

১৩৬৬ সানের বৈশাধ <mark>দংখ্যা হ</mark>হতে আশ্বিন সংখ্যা প্রয়ন্ত

| | | | | | N. P. |
|-------------------------------------|--|--------------|-----------------------------------|--|---------------------|
| বিষয় | ● লেখক | পরা | विषय | দেখক , | - |
| যুগবাণী— |), She, 023, ee0, | 184. 323 | -৫। শিকাও শিকায়তন | অবিনাশচক্র হার | 330 |
| প্রবন্ধ | | | ২৬। সাহিতা ও শিল্পে চিবস্থনত | া জ্যোতির্যন্ত রায় | 265 |
| ১। আমাদের সৌকর | াবৃদ্ধি দেবেন্দ্ৰনাথ মিত্ৰ | 926 | ২৭। স্কটগাশু ইয়ার্ড বনাম | | |
| ২। আফ্রিকার সেহ | পি, দি, সরকার | 8 • • | ক'লকাতা পুলিশ | প্ৰানন ঘোষাৰ | 4.04 |
| ৩। আলোচনা নিযু | ল করার | | ্চ। সনাতন গোস্বামীর | | *** |
| আলোচনা | ভঙ্গণ চটোপাধ্যায় | 645 | গৃহভাগে | উমাপ্রসর দাশকৰ | *14 |
| s। ইন্টারমিভিয়েটে | অপ্লাল | | বিবিধ রচনা— | | |
| পাঠাপুস্তক | স্থাকর চটোপাগাস | ъ | ১। না-জানা-কাছিন | তাল বেতাল 😿 | ; >4.28%,46 * |
| १। कानीपारी । का | লীপূজার | | -। বিপ্লবের সন্ধানে | নারায়ণ বন্ধ্যোপখ্যা | |
| ইতিহাস | শশিভ্ৰণ দাশগুৱ | 168 | • | | beb. 3038 |
| ৬। চিএ-চরিত্রে বর্ণটে | বাধ ও | | ৩। ভেবাফিগ্নার | অমল সেন | 201 |
| ে সামাদর্শন | গোৰ্গ্বন আশ | 8+3 | ৪। শিকাব কাছিনী | কমলেশ ভাগড়ী | *** |
| ৭। জার্মাণীতে এখম | | | উপস্থাস— | | 4 |
| ভারতের মুক্তিকা | ামী ' অবিনাশচন্দ্ৰ ভট্টাচাৰ | 364 | | | ** |
| ৮। জনাত্তর কি সহ | ৰে? বন্ধচারী মেধাচৈতক্ত | ٥٥٤, 843 | ১। শ্বনকেত | সাত্য কি | 44 By |
| ১। জননী কগদাত্রী | 9 | | २। व्यवस्था श्रीवरी | পঞ্চানন ঘোষাল | 188, |
| শী শীসাবদামবি | যতীন্ত্ৰবিমল চৌধুবী | ૯ ૨ ૨ | | | 44.C. SAME |
| ১ । জাবন-গাঁতা | গৌতম সেন | 300 | ০। ইন্দাণীর প্রেম | নীলিমা দাশগুন্ত ধ | 4. 824 |
| ১১ ৷ ভাগো | পি, সি, সরকার | 60 | ৪। চ=পাতার নাম | মহা:খতা ভট্টাচাৰ | 284 |
| ১২। নাট্যাচার্য লিশিং | | | | 878. 975 | . 14 . 3 . 4 |
| সঙ্গে কিছুক্ষণ | অমিরকুমার মুখোপাধ্য | ার ৩৮২ | ে৷ পাগলা হতারে মামলা | প্ৰকানন ঘোষাল | 435, est. |
| ১৩। প্রাচীন ভাবতে | | ¢ 6 8 | | | 1140, 33++ |
| ১৪। বিভিন্ন তন্ত্রেব ধর্ম - | • | 25 | । বন কেটে বসভ | মনেক ২ম্ব | \$44, 00¢ |
| ১৫ (বক্সবাড়ী আইনে | The state of the s | 77. | | e • • , • • • | b. 29 20 mg |
| ১७। देवनाली | নৃপেন্দ্ৰনাথ বাষচৌধুরী | 8 • 0 | ৭। বর্ণালী | সুলেখা দাশগুৱা | A >45 |
| ১৭। বৌদ্ধ দেবী | শশিভ্যণ দাশগুপ্ত | **8 | | 8. | אַר פּטָפּ אַ |
| ১৮। বাঙলা শভিধান | সঙ্গন শৌরীক্রকুমার ঘোষ | 265, | ৬। বাতিখন | বাৰি দেবী | ire, es |
| | <u> </u> | 196 2.65 | 13 | | 1 8. 3 4 6 6 T |
| ১১। বজরম্বীর মৌনা | | 189 | ১। বিদেশিনী | नौरमवञ्चन भागरः य | gji 🍇n, |
| ২ • । বাঙালী কেরাণীর | - | | | | Mare ser |
| পরিচালনা | নগেন্দ্ৰনাথ ভট্টাচাৰ | 186 | ১ । ভাবি এক হয় স্থার | দিলীপকুমাব বার ~ | or, 144. |
| ২১। বাঙলা শাক্ত প। বৈষ্ণৰ পদাবলী | | | | . 485. 47 | ₩ ₹ ₹ , \$ % |
| | ननिक्रव मानश्य | 255 | ভ্ৰমণ-কাহিনী | | |
| ২২। মি: লোমেন হও নায়ক বিনয় বং | • • • • | \$ ip \$ | ১। ভূমর্গ পরিক্রমা | াশ্বঞ্সাদ নাপ | M |
| २७। रखनानव ना यक्ष | im 4 % ! . | 202 203 | ২। লশ্তনের পাড়ার পাড়ার | হিমানীশ গোসামী | 318. 433 |
| २०१ विद्वारा विद्वार | | >₩ | | \$. \$ @ € ¢ . ¢ | 4.1 |
| বিষ্কারণছড়ি | পূলিনবিহারী বন্ধ | | | ነን , ምወርና , ምወወር ነንሩ ; ም • ቁቁ , ም ፅ ቀየ | 1100 |
| . m.s. (4) A | ग्रानानायकाचे वर्ष | 44. | e - 8本; e 8 b 本,9 · 8本; | 10041 0044 1 944 | 4-25 M-45 G-2 T |

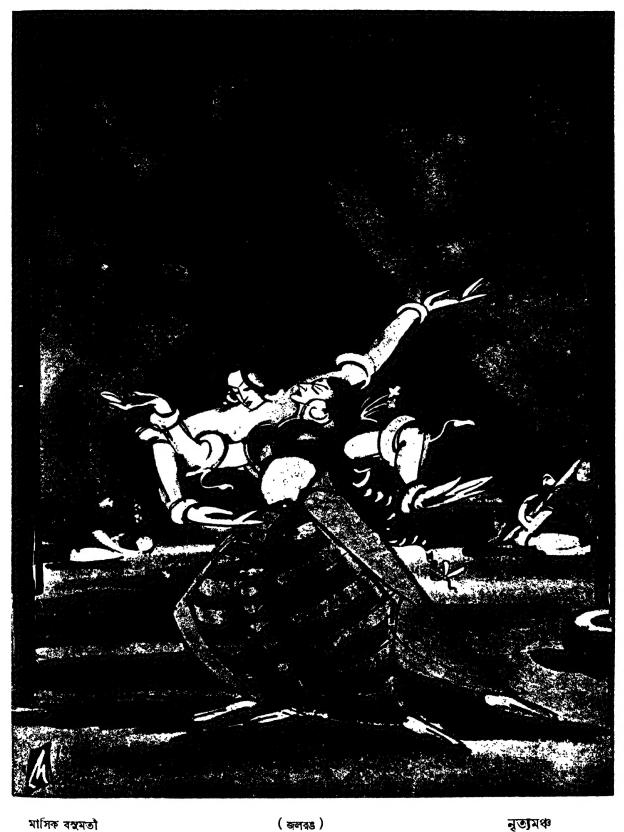
স্চীপত্ৰ

| | विवय | লেখক | श् र्वा | | বিষয় | লেখক | পৃষ্ঠা |
|---------------|------------------------------------|--------------------------|----------------|-------------|---------------------------|--------------------------------------|--|
| ৰ বিভা | | | | 84 | বোটানিকেল গার্ডেন-এ | অশোক ভঁটাচাৰ | 446 |
| ,31 5 | াধরা | ভপতী চটোপাধ্যাব | 202 | 1 68 | বেশ লাগে | ৰকুল বন্দ্ৰ | 100 |
| ंश 🖷 | ভিগারিকা | শনিল চক্রবর্তী | ६७५ | 811 | বছরূপী | তক্ষতা ঘোৰ | 444 |
| | থ চ | সম্ভোবকুমার অধিকারী | 132 | 851 | বাসবো ভালো | সাধনা বস্থ | 3.64 |
| 81 4 | क्शनमीत हत | আইভি বাগ | 128 | 82 | ভূপ | কাকলী চটোপাখাৰ | 201 |
| .6 1 2 | পার গ | মারা মুখোপাধ্যার | 404 | 4.1 | ভূপ | ৰকুল ৰক্ষ | 484 |
| 6 I W | ভ্ৰোণেৰ বং | রথীক্রনাথ সেন | 200 | 621 | ভালোবাসা | অঞ্চি দাশগুৱা | 123 |
| | াশিনের ভোর | পার্কুমার চটোপাব্যার | 3 | 421 | ভোরাই | সজনীকান্ত দাস | 166 |
| | নকাশ: মাটি | কুতী সোম | २१७ | 201 | মেমোরিয়ালের মাঠের | | |
| | ক মুঠো ভিক্ষে পাবো বা | - | 3 4 | | সেই মেয়েটি | বিমলচন্দ্র সরকার | ٠. |
| | ন্মনা মেৰে | শেফালি সেনগুপ্তা | 489 | 481 | মানসভীর্ষে | বাণী পাল চৌধুৰী | 360 |
| | কটি কবিতা | অবস্তু সাক্রাল | 662 | ee i | মনের আকাশে | স্থপ্রিয়া 📏 | 255 |
| | त्या नवर्ष | মধুচ্ছন্দা দাশগুপ্তা | 33. | 691 | मन | नीहातवश्चन हामपात | 4.7 |
| | গন্ধী নজকুলকে | গোরাঙ্গ ভৌমিক | 360 | 49 1 | মহাপ্রস্থানের পথে | প্রভাবতী বিশাস | 005 |
| | নম্ভ বী ণার | কুষণ বন্দ্যোপাধ্যায় | છર હ | 201 | यन | বীরেশর বস্থ | 162 |
| | গড় খানাম কান একজনকে | জগৎকুমার বিশাস | 982 | e3 1 | মৃত্যুর অথও প্রেম | জয়তী বার | - |
| • | काम अक्षमण्य धराजी | মাধ্বী ভটাচার্য | • | | | | 435 |
| | ব্যাগ। বি হৌদ্রে বলসিভ | | 22 | 60 1 | ज्ञान पृष्ण नव | শিবশস্থ পাল | 278 |
| | | সত্যধন ঘোষাল | 86 | 621 | বে পাখী ফেরে না আর | উমাপদ বারচৌধুরী | bir |
| | ামে | কেশব চক্রবর্তী | 202 | ७२। | রাজধানীর পথে পথে | | 13r, 80r, |
| | ারীব | অশোকা দেবী | २२० | 601 | बमनी | ্ ৫১৩, ভৃত্তিসাম | 160, 380 |
| • • | াভাপাঠ | শিবপ্রসাদ বন্দ্যোপাধ্যার | 000 | | | • | ؕF |
| | হণালিতের কথা | মহিমবঞ্জন মুখোপাধ্যার | 221. | 481 | র ওহারি প | | 11. |
| | (B. , | শমিতা বস্থ | 76 | 961 | শিশিরকুমার | ক্রজাক বন্যোপাধ্যার | |
| | वि | সঞ্চিতকুমার চটোপাখ্যার | e 98 | 991 | তথু বাভটুকু পার হলে | কৃষ্ণ ধ্য | 936 |
| | দীবন-ছড়া | চণ্ডী সেনগুপ্ত | 42 | 91 | স্থানাটোরিয়াম | শক্তি মুখোপাধ্যায় | •1 |
| • | লছবি | মলরশকর দাশগুপ্ত | 122 | 961 | সূৰ্য কাব | আবহুল মজিদ | २२€ |
| રહા 🏗 | রাপাখি গঙ | রমেন্দ্রনাথ মলিক | > 69 | 621 | দেই প্ৰাগৈতিহাসিক মেয়ে | | 607 |
| 291 3 | ারী | বিমস্চন্দ্র ঘোষ | 0F2 | 9-1 | সকলই কবিভা | নন্দলাল বেয়া | 6.0 |
| २४। प | হুমি আছ | প্রীতিষ্বা বন্যোপাধ্যার | #2¢ | को व | गे — | | |
| 231 9 | তীয় নয়ন 🤇 | দেহ্ৰত চক্ৰবৰ্তী | 474 | | অথও অমিয় ঐগোরাস | অচিন্ত্যকুমার সেনভব | 30.346 |
| 0.1 9 | হুমি এসো | স্থমিতা মিত্র | 452 | 31 | व्यय वान्य व्याप्तामान | | 160, 360 |
| 03 I F | ামোদৰ | অধীর সরকার | 674 | | ساب هـ ـ د | | 33 |
| ્રા કે | ীল পাৰি | बर् छी (मन | ७५७ | श | বীর রমণী জুডিখ ' | অমল সেন ভবানী মুখোপায়ার | \$ · · · , \(\sigma \) \(\sigma_{\text{\chi}} \) |
| 991 5 | া ভূমি বেয়োনা চলে | গোপাল ভৌমিক | >.0 | 01 | ਜ ' | क्याना बूट्यानाचुात्र 8कर, १०२, १ | |
| | প্ৰভূ ⁻ শিষ্য সমাচাৰ | বিমলচন্দ্ৰ ঘোৰ | Cap | | 6.6 | রবি মিত্র ও দেবকুমার | |
| | প্ৰতীকা | স্থান চটোপাগ্যর | 640 | 81 | শিশিব-সান্ধিধ্যে | | 143, 388 |
| • | ারা জি ভ | সম্ভোত্তুমার দাশগুপ্ত | 406 | | | | |
| | বৌর ঝাউবনে | व्ययस्थानम् पञ | 114 | 1 | সাধ্বী অবোরকামিনী | স্থীর ব্রহ্ম | 96 |
| | হুল ফোটানোর গান | অশেক ভটাচার্য | 880 | সংগ্ৰ | ₹— | | |
| | हुन द्याराज्यात्र गान | বেলা বন্দ্যোপাধ্যাব | ₹8 | 31 | পুণ্যভূমি•ভারত | | 996 |
| | तुम् नारमा तुमाञ्च | ভত্নগভা যোৰ | 54. | | ्र अविक द्रम | | २५७ |
| | ব্ৰণাথ গাবি বারা আ বিড়ি | কাৰলা চটোপাধ্যায় | 209 | | | , ७८६, ६७२, १२६, | 5.0. 1.50 |
| | | সমসকুমার বন্দ্যোপাধ্যার | . 657 | { |) 19 | 1, 08E, EQZ, 74E) | , , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| • • • • • | वर्ष् | वीचि वस | ७२७ | CAC | प-विद्य ारम ्, ५१३ | , 068; 600, 100, | 22., 2.21 |
| | ব্ৰয়ৰ | | | 91754 | 955— · · · | , 2-2, 058, 607, | 120, 3026 |
| uc 1 1 | লাক্তি ৰ | দেবপ্রসন্ন মুখোপাধ্যার | eze | 1016 | | | |

र्गायं ।

| | বিব্ৰ | তাৰ্ক | পৃষ্ঠা | | विवद | লেখক | |
|---------------|-------------------------------|---------------------------------|---------------|------------|---------------------------------|---------------------|--------------|
| CEIB | দের আসর | | 1 | चन्न | 6 2144 — | | |
| উপক্রাস | | | 1 | প্রবন্ধ | | | · * |
| 3 1 | দিন আগত ঐ | ধনপ্তর বৈরাগী ৬৪৮, ৮৪ | b, 3.98 | 5 1 | উচ্চশিক্ষার মাধ্যম | শান্তি ভটাচাৰ | |
| રા | সোনালি ব্যবণা | रेमन ठकवर्की ७२ , २ | 26, 805 | ٦ ١ | কবিতা ও ভার জনপ্রীতি | | 69 |
| • | কাহিনী— | | i | 91 | ববাহিতা স্ত্ৰী পাব্দতী স্থী | অমিরহাণী দাস | ي د , |
| 31 | ৰাধি বিশ্বামিত্রের শিক্ষা | সুল্ভা কর | •8 | 8 1 | মেয়েদের ক্যাম্পে থাকা | ইন্মতী ভট্টাচাৰ্য | 47 |
| ર | চেকোপ্লোভাকিয়ার স্থপকৰ | t | 400 | | শরৎচন্দ্রের সমাজ-চেতনা | অক্ৰিমা কুখোপাখ্যার | wŤ |
| • | ছই বোন | পুস্পদল ভট্টাচার্য | 408 | ভ্ৰমণ-ব | দহিনী— | | |
| 8 | নাইটিংগেল (অনুবাদ) | বকুল ঘোৰ | 61 | 3 1 | একটি নিৰ্বলা | 2 | • |
| | নামের শক্তি | সদানশ ভটাচার্য | 889 | | ভ্ৰমণ কাহিনী | ইন্মতী ভটাচাৰ | 2.3 |
| | শ্রেষ্ট্রের স্থ্র | অশোককুমার চৌধুরা | ५७२ | 21 | ক্লবাত্ৰা | क्रमा (मर्वी | ર૪ં |
| | হৈমবতী উঠা | অমিতাকুমারী বস্ত | 3.13 | 91 | পথে পথে | ন্থনীতা দম্ভ | રક |
| প্ৰবন্ধ- | | | | खीवनी | | | |
| 21 | | দেবত্ৰভ ৰোৰ | 882 | 3 1 | ভক্তকবি জয়দেব ও | | : |
| 31 | আকাশপারের দেশে | স্থাংভ ঘোষ | 305 305 | | ভাগাবতী পদ্মাবতী | প্রবী পাঁজা | २३ |
| 91 | কিশোর-সাহিত্যে রোমাঞ্চ | | *ee , | | মহিলা কবি চন্দ্রাবতী | ৰ্ছি চক্ৰবৰ্তী | २४ |
| 81 | कांड | বিনয় চক্রবর্তী | 6,1 | গল্প ও | কাহিনী— | | |
| स्यग- | | INMA DOPNOT | 91 | 31 | कलानी | অপরাজিতা ঘোব | ree, 5 - 'e |
| | আধুনিক আফ্রিকাতে | | | ૨ I | ঝাড়ুদারের বৌ | অমিতাকুমারী বস্থ | 81 |
| 21 | পাঁচ মাস | পি, সি, সরকার | | | মুবারিকা বিবি | শিবানী ঘোষ | २६ |
| জীবনী- | • | भि ।यः यत्रकात्र | 3.18 | | মাছচুচাক বেগম | শিবানী ঘোষ | 91 |
| 21 | — গিবনের আত্মজীবনী | | | • | মাষ্টার মশার | আশা দেবী | ٥٠٤ |
| - • | াসবনের আত্মজাবন। ভক্ত কবীর | স্থনীলকুমার নাপ বাস্থদেব পাল | २७8 . | ৬ | বক্তগোলাপ | গীভা চক্ৰবৰ্তী | •1 |
| २। ७। | ষাত্মকর সরকার | वीवादावी <i>द</i> मन | २७ २ , | ٩ | সুন্দরীশ্রেষ্ঠা হেলেন | থাপোলা | 81 |
| 81 | শ্বরণীয় বারা | কবি কৰ্ণপুর | 443 | ۲ | স্বসম্ভ বা | প্রবী চক্রবর্তী | 7 • 8 |
| ৰ বিভা | | कार कर्रम् | 3.4 | ক্ৰিভ | | | |
| | ছোট গিল্লী | | | | অ ব্যক্ত | প্রতিমা চটোপাধ্যার | 61 |
| 21 | | বুদ্দেৰ বাগচী | 465 | | এককালি কোদ্ব | ৰপ্না ভন্তা | à |
| ۶ ا ماديجو | শত ও পা্ৰী | রণজিংকুমার দত্ত | F68 | | ছুটি | ৰীণা মিত্ৰ | ঠ |
| যাহতং | | . 6 | 200 | | দিন-বাত্ৰিব কাৰ্য | সভ্যমিত্রা রার | ھَ |
| 21 | কালি থেকে সন্দেশ | এ, সি, সরকার | 2.49 | | মৃত্যুর পরে | বিশাখা ঘোষ বার | ঐ |
| २ । | গ্লাস অনৃত কৰাৰ বাছ | • • | 887 | DIE S | নে (ৰাঙালী-পরিচিতি |) | |
| 01 | ন্যা প্রসার ন্যা বাছ | • • | ₹७• | | মূণালিনী সেন, অরবিক্ষনা | | |
| | বোজামের বাত্তমূল | • • | 445 | 21 | विनायकनाथ वस्मानाथार | • | |
| | ক্ষাল আর পেলিলের ভে | ₹1 • • | res | | হরিদাস ভট্টাচার্য, শিবপ্রস | | 31 |
| | চিত্ৰ— | | | २ । | | | |
| | নুত্যমঞ্ (জনরঙ্ক) | দেবত্ৰত মুখোপাখ্যার | বৈশাখ | | বভাজনাথ সরকার, শৈকে | | 52 |
| રા | | মহীতোৰ বিশাস | टेकार्ड | 01 | বোগেশচন্ত্র তথ্য, বিষ্ণুচরণ | | |
| 01 | | শ্ৰচাক দেবী | আৰাচ | | রবীজনারারণ চৌধুনী, আ | | ৩১ |
| 8 (| ভক্তিপরাকা (হেচ) | অমৃতলাল ৰন্দোপাধ্যার | खावन | 8 1 | | | _ |
| 4 | রঙ বাহার (জলংঙ) | বিশ্বপতি চৌধুরী | ভান্ত | | শ্রদিন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়, প্রা | | •• |
| • 1 | হাট বাজার (খেচ) | অর্বিশ'দন্ত | অাখিন | e 1 | | | • |
| ৰেলা | াৰুলা ১৬. | , २ 8, 424, 138, 5 4 | | - | নিরাপদ মুখোপাধ্যায়, কর | | 31 |
| | av | | -,,- | • 1 | বাজেন্ত্ৰলাল আচাৰ্য, চাকা | E EUDIA, | |

| 8 | | | स्य |) · (e) | | |
|---------------|--------------------|--|--------------|---|--|----------------|
| | বিৰয় | লেখক | পৃষ্ঠা | विनय | শেৰক | পৃষ্ঠা |
| গল্প- | _ | | | নাচ-গাল-বাজনা— | | |
| | | শচীন বিশাস | 201 | প্রবন্ধ— | | |
| 21 | | न्वान । प्रान | 100 | ১। কবিগানের সাংস্কৃতি | 4 | |
| २ । | | আবহুল আন্তীক আল আমা | 27 L-L-Ja | ভূমিকা ' | দিলীপ চটোপাখ্যার | 7 . 5 |
| | ইতিকথা | | 226 | ২। কবি ও গীতিকার | | |
| 91 | ~ | রাণ্ডেমিক | | নজকুল ইসলাম | * কালীপদ পাহিড়ী | 083 |
| 8 1 | দৃষ্টিবাণ | বাসস্তা বন্দ্যোপাধ্যার | 9. | ৩। বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে | | |
| e 1 | দৰ্শন | মণীব্দুনারায়ণ বায় | 4.7 | স্বসাধনা | নিমাইটার বড়াল | « ২ ৮ |
| 91 | পদ্মাগান্তের খেরা | শচীন্দ্রনাথ অধিকার | ર | ৪। বাউল পদ্মলোচন | ভর্দেব বার | b-1 - 0 |
| 9 1 | প্রেডলিপি | রঞ্জত সেন | 6.4 | ৫। যাত্ৰাগানের ইভিক | থ। দিলীপ চট্টোপাধ্যার | 920 |
| 41 | মমভাষয়ী | সুশীল বায় | *** | ৬। সঙ্গাতশিহন শরৎচন | | >*er |
| 5 1 | যে লা | বিবেকরঞ্জন ভট্টাচাধ | 428 | বেকর্ড-পবিচয় | | 23, 663 |
| 3 - 1 | মরশ্রমী | প্রফুর বার | 3 | আমাব কথা—(শিল্প-পা | | |
| 331 | যাত্ৰা | স্পেনসার স্থবত দত্ত | ७१७ | 1 | ০৬০ ২। কাশীনাথ চট্টোপাধ | াাৰ ৩৫২ |
| 32 1 | শীতের পড়স্ত বেলার | মাধবী ভটাচার্য | ७•३ | 1 | ৫৩ । প্রস্নকুমার কল্যা | |
| 106 | শ্ৰেষ্ঠ উপদেশ | অরবিন্দ দাশগুপ্ত | ७৮१ | , | ৮৮২ ৬। বাধারাণী দেবী | 192 |
| 381 | শাপমৃক্তি | বারেশচক্র শর্মাচার | 360 | রঙ্গপট— | | |
| Se 1 | সভ্য | অন্ধূপ সেনগুপ্ত | 866 | | | |
| ۱ هد | চাইড পাক কণার | সম্ভোবকুমার ভটাচার্ব | \$4. | প্রাত্মন্থতি— ১। শ্বতির টুকরো | সাধনা বস্থ -১৭৫, ৩ | w\. #84.P |
| W 83 2 | at u — | | | | म : कम्यानिक वस्म्याः १७८, ১० | |
| | | | | রন্ধপট প্রস ন্ধে | | 3, 33.9 |
| উপস্থা | | | L. | বিবিধ— | | a, 33-1 |
| 21 | অন্তগামী পূৰ্বা | ওসামু দোজী: কল্পনা রায় | P5, | l . | | • • • |
| | | >2 % , 802, 92 b | , 210 | ১। চগতি ছবির বিবর্ণ | | 98• |
| লীবন | _ | | | ২। জেনিফাৰ জোন্স | দেবব্ৰত বোৰ | 3.9 |
| 5 1 | ঋণাঞ্চলি | , | , 8•9, | ৩। নটগুকর দেহরকা | | (0) |
| | নিৰ্মণ চ | ন্দ্ৰ গলেপথায়ে ৬৪০,৮১০ | . 303 | ৪। নজুন আঙ্গিকে মিন ৫। নকল আকাশপাড়া | | 18• |
| 4町- | • | | | 1 | লে কলে বেলাবর বের বস্তমহলের প্রচেষ্টা | 22·w |
| \$ 1 | জুলি হোমেন | মোপাসাঁ : রমেন চৌধুরী | २ १ 8 | ভ। বন্ধাউদের সাহাব্যক ১২৪ ও চিত্র-স্মালোচনা- | | 33-4 |
| | রূপকথা . | ক্রেলা : তুষার সাক্রাল | F3. | | _ | |
| | | | | ১। অপুর সংসার | 6 | 063 |
| কাব্য- | | | | ২। ইন্দুনাথ, ঞ্ৰীকান্ত ও | | >>• |
| 31 | আনন্দ বৃন্দাবন | কবি ক র্ণপূর : ১১২, ২৫২ বাধেন্দুনা থ ঠাকু র ৬৮৮, ৮৩২, | | ०। इन्स्कान | ১০১ ৪। একমুঠো আকাশ | 399 |
| _ | | वार्यन्त्रभाष ठाकूत्र ७४४, ४०२, | 3-40 | १। क्ष | ৩৬৩ ৬। ডাকবা'লো ১৭৮ ৮। সোনার হরিব | 396 |
| কৰিছ | | | | ৭। দীপ ছেলে যাই | | \$3•€ |
| 51 | | দী হার্ডি: সুনীতিকুমার গুড়ি য় | । १४७ | 1 | ট ভালে ভালে ও অগ্নিসম্বা | 3 · t |
| ۱ ډ | इक्लिके मार्डेड | কোলবিজ: ভক্না মুখোপাখ্যা | | প্রচ্ছদ— | £ £ _ | |
| • 1 | একটি আর্থাণ কবিতা | আইশেনদৰ্ক: ইন্দিরা চটো | | >। অগ্রকনন্দা | বিভাগ মিত্র | देव णाः |
| | | ও মানস রার | 62. | ২। কাশ্মীর | বিভাগ মিত্র | 'का |
| 8 I | খেয়াল | সরোজিনী নাইছু: | | ৩। শিশবকুমাব | পরিমল গোস্বামী | ন্ধাৰা |
| | | মঞ্য দাশগুপ্ত • | २१४ | ৪। পাঠরতা | বিশু চক্ৰবতী | ` ,প্রাব |
| 41 | ত্তনা | হো, চি, ফাঙ্কঃ অক্সয় বস্থ | 471 | ে। বাদ্রালী মেয়ে | সভ্য পাল | '6 1 |
| • 1 | তোমার বৃদ্ধকালে | ইয়েটস্ : কল্যাণ সরকার | २१७ | ভ। ছই বোন | ৰামকিশ্বুর সিংহ | <u> আর্থি</u> |
| 11 | ভিমিরাভিশার | ভ্ৰাউৰিং : স্তকুমারী দাশ | 857 | বিজ্ঞান-বার্ডা— | (88, २७७, १०৮, ৮১ | |
| 41 | | (मनी: कोरन इक पान | 122 | কেনাকাটা— | >+2, 422, 427, 124, bb | 10, 200 |
| | | | | | | |



। देवभाव, ५७५५॥

(জলরঙ)

— 🛢 দেবত্রত মুখোপাধান্য অঙ্কিত

সতীশচন্দ্র মধোপাধ্যার শ্রতিয়



৩৮শ বর্ষ—ইবশাখ, ১৩৬৬]

॥ স্থাপিত ১৩২৯ ॥

প্রথম খণ্ড, ১ম সংখ্যা



এ এবামকৃষ্ণ প্রমহংসদেব। 'আমার চৌদ্রপুরুবের কেছ শিবকেও ক্থন দেখেনি, বিফুকেও ক্থন দেখেনি; অত্এব কে বড় কে ছোট, তা কেমন ক'বে বোলবো ? তবে শাল্পের কথা গুনতে চাও তো **এই वनाट हद ता, देनवनात्त्व निवाक वक्र कादाह ७ देवनवनात्त्व** বিফুকে বাড়িরেছে; অভএব বার বে ইষ্ট, ভার কাছে সেই দেবভাই বঙ্গ সকল দেবতা অপেকা বড।

"পন্মলোচন অত বড় পশুিত হ'ৰেও এথানে (পামাতে) এভটা বিশাস ভক্তি কোবত! বলেছিল—'আমি সেৱে উঠে সব পশুভদের ভাকিরে, সভা ক'রে সকলকে বোলবো, তুমি ঈশ্বরাবভার; আমার क्था (क कांद्रेटक भारत (मधरवा। । भधुत (अक ममरत जा कांत्र(म) বত পশ্চিতদের ভাকিরে দক্ষিণেখরে এক সভার বোগাড় করছিল। পদ্ললোচন নিলেভি অশুত্তপ্রতিগ্রাহী নিষ্ঠাচারী বান্ধণ; সভার শাসবে না তেবে শাসবার ভক্ত শহরোধ করতে বলেছিল! মধরের ক্থার ভাকে জিজ্ঞাস৷ করেছিলাম—'হ্যাগা, ভূমি দক্ষিণেশ্বর বাবে না ?' তাইতে বলেছিল—'ভোমাৰ সঙ্গে হাড়িব ৰাড়ীতে পিৱে খেৰে • শাসতে পাৰি। কৈবৰ্তের বাড়ীতে সভার বাব, এ আৰু কি বছ ±41 5,

'কেউ ডাক্ডারি করে, কেউ থিয়েটারের ম্যানেক্ডারি করে, এথানে এনে অবভার বললেন। ওরা মনে করে অবভার ব'লে আমাকে পুৰ ৰাডালে -- বছ কথলে। কিছ ওবা অবভাৱ কাকে বলে, ভাৰ বোবে কি ? ওদের এখানে আসবার ও অবভার বলবার চের আর্থে भन्न:नाठत्वर यक लाक--वाबा मात्रा क्रीवन के विवरत्व ठक्कांत्र कान কাটিবেচে—কেই ছুর্টা মর্শনে পশুন্ত, কেউ তিনটা মর্শনে পশুন্ত— কত সৰ এখানে এসে অবভাৰ ব'লে গেছে। অবভাৰ বলায় ডাছজ্ঞান হ'বে গেছে। ওৱা অবতাৰ ব'লে এধানকাৰ (আমার) আৰ কি বাড়াবে বল ?'

^{*}গুটি সৰ খন বুৱে ভবে চিকে উঠে; মেধর থেকে বা**লা অব**ধি সংসারে বতন রকম অবস্থা আছে সে সমুদর দেখে, ওনে, ভোগ ক'বে, ভুচ্ছ ব'লে ঠিক ঠিক ধাৰণা হ'লে ভবে প্ৰমহংদ অবস্থা হয়, ৰথাৰ্থ জ্ঞানী হয় ! এ ভ গেল সাধকের নিজের চরমজ্ঞানে উপনীত হইবার কথা^{"।} আবাৰ লোকশিকা বা অনুসাধাৰণের বথার্থ শিক্ষক হ**ই**তে इहेरन कित्र न इंदर्श चारक्षक छ्रम्यस्क रनिएकन- चाप्तरका अकी। নকুন দিবে করা বার ; কিছ পর্কে যারতে হ'লে (শব্দ ছবের ছক্ত) महीका चीकिएतिया महाराज्य हरिया । हार व

পদ্মা গাঙের খেয়া

শচীন্দ্ৰনাথ অধিকারী

ক্ষণার বলে 'এক নদী বিশ কোল', বিশেষ করে পদ্মা গান্তের খেরাঘাটে।

এপারে কালোরার চর থেকে ওপারে বাজিতপুরের ঘাট জ্বধি পৌছুতে লাগরে বাড়া এক ঘণ্টা, বদি নদী শান্ত থাকে। এপারে নিলাইনহ ওপারে পাবনা সহর। বাজিতপুর পাবনা সহরের বন্ধর। উলান ভাটি জাড়াইতলা স্তীমারগুলো চেউএর প্রচণ্ড জ্বালোড়ন তুলে ঘেরাঘাটটা পল্লার বুকের মধ্যে মধ্যে পাশ কাটিরে পাবনা গোরালন্দ বাডারাত করে। কাঁচি চর চিক্ চিক্ করে। সমন্ন সমন্ন থেবানাও দে চরগুলিকে সাবধানে জ্বিক্রম ক'রে পারাপার করে। বর্বাকালে ঘণ্টা সমুক্র বিশেব।

ভোব হরেছে। প্রথম থেয়া ছাড়বার সময় হরেছে কালোয়া ঘাট থেকে। শীতের শেষ। প্রভাতে মিঠে মিঠে রোদ, সঙ্গে শির্মিরে পদ্মার হাওয়া। পাবের বাত্রীরা বেশ আবামেই প্রথম থেয়ার অংপক্ষায় পল্ল-গুছাব করছে, তামাক থার থেয়া মারির কুঁড়ে বরের সামনে, কেউ দাঁড়িরে, কেউ বা বসে। মাছ, ত্রিতরকারী, ছব, মটর কলাই, প্রারাজ, গুড়ের হাড়ি, শাকসবজী, গরু, ছাগল, মোব, রুবগী, পারের আশার থেয়া মারির বরের সামনে ছোটবাটো একটা বাজার-বসিরেছে, কিছু প্রথম থেয়া ছাড়তে দেরী হবে।

ৰাত্ৰীদের প্ৰাপ্তের পর প্রব্যে জানা গোল, জমির ভাই অমুপস্থিত বলেই প্রথম নাও ছাড়তে দেবী হবে। বেলা বাড়ছে। খোদাবল নিকারী হাঁক ছাড়লো এনারেৎ চাচা, লাও ছাড়ো, বেলা হল, ইলিশ মাছ বেশীক্ষণ রাধা বাবে না।

এনারেং বুড়ো মাছুব। এই ধেরাঘাটের মারি ও মালিক।
আনেক টাকার সে ঠাকুর বাবুর কাছারী থেকে এই ঘাট বন্দোবন্ত
নিরেছে। নিব্দে খাটতে পারে না। এনারেতের তুই ছেলে জমির
আর জছিম পারঘাটের খবরদারী করে, পারাপারের বাবতীর বন্দোবন্ত
করে তুই জন মাইনে করা মুসলমান মার্কির সাহাব্যে। বুড়ো এনারেং
আট খুব ভালই চালাছে, স্বাই তার উপরে খুলী। বড় ছেলে জমিরই
ধেরার কর্তা। পারঘাটের কারদা কামুন, ধরণ ধারণ, নদীর অবস্থা,
ধেরার অন্ধি-সন্ধি ভার নথদর্শণে। জমির নতুন বিবে করেছে আজ
মাসধানেক হল। ববিবারে সেই বে নতুন খণ্ডবর্যান্তি গিরেছে, আজ
বার দিন হল ফেরে নাই। ভাইতেই থেরা পারাপারের কিছু অব্যবস্থা
ছবে। একারণে বাপ এনারেং অভ্যন্ত চিন্তিত ও বিরক্ত। ধেরাভাটের এতদিনকার প্রনাম নিষ্ক হবে, সে কথা সে ভারতেও
পারে না।

খেৰাবাত্ৰীদেব সোৰগোল ক্ষক হল। দীমু শীকণাবের পাবনাং মুলৈকী কোটে মোকর্দমা আছে। শিকদাব মশাই ব্লনেন এনাং ভাই, পোড়েডদেব দিয়েই লাও ছাড়ো। বেলা বাড়ছে। ওদিকে প্রকারা ট্যাচাছে পাবনা বাজার ধরতে হবে এনাং ভাই। সহবের বাজার। সে ভো শিগেদের হাট লয়।

অনারেন্ডের বকাবকির ঠালোর ছোট ছেলে জছিম গজর গজর করতে করতে বড় নাওখানার দলি খুলে ফেলে ভাকলো—ভার রে ভামিক ভাই, কাঁড় ধর। ভোমরা সব উঠে পড়ো ভাই সব। সাও ছাড়লাম।

পাবের বাত্রী অধিকাংশই আগে ভাগেই মালপত্র নিয়ে বড় নোকোর উঠে বদেছে, নোকোর গলুই পর্যান্ত বোঝাই। বারা ভীবে দাঁড়িরেছিল তারাও ভাড়াতাড়ি এক হাঁটু কল ভেঙে নোকার উঠে পড়ল। নোকা হাড়ল।

নৌকা ছাড়ামাত্র এপাবের বাবিসাবের পাড়ির উপর থেকে ছাডামাধার ছ-তিন জন লোক চ্যাচাতে লাগলো—স্থামানের লিরে বাও মাঝিভাই, জমির, জমির ভাই দাড়াও।

আর 'মাঝিভাই গাঁড়াও।' ততক্ষণ হালের তুই ভিন ঘাইতে নোকাধানা আগবলি এগিরেছে, তীরের জলপ্রোতে কল কল ধ্বনি তুলে বাত্রীদের কলগুলনের মধ্যে বাত্রা স্থক্ষ করেছে। কেউ কেউ মন্তব্য করছে—আরে বাবা, সারাপথ ছুটোছুটি থেরাধাটে গড়াগড়ি। প্রের লাওএ আইসো গো—প্রের লাও হাড়ছে।

প্রভাতে পর পর ত্থানা নৌকা ছাড্বার নিরম। তাই পাঁচসাভ
মিনিটের মধ্যে আবার অনেক বাত্রী জড় হল। তিনটে গাইবাছুর
এলো ওপারে সাদিপুর বাধানে বাবে। নৌকা জার একথানা না
ছাড়লেই নর। বুড়ো এনারেৎ তামাক থেতে খেতে পড়েং
জমাবংকে বলল, দেখতো জমাবং, হারামজাদা জমিবের আকেলখানা
দেখ। বেটার তিন তিনটে দিন খণ্ডবাড়ী মধুর হাঁড়ি খেবেও
আল মিটলো না। এতবড় পল্লাগাঙের খেরা। বেঠা লাউড়ি
দেখে ভূলেছে। আহম্মকটাকে পেলে হয়, আমি ওকে পার্ভার
পেঠা করব। আমার কিসে তাগোৎ আছে রে বাবা! বাক্ চল,
আমিই হাল ধরছি। মাজার গামছা বেঁবে চট জবে চলে আর

বুড়ো এনাবেৎ সাঁ। করে গিবে আর একধানা থেয়ানোকার হাল ধরে কেলল। ধরধবে সাদা গোঁফদাড়ি, বুকে সাদা গোঁফ সন্তর বছরের বুড়ো, গামছাট। মাথার বেঁথে নীর্ণ ছখানা হাতে হাল ধরে কেলল। বার্দ্ধক্যে চিম্ডে শুকনা দেহথানা বেন হঠাৎ বীরদর্শে বিগত থোবনের ভূলিকে কেঁপে উঠলো। স্বাই অথাক। আৰু চার-পাঁচ বছর এনারেৎ থেয়া নাওএর হাল ছোঁয় না। বুছ বাত্রীরা বলল একী এনারেৎ চাচা, ভূমিই বে হাল ধরলে?

আব বোলো না বাহু, সে হারামজালা গেছে খণ্ডববাড়ি হানিমপুরে। তার কথা আব বোলো না। আমার নসিব।ছেলেটা একেবারে বেরাক্টেলে নাংলা চারা। আজ তিন দিন হল গেছে। এতবড় একটা খেরাঘাটের তার তারি উপরে। হারামজালা নিমকহারাম! কথার বলে চারা বুছিনালা—বরে আগুন বাইরে বারা। আমার সেই দশা এই বুড়ো কালে। নে তাই সব উঠে পড়। ওবে গকছতো হটকট করছে, নাও ছুলছে—ওদের মুখের কাছে বড় দেনা বে তাই। জমারং, গাঁড় বর। দেখো তাই সব, লাও কাং না হর বেন। ওবে ছাগল করটাবে বাব। আবে বেশ বাতাস উঠেছে রে। পাল পাবে-পাল পাবে। পালের ছালা বাব। তমিছ

ভাই, ছালার দড়িটা ধরো না—এবানে বাঁধো। পাল থাটাই। কেমন চমৎকার হাওয়া পেয়েছে! এইজো রেলগাড়ির মন্ড দৌড়োবে লাও।

বাত্রী তমিক সেধ এনারেতের বিশেষ পরিচিত ও অনুগত।
সে পালটা ঠিক করে ফেলল। একে প্রাল হাওরা, তার পর
শাস্ত নদীর তরতরে স্রোভ। সমস্ত পালধানাকে অর্থবৃত্তাকারে
ফুলিরে বোঁবোঁ শব্দে গাঙের অক্তে ফলে কলকল শব্দ তুলে নৌকাধানা
পদ্মার বুকে ছুটে চলল। অনেক দিন পরে পাকা বছদর্শী মাঝির হাত
পড়েছে ধেরা নৌকোর।

ভানহাতে প্রকাপ্ত হালখানা ধরে বৃদ্ধ প্রনারেৎ দীয়ালো চোপে মুপে ভার বে বিরক্তি ও অসহার ভাব ছিল, তা কোথার উড়ে গেল। মনে হল বেন চবিবশ বছবের বৃবক প্রনারেৎ মাঝি আজ বছকাল পরে পল্লা গাং পাড়ি দেবার জন্ত থেরানৌকার হাল ধরেছে। বোঝার নৌকা চলছে—সাঁ সাঁ করে পল্লার বৃকে নিবিড় কলরোল ভূলে। প্রনারেৎ বেশ প্রকুল চিত্তে গল্ল জুড়ে দিল। মেজাক ভাল থাকলে প্রনারেৎ গল্ল বলে স্বাইকে ভাক্ লাগিরে দিত। আজন্ত নির্ভাবনার কিসের বেন ফুডিতে সে গল্ল জুড়ে দিল—ভার বোবনের ইতিহাস।

বুঝলে ভমিল ভাই ! ভূমিও ভো ঠাকুর বাবুর শিলেদা কাছারীতে ववकमानी करवह। कायवा बाव की मरबह ठांकूव वावूव मारशाहै। সে সব দিন कि चाक्क वि छोडे ? সে সব দিন कि चाव फिवरव ? শোনো, দে সব কাণ্ডকারধানা। খদেশীর চেউ লেগেছে সারা ভাশে। ইংরাজরাও বাবুদের ধরে ধরে জেল দিছে। তবু ভালময় হৈ-চৈ। बे व को वल वातुवा-वंद्य भाजदः नाकि-वे वृत्रि नवाद बूट्ट बूट्ट. কত গান, কত কেন্তন। বাবুণশাই আসেন অমিলারীতে—হৈ হৈ কাশু, গাঁবে গাঁবে সাড়া পড়ে গেল। को চেহারা বাবুমশারের। আ:! ছুধে-আলভায় গায়ের বরণ, সোনার বরণ দাড়ি, মাঝার বাবরি চুল, পদ্মস্থলের মত ছটো চোৰ। বাঁশীর মত গলার স্থব। বাবুমশাই গান গাইতেন—কত গান। সে সব ভূলে গেছি। না না ; হাা-হাা-মনে আছে-এ বে ভার মরা গাড়ে বান এসেছে, **জ**ন্ন মা বলে ভাস। ভন্নী।' জেড়ী নাবে বদে বাবু গাইভেন,—পেৰ**জা**বা হৈ- ৈ কৰে গাঁ ছেড়ে তাঁকে খিবে ধরতো। কত ভদৰণোক বাবু আসতো-নানান ভাশ থেকে। খদেশী বাবুবা গান গাইতো আর বাবু মলাইয়ের হাতে লাল পুজো বেঁধে দিজ,—স্বার হাতে ঐ রাঙা হুতো, ঐ আঁখি বন্ধন' না কি বে বলে, ভাই বাঁধা। সব বাড়িতে মাধাবাড়া বন। বিলেডী কাপড়, পালা মূপ রাস্তার কেলে দিতো, পুড়িয়ে দিতো। স্বাই পদ্মা গাঙে চান করতো সাঁভার থেলত। আর বাবু মশাই কথা বলতেন-কী মিঠে গলার স্থ্ব-वुक ठीखा इरव वरका-चाः-त मित्नव कथा की वनव !

ভমিত্ব বলল—আমরা ওনেছি। চোঝে দেখিনি। আছা, ভূমি ভো আগে ভাকাতি করতে ? ভূমি ভাকাতি ছেডে ঠাকুর বাবুর বরকলাজীতে বহাল হলে কেমন করে, সেই গল্প কর চাচাজী।

থনারেং একটু কেশে ছেসে আবার আবন্ধ করল ভার ভাকাতভীবনের ইতিহাস। শোন্—ভবে শোন্। আমি ভাকাতি করতাম
কনিমুখী সর্ধাবের দলে। ুসে বারে পুরেংপুরে কড়ি বসাকের বাড়ীতে
বে ভাকাতি হ'ল—ভাতে আমিও ছিণাম একজন আসামী। আরে
আমি কনিমুদ্দির দলের গোক হলে কি হয়—জানি নে, গুনিনে,—

আমাকেও লাল পাগড়ী পুলিশে ধরে নিয়ে আলো। কড ভবত হল, शार्तात्री थाना, कविष्ठेरन थाना एक एक । कवित्रकी वर्ता शक्रामा । মামলা হল কুষ্টের আদালছে। আমি ঐ ডাকাভিতে সভাই ছিলাম না—ভার পেরমাণ হয়ে গেল। আমি খালাস পেলাম। সাভবেছের রাবদের বাড়ীর ভাকাভিতে এক বছর খেল খেটেছিলাম। বেইনগরের জেলে, খানি টানিছি, খোৱা ভাঙিছি—৬: বড বট্ট। ভাট খালাস (भारवरे अरक्वारव मिनिया त्वारहे वांतू मभावरक ववनाम (मनाम क्रेंक् । তথন এদিগরের সেরা ওস্তাদ লেঠেল মেছের সর্দার বাবু মশারের সর্দার বরকলাজ হরেছে। আর কালোরার মধু মাল, একাজনি, ছেঁউজের হার্ধর সর্দার বহিম বন্ধ্য কোটপাড়ার এসমাইল, জোলাবালি, শিলিয়ার তারণ সিং, কেতু ঢালী—এরা সব অনেকে ডাকাতি ছেডে বরফলাছীডে ভরতি হরেছে। বাবুমশাই সব গাঁরের ছেলেদের নিয়ে খদেশী দল গড়লেন। তাদের স্বাইকে লাঠিখেলা আর কুন্তী শেখাতে হবে। কুঠীবাড়ীভে লাঠিখেলা হল। আমি বাবু মশাইকে সেলাম করে ক্ষেক হাত লাঠি খেললাম। বাবুমলাই ভারি খুলী হলেন। আমি ব্ৰক্ষাজী চাক্ৰীতে বছাল হলাম। সে সব কি ধিল গেছে বে বাবা !

ভার পরে শোনো, মন্ত বড় তাঁভের ইমুল হল। ঠকাঠক তাঁত বসল শিলিদহ কাছাবীর মাঠে টিনের ছাল্ডার। দিন-বাত ভাানৰ ভাানৰ চৰকা চলে। কুঠে কুঠীবাভিতেও সভাসমিতি হল-কত গান। কাণ্ড, তাঁভ বসল। কড ভৈরী হল। অমিলারীর চাদর ওস্তাদ জোলা কারিকরবা গাঁরের লোকদের আর ছাত্তোরদের তাঁতের কাল শেখাতে লাগল। আবার খোলকর্তাল নিয়ে সাঁবের বেলা লগবসংকীর্ত্তন বেরোতো গাঁরে গাঁরে। কী সব গান-আধার মনে আছে, ভলিনি—'সোনার' বাংলা, ভোষার ভালবাসি। আবার আগে চল ভাই'--- G: সে কন্ত বক্ষের গান। আর একবার की इन कात्ना ? याद यनारे व्यक्ति ठएए भारता महत्व (भारता। সেধানে মন্ত বন্ধ সভা। শিলিদহ কুঠীৰ হাট খেকে বন্ধবান্ধৰ নিৱে বাবুমলাই বোট ছাড়লেন। উ: शि: সে বিটি! মুললবারে বিটি। ম্যানেজাৰ বাবু মাথাৰ হাত দিবে ভাৰতে লাগলেন। প্লাগাঙে বাব মুখার কী বিপদ হবে। তাঁব হকুমে আমরা চরমহালের পেরছারা সব ডিফী-লাও নিয়ে রঙনা হলাম। পঞ্চামধানা লাও ভিন চাংলো পাড়ি। উ: ঐ বমাঝম বৃষ্টি মাধায় করে বাজিভপুরে দল বেঁধে বেয়ে দেখি, বাবু মশাই হাসছেন—পৌছে গেছেন ঐ চয়ত পদ্মা পাড়ি দিয়ে। আলাৰ কুদৰত। ভাবি ফুডি। বেছিয় উঠলো ৰলমল কৰে। উ: পাবনা সহয় ভোলপাড়। বাব মশাই গান করলেন, ঝাড়া ভিন ঘটা বক্তিমে দিলেন। লোকে লোকারণা। আমরা মুখ্য মাছুব, কী বা বুকি। কতো রাজা মহারাজা। আমীর ওমরাও এমেছিলেন। গাড়ি-বোড়া লোকলম্বরে পাবনা সহর গুলজার। ফিটিন পাড়িতে বাবু মশাইকে চড়িরে পাবনার উকিল বাবুৱা বন্দে মাভৱং শব্দে সহর কাঁপাবে দিলো।

খেরা নৌকো তীরবেগে চলছে। এনাছেং তখন গলে মঞ্জে গিরেছে। ভরা নৌকোর সবাই হাঁ করে তনছে। এনারেং বলতে লাগলো—

তারপরে শোনো এক মজার কাণ্ড! আমি বরকজাজী করি

ভখন ঠাতুর বাবুর বোবপুরচরে। ভৈরব পাড়ার সীমানা নিয়ে লাটোবের ছোট তরক হাজার সঙ্গে ঠাকুর জমিদাবের বিবাদ। মামলা মোকর্মনা, দেওয়ানী ফৌলদারী, অনেক হল। শেবে নাটোরের ভোট ভরকের নারেব করল এক মঞ্চার কারসাজী। বলা নেই কঙ্মা নেই, ঠাকুর বাবুর সীমানা প্রায় ভিন রসি চর জবর দখল করে ঐ মাদারতলার ছামে প্রার ছই তিন কুড়ি নাড়ার কুজেখন বানিয়ে তাদের পেরজ। বসিয়ে দিল। ভাদের গঙ্গ মোব ছাগল চরতে থাকে। পেরার একশো দেডশো বাসিক্ষা। নারেব মশাই বললেন—এনারেৎ, আর তো ওদের সলে ফৌজদারী করতে शांति ना । अवाहे (कोकनांतीकाना कक्क, चांमवा हव चांमांनी। কী উপায় করা যার বল। আমি বললাম—ভজুব চুপ করে বুকে थावा मिरत वरत थाकून। यन किष्कुत्र इत नि। टेइ-टेठ कवरण ৰাৱণ ৰকুন। আমি কোলদাবীর আসামী হয়ে কাল সাবাড় करत मि। नारत्व मनाहे निकित्म। कान टेह-टेंड नाहे, जामवा वन किछूरे जानि ना। अक्षिन क्रिक प्रभूत। थी थी क्राइ চরের আগুনের মন্ত রোদ। আমি চুপ করে ওদের পাড়ার কাছে খটি হাতে করে ঐ কাশবনে পারধানা করতে গিরেছিলাম এক মজার কাও করে। জার বার কোথায়? পেরার কাও। ঐ ছুপুৰে একেবাবে সভাকাশু। সৰ নাড়াৰ কুঁড়ে ধুধু কৰে জ্ঞা উঠল। মেয়েরা গিছিল চানে, মিনসেরা সব মাঠে, গক্স-বাছুর त्रव हत्राष्ट्र वाष्टिरवानाच्या कि अवार्य मरम ना- देह-देह কাণ্ড, গরু বাছর গাঁ গাঁ করে ছুটভে লাগলো, মেয়েছেলেরা काछ-माछ (कॅप्त हव काहिरव निम । को खबहब बार्श्वन ! स्वरव ছার ছার বব ছেড়ে আমরাই আগুন নিবিবে হিলাম। সব পালিয়ে প্রাণ বাঁচাকো। তার পরের দিন আম্বা সেধানে পেরার ত্রিশ-চল্লিৰ জন লাভল লাগিয়ে চ'লে কলাই ছিটিয়ে দিলাম। দশ-বারোজন আমাদের পক্ষের পেরজা মোডাইন করে দিলাম একছিনের মধ্যে। নাটোর রাজার নারেব ভাবোচাকা খেরে চুপ করে গেল। কিল থারে কিল চুরি করল,—ফেজিদারীতে মোটেই গেল না। ঐ মাদারতলার ছাম আমাদের দখল হরে গেল। ভারপরে চলল দেওহানী মামলা। পাবনা কোট, হাইকোট। বেমন ঠাকুর জমিদার তেমনি নাটোরের বাজা। কেউ কম লয়। বাবুমশাই চার মহাল তদত্ত করলেন, কাগলপত্র চিঠে খতেন লকসা কত দেখলেন। জেদের মামলা চলল বছরের পর বছর। ভারপর আমাদের গাঁরে লাগল কলেরা। অনেক লোক মরল, গাঁ সাফ হয়ে গেল। আমার বিবি সেই কলেরাতেই মারা বার। ছুভো চাংড়া ছাভরাল নিয়ে ভামি বড় বিপদে পড়লাম। সংট্ বলল-নিকে করে।। আমি পাপলের মত ঘ্রে বেড়াভাম। কোন ছোটলোকের মাইয়া আনবো, ছাওয়াল হুডার বছন হবে না-সংসারে অশান্তি হবে। নিকে পুরতে মন সরল না। ভাইরদ্ধি মোলা বলল-নিকে করে। । ছলিম মোলার বিধবে মাারাভারে নিকে কর, বড় ভাল মারে, ভোমার ছাওয়ালদের অবস্থ হবে না। পারলায না। দিনবাত বেথির মরা মুখ চোহের উপর ভারতো, ভার ক্থাওলো কানের মধ্যে বাজতো। ভার জন্তে পরাণ্ডা সারাদিন আহলি-বিছলি করত। তার ডাগর ডাগর চোধ হডো—আহা, ষিষ্টি কথাওলো---

প্রীর সৃতি কেপে উঠলো বৌবনের সৃত্তিকথার। তাই লক্ষা

পেরে এনারেৎ নৈ প্রসঙ্গ ছেড়ে দিল। এদিকে পালের জোরে নৌক। পদ্মাপাড়ি দিরে ঐ অর সময়ের মধ্যেই বাজিভপুরের ঘাটে এসেছে।

মাস ছবেক কেটে গেল। ২ড় ছেলে জমির এসে ঘাটের ভার নিরে বথারীভি থেরার কাজ চালাছে।

থেয়াবাটের উপরেই ঘটিমাবির দোচালা ঘর। ঘরের সামনে বাঁশের বাধারির তৈবী 'চরাট' ছক্তাপোবের মত সবার বসবার জন্তে, আতিথ্য দেবার জন্ত। সারাদিন হকা কলকে তামাক চলে। একটা চারপারার উপর বলে এনারেৎ সবার সজে কথাবার্তা বলে। ঘরধানার পিছনে একথানা ছোট চালায় রায়াঘর। এনারেৎ রায়াবায়া করে কথনো কথনো। আবার অনেক সমরই বুড়ি চিড়ে ছাড়ু থেরে দিন কাটার। আলক্ত ও অবহেলায় থাওয়া দাওয়ার অক্সবিধায় এনারেতের বার্ষক্য বেক্ট হয়েছিল।

ছেলে-অন্ত প্রাণ এনারেৎ জমিরের খণ্ডববাড়ির উপরে অস্বাভাবিক টান কোন কারণে, তা অনেক দিন আঙ্গেই বুবেছে। তাই তার নিজের বাডিখানা বা একেবাবে ক্সীছাড়া হয়ে গিয়েছিল, মেরামভ করে নিয়েছে প্রায় ছুশো টাকা খরচ করে। তবু ভাই নয়, গরু ছাগল পুৰেছে মুবসী পুৰেছে। বেটার বোকে এনে সংসারে পরম স্লেছে প্রতিষ্ঠা করে দিরেছে। লাউ কুমড়োর মাচা, মরিচ বেগুনের কেত তৈরী করে বেটার বৌ-এর সাধুখাজ্ঞাদ মেটাবার সমস্ত ব্যবস্থাই করে দিরেছে। ছোট ছেলের বিয়েও প্রার ঠিকঠাক করে ফেলেছে। ছুই ছেলেকে সংসারে স্থিতু করতে পারলেই এনায়েৎ নিজের কর্তব্য শেষ করতে পারে। নিমতশামাঠে হোসেন সর্দারের ভোডটা নিলাম ধরিদ করে সভেরে। বিখে খানজমিও ছেলেদের জন্ম করে দিয়েছে। খেরা-ঘাটের উত্তরোত্তর উন্নতির সঙ্গে সঙ্গে তার সাংসারিক উন্নতিও অব্যাহত আছে। ছেলে-অভ প্রাণ ধনাবেৎ অকরে অকরে তার পিতৃকর্তব্য পালন করে চলেছে। এ বেন তার পিত-দাহিত, কঠোর বর্ত্তব্য সম্পাদন মাত্র। এত করেও এনারেৎ থেরাখনটিতে থাকতো, রাভ কাটাতো, খাওরা-দাওরা করত। বৃহত, ছেলেদের খ্র-ছুরোর গুছিরে দিলাম। আর কি, আমি তো এখন থালাস। ওরা মাছব হোক, অথে এখাক, বিধেরাঘাট চালাক, আর কি করব আমার কাজ খতম। এখন আলা কবে তাঁর পারের তলায় ভেকে নেবেন তারই আশার আছি বাবু। আমার কাল আমি করেছি।

থেরাঘাটে ভাঙা দোচালা খবে চুপচাপ বসে থাকে এনাহেং। থেরাঘাটের ঘরই বেন ভার বাড়ি-ঘর সব। নিজের তৈরী সোমার সংসার বেথানে, সে বাড়িতে সে জরই রার, সেও বেন নিভান্ত কর্ত্তরাবাবে। বেটার বৌদের ব্যবহার কথাবার্তা চালচালনে সে আনন্দ পার না। ভারা পরের মেরে, এসেছে সোরামী-সংসার নিবে প্রথে ঘর-সংসার করতে। খণ্ডর লাভড়ী বা আর কেউ বে সংসারের ভাগিদার থাকবে, ভাদের প্রথের ভাগ বসাবে সে রকম শিক্ষা ভারা পার নাই। এনাবেং প্রেক্তর্থেশ হাদরে দারুণ আঘাত পেল। ছটি ছেলে ভার নরনের মণি, ভাদের প্রথই ভার প্রথ। বৌমারা খণ্ডরকে থেকে বল্ড, চুটো ভাভ বেড়ে দিত, ভামাক সেকে খণ্ডর অন্থবোধ করলে কল্কের একটু আঞ্চন দিত, দাওরার বসবার জন্ত চাটাই দিতো, এইমাত্র।, এর বেনী বে প্রেক্তর্মভা লাদর-বন্ধ বৃদ্ধ পূত্রগত প্রাদি খণ্ডর আলা করে, ভারা ভা বুরুভো না। বাড়িতে এলে এনারেংতর প্রলোকবাসিনী স্তার শ্বিভ

এইছতেই তাকে বেশী কঠ দিও। তার সোনার সংসার তো নর তার সবই পর হয়ে গেছে।

কিছুদিন সহু ক্ষৰাৰ প্র এনাবেং এ সব আর পারে মাধ্যে।
না। ধেরার কুঁড়ে ঘরে বেশ আরামে সে থাকে। অস্থবিধার মধ্যে
সে বালা ক'বে থাওরাটা একটা হাংগাম মনে করে। ছু-তিনথানা
গাঁরের স্নানের ঘাট এই ধেরাঘাটেরই পেছনে। একটা বাউ
বোনাজের প্রাটিরের ধার দিয়ে সেই একপেরে বাভাটা জলে
নেমছে। প্রামের পুক্রব রমণী ছেলেমেরেরা সেই ঘাটে আনাগোণা
করে। তারা বুবতে পারে বে এনাং মাঝি বাড়িতেও বার না, বালা
করেও থার না।

ঘর-সংসারওয়ালা বুড়ো মানুষটা এভাবে বাঁচে কি ক'রে? চিড়ে-মুড়ি ছাড় থেরে একটা সমর্থ বুড়ো মায়ুব বাঁচতে পারে? ছেলে জমিরের কাছে অনেকেই অমুবোগ করে, কড়া কথা শোনার —ভার গারে কি মাঞুবের চামড়া নেই ? সভিা কি সে বুদ্দিনাশা চাবা ? এমন স্বেহপ্রবণ বাপের উপর সমস্ত মারামমতা কি ভারা সুন্দরী বৌ পেরে একেবারে ভূলে গেছে ? জমির ভার জছিম এই নিবে তাদের জীদের সাথে বগড়া বাধার, ছোটলোক চাবার খবের মেরে বলে গালাগাল পাড়ে। বাপের কাছে এসে অমুরোর জানার হুই বেলা বাড়ি গিয়ে খেয়ে জাস্থার জন্তে। বাপ স্বই শোনে, ছেলেদের মনের ভাব বেশ বোঝে, কিছ বে পাবারের আখাতে বুৰের বুক ভেঙেছে, সে আখাতকে এড়িয়ে চলতে চার। হা হা করে হেঙ্গে ছেলেদের অফুবোগ উড়িয়ে দিয়ে সে বলে এই প্যাগাঙের অফ্যস্ত জল আর হাওরার প্রায় বিশ বছর মামুব হরেছি। এই আমার ভালো। এই খেরাপারের বাত্রীদের আনাগোণ। মেশামিশি সারা দিনমান আমাকে বাঁচিরে রাখে, কাজে ভূবিয়ে বাবে। আমার সেই স্থবের পবে ভোরা বাদী হ'সনে বাপজান! আমি বেশ আছি, সুৰে আছি।

বুড়ো এনায়েভের মনের মধ্যেকার গভীর ক্ষভের প্রকৃত সন্ধান পায় অনেকেই। বিশেষ করে একটি অনাধা স্ত্রীলোক। সেও জীবনে কারো স্নেহ পায় নাই, স্বামিপ্রেমের স্বাদও সে পায় নাই, কারণ সে বাল-বিধবা। কারও খরণীও সে হতে পাবে নাই. কারণ সে বকম চেটা করবার মত দরদ ভার ভাইদের नारे। छात्र छारेरवीताल बरे व्यवीता विश्वा नामीत मन्त्र থোঁক তো বাৰেই না বৰং উঠতে বসতে তাকে খোঁটা কেব পরীব ভাইদের ঘাড়ে বলে সে ভাত গেলে, আর পাড়ার পাড়ার ছোরে। বাপ ছলিম মোলা শেব বয়দে ভিকা করে খেতো-ভার क्षेत्र क्ष क्ष मा (भार अक्षित क्षेत्र स्व निकास हम। নছিবণ ছ'মাসও স্বামীর হব কবে নাই। যোর বর্বার পল্লার মাছ ধরতে গিয়ে ভার স্বামী কড়ের মধ্যে মারা বার। বাপ মা ভারের মেহ স্বামীর আদর সোভাগ বিধাত। ভার কপালে লেখেন নাই। সারা পাড়ার হতভাগিনী টো-টো করে বোরে—বেধানে পার সেধানেই ছ'ৰুঠো থেবে বেঁচে আছে। কিছ ক'দিন কে কা'কে খেতে দেৱ। ভাকে পাড়ার চাহিদামত গভর খাষ্টিরে পেটের ভাত জোগাত করতে **इत्र । छेमानीन अनीरत्रश्यक प्र'र्यमा (मर्थ (ब्यदाचार्छ ।**

বুড়ো এনায়েৎ খেয়াখনে বসে বসে ঠুশ করে দেখে নছিরণ কারো বাড়ির জল টানছে কাঁথে কলসী নিয়ে, কারো খারে কাণড় কেচে

দিছে সারা ছপুরের রৌক মাধার করে। একদিন নট্রণ এনারেৎকে বাটে একা পেরে বলন—মাঝি গো, ভূমি ক্রিক্স উপোস করে ক'দিন বাঁচবে? আমি ভোমার ছবেলার বেঁধে থাওরারো। এ বারার চালার বাঁধবো—বুঝলে? একটা বৃক্ষাটা কারা ভার গলার করে।

শ্বনারেৎ সবই ব্ৰেছে, কারণ স্বচন্দ হতভাগিনীর এই ছদ্পা সে দিনের পর দিন দেখে স্থাসছে—ছটো ভাতের ছন্ত ভার কী হানভা। মুখ সুটে কিছু বলতেও পারছে না—সইতেও পারছে না। সে বলগ—ৰেশ, ছুই ছবেলা স্থামার বেঁধে খাওয়াস। স্থামি সব বন্দোবন্ধ করে রাখবো।

সেই থেকে এনাবেং ত্বেলা বারাভাত থাচ্ছে, নছিরণের সেবাবন্ধ পাছে। হাটের দিনে একথানা সাড়ি ছার সামছা কিনে বলল—নছিরণ, এই নে, সাড়িখানা পরিস। নছিরণ হাসির্থে সাড়িখানা হাতে নিলো—চোখ দিরে করেক কোঁটা জল পড়ল। তা কিছ এনারেতের দৃষ্টি এড়ার নাই। গভীর সমবেদনার তার মনের মধ্যেকার মুমন্থ ভালবাসা জেগে উঠল।

জ্যৈর মাস। বর্ষার আগমনী ক্ষম হরেছে ত্বকুলগ্লাবী উন্নাদিনী নববেষ্ট্রনা পদ্মার অজে। পদ্মার বুকে অভান্নী চরগুলো পদ্মার বিলাল বুকে আশ্রম নিয়েছে। কালবৈশাবীর উদ্ধায় নুজ্যে বেষ্ট্রন-চঞ্চলা পদ্মাও নৃত্য ক্ষম করেছে।

শিলেদহ সদৰ কাছাৰী থেকে ব্যুক্তপান্ধ মোহন সিং প্ৰোহানা এনে দেখালো খেরামাবি এনারেংকে। আগামী সানবাতা মেলার বে বিপুল ৰাত্ৰীসমাগম হবে গোপীনাবের স্নানৰাত্রার উৎসব দেখতে, তাদের পারাপারের উপথুক্ত স্থবন্দোবন্ত করবার জন্ত ম্যানেজারবারুর হুকুম সে শোনালো। এবছবে খেডা পারাপারের নতুন ব্যবস্থা করতে হবে। গভ বৎসর ঐ প্রকাশু মেলার প্রদিন সাদিপুর (वंदाचारहेद ওপাद हरदद मध्य अक्डी नांदीवर्ष हरद्विण, ज्यान কটে সেই অপৰাধী গুণ্ডাকে পুলিল পকাড়াও কৰে। মামলা-মোকর্দমা হরে সেই গুণার প্রীবর বাস শান্তি হর। মেলার করেক দিন পদ্মার চরের নিকটেই গভীর বাত্রে নির্জনতার স্মরোগে গুলাবা এই বৰুষ অভ্যাচাৰ ক্ৰায় ঠাকুবৰাবদের ভূল্মি ৰটেছে. মেলার কতি হয়েছে, জনসাধারণের মনে ভরের সঞ্চার হরেছে। তাই ম্যানেজাববাবুর কড়া ছকুম, স্নানবাত্রার মেলার তিন দিন তিন বাত্রি পারাপারের অতিবিক্ত বিশেষ ব্যবস্থা রাখতে হবে, আর সূর্ব্য অস্ত বাবার পর পরই এপার ওপার তুপারের খেয়া নৌকা বাত্ৰীবছন করতে পারবে না। পুলিশ আর প্রামের ম্বেক্সানেবকেরা এই সব তারির ভাগাদা করবে।

সানবাত্তার মেলা উপলক্ষে প্রতি বংসরই থেরা পারাপারের অতিবিক্ত বন্দোবস্ত করতে হয়। এতে বেমন থবচ হয় আরও থুব বেলী হয়ে থাকে। এবারেও সেই সমস্ত মামুলী ব্যবস্থা করবার জন্ত শমির অছিম ছাই ভাই উঠে পড়ে লাগলো। এদিকে ঢোলসহরহ দিয়ে কাছারী থেকে প্রচার করে দেওরা হয়েছে—হেলার ভিন্ন দিন ভিন রাভ প্র্যান্তের পর সমস্ত থেরাবাট বছ। কোন বাত্তী বেন পারাপারের চেষ্টা না করে এবং থেরার ঘাটমান্তি বেন সভর্ক হয়।

बनाव्यक्त विश्वापार मनाव ध्येष विन व्यक्त वाजी-वाजिनीव

অসন্তব ভিড়। পুক্রব-ৰাত্রীর বিশুপ মেরেবাত্রী। মেরেকের বিবাট হুসুম্বানির মধ্যে থেরার নাও ছাড়ে। আবার নতুন বাত্রী-পরিপূর্ব নৌকা ঘাটে ভিড়লেও অমূরপ কল্পনি। করেকজন বাত্রী থেরাঘাটে বসেই বান্না-খাওরা সেবে নের। অপরপ চেহারার নানা লেশের বাত্রী-থাত্রিনীর বৈচিত্র্যে থেরাঘাটের এক্ষেরে চেহারাটা বদলে প্রছে।

বুধবার মেশার শেষ দিন। তিন দিন তিন বাত্তি অবিবত পরিশ্রমে থেরার মারিরা স্বাই ক্লান্ত। স্বায় এনায়েংকেও করেক বার হাল ধরে বাত্তী-পারাপার করতে হরেছে। সারা দিন রাত খেরাঘাট লোকসমাগ্রমে স্বগ্রম। বৈক্ষব-বৈক্ষবীদের কীর্ত্তন আর বাউলাক্ষবিদর গানে বুজো এনায়েতের মনটা খুনীতে ভরপুর।

সদ্ধা উত্তীর্ণ হিষেছে। পূর্ণিমার জ্যোৎস্নার রূপালী চরখান।
পদ্মার বিশাল বৃক্থানা বক্ষক করছে। পূর্ব্য অন্ত বেতে বৈতেই
ধ্বো পারাপার বন্ধ হরে গেছে, গোকের আনাগোণা নাই। নীরব
নির্ধন পদ্মাবক্ষ, ধেরাঘাট পদ্মার চর, তীরভূমির প্রামগুলো। ধেরাঘাটে
কেউ নাই—একা এনারেৎ চরের উপর বসে তামাক খাছে।
অনেক দিন থেকেই সে অভিমাত্রায় বেকী গভীর। নছিরণ, রান্নার
চালার রান্না করছে। এনারেৎ আন্ধাবেল খুলি। নছিরণকে বেশ
ধোসমেলাক্ষে ভাকল—নছির, মেলার গিরেছিলি? মেলা দেখবি
না? নছিরণ কোন জ্বাব দিল না। খুব চাপা যেরে নছিরণ।
কে লানে এনারেৎ ভার জন্তে মেলা ধেকে রসগোলা পানভুরা এনেছে,
একখানা তাঁতের সাড়ি এনেছে। সে লানে, এনারেৎ ভাকে খুব
ভালবাসে। এনারেতের মনটা এই কারণেই খুকী আত্মভুগ্ও। নছিরণ
আন্ধ্ আর নির্মাশ্রর নর।

এমন সমর হঠাৎ একজন স্ত্রীলোক একা এসে হাজির পেরাঘাটে। ভার সঙ্গে না আছে কোন মেরে বা পুক্র-সন্ধী। রাভ কম হর নাই। এমন সমরে একাকিনী স্ত্রীলোকটি খেরাঘাটে হাজির হল কেন? এনারেৎ ভারতে লাগলো, যেয়েটির সাহদ তো বড় কম নর। থেরাঘাটে এই চরে সে কেন মরতে এলো?

মেরেটি এনারেতের কাছে এসেই এনারেতের পা জড়িরে ধরত। কারার ভাঙা গলার বলতা—মাঝি, তুমি আমার বাপ। আমার বাঁচাও তুমি। আমার জাত বার ধম বার। আমি তোমার মেরে। এনারেৎ আকাজ করত, কোন ওঙা বদমারেস এর পেছু নিরেছে। সে বলতা—বাাণার কি গো? কি হরেছে বল তো?

সে বলল—এই চরের একটা লোক আমার ভূলিরে এনেছে।
আমার গাঁরের সাধীরা গোপীনাথের মন্দিরের ভিতরে ছিল,
আমি বাইরে মেলার মধ্যে কাচের চুড়ি কিনছিলাম। সে
লোকটা এসে বলল, ভোমার বাড়ি তো সাতবেড়ে? ভোমার
সন্ধীরা ভোমার খুঁজে না পেরে বাড়ী রওনা হরে গিরেছে। আমার
বলে গেছে ভোমার থেরা পার করে কাজীপাড়ার নিরে বেভে।
কাজী-পাড়ার ভারা ভোমার অপেকা করবে। আমি বিশাস করতে
পারলাম না। বললাম আমি হেখার খাকবে, ভারা ঠাকুর
লেখে আমার নিরে যাবে, কথা আছে। লোকটা ভা ভনল না।
ভার সঙ্গে আরো ভিনজন মুসলমান ছিল। শেবে ভারা ভর
লেখালো, নানারকম খারাপ কথা বলল, সে সব কথা বলভে

লক্ষা করে। তথন মনে করলাম, ওদের কথামত থেরাঘাট অবধি বাই। দেখানে গেলে হ্রতো বাঁচতে পারবো।

এনারেং লাগুন হরে উঠল, বলল, ভূষি এসো বাছা, লামার ঐ খনের মধ্যে গিছে বসে থাকো। ভোষার কোন ভর নেই। বা করবার আমি করছি।

করেক মিনিটের মধ্যেই চার জন বাধামার্ক বৃবক এসেই বলল, মাঝি, আমরা পারে বাবো। আমাদের বাড়ির একটা মেরে এখানে এসেছে। তার মারের বড় অপুখ। তাকে নিরে এই রাজিরেই বাড়ি বেতে হবে। সে মেরেটা ভোষার বরে আছে বোধ হয়, তাকে আসতে বলো। নাও ছাড়ো, না হয় বল, আমরাই ছোট নাওখানা নিয়ে পার হই।

এনায়েৎ বশল এখন কেউ পারাপার হবে না। এখন বাও, কাল ভোরে এলো, পার করে দেব। সন্ধ্যা খেকে পারাপার বন্ধ, ভা জানো না ?

ভারা ক'লনেই অনেক কড়া কড়া কথা গুলালো, তর্ক করল। শেবটার ওরা ছোট নৌকাধানা খুলে নিরে পার হবে জানিরে বলল, মেয়েট কোথার? তাকে ছেড়ে গাও। নইলে ডোমার মাঝিসিরি শিখিরে দেবো। চালাকী কেরো না।

এনাবেৎ ব্ৰলো এবা দলে ভারী। থেরাছাটে সে সন্মিনীন একা। ভার পক্ষে থিতীর পুরুষ নেই। ভাইতে এরা সাহস পেরে পেছে। সে অমুরোধ করল—এখন থেরা ছাড়া বেআইনী। ভারা লোকার হাত নিলে ভাদের বিপদ হবে। কিছু ভারা কিছুতেই ভনবে না। একজন বলল—মার শালাকে। আর ছজন খেরার কুঁড়ের দিকে অগ্রসর হল।

গুনারেতের মাধা গংম হবে উঠলো; বলল—শোনো, আমি গুনারেৎ লেঠেল, গুনারেৎ ভাকাত, আমার গারে হাত দিলে তোমানের ভাল হবে না। আমার খরের মধ্যে কেউ গেলে মারা পড়বে। সাবধান। তোমানের চিনি। বুড়ো মানুষের কথাটা লোনো।

লোক ক্ষটির হাজে লাঠি ছিল। ভাষা গালাগাল দিয়ে উঠলো। এনাবেৎ এক লাক দিয়ে কুঁড়ে থেকে ভার বড় আড়লাঠী খানা নিয়ে এগিয়ে এলো, আয় বদমাশ্যা আয় আমার সামনে। নছিবণকে বলল নছীর, বেষ্টোকে নিয়ে সরে পড়। শীগগিব পালা।

বাংলো মারামারি। এনায়েতের লাঠির নায়ে একজন ধরাশায়ী হল, তথন আর তিন জন তাকে একসজে আক্রমণ করল। নছিবণ হঠাৎ মাছের বঁটি নিয়ে থেয়ে এলো গাছকোমর বেঁব। তার তথন চার্ভা-সূতি। সে বাকে পাছে তাকেই বঁটির কোপ দিছে আর প্রাণপণে চীৎকার করছে ভোমরা এগোও, এগোও, ভাকাত পড়েছে ভাকাত পড়েছে।

সেই চীৎকারে বছ লোক ছুটে এল। তিন জন জোরান মর্ণর সঙ্গে একা লাঠি চালিরে বৃদ্ধ এনারেৎ ক্লাক্ত হরে পড়েছে কিছ ওওা ক'জনও বেশ জব্ম হয়েছে। বছ লোক এবং সঙ্গে সঙ্গে মেলার পুলিশ ছুটে এল। ওওাদের এেকভার করতে বিশেষ অস্মবিধা হল না। চারিদিকে হৈ-ঠৈ পড়ে গেল। ঐ রাজেও কাছাকাছি ক'বানা গাঁরের লোক সেবানে জমা হল। জমিব জাব জছিম এসে পড়েছে। বৃদ্ধ এনাবেতকে ধরাধরি করে চডাটার উপর শুইরে
দেওরা হরেছে। এনারেতের জ্ঞান নাই, বুকের তান পাশে ভরানক
জখন, দরদর্থাবে বক্ত পড়ছে। এ ভো লাঠির ঘা নয়। নছিবণ
বলল—শুণ্ডাদের হাতে ধারালো অন্তও ছিল। মনে হল তারা
আত্মরকার জন্ত ছোরা ব্যবহার করেছে। এনারেতের এ অবস্থা
দেখে স্বাই ভ্রানক উদ্বিগ্ন হরে উঠলো। নছিবণ জল চেলে
এনারেতের জ্ঞান স্থার করতে না পেরে তার বুকের উপর কেঁদে
আছড়ে পড়ল—গুহে জালা, এ কি করলে ? মাঝিকে বাঁচাও
আলা! তার বুক্কাটা অবিবাম কালার স্বাই বেনী বিব্রত হরে
পড়লো, সরকারী ভাজার ভাকা হল।

ভাজার সব দেখে-শুনে বললেন, গুণারা ছোরা মেরেছে বুকের বাঁ দিকে, বজ বছ করা প্রার ছঃসাব্য! স্বাই হতাশার ভেঙে পড়ল। কুঠে থেকে বড় ডাজার আনবার সময় পাওরা বাবে কি না সন্দেহ। জমির ও জছিমের মুখ শুকিরে পেল, বাণজান বাণজান চীৎকারে ভালের হুঁভারের কাল্লা, উপস্থিত জনভার চোথেও জল। স্বার কাল্লা ছাপিরে উঠল নছিবপের কালার বোল—মাঝি লো মাঝি—আঘার ছেড়ে বেও না মাঝি—হা আলা, আমার মাঝিকে বাঁচাও। আমার বজ্জ নাও।

সরকারী ভাজার বন্ধ বন্ধ করবার অন্ত কোন ফ্রেটি করছেন না।
নছিরণ পাগলিনীর মত একবার অন্ত চালছে—এদিকে ওদিকে
ছুটে ভাজারের ওব্ধ এগিরে দিছে আব ভাকছে বৃক্কাটা কারার
ভেক্তে পড়ে—মাঝি গো মাঝি—একবার ভাকাও মাঝি। ঐ বে
ভোমার অমির অছিম দাঁড়িয়ে কাঁদছে। একবার চোধ মেলে চাও।
আমি এই বে ভাকছি একবার কথা কও মাঝি, ওঠো কথা কও।

হঠাৎ এনারেতের বেন জান হল। চারিদিকে চেরে বছুণার কাতর শব্দ করে ডাকলো—নছিব, আর, আমার কাছে আর। উ: আমার পরাণ বে বেরিয়ে বার নছিব, নছিবণ আর আয় আমার কাছে আর ভোকে গাণ্ডের জনে ভাগারে দিয়ে গেলাম বে—

নছিবণ তথন উমাদিনী। এনাবেতের বুকে গুটিরে পড়ে কাঁদছে মাঝি গো, আমার নিরে বাও, আমিও বাবো ভোমার সংস্থাবি গো—উমাদিনী নছিবংশর বুককাটা কল্পন, সমবেত অনভার অঞ্চাবা—সব শেষ করে দিরে এনারেং ছ'ভিনবার মাখাটা বাঁকানি দিয়ে শেষ নিংখাস কেললো। খেরাঘাট কল্পনরোলে মুখবিত, অভাগিনী উমাদিনী নছিবণ বালির মধ্যে সভাছে আর বুক্ফাটা চীংকার করছে মাঝি গো—মাঝি গো! পদ্মার কলরোল ছাপিরে উঠছে ভার রোদনধ্বনি।

স্থানাটোরিয়ম শক্তি মুখোপাধ্যায়

এখানে বেশ আছি। সবৃদ্ধ পাহাড়ের গায়
স্থানিপুণ শিলীর হাজে-আঁকো ছবির মতন
প্রকৃতির বৃক থেকে জেগে-ওঠা নতুন জীবনে
আলোর সন্ধান। তানাটোরিরম।

এখানে বেল আছি। স্যাৎস্যোতে বস্তির গলি-বুঁজি ঘরে আর নর খুক খুক কালি। মুখ দিরে রক্ত নেমে বুক ভেডে অবিবক্ত আর নর ভিলে ডিলে বিদগ্ধ জীবন।

এথানে বেশ আছি। তপতী ভূমি আজও
নির্ভরে নিশ্চিত্ত হয়ে বাভায়ন থুলে
বনে আছো এলোচুলে। আমার বারতাথানি
তোমার স্বৃত্তির খারে স্বপ্ন নিয়ে নামে।

এধানে বেশ আছি। প্রশক্ত বরের কোশে আমার বেডের ওপর কোন এক হতাশ প্রেমিক রোমাঞ্চ কাহিনী নিরে অভিশপ্ত জীবন মারধানে বিশীর্ণ দেহ ভার ডক্রালু চোধ মেলে জাগে।

এখানে বেশ আছি। সকলেই বলে, বাজবোগ সেবে বাবে স্মৃত্ব হবো আগের মন্তন জীবনকে কিবে পাবো আগামী কালের কোন দিনে।

এবানে বেশ আছি। এ গুৰু আখাস বাণী মন আমার আশাহত, ভর হর প্রতি পদক্ষেপে প্রেমের ও জীবনের মৃত্যু এসে এই বুঝি শিহবে গাড়াল।

পৃথিবীর আলো বদি করে করে চোথ দিয়ে অন্ধকার নামে আমার হতাশ প্রেম মৃত্যুর মুখোমুখি এসে প্রিয়ার অঞ্চলতে হবে ভার জীবন-সমাধি।

ইণ্টারমিডিয়েটে

ডক্টর শ্রীস্থধাকর চটোপাধ্যায়

িকলিকাতা বিশ্ববিভালর ওড়িরা ইন্টারমিড়িরেট প্রীক্ষার একটি কবিতা পাঠ্য করেছেন। তার বিষয়বস্ত আর বাই হোক, সুকুমারমতি वालक-वालिकांत्र निकृष्ठे शिव्यवभनावांशा नव । अहे व्यवस्था मधा मित्र कर्द्धभक्त्व अवः स्माराधावत्व पृष्टि साकर्षण कवा हास्त् । - म]

কিছুদিন আগে ভাব পড়েছিল ইণ্টাবমিডিয়েট ওড়িয়াব একটি ছাত্রকে কিছুটা সাহাব্য করার। বাংলা-হিন্দীর মতই ওড়িয়াতেও টেক্সটবৃক বা পাঠ্যপুস্তকের চাপ বেনী, নম্বর কম। চলিশ নম্বর বইরে, বাট নম্বর বাইরে। কলেজ-এ অধ্যাপনা করতে করতে বিরক্ত হরেছি এ কথা ভেবে বে, দুবছুর ধরে ছাত্রদের বে ইণ্টার বাংলার টেক্সট পভান হয় ভাতে মাত্র চল্লিশ নমবের বিশদ আলোচনা করা হর। আর বাকী বাট নখর বে-কলেকে ভাল টিউটোরিয়ালের ব্যবস্থা আছে সেধানে কোন বক্ষে বুড়ী-ছোঁয়ার মত শেব করা। অর্থাৎ অধ্যাপকরা 'টীচ্ এও গো' না অনুসরণ ক'বে 'টাচ এও গো' পুত্রতি অনুসরণ করেন। পরীক্ষা সেই ধরণের হয়। ওড়িরা পড়াতে গিরেও সেই ব্যাপার লক্ষ্য করলাম। ছটি গল্পগ্রন্থ। ছটি কাৰ্যগ্ৰন্থৰ দীৰ্ঘ কবিতা। ৱাধানাধ গ্ৰন্থাবদী পূৰ্বেই নাডাচাঙা করেছি। ওড়িরা সাহিত্যের উপর বাংলার প্রভাব নিম্নে 'বস্তুনতী'তে 'বঙ্গনাহিত্য ও বহির্বন' নামে আলোচনাও করেছি ১১৪৬ সালে। প্রাথম ভেবেছিলাম ঐ বিষয়ে থীনিল কেব। পরে হিন্দী-সাহিত্যের উপর বাংলার প্রভাব নিমে খীসিদ দিই। পুরোনো বই হাতে আসাতে অধীর আগ্রহের সাথে পুনর্মিগনের আনন্দ অমুভব কর্তাম। 'রাধানাধ প্রস্থাবলী'র সব কবিতা পূর্বে পড়া হয়নি। তের বছর ৰাগে গ্ৰন্থাৰণীৰ ভূমিকা এবং 'মহাবাত্ত।' কবিতা নিৱে বালোচনা করেছিলাম। তের বছর বাদে 'গ্রহাবলী'র অপর একটি কবিভা পড়াতে বদার আগে পড়তে বদলাম। ইন্টারমিভিরেট ওড়িয়ার পাঠা কবিতা 'পাৰ্ব্ব টা'। ওড়িবা সাহিত্যের একটি বিরাট স্তম্ভ ভূদেব-নदोन्निय সমসাময়िक ∙ ∙ভূদেব-নदोन्निय বাধানাথ বার। শ্রীভিগ্ত। বাংলা সাহিত্যে ভূদেব-নবীনের বে স্থান, ওড়িয়া সাহিত্যে রাধানাথের স্থান ভার চেত্রে কম নর। "কবিবর ৺রাধানাথ আধুনিক উৎক্সর সাহিত্যিক সম্প্রদার এবং গুণগ্রাহী বিষয়গুলী-ৰুৰ্জ্ব সাহিত্যসমাটৰ সুধৰ্ণ সিংহাসনৰে অভিবিক্ত হোই অছতি। বস্তুত: ৺বাধানাথ আধুনিক উৎক্স সাহিত্য মন্দিবের সর্বপ্রধান निर्वाणा।" "क्विय बार्गानाथ" मण्डारे अक्कन मक्तिनानी कवि। বাংলা সাহিত্যে মধুস্কনের অমুগামী হিসেবে হেম-নবীন বে প্রতিঠা পেরেছিলেন, ওড়িরা সাহিত্যে মধুস্দনের অন্থপামী অভিতাক্ষরের কৰি হিসাবে বাধানাথের স্থান ভার চাইতে উঁচুতে বলেই আমার মনে হয়। অজ্ঞ হেমচক্র সহকে একথা বলা বোধ হয় অসকত হবে না। মধুস্থনের কবি-প্রতিভা হেমচক্রের ছিল না, তাই বার্থ অমুকৃতি হিসেবে হেমচজের কবিতার এতিহাসিক মূল্য আছে, हिब्द्धन मूना तहे। वाशामां कवि। छात नवस् अक्था वना

বাব না। ভাৰতের বে কটি সাহিত্য পড়ার সৌভাগ্য আমার হয়েছে ভাতে বিগঠ শতাব্দীর ভারতীয় কাব্যসাহিত্যে রাধানাথের বে বিশিষ্ট স্থান আছে সে-বিবারে সন্দেছের কোনও কারণ নেই। এই বাধানাথের 'পার্স্কতী' কবিতা ইন্টারমিডিরেট-এ পাঠা। পরম আগ্রহের সঙ্গে কবিভাটি পড়তে প্রক ক'রে দিলাম।

কবিতা পড়তে পড়তে মাধাটা বেন কেমন এক বৰ্ষম হয়ে গেল। ব্যাপারটা ঠিক ব্রাছি ভাগ কেমন বেন গোলমেলে ঠেকছে কবিতাটা ৷ নিঃসম্পেহে কবিতাটি ভাল, কিছ বিষয়বস্তু ইণ্টাবু-মিভিরেটের বারা প্রেরো বোলর পা দিরেছে ভাদের পক্ষে, একেবারেই অপাঠ্য বলে মনে হচ্ছে। ইডিপাসের ট্যাভেডির ভীবণতা এক অতলাম্ভ হাহাকার বরুত্ব পাঠকের বোধগমা---এবং গ্রীক সাহিত্যপিপাত্মর পাঠা। বালক-বালিকাদের অপাঠা বিষয়বন্ধ---মাতা পুত্রের বিষম পরিণতি। তবু সেধানে নিয়তির বিজয়নায় বিভবিত মনুষ্যপ্রেমের অভিনপ্ত আর্জনাদ। পেখানে ব্যাপার আরও পভীর • • এখানে পিতা-পুত্রীর মধ্যে ব্যাপার, তাও উভরের মধ্যে পরিচরের অজ্ঞভা নেই। এ ধরণের কাহিনী সাহিত্যে অপ্রচলিভ নর শিতার 🕶 উন্মন্ত কলার কাহিনী ওজিদের "মেটামরফলেস"-এ ব্রেছে (Cinyras and Myrrha)। ক্লাব জন্ম উন্মন্ত পিতা শিবঠাকুর বাংলা পদ্মপুরাণে দেখা দিয়েছেন। ঋগুবেদে এবস্থি কাহিনী আছে। Cencla ঘটনাও অজানা ময়। তবে 'এনসাই ক্লোপিডিয়া বিট্যানিকা' বলে বে পিতা Francesco Cenci বে কল্প Beatrice Cenci সংক্র এ ধরণের অল্পার কিছু করেছিলেন তা প্ৰমাণিত নৰ ("but there is no evidence that he tried to commit incest with her, as has been alleged")। এবস্বিধ ঘটনা সাহিত্যে আলোচিত হ'লেও ইন্টারমিডিয়েটের ছাত্রছাত্রীদের পক্ষে আলোচিভব্য একেবারেই নয়। তাই ক্সিকাতা বিশ্ববিভালরের ওডিয়া-ইন্টার্মিডিরেট-এ বারা বিবয়বস্ত নির্বাচন করেছেন তাঁর৷ হয় কবিতাটি (পার্বতী) না পড়ে নির্বাচিত ক'বেছেন, বা না ভেবে নির্বাচিত করেছেন। আমি কলিকাতা বিশ্ববিজ্ঞালয়ের ছাত্র। ভালও বাসি কলিকাতা বিশ্বিকালয়কে। তবুও একখা বলব বে না-পড়ে প্রশ্ন করার ঘটনা বিবল নৱ। আমাৰ পাঠাজীবনেই ঘটেছে। ১১৪৫-এ এম-এ'জে শামার প্রাদেশিক ভাষা 'ওড়িয়া' ছিল। একটি ওড়িয়া কাব্যগ্রন্থে 'নববৰ্ষা ভাবনা' কবিতা পাঠ্য ছিল। কবিতাটি নুতন ব্ৰ্যাকাল সম্বনীয়। বিনি প্রশ্ন করেছিলেন ভিনি বইটি পঞ্চেন নি। ফ্রন্তবেগে 'নক্ষকিলোর বল' এর 'নির্মারিণী' কাব্যগ্রন্থ উপ্টোক্তে গিয়ে 'নববর্ষ ভাবনা' পড়েছিলেন ; এবং ইংবাজীতে প্রশ্ন ক'রেছিলেন বে "advent of new year" সম্বন্ধে কবি কি লিখেছেন বল ? প্ৰশ্ন করেছিলেন কে জানি না, তবে শুনেছি খুব সম্ভব পণ্ডিত গোদাববীশ মিল্র। পরীকা দেবার পর আমরা দল বেঁথে কনটোলারের কাছে অভিবোগ ভানিবেছিলাম এবং তদন্তের পর এ প্রশ্নটির জন্ত স্বাইকে কত নশ্বর দেবার ব্যবস্থা হয়েছিল শুনেছি। বলা বাচলা, 🛦 'ডিস গ্রেস' নবর না পেলেও হরত ওড়িয়াতে আমি প্রথম হ'তাম।

এথানেও অমুরূপ ব্যাপার ঘটেছে বলে আমার বিশাস, এবং विवय निर्वाठन याताहे करत पोकून चामात धहे धावरकत मधा मिरत বিশ্বিভালয়ের কর্তৃণক বিশেষ করে ভাইস চ্যালেলার এব্স্তু নিৰ্যলকুমাৰ সিদ্ধান্ত, ভাৰতীৰ সাহিত্য বিবৰক বাৰতত্ব লাহিড়ী ১ 📈 অবাণক আমাৰ প্ৰবেষ গুলু ভট্টৰ ক্ৰীখনিক্ষণ লাভান্ত এবং ভূলনাগুলক ভাষাভত্ত্বৰ বহৰা প্ৰাক্ষেত্ৰ ভট্টৰ ক্ৰীপ্ৰকৃষাৰ সেন মঙাশ্বেৰ দৃষ্টি আকৰ্ষণ কৰছি। আৰ বাইবে বীৰা আছেন উলেন মধ্যে আমাৰ গুলু এবং দিলী বিষয়ে গবেইণাপ্ৰৱেশ্ব নিৰ্দেশক ভট্টৰ ক্ৰীপ্ৰনীতিকৃমাৰ চটোপাধাৰে, পূভনীৰ অধাণক প্ৰীপ্ৰিবতঞ্জন সেন এবং প্ৰস্কেষ্ট সাভিত্যিক জ্ৰীপ্ৰপ্লগানম্ভৱ বাদ্ৰ মঙাশৱকে আমাৰ প্ৰবিশ্বেৰ খেল্কিকভা বিষয়ে এবং ইণ্টাৰ ছাত্ৰছাত্ৰীদেৰ পক্ষেপাঠা হিসাবে নিৰ্কাণ্ডিত না কৰাৰ জন্ম আমি ৰে অভিমন্ত জানাছিছ ভা কতথানি গ্ৰহণবোগা ভা বিচাৰ কৰতে বলি।

অলীলতা বিষয়গতও হতে পাবে, বর্ণনাগতও হতে পাবে।
বিতীয় শ্রেণীৰ উদাহৰণ শুক্ল বজুর্বেদে, জেমস অরেসের ইউলিসিস গ্রেছে। প্রথম শ্রেণীৰ অলীলতা 'পার্বকী'তে বিশেষ করে বধন আমরা চিন্তা কবি যে নির্বোচকমগুলী পানের বোলোর কৃচি বাঁচা ছেলে-মেরেদের জন্ম বিষয়বন্তুটি অভুমোলর করেছেন।

কবিবৰ বাধানাথ বায় 'পার্কান্তী'র ছটি সর্গ কবিতায় লিথে বেতে পেবেছেন, বাকী অংশের প্লট গছে লেখা বরেছে ভা তিনি কবিতার স্কপায়িত করার পূর্কে দেহত্যাগ করেছেন। 'পার্কান্তী'র ঘটনা এইরপ—

সম্ভ দৈংকলে দিয়িজয় সেবে বীরসিংচ গলেশর রওপুর পূর্গ অববোৰ কবাস জন্ম তৎপর। পঞ্চবর্ববাশী কত মুদ্ধ হরে গেছে, কত মহাপ্রাণী হক চরেছে কিছু বদ্ধপুরপতির মন্তক অবনত হরনি এখনও। তাট রাজা গলেশর সমস্ত বিকিত রাজা ও রাজনৈয়সহ আপন সৈরগতিনীর অবিপতি হ'ব সেধানে তুর্গ অববোৰ করে বরেছেন দীর্ঘ দিন। সেই সেনাবাহিনীর মধ্যে রাজা নিজ কভাকে নিরে গেছেন। কভা কৌললা "একমাত্র পূপ্প অন্নয়র সেহি লিবির-কটকবনে" কাঁটার মধ্যে স্কর ফুলের মত ফুটে ররেছেন। এ কভা কিপে গলে বালা অতুলা জগতে"। কিছু এই কভা—

শ্বিপ্ত প্রেমে পড়ি সমস্থা কৌশল্যা হেলা সে সেনা-নিবেদে। মলে ভৈদবিন্দু পরা এ কলঙ্ক ব্যাণি সলা দেশে দেশে।

চতুদিকে ছড়িরে পড়েছে রাজকভার কলঃ। কুমারী রাজকভা সমস্থা'। রাজা বরেছেন সৈত ও কভাকে নিরে অবরোধ ক্ষেত্রে, সেধানে এ ছবঁটনা-কি করে ঘটল! রাণী ররেছেন দেশে, তাঁর অন্তর্ব এই সংবাদে "পূটপাক" প্রার নিরন্তর অলছিল। মনে তাঁর আন্তি নেই। কেবল কৌলল্যার ছর্ডাপ্যের চিন্তা। হঠাৎ রাণীর কর্পকুহরে কি অপরীরী বাণী প্রবিষ্ট হল—"কৌলল্যার কথা কহিব লে আসি"। সিকে উঠলেন রাণী। কেউ কোধাও নেই।

এদিকে প্রানাদ-লিখনে বসে বয়েছে পর্বানেকণ-নিরত কঞ্কী।
বৈ পাহাড়ের পর পাহাড় চলে গেছে কত দুরে রত্বপুর অববি। প্রতি
বিহাড়ের মাখার আগুল আলাবার ব্যবস্থা বরেছে। রত্বপুর বিজয়ের
বৈশি অপ্নির্থে পাহাড়ের পর পাহাড় অভিক্রম করে ক্রভবেপে ছুটে
বিসনে প্রেশনের দেশে ভারই স্থাবস্থা বরেছে। প্রতি বাত্রে অভকাবের
বিশ্ ভূবে বাওরা লৈলপ্রেলীর দিকে তাকিক্ষে থাকে কঞ্কী। আগুল
কি ? বিজয় সংবাদ কি আগুলের অক্ষরে লৈললিখনে বস্তো

উঠল ? প্রতীকার দাঁসের পর দাস বার। ইঠাৎ একটিন থালে উঠল পাহাড়ের আগুর ০০ পাহাড় হতে সে পাহাড়ে অর্ন্নিগ্রেন্ড। আনন্দ সংবাদ! ককুরী রাণীর কাছে ছুটল সেই আনন্দ সংবাদ। আক্রারের মধ্যে কেবল বিশ্বরে অগ্নি সংকেউই লক্ষ্য করেনি ককুরী, আরও কিছু লক্ষ্য করেছে। অপরীর বালকভা মৃতি সে পাই লক্ষ্য করেছে ০০ নাই আক্রারে। অবিকল সেই আকৃতি, সেই বেশভ্রা কিছ গে প্রস্কার্ডার নাহিঁলে বদনে কেবল বিবাদ রেখা। সংবাদ গুনে রাণী স্বন্ধিত। চতুর্দ্ধিকে আনন্দ সঙ্গীত ধ্বনিত হরে উঠল, 'জর গঙ্গেখর,' কেবল বাণীর মনে প্রথ নেই, শান্ধি নেই। প্রভাতে আখারোহী দৃত এক গঙ্গেখরের বিজয় সংবাদ নিয়ে—

ব্ব বছপ্ৰ পতি কেলে মহা—
বাজাক হজে নিধন,
বছপুৰ জেলা জন্মপূৰ্ণ এবে
পেৰিবে দেবী চৰণ।
পূৰ্ণমাসী দিনে বীর গলেশব
বিজে কৰিবে ভবনে,
বিজিত বাৰত সামস্ত ভূপাল
জাসিবৈ গুল-গছনে।

বাজা গলেশব বন্ধপুর বাজকলা (বাজসেমা) আরপুর্ণা হৈছ ও ও সলী বাজাদের নিয়ে পূর্বিমা তিথিতে ফিরবেন। আছোলন চচল আডার্থনার। সমস্ত পূরী আনন্দপূর্ণ কেবল বাগীর মনে প্রথ নেই। কলা কৌনল্যার কি হ'ল ? বাত্রে নিস্তাব নিস্তাব বহুলুর হতে ক্রন্তবন্ধনি ছেসে এল। রাগী সেই ধ্বনি লক্ষ্য ক'বে সাহসে ওর ক'বে এসিবে গোলেন। লেখলেন কলার আকৃতি। বিলাপ করছে সে মৃতি। অভিত হরে গেলেন রাগী, পার্বতী। কিছুক্ষণ কথা বেকল না মুখ দিবে তার পর বীবে বীবে প্রক্ষ করলেন, কে তুমি ? আমার কলার আকৃতি নিরেই বা তুমি এই তাবে পুরহু কেন ? মৃতি পরিচর দিল—

জুংখিনী কোঁদল্যা জননা লো, তোৰ
আছি কি আউ জীবনে ?
কোন বংশ যাতা এ ছবাশা বুখ।
পোবু তুহি কি কারণে ?
কোহরে পালিতা তনরা ভোহর
নাভি এ মন্ত্য সংসারে
আর্ডে অমু অছি
ভব ববনিকা পাবে।

ছুঃখিনী কৌশল্যা এই দশার কারণ নিবেদন কাবে থাক্সের কাছে, ভাই সে এসেছে। কভদিন ববে সে মাকে ভেকেছে মা ভ ভার ভাকে সাড়া দেরনি। আৰু মা এসেছে, মাকে জানাবে সে সব কথা। বৃল্যভে লাগল কৌশল্যা আপন কথা:—.

লোকে বে বলে বাজকুলে জন্ম হওৱা জাগোর কথা সে কথায় -বিক। বিক আমার জন্মে বিক বাজকুলে, বিক সে লোকসন্মানে। "বাজাত আলেশে মহাহৰ্ষত্বে বাইবিলি মুক্তুলে, পিতৃসেবা, বাজ সেবারে মোহর দিন বাউবিলা জলে।" একদিন পিতা সম্ভ বীয় রাজাকে (বারা তার সনী ও সাহাব্যকারী ছিলেন) সংখাধন-করে বললেন, গলেবরের এই প্রতিজ্ঞা আপনারা ওছন। বালিকা কোল্ল্যা আপনাদের সমূবে, রূপে সে অতুলনীর। ওপে সে বীরের বোগ্য। সেইজন্ম কার্যন্ত্রেল বাক্যবীর ও কার্যনীরের মধ্যে পার্যক্ত করে ব্যৱহার হ্বার জন্ম এই মুখছলে কল্যা এসেছে। এই বন্ধুপুর ছুর্গলিরে বে বিজ্ঞরী রাজা পভাকা তুলতে পার্বে তাকেই ব্যৱহা প্রহণ করবে পতিরূপে। ভারপর একদিন—

স্থিতে পুছিলে দিনে নূপ মোডে কহিবৃটি জেমামণি গ্ৰহণ কৰিবা লাবণ্য প্ৰতিমা অৱপক্ষে তা কি মণি ? 'ভৰ্ষি কেঁউ দোৰ ?' বাজা ৰু কহিলি, ওনি হেলে ছাইমন, कहिंदग, विश्व আকৃতি বাহার বিচার ভার ভেমন। क्रिवाय प्रदर ৰচনে ঘটিলা निर्भारबार्श बाहा माणः! অভাগীর কর্ম দোবকু হেলা সে দাকণ নিশা প্রভাত।

সেই বাজেব দাকণ ঘটনার মিদাকণ মৃত্যু ইচ্ছা জেগে উঠল। নিরস্ত করার জন্ম বলতে লাগলেন দিনের পর দিন রাজা। অবলেবে রাজা কুন্দ হয়ে তাকে নিজন কারার প্রেরণ করলেন শিবিরের পালে। লোক সমক্ষে রাজা বললেন রেনে ক্রিটা বলে ক্রডাকে তিনি কারার প্রেরণ করেছেন। সেই নিজন কারাবালে কেউ দেখা করতে আসত না, কেবল রাজার আসার অধিকার ছিল—

> িকেহি ন আসিলে দেখিবাকু মোডে একা সে রাজা বিহনে, রাজা সজে দেখা— ঠাফ সে নিজুনি শ্রেয়: বিলা শতশুশে।"

কারণ, বাজা কেবল দেখা করতেই আসতেন না। "মর্তা মুক্তীপাকে" এই রকম করেক মাস কাটল। অবলেবে "পাপ পরিপাকে হেলা পাপগর্ড সক্ষণ মোর প্রকাশ।" সংবাদটুকু বাইরে প্রকাশ করলেন রাজা, বিচারক তিনি। কঠোর গ্রারবিচারক, ভ্রষ্টা ক্লাকে তিনি লাভি দিরেছেন। স্বাই রাজার প্রশংসার পঞ্চর্যুৎ আর ক্লার নিশার ব্যক্ত। বথাকালে কারাগৃহে শিশু আবিভূতি হল। রাজা দেখলেন সেই শিশুকে এবং

ঁজার অবরব দেখিলে নৃপতি নে পুত্রে প্রতিফলিড

বিহাপাপে মহাপাপ সংগোপন সংকল কেথা দিল। নবজাতক ও কৌপল্যা গোপনে থউলী পর্কতে প্রেরিত হল। সেধানে এক কূপে পাতিত হল কৌপল্যা ও নবজাতক রাজার নির্দেশে। সেই কূপে কিছু দিন গুলুগানে নবজাতককে বাঁচাবার চেঠা করল কৌপল্যা। ভার পর নারা গোল সেই শিশু। নিদাদ্ধপ ভার বাগুনার মাতৃক্ষের বৃদ্যু বটল। নৰজাতকের আগতীন দেছ কুরিবৃতি গ্রায়ক হ'ল মাতার---

> লে কৌশল্যা এবে জঠর স্থালারে ওটারিলা শিক শব।

পিতা কভাকে মারবার জন্ত ফেললেন কুপে, জার মাতা পুর শরীবের সাহাব্যে ফুরিবৃত্তির প্রায়াস পেল।

পিতা হোই স্থতা প্রাণ এছিরপে
নাশিবার অনশনে,
মাতা হোই মন বলাইবা মৃত
তনর-তম্ব-ভোজনে ?
দেখিবার থাউ তেশি কি, এহো কি
ভানিখিলু কর্ণে কে বে ?
কে কছিব এহি অমামুবী কথা
কেমপ্তে সহিলে দেবে ?

ক্রমে সেই কুপে জীবনবন্ধণা শেব হল কৌশল্যার। এত সব কথা বলল কৌশল্যা মাকে। তার পর শেব কথা বলে কৌশল্যা বিদার নিলঃ—

> িৰাউছি মা' মোতে যুগে যুগে মিলু তো পৰি জননী ভবে, মো পৰি ছঃখিনী পুতা জাত প্নি ম হেউ তোৰ গৰভে।"

ভীষণ জ্জাতপূর্ব ঘটন।" ওলে য়াণী হততথ হ'রে রইলেন।
"মোর স্বতা-ভাগ্যে এহি পিতা, হাহা !
. মোহরি ভাগ্যে এ পতি !"

প্রথম সর্গের সমান্তির পর বিতীর সর্গে রাজ জাগমন। সঙ্গে এলেন রন্থপ্র-রাজকভা জরপূর্ণা। মধুস্পন দন্তের বারা জন্মপ্রাণিত রাধানাথ রায় 'মহাবাত্রা' মহাকাব্যে কি ধরণের অমিত্রাক্ষর ওড়িয়া সাহিত্যে প্রবর্তন করেন তা জামি জন্মত্র (বঙ্গসাহিত্য ও বহিবলৈ) জালোচনা করেছি। িএ প্রসঙ্গে জাধুনিক হিন্দী সাহিত্যে বাংলার স্থান ক্রষ্টব্য বি এখানেও সীতা ও সরমাকে মনে পড়বে জরপূর্ণা ও পার্বেতীর বর্ণনা প্রসঙ্গে। একজন শোকরিষ্টা পিড়হারা জন্ম জন শত্রুপুরীতে 'কল্যাণকারিনী। মধুস্পনের কিয়া বিশাবরা রমা জ্যুবালিতলে' মনে পড়বে রাধানাথের কবিতা পড়তে পড়তে—

মিয়মাণা আহা, অমুরালি তলে কিংবা কিমাধরা যুমা।

অথবা মনে পড়বে মধ্পুদ্দের :—
ব্রিবার কালে, স্থি, প্লাবন পীড়নে
কাতর প্রবাহ, চালে, তীর অভিক্রমি,
বারিবাদি ছটু পালে; ধ্রেমতি বে মন !
ছাথিত, ছাথের কথা কছে নে অপবে।

ৰখন বাধাসাথেৰ কবিতা পড়া ছবে—
দেবি গো, প্ৰাস্তুট ভটিনী বেসনে
ন পাবে বাহি সভাসি,
অসভালে লছুঁ পূৱ প্ৰবাহকু
বেনি কুলে দিএ ঢালি
ছংখী সেহি পরি, স্তুদে বেবে ভার
ৰঙ্গি পড়ে জন ব্যখা,
সম ছংবি জনে স্তুদ্ধ কথা।

এ অংশটি আরও অনেক স্থান মধুস্দনের মেখনাদবধ কাব্যের হুবছ অনুস্কি। সে-প্রসঙ্গ এখন আলোচনা করব না। এই অংশে অনুস্কি। সে-প্রসঙ্গ কাহিনী এবং বছপুর পরাজ্যের কর্মণ কাহিনী বনে সর্গ শেব করলেন। বাকী অংশ গজে লেখা ঘটনা কবি সেটি: ক কবিতার ত্রপ দিয়ে বেতে পাবেননি। অনুপ্রিরাজপুত্র-প্রেমিকা, এদিকে রাজা নিজে তাকে প্রহণ করতে চার। রাণী বখন শুনলেন বে পুত্রবধ্ সমা অনুপ্রিকে রাজা গ্রহণ করতে চান, আপন ক্লার ব্যাপাবের পরেও তথন রাণী ভাবলেন, এ মোহ পুরুগবে মন সমর্পণ কবি বিবাক মোহর বধ্, স্মতরাং কলা ছানীরা হোই-অন্থ । এহাক উপরে পুণি অত্যাচার । হে বিধাতা। কেউ পাণবে এ ভলি স্কামী পাইলি ? এ পরি নররাক্ষস্ক পৃথিবী খীর পতি বোলি সহি পারজিন্মাত্র মুঁ পারিবি নাহিঁ।"

বাণীর পড়েগর আবাতে মারা গেলেন রাজা। রাণী পুত্রকে বলংগন, "এ রাক্স নিজর বোপিত বৃক্তেদনর প্রতিজ্ঞা করিথিলা। তুনি বিশ্বিত তুজানাহি, এহি বাক্স কৌশল্যাকু ভ্রষ্টা করি সেহি অনাধা বালিকাকু সমস্তান নিহত করাইলা। কুমার, তুজার সেহি প্রাণ্ড সিনী ও মোহর সেহি প্রাণ্য ছহিতা কৌশল্যা আজ জীবনরে নাই। এ পাৰৰ নিজৰ বোণিত যুক্ত বোলি যোহ কভাৰ গভীক নষ্ট কলা।" বাজাৰ মৃত্যু ঘটাৰ পৰ, অৱপূৰ্ণীৰ মৃত্যু ও বাৰীৰ নিক্তকেৰে পাৰ্কতীৰ গভাগে সমাপ্ত। এই গভাগে কাব্যেৰ কাঠাৰ কিছ কবিতা নৱ। এই ছই সৰ্গেৰ পাৰ্কতী কাব্য ইন্টাৰ্মজিনেট ছাত্ৰছাত্ৰীদেৰ্ব পাঠ্য। এখন আপনাৰা বিচাৰ ককন পাঠ্য কবিতাটি ইন্টাৰ ছাত্ৰছাত্ৰীদেৰ পক্ষে অপাঠ্য কি না ?

্ঞাইখানে বিশ্ববিভাগরের কর্তৃণক্ষের 'মাসিক বস্থবতীর' ১৩৬৩ সালে ভাসনখার 'সক্ষাদসমূল' প্রবৃত্তির দিকে দৃটি আকর্ষণ করছি। গ্রন্থটি কলিকাতা বিশ্ববিভাগরের হিন্দীতে বি-এ অনাস্থ্র পাঠ্য ছিল। 'সক্ষাদ-সমূল' গ্রন্থটি মৌলিক নর, এবং এতে অস্থবাদে বালালীদের প্রতি কটাক্ষণাত করা হরেছে কিনা বালো কথার সাহার্য্যে ভা বিবেচনা করার জন্ত 'আমার আধুনিক হিন্দী সাহিত্যে বাংলার ছান' গ্রন্থটি দেখতে বলি। অথবা এ ব্যাপারে ভক্তর শ্রন্থনীতিকুমার চটোপাধ্যার মহালাই কি বলেন, তা বিশ্ববিভাগর কর্তৃপক্ষ জানার চেটা করতে পারেন।

পবিশেবে, ওড়িরা সাহিত্যাছুরাগীরা বেন আমাকে ভূস না বোঝেন তার জন্ত বলছি বে পার্কতী কবিতার কাব্যমূল্য সম্বন্ধ আমি অচেতন মোটেই নই। বইটি ইন্টারমিডিরেট শ্রেণীতে নির্কাচিত করাতেই আমার আপত্তি। শ্রহা রাখি আমি ওড়িরা সাহিত্যের প্রতি এবং কবিবর রাখানাথকে আমি বিল্মাত্র ছোট করার চেটা করিন। রাখানাথের অনেক আগেলার পূর্কপূক্ষর বাঙ্গালী কারছ ছিলেন এটা বাংলার পক্ষেও গৌরবের কথা। আর বিশ্ববিভালর এবং তার কর্তৃপক্ষ সম্বন্ধ বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার বিশ্ববিভালর তার তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালি আন্তর্জ্য ক্রিয়া বিশ্ববিভালর তার বিশ্ববিভালর তার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর নার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর নার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর নার বিশ্ববিভালর নার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর নার ক্রিয়া বিশ্ববিভালর নার বিশ্ববিভালের নার বিশ্ববিভালের নার

খেয়ালী

মাধবী ভট্টাচার্য

খন বাত্রির কজ্জসমাধা উজ্জল চোধ ছু'টি
থম্কে বেদিন দাঁড়াবে আমার শব্যার পালে এসে,
নীল আলমানে রসীন চাদ হানিবে কুটিল ক্রকুটি
বগ্ন-কুহেলি বিহাবো আমার নিবিড় শ্ব্যা-প্রদেশে।

ভোবের হাওরার সভা আমার থেরালী বপ্ন বোলে নীল নীল ছ'টি চোথে গভীবের মাঝে কান পাভি কোন্ অমবার বাণী শোনে।

খন বাত্তিৰ অঞ্চলতলে সৰ্যেতে ৰূপ ঢাকি' আত্মা কুকাৰি হংকাৰি বলে ভালবাসা কোৰা বাৰি ?

বাত্ৰিৰ কালো চোৰে ইংগিড ভেসে ওঠে

ধেষালের ভরী ভেনে চলে থীৰে খেরালী ভটিনী বাহি' , ধেরালী লে কোন কল-কর্মান গোলালের গান গানি' ৷

বিকিম্চন্দ্রের ধর্ম-জিক্তাসা

ডক্টর স্থালকুমার গুপ্ত

বিশ্ব কলে উনবিংশ শতালীতে ইংবেকী শিক্ষা-বিশ্বাৰ
ও খুইখৰ-প্ৰচাবের চেষ্টা এবং প্রাক্ষধনান্দোলনের প্রতিক্রিরাক্ষত্বপ বর্ষের সমাজের মধ্যে প্রবল চাঞ্চল্য দেখা দেব এবং সমাজের
ক্রেড্রেশ বর্ষের সমাজের আদর্শকে রক্ষা কবতে মচেট্ট হন। বা কিছু
প্রাচীন তার মহিমা-ভীর্তন করে তাঁবা সমাজের ভাঙনকে রোধ
করতে চেষ্টা কবেন। ক্রমে বুগের প্রবোজনে হিন্দুধর্মের সংখ্যার
ক্ষারম্ভ কর। এই সংখ্যা-ভাজনের অভ্তম প্রধান্ধ মান্তম্প
বিশ্বাসকল চাষ্টাপাবাার (১৮৩৮-১৮১৪)।

कीवरमय प्रशासकाम भर्वत बास्त्रपत्त काम विराम प्रवासका क्षेत्रि क्षेत्रका क्यांच वि । त्रांशांवन कार्य किवि विरक्त 'কৌৎপন্নী' বা 'পঞ্জিনিভিন্ন' ব'লে পবিচৰ জিভেন। ভবে ভিনি বে : হিন্দুৰ্থ সৰ'ছ আৰম্ভ আৰম্ভ কৰেছিকেন তাৰ প্ৰমাণ পাওৱা ছবৰ ময় : ত্রিয়াসিব 'জি জ্ঞালভাটা বিভিট্ন' পত্তের ১০৬ সংখার 'Buddhism and the Sankhya 3691 galte. Philosophy' विश्वप्रमुख त्रजार्थ क्षकाशिक हरदेशि। শৰ্চক মুখোপাধারের 'The Mukherjee's Magazine'এর ১৮१७ शृंहोरक्त त्य मारत विक्रमहत्त्व 'The study of Hindu Philosophy' নামে একটি প্রবদ্ধ লেখেন। ১৮৮২ খুটান্দের শেষের দিকে শোভাবাছার-যাভবাতীতে এক প্রাছের ব্যাপারে পাত্রী ভেটি ও বেডারেও কৃষ্যোচন বন্যোপাধ্যার হিন্দর্বকে অ'ক্রমণ করলে বভিমচক্র 'রামচক্র' এই ছল্পনামে ভাকে প্রভিবোধ করার সমরে ভিলাবরের মলভাজ্ঞালি সম্পর্কে বিশেষভাবে ভিত্তাস্থ হ'বে ওঠেন। এই সময় ভিনি পঞ্জিটিভিই বোগেশচক্র ছোহকে Letters on Hinduism नात्र कलक्काल शत लायन।

এই প্রসঙ্গে বলে রাখা ভাল বে. উনবিংশ শতাকীর দিতীরার্ধে এ দেশে 'পজিটিভিজমের' প্রবল চেউ উঠেছিল। তালভলার নীলমণি কুমারের এক আত্মীরের বাড়িতে একটি 'পঞ্চিডিষ্ট' ক্লাব ছিল। এই সাবের সভাদের মধ্যে ভিলেন বোগেলকে বোব. र रामठळ राज्यांभाशाय, नीनक्ष्र प्रक्रमताय, कुकनांच मुखांभाशाय, নীলমণি কুমাৰ প্ৰাকৃতি। এঁবা সকলেই পুৰোপুৰি কোঁতেৰ भिया ना ह'ला 'हिष्णमानिष्ठि' (humanity) अब त्यवां चीरन উৎসৰ্গ করাকে মহন্তম কাজ বলে মনে করতেন। বোপেলচন্ত্র কোঁতের মতবালকে এলেশের লোকের উপরোগী করার ছবে এব অংশবিশেষের পরিবর্তনের পক্ষপাতী চিলেন। ভিউমানিটি এর মৃতি বীওপুঠের জননী ম্যাডোনার প্রতিকৃতির অভুরূপ করাই কোঁতের অভিপ্রার ছিল। কিছ বোগেশচন্ত্র মাাডোনার মর্ভির পৰিবৰ্তে কন্তাপেড়ে শাড়ীপৰা ও কপালে সিঁপৰ দেওৱা একটি নারী শিশুকে ভরণান করাছেন-এই রকম মূর্তি তৈরী ক'বে ভার নাম দিহেভিলেন 'নাহাহণী'। এই ব্যাপারে কুফকমল এক জন বড় 'পজিটিভিট্ন' ছিলেন। ছাতিকখার তিনি বলেছেন। 'আমি positivist: আমি নান্তিক।'১ বোগেশচন্তের কোঁতের हिन्दानी माद्रव करेन, कुक्कमन अधिक निक्रिक्टिंड मधर्मन tarbo etcer for a contentument editioner eithe eraces even refer

উঠেছিলেল এবং 'জবাধুস্থসভালং' এড়ডি প্ৰের তব পর্বত 'পজিটিভিজম'এর যথে চালাছে চেট্টা করেছিলেল। বোগেলচজের মৃত্যুতে এই আন্দোলনের উত্তেজনা কমে আলে। নোগেলচজের সম্পোর্লেই বভিমচজে বে কোঁতের 'হিউম্যানিটি'র ভাবে মিলের ভাবে উষ্ ভ হরেছিলেল—এ কথা অধীকার করা বাব না।

বহিমচন্ত্ৰ নবযুগের প্রেরণা, উৎকঠা ও প্রয়োজনকে অমুজ্ব করতে পেরেছিলেন। তিনি এ কথা স্পাই তারেই বুংষাছিলেন বে, পাদচাত্ত্যা দিক্ষার বৈজ্ঞানিক দৃষ্টিতলি এব প্রথম যুক্তিবাদের কাছে পুরাতন সংস্থার ও আল্পবিধি কোনমতেই আল্পবিধা করতে পাববে না। কিছু তিনি এ কথাও অমুত্ব করেছিলেন বে, পাদচাত্যার আদর্গ প্রাকৃতিক ও ঐতিহাসিক কাবনেই এ খেলের আদর্গ হ'তে পাবে না। তবে পাদ্যাত্ত্যা দিক্ষা সভ্যতার উৎকর্য ও প্রয়োজনীয়তা বীকারে তিনি কোন দিলই কৃতিত ছিলেন না। তার দক্ষা ছিলস্পাক্ষার বিদ্যান্ত্রী এক সামহত্যা রক্ষা ক'রে ছিল্ম্বর্যকে সংস্থাপর প্রয়োজনাত্রীয়ার এক সামহত্যা রক্ষা ক'রে ছিল্ম্বর্যকে সংস্থাপর প্রাপাবে চিত্তভার্ত্তর প্রাথমিক সোপান বিশ্বত্রত্ব নামক প্রপ্তে মন্ত্র্যান্ত্রক, সামহত্যার বলে ধর্মের একটি সর্বালীন আদর্শ প্রতিপর করেছেন।

করেকটি উক্তি উদ্ধৃত করলেই বৃদ্ধিমচন্দ্রের ধর্মতত্ত্বের ধারণা স্পষ্ট হবে। বৃদ্ধিমচন্দ্রের অনুস্থীসনতত্ত্বের মূল কথাগুলি (২) এই—

শিব্য। তাহা আপনাকে বলিতেছি, শ্রবণু করুন।

- ১। মছুবের কতকণ্ডলি শক্তি আছে। আপনি তাহার বৃত্তি নাম দিয়াছিলেন। সেইগুলির অয়ুনীলন, প্রক্রণ ও চরিতার্থভার মছুবাছ।
 - ২। তাহাই মহুব্যের ধর্ম।
- ০ : সেই অনুধীননের সীমা, প্রস্পারের সহিত বৃত্তিগুলির সামস্যা
 - ৪। তাহাই সুধ।
- ४। धरे नमच वृद्धित छेनवृद्ध अञ्जीनन इटेश्न हेराता नकरण्डे केचतव्यी रता केचतव्यविकारे छेनवृद्ध अञ्जीनन। तरहे अवद्यारे छक्ति।
- ৬। ঈশ্বর সর্বভূতে আছেন। এই অন্ত সর্বভূতে প্রীতি ডজির অন্তর্গত এবং নিতান্ত প্ররোজনীর অংশ। সর্বভূতে প্রীতি ব্যতীভ ঈশ্বরে ভক্তি নাই, মনুবাদ নাই, ধর্ম নাই।
- ৭। আত্মপ্রীতি, বন্ধনগ্রীতি, খদেশপ্রীতি, গণ্ডপ্রীতি; দরা এই প্রীতির অন্তর্গত। ইহার মধ্যে মনুব্যের অবস্থা বিবেচনা করিয়া খদেশপ্রীতিকেই সর্বন্ধের্ঠ বর্ব বলা উচিত।"

ব্যৱসচন্দ্রের মতে অনুশীলন হব প্রাতন ধর্মের সংভার মাজ। এ সম্বন্ধে ব্যৱসচন্দ্র লিখেছেন—

শিব্য। অভ্নীলন আবার ধর্। এ সকল নৃতন কথা।
৪৮। নৃতন নহে। পুরাতনের সংখার মাত্র। (৩)

কালভেদে ধর্ম-সংখাবের প্রব্যোজনীরতা বহিমচন্দ্র খীকার করতেন।

"গুড়া । তেবে বিশেষ বিধিস্কৃত ধর্মেই সময়েচিভ হয়। ভাষা কালভেকে পরিহার্যা বা পরিবর্তনীয়। ছিলুধর্মের নব সংখারে এই খুল কথা।"(৩)

विधियालाः माहारिम्ब शक्तभाषी अस्वयंद्रिये शिरमन ना ।

বিল । অনুসীলন প্রবৃত্তি মার্গ-সন্ধাস নিবৃত্তি মার্গ । সন্ধাস অসম্পূর্ণ ধর্ম । ভগবান কর্ম কর্মেই প্রেট্ডা কীর্ডন করিয়াছেন। অসম্পূর্ণ ধর্ম । ভগবান কর্ম কর্মেই প্রেট্ডা কীর্ডন করিয়াছেন। অনুসীলন কর্মান্তক । "৫

বলিমন্তে মনে করতেন, ডক্তিশ্র বে ধর্ম তা অতি নিকৃষ্ট ধর্ম !
বেদে বে ভক্তিবাদ নেই তা নয়, কিছু মুদ্ধগ্রন্গীতাই ভক্তিভদ্বের শ্রেষ্ঠ গ্রন্থ । বল্লিমন্তন্ত্রর অন্ধ্রীলন ধর্ম গ্রীভোক্ত ধর্মের এক নৃতন নাখান মান্ত। ডিনি বৈক্ষরধর্মের প্রেক্তি মধ্যেষ্ট প্রাধানীল ছিলেন। জবে জিনি বলোহন বে চিন্তভদ্বি ছাড়া কেই সন্ধ্যিকার বৈক্ষানিক ছবে পাবে না। সন্ধিমনজ্ঞের ধর্মমন্তের মূলে কোথাও বৈজ্ঞানিক ছুক্তিবাল না প্রকৃতিবাদকে অনীকার করা হয় নি। ভিনি চিন্ত্র্যের সেই মর্মন্তাপকে অম্বন বলেছেন যা মন্তব্যেষ্ট হিত্সাধন করে এবং মন্তন্ত্রক ব্যার মুলা

শ্বক — তিন্দুদর্শ্বন সেই মন্মতাগ অমর। চিন্নকাল চলিবে, মন্ত্রোব চিত্রসাধন করিবে, কেন না, মানব-প্রকৃতিতে ভারার ডিজি। ত

ধর্ম জ্বের মূলে এই প্রকৃতিবাদ বিশেষ ভাবে লক্ষ্যণীর। এই প্রেকৃতিবাদেন ওপরে প্রভিট্টিত ধর্মের প্রধান অবলম্বন জীবন ও ভগং। এইখানে বিদ্বাসক্রের স্বস্তুমভের সাক্ষাং পাওয়া বায়। এই প্রসঙ্গে একটি উক্তি স্ববীয়া।

"গুৰু ।—নিধিল বিশেষ সৰ্ববাংশই মনুবোৰ সফল বৃত্তিওলির্ই অফুকুল। প্রকৃতি আমাদের সফল বৃত্তিগুলির্ই সহায়।" ৭

এই তন্ত্রগৃষ্টির প্রভাবেই বন্ধিমচন্দ্র পাশ্চান্তা বিজ্ঞান সাংনা ও ভাবতীয় অধ্যাত্মপিপাসার সন্ধি ছাপন করতে সমর্থ হয়েছিলেন। বন্ধিমচন্দ্রের কাছে জগৎ সন্ত্য এবং দেহই প্রধান ও আদি সাধনের বন্ধ। দেহ ও মনের প্রধান ও মৃদ বুত্তিগুলির পূর্ণ উন্মোচনের মধ্য দিরেই উন্ধানকে পাওরা সম্ভব। মান্থবের ধর্মপ্রধানতা মান্থবের প্রকৃতি থেকেই জন্মলাভ করে। মান্থবের প্রকৃতির পূর্ণ পরিণতির বে অবস্থা তার আদর্শই উন্ধর নামে অভিহিত।

শিষ্য। এরপ আদর্শ কোথার পাইব ? এরপ মছব্য ভ দেখিনা।

গুল। মহাব্য না বেখা, ঈশাব আছেন। ঈশাবই সর্ববিশুনের সর্বাঙ্গীন ভূত্তির ও চরম পরিণতির একমাত্র উলাহরণ। এইজ্জ বৈদান্তের নির্দ্ধণ ঈশাবে ধর্ম সম্যক ধর্মত প্রাপ্ত হর না, কেন না বিনি নিশুণ, তিনি আমাদের আদর্শ হইতে পাবেন না।—
বাঁহাকে "Impersonal God" বলি, তাঁহার উপাসনা নিম্মল, বাঁহাকে "Personal God" বলি, তাঁহার উপাসনাই সফল।"৮

বৃদ্ধিচন্দ্রের ঈশ্ববেদ্ধর ধারণার মৃত্যে ছিল 'হিউম্যানিজ্ম' (Humanism)। এই 'হিউম্যানিজ্ম' মান্তবেরই পূলা, মান্তবের মধ্যেই দেবতার জন্মদান ও জারাধনা। এই 'হিউম্যানিজ্মে'র পথেই পাশ্চান্তা ও প্রাচ্যের জীবনও ধর্মজিজ্ঞাসার একটা সেতৃবন্ধন হরেছিল। বৃদ্ধিমন্তর ব্যক্তির জ্ঞান্তর স্বাধ্বির ভূজির জ্ঞান্তর ব্যক্তির স্বাধ্বির ক্রাধ্বির বৃদ্ধির জ্ঞান্তর বৃদ্ধিতর মন্তর্গর জ্ঞান্তর বৃদ্ধির জ্ঞান্তর বৃদ্ধিতর মন্তর্গর জ্ঞান্তর বৃদ্ধিত ক'বে বৃদ্ধিনিজ্ঞ সংক্রিন্তর মন্তর্গর জ্ঞান্তর বৃদ্ধির স্বাধিনের দ্বা মিটাতে প্রবাসী হরেছেন। তার মতে এই স্বাক্রনের পথেই মানব-দেবতার সেবা করা সভ্য। এই

কেরে বভিষ্যক্ত পাশ্চান্ত্যের হিত্তবাদকে অনুশীগনতত্ত্বের অসীপূর্য করেছেন।

ভিন্ন । - - - - আমি বেধানে উহাকে ছান দিলাম, ভাষা আমাৰ অনুদীলনভড়ের একটি কোণের কোণ মাত্র। - - -

ছুলকথা, অনুশীলন ধর্ম্মে Greatest good of the greatest number প্ৰিভতন ভিন্ন আৰু ভিছুই নহে। ১

ৰভিষ্ঠক আত্মহিত সাধনকে প্ৰছিত সাধনেৰ নীচে ছাৰ বিবেশ্যন।

ওছ। প্ৰের অনিষ্ট্যাত্তই অধর্ম। প্রের অনিষ্ট **ক্ষিত্তা** আপনার হিত্যাধন কবিধার কাছারও অধিকার নাই। ১°

ভিতের বে অবস্থার আত্মনীতি ও পৃথিনীতিতে বিবোধের অবসার হব বহিমচন্দ্রের মতে ভার মামট ভিত্ততিবি প্রধান সক্ষণ। বছিমচন্দ্র এই মানবারীতিকেট সক্ষল নৈতিক গুডিভাব উর্জে স্থান বিবে একে মানবার্থনের অন্তর্গত করেছেন। বছিমদন্দ্র অভাতি ও ব্যালন্দ্রীতিকে অস্বীকার না করে স্বজাতি ও অ্যালন্দ্রীতির মধ্য বিবে বিশ্বতিত সাধ্যনের প্রবাসী ভিত্রেন।

তিক। বন্ধত:—জাগভিক প্রীভির সঙ্গে আত্মপ্রীভি বা ত্বজন-প্রীভি বা দেশপ্রীভির কোন বিবোধ নাই। পরস্মান্তের অনিষ্ট সাধন করিরা আমার সমান্তের ইট্নাধন করিব না, এবং আমার সমান্তের অনিষ্ট সাধন করিরা কাহাকেও আপনার সমান্তের ইট্নাধন করিতে দিব না। ইহাই সমদর্শন এবং ইহাই জাগতিক প্রীভি ও দেশপ্রীভির সামজ্ঞা। ১১

বলা ৰান্ত্ৰা, এই দেশপ্ৰীতি ইউবোশীর patriotism নর; কেন না ইউবোশীর patriotism ধর্ম্মের তাংপর্ব প্রসমাজের পৃষ্টন করে নিজসমাজের পৃষ্টি সাধন।

ৰছিম-প্ৰচাৰিত patriotism কে অনুবিক্ষ বোৰ religion of patriotism বলেছেন।

"This is second great service of Bankim to his country that he pointed out to it the way of salvation and gave it the religion of patriotism, of the new spirit which is leading the nation to resurgence and independence, he is the inspirer and political Guru." 32

বহিমচন্দ্র স্নাতন ধর্মাদর্শকেই বুগের প্ররোজনে শোধন ক'রে নিরেছিলেন। বলতে গেলে স্নাতন ধর্মাদর্শ একটা নৃতনভাবে ব্যাখ্যাত হরেছিল। এ সহছে মোহিত্সাল মজুমদার লিখেছেন,

ভিনি ভত্তবাদী (mystic) সাধক বা বোগী ছিলেন না—ভিনি ছিলেন থাটি Humanist; Humanismকেই বতথানি লোখন স্করিবা লওবা বাব ভিনি ভাষাই করিবাছেন, এই কথা মনে না রাধিলে তাঁহার সেই সাধনা ও বিশিষ্ট প্রতিভাব মূল্য নির্ণরে ভুল হওরাই সন্তব। ১৩

বৃদ্ধিয়ন তংগ্ৰচাৰিত অমুশীলন ধৰ্মেৰ উদাহৰণ-মুৰুপ 'কৃষ্ণচৰিত্ৰ' বচনা কৰেন। পোৰাণিক ঈৰৰ কৃষ্ণেৰ ঈম্বৰ প্ৰতিপন্ন কৰা ভাৰ উদ্ধ ছিল না। কৃষ্ণেৰ মানবচনিত্ৰ সমালোচন কৰাই ভাৰ লক্ষ্য ছিল। মুগেৰ ধৰ্মকোৰেৰ প্ৰেৰণাতেই বৃদ্ধিয়ন্ত্ৰ কৃষ্ণচৰিত্ৰেৰ সমালোচনাৰ উদ্বৃদ্ধ, কেন না কৃষ্ণ এদেশে সৰ্ববাণিক।

'এচাবে' বাবাবাহিক ভাবে বের হ'বে 'কুকচন্ডিত্র' ১৮৮৬ খুইাকের ১২ই আগষ্ট পুন্তকাকারে একালিক হয়। অনুসীলনতত্ত্ব প্রচাবের উদ্দেক্তে বন্ধিনচন্দ্র 'আনক্ষয়্চ' (১৮৮২), দেবী চৌধুবাণী (১৮৮৪) এবং সীভাবায় (১৮৮৭) নায়ক ভিতনধানি উপজাস বচনা কবেন।

পূর্বই বলেছি, বৈক্ষবধরের প্রতি বছিমচন্তের আন্তরিক প্রছাছিল। উদ্বেষ বাড়িতে বাধাবদ্ধতের নিত্য পূলা হত। তিনি কীর্তন গুনাতে অভান্থ ভালবাসতেন। প্রসক্ষত বলা বার বে, বছিমচন্ত্রের বচনার কীর্তনীরার চরিত্র স্থান্তি ও কীর্তনের উল্লেখ তাঁর বৈক্ষবধর্ম প্রীতির পরিচর প্রদান করে। হরপ্রদাদ শাল্লী লিখেছেন, একবার গুনিহাছি, কীর্তনিওরালাকে পেলা দিজে দিতে তিনি বিক্ষমর্শনের তহবিল থালি করিবা দিরাছিলেন। গানের উপর তাঁহার বেশ ঝোঁক ছিল। জিনি করেক বংসর ধরিরা বহু ভটের নিকট গান শিধিতেন।১৪

ৰভিষ্চক্ষে। কুষ্ণচ্বিত্ৰেৰ ওপর বৈক্ষবভাব প্রভাব আছে। বৈক্ষ হভাব প্রভাবেই বন্ধি মচন্দ্র কুঞ্চরি'ত্র মানবভা ঢেলে দিয়েছেন। অ'শ্র দেই সঙ্গে সঙ্গে আক্তগরের প্রভাবে বল্পিয়চন্ত্র তার কুফ্টরিত্রকে দার্ঘ্য, এবর্ষ ও তেজবিভার মণ্ডিভ করেছেন। ওরু তাই নর। পাশ্চান্তোর যুক্তিবাদের সাদাব্যে তিনি কুক্টারিত্রকে বহু পৌরাণিকভার কলম্ব থেকে মুক্ত করে এনেছেন। কিছু এসব সংস্তৃও বলভে হর বে, বিভিয়*চন্দ্রের কৃষ্ণ.ক আদর্শব্*জানে পোচক উপাসনা করবে এ কখনই সম্ভবপর নর। বঙ্কিমচক্রের মধ্যে সত্যিকারের আধ্যাত্মিক অমুভূতির ৰভাৰ ছিল। ভূত্ব rationalism-এর শক্তিই প্রধানত: ঠাকে কুক্ঃবিত্র প্রশারনে চালিত করেছে। ঐকুক্চবিত্রের প্রধান গুর্বল্ড: সম্বন্ধে কালীনাথ দত্ত লিখেছেন, "সাধারণ মান্তবে একজন উপাসকের চান-একজন ভক্তের প্রতিজ্বি দেখিতে চান। 🗃 কৃষ্ণ চরিত্রে 'ইহার কিছুই খুঁজিয়া পাওয়া বার না। তাঁহাতে ना हिन देवर्गा ও ভগবংনির্ভর, না ছিল ভগবংভস্কি, না ছিল ভগবং-প্রেম, 'না ছিল ভগবং-বিশাসের গভীরতা ও व्यवस्था । ১०

বন্ধিমচন্দ্র নিজেই এই জভাব বোধ করেছিলেন "কেবল একটা কথা এখন বাকি জাছে। 'ধর্মতত্ত্ব' বলিরাছি, ভক্তিই মনুব্যের অধান বৃত্তি। কৃষ্ণ জাদর্শ মনুব্য, মনুব্যুৎের জাদর্শ প্রচারের জন্ম জবতীর্ণ—ভাঁহার ভক্তির ক্মৃত্তি দেখিলাম কৈ ?"১৬

বঙ্কিমচন্দ্র এই ধর্মজিজাসার উত্তর দিতে পারেন নি।

বিষমচন্দ্রের কৃষ্ণারিত্র ব্যা.ত হলে তাঁর ধর্মশিক্ষা সম্পর্কে ছ'-একটি কথা জানা আবগুল। বিষমচন্দ্রের প্রধান শিক্ষা তাঁর শিতার কাছে। পূর্ণচন্দ্র চটোপাব্যার লিথেছেন বে, একজন সন্ন্যাসী মহাপুদ্ধর বাদবচন্দ্রের জীবন দান ক'বে তাঁকে দীক্ষিক্ত করেন।১৭ এনিকে তিনি পরম বৈষ্ণর ছিলেন। পিতৃদেবের উপদেশে এবং সংস্কৃত গ্রন্থানি পাঠ করেই বন্ধিমচন্দ্রের হামরে প্রথম ধর্মের উন্দেহ্র হয়। বে সব সংস্কৃত প্রদানি বিষমচন্দ্রের স্বচনাদি থেকেও প্রমাণ করা নার বে, তিনি তল্প, মন্ত্রশক্তি, দৈববল ইত্যাদিতে বিখাসী ছিলেন। তাঁর শাক্তভাব প্রধানত এই বিখাস থেকে পাওরা। এর ওপর পৃশ্চান্তা বৃক্তিবাদ, 'Humanity'-এর আদর্শ প্রমৃতি তিনি

পাশ্চান্ত্য নিকাৰ কল্যাপে লাভ কৰেছিলেন। এই ভিনটি বাবাধ বহিমচন্দ্ৰের কুকচরিত্র অভিবিক্ত।

'তব্বোধনী'নত বিজেজনাথ ঠাতুর কৃষ্চরিজের সমালোচনা করলে 'প্রচারে' বহিমচন্দ্র তার জবাব দেন। এই প্রসাদে বিজেজনাথ জার স্থাতিকথার বলেছিলেন,

কেন বৃদ্ধিয় তুটো কু:ক্ষর অবতারণা করিলেন, এবং এক কৃষ্ণক আদর্শ পুকর বলিরা দাঁড় করাইতে চেটা করিলেন ? বৃদ্ধিচন্দ্র শেষা শবি বৃত্তই গীতাভক্ত হউন না কেন, ভিনি অনেক দিন ধরিয়া পাঝা positivist ছিলেন। Positive Philosophy বাহাই হউক না কেন, ওরু মাছুবকে লইরা একটা Positive religion দাঁড় করাইবার চেটা করিলে চলিবে কেন? Religion কি অমনি গড়িরা তুলিলেই হর ? Positivist চাহিল একজন grandman—মহাপুকর। বৃদ্ধিম বাবু ভাবিলেন, এই ত আমার হাতের কাছে একজন grandman বৃদ্ধিয়েকে; বেমন বিষয়বৃদ্ধি, তেমনি প্রমার্জ্জান, এই বকম চৌকস মামুর্দ্ধকার। অত্যর্থ আমাদের দেশে positivist religion দাড় করাইতে হইলে প্রকৃষ্ণকে grandman করিলেই স্মালস্ক্রন্থ হইবে। তবে বুলাবনের প্রকৃষ্ণকে আর মহাভারতের প্রকৃষ্ণকে এক করিলে চলিবে না। ফলে দাড়াইল বৃদ্ধিমের কৃষ্ণচরিত্র। "১৮

বাক্ষণমাক্ষের নেতৃত্বত্ব বিষয়চক্ষের ধর্মজনক প্রচণ্ডভাবে আক্রমণ করেন। এই আক্রমণকারীদের মধ্যে রবীক্ষুনাথ ঠাকুরও ছিলেন। ১২১১ সালের (১৮৮৪) অগ্রভারণ মাসের 'প্রচারে' বহিমচক্ষ 'আদি বাক্ষসমাজও নব্যহিন্দুসংগ্রণার' নামে এক প্রবন্ধে এই আক্রমণের বলিষ্ঠ জবাব দেন।

বঙিমচন্দ আক্ষধৰ্মকে হিন্দুধৰ্মের শাখা বলেছেন।

ত্রিজগর্মের আমরা পৃথক উল্লেখ করিসাম না, কেন না, ব্রাজগর্ম হিল্পুথমির শাখা মাত্র। ইহার এমন কোন সক্ষণ দেখা বার নাই, বাহাতে মনে করা বাইতে পারে বে, ইহা ভবিব্যতে সামাজিক ধর্মে প্রিণত হইবে।"১১

বিষ্ণাচন্দ্রর জীবনের শেষের দিকে পশুতবর শশধর তর্কচ্ছামণি উত্তর ওপূর্ব বাংলা থেকে কলিকাতার এসে আলবার্ট হলে হিন্দুধর্মর বৈজ্ঞানিক ব্যাখ্যা বিবর্ক করেকটি বক্তৃতা করেন। এই বক্তৃতার শ্রোতা ছিলেন বহিষ্ঠক্র, অক্ষয়কুমার সরকার প্রভৃতি মনীবিপণ। ছ'তিনটি বক্তৃতার উপস্থিত হবার পর বহিষ্ঠক্ত আর বাননি। এই প্রসঙ্গে বিষ্ণাচন্দ্র চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যারকে বলেছিলেন,—

ব্যৱস্থিত ভার দৈবতত্ত্ব ও হিন্দুধর নামক প্রবন্ধের এক ছলে কুটনোটে বলেছেন,---

শিখিত শুশুৰৰ তৰ্কচুড়ামণি মহাশুৰ বে হিন্দুৰ্গ প্ৰচাৰ কৰিছে

নিযুক্ত, তাহা আমাদের মতে কথনই টি'কিবে না এবং উচ্চার ংশ্ব গকল ইইবে না। এইরপ'বিখান আছে বলিয়া আমহা তাঁহার কোন কথার প্রতিবাদ ক্রিলাম না।" (২১)

উপরের আজ্যেচনা থেকে ব্যক্তিমচন্দ্রের ধর্ম-জিজ্ঞাসার থকাণ স্পৃত্তী হবে ব'লে বিধাস দ্বিভিন্নতন্ত্রের সাহিত্য-স্তৃত্তীর মূল প্রেরণা ধর্ম। সেই কারণে তার ধর-ভিজ্ঞাসার সংজ পরিচিত না হ'লে তার রচনার্থ পূর্বহার প্রথম ও স্কানিরপণ বধাবধ ভাবে করা সভব নয়। বহিমচন্দ্রের ধর্মজিজাসার মধ্যে উনবিংশ শতকের শেবার্থের উৎকণ্ঠা ও প্রারোজন ধরা পড়েছে। এই হিসেবে তার ধর্মজিজাসা একটি বিশিষ্ট মূল্যে মহৎ ও দীব্যিমর।

| | গ্রন্থ পঞ্জী | ১২। সুরেশচন্ত্র সমা লগতি সঙ্গিত বহিম -এসল - |
|------|---|---|
| 31 | বিপিনবিহারী ভগ্ত। পুরাতন প্রসঙ্গ প্রথম পর্বার) | । (পविनिष्टे-२)। कनिकाण ১৯२১ : ११: ১৫। |
| | क्रिकांका ১৯১७ : गुः २७० | ১৩। মোহিতলাল মজুমদার : বাংলার নব্যুপ : |
| २ । | ব্যিষ্ঠান্ত্ৰের গ্ৰন্থাৰ্কী (সাহিত্য গ্ৰন্থাৰ্কী বিভীৱ ভাগ) | · |
| | বস্ত্ৰমতী সাহিত মন্দির রাজসংকরণ : পু: ৮২ | ১৪ স্থারেশচক্র সমাজপতি সঙ্গতি বছিম-প্রসঙ্গ : ১৫৭। |
| 0 | वै : गुः १ | se की : शृ: २१०। |
| 8 1 | હ્યે : જું: 58 | ১৬ বহিষ্যক্তের সাণিত্য-গ্রন্থাবলী প্রথম ভাগ: পৃ: ১৭০। |
| 4 1 | લે : ગુરુષ્ટ | ১৭ विषयभाषाः पृः ३४-५०२। |
| | હ્ય : 9:58 | ১৮ বিশিনবিহারী ওপ্ত : পুরাতন প্রাস্থ বিভীয় প্রায় : |
| 91 | હ્યા ક જુંડન | क्लिकांछ। ১৯२७ : नुः ১৯৪-८। |
| 1 | હો : બં: ১১ | ১১। বৃদ্ধিমচলের সাহিত্য প্রছাবলী বিভীর ভাগ : পৃ: ৩৬১। |
| 3 1 | હ્યે : જુ: ৬૧ | २ । विश्वप-व्यत्रकः पृः ७०७-८। |
| 3-1 | હે : ઝું: ৬৬ | ২১। বৃদ্ধিদচক চটোপাধ্যার ঃ বিবিধ (সাহিত্য পৃথিবদ সং)। |
| 22 1 | લે જું: ૧૭-৪ | কলিকাতা ১৯৪১ : পু: ১৮৭। |

বীবু

অমিত বস্থ

কাগজ কাগজ বাশি বাশি নাম আদার খণ বাতারাত খোঁজ কথোপকথনে কাটাই দিন, জমা ও খরচ মিলিরে করিরে মাধার ঘাম বিশ-ভাউচার সাজিরে-গুছিয়ে মিটিরে দাম। অতি মিনিটের অতি জানা-পাই স্থদে ও মৃলে চুকিয়ে ভবেই ছুটির বাভাস লাগাই চুলে, সে ছুটি মরবে দেওরালের চাপে ডাইনে-বামে সে ফুল বৰবে আন্তাবলের বুলোর বামে ? অৰ্থচ সিদ্ধু নেচে উত্তাল ছু' বাহু ভূলে मिर्दे निर्देन वानिशाष्ट्रि-कृत्न छेठेरव कृत्न, টেউ ছেঁকে ছেঁকে বিশ্বক কুড়িয়ে ছছনে ভারা ফিরবে ক্লান্ত খুশিতে উথলে কুধার সারা। ছুপুরের ছায়া বিকেলের মাঠে শিকার সেরে হড়িয়াল ডাক বুনো তিভিন্ন সরাল মেরে, আবংৰ স্থবের অন্সরে স্থবা-ওম্ব-সাকী দুরে সাড়া দেবে পাহাড়ের কোলে গানের পাথী। বকুলের ফুল ঝরে টুপ টুপ কোলের কাছে নিকটে উক নিবিড় গুমের ইসারা আছে, ৰাত গাঢ় হ'লে গাছেৱা ঘূষোলে আকাশ জাগে कूरनद भ्वांना करद कांत्र ज्ञांत्म कारव नारम ।

यञ्जमानव ना यञ्जरम्वछ। १

তক্ষণ চটোপাধ্যায়

িথবা নানা স্পাতির লোক কলকারথানার রহস্ম শার্ও করবার জন্তে এক শ্বাধ উৎসাহ ও প্রবোগ পেয়েছে. তার্থ একমাত্র কারণ বন্ধকে ব্যক্তিগত স্বতন্ত্র স্বার্থসাধনের উদ্দেশ্মে ব্যবহার করা হর না। শামরা শামানের লোভের জন্তে বন্ধকে দোব দিই, মাতসামির জন্তে শাস্তি দিই তালগাছকে। —রবীক্রনাথ (রাশিয়ার চিঠি)]

ব্ৰুক্ণনীল বা সনাতনপত্নী বলতে বা বোঝার, লোকে
সাধারণত সেটা পছল কবে না। সমাজে বহুণনীলতার
কার নেই। অথচ আধুনিক চিন্তালগতে সনাতনপত্মার অভিছ লেখতে পাওয়া বার নানা দিকে। এমন কি আধুনিকপত্নী বা প্রোতিপত্মীদের মধ্যেও কেউ কেউ আচমকা একটা হা খেরে বা অন্ত কোন কারণে রাভারাতি ইতিহাসের দিকে পিছন কিরে সনাতনপত্মার গুল গাইতে গুলু করেন। বহুণনীলভা কেউ পছল করে না অথচ তার অভিছও খেকে বাওয়া এই ক্ষের মধ্যে সম্পর্ক আছে। আধুনিক বহুণনীলতার ইতিহাস হচ্ছে প্রোতনীল গুণতান্ত্রর অর্থাৎ সমাজভাত্মিক চিন্তাগারার সমস্ত রকম অগ্রগতি ও সাফল্যের বিরোধিতার ইভিছাস।

এডমণ্ড বার্ক ফরাসী বিপ্লব সম্পর্কে বা বলতেন আন্তকের সনাভনপদ্মীর। কল বিপ্লব সম্পর্কেও সেই ধরণের কথাবার্ত্ত। বলেন। সমাজতত্ত্বের দেশে বিজ্ঞান ও বছকৌশলের জভাবনীর কীর্ভি দেখে আঁথকে উঠছেন তাঁরা, বসছেন সেই বন্ধসন্তাতা মাছবের পক্ষে সমূহ বিপদ। কারণ মায়ুব সেধানে বন্তু-দানবের দাস হয়ে প্রকৃতির ক্রমামুগতার সঙ্গে পাল। দেবার ক্রনে জ্ঞান-বিজ্ঞানের ক্রমবিকাশের দিকে বেতে তাঁবা নাবাজ। অভীতের সামনে বর্ত্তমানকে তাঁরা এমন ভাবে আলাগা করে খাড়া করতে চান বেন পচা-ধ্বসা আধুনিক যুগ গৌরবম্ব প্রাস করে ফেলার চেষ্টা করছে। এই ধারণাটি মধ্য শ্রেণীর কিছু বৃদ্ধিজীবীর মধ্যেই বেশি 'দেখা **যায়। তাঁরা সাননে** সেকালের মধ্যে মুধ গুঁকে স্বস্থি পেতে চান। সমাজের অগ্রগতি তীলের মধ্যে এই ধরণের নেভিবাচক প্রতিক্রিয়া দেখা দেয়। সপ্তদশ শতাব্দীর ইংল্যাপ্ত অষ্টাদশ শতাব্দীর ফ্রান্স এবং আধুনিক সোভিয়েত ইউনিয়নে মান্থবের গণভান্ত্রিক অধিকাবের বাচাই করেন। তাঁয়া আইনের বদলে কভটা শক্তি প্ররোগ করা হোল বা চিরাচরিত প্ৰথাৰ বদলে কভ বৰ্ষৰ ভাবে নতুন ধাৰা চালু কৰা হোল ভাই দিয়ে। এঁদের চোখে মার্কিণ ও সোভিয়েত ব্যবস্থা ছুই কুৎসিত কিছ সোভিয়েত আরো অনেক বেশি কুৎসিত। এখানেই শেব নয়। ভাঁদের কেউ কেউ শেব পর্বস্ত এই মতে ফিবে বান বে মায়ুবের প্রকৃতি কিছুতেই বদলার না। এমন কি সাম্যবাদী সমাজেও नत्र। काँवा वरनन, माञ्चव क्वानक चनवारी ও विद्धाही धवर ৰুদ্ধিবুদ্ধির ৰতই চাব করা হবে ততই বি ঢালা হবে 'নিহিলিজনে'র আওনে। বৰ্ণৰতা মাছবেৰ বভাৰজাত এবং কোন ৰক্ষ নতুন नामानिक পরিবেশেই তা বদলার না। এই সম্পর্কে মার্ক্র এলেলন लिनित्न वक्तरा वान मिरब्र थरेहेकू वला बाद वि चानिय नामावात्त्व ষুগে মানুৰ কিছুডেই ব্যক্তিগত সম্পত্তি মানত না। ব্যক্তিগত

সম্পত্তির বিক্লছে ভার অভাব বিজ্ঞোহ করত। ব্যক্তিগত উৎপাদনের বুগে সেই প্রকৃতি আন্তে আন্তে তার বদলে গেল। তথন তার ধ্যান ধারনার রাজ্য দখল করে নিল ব্যক্তিগত সম্পত্তি। তেমনি সমাজতত্ত্বের সমবাহিক পরিবেশেও মানুষ্বের কৃতি প্রকৃতি নতুন রূপ নিতে বাধ্য এবং নিজে।

মামুবের প্রকৃতি বদলার কি না সেটা এ প্রবন্ধের আলোচ্য বিষয় নর। এখানে আলোচ্য মামুবের সমাজে যন্ত্র বিশেব করে আটোমাটিক বা ব্রংচালিত বল্লের ভূমিকা। বন্ধীকরণ ও ব্যংচালনা মামুবকে যন্ত্রের দাস করে এবং মামুবকে যান্ত্রিক করে কেলে নাকি মামুবই যন্ত্রকে নিজের স্কুম তামিল করতে বাধ্য করে, এই হচ্ছে মোলিক প্রশ্ন।

সমাজের তথা সভাতার ক্রমবিকান্যে ইতিহাসে স্বচেয়ে বড় বিষয় কী? একথা এমন কি ধনভাত্তিক দেশের ইতিহাস্থেতারাও বীকার করেন বে, সমাজ ও সভাতার ইতিহাস, হচ্ছে প্রধানত উৎপাদন ব্যবস্থার অগ্রসতির ইতিহাস, উৎপাদন কৌন্দের অগ্রসতির ইতিহাস, উৎপাদিকা শক্তিওলির অগ্রসতির ইতিহাস এবং উৎপাদনের ক্ষেত্রে মান্থগের সঙ্গে মান্থবের সম্পর্কের ইতিহাস।

মানুষ উৎপাদনের উপায় উপকরণগুলির উন্নতি করার চেটা করে
নিজের 'র'ব-মুবিধা জারাম-বিরামের জন্তে। বাতে জ্লাসময়ে
জারো বেশি ভোগ করবার জিনিব তৈরী করা বার, বাতে কম
মেহনত করে বেশি উৎপাদন করা বার, এই হচ্ছে তার উদ্দেশ্তে। এক
কথার প্রতিদিন মান্তবের বে সাংসারিক ও সাংস্কৃতিক চাহিলা বেড়ে
চলেছে তা বতপুর সম্ভব মেটাবার চেটা করার জন্তেই মানুষ কল্প
কৌশলের উন্নতি করতে চার। সমাজতান্ত্রিক সমাজে ব্যাপকভাবে
বিজ্ঞানের সাহাব্যে নতুন বন্ত্রপাতি ব্যবহার করে প্রেকৃতিক শক্তিগুলি
একের পর এক জারতে এনে সেগুলির সাহাব্যে নতুন
বন্ত্রকৌশলে উৎপাদন ও প্রথ-সান্ত্রল্য বাড়াবার এবং মানুবের
বাটুনি কমাবার চেটা চলছে। সমস্ত মানুব অংশ নিচ্ছে সেই
কাজে সেই জ্বভাববিহীন সমাজ ও তার সাংস্কৃতিক ইমারত রচনার।
সেই স্বপ্নই দেখেছিলেন শেনিন বেদিন তিনি বলেছিলেন বে
বামন দিন জানবে বেদিন একজন র'াধুনীও বাট্র পরিচালনা
করতে পারবে। ইংরেজ কবি 'উইলিরাম মরিসের স্বপ্নও ছিল
ভাই।

লেনিনের সেই স্থপ্ন সফল হতে চলেছে, সফল হতে চলেছে প্রথমত নতুন ভারসঙ্গত সমাজ ব্যবস্থার কল্যাণে এবং বিতীয়ত বন্ধকৌশলের অপূর্ব সাফল্যের দৌলতে। ,সে দেশে বান্ধর উদ্লাভ ও ব্যবহার কাউকে বেকার করে না বরং ভালের মেহনত হাত্ব। করে, সক্তি ও সংস্কৃতির উন্নতি করে। বন্ধ ও সপ্তম পাঁচ-সালা বন্ধোবন্ধে

জামরা তারই প্রতিচ্ছবি দেগতে পাই। ৬ গ্রিকরনার খন্ডা নির্দেশনামার বলা হরেছিল:

"বস্ত্রকৌশলের আবন্ত উন্নতির জ্বলা, উৎপাদনের মান উচ্চত্তর করার জ্বল্প এবং কাজকর্ম আবিন্ত সহ্লা সরলা করার জ্বল্প বস্ত্রীকরণের বিপুল উৎকর্ম সাধন কবিতে হইবে এবং ব্যাপক ভাবে স্বয়ং চালনা ব্যবস্থা চালু কবিতে হইবে।"

এখানে কাজকর আরও সহজ সরল করার উদ্দে**গট ল**ক্ষা করার মত।

এবার নতুন ৭-সালা পরিকল্পনার কথা ধরা বাক। পরিকল্পনার বলা হয়েছে:

সাম্হিক ষত্রীকরণ ও স্বয়ংক্রিয়করণ স্বর্থনীতির উন্নতির প্রধান ও নিরামক উপার এবং তাহার ভিত্তিতে প্রমের উৎপাদিকা শক্তি নূহন ভাবে বৃদ্ধি পাহবে, উৎপাদনের পঞ্তা ধরচা ক্মিবে এবং উৎপন্ন প্রবের গুণগত উৎকর্ম সাধিত হইবে।

উৎপাদন বৃদ্ধি ও মেহনতী জনতার জীবনধাত্রার মানের উন্নতি সাধনের প্রকৃষ্ট কারণ হিসাবে প্রমের উৎপাদিকা শক্তি, পরিকলিত যত্ত্রীকরণ ও স্বরংক্তির ব্যবস্থা প্রচলনের ভিত্তিতে যথেষ্ট পরিমাণে বৃদ্ধি পাইবে।

মেচনতী জনতার জীবনধাত্রার মানের উন্নতি সাধনের সঙ্গে সৈনিক কাড়ের ঘণী কমিরে দেওরা হবে (দৈনিক ৫ ঘণী) এবং সপ্তাহে হুদিন প্রো ছুটি দেওরা হবে । অর্থাং মায়ুষ জনেক বেনি অবসর পাবে জান সকর ও সংস্কৃতিচর্চা করার জক্তে। তথন তারা সকলেই পলিটেকনিক্যাল নিক্ষা গ্রহণ করবার সমর পাবে। জে ভি স্তালিন তাঁর "গোভিষেত ইউনিয়নে সমাজভন্তের অর্থনৈতিক সমস্যাবলী" বইখানিতে এই রকম ধারণাই দিরে গিরেছেন সোভিষেত দেশের আগামী সমাজ ও সংস্কৃতি সম্পর্কে। তিনি বলছেন বে সমাজভন্তের মৃত অর্থনৈতিক নিয়মের প্রেথম অংশটি হচ্ছে সমগ্র সমাজের প্রতিনিয়ন্ত বর্তমান সাংসারিক ও সাংস্কৃতিক চাহিদার যভদ্ব সম্ভব পরিভূষ্টি সাধন। কি ভাবে সেটা চবে সেকথা বলতে গিয়ে তিনি লিখছেন:—

শ্রমন্ত্রীর জনতার অবস্থার মৌলিক পরিবর্ত্তন না করে সমাজের মামুখের সাংস্কৃতিক মানের বেশ ভাল রকম উন্নতি করা বাবে এ ধারণা ভূল। তার জন্ম সর্বপ্রথমে দৈনিক কাজের সমর অন্তত ৬ ঘণ্টার এবং পরে ৫ ঘণ্টার কমিয়ে আনতে হবে। তারপর আবিশ্রিক পলিটেকনিক্যাল শিক্ষার প্রেবর্তন করার দরকার হবে, বাজে সমাজের লোকেরা নিজেদের পছ্লদস্ট পেশা বেছে নিতে পারে, সারা জীবন একট পেশার বাধা না থেকে।

সাম্যবাদী সমাজের সাংস্কৃতিক জীবনের এই হচ্ছে নীলনক্সা। স্তালিন বে পূর্ণাবয়ব মামুবের স্বপ্ন দেখেছিলেন সে মামুবকে সারা দিনে মাত্র করেক ঘণ্টা নির্দিষ্ট কাজ করতে হবে। বাকি সমস্ত সম্মটাই সে সংস্কৃতি ও জ্ঞান চর্চার শিছনে ধরচ করতে পারবে। স্বাংক্তির ও অভান্ত বল্লপাতিই ভাকে এনে দেবে সেই স্ববোগ।

বাশিয়ার চিঠির প্রথম পাতাতেই ব্রীক্রনাথ লিখছেন:

^{"চিরকালই} মানুষের সভ্যতার একদল **অধ্যাত** লোক থাকে, কাদেরই সংখ্যা বেশি, তারাই বাহন। তাদের মানুষ হবার সমর নেই : কম পরে, কম শিখে, বাকি সকলেব পরিচর্ধা করে। তারা সভ্যতার পিলস্কল, মাধার প্রেদীপ নিয়ে ধাড়া পাঁড়িয়ে থাকে, উপরের সবাই আলো পার, তাদের গা দিবে তেল গড়িয়ে পড়ে। অথচ উপরে না থাকলে নিভান্ত কাছের সীমার বাইরে কিছু দেখা বায় না। কেবলমাত্র জীবিকা নির্বাহ করার জন্ত তো মানুবের মনুবাড় নর ? একান্ত জীবিকাকে অভিক্রম করে তবেই তার সভ্যতা। সভ্যতার সমন্ত প্রেষ্ঠ ফ্সল অবকাশের মধ্যে ফলেছে।

ক্ম খাওৱা, ক্ম পরা, ক্ম শেখা, এই ক্মের পালা সাক্ষ করে পর্বাপ্তের বন্দোবস্ত করা এবং সেই সক্ষে অবকাশের সুযোগ বাড়াছে পারলে ভবেই গোটা দেশের সমস্ত মানুষ, মানুষের মর্থানা নিয়ে বাঁচতে পারবে এবং সেই সক্ষে জাতীর সাংস্কৃতিক সম্পদ স্পৃষ্ট ক্রতে পারবে এবং সেই সক্ষে জাতীর সাংস্কৃতিক সম্পদ স্পৃষ্ট করতে পারবে বিশ্বসংস্কৃতিকে করতে পারবে সমৃত্তর। বিজ্ঞান ও বন্ধকৌশলের উন্নতি এবং উৎপাদনের স্বার্থে সেগুলির বারহারই তার একমাত্র উপায়। পুরাতন পৃথিবীর জ্বাজীর্ণ জ্ঞায় স্মাজকে উল্টে দেবার জ্যাকিমিডিসের লিভার হচ্ছে এই সর অভিনব কলকৌশল। বিদ্ধ মানুষের এইসব নতুন কীর্তিকে অভিনদন না জানিরে একদল বৃদ্ধিনীবী প্রশ্ন ভুলছেন বে এসবে মানুষের স্থা কি বাঙরে গ্ 'সাইবার্নে টিকস' শক্টি তাঁদের কাছে তুঃব্যের সামিল।

'সাইবার্ণোটিকস' শক্ষটি এসেছে গ্রীক শক্ষ কাইবার্ণোটিস থেকে, বার মানে মাঝি অর্থাৎ চালার্ক। স্টিশ বৈজ্ঞানিক এসলিলে স্টোমেশন বা শুয়ং চালনার সংজ্ঞা দিছেন এই ভাবে:—

এমন ধরণের উচ্চারের স্বয়াক্রির বন্ত্রপাতি বা পদ্ধতির প্রবর্তন করা বা মান্ত্রের কারিক পরিশ্রম এবং খুটিনাটি নিংস্ত্রণ কার্ব আনেকাংশে বাদ দিয়ে দেবে।

শুধু যন্ত্ৰীকরণে মেহনত কমে গেলেও তদাবক বা নিমন্তৰের দাহিছ থেকে যায়, পদে পদে যন্ত্ৰের কাজের প্রস্তোকটি থাপের দিকে দৃষ্টি রাখতে হয়। বায়ংক্রিয় ব্যবস্থায় হন্ত নিজের কাজের জনাবক নিজেই করে! মানুষের শুধু দায়িছ থাকে হন্ত ঠিক মন্ত চলছে কি না সেইটুকু দেখা।

একটি উদাহবণ দিই। সোভিয়েত দেশে কে 'শেমাখা' নামে একটি মোটর জাহাজ আছে। সেটি বখন সমুদ্রে পাড়ি দেয় তখন ভাতে হাল ধরবার কোন লোক খাকে না সেই কাজের দায়িও রয়েছে একটি কলের উপর; বার নাম 'জাইরো-হেলম্সম্যান।' জাহাজটি পথজ্ঞ হলেই 'জাইরো কম্পাগটি' (দিগদর্শন হল্প) এক বৈহ্যাতিক কৌশলে জাইরো-হেম্সম্যান বা হল্পমাঝিকে সেই খবর পৌছে দেয় এবং বল্পমাঝি স্বয়াকিয় বল্পকোশলে জাহাজটি ঠিক পথে কিবিয়ে আনে।

আর একটি দৃষ্টান্ত। উক্রাইনের একজন বৈজ্ঞানিক এমন একটি ইলেকট্রনিক যন্ত্র উদ্ভাবন করেছেন বা শরীবের বে গোন আরগার বক্তচাপ ধরে দিতে পারে এবং হুংপিণ্ডের স্পক্ষন ও ধ্বনি রেকর্ড করে, হুংপিণ্ডের কাজে গালতি থাকলে তা জানিয়ে দেয়। এমন কি নেই অস্প্রভাব চিকিৎসা পদ্ধতি সংক্রাপ্ত তথ্য দাখিল করে। ভাই বন্ধটিৰ নাম "ব্যাক্রিয় ভাজার।"

উলাচবণ ছটি থেকে বোঝা বার, সোভিয়েত থেলে মাতুৰ শ্বংক্রির

হিসাবে। মান্ন্ব একটা কাজ ঠিক করে দিছে এবং বান্ত্রিক "মন্তিক" মান্ত্রের ইছা ও নির্দেশমন্ত সেই কাজটি নির্দ্দুলভাবে করে দিছে অর্থাৎ মান্ত্রের মেচনভটা হন্ত্র করে নিছে। ভাই কার্ল মার্ন্ত্র্যর করে দিছে এবং মান্ত্রের মেচনভটা হন্ত্র করে নিছে। ভাই কার্ল মার্ন্ত্র হন্ত্রের করে একার্ন্ত্রের মান্ত্রের ইন্ত্রির করে একার মান্ত্রের ইন্ত্রের করে একার মান্ত্রের ইন্ত্রের করে একার দেওলি আমানের ইন্ত্রের চেরেই অনেক ভাড়াভাড়ি সাড়া দের। আসলে সেগুলি যন্ত্রের কান্ত্র নির্দ্ধর করবার ইন্তের্ট্রনিক হন্ত্র। এই ধরণের একটি ইন্তেকট্রনিক হন্তর্জের গণনাযন্ত্র আমানের ইন্তিটিটটকে দেশরা হবেছে সোভিয়েত সরকারের পক্ষ থেকে। এই যন্ত্রিটিটটকে দেশরা হবেছে সোভিয়েত সরকারের পক্ষ থেকে। এই যন্ত্রিটিটটকে দেশরা হবেছে প্রান্ত্রের কর্মানের রাধ্যের পারে, সেগুলি দিয়ে মান্ত্রের নির্দ্ধেশমত হিসার করে দিতে পারে বে কোন বিষরে। ভার অরণ্ডান্তিত্ত ভূল হবার ভো নেই। মান্ত্রের অরণ্ডান্তি ও মন্তিক্রের ভূল ক্রটি হন্ন কিছ অরংক্রের গণনাধন্ত্রের হন্ত্রনা।

সোভিয়েত দেখে মাহাৰের পরিশ্রম কমানো এবং উৎপাদন বাড়ানোর উদ্দেশ্রে কারখানা-শিল্পে স্বরংচালিত কলকৌশল বাবহার হচ্চে। লৌহশিলে লোহার চাদরে নির্দিষ্ট মাপের গর্ত করা এবং অস্তান্ত নানা কাজ হল্ল আপনা আপনিই কৰে স্থপাবভাইজার টেলিফোনে ভকুম দিলেই। টেলিফোনের ভকুম অভুসারে বল্পের গণনা ও ম্বরণশক্তি বিভাগ কোন কালটা কি মাপে এবং কতটা করতে হবে সেটা হিসাব করে নের ' ভার পর বোভাম টিপলেই হক্ম মাফিক কাল চলতে থাকবে। স্বরংক্রিয় গণনাম্ত্র দিয়ে আজকাল শিল্প ও অর্থনীতির মানাংক কথা হচ্ছে, জেট বিমানের ইঞ্জিনের নক্ষা ভৈরি স্কোন্ত হিসাবপত্ত করা হচ্ছে, অসবায়ুর পূর্বাভাস দেওর। বাচ্ছে, ৰুকেটের চেয়েও দ্রু ভবেগে রুকেটের গতিপথ গণনা করা বাচ্ছে। সঙ্গে সঙ্গে এই সব কাজের পড়ভা, থরচা হাজার হাজার গুণ কমে যাচ্ছে। অটোমাটিক বোলিং মিলে শ্রমিকদের পার ভারি লোহার ভাল নাডাচাডা করতে হয় না। সে খালি বলে বোডাম টেপে। এমন কি সেধানে বলে বলে সে গল্পের বই বা কোন বই পড়ভে পারে। ৰক্ষের কাঁধে নিক্ষের কাজের ভাবি বোঝা চাপিরে দিয়ে সে থালাস। কালের মধ্যেই দে অবকাশ পার। বন্ত কালে কাঁকি দিচ্ছে বিনা, তার কোখাও কিছু বিকল হয়েছে বা বিগড়েছে কি না সেদিকে নক্তর ৰাণা এইটুকুই ভাব কাজ।

সাইবার্ণেটিকস বিজ্ঞানের প্রথম পূত্র নিবছ করেন মার্কিণ বৈজ্ঞানিক নর্বাট ওয়েইনার। কিছ তিনি স্বীকার করেছেন বে কণ্ডিশগুনিফের সম্পর্কে কশ বৈজ্ঞানিক ইভান পাভসকের শিকাই সাইবার্ণেটিকসের অস্তুনিহিত প্রাণশক্তি। লেনিনগ্রাদেও "সভেৎদানা" নামে বে "ইলেকট্রে। ভ্যাকুয়াম" কারধানা আছে সেধানে ১৯৩৫ সনে কুকুরের একটি বৈছ্যাতিক মডেল তৈরি করা হয় এবং সেই মডেলটিতে বিছ্যাৎপ্রবাহের বার। কণ্ডিশগু রিফের স্বৃষ্টি করা গিছেছিল। তাই থেকে প্রমাণিত হয়, স্বর্গচালিত নিয়্তুণ বজ্ঞের সঙ্গে সাধারণ স্থাবিক প্রক্রিয়ার সাণ্ড আছে। মামুবের দেহে আছে কোটি কোটি (১৫০০ কোটি) স্নায়ুকোর। সেই স্নায়ুকোরের জারগায় প্রধান বজ্ঞে রয়েছে ইলেকট্রনিক টিউর (সরচেরে বজ্ বল্পে ২২।২৩ হাজার পর্বন্ধ টিউর থাক্তে পারে)। মাসুবের দেহে বেমন স্নায়ুকোনি গণনাব্যে। বৈত্যাতিক তার। সোভিয়েত বৈজ্ঞানিক

লেভ গুতেনমাকার বলেছেন—এই ব্যাপারে মান্থ্যের স্বরণশক্তিই বিশেষ করে জরুরী। ইলেকট্রনিক মেশিনের স্মরণশক্তির মান্ত্রের স্বরণশক্তির সঙ্গে সেই ধরণের সম্পর্ক রে সম্পর্ক রয়েছে চোথের সঙ্গে আলোক কোবের বা মাইক্রোফোনের সঙ্গে কানের। এই ধরণের কোন কোন সাদৃগ্য আমরা স্থাষ্টি করতে পারি কিছ ভাই বলে মান্ত্রের মন্তিছের মধ্যে দেব কৈব-পদার্থিক বা কৈব-বাসার্থনিক ক্রিয়া প্রক্রিয়া ঘটে সেগুলি ইলেকট্রনিক মডেলের মধ্যে স্থাষ্ট করার কোন দরকার নেই। মান্ত্রের মন্তিছের গাণিতিক প্রক্রিয়া মিলিরে দিভে পারাটাই আসল কথা।

এই ধরণের ইলেকট্রনিক বন্ধ যে কোন বই-এর লেখা মুখ্যু করে স্বরংক্তির টেলিফোনের সাহায্যে অক্স সহঁরের পাঠকের চোথের সামনে টেলিভিসনের পর্দার সেই লেখা প্রভিফলিত করতে পারবে। বি-ই-এস-এম মডেলের ইলেকট্রনিক কম্পিউটার ১০ মিনিটের মধ্যে আবহাওয়ার বে পূর্বাভাস দিতে পারে সেই কাজ করতে একটি গোটা আবহাওয়া অফিসের ২ বছর লেগে বাবে।

সোভিরেতে বেলগাড়ীর ইঞ্জিনের জন্ম একরকম স্বরংচালিত চালক তৈরি হরেছে বা সব দিক হিসাব করে প্রয়োজন মন্ত গাড়ীর গতিবেগ নিরন্ধণ করতে পাবে এবং গাড়ীর নিরাপত্তা রক্ষা করতে পারে।

আগেই বলেছি, বঞ্চাপ ও হাংপিণ্ডের স্পন্দন হিদাব করবার স্বয়ংক্রিয় যন্ত্রের কথা। হাদ্বোগীর উপর অস্ত্রোপচার করা হবে কিনা এবং উচিত হলে কথন করা হবে, এ সবই সেই যন্ত্র বলে দিতে পারে। স্কতরাং শদ্য চিকিৎসককে কোন নৃঁকি নিতে হয় না।

মান্তবের স্থারুতর অভ্যন্ত নির্ভিরবোগ্য। মন্তিকের কোন অংশ আহত হলে অক অংশ সে কাজে আনাড়ি হলেও সে কাজের দায়িছ নের সাময়িক ভাবে। তার ফলে দেহরপ্রের কাজকর্ম আবার চলতে থাকে। স্বরংক্রির বরের ক্ষেত্রেও অংশ-বিশেষ বিগড়ে গেলে অক্ত অংশ বাতে তার কাজ করতে পারে তার ব্যবস্থা করতে পারলে স্বরংক্রির বস্ত্র আবো নির্ভিরবোগ্য হবে। তা করতে পারলে "বরের মন্তিক" পরিবেশ পরিবর্তনের সঙ্গে নিজেকে থাণ থাইরে নিরে কাজ করতে পারবে। সঙ্গে সজে হাজার রক্ম কাজের অক্ত হাজার রক্মের বন্ধ না করে, থালি বিভিন্ন অংশ অদল-বদল করে যাতে একই মতেলের থাবা নানা রক্ম কাজ করা বার, সেদিকে চিন্তা করতে হবে এবং গোটা কারথানার সমস্ত কাজের সামগ্রিক স্বরং চালনা প্রবর্তন করতে হবে। এই হচ্ছে সাম্যবাদী সমাজে উত্তরণের অক্ত সমাজ্যাদী সমাজের দাবী।

কিছ যন্ত্র কি সন্তিটে মন্তিকের জারগা দখল করবে? হার্ভার্ড বিথবিজ্ঞালরের জ্ঞবাপক এডমণ্ড বার্কলে স্বয়ংক্রির বন্ধগুলিকে "বিরাট মন্তিক বা চিন্তালীল বন্ধ" জাখা। দিরেছেন। লণ্ডন বিখবিজ্ঞালরের জ্বযাপক জন ইয়ং-এব মতে মামুষের মন্তিক হচ্ছে একটি প্রকাশু গণনাবন্ধ বার মধ্যে ররেছে, ১৫০০ কোটি স্নায়ুকোব। এঁরা ছজ্জনেট মামুষের মন্তিক জার ব্যন্তের মন্তিকের ধর্মসত পার্থক্য উপোক্ষা করে তবু বাহ্যিক সান্ধগুটি দেখছেন।

প্রথমতঃ স্বর্থকির বছের শ্রষ্টা মাত্র্ব, তার মালিকও মার্থ্ব

প্রয়ক্তির বস্তু তার শ্রষ্টার ভ্রুম তামিল করে। কিছু মামুবের মাস্তক বহু হাজাব বছুবের প্রাকৃতিক বিবর্তনের পরিণতি। সবচেয়ে নিখুঁত বান্ত্র সঙ্গেও মামুবের মন্তিকের তুলনা করতে বাওয়া বাতুলতা। কারণ বল্পের মান্তবের মাধার মত চিস্তা করার, উপলব্ধি করার, জীবনকে বিশ্লেষণ করার, অভিজ্ঞতার সংশ্লেষণ ও সমীকা করার এবং আগামীকালকে ভবিষ্যৎ-দৃষ্টি দিয়ে দেখতে পাওয়ার ক্ষমতা নেই। মামূবের প্রজ্ঞা আছে, বৃদ্ধি আছে, আছে করনা করবার ক্ষমতা। কিছ বন্ত বন্তুই, স একটা স্বয়ংক্রিয় কৌশস মাত্র। অনুগত ভূত্যের মন্ত দে কাঞ্চ দিলে, ভা ঠিক মত কবে দেয় চোৰ বুঁজে। মাতুষের ভুকুম না পেলে তার অবস্থা গাঁড়ায় একটা অচন জড়স্তুপের মত। সে অংক করতে পারে কিছ সাহিত্য রচনা করতে পাবে না, যন্ত্র-কৌশলের তথ্য ভর্জমা করতে পারে কিছ উপকাস অমুবাদ করতে পারে না। তার স্থৃতির কোঠার কিছু শব্দ আর কবিতার ছব্দের নিয়ম, সংখ্যায় লিপিবছ করে দিলে সেই নিয়মে সে কবিতার লাইন সাজিয়ে দিতে পারে কিছ মূল কবিতা বচনা করতে পারে না। ছকে দেওরা গণিতের সমস্তার সমাধান সে করতে পারে কিছ নতুন সমস্তা বার করতে পারে না।

তাহলে দেখা বাছে বে শ্বয়াক্রির বন্ত আগ বে কোন বারের
মতই মামুবের শ্রমের একটি হাতিরার মাত্র। নির্দিষ্ট সীমার মধ্যে
দে মামুবের মন্তিকের একটি প্রবিদ্ধন মাত্র, বেমন প্রবর্জন হাছ্
হাতৃড়ি, মামুবের •হাতের। ধনতান্ত্রিক ছনিরার কোটি কোটি
বেকার আছে, মুনাফা নিকারের রেবারেবি আছে বলে দেখানে বন্ত্র
এবং আরো বেশি করে শ্বয়াক্রিয় বন্ত্র শ্রমিকের শক্র; কারণ বন্ত্র
বসানো মানেই কিছু লোক ফালতু হয়ে পড়া। বন্ত একাই তো
তাদের অনেকের কাজ করে দেবে। কিছু সমাজতন্ত্রের ছনিয়ার
বেকার সম্প্রা ও গলা-কাটা প্রতিদ্বিতা নেই বলে বন্ত্র সেখানে
মানুবের বন্ধ ও সহযোগী। আসল কথা বন্ত্র নিজে ভাল বা খারাপ,
একথা বন্ধার কোন জর্ম নেই। কে বন্ত্র ব্যবহার করছে এবং
কি উ.দ্বল্পে ব্যবহার করছে, তার ওপরই বন্ত্রের গুর্ভাণ্ড নির্ভর্কর। দৃষ্টাস্ত দিই। বুটেনের ফাউণ্ডী ওয়ার্কার্স জার্গাল লিখছে:

"বৃটিশ শ্রমিকরা জানতে চার বে কারধান। স্বরংচালিত হলে ১০ জন শ্রমিকের মধ্যে ৮ জনের বদি চাকরী বার ভারতে সেই কারধানার তৈরি জিনিব কিনবে কারা ?"

করাদী পত্রিকা "ভিয়ে উজিয়ে" মস্তব্য করেছে:-

"আমবা স্বয়্যক্তির ও অকান্ত নতুন বন্ত্রপাতির শিকার হতে
বাজি নর। উৎপাদন বৃদ্ধির পরিণামটা বে কী তা আমাদের
জানা আছে: মেহনতের তুলনার মজুবী কমা আর বেকার হওরা।"
এক্ষেত্রে নজুন বন্তুকোশল বে মানুবের আত্মর্যাদা নিরে
মানুবের মত বাঁচার পথে বাধা দিয়ে মানবাত্মার অপমান করছে
দে কথা কেউ অস্বীকার করবে না। কিছ কেন হচ্ছে এ
রকম ? হচ্ছে এই জত্তে বে, ধনতাত্মিক সমাজের হর্তাক্তা
বিধাতাদের অপমালা ও গায়ত্রী-মন্ত্র হচ্ছে মুনাফা। মূলধনের
মালিক ও শ্রমিকের বে সম্পর্ক সেধানে তো উৎপাদনের উন্নতির
পথে বাধা স্থাই করে। শ্রমিক হাটাই করে এবং মজুবী
কমিরে সেধানে মুনাফার টাকা নতুন বিভ্রক্তির সংখ্যাও

বেড়ে চলার উংপর জিনিব বিক্রী করার বাজার ক্রমণ সংস্কৃতিত হতে থাকে। কারণ বেকার বত বাড়ে কেনবার লোক ভছেই কমে। ফলে বাজারে মাল পড়ে থাকে। বাস্তায় নগ্নদেচ, নগ্নদ লোকের। পুরে বেড়ার কালের সন্ধানে, তাকিয়ে থাকে লুক দৃষ্টিতে দোকানের শো-কেনে সালানো চবেক বৰুমের ভাষা কাণ্ড জুতার দিকে। জিনিব বরেছে, চাহিলা বরেছে ভার চেম্বেও অনেক বেশী, কিছ মাল বিক্ৰী হয় না । সেই মাল পেৰ প্ৰস্তু হয়ত পচিয়ে, হয় कृडेभार्च नम् "Reduction sale" এ বেচতে হয় विश्व उत् बांब কাণ্ড জামা নেই সে কাপ্ড জামা কিনতে পাবে না। বার জুভা নেই তাকে বৈশাৰের প্রচণ্ড গ্রমে কলকাভা সহরের পাঁচের রাস্তান্ত পা পুড়িষে হাটতে হয়, মুনৌরীর প্রচণ্ড শীতে গা হাত পা অসাভ ছবে গেলেও সে গ্ৰম জামা কিনতে পাৰে না। দোকানে দোকানে কামা সাকানো থাকা সত্ত্বেও। কার্থানার মালিকের পক্ষেত্র নতুন ষ্ম্রকৌশলের পিছনে মজুব-মারা টাকা চেলে ষ্ডটা লাভ হওয়া উচিত ছিল তা হয় না। তবু সেই বিষাক্ত রাস্তা ছাড়া তাঁব গতি নেই, কারণ টাকা ছাড়া তিনি কিছু চিনতে শেখেননি। বেকারের দল যত কাঁপবে মজুরী নিয়ে দরাদরি করার ক্ষতাও মালিকের তত বাড়বে। কিছ পণ্য বেচবার বাজার না বাড়াতে পারলে মজুৰী কমিয়ে বা ছাঁটাই করে তাঁৰ বাঞা পূৰ্ণ ছ'তে পাৰে না।

দেশের লোকের তো কেনার ক্ষমতাই নেই। স্থতথা তথন ভাঁর মতলবটা সমব্যবসায়ীকে পথে বসাবার দিকে বায়। ভিনি ৰে মাল তৈবি কৰেন দেই মালের অক্ত ব্যবসায়ীদের চেয়ে সম্ভার মাল বাজাবে ছাড়:ত পারলে তাঁর বাজার বাড়ে। নতুন বস্তুকৌশল লাগাতে পাব্ৰল উৎপাদনের পড়তা ধরচা কমে। তাই বিনি বন্ধকৌশলের পিছনে বত টাকা ঢালতে পারেন ভিনি ভত বেশি করে চুনোমাছ জাভীয় ব্যবসায়ীদের শালবাতি জালতে বাধ্য করে নিজে রাঘব-বোরাল হরে দাঁড়ান। কিছ লোভের কোন শেষ নেই। প্রতিমৃশ্বীদের কাবু করেও দেশের সাধারণ লোকের শভাব অন্টন বাড়তে থাকার দক্ষণ, সব মাল তিনি দেশে বেচতে পারেন না। তথন বিদেশী বাজাবের দিকে তাকান তিনি লোলুপ দৃষ্টিতে। শেষ পর্যস্ত দেশের মধ্যে তাঁর তৈরি মালের চাছিদ। থাকা সত্ত্বেও সেই মাল বিদেশে বপ্তানী করেন, মুনাফার অংশ তিনি অহু ৪ বাখার চেষ্টা করেন। বিদেশে গিয়ে তাঁর মাল অক্ত দেশের রপ্তানী করা মালের সঙ্গে বাজারে বদি টেক্কা দিতে পারে ভবেই তাঁর লাভ। সেই পালা ছুটে জেতবার জন্ত পড়তা ধরচা আরো কমাতে গিরে তিনি মজুবী আবো কুমাতে চেষ্টা করেন আরো লোক ছাঁটাই কবাব শাসানি দিয়ে। না হলে নিজের মুনাফার অংক ঠিক রেখে বা বাড়িয়ে অন্ত দেশের রপ্তানীকারকদের চেতে সম্ভায় তিনি বিদেশী বাজাবে মাল ছাড়বেন কি করে? স্করাং দেখা যাছে বে, ধনভান্তিক ব্যবস্থা অনুর্গণ উৎপাদন বাড়িয়ে বেতে পারে না : সেই সমাজের পাণারা বথন মজুবদের বেল্ট কবে পেটের গর্ত ছোট করতে ছকুম क्रिय छिर्भावन वाष्ट्रांच श्लोगान छाष्ट्रण, त्रही इत्क मध्युवस्य (धाँका দেবার চেষ্টা মাত্র। সেজতে বন্ধকশিলের পূর্ণ ব্যবহার করাও ভার পক্ষে সম্ভব ময়। বে সমাজ সমস্ত মাহুংবর চাহিদা মেটানকেই স্বচেরে বড় কর্ত্তব্য মনে করে বস্তুকৌশলের পূর্ণ ক্রথোগ নিডে পারে সেই বদি সে ধনতাপ্তিক ব্যবস্থাকে সরিমে দিয়ে নিজের জাবিপত্য

কাষেম করতে পাবে। ইতিহাসে এই ধরণের বন্ধ নজির আছে। ভামযুগের মিশরীয় স্বৈরভন্ত:ক লৌহযুগের আবির্ভাবের পর গ্রীদের অপেকাকৃত কারসকত সমাজের জন্মে জারগা ছেড়ে দিতে হরেছিল। ভারপর মধ্যযুগের শেবের দিকে ভারি মন্ত্রণাভির উদ্ভবের ফলে কুটির-শিল্পভিত্তিক সামস্ভতান্ত্ৰকে নতুন আগৰুক ধনতয়ের হাতে ক্ষমতা তুলে দিতে হয়। সেদিনকার সেই প্রগতিশীল ধনত**ন্তের** কা**ছে আজ** "প্রাচুর্য" বা অবত্যৎপাদন একটা ভয়াবহ সমস্যা হয়ে দাঁড়িয়েছে। অবভাবের জমিতেই তার ফদল ফলে, ছডিক হলেই তার লাভ। প্রাচুর্ষের "বিপদ" দেখা দিলেই সে কৃত্রিম কৌশলে অভাবের স্মষ্ট করে। তাই ধনভান্ত্রিক সমাজে যন্ত্রকৌশল শ্রমিকের পক্ষে বস্তুদানব। সেই সমাজ ব্যবস্থাকে নতুন সমাজতান্ত্ৰিক ব্যবস্থার হাতে পরাক্ষর বরণ করতে হবে, এই হচ্ছে ইতিহাসের আমোঘ বিধান। সেই নতুন সমাজে সমস্ত লোকের ক্রয়ক্ষমতা থাকার ফলে দেশের বালারে কোন সময়েই চাহিদার অভাব থাকবে না, এবং মজুরী দিনকে দিন বাড়বে বলে চাহিদাও বেড়ে চলবে। সঙ্গে সঙ্গে বস্তুকৌশলের কল্যাণে খাটুনি কমতে থাকবে। মস্কোর বল বেয়ারিং কারধানায় বছর চবিবশেক আগে প্রথম স্বয়ং চালনা বৈঠক হয়। তারপর সেখানে একটি 'বান্ত্রিক হাত' তৈরি 'হয় ভারপর আদে যুদ্ধ। যুদ্ধের পর নতুন উত্তমে স্বয়ং চালনার দিকে মন দেওয়া হয়। আৰু সেখানে গেলে দেখতে পাবেন, স্থপবিসব পরিজ্র শপশুলিতে ফুটস্ত লোহার বা তেলের হুর্গন্ধ নেই, অলিগলি দিয়ে কোন টুলির চলাফেরা নেই, কোথাও লোহার বড়ভি পড়ভি ছাঁটাই গাদা হয়ে পড়ে নেই। লোক নেই, জন নেই, কোন আওয়াক নেই। মনে হবে ষেন এক দৈত্য ঘূমিয়ে আছে।

কিছ কারখানার কাজ বন্ধ হরনি, মজুব ছাঁটাইও করা হরনি।
১৯৫৫ সালের তুলনার উৎপাদন বেড়েছে ৬০ ভাগ। চোখের
অলক্ষ্যের মামুবের হুকুম তামিল করে বাছে। স্বর্য়ক্তিরতার
দক্ষণ বাদের সেখানে আর দরকার নেই ভাদের অল্প কাজ দেওরা
হয়েছে মাইনে বাভিয়ে। আর বারা নতুন করে ভালিম নিয়ে
স্বর্যক্রের বস্ত্রের উপর ধ্বরদারী করছে, তাদের মাইনে বেড়েছে
দেড়গুণ, বিশুণ। কাল তারা ছিল কারিক-শ্রমিক। আজ ভারা
দারীরের পরিশ্রমের বদলে মাধার পরিশ্রম করেই খালাস অর্থাৎ
বল্পকাল ও স্বর্গুলোনা দৈহিক ও মানসিক পরিশ্রমের ব্যবধান
ক্রমশ: কমিয়ে আনছে। এটা মামুবের মর্যাদা ও গোরব বাড়াছে
না কমাছে? বল্পের দেশিতে সোভিয়েতের মানুবের অবসর সমর
বাডবার ফলে সেই অবসরের জমিতে জান-বিজ্ঞানের বে সব নতুন
ফলল ফলবে, তা মান্ধুবের মর্বাদা বাড়াবে না কমাবে? সে ক্ষেত্রে
বল্পানৰ না দেবতা ?

উনবিংশ শতাকীতে বন্ধীকরণের গভিবেগের তুলনার আক্রেক ধনতান্ত্রিক সমাজে স্বর্গালনার গভিবেগ বেশি হবে। কারণ আক্র বিজ্ঞানকে সচেতনভাবে উৎপাদনের কাজে লাগান হছে। কিছ স্বর্গালনা ব্যবস্থা যত বেশি চালু হবে ধনতন্ত্রের নড়বড়ে অবস্থা ততই বাড়তে থাকবে। বিভিন্ন ধনিকের মুনাফার হারের মধ্যে পার্থক্য বাড়তে থাকার ফলে বাজারে তাদের পরস্পারের সম্পর্কের মধ্যে স্মন্ত্র্ ভাব থাকবে না। কাজে কাজেই গলাকাটা প্রতিব্যক্তিতা হরে উঠবে আবো সঙ্গীন। সেই সঙ্গে শিক্ষের অভ্যুন্নত বন্ধকোশল এবং অপেক্ষাকৃত পশ্চাৎপদ কৃষিব্যবস্থার মধ্যে কাঁকটা আরো বেড়ে বাবে। এই ভাবে ৩ধু কোম্পানীতে কোম্পানীতে কেন, জাতীয় অর্থনীতির বিভিন্ন ক্ষেত্রের মধ্যে বৈষম্য দেখা দেবে। ওদিকে ধনতান্ত্রিক ছনিয়ার বিভিন্ন দেশের অগ্রগতির মধ্যে অসমানতা বাড়তে থাকবে, দূরত্ব বাড়তে থাকবে অত্যুন্নত শিল্পপ্রধান দেশ ও অমুন্নত দেশগুলির অর্থনীতির মধ্যে। সাত্রাজ্যবাদী দেশগুলি ঐ সব অনুনত দেশের অর্থনীতির মধ্যে সাহাষ্যের নাম করে মিলিত হবার চেষ্টা করে শোবণের মতলবে। কিছু আজ সমাজতন্ত্রের দেশগুলি যন্ত্রকৌশলের ব্দভূতপূর্ব উন্নতি ও বাবহারের কল্যাণে আমাদের মত গরীব অফুন্নত দেশের সত্যিকার অর্থনৈতিক উন্নতি সাধনের ক্ষেত্রে বিরাট ভূমিকা নেবে। ধনতান্ত্রিক সমাজে ষল্লকৌশৃল, বিশেষ করে স্বয়ংক্রির উৎপাদন কৌশল ধনিক শ্রেণীয় উৎপাদিকা শক্তি ও শ্রমিক শ্রেণীয় ক্রমশক্তির অন্তর্বিরোধ তীক্ষ্ণ থেকে তীক্ষতর করে তুলবে। কারণ মজুবী হিসাবে কম টাকা খনচ করে মালিকরা বেশি মাল তৈরি করতে পারবে। ফলে উংপাদিকা শক্তির, জনগণের জ্বরশক্তিকে ছাপিয়ে বাবার বে স্বভাবজাত কোঁক ধনতন্ত্রের মধ্যে আছে সেটা স্বয়ংক্রিয় বল্লের দক্ষণ আবো জোরদার হতে থাকবে—বার পরিণাম হবে बर्थ देनिष्ठिक मःक्रहे । আসলে স্বয়ংচালনা ব্যবস্থা সমাজভাত্তর জিনিব। মাঞুষের বুদ্ধি ও মেহনভের চর্ম পরিপ্রকাশ হিসেবে স্বন্ধচোলিত উৎপাদন ব্যবস্থার সফল পরিণতি ঘটতে পারে,সেই সমাজে যেখানে উৎপাদনের উপায় উপকরণ মৃষ্টিমেয় কয়েকজনের উদ্বুত্ত মৃল্য কাঁপিয়ে ভোলবার হাৈভিয়ার না হ্যে সমগ্র সমাজের মালিকানার থেকে উৎপন্ন সামগ্রী সমাজের সমস্ত মামুবের হাতে তুলে দেবে।

স্বয়ংচালিত বন্ধকৌশল ও পার্মাণবিক শক্তি ধনতান্ত্রিক সমাজের পক্ষে এক প্রচণ্ড ভাঙ্গনের শক্তি। উৎপাদিকা শক্তি ও উৎপাদিকা **সংস্পর্কের অন্তঃসংঘাতকে ভা**রা বিজ্ঞোরণের মুখে নিয়ে বাবে। বিংশ শতাকীৰ সৰ্বহাৰা বিপ্লবেৰ যুগে বৈপ্লবিক মন্ত্ৰশক্তিৰূপে সম্বাচালনা ও পারমাণবিক শক্তি হবে সমাজ বিপ্লবের অগ্রদৃত। বিপ্লবের গর্ভে বে নতুন সমাজের অত্যাদয় হবে সেখানে মানুষকে ভার ক্রজি-কৃটির জন্ত তুর্ভাবনা করতে হবে না। ভাল ভাবে খেয়ে পরে অঞ্জল অবসর নিয়ে সে জ্ঞানচর্চা করতে পারবে। সেই সমাজের শেব স্তবে মাইনে मध्ये वा राज कि हू थोकरव ना । कांत्रण सञ्चरकोणन । ও विकारने द शोनरक তখন এত ভোগ্য সামগ্রী তৈবি হবে বে মজুবী ব। মাইনের বাঁধন দিয়ে ক্রক্সমতা বেঁথে দিয়ে পণ্যের বাজারে "রেশন" চালু রাধার দরকার হবে না। সকলে সাধ্যমত সমাজের সেবা করবে, সমাজ সকলকে খালি সমমূল্যের পাবিশ্রমিক না দিরে প্রভােককে পরিপূর্ণ জীবন বাপনের মন্ত জিনিবপত্র দেবে। সেখানে সকলেই কর্মনৈপুণ্য অর্জন করে শ্রেণীবিভেদের অস্তবার দূর হ'বার পরবতী অগ্রগভির অস্তবার অর্থাৎ বল ও বৃদ্ধির ব্যবধান দেবে ঘূচিয়ে, সকলেই হবে একাধারে শ্রমিক ও বুদ্ধিন্দীরী। অভএব বে অতীতের পুনক্লজীবনকামী স্থ-সমাচার প্রচার করা আৰু অনিশ্চয়তাবাদ ও অতীত পুরুর বেদীতে বলে ঠাণ্ডা লড়াইএর যোদ্ধানের রসদ ও বাকুদ জোগাবার চেষ্টা করছেন, বারমনের ভাবায় বলা বাম যে, যে হাভের গাঁটা একদিন তাঁরা ধেরেছেন আজ সেই হাতই তাঁরা চাটছেন এবং বুকের মধ্যে নিজের প্রতি ঘুণার জলে মরছেন। বন্তু মানুষকে কি সুধ দেবে ? काँक्षित थेहे व्यक्षित क्वांव हर्ष्क्—शा (मर्ट्ट, निक्टबहे स्मर्ट्ट ।

বী বাংগনা জ্ডিথের কীর্তি ইতিহাসে চিরশ্ববণীর হ'রে লাছে। জগতে জ্ডিথই প্রথম নারী, বিনি দেশের স্বাধীনতা রকা করেছিলেন স্বীয় রূপ এবং বৃদ্ধিক বোল আনা কাজে লাগিয়ে।

সে প্রায় হু' হাজার বছর আগেকার কথা—গুট্রধর্মর তথন জন্মই হয়নি, ইতদি জাতি গুনিয়ার অক্ততম শ্রেষ্ঠ জাতি। তাদের দেশ ছিল জেকজালেম। আজ এই ইতদি জাতি গুট্টানদের অমাম্বিক অত্যাচাবে ছনিয়া থেকে লুপ্তপ্রায়,—আজ তারা গৃহহীন, দেশহীন, জাতিখহীন, বাবাবর; কিন্তু আমি বধনকার কথা বলছি, তথন তাদের দেশ ছিল, জাতি ছিল।

এই ইছদি জাতিরই একটি শাধা আসিরীর রাজার অভার অভারার সইতে না পেরে জেরুলালেমে এসে আশ্রর নিরেছিল। তথন জেরুলালেম ছিল সবুজ পাইন আর দেবদারু গাছে ঢাকা ছোট পাহাড়ী দেশ—ইলদিরা এই দেশটিকে খুব শছক করেছিল আর ডেবেছিল, এই স্থাকিত জারগায় এখন থেকে তারা সম্পূর্ণ নিরাপদ—আসিরীর রাজার প্রকার অভার অভারার থেকে অভাত: তারা সুক্ত।

সেধানে করেক বছর তারা থ্ব সুবেই দিন কাটালো। অবংশবে এক দিন তাদের ভূল ভাঙলো। আমরাও আমাদের গর আরম্ভ করবো সেই দিন থেকেই।

ভখন সবে স্বোদয় হ'রেছে, একজন প্রিক একটা মস্ত বড় শাদা খোড়ার চেপে ইছদিদের নগরের মধ্যে এসে প্রবেশ করলো। আচনা লোক দেবে কোড্হলী নর-নারীর দল ভিড় ক'রে দাঁড়ালো ভার চার পাশে। সৈনিকের হাতে একথানা খোলা চিঠি—সে এনে দাঁডালো ইছদিদের সর্দাবের বাড়ীর দরজার।

কিছ সদাবিকে আর ডাকতে হলো না, তিনি নিজেই বাড়ীর ভিত্তর থেকে বেরিরে এসে দেখেন, একজন আসিরীর সৈনিক তার বাড়ীর দরজার ব'সে—দেখে তিনি অতিমাত্রার বিশ্বিত হলেন। ক্রমে তার বিশ্বর শংকার পরিণত হ'লো। চিঠিধানা প'ড়েই তা হাতের মুঠোর চেপে তিনি বর থেকে বেরিরে গেলেন, যাবার সমরে সদার সৈনিককে উত্তরের জন্ম কিছু সমর অপেকা ক'রতে ব'লে গেলেন।

ক্রমে ক্রমে চিঠির কথা সমস্ত নগরে ছড়িয়ে প'ড়লো। যুবক-বৃদ্ধ-বালক সবাই শুনলো। ভারপর একে একে ভারা এসে সমবেন্ড হ'লো সদ'বের বাড়ীতে—এক অজানা শংকার থেকে থেকে কেবলই ভালের সকলের মন হলে উঠছিলো।

শেষকালে সর্বসমক্ষে চিঠিথানা পড়া হ'লো। আসিরীয় সমাট জানিয়েছেন তিনি দিখিলয়ে বের হবেন, তার জক্ম ইছদি প্রেছাদের অস্তত হাজার সৈক্ম দিয়ে তাঁকে সাহাব্য ক'বতে হবে। অক্সথার ইছদিদের রাজ্য আক্রমণ ক'বে ভিনি ভা ধ্বংস ক'বে কেলবেন।

চিঠি প'ড়ে সবাই থানিকক্ষণ নিৰ্বাক নিম্পক্ষ হ'বে ব'সে বইকো, কিছা সে মুহূৰ্ত মাত্ৰ। তাবপবেই সবাই বড়ের বেগে পা-ঝাড়া দিয়ে উঠে দাড়ালো। একটা অপারসীম অপমান আব বেদন-বোধ তাদের মনকে আছের ক'বে বেখেছিল। তরুণরা অপমান বিকুর হ'বে উঠলো,—এ অপমান কিছুতেই তারা সহু ক'ববে না। আসিরীয়ার বাজা এক সময়ে তাদের মনিব থাকলেও আজ আব তিনি মনিব নন। স্থতবাং তার এ অক্তার আদেশ ইছদিরা মানতে বাজী নর।

वौत्रत्रमशे जुिंध्थ

শ্ৰীঅমল সেন

ইছদিদের সদার আসিনীর দৃতের চোখের সাহনে রাজার সেই আদেশ-লিপি ছিঁছে টুকরে। টুকরো ক'বে বাভাসে উভিয়ে দিলো। আসিনীয় রাজদৃত শুরু হাতে নিজের দেশে ফিরে গেলো।

আসিবীয় দৃত কিরে সেলো। কিন্তু আসিবীয়বা বে এ অপমানের অতিশোধ না নিয়ে ছাড়বে না এ-কথা ইছদিরা ভালো ক'রেই জানতো। তারা ভাই ভ্রিয়াতের জন্ম প্রেল্ডত হ'তে লাগলো।

সমগ্র ইত্দি জাতি পবিত্র ঐক্যমন্ত্র দীক্ষিত হ'রে এক বৃহৎ
সংঘবদ্ধ শক্তিশালী জাতিতে পরিণত হ'লো। তারা করেক
মানের প্রবোজন মিটাবার পক্ষে উপযুক্ত থাতা সংগ্রহ ক'রে
সমস্ত নগরবাসীদের নিরে এক উঁচু পাহাড়ী হুর্গে এসে
আশ্রর নিল। হুর্গম অভেত্ত সে বন-হুর্গ। বাইরে থেকে এই
হুর্গের অবস্থান সহজে লোকের চোখে পড়ে না।

কিছুদিন পরে আসির্বায় সমাটের বিবাট গৈছবাহিনী এসে ইছদিদের নগরেব মধ্যে প্রবেশ ক'রলো, কিছু ভারা দেখে আশ্রুষ্ট্র গুলা, ইছদিদের বর-বাড়ী সব শৃক্ত প'ড়ে আছে—কোষাও কোনো লোকজন নেই। সেনাপতি অবাক হ'য়ে ভাবতে 'লাগলেন, লোকজন সব গেলো কোষার? কোষায় বেভে পারে? ভার সৈক্তরা সব বেরিয়ে প'ড়লো ইছদিদের সম্বানে। অবশেষে বহু কটে ইছদিরা হে তুর্গে আশ্রুষ্ট্র নিয়েছিল সেই তুর্গের সম্বান মিললো। কিছু তুর্গরারে উপস্থিত হ'য়ে দেখলো, তুর্গভোবণ বন্ধ। বিপুল্ বেগে ভারা গিয়ে তাঁশিয়ে প'ড়লো সেই তুর্গের উপর, ভাদের প্রচণ্ড আঘাতে তুর্গ-তুরার ঝন্-ঝন্ ক'বে কেনে উঠলো—কিছু ভাঙলো না। আঘাতের পর আঘাতেও তা বইলো অটুট, অব্যাহত। আসিরীয় সৈক্তদল প্রান্ধ হ'য়ে গভীর হন্তাশায় ব'সে প'ড়লো। সেনাপতি বললেন, পাহাড়েব চারদিক ঘূরে খুঁজে দেখা এই তুর্গের আর কোনো দিকে কোন তুরার আছে কি না।

সৈত্র। তীরবেগে খোড়া ছুটিরে দিলো এবং নগর প্রদক্ষিণ ক'বে এসে জানালো, না হুজুব, এব চার দিকে খাড়া উঁচু পাহাড়— ঢোকাব কোনো উপায় নেই।

ইছদিদের তুর্গছারে বিরাট আসিরীর সৈভবাহিনীর ছাউনি
প'ড়লো। তারা দিনের পর দিন তুর্গে প্রবেশের উপায় অরুসন্ধান
ক'বতে লাগলো, কিন্তু কোনো উপায়ই মিদলো না। এদিকে
তাদের থাত বদিও বথেষ্ট পরিমাণে ছিল কিন্তু অল তুরিয়ে আসতে
লাগলো। বিশেষ চিন্তার কথা। জল কুরিয়ে গেলে বিপদের
আর অন্ত থাকবে না। সেনাপতি মশাই ভরানক চিন্তিত হ'য়ে
ল'ড়লেন। তিনি কয়েক জন সৈতকে ডেকে ব'ললেন, দেখো,
এটা পাহাড়ী দেশ, কাজেই এখানে জল না থেকেই পারে না।
পুঁলে বের করো কোথার করণা আছে।

দৈনিকরা ঝরণার অস্থসদ্ধানে বের হলো।

ইন্তদিরা শক্রর তরে দিনের বেলা কখনো বাবণা থেকে জল নিতে আসতো না, পাছে শক্ররা টের পেরে বাবণা আটক করে। তাহ'লে ভারা জলের অভাবে শুকিরে ম'ববে। ভারা রাত্তির অক্ষকারে চুপি চুপি শক্রদের অসম্ভা এসে ব্যবণা থেকে কল্সী ভারে জন নিবে বেভো। কাজেই আসিবীর সৈত্রা সহজে এর স্কান পেলোনা।

কিন্ত একদিন আসিরীয় সৈনিকদের কাছে এ বহস্ত ধরা পড়ে গোলো।

ব্যবণার সন্ধান পাওয়া গেছে শুনে সেনাপন্তি তো এক লাফে স্বর্গে উঠলেন। তৎক্ষণাৎ হুকুম দিলেন, বাও, একুণি ছ'শো তীবন্দার নিরে গিবে ব্যবণা আটকাও। দিনে বা বাতে কোনো ব্যাটা ইছদি বেন তা থেকে এক ঘড়া জ্বলও না নিতে পারে।

এমনি ভাবে ইভূদিদের জলের উৎস অবরত্ত হলো।

ইছদিরা বিশেষ চিস্তিত ও শংকিত হরে উঠলো। আসিরীর সৈপ্তরা যদি এক মাসের পরও দিনের পর দিন অবরোধ চালাতে থাকে তা হলে উপায় ? ইছদিদের মুধে একটা চিস্তার কালোছার। যনিয়ে এলো।

আর আসিরীয় শিবিরে উঠতে লাগলো খন খন উল্লাস্থনি।

দেড মাস পরে---

্লাসিরীর সৈক্তদের অববেধা তুলে ফেনবার কোনো লক্ষণই দেখা গোলো না। ইছদিদের হুর্গ তখনও অবক্ষ। এদিকে সঞ্চিত জল ক্ষরিরে গোলো। প্রথম হু-চারদিন ইছদিরা মুখ বুক্ত জলের অভাব সহু করতে চেষ্টা করলো—কিন্ত জলের কষ্ট কি সওয়া বার গ তারা হু-চারজন মরিয়া হরে ছুটে গোলো শত্রুর করল থেকে করণা উদ্ধার করতে—ফল হলো মৃত্যু। শত্রুর বিষমাধা তীর এসে তাদের কঠ বিদ্ধ করলো।

শেষ কালে জলের অভাব তীত্র হয়ে উঠলো, সমস্ত নগরময় হাহাকার উঠলো—অল, জল । অলের তৃষ্ণায় অধীর হয়ে সবাই পাগলের মতো ছুটে গোলো সদাবের কাছে। কিছ সদাব কি করবেন ? তারা তৃষ্ণার পাগল হয়ে গর্জে উঠলো, এ স্বাধীনভা আমরা চাই না। বে স্বাধীনভা আমাদের কুধার জন্ম, তৃষ্ণার আলটুকু পর্যন্ত দিতে পাবে না তেমন স্বাধীনভা নিয়ে আমাদের কি হবে ? আমরা বাঁচতে চাই। তুমি আমাদের অনুমতি দাও সদার, আমরা শুকুর কাছে আলুসমর্পণ করি।

কিছ সদার অবিচলিত। ধীর গন্তীর কঠে তিনি বললেন, না, ভা হয় না।

তারা আবার চীৎকার করে উঠলো, হর না? কেন হয় না
তানি ? সদার সে কথার অবাব না দিয়ে বললেন, ভাই
সব, তোমরা বে এতো ত্র্বলচিত্ত তা আমি জানতুম না। সময়
বখন ভালো থাকে তখন বীর্থ অনেকেই দেখাতে পারে। বাঁটি
বীর্থের পরীকা হয় তুঃসমরে। জাতিব স্বাধীনতা নিয়ে বেখানে প্রশ্ন
সেধানে এর চাইতেও বাতনা, এর চাইতেও স্থাবনিতা নিয়ে বেখানে প্রশ্ন
ক্ষেণ্টে গেলেও তা সইতে হবে। আজ শ্ক্রের কাছে নতজায়
হ'য়ে জল ভিকা ক'য়ে তৃষ্ণার দাবদাহ থেকে প্রাণ হয় তে। বাঁচাতে
সমর্থ হবে, কিছ তার পর ? তার পর দীর্ঘ দিন দীর্ঘ যুগ জাতির
ভবিষ্যৎ যে গাঢ় অক্ষকারে ঢাকা প'ড়ে থাকবে, তার কথা ভেষে
দেখেছো কি ? ভেষে দেখেছো কি—পরাধীনতা এর চাইতেও শোচনীয়
সৃত্যু, এর চাইতেও তিক্তের বেদনা ? আমাদের ভবিষ্যৎ বংশবরগণ

তথন অহরহ বে অভিশাপ দেবে, তারা বে অঞ্চ বিসর্জন ক'রবে তার দাহ কবরেও বে আমাদের তির্হোতে দেবে না !

তবে কি করবো সদার ? এ তৃষ্ণার ছালা বে ছার সইতে পারি না:—ভাদের উত্তপ্ত কণ্ঠ ধীরে ধীরে শাস্ত হ'য়ে এলো।

সদর্যি ব'ললেন, আজ তোমরা স্বাই বে বার খরে কিরে বাও ভাই। গিরে দেবতার চরণে প্রার্থনা করো, বলো, আমাদের বাঁচাও, তৃষ্ণার দাহ খেকে আমাদের বক্ষা করো। প্রাথীনভার বন্ধন খেকে আমাদের মুক্ত রাঝো। তার পরেও বদি কিছু না হয় তথন দেখা বাবে পরামর্শ ক'রে।

কী ক'ববেন তথন সদাবি ? সদাবি চেবে দেখলেন একটি মেরে, তাব চোখে মুখে অপূর্ব দীন্তি ফুটে বেক্লছে —দেবতাব কাছে প্রার্থনা ক'বেও বদি আপনাদের ঈপ্সিত ফল না মেলে তা হ'লেই কি আপনাবা আপনাদের দেশের স্বাধীনতাকে বিদেশী শক্তব পাবে উৎসর্গ ক'ববেন ? চকিতে স্বাই মেয়েটির দিকে ফিবে তাকালো।

थहें हे जुडिय।

তীক্ষ ঝাঝালো তার কঠ,—নিরাভরণা, ক্লফকেশ, জ্যোতির্বস্তিতা জ্পূর্ব যুবতী বিধবা। সকলেই বিশ্বিত কঠে বলে উচলো,— ভূডিখ!

জৃতিধ তার কঠকে আরো তীক্ষ, আরো ঝাঁঝালো ক'রে জ্বাব দিলো, ই', আমি জৃতিধ। আমি জানতে চাই, এই কি বিধাস-প্রায়ণ ইছদিদের মতো কথা? এই কি মামুবের কান্ত? দেবতা কি আমাদের গোলাম? সে কি কাক্ষর তোরাক্তা রাখে বে আমরা তার ওপরে ছকুম চালাফে? কতদিনে তিনি দয়া ক'ববেন তা তাঁর ইছো—পাঁচ দিনেও ক'বতে পারেন, পাঁচ হাজার দিনেও ক'বতে পারেন, ততদিন কি আমরা নিশ্চেপ্ত হ'রে ব'সে থাকবো? আর বদি প্রার্থনা হিফল হর তথনই কি আমরা মাটিতে পুটিরে প'ডবো অসহায়ের মতো? আমরা কি মামুখ নই? নিজেদের খাধীনতার জক্ত বদি আমরা নিজেরা যুদ্ধ ক'বতে না পারি তবে মামুয হ'রে জন্মগ্রহণ ক'বেছিলাম কেন? আপনারা আজ্মসমর্পণের কথা ভূলে হান। স্বাইকে একথা বেশ প্রিছার ভাবে জানিরে দিন—আমরা দিপাদার তিলে তিলে শুকিরে মরবো তবু শক্রের কাছে মাথা নোহাবো না।

সর্গারের মনে হ'লো, ভগবানের আদেশবাণী বেন জুডিথের মধ্য দিয়ে আজ আজুপ্রকাশ ক'রছে। তিনি ব'ললেন, তবে তাই হোক মা! পুণ্যবতী তুমি, তোমার কথা কথনো মিখ্যা হবার নর। সর্গারের আদেশে স্বাই বে বার বাড়ী ফিরে গেলো। জুডিথও বাড়ী ফিরে এলো।

সেদিন বাত্তে ঘূমিরে ঘূমিরে ছুডিখ স্থপ দেখলো। দেখলো, সেই শৈলদিখনে গাঁড়িয়ে সে একা—আকাশ দিয়ে নিবাশার কালো চেউ ছুটে আগছে—নীচে ভৃষ্ণাঠ নর-নাবীর বৃক্ষাটা চীৎকার। এমন সময়ে কে বেন তাকে উচ্চকঠে ব'লে উঠ্নলো, ছুডিখ! এ জাতিকে নিবাশার হাত হ'তে, শিপাসার হাত হ'তে বাঁচাবার তার তোমার।

জুডিধ ব'ললো, দীনা নারী আমি, আমার সে শক্তি কোধার প্রভু ?

উত্তর হ'লো, তুমি দীনা'নও। চেয়ে দেখো, শক্তি ভোষার নিজের মধ্যে—ভোষার রূপে, ভোষার মেধার, ভোষার নির্ভীকভার। কে এই জুড়িখ? সকল কালের সকল দেশের স্বাধীনতার পুলারীদের ইনি নমস্তা।

মিবারী—ইভ্দির আদবের কলা জুডিধ। অপূর্ব স্থলরী, দেখে মনে হ'তো বেন অগতের সর্বশ্রেষ্ঠ শিল্পী ত্থপাথর খোলাই ক'বে এক জীবন্ত নারী-প্রতিমা স্থাই ক'বেছেন, চাইলে চোধ ফেরানো বেতো না। একদিন মানাসেরের সংগে তার বিবে হ'বে গেলো।

किन करत्रक किन बार्लाच्छ जू जिथ विश्वा उ'ला। मानारमम ज्ञानक श्वर्ताण इ त्वर्थ मात्रा शिर्दा हिन, किन क् जिथ श्वर्तामात्रक ज्ञानाशिक हिन ना। सामीय लाटक मा महारिमनीय मटा इ'ला—निवालक्षा, जेनवामकोना, क्रक्टकम, मर्नश्रकाव विमामिना विज्ञा अमिन लाटक क् जिस्वा मिरनत्र नव किन का विह्ना।

কিছ সেদিন োরের আলোর তার স্থা ভেঙে গেলো, সে চোধ মেলে চাইলো। স্বাই অবাক হ'রে দেখলো, জুডিধ বেন আর সে জুডিধ নেই। কী অপূর্ব এক আনক এবং আলু হৃত্তির আলোকে বেন তার এতদিনকার অমাটবাধা অক্ষকার দূর হ'রে মুধে হাসি ফুটে উঠলো।

সারাট। দিন জুডিখ আনক্ষ ক'রে কাটালো, সন্ধ্যাবেলার সদ'রিকে ডেকে এনে নিরিবিলিতে ছ'জনে অনেকক্ষণ কি যেন পরামর্শ ক'বলো। তারপর ছুডিখ তার পরিচারিকাকে ডেকে ব'ললো, আমার সুন্দর ক'রে সাজিয়ে দাও তো?

বৃদ্ধা পরিচারিকা জুডিধের একথা প্রথমটা বিখাস ক'রতে পারছিল না, ভাবলো, জুডিধ ঠাটা ক'রছে।

ভূডিধ তার মুখ দেখে তার মনের ভাব বুঝতে পারলো, ব'ললো, হা ক'রে চেরে দেখছো কি ? ভোরও থেকে আমার ভালো ভালো গরনা-পত্তর আমা-কাপড় সব বের ক'রে নিয়ে এসো। আমি আজ অভিসাবে বাবো।

প্রিচারিকা আর কোনো কথা না ব'লে তার আদেশ মতো জিনিবপত্র এনে জুডিথকে সাজাতে ব'ললো। বসন-ভূবণে বড়ালংকারে তিলোভমা সেজে জুডিথ বের হ'লো অভিসারে। সংগে সেই বৃদ্ধা পরিচারিকা। পরিচারিকার হাতে চার-পাঁচদিনের উপযুক্ত থাবার আর দেখানে গিয়ে প'রবার মতো কাপড়-চোপড়। পরিচারিকা জানে না কোথার তারা যাছে।

নিশ্বৰ অন্ধকাৰেৰ বৃক্তে পথ ৰচনা ক'বে চ'লেছে ছটি নাৰী। জুডিধ আগে আগে, পিছনে সেই কোডুহলী পৰিচাৰিকা। ছ'লনে পাহাড়ী পথ বেবে ভব-ভব ক'বে নীচে নামতে লাগলেন। নগবের সীমান্তে পৌছানোমাত্র ঘারী ঘাব খুলে দিলো, জুডিধ বাইবে শক্ষ-শিবিবের সামনে এসে ঘাঁড়ালো। সবাই এসে ভিড় ক'বে তাকে ঘিরে ঘাঁড়ালো, চাব দিকে লুক্ছটি। কিছ জুডিধ সেদিকে দুক্পাত না ক'বে প্রম নিশ্চিত্তভাবে ব'ললো,—ভোমানের সেনাপত্তি মশাই কোথার ?

একজন প্রশ্ন ক'বলো, তার কাছে তোমার কি দরকার ?

জুডিখ উত্তর দিলো, আমি একজন হিব্রু নারী, আর এই আমার পরিচারিকা। বিনা শত্রুক্তরে ইত্দিদের দেশ জর করার ফ্লী আমি আনি।

नवाहे (कामाहन क'रत फेंग्रेंगा अक मर्श्य-कि ? कि क्मी ?

জুডিথ তাচ্ছিল্যের স্থবে ব'ললো, তোমাদের সেনাপতি **ছাড়া আর** কাউন্থেই তা ব'লবো না।

অগত্যা জুডিধকে আর তার পরিচারিকাকে সেনাপতির কা**ছে** হাজির করা হ'লো।

জু'ডথের অতুসনীর রূপ দেখে সেনাপতি মুগ্ধ হ'লেন। এমন স্থানী মেরে তিনি জীবনে কথনো দেখেননি। বছ কটে আত্মসন্থরণ ক'বে সেনাপতি লিজ্ঞাস। ক'বলেন, কি চাই ভোমার ?

আমি আপনাদের বিনা সৈক্তক্ষরে শক্তক্ষর করার উপায় ব'লে দিতে পারি,—কুডিধ ব'ললো

দেনাপতি বিজ্ঞানা ক'বলেন, তাতে তোমার কি লাভ ?

এক অডুত কৃটিৰ হাত্যে দেনাপভিকে মুগ্ধ ক'বে জ্ডিধ ব'ললো, দেনাপতি মশাই, কেউ যদি আপনাব শ্রেষ্ঠ সম্পদ, ইহলোকের সর্বোত্তম রত্ন পুঠন ক'বে নিতে আদে তো কি দণ্ড আপনি তার বিধান কবেন ?

40:07 |

আমিও তাই ক'ববো সেনাপতি! নগৰের কেউ আমাকে সাহায্য ক'বতে পাৰ্যৰ না। তাই তো বেধিয়ে এসেছি প্রতিহিংসার আন্তন বুকে নিয়ে।

ভাহ'লে ভূমি আমাদের শিবিরেই থাকছো ভো ?

গা, আপাতত ভো আছি। দরকার মতো নগরে চুকে সংবাদাদি নিরে আদ্বো।

জুডিখের বাস করার জন্য একটি পৃথক তাঁবু ছেড়ে দেওরা হ'লো। তার পর এলো রালি বালি থাবার, কিছ সে থাবার জুডিথ স্পর্ণও ক'বলো না। তার নিজের সংগের থাবারই তার পক্ষে যথেষ্ট ছিল।

এমনি ক'বে জুডিও শক্ত-শিবিবে আস্তানা ক'বলো।

তিন দিন তিন বাত্রি কেটে গোলা— জুডিথ বসে বসে শক্ষণবাদের অবদর খুঁজছিলেন। অবলেবে এক দিন সে অবদর এলো। সেনাপতি বাত্রে জুডিথকে নিজের শিবিরে নিম্মুণ ক'বে পাঠালেন,— জুডিথ সে নিম্মুণ উপেকা তো করলেনই না ববং সাগ্রাহ তা গ্রহণ করলেন। এই-ই তার শক্র ধ্বংস করবার স্ব্যোপ্ত উপায়। তিনি ব্রলেন, এই-ই শ্রেষ্ঠ হুগ স্বাধীনতার মন্দিরে পুভা দেবার। অনেককণ ব'সে তিনি দেবতার পায়ে প্রার্থনা জানালেন,—দেশকে শক্তঃ হাত হ'তে মুক্ত করবার জন্ত জামার এ রূপ নিরে খেলা, জামার এ প্রেমের অভিনয়—এর জন্ত নারীর রূপকে তুমি অভিসম্পাত ক'বো না ঠাকুর! তুমি আজ জামার রূপকে শৃতগুণ ব্রিত করো।

সেনাপতির স্থৃতিতে সেদিন জোরার ডাকলো। স্বরং জুড়িথ—
মনোমোহিনী রূপসী, অপুর্শোভনা জুড়িথ আজ মনদাত্রী। কাজেই
পানের মাত্রা অস্বাভাবিক রক্ম বেড়ে গেলো। পেরালার পর
পেরালা নিঃশেষ হচ্ছে। শেষে এমন হ'লোবে, আর মাথা ভোলার
শক্তি নেই। সেনাপতি শব্যার লুটিয়ে পড়লেন। জুড়িথ একা,—
তথন ব্বে আর কেউ নেই। গভীর রাত্রি।

জুডিথ সচকিত হ'বে গাঁড়ালো। দেশের শত্রু, জাতির শত্রু,— তাকে ধবসে করার এই তো উপযুক্ত সময়।

কিলাহতে বসনের তল হ'তে একখানা তীক্ষ কুরধার ছুরিকা

বের ক'বে দৃঢ় মুট্টিছে ধরে একবার ঈশবের নাম নিলো জুডিথ, তার পর সেই ছুবি সজোবে সেনাপতির গলার বসিরে দিলো,—শির স্বক্চাত হ'লো। সেনাপতি একবার ছ'-ই। করারও অবসর পেলো না। জুডিথের হাত রক্ষে রঙীন হ'য়ে উঠলো।

পরিচারিকা এতক্ষণ বাইবে বসেছিল। জুডিথের আহ্বানে ভিতরে এসে স্ঠান্তত হ'য়ে দাঁড়িয়ে পড়লো। জুড়িথ বিনা বাক্যে স্থিব অকম্পিত হস্তে সেনাপতির ছিন্নমুখটা ব'বে পরিচারিকার মৃড়িতে জুলে দিলো।

পরিচারিকা ভয়ে ধরধর করে কাঁপতে লাগলো।
ভূতিধ বললো, চলো, এখনই আমাদের নগরে ফিরতে হবে।
ফু'জনে তাঁবুৰ বাইরে এসে দাঁড়ালো, কেউ ভাদের বাথা দিলো
না। কারণ তেমন হুকুম ছিল না। জন্ধকার ভেদ করে হুজনে
এসে নগরের ভোরণের কাছে দাঁড়ালো,—ভোরণবার খুলে গেলো।

দেনাপতির মুণ্ডী নগর-সীমাস্তে ঝুলিয়ে রেখে জুডিখ খুব জোরে

রণভেরীতে ঘা দিলো। পূর্ববন্দোবন্ত মতো হাজার হাজার হীর ইছদি যুবক অন্ত হাতে নিরে ছুটে এলো। আবার নগর-ডোরণ খুলে গেলো।

আসিরীয় সৈত্রথা এ-সবের কিছুই টের পারনি। টের পেলো বধন তথন চারিদিকে ইছদি-সৈত্র। স্বাই টেচিয়ে উঠলো, সেনাপতি কোধার ? সেনাপতি কোথার ? সেনাপতির তাঁবুতে দলে দলে সৈত্র ছুটে গেলো, গিয়ে দেখে, সেনাপতির বড়টা মাটিছে গড়াগড়ি থাছে। সৈত্ররা ভয়ে ছত্রভঙ্গ হ'বে প'ড়লো। সেনাপতির মৃত্যুতে ভীত হ'য়ে বে বেদিকে পারলো ছুটে পালালো।

প্রদিন বখন পূবের আকাশ লাল হ'বে উঠলো, দেখা গেলো, প্রান্তর আদিরীয় সৈঞ্জের শবে পরিপূর্ণ। একটি জীবিত আদিরীয় সৈলও সেখানে নেই!

বীবাংগনা পুডিথের কীর্তি ইতিহাসে টেরশারণীর হয়ে বইলো। জুডিধই বোধ হয় জগতের ইতিহাসে স্বাধীনতার প্রথম প্জারিণী।

ব্যর্থ সাধনা

গ্রীবেলা বন্দ্যোপাধ্যায়

মনেতে ছিল বে নীবৰ বাসনা ভোমাবই অৰ্থ কবিব বচনা আমাবই নীবৰ সাধনা দিয়া, তুমি তো জানিতে মনেব বাসমা চিবদিন আমি কবেছি কামনা ভোমাবে লভিব শ্ৰেষ্ঠ সাধনা দিয়া।

মনে ছিল আৰা, সাধ্য ছিগ না সে সাধ সাধিতে, তবু নিশি-দিন কবেছি কামনা সাধিতে হইবে প্রাণের সাধনা কঠোর সাধনা দিরা। কত বন্ধী ওনায়েছে গান, তোমার বন্ধ আনি মোর গীতহীনা বীণা পড়ে থাকে তোমারই বেদীর পরে, ওগো, একটু করুণা লাগি ব্যর্থ হবে কি মোর শ্রেষ্ঠ সাধনাথানি ?

তুমি তে। জান, এক তান
আমি সেধেছি শতেক বাব,
তবুও তোমার কটাক হরেছে বে উপহার,
তুমি জান ওগো, করি নাই হেলা
তোমারে শোনাতে মোর এই দীন বীণা
করেছে প্রয়াস শতেক বার।

তোমার প্রবণে হইবে মধুর
ভাবিরা মনেতে বুধাই আমি বে সেধেছি প্রব,
বুধাই হবে কি এ প্রব সাধনা নীরব বাসনা মোর ?
মনেতে ছিল বে অনেক আশা
আমার প্রবেতে ফুটিবে সে ভাষা;
আজি এনেছি বহিয়া ছিয়ভন্নী নীরব স্লান
ক্রেরাও মুধ্য, করো গো একটু করুণা দান।
কেল গো অঞ্চ একটি বিলু করুণাথানি,
সব হতে ভবে সার্থক হবে মোর বার্থ সাধনাথানি।

Modlesel 121232 Afrigas. Arsis mesis

নিমাই-ই নতুন কৃষ্ণ। একাধারে রাধাকৃষ্ণ। कृष्ण्ये 'त्रमानाः त्रमण्यः'। मर्वज्राज्यास्त्र। 'বে রূপের এক কণ, ডুবায় যে ত্রিভুবন, সর্বপ্রাণী করে আকর্ষণ।' ত্রিজপন্মানসাকর্ষী মুরলীকলকুঞ্জিত। কুঞ্জের তিনটি বাঁশি! বৈণবী, হৈমী আর মণিময়ী। যখন পক্ষ চরায় তখন সহচর রাখালদের আনন্দ দেবার জ্বস্থে ধৈণধী বাজায়। ু যথন গোপীদের আকর্ষণ করবে তথন বাজায় হৈমী। আর • মণিময়ী । যখন সম্মোহিত করবে ত্রিজ্পপৎকে। যখন মন্ত ময়ুর নৃত্য করবে আনন্দে। কৃষ্ণসারপেহিনী হরিণী মুগ্ধ হয়ে ছুটোছুটি করবে, কখনে। বা গাঢ় প্রণয়দৃষ্টিতে দাঁড়িয়ে থাকৰে স্থির হয়ে। যথন স্তনক্ষরিত কেনগ্রাস খেতে ভূ**লে** যাবে গোবৎসেরা। প্রণতভারবিটপী ফলে-পুষ্পে মধ্ধারা বর্ষণ করবে। আবর্তছলে ভাবোচ্ছাস জাগবে নদীতে। কুম্ণের তিন বাঁশি তাই আকর্ষিণী আর সম্মোহিনী। যার আকর্ষণে বক্ষো-বিলাসিনী লক্ষ্মী পর্যন্ত আকুষ্ট। 'গাঁর মাধুরীতে করে শন্মী-আকর্ষণ।' যার 'পীরিভিময় প্রভি অঙ্গ', যে 'কেবল রসনিরমাণ'। সৌভাগ্যের 'পরং পদং', ভূষণেরও **ज्यगयत्रभ ।**

কৃষ্ণাঙ্গ মাধুর্যসিদ্ধ্। ক্ষীরোদকশায়ী। 'আমি ফীরে ভাসি দিবানিশি ক্ষীরোদবিহারী।' কৃষ্ণের রূপ অসমোধর্ব, অসম আর অনুধর্ব, অর্থাৎ এর সমানও কিছু নেই, অধিকও কিছু নেই। এরপ অনহ্যসিদ্ধ, কোনো কৃত্রিম আভরণের ধার ধারে না। সকলসোন্দর্যসারসন্নিধেশ। এ রূপ অপরিকলিতপূর্ব। এমনটি আর দেখিনি কখনো। যভ দেখি ততই অদেখা থেকে যায়। নিজের মাধুরীতে কৃষ্ণের নিজেরও অভৃপ্তি। যেহেতু নিজের রূপ

নিজে কৃষ্ণ সম্পূর্ণ আস্বাদন করতে পারছে না। 'দর্পণাতো দেখি যদি আপন মাধুরী। আস্বাদিতে লোভ হয় আস্বাদিতে নারি॥'

এই আস্বাদনের একমাত্র সামর্থ্য রাধিকার। माननाथा महाভाবের যে অধিকারী। কে রাধিকা 🕈 যে আরাধনা করে সেই রাধিকা। যে গোবিন্দের আনন্দিনী। যে সর্বগুণখনি কৃষ্ণকাস্তাশিরোমণি। ভাবের পরমাকাষ্ঠ।। যার প্রথম স্নান কারুণ্যামৃত-ধারায়, দিতীয় স্নান তারুণ্যামৃতধারায়, ভৃতীয় স্নান লাবণ্যামৃতধারায়। স্নানশেষে পরেছে কী। 'নিজলজ্জা শ্রাম পট্টশাড়ি পরিধান।' দ্বিতীয় বসন নেই ? আছে। 'কৃষ্ণ-অমুরাগ-রক্ত দিতীয় বসন।' বুক ঢেকেছে কী দিয়ে ? প্রণয়-মান কঞ্চলিকায়। অঙ্গান্থলেপন করছে না ? করছে বৈ কি। তবে ভার উপাদান কী ? নিঙ্গকান্তি কুন্ধুম, স্থীপ্রণয় চন্দন, আর অধরের হাসিটুকু কপূর। কুফের উজ্জ্বল রসই মৃগমদ, তার কলেবরের চিত্রলেখা। প্রেমকুটিলভাই হুই চোখের ক:জল, অমুরাপই অধরের অরুণিমা। চারু ললাটে সোভাগ্যের ভিলক, প্রেমবৈচিত্তাই বৃক্তের মধ্যমণি। সর্ব অঙ্গে উদ্দীপ্ত সাত্তিক ভাব—নির্বেদ, বিষাদ, দৈক্স, श्रानि, गर्व, ब्यार्ट्य, ब्याष्ट्र, वोष्ट्रा, हिस्रा। कृष्टनाम-रुगयमहे कर्न्ष्रम । कृष्णनामरुगयमहे त्रमनात मीन ।

রাধিকাই একমাত্র দর্পণ, নির্মল সংপ্রেমদর্পণ, যাতে কৃষ্ণমাধুর্য ঠিক-ঠিক প্রতিফলিত হতে পারে। আধার সেই প্রতিফলিত জ্যোতি কৃষ্ণে পড়ে কৃষ্ণমাধুর্যকে আরো মোহনীয় করে তোলে। 'মন্মাধুর্য রাধাপ্রেম—দোঁহে হোড় করি। ক্ষণে ক্ষণে বাঢ়ে দোঁহে কেহো নাহি হারি।' যত পান ভঙ্গ পিপাসা। যত স্পাহা ডত প্রীতি। যত প্রেম ভঙ্গ

মাধুৰ্য। যত মাধুৰ্য ভত প্ৰেম। ওপু ইন্দ্ৰিয় থাকলেই কি দর্শন চলে ? আর শুধু দর্শনেই কি আসাদন ? চক্স তো চিরমধুর, কিন্তু সেই মাধুর্য সেই পরিপূর্ণ আম্বাদন করতে পারে যার চোখে প্রেম আছে। যতটুকু প্রেম ততটুকুই ভোগ। কৃষ্ণ তো মধুরের সম্রাট, আর, কে এমন ব্রজবাসী আছে যে না ভালোবাসে কৃষ্ণকে 🕈 কিন্ত ব্ৰজবাদীদের ভালোগাসা আংশিক, পূর্ণতমের চেয়ে সব সময়েই শুর্ন প্রের একমাত্র রাধিকায়। রাধিকায়ই একমাত্র প্রৌঢ় নির্মল পরিপক প্রেম, রাধিকায়ই ভাবের একমাত্র অবধি। স্বভরাং রাধিকায়ই কৃঞ্চ-মাধুর্য পরিপূর্ণ অধিকার। রাধিকাই স্বাদ-আস্বাদনের শক্তিগরীয়সী।

দর্পণে নিজের মাধুরী দেখে কৃষ্ণের আবার ইচ্ছে হয় নিজেকে আশ্বাদন করি। মানুষের এই ইচ্ছেই শ্বাভাবিক যে আমার মাধুর্য অক্তে আশ্বাদন করুক। কিন্তু কৃষ্ণের ইচ্ছা লোকাতীত। তার ইচ্ছা, আমার মাধুর্য আর সকলে আশ্বাদন তো করবেই, আমিও করি। এই-ই শ্বভাব, এই-ই শ্বরূপণত ধর্ম কৃষ্ণমাধুরীর। আর সে পরিপূর্ণ আশ্বাদন কি করে সম্ভব যদি না রাধাভাবে উদ্ভাসিত হই। তাই কৃষ্ণের রাধিকাশ্বরূপ হবার উৎক্রা। কিন্তু রাধিকা হতে পারে না বলেই কৃষ্ণের থেদ। কৃষ্ণের মাধুরী কৃষ্ণে উপজ্বায় লোভ। সম্যক্ আশ্বাদিতে নারে, মনে রহে ক্ষোভ।' কিন্তু কৃষ্ণে কই সেই রাধাভাব ?

কৃষ্ণের ক্ষোভের নিবারণ হল শ্রীচৈতত্যে। হল স্বাদবাঞ্চার পরিপূর্তি। রাধিকার ভাব আর কান্তি অঙ্গীকার করে অবতীর্ণ হলেন নবদ্বীপে।

> 'পিতামাতা গুরুগণ আগে অবতারি। রাধিকার ভাব বর্ণ অঙ্গীকার করি॥ নবদ্বীপে শচী পর্ভ-শুদ্ধ ছগ্মসিন্ধ্। তাহাতে প্রকট হৈল কৃষ্ণ পূর্ণ-ইন্দু॥'

> > 50

দেখ পড়ায় কেমন মন আমাদের নিমাইয়ের ! বাজির বার হয় না ছেলে। সাবাক্ষণ বই মুখে করে বসে থাকে। বাবা-মায়ের চোখের আড়াল হয় না। লেপে থাকে ছায়ার মত।

বিশারাপ একখানা পূঁথি রেখে পেছে ভার জন্মে।

বড় হয়ে পড়তে বলেছে। কবে বড় হবে না জানি। কবে সব বুঝবে দাদার মত !

যাবার আপে বিশ্বরূপ ডাকল মাকে। বললে, 'মা, এই পুঁথিখানা ভোমার কাছে রাখো।'

'কেন বল তো ?'

'বড় হলে পড়তে দিও নিমাইকে।'

'সে কি,' অবাক হলেন শচা দেবী, 'ভূই নিজেই ডো দিতে পারবি। আমাকে টানছিদ কেন? তোর পু'থি তোর কাছেই থাক।'

বিশ্বরূপ হাসল। বললে, 'আমি যদি দিতে পারি, ভালো কথা। কিন্তু ঘটনার স্রোত্ কখন কোন দিকে যায়, আগে-পরে কে কবে মরে-বাঁচে, কে বলভে পারে ? আমি বলছি, রেখে দাও ভোমার কাছে।'

তখনো কিছু বোঝেন নি শচী দেবী। রাখলেন ছেলের কথা। রাখলেন পুঁথি।

খাওয়ার সময় পেরিয়ে যাচ্ছে, নিমাইকে পাঠালেন অবৈতসভায়, দাদাকে ডেকে আনতে।

কিন্তু কোথায় বিশ্বরূপ। এখানে-ওখানে কোনোখানে সে নেই, নেই বুঝি বা সংসারসীমানায়। কালার রোল উঠল বাড়িতে। দাদা নেই, নিমাই লুটিযে পড়ল ধুলোয়। আর নিমাই যথন কাঁদছে তথন আর সব ভুলে আপে নিমাইকে শাস্ত করো। নিমাই-ই তো সর্বঝণের পরিশোধ।

এই একজন বিমুখ সংসারে কৃষ্ণ-নাম করছিল,
নবদ্বীপে বলাবলি করছে সবাই, সেও,ছেড়ে গেল
আমাদের। বিশ্বরূপই যদি বনে যায় তা হলে
আমরাও তার সঙ্গী হব। কী মুখ হল কৃষ্ণ-নামে,
'পাষণ্ডীর' দল যখন উপহাস করবে তখন সইবে না
বাক্যজালা। আমরাও তাহলে কৃষ্ণ-ভৃষ্ণা ছেড়ে
দেব। সংসারকেই সার মানব। বাড়াব না প্রহসন।

কিন্তু অবৈত টলে না। জগন্নাথের আঙিনায় সে হরিনামের ধ্বনি তোলে। বলে, হরিতেই সমস্ত হরণের পরিপুরণ। সর্বশৃত্যের পূর্ণায়ন।

অধৈতের উৎসাহে আর সকলেও প্রাণ পায়। আশায় বুক বাঁধে। কঠের স্থর মেলায়। হরিধ্বনির লহর তোলে।

শিশুদের সঙ্গে: নিমাই খেলছিল বাইরে, হঠাৎ খেলা বন্ধ করে বলে উঠল: 'আমাকে ডাকছে বাজিতে।' 'তোকে আবার কখন ডাকল ?' সঙ্গীরা আপত্তি করল।

'হাাঁ, ঐ যে, পাচ্ছিদ না শুনতে ?' ব্যস্ত হয়ে ভুট দিল নিমাই।

নিমাইকে ছুটে আসতে দেখে সবাই উৎস্ক হয়ে প্রশ্ন করলে: 'কি রে, কি হয়েছে? কি চাই? আসছিস কেন হন্তদন্ত হয়ে?'

'বা রে, আমাকে ডাকলে যে তোমরা।' নিমাই তাকাতে লাগল চারদিকে।

'না তো, তোমাকে ডাকি নি তো কেউ। স্বাই মিলে হরিকীর্তন করছিলাম।'

'ও, ডাকো নি বৃঝি !' নিমাই আবার ছুটে চলে গেল খেলাস্থলে।

যাকে ভাকছে সে কে, নিমাই-ই বুঝি বুঝতে দিতে চায় না।

'নাম-সঙ্কীর্তন কলৌ পরম উপায়।' অনেকে একত্র হয়ে স্ফুটকণ্ঠে কৃষ্ণনাম করাই কি শুধু স্কার্তন ? না। একলা বসে সম্যুক কীর্তনিও সঙ্কার্তন। সম্যুক্ত কীর্তন কী গ স্প্রষ্ঠ স্বরে নামের যথার্থ উচ্চারণই সম্যুক কীত্ন। তাই সজনেই হোক, নিৰ্জনেই হোক, দলবদ্ধ হয়েই হোক বা একাকীই হোক, যখনই নাম করবে শব্দ করে করবে। শদেই পাঢ় হবে অভিনিবেশ। দুরে যাবে চিত্ত-বিক্ষেপের সম্ভাবনা। সংযত বাগিন্দ্রিয়। হবে আর কে না জ্বানে রসনাই সমস্ত ইন্দ্রিয়ের চালক। রদনা বশীভূত হলেই সমস্ত ইন্দ্রিয়ের প্রশমন। তাই উচ্চদোযে নাম করো। অমুচ্চে বা নীরবে নাম করলে কি ফল হবে না ? আর সব ফল হবে গুণু প্রেম জাগবে না। নীরবে কি প্রেমসম্ভাষণ হয় ? নৈঃগদ্য কি জাগাতে পারে প্রতিধানি ? তা ছাড়া উচ্চস্বর কীর্ত নেই তো হতে পারে পরসেবা। বাঘের সঙ্গে নাচতে পারে হরিণ, সাপের সঙ্গে ময়ুর। ^{পরস্পরকে চুম্বন করতে পারে। হরিদাসের ঘরের} ্যারে বসে বেশ্যা হতে পারে বৈষ্ণবী।

প্রতিদিন এক লক্ষ নাম উচ্চস্বরে কীর্তন করে সরিদাস। লক্ষহীরা তাকে ভ্রন্ত করতে এসেছে, বাজ্ঞ করেছে তার যৌবনের অভিলাষ। হরিদাস বলছে, অপেক্ষা করো, আমার নাম-সঙ্কীর্তন আগে শেষ হোক। তুমি ততক্ষণ করে শোনো এই শামধানি। নাম শেষ হলে তুমি যা চাও তাই হবে। হিরিদাস কহে—ভোমা করিব অঙ্গীকার। সংখ্যানাম-সমাপ্তি যাবৎ না হয় আমার॥ তাবৎ তুমি বসি শুন নাম-সঙ্কীর্তন। নামসমাপ্তি হৈলে করিব যে তোমার মন॥

নাম শোনবার পর ভোমার যে মন হয়, অর্থাৎ' তথন তোমার মনে যে বাসনা আসে তা চরিতার্থ করব। নাম শুনতে-শুনতে প্রস্তর দ্রবীভূত হল, সংখা।পুরণের পর লক্ষহীরার মনে জাগল শ্রীকৃষ্ণসেবার বাসনা। 'তুলসীকে ঠাকুরকে দণ্ডবং করি। দ্বারে বিস নাম শুনে—:বালে হরি-হরি।'

নামই পূর্ণতা-দাতা। নববিধা ভক্তির জনয়িতাও নাম। সর্ববেদ, সর্বতীর্থ, সর্বসৎকর্ম থেকেও নামের মাহাত্ম্য অধিক। নামই পরম উপায়।

পড়ায় খ্ব মন দিয়েছে নিমাই। যা পড়ে তাই মনে রাখে, শোনামাত্রই সমস্ত প্রচ্ছন্ন অর্থ প্রকটিত করে। এমন সুবৃদ্ধি শিশু আর দেখিনি কোথাও, পণ্ডিত-ছাত্র সবাই বলে একবাক্যে, বলে বিভায় এ বৃহস্পতিকে অতিক্রম করবে।

দেখে-শুনে শচী খুব খুশি। কিন্তু জপরাথ বিষাদপত্তীর। বলে, 'বিশ্বরূপেরও এমনি মতি ছিল অধ্যয়নে। সমস্ত শাত্রপাঠ শেষ করে শেষ পর্যন্ত এই শিখল, সংসারে ভিলমাত্র সত্য নেই, আর তাই জেনে বিষয়মুখ ভুচ্ছ করলে। ভোমার এই ছেলেও বিভার অমনি ব্যাখা করবে, সংসার ছেড়ে চলে যাবে অরণ্যে। স্বতরাং ওর আর পড়ে কাল নেই।'

'মূর্থ হয়ে থাকবে ?' শচী দেবী আরেক রকম ভয় দেখলেন।

'তবু ঘরে তো থাকবে। থাকবে ভো চোথের উপর।' ব**ললেন জগ**ন্নাথ।

'কিন্তু মূর্থ হয়ে থাকলে ওকে খাওয়াবে কে ?' শচীর আরেক রকম নালিশ।

'যে সকলের পোষণ-পালন করছে সেই কৃষ্ণ খাওয়াবে। এই আমাকেই তো দেখছ। এড বিভার্জন করেও কেন এত দারিদ্যা ? আর দেখ, যে ভালোমত বর্ণ উচ্চারণ করতে পারে না তার ছ্য়ারে সহস্র পণ্ডিতের ভিড়। বিভায় কিছু হবে না, ধদি হয় তো হবে গোবিন্দের আনন্দে।'

আঁচলে চোথ ঝাঁপলেন শটা দেবী। 'মূর্থ হয়ে থাকলে কেউ ভো কল্ঞা দেবে না নিমাইকে ?'

'কপালে কৃষ্ণ বেমন লিখেছে, মৃথ'ই হোক আৰু

পণ্ডিভন্ন হোক, ঠিক তেমনটি জুটে যাবে আপনা-আপনি। কৃষ্ণ-কৃপা ছাড়া কিছুই হবার নয়। দৈক্সহীন জীবন আর কন্তহীন মৃত্যু—ভাও কৃষ্ণকৃপায়। ধনে-পুত্রেই বা কা হবে যদি কৃষ্ণ-আজা কৃষ্ণ-ইচ্ছা না থাকে ? স্বভরাং চিন্তা করে লাভ নেই, কৃষ্ণই একা চিন্তাকর্তা। ডাকো নিমাইকে।'

ছ' বছরের শিশু, নিমাই কাছে এসে দাড়াল।

নির্মম শোনাল জগরাথকে। বললেন, 'আজ থেকে ভোমার পড়া বন্ধ। পাঠশালা বন্ধ। বৃঝলে ? যেতে পারবে না আর গুরুর কাছে, পুঁথিপত্তর সব ফেলে দিয়ে এস পঙ্গায়।'

কাতর চোখে তাকিয়ে রইল নিমাই।

জগরাথ দমলেন না এতটুকু। কঠোর স্বরে বললেন, 'না কিছুতে না। বিভাই একজনের কাল হয়েছে। আর নয়। আমার মূর্থ পুত্রই ভালো।'

যথা আজ্ঞা। বিভারসে ভঙ্গ দিয়ে খেলা নিয়ে মাতল নিমাই। দাদার শোকে একটু সংবৃত হয়েছিল, আবার উদ্ধৃত হয়েছিল। শুধু দিনমানে নয়, রাত্রেও চলল তার চাপলা। সদ্ধ্যে হয়ে পেল, বাড়ি ফিরবি নেনিমাই? আমার কি আর পড়া আছে যে বাড়ি ফিরব ? আমার কি আর বই নিয়ে বসা আছে? ভার চেয়ে গায়ে কম্বল মুড়ি দিয়ে যাঁড় সালি, এ-বাড়ি ও-বাড়ি জিনিসপত্র ভেঙে দিয়ে আসি, পড়শীর কলাবনে চুকে তাগুব লাগাই। এ কা মুর্খের মত ব্যবহার! মূর্থ করে রেখেছ, ব্যবহার কি তবে অন্ত রকম হবে?

আঁস্তাকুড়ে ঢুকেছে নিমাই। এঁটো হাঁড়ি পর-পর সাজিয়ে সিংহাসন করে বসেছে। পৌর-অঙ্গে নেথেছে হাঁড়ির কালি। সঙ্গীরা ছুটে পিয়ে খবর দিয়েছে শচীকে। দেখবে এস নিমাইয়ের কীর্তি।

হায়-হায় করে ছুটে এসেছেন শচী। এ তুই করেছিস কা ? এ তুই কোথায় এসে বসেছিস ?

'আমি তার কী জানি।' নিমাই বলছে গন্তীরমুখে, 'আমি তো মূর্থ। আমার কি ভলাভজের জ্ঞান আছে? আমি কি জানি স্থানের ভালো-মন্দ? আমার কাছে সব জায়গাই সমান।'

'ছি ছি,' ধিকার দিয়ে উঠলেন শচী দেবী, 'তা বলে তুই এঁটো-ঝুঁটো মানবি নে? আবর্জনা কেলবার অপবিত্ত স্থানে পিয়ে বসবি?' নিমাই বললে, 'আমি যেখানে বসি সে স্থান কি অপবিত্ত ?'

> 'প্রাভূ বলে, মাতা। তুমি বড় শিশুমতি। অপবিত্র স্থানে কভু নহে মোর স্থিতি। যথা মোর স্থিতি সেই সর্বপুণ্য স্থান। গঙ্গা আদি সর্বতীর্থ তহিঁ অধিষ্ঠান॥'

'শীপপির উঠে আয় বলছি।' তাড়না করলেন শুচী, 'স্নান করে আয় গঙ্গায়।'

নিমাই গ্রাহাও করণ না।

'তোর বাবা দেখতে পেলে কী বলবেন বল তো ?' শচীর কঠে এবার অনুনয় ঝরল্: 'লক্ষ্মী মাণিক আমার, উঠে আয়।'

'তা হলে বলো আমাকে পড়তে দেবে? যেতে দেবে পাঠশালায়?' ছষ্টু হাসিতে নিমাইয়ের হু'চোধ ঝিলিক দিয়ে উঠল।

বহু লোক জড়ো হয়েছে ইভিমধ্যে। দেখছে
মা-ছেলের কাণ্ড। বাপের কাছে থবর পাঠিয়েছে।
'সত্যিই তো কেন পড়তে দেবে না ? এ কোন
শক্র পরামর্শ দিল যে ছেলেকে মূর্থ করে রাখতে
হবে ?' সকলে পঞ্জনা দিল শচীকে। জগন্নাথ এসে
পড়লে জগন্নাথকে বললে, 'কত বড় ভাগ্য তোমাদের, ছেলে নিজের থেকেই পড়তে চায়। এমনটি
আর মেলে কোথায় ? সেই ছেলের মনে ব্যথা দিয়ে
লাভ কি ? যা করবেন কৃষ্ণ করবেন। যদি কাউকে
ভিনি নিয়ে যেতে চান মূর্থ বলে নিরস্ত হবেন না।'

সকলে পীড়াপীড়ি করতে লাগল জগন্নাথকে। পড়তে দাও ছেলেকে। ছেড়ে দাও কৃষ্ণের হাতে।

কৃষ্ণই মূল কারণ। আর প্রকৃতি ? প্রাকৃতি পৌণ কারণ। ঘটের মূল কারণ কুন্তকার। গৌণ কারণ চক্র-দণ্ড। অগ্নিম্পর্শে লোহ উপ্ত হয়ে যদি দন্ধ করে তবে সেই দাহের মূল শক্তি অগ্নি, গৌণ শক্তি লোহ। তাই কৃষ্ণই আদিপুরুষ, প্রকৃতি তার মায়া, নিমিত্ত-কারণ। কি রক্ষম কারণ ? 'প্রকৃতি কারণ যৈছে অক্লাগলস্তন।' কোনো কোনো ছাগীর গলায় স্তনের মত মাংসপিও ঝোলে। দেখতে স্তনের মত হলেও তাতে হুধ জনে না। অক্লাগলস্তন যেমন তাই স্তিকার স্তন নয় তেমনি প্রকৃতিও জগতের বাস্তব কারণ নয়। বাস্তব কারণ ক্রে। স্বই কৃষ্ণশক্তি প্রস্কৃতিও। স্ব তাই অর্পণ করো কৃষ্ণকে।

জগন্নাথ বললেন, 'উঠে আয়। এবার থেকে দেব তোকে পড়তে।'

বর্জিত হাঁড়ির রাজসভা থেকে হাসিমুখে উঠে এল নিমাই। গঙ্গাদাসের পাঠশালায় আবার পড়তে গেল।

ব্যাকরণের অধ্যাপক, গঙ্গাদাস হিমসিম খাচ্ছে নিমাইকে নিয়ে। গুরু যাই ব্যাখ্যা করে তাই খণ্ডন করে নিমাই, আর যখন খণ্ড-বিখণ্ড হয়েছে গঙ্গাদাস তখন আবার সেই মূল ব্যাখ্যা স্থাপন করে।

বিষ্ঠা-ব্যাখ্যা শুধু পাঠশালাতেই নয়, ঘরে-বাইরে, স্নান করতে এসে চালায় গঙ্গার ঘাটে-ঘাটে। প্রতি ঘাটে সাঁতার কেটে এসে উপস্থিত হয় আর ব্যাকরণের বিশেষ কোনো স্থুত্র বা টীকা ধরে কলহ করে। কোনো ছন্দেই গৌরচন্দ্রের সঙ্গে কেউ এঁটে ওঠে না। শণ্ডন করেছ কি, স্থাপন করি; স্থাপন করেছ কি ছেদন করি। আমি শুধু ছেদনে-কর্তনে নই, আমি আবার আরোপে-প্রতিষ্ঠায়।

গঙ্গার বড় ক্ষোভ ছিল, কুষ্ণ শুধু যমুনাতেই লীলা-বিহার করেছে। ঈর্বা ছিল যমুনার প্রতি। গঙ্গার সেই ক্ষোভ মিটিয়ে দিল পৌরহরি। ন্তনতর লীলা করল। শুধু কৃষ্ণসীলা নয়, যুগলিত রাধাকৃষ্ণের লীলা। এক দেহে ছই প্রেম। এক ভূবে ছই সান।

এবার তবে পৈতে দাও ছে**লে**র। দিনক্ষণ ঠিক করো।

উৎসবের আয়োজন করলেন জপন্নাথ। মৃদঙ্গ-সানাই বাজতে লাপল, বিপ্রপণ শুরু করল বেদপাঠ। গৌরাঙ্গ আজ শ্রীঅঙ্গে যজ্ঞসূত্র ধরবে, হাতে দশু, কাঁধে ঝুলি, ভিক্ষেয় বেরুবে ঘরে-ঘরে। এস ভোমরা দেখবে এস। বামনরূপ ধরবে আজ পৌরচন্দ্র।

বামনের মধ্যে বলি বিশ্বরূপ দেখল। দেখল হরির পদদ্বয়ে ধরণী, পদতলে রসাভল। নাভিতে আকাশ, জভ্বাযুপলে পর্বতনিকর, কুক্ষিদেশে সপ্তসমুত্র, বক্ষংস্থলে নক্ষত্রনিচয়, জ্বদয়ে ধর্ম, স্তনদ্বয়ে ঋত ও সত্য, মনে চন্দ্র, কঠে সামবেদ, বাহু চত্ষ্টয়ে দেবমণ্ডলী, কর্ণযুগলে দিক্, শিরে স্বর্গ, কেশে মেঘ, নাসিকায় বায়, ছই চক্ষে সূর্য, বদনে অগ্নি, রসনায় বরুণ, ভাষয়ে অধর্ম, পাদস্তাসে মন্তর্জ, ছায়াতে মৃত্যু, হাস্তে মায়া, শিরায় নদা, নথে শিলা আর রোমে ওয়ধি। বামন বলদ, হে অস্কুরবর, তুমি আমাকে ত্রিপাদপরিমিত

ভূমি দিয়েছ, আমি হুই পদবিক্যাসে সমগ্র পৃথিবী আক্রমণ করেছি, এখন তৃতীয় পদের জ্বস্থে ভূমি নির্দেশ করো। গুরু গুক্রাচার্য দারা তিরস্কৃত হয়েও স্থুব্রত বলি সত্য পরিত্যাপ করে নি, বললে, আমার মাধায় আপনি তৃতীয় পা রাখুন। 'পদং তৃতীয়ং কুরু শীষ্টি মে নিজম।'

নিমাইয়ের মস্তকমুগুন হল, পরল রক্তবস্ত্র। জপরাথ ছেলের কানে পায়ত্রীমন্ত্র উচ্চারণ করলেন। এ কি অঘটন! মন্ত্র শুনে নিমাই হুস্কার দিয়ে উঠল, পড়ে পেল মৃছিত হয়ে। সমস্ত দেহ পুলকে শিহরিত হচ্ছে, বিতরণ করছে উদ্দীপ্ত তেজ আর হুই চোখে নেমেছে অকৃল প্রাবণ। স চলের পরিচর্যায় যখন বাহ্যজ্ঞান ফিরে এল নিমাইয়ের, তখন ভার সে কী গন্তীর মূর্তি! এ ফেন তখন নতুন আরেক মাসুষ, যেন এ জ্বপতের কেউ নয়। ন' বছরের ছেলে তখন নিমাই, কিন্তু তার দেহে যে নতুন মাহুষের আবেশ এসেছে, তাকে চিনতে কারুর ভূল হয়নি। 'চৈতস্থসিংহের নবদ্বীপ অবভার। সিংহগ্রীব সিংহবীর্য সিংহের ছক্ষার।' পৌরদেহে শ্রীহরির আবির্ভাব হয়েছে। স্থুতরাং এর নাম হোক পৌররায় !

হে কৃষ্ণ, জানি না তুমি কোথায়, জগন্নাথ প্রার্থনা করতে লাগলেন, আমার পুত্রের প্রতি রেখো তোমার শুভদৃষ্টি। কন্দর্পজ্মী এর রূপ, দেখো ডাকিনী-দানবেরা যেন বশ করতে না পারে তাকে। আর যে ছেলে সর্বদা জোমাকে দেখে, তোমাকে ডেকে খুশি, তার যেন না কোনো অমঙ্গল হয়।

প্রার্থনা শুনে মনে মনে হাদল বুঝি নিমাই।

হঠাৎ জ্ঞানীগুরুর মত গন্তীর স্বরে মাকে ডাকল তার কাছটিতে। ভয়ে ভয়ে দাঁড়ালেন এসে শন্তী। এ যেন তাঁর বালক পুত্র নয়, যেন কোন পরাক্রাস্ত পুরুষ। শাসনশাণিত্ব স্বরে বললে, 'মা, তুমি একাদশীর দিন ভাত থাও কেন? খাবে না ভাত।'

'খাব না।' অপরাধীর মত বললেন শচী, অমুজ্ঞা পালনের ভঙ্গিতে।

'আর,' আরো বললে নিমাই, 'শোনো, এ দেহ আমি ত্যাগ করলাম এ মুহুতে, চললাম গৃহ ছেড়ে। যে দেহ রইল সে তোমার পুত্র, তাকে স্নেহে-যত্নে পালন কোরো। সময় হলে আমি আবার আসব, আবার দেখবে আমাকে সকলে।' নিমাই আবার মৃষ্টিত হয়ে পড়ল। জ্বলসেকে আবার তার চেতনা ফিরে এলে সকলে দেখল, সে চণ্ডতেজ দেবাবেশ আর ভাতে নেই, এ নিমাই আবার সেই সন্তান-নিমাই। সেই নিতলশীতল নবনীকোমল লাবণ্যপুঞ্জ।

'কী বলছিলি বল ভো ?' জগন্নাথ মনে করিয়ে দিতে চাইলেন।

'কী বলছিলাম ?'

90

'বলছিলি, এ দেহ ছেড়ে চলে যাচ্ছি, যে রইল সে তোমার পুত্র, ডাকে তোমরা দেখো।'

'কই! কখন!' বিস্ময় মানল নিমাই: 'আমি আবার কী বললাম!'

হে গোবিন্দ, নিমাই আমার স্থরে থাক, নিমাই আমার গৃহস্থ হোক। তার ষড়ের আমরা ত্রুটি করব না। প্রাণপণ পরিচর্যা করব। পাখার উত্তাপের আডালে রাখব তাকে সম্ভর্পণে।

'এ কি, এ প্রার্থনা করছ কেন ?' শচী দেবী শুনতে পেয়েছেন স্বামীর কাতরতা।

'জানো, তুঃস্বপন দেখেছি।'

'কী হুংস্থপন ?' শচী দেবীর মুখ কালো হয়ে উঠল।

'দেখলাম নিমাই শিখার মুগুন করেছে, ধরেছে সন্ন্যাসীবেণ। সব সময়ে কৃষ্ণ বলে হাসতে কাঁদছে চলছে নাচছে। দলে দলে লোক চলেছে পিছে-পিছে, অবৈভ আচার্য পর্যন্ত, সুরে সুর মিলিয়ে চলেছে। সে সুর আকাশ ছুঁয়েছে, ছুঁয়েছে দিক্দিগন্ত। সকলের মাথায় পা তুলে দিছে নিমাই, অবৈতের মাথায় পর্যন্ত, বসছে গিয়ে বিফুর সিংহাসনে। এ কী দেখলাম!'

শচী দেবী আশ্বস্ত করতে চাইলেন। বললেন, 'এ স্বপ্নমাত্র। এ কখনো ফলবার নয়। পুঁথি ছাড়া নিমাইয়ের আর কোনো মতি নেই, ক্ষচি নেই। ঘরের বাইরে জানে না সে পথ-প্রাস্তর। বিগারসভাবই তার একমাত্র বস্তু, একমাত্র ধর্ম। তুমি চিস্তা কোরো না। নিমাই আমার ঘরের ভিত্তি, আমার অন্নের স্বাদ, আমার চক্ষের তারা। আমার দেহের মেরুদণ্ড। আমাকে ছেড়ে যাবে না এক পা।'

• ক্রিমশঃ।

মেমোরিয়ালের মাঠের সেই মেয়েটি

বিমলচন্দ্র সরকার

মেমোরিয়ালের মাঠে দেখি তাকে
শব্দ সোক্ষ করেছে একটি।
খুলিবে সাদ্ধা হাওয়ার উড়িয়ে দিছে,
মুঠো মুঠো ধুলি উড়িয়ে দেবার মতন।
উচ্ছাসে মুখরা একটি চিত্রাপিতা নদী,
অস্তর-বাহিবে লেগেছে বৌবনের চেউ।

খালতো গালে প্রের রক্তিম-জ্বাভা পড়েছে।
উচ্চ্ছাল কুম্বলবালি মুখে চপলা হাসি,
দেহের স্তবকে স্তবকে উদ্ভাসিত বৌবন-প্রবাহ।
শূসার-হাসি তার ছ'টি কাজলা আঁথি-ছারে;
স্বর্গের মেনকা বৌবনমদে গর্বিতা মেরে
প্রেমাসনে ভোগবতী শিক্ষীর ক্ষিত্ত মানসী।

ঠোটে তার খলক্তক তিলক মাথা কোন এক্ডথাকী, বুবি এক প্রেতিনী ! প্রেমোলাসে ছল ও কলার মারাবিনী, সাঙ্গ সাথে বতিস্থধ-ভোগবিলাসিনী। কামিনী খলকা মেয়ে, কলির মেনকা, এ যুগের ভাবীজননী উগ্র আধুনিকা। করে। আর রাতের আঁধারে জলের ধারে সমুক্রের তেউ গোণো। ওরা আসে আবার চলেও বার। মারে করে নিরে আসে প্রকাশু এক ভাল কি, রাতের আঁধারে ভা চিক্ চিক্ করে অলতে থাকে। ওরা কোন্ জানোরার জানতে ইচ্ছা বার। ভরও হয়। বদি ওর স্থনীল অতল জলবি থেকে উঠে আসে অতিকার প্রাঠৈতিহাসিক কোনো জানোরার।

বাতের খানা-দানা সারা। ওবে আছি সেই পুরাতন গর্ত আশ্রম করে, নেটের ট্রেঞ্চ মশারি মেলে। স্থপ্ন দেখেছি ভূতের। ভূতে তাড়া করেছে। আর আমার পাখা গজিয়েছে, তাই দিয়ে উড়ে উড়ে পালাছি। চঠাৎ প্রবল বাঁকুনি খেয়ে স্থপ টুটে গেল। গুমও ছুটে গেল। গ্লেল ক্রাশ্? জাহাজভূবি? নাঃ। ও সব কিছুই নয়। আমার পুরোন ও-দির জিপ্-ডাইভার। লারেক কাশেম আলি। ও কি এবারে ভূত হয়েছে? এত হাতে নির্জন বীচে এলো কি করে? ওর ইউনিট তো এখান খেকে বহু দুরে।

--কি খবৰ মিঞা সাব্ গ

— হজুব, বড়া সাব্ গাড়ী ভেজা। তুরস্ক চলিয়ে। ও দেলাম দিরে জানায়। বাক্। আশ্রীনী নর। সশরীরে এসেছে। কিছ এত রাতে ? আমাকে কোধার নিয়ে বেতে চার ?

তাও জানে না। তথু বললে ও-সির অর্ডার। তবু বিখাস নেই। জাপানীদের হাতে বছ অপমৃত্যু ঘটেছে। টর্চ ছেলে দেখে নিই ওর ছায়া পড়ে কি না।

বাত সাড়ে বারটা। ক্রমে আবও গভীর চচ্চে। বেতেই হবে। কেন না, থোদ ও-সিব অর্ডার। জীপ পাঠিয়েছেন। ও এসেছে সেই জীপে করে। কিছু কেন? কোথার?

ওই সব প্রশ্ন অচল। অবাস্তর। সবই সিক্রেট। আমরা এক সিক্রেট সোসাইটার সদতা। কবে, কোধার, কেন, কি হবে না-চবে, ভা নিয়ে জল্লনা-কল্লনাও নিবেধ করতে হবে, তা এখনই। রাভ বার্টা, না ভিনটে, সে কোনও ক্ধাই নর।

পুতবাং বেতে হোল। বাস্তা নয়। সমুমুদৈকত। জীপ
ছুটেছে ছুর্নিবার গতিতে। ভাটার টানে বালি জমে সিমেটের
কংক্রিট হরে রয়েছে। টেউরে টেউরে তা ক্রমাগত আবও শস্ত
হছে। তারও উপর দিরে গাড়ী ছুটেচে উয়েতের মতো। স্পীডো
মিটারের কাঁটা বেড়েই চলেছে—ব্রিশ, চক্রিশ, পঞ্চাশ, বাট, সত্তর।
নাং। আব ওদিকে চাওয়া বায় না। বে কোনো মুহুর্তে
গ্রাক্সিডেট হতে পারে। নারেকের ভাতে ক্রক্রেপ নেই।
সীমাজের পাঠান। ভর-ডর নেই কোনো। চারপাশে লোকজনও
নেই বে, পরদিন ভারা দেখতে পারে—গ্রাক্সিডেট হতে বাঁচার
আধা। রাজের আঁধার। বালির ওপর ক্রীণ টাদের আভা।
সামনে, পিছনে, ডাইনে, বামে, তুপাশে মনে হছে বেন একথানা
একটানা খুব লখা-চওড়া ফিছে। মহুন রাজের বিছানা বিছানো।

ক্ষে গাড়ীর গতি ভব। সামনে চঞ্সা কিশোরী এক
এক-বেঁকে চলে গেছে বছদ্র। •িনিশিপাতে উজ্জ্বল ভোষারের
জলে ভবে সিবেছিল আপনার কুল্ল স্তুম্ব । এখন তাই আবার
ভবে চলেছে আপন মনের খুনীতে। ভেমনি উজ্জ্বন, আর জকুপণ।
সে স্পাল্য ব্যাস্থানী শ্রীক্ষা ক্ষাণ্ডা

না=জানা=কাহিনী

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] তাল-বেতাল

তেমনি চলে ৰায়। ধৰে বাধা বার না। তাই দিয়ে চলেছে নি:শেৰে। এখনও প্রচুর জন। সে জলে জীপ ঠাই পাবে না। আবও কমবে। তাবং অপেক: কংতে হোল নি:শ্ৰে।

হাত্রি গভীর। একাদশীর বাঁকা শশী পশ্চিম দিগক্তে বিসীয়মান। আকাশ মান। মান জ্ঞোৎসায় ঢাকা ধরণী। দিগন্ত প্রদারিত গুলাহীন বুক্ষহীন প্রান্তর। চারিদিক ঢাকা। নির্জন সমুস্থতীর, নিস্তব্ধ সমুদ্রজল। নিস্তব্ধ প্রকৃতিহাণী নিশীথের काराज्ञत উरवर्ग। की स्वन अक जार प्रधारतम प्रवाह शक्कीय, স্বাই বছতাময়। মাধাৰ উপৰ আবদ্ধা নীলাকাশ অন্ধকাৰে বছতাময়ী ধরণী জলে গোল হয়ে মেশামেশি। পশ্চিম দিগস্তে সমুক্তজ্ঞলে ক্ষীৰ চাদের আভা। মাঝে কচিং একটা ঢেউ। তাও নি:শব্দ।" আরু তাম ভিতৰে বাল হাজাৰ হীৰামাণিক। ভাটাৰ টানে জলে টান ধরেছে প্রচুব। মনে বি ধছে পিছনে ফেলে-আসা সমস্ত জিনিষ। সেই ট্রেঞ্চ। দামী ক্যামেরা, পার্কার সেট। দিনের আলোয় লোন দিংহছি ব্যাংক। সাব কথনও তাদের দেখা মিলবে না। ষ্দি হয়, এরাক্সিডেউ। হতে পাবে প্রলোকে। যদি ভা থাকে। প্রায় খত। তুই বসে, সেই নির্জন আবছা অন্ধকাবে। খালের জল কমতে জীপত আবার চলা স্থক্ন করেছে। কোমর জলের ভিতর দিরে গাড়ী পার হয়ে গেল। ওটা আগেই ওয়াটারপ্রফ করা ছিলো।

আবারও মীটাবের কাঁটা উঠছে। পঞ্চাপ, বাট, সত্তর।
বেপবোরা ডাইভার। সামনে জঙ্গল স্থক হয়েছে। কোধারও
আলোর লেশ নেই। বিবাদে শ্রিমনাণ শেব টাদ ডুবেছে সমুদ্রজন।
সেই অন্ধারেই গাড়ী ছুটেছে ভূতের মতো বনের ভিতর দিরে।
গাড়ীতে আলো আলা নিবেধ। ক্রংম সে জঙ্গল আরও ঘনীভূত!
কাজেই স্পীড়ও কমতে কর্মতে একেবারে কমে গেছে। পাহাড়ের
কাঁকে কাঁকে ওরা কে গাঁড়িরে? বড় বড় ভালগাছ মাথা উঁচু
করে কি দেধছে। আমাদের গতিবিবি? ওরই ক্রঁকে কাঁকে
তাঁব্। তারাও প্রেতের মত নিংশকে দাঁড়িয়ে। ওরাও হয় তো
কিছু দেধছে। কী বেন একটা কিছু ঘটতে চলেছে। অথবা
হয় তো কারও ইসারায় অপেক্ষমান। আমাদের গাড়ী পৌছেছে
সেই অন্ধারেই। কিছু এ কি? এত বাতে স্বাই চুপচাপ
বাইবে গাঁড়িয়ে কেন? নড়ন-চড়নও নেই কারো। লোকজন,
অফিয়ার সবই সেই অন্ধারে গাঁড়িয়ে। সারিবছ, নিংশন্ধ। সবই
কি প্রেতের রাজ্থ? কিসের অপেক্ষা?

স্বাই প্রশ্নত। হাতে বাইফেল, কাঁগে ব্যাগ, পোঁচে টোটা। বেরনেট কুলছে। কোমরে আডাই হাতি থাটি থ্রীলের দা। ওটা তরোয়ালের মত কুলছে। ব্যার জঙ্গবৃদ্ধে ওটা দেওরা হরেছে একধানা করে। ঘাড়ের কাছে বাঁগা বেজিং। ছোট নেটের ট্রেক মশারি ও আর ধ্ব হাজা একধানা অষ্ট্রেলিয়ান রাাগ। এই সম্বল। আরও আছে। ছোট এক টিন এমার্জেলী বেশান। কিছু ব্যাওক্তঃ। সত্যিকাবের ছাগল নয়। কাপড়ে তৈরী, জল বাধার কায়দা।
মালামাল আব সবই তাঁবুতে পড়ে। থোল ও-সি এড,ডুপীট
সবাবই ওই সাজ-পোষাক। কিছু কোথায় ? সামনে, না পিছনে ?
আমরা ফিবে এসেছি। বর্বার জলল থেকে পালিরে দক্ষিণভারতের এক বন্দরে। বিক্রিট। বর্বার জললে পড়ে মার খাছে
ওদের ছাতে। আর ওদের স্নাইপারের হাতে। প্রথম জাপানীরা
বধন বেলুন আর সিলাপুর আক্রম্ণ করে, বুটশ প্রাণভ্তরে
পালিরেছিল। ভারতীয় আমি জাপানীদের হাতে বেচে নিয়ে
বিনিমরে নিজেদের প্রাণ বাঁচিরে। ইংরেজের সেভুল ভেলেছে

পৰে। সেই বেচে আসা আর্মি রূপ নিষ্ণেছ ক্যালনাক আর্মির।
থতম করেছে ডিভিশানকে ডিভিশান। পুরাতনী শিক্ষা। এবার
ভাই সবসমেত বিটিট ? ক্রমে সে বন্দর ছেডে আমরা দক্ষিণাবর্তের
বাস্তার উঠেছি। আবর্তিত হয়ে চলেছি মোটবের চাকার সাধে।

কোক নাদার ছাউনী। লোক লোকালয় বহুত দ্ব। তা বিশ ত্রিপ মাইল। তালবনে ছোট ছোট তালপাতার কুঁছে। লোকলা বন্দোবস্ত। অর্থাৎ মামুখ-সমান উঁচু খবে মটকার তুলে চারখানা খাটিয়া বাঁধা। দড়ির চারপাই। শবের বলতে পারেন। তারই নীচে মাটাতে আর চারখানা। আটজনের শয়নকক্ষ। বেড়া নেই। তার চাব দিক খোলা। চার পাশে বদতি নেই মামুবের। অভ্যানোরারও কি নেই ? পাশেই ছোট ডোবায় জল। বালাবালা হাতমুখ ধোরা চলছে। আর খাবার জল এক হাত বালি খুঁডে মিলে।

বর্মার নামকরা জঙ্গল উধিয়া। সেখান থেকে আমাদের কোম্পানী ণিরে এসেছে সম্মানে। এসে আগ্রার নিরেছে দকিণ-ভারতে এই ভাৰবনে। বৰ্মা থেকে মাদ্ৰাজ্ব। সগৌৰৰে পশ্চাদপসংগ ! ধবরে সর্বত্র ছাপা হরে বেকচ্ছে, আমরা এখনও हत्त्रिक् अवः तत्र हित्राद्य हिन्दिक वार्निन कुटहेरि चार्याप्तव ছাড়িরে বাবার কথা। অনেক আগে। তার বদলে আমরা গিবেছি উন্টো দিকে। ভারতের নিবাপদ দক্ষিণ প্রান্তে। এই ভালবনে। আসল ধবর, বর্মার জঙ্গলে জাপানী আর আই-এন-এর হাতে আমাদের করেক ডিভিশান পুরো সাবাড় হয়েছে। মচামার বি এইচ কিউ সিমলাতে বলে। খবর পৌছচে ম্যালেবিয়ার। আসল তথ্য জেনেছেন ছর মাসে। আরও সাবাড় হওরার পর। স্তরাং যুক্ষের কারদাকাতুনও ক্রমাগত বদলাতে হচ্ছে। দিন দিন ভা পালটাচ্ছে। ভাপানীয়া পৃথিবীয় সেয়া মিলিটারী। সেটা প্রমাণ দিয়ে গেল এই যুদ্ধে। বুটিল, আমেরিকা, জার্মাণ রাশিয়া? জাপানীদের কাছে ওরা তুলনাহীন। মনে অনেক দাগা পাওৱার পর একজন আমেবিকান জেনারেল সেকথা স্বীকারও করেছেন সেদিন। "Although poverty-striken and lacking in mental development, the Japanese are the most formidable adversary," ভাৰতীয় কাগতে যদিও ওকে বর্বর আখ্যা দিয়েই চলেছে এখনো।

ধবানে মান ছই থাকার পর আমাদের ছাউনী আবার পথ বরেছে। সকালে উঠেই হালুরা-পুরী। সাথে চা-পান। তারপর গাড়ী ছাড়:লা। টেন নয়, মোটর কনভর। সমস্ত দিন ভা লাইন দিরে চলেছে। বেদের সংসার। লটবছর, ব্যক্তিগভ মালপত্রব, থানাদানা, মায় কাঠ পর্বস্ত গাড়ীতে চাপান দিয়ে

নে গাড়ী চলেছে। চলেছে তো চলেছেই। রাভ দশটার আগে ভার বিরাম নেই। যতক্ষণ না অন্ত ছাউনী পৌছার। বোল গড়ে শ'মাইল। হুপুরে এক ক্ষেত্তের কাছে গাড়ীগুলো থাকে। ক্ষেত্রে জল নিয়ে চা তৈবী হয়। চা খাওয়ার পর গাড়ী আবার পুথে উঠিলো। যড় যড় করে চলেছে। ক্ষেতে জল নেই। ট্রেন খামাও। ওর বয়লাবের গ্রম জলে চাতৈরী হলো। আপনারা খেয়ে দেখতে পারেন। বাতের বেলায় অক্ত ছাউনী। ধলোয় ব্বাপাদমন্তক ঢাকা। এক কিন্তুত কিমাকার দৃগু। ভূত সাব্বার কত বাকী ? তথন কোনোরকমে হাত মুখ গোওয়া বা স্নান করা। ভার গোগ্রাসে খেয়ে বাওয়।। কারণ পেটের ভিতর বৈধানবের লীলা। খাবারও থালে তৈরী থাকে। মাংসও থাকে। রাভটা ভাই থেরে কাটলো। কিছ সকালে সূর্য ওঠার আগে আবারও সেই পথ। বে পথের শেষ অবধি শেষ পাইনি। সূর্যদেব কখন উঠে কখন অভে ধান, সে খবৰ আমৱাবাৰিনা। যদিওভিনি আমাদের সামনে মাধার উপর দিয়েই চলেছেন। আমরা কথন উঠবো, কথন অস্ত যাব বিছানার, সেই ভাবনাই আমাদের প্রবল। কখনও উঠেছি পাহাজের চূড়ো, কখনও গভীর খাদ, কখনও অন্ধকার স্থতঙ্গপথে, কখনো বা চলেছি নদীর উপর দিয়ে।

নোকো দিয়ে দিয়ে আৰু তৈরী হয়েছে। তারই ওপর দিয়ে আমাদের মোটরগুলো পার হয়ে চলেছে। উঁচু নীচু, পাহাড় পর্বত, গিবি নদী, থালবিল, বনবাদাড় পেরিয়ে অংশেষে রেখানে পৌছেছি, তার নাম বোস্বাই সহর। আর ও দিকে এগোন বন্ধ। কারণ সমুদ্র। ও না থাকলে আরও বেতাম। আমনবার পথে সক্ষ পথের তীক্ষ বাঁক। পাহাড়ের চুড়োর। এমনও হয়েছে, সেখানে দাঁড়িয়ে গেছে তুখানা মোটর একেবারে মুখোমুখি। এগোলে বিপদ। প্রচালেও বিপদ। একেবারে খাদের তলায়।

আমর। সহর ছেড়ে এবং ডক ছেড়ে এবার জাহাজে। এবার বসবার পালা। সমস্ত মোটর গাড়ীগুলোও জাহাজে উঠ গেছে। অফুরস্ত অবসর, থাও, দাও, ঘূমাও। প্রাণভবে স্নান করে। সমুদ্রে, সমুজের হাওয়া থাও। তিন দিন জাহাজে। সমুদ্রে সাভারও কেটেছি। কিছ ও সবই পুরোন হয়ে গেছে। দশ বিশ্বার সমুদ্র-বাত্রাও হয়েছে। ওতে আব মন ভবে না। মনটা লোকালরে বেভে চায়। লোকের সাথে মিশতে চায়। একট প্রাণখোলা আলাপচারী, করেক বছর জঙ্গলে কাটানোর পর। কিছ সেটাই মানা। কাবণ কাবো অজানা নহ। ফ্রণ্টে কালনাল আর্মি। সে ধবর বাইবে না ছড়ার। বাইবে বেতে পাশের প্রবোজন ? পাশ বদি বা মেলে, সবুজ পোষাকে ষেতে হবে। রাস্তা ঘাট সব জায়গায় বড় বড় গোল লেবেল মারা। তাতে একটা ক্রশ আর লেখা—Out of Bounds. তারপর মোড়ে মোড়ে এম পি অর্থাৎ মিলিটারী পুলিশ। অর্থাৎ বাবার বাবা! লড়াইরের সময়। পুলিশের উপর মিলিটারী। ভার উপর মিলিটারী পুলিশ। চুরি করে সাদা পোবাকে গেলে ওরা কি করে ধরে ফেলে। অভুত ওদের ক্ষমতা। জ্ববলপুরের ঘটনা। করেক বন্ধুমিলে চুরি করে সহবে বেরিয়েছেন। সাদা পোবাকে সহর বেড়ানো হচ্ছে। গরে মশগুল। আচমকা এক ঘন্তকার ধ্বনি এলো—Halt ! ধুব জোর। হঠাৎ ঠাণ্ডার জল বেমন জমে বরফ হয়, ওদের পাওলো ঠিক তেমনি জমে ব্যক্ত হয়ে পেল এক লছমায়। ধরা পড়লো স্বাই।



সাপুড়িয়া —বাবীক্রনাধ প্রামাণিক

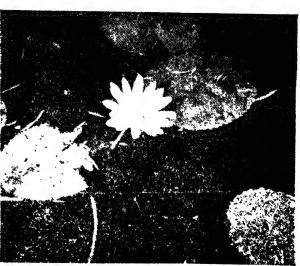


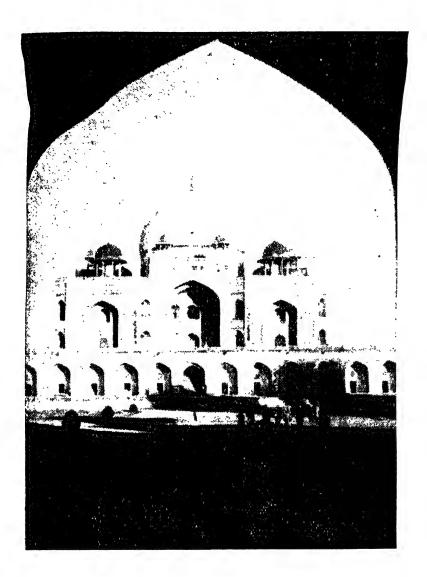
গৌরীকৃণ্ড (ভ্বনেশ্বর)



ছিবি পাঠানোর সময়ে ছবির পিছনে নাম ধাম ও ছবির বিষয়বস্তু যেন লিখতে ভূলবেন না।







ন্থমায়ুনের সমাধি (দিল্লী) —ধভাত দেন

কবরী-বন্ধন —অমসচন্দ্র চ





ভাই-বোন —বাসম্ভী মৈত্ৰ



াগনী —ক্যাপটেন ব্যানাচ্ছী

> তাজমহল —শ্রীপধিক



জাতিতে বানর। 'জপুবান' ছিলেন হত্তমানের আতা— জাতিতে বানর। 'জপু' বলতে সামানের এই বানবকুলের

ভাতিতে বানর। 'ভদু' বলতে আমাদের এই বানরকুলের क्वाइ यान इत्रा डिव्छि । इत्राकी खावाद 'कारम।' वर्ष हाछी । আফ্রিকার অধিবাদীদের মধ্যে 'জাখে।' কথাটি সর্বাধিক প্রচলিত। বে কোনও আফ্রিকানে আফ্রিকানে দেখা হলেই একে অপরকৈ হাসিমুখে অভিবাদন করে আর বলে 'জাখে।'। মাউ মাউ অধ্যুবিত কেনিয়া বাজ্যে কিকুৰুদের মধ্যে দেখেছি তাবা, দেখা হলেই বলে 'লাছো'। বালধানী কাম্পালান্তে বোটারী ক্লাবে শেখছি, আফ্রিকান সভাবা নিজেদের মধ্যে প্রত্যক্তিবাদন করে বলে আছে।।। यश-व्यक्तिकाव नीननावत्र त्यांक्रमाव विकाय कन्नत्न निकायीत्रय প্রস্পরে অভিবাদন করতে দেখেছি 'কাহে।' বলে। আমাকে কেউ निश्चित्व (मद्यति, चामि नित्क नित्कहे कामाव शाफीव माकावत्क একদিন স্কালে দেখা হতেই বল্লাম 'জাম্বো'। আমার সোকার गिनात्था (इटन भग्नेन इद्ध वन्ना 'कार्या, कार्या'। भदक्र(वह ৰিজ্ঞানা কবলো, 'সাহেব ম্পিক সহেলী ?'—'সাহেব, **আপ**নি সংহলী ভাবা জানেন !' পরে জানতে পাবলুম আফ্রিকাডে অনেক জাত অনেক ভাগ-বিভাগ থাকলেও ওদের স্বাইর अकृते। (Common Language) आर्ट वृद्ध नाम (Swahili) 'নোহাহিলী' বা সহেনী। পরে তথা সংগ্রেহ করে জানতে পাৰলুম বে আন্তৰ্জাতিক কথা ভাষাৰ মধ্যে এই সংক্ৰী ভাষার স্থান সপ্তম এবং বিসাতে আন্তর্জাতিক ভাষা শিক্ষাকেন্দ্রে এই সহেদী ভাষা বিশেষ সমাদৃত। কেনিয়া, होत्रानाहेका, खाक्षिवाद, नाहेकालााक, कत्ना मर्ख्यहे महानी जाबाद প্রচলন আছে। এ ভাষা শিকাও কঠিন নয়, ব্যকরণের তুর্গম কিলা **उन मा करवरे महिमी (मधा वाद। महिमी जावाद आद्या ह'न टार्थम** चित्रांत्रन, चानको। हिन्ती खावात "नमाख चुक्तिता" ইংবাজी "How do you do, Good Morning" "ন্যস্থার, কেমন আছেন," "লয় হিন্দ" অনেকটা এই জাতীয়। আজাদ হিন্দের সভারা বেমন निष्करमत्र मरशा 'बत्र हिम्म' राम चित्रामन कतरा 'बार्चा' ক্ণাটির মধ্যেও এরপ জাতীয়তার তাৎপর্বাপূর্ণ জানক্ষমিশ্রিত শকুত্রিম ওড় কামনার ইঙ্গিড শাছে। কার্জেই বে কোনও আফ্রিকাবাসীকে 'ক্রাম্বো-ক্রাম্বে' বললে তারা ধনী হয়। ক্রাম্বো পর্ব নমস্কার, অয়মারস্তঃ ওভার ভবতু।

আফ্রিকার এসে আমরা একদিন দল বেঁধে ছুপুর বেলার মোটবে
চড়ে জঙ্গলের মধ্যে প্রবেশ করি। এদেশে নিরম হল, গাড়ী থেকে
নামা নিবেধ, গাড়ীর দরজা-জানালা কাচ বন্ধ করে জঙ্গলের মধ্যে
আড়ি পেকে থাকতে হর। কিছুকাল মধ্যেই সব বকম বড় বড়
জন্ধ-জানোরারের দেখা পাওয়া বার। সজে এদেশীর লোক
গাইড' নিতে হর—জঙ্গলের নাড়ী-নক্ষত্রের সব হিসাব তার জানা
আছে। আমরা জঙ্গলের নাড়ী-নক্ষত্রের সব হিসাব তার জানা
আছে। আমরা জঙ্গলের হরার কিছুক্ষণের মধ্যেই ৫।৬টা সিহে
দেখতে পোলাম। আমাদের মোটরের মাত্র তিন চার ফুট দূর দিরে
সিংহের দল চলে গেল। জেরা, জিরাক, বাইসন দেখলাম শত শত,
আর জংলী হরিণ দেখলাম হাজার হাজার। জঙ্গলের মাঝে
বাসের বন আছে—মাঠু আছে, দেখানে গাড়ী নিরে গেলে হাজারে
হাজারে জেরা, জিরাক, উটপাথী, হরিশ, বাইসন, সব কিছু দেখা বার।
মোটর গাড়ীতে বসে হাতী দেখা নিরাপদ নছে। আমরা উপাতা
থাকাকালে রখন হাতী দেখতে বের হলাব—ছির হল নারাবারি

যাত্বসভ্রাট পি, সি, সরকার

ধ্বধানকার এক (Tree Top Hotel) পাছের ভগার হোটেলে
থাকতে হবে। দিনের বেলা বওনা হয়ে এ গাছের ভালে (সিনেরার
টার্জেনের মত বাড়ীতে) রাত জেগে বদে থাকতে হয়ে—নীচে আসবে
সর রকম লক্ত-আনোরারের দল—বিশেষ করে হাতীর দল। আমরা
বধন দেখার কর গেলাম তথন সর ব্যবস্থা স্থকর ছিল। কারণ এর
চার-পাঁচদিন আগেই ইংলণ্ডের রাজমাতা এখানে এসেছিলেন
এয় ভিনিও এ গাছের ভালের চোটেলে বসে জানোরার
ক্রেছিলেন। দিনে দিনে বেতে হয় আবার দিন হলে ক্রিরে
আসতে হয়। কিছু বনের মধ্য দিরে বাবার সময় রে কোনও
মূহুর্জে বে কোনও বন্যকত্বর দেখা পাওরা বেতে পারে।
সিহে, বাব, গণ্ডার, হরিণ, হায়েনা, জেরা, জিরাক এরা কেউই
গাড়ী আক্রমণ করে মায়ুর মারে না। গাড়ী বছু করে চুপ
করে বদে থাকলে এদের জন্ম কোনও ভয় নেই; তবে জালো'
বা হাতীর কথা সভন্ত। সেজল এখানকার গভর্ণমেন্ট কতকওলি
কর্ত্ব্য লিখে নোটিস দিয়ে দিয়েছেন।

প্রথমতঃ জঙ্গনে চুকলেই মাবে মাবে লেখা দেখা বার
Elephants have the right of way অর্থাং এই প্রে
লাগে হাতীকে বেতে দিতে হবে। হাতীরা সাধারণতঃ
তাদের জানা বাস্তা দিরে বেশী বাতারাত করে। কাজেই
এ সব বাস্তা দিরে প্রোরই জংগী হাতী বাতারাত করতে
দেখা বার। এ সব বাধা-ধরা জায়গা ছাড়াও অভান্ত সর্কর
প্রোরই হাতীর দেখা পাওরা বেতে পাবে। তাই মোটর-চালকদিগকে



লাবো

निम्निविक উপদেশ ছাপিরে জানানো হয়েছে—(क) রাস্তার পাশে বোপ থাকলে ভাডাভাডি ঘোটর চালাবে না, বালা বাঁকা হলে থ্ব উঁচ-নীচ হলেও ভাড়াভাড়ি গাড়ী চালাবে না। (খ) बोल्डाय हां हो। प्रभान अभिष्य (युष्ट मा, मार्रशान हरत मृद्य मृद्य भुष्ठरव. ठां डीरक चार्श भिष (इस्क स्मरव। गांकी निरंत्र कारख ছাতীৰ দিকে এগিয়ে যেও না, মনে কৰো না বে গাড়ী দেখে হাতী চলে বাবে ববং তৃমিই অবাক চয়ে দেখবে বে. এক সেকেণ্ডের মধ্যে ভোষার পেছনেও একটা হাতী গাড়িরে আছে, বা বাস্তার ধারে বতগুলি ঝোপ দেখেছিলে সংই হাতীতে পরিণত হরে আছে। (গ) ছাতী রাজ্ঞার ধারে রয়েছে দেখে অধীর হয়ে গাড়ীর গিয়ার চেপে ভীরবেগে পার হতে চেঠা কবো না, হাতী এতে চমকে উঠে ভোমার পেচনে ভীষণ ভাবে^{ত্র}ভাডা করবে। (খ) ছাতী দেখে গাড়ীর হর্ণ বাজিও না, ববং ইঞ্জিনের শব্দ বাড়িয়ে দিয়ে তাকে বৃষতে দিও বে তুমি বাচ্ছ। (&) তোমাকে শেষ ক্ষেমী ষ্টিমার ধরতে হবে, ভাঙাভাড়ি বেভে হবে, তা হলে অনেক আগে বওনা হও, কাৰণ মাৰপথে বুনোহাতী তোমাকে কয়েক ঘণ্টা পর্বাচ্ছ আটকে রাধতে পারে। (চ) হাতী যদি রাস্তার দিকে युथ करत ना थारक, विन त्रांछात निरुक चांगरक ना स्था, विन चरनेक দরে দেখ তবে ভয় নেই, নিশ্চিস্তে চলে বেও, হাতী ভোমার দিকে নজবই দিবে না। আফিকার জঙ্গলে পথ চলতে হলে এদেশের গাড়ীচালকদের এই ছয়টা কথা সর্বদাই মনে বাখতে হয়। উগাপ্তার Road Safety Propaganda Committee মাঝে মাঝেই এদেশের বড় বড় সংবাদপত্রে বিজ্ঞাপন ছাপিয়ে সব কথা क्रांनिख एन ।

গভর্ণমেণ্টের বক্ত প্রাণী সংরক্ষণ সমিতির প্রধান অফিশার (ি:
আর, এম, বিয়ার) একটি ঘটনার কথা লিগেছেন। সম্প্রতি একজন
আমেরিকার ফিল্ম প্রভাগার তাঁর সহকারী সহ আফ্রিকার জঙ্গলে
আসেন। এক দল হাতী এখানকার "নিয়ামাগাসানী" নদী পার
হচ্ছিল তথন তিনি ছই তিন শত গজ দূর থেকে ঐ হাতীগুলি
দেখে গাড়ী থেকে নেমে ফিল্ম তুলতে আরম্ভ করেন, তৎক্ষণাৎ অভ্ন একটা হাতী বিহাৎবেগে তার পেছন থেকে এসে আক্রমণ করে। তিনি ক্যামের। ছুঁড়ে ফে:ল দিয়ে কাঁটাবোপের মধ্যে চুকে পড়েন। ক্যামেরাটিকে ভেলে-চুরে দিরে হাতী ঐ কাঁটাব ঝোপের মধ্য থেকে মিষ্টার লাণ্ডারকে টেনে বের করে তিনবার ভূঁড় দিরে ধরে উপর দিকে ছুঁড়ে মারে—যথন তিনি হাতীর ছুই পারের কাঁকের মধ্যে পৌছেন তথন তিনি সম্পূর্ণ মরার ভাণ করেন। এটা কার্য্যকরী হয়, কারণ হাতী ভাকে ছেড়ে দিয়ে যায়—যদিও সন্দেহের সঙ্গে আনেকবারই পেছন ফিরে দেখেছিল। মিষ্টার ল্যাণ্ডার প্রাণে মারা যান নি, ভবে তাঁর ডান পা-টি গিয়াছে, বাঁ পা-টিও মচকে গিয়েছে—সারা শরীরে অসংখা ক্ষতের দাগ নিয়ে আজও বেঁচে আছেন।

আফ্রিকার জঙ্গলে একটা হাতী সর্বাধিক সংবাদপত্তে পাবলিসিটি পায়। তার সম্বন্ধে এদেশে এবং বিসাতে অসংখ্য সংবাদ ও ফটো ছাপা হয়েছে। আফিকায় জন্ম সংবন্ধণ সমিতির অৱতম ভারপ্রাপ্ত অফিসার মিষ্টার জন মিলস এই হাতীর অনেক,বিবরণ লিখেছেন। আফ্রিকার বে হাতীটা এত প্রসিদ্ধি পেয়েছিল—জ্লীরা তার नाम पिराइडिल "नुवाःशांखन" (Lubangawon) वात इः । खी অর্থ করে ইংরেজগণ এর নাম দেন The Lord Mayor... বধন এই জন্মলের প্রধান কার্য্যালয় ১১৫৪ সালে পারা (Paraa) নামক জারগার স্থানান্তরিত হয় তখন প্রত্যেক দিন তুপুরে এই লর্ড মেরুর এলে কাঠের মিল্লিদের কার্যান্তলে এলে দাঁড়িয়ে থাকতো। একদিনও বাদ যায় নি-প্রত্যেক দিন হুপুর বেলায় লর্ড মেরব এসে কাজের কাছে চাজির। মিন্তিরা ঐ স্ট মেরবের অস্তত: ত্রিশ গছ দূরে থাকলে তবে কাজে মন দিত। দুর্ঘ মেহর কলা খেতে খুব ভালবাসতো। যদি সে বুঝতে পারে কোনও ক্যাম্পে বা মোটর গাড়ীতে কলা ব্য়েছে—তবে সে নিব্বিবাদে সেখানে গিয়ে 🔊 ভ দিয়ে কলা বের করে আনতো! মোটর গাড়ীর দরজার কানালায় কাচেব কাঁক দিয়ে সে কৌশলে ভঁড় চুকিয়ে দিতে একাদ হয়েভিল। বাত্তিবেলার ক্যাম্পের পাশে আগুন জালিয়ে নিশ্চিম্ভ মনে লোকেরা ভয়ে থাকে। আগুন দেখলে হাতী, গণ্ডার, সিংচ সব প্রাণীই ভব পায়, কথনও ক্যাম্পের কাছে ঘেঁষে না। লর্ড মেয়রের কথা স্বভন্ত, দে রাত্রিবেলায় চুপি চুপি এসে জানালা দিয়ে 🗝 ড চুকিয়ে কলা-মূলা বা পায় নিয়ে বায়।





আফিকার হাতী আপন মনে জল থাছে

় আফ্রিকার জন্মে ওধু হস্তীরা নহে, বলহস্তীরাও দলে দলে চলে

আর নিদ্রিত লোকদের সাথে মজা করার জন্ত তাদের গায়ের লেপ, कथल नव (हेटन निरम् बाम् । लई (मधुन कांक्रेटक मादन नि. कदन ভয় দেখিয়েছে স্বাইকে। কত শত লোক ভার ফটো তুলেছে-তার ফটে। দিয়ে কত বৃক্তম ফটো পোষ্টকার্ড তৈরী হবেছে। এদেশীয় ও বিলাভী কত শত খবারর কাগজে ভার ছবি ওখম পাভায় ছাপা হয়েছে-এতেন বিশ্ববিশ্বাত হয়েও সে লোকজনের সঙ্গে ঠাট্টা-ইয়াকী করতে ভালবাসতো--কলা চুবি করে থেভো। একবাৰ একদল শিকাৰী এসে এখানে একটা হোটেলে আশ্রয় নেয়। হোটেলে জায়গা বেশী চিল না—তাই কয়েক জন গাড়ীর দবজা-জানালা বন্ধ করে দেখানে শুয়ে পড়েন। কিছ খাওয়ার শ্বিনিয (কলামূলা) গাড়ীর নীতে লুকিয়ে বেখেছিলেন। লড মেরুর ষধারীতি তার বাত্তিবেলার টচল দিতে এসে, এ কলার থোঁজ পান কিছে ভূড দিয়ে এগুলি আনতে না পেরে শেষে গাড়ীটাকে উল্টিয়ে দূবে সরিয়ে । দৈয়ে কলা খেয়ে নেয়। গাড়ীর আবোহীরা অকত দেহে থাকলেও তারা যে ভয় পেয়েছিল তা জীবনেও ভুলভে পারবে না। সম্প্রতি একটি বিশ্বাত ফিলা কোম্পানী আফ্রিকার জন্প ছবি ভূলতে আদেন। তাঁরা হলের একধারে টিমারচাট ভৈরী করে পাশেই ভাদের Naked Earth নামক ফিলোর 'সেট' ভৈরী করেন। এ সেটে একটা খুব উঁচ কাঠের বেড়া দেওয়া হয়েছিল।

শক্ত কাঠেছ, নেড়া দেওৱাৰ উদ্দেশ্য—বাতে হঠাৎ কোনও জংগী জানোয়ার সেধানে চুকতে না পারে। একদিন সকালে ফিলাকোনার সমস্ত লোকজনকে সচকিত করে সেধানে হাজির হল লর্ম্ম মেরর আর ঐ বেড়াটাকে ফুংকারে উড়িরে দিয়ে নীচেনেনে এসে হুদের জগ থেরে গেল। ফিলা কোন্দানীর লোকেরা এই ব্যাপারটিকে প্রাপ্রি কিলা তলে নিরেছেন—জানা গেল বে

ঐ কি.মা এই দৃভটা দেখানো হবে। পরে কিন্দ কোম্পানী লও মেরবের জন্ম ঐ ফেড়ার এক দিকে রাস্তা ছেড়ে দেওয়াতে আব কোনও দিন নুতন বিপদ হয় নাই।

একবার এখানকার ২ন্ত জন্ত সরক্ষণ সমিতির অফিসারের বাড়ীর কাছে একটা জলের কল কর্ড মেয়রের দ্বাইতে পড়ে। লর্ড মেয়র জলের কল নাড়াচাড়া কবে দেটাকে হঠাৎ খলে ফেলে এবং প্রাণভরে এ নঙ্গের জন খেয়ে নেয়। পরে দেখা গেল বে প্রভাক দিন তিনি একটি করে জলের কল পুলে দিয়ে তার থেকে জল থাচ্ছেন। লর্ড মেয়র আর পচা ডোবা বা পঞ্চিল হুদের জল খেতে চান না, প্রভাকে দিন কলের জল নিজে নিজে ধুলে নিয়ে প্রাণ ভয়ে থেয়ে নেয়—কিছ কোন দিনই ভিনি -ব্দার কলটা বন্ধ করে রাখেন না। ফলে প্রতিবেশীদের হয় জনকষ্ঠ। তারা শ্বির করলেন রাত্তিবেলার জলের সাপ্লাই বদ্ধ করে দেবেন। শর্ভ মেরর রাত্রিতে কল থুলে দেখেন জল নেই, এত বড় অপমান ! সে কলটা ভেলে—মুচড়িয়ে অভ একটা কল খোলা হল দেটাতেও জ্বল নেই। এই ভাবে পর পর কল ভেক্তে দেওবা হচ্চিল। কর্ত্তপক্ষ বেপবোয়া হয়ে হাতী বাচে না খেতে পারে (Elephant Proof) জলের কল বনিরেছে। ভর্ত মেরব মাতুর খুন করে নাই—ভবে কলা আর ভূটার থোঁজে দে অনেক তাঁবু ছি ড়েছে, অনেক গাড়ী উল্টে দিয়েছে, লোকজনের বাড়ী ঘৰ অনেক ছোটধাট ইমাবতী ভেঙ্গে চুবে দিয়েছে। কাঞেই গভৰ্ণমেন্ট একদিন তাকে গুলা করে মারতে বাধ্য হন। মৃত্যুৰ পর তার সমস্ত বিবরণ কাগজে ছাপা হর—মৃত্যুকালে ভার বয়স হয়েছিল মাত্র বিশ বংবর, তার দেহের ওজন ছিল ৩॥• টন। ন্দাফ্রিকার ও বিশাভের পত্রিকায় পত্রিকার ভার ফটো ও মৃত্যু-সংবাদ ছাপান হয়েছে। লওঁ মেয়র মরেও আব্দ হস্তিকুলে অমর।



গাছের ডগার (Tree Top) হোটেল খেকে হাতীর দল দেখা যাচ্ছে



হাতী তাকিয়ে রয়েছে—এ রান্তা মোটেই নিরাপন নর

"Ships that pass in the night, and speak each other in passing,
Only a signal shown and a distant voice in the darkness;
So on the ocean of life we pass and speak one another
Only a look and a voice, then darkness again and a silence."

—H. W. Longfellow.

সাধ্বী অভোৱকামিনী

🗬 সুধীর ত্রশা

[১২৬৬ সালের বৈশাধ মাসে (ইং মে ১৮৫৬) চবিৰণ প্রগণার অভুৰ্গত ৰাইহাটি প্ৰপ্ৰাভুক্ত শ্ৰীপুৰ গ্ৰামে স্বৰ্গীয়া দেবী আৰোৱকামিনী বাবেব জন্ম। ১৮৬৬ সালেব মাৰ্চ্চ মানে ভাঁহাৰ ৰিবাহ হয় স্বৰ্গীয় প্ৰাণকালী বাবেব পুত্ৰ শ্ৰীযুক্ত প্ৰকাশচন্ত বাবেৰ স্থিত। বর-বধুর বরস বধাক্রমে ১৮ এবং ১০ বৎসর। আবোৰকামিনীৰ প্রলোকগত হওয়ার তারিখ ১৫ই জুন ১৮১৬। ব্য-১৮৫৬, মৃত্যু-১৮১৬, বিবাহ-১৮৬৬ এই বর্ষদের প্রভাবেই হয়ত জীবিধানচক্র রায় আৰু পশ্চিমবঙ্গের মুখ্যমন্ত্রী। সাধ্বী অবোরকামিনী আমার প্রতিবেশী ডক্টর রায় মহাশবের পুৰুনীয়া মাতা ছিলেন। এই জাবন-লালেণ্টি জীপ্ৰতাপচন্ত্ৰ মজ্মদার কর্ত্তক লিখিত স্ত্রীচরিত্র নামক পুস্তকের (স্ত্রী-জাতীয়-📆 ভি বিষয়ক উপদেশ এবং দৃষ্টাস্ত) সংশোধিত ও বর্ত্তিত বিতীয় সংস্করণ হইতে গুহীত। তথানীস্তন বন্ধ মহিলা সম্বন্ধে ১৩০৫ সনে একানিত এই অংশটুকু বিশ্বতির অতল তলে ডুবিরা বাওয়ার পূর্বে জীর্ণ পূর্চা সংখ্যা ১৫৮--- ১৬৪ হতে উদ্বার করা গেল। কারণ মনে হয়, বুগাঁৱা অখোরকামিনীর চরিত্র আজকের দিনেও আমাদের সম্বাচ্ছের মা ও বোনেদের অভকরণবোগ্য---।

ব্রস্তমান সময়ে সাধনী অব্যোরকামিনীর চরিত্র মহিলাকুলের পক্ষে বিশেষরূপে হিতকর। তিনি আমাদিগের নিকট প্ৰিচিতা ছিলেন। এবং আমাদিগের প্রমান্ত্রীয়া ছিলেন। উত্তর-পূর্ব ৰাজ্ঞলাৰ টাকী নামক পত্নীতে কায়স্তকলে অনুমান ১৮৫৬ গুটান্সে আখোরকামিনীর অন্ম হয়। ১৮১৫ শকে বাঁকিপুর নগরে তাঁহার স্বৃত্য হয়। বাল্যকালে তাঁহার কোনরপ বিভাশিকা হয় নাই। এবং দল বংসর মাত্র বয়সে জাঁচার বিবাহ হইরাছিল। কিছ বে ৰাজ্ঞির হস্তে ভাঁহার ভার অপিত হয় তিনি অতি স্থপাত্র ও সদাশর। টাকী নিবাসী জীযুক্ত প্রকাশচন্দ্র বায় অবোরকামিনীকে বিবাহ করিয়া অনতিবিলয়ে তাঁহার জ্ঞান ও ধর্ম শিক্ষা কার্য্যে মনোবোগী হটবাতিলেন, অর বরস হইতেই অংখাবকামিনীর ধর্মে মতি জয়ে, ২১ বংসর বর:ক্রমে তাঁচার আকাংম্মে দীকা হয়। ভাঁহার প্রবদ ধর্মতৃকার সঞ্চার হয়। তিনি ধর্মিট স্বামীর সঙ্গে একলত হইতে ব্যুগতী হয়েন, এবং প্রতঃধে সহায়ুভূতি ও সহারত। করিবার জন্ম আত্মনিগ্রহে নিযুক্ত হরেন। এই সময়ে ৰঙ্গদেশ ব্যাপিয়া একটি প্ৰকাণ্ড কড় হয়, এবং ভাহাতে লোকে ৰাৱপৰ নাই ভীত হইয়াছিল। তাহাদেব কট নিবাৰণেৰ অন্ত অবোরকামিনী অর্থাভাবে আপনার স্বর্ণতাবিজ অকান্তরে দান ক্রিয়াছিলেন। ভাঁহার প্রহিত-প্রায়ণ স্বভাবের ইচাই প্রথম পরিচয়, অংখারকামিনী নিজ জন্মভূমি ত্যাগ করিয়া বৌরনের व्यावाष्ट्रहे यामीव कर्षञ्चात्न विहाब व्यामान वाम करवन।

ষতিহারী ও বাঁকিপুর, বিশেষত বাঁকিপুর তাঁহার কর্মভূমি হয়,
বধন বেধানেই বাস করিভেন দয়া ও পরোপকার প্রবৃত্তির
পরিচর দান করিছেন, অতি সামান্ত বিষরেও পরস্থাধে মনযোগিনী
হুইছেন। বদি কেই ভাহাকে কোনপ্রকার কল, মূল, কি মিটার
উপহার দিত, তিনি তাহা অতি ক্সুক্ত ক্তে বিভাগ করিয়
আনেকের গ্রহে পাঠাইছেন এবং ভাহার একাংশ মাত্র নিজ

পরিবারের জন্ত রাখিজেন। বিহার জঞ্চল নারিকেল বঙ্চ ছুজাপ্য বন্ধ। একবার জ্বোরকামিনী ছুই চারিট নারিকেল; উপহার পাইরা ভন্ধারা এক প্রকার পিট্টক প্রস্তুত কবিলেন, গ্রাবং নিকটন্থ বিভালরের ছাত্রদিগকে নিমন্ত্রণ করিরা জাহার করাইলেন এবং ছাত্রেরা প্রবাসে জতি সামান্ত জাহার করিয়া থাকে, এই নিমন্ত্রণ স্বন্ধান্ত মিষ্টার ভোজনে অভিলয় আক্রাদিত হইল।

এই সামাক্ত বিষয়ের উল্লেখ এইজক্ত করা বে, অংবারকামিনী অভি শীঘট পরোপকার বতে এত অধিক অমুরাগিণী ও উৎসাঙী হইলেন বে অন্তের দেবা জাঁহার ভীবনের প্রধান কার্য্য হইয়া উঠিগ। বেরূপ শোক হউক না কেন, উচ্চপদম্ভ হউক আর অভি নীচ জাভীয় হউক বিপন্ন হইলেই সাধবী অংখারকামিনী তাহাদের সেবার আত্মসমর্পণ করিছেন। একদিন সমাচার আসিল বে বাঁকিপুরের কোন উচ্চ কৰ্মচাৰীৰ পত্নী প্ৰানৰন্বায় পীভিত অবস্থায় পড়িয়া আছেন। ভাঁহাকে এবং ভাঁহার কয় শিশুকে সেবা করিবার কোনো লোক নাই। অবোরকামিনী তখন আছার করেন নাই। কিছ ভনিবামাত্র তিনি দেই স্থানে গমন কবিলেন এবং বদিও এই পবিবাৰ তাঁছাৰ নিকট সম্পূর্ণ অপরিচিত, তথাপি এরপ বড়ের সহিত প্রস্তি ও শিশুর সেবায় নিযুক্ত হইলেন বে, লোকে দেখিয়া আশ্চর্য হইল। শনাহারে সমস্ত দিন ইহাদের সেবা করিলেন কিছ শিশুটিকে বাঁচাইতে পারিলেন না। তিনি আর একদিন শুনিলেন একটি অতি নীচ লাতীর ব্রীলোক প্রস্বাস্তে অভিলয় ক্যা হইয়া পড়িয়াছে, ফ্রতগতি নেধানে গিয়া দেখেন, প্রস্থৃতি একজন কয়লা-বিক্রেভার পদ্ধী, একটি শতি কুক্ত শপরিষ্ঠার কুটির মধ্যে বাস করে। স্থাবার সে কুটীরের विश्न वजाववानिष्ठ পविभून, चरव ख्वानक कुर्नेच, भवा। नाहे, বল্প নাই, ঔষধ নাই পথা নাই। উপস্থিত হওৱা মাত্ৰ তিনি নিজ পরিচিত চিকিৎসকের অক্ত লোক পাঠাইলেন। নিজগৃহ হুইতে শব্যা ও বন্ধ আনাইলেন এবং সহস্তে নাটা লইয়া ধূলি মলিন বন পরিষার করিতে ব্যক্ত হইলেন। তু:খী গুহস্থেরা অনেক নিবেধ করিল, তিনি ভনিলেন না, বলিলেন, এই ছুই হস্ত কিসের অন্ত ? শীম কুটীর-বাসিনীকে স্বস্থ করিয়া তুলিলেন এবং বতদিন সে সবল না হইণ ভাহার ভশ্রবা কবিলেন।

কোন আগছক অতিথি অবোরকানিনী দেবীর গুহে নিরাম্রর হইরা আসিলে কিরিত না। একবার একদল সার্কাদ অভিনেতাদিসের মধ্যে একদন পীড়িত হইরা উচিহার গৃহে উপস্থিত
হইল। এ প্রকার লোকের সঙ্গে তাঁহার কথনও কোন সংস্রব
ছিল না, তথাপি পীড়িত দেখিরা তাহাকে তথনই গৃহে ছান
দিলেন এবং বন্ধ সহকারে আরোগ্য করিরা বিদার করিলেন। এই
প্রকার অনেক লোক তাঁহার গৃহে আশ্রের লইত, এবং সমরে সমরে
বোর অক্তক্ততা ও বার্থপরতা প্রকাশ করিত কিছ এক দিনের অস্ত
তিনি প্রস্বোর বিরত হরেন নাই। তাঁহার নিজ পরিবারে বিংশতিটি
বালিনা প্রতিপালিত হইত। তাহার। নানা ছান ও নানা পরিবার
হইতে সংগৃহীত। তাহাদের শিক্ষা, বাদ্যা, সদাচার সমুদারের ভার
কিছ হক্তে প্রহণ করিয়াছিলেন। আপনার পাঁচটি সন্ধানদের সঙ্গে
তাহাদিসকে রক্ষণ ও পালন করিতেন। এবং আশ্বর্থ এই ব্যু

নিজের পূত্রকভাদের সজে পালিত সন্তানদের কোন প্রকার প্রজেদ বাধিতেন না। বদি কেহ বসিত ভোষার অবিবাহিতা কলার হাতে কাচের চূড়ী থুলিয়া এক জোড়া সোনার চূড়ী পরাইয়া দেও। তিনি বলিতেন তা হলে অপর দশটি কলা কি ভাবিবে ? পাছে তারা মনে জুঃও পার, পাছে তারা মনে করে আমাদের মা নাই, তাই আমাদিগকে গুরু হাতে থাকিতে হয়। অভ এব আমি এয়প ইতর-বিশেব করিতে পারিব না।

অঘোরকামিনী নিজের পরিধানের জন্ত অতি সামান্ত এবং কুচিবিক্লম বস্তাদি ব্যবহার ক্রিভেন, তাহা দেখিয়া খনেক লোক নিন্দা ও বিজ্ঞাপ-ব্যঙ্গ করিত, কিছ ভিনি তৎ প্রতি কর্ণপাত ক্রিতেন না। প্রকাশ বাবু উচ্চদরের ডেপুটি কালেকটর; তাঁহার উচ্চ বেতন, কিন্তু তাঁহার প্রিয়তমা পত্নী নীলে ছোবান খান পরেন, মাসের শেব পর্যাক্ত বেতনের টাকা কুলায় না, সাধারণের হিতকর কাৰ্য্যে সমুদান্ত বায় হইয়া বায়। বাঁকিপুরে একটি বালিকা বিভালয় আছে, তাহার শিক্ষকতা ও ভত্তাবধান কার্য্যে অংখারকামিনী সারাণিন ব্যঞ্জ থাকিতেন। এবং ভাহার ব্যয় সকুলানের জন্ত তাঁহার মাসিক আবের অনেক টাকা তাঁহাকে দণ্ড দিতে হইত। আমরা সকলে ইহা জানিতাম, কিছ তিনি নিজে কংন ইহার উল্লেখ করেন নাই, এই বিতাসর সম্পর্কে একটি অপূর্ব্য কাহিনী আছে। ইহা স্থাপনের কিছুকাল পবে অবোরকামিনী ভাবিলেন যে বিজ্ঞালয় চালাইতে গেলে নিজের উচ্চ শিকার আবশুক্র। আমার উচ্চ শিকা নাই, শিকা করিতে হইবে। তথন তাঁহার বয়ক্রেম ৩৫ বংসর, এই বয়নে পঞ্চ সম্ভানের মাত। হটরা, সম্পন্ন ব্যক্তির ভাষ্যা হইয়াও তিনি কিয়ৎ কালের জন্ত বাবিপুর ভাগে করিলেন ও লক্ষে নগরে মিসনারীদিগের ন্ত্ৰীবিত্তা শব্দে মহা উৎসাহে ছাত্রীরূপে হইলেন। সেধানে নয় মাদ কাল পরিশ্রম করিয়া নিজ পরিবারে ফিরিয়া শাসিলেন এবং বালিকা বিভাগয়ের কার্য্যে নৃতন উভয়ে পুনরার্ভ क्रि:लन्।

অংশারকামিনীর এই সমস্ত হিতৈষণার উল্লেখ করিলাম বলিয়া কেহ বেন মনে না করেন, তিনি তাঁহার নিজ পরিবারের প্রতি এক দিনও উপেক্ষা কিয়া অবত্ব করিয়াছিলেন। স্থামী ও সন্তানদের জন্ত কি পর্যান্ত পরিপ্রাম করিতেন ও তাঁহাদিগকে ভালবাসিতেন, সমস্ত পরিবার সজল নয়নে তাহার ব্যাঝ্যা করিয়া ফুরাইতে পারে না। প্রকাশ বার্কে সরকারী কর্মোপলকে নানা ছান পরিজ্ঞখণ করিতে হইত। অংশারকামিনী চিরদিন তাঁহার অয়ুগামিনী হইতেন। পথ জমণের সকটে ও অস্থবিধা অকাতরে বহন করিতেন। একবার প্রকাশ বার্ব অতি উৎকট পীঞাতে প্রাণসংশ্র হয়, সাধ্বী অংশারকামিনী হুই মাস পর্যান্ত দিন-বাত্রি তাঁহার চিকিৎসা-পথ্যের জন্ম এরপ অবিপ্রাম্ভ সেবা করিয়াছিলেন বে, বে তাহা দেখিয়াছে, সে কখন ভূলিবে না। অধ্য জ্বোরকামিনী স্থামীর সঙ্গে সর্বপ্রকার দৈহিক সম্পর্ক ত্যাগ করিয়া কঠোর ব্রহ্মহর্ধ্যাবলম্বন করিয়াছিলেন। কিছ স্থামীর বাহ্নিক সেবা তিনি জীবনের প্রধান কর্ম্ব্য মনে করিতেন ।

স্বামীর নিকট সম্পূর্ণ বাধ্যতা তারার প্রধান বত। প্রকাশচন্ত্র

আক্ষনমাজের একজন ব্যক্তি, ভাষার নিঠা, ভক্তি, সচ্চরিত্রতা সকলেই জানেন। জাঁহার জনেক ধর্মবন্ধু আছেন, কিছ ভাঁহার ভাষ্যার ভার ধর্মবন্ধু তিনি অপর কাচাকেও কখন পান নাই। ধর্ম প্রসংক্ষ, वर्षविशाम, वर्षश्रकात्त्र ज्ञाचकामिनीव **অ**বিশ্রাস্ত উৎসাহ। বাঁকিপুরে কোন সাধু ব্যক্তি উপস্থিত হ**ইলে** অংশারকামিনী সুস্তিজ্ঞ পুঞা-মন্দিরে মহাস্থারোত পুড়িয়া ৰাইত। সেবার ও আদরের সীমা থাকিত না। অংখারকামিনী প্রতি বংসর অনেকগুলি আত্মীরংকু সঙ্গে করিয়া রাজগুড় নামক বৌদ্ধতীর্থ পর্যাটন করিতে বাইতেন। ধর্মসাধন করাই এই পুর্য টনের একমাত্র লক্ষ্য। ছুই ভিন দিন দেখানে প্রবল উৎসাহে ধর্ম্মাৎসব করিতেন, গমাপথে লোকদিগের নিকট প্রকাশ্র উপদেশ ও নগর-সংকীর্ত্তন করিতেন। এইরূপে তিনি ধর্মাত্মা সামীর সঙ্গে নিগুচ ভক্তি, নিষ্ঠা ও উচ্চত্রত পালন করিয়াছেন। ঈর্বোণাসনায় অবোরকামিনীর অসামাত ভক্তি দেখিরা আচার্য্য কেশবান্ত অভিলয় সভোব প্রকাশ করিয়াছিলেন। বাস্তবিক তাঁহার ধর্মভাব হইতেই কাঁহার পরসেবার প্রবৃত্তি, ভগবস্তুত্তি এবং লোকসেবা সমান পরিমাণে ভাঁহার চরিত্রকে গঠিত করিয়াছিল।

व्यापावकामिनीत पृष्ठास्य वांकिनुत्रम् महिनामश्रेनीत् इनुमून পড়িরা গিরাছিল। আজ বেলগাড়ী ভ্রমণকারিণী জ্রীলোকদিপের জন্ত বিশ্লামগৃহে স্ত্রী-জাতির প্রতি অত্যাচারী ছুবাচার্টিগের শাসনের জন্ত গতর্ণমেণ্টে দর্থান্ত করা, আজু সাংবৎস্বিক ধর্মায়প্তান अवभ नाना व्यकाव मश्कार्या काँहालाव मर्खना रिभून छेश्माइ हिन। কিছ বহ দিন হইতে অংবারকামিনীর শ্রীর অসুত্ব হইতেছিল। নানা পরিশ্রমে ও নানা কইভার গ্রহণের জন্ম তিনি বার বার রোগাক্রান্ত হইয়াছিলেন। শেবে শ্রীর ভাঙ্গিরা পড়িল, ভয়ানক অব-বিকার হটল, ভাঁহার আস্মীয়সজন সকলেই বুরিলেন যে, এবার আরোগ্যের কোন ভর্মা নাই। সকলেই জাঁহার সেবার নিযুক্ত হউলেন। চিরজীবন তিনি লোকের দেবা করিয়াছিলেন, লোকে এ অনমরে কি তাঁহার গুণ ভূলিতে পাবে ? তাঁহার স্বামী ও সম্ভ নগুণ অবিশ্রাস্ত সেবার জন্ম পরিশ্রম করিলেন। কিছ কিছুভেই কিছ हरेन ना। स्नवी अध्योदकामिनी २५३८ धृष्ठीस्मव १८०३ खून सिवान ভগৰানের পবিত্র ভোত্র ভনিতে ভনিতে ও করিতে করিতে ইহলোক হইতে বিদায় লইলেন।

আৰু আৰু সে বাঁকিপুৰ নাই। বালিকা বিভালর আছে।
আৰু সমাজ আছে, ত্রীমণ্ডলী লোক্মণ্ডলী নিকলই বহিংছি,
কিছ দেবী আঘাৰকামিনীর অভাবে সকলই অঙ্গহীন, তেজোহীন,
প্রাণহীন! আঘাৰকামিনী স্থাশিকিতা মহিলা ছিলেন না, স্প্রকৃতি
কি সভাতার জন্ত বিখ্যাত হরেন নাই, সকল বিষয়েও স্থিতেনাও
ক্রিতে পারিতেন না, কিছু তাঁহার প্রস্কোর্য আত্মসম্পূর্ণ,
সংকার্যে উংসাহ, সংসাববৈবাগী, চিন্তভূত্তি, পাতিব্রতা, ধ্র্মবিখাস
ও অসাধারণ ভগবদভক্তির কথা যে ভূনিবে তাহাবই বিভত্ত আহ্লাদ
হইবে। শ্রীমৃক্ত প্রকাশচন্দ্র বায় তাঁহাকে সহব্যিনীকণে পাইরা
বন্ধ হইরাছিলেন এবং আম্বা তাঁহাদের উভরকে শ্রন্থা শ্রীরয়া
স্থী হইরাছি, উপকৃত হইরাছি, কুতার্থ হইরাছি।

[মাসিক বস্থমতীতে প্রকাশিত বিজ্ঞাপন বিশ্বাস ও নির্ভরযোগ্য]

ভাবি এক, হয় আৱ

দিলীপকুমার রায়

ছাবিবশ

প্রিণ বাছ শ্রা বাগ্দভাকে নিয়ে পার্ক থেকে যখন বেক্স **७**थन ताङ म्योत । উञ्चाद ,मन नित्मत्वद मञ्ज कृदेशाङ म्हा দলে যুগল মৃতি চলেছে আনন্দে। কিছু পল্লবের মনে হ'ল কাকুর আনশ্চী ওর আনন্দের কাছাকাছিও আসতে পারে না। ওর কাছে এমন আশ্চর্য ভাবে কথনো প্রত্যক্ষ হয়নি আনন্দের বিশ্ববিশ্ববণী মৃতি। বিষ্ণের সম্পদ ওর কাছে আন্ত তুল্ক, নগণা, অবাস্তব থেকে পাবিজ্ঞাত ওব হাতে আসাব সঙ্গে সঙ্গে গে আব সব মর্তা ফুল্ই হ'বে গেছে স্লান, নিভাভ গন্ধহীন। বাহু ত ওব বছবাঞ্জিখাব বাছা কোমল কবোক চাপ ও নিবিড় ভাবে গ্রহণ কবেছে ওর সমস্ত চেতনা দিয়ে। এমন অপরপা, এমন লোকলগামভূতা, এমন चा-मगरी चाक उटक वरण करवड्ड-- चन्नोकांत करवड्ड छोरमश्रध থাকবে ওর পার্ষার্তিনী, দৈনন্দিন জাবনে হ.ব সুধ-তুঃখ, আশা-নিরাশ, স্বপ্ন-বেদনার সাধী-সকালে উঠেই প্রথম তেখবে ওর তক্রালস অনিন্দা মুখধানি, রাত্রে নিজার অতলে তলিয়ে ধংবার আগে প্রস্তু ওর কোমল স্পর্ণ ওর অংক থাকরে লভার মতন জড়িয়ে, থেকে বেকে বুম ভেঙে উঠেও পথবে ওকে অতৃপ্ত নয়নে—এই বৰুম আবো কত কী জন্না-কল্লনার নেশার ও পথ দেখতে পায় না (यन ! वाग्मान · · वाग्मान · · वाग्मान · · चथा ─ ─ ७व चवाक लात्त्र ভাবতে—হুদিন আগেও ও ভো জানত না বিধাতার কোন অংশীবাদ ওর পথ চেয়ে আছে? মনে পড়গ—পরও দিন বাতে ওব চিত্ত-বিক্লবের কথা। সার স্বাঞ্জ । মনে পড়ল ওর একটি প্রিয় গান : **"বুর্গ নামিয়া আত্মক মর্ভো, বুর্গে উঠুক ধরণী"**…

ভঠাৎ কর্কশ সাইবেণ ও আইবিনের চিৎকারে ওর বিহ্বল স্থপ্ন ভেডে থান থান হয়ে বায়। ঠিক সেই মুহুর্ভে ফুটপান্ত থেকে কে একজন ওর বাছমূল থ'বে টান দেয়। বাছলগ্ন। আইবিনকে নিয়ে ও লাফিয়ে ফুট শভে উঠে কোনোমতে টাল সামলে নেয়। সঙ্গে সঙ্গে ট্যাজিটা বেরিয়ে বায়। এক চ্লের জ্ঞে বেঁচে-বাওরা বাকে বলে।

কানে আসে পবিচিত হিজপের হাসি ও থাস বাংলার ধ্যক: এমনি করেই কি প্রেম করে হে—মোড়ের মাথার? আর একটু হলেই বে প্রেমনীলা সাঙ্গ হয়ে গিয়েছিল!

धकी! यूष्रक !

বুল্বকের দৃষ্টি পড়ে আইবিনের 'পরে: এ কী। ফ্ররলাইন চের্থকিফ ? মাফ করবেন—আপনাকে পিছন থেকে দেখেছিলাম ব'লে চিনতে পারি নি। পারলে আপনাকেই চেপে ধ্বতাম প্রথমে— ট্যান্সিটা –এ কী?

ও কিছু না—কন্নুয়ের কাছে খেঁব লেগে ওভারকোটটা একটু ছিঁড়ে গেছে।

ওভারকোটের জন্মে ভাবহি না—আপনার করুয়ে—

না না লাগে নি—:চাটটা বেচারি গুজারকোটের উপর দিরেই গেছে।

পল্লবের এককণে সাড় ফিরে আসে, উবিগ্ন কঠে বলে: সন্ত্যি বলছ—সাগে নি চোট ? দেখি— আইরিন সকুঠে বলে: না, দেখবে আবার কী-কিচ্চু হর নি। কেবদ ওভাবকোটটার জ্বলে একট ছ:ব হচ্ছে।

যুত্তক তেসে বলল: সে ক্সন্তে জামের দেবেন তিনি—বিনি দায় না বুবো ভাব নিতে ছোটন।

পর্ব মবমে ম'বে গেল: স্ত্যি আইবিন—কোমাকে আজ আমি মানে স্থান অকার চয়েছে স্কামি দেখাত পাই দি স্

যুত্তক হ'স আইবিনের ভিকে চেরে চাথ মিট;'মট ক'বে বলে: বিশ্ব এ দায় আপনারি ফ্রফাইন। মানে, ভন্ধকে চকু দানের।

আইবিন হেলে বলল: অবিচার করবেন না—জন্ধ নর— সংস্ঞান্তাত। তাই চাথ ফুটতে একটু সময় লাগবে।

পল্লব অপ্রতিভ স্থবে বলল: চলো যুক্ত, একটা কাকেতে ব'সে—

ন' ভাই, শন্তবাদ! আৰু আমাত সঙ্গে একজন আছেন। একপ ক্তের two is company ভাব একটি বেলি হ'লেই বসভক ব'লে টুলি খুলে কৃষ্ কজার আইবিনের কচ্ছন ক'বে ক্ষভাষার কেসে কি বলল। আইবিন খুলি হ'বে মুখ ফিবিবে নিল। পদ্ধব শুধালো: কী বলল।

তোমার ভার নিতে—ভবু পথে চালাতেই নব, পথ দেখাতেও বটে।

সাতাশ

রাত সাড়ে বারটায় যথন পল্লব বাসায় ক্লিবল তথন ওব মনের সব বিধা-হল্ম কেটে গোছে, বজা উঠেছে মাতাল হ'রে। চিন্তার দল এলোমেলো, কিছ ছুটেছে একই চিন্তার অভিসাবে। ফিবে কিবে মনে হয় আইরিনের প্রেশ্ন: আমি তোমাব ভার হব না তো?

ভাগ গুলিন আগেও ও এ-নিয়ে কতই ভেবেছে---বিবাংহর হাজারো দায়িত্ব, সংসারের ভার, লোকমত, কুতুমের নিষেধ - জারোকত কী ? কিছু আৰু মনে হয় ওর নিজেরি উত্তর : বেদীর কাছে কি প্রভিমাকে মনে হয় ভার, না মুক্তি ? কোপেকে मान थल थ-उपमा ? अवहें नाम कि (श्वतना ? विकृ इय कार्य अहे-हें কি জীবন-বিধাতার সম্রেহ বিধান নয় ? দেশের কাঞ্চ ? কেন ? দেশের কাজ কি বিবাহ করলে হয় না ? ভিলক, অরবিশ शाकी, तमनव्यू-तित्वत कांच थेँ त्वत्र (ठात्र विन करत्राह व्ह ? विरिवकानत्मत्र कथा मान পाए इठीए। किन्ह मन कृष्य छोठे वान : স্বাইকেই কি বিধাতা এক ছাঁচে ঢালাই করেন ? বিবেকানক অবশ্ৰ মহাপুক্ষ—নিঃসন্দেহ। কিছ তাই ব'লে কি বলতে হবে তাঁর পক্ষে বা ছিল স্বধর্ম তা আরু স্বার কাছেও হবে স্বধর্ম ? রাম, কুফ, বাজ্ঞবন্ধা, বশিষ্ঠ, বৃদ্ধ, হৈতক্ত, রামকৃষ্ণ, বিজয়কৃষ্ণ গোস্বামী · · ও খুব জ্বোর দিয়েই বলে মনে মনে: বিবাদ খদি মছন্তম জীবনের **अक्ट**बोइहे हृद्य छत्य थें एवं व्याद्धात्कहे विवाह करबिहरणन . विन १ মহাভারতেই কি বিধান নেই—সংসাবে মোটামুটি চারটি স্বভাবের জীব অন্মার ? বার ইহকাল আছে কিন্তু প্রকাল নেই, বথা ভোগী; বার পরকাল আছে কিছ ইহকাল নেই, ৰখা বোগী, বার ইহকালও तिहै, **भद्रकान** तिहै वेश हुर्बु ल न्नि । चात्र वात्र हेहकान আছে প্রকালও আছে বিধা ধর্মতীক গৃহস্থ। নারী নরকের খার---এ-বিধান কি সভািট কেষ্ট ভাগবত বিধান ব'লে মনে করতে পারে ? পরব ছারার সঙ্গে যুদ্ধ করে: কেপিনবস্ত: খলু ভাগ্যবস্তঃ ? দুর-ত একটা কথাই নর।

ঘরে চুকে আলো আলতেই দেখে, ওর লেখার টেবিলের উপরে একটি চিঠি। অতি পরিচিত হস্তাক্ষর। ঠিক্ আলই ! · · ও থুসল খামটি সম্ভর্গণে, কুন্ধুম লিখেছে:

"ভাই পলবা

বিলেত থেকে ফেরার পর প্রায় আড়াই বংসর কেটে গেছে। তোমাকে চিঠি লেখাও হয় নি প্রায় বছর খানেক। লিখব কী—ক্ষেস থেকে ওয়া মাদে একটি করে চিঠি লিখতে দিত, লিখতে হ'ত বাড়িতেই—বিশেষ করে বাবাকে আখন্ত কয়তে। তাই কিছু মনে কোরো না। তোমাকে চিঠি লিখি না বটে, কিছ বোৰ হয় এমন দিন বায় না বেদিন তোমার কথা একবারও মনে পড়ে না। বিশেষ ক'বেই মনে পড়ত জেলে—জ্য়নাকয়না কয়তাম কত রকম—কী ভাবে ভোমার প্রবাস জীবন কাটছে, না জানি।

মাত্র পরও জেল থেকে ছাড়া পেয়েছি এগার মালের পর। বেরিয়েই প্রথম ভোমাকে লিখছি।

দেশে পৌছেই ভোমাকে চিঠি লিখেছিলাম। তাঁতে খবর দিয়েছিলাম—লামি দেশবন্ধুর নেতৃত্ব বরণ ক'বেই দেশের কাজে নাঁপ দিয়েছি। এব জল্যে একটি বারও আমার পরিতাপ আসে নি। আমার মনে হর—তিনি শুধু রাজনৈতিক নেতা হিসেবেই নক, মাছুষ হিসেবেও গান্ধীজীর চেয়ে বড়, বলিও গান্ধীজীকে আমিও এ যুগের মহং মাছুষকের অক্যতম ব'লে মনে করি। তাঁর অসহবোগ আন্দোলনের রাজনৈতিক সার্থকতা সম্বন্ধে বাই বলা বাক না কেন, এ কথা না মেনেই উপায় নেই বে, তিনি তাঁর চরিত্রবল তথা আন্তরিকতার গুণে দেশে একটা নবজাগরণ এনেছেন; সে জংল্য তিনি আমাদের নম্মানি বিকি! কিছ তেরু বলব তাঁর মধ্যে সে হার্মনি ও গভীরতা আমি গঁজে পাই নি বার গুণে দেশবন্ধু বড় হ'য়ে উঠেছেন। গান্ধীজী ত্যাগে খুবই বড়—এ কথা মানি, কিছু দেশবন্ধ্ব সঙ্গে আমি একমত বে, তিনি সামাজিক জীবনে হিন্দু হ'লেও নৈতিক দীকার বিদেশী, বেছেতৃ তাঁর গুকু গীতার কৃষ্ণ নন, তাঁর গুকু তিনটি বিদেশী—খুই, টল্টর ও খোরো।

দেশবদ্ব বেলার একথা খাটে না, বেহেতু তাঁব রাজনৈতিক শিক্ষাগুক ইংরাজ হুলেও, ধর্মনৈতিক দীক্ষাগুক ভাবতই বাট। তিনি শত্তবিক্ষৰ, বহিঃশাক্ত। তাঁব মহন্দে আমি অভিভূত, তাঁব স্নেহ পেয়ে আমি ধন্ত।

আমি গান্ধীক্ষীর অহিংসামন্ত্র বিশাস না কর্মলেও দেশবন্ধ্ব উপদেশে তাঁর অসহবাগে আন্দোলনে বোগ দিই—আবো এই ভেবে বে. এ-স্ত্রে রাজনীতির টেকনিক তথা প্রিজিপল সম্বন্ধে অনেক কিছু জানতে পারব। জলে না নেমে ওধু বে সাঁতার শেখাই বাম না তাই নম—জলের বাধা কী জাতের সে সম্বন্ধেও প্রত্যক্ষ অভজ্ঞতা অর্থন করা বাম না। এর ফলে একটা মন্ত অভিজ্ঞতা আমার সংগ্রহ এই—বে কথা দেশবন্ধ্ প্রায়ই বলেন বে, স্বাধীনতার সংগ্রামে ইংগাল আমাদের প্রচন্ত প্রতিপক্ষ হলেও ঘামাদের সব চেম্নে বড় শক্র কানা নম। আমাদের সব চেম্নে বড় শক্র কানা নম। আমাদের সব চেম্নে বড় শক্র ভারানী নম। আমাদের সব চেম্নে বড় শক্র হল গৃহশক্র ওম্বেফ বড়ু শক্র হল গৃহশক্র ওম্বেফ মন্ত্রামে বিশ্বন্ধ্যা। এ ওধু দেশবন্ধ্য অভিজ্ঞতা নম্ন—১৯১৭-ম্ব

লেনিনেরে। ঠিক এই অভিজ্ঞতাই হয়েছিল—সব চেয়ে বেশি তাঁকে
লড়তে হয়েছিল স্বদেশবাসীদেরি সংক্র কিছু দেশংকুর সজে
লেনিনের তফাং এই বে তিনি বলেন না তাঃস্বঃ—এদের লিকুইডেট
করতে হবে রাভারাতি, বলেন—এদেরো কাজে লাগাতে হবে।
কিছু মকুকগে বাজনীতি—এ বিষয়ে অনেক কিছুই বলবার আছে,
কিছু সেহবে তু'ম ফিরে এলে।

বলেছি, আমি স্বদেশী আন্দোলনে বোগ দিতে না দিতে ওরা আমার পারে নূপুর না হোক, হাতে বালা প্রায় ও পাঠায় হরিণবাড়ি। সেথানে আমি দেশ্বস্থুব সঙ্গে এক কারাকক্ষে কাটাই ছ'থাদ-এ ববর ভূমি নিশ্চরই পেয়েছ। তারপুর ফের **ভামাকে** ওরা ধরে ঠিক এগার মাস আগে। পরশু ছেড়ে দিয়েছে, ক্রেলে আমার শরীর ধারাপ হবার দক্ষ। তবে মনে হয় ওয়া ওঁথ পেতে বলে আছে--আমাৰ শৰীৰ ভালো হতে না হতে ফের পাকভাবাৰ জব্যে। এবার ধরলে বোধ হয় সহজে ছাড়বে না। গুক্তব-এবার ধরলে আমাকে পুলিপোলাও চালান দেবে বর্মায়—মাণ্ডালয় কেলে। আমি প্রস্তুত আছি। দেশের জন্মে তু:খবরণ করেছি টোখ খুলেই— তাই সেজন্মে খেদ্'নেই। তবে মন খাবাপ হয় ভাবতে বে, অদূর ভবিষ্যতে আমাদের খাধীন হবার কোনো আলাই নেই-মনে বদি না হঠাৎ ফেব বিশ্বযুদ্ধ বাধে। দ্বিতীয় বিশ্বযুদ্ধ অবভা বাধবেট. কিছ কবে বাধবে ভাবি। মনে মনে ভাপি: নারদ নারদ! বাধাও বাধাও বাধাও ওস্ত-নিওস্তের লড়াই—তিলোত্তমা হোক कलानियानिमय (पर्वी।

জেল থেকে বেরিয়েছি নানান অন্থের ভূগে। প্রায় দশ দের ওজনে কমে গেছি ডাক্ডাবে বলছে—হ'টি মাস প্রো বিপ্রাম নিজে কিছ বিপ্রাম নেওয়া জামার পক্ষে অসম্ভব। সামনে অফুরক্ত কাল, দেশবন্ধুও কাল তথা অন্তম্ভ—কাজেই তাঁর অনেক কাজের ভারও আমাকেই নিতে হয়েছে। জন্তালু দেশকে জাগানো কি সহজ্ব রাগার ? আমেরিকার বাণী: সময় হ'ল টাকা, দেশবন্ধু ঠাটা ক'রে বলেন ভারতবর্ষের বাণী: সময় হ'ল ছল্প্ভি। রসিক লোক—সাহসেও বেমন হাসিতেও তেমনি। একটা মানুবের মন্তন মানুব দেশগাম বটে!

আমার কথাই ব'লে চলেছি। এগার মাদ লৈপিক মোনের প্রতিক্রিয়া আর কি। মরুকগে, এবার তোমার কথা কিজাদা করি। হাাবলতে ভূ:লছি—তোমার ছ' তিনটি চিঠি পেরেছিলাম, তথন আমি জেলে।

তোমার কব বাজবীদের কথা লিখেছ, বেশ লাগল। ওদের সঙ্গে মিশতে আমি বারণ করি না। দেশবন্ধুর সংস্পাশ এসে আমার এ-সম্বন্ধ মত একটু বদলেছে। এখন আমার মনে হর—ওদেশের দেয়েদের সঙ্গে বারা মিশতে পারে—পবিত্র ভাবে অবগু—তারা ওদের কাছে অনেক কিছু শিখতে, লাভ করতে পারে। স্বামী বিবেকানন্দও বার বারই বলেছেন ওদের দেশের মেরেদের কাছে থেকে আমাদের অনেক কিছুই নেবার আছে। কেবল একটু কিছ' আছে।

বিবেকানৰ বা পাবতেন তা স্বাই পাবে না, এটুকু ভূগলে চলবে না। মোহনলালেওই দৃষ্টান্ত নাও না। সে বড় গলা ক'ৱেই বলন্ত বে লে ছানে; where to draw the line—ম্বে প্রেড় কিছ কাৰ্বত কী ঘ'টে গেল, বলো দেখি ? অবঞ্চ বিভাব বিক্লছে ব্যক্তিগত ভাবে আমাৰ কোনো অভিবাদই নেই। এ-ও আমি মানব বে দে ঘেবে ভালোই—হৈ বিলী কি বিলিনী নৱ। কিছ কাল ভার পাণ্ড্ৰ বং ও লান মুখ দেখে মনে হ'ল সে মন:কটে আছে। মোলনলাল বদিও বলল বে এদেশের গ্রম সইছে না ব'লেই ভাকে এত সান দেখাছে কিছু আমার মনে হ'ল এই বাহ—বিতার সম্মান্ধ বা ভব কবেছিলাম ঠিক ভাই ঘটেছে: ও আমাদের দেশের ভব্ন অল-হাওরাই নব, আবহাওরার সঙ্গেও নিজেকে খাপ খাওরাতে পারছে না। মোলনলাল কথার কথার বলল—ওকে একবার চেঞ্লে ছইজলভি নিয়ে না গেলেই নর—ওকে ভালো ভাজার দেখাতে হবে। আমি গুনে একটু আশ্বর্ধ হ'বে বললাম: গুনেছি বন্ধা বোগের স্বচেরে ভালো চিকিৎসা হর সুইজলভি, কিছু ওর ভো ভেমন কোনো শক্ত অন্ধ করে নি ?

মোহনলাল বেন একটু ক্লাম্ভ কঠেই বলল: 'রিভা বলে —এদেশে কেউ ভাক্তাবির কিছুই জানে না।' শুনে এখনে একট ক্ষুদ্ধ হয়েছিলাম-ক্ষুল করছি। কিছ ভেবে দেখলাম রিতার থুব দোক নেই। এ দেশের ছ:ধ-দৈশ্র-দাবিদ্রাই সব আগে বিদেশীর চোখে পড়ে। ভাছাড়া ৰতই কেন না আমদের দেখের আধ্যাত্মিক সম্পদ बिष्य कांक कत्रि, স্বাধীন দেশ্বে লোক কিছুতেই এমন দেশকে শ্রন্থা করতে পাবে না—যাব কোটি কোটি সম্ভানকে পদানত ক'বে বেথেছে হাজাব পঞালেক ফিবিজি। আন্তই সকালে এই নিয়ে দেশবন্ধর সঙ্গে কথা হচ্ছিল, তিনিও বললেন: ঠিক এই জলেই আমাদের সব ছেড়ে আগে চাই স্বাধীন হওৱা, নৈলে আমাদের সাংস্কৃতিক তথা আগ্নাত্মিক স্ম্পদের বাণী ওদের কানের মধ্যে বেকে পারে কিছ মরমে পশবে না বাবা ৷ ব'লেই মৃত্ হেসে বললেন : তুমি জানো—আমার আপত্তি বিদেশিনী বিয়ে করায় নয়, আমার আপত্তি মেম বিয়ে করায়, কি না এমন মেরেকে ঘরণী করায় বে শব্যাসঙ্গিনী হবার কার্লা-কায়ুন জানলেও সহদেশিনী হবার মন্ত্র-তন্ত্র শেখেনি। না. এ যুগে স্ত্রীকে ख्य महर्शांनी ह'ताई हमारव ना-ह'र्ड हरव महरमाना, a कथाहा ভূমি চালু কোরো কুকুম-পরে কাজে আসবে। কথার ক্ষমতা কভ বেশি ত্রি এখনো জানো না, কিছ আমি হাড়ে হাড়ে জেনেছি বাবা। এই রকম কত চমংকার কথাই বে তিনি বলেন-তুমি খাকলে নিশ্চয়ই টুকে রাখতে কিন্ত বা বলছিলাম।

আমি মোহনলালকে বললাম একটু ক্ষু হ'বেই, এ দেশের ডাজ্ঞারদের 'পরে বথন বিভার শ্রন্ধা নেই তথন ওকে সুইজল'ও নিয়ে বাওয়াই ভালো। কবে বাচ্ছে? মোহনলাল বলল: তোমার জেলে বাওয়ার দকণই বেতে পারিনি, কারণ মাস খানেক আগে দেশবন্ধ্ বলছিলেন—তোমাকে এ বাজা ছেডে দেবে। এখন ভূমি বখন ব্যের ছেলে ঘরে কিরেছ, তখন কালই পাসপোটের জ্ঞেল দরখান্ত করন বোধ হয় মাস খানেকের মধ্যেই কালাপানিতে পাড়ি দেব, ভারপরে যা করেন নিয়তি। ওর কথার মধ্যে একটু কী বলব ডিসাপ্রেন্টমেটে? স্বর বেজে উঠল। অপ্চমনে আছে ও বিলেজে বখন বিতার মোহে পড়ে (সহদেশিনী ছাড়া আর কাকর প্রেডি সভিয়কার 'প্রেম' হ'তে পারে ব'লে আমার কোনো দিনই মনে ক্র্মিন) তখন বলেছিল বিক্ত্রলালের সানকে নিজির ক'রে:

'প্রেমে নর আপন হারার প্রেমে পর আপন হর।

আদানে প্রেম হয় না কো হীন, দানে প্রেমের হয় না কয়।'
কথা অনবত কিছ এ প্রেম জাগে কখন ? না, য়খন দুটো মন
একই আদর্শে অমুপ্রাণিত হ'য়ে ওঠে, তার আগে নয়। এই ল্লেড্রই
বিদেশিনীক বিবাহ করার আমার এত আপত্তি। অবশু বদি তেমন
বিদেশিনীর দেখা মেলে বে নিজের স্বাকাত্য গৌরবকে নত্তাং ক'বে
দিরে সহধর্মিণী তথা সহদেশিনী হ'তে পারে, তা হ'লে তাকে জীবনসন্ধিনী করা বেতে পারে। কিছ এমন মেয়ে পাওয়া দুর্ঘট,
নৈলে মোহনলালের মতন সত্যিকার মহৎ যুবকও কি আজ
এমন বিপাকে পড়ত ? তাহ'লেই দেখ—পোরাকি মেকি
প্রেমের রূপের সঙ্গে খ্রোয়া থাঁটি প্রেমের রূপের তফাৎ
কতথানি!

এত কথা লিথতাম না, বদি না মোহনুলালের অবস্থা দেখে মন থাবাপ হ'ত। কিন্তু ও এখন করবেই বা কী—বলো ? দেশের কান্ধ ও করতে চায় সতিয়ই, কিন্তু ন্তুকৈও তো ফেলতে পারে না ? সতিয়, কাল কেবলই ভেবেছি ওর কথা। হরত ওর সঙ্গে তোমার মাস ত্রের মধ্যেই দেখা হবে। কারণ ও বলছিল, রোম হরেই বার্লিনে বাবে, সবশেরে সুইজল ও। তোমার বিতাকে দেখে কি মনে হয়, জামাকে লিখো। জামাব মনে হয়, ও এদেশে এসে সুখী হয়নি। তরে এ বিষয়ে জামার ভূল হ'তেও পারে।

শেবে একটা কথা কিজাসা করি: দেশে ফিবছ কবে ? প্রার্থ আড়াই বছব হ'তে চলস, ভোমার সঙ্গে ছাড়াছাড়ির পর। গান তো অনেক শিথলে? আব কেন ? এবার বা শিথলে দেশের কাজে লাগাও: দেশকে জাগাতে হবে গান গেয়ে—মনে রেখো। 'আমরা ঘুটার মা তোর দৈক মানুর আমরা নিগ তো মেয়।' কবে যে ফেব এই অসুর্ব গানটি শুনব তোমার মুখে, আর শিবার শিবার জাগবে উদ্দীপনা! দেশবদ্ধুও তোমাকে চান। তা ছাড়া দেশবদ্ধু কালই বঁলেছিলেন— ভূমি দেশে ফিবে নানা চ্যারিটি কজাটি ক'বে আমানের টাকা তুলে দেবে—মানে, শুষ্বুপ্রেরণা নয়, পাথেরও হবে। তোমাকে ভগবান দিয়েছেন অনেক কিছু—দেশের কাজে লাগালে ভবেই না দেবৰ দান সার্থক হরে উঠবে। চিঠি লিখো।

ইতি তোমার নিভাক্তভাষী জেহবন্ধ কুরুম ।

পুনশ্চ:—কাল বাতে মোহনলালের কথা ভাবতে ভাবতে একটা কথা কেবলি মনে হচ্ছিল ফিবে কিবে। মনে হচ্ছিল, আবো এই নিয়ে তোমার সঙ্গে ভর্ক হরেছিল কলে। ভূমি বলেছিলে: মোহনলাল বখন বিভাকে ভালোবেলে ফেলেছে, তখন ভাকে বিবাহ না করে কি করতে পাবত? আমি সে-সময়ে উত্তর খুঁজে পাইনি। কিন্তু কাল মনে হচ্ছিল বে, মোহনলাল একটা কাল করতে পাবত: রিভার প্রভি ওব ভালোবালা প্রেম না মোহ, দেটা বাচাই করতে পাবত কিছু দিনের জত্যে দৃরে গিরে। আমার মনে হয়, প্রেমকে বাচাই করবার এ ছাড়া আর পথ নেই। কারণ, এক দিকে নর-নারীর প্রশাবের প্রভি টান বেমন সান্নিধ্যের ইন্ধনে আগুনের মভই জাল ওঠে, ভেমনি অন্ত দিকে, করিব বারার বাবণ প্রেম ক্রেম করে বতই কবিছ করি না কেন, করিব বানিকটা মাবাই বটে—যানে, নরকে ছয় করতে পাবে ভার বাছত্বেশ্ব

গ্রেণিওয়ার। এর একমাত্র কাটান হছে, তাকে প্রথ কর।—পর্বাৎ লহের সায়িধ্যবলে যে উচ্ছাস জেগে ওঠে, তাকে আফর্লের মিক্ষে ক্যে দেখা।

আটাশ

প্রবের মাধার বেন আকাশ ভেঙে পড়ল। থানিককণ ও বিহ্বলের মতন চুপ ক'বে রইল। ওর মাধার মধ্যে ঘোরা-ফেরা করতে থাকে: সহদেশিনী সহদেশিনী।•••

হঠাৎ ও কৰে ওঠে: বদি ধরেই নেওয়া বায় বে বীতা পারেনি মোহনলালের সহদেশিনী হ'তে—ভা হ'লে কি এ সিদ্ধান্ত করা বার বে আইরিনীও পারবে না ?

ওর মন বিজোহী হরে ওঠে: এ কখনো হতে পারে বে যুগ-যুগ ধরে কবিরা মিথোই প্রেমের জয়গান করে এসেছেন? শুরু উচ্চাসের কণায়ু মোতে পড়ে, কবিছের আবেশেই বলে এসেছেন প্রেম ককর, জন্মান, অমব ?

কিন্ত যোচনসালও তো বিতাব সঙ্গে বধন প্রেমে পড়েছিল ডখন ভেবেছিল এ-প্রেম ধোপে টিকবেই টিকবে? সত্যিই কি ও নিবাশ হয়েছে—সে প্রেমের বঙ তুদিনেই হারিয়েছে তার বঙ চট্ট নিবিড়লা? আহা, আজ যদি মোহনসাল কাছে থাকত!

কুর্মেব চিস্টা ও ফের পড়ল আজে । পড়তে ওর মনে আবার জেগে উঠল গল্প, সংশ্র । একবার মনে হয়—আইরিন রিতা নয়, আবার অম্নি মনে হয়—কে জানে—হয়ত সেও বিতারই মতন পারবে না ভারতবর্ষকে ভালোবাসতে, শ্রদ্ধা করতে ?

কিছ না, এ একটা কথাই নয়। কে না ভালে প্রেম মামুবকে বদলে দেব—— শব্দা বদি দে থাঁটি প্রেম হয়। তথু প্রকে আপন করা নর লাপনকেও দে পর করে না কি প্রতিপদে? নর বধু ধরন আমীর ঘবে আলে তখন সে কেঁদেই সারা হয় পিতৃগুহের কথা ভাবতে। কিছ ভার পরে কি আচিন ঘরই হয় না আপন, চেনা ঘর বার না দ্রে সরে ?

মনে পড়দ ওব প্রিয় কবির জপরুণ নববধ্ কবিতা:
ক্রমণ দিন কাটিরা গোদ সন্দেহ ও জবে,
কাটিরা গোদ ভাবনা ভীতি নিকট পরিচরে
ব্বিলাম বে—জামার পতি জামার স্থা তিনি,
ভূবন 'পরে এমন জার কাহাকে নাহি চিনি।
পুণবেছি বটে মাতার প্রেম, পিতার এজ প্রেহ,
ব্বেছি জাজ—এমন জার জাপন নচে কেই।
এ দেহ মন দিরেছি জামি তাঁহারি পারে সঁপি
জীবনে বেন মরণে বেন তাঁহারি নাম জপি।(১)

এই অবিষ্কাণীয় চবণ ক'টি তিনি লিখেছিলেন কি তাঁব দ্বীকৈ দেখেই নয়—বার মৃত্যুর পরে আর ভিনি বিবাহ করেননি, বলেছিলেন—বিবাহ কেবল একবারই হয় ? এই বে একনিপ্ত অতলাস্তিক বেদনার ব্যবধানও মান করতে পারেনি—এ কি ওপু কবিছের উচ্ছ্যোস ? হতেই পারে না। কুকুম মহৎ, ভ্যাগী, দেশবত, কিছু সে কি কুখনো কাউকে ভালোবেলেছে বে ভাবে নিব বধ্ব' কবি ভালোবেলেছিলেন 'তাঁর বধুকে ? দেশসেবার

সৰজে ও অনেক কিছু জানতে পাবে, কিছ বিবাহের ও কী জানে শুনি ?

কিছ আমনি ধেব উ কি মারে উণ্টো যুক্তি: তার প্রেম হে মোহ ছিল না সেটা কবি প্রেমাণ করেছেন কিসের সাক্ষ্যে ভিছ্যুগের না জীবনের ? হাজার হাজার কেন্তে জীবনের সাক্ষ্য ঠিক এই প্রেমকেই না মলুব করে না কি ? তবে ? কেমন করে ও জোর করে বলতে পারে—আইবিনের প্রেতি ওর প্রেম সভ্যের কোঠার পড়ে (বার প্রমাণ ছারিছে) না, মিন্যার কোঠার পড়ে (বার ধর্ম উবে বাওরা)—বেমন হরেছে হরত মোহনলালের ক্ষেত্রে ? .

কিছ এ তো কুরুমের সন্দেহ মাত্র ? কে বলল বে মোহনলাল ও বিভাব প্রেম উবে গেছে, কি মূলা হয়ে এগেছে ?

শ্বমনি ফের সংশর ওঠে মাথা চাড়া দিরে। কেসলার বাই হোক তাকেও আইবিন তো ভালোবেসেছিল আর বধন ভালোবেসেছিল তখন তো তার মনে হরেছিল—এ ছাতী প্রেম ? তবে ? তবে কেমন করে পদ্ধর বলতে পারে বে, ওর প্রতি আইবিনের প্রেমের জাতই আলাদা ?

না:, কুঙ্গুম মিখ্যা বলেনি: ওদের প্রেম সার্থক হ'তে পাবে না বলি ভাইরিন প্রবের সভলেশিনী হ'তে না পারে। কিছ পারবে কি না আগে থেকে জানার উপার কী ? ওকে ছেডে কিছুদিন দরে থাকা ? একথা ভাবতেও ওর মন ব্যথার টন-টন ক'রে ওঠে। কিছ বত্ট ভাবে তত্ত মনে হব ফ্রাট ক্রামারের কথা: সে, ব্যবধানের নিক্ষে প্রেমকে পর্থ করলে ভাতে ক'রে প্রেমের লাভ বৈ ক্ষতি নেই। ভাজকের মাতুব এ-বুগের ভাবচাওয়ার ग'ए উঠেছে, आव त्त-का:हास्ट्रा, स्वनदा शास राज Zeifgeist— চায় স্ব কিছু ক'বে লেখতে। আপেকার যুগের মাতুব ছিল স্বল—যা দেখত তাকেই গ্ৰহণ ক্রত তথনি তথনি। এ-মুগের মাছবের খভাব থানিকটা বদলে গেছে বৈ কি! কোনো কিছুরই সে আর দাম ধরতে পারে না ভার বাঞার দর নিরে। ভাছাভা ৰাচাই কয়তে এত ভয়ই বা কেন ৷ মোহ-লালের কথা একটু আলাদা: পাকে চক্তে বিভাব এমন অবস্থা দাঁড়িয়েছিল বাব ফলে তথনি তথনি বিবাহ না ক'বেই ওর উপায় ছিল না। কিছ আইরিনের তো ঠিক সে অবস্থানয়। ও ঠিক করল-আইবিনকে বদবে সব কথা থোলাগুলি। না, মোহনলালের কথা বলবে না—কারণ ভার ৬ বিভার প্রেমের এখনকার অবস্থা व ठिक की छ। ए। ७ काल ना-छत बुक्सब रहामिनी कथाहे। व मर्भ ७ तक वृतिहत मिर्ए है इस्त-मिर्व ७ की छारन निव-জার বলবে ওকে বে, কিছু দিনের জন্তে বেচ্ছাকুত বিরহকে বরণ ক'রে দেখা বাক ওদের প্রেমকে বাচাই ক'রে। এতে ব্যথা বাছবে উভয়েরই—কিছ ব্যথাতে ভর কী—বদি প্রেম সাঁচ্চা হর ?

তবু বাধার বৃক টন-টন ক'বে ওঠে। কক্ষণ। কুরুম দেশের আছে প্রাণ দিতেও পেছপাও নর আর তার বৃদ্ধু হ'বে ও কি না কিছু দিনের আছে বিবহবাধাকে ববপ করতে ওরাবে? কুরুমের ত্যাগ, মহন্দ, আনক্ষঠের সন্তানরত ববপ ক'বে সর্বহারা হ্রার আদর্শ ওর মনে কের অ'লে ওঠে আলো হ'বে। প্রেম বড়—সভ্য, কিছু গুছু হ'লে ওবেই না সে ববেণা! ও কাল সকালেই আইবিনের কাছে ক্থাটা তুলবে। সে নিক্ষ বুরুবে—মানে এছি

ওকে সে সন্তিটেই ভালোবেসে থাকে। ওর মহৎ আদর্শের টানে সে মিশ্চরই হতে চাইবে ওর 'সহদেশিনী'।

চ চ করে ছটো বাজল। স্লাস্ত হ'রে ও ওরে পড়ল।

পরনিন সকালে উঠে কফি নিয়ে বলেছে, এমন সময় পরিচারিকা চুক্তল একটি চিঠি নিয়ে।

এ কী! মোহনলালের হস্তাক্ষর! সাগ্রহে পড়ে: "ভাই পল্লব,

কুকুম হয়ত ভোমাকে জিথে থাকবে বিভাব শরীর ভালো বাছে না। তাই ছির করেছি কয়েক দিনেই মধ্যেই রওনা হব। কারণ বোধ হব দিন সাভেকের মধ্যেই একটা জাহাতে হুটো বার্থ পাওয়া বাবে। প্রথমে ভেবেছিলাম বে বঙনা হব মাসধানেক বাদে কিছ কাল সারারাত বিভাব মাধা গ্রেছে। ৩-ও আর দেরি করতে চাইছে না, তাছাড়া বদি ওব শরীর সারতে ওকে যুরোপে বেতেই হয় ভবে ভভ্তা শীল্পম—বটেই ভো।

ভূমি বধন এ চিঠি পাবে ভখন হতে আমরা রোমে। কারণ আমরা ঠিক করেছি পোর্টিসেড পর্যন্ত আহাজে গিরে কাররোতে ছু'-চার দিন বিশ্রাম করে উড়ে বাব গোলা রোম। 'দেখানে আমাদের ঠিকানা: লুনা হোটেল। ভূমি রোমে একবার গ্রে বাও না? বেশ হয় তা'হলে যদি ধরো ধোমে গিয়েই দেখি— ভূমি সমরীরে! লুনা হোটেলেই থেকো— মানে যদি রোমে আসো। বদি না আসতে পারো ভবে আমাকে দিখো রোমে, আমরা বালিনে ছুমেরে বাব সুইললগু—বদি সন্তব হয় ভোমাকে পাকড়াও করে। আনেক কথাই বলবার আছে, কিছ চিঠি লিখবার যুগ—তে হি নো দিবসা গতা:। এখন কেবল একটি জিনিব পারি পূর্ববং ভোমাকে কাকে পেলে অনর্গল মনের কথা বলভে রিভাও ভোমাকে বলতে চার আনেক কিছু। আশা করি দেখা হবে রোমে কিয়া বালিনে। ইতি সেইবদ্ধ মোহনলাল।"

উনত্তিশ

হঠাং পল্লবের মন বিবাদে ছেন্তে যায়: স্বাই মিলে চক্রান্ত করেছে ওকে আইরিনের কাছ-ছাড়া করতে। কালকের রাতের রন্ডিন শিহরণ আজ কোথায় তার জারগা 'জুড়েছে আজ হাজারো বিষস ভর ভাবনা, ছিবা সংশ্ব। কবির থেক মনে পড়ে: "Rarely, rarely comest thou, o spirit of delight!

কিন্ত আছই আইরিনকে বসবে কোন মুখে সেগে বিরহ বরণ করার কথা ? যদি সে হাসে, কি মান করে ? পারবে কি ভখন ফুচ্ছাসাবনের উগ্র সংকল্প বজার রাখতে ? কুফুমেস আদর্শ তো ওর নিজের আদর্শ নর ? তাছাড়া বাবেই বা কোধার ? গান শেখা সৌধিন বিলাস হ'তে পারে তবু তো একটা কান্দ। অ্যান্ত গিরে করবে কী ? ভেরেণ্ডা ভাজবে ? দর—বত সব উভট জলনা।

তার পরেই মনে হর মোহনগাল ও রিভার কথা। ওরা হরত এত দিনে রোমে এসে গেছে। রোসো, ওর চিঠি এসেছে ঠিক তেইল দিনে। হাা, ও বদি চিঠি লেখার সাভ দিনের মধ্যে জাহাল নিরে থাকে তবে কাররোতে পৌছেছে দিন সাত আট আগে। তা'হলে এখন ওর রোমে পৌছে বাবার বথা। ও উঠে একটা টেলিপ্রা। কর্ম নিয়ে বলে। লেখে: Mohon Ghosh, Allevgo Luna Roma—Telegrafate gubito Perfavove..(২)

এমনি সময়ে • কিং • কিং • কিং • •

Kommen Sie, herein ; (e) ace e chica!

হাসিমূখে য়ুস্ফের আড়াদয়, বলে হাসিমূখে: Ruten Sie nicht den Teufel herein 1(8)

পল্লৰ ছেসে বলে: ভাকা ৰায়—-ৰদি সেহৰ ব্যথাৰ ৰাখী। বাসো।

না ভাই বসবার সময় নেই। ভোমাকে আমিই এসেছি ভাকতে। ভাকতে? কোধায়?

যুহফ আড়মিপ্রণন্ত অভিবাদন করে ধরে ইভালিয়ান: Alla bellissima Italia—la culla della poesia। (৫)

সে কি?

কাজ থেকে ত্মাস ছুটি নিয়েছি— জার পারি না শীভ সইতে। জালই রোম বওনা হছি— তুমিও চলোনা।

GIN ?

অমন বাজধানী কি আরে আছে ভাই—il pavadiso del sogna į (৬)

कि₩---

কিছ না—চলো তোমার তো আর চাকরি নেই বে ছুটি নিতে হবে। ভোমাকে বত দেবি ততই বলে-পুড়ে মরি—কর্ষার! না ঠাটা নয়—চলো়। সেদিনই ভো বলছিলে ইভালি দেববার ছোমার ধ্ব শব। এখন ইতালিয়ানে হাতে বড়ি হয়েছে—অত্মবিধে হবে না।

িছ আছই ?

যুক্ষক ওর পিঠে চাপড় দিয়ে বলে: আহা, নংকরাটি জুড়িয়েবাবেন না, বাবেন না। বরং বিরহের আগগুনে আহো আজলামানা হ'রে উঠবেন। মিলনকে চিনভে হলে চাই বিরহের চক্ষুদান।

কী ৰে জুমি !—না, এ বিরহ মিলনের কথা নম্ব—ভামি নিজেই ভাবছিলাম একট বেডাতে বাব—

বাস, তবে স্বার কি ? স্বর্গনদের ভাবায় বলি abgemacht ৷ কেমন, কথা দিছে তো ?

পল্লব একটু ইভস্তভ: ক'রে বলে: বিকেলে বলব।

কী মুদ্দিল। ট্রেনে ঘ্মতে হবে তো। না, আর কথা নর— আমি এফুণি একটি শোবার কুপে রিজার্ভ করতে বাচ্ছি—টাকা দাও তো।

ব্যাক্ষ থেকে আনতে হবে—কভ টাকা ?

কত আৰু তিন চাৰ পাউশু—দে বাক আমিই টিকিট কৰে বাৰব। কেবল দেখো ভাই, গৰীবেৰ টাকাটা মাৰা না বাৰ।

২। Please wire at once ৩। ভিতরে এসো ৪।
শরতানকে ভাকতে নেই ব্রের ভিতর । ৫। স্বারীতমা ইভালি
—কবিতার গোলনা।

[।] चत्त्रव चर्गवाका ।

চলনাম এখন, বড় ভাড়াতাড়ি। হ্যা শোনো, ভূমি ওয়ু তোমার পাদপোর্টে ইতালিয়ান কনসালের কাছ খেকে একটি ছাপ নিও— ভিনা। আমিও দেখানে থাকব—ঠিক ছপুর বেলা, কেমন ?

শোনো শোনো। ইভালিয়ান কনস্থলেট কোথার ?

বিসমার্ক শ্রাসে—ইাা, ট্রেন রাভ পৌনে দশটার ছাড়বে। পংস্কাম বানহকে ঠিক সাড়ে আটটার মধ্যে গিরে ছাজির হয়ো কিন্তু ভূলে গিরে আমাকে কাঁসিয়ো না ভাই, সন্মীটি!

ৰণেই ৰুম্মৰ ৰড়েৰ মতন বেৰিয়ে গেল টুণি নেড়ে: Addis, amico caro (৭)

প্রবের মন থারাপ হয়ে গেল: এ কী কাণ্ড! নিম্নতি বেন উঠে পড়ে দেগেছেন ওকে রাতারাতি আইরিমের কাছ্ছাড়া করতে! ওর মনের মধ্যে ছটো স্বর ওঠে বেজে: একটা স্বর বলে: হাতের সম্ম্মী পারে ঠেলো না। অক্ত স্বরটা বলে: কী সেণ্টিমেণ্টাল! ওর বে করে সেই হারায় সব আগে।

ভেবে চিস্তে ও টেলিকোন ধরে···আইবিনের নম্বর দেয়। পরিচিত শ্বর: কে ?

আমি-পদ। আইবিন ?

१। ७७ वारे, व्यव वकु !

হাসির শব্দ: এখনো পরিচয় দিয়ে চেনাতে হবে ? আমি বে টেসিফোনে ভোমার মিখাস শুনলে বলে দিতে পারি, মনামি শের !

পল্লব হেসে বলে: ভোমার সঙ্গে কার কথা, শোনো, ভোমার সঙ্গে আমার কথা আছে। একশি।

ফাউ কামাবের ভাষার—Ich applaudiere auf das her(৮) Zlichete একণি চলে এলো।

(कांशात ?

কোথার আবার ? সোক্ষা আমার এথানে। Nur Keins Angst; (৯) সকালে এথানে একেবারে নির্কন—কোনো ভর নেই—স্বাই কাঞ্চে বেরিয়ে বার।

ভৱ আবাৰ কিসেব গ

টেলিফোনে আইবিনের হাসি বেছে ওঠে: নাভাশা ভর দেখারনি—কুমারী শরন কক্ষে কুমারের আবির্ভাব এদেশে নিবেধ ? বলেই হেসে: কিছ এখন দে-ও কিছুই বলতে পারবে না—কেমন হয়েছে ?

পল্লবও হাসে: খুব সাঞ্চা হয়েছে তার। আছো আমি আসছি তাহলে। ______ ক্রমশঃ।

৮। আমি সর্বাস্তঃকরণে সাবাস বলছি। ১। মা ভৈ:।

খর রৌদ্রে ঝলসিত

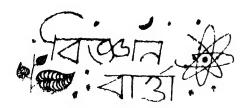
সভ্যধন যোষাল

ভীক্ষতার সীমানায় ঝলসে পেল।
চিকণ্টিকণ কথা বলার স্থর,
এবং পাঝীর ঠোটের মতন লাল হয়ে
অলতে থাকলে তৃমি
কিংবা দে তৃমি নও—
এক অর্থময় দেহ।

ভীত্র হরে ছড়িরে বাচ্ছে জনতা নিদারুণ নিদাবেও কাঁপছে ব্দর আকাশ আশুর্ব হয়ে দেখছে কেবল প্রাচীনা পৃথিবী নির্বিকার আমাদের অর্বাচীন প্রেমময়তার।

ভীক্ষতার দীমানার তীত্র হরে ছিটিয়ে পড়ছে সব।

জানি না কতকণ তুমি অগবে—
মুঠো-মুঠো মেঘ নিয়ে ধিকিধিকি জাকাল,
উন্মুক্ত কুপাণের মত দীপ্রদিনের সীমানার
মূরতে ঘুরতে ব্যক্ত কামনার প্রেট্ট হরে গিয়ে
জামিও
নিবস্ত জনতার মিশে বাব
কোন এক সময় ৷



পক্ষধর মিঞা

ৰ্জ্বেন বি বেইলাবের ছোট একটি আলোচনা চোৰে পড়লো। পাৰ্নিক বিজ্ঞানের পরিবেক্ষিতে কি ভাবে বর্তমান ক সের विकास भिकाशासिक धाराजीव भविष्यंत्रस्य खाराक्रमः सा विद्यात क्रिस चार्लाक्रभाक कार्यका। विकास विकास कार्यक कार्यक कार्यक ष्ट्रांस इर व्यक्तिनहें किंदू मा किंदू प्रणानाम जन्मानमी जात्र महा मरबूक गरम । श्रुवशाः श्रुद्धारना विकाशास्त्रव द्वानानी चार दिश्वय कार्यक्रियो नवः मक्रान्य माल कालाप्य अविकित क्यान क्राय. भूद्वादमारम् कुन्रत्न हन्दर मा। कावन भूद्वादमा क्नाक्न, मध्याम बर ज्याविशीव जैनव जिल्ड क्रवेट मज्याव बच हरव्छ। मजूम আবিভাব এবং তথ্যাবদীর সঙ্গে তার পূর্বতন পরিক্রেকিতের সম্বেদন ঘটিংই কোন কিছু ছাত্রদের কাছে উপস্থিত করা এক শতাভ কঠিন কাজ। কারণ শিক্ষাণানের সময় সীমাবত, छोळालव निका शहरनव नमवन नीमावन, चुकवाः काव मधाहे ছাত্রদের ক্রমবিস্তারশীল বর্তমান বিজ্ঞান-জগতের সঙ্গে পরিচিত করতে হবে। তাই মনে হয়, বর্তমানকালে বিজ্ঞানের কেতে শিক্ষাদান করা কঠিন কাল । শিক্ষকদের দায়িত এবং কর্তব্য কঠিন धवः शक्यभव

অধ্যাপক বেইলার তাই বর্তধান পরিপ্রেক্ষিতে শিক্ষাদানের প্ৰতি এবা শিক্ষকদের কঠব্য কি হওয়া উচিত, তার উপর তাঁর নিজের মুলাবান মতামত প্রকাশ করেছেন। বেইলার নিজে **धक्कन शांछनामा विकानी अवः निकारित । आध्यतिकात परेक्रव** রসায়ন-বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে তাঁর নেতৰ সর্বন্ধনস্বীকৃত এবং বর্তমানে ভিনি আমেৰিকান কেমিকালে সোদাইটিব সভাপতি। বেইলারকে অনেকেই Mr. Inorganic Chemist বলে সম্বান জানান; ভাই অধ্যাপক বেইলাবের এই মভামতের বিশেব মৃল্যমান আছে। বিজ্ঞানের কেত্রে আমেরিকার উন্নতি, অগ্রগমন, এবং প্রাধার বিষের মধ্যে এক বিশেষ মর্বাদার অধিকারী। নিজের দেশের শিকাধারার মধ্যেও আধুনিক কালের সর্বপ্রকার জ্ঞানার্জনের স্থবোগ এবং স্থবিধা বর্তমান, স্মতবাং এ ক্ষেত্রেও বদি বেইলারের মজে একজন শিকাবিদ এবং বিজ্ঞানী বদি ভাবৰ পৰিমাৰ্জনের জন্ত চিল্লা করতে প্রক্ করেন, ভারতে ভারতবর্ষের বর্তমান অবস্থার এই চিন্তার প্রাক্তন ও গুরুত্ব বে কতো বেশী, তা আমাদের দেশের বে कान भिकारिक्टे छेननिक कराज भारतिन। এम्स्य माधारक বিজ্ঞান-শিক্ষক তুলনামূলক ভাবে ভারতবর্ষের চেয়ে খনেক বেশী निकानात्मव ऋरवात्र ऋतिशाव अधिकावी, निकानात्मव श्विष्ठि অনেক আধনিক; ভা সত্ত্বেও ধদি তাদের বর্তমান কার্যপ্রশালী পরিবর্তনের প্রয়োজন হয় ভাহলে আমাদের দেশের শিকাদানের পছতির পরিবর্জনের প্রারোজন বে কতো বেশী, ভা বে কোন চিভাৰীল পাঠকই উপলব্ধি করতে পারবেন।

त्मव जारन वृक्ष करवरक्म । केन्द्रिके क्रिका-the mind is a pyre to be kindled not a vessel to be filled. व्याबदक्य विद्या (व क्यांन विषय्त्र विष्यां क्यांनकाकार्यात्रव अक कुडारंबंध मासूब कांत्र मत्त्व मत्त्व वांत्र वांच्य भारत मा । माह्य জানকে উপলব্ধি করতে পারে, তার মূল ভিত্তির সঙ্গে পরিচিত হতে পাৰে। এতে মনেৰ হয় সম্প্ৰসাৰণ জ্ঞানেৰ মৃদ্য ভিভিন্ন সংক মুপ্ৰিচিত হবাৰ কলে তাব জ্ঞানভাণ্ডাবেৰ প্ৰিচিত অংশসমূহের কাৰ্য্যকাৰণকে ব্যবহাৰ ক্ৰাৰ ভাব ক্ষতা জ্বায়। মনকে ভাই জ্বালিয়ে ডুলভে হুবে, বাভে সে নিভের জ্বালায় এগিয়ে চলাব পণ थुँ स्थ भारा, निरम्ब छेखारभेरे हमाव भर्यव वाधावकरक गणिस्य प्रिट भारत-विश्वत निकारक विष्कृष्ठक करत विषय जाला विषय कराज भारत। बालिरब एकराज भारत बावन बक्का नकुम जिकामारतात याबार्य जिक्करकता यांच काउरवर कार्बाह्मत्वर हैकारक कान्यिक मा कराफ भारतम, कारमत कान উপলব্বির ক্ষমতার বুলি বুলি না ঘটাতে পার্বেন, ভাছলে ভাবের भव व्यक्तिहा वार्च करवा कावालय मन करव शक्रव कम ভাগর পাত। শিক্ষকৈরা ভা ভবে দেবেন কিছ পাতের মধ্যে অবস্থিত বল্লটির বিকাশ আর ঘটবে না। সর্ব দেশেই সর্ব প্রকার শিক্ষার ক্ষেত্রেই ভাই শিক্ষকদের পবিত্র দায়িত্ব হবে দাবিত অবশ্র নতন নয়, এটা চিবকালের। তাঁরা ছাত্রদের জ্ঞানার্জনের আকাজ্যাকে উৎদাহিত করেন, অনুপ্রাণিত করেন; জান-ভাগ্তারের সীমানা সম্প্রসারণের অন্ত সঠিক পথে চলংর নিদেশি ছাত্ররা শিক্ষকদের কাছ থেকেই পায়।

व्याचारमञ्ज (मरमञ व्यवस्थाते। कि १ स्व भिक्यांशाश्रेष मरश मिरह আমাদের দেশের ছাত্রবা বিশ্বের জ্ঞান-জগতের বৃহত্তর পরিবেশের দিকে এলিয়ে বান, ভার স্বরূপের সঙ্গেও আপনাদের পরিচয় আছে। এতে ছাত্রদের মন প্রদীপের মতো অলে উঠে না. সীমাবদ্ধ জনপাত্রের মতো প্রদ্র এবং তার উত্তর মুখত্ব করার মধ্যেই সীমাবত থাকে। বিখের উন্নতিকামী জাতিবা বধন প্রতিদিনের পদক্ষেপের সঙ্গে সংগ্রই ভাদের শিক্ষাধারার কিছ না কিছ উন্নতি এবং পরিমাহল্লনের কথা চিম্বা করছেন, এখন আমাদের দেশের শিক্ষাধারা চলেছে কোন পথে ? শিক্ষাদানের চেরে পরীক্ষা গ্রহণ এবং মুখস্থ করে উত্তর লেখার প্রাধাস এখনও ঠিক সেই আদিম কালের মতো একই ভাবে বিরাজ করতে। ছাত্রদের মন একটা বিবাট পাত্র, মান্তাবমশাইরা সেই পাত্র করেকটি আলোচনার মধ্যে দিয়ে ভতি করে দিলেন। পরীক্ষার হলে গিয়ে প্রশ্নপত্র দেখে ছাত্ররা বেগুলি তাদের জানার মধ্যে পেলো, সেগুলি দাগ দিয়ে নিয়ে ভাডাভাডি ৰাভাৱ মধ্যে বার করে দিয়ে এলো। সকলেইই মুখে এক কৰা कहें। 'कमन' भएला। अर्थार अध्रभावत क'हे। आधार हेखर के এक এक खरनद मरनद चडांद मरश विदाख कदिला। चडा काँक করে ভা ভারা সব ঢেলে দিয়ে এসেছে পরীক্ষার খাভার। শেষ হয়ে গেছে ভাষের কাল-বড়া এখন কাকা। পরীকার ফল বার হলো। বড়া বারা কাঁক করতে পেরেছেন উত্তরের খাতার, তাঁরা ডিগ্রী পেলেন। তাঁদের মান বাডলো—ডিগ্রী হাতে করে এসে নামদেন কৰ্মক্ষত্ৰে। খড়া ৰে সেই পৰীকাৰ সময় কাঁক কৰে তিনি উত্তৰেৰ থাতার ঢেলে দিয়ে এলেছিলেন—তা তার পর কাঁকই বইলো।

বারাখবের কুলুলাতে। এদিকে বিনি বড়া করেছিলেন নানা বছ
সাগ্রহ কবে কিছু তুর্ভাগ্যক্রমে তাঁর ঘড়ার জিনিব প্রশ্নপত্রে আসেনি—
তার কি হলো ? পরীক্ষার হলে তিনি মাধার হাত দিরে বসলেন,—
তাঁর ঘড়ার রবেছে জল আর পরীক্ষার এসেছে তেল। অত এব এবার
পরীক্ষার হিনি ফেল হলেন—দোষ দিলেন ভাগ্যের। লেখাপড়ার
পালা শেষ হরে গেল। কিছু দিন পরে তাঁর ভর্তি ঘড়ার বা কিছু
ছিল, তা সর পচে একেবারে ভকিরে গেল। শিভুদেবের বহু কঠারিছ
অর্থের এই হলো সদ্পতি। এই ঘটনার আর একটি ভৃতীর পর্যারও
আর্থের এই হলো সদ্পতি। এই ঘটনার আর একটি ভৃতীর পর্যারও
আর্থেন এই হলো সদ্পতি। আই ঘটনার আর একটি ভৃতীর পর্যারও
আর্থেন এই হলো সদ্পতি। তাই ঘটনার আর একটি ভৃতীর পর্যারও
আর্থেন এই হলো সদ্পতি। কর্মেণ ভারলে ছবৈ দাল-হালামা,—
ভারবা থিছিল করে চিংকার করবে প্রাশ্নপত্রে কেন শক্ষ হরেছে ?
অর্থাৎ ঘদায় বা ছিল, তা কেন প্রশ্নপত্রে দেওরা হয়নি ? আরে কি
ক্রের দেবের ?—বিনি প্রশ্ন করেন, তিনি হুছার কি আছে, তা
প্রানেন না এবং বিশ্ববিত্যালেরে কোন আইন নেই, হুছার কি আছে
তা দেগে প্রস্থাপত্র ব্যচনা করতে হবে।

পাঠকেরা হয়তো প্রশ্ন করতে পারেন, বেইলার সাহেবকে নিয়ে সুক করে কথায় কথায় এতো দুৱে চলে এলাম কেন ? এলাম অনেক তু:থে। সূত্র আমেরিকার বলে দেশের থুব কম ধবরই পাই—বা পাই তা অনেক সময় নিজেদের বিব্রত করে তোলে। এদেশে এশিয়ার থবর বল্পে একটি ইংরাজি সাপ্তাহিক বার হয় এবং এশিয়াবাসী নানা কাজে, লেখাপড়ায় বা গবেহণায় **শে**গ দিয়ে এদেশে আছেন, বিশেষ করে তাঁথাই নেন এই পত্রিকার সাম্প্রতিক সংখ্যায় দেখলাম, কোলকাতার ৰা কি ভাত্ৰহান্ধামা হয়েছে। ব্যাপারটা সেই চিবস্তন-কোন এফটি প্রপ্র নাকি কঠিন হয়েছিলো। এদেশে ঠিক এই কারণে ছাত্ৰের ধারা ব্যাপক দালাহালামা বেধি হর কানা করা বায় না। स्मित्री काव-इतिस्त्र, शिक्ककालव, विनि क्षेत्रभक्त वहना काविहालन তাঁৰ না শিক্ষাদানের প্রবাদী এবং পরীকা গ্রহণের ধারায় ? ছাত্রদের দ্বারা এরকম প্রভাক্ষ সংগ্রাম ভো আজ প্রথম নর-এর অবলুণ্ডির জন্ম শিক্ষানারকেরা কোন নতুন উপায়ের সন্ধান করেচেন ?

যাই হোক, আবাব নিজের কথার ফিরে আসা যাক। বেইলার সাহেব বিজ্ঞান শিক্ষার ক্ষেত্রের দ্রুত পরিবর্তনের জন্ত পরিবর্তনের জন্ত প্রত্যাক বিজ্ঞান শিক্ষাককেই তাঁদের শিক্ষাদানের প্রণালীর উন্নতি বিধানের দিকে বিশেষ দৃষ্টি দিতে অফ্রোধ জানিরেছেন। আধুনিক বিজ্ঞানের প্রতিদিনের উন্নতির সঙ্গে কাঁধ মিলিরে ভার সমরোপবোগী পরিমার্জন ঘটান সহজ্ঞ নর। বিজ্ঞান-শিক্ষকদের সামনে এই মহাসমত্যা এক বিরাট চ্যালেঞ্জের আকার ধাবণ করেছে। আক্সেকর বিজ্ঞান-জগতের পরিপ্রেক্ষিতে বিচার করে আগামীকাল বে পরিবর্তন

শিক্ষকেরা আনবেন,—আগামীকালের বিজ্ঞান-জগতের অর্থার্থন এবং আবও কিছু নতুন আবিদারের সংবোজন তার মধ্যে আবার নতুন সমস্তার উদ্ভব ঘটাতে পাবে। প্রভ্যেক উন্নতিকামী দেশের চিন্তানায়কবাই দেশের বিজ্ঞান শিক্ষাদানের ধাবার পরিমার্জনের দিকে বিধের নজর দিরেছেন। কারণ, এর উপরেই উাদের নিজের দেশের ভবিষাৎ নির্ভব করছে।

ছটি দৃষ্টিভন্নীতে শিক্ষকদের শিক্ষাদানের প্রতিকে कराक इत्य। ध्यंभिष्ठ इत्मा निकामात्मव নতুন নতুন তথাবদীর সংযোজন এবং হিতীয় হলো (বসৰ कारिकार माला बिरव धहे भव मजून चाविकार APP OF রূপ পরিগ্রাহণ করেছে ভার সঙ্গেও ছাত্রদের মনের সংযোজন ষ্টিয়ে দেওয়া। বেটলার বলেছেন বে, এট চুটির কোন একটিকেট কম গুরুত্ব দিলে শিক্ষকেতা জাঁদের সম্পূর্ণ দায়িত্ব পালন করতে সক্ষম হবেন না। কারণ নতুন তথ্যাবলীকে বাদ দিবে শিক্ষাদান করলে আধুনিক বিজ্ঞান শিক্ষার সম্পূর্ণরূপে ছাত্ররা উপলব্ধি করতে পারবেন না এবং বর্তমানকালের বিজ্ঞান-ভগতের চিস্তাধা । কি ভাবে পড়ে উঠলো ও তার সঙ্গে বিজ্ঞান গংবহণার পুর্বংস্থীবা কি উপায়ে আধুনিক বিজ্ঞান জগতকে সুশোভিত করেছেন তার মর্য উপস্ত্তি করতে না পেরে ছাত্ররা বিজ্ঞানের মনোভাবের সন্ধান পাবেন না। বিজ্ঞানের এই মনোভাবের সঙ্গে স্থপবিচিত না হলে ভবিষ্যং বিজ্ঞান গবেষণার ক্ষেত্রে পদার্পণ করা এক স্মকটিন কাজ।

এখন শিক্ষকেরা যদি এট ছটি দৃষ্টিভঙ্গিতেই তাঁদের শিক্ষাধারা পরিচালিত করেন, ভাহলে : মস্তাটা আসে কোথা থেকে ? সমস্তাটা विश्रोक कदाक भिकामात्मय मृनद्भत्म । भिकामात्मय विवयवन्त বোঞ্চই বাচ্ছে বেড়ে কিছ ছাত্রদের শিক্ষাগ্রহণের সময় তো বাড়ে নি ? সব তথ্য তো ছাত্রদের সামনে এই বল্ল সময়ে উপস্থিত করা বায় না—উপস্থিত করলে তা পাত্র ভরাই হবে, প্রকৃত শিক্ষাদান করে মনকে উদ্দীপিত করা যাবে না। ছাত্রদের পক্ষে একই সমরে এতো বেশী জিনিব শিক্ষা করা কখনই সম্ভব নয়। সেধানেই তো শিক্ষকের কর্ত্তব্য এবং দায়িত্ব ক্ষক হলো। তাঁকেই স্থিব করে নিতে হবে, কি ভাবে পড়ালে বিজ্ঞানের মৃঙ্গ মনোভাবের সঙ্গে ছাত্রদের পরিচিত করানো বাবে। ছাত্রবা পাবেন রসের আখাদ--তাঁদের জানার্জ্বনের ইচ্ছা প্রছালত হবে। বিজ্ঞানের কোন ভধ্যকে বেশী গুৰুত্ব দেবেন, কোন ভধ্যকে ঠিক কি ভাবে উপস্থিত করবেন, তার সমস্ত দায়িত্ব বিজ্ঞান-শিক্ষকের। বেইলার বলেছেন, আগোর যুগোর চেরে আধুনিক কালের ছাত্রদের অনেক থেকী বিষয়-বন্তর সঙ্গে পরিচিত হবে, তাই শিক্ষকেরা যদি ভাকে সংক্ষিপ্ত এবং স্তুসংবন্ধ না করতে পারেন, ভাহলে বিজ্ঞান শিক্ষার ধারা এক অসম্বের পর্যায়ে উপনীত হবে।

"He who first shortened the labour of copyists by device of Movable Types was disbanding hired armies, and cashiering most kings and Senates, and creating a whole new democratic walls; he had invented the art of Printing."

-Thomas Carlyle.



মহাখেতা ভট্টাচাৰ্য

Ċ

ত্ৰত্বে পদরা যাধার নিবে কাটছিলো দিন। নিজের দিকে ভাকাবার সময় ছিলো না চম্পার। সেই বিয়ে ভেডে দেবার প্র থেকে প্রভাপ আর ভার মভো আরো ক'লন মাভকরে পরিহার করলো ভাদের। কিছ গ্রামণ্ডর মানুষকে কিছু ভারা মাধা কিনে वार्ष नि । विक्, ऋजन, छभवकीव्यमान और मन भनीवखनरना मानून স্বজকু যাবীকে ত্যাগ করলো না। তাদের সঙ্গে কথাবার্ডা ভাদের খবের সামাক্ত খাবোজন ভাগ বইলো। পাল-পার্বণে ক'রে নিতে ডাকণ পড়লো তাদের। কিছ তাদের এমন ক্ষমতা নেই যে এদের কাণড়-ক্লটি কোগার। লালা বৈক্ষনাথের বাড়ীতেও মস্ত সংসার, অনেক কাজ। সাদা চুণ-রং করা দোভলা মেটে খর। তার নিচের কামবায় বেড়ির তেলের বাতি জেলে পদীতে বলে থাকে বৈজনাথ। স্থদ কবে। চাৰী কিবাণের বিপদের সময়ে থলি ভরা টাকা বাজিয়ে সাহায়া করতে চায় मिथ्य (मृद्ध। व्यन—कित्मत्र निश्वाभूग छाई? छाईक देवि। ৰিচ্ছি, তাতে কিসের ভাবনা ? তথু ভাই, ত্বদ কারবারের **আদর** ৰাধবার জন্তে এই ভূবা কাগতে একটি টিপছাপ দিয়ে বাও। হাঁ, ভোমার আমার হু'জনের ইমান ঠিক বইলো।

টিণছাপ দিতে তঃৰী কিবাণের আঙুল যেন আর উঠতে চার না। কেন না, তারা ভাল ক'রেই জানে তাদের অধস্তন তিন চার পুরুবেংও কপাল ঐ তোজী খাতাতে বাঁধা পড়লো। সভ্যি সন্তিয়ই ভাই হয়। হয় বান, নয় আনাবৃষ্টি, এই সব চোট ঠেকিয়ে বদি বা কথসুখা মাটিতে দোনালী সর্জ গমের বং ঢেলে দিলো কিবাণ, দে কদলে সে হাত ঠেকাতে পাবে কোধায় ? সব টাকা গিয়ে এঠে ঐ লালার খবে। গণেশের সিঁদ্বছাপ দেওয়া লোহার সিন্দ্ক। কপাল চাপতে কিয়াণ আবার ধার করে।

বৈন্ধনাথের হাসি হলো মকরের কামড়। এমন করে গাঁত বসার বে, ঠাহর হর না অন্তিম মুহূর্ত পর্বস্ত। তার পর অদে-আসলে মিলে ধারের বহরটা বধন বৃকে চেপে বঙ্গে, তথন মনের তু:বে মাটিতে লাখি মেরে ফিবাণ বার ফোজে নাম লেখাছে। কোম্পানীর ফোজে রংকট হওরার স্বপ্ন, সে বেন সোনার হরিণ। ফোজে নাম লিখিরে একটা কিবাণেরও নসীব ফিরেছে? ঘনে তো পড়ে না। তবু তারা বার। কেন বার, জিল্ডাসা করলে ওপর দিকে হাত দেখার। ভগবান জানেন, গৈবীনাথ জানেন, কেন ফোজে বার কিবাণ।

শৈই লালার বাড়ীতেই এক দিন ডাক পড়লো চলপার মা'ব।

লালার বরেই উঠেছে তার স্বামীর জমি আর ক্ষেতী। তার গোরেই গিয়ে গাড়াকে মাথা কাটা গেল তার। কিছু হংশীর আত-মানে ভার করলে চলে না।

চম্পাকে নিধে তবু কি গাঁরের মান্তবের কোঁতুহলের শেব আছে ? বরেস পনেরো পেরিয়ে গেল। তরা বোলো বছরে কোন্ মেরে অবিবাহিত থাকে ? সমহঃখে লালার বুঙী-মা বললো—আমার কথা শোন্। তীর্থে বাব আমি। আমার সঙ্গে দে মেরেকে। পুক্ষে চান করিরে সাবিত্রী-তিগক দিরে আনি তোর মেরেকে। বিষে ভো হবে না। দেবতার দোর ধরে থাকু।

বৌবনে পড়ে মেয়ে হয়েছে মা'ব গলায় কাঁটা । মা বলে—ভাই কবো নানী, আমার ভাবনা-চিন্তা দূর হয়ে বাক।

লালার মা বলে—বরে বসে তীর্থ হয় ? না মঞা গছে, না মদিনা গরে, বিচ মে বিচ হাজি থে ! অমন ধর্ম ক'জন করে ? আর ক'জন পারে ? তীর্থে বাব, নিয়ে বাব মেয়েকে ! রাভার আমাকে একটু মনৎ তদবির করবে ৷ তার পর লাগিয়ে দেবো আশ্রম কোথাও ৷ মনে করবি চম্পার মা, বে পরমেশ্বর ভোর মেয়েকে নিয়েছেন ৷

এমনি সব ভাল ভাল কথা বলে লালার বুড়ী-মা। ভার পর বলে—আমার বেজাইটা-তে একটু ছুঁচ চালিয়ে দিবি বছ? তো এনে দিই?

-- (q# I

মেরামতি আর ফুটোফাটা সারবার কাল একে দেয় চন্দাকৈ তার মা। এখন ভার গাঁরে বেরোয় না চন্দা। বরে বঙ্গে মানকে সব কাল করে দেয়। মানকও হয়েছে নানা আলা। বেরেকে বেন ভার দেখতে পারে না। কেন ভারালো এই ঘেছে। এই এক গমের থেকে ভার যভো হঃখ; ভানতে ভানতে চন্দাও মা ধাই। ভূমি হুখে ধাকো। ভারালে বেরে কেলকে পারোনি মা।

— তুই শোষাকে এই কথা বললি ? বলে মা-ছে তে একসলে একটু কাঁলে কৰে। কাঁললে মনটা বড় ছালকা ছব ক্ৰেছৰ। চম্পাৱ বাবার নাম করে কেঁলে সে বলে—হে গৈবীনাথ, কেন আমাকে এমন করে হুঃখ দিলে ? কেমন সাজানো সংসার পেয়েছিলাম। দশরখের মতো খণ্ডম, কৌশ্ল্যার মতো শাস—বামের মতো খামী !

ीवात (कतवात्र अध्य

303

जिलायगांत-अध्ये कार्जि यूक त्ताथ कितावत

, नम्र शास

41A4 4946

ভারপরই সব অভিবোগ গৈবীনাধকে ছেড়ে স্বামীর ওপর

শ্রামি হেটে গোলে তুমি বুকে ব্যথা পেতে, ইনারা থেকে জ্বল বয়ে আনতে দাওনি তুমি! লুকিরে জল এনে দিতে তুমি, ছুপুরবেলা ধারদেনা দিতে হাতের রূপোর চুড়ি থুলে দিলাম বখন, কত ছুঃধ করেছিলে? এখন কি এত নিদ্র হয়েছো বে দেখতে পাও না, কত ক্ষে দিন কাটে আমার? তোমার মেয়ে জাজ বানের মুখে তেনে বায়, জামার বুকে জার কি ভাকে বাঁচিয়ে রাধি?

থমনি সব কথা বলে কেঁদে-কেটে স্বক্ষ বায় কাছে। কিছ বোল বছবের বুকে বে পাবাণ-ভার, ভা ভো চোবের জলেও হাছা হয় না ? আর কালা বেন আনে না চম্পার চোবে। তাকে কি ভগবান এত আলা দিয়ে গড়েছিলো ? ছেবে ভেবে কুল পায় না চম্পা। এসে থেকে সে কি ভাষু ছংগই দিলো লোককে ? কিছ চম্পন ভো নে কথা বলভো না ?

জীৰ্ণ খবেৰ ভাঙা গেৱস্থালীৰ কাক চম্পাৰ দাবা হয়ে বায় ৷ বৰ্ণা भएड नमी तक्यन छत्त्र डिर्फ़र्छ। चाहे एटएड चाहे छेर्फ़र्छ अमिरक। अ चार्ट क्छे जारम ना जाज-काम। हम्लारमत ऐक्टीरन हाता क्ल এক ঝাঁক বক উড়ে বায়। তবে কি বৃষ্টি আসবে ? আকাশ ভ মেঘে বেঁপে এসেছে। কাজল-কালো মেঘের দিকে চেরে চম্পার মন বেন কেমন উদাস হয়ে বার। কোথায়, কতদুরে গিয়েছে চন্দন। কর বছর বে হয়ে গেল! পুখীখরের এক ছেলে, এমন ক'রে নির্বাসনে থাকবার কি দরকার ছিল? প্রভাপ চাচা জার তুর্গা চাচীও ঘুরে এমেছে মেখান থেকে। নানা'র সঙ্গে নাকি কাজ করছে চন্দন! ফারসী শিথেছে, হিন্দী শিখেছে কোন বাদ্ধলীবাবুর কাছ থেকে। বাঙ্গালীবাবু কাকে বলে। জানে না চম্পা। তবে কৌশল্যার কাছে ভনেছে বাঙ্গালীবাবুরা মাছ খার, মাংস খার। সাহেবদের সঙ্গে এক সমান হয়ে কথা বলে। ভাতেই বা কি হলো ? এক ছেলে, তাকে বিষে দেবে না তার বাপ-মা? দিক না কেন, সুৰী হোক না কেন, চম্পা কি বাদ সাধতে বাবে ? কখনই না।

ভাবতে ভাবতে চম্পা হাতীর পেছনে গিয়ে গাঁড়ায়। ঐ ভো এক ফালি নীল মেন্বের মতো নদীখানি দেখা হাছে। চম্পা জানে, এই ঝোড়ো হাতাদে নদীর জল কেমন কুঁচকে হার। কেমন রেখা পড়ে। জাবার বৃষ্টি পড়ে বখন—টুপটাপ করে ক্ষক্র হয় বড় বড় কোঁটাতে—তথন নদীটা কেমন জলান্ত হয়ে ওঠে। কত দিন দেখেছে চম্পা। চম্পন তাকে দেখিয়েছে। বৃষ্টির রাপটার নীল হয়ে গিয়েছে মুখ। তখন বটগাছের নিচে গাঁড়িয়ে তুলন বৃষ্টি ধরা জবে আবের জাপের করেছে। জাবার ঝলমলে রোদের দিনে, নদীর জবে হাত পাধুয়ে, পাগার থৈয়ে নিয়ে কাবে শীলমোহর করা থলি ফেলে সরকারের ডাকবরদার বখন ঠাটু ঘোড়া নিয়ে খুট খুট ক'য়ে পাকা সড়ক ধরেছে—তার পেছন পেছন চলে গিয়েছে সে জার চম্পন। কোমবের পেটি জার কাবের তক্ষার লাল বং বখন জনেক পুরে মিলিয়ে গিয়েছে, তখন গমক্ষেতের মধ্যের সক্র রাজ্যা ধরে গাঁরে ফিরতে ফিরতে তারা তুলনই গলা মিলিয়ে গান করছে—

--লেভে চন্দন চন্দক মালা কানমেঁ কুগুল নৈন বিশালা

বাজন বাজে বড়াছবাগা চলে বামবাধ্বকে ব্যাত, বে ৷

বিভার ওপর চিবুক্থানি বেখে চন্দা উদাস চোথে তাকিয়ে থাকে। কোথার চলে গেল চক্ষন। আজ বদি ফিরেও আগে, চন্দা কি তার জীবনে জাবার নিজের জভিনপ্ত ছারা ফেলডে বাবে? এই তো সেদিন, কি কারণে মন থুনী হয়েছিলো। মূইকুল পরেছিলো চন্দা বেণীডে। সঙ্কোর মূখে ছঙ্গ নিয়ে চলে জাসছে চুলি চুলি, দেখে চন্দনের মা কেমন বিফ্রাণ করে বলালো—দেখ দেখ, জামার ছেলেটাকে দেশ-খর ছাড়া করলো, এখনো কুল পরে মন ভোলাবার শুধ বায় নি?

হোঁচট খেরে পা কেটে গেল, সেদিকে না ভাকিরে প্রায় ছুটে চলে আসে চল্পা, তবু ছুগার শাণিত কণ্টা ভাকে অনুসরণ করতে ছাড়ে নি—ও মেরে শহরের বাজারে গিয়ে ওঠবে আর নাচ.নী হবে, ভোমবা দেখে নিও।

চক্ষা ভাবে না, হুগার ছেলের কাছে আর সে বাবে না। কোন দিনও না। বলা বার না, হয় ভো একদিন বরাত, নিরে বেরুবে চক্ষনের বাবা। না কি বৌ নিয়েই ফিরবে ? চক্ষনের নানা না কি এমন মেরে বাছাই করবে, যার জোড়া নেই—চক্রবদনী, মুগনয়নী কাঁচা সোনার মভে। বিভ্

আর চম্পার তো বিষ্ণেই হবে না। ভাবতে পরে সমটা থারাণ হরে বার আবার। তার কোন দিন কিছু হবে না। যত আনশ্ উৎসব সব ঐ অক্স অন্য মান্তবের হবে! নিজের হুংখে নিজেই উদাস হরে চেরে থাকে চম্পা। বর্ধার জল পোর কদম গাড়ে কুল ফুটেছে। নদীর ওপারে বনে ময়ুর ডাকে শোনা যায়। চম্পাদের খরের পেছনে কেমন মথমলের মতো ঘাস হয়েছে। বুইগাছটা নাড়া দিলে ফুস আর বুটির জল হুই-ই ববে পড়ে। একবার গাছটা নাড়ার চম্পা। বুটির কোটা কেটা জল বুনি নিচের খন সব্জ পাতাগুলিতে তথনো লেগেছিলো। এবার ভারা ববে পড়ে। চম্পার চুলে আটকে পড়ে দেখতে হয় ঠিক বন মুক্তো লেগে রয়েছে।

হঠাৎ কানে আসে অনেকগুলো গাড়ীর ঘড় ঘড় শক। তাদের গাঁরেই চুকলে। বুঝি। কৌতুহলী চম্পা আপল খুলে এগিরে বায়। আবোহীদের চোধে। পড়ে না। কিছা সারি সারি ভিনটে বংার গাড়ী এলো! বড় বড় চাকা। বাঁশের ছাউনীর মুথে ছাঁট লাল কাপড়ের খোপা-খোপা ফুল। বাত্রিবাহী গুড়ৌ। এ গাঁটো কাক ত' এমন সময় ফেববার কথা নয় ৷ তবে কি বাইটে কেউ এলো চল্লা ভাবে—কৌশল্যার **ख्या निम्हे हम्दा**। চকিংত আত্মসচেতন হয়ে কেতুহলী চোৰে মাঝের नात हन्ना। গাঙী থেকে কে বেন গুরে ভাকালো। বুক হুক হুক করে ভার। নিলা**ছ হরে এতথানি এগি**রে আসা উচিত হরনি তার। গা আঁচল ছিল ভো? যোটা হলদে ওড়নাটা টেনে নেয়।

কানপুর ও 'আকবরপুর থেকে রাস্তা এসে তেরাপুরের আগে মিলেছে। তারপর তেরাপুর হরে সেলার নদী পেরিরে সে পথ বর্গ পেরিরে কারী হরে চলে পেল। এই পথ কোল্পানী সহক। এ পথের সলে বোসাবোগ করবার অভে আল্পানানীথেকে কত গ

জালের মতো এনে মিলেছে। আক্ষরপুর, ঘটমপুর, কোরা, কটোরা, চামীরপুর হিন্দকী, কডেবপুর। এই সব জারগা থেকে এসেছে সব ছোট ছোট পথ। সব পথই বে কোম্পানী সাহেবের বানানো তা নহ। যেমন তেরাপুরের পথ বানিরে দিয়েছিলেন রক্ষরাদের গাজী সাহেবের শিব্য মহম্মদ রক্ষর। বুক পর্যন্ত সালা দাড়ি, হাতে তস্বীমালা, কোরাণ কঠন্ত ছিলো গাজী সাহেবের। সিছপুক্য, দিনাস্তে এক জাঁজেলা হুধ থেতেন শুরু। আর সে হুধও নাকি একটি ধবধবে সালা গাই এসে দিরে যেতো। গাজী সাহেবের অব্যর্থ ঔষধে আরোগ্য হতো সর্পনষ্ট বাজি। কি হিন্দু, কি মুস্সমান স্বাই বিপদকালে নিরে বেত গাজী সাহেবকে। মহম্মদ রক্ষরের ছেলেকে কাটলো বিষধর। গাজী সাহেব নিজে তথন মৃত্যুশব্যার। তবু, মহাত্থের সেই কাল বাতে ঠিক চোক্ষ মাইল রাস্তা পেরিবে একেন গাজী সাহেব। মহম্মদ রক্ষরের জ্নাকীর্ণ হুরে চুকে একবার দাড়ালেন মৃত্যুপথরাত্রীর মামার কাছে। হাতের লাঠিটা দিরে মৃত্ ঠেলা দিরে বললেন।

—কোন কাম কলিস নি তৃই বেটা। ময়দান পড়ে রয়েছে, ভাতে একটা গমের চারাও ফৈলাদ কবলি না—সে গাছের একটা দানাও কোন চিড়িয়া খেতে এলো না—কি হিসেব দিবি তুই আলার কাছে গিয়ে ? উঠো, নিদ্ না বহো, ছনিয়া মেঁ আপনে কাম বচাও!

তার পর চলে গেলেন। সকালের আগেই মহম্মদের ছেলে প্রস্থ হরে উঠলো। সকুতজ্ঞ মহম্মদ গাজী সাহেবের কাছে গেলেন দরগার ভেট নিরে। গিয়ে দেখেন, কাঁচা এক কবরে বাতি ফেলে শোক করছেন ব'লে ভক্তবৃক্ষ। গাজী সাহেব মারা গিরেছেন গভ সকারে।

মহা কৃতজ্ঞতার মহম্মণ তেরাপুর থেকে বমুলাবাদ এক পাক। সড়ক বানিয়ে দিলেন। গালী সাহেবের নাম নিয়ে চললে এ পথে গাত্রীর কোন বিপাদ হর না বলেই এ অঞ্চলের লোক বিখাস করে।

এমনি ধারা ভারো কত পথ। কোন ঠাকুরসাহেব হরতো নিজের কীর্ত্তি অকুর রাধবার জন্তে পথ করেছেন। কেউ বা মৃত শিভৃপুক্ষবের নামে উৎসর্গ করেছেন কোন কাঁচা সড়ক। কিছ কোম্পানী সরকারের পাকা সড়কের সল্পে কাক্সই তুলনা হর না। চমৎকার পথ! চওড়া অব্দর পথ। এই পথ দিয়ে কোম্পানীর ভাক চলে, কুচ চলে, রেসালা ও পদাতি ফৌজের সিপাহী সওরার-রা ছুটি কাটিরে গ্রাম থেকে হেড কোরাটারে হাজিবা দিজে বার। কথনো সাহেবরা শিকারৈ চলেন এ পথ ধরে। সাহেবরা এ জারগা থেকে ও জারগা গেলেন ভো একটা ছনিয়া শিক্ত উপত্তে চললো সাধে নকে। কত তাঁবু, কত বেষারা, ভাবদার, ধানসামা, সহিস, মুলালতি, বাব্টি, কুলী। ভেড়া, বকরা, মুবগী মুবগা, এমন কি তুখ দেবার গাইটিও চললো সাথে সাথে। সাহেবরা এলো ভো আশ্পাশের মানুধ বাস্তা ছেড়ে নেমে বাবে পাশের কেন্ত, নালা বা খাদে। বে নামৰে না, তাকে খোড়া দিয়ে ভর দেখিয়ে নামিয়ে দেবে ওয়া। কেম্পানী সরকার। সাহেবরা সকলেই রাজা। রাজার সঙ্গে একই পথে একই সময়ে চলা কি আদৰ মাকিক ?

পথ। তবু কালো চীমড়ার মামুযঞ্জোকে দ্বে রেথে বাঁচবার কি প্রয়াস! বত নতুন আমদানী সাহেব, ততো এই রক্ষ ছেঁারাচ বাঁচিয়ে চলবার চেটা। কোথার বনক্ষল দিয়ে চলেছে সাহেব।

ভাঁবু খাটাবে, আসবাৰ সাঞ্জিয়ে খাটপালং চেয়ার আসমারীভে বন্দোবস্ত করে দেবে হিনুস্থানের মাতৃব। দশ দিক খুঁলে পেতে মুবগী থানীর মাংস, ভোকা চালের বিরিয়ানী আর মদের ঠাণা বোকল, সে-ও আনবে তারা। গরমে পুড়ে তারা পাখা চালাবে, **ইডে** ভারা-ই আগুন আলাবে। সব সময় ভজুরে হাজির থাকবে। ভাদের এই সবটুকু সেবা নিঃশেবে নেবে সাহেব। বট উঁচু করে, পা নাচিয়ে, নিগার অথবা শৃয়ার ব'লে। কিছ তাই ব'লে ড'দের সাহৰ ব'লে স্বীকার করবে? অসম্ভব। এমন দৃদ্যুগ এ ধারণা, যে সভ্যতা থেকে অনেকদৃরে, নগণ্য কোন নির্জন জারগাতেও, কোম্পানীর সাহেবরা, সাহেবরা সাহেব ছাড়িয়ে মানুষ হরে উঠতে পারেন না। যে সব সাহেবরা লাখে একজন, এই সব অলিখিত কামুনের লক্ষণের গণ্ডী পেরিয়েছেন, তাঁদের এদেশের মাতুষ প্রধা করে, ও-পারের মাতুষ ভাচ্ছিল্য করে ! সাহেবরা সাহেব, তাতেই তাঁদের সাত খুন মাপ। ভাষা বোষেন না, विस्पां अबा तारे व महाराम मन्नर्रक, निरक्तान निकानीका आहरे দণ্ডী দিয়ে মাপা ধায়—তবু তাঁরা শাসন চালাচ্ছেন। সাল আঠারো শ' পঞ্চার। কালো চামড়ার কোটি কোটি মাতুৰ আৰ তাদেব অন্যভ্যি হতভাগ্য সুৰু মহাদেশ, তাদের ওপর শাদা চামড়া অব্যাহত भागन हानात्त, এই इत्ना धेर गूराब वारेत्वलब निर्मा ।

এত কথা তেরাপুরের মাছুষ জানে না। তবে মা**ওল** তাদেরও দিতে হয় বৈ কি। তাই তেরাপুরের বুড়ো মাছুবরা বলে।

— জমানা বদলাবারও একটা তরিকা ছিলো। আমরা বুঝতে পারতাম, কথন কি হছে ! এখন আর কিছু ধরতে ছুঁতে পারি না। এমন তাড়াভাড়ি বদলে বাছে সব !

কোয়ানবা হাসে। তাদের বক্ত গ্রম। বলে বৃড্টো লোকদের ৩চু ভয়! সব ঠিক আছে। ভোমবাই বুড়ো হয়ে বাছঃ!

-al, al

মাধা নাড়ে বুড়োরা সবিবাদে। বলে—বদলাছে। কিছ ভাল হছে কিছু ? কিছু না। এত অনুধ বিন্তুধ, ফসলে এত অজনা, আকাশের এত ধামধেরালী, এ তো ভাল নর!

ু বুড়োরা মাটির সঙ্গে গভীর টানে বাঁধা। গাছের মডো।
তাই আবহাওরার বদলটা ভারা আগ নিরে নিরে বোঝে। বোঝে
কিন্তু বোঝাতে পারে না ছেলে-নাভিদের! মাধা নাড়ে ওপু
বিজ্ঞান্তিতে।

ভবু এই পথ তাদের জীবন-বৈচিত্রও জোগার। পথ দেখে জনেক সময় বার ভাদের।

কে এলো নব আগছক, জানবার জক্তে ব্যস্ত ছিলো চল্পা।
ভাছাড়া হঠাং বেন মনটা টলমল করে নড়ে গিয়েছে প্রশাস্তি।
প্রনো স্তির সঞ্চারেই কি এমনটা হলো? মনের জতল থেকে
উঠে এলো জনেক সব ছবি, বা নাকি মুছে বাবার কথা! প্রথম
বৌবনেই বে মন এমন হয় ডা জানে না চল্পা। সহসা জমাস্ত করছে বিধি-নিবেধ, জেনে-ও মুপুর বেলা একবার নদীর ধাবে বাবার
জক্তে আকুল হয়ে উঠলো চল্পা। সেই নদী, সেই বটগাছ, সেই
প্রশাস্ত, বিপুল, উদার ব্যান্তি। ভার জনেক নিঃসল বেদনা দিনের
স্কী।

কাল ছিলো ছণিত বৰ্ষণ। মেখ তবে আকাশ নেমে এসেটিলো

চন্দাদের বাড়ীর ওপর। বৃষ্টির প্রেভিক্রণিত ছিলো। রাতে বিনিজ্ঞ চোধে জানলা দিরে সেই নিক্র আঁধার দেখতে দেখতে চন্দা মনে মনে কামনা করেছে বৃষ্টি জাক্ষ। বাম্ বাম্ করে নেমে ভাসিরে দিরে বাক সব কিছু। তাহ'লে ঘুমোতে ভালো লাগবে তার। সে ঘুমে ক্ষম্মর কোন সুধের স্বপ্ন দেখাও সম্ভব। কিছ বৃষ্টি জাসেনি।

সেই বৃষ্টি এলো আবাল, এখন। এই অসমবে। নদীর জল সিংহের মতো তেউরের কেশর ফুলিরে উঠে এলো। বৃষ্টিতে সভিত্রই ঠাহর হয় না কিছু।

এ সময়ে বটগাছটার গোড়ার কাছে অস উঠে আদবার কথা। তবু তার কথাই মনে হলো চস্পার। দৈশব থেকে এই বটগাছটাকে সেমনে মনে বন্ধু বলে জেনেছে।

পা ফেলতে ভূল হয়েছিলো, আর একটু হলেই নরম মাটির ধ্বনের সঙ্গে বুঝি নিজেও চম্পা জলেই পড়ে বেভো আজ। বলি না ভাকে ধরে ফেলভো চন্দন। অন্তুত একটা মুহূর্ত। পরে চম্পা চেষ্টা করেও এই মুহূর্তটার বিশ্বর আর চমক শ্বরণে আনতে পারেনি। এ বক্ষম আস্ক দৈবী বোগাবোগ কচিৎ হয়।

-পড়ে বাবে চম্পা !

ছুৰ্ঘটনা বাঁচলো। কিছ চন্পা চলে এলো কাছে এক টানে প্ৰায় বুকের ওপরেই এনে পড়লো বলা চলে। কিছ সে-ও মুহুর্বের বিভ্রম। ভারপরই প্রায় রুচ ধাক্কার চম্পাকে সামনে ঠেলে দিলো চন্দন। বললো—খুব বেঁচে গেলে।

বিশ্বরের খোর তখনো কাটেনি। চম্পা বসলো—তুমি ?
—নম্বতো কি ?

কৌতুকের হাসিতে মিত মুখ চন্দনের। বলে—কাল অমন করে দেখঝান। গাঁড়িরে ছিলে পীলা ওড়নীতে বাহার দিয়ে। সঙ্গে দালা বাবা ছিলো, নইলে!

—দে তুমি ?

স্বীকার করে চন্দন মাধা নেড়ে বলে—স্বামি এসেছি সে কথা শোননি? স্বামি ত ভাবলাম তুমি ওনেই এনেছ দেখতে।

সচেতন হলো চম্পা। ঈষং গর্বের ও আহত আহমিকার সুরে বললো।

—গাঁরে আমি যাই না। গেলে নিশ্চর ওনতাম। শ্রীফ হরে ফিরে এনেছে ছেলে, আমাদের মতো পরীবকে নিশ্চর শোনাভো ভোমার মা!

চন্দন জবাব দের না। তাই থোঁচাটা তাকে বিঁধলো কি না, বুবে পার না চন্পা। জাঘাত করে নিজেরই মনটা খারাপ হয়ে গিরেছে বেন। তাই দেই মনটা জয় করে আবার চন্পা বলে—না জানি কত খয়রাৎ জকাৎ আজ ভোমাদের বাড়ীতে। জামি তো তাতেও বাদ পড়েছি চন্দন!

--- हच्या, वाटक कथा वटना ना।

মনে বে অনেক হংখ চম্পার। আরো অনেক কথা বলতে ইচ্ছে করে—কিন্তু চন্দনের গলার গভীর স্থব, সেই ছেলেমানুষী কিশোর কঠ কোথার গেল ? কথা বলতে চেরে কথা হারিরে ফেলে চম্পা। আশ্চর্য হরে ভাকিরে থাকে। প্রথম দর্শনের চনক আর বৌষ্টা কেটেছে। ভারপরে আবার নির্মম কোন কৌভুক করতে সাধ বায়। মনে হর চন্দনের আত্মবিখাসটা তেতে দের বোঁচা দিরে।
সে কথা বললো বলেই ধন্ত হরে গেল চন্দা ? তা তো নর !
চন্দা বলে।—চেহারা তো রহীসদের মতো! অনেক দেশ ব্রে
এসেছ ? আমার জন্তে কিছু এনেছ ?

- —নিশ্চর গ
- -- কি এনেছ ?

বৃষ্টির ছোঁরাচ কি চম্পার গলারও লাগলো। নইলে গলা এমন ভিজে কেন! বেন জুঁইগাছটার পাতায় ফুলে জল। নাড়া দিলেই বাবে পড়বে। পাছে বাবে পড়ে, তাই নিচ্ গলার চম্পা আবার বলে—কি?

—দেশতে পাছ না ? সামনে গাঁড়িয়ে আছি, সেই কথন থেকে গাঁড়িয়ে গাঁড়িয়ে পা আমার ধরে গেল।

এবার চম্পার অভিমান কুলে ফুলে ওঠে। চিরদিনের অনাদরের মেয়ে। এতটু চু ভালোবাসার ছোঁয়াচ লেগেছে তো কথা নেই! চম্পা বলে :— এত দিন আস্থান কেন ?

- —কাজে ছিলাম।
- —কি কাজ ?

—স্বনেক কাজ। কিছ সে সব কথা কেন চম্পা? এই ত এসেছি। ভোরবেলাই চলে আসতাম। কিছ আন ভোসব!

এবার ছন্ত্রনে পাশাপাশি খেঁসে আসে। বৃষ্টির সাদা আবরণটা ছন্ত্রনকে থিরে রয়েছে। আড়াল করে রয়েছে বহির্জগৎ থেকে। চন্দনের কথা শুনে মান হাসে চন্দা। সে আনে না চন্দনের আসা কত অসম্ভব ! বলে—ভূমি আর কি জানলে বল গু এখানে প্রেডিনিন, সে বে কত কথা—

বলতে বলতে মুলার মুখে হাত চাপা দের চন্দন। বলে
—বাস, আমি তো এসেছি। আর কেন ভাবনা ?

মন্ত্ৰমুগ্ধ চম্পা তাকিরে থাকে। চন্দন বলে।—আমি অনেক যুবেছি, অনেক দেখেছি চম্পা! এরা জানে না তাই ছোট ছোট কথা নিরে পড়ে আছে। তুমি কিছ সে সব কথার হঃধ পেরো না।

বাধ্য মেরের মতো ঘাড় নাড়ে চম্পা। তার পর চন্দন বলে
—িকি স্থন্দর হরেছ চম্পা? চেনা বাছে না জানো? কে
বলবে এ সেই চম্পা!

- —কেন বি**জ্ঞী ছিলাম** ?
- এমন হবে কে ভেবেছিলো ? চলো নিয়ে ষাই শহরে। শহরে মেরেরা কেমন অন্দর বাঘরী ওড়নী নাগরা পরে। কেমন বেণী বাবে।
 - --- थ्व च्याव, ना १
 - —ভোমার চেয়ে নয়।

চন্দনের কথার চন্পার ছনিরাটা অমনি ভ'রে ওঠে বেন। খুনীরালির রঙে বড়ীন হয়ে ওঠে। চন্পা বলে—সভিচ ?

—সত্যি।

আর বৌবনের ধর্ম-ই এই, চন্দনের সঞ্চাশ্য দৃষ্টিতে চন্দা। বে-ই কানলো বে সে স্থান, জমুনি বেন সে আরো অনেক স্থান হলো। এই সৌলর্ব আগেই এসেছিলো। কবে বে কৈশোর ও বেইনে ছুই-ই মিলিক হলো। ছুই-ই সামুদ্ধাস অঞ্চলিতে পূর্ণ করে দিলো তার্ দেহ, তা জানতো না চম্পা। চবণের সে চপলতা কবেঁ বে নরনের নীলাঞ্জন ছায়াতে মিলিরে রহস্মর করলো কটাক্ষ, তা-ই বা কে জানতো! সমস্ত শরীর ভবে উঠলো। বেন মঞ্জবিত হলো লতা। অবতে বাঁধা চুল, তারই বা শোভা কত! গরীব মেরের লাল আদিয়া পীলা ওড়না—তাতেই চম্পা কত স্কর্মর! মুগ্ধ চক্ষন চেরেই থাকে কিছুক্ষণ। লক্ষা পেরে মুখ ব্রিরে নের চম্পা। চক্ষন বলে—অমন কুপণ হ'লে কেন চম্পা। কত দিন দেখিনি বল তো?

এককণে চল্পা সহজ হয়েছে। সংকীতুকে হেসে হেসে বলে— ছিলে কোথায় ? মনে ছিলোঁ এ গাঁৱের কথা ?

—ছিলো না ? জানো না ত, সাহেবের সঙ্গে গিয়েছিলাম শ্রোগজী। পথে সাহীসভকে ভাকুর হাতে পড়লো আমাদের গাড়ী। সাহেব ছিলো পেছনে। সঙ্কী বিশ্বলা আমার কাঁবে। মরেই বেতাম হয় তো, বদি না সাহেব এগিয়ে এসে গুসী চালাতো বটাপট। কিছ মনে হলো—বদি ভোমাকে আবার না দেখতে পাই?

- —কোথায় লেগেছিল চোট ?
- —জধম আরাম হরে গিয়েছে।
- -- छत् (मधि ?

ক্ষমং-গঞীর হয়ে চম্পা নিরীকণ করে দেখে। এত দিনের জদেখা। তর্ এমন সহজ ভাবে কাঁবে হাত দিয়ে দেখতে, এমন করে কাছে আসতে থাক চম্পাই পারে। চম্পনের মনে হয় চম্পার মতো এমন দোসর তার কেউ নেই। এই সহজ বদ্ধুত্বে জন্ম বন কৃতজ্ঞ লাগে তার। ঠিক এই কথা হয়তো বলতে চায়নি, তর্ এই সব কথাই কেন বেন এসে পড়ে! চম্পনের মনটার চারিপালে বেন পাহারা ছিলো। এসব কথা-ভাবতে বা কইতে মানা ছিলো। এখন চম্পার নৈকটো সহজেই অপসারিত হলো সেই বাধা।

চন্দন বলে,-তুমি কি বুঝবে চন্দা ? আমার মনে কত কথা, আমি সব বলতে পারি না। শিকার করতে জগলে চলেছে সাহেব। ঢোলপুৰের বাজার জঙ্গলে। বাজার হাতীতে সাহেব, পিছনের হাতীতে আমি, সাহেবের বন্দুক নিয়ে। হঠাৎ সামনে পড়লো গুলবাৰ। ঝাঁপিরে পড়লো গাছ থেকে। সাহেবের বলুকে নিশানা ছুটে গেল, থাবার চোট থেরে জানোয়ার লাফিরে এলো। আমার থেয়াল ছিলো এ বৰুম কিছু একটা হতে পাবে। দাদা লিখিরেছিলো শিকাৰের বৃলি। জানি চোট খেলে শেরের চাইতে গুলবাঘ কিছু কম নয়। কিছ হাতীবে ভয় পেয়ে জমন বিগড়ে বাবে জার সব ভূলে গিবে অমন ছুটবে পাগাল হয়ে, সেক্থা দাদা বলেনি। এক নিমিবে কি হবে গেল, আমি গেলাম পড়ে। অধমী বাব আমার বুকের ভপর। সাহেব জাভটা আমি বুঝি না চম্পা। এ সাহেব ছোকরা। ষতি বৰমেজাজী। এখন ৰেখি বে না, জীতুও বটে। ভৱে কেপে গিরে আমাকেই হরভে। সে গুলী করতো, বদি না মাত্ত তার হাতী সামলে নিয়ে গাঁড়িয়ে উঠে সাহেবকে না হঁ সিয়ার করতো। গুলবাখার দকে লড়াইরে আমি বধনু বেকারদার আইকে গিরেছি, জানোরার चार्यास्क करका करतरह उसन हुछि अला .कोना चानि। चार्यात দোভ। আমাকে বাঁচাতে ভাব ভরোয়াল আনোয়ারকে বিধলো हिन्दे, विश्व वामाय माथांहेरत बाहरता ना । कि व्यवहर यहना

চম্পা, সৰ বেন আঁধার হয়ে গেল, কিছু ভোমার কথা আমার সেই সময়ও মনে হলো।

এতক্ষণে আকাশে বৃষ্টি থেমেছে। পাতা থেকে লল কারছে টুপটাৰ রপোলী ছলে। আৰাশ সবটুকু ভল চেলে দিয়ে এতক্ষণে সান মেথের ওপর বামংফুর বাঙা হাসিট্রু ছড়িবে দিবে চেবে আছে মাটির দিকে। আকাশের পূর্ণতা শৃক্ত হলো। আর চম্পার মনটা বেন এতদিন ধরে পিপাসী নদীর বৈদাধী বুকের মতে। শৃক হয়েছিলো। একফণে সেই হ্নয় ভরে উঠেছে। ছলছল করছে কানায় কানায়। অনেক ক্ষোভ অনেক তুঃধ চম্পারত ছিলো। তার সঙ্গে কেউ কথা বলেনি। চন্দনের মা তাকে কভ অপমান করেছে। অনেকু ছু:থে চম্পার মনটা ওরু চন্দনকেই শ্বরণ করেছে। ভারা হ'লনে গৈবীনাথের মন্দিরের পালে কদম গাছের একটি শিশু চারা আধিকার করেছিলো। টেই গাছে ফুল এলেছে গভ বছর। দেখে চম্পার মন কেমন করছে। ভালের বাড়ীর পেছনে জামগাছে এবার কালো মেংখর মতো কল ধরেছিলো। চুরি করে সেই জাম হু'জনে বলে খেতো এই গাছের ভলার বলে। সেই কথা মনে করে চম্পা এবার এক আঁচলা জাম একটাও খায়নি। সব ছড়িবে দিয়েছিলে। গাছের তলার। কাঠবেডালীবা দল বেঁধে থেয়ে গেল। সেই হরিণশি**ও** ? চম্পার চোৰের সামনে সে বড় হলো। এবার শীতকালে সেই হয়িণকে সে মন্ত্র চালে এক ছরিণীর সঙ্গে ঘুরে বেড়াতে দেখেছে। আবার হবিণীর ভাক ভেকে দেই হবিণকে ভূলিয়ে এনে ভীর সন্ধানে মারলো এ আহীরদের ছেলে গোপাল। গোপাল হয়েছে চিডিয়াঁমার। ভিতির, বটের, ছবিহাল, হবিল, জাভি ধরতে পারে না। মেরে নিরে পিরে বেচে আসে সাংহ্রদের ভারতে। big भा थक किट्य दांशा, बन्दिय काला हानित्य त्मे हिर्दिशस्य नित्य লেল গোণালরা কয় ভাই। বলে পড়া মাথা, আর নিমীলিত চোৰ। সেই হবিণকে দেৰে চম্পা, ছু:খে ক্ৰোধে বত কেঁদেছে একা একা। চৰুন থাকলে গোপালকে নিশ্চয় শান্তি দিতো ।

এ হলো কারণের কথা। উপলক্ষ্য ধরে মন কেমন করা। কিছ
তা ছাড়াও কত সমন্ত্র ধেমনি মনটা কাঁদতো, লু ভ করতো, উদাস
লাগতো। ক্ষেত কুড়িরে গম তুলে টুকরি ভরছিলো চল্পা একদিন।
এমনি রাড়া বিকেল। অল্লাণের বাড়াসে শীত করে। কালো
কল্পন্তর মোটা ওড়না টেনে নিরে সে কুলো দিরে ঝাড়ছিলো গম—
হঠাৎ কানে এলো বিয়ের গান। পালকি নহু, ছোট নালকি করে
বৌ চলেছে ভিন্ গারে। বর পালে পালে লাঠি হাতে জুতো পারে
বাছে। মেয়েরা গান গেয়ে এগিয়ে দিতে চলেছে গাঁরের
সীমা পর্বস্ত। ভিন্ পাড়ার মেরে। মেয়েরা একটানা কল্প
বিলম্বিত স্বরে গাইছে—

দীতা ধৈষ্ঠ। কী মাতা ধোষে, ধোষে জনাবাৰ চলে তুলহুন কো 'হুলহুনীয়া— সীতা মৈষ্টা ধোকে কহে কব লাও গে লোটকে চলে তুলহুন কো হুলহুনীয়া।

পানের সেই ক্রণ পুর গুনে সেদিন চম্পার মনটা সহসা চম্পনে র কথা মনে করেই থাবাপ হয়েছিলো। চম্পার চোথের জল গাঁরের মাছুর কোন দিনও দেখেনি। সেদিনও সকলকে সুক্রিয়ে চুক্টা মুখ নিচু করে কেঁকেছিলো। ছাই চার কোঁটা অভিমানী অঞ্চ গুবে গিরেছিলো মাটিতে। মনে হয়েছিলো কত দিন হলো কোখার চলে গিরেছে চন্দন। কোখার হারিয়ে গিরেছে। কত শহর, কত মামুব, কত দ্ব-দ্বান্তের পথ। আবার এ-ও মনে হয়েছিলো, ভার মতো মেয়ে, বে অবাঞ্চিত, বাকে কেউ চার না, তার এই সব কথা মনে হওয়া বোধ হর একান্ত বিলাস! এমনি বারা সব কথা ভেবে হাতের গম তার মাটিতে পড়ে গিয়েছিলো অজ্ঞান্তে। আঁবার এসেছিলো আন্তে করে নেমে। ঠাণ্ডা বাতাসে শরীর হিম হয়ে গিয়েছিলো আন্তে করে নেমে। ঠাণ্ডা বাতাসে শরীর হিম হয়ে

আৰু চম্পা চম্পনকে সে সব কথা বলে না। সেই সব তৃংধের চেয়ে আৰুকের তথা অন্ধান কড়। আর চম্পা অন্ধা পাঁচজনের শংতা নর। সে সব ছোট ছোট ত্বও হুংধ খুঁটিরে বাঁচে না। প্রভাগত এই বন্ধ্ সন্দের প্রেমের প্রেভিউতিটা এত বড় সম্পান, বা তাব ছেঁড়। ওড়নীর আঁচলে বেঁধে সে অনেক হুংধ অপমানকে তুচ্ছ করে জয়ী হরে উঠতে পারে, সুম্পর ও সভেন্ধ হরে উঠতে পারে, এ কথা চম্পা বোকে।

চন্দনের এত দিনে খব শান্তি বোধ হয়। ত্যা ছিলো, আকৃতি ছিলো, বাাকুলতা ছিলো। সেই সব ত্যা তার শান্ত হলো চন্পার কাছে এসে। চন্পার পরিপূর্ণ স্থাও ভরা মুখধানার দিকে চেয়ে চন্দন ব্যতে পারে এত দেশ ঘূরে, এত মামুর দেখে, এত জীবন দেখে ভবু ভার মন ভরেনি কেন। শ্বাধ্য মন সেই বুহত্তর জীবনের থেকে মুখ ঘূরিয়ে ছিলো। প্রত্যাধ্যান করে চলেছিলো সব স্থাও। তার ত্যার পানীয় এইখানে মেপে রেখেছেন। এই নিঃসঙ্গ, স্ক্রম্ব এক গরীব মেয়ের মধ্যে এক সরোবর টলটলে গভীর ভালোবাসাতে ভূবে না গেলে তার শান্তি নেই। বুবে তার যেন শ্বাকও লাগে। চন্দন বলে—কি, এখনও বলবে ভূলে ছিলাম ?

মাথা নাজে চম্পা। আৰু কথনো সে ভা বলে । মনে মনে বলে আমি কি বেইমান ?

সহসাকোনোকখামনে ক'বে একটু হাসে চক্ষম। ভন-তন করে বলে---

—লোভে¹চন্দন চম্পক মাল।
কান মেঁ কুণ্ডল নৈন বিশাল।
চম্পা হাসে। চোধ অগ অল করে সেই শৈশব স্থাভিতে। বলে—
—বাজন বাজে বড়াছবাগা
চলেঁ বামবাধ্বকে ব্রাড, রে !

ছ'জনেই হেলে ফেলে। ভাদের প্রিয় ও পরিচিত আকাশ ধেন জলহীন ছলছলে মেখমাধা মমতাময় দৃষ্টিতে চেয়ে থাকে ভাদের দিকে। রামধল্প রং-মাধা সন্ধ্যামণি বেন পরম স্লেছে লুটিয়ে দেয় তাদের হ'জনকে বিবে। বড় স্থলন হয় ছবিধানি। পাশাপাশি দাঁড়িয়ে হ'জনে একজনের লাল আজিয়া আর পীলা ওড়নী ঢাকা পুল্পিত পলাশ ফুলের গাছের মতো মদির বৌবন, বেন প্রথম নিজেকে আবিভাব করে সে জন বিশিত হলো। বিশ্বিত হরে চুপ করে বইলো। আর একজনেরও ঈবৎ সহাস मूट्य, मूद्ध व्यथ्ठ शृञ्जीद मृष्टि । शांन मिट्य यमि धरे इविधानित्क মঞ্ল করা বেছে! তো সে গানের কথা হতো—বড়ে ভাগসে সকন পাওরে। কিছ গানের কথা ও হুর এখানে অনুপস্থিত। ডবে এই ছবিধানিকে আরো স্থলৰ কেমন কৈৰে করা বার ? কি ভেবে, চল্পা ও চন্দনের পরিচিত আকাশধানা, নিজের বকে এক কাঁক হীরামণ উড়িরে দেয়। খণ্ডে দেখা বালকভার ব্রৈয় পাৰীর মতো অন্দর সেই হীরামণগুলি কিচ মিচ, ক'রে উড়ে বরে। হীরে-চণী-প্রায় মতো কিক্মিকিয়ে সই পাখীর সার মিলিয়ে বায় সাদ্ধ্য গগনের প্রেহ্ময় কোলে। আর সম্পূর্ণ হয় ছবিধানি। ফিম্মাঃ।

জীবন-ছড়া

চণ্ডী সেনগুপ্ত

জীৰনটা এক মাধুৰ্যময় হড়া দাঁড়ি কমা সেমিকোলন ভবা লালটুক্টুক্ ছবি দেখার স্থথে হঠাৎ বখন তুমি আসো বুকে।

জীবন-ছড়ার মাঝে মাঝে বতি তথন আমার মনের খবে তোমার আরতি তথন আকাশ আর্তপ্রবে ভিক্ষা ক'রে আলো আমার দেহে ছড়ায় এসে সকাল জমকালো।

জীবন-ছড়ার ছব্দে নূপুর বাজে ফেলে-জাসা সে এক মাহার সাঁঝে সদ্ধাবেলার উদাস পুরবীতে কে ধরা দের ভূলের স্থরভিতে ?

শীবন-ছড়ার ছই দিকে ছই বর সন্তিয় ওবু মধ্যিধাদের চর।

ত্রিকণেশ ভাবছিলো, সেই বেদিন 'রণ্ডডেন্ডন গুদ্ধ' দিয়ে এলো ইন্দানীর হাতে, সেদিন শেব-যুহুর্তে বে দৃষ্টি-বিনিমন্ন হয়েছিলো ওর সঙ্গে সে দৃষ্টি কত সুক্ষৰ, কত অনুযাগপূৰ্ব, व मृष्टिय माकित्ना ও উक्षीश्च इ'रत क्ल्माश्च्यव मण्ड कोए किरविक्रामा, किन छात्रभव नावाव की चलेला हेलामीव--शमन निर्म व विव्वश्रांत की कांवण चंदेला! किन्त, कांवण चंदिहिला, हैक्सानीव 'लिटोव' পांख्यांव मरवान वहन क'रव विभिन टिठि अला. দেদিন সংখ্যায় খেয়েকে নিয়ে বেরিরেছিলেন রমেন, তুপুরে অফিসে বনেই ধ্বরটা পেরেছিলেন উনি, চাপ্রাশী বর্ধন রমেনের লাঞ্চ নিতে ছুপুরে এসেছিলো, সেই সময় তার হাতে কলকাতার চিঠিখানা विद्य विद्यक्तिन नर्सानी। त्न नःवादन द्रायनदन्य अकिरमय वांडानी অবাঙালী প্রত্যেকেই অত্যক্ত আনন্দ প্রকাশ করেছেন, অভিনন্দন क्षानित्तर्द्धन । क्लन्तभारकत्र वात् ह्हालमाञ्चरवत मछ देश-देह क'दत्र আনন্দ জ্ঞাপন - করেছেন, এবং অফিসের স্বাইকে ডেকে ডেকে এ ভুভদ্বোদ জানিরেছেন। এবং বাড়িভে গিরেও চা খাওয়ার টেবিলে গল কবেছেন খুব। এ গলে চোধ-মুখ উজ্জল ক'বে বোগ **पिराह चक्रां मां व नौजा। त्मां जिल प्रांच प्रांच हेळा भीव दो मां जा** না ক'বে পাবেনি বিভ বেছেতুও গেলো বছর ওয়ু ইংবিজীব खबरे वि-श भागी। कदाल भारति अवर वे अक्कांति ছেल्माक्स हेळांगे हेरविकोटक काहे ह'त्य अटकवाद्य मिटाव लाद्य राम चाट्य. তাই কেমন এক ধরণের প্রাক্তরের গ্লানি বোধ করছিলো ও, মুখ নামিরে নীরবে চা থৈরে বাজিলো, আর তক্ষবালা চা ঢালতে ঢালতে বড় মেরের লজ্জাকণ মুখের দিকে এক নজর তাকিয়ে গভীব গলার ভষু বললেন, বা: বেশ ভাল খবর !

সাদ্ধ্য ভ্রমণে বেরিরে মিসেন ভালুকদারের সঙ্গে ম্যানিং করতে করতে মিসেন ভরুবালা বিখানের চোখে পড়লো, মিনার্ভা বুক সপ থেকে বই-এর ভারে একেবারে কুঁলো হ'রে বাপের সঙ্গে ইন্দ্রাণী বেরিরে এলো।

ভাবলেন, আৰু ওর সংগ্ কথা বলে ছু-এক মিনিট অপব্যর করা চসতে পারে, ভাকলেন, শোনো! ইন্দ্রাণী মুধ ভূসলো, বমেনও।

মিলেস ভরুবালাকে দেখভে পেরে রমেন অফুটে বললেন, ইম্মা, আমার হাতে বই দিয়ে তুমি এগিরে বাও, দেখো উনি কেন ডাকছেন।

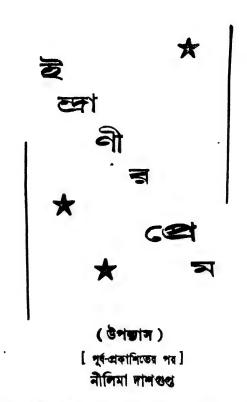
না বাবা, আমার হাতেই থাকু—বই-এর বোঝা হাতে নিরেই ইক্রাণী তক্ষবালা বিখাদের সামনে এলো।

ভোষার নামটা বেন কী ? ইন্দ্রাণী খুব অবাক হ'রে ভাকালো কিছ খুব সংবভ গলার উত্তর দিলো, ইন্দ্রাণী।

পালে দাঁড়ানো মিলেস ভালুকদার প্রশ্ন করলেন, মেরেটি কে ? মেরেটিকে থেন দেখেছি মনে হচ্ছে—

হাা, দেধবেন বৈ কি সিমলের বাস্তা আর ক'টা—ওঁলের আকিসের প্যাকাউটস অফিসার রমেন বাবুর মেরে। ওকে বাহুবা দিতে হর, বেশ ভাল কল করেছে এবার ম্যাট্রিকে, ইংরিজীতে নাকি কাঠ হরেছে—

আছা ! মিসেন ভালুক্দারের কঠে স্থাপট বিশ্বর । মিসেন ভক্ত বালা ভাবার ইন্ত্রাণীর দিকে ভাকিরে কিছুটা বেন হরা • হিটোলেন চোর দিয়ে, ভা বেল, বেল, এলো একদিন ভাষালের



বাড়ি, মিটি খাইরে দেব, বাবা বুঝি এসব বই প্রভার দিলেন ভোমাকে ? ভা বেশ, বেশ, হঠাৎ ত্রেক কবলেন ভক্ষবালা, অনেক দরা দেখিরেছেন উনি।

বেতে বেতে অনুচ্চ কঠে মিসেস ভাসুকদার বলসেন, মেরেটি খুব ইংরিজী প'ড়ে বোঝা বাছে, একদিনে একরাজ্যের বই কিনে কেলেছে।

একটু পরিহাসের প্ররে উত্তর দিলেন ভক্ষবালা, সব বই কী আর পছবে মিসেস ভাসুকদার, বেশীর ভাগই শোভারুদ্ধি করবে আলমারীর। মিসেস ভাসুকদারের জ্ববারটা আর লোনা গোলোনা।

ইন্দ্রাণী ফিরে এলো বাবার কাছে, গোধুলির অসান আলো কেমন বেন হঠাৎ রান মনে হছে ওব কাছে। আসার সময় সারাপথ গল্পে গল্পে এসেছিলো, বাওরার সময় একেবারে চুপ। ওব কানে বাবে বাবে অস্থ্যণিত হছে চুটি কথা ইংবিজ্ঞীতে নাকি কাই হ্রেছে, আর, সব বই কি আর পড়বে মিসেস তালুক্লার ? সেদিন বাত্রে বিনিজ্ঞটোখে অনেকক্ষণ কাটিয়েছে ইনা। আর নিজের চুর্বলতার জন্ম নিজের ওপর বত কোধেব তাপমাত্রা বৃদ্ধি হচ্ছে, তত অনুগু আক্রোপের জাল বুনে চলেছে অক্লপের বিক্ষরে। কল্পবালা হাতের নাগালের বাইরে, কিছু অন্থপণ তো আছে।

সকালে বাতভাগা রাজাচোধ দেখে সর্বাণী উবিধ হরেট্রিলেন, কি বে তোর মুখের চেহারা অমন কেন? কাল নিশ্চরই ঠাখা লাগিবে কেলেছিল? বেধি কাছে আর তো, কপালটা দেখি—

না যা, কিছু হৈবনি—ভাড়াভাড়ি যা'ব চোথের সামনে থেকে সরে গিরেছিলো ইক্রাণী, ওর মনে হঞ্জিলো, ওর বুকের কছ আফোনের আন্দোলন এথনও শাস্ত হরনি সম্পূর্ণ, কাছে মেনে, বা বদি টের পেরে বাব।

কাাধলিক কাবের চৌদ্ধ নম্বর মুইটে সন্ধ্যে কাটিয়ে এলো ইন্দ্রাণী, সকালে সর্লাণী বাভি কিবে এসে অকুণেশের আসার কথা বলতেই-हैसानी मान मान ठिक कात्र किनाना विकास । वाफिएक शांकाव ना মার সঙ্গে হাতে হাতে খাবার দাবার স্বই বানালো বিজ বিকেল পাঁচটা বাজার আগেই ও চলে গেলো চৌদ নম্বর সুইটে। দেখানে ওর সমবরদী এক পাঞ্জাবী মেয়ে জাছে, ভীনা কাপুর, মাঝে মাঝে ইনা বার সেধানে। মেডেটি জ্বাক্ত-পালাবী মেয়েদের মত খুব একটা উৎকট আলটা মডার্ণ নর, সেজ্জ ওর সঙ্গ ইন্দ্রাণীর সহনীয়। ভাছাড়া ওর উৎসাহ এবং আন্তরিকতায় পাঞ্জাবীদের মামুলী আদৰ কারদার च-चा-क-थ (करन निरद्राह हैना, शत्मदा नचत यूहेर्ड यूत्रीमत चक्रश নামে আর একটি পাঞ্জাবী মেরে আছে, সে ইন্দ্রাণীর থেকে সামাস্ত কিছ বড হবে, প্রায়ই সর্মাণীর কাছে উলের প্যাটার্ণ ভলতে আনে, সেই সূত্রে আলাপ। বোজই ইন্দ্রাণীকে একাধিক বার ওদের বাড়িভে আসতে বলে, একদিন সন্ধ্যের পর গিয়েছিলো ইনা সুরীন্দর স্বরূপের বাড়িতে, গল্পে গল্পে রাভ হয়ে গিয়েছিলো সেদিন, যথন ফেরার জ্ঞ উঠে দাঁডালো ও, তথন সুৱীশ্ব বাতের থাওয়া থেয়ে যাওয়ার জন্ম ওকে হাত ধরে টানাটানি, আরে বহিনজী! ধানা তো ধানা। ৰত ও অস্বীকাৰ কবে তত হাত ধবে টানাটানি কবে সুবীক্ষর আৰ বলে, ধানা তো ধানা বহিনজী!

শেষকালে ওর বাবা মা পর্যন্ত বধন বললেন, তথন ইনাকে সম্বৃত্তি দিতেই হলো। কালো ঝুলের মত ধানিকটা সরবে শাক দিরে তিনটে তলুলের কটি কোনমতে গিলে তারপর ও বাড়ি ফিরেছিলো, কটি আদপেই প্রুক্ত নর ইনার, ভাতই ভালবাসে ও, তবু অত পেঙাপাড়ি করলে না ধেরে আর করা বার কী! কিন্তু, তার প্রদিন হুপুবে ভীনা কাপুর এনে হাজির, বহিনজী! কাল ডুম্নে এ কেয়া কীয়া, একদম সভানাশ কর দিয়া—

ইন্দ্রাণী অবাক হরে জিগোস করলো, কিঁউ ? ভারপর সমস্ত শুনলো ও জীনা কাপুরের কাছে,—হাত ধরে টানাটানিই করুক আর পা ধরে সাধাসাথিই করুক কথনও থেতে হয় না ওরকম। কাল রাত্রে ওরা ভিন জন আধণেটি রয়ে গেছে, কারণ ওদের রাভের বরাদ মাফিক রাল্লা হয়ে গিরেছিলো, ওরা ভারপর আর কিছু পাকাবে না।

আল সকালে স্থাশন নাকি ভীনার কাছে এসে বাডালীদের এটিকেট সম্বন্ধে কিছু সন্দেহ প্রকাশ করেছে। আগে নেমস্তন্ধ না করলে হালার মাধা কুটলেও থেতে হয় না। সমস্ত ভংন ইন্দ্রাণী স্তন্তিত, বললো, জাগে নেমজন্ধ না করলে ধাওয়া উচিত নয়, এ নিয়মটা এক পক্ষে ভালই—থ্য ধারাপ নয়, ওটা মানলাম, কিছু তাহলে বাড়িভছু স্বাই মিলে—ধানা তো ধানা—বলে জমন হাস্ত ধরে টানাটানির অর্থটা কী ?

ভীনা বিল-খিল করে হেসে উত্তর দিয়েছিলো, পাঞ্জাব দে এসী বেওঁয়াক ভার বহিনভী!

ইনা বাঙি ফিরতেই সর্বাণী ধমকের প্রবে বললেন, অরুণেশ্ এমেছিলো, ডেকে পাঠালাম, তবু এলিনে কেন ?

আমি এসে আর কী করতাম—আবছা গলার বলে সিঁড়ি দিরে উঠতে লাগলো ইনা। রবেনও মেরের আচরবের প্রভিবাদ করে অনুবোগ করতে বাহ্চিলেন কিছ মেরের কাঠখোটা উভরের পর ঠিক। নাবালি স্থে এলো মা। চূপ করেই বইলেন। সিঁড়ির বাঁক ঘোরার মুখে ইন্দ্রাণীর কানে এলো, সর্বাণী আনন্দের প্লবে বলছেন, দেখো, মিসেস বিখাসের আভিচাতোর উৎকট দন্ত দেখে আমি মনে মনে বরাবর হেসেছি, অর্থকে প্রমার্থ মনে ক'রে কী হাস্তকর গর্বই না উনি ক'রে বেড়ান. ওঁর আচরণে আমার কট্ট হয়নি, করুণা হয়েছে। আল দেখলাম ওঁর সন্তিচ্বার গর্বের জিনিব আছে বৈ কি, সে হলো ওঁর ছেলে অরুণেশ, এমন প্রকার প্রব্রুয়ার মনের আর প্রক্রুয়ার চেহারার ছেলে বাঁর, তাঁর আর কী লাগে পৃথিবীতে ? আল সকালে পথে বখন আমাকে ডেকেবলনো, মাসীমা, আমাদের মিটি থাওরাবেন না ? তখন আমার মনে হয়েছিলো এত মিটি গলার মাসীমা ভাক আমি বেন আর কথনও ভানিনি, তারপর বাড়ি আসতে আসতে এ কথাও ভেবেছিলেম—যার মুথের মাসীমা ভাক অমন, ভার মুথের মা ভাক না জানি আরো কত মিটি, এখন আলাণ ক'রে দেখলেম, স্বভাব তার,চেরেও মধুর।

ইন্দ্রণীর ধেরাল হতে দেখলো, ও সেই সিঁড়ির বাঁকেই স্থির হরে দাঁড়িয়ে আছে। ক্লিপ্সে পায়ে পরের ধাপে পা বাড়ালো কিছ অফণেশের নাম জাবার বাবার গলায় শুনেই ফ্রেমে আঁটা ছবির মত দাঁড়িয়ে গোলো।

বংশন বললেন, ও মা, তুমি অরুণেশের কথা জানো না বুঝি ? ও হয়েছে ঠিক ওর বাবার মত— স্বভাবে, বিভায়, ইংনিজীতে ফার্ড রাশ ভো পাবেই, থ্ব সভব ফার্ড ওই হবে। ওর প্রফেসারদের কাছ থেকে সেই রকম আভাসই পেরেছেন মি: বিখাস। আর মাস ভিনেকের মধ্যেই বিসেত রওনা নিচ্ছে অরুণেশ, অস্ত্রহোর্ড পড়বে।

: বিসেতে চলে ৰাচ্ছে অক্লণেশ। সাত সমুদ্ধ তেরো নদীর ওপারে। সেই ভাস। বোজন বোজন ব্যবধানই ভাস, অক্লণেশের সর্বনেশে কঠন্বর কারে কানে আসবে না তাহলে, ও তো কঠের পর নয়, ও তব্ বাছ—সে পর ওকেই সম্মেহিত করেনি তবু এক ডাকে ওর মাকেও মজিয়েছে। কিন্তু, চলেই তো বাচ্ছে অক্লণেশ, কত সাগর-উপসাগর পেরিরে সেই প্রদূরে চলে বাচ্ছে, তার আগে একদিন একটি বার তবু এক মিনিটের জন্ত-

নিচেব সিঁড়িতে মা'ব পাষের পরিচিত শব্দ পেতেই উর্দ্বাসে
সিঁড়ি বেরে ছুট দিলো ইক্রাণী। একেবারে নিজেব শোবার ববে এসে
বপ ক'বে ওরে পড়লো। উত্তেজনা কিছুটা কমলে ইক্রাণী ভাবলো,
নীলাই বা আজ এলো না কেন ? কী হলো নীলার ? ভবে কি
অক্লণেশ—বেসামাল মন নিবে আবো একটা বাত অনিজার
কাটালো ইক্রাণী।

প্রদিন বিকেলে নীলা এসেই একটু কৈনিয়তের ছারে বলালা, কাল ভাই সিনেমার গিয়েছিলেম, ভাই আসা হয়নি, ভা বলে পড়ার কাঁকী দিইনি আমি, ছ দিনের বাংলা টাছ একদিনে করে এনেছি। ইক্রাণী নীলার পালের চেয়ারে বসে টেবিলের ওপর থাতা রেখে পাতা ওন্টাতে ওন্টাতে ফট ক'রে প্রথমেই প্রেশ্ন ক'রে বসলো। ভোমার দালা বিলেত বাছেন?

হাা, ভূমি জানতে না বৃঝি । পাশপোর্ট হরে গেছে কবে ! বেদিন পাশপোর্ট এসেছে, দেদিন থেকে জামার মন বে কী ধারাপ-জানদার বাইরে চেথে রাখেলো নীলা।

নীলার বাংলা থাতার একেবারে প্রথম পাতার, প্রত্যেক থাতার প্রথম পাতাটা বাদ দিয়ে নীলার দেখা অভ্যেস, অফ্রেশের হতাক্ষ —প্রায় আব পাতা কবিছা লেখা। ও লেখা ভূল হবার বো নেই ইন্দাণীর, বেন শিলালিপির মন্ত মুদ্রিত হ'বে আছে ওর অন্তরে। নীলার অন্তিত সম্পূর্ণ বিশ্বত হবে পড়া গুরু করে দিয়েছে ইন্দ্রাণী, পড়া শেব হলো। এমন ক'বে কেন লিখেছে অরুণেশ,—কিসের নেশার বেন বালি থোঁড়া—অথচ জল নেই—আব জল নেই বিদ, তবে তৃষ্ণার অনুভৃতি কেন ? এত তুঃখ অরুণেশের, এত তুঃখ।
—শেবের লাইনের ধীবোচ্চারিত প্রার্থনার উপমাটা আবার ভাবলে। মনে মনে—ছটি ক্লান্ত চোখ তৃমি ভোরবেলার জানলার মত আছে খলে ধবো। আমি বাক্তি-দিন পথে—

ইন্দ্রাণীর মুখে এক কোঁটা বক্ত নেই। স্থংপিণ্ডের ক্রন্ত আওরাজ্ঞানিকে বেন স্পষ্ট শুনতে পাছে। জানলা খেকে চোঝ সবিয়ে নীলা বললো, ইনা, দেখো তো ভাই, আজকের বচনাটার ট্রাটিং ঠিক হংছে কি না—কথা শ্বের হুওরার আগেই অকণেশের লেখা কবিতাটা দেখে কেললে নীলা, ও মা! দাদা আবার আমার খাভার কী লিখলো? দেখি—দেখি—নীলা খাভাখানা হাতে নিয়ে পড়া শুক ক'বে দিলো। গড় গড় ক'বে কবিভাটা প'ডে নিয়ে বলনে, কি জানি, মানে-টানে ভো কিছু বুঝলেম না—দাদা মন খারাপ হলেই কবিতা লেখে, কিছু আমার খাভার তো কোনোদিন—কথা খামিয়ে একটু বেন গভীর চিন্তা কংতে লাগলো নীলা। নিজের ফাকাণে মুখটা মুখ ঘ্রিয়ে নীলার চোখের খেকে আড়াল ক'বে খ্য আবছা গলায় ইক্রাণী বললো, তাই বুঝি— ? নীলা মনে মনে চিন্তা করতে করতেই কিছুটা আয়াগত ভাবে বললো।

কি জানি, দাদাব বে হঠাৎ হঠাৎ এত মন থাবাপ হয় কেন ব্যিও না আমি, কাল সকালে কত লাফালাফি করতে দেখলাম, আমাদের সিনেমা দেখার ভছ টাকা দিলো, হাসতে হাসতে গল্প করতে করতে আমাদের এগিরে দিলো সিনেমা-চল পর্যাভ্ত—তারপর কী-ই বে চলো, রাভ আটটার বাড়ি ফিরে দেখি, ঘর অভকার করে ভরে আছে দাদা। উঠলোও না, খেলোও না, মা বধন ডাকাডাকি লাগালেন, বললো, কোনো বহুব বাড়ি থেকে বেদম ধেয়ে এসেছে; কিন্তু সকালেও দাদাকে মুড়ে দেখিনি, তার মধ্যে কথন বে আবার আমার পাভার পাভায় কবিতা লিখলে—মুহূর্ত তুই ধেমেনীলা প্রশ্ন করলো, ইনা, তুমি দাদার কবিতার মানে ব্ৰেছা।

ইন্দ্রাণী বেসামাল মনটাকে প্রাণপণে গোছাবার টেটা করে খব অফুটে বললো, না তো ভাই—

সে কী, তুমিও বৃগলে না ? আমি ভেবেছিলাম—ইনার মুখের দিকে একপলক তাকিবে নিবে কথা শেব করলো নীলা,—বোধ হয় বি-এ ক্লাশে না পড়লে এসব কবিতার মানে বোঝা বাবে না ?

তাই হবে বেধা হয়—বেন কতদ্ব থেকে কথা ক'টি বললে ইন্দ্রাণী। ইনার কঠনরে বিশ্বিত হরে বন্ধুর মুখের দিকে কিছুক্তণ ভাকিরে রইলো নীলা, ইনা ভাই, ভোমার কী শহীর ভাল নেই ? ইন্দ্রাণী চমকে উঠলো, ইন্দ্রাণীর চমক দেখে নীলা অবাক হলো আবো। চেপ্তা ক'রে ইনা সচেন্তন হলো, সকাল থেকে মাথাটা ধরে আছে ভাই, ভাই শহীরে তেমন ভুকু নেই—নীলার অবাক চোখের দিকে ভাকিরে মান একটু হাসলো ইন্দ্রাণী।

व्यप्तिल लाउना व्याननात्रहे कता

रवाखालीत

আপনার লাবণানয় প্রকাশেই আপনার সৌন্দর্যা। কিন্তু রোদ আর গুক হাওয়া প্রতি-দিন আপনার সে নাপুরী ন্লান করে দিছে। ওবধিগুণামুক্ত সুবভিত বোরোলীন এই করুণ অবস্থার হাত থেকে আপনাকে রক্ষা করবে। এর সক্রিয় উপাদানগুলি আপনার হুকের গভীরে প্রবেশ কবে শুনিয়ে যাওয়া মেহজাভীয় পদার্থ ফিরিয়ে এনে আপনার বুককে মথমলের মত কোমল ও মস্ণ কোরে সজীব ও ভারুণোর দীপ্তিতে উজ্জ্লে ক'বে তুলবে। আবেশ-লাগা স্থুরভিযুক্ত বোরোলীন ক্রীম মেথে আপনার ম্বকের সৌন্দর্যা রক্ষা করুন আর নিজেকে রূপোজ্জ্লল করে তুলুন।



পরিবেশক :



कि, पर এए दिनार, ३७, वनिकेष स्मन, कलिकाछा-ऽ

ভারতে আজ আর প'ডে দরকার নেই, চল, বাগানে গিরে গল কবি—

গা তাই চল। খাভাটা আৰু বৰং থাক আমাৰ কাছে, কাস আমি দেখে ৰাখবো—

ঠিক আছে। তুই বন্ধ উঠলো।

গল্প মানে, আজ শুধু দাদাব গল্পই কৰে চললো নীলা। বে কোনো কাৰণেই হোক, দাদার মন কাল থেকে ভাল নেই, ভাই ওবও ভাল নেই। আজ সকালে দাদার মন থারাপ নিবে অনেক ভেবেছে ও, অভ যে ভাল লেথাপড়ার, ভার মন থারাপ হর কিলে? ও ভো ভেবে পায় না, ফেল করার কোনো চিন্তা নেই কিছু, ভাছাড়া ইচ্ছে মতন পকেটমানি পায়—কোনো দিন মাকে খোলামোদ করতে হয় না ওর মত—ভবে এত মন থারাপ আব মুখতরা অভ্যার বে দাদা কোখা থেকে জ্টিয়ে নিবে জালে! দাদার গল্প করতে করতে নীলা বলে কেললো, জানো ভাই ইনা, দাদার বোধ চয় বিবে হবে নীগগির—

বিরে ? ইনার কণ্ঠ চিবে কথাটা যেন বেরিয়ে এলো । কেন, তৃষি শ্বত আশ্চর্য হ'লে কেন ?

না, মানে—এন্ত জন্ম বয়দে তো আজকাল কেউ বিবে করেন না—ইনা শক্ষ ক'বে হাসতে চেটা করলো।

তা অবল ঠিকই বলেছো छोड़े, किছ या नानाव विदय न। नित्व किছুতেই नानाक विक्रास्त्र नाजीवन ना, व्यास्त्र कथा कांग्रेशिक क्लाइ এই नित्र वांवाव मान

ও। ইন্দ্রাণীর সংক্ষিপ্ত উত্তর।

নীলা ঠোঁট টিপে হেলে বললো। আমার এক খুডতুতো মামা বছর করেক আগে ইঞ্জিনীরারিং পড়ভে বিলেত গিরেছিলেন, বাওরার আগে দিনিয়া নাকি মা কালীর পা ছুইরে প্রতিজ্ঞা করিরে নিরেছিলেন বে মেম বিরে বেন কিছুতেই না করেন। পাল করেও বধন মামা এলেন না, তথন ধবর নিয়ে জানা গেলো, মামা ওখানেই একটা কার্বে চাকরী নিরে মেম বিরে করে বলে আছেন, ভাই মার এত ভর।

ইক্রাণী নিকন্তর। নীলা আবার বললো। বাবার একদম মড নেই, বলেন, বিরে করে গেলে পড়াগুনো ভাল হবে না, তাছাড়া অক্সফার্ডে বেসিভেনসিরাল ছাত্রদের মত কিছু তর নেই,—নিম্বের পারে না গাঁড়ানোর আবে, আঞ্চকাল কিছুতেই বিরে বেওরা উচিত নর। তা বাবার কথার মা কানও পাতছেন না। অক্সফোর্ডের ছাত্রদের তু তিনটে যেম বিরের নজির সঙ্গে সঙ্গে দিরে দিরেছেন।

নীলা থামলে ইন্দ্রাণী বেন ভীকুগলার প্রশ্ন করলো। আর তোমার দাদা কী বলেন ?

माना ? श्विन श्विन करत (इर्ट्स छैठेला नीना—माना मात्र शंजा अलिएत गरंद वर्ट्सिक्ट्रा (मिन—मा, कवित्रांकी विकृत्कल्य अर्कात मिर्द्ध मिर्द्ध करण वर्ट्स, कृष्ण कर्द्ध वर्ट्स कर्द्ध कर्द्धक मिन माथारे मार्था मिकिनि, ना इर्ट्स विन आवार अथायनातात्र एवं म्वकार करस्य शर्क ।

ইন্দ্ৰাণী হাসলো, নীলা হাসিমুখে বলে চললো—দাদাটা ভাই এমন ছুই, এখান খেকে ওখান খেকে বাজ্যের কনের ফটো এলে:ছু, মার সামনেই ফটো দেখে দেখে এমন মজার সব বিমার্ক করবে— ষুটকী, পুঁটকী, ভেটকী, লজাবতী, কলাবতী, অহী, হন্তী, একজনের নাকটা একটু খাড়া বলে, তাকে বললো গণাবনী, একজনকে খাণ্ডাবনী, আবার একজনের মুখের হাঁ-টা একটু বড় বলে তাকে বললো হিপ্পো, মা তো দাদার কথা শুনে হেদেই বাঁচেন না, আমরাও। একটি খুব স্থন্দরী মেরের ফটো এনেছে, খুব বাচ্চা-বাচ্চা দেগতে, মা নেটা দাদার হাতে তুলে দিয়ে বলনেন, একে তো তুই আর অপছন্দ করতে পারবিনে, চমৎকার স্থন্দর দেখতে!

দালা ফটোটা নিয়ে বেশ একটু সমর দিয়ে দেখলো, মাভাবলেন, একে নিশ্চরই পছক্ষ হহেছে দালার, দালা করলো কী, ফটোটাকে চিঠি বিলির মত অক্তফটোগুলির মধ্যে টেবিলে ছুঁড়ে দিয়ে মার দিকে তাকিয়ে বললো, মা, নীলুর কাজুবাদাম আর ইফির শেরাবের আর লোক বাড়িও না বাপু, মুথের আবদেরে ভাব দেখে মনে হচ্ছে, ওর এখনও বিশ্বক বাটি দিয়ে হুধ খাওয়ার বয়ের পেরোয়নি, আবার সবাই মিলে হাসাহাসি, তারপর, বে ফটোখানা হাতে তুললো দালা তার আছ্যু একটু বেশীরকম ভাল, সে ফটোখানা হাতে তুললো দালা তার আছ্যু একটু বেশীরকম ভাল, সে ফটোটা হাতে নিয়ে মার গা খেঁলে বলে পড়লো দালা, বললো,—মা, এঁকে আমার ভারি পছক্ষ হয়েছে, এঁর সঙ্গেই আমার বিয়ে দিয়ে লাও, ঠাকুরমাকে দেখিনি বলে মনে মনে ভারি একটা হুংধ ছিলো আমার, এ্যাদিনে সে হুংধটা ঘূচবে, তোমাকেও বৌমা বলে ডাকতে শিখিয়ে দেব'খন—শুনে মা খ্র ফাটিয়ে হাসতে লাগলেন আর আমরা তো গড়গাড়ি।

ইন্দ্রণীও উচ্চকঠে হেনে উঠলো। ইন্দ্রণীর মুখের দিকে তাকিরে তাকিরে নীলা মনে মনে কী ভাবলে কে জানে। বলে বসলো। দেনিন আমাকে কেপাবার জন্ম দাদা তোমার সকে অমন করে কথা বলছিলো ভাই না হ'লে দাদা লোক খুব ভাল।

সভিত্য ? চোৰ বড় কৰে আবাৰ ছেনে উঠলো ইক্ৰাণী।

এক ঘূমের পর শোওয়া বলস করতে গিয়ে সর্বাণীর চোঝে পড়লো, মেয়ের ঘরে আলো অলছে, ইনা শুলি ? কাল সকালে বই শেব হবে—মার কথার সম্বিত কিবলো ইন্দ্রাণীর: বই! কোথার বই! ওতো নীলার বাংলা থাতাটার প্রথম পাতা থুলে যনে আছে।

দর্মণীর কঠনবে রমেনের হাজা ঘূম গোলা ভৈছে, মুম ঘূম গলার বললেন, ইন্থু দেখছি বই পড়ার নেশার তার মা-বাবা সবাইকে ছাড়িরে গোলো—ভারপর গলার একটু উঁচুতে তুলে বললেন, ইন্থু আর রাত জেগো না মা—দরীর বড়ত থারাপ হবে। ইনা তরে পড়বে বলে আলো নিবোতে উঠে গাঁড়ালো, ও বেন আলুরের ঘোরে বদেছিলো একুকণ, গাঁড়ানো অবস্থার থাতার প্রথম পাতার চোথ পড়লো আবার: সর্বনাদ, এ কী ও করে বসেছে। অকুলেশের লেখার নিচে, ওটি গুটি কী যেন লিখে বসেছে ও। লেখাটা পড়ে চোথ একেবারে স্থিব হবে গেলো ইন্ধাণীর, হাতের নির্জন বরেও, মুখ রাডা হলো, কান গরম হলো, চোথের পাতা কাঁপলো, হজার একটা মন্ত চেটা গলা পরস্ক লাফিরে উঠলো; লাভ বাড়িয়ে পাভাটা ছি ডুভে গিরে আবার থেমে গেলো ইন্ধাণী—বৃদ্ধ নীলা কিছু ভাবে ? পা টিলে টিপে এসে ওর ম্বর থেকে ছিলা। খাভাটা সামনে টেনে নিরে খ্ব সম্ভর্গণে বসলো ইনা। নিজের লেখার আর একবার চোথ

কোতেই ওর অংশিশুটা বেন বক্ বক্ করে উঠলো। আর দেবী না করে লেখার অক্ষরগুলি বাঁচি-বাঁচি ক'রে কাটতে লাগলো। সমস্ত কাটাকুটি অনিপুণ ভাবে শেব ক'রে খাতা বন্ধ ক'রে আলো নিবিয়ে ওরে পড়লো ইন্দ্রাণী। শোওয়ার পর, ওর লেখা তৃ-একটা শব্দ মনে ক'রে আবার লাল হলো ইন্দ্রাণী। তাবপর নিজের মনেই হাসলো: চেটা করলে ও তাহলে হয়তো একদিন কবিতা লিখতে পারবে। আন্তে আন্তে লঘু মেবের মত হালকা তন্দ্রা নামলো ইন্দ্রাণীর চোখে। ঘূমিরে ঘূমিরে হাসছে ইন্দ্রাণী—অক্লেশের কত গল্প ডনেছে আক্র নীলার কাছে, তার মধ্যে কোনটা মনে ক'রে হাসছে কে জানে! কিয়া ওর মন বিহার করছে হয়তো কোনো সোনালী স্বপ্লাকে।

প্রদিন বিকেলে বখন খাতা ক্ষেত্র দিলো, নিজেই নিজের কাটাকৃটি নীলাকে দেখিরে কৈফিছ্র দিয়ে দিলো ইন্দ্রাণী, ভাই, তোমার জন্ত একটা বাংলা প্রদ্র ভূলে ওখানে লিখে কেলেছিলেম, তারপর কেটে দিয়েছি, প্রান্ধটা জাবার লিখে দিয়েছি খাতার লেব পাতার।

নীলা হেদে বললো, ভাতে আর কী হরেছিলো, দাদা ও পাতার লিখলে কী হবে, থাতা ভো আমারই। তা পর আমার রচনাটা কেমন হয়েছে ?

এক লাইন না পড়েই ইনা ব'লে দিলো, খুব ভাল, তারপর এদিক সেদিক তাকালো কয়েক বার, মন ওর স্থির হয়নি এখনও, বে কোনো মুহুর্জে একটা কিছু ঘটে বেতে পারে, এমনই বেন মনের অবস্থা।

খ্ব ভাল কমপ্লিমেট শুনে নীলার চোধ-মুখ ঝক্মক্ ক'বে উঠলে, ওব রচনা প'ড়ে এত বড় সাটি।ফিকেট ইঞাণী এর জাগে ভার দেয়নি।

নীল। বাড়ি ফিরলো যখন, সিমলার সংস্কা তথন শুকু হরেছে সবে। সেট থেকেই ওর ঘর থেকে বেরিয়ে আসা তিমিত আলোর

দেশতে পেলে ওর দাদা ওর খবের সামনের বাল-বারান্দার দাঁড়িয়ে আছে। অরুণেশের দাঁড়ানোর কারণটা মনে হতেই হেসে ফেললো নীলা, বেশ্বেয়ালে ওর খাতার করেক লাইন কবিতা লিখে ফেলে জকণেশের অস্বন্তির আর সীমা নেই কাল থেকে, কাল খাভাট ইন্দ্রাণীর কাছে বেখে এসৈছিলো ব'লে অন্থাবাগ করেছে খুব—বৃদ্ধি ক'রে আমার লেখা পাতাটা ছিঁতে আনতে পারলিনে? বৃদ্ধি আর ভোর করে হবে নীলা?

গট্গট্ ক'বে ঘরে চুকে টেবিলের ওপর
থাতাটা থুলে বাঁ হাজ দিয়ে চেপে রেথে ফ্রন্স
ক'বে প্রথম পাতাটা ছিঁতে কেললো নীলা,
অঙ্গণেশ বারান্দা ছেড়ে তভক্ষণ ঘরে এনে
পড়েছে, দাদার দিকে পাতাখানা বাড়িরে
দিরে নীলা হাসিমুখে ব্ললো, এই নাও দাদা
ভোমার ঘ্রোধ্য কবিভা, বাপ রে ! একটা
লাইন বদি মানে ব্রেছি আমি !

আকণেশ হাজ বাজিরে পাতাধানা নিয়েই কাটাকুটির ওপর চোধ বাধলো। নীলা দেখলো সেটা, বললো, ইন্সাণী ভূলে বাংলার একটা প্রের গুখানে লিখে ফেলেছিলো—তারপর কেটে দিয়েছে।

আক্রণেশ কোনো উত্তর না দিয়ে বালবের একেয়ারে নিচেত্র এসে পাস্তাটা চোখের সামনে ভূলে ধরলো একবার।

ান, এমন হিজিবিজি ক'বে কেটেছে ইন্দ্রাণী, কোনো একটা আকরও স্পষ্ট হলো না। দাদার প্রয়াস দেখে হাসলো নীলা, ও প্রশ্ন জেনে ভার আর কী হবে দাদা? ও প্রশ্নটা আমার বাভার মধ্যে আবার ইনা লিখে দিয়েছে। অফ্রপেশ কিন্তু একবারও বাভার মধ্যে লেখা প্রশ্নটা দেখতে চাইলে না। বোনের কথার উত্তরে হেসেবললে তথু, পাগল নাকি! বাংলা প্রশ্ন দেখে আবার কী হবে? আমি আমার লেখাটাই আবার পড়ছিলাম একট।

বাতের খাওরার টেবিলে ছেলেকে অমুপস্থিত দেখে গুরুবালা উন্থিয় হলেন থুব। নিচ থেকেই অমুচ্চ কঠে—খোক্ষন, থোক্ষন করে ডাকাডাকি লাগিরে দিলেন। ছড়ির সময় দেখে এ বাড়ীর সকলে খাওরার টেবিলে এসে উপস্থিত হয়। চার বেলাই ডাই। কেউ ছ-এক মিনিট আগে পরে। মার গলা ওনে ঘড়িছে একবার চোধ ফেলেই ভাড়াভাড়ি চেয়ার ঠেলে উঠে কপাটের খিল খুলে কিশ্র পারে নীচে নেমে এলো অকণেশ—ওর অভ প্রায় কুড়ি মিনিট ধরে স্বাই বলে আছেন ভেবে ও মনে মনে সক্ষা বোধ করলো খুব।

দাদা, দরকা জাটকে কী করছিলি বে ? ঘূমিরে পড়েছিলি বুঝি ? নীলার প্রশ্ন।

ভূ—বলে ছ হাত তুলে চোথ ছটো একবার কচলে নিরে বপ করে নীলার পাশের চেয়ারে অরুপেশ বলে পড়লো। অরুপেশের রুপের ভাব অভি প্রেক্স। নিরম মাফিক বোনেদের সঙ্গে খুন্তুটি করে থেতে লাগলো ও। দরজা বন্ধ করে অরুপেশ মস্ত একটা ছ্রছ কাজে ব্যাপৃত ছিলো এতক্ষণ। বেম্লোর কোন বাজি থেকে একটা পাওরারকুল লেল যোগাড় করে, টেবিল লাইটের বাল্বটা বদলে



ছুল' পাওয়াবের বাল্ব লাগিয়ে, ইন্তানীর কাটাকুটি হিজিবিজি থেকে একটি একটি করে জক্ষর উদ্ধার করছিলো। দেড় ঘণ্টার চেষ্টার দেড় লাইন উদ্ধার হরেছে—কাতেই ও উত্তপ্ত, কাটাকুটির কয়েদ থেকে জার বদি বাকী শব্দগুলো নাও থালাস হয়, তাতে কোনো ছঃখ নেই ওব। কিছু, সব লাইন পড়জে পারার পর, ওব মনে হয়েছিলো, শেবের শব্দ ক'টি বাদ পেলে ওর জীবনে মেন মস্ত কাঁক থেকে যেতো। ছেলের সহজ্ঞ প্রফাল দেখে আছেল্য বোব করছেন ভক্ষবালা। ছেলের মুখ কালো দেখলে, ওর সামনে গোটা পৃথিবীটাই কালো হয়ে বার। মা'র পক্ষপাতিছে মেয়েরা জনেক ক্ষেপায় মাকে। মুবগীর তেলু বীর রোষ্টের আর একটা টুক্রো ছেলের থালায় তুলে দিতে দিছে জক্ষবালা বললেন, পরও তোর কী হয়েছিলো খোকন ? বাইরে থেকে থেরে এসে পেট বাথা করছিলো বোধ হয়, ন। ?

মা'র কথার উন্তরে ঘাড় নাড়লো অরুণেশ, তার পর তু আসুস্ দিরে আলগোছে মুরগীর ঠাটো নীলার পাতে তুলে দিরে উচ্চুল গলার বললো,—নে নীলা, তুই খা বাপু ঠাটো, বে ভাবে টেরিয়ে টেরিরে তাকান্ডিস আমার পাতের দিকে, আমার আর ভ্রুম ভ্রবার উপার নেই। নীলা প্রতিবাদের স্থবে টেচিরে উঠলো, আমার নামে মিখ্যে অপবাদ দেবে না দাদা, আমি ভোমার পাতের দিকে কথন ভাকালাম ?

পাছে নীলা আবার ওর থালার পট করে তুলে দের সেজজ বীহাত দিয়ে থালা আড়াল করে অকণেশ বললো। না রে নীলা, মনের আনন্দে তুই চিবো ঠাাটো, আমার পেটে আর একটি কোঁটা জারগা নেই—শেলি অকণেশের উপ্টো দিকে বঙ্গেছলো। কারি বোলটা শেলির দিকে ঠেলে দিয়ে অকণেশ মিত্তমুপে বললো, শেলি তুই বাকীটুকু শেষ করে ফেল, ভাল করে থেরে দেয়ে এই এক মাসের মধ্যে শরীরটাকে একটু সবলা করে নে দিকিন, না হলে পৃথুলা হস্তিনীর পাশে নেহাৎ একেবারে হেলে সাপ বনে যাবি যে। পৃথুলা হস্তিনী মানে, গিরীনের মাতা মিসেস ভালুকদার, তাঁর মেদ্যকল চর্বির থাজগুলি সকলেরই দৃষ্টি আকর্ষণ করে।

সশব্দে হেনে 'উঠলেন সকলে। শেলি বাঁহাতে জলের গ্লাস ভূলে মা-বাবার চোধ আড়াস করে ভাইকে ভেঙালো। অভরশ্বের বাবু ছেলের দিকে তাকিরে বললেন, থোকন, কাল ভোষার স্টেগুলোর ট্রারাল দিরে এসো, আর ভোষার ট্রশিকাল স্টের কোটটা বোধ হর একটু আঁটো হয়েছে, ওটাও সঙ্গে করে নিরে বেও অলটার করার জন্ত। আমি জানতিপ্রসাদকে বলে রেখেছি।

না বাবা, ইপিকালের কোট একদম ঠিক আছে, দেদিন কোটের
নিচে ছটো সোরেটার পরেছিলাম বলে অমন দেখাছিলো—উত্তর
দিলো অকণেশ, ভক্ষবালার জক্ত সকলে অপেকা করছিলেন।
পেট ভরে গেছে বলে অকণেশ ফুটু দেলাভ থারনি। তক্ষবালা
কটসেলাভ থাওয়া শুক্ত করেছিলেন, অকণেশ বাঁহাতে নিজের
কাচের বাটিটা ভূলে মার বাটির মধ্যে উপুড় করে দিলো। চামচটা
মুখ থেকে নামিরে তক্ষবালা, খোকন, কী হছে—কী হছে—বলে
উঠলেন, তথন অকণেশের সর্বৃত্ব চালা হরে গেছে। তক্ষবালা
নিখাস ফেলে খামীর দিকে ভাকিয়ে বললেন—

দেশলে ছেলের কাগুখানা! কিছ তরুবালার অত্যধিক মিপ্তারপ্রীতির থবর সকলেই জানেন, সেলক তরুবালার কপট অসহায়
মুখের দিকে ভাকিরে হেসে উঠলো সকলেই, মুখ ধুয়ে অরুণেশ হরে
প্রসেই কপাটে খিল দিলো। টেবিল-ল্যাম্প জালিরে ছেঁড়া পাতা
ভাব লেল নিয়ে আবার বসলো টেবিলে। আরো হণ্টা ছুরেকের
চেপ্তার, সব কটা অক্ষর ধরা দিলো ওকে। গুগুখন আবিদ্ধার
করলেও এর চেয়ে বেশী বোধ হয় আনন্দ হয় না। উদ্বারলিপিটা
হাতে ভূলে নিলো অরুণেশ, গুন-গুন করে গেয়ে চললো ওর মন,
একবার, তুবার, এমনি করে অনেক বার—

ফিরে ফিরে এসে কা'কে বাও ডাক দিয়ে সে কী আমি, সে কী আমি— বে আমি এখন প্রাণের পসরা নিয়ে তোমার তীর্থগামী।

অনেক পরে আলো নিধিয়ে ওয়ে পড়লো অর্কণেশ। বাইরে তন্দ্রাহারা জ্যোৎসা। কাচের জানলা দিয়ে চাদের বিচ্ছুরিত রেধান্ডলি অরুণেশের স্বপ্রময় কপালে প'ড়ে লুটোপুটি বেলতে লাগলো।

দেদিন প্রহরশেষের আঁলোয় প্রখ্যান্ত কামনা দেবীর মন্দিরে ইন্দ্রাণীর সঙ্গে আফ্রন্থিক ভাবে দেখা হ'য়ে গেলো অরুণেশের। অকণেশের ফটো ভোলার হাত নেহাৎ মন্দ নয়। শেলি-গিরীন প্রসপেক্ট হিলদের এদিকে ওদিকে যুগলে নানান ভলিমার ফটো তুলবে বলে অক্লণেশকে ওদের সংক্র ধরে নিয়ের এসেছে। এসেই প্রসপের হিলসের মাধার মন্দিরের অভ্যস্তরে চুকেছে ওরা, কামনা দেবীকে প্রণাম জানাতে। অরুণেশ সূর্যের দিকে জেন্স দিয়ে একটা ফটো তোলার ইচ্ছের এদিক সেদিক দেখতে দেখতে মন্দিরের পশ্চিম কোণে এনেই—বিভাতীয় পোষাকে সজ্জিতা ইন্দ্রাণীকে প্রথমে চিনতেই পাবে নৈ, আজ ভীনা কাপুরের একান্ত আগ্রহে ওর একপ্রস্থ সালোয়ার-ক।মি**জ আ**র চুল্লী পরে ওর সঙ্গে এখানে বেড়াভে এসেছিলো। ভীনার শাড়ি পরার স্থ খুব, ছদিন ইনার শাড়ি পরে বেরিয়েছে, অতএব—ওকেও পরতে হবে। মন্দিরের পশ্চিম চাতালে একটা দোলনা টাঙ্গানো আছে, একটা বেকট্যাঙ্গল সেপের পিঁড়ির গুণালে গুটো গুটো চারটে ফুটো ক'রে শক্ত কাছির মত মোটা রক্জ দিবে বাধা। এতক্ষণ ভীনা দোল খেবেছে—দোল দিয়েছে ইনা, এখন ইন্দ্রাণী দোল খাচ্ছিলো ৷ ইনা ভয় পাচ্ছিলো ব'লে খুব বেশী জোরের সঙ্গে ভীনা কাপুর এক একটা ঠেলা দিচ্ছিলো আর খিল খিল ক'বে হেসে বলছিলো-

বহিনজী, হাত মাত ছোড়ন। ! পানি পিয়াস পেয়েছে ভীনার, লোলনার প্রচণ্ড একটা ঠেলা দিয়ে প্রায় মন্দিরের চুড়ো পর্যন্ত তুলে ও ছুট লাগালে। মন্দির সংলগ্র কুপের কাছে, ওখানে কুয়ের পাড়ে একজন লোক সর্ববদাই বসে খাকে বাত্রী-বাত্রিনীদের হাতে জল টেলে দেওয়ার জন্ম। এ কুপের জলের খ্যাভিও স্থাপুর প্রসারিত, এ জল ভক্তি ভ'রে খেলে নাকি সমস্ত রোগ নিরাময় হয়। লোলনার ছরন্ত বেগে ইন্দ্রাণী জন্মুট একটা চীৎকার ক'রে নিচের দিকে তাকাতেই অগ্রে পোটেবল ক্যামেরা কাঁপে ক্ষক্রপেশকে এদিক পানে আসতে দেখে কেললো। বিজ্ঞাতীর পোষাকের কজ্জায় জন্ত জালচর্য একটা ধানি নির্গত হলো ওর কণ্ঠ খেকে আর সঙ্গে সংলে ক্রিলাভিতে একটা হাত ছেড়ে দিলো ও। শক্ত বজ্ঞা ব্রুবে গেলো

বৃদ্ধি করে আর ইন্দ্রাণী সবেগে শৃশ্ধ থেকে নেমে আসতে লাগলো। ততকণে অরুণেশ দেখে কেলেছে ইন্দ্রাণীকে। বল লোকার মত লাক দিয়ে এসে অরুণেশ ইন্দ্রাণীকে একেবারে লুকে নিলো। আর তারপর, বধন ধীরে ধীরে চাতালে ইন্দ্রাণীকে দাঁড় করিয়ে দিলো অরুণেশ তার বহু আগেই দাঁড় করাতে পারতোও। নিবিড় আলিকনে ইন্দ্রাণীকে করেক মুহূর্ত বেঁগে রেখেছিলো অরুণেশ, ইনার ভীক্রুকের আওয়াক অমুভব করছিলো নিক্রের বৃহ দিয়ে। আলিকনমুক্ত ক'বে দাঁড় করালো যধন ইন্দ্রাণীকে তথন মনে হলো বক্ত গোধুলির বেন সবথানি রং চুরি করে নিয়েছে ইনার কপোল, কপাল। ইন্দ্রাণী মুধ নত ক'বে একেবারে আড়েই হয়ে অনুরে কাঞ্চনজ্জার মত বেন স্তব্ধ মেনিতার দাঁড়িরে বইলো।

ন্নক। শব্দ শুনেই যুখ তুগলো ইস্মাণী, দেখলো ওর এই ভঙ্গিমা অকণেশের ক্যামেরায় ধরা পড়ে গেলো, শুধু ফটোই নয়, ওর এই বিজ্ঞান্তীয় পোষাকের ফটো। অকণেশের দিকে তাকিয়ে ব্যাকুল গলায় বললো, ছি:, ছি:, এটা কী করলেন আপনি? তারণর সন্ত্রাসে চোথে ঘাড় ফিরিয়ে জীনা কাপুরকে খুঁজতে লাগলো, কিছ দেখতে পোলো না ওকে। জীনা জল খেয়েই ফিরেছিলো, দেরী করেনি। দোলনার কাছে বরাবর আসতেই আলিংগনবছ অবস্থায় অকণেশ আর ইন্দ্রাণীতক দেখে ফেললো।

থাবে বাবা ! ইনা বহিনজী এত্না পেয়ার করছে ! পেয়ারের আদমিকে ভি আজ এখানে আদতে বলেছে ইনা বহিনজী, তা তো বাতায়নি ওর কাছে । এট করে সামনের বিস্তারিত পাধরের বাঁজে আড়াগ করলে নিজেকে । ইন্দ্রাণী ভীনা কাপুরকে না দেখে এক দিক দিয়ে একটু অন্থির হলো বটে কিছু তার চেরে অনেক বেশি নিশ্চিম্ভ হলো। আবার শব্দ হলো ক্লীক্। ওর খাড় ফেরানো ভঙ্গিমা ধরা পড়লো এবার।

না-না-না—মুধ ব্রিরে প্রতিবাদ করতেই ইন্দ্রণীর চোধে পড়লো ওর দিকে লেজের মুথ রেখে ক্যামেরা প্রাডলান্ত করছে অক্লেশ। ছ হাত দিয়ে তাড়াভাড়ি মুখ ঢেকে ইন্দ্রণী বলে উঠলো, না-না-না—সঙ্গে সঙ্গে শব্দ ভনলো ক্লীক্। বিমৃত্ ইন্দ্রণী চোধ থেকে হাত নামিরে মুহুর্ত হই অক্লেশের দিকে করুণ চোধে তাজিয়ে ক্রত এগিরে এসে হাত চেপে ধরলো, ভিজে ভিজে গলার বললো, এ কী হছে। অক্লেশের হাত নামিয়ে ক্যামেরাটা চামড়ার খাপে রেখে দিলো। ঠোটে ছাত্ত মীর হাসি চেপে রেখে মুগ্ধ দৃষ্টিতে ইন্দ্রণীর দিকে চেরে রইলো। অক্লেশের চোথের চাউনি অক্ল্যুন্থণ ক'রে আবার টকটকে রাভা হয়ে গেলোই দ্রাণীর মুধ, মেরেদের শরীর নিরে বে কী দারুণ হজা। দোপাটা মুর্থাৎ চুরীটাকে ত্ হাত দিয়ে নিচের দিকে বিস্তার করতে করতে ক্র্যুন্ত আবছা গলার বললো, আমি এবার বাই—সঙ্গে সঙ্গে পছন ফরে চলতে গুকু করলো ইন্দ্রণী।

দীড়াও! বেও না—এমন সর্বনেশে কণ্ঠস্বর কেন অকণেশের, ইটে পালাতে গিরেও পারলো না ইন্তাণী, ঘুরে ছির হয়ে দাড়ালো।
নার চুর্বকৃত্তল হাওয়ায় কাঁপিছে—মনও কাঁপছে একটু একটু।

সক্ষেপ মুখে পদই ছুই মীর হাসি নিয়েই এলোঁ ইন্তাণীর একেবারে

ামনে। ব্রীড়াময়ী আর্জিম ইন্তাণীকে দেখে আরো একট ইন্ত্ৰাণী, কোন ডাকটা লোভনীয় ভোষায়ণ ইন্ত্ৰাণী, ইনা নাইয়ণ

া সর্বনাশ! কেন ও পাতাটা ছেঁড়েনি তখন! কী হবে!

আত কাটাকাটি লেখাও পড়ে ফেলেছে অফণেশ! হে ওপবান,
আমি আমার মুখখানা এখন কোখার সুকাই? ইন্দ্রাণীর প্রায়
কাঁদ কাঁদ অবস্থা। অফণেশের তবু মায়া হলো না। মনে মনে
হেসে আরো অক্ট পলায় বললো, অত লক্ষ্রা কেন পাছে। ইন্দ্রাণী,
ভয় নেই, শেষের লাইনটা পড়া হরনি আমার—আত্মসমর্পণের পর
মামুব বখন অম্প্রহ ভিক্ষে ক'বে, অফণেশের চোথে ঠিক সেই রক্ষ
চোধ বাধলো ইন্দ্রাণা।

আর কত নির্ময় হওয়া বার, নির্ম্ন বাংলা আর বার কত?
আকণেশ হাত বাড়িয়ে ধরতে গেলো ইন্দ্রানীকে। মন্দিরের দক্ষিণ
কোণ থেকে শেলির গলা শোনা গেলো, থোকন! কোথার শেলি
তুই? লাইট চলে গেলে ফটো আর ভোলা হর্ষে কথন? তাড়াভাড়ি
হাত সরিয়ে ভাবতে লাগলো থোকন।

: কী কাণ্ড! মনেও তো নেই—ফিল্ফুলি তো সবই খবচ কবে বসে আছি। সামনের চালু পাখরটা দোল খেরে নেমে গেছে বেখানে, ইন্দ্রাণী উর্দ্ধাসে ছুটে গিরে সেখানে আত্মগোপন করলো। অক্লণেশ ফিল্ম ফুরোনোর কথা ভূলে গিরে ইন্দ্রাণীর বিশ্বংগতির দিকে তাকিরে হাসলো।

শেলি ও গিথীন মন্দিবের পশ্চিম কোণে এসে পড়েছে, অরুণেশকে ঢালু পাথবটার দিকে অমন ছির হ'লে তাকিয়ে থাকতে দেখে শেলি সবিম্নয়ে প্রশ্ন করলো, কী হলো রে ভোর? অত ভাকাডাকি ক'বে কিবছি, শুনতে পাসনি ?

অরুণেশ মুখ ফিরিয়ে স্থলর হাসলো।

লাইট লক্ষ্য করছিলাম, জাজ দেরী হয়ে গেছে, এ জালোর জার ফটো উঠবে না।

শেলি ফুন গলায় -বললো, সে কী । অভ ব্যবস্থা ক'বে ভোকে নিয়ে এলাম—একটু টাইমিং দিয়ে ফটো ভোল না থোকন। বোনের মুখ দেখে খোকনের কট্ট ইচ্ছিলো, কিছ তখন আর উপায় কী । ওদের পোজ নিতে বলে একটা ফটো তোলার ভাগ করলো অকপেশ, তারপর আন্তরিকভার স্থরে বলনো, আজ আব হবে না রে শেলি, ভোকে কথা দিছি সামনের শনিবার আবার নিশ্চরই আমি আসব । আজ চল বাড়ি ফেরা বাক—অকপেশ বড় বড় পায়ে চলতে শুক করলো। পেছন থেকে গিরীন ডাক দিলো, দাড়াও না হে, অভ ভাড়াছড়ো লাগিরেছো কেন ? একসকেই কিববো আমরা। শেলিও ইাকলো, এই খোকন দাড়িয়ে বা।

অকণেশ তথন অনেকটা দ্বে চলে গেছে, মুধ ব্রিয়ে গলা
চড়িয়ে উত্তর দিলো, তোরা আরু আমি নিচে আছি। আনন্দের
এমন উত্তরক উত্তেজনার কি গাঁড়িয়ে থাকা বার ? লাকিয়ে
লাকিয়ে নামতে লাগলো অকণেশ। শেলি কিছ ভাই-এর বিবেচনায়
ধূলিই হলো। গিরীনের হাতে হাত ধরা দিয়ে বেঁসা-বেঁসি ক'রে
ধ্ব ধীরে ধীরে উৎরাই নামতে লাগলো ছক্তনে। পথ ছেড়ে
অক্রেণ্শ সংক্ষিপ্ত উপপথ দিয়ে লাফিয়ে লাফিয়ে নেমে এলো নিচে।

নাজা রাজাটা সর্পিল বাঁক থেকেছে বেখালে, সেধানে টিনের চালা দণ্ডরা ক্ষুত্র ক্ষুত্র মাটির করেকথানা বর, প্রথম কুটারের আজিনায় । নালা বালা ছটো চিনে শিশু ডাংগুলি থেলছে। ডাংগুলি মেরে নাপেসরভা পাল ফুলিয়ে মুখ দিয়ে শব্দ বার করছে, এক মাত্যম্ চা-রোটি, ছ মাত্যম্ হুব বোটি, তিন মাত্যম্ গোল রোটি-। কুতকুতে চোধ, কোলা কোলা গাল আর আবো আবো ভাষার—
নাত্যমের ভর বফলাটা খুব সুর ক'রে টেনে প্রের ম টা পট্ট করে উচ্চারণ করছে। বাং! ভারি স্কর্মর ভো! অক্লেশ গাড়িয়ে গাড়িয়ে বেলা দেখতে লাগলো।

আভাবনীয় আনেক কিছুই ঘটে বায় এই পৃথিবীতে। জিতেজনাথের উঁচুগদার আনেশ উচ্ছল কঠবর শোনা গেলো, বীয়ুদিদি শীগ্লির শুনে বা—মীনাক্ষী দৌড়ে এলো, কী দান্তু ?

নেশ্ তোৰ মাষ্টাৰমশাই লাংখাণতি হবেছে—দাতৃ ওব সংল ভাষানা কছেন না কিছু বগছেন, মীনাক্ষী প্ৰথমটা কিছুই বুৰতে পাৰলো না। কেমন একবকম বোকা-বোকা চোখে ক্যাল-কাল কৰে দাত্ব দিকে ভাকিয়ে বইলো ও।

কি বে বিষেদ হলো না কথাটা—জিতেজনাথ কাঁব সামৰের খোলা খবরের কাগজটা টেবিলের উন্টো দিকে দাঁড়ানো মীনাকীর দিকে হাত দিরে ঠেলে দিলেন। স্প্রিরর আবক্ষ ফটোটাই আগে চোখে পড়লো মীনাকীর। সামনের দিকে শ্বর ঝ্ঁকে খেন কিছু নিরীকণ করছে, অবিকল সেই নিজম্ম ভলিমায় ফটোখানি উঠেছে, টোটে চাপা হালি।

কি দিদি, বিশ্বেদ এবার হলো তো ? দাত্র কণ্ঠবরে মীনা ভাড়াভাড়ি ফটোর থেকে চোঝ সরিরে ফটোর ওপরের ভেডিংগুলির ওপরে চোঝ বাঝালার সোভাগ্যলাভ। এবারের ডার্বির ফার্র্ড প্রাইক্ষ উইনার প্রীশ্রপ্রির সোম কিন লক্ষ টাকা লাভ করিরাছেন। তাঁকে আম্যুদের আভনক্ষন জানাই। ছোটো ছোটো অকরে আরো লেখা ছিলো কিছু। আর না পড়েই মীনা টেবিল থেকে থবরের কাগজের ওপরের পাভাটা প্রার ছোঁ দিরে নিরেই ছুই দিলো যর থেকে। মীনাক্ষীর উচ্চুদিত কণ্ঠের—দিলাই, দিনাই—ভাক্ কানে এলো জিতেজনাথের। একট্ পরেই শিশিরকণাকে সঙ্গে নিরে মীনাক্ষী কাগজ হাতে ক'রে আবার ঘরে চ্কলো। খুলি উপচে পভা গলার বললো, মাইারমশাইকে একদিন নেমজের ক'রে খাওরাতে হয়, না দাত্ ?

বিভেন্দনাথ হো-ছো ক'বে হেসে উঠে বললেন, সে কী মীয়ু,
আমরা থাওরাবো কী ? ওই কো এখন স্বাইকে থাইরে বেড়াবে।
ক্ষেত্র এখন সাংখাপতি, নাও ওবু এক'লকের নর তিন লক্ষের—
ব্বৈছিস দিদি !

শিশিবকণা হাসিমুখে বললেন, হোক লক্ষণতি, আগে ওকে থাওৱাবো। মিমুব পালের থবৰ দিয়ে গেলো বেদিন, তথন আমবা বাড়ি ছিলাম না, দক্ষিণেশ্ব কালীমন্দিরে সিয়েছিলাম, দর্শন ক'রে বাড়ি কিবলুম বধন—তথুনি চলে গেল স্থপ্রেয়। ওকে বলে দিরেছি আমি, আর একদিন এসো, ভোমার থাওৱা ভোলা বইলো।

সজে সজে সেদিনের ঘটনা মনে পড়ে পাঁশুটে হয়ে গেলো মীনাকীর মুখ। ওর মন বললো: আব বদি কোন দিনই স্থপ্রিয় না আসে, সতিয় বদি চৌকাঠ না ডিকোর ওদের—। আর বদি—

জিতেজ্বনাথ কাগজ পড়তে পড়তে বললেন, চমৎকার সহজ স্থলর হেলেটি। ওর প্রাণস্থ ললাট দেখেই বুঝেছিলাম, এ কপাল পাধরে চাপা হ'তেই পারে না। ওর সঙ্গে আলাপ ক'রে ভারি ভাল লেগেছিলো সেদিন, এমন একটা সহজাত দক্ষতা আছে ওর স্বভাবে, পাঁচ মিনিটের আলাপেই ওকে বেন না ভালবেদে পারা বার না।

মীনাক্ষীর হঠাৎ কারা পেরে গেলো। চোখের অল লুকোবার ব্বস্তু ছব্দ চলে গেলো ভাড়াভাড়ি। নিব্দের পড়ার নির্ব্ধন খরে এসে নীরবে অঞ্জবিসর্জন করতে লাগলো। আরো জনেক দিন ওর কালা পেরেছে—কেঁদেছে, কিছ সে ছিলো ছংখের কালা। খুব বধন **অন্থির ছয়েছে মন, ও ওর লুকোনো জায়গা খেকে তখন বার্ণলে**য় মলমের টিউবটা বার ক'রে স্থির চোধে চেয়ে থেকেছে সেটার দিকে: পেরেছে সান্তনা। কিন্তু আঞ্জকের কালা বেন হারানোর শক্ষার কালা: লাখোপতি স্থপ্রের আর আগবে না ওর কাছে, ভার নাগান ও আর কোনোদিন পাবে নাঃ স্থপ্রিয়র সঙ্গে সেছ-পোড়া ভাছ ভাগাভাগি করে খাওয়ার ভাগ্য হলেও হ'তে পারতো কিন্ত রাঞ্চভোগের আংশীদার হওয়ার ভাগ্য ওয় কোনোদিন হবে না। অদুরে স্থবর্ণবালাঃ भारत्व मप्त कात्न (वर्डिंहे, ह्रांबित्र क्रम निर्मिश् करत्र बूह्ह (क्रम ভাড়াতাড়ি একটা বই খুলে নিয়ে চোৰের সামনে ভুলে ধরলো স্থবৰ্ণালা স্থপ্ৰিয়ৰ লাখোপতি হওয়াৰ সংবাদ শিলিবকণাৰ কাচে ভনলেন এবং মীনাক্ষী ওঁকে জানানোর দরকার মনে করেনি বলে মত মনে মর্মান্তিক কুদ্দ হ'লেন মেছের ওপর। সশব্দে ঘরে চুকলে: স্থবৰ্ণবালা। মেয়ের বই ঢাকা মুখের দিকে খরদৃষ্টি নিকেপ ক'ট একটু বেন চিবিয়ে চিবিয়ে বললেন, ভোর মাষ্টার তিন লাখ টাং পেরেছে, সে বরবটা আমাকে দিলে কী ক্ষেতিটা হতো শুনি ?

योगाकी निक्र १।

আ মলো বা, মুথে কী কুলুপ লাগিয়েছিল নাকি? বাপাঁ
দিয়ে উঠলেন সুবর্ণবালা। মীনাক্ষী নিকন্তর। সুবর্ণবালা মেয়ে
ওবকম দ্বির ভলি দেখে ভেতরে ভেতরে টগাবগিরে উঠলেন। মেয়ে
আড়াল করা মুথের দিঃক আবার অগ্নিদৃষ্টি হান:লন একটা
মনে মনে বললেন—বার অক্স চুবি করি দেই বলে চোর,—আগঃ
ভাল তো পাগলেও বোঝে,—এ মেরের কপালে অনেক হুঃখ আা
দেখছি,—আবার কেটে পড়বার উপক্রম করেই অভুক্ত উপায়ে নিজে
তেকে কব.লন স্থবর্ণবালা ভারপর আশ্চর্ব নরম গলায় মেরের
তথোলেন, ভোর মাষ্টারের ঠিকানা জানিস ?

মার নির্গজ্ঞ প্রশ্নে নির্বাক আর থাকতে পারলো না মীনার্গ কৃষ্ণ সন্তীর গলায় উত্তর দিলো, জানি না।

স্থৰ্গৰালা মেরের ভাবভঙ্গিতে একেবারে বেন ক্ষেপে গেলে ডিক্ত গগার বললেন, ভা ম্বানবে কেন? জানো কেন্ ভাকামী করতে।

শব্দ ক'বে হেঁটে ঘর খেকে বেরিয়ে গেলেন স্থবর্ণবালা।

[क्य≅

আপনার জন্যে চিত্রতারকার মত অপূর্ব লাবণ্য

মালা দিনহা সতি।ই অপূৰী দৈইলীৰবিশ্ব অধিকারী । কি করে তিনি লাবণা এত মোলারেম ও ফুল্বর রাখেন ? "বিশুদ্ধ, শুত্র লাম টয়লেট সাবানের দাহাযো", মালা দিনহা আপনাকে বলবেন । চিত্রতারকাদের প্রিয় এই মোলারেম ও হগম্বী সৌল্মগ্র সাবানটির সাহাযো! আপনারও অকের যত্র নিন । মনে রাখবেন, মানের সময় লাম সত্যিই আন্মুদ্ধায়ক এ

বিশুদ্ধ, শুল্ল ত্যুদ্ধে মান্ত্রাদ্ধ



হিন্দুৰাৰ লিজাৰ লিখিটেড, কন্ত্ৰ ক প্ৰায়ত।





পথের কথা বলতে একঘেরে কাগে। কিন্তু পথের ওপর দিরে
বারা চলে তাদের কাছে পথ সব সমস্ট নতুন রূপ নিরে
আলে । এক পা বাড়ালেই চার পালের চেহারা বদলে বার। মোড়
ফিরলেই দেখা দের নতুন জগং। অপ্রত্যাশিত কত বিপদ এসে
পথের আকর্ষণ আবো বাড়িয়ে দেয়।

এমনি এক বিপদ এলো। এক খাড়া পাহাড়ের চুড়োর উঠে পথ শেব হলো। শেব মানে, সেখান থেকে অস্তত: ভিরিশ ফুট নিচে নামতে হবে।

তিয়েলিং বললেন, কোমরে দড়ি বেঁধে নামতে হবে। তাছাড়া কোনো উপায় নেই। সঙ্গী শেরপারা সবাই জানে এ পছতি। তারা অভ্যন্ত। তথু জানে না শান্তমু, কিশোর আর কালী।

পাহাড়ের চেচারা দেখলে ভর হয়। যেন পাধককে ভয় দেখাবার জন্তেই সে একটা হিংল্ল সিংহের মত মাথা ভূলে থাড়া হরে আছে।

শেরপারা কোমরে দড়ি বেঁধে তিরী হলো। ওপর থেকে এক একজনকে ঝলিরে দেওয়া হলো। নীচে নেমে সে দড়ি খুলে কেললো। এই ভাবে নামলো শাস্তম্ভ, নামলেন ভিয়েলিং। কালী কিছুতেই রাজী নয়। কোমরে দড়ি পরায় ভার আপতি। কিছ উপায় কি? শেষ পর্যন্ত হলো ভাকে।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতৰ পৰ] শ্ৰীশৈল চক্ৰবৰ্ত্তী শৃক্তে বুলে নামতে নামতে মাঝে মাঝে তথু পর্বতগাতে পা ঠেকে। সেই অবস্থার চীৎকার করে উঠলো লালী। কিছ সে করেক মুহুর্তের জন্তে। মাটিভে পা পড়তেই সে আভাবিক হয়ে উঠলো। এবং উল্লাসে সকলকে ছাপিরে উঠলো। বাধা জয় করার পরে এমনই হয়, বে আনন্দ ভীতুরা কোন দিনই পায় না।

কিছু দূর বাবার পর ভিয়েলিং বললেন, সামনে ঐ বে কালো পাহাড়ের একটা পাঁচিল দেখছো, ঐটা পেকলেই আমরা একটা ছোট উপত্যকার গিরে পড়বো, ভার পরেই—ভিয়েলিং চূপ করনেন।

ভার পর কি ? ব্যপ্ত কঠে প্রশ্ন করে **শাস্তমু**।

তার পর, তোমাদের ব**ছ-আকাত্মিত বস্তর সন্ধান মিলবে,** বল্লেন তিরোলিং।

মনে মনে লাফিয়ে উঠলো শাশুফু। সে বললে, ভার মানে, ভাপনি বলছেন সোনালি করণা দেখতে পাবো ?

হাা, তাই।

ভরবে, ভরবে, তিনজনই সমন্বরে টেচিয়ে উঠলো।

সারা দিন পথশ্রমের পর সন্ধার আগেই ওরা তাঁবু থাটাতে লেগে গেল। তুষার-ঝড় ঠেকাতে পারে তেমন ভাবেই তাঁবুর দড়ি-দড়া শক্ত করে বাধা হলো।

বাত্রে আহারের পর স্বাই বিশ্রাম করছে, লালী আর কিশোর বলে উঠলো, লামাজী, এবার সেই গলটো শুরু বরুন। ভিয়েলি: প্রস্তুতই ছিলেন। শুধু ওদের আগ্রহ আছে কি না দেখছিলেন।

ভিয়েলিং বলতে আইভ করেন। গতকাল আমরা চ্ংপোকে রাজার কাছে বিচারের জন্ম ধৃত হয়ে যেতে দেখেছি। ভাই না ?

চ্ংপোব দিক থেকে বলবার কিছু ছিল না। কেন না, ঘটনাটা স্ত্রি। জমিদারের লোক এবং গ্রামের ছ'-একজন চাবী অচক্ষে থেগছে বে একটি শাদা যোডায় চড়ে মিমি যাছে। তার করণ মুখ ভয়ে বিবর্ণ, তবুক সেই রহত্মময় যোড়া তাকে উড়িয়ে নিয়ে যাছে'। এই সব সাক্ষাের পরে প্রমাণিত হলাে যে যোড়াটি চুংপাের ভৈরী।

শ্যতান ছেলেটাকে এখনি ক্ষেদখানায় পুরে রাখা হোক, রাজা বাজধাই আওয়াজে ফেটে পড়লেন। তিনি আরও বললেন, তিনজন অখারোহী মিমিকে খুঁজে আনবার জল্ঞে এখনি বেরিয়ে পড়ক।

চুংপো বন্দী হরে রইলো এমন এক জেলধানার বার দেরালগুলো সব চেয়ে মোটা, লোহার দরজাটা সব চেয়ে মজবুত আর পাঁচিলগুলো সব চেয়ে মেটা, লোহার দরজাটা সব চেয়ে মজবুত আর পাঁচিলগুলো সব চেয়ে যে উঁচু। তাছাড়া করেদের রক্ষী বারা তারা নাকি বমণ্ডের মড, চেহারার এবং স্বভাবে। সকলে আন্দান্ধ করলো এভটুকু ছেলের জঙ্গে এত কাণ্ড! চুংপোর বাপ-মা কাঁদতে কাঁদতে ভাবলো। আহা, বাছা চুংপো ওবানে আর বাঁচবে কছকন! ভারা রাজাকে অহুরোধ করে বললে, দয়া করে এই ব্যবস্থা করন, বেন সময় মত ওকে থাবারটা দেওয়া হয়। কিছ থাবার দেওয়ার ভার বার হাতে সে আবার ভীবণ নিঠার, আর জল বে দেয় সে কানে ভানতে পায় না। বেটুকু লোনে তা-ও ভূল বোকে।

স্থতনাং ব্ৰডেই পাচ্ছ, চ্ংপো কী কঠেই আছে ঐ জেনের ক্ষুদে ঘবে। ভরেই হয়তো কাঠ হয়ে গেছে দে। উঁছ, ছোট হলে কি হবে, চ্ংপোর বুক্থানা ছিল ইম্পাতের মন্ত, ভরে দৌমড়াবার মন্ত নয়।

ভিন দিন পরে বখন জেলখানার লোক গিয়ে যাজাকে বললে বে চ্যুগো বেশ স্বছই আছে, তখন রাজা ধুব অবাক

ছয়ে গেলেন। মনে মনে ছঃখও পেলেন একটু, লোকের কষ্ট দেখলে ডিনি ম**লা** পেকেন।

দেশের লোক স্বাই এটা জানতো। রাজার সেই দিন খ্বই মন খারাপ বেতো বেদিন তিনি একজনকেও শান্তি দিতে পারতেন না। সেই জল্ডে প্রভাবের কাছ খেকে খাজনা জাদার করতে স্বচেরে হিল্লে মেলাজের লোক পুরতেন তিনি। তারা হাজার রকম শান্তির ব্যবস্থা করতো গরীব জার নিরীহ প্রজার উপর রাজা বলতেন গরীব সাজা ওদের বেমন সধ, বেত মারাও জামার তেমনি স্থা এইটিই ভার বিচার।

বাই হোক, রাজা কার কাছে গুনলো, চুংপোর কাছে এক বাহু-তুলি আছে, দে তুলি দিয়ে বা কিছু আঁকবে তাই জীবস্ত হবে!

এই থবর এতো দেরিতে জানাবার অপরাধে মন্ত্রীকে সাত বার ওঠ-বোস করতে হলো। বাই হোক, থবরটা বখন পেলেনই তথন তো তার ব্যবস্থা করতে হবে। বাহু-তুলি বদি সত্যিই হর তাহলে তা দিয়ে তো রাশি বাশি ধনরত্ব পাঁওয়া বেভে পাবে। রাজার মনের জিভে জল এদে গোল।

অবিলখে তিনি চ্ংপোকে বললেন, আমার ধনরত্বের ছবি এঁকে দাও দেখি, আর সেগুলো সতিয় করে দাও।

চ্ংপো বৃক ফুলিয়ে বললে, মহাবাজ, আমার ছারা ওকাজ হবেনা।

কন্ ঝন্ন্ন্-কেরে উঠলো রাজার আংশ-পাশের তিরিশটা ভলোৱার।

তবুও রাজা ধৈর্য হারালেন না। তিনি বদলেন, আচ্ছা, সোনার একটা সিংহাসন আঁকো ভো ?

গুটাও হবে না আমার ধারা মহারাজ, তেমনি নির্ভীক ভাবে বসঙ্গে চুংপো।

ভাবার তিরিশটা ভাসি ঝনৎকার করে উঠলো। রাজা বললেন, সোনার ইট আঁকো, সোনার ভালগাছ আঁকো, সোনার ফটক. সোনার হাতী—সোনার যা খুনি তোমার আঁকো। ভামার কথামত কাজ করলে ভোমায় ভামি ছেড়ে দেবো। ভার তা না হলেন্দ

চুংপো তব্ও ঘটল। একটুও কাঁপলোনালে। অত্যাচারী ঐ রাজার ওপর তার মন বিবিষেছিল।

কিছ রাজা এবার ধৈর্ঘ হারালেন। রাগে ফুলতে থাকেন তিনি। কোমরবন্ধনী ছিঁড়ে গেল, যুকুট কাঁপতে লাগলো মাধায়।

পাঁতে পাঁত পিবে তিনি গর্জন করে ওঠেন, শ্রতানকে জেলে দাও, হত্যা করে।, ওর তুলি কেড়ে নাও। কই, কে আছো ?

পাবিষদ জন্নাদ অনেকেই ছিল দেখানে। তারা নেকড়ে বাবের মত লাকিরে পড়লো চুংপোর ওপরে। কেড়ে নিল তার হাত খেকে ছুলিটা, তারপর ঠেলতে ঠেলতে নিরে গেল। আরো জন্ধকার এক করেদে পূরে চাবি দিল।

ভূলিটা হাতে নিরে গালা য্রিরে কিরিরে দেখলেন। ভূলিটা তোমন্দ নম, ছ'ভরি হবে সোনা আছে এর গারে। কই দেখি হে কাগল আর রং আনো তো ?

লিকে লিকে ছুটলো একলোঁ জন লোক। বড় বড় পাকানো কাগজের তাড়া এনে পঙ্লো। নানান বং গুলতে বদে গেল জন্মেক। সেই বং রাখা হলো একলোটা বাটিছে। বালা বললেন, সোনালি বং চাই স্বচেয়ে বেলি। **আমি ব্যন** আঁকবো, সোনা দিয়ে ছাড়া আরু কোনো বং আমি পছক কবি না।

একটা বড় গামলা ভর্তি করে বাধা হলো সোনালি রঙে। রাজা তুলি ধরলেন, গোটানো কাগজ টান করে ধরে রইলো সাত জন গোমভা। তিনজন জোয়ান পাধা চালাতে লাগলো রাজার মাধার গুলব।

বাজার কপাল খেমে উঠলো। গ্রমে না চিম্বার কে বলবে ?

কি আঁকবেন রাজা ? এ বিভা তো তাঁর জানা নেই। মনে মনে আপশোৰ করেন আহা, এতদিন বদি শিথতুম একটু এই ছবি আঁকাটা! এখন আব উপার নেই। রাজসভার স্বাই অপেকা করেছে। কিছু একটা আঁকভেই হবে। মনে জোর আনেন। আপনার ওপর বিশাস চাই, তিনি না রাজা। কি এমন শক্ত কাজ এটা ? স্বচেরে সহজ হবে ষেটা একটা সোনার লাঠি আঁকা, ভাই আঁকবো।

তাই আঁকলেন তিনি। কিন্তু সোজা রেখা টানা তো সহজ্ব নয়, তুলি চললো আঁকাৰীকা হয়ে ঢেঁইখেলানো কাগজের ওপর।

ভাষণৰ সেই ছবি জীংস্ত হলো বটে, কিছু সোনাৰ লাঠি হলো না, হলো একটা সক্ল মোটা কুংসিত সাপ। সেই কুংসিত সাপের গাঁৱে ছবিতে বেমন বং পছেছিল ঠিক তেমনি কুলো। সোনালি ছোপও কিছু ছিল। কিছু ভার কোঁস-কোঁসানিতে স্বাই সন্তপ্ত। ২ে জানে কা'কে কখন ছোবল দেয়। তথন স্বাই মিলে ভাকে লাঠি শাবল বল্লম দিয়ে পিটতে লাগলো।



বাজা আপশোৰ করেন, কেন একটু ছবি আঁকা দিখিলৈ, হার হাছ 🛶

তারণৰ বাজা আঁকলেন একটা আম। আমটা আঁকবার গোবে আঁকা-বাঁকা ভো হলোই, তার কোনো বাহার রইলোনা।

যা-ই হোক, কাগজ থেকে সন্তিয়কার রূপ নিয়ে সেটা বধন পাঁড়ালো,
তখন বাজার মনে পড়লো সোনালি রং দেশরা হয়নি। তা বেন
হলো কিছু সবচেরে বা ক্রটি হরেছে, তা হছে আমের গোড়াটা
মজব্ত করে আঁকা হয় নি। তারই ফলে টলটল করতে করতে
আমটা গাঁড়াতে পাবলোনা। শব্দে তার পতন হলো এবং সেই
সঙ্গে সব চেরে হিংল্ড জেলখানার সেই বুক্টাটাও মরলো চাপা পড়ে।

মন্ত্রী বললে, রাজ। মশাই, কাছের জিনিদের বিপদ অনেক, তার চেয়ে এমন কিছু আঁকুন বা দূরে থাকে।

তার মানে ? রাজার ব্রুতে দেরি হয়। মন্ত্রী বললে, এই বেমন অনেক দ্বের পাচাড়, গাছ—

ঠিক বলছে। রাজা উৎসাহিত হয়ে ওঠেন। পাহাড় তো হবেই, ওটা আঁকিতে খুব পারবো। উঁচ্-নিচ্ টেউ খেলিয়ে দিলেই হলো, আার খোঁচা-খোঁচা পাহাড়ের চুড়ো তা তো জলের মত সংজ্ঞা তারপর সেই পাহাড়দের হিমালয়ের দিকে ছেড়ে দিলেই হলো। তবে, তার মধ্যে একটা সোনার পাহাড় আঁকবো, সব চেয়ে বড় হবে সেটা।

এলো মন্ত বড় কাগজ, এলো বাটি-বাটি রং। রাজা বিপুল উল্লমে ধরলেন বাজু-ভূলি। ভারপর আঁকো-বাঁকা রেখা টেনে চললেন হরদম। মন্ত্রী বললে, ত্'-চারটে গাছ-গাছড়া দিলে মুন্দ হরুনা। ভাও আঁকলেন রাজা কালির পোঁচ দিয়ে।

একজন পারিবদ বলে উঠলো, কতকগুলো মানুব দিলে কেমন হর ?

মামুষ? রাজার তথন ঝোঁক চেপে গেছে। তিনি তেমনি কালির পোঁচড়া দিয়ে এঁকে ফেললেন জনেকগুলো মানুষ। বেগুলো জানাড়ি হাকের আঁকা, ভাই না হলো মামুষ না হলে। জন্ত। জাবস্ত হবার পর তারা ব্রে বেড়াতে লাগলো পাহাড়ের গায়ে গায়ে। জনেকে বলে, সেইগুলোই নাকি পরে ইয়েতি হয়েছে, যারা জন্ত নয়, মানুষ্বও নয়।

ষাই হোক, সোনার পাহাড়টা আঁকিলেন সামনে। সেটাকে এতো উচু করলেন আব এতো নোংবা করলেন বে, জীবস্ত হতে সেটা সোনার ত হলোই না। তবু পাথর আব পাথর। তার কোনো গড়ন নেই, বাহার নেই। তা না থাকলেও ক্ষতি ছিল না, কিছ নড়বড়ে পাথর আনেকজলো এলোমেলো সাজালে যা হয় তাই হলো। একটু পরেই হুড়মুড় করে পছলো বিবাট ভারেয়াজ করে। আব একটু হুকেই রাজা চিঁড়ে-চ্যাপ্টা হয়ে মরতেন। তা হলোনা, কিছ বাজবড়ীর আধখানা গেল ভাঁড়িরে ধুলো হরে।

ভিয়েলিং একটু থামতে লালী জিগ্যেদ করে বললে, চুংপোর কি হলো ?

বাজপুণীতে আর্তনাদ উঠতে তথন বাজার চৈত্র হলে।। তিনি বললেন, চের চয়েছে, এ সব আমার হাবা হবে না ব্যতে পাক্তি। এথ থ্নি নিরে এলো সেই ফুলে শ্বভানটাকে।

চুংপোর হাতে ভার সর্বনেশে তুলিটা গুঁজে দিয়ে রাজা বললেন, ভাল চাস তো, এথখুনি একটা সোনার ডাগন এঁকে দে। নইলে ভোর ঘাড়ের মুণ্ডু নামিয়ে দেওলা হবে। চ্বংপা বড় করে আঁকিলো একটা ডাগন। সোনা-রং _{দিং} দেহটা ভরিয়ে দিলে। ভারপর সেটা **ভ**ীব**ড় করভেও ভা**র দেৱি লাগলো না।

বিরাট ডাগন, চকচক করছে তার সোনার মত গা। তার নি:খাসে আগুন ঝরতে লাগলো। ঝলসে গেল রাজপুরী। মন্ত বড় ই। দিয়ে এক প্রাসে সে খেরে ফেললো রাজাকে। বে বেখানে ছিল উর্থখাসে ছুট দিল। অনেকে গেল ডাগনের পেটে, আর কেউ কেউ পালিয়ে বাঁচলো।

তারপর ? তারপর চুংপো তুলিটি জামার ভাঁজের মধ্যে নিরে বেরুলো। তার মনে পড়লো মিমির কথা—তাকে খুঁজে বার করতেই হবে।

রাত আর বেশি নেই। আজ এই পর্বস্ত থাক। এই কথা বলে তিরেলিং সে রাত্রের মত চুপ করলেন। প্রদিক কর্মা হছে তথন।

ঋষি বিশ্ব†মিত্রের শিক্ষা শ্রীশ্বলতা কর

বুবি বেশী ক্ষমতা থাকলেও অহঙ্কার করা উচিত নর। বল ও দর্শের অবশু পতন হবে, এই নিয়ে মহাভারতে একটি মজার গল্পাছে।

তোমবা বিখামিত্র ঋষির নাম শুনেছ ? , আহেকার ও দর্পের ফলে জাঁর কেমন পতন হয়েছিল, তাই নিয়ে এই গল্প।

বিখামিত্র চিরকালই থবি ছিলেন না। প্রথমে তিনি ছিলেন কান্তকুক্ত দেশের রাজা। ধন, ঐখর্যা, সৈক্তবল কিছুরই তাঁর জভাব ছিল না। রূপ-গুণের তাঁব তুলনা ছিল না। কিছ অনেক গুণ ধাকা গত্বেও তাঁর একটি বিশেব দোব ছিল।

ক্ষতাব শংকাবে মন্ত হয়ে তিনি সব লোককে তুচ্ছ জ্ঞান করতেন। বিনয়, ধৈষ্য এসব গুণ তাঁর চরিত্রে একেবারে ছিল না। তাঁর আদেশ মেনে সব লোক চলবে এই ছিল তাঁর ধারণা। কেউ বদি তাঁর আদেশ অমাক্ত করত ত তাকে কঠিন শাস্তি দিতেন।

রাজা বিশামিত্র থ্ব শিকার করতে ভালবাসতেন। একদিন ভিনি সৈয়-সামস্ত দলবল নিয়ে খোর বনে শিকার করতে গেলেন।

সকাল খেকে সন্ধা পর্যস্ত বন তোলপাড়' করে অসংখ্য বাছ, ভালুক হাতি, হরিণ মারতে মারতে রাজা বিশামিত্র ও তাঁর সৈক্ত-সামস্ত ক্লান্ত হরে পড়লেন। তখন তাঁরা রাজধানীকে ক্লিরে বাবার জোগাড় করতে লাগলেন।

এমন সময় বিধামিত্রের সেনাপতি সভরে বললেন—মহারাজ, জামরা রাজধানীতে ফিরে বাবার পথ হারিরে ফেলেছি। বোর বনে এসে পড়েছি, এদিকে সন্ধ্যা হবে জাসছে, এখন কি করব প্রামর্শ দিন।

রাজা বিধামিত্র বললেন—শামরা সবাই খুব ক্লান্ত হরে পড়েছি।
কিদের, তেটার অভ্নির হরে উঠেছি। খুঁজে দেখ, বদি কোন খবির
আশ্রম পাও ত সেধানে চল। 'খবিরা সব সমর অভিধি সংকার
করেন। তারপর রাজধানীতে ফেরবার পধা খুঁজো।

রাজার কথা গুলে দেনাপতি দলবল নিরে বনের মধ্যে খুঁজতে লাগলেন। কিছুক্দণ খুঁজতেই বশিষ্ঠ অধির আধান্ত পেরে গেলেন। তথন রাজা বিশামির সৈগ্য-সামস্ত নিবে বশিষ্ঠ অবিস আদ্রমে উপস্থিত হলেন। সেকালে ঋষির আদ্রমে অতিথিদের সম্মান দেবতার সম্মানের তুল্য ছিল।

বশিষ্ঠ ঋষি এই সব মাননীয় অভিথিদের দেখে এন্তব্যস্ত হয়ে এগিয়ে এসে সাদর সন্তাহণ জানালেন। তাঁর শিষ্যের স্বায়ের পা ধোবার জন্স, বসবার আসন এনে দিলেন।

রাজা বিখামিত্র পথ হারিয়ে ফেলেছেন শুনে, বিদির্গ ক্ষবি বললেন—মহারাজ, রাত গভীর হয়েছে। এখন এই বনের মধ্য থেকে পথ খুঁজে বার করা কঠিন। আজ রাতের মত আমাদের আশ্রমে থেকে ধান। কাল সকালে আমার শিষ্যেরা রাজধানীর পথ চিনিরে দেবে।

বিশামিত্র ভাবলেন—এই ঋষির আশ্রমে বে খাবার খাব আর বে বিছানার শোব ভাতে আমাদের খুবই কট হবে। রাজকীয় ঐশর্য্যে আমরা অভ্যন্ত, সে সব আর এই গবীব ঋষি কোথার পাবে!

কিছ কি ভার করা বায় ? উপায় বখন নেই তখন বাজী হতেই হবে। এই ভেবে বিখামিত্র বললেন—তাই হবে বশিষ্ঠ ঋষি! আপনার আভিখ্য স্বীকার করলাম। আজ রাত এখানেই কাটাব। বশিষ্ঠ ঋষি বিখামিত্রের মুখের ভাব দেখে মনের কথা ঠিক ব্যতে পেরেছিলেন। ভিনি বললেন—মহারাজ, আপনি কিছু ভাববেন না। আপনাদের সেবার কোন ক্রটা হবে না।

এখন বশিষ্ঠ ঋষ্টি পাতার কুঁড়ে খবে থেকে করেকটি শিব্য নিরে পূজা-অর্চনা করে আর ছাত্রদের পড়িয়ে অভি সাধারণ ভাবে দিন কাটাতেন বটে কিছু তাঁর আগ্রমে একটি মহা মৃল্যবান জিনিষ্ছিল। এই জিনিষ্টি হল একটি অর্গের গরু, তুবারের মন্ত সাদা তার গায়ের রং, কুচকুচে কালো ছটি ভাগর চোখ, কোমল তার দেহের গড়ন। বশিষ্ঠ ঋষি এই কামধেমুকে দেবতা একার কাছ থেকে চেয়ে নিয়েছিলেন। একে তিনি নিজের মেয়ের মন্ত প্রেহ করভেন। আদর করে নাম দিয়েছিলেন নন্দিনী। নন্দিনীর একটি বিশেষ গুণ এই ছিল যে, বশিষ্ঠ ঋষি তার কাছে যথন বা চাইভেন তথন ভাই পেতেন। অর্গে, মর্ভ্যে, পাতালে এমন কোন জিনিব ছিল না, যা নন্দিনী দিতে পারত না। বশিষ্ঠ ঋষি বিশামিত্রকে অভ্যর্থনা করে এসে নন্দিনীকে ডাকলেন। নন্দিনীছুটতে ছুটতে কাছে এল। বশিষ্ঠ ভার গায়ে হাত বুলিয়ে বললেন—নন্দিনি, মহাবাজ বিশামিত্র তাঁর দলবল নিয়ে আমার অতিথি হয়েছেন। তুলি তাঁদের সেবার আয়োজন এখনি করে দাও।

নন্দিনী ঠিক মাছবের ভাষার কথা বলতে পারত। নন্দিনী বলল—বাবা, কিছু ভাষবেন না। আমি এখনি সব ঠিক করে দিছিছে। এই বলে সে তিন বার হাষারধ করে চীৎকার করে উঠল। অমনি এক অভুত ব্যাপার হল। প্রথম হাষারবের সঙ্গে তার মুখ থেকে বাজা মহারাজার থাবার উপযুক্ত হাজার হাজার সোনার পাত্রে ভরা রাজভোগ, মিপ্তার, ফল বার হরে এল।

ষিতীর হাধারবের সঙ্গে সঙ্গে তার মুখ থেকে রাজা মহারাজার শোবার উপযুক্ত হাজার হাজার দামী মথমলের বিছানা বার হরে এল। তৃতীয় হাধারবের সঙ্গে সঙ্গে তার মুখ থেকে হাজার হাজার দাস-দাসী রাজা বিধামিত্র ও তাঁর দলবলৈর সেবা করবার জক্ত বেরিরে এল। তথন বশিষ্ঠ ক্ষমি বাজা বিখামিত্রকে ও তাঁর সৈত্ত-সামস্থলের সেই সব রাজভোগ ধাবার জভ ও কারপঃ মধ্মলের বিছানার শুরে ক্লান্তি দুব করবার হুত অফ্রোধ করলেন।

এই ঐক্সালিক ব্যাপার দেখে বিখামিত্র অবাক হয়ে গেলেন। আন্ত-কৃত্তি তাঁরা পরম আনন্দে সেই রাজভোগ খেলেন। সেই কুলের মত নরম বিছানার তারে অগাধে গ্মিয়ে প্রান্তি-ক্লান্তি পুর ক্রলেন।

প্রদিন ভোর হল। বাজা বিশামিত্র যুম তেজে উঠেই সৈক্ত-সামস্ত নিবে সাজ-পোষাক পরে আশ্রম ছেড়ে বাজধানীর দিকে চললেন। বলিঠের শিবোরা পথ দেখিরে দেবার জন্ত সজে চললেন।

ষাবার সময় বিশামিত্র বশিষ্ঠ অবিকে বললেন—হে ক্ষি, কাল আপনি বে ভাবে অভিনি সংকার করেছেন, বে অমৃতের মন্ত থাবার থাইয়েছেন, যে অলর নরম বিছানার তইরেছেন, তার জন্ম কি বলে বে ধল্লবান দেব জানি না। এখন বাধার সমন্ত্র আমারে একটি অমুরোধ আপনাকে বাধতেই হবে। আপনার ওই কামধেষু নন্দিনীকে আমাকে দান ককন। কাল রাতে ওর অভুক্ত সব্কমন্তা দেখে আমি আশ্চর্যা হয়ে গেছি। ওর বদলে আপনি বক্ত টাকা চান দেব, আমার অর্থেক রাজত্ব প্যান্তা দিতে রাজী আছি।

বিধামিত্রের অন্থাবে গুনে বাঙ্ঠ ধ্বি বললেন—মহারাজ,
অতিথি দেবতার মত স্থানের পাত্র। অতিথি বা চান তাঁকে তাই
দেওয়া উচিত, কিছু তবুও আপনার এই অনুবোধ রাখতে পারলাম
না। তার কাবে আপনাকে বলছি গুনুন। কামধেমুনান্দনীকে
আমি দেবতা ক্রমার কাছু থেকে চেয়ে নিছেছি। প্রায়ই আমার
আগ্রমে রাজা-মহারাজা এসে অতিথি হন। তাঁলের সেবা
করবার জন্তু বে রাজভোগ আর যে স্ব বিলাস্ত্রবা
দরকার হয়, সে সব আমি নিন্দনীর কাছু থেকে পাই। তাছাঙা
আমাকে প্রায়ই বড় বড় বজ করতে হয়, তাতে দেবতা, ঋষি,
রাজা, মহারাজা ও সাধারণ লোক স্বাইকে নিমন্ত্রণ করে থাওয়াতে
হয়। সে সব জিনিব নিন্দনী আমাকে দেয়। নিন্দনীকে দান
করলে আমার অতিথি সংকার করা ও ব্রু করা ত্ই-ই বদ্ধ হয়ে
বাবে।

স্তবাং কেন আপনার অন্ধ্রোধ আমি রাখতে পার্লাম না, সেকথা আপনি বুঝবেন এবং আমার ক্ষমা করবেন। আর ধার্মিক ঋবিরা কথনও টাকার লোভে ভোলে না, একথা আপনি জানেন। স্তবাং আপনার অন্ধিক রাজ্যের লোভে আমি নন্দিনীকে দেব না, ভা বুঝতেই পারছেন।

এই বলে বশিষ্ঠ কবি চুপ করলেন। বশিষ্ঠ কবির কথা শুনে রাজা বিখামিত্র রাগে অলে উঠলেন। দেশ-বিদেশের রাজারা পর্যান্ত তাঁর আদদেশ অমাক্ত করতে সাহস পার না।" আর সামাক্ত একজন গরীব কবি কি না তাঁকে অঞাক করছে!

বিশামিত্র কঠোর হাবে বললেন—ওই কামধের নশিনীকে দিতেই হবে। আমি শেষ বাব অস্থাবাধ করছি। বদি ভাল বোঝেন ত দিয়ে দিন। নরত আমার গৈতেরা জোব করে এখনি ওকে ধরে নিয়ে বাবে। আপনি কি আর আমার সঙ্গে ক্ষমভায় পারবেন?

विश्व अवि वनानक-नामि भेनीव अवि, नामाद कि जार .

ক্ষমতা। তবে স্বেচ্ছায় নশিনীকে আমমি দেব না। ইচ্ছা হয় ত ভোৱ করে কেডে নিতে পারেন।

এই কথা শুনে বিশ্বামিত্র আরও রেগে টেঠলেন। এত বড় ম্পুদ্ধি গরীব শ্বির বে, সে কাঁর সৈত্তবল অন্তবলকে তর পায় না।

চীৎকার করে বদলেন—সেনাপতি, সৈতদের বল নিন্দানীকে মারতে মারতে টেনে নিয়ে যাক। ওর বাছুরকেও মারতে মারতে ধরে নিমে যাক।

বাজার আদেশ শুনে সেনাপতি সেনাদেব হুকুম দিলেন। সেনারা ছুটে এসে নন্দিনীকে শক্ত দড়ি দিয়ে বেঁধে লাঠি দিয়ে মারতে মারতে টানতে লাগল। লাঠিব আঘাতে নন্দিনীর ভূষাবের মত সালা শরীর থেকে হক্ত ঝরে পড়তে লাগল। কিছ

কাতর প্ররে কাঁদতে কাঁদতে নিজ্ঞানী বলিষ্ঠকে বলল—
বিশামিত্রের সৈতেরা এ ভাবে জামার মারছে, টেনে নিয়ে বাচ্ছে,
জবচ জাপনি এদের কিছুই বলছেন না! তবে কি জাপনি
জামাকে গ্রেহ করেন না? জামি কি জাপনার মেরে নই ?

এন্ত দিন ধরে মামুষ করেও আপনার কি আমার উপর কোন স্লেহ নাই ? আমি বিধামিত্রের সঙ্গে চলে বাই, এই কি আপনি চান ?

বশিষ্ঠ ঋণি নশিনীর অভিমান ভরা কথা ভনে বললেন—মা নশিনি, তোমাকে আমি নিজের মেরের মত স্নেহন্করি, সে কথা তুমি ভাল ভাবেই জান। আমি ভোমাকে আশ্রম থেকে বেতে দিতে চাই না। কিছু রাজা বিশামিত্র সৈতু দিয়ে স্মোর করে ভোমাকে নিরে বাজ্বেন।

আমি গণীব প্রষি, অন্তবল, সৈল্বল নেই। কেমন করে ভোমায় রাথব, তাদের বাধা দেব ? তাছাড়া ক্ষ্মিদের ধর্মই হল ধৈর্ম্য আর ক্ষমা। তেজ দেখালে তাদের অধ্য হয়।

বশিষ্ঠ খবির কথা ভানে নশিননী বলল—বাবা, আপনি ভাহলে আমাকে বেতে দিতে চান না। বুঝলাম আপনি আমাকে প্রেত্
ক্রেন। এখন চেয়ে দেখুন কার সাধ্য আপনার নশিনীকে কেড়ে
নেয়।

বশিষ্ঠ থাবি বললেন—নন্দিনি, ঐ দেখ তোমার বাছুরকে বিশামিত্রের সৈজেরা দড়ি বেঁগে টানছে লাঠি দিরে মাণছে। সে ভোমার মুথের দিকে চেথে কাঁদছে। পার ত ওদের অত্যাচার থামাও। ওরা তোমার উপরেও যে ২কম অত্যাচার করছে, বে ভাবে তোমাকে মারছে এ-ও দেখতে আমার কত কট্ট হছে বুবছ ?

বলিষ্টের কথা শেষ হতে না হতে এক অন্তুত ব্যাপার আরম্ভ হল, নন্দিনীর শরীর বাড়তে বাড়তে বিরাট পাহাড়ের মত হল, আর দেই শরীর থেকে প্রচণ্ড আগুনের হরা বেরোকে লাগল। তার হুই চোধ প্রকাশ্ত বড় হয়ে হুটো আগুনের গোলার মত হল। সেই চোধ থেকেও বলকে শলকে শাতন বেরোতে লাগল।

ভারপর নন্দিনী ভীষণ শব্দে ভেকে উঠল। বাঘের ডাক সে ডাকের কাছে হার মেনে বায়। সেই ডাকের সঙ্গে সঙ্গে মারাক্সক অস্ত্রশস্ত্রে সেজে লক্ষ লক্ষ ভেজনী সেনা নন্দিনীর মুখ থেকে বেরিয়ে এল। ভারা বাইবে এসেই বিশামিত্রের সেনাদের বিবে ফেলে প্রচ্নুণ মুদ্ধ শাবন্ধ করল। এই অন্তত ব্যাপার দেখে বিখামিত্রের সেনার। ভয়ে হতবৃতি হয়ে গেল। ভবুও একটু পরে প্রকৃতিত্ব হয়ে নিজেদের প্রাণ বাঁচাবার জন্মনীয়া হয়ে যুদ্ধ করতে লাগল।

কিন্ত কি সাংঘাতিক বিক্রম নিশ্নীর সেনাদের ! খুব জন্ন সমরের মধ্যেই তারা বিশ্বামিত্রের সব সেনাদের হারিরে দিল। এমন ভীবণ ভাবে বিশ্বমিত্রের সেনারা মার খেল বে তারা নিশ্বনীকে আর তার বাছুরকে ফেলে রেখে প্রাণের ভরে উদ্বিখাসে ছুটে পালাতে আরম্ভ করল। রাজা বিশ্বামিত্রও ছুটে পালাতে লাগলেন। পিছনে পিছনে নিশ্বনীর সেনারা তাড়া করে চলল। খানিকটা ছোটবার পর বিশ্বামিত্র ও তাঁর সেনারা সভরে চেয়ে দেখল বে, নিশ্বনীর সেনারা তাঁদের স্বাইকে ঘিরে ফেলেছে আর পালাবার উপার নেই। এথিন বুঝি প্রাণে মেরে ফেলে। বিপদে পড়ে রাজা বিশ্বামিত্র বুঝলেন রাজা হয়ে অহলাক করার ফল, বল ও দর্শ দেখানর ফল কি রকম বিষমর হতে পারে। বে বশিষ্ঠ শ্ববি আশ্রয় দিয়ে অভিধি সংকার করলেন, ক্ষমভার অহলারে মন্ত হয়ে তাঁর শক্তা করার ফল কেমন সাংঘাতিক হল।

কিছ এখন ভাব ভেবে কি ফল! নন্দিনীর সেনারা তাঁদের স্বাইকে বন্দী করেছে। প্রাণে মারবার জন্ম তীর-ধন্ত্ক উঁচু করে ধরেছে। ভার এক মুহূর্তেই তাঁরা স্বাই মারা বাবেন।

প্রাণের ভবে রাজ। বিশ্বমিত্র স্থার তাঁর সেনারা ধর থর করে কাঁপতে লাগলেন স্থার কাঁদতে লাগলেন।

বাঞ্চা বিশ্বামিত্রকে প্রাণ ভরে কাঁদতে দেখে দরালু ঋষি বশিষ্ঠ বললেন—মা নন্দিনি, তোমার সেনাদের বারণ করে দাও, তারা যেন এঁদের প্রোণে না মারে। আমি ঋষি, ক্ষাট আমার ধর্ম।

নন্দিনী সেনাদের বলল— সৈকুরা এই রাজাকে আর তাঁর সেনাদের প্রাণে মেরোনা। কিছ প্রাণেনা মেরেও এমন ভাবে মার বাতে এপের নিক্ষা হয় বে ঋষির আশ্রমে এসে অহকার ও দর্শ দেখান চলেনা।

নন্দিনীর কথা গুলে সৈজেরা ভীষণ ভাবে বিশ্বমিত্র ও তাঁর শিব্যদের মারতে লাগল। তথন বিশ্বমিত্র ও সৈজেরা কাঁদতে কাঁদতে বশিঠের কাছে ক্ষমা চাইলেন, প্রাণ-ভিক্ষা চাইলেন।

দয়ালু ঝবি বললেন—নিদ্দানী ভোমার সৈতাদের চলে বেতে বল।
নিদ্দানী তথন আগের মত আবার ভীবণ শব্দে ডেকে উঠল।
সঙ্গে সঙ্গে সব সৈতা ভার মুথের মধ্যে চুকে মিলিয়ে গেল। নিদ্দানীর
প্রকাণ্ড আগুন-অলা শ্রীবণ্ড শাস্ত হয়ে গেল। সে আগের মত
স্কল্য স্বর্গের গক্ষর রূপ ধ্বল।

বিশিষ্ঠ ঋষি বিশামিত্রকে ২ললেন—মহরাজ, আপনি সৈত্রদের নিরে বাজ্যে কিবে বান। আমার থেকে আপনার কোন অনিষ্ট হবে না। আপনি শ্বণাগত, তা ছাড়া অতিথি। তথু অহরারে মত হংয় বল ও দর্গ দেখাতে চেয়েছিলেন বলেই এই কট্ট সইতে হল।

আমি আপনাকে একটিমাত্র উপদেশ দিছি। বতই বড় বাজা চোন, অহস্কার, বল ও দর্পের বশ হবেন না। অহস্কারীর যে প্রথন হয়, তাত দেখতেই পেলেন।

বশিঠের কথা শুনে লক্ষার অনুলেচনার বিখামিত্রের মন ভরে উঠল। বশিঠ ঋষিকে প্রাণাম করে ভিনি বললেন—ঋষি, আজ থেকে আমি রাজ্য ভ্যাগ করলাম। বনে গিরে হাজার বছর তপ্তা করে ঋষি হব। **ভাপনার কাছে** এসে বুরলাম, ঋষির ক্ষমতার কাছে রাজার সৈত্তবল, ধনবল, তেজ, গর্বন, কত মিধ্যা।

তার পর বিশামিত্র সেনাপতিকে বললেন—সেনাপতি, সৈল্পবের নিরে দেশে চলে বাও। প্রচ্ঞাদের বল, রাজা বিশামিত্র রাজ্য ছেড়ে সন্ত্যাসী হরেছেন। এই বলে বিশামিত্র রাজ্যবেশ ছেড়ে সন্ত্যাসীর পোষাক পরলেন। এমনি ভাবে এক দিন বলির্চ ক্ষবির আশ্রমে রাজা বিশামিত্রের অহঙ্কার ও গর্মের পত্তন হয়, আর তিনি রাজ্য ছেড়ে ক্ষবি হন।

ফাউ

ঐবিনয় চক্রবর্তী

ব্যামন্থক বলেছেন: বোকা হবি কেন, বাজারে গিয়ে জিনিষ্টা কিনে ফাউটা গুছ চেয়ে নিয়ে ভাসবি।

পৃথিবীতে এই ফাউ পাওয়া বায় অনেক কিছু ই। ফাউ কথা বলাবও স্বভাব আছে অনেকের। কাজেই ফাউ নিয়ে এক কলম লিখলে নিশ্চয়ই আপনারা কাপরে ফেলবেন না আমাকে। তবে ফাউ নিয়ে লেখাটা ফেলনা নয়।

শোনা যাস, এক প্রসা সের হিসেবে চার সের বেগুন কিনে এক ভদ্রলোক এক সের বেগুন ফাউ পেয়েছিলেন। তাই শুরু ফাউ নিরেই ফিরতে চেয়েছিলেন। তার সে ইচ্ছে সফল হয়েছিল কি না সেটা আমার জানা নেই। তবে এ থেকে মালুম করুন, ফাউরের জন্ম মামুবের ফালতু দরদ কত! বাড়তির জন্ম বাড়াবাড়ি কেমনতর!

কবিগুরুর সাহিত্যে অমর কার্লিওরালাদের চড়া স্থানে টাকা বাটানোতে জুড়ি কম। স্থীকার করতে লজ্জা নেই, তাদের আসল চাইতে কুনীদ বা প্রদের তাগাদা কত অস্ত্রমধর। পাওনা ছেড়ে ফাউরের জন্ম ভাদের কোঁপর দালালির তুলনা মেলা ভাব!

হবেদ বকম ফাউরের কথা আমরা অনেকেই জানি। নতুন জামাইদের কাছে ফাউ হল গুালিকার ঝাঁক। সাকুদা, দিদিমাদের কাছে আদরের ফাউস্বরূপ নাজি-নাজনী। বরের মারের কাছে কাউ বৌতুক। জাগে বেমন বাজপুত্রেরা বাজক্ঞাদের পাণিগ্রহণ করে ফাউ পেতেন অর্ধেক বাজখ। বর্তমান কালে হোমরা-চোমরারা সরকারী ফাউ পান পদ্মভূষণ, পদ্মন্ত্রী। পুলিশ, মিলিটারীরা অশোকচক্র এবং মাহিত্যরখীরা জাকাদেমী জাওরার্ড বা নিদেনপক্ষে একবার রবীক্ষ-পুরস্কার।

কিছুকাল আগেও হব্ববের বোগ্যভার পরিমাপ ছিল তর্
চাক্রীর মাইনের নয়, তার উপরির বহরেও বটে। প্রাচীনেরা তাই
বাবাজীদের কুঠাহীন কঠে জিগ্যেস করছেন: বাবাজীর চাকুগীতে
উপরি আছে ত ? রেল, আদালত এবং পুলিশ বিভাগের চাকুথিয়াদের
তাই দাম ছিল বহু, মান বহুতর। আজ অবগু তেমন ভাবে কারও
উপরির থবর নেওরা শিষ্টাচার হয় না। তবে এ কথা ঠক,
পরোক্ষভাবে ফাউ কিছু পেলে আমাদের অনেকেরই গোসা কাটে এবং
অপর পক্ষের হয় কাম ফতে।

ফাউ বা বাড়তি পাঁওরার জন্ম আমাদের উৎসাহের নেই অন্ত, আকাজ্জার নেই অবধি। তাই প্রতি বছরের স্মৃত্যত স্মৃত্য ক্যাকোণ্ডারের জন্ম কাড়াকাড়ি কম নর। চাকুরীর সমান্তিতে ফাউ পেন্সন দীর্ঘায় বৃদ্ধদের কাছে নয় কম উপজোগ্য। যেমন বেলওরের চাকুরিয়াদের কাছে ফি বেলপাশ বা বেসবকারী কল-কারবানার বাংসরিক বোনাস কর্মীদের কাছে নয় কম আক্রিয়া তাই আমাদের মনে কাউবের প্রতি মমত্ব অসীম, মায়া অনস্ত। ফাউ পেতে তাই আমরা কাঁক খুঁজি। অতিবিক্তের জন্ম হই অতি আয়াসী।

অধুনা বিজ্ঞাপন ছিদেবে কখনও কখনও কটে জিনিস পান কেতারা। সাবান বা গদ্ধতেল ছ'-এক বেতেল কিন্সে কখনও মেলে নম্নাভিরাম সাবানদানী যা মনোলোভা চিক্না। 'এরোপ্রেনে চাপলে যাত্রীরা পান বেকফাই, ভিনার এবং রঙ্গীন এয়ার ব্যাগ। বাটার জুভোর দোকানে পূজোর সময় শিশুরা পার বেলুন বা চকলেট। পাঁজিতে এবং দৈনিক পত্রে উপভারস্বরূপ পাওয়া যায় এমন বিজ্ঞাপন বিবল নম। দৈনিক ধবরের কাগজে মাঝে মাঝে তাই থাকে হরেক সালিমেট। মাসিক পত্রিকার সাথাসিক এবং বার্ষিক গ্রাহকেরা কখনও তাই পান ক্রি ভাকমাশুল। এতে ব্যবসাব চলন বাড়ে, বিজ্ঞাপিত সামগ্রীর আকর্ষণ হয় প্রনিবার।

ফাউ পেতে এবং দিতে মন্তা অনেক। তবে ফাউ কথাবও আনন্দ কম নয়। আসর জমানর জন্ম কথার মালা গাঁথতে হলে অনেক অনেক ফাউ কথা চাই। তবে ফাউ কথা এবং বাজে কথার ফারাক অনেক। ফাউ কথা সময়-বিশেষে বিবক্তি আনে কিছ বাজে কথা বক্তার প্রতি শ্রন্থা কমায়। ফাউ কথা তাই কথনও ভাল লাগতে পাবে কিছ বাজে কথা কথনও নয়। ত্রুবসিক লোকের ফাউ কথাও তাই পারে কুল ফোটাতে। পারে বা হৃদয় ভরাতে।

অনেক আগে বাজা, মহারাজা, বাদশা, শাহজাদা ফাউ কথা শুনবার জন্ম করতেন গুণী ব্যক্তির নিয়োগ। তাদের আদর করে কারা বলতেন বয়স বা সভাসদ এবং চসতি কথার তারা ছিলেন ভাঁড়। মজার মজার ফাউ কথা বলে তারা তাঁদের মনোরপ্তন করতেন। দিতেন গৌড়জনে আনন্দরস। দৃষ্টাস্তবরূপ, মোগলস্ত্রাট আক্বরের সভার বীরবল এবং কুফ্নগ্রের মহারাজ কুফ্চন্দ্রের সভার গোপাল ভাঁড়ের নাম আসে মনে। সে যুগে ভাঁড়ামি বা ফাউ কথার মাধ্যমে তাঁরা নির্ভেজাল স্থল আনন্দের জন্ম হাস্তরস পরিবেশন করতেন, তার প্রমাণ আছে ইভিহাসের পাতার পাতার।

বর্ত্তমান যুগ জনেক এগিরে যাছে। এখন জামরা নিক্তি মেপে মেপে কথা বলতে ভালবাসি। বর্ত্তমান সভ্যতার শিক্ষা হছে সংবম এবং বিবিক্ততা। তাই জামাদের বর্ত্তমানে কথার কুলগ্রিতে যুক্তির তীক্ষতা, বৃদ্ধির গভীরতার মূল্য জনেক। ফাউ কথার স্থান একদম নেই বললেই চলে। জাবার কাউ বলার ফ্যাসাদও পদে পদে নর কম। অতএব আর বা কিছু ফাউ জাত্মক ক্ষতি নেই কিছু ফাউ কথা বলে ফক্টিকারি করা জামাদের উচিত নর।

নাইটিংগেল

নিদেশের রাজার রাজবাড়ী পৃথিবীর নামকরা জারগা ছিল রাজার বাগানে ছিল হবেক রকমের ফুল। ফুলগাছের চারিদিকে রূপোর ঘন্টা বাঁধা থাকত পথচারীকে সাবধান করার জন্ত। বাগানের সীমা বে কোথার শেষ হয়েছে, তা কেউ ধারণা করতে পারত না। বাগানের শেষ প্রান্তে ছিল জনেক বড় বড় গাছ, তাদের-শাখা-প্রশাধা সমুক্রের্টেশ্ব পড়েছিল। গাছভলির পাশেই ছিল গভীর নীল সমুধ্র। সেই গাছগুলির শাখাতে একটি নাইটিংগেল পাঝি আশ্রর নিয়েছিল। ভার স্থমিষ্ট স্ববের ধ্বনি শুনে সকলেই মুখ্য হত।

ষাত্রীরা বিভিন্ন দেশ হতে বাজার মহানগর দেখতে আসত।
মহানগর বাজবাড়ী, বাগান দেখে আনন্দ পেত। বিশেষ করে
ভালের মধ্যে কেউ বনি নাইটিংগেল পাবির গান ভনতে পেত, তবে তার
আনন্দের সীমা থাকত না। দেশে ফিরে গিরে বাজার রাজ্যের কথা
সকলকে বলত। কেউ আবার রাজবাড়ী সহক্ষে বই লিখত।

পৃথিবীর লোক বইগুলি পড়ে রাজবাড়ীর কথা জানতে পারল। একদিন একটি বই চীনদেশের রাজার হাতে পৌছাল। রাজা বার বার পড়েন এবং প্রত্যেক মুহর্তে মাধা নাড়েন। কিন্তু বইরের শেষভাগে এমন কিছু পড়লেন, যা তাকে জবাক করে দিল। কথাগুলি ছিল এই, নাইটিগোল পাঝি সবচেরে ভাল।

প্রধান মন্ত্রীর ভাক পঞ্জ। মন্ত্রীর প্রাকৃতি ছিল অন্তুত! তাকে কোন প্রশ্ন জিজেদ করলেই, দে উত্তব দিত, ফু:! তাকে দেখে রাজা বলতে আরম্ভ করলেন, নাইটিংগেল নামে এক ছোট পাধি আমার রাজ্যে আছে। তার গান আমার রাজ্যের সম্পদ। এর আগে কেউ তার সম্বন্ধে আমাকে জানার্যনি কেন? আমি চাই তাকে রাজসভার নিয়ে এস এবং আজ স্থায়ে পাধি আমার সামনে গান করবে। সমস্ত পৃথিবী বে বিষয় জানে, আমি সে বিবরে অজ্ঞ।

মন্ত্রী উত্তর দিল, আমি ভাকে খুঁজে বা'র করব।

কোথার তাকে পাওয়া গিরেছিল ? প্রধান মন্ত্রী বড় বড় খংগ্রহ মধ্যে দিয়ে, বাস্তার মধ্যে দিয়ে দৌড়তে লাগল। পথে বাদের সঙ্গে দেখা হল, তারা পাঝি সম্বন্ধে কোন খবর দিতে পারলো না। বাধ্য হয়ে রাজার কাছে ফিবে গেল এবং রাজাকে বলল, লেখক নিশ্চর বাজে কথা বইএ লিখেছে। জাপনি এই বাজে কথা বিখাস করবেন না।

বাজা বিষক্ত হয়ে বললেন, বে বই আমি পড়েছি, সেই বই জাপানের রাজা পাঠিয়েছেন। সেইজন্ম এই কথা কখনও মিধ্যা হতে পারেনা। আমি পাখির গান শুনতে চাই। আজ সন্ধার পাঝি নিয়ে রাজসভার হাজির হবে। আমার ইচ্ছা যদি পূর্ব না হয়, তবে রাজসভার সভ্যদের শান্তি দেওয়া হবে।

ज्ञार क्षरांत मन्त्री উপব্যক্ত। नीठकाः, वास्त्रांत्र मध्य जिल्ह

দৌড়াতে লাগল। বাজসভার সভারা মন্ত্রীর সঙ্গী হল। অবশেষে বানাঘরের একটি ছোটমেরের সঙ্গে দেখা হল। মেরেটি বলল, ও! নাইটিংগেল! তাকে ভাল ভাবে জানি। কি স্মন্দর গান গাইতে পারে। প্রত্যেক দিন ধাবার টেবিলে বা গুঁড়াগাড়া অবশিষ্ঠ থাকে, আমার মার জন্ম নিরে বাই। আমার মা সমুদ্রের ধারে থাকে। কিবে আসবার সময় সমুদ্রের ধারে গাছগুলির নীচে বিশ্রাম করি। সেই সমর পাথির মিষ্টি গান শুনি। তার গান এত সম্পর হে আমার চোধে জল আসে।

মন্ত্রী মেয়েটিকে মিনভি করে বলল, রারাখরের ছোট মেয়ে আমি ভোমাকে রারাখরে বড় কাজ দেবো। পাধির কাছে আমাদের নিয়ে চল। পথে বেতে বেতে গরুর ডাক, ব্যাঙের ডাক ভনতে পেলো। কিছু পরে সেই ছোট নাইটিংগেল পাধির গান বাডাসে ভেসে এল।

ছোট মেয়েটি বলল, ঐ দেখুন। গাছের উপরে তাকান। ঐ ছোট পাথিকে দেখুন। মন দিয়ে গান শুমুন।

রাশ্লাবরের ছোটমেয়েটি পাঝিকে লক্ষ্য করে বলল, জামাদের মহামাক্স রাজা তোমার গান শুনতে চেয়েছেন।

পাখি উত্তর দিল, আনন্দের সঙ্গে রাজাকে গান শোনাব।

বাজসভার পাবিকে নিয়ে যাওয়া হল। বাজসভার মধ্য জায়গায় একটি দাঁড় বসান ছিল, সেঝানে পাঝিকে বসতে দেওয়া হল রাজসভার সভারা এবং সেই ছোট মেরেটি উপস্থিত ছিল। প্রত্যেকে স্থন্দর কাপড় পরে এসেছিল। প্রত্যেকে গান জায়য় করবার জলা মাধা নাড়ালেন। এত মিষ্টি করে গান গাইল রে রাজার গালের উপর দিয়ে চোঝের জল গাড়িয়ে পড়ল। প্রত্যেকের রিকর্দির পরিচয় পাওয়া গিয়েছিল। কারণ তার স্বরের ধ্বনি প্রত্যেককে মুগ্র করেছিল। রাজা প্রস্কার দিতে চাইলেন কিছে পাধি নিতে রাজী হোল না। পাধি বলেছিল, রাজার চোধে জল দেখেছি। রাজার চোথের জলের বিশেষ দাম জাছে কারণ রাজার মনের ভাবের রূপ দিয়েছি। সেইজল এই পুরস্কার জামার জীবনের স্বচেরে বড় পুরস্কার।

অনুবাদক—বকুল ঘোষ।

শুভ-দিনে মাদিক বস্থমতী উপহার দিন-

এই অগ্নিম্ল্যের দিনে আত্মীয়-ছজন বন্ধ্-বাদ্ধবীর কাছে দামাজিকতা রক্ষা করা বেন এক গুলিবহু বোঝা বহুনের দামিল হরে পাঁড়িয়েছে। অপচ মান্তবের সঙ্গে মান্তবের থৈত্রী, প্রেম, প্রীতি, ক্ষেহ আর ভক্তির সম্পর্ক বজার না রাশিলে চলে না।' কারও উপনয়নে, কিংবা জন্মদিনে, কারও উভ-বিবাহে কিংবা বিবাহ বাধিকীতে, নয়তো কারও কোন কুতকার্য্যতার আপনি 'মাসিক বন্ধমতী' উপহার দিতে পারেন অতি সহজে। একবার মাত্র উপহার

মানিক বন্ধমতী। এই উপহারের জন্ত সংগুল্য আবরণের ব্যবস্থা আছে। আপনি ওপুনাম ঠিকানা টাকা পাঠিরেই থালান। প্রদেও ঠিকানার প্রতি মানে পত্রিকা পাঠানোর ভার আমাদের। আমাদের পাঠক-পাঠিকা জেনে খুলী হবেন, সম্প্রতি বেশ করেক শত এই ধরণের গ্রাহক-গ্রাহিকা আমরা লাভ করেছি এবং এখনও করছি। আশা করি, ভবিব্যতে এই সংখ্যা উত্তরোভর বুদ্ধি হবে। এই বিবরে ধে-কোন জ্যাতব্যের জন্ত লিখুন—প্রচার বিভাগ মানিক বন্ধমতী। কলিকাভা।

যাঁরা স্বাস্থ্য সম্বন্ধে সচেতন তাঁরা সবসময় পাইফব্য সাবান দিয়ে স্নান করেন।



হিন্দুগৰ লিভার লিমিটেড, বোগাই কর্তৃক প্রস্তুত।

্ৰ্ৰনাকী আৰু বড়া ধমক থেৱেছে বাপের কাছে। মারের উপর কাপে সংক্ত পরীর ভার কলে গাছে।

কিছ 'বাবা ষ্টক্রণ জাছেন বাড়ীতে, সুবটি
বৃদ্ধে থাকতে হবে'নয়ত একটু ট্যা ফুঁ করলে
বাবার বে মৃত্তি দেখতে হবে, দে চিস্তা
ক'রতেই হৃৎকল্প উপস্থিত হোল তার।
বাবার রাগের সময় মুখ বৃদ্ধে চড়-চাপড়,
থমক-ধামক হজম করাই বৃদ্ধিমানের কাজ,
এ তারা সব ভাইবোনেই বুঝেছে। মুখ দিয়ে
কথা বার হয়েছে কি বীরেন বাব্র চড়টাও
বড় হ'য়ে পড়েছে পিঠে, কিংবা চোথের
দিকে তাকিয়ে কেঁনেই ফেলেছে তারা। এমন
দিনটি অবগ্য এনাকীর কয়নায় অনেক দিন
আগে থেকেই মুক হয়েছে। সেই ইয়েটী
আর অফ পরীক্ষার পর থেকে। মনে মনে
আস্থির হ'য়ে উঠেছে সে। বাবা অকিসে

বেরিয়ে বাক না, তারপর মাকে একচোট্ নেবে সে। সব কথা বাবার কাছে পুট-পুট ক'রে নালিশ করা বের করাছে এনাক্ষী।

বাবার সলার সাড়া পেরে মাধা নীচ্ ক'রে বইরের পান্ডার চোথ নামাল। এনা, মীনা, দিতীয়বার আর ডাকার প্রয়োজন হয় না। ছেলে-মেরেরা বে বেখানে থাকে বাবার একডাকে সাড়া দিরে ছুটে আলে কাছে। এনাক্ষীও ফকের কোণা মুখে পুরে এক কোণে এসে দাঁড়াল। বড় হরেছে কিছু সহবৎ শেখেনি এখনও। সব সমর আমার ঝল মুখে পুরে কামড়াবে। বকাবকিতেও শোধরাতে পারা গোল না। রায়াধ্বের দরজার দাঁড়িরে মা আর একটা বিজ্ঞারণের আশস্থা করছিলেন। কিছু না, সামলে নিরেছে। হুটাৎ বাপের চোথে চোখ পড়তেই মনে প'ড়ে গেছে। ভাজাভাড়ি জামার ঝ্লটা ছেড়ে দিয়ে হাভ দিয়ে ক্লটা টান করতে লেগে গোল। ভারীমুখে বীরেন বারু মীনার দিকে ভাকিয়ে বললেন—ভোর বুক্লিইটা দে। অফিল ফেরত বই কিনে আনব। আর এনা—

বেচারী এনার ভতকণে প্রাণ-উচ্চ গেছে। আধ ঘটাও হয়নি একচোট বকুনি থেয়েছে। বাবার ডাকে মুগটা নীচু ক'রে আঙ্গলে ফকের ঝুল জড়াতে লাগল।—তাকা আমার দিকে—বাপের আদেশে তাকাতে গিয়ে ভঁটা ক'রে কেঁদেই কেলল সে।

হাতের উপটো পিঠ দিয়ে চোগ কচলাতে কচলাতে চোগ হুটো লাল ক'রে ফেরল।—পরীক্ষার ফেল করবি আবার কিছু বলতে গেলেও উন্টে কারা। কেন, আগে মনে থাকে না গ মেরের জল-ট্সটলে হুটো শাল চোথের দিকে তাকিয়ে তথন আর কিছু না বলে বেরিরে গোলেন বীরেন বাবু। আর সাথে সাথেই রায়াঘ্রের বারান্দা থেকে মা এনাক্ষকৈ আদর-মাথান মুথে ডাকলেন এনা, শোন। আর আমার কাছে আয়। মারের ডাক কানে বেকেই এনাক্ষীর চোথের জল শুকিরে গেছে। বাগে চোথ দিয়ে যেন আগুন ছুটছে তার।

মুহূর্ত পূর্বেই দেই কারাভেজ। কোমল, ছংথী-ছংথী চেহারাটা কিছুতেই আর চেষ্টা ক'রেও মনে আনতে পাবছে না দোতলার স্থহাদ। রেলিং ফ'ুকে নীচের দিকেই ডাকিয়ে ছিল। অভ্যাদটা ভাল নর তব্ নিজেকে শোধরাতে পাবে না। নীচের তলায় বথনই কোন কারণে



বাসন্তী বন্দ্যোপাধ্যায়

চেচামেচি গণ্ডগোল কানে যান্ন, মেরেদের মন্ত অমনিই বেলিং ব'কে দিছিরে পড়ে মহাস। এজতে বাড়ীর লোকের কাছে ধমক থার, নীচের তলারও কারো চোধ পড়ে গেলে কথা শোনাতে ছাড়ে না। আর কেউ নম্ন, মীনা কিংবা মীনার সায়ের নভরে পড়লে, তারা নিজেরা কিছু বলতে আলে না। আপন মনে বিড়বিড় ক'রে বলে, কি বলে সে এত উচু থেকে মহাস ভনতে পার না, ভবে খ্বই যে বিরক্ত হরেছে সে ভালের অপ্রসন্ন মুখের দিকে ভাকিরেই বুঝতে পারে। বুঝতে পেরে অবভা সরেই যার।

কিছ একট্ পরেই হয়ত কানে জাদে, কি হংগছে মা কিংবা কি বে
দিদি, কে অস্প্রের মত তাকিংর আছে ? তার পরেই নীতে থেকে
চীৎকার ভেসে আসে এনার—মাসিমা ও মাসিমা। অহাসের মা
আগে আগে বুরতে না পেরে সাড়া দিতেন। বলতেন, কি রে
ডাকছিল কেন ?

ঝগড়ার মুরে এনা বলত—ডাক্ছিদ কেন কি! ছেলেকে শাসন করতে পারেন না ? পরের বাড়ীর দিকে অসভোর মত তাকিরে থাকে ?

আজ-কাল আব সুহাসের মা সাড়া দেন না। বরং এনার পলা পেলেই ওদের ভনিয়ে ভনিয়ে সহাসকে ধমকের সুরে ডাকতে থাকেন।

তিনি বে এ বিবার স্থাসকে শাসন করছেন সেটাই বোঝাবার জন্তা। বগড়াটা তাই আব গড়ায় না। কিছ সহাস কিছুতেই নিজেকে শাসনে বাথতে পারে না। তেমন কিছু কানে গেলে বই উন্টে বেথে ঠিক রেলিং বৃঁকে দাঁড়িয়ে পড়ে। তবে আগের সেই জগাধ কোঁত্হলও আব নেই। আজ-কাল তেমন আর মজা ও পার না। ছদিন পর এ-ও হরত থাকবে না। আজ কিন্তু সকাল বেলারই বীবেন বাবুর বাগারাগি কানে গেছে। কা'কে বেন খুব ধমকানি দিছেন। কা'কে বকছেন কে জানে? ও সব একখেরে হরে গেছে। তলুলোক নিজের ছেলেমেরেদের ধমক-ধামক দিয়ে কি বে আনম্পান, বইটা তুলে পড়ায় মন কসাতে টেগ্রা করল। ছোট বোন ওলাকী কি কালে ঘরে চুকে হঠাৎ থমকে দাঁড়িরে বলল—জান দাদা, এনাকী না কেল করেছে? ওর বাবা ওকে কি বকুছে। মেরেছেও।

তথন তথনই আশর্ষা, সুহাস বই ছেড়ে উঠে পাড়িয়েছে। রেলিংয়ে ভর দিয়ে নীচের শৃক্ত উঠোনটার দিকে শৃক্ত চোথেই তাকিয়ে बहेन म । এখন আৰু কোন সাড়া-শব্দ পাওয়া বাচ্ছে না, চোখেও দেখা বাছে না কাউকে। স্বাই বোধ হয় খবে। এনাকীও। এ মেরেটি সম্বন্ধে তার আছেতৃক একটা কৌতৃহল কেন যে মনের মধ্যে বাসা বেঁধেছে, কিছুতেই বুবে উঠতে পারে না সে। আছ মাস আষ্ট্রেক হোল তারা এসেছে, এই ক' মাসে উঠতে বসতে চলতে ফিরতে সব সময়ই চোৰে পড়ছে মেয়েটিকে। একটি কিশোরী মেয়ে। কাপ্ড প্রলেই বেন মানায়, তবু ফ্রক ছাড়বে না। কগড়া করছে ষধন, মনে হয় ত্নিয়াতে ঝগড়া ছাড়া কিছু জানে না। বাড়ীতে কাক চিল বসতে পায় না। আবার যখন বাপের ধমক খেয়ে কাঁদে, উপৰ থেকে এমন অসহায় মনে হয়, কটুই হয় সংহাদেৰ দে সময়। ছোট ভাইকে যখন পিটছে ঠি:ভ্ৰভাৱ বেন জানোয়ারকে ও ছাড়িয়ে ষায়, মাকে ভেংচি কাটছে, দিদির চুল টেনে পালাছে, সব সময়ই একটা চরম কিছু করা চাই-ই: প্রথম প্রথম মেরেটার কাগু কারধানা এফটা ছেলেমানুষী ছঠামী মনে কবে সুহাসের বেশ ভাল লাগত। क्रमणः किन्न मान इच्छ जामान भारति। ज्यानक हिःसारे, यंगजाहै. বদরাগী, জেগী। সুহাসের মনে একটু সন্দেহ ছিল বোধ করি लबानणाइ क्षीयम । व्यासा भाग छाउ नह । मर्व्यक्ति किरहरू अवहा বাৰিকেন। তবু এ মেডেটি সম্বন্ধে অহাসের অসীম কৌতুলল।

চৌদ-পনের বছবের একটা উঠতি বংসের মেয়ের এ সমস্ত কার্ড-কারথানা দেখতে সংগাসের ভাস সাগে। আর ভাই সে বেসিং ক্রেড-ভাকিরে বাকে নীচে।

মলিনা দেবী কাছে এসে এনাকীর ছাত ধরে টানতে লাগলেন।
লাখনার করে বললেন—পরীক্ষায় ফল খালাপ হোলে গুরুতনরা
ও-বক্ষ একটু বকেই। তাই ব'লে তুই মুলির মত কাঁনছিস? এত
বড় দিদি হ'রে? ঐ দেখ মুলি কেমন অবাক চোপে তাকিরে আছে
তোর দিকে।

মার হাত থেকে কট্কা মেবে হাত টেনে নিল এনাকী।
নাকি সরে বলল—যাও যাও। তুমিই ত বত নাঠের মূল। সব
কথা বাবার কাছে নালিশ করা চাই। ভোমাকে আমি বারণ
করে দিয়েছিলুম না ? বলতে বলতেই আবার হ'চোথ জলে তরে
এলো। মলিনা দেবী শিঠে হাত বুলিরে বললেন—বোকা মেয়ে!
পরীক্ষার ফল বাপ-মারের কাছে লুকোতে আছে না কি?
এবার মনোযোগ দিয়ে পড়, সামনে বার সবার চেয়ে বেশি নম্বর
পেরে উঁচু রাসে উঠবি।

মাষের এ সব ছেঁলো কথা শোনার মত ধৈর্য কিংবা মন কোনটাই ছিল না এনাক্ষীর। কালাবোজা গলায়ই ভেড়ে উঠল সে— তথন একশবার বললুম একজন মাষ্টার বেখে দাও। ইংবেদী ক্ষর



िककू द्विना। उपन कनलाना। अभित्क एक्ता कवता मामनि कि चाह्य। केटी ठटम चामिया विच ४ ११ विक छात्र पहिल्हें क्रिक्स समावीच हरिस केटिय (मिह्यू)

মলিনা দেবী বললেন—দেখি এবার বলে-করে একজন মাঠার রাখতে পারি কি না। কিছ এনাক্ষীর গলার স্বর শুনে ববে না চুকে জাবার বারাশায়ই বেরিয়ে এলেন।

এনাকী চিৎকার করে বলছে—লক্ষা করে না পরের বাড়ীর দিকে চেয়ে থাকতে। অসভ্য, বদমাস ছেলে। বলতে বলতে ওপালের নিজি দিয়ে সোজা উপনে উঠতে লাগস।

মনিনা দেবী ব্যস্ত-জ্ঞস্ত হয়ে এনাফীকে বাধা দিতে নি ডিমুখী দৌড়ে গোলেন, কিন্তু মেয়েটার নাগাল পেলেন না। ছি, ছি, ফি সব বলে আসবে কে জানে। লক্ষার রাগে সরে বেতে ইচ্ছে হোল ভার। উঠোনে শাড়িয়ে টেচিয়ে চেচিয়ে ডাফ্তে লাগলেন মেয়েকে। এফটক্ষণ প্রই এনাকী গ্র-গ্র করতে করতে নি ডি দিয়ে নেমে এলো।

সম্ভন্ত হবে কাছে এগিয়ে গিয়ে উৎকঠিত খবে কিজেন করলেন—কি বলে এলি ভুই উপবে? ছি ছি ভোর জন্ম কি কারো সাথে সন্তাব রাধার উপার নেই? ফেল করেও তোর লজ্জা হয়নি আবার রাগ দেখাতে বাস সবার উপবে? মায়ের কথার কোন উত্তর না দিয়ে লোজা খবে চ্কে পড়ল এনাফী। আর মলিনা দেবী নীচে খেকেই সহাসের মাকে ভাকতে লাগলেন—দিদি, ও দিদি—

মারের পলা পেয়েই বড়ের বেগে বেরিয়ে এলো এনাক্ষী, ভারপর টানতে টানতে মাকে বরের দিকে নিয়ে চলল। ঝগড়ার স্থরে বলল— আবার দিদিকে কেন? বলবে বৃক্তি এনাক্ষী বা বলে এলে! ভার জন্ম কিছু মনে ক্রবেন না? বা বলে এসেছি ঠিকই বলেছি, ভূমি আবার কোন লছ্ডার ওদের সাথে কথা বলতে বাও?

মলিনা দেবীর আর সহু হোল না। ঠাস করে এক চড় বিসিয়ে দিলেন মেরের গালে। চাপা বরে বললেন—হুহছ্ডাড়ী মেরে! নিজের বভাব মন্দ বলে ছনিয়ান্ডম লোককে তুই মন্দ দেবিস? ছাড় তুই, আমার হাত ছাড়। চড় থেরে ভক্তপোলটার উপর চুপচাপ বসে রইল এনাক্ষী। একটা অসভা ছেলেকে সামনাসামনি অসভা বলাতে অপরাব কোবার বুরে উঠতে পাবল না। গালে হাত বুলোতে বুলোতে ছোট ভাই তপুর দিকে তাকিরেই কি কথা হঠাং মনে পড়ে গেছে। তারপরই দৌড়ে মার কাছে। মলিনা দেবীর মেনাক্ত ভবনন্ত যাতত্ব হয়নি! আবার এনাকে দেবে বেবে উঠলেন—রাল্লবে আবার কি? কালের সময় এখন বিরক্ত করতে আসিস না। বেরো। এনাক্ষী ভেটে কেটে উঠল মাকে—বেরো বললেই বেকবো নাকি। তপু ফাই হরেছে, টাকা ফেল, আমবা মিট খাব।

এনাক্ষীর কথার ধরণই এ রকম। কত বার বুবিরেছেন
মেরেলের, এমনি কক ভাষা কানে অভ্যন্ত ধারাপ শোনায়। বেন
সর্ব্বদাই একটা যুবং দেহি ভাষ সেবের। বহু বার বলে বলে
নিজেই হতাশ হরে ছেড়েছেন। মেরে নিজে থেকে না শোধরালে
ভার সাধ্য কি ও মেরেকে শারেভা করেন! আজ মীনা, তপু,
দিপুর আনক্ষাজ্জল চেহারার দিকে ভাকিয়ে এনার চেহারাটাই
বার বার চোথের উপর ভেনে উঠছিল। বাপের বকুনি থেয়ে বথন

কাদ্দিল ভাবা মারা হজিল মলিনা দেবীয়। কিছ বীরেন বাং সামনে থেকে মেরেকে টেনে জানার সাহস তাঁর ছিল না। তাং কর্তা বেরিয়ে বেতে এনাকীকে কাছে টেনে জাদর করে ওর ছংং ভূলিয়ে দিতে চেরেছিলেন। অবগ্র এ-ও জানতেন কোন ব্যাপারেছ বেনিকণ মুখভার করে থাকা সভাবই নয় মেরেয়। তবু এনাকীর চোথের জল দেখে সে মুহুর্ত্তে বেদনার প্রাণটা মুচ্ডে উঠেছিল ভার। সহজে কাদবার মেরে ত ও নয়! কিছ সাধ্য কি ওর সম্বন্ধে ছ'মিনিট ওর নিশ্চিন্ত থাকার। একেবারে হাড্জালান মেরে। কি যে ব'লে এসেছে ওপরে কে জানে ?

এনাকীকে পেছনে তবু দীড়িয়ে থাকতে দেখে, বস্থার দিয়ে উঠলেন—ফেল করে ফের মিষ্টি থাওয়ার কথা বলতে স্কলা করে না তোর ? ও তুই বলেই পারিল, জন্য মেয়ে হোলে এতক্ষণ স্কলায় মাটিতে মিশিয়ে বেড।

এনা ফের ভূক কুঁচকে মুখভিন্ধ করে বলল—বাবে বা কেল করেছি বলে কি মুখ গোম্ভা করে সারা দিন বসে থাকব নাকি, না কাদতে বসব ? ও ভোমার মন থারাপ হয়েছে, তৃমি মুখভার করে বসে থাকগে। এখন টাকাটা ত ফেল।

- —টাকা আমার কাছে এখন নেই। যা, বেরো।
- ইন, নেই ! বললেই হোল ? শীগ্গির বের কর।

মলিনা দেবী এবার কড়াটা উম্ন থেকে নামিরে সোজা দাঁড়িয়ে পড়লেন। চোধ লাল করে বললেন—দেখ এনা, ভাল হচ্ছে না। একটু জাগে যে মার থেলি, তবু লজ্জা নেই ?

—না, আমার লজা নেই। তৃমি টাকা দাও। লোকের বাড়ীতে দেখেছি, ছেলে-মেরেরা পাশ করসে বাড়ীতে থাওরা-দাওরা আনক্ষের গুম পড়ে যায়। আর আমাদের বাড়ী সবই উল্টে। এছজন প্রথম হয়েছে, একজন তৃতীয় হয়েছে, ভবুসব গোম্ডাযুধ।

এ ব্দুত কথার কি উত্তর দেবেন মলিনা দেবী ? এ উন্টো মেরেকে কি করে দোজাপথে বোঝাবেন ? সবটাই যে এনাক্ষীর জন্ত, নে বোধ কি ওর আছে ? মীনা, তপু, দিপুও বে উচ্ছাসের মাবে হঠাৎ এনাক্ষীর দিকে তাকিয়ে স্তব্ধ-বিষয় হয়ে উঠছে, সে খেয়াল অংগ এ মেয়ের ধাকার কথা নয়। অভটুকু ছেলে দিপু, সে প্রাভ এনাক্ষীর কারা দেখে ঘরের কোণায় মুখ লুকিয়ে কেঁদেছে। মলিনা দেবীর কাছে এসে বলেছে—মা, বাবাকে বকতে তুমি বাবণ কর মা ! ছোড়দি' বে কাঁদছে। এখন মেয়ের দিকে ভাফিয়ে হঠাৎ ছুবারে তপু দিপুকে দেখতে পেলেন। এনাক্ষীর সহজ্ঞ ভাব ফিরে আসাতে ওরাও থেন অনেক সহজ হয়ে উঠেছে। মুচকি মুচকি হাসছে হু ভাইয়ে। ওদের হাসিমুখ দেখে সেকেণ্ড খানেক কি ভাবল এনাক্ষী, তার পর ঘরের দিকে ধেতে বেকে বলল—দেবে নাভ ? আছে! ঠিক আছে। আমার হু'টাকা জমেছে, আমি থাওয়াব। মলিনা দেবী হাত ধুয়ে এ **খবে এলেন। কাপড়ে হাত মুছতে মুছতে** दललन--- मिक्टि, मिक्टि, वान ता वान ! এ মেরের পারার পড়লে--কথা শেব হোল না। ততকণে এনাকী ছুটে বেরিরে গেছে বাইরে। দৌড়ে সামনের বারাকায় এগিরে গেছেন।' ঠেচিয়ে ডাক্সেন-এনা ভাল হচ্ছে না, ভাল হচ্ছে না। **ভাবার ভূই লোকানে লোভোছিল!** ফিরে আর, শীগ্সির ফিরে আয়। তপুকে টাকা দে, তপু কিনে

আনংব। মারের কথার একবার পেছন কিরেছিল। তার পরই গলির গোড়ে উবার।

থাবি ফ্রাক গলির মোড়ে উবাও হোডেই সাম্মের ঝল-বারাক্ষা থেকে নিজের খরটার ফিরে এলো সহাস। এনার দোতলার ওঠা দেবেই সাম্মের ঝল-বারাক্ষার আশ্রার নিরেছিল সে। কি বেন সব গড়গড় করে বলে গেল মাকে, এতদ্ব থেকে শোনা বাচ্ছিল মা, তর্ মস্তব্যগুলো বে মোটেই শ্রুতিরধ্ব ছিল না বে, এত দ্বে থেকেও গলার স্বরে বেশ স্পাই ব্রুতে পারছিল। বলতে কি, একটু একটু ভরই হঙ্গিল স্থহাসের। যদি সোজাগ্রাক্ত তাকেই বাচ্ছেতাই করে অপমান করে বেত সে, ভরে একরকম পালিরেই এসে বসে আছে এখানে, তাহলে নিজের স্বপক্ষে কোন বৃক্তিই সে দেখাতে পারত কি দু এনা ফিরে বেতে মনে মনে কত বে স্বক্তি কিরে পেরেছিল, মনে করে নিজের স্থলিতার হেসেই ফেলল স্থাস। বাপ রে, ও মেরের পারার গড়লে বক্ষা ছিল না আছা। হেসে বইটা খুলে পাতা ওণ্টাতে ওণ্টাতে বগতোক্তি করল—কি আশ্রের্য মেরে বাবা।

মা যে খরের সামনে বসে কুটনো কুটছিলেন সে খেরাল ছিল না। গোরী দেবী মুখ বাড়িরে বললেন—কা'র কথা বলছিল রে স্থলাল । ঐ নীচের তলায় এনাকীর ? ভারপর ছেলের সাড়াশব্দ না পেরে নিবেই আবার বললেন—সভিয় অছুত মেরে! হেসে ছেলের দিকে তাকিরে বলসেন—একটু আগে আমাকে কি বলে গেল জানিল ? স্থান খর ছেড়ে বারালায় মার কাছ খেঁলে এসে বসল। হেসেই বলল—কি?

করেল গেল, আপনার ছেলের চোৰ আমি গেলে দেব মাসীমা।
পারের বাড়ীর দিকে ভাবে-ভাবে করে তাকিরে থাকা জন্মের মৃত্ত
বৃচিরে দেব। আর তাকাবি কথনও ? উচ্ছাসিত হোয়ে মায়েছে
ছেলেতে হেসে উঠল। সুহাস হঠাং হাসি থামিরে গস্তীর গলার
বলল—দেব মা, আমি অবাক হই মেয়েটার রূপান্তর, ভাবান্তর
দেবে। এই চোবতরা আন্তন, বাপ রে! ওপর থেকে বে চোবের দিকে
ভাবালে আমার পর্যন্ত আতক উপস্থিত হর। আবার মুহুও প্রেই
দেব বাপের ব্যক্তে এমন ক'রে কাঁদছে, কট্টই হর সে সম্ম। রাগছে
বর্ধন ছোট ছোট ভাই হুটোকে কি মার্ধবই না করে, আবার পর
মুহুত্তেই দেব আদরে আদরে বেচারাদের একেবারে প্রাণান্ত। ছুটো
শক্তিই স্মান কাক করছে।

গোৰী দেবী বললেন—অথচ দেখ, ভদ্রলাকের আব পাঁচটি
সন্তানই কিছ বড় শাছ-লিষ্ট। সব মারের মন্ত হরেছে। বাপের
মেলাছ পেরেছে একমাত্র ঐ মেজোটি। এই নিরেই সেদিন এনার
মা কত হংব করছিলেন। সুহাস আন্ত কিলা তু' কাঁক করতে
করতে বললে—কি বলছিলেন। পুহাস আন্ত কিলা তু' কাঁক করতে
করতে বললেন—দেখ্ ত শুক্, উত্থনে করলা দিরে এসেছিলাম
ধরল না কি ? তারপর আনু ছাড়াতে ছাড়াতে ছেলের প্রশ্নের উত্তর
দিলেন। একটু তাছিলামাধা সরে বলালন—বলছিলেন, মেইটার
অভাব দিনকে দিন এমন হিল্ল হোরে উঠছে বে. মনে আর শান্তি
নেই তাঁর। এই সম হংব করণছলেন আর কি। নৃতন কোঁরে
আর কি বলবেন। চোবের উপরই ত দেগতে পাই সব অতবড়,
বিদ্বী মেরে, মা বলে বলে শ্রবাণ, তবু ফ্রুক ছেড়ে কাণ্ড প্রবে মা



সিন্ধ মধ্যে পাঁচ, বার থাতা পোঁজন, বিমুট-কল্পে নিতে দোখানে নিত্র থাতা প্রবিদ্ধান বাপ প্রস্থা বাদ্ধান থাকার। আন প্রস্থা বাদ্ধান বাদ্ধা

উঠে ইংড়াতেই এনার গলার সাড়া পেয়ে এক পা বাড়াতে গিয়ে বাধা পেয়ে ফের বদে পড়তে হোল। গৌগী দেবী সাটের বুল টেনে বাগিয়ে দিয়েছেন ছেলেকে। হেসে বসলেন—চোধ ছটো ভোর সভিটেই বাবে। হুলো নেই? স্বহাস অন্তনম ক'রে বঙ্গল—একটু দেবি মা, বেশ মহা নাগে। গৌগী দেবী সন্তীর হ'রে বজলেন—ছিঃ। বড় হ'হেছিদ এখনও কোন কাণ্ডভান হোল না? এ কি মেয়েলী স্থভাব হচ্ছে দিনকে দিন? যা পড়তে যা।

অগত্যা পড়ার মারই চুকতে হোল স্থাসকে। পর পর ছটো বছর একই সালে ব'মে গেল এনাকী। মারীর থাকা সম্বেও। আর এই ক্ষাকে মীনাক্ষার স্থানের গণ্ডি পার হ'য়ে কলেক্ষে বাভায়াত প্রক হয়েছে। তপু ছ' দ্লাস উঁচুতে উঠে এনাকীকে ধরে ফেলেছে। দিপুও এগিয়ে গেছে ছ' ধাপ। তবু এনাকীই বেই তিমিরে সেই তিমিরেট। দোহসার সংক্ষেত্র এবাব কাইতাল ইয়ার।

আবের সেই অলোডন কৌতুহল আর নেই। একসম গছে খলা খায় না, ভবে অনেকটাই গেছে। এখন চেটুকু আছে 🙂 🚁 আৰ অবাভাবিক বলা চলে না। ওটুকু জনেকেইই থাকে। গত বছবেও প্রমোশনের দিন বীরেন বাবুর ধমক-ধামক কানে গ্রেছ স্ফাসের। কিছা এ বছর দেন বড বেশি চপ্চাপ। এবারও বে এনাক্ষীর কপালে প্রমোশন জ্বোটনি, সেখার ঘালেই পেরেডে নে। স্কাল থেকেই একটা ংমকের আশস্কায় প্রচান নিজেই ধেন উংক্তিত হুরৈ ছিল। কিছুমা, কিছুই কানে গেলুমা: ভারী পাছায়াভি বোধ করতে লাগল েহাস। নিজের ঘরে টেবিলের উপর হা হাতের ষ্কার রেখে মুখ্র চেপে এ সংই চিন্তা কর্মিকা: স্বাচমকা একটা বড অনোশন পেয়ে ধনাকী যে হঠাৎ বড় নেশী বড় হোমে নেছে এ ধেন সহ হচ্ছিল না সহাদের। স্ট্যি তাই। ক্রম ছেড়ে শাড়ী ধরেছে সেটা কিছু নয়, কিছ দেই উচ্ছল চাপল্যে সর্বনাই প্রাণচঞ্চল একটা ধুণী আচমকা যেন শুৱ হ'ছে গেছে। বড আশুৰ্যা বোধ গুলেছে শুহাসের। মাত্র ছটি বছরে কেউ যে এমনি বেমালুম পান্টে दर्स्ड भारत, स्वत कार्य ना स्थान विस्थान कह ना। ध भारवर्शन व कोर बक्टा उलाए-भाषाद बाद भाष, जा नव। वीद वीद সব কিছু সুইয়ে সুইয়ে, কাউকে তেমন আশ্চর্যা না করে দিয়েই আন্তে আন্তে পান্টে গেছে এনাক্ষী। এখন আয় হু'চোখ ছু'কান পেতে রেখেও অস্বাভাবিক কিছু চোথে ঠেকে না, কানে আলে না। ২ড বেশী শান্ত-স্মী মেয়ে হ'বে গেছে বেন। কিছ সব চেয়ে বা আশর্ষাক্র, তা হচ্ছে পুহাদেব নিজেবই মন। এনাফীর সেই ৰগড়া, দেই হিংস্টেপ্ৰা, সেই দৌৱাত্মাপ্ৰা, বা দেখে বিব্ৰক্তিতে বাগে কত সময় ভাব জ কুচকে উঠেছে, সেই বেন ভাল ছিল।

ন একটা স্বতঃস্থৃত জোৱাবকে কে হেন বাঁধ নিয়ে আই কুল বেশেছে, এনাঞ্চীকে দেখলে জাজ-কাস্ত্রির এমনি এবটা আ মনে পড়ে বার। আরা তাই মারের মূথে এনাঞ্চীর প্রশাস মনই ধারাপ হ'রে বার, মাকেও তখন সন্থাহর না, মনে পড়ে মারের জাগের উভিগুলি। কিছু এটাই ত নিরম। শাস্ত, হ মেরেদের প্রশাসাই ত প্রাপ্য। তার মনের উভিগুলোই ব

এই আড়াই বছরে একই বাড়ীর বাসিন্দা হোয়েও এনাকী:
পরিবারের কারো সাথেই বলতে গেলে তেমন আলাপ পরিচয় হয়
সহাসের। সহাস এমনিতেই একটু অমিতক, তাছাড়া ত
সমবয়সী কেউ নেইও ত ও পরিবারে। সতরাং আজ-কাল কাঃ
অকাজে ভূটে ভূটে আসে মীনাকী। ভঙ্কান অগনি দিনে পনর ব
নামছে নীচে। এক সাথে সুল-ফাইছাল পাল করে একই কলেং
ভত্তি হয়েছে হ'জনে, এত দিনে তাই বয়্বটা জমে উঠেছে খ্ব
সহাস ঠিক বয়্বের পর্যারে না উঠলেও বোনের বয়্ হিসেবে অনেক
সহল হ'রে উঠেছে মীনাকীর কাছে।

বিকেলে জাজ জার বেবোয়নি। বন্ধুনের ট্রামে খুলে দিয়ে তাটে সম্বন্ধেই কথাবার্তা। বলছিল মারের সাথে। মীনাফী এলো এসনা সাসীমা মাসীমা, হৈ-হৈ করতে ভরতে, এসে থমকে গাঁড়ি পড়ল। গুরাস এ সময় বাড়ীতে, ভাবতে পাবেনি নিয়ে উন্থাসের জন্ম বড়ই লক্ষিত হোয়ে উঠল। কিছু বড়ই সপ্রাহি থেরে মীনাফী। হেসে বলল—বা রে মাসীমা, মিট্রি কোথার উত্তরটা দিল পুরাস। মৃত্ হেসে বলল—বা রে মিট্রি তে আগাঁ জানবেন, মিন বালি হাত কেন গ

 াবে, আমি কেন মিষ্টি খাওয়াব ? এহাসও গন্ধীর গলা বলল-বা বে কেন খাৎয়াবেন না ? গৌৱী দেখা মন্ধা দেখছিলেন এই খুলী সপ্রতিভ মেয়েটিকে বছই স্নেত করেন ভিনি। মনে কোণার একটা আশাও গুয়ে রেখেছেন। মনে মনেই থাকেনি ড মেয়েকে বলেছেন ও। আর ভক্লার মুগ থেকে সে কথা মীনাক্ষীয়ে পবিবারে কানে বেতে কভক্ষণেরই বা ওয়ান্তা। আডালে মীনাক্ষী रोषि वर्ष ठीहें। अक कामहा क्वरल श्र हैमावधान ऋहार কান এড়িয়ে এমনিতেই বিছেব নামে নানান অজুহাত, ভার ওপ মীনাক্ষীর সাথে তার বিয়ের প্রভাব শুনলে কি জানি, শুক্রা বোধ করি বেটুকু কুধাবার্জা বলত ভাও বন্ধ কর্মব। গৌরী দে-তা চান না। বরং সুহাস খার মীনাক্ষীকে খালাপ করতে দেখ একটা শান্তি পান। এঘন মেয়েকে সূহাস কিছতেই অপছ করতে পারবে না। বুঝে-স্থা নিক না। ছক্ষনের কথা ত মজাই পাছিলেন। হেসে বললেন-এ বলছে কেন খাওয়া ও বগছে কেন খাওয়াবেন না, বেশ মন্ত্র! আর সভ্যি কথাই 🥫 মীনাক্ষী শুৰু শুৰু মিটি থাওয়াতে যাবে কেন? তোর বোনে বিষে, এক বড় একটা শুভ সংবাদ, মীনাক্ষী নিশ্চরই দাবী কর পাবে মিটি থাওয়ার, মীনা, জামি তোমার দলে। জোরে হে^ন **डि**ठेरनम् ।

মারের সাথে সহাসও হাসল। বলল—বেশ কথা, বোদ বিরে, ৩ভ সংবাদ সংক্ত নেই, মিটিমুখ করানর মভই সংগ কৈ মীনাকী দেবীর দিক থেকে ও ত মত ক্লগংবাদ আছে। শিক্তিয়ুগ করাবার মতই ভত সংবাদ।

তথনও ঠিক বুৰে উঠতে পাছে না মীনাকী। ভুকু কুঁচকে মৃত্ হেসে বসল---বুৰতে পাছি না। কি সংবাদ বলুন ত ?

মনে করতে পাছেন না !

ঠোঁট কামড়ে চিস্তার ভাগ কংল—না ধরতে পাচ্ছি না।

গৌরী দেবী চেসে বৃদ্দেন—অত বাধার মধ্যে না বেথে পরিকার করে বলই না বাধু !

— আছে। পরিভার করেই বলি। হার ছ'ছুটো ভাই প্রথম হরে উঁচু লাদে ওঠে, তার কাড়ে মিটি খাওয়ার আবদার আমরা নিশ্চরই করতে পারি। কি বলেন পারি না ?

মীনাকী বিশিষ নিংখাম ফেলে বলগ—তা নিশ্চরই পারেন। সেব্যবস্থাত চবে। কিন্ধ আগের ব্যাপার আগে। আমি বগন জানিষেছি আমারটা মিটে যাক, ভারপর চলুন আপনি নীচে, এ উল্লেক্ষে করু আপ্নার পায়ের গুরা পড়বে।

গোঁৱা দেবী ছোট একটু নিংখাস ফেলে বললেন—এনার খবর ভনে মনটা বছ খারাণ সোহে গেল। বেচারী এত থেটেও— ক্থাটাকে ভাব শেষ করলেন না।

স্থাস মীনাফীব মুখের দিকে তাকিয়ে বসল—ক' সাবজেটে কেস করেছে আপনাব বেনে ?

—তু' সাবস্থেরে।

—कि कि ?

---- হাল, ইংরেছী।

আবেহাতরটো হঠাং সেন বিষয় ও ভারী হ'য়ে উঠল। গৌরী দেবী আবার বললেন—শুকু বলছিল, এনাকী নাকি আব পড়বে না। সভিচুলা কি ৪

মীনাদী বলস—সভিয় মাসীমা, আমরা স্বাই বৃক্তিরে বৃক্তিরে হ্ররাণ হ'রে গেলাম, এমন কি বাবা বললেন, স্কুলে না বেতে চাস, বাড়ীতেই অন্ধ আর ইংবেজীর হুটো মাষ্টার রেখে দি, প্রাইভেট পড়। তাতেও জাপত্তি। আর একবার না করলে ও মেয়েকে 'হাা' করার কার সাধ্যি। বাবাকে বে অত ভরু করে ভবু সোজা জ্ববার, না, আমি আর পড়ব না।

কথার মাঝথানে হঠাং স্মহাস বজে উঠল—সে কি, পড়াওনা ছেড়ে দিয়ে বাড়ীতে বসে করবে কি ?

এনাক্ষীর প্রায়ক উঠে পড়াতে ভারী অস্বোয়ান্তি বোধ করছিল
মীনাক্ষী। বোন ফেল করেছে, লক্ষ্যটা ধেন তারই, প্রান্ত পাণ্টাবার জন্ম স্থানের কথার উত্তরে হেদে বলল—করবে মাধা আর মুণ্ড। তার পর গৌরী দেবীর দিকে তাকিয়ে বলল—তারিধ করে ঠিক হোল মাসীমা ?

গৌরী দেবী বললেন---সবে মেয়ে পছন্দ ক'বে গেল, দেনা-পাওনার কথা কিছুই ঠিক হয়নি, তারিধের এখনই কি ?

মীনাক্ষী আবার কল-কল ক'বে উঠল। ভূক উঁচিরে বলল—কি
চাপা মেরে বাবা! বলে শ্বীর ঝারাপ, ক্লেজ বাব না। আমিও
তাই বিখেদ করে কলেজ গেছি। এলে ত্রীন্তনলাম, 'করাকে আক্
দেখতে এসেছিল। কই মাসীমা, আপনিও ত কিছু বলেননি।
গলার মৃত্ব অনুবোগের সুর মেশাল।

— । আর বলাবলির কি আছে বে, কথাবার্ডা অনেক দিন থেকেই ত চলছে, নে ত জানিসই, আজ ওরা এলে মেরে দেখে গেল। অহানেরই বজু।

এসব কথা কিছু ভাল লাগছিল না অভালের। মনটা লঠাৎ থাগাণ হরে গেছে নানাকীর কথায়। এনাফী পড়া ছেড়ে দেবে ? করার মধ্যে ত মার ঘ্রকরার সাহায্য করা। এমনিভেই হাবে-ভাবে মীনাফীকেই ভাব ছোট বোন বলে ভূল হয়, এব ওপব সংসাবের চাকার মাধা গ্রালে ও-লেগ্র সূচী হোতে আর কভ নিন ? চেলেমামুধ, ছেলেমামুবের মত না থাকলেন।

মীনাকী বলছে—ইয়া, ক্ষ্যাসদা, বহুব নাম কি, দেখতে কেমন ? বলুন না স্ব থুলে। সুখপুড়ী বলে কামি কিছু কানি না।

এ হণার কোন উত্তর না দিরে হঠাৎ চেডার ছেছে উঠে পড়ক সুচাস : পা বাড়িয়ে মীনাক্ষীর থমকানো মুখের দিকে তাকিরে ছেসে বলক—নাম মুখ্য চ্যানিভাঁ। দেখতে নাম্য মতই ক্ষমর ! ভার সব মারের কাছেই শুসুন।

মীনাক্ষীর অন্তমনস্থ চেহারাটার দিকে তাকিছে গেনি দেবী মেছেকে ভাকলেন—শুকু, চা তোগ না ভোর এখনও ? তার পর বঙ্গলেন—সুহাসের ঐ পাগলামি, কখা নেই, বার্লা নেই, হয়ত কোন কথা মনে পড়ে গেছে, সাথে সাথে মুখ গন্তীর, গলা ভারী। তুমি কিছু মনে বোর না মীনাক্ষী!

সভিত্য ক'রে মীনাকী একটু মনাক্রা হ'বেই পড়েছিল। গোড়ী দেবীৰ কথার শুদ্ধ গলাম বলল—না, না, মনে করার কি আছে? আমি যাছি শুনুৰ কাছে, ওপানেই চা থাব। সহাসের সামনের বারাকা নিষ্টেই ওপালে বারাধার। চারের পেরালার ঠু-ঠাং লক কানে আলছে। মুখ ফিরিয়ে একবার শুক্লার দিকে তাকিয়ে আড়াচোপে সহাসের খনের দিকে তাকাল। তক্তপোলটার উপর চিং হয়ে শুনে চোথের উপর আড়াআড়ি ভাবে হাত বেথে কি ভাবছে। কি ভাবছে? মনের প্রশ্নটা মুখেই বেরিয়ে গেল, ম্নুর্জ পুলের সেই মনথারাপটুকু আর নেই।

—কি ভাবছেন গ

ধড়কড় করে উঠে বসল সভাস। ব্যাব-বাক্ল গলার বলল
— ভুমুন, শুমুন, এই মুহুর্ত্তে আপনাকেই ডাকব ভাবছিলাম।
ভাব সভাসের সেই গলার খবে চোলেব ভাবায় মন্ত্রুম্বর দাড়িয়ে পড়ল মীনাকী। সেকে গুখানেক খেন চেতনাইন দ্যে
পড়েছিল তারপ্রেই নিজেকে ষভটা সভব দম্য করে ভুলতে
চেন্তা করল। বুকের উথাল-পাখাল চেউকে দম্য করে মুখ বাভিয়ে
একটু হাসির ছোয়া ভূলে বলল—হুঠাং কি ব্যাপার বলুন ত ? একটা
নিজ্ফান-পরে সুগাল তাকেই ডাকবে ভাবছিল। চেলাভেও। সেও
ইতিমধ্যে চুকে পড়েছে। তবে কি অব্যক্ত কথা সাজ ব্যক্ত করে
সুহাস ? বুকের মুকপুকানি কিছুকেই থামতে চার না। তেরু এলব
ক্ষেত্রে জোর করেই খাভাবিক হতে হয়। কাপা গুগার তাই মীনাকী
ক্রটা হাবা ভাবাই ব্যবহার ক্রল—ক্ষামাকে আব্যাহ হুঠাও ডাকবার
ছোয়োজন হোল কেন ?

আর এ মুদ্রে স্তিটে প্রাদের কোন কাগুজান ছিল না। নইলে নীচের তলার একটা অপথিচিত যুবতী সহজে তার এই বেংাড়া রয়দ সংস্থেও ও কি করে বলতে পারল—বেণুন, আপনার ছোট। ञ्चरामा ३ रवलकुरलत छाता

বিমল জার বিনর মধুপুরে বেড়াতে এসেছে। সকালে ভারা গেল ভূতোদার বাড়ী। গিয়ে দ্যাথে ভূতোদা পট্ট করে বাগানে যত বেলসুসের চারা উপড়ে দেলছেন আর নিজের মনেই গজগজ করছেন—

"তিনমাস ধরে জল বিভিছ আর মাটি কোপাছি কিছ ছুলের নাম নেই। দরকার দেই আমার এমন গাছে। বিমল হস্ত দত্তে গৌডে এল—-

"बाहा हा कत्रहन कि कूछाना।"

ভূতোদা : "করব দা তোকি ?"

বিনয় ঃ দোব তো আপনারই। এ শব্দ মাটিতে কি
তথু জল দিলেই গাছ বাড়ে ?
ভূতোলা ঃ তার মানে !
বিনয় ঃ তার মানে যাটিতে

লার মেলান দেখবেন গাছ .
চড়চড় করে বাড়বে। এথানকার মাটিতে রসক**ন**





DI PI A-MS2 BG

জুভোদা: যা: যা: তোদের কাছে পৃষ্টি মানে হতে গাছের জন্যে সার আর মাসুষের কন্যে 'ডালডা'।

বিনয়: নিশ্চই—জানেন আজ লক লক পরিবার নিয়মিত 'ডালডা' ব্যবহার করছে ?

ভূতাদা: তাই বলেই কি আনার মানতে হবে বে 'ডালড়া' প্রাকৃতিক থাবারের মন্তনই ভাল ?

বিনয়: নিশ্চই ! আপনাকে এবং আপনার মত আর স্বাইকে একদিন মানতেই হবে এ কথা । তবে কিছু সময় লাগবে। পুরনো বিধাস ভাসতে একটু সময় লাগে। আর আ্লাদের রামায় বনম্পতির ব্যবহার তো সেই দিন আরম্ভ হোল।

বিমল: 'ভালডা' মাত্র ৩২ বছর হোল আমাদের বান্ধারে এসেছে। অনেকের গারণা যে তৈরী করা থাবার সবসময় যেগব থাবার স্বাভাবিকভাবে পাওয়া যায় তার তুলনায় অনেক কম পুষ্টিকর।

ভূতোদা : কিন্তু সে ধারণা কি সন্ত্যি নয় ?

বিমশ: মোটেই নয়। বাজারে সবচেয়ে জনপ্রিয় বনস্পতি 'ডালডার' কথাই ধরুন না। এ কথা সত্যি যে 'ডালডা' তৈরী হয় বিশুদ্ধ ভেষজ তেশ পেকে— থে কেউ গিয়ে দেখতে পারে 'ডালডা' কি ভাবে ভৈরী হয়।

বিনয়: আর এ কথাও সত্যি বে 'ডালডায়' যে পরিমাণ শরীরের পক্ষে অপরিহার্য্য ভিটামিন 'এ' এবং 'ডি' যোগ করা হয় তা অধিকাংশ সাধারণ 'প্রাকৃতিক' বাদ্যের সমান বা বেশীও।

ভূতোদা : দাঁড়াও, দাঁড়াও । ব্যাপারটা আরও থোলসা করে বল। 'ডালডা' তৈরী করার সময় খাদ্যগুণ কি একেবারেই নষ্ট হয় না বলতে চাও।

বিনয়: একটুও না। পুষ্টি বিধারদের। প্রমাণ করেছেন যেসব তেল থেকে 'ডালডা' তৈরী হয় সেগুলিতে তৈরীর সময়েও শক্তিদায়ী গুণগুলি পুরোপুরি বজায় থাকে। মনে রাথবেন 'ডালডা' তৈরী হয় কড়া সরকারী নির্দেশ অমুযায়ী। ভারত সরকারের নির্দুক্ত তদত্ত ফুমিট বনম্পতি ভালভাবে পরথ করে দেখেছেন। তাঁরা দেখেছেন খে বনস্পতি ভুরু যে শরীরের পক্ষে কড়িকর নয় তাই না বনস্পতি শরীরের পক্ষে ভাল।

ভূতোদা : আছে। আছে।, সে তো ব্যলাম। কিন্তু আনার বাড়ীতে যে 'ডালডা' দিরে রান্নাবারা হয় সেউাড় যে বিশুদ্ধ আর প্তিকর হবে তার কি নানে আছে।

বিমল: আপনি যেখানেই থাকুন না 'ডালডা' আপনি কিনতে পাবেন একখাত শীলকরা টিনে যাতে ভেজাল বা ছোঁয়াডের কোন খাশফা থাকেনা।

বিলয় ঃ তাছাড়া 'ডালডা' তৈরীর সময় হাত দিয়ে ছোঁওয়া হয় লা। 'ডালডা'র পেছনে রয়েছে তারতবর্ষে স্প্রতিটিত একটি কোম্পানীর অসীকার যে 'ডালডা'র সম্বন্ধে যা কিছু বলা হয় তার সবই সত্যি—যে 'ডালডা' একটি উৎক্রপ্ত রালার স্বেহপনার্থ যাতে যোগ করা হয় স্বান্থানায়ী ভিটামিন।

বিনলঃ এর পরেও কি ভুল ধারণা পাকতে পারে ?
ভূতোলাঃ কে বলেছে আনার ভূল ধারণা ছিল ?
আমার বাড়ীর সব রান্নাবানাই 'ডালডার' হয়। ওরে
হরি আজ বাজার থেকে বেলফুলের চারাওলোর জন্যে
একট সার আলিস তো।



DLIPL B-X52 BG

বানকে একবাৰ আমাৰ কাছে পাঠিবে দেবেন। মানে, এই একটু বুৰিবে দেখতাম, আর বনি বালী হব আমি নিজে বন্ধ নিরে পড়িবে ওকে বেমন কোবে কোক প্রমোশন পাইবে দিতামই দিতাম। একটা উদ্দৃশ্যের বোঁকে নিজেকে এমনি ভাবে উন্মুক্ত কোবে দিরে ভাবী শক্ষায় পড়ে গেল দে। ছি, ছি, তার এই বর্গ্তা মনোভাবকে বে কেউ একটা মানে হিলেবেই নেবে। আম্তা-আমতা গলার ভাবী বিজ্ঞত করে বলল—মানে, ছেলেমান্তুম, এ বরুনে লেখাণড়া ছেড়ে ক্যবেই বা কি, তাই একটু বুনিবে দেখতাম, এ কথাটুকু বে আবো বেমানান হোল, উপলব্ধি করে একেবারে ভীবণ অপ্রত্তে পড়ে গেল। সভািই ত বাশ, মা, দিদি বেখানে হার মেনে গেল, দেখানে দে একজন অপরিচিত হবে কি বোঝাবে গ

খেষে খেষে মীনাকী উচ্চাবণ কণ্ঠল—আপনি এনাকে পড়াবেন ? একটা চোধবোকা অজকাবকে বেন আন্তে আন্তে চুঁতে পাবছে মীনাকী। কিছু কি আক্ষর, এ-ও কি সন্তব ? তথু মাত্র দৃষ্টি চুঁইবে ছটো পরস্পাব-বিবোধী মনের এমনি বোগাবোগ। এনাকীর মনটাকে একটু একটু বেন ব্রতে পারছিল সে। একটা সহজ সরল মেবেলী মনকে ব্রতে খুব কঠকর নম্ম অভ একটি মেবের কাছে। কিছু সুহাস ? এ ভাব ধারণার অতীত ছিল, আর ভাইত সে নিজেকে সুহাসের সঙ্গে জড়িরে কভ মধুব করনা কভ বলিন খথে বিভোর হরেছিল। ইছন বোগাছিল তরা।

একভোড়া দৃষ্টির সামনে এনাকী বে নিজেকে কত পরিবর্তিত করে কেলছে, সব লক্ষ্য করেছে সে। মনে মনে হেসেছে। মেরেদের এই হঠাৎ বড় হওয়ার উপলমিটা বেন লজ্জাবতী লতার মত। একটুতেই বুলে, কুঁকড়ে আসে। অমন তুর্দান্ত মেরেটা সহাদের দৃষ্টির সামনে বেন এতটুকু হরে বায়। ঝুঁকে-পড়া সহাদের চোথে কত সমর তিরস্কার, কত সমর কোতুক, কত সময় অমুবোগ, অমুরোধ, কোন সময় বা শ্রেক মলা উপভোগ করা সব লক্ষ্যে এসেছে তার এনাকীর দৃষ্টি অমুনরণ করেই। কিছু কৈ, কোন দিন সে চোথে অমুরাগ দেখেছে বলে ত স্মরণ হজেনা ? কিংবা হয়ত তারই চোথের ভুল, বাকে সে অমুবোগ, অমুরোধ বলে ভেবেছে, অমুরাগে তাই ভবে উঠেছিল। তবু বার ভবে সেই বুবেছে, অলে কি এর বুমবে, তারই মত অল মানে করে ভুল বুববে।

শ্বনেককণ পরে কথাটাকে শেষ করল মীনাক্ষী—দেখুন ব্রিরে, শামরা ত হার মেনে গোলাম। বাজী যদি করতে পাবেন, সতিটে একটা অসাধ্য সাধন করবেন। আড়চোথে অহাসের লজ্জিত বিব্রত চেহারাটার দিকে তাকিয়ে ঘর ছেড়ে বাইবে সিঁড়ি দিয়ে নামতে নামতে নিজের মনকে ছুঁতে চাইল মীনাক্ষী, কিছ কোন কিছুই উপলব্ধি করতে পারছে না। ছঃখ না, আনন্দ না আশাতক কিছুই নয়, গুধু যেন বিশক্ষোড়া একটা প্রকাণ্ড বিশ্বয়ে হতবাক হয়ে গেছে।

ও-ঘরে এনাকী কাপছ কুঁচিরে রাধছিল আলনার। মলিনা দেবী স্থহান।
বারাকার বদে ছোট মেরে মুদ্ধিকে জামা পরিরে দিচ্ছিলেন, মীনাকে ম
দেখে বললেন—কলেজ থেকে এনেই অথনি ওপরে ছুটেছিল। নে, ছাই, র
মুখ-ভাত বুরে নে, এনা চা করে দিক। সাথে

মীনা সে কথার কোন উত্তর না দিয়ে মারের গা খেঁবে এসে বসল। আছুরে গলার বলল—ছুমি আজকাল এনাকে বেশি ভালবাসত্ মা । কেন ? লক্ষ্মী মেরে বলে ? প্রথম সভান মীনাক্ষ্মীর উপর মা বাব। উভ্তরেরই টানটা বেলি । বড় হরেও ভাই আদরে আকারে ভোট ভাইবোনদের সে ছাড়িরে বার।

মেরের কথার হেঙে কেললেন মনিনা দেবী। মীনার দিকে তাকিরে বললেন—সত্যি, ছোটবেলার তুই ছিলি শান্ত-শিষ্ট, এনা একটা ডাকাত। বড় হোরে ছন্তনেই উল্টো করে গেছিল। ইবত বড় হন্তিল তার চক্ষসতা আবো বাড়ছে আর এনা ভোর ছোটবেলার বভাবটা পাছে। মারের কথার হেঙে গড়িরে পড়ল মীনাক্ষী।—আছা মা, আমি ত ছোটবেলার বোকা ছিলুম কিছু ব্রভ্ম না, তাই চ্পচাণ থাকভ্ম, বড় বত হোতে থাকলাম একটু একটু বৃদ্ধি পাকতে আরম্ভ করল, চক্ষলতাও বাড়ল। কিছু তোমার ঐ বৃদ্ধিতে পরিপুক ডাকাত মেয়েটা হঠাৎ এমন শান্ত-শিষ্ট হরে উঠল কেন বলত ?

ছোট মেরের মুখে পাউডারের পাক বুলোতে বুলোতে মিনা দেবী বললেন—তোর বত পাগলামি কথা ! বড় হওরার সাথে সাথে ও নিজে থেকেই হর, ছোট মেরেকে ছেড়ে দিরে উঠলেন এবার । মীনাকী ঝলার দিয়ে উঠল—ছাই জান তুমি । তাহোলে ত জামার জারো শাস্ত-শিষ্ট জারো লক্ষ্মী হওরা উচিত ছিল, হরেছি ? তারপর উঠে গিরে এনার হাত থেকে কাপড় কেড়ে নিরে টানতে টানতে তাকে বারালার নিরে এলো। মা'র দিকে ফিরে বলল—এনাকে জিজেল কর না। হঠাং ও তার শাস্ত-শিষ্ট মেরে হয়ে উঠল কেন ?

এনা থক্তমত গলায় বদল —বাবে, এ দব কি হচ্ছে ? ছাড় কাপড় ছাড়, কাজ করতে দেবে না ?

রাখ তোর কান্ধ। হঠাং শ্বত শাস্ত-শিষ্ট লেক্ষবিশিষ্ট হয়ে উঠলি কেন তাই বল ভাগে ?

ভূদ্ধ কুঁতকে এনাকী বলস—এ আবার একটা প্রশ্ন কি ? এব কোন উত্তব আছে? থাকলে মা যা বলেছেন ঐ উত্তর। স্বাই ত এক ছাঁচে ঢালা নয়। সাধারণ মেয়ের। বড় হওয়ার সাবে সাধে নিজে থেকেই সংযত হয়।

তেড়ে উঠল মীনাক্ষী—তার মানে আমি অসংৰত ? মাঝগানে মলিনা দেবী বাধা দিলেন—কি পাগলামি আরভ করেছিস বলত ? গুধু-গুধু ঝগড়া করছিস মীনা, হয়েছে কি তোর ?

বহস্তরা গলার মীনাকী বলে উঠল—ভূঁ ভূঁ, বাবা আমার চোথকে কাঁকি দিবি তই ?

মলিনা দেবী এবার উঠে গাঁড়ালেন, পা বাড়িয়ে বললেন—
সর, বাই, কলেজ থেকে এদে হাত-মুথ ধুয়ে চা-খাবার না থেরে
বাকে বকতে আরম্ভ করেছিন! সর দেখি, চায়ের জল চাপিরে
আদি। মায়ের হাত ধরে কের বসিবে দিল মীনাক্ষী। স্পষ্ট বরে
বলন—তোমার দিতি মেরেকে সন্মী করেছে ঐ ওপরতলার
মহাস।

মলিনা দেবী এবার হেদে ফেললেন—কি বে মাথারুত্ বকিস ছাই, কোন কথার বলি কোন যাত্রে থাকে! তাছাড়া ওদের সাথে কি বিচ্ছিরী ব্যবহার করেছে এনা, চিন্তা করলে এখনো লক্ষার আমার মাথা কাটা বার।

এবার হেলে গড়িরে পড়ল মীনান্দী—সভ্যি মা, সভ্যি!

আছা এনাকেই জিজেদ কর। ভারপর এনার দিকে ভাকিরে । চোর পাকিয়ে বুলল—এই এনা, মিথা যদবি মা।

এতকণ হাতের কাজ বন্ধ করে দিদির কথাই ওনছিল এমাকী।
এবার মারের কাছ বেঁলে এনে বসলা। সহজ্ব সোজা পথই জানে
সে। সতিয়ই ত এ বিবরে তার নিজের ত কোন সন্দেহ নেই ?
তবে আর বসতে বাধা কি ? কিছু আন্চর্যা! দিদিও সক্ষ্য
করে এসেছে বরাষর। হেসে বসসস্পত্যি মা, ভারী আন্চর্যা!
ভদ্যসোক সর্বনা একজোড়া দৃষ্টি দিরে বেন আমার শাসন করছেন।
ইদানীং বগনই ঝগড়াঝাঁটি করে কিংবা অকারণে চেঁচামেটি করে,
তপ্ দিপুদের মারধর করেছি হঠাৎ ওপর দিকে চোখ পড়ে, সাথে
সাথে ভারী লক্ষ্য পেরে গেছি মা! ছেলেটি বেন চোখ দিরে
তিরকার করছে। অনেক সমর বেরাও দেখেছি চোখে। অছুত
মা, চোখ দিরে কেউ বেরা ছোটাতে পারে?

মলিনা দেবী এনাক্ষীর আন্গা চুদগুলোকে একটা উঁচু করে খোঁপা বেঁধে দিলেন। হেদে বললেন—একটা কথা মনে পড়ে গোল।

তারপর মীনাক্ষীর দিকে তাকিরে বললেন—তোর ছেলেবেলার কথা।

থনাকী মীনাকী চোথ নাচিবে বসল-ক্ৰি মা কি? মার মুখে তাদের ছোটবেলার কথা শুনতে কি বে আনল!

মলিনা দেবী • বললেন—মীনা, তুই তথন বছর পাঁচেকের।
একটা কাচের গ্লাস ভেঙ্গে কাচুমাচু মুখে দাঁড়িয়েছিলি। উনি
চোধ গরম ক'বে তাকাতেই আমার কাছে কাঁদতে কাঁদতে নালিশ
জানালি মা, বাবা আমাকে মেরেছে। উনি ওদিক থেকে আদর
ক'বে বললেন কি দিয়ে মেবেছি মা মণি তোমাকে ?

মীনার দিকে তাকিরে হেসে বললেন—তুই বললি, চোধ দিয়ে মেরেছ ত তুমি আমাকে।

উচ্ছ্যপিত হোরে হেসে উঠিল স্বাই। হাসি থামিয়ে মীনাক্ষী এক সময় ছাড়া গলায় বলল—হাঁ। ভাল কথা, ভূলেই গিয়েছিলাম। এনা, তোকে একবার ওপরতলার সূহাসদ। ডেকেছিল, গুনে আসিস।

সন্ধ্যে হবে গেছে। বারাশার অহাস ডেক-চেরারটার গা এদিরে পড়ে ছিল। কাল শুরার মুথে একটা খবর শুনে বিমরে একেবারে হতবাক হবে গেছে সে। নিজের মন আর দৃষ্টি ছটোকেই বেন ছুঁতে পারছে না। মন বা চার দৃষ্টিতে ঠিক তার উপ্টোটাই ফুটে উঠতে পারে? সে কি করে সপ্তর? শুরা বলেছে এনাক্ষা নাকি তার চোথে তিরন্ধার ফুটে উঠতে দেখেছে, ঘুণা করতে দেখেছে, ভাই সে তার পূর্ব-স্থভাব আন্তে আন্তে বদলাতে চেটা করেছে। বলেছে নাকি একজাড়া দৃষ্টি বদি অহরহ এমনি অহসরণ করতে খাকে কি রক্ম অবোয়ান্তি লাগে বলুন ত শুকুদি'! বুঝি আণনার দাদা আমার ভালর জন্ম অমনি করছেন, তবে সেটা অনেক দেবিতে ব্রেছি আগে ত কত গালাগালি করেছি আপনার দাদাকে।" মনে মনে হাসল স্থহাস। কি সব অবচেতন মন-টন আছে, তাইতেই বৈথ করি থারাপটা আরার্গই লেগেছে। মনে বখন হরেছে এইতেই ওকে মানার, অবচেতন মন হরত তথন ব্লছে না, ওকে ভাল বিকেই টানভে হবে। আর তাইতেই চোথের ভাবার সেই ছারাই

পড়েছে। কি সব মনস্থ বাপাব। ও সব ছেড়ে দেওইছি ভাল। তবে এটা ঠিক, ওর ভাল ভাবতে নিজের ভাল লাগে। আর তাইতেই ত এনাক্ষীর লেখাপড়া ছেড়ে দেওরার সংবাদে শভটা বিচলিত হরে পড়েছিল।

কানে এলো ভতি মৃত্ গলা—ওকুদি', ভাপনার **লালা নাকি** ভাষার ডেকেছেন ? কেন ?

গুকুর অবাক গলা গুনল—সে কি ? দাদা গুৰু গুৰু ভোকে ভাৰতে বাবে কেন ?

একটা হাদির ঝলক কানে এলো স্থহাদের---- আমিও ত ডাই বলি, হঠাৎ কিলের তলব ?

বিড়-বিড় গুনল স্থহাস—নালা ত ঘোটে তোকে চেনেই না, কি জানি, আয় এই বারান্দায়ই আছে।

চোথ বৃদ্ধে মনে মনে ভারী আনন্দ উপলব্ধি করছিল। ভঙ্গা বলল—দানা, ভূমি নাকি এনাকে ভেকে পাঠিয়েছ ?

হু । এগেছে নাকি ।

এনাকী এক পা এগিরে এসে সামনের চেয়ারটার হাতলে হাত রাখল—হাঁ। আমি এসেছি। কোবাও আড়ইতা কিংবা আড়াবিক যুবতী-সলভ লজ্জা দেখল না সহাস এনাকীর কথার কিংবা চেহারার। এ মেরেই কি ইলানীং চোখে চোখ ভুলে পর্যন্ত তাকাতে পারত না ? নিজের ডেকচেয়ারটা পেছনে ঠেলে সামনের চেয়ারটা



দেখিৰে বান—বোগ। ভাৰণৰ ওপ্লাৰ অধাক চাউনিৰ দিকে ভাকিৰে ভৱন গলাৰ বলন—বাড়ীতে এক জন মাজসণ্য অভিধি এলো, এক কাপ চা ৰাওৱাৰি মা ?

এনাক্ষী হাত তুলে বাবা দিল—না, মা, গুকুদি'! চা আমি বেশি বাই না। তার পর সোলা সহাসের মুখের দিকে চোব রেখে—কিছ আমি কিছুতেই বুবতে পাছি না, কেন আমার ডেকেছিলেন। বলছি। লেখাপড়া ছেডে দিছে কেন?

ভুনা তথনও গাঁড়িয়ে ছিল। আকর্ব্য হ'বে ভাবছিল, ছ'বল অপরিচিত মানুষ ঠিক এমনি ভাবে, এমনি ভঙ্গিতে, এমনি বিষয়ে কি ক'বে কথা বলতে পারে! বে জানে, নর ত বে কেউ ওদের চোধ-মুধ দেখে কিছুতেই বিশেস করবে না ওরা আকই প্রথম মুধোমুধী হোল। বলতে গেলে প্রথম পরিচর। আচমকা চারের কবাটা মনে হোল। ঠিক। তা ছাড়া দাদাটা এনাক্ষীর মুধের দিকে এমন ভাবে ভাকিরে আছে, কেমন ভানি অবোয়ান্তি লাগতে লাগল। খুরে পা বাড়িয়ে বলল—তথন থেকে গাঁড়িয়ে কথা বলছ, বোস না।

বসার ইচ্ছে থাকলে কারো অন্ধ্রাবের অপেকা না করে নিজেই বসত সে। আর না বসবে বলি, তবে কারো কথাতেই নয়। সেটুকু বুবে হাসস কুহাস। স্লিগ্ধ হেসে বসল—লেখাপড়া ছাড়ছ কেন ?

আর শক্ষ করে এনাকীও হেসে উঠন—ভারী আকর্ব্য ত! আমার লেখাপড়া নিরে আপনি দেখছি ভারী চিভিত! তা ছাড়া দেখলেন তঃ একই ফ্লান্সে পড়ে আছি তিন বছর। ভাল লাগে?

স্থাস এবার অভিভাবকের সুর টেনে আনল গলায়—তাতে কি হরেছে। সবার মেধা ত এক নয়। পড়। পড়া ছেড় না। টোটের কোণার হাসিটা তথনও মিলোয়নি, এনাকী চোথ নামিরে মেবের দিকে তাকাল—বাবা, মা, দিদিদের মত আপনিও নিশ্চয়ই আমার ভাল চাইছেন, কিছ তাদের বেমন নিরাশ করেছি, আপনাকেও তেমনি হতাশ করতে হচ্ছে। চেঠা ত করলাম, ও হবার নয়। ও পাট তুলেই দিলাম।

চেষার ছেড়ে উঠে পড়ল অহাস—আমার কথা লোন এনা। এত বৃদ্ধিমতী মেরে হবে এটুকু বোঝ না, আজকালকার দিনে লেখাপড়াটা কত দরকারী? লক্ষীটি। পড়া ছেড় না। আমি তোমার পড়াব। আর তথু পড়ান নর, গ্যারাণ্টী দিরে পাল করাবই করাব। রাধবে আমার মাঠার? রাধবে ?

থমন লক্ষ্মীটি ? হঠাৎ কেমন বুক ধড়ফড় করে স্থহাসের চোধেমুখে ভাবার কোনধানেই জার সংবত ভাব দেখছিল না দে। ছটো
মিনতি-মাধান চোধ নিয়ে যেন ডিফুকের মত হাত পেতে গাঁড়িরেছে।
ও ছটো চোধের দিকে জাবার চোধ তুলে ভাকানর সাধ্যি নেই জার
থনাক্ষীর। বুকের উধাল-পাধাল টেউকে কঠে দমন করল সে,
জক্ট মরে ওরু বলতে পারল—জামি এবার বাই।

ৰুত্তে চোধেৰ ঘূটি পাণ্টে গোল স্বহাসের। তরাট গালার বলল— মা বাবে না। আমার কথার উত্তর দিয়ে বাও।

তার পর হঠাৎ এমাকীর দিকে তাকিরে মমভার ভরে উঠল মন।
বেচারী মুধ তুলে ভাকাতে পর্বস্ত পাছে না, ধর-ধর কাঁপা হাতটা
পিঠের দিকে ছড়িরে দিরে আঁচলটা টেনে আনল সামনে। এক মুহূর্ড
চোধ তুলেই নামিরে নিল, তার পর আবছা স্বরে বলল—আমি ভেবে
দেখি। একটু আগেও সহজ্ঞ, স্বজ্ঞ্জ ছিল। ঝোঁকের মাধার
আবেগের তাড়নার অমন করে নিজেকে প্রকাশ করে ফ্লো মোটেই
উচিত হরনি। এখন একটা বাণবিদ্ধা হিংগার মন্তই ছটফট করছে
এনাকী। ভার চোধের আড়ান হোতে পারলে বেন বাঁচে।

মারা হোল স্মহাসের। হেসে বলল—আচ্ছা বেল, ভেবেই বোল। কিছ শেব মুহুর্ত্তে নিচ্ছেকে ধরে রাধতে পারল না।

আন্তে ডাকল—এনা! এনাকী থমকে গাঁড়িরে পড়েছে। আবার কি বলবে সুহান ? এর পরে ও কি আর বলবে ? আর বেশি শুনতে তার বে গা কাঁপছে, চোথ ঠেলে কারা আসছে। না, না, আর দে শুনতে চার না। মত ত সে আনিরেছে। আবার কি ? সে কি তার চোথের ভাষার আজো তার মনকে বোঝেনি ?

কোন কথা নয়, হুহাস এগিয়ে এসে এবার এনাক্ষীর ছটো মুঠি চেপে ধরল। আবেগ-কাপা গলায় বলল—নিজের মনকে ছুঁয়েছ থনা? এক কাল আমার চোখ দিয়ে ভূমি নিজেকে চিনেছ, এবার ভোমার চোথ দিয়ে আমায় চিনে নাও।

হঠাৎ পারের শব্দে ত্জনেই চমকে উঠেছে। স্থহাস চমকে হাস্ত ছেড়ে দিরেছে। পর্দার ওপাশে ওক্লা চারের কাপ নিয়ে এসে দাঁড়িয়েছে। এনাকী একটা বড়ের মতই পাশ কাটিয়ে ছুটে গেল। স্থহাস বলছে—-আবে চা-টা খেলে বাও।

বিভ্নাকী ততকলে উবাও! অনমা এ প্রাণবভাকে কি দিয়ে ধরবে এনাকী? বড়ের দাপটে একটা কন্ধ ঘরের সব বিছু বেন উলোট-পালোট ক'বে দিয়ে গিয়েছে 'তার! ভাবা নর, ভঙ্গি নয়, গুরু মাত্র দৃষ্টি দিয়ে একজন তাকে তার মনের মত তৈরী ক'বে তারপর ভিক্ষুকের দীনতা নিয়ে এসে দাঁড়িয়েছে। সে কি জানে না এনাকী তারই উপযুক্ত হোতে চেষ্টা করেছে এত কাল? আকর্যা! এনাকী নিজে কি জানত? আজ এ মুহুর্ত্তের আগে? না জানত না। না কি মনে মনে জানত নিজেকে, চিনত। কে জানে! এখন সে চিনেছে, এখন বে জেনেছে সে ত মিখ্যে নয়। একটা রজীন প্রভাগতির মতই বেন উড়তে উড়তে এসে দাঁড়াল রায়াল্বের ছ্রোরে। ছ' হাত ছ' দরজার কাঠে রেখে কেমন লজ্জা-লজ্জা সূরে বলল—না মা! লেখাপড়া বাদ দেওয়াটা কোন কাজের কথা নয়। চেষ্টা করতে দোব কি? কাল থেকে স্কুলেই বাই। পড়াশোনাতে লক্ষা কি মা!

"লোকে বলে, এই ত ছমিরা। কিছ এই কি যুক্তি। পৃথিবী কি শুধু অভীতের জন্ত।
মান্ন্ৰ কি কেবল তাহার প্রাতন সংখ্যার নইরা অচল হইরা থাকিবে। নৃতন
কিছু কি সে কলনা করিবে না। উন্নতি করা কি তাহার শেব হইরা গেছে।
মাহা বিগত তাহা মৃত, কেবল তাহারই ইছা, তাহারই বিধান মান্নবের সকল
ভবিব্যৎ, সকল জীবন সকল বড় হওরার হার কছ কবিরা কিরা চিরকাল
ব্যিরা প্রাতৃত্ব করিতে থাকিবে। শিল্পবংচল্ল।

একটু সানলাইটেই অনেক জামাকাপড় কাচা যায়

- प्रानलाश्रेटित पाणितिक रक्तिगरे वत कातप





[Osamu Dazai's "The Setting Sun"-এর অনুবাদ]
প্রথম অধ্যায়

সাপ

স্কৃট কাতবোজি কানে এল। এই তো মা ধাৰাব খবে বদে স্প থাছিলেন, এনই মধ্যে কি হ'ল আবাব ? স্পে কিছু পড়েছে ভেবে জিজেন কবলাম—চূল ?

না, বলে মা নির্বিকার ভাবে আর এক চামচ ত্প মুখে দিলেন। দেটুকু শেব হ'লে ঘাড় কাং কাবে রাল্লাব্যের জানালার ভেতর দিরে বাইবে চেরী গাছটার দিকে একদৃষ্টে চেরে রইলেন এবং ঐ অবস্থার আরও এক চামচ ত্প ঠোটের কাঁকে চালান করে দিলেন। 'মহিলা-পত্রিকা'র বহুবর্ণিত ত্প বাওয়ার পদ্ধতি হ'তে সম্পূর্ণ ভিদ্ধ বে প্রথার মা ত্প খান, তাকে পাখীর ডানা ঝাপটানোর সঙ্গে তুলনা করলে ভূল হবে না।

আমার ছোট ভাই নাওলি একদিন বডের মাধার বলেছিল—
নামের সঙ্গে ধেতাব লোড়া থাকলেই কিছু আর অভিনাত হওৱা
যার না। প্রকৃতিদত্ত একথানি মাত্র সংজ্ঞা নিরেও বহু লোক
যথেষ্ট মার্কিচ হর, আবার আমাদের মত অনেকে থেতাবমাত্র সম্বল
করে চণ্ডালেরও অধম বনে গেছি। বেমন ধর ইরাদীমাকে ওর
ইলুলের এক সহপাঠী কাউট) দেখে রাভার বে কোন দালালের

চেরেও বেশী অলীল লাগে কি না ? হতভাগা তাঁর কোন আত্মীরের বিরেতে মার্কিনী ভিনার জ্যাকেট পরে এসেছিল ! পোষাকটার বিদি বা কোন অর্থ পাওরা বার, কিছ খাবার টেবিলে দে বেভাবে ভারী ভারী শব্দের ঘাঁধা তৈরী করে বক্তভা চালালো, ভাতে আমার রীতিমত গা ঘূলিরে উঠছিল। এই জাতীর সন্তা বাহাছ বির সঙ্গে সংস্কৃতির কোন সম্পর্ক নেই। ইউনিভারসিটি খিরে বেমন উচ্চ শ্রেণীর নিবাসেঁর ছড়াছড়ি, অভিনাত বসতে তেমনি "উচ্চদরের ভিথারীর" দলকে বোঝার। বথার্থ নীল রক্ত বাদের গারে আছে, ভারা ইয়াসীমার মত হামবড়াই করে না। আমাদের পরিবারে একমাত্র মা হলেন থাঁটি সোনা। তাঁর মধ্যে একটা কিছু আছে, বা আমাদের নাগালের বাইরে।

তুপ থাওৱার ব্যাপারটাই ধরা বাক্ না কেন ? আমরা শিথেছি প্লেটের ওপর ঈবং বাঁকে, চামচটাকে কাং করে স্পে ভ্রিছে মুখে তুলতে। মা কিছ মাধা খাড়া রেখে, গোলা হয়ে বলে বাঁ হাতের আকুদণ্ডলি টেবিলে ভর দিরে প্লেটের দিকে না ভাকিষেই সুণ থান। এত জ্ৰুত ও পৰিচ্ছন্ন ভাবে মা চামচে স্থপ ভোলেন বে, পাখীর ঠোটের সঙ্গে দিব্যি তার তুলনা চলে। চামচটাকে शूर्वत बाड़ा बाड़ि क्रत बानलगरह हिंग्डित ज्लाब छत्रन भेगार्व हिस्क চালিয়ে দেন। তারপর চাবিদিকে আনমনা দৃষ্টি বুলিয়ে পাখীর ডানা ঝাপটানোর মন্ত চামচটাকে ফট-ফট করে ঝেড়ে নেন। আশ্চর্য্যের কধা এই বে, এক কোঁটা স্পও বাইবে পড়ে না ;ু চুমুক দেওয়ার শব্দ তো হ্রই না, এমন কি প্লেটের ওপর চামচ নামিয়ে রাধার শব্দও হয় না। হ্রত তথাক্ষিত ভ্রসমাকের নির্দিষ্ট চাল-এর সঙ্গে মারের ত্প থাওৱার ধরণটুকু মেলে না, কিছ আমার কাছে এর মূল্য কম নম। এটুকুই বেন সবচেয়ে থাটি মনে হয়। বাস্তবিক প্লেটের ওপর বুঁকে পড়ে থাওৱার চেরে মারের মৃত গোন্ধা বলে খেলে সুপটাতে বেন অনেক বেশী স্থাদ পাওৱা যায়। কিন্তু নাওজির ভাষার উচুদরের किथावी इक्षाव करून मारवय मछ जनावारम स्न बाक्षा जामाव स्रव ওঠেনা। ভদ্র সমাজের চলতি বেওয়ার মত গোমড়া মুব প্লেটের ওপর বৃ কিরেই খাই।

সাধারণতঃ টেবিলি-ভক্ততা বলতে বা বোঝার, তথু স্পুপ কেন, বাবতীর আহার্য্যের প্রতি মায়ের ভলীটাই তার থেকে আলাদা। মাসে পাতে পড়ার সঙ্গে সঙ্গে ভূবি-কাঁটার সাহাব্যে ভোট ছোট টুকরো করে কেটে নেন. তারপর কাঁটাটিকে ডান হাতে নিরে খুলি মনে একটির পর একটি টুকরোর সহাবহার করেন। আবার আমরা বধন লব্দ না করে মুবগীর হাড় থেকে মাসে ছাড়াতে হিম্নিম্ থাছি, ততক্ষণে মা দিব্যি নির্কিকার ভাবে হাঙটি হাতে ভূলে নিয়ে মাসেতে কামড় বসান। এ ধরণের অভব্য আচরণ কেবল বে ভাল লাগে তা নর, কেমন বেন প্রীতির উদ্রেক করে। নির্জেক্ষাল পদার্থ অক্তরকম হতে বাধ্য।

আমি অনেক সমরে ভেবেছি বে, আসুল দিয়ে থেলে থাবারের বাদ বেশী ভাল লাগবে, কিছ খাই না, কারণ আমার মন্ত উঁচুদরের ভিথারী মারের নকল করতে গেলে আসল ভিথারীর মত দেখাবে।

আমার ভাই নাওলি বলে, মারের সঙ্গে আমাদের কোন
তুলনাই হর না। মাঝে মাঝে নকল করতে গিরে নাকাল হয়েছি:
একথাও ঠিক। একবার শরৎকালে আমাদের নিশিকাতা স্থাটের
বাড়ীতে অপূর্ব জ্যোৎসা রাভে মা আর আধি বালানের মংব্য

পূত্রপাড়ের আটচালার বসে টাবের শোভা দেওছিলার। হঠাৎ মা কাছাকাছি একটা প্রাকৃতিভ পূলাঝাড়ের কাছে গিরে সালা সালা কুলের মধ্যে থেকে হাসতে হাসতে আমায় ডাক দিলেন—

काळू:का, वन्रात्वा लामात्र मा श्रवन कि कत्राह्न ?

ষুগ তুলছেন।

मा এবার গলা ছেড়ে হেলে উঠলেন, হঁ, হঁ!

আমি অস্তব ক্রসাম তার মধ্যে প্রভা করার মত এমন একটি বাঁচি বস্ত আছে, বার অমুকরণ করা অসম্ভব।

সকালে সুধ ধাওবাব গল করতে বলে কোধায় সবে এসেছি, সে কথা থাক, কিছ সম্প্রতি একটা বইবে পড়লাম, ফরাসী বাজতল্পের যুগে সম্ভান্ত মহিলারা বাজোঞ্চানে অথবা বাডায়াতের পথের বাঁকে নিজেদের হাকা করতে আদৌ বিধাবোধ করতেন না।

এ ধরণের সহস্কৃত। ভারি ভাল লাগে আমার এবং আমি অবাক হরে ভাবি, মা বুঝি সেই মহিলাদের শেব নিদর্শন।

বাই হোক, আজ সকালে স্প থেতে থেতে মারের অক্ট চিৎকারে চমকে গিরে বধন প্রশ্ন কিবলাম, 'চূল' কি না, মা জবাব বিলেন না।

মূপ বেশী হয়েছে ?

রেশনে পাওয়া মার্কিণী টিনের চালানী মটরওটি দিরে আক্ষের স্পটা আমি পাতলা করেই রেঁধেছিলাম। বাঁধুনি হিসেবে নিজের ওপর আহা আমার নেই, বলিও প্রত্যেক মেয়ের অববারিত শিক্ষা-তালি গর মধ্যে রায়াও পড়ে। সেই কারণেই মা বলছেন ধারাপ হরনি, তবু স্পের জন্ত আমার ত্র্তাবনার অস্ত নেই।

গন্ধীর ভাবে মা বললেন—স্পটা চমৎকার হরেছে। সেটুকু শেব করে সামুক্তিক শাকজড়ানো ভাাতর মণ্ড থেলেন।

সকালে খেতে আমার কোন দিনই ভাল লাগে না, বেলা দ্বটার আগে ক্ষিদেও পার না। আৰু সকালে স্পটা কোন মতে গলা দিরে নামল বটে, কিছু আর কিছু খেতে চাওরা ঝকমারি। ক্ষেকটা মও প্লেটে নিরে চপটিক নিরে খ্ঁচিরে খ্ঁচিরে আলু-ভাতে বানিরে কেললাম। চপটিকে সামাল একটু তুলে, মারের চামচ বরার মত মুখের আড়ালাড়ি ভাবে ধরে, তাই দিরে পাখী খাওরানোর মত মুখের মধ্যে ঠেলে দিলাম। খাবার নিরে আমি এই কাণ্ড করছি, ইতিমধ্যে মা নি:লব্দে উঠে সকালের স্বর্গের আলোর তত্ত দেওরালে হেলান দিরে গাঁড়ালেন। কিছুক্ষণ চুপ করে আমার খাওরা দেওবালেন।

কাছকো—ওভাবে থেও না। সকালের থাওরাটা সরচেরে তৃতি করে থাওরা উচিত।

মা ভোমার ভৃত্তি হর ?

चामात्र कथा (इएड माও, अथन चामि त्मदव छेटीहि।

কিছ শামার ভো কোন শহুধই করেনি ?

মা, না। সান হেলে মা বাড় নাড়লেন।

পাঁচ বছৰ আগে কুসকুদের বোগে আমি শ্ব্যালারী হরেছিলাম। স বোগ অবক্ত সম্পূর্ণ ফেছোর বাধিবেছিলাম। সারবিক হর্মলভা বিং মনংগীয়াই মারের বর্জমান অস্মৃতার কারণ। তাঁর একমাত্র বিচ্ছা ছিল আমার নিরে।

খ্ৰা:, খামার মুখ কসকে বেরিরে গেল।

কি হল ? এবার মান্তের প্রেশ্ব করার পালা।

পরস্পরের চোধে চোধ পড়তে ত্'জনেই পূর্ণ সহায়ভূতি অয়ুভব করলাম। আমি হেলে উঠতে মারের মুখেও হাসে ফুটল।

ছশ্চিন্তা আমার মনকে নাড়া দিলেই এ ধরণের শব্দ আমার অকান্তে মুখ দিরে বেরিয়ে আসে। বছর হরেক আগে আমার বিবাহ-বিচ্ছেদ সংক্রান্ত ঘটনাগুলি হঠাংই ছবির মত মনের মধ্যে ভেদে ওঠে এবং আমি টের পাবার আগেই মৃত অর্জনাদ আমার মুখ ফস্কে বেরিয়ে গেছে। কিছু মায়ের মুখে ঐ কফ্ণ শব্দটুকুর কারণ কি ? আমার মত অতীতের কোন ছশ্চিন্তা নিশ্চমুই তাঁকেও ঠিক এই মুহুর্জে নাড়া দেয়নি। না, কিছু কারণ একটা আছেই।

মা--- একুণি তুমি কি ভাবছিলে ?

ভুলে গেছি।

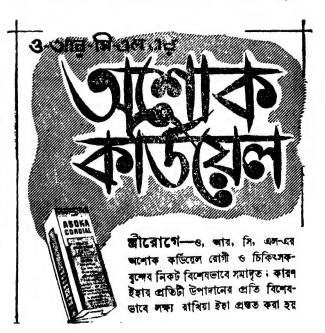
আমার বিবর গ

ना ।

নাওজির বিবর ?

হাা, তারপর ক্ষণিকে আত্মসম্বরণ করে এক পালে মাধা হেলিরে বললেন—বোধ হয়।

আমার ভাই নাওজি ইউনিভারসিটিতে পড়তে পড়তেই যুদ্ধে বৈতে বাধ্য হয় এবং দক্ষিণ প্রশাস্ত সাগরে ওর। তাকে চালান করে দেয়। আমবা তার কোন ধবর পেতাম না এবং যুদ্ধ বিরতির পরও আজ অবধি সে নির্থোজ। মা ধবে বেধেছেন ছেলের



দি ^{*}ওরিয়েন্ট্যাল রিসার্চ অ্যান্ড কেমিক্যাল ল্যাবরেট্রা লিঃ সঙ্গে তাঁর এ জীবনে দেখা হবে না। অস্ততঃ মুখে তাই বলেন কিন্তু আমি একবারও হাস ছাড়িনি। আমার দৃঢ় বিখাস, তার সঙ্গে আমার দেখা হবেই।

ভেবেছিলাম, তার আশা আমি ছেড়েই দিয়েছি, কিছ তোমার ঐ স্থবাত্ প্পটা তার কথা মনে করিয়ে দিল। এ ভাবনা আর বেন সইতে পারি না। এখন মনে হয়, ওর দিকে আমার আরও অনেক বেশী নজর দেওয়া উচিত ভিল।

হাইস্কুলে ঢোকার প্রায় সংস্ক সংস্কেই নাওজির দারুণ সাহিত্য-প্রীতির উিজেক হয়। সেই অবধি সে দায়িম্বজ্ঞান-হীন জীবন বাপন করতে ক্ষক করে। মায়ের হুংথের সীমা রইস না। তার এ-ধরণের দায়িম্বজ্ঞান-হীনতা সংস্কেও মা স্পাধিতে থেতে তার কথাই ভাবছিলেন। রাগে আমি খাবাস্টুকু জোর করে মুখের মধ্যে পুরে দিলাম, আমার চোথ হুটো আলা করে উঠন।

সে বহালতবিয়তেই আছে। খাদা আছে নাওজি। ওর মত হতভাগাদের মনণ নেই। বারা সং, বারা স্থশর, বারা বিনয়ী ভারাই আগে ভাগে খতম হয়ে বায়। মাধায় দাঠির বাড়ি মারলেও ভোমার নাওজি মরবে না।

মা হাসলেন—ভার মানে তুমিই বোধ হর আগে বাবে।
আমার ঠাট। করলেন মা।

আমি কেন মরব ? আমি মল, আমি কুৎসিত। আদীটা বছর হেদে-খেলে কাটিয়ে দেব।

সভিঃ ? ভাহলে ভোমার মা নকাই বছর বাঁচবেন বল ?

খাবড়ে গিরে আমি বললাম——নিশ্চরই। হতভাগার। বছকাল বাঁচে, স্থন্দরেরা অর বরনে মরে। আমার মা স্থন্ধরী, কিছ আমি তাঁর দীর্থায়ু কামনা করি। কি বে বলব ভেবে পেলাম না। চটে গিরে বললাম—কেবল আমার ফাঁদে ফেলবার চেষ্টা না? নীচের ঠোটটা ধর-ধর করে কেঁপে উঠল, চোধের জল সামলানো দার!

সাপের গরটো করা উচিত কি না বুৰতে পারছি না। দিন
চার পাঁচ আগে পাড়ার ছেলে-মেরেরা বাগানের বেড়ার বোঁটার
সুকনো বারো-তেরটা সাপের ডিম খুঁজে পার। তাদের বিশাস বে,
ডিমগুলো বিষাক্ত সাপের। তেবে দেখলাম, বারোটা সাপ যদি
সারাক্ষণ বাঁশবাড়ের মধ্যে কিলবিল করে বেড়ার, তবে আগে
বেকে সাবধান না হয়ে বাগানে ঢোকা দাম হবে। বাচ্চাদের
বল্লাম—ডিমগুলো পুড়িয়ে ফেলা বাক, কি বল ? বাচ্চারা হৈ-হৈ
করে আনক্ষে নাচতে নাচতে আমার সঙ্গে চলল।

বোণের কাছে এক রাশ খড়কুটো জড়ো করে জাগুন ধরিরে একটার পর একটা ভিম ছুড়ে দিলাম। বছকণ গেল, তবু সেগুলো পুড়ল না। বাচ্চারা বেশী করে ডাল-পাড়া দিয়ে আগুনটা উদ্ধেদিল। তবু ডিমগুলো বেমনকার ভেমনি রয়ে গেল। রাজ্যার গুবারের বাড়ীর মেয়েটি বেড়ার কাছে এসে জিজ্ঞেস করল—ব্যাপার কি ?

সাপের ডিম পুড়োচ্ছি। ভন্ন করে, পাছে বিবাক্ত সাপে বাড়ী ছেরে বার।

ডিমঙলো কত বড় ?

श्वश्टन माना शास्त्रव खित्मव माहेत्वव ।

ভাহলে ওণ্ডলো ঢেঁাড়া সাপের ডিম। বিবাক্ত নর। কাঁচা ডিম পোডে না, জানো ভো ?

কি বেন মজার স্বাদ পেরেছে, এই ভাবে হাসতে হাসতে চলে গেল মেরেটি।

আধ ঘণ্টা ধরে আগুন অলগ—কিছ ভিষের অবস্থা বে-কে সেই !
আমি বাচ্চাদের আগুনের ভাত থেকে টেনে এনে ডিমপ্রলো প্লাম
গাছের গোড়ার পোড়বার বন্দোবন্ত করলাম। কভকগুলো মুড়ি
বোগাড় করে সমাধির ব্যবস্থা হল। হাঁটু গেড়ে হাত জোড়
করে বসে বাচ্চাদের বললাম—এন একটু প্রার্থনা করে নিই—
কেমন ?

বাচারা আমার কথামত হাত জোড় করে পেছন দিরে বনে পড়ঙ্গ। সব সেরে আমি বাচাদের সঙ্গ ত্যাগ করে পাথরের সিঁড়ি বেরে উঠ এলাম। সিঁড়ির মাধার মটরলজার মাচানের ছারার গাঁড়িরে মা বলসেন—এ কি নিষ্ঠারতা ?

জামি ভেবেছিলাম, ওগুলো বিধাক্ত সাপের ডিম হবে বুৰি, কিছ তা নয়, একেবারেই ঢোঁডাসাপের ডিম। বাই হোক, ওদের ভাল করে সমাধি দিয়েছি। ছংখ করার জার কোন কাবণ নেই। মনে মনে ভাবলাম, কি কুক্ষণেই না মা জামার ধরে ফেললেন।

কুস, নার নয়, তবে দশ বছর আগে, আমাদের নিশিকাত। বীটের বাড়ীতে বাবার মৃত্যুর পর থেকে সাপ সম্বন্ধে মারের মনে কি এক আতক আছে। ঠিক বাবা মারা বাবার আগে একটা ছোট কালো ফতো বিছানার পাশে পড়ে থাকতে দেখে মা অক্তমনম্ব ভাবে দেটাকে তুলে ফেলে দিতে গিয়ে দেখেন ফ্তো নয়, সাপ। মবের পাশে বারালা মত পথ দিয়ে সাপটা পিছলে বেরিয়ে গেস। তথু মা আর আমার ওয়াদা মামা দেখেছিলেন। তাঁরা মুখ চাওরাচাওয়ি করে চুপ করে রইলেন, পাছে শেব মুহুর্তে বাবার লান্তির ব্যাঘাত হয়। দেইজভ আমি আর নাওজি দে সময়ে দেখের উপস্থিত থাকা সম্বেও কিছই টের পাইনি।

কিছ বেদিন সন্ধায় বাবা শেষ নিংখাস ত্যাগ করলেন-সেদিন আমি বাগানে পুকুৰপাড়ে সব ক'ট। গাছে সাপ অভিয়ে থাকতে মেখেছি। তথন আমার উনত্রিশ বছর বয়স, দশ বছর আগে ছিল উনিশ, নেহাৎ কচি থকিটি তো নয়। দশটা বছর পার হয়ে গেছে সভ্যি। কিছু সেদিন বা বা ঘটেছিল, আজও সে সব কথা আমাৰ মনের মধ্যে পহিষ্ঠার আঁকা আছে, ভুল হবার বো নেই। পুকুর-পাড়ে ঘূরে ঘূরে পূজোর ফুল তুলছিলাম। আঞালিয়া (azaleas) ঝাড়ের কাছে আসতে যগ, ডালের আগার অভানো একটা সাপ চোৰে পড়ল। গা'টা শিউরে উঠল। সেধান থেকে এগিয়ে কোরিয়া গোলাপের একটা ভাল কাটতে গিয়ে দেখি, সেখানেও সাণ**া** পাশাপাশি সাহবের গোলাপ, পেপল্, ব্রুদ, উইসটেরিয়া; চেরিগাই সর্ব্বত্র, প্রত্যেকটি বোপে, গাছের ডালে একটা করে সাগ। ধুব বে ভর পেলাম, তা নয়। ভাবলাম আমার মত এই সাপের 📲 বাবাব আত্মার প্রতি প্রদা জানাতে গর্ড ছেডে বেরিয়ে এসেছে। পরে বাগানের এই সাপেদের কথা ফিসফিস করে মাকে বলসাম। তিনি एथु এक भाग माथा हिनिया गांव विकास-स्वत कि अकडी ग^{ुन्}व চিন্তার ময়। মুধে অবগু কোন মন্তব্য করসেন না।

अक्षां के त्व, बहे क्षेष्ठ क्षेत्रांत शव (बदक जारशव क्षां

গারের বিত্কার প্রেপাত হয়। এর থেকে এদের সম্বন্ধ মারের মনে উল্লেগ, আতম্ব ও আশকা বাসা বাঁথে।

আমার সাপের ডিম পোড়াভে দেখে নিশ্চর তাঁর মনে অমলস-আশহা জাগে। এ কথা থেরাল হতেই নিজের নির্কৃতিতার গুরুত বুবলাম।

হরত বা একদারা আমি মারের কোন অমসসই ডেকে এনেছি— এই চুশ্চিম্বার হাত বেশ কিছুকাল এড়াতে পারিনি। এবং এত সব ঘটনার পর স্করের সভায় হওয়ার মন্তব্য করে আবোল-ভাবোল কথা দিয়ে চাপা দেবার ব্যর্থ প্রবাস চোধের জলে শেব করলাম। পরে প্রাতরাশের বাসনপত্র সরাতে গিয়ে একটা অসহ বালা অফুড্র কর্লাম, বেন একটা কাল সাপ মায়ের আয়ুর প্রতি নিশানা বেখে আমার বুকের ভেতর বাসা বেঁধেছে। সেণিনই যাগানে একটা সাপ দেখলাম। সকালটা ভারি স্থন্দর, স্নিগ্ধ দেখে वाताचरवद शांठे त्यादा, अकठा त्याकव कार्याव मार्क लिएन निरंत वरम ৰঙ্গে উল বুনতে সাধ হল। চেৱার হাতে বাগানে পা দিতেই ক্যানার ঝাড়ের পালে একটা সাপ নক্তরে পড়ল। প্রথম কথা মনে তল কিবে বাই, গাজী-বারাক্ষার চেরাব টেনে সেধানেই বোনা मिरत वननाम। विरक्तन वांशास्त्र अशास्त्र अराम्यत नाइख्वती (बरक मात्री जरविज्ञातत अक छन्।म इवित वह जानएक जिरह सिब, একটা সাপ মন্তব গতিতে মাঠ পেরিরে চলেছে। সেই সকালেব স্থকর, সাবলীল সাশটাই পরম শান্তিতে চলেছে। বুনো গোলাপের হারার এসে, মাধা খাড়া করে আগুনের শিখার মত ভয়ত্তর জিভ বের করে নাড়তে সাগল। কি বেন খুঁঞছে মনে হল, কিছ একট্ট পরেই মাথা নীচু করে পরম ক্লাস্কিভরে মাটিভে পড়ে গেল। মনে মনে বললাম—নিশ্চর সাপিনী ! তথন পর্যান্ত তার সৌন্দর্যাটাই আমার চোথে পড়ভিল; গুলাম খেকে ছবির বইখানা বের করে ফেরার পথে সাপের জারগাটার চোধ বুলিরে নিলাম, কিছ সে ভতকণে অনুগ্র হরে গেছে।

সন্ধ্যেকো মায়ের দক্ষে চা খেতে বনেছি, বাগানের দিকে চোধ পড়তে দেখি, পাথরের সিঁড়ির তৃতীর ধাপে আবার সেই সাপ সম্বর্গণে আত্মপ্রকাশ করছে !

মা-ও লক্ষ্য কংছিলেন—এ কি দেই সাপ ? বলতে বলতে লৌড়ে আমার পালে এসে, আমার হাত ধরে ভরে ঠক্ ঠক্ করে কাঁপতে লাগলেন। চট করে জার ত্দিস্তার কারণ আমার কাছে ধরা পড়ে গেল।

णामि वननाम-वर्षाः तारे फिल्मामत मा ?

चिक्रें क्रवार मिल्निन-रा, रा।

নি:শব্দে দম বন্ধ করে আমরা পরক্তারের হাত ধরে দাঁড়িয়ে বইলাম । সাপটা অলস ভাবে পাধরের ওপর গুটিয়ে ওল এবং তার পরেই নড়তে স্কুল্ল করল। এলোমেলো গতিতে, তুর্বলভাবে সিঁড়ি পেরিয়ে ক্যানার কোপের মধ্যে মিলিয়ে গেল।

কিস-ক্ষিদ করে বললাম—সকাল থেকে এটা বাগানের মধ্যে ব্রে ব্রেড়াছে। দীর্ঘদান কেলে মা চের্বের গা এলিরে দিলেন। হভাশ ভাবে বললেশ—ঠিক তাই হয়েছে। আমি বেশ বুঝভে পারহি বেচারা ভিমণ্ডলো খুঁজে বেড়াছে।

ে কি করব ভেবে না প্রের বোকার মত হেনে উঠলাম। অভগানী

ক্রের আন্তা মারের চোপ ত্টিতে গাঢ় নীলের ছারা কেলেছে।

ঈবং ক্রোধের ভাব কুটে মুখখানা এমন অপরপ হরেছে বে, ছুটে
গিরে কোলে বাঁপিরে পড়তে ইচ্ছে হচ্ছে। এইমাত্র বে সাপটাকে
আমরা দেখলাম, মনে হ'ল মারের এখনকাব চেচাবার সত্তে ভার কোথার মিল আছে। কেন বে অমুভব করলাম কুৎসিত সাপটা
আমার বুকের মধ্যে বাসা বেঁধেছে, শেব পর্যান্ত সে একদিন বিবাদমনী
মা সাপটিকে আত্মগং করবে।

মারের নরম, স্থগঠিত কাঁধের ওপর হাত রাধলাম। সেসময়ে আমার শরীবের ভেতর বে দারুণ আলোড়ন বরে গেল, তা বোরাবার ভাষা আমার জানা নেই।

বে বছর জাপান বিনাসর্তে আত্মসমর্পণ করে, সে বছর ডিসেম্বর মালে আমরা নিশিকাতা খ্লীটের বাড়ী ছেড়ে দিয়ে ইছু (Izu)-তে চিনা-প্যাটার্ণের এই বাংলোর উঠে এলাম। বাবার মৃত্যুর পর থেকে মায়ের ছোট ভাই 'ওয়াদা'মামা, বর্ত্তমানে ইনিই মায়ের একমাত্র বন্ধ-সম্পর্কের আত্মীয়—আমাদের সম্পত্তির তদারক কর্মিলেন। কিছু যুদ্ধের শেবে মামা মাকে জানালেন, তুনিরা ওলট-পালট হরে গেছে, আগের মত বাবুয়ানা আর চলবে না। আমাদের বাড়ী বিক্রি করে চাকর-বাকরকে অবাব দিয়ে দিতে হবে; স্বভরাং দেলে-গ্ৰামে ছোট একধানা বাড়ী কিনে হ'লনে নিবিবিদিতে থাকাই ভাল। টাকা-পর্মা সম্বন্ধে মা শিশুর চেরেও অজ্ঞ ছিলেন, কাল্লেই ওয়াদামামার এই প্রস্তাবের উত্তরে ভিনি বেমন ভাল বোঝেন, সেই ব্যবস্থাই করতে বলে দিলেন। নভেম্বর মাসে মামার কাছ থেকে এक बक्बी एरिक्ब किठि अन, लाइकांडेन्ड काल्बाहा (Viscount Kawata)व वाकी विक्रिय चरव निष्य। वाकीव हिर बाबहे के है, চার পাশের দুগু ভাল, আধ একর আন্দান্ত ধানের জমি আছে। এ ছাড়া লায়গাটা প্লাম ফুলের জন্ম বিখ্যাত। নীতে উক, গ্রীমে ঠাণ্ডা থাকে।

ওয়াদামাথ চিঠিব শেব দিকে লিখেছিলেন—আমার বিখাস, জারগাটা ভোমাদের পছক হবে। তবু ভদ্রলোকের সঙ্গে একবার সাক্ষাৎ হওয়। প্রেরোজন। কাল একবার আমার আণিসে আসতে পার ?

অমি জিজেদ করলাম—মা, ভূমি বাবে ?

षठि धः ध्य पृष्ठ (क्टन मा कराव किलन-साव देव कि । उड्डिक्ट (व !

ছুপুবের প্রেই মা রওনা হলেন। আমাদের পুরনো ডাইভার তাঁর সঙ্গে এবং সভ্যে আটটা আন্দান্ত মাকে ফিরিয়ে আনল।

আমার ববে চুকে ভেল্পে ভর দিয়ে এমন ভাবে বদে পড়লেন বে, মনে হল এখুনি বুঝি অজ্ঞান হয়ে পড়বেন।

नव ठिक रुख राज । अरे हेक्रे ७५ वनराज ।

কি ঠিক হয়ে গেল ?

नव ।

কিছেই চম্কে উঠলাম—বাড়ীটা একবার চোৰের দেখাও দেখলে না ?

ডেকের ওপর কর্ই তুলে, হাত দিরে কপালটা চেপে ধরে, দীর্ঘনিংখাস কেলে মা উত্তর দিলেন—তোমার ওয়াদামামা বলছেল জারগাটা ভালই। মনে হচ্ছে চোধ ধোলবার সুমুসং পাব না, তার আগেই সেধানে গিয়ে উঠতে হবে। এতক্ষণে মাধা তুলে মৃত্ হাসলেন, মারের মুথধানা অত্যস্ত কাতর ও কুক্ষর দেধাছিল।

ওরাদামামার প্রতি মারের জন্ধ বিশাস দেখে বিমৃচ ভাবে আমি উত্তর দিলাম—তা তো বটেই।

ভাহলে তুমিও চোথ বুজেই থেকো।

এবার আমরা ছঞ্জনেই হেসে উঠলাম, কিন্তু হাসি থামতেই রাজ্যের অন্ধ্বার মনের ওপর চেপে এল।

এর পর থেকে প্রতিদিন কুলির। এসে বাড়ী বদলের ফিনিবপত্র বাবাছাদা করে। মামা একদিন নিজে এসে বিক্রির মালপত্ত-গুলোর ব্যবস্থা করে গেলেন। আমাদের কি 'ওকামী' আর আমি জামাকাপড় গোছান, আবর্জনা বাগানে নিয়ে পুড়িয়ে ফেলা, এ বরণের কাজে ব্যস্ত রইলাম।

মা কিছ মোটেই সাহাব্য করতে রাজী হলেন না। নিজের ববে এটা-ওটা করে কাটালেন।

একদিন আমি সাহস সঞ্চয় করে, একটু রাগের মাথার জিজ্ঞেস করে বসলাম, ব্যাপার কি ? তোমার কি 'ইজু'তে বেতে ইচ্ছে নেই না কি ? একান্ত উদাস ভাবে কবার দিসেন—ন। । বারার ভোড়জোড় করতে দিন দশেক কেটে গেল। এক সদ্ধার আমি আর ওকামী কিছু বাজে কাগল, থড় ইত্যাদি বাগানে নিরে গোড়াছি, এমন সমর মা খব থেকে বেরিরে বারালার এসে গাড়ালেন এবং নিঃশজে অগন্ত আগুনের দিকে চেরে বহিলা। একটা ঠাণ্ডা পশ্চিমা হাওরা উঠেছিল—ধোরাটা মাটির ওপর দিরে গড়িরে বাছিল। আমি মুখ তুলে মারের বুখের দিকে চেরে অবাক্ হরে গেলাম, মারের এমন রক্তহীন ফ্যাকালে চেহারা বহু কাল চোখে পড়েনি। আমি চেচিরে উঠলাম—মা, তোমার ভো মোটেই ভাল দেখাছে না ?

হাসির্থেই জবাব দিলেন—ও কিছু নয়। তার পর আবার
নিঃশব্দে খবে খিবে গেলেন। সে রাত্রে আমাদের বিছানা বাঁধা
ছবে গিরেছিল বলে ওকামী একটা সোকার ওল। আমি আর
মা প্রতিবেশীর কাছ থেকে ধার করে আনা বিছানা মারের ঘবে
পেতে ওলাম। মারের ঘ্র্বল কঠন্বরে ভর পেলাম। মা বললেন—
কেবল তোমার জন্তেই বাওরা। তৃমি আছ বলেই আমি ইজুতে
বেতে রাজী হরেছি।

ব্দভাবনীয় এই মন্তব্যে ঘাবড়ে গিয়ে ব্দনিক্সা সংস্ত্রেও ব্রিজ্ঞেস করলায—বাব ধর বদি বামি না থাকতাম ?

হঠাৎ মা কেঁদে ফেললেন—আমার পক্ষে স্বচেরে সোজা রাজা ছিল মৃত্যু। তোমার বাবা এথানে শেব নিংখাস কেলেছেন, এথানে মরকে পারলে কোন ছংখ ছিল না। ডাঙ্গা-ডাঙ্গা কথা কারার জড়িরে ফুঁপিরে ফুঁপিরে উচ্চারণ করলেন।

এ পর্যন্ত মারের এমন অসহায় রূপ কোন দিন আমার চোখে
পড়ে নি, এমন ভাবে কামার ভেঙ্কেও পড়েন নি। বাবার মৃত্যুর সময়
না, আমার বিরের সময় না, সন্তান পেটে নিরে বেবার তাঁর কাছে
আসি তথনও না, হাসপাতালে বখন মরা ছেলে হ'ল, তখনও না;
পরে বখন অস্থ হরে দীর্ঘলাল শব্যা নিই তখনও না। এমন কি
নাওটি বখন অভাত অভার কাজ করে তখনও মাকে এভ কাভর

দেখিনি। বাবার মৃত্যুর পর এই দশ বছর ধরে মা ঠিক বাবার জীবিতকালের মন্ডই শাস্ত-বাক্ত্ম ভাবে কাটিয়েছেন, নাওজি আর আমি সেই স্থবোপে থুলি মত বেড়ে উঠেছি, কথনও কিছুতে মাৰা খামাই নি। এখন মায়ের টাকা ফুরিয়েছে, এডটুকু অসংভাব প্রকাশ না ক'বে সমস্ত টাকা আমাদের ছই ভাই-বোনের জন্ত খরচ করেছেন। আল সংসার গুটিরে সহায়-সম্পদহীন অবস্থায় অজানা এক ছোট বাড়ীতে নতুন করে সংসার পাততে বাধ্য হয়েছেন। মা বাদ রূপণ হ'তেন, আমাদের বঞ্চিত করে, আর পাঁচ জনের মত গোপন অর্থাগমের উপার চিস্তা করতেন, তাহলে আজ সংসার উল্টে গেলেও মরণকে এমন আকুল ভাবে ডাক দিডেন না। জীবনে আজ প্রথম আবিষ্ণার করলাম অর্থাভাব কি মারাত্মক, লোচনীয় অসহার অবস্থা স্মষ্ট করতে পারে। বুকের ভেতর ভোলপাড় হয়ে গেল। কিছ এত উদ্বেগেও চোখে অল এল না। আমার মনের এই অবর্ণনীয় অবস্থাকেই বোধ হয় মানব-জীবনের মর্যাদাবোধ সংক্রা দেওয়া হয়েছে। সেইখানে ছাতের দিকে চেয়ে অন্ড অচল ভাবে শ্রীরটাকে পাথবের মত শক্ত কবে শুরে বইলাম।

বা তেবেছিলাম ঠিক তাই, পর্যদিন মারের দারীর বেশ থারাপ হল। এটা-ওটা নিরে দেরী করতে লাগলেন বেন, এবাড়ীতে শ্রেডিটি মুহুর্ন্ত তাঁর কাছে অমূল্য—কিছ ওরাদামামা এসে জানালেন, ইক্তেচলে বেতে হবে। প্রার সব জিনিবই জাপে রওনা হয়ে গেছে। স্পাই জনিচ্ছার সঙ্গে মা কোটবানা গাত্রে দিলেন, তারপর কোন কথা না বলে ওকামী এবং জামাদের বাকী চাকরবাকর—বারা জামাদের এগিরে দিতে এসেছিল—তাদের দিকে ফ্রে মাথা হেলিয়ে বিদার সন্তাবণ জানিয়ে নিশিকাতা শ্রীটের বাড়ী থেকে বেরিয়ে এলেন।

টেনটা শপেকাত্বত থালিই ছিল, আমরা বসার জারগা পেলাম। মামার বেন আনন্দ উছলে উঠছে—গুন-গুন করে 'নো' পালার গান ভালছেন। এদিকে মারের মুখখানা ফ্যাকালে হরে গেছে, চোথ ছটি নীচু করে উদাসীন ভাবে বদে আছেন। নাগাওকার (Nagaoka) মিনিট পনেরো বাবার পর নেমে পাহাড়ের দিকে রওনা হলাম। ছোট একটা প্রামের দিকে ধীরে ধীরে পাহাড়ের চড়াই উঠে গেছে—ভার শেব প্রাস্তে চীন প্রাইলে ভৈনী প্রক্ষর একটা বাংলো চোথে পড়ল। উঠে একটা দম নেবার আগেই আমি টেরিরে উঠলাম—বা ভেবেছিলাম, ভার চেরে অনেক বেদী স্কল্য জারগা। ভেতরে ঢোকবার আগে একটু খেমে মা বললেন—সভিয় ভাই। মুহুর্জের জন্ম ভার দৃষ্টিতে প্রসন্ধতা নেমে এল। আত্মপ্রসাদে গদগদ হ'রে মামা বললেন—প্রথম কথা হল বাহানটা ভাল, বাকে বলে বিশুদ্ধ বায়।

মা হেনে কেললেন—তাই তো, চমৎকার প্রাণকুড়নো হাওরা !
আমরা তিনজনেই হেসে উঠলাম।

ভেতৰে গিৰে টোৰিও থেকে আমাদের বে জিনিব পত্র এসেছিগ—
সেওলো পেলাম। বাড়ীর সামনেটা প্যাকিং কাঠের বালের পাহাড়
জমেছে। মামা আনন্দে একেবারে দিশাহারা হয়ে আমাদের
বসার ববে নিয়ে গেলেন—একবার বাইরে 'চেরে দেশ—বি
অপরণ দৃত !

क्थम विरक्त क्षांत किमाहे, मिरकत पूर्वा वांत्रारम मन्त्रामहीत ,

গাঁগে স্বিশ্ব প্রশ বুলিরে দিছিল। মরদান থেকে এক বাপ সিঁড়ি গাম গাছে থেরা ছোট একটি পুকুবের দিকে নেমে গেছে; তারপর আছে কমলা লেবুর বাগান। একটা মেঠো রাজ্ঞার পাশে বানক্ষত, আঙুর-ক্ষেত্ত, স্বশেষে—দূরে সমূদ্র চোখে পড়ে। বসার খবে বসে সমুদ্রকে ঠিক আমার বুক বরাবর উঁচু মনে হ'ল।

নিজেক গলার মা বললেন—ভারী স্লিগ্ধ দৃগু! অত্যবিক থুশি গলার আমি সার দিলাম—নিশ্চরই বাতাসের গুণ। টোকিও'র লুর্ব্যর আলোর সঙ্গে এখানকাব আলোর কত তফাৎ দেখেছ। বেন রেশমী কাপড়ে ছেঁকে স্ব্যু তার রশ্বি আমাদের কাছে চালান করে দিছে।

নীচের তলার ত্'ধানা বড় বড় বর—একধানা চীনা-প্যাটার্ণের বৈঠকধানা, আরু একধানা বসার বর, এছাড়া রাল্লাবর, বসার বর, প্লানের বর, ধাবার বর সবই আছে। দোতলার বিদেশী কার্যার একটি বরে প্রকাশ্ত এক বিছানা।

গোটা বাড়ীটা এই, তবু আমার মনে হল আমাদের ছজনের পক্ষে বাড়ীথানা কিছু নিন্দের নয়। এমন কি, নাওজি ফিরে এলেও বিশেষ অসুবিধা হবার কথা নয়।

সে গ্রামে একটিমাত্র হোটেল, মামা আমাদের থাবার ব্যবস্থা করতে সেথানেই গেলেন। শীগ গিরই তিন জনের মত কিছু থাত এসে পড়ার তিনি, বসার ঘরেই বেশ গুছিরে নিরে থেতে সুক্ষ করে দিলেন। মামার সঙ্গে ছইছি ছিল, তার সালাব্যে আলার্থ অনারাসে পাকস্থলীর পথ খুঁজে নিল। উছলে ওঠা খুশিব ভোড়ে তিনি এবাড়ীর প্রাক্তন মালিক ভাই কাউন্ট কাওরাটার সঙ্গে চীন অভিযানের বিচিত্র অভিত্ততার কাহিনী আমাদের গলাখ্যকরণ করতে বাধ্য করলেন। মা নামেই থেতে বসলেন এবং আঁধার ঘনিরে আসার সঙ্গে সঙ্গেদক্ষিক করে বললেন—আমি একটু শুতে চাই।

আমাদের জিনিবপত্তের মধ্যে থেকে বিছানাটা টেনে বের করে মারের সঙ্গে ধরাধরি করে পেতে ফেললাম। তাঁকে দেখে কেমন যেন বুকটা ছাঁথ করে উঠতে থারমোমিটার বের করে ভাগ নিরে দেখি ১০২ ডিগ্রি।

মামা পর্যান্ত থাবড়ে গেলেন। বাই হোক, তিনিই প্রামের মধ্যে ডাক্তার খুঁজতে বেরোলেন। মাকে ডাকাডাকি করতে তিনি করের বোরে মাধা নাড়লেন মাত্র।

মাবের ছোট হাতথানি নিজের মুঠিতে চেপে ধরে কেঁদে ফেল্লাম।
মা আমার এত ত্থা, এত মর্মান্তিক তথা; না গো আমরা তুঁজনেই
তথা মারুব। আমার কারা আর ধামতে চার না। কাঁণতে
কাঁদতে মনে হল মাবের সঙ্গে আমিও এই মুহূর্ত্তে মরণকে বরণ করে
নিই। আর কিসের আশার বাঁচা, নিশিকাতা স্থীটের বাড়ী ছাড়ার
সঙ্গে আমাদের বাঁচবার অর্থ ঘচে গেছে।

প্রার ঘটা ছই পরে মামা এক গ্রাম্য ডাক্তার নিরে এলেন। ভন্তলোককে বধেষ্ট বৃদ্ধ বলেই মনে হ'ল। সেকেলে পোৰাকী দ্বাপানী কাপড় পারে ছিল।

নিমোনিরার উচ্চান্তে পারে। বাই হোক, হ'লেও ভয়ের কিছু নেই। অনিশ্চিত মন্তব্য করে মার্কে একটা ইন্জেকশন দিয়ে গেলেন।

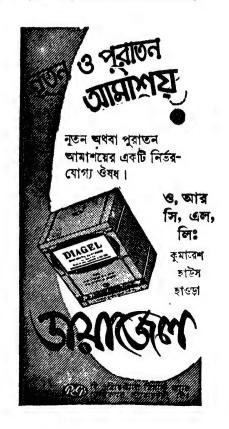
ী প্ৰদিনও আৰু নামল না। মামা আমাৰ হাতে ছই হাজাৰ

ইয়েন্ (জাপানী ডলার) দিয়ে বলে দিলেন হাসপাডালে পাঠাতে হ'লে টেলিপ্রাফ করে তাঁকে ধবর দিতে। সেদিনই ডিনি টোকিওতে কিরে গেলেন। প্রয়োজনীয় বংসামান্ত বাসন-পত্র বের করে সামান্ত ভাতের কাথ তৈনী করলাম। মাত্র ছিন চামচ মুখে দিয়ে মাথা ছেলিরে মা আর দিতে বারণ করলেন। ছুপুরের আগে জাবার ডাক্তার এলেন। এবার পোষাকের ঘটা কিছু কম, তবু হাতের দন্তানাভোড়া ভোলেন নি।

আমি প্রভাব ক্রলাম হরত বা মা'কে হাসপাতালে
নিয়ে বাওয়া উচিত। ডাব্ডার বললেন—না, তার দরকার
হবে না। আব্দ একটা কড়া ইন্জেক্শন দেব, তাতেই স্বরটা
নেমে বাবে। আগের দিনের মত তাঁর আব্দকের কথাতেও
বিশেষ ভরসা পেলাম না। কড়া ইন্জেক্শন দিয়েই ভিনি চলে
গেলেন।

বিকেলের দিকে মায়ের মুখখানা টুকটুকে লাল হ'বে উঠল—
ভাব সঙ্গে প্রচুর ভাম হ'ল। সম্থবতঃ এ সেই আন্তর্থ্
ইন্:ক্রক্শনের গুণ। রাজে মা'বের ভামা ছাড়িবে দিছি, মা বলে
উঠলেন—কে ভানে—হয়ত উনি মস্ত বড় ডাক্ডার।

অবের তাপ বাভাবিক অবস্থায় নেমে এল। আনদেশ আতিশব্যে গৌড়ে গ্রামের হোটেল থেকে বাবোটা ডিম কিনে আনলাম। করেকটা নরম সেদ্ধ ক'বে মাকে থেকে দিলাম। মা ভিনটে ডিম আর একবাটি ভাতেব কাথ থেরে ফেললেন।



প্ৰদিন সেই ডাক্টাৰ আবাৰ তাঁৰ অমকালো পোৰাক প্ৰে এসে উপস্থিত হ'লেন।

কাঁৰ ইনজেকশনের ওপের কথা ওনে গঞ্জীর ভাবে যাথা নাড়লেন। ভাবধানা ঠিক বেমনটি আলা করেছিলাম। ভারপর সবদ্ধে মাকে পরীকা করে আমার দিকে ফিবে বললেন—এখন ভোমার মা সম্পূর্ণ ক্রস্থ। তাঁর বা ইচ্ছে করে থেতে দাও।

থমন মন্ধা কৰে কথা বলেন ভদ্রলোক বে হাসি চেপে বাথা লাৱ। দোৰ পৰ্যন্ত তাঁকে এগিছে দিয়ে এলাম। ববে ফিবে দেখি, মা দিব্যি বিছানার ওপব উঠে বসেছেন। নিজেব মনেই বললেন—সভিয় ভদ্রলোক বিচক্ষণ ভাক্তার বটে! আমার আর একটা অ্পার ভাব ভাবে আছে।

মা গো, দরজাটা খুলে দিই ? বাইবে ব্রফ পড়ছে।
মুলের পাঁপড়িব মত বড় বড় বড় আকাশ থেকে ববে পড়ছে।
জানালা খুলে দিরে মারের পাশে বলে সেদিকে চেরে বইলাম।
জাবার বেন আপন মনেই বললেন—আর আমার কোন অস্থ
নেই। তোমার পাশে গিরে এই ভাবে বখন বসি, তখন মনে
হয় এত দিন বা ঘটে গেছে, সে সব খুপ্প। সন্তিয় বলছি—বাড়ী
বদলের কথা ভাবতেও আমার খারাপ লেগেছিল, অস্ত্র মনে
হয়েছিল। আমাদের নিশিকাতা ফ্রীটের বাসার আর একটা দিন,
এখন কি আখখানা দিন বেশী খাকতে পেলে আমি বর্জে বেতাম।
টোপে উঠে অববি আখমরা অবস্থা, এখানে প্রথম করেকটা
মুতুর্জ ভাল লাগার পরেই বুকের ভেতরটা টোকিওর অন্ত কেনে
উঠল। তারপর সব শুলু ঠেকল। সাধারণ কোন বোগ আমার
নর। স্কার্ব বেন আগের আমাকে মেরে ফেলে, সম্পূর্ণ নতুন করে
প্রাণ দিলেন।

সেদিন থেকে আৰু অবৰি আমৰা ছ'জন পাহাড়েৰ গাবে এই
নিবালা কৃটাৰে দিন কাটাছি। আমৰা হারা করি, বারান্দার
বনে উল বৃনি, চীনা ঘবে বনে বই পড়ি; এক কথার বলতে
পেলে বিধন্দারের বাইবে একান্ত বৈচিত্রহীন জীবন বাপন
কৰি। কেব্রুরারিভে সারা প্রামধানা প্লাম্ ফুলে ছেবে পেল।
মার্চ মাস পর্যন্ত বাতাসহীন লান্ত দিন একটিব পর একটি
করে পার হবে পেল। মানের খেব অববি ফুলেরা গাছেব ভাল

আলো করে রইল। বতবারই কাচের সব দরজা পুলে দিই। ততবারই সারা বাড়ী কুলের গজে মেতে ওঠে।

মার্চের শেষে প্রতি সন্ধার একটা বাতাস কোথা থেকে চুটে জাসে। জামি জার মা গোধ্সি বেলার চা থেতে বসলে পাণড়ির দল জানালার ভেতর দিরে উড়ে এসে জামাদের পেরালার পড়ে। এখন এপ্রিল মাস, বারালার বৃন্তে বনে জামাদের চাযবাসের কথা হয়। মা জামার সাহায্য করভে চান। হঠাৎ মারের সেই কথাটা মনে পড়ে গেল, জামরা মরে আবার ভিন্ন মামুয় হরে বেঁচে উঠেছি। কিছ জামার ধারণা, জামাদের সাধারণ মানুবের পক্ষে বীশুর মন্ত প্রর্জন্ম সন্তব নর। মা বলেছিলেন জভীতকে তিনি ভূলে গেছেন, অথচ আজই সকালে তুপ্ থেতে বসে নাওজি'র কথা মনে করে কেঁনে উঠেছিলেন। জামার মন থেকেই কি জার জভীতের ক্ষতের দাগ মিলিয়ে গেছে গু ভা নর।

উ: । আমি সোকান্থলি মনের কথা উলাড় করে সমস্ত লিখতে চাই। মাবে মাবে আমার মনে হয়, পাহাড়ী এই বাড়ীতে বে অবিচ্ছিন্ন শান্তি বিরাজিত, তা মিধ্যা, ছয়। মাও আমার বিপ্রামের এই য়য় অবকাশ বলি ভগবানের ইছা বলেই ধবে নিই, তবু আসর বিপদের কালো ছারা বে ক্রমেই ঘনিরে আসছে, সে চিন্তার হাতও বে এড়াতে পারি না। মা খুশির ভাশ করে, কিছা দিন দিন তিনি ওকিরে বাছেন। আর আমার বুকের ভেতর বে কাল সাশ বাসা বেঁধেছে, মারের আরু নিরে সে দিনে দিনে বেড়ে উঠছে, আমার সমস্ত প্রতিকৃস ১েটা ব্যর্থ করেই সে পরিপৃষ্ট হছে। এমন বলি হ'ত বে, বিশেব কোন অত্তর সঙ্গে এর আবির্ভাব হরে শৃত্তে মিলিরে বেড। সাপের অত্তরলা ভিম পোড়াবার কথা আদে। বে মনে এসেছে, ভা' থেকে আমার মানসিক অবস্থা অত্যান করে নেওরা শক্ত নর। আবার প্রতিটি কাল মারের , ত্বংধ বাড়াবার এবং তাঁর শক্তি কর্মর পক্ষে বর্মেই।

অমুবাদ—কল্পনা রায়

যে পাখী ফেরে না আর শীউমাপদ রায়-চৌধুরী

বহু দ্ব সমূত-নিভূতে নাবিকেগ-বীধি বেধা বীপের আকাশে হলুদ ডানার বাঙা বোদের স্থবিভি এক বাঁকে নীড়-ভোলা পাখী, নিক্ষেশ প্রান্তিক সকাত জীবনের ক'টি দিন; দিগস্ত বাতাসে নব্ম পালকে মাধা জ্যোৎসা-প্রাগ—চ'লে বায় জার ফেরে না কি!

ছারাঘন দ্বীপ দেখা' একটি পৃথিবী ছ'জনার একান্ত নিরালা, নি:নীম তবল-ছলোছল---সন্ধার মালতী-যুখী পাপড়ি-লিখিল জ্নেক প্রান্তর ধৃ-ধৃ পার হ'বে খেমেছে দেখানে ছ'টি ভানা নীল-- এক দিন ফিরে-আসা নতুন বন্দরে বোক্রমরী কী পাবাণ মাটি, উত্তল বাদামী বুকে ধ্সর অপন পালছেঁড়া ভলুর মান্তল ভনেছে কি ঋজু কোনো নক্ষত্রের গান প্রাণ-ধর গুরু সভ্য খাঁটি ! চিত্তের চৈতালী দিনে ভবু তো খোঁপায় ঝবোঝবো নিরীবের ফল।

ছুৰ্গ ভ মানস-ভীৰ্থ চিব-কল্পাক কোথা কোনু অধিভ্যকা-পাৰ, আক্লেব বন-শেৰে বিদাৰেৰ চাঁদ তাৰ পৰ ৰক্তিম প্ৰভাৱ শিশিৰেৰ অৰে হেখা ভিজে খাস-মাঠ, পেৰেছে কি প্ৰেম নিকল্ৰ



নেতাজী স্মভাষচন্দ্র বস্থু ও মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধীর পত্র-বিনিময়

পান্ধীব্দির উত্তর—৩

বিড়লা হাউস, নৃতন দিল্লী, ২, ৪, ১১৩১,

প্রির স্থভাব,

তোমার ৩১শে মার্চের এবং তাহার পুর্বেকার পত্র চুইটি পাইরাছি। তুমি স্পষ্ট কথা বলিরাছ এবং নিজ অভিমত্ত স্পষ্টভাবে ব্যক্ত করার জন্মই আমি তোমার পত্রগুলিকে পছস্প করি।

ৰে অভিমতগুলি তুমি প্ৰকাশ কৰিবাছ তাহা আমাৰ এবং আয়ারদের মতের এতই প্রিপস্থী বে, একটা মীমাংসার সন্তাবনা আমি দেখিতেছি নাঁ। আমার মনে হয়, প্রত্যেক মন্তবাদকে ফুম্পাইভাবে দেশের লোকের নিকট উপস্থাপিত করা উচিত। আর বিদি সত্তার সহিত উহা করা হয়, তাহা হইলে মন্ত-সন্ত্রের পরিণতি গুহযুত্ব কেন হইবে তাহা আমি বুঝিতে পারিতেছি না।

আমাদের মধ্যে বে মতবিবোধ বহিরাছে তাহা অক্সার নহে, পারস্পরিক বিশাস ও প্রছার অভাবই অক্সার। সমরের বাবাই ইহার প্রতিকার হইবে, কালই প্রেষ্ঠতম নিরাময়চারী। বদি আমাদের মধ্যে সত্যকার অহিংসা থাকিয়া থাকে, তাহা হইলে গৃহযুদ্ধ ভ নহেই, ভিক্ততার স্মষ্টিও হইতে পারে না।

সকল দিক বিচাব কবিবা আমি এই অভিমত পোবণ কবি বে, তোমার মতে বিখাসী ব্যক্তিগণকে লইবা এখনি একটি কার্বানির্বাহক সমিতি ভোমার গঠন করা উচিত। তোমার কার্বাক্রম নিল্ডিডরপে স্থিব কবিবা তাহা আগামী এ, আই, সি, সির সম্মুখে উপস্থাপিত করা উচিত। উক্ত কমিটি বদি ভোমার কার্বাক্রম গ্রহণ করে তাহা হইলে ভোমার পক্ষে কাল চালাইবা বাওরা সহজ্ব হইবে, সংখ্যালঘিষ্ঠদের ঘারা বাধাপ্রাপ্ত না হইবা ছুমি ভোমার অভীষ্ঠ সিছ করিতে পারিবে। অপর পক্ষে, বিক কমিটি ভোমার কার্ব্যক্রম স্থীকার না করে, ভাহা হইলে ভোমার পক্ষে পদত্যাগ করিবা কমিটিকে ভাহার সভাপতি নির্বাচন করিতে দেওরা উচিত। তথন ভূমি অবাধে, ভোমার নিজের পছতিতে, দেশবাসীকে ভোমার বজব্য বুঝাইবা বলিতে পারিবে। পশ্তিত পদ্বের প্রভাবের কথা না ধরিবাই আমি এই প্রামর্শ ভোমাকে দিভেচি।

থ্যন তোমার প্রস্নগুলির উত্তর দিই। ব্যন পণ্ডিত পদ্বের প্রভাব পেশ করা হয়, তথন আমি শ্ব্যাশারী হিলাম। মথরা শাস- সে সম্বে রাজকোটে হিলেন। ডিনি এক্টিন স্কালে আয়ার নিকট এই সংবাদ আনিলেন যে, পুরাতন নেতাদের প্রতি আছাজ্ঞাপক একটি প্রস্তাব পেশ করা হইবে। আমার সমূতে তথন প্রস্তাবের থসড়াটি ছিল না। আমি বলিয়াছিলাম বে., যছদুর দেখিছেছি তাহাতে ভালই হইবে, কারণ, সেবাপ্রামে আমাকে বলা হইরাছিল বে, রাষ্ট্রপতি-পদে ভোষার নির্স্তাচন ভোমার প্রতি ভতটা আছাজ্ঞাপক নহে, যতটা পুরাতন নেতৃত্বের প্রতি আনাস্থাজ্ঞাপক বিশেষ করিয়া সন্ধারের প্রতি। ইহার পর মোলানা সাহেবের সহিত দেখা করিবার জল যথন আমি এলাহাবাদ বাই, তথনই আমি প্রস্তাবিটির আসল খসড়াটি দেখি।

আমাৰ মৰ্ব্যাদাৰ প্ৰশ্ন এবানে উঠে না। উহাৰ কোনও নিজ্প মূল্য নাই। আমাৰ মনোভাব সম্পৰ্কে যদি সন্দেহ পোষণ কৰা হয়, আমাৰ নীতি বা কাৰ্যক্ৰম যদি দেশবাসী অগ্ৰাহ্ম কৰে, তাহা হইকে মৰ্ব্যাদাৰ নাশ অবগুই হইবে। তাৰতেৰ কোটি কোটি মানুবেৰ কাৰ্য্যেৰ সমন্ত্ৰীগত ফলেৰ গুণ বা দোৰ অনুসাৰেই ভাৰতেৰ উপান বা পতন হইবে। ব্যক্তি ৰভই বড় হউন না কেন, ঠাহাৰ নিজ্জ্ম কোনও মূল্য নাই—তাহাৰ মূল্য এই কোটি কোটি নৱ-নাৰীৰ প্ৰতিনিধিছেৰ মাপকাঠিৰ বিচাৰে। স্ক্ৰোং এ প্ৰস্কৃ আলোচনাৰ বিষয়-বহিচ্ছত কৰা যাউক।

তোমার মতে, এখনকার মত দেশ আর কথনও ছহিংস হয় নাই। আমি তোমার এই ছভিমত প্রাপ্রি ছঙ্গীকার করি। বে বায়ু আমি নিঃখাসে লইতেছি, তাহার মধ্যেও আমি হিংসার গদ্ধ পাইতেছি। কিছ সেই হিংসা এখন একটি ভুন্মরূপে গ্রহণ করিয়াছে। আমাদের পারস্পরিক ছবিখাস নিয়ন্তরের হিংসারাদ। হিন্দু এখা মুসলমানগণের মধ্যে ক্রমবর্দ্ধমান বিভেদ সেই হিংসারই প্রকাশ। আমি আরও উদাহরণ দিতে পারি।

কংপ্রেদের মধ্যে ছুনীভির পরিমাণ সম্পর্কে আমাদের মধ্যে মন্ত-পার্থক্য আছে বলিয়া অমুমিত হইতেছে। আমার মনে হয়, ছুনীভি বাড়িতেছে। এ বিবরে প্রাপুরি ভদন্তের অমুরোধ আমি গত করেক মাস ধরিয়া করিয়া আসিতেছি।

এই পরিস্থিতিতে অহিংস গণ-আন্দোলনের জক্ত উপযুক্ত পরিবেশ আমি লক্ষ্য করিতেছি না। চরমপত্রের পশ্চাতে বদি উপযুক্ত কার্য্যকরী শক্তি না থাকে, তাহা হইলে উহা একেবারে মুলাহীন।

কিছ পূর্বে তোমাকে বেরপ বলিরাছি এখনও সেরপ বলিছেছি
আমি বৃদ্ধ ইয়া পড়িয়াছি এবং ডজ্জুলুই সন্তবন্ত: অতি সাবধানী এবং
ভীক হইয়া পড়িতেছি। কিছ তোমার আছে বৌবন এবং বৌবন-জাত বেপরোয়া আশাবাদ। আমি আশা করি, তোমার পদ্মাই ঠিক,
আমার পদ্ম ভূস বলিয়া প্রমাণিত হউক। আমার দৃঢ়বিশাস এই বে,
বর্তমানে কংগ্রেসের অবস্থা বেরপ তাহাতে ভাষার পক্ষে উদ্ধেশ সিং হওরা অসম্ভব। উহার পক্ষে বথার্থভাবে আইন অমান্ত আন্দোসন পরিচালন। করা সম্ভব নর। স্থতরাং ভোষার গুবিষ্যবাণী বদি ঠিক হর, তাহা হইলে আমার আসন এখন পশ্চাতে, সত্যাগ্রহী নেতারপে আমার দিন চলিয়া গিয়াছে।

কুল বালকোট ব্যাপারটির উল্লেখ করিয়াছ বলিয়া আমি আনন্দিত। আমাদের দৃষ্টিভঙ্গীর বিভিন্নতা উহার বারা স্পষ্ট হইরা উঠিরাছে। এ সম্পর্কে বে পদ্ধা আমি গ্রহণ করিরাছি, তত্ত্বক আমি আছে) অনুভগু নহি। আমি অমুভৰ ক্রিভেছি বে, উহার বিশেব ভাতীর মৃদ্য ভাছে। বাজকোটের জন্ত ভামি অন্তান্ত দেশীর বাজ্যে আন্দোলন বন্ধ করি নাই। কিন্তু রাজকোট আমার চোৰ খুলিয়া मितारक छेहा जामारक भथ रमशहैतारह। चार्चत सक जामि निक्रीरक আসি নাই। অনিচ্ছার আমি দিল্লীতে আছি এবং প্রধান বিচারকের বাবের জন্ম অপেকা করিভেছি। বড়লাট আমার নিকট তাঁহার শেব ভারবার্তার বে ঘোষণা করিরাছিলেন, তাহা সফল করিবার জন্ত যুক্তকণ কাৰ্যক্ৰম প্ৰহণ না ক্যা হয়, ততক্ষণ দিল্লীতে থাকা আমি আমার কর্ত্তবা বলিয়া মনে করি। হয়ত আমি কোনওরপ অনিশ্চয়তার সম্বধীন না-ও চইতে পারি। আমি যদি সর্বোচ্চ রাজশক্তিকে ভাচাৰ কঠিবা সমাধা কবিবাৰ জন্ম আমন্ত্ৰণ জানাইয়া থাকি, তাহা হউলে সে কৰ্ত্তব্য **ৰখাৰথভাবে পালন কৰা** হইল কি না তাহা দেখিবার জন্ম দিল্লীতে অবস্থান করিতে আমি বাধা। যে দলিলের অর্থ সম্পর্কে ঠাকুর সাহের সম্পেহের অবকাশ রচনা করিয়াছেন, ভাহার ভাষা কবিষার জন্ত প্রধান বিচারপতিকে নিয়োগ করার মধ্যে আমি কোনও অভাব দেখিনা। প্রসঙ্গত: জানাইতেতি বে. প্রধান বিচারকরপে নছে, বড়গাটের বিখাগভাজন দক আইনজ্জাপ স্তার মরিদ দলিশটি পরীকা করিয়া দেখিতেছেন। বড়লাটের মনোনীত ৰাজ্ঞিকে বিচারকরণে স্বীকার করিয়া আমার মনে হর, আমি শালীনতাঃ এবং জ্ঞানবতার প্রিচয় দিয়াছি এবং উহাপেকা বাছা चावल व्यावाधनीय, ध-विशय चामि वक्रमादिव माविच वाफाइवा विदां हि ।

আমাদের মধ্যে বে ভীষণ মতানৈক্য আছে, সে-সম্পর্কে আলোচনা করিলাম বটে কিছ এ বিষরে আমি গুঢ়নিস্চর বে, আমাদের ব্যক্তিগত সম্পর্ক তদ্বারা আদে কুল হইবে না। এই পার্থক্যের মধ্যে বলি আন্তরিকতা থাকে, আমার বিশাস ভাহা আছে, তাহা হইলে, পার্থক্যন্তনিত বাক্তা উহা কটাইয়া উঠিতে পারিবে।

নেভাজীর পত্র—৪

জিরালগোড়া পো:, জেলা মানভূম, বিহার, ভই ৰপ্রিল, ১১৩১।

लिय प्रशंखांकी.

আমার মেজ দাদ। শরংকে এক পত্রে আপনি উভর পক্ষের নেতাদের মধ্যে এক প্রাণখোলা আলোচনার পরামর্শ দিরাছিলেন, বাহাতে ভবিষ্যকে সম্মিলিত ভাবে কাক্ষ করিবার পথ পরিভার হয়। ইয়া অত্যম্ভ উচ্চালের পরামর্শ এবং অতীতে বাহাই ঘটিয়া থাকুক না কেন, আমি এ-বিবরে বথাসাধ্য করিছে রাজী আছি। এ-বিবরে আমার হারা কিছু করা উচিত মনে করেন কিনা এবং উচিত মনে করিলে, কি করা উচিত—সে সম্পর্কে আপনার অভিমত আনাইবেন কি ? আমার ব্যক্তিগত অভিমত এই বে, এই ঐক্যুনাধনের প্রচেষ্টার আপনার প্রভাব এবং ব্যক্তিছ বথেই কার্য্যকরী হইবে। আমরা ঐক্যুনাধনের সকল আশা ত্যাগ করিবার পূর্বে আপনি কি সমগ্র শক্তি নিরোগে শেব চেষ্টা করিবেন না ? এখনও দেশবাসী আপনাকে কি দৃষ্টিতে দেখে তাহা মরণ করিতে অমুরোধ করিতেছি। আপনি কোনও দলের পক্ষপাতিছ করেন না। স্মতরাং ব্ধামান দলগুলিকে ঐক্যুবছ করার জন্ত অনুসাধারণ এখনও আপনার মুখের দিকে চাহিরা আছে।

उदाकिः क्यिष्टि गर्रेन मन्नार्क जाननि त्व नवामर्च निवासन, সে সম্বন্ধে আমি গভীবভাবে চিস্তা করিতেছি। আমার মনে হইতেছে, ব্দাপনার উপদেশটি নৈরাণ্ডের মন্ত্রণা। এক্যের সকল ব্দাশা উহা নিশুল কবিবে। বিভেদ হইতে উহা কংগ্রেদকে বক্ষা কবিবে না, উপরত্ম এরণ শক্তটের জন্ম পথ সহজ্ঞ করিবাই দিবে। বর্তমান অবস্থার একদলীয় ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের পরামর্শ দেওয়ায় অর্থ দলওলিকে এখনই বিচ্ছিন্ন হইতে উপদেশ দেওৱা। উহা কি এক মারাত্মক দারিভবোধ নছে ? আপনি কি এই বিবরে দচনিশ্চর ছইথাছেন বে, একবোগে কাল অসম্ভব ? আমাদের পক্ষের অভিমত এই বে, তাহা আমরা মনে করি না। "ক্ষমা করা এবং ভূলিয়া বাওরার জন্ত আমরা ব্থাসাধ্য চেষ্টা করিতে প্রস্তুত। একই আদর্শের জন্ত একবোগে কাজ করিতে আমরা ইচ্ছক। আমাদের সকলের মধ্যে এক সম্মানজনক আপোব মীমাংসার জন্ত আমরা আপনার উপর নির্ভর করিতে পারি। আমি ইতিপূর্বেই আপনাকে विनदां कि अवर निविदां कानारेदां कि त्व, कराज्यां मर्गरेन अवन বেরূপ আড়ে এবং আলব ভবিষাতে উহার বিশেষ রূপ পবিবর্তনের সম্ভাবনা না থাকায়, স্কাণ্টীয় কাৰ্যানিকাংক স্মিতি গঠনট সর্কোৎকৃষ্ট বাবস্থা চটবে। এই ক্মিটিডে ব্থাসম্ভব সকল দলের প্রতিনিধির স্থান থাকিবে।

चामि कानिएक भाविदाहि या, चाभनि এইक्रभ मर्ख्यमगीर ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের পক্ষপাতী নহেন। বিবোধিতা কি নীতির দিক দিয়া (বেমন, আপনার মতে একবোগে কাম অসম্ভব) অধবা উচা কি আপনার এই অভিমতের অক বে, ওৱাৰ্কিং কমিটিতে গান্ধীবাদীদেৱ (আমি এই বাক্যাংশটিব ব্যবহার এইবর কবিলাম বে. উহাপেকা উত্তম শব্দ পাই নাই এবং এছৰ আপনি আমাকে ক্ষম করিবেন) প্রতিনিধিত অধিক থাকা প্রয়োগন ? শেষের কারণটি সত্য হইলে, অমুগ্রহপূর্বক আমাংক তাহা জানাইয়া দিন। তাহা হইলে সমগ্র বিষয়টির পুনর্বিবেচলার এক সুবোগ আমি পাইতে পারি। আর পুর্বের কারণটি সভা হইলে, এই পত্ৰে আমি বাহা জানাইতেছি তাহার আলোকে আপনার উপদেশটি অমুগ্রহ পূর্বক পুনবিবেচনা করুন। কংগ্রেসে বধন আমি ওয়াকিং কমিটিতে বোগ দিবার জন্ম সমাজত্ম-বাদীদের আমন্ত্রণ জানাইয়াছিলাম তথন আপুনি স্পষ্ট গ্ৰায় বলিবাছিলেন বে, আমার ঐ কার্য্যের পশ্চাতে আপনার সম্বন ছিল। ভাহার পর কি প্রিস্থিতির এতই ওঁকুত্পূর্ণ পরিবর্ত্তন ইইয়াটে ৰাহাৰ কলে আপনি এখন একদলীয় ওৱাৰ্কিং কমিটি গঠনেৰ ^{এই} পীড়াপীতি করিছেতেন ?

আপনি আপনার পত্রগুলিতে আমাদের হুইটি দল সম্পর্কে ব্লিয়াছেন বে, উহারা পরস্পারের একান্ত বিরোধী। আপনি আপনার মছবাটি পরিকার করিয়া বুঝাইশ্বা বলেন নাই। আপনি বে বিবোধের উল্লেখ কবিয়াকেন তাহা কার্যক্রমের ভিজিতে না ব্যক্তিগত সম্পর্কের ভিত্তিতে স্থাপিত, তাহা পরিষার বুরা বাইতেছে না। আমার মতে, ব্যক্তিগত সম্পর্কের ব্যাপার্টা, নিতান্ত সামরিক। ঝগড়া এবং মারামারি করিতে আমরা বেমন পারি. শামাদের মতানৈক্য ভূলিয়া বাইতে এবং হস্তমৰ্দন করিতেও আমরা তেমনই পারি। উদাহরণস্বরূপ, আধুনিক কংগ্রেসের ইতিহাসে, স্বরাজ্যবাদী কাহিনীটির কথাই ধরুন না। বতদুর আমি জানি, কিছুকাল বিৰোধের পর, আপনার সহিত দেশবদ্ধ ও পণ্ডিত মতিলাল্ভীর সম্পর্ক বছদুর সম্ভব মধুর হইরাছিল। গ্রেটবুটেনে বিপাপের শময়, বড় বড় রাজনৈতিক দলগুলি স্ব সম্বেই এক্যবদ্ধ হইয়া একই মল্লিসভার বোগ দিয়া কাল করিতে পারে। ইউরোপের অক্তাক্ত দেশে, বেমন ফরাসী দেশে, প্রত্যেকটি মদ্রিদভাই সর্বাদদীর মদ্রিদভা। বুটিশ এবং ক্রাসীদের তুলনার কি আমবা কম দেশপ্রেমিক ? বৃদি আমবা তাহা না হইরা থাকি, তাহা হইলে সর্বদলীয় কমিটি গঠন ক্রিয়া স্মঠূভাবে কাল ক্রিভে পারিব না কেন গ

আপনি বলি মনে করেন বে, ব্যক্তিগত বিষয় নহে, কার্যক্রমের ভিত্তিতেই আপনার বিয়েধিতা, তাহা হইলে এই বিষয়ে আমি আপনার মতামত জানিতে চাহি। আমাদের কার্যক্রমের সহিত আপনাদের কার্যক্রমের পার্থক্য কোধায় এবং তাহা কি এন্ডই গভীর বে, একবোগে কাল্ল সন্তব নহে ? আমি জানি বে, আমাদের মধ্যে মস্ট্রেধতা রহিরাছে। কিছু আমি ওয়ার্কিং কমিটির সদস্তগণকে তাহাদের পদত্যাগ-পত্রের জবাবে বলিরাছিলাম বে, আমাদের মধ্যে বত বিবরে মতপার্থক্য রহিরাছে তাহাপেকা অনেক বেনী বিষয়ে মতৈক্য রহিরাছে। ত্রিপ্রীর ঘটনা সত্তেও আমি এই মত এধনও পোষণ করি।

বরাজের বিষয়ে আমার চরমপত্র সম্পর্কিত অভিমত সম্পর্কে লাপনার পত্রগুলিতে বলিরাছেন বে, অহিংস গণসত্যাগ্রহের উপরোগী আবহাওয়া এখন নাই। কিছু আপনি কি রাজকোটে অহিংস গণসংগ্রাম স্কুল্প করেন নাই ? অভাভ দেশীর রাজ্যেও কি নাপনি তাহাই করিভেছেন না ? এই দেশীররাজ্যগুলির অধিবাসীরা ত্যাগ্রহ আন্দোলন পরিচালনে অপেকাকৃত অনভিজ্ঞ। বুটিল তারতের আমরা অধিকতর শিক্ষার এবং অভিজ্ঞার দাবী করিতে গারি—অভতঃপক্ষে উহাদের ভুলনার। ব্যক্তিবাধীনতার এবং গারিভিশীল সরকার গঠনের দাবীতে বলি দেশীর-রাজ্যগুলিকে সংগ্রাম করিতে দেওরা সভব হইতে পারে, ভাহা হইলে বুটিল ভারতের নামাদিগকে তাহা দেওরা সভব নর কেল ?

গানীবাদীদের সমর্থনৈ ত্রিপুরী কংগ্রেসে বে জাতীর দাবীর প্রস্তাব পাশ কইরাছিল, তাহার কথা থকন। বলিও উক্ত প্রস্তাবটিতে স্থলর স্থলর জন্পাই বাক্যাংশ আছে এবং করেকটি বড় বড় আদর্শের কাঁকা বুলি আছে, তথালি উহার সহিত চরম্পত্র দান এবং আগামী কথামের জন্ত দেশকে প্রস্তুত কয়া সম্পর্কে আয়ার অভিমতের বছ বাদ্ধ আছে। আগমি কি এই প্রস্তাবটি সমর্থন করেন? বদি ভাহা করেন, ভাহা হইলে আর এক ধাপ অঞ্চনর হইরা আমার পরিকলনাটি গ্রহণ করিভে পারেন না কেন গ

এবার আমি পণ্ডিত পছের প্রস্তাব সম্পর্কে বলিব। ইহার প্ৰধান অংশটিতে (শেবাংশটির কথা বছিতেছি) হুইটি বিষয়ের উল্লেখ আছে। প্রথমত: ওয়ার্কিং কমিটি আপনার বিধাসভাজন-পুরা বিশাসভালন হওয়া চাই। বিভীছত: আপনার ইচ্চামুসারে উহাকে গঠন করিছে ছইবে। আপনি বদি একদলীয় ওয়াকিং ক্মিটি গঠনের প্ৰামৰ্শ দেন এবং একপ কমিটি গঠন করা হয়, তাহা ইইলে লোকে বলিতে পাবে যে, উহা "আপনার ইচ্ছামুসারে" গঠিত হইয়াছে : কিছ ইহা কি ধবিয়া লওয়া বাইতে পাবে বে, উছা আপনার বিশাসভাজন হটবে ? এ. আট. সি. সির সভার পাডাইরা উঠিবা একথা বলিবার স্বাধীনতা থাকিবে কি বে, আপনি একদলীয় ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের উপদেশ দিয়াছেন এবং নৃতন কমিটি আপনাৰ বিশাসভাকন ? অপর পক্ষে আপনি যদি এরপ ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের প্রমর্শ দেন যাতা আপ্নার বিখাস্ভাজন নতে, তাহা হইলে আপ্নি কি পদ্ধ প্রস্তাবকে কার্যাকরী হইতে দিবেন—আপনার নিজের দৃষ্টিকোপ হইতে তাহা হইলে আপনি কি জায়সম্মত কাৰ্যা করিবেন ? সম্মাটির এই দিকটি আপনাকে ভাবিয়া দেখিতে বলি। পছ প্রস্তাবটি বদি আপনি স্বীকার করেন ভাছা হইলে তথু বে নুতন ওয়ার্কিং কমিটি সম্পর্কে আপনার ইচ্ছা জানাইতে হইবে তাহা নহে, এ একই সময়ে, আপনার বিশাসভাজন হয় এমন এক কমিটি গঠম-সম্পর্কে পরামর্শ দিতে হইবে।

পম্ব প্রস্তাবের গুল সম্পর্কে এখনও আপনি বিছ বলেন নাই। আপনি কি উহা সমর্থন কংবন ? অথবা আপনি এমন একটি সর্ব্ববাদিসমত প্রস্তাবের পক্ষপান্তী, বাহা কমবেশী আমাদের প্রাম্পায়বারী হইবে, বাহাতে আপুনার নীতির প্রতি আছা আপুন করা হইবে, আপনার নেতৃত্বে পুরা বিশাস জানান হইবে এবং বাহাতে বিৰোধমূলক ধারাওলি সংযোজিত থাকিবে না ? আবও, পূর্বোঞ্চ পদ্ধ প্রস্তাব পাল হইবার পর, ওয়ার্কিং কমিটি গঠন সম্পার্ক রাষ্ট্রপতির ক্ষতাটি কিরপ দাঁডাইবাছে ? আমি পুনরায় এই প্রশ্ন করিতেছি, কারণ, বর্তমান কংগ্রেস শাসনতর প্রকৃতপক্ষে শাপনাংই রনো এবং সেম্বর এ—সম্পর্কে আপুনার অভিমত আমার উপর বিশেষ প্রভাব বিস্তার করিবে। এ-সম্পর্কে আর একটি প্রশ্ন আছে এবং তাহা আপনাকে ভিজ্ঞাসা করিতেছি: পর প্রস্তাইটিকে কি আপমি আমার প্রতি অনাভাজাপক বলির। মনে করেন ? বদি ভাহাই মনে করেন, ভাষা কইলে, আমি তৎক্ষণাৎ পদত্যাগ করিব এবং ভাষাও বিনাসর্তে। আমার সাংবাদিক বিবৃতিতে এই প্রশ্নটি সম্পর্কে করেকটি পত্তিকা সমালোচনা কবিয়াছেন। তাঁহাদের সমালোচনার ভিত্তি হইতেছে এই বে, আমার পক্ষেপদত্যাগ করা উচিত। এ মুল্পরে আপনার অভিমতের এবং আপনার বাজিংখ্য প্রভি বাজিগত শ্রমাবশেষ্ট সম্ভবত: এরপ মনোভাব গ্রহণ করা হইয়াছিল।

করেকটি সংবাদপত্তে বেরপ মন্তব্য করা ইইরাছে, সন্তবতঃ
আপনিও সেইরপ মনে করেন বে, পুরাতন নেতাদের বর্ত্ত্বের
আসনে পুনরার বসান উচিত। যদি তাহাই হয়, তাহা ইইলে আমি
আপনাকে অন্থরোর করিব—কার্য্যকরী রাজনীতিতে ফিরিয়া আমুন,
কংগ্রেসের তারি আনার সভ্য ইউন এবং ওয়ার্কিং ক্মিটির ভার এহণ
ক্ষন। এরপ উন্দির ভক্ত আমাকে ক্মা করিবেন। কাহারও

প্রতি আঘাতের অভিপ্রায় না লইয়াই আমি ইহা বলিতেছি। আপনার অমূচরগণের, এমন কি আপনার বিশিষ্ট, প্রিয় অমূচরগণের সহিত আপনার পার্থকা আকাল-পাতাল। এমন লোক বহু আছেন

া আপনার জন্ত সং কিছু কবিতে পাবেন কিছু উঁহাদের জন্ত নহে। আপনি কি একথা বিশাস কবিবেন বে, গত রাষ্ট্রপতি নির্মাচনের সময় করেকটি প্রদেশে কয়েক জন গান্ধীবাদী আমার পক্ষে ভোট দিয়াছিলেন, পুরাছন নেভাদের নির্দেশ অগ্রাছ করিরা ? আপনার ব্যক্তিছের প্রভাব যদি এ বিবরে না পড়ে তাহা হইলে, পুরাছন নেভাদের বিরোধিতা সত্ত্বে আমি তাঁহাদের সমর্থন পাইতে থাকিব। ত্রিপুরীতে পুরাছন নেভারা চাতুর্য্যের সহিত সরিয়া পড়িয়াছিলেন এবং অধিকতর চাতুর্য্যের সহিত আমাকে আপনার বিরোধিতার সম্মুখীন করিয়াছিলেন। (কিছু আপনার সহিত আমার কোনও বিবাদ ছিল না)। পরে তাঁহাদের বিবাট জয় এবং আমার পরাজয় হইয়াছিল। আসল ব্যাপার এই বে, উহা তাঁহাদের জয় বা আমার পরাজয়ের স্টক নহে। উহা আপনারই জয়ের স্টক (আপনার বিহুছে সংগ্রাম করিবার কোনও কারণ না থাকা সত্ত্বে)! কিছু উহা বথার্থ জয় নহে, কিছুটা আত্মসম্মান বিক্রম্ব বারা উহা লাভ হইয়াছে।

কিছ আমি অবাস্তর প্রান্তর আসির। পড়িতেছি। আপনি বাহাতে প্রত্যক্ষরপে, খোলাথুলি ভাবে কংগ্রেসের পরিচালনা করিতে পারেন, দেজত আমি আপনার নিকট আবেদন করিতে চাহিয়াছিলাম। উহা থারা সকল সমতা। সহক্ষ হইরা ধাইবে। পুরাতন নেতৃত্বের বিক্লছে বিরোধিতার অনেকথানি—উহার বিজ্লছে বিরোধিতা নি-চংই আছে—আপনা হইতেই তথন অবসান হইবে।

আপনি বদি তাহা না পারেন, ভাচা ইইলে আমার এবটি বিকর পরামর্গ আছে। আমাদের দাবীমত স্বাধীনভার জন্ম জাতীর সংগ্রাম, বুটিশ সরকারকে একটি চরমপত্র দিয়া শুরু করুন, এই আমার অমুরোধ। ভাচা শুরু করিলে, আপনি বদি চাহেন, তাহা ইইলে, আমরা সানন্দে দারিখের পদন্তলি ইইভে সরিয়া দাঁড়াইব ; আপনি বাহাদের বিশাস করেন বা পছন্দ করেন, তাঁহাদের হল্পে ঐ দারিখের পদন্তলি শুদ্ধন্দে ছাড়িয়া দিব। কিছ একটি মাত্র সর্প্তেশ ভাগিয়া দিব। কিছ একটি মাত্র সর্প্তেশ ভাগিয়া দিব। কিছ একটি মাত্র সর্প্তেশবানতা-সংগ্রাম পুনরায় শুরু করিভেই ইইবে। আমার স্তার, জনসাধারণও উপলব্ধি করিভেছেন বে, বর্তমানে আমাদের নিকট বে স্ববোগ উপস্থিত ইইয়াছে, সেইরপ প্রবোগ একটা জাতির জীবনে কচিৎ আসে। সেইজগ সংগ্রাম পুনরারস্তে সহায়ভার জ্ঞাবনা বে কোনওরপ আস্বভাগি করিতে রাজী আছি।

বদি শেব পর্যন্ত আপনি বলেন যে, সর্ববলীর ওরাকি: ক্মিটি আচল, আমাদের সমূথে একমাত্র বিকল্প ব্যবস্থা হইতেছে একদলীর ওরার্কি: কমিটি এবং আপনি বদি চাহেন বে আমার পছসমত ব্যক্তি লইরা উক্ত কমিটি গঠন করা আবগুক, তাহা হইলে আমার একান্ত অমুরোধ এই বে, আগামী কংগ্রেসের অধিবেশন পর্যন্ত আপনি আমার প্রতি আহাজ্ঞাপন করুন। ইন্তিমধ্যে সেবা ও আত্মত্যাগের দারা বদি আমার আমাদের নীতির ভাষ্যতা প্রমাণ করিতে না পারি, তাহা হইলে কংগ্রেসের নিকট আমরা বিক্তিত হইব এবং স্থভাবতঃ ও ভারতঃ দারিবপূর্ণ পদ হইতে আমরা বিতাড়িত হইব । বর্ত্তমান অবহার, আপনার আত্মতাপক তোটের অর্থ এ, আই, সি, সির আত্মতাপক

ভোট। আপনি বদি আমাদিগকে আপনার আম্বাক্তাপক ভোট না দেন অথচ আমাদিগকে একদলীয় ওয়াবিং কমিটি গঠন করিতে বদেন, তাচা চইলে আপনি-পদ্ধ প্রস্তাবকেই কার্য্যে পথিণত করিবেন।

পুনরার আমি আপনাকে অমুরোধ করিতেছি, আপনি দয়া করিয়া জানান, নীতির দিক দিয়া আপনি সর্বাদনীর ক্যাবিনেট (ওয়ার্কিং কমিটি) গঠনের বিরোধী, না আপনি উক্ত ক্যাবিনেটে পুরাতন নেতাদের সংখ্যাধিক্য চাহেন বলিয়া বিরোধিতা করিতেছেন। ২০শে মার্চের প্রথম চিঠিতে আমি এই প্রশ্নই করিবাছিলাম।

এই পত্ৰ শেষ কবিবাৰ পূৰ্বে আমি ছই একটি ৰাক্তিগত বিষয়ে জানাইডেছি। জাপনি পত্তে জানাইয়াছেন বে, বাহাই ষ্ট্রক না কেন, আমাদের ব্যাক্তগত সম্পর্কের অবনতি হইবে না। আমি স্কান্তঃক্রণে এই আশা পোষণ করিছেছি। প্রসঙ্গতঃ একথা কি আমি বলিতে পারি ষে, জীবনে এফটি বিষয়ে আমার গর্কবোধ আছে—আমি ভন্তলোকের সম্ভান এবং নিজে ভন্তগোক। দেশবন্ধ দাশ আমাদের প্রায়ই বলিতেন— রাজনীতি অংশকা জীবন বড়।" সেই দিকা আমি তাঁহার নিকট হইতে শি**থিরাছি**। শৈশ্ব হইতে বে ভদ্রতার আদর্শ আমার মনের মধ্যে গাঁখা বহিরাছে এবং আমার মনে হর, বাহা আমার বক্তে আছে, ভাছা इहेट्ड क्रेड इहेदाहि विनदा मान हरेल, स्नामि सांव धक्रिया বাজনীতিক্ষেত্রে থাকিব না। মানুষ হিসাবে আপনি আমাকে কি চোখে দেখেন, তাহা জানিবার উপায় আমার জীবনের সামায় আলেট দেখিয়াছেন। আমার রাজনৈতিক প্রতিখণীরা আমার বিক্লাৰ কভ গৱাই না আপনাকে শোনাইয়াছেন। সম্প্ৰতি কয়েক মাস আমি জানিতে পারিরাছি বে, আমার বিক্লছে মুখে মুখে बक्षि श्रुरकोननी चथ्ठ छोर्ग व्यव्यवस्थि वानान इट्रेस्ट्रह् । বলপর্বেট আমি এ বিষয় আপনার গোচরীভূত কবিতাম কিছ প্রচারের বিষয়বন্ত এবং কাহারা প্রচার করিতেছে, সে সম্পর্কে প্রতাক প্রমাণ না পাওয়ায় তাহা সম্ভব হয় নাই। বিষয় সম্পর্কে পরে আমি জানিতে পারিয়াছি, বদিও আমি এখনও জানিতে পারি নাই কাহারা এই কার্য্য করিতেছেন।

পুনরার আমি অবান্তর প্রসঙ্গে আসিরা পড়িরাছি। একটি
পত্রে আপনি এই আলা প্রকাশ করিয়াছিলেন বে, আমি বাহাই
করিনা কেন, "ভগবান আমাকে পথ দেশাইরা চলিবেন।" বিশাস
কর্মন মহাআজী, সকল দিবসব্যাপী আমি, একটি প্রার্থনাই
করিতেছি—আমার দেশের এবং দশের মুক্তির পথ-সম্পর্কে আমি
বেন আলোক পাই। প্রয়োজন এবং স্বরোগ উপস্থিত হইলে
আমি বাহাতে নিজেই দৃঢ়ভার সহিত সমুখীন হইতে পারি,
সেজন্ত শক্তিও অমুপ্রেরণার প্রার্থনা আমি করিয়াছি। আমার
দৃঢ়বিখাস এই বে, একটা জাতি বাঁচিতে পারে বদি সেই আভির
অন্তর্ভুক্ত ব্যক্তিসন্তা দেশের প্রয়োজন উপস্থিত হইলে মরিবার জন্ত
প্রস্তুক্ত ব্যক্তিসন্তা দেশের প্রয়োজন উপস্থিত হইলে মরিবার জন্ত
প্রস্তুক্ত থাকে। এই নৈতিক (বা আধ্যান্থিক) "হারাকিরি" সহজ্প
সহে। দেশের প্রয়োজন উপস্থিত বথনই হইবে তথনই বেন
ভাহার সমুখীন হইতে পারি, সে শক্তি, ভারন্ন বেন আমাকে দেন।

আশা করি আপনার খাড়োরতি হইতে থাকিবে। আবি বীরে বীরে শ্বন্থ হইরা উঠিতেছি। সঞ্জ প্রণামাজ্যে—

ব্দাপনাৰ ক্ৰেছেৰ—সূতাৰ।

মাসিক ৰুমুমতী—বৈশাধ





অপূর্ব সাদা করে জামাকাপড় কাচে

भाक - जाणाम्ह्या तोल भाउँ जाती जाभतात जामा-কাপড়কে এক অপুর্ব শুত্রতা দের, কোর কাপড় কাচার উপাদার যে জামাকাপড়কে এত সাদা করতে পারে তা ছিল আপনার ধারণাব অতীত ! এক প্যাকেট ৰাবহার করুন, আপুনাকে মানতেই হবে যে... আপনি ৰখনও কাচেননি জামাকাপড় এত যুক্তমকে সাদা. এত কুৰুৰ উৰ্জন কৰে! সাঁচ, চাৰৰ, সাড়ী তোৱালে—সবকিছু কাচাৰ

আপনি কথনও দেখেননি এত ফেণা—ঠাওা বা গ্রম অলে, কেণার পক্ষে প্রতিকুল জলে, সাঙ্গ-সঙ্গে আপনি পাবেন ফোরে এক সমূত্র! আপনি কথনও জানতেন না যে এত সহজে কাণত কাচা যায়! বেশি পহিল্লম নেই এতে ! ভেজাদো, তেপা, এবং গোওৱা মানেই জাপনার স্কাপনি কথনও পাননি অগপনার প্যসার মূল্য এত চমংকারভাবে किता। ক্লামাকাপড় কাচা হয়ে গেল।

একবার সাফ ব্যবহার করনেই আপনি এ কথা মেনে নেবেন ! সাক

. अभिन्न निकारे भवश्च काव प्रभूत. जिल्ला कावा आहाँ कावा कावा आहाँ कावा आहाँ कावा आहाँ कावा आहाँ कावा आहाँ कावा SU, SAKE NO

अला और खामने ! विन्द्राव निकार विभिटिए, क्यून क्षत्र ।



সাত্যকি

11

পূল বেঁখে ছেলেরা চলল পিক্নিক করতে। সমস্ত দিন একসঙ্গে মনের খুলীতে কাটাতে পারবে ভেবে ওবা চঞ্চল হয়ে উঠেছে। আৰু কোন শাসন নেই, নেই পড়া না পারার ভর। ওদেরই মধ্যে কেউ কেউ হয়তো ভাবছে, বদি সারা বছরই এ রকম আনন্দ করে কাটানো বেত।

একটা বাগান-বাড়িতে এসে পৌছলুম।

বড়লোকের সধের বাড়ি। দেখেই বোঝা বার। এক দিকের কোণ উঁচু করে ইট দিরে গোল করে বেরা জারগার জারগার। জার তার মাঝধানে মৌস্মী ফুলের বাছার। কাঁটালিটাপার সাহগুলিও স্থার করে লাগানো। গোট থেকে লোজা বাড়ি পর্যন্ত ফুড়ি-ছাওরা পথ। পথের ছুঁধারে লখা লখা পামগাছের সারি। জনেকধানি জারগা জুড়ে পুকুর। তার ওপর সেতু। ছুটো ডিজি নৌকাও বাঁধা জাছে ঘাটে, দেখা গেল।

গ্রমন ক্ষার জারগায় এসে ছেলেরা মহানক্ষে হটোপুটি জারস্ক করে দিল। দলে ছিলেন গ্রুন প্রবীণ শিক্ষক। তাঁরা প্রথমে বাধা দিকে চেয়েছিলেন। পরে ছেলেদের উৎসাহ দেখে তাঁরা নিরস্ক হন। তথু সারধান করে দিলেন, বেন কেউ ফুল না ছেঁড়ে কিংবা কোন সাছপালার ক্ষতি না করে।

বড় দেখে একটা গাছের নীচে রাক্সা চাপান হয়েছে। ছোট ছোট দলে ছেলেরা বিভক্ত হয়ে এদিক-ওদিক বেড়াছে। কেউ কেউ নৌকা বাইতে চাইল। মালীর সঙ্গে পরামর্শ করে শিক্ষক মহাশর ভাদের অমুমতি দিলেন।

বেলা যে দেখতে দেখতে কেমন করে কেটে পেল, বোঝা গেল
না। আমি একটু অক্তমনত্ব ছিলুম। মনে বিগত দিনের ছবি
তেনে উঠছিল। আমিও এদেরই মতো এক দিন ছোট ছিলুম।
এমনি দৌরাক্স করতুম। বড়রা কখনো হাসিমুখে সহু করতো,
কখনো বা করতো না। বখন করতো না তখন হর বকুনি, নরতো
মার খেতুম। তবু ভাল লাগত। তখন ভাবতুম বড়দের কত মজা।
আমাদের মতো পড়া দেবার যন্ত্রণা সহু করতে হর না। কেমন
বখন ইচ্ছে, তখন বাড়ি আসে। আর আমার বাড়ি ফিরতে একটু
দেবী হলেই ডয়কর সব কাও হতো বাড়িতে। আহা, বদি আবার
কোন দিন এই ভাবনা বিহীন দিনগুলির দেখা পাই!

् की चनन পৰিকল্পনা। নিজেব মনেই হাসি পাছিল। कानाই

ওদিকে একটা বাচ্চা ছেলেকে নিয়ে ঘূবে বেলাছে:। সারাদিন ও সেই ছেলেটিকে নিয়ে কাটাল। কখনো ওকে ওলতি তৈত্রী করে দিছে, কখনো বা ওর সঙ্গে মার্বেল খেলছে। কানাইও বেন একটা ছোট ছেলে হয়ে পড়েছে।

ফেরবার পথে কানাই বলল, শহরকে দেখতে বেশ, না ?

- —কোন্ শহর ? আমি বিশিত হয়ে জিজাসা করলুম।
- —বা বে! বে বাচ্চা-ছেলেটার সঙ্গে আমি সারাদিন কাটালুয সেই তো শঙ্কর। কানাই অফুযোগ করল।

-01

কানাইকে সাধনা দিয়ে বলি, হাা, ছেলেটা বেশ দেখতে। ভোষার বদি ওরকম একটা থাকতো!

कानारे नमञ्ज एकीएक वनन, (४)९, की व वर्णा।

বুঝলাম কানাই ছেলেটিকে ভালবেসে ফেলেছে। আর এই একই কারণে ওর বিষের প্রস্তাব করা আমার পক্ষে অভ্যস্ত সহজ্ঞসাধ্য হরে বাবে। ভগবানকে ধয়াবাদ দিলুম।

বাড়ি ফিবে এসে আর বাইরে বেতে ভাল লাগল না। বারাক্ষার একটা মাহর বিভিন্নে শুরে পড়লুম।

পামা এসে একবার জিজ্ঞানা করল, শরীর ধারাপ লাগছে না কি ?

মাধা নেড়ে বললুম, না।

- —ভবে ভৱে পড়লে বে ?
- -- ध्यनि ।

পামা নিশ্চিত্ত মনে তার কাক্ষ করতে চলে গেল। কি বেন ভাবছে পামা! সেই কাল রাভ থেকে ওকে একটু গভীর-গভীর দেখছি। পরিহালের প্রবে আর কথা-কাটাকাটি নেই, নেই কাছে এলে সোহাগ জানানো। আছ ও ওগু দারীর খারাপ কিনা জিজ্ঞাসা করেই চলে গেল। অল দিন হলে কাছে এলে বসতো, কপালে-বৃকে হাত রেখে দেহের তাপ পরিমাপ করতে চেষ্টা করতো। কিছুই করলো না দেখে ওকে একবার ডাকতে ইছা হলো। তার পরই ভাবলুম, খেছার বখন ও আসেনি তখন ওকে ডাকা মানে ওর অভিমানকে প্রশ্রম্ব দেওরা। মেরেদের তোরাজ করার পক্ষে আমি নই। তাতে ওরা পেরে বসে। আমি আরামের সলে একটা নিগারেট ধরিরে টারতে লাগকুম।

বাইরে গলার আওরাজ পাওরা গেল। মহিম ডাকছে, নরন ফিরেছো নাকি গো ?

মহিমকে এনে মাতৃরের এক দিকে বসতে দিলুম। পা মুড়ে বাসিরে বসে মহিম জিজ্ঞাসা করলো, তার পর কথন ফেরা হলো ?

- —এইভো এলুম।
- —আবার বিরক্ত করলুম না ভো ?
- -- ना ना। कि (व वालन ! চা शांदन ?
- চা ? তাম স্বনয়। কিছু তার জ্বন্তে তোমায় বাস্ত হতে হবে না। বৌমা, ও বৌমা!

পামা মাধার ঘোমটা একটুধানি টেনে বেরিয়ে এলো আঁচলে ভিজে হাত মুছতে মুছতে।

মহিম বললো, ছ'কাপ চাকর তো বৌমা ভাল করে। থ্ব ভাল বেন হয়, বুয়লে ?

মাধা ভূলিয়ে সায় দিয়ে পামা বেরিয়ে গেল।

- —ভার পর ধবর কি বলুন ? আমি জিজ্ঞাসা করলুম।
- —খবর আর কি ভারা! শিব বাবুর মেরেকে দেখতে বাওয়া ভাহলে ঠিক, কী বলো ?
 - —হাঁ। হা। এ বিষয়ে আপনি নিশ্ভি খাকুন।
- —তা বলি, কানাই ছোকরা গোল কোণার ? তাকে দেখছি নাবে ?
 - —কানাই একটু বাইরে বেড়াভে গেছে।

চারে একটা নরম চুমুক দিয়ে মহিম বলল, আ! মহিম চলে বাবার পর ছারিকেনের পলতেটা একটু বাড়িরে দিরে হিসেবের থাতা খুলে বসলুম। কত দিন বে হিসাব লেখা হরনি। নোট-বই থেকে সব পাকা খাতার তুলতে লাগলুম। কানাইকে হিসাব ব্রিয়ে দিতে হবে। ওর বখন আলাদা সংসার হছে তখন ওর খবচপত্র আলাদা করে দেওরাই ভালো। একমনে কাজ করতে শুকু করলুম।

আমার একাগ্রতা ভাষিয়ে দিয়ে কানাই বদদ, কি **লভ** হিসাব করছো ?

- এই অনেক নিন খাতা লেখা চচ্ছে না, ভাই।
- —বাথো তুলে ওপব। যত বাব্দে ঝক্কি ঝামলা বাপু।
- —দে কি, কানাই ? ভূমি হিসেব বুঝে নেবে না ?
- —হিদেব বুঝে নেব ? মানে **?**

আমাকে নিক্তর দেখে কানাই আবার বলল, ও বুৰেছি। আমাকে আলাল করে দিতে চাও। কিছ কেন ?

- —ভোমার ভালোর করে।
- আমাৰ ভালো-মন্দ বোঝাৰ বয়েস কী আমাৰ হয়নি 🕈
- —হংয়ছে। কিছ একটা কথা তুমি ভূসে বাছ, কানাই। তুমি জান বে জামার আর পামার সভে বিরে করার পর ডুমি বাস করতে আর পারো না ?
 - —কেন পারি না ?

অলৌকিক দৈবশণ্ডিসমান্ত ভারতের সক্ষান্তেও তান্ত্রিক ও তেয়াভিবিষ্

জ্যোতিষ-সম্রাট পশুত শ্রীযুক্ত রমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য, জ্যোতিষার্থব, রাজজ্যোতিষী এন্-আর-এ-এন (লগুন),



(জ্যোতিষ-সমাট)

নিথিল ভারত ফলিত ও গণিত সভার সভাপতি এবং কাশীছ বারাণনী পণ্ডিত মহাসভার ছারী সভাপতি।
ইনি দেখিবামাত মানবজীবনের ভূত, ভবিষাৎ ও বতমান নির্ণয়ে সিন্ধহন্ত। হন্ত ও কপালের রেখা, কোটী
বিচার ও প্রস্তুত এবং অন্তত্ত ও হুই গ্রহাদির প্রতিকারকল্পে শান্তি-স্বন্ত্যায়নাদি, তান্ত্রিক ক্রিয়াদি ও প্রত্যক্ষ করপ্রদ
কবচাদি হারা মানব শীবনের ছুর্ভাগ্যের প্রতিকার, সাংসারিক অশান্তি ও ভান্তার কবিরাজ পরিত্যক্ত কৃত্রিন
রোগাদির নিরাময়ে অলৌকিক ক্ষমতাসম্পন্ন। ভারত তথা ভারতের বাহিরে, যথা—ইংলাও, আমেরিকা,
আফিকা, অস্ট্রেলিয়া, চীন, জাপান, মালয়, সিজ্বাপুর প্রভৃতি দেশহ মনীবীবৃদ্ধ তাহার অলৌকিক
দৈবশক্তির কথা একবাক্যে বীকার করিয়াছেন। প্রশংসাপত্রসহ বিস্তুত বিবরণ ও ক্যাটালগ বিনামূল্যে পাইবেম।

প্রিভেন্সীর অলোকিক শক্তিতে যাহারা মুগ্ধ তাঁহাদের মধ্যে কয়েকজন—

হিজ হাইনেস্ মহারাজা আটগড়, হার হাইনেস্ মাননীয়া বঠমাতা মহারাণী ত্রিপুরা ষ্টেট, কলিকাতা হাইকোটের প্রধান বিচারপতি মাননীয় জার মন্ত্রথনাথ মুগোপাধাায় কে-টি, সম্ভোধের মাননীয় মহারাজা বাহাছর ভার মন্ত্রথনাথ রায় চৌধুরী কে-টি, উড়িবা হাইকোটের প্রধান বিচারপতি মাননীয় বি. কে. রায়, বজায় গভর্গনেন্টের মন্ত্রী রাজাবাহাছর জীপ্রসমনেব রায়কত, কেউনঝড় হাইকোটের মাননীয় জজ রায়সাহেব মি: এম. দাস, জাসামের মাননীয় রাজাপাল ভার ফজল আলী কে-টি, চীন মহাদেশের সাংহাই নগরীর মি: কে. রুচপল।

প্রত্যক্ষ ফলপ্রদ বছ পরীক্ষিত কয়েকটি তল্পোক্ত অত্যাশ্চর্য্য কবচ

ধনদা কবচ—ধারণে স্বল্লায়াদে প্রভূত ধনলাভ, মানসিক শান্তি, প্রতিষ্ঠা ও মান বৃদ্ধি হয় (তন্ত্রোক্ত)। সাধারণ—গান্তি, শক্তিশানী বৃহৎ—২৯।১/০, মহাশক্তিশালী ও সত্তর ফলদায়ক—১২৯।১/০, (সর্বপ্রকার আর্থিক উন্নতি ও লক্ষ্মীর কুপা লাভের জক্ত প্রত্যেক গৃহী ও ব্যবসায়ীর অবশ্ব ধারণ কর্তব্য)। সর্ব্বত্তনী কবচ—শ্বরণশক্তি বৃদ্ধি ও পরীক্ষায় স্থকল ৯।১/০, বৃহৎ—০৮।১/০। মোহিনী (বশীকরণ) ক্রচ—ধারণে অভিলবিত স্ত্রী ও প্রশ্ব বশীভ্ত এবং চিরশক্ত মিত্র হয় ১১।।০, বৃহৎ—০৪৯/০, মহাশক্তিশালী ০৮৭৮৯/০। বসায়ন্ত্রী করচ—ধারণে অভিলবিত কর্মোন্নতি, উপরিস্থ মনিবকে সম্ভন্ত ও সর্বপ্রকার মামলায় জয়লাত এবং প্রবল শক্তনাশ ৯৯/০, বৃহৎ শক্তিশালী—৩৪৯/০, মহাশক্তিশালী—১৮৪।০ (আমাদের এই করচ ধারণে ভাওরাল সন্ত্রাসী ক্রমী ইইয়াছেন)।

(যাগিভাৰ ১৯-১-এঃ)' অল ইণ্ডিয়া এষ্ট্ৰোলজিক্যাল এণ্ড এষ্ট্ৰোনমিক্যাল সোসাইটী (রেজিটার্ড)

হেড অফিস ৫০—২ (ব), ধর্মজনা খ্রীট "জ্যোতিব-সম্রাট ভবন" (প্রবেশ পথ ওয়েলেগনী খ্রীট) কলিকাতা—১০। ফোন ২৪—৪০৩৫। সময়—বৈকাল ৪টা হইতে ৭টা। ব্রাঞ্চ অফিস ১০৫, শ্রে খ্রীট, "বসন্ত নিবাস", কলিকাতা—৫, ফোন ৫৫—১৬৮৫। সময় প্রাভে ১টা হইতে ১১টা ।

- —আমৰা বিবাহিত নই বলে।
- —ভবে এদিন কী করে কাটিরে এলুম ?
- —তৃমি একলা ছিলে আর কিছুদিনের মধ্যেই ভূমি বিরে করতে বাছে। তোমার খণ্ডরবাড়ির লোকেরা নিশ্চরই আমাদের সলে ভোমার থাকাটা পছল করবে না।

—তা হলে বিয়ে বন্ধ থাক।

কানাই রাগ করে উঠে চলে বাছিল। পামা এসে তাকে আবার বসাল। তার ছটি হাত ধরে বলল, রাগ করো না, ঠাকুবপো! উনি ঠিক কথাই বলেছেন। তোমাকে আব তোমার বাকে আমি কাছে রাধতে পারলে খ্বই খুলী হতুম। কিছু আমি বে অসামাজিক জীব। নরকের কীট। আমার ছারা পর্যন্ত মাড়ানো পাপ। তুমি দেখো, ঠাকুবপো, বিষের পর ঠিক তুমি আমার কথা বুরতে পারবে।

কানাই গুম হয়ে বসে রইল। সমাজ ব্যবস্থার পামার স্থান কত নীচে বোধ হর সেই কথাই ও ভাবছিল। মানুষ কতই না জনার সংস্থার মেনে চলে। জাবার সংস্থার ছাড়াও মানুষ বঁণচতে পারে না। তৃংথের জাগুনে মন পুড়িরে নিলে নাকি মন ওছ হয়। পামা কত লাজনা, কত তৃংথ, কত জপমানই না সন্থ করেছে; বেলনার জাগুনে পুড়ে ওর মনও ভো ওছ্ব-ইরেছে, পবিত্র হয়েছে। কৈ কেন্দ্র ওকে সে-মর্বাদা দেবে? জাসলে ওর বে একটা মন জাহে, সে-থবরই কেন্দ্র বাথে না। তথু রাথে পামার দৈহিক সৌলংগ্রের উপাদ-পভনের ইতিবৃত্ত।

আৰু আমাদের পরিবারে বে কটিলভার স্থান্ত হৈছেছে, ভার মূলে কে ? কা'কে লোব লোব ? আমি ভো পামাকে অগ্নিসাকী করে বিবে করতে চেরেভিলুম, কিছু ও বাজী হয় নি। বোধ হয় পামা বিবাহিতা, বোধ হয়েছিল বাগদন্তা। সংঝাবের অক্কার গলিতে পামাও হোঁচট খাছে। আমাকে বিয়ে ক 1:ত ওর বি বকে বাধছে। আমাক বাধাটা বে কী এবং কোখায় ভা জানার সৌভাগ্য এখনো আমার হলো না। এক এক সময় মেরেরা এমন যুক্তিহীনভাবে জেলী হরে ওঠে বে বাগ হয়।

রাত হরে বাছে দেবে আমি কানাইকে বললুম, চল, চল। থেরেনি। রাত অনেক হলো।

কানাই জৈদ ধবলো পামাকেও বসতে হবে আমাদের সঙ্গে। বিশ্বত হলো পামা। বরাবর আমাদের থাওরা হৈরে বাবার পর ও থেরেছে। কানাই নাছোড়বালা। তার পীড়াপীড়িতে পামাকেও বসতে হলো আমাদের সঙ্গে।

52

ববিশক্ষের শেব দানাটা পর্যন্ত চালান করে দেবার পর মাঠের কান্ধ আর আপাতত বইল না। বাইবের দিকে নজর কেরাতে হবে। মহাজনদের মাল কলকান্তা থেকে আনতে হবে। বাঁথা ব্যৱ বেগুলি আছে, তাছাড়াও অভান্ত আর বাড়িয়ে ফেলার পক্ষপাতী আমি। ব্যক্ত ক্যাতে আমি চাই না।

- " সিভিদসাগ্লাই ডিপোতে এক দিন সকলাবেলা দরী নিবে গেলুম। ি সিবে দেবি বিষাট লাইন পড়েছে। একটা গাড়ী একটু এওছে আব সঙ্গে কাৰে পাবো পাঁচটা গাড়ী সেই শৃক্তস্থান প্ৰণ কৰতে এক ভোটে ভড়মুড করে এগিয়ে আসছে। পুলিশ অসহায় দৰ্শকের মতো চেরে চেরে দেখছে আর লাঠি হাতে গোঁকে তা' দিছে। কম্ করে একশ' লবীব লাইন।

ওজন হবার বন্ধ পর্যান্ত পৌছতে তিন বন্টা লেগে গেল। তারপর এজেন্ট, চালান পাল, মাল তোলা আর চেকিং থেকে বেরুতে বেলা বাবোটা বেজে গেল। এত অস্মবিধা সন্তেও আমরা এবানে ভিড় করি। কেবল রেট লাভজনক বলে। দিনে তিনটে ট্রিপ করতে পারলে, লাভ মোটাষ্টি ভালই হর। কিছু সব দিন ছুটোর বেলী তিনটে ট্রিপ হুয়ে উঠে না।

সেদিন স্থানের সঙ্গে হঠাৎ দেখা হরে গেল। **অনেক কথার** পর স্থাস বলস, ভোমাদের সঙ্গে বাই চল। **আরের নতুন রাস্তা** করে দি।

স্থাদের আয়ের রাস্তা করে দেবার প্রভাব কানাই ভাসমনে নিতে পারেনি। ভরে ভরে সে বদল, নরন, ওকে বিদের করো। আমাদের বা হছে, ভা নিয়েই চলে বাবে। ও শ্রতানটাকে দেশলে আমার ভর হয়।

- -- ভत्र भारात की चार्छ ? च**डर किरत चामि रनि**।
- —তুমি জানো না। ও সব করতে পারে।
- —দেখা বাক না ওব দৌড়। আমবা বা ভালো বুৰব, ভাই কববো। ওব কথামতো বে চলতে হবেই, ভাব ভো কোন মানে নেই ?

বা ভেবেছিলুম, ঠিক ভাই হলো। স্থদাস শেষ পর্যন্ত মাল চুবি করার প্রামর্শ দিলো। বস্তা ফুটো করে, কিছু কিছু মাল সরিরে ব্লাক করার কথা বলামাত্র কানাই গর্জে উঠল, বা বলেছেন বলেছেন। আর ভবিষতে কখনো আমার সামনে এ বকম কথা বলবেন না। মাল কমতি আমরা করতে শিখিনি আর শিখতেও চাই না।

স্থাস চুপ করে বইল। তার পর সব উত্তেজনা স্থিমিত হরে এলে বলন, বড়লোক হতে হলে এ ছাড়া সহজ রাভা আর নেই, কানাই! লরী করে অনেকেই তো বড়লোক হরেছে। আর ভোমরা, বড়লোক হওরা তো দূরের কথা, হ'দিন লরী বন্ধ থাকলেই উপোস করবে। অবগু আমার কথামতো চলো আর নাই চলো, আবেরে ব্রুতে পারবে বে আমি কোন থারাপ মন্তল্য নিয়ে এ কথা ভোমাদের বলিনি। আমি ভোমাদের ভাল চাই বলেই এ প্রভাব করেছি।

- —নেংবা কিছু কবে, বড়লোক হতে আমরা চাই না।
- —দেখ, নোবো কোন জিনিসকে বলহু, তা জানি না। আসলে টাকা কথাৰ বাস্তা—মানে তোমাদেৰ ব্যবসাৰে আৰু পাঁচজন বা কথাছ—কথনোই থাবাণ হতে পাৰে না। থাকু পো। তোমাৰ বিদি আপতি থাকে, তবে ও সৰ আলোচনা না কথাই ভালো।

আলোচন। বন্ধ করে জনাস **অন্ত চাল চালল, আল মন্দ্রের** দিকে চল মহাকালী স্পোটিং ক্লাবে বাওৱা বাক।

কানাই জুৱা খেলতে ভালবাসে। ওর মন জর করতে হলে গুৱার কথা বলা ছাড়া লার কোন রাড়া বে নেই মুলাস তা জানে এবং জানে বলেই 'মহাকালী স্পোটিং স্লাবের' বার করতে সাহস দেন।

কাবে ধৰ্ম পৌছলুম ভৰম দেখি আসৱ পুৱা দমে জমে উঠছে। কেট আমাদের দিকে ফিয়ে ভাকানো প্রয়োজন মনে কর্ম মা। গ্রের ভিতর কেবল নম্বর গোণার আওয়াল।

কাগজের চাক্তি নিয়ে আমরাও খেলার খোগ দিলুম। করেক াউত্ত পরেই আমার সব হার হয়ে গেল। আমি সব কিছুই গ্রাড়াভাড়ি করি বলে কোন কিছুই জিভতে পারি না। ভুরাতে লিততে হলে বৈষ্য দৃষ্টি আর বৃদ্ধি থাকা দরকার। আমার তা কানাকড়িও নেই। কানাই দেখি অনেক চাকতি অমিয়ে ফেলেছে। গাল, নীল, সবস্ত্র অনেক চাকতি।

চেবে গিরে আমি বাইবের বাবান্দায় গিরে একটা চেয়ার নিবে বসে বদে রাস্তার লোক চলাচল দেখতে লাগলুম। বারান্দার বে ছখন াহাবা দিছিল, ভারা দেখি হঠাৎ চঞ্চল হয়ে উঠল। কি ব্যাপার, আমি বুবতে পারলুম না। ওদের সঙ্গে সঙ্গে আমি বরের ভিতর এসে দেখি, খেলা পুরোদমে চলছে। মালিকের সঙ্গে কী ফিস-ফিস করে পাহারাদাররা কথা বলছে। স্থদাসকে খুঁজে পেলুম না। কিছু একটা গণ্ডগোল কোধাও হয়েছে মনে করে আমি কানাইকে এক পাপে ডেকে এনে কাগজের চাকভিগুলি ভালিরে নিতে বললুব।

হঠাৎ খরের ভিতরকার বাতি সবুজ হয়ে গেল। মালিক সকলকে भारतीन करत मिरत रमलान, (थमा रक्ष करत मिन गर । जानून একটু গান-বাজনা কথা বাক ।

কিও গান-বাজনাব ,অবসর আবে পাওরা গেল না। সমর্পে হলো পুলিশের আবিষ্ঠাব। দেখতে দেখতে হড়োছড়ি ওক হরে গেল। গ্ৰেন্তার হলুম সবাই।

পুলিশের গাড়ী করে থানার এলুম। নাম-ধাম লেখা হলো। কিছ জামিন না পেলে ছাড়া পাওয়া হাবে না। অভএব কাল কোট না খোলা প্রাস্ত পুলিশের আতিখ্য স্বীকার করতেই হবে।

হাজত-বাস জীবনে প্রথম বলে কেমন বেন ধারাপ ধারাপ লাগছিল। কভ নীচু শ্রেণীর লোকের সঙ্গে রাভ কাটাতে হবে। চোর, জোচ্চোর, প্রেটমার। হয়তো খুনেও আছে এর মধ্যে। পা বিন-ঘিন করে উঠল ঘুণায়। কারো দিকে চোৰ ভুলে ভাকাতেও পারছিলুম না। একটা অবুরা লজ্জা পেয়ে বলেছে।

ত্রভাগ্যের কথা ভাবছিলুম বলে বলে। কোর্ট থেকে জামিন নিতে হবে। অভএব কাল কোট না খোলা অবধি ভেবেও কিছু श्रव मा। इंग्रेंश च्यमात्रव कथा मत्न अंखन। এখন। না বলে করে ও গেলই বা কোখার ?

কানাই আমার পাশে চুপ চাপ বঙ্গে আছে। কোন কথা বলছে না। বোধ হয় ভাবছে ওর ক্ষেত্রই আমার এ দশা। বার করেই ংোক, হাজতে বৰন চুকে পড়েছি, তৰন কার দোব এ নিয়ে মাৰা শমিয়ে আর কী হবে! ভার চেরে উদ্ধাব পাবার চেষ্টা করা অনেক বেশী বৃদ্ধিমানের কাজ হবে।

দরলা থুলে গেল হাজতের। আমি আর কানাই থানা অফিসে वनुम । जनारमद छोत्र व्यवस्थात व्यामारमद वामिन इरद छान ।

একগাল হেসে অদাস বলল, গাল দিছিলে নিশ্চরই এতক্ষণ ?

লনা, না। পাল দোৰ কেন? অবাক হয়েছিলুম তোমায় नी (प्रत्य । चामि विवत्र वस्त्व वस्त्रम् ।

— मार्ट जाहे, जाबि कि हारे जानि व शूनिन जागरह ? वारेटव

विविधि हिम्म निर्भाषि किमाछ । स्निक्ती यमन, कर्छा, वास्त्र शक পাওয়া যাছে। আৰু নিমিষেই সব গ্ৰেপ্তার হয়ে গেল সবাই। আমি ভাই আৰু ক্লাবে না গিলে, সোভা উকিল বাবুর বাড়ি গিলে সব ঠিক ঠাক করে ওঁকে ধরে নিবে এলুম। নাও, সিগারেট খাও।

এই এক বাত্রিতে অনেক অভিজ্ঞতা হলো। ভাহলে পুলাস একেবারে অমাত্র্য নর। পামাকে জামা-কাপড়ের লোভ দেখিরে আমার কাছ থেকে সরিয়ে নেবার চেষ্টা করছে বলে, ভেট্কু রাগ ওর ওপোর ছিল, তা আর রইল না। বর্ঞ ভাবলুম, আমার বেদিকে নজর নেই, ও সেদিকে আমার নজর ফিরিয়ে দিয়ে ভালই করেছে। হরতো পামার সাক্ষ্ণোর দিকে আমি এখন আরো একটু বেশী নজৰ দিতে পাৰব। কুভজ্ঞতা বোধ হলো।

কানাই কথা কইল না আর।

কিছ কথা বলুক আৰু নাই বলুক, কামদেবপুরের শিব বাবুর মেরেকে দুখতে বেভে এক কথাতেই সে রাজী হয়ে পেল। এভ ভাড়াভাড়ি ওর স্মৃত্তি হবে আমি ভাবতে পারিনি।

মেরে দেখার ভাষাসা আমরা করতে হাইনি। বংলাবলীর পরিচয়ও ওঁরা—মানে পাত্রীপক্ষ—জিজ্ঞানা করে আমানের বিপ্রত করলেন না। মেরে এমন অসাধারণ কিছু ময়। মোটাষুটি ভালই। ষত এব পাকা কথা আমরা সঙ্গে সঙ্গেই দিয়ে দিলুম।

মহিম বৌতুকের কথা ভুলতেই আমি বাবা দিয়ে বলল্ম, षाभाष्मत्र नावी-माख्या किছू त्वहै।

শিব বাবু খুনী হলেন। তবু তিনি বললেন, দেখুন, স্বাইতো চায় নিজের মেরেকে ব্রাসাধ্য দিতে। আমিও ব্ডটুকু পারি দোব। তাতে আমি বাদ সাধবো না। তবে আমার জামাইকে আমি একটা উপহার দেব সেটা কিন্ত নিভেই হবে। পারছেন আমার এই একটা মাত্র মেয়ে। সে উপহারটা বে কি, তা আমরা জিজাসাকরা প্রয়োজন মনে করলুম না।

পামা সব ভানে খুলী হয়ে বলল, ঠাকুরপো, এবার আমার পাওনাটা মিটিয়ে দাও।

কানাই থুবই অবাক হয়ে বলল, বৌদি, ভোমার পাওনা ?

—বা বে মশাই, এত দিন বে সেবা ক্রলুম, ভার বুঝি কোন माम (नहें ?

দ্রারোগ, ধবল ও বৈজ্ঞানিক কেশ-চৰ্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্ম্মরোগ ও চুলের যাবতীয় রোগ ও দ্বীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসাম্ব

পত্রালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ডাঃ চ্যাটান্দীর ব্যাশন্যাল কিওর সেন্টার ৩৩, একডালিয়া রোড, কলিকাতা-১১ मका ।।--।।।। कान नः १६-२७१४

पुष अकारा है (हैर कांनाई बंगम, ७ वाका । जा जावाद साई ! की डांडे रामा ?

—ना वाकः। अथन किङ्क् बनव ना। विद्युत्र शृद्ध वनवे, स्कृतनः ? —दिन छोटे हृद्यः।

20

শাত্র জার করেক দিন বাকি বিয়ের। এর মধ্যে কভ কাজ পাড়ে ববেছে। বাড়ি থুঁজতে হবে, জিনিসপত্র জোগাড় ক্রতে ইবে, জারো বভ কী।

হাতে হাতে সবাই মিলে অবগ্য সাহায় করছে। প্রীমস্ত সেদিন ব্রেয় সন্ধান দিয়ে গোল। ছটো মাত্র হয়। ভাড়া আঠারো টাকা। ভাও আবার ওলাইসিধিতে। এখান থেকে বেল দূর। তা হোক। যদি ভাল হয়, তবে আপাতত ও ছটোই নিয়ে নিতে হবে।

খর দেখতে গেলুম সকালবেলা: আলো থাকতেই খর দেখা ভাল। অক্কারে ঠিক বোঝা বায় না। কানাইকে সজে নিয়ে শৌহলুম। খর দেখে আমার প্রক্ষ চল। ভাড়া অব্ একটু বেশী। কিছ উপায় কী। আগাম জমা দিয়ে এলুম।

স্থান গারে-হলুদের তথ নিয়ে এসেছে। পামা তাই গোছগাছ করতে ব্যস্ত! উৎসবের সাড়া পেরে সমস্ত বাড়ি বেন কালে মেতে উঠেছে! কেউ বলে থাকতে চার না। স্বাই একটু-না-একটু কাল করে আনন্দ পার। আমাদের বাড়িতে কোন ছোট ছেলে-বেরে নেই। অধ্ব পাড়ার ভূ-চারটে ঠিক এনে জুটেছে।

কারা-কারা বরধাতী বাবে সব ঠিক করা হরে গেছে। এখন বাকি রইল বাতির ব্যবস্থা করা। বৌ-ভাত কানাই-এর নতুন বাড়িতে করাই আমার ইছে। অনেকথানি আয়গা জুড়ে উঠান মুরেছে সেখানে, জলেরও অভাব নেই।

কিছ পামা এ-প্রস্তাবে মন-খুলে সায় দেয় নি। এখানে বে বৌ-ভাত হওয়া ঠিফ নর, তা সে জানে। অথচ অন্ত কোন বাড়িতে বৌ-ভাত হোক, তা-ও সে চায় না।

সংস্কার দিকে পামাকে একলা পাওরা গেল। ভাকে বধন সর্ব বুরিরে বলসুম, তখন সে ওধু একবার আমার দিকে ভাকিয়ে চুপ করে রইল।

ধানিককণ পরে জামার জারো কাছে সরে এসে বলস, জামি ইদি ক'দিন অন্ত বাড়িতে গিয়ে ধাকি, তবে কী এধানে বৌ-ভাত হতে পারে না ?

- —তা কেন ভূমি বাবে, পামা! নিজের বাড়ি থাকতে ওরকম

 করে কট্ট করার কী দরকার ?
- ভূমি বুঝছ না কেন গো? নতুন-বৌ এলে কে তাকে বরণ করবে? কে তার দেখা-শুনা করবে, বলো তো? ও বাড়িতে তো কোন আস্বাবপত্র নেই, মেয়েদের বা-বা দ্বকার তাও নেই। আর ভা ছাড়া, ধাকলেই বা কী? একটা মেরে ছেলে কাছে না ধাকলে নভুন-বৌ ভারী অস্ত্রবিধের গড়বে।
- —-বুৰলুম। আছে!, শ্ৰীমন্তৰ মেরেকে বলৰ ক'দিন ওবাড়িজে কাটিৰে বাবে। তা হলে হবে তো ?

আসলে পামার খুব ইচ্ছে নতুন-বোকে কাছে রাধার। বুরতে পাবধি। কিন্ত এ কি এক অবুর ছেলেয়াছবিতে বে পেরে বসেছে পায়াকে। বদি কেউ কোন কটু কথা তাকে বলে। কিংবা বদি ক্ষর ইন্ধিত করে পামার চরিত্র নিরে? সে আঘাত পামা কথনে। মুহু ক্ষতে পারবে না। বাতে কোন দিন তাকে কাল্লবাহ্নছ থেকে কোন কথা ওনতে না হয়, তাই জন্তে তাকে আমি এতদিন স্তর্গনে আগতে রেখেছি। পামার আজার আজ রাধা আমার পাক্ষ কোন মৃত্তেই স্পত্রপর নয়।

- —এই, শোনো। আমি অগ্র কথা পাড়ি, তুমি কী দেবে কানাই-এর বেংকে বলো তো ?
 - কী আবার দোব। আমার কী আছে ? অভিমান করল পামা।
 - —আমি তো জনজান্ত বেঁচে আছি'।
 - —ভাই ভো আমিও বেঁচে আছি।
 - —ভা হলে হুকুম কর, কী আনতে হবে।
 - —বিছু আনতে হবে না। বা দেবার, তা আমার কাছেই আছে।
 - <u>-01</u>
 - —বাগ হলো বুঝি ?

নানা। রাগ করবো কেন ? তুমি যে লক্ষী। লক্ষীর ভাতারে কীকোন কিছুর অভাব থাকে ?

- , —ধাকে নাই ভো।
- —কিছ সন্মীর ভাগুরে বে একটা জিনিসের শোচনীয় স্বভাব দেখতে পাছিঃ ?
 - —সেটা কি ?
 - --वृद्धि।
- আছে। বাবা, আছে।, ঘাট মানছি। তুমি যা বলবে তাই ছবে।

আদরে আদরে আমাকে উদ্যন্ত করে তুলস পামা। শাড়ীর আঁচল দিরে আমার কপাল মুছে দিরে বলল, কী রকম সুন্দর "আমরা দিন কাটাজিলুম, আর কী হরে গেল, না ?

পদিবর্তনের স্রোতের এক পাশে পাঁড়িয়ে অমুশোচনা করা চলে, কিছ প্রবহমান স্রোতের গতিবেগ তাতে বিন্দাত্র রুদ্ধ হর না। কার মানসিক ভটে কতথানি ভাবনার পলিমাটি পঙ্ল, কার অমুভূতিতে কতথানি ভালন ধরল, তা নিয়ে মাধা ব্যথা নেই সময়ের। আজ বা আছে কালও ভাই ধাকবে—এটা স্বাই চায় না। তুঃখী চায় না, আজকের তুঃখ কালও ধাক। অসুস্থ মান্ত্য চায় কালই সুস্থ হতে।

আমাদের জীবনের আসর পরিবর্তন প্রসর্চিত্তে পামা গ্রহণ করতে অপারগ। তাই বলে বে পরিবর্তন হবে না, সেটা তো কোন কাজের কথা নর ?

লোকজনের ভীড় ভার বিয়েবাড়ির স্বাভাবিক বিশৃথলার মধ্যে কানাইরের বিবে হয়ে গৈল।

বৈতিক দিলেন বটে শিব বাবু। আমানের সকলের করনার বাইরে। জামাইকে তিনি উপছার একটা দেবেন বলেছিলেন এবং সেটা বে পাঁচটনি বেডকোর্ড হবে, তা আমরা ভাবিনি। বছ বল্ল বরবাত্রীরা। দিল আছে বটে—বলল অভ্যাগতেরা।

আশাতিরিক্ত উপঢ়োকন কী কারো মনে সর্বার বীক ছড়িয়ে দেয়নি ? নিমন্তিতেরা কি স্বাই প্রসংঘনে ফিরে গেল ? নেধছিল্ম আর ভাবছিল্ম।

७ धन गानार- अवाकित मानारकार । क्रमणः ।





ভবানী মুখোপাধ্যায় চবিবল

जा काटन बु:चत्र चनचंडा, चार्त्राणी ও है:बाट्यत मन कशकवि ক্রমশ:ই প্রবলতর হয়ে উঠেছে, বার্ণার্ড শ' এদিকে মাখা খামাবার অবসর পাননি। কাউণ্ট হেনরী কেসলার একটা খাংবদন জানিয়ে বললেন-জামবা হলাম সেকসপীরর, গারটে, নিউটন, লাইবনিৎস প্রভৃতির সাংভৃতিক বংশ্বর, ইংলও ও ভার্মাণীতে কত সাংস্কৃতি কমিল, অতএব লডাই কেন বাধবে? এই সূত্ৰ থেকে फेबर (मानव माशा कि किए जांश्वाकिक कार विभिन्न चार्ट विकारित खरा ইন্ডাছারের মাধামে। ইংলণ্ডের তর্ক থেকে বিজ্ঞপ্তি রচনার ভার পড়ল বার্ণার্ড শ'র ওপর। বার্ণার্ড শ' কিছ বুঝলেন সেক্সপীয়র ইত্যাদির প্ৰতি উভয় দেশের একটা শ্ৰদ্ধা আছে বলেই লড়াই বন্ধ করা বাবে না, ভাছাড়া জার্মাণরা ভাবে সেক্সপীয়র একজন জার্মাণ, ইংরেজরা কিছুই ভাবে না। বার্ণার্ড শ তাই তাঁর ইন্ডাহারে দিখলেন আর্থাণ নৌবহর দেৰে ঈর্ঘান্বিত হওয়ার কিছু নেই, ইংলও এই বাবস্থাকে মানব ज्ञाका मःत्रकानंत धक व्यक्ति व्यक्ति भाग काता अव काल সেম্বপীয়র নিউটন প্রভতির সাম্বেতিক নাতি-প্রণাতিরা সেই ইস্তাচারে স্বাক্ষর দানে সম্মন্ত হলেন। এ লাইনটি উঠিয়ে দিতে হবে—এই তাদের দাবী। বার্ণার্ড শ' অবস্থাটা বুঝলেন, তিনি ১১১৩-র मार्ट् अवर ১৯১৪-व काश्चवांकी मारत वशाकरम The Daily Chronicle এবং The Daily News এ এই বিষয়ে ছটি প্রবন্ধ লিখলেন।

বার্ণার্ড শ' যুদ্ধবিরোধী ছিলেন মনে-প্রাণে, তিনি জানতেন, পৃথিবীতে বতদিন হিংসা-কুটিল মাত্রৰ থাকবে ততদিন এই ধরণের যুদ্ধ-বিরোধ বন্ধ করাও সঞ্জব নর।

বার্ণার্ড শ' যুদ্ধ-নিবারক নানা বকম প্রস্তাবও দেশবাসীর সামনে উপস্থাপিত করলেন। বলা বাহল্য, তা উপেক্ষিত হ'ল, এমন কি, কেন্ট কেন্ট উপহাস করে বললেন—বৈদেশিক দপ্তরে বার্ণার্ড শ' ধাকলে পনের দিনেই যুদ্ধ বাধতো, বার্ণার্ড শ' জবাবে বলেছিলেন, জামি বৈদেশিক দপ্তরে নেই বলেই ত'—জাঠার মানেই যুদ্ধ সাগলো। বাৰ্ণীত শ'ব কাছে বে-কোলো বক্ষের বৃদ্ধ মানে একটা নিদাক। অভিদাপ। বাৰ্ণাত শ'কে একজন একদা হ'ল ক্ষেত্ৰিলন আপনি Commonsense about the War লিখতে গোলেন কেন।

বাৰ্ণাৰ্ড শ' জবাৰে বললেন, কাৰণ আমি চিবদিনই যুক্তক গুণা কৰে আসন্তি। (I have always loathed war)

কিছ বাণার্ড খ'বা তাঁব মত ভাবো কেউ পছল কলন ভাব নাই কলন, পুথিবীৰ জনেক লোক বুদ্ধে ভানল পায়, যুদ্ধই ভাচের ব্যান-কান। বুদ্ধে অসংখ্য নৰ-নারীৰ অকারণ মৃত্যু হয় এবং বুদ্ধেৰ কলে বিকৃত অৰ্থ নৈতিক চাপে সমাজের ভাষিক ও নৈতিত অবন্তি ঘটে, এ স্বাই ভানে। তুরু বুদ্ধের আনলে বাইনায়ত থেকে ক্ষুদ্ধ কৰে—হোৱাকার্যাবি স্বাই চালা হয়ে ওঠে, তয় ভাছে, তুরু ভারও আছে। বুদ্ধ প্রতিবোধের সার্থক উপার আছে। আহিছার করা বার্ষি।

১১১৪ খুটাজের ১৪ই নছেবর তারিবের The New Statesman and Nation নামক পত্রিকার অভিবিক্ত ক্রোড়পরে বার্ণার্ড ল' দিখিত Commonsense about the War প্রকাশিত হয়। সম্পাদক ক্লি কোর্ড সার্গ বার্ণার্ড ল'ব বজব্য বিষয়ের প্রতি অভ্যুক্ত প্রভা পোরণ ক্রডেন না, কিন্তু তিনি জানতেন এই প্রবিদ্ধানর কলে তাঁর পত্রিকার প্রচারবৃদ্ধি পাবে; তাই তিনি জক্তোভরে বার্ণার্ড ল'ব বচনার একটি কথাও পরিবর্তন না করে প্রকাশ করলেন।

বার্ণার্ড শ'র সমালোচক এবং প্রবল প্রতিহল্টী এইচ. ভি, ওরেলস এই প্রবন্ধ পাঠে ক্ষিপ্ত হরে উঠলেন, তিনি ক্ষিপ্ত হয়ে লিখলেন Shaw is like an idiot child screaming in a Hospital.

জন গলসওরার্দি বললেন, এই প্রবন্ধ বিকৃত ক্রচির পরিচাহক, কাহপ এ বেন কাটা বাবে মুপের ছিটে।

কিছ লেবৰ পাৰ্টিৰ নেতা কীয়ৰ হাৰ্ডি বাৰ্ণাৰ্ড শ'কে একটি চিঠি লিখলেন। এই চিঠি সম্ভাবিষ্বাপ্পকে এইটি ফুরে বেন উভিরে নিরে গেল। তিনি লিখলেন— 118 inspiration is worth more to England than this war has yet cost her in money I mean. When it gets circulated in popular form and is read as it will be hundreds of thousands of our best people of all classes it will produce an elevation of tone in the national life which will be felt for generations to come. অমুক্রেরণার মূল্য যুদ্ধ বাবদ ইংলও বে অর্থ ব্যর করেছে ভার চেয়ে ব্দনেক বেৰী। এই প্ৰবন্ধ বধন স্থলভ আকাৰে প্ৰচাৰিত হবে তখন আমাদের জাতীয় জীবনের সর্ব শ্রেণীর অসংখ্যা সংমায়বের মনে এক উন্নত স্থাৰ কৰাৰ এবং পুৰুষামূক্তমে তা উপলব্ধি কৰা বাবে।) এই সব কিছুর উত্তরে বার্ণার্ড শ' শুরু একটি কথা বলকেন—"We must tell the truth unashamed like men of courage and character-

সমালোচকদের মতে বার্ণার্ড শ'র জীবনের সর্বশ্রেষ্ঠ সাহসিক বর্গ
Common sense about the War বচনা এবং প্রকাশ করা !
The New Statesman and Nation প্রিকার প্রচার-সংগ্রা

গ্রং তেওঁ কলিছে পৌছাল। এই প্রবন্ধ বিশ্বত হওবার আনেক পরে
সাংবাদিকরা তার উল্লেখ করে বংগির্ড ল'কে আনেক কটুক্তি করেছেন।
বার্গতি ল' কিছ এই কারণে এতটুকু কুর হননি, তিনি জানতেন,
এই বিষয়ে তাঁর বিচাববৃদ্ধিই চুড়াছে। বার্গার্ড ল' বলতেন—'You
may demand moral courage from me to any
extent, but when you start shooting and knocking
one another about, I claim the coward's privilege
and take refuge under the bed. My life is far too
valuable to be machine gunned'. (আমার হাছে
তোমরা নৈতিক সাহস দাবী করতে পারো, কিছ তোমরা বর্ণন
প্রক্রারের মধ্যে হানাহানি কল করে। তথন আমি ভীকর ক্রেণা
গ্রহণ করে বিছানার নীচে আশ্রের নেওরা শ্রেহা মনে হিন।
গ্রহণ করে বিছানার নীচে আশ্রের নেওরা শ্রেহা মনে হিন।
ব্যালনগানের আফ্রেরণ মহার চাইতেও আমার জীবনের মৃণ্য আনেক
বেলী।

Common sense about the War পড়া থাকলে হয়ত এত হৈ-চৈ হত না, অধিকাংশ বিদগ্ধ মামূব এই নিহন্ধ পড়েননি, জাঁবা এব ওর মুখে শুনেছেন যে তীবণ ইংবাল-বিবোধী এবং যুদ্ধবিবোধী বচনা। ফলে সবাই মিলে আক্রমণ স্থক করল। শ'লিখেছিলেন, বেলজিয়ান ঘটনাবলী একটা অভ্যাত মাত্র বৃটিশেব যুদ্ধে নামার, এবং সেই অভ্যাত অতি তুর্বল এবং ভোলো। শ'বলেছিলেন, প্রতিটি সেনাদলের সৈনিকরা বৃদ্ধি বুদ্ধিমান হত, তাহলে বে ধার দলেব কর্তাকে হত্যা করে বাড়ি ফিবে আসতো, যুদ্ধরত দেশের মামূহবা যদি এর মর্ম বুবজো, তাহলে ভাবা কিছুতেই যুদ্ধর খরচ দিত না। জার্মাণীতেও যুদ্ধরাজ Junkers (দেশোরালী মুক্লি) আছেন, বেমন আছেন ইংলতে। ইংবেজরা তও—আত্মগরিমা প্রচার ও শক্ষাক্ষকে গালাগাল দেওরাটা যুদ্ধরের পথ নয়। আর এতবর্তা গে (সুটিশ প্রবান্ধ সচিব) ইংলতের মনোভর্মী বিদি পূর্বান্থ পরিকার ভাবে জানাতেন, ভাহলে যুদ্ধ প্রতিবাধ করা চলত।

বার্ণার্ড শ' রচিত Common sense about the War গণতত্ত্বের স্বলক্ষে এক দেশপ্রেমিকের বক্তব্য, ঝুটাচালের বিক্তম্বে প্রতিবাদ। কিছু এমন কুংসিত কুংসা ও কলক বার্ণার্ড শ'র বিকামে প্রচারিত হতে লাগল, যার আর ছুলনা পাওয়া যার না। এ ফো এক দিকে গোটবুটেন, ফালা, মালিরা, বেলজিয়াম আর অপর দিকে জার্মানী, অস্ত্রীয়া, তুর্কী এবং বার্ণার্ড শ'। সংবাদপত্ত্রে আন্দোলন উঠল, বার্ণার্ড শ'র নাটক বয়কট করো। প্রবাতন বন্ধুবাও তাঁকে পরিত্যাগ করলেন। রয়াল লাভাল ভিভিশন থেকে এক সন্ধায় হার্ণাট এ্যাসকুইশ্ব বলেছিলেন—The man ought to be shot।

বার্ণার্ড শ'ব কাছে প্রতিদিন অজ্ঞ পত্র আসতে লাগল, গালাগাল আব তিংস্থাবে পূর্ণ সেই চিঠিগুলিতে বাড়ি ভবে গেল। একদিন এক সাহাধ্য-বজনীব অভিনয়ে অভিনেতৃবর্গ বার্ণার্ড শ'ব সঙ্গে একত্রে ফটোপ্রাফ তুলভে নাজী হলেন না, এমন কি, আমেরিকার পর্যাস্থ তার প্রতিক্রিয়া পৌছালো।

বেশজিয়ানবা কিন্তু বার্ণার্ড শ'ব ওপর চটেনি, তারা তাঁকে আমন্ত্রণ বিবে আনলে। জার্মাণীর বিক্লতে বঞ্চব্য গুছিয়ে লেখার জন্ম। বার্গার্ড শ' ভার ফলে বিধানে—An Open Letter to President Wilson—১৯১৪ ৭ই নভেষ্য ভারিথের The Nation পত্তিকার কেই প্রথম প্রকাশিত হল। এই প্রথম পাঠে উল্লেট্ড উইলসনের মন্ত্রে প্রতিক্রিয়া ঘটলো ভা জানা বার না। এই নব ব্যাপারে বার্গার্ড শ'র অভিমতাদি নিয়ে ওরত্বপূর্ণ আলোচনা করেছেন আর্কিবাল্ড, হেনভারসন, ভাঁর মন্ত অভি তীর। তিনি বলেছেন একদিন ঐতিহাসিক্রা স্থীকার করবেন বে বার্গার্ড শ'ব বচনা কি ভাবে উইলসনকে প্রভাবিত করেছে। বিশেষতঃ দি দীপ অব নেগ্রান, ফ্রীডেম অব দি সিন, ভালাই চুক্তি, চতুর্দ শ কা চুক্তি এবং ভারাবদের সঙ্গে সরাশির আলোচনা বার্গার্ড শ'ব মতবাদের প্রভাক্ষ প্রতিক্রো।

জার্মাণয়া খার্ণার্ড ল' দিখিত Common sense নিজেদের প্রাথের কার্যের করকেন। বিচি কোনো সমালেচিক বার্ণার্ড ল'র এই কীতি অত্যন্ত সাহসিক এবং Ton Payne-র সংস্ত ভূলনীর বলেছেন, ফ্রান্ড ছাবিস বা সেউন্তন আভিন প্রভৃতি জীংনীকারদের মতে বার্ণার্ড ল'র পরবর্তী কার্যারলীতে মনে হর তিনি কিল্পে ভীত হরে পড়েছিলেন। ফ্রান্ড ছারিসনের রচিত জীবনী বার্ণার্ড ল'র জীবনকালে প্রকাশিত, এই বিষয়ে হুবং বার্ণার্ড ল'ও কোনো মন্তব্য করেনি। বৃটেনের লোকজন তাঁকে লক্ত মনে করলেও সরকার তাঁকে নিরাপদ নাগরিক হিসাবে প্রহণ করেছেন, এমন কি তাঁকে বৃদ্ধ কালে সমরক্ষেত্রে আমন্ত্রণ করে নিরে গেছেন।

উপজাস লেখক এ, ই, ওব্লু ম্যাসন ব্ছের সময় গুপ্তচর বিভাগে নিযুক্ত ছিলেন, ভূমধ্যসাণর জঞ্জে, তিনি বার্ণ ও দ'কে অন্ধর্মার জানালেন বে, জার্মাণ অপপ্রচারের জবাবে মৃহদের মধ্যে প্রচারের জন্ত কিছু লিখুন। এর ফলে বার্ণার্ড দ' লিখলেন An Epistle to the Moons, বার্ণার্ড দ'র এই নিবন্ধ নাকি মৃরদের শাস্ত করেছিল।

এই কারণেট কেউ কেউ প্রেল্ল করেল, তাহলে Common sense about war নিয়ে এক হৈ হৈ কিলেব ?

১৯২৪-এ বার্ণার্ড শ' প্রতিবাদ জানিরে ংকেন—জানি কোনো দিনই সরকারের বিরোধিতা করিন। বুটিল গ্রন্থনিক জানতেন আমি ভাদেরই দলে। জামি দেখেছি যে আমেরিকানরা বা বে সব ইংরেজরা সেই সমর আমেরিকার ছিলেন, বথা হেনরী আর্থার জেমস, তাঁদের ধারণা বে আমার মনোভংগী প্রাক্তিতের ভলী, করাসীরা বাকে বলে Defeatist। ইংরাজরা কিছু আসল ধবর রাধতেন, তা নইলে আমাকে গুলী করে মারা হত। ১৯১৪—১৮ খুষ্টাব্দে বার্ণার্ড শ' অপেকা অনেক কল্ পাপে অক্ত দেশে অনেক বাবীনচেতা মানুষের গুরুষণ্ড হরেছে।

ক্রার্ক ছারিস একটি চমংকার উজি করেছেন—মলিয়েরের মত এই ব্যক্তির হাদরে করণার ক্রীরধারা প্রবাহিত, কিছ তুর্গেনিছের নিহিলিষ্ট নারকের মত সংকটকালে কি জীবনে কিংবা নাটকে বেখানে বৈপ্লবিক মনোভংগীর চরম অভিব্যক্তির প্রয়োজন সেধানেই তিনি বার্গ হয়োছন, সেধানে তিনি ছুর্বল।

তবগু মিলেস প্যাটিক ক্যামবেলের পুত্রের মৃত্যুতে বার্ণার্ড শ' কিঞ্চিৎ আবেগ প্রকাশ করে চিটি লিখেছিলেন। এই চিটির ব্যাট্র ইতিমধ্যে উল্লেখ করেছি। বার্ণার্ড শ' হেসকেথ পীররসমকে পরে লিখেছিলেন— তুরি বদি এখন Common sense about the war ঠাও। মাধার পজে। তুরি অবাক হরে বাবে এই বে, কেন কিছু লোক এই নিবছ শত্তে কেপে উঠেছিল, বিশেষ করে বাবা এক ছত্রও পড়েনি তালের রাগটাই বেলী, এরা কিছু ভেনেছিল Junker কথাটি গালাগাল হিসাবে প্রচণ না করতে আমি সাবধান করে দিছেছি। বুরোপের আসল Junker হলেন ভার এডওয়ার্ড প্রে। আসল কথা হল, বে তেতু আমি জাতে আইবিশ, আমার মনোভংগী বৃটিশেবিবাবী, ভাই বৃটিশের ভবক থেকে আমার বক্তব্য পেশ করাটা অনেকের কাছে অসম্ভ মনে হবেছে।

বুদ্ধে পর লর্ড মরনীর চিঠিগত্র প্রকাশ হওরার পর সন্দেহাতীত
ভাবে প্রমানিত হরেছে ভাইকাউন্ট প্রে এবং লণ্ডনের আরো অনেকেই
কাইজারের কাছাকাছি বেসব মাত্রব ছিলেন তালেবই সমতুল্য
অপরাধী। ফ্রার্ক ছাবিস বলেন ১৯১৪ পুরাক্ষেই বার্গার্ড শ' হয়ত
কিছু গোপনতথ্য জেনেছিলেন, এডওরার্ড প্রে প্রভৃতির সম্পার্ক।
জানা অসভাও ছিল না কাবেণ বড় মহলের ব্যক্তিদের কাছে কোনো
খবরই গোপন থাকে না। কিছু ফ্রার্ক ছারিসের মনে হয়নি বে
পৃথিবীকে ধ্বংস করা বা হুর্গতি থেকে নিজ্তি দিয়ে নিবিড় নিরবছির লাছি প্রতিষ্ঠার উদ্দেশে তিনি একটা আপোষ-ব্যা,
করেছিলেন নিজের বিবেকের সঙ্গে, বেমন করেছেন তাঁর সাহিত্যের
সঙ্গে, এই বিবরে হয়তো তাঁর সমগোত্রীহের সংখ্যা অধিক, কিছু
ভাই বলে তাঁকে আমি ক্রমা করতে পারি না। আমি চেরাইনকে
শ্রদ্ধা কবি, কারণ তাঁর মতবাদ নির্দিষ্ট এবং স্বদ্ধ, বুদ্ধের আগো,
মধ্যে এবং পরে তিনি তাঁর মত পরিবর্তন করেন নি। আমার মতে
বার্গার্ড শ' বার বার রঙ বদলেছেন, ব্যন্ত তিনি বছরপী নন।

বার্ণার্ড ল'ব প্রতি ইংলগুবাসীর অপ্রভা, অভন্তি ও ঘুণা বেড়ে উঠল জার্মাণ সাবমেরিপের ধাক্কার Lucitania নামক বাত্রিবাহীজাহাল ডোবার পর। বার্ণার্ড ল' বলেছেন— আশ্চর্ম, বে সব মার্যর এতদিন কোনো রকমে ঠাণ্ডা মাধার ছিল, তাবাও ক্ষেপে উঠল,
কিম্ আশ্চর্মাম্ অভংশরম্ ! সেলুনের নিরীহ বাত্রীদের হত্যা করা !
তত্তংকিম্ ! এই আন্দোলন স্থক হল ৷ কিছু বা ঘটলো তা
তথ্যাত্র এই কথার ঠিকমত ব্যক্ত করা বার না ৷ বলিও এই
হুর্ঘটনার তিন জন বিধ্যাত বলি আমার স্থপরিচিত বন্ধুদের
অভতম তব্ সমন্ত ব্যাপার্টি আমার কাছে বাড়াবাড়ি মনে হল ।
ত্ত্যামার বরং আত্মত্তি হল এই ভেবে বে, বে-সামরিক মাত্র্যর আনলো যুদ্ধের স্থান কেমন, এতদিন তারা যুদ্ধী বুটিশ
ক্রীড়া-কৌশলের অন্তর্গত চমৎকার খেলা মনে করত।

Lucitania ভূবি সংক্রান্ত বার্ণার্ড শ'র উক্ত The New Statesman পত্রিকার সম্পাদক মিঃ ব্লিকোর্ড সার্পকেও সম্রস্ত করে ভূলল, এই পত্রিকার প্রতিষ্ঠা ব্যাপারে বার্ণার্ড শ' অর্থ সাহায্য করেছিলেন। কিছু মিঃ সার্প Lucitania অলমগ্ল হওয়া সম্পর্কে বার্ণার্ড শ'ব বক্তথ্য প্রকাশ করতে স্বীকৃত হলেন না। এই কারণে বার্ণার্জ শ' মনে এতটুকু ক্ষোভ বা আলা রাখেননি, পরে ক্লিফোর্ড সাপের ছদ'শার সময় বার্ণার্ড শ তার সর্বশক্তি নিরোগ করে বহুয়ায়্রা করেছিলেন। কিছু New Statesman পত্রিকার ১৯৩৯

এব আগে আর কোনো দিন লেখেন নি। ১৯৩৯এ আবার এইটি
মহাযুদ্ধের প্রনা, বার্শির্ড ল' আবার বুদ্ধ সম্পর্কে নিজম মন্তামন্ড লিখতে শুকু করলেন The Nation প্রিকার।

' বার্ণার্ড শ তাঁর সাহিত্যিক বন্ধু আলংক্রেড সুটরোকে বলেছিলেন
— "জার্মাণরা বখন Rheims Cathedral এ গোলা ছুঁড়েছিল
তখন আমার প্রথম প্রতিক্রিয়া চাইছিল বে গোলনাজের মাধা
ভূঁড়ো করে দিই। লক (L. T. Locke) আমার সামনেই
বসেছিল, লে আমার প্রভাব সমর্থন করে এবং আমার ভার-বৃত্তিব
প্রশাস্য করে—"

Lucitania জলমগ্ন হওয়ার পর Dramatist Clubএর এক লাখে লক, হেনতী, প্রভৃতি সদভ্যনা বার্ণার্ড শার মন্তব্য নিরে আলোচনা করতে লাগলেন। তার পর এক রকম বিনা মেন্তব্য মত বিনা নোটিলে বার্ণার্ড শাকে সদভ্যপদ থেকে বিভাজিত করা হল। বার্ণার্ড শাঁ তাঁদের জানালেন বে, এই প্রভিটা আইনগত নর, কারণ তাঁব সদভ্যপদ থাছিত হয়নি, তবে হালামা না বাঙ্বে তিনি সহং থবিত্যাপ করবেন এই দিছাতের প্রতিবাদে।

প্রাণ্ডিল বার্কারও পদত্যাগ করলেন। ইম্রায়েল জানগউইলও পদত্যাগ করতে প্রস্তুত হলেন, বার্ণার্ড শ' বাধা দিলেন। জানগউল ডামাটিইল ক্লাবে নারীসদল্য প্রহণের অপক্ষে আন্দোলন ঢালাছিলেন তথন। আরো কেউ কেউ হয়ত ক্ল্যুবর প্রতি বিরক্ষ হিলেন, এই সুযোগে তাঁরাও পদত্যাগ করলেন।

ভ্রু, ভে, লক নম্র শভাবের শকি শান্ত ভদ্রলোক ছিলেন, সেই
মান্ন্যও বার্গ উপ'ব হন্ত পান করার ভক্ত ক্ষেপে উঠালেন। বার্গার্ড
ল' বলেছেন—"গুল্ম এবং মেজাজে লক ছিলেন পাকা ওতেই ইণ্ডিয়ান।
এই সমরে আমি একদিন লেখক-সমিভির কমিটি মিটি'এ উপস্থিত
ছিলাম, সহসা কোথাও বিভূ নেই লক চীংকার করে উঠল—বার্গার্ড
ল'র সঙ্গে এক ব্যরে বসতে আমি রাজী নই। ভার পর দরভাটি
সশকে বন্ধ করে চলে গোল। দ্যাক খোরার আমার মুখে চুকালি
লেপে দেংবার প্রভাব ছেপে প্রকাশ করেল। ভবে এই জাতীর
যুদ্ধালীন হিছিবিংবার নীগারিতই অংসান ঘটল, ভ্যাক আমার আর
লক ত্তনেই এসে হাত বাভিরে সেবহাও করেল। আমিও হস্ত
প্রামারিত করলাম। আমার কাছে যুদ্ধার আর অব সংক্রামক
মহামারীর মত। এই সময় বে সব বেগী বিকারের ঘোরে প্রশাপ
বকে, ভা রোগশবার শান্ধিত বেগীর প্রলাপের মৃত্ই উপেক্ষণীর।

পরে অবল ডামাটিইস ক্লাব বার্ণার্ড শ'কে আংশর জিনারে সম্মানিত অভিথি হিসাংব নিমন্ত্রণ করেছিল, কিছু মনে এন্ট্রকু বিষেষ পৌর্থ না করলেও, বার্ণার্ড শ' অন্ধৃত্যত দর্শন করে সেই নিমন্ত্রণ এড়িরে গোলেন। বার্থার্ড শ' এই উপলক্ষে এনটি চমৎকার কথা বলেছেন—"Any one who is a pioneer in art is hated by the old gang and should not join their clubs, as it enables them to expel him, and to that extent places him in their power."

বার্ণার্ড শ' বলেছেন, কোথার সব মুছে গোল, আমার বিরুদ্ধে এই সব চক্রান্ত আর অভিবোগ, অন্ধুবোগ একদিন মিলিরে গোল, সেই ক্লাবও হয়ত উঠে পেছে, হেনরী জোনস শেষ পর্যন্ত রেগে ছিল, সে আর কিছুতেই মিটসাট করেনি, এ তার একতবকা লড়াই, আমি ' ধার বার হাত বাড়িরে এগিরেছি ও হাত স্থিরে সিরেছে, আর একজন এইচ, জিওরেলস্, তবে তার ব্যাপার আলাদা। মরার সমর ওরেলস একথানি ছোট কাগজে অতি ক্ট্র করে লিখেছিল, আমার বিক্লমে তার ব্যক্তিগত ভাবে কোনো আফোল নেই, সে কাগজটকু কোধার আছে।

১১২১ পৃষ্টান্তে Testimonial Matineeর এক কমিটি হয় জে, এইচ, বার্ণসকে সম্মানিত করার উদ্দেশ্যে। জোন্স বেই দেখলেন সেই কমিটিতে বার্ণার্ড শ'ও আছেন, তিনি পদত্যাগ করলেন, বার্ণার্ড শ' ভার মতে a freakish homunculus germinated outside lawful procreation (আইনগত জম্মবিধির বাইবে কৃত্রিম পৃদ্ধতিতে বার জন্ম, বেমন গ্রীক উপকথার পারাকেলহন)

এর স্ববাবে বার্ণার্ড শ' বঙ্গলেন—সংক্ষহাতীত ভাবে আমি
আমার প্রথাত পিতার পুত্র, এবং আমার স্বননীর সম্পত্তি ও পিতৃবাবের আইনগত অধিক।রী।

জোন্সের এই আক্রমণাত্মক রচনার প্রকাশককে জোন্স আখাস দেন, রচনাটি প্রকাশ করিলে বার্ণার্ড শ' তাঁর বন্ধুর বিক্তমে মামলা করবেন না। বার্ণার্ড শ' এই কথা শুনে বললেন—এ কথা জেনে আমি আত্মন্তিগু লাভ কবেছি যে, লেথকের আখাস না পেলে প্রকাশকরা এই মানহানিকর রচনা প্রকাশে সাহসী হতেন না, জোনস বলেছিস, আমার বন্ধুষ নির্ভরবোগ্য, এটা সে ঠিক্ট বলেছে। পৃথিবীকে গণভাৱের পাক নিরাপদ রাধার জন্ত যুদ্ধানে থাপিছি
ল' রাজনীতিক ও কুটনীভিবিদ্ধাের কাছে কিছু প্রভাব বিরেছিলেন।
কিছ ভার্সাই পীস কনকারেলে কেউ তা নিরে মাধা ঘামালো মা।
বার্ণার্ড ল' বল করে বলেছেন, এ বেন কণ্ডমের মাছির বিধিন
উপানাগরের ধ্যানমন্ন তিমিমাছের কানের কাছে গুলন করা।

U. S. A. সমবান্ধ সীমিতকবণের উদ্দেশ্যে বে সভা ভাকা হয়, বার্ণার্ড শ' তাতে বোগদান করতে বাজী হননি। বলেছিলেন—সমবান্ধ সীমিত কবলে যুদ্ধ নিবোধ কবা বার, এই ধাবণা ভূল, প্রেষ্থ ধাবের কুন্তার-লড়াই-এব প্রভাক প্রতিবাদ।

বার্ণার্ড শ' কোনো দিন হাউস-অব-কমপের সভার উপস্থিত হননি, দর্শক হিসাবে কিছ ১১২৮-এ জেনেভার দীগ অব নেশনসের সভার হাজির হয়েছিলেন। সমগ্র অধিবেশন তার কাছে Dull এবং Stupid বলে মনে হরেছে। বার্ণার্ড শ' বলেছেন—In the atmosphere of Geneva patriotism perishes; a patriot there is simply a spy who can not be shot; কিছ যুদ্ধের পর বাশিয়ার সংবাদে ক্রাক্ত হারিসকে লিখেছিলেন, রাশিয়া থেকে অসংবাদ এসেছে, ঈশর বছরূপে প্রকাশিত হরে পরিসূর্ণ হয়েছেন। আমাদের ছল হাডের মুঠার অনেক বিশ্বর রেখেছেন।

ক্রমণঃ।

না, তুমি যেয়ো না চলে

গোপাল ভৌমিক

না, তুমি বেংশা না চলে
এই অফুবোধ
বার বার ধনিও জানাই
ভোমার ববির কানে
সে কথা বাবে না জানি,
বেহেতু যখন বাজে
বিদায়ের করুণ সানাই
তথন ফেরার কথা তুরু বাতুলতা।
সব কিছু জানে মন

না, ভূমি বেয়ো না চলে,
হোক দে ক্ষণিক দাবী,
ক্ষর তার অনেক গভীর
জানি বলে
বার বার এক দাবী করি;
জানি তাকে পারে দলে
ভোমার আগের কোটি মালুবের মত,
হয়ভো বা দেবতার মত ভূমি বাবে চলে।
হতাশার ক্ষোভ নিয়ে আমার পৃথিবী
নিজেকে ভূবিরে দেবে কল-কোলাহলে।

না, তৃমি বেরো না চলে,
কে একথা বলে ভার কে-ই বা না বলে !
তবু সব চলে বার,
থাকবার বারা থাকে পড়ে;
পৃথিবী বলে না শেব কথা
সাইকোন কিবো বালিবড়ে।
বথন মন্তব বড় কেনে কেনে বলে,
না, তৃমি বেরো না চলে,
তথন তু' চোথ কিবে অভ কোনখানে
দেখে কুল স্বানোহ, ধরা দেই গানে।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] হিমানীশ পোস্বামী

If there are five empty seats and I say the bus is full, the bus is full.

-Conductor of a London bus

্রিবাবে লিগুফিড গার্ডনস।

বেলানি' বাড়ী বদল করলেন, ঐ বাস্তাবই পাশের বাড়ীতে গেলেন আমরা চলে এগাম পশ্চিম থেকে উত্তর লগুনে। এবারে বাড়ীটি হ'ল বড় একটি ক্ল্যাটের অংশ।

পাড়ার নাম থাম্পট্টেড।

পাহাড়ী অঞ্চল-প্রচুর গাছপালা চাবদিকে। এ অঞ্চলে সবচেরে বেশি সূর্বের আলো পাওয়া বায়, সবচের বেশি স্লো পড়ে, কুরালা সবচেরে কম হয়।

এ পাড়া নানা কারণে উল্লেখবোগ্য। একশো বছর আগে এ বিকটায় লোক-বস্তি প্রার ছিল না। লোক বসতি ছিল না ভার কারণ এখনো কলের জলের ব্যবস্থা হয়নি। এক বালতি জলের দাম তথন এ পাড়াতে ছিল এক শিলিং। ডাকাতেরা বোপে



चामना गव किছूत्रहे विस्त्रांधी

ঝাঙে পুকিরে ধাকত—প্রিকলের জাজমণ করত। এর জ্ঞান থেকে চোর-ভাকাভদের খুঁজে বার করা বেজার বটন কাজ ছিল।

এই পাড়ার চোর-ভাকাত ছিল আর ছিলেন এক কনষ্টেবল। এই কনষ্টেবলটি কখনো একটি চোরও ধরেননি। না খেয়ে অস্তম্থ অবস্থার তাঁর মৃত্যু হয়। ইনি জীবনে একটি চোর না ধরলেও ইনি অন্ত অনেক কিছুই ধরেছেন, বন্দী করেছেন। ইনি পাছপালা, দৃশু, গক্ত-ঘোড়া এ সমস্ত তাঁর তুলি এবং ঝ্যানভাসের সাহায্যে ধরে রেখেছেন। তার প্রমাণ এখনও আছে গ্রাশনাল আট গ্যালারি এবং টেট আট গ্যালারিতে।

র্থ র নাম জন কনটেবল। বেঁচে থাকার সময়ে তাঁর ভাগ্যে
সম্মান এবং টাকা জোটেনি। এখন তাঁর ছবির দাম হাজার হাজার
পাউও। শিরীরা মরে না গেলে বে তাঁদের সম্মান হর না ইনি
তার জলন্ত উদাহরণ। এখনও জনেক শিরী স্থাম্পটেডে থাকেন
তাঁদেরও জনেকের ধারণা মরে গেলে তাঁরাও বিখ্যাত হবেন।
তাঁদের ছবি দেখে জনেক সমালোচক বলেছেন তাঁদের মরাই
উচিত। স্থাম্পটেডে শিরীরা বেডেই চলেছেন। প্রতি পাঁচজন
ক্রাম্পটেডের লোকের মধ্যে একজন হ'লেন শিরী।

এই खरना मध्य (मध्य इस्म (मध्य क्ये निक्कि खरना (छ) ह পড়ত। সুধের কথা, ইংল্যাণ্ডের সর্বত্ত শিল্পাদের এমন প্রায়র্ভাব নেই। স্থাম্পটেডের রান্ধায় রান্ধায় দেখা বায় শিল্পীদের আবিপত্য। এই শিলীবা ছেঁড়া পোলাক পরেন (একজন শিল্পীবন্ধু বজেছেন এঁরা নতুন পোলাক থাকলে ছিঁভে নেন।) দাবা থেলেন, কফী ধান, জাঁ পল সার্ভর এবং ডিলান ট্যাস সম্পর্কে আলোচনা করেন, এভরিম্যাল দিনেমা হলে ত্রিশ বছরের পুরোনো ভাল ছবি দেখে প্রবন্ধ লেখেন (ভা ছাপা হয় না), বন্ধুদের পড়ে শোনান, বন্ধুরা প্রতিটি কথা ভূগ প্রমাণ করেন—প্রতিটি মতই অগ্রাহ্ বলে মস্তব্য করেন। এই রকম বাধা পেলে তাঁরা আবো উৎসাহিত ছন, আরো সমালোচনা লেখেন। কিছ একবার প্রশংসা করলে এ দের স্বাই স্মালোচককে অনার্য লোক বলে গালমন্দ করেন। এঁদের অধিকাংশই বিশাস করেন, পুথিবীতে কোন কিছুতেই ভার বিচার হর না। এঁদের কেউ যদি বিখ্যাত নাহন ভাহলে সেটা হল সমাজের অকার বিচারের ফল, আর বদি কেউ বিখ্যাত হন ভাহতেও সেটা বে অভার বিচারের ফলেই হয়েছে, সে বিষয়ে কোন সংশব এঁদের নেই।

এঁবা সমস্ত প্রচলিত এবং অপ্রচলিত বিধাসের বিরোধী।
গুচো মার্কসের মন্ত whatever it is, we are against it মন্ত্রে
এঁদের বিধাস। এঁবা নেগেটিভয়মী। এক কথার, এঁবা
ইনটেলেকচ্যাল। সমস্ত স্থাম্পাঠেও ইনটেলেকচ্যাল ভতি। কিছ
আমাদের ল্যাণ্ডলেডি মিসেস হেইলের মধ্যে আধ আউজ্জও
ইনটেলেকচ্যাল হবার ক্ষমতা ছিল না। ইনি টাকা ব্যুতেন, এবং
টাকা তাঁর ছিল। টাকা ছাড়া আব অস্ত কোন রকম ব্যাপারের
সল্পে জড়িত থাকা প্রচল্প কর্তেন না।

মিসেস হেইদের বরস ছিল প্রায় বাট। জাতে ছিলেন ইজনী। এঁব ছেলে ইজনী নাম হেইস পছন্দ করত না বলে নাম বদলে করেছিল হলকোর্ড। হলফোর্ড ছিল ডাজ্ডার। হলফোর্ড এ বাড়ীতে থাকাঙো না—কিন্ত তাব প্রচুর বই ছিল। বাড়ীর স্থাট বড় তাক ভতি বইগুলিতে ছিল ক্ষচির পরিচয়। পিকাসো এবং মনজেয়ান, বেনোয়া এবং স্থা প্রভৃতি শিল্পীদের সম্পক্তি বড় বড় বই। ভা ছাড়া বিশ্বসাহিত্য সম্পর্কে নানা ধরনের বই।

এই স্নাটটি ছিল বেসমেণ্টে। একতলা এবং দোতলার অক্তরা থাকতেন, তাঁদের সঙ্গে আমাদের কোন সম্পর্ক ছিল না। লগুনে প্রতিবেশীদের সঙ্গে সম্পর্ক না রাধাই রীতি। আমাদের দেশের ঠিক উন্টো। আমাদের দেশে প্রতিবেশীরা সমস্ত রকম ব্যক্তিগত প্রায়ের উত্তর দিতে বাধ্য—বেমন, আপনার বেতন কত, ত্রীর বরস কত, হোমিওপ্যাথ ভাক্তার না ডেকে আলোপ্যাথ ডাক্তারের কাছে চিকিৎসা করান কেন, আপনি কাল সন্ধার কোধার গিরেছিলেন, রবিবার সকালে বে ভক্তলোক ডাকতে এসেছিলেন আপনাকে তাঁর নাম কি, ঠিকানা কি, তিনি কত মাইনে পান—ইত্যাদি এ সুমস্তেরই জ্বাব দিতে হয়। লগুনে এ সমস্তের জ্বাব দিতে হয় না। কেউ বিপদে পড়লে কিছ লগুনের প্রতিবেশীরা সক্তন হয়ে ওঠে।

লগুনে একটা ব্যাপার খুব লক্ষণীয় হ'য়ে উঠছে। একবার বে বাছীতে ভারতীর্বা বার সে বাড়ীতে আন্তে আন্তে ভারতীরের সংখ্যা বাডতে থাকে। ক্রমে এমন হয় যে, শেষ পর্যস্ত সে বাড়ীটার সমস্ত্রই ভারতীয় লোকজনে ভবে বার। এটা কেমন কবে হর বলছি। একটি বাড়ীতে দশধানা খব, প্রায়ই লোকেরা উঠে যার—উঠে বাকার আগে বাড়ীর লোকেরা ভানতে পারে বর থালি হবে। ভারতীয়টি যদি ভানতে পারে যে একটি খর থালি হবে, সঙ্গে স্কে সে তার ভারতীর বন্ধকে বলবে একটি ঘর থালি আছে—সে ল্যাপ্রলডিকেও বলবে যে, তার বন্ধ খুবই ভন্ত, সে আসতে চায় এই বাড়ীতে। স্যাপ্তলেডির কোন আপত্তি থাকবার কথা নর-কারণ সে বথন একজন ভারতীয়কে ঘর ভাঙা কিরেছে, অঞ্ একঙ্গনকে ভাড়া দিতে আপন্তি কি? এই ভাবে আন্তে আন্তে এক একটা বাড়ী ভারতীয়রা অধিকার করতে আরম্ভ করে। যে বাড়ীতে প্রচুব ভারতীয় সে বাড়ীতে ইউরোপীথান বা জ্যামেরিকান কেউই থাকতে চার না। কারণ প্রতি ঘর থেকে পেঁঃ।ল-লংকা বস্থনের গন্ধ সমস্ত বাঙিটিকে ভ'রে, তোলে। বিশেষ ধরনের ফুলপ্রুফ নাক না হ'লে সে গন্ধ সহা করা কঠিন। এইবকম বাডীভে ভারভীয়র। পাকে। প্রভ্যেকের আলাদা ঘর হ'লেও তারা নিজেদের মধ্যে নানা বৰুষ মামা কাকা ভাই দাদা খুড়ো সম্পৰ্ক পাতিয়ে নের। খুব বন্ধ হ'বে বার পরস্পবের মধ্যে।

খ্ব বেমন বন্ধুত হর, ভেমনি শত্রুতাও হর। প্রথমে গলার গলার, পরে আলায়-কাঁচকলায়। একত্র থাকতে থাকতে নানা রক্ষ আর্থিক আলান-প্রদান চলে। প্রত্যেকে প্রত্যেকের কাছ থেকে ধার করার চেষ্টা করে। এই সব বাড়ীতে বারা থাকেন, তাঁরা ভারতীরদেরই কেবল পরিচয় পান। অনেকে লগুনে বছরের পর বছর থাকেন, কিছু তাঁদের সঙ্গে একটি অভারতীরের সঙ্গে বন্ধুত্ব বা। তাঁদের কাউকে বলি জিজেস করা বার ইংরেজদের কেমন লাগল ? তাঁরা উত্তর দেন: ইংরেজ ভো কোলকাভার অফিসের সামের, সেই ভো ইংরেজ। লগুনে ইংরেজ টিংরেজ দেখিনি—তবে হাা, বাঙালী, মান্তালী, পাঞ্জাবীতে লখন ভরা।

লওন ভরা—কথাটা ঠিক নয়। তবে বেলওবেতে বা কাউণ্টি

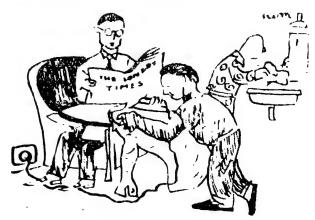
কাউজিলে আঞ্চলাল প্রচুব ভাষতীয় কোনিগিরি কংলে। প্রচুব লোক লখন ট্রানসপোটের কাজ কংলে। শু:নছি প্যাডিটেন ট্রেশনের একজন বাঙালী ইনফ্রমেশন কাউটারে বংসন—বাঙালীরা গিরে ভাঁকে জিজেন করেন, দাহ, বলতে পাবেন অক্সফোর্ডের টিনিট কোথেকে কিনব ?

বাঙালী দাত্ তিপাঁটি দাঁত দিবে নিজের জিভটাকে কামড়ে ধরেন, তারপর বলেন, এ তো এ দিকে পথ দেখা আছে—আর আমাকে বাঙদার কথা কওয়ান কেন মশাই ? ইংরেজদের থাছি ওদের ভাবার কথা না কইলে চাকরি বাবে!

কিছ চাকরি গৈলেই বা কি, গ্রাশনাল-ইনশিওরাজ আছে না ? চাকরি গৈলেই বেমন আমাদের দেশের অনেকে রাজার বঙ্গে পছেন, সাবাদিন ভিক্তে করেন, ইংল্যাপ্তে চাকরি গেলেই কিছ রাজার-রাজার বসবার জো নেই। প্রথমত গবর্ধেট থেকে তাকে কিছু পরিমাণ টাকা দেওরা হর—কাতে ভিক্তে করতে হয় না। এটা তার প্রাণা—এটা হ'ল ইনশিওরাজা। কিছু এতেও বদি না চলে, তাহ'লে আছে গ্রাশনাল আাসিস্টাজ, এবাও প্রচুর সাহাব্য করে থাকে লোকদের।

ভারতীয়দের বাড়ী দধল সম্পার্ক আমার জানা একটি ঘটনার কথা বলছি। সে বাড়ীতে জন-কুড়ি ভারতীর থাকত—জন্ম কোন জাতের লোক ছিল না! কি কারণে একটি ভারতীর ছাত্রের সঙ্গে ল্যাণ্ডলেডির গোলবোগ হওয়ার ল্যাণ্ডলেডি ছাত্রটিকে চলে বেতে বলেন বাড়ী থিকে। বাগোরটা জল্ম ভারতীররা শুনলো—শুনে ল্যাণ্ডলেডিকে জন্মরোধ করলো বে নোটিদ প্রত্যাহার করা হ'ক। ল্যাণ্ডলেডি কর্ণপাত না করাতে কুড়ি জন ভারতীর এক সঙ্গে নোটিদ দিল ল্যাণ্ডলেডিকে।

বাড়ী বদলের দিন দে এক আশ্বর্গা ঘটনা। প্রায় একশো জন ভারতীয় জমা হয়েছে বাড়ীর সামনে। প্রত্যেক ভারতীয় ভাদের চার-পাঁচজন বজুকে সঙ্গে নিয়ে এসেছে বাড়ী বদলানোতে সাহায্য ক্ষবার জন্ম। প্রচুর ট্যাক্সি জমায়েত হয়েছে বাড়ীর সামনে। হৈ চৈ করে জিনিবপত্র নামানো হয়েছে। চারিদিকে প্রভিবেক্টিয়া মজা দেখছে। ছ একজন পুলিসও জুটে গিয়েছে কী হয় দেখবার জন্ম। ঘটাখানেকের মধ্যে সমস্ত বাড়ীটাতে নেমে এসেছিল কববের গান্তীর্য। একটি ভাডাটে নেই, কেংল ল্যাগুলেন্ডি।



পুলক জাম৷ ইন্তিবি করা শিখছে

কোনও কোনও ল্যাপ্তলেডি ভাল যে হন নাভানয়। ভীয়া ভাল, কিছ ভারতীয়দের অভ্যাদের কথা তাঁরো জানেন না বলে রাগ কবেন। ইংরেজনের গতিবিধি প্রায় মাপা। তাঁদের গতিবিধির বেটুকু বৈচিত্র্য আছে ভাভেই তাঁরা খুসি। ভারতীয়দের সঙ্গে কীয়া পাল্ল। দিতে পায়েন 'না। বিশেষত ল্যাওলেডিয়া একট বেশি মাত্রায় ভারতীয় বৈশিষ্টো কান্তর হয়ে পড়েন। ইং**ডেজদের थावना व माञ्चरव विनि वक् थाकाव ध्यवायन तिहै--- এक-याध्यन** ৰদি থাকে ভাল, না থাকলেও ক্ষতি নেই। কিছু ভাৰতীয়দের वक् ट्राइब--- चात वक्तुप्तत कांकरे रंग वांकीरक बाता, अरम देश दे করে গল ·করা এবং এগারোটা বারোটার লোকে ঘ্মিয়ে পড়লে বিনা কারণেই ফোনের ঘণ্টা বাজিয়ে জাগানো। কোন কোন লাভিলেডি সামার আওয়াজও সহা করতে পারেন না। বেডিও ৰদি কোৰে বালানো ভিন্ন তাহ'লে তাঁৱা সেটাকে অপৱাধ মনে করেন। অধ্চ ধুব জোবে বেডিও না বাজালে আমরা বেডিও वाधराव वर्ष है चूँ एक भारे ना। धकरे। बाह्रेन अस्मान् बाह्र रा বেডিও এত জোবে খুলে বাখা চলবে না, বাতে প্রতিবেশীদের এতে অস্কবিধে মোটেই না হয়। স্বামাদের লৈপে বেমন প্রতি সহবে চার পাঁচটা বেডিও থাকলেই চলে যাহ, ইংল্যাণ্ডে ভা চলে না। সেধানে এমন কি পালের ঘরের রেডিও শোনা যায় না এমন আস্তে বাজানো হয়।

আমাদের নতুন বাড়ীটি ভালই হ'ল। তবে ফার্লিরের প্রার্থ কিছুমাত্র ছিল না। সমস্তই ভাঙা এবং কোনক্রমে ব্যবহার করা বলে। একটা টেবিলের পা এমন নড়বড়ে ছিল বে লে টেবিলের উপর কিছু রাধা চলত না। অস্তত সে টেবিলে ধাওয়া কিছুতেই চলত না। হঠাৎ ভেঙে পড়বার সন্তাবনা ছিল। সে কথা বলাতে মিসেল হেইল বলভেন টেবিল ওমনিই হয়। আন্ত টেবিল লগুনের কোন ল্যাণ্ডলেডিই দের না।

ল্যাণ্ডলেডিকে বললে কোন অভিবোগের প্রতিকার হয় না বে ভার প্রমাণ বন্ধ বার পেষেছি। নিজেদেরই সারিরে নিভে হয় প্রসা খনচ কলা। আমাদের এবাবে ইলেক্ট্রিক হীটার ব্যবহার ক্ষতে হল-কারণ গ্যাস হাটার নেই এ বাড়ীতে। একটা ঘরে ক্রলা দিরে ঘর গ্রম করতে হর। ক্রলা প্রথমত পাওয়া ক্রিন। একটি ক্ষুলাওয়ালার কাছে নাম লেখাতে হল। তারা ক্যুলা দিয়ে গেল গাদা থানেক। সে কয়লা সমস্তই ভিক্নে। আমি আর রমুণ (পিদত্তো ভাই বরস ১ বছর) হজনে মিলে মাঝে মাঝে লোহার শিক দিয়ে করলা ভাঙতাম বাগানে। বৃষ্টি পড়লে দেখানে ছাতা নিমে বেভে হত। সেধানে বদে আভ কয়লাকে টুকরো টুকৰো করতে হত। এর ফলে অর্দ্ধেক করলা ওঁড়োহ'য়ে ছিটকে বাগানের ঝোপের মধ্যে অনুত হত। বাকী বা থাকত এক বালতি বোঝাই করে এনে আলবার ব্যবস্থা করতে হ'ত। এম্বর ওকনো কাঠ বাড়ীতে মজুদ রাখতে হত। এই ওকনো কাঠের টুকরো প্যাকেটে করে দোকান থেকে কিনে আনতাম। একটা ছোট পাাকেট কিনতে পাঁচ ছ পেনি খরচ পড়ত। এই কাঠ কিছ সহজে অগত না। এই কঠি আলানোর জন্ত আবার প্রবোজন হ'ত ধ্বরের কাগল ৷

কিন্তু সৰ সময়ে থবৰেৰ কাগজে কাজ হ'ত না। কেৰোসিন

ব্যবহারও করে দেখেছি। তা ছাড়া আর একরকম আলানি বাজারে পাওয়া বেত, ধরেরের মত দেখতে, দেওলো খুব তাড়াতাড়ি পোড়ে আর বেশ তাপও হয়। প্যাকেটে ছ'টা এরকম ধরের থাকে, দাম ছ' পেনি। প্যাকেটে লেখা থাকে বে প্রতিবার আওন ধরতে একটি কিংবা ছটি খরচ করলেই হয়। কিছ অধিকাশে সমরেই হয় না।

কম পক্ষে চারটে করে ধয়ের পোড়াতে হয়।

কয়লা ধরাতে সময় সাগে অস্তত এক ঘটা। কয়লা বধন ধরে আসে তথন বড় ভাল সাগে। কিছ তথন কয়লায় আগুন উপভোগের সময় নেই।

হাত ধুতে হবে। সারা হাতে করলার দাগ, মুখে করলার দাগ। চান করলেই ভাল হয়। রোকই প্রায় চান করতে হ'ত।

এরকম আন্তনের কোন অর্থ বৃধি না। কারণ করলা আলিরে বেশ আরাম করছি হয় ত—এমন সময় টেলিফোন এল পুলক চক্রবর্তীর। ওর কাছে বেতে হবে বেলসাইজ হয়ারে। সেথানে কী এক পার্টি হ'ছে কনটিনেটাল ক্লাবে। অত কষ্টে তৈরি করা আন্তনকে ফেলে বেতে হয়, নিবিয়ে দেওয়া সম্ভব হয় না।

এরকম বাড়ীতে সবচেরে ভাল উপার হ'ছে বিছানার তরে তরে পড়া। লেপ গার দিয়ে।

ষে ইলেক ট্রিক হীটার ছিল এ বাড়ীতে তার উত্তাপ এত কম বে হীটাবের ইঞ্চি তিনেক পুরে হাত না রাখলে একটুও প্রম লাগত না।

পুলক চক্রবর্তী বেখানে থাকত সে বাড়ীতে থাকত সাধারণত ইউরোপেন ছেলে-মেয়ের। পুলক বে খবে প্রথমে গিয়েছিল সে খবে আবো হুজন লোক থাকতো।

তারা জার্মান বা ইটালিয়ান নয়।

ভারা ইউরোপের লোক নয়। তাদের আবাস চীন দেশে। ভাদের সঙ্গে পুলকের হ'ল বন্ধুছ।

ঐ চীনে ছেলে ছটি বোজই তাদের গেঞ্চি শার্ট ইত্যাদি সাবান দিরে কাচতো, গুকুতো এবং ইন্ডিরি করতো।

লপ্তনে ধোবার থবচ প্রচুর। একটা শার্ট মুক্তে দেড় শিলিং পর্যন্ত লাগে। আমাদের এক টাকার সমান। অভএব নিজে ধুরে নেওরা সবচেরে ভাল। এর জক্ত ওরাশিং মেশিন পাওরা বার। কোন কোন দোকানে প্রচুর ওরাশিং মেশিন রাখা হয়—সেখানে গিরে আব ঘণ্টার পাঁচ ছ সের ওজনের জামা-কাপড় আড়াই শিলিং থবচ করে ধুরে আনা বার। তারপর শুকিরে ইন্তিরি করে নিলেই হয়। অনেকেই এটা করে থাকে।

চীনেবাও তা কৰতো।

একদিন পুলক চীনে ছেলে হুটিকে বললো, ভাই, ভোষর!

আশ্চর্য কাণ্ড করছ—এমন স্থলর বোরা আর ইভিরি এভ দেশ

যুবলাম কিছ কোথাও দেখিনি। আর বোর হয় এজমে কোথাও
দেশব না।

চীনে ছেলে ছটি বিনুৱের অবতার। তারা বলে, এ তো খ্ব সোজা—সবাই করতে পারে, এমন কি তুমিও করতে পার। পুলর্গ আরও বিনুৱের সঙ্গে বলে, না আমি কিছতেই পারব না—জাহাব ন্বার জামা কাপড় ধোওয়া হবে না। চীনেরা ভবসাবের হবে গুবে। এফদিন তারা পুসকের পুরনো জামা ইত্যাদি ধুরে নিরে এস ওয়াশিং মেশিনে। পুলক দেখলো।

চীনেরা বগগো, এবাবে ইন্তিরি করা শিবে নাও। শীড়িরে গুড়িরে দেখ কেমন করে আমবা করি। পুলক ভাও দেখলো।

তারপর দিন থেকে রোক্স চীনেরা পুলকের সমস্ত স্থামাকাপড় বুরে দের। ইস্তিরি করতে শেখার।

কিছ পুলক কিছুতেই শিথতে পারে না।

সে কাঁড়িরে কাঁড়িয়ে ধববের কাগক পড়ে অথবা দাড়ি কামার বাব মাবে মাবে ইস্তিরি দেখে। পুলক ইস্তিরি করা কিছুতেই শিবতে পারেনি। প্রায় তিন মাল চীনারা চেষ্টা করে হাল ছেড়ে দের। তার পর তারা বাড়ী ছেড়ে দের।

লগুনের ধোপীরা কাপড় কাচতে বড় দেরি করে।

এদের দোকান আছে, কিছ সংখ্যার খুব বেশি নর। সাত দিনের কবে স্তির কাপড়-জামা পাওয়া বার না। কখনো চোদ দিনত দেপে বার। এই ধোপা দোকানদারেরা থুব সজীব মুখ করে থাকে। কোথাও তাদের হাসতে দেখেনি। ইংল্যাতে সমস্ত দোকানেই দোকান-কর্মচারীদের হাসবার নির্ম—এমন কি মাংদের দোকানদার পর্যন্ত হেসে জিজ্ঞেদ ক্রবে, এ দেশ ভাল লাগছে? আমাদের দেশের জাবহাওয়া নিশ্চর তোমাদের ভাল লাগে না?

কিছ ধোপাদের হাসতে দেখিনি। এরা হাসে না, কিছ
এনের বনিক্তাবোধ আছে। এরা অক্তের লাট, অক্তের কুমাল
—বিশেষ ক'বে অক্তের তোরালে প্যাকেটে ভরে দের।
ব্যক্তিগত সম্পত্তি এবং তার বন্ধার আইন-কান্থনে ইংল্যাণ্ডের
বাতান ভাবি, কিছ জামা-কাপড়ের বেলায় ব্যক্তিগত সম্পত্তি বলে
কিছুই নেই। প্রত্যেকেই প্রত্যেকের লাট পরে—প্রতে
বাধ্য হয়।

শাট নতুৰ কিনেহ, ধোণা দিছেছে? এই কথাটি আমাদের মধ্যে খ্য পরিচিত ছিল। কেউ নতুন শাট কিনলে তাকে অফ করবার জন্ত খ্ব সহাত্ত্তির সংক্ষেত্র হ'ত, তাই, তোমার ধোণা বড়ই অসং তো!

কেন ?

ঐ বে শাটটি পরে আছে, ওটা তো ভোষার নর—তোমা ব ও বক্ম ক্ষতিই হবে না—ব্রাষ্টন বডের খ্রাইপ দেওরা শাট তোমাকে মোটেই মানার না।

मानाव ना-वटहे ?

अक्रम मानाव ना ।

ত্মি কেনে বাথো, এই শাট আমি নিজের পরদার এবং নিজের পঙ্ক অমুবায়ী কিনেছি।

মাপ করে। ভাই। আমি আনভাম না।

একবার খুব মঞ্চা হয়েছিল। সাধনের প্যাকেটের সঙ্গে অক্ত কোন এক ভদ্রগোকের প্যাকেট স্থম্ভ বদলে গিরেছিল।

তিন দিন দে বেগে ছিল। বুজ খেলেনি, বৃদ্ধুদের খাওরায়নি— এমন কি বালা করেনি পর্যন্ত। ভার পর দে একটা কাঁচি দিরে সমস্ত জামা কেটে ফেলে ভাইবিনে ফেলে দের। কারণ, ঘটকের গলার মাণ ফোল ইঞ্চি, আর ধোবার দেওরা শার্টগুলির প্রভ্যেক্টি চোদ্দ ইঞ্চি। ধোৰার লোকানে বলেও কোন ফল চয়নি। তারা বলেছিল, নম্বরে মিলে বাছে অতথব এ নিশ্চরই সাধনের জামা। সাধন বলেছিল, না এ জামা আমার নয়, বে কোন গাবাই সেটা বুরুভে পারবে।

কিছ দোকানদার ব্ঝতে পারেনি। ক্লচি হয়নি।

সে জামা কিনল এবাবে—নাম তাব টেবেলাইন। এ জামা ধোবাকে দিতে হয় না। বাড়ীতে মেসিনে পাঁচ মিনিটে কাচা বার, তু ঘটার মধ্যে শুকিরে দেয়।

এই জামার ব্যবহার ইংল্যাণ্ডে প্রচুর বেড়ে বাছে। আতে আতে তুলোর প্রাধান্ত কমছে। এর পর বিছানার চাদর, বালিশের ঢাকনা সবই এ দিয়ে তৈরি হবে হয়ত।

লোকে বত এই নতুন জিনিসের জামা ব্যবহার করছে তত ধোবারা কম টাকা পাছে— মার ততই ধোরার ধরচ বেড়ে বাছে। এর পর হয়ত একটা জামা ধোরার ধরচ দিরে একটা জামাই কেনা সম্ভব হবে। লোকেরা বাড়ীতে বত কাপড় ধুছে ততই সাবানের বিক্রি বাড়ছে।

বিশেষ করে গুঁডো সাবানের।

আর প্রচুর বিজ্ঞাপন চোধে পড়ে সাবানের ওঁড়োর। সব সাবানের ওঁড়োতেই সমান কাল হয়—সমান পরিকার হয়। একটু কম বেশি হ'লেও তা ধর্তব্যের মধ্যে নর, কিছু সাবান কম্পানীরা বিজ্ঞাপন দের, আমাদের সাবান দিয়ে ধুলে সাদার চেয়েও সাদা হয়। অন্ত এফটি কম্পানী বিজ্ঞাপন দেয় কেবল সাদাতে আর চলবে না, এর সঙ্গে প্রয়োজন উজ্জ্বলতার। অন্ত একটি কম্পানী বিজ্ঞাপন দের, উজ্জ্ব্যা আরো স্থায়ী করে আমাদের সাবানের কেনার।

ধ্বরের কাগজের পাভায় পাভায় বিজ্ঞাপন দেখে মনে হয় একটা জিনিস—ইংরেজরা বেশি সাবান ব্যবহার করছে—জ্বতএব ভারা পরিফার জাভ। কথাটা সভ্যি। জার একটা জিনিস মনে



अशिष ५ वर

হয় বে ইংরেজরা সাধানের জক্ত খত খবচ ট্রুকরছে তার চাইতে বেশি খরচ করছে বিজ্ঞাপনের জক্ত।

অর্থাৎ বিজ্ঞাপনের জন্ম থবচ ক্রছে কম্পানিরা কোটি কোটি টাকা। এই টাকা দিছে ক্রেভারাই। অর্থাৎ ক্রেভারা একটা জিনিসের জন্ম দাম বেশি দিছে। অথচ কোন জিনিস বিক্রি করতে হ'লে বিজ্ঞাপন দিতেই হয়। কিছু দেখা গেছে বে সাবান বিক্রির ব্যাপারে ভারা মাত্রা ছাড়িয়ে গেছে।

বাসে, টিউবে বিজ্ঞাপন, রেডিওতে টেলিভিশনে সর্বত্র বিজ্ঞাপন। অধিকাংশই সাবানের।

সাবানের গুঁড়োর দাম মাঝে কমিরে দেওরা হয়। বার দাম ছ শিলিং প্যাকেট, তার দাম একটি কোম্পানি হঠাৎ এক শিলিং ছ পেনি করে দেয়। সঙ্গে সক্ষে সমস্ত কোম্পানি ভালের সাবানের দামও কমিরে দিতে বাধ্য হয়। দেখা গেছে ভাভেও ভালের লাভই থাকে।

লিগুফিন্ড গার্ডনসে বেলাদি' হ'লেন আমাদের প্রভিবেশী। এফদিন দেখি বেলাদি' ছ-একটা ভিনিস কেমিষ্টের দোকান থেকে কিনেছেন। তার মধ্যে একটা টিউব—সান ট্যান লোশনের।

ইউবোপে এই জাতীর লোশনের বিক্রি থুব বেশি। বাঁরা রৌদ্রস্নান করেন বাগানে বা সমুদ্রের ধারে তাঁদের পা ধাতে পুড়ে না বার তার জগু আগে থেকে এই তৈলাক্ত পদার্থটি মেথে নিতে হয়। কিছ ভারতীরদের এ জিনিস বিশেষ প্রেরাজন হর না— কারণ ভারতীর্বা ইংরেজদের মতো অত স্থর্বের আলোর চান ক্রবার পক্ষপাতী নর। তাই ওটা দেখে অবাক হলাম। বললাধ, বেলাদি, বৌদ্রনান ক্রেন নাকি আপনি?

- देक ना ! एक वजाला ?

— আপনার কাছে সানট্যান লোপন দেখছি কি না তাই! এটে গারে মেথে সারেব-মেমেরা সমূজের ধারে মড়ার মত পড়ে থাকে। বেসাদি' বদকেন, এফুনি কেমিটের দোকানে দিয়ে এসোনা ফেরত এটি।

বেলাদি' টুথপেষ্ট মনে করে কিনেছিলেন ওটি। এরকম ভূল প্রারই হয়। দোকানে সাজানে। জিনিস খাকে, নিজে ভূলে নিতে হয়, দাম দিতে হয়, সাধারণত—টুখপেষ্ট মনে করে সানট্যান লোশন আনা মোটেই অসম্ভব নয়।

কিছ কেমিটের দোকানে গিয়ে ডিম চাওরাটা একটু বাড়াবাড়ি বৈ কি। তাও ঘটেছিল আমাদের বন্ধু ইসমভুলা আনসারির ভাগ্যে। ত কিনতে বেরিয়েছিল ডিম—এসেছে তু সপ্তান্থ হল লাখনে। খেকে।

ফিঞ্জী রোড টিউব টেশন থেকে বেরিরেই বাঁদিকে ছু একটা দোকানের পর হল কেমিটের দোকান—আর ভার পাশেই মাসে ডিগ ইত্যাদির দোকান। দোকানের শোকেসে রয়েছে ডিম— সালানো।

ও ভূল করে চুকে পড়েছে কেমিটের দোকানে। কেমিটের দোকানে থাতা পেলিল ক্যামেরা রবারের বল, ডারেরী, স্টকেস, কিম্ম এ সমস্ত পাওরা বার—কিন্ত কোন কারণে ইংল্যাণ্ডে এরা ডিম বিক্রি করে না। এরা হলুদ, দারচিনি, লঙ্কাওঁড়ো পর্যস্ত বিক্রি করে। কিন্তু ডিম নর। কেমিট্রদের দেখলে মনেই হর না এরা ডেমের নাম স্তনেছে কথন। আনসারি একটি মহিলা শূপ আর্গিস্ট্যান্টকে বলেছে, গোটা ছয়েক ডিম দাও তো ?

ডিম ? তুমি ডিম চাও ?

আনসারি জবাব দিরেছে : চাই বই কি—আলবত গেই। আমি ডিম কিনতে এসেছি—ডিম কিনব, তৃষি ডিম বেচবে।

না, আমি ডিম বেচৰ না। পাশের দোকানে বাও, ওদের কাছ থেকে ডিম পাবে।

আমি ডিম কিনব এবং এখান থেকেই কিনব। না কিনে নঙৰ না।

ভদ্রমহিলা বললেন, প্রসা লাও আমি লিছি। পংসা নিরে পাশের দোকানে গিরে চারটে ডিম কিনে এনে আনসারির হাতে দিরে ভদ্রমহিলা বললেন, এর পর থেকে হখন ডিম কিনতে আসবে তখন এ দোকানে বেও।

শানসাবি ভূল বুঝতে পেরে লাল হ'বে উঠেছিল লজায়।

থ্ব সাবধানী লোক আমাদের ছুলুদা। (দেবত্রত চক্তবর্তী) ছুলুদাও একটি কেমিটের দোকানে গিরেছেন—ভিনি কিনবেন এক টিউব দাড়ি কামাবার সাবান। দোকানদার জিজ্ঞেস করলেন, উইব আশ অর উইদাউট আশ ? (অর্থাৎ বে সাবানের টিউব নেবে, সে সাবান হাত দিয়ে গালে সোজাছজি ঘ্রতে পারো—আশের প্রয়োজন হর, তেমন টিউবও আম্বা বাধি।)

ছুলুদা ভাবলেন, উইথ আশ—অর্থাৎ এরা টিউবের সংক আশও বিক্রি করবার তালে আছে। তিনি জোরের সংক বললেন, ছফ কোর্স, উইদাউট আশ।

বাড়ীতে এসে জল দিবে আশ দিবে তুলুদা বত চেঠা কবেন কিছুতেই কেন। হব না। অবশেষে তিনি ব্যাপারটা ব্রুতে পাবলেন। প্যাকেটের উপব লেখা আছে: আশ ব্যবহার করতে হব না। উইদাউট আশ !

কোলকাতায় বে জিনিস প্রত্যেক বাড়ীতে আছে তা লগুনের প্রার কোন বাড়ীতেই নেই—ক্রিনিসটা কি ? আরসোলা ? ছারপোকা ? একলো দেখতে পাওয়া যায় না বটে তেমন, কিছ একেবারে অনুজ নয়। জর্জ অরওয়েস লিখেছেন তাঁর বইতে বেটেমস নদীর উত্তরে কোন কারণে ছারপোকা নেই—কিছ দক্ষিণ দিকে আছে। এয় কারণ কি জানা বায় না। টেমস ত এটুকু একটা নদী সেজত ছারপোকাদের কী অপ্রবিধে হয় বৃঝি না। কোলকাতায় বে জিনিস প্রত্যেক বাড়ীতে আছে সে হ'ল সমতল ছাদ। লগুনের ছাদ সমতল নয়। তার উপরে বলা বায় না, আছ্ডা মাঝ বায় না।

লশুনে কোলকাতার মত ছাদ করা হর না, ভার কা^{বন} হ'ল প্রো।

সো বাতে পড়ে পড়ে ছাদের উপর ছয়ে না বার সেজগু হার এমন করে তৈরি যে স্নো কিছু জ্বমে গেলেই পড়ে বার আপনা-আপনি। আমাদের দেশের করুগেটের টিনের চালের মত।

ছারপোকার কথার মনে পড়ে গেল একটি বাঙালীর ক^{থা।} লিও ফীক্ত গার্ডনসে আমালের পাশের বাড়ীতে থাকভো সে। তা^র কাল ছিল নানা বিধয়ে কেল করা। ওনেছি সে ভাল রাল্লাও ক^{র্ড।} একদিন সে আমাদের ফ্লাটে এসে বললো, বড় বিপদে পড়েছি, পাউণ্ড ্রেড চাল হবে ? আমি বারা ঘর থেকে এক পাউণ্ড চাল এনে ্লাম। ছু পাউণ্ড দেবার মত চাল ছিল না।

রাত তথন দশটা।

আধ ঘটাখানেক পরে এঙ্গে বললো, খানিকটা মাখন পেলে ভাল হত।

মাধন ভাকে দিলাম ধানিকটা।

আবো একটু পর এনে বললো। গোটা চাবেক আলু যদি · · । তাও দেওয়া গেল !

সে অনেক ক্ষা প্রার্থনা করল। বিনয়ের অবতারের মত অনেকটা কথাবার্ভা বললো। আবো বললো প্রদিন সকালেই সমস্ত সে ফেরত দিয়ে বাবে।

কথা রাখেনি নে। তার পর থেকে ওর কথা মনে হলেই ছারপোকার কথা মনে পড়ে। টিপে মারতে ইচ্ছে করে। এই ব্যাপারটা নিয়ে অনেক ভেবেছি, আলোচনা করেছি। আমার এক বন্ধু বলেন এব জন্ত ত্বংখের কিছুনেই। ধার নিয়ে শোধ দেননি এটাই স্বাভাবিক-ম্বর্থাৎ বাভাগীর পক্ষে স্বাভাবিক। আর বদি দে লগুনে বার ভার লৈ দে তার বাঙালী বৈশিষ্ট্য বন্ধায় রেখেছে। অভথব এগুলো সহু করতেই হবে। মণি পালিতেবও এছই অভিজ্ঞা—ভিনি প্রচুর ধার দিয়েছিলেন বছ বাডালীকে, কিন্তু তারা থুব কমই শোধ দিয়েছে! আমরা পরে দেখেছি বাঙালীদের মধ্যে এমন এক একজন কোপেকে উড়ে এসে জুড়ে বঙ্গেন, মামা দাদা দিদি সম্পর্কে পাতান এবং নানা স্থবিধে করে নেন। ওঁরা ইংরিজি খাল মুখে তুলতে পারেন না বলে প্রার বোজই ভারতীয়দের ফ্রাটে ঘ্রে বেড়ান বদি কিছু খাত জোটে এই আশায়, ওঁরা ধার করেন—দেশে ন্ত্রী না খেরে আছে ছেলেরা প্রেট কাটা ধরতে বাধ্য হচ্ছে এ সম্ভ কথা বলেন। এ বিবদ্ধে এক ওস্তাদের কথা বল্ছি। এঁর বহু ছ্লুনাম—কখনো ইনি প্রভু বসাক, কখনো উষা সায়। অনেক বাঙালী সবছে বাঙালীদের সংস্পর্ণ এভিবে চলেন—কিছ এই প্রভু বসাক বা উবা বার জাতীয় লোক বে এজন্ত অনেকথানি দায়ী সে বিব্যৱ বিন্দুমাত্র সন্দেহ নেই। এই প্রভু বসাক বা উবা বারের এক তু পাউতে চলত না, ইনি দশ পাউতের কম ধার করতেন না, এবং তারপর সে মুখ আর দেখা বেভ না। রান্তার হঠাৎ দেখা হ'লে পাশ কাটিয়ে ছুটে পালিয়ে বেছেন, এই জোচোরটি কোথার আছে জানি না। শুনেছিলাম কার কাছ থেকে চল্লিশ পাউণ্ড ধার করে জাহাজে করে দেশে ফিবে এসেছিলেন। এখন তিনি কি ভাবে লোকেদের কাছ থেকে ধার করছেন জানতে ইচ্ছে হর।

কিছু কিছু বাঙালী এখনো ভাল আছেন এটাই ভরসার কথা।
কৃষ্ণ মেনন একবার ছাত্রদের সভার বলেছিলেন, তোমরা
আমাদের দেশের বাষ্ট্রদৃত্তের মত। তোমরা যা করবে তার
কলেই নির্ভির করবে আমাদের সঙ্গে ইংরেজদের সম্পর্ক।
আমরা বারা মাউন্তে, করা বাষ্ট্রদৃত তাদের চেরে ছাত্রদের দারিছ
অনেক বেশি।

দারিছহীনতা আমাদের প্রচ্ব। এ গুলোর নানারকম উদাহরণ 'দেওরা বায়। ইংবেজদের একটা গুণের কথা জানি, সেটা হল তাদের ব্যবসায়িক সততা। তারা কথার দাম দের, থারাপ জিনিব দিলে তা ফিরিরে দের। কিছ ভারতীর দোকানে ঠিক তার উপটো দেখতে পাই। কোন জিনিস খারাপ দোকানদারেরা ইচ্ছে করেই দের, অভএব তা কেবং দের না! জামাদের প্রায় প্রতিটি খাতে ভেজাল জামরা খাছি। কতি আমাদের বে দেহের হচ্ছে তা নর, ভাত হিসেবে জামরা ভেঙে গিয়েছি বলেই এর বিক্তর জামাদের সামাজিক প্রতিরোধ নেই। তাই একে বলা চলে নিজের পায়ে কুড়ল মারা।

বে ইংরেজ দোকানদার হাসিমুখে খারাপ কোন জিনির ফিটিরে দেয়, জখন হরতে! কিছু ক্ষতি হয়, কিছু এটা তার পক্ষে একটা ইনভেইমেন্টও বটে। ক্রেভা সেই দোকানে নিশিক্ত ফনে জিনিস্কিনতে পারে। জর্মাইংরেজ সং বলেই বে এটা করে তা নয়।ইংরেজ জানে, এর ফলে তার লাভই বেশি হবে। কেবল সে নয়, ভার ছেলেও বাতে সে ব্যবদার বজার রাখতে পারে সেজভ সে ছেলেদেরও সভতাই শিক্ষা দেয়। ব্যবদার জন্মই সততার প্রয়োজন।

আমার ত্-একজন বন্ধু লণ্ডনে হঠাং একটা বিরাট একটি ব্যবসার স্থান্য জুটিয়ে কেলে। কাপেট তৈরি করবার জন্ম বাজে উল কেনা হয়—বাজে উল ফেলা বায় না, দেওলোও বিক্রি হয়। হিসেব করে দেখা গোলো দশ বারো হাজার টাকা খরচ করলে তিশ হাডার টাকা লাভের সন্তাবনা। কিছ দশ বারো হাজার টাকা ছিল না, জতএব হাজার পাঁচেক টাকা অগ্রিম চাভ্যা হল।

ধে কম্পানির সঙ্গে ব্যংসা করার কথা ভারা বৃদ্ধা, ছাপ্তে জিনিস ডেসিভাবি দাও ৭বে দাম দেব। বিল ছফ লেজিং দেখিরেও টাকা পাওয়া বংবে না বঙ্গে তাঁরা জানালেন, কারণ ইতিপূর্বে ছাব একটি ভারতীয় কম্পানি উলের সঙ্গে পাটের ভেজাল দিয়ে তাদের জানী হাজার টাকা ক্তিগ্রন্ত করেছে— অতথ্য তাঁরা হিন্দ নিতে বাজি নন।

আমবা লিওফিন্ড গার্ডনদে বেশ কিছুদিন ছিলাম— অথচ
মিদেদ হেইসকে চান করতে দেখিনি। এ ব্যাপারে ধুব অবাক
হতাম, বলাই বাজ্যা। কিন্তু তিনি নিজেই একদিন বললেন বে
তিনি পাবলিক বাথে নিয়মিত চান করেন। বাড়ীতে স্ক্রের চানের
ব্যবস্থা থাকা সত্ত্বেও বাইরে গিয়ে চান করেন বেন জিজেদ করাতে
তিনি বললেন তাঁবে বয়স বেশি হওয়াতে তিনি পেনশন পাছেন
গ্রপ্থিনেটের কাছ থেকে। বাঁরা বৃদ্ধ বয়সের পেনশন পান তাঁবা



হুবের বোক্তল ও টিট পাখি

সাধারণ স্থানাগাবে কোনো ধরচ না দিয়ে চান করতে পারেন এবং সোম থেকে বৃহস্পতিবার এই চার দিন বিনা ধরচে বে কোন সিনেমা হলে চুকতে পারেন। মিসেস হেইস প্রচুব সিনেমা দেখতেন। কিছ তাঁর একমাত্র উদ্দেশ্য ছিল সিনেমা দেখা নয়, বাড়ীতে আগুন জেলে ধরচ না করবার জন্ত।

সাধারণ স্থানাগার লগুনে প্রচুর আছে। স্থামাদের একটি পোল্যাণ্ডের ছেলের সঙ্গে আলাপ হয়েছিল পিকাডিলি পাড়ায়— নাম তার বব। বব সমস্ত রাত পিকাডিলিতে ঘুরে বেড়াড— তার সামাত্র কিছু প্রসা ছিল ভাতে হোটেলে থাকা বেত না। **অভএ**ব সে ছুপুর বেলা ছ' সাভ পেনি খরচ করে চানের টবে পরম জলে ঘুমিরে নিত ঘটা কয়েক। স্বাস্থ্য ভাল ছিল-এবং পিকাডিলিতে সমস্ত বাত ঘূবেও ভাব কোন বকম ব্দস্থবিধে হ'ত বলে মনে হয়নি। তা ছাড়া পিকাডিলির খুব **কাছেই** কভেণ্ট গার্ডেন—সেধানে সাক সম্ভীর পাইকারী বাজার— ৰাত্ৰি বাবোটাৰ পৰ গ্ৰাম থেকে আসে সবিতে কৰে শাক সৰজী ফল কুল ইত্যাদি। দেখানে তার সঙ্গীর অভাব হয় না। মাঝে মাঝে এব ওব বোঝ। ববে দিয়ে ভাব ছ'চাব শিলিং খায়ও হরেছে— **কিন্তু সে বেজাইনী** ভাবে। তার বোঝা বওয়ার **অধিকার নে**ই। বোঝা বইতে হ'লে ইউনিয়নের কাছে আবেদন করতে হবে। ভারা বিদেশীকে কাজ করতে অনুমতি দেবে না। আর বব নিষ্মিত কাজ করতে চাইতও না। আনিষ্মই ছিল তার কাম্য। ছু' একবার ইংরেজ "টেডি বয়"দের সঙ্গে ভার বুবোঘুবিও হ'রেছে।

ববের সবচেরে ভাল লাগে ইংরেজ পুলিস। রাভ ছটোর সময় পুলিসের সঙ্গে ববের দেখা ফ্লাফালগার স্বরারে। এখানে ভিক্করছ—বাড়ী বাও! পুলিস বলে চলে গেছে। আর কিছু বলেনি। প্রদিন সেই পুলিসের সঙ্গে একই জারগায় একই অবস্থায় দেখা। কীতে, ভোমার বাড়ী কোধার ?

—আমার বাড়ী নেই।

💳 হ বাড়ী নেই, বটে ? স্থামার সঙ্গে এস।

বিনা আপত্তিতে বব পুলিসের সঙ্গে বার। **ধানাতে শো**বার বন্দোবন্ত নাকি খুব ভাল।

হ'-চারদিন জেলও খেটেছে।

ছেলেটি কি ভাবে পোল্যাও থেকে লগুনে এসেছিল জানি না। তাব কোন পরিচর সে জানতো না। তার মাধা হয়ত থুব পুত্ ছিল না। কিছ এই রক্ষ ছেলের। লশুনের ছুবুতদের শপ্পরে গিয়ে পড়ে। লশুনের নানারকম হুৰ্বুভ লাছে। বিশেষ করে সোহো অঞ্চল হুৰ্বুভদের ঘাঁটি আছে। এই সৰ দলে পৃথিবীর সৰাইকে পাওরা বার। এরা বন্দুক বিভলভার পছন্দ করে না। বিলেব করে দাড়ি কামানোর কুব এংবে খুব প্রিয়। এতে কাজও হর সার-গুলিশ এই অন্তকে বে-ভাইনী বা অসাভাবিক মনে করতে পারে না। ভবে লণ্ডনের এই সাণারওয়ার্গত অধিকাংশ লোকেন্ধের সভিজ্ঞতার সাওতার পড়ে না। ভারতীয় ছাত্রবা সাধারণত সন্ধোর পর এ পাড়ার আদে না, যদিও কাছেই লণ্ডন ইউনিভার্সিটি। আমাদের এক বন্ধু দেবব্ৰত চন্দ্ৰ সোহোৱ ভেতৰ দিবে না গিবে প্ৰাৰ্থ আৰু মাইল বেশি হাঁটভো। সে বলভো, গোলমাল থেকে দূরে থাকাই ভালো। আমরা বছবার সোহোর মধ্যে গোলমাল দেখবার আশার গিরেছি, কিন্ত কোনদিনই অস্বাভাবিক কিছু চোখে পড়েনি। একেবারেই পড়েনি বললে ভূল হবে।

একদিন সোহো স্বরায়ের মধ্যে পার্কে সন্ধ্যের কিছুপরে দেখেছিলাম দেবব্রতকে।

দেবৰত বলেছিল, সৰ বাজে কথা না বে ? কই কেউ তো কুর নিয়ে ভাড়া করল না ?

[व्यात्राभीवादा नमाना]

EGYPT MIGHT IS TUMBLED DOWN

(M. E. Coleridge)

(3)

মানব-মনের মাঝে গরেছে বিলয় মিশবের শক্তি ৰত, ৰত পরিচয়, তেমনি পতন হ'ল গ্রীসের ট্রয়,— বোম আর ভেনিসের গর্ব হ'ল ক্ষয়।

()

তব্ তথা আজো আছে নিল্লী কবিগণ, আছে জেগে জীবন মাঝে কতো না স্বপন। অসার অস্থাই, বেন ব্যর্থ জ্ঞাক, আর আছে জেগে যত মানবের মন। অমুবাদিকা—কুমারী শুক্লা মুখোপাধ্যায়

এদো নববর্ষ

মধুচ্ছন্দা দাশগুপ্তা

তুমি গুরু বাবে মোর এসেছো
(তবু) ফুটেছে অলানা ফুল, করেছে কভ বকুল
স্থাতি ছড়িয়ে গেছে বীধিকার
কোকিলা মুধ্যা হয়ে, ডেকে গেছে মুহ, মুহ
বস্থাতী পুলকিতা গীভিকার

হে ন্তন পুরাতনে টানো অবভঠন নব রূপে এসো মোর গৃহে আজ বেমন এসেছে কলি মলিকা ডালে ডালে, বেমন পরেছে ধরা নব সাজ (তবু) তুমি তধু দূব হতে হেসেছো।

মিষ্টি সুরের নাচের তালে মিষ্টি মুখের খেলা আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



স্প্ৰসিদ্ধ কৈ লৈ



বিস্কৃটএর

প্রস্তুকারক কর্তৃক আধুনিকতম যদ্ধপাতির সাহায্যে প্রস্তুত কোলে বিস্কৃট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০

কবি কর্ণপূর-বিরচিত

আনন্দ-রন্দাবন

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর] অমুবাদক—-শ্ৰীপ্ৰবোধেন্দুনাথ ঠাকুর

২৭: দেখতে দেখতে সেই সময়টি এল, বধন ভয়পান বন্ধ হয়ে বায় শিশুদের, এবং হামা টেনে আর ভারা চলে না। বালকুক এখন বীরে বীরে চলেন, পায়ের পাভায় ভর দিয়েও ইাটভে পারেন, ননী চুঙিও করেন।

বিনি প্রমানশ-কন্স তিনি যে-ক্ষেত্রে প্রকট করছেন তাঁর বাল্য-লীলার কোতৃক, সে-ক্ষেত্রে কি জানন্দের জন্ম না হয়ে যায় ?

२४। এकमा--

নিজের খবপানি নির্জন দেখে, চুরি করতে চ্কেছেন ছেলে।
চুরি করলেন কোগের দিনের ননী-ফালানো বি। চুরি করতে
গিরে, মণিস্তম্ভে বেই না দেখা নিজের প্রভিবিদ্ধ, জমনি থামা। ভরে
ভবে ছারাটিকে তথন ছেলে বললেন ভাই, ভাই, বলিসনি ভাই মাকে
জামার, ভোর জন্মও ভাই ভাগ বেখেছি জামি, থা ভাই। কল কল
করে বকে বাচ্ছেন চোর, জার জাড়াল খেকে লুকিরে লুকিয়ে ভনলেন
মা।

১৯ । তারপরে বেই ছেলের কাছে রজ করে এগিছে গেলেন মা অমনি ছেলে সঞ্চতিত। নিজের প্রতিবিশ্বটিকে দেখিয়ে দিয়ে মাকে বলে উঠলেন—

মা মা, দেখ কে এসেছে। ননা চুবি করতে এই মাত্র হবে এসে চুকল। লোভ হরেছে চোবের। বারণ করছি, বিছুতেই ভুনছে না। বাগ করছি, ও আমার উপর চোগ বাঙাছে। আমার তো জার লোভ নেই ননীব উপব।

৩০। আর একদিন-

কার্যাস্ববে গেছেন জননী। ইজ্যবস্বে ননী চুরি করছেন ছেলে। হঠাৎ দৈবগতিকে মা এফে উপস্থিত। ছেলেকে দেখতে না পেয়ে ষেই তিনি ডাক দিয়ে উঠেছেন—

ও কুফ, বাপ আমার কোধায় গেলি তুই, কি করছিস রে ? অমনি ভরে ভকিরে গেল ছেলের মুধ, বন্ধ হার গেল ননী চুরি। জিরিরে জিরিরে মাকে বললেন—

ম', মা, আমার কাঁকনের মাণিকথানা আগুনের মত অলছিল কি মা, - একদম পুড়ে বাচ্ছিল আমার হাত। ননীর ভাঁড়টার ভিতর তাই হাত ডুবিয়ে জুড়িয়ে নিচ্ছিলুম অলুনি।

৩১। কর্ণরিম্য বাক্যশুনে মারের ঠোঁটে অভিনয় করে উঠল বিশ্বয়। বলেন—

আর আর এদিকে আয়। তারপরে ছেলেকে কোলে তুলে নিরে বললেন—

দেখি তো বাছার আমার কী হয়েছে। দেখি তো একবার হাতথানা। পুড়লো কেমন করে ?

় পূজার ফুলের মত হাতথানিকে বাড়িয়ে দিলেন ছেলে। স্নার নুমা সেই হাজের উপর মিঠি দিতে দিতে বললেন— আহা, হা, সভিটেই ভো, বাছার আমার হাতথানি আগুন হুরে গেছে গো! দি এবার, দূর কবে ফেলে দি মাণিকথানা। ভারী ছুটু এই পদ্মরাগ মণিটা। ভারপরেই ছেলেকে বুকে জড়িরে মারের দেকী খেলা!

৩২। আর একদিন---

ফুলের কলির মত কচি-কচি হান্ত ঘৃরিয়ে ছেনের সে কী চোধ মাজার ঘটা! তারপরে হুচোথ ছালিয়ে টপটপ করে চোথের জল ফেলার সে কী কায়দা। হঁ হুঁ হুঁ করে সে কী ঠোঁট ফুঁলিয়ে কঁলিয়ে ফালার কহর! মুখের একটি বাক্যিও বোঝে কার সাধ্যি!

কী হরেছে ছেলের ?

না, মা তাঁকে বকেছেন। ননী-চুরি-চুরি থেলা থেলছিলেন ছেলে, স্থার মা কি না তাঁকে বকেছেন।

আছা আর কাঁদতে হবে নী গো, আর আর তোর মুখ মুছিরে দি। তোরই তো এই এই সং--বলতে 'বলতে ননী-চোরাকে গলায় তুলিয়ে মারের দে কী চোখ হলছলে আদর!

৩০। আর একদিন---

পূর্ণ-ক্যোৎসা-বিধেতি মণিমর অঙ্গন। প্রকণুরপুরধ্নীদের সঙ্গে বসে সভা স্থাকিবে ওভালাভ করছিলেন মা যশোলা, পাশেই খেলা করছিলেন ছেলে। এমন সময় আকাশের চক্রটির উপয় নক্ষর পঙল কুফাচন্দ্রে। আর বার কোধায় ?

পিছন দিক্ থেকে গুটি গুটি এগিয়ে এলেন ছেলে। মাধার ঘোমটা সরিয়ে তুলতুলে হাত ত্থানি দিয়ে মাধার মাধার বেণী ধরে এক টান। চূল থুলে দিয়ে মায়ের পিঠে এই মায়েন কিল তো সেইই মায়েন কিল। সঙ্গে সংল গলা ছেড়ে ছেলের কী কারা, জার কী আধা-আধা বুলি—

দে মা, আমার দে মা—শ্রেহে ভিজে বার মারের প্রাণ। অরুণ হর তুনরন। পালের সধীদের দিকে তিনি মিনতির চোধে চান।

৩৪। বিনয়ের প্রণয়ে গলে গেলেন স্থীরা। ভাড়াভাড়ি কুষ্ণচল্লকে ছাড়িয়ে নিলেন তাঁরা। নিজেদের কোলের কাছে টেনে নিয়ে ছেলে সামসিয়ে বললেন—

বাছা, তুমি কি চাও ? ক্ষীৰ চাই ?

ना ।

পুৰ ভালো দই ?

ना, ना।

চাচি ভবে ?

ना, ना।

তাহলে ছানা ?

नाः ना ।

ভবে ভোমার কী ইচ্ছে ?

ननीव वि मांखः "एन।

ও মা, এই কথা! বেশ আমৰা দেব। এবাৰ আৰ ঠোঁট ফুলিও না। মাৰেৰ উপৰ এত বাগ ফলাবে না•••কেমন ?

খবের ঘি আমায় ভালো লাগে না।

· এই না বলে, অঙ্গুলির পাপড়িগুলিকে উর্মুখিন্ করে কুফ্চল্ল দেখিয়ে দিলেন জ্যোৎস্নার ভরা আকাশের চন্দ্রটিকে।

৩৫। সধীরা মুধচাওরা-চাওরি করতে লাগলেন। এক সধীবলে উঠলেন—

ভিবে বাপ আমার । ওটা কেন ননীর বি হতে বাবে ? ওটা একটা বালিহাস ; আকালপথের পলু-সায়র পার হয়ে বাছে ।

কি^{ত্ৰ}ে এ বালিহাদটা চাই, এনে দাও, আমি খেলব। ও পারে না পালিয়ে বায়।"

৬৬। এই বলতে বলতে উংকঠার ছটফটে হরে কৃষ্ণচন্দ্র মাটিতে নাচাতে লাগলেন তাঁর জোড়া-পা। মারের স্থীদের 'গলা জড়িবে জড়িবে কেবল :চঁচাতে লাগলেন—

"वाउ, वाउ · · "

ছেলের কাল্লা আর থাঘেনা। আগগের চেয়ে আনেক বেকী কাল্লা। বাল্যের আবেশভরা কাল্লা। আর এক সধী তথন বসলেন—

"এই এঁবা জোমার ঠকিবেছেন। ওঠা বাজহাদ নয়। ওটি আকাশের মাঝধানে অমৃতের বশ্বিভরা চাঁদ।"

তাহলে ঐটিই আমার দাও। আমার ধুব ইচ্ছে করছে। আমার সলে ও থেকা করবে। নিয়ে এস এফুপি, দাও দাও।

৩৭। বলতে বলতে আরও মাত্রা ছাড়িরে উঠল কুফচন্দ্রের কারা। ছেলেকে কোলে ভূলে নিলেন মা বশোদা। বললেন—

ওটি ননীর বি-ই বটে। রাজহাঁস নর, অমৃত-রশ্মিও নর। কিছ ওটিতো তুলাল তোমাকে দেওরা চলবে না। ঐ দেখ, দৈববোগে ওর গারে গরল লেগে গেছে। তাই ওটি থেতে থ্ব ভালো হলেও, এধানে কেউ ওটি ধার না।

৩৮। বিশ্বর ফুটে উঠন কৃষ্ণচক্রের উত্তরে—মা মা গবল লাগল কেন ৬তে ?

কেন মা ?

মারের মনে হল, বাক আগের আবেশ কেটে গেছে ছেলের; তাঁর কথার প্রস্থা হয়েছে কুফের গল্প শোনবার আরহে। এক বস থেকে আর এক বসে ভাহলে চলে পড়েছেন তাঁর ছেলে। ভাই, ছেলেকে বুকে জড়িয়ে জননী তথন মিট্ট হাসে বিট্টি ভাবে বললেন—

৩১। বলি ভবে শোন,—একটি সাগ্য আছে। ভার নাম কীয়।

ক। মা, কী রকমের দেখতে সেটা ?

মা। ছধ দেখেছিস তো ? সেই ছধে ভর্তি সেই সাগর।

ক। আছে। মা, কত গৰু দোৱা হল বে এ সাগর জন্মাল ?

মা। ওবে সোনা, গরুর ভুধ নয়।

ক। সামাকে ঠথাভিছেন মা, গাই না হলে বুঝি ছুখ হর ?

মা। বিনি গরুর মধ্যে ছবের সৃষ্টি করেছেন, তিনি বিনি-গরুও ্ডুগ তৈরী করতে পারেন। কু। তিনি কে ?

মা। তিনি ভগবান, জগৎ-কারণ।

কু। সে ভাবার কে ?

মা। ওবে ছেলে, ভিনি ভগবান। তাঁর নাম 'অ---প' তিনি । চলতে পাবেন না। 'ভগবানে'র গ নেই, ভাহলে 'ভবান্';---ওরে ভুই রে আমার সেই।

কু। হুম বাবা, এবার মা তুই সন্তিয় কথা বলেছিস। ও মা, গল বল।

মা। পুরাকালে পুর আর অপুরদের মধ্যে বাগা হর।
অপুরদের মোহিত করতে হবে, তাই এক দিন ভগবান মধুন করলেন
ত্ব-সাগর। এক প্রকাশু পাহাড়, মন্দর পাহাড় তাঁর নাম, তিনি
হলেন মধুন-দশু। রজ্জু হলেন স্পরাক্ষ বাস্থিক। এক দিক থেকে
অপুরেরা, অক্স দিক থেকে পুরেরা টানতে লাগলেন সাপের দড়ি।

কু। মা. বেমন করে গোপীরা দই ময় ?

মা। ইথা গোপাল, ঠিক্ সেই রকম। আর মইতে মইতে সেই হুধ সাগর থেকে উঠল গরস, •••কালকুট তার নাম।

द्र । भा, शूर्ध कि करत शर्म इरत ? तम (छ। সাপেদেরি इत ।

মা। বাছা, সেই গ্রল কালকুটটিকে ধখন মহেখর পান করে ফেলছেন, তথন ভার বা ছিটেকোটা পড়ল, সেই কোঁটাগুলোকেই খেরে ফেলেছিল সাপেরা। ভাতেই সাপেদের বিষ হল। ভাই বলছিলুব, ছুধেও বে গ্রল ধাকে সেটা ভগ্বানেরই শক্তি।

ক। হঁ, মাঠিক ঠিক।

মা। আকাশে ঐ বে ননীর খিরের কোঁটাটাকে দেখছিস উনিও উঠেছিকেন সেই সাগা: থেকে। তাই ওঁর গারে লেগে গেল গরলের বাবিটুকুন। ঐ দেখ, ঐ বে কালোদাগ্য-সকলেই ওর নাম রেথেছে কলক'। •••তথন খরের খি-ই থাও বাছা, ওটি নর।

গল্প ভনতে ক্ষেত্র চোথে ব্য নেষে এল। লীলানিজার পুত্রের তছুথানি অংশ হয়ে পড়েছে দেখে জননী ৰশোদাদেবী ভাঁকে তৃলে নিয়ে ভইয়ে দিলেন বহুমূল্য বিছানার। কপুরের ধূলির মত ধবল সেই শয়নতল। ভইয়ে দিয়ে আভে আভে মা বশোদা ব্য পাড়িয়ে দিলেন কৃষ্ণকে।

৪০। পরের দিন সকালে প্রদেষ ওঠেননি তথন আকাশে, দ্বি-নবনীত ইত্যাদি হাতে নিয়ে ছেনের হুম ভাঙাতে এলেন জননী। কুফের গায়ে হাত বোলাতে বোলাতে বললেন—"আগো রে, তুলাল আমার আগো। মবে যাই, মবে যাই, কাল বাছার আমার থাওয়া হরনি, এবার ওঠো।"

ছেলেকে যুম খেকে ডুলে গদ্ধসলিল দিয়ে মুখকমলখানি ধুইরে দিলেন মা। তার পরে ছেলেকে কোলে বসিয়ে দেখিরে দিলেন সোনার পাত্রে সাজানো নবনীভাদি খাতসামগ্রী। বললেন—"বেটা মুখে রোচে, খাও।"

বললেন বটে জননী বিভ পুত্রের জভ্যাস থাবে কোথার ? ভঙ্গপান ভ্যাগ করা সংস্থি ভিনি ঝাঁপিরে পড়ে পান করভে জারভ করে দিলেন মারের ভন।

85। কিছুকণ ত্থ খাইরে মা বললেন—"তুই তো ননী থেছে ভালবাসিদ। ননীটুকু এখন খেয়ে ফেল্,।"

कु। ना मा, ७-तर चामि थार ना। काल दाखित चामि

ভোকে মিখ্যে কথা বলে খুমিরে পড়েছিলুম। আমার ক্ষিদে ছিল না।
মা। তুই বদি খুমিরে পড়িস, ভাহলে কে আমার ঘরে চুকে
চুরি করবে ননী ?

কৃ। মা মা, কবে আবার আমি ভোমার ননী চুরি করলুম ? মা, তুই মিথো কথা বলছিল। মিটি মিটি টোটে মিটি মিটি কথা। মারের মন গলাতে, মন রাজাতে মন ভোলাতে আর কতকণ ? তেই রক্ষের বাল্যলীলা চলে লীলা-বালকের—অনস্ত থেলা, আর দে থেলা কত পরিপাটি!

৪২। একদিন,—বালকৃষ্ণ দাপিয়ে বেড়াছেন গোশালার চাতালে। হঠাৎ এমন সময় লাফ দিয়ে দেভিল এক বাছুর। দেখাও বেই জ্বানি দেভিল গ্রেই বাছুরটাকে জ্বাপটে ধরে এক ষ্টেকায় মাটিতে কেলে দিলেন ছেলে। তার পরে নিজের হুইটুর মধ্যে বাছুরটাকে না চেপে ধরে, হু হাত দিয়ে তার গলা না জড়িয়ে নিজের মুখের পদ্মফুল দিয়ে সে কী সুন্দর করে বাছুরের মুখ বোলানোর ঘটা, সে কী হাসি দেওবার ঘটা বাছুরকে!

দেখেন, আর মারের প্রাণ মানচান করে ভরে মার কোতৃকে।

নিজস্ব গকর গোরালে গ্রতে গ্রতে একদিন প্রীকৃষ্ণ বেই মলে
দিয়েছেন একটা কচি বাছুরের ল্যান্ত, অমনি বাছুর দোড়। নিজেও বেই তড়াক্ করে লাফিরে উঠেছেন, অমনি ছেলের থসে পড়ে যার কটিতটের ঘটি। আর পরাও বেই, অমনি যেন একটি মুহুর্তেই চুরি ছরে গেল দেখুস্থীদের মন। নগ্ন কৃষ্ণের মধ্যে তাঁরা চকিতে অমুভব করলেন অনাবৃত্ত এক মুর্ভ্ত ব্রহ্মক।

তার পরে আঙিনার পাঁক তুলে তুলে নিজের গারে মাধার সে কী উংসব! মুগমদে বেন সংলিপ্ত হয়ে গেল নীল গা। দেখুস্টাদের আর পাতা পড়ে না চোখের। তাঁরা নয়ন ভবে দেখতে থাকেন ছ্নয়নের অভিবামকে, সুক্ষরকে। সুক্ষরে কি অসুক্ষর কথনও থাকে?

কোনো কোনো দিন বাইরে বেড়াতে বোরাবেন ছেলে। ছেলেকে সালাতে বসেন মা। নিওঁৎ করে ছেলের মাথায় বেঁধে দেন ছোট একটি উন্থীব। বেছে এনে কোমরে পরিরে দেন পীতবাস। গোরোচনা দিরে কপালে আঁকেন তমালপাতার তিলক। কাজল পরাছেন চোথে, ছেলের আর তর সর না। "দাঁড়া বলছি, এ তাথো, ছুলোকের দৃষ্টি আবার না পড়ে" বলতে বলতে গাঁরের মায়ের মত নন্দরাণী নিজের বুকের কাছে টেনে নেন তাঁর বৈলোক্যমোহন ছেলেকে আর মুখামৃত দিয়ে প্রো করেন ছেলের মন্তক। পুত্রের কঠে ছলিয়ে দেন অতি চমৎকার একটি বাঘনধ, সোনা দিয়ে বাঘানো, শ্রোণীতে পরিয়ে দেন মহার্হ মিণির এক লহর কিছিনীমাল্য। এইবার তাহলে ধড়াচুড়ো পরে পুরের বাইরে খেলতে বেরোতে পারেন বালকুক্য ভাতীরিণীদের পদ্ম-আঁথির আঙিনার আছিনার।

৪৩। তার পর একদিন—অঞ্জপুরের শ্রেষ্ঠ রমণীরা একরে উপস্থিত হরে গেলেন মহামহিমামরী ব্রজরাশীর সমীপে। তাঁরা সকলেই জানতেন, বে-ছেলের উদরে অধিষ্ঠান করেন জর, বিনি সর্বদাই সদয়, সে-ছেলের বৃষ্ঠ খেলার পৃথিবীর মানুষ বে মন্ধরে, সে-খেলার বে সর্বত্র বিজয় হবে এতে আরু আশ্চর্ব্য কি? এই জ্ঞান থাকার দক্ষণ তাঁদের মনে হুংখের উদর না হলেও কতাই না বেন তাঁরা ব্যথা পেরেছেন, এই ভাব দেশিরে তাঁরা এলেন কুফের বিক্লান্ধ অভিযোগ করতে মারের কাছে।

- ৪৪। এলেন তাঁরা সকলে। ওঠে কৌতুক, অংবে ভালবাসা, সারা সুথে হাসি। বললেন—
- —"রাণী মা এ ছেলে আপনার—ভবিষ্যতে ভারী ছুইছ হয়ে উঠবেন। এখন তো সবে ছটি পান্তা গলিয়েছে, ভাতেই এই; ভূবন কাঁপিয়ে ভূলেছেন। বাড়লে পরে আরও দীলা বাড়বে। তখনই পাড়াকে পাড়া লোপ করবার চেষ্টায় আছেন, না জানি এর পরে আরও কি করে বসবেন।"
- "গো-দোহনের আগেই ইনি বাছুবের দড়ি খুলে দেন। বাছুবঙলো হুধ খেরে নেয় সব। যদি কেহ তৎন ওর সামনে গিয়ে রাগ দেখান, তাহলে তকুণি উনি এমন এবটি মিট হাসি হাসেন, বে লোপ পেয়ে যায় বোষ।"
- —গহন অন্ধন্ধরে রাণীমা, আমরা অতি বছে লুকিয়ে রেখে দি ননী ঘি ইত্যাদি সমস্ত। কিছু আপনার ঐ ছেলেটি কি করেন জানেন ? ঘরে চুকে নিজের রূপের আঞোষ ঘরের আঁথার দূর করে দিয়ে ঘরের কোথার কি আছে সমস্তই বের কছে ফেলেন। "(৩৮)
- "কী ছড়াছড়ি মা, কী আল্সেমি আপনার ছেলের। থাবেন তো নিজে এই এন্ট্রুক, আর গাছের বাঁদরগুলোকে ডেকে এনে থাওরাবেন এই এতথানা। তৃত্তিমন্ত বাঁদরগুলোও বদি আবার না থান তাহলে রেগে ভাঁড় ভেঙে নেব মাটিতে ছড়িরে দেন আপনার কুমার।"
- তাহার বেধানে হাত পৌছয় না, সেধানে পিড়ের উপর পিড়ে চাপিরে সিঁড়ে বানান। তার পর ভার উপর পাঁড়িরে হাত বাড়িরে সিকে থেকে চুরি করেন দই, ননী, মাধন, হানা। বিদ কেহ মানা করলেন ভো রক্ষে নেই, এক পলকে মাটিতে ছুঁড়ে কেলে দেন সমস্ভ।",
- ••• জার মা বৃদ্ধ করে বদি একবার ওঁর হাত ধরেছে কেউ অমনি হাত মটকিরে পিটান। তারপরে দূরে গাঁড়িরে ত্রত গর্জান। আবার বলেন কি না•••গাঁড়াও দেখাছি, ঘর পুড়িরে ভোমার ছেলেদের আমি তাড়িয়ে দেছ।"
- ••• কৈউ বদি বা বলে কেলেছেন, •• ইনি চোর মহাশয়' ভাহলে সে কী বাগ, মা, আপনার এই ছাই টির। রেগেই খুন। একেবারে ধুই হয়ে ওঠেন। বলেন•• তুমিই চোর। এ বাড়ী ভো আমার বাড়ী, এ বাড়ীর সমস্কট ভো আমার।
- "বেউ বদি না নিজের বাজটিকে মোলারেম করে মাটির প্রালেপ দিরেছেন, বা ছবিটির মত করে কলি ফিরিরেছেন তা হলে দেখুন গিরে, ঐ আপনার ছেলেটি সেধানে গিরে ধুলো ছড়াছেন বালি ছড়াছেন, নোংবা পাতা ছড়াছেন। নাংবাখা, খরের শুদ্ধি আর বইল ড়া। আপনার সামনে আমাদের এই কেন্তু ঠাকুরটি স্থনীল বালকটি হয়ে থাকেন। আর আমাদের বাড়ীতে বেই উপস্থিত হন অমনি উনি হরে ওঠেন সাক্ষাং চোর, ধাই গিমর আত্ত থাকে না, একমুধ ধরধরে কথা, মহারাণী, মহা-লুভী।
- ৪৫। অজ্বমণীগণ এতক্ষণে এই খৈন নিভাপ্ত নিঠুবত। ও মিধ্যা বৈষি দেখিয়ে ঐ হেন বাক্যবাণ বৰ্ষণ ক্ৰছেন, ভতক্ষণ বালকুমের নয়নে ছল্ছল করে উঠেছে মিধ্যা-ক্ষমা। বিনি স্কৃতি

নবোৎসবে মাজিরে রাখেন জগৎকে, তিনিও তথন এই কুট আলাপের বৈষ্ণ্য দেখাবার অভিলাবে মুখখানি তার তুললেন। বদিও নীতির দিক দিয়ে তিনি অপরাধী, তবুও বেন কোনও অপরাধই তিনি করেন্নি, এমনি একটি ভাব দেখিয়ে, স্বকিছু ধামা-চাপা দেবার উদ্দেশ্যে মধুর মধুর ক্ষরে বললেন—"মা, মা, এদৈর মধ্যে একজনও আমায় ভালবালেন না। এঁদের শ্লেহ নেই। একটও না। এঁদের কথার একটকুও সন্ভিত্ত নেই। এঁরা একদম মিথাক। এঁদের সমস্তই মিথো। এঁবা মাছব ওঁদের ছেলেরা অনেক নতুন নতুন খেলা জানে, ভাই তাদের সঙ্গে আমার এত ভাব। তারা এক নিমিবে মার আপন হয়ে বায়। তাদের সঙ্গে দেখা করতে আমি রাত পোহালেই তাদের বাড়ী বাই। এঁরা আমার বেতে দেখেছেন কিনা, তাই জেবি কবে এখানে মিখ্যে কথা বলতে এলেছেন। বিশাস করিসনে মা ওঁদের কথার। এই আমি বলে রাখছি মা, বদ্ধদের সঙ্গে দেখা করতে আর বাব না আমি কোনো দিন ভাদের বাড়ীতে। বলতে বলতে ছেলের হুব काँन काँन हरत छे। ज्या छान बारा कि करत বসবেন? কিছ ব্রজেখরী লীলা-বালকটিকে কোলের কাছে টেনে নিলেন, আর নিজের মুখ-চোখের ভাব গোপন করে হাসতে হাসতে ব্রজ্বনিভাদের বললেন-

৪৬। "আহা, আপনারাই তো দেখছি মিখ্যেবাদী, আর আমার গোপালই তো দেখছি সভিয়বাদী। এ বেচারী তো কোনও অপরাধই করেন নি।"

चार और किंच चाननारा वकरवन ना रान।

হো: হো: কবে হেসে উঠলেন সকলে, চলল, প্রীতি-কথা। শ্রীবোছিণীদেবীও এসে পড়লেন। ভারপরে তিনি ঘখন বান্ধবীদের কপালে পরিয়ে দিলেন ভিলক, তথন সম্মানিত সেবা পেয়ে সানন্দে বিদায় নিয়ে চলে গেলেন ব্রহ্মবনিভারা।

৪৭। তাঁবাও গেলেন, আর জন-নীতি-পণ্ডিতা প্রীকৃষজননীও
শিক্ষা দিতে বদলেন তনমকে। কোলে বদিয়ে বললেন—"ওরে
ছেলে, তুই বড় লুভী। তুইপানা কয়তে হয় নিজের ঘরে করিল।
৬সব নিজের ঘরেই শোভা পার। দেখারও ভালো। পরের ঘরে
গিরে অভ সব ছ্ট-ভূটু খেলা—ওরে নীলমণি, সে কি তোকে মানার ?
ছুই আমার কত সুক্ষর ছেলে, বাইরে গিরে এমন খেলা আর
ধেলিসনে বেন। খেলতে হয় নিজের আভিনার খেলবি।"

৪৮। এমন সময়ে বছরার এসে পড়লেন সেখানে। এসেই

a the

দেখেন তাঁব আছকটিব, তাঁব আখীয়খভনদেব মুক্তদটিব কেমন ধেন আছিল হবে পড়েছে প্রতাপ। কই, শরীর তো কিছু ধারাপ দেখাছে না। তাই বাণীতে অতি মাধুর্যার ২স মিশিয়ে কুককে ভাক দিয়ে বললেন—আব, এদিকে আর, আমার কোলে আর।

মাতৃত্বস্ক থেকে জনকের বৃকে ঝাঁপিয়ে পড়কেন কৃষ্ণ। বাপের কঠ জড়িরে রূখ টিপে টিপে বললেন—মা আমার কেন - মিখ্যি মিখ্যি ---বক্স

মা, তুই মা বল না কী হয়েছে ঝটপট। ব্ৰহ্মণী তথন কথকথাৰ মত কৰে, ফলিয়ে বলে গেলেন বোৰ-বউদের মধুধারার মত সমস্ত কথা।

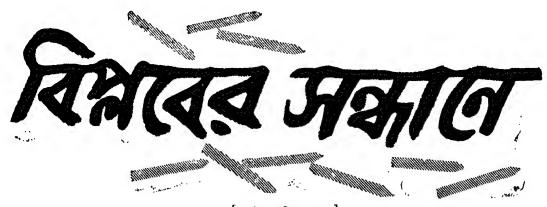
৫০। মনের ভাব গোপন করে ব্রজরাক্ষ তথন অম্বোগের স্থান মহিবীকে বললেন—ভোমারই অপবাধ হয়েছে সব চেরে বেলী। আমার ছেলে, ভাকে হতেই হবে নিস্পাপ, বুজিমান, বিনমী। সব সমরেই দেখেছি, গোপবধুরা কুফের নিন্দা করেন। মিথো নিন্দা। নিন্দে রটিয়ে রঙ্গ করেন। ওঁদের স্থভাব ঐ। প্রের মণি দেখলে মাৎসর্বে ওঁরা ভরে ওঠেন। তাঁদের কথার তুমি বিখাস কর? আশ্চর্ব। বলেই ছেলের দিকে চেরে বললেন—আমার কোলেই থাক, আর কারো কোলে বাসনি। বলাও শেব হয়নি, আর পিতৃ-জঙ্ক থেকে মাতৃ-জক্তে ঝাঁপিয়ে পড়েছেন কৃষ্ণ। মারের কোলে চড়বার ক্লন্তে ছেলের সে কী আঁকপাক ভারপর মারের কোলে গছার বসার সে কী কারণা! রাজদম্পতী ভো হেসেই সারা।

৫১। দয়ুজদমনের জননীর সঙ্গে কিছুক্ষণ সহর্ষ হাতালাপ করে ব্রজ্বান্ধ উঠতে বাবেন, এমন সময় একটা কথা হঠাৎ তাঁর মনে জাগল। তিনি গাঁড়িয়ে গেলেন। মহিষীর কাছে প্রস্থান করলেন—"নেথ রাণী, কুফ একলাই বেরোর। প্রবেল বলরামও সঙ্গে থাকেনা। তৃত্বনেরই একা-একা ঘোরাফেরা করাটা ভাল নর। ভাই ভাবছিলুম জামানের এখন নিমৃত্যু করা প্রয়োজন হয়ে উঠেছে কতকগুলি পরিচালক। খেলার সহচর হওরা চাই, সেনাচজুরও হওরা বাই। সব সমরেই ভারা সঙ্গে সঙ্গে ভিরবে তৃত্বনের। কি বল।"

বিচার শেব হরে গেলে এজরাজ সেই দিনই কুক্ষ-বলরামের শেবার নিযুক্ত করে দিলেন করেকটি বী-সচিব এবং ওটিকরেক বালক-দল।

• ः अमलत् श्रह्मको • • •

্ এ মাসের প্রছম্পটে প্রাকৃতিক শোভা সম্বিত অসকানসার একথানি আলোকচিত্র বুজিত করা হ'ল। আলোকচিত্রটি গ্রহণ করেছেন জীবিতাদ হিত্র।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] নারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

ভালেও হাউসটা ছিল গোরেন্দা অফিস এবং প্রেসিভেন্সি জেলের মাবের হল্টিং ষ্টেশনের মতন। প্রথমে গ্রেপ্তার করা ছত তথনকার,—বোধ হর,— Section 52 Cr. P. C. অমুসারে। তাতে ১৫ দিন রাধার পর প্রেসিডেন্সি জেলে ডিফেন্স আর্ট্ট বা বেগুলেন বি তে আটক রাথা হত সাধারণত এক মাস—কুখাত ৪৪ ডিগ্রি বা 44 cell-এ। তার পর ডিফেন্স আর্ট্ট ওয়ালাদের সাধারণত বাইবে গ্রামে অস্তর্যাপ করা হত। বেগুলেন্সন খ্রিজ্বালাদের তার প্রেগ্ডেলেই আটক রাধা হ'ত,—
এবং তথনকার দিনে আসামী ও প্লিশ, সকলেই মনে করতো, তাদের সারা জীবন আটক রাধা হবে।

e২ ধারার প্রথম ১৫ দিন কীড খ্রীট ও ডালাণ্ডা হাউদে কাটতো—কীড খ্রীটে প্রথম সন্তাবণ-আপ্যায়ন,—আর ডালাণ্ডার বিশ্রাম। বারা প্রো স্বীকারোক্তি করতো,—বারা আধা স্বীকারোক্তি করতো,—এবং বারা স্বীকারোক্তি না করেই অগ্নিপরীক্ষায় উত্তীর্ণ হ'ত,—সব রকম লোকই ডালাণ্ডার আসতো।

শীকারোজ্ঞি করার চং করে কিছু বলা এবং কিছু চেপে বাওরা, এই হল আবা শীকারোজ্ঞি। এই চালাকি করতে গিয়ে বেসামাল হরেও অনেকে পুরে। শীকারোজ্ঞি করতে বাধ্য হ'ত। গোয়েলা অফিসাররা প্রায় প্রভাহই ডালাখা হাউসে আসতো কারো না কারো সলে দেখা করার জ্ঞাে। গুনেছিলুম, ছ'-চারটে সেলের দরলা দিনের বেলা খোলা রাধা হ'ত, বন্দী বধন ধুসী বাইরে বেক্তে পারতো।

ঠাকুরের স্বীকারোজ্ঞির পর অনেক লোক ধরা পড়েছে, তার মধ্যে অনেকে স্বীকারোজ্ঞি করার আরো অনেক লোক ধরা পড়েছে,—
আবার তাদের অনেকে স্বীকারোজ্ঞি করছে, এই রকম একটা ছড়েছড়ি তথন চলছিল এবং গোরেন্দা-অফিসে হড়ছড় করে মাল আমদানী হচ্ছে, আসামাত্রই হড়দাড় করে ঠেলানো চলছে, বাসি মাল ভালাখার পাচার করে টাটকা মালের জায়গা করা চলছে, একটা হৈ-হৈ হৈ-হৈ বাপার চলছে।

ধিন্তির কথা লিখেছি, পড়ে এক বন্ধু বললেন, বিপ্লবীদের
নাকি জাত মেবে দিয়েছি। তাঁকে আখন্ত করে বললুম, জাতমারার
এথনো অনেক বাকি, এথনও জাত আধমারাও করতে পারিনি।
আমি গ্রীব ছথিয়া বলেই বে আমারই ওপর থিন্তি চলেছে,
ভা মন্ত্র, সে সময় বাবা ধরা পড়েছে, ভালের সকলেরই এ হাল।

ফেরারীদের ওপর আগকোশ সব চেয়ে থেঁশাঁ। ভবিচযুক্ত ভক্ত।
টচার--বাজে কথা।

বিশ্জ্জনক ফোরী তুপেক্রকুমার দত্ত রিভদ্ভার সহ রাভার ধরা পড়েছিলেন, ডল্লন দেড়েক পুলিপের সলে মহিরা হরে ধ্যঞ্জাবিত করে জবম হরেছিলেন, জ্ঞান হয়েছিলেন,—পাছে দ্বীকারোক্তি করতে হর বলে' লালবাজার লক-জাপে গলার দাঁসি লাগিয়েছিলেন জাত্মহত্যা করার জল্জে—দাঁসি কেটে নামিরে তাঁকে হাসপাতালে পাঠানো হয়েছিল। ভিনি পরবর্তী কালে তার্ শ্বভিক্থার (বিপ্লবের পদ্চিন্ত) লিখেছেন:

"হিন্দুখানী একটি পিছনে এসে গাঁড়িয়ে আমার চুল ধরে টানতে শুকু করলো- - আনি তো মারবে,—চুপ করে বইলাম।

"সাহস পেয়ে চারিদিক থেকে গাল পাড়তে গুরু করলো। মার হয়ত সহু হত্ত—গাল সহু হয় না।"

তারপা তিনি চীৎকার করে ধমক দিলেন,— তাঁর কেস কোটে বাবে বলে তাঁকে আর মারতে বারণ করা হল, মার বন্ধ হল।

অক্সত্র তিনি লিখেছেন,—"নিজেকে বাঁচাবার জক্ত অপরের সর্বনাশ করা—বিপ্লবীর ধর্মত্যাগ,—বিপ্লবীর জাতিপাত।— অথচ কাল নামে না রটেছে? জীবন চ্যাটার্জির নামে পর্যত্ত—বে জীবনকে জামি নিজের চেয়েও বেশী বিখাস করি। অনুশীলনের অনুত সরকার —পরে শুনেছি, এঁদের নামে বা কিছু রটেছে, সবই মিধ্যা। আত্মসমান অনাহত রেখেই এঁবা উৎরেছেন।

(अष्टत)— "শুনেছিলাম ডালান্দা হাউদের কথা। এক বন্ধুকে
শীতের রাতে জলে চ্বিমে রেখেছিল মীকারোক্তী করাবার জলে।
— অমর ঘোষ (অতুলদার ডাই—না, ব) অরদা মজুমদার
(অমৃতবাজার পত্রিকার অ্যাসিষ্টান্ট এডিটর—না, ব) অরুণ গুহ,
ভীবন চ্যাটার্জি—মারো কত বন্ধুকে কীড ফ্রীট পুলিশ অফিসে
অমান্থবিক মার মেরেছে, —দিনের পর দিন না খেতে দিরে
সর্বক্ষণ পাঁড় করিয়ে রেখেছে,—ভার উপর হাত পা বেঁধে রাতের
পর রাত ক্ষল দিরে পিটিয়েছে। জীবন ১০৪ ডিগ্রী অর নিয়ে বরা
পড়েছেন, সেই অবস্থার তাঁকে নিয়ে তিন চার জনে মদ
থেরে এনে শেব রাত অবধি ঘরের এনি ক্রখেকে ওদিকে ঠেলে ঠেলে
ফেলে টেনিল খেলেছে। আরো বা করেছে, ভল্লাকের মুখের
ভাষার ভা বেরার না।"

थरे व ठावण्यनव माथ अक माल लाथा, धरेशाय, चाँमर



· दन' अ दम कि दक न दही मं श्री है एक है निः

● विकाल • वाचा है • विशे • वालास

দাদার মুখে শুনেছি, ভূপেন বাবু জাঁর এক বন্ধুর স্বীকারোক্তি ঢাকা দিয়েছেন। অভিরিক্ত অভ্যাচারের জয়েত এরকম সহামুভ্তি অসম্ভব নর।

স্বীকারোক্তির সম্পর্কে ভূপেন বাবু লিখেছেন, "একদিন ছুপুরের পরে ডারু পঞ্জো জেলের ফটকে। দেখি দশ-বারোজন বন্ধুকে জেলের বিভিন্ন স্থান থেকে ও অন্তত্ত থেকে নিয়ে এসেছে সনাক্ষকরার জল্তে। তার মধ্যে আছেন অধ্যাপক শবৎ ঘোর (বাছদার বন্ধু—টালার বিনি ছোট লাঠি খেলা দেখাতে আসতেন—না-ব-), অধ্যাপক বিপিন দে, সাংবাদিক স্থরেন সিংহ এবং আরো জয়েরকজন। চোধ-মুখের অবস্থা প্রায় কারো স্থবিধার নয়। "আমরা বথন স্বাই একজ জড়ো হয়েছি, এক জনকে ব্রলাম। জিন্তানা ক্রলাম, "স্ব স্থীকার করেছ কেন ?"—"কি করব ? দেখুন, অমুক বাবু স্ব বলে দিয়েছেন।"

শ্বই অধুক বাবৃও সেধানে হাজিব ছিলেন। • • • বজুবা সবাই
নীবৰ— আমিই একা কথা বলছি। কাজেই হিলের নজর পড়েছে
আমার দিকে। • • • তখন এক হাতে আমার ধরলো, এক হাতে
বজুটিকে ধরলো, নিয়ে গোভিব কাছে হাজিব করলো। "

অবস্থাটা নেহাৎ ভবিযুক্ত নর। সব কথা বলে দিয়ে অনেক লোকের গ্রেপ্তাবের কারণ হওরার পরও রাজ্যকী হয়েছেন অনেকেই। এমনি এক জন রাজ্যকী ছিলেন অমুশীলনের বোগেশ চ্যাটার্জি, বিনি '৫৮ সালে দিল্লীতে অশোক সেনের পতাকাতলে ৩০০ ভূতপূর্ব বিশ্ববীর প্রদর্শনী করেছিলেন, কাকোরী বড়বল্প মাললার সার্টিফিকেট ও আগডভারটাইজমেন্টের সাহাব্যে।

বসন্ত চ্যাটার্জির খুনের সঙ্গে বাঁরা জড়িত ছিলে, তিনি তাঁদের সঙ্গে জড়িত ছিলেন এবং ধরা পড়ে সব বাঁকার করে বৈগুলেশন থিতে জেলে জাটক রাজবলী হয়েছিলেন। জেলে তাঁর দলের অগ্য স্বাজবলীরা তাঁকে একখরে করেছিলেন, তিনি মনমরা ভাবে একা একা বেড়াতেন। ভূপেন বাবুই তাঁর অবস্থা দেখে তাঁর সঙ্গে মিশে ভাতে rehabilitate করেছিলেন।

বাই হোক, ভালতা হাউনে আমাকে বে খোপে প্রলো, তার কাছেরই এক খোপে ছিল করালী। পার্থানার নাম করে সকলে বেবোতে আরম্ভ করেছে দেখে আমিও বেরোলুম এবং করালীর পালে পালে চললুম—পেছনে পাহারাও চললো। বেল একটু দূরে একটা টিনের চালায় একসঙ্গে অনেকগুলো পার্থানা—ছ'সারি ছোট ছোট খোপ। ছ'জনে পালাপালি ছই খোপে চ্কলুম। এমনি আরো অনেক জোড়া পালাপালি থোপে চ্কলো—চাপা গলায় গুলুবণ শুফু হল।

ছু' মিনিট ন। বেতেই পাহাবা হাঁক দিলে, জলদি করো।
ভাড়াতাড়ি ছুই চারটে কথা বলে এবং জেনে নিবে বেবিরে পড়লুম।
সে গোড়াতেই মার এড়িরেছে—বল্ক-শিল্তনের কথা চেপে গিরে আর
ক্তকগুলো কথা বলেছে—ভার মধ্যে পাড়ার কথা থব কম।
সে ভখন স্বেমাত্র বি-এ পাশ করেছে—কলেজ, হাডিঞ্জ ও হিন্দু
হোষ্টেল, সভীণ চক্রবর্তী, এবং হাঙ্গদের বাড়ীর ফেরারীদের
কথাই প্রধান। একজনের কথা বললো, সে বা-কিছু জানতো
সবই বলে দিরেছে। ক্রাপীকে কীড স্থাটে থাকতে হ্রনি।

্ৰ সন্ধাৰ সময় সেলেৰ গৰাদেৰ কাৰু দিছে বাজেৰ থামা দিয়ে

গেল,—কি, তা মনে নেই। জনেক বাত পর্যস্ত জাকাশ-পাতাল ভাবতে ভাবতে মাধাটা গ্রম হয়ে গেছে, ঘুম জালছে না ; এমনি ছটকট করে শেবে ঘ্মিয়ে পড়লুম। জাবার কাঁচা যুম ভেলে ভোৱে উঠে পার্থানা যাওয়ার পালা। এমনি করে দেখা হল প্রায় সকলেব সঙ্গে,—কিন্তু কথা বলার স্বযোগ হল না। ওরা একটু একটু তফাতের সেলে ছিল, ওদের পার্থান। যাওয়ার জন্তু সক্ষী চিল।

ত্'-একদিন পরে একদিন তুপুরে বারাদার চেচামেচি শুনে গরাদের কাঁক দিরে নাক বাড়িরে আড়চোথে দেখি,—হাক্ত সেলের বাইবে বারাদার এসে এক পাহারাদারের গড়গড়ার মুখ লাগিরে কাঞ্জামি করে টান দিয়েছে, আর সে চেচাচ্ছে, তার গড়গড়া নই হয়ে গেছে বলে। হাক্ত দাঁত বার করে তাকে বোঝাবার চেটা করছে!

প্রাক্ত দশটার সমর সাক্ষোপাক বেষ্টিভান্থে সাহেব আসেন, এবং প্রভ্যেক সেলের সামনে দাঁড়িয়ে বলে যান,—"You are remanded till tomorrow." তিনি ম্যাজিট্রেট—"till tomorrow" সাহেব। অর্থাৎ রোক আমাদের ম্যাজিট্রেটের সামনে হাজির করা হয়। ভবে পর্বত মহম্মদের কাছে বার না, মহম্মদই প্রতির কাছে আসেন।

আমার সেলের এক পাশে থাকতেন হরিল দাশগুপ্ত, আমাদেরই আর এক সেণ্টারের লোক। তথন তিনি থাকতেন নবকুকা স্ত্রীটে, পরে তিনি হাতীবাগানে হীরেন দত্তদের দক্ষণ বাড়ীতে স্পোর্টিং গুড়ারের দোকান করেছিলেন—এথন দোকান বেশ বড় হয়েছে।

তাঁর এক সহক্ষী লগিত বসাকও ছিলেন, এবং আর একজন ছিলেন এক বসাই রায় (কর্মকার) যিনি নাকি যা কিছু জানতেন, সবই প্রাক্তিলেন। কাঁলের জুরেলারীর দোকান ছিল, এখন দোকানও বড, এবং শেশ বড় সোক তিনি।

কয়েক দিন পরে একদিন পঞ্চাননের সঙ্গে পায়থানায় মেলবার এক সুবোগ ঘটে গেল। তিনিও বললেন আমাদের 'একজনের' কথা—বা জানতো, সবই বলে দিয়েছে। গরনা গলানোর কথাটা সে জানতো না, তাই পুলিশ জানতে পারেনি। পঞ্চাননকে বথন কীড খ্রীটে নিয়ে বায়,—তথনই দেখে আশ্চর্য হন বে, আমাদের ঐ 'একজন' 'freely' ঘরের মধ্যে ঘোরাফেরা করছে, অফিসার তাকে সিগারেট দিছে, সে সিগারেট খাছে।

সে পঞ্চাননকে বললে, সবই পুলিশ জানতে পেরেছে, স্মতরাং তথু তথু মার না থেয়ে, বা জান সব বলে দাও। সেই পঞ্চাননের জধম হাতটার দাগ দেখিয়ে দিলে, এবং সেই হাতটাকে পুলিশ ক্লস দিয়ে পিটলে। শেব পর্যন্ত পঞ্চানন কিছু চেপে, কিছু বলে রেহাই পেলে।

গুণু তাই নর,—পঞ্চানন বললেন, আমার সামনে অভিসাররা সতীল চক্রবর্তীর সন্ধানে কোথার বৈতে হবে তার পরামর্ল করলে, এবং আমাদের ঐ 'একজনকে" গোঁল-দাড়ীর পরচুলো পরিরে মোটবে নিয়ে বাওয়ার ব্যবস্থা করলে। তারপর তাকে নিয়ে বাওয়ার পর পঞ্চাননের অফিসার বললে, এই সব ছেলে নিয়ে বিয় করবে? হঁ:।

ৰাই হোক, পঞ্চাননকেও কীড ষ্টাটে রাখেনি। ছবিশ দাশগুপুকে বখন বিভাষ্টিটে ঠেলাছে, ভিনি চপ কৰে আৰ্ ধাছেন দেখে এক কাঁকে পাহারার কনেইবল তাঁকে বলে দিলে,—
'রোতা নেই কাছে? চিল্লায়কে রোও, কমতি মারেগা!' তারপর
তিনি চেঁচাতে শুলু করলেন, এবং তাঁর মনে হল, সত্যিই কিছু স্কল
পেলেন। পঞ্চানন যখন যুগল দত্তদের আহিবীটোলার বাড়ীতে
ছিলেন, তখন হরিল বাবু এবং ললিত বাবু অনেকদিন তাঁর হাত
'dress' করেছিলেন। এর ফলে তাঁর সঙ্গে আমার একটু
আছীয়তা বোধ জন্মেছিল। সে সভাব-আনত আছে।

গোরেন্দা অফিসারদের কাজটার প্রাকৃতি একই, কিন্তু একজন জ-পরিচিত ব্যক্ত ভদ্রলোককে প্রথম সাক্ষান্তেই মার এবং নোংবাভাবার গাল দেওয়ার মতন 'এলেম' সকলের থাকে না। তার জক্তে বাছাবাছা মার্কামারা ছোটলোক অফিসার থাকে। উপ্তট অকথ্য অত্যাচারের ব্যবস্থাও তাদের স্বাধীন মন্তিকে? আবিভাব। এদের মধ্যে আবার পাজির শিরোমশি'বলে কারো কারো থ্যাতি আছে। তাদের হাতে বারা পড়ে, সরচেরে বেশী হুর্ভোগ হয় তাদের। এরা কিন্তু চাকরীর স্বচেয়ে ওপরের ধাপে উঠতে পারে না। তার জক্তে অক্সপ্রকার 'এলেম' দরকার।

ষাই হোক,—১০ দিন ভালাগু। হাউসে till tomorow থেকে, এক দিন বিকেসে এক কালো গাড়ী-বোঝাই হয়ে চুকলুম প্রেসিড়েন্সি জেলে কুণ্যাত ৪৪ ডিগ্রী বা 44 cellএ। সে হচ্ছে নিজ্ঞান কারাবাদ।

জেলের ফটকে • চুকে একটা থাতার নাম-ধাম লেখা হল, তারপরে আর একটা ফটক থুলে জেলের মধ্যে নিয়ে থানিক দ্বে ৪৪ ডিগ্রীর ফটকে চুকলুম। সেখানে একজন ইউরোপীয়ান ওয়ার্ডারের টেবিলে আবার নাম-ধাম লিখিরে নিরে চললো। চওড়া একটা রাজার বাঁ দিকে বরাবর দেওরাল, আর ভানদিকে পর পর ৪৪টা দেলের সারি। মাঝে আর একটা গেট ও দেওয়াল দিয়ে সেলের সারিটা ভ্ভাগে ভাগ করা হয়েছে, এবং সে গেটেও এক ইউরোপীয়ান ওয়ার্ডারের পাহারা আছে।

আমবা বত এগোছি, আমাদের আগে আগে একজন করেদী মেট ডানদিকের সেলের কপাটগুলো বন্ধ কবতে করতে চলেছে, এবং আমরা পার হরে গেলে আবার কপাটগুলো পুলে দিছে আব একজন। অর্থাৎ বন্দীরা বাতে কারো মুখ দেখতে না পার তার নিধুঁত ব্যবস্থা। বে কপাটগুলো বন্ধ করা এবং খোলা হছে, সেগুলোই সেলের কপাট নয়। সেলের গরাদে দেওয়া দরজার তালা বন্দী আছেন বন্দীরা— ভার বাইরে আর একটা দেলের মতন ছাদহীন জারগা আছে, তার নাম আণি উদেল,—লোহার কপাটগুলো সেই আগি উসেলের।

বন্দীবা দিনবাত সেলের মধ্যে তালাবন্ধ থাকেন—সকালে মুখ গোওয়া বা স্নান কবার জ্ঞে একবার পনেরো মিনিট, আর বিকালে "Exercise" এর (বেড়ানোর) জ্ঞে আর একবার পনেরো মিনিট বন্দীকে সেই আটি উপেলে বার করা হয়। কিছু এক সেল বান দিয়ে এক সেল, এই ভাবে ত্যার তাঁদের বেবেছে দেওয়া হয়, যাতে পাশাপাশি সেলের বন্দীবা কথাবার্তার স্থযোগ না পার। আবার লোহার কপাটভলোর মারে একটা ঢাকনা দেওয়া ফুটো আছে, যাতে বাইরে থেকে ওয়ার্ডাররা টাক্টিনা স্বিয়ে ফুটোতে ঢোথ লাগিয়ে দেখতে পারে বন্দী কি কহছে।

ুবেলগুলো এতটা চওড়া, বাতে ছখানা খাট পাশাপালি রাখা

বার; আর তার পিছনে আর একধানা থাট আড়াআড়ি রাধা বায়, এতটা দখা। তিনথানা থাটের মত ভারগার একধানা থাট চটের তোবক কম্বল বালিসসহ দংজার মার পর্যন্ত দংল করে আছে,—পাশে আর একটা থাটের মতন ভারগা আছে নড়'চড়ার মতন,— এবং দেখানে আছে একটা জলের কুঁলো একটা এনামেনের থালা ও মগ,— এবং শিছন দিকে আর একথানা থাটের মতন ভারগায় আছে তুটো আলকাতরা মাথানো চুপড়ি,—মলমুত্র ও শৌচক্রিবার জভে। গরাদের বাইরে আছে এক বালতি জল। পিছনের দেওবালের উপর দিকে, একটা ঘুল্যলি জানালা।

ব্যবস্থা দেখে অঙ্গ জগ হবে গেল। তথনও জানি না, কতদিন এথানে ঐতাবে হাখবে। আমার আসার আগে নারা এসেছেন, বাঁদের অনেককে ঐভাবে ঐথানে অনেক দিন বেখেছে, এবং তাঁরা কেউ পাগল হয়ে গেছেন, কেউ আত্মহত্যা করেছেন, সকলেরই স্বাস্থা ভেঙ্গে গেছে। তার কলে কিছু কিছু সুবাবস্থা হরেছে, আমি এসেছি সেই সুবাস্থার আমলে।

ভাগাণ্ডা থেকে থাইষে নিয়ে এনেছিল। কাজেই শুরে প্রভাগ মনে হতে লাগলো, ইহলোক সম্পূর্ণ অভকার হয়ে যাওবার পর যে সর ভদ্মলোক পরলোকে (অবশু নরকে) যান, জাঁদের সেধানে ঠিক এমনি ব্যবস্থা। অভগের একমাত্র সঙ্গী অপরীরী চিস্তা—অম্প্রট, এলোপাভাড়ি, দম-আটকানো! ফ্রমে অবসর হয়ে ঘুমিয়ে পড়লুল।

বাতটা কখন কেটে গেল, জানতে পাবপুম না—ভোবের আগেই পালের cell এর দরজা খোলার শব্দে ঘূম ভেলে গেল। মেধর এল করেদী মেটের সলে—টুকরা খালি দেখে বখোটিত প্রামর্শ দিয়ে গেল। প্রামর্শ গ্রহণ করে রাখলুম। বেলা ১টার ও বিকেলে আর হবার এল।

স্কালে জ্যাণিট সেলে বার করে দিলে। মুখ ধুরে একটু পার্চারী করে নিলুম। চার কদম হাটকেই দেওরালে নাক ঠুকে বার, কাজেই সে প্রায় গ্রপাক খাওরাই হল। ১৫ মিনিটেই জাবার ভালাবনী।

ভারণর এল চা! ভোরণর ডালার মতন একটা টিনের ট্রেভে আধ্ধানা পাউন্নটিতে মাধন লাগানো নাজানো, আর প্রকাশু এক বালতি চা। এক পিন মাধন কটা এবং প্রায় এক মগ চা গরালে গলিয়ে দিবে গেল। খেরে পেট ভরে গেল। ব্যলুন Defence of India Act এ পড়েছি, এবং ভক্ত লাক হয়েছি!

ভাবেশর এক আওয়াল এল "সরকার সেলাম"। এক করেণী মেট এনে ব্যিয়ে নিয়ে গোল, স্থপারিটেউটে আসছেন, ভিনি এলে হাভের চেটো হুটো বৃক্তের হুপালে রেখে ভাঁর সামনে দাঁড়াভে হবে। মনে হল, ডাকাভনের "hauds up" order, পাছে কেউ গুলিটুলি করে। স্থপারিটেউটে রূপ দেখে এবং দেখিরে চলে গোলেন।

খনটাৰ নম্বৰ মনে নেই, ২৩।২৪ হ'তে পাৰে। মেকের টালি খোনাই কৰে লেখা আছে Prithi Sing Transportation for life Lahore Conspirary case—1915. কেম্বন খেন একটু ভাল লাগলো। বেন একটু সাধুসক পেরেছি!

ভাপনারা মুচকি হাসি হাসবেন না। ঘটনাচক্র একটু

ভিন্নভাবে ঘ্রলে আভকের ৪৪ ডিগ্রীর প্রত্যেকেরই ঐ
আবস্থা হতে পারতো। পানের দোকানের পাশে দড়ির
আঙন ঝোলে—বে না সে বিভি-সিগারেট ধরিরে নিয়ে
চলে বায়— দোকানদার কিছু বলে না, কারণ সে ভানে. বে ধ্মপায়ীরা
ভার দোকানের কাছ দিয়ে মাঝে মাবেও হাঁটে, ভারা সকলেই ভার
potential খাদের—কোনো দিন কিছু না কিছু কিনতে পারেই।
বোমা তৈরির পরামর্শমাত্র করেও তো আকামান-ফেরতের সাটিফিকেট
পাওবা যার, এবং শুবু ভারই ভোবে নেতা হওৱা বার। বাক—

তুপুরের ধানা এল—বে ট্রাছের ডালায় পাঁউকটি এসেছিল, সেই ট্রাছডরা ভাত, আর বালতি বালতি ডাল, ঘাঁটি, মাছের কোল আর ডিমসিছ। বেন লাট্যাহেবের মেমের বিয়ে।

গবাদের ফাঁক দিয়ে গলিয়ে গলিয়ে আমার এনামেলের থালা আর মগ ভবে বা দিয়ে গেল, মনে হল ত্'বেলার থোরাক। কিছ সব থেরে ফেললুম। অনেক দিনের কিলে।

বাইবের বালতির জল দিয়ে গরাদের ফাঁকে হাত গলিয়ে থালা মগ ধ্যে বেখে গুরে পড়লুম। বস্ততাদ্রিক পোড়া-পেট প্রচুর বস্ত সংগ্রহ করে ঠাপ্তা হল, এবং ঘম আসতেও লজ্জা হল না।

বেশ থানিক ঘুমিরে উঠে পেটের অবস্থা দেখে চিন্তা হল—হজম ভো করা চাই! থুব বভকজলো ভন বৈঠক দিরে ইাপিরে আবার ভলুম। তার পর বিকেলে ১৫ মিনিট জ্যাণ্টিসেলে ঘুরপাক খাওরা হল। তার পর সন্ধার আগে আবার রাত্তের থাওরার পালা।

বড় বড় লাল লাল মোটা মোটা পোড়া দাগওয়ালা কটি—ছুথানা নিলুম। ডালটা ভাল—আধমগ নিলুম, আব ভাব সলে এক হাতা মাংস। চেহারাটা দেখে ভক্তি হচ্ছিল না, কিন্তু থেতে ডালই লাগলো।

চবিশে ঘণ্টার এই প্রোগ্রাম দিনের পর দিন চলতে লাগলো।
এলোমেলো চিস্তার হাত থেকে বেহাই পাওরার অভে ব্থন-তথন
অন-বৈঠক করি। দিনের পর দিন এ একই মুখগুলো কলের পুতুলের
মতন আদে বার, আর একটাও মুখ দেখার উপার নেই—আমিও
বেন কলের পুতুল বনে গেছি।

ইন্ডিমধ্যে এক দিন এক মেটের হাতে একগালা বই সমেত ওয়ার্ডার এসে বললে—ইচ্ছা হলে এর থেকে একথানা বই মিতে পাব—পড়বার জল্তে—হস্তার একথানা করে বই জেল-লাইত্রেরী থেকে দেওরা হর।

বই দেখসুম মহান টাইপের—অমির নিমাই চরিত, অমিতাত, ভাক্তার চুণীলাল বসুর থাত—এই তৃতীর বইটাই নিলুম। ছোট বই, এক নি:খাদে পড়া হরে গেল। সাত দিন ধরে সেইটেরই চর্বিত-চর্বণ করলুম—প্রার মুখন্ত হরে গেল। থাত সহজে অত চমৎকার বালো বই কিছ আর হয় না। থাত সহজে, পরিপাক প্রধানী সহজে আমার অভাবধি ঐ বিভাতেই চলে বাচেতু। ৪৪ ডিগ্রীর নীট লাভ ?

এক দিন ওয়ার্ডাব এক করেদী সঙ্গে করে এসেছে, কয়েদীর হাতে এক মোটা চূল-ছাঁটা ক্লিপ। ইচ্ছে করলে চূল ছাঁটতে পারি কিছু মাধা ও দাড়ি এ ক্লিপ দিয়ে মুড়িরে দেবে আগাগোড়া আরু কিছু নর। আমি বলসুম, দরকার নেই। চলে গেল। চূল-দাড়ি বড় হতে লাগলো। ঠেসে ধাই, আরু বধন-তথন তন-বৈঠক ক্রি—ওজনও বাড়তে লাগলো। হত দিন এতাবে থাকতে হবে জানা নেই বলে,— বধন এই প্রশ্নটা মনে হর, তথনই মনটা অন্থির হরে ওঠে—জার জাবার কলে তন-বৈঠক করে ইাপিরে চিস্তাটাকে তাড়াই।

দেওয়ালের গারে একটা মশা রক্ত খেরে গোল হরে বসে
আছে,—তাকে ধরতে চেটা করি,—সে উড়ে ধার, বিদ্ধ একটু ছুরে
গিরে আবার বসে—একটু গুরুভোজন হরেছে—আমারি মন্তন।
ডন-বৈঠক দিকে পারে না। একবার ধরে কেলি। সর্বের মন্তন
এক ডেলা জ্মাট রক্ত আমার আঙ্গুলে আটকে বার,—আর মুশাটা
উড়ে পালিরে বার। বাহাছর !

অমিয় নিমাই চরিত আর অমিতাত পড়া হরেছে—ছু বার পড়তে ইচ্ছে করে না, তবু ৭ দিন ধরে চোধ বুলোই। চটের সদিতে গোঁজা একটা বড় আলপিন আবিভার করলুম—দেওরালে আঁচড় কেটে নামটা লিখলুম। আলপিনটা বখাছানি বৈথে দিলুম। সময় কাটে না ডন-বৈঠকই চলে।

হঠাৎ একদিন গেটে ডাক পড়লো—বার-তারিশ ভ্লে গিয়েছিলুম—Interment order পেলুম—দেপলুম ৪৪ ডিগ্রীতে ১ মান হয়ে গেছে ৷

"Wheras in the openion of the Government you....have acted, is acting or is about to act in a manner prejudicial to public safty, the Government is pleased to direct that you shall proceed directly to Krishnagar, Dist. Nadia, and report yourself to the S. P., etc. etc.— **Equ | **Quality** | **Q

এই বাঁধা গড়ের মধ্যে প্লিশ সাহেবের নির্দেশমত ছালে থাকা এবং নানা বিধি-নিবেধের সর্ভের ফিরিন্তি। Order-এর সঙ্গে রাহা-থবচ দিরে প্রেড ছেড়ে ছিলে। পুলিশ সাহেবের কাছে হাজির হওয়ার সমর নির্দেশ করা হয়েছে ট্রেণের টাইম 'দেখে,—এবং ছাড়া হরেছে সে টাইমের ঘণা ছই আগে। সভবত পিছনে চর থাকবে, পথে কারো সৈঙ্গে 'দেখা করি কি না, তা দেখবার জন্তো। প্রভাগ আলিপুর থেকে হেটেই শিরালদার বাবো ছির কলে বওনা দিলুম।

সারা পথ লক্ষ্য বাধলুম। ধর্মজনা ব্লীটে ভালভলার বোড় পার হরেও মনে হল না পিছনে কেউ আসছে। স্মৃতবাং Henghtonএর ক্যামেরার কারথানার চুকে পড়ে টালার অতুল লাসের সঙ্গে দেখা করে থবরটা দিয়ে বেরিরে পড়লুম। শরীর এভটা ভাল হয়েছিল বে, অতুল বাবু দেখে রীতিমতন বিশ্বিত হয়েছিলেন।

কৃষ্ণনগবে বখন পৌছলুম, তখন অনেক রাত। টেশন খেকে বৈনিরে বড় রাজা ধবে খেতে খেতে এক বালালী হাওলদারকে দেখে পুলিশ সাহেবের খোঁজ নিলুম। আমার প্রেরোজনের কথা ওলে তিনি বললেন, এত রাতে বাওরার প্রেরোজন নেই,—আজ কোডোয়ালী খানার ওবে থেকে কাল সকালে সাহেবের কাছে গেলেই হবে।

কোতোরালী থানার বড় দারোগা অভটা ইন্সিচেরার দেখিরে দিয়ে বলদেন, ওতেই রাউটা কাঠিরে দিন। ভাই হল—পথে কিছু থাবার থেরে নিরেছিলুম, রাডটা কেটে গেল-। সকালে পুলিশ সাহেবের কাছে গেলুম,—ভিনি I B officer-এর
ভাতে আমাকে সঁপে দিলেন—বিকালে আমাকে নিয়ে তিনি রওনা
হবেন শাস্তিপুরে।

বিকালে প্রকৃত বড় উঠলো,—সব চেরে বড় আখিনে ঝড়, বাতে পদ্মার অসংখ্য নৌকা ডুবেছিল,—একখানা লঞ্জে উড়িয়ে নিয়ে একটা চরের মাঝখানে কাৎ করে কেলেছিল। দেশে কলাগাছ প্রায় নিমুল হয়েছিল,—অসংখ্য বড় বড় গাছ পড়ে টেলিগ্রাফের তার ছিঁতে পথবাট বন্ধ হয়ে গিয়েছিল।

সেই ঝড়েব বাতে সেথানে গিবে হাজিব হলেন পঞ্চানন—তিনি বাছেন বাণাঘাটে। ঘটনাচক্রে তুজনে থানার একবাত সাবাবাত গল্প করে কাটানো হল। পরেব দিনটা গেল গাছ কেটে বাস্তা সাক করতে। পঞ্চান বড় লাইনে বাণাঘাট চলে গেলেন। আমাকে ছোট লাইনে বেতে হবে, স্কেবাং আব এক দিন থাকতে হল। আই-বিব লাক হোটেল থেকে ভাত খাইবে আনলো।

দিদি আমার সঙ্গে দেখা করার চেষ্টা করছিলেন গোড়া থেকেই এবং শেব পর্যন্ত কর্তারা দেখা করার অনুমতিও দিয়েছিলেন, কিছ সে একটা বদিকতা—দেখা করার তারিথ ছিল আমাকে জেল থেকে বার করে দেওরার পরের দিন। অর্থাৎ দিদি বধন একবার সেট্রাল জেল, আর একবার প্রেসিডেলি জেলের ফটকে মুরে পাতা পাছেন না, তথনই চলছে এ ইড, মাধার ওপর গাছের ডাল ভেঙ্গে পড়ছে। ভাগীলামাইকে সঙ্গে করে জল-ঝড়ে ভিজে নাস্তানাবৃদ হরে আমার দেখা না পেরে বাড়ী ফিরেছেন।

প্রথমে গোয়েশারা দিদির পিছনে লেগেছিল, আপুনি স্ব জানেন, স্বাই বলেছে, অমুক বলেছে, "চাবু বলেছে", (দিদির ভাষা) তথন বুম্লুম, আঁটকুড়ীর ব্যাটারা ধোঁকা দিছে ।

ষাই হোক, তারপর থেকে দিলি তাদের পেছনে লাগলেন, ওকে আমার হাতে ছেড়ে দাও, আমি কারো সাথে মিশতে দোব না, ও আমার কথার অবাধ্য হবে না, ইত্যাদি। সে কথার আমল না দিয়ে ওরা দিদির কাছে জেনে নিয়েছিল, শান্তিপুরে ছোট ছগ্নীপ্তির বাড়ীর কথা এবং তাঁর সঙ্গে বন্দোবস্ত করেছিল আমাকে সেধানে রাধার।

ভগ্নীপতি বোগানন্দ গোসামী (উচ্ছে গোঁসাই পাড়ার আন্তি গোঁসাই) সপরিবারে কলকাতায় চলে আসার বন্দোবস্ত করছিলেন, আমি বাওয়ার পর জাঁরা চলে এলেন, ওধু জাঁর বৃদ্ধা মা থেকে গেলেন।

মন্ত চৌহদির মধ্যে মন্ত প্রাচীন ভাঙ্গাচোরা বাড়ী, প্রচ্র কল-ফুলের গাছ, ভাঙ্গা পাঁচিল, ইটের গালা, এবং বড় বড় দাঁড়স ও গোধবো সাপের আড্ডা।

শান্তিপুরে ওধু ওঁরাই রাটা শ্রেণীর গোস্বামী, স্থার সব গোস্থামী বাবেক্স শ্রেণীর। ওঁদের পূর্বপুক্ষ প্রীচৈতক্তদেবের সঙ্গে পূরীতে গিয়েছিলেন, ওঁরা এথনো পূরীতে গেলে জগরাথের পাণারা এনে ভূমিষ্ঠ হয়ে প্রণাম করে, পায়ের ধূলো নেয়, প্রসাদ এবং ভোগ দিরে বায়। ভ্রীপতির সঙ্গে পরে আমি পূরী গিরে স্বচক্ষেদেখেছি।



জীবাণুনাশক নিমতেল থেকে তৈরী, স্থান্ধি মার্গো সোপ কোমলতম হকের পক্ষেও আদর্শ সাবান। মার্গো সোপের প্রচুর নরম ফেনা রোমকুপের গভীরে প্রবেশ ক'রে ত্বকের সবরকম মালিশু দূর করে। প্রস্তুতির প্রত্যেক ধাপেই উৎকর্ষের জন্ম বিশেষভাবে পরীক্ষিত এই সাবান ব্যবহারে আপনি সারাদিন অনেক বেণী পরিকার ও প্রফুল্ল থাকবেন।

পারবারের সকলের প**ক্ষেই** ভালো



आर्ग व्याप्त

দি ক্যালকাটা কেমিক্যাল কোম্পানি লিমিটেড, কলিকাতা-২১

ভাই ওঁদের নাম উড়ে গোঁসাই। এখনি নাম দেওরা শান্তিপুরেব একটা বেওয়াজ। বিজয়কুক গোঁখামীদের বলে, বোধ হয়, "চাকফেরা" গোঁসাই। আর এক গোঁসাইদের নাম "আতাবুনে।" এমনি আরো নাম আছে। এক রায়েদের নাম আছে 'পাঁটা বাম"!

বোগী প্রোফেদর গ্রামস্থলর গোস্বামী আমার ভগ্নীপতির জ্ঞাতি-ভাই, পাশেই বাড়ী। আমি বধন গেছি তথন তিনি হবিব্যি ধান, ইট মাধার দিরে কম্বলে শ্রন করেন, বাড়ীর বাইরের প্রকাশু বৈঠকধানার দর-দালানে থাকেন।

ইণ্ডিয়ান আটেব একটা ছবি ছিল দেখেছেন ? "গজে উদাস হাওরাব মত ওড়ে তোমাব উত্তরী, কর্ণে তোমাব কুফ্চ্ডার মন্ত্রী ?" তথন স্থামস্থলব গোবামীব চেহারা ছিল তেমনি ফিনফিনে ফাইন।

সকালে সহবের এক প্রান্তে থানার রোজ একবার হাজিরা দেওবার আনেশ পাসন করতুম, আর শ্লামস্থলর গোস্বামীর তুই ছোট ভাই গৌর আর নিজাই এবং আমার ভগ্লীপতির প্ডতুভো ভাই কটিকের সঙ্গে গোপনে exercise করতুম। আমার চেয়ে কিছু ছোট ছিল গৌর আর ফটিক, নিভাই আরো ছোট।

ওদেরই এজমালি মদনমোহনের মন্দিরের পুরোহিত রাধানাথের সঙ্গে নাটমন্দিরে দশ-পঁচিশের আছ্ডারও বোগ দিতুম। দিনটা কেটে বেডো। বাত্রে হত অশান্তি—বাড়ীর বাইরে বাওরার আদেশও ছিল না, সে কথাও ওঠে না—হরের বার হতেও ভয় করতো।

মললার গিরিনদার আত্মীর থগেন ও রাজেন ব্যানার্জি, গুই ভাই, অন্তরীণ হরেছিলেন ফুলিরার কাছে তাদের পরিত্যক্ত পৈত্রিক বাড়ীতে। তাঁরা থানার হাজিরা দিতেন সপ্তাহে একবার কিছইবার—মাঝে মাঝে দেখা হত, নিবেধ সজেও আলাপও হরেছিল। থগেন মুক্তির পর সেক্রেটারী ইকেনসনকে ধরে রেলে, বোধ হয় মুক্তেরে, Labour Inspector এবং চাকরী পেবেছিলেন। এখন ভিনি একজন বড় অফিনার, হবত বিটারার করেছেন।

শান্তিপুর মতিগঞ্জের কানাইদার ছোটভাই বলাইদা—সঞ্জীর ব্যানার্জি বোধ হয়—ছেলেবেলার বাড়ী থেকে পালিরে আমেরিকার গিরে ইলেক ট্রিকের কাজ লিথে ১৫ সালে দেশে ফিরছিলেন বিনা পাসপোর্টে, এবং ধরা পড়ে Ingress into India Act এর বন্দী হয়ে কিছুদিন জেলে থেকে বাড়ীতে অন্তরীণ হয়ে এসেছিলেন। চমৎকার গৌরবর্ণ জোরান, প্যাণ্টের ওপর বুট চড়িরে বাড়ী থেকে বেরিয়ে এক দৌড়ে থানায় হাজিরা দিরে জাবার এক দৌড়ে ফিরে জাসতেন—দেধবার জভে পথে লোক গাঁড়িয়ে যেতো। এখন তিনি সনাতন ছা-পোষা বাঙ্গাদী।

হিন্দু হোষ্টেলের বাম ভটাচার্য শান্তিপুবের^ইবিখ্যাত পণ্ডিত লালমোহন বিজ্ঞানিধির পুত্র। তাঁর দাদার সঙ্গে আলাপ করে নিয়েছিলুম—পরে বামবাবু হোম-ইকার্শ হরে আসার পর দেখা হল। গোপনে একদিন তাঁর বাড়ী নিমন্ত্রণ ধেলুম।

আলিপুর বোমার মামলার নিরাপদ রারের বাড়ী বাগ-আঁচড়া গ্রামে। তিনি আন্দামানে কয়েক বছর দণ্ডভোগ করে ফিরে এসে গেঞ্জি বা মোলার কল নিরে কাজ শুকু করেছিলেন। গোপনে একদিন তাঁর সঙ্গেও আলাপ হল।

দিদি ইতিমধ্যে একদিন ভাগীলামাইক্রে সঙ্গে নিয়ে কর্তাদের কাছ থেকে ত্কুম নিয়ে এসে উপস্থিত হলেন। সব কথা বলাও শোনা হল। দিদি দেখা করে বাওরার পর লেখালেখি শুরু করলুম বাড়ী বদলের জন্তে—নানা জন্মবিধার দোহাই দিরে।

শেব পর্যান্ত লক্ষ্মীতলাপাড়ার কাছে পাঁটা রারদের বাড়ীর পাশে
শিব ব্যানাজিদের বাড়ীর একাংশ ভাড়া করা হল। সেথানে চলে
গেলুম। সেথানেও বাড়ীর অক্ত অংশে শিববাবুর মা দাবোগা
ইন্সপেক্টরকে বলে করে থেকে গেলেন। শিববাবু তথন বিদেশে
চাকরী করেন

ক্রমে থগেন রাজেনও লেখালেথি করে শান্তিপুরে এলেন—
কাঁনের জন্তে ভাড়া করা হল রথতলার এক বড় দোতলা, বেখানে
আগে বোধ হয় কনসাটোর ক্লাব ছিল। সে বাড়ীর পিছন দিকে
একটু জারগা ছিল। ক্রমে সেখানে ভেল দিগদিগ খেলা শুরু হল
গোপনে। কুবীর ডাজ্ঞার ও হাবু ডাক্ডারের সঙ্গে জালাপ
হরেছিল। কুবীর ডাক্ডারের ছোটভাই রাজু, পোঠনাট্রারের ছেলে
(ছাত্র বে-জাইনী) এরা ছিল ভেলদিগদিগের দলে।

ভগ্নীপতির বাড়ীর পালে রন্ধনী মলিকের নাতি প্রভাস মলিক (ডাক নাম পিলু) তথন ফার্ড কালের ছাত্র। তাকে হারমোনিরামে আকৃল টিপে টিপে "শক্তিমন্তে দীক্ষিত মোরা" গানটা শিথিরে শেষ পর্বস্ত হিকুট করে ফেলেছিলুম। তারপরের হিকুট হল ভার বন্ধু সারদা ব্যানার্জি—ভামবান্ধারের (শান্তিপুরের) দিকে বাড়ী। সে তথন ম্যাটিক পাশ করেছে।

ক্রিমশঃ।

বাঙালী হিন্দু হউক, মুসলমান ছউক, পৃঠান হউক বাঙালী বাঙালী। বাঙালীর একটা বিশিষ্ট রূপ আছে, একটা বিশিষ্ট প্রকৃতি আছে, একটা বহুতের ধর্ম আছে। বাঙালীকে প্রকৃত বাঙালী হইতে হউবে। বিশ্ববিধাতার বে অনস্ত বিচিত্র সৃষ্টি, বাঙালী সেই সৃষ্টি-প্রোক্তের মধ্যে এক বিশিষ্ট সৃষ্টি। অনস্তরূপ লীলাধারের রূপ-বৈচিত্রো বাঙালী একটি বিশিষ্ট রূপ হইবা সৃষ্টিবাছে। আমার বাঙলা সেই রূপের মৃতি। আমার বাঙলা সেই বিশিষ্ট রূপের প্রাণ।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর]

[সি, এফ, অ্যাণ্ডজ লিখিত 'What I Owe to Christ' গ্রন্থের বঙ্গামুবাদ]

খুষ্টামুসরণ

প্রীপ্রাক্তসংগ লামে আছুরেল প্রাক্তন এক সংবের প্রতিষ্ঠা করেন। এই সংব প্রতিষ্ঠার পূর্বে তিনি লাহোরের বিশবের সঙ্গে ঘনিষ্ঠ আলোচনা করেছিলেন ও অভাক্ত অন্তরক বন্ধদের উপদেশ নিরেছিলেন।

পরম প্রভৃ বিশ্বতাতা বীত্রপৃষ্ট এই মর্ভভূমিতে বেভাবে জীবন জতিবাহিত করেছিলেন, ঠিক সেই জীবনকে নিতাস্ত বনিষ্ঠভাবে জমুদরণ করার বাত গ্রহণ করেছিলেন এই সংঘের ভাতৃরুল। পুরোপম জীবন বাপনের জানান্দে সর্বস্ব ভ্যাগের সংক্র ছিল ভাতৃগণের প্রধান সংক্র। নিজ্ব বলতে কিছুই কারো থাকবে না। বীত সব চেরে ভালোবাসতেন দরিক্রদের,—দরিক্রের সেবাই ছিল এই সংঘের প্রধান আহর্ষণ ও কর্তব্য। সাধু ফ্রাজিসের প্রথম ভক্তগণের মতো এই সংঘের সভ্যরাও দরিজের ভাতা হয়ে নিজেদের বল্য মনে করেছিলেন।

এই নৃতন প্রতিসংঘের আরম্ভে তারুরেল টোক্স আর আদার গুরেটার্শ এই হজন পূর্ণসদত হলেন। গুরেটার্শ ছিলেন কেম্বিজ মিশনের একজন তরুণ সভ্যা,—টোক্সের আদর্শে অর্প্রাণিত হরে তিনি বছদিন থেকে দারিন্দ্রোর ব্রত-বন্ধনে স্বেচ্ছার নিজেকে জড়িয়েছিলেন। সাধু স্বন্ধর সিং ও উইলির্ম ব্যাঞ্চ এই সংঘের সদত না হলেও একই বিক্ততার ও সেবার আদর্শে এই সংঘের সদে ঘনিষ্ঠ হরেছিলেন।

এই ভাতৃসংখে বোগ দেবার জন্তে আমার সমস্ত অন্তর ব্যাকৃল হয়ে উঠল। কিন্তু উপর্যুগরি ম্যালেরিরার ভূগে ভূগে আমার দেহের তথন এমনই ত্ববন্ধা বে, মনের হতালাকে মনে চেপে রাধা ছাড়া গত্যন্তর নেই। বীওপুঠের নামে বিধান ও আন্ধনিবেদনের এই কঠোর পথে বারা পা বাঞ্চালেন, এই তরুপ বীরদের প্রতি আমার মন্তবের সমস্ত ওভকামনা ধাবিত হোলো। বিশপ নিক্রবের বাস্তবিক উৎসাহ ও আনীর্বাদও তারা লাভ করলেন। এই ভাতৃসংখের প্রতিষ্ঠায় তিনি অত্যন্ত উৎসাহিত হ্রেছিলেন,—পাল্লাবের পুরীয় সমাজের মধ্যে এমন একটি সংখের উন্থোধন তার আমনের প্রের বুটনা বলে তিনি মনে ক্রেছিলেন। লাহোর সিলার এক বিশেব উপাসনা-অনুষ্ঠানী তিনি আত্বুলকে অকুঠ আনীর্বাদ ক্রনেন, পুরীয়ুসরবের বন্ধুর পথবাত্রার তালের হরে ঈশরের আনীর্বাদ প্রাধনা করলেন।

উত্তর-পাল্লাবের পাহাড়ীদের সারা অন্তর দিরে ভালোবাসতেন টোক্স, তাদেরই সেবার তিনি উৎসর্গ করলেন নিজেকে। কিন্তু করেক বৎসর বেতে না বেতেই তিনি উপস্থি করলেন বে তাঁকে লোকে ঠিক্মতো ব্রতে পারছে না, তাঁর সেবারতের ভুল অর্থ করেছে তারা। তারা ভারছে নিজের ব্যক্তিগত পার্মার্থিক উল্লেভিই তাঁর লক্ষ্য। এই ভূল-বোকার্থি ক্রমেই বড়ো হরে উঠতে লাগল, সেবারতী টোক্স নিত্য অনুভব করতে লাগলেন, দিনে দিনে নির্থক হরে উঠছে তাঁরণ্পারাস।

তাঁর সহছে সাধারণের বা ধারণা তা গোপন করত না তাঁর পাহাড়ী বন্ধুরা। তার। বলত,—ভূমি তো বিভহীন সংসারবছনহীন সাধু,—তোমার পক্ষে পুণাসঞ্চর আর শক্ত কী? ডোমার বুজির পথে বাধা কোথার? কিছ আমরা গরীব সংসারী লোক, প্রলোভন আর পাণ নিয়েই আমাদের ঘর। সংসার প্রতিপালনের জতে কাঁচ্বি জোগাড় করতেই আমাদের দিন বার, ধর্মের কথা ভাববার সময় কোথা সামাদের? তোমার মোক্ষ তো হাড়ের বুঠোর, কিছ জন্ম-জন্মান্তর ধরে এই পাণ পুথিবীর পাকে আমাদের যুরতে হবে।

দিনে দিনে টোক্স উপলবি করতে লাগলেন বে ভারতের গৃহসংসারহীন পথচারী সাধারণ সাধুদের এরা বে চোপে দেখে, সেই চোপে তাঁকেও এরা দেখছে। এই সব সাধুবা প্রামে প্রামে জিলা করে বেড়ায়,—নিভান্ত কর্তব্যবিষ্থ আলতে। বদি বা কেউ ধান তপতা করে, তা ভুধু নিজেরই আজার উন্নতির উদ্দেত। কিছ বার্থপর আজ্বলোধন ভার লক্ষ্য নয়, বৃহৎ সংসারের সেবার মানসেই তিনি সংসার-নিগড়ে বাঁধা পড়েননি। আলামাজিক তিনি, কিছ সমাজ কল্যাণেই তাঁর খুটোপম আজ্বান,—এ কথা তিনি ব্রাক্রেল কেমন করে? ব্যক্তিগত মুক্তি সাধনের জন্ম তাঁর কিছুমাত্র ব্যক্ত্রেল নেই,—কিছ তাঁর নিংস্থল সন্ন্যাসী-ভাবন দেখে বিপরীত ধারণাই করছে লোকে।

ষ্টোক্সের জীবনে এ এক নিদারণ সমতা। দিন বাত্তি এই
সমতা নিরে চিন্তা করতে লাগলেন, বীতর কাছে প্রার্থনা করতে
লাগলেন এই সমতার সমাধান। এই প্রথমের একটিমাত্র উন্তরই
তাঁর মনে প্রতিভাত হোলো। উত্তর-ভারতের পার্বত্য অধিবাসীদের
সেবার জীবনোৎসর্গের সংকল তাঁর,—তিদি ছিল্ল ব্রুলেন এই
অধিবাসীদের বিশ্বাস অর্জন করতে হলে এদেরই মতো তাঁকে সাংসাবিক
জীবনের দারিত্ব প্রহণ করতে হবে। এই পাহাড়ীদের মধ্যে তিনি

ষ্টোক্স যদি এই পথ, গ্রহণ করেন তাহলে গৃষ্টামুস্বণ জাতৃসংঘ ভেঙে বাবে—এই কথা তেবে আঘার মন থুব থারাপ হোসো। কিছ শেব পর্বস্ত তাঁর মনে সায় দিতে গোলো আমাকে। বিশপ কিছ কিছুতেই ষ্টোক্সের যুক্তি মেনে নিতে পারলেন না এবং ভীত্র আপত্তি জানালেন। ষ্টোক্সের সিদ্ধান্তের প্রতি সহামুভূতি সম্পন্ন হয়ে প্রথম থেকেই তাঁকে সমর্থন কর্লেন স্থীল কন্তা।

শেষ পর্যান্ত ষ্টোক্স শৈলপালিক। এক বাজপুতানী মহিলাকে বিবাহ করেন। এই মহিলা ভারতীয় খুটান ছিলেন। বছ বছর পূর্বে চা-বাগানের কাজে একজন চীনা খুটান কোটগড়ে আনেন ও এই বাজপুত পরিবারে বিবাহ করেন। ষ্টোক্সের জী এই চীনা খুটানের পৌত্রী। ষ্টোক্সের সন্তান-সন্ততির বমনীতে তিনটি বিভিন্ন জাতির রক্তধারার সময়র।

ষ্টোকসের এই বিবাহের শিহনে আবো একটি প্রেরণা ছিল। ভিনি ছিলেন প্রকৃত খুটান। নিজেদের খুটান বলে পরিচয় দিয়ে ইউবোপীবানরা ভারতীরদের প্রতি বর্ণবিধেবমূলক বে তুর্গবহার কয়ত, ভা দেখে দেখে পীড়িত হয়েছিল প্লোক্সের চিত্ত। স্বাঞ্চাত্যবোধের **অঃমিকা ও বর্ণ**বিষেবের কালিমা ইউরোপীয়ান ভারত প্রবাসীদের এমনই এক অভুত মানসিক ভবে পৌছে দিয়েছিল বে এমন কি मुक्तार भरत् छार्डोत । अलार्डीत धृहीरनत मतलहर ममारि পালাপাশি বাথা 'নিষেধ ছিল বছক্ষেত্রে। শাদা-কালোর এই বিভেদ স্বচেরে প্রকট ছিল পাঞ্চাবে, এই বিভেদ মৃত্যুরজ্ব ফাঁদ পরিবেছিল গুটান স্মাজের কঠে। বলিষ্ঠতম উপায়ে টোক্স এই ৰুজ্বুৰ বন্ধনকে ভিন্ন কৰেছিলেন, মানবান্থাৰ এই অবমাননাৰ বিৰুদ্ধে উলাবতম বিজ্ঞাহ তিনি ঘোষণা করেছিলেন ভারতীয় নাবীকে ভীবনদল্পিনী করে, ভারতীয় 'সংসারকে আপন সংগার বলে প্রহণ করে। তিনি মনে ভেবেছিলেন, এ যদি তিনি না করেন তাহলে প্রভু বীওর প্রতি তাঁর কর্ত্যা তিনি সম্পূর্ণ করতে পারবেন না। ৰীওপুষ্টেৰ ক্ষমান্তৰৰ দৃষ্টিৰ সন্মুখে কে বা ইছদী, কে বা গ্ৰীক, কে বা আর্থ, কে বা বর্ণর, কেই যা স্বাধীন আর কে-ই বা দাস। তাঁর সমদৃষ্টিতে সকলেই স্থান, সকলেবই অন্তবে তাঁব অবিচান।

ভারতীয় নারীকে সংধর্মণীরূপে গ্রহণ করার শিছনে প্রোক্সের আতি মহান উচ্চাভিদার ছিল। পুষ্টান বিবাহের অন্তর্নিহিন্ত গুরুত্ব নিয়ে আমি গভীরভাবে চিন্তা করিনি, কিন্তু এ কথা স্থির উপলব্ধি করেছিলাম যে তাঁর এই বিবাহ নিতান্ত সহল বিবাহ নর, সমাজকল্যাপের এক মহান প্রেরণায় এ তাঁর জীবনব্যাপী আত্মপরীক্ষার বাত। তাই এই ব্রত পালনের পথে তাঁকে আমার আন্তরিক ভ্রকামনা আনাতে আমি দ্বিগা করিনি! ইতিমধ্যে আমি দ্বির ব্রেছিলাম যে, এ যুগের মানব-সংস্কৃতির কুংসিততম শত্রু বর্ণবিভেন, বীতর পবিত্র কুস্চিত্রের অলে পাপের কালোছারা এই বর্ণবিভেন।

ষ্টোকসের বিবাহের ফলে গৃষ্টাত্মসরণ সংঘ ভেঙে গেল। এই সংঘকে আর পুনকজনীবিত করা সম্ভব হরনি। ষ্টোক্সের সংসার প্রবেশ সংঘের প্রতি মর্যান্তিক আখাত, এই আখাত আপন বুকে অভ্তব করলেন আমানের বিশাপ। অক্তাক্ত আনেকেও গভীর ছঃধ শেলেন এই ঘটনায়। কিছু আজু বধন দুরল্পী দিয়ে দেখি তথন মনে হর মামুবের আশা-নিরাশার মধ্য দিয়ে ঈশর বুবি অতি বিচিত্রভাবে আপন উদ্দেশ্য সাধন করে চলেছেন। ভ্রাতৃসংখের নিরম-শৃংখলার দৃঢ় বন্ধন ঈশর বেন হঠাৎ খলিরে দিলেন। এই আশুর্ন মুক্তির ফলেই সুন্দর সিং-এর মতো সাধু খুপ্তের প্রতি আশুনিবেদিত জাবনকে সারা বিশের সেবার বিলিরে দিতে পেরেছিলেন। কী পাশ্চাতা কী প্রতিটা, বিশের সমস্ত খুষ্টীর সমাজে পরিচিত হরেছিলেন সাধু সুন্দর সিং। খুষ্টপ্রেমের অকুঠ বিতরণের বিনিমরে দেশে-বিদেশে লক্ষ্ণ সন্ধায়বের প্রেম তিনি জর্জন করেছিলেন। সংঘের বন্ধনে বদি তিনি বাধা পড়তেন, তা হলে এ হোতো না। কোনো সংখ বা সম্প্রদারের গণ্ডীর মধ্যে আবন্ধ থাকবার মামুব ছিলেন না স্ক্রম সিং। তিনি ছিলেন একলা পথিক, এক বীশুর পথ-প্রদর্শনকেই তিনি স্তা বলে গ্রহণ করেছিলেন। সেই পথে তিনি ছিলেন অকুলে করেছিলেন। সেই পথে তিনি ছিলেন অকুলে করেছিলেন। সেই পথে তিনি

সংঘের অপর সদত্য ত্রাদার ওরেষ্টার্শের মুক্তিও মঙ্গলায়ক হরেছিল। বিশিষ্ট কর্মপথে তিনি অগ্রসর হতে পেরেছিলেন, সংঘের মধ্যে থাকলে তা সন্তব হোতো না। বে কাজ তিনি হাছা আর কেউ পারত না, সেই কাজের ভার ঈশ্বর তাঁর উপর হস্ত করেছিলেন, ঈর্বরেই মহা উদ্দেশ্ত সাধন হরেছিল তাঁর জীবনে। ত্রাদার ওরেষ্টার্শ এখন দক্ষিণ-ভারতে টিনিভেলির বিশপ, বিরাট এক ভারতীর খুষ্টাণ সমাজের তিনি দেবক। এই সমাজের অবিকাংশ লোকই অতি দ্বিত্য। বাদের মঙ্গলাকাংখার নিত্য নিরোজিত তাঁর জীবন, তাদের অকুঠ প্রভারীতি তিনি লাভ করেছেন।

করেকটি কুদ্র কথার আর্যেল টোক্স সাধু স্বন্দর সিং ও অন্তান্ত বকুগণের জীবন-কাহিনী বর্ণনার মাধ্যমে আমার সেদিনের অন্তর-জীবনের কাহিনীই আমি উদ্ঘাটিত করতে চেট্টা করছি। ভারতে আমার মর্ম-জভিগানের এঁরাই ছিলেন নেতা, দৈহিক কারণে অবিলয়ে এঁদের তীর্থবাত্রায় আমি বোগদান করতে না পারনেও এঁদের জীবন ও এঁদের পদ্বার আমি অনুপ্রাণিত হয়েছি। এঁদেরই কল্যাণে জীবস্ত বীশুর ধ্যানরূপ আমি ভারতভূমিতে উপলব্ধি করেছি, এঁদেরই আন্তর্শ আমি আনন্দিত আবেগে গেব্রন্তি দেবা ও কল্যাণের স্ত্যা পথের সন্ধান আর্মি পেরেছি।

সংসারীর জীবনের চেরে সংসারজ্যাগী ব্রক্ষচারীর জীবনকে ভারতীরেরা বড়ো বলে মনে করে। এই মনে করাটা স্বাভাবিক নয়। ভারতবাসীর এই ধারণার পরিচর ষ্টোক্স জনেক জাঙ্গেই পেয়েছিলেন, জামি অতো শীল্প বুঝতে পারিনি। বিবাহিত জীবনের চেয়ে অবিবাহিত জীবন মহত্তর,—এই ধারণা জামি মিখ্যা এবং হীন বলে মনে করি। স্বামিন্তীর স্বস্থ স্বাভাবিক দাস্পত্য জীবনকে হের করলে থুপ্তের বাণীকেই অবজ্ঞা করা হয়। মানবপুত্রের জানিম স্থান্তির মৃলে নরনারীর দাস্পত্য সম্পর্ক, এই সম্পর্ক পরিত্র। বিবাহ বন্ধন এক অভি পরিত্র ধ্রবন্ধন, সংসারজীবন এতো পরিত্র রে বীও বলেছেন রে পৃথিবীর দিওরা স্বর্গোলানের কুস্কমাকোরক।

আমি নিজে বিবাহ কৰিনি। আমাব্ৰ অবিবাহিত জীবনবাত্ৰা নিষ্কেও লোকের মনে ভূল ধারণার স্থাই হতে পারে। বিবাহ করব কি করব না, কোনু পথে প্রভূর নির্দেশ আমি ভালো ভাবে পালন করতে পারব ? তথন আমার মনে হরেছিল বে এ বিবরে আমাকেও আন্ত মতিস্থির করতে হবে। তার পর অবশু বছ বংসর কেটেছে। তামুরেল টোক্স বে ভূল ধারণার সম্থীন হরেছিলেন ভারতভূমিতে আমার স্থীর্থ নিত্য-পর্বটনার উপরের আশীর্বাদে এমনি ভাস্ত ধারণার সম্থীন আমাকে কোথাও কথনো হতে হয়নি।

এ সব ঘটনা কৃতি বছর আগেকার কথা। পৃষ্টান-জীবনের বছ বিচিত্র অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে এই কৃতি বৎসর আমার ফেটেছে। সিমলার পার্বত্য-অঞ্চলে স্থায়ুরেল ষ্টোক্স, স্থানর সিং ও স্থানীল ক্ষেত্রর সঙ্গে অভিবাহিত দিনগুলি কৃতি বৎসরের ব্যবধানের প্রাপ্ত থেকে প্রষ্টতার রূপে আমার চোবে ফুটে উঠেছে। স্পষ্টতার ভাবে আমি উপলব্ধি করছি যীওর পারমাধিক রাজ্যের এক অপ্র্বিধান, দে বিধানের কণা তিনি অভি সহজ্ঞ স্থান্ত উপমায় ভাক্তের প্রাপে গেঁথে দিয়েছেন। প্রভ্ বলেছেন,—ব্বের শুক্ শীর্ষ মাটিকে বাবে পড়ে, তাই শশু জন্মার। সে মুকুল বাবে না, সে মুকুল একাকী। বে মুকুল বারে, সেই আনে ফলের সমারোহ।

ষ্টোক্দ এবং তাঁর জাতৃবৃন্দ গুটামুদ্যবেশের যে প্রাথমিক পরীক্ষার বীক্ষ বপন করেছিলেন, তারই ফলে গ্রামলা ভারতজ্মিতে সঞ্জার্ত হয়েছিল মহার্য ফুদল। ষ্টোক্দের বিবাহের পর প্রটামুদ্যরণ জাতৃদংখের স্বাভাবিক মৃত্যু হয়েছিল, কিছু দে মৃত্যুতে ছিল প্রজীবনের আশীর্বাদ। এই জাতৃসংখের আদর্শ-বীক্ত থেকে ভারতের বিভিন্ন ক্ষানে জন্ম নিষেছে বিভিন্ন ক্ষপের নানা প্রেনাগ্রার অবস্থিত প্রতীক্ষাক্রের থিকপত্রে ও যুক্তপ্রদেশের আদর্শনার অবস্থিত প্রতীক্ষাক্রিল এই নবজীবনের নিদর্শন। এই মানব সমাক্ষে বারা আলাহত, বারা হুর্গত্তম তাদের সেবার জীবনোৎসর্গের আহ্বান নিজ্যকাল গ্রুত্থ প্রত্তির কঠে ধ্বনিত হায় চল্লেছে, সেই আহ্বানে সাড়া দেবার মজো ভক্তসংখ্যাও বিবল নর। তার প্রমাণ পূণার প্রতীক্ষাক্রান্ত অম্বুজ্ব আছে।

মানবপুত্রের এই আহ্বান কতো ভাবে আমাদের কানে বাজে, কতো রূপে ভিনি আবিভূতি হন ভজের চিন্তমন্দিরে! সেই আহ্বানের প্রতীক্ষার উৎকর্ণ ভজের ইন্দ্রির, সেই আবির্ভাবের আহ্বানে বিনিক্ষ ভজের হাদর। বাটকা-বিক্ষৃত্ব রন্ধনীর নিবিড় অন্ধর্কারে চকিত বিদ্যাৎ-বিকাশের মতো তাঁর প্রকাশ। তথ্য ভিপ্রাংবে কান্ত পরিব্রজ্ঞার মধ্যে তাঁর উপস্থিতি, হ্রতো বা শাস্ত্র প্রতাবের অক্লিমার হ্যতো বা স্নান গোধুলির ব্সরতার তার স্পর্ণ। আশামর্থবিত নিত্য-প্রতীক্ষিত অন্তর নিরে দৃঢ় মেধলার বসন সম্বত্ত করে প্রির-আহ্বানে কান পেতে থাকে অভিসারিকা। পরম প্রভূব কর্ম-আহ্বানে তেমনি স্ববন্ধন মুক্ত নিত্য প্রস্তুত প্রতীক্ষা আমাদের, আম্বা এই থুইপথের পথিক দল।

অ্যালবার্ট ক্রুইট্জার

নশের-সমস্তার ভার তথনো আমার মাথা থেকে নামে নি। এক দিকে আমি 'সাধনা করছি কী ভাবে আমার জীবন-বাত্রাকে থুষ্টের পদ-চিচ্ছের মধ্যে বিজীন করতে পারি, অন্ত দিকে তাঁর ইক্ষার আত্মবিক নিদেশিকে ব্যবহারিক জীবনের জেত্রে ইট মুখে মাল্ল করতে পারছি না। ঠিক অমনি সংকটকণে ঈখ্যের এক পংম আনীর্বাদ আমি লাভ করলাম। মহান পৃষ্টান জ্যালবাট স্কুইট্ডাবের আজিক সম্পর্ক আমি লাভ করলাম। এই সম্পর্ক আমার ভাগ্যে এক অতি মহার্থ সম্পদ।

দিলী গৃষ্টীয় সমাজের আওতার আমি তথন পদে পদে নানা অটিল সমস্তা, নানা ছর্বোগ্য প্রশ্ন, নানা নিক্সপায়-বিহ্বলতা। বন্ধ খবে বটিকার আখাতে বেমন করে কন্ধ খবের অর্গণ ভাঙে, ঘুচে বার ধূলি-জন্মালের মালিক,— ঠিক তেমনি করে সমুদ্র পার থেকে জ্যালবাট স্কুইটজাবের বিজয়ী স্পর্ণের আখাত আবেষ্টনীর কারাগার থেকে মুক্তি দিল আমার মনকে। প্রথমে ভারে রচনাবলীর মাধ্যমে জ্যালবাট স্কুইটজাবের সঙ্গে আমি পরিচিত হই, এবং পরে তাঁর সঙ্গে ব্যক্তিগত ভাবে নিবিত্ব বন্ধুখের ছুর্গভ আনক্ষ আমি লাভ করি।

'এতিহাসিক বীণ্ডর সন্ধানে' নামক তাঁর বিখ্যাত গ্রন্থটি তথক সবে প্রকাশিত হরেছে। এমনি হয় বে একটি সদ্প্রন্থ পাঠ করে জীবনের সম্যক দৃষ্টিভঙ্গী বদলে বার। আমারও ক্ষেত্রে এইরূপই হয়েছিল। এই পৃস্তকের শেব পরিচ্ছেদটি পড়ে আমি সবচেরে অভিভূত হয়েছিলাম। আমার মনে হয়েছিল স্থুইটজার বেন তাঁর রচনার মাধ্যমে আমার নিভৃত আতাকে স্পর্শ করেছেন।

গসপেলের ঐতিহাসিক অংশাবলী আমি অভান্ত নিবিষ্ট আঞহের



ডি, এন, ৰস্থর

হোসিয়ারি ফ্যাক্টরী কলিকাতা—৭

–রিটেন ডিপো–

হোসিদ্বারি হাউস

৫৫।১, কলেজ খ্রীট, কলিকাভা—১২

ফোন: ৩৪-২৯৯৫

সঙ্গে অধ্যয়ন করেছিলাম,—আমার মানসিক অন্তর্গন্থের অন্তেই বিলেষ করে পৃষ্টভীবনীর এই দিকটি নিয়ে আমাকে বেশি করে পৃড়াশুনা করতে হয়েছিল। ভারতীয় ধর্মগ্রন্থ সমূহও আমি সঙ্গে সঙ্গে জুলনামূলক ভাবে পাঠ করছিলাম। কৃষ্ণবৃদ্ধ প্রভৃতি হিন্দু অবভাবের সম্বন্ধে পৌরাণিক করুকাহিনীর অন্ত নেই। আমার কেবলই মনে হোতো আমার ধর্মগ্রন্থেও বীত্গৃষ্টের জীবনীর মধ্যেও করকাহিনী মিশে নেই কি ?

ভা ধদি হয়, তাহলে খুইজীবনীর কতোটা সত্য জার কতোটা কল্পনা, কভোটা পুরাণ জার কতোটা ইতিহাস ? বীওখুই কি নিছক পৌরাণিক চরিত্র না ঐতিহাসিক জননায়ক ? জন্মজিৎস্থ খুইজজ্বে কাছে এ সমস্তায় সমাধান কোধায় ?

এ ওধু বৃদ্ধিবাদী সম্প্রান্য, এ আত্মার সংশ্র । বক্তে আমার ম্যালেরিয়ার বিব, ক্লপ্প ছুর্বস দেহ, স্তিমিত শক্তি ! মানসিক ছুর্বলভার পক্ষে প্রশস্ত অবস্থা । সেই সময়ে বারে বারে সংশ্রের প্রেভছোয়া মনকে আক্রমণ করে, আছের করে সংস্থ অন্তর্গৃত্তিকে । কেম্ব্রিজে বধন ছিলাম তখনো এই প্রশ্ন আমার মনে কেগেছিল । কিন্তু কেম্ব্রিজে ধাকতে অধ্যয়নের যে ব্যাপক প্রযোগ ছিল এখানে তা নেই । এখানে গবেষণার উপকরণ নেই,—বা বই হাতের কাছে আসে তাই পড়ি, তার বেশি কিছু পড়ার প্রযোগ মেলে না । সম্প্রার সমাধান খুঁজে পাই না ।

পুইজীবনীর ঐতিহাসিকতা বা পৌরাণিকতা নিবে এই বে প্রেম্ব,—এমনি আরো নানা প্রশ্ন নানা অন্থবিধা আসে। আমার অন্ত কাজের মাঝে মাঝে তারা ভিড় করে, বিজ্ঞান্তি আনে সদা সর্বদা। উত্তরহীন এই সব প্রশ্ন মনের মধ্যে গোপন ক্ষতের মতো জমা হয়, বহির্বান্তবের সঙ্গে আমার আত্মার বোগস্ত্রকে শিবিল করে দেয়। জ্ঞানের বেধানে অভাব, বিশ্বাসেরও সেধানে দৈছ আরু নৈতিক সম্প্রা সেধানে প্রবলতর।

সাধু জনের স্থসমাচারে একটি অক্সছেদ আছে, বেধানে তাঁর জন্ধবৃদ্ধকে ধৃষ্ট, বলছেন, অল্লকাল তোমরা আমাকে দেখতে পাবে, আবার অল্লকাল তোমরা আমাকে দেখতে পাবে না।

আমার পৃষ্ট-নিবেদিত সমগ্র জীবনে প্রভুৱ এই বাণী এক আদুর্ব সভ্যরূপে প্রকাশ পেরেছে। কোনো কোনো সমরে তাঁর স্পার্শ আমার অন্তরের এতো নিকটে আমি অন্তত্তব করেছি বে তাঁর উপস্থিতির কোনো বাহিক সাম্যের প্রেরোজন হয়নি,—উপহাস করতে পেরেছি সমন্ত সংশয়কে। তাঁর প্রথম ভক্তজ্বনের মতোই আমি তথন বলতে পেরেছি, প্রভু, স্পষ্ট আপনার বাক্য, প্রহেলিকানীন প্রবাদবিহীন। তাতেই আমি বিখাস করেছি বে ঈশর-প্রেরিত আপনি।

আবার কোনো কোনো সমরে অককার বেন নেযে এসেছে, স্বচ্ছ দৃষ্টির সামনে কুটে উঠেছে মেখাবরণের বাধা, সংশ্যের তরক বিক্লোভের মাঝবানে আমার বিপর আত্মা বিধাস ও আশার যুগল নোকবের অন্ত ক্লিষ্ট প্রার্থনা করেছে।

দিল্লীতে অবস্থান কালে স্থানীল কল আমার প্রম সহার ছিলেন, তাঁর স্নেহ প্রীতি আমার মহা অবলখন ছিল, কিন্তু এইরপ বিপর বিবাদের বুরুর্তে স্বাসরি ভাবে তিনিও আমাকে কোনোরপ সাহাব্য করতে পারতেন না। তাঁরও নিজের মনে নান। প্রকার সংশহ ছিল। পৃষ্টের প্রতি প্রদীপ্ত প্রেম সত্ত্বও তাঁর বৃদ্ধিবাদী মন আমারই মতো দোলায়িত হোতো নানা প্রশ্নে। অপর পক্ষেবনই সাধু স্থানর সিং-এর সংস্পার্শে আমি আসভাম তথনই তাঁর শিশুস্কলভ আছা ও বলিঠ সাহস আমার মনকে নির্মল আনক্ষরসে পরিপ্রত করত। স্থানর সিং ছিলেন গ্যালাহাডের মতো প্রান্তাদর প্রান নাইট, ঈ্যরের জ্যোভির্মর রূপ সর্বদা আগ্রক থাকত তাঁর অসান দৃষ্টিতে।

নানা সংশ্যে আমার মন বধন বিচসিত তথন ঈশরের এক অম্ল্য উপহারের মতো অ্যালবার্ট স্থুইটজারের এই গ্রন্থটি আমার হাতে এল। গৃষ্ট-জীবনীর এতিহাসিক ভিত্তি সংক্রান্ত নিউ টেন্টামেন্টের সমস্ত প্রশ্ন নিয়ে তিনি এই গ্রন্থে গভীর গবেবণা করেছেন, এ পর্যন্ত প্রকাশিত পৃষ্ট-জীবনীর সমস্ত খ্যাত অখ্যাত গ্রন্থাকী নিয়ে আলোচনা করেছেন, বীতর প্রতি প্রতি যুগের বিশাসকে তিনি বিচার করে দেখেছেন। শেব পর্যন্ত তিনি বোবণা করেছেন বে মানব সমাজের প্রতি বীতর দাবী অকুঠ আম্গত্যের দাবী।

শামার শব্যবস্থিত চিত্তের প্রতি এই খোষণার মৃদ্য সেদিন ছিল শপরিনীম। তাঁর এই প্রস্থের শেষ পরিছেদ শামাকে সবচেরে অভিত্ত করেছিল। পুষ্ট বিবরণ নিরে পাণ্ডিতাপূর্ণ নানা যুক্তিও নানা ব্যাখ্যার শবসানে তিনি সমস্ত পাণ্ডিতা পরিহার করে একনিষ্ঠ সাধুর শস্তবের ভাষার এই পরিছেদ রচনা করেছিলেন।

আাসবাট সুইটজার বলেছেন, খুষ্ট জীবনের সমস্ত জলোকিক ঘটনাবলীকে বাদ দিরে নিভান্ত ইল্রিয়গ্রাহ্ম বান্তব ইভিহাসের কাঠামোর উপর পাঁচ করালে সে জীবনের মহন্তকে উপলব্ধি করা বাবে না। সেই ঐতিহাসিক চরিত্র-চিত্র হবে বিবর্ণ নিভাগ। উনবিংল শতাকীর বৃক্তিবাদীরা বে বান্তবভার থাঁচা ভৈরী করেছেন ভার মধ্যে খুষ্টচরিত্রকে বল্পী করা অসম্ভব। কেন না, খুষ্ট কোনো নিদিষ্ট বুণ্ডের কোনো নিদিষ্ট যুক্তির নিগড়ে আবদ্ধ নন। সর্বকালের সর্বধারণার কেন্দ্রে ভিনি বিহাজমান। ভিনি নীভিশিক্ষক নন, তিনি মানব বিবেকের সাভ্যতিক অফুশাসক নন। তিনি মানবন্ধাতির সর্বযুগের একছত্র সম্রাট, মানবান্ধার সর্বসম্পত্তি আমুগত্য ভার দাবী। বেধানে ভার চৈতত্ত স্পর্শ, সেধানেই ভার অনির্বচনীর লীলা। এই লীলা ভার আগমনীর সংকেত। খুষ্ট বে যুগে ধ্বাধামে অবভার্তি হয়েছিলন সে এক জলোকিক যুগ! সে যুগের শ্রেষ্ঠ অলেকিক ঘটনা খুষ্টের আবিভাব।

স্থুইটভাব প্রান্ন করেছেন, থৃষ্ঠকে আমাদের জীবনের প্থপ্রদর্শক রূপে গ্রহণ করতে সভাই কি আমরা চাই ? তাঁর নরনজ্যোভিকে প্রবভারা করে আমরা সর্বভাগী হয়ে তথু তাঁরই অমুগামী হতে কি চাই তাঁর প্রথম শিব্যবুক্ষের মতো ? তর্করাদী বলে, থুষ্টের আভ পূনরাবিভাবের আশার তাঁর প্রথম প্রথম মনোনীত প্রেরিজ্ঞগণ ভূল করেছিলেন। কিছু নিভান্ত বাস্তবের গভীরে বে সভ্য বিরাজমান ইতিহাসের নিক্ষে উজ্জ্ঞল রেখার ভা কি প্রমাণিত হরনি ? তাঁর আবিভাবের পর অভিবাহিত হয়েছে শভানী থেকে শভানী পার; ইতিহাসের প্রতি যুগে কোনু বিচিন্ন চুম্বক আবর্ষণে তাঁর প্রতি

ধাবিত হরেছে নরনারীর আঞা, আনন্দিত আজ্বসমর্পণের আকুস আবেগে ? সর্বভূতে সর্বকালের মানবস্তম্বে অবিনশ্ব তাঁর স্পর্ণ, এই কালজরী বহুত্যের মূল কোথার ? একটিমাত্র সহজ স্বীকৃতিতে এই বহুত্যের উদ্ধাটন। স্বীকার করি তিনি নিত্য আবিভূতি, চির-উদ্ভাসিত, প্রমুস্তা তিনি।

মানব-ইতিহাসের এই মহান পুরুষ বীত গৃষ্ট, বান্তবভার পথে পথে তাঁর সন্ধানের সমান্তিতে আালবার্ট সুইটজার তাঁব আশ্চর্য প্রস্তুর বলেছেন:

প্রতি মুগুর্তে আমাদের সামনে বীওগুঠ আবিভূতি হন, নামচারা তিনি পরিচয়হারা রূপে, বেঘন একদা 34 প্রান্তে পুনরাবিভূতি হয়েছিলেন। সেদিন ওরা তাঁকে क्षेथ्रम চিনতে পারেনি। আমরাও কি চিনতে পারি ? সেদিনের মতো আঞ্জও তিনি আমাদের আহবান করেন, বলেন, অমুসরণ করো আমাকে। এ যগের মান্তবের যা কর্তব্য, সে কর্তব্যের আহবান ভিনি ধ্বনিত করেন আমাদের হাদরে। এই নির্দেশ রাঞ্চ আজ্ঞা,—এ আজ্ঞার প্রতিপালন মানবাত্মার ঐতিহাসিক অজীকার। তাঁর আজ্ঞা বারা পালন করে, তারা পশুভই হোক আর মুর্থই হোক, তাঁর নিৰ্দেশিত পথে শত যন্ত্ৰণা শত বন্ধুৰ বঞ্চনাৰ মধ্যেও তাৰা তাঁৰ নিভা-উড়াসিত মৃতির দর্শন লাভে বস্তু হয়। তাঁর অবর্ণনীয় শীলারপকে ভারা চিনতে পাবে।

সুইট্রার সেই চিরস্তন প্রত্মৃথিগৃঠির সামনে আমাকে আবার এনে উপস্থিত করলেন, আমার জীবনের সংশর-কালিয়া মুক্ত প্রতিটি ভাষর মুহুর্কে বে প্রভূকে আমি চিনেছি, বে প্রভূকে আমি ভালোবেসেছি। আমার মনে হোলো আমার নিভূত অন্তরের গোপন কথাটি বেন পাঠ করেছেন সুইট্রার, সেই কথাটিই উজ্জল অকরে লিপিবছ বারে ভূলে ধরেছেন আমার গুসর দৃষ্টির সামনে।

সুইট্জাবের এই গ্রন্থ অপর একটি দিক থেকেও আমার মনকে অহরণ নাড়া দিরেছিল। বীওর ঐতিহাদিক চরিত্র-চিত্র অংকনমানদে তিনি খুঠার-স্বাক্তর প্রথম শতাকীতে রিরে পৌছেছিলেন। দে ব্গেব খুঠভক্তগণের অলৌকিকের প্রতি আকর্ষণ ও লীলাবিভূতির প্রতি বিশ্বাসকে তিনি অল কথার এড়িরে বেতে চান নি। বীওর আও প্ররাবির্ভাবের কথা ধর্মগ্রন্থের বেখানে বেখানে লেখা আছে, সেই সব লেখান্ডলি জিনি পূর্বাক্ষাবে আলোচনা করেছেন। খুটের প্রথম শিব্যাপ আলৌকিককে বে ভাবে উপলভি করেছেনে, ইইট্লাব প্রম বত্রে সেই অলৌকিক পটভূমিকা বচনা করেছেন তার গ্রন্থে।

স্থাই জাবের এই বচনা পড়তে পড়তে আমিও আমার প্রথম জাবনে কিবে গোলাম, ফিবে গোলাম আমার পিতা-মাতার কাছে, জাদের ঘনিষ্ঠ বিখাদের আবেষ্টনীর মধ্যে। আমার পিতার ধর্ম-বিখাদের কথা আমাকে গভীর ভাবে চিপ্তা করতে হোলো, ভার সঙ্গে আমার ধর্ম-বিখাদের বোগস্তুর আমি রচনা কর্মলাম।

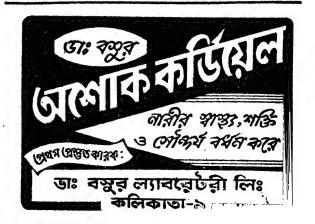
আমার পিতামাতার বিধাসের সথে আক্ষরিক ভাবে একান্ত হওরা আমার পক্ষে সন্তব ছিল না। প্রতি পত্রে আমার পিতৃদেব আমাকে নিথতেন বীশুর প্রত্যক ভবিবাৎবাণী আচিরে সভা হতে চলেছে, মানবাদবার্তির প্রতিকাল করেল শিক্ষা ব্যাহানিকাল নেই। সেই আবির্ভাবের পথ চেরে তিনি বসে আছেন। শিশুর মতো সারল্য নিরে আমার পিতা বিধাস করতেন বে, ঈশুর বছি ইছা করেন তাহলে এক লহমার প্রকৃতির সব নির্মকে তিনি বছলে দিতে পারেন।

আমার পিতার ছিল শিশুজনোচিত আছা। সেরপ আছার অধিকারী না হরেও আমি মনে প্রাণে বিখাস করতাম বে, এই বাছব সংসাবের কেন্দ্রে এক আলোকিক আনন্দ জগৎ বর্তমান। কেন না, সেই আনন্দের আখাদ আমি পেছেছি। এই মনুষ্য-ভাগ্যের মার্বধানে এক আছিক জীবনের প্রত্যাশা আমি কর্জাম, বে ভীবনের প্রপার ওপার জুড়ে ঈর্বের অধিঠান, ঈর্বের প্রথম স্কলন কর্জণার বে জীবন নব জীবনে অনুরাগ। আছার এই অবিনশ্ব অসীমভা নিরে কোনো সংশ্র ছিল না আমার মনে।

আমার পিতৃদেবের বাহ্মিক চেচারাতেও প্রকৃ বীশুর দেইচিছ্ছিল। থুষ্টোপম চরিত্র প্রকাশ পেত তাঁর মুধ্যগুলে। মুক্তিলতা পরম প্রতৃ থুষ্টের চরণে তিনি তাঁর সমস্ত বিখাসকে সরল নিশুর মতো অকিঞ্চন হরে সমর্পণ করেছিলেন। এই চিরবিশ্বস্ত আত্মদানে রুপাছারিত হয়েছিল তাঁর চবিত্র, অপূর্ব-স্কুলর হাইছিল তাঁর অস্তঃকরণ। থুষ্টের পুনরাবির্তাবকে আত্মবিক আর্থ নিরে তিনি বে তুলই করুন না কেন, সমস্ত ভ্রমকে তিনি জয় করেছিলেন বিখাস নিরে আশা নিরে প্রেম দিরে। তাঁর খুষ্ট-নিবেদিত জীবন বে উচ্ছেলিত আনন্দ, অপবিমান আশা ও উচ্ছানিত ভব্দিতে পরিপ্লুত ছিল, সেই আনন্দ, আশা ও ভক্তিকে আমার জীবনের বুহজর কেন্তে সঞ্চারিত কয়তে বেন পারি, এই কামনাই ছিল আমার।

আমার পূর্বজীবনের প্রতিটি অভিজ্ঞতাকে আমি পুনর্বার একে একে মুরণ করতে লাগলাম। এই সমস্ত অভিজ্ঞতার সংবোগে মর্থমূলে বিখাসের বে ভিন্তি রচিত হরেছে, সেই ডিভির মুদ্চতা আমি আবার ধীরে ধীরে পরীকা করে দেখলাম। কেন না, বিখাসের এই ভিত্তির উপরেই আমাকে নৃতন করে প্রতিষ্ঠা করতে হবে আমার ধর্মের মর্থম্পির,—ভিত্তিমূলের প্রস্তুরকাঠীতে কোনো সংশ্যের চুর্থলতা থাকলে চলবে না।

আবো একটি বিষয়ে আমি আলিখার্ট সুইট্রাবের কাছ থেকে শ্রেষ্ঠ সাহাবা লাভ করেছিলাম। তার নিজের জীবনের উলাহরণে



আমি উহ ছ হবেছিলাম। সমস্ত জীবন দিবে প্রতি মুহূর্তের কর্ম
দিরে ছুইট্জার নিঃশংক নিঃসংকোচে প্রভাক বীশুকে অন্থসরণ
করেছিলেন। প্রগাঢ় পাণ্ডিতা ছিল তাঁর, সঙ্গীতবেভা হিসাবে তাঁর
ছিল দেশজোড়া খ্যাতি। কিছ শিক্ষকতা বা সঙ্গীতশুষ্ঠার লোকরঞ্জক
বৃত্তি পরিত্যাপ করে তিনি ডাজ্ঞারী পঙ্লেন। শতাকীর পর
শতাকী ধরে সভ্য মান্ত্রের অত্যাচার বে দেশের ললাটে গাঢ় থেকে
গাঢ়তর কালিমা লেপন করেছে,—চিকিৎসকরপে সেবার বৃত্তি
নিবে সেই গভীর মধ্য আফ্রিকার তিনি বাত্রা করলেন। আফ্রিকার
বিষ্কুবৈশ্রিক অঞ্লে ওগুই নদীর ধারে তিনি উপস্থিত হল্মেন ও
ফ্রাজেরিরা-বিষর্গ্ত একটি গ্রামে গিয়ে আগ্রাহ্ব নিলেন।

প্রতীচ্য সঞ্জাতার আওতার স্থাপুর প্রান্তে আফিকার আদিবাসিগণের এই নগণা জনপদে সুইট্জার বোগী ও মুমূর্দের সেবার ভার পৃষ্ট-নিবেদিত সমস্ত জীবন উৎসর্গ করেছেন। পুটের পথে জীবনকে পরিচালিত করেছেন তিনি সমস্ত পার্থিব পাথেরকে পরিত্যাগ করে।

আজিকার উক্-মগুলের গভীর অরণ্যের উদার নির্কানতার গু ইর উপস্থিতিকে অন্তরের একান্ত নিকটে অন্থভর করেছেন সুইট্জার। ইবরের অলোকিক নিদেশি আলও তাঁর প্রভিদিনের কর্মধারাকে পরিচালিত করছে, আনশ-অভিবিক্ত করছে তাঁর প্রতি মুহূর্তের সেবারতকে। বীশুর নামে অবজ্ঞাত দীন-স্বিল্রের সেবার তিনি তাঁর সমগ্র জীবনকে দান করেছেন,—এই দানের আনন্দ তাঁর ব্যবহারিক জীবনের সমস্ত কুছেসাধনকে এক অনির্বচনীর গৌরবে ছবিত করেছে।

স্থুইটুলার মনে করেন,—পুষ্ট শুধু কোনো এক স্বতীত মনুষ্টেরিত্র নন, তাঁর প্ৰিচয় ওয়ু প্রাচীন ন্থিপত্রের অধ্যরনের মধ্যে সীমাবৰ নয়। প্রতি যুগের মানবাত্মার মন্দিরে তিনি বিরাজমান। ভবু তীকে সন্ধান করতে চয় যুগে যুগে। এ সন্ধান সহক্ষের পথে লয়,—বতো বৃগ অভীত হচ্ছে, তভোই পথ হচ্চে বৰুবতৰ, সভানের বেদনা হচ্ছে ভীষ্তর। প্রতি যুগে মানবস্মাজের ৰীৰ অভিযাত্ৰীৰ দল জাঁৰ সন্ধান কৰে, তাঁৰ স্পৰ্গ পাৰ, প্ৰম ভঞ্চি ও चांचाबिरवनस्त्र भश निरत् छैरिक चर्कन करत। ভৌগোলিক সীমাবেধার বারাও এই অভিবাতীরা আবদ্ধ নর, তাঁর সম্ভান, তাঁব পরিচয়, দেশে দেশে। দেশাচারের লোকাচারের সমস্ত অর্থল ভিনি ভেঙেছেন। তাঁব আবির্ভাবের প্রমোপলবির বে সন্ধানী তাকেও হতে হব সর্ববন্ধন হীন। তিনি আসেন,—সমস্ত বিচার ভর্ক ও হম্বকে অভিক্রম করে তিনি আদেন, মনুব্যচেতনার আপাত পরাজয়ের অন্ধকারের প্রান্তে আসর বিজয়-প্রভাতের জ্যোতিবন্ধ বিভা কুটে ৬ঠে জাঁর চরণম্পার্শে। তিনি মানব-সংস্কৃতির দিগস্ত অভিক্রমের পথ, ভিনিই পথের প্রদর্শক। তাঁর মৃত্যুতে ন্বজীবনের সংকেত। তাঁর জীবনদান পুনকজীবনের জংকুর।

প্রবর্তীকালে ইউবোপে গিরে কিছুদিন আলবার্ট স্কুইটজারের সঙ্গে একত্র বসবাস করার সোভাগ্য আমার হরেছিল। আমার মনে হয়, সাধু স্থশ্যর সিংও জাপানের কাগাওয়া ছাড়া স্কুইটজারের স্পতা এতো ঘনিষ্ঠ গুটামুসরণের অধিকারী আর কেউ এ বুগে হননি। ক্রীয়া কোলোভাসিত আশ্বত্যাগের কাহিনীর সঙ্গে আল স্বস্থ পৃথিবী পরিচিত; তাঁর অনহক্ষণীয় থুইজজির কথা আছা কারে।
আছানা নয়। বে বীণ্ডকে তিনি সমন্ত মন-প্রাণ দিয়ে পূজা করে
চলেছেন, তাঁর প্রত্যক্ষণ প্রতিবিশ্বিত হয়েছে ছুইটজারের চরিত্রে,
বে চরিত্রে শিশুর সারলা-সোঁবভ নিত্য বিকশিত।

সুইট্ডাবের গ্রন্থটি পাঠ করতে করতে আমি একটি বিষয়ে দুঢ়নিশ্চয় হলাম। বালাকালে পিতৃগুহে বে ধর্মশিকা আমি পেরেহিলাম, তার পিছনে ইখরের অবগ্যই কোনো অভিপ্রায় ছিল। সেই শিক্ষার মৃতি আর স্কুইটজারের এই গ্রন্থ একত্রে আমার মনকে উদ্বেলিত করে তুলন। ঘতো সামাক্ত বতো অকিঞ্চিৎকরই হোক না আমার জীবন,—প্রতাক বীতর সন্ধানে আমিও কি পথে বার হতে পারি না? প্রাচীন খৃষ্টীয় সম্প্রদায়ের অস্তরে বে আলোকিক বিখাদ ছিল, আমার কর্মে ও প্রার্থনায় দেই বিখাদকে কি পুনর্জাগরিছ করতে পারি না ? যুগে যুগে মামুধের ধেধানে বেদনা, মানবাত্মার বেধানে নিপীড়ন, সেইখানেই থুটের আবির্ভাব। মানবভাগ্যের সেই ফেনা বঞ্চনার মধ্যেই আমি আমার প্রভুকে সন্ধান করব। भुष মুখের মন্ত্রে নয়, জাঁর প্রিয় কার্য্যের বন্ত হয়েট আমি জাঁর উপাসনা করব। তাঁর নামে জীবনকে উৎসর্গ করব সর্ব মানবের সেবার। সেই হ্রদের ধারে তাঁর প্রথম শিষারা প্রভুকে বেমন দেখেছিল, প্রভর কথা ধেমন ওনেছিল, আমিও কি আমার প্রভুকে উপলব্ধি করতে পাবৰ না তেমনি কৰে,—সৰ্বস্বহাৰা হয়ে সেবাসমুদ্ৰেৰ ত'ৰে পাঁড়িছে ? আমিও কি ভনতে পাব না তাঁর অমোঘ-অমৃত বাণী,—বংস, অনুসরণ করে৷ আমাকে!

বন্ধা-শিহরিত এই যুগ, রোগজর্মর এই পৃথিবী। সংশয় আর বেদনা, অবিধাস আন রোদন। পৃথিজন্মের প্রথম শতাব্দীতে প্রথম ভক্তগণের অন্তর পুণ্য আন্থার যে অপূর্ব গুণাবলীতে মণ্ডিত ছিল, সেই ভলি, সেই বিধাস, সেই সাবল্যকে আবার এ যুগে যদি প্রতিষ্ঠিত করা যার, তবেই একমাত্র মঙ্গল। এ আমি স্থির বুঝেছিলাম, আমাদের আবার সেই প্রথম শতাব্দীর পুঠান হওয়া প্রয়োজন।

শিশু উত্তেজনা ও শ্বর অভিজ্ঞতার ফলে পৃথ্টের আদিম ভক্তমণ্ডলী পুনরাগমনের সম্প্রাটির নিতান্ত সহজ সমাধান করেছিলেন। আমার সমল বিধানী পিতার মতো তাঁরাও প্রভুর কথার নিতান্ত আক্ষরিক অর্থ করেছিলেন। কিন্তু তাই বলে পৃথ্টের পুনরাবির্ভাব মিধ্যা নর। পাপ-কলুবিত মৃত্যু-বিধ্বন্ত ধরণীতে পৃথ্টের অলোকিক অতীন্তির স্পর্শে নবপ্রাণের ও নবপুণার সঞ্চার,—এই বিখাস পৃষ্টবিখানীর জ্ঞাম-কেন্তের চিরঞ্জীব বিখাস। এই বিখাসই সাধুগণের স্প্রমাচার। এই ধরণী শতকলুব সন্তেও ঈশ্বরের রাজ্য,—এই রাজ্যের ঘোষণা করেছেন ঈশ্বরপুত্র মহামানব বীত। বীত্রপৃষ্টের সমসাময়িক ভক্তগণ প্রভুর অতীন্তির লীলার প্রকাশ দেখেছিলেন স্থার্কান্তের অধিকারী। সেই স্বর্গরাজ্যের প্রত্যক্ষ পূণ্যের অধিকারে তাঁরা ব্যাবিশ্বর্জনক স্থ্যু ক্রেছিলেন ক্রেছলেন ক্রেছলেন, অধ্যাহ উত্তরও ছিল, কেন না প্রভু পৃষ্ট ছিলেন স্বর্গনা কাছাকাছি। ঈশ্বর-রাজ্যের ঘার ছিল সামনাগামনি।

পুঠ সরিহিত ভজগণের অধুনা-বিরল বিচিত্র উদ্দীপনার পরিচর সাধুজন লিখিত অসমাচারের খেবের দিকের বর্ণনার অ্লার প্রকাশ পেরেছে। এমন স্মান্ত ভাবে চিত্রটি সংক্তিত হরেছে বে, সম্ভ চুড্রটি বেন ফুটে উঠেছে আমাদের চোধের সামনে। সমুস্ক-তীবে প্রিয় শিষ্যগণকে বীশুর শেষ দর্শনদানের সেই অবিশ্ববীর গুঁঠ।

এই কথা সৰ্বত্ৰ প্ৰচাৰিত হংবছিল বে, ৰীতৰ প্ৰৈয় শিষ্য মাৰা বাবেন না, বত দিন না প্ৰাভূ আসেন তত দিন প্ৰতীক্ষা কৰবেন। সেই কৰে ৰীতৰ তক্ষণ প্ৰধাত্তিগণেৰ কাছে প্ৰকৃত কাহিনী স্পষ্ট ভাবে প্ৰকাশ কৰা প্ৰবেজন ক্ষেছিল। জন সেই ঘটনা সম্বন্ধে নিধেছেন,—কিছ বীত বলেননি বে, প্ৰিয় শিষ্য মনবেন না। তিনি গুধু অভাগ্ৰ ভক্তদেৰ বলেছিলেন,—আমি ৰদি ইছ্ছা কৰি বে এ আমাৰ আগমন পৰ্বন্ধ থাকে, তাতে তোমাদেৰ কি ?

আমবা, আমাদের মনশ্চকে কল্পনা করতে পারি, খুঠের শেষ প্রতাক্ষ শিষা তাঁর নখর জীবনাবসানের দিনটি পর্যন্ত বৃদ্ধ কঠে তহণ শিষ্যদের কাছে খুঠের অলোকিক জীবনী শোনাছেন। পরম প্রভাৱ এই জীবনী তিনি ভনিয়েছেন শত সহত্র বার বৃত্ত দিন না মৃত্যু এসে কঠকদ করেছে। প্রভ্ আসবেন, প্রভ্ আবার মরদেহে অবতীর্ণ হবেন, এই বিশাসের অন্তর্নিহিত শক্তিকে উপসন্ধি করা শক্ত নর, এই বিশাসের বলেই বাহ্মিক জগতের নিগড় শিধিল হয়,—মেধানে প্রভ্ নীত নিত্যকাল অনুভাবে অবস্থিত ইশবের সেই অনন্ত বাজ্যের আহবানে আকুল সাড়া দের বিশাসী-আত্মা।

বীতপুর অবিসংশ আবার মরদেহে পৃথিবীতে পুনরাবির্ভূত হবেন, প্রভ্রুত প্রথম ভক্তগণির মধ্যে অটুট ছিল এই বিশাস। পুরীর সমাজে প্রথম মৃগে এই বিশাস রে দীর্যন্থারী হরেছিল ভা বোষ হর দিখরেরই মঙ্গলময় অভিপ্রেত। সে মৃগের পুরবিশাসী নরনারীরা ছিল অতি সরল, অতি দীনহীন, কোনো বিরাট ঐতিহ্ন ছিল না তাদের পিছনে। অবিশাসী পুরুষ শক্তির হাতে বে প্রচণ্ড অত্যাচার ভারা সহু করেছিল, সেই সহু করবার শক্তি তারা পেরেছিল কোখা থেকে? প্রভু আবার আস্বরেন, আসার পেরিনেই,—এই প্রথ আখাই সেই দীন পুরীনের বুকে দিরেছিল বল। বে কল্পনা নিতান্ত সংজ, বে আশা নিতান্ত বান্তব; সে সংক্তে নিতান্ত প্রত্রম চিবান্তব ভ্রের ভ্রমি তাঁদের অতি প্রত্রম । সেই বিশাসকে নিতান্ত প্রব্রম হরনি তাঁদের অতিহের সেই অকুতোভর পুরশ্ববাত্রীদের হের করবার অধিকার আমাদের নেই।

বৃদ্ধ জন উপদেশ দিয়েছেন, পৃথিবীকে প্রেম কোরে। না, আরুষ্ট হোয়ো না পাথিব বস্তুনিচয়ের প্রতি। যদি কোনো ব্যক্তি এই নখব পৃথিবীকে ভালোবাসে, পরম পিতার প্রেম খেকে সে বঞ্চিত ইয়। কেন না পৃথিবীর বা কিছু সঞ্চর—দেহের বাসনা, ইন্দ্রিয়ের লালসা ও মরজীবনের স্বর্গ, — এ সব পৃথিবীরই, উপবের নয়। এই পার্থিব কুরার কুরার, জুড়ার জীবনের বাসনা কামনা,—কিছ

ঈশবের কার্য যে করে সে চির্মিন জীবিত থাকে সে শিশুগণ, মনে রেখো,—শেষের প্রচর উপস্থিত।

শেব প্রাহরের ঘটা বাজজে। এ বেন জীবন-মৃত্যুর এক চরত্র निक्कन,-- चार (मिर्द (नहें,-- चार कि दार ना, (नर कि (नर ना ভোমার আশীর্কাদ, চলব কি চলব না ভোমার আদিই পথে। নিঃশংক নিঃসংশন্ন করতে হবে মনকে এই মুহুর্তে। সংযত করতে হবে মেখলা, আলতে হবে অভিসাবের বন্ধুর পথের স্থানয়-প্রদীপ, পুষ্ঠথা গ্রন্থের মূলে এই অবিলম্ব আত্মপ্রস্তুতির সুরটি বারছে। মানা-সুরের একাতান এই প্রন্থ, কিন্তু তার মধ্যে মৃল স্থরটি জদর্ভন্তীর প্রধান ঝংকাবের মতো। এই ঝংকার ঘুম ভাঙার, ঘুচিরে দের অলস খুপ্লের মারাজাল। গুষ্টের পুনরাবিভাবি স্বপ্ন নর কল্পনা নর --পরম সত্য। জীবনের বে কোনো মুহুর্তে সে সভ্যের পরম প্রকাশ, ক্রুসের যুপকাঠে ৰে সভ্যকে হভা। কৰা ধাবনি। এই ক্ৰুসেৰ ধাৰা অফুবৰ্ডক ভাগেৰ প্ৰতি মুহূৰ্তে প্ৰস্তুত হয়ে থাকভে হবে। কে জানে কথন প্ৰজ আবিভূতি হবেন, বলবেন, অনুসরণ করে। আমাকে। এই আহবান ছয়তো বা মধ্য বাত্তির তিমিবাদ্ধকারকে ভেদ করে কানে বাজৰে, ভয়তো বা সেই হুণতীবের প্রত্যুবের মতো নবোদিভ **পূর্বের আনস্থ**-বীণায় ধ্বনিত হবে সে আহবান। একান্ত অপ্রতীকিত হুত্রতে স্পশ্তি হবে তাঁর চির প্রতীক্ষিত পদধ্বনি।

এই প্রতীক্ষার পরম অবসানে নংজীবনের স্টনা। পৃথিবীর আসজি, ইন্দ্রিরের অভিসাব, নবজীবনের বাসনা কামনা মানবাত্মাকে পঙ্গু করে রাখে। কিছ সেই আহ্বান বার প্রাণে বাজে, সে পঙ্গু গিরি উন্নংখনের শক্তি সাভ করে এক মৃত্তে, অপস্তত হয় ভাষ সর্বন্ন ভার। তার অজকার স্তদর-কন্দরে মহাজীবনের নব উদ্দীশনার আলোকবর্তিকা মৃত্তে জলে। তার আর কিছু থাকে না, কিছু সে সঞ্চিত বাথে না পৃথিবীর জ্ঞাস, তার সব কিছু গ্রহণ করেন প্রভু গুষ্ট।

তুর্বলতা ও সংশবের অন্ধলাবে আছের আমার ক্লিষ্ট অন্ধলের আনালবাট সুইটজাবের গ্রন্থ দেই আলোক-বাতিকাটি ছাপন করল।
তাঁর নিজের জীবনের উনাহরণ আমাকে ঠেলে দিল দীন দরিদ্রদের
মধ্যে, বারা সর্বহারা ও ভাবাহারা তাদের সঙ্গে দৃঢ় বন্ধ করল আমার
আন্ধার কথা। আমি আমার বইপত্র ফেলে আবার পথে বার হতে
তক্ষ করলাম, ঘুরতে লাগলাম গ্রামে গ্রামে। সরল প্রামানীদের
সাহচর্বে মানবজীবনকে উপলব্ধি করতে ওক্ষ করলাম। ক্রমে আমার
মন বীবে বীবে একনিষ্ঠ বিশ্বাসের গৌরবে নিজ্লুর হয়ে উঠল।
আমার স্থাবের মানবগানে ভ্রন্তি ও বিশ্বাসের বাতিকাটিতে প্রম্ব
মলসমর পিতা আপন হাতে অধলিন ও আলা-প্রোজ্জল লিখাটি জেলে
দিলেন। বে আহ্বানের জন্তে উৎকর্ণ হরে ছিলাম, সেই আহ্বান
আমার প্রাণে প্রস্নে মন্ত্রিত হোলো।

অমুবাদ:—নির্ম্মলচন্দ্র গঙ্গোপাধ্যাক্ষ

ভারতের বৈশিষ্ট্য রক্ষা করাই যদি ভারতের জাতীরভার লক্ষ্য হয়, তবে ভারতের এই নব-লাতীয়তার সাধকেরা তাঁহাদের সাধনার এই সনাতন প্রকৃতিকে কিছুতেই উপোক্ষা করিতে পারেন না। ভারতের বৈশিষ্ট্য বে কি, ইহা বাঁহারা বোকেন এবং সর্বদা শ্বৰণ করিয়া চলেন, তাঁহারা সমগ্র ভারতের এক্য সাধনের লোভে ভিন্ন ভিন্ন প্রদেশের প্রাদেশিক বৈশিষ্ট্যকে কথনই উপোক্ষা করিছে পারেন না। ভারতের এই বৈশিষ্ট্যের জ্ঞান প্রায় লোপ পাইরাছে বলিয়াই আন্ধ বাঙালী প্রত্যক্ষ বাঙলাকে ভূলিয়া, অপ্রভাক্ষা বাঙালী প্রত্যক্ষ বাঙলাকে ভূলিয়া, অপ্রভাক্ষা বাঙালার বাঙালা বাঙালা বাঙালা বাঙালাক ব



তি। পড়ার পরেই জোরার জাসে। তেমনি ক'লকাতা
মাঠের হকি লীগের সমাপ্তির সংগে সংগে বাইটন কাপের
থেলা বেশ উৎসাহ ও উদ্দীপনার মধ্যেই সুকু হরেছে। বলিও এখনও
এর শেব হরনি। এবারকার বাইটন কাপের প্রতিবাগিতার
সর্বসমেত৪১টি দল বোগদান করেছে। এর মধ্যে বহিরাগত ১৭টি
দল জাছে। বাইটন কাপের ইতিবৃত্ত ও পর্য্যালোচনা জাগামী সংখ্যার
জালোচনা করব। এবার ক'লকাতার মাঠের হকি খেলার একটা
সাম্প্রিক জালোচনা করছি।

ত্কি

এ বছবের প্রথম ডিভিসন হকি থেলাগুলি দেখে মনে হরেছে, কলকাতার হকি থেলার মান ক্রমশ: নিয়মুখী। থেলোরাড়দের অফুদীলন, অধ্যবসার বেমন একান্ত প্ররোজন তেমনি দেশের তরুণ খেলোরাড়দের তৈরী করার ভার একান্তভাবে ক্লাব কর্ত্পক্ষের। এ বিষয়ে বদি এখন থেকে ক'লকাতার ক্লাবগুলি তৎপর না হর তা হ'লে ভারত অলিম্পিকের বে হকিতে একজ্জ্র সম্রাট—সেই সিংহাসন থেকে নেমে দাঁড়াতে হবে। পথ করে দিতে হবে হয় পার্শবর্তী—পাকিস্থান বা অক্ত কাউকে।

এবার চ্যান্পিরানসিপের গৌরব অর্জন ক'রল ক'লকাতার অহাতম শ্রেষ্ঠ দল মহামেডান স্পোটিং। চ্যান্পিরানসিপের জন্ম মহামেডান দলকে বিশ্বের বেগ পেতে হরেছে, অপর নিকট প্রতিষ্কা ইষ্ট-বেঙ্গল দলের কাছে। নিভাস্ত হুর্ভাগ্য বশতঃ ইষ্ট-বেঙ্গল দল মহামেডান স্পোটিং-এর সঙ্গে খেলার যথেষ্ঠ ভাল খেলেও জ্বলাভ করতে পারেনি। পোনান্টি বুলির অপবাবহার, তাহাড়া বহু স্ববোগের অপব্যবহার এ খেলার জ্বলাভ করতে দেরনি।

প্রথম 'ডিভিসনের ১১টি ক্লাবের মধ্যে সত্যই মহামেডান দল ভালই থেলেছে। অপরাজ্বের গৌরব নিয়ে এবারকার লীগ চ্যান্দিরানসিপ লাভ সত্যই প্রশংসনীর। এ প্রসংগে উল্লেখ করা বেভে পারে, মহামেডান দল গতবারে রাণার্স আপ লাভ করেছিল। এটাই মহামেডান দলের প্রথম লীগবিভয় নর। ইন্ডিপ্র্বে ১১৪৫ সালে মহামেডান দল লীগ বিজয়ের গৌরব অর্জ্জন করে। এবারকার সমস্ত প্রতিবোগিতার থেলার মাত্র তিনটি থেলার মহামেডান দল অমীমাংসিত ভাবে শেব করেছে। মহামেডান দলের পরই সাম্বিক ভাবে ভাল থেলেছে ইগ্রবেল্ড দল।

এবার সর্বাপেকা হতাশ করেছে কলকাতার অক্তম থ্যাতনামা দল মোহনবাগান। গতবার পর্যান্ত উপর্যুপরি চার বার মোহনবাগান দল দীপ বিজ্ঞানের গৌরব অর্জন করে এসেছিল। তাই জনেকেই আশা ক্ষেছিলেন, এবারও দীগবিজ্ঞরী হরে হকি দীগের খেলার বিশ্বী বিশ্বী বেক্ট ক্ষেব। কিছু বোহনবাগান বল

ইটবেকল দলের বিক্লে প্রাজয় বরণ করার পর খেলার মধ্যে শিথিলতা প্রকাশ পার। এব প্রই ইটার্শ রেলদল ও মহামেডান দলের কাছে প্রাজয় বরণ করার লীগ পালার দৌড়ে পিছিরে পড়ে।

কলকাতা মাঠে বে সমস্ত থেলোরাড়রা চকিকে তার খ-জাসনে প্রতিষ্ঠিত করেন, তাঁদের প্রত্যেকেরট খেলার মধ্যে ফুটে উঠেছে জনৈপুণা। তাঁদের স্বাতাবিক ক্রীড়াকোশল তাঁরা হারিবে ফেলেছেন। ভোলা চক্রবর্তী, চরিপদ গুঁই, ক্রডিয়াস, গুরুং, পিরারা সিং, কারো খেলাট টোখে লাগে না। দিন দিন তাদের খেলা নিপ্রত হয়ে বাজে। সেইজক সর্বাগ্রে প্রয়োজন অমুশীলন ও অধাবসায় খেলোরাড়দের মধ্যে।

প্রথম ডিভিসন থেকে এবার দ্বিতীয় ডিভিসনে নেমে বাচ্ছে ক'লকাভার অন্ততম খ্যাতনামা দল ভবানীপুর ও ভালভলা ৷ গভ কয়েক বছর আগেও ভবানীপুর কলকাতার হকি মরওমে বে আলোড়ন ও উদ্দীপনার সৃষ্টি করতো তা দর্শকরা নিশ্চরই বিশ্বিভ হননি। ১৯৫৩ ও ১৯৫৪ সালে একছেত্র আধিপতা ছিল ভবানীপুর দলের। ফুটবল থেকে নেমে বাওয়ার পরই হকি থেকে নেমে বাওয়ায় মনে ংছে ভবানীপুর দলের একে একে নিবিছে দেউটি। ভবানীপুর দল এবারকার প্রতিযোগিতার প্রথম ১২টি থেলায় বর্থন মাত্র ১টি পয়েণ্ট সংগ্রহ করল তথনই ভারা অফুমান করলো এবারকার প্রতিবোগিতার ফলাফল সম্বন্ধে। এবং অত্যন্ত হতাশ হরে শেষ পর্যান্ত প্রতিষোগিতা খেকে সরে দাঁড়ালো। অপর দল ভাৰতলা ১৮টি থেকার মধ্যে মাত্র ৭টি পয়েণ্ট লাভ করেছে। শেষ পর্যান্ত ভালভলা এবং উরাজী দলের মধ্যে নেমে যাওয়ার পাল্লায় বেশ উত্তেজনার স্থাষ্ট হয়। শেব পর্যান্ত ৮টি পরেন্ট পেরে এবারকার মত উরাড়ী দল প্রথম ডিভিসন লীগ থেকে নেমে ষাওয়ার চাত থেকে রেহাই লাভ করে।

আগামী বাবে প্রথম ডিভিসন ধেলার গৌরব দ্বর্জন করলো
আদিবাসী ও ঝাড়থণ্ড ক্লাব। দ্বিভীয় ডিভিসনে এবার চ্যাম্পিরানসিপ
লাভের গৌরব দ্বর্জন করলো আদিবাসী দল। আদিবাসী দল
ক্রমোন্নতি সভাই প্রশংসার দাবী বাবে। আদিবাসী দল ১৬টি
ধেলার মধ্যে ২১ প্রেট পেরে দ্বিভীর ডিভিসন চ্যাম্পিরানসিপের
গৌরব দ্বর্জন করলো। অপরপক্ষে ঝাড়থণ্ড ক্লাব '১ প্রেট পিছিয়ে ব্যেভ দ্বর্গিং ২৮ পরেট লাভ করে রাণার্স আপ লাভ
করলো। আগামী বাবে এই ছুইটি দলকে প্রথম ডিভিসন হর্কি
নীগের আসরে প্রতিদ্বিভা করতে দেখা বাবে।

আন্তঃ-কলেজ হকি

ৰাত্ত:কলেজ হকি লীগের খেলার ২৩টি কলেজকে তিনটি তালে তাল করা হয়। এবার্কার চ্যান্সিরানসিপু লাভ করেছে সেট ক্লেভিয়াস কলেজ। এবার নিয়ে মোট পাঁচ বার দেউ ক্লেভিয়াস কলেজ আন্ত:-কলেজ হকি লীগের খেলার বিজয়ীর গৌরব অর্জন করলো।

তিনটি গ্ৰুপের মব্যে একটিতে সেট জেভিবার্স, একটিতে খটিশচার্চ্চ ও অপরটিতে বি. ই. কলেজ চ্যাম্পিয়ানসিপ লাভ করে। এবার এই ভিনটি গ্ৰুপ চ্যাম্পিয়ানকে নক-লাউট প্রধায় খেলিয়ে চ্যাম্পিয়ানসিপের ব্যবস্থা করা হয়। কিছ শেব পর্যান্ত স্কটিশচার্চ্চ কলেজ প্রতিবাগিতায় অংশ গ্রহণ না করার বি, ই, কলেজ ও সেট জেভিয়ার্সের খেলার সেট জেভিয়ার্স দল ১-০ গোলে জ্বলাভ করে চ্যাম্পিয়ানসিপ লাভ করে।

অথ ষ্টেডিয়াম প্রদক্ত

ষ্টেডিরাম নিয়ে মাসিক বস্থমতীব পাতার ইতিপূর্বে বছবার আলোচনা করেছি। কম্পোজিট ষ্টেডিরাম কিংবা একক ষ্টেডিরাম সম্পর্কে আলোচনা করেছি। এখন সর্বাজ্যে আলোচনার কথা ষ্টেডিরাম হওরার শাশার কথা।

ক'লকাতার নবনির্মাচিত মেরর বি, কে, ব্যানার্জ্জি ষ্টেডিয়াম সম্পর্কে সবিশেষ আগ্রহী হয়েছেন। বর্তমানে বে ষ্টেডিয়াম সম্পর্কে দাবী কমিটিত হয়েছেন তার সভাপতি নির্মাচিত হয়েছেন জ্রী বি, কে, ব্যানার্জ্জি। পশ্চিম বাংলার মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র সায় উদ্ভোগী হয়েছেন। কলকাতায় ষ্টেডিয়াম হোক্, এই দাবী নিয়ে এগিয়ে এসেছে বাংলা দেশের তক্ষণ ছাত্ররা। এই ষ্টেডিয়াম-যজ্জের হোতা ছাত্র-সম্প্রদার। তারা বে ভাবে এগিয়ে এসেছে তা সভ্যই প্রশাসনীয়। তক্ষণদের দাবী কোনমতেই প্রত্যাধ্যাত হতে পারে না বলে মনে হচ্ছে।

বার বার ষ্টেডিরামের কথা উঠেছে। পত্র-পত্রিকার বিশেষ ভালে আলোচনা হবেছে, কিন্ত প্রেতিবারই কোন অনৃত্য হাতের ইলিডে সমগ্র উত্তেজনার ববনিকা পতন ঘটেছে। সজোবের মহারাজা, আরু থেকে দীর্ঘ দিন আগে কলকাতার ষ্টেডিরামের প্রেরোজনের উপদেশ অন্থত্তব করেছিলেন। রাজা, মহারাণী, ক্রীড়াজগতের দিকপালেরা, মন্ত্রী, উপমন্ত্রী, প্রত্যেকেই সবিশেব চেষ্টা করেছেন কলকাতার ষ্টেডিরাম তৈরী হোক। ক্রীড়ামোদীরা রোদ-বৃত্তির হাত থেকে মৃক্তিলাভ করুক। থেলা দেখার সত্যকার নির্মাণ আনক্ষ অমৃত্য করুক। কিন্তু তৃঃথের বিষর, শেব পর্যান্ত কলকাতার ষ্টেডিরাম গড়ে ওঠেনি!

কেন্দ্রীয় প্রতিবক্ষা মন্ত্রী জ্রীকৃষ্ণ মেনন ষ্টেডিয়াম নির্দ্ধানের সবিশেষ আগ্রহ দেখিয়েছেন। রাজ্য সরকার এ বিষয়ে বিশেষ আগ্রহী।

কলকাভার মতন এত বড় শহরে একটা ষ্টেডিরাম নেই, একথা অন্ত কোন রাজ্যের ভরুণেরা হরতো কল্পনা করতেই পারে না। ফুটবলের পীঠভূমি, হকির তীর্থক্ষেত্র—সেধানে ষ্টেডিরাম নেই, এর চেয়ে সজ্জাকর ব্যাপার ভার কি হতে পারে ?

কলকাতায় ষ্টেডিয়াম নির্মাণ ব্যাপাবে কেন্দ্রীয় সরকারের বিমাতা-স্থলভ ব্যবহার সত্যই আশ্রহ্যজনক! তবু আশার কথা, রাজ্য সরকার জী বোষকে পাঠিয়েছেন সোভিয়েট রাশিয়া ও চেকোপ্লোভাকিয়াতে। ওধু আর্থিক সাহাব্য নয়, উন্ধত ধংশের ষ্টেডিয়াম গঠনের জন্ত কারিগরী সাহাব্যের জন্ত। শোনা বাজ্যে, পঞ্চাশ হাজার দর্শক বাতে খেলা দেখতে পারেন, তার উপ্রোগী করে একটি কম্পোজিট ষ্টেডিয়াম গঠন হবে।

অধরা

(Browning's "Love in a life" ৰকাখনে) তপতী চট্টোপাধ্যায়

মন বে আমার ছুটে বেড়ার চাই গো ভোমার চাই
প্রেভিধ্যনি উছলে ওঠে কই গো তুমি কই
আড়াল থেকে ডাক দিয়ে বাও তাই তো আমার চাওরা
ডাক দিয়ে তাও লুকিবে বেড়াও বার না তোমার পাওরা।
জীবন-কমল-কোরক 'পবে
ডোমার চরণ-চিহ্ন পড়ে
সে বে আমার হাভছানি দের

ভাইতো পরাণ ছোটে,

তোমার পদধ্বনির পরে

আমার এ মন লোটে।

আসবে বর্থন তুমি আমার হাদর-কমল 'পরে

এমন হবে আলায় আলো ভোমার স্পর্শ ভরে,
ভোমার পারের অলক্তরাগ কমল হরে ফুটে
থরে থবে উঠবে ভরে আমার বন্ধপুটে।
ভোমার অলক-ভরকভার
হিরার মম পুলিত হার
পূর্ণ করে জীবন মম

মেলবে জীবির ভারা,
নীবব ভোমার মৌন হাসি
সকল ক্লান্থিহবা'।

কিছ জামার হিরার জালো কই গো জামার প্রেম আন্ত পথে ক্লান্ত চরণ থোঁজে বে বিশ্রাম, মনকে বলে প্রবাধ দিরে শান্ত করে জামার প্রিবে বলে জামার পুঁজৰে বলে ভাইতো ভোমার বাঁচা

অঙ্গৰ ও প্ৰাক্ত



বিবাহিতা স্ত্ৰী পাৰ্ব্বতী সখী

শ্রীঅমিয়রাণী দাস

ইহা বংশ শতাকীর নর বা উনবিংশ শতাকীরও নর।
ইহা যুগের প্রথমাবস্থা হইতেই চলিয়া আসিতেছে। সংসারস্কার ও প্রাণিস্টির যুগ হইতে চলিয়া আসিতেছে বে, পুরুষ
ও স্ত্রী তুইটি ভিন্ন প্রকৃতির স্টি। ওধু মানব সমাজে নয়, পশু-পাঝী
কীট-পত্তমদের মধ্যেও এই ব্যবধান আছে। সঠিক অন্মতালিকা
কোবলে ভাহাতেও হন্নত দেখা বাইবে বে, এই ছইটি
পরস্পরের সংখ্যা প্রায় সমভাগে আছে। হন্নত ইহা স্বরং
ভগবানেরই ইছা।

এই ত্রী ও পুরুবের মধ্যে বে কে বড়, তাহা আদ্ধ পর্যন্তও গবেষণার সঠিক ভাবে বলা যার নাই। কেহ বলেন পুরুব, কেহ বলেন ত্রী; কিন্তু জনেকের হিসাবে পুরুব বড় বলিয়া গণ্য হইয়া থাকে। দেবাদিদেব মহাদেব হইতে সংসাবের স্পষ্টির নিত্রই প্রাণীর মধ্যেও দেখা বার বে, পুরুব জাতির দৈহিক বল বেশী এবং ঐ বিক্রমেও পুরুবজাতি বড় বলিয়া বলা বাইতে পারে। কিন্তু জীজাতির বে বল তাহা দৈহিক নর, সেইজভুই সাধারণ চক্ষে জীজাতির পজ্জির পরিচর সহসা ধরা পড়ে না। জীজাতির শক্তির পরিচর দের পুরুবের ভিতর দিয়া। সেইটি কম শক্তির পরিচর নর বরং পুরুবজাতি হইতে অধিক বলিয়াই গণ্য করিতে হইবে।

ভৰ্ক হিসাবে বা সভ্যিকার হিসাবে বদি গুণাগুণের বিচার করা হার, তবে মনে হয় কোন জাতিই কম নর। ছই-জনেরই সমশক্তি। ভৰ্ক হিসাবে বলা বাইজে পারে বে, বদি পুরুষ বড়ই হয়, তবে औ থাকিবে তবৈ পুক্ৰ তাহার নিকট আসিতে পারে না। হইতে পারে পুক্র জাতি দৈহিক বলে শক্তিমান; কিছ ব্যাহিক শক্তিতে দ্বীজাতির জন্ম, গঠন ও জীবন।

কবিগণ দ্রীজাতিকে শক্তিজাতি বলিয়া আখ্যা দিয়াছেন।
ভাষার কারণ নিশ্চয়ই কিছু আছে, বাহার দক্ষণ স্ত্রীজাতিকে ঐ
শক্তিজাতির নামে পরিচয় দেওয়া বাইতে পারে। কারণ
উল্লেখ না করিয়া কবিদের আখ্যা লইয়াই ইহা জোর করিয়া বলা
বাইতে পারে বে, স্ত্রীজাতি, শক্তি-জাতি। ভাহার বে শক্তি
আছে, ভাহা পুক্র-জাতির নাই।

বীঞ্চ ব্যক্তীত অঙ্ক হয় না। সেই বীজ ৰে জীব-পুক্ৰের নিকটই থাকিবে, এই যুক্তি বাতিল করিয়া দিয়াছেন বর্তমানে বিজ্ঞানিগণ। জীব-পুক্ষের বীজ ছাড়াও বে প্রাণীর স্থাই হইতে পারে, তাহা বিজ্ঞানীদের গবেষণায় পাওৱা গিরাছে। কিছু এ জীছাড়া সন্তান প্রাণ্ড কর কি না ভাছা আজ পর্যন্তও বিজ্ঞানীদের হাতে ধরা পড়ে নাই বা ভবিষাতে পড়িবে কি না ভাছাও সন্দেহের কথা। এই বিষয়ে বেখানে প্রাণিস্থাইর প্রথম স্ত্রশক্তিতে জীবাতির শক্তি পুক্রব-জাতি হইতে অধিক বলিয়া মনে হয়, সেইখানে আম হইতে মৃত্যু পর্যন্ত জীবন মাধ্যমে বে জীজাতি পুক্রবজাতি ছইতে শক্তিতে কম, তাহা গ্রহণযোগ্য নয়।

একটি জীবনের মধ্যে কয়টি শক্তি জাসিতে পারে ? বিবেচনা করিয়া দেখিলে মনে হয়, দেইখানে চারটি শক্তির শেবিচয় পাওয়া বার, কথা—মক্তিছের, দেহের, মনের ও জন্তরের (এখারক) । এই চারটি শক্তির মধ্যে দৈহিক শন্তিতে খ্রীকাতি পুক্রজাতি হইতে কম হইতে পারে। কিন্তু অন্তাক্ত তিনটিতে হয় বেনী, নয় ত পুক্র জাতির সমভাবে জাছে, কম নয়।

উপরোক্ত বিষয়গুলি ছাড়াও আরও এমন অনেক নজীর আছে বে, প্রীকাতি পুক্ষকাতি হইতে জীবন-শক্তিতে কম নর, ভাহার অনেক প্রমাণ ইতিহালে, পুরাণে ইত্যাদিতে রহিয়াছে।

ত্তী ও পুক্ষজাতি হিসাবে বলা হইল। এখন বজ্ব হা হইবে ব্যক্তিগত ব্যাণার লইরা, ভাতি ছাড়িয়া বলি ব্যক্তিগত হিসাবে স্ত্রী ও পুক্ষ বলা বার, তাহা হইলে সাধারণত বিবাহিত ব্যক্তিদের বিষয়ই বলা বার। ত্ত্রী বলিতে বুঝায় বিবাহিতা এবং পুক্ষ বলিতে বুঝায় বুবকের পরবর্ত্তী জীবন। ঐ ত্রী প্রথমাবস্থার কলা বা বালিকা, বিতীয়াবস্থার ত্রী, তৃতীয়াবস্থার গৃহিণী ও চ্তুর্থাবস্থার হন সর্ব্ব সাধারণের বৃদ্ধনা। ভার পুক্ষ বালক অবস্থা হইতে যুবকে পরিণত হয়, তার পর তৃতীয়াবস্থার হয় সংসার-কর্মী, চ্তুর্থাবস্থার সর্বজনের উপদেশকারী বৃদ্ধ বলিয়া গণ্য হয়। সেই অস্তই ত্রী বা পুক্ষ বলিংল বিবাহিত বলিয়া সাধারণত ধরিয়া লইতে হয়। ত্রী হিসাবে তালার প্রথম জীবন বা প্রথমাবস্থার কথা উঠে না এবং পুক্রবের কথাতেও প্রথম ছই অবস্থার কথা উঠে না।

বিবাহিত ভীবনের স্ত্রী ও পূক্ষবের কথাই চইবে এথানে আলোচা বিষয়। কারণ, সেই সমর হইতে তুই জনেরই॰আগল জীবনের কার্ল আরম্ভ হয়। জীবনের ধারার কার্যস্ত্রনা, জীবনের গঠন ও

বিষয়ে কেই ভিন্ন মত পোৰণ কৰিয়া থাকেন, ^{সুবে}

কী পঞ্জিপার মারক্তে জানাইলে বাধিত চইব।

প্রিচালন সম্পর্কে প্রয়োজনমতে সংসারী হইরা, কর্ম ও ধর্মের কর্ত্তব্য-পথ বাছিরা লইতে হর সেই সমর হইছে।

বিবাহ বস্তুটি কি, তাহার আলোচনার অনেক আছে, ছবে এখানকার আলোচনা তাহা নহে। ছইটি বিবাহিত জীবনের পরশাবের সম্পর্কের বিষয় লইয়া হইবে আলোচনার বিষয়। বধন বিবাহ" বলিয়া কথা হইয়াছে, তখন বুঝিতে হইবে ইহা সংসাবের মন্তব্য-সমাজ ব্যতীত অক্তের নয়।

বিবাহের পর বালিকা হয় ন্ত্রী, তার পর হয় মা, সন্থানের জননী।
ঐ সন্থান যত দিন না বছের হয়, তত দিন থাকে মায়ের কাছে,
লালিত পালিত হয় মায়ের আদর-য়ত্ম, শিক্ষা পায় মায়ের গুণের।
বয়য় হইলে থাকে না ততটা মায়ের সাথে থনিষ্ঠ সম্বন্ধ। বয়য়
সন্তানগণ পাইয়া থাকে তথন মায়ের শুভ আশীর্কাদ। সন্তানগণের
বিবাহ হইলে মা পাইয়া থাকেন কিছু মানসিক বিশ্রাম, বিদি তাহারা
থাকে ভাল পবিষেশে। নচেৎ মা পাইয়া থাকেন আরও বেশী মনের
কঠা। সন্তানের সাক্ষ মায়ের খনিষ্ঠতা থাকে সন্তান বয়য় বা বিবাহ
হইবার পূর্বা পর্যান্ত। তত দিন থাকে সন্তানের উপর মায়ের অক্লান্ত
পরিশ্রম। সন্তান যথন বড় হয়, বুন্ধি হয়, স্কুল ও সামাজিক
শিক্ষা পায়, তথন আর মায়ের উপর তত্তটা টান থাকে না,
আন্তে আন্তে সরিয়া পড়ে মায়ের কাছ হইতে। মায়ের সক্ষে

ঘনিষ্ঠতার শিখিল হয় তথক হইতে। বিবাহের পর বেরে সভান বার ভাগার খামীর কাছে, আর পুরুষ সভান বার উপার্জনের উপারে খানাভবে। মা থাকেন তথন গৃহিণী চ্ইয়া নিজের খামীর পার্থে। প্রায় শতকরা ১১ ভাগই দেখা বায় বে, পুরুষ সন্তান কার্যোপলকে তাহার প্রী-সন্তানাদি সইয়া থাকে অভ ভানে, মা থাকেন তথন কোন এক দ্ব দেশে। কেন এমন বিজী বা নির্ম, সেই-ই হ্ইয়াছি সংসাবের স্ত্রী-পুরুষের ধর্ম্ম।

বদিও পুরাণে আছে বে, 'জননী জন্মভূমিণ্চ অর্গাদপি গরীরসী,' গুরুজনদের মধ্যে জননী সর্ক্তপ্রেষ্ঠ ; কিছু ভাহা আধাাত্মিক হিসাবে। জ্রী পুরুবের কর্ম্মজীবন ও কর্ম্মজীবনের ধারা পরীক্ষা করিলে ইহা স্পাইই বৃঝা ধার বে, বাস্তব জীবনে পুরুবের নিকট ভাহার মারের কর্জ্বস্থ থাকে সংক্ষিপ্ত, ঘনিষ্ঠভা থাকে জীবনের একাংশ, সম্পর্ক থাকে ভক্তিও আধ্যাত্মিক হিসাবে।

মেরে সম্ভান কাটার তাহার মারের কাছে। তাহার জীবনের প্রায় এক-পঞ্চম ভাগ সমর, জার পুরুষ সম্ভান থাকে তাহার এক-চতুর্থাংশ সমর। বাকী জীবন কাটার নৃতন জীবনের সঙ্গে— জ্রী ও পুরুষ হিসাবে বা স্থামি-জ্রী হিসাবে। সম্ভান যভদিন থাকে মারের কাছে, তভদিন থাকে তাহার জাদর, শিশুবাংসলা ভাব, মনের কোমলতা।

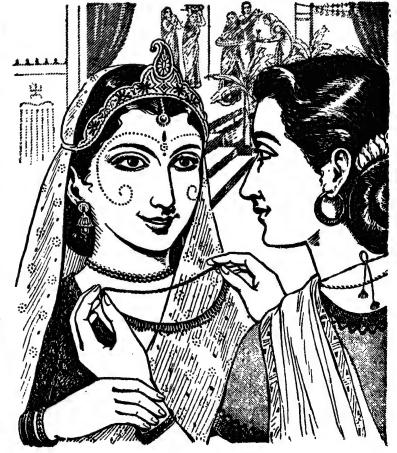


"এমন স্থলর গহনা কোপায় গড়ালে ?"
"আমার সব গছনা মুখার্জী জুয়েলাস'
দিয়াছেন। প্রভ্যেক জিনিষ্টিই, ভাই,
মনের মত হয়েছে,—এসেও পৌছেছে
ঠিক সময়। এঁদের ক্ষতিজ্ঞান, সততা ও
দায়িত্বাবে আমরা স্বাই খুলী হয়েছি।"



^{দিনি মোনার গহনা নির্মাতা ও **রছ**-। বহুবাজার মার্কেট, ক**লিকাতা-১**২}

টেশিফোন: ৩৪-৪৮১০



তার পর বধন হয় বয়দ, পাইয়া থাকে নৃতন জীবন ধারণের প্রশালী, তথন থাকে না ভাষার সেই শিশুসুকভ চরিত্র। জীবন নির্কাহের ধারাছুবারী সময়ে হইরা উঠে উঠা, সময়ে হইরা থাকে কোমল, জীবন পরিকল্পনা ও পরিচালনার সামগুলু রাখিরা চলিতে থাকে। জ্রী ও পুরুষ এই চুই জীবনের মধ্যে কেবেনী করিয়া সামগুলু রাখিতে চার বা চেপ্তা করে, ভাষাও বিবেচনা করিয়া দেখিবার বিষয়; সেই ধারা চলিয়া থাকে এক ছুই বংসর নর, মৃত্যু পর্যন্ত।

বিবাহের পর নৃতন জীবনের সংস মিলিত হইয়া, জীবনের মান বজার বাৰিয়া, উভর জীবনের প্রথ-ছঃখের ভাগী হইয়া, নিজেকের সভানের উপর কর্ত্বরা পালন করিয়া, জীবনের প্রায় ভিন আলে সময় ঢালিয়া নেওয়া বে কাহার পকে হইতে পারে, কোন শক্ষিতে সে সেই ভাবে ভীবন বাপন করিছে পারে, তাহা বিশেষ ভাবে বিবেচনার বিষয়। এই বিষয়ে সকলেই একবাক্যে স্বীকার করিবেন বে, ইহা পুরুষের পক্ষে কঠিন, ইহা স্ত্রীভাতি ভিন্ন অন্ত লোকের পক্ষে অসম্ভব। সেই সময়ে, সেই ২য়সে, মা থাকেন না সকে। তথন ত্রা হইরা থাকে মারের পুরুষ সম্ভান—স্থামীর জীবনের সঙ্গী। ভাচাকেই দেখিতে হয় স্বামীর জীবনের সুধ, লইতে হয় স্বামীর কট্টের অংশ, করিতে হয় স্বামীর ঔরব-জাত সম্ভানের শুশ্রুষা। বৌকার ভালের মত বাধিতে হয় ভাহার লক্ষা। মায়ের হাত হইতে লইরা বার স্ত্রী ভাঁহার পুত্রের সমস্ত ভার। এই স্ত্রী-জীবন বে কত কঠেব, তাহা সেই স্ত্রী-জাভিই কেবল বুঝে। মা ভাঁহার পুত্র সম্ভানকে গড়িয়া থাকেন, বিশ্ব স্ত্রী তাঁহাকে সম্পূর্ণ রূপ विश्वा थारकन। সেই অভাই বিবাহিত পুত্র সম্ভানের নামের সক্তে থাকে না মারের নাম, থাকে তাঁহার স্ত্রীর নাম। ইহা আভিকার নর, পুরাণেও পাওরা বায় ইহার সাক্ষ্য। শিবের নাম উচ্চারণ করিতে মুখে খালে পার্বভীর নাম, যুগিষ্ঠীর-ভীমার্ক্তনের নামের সঙ্গে ঘনিষ্ঠ ভাবে বহিয়াছে তাঁহাদের স্ত্রী ক্রৌপদীর নাম, বামাবভারের ইতিহাসের প্রসিদ্ধ শীবনী ব্যাখ্যা বৃহিরাছে সীভালেবীর! পরমপুরুষ রামকুষ্ণদেবের শ্রীমা সারদা (मर्वी, महाचा शास्त्रीय कीवनीय त्यार्थ कश्य विश्वादक कछवी वांत्रे शाबीर कीरन । एषु अप्तर्भ नम्न, शृथितीर नर्सेखरे वहे वक्रें ধারা, জীবনের কর্ম ছিসাবে, ধর্ম হিসাবে, পুরুষের নামের সঙ্গে বিশেব ভাবে জড়িত থাকে তাঁহার স্ত্রীর জীবন। ইতিহাসের পাতা পড়িলে পাওয়া বার ইহার জনেক দৃষ্টান্ত। মারের নামের চাহিতে ত্তীর নামই পরিস্ফৃটিত হইরা থাকে বেশীর ভাগে। পুরুষ হিসাবে ভাষার স্ত্রীর বিষয়ে একাঞ্ডা দেখাইয়াছেন ছুইজন, দিল্লীর মোগল বাদশাহ জাহাঙ্গীর শাহ আর ইংলপ্রেশ্বর সম্রাট আৰ্ট্রম এড্ওরার্ড। স্ত্রী-জীবনের ইভিহাসে থাকিবে এই চুই महात्मद जाएनं हिद्यवनीय।

মেরে ও স্ত্রী-জীবনের সার কি ? সংসাবের উপর সন্থতা কোথার ? ভাহার নিজের অভিত হিসাবে কি আছে ? মারের বাড়ীতে মারের আদর, স্থামীর বরে স্থামীর কর্ম ও ধর্ম কার্ব্যের সহায়তা। তাহার নিজের বলিরা থাকে কেবল নাম, স্থামীর নামের সঙ্গে ত্রীর নাম, কর্ত্ব্য হর স্থামীর জীবনের সঙ্গে নিজের জীবনের মিলন রাখা। স্থামীর ব্বের স্থা-স্থ্রিধার আলা ও

ক্ষতামূৰারী বাবছা করাও সাহাব্য করা, খামীর স্ভানদের লালন-পালন করা, খামীর মৃত্যু পর্বান্ত সেবা ভশ্রবা করা। স্ত্রীর নিজের জীবনের অভিছ থাকে ঐ সব কাজের মধ্যে, নিজের হুখ আনন্দ সব ছাড়িরা দের খামীর জীবনের মধ্যে, ত্রীর নাম পাওয়া বার খামীর জীবনের মাধ্যমে।

পুৰুষ সপ্তানের কান্ধে কাছে তাঁহার মারের বা তাঁহার
ন্ত্রী-জীবনের মূল্য কতটুকু, ধর্ম ও কর্মজীবনে পুন্ধব বা ন্ত্রীর মূল্য
কতটুকু, এই ছই জীবনীর পৃথক ভাবে মুক্ত ভাবে আর কেচ
ঘনিষ্ঠতার ভাবে কেহ আছে কি না, ভাহা লিখিত বিষয়গুলি
হইতেই স্পষ্ট ভাবে বুঝা বাইতে পারে বে, কাহার শক্তি কতটুকু—
পুক্রবের না ন্ত্রীর ?

একটি নির্জ্জলা ভ্রমণ কাহিনী ইন্দুমতী ভট্টাচার্য্য

ক্রিপের উদ্ধেশ্য ভাষমগুহারবারের পথে। তু'দিকে উন্মৃত্য প্রান্তর, সবুজ জার সবুজ— দ্বের ধুমারমান বনরাজিতে বিলীন হরেছে নীল জাকাশের কোলে। ধানকাটা সারা হরে গেছে— ধড়ের গোড়াগুলো থালি কাল্ডের দস্যভার নিক্ষণ ভাবে জর্জরিত হয়ে জপহত-সর্বস্থ হওয়ার লজ্জার কিংকর্ভব্যবিমৃচ হয়ে পড়ে জাছে মাঠে। মাঝে মাঝে তু'টো-একটা কড়াইভ'টি জার থেঁসারীর ক্ষেত—থেলাঘরের যেন নয়নবিন্ধুগ্রুকর সবুজ জার চমৎকার নীল জথবা লাদা রংএব ছোট জখচ অপূর্ব্ব ফুল বুকে নিরে!

দ্বের নারকেল গাছপ্রলো বেন বেড়া দিবে রেখেছে এই সব দেশার মাঠকে, চুকতে দেবে না কাউকে। তাই মাধা তুলে আছে আকাশে অটপ্রহ্ নাড়ছে, মাধা অন্বর্ত, না, না, না, প্রবেশ নিবেধ, নিবেধ নিবেধ।

পাকা বান্তার বাঁ হাতে সক রেলের লাইন পথের সক্ষে পালা

দিরে চলেছেই চলেছে। মাঝে মাঝে ইষ্টিশান—সবই বেন
ধেলাঘরের। আর ডানহাতে রান্তার সক্ষে পালা রেখে চলেছে
সক্ষ থাল একটানা ভিরতিরিরে টলটলে জল নিয়ে। ছ'-একথানা
শালতি বাঁধা রয়েছে এথানে-ওথানে।

মাবে মাঝে গ্রাম অর্থাৎ করেকটা চালাবাড়ীর সমষ্টি—চামীয়া সেই জনের ধারে গ্রাঁটি করে বাঁথা থড় আছড়ে ধান বার করছে। সোনারং-এর থড়ে গাদা আলো করে রেখেছে এক এক জায়গাকে। নিকোনো নিটোল উঠোনে ছেলে কোলে করে দাঁডিয়ে আছে চামী-বোঁ।

একটিমাত্র বাঁশ ফেলা পুলের ওপর দিরে করছে কেউ কেউ জানাগোণা বড় রাস্তার। ভারী স্থক্তর লাগে দেখতে—একটার পর একটা ছবি বেন, থালি ছবি। বাদের ভালবাসি ভাদের এনে দেখাতে ইছে করে, একা দেখে ভৃত্তি হর না মনটা কেমন কেমন করে। মাঝে মাঝে হাটা রাজ্যার বাবে, ভরিতরকারী জার ভাব—ভাবের বাজ্য বেন।

কথা ছিল ভারমগুহারবাবে গিরে হণ্ট করা হবে একেবারে কিছ বিধি বাম। একটা প্রামের কাছাকাছি এসে বাস বিগড়ে বসল। বাক্। তব্ সামনে প্রাম ব্যবহে একটা ভানহাভি। নেমে পঞ্চা গেল। তার দিকে বাঠ তার মাঠ, কেবল বাঠ। ঐ ছোট প্রামে চুকে ছারাবেরা ঐ শান্তির নীড়ে বাবার লোভ সামলাতে পারা গেল না। কিছ হার! বাঁশের পুল পেরোন হবে কেমন করে? বাঁশের পূলের কাছে সকলকে জড়ো হ'তে দেখে ঘর ছেড়ে বেরিরে এল একদল বৌ, গিল্লী, ছেলেমেরে। একটা কালো রং-এর গলার বৃত্ত রবাঁধা কুকুবও বেরিরে এলে এই জনধিকার প্রবেশোন্তত অদৃষ্টপূর্ব আধুনিকাদের দেখে তারস্বরে চীৎকার করতে লাগল।

একজন হাসিথুনী ব্বীর্সী এগিরে এসে বলল, এসো না মা, এসো। কি করে বাব ?

কেন ? এই পুল পেরিরে ?

ওবে বাবা, মরে বাব-সবাই চেঁচিয়ে উঠল একসঙ্গে।

কেন, ভর্টা কি ? এই তো আসবে সড্সড্ ক'রে, বলে এক
নিমেবে সে-ই সড্সড়িরে এপারে এসে হাজির হ'ল। তখন ত্র'-চার
জনের সাহস হল—হিল্ডোলা লিপার সকলের পারে—তাই হাতে
নিরে বাঁশে পা ঘরটে ঘরটে ত্র'-চার জন কার্ত্রেশে উৎরালোও
কোনরক্ষে। ওপারে বৌঝিরা তো হেসে অছিব—ছেলেমেরেগুলো
তো ত্রো-ছ্রো স্চক হাততালিই দিতে আরম্ভ করল।
বীররস জাগলো তখন সকলের মনেই, স্বাই তৎপর হ'ল
তখন বংশবিহারে।

স্থ্যমা মজা করক সব চেরে বেশী—আছেক পথ গিরে আর এগোতেও পারে না, পেছোতেও না—রীতিমত কারা স্থক—বাপাৎ ক'বে ওর হাতের কাচবসানো লক্ষোই ল্লিপার পড়ে গেল জলে।— চার, হার, হার করে ও-ও বৃঝি পড়ে এইবার! সকলের বৃক্ চিপ্, চিপ্, করতে লেগেছে।

ওপারের একটি বছর দশেকের মেয়ে এসে উদ্ধার করল ওকে— হাত ধ'রে ধ'রে নিয়ে গিয়ে।

বাবাঃ, বাঁশের পূল পেরোন এত ! এ যে মহা প্রস্থানের পথ বে বাবাঃ!

ওপারের ওরা বহু সমাদর করল। এসো মা, বসো মা—এই বে চিঁড়ে কোটা হ'চ্ছে, খাওসে—ছেলেদের ডেকে ডাব চিরে দিই মা, বোসো—ইভ্যাদি অনর্গল ব'লে। কি পরিভার পরিচ্ছন্ন নিকোন উঠোন, ঘ্রদোর, চেঁকিশাল!

দড়ির দোলনার শুইরে বাধা খোকা আব নিকোন উন্থনের পাড়ে কুণুলী পাকিরে শুরে থাকা বেড়ালটা পর্যন্ত যেন আনন্দের উৎস এক একটি। উঠোনে বিছোন ধান শুকুছে—দাওরার উঁচু চৌকিতে বলে তিনমাধা এক হরে যাওয়া এক বৃদ্ধ—নলিতে, কে গো। বলে সাড়া নিল।

একটা বিবাটকার ভেঁতুল গাছ বুঁকে পড়ে পাহারাওলার মত দৃষ্টিতে বেন বাড়ীটার অভিসদ্ধি দেধবার অভ উন্মূধ হয়ে আছে— তাই বাড়ীর এক পাশটা কি ছারাশীতল।

বসৰ বসৰ কৰা হচ্ছে এমন সময় ছাইভাৰ তাক দিল আমাদের, এখনই বেতে হবে—কাজেই সেই সহাদৰ আতিথেৰতাৰ সুৰোগ গ্ৰহণে পূৰ্ণজ্বেদ কেলে উঠতে হ'ল—ও মা, সে কি কথা মা, চললে অফুণি ?

় ^{হা}। সাসৰ সাবাৰ—সাবাৰ সাসৰ বলে বেৰোন হল। অবসাৰ ভিজে ভ্যাৰভেৰে *মূ*লুবাল জুতো একটি ছেলে উদ্ধাৰ করে দিয়েছে ইতিমধ্যে। এবার ওরা একটু দূরে একটা 'আনারাসে' পার হবার পূলে নিরে পেল আমাদের—ভাতে ভিন্টে বাঁশ আছে—এখান দিয়ে মাল বার কি না তাই এটা এত ১৬জা, বলল গিল্লী।

বাবা! এত চওড়া! পুল পার হতেও আমাদের পৌর মাদে গারে বাম বেরোল।

আবার বাত্রা। বেলা তথন অনেক। আবার সেই মোছের অঞ্চন মাথিরে দেওবা দিগস্তবিসারী মাঠ আর মাঠ ত্'দিকে—আর মারে মারে প্রাম—দৃষ্টিস্থকর প্রসন্তমার।

কথা হল বে এবাৰ বে হাটটা পাওৱা বাবে সেথানে থেমে একটু চা-টা থাবার চেষ্টা দেখা বাবে। কাক্সেই—সামনে ভান হাতি থালের থাবে একটা চালা—একটা সাইনবোর্ড কাত মেরে রয়েছে, ভার উপর কি বেন লেখাও বয়েছে ভাতে।

এতগুলি জীব নিয়ে বাদকে ধামতে দেখে অনেকেরই দৃষ্টি পড়ল এদিকে—ও মা! ছ' মিনিটের মধ্যে বে দেই চালাধানার চালে উঠল একটা লোক! নীচে দাঁড়াল আর একজন—সাইনবোর্ডধানা ঠিক করে বসিয়ে দেওয়া হ'ল—আদর্শ হিন্দু হোটেল—অনেক থাদেরের সমাগম সম্ভাবনার মুখ ভঁজড়ে পড়ে ধাকা সাইনবোর্ডের এই কণাল ফেরা।

বীণাদি' তথন গল স্থক করলেন—এটা কি রকম হোটেল জানেন ?

কি বকম ? কি বকম ? সমন্বরে বলে উঠল স্বাই।

তথন বীণাদি' আরম্ভ করলেন — ঐতো একথানা চালাওলা বর দেখছেন, একটা ঢালা বিছানা ওতে পাতা আছে নির্ধাৎ—ভাভে একটা কোল-বালিশের মত লখা মাধার বালিশ। বে হোটেলে বাবে, ম্যানেজার জিজ্ঞাসা করবে—কাত্ না চিৎ ?

সে আবার কি? আমরা বিজ্ঞাসা করি।

কাত মানে কাত হ'রে শোবে, না চিৎ মানে চিৎ হ'রে শোবে। এ কথা জিজ্ঞাসা করার অর্থ ?

স্থানাভাব। কাৎ হ'রে শুলে এক আনা ভাড়া, চিং হ'রে শুলে গুই আনা।

णानत्य कि क'त्त्र, त्क कथन हिए इस्ह् ?

সারা রাত ম্যানেজার কাম পাহারাদার বসে থাকবে আর চেঁচাবে—২নং চিং—৮, ১০নং চিং—৮, এই রক্ম আর কি—

হো-হো ক'বে হাসতে হাসতে নামা হ'ল বাস থেকে। থালটা আগাগোড়া গেছে, এখানে ওপারে বাবার জন্ম বাঁধানো পাকা সাঁকো একটা। সাঁকোর নপবেই নানান নিধি, ডাব ভো আছেই—ভেডৱে চারের লোকান তুটো-চারটে, কিছু বারা করছে চা আর বাতে ক'বে করছে, ভা দেখেই চা-ভেটা গলাভেই মেবে ফেলতে হ'ল।

এথানেও চিঁড়ে কোটা হচ্ছে কিছ কলে—হাঁ-হাঁ করে আঞ্চন অসছে আর পাহাড় পাহাড় চিঁড়ে কোটা হ'রে বাচ্ছে নিমেবে— আমানের এদিকে কথনও দেখা বার না এ-সব, বানের রাজত্বে ভিন্ন ব্যবস্থা।

একটু পরে জাবার বাসে ওঠা। বিশ্ব গাড়ীবে টার্ট নের না জার—কি মুখিল।

जिक जरम तान धराव। शांटेव **जिक, ठाविनिटक रा**त्रव—

নানা মন্তব্যের পর সাব্যন্ত হ'ল বধন এটা বাস নর গরুর গাড়ী, তথন অপমান আর সইতে না পেরেই বোধ করি অচল বাস সচল হ'বে উঠল।

ভাষমগুহাববাবে বধন পৌছান গেল, তথন পাঁচটা ।—নামলাম।
সামনে গলাব সে কি কপ! সেই প্রলংক্তরী গলাব দিকে
ভাকালে ভন্ন করে—আবাব বিশ্বরে মন ভব হ'বে বার—কভ অল,
কভ জল! আর বিশ্বপ্রাসী কুধা নিবে বেন ভীরভূমি গোগ্রাসে
গিলে থেবে চলেছে গলা, সর্বনাশী বাক্ষমী! মনে হয়, সব গিলে
থাবে, সব!

কত বংদ্ধ, কত অর্থবাবে বাঁধবার সংবত করবার চেঠা করা হয়েছিল পাগলীকে—কিন্তু সে অটহাসি হেসে টুকরো টুকরো করে অবহেলে ধুলোর লুটিয়ে দিয়েছে সে বাঁধন—তাবৈ তাবৈ করে নাচছে আবার!

ওই দ্ব দিগন্তে অন্ত বাচ্ছে পূর্ব্য, লাল টুকটুকে, বর্ণনা করা ধার না এমন বং নিরে—ওপার থেকে এপার পর্বান্ত সিঁদ্র ঢালা একটা হিলিবিলি কাটা পথ—বেন স্বর্গে বাবার চেইথেলান সিঁড়ি।

এমনি অন্তুত, এমনি ভাষার অতীত, এমনি আকাজ্যার বল্ধ— কিন্তু দুব থেকে উপভোগ্য, কাছে বাবার নামে ভর!

কিন্ত অন্ধকার হয়ে আসছে এদিকে—কাকণীপ চলুন, কাকণীপ চলুন, সকলে পীড়াপীড়ি করলেও খামধেরালী বাসের ওপর নির্ভর করে তা চলে না কিছুতেই, অতএব ফেরা।

শীতের সন্ধা, দেখকে না দেখতে জন্ধকার কথন এসে যেন বিবে কেলল মাঠ, পথ, চারিধার—শুধু দ্বের প্রামে প্রামে একটা আঘটা টিমটিমে আলো আর কাছে দ্বে জোনাকীর মিটমিটানি ছাড়া জন্ধার, সব জন্ধকার!

একটা বিবাট গাছতলার এসে খ্যাঁ—চ করে থেমে পড়ল বাস।
—তবু গাছতলার!

ভারপর আর চলে না—ছাইভার, মিল্রী গলদ্বর্ম, তবু চলে না— কিছুতেই না—এদিকে রাত খন হয়ে আসছে—এক খণ্টা, ছুঘ্টা কেটে চলল, থাস চলে না।

লোকালর অনেক দ্বে—এবান বেকে হেঁটে আশ্রর থোঁলাও পাগলামী। পাবলিক বাদ বাছে মাঝে মাঝে। তাইতে চড়ে বাফুইপুরে বেতে পারা বাবে এবান বেকে ২১৷২২ মাইল—তারপর বাদ বদলে বেহালা, দেবান বেকে এসপ্লানেড, তারপর গস্তব্যস্থল। নানা ভক্তকট—আমাদের বাদে জিনিবপত্রও রয়েছে—তার ওপর এই তেপাস্থারের মাঠে ডাইভার আর মিন্ত্রী বেচারীকে ফেলে বাভরা দেও বেন কেমন। তাই বতক্ষণ খাদ ভক্তকণ আশ করে বদে বাক্তে বাক্তে রাভ সাড়ে ন'টা।

লাষ্ট্ৰ পাবলিক বাসও চলে গেল বোধ হয়। বাড়ীতে কি ভাবনা সব ভাববে—আর বাতে বে আর কেরা বাবে না, তাও ছিবনিশ্চর— ভখন নাকে কালা আরম্ভ হল প্রোর সবাইকার।

বাতে না ফিবলে কার বাড়ীর লোক বে কি করবে—ভাবনার কার বাড়ীর লোক হাটকেল পর্যান্ত করবে, তারও ফিরিন্তি খনতে খনতে কান ঝালা-পালা আর বলতে বলতে মুখ ব্যথা করতে লাগল।

পূবের টিম্টিম্ আলোভলো সব নিক্তে লাগল একে একে।

অচিরেই হয়ত সবই নিবৰে গুরু করাল মুখ ব্যাদন ক'বে ছ দিন থেকে এগিরে আসবে অন্ধকার আবি গুরু অঞ্জার।

আশে-পাশে ছ'-চার জন করে লোক জমেছে। কৌত্হলী হ'রে দেখছে, উকি-কৃকি মারছে। গুন্ গুন্ করছে। এইটা টচ্চের আলো ফেলতে ফেলতে মাঠ পেরিয়ে ছটো লোক এল, বমদৃত।

বাদের গারে গয়না ছিল তাঁরা সব খুলে রুমানে বেঁধে বুকের মধ্যে রাখল। গয়না পরার সথ কেন হ'য়েছিল এই বিকার দিতে দিতে।

কি করা বাব ? কোপার বাওয়া বার ?

বাণ্দি জিল্লাসা করকেন, ঐ লোকদেরই অনেক ইতন্তত: করে (সম্বোধনটা কি করবেন অনেক ভেবে ভেবে ঠিক করে ইলিশ মাছের নোকোর মাঝিদের বা ব'লে সম্বোধন করা হয়, রাণ্দি বেছে নিলেন সেই সম্বোধনই) কল্তা ও কল্তা, এখানে বাব্দের বাড়ী আছে? (ভেবেছিলেন রাণ্দি বখন কোন উপাঠেই হবে না তখন অল্পতঃ কোন ভক্তলাকের বাড়ী গিয়ে রাডটুকুর মত আশ্রম নেবেন)।

ना ।

কত দূরে আছে ?

এখান থেকে হু কোশ, আড়াই কোল।

দমে গেলেন রাণুদি, বিজ্ঞাস। করলেন ভাবার।

কাছাকাছি গ্রামের নাম কি ?

যোৱার ঠেগ।

কাণুদি, চুপ। অক্স সকলের অভিযোগ প্রবল হ'রে উঠেছে এবার। কেন পাবলিক বাস ধরা হোল না আগে।

হার বে! ধারাপই যদি হ'ল বাস সেই আদর্শ হিন্দু হোটেলের কাছেই কেন হ'ক: না বীণাদি'র সেই কাত্ /০ আর চিং ৬'০ দিয়েও না হয় কোল ব:লিশে মাথা গোঁজা বেত। অথবা সেই অতিনিধ্বসল গিন্নীর বাড়ীর সামনেই বা কেন হল না—এই ধপ্লবে পড়ার ধ্বকে বে বাশের পুল পেরোন চের ভাল ছিল।

হার হার করতে করতে বাজল' সাজে দলটা। বাইবের অন্ধকার আবা কোত্হলী সেই কতাদের কেন্দ্র ব'বে কত উভট ভরংকর কলনা যে পাগল ক'বে দিতে লাগল মনকে।

আর আশা নেই—কিচ্ছু নেই—বড় করে নি:শাস পড়ল বুক থেকে বাণুদিব।

কিছ হয়ত সকলের মনের আকুল প্রার্থনায়ই একথানা বাদ আসতে দেখা গেল-স্যারেক্তে ফিরছে।

বেঁধে, বেঁধে, বেঁধে—সকলে ছিটকে পড়ে বাস থেকে গাঁড়ান হ'ল রাস্তায়—বলি না থামে! যদি না থামে!

ডাইভার হক্চকিরেই থামাল নিশ্চয়—ডাকাত পড়ল নাকি!
আমাদের জিনিৰণত্রের কথা মিন্ত্রী আর ডাইভারকে বড়ের বেগে
বুৰিবে দিয়ে দয়ামারা আর না ক'বে ডাবল কেয়ার দিলল জার্দি
ক'বে বাক্টপুর।

সেধানেও সাভিদ বন্ধ হ'মে গেছে—তবে ঐ ভাগ্যিস গ্যাবেক্তে করার নির্মটা আছে—তাই বাত্রা বেহালা—আবার সেধান ধেকে এসপ্লানেড—কিন্তু তারপর ? বাড়ী ক্ষেরবার সাই ট্রেণও তো হাভড়া ছেড়ে ব্যাপ্তেল পৌছে বাসি হ'বে পেছে ! একলা লোকলা হ'লে মা হয় আছীয়-মন্তনের বাড়ী ওঠা হায়, এত ব্যক্তিরে আপ্রতির



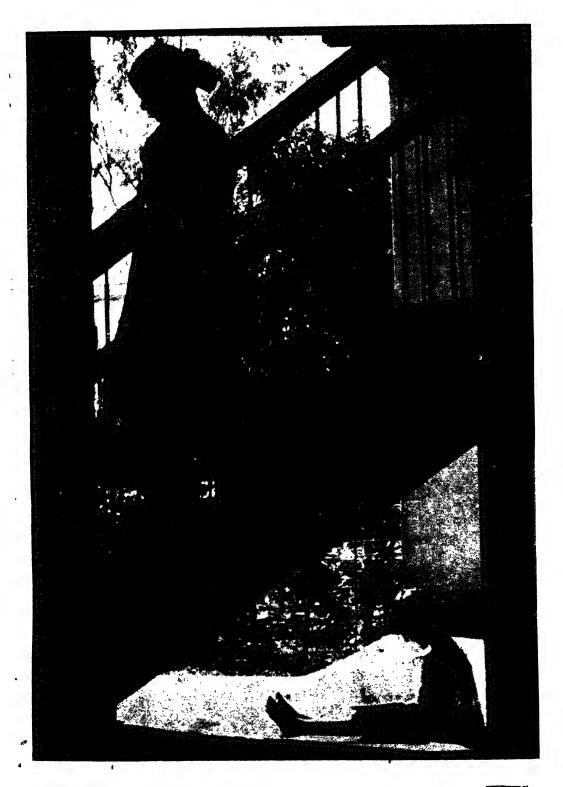


দিলওয়ারা **মৃতি** —অসিত বাব



্ **ফড়েসাগর লেক (রাজস্থান**) —দিলীপকুমার ক্রোণাগ্যার





সাজসজ্জা —মীরেণ অধিকারী





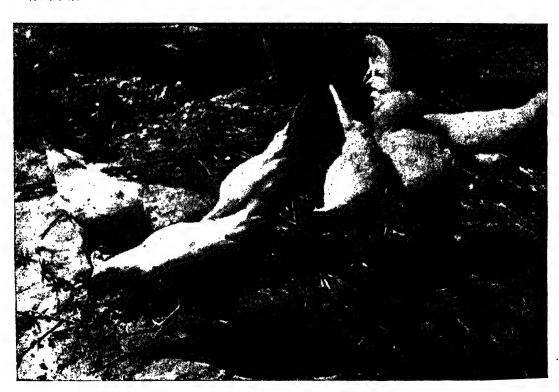
থসক্রবাপ (এলাহাবাদ) —ক্মলেশ দ



ভিক্টোরিয়া —অমিতকুমার সরকার

খাত্যের লোভে

—বহু বন্দ্যোপাধ্যায়



:

হ'লেও। কিছ এই সংসোপাস নিরে। যতই বলা হোক থাব নাশোব না—ওপু তোমাদের বাইরের হুরটাতেই বলে বলে রাডটুক্
পূইরে নেব—ভারা কি তা ওনবে !—কোলকাতা সহরে প্রসা
ফেগলে যত রাভিরই হোক থাবার হয়ত মিলবে কিছ শোওরা ?
এই প্রচণ্ড শীতের বাভিরে ! একটা মাত্র লোক থলেই বা ওতে
দেবার বাড়তি বিছান। থাকে ক'টা বাড়ীতে ! কিছ এসপ্রানেডে এক
দঙ্গল মহিলা দাঁড়িরে থাকা তো যার না । প্রথমে ঠিক হ'ল
হাওড়া ষ্টেশনের ওরেটিং ক্লমেই কাটিরে দেওয়া হবে বাত—কিছ
বড় দৃষ্টিকটু লাগে দেটা—

বাণ্দি বললেন। চলুন বউবাঞ্চাবে আমাদের বাছে— দেখানে বলে-বসেই না হয় কাটিয়ে দেব রাডটা। তবু একটা আশ্রয়। কিন্তু ব্যাক্ষের দারোরান তো চেনে না আমাদের। খুলবে কেন গেট অত রাত্তিরে? কথাটা যুক্তিযুক্ত বটে।

তবু চেষ্টা—মার সাড়ে বারটা তো বেন্দ্রে পেছে, আর রাত কতটুকুই বা—না যদি গেট খোলে দাবোরান তথন দেখা বাবে, বলে আবার পাড়ি সেই বউবালারে।

যা ভাষা গেছে তাই---নেপাদী দাবোয়ান হতভন্ন-তালাবন্ধ গেটের ওপার থেকে সে কোন কথার কান দেবে না।

রাণুদি তথন ম্যানেজারকে ফোন করে অনুমতি নিজে বললেন দারোয়ানকে। সে রাজী হয়ে ভেতরে গেল।

ভাগ্যক্রমে বাঁশরী বলে একজন কর্মচারী কার্যাগতিকে সেদিন বাড়ী বেতে না পেয়ে তেততায় শুয়েছিলেন। দারোয়ান বুদ্ধি করে নিয়ে এল তাঁকে। সব শুনে গোট খোলালেন ভিনি।

ব্যাক্ষের পথের ওপরের বড় হল খরটা হ'ল ফার্নিচারের শো-ক্ষম।

বাতের মত ওধানেই থাকতে হবে। করোরই আর পাঁড়াবার মত ক্ষমতা ছিল না—দারোয়ানের থাটিরায়, টুলে, সিঁড়িতে বে বেধানে পেয়েছে বলে পড়েছে ইতিমধ্যে।

শো-ক্রমের ভেত্তবে আবার একজন দরজা বন্ধ করে পাহারা দিছে—কুন্তকর্ণ। দরজা ধান্ধিয়ে ধান্ধিরে টেচিয়ে টেচিয়ে গলা ভেঙ্গে বাবার বোগাড় বাঁশরীর আর দারোয়ানের।

খনস্তকাল পরে জাগলেন খবশেষে মুচুকন্দ।

তথন আর কথাবার্তা নর--সেই স্বত্নস্চিত্র চক্চকে নর্ন-বিষ্থাকর বহু মূল্যবান সোকার আর গদী পাতা খাটে ওঠা বিনা বাকাবারে। বাঁশনীর আতিথেরতার তুলনা হয় না অভ রাত্তেও। চা-থাবারের ব্যবস্থা করলেন সঙ্গে সঙ্গে চেনা দোকানের দোকানদারকে জাসিরে।

তারপর বাকী বাত! শো-ক্রমের নিশ্চল আসবাবশুলোর ওপর সচল সচল মন্ডেল হরে। কাচের দরজাব কাছে দাঁড়িয়ে নিশাচব ছ-চাব জন—পূলিশ ও—চয়ত বিশ্বরে দেখছিল দাঁড়িয়ে। ছচোখের পাতা একও করিনি আমবা। এই জভিনব জভিজ্ঞতা, জভাবনীর ভাবে বাত্রি বাপন—বাড়ীর সকলের ছন্চিস্তার কথা ভেবে তা সক্লব চিল্লা।

রাণ্দি' একেবারে সামনেবই সোফাষ্টাতে গুরেছিলেন—রান্তার ওপারে এক অভিপরিচিতা ফিন্মষ্টারের বিবাটকার ছবি আলোর নিচেই। ভাবছিলেন বার ছবি সে কি স্বপ্নেও ভাবছে ভার ছবির দিকে পলক না ফেলে তাকিয়ে রাভ কাটাছে কেউ! রাণ্দি' তাকিয়েছিলেন বটে কিছ ভাবছিলেন অনেক কথা। ভাবছিলেন উচ্চশিক্ষতা, অতি আধুনিকা, রোজগেরে হলেও মেরেরা মেরেই, বেপরোয়া হওয়ার উপায় নেই, হওয়া বায় না—নানা ভুজুর ভরে ভটত্ত হরে থাকতে হর সর্বাদা, বাড়ীতে বকুনি থাওয়ার ভরেই ভোকাঠ হরে রয়েছে ক'জন!

স্বাই চ্পচাপ। মাঝে মাঝে একজন হয়ত বলছে—কি লুমোডে পাবে বাবা সব, এব মব্যেও লুমুছে ? ভখন স্বাইকার একসঞ্জে সারা মাধার আকাশ ভেঙে পভেছে, এ অবস্থার লুমুছে এ অপবাদ সন্থ করতে সকলেই নারাজ। অমনি আবার এর ওর নাম ধরে ডাকাডাকি হাসি, খানিকটা গল একটু; আর বাণ্দি'কে ক্ষেপানো ও কতা ও কতা, বাবুদের বাড়ী আছে এখানে ? এ গ্রামের নাম কি কতা ? মোলার ঠেন। মোলার ঠেন—হাসি আর হাসি এখন।

ভোর চারটের আবার বাঁশরী। পত্রপাঠ হারিসন রোভে সিরে ট্রাম ধরে হাওড়া টেশন।

তারপর সারা টেশ কার কি মনে হচ্ছিল তার ইতিহাস আর কার বাড়ী সিরে কি হবে, তারই ভাবনা আর ভর !

কবিবন্ধ্ জিজ্ঞানা করলেন রাগ্দি'কে—কাকণীপে কি দেখলেন ? কাক ? না থীণ ?

ष्टे-रे छेखव मिल्नन वान्मि ।

वर्षाद १

व्यर्थाः मारत वृतनारनाव वानका वात व्यर्थ त्रमूख अकरू बीन।

ভুল কা**ক্লী** চট্টোপাধ্যায়

হরতো ভূল করেছি আমি,
হরতো একই ভূগ ভূমিও করেছ।
সেই ভূল বদি সভাই ভূল হর
তা'হলে, ববি শন্তী ভারা ভূগ।
ভূগ 'বউ কথা কও' পাশির গান,
সাগরের শ্রেডি ভটিনীর অনুবাগও
ভূস, আর ভূমি আমি, এ জীবন-বৌধন সবই ভূল।

বিদ্ধ ভূল নয় হাণয়ের পুঞ্চীত্র আবেগ
চোধের কোণে ভীক স্থপের এলোমেলো মেদ।
ভূল নয়, বিহাতের চঞ্চল প্রেকণা,
হবিণীর কালো চোধে মৃত্যুহীন জন্মের উৎসব
বিনিক্স বসন্ত রজনীতে।
গুগো ভূল নয়,—
এই জীবন-বৌধন ভূল নয়।



[প্ৰ-প্ৰকাশিতের পর] মনোজ বস্থ

এগারো

হৃদিতলার গাঙের উপর হোটেল। টাপুরেঘাটা অল্পুর দেখান থেকে। জগা বলাই ও হর বড় ই এইখানে উঠেছে। রেটটা ভিছু বেলি এই হোটেলে, জনপ্রতি এক সিকি এক এক বেলার। ভবে পেট চুক্তি। এবং তামাক ও মাধবার তেল ফ্রী। কোন থক্ষের রাত্রে থাক্তে চাইলে একটা মাত্রবও দেবে, সে বাবদ কিছু লাগবেনা।

বেটের কথা গুনে হর বড়ই আগু-পিছু করছিল। বলাই হাত ধরে টানে: এলো দিকি। মা বনবিবির আশীর্বাদ থাকে তো তিন জনের তিন সিকি নিরেও ওদের জিনে বেতে দেবো না। তিনটে পাতা করতে বলো ঠাকুর মশার। দেখা বাক।

বাষুন ঠাকুর মালিকের কাছে এই তথিব ব্যাপার বলে থাকবে কিছু। এর পরে দেখা গেল, খাওরার সময়টা খুদ ভিনি সামনের উপর দাঁড়িয়ে। বলাইর আরও রোধ চড়ে বার। ভাত দিয়ে ঠাকুর ভাল আনতে গেছে, ইভিমধ্যে মুণ সহবোগে সমস্তগুলো ভাভ সাপটে দিয়ে সে বলে আছে। বাটিতে ভাল ঢেলে দিয়ে আবার ভাত আনতে গেছে, বাটির ভাল চোঁও করে এক চুষুকে মেরে দিল। এক খদ্দের নিয়েই নাস্তানাবৃদ্ধ বাষুন ঠাকুর। মালিক রাগে গরগর করছে। বলে: থাঁড়ি-মুসুরি দশ পরসা সের হরে গেছে। আর ভাল পাবে না বাপু!

হর বলে, কোন হোটেলে তো এ নিয়ম নয়। ভাত আর ডাল নিরে কেউ ক্যাক্ষি করে না। খদ্দের সব ভেগে বাবে এমনধারা করলে।

হোটেলওরালা ভ্রান্ত করে বলে, তাদের তালে মাল থাকে
কচটুকু ? বড় জোর মালসাধানেক ডাল বাঁধে; আর বড়
গামলার ফানে-জলে গুলে রেখে দের। গামলার ফানে হাতা
করেক ডাল ঢেলে আছে। করে ঘুঁটে দের। বাস, হরে গেল। তারা
কি জন্ত দেবে না, অমন ডালে ধরচাটা কি ?

বলাই তাড়াডাড়ি বলে, বাকগে, ডাল কে চার ! ভাত হবে তো ? আর মূণ ? মূণ না হলেও চলবে, শুরু ভাতই সই।

ছ্ণ-ভাতই চলল। হোটেলওরালা চমৎকৃত হয়ে দেখছে। জন্মৰ আনন্দ ধৰে না। হী, বাহাছুৰ বলি বলাইকে। স্টেছাড়া বেট সম্বেও লোকটার চকু কপালে উঠে গেছে। হাসি চেপে জগা জিন্তানা কবে, জয়ন এক নজবে কি দেখেন মুলাই ?

লোকটা বলে, চোথে তো ওর বাইরেটা দেখছি। টিপে দেখতে ইচ্ছে করছে, চামড়ার নিচে বোধ হর এক কুচি ছাড়মান নেই—ভবুই খোল। তুলো ভরার আগে পাশবালিশের খোলের মতন।

গেই প্রলা দিনের পর থেকে হোটেলওরালা লোকটা আর আমন ঠার দাঁড়িয়ে থাকে না, বোরাফেরার মধ্যে এক একবার উঁকি দিয়ে বার। চোধ মেলে ব্যবসার ডাহা সর্বনাশ দেখতে ভর করে বোধ হয়।

থাওরার পরে পরসা মিটিরে নের, এবং পানের থিলি দের থক্ষেরদের। সেই সমর জিজ্ঞাসা করে, ক'দিন আছু আর ভোমরা ?

জগা ভাসমাঞ্বের মতো বলে, কাজ মিটলে তবে তো হাওয়ার কথা ! পনের বিশ দিন লাগবে। বেশিও লাগতে পারে। তর নেই, বে ক'দিন আছি, তোমার হোটেল ছেড়ে অন্ত কোনখানে নড়ছিনে।

আমি তো মূণ-ভাত থাওয়াছি, জন্ত সব হোটেলে দেদার ডাল দেয়, তবু বাবে না ? ঐ বসময় চক্ষোন্তির ওথানে বাও। বড় বড় মাছেব দাগা—

জগা বলে, উঁহ, তুমি বে মাহুব ভাল। তোমার ব্বের দাওরাটা আরও ভাল। ঠাণা হাওরা দের। তবে সুধ আছে।

সেই বাত্তে ভতে গিয়ে মাহব খুঁজে পার না। গেল কোবা ?

হোটেলওয়ালা বলে, দেখ কোন দিকে পড়ে আছে। বাভাবে হয় তো বা গাভের কোলে নিয়ে কেলেছে। কি করব, বাড়ভি মাত্র মানুহে ক'টা রাধতে পারে বলো ?

হর বড় ই তথন বলে, গুলোর উপর ওইবো না দাদা। বের করো মান্তর। আজকেই শেষ। সকালবেলা আমরাচলে বাছি।

ঠিক ? তুমি মুক্লবিৰ মাজুব—কথা দিছে কিছা। ছেঁণড়াঞ্জো কথন কি বলে, ওৱা বললে বিধাস করতাম না।

হ্যা, বলছি আমি। নিশ্চিত হয়ে মাছ্য বের করো দাদা! টোলক আত্ম বিকেনেই পাবার কথা। হয়ে উঠল না। ছাউনির কান্ধ রাতের মধ্যে শেব করে রাধ্বে, ভোরবেলা দিয়ে দেবে।

হোটেলওরালা বলে, পুরানো লোক ভূমি, ক্সনেক দিনের

ভাগবাসাবাসি। এ-রকম খদ্দের হোটেলে কোন আঞ্চেল এনে ভূললে বলা তো ?

ধাইরে দেখেছি নাকি ? হেসে উঠে হব অড্ই বলগ, আছে।, এবাবে কাউকে বধন সঙ্গে আনব, বাড়িতে নেমন্তর করে ধাইরে পুরুষ করব আগেভাগে।

বজ্ঞ হাওয়া হোটেলের পিছন দিককার দাওয়ায়। মাছরের উপর পড়ে আছে ভাই, নয়ভো মাছর সন্তিয় সন্তিয় উড়িয়ে নিয়ে ফেলভ। ক'টা রাভ পালাপালি ঝাটিয়ে গেল তিন জনে। জগা-বলাই জসাড় হয়ে খুমোয়। ছচ্ইয়ের মগজের ভিতর নানান মতলব— এক এক সময় জ্ববীর হয়ে ওঠে, চুপচাপ থাকতে পারে না, য়ৢমজ্জ জগা-বলাইর গা ঝাঁকিয়ে তাদের কাছে জ্বতীত জার ভবিব্যতের কথা শোনায়। বন কেটে বসতির ওক—এই তো ক-বছরের কথা। কী হয়ে গেল ভারপর দেখতে দেখতে। জারও হবে, শহর কলকাতা জমে উঠবে দেখা বাদা জ্কলের মধ্যে।

স্কালবেলা উঠে জগল্লাথ ছুটল ঢোলের দোকানে। প্রসা চুকিরে দিয়ে জিনিবটা ভগু নিরে আসা। বলে, ভোমরা বাটে চলে বাও। বদি একটু দেরি হবে বায় টাপুরে-মাঝিকে বলে করে রাথবি বলাই। নৌকো ছেজে না দেয়।

বাটে গিরে বদেছে বলাই। আছে বদে তো আছেই। এই আসছি বলে হর বড়ুই পথের পাশে এক দোকানে চুকে পড়ল। পাটি-মাহুরের দোকান। জগারও দেখা নেই। নড়ন ছাউনির পর ঢোলক কি রকমটা দাঁড়াল, পরধ করতে গিরে হরতো সে দোকানেই বোল তুলতে বলে গেছে। কিছু বিচিত্র নয়। কেউ বিদ ছ-চার বার বাহবা দেয়, বাস, হয়ে গেল আজকের মতন টাপুরে ধরা। দোকানের উপরেই গান-বাজনার আসর। জগাকে বিখাস নেই, জগা সব পারে।

ঘাটের উপরে এক দোকান। ভাল দোকান—বিভি বিলি-পান বাতাসা মুড়ির-মোয়া সমস্ত মেলে! দোকান চালাঘরে—কিছ লিটে মাটির উপরে নয়। ধানিকটা উঁচুতে বাঁল ও গরানের ছিটের মাচা; মাচার উপরে মালপত্র ও দোকানদার; উপরে ধড়ের চাল। কোটালের সময় গাঙের জল বেড়ে মাচার নিচে ছলছল করে। দোকানের সামনে যুঁটি পুঁতে চেরা-বাঁলের বেঞ্চি মতো করে রেখছে, জন পাচ-ছয় বসে আছে বেঞ্চিতে—বিভি খাছে, পান খাছে। টাপুরে-মৌকোর চড়ন্দার এরা সব এবং বলাইও বসেছে এই জায়গায়। নোকো ছাড়ো-ছাড়ো। উঠে পড়েছে বেশির ভাগ। এদেবও ডাকছে। বলাই একনজ্বরে চেয়ে পথেব দিকে। গোলা পথ—বাঁকচ্ব নেই। উর্বেপের বলে এগিয়েও দেখে এসেছে বারকরেক।

টাপুরে-নোকোর ভাড়া; দর্গাম করতে হর না। একেবারে ব্যারখোলা অবধি বাবে তো চার আনা। তবে ঠিক অর্থেক পথ কুমিব্যারি কিন্তু দশ প্রকা। তেলিগাঁতি এক আনা, গ্রনগাছি তিন আনা। গলুরে দাঁড়িয়ে এক জনে হাঁক পাড়ছে: ব্যারখোলা কুমিব্যারি গ্রনগাছি ছাড়ে নোকো, ছাড়ে-এ-এ-এ-

এবং ছেড়েও দিল টাপুরে। কাছি থুলে হাল-দাঁড় বেরে চাল গেল মাঝ-গাঙ অবধি। বেঞ্চির উপরের চড়ন্দারেরা নড়ে না— ডলভানি করছে, নডুন করে বিড়ি ধরাছে আবার। ইা, আসছে এইবার—বলাই ঠাহর করে দেখে, মানুষ্টা অগন্নাথ না হারে বার না। আসছে বাভাসের বেগে, দৌড়ানো বলা চলে। কাছাকাছি এলে দেখা বার, ঢোলক বলছে পিঠের দিকে—ঢোলকের আটোর মধ্যে চাদর গলিয়ে পৈতের মতন কাঁবের উপর আয় বগলের ভলা দিয়ে নিরে গেছে।

ছেড়ে গেল নাকি বে ?

বলাই বলে, নতুন বউ হয়ে পাল্ফি থেকে নামলে দেখছি । বা বললে, ভার বোলো না। লোকে হেলে খুন হবে।

বেকুব হরে সিরে জগাও হাসতে লাগল। তা বটে, পুরানো কারদা টাপুরেওরালাদের। ছাড়ছি বলে মুথে মুথে টেচালে চড়ন্দারে গা করে না। বাট থেকে সন্তিয় সন্তিয় ছেড়ে থানিকটা আন্ত-পিছু করতে হয়। তথনও এমন কিছু চাড় নেই, সে তো এই বুবতে পাবছ নোকার লোকগুলোর ধরণ দেখে।

গাঙেব দিকে তাকিরে জগা জবাক হল: এক-পো ভাঁটি নেমে গেল, এখনো চড়ক্ষার ডাকে ! বয়ারখোলা আজ পৌছতে হবে না, গরলগাছি কি কুমিরমারি অবধি বড় জোর। আর দেরি কিসের মাঝি ? ছাড় এবাবে।

ছইরের ভিতরের লোকগুলো কলরব করে ওঠে। মনের মডো কথা পেরেছে। ঠিক কথা, সত্যি কথা, ছাড়ো এখুনি। কেউ বাকি থাকে তো সে লোক কালকে বাবে। ছ-এক জনের জন্মে এত মায়ুব কষ্ট পাবে, সেটা হতে পাবে না।

মাঝি চেনে জগাকে। এ অঞ্চলের গান্তে থালে বাদের গতারাত, জগাকে চিনবে না এমন কে জাছে? চড়লারে চেঁচামেটি করছে, ঠেকিরে রাখা মুশকিল—জভা কেউ নর জগা এলে আবার ফোড়ন দিছে ভাব ভিতরে। রাগ করে বলে, দেরি তো ছোমাদের জান্ত জগা। তুমি এলে গেলে, ভোমাদের হব-ব্যাপারির এখনো পান্তা নেই। বাবে কেলে তাকে? ভাই চলো। ধ্বজি তুলে ফেল ভবে ছোঁড়া। দাঁড়ে চলে বা।

জগা বলাইকে বলে, খড় ইটা কোথা পড়ে বইল ? আমি ভাবছি, ব্যস্তবাগীশ মানুষ—নোকোর মধ্যে আগেভাগে গিয়ে বলে আছে।

বলাই বলে, আসছিলাম ছজনে। মাজ্বের দোকান দেখে খড় ই চুকে পড়ল। বলে, এগুতে লাগ, একটা শীতলপাটি নিরে বাজি।

পারে পারে তারা নদীর খোলে গিরে দীড়াল। জগা বলে, ছেড়ে দাও মাঝি, আব কাজ নেই। শীতলপাটি কিনতে গেছে— দোকানস্থয় সঙ্গা করে আনতেও তো এডফণ লাগে না।

এসব নিত্য নৈমিন্তিক ব্যাপার। নোকো ছাড্বার মূথে এ ধরনের কথাবার্তা হামেশাই হয়ে থাকে। শেষ মুখটার ধ্বন্ধি পূঁতে নোকোর কাছি তার সঙ্গে জড়িয়ে রাখে। রাগের বলে ধ্বন্ধি একবার বা তুলেই কেলন, প্রকণেই আবার পূঁতে দেয়। এক চড়ন্দারের স্তাড়া চার-চার আনার প্রসা ছেড়ে বার্যো সহক কথা নয়।

এমন সময় দেখা গেল, হয় বড়ুই বিভিন্ন দোকানের ধারে এসে গেছে। হাত উঁচু করেছে দেখান খেকে।

মাবি হাঁক দিছে: চলে এসো, চলে এসো— জগা তেড়ে ওঠে: কোথা ছিলে এতকণ তনি ?

हत्र शंभाष्टि। काँवित मैळनभाषि विविद्य दरन, मुख्ना

করলাম। আগে মনে ছিল না, দোকানের সামনে এসে হঠাৎ মনে পড়ে গেল।

জগা বলে, ওবে আমার লাটসাহেব ! বড্ড প্রসা হ্রেছে । নাতির অন্ধর্মানন দিয়ে উঠলে সেদিন, তার উপরে আবার এখন শীতবপাটি ! ওদের মধ্যে চলিত বিশেষণের হুটো-একটা প্রয়োগ করতে বাচ্ছিল । বলাই থবিতে জগার মুখে হাত চাপা দেয় : চুপ, চাবামি করবে না এখন । মুখ দিয়ে ভাল কথাবার্ডা বলো ।

নোকোর গলুয়ের একজন ভিতরের দিকে ইঙ্গিত করে চাপা গলার বলে, ভাল লোকেরা আছেন, চুপ চুপ—

কালা ভেঙে বাকী ক-জনে এবার উঠে পড়ল। বাইবে পা ফুলিবে বদেছে। নোকো বেশি জলের দিকে গেলে কালা ছাড়িয়ে ভবে পা জুলে নেবে। জন কুড়িক চড়ন্দার আগেলগৈ চড়ে বসে জাছে। একটা ছইবের নিচে অভগুলো মানুষ—দোরগোলে গাভে ভো তৃফান উঠবার কথা। কিছা কী ভাজ্জব, ধানে বসে আছে সকলে বেন। আখবা মানুষগুলোকে কেউ বৃথি খুন করে নোকোর উপর ফেলে দিবেছে। জ্যান্ত মানুষ—বিশেষ করে জোরান্যুবা বেগুলো আছে, এমনবারা চুপচাপ থাকে কেমন করে ? তামাক থাছে, তা-ও অতি সাবধানে। হঁকো টানার ফড়কড় আওরাজ বেন অভিশর কজ্জার ব্যাণার।

ভাল করে উঁকিঝুঁকি দিয়ে ব্যাপারটা মালুম হল জ্ঞগার। কাড়ালে ছটো মেরেমাত্র। ছটে। মাত্র মুশলের ভয়ে বাঘের দোসর এতওলো মরদ ঠাণ্ডা। ছই বা বলি কেন-একজনে ছোমটা क्टिंग खला पिरक पूर्व किरिया वरन चारह। विस्तापिनी-বিনি বউ-পাগন দাসের পরিবার বিনি বট কিছু নয়-মুশল হল অপরটি, চারু। কী সুন্দর গোলগাল পরিপৃষ্ট হয়েছে! কাপড়-চোপড়েও দিব্যি বাহার। জোয়ান পুরুষদের সামনে কমবন্ধসি মেন্দ্রের শব্দ্ধা করা ভো উচিত, তা সে-ই তো দেখি নাটার **মন্তন বড় বড় চোধ** ঘূরিয়ে এক নৌকো মান্ত্র্য জব্দ রেখেছে। টাপুরে-**নৌকোর মেয়েমাত্র্য চ**ড়ব্দারও যায়। কেনাবেচা করতে যায় **ফুলঙলার, আবা**র ভলাটের বউ-বিরা বাণের বাড়ি খতরবাড়ি ষাভারাভ করে। দরগা ও ঠাককনতলায় পুৰা কর্তে চলেছে, এমনও আছে। এরা সে দলের নয়—চেহারা এলাকশোশাক ও চালচলনে বোঝা বাচ্ছে আবাদ এলাকাবই নয় এরা। উত্তরের ভদ্র অঞ্চল **থেকে আসছে। আ**দম পুরুষেরাই—যার নেই মৃলধন সেই আলে বাদাবন। শৃক্ত হাতে এসে ভান্তে আন্তে জমিয়ে নেয়। কাঙালি চৌধুরি যেমন একদিন বনকবের বাবুদের চক্টোত্তিরাধুনি হয়ে এসেছিল। আশায় আশায় এসেছে ধেমন ঐ গগন, এবং গোপাল ভরবাঞ্জও বটে। পুরুবেরা আদে, কিছ বাইরের ভদ্র অঞ্চলের মেয়েলোক এই প্রথম বোধ হয়। তাই দেখে তাদের সামনে বাদার জোয়ানপুরুষেরা ভক্ত হবার ব্বস্ত উঠে পড়ে লেগেছে।

বিরক্তি ভবে জগা চঁইয়ের বাইবে বসে পড়ল। জাকাশ মেঘে ভরা, ফণে ফণে বৃষ্টি নামছে। বৃষ্টির জল ব্যবহার করে ভিজিরে দিয়ে গাঙের জলের উপর দিয়ে বনের মাধার উপর দিয়ে পালিয়ে বাচ্ছে। একবার এই হয়ে গেল, বাঁকটা না ঘুরতেই কের সেই কাঞা। ভা হোক, বৃষ্টিতে বারস্বার চান করবে তবু ভুইরের ভিতরেয় ঐ ভেড়ার পালের মধ্যে নর।

চলেছে, টাপুৰে-নেকা চলেছে। ছপ-ছপ দাঁড় পড়ে একটানা, মচমচ আওহাজ ওঠে দাঁড়ের বাশ-দড়িতে। অতল নি:শন্ধতার মধ্যে ঐ বা এক ধরনের আওয়াজ। জগা আর পারে না, কেপে গিরে বলে ওঠে, বাল্যি সব হরে গেল—ভোমাদের হল কি আজকে মারি? ভূত দেখেছ না বেলে-সিঁহুর খাইরে দিরেছে কেউ? (বেলে-সিঁহুর সঠিক জানিনে, খেলে নাকি মাছবের বাকশক্তি উপে বায় একেবারে)

মাঝি বলে, বক্বক করে হবে কি ? গরানগাছির খাল নিয়ে ভাবনা, শেষ-ভাটার একেবারে জল থাকছে না। কোমর ভর কালা।

দাঁড়িদের ক্ষৃতি দিছে: সাবাস ভাই। ভোর জোর এমনি মেরে দিরে ওঠ। কুমিরমারিতে জোরার করে দাও। নহতো সারা রাজের ভোগাজি।

আধার চুপচাপ। জগা তথন হর বজুইকে নিয়ে পড়েছে: তোমার জঙ্গে দেবি। মাছের পয়সার বজ্জ গ্রম—উঁ, শীতলপাটি বিনে মুম হয় না?

হর গলা বাড়িরে জবাব দের, পাটি আমার নয়। বড়দার।

জগা বলে, বটে! আমাদের কিছু বলে না, চুপি চুপি
ভোমার কাছে করমাস করল।

হুড়োহুড়ির মায়ুব তোমরা। ঠাণ্ডা মাথার দেখেণ্ডনে বাছগোছু করে কেনা পোবার ভোমাদের ? ধরো, এই একখানা পাটি পছুন্দ করভে বিশ্বানা অন্তত পেড়ে ফেললাম। শলা সক্ল-মোটা হালকা-ভারী আছে, বুয়ুনি খন-পাতলা আছে, আনক কিছু দেখে কিন্তে হয়। হু-হু, সোজা নয়।

বলাই বলে, ওসব কিছু নয়। বড়দার দজ্জা করেছে আমাদের বলজে। অড়ি অড়ি ঝালে নেমে ডুব দের, গ্রম কি রকম বুনতে পারো না? জল লোনা হোক বাই হোক পানকৌড়ির মতো ডুবুভেই হবে।

জগা বলে, আর সেই মানুষ, এদিকে দেখলি তো, বাড়ির চিঠি নাখুলে উন্ন দেয়। খুলে পড়লে মন পাছে নরম হয়ে গিরে কিছু পাঠাতে ইচ্ছে কয়ে। বড়দা বলে মাল কবি—কিছ এক এক সময় চামার বলতে ইচ্ছে করে।

হর বড়্ই ভাড়াতাড়ি চাপা দেয়: থাক থাক। ভদ্রগোকের মেয়েছেলেরা বাচ্ছে, অকথা-কুকথা বুবের আগায় জানবে না।

ভাল রে ভাল! মুধ থুললেই ত্রস্ত হয়ে ওঠে আন্ত সকলে। কোন বেধাপ্লা কথা কখন বেরিয়ে পড়ে!

দীর্থকণের এত রাস্তা তবে কি বোবা হরে কাটাতে হবে ? জগা তা পেরে উঠবে না, ভস্তুলোকের মেরেছেলেরা বা-ই বলুক। তথন দাঁড়িদের বলে, হাতে মুখে চালাও ভাই সব। দাঁড় মারো। গীত ধরো এ সঙ্গে একথানা—

চাপা গলায় ভর ধমক দিয়ে ওঠে: থামো। ওঁরা সব বাছেন, গীত আবার কি কল এর মধ্যে ?

বাঃ বে, ওঁরা বাচ্ছেন বলে মুখে তালাচাবি এঁটে থাকতে হবে ? আমার থারা পোবাবে না। তোমাদের সরম লাগে তো আমিই ধর্মি গান—

मिफिरमब छेरमन करव चार्वाव वरन, शान शाहरव ना छ।



লোরারকি করো আমার সঙ্গে। কাঁকা গাঙেক উপর একলা গলার জুত হবে না।

বাড় কাড করে গালে বাঁ-হাত চেপে ধরে আঁা-আঁ। করে জগা তান ধরল।

वनाहे कबूटे मित्र खें छ। (मग्र: ब्या:, कि हस्छ ?

কিছ করে ছেলে ফেলে জগা বলে, ওনতে পাছিল ন। ? পান— গান নয়, কানের ফুটোয় যুগুর মারা। কি ভাবছে বলো দিকিনি যেয়েছেলে। যাঁড়ের মতন না চেচিয়ে গানই ধরো তবে সভিয় নতিয়।

্জগা বলে, গানের ভুই কি জানিস বে ? গান হলেই বুঝি নাকি-কালা! নানান স্থবের গান আছে। আজকে এই টেচানো গানে আমার মন নিজে।

আরম্ভ করে দিল মার-মার কাট-কাট রবে, কানে তালা ধহিরে দেবার মতলব। কিছু দিখল আছে বিজ্ঞাটার—স্বর্টা এক সমর মোলারেম হরে উঠেছে, তাল-মাত্রাও উঁকি-ঝুঁকি দিছে গানের ভিতরে। প্রতিহিংসার তাব তেমন আর উগ্র নর। আবেশে এমন কি চোধও বুঁজে গিরেছে, হাতের চেটোর ধাবা দিছে নোকোর উপরে। ছইরের বেড়ার গারে চোলক, বলাই পা খবে খবে গিবে পেড়ে আনবার তালে আছে সেটা।

খনখনানি আওয়াক পেরে জগা চোখ মেলল। চাক ছইয়ের বাইবে চলে এসেছে। এসেছে সামনের উপর। খহন্তে শাসন করতে এলো নাকি? অভের কথার হল না তো ঐ পরিপুঠ হাতে জোর করে তার মুখ চেপে ধরে গান খামিয়ে দেবে?

গান আগনা-আগনি থেমে গেছে ততকণে। ভাজ্জন কাণ্ড!

অগরাথ বিখাসের সঙ্গে লাগতে এসেছে—বত বলবানই হোক—
বেটাছেলে নয়, মেয়ে একটা। পরক্ষণে আছের ভাবটা কেডে ফেলে
ভক্ত করবে আবার প্রবল কঠে—আগেভাগে মেয়েটাই বলে ওঠে,
থাসা হচ্ছিল—থামলেন কেন ?

আবো আশ্চর্য, আপনি-আপনি করে কথা! জগা বেন মাগ্রবান মাগ্র্য, থাতির দেখিরে তেমনি ভাবে বকছে। এ ভল্লাটে এ সব চলে না। হলে কি হবে, সঙ্গে করে নিরে এসেছে ভদ্র অঞ্চল থেকে। উৎকট লাগে জগার। নীর্দ্দ কঠে দে বলে, সানের এই খানটার আমি থেমে বাই।

সেকি গো? মাঝধানে থেমে পড়লে ভাল লাগবে কেন? আমার এই নিরম।

নগেনশনী নিবে চলেছে এদের। অথবা চাকুই অপর ছটিকে টেনে হিঁচড়ে বাদাবনে নিবে বাছে। নগেন ভাকে, চলে এসো চাকু, ওদিকে কি? ওদের সঙ্গে কি বচসা লাগিবছে।

চাক কানেও নিল না। অভিনানে কণ্ঠ একটু বুবি প্রথমে হরে বার! আমি না এলে ঠিক আপনি সারা করতেন। বেশ, বাদ্ধি আমি ভিতরে।

আমার গান সারা হয়ে গেছে।

চাক তর্ক করে, কক্ষণো হয়নি ! বা-তা বোঝালেই হবে ? বিনোদিনী অবাবে রাগ করে ওঠে। কি হচ্ছে চাক ? চলে আসৰি কিনা, তাই বল।

চাক বলে, একটা গোনার স্বভাবের মাসুব থাকে বউদি, লোকে বা বলে ঠিক ভার উল্টোটি করবে। নে ক্রিকার্ম্ব মান্ত্র ও হয়ে ভার বুথের দিকে ভাকিয়ে কোথাকার মেরে এসে উঠেন্তে, একটুও সভাচ নেই অগা হেন পুরুষকেও বুথের উপর ট্যাক-ট্যাক করে শুনিরে দের বলে, বেশ, তবে আমি বলছি গান আর গাইবেন না আপনি এখানে শেব।

গাবোই না তো !

এটা কি হল ? একমত হয়ে গেলাম বে তবে ! আমি এক কর্ব বলব, আর বাড় হেঁট করে তাই আপনি মেনে নেবেন ?

জগরাথ বলে, আমার উন্টোপাণ্টা বীত। লোকের কথা কথ্নে তনি, কথনো তনি নে। এবারণা তনব।

বিনি বউ আবাৰ ডাকে, ওবে চাকু, চলে আর— বাছি বউদি! পানটা পুরো শুনে তবে বাবো।

কিছ গান আৰু হল না কিছুতে। চাকও নাছোড্বালা, গা না তনে নড়বে না। শাড়ি সামলে আসন-পিড়ি হয়ে বসে গে সামনে। বসেই বইল। থাকো বসে, বয়ে গেল। সারা বেলান্ড ব থাকো না, কি হয়েছে!

চাক বাগল অবশেষে: বজ্ঞ বাচ্ছেতাই মাছৰ আপনি না গাইলেন তো বয়ে গেল। মেঠো গান বই তো নয়। এর চে ভোলো ভালো গান কত আমহা ওনেছি!

উঠে ফরফরিবে চলল। ছইরের নিচে গেল না আর, উঠল গিংছইরের ছাতে। উঠবার ধরনই বা কি, খুঁটিতে পা ঠেকিরে তড়াই করে উপরে উঠে পড়ল। কী গেছো মেরে বে বাবা! সার্কালেধিয়ে বেড়ার নাকি? ছইরের উপরে উঠেই কিছ একেবাং চুপ—মত্র পড়ে কে বেন পাবান করে দিয়েছে। মুগ্র চোখে চেংজাছে দিগান্তের দিকে। মাঠের দ্রপ্রান্ত অবধি সবুজ রঙে ঢাকা এতটুকু কাঁম নেই কোনখানে। উল্লাসত কঠে সহসা ঢাকা কথ বলে ওঠে, জসল ঐ নাকি মাঝি? বাদাবন ?

জগন্ধাথ উপৰাচক হয়ে সামাল করে, নৌকো টলছে—জলে প^{্রে} গোলে চিন্তির। জঙ্গলের ক্তি বেরিয়ে বাবে তথন

নিক্তবেগ কঠে চাক বলে, কিছু হবে না। ভাল সাঁতার জানি স্থামি।

সাঁতারের ক্রসৎ দেবে না। কুমিরে ধরবে বিস্থা কা^{ন্তি} কাটবে। কেটে নেবে বখন, বেশ স্থড়স্থড়ি লাগবে। ভারপ[ে] দেখা বাবে, পুরো একটা পা-ই পাওয়া বাচ্ছে না।

মাঝি বলল, ছইয়ের উপর অসমন করে পীড়ায় না বুনডি। ^{বর্তে} বসে দেখ।

অনেক পথ গুণ টেনে গ্রনগাছির থানের কাদার নোকো ঠেন ঠেলে অনেক কটে কুমিরমারি পৌছানো গেল। বড় গাঙের মধ্য উজান বাওরা চলবে না। বাভাগও সুধড়। নোকো চাপান দেওৱ ছাড়া গতি নেই। আরও খান ছই বাঁক গিয়ে দোখালার ভিত্ত কোন গতিকে বদি চুকে পড়া বেভ, খালে খালে বা-ছোক করে এগুল চলত। হল না হরর দোবে। তার ওই ইজেপণাটি পছক ক্রম্থির।

জগা ৰংশ, ব্যারখোলায় কাচ নেই, কুমির্মারি নেমে ^{নোম্ব} ইটিভে ইটিভে চলে বাব। ভোমাকেও হব, ইটিভে হবে আ^{নাকে} সংস। ব্যাপার-বাণিজ্যে ছ-চার পরসার **যুখ দেখতে আরভ করে** হর মৃত্ ই থানিকটা বাবু হরে পড়েছে। বলে, জানো না ভাই। পথ এখনা হরেছে নাকি? বনজঙ্গল জল-কাঙাল—

ভোমার জন্তে এত লোকের ভোগান্তি। ছাড়ছিনে ডোমার। গুটুতে না পার, পায়ে দড়ি বেঁধে টানতে টানতে নিয়ে তুলব।

হব চুপ করে বায়। কথায় কথা বাড়ে। ভক্র আঞ্চলের মানুষ নোকোয় বাছে, তাদের সামনে আরও না ভানি কী বলে বসে। বাক পুরভেই ছোট ছোট টিনের চালা। কুমিরমারির হাট। হাটের নিচে বাটের ধাবে নোকো কাছি করল। থাকতে হবে বেশ ধানিককণ। জোয়ার শেব হবে গিয়ে ভাটার টান বভক্ষণ না ধরছে। এক প্রহর বাভ হবে ভো বটেই।

নেমে পড়ছে সব চড়ন্দার। মরা গোনে জ্বল বজ্ঞ নেমে গিরেছে।
নিকানো উঠানের মজো নদী-চর তক্তক করছে। ছোট ছোট
মাছ কাদার উপর ছাপ কেটে সর সর শব্দে ছুটোছুটি করছে এদিকগেদিক। পা চাপালে কাদার মধ্যে বসে বাচ্ছে। নোনা কাদা
আঠার মতন লেপ্টে বাবে, কাদার ভাবে পা উঁচু করে ভোলা দার।
জোরার বলে তবু ভো জনেক দূর জবধি নৌকো উঠে এসেছে।

নামতে হবে গো এবারে। নেমে থেরে-দেয়ে চরে-ফিরে বেড়াওগে এখন। টানের মুখ গুরলে সেই সময় এসো।

চাকু নামতে গিয়ে খমকে দাঁড়াল। বারা নেমেছে, ভাকিয়ে ভাদের তুর্গতি দেখছে। মুখেই এত ফড়ফড়ানি—কাদার পা দিতে হবে, আঁতকে উঠছে সেই শকার। সাপের মুখে পা দিতেও তো মানুষে এমন কৰে না। ভানামভেনা চাও ভো থাকো নৌকোর খোপে ঘাটক হয়ে, অন্ত সকলে নেমে বাক, থাকো পড়ে একা একা। কার দায় পড়েছে, কে পিঠ দিছে তুৰ্গা ঠাকক্ষণের সিংহের মন্তন—সেই পিঠের উপর পা রেখে কালা পার হয়ে উনি ডাঙার উঠবেন। আর বে পারে পাঞ্চক, জগা বিখাস নর কখনো। ভার দিকে তাকার क्न वात्रशात, (ভবেছে कि ? वांधन-वांहा निरहान वश्हीत लाखा দেখছে। দেখ তাই, জার কিছু প্রত্যালা কোরো না। মাধার কাপড় দেওয়া অপর মেয়েলোকটি দিব্যি তো নেমে এলো। भाव नवावनिक्री, तथ, नाकि-नाकि वृत्ति छाएए : नवाहे ^{চলে} বাচ্ছ বে বউদি, একা-একা আমি পড়ে বইলাম—। বেন পারে দড়ি দিরে কেউ বেঁধে রেখেছে ছইরের বাঁশের সঙ্গে। কাদার নামবে না তো ভড়াক করে লাফিরে পড়ো এই জগরাধের মতো। কাদা তো বড় কোৰ হাত আঠেক জাৰগায়—আট হাত লাকাতে পারো না, চোধ গুরিয়ে গুরিয়ে তবে আর শাসন কিসের অত ?

এক দল পশ্চিমা কুলি বাস্তাৰ মাটি ফেলছে। বেলা পড়ে এলো, কাল কবছে তবু এখনো। আব কত কাল লাগবে ৰে বাপু! মাটি ফেলাটা হবে গেলেই পারে-ইটোব অক্তত সোলা পথ পাওরা বার, গাঙে-বালে ঘ্রণাক খেবে মরতে হবে না। খালের উপর পূল হবে। পুলের অন্ত ইটকাঠ লোহালঞ্জ এসে পড়েছে। খাল-ধাবে পাহাড়-প্রমাণ তক্তা গালা দিরে বেথেছে। আবে আবে, কি করছে দেব ছোঁড়া ক'টা—চার-পাঁচটা ভক্তা কাঁবে বরে এনে কালার উপর ফেলল। ভক্তার উপর পলাঁববিক্ষ বেথে ঠাককণের ডাঙার ওঠা হবে। আবলার তো বেড়েই চলবে এমনি বারা গোরাছ হলে।

এক বলোবক সংব্ৰও মেষেটা বেন গলে গলে প্ডছে। চাফ নয়, নাম হওয়া উচিত ছিল ওব নবনীবালা। নোকোর কাড়ালে গাঁড়িয়ে বলছে, হাত ধ্যো না গো কেউ হোমরা। নামি কেমন ক্ষে তক্তার উপরে ?

তা-ও চার-পাঁচ মরদ এগিরে এসেছে হাত ধরে নামাবার তরে।

রকম দেখে জগা দাঁড়িরে দাঁড়িরে হাসে। হঠাও সে-ও ছুটন—
তার সঙ্গে পারবে কে ? ছুটে সকলের জাগে চলে সেল।
কাড়ালের এপালে ওপালে হাতগুলো উঁচু হরেছে চাকুকে নামিরে
আনার জন্ম। সকলের উঁচুতে উঠে আছে জগার ইম্পাতের
মতো কঠিন কালো হাতথানা।

জ্ঞার বিক্রম, লক্ষ্ণ দিরে কাদা পার হওরার সময় সকলে জেনে বুবে নিরেছে। চাঙ্গও বুঝেছে। আগ বাড়িরে এসে দাঁড়াল দেই মান্ত্র। হাতে হাত ছোঁরাতে না ছোঁরাতে জগা মেরেটার হাত অমনি মুঠোর প্রে হেঁচকা টানে এনে ফেলল ভক্তার উপরে নম্ব—ভক্তার পালে কাদার ভিতর। আর কেউ হলে লে টানে কাদার উপর গড়িরে পড়ত, শক্ত মেরে ভাই সামলে নিল কোন গড়িকে।

ছুঁচো কাঁহাকা—বজ্জাতের বেহদ ! রাগে গরগর করতে করতে এক ছ-হাতে একতাল কাদা তুলেছে জ্ঞগাকে ছুঁড়ে মারবে বলে। কোথার জ্ঞগা ? চক্ষের পলকে জ্ঞাত দূরে ঐ নতুন রাজার আড়াল হরে গেল। কিহা ধোঁরা হয়ে আকাশেই উড়ে গেছে হয়তো।

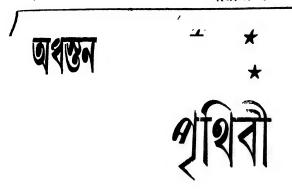
ছুটতে ছুটতে চাক ও বাস্তাব 'উপৰ পেল। নতুন মাটি কেলে আনেক উঁচু করেছে—চতুর্দিক সেধান থেকে তাকিয়ে তাকিয়ে দেখে। গেল কোন দিকে ? বে চুলোয় গিয়ে থাকে, থাকুক না আপাতত পালিয়ে। নৌকো ছাড়বার সময় হলে আসতে হবে বাছাবনের। শোধবোধ সেই সময়।

হর বড়ুই বাড় নেড়ে বলে, কেপেছ ? পারে পারে কত পথ মেরে দিল তারা এচকণ ! একা নর, জগা আর বলাই। আমাকেও টেনেছিল। আমি কারো গোলাম নই বাপু, স্বাধীন ব্যবসা আমার। দেবি হল কিয়া তাড়াতাড়ি পৌছলাম, আমার কি বার আনে ? আমি কেন কট করতে বাই ?

মানুৰ অবাক হবে বার: বলো কি গো? রাভার একটুথানি নিশানা হবেছে কি না হবেছে—অলে নেমে থালই পার হতে হবে ভিন-চারটে—

হর বলে, এক শহর ঠার বলে থেকে ভারপর নৌকোর শভেক আঞ্চল দুরে বাওয়া—এর চেয়ে জল বাঁপানো কাদা মাথা জনেক ভাল ওদের কাছে। বতক্ষণে নৌকো ব্যায়থোলা বাবে, ওরা থেয়েদেরে পূরো এক বৃষ যুষিয়ে উঠবে ভার ভিতরে।

ধোপছবন্ত কামিজ-পরা নগেনশনীর সঙ্গে হর এবার পরিচর করছে: বাবু মশারের বাওরা হচ্ছে কোথা ? ভেবেছিলাম কুমিরমারিকে শেব। নভুন চৌকি বনে গেল, কুছঘাটা হল, বাবু লোকের আনাগোনা বেড়ে গেছে—মা-লন্মীরা এসে পড়ে এবাবে গেবছালি পাতাবেন। আরও নাবালে বাছেন এঁলের স্বলবে ? কোথার ?



ডক্টর পঞ্চানন ঘোষাল

[কোনও এক প্রাচীন বা আধুনিক প্রতিষ্ঠান বা সমাক কিংবা কোনও ব্যক্তিগত চরিত্রের বিশ্লেষণ এইখানে করা হয় নি। এই উপজাসের প্রতিটি চরিত্র কামনিক মনে করে নিলে আমি পাঠকদের নিকট কুডজ্ঞ থাকবো।

সামীদের কাছ হতে ছিনিরে নেওরা গামছা ও কাপড়ের
বুঁট দিরে একের বাছর সঙ্গে অপবের বাছ বেঁধে তাদের
গঙ্গ-ভেড়ার মত তাড়াতে ভাড়াতে চিংপুর রাজার মোড়ে এসে
শান্ত্রিলল সহ প্রণাব এবং চিরঞ্জীব বাবু নিশ্চিত্ত হরে পিছন ফিরে
ঘটনাস্থলটির দিকে একবার তাফিরে দেখলেন। তখনও পর্যান্ত বজীবাড়িগুলির মধ্য খেকে মধ্যে মধ্যে ইট-পাটকেল ও সোজাওরাটারের বোতল সাঁ-লা করে ছুটে এসে কচুরী গলির ডান দিককার বিতল কোটাবাড়ির দেওরালের উপর পড়ে ভেডে টুকরা টুকরা হরে এদিক-ওদিক ছড়িরে পড়ছিল।

সামনের ট্রামবাস্থার উপর দিয়ে তুই-একধানা ট্রাম তথনও ৰে না চলছিল ভা-ও নয়। কিছ ভাব ভিতৰকাৰ বাত্ৰীবা প্রার সকলেই ছিল এই অঞ্চলেরই লোক। নির্বিকার চিত্তে ভারা প্লাডির জানালা দিরে গলা বাডিয়ে বাহিরের তামাসাটা দেখে बिन माउ। चार्य-भारनद माकानमाद थरः भवहादीस्मद संयक्त মনে হয় তারাও রাস্তার সাধারণ পথিক এবং ট্রামের যাত্রীদের মতই নির্মিকার। এইরপ ঘটনা প্রান্তাহিকই এথানে ঘটে থাকে। ক্রমে ক্রমে তাবের নিকট এইরূপ ছোটখাটো ঘটনা গা'-সওয়া হয়ে গিয়েছে। তা'ছাড়া এখানে শান্ত্রী পুলিশ ও জুয়াড়ীদের মধ্যে থপুষু হচ্ছে। তাদের এই হারজিতের মধ্যে জন-সাধারণের আদে-যার কি ৷ এই স্থলে তারা নির্কিকার দর্শক ছাতা আৰু কিছই নয়। এই সং পাড়ার গুণা পাড়ার কাকুরই কৃতি করে না। ভবে তারা থামকা পরের ব্যাপারে জড়িরেই বা পড়বে কেন ? গুনা গিয়েছে বে. প্রাচীন ভারতে রাজায় রাজায় যুদ্ধের সময়েও কুষ্ক্রা মনের আনন্দে ভূমি কর্ষণ ৰূবে বেতো। এবাও ভো সেই প্ৰাচীন ভাৰতীবদেৰই বংশবর। ভারা বণি তাদের বংশের ধারা এই ভাবে বজার বাবে তাহলে সেই জন্ত দোষ দেওয়। বাৰ না 1

এদের এইরূপ মনোবৃত্তি প্রণব ও চিরঞ্জীব বাবুর স্করাত ছিল না। ভাই জারা সদলবলে বড়ো রাভার উপর এসে নিজেদের কভকটা নিরাপদ মনে করলেন। এমন সমর :

তারা লক্ষ্য করলেন, এক ব্যক্তি সামনের কোটা-বাড়ি
পরিত পতিতে বেরিয়ে লাসছে। কমাল দিয়ে মুখটা চেপে রাধা
তাকে একজন ভল্ললোক ব'লেই মনে হলো। কিছু তা সন্ধে,
প্রণব বাবু ছুটে পিরে তার হাতটা চেপে ধরলেন। ভল্ললাভ্
তাড়াভাড়ি মুখের উপর হতে কমালটি সরিয়ে নিয়ে বদে
উঠলেন, জারে এ জামি ! জামি প্রণব বাবু! চিনতে পারছেন
না জামাকে ?

প্রথম বাব্ আশ্চর্যাধিত হরে চেরে দেখলেন, ভদ্রলোক তাঁর ব্যুষ্ট পরিচিত এক ধনী ব্যক্তি। স্থানীয় মনোরমা বিয়েটারের ভিনি একজন মালিক। এছাড়া স্থানীয় একটি কলেজে তিনি প্রফোরীও করে থাকেন। জনসমাজে ভদ্রলোকের নানা কারণে স্থানা আছে। তাঁকে এই ভাবে একটা বেখাবাটা থেকে বেরিয়ে আসতে দেখে চিয়ঞ্জীব বাবুও কম আশ্চর্যা হনমি! কারণ ঐ বাড়ীটার ববে ববে বে মধ্যশ্রেণীর বেখা নারীগণ বাস করে, ভা উভয়েরই জানা ছিল।

'আপনারা খুব আশ্চর্য্য হচ্ছেন, না' ় প্রণব ও চিরঞ্জীব বাবুকে কোনও প্রশ্ন করবার স্থবোগ না দিয়ে ভদ্রলোক বলে উঠলেন. আজে—এই বাড়ীটা আমার নিজের হলেও এখানে আমি ভাড়া আদার করতে আসি নি। এমন কি থিয়েটারের জন্ত কোনও একট্ৰেসের সন্ধানেও এখানে আমি আসি না। উবাকে চেনেন তো ? আমাদের থিয়েটারের উধা। গত দগ বছর হলো ছজনে স্বামি-স্ত্রীর মত এইধানে ধাকি। তাই প্রতিটি সন্ধ্যের এইধানে ঘণ্টা ছুই ভিন আমাকে কাটিয়ে বেতে হয়। এখানে বেশীকণ ব্দাপনাদের সঙ্গে কথাবার্তা কওয়া নিবাপদ নয়। আপনারাও বেশীক্ষণ আর এখানে অপেকা করবেন না। আপনাদের মহলে মেলামেশা আমার বছ দিনের। ভাই বলভি এখান খেকে চলে বান এবুনি। শান্তীদের মধ্যে মিছামিছি বেশী ক্যাশ্ররেলটি হলে কর্ত্তপক আপনাদের ট্যাক্টলেশ বলে অভিহিত করে কৈফিছে চাইতে পাবেন। ভা' ছাড়া ভেডবে আরও ব্যাপার আছে। সব কৰা আপনাদের এখানে জানানো জামার পক্ষে সম্ভব হবে না। আক্রা, ভাহলে চলি আমি-

ভদ্রগোক ছবিত গতিতে পাল কাটিরে রাক্টার ওপারে অনৃত্য হরে বাওয়ার সঙ্গে সঙ্গে সেথানে সবেগে আর একথানা ট্রাম-গাড়ী এসে পৌছল। এদিকে ভদ্রগোকের উপদেশের মধ্যে বে যথেষ্ট যুক্তি ছিল তা অভিজ্ঞ অফিসার প্রণব এবং চিরঞ্জীব বারু উপলবি করতে পেরেছিলেন। তাই আর ঘটনাস্থলে দেবী না করে ট্রামটাকে থামিরে আদামী ও শান্ত্রীদেব নিরে তারা ঐ পাড়ীর সেকেশু ক্লাল কামবার উঠে পড়ে থানার দিকে এগিরে চললেন।

२

জোড়াসাঁকো থানার ভারপ্রাপ্ত প্রবীণ অক্সার মহীক্স বারু
অকসার-ইন্চার্জের নিদিষ্ট কামরার বসে প্রণেব ও চির্কীব বারু
অক্স উষিগ্ন হবে অপেকা করছিলেন। এই দিন সরকারী ও
বে-সরকারী এই উভরবিধ কাজে তাঁকে বহুক্ষণ থানা
বাহিবে কালাপহরণ করতে, হরেছিল। মাত্র এক ঘণ্টা পূর্ব্বে তিনি
থানার কিবে থানার অভাত অফিসারদের নিকট হতে ঘটনাটি
সম্বদ্ধে ভানতে পেরেছিলেন। বাঞ্চভাবে তিনি থানার ভাবেলা রাভাব

भारता क्रिकेटिक विन्दारिक सम्बोधना, कार्क भाषी चार्क व. क्री লুচিন মিনিটে আত্মারাম মামে ভারেক বাজিত নিকট কতে চিবলীব ্ৰাব্ৰ উপৰ কচুৰী গুলিৰ গুণাদেৰ ভাষলাৰ বিধন অবভিত হবে প্রার বার করেক জন সিপাচীশাল্পী সহ ঘটনাক্তলে রওমা হয়ে এর পর একটু ভেবে নিয়ে তাঁব মুখের চুকটে আরও ুট একবার নান দিয়ে খড়ির দিকে ভাকিরে তিনি দেখলেন বে. ইতিমধোই ঐ ঘড়িতে সাস্টা নেভে গিরেছে धेंडे प्रयश् श्रामात ্রেড জ্মাদার মোচন সিং কথন এসে থানার বভবাবর কাচ বেঁসে নচনা মোনন সিংকে আফিস-ববে এসে টেপস্থিত হতে (मध्ये वहवान मन'स्य वांत कुद हास (हैहिस क्रेस्नन, 'किश মাচন সিং। উনলোককে। তচ্বী গলিসে অভয়িয়ে। লোককো পাকডানে কোন বোলা ৷ এক বোল হাম নেতি থানেমে হাজিব নেহি বহে তো কৃছ না কৃছ থামেলা আ বাকি। বেভয়া সব কাম দেখানেওয়ালা ভোকবা অফিসারকো পাকড পাকড বড়া সার মেরি শিব পর ডাল দিয়া ছাত্ত। তম উনলোককো সমধারকে নানা কর দেনে নেহি লেখা।

মোচন সিং ক্ষমালার চলেও একজন পুৰান্তম অভিজ্ঞ বাজি। বিচকাল বাবে লৈ এই থানার জমালাবরূপে বাহাল আছে। এই বালাবার হালাকার সংগ্রহ প্রতিটি ত্রহ ব্যাপারে একবার তার সংগ্রু প্রামর্শ করে নেয়। এ-ছাড়া নবীন অফিসার্গ্রের কি করা উচিত বা কি করা উচিত নর এবং তাদের কোবার বাওয়া উচিত বা কোবার বাওয়া অফুচিত, সেই সম্বন্ধে প্রোক্ষ ভাবে ভালের বৃক্তিয়ে দেবার ভাব বড় বাবু এই হেড জমাদারের উপরই ছেড়ে দিয়ে নিশ্চন্ত ছিলেন। কচুবী গলির কোনও ব্যক্তির কোনও

কার্ব্যের অন্থা তাদের উপর এই থানা থেকে কেন্ট্র অকারণে হস্তাক্তের করে, তা বড় বাবুর প্রার হেড জমাদার মোচন সিং-র পচল করেমি। তাই সে অভিযোগের ববে বড়বাবুর প্রপ্নের প্রভান্তরে বলে উঠলো, 'ক্যা করে সাব, ইনলোক বাভ তো খোড়াই ওমতে লেকেন উঁহা বড়িয়া কুছ গোলমাল হো গ্যায়া হোগা। নেহি ভো উনলোক এতনা ঘড়ামে ককর লোট আ বাতে। হামলোককেভি কুবন উঠা বানে চাহী।'

ভ্যাদার মোহন সিং-এর ভার বড়বাবুও প্রণব বাবু ও চিরক্লীর বাবুর নিরণপত্তা সম্বন্ধে চিন্তিত হরে উঠেছিলেন প্রকৃতপক্ষে তাদের উপর বাবুর বিরক্ত হলেও তাদের উপর বাব করার তাঁর কোনও হতু ছিল না। এ ছাড়া অধীনস্থ অকিসাবদের উপর তাঁর স্বাভাবিক কর্তব্যসত্ত বেশ কিছুটা মেহও ছিল। তাই প্রকৃতিত্ব হরে তিনি গর্জন করে উঠে মোহন সিংকে ধানার বাকী সিপাহীদের তৈরী করতে আদেশ দিয়ে আশান মনে বলে উঠকেন, নাঃ, দেখিক ব্যাটাদের বজ্ঞ আদারা দেওরা হয়ে গিরেছে। এতো বড়ো আশারি। বে আমার বিনাত্ম্যতিতে তারা আমার অ'ক্ষাবদের মারধর করতে সাহস্করে। দীড়াও দেখাছি আমি মভা বেটাদের।

খানার ইনচাজ্ঞ অফিসার মহীক্র বাবু টেবিলের গ্রন্থার থেকে গুলীভরা শিল্পলটা বার করে উঠে দাঁড়ানো মাত্র সেধানে প্রেণির গু চিন্ধনীর বাবু আসামী ও শান্তীদলসহ উপস্থিত হরে বলে উঠলেন, 'থানায় কিবতে একটু দেনী হরে গেল জার! আমবা সকলে সোজা খানাতেই ফিবে আস্ছিলাম কিন্তু চিন্ধনীর বাবু এবং তৎসহ করেকজন সিপাহী এবং ছুই তিন জন আসামীও আহত হংবছিল। সেইজক হাসপাতালে আগে গিরে এদের আঘাতজনিত ক্ষতগুলিতে



পটি ধরিবে তবে ধানার ফিরতে পাবসুম। চিরজীব বাবুর সাহাব্যের জন্ম থানা হতে বেক্সবার আগে ঘটনাটি সম্বন্ধে আমি থানার জাবেলা থাতাতে পৃথায়পুথারপে লিখে রেখে গিরেছি। আপনি নিশ্চমুই ঘটনাটার বিবরণ এতক্ষণে এই থাতা থেকে পড়ে জেনে নিরেছেন। বাাপারটা হ্যেছিল, তার—

ব্যাপারটা হপুর থেকে সন্ধ্যা পর্যান্ত ওথানে কি হয়েছিল এতক্ষণে ভা জানতে জামার কিছুই বাকি নেই, প্রণব বাবু। জামি বেথানেই ব্যেপাকি না কেন. এলাকার প্রতিটি ধ্বর জামি ঠিক সময়েই পেরে বাই; ধ্বরটা পেরেই জামি সব কাল কেলে থানার ফিরে এসেছি, হাতের অলীভরা পিতলাট পুনরার টেবিলের ভ্রাবে পুরে বাধতে বাধতে বছবার মহীক্র বাবু উত্তর করসেন, 'কিছ চিরজীব বাবুরও জামাকে না বলে জত ন্য লোক নিরে কচুবা গলির মন্ত জারগার জুরা ধ্বতে বাওবা ভিচ্নত হয়নি।'

জুয়াড়ী আসামীদের সর্ধার মিঠুরাম বীরভাবে থানার বড়বাবুর ক্ষাগুলি এতক্ষণ ধংব ওনছিল। এইবার সে সাহদ পেয়ে বলে উঠসো, হজুর লোক ধবর ভেজনে হামলোক থানেমে চলা আতি। লেকেন দেখিলে না, হজুব ! ইন নহা বাবু লোক কেতনা জুলুম জুটুমুট হানি সোককো পর কর 'চুকা, আজ।' পুরাড়ী সদারকে এই ভাবে তাঁৰ নিকট নিল্ছেন্ব মতন আপ্যায়িত জানাতে দেখে বড় বাবু মহীক বাবু বৈর্ছারা হয়ে ভাদের উদ্দেশ করে টেচিয়ে উঠলেন, চুপ রচো কম্বধতকো বাছা। এতনা সাহদ ত্যা ভোমরা যে মেরি অফসার পোককে বদনমে তুম হাত ভালা হায়। এতনা কপেয়া বানায়া বে তুম লোক বরাবর খানেতর আদমীয়েকে মুশুকে বাখেলে! এছি বাত, তুম সমৰ: হো তো তোমরা সারা বস্তা খাম অভি লাগনে আলায় দেরা। ভূলো মাত বে হামতা নাম মহীকে বাবু হায়। আন্টের এ ভি খেয়াল রাখো ৰে প্রানো জমানী বদল হাতা। উদি সাথ তোমলোককে প্রানো চাল ভী ছোড়নে পড়েগা। আজ চিঞা করে ভি তো তুমলোককো হাম বাঁচানে নেহি সেকুখা। যাও আভি সবকই ভূম লোক খানেকে লকু আপ'লে। এই মোহন দিং। লে ধাও ইলোককো হাজতমে।'

থানার বছ বারু মহীক্স বার্র শেষ কথা করটি বিশেষ তাৎপর্ব্যপ্তি ছিল। সতা সতাই তিনি একটি বুগের সন্ধিক্ষণে দাঁড়িয়ে কথা বলছিলেন। উপস্থিত সকলেই উপলব্ধি করতে পারলো বে পুসানো যুগ তার দোষ-গুণ সহ শীঘ্রই বুঝি বিদার নেবে এবং তার পরিতাক্ত হল ক্ষরিকার করবে নিজম্ব দোষ-ক্রটা সহ একটি নৃতন যুগ। প্রেণব এবং চিরঞ্জীর বারুরা দে সেই জনাগত যুগের জ্বাপ্ত মার, তা বুদ্ধিমান বজ্বারু মহীক্স রাবের ব্রুক্তে বাকি থাকে নি। নানা কারণে তাদের প্রিলি কার্য্য সম্বন্ধে নৃতন চিক্তাথারা তিনি মনে মনে পছন্দ না করলেও তাদের কার্য্য সম্বন্ধি ভাবে বাথা দানের তিনি কোনও দিনই প্রেম্মেলন মনে করেন নি। তাই তাদের ঐ সকল আদর্শক্ষনিত ক্ষাব্যের জন্ম বিপদ উপস্থিত হলে তিনি তাদের ঐ সব বিপদ থেকে বাবে বাবে মুক্ত করে দিতে চেষ্টা করেছেন।

বড়বাব্র আদেশ মত জমাদার মোহন সিং আসামিগণকে
পালের খরে নিয়ে গেলে মিত হাত্যে বড়বাবু প্রণব ও চিরঞ্জীব বাবুকে
তার সামনের চেমার ছ'বানার বসতে অন্তবোধ করে দরভার

জিশিশাহীকে ভালের ও নিজের জন্ত করেক কাপ চা আনিবে দেবার

কম্ম আদেশ দিলেন। তারপর চায়ের কাপটি সেবানে মিরে আফ মাত্র তা পান করতে করতে তাঁরা ঐ দিনের মামলা সংক্রন্থ আলোচনা ক্ষক করে দিলেন।

বাক্, বামেলা বধন বাধিয়েছো তথন তার সমুখীন হতেই হবে,
পিত হাস্থে বড়বাবু প্রণব ও চিন্নঞীব বাবুকে উদ্দেশ্য করে বললেন
থিখান থালা কেল ক'টা থাকে থাকে লিখে ফেলা বাক।' হাঁ। লাব,
বড় সাহেব থানা ভিসিট করতে আসার আগেই ওগুলো লিখে ফেল ভালো।' প্রণব বাবু আখন্ত হয়ে বড়বাবুর কথার প্রাত্তার করলেন, 'তবে থাধান অন্থবিধে হছে এই আত্মারামকে নিয়ে ও লোকটা সমর মত পালিয়ে থানার থালে থাবর না লিয়ে চিন্নঞীব বাবু আক্র প্রাণ নিরে থানার ফিরতে পার্ভেন না।'

'সভিয় ভার!' সাহস পেরে এইবার চিরঞ্জীব বাবু বলকের বিদিও লোকটা অক্সান্ত আসামীদের ক্সারই ওবানে বে-আইনীভাগ জুয়া ধেলতে এসেছিল ভাহলেও মানবভার দিক্ষ থেকে বিচার কং ওকে আমাদের পক্ষে বে কোনও রক্ষে মুখ্তে দেওরা উচিত হবে।'

বড়বাবু মহীক্র বার ছিলেন একজন পুরাতন কর্মদক এ অভিজ্ঞ অফিসার। মানবতা প্রভৃতি চোথাচুথি বুলির কোন দিনই তিনি বার বারেন নি। রাঞ্জীয় কার্য্যের সহিত্ত এই সরে কড়টুকু সম্পর্ক ভা তাঁর অজ্ঞাত ছিল না। এই সর অবেজা। কাকা বুলিগুলির উর্দ্ধে উঠতে না পারলে আজ্ঞ পুলিল বিলা: এতো নাম-ভাক তিনি কোনও দিনই অজ্ঞান করতে পার্ভেন না।

'দেৰ চিরঞ্চীব! তুমি দেখছি কাজক্ম কোনও দিন্ট্ শিখ না, বিরক্ত হয়ে বড়রাবু মহীন্দ্র বাবু বললেন, একটা সিম্পিল পিতঃ ক্লামসি করে তোলার জন্তে একটা বিশেষ হাকে ভূমি ক্লাম ক ফেলেছে।। বতোই ভূমি মানবস্তা এবং উচিত্য ও আনোচেত্য কৰা ভাৰণে হতোই একটা সামতে শিষ্ডকে ভূমি ভটিল চ **ক্টিস্ভর করে নিজের এবং সেই সঙ্গে আমাদের জন্মত তুমি অকার** বিপদ ডেকে আনবে। ট্রামে করে ভাস্ট্রেল ভো ধানার দি সানাহার সেবে বিশ্রাম করবার জ্বল । প্রান্ত্র ট্রাম থেকে নে পড়ে এই এজিলিটিটা না দেখালেই কি চলতো না? এই স কামেলা না বাধালে আজ একটু সিলেমা-টিনেমা সেখে আসা চন্ত ভো! এই সৰ ঝামেলা বাধিয়ে আবার মানবভার বুলি আওগা তোমাদের লক্ষাও করছে না ? এদিকে আবার একজন ভাট কাজ-জানা অফ্যার হয়েও প্রণর প্রয়ন্ত ভোমার রায়ে রায় দি চলেছে। প্রকৃতপক্ষে এই কেসটা তো একটা খুবই সিম্পিস কে^ম কতোকগুলি জুয়াড়ী রাস্তায় বসে জুয়া খেলছিল আর ভাদেঃ মং এই আত্মারাম নামে আসামীটাও ছিল একজন। বাস। এদের ইবর্জ নামে একত্রে জুয়াখেলার একটা কেল লিখে দাও। এর গ বাহির হতে কয়েকজন গুণা পুলিশ্দপকে আক্রমণ করেছি এই তো ? এই সম্পর্কে আরও জনকতক লোককে ঘটনার গ ভৌষরা সন্দেহক্রমে এখান-ওথান খেকে পাকড়াও করে এনাই বেশ ঠিক আছে। তাদের নামে একটা রায়ট-টারটের কেস 🎮 রাথো। **অবশু কেসটা কোটে পাঠানোর কোন সার্থক**তা ^{নেই} **লাখেরে সমবিক প্রমাণের অভাবে ভোমাকে ভালের ছে**ড়ে দিটে হবে। এব পর ভোমাদের এ পেয়ারের পহীব মঞ্চুর ভাত্মারাট নামে আৰও একটা অভিবিক্ত মামলা ভোমাদের 😤

দরতেই হবে। যে উদ্দেশ্তেই হোক গুলিশের আইন সকত শেশাজনী হতে অলক্ষ্যে সে পলায়ন করেছিল। এই বিশেষ অপরাধের জন্ম উপরোক্ত রূপ অভিরিক্ত একটি মামলা আমরা ভার নামে কলু করতে বাধা। এ কেসটি অবভা ভার বিক্রছে ধুবই টাইট কেল। ভাল বিক্লছে বা সাক্ষ্য প্রমাণ আছে ভাতে করে আলোলতের বিচাবে এর সা্লাহ্যে বাধবার গোন নাগাই নেই।

'এ'া৷ বলছেন কি ভাৰে' <mark>৷ এক ৰকম আঁতিকে উঠে চিবজীৰ</mark> খাব বলে উঠলেন, 'হাা! ও না বলে আমাদের হেপালত হতে লালিয়েছিল বটে ; কিন্তু এতে ওর উদ্দেশ্য বা মোটিভ ছিল তো শতীৰ লু': 'কি বাজে বড়ছো, চিবছীৰ বাবু!' **টেবিল থেকে একটা** জাঠনের কিতাব উঠিলে নিবে বছবাবু মহীল বাবু বললেন, সাধারণ ভাবে অপুরাধ প্রামাণের প্রয়া ভারি পিছনে যে একটা উদ্দেশ বা মোটিভ থাকে তা স্কাৰ্যে যে প্ৰমাণ করা প্রয়োজন তা আমি সীকার করি। কিছ এই পুলিশ হেপাক্তী থেকে পলায়নরপ অপরাধ সম্পর্কে লোৱতীয় দশুবিধিতে যে ধারাটি সন্নিবেশিত হরেছে তাতে মোটিভ বা ট্ডেঞ্-বাক্টি কি কোধার লেখা আছে ? দেশের আইনপ্রণেতারা যদি তোমাৰ এই মানবভাৰ কথা ভুলে গিয়ে থাকেন, তাহলে তার জনু তো জামরা দায়ী হতে পারি না ? ভুলে যাবে না বে দেশের আইন দয়া-দাক্ষিণ্য •বা কুভজ্জতা দেখাবার জন্ম কোনও অধিকার ক্ষাদের এখনও দেয়নি। বাও যাও। এইবার এদের বিরুদ্ধে ম্পাৰ্থ ভাবে ক্ষেদ্ৰ কছটি চটপট লিখে ফেলো গে। **এথনি বড়সাহেব** শদেই চাঞ্চ্যক্র বিধার এট সব মামলার আরক্লিপি (ডাইরী)-গুলি এগুলি দেখতে চাইবেন। আমরা এখোন একটা নিদারুণ বাস করতে সুকু করেছি। এথানে থারিক যুগোর মধ্যে নেই। ইনসিডেন্ট স্থান কোনৰ ভাৰতথ্যপূচার ভিল্মাত ঘটনা মাত্র। ভাই এদের ঘটনারপেই এখানে ষামাণের মেনে নিজে হবে। এখানে দয়াপরৰণ হয়ে বদি ভূমি আ্যারামের বিক্লান্থ মামলাম তাঁকে বাঁচাবার জ্বল নিজ খরচে উকিল নিয়োগ করো, তা হ**লেও তুমি একজন পুলিশ** অফিসার বিধায় ভোমার পক্ষে সেই কাৰ্য্য দশুনীয় ও অমার্ক্তনীয় এক অপরাধ হবে। তবে দে এই <mark>মামলার দণ্ডিত</mark>

হওরার পর তুমি যদি ভার ফাইনের টাকা কয়টা আদাল:ত কাউকে দিয়ে পাঠিয়ে দাও ভোগে কথা স্বত্ত ।'

বড়বারু মহীক্স বাবুর যুক্তিপূর্ণ বক্তব্যের বিজেদ্ধে কার কিছু বদবার ছিল না, তবুও চিরঞ্জীব বাবুর মনে হলো চারিদিকে ধেন শ্রনাচার ও অবিচার ঘিরে বরেছে। চিরঞ্জীব বাবুর চিন্তাগারার সক্ষে প্রধান বিব্রু ভিত্তাগারার সক্ষে প্রধান ছিল। তাদের ভ্রুনেরই এই সময় মনে গাঁ বে এই সব অবিচার অবিচার হলেও ভাবি বিজ্ঞান প্রতিত্তার করার সাধ্য তাদের কাদ্রাই নেই। এই সব আইন বারা বচনা করেছেন তাঁরা এথোন সকলেই নাগালের

বাহিবে। একণে ভাইনের মূল কিভাবগুলির উপর মাধা খুঁছে ফিরলেও সেধান থেকে এই সম্পর্কে কোনও সহত্তরই মিলবে না। অগন্ত্যা তাঁৱা ছক্তনেই বড়বাৰু মহীক্ত বাবুৰ উপদেশ মত পাৰ্থবন্তী খবে এসে আসামীদের মুখের দিকে না তাফিয়েই ছিতাদের বিশ্বতে মামলাগুলি একে একে লিখে ফেলতে পুরু করে দিলে। তব্ও শাস্কারামের বিরুদ্ধে 'পলায়নের' মামলাটি লিপিবছ করতে করতে চিবজীব বাবুৰ মুখ খেকে অলক্ষো একটি শব্দ বাব হয়ে এলো--উঃ কি অবিচার। চিরঞ্জীব বাবুর মুখে এই কথাটা বোধ হয়: ঠিক এই সময়েই প্রণৰ বাবুৰও মনে ক্লেগে উঠেছিল। অভ্যান ভতার মধ্যেও চিবজীৰ বাবৰ আক্রেপ্সনিটি সহজেই প্রণৰ বাবুর কানে পৌছিরেছিল। কিন্ত প্ৰণৰ বাবু তুনিয়াৰ হাল-চাল সম্বন্ধে চির্ঞীৰ বাবু অপেক্ষা অধিকত্তর রূপ অভিজ্ঞ ছিলেন। তাই তিনি ইসারায় তাঁকে চুপ করতে বলে পুনরার আপন কার্য্যে মনোনিবেশ করছিলেন। এমন সময় পিছন হভে কে একজন ভদ্রলোক এসে বলে উঠলেন, 'নমস্বার প্রণব বাবু। বাধ্য হয়েই আসতে হলো। একট বিরক্ত করবো, ভার'় প্রণব ও চিব্রজীব বাবু তাঁদের কলমের গভি ধামিরে সচকিতে চেয়ে দেখলেন তাঁদের পরিচিত শ্রীরছহরি কলেজের অধ্যাপক এবং স্থানীয় মনোরমা থিয়েটারের মালিক শ্ৰীওক্ষেন ঘোষ কথন তাঁদের সন্মুখে এসে উপস্থিত হয়েছেন।

'আরে। ঘোষ সাহেব বে,' টেবিলের উপর হাতের কলমটি
নামিরে বেথে প্রণব বাব্ জিজেন করলেন, 'আপনিও থানার
এসে উপস্থিত! ব্যাপার কি, কিছু থবর আছে'? 'না না।
থবর থাকবে আর কি? খবর দেওরা আমাদের পেশা নয়'।
ও সব বাজে ব্যাপারে কোন দিনই আমরা থানিনি
একটু অপ্রস্তার সহিত প্রফোর ঘোষ সাহেব বললেন,
এই আপনাদের অতেই আজ থানার আসতে শধ্য হয়েছি।
কচুরী গলির মোড়ে গাঁড়িয়ে আমার সঙ্গে বন্ধুছের ভাব না
দেখালে আপনাদের কাছে আসবার আমার কোন দরকারই
ছিল না! এথোন আমাকে থাকতে হয় ওই ওলের সঙ্গে
ডলেরই ঐ পাড়াতে তো। তাই ওদের অনুবারে আসতে
হলো—একবার আপনাদের কাছে। হদি দ্যা করে অস্ততঃ

পেটের যন্ত্রণা কি মারাত্মক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন ! যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দুর করতে গারে একমার

বহু গান্ধ গান্ধড়া দারা আয়ুর্বেদ মতে প্রস্তুত

वातव भवा द्वाविशं नर २५४७८८

ব্যবহারে লক্ষ লক্ষ রোগী আরোগ্য লাভ করেছেন

অন্ধ্ৰস্প্ৰা, সিত্ৰসূপ্ৰা, অন্ধ্ৰসিত্ৰ, লিভাৱের ব্যথা, মুথে টকভাব, ঢেকুর ওঠা, ৰমিভাব, ৰমি হওয়া, গেট ফাঁপা, মন্দায়ি, রুকজানা, আহারে অরুচি, স্বন্ধনিদ্রা ইত্যাদি রোগ যত পুরাতনই হোক তিন দিনে উপশম। দুই সন্ধাহে সম্পূর্ন নিরাময়। বহু চিকিৎসা করে যাঁরা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও আক্তানা সেবন করলে নবজীবন লাভ করবেন। বিফলে স্কুল্য ক্ষের্ৎ। ১২ ভোলা এটি কোঁটা ৬-টাকা একলে ৬ কোঁটা ৮টাকা ৫০ ন্যুপা। ডাং মাঃ এ পাইকারী দর পুথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। হেড অফিস-ব্রিশাজ (পূর্ব্ব প্রকিস্তান)

ৰাষ। কেনেৰ আসামী ক্ষানিৰ জামীন দিবে দেন। তা বাজিগত তাৰে ওচৰ উপৰ আমাৰ বিশাস আছে। তাই আমি বিষ্টেই ওচেৰ তত জামীন হতে পাৰবো।

व्यंतर ও डिनशीन बाद सङ्क्रण निर्दाक जात्व व्यक्तमान व्याद्यन ছিকে হেবে বইলেন। জাব মতন একজন নামকবা অধিক্ষিত রাজ্যিক এই মৰ ওখা বদমারেলদের সভিত যেলামেশা ভাছলে हरता। जाहरता कि श्रेष्ठ अन श्रेश क्रुनाफ़ीबांश बाह्य विक इस्क किए किए मन्धर्मत्व विधिकाती । वथन कार्यमाद (बांदरक स्त्रीयां पछि अवा जीवांव चारती प्रत चक्क व्यवीरत कांव মুৰিতা উষাৰ ৰাজীয়ে ভাষা প্ৰতিন্নি বাভাষাত কৰতে क्षा, जनम जारक प्राया प्राया महिल जारमा क्रिकेश किन् चारम देव कि । के जिल्लाकोक्त क्या क्या त्याः त्यारम নিকট কোনও দিন একটি কণবানও বাবী কবেমি। অধিকত এই সৰ চোৰ গুণাৰা পাড়াপড়ৰীকেৰ ভিম পাড়াৰ বনমায়েসদেৰ कवन श्रंक हारमनाहे सका करब अरमरह । यह निरक আফেসার খোবকেও ভার পদখলন বা চরিত্রহীনভার ভব্ন স্বদিক विरवहमा कराम मिनहरे मारी करा शह मा। कनकीविमी मारी উৰাকে একনিষ্ঠ জীবন যাপনের স্থয়োগ দিয়ে প্রো: বোষ তাকে অধিকত্ব অধ্যপত্তন হতে যে বুকা করেছেন, তা নিঃসংশর চিত্তেই বলা বেভে পারে। আর এ হতভাগিনী নারী উবারাণীরও 🗣 वह मन्त्रन लाहे ? जाएक देव कि। छाना इटन कि त्र শিলের পূজারী হবে এতো নাম করতে পারতো? সেদিনও তো আৰ্থৰ ও চিরঞ্জী বাব ঐ নাবীর অভিনয়-চাতর্বে। মুগ্র হবে গিবেছিলেন। প্রণব এবং চিরঞ্জীব বাবুর মনে হলো, বে নুতন দৃষ্টিভঙ্গীর সাহাব্যে খুঁজে বার করতে পারলে পাঁক জ্ঞাল বা ডেবরিসের মধ্য থেকেও বহু মণিমাণিকা ভাচলে উদ্ধার করা বার। এই সব জ্বাড়ী বদমায়েদরা ঐরপ পদ্ধিদ পরিবেশের মধ্যে থেকেও বে তথনও পর্বাপ্ত করেকটি গুণেরও অধিকারী থাকতে পারে, তা ভথনও পর্বাস্ত প্রণাব ও চিরঞ্জীব বাবর কল্পনারও বাইরে ছিল। কৈ, বে অপকার্য্য ভারা পেশারণে গ্রহণ করেছে ভার বাইরে ভো ভারা অন্ত কোনও অপরাধ করে না ? বরং এমন বছ বৌনজ ও অবৌনজ অপরাধ আছে, যাকে ভারা অস্তবের সঙ্গে ঘুণাই করে থাকে। ভাদের সামেস্তা করার জন্ম প্রভিলোধের মনোবৃত্তি নিয়ে প্রণব ও চিরঞ্জীর বাবু ভালের ডেরার মধ্যে মধ্যে হানা দিরেছে। কিন্ত আজও পর্যাক্ত কোনও ধর্মবাজক বা সমাজসেবী ভালের দেহ ও মনকে উদ্ধার করবার षद्ध সেইখানে বাওয়ার করনাও করে নি। প্রণব ও চিরঞ্জীব বাবু সৰ দিক ভেবে কাৰুৱ উপৰ ৰাগ তো কৰতেই পাবলো না, বৰং সকলেরই প্রতি ভারা প্রশংসোর ব হরে উঠলো। মারুবের বদি বাঘ মারার অধিকার থাকে ভাত্তে বাবেরও আত্মরকার্থে যুরে পীড়াবাৰ অধিকার আছে বৈ কি ৷ পুলিশের আক্রমণের প্রভান্তরে ভালের উপর গুণাললের প্রক্তি আক্রমণের মধ্যে প্রেশব ও চিরম্বীর বাবু আৰু বেন কোনও অক্সায় দেখতে পেলেন না।

নিশ্চরই কামীন ওদের দেবে। এতে আপত্তি নেই আমাদের।' বিষাযুক্ত চিত্তে প্রোঃ বোষকে উদ্দেশ করে প্রথব বার বললেন, কিছ সেট সলে এ দণিক্র প্রমিক আত্মারামকেও ক্রাপ্নাকে আরীনে নিয়ে বেতে হবে'। 'এঁয়া। এই আবার কি মুছিলে ফেললেন আমাকৈ সমুক্ত হয়ে প্রোফেসর ঘোষ-উত্তর দিলেন, 'ট্রা লোকটাকে ভো আমি ভিনি না, ভাব ? না, মণাট। ও সব বাইরের লোকের ব্যাপারে আমার কোনও মাধাবাধাই নেই'।

প্রোক্সের খোন সাভেন সভা কথাই বলেছিলেন। যে বৃগে বন্ধুছ ছাপনের সময় প্রথমেই বিবেচনা করা হয়ে থাকে ব বি বন্ধুছ ছাপনের সময় প্রথমেই বিবেচনা করা হয়ে থাকে ব বি বন্ধুছ বাজির কভটুকু মাছরের উপকার করার জমতা আছে, সেই বৃগে জার কভটুকুই বা ভাছ অপকার করার জমতা আছে, সেই বৃগে জারাহণ করে জিজারিল পঞ্জিত প্রোফ্সের ছোবের পক্ষে এর চেয়ে অধিক উরারভা কেথানো সভবও ছিল না। ভাই প্রেণ বাব্ একরার পর্য ভবরার জভ সন্থে হণ্ডার্মান কচুরী গাঁলির প্রথান্ত ওপা সর্থার বিঠালয়ামকে জিজারা করলেন, 'কেয়া সন্ধান। আছারায়কোভী জামীনমে লে লেগা'। ওপা-সর্ধার বিঠালতাম কিছু প্রথম বাব্ প্রথমের উপ্রয়ে বলে উঠলো, 'জল্পর বাব্ সাব। উনকো জামীনমে লে লেলে। উনকো ইলি আপ্সাক্ষে বাব্ ক্রামের উপ্রয়ে বলে উঠলো, 'জল্পর বাব্ সাব। উনকো জামীনমে লে লেলে। উনকে। ইলি আপ্সাক্ষে বাজে ছামি লোকই তে। দারী ছার। বেইমানী কাম হামলোক কডি নেহী করেলা, বাবু সাব।'

লোফেসার ছোৰ সাহেৰের মত গুণা-সন্দার বিঠলরামণ্ড আত্মারামকে মাত্র এইদিনই দেখেছে। সাধারণ ভাবে মনে হতে পারে **७७।-मर्काव विक्रेणवास्मव धवर्शिव वावहास्त्रव छन्न मोदी छन्न छात्रि**व বেপরোয়া মনোভাব। বিশ্ব এই ক্ষেত্রে ভার স্বভাবস্থলভ বেপরোয়া মনোবৃত্তির সহিত বে বধেষ্ট দরদেরও হোঁরাচ ছিল ভাতে অভিজ্ঞ অফসার প্রণব বাবুর কোনও সন্দেহই ছিল না। ভারা খুলী মনে তাকে বাহবা দিয়ে কি একটা কথা বলতে চাইছিলেন, এমন সময় দরকার সিপাহী ছুটে এসে সেলাম করে জানালে, 'ছজুর বড় সাঙের শাগরা।' এব সঙ্গে সঙ্গে বাহির হতে পাহারারত বন্ধুকধারী সেণ্টি,র বন্তুক উঠানো ও নামানোর খটখট আওয়াজের সঙ্গে একটি মোটব গাড়িব দৰ্মা থলা ও বন্ধেরও একটা খটাখট আভ্রাদ্ধ শুন। গেল। প্রণব ও চিরঞ্জীব বাবু উঠে গাঁড়াবার সঙ্গে সঙ্গে কোন দিকে দুকপাত না করে ক্রন্তগতিতে বড় সাহেব রমেশ বাবু থানার জুনিয়ার অকসাবের ব্রের মধ্যে চুকে পড়লেন। ব্ডুসাহেবের পিছন পিছন তাঁকে সম্মান দেখানোর জন্ম প্রণব ও চিরঞ্জীব বাব এবং থেই সঙ্গে প্রোফেসার ঘোষ সাঙ্কেবও বড় সাহেবের সম্মুখে এসে উপস্থিত হলেন। আসন গ্রহণ করার পর বড় সাহেব রমেল বাবর প্রোফেসার বোবের উপর প্রথম দৃষ্টি পড়লো। একটুখানি দাঁড়িয়ে উঠে উংকুল হরে বড় সাহেব বলে উঠলেন, হালো প্রোকেসার ছোর। জাপনি এখানে, ব্যাপার 🖚 ?' প্রোফেসর খোব সাহেবের বক্তব্যটুকু ধীরভাবে **छत्न निरंद राष्ट्र मार्क्ट वर्षमा वावू थानाव वाक्यावृदक छैत्सम करव वर्ष्म** উঠলেন, 'এঁয়া, এ আবার কি ? এ তেরী ব্যাভ কেল, উ:া পুলিশকে জুবাড়ীৰা ধৰে পিটিয়ে দিলে। ভেপুটা সাহেব ভনলে ভো বেগে আগুন হবেন। এঁয়া? আমি জানতে চাই কে ওথানে জুল চালাছিল। ওদের কাছ হতে বুবের প্রসা থেরে ওদের ধরতে গেঞ্টে ত্ত্ব প্ৰবা মাৰ্থিঠ কৰে থাকে। তা না ছলে ওদের মন্ত্রাল কোড অফুৰায়ী ওয়া শুৰু ধৰাৰ ক্ষয়ে পুলিলের গায়ে হাত বধনই ভাবে না। जावात यान रहा, अहे मृत के विवतीय वायूबरे स्वात । जावि अकृति ^{७१०}

সাসপেও কবে পাৰে। সাধনের সোমবারের সকালে আপনি ওকে ক্ষেডাবাগানের বিলোটের ক্লয়ে হাজির করবেন। এখন আত্মারাম হাড়া আর সকলকেট আপনারা জামিন দিরে দিন ! এদের বিক্লছে তো মাত্ৰ ঐ জুবাৰ পেটা কেন। আজাবামের বিকৃত্তে তো দেখছি সিবিস্তাস কেস সেখা ভবেছে। ওব জামিন টামিন কিছ এখন ছবে না। ও পালি'ব পানাব এদে ধৰত দিবেছে না চাডী করেছে। ও সৰ চালাকী ভোষকা না বুঝো, আমি তো বুঝি। ও ছোডে এলে থানার দলের করে খবর দিতে এমেছিল, বাতে ওলের সকলেরট বিকরে মা शंसते त्कन मूळ् करा हत्। श्रमत छोंश्रकांद चामि कृति मा। आंध्र विभ वहव हांकवी हत्य हम्राला चांघांव। এक्हें खिंद কাৰে বাতে আচাৰত থেকে **অভত এ লোকটা না থালাস** পাছ। ' विक्र मार्टिय बरमन यातुन भवित्रभीतमम् क्रम 'मन क्रम्बम चामाधीतक विक्रियातारे काँच नामान नेक कवित्व क्था स्टाहिन। प्रकेरनर मछ वछ गारहरवर छैनातम श चारतम प्रकार विकार है ये प्रकम बाप्रामीतम्बल कात्म शिराक्तिम । श्रशा-मर्माद विक्रेमदाम অভাষাম সম্পর্কীর উপদেশটি শুনা মাত্র অবাক হরে মনে মনে অষ্টিডে উঠলো, হা বে খোদা ৷ এই সব বুড়বাকদের তুমি আমাদের मण रमहाना करत कुनरक शांतरन ना ? क्था-नर्फारवत अक्सन সাকরেদ আসামীরও কানে বভ সাহেবের শেবের আদেশটি প্রবেশ ^{করেছিল।} তাই দে-ও বেন একবার ভাবের **আ**বেপে অভুট শ্বরে বঙ্গে উঠলো, 'সব বেইমান হায়। আর সকলের মত চিরঞ্জীব বাবুও এতকণ দাঁভিয়ে দাঁভিয়ে বড় সাহেবের উপদেশ ও নির্দেশ-বাণী গুনেছিলেন। নিজের বা কিছু অপমান তা কিছুকণের ৰৰ ভূবে গিয়ে ভাঁৰ ঠোটেৰ কোণে মাত্ৰ একটা কথাই যুগিয়ে এলো 'এ কি বিচার না বিচারের প্রহসন!' কেবলমাত্র পানার বড় বাবু মরমে মরে গিয়ে মধ্যে মধ্যে চিরঞ্জীব বাবুর দিকেই মাত্র চেয়ে দেখছিলেন। বড সাহেব রমেশ বাব বিছ কে কি ভাবে তাঁৰ উপদেশ এবং নিৰ্দেশবাণী গ্ৰহণ করছে, তা ভেবে দেখবাৰও প্ৰয়োজন মনে কন্মলেন না। ক্ষমতায় আসীন ব্যক্তিদের এই সব আজেবাজে বিষয় ভেবে দেখবার জন্ম পর্যাপ্ত ন্মগ্ৰন থাকবাৰও কথা নয়। তিনি ভাড়াতাড়ি কয়েকটি প্ৰয়োজনীয় াভাপতে মন্তব্য সহ দক্তথত করে বেমন বেগে প্রবেশ করেছিলেন ^{ত্রেমনি} বেগে থানা থেকে বহির্গতিও হ**রে গেলেন। পিছন পিছ**ন ্রতাধিক বেগে থানার অফিসারের দল জাঁদের শেব অভিবাদন স্থানাবার উদ্দেশ্যে তাঁকে তাঁর গাড়ী পর্যন্ত এটা স্বভির নিঃখাস ফেলে পুনরার তাঁরা পানার ভিতৰ ফিরে এলেন। ততক্ৰে থানার ष्यश्चन কথ্যানীর দল বড় সাহেব রমেশ বাবুৰ নির্দেশ অম্বায়ী এক আত্মানাম ব্যক্তীত অপর সকল আসামীকেই প্রোকেসার বোব সাহেবের কাষানতে জামীন দিয়ে ছেড়ে দিয়েছে। প্রত্যাপত অফসার্দের গা ^{এঁ}সে আসামীরা একে একে ধানা হতে এ**চক্লণে বেরি**রে বা**ছিল।** তাদের দিকে নির্বিকার দৃষ্টিতে একবার চেবে দেখে বড়বার মহীক্র तीत मामान कित्रक्षीय वातूव कीत्यत्र छेभन्न कांछ त्वाच वाम केंद्रमनन গড় সাহেবকে কিছ কোনও প্ৰকাৰেই একত লোব (Vet) ^{দানু} না। তাঁৰ ধান ধাৰণা ও অভিজ্ঞতাৰ দিক বিচার করলে তাঁর এই বুল বিবেচনার বভ তাঁকে কোনও

বোৰই দেওৱা উচিত হবে না। বা কিছু গোব তা আমাৰ আব ঐ হৈত জমাণার মোহন সিং-এর। মিছামিছি আমাদের কৃত দোবঙালি বড় সাহেব নিবিবচারে ভোমাব উপর চালিরে দিলেন। সভাই চিরজীব, আমি এজত বড় লজ্জিত ও ছাখিত। ঠিক আছে, বাওৱা বাবে আখুন ভোমাকে নিরে সোমবারে তাঁর রিপোর্ট ক্যে। বড় বড়ই ওঁবা বাঘ ভালুক ভোমাকের বড়বাবুর আছে। হাা, ভারিই ক্যাজা ভোমাকের বড়বাবুর আছে। হাা, ভারিই ক্যাজা ভোমাকের বড়বাবুর আছে। হাা, ভারিই ক্

নিজেৰ জুনিচাৰ অভিনাবদেৰ কাছে থমন প্ৰাঞ্জন ভাবে বডৰাবু বাকাৰোক্তি কৰবেন তা প্ৰধাৰ ও চিনন্ধীৰ বাবুৰ বাবেণাৰ বাইবে জিল। জাঁৱ সভাবাদিতা এবং জুনিয়াৰ অভিসাবদেশ প্ৰতি অলয়া ছেড ও কৰ্ম্ববাৰোধ সভা সভাই ভাষেৰ মুখ্ৰ কৰে জুলেছিল। সপ্ৰতিভ ভাবে 'না ভাব, ঠিক আছে' বলে উত্তৰে ভাবেৰ প্ৰিছ বড়বাবৃক্তে প্ৰধাম জানাৰো হাত্ৰ, তিনি বিভঙাক্তে প্ৰণাৰ ও চিনন্ধীৰ বাবুকে উল্লেশ কৰে বললেন, 'হাা, দেখো সহয়েও উৰাক্তে আজ আমাৰ এব জন্মৰ গোছেৰ আমন্ত্ৰণ আছে থানাৰ ফিনতে আজ আমাৰ প্ৰনেক বাত হবে বাবে। ঐ জাবগাটাৰ ঠিকানাটা মাত্ৰ এই থানাৰ সিপাহী ক্ৰিমবল্লেৰ জানা আছে। বলি একান্তই লবকাৰ হবে পড়ে তা'হলে তাকে দিয়ে ভাডাভাড়ি আমাকে ভেকে পাঠাবে। আছো, এখন ভাই তা'হলে চলি আমি। বড়বাবু খানা হতে বাৰ হয়ে গেলে প্ৰণাৰ ও চিনন্ধীৰ বাৰু নিজেদেৰ নিৰ্দিষ্ট কক্ষে কিন্তে এলেন। বড়কণ তাৰা চপ ক্ৰেই

বাদবী বস্থর বন্ধনহীন গ্রন্থি

দাম—ছু' টাকা

বলাকা প্রকাশনী

২৭-সি, আমহাষ্ঠ খ্রীট, কলিকাতা—৯

"লেথিকার প্রথম উপস্থাস, তাই চ্পানামে ভীরু পদক্ষেপ।
শ্রীমতী ভক্তি দেবী বইয়ের ভূমিকায় চ্পান্তরন নিচ্ছেই কাটিয়ে
উঠেছেন, সম্ভবত: তারাশঙ্করের ভূমিকায় কেটে গেছে।
প্রাণতোব ঘটকও ভক্তি দেবীর শক্তির পরিচয় জেনেই এ
কাব্দে তাঁকে উৎসাহিত ক'রে এই বই নিহিয়েছেন এবং
বস্থমতীতে প্রকাশ করেছেন। কাহিনী পরিকল্পনায় তুঃসাহসের
পরিচয় আছে—এবং শেষ অবধি তা নিশ্চিত সৎসাহসের
নির্দেশরসে ফুটে উঠেছে। এই বইয়ের ছুটি পুরুষ-চরিত্র
এবং একটি নারীচরিত্র, সৎসাহস, উদাধ্য এবং আম্বরিকতার
সংগে সমাজের একটি অতি বড় সমস্যা সমাধানের ইন্তিভ
দিয়েছে। বইখানা একটানা শেষ না করা পর্যান্ত থামা যায়
না। ভাষা সরল এবং জোরালো; এ রক্ষ স্কর ছাপা বইতে
ছাপার ভূল অবাহিত।"— মুগান্তর, ১৫ই ফেক্স্মারী, ১৯৫৯।

বদে বইলেন, ভারপর সহসা নীববভা ভঞ্ক করে চিরঞ্জীব বাবু বলে উঠলেন, দেখুন প্রণব বাবু! সভাই তা' হলে হিট্টি বিপিটস ইটসেলফ। কচুবীগলিতে গুণাদের আক্রমণের সময় বেমন একসময় আন্ধানাম হাড়া আমাদের হেপাজতে কিছুক্ষণের জন্ত আব কোনও আ্যামীই অবশিষ্ঠ ছিল না, তেমনি ধানাতেও এখোন এই হভভাগ্য অনুগত আন্থাবাম হাড়া আমাদের বাবা গৃত আব একজন আ্যামীও অবশিষ্ঠ বইল না। এই কি হচ্ছে তা'হলে ঈথবের চুলচেরা বিচাব ? আমার নিজের তুর্জোগের কথা না হব বাণুই দিলাম।

'ইববকে অকারণে আমাদের মধ্যে টেনে এনো না, চিরঞ্জীর', একট্ট হেনে ফেলে প্রথম বার্ উত্তর করলেন, 'মান্তবের জীবনটা হচ্ছে একটা বিরাট অন্ধান্ত। ঠিক হিসের মক চলতে না পারলে এই রকম গোলমাল ও ভূল বাবে বাবে হবে। আললে আমাদের ভালকর্ম মুগোপ্যোগী না হওরার অন্তে বাবে বাবে আমরা বিপদে পড়ে থাকি। তাই আমাব মনে হয় যে মুগের পরিবর্তন না হওরা পর্যন্ত কিছুকাল আমাদের অপেকা করাই উচিত হবে। তবে দিন আগত এ, কিছু একথাও ঠিক যে, সাধ্যমত আমাদেরই এ আকাজ্যিত মুগের আও আগমনের স্কুচনা করে দিতে হবে। তবে এই জন্ত কিছু কিছু বিভ্রমনা ও লাজনা আমাদের মধ্যে মধ্যে সুক্ত করতে

হবে বৈ কি ? আমরা ভো কোন হার, ভাই! পৃথিবীর প্রথাত অবতারহা পর্যন্ত যুগের বিরুদ্ধে পাড়াতে সকল ক্ষেত্রে সাহসী इन नि । अत्निष्कि, औ जब बरवना वैधर्मशक्त ७ व्यवकारामय श्रीप्र नकरमहे चन्न इं होज़ार रश्तर शूर्त्य बनाशहण करबहिरमन। इंडिकान यत्न (व, के नमग्र को छनान क्षंत्र। शृथियीव नर्सकर চালু ছিল। কিছ এ সকল অবতাররা বহু ভালো ভালো বাণী मायुग्रक व्यनान कदानत को छनान व्यथात विलापन विकास একটি কথাও উচ্চারণ করে তাঁদের পূর্বপোষক ধনী ভক্ত শিখাদের বিরাগভালন হতে বোধ হয় কোন দিনই সাহদ করেন নি। ভারা মনুবা সমাজকে প্রগাঢ়রণে ভালবাসলেও তৎকালীন যুগের পরিবর্ত্তনের অভ অপেকা করাই সমীচীন মনে করছিলেন বোধ হয়। যাঁৱা ভা কবেন নি'ভাঁৱা নিশ্চৱই ঐ সময়কার অনসমাজের হাডে অব্যক্তাবে নিগৃহীত হয়ে বসবাসের অভ গছন অরণাকেই বেছে নিরে খাকবেন। থাক এখনোএ সব তত্ত্ত্থা, ঈশব ও তাঁর অবিচারের কথা ভলে এইবার মামলার ডাইবী ক'টা চটপট লিখে ফেলতে হবে আমাদের। ভা'না হলে আমাদের আরও এমন সব অপমান সইতে इत्त्रं वा वधने अर्था स्वामात्म्य थायेगाय वाहेत्वहे स्वाष्ट्र ।

ক্রমশ:।

বিদায়

তরুলতা ঘোষ

স্বপনের খোর ভেঙ্গে গেছে মোর—
বাই তবে চলে বাই,
বাসনার নীল আকান্দের শেবে
বামধ্যু আর নাই।
নীল নভোপটে মেলে দেব পাধা,
দ্বে চলে যাব বিক্ত বলাকা
অসীম শ্লে গুঁজে দেবি বদি
শান্তির নীড় পাই।
বেদনা-বিশ্ব শ্ল জদবে
বিদাবের গান পাই।

দ্ব-দ্বান্ত ভ্ৰমণ-ক্লান্ত
প্ৰান্ত বলাকা আমি.
ছারা-সুনিবিড় আশ্রুর লাগি
তব শাধা 'পরে নামি,
মনে ছিল আশা দেখা গা'ব গান,
কুস্ম-স্বাদে করে নেব স্থান,
গোপন-পুলকে ঢেলে দেব প্রাণ
প্রবছারে থামি।
বহু আশা করে তব শাধা পরে
নীড় বেঁধেছিয়ু আমি।

কানন-কুলে কুম্ম-পুঞ্জে
ঋতু গেরে বার গান,
ভাষা দিশাহারা স্ব-স্বাভিতে
বিবশ আমার প্রাণ,
নয়নের জল ঢালি তরুম্লে,
আশা করেছিত্ব পত্তে ও ফুলে
লশিত মাধুবী উঠিবে গো ছলে,
নিঃশেষে দিব দান—
বন্ধনটীন ব্যাধারার
পূলকাঞ্চিত প্রাণ।

গুৰু শাখাৰ স্থা আগ্ৰহ—
গ্ৰাম কিশসর হাবা
দে তো নিজাণ কঠিন বাঁধন,
দে তো নিৰ্মৰ কাবা।
গুই তো আমাৰ শাখা-নীড়ে আজি
ককণ-বাগিণী উঠিতেছে বাজি,
গোপনে ব্যথার ববে পড়ে হার
গলিত বেদনা-ধারা,
বহু দূবে ভাই আমি চলে বাই
স্থপ্ন প্লোবেছে সাবা।

फिरतत अर्व फिल अणिफिल ...



রেলোনা ঝো, নিঃ, অট্রেলিয়ার পক্ষে হিন্দুহান নিভার নিঃ, কর্ম্বর ভারতে একড

BP. 148-X58 BQ.



িপৃধ-প্রকাশিতের পর] স্থালেখা দাশগুপ্তা

নিরে কথা বলতে ওর আর মন ছিল না। নইলে বলে না
গোলেও এসে বলতো। ববং বলতো আরো বং চড়িয়েই—বদি ও রজতের
এই রাজকীর লাঞ্চ পার্টির রাজকীয় অপব্যরের উপর আর কিছু
কারিগরি চালাবার লক্ষি ওর ছিল মা। তব ছু'টোথ বড বড় করে
ভূলে হুন্থ-বিশ্বযের ভাগ করে বর্ণনা দিস্ত সেই পরমান্দর্য থাতাভালিকার। দরভার বাগত সভাষণবতা মড়েলের মতো গাঁডিরে থাকা
মেরেটি হতে আরম্ভ করে প্রতিটি বিভিন্ন নারী-পুরুষের বিভিন্ন
রকমের পোরাত্ত-পরিজ্ঞানের আর চলম্বলনের ব্যরের অস্কের।
বলত, আরা ভোবাই দেখলিনে। আমার এমন ছুংখ হচ্ছে, আপসোল
ছচ্ছে। এঁয়া বলব আর একদিন এমনি একটা পার্টির আরোজন
করতে ? ওদের পক্ষে কি আর এমন। আমাদের পাঁচ সাভ টাকা
ভদের পাঁচ শক্ত হাজার টাকা এক কথা ভো—বলবো ? দেখবি

'নৰ মাত', নত কনা, নত বধ্ সকৰী ৰপদী, তে অনন্ত বৌৰনা উৰ্থী পুনিগণ ধানে ভাজি দেৱ পদে তপসাৰ ফল ভোমাৰ কটাক্ষণাতে ত্ৰিভ্ৰন বৌৰন-চঞ্চল, তব স্তুনভাৰ হতে নভস্তালে ধদি পড়ে ভাৰা—

আকন্মাং পুরুষের বক্ষোমাঝে চিত্ত আত্মহারা, নাচে বক্তমারা।'

যাবি দিদি? আমি বললে ভদ্রলোক ঠিক আর একদিন এমনি একটা পার্টির ব্যবস্থা করবেন। এতো তালো না—একেবারে ভীষণ। ভারপর লজ্জার রং মিশিরে ধেমে ধ্যমে বেন বলভে চার না, ভেতরের আবেগ চেপে রাখতে পারছে না বলেই বলে ফেলছে, এমনি করে বলভ বজতের কথা আর দেখত মৌরীর মুখের চেহারা বলল। ক্লেপানোর এমন একটা বিষয় হাতে পেরেও বে ছেড়ে গেল মজু, তা একেবারেই ভিজ্ঞাবোৰে।

ভবু কিছ মঞ্জে দেখা গেল একদিন বজতেরই হোটেলের ক্রিডোর দিয়ে দ্রুত পায় প্রবেশ করতে এবং বজতের বছ দরকায় পাঁড়িয়ে টোকা দিতে।

আৰু ছুটিব দিন দেখে সকাল বেলা বেৰিছেছিল সে ভাব এক ৰত্নৰ দেওৱা ছটো ঠিকানা নিবে টুইসনেব খোঁজে। ছ' জাৱগা খেকেই নিৰাশ হন্তে ক্ৰিডে ছয়েছে ভাকে। ইয়োবোপীর দেশগুলোর ইতি-হতিনিক পড়তে পড়তে উপাৰ কৰীৰ নানা প্ৰেণগ-প্ৰাইখাৰ কৰা চিভা কৰতে কৰতে পথ চলছিল মন্থ আৰু ক্ষুক্ত ভাবে ভাবচিত্ৰ, একটা বি. এ অন্যাসের হাত্তী সে, একটা সামান্য বোঞ্গাবের পথ মাধা খোঁড়াখুঁ ডি করেও করে উঠতে পারছে না!

বজা কিছু হঠাৎ করে একটা বেশ ভালো টুইশন পেরে গেছে।
একটি এগালো মেরেকে বালো শেখানো। সপ্তাহে ভিন দিন।
গঠানোর টাকা মারনে। ও যদি এমনি একটা ভোগাড় করতে
পারতো। হঠাৎ পথের মাঝেই খমকে দাঁড়িয়ে পড়ল মস্তু। রক্ষতের
সেই লাক্ষে বহু ইরোরোপীয়ান মহিলার ভিড় দেখেছে সে। ভাদের
ভেহর তো কারু বাংলা শেখার প্রয়োজন না থাক, স্থ থাকতেও
পারে। যদি না-ও থাকে ভবে কথাটা মনে হছে না বলেই
হয়ত নেই। বললে উৎসাহবোধ করতে পারে। বিশেষ করে
কথাটা যদি আবার রক্তক বলে। হাঁ নিশ্চর—বড়ার মতেও
একটা কান্ধ বজত ওকে ঠিক করে দিতে অনারাসে পারে, এই
মুহুর্তে পারে।

মন্ত্রধন গিরে রঞ্জের খরের মেহগনি কাঠের ভারি দরভাব वक्क क्लार्ड रोहाका निरंत्र नीड़ारना, खबन नम्हा राख्य ना शिराउ বাজে। এই কিছুক্ষণ হলো মাত্র বিছানা ছেড়ে সোফার এসে বদেছিল রঞ্জত বন্ধ লেবুর রুস দেওয়া ব'কফি দিয়ে গেলে বসে বঙ্গে জাতে গলা ভিজোচ্ছিল আৰু বিস্থাদ—বিস্থাদ বেন তাৰ বাত ভোও শিশবিট ঢাল। জিবে মনে শ্ৰীবে, বিস্থাদ ধেন তার পুৰে। জীবনটার প্রতি এমনি ভাবে প্রতিটা চুমুকের সংগ্রে মুধ বিকৃত করতে করতে বাঁ হাতে কৃষ্ণ এলোমেলো চুলগুলোকে পেছন দিকে ঠেলছিল এমনি সময় দরজায় টোকার শব্দ হলো। বে ভাবে ঝুঁকে বলেছিল ভেমনি ভাবে বদে খেকে চুলের ভেতর আঙ্গুল চালাতে চালাভে বিংস গলায় গাড়া দিল দে—কাম ইন—কাম ইন। মঞ্ভেতবে চুক বেল করেক পা ববের ভেতর এগিরে এলে মুখ তুলল সে। প্রথম মুহুর্জনৈর বে মঞ্কে কোন সম্ভাবণ করে উঠতে পারলে না বজত সেটার কারণ বোধ হয় অবিশাশ্য আনন্দ। ভারপর একেবারে উঠে দীড়িয়ে ডান হাভটা প্রসারিত করে দিয়ে পাহ্বান জানালো—ভারে धामा धामा ।

মঞ্ছারো করেক পা এগিরে এলে সম্ভত ভঙ্গিতে সামনের সোকাটা দেখিরে দিল বসভে।

মঞ্বসলে সে-ও বসল মঞ্ব মুখোমুখি কোঁচে। টেবিলের উপবেব টিনটা খেকে একটা নিগাবেট টেনে বের করে তুই ঠোঁটের চাপে ধরে লাইটার আলাতে আলাতে বলল—'প্রভাতে উঠিরা ও মুখ দেখিছু, দিন বাবে আল ভালো' কি বলো ?

লাইটারের পলক আলোর রজত্তের মুখের বা সব আগে মঞ্গ চোবে পড়ল তা হলো, তার তৃই চোখের কোল-গড়ানো গভীর কালি—কুর্মা-ঢালা কালি।

লাইটার নামিয়ে মঞুর দিকে তাকালো বজত-ক্ষি থাবে?

—না। কফির গন্ধ আমার ভালো লাগে না।

—বালাল আর কা'কে বলে। আছো, চা আসছে। চা-⁵ থেয়ো। মঞ্ব দিকে একটু ব্ঁকে বসল রজক—ভারণর বলো দে^{বি} তুনি, তোমার সে দিনের প্রার্থনায় জোর ধ্বেছিল ?

হাগল মন্থু।

— অবণ্ডি তৃমি বলবে তোষার প্রার্থনার জোর ছিল কি না তার পরধ তো হবে আমফ্লের দিরে। আশা হর ডোমার ? —হয়। হাসিমুখে জবাব দিল মঞ্। তবে প্রার্থনার ফললাভ তো হাতে হাতে হয় না কিছু একদিন না একদিন নাকি হয়ই। ফলের জন্ম অপুক্ষা করতে হবে আমাদের।

--কববে অপেকা ?

সরল ভাবে 'হাঁ' বলতে গিয়ে বন্ধতের চোধের দিকে তাকিরে থেমে গেল মঞু।

হাসল বক্ষত। ছেলেমানবি কবছি। বেন আপনাকে আপনি বলে উঠে পড়ল বজত সোফা ছেড়ে। ইটোইটি কবতে করতে বল্লে—মামি তো জানি আমাকে ংমক দিরে নিজে তৃমি বাড়ী ফিবে গিয়ে দিব্য পেট পুরে খেয়েছ। তাই তোমার প্রার্থনায় জোর না ধরণেও আমারটায় নিশ্চরই ধরেছিল। একে তো নির্জ্ঞলা উপোদ করেছিই। তার উপর জানতো, সাধনায় বসবার আপে সাধকবা সিদ্ধি গাঁজা ভাঙ্গ কারণ বা হোক একটা নেশায় বুঁদ হয়ে বনেন। তাকেও ক্রটি বাধিনি আমি। আছেণ, সেদিন তোমার খুবই ধারাপ লেগেছিল না ?

- —লেগেছিল।
- ---কিছ কেন ?
- —ভালো লাগছিল না বলে।

হেলে ফেলল বজত।—তোমার কি ভালো লাগে বলো ?

- —ভাবতে হবে।
- —বেশ ভেবেই বল। বলল বজত।
- —এতো তাড়াতাড়ি হবে না। মনে সর্বদাই তো কত চাওয়ার ভিড় দেগে রয়েছে কিছ যদি দৈববাণী হয়, বর নাও।' তথন কি আমরা ভেবে ঠিক করে উঠতে পারি কি ছাই!
 - --পারো না গ
- ——না। মাধা নাড়ল মঞ্। পারি না। আমি আকুল হরে ভেবে দেখেছি, খুঁজে পাইনে। সব চাওরা কেমন বেন তুল্ক হরে উঠে চোধের উপর দিয়ে, একের পর এক করে মিলিয়ে বেভে থাকে। হাসল মঞ্ । আপনাবটাও ভেবে দেখতে সময় লাগবে। এটা ওটা একটা কিছু বলে ঠকে বেভেও ভো পারি।

দৃষ্টিটাকে একটা কিছুর ওপর বেথে বজতকে জন্মনত্ব ভাবে বদে বদে চুগ পেছন দিকে ঠেলতে দেখে মগু জিজাসা করল—কি ভাবছেন এতো ?

—তোমাকে। তোমার কথা অনেক সময়েই আমি এমনি ভাবি। আছো মঞ্ট তুমি কথনো কাউকে ধ্ব ভেবেছ—ভীবণ ভাবে ভেবেছ १

उरकर्गार हित्न हित्न करांव फिल प्रञ्जू —है।---वा -- वा ।

- **一(** () (
- ---বলবো ?
- —ব**লো**।

— সামার নজরটা সব দিকেই সাংঘাতিক রক্ষের উঁচু।
সাধারণ মানুবে আমার মন নেই। রাজা মহারাজাদের কাল তো
কালিদাসের কালের মতো হারিয়েই পেল। অপত্যা মন্ত্রীদের

^{২গো} বিনি মহামন্ত্রী তাঁর কথাই ভীবণভাবে ভাবি আমি।
ক্রিভিন তাঁর উদ্দেশ্তে মালা গাঁখা, প্রতিদিন তাঁর উদ্দেশ্তে সে

শাসা সামার অলে ভাসানো। বীতে গ্রীবি শেতপত্ম। বসক্ষ

কাৰিনী। বৰ্ষায় সন্ধাৰ্মালতী। প্ৰীন্ম ভালাই কালের গুছু।
চোধের জলের চাইতে পবিত্র বারি নেই। ভাই সে মালা রাভে
চোধের জলে ভিজিয়ে রেখে ভোরে ভালাই জলে। বেদিন আমার
মালা আমার নিঃখাসের, আমার চোধের জলের উক্তা সজে নিয়ে
গিয়ে তাঁর গলার ছালিয়ে পড়তে পার্বে—সেইদিন ধন্ম হবো আমি।

- --এসো দিছি আমি মালা দেবার ব্যবস্থা করে।
- উহঁ, তেমন দেওয়া নয়—দশের মধ্যে একজন হয়ে দেওয়া নয়। দীর্ঘ প্রতীক্ষার বার্থ হবে তেনু আমার মালা, আমার মালা বলেই এসে প্রাস্থান হাতে গলায় না প্রা প্রস্তু সে মালা জলেই ভেসে বাবে।
- —আছা, তোমার মাল। তিনি তোমার মালা বলেই একাছে গলার প্রলেন। কিন্তু তারপর করবে কি তাকে নিয়ে ভূমি ? সকালবেলা আলু-পটল মাছের ফর্ন হাতে বাজারে পাঠাবে ?
- —না। তাঁর বাজকাজই তিনি করবেন! তথু দিনেত কাজের ভক্তে চুপি চুপি কানের কাছে মুখ নিয়ে বলবে! বাজকাজে ধাবার আগে আমার কথাটা একট তনে বেও গো।

হেদে উঠল বজত—ভোমার রাজার কানে কানে বলা কথাটা কি, নিশ্চয়ই সেটা জিজ্ঞাসা করা আমার পক্ষে শোভন হবে না। কিছ ভারপর ?

- —তারপর ? ভারপর আর আমি ভারতে পারিনে। রাজার রাজত্বের চেহারাই বাবে বদলে। ৩:, আপনি ভারতেন তো কি বৃষ্টতা কি স্পর্জা মেরেটার! কিছু শিক্ষিত নার্সের চাইতেও বেমন মঙ্গল ইচ্ছার জোবে আর হৃদয়ের জোবে তুর্থ মা সন্তানের পক্ষে অনেক বেশী মঙ্গলের হরে থাকেন, ভেমনি রাজার রাজত্বের মঙ্গলের পক্ষেও সব চাইতে বেশী মঙ্গলের কাজ করতে পারে শুভ ইচ্ছার জোর, আর হৃদয় পারে না ?
- রাজার গলার মালা দেওরা তোমার ঘটুক আর নাই ঘটুক—
 ভূমি অনেক কাজ করবে মঞ্—নিশ্চরই অনেক কাজ করবে।

বেমন বসেছিল ভেমন বলে থেকেই ডান হাছটা মঞ্ বজতের দিকে বাড়িয়ে বললো, করবো একটা প্রণাম ?

— স্বাবে, কি পাগল! একেবাবে ওপ্ত হয়ে মঞ্ব বাড়ানো হাতটা ছ' হাতে মুঠো করে ধরল রক্ত ।

ওরেটার এসে প্রাভরাশ হাতে ঘরে চুকলে মঞ্র হাত ছেড়ে দিল রজত। হাতের টেটেবিলের ওপর নামিরে রেথে ওয়েটার চলে গেল।

- —এই এগারোটার সমর ভোরের থাওরা ? স্বামি এ সমরই চা থাই। স্বান্ধ নিশ্চরই তোমার উপোলের দিন নর।
- —না বলে এগিয়ে বলে ট্রেটা মঞ্ টেনে নিল কোলের কাছে। ভারপর ফলের ভিদটার ফল নামিরে ধাবারগুলো কিছু কিছু প্লেটে ভূলে নিয়ে নিজের জন্ম রেধে বাকি সব ধরে দিল রজভকে।
- —এটা কি হচ্ছে? সামি খেলে কি মানিয়ে নিভাম না। সকালে মামি ভধু চা খাই। ওদের দেবার নিয়ম, দিয়ে বার।
- সাছে। আৰু ধান। ডিম-কটিব ডিসটা ভার হাতে ভুলে দিরে বলল—সকালে এমন না থাওরাটা কিছু ভালে। ময়। ছুপুরে ধান ক'টার ?
 - -- अक्हां इत्हां किनत्हे ।

— জাঁ। — ছ'চোথ বড় করল মঞ্ । আমার দিদির ভত্বাবধানে থাকলে দেখিয়ে দিভ লিভার নষ্ট করা, আপনার এই থালি পেটে চা-কফি থাওয়া।

মাধা একেবাবে এ কাত ও কাত করল রক্তত— স্বাস্থ্য থাবাপ হর এমন কাক আমি কথনো কবিনে। লিভাবের উপর আমার মারার থবর তুমি কি জানবে । চা-চফি থাবার আলে তুথানা এরাক্ট-বিস্থুট থেরে নিতে আমার কোন দিনও ভূল হর কিনা ডেকে ক্লিজ্ঞালা করে। ওরেটাবকে। চামচে দিয়ে ডিমের পোচটা তুলে মুখে ফেলে কুমাল দিয়ে মুখ মুছল রক্তত। আছে। মঞ্. সেই আক্র্যা নীল চোথের ছেলেটি কে । যদিও তার চেহারার আবো বৈশিষ্ট্য রয়েছে কিন্তু তার চোথের নীল বংটাই সেদিন আমার দৃষ্টি টেনেছিল সব চাইতে বেশী। কে সে !

হাতের টোষ্ট নামিয়ে বিশ্বিত কঠে জিলাসা করল মঞ্—কোধার দেশলেন আপনি তাকে ?

- —কফি-হাউদে।
- --আমার সঙ্গে ?
- —ভাবগুই।
- —কথনোই ক্নি-হাউলে আমার সঙ্গে তাকে আপনি দেখতে পারেন না।
 - —তবে লেকে ?
 - —তাও না।
 - **一**时(本 ?
- —কোন পার্কে? ভারপর রক্ততের মূখের দিকে ভাকিয়ে ব্ললো—না ভা-ও দেখেন নি। মিখ্যে বলছেন।
- —মিখ্যে বস্ছি ? এই চেহারার কাক সঙ্গে তোমার পরিচর নেই ?
 - —ত। আছে। কিন্তু কোধায় দেখলেন, তাই বলুন ?
- দেদিন তুমি বখন না খেরে বেরিরে একে আমি তোমার পেছন পেছন একেছিলাম। তুমি দেখনি। একেবারে একরোধে চলেছিলে ভো? হঠাৎ মস্ত একটা গাড়ী খেকে এক ভন্তদোক বেরিরে এসে তোমার নমস্কার জানালে, তুমি অপ্রত্যাশিত সাক্ষাতে বলে উঠলে— আবে, আপনি কোথা খেকে! ভাবি মজা তো! ভখন আমি ভোমাদের পেছনেই ছিলাম।
- —তাই বলুন। আবার টোষ্ট হাতে তুলে নিল সে। গাড়ী থেকে নামলেও সে কিছ আপনাদের জগতের কেউ নর। আমাকে বাঙ্গাল বলছিলেন তো, ইনি তার চাইতেও বাঙ্গাল। দেশ ছেড়ে এথানে এসেছেন দেশ ভাগেরও বহু পরে।
 - —ভাবপর ?
- —ভারপর বাস করেন উবাত্তদের গোয়ালে। খান আকাঁড়া চালের ভাত আর কচুর তরকারী।

বঙ্গত ওব দিকে তাকিয়ে ওব কথা ওনতে ওনতে যে একে একে তাব ডিসেব সমস্থ থাকার ওব ডিসে তুলে দিতে লাগল, মঞ্ব লক্ষ্যে তা পড়ল না। সে থেতে খেতে নিজেব থোঁকে বলে চললো—মনে আছে দিদির বিরেব দিন সন্ধায় থবর দিতে এসেছিলাম বিরে না হবার। আপনি এক ডিসভর্তি স্বাহ্ থাবার সামনে থবে দিরে বলেছিলেন, তোমার মুধ দেধে মনে হছে সমস্ত দিন তোমার

থাওয়া হয়নি।' সেদিন এই ভদ্রশোকটির স্থুল তৈরীর কলন। প্রিকলনা শুনতে শুনতে দিন এমনই গড়িয়ে গিয়েছিল বে, তার মধ্যাছের থাতা-তালিকার প্রধান মেছু সেই অনবত কচুর তরকারীর স্থাদ গ্রহণ করবার সৌভাগ্য আমার হয়েছিল। কিছু সে তরকারী গুলার এমনই ভূল ফোটাতে লাগল বে আমার পক্ষে হ' গ্রালের বেনী তিন গ্রাদ মুখে তোলা সম্ভব হলো না। শুধু এঁর ক্ষ্ধার্ড খাওয়ার দিকে তাকিয়ে বংসছিলাম।

- —স্থুস কেমন চলছে তার? বেকনের টুকরোগুলো মঞ্র ডিলে তুলে নিজের প্লেট খালি করে রজত হেলে বদল দোফায়।
 - ---স্কল হয়ই নি।
 - -- (कब ?

সংক্ষিপ্ত ভাবণে নীলের স্থুল পরিকল্পনা কাজে পরিণত না ত্রার ঘটনা বলে থাওদা শেষ করল মঞ্। তারপর টি-পট থেকে চা চেলে রজতের হাতে একটা কাপ তুলে নিয়ে নিজের কাপটা হাতে নিয়ে সোফায় পিঠ বাখলো দেও। বর্তমানে ইন এখন সাহিত্যিক নামশিপাদী কোন এক ধনীর মজহুরি করছেন। তার ঠাণ্ডা 'ঘরে মৃসাবান সিগারেট আব বিলিতি নক্ষাতোলা কাপে চা খেতে খেতে নামশুদ্ধ লেখা বিলি করে চলেছেন। সামনে প্রদায় মরকুম, তাই নাকি এখন ভার নিঃখাদ ফেলবার সময় মিলছে না। বলেন, উপাদেয় খাবার খাই। গাড়ীতে বাতায়াত করি। ঠাণ্ডা ঘরে বসি—স্মাটের মতো কাটছে দিনগুলো। বেচারা!

- —এই সৌভাগ্যবান বেচামার নাম ?
- —কি ? বলে বজতেও নিকে ভাকাতেই রলতের কৌত্কোজ্জল চোধের সজে চোধ মিললে হেলে ফেলল মগ্র। ভাব নাম ? ভাব নাম নীল। 'চা'টা চক-চক করে থেয়ে নিয়ে কাপটা রাগতে রাগতে বললো—যত বাঙ্গে কথায় সময় নাই করছি। যে জল্লালা ভাই এপন বলা হলোনা। আমি কিছ একটা বিশেষ দ্বকারে আত্ম আপনার কাছে এনেছিলাম।
- —বেচারার সঙ্গে পরিচয় করা যাবে একদিন কি**ছ** বিশেষ দরকারে এসেছিলে? কি বলোতো? অত্যস্ত উৎস্ক ভাবে বিজ্ঞাসা করে মঞ্ব দিকে সুঁকে বসুস বজত।
 - -- এक्टी कांछ ठांडे।
- কাজ ? থেন 'কাজ' শক্টার জর্ম জনরক্ষম করে উঠতে পারলুনারজ্জ।
- —হাঁ কাছ। একটা ছোটগাটো কাজের ভীংণ দরকার আমার। অবগু কলেজের ফাঁকে। আমার এক বন্ধু একটি গুয়ালো মেয়েকে বাংলা শেখানোর চমৎকার কাজ জোগাঁও করেছে। সেটা দেখেই আমার মনে এলো আপনার সে দিনের পার্টিতে বছ বিদেশিনী সমাবেশ দেখেছিলাম। এমনি একটা কাজ হয়তো জোগাঁড় হয়ে যেতে পারে আপনার কাছে এলে। আর তন্ধু বিদেশীরাই বা কেন, দেখলাম দেশীরাও তো প্রার জনেকেই আপনারা—বাংলা জানেন না।
 - আমরা বাংলা ভানিনে !
- —কোধার আনেন। ইংরেজিতেই তো নিজেদের ভেড^{ুর} কথা বসভিলেন।

-দে কি জানিনে বলে ?

চূলের গোছা আক্লে জড়াতে আর খুলতে খুলতে বিব্রত কঠে।
এজত বলগো—মুস্ফিলে ফেললে দেখছি।

স্বভাব মামু-যের সব কিছু ঠেলে আগে এসে গাঁড়ায়। এই করতে গিরে বে সে নিজের দরকারী কথা থেকে দুরে সয়ে বাছে সে খেয়াস মঞুর বইস না। বললো—জানেন, বাঁরা নিজেদের ভেতরও নিজের ভাষা ছেড়ে ইংরেজী ব্যবহার করেন, তাঁদের সম্বন্ধে বলার কিছু নেই। বলে ঠোঁটে মুখে একটা অবজ্ঞার ব্যঞ্জনা প্রকাশ করল মঞু। কিছু বাঁরা ভা করেন না তাঁরাও অক্সভাবী হলেই সোলা চলে বান ইংরেজীতে। আজ্ঞ এ কেন করে চলেছেন আপনার। গ

বিশ্মিত কঠে বজত বললো— বাদের কথা তুমি শরীর থেকে জাবশোলা কেড়ে কেলে দেবার মতো মুখ করে কেড়ে ফেলে দিলে, তারা কেন তাদের মায়ের মুখের কথা ছেড়ে অপবের মায়ের মুখের কথার কথা বলে, এ তুমি নিশ্চয়ই জিল্ডালা করতে পারো। কিছু বারা বিদেশী তাদের সঙ্গে ইংরেজী বলা ছাড়া উপায় কি?

—উপার না বলা । আগবাড়িয়ে যদি কেউ নিজেদের ভাষার কথা বলতে শোনে তবে দে তো তাদের মন্ত অবিধার কথা । কট কথা বলতে শোনে তবে দে তো তাদের মন্ত অবিধার কথা । কট করে অপর ভাষা শিশতে বসনে তারা কেন্দ্র জানের দিকে তাহিয়ে কোন শিকাটা আমাদের । কিছু ইংরেজী না জানলে বেমন ইংরেজদের দুদশে বসবাস অসম্ভব হয়, হিন্দি না জানলে হিন্দিভাষীদের বাস্দ্যে, ভেমনি বাংশা না জানলে বাংলা দেশে চলাও মদন্তব হবে—এই তো হওয়া উচিত—এই তো করে তোলা উচিত।

মঞ্ব মূথের চাব পালে এনে ট জি-ঝুঁকি দিয়ে দাঁড়ালো বিন্দ্বিন্দ্ উত্তেজনার ভিড দেবতে লাগল রঞ্জ ।

---কিছ আশ্নাদের ভেতএই যদি থাকে অবজ্ঞা থাকে অনাদর, ভবে কি কৰে কি হবে ?

াছতকে আঙ্গুলের টোকায় সিগারেটের ছাই ঝাড়তে দেখে বলস—কি, হাতেও ঐ সিগারেটটার ছাই ঝাড়ার মতোই ঝেড়ে ফেলে নিজন তো কথাগুলোকে আমার একেবারে টাটকা টাটকা ?

- —ন। তৃমি একথাই তো বলতে চাচ্ছ যে, প্রয়োজন হয় পলে প্রয়োজনের চাপেই আনবা শুরু মণত্র প্রয়োজনীয় ভাষাগুলো শিথে থাকি। বাজনা ভাষার পেছনেও একটা প্রয়োজনের চাপ বা তাগিদ স্থাষ্ট করতে হবে—আব কোথাও না হোক বাংলাদেশটুকুর মধ্যে নিশ্যাই। ঠিক। কি করতে হবে বলো ?
 - —আমি বলবো কি করতে হবে !
- স্পৃথিই বলবে। স্বামার কাছে তো এ-সব মচেনা ব্রগতের চিন্তা।

—ভবে সে কথা বলা হরে গেছে। কিন্তু এখন আমি উঠবো। বৌলিবা অপেকা করবেন থাওয়া নিয়ে। যদি আপনার বাদ্ধবীদের কেউ বাংলা শেখেন কবে জামি শেখাতে পারি এবং বর্তমানে দেংশর প্রয়োজনে নয়, নিজের প্রয়োজনের দিকে তাকিয়েই বলছি। পাছে বজ্বত কথাটার উপর গুরুত্ব ভাবোপ না করে, তাই ব্যাগ খুলে ছ' টুকরো কাগজ বের করে রজতের সামনে ধরে বললো, এই দেখুন না ছ'-ছটো কাজের জন্ত বুবে নিয়াশ হয়ে ভারপর আপনার কথা মনে পড়েছে, আপনার কাছে এসেছি। একটা টাকা রোজসারের উপায় না করতে পারলে চলবেই নাবে।

রক্ষত সোকার বীসেই হাত বাড়িরে পালের দেবাজটা টেলে খুলল।
তারপর তার ভেতর থেকে বের করল একটা চেক-বই আর একটা
কলম। টেবিলের উপর লয়া চেক-বইটা মেলে ধরে প্রথমে লিখল।
মঞ্ব নাম। তারপর একটা টানা সই দিল নিজের। কাগজটা ছিঁছে
কাগজ চাপা দিরে বাখল মঞ্জর সামনে।

বোকার মতো জিজাসা করল মঞ্জু—কি এটা ?

—চেক। ভোমার প্রয়োজনটা আমি জানিমে। অকটা ভূমি বসিয়ে নিও।

চেকটা হাতে তুলে নিল মঞ্। কিছুক্ষণ নীরবে র**জতের** নাম সইটা দেধলে, ভারপর চোধ তুলে বললো—পাঁচ দ**ল বিল** হাজার—বসাবো ?

- —বসাও।
- —কিন্তু ভারপর আব বে কোন দিনও আমাকে দেখে দিন ভালো বাবার কথা আপনার মুখে আসবে না ?
 - —ভাসবে।
 - -- আসবে গ
 - —-হাঁ আসবে। তুমি রোক্ত এসো।
 - এমনি সাদা চেক সই করে দে:বন একটা করে ?
 - ---(मदवा ।
 - --ভারপর গ
 - —ভারপর বে দিন না পারবে। সে দিন তুমি থাওয়াবে আমার।
 - —আমি ? কিছ টাকা নিয়ে তো আমি জমিয়ে রাখবো না ?

GUARANTEED



WATCH REPAIRING UNDER EXPERT SUPERVISION



তথন আপনার এক সন্ধার উপকরণ সংগ্রহের সাধ্যও বে আমার মত বিশটা মঞ্জর হবে না।

- -(ECS (FC4) |
- —পারবেন না।
- —পাৰবো। দেখো ভূমি।
- ভাতত শীঅম্। আজ (থকেই। বাব বাব চেক কাটার দরকারটা কি। কেটে দিন একবাবে। আপনার কিছু নর।

হাসল বজত-না আমার কিছু নর।

আৰু সন্ধ্যার আসবো আমি দেখতে। ঠিক ?

উঠে মঞ্ব সোকার পেছনে গিয়ে গাঁড়িরে বলক ভাষাটে হাজের লখা লখা সাক্তা মঞ্ব মাথাটা সম্মেছে একটু চাপড়ালো। ভারপর ছ-হাত পেছনে রেখে পার্চারী করতে লাগল খরের এ-মাখা ও-মাথা।

টেবিলের ওপর থেকে রক্ততের কলমটা তুলে নিয়ে মঙ্গুরের উন্টানো পেথমের মতো গোটা নয় দশ পেথমধরা নয়ের সারি চেকটার মধ্যে লিখে কলম বন্ধ করে উঠে দাঁড়ালো মঞ্ছ।

- —বিলে না।
- —কাজের থোঁজ নিতে আসবো। মনে থাকবে তো আপনার ?
- —থাকবে। সেই থোলা দেবালটার ভেতর একসঙ্গে ভাঁজ কর।
 সামনে বে দশ টাকার নোটের পাঁজাটা ছিল সেটা ভূলে মঞ্ব ব্যাগটা
 গুর হাত থেকে নিয়ে তার ভেতর ভবে দিতে দিতে রজত বলল—বার
 দিলাম । কাজ পেরেই শোধ দিও।
- এ টাকা বে ওর পক্ষে এখন কি, জানে ওধু মঞু। কিছ এ ঘর বেকে টাকা হাতে বেরিরে বেতে দেখেছে সে। এব চাইতে জন্মশর মৃক্ত ওর ধারণা ও জার কোন দিন কিছু দেখেনি। স্তব্ধ হরে দাঁড়িরে বইল মঞু।

ব্যাগটা নিজ হাতে মঞ্ব কাঁথে ঝলিয়ে দিয়ে বজত বলন—সব কিছু নিয়ে এতো অখবা ভাৰতে নেই। বিশেষ করে তোমার মুখে চিতা মানায়, ভাবনা মানায় না একেবারেই।

প্রব্যোজনের চেহারা এক এক সময় এমন দুর্জান্ত হয়েই দেখা দেয়, বধন অস্ক্রকে শুধু বুঝি চোধ বুকে আর ঢোক গিলেই এডাতে হয়।

বাড়ীতে ঢোকার আগে টাকাগুলো ব্যাপ থেকে বের করে ক্সমালে জড়িয়ে বুকের ভেতর ঢোকালো মঞু। কোথায় রাখবে, क (मध्य (क्याद क कार्त ! कथात्र वरण, मार्यात्मत्र भाव तिहै। সে টাকা আর মঞু বেরই করল না আমার ভেতর থেকে। বিকেলে গা বুতে গিয়ে মনের ভুলে গায়ের জামা খুললে খামে ভেলা কুমান্তৰ টাকা পড়ে গিয়েছিল মেঝেৰ উপৰ। টাকাটা তুলে হাতে নিয়েও কভক্ষণ চুপচাপ গাড়িয়েছিল সে। যদি ও দেখতে না পেভ, খেয়াল না করত। এই তো মৌরী এসে দরজায় গাঁড়িয়ে তাড়া দিয়ে গেল ভাড়াভাড়ি করবার জন্ম। ও বেঙ্গুভেই তো সে এসে চুকতো। তার চোখেই তো পড়ত ক্ষমালে জড়ানো এই টাকা। সেই ভো উপুড় হয়ে তুলত। তারপর পাগল হয়ে উঠতনাসে। ক্ষেপামি শুরু করতনাসে! শুনত কোন যুক্তি? মানত কোন কারণ ? বজতের এই দেওবার পেছনে কোন মতলব तिहै, **७३ वहें ति**७द्वाद (पहलि कान व्यर्थान तिहे—पूरे ठींछि সমুদ্রের চেউ-এর মতো বিজ্ঞাপর চেউ তুলে ছুড়ে কেলে দিত ন। কথাগুলোকে মৌরী ঢেউএর মাথারই বস্তুর মতো। দাঁড়িয়ে পাঁড়িরে মঞ্জু ধেন যে তুর্ঘটন। ঘটতে বাচ্ছিল, ভার আদ আর **ৰৱের দত্ত বন্ধা পা**ওয়ার আরাম এই **হুই অমু**ভৃতির উপর দিরে একবার সধের পদচারণা করে এলো।

ক্রিমশঃ।

মানসতীর্থে বাণী পালচৌধুরী

হে বাত্রী মহান্, চলেছো গভির পথ অবারিত করি, ভরে নিভে প্রাণ বিরাট বজ্ঞের আহ্বানে, অসীম সংস্কার পানে

তাই বিষ্ণাবিত পথ।

শরণ্যের নিংসক মর্ম্মরে বে বানী রাখিয়া গেলে খনরারী স্বরে উপল-নির্বরে ক্ষীণ স্রোকস্থিনী বীচিভক 'পরে বে ধ্বনি রণিয়া উঠে খাত্মহায়া সে ভোমারই গভিহীন প্রাণধারা

মর্শ্বের নিবেদন অনন্তে।

স্টির অপ্পষ্ট প্রভাতে
পটাস্তরে, নিশ্চিদ্র অন্ধ রাতে
পেরেছিলো ভোমার অস্তর
আদিদেবতার পরম নির্ভর
হে পশিক, ভাই সেই বিজুরিত হর্ষে
দিব্যজ্যোতি অপ্রমের বিরাটের স্পর্গে
ভীবনের প্রথম দীকা।

ভোমার চরণপাতের শতোভর চিহ্ন করিবে না অপস্তত এ দীন মালিছ ? করিবে না আব বার বীর্ষ্যে, তেজে, ক্ষেমে প্রাস্থিত জগতের প্রেমে পুরাস্থত তব আধীর্মাদ ?



দালের উল্লেখযোগ্য বই 2060

এশিয়া

বেলল পাবলিশাস

रकोष माः भः

বস্থারা

মিত্রালয়

ভীহত্ত

व्याही

জিক্তাসা

ভবিষেণ্ট

দেবদত্ত এণ্ড কোং

জাগরণ প্রকাশনী

ভ্ৰমণ ও অভিযান

क्रकांवरवंत्र शेथ 8-0 • আক্রের পশ্চিম ৪-৫٠ वानात ७-८० নতুন ইয়োরোপ:

নতুন মাত্র্য ৫-০০ **निश्रामित्रामित्र (मर्म २-००** বিদেশ-বিভ ই ভারতের বিভিন্ন প্রান্তে ৫-৫০

হিমন্তীর্থ ৩-৫ •

দিলীপ মালাকার দক্ষিণারজন বস্থ বেঙ্গল পারিশাস (गोशानमान राष्ट्रममात्र (मण्यामिक) গোপালদান পাব্লিশান

বোগেশচন্দ্র বাগল

মণীজ চক্তবতী

উমা দেবী

মণি বাগচী

শঙ্কবনাথ বায়

মণি বাগচী

সুশীল বাব

বেজন পাবনিশাস সুকুমার রায়

কুমুদ্রঞ্জন রায় এদ রায় এশু কোং

অশোক ভটাচার্য সারস্বত লাইবেরী

বেগম শামস্থন নাহার ভারতী লাঃ

মুজাক্ষর আহমেদ বিংশ শতাকী

महीनमन हाडाशाधाय चारे, ब, शि

मीरनम हटहा: (मन्नामिक) विरकामय

অচিন্তা সেনগুরা এম, সি, সরকার

অসমঞ্জ মুখোপাধ্যায় আই, এ, পি

জিভেন্দ্ৰনাথ চক্ৰবৰ্তী মিত্ৰ ও খোষ

অনুদাশক্ষর বায় এম, সি, সরকার

ড: প্রফুলচক্র খোষ

মনোজ বস্থ

জীবনালেখ্য ও মনীয়ী প্রসঙ্গ

ष्याय मोत्रमादञ्जन द्वांच ১-৫• কবি স্থকাম্ভ ২-৫০ কেশকজ্ঞে সেন ১-০০ জী চাজগতে দিকপাল বাঙালী ৩-৫০ অজয় বস্থ पत्रमी भाव ९ हत्स ४-८० हम कीरानव भूल काहिनी २-०० आवष्ट्रम आक्रीक आग आमान

নজকলকে ষেমন দেখেছি ২-৫ • নজক্স প্রসঙ্গে ৪-০০ বাবার কথা ৩-০০ বাথা ষতীন ২-৭৫ विकानी अवि कशमीनहत्त ७-०० বীরেশ্ব বিবেকানন্দ (১৯) ৫-০০ বৈজ্ঞানিক জগদীশচন্দ্ৰ ৩-০০ ভারতের সাধক (৪৭ খণ্ড) ৬-৫ • বাম্যাহন ৪-০০

সাহিত্য ও সংস্কৃতি

অার্নিক বাংলা কাব্যপরিচয় ৬-০০ দীন্তি ত্রিপাঠী নাভানা উনিশ শতকের বাংলা

শাহিত্য ৫-০০

भवरातस्य मान २-१८

প্রবাধ

ত্রিপুরাশকের সেল পপুলার লাই:

বাংলা সাহিত্য ১০-০০ কৰিতার ধর্ম ও আধুনিক বাংলা কবিতার ঋতুবদল ৪-০০ কবি সভ্যেন্দ্রনাথ দত্ত ৫-০০ কলিকাভার সংস্কৃতি কেন্দ্র চঙ্গচিস্তা ২-৫ • **ভোড়া**সাঁকো ঠাকুরবাড়ি ৩-•• ত্রিপুরায় বাংলা ভাষা ও

উনবিংশ শতাকীর প্রথমার্থ ও

সাহিত্য ৫-০০ दक्ष त्रीमक ४००० বৰ্ষৰ যুগোৰ পৰ ২-৫ • वाःना नाठा विवर्धान

গিবিশচন্দ্র ৫-০০ বাংলা সাহিত্যের রূপরেখা (২ম্ব) ৫---ववीत्रकार्या कानिमारमव প্ৰভাব ৫-৫ •

শতাদীর শিশু-সাহিত্য ৭-০০ সাহিত্যে ছোট পল ৮-•• সংস্কৃত শব্দশান্তের মূলকথা ৫-০০

অসিতকুমার বস্যো: বৰলাভ

অকণ ভটোচার্ব **ভি**ক্তাসা ভারতী লাইবেরী মন্জীদা খাতুন যোগেশচন্দ্ৰ বাগল গ্রী গুরু বাজপেখর বস্থ মিত্ৰ ও খোৰ সৌরীক্রমোহন মুখোঃ পাইওনিয়র

মোহিত পুৰকায়স্থ কাৰ্মা কে, এল সুৰীল বাব (সম্পাদিত) প: প্ৰ: ভবন প্রেমেক্র মিত্র কথামালা

অহান্ত চৌধুরী ব্ৰুল্যাও

গোপাল হালদার এ, মুখাজি

বিমলকাজি সমদার क्रमात्र থগেন্দ্ৰনাথ মিত্ৰ বিজ্ঞোদয় নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায় ডি, এম শৈলেজ সেন্তর কাৰা কে, এল

রম্যরচনা

ৰত ও প্ৰভাহ **উপল-উপকৃলে** २-२ ६ একটি সুবের কারা ২-৫٠ নিঃসঙ্গ বিহঙ্গ ৩-৫০ ব্যান ও বক্তা ৩-০০ ভেলকি থেকে ভেবল ৬-০০ যুদ্ধের ইয়োরোপ ৪-০০ লোহকপাট সত্বভির গল ২-৫ • হরেকরকম্বা

নীলকঠ বেঙ্গল পাব্রিশার্স নিমাইসাধন বস্থ এ, কে, ঘোৰ সাহিত্য ভারতপুত্রম মুখার্জি বুক হাউস वानी बाब শশিভূবণ দাশগুপ্ত বেঙ্গল পাব্লিশাস ঐ আনন্দকিশোর মুজী বিক্রমাদিতা à ঐ ভবা সন্ধ à সত্বগ্রি নীলকণ্ঠ

त्रमत्रहना

वानिएव वनकि ना

প্ৰবৃদ

बनाका टाकममी

অপরাজিত ১°৭৫

বাজলক্ষী (শবৎচন্দ্র) ২ * • •

नकान-नक्षाव नाढेक ७'८.

অস্তর্গতমা

অপ্রপা ৪°০০

আনন্দনট ৩'••

এক আঙ্গে এন্ত রূপ ৩°০০

কাঠের ঘোড়া ২'৫০

গল্পকাশ্ব ৮ • •

গল্পকর্ন ৪°••

bस्पश्लिका २°€•

চৈত্ৰদিৰ ৪° • •

জলপায়ুবা ৪° • •

দিবারাত্রি ৩°••

হম্মধুর ৩'৫٠

উত্তরণ ২°৫০

এলাজি

ভাতীয় সা: প্

CORT

মিত্ৰাগৰ

| >64 | ৰা | |
|---|---|--|
| ধর্ম ও দর্শন | | |
| দর্শন প্রাসক ৭-০০ দর্শনের ভূমিকা ৬-০০ পাশচাক্য দর্শনের ধারা ও | ইন্দু মজুমদার আশুডোব বুক ঠল নীরদবরণ চক্রবর্তী এ, মুখাজি | |
| | রবি রায় সিগনেট | |
| স্থিতপ্ৰজ্ঞ দৰ্শন (বিনোবা) ১-৭৫ | वीररख छङ् । भर्तामय | |
| हिन्तु पर्य द्यादिनका 8-60 | স্বামী বিফু শিবানশ গিরি সভ্যাশ্রম | |
| সংগীত | | |
| ৰবীক্ত সঙ্গীতের ভূমিকা ২-০০ | কণিকা বন্দ্যোপাধ্যায় ও বীরেন্দ্র বন্দ্যো: এম, সি, সরকার | |
| হিন্দুখানী সঙ্গীতে ভানদেনের | | |
| इन २-१० | বীরেক্সকিশোর রায়চৌধুরী ডি, এম | |
| অভিধান | | |
| | স্থারচন্দ্র সরকার এম সি সরকার াবলী | |
| | | |
| ইভিহাস | | |
| | | |

ইয়োরোপে ভারতীয় বিপ্লংবর অবিনাশচন্ত্র ভটাচার্য পপুলার সাধনা ৪- • • সমাট বাহাত্ব শার বিচার ৩-০০ অপূর্বমণি দত্ত নিত্ৰ ও ঘোষ নানা নিবন্ধ

আধুনিক ইয়োরোপ দেবজ্যোতি বর্ষণ বেঙ্গল পাব্রিশার্স গণতত্ত্ব প্রসংক ২°০০ অমান দত্ত মিত্রালয় গ্রন্থার পরিচালনা ২°৫০ खे छक् বাজকুমার চক্রবতী জেল ডায়েনী ৩° · · সভীন সেন মিত্রালয় টিবি সম্বন্ধে ৪°০০ ভোলানাথ মুখোপাধ্যার মিত্রালর ইন্দিরা দেবী চৌধুরাণী বিশ্বভারতী नातीत উच्छि २'८० প্ৰমাণু শক্তি ৪' • • অমেলন্য দাশগুপ্ত (शांभानमात्र भावनिमात्र শ্ৰীনিবাস ভটাচাৰ্য প্রাথমিক মনোবিজ্ঞান বেকল পাবলিশাদ বৈদিক ও বৌশ্বশিকা নলিনীভূষণ দাশগুপ্ত ঠ কবিতা

মণীক্ত বার অমিল থেকে মিলে ১-৫٠ এম, সি, সরকার व्यालवा २-८० এম, সি, সরকার विकृ (म আলোকিত সমন্ত্র ২-০০ আলোক সরকার **মিত্রালয়** #184 J-.. বীরেন্দ্র চটোপাধার ইতিয়ানা

ব্যঙ্গ কবিতা ৬-০০ বনফুল বেকল পাবলিখাস বে আঁধার আলোর অধিক ২-৫০ বৃদ্ধদেব বস্থ थम, मि, मत्रकाः বক্তগোলাপ ২-৫০ বিমলচন্দ্ৰ ঘোষ শেষ সভগাত ৪- • • নজকুল ইসলাম আই, এ, চি শ্ৰেষ্ঠ কবিতা ৪-০০ স্থানির্মণ বন্ধ মিত্ৰ ও খোৰ সন্ধামণি ৫-৫ • কালিদাস বার এ, মুখাছি সমকাশীন শ্রেষ্ঠ ব্যঙ্গ কবিভা ৪-০০ কুমারেশ বোৰ (সম্পাদিত) গ্রন্থ্যু স্বনিৰ্বাচিত কবিতা ৪-০০ সঞ্জয় ভটোচার্য আই, এ, পি

নাটক

রমেন লাহিড়ী

धाकामविश्वी २ ०० অভিত গঙ্গো সেনগুপ্ত বৃক ইন উটবোগ ২*০০ উপেন্তৰাথ গঙ্গো ডি এম क्षका २'८० ভারাশক্ষর বন্দ্যো @ 5: # কালবাত্তি ২ • • চিত্তরঞ্জন খোষ বিংশ শতাকী क्रमा २.०० বিধায়ক ভটাচার্য শ্ৰী হত গুঙ্গাহ (শবৎচন্দ্র) २ • • অবিনাশচন্ত্র ঘোষাল CONT. চোৰ ২°০০ ছবি বন্দ্রো গোপালদাস পাবলিশাস চায়ানট ২ ৫০ পপুলার লাইত্রেই উৎপল দম্ভ किन नर्ग 2 ७२/२ ... অমরেজনাথ মুখোপাখ্যায় আৰ্ট আৰ্ লেটাৰ জিনইন ১°•• স্থনীল দত্ত জাতীয় সাহিত্য প থানা থেকে আসছি ২'০০ অভিত গঙ্গো প্রকাশনী নব একান্ত ৩°৫٠ মশ্মধ রায় হ'দাসক্ঞ বহিন্দত্তপ ২ • • • भविक रक्तांशांश जी हर বারো খণ্টা ১'২৫ वाडेहें।म वर्गाव কিরণ মৈত্র

পল্পগ্রহ

দেবনারারণ গুল্প

সোমেক্রচক্র নন্দী

বারীজনাথ দাশ বেক্সল পাবলিশার্গ লৈলভানৰ মুখো ত্ৰিবেণী প্ৰকাশন ভীওক বিভক্তি মুখো নরেজনাথ মিত্র 电弧穿槽 নাড়ামা অচিন্ত্যকুমার সেনগুপ্ত প্রমধনাথ বিশী বিশ্বাণী শন্তাকী কুমারেশ বোব আশাপূর্ণা দেবী মিত্ৰ ও খোৰ € 6 F প্রবোধকুমার সাল্ল্যাল ভবানী মুখো এম সি স্বতার ননী ভৌষিক ভাশনাল বুক এ ধনপ্রব বৈরাগী আর্ট এও টেটার ছিলেন বাবুর দেশে ২'৫০/৩'٠٠ विदिनी क्षकानन প্রেমেক্র মিত্র প্রতি বিমল কর মুজতবা আলী ও রঞ্জন ক্ৰিৰেণী প্ৰকাশন

প্রস্থাপতির বত ২'৫٠ वत्वाती २° 00 বিধের প্রফারউ ২°৭৫ বিশ্বপাথর ২'৫٠ মনোমুকুর মুদ্ধা কথা

মুদ্র মিলন মায়াকুরঙ্গী ৩°৫٠ মেখলা ছপুৰ ২°২৫ মুগৰিয়া ৩°৫০ রপদীর শেষণক্র ২°৫০ রপের দা**র** ৩°৫০ সেই চিবকাস ৩°৫০

অন্মিতা ৪ • • অনু দিগত ৫° • • অর্ণ্যকাস্র ড ••• খানোখীলাল পাখেটিয়া ২°৫০ আমার কাঁসি হল ৩ ৫ -ইস্করায়ণ ৪ ••• একটি আশাস ৬°৫০ একটি স্বাক্ষর ৩"০০

কামল গাঁয়ের কাছিনী ৪°৫٠ কেরী সাহেবের মুজী ৮ ৫ -**ठावना ठाउँन 8'৫**० চাবপ্রহর ২ ••• জনতবৃদ্ধ ৪°০০ ইড় ও বিহঙ্গ

ভাকহরকর।

ক্কপ্ৰ ২ ৭৫

ক্ষুলাকুঠির দেশ

ভামসা কাঁপভাল ২'৭৫ তুঘি সন্ধার মেখ ৫°৫٠ বিধারা ৮ ••• তৃতীয় ভুবন ৪°৫• দাঁড়ের ময়না ৩°৫০ নক্ষের বাত ৩'৫০ নীসদিগস্ত ৩° • • নীসরাজি ৩°৫০ পাৰ্ক 8°e.

প্রবোধবন্ধ অধিকারী নিউ ক্রিপ্ট বিংশ শতাকী চিত্তবঞ্জন খোৰ শিবরাম চক্রবর্তী কথামালা Sep. ভাবাশন্তৰ বন্দো ক্লাসিক প্রেস সমবেশ বস্থ বাকভোষ মুখোপাধ্যায়

গুপ্ত প্ৰকাশিকা ধীরাজ ভটাচার্য কারেন্ট বুক শপ লী গুৰু भवित्मु वत्ना প্রতিভা বস্থ এসো: পাবলিশার্স হরিনারায়ণ চটো <u>ज</u>िश्क শ্ৰীতক দীনেব্রকুমার রার অরদাশক্ষর রার এম সি সরকার মিত্ৰ ও খোষ (मर्वभ माभ

উপগ্রাস

নৱেন্দ্ৰনাথ মিত্ৰ মিত্ৰ ও খোষ প্রীগুরু হবিনারায়ণ চটো ঠ বিশ্বনাথ চটোপাব্যায় আই এ পি বিক্ৰমাদিত্য মনোক বস্থ বিবেণী প্রকাশন মিত্র ও খোষ ভারাশস্কর বন্দ্যো স্থবোধ চক্ৰবৰ্তী গ্রীহক বামপদ মুখো এদো: পাবলিশাস স্থনীল সরকার এশিয়া শৈলভানন্দ মুগোপাধ্যায়

বেঙ্গল পাবভিশাস শক্তিপদ বাজগুরু গুরুদাস প্ৰমণনাথ হিশী মিত্র ও খোষ বারীন্দ্রনাথ দাশ বেঙ্গল পাব্রিশাস মাহমুদ আহমদ সাধারণ পাব: বনফল আই এ পি ভারাপ্রসন্ন চটোপাধাায়

বেক্সল পাবলিখার

তাবাশহুর বন্দোগাধাায় বেঙ্গল পাবলিশাস বেক্স পাবলিশাস জরাসন্ধ ঠ নীলা মজুমদার নিউ এছ भवमिन्यू राम्या সমরেশ বন্দ্র ক্যালকাটা পারিশাস मीरभेख रान्त्राभाशांत्र **মিত্রালয়** পূর্বেন্দু পত্রী সাহিতা

মভি নশী

জ্যোতিরিন্দ্র নন্দী

সবিৎশেখর মজুমদার

চামডার কার ছোটদের শ্রেষ্ঠ গল আই, এ, পি (বনফুলের) ২°০০ নারারণ গঙ্গো: গোপালদাস পাব: ছোটদের শ্রেষ্ঠ গল আই, এ, পি (इस्यक्षक्रमात्र) २°•• वाही

প্রেদক্ষিণ

কামুসের আয়ু ৫°৫• বউড়বির খাল ৩°০০ दक्षवशीव श्राप्ति २° • • বেগম ৩°০০ रम्बोक 8 • • মৎসাগন্ধা ৫ • • মহাবাণী ৩°৫• মন কেমন করে ৩°৫٠ মন নিয়ে খেলা ৫ * • • মনে মনে ২ • • মুগভূকা

মেঘ পাহাডের গান ২°০০ মেখ ডম্বর ৩ • • মেবের পরে মেব ত'৭৫ মৌস্থী ৩ • • মধুরে মধুর ৫°৫ • মধ্মিতা ৪'৫০ রপদী রাত্তি ৫ ০০ রোহাক ত'র • শভকিয়া ৮ ০০ শেষ পর্যন্ত ৩°০০ সমুদ্র সংফন সিফুপারে ৭ • • সুথছ:খের চেউ সোহাগপুরা সিশ্বপারের পাঝি ১°০০ শুভি ৩ • • • বেলোয়ারী ৬°৫০

অথ ভারত কথকতা ২ ২৫

चानि जनित (मार्थ २°००

আজিকালের বজিবুড়ো

এ দেশ আমার (২য়)

থশির হাওয়া ১'৫০

আধুনিক ম্যাজিক ২ • • •

থেয়াল, খুলি অসম্ভব ৩ * * *

স্ধীবঞ্চন মুখোপাধ্যার

বেঙ্গল পাবলিশাস বিমল কর কথামালা 307 মহেন্দ্ৰনাথ গুপ্ত বাস্থী বস্থ বলাকা প্রকাশনী कामकाही भावः श्वरांक रत्नारः নারায়ণ সাক্তাল বেছল পাব্লিখাস অচ্যত গোস্বামী ডি, এম ð বনকুল বিমল মিত্র নিউ এছ ধীবাজ ভটাচার্ব এম, সি, সরকার সভাবত মৈত্ৰ মুখার্জি বুক হাউস সরাজ বন্দ্যোপাধ্যার

বেঙ্গল পাবলিখাস অনিসকুমার ভটাচার্য ডি, এম প্ৰশাস্ত চৌধুৰী বলাকা প্রতিভা বস্থ নাভানা প্রেমেক্স মিত্র আই, এ, পি মহাখেতা ভটাচার্য এ, মুখাৰ্ছি সরোজকুমার রায়চৌধুরী বিভোদর অচিন্ত্য সেমন্তপ্ত আনন্দ পাব্রিশার্স मीलक कोवबी এম, সি, সরকার স্থাধ খোৰ আন্দ পারিশাস সৌরীক্রমোহন মুখো: লিশির পাব: আক্তোৰ মুখোপাধ্যার মিত্র ও ঘোৰ नीदमदञ्जन माम्बर्ख নিওলিট নরেন্দ্রনাথ মিত্র বেঙ্গল পাবলিখার্স গৰেন্দ্ৰকুমাৰ মিত্ৰ जी शरू বেঙ্গল পাবলিখাস প্রেফল বায় সঞ্জ ভট্টাচাৰ 300 প্রবোধকুমার সান্তাল মিত্র ও ঘোর

শিশু-সাহিত্য

প্ৰীকথক ঠাকুর বিতোদয সুখলতা বাও বহন্তকুমার ভার্ডী ক্লাসিক প্রেস এ, সি, সরকার মিত্রালয় দেবীপ্রসাদ চটোঃ বেঙ্গল পাব্লিশাস নারায়ণ গঙ্গো: অভ্যুদয় প্র: মন্দির অমির চক্র: (সম্পাদিন্ত) ননীগোপাল চক্র: বেক্স পাক্রিশার্স

বনফুল অভাদর প্রকাশ মন্দির

হেমেন্দ্রকুমার রায় ঠ

| ছোটদের শ্রেষ্ঠ গল | |
|-------------------------|---------------------------------------|
| (यानिक वत्ना:) २ ••• | মানিক বন্দ্যোপাধ্যায় |
| | অভ্যদর প্রকাশ মন্দির |
| हाउँदान जीकास २'१० | এম, সি, সরকার |
| (छाटिएम्ब दखमञ्ज ७ थ • | ন্থনীৰ দত্ত সম্পাদিত জাতীয় সাঃ পঃ |
| বড়ের বাত্রী ১°৬• | অচিন্তা সেনগুপ্ত এসোঃ পারিশার্স |
| জ্ঞান থেকে অজ্ঞান ১°৬۰ | বুদ্ধদেব বস্ত ঐ |
| নিভতিপুর ১°৬• | ধ্বেমেন্দ্র মিত্র 👌 |
| পদ্মগোলাপ ২*•• | মনোজিৎ বন্দ্ৰ মিত্ৰালয় |
| পাকুল পাকুল পাকুলটি | অমিতাভ সেন অকর |
| প্রাণী ও প্রকৃতি | বিমনাপ্রসাদ মুবোপাধ্যায় |
| • | বেঙ্গল পাব <i>লি</i> শাস ^ৰ |
| বনের ভাক ৫ ••• | স্বামী বিশাল্যানন্দ অরুণ দে |
| বাংলার ডাকাড (২য়) ২°৫∙ | ষোণেক্রনাথ তপ্ত বৃন্দাবন ধর |
| মায়ের বাঁশি ৪°৫٠ | বিমল ভোষ (যৌমাছি) মিত্রও ভোষ |
| মামা ভাষে • ৭৫ | শিবরাম চক্রঃ এম, সি, সরকার |
| মামাবাজ়ি ১°৫• | অর্বিশ গুচ অভ্যুদ্য প্র: মন্দির |
| বঙিন রূপক্থা ১'৬• | প্রবোধ দালাল এসো: পাবলিশাস |
| সদাশিবের ভিনকাশু ১°৭৫ | শत्रमिन् रान्त्राभाषात निष्ठे अस |
| महस्र ग्रा | শ্ৰীলেখা থণ্ড বেক্স পাবলিশাস |
| সাত রাজ্য ১°৮০ | সুকুমার দে সরকার অভাদর প্র: ম: |
| রংবেরং ৩°৫০ - | ष्ववनीखनाथ ठीकूव व |
| ক্লপক্ৰাৰ ঝাঁপি ২°২৫ | সৌবীক্রমোহন মুখো: আই, এ. পি |
| প্রাচীন সাহিত্য | |
| কু মাবসম্ভব | বিহারীলাল গোস্বামী মিত্র ও ঘোষ |

অনুবাদ

অভিসার (জাঁ পল সার্ত) শিশির সেনগুপ্ত ও জয়ম্ভ ভাতুত্তী বেক্স পাব্লিশার্গ কাশ্মীর প্রিজ্যের (কারণিক) বিমল দম্ভ ঠ ক্যাসানোভার স্মৃতিকথা ৫-৭৫ শাস্তা বস্ত আৰ্ট এণ্ড লেটাৰ্ন চিড়িয়াথানার খোকাখুকু (ভেরা চ্যাপলিনা) ৩-০০ প্রতিভা দাশগুপ্তা পপুলার ছু কুনকে ধান (শিবশঙ্কর পিল্লাই) ৩-০০ ত্রিবেশী প্রকাশন वाचीकि बामायुन ১२-०० শিশিরকুমার নিয়োগী এ, মুণাছি মানবদেহের গঠন ও ক্রিয়াকলাপ (এ, এন, क्रावान । १-०० प्रभन्न ताम्रहिष्द्री कामनान वक धः মাটির মাত্র্য (কাঙ্গিন্দীচরণ পাণিগ্ৰাহী) ২-৫০ সুধলতা রাও ত্রিবেণী প্রকাশন সাগরে মিলায়ে ডন (শলোগফ) ৬-০ • রথীন্দ্র সংকার লাশনাল বুক এ: সাহিত্য শিল্প প্রসংস (মাক্স একেলস লেনিন) ৩ -- ৽ ঠ

স্মৃতিকথা

খড়ির লিখন ২-৫০ 작주회 নিউ এ ছেলেবেলার দিনগুলি ৩-০০ পুণালতা চক্রবর্তী শনিউ 1%% ভন্তাভিলাষীর সাধুসক (৬য়) ৬-৫০ প্রমোদকুমার চটোপাধার ডি. এম ষা বলো ভাই বলো ৩-০০ শকৈর নিউ এয় ববি-ভীর্থে ৫-০ ০ অসিত হাল্দার পাইওনিয়র বুঙী শুভিচিত্ৰণ পরিমল গোস্বামী প্ৰজা প্ৰকাশন

कां को नष्टक्रनरक

গোরাঙ্গ ভৌনিক

ৰা কিছু উপমা জানি সংই, মনে মনে ভাবি। তবুও তুলনা তাঁৱ মেলে না, মেলে না। জামি বে দেখেছি এক জত্যাশ্চৰ্য ছবি।

কখনো উপমা দিই—

ভাবে,

স-গাণ্ডীব অর্জ্জ্নের সাথে। আবার কথনে। বলি,

इला ना, इला ना।

কারণ, গাণ্ডীব নয়

হাতে তাঁর ছিল অগ্নিবীণা প্রাণে **ছিল আগ্নের** উদ্ভাপ ।

हो। कि जानि हन ! कि तन कि ज्न !

আগ্নেম বীণার ভারে

হাতের আঙ্গ

তাঁৰ ভৰ হয়ে গেল। থধন নিশ্চিত জানি, কোন দিন আর ভনবে না^{*} ভনবে না কেউ

কোন স্থ্য

আহের বীণার। সে আজ নীরব কণ্ঠ। ভাষাহীন নিক্লন্তর কবি

আজকে স্বার কাছে। সে জীবস্ত একথানা

অভ্যাশ্চৰ ছবি।

ভাই ভো, এখন তাঁর^{*} চারি পাশে বন্ত সব বারোরারী পাপ অকত, বিকু**ত** হয়ে **জ**মে ৬ঠে।

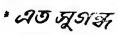
বিজোহী এখন টোর

হাৰিবেছে প্ৰাণের উত্তাপ।

ন্তব্যর্ককর হিমালয় বোকে ট্যালকাম পাউডার



आज्ञामित ज्ञट्डिड थाकात्र ङ्खा



• अठ कप्र খतुह

• जाता भतितात्त् भस्डस्ये जामर्था



এরাসমিক লওনের পকে হিন্দুর[নু লিভার লিঃ, কর্তৃক ভারতে প্রস্তুত টে



শিল্প ও কারিপরী যাত্বর

কি কা ও সমুমতির কেত্রে যাত্ব রর গুরুত্ব ও উপধোগিতা ষে কতথানি, এ বলার অপেকা রাথে না। জ্ঞানপিপার মাছবের বিচিত্র চাছিদা মেটাবার একটি সক্র ব্যবস্থা বেমন গ্রন্থাগার, ভেষনি অন্তত্ম প্রধান উপায় নিঃসংক্ষ্টে বাছ্বর। আধুনিক শিল্পায়নের যুগে বে কোন দেশে শিল্প ও কারিগরী বাত্তবের মূল্য তলনায় নিশ্চয়ই আরও বেশী।

আমাদের একটি সাধারণ ধারণা---বাতু্ঘর হল কভকগুলি বিশ্বভ ও সচল বন্ধর সমাবেশ বা সংবক্ষণ ক্ষেত্রবিশেষ। কিছ বাস্তব উপৰোগিতার দিকে ভাকিরে এই ধারণা অভ্রাস্ত বলে মেনে নেওয়া চলে না। প্রকৃত প্রস্তাবে বে কোন যাত্বরই একটি জীবস্ত শিকা প্রতিষ্ঠান, এখানে বা কিছু খাকুক জড় কি জীবস্ত, ভাই মায়ুবের চিম্বাধারাকে পুষ্ট করবে বরাবর। অভীতের সঙ্গে বর্ত্তানের তুলনা-মুল্ক বিচার-নিবিথের সংযাগও দিয়ে থাকে এই বাছ্বর। শিক্ষা-বিশেষজ্ঞানের মতে বর্তমান যুগে প্রকৃত বিশ্ববিভাগর বলতে গ্রন্থাগার আর বাহুবরকে বুঝার। যাহুবরের তিনটি গুরুবপূর্ণ কাজ বা লক্ষ্য---নানা ক্রব্য সংগ্রহ ও সংবক্ষণ, সংগৃহীত ও সংবক্ষিত ক্রগাদির পর্বালোচনার মাধ্যমে শিক্ষার প্রসার এবং সাধারণ জীবন সমূদ্ধির खन भंगांश खान विकाम।

পশ্চিমী লগতে শিল্প ও শিল্প-বিজ্ঞানের বাত্তার বহু কাল আগে থেকেই চলতি। সহজ কথায় যে সকল বাষ্ট্ৰ শিল্প বিষয়ে সমুদ্ধ ও অপ্রণী, সেধানেই দেবতে পাওয়া বাবে একাধিক বাতবর। এই ধরণের বাছঘর অবজ্ঞ প্রথমে সংস্থাপিত হয় ইউরোপে, কিছ একণে ম্মুদ্র মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্রেই এর সংখ্যা অধিক। একমাত্র নিউইয়র্ক সহথেই বিভিন্ন বকমের বিজ্ঞান বিষয়ক বা শিল্পকলার বাত্রর ববেছে কুড়িটিব উপর। এ ছাড়া অ'ছে চারিটি উদ্ভিদ বিষয়ক ৰাত্বৰ (বোটানিক্যাল গার্ডেন) ও সতেএটি ঐতিহাসিক বাত্বৰ। **আমেরিকার প্রাকৃতিক ইতিহাস সম্পর্কিত বাত্র্যানি একটি মস্ত** বিশ্বৰ—বিচিত্ৰ তথা ও ইতিহাসের নজীর সম্বলিত এমন প্রকাণ্ড ৰাত্বৰ বা সংগ্ৰহশালা পৃথিবীর আবে কোথাও নেই। ভারাণী ফ্রান্স, কুলিয়া—ইউরোপের এই কয়টি ভারগা এবং অষ্ট্রেলিয়া জাপান প্রভৃতি শিরোয়ত দেশগুলিতেও শিক্ষামূলক বাতুহর বিভ্ৰমান আছে কোনও না কোন ধ্যুণের।

এই প্রসঙ্গে শিল্পারনে ব্রতী স্বাধীন ভারতের কথা আপনিই ওঠে। এত কাল অধীনতার নাগণাশে ভারত আবদ্ধ ছিল, এগিরে বাওয়ার স্বকাব ব্যাপক প্রিকল্পনা নিম্নে নতুন করে গড়ে তুলতে চাইছেন এই দেশটিকে—ক্রত শিল্পমৃদ্ধ করাব দাবী রাধছেন পৃথিবীর অপর অগ্রদর ও স্বাধীন জাভগুলির মতো। বস্তুত:, দ্বিতীয় পঞ্চবার্ষিক পবিকল্পনার শিলোরয়নের উপর ওক্ত আবোপ করা হয়েছে অনেকটা বেৰী। বে কোন শিল্পোরয়নের প্রাথমিক প্রয়োজন বেটি—সেই কারিগরী বিদ্বার্জ্ঞানের ব্যবস্থাও এরই ভেতর কিছু কিছু বে না হরেছে ত।'নয় কিছ উন্নত শ্রেণীর শিল-সংগ্রহশাসা বা বাত্তরের অভাব সেই থেকেই এ দেশে খুব প্রকট।

অবগু একটি আশার কথা—সরকারী উল্লোগীপণায় সম্প্রতি কোলকাতা মহানগৰীতে একটি শিল্প-যাওখৰ (বিভলা শিল্প-কাৰিগৰী বাতুহৰ)স্থাপন কৰা হয়েছে। স্বত:ই ধৰে নেওয়া বায়, শিল্প-বাহুদর বা সংগ্রহশালা অপরিহার্যা প্রয়োজনীয়তা থেকেই সরকারের (কেন্দ্রীয় বিজ্ঞান ও শিল্প গবেষণা পরিষদ) এই উল্লেম বা প্রায়াস। পশ্চিমবঙ্গের মুখমন্ত্রী ডাং বিধানচন্দ্র বাবের নেতৃত্বে গঠিত আলোচ্য ৰাত্ববের প্রিকল্পন: কমিটির নির্দারণ মতে এতে সব সময় (১) কারিগরী বিধয়ের সাম্প্রতিক অগ্রগতি, (২) মানব-সমাজের ক্ল্যাণার্থ কারিগরী বিষয়ক অবদান এবং (৩)ভারতীয় শিল্প-কারধানার আধুনিক কারিগরী প্রতি প্রয়োগ-এ সকলের চিত্রাবলী অফিত থাকবে। নির্দ্ধারিত উদ্দেশু সাধনের আৰু সংশ্লিষ্ট কৈত পক প্রথমাবস্থায় নিম্লিখিত কয়েকটি কারিগরী বৈত্যতিক বোগাৰোগ, বিত্যংশক্তি উৎপাদন ও পরিচালনা, পরমাণবিক জ্ঞান, লিভিল ইঞ্জিনীয়ারিং, চল্মালিল, বয়ন ইঞ্জিনীয়ারিং পরিবহন, রসায়ন বিতা আব ধনি ও ধনিজ সম্পদ। পরিকল্পনা কমিটির ঘোষণা অনুসারে এই বাতৃত্বের উদ্দেশ এক কথায় দর্শকদের কারিপরী বিভা শিক্ষা দেওয়াই নয়, ভা ছাড়া আরও কিছ। বিশ্বরকর বৈজ্ঞানিক জগৎ সম্পর্কে দর্শকমগুলীর অফুদ্দিৎশা বুদ্ধিই উহার মূল উদ্দেশ্য।

विक्रमा निम्न ও निम्नविकान राष्ट्रचत्वव चार्क्सानक উत्पाधन উপলক্ষে কেন্দ্রীয় বৈজ্ঞানিক গবেষণা ও সংস্কৃতি বিভাগীয় সচিব প্রীভূমায়ুন ক্রীরের একটি কথা উল্লেখ করা বেতে পারে 'এছলে! বাহুখবের গুরুহ ও প্রবোজনীয়তা স্বীকার করে নিয়েই তিনি ব্লেন— বাহুব্য ৩ধু ইঅতীতের হ্লাপ্য ধ্বংসাবশেব-ভাগ্তার মাত্র নয়। বাতু্ত্ব সৰ্ব সময়ই জীবন্ত থাকবে এবং চার পাশের জীবনের সংজ্ঞা পড়ে উঠবে। শিৱকলার বাত্ত্ববে ওরু অতীতের শিক্ষরতা সংগ্ৰহ করে বাধলেই চলবে না, বর্তমান শিলের গতি-প্রকৃতির <u>পথে প্রভাবতটে তার ছিল নানা বাধা ও প্রতিবন্ধক। এখন ছাতীয় নিদর্শনও সেধানে থাকা চাই। সময়ের সংসে পাল্লা দিয়ে চলার</u>

জন্ত প্রত্যেক বছর নতুন জন্য জানতে হবে। জতীতের বিভিন্ন
নিকে জালোকপাত এবং বর্ত্তমান জালোলনের সংগে তার
সম্পর্ক দেখবার জন্ম মাঝে মাঝে ঢেলে সাজাতে হবে প্রনো
জিনিবগুলি। মোটের উপত্য, নানা ধরণের চাট, ছবি, চলচ্চিত্র
এবং জন্তান্ত জিনিবের সাহাব্যে প্রত্যেক ক্ষেত্রে ঐতিহাসিক
জন্ত্রগতি এবং জতীতের সংগে বর্ত্তমানের সংবোগ সংস্থাপনই হতে
হবে বাছ্বরের প্রধান কাজ।

সরকারের পক্ষ থেকে শিল্প ও কারিগরী বাছ্যর সম্পর্কের বলা হরেছে এবং দাবী রাখা হয়েছে, কার্যক্ষেত্রে এর সফল রূপারণ বদি হ'ল, তা' হলে নিশ্চয়ই আশার কথা। ভারতহর্য সবে শিল্লায়নে এতী হয়েছে—অনেক বাধা রয়েছে তার অগ্রগতির পথে। এই মুহুর্ত্তে একটিমাত্র কারিগরী সংগ্রহশালা হলেই এই বিশেব ক্ষেত্রটিতে দেশের অভাব মিটবে না। ভারতের শিল্পপ্রধান অপর অঞ্চলতেও অমুরূপ বাছ্যর প্রেভিতি না হলে নয়, আশা করা বেতে পারে, জাতীর সরকারের এ বিষয়ে উল্লম থাক্রে থার জনসাধারণও সেই উল্লমকে জারদার করার জল্প তৎপর্কা দেখাবেন।

কাঠের পোকা ও এর প্রতিকার

সাধারণ অবস্থার কীট বা পোকার আক্রমণ থেকে কারও প্রায় বেহাই নেই, গাছেরও নর। কীটিংথিস্ত হরে কন্ত গাছের অকালমৃত্যু ঘটছে, কে রাখনে ভার হিলাব! আমাদের বাসগৃহ সমূহেও কীট বা পোকার উৎপাত কম নর কিছুমাত্র। গাছ কাটার পর যে কাঠ এনে স্বত্বে আলবাবপত্র তৈরী হল, বা দিরে সাজানো হ'ল পছন্দমত নিজ নিজ গৃহধানি, পোকার মারাত্মক আক্রমণে সে জী নই হরে বেতে পারে অল্লসময়েই। এই ভাবে কন্ত সধের জিনিস কত গৃহস্বামীকেই না হারাতে হচ্ছে, অমনি বলা নিশ্চয়ই ক্রিন।

শবণ্য একথা ঠিক—বিজ্ঞানের উন্নতির সঙ্গে গাছের কাঠের পোকা দমনের ব্যবস্থাও নির্ণীত হরেছে নানা ধরণের। এ-যুগে ঘরে কোন কাঠের জিনিস নেই, এমন প্রায় দেখা বায় না। গৃহ-নির্দ্ধাণ খেকে স্কুল্ল করে গৃহসজ্জা অবধি সব ক্ষেত্রেই কাঠের প্রয়েজন একরণ শুপরিহার্য্য ভাবে। ঘরের কড়ি, বর্গা, খিলান দরজা-জানালা প্রভৃতি বেমন কাঠের হয়ে খাকে, তেমনি চেমার, টেবিল, শালমারী ইত্যাদিও বেশির ভাগ ক্ষেত্রে দেখতে পাওয়া বার কাঠেরই। সেজ্ল ব্যবস্তুত কাঠ বা কাঠের জিনিসটিকে শক্ত ও মজবুত রাধবার থাতিরে প্রত্যেক গৃহস্বামীরই সর্কাণ সবল নজ্জ নিব্দ না করলে নয়। পোকার শাক্রমণের প্রতিকার বা প্রভিবোধ হিসাবে প্রথমেই ভোলার বতে পারে এইটি।

সাধাৰণ নিরমান্ত্রসাবে বে গাছ সাববান, তাতে কীটনে বী সহজে আক্রমণ হয় না। গৃহের জিনিসপত্র বদি অসার কার্ট তৈরী হয়, তা হলেই বিপদের আদল্প বেদি। সাববন্ধ বদেই সেওন, শাস ইত্যাদি কাঠ দিরে বাই তৈরী হোক না, তাই দীর্ঘ স্থারিত লাভ করবে। অন্ততঃ এসব শ্রেণীর কাঠবা কাঠের তৈরী জিনিস পোকার ভাক্রমণে বিক্তান্ত হয় না কিংবা কোন কাঠের পক্ষে এদের অঙ্গে দন্তস্কুট করাই সাধ্যায়ন্ত নয়।

বিছ, গৃহে সংবৃদ্ধিত সকল কাঠ বা কাঠের জিনিসই যে পোকার আক্রমণে জমনি জকত থাকবে, দে নিশ্চরতা মোটেই দেওরা চলে না। সহরে যেমনই হোক, পরী অঞ্চলে ব্যবহৃত বেশির ভাগ কাঠ বা কাঠের জিনিসই কীট-কবলিত হয়ে বিনষ্ট হয়। কাজেই গৃহস্বামীকে হুদিরার থাকতে হয় সর্বক্ষণ, জেনে বাথতে হয়—ধর সন্ধিচ্য কি প্রতিকার, লোচনীয় অবস্থার কি প্রতি-ব্যবস্থা।

কাঠের কত্তকগুলি সাধারণ শক্ত—উই, যুণ, কড়া-পোকা ইত্যাদি। উইপোকা যে কাঠতে ধরে, দেখতে দেখতে ছারখার করে দের এর সকল প্রী ও অন্তিম। কারণ উইপোকার বংশ বৃদ্ধি হর অতি ক্রত, এদের দলবদ্ধ আক্রমণ বড় মারাম্বক। মুণ বে কাঠে আক্রমণ চালার, বাইরে খেকে প্রথমে নজরে না পড়লেও সেই আক্রমণ ভয়াবহ। কত অসার কাঠ ও কাঠের জিনিসই এদের করলে পড়ে বিধনত হচ্ছে অবিরাম। মরে কোখা খেকে কি ভাবে বে এ সকল রিপু এসে হাজির হয়, বলতে পারা বায় না। তবে বল্লের অভাবে এবং কাঠের নিজন্ব দোবেই এই আক্রমণ হয়ে খাকে, এ বলা বাছলা।

পূর্বেই বলা হয়েছে—কতকগুলি সারালো কাঠ বেমন মেন্ত্রগণি,
এ সকলে কথনই পোকার আক্রমণ হর না। আবার, উইলো প্রভৃতি
গান্থের কাঠে সহজেই পোকারা আক্রমণ চালার। ওক, ওয়ালনাট,
বীচ প্রভৃতি কতকগুলি কাঠ বহু বৎসর পেরিরে যাওয়ার পর
কীটবিধ্বন্ত হ্বাব কারণ হয়। আমাদের দেশের নিমগান্থেও
পোকা সহজে আমল পার না, এমনি দাবী চলে এসেচে।

কাঠের পোকার আক্রমণ রোধে করেকটি ব্যবস্থা অবলম্বন করা বার সংজেই। ঘরের জিনিসপত্তিলি প্রারই বেড়ে মুছে পরিছার পরিছার রাধা—এইটি অবল্য করণীর। ক্ষেত্র-বিশেবে আলকাত্রা, কেরোসিন তৈল বা বিভিন্ন বঙ ব্যবহারেও উপকারিতা লক্ষ্য করা বার। কীটনিবোধক তৈল জাতীর পদার্থ আজকাল বাজারে অনেক ররেছে। পোকার কবল থেকে রেহাই পাবার জক্স সে সবের নিয়মিত ব্যবহারও কলপ্রাদ। মোট কথা, এই ব্যাপারে সমগ্র দারিঘটা নিতে হয় গৃহকর্তা আর গৃহক্তীকে। চেরার টেবিলের তলার, দর্ম্বা আনলার কাঁকে, ছবির কাঠামোতে সাধারণত্ত: পোকার বাসা হয়। সে সব স্থানে নিয়মমত ডি-ডি-টি প্রভৃতি ছড়িরে দিলে উপকার না হয়ে পারে না।

বিদ্ব দেশিয়া হটিয়া বাওয়া, ভয় প্রদর্শনে ভীত হওয়া, প্রাণভয়ে কাতর হওয়া, লোকের প্রতিকৃত্যতা বদতঃ সংক্রিত জনুষ্ঠান পরিভ্যাগ করা কাপুক্ষতা।
—শিবনাথ শাদ্রী

॥ সাসিক বস্তুসতীর এজেণ্ট-তালিকা॥

বর্তমানে মাসিক বস্থমতীর ব্যাপক ও বিস্তৃত প্রচার বাঙলার সাময়িক পত্রের ইতিহাসে বিশ্বয় সৃষ্টি করিয়াছে। আমাদের পত্রিকার এজেন্ট-তালিকা লক্ষ্য করিলেই আমাদের কথার সত্যতা প্রমাণিত হইবে। কলিকাভার বাহিরের স্থানীয় বাসিন্দাদের মাসিক বস্থমতী প্রাপ্তির স্থবিধার জন্ম আমরা বর্তমান সংখ্যা হইতে আমাদের এজেন্ট-তালিকা নিয়মিত প্রকাশ করিব। মাসিক বস্থমতীর সন্থদয় পাঠক-পাঠিকা এজেন্টদের ঠিকানায় যোগাযোগ করিতে পারিবেন। কেবলমাত্র কলিকাতা অঞ্চলের আমুমানিক পাঁচ শত বিক্রেতার নাম এই তালিকায় নাই।

| ॥ বাঙলা | (तम ॥ | | বীরভূম 💿 | • | नमीयां 🕖 |
|---|-----------------------------|---|-----------------------------|--|----------------------------|
| | হাওড়া 💿 | শ্ৰীমাণিকচন্দ্ৰ সাহা | —রামপুৰহাট | জীগোপালচন্দ্র সেন | —শান্তিপুর |
| | | শ্ৰীমণিমোহন চন্দ্ৰ | —নলগটা | শ্রীহরিচরণ প্রামাণিক | —নবদ্বীপ |
| একানীনাথ সাহা এললোককুমার চাটোজ্জী | —আমতা —বেলুড় | শ্রীমশ্বথকুমার ন্যানাক্ষ্মী | — শিউড়ি | | মূশিদাবাদ 💿 |
| | হুপলী 🔵 | | বাঁকুড়া 🌑 | জীঅহিতৃয়ণ মালাকার জীবিখনাথ দাস | —বেলডাঙ্গা —ধুলিয়ান |
| এঅমূল্যচরণ ঘড়া | —শেওড়াফুলি | জীগঙ্গেশচন্দ্র কম্মকার | —বিষ্ণুব | শ্রীক্ষাবোদচন্দ্র গুপ্ত | , — মুশিদাবাদ |
| এমদনমোহন গাসুলী | — মগরা ও ত্রিবেণী | শ্ৰী বি, পাল | —সোনামুগী | শীহরিপদ সাহা | —জিয়াগঞ্জ |
| बिशका धव (म | —গ্রীরামপুর | শীবিজ্ঞপদ দাস | —বাঁকুড়া | মে: ঘোষ লাইত্রেরী | —বহরমপুর ও থাগড়া |
| এ বিশ্বনাথ ভট্টাচাৰ্য্য — | ভৱেশন ও বৈছাবাটা | | | | মালদহ 🍙 |
| 🗬 লিতমোহন দত্ত | — হুগলীঘাট | | মদিনীপুর 🙍 | _ | |
| ্রিগোবিন্দচন্দ্র কুমার | — শিসুর | • | -11.1.1 Tu | ৰা এম, এম, চক্ৰবতী | —হ্রি×চ ন্দ্রপুর |
| জীমণিভূব ণ সিং | — আরামবাগ | শ্রীপঞ্চানন চৌধুরী | —ঝাড্থাম | শ্রীস্থালকুমার শেঠ | —মালদা কোট |
| এইবজনাথ মুখাৰ্জী — | –নবগ্রাম, কোননগ্র | নে: মিশ্র নিউজ এজেনী | —কলাইকু গু | | কুচবিহার 🌑 |
| | বৰ্দ্ধমান 🌒 | শ্রীভাম্বরচন্দ্র পাল শ্রীড়ে, এন, আচাধ্য | —গড়বেঙা —মহিষাদল | ক্রীঅমূল্যবতন রায়গুপ্ত জ্রীগ্রনিলরঞ্জন চক্রবর্ত্তী | —দিনহাটা —কুচবিহার |
| শ্রীক্ষমরকুফ দত্ত | —চিভবঞ্জন | শ্ৰী আই, বি, ঘোৰ - | –চন্দ্ৰকোণা বোড | ्यात्रामगत्रज्ञम् छ्यानसा | • |
| মেসার্গ বাগচী ব্রাদার্স | —কুলটি | শ্ৰীহ্বিসাধন পাইন | —খাটাল | | জলপাইগুড়ি 💿 |
| ৰেগাৰ সামচা আলান শ্ৰ ভূতনাথ দাস | —#13 51 6 | শ্ৰীমতী কৰকলতা দেবী | — খড়্গাপুর | শ্রী এ, ধর চৌধুরী | আলিপুরহয়ার |
| প্রকৃত্যাংন স রকার | —ধানীগ্রাম | ञीञ्चरताधरङ क्रीधूनी | —মেদিনীপুর | শ্রীসভীশচন্দ্র বোস | — মঙ্গ-জংশন |
| শ্রী এস, প্যাতে | —বৰ্দ্ধখান | | | শ্ৰী এস, এন, নন্দী | —জলপাইগুড়ি |
| बिक्या मन मुशास्त्री | —ভয়াবিয়া | | মানভূম | শ্রীমতিলাল সরকার | —কালচিনি |
| 🕮 কে, সি. নাথ | —পানাগড় | জীবিমল কান্ত রায় — কু | মারধুবি ও ববাকর | | দাজ্জিলিং 🍙 |
| ত্রীবেণুপদ পাল | — ভে, কে, নগর | শীঅবনীমোতন দাশ | —পুক্লিয়া | শ্রী ডি, এন, বঙাল | —কাজিম্পাং |
| জ্ঞীতারাপদ বায় | —বর্বণি | - mildelladiaal udi | 241-141 | শ্রীমতী শচীবাণা দেবী | —ক।।পশা —শিলিগুড়ি টাউন |
| এতপনজ্যোতি চ্যাটাজী | —সীভারামপুর ——সীভারামপুর | | | व्यावका निर्माता स्वरा | • |
| জিক্তরেন্ত্ কার দে | —বাণীগঞ্জ —বৰ্দ্ধমান | চবিবশ পরগণা 🌑 | | | পঃ দিনাঞ্চপুর 💿 |
| 🗐 বি, কে, আইচ প্রিপঞ্চানন মোদক | বশ্বনা কালনা | শ্ৰীসুশীলকুমার ভট্টাচাধ্য | —ইছাপুর | এ এ, কে, চ্যাটাজী | —বালুরখাট |
| অ পঞ্চানন মে।দক এ এইচ, সি, ঘোষ —বাণ | | প্রাত্ত প্রাত্ত করা | —কাক ৰী প | | _ |
| জ্ঞা এহচ, স, যোগ — বা জ্ঞান্তক্ষরগোপাল সেন | ণ্যুর ও আসোনসোল —- গলসি | ম: বি. এল, সাহা এণ্ড স জ | —ব্যারাকপুর | • | ত্রিপুরা \bullet |
| জ্ঞাসুন্দরগোপাপ সেন জ্ঞাসুন্দীসকুমার বায় চৌধুর | • | त्या । या ज्ञान गारा अस्त गण ज्ञी वाद्य नृत्मखनाथ क्रीवृती | —ড়ারাকসুর — টাকী | শ্ৰীমাণিক ভটাচাৰ্য্য | — আগরতলা |

| ক্রিমোদরঞ্জন দেনগুপ্ত যগার্স শিলং স্পোটস ক্রিনেন্দ্রনাথ লোধ ক্রিনে, কে, চৌধুরী ামতী কনকরাণী গাঙ্গুলী গ্রম- আর- ভটাচার্য্য ক্রিন্তরঞ্জন ভারেল ঘ: পি, এস, জৈন এপ্ত কোঃ | মে: গয় —হাইলাকান্দি ক্রীসতো —শিলং ক্রীরাধা —কমলপুর মে: জ্ঞা —শিলচর ক্রীরামা —তিনস্থকিয়া ক্রী এই —মাকুমজং মে: চর —তেজপুর ক্রীদেবন | মে: ক্যাপিটাল বুক জিপো মে: গয়া মিউজিক্যাল ষ্টোরস ত্রীসত্যেক্তনাথ মজুমদার ত্রীরাধারমণ মিত্র ত্রেক্তরাল থ্যাকার এণ্ড কোং ত্রাহারসাল ত্রীরামত্রিচপ্রসাল ত্রাহারদাগা ত্রী এইচ, এন, চ্যাটার্জ্জী ত্রেক্তর্তী এণ্ড কোং ত্রাহারগাগ টাউন ত্রীদেবনারায়ণলাল ত্রীবাচ্চু সিং ত্রাহারমান | উত্তর প্রেদেশ মেসার্স মিকাডোস বেনারস নিউজ পেপার এজনী — বেনারস এ এদ, বি, মৈত্র এ এদ, বি, মৈত্র এ এদ, বি, মৈত্র এ এদ, বি, মৈত্র নিউ দিল্লী মা: সেন্ট্রাল নিউজ এজেলী মা: কিতাব ঘব মা: ইন্টারলাশানাল প্রোস — এলাহাবাদ | | |
|---|---|---|---|--|--|
| । কে, চক্রবর্ত্তী য: শাশাশ্বাল লাইবেরী শ্বাহুতোব মিত্র । বি, চক্রবর্ত্তী কোলাচাদ বণিক ।বিলোচন বায় | - | শীসরোজনাথ ঘোষ — সিম্রি ও পাথারদিহি শীক্ষণাসিদ্ধ্ বাষ — বেরমো শীক্ষবিহারী গাঙ্গুলী — জামালপুর শীনিনেশচন্দ্র বিশাস — বরজামদা মে: ইউনাইটেড ডিব্রিবিউটর্স — টাটানগর সাঁথিতাল প্রপ্ণা | মধ্য প্রেদেশ মে: এ, এইচ, মিত্র সরকার এণ্ড কোং —ভিশাই ও ছাগ উড়িয়া | | |
| াসতীশচন্দ্র বারচৌধুরী াপরিতোব মুখার্ল্লী াস্ত্রজিতকুমার সরকার ামনোমোহন চ্যাটার্ল্জী | বিহার —রঘ্নাথপুর —ধানবাদ —কাতরাসগড় —মজঃফরপুর | শুরু ক্রে, এন, সাহা শুরু ক্রের করের শুরু করের শুরু করের শুরু করের শুরু করের | শ্রী বি দত্ত —রেচিকেরা ম: এ, এইচ, মিত্র সরকার এশু কোং — ব্রজরাজনগর প্রতিমা নিউজ এজেন্সী —থুড়া শ্রীউদয়নারায়ণ দাস — ভ্রমক | | |

মাসিক বসুমতীর প্রচার ও প্রসার বাঙলা দেশের বিষয়!!

-মাসিক বস্থমতীর বর্ত্তমান মূল্য

| ভারতের বাহিরে (ভারতীয় মূদ্রায়) | | | ভারতবর্ষে | | |
|------------------------------------|------|------|---|--|--|
| বার্ষিক রেজিন্ত্রী ডাকে | - | 28 | প্রতি সংখ্যা ১:২৫ | | |
| ৰাণ্মাষিক " | **** | 321 | বিচ্ছিন্ন প্রতি সংখ্যা রেজিন্ত্রী ডাকে 👚 ১:৭৫ | | |
| প্ৰতি সংখ্যা " | | 21 | পাকিস্তানে (পাক মুব্রায়) | | |
| ভারতবর্ষে | | | বার্ষিক সভাক রেজিষ্ট্রী খরচ সহ 👚 ২১১ | | |
| (ভারতীয় মুদ্রামানে) বার্ষিক সভাক | | 30 | ৰাগ্মাসিক " " — ১ ০ ·৫ • | | |
| " যাণ্মাসিক সড়াক | | 4.6. | বিচ্ছিন্ন প্রতি সংখ্যা " — ১.১৫ | | |

[●] শাসিক বস্থমতী কিন্দুন 💿 মাসিক বস্থমতী পড়ুন 💿 অপরকে কিনতে আর পড়তে বন্দুন 🌑



কবিগানের সাংস্কৃতিক ভূমিকা

ট্রিন শতকের ইয়া বেঙ্গল দেশীর ঐতিহ্ সম্বন্ধে অপরিচয় হেতৃ ও বেনেসাঁসের নতুন আলোয় প্রদীপ্ত পাশ্চান্ত্য সংস্কৃতির পরিচয় পেয়ে ভদানীস্তন দেশীয় সংস্কৃতির রূপ দেখে চন্দ্রশ্রম চয়েছিল। ভদানীস্কন দেশীর সংস্কৃতির একটি শাখা হোল কবিগান। পাশ্চাভোর সমুদ্ধত সাহিত্যবস আখাদন করে নব্য বাংলা কবিগানকে অবজ্ঞা ও ভাচ্চিল্যের সঙ্গে অত্বীকার করেছিল। কিছ ভখনই কয়েকজন ঐতিহ্বদেতেন একে জ্লীকার করে নিয়েছিলেন ও মুল্যায়নের প্রয়াস পেরেভিলেন। ঈশর গুপ্ত, বঙ্গলাল, বাজনাবাহণ বস্তু সাভিত্যের আসরে একে প্রকিষ্ঠা দিতে এগিরে এসেছিলেন। তারপর সারও করেকজন অজ্ঞান্তনামা দেখক চেইতি হয়েছিলেন। ১৩০২ সালের জৈষ্ঠ মাসের "সাধনা"র রবীজনাথ "কবিগান" শীর্ষক প্রবন্ধটিতে কবিগানের সাংস্কৃতিক ভূমিকা ও বরুপটি উদ্ঘাটিত করবার প্রথম প্রয়াস পান। এর পর "নবাভারতে"র পাতার ব্রম্পুক্ষর সান্ত্রালকে কবিওহালাদের পবিচায়নে কগ্রসর হতে দেখি। বর্তমানেও অনেকে কবিওয়ালা ও তাঁদের কবিগানের বিবরে আলোচনা করছেন। আমরা এখানে কবিওয়ালাদের পরিচর বা কবিগানের ব্যাকরণ নিয়ে পর্যালোচনা ক্বতে চাই না। এ প্রবন্ধে ক্বিগানের ঐতিহাসিক সমুস্তবের পটভূমিকা ও ভার সাংস্কৃতিক ভূমিকাটি নিদেশ করবো মাত্র। আমাদের দেশের সাংস্কৃতিক ইভিহাসে কবিগানের একটি বিশিষ্ট ভূমিকা আছে।

আঠারো শতকের মাঝামাঝি থেকে উনিশ শতকের তিন দশক পর্যান্ত কবিগানের সাদ্ধা আসর সরগরম হরে উঠত। হঠাৎ এমনি সাদ্ধা বৈঠকে গানের মাতোরারা হরনি, ধীরে ধীরে অনিবার্ধা ঐতিহাসিক কারণে হয়েছে। দিনের কান্সের শেবে বাতের আঁধারে চণ্ডীমগুণে সাহিত্যের আসর—প্রাচীন বাংলা সাহিত্যের চিরাচরিত রীতি। তাতে পাঁচালী চত্তে বামারণ গান, মকল গান চলতই। দেধারতেই কবিগান চলে একেছে। এই ফিনিসটা নতন কোনো সমূত্ৰ নয়। সেই প্ৰনো ধাৰাবই কীৰ্মাণ অংকরী রণ্যান। কি ভাবে সেই ধাৰা কবিগানের রূপ নিল বুবতে পারতেই ক্সিনে। অরুণটি স্থান্ত উঠবে।

মোগলবা বাঙালী সংস্কৃতির ভাবলোকে নতুন কোনো দিশা দেখাতে পাবে নি, নতুন কোনো ভাব-উৎসের মুখ খুলে দিতে পাবে নি। বাদশাহী বিলাসের সমাবোহে নগরগুলোকে কেবল বিল্পত করে তুলেছিল। সেই বিলাসের রসদ জোগাতে প্রামবালো বন ও প্রাণের সম্পদে রিজ্ঞতার চরম সীমার এসে পৌছেছিল। শুলার রসের বসিক নগরী নাগরীর স্বপ্নে ছুলছল। বাজনৈতিক দাবা নিরত বিজোহে আক্রমণে চঞ্চল, ভাই প্রামবালোর বুক সব সমর উপক্রত, সমাজের স্থিরাবিধি অস্থিততার বিজ্ঞান ক্রমের শুলার বস তার বিভোল ছেড়ে জনাবৃত কালিমা নিরে দেখা দিয়েছিল প্রামা সমাজে, বিজাস্থলবের জনপ্রিয়তা দেখা দিল। জীবনধারণের নিঠ্র সংগ্রামে বর্মের মোহ ক্রমে দ্ব হচ্ছিল। বামানন্দের বৈরাগা পীড়িত কঠে ধ্বনিত হয়েছিল,—

বস্তহীন বিগ্ৰছে সেবিয়া নহে কাজ। নিজ কট দায় আৰু লোক মধ্যে লাজ।।

তথু দিনবাপনের গ্লানি একান্তিক হত্তে উঠছিল—"আমার সন্তান বেন থাকে ছবে-ভাতে।" ওদিকে ভারাকানের দূর প্রাপ্তে নৌবিক প্রশাহনীর প্রতি বাঙালী মুসলমান কবির দৃষ্টি আরুষ্ট হয়েছে। পूर्वराक हिन्तु-यून्नमान कविरानंद कर्छ कीवरानंद खर्थ-छःथ, हानि-कान्ना, প্রেম-বিংহ পরিকীর্ণ বাস্তব কাহিনী ধ্বনিত হচ্চে। সতের শতবের গোড়া থেকেই সন্ধীৰ ভাৰপ্ৰবাহ মন্দীভত হয়ে আসছিল, পৌৰাণিক কাহিনীর অমুবৃত্তি ক্রমেই প্রকট হচ্ছিল, ভাবের খবে চরি হওয়ার কাবারপের বহিবাবর্ব সম্বন্ধে অভি মনোবোগের ঝোঁক দেখা বাছিল। বাংলা সাহিত্যের এভিবেগ আবহন হয়ে আস্চিল। নগবের চিন্তপর্যে ভার ক্ষীণ ধার! উচ্চবিত হতে চাইছিল। প্রামের অর্থনৈতিক জীবন ক্রমানরে ভেডে পড়ায় সাহিত্য চর্চা অসম্ভব হয়ে উঠছিল। সাহিত্য চচার পক্ষে ভাই বাজদববার বা ধনখ্টীত নাগরিক সমাজ এবাস্ত হরে উঠছিল। আর এক দিকে লোবুপ ইংরেছ বণিকের পদ সঞ্চাব-শারেন্তা থার আমলেই নির্বিষে বাণিজ্য চালাবার অধিকার লাভ, বর চার্ণকের নেতাত্ব স্তামুটিতে ঘাঁটি স্থাপন, শোভা সিংকের বিস্লোধের অবাজকতার সাধু সুবাদার ইবাহিম থাঁর কাছে সামহিক আশ্র স্থাপনের অমুম্বভিলাভ ও কোর্ট উইলিয়াম গঠন, স্ভায়টি গোবিদপুর বলকাতা এই তিনটি গ্রাম ক্রয়ও তাদের শাসন অধিকার লাভ, সেধানে নাগরিক ব্যবস্থা ও স্বাস্থ্যকার নতুন নিরম প্রবর্তন, এভাবে কলকাতা নিরাপত্তার স্থবকিত আশ্রর হরে উঠে। লোভা সিংহেব বিস্তোহ ও বর্গীহাকামার ভাড়নে লোক সমাগম অতি ক্রভ বেডে চলন, কলকান্ডার চারদিকে নতুন মানুষ ও নতুন ঐতিহ্নের ভিত্তি গড়ে উঠল। ১৭৫০-এ এখানে এক লক্ষ লোকসংখ্যা হোল। ভাবপৰ चार्तात बहुनाथ नवकारवन कथार-In 1757, we crossed the frontier and entered into a great new world; fas—it was the beginning slow and unperceived of a glorious dawn,

এই বাত ভোবের বাাকুল প্রতীক্ষা করতে করতে অর্থ শতাকী কেটে বার, এই অর্থ শতাকীতে—মির্জাক্তর মির্কাসিমের হাতফিবি র ইংরেজের হাতে রাজ্যভার আসে, ক্লাইভের ছৈত শাসন নীতি সং কে করে ছাইর দমন শিষ্টের পালন ? অর্থণিপাসার লেলিভান গুলা সারা দেশকে প্রাস করতে উত্তত হর। এসবের পণিহাস -চিয়াভবের মহস্তব, প্রাম্য সমাজ বিধ্বন্ত বিপর্যান্ত, ওক-তৃতীরাংশ শানে পর্যবস্থিত হয়। কর্ণওয়ালিশের আমলের পর দেশে শান্তি-গুলার আবছাওয়া কিছুটা ফিরে আসে। মোট কথা, আঠার তকের ইভিগাস অবিমিশ্র ধ্বংস ও অবক্ষরের পীড়ন ও শোষণের তিহাস। বাঙালী জাতির প্রাণ কণ্ঠাগত হরে এসেছিল, তার গি-প্রাণ দীন সাহিত্যিক প্রস্থাসে জানান দিছিল কেবল আর জ্বিল নতুন প্রা, নতুন আলো।

তদানীস্তন ইংবেজরা উন্নত মুরোপীর সভ্যতার প্রোক্ষক আলোক
করে আনেনি। তারা কলকাতা ও তার ধারে পাশে
ট-কোনল ও অর্থলালসার রক্তিম শোষণ, নীতিহীন জীবনের
ক নতুন পরিবেল গড়ে তুলেছিল—সমস্ত দেশের 'অককারে
টি এক আলোর প্রমাদ। কলকাতার আদিবাদিক্ষা ছিল
নির্ভিন্থী নিমন্তরের অবিবাসী; আর কলকাতার বুকে বারা
মারেং হোল তাদের জীবনে শিক্ষাদীক্ষার প্রোতোপথ অবক্ষর,
টিটান সংস্কৃতিজাত জীবনাদর্শ বিনত্তী, চিরস্থায়ী বন্দোবন্তের ফলে
বাতন সামন্ততান্ত্রিক বংশগুলি অবলুপ্ত। ওধু অর্থের দোলতে
মাজে নতুন প্রতিষ্ঠি দেখা দিল। এতিহাহীন, রক্ষক্তবিন্তিত,
কিদািকা হীন এই নব প্রতিষ্ঠিত বণিকধর্মী সমাজে সাহিত্য ও
ক্ষেতি পৃঠপোষকতা লাভ করে সাদ্য আসরে বে কপ নিয়ে দেখা
লে, তা-ই হোল কবিগান।

কবিগানের রুণটা কেমন হবে বান্ধনৈতিক, সামালিক ও িফুতিক পটভমিকা থেকেই ভার আভাদ পাওৱা গেছে। াধুনিক চেত্তনার ক্রমস্থার ঘটেছে অন্তলেকি, থিনো আধুনিক জীবনবোধ ও কাব্যিক বিষয়ের নতুন দিগস্ত দ্বাটি ছ হয়নি, তাই কাব্য উপাদানের দিকে তারা ছিল পুরাজনের ভোছদারী। আর প্রাতন ভাবসম্পদ অভ:সার্শ্র হয়ে গৈছিল। আধিভৌতিক চেতনা, মানবিক কামনা বাসনা নিৰ্বাধ য়ে দেখা দিবেছিল। সৃন্ধতা ও শালীনতার আভিজাত্যও আশা বি যায় না, কেন না সেই কালটাই হোল ও কুল ভেডেছে অবচ িকুল গড়ে উঠেনি, এমনি একটা অস্থির রাষ্ট্র-সমাঞ্চ-সংস্কৃতির 👬 🐯 য কাল । তাই কোনো সাংস্কৃতিক বা সাহিত্যিক উপাদানই १ष्टिनीन क्रभ निरम (एथा फिट्ड भारत ना। जात विवाद कारवाब গাঁগারও নিজে পারে না। তাই খণ্ড কবিভার রূপ নেবে। উদ্ধ কবিতাস্টি হতে পারে না সেকালে, তাই উপরি-উক্ত উপাদান ^{টুপকরণ} মিলে মিশে বে জিনিসটা গড়ে তুলল ভা হোল ক্বিগান, ্ঠা কবিগান না হয়ে পারে না। সেটা গড়ে উঠন বেমন, তেমনি াড়া হৈতে লাগল। কবিপ্রতিভা অমনি পরিবেশে সাভ্য আসরে ^{চরমাদ} মত তৈরী করতে লাগদ কবিগাল।

ক্ষিমা কারিগ্রের মন্ত ক্রিগানকে কন্ত বিচিত্র রূপে গড়ে ভিঙে, নানান উপকরণ ছুড়িরে মিলিরে তৈরী করতে লাগলেন, ক্রিনীকান্ত দাস মশার ভার ফিরিন্তি দিরেছেন। তর্কা, দাঙ়া ইবি, থেউড় একদিকে, অন্তদিকে পাঁচালী, চপকীর্তন, কুক্ষরাত্রা, সার একদিকে আধ্ভাই, হাক আধভাই, টপু পা তদানীক্রন কালের

নানান ক্ষীণধাৰা মিলে মিলে এট বিচিত্ৰ কাত্ৰকৰে নিবসিত हारहिल। करका, क्रांखा-कवि, अप्टिएन আধিকেতি কতা. মানবিক্তা : পাঁচালী, চপকীর্তন, কুফরাত্রার ধারহীন ভক্ষিভার ও ভার-চীন ধার্মিকভা : আর এই চুই ধারার খণ্ডরণ নির্মাণ, সচেতন কাক্তলা অবণীয়। ভাতীর ধারাটির গান, বাজনা, সুবের কেবামভি, বিশেষ করে টপ্পার সংক্ষিপ্ত অবনমিত রাগসঙ্গীতের মধামা গভি স্ব্ৰণীয় এখানেই সাধনিক গানের প্রথম সূচনা। স্বাধনিক গানের বাজনা ও স্থাৰেবও। তখনকার দেওয়ান বেনিয়ান রাজারা এব পত্তন করেছিলেন। একটা উদাহরণ দিলেই এটা সুস্পষ্ট হরে উঠবে। ১৭১২ সালের ২৫শে সেপ্টেম্বর তারিখের ক্যালকাটা ক্রণিক্যাল" মহারাজা স্থপমর রায়ের বাডীর নাচগানের আসরের বিশেষ একটি বৈশিষ্ট্য নিদেশ কবে বলেছেন, The only novelty that rendered the entertainment different from those of last year, was the introduction, or rather the attempt to introduce, some English tunes among the Hindoostance music. औरक द्रारमान बिक निश्वावृत हेन् भाव मानविक चार्यम्यन खात्राच निर्मा करत्रह्म (বিশ্বভারতী পত্রিকা, বৈশাধ আবাঢ় ১৩৬৩)। আর প্রথম তুধারার মানবিকতা, আধিভৌতিকতা, খণ্ডরূপ, সচেতন কারুকলা क्ष्मशृति निष्य क्षेत्र काला ममनामविक चडेनावास्त्र वर्गनामीख हारा. मधकुमानव हो ह क्षेडीहार मानहे, अभिक्रेम (शब कविका). লিবিকের সমুদ্রত ভঙ্গী লাভ করে, হেমচন্দ্রের ছাতে দেশপ্রেম আর

সঙ্গীত-যন্ত্র কেনার ব্যাপারে আগে বলে আলে ডোয়াকিনের



কথা, এটা
খুবই খাভাবিক, কেননা
সবাই জানেন
ডোয়াকিনের
১৮৭৫ সাল
খেকে দার্ঘদিনের অভিভভার ফলে

তাদের প্রতিটি যন্ত্র নিশুত রূপ পেরেছে। কোন্ বজের প্রয়োজন উরেখ ক'রে মৃল্য-তালিকার জন্ম লিখন।

ডোয়ার্কিন এণ্ড সন্ প্রাইভেট লিঃ শোক্ষ: —৮/২, এস্প্ল্যানেড ইস্ট, কলিকাডা - ১

ল্লেবের কটাক্ষে অগ্রসঃ হয়ে, নবীনচন্দ্রের হাতে রোমাণ্টিক চেতনাৰ ভূমিষ্ঠ হয়ে বিহারীলালের হাতে আধুনিক গীতিকবিভার দীকা লাভ করে আধুনিক কালের হাতে এসে পৌছেছে। অতএব আৰম ছ্ধাৰাৰ মাৰে আধুনিক কবিতার বেমন উল্লেষ, ভৈমনি শেষ ধাৰাৰ মাৰে শাধুনি হ গানে । প্ৰথম উৎসাৰ। এভাবে কবিগান একাধারে আধুনিক কবিতা ও গানেব অন্মলয়ে খেকে এক বীজ ছুই মুলের মত উদ্ভিন্ন হরে প্রাণারিজ ও বিকশিত হয়েছে, ভাই সে পার্থ গনামা, কবিতা ও গানের সম্মিলনে সে কবিগান। ষভই তার ছব, অমাজিত, অশালীন, অনভিজাত রূপ হোক না কেন, আমাদের দেশের সাক্ষেতির ইতিহাসে তার একটি বিশিষ্ট ভূমিকা चाट्ट। वरीम्प्रनारथव छारे वथार्थ निर्द्यम,--वाःनाव श्राहीन কাব্যদাহিত্য ও আধুনিক কাব্যদাহিত্যের মাঝধানে কবিভয়ালাদের পান। এই নষ্ট প্রমায়ু কবির দলের গান আমাদের সাহিত্য এবং সমাজের ইতিহাসের একটি অঙ্গ। বলা বাত্ত্যা, আমাদের সংস্কৃতির ইভিহাদেরও। -- मित्रील हाहीलांशांच ।

আমার কথা (৫২) এপ্রস্কুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

১১৪৩ সালে এক কিংশার ভাত্র পাটনা বিশ্ববিভালরের রজভ-ক্ষম্ভী উৎসবে দর্শক হিলাবে উপস্থিত থেকে ভারতখ্যাত প্রবীশ গায়কদের মধ্যে ত্রহী তক্ষণ উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতজ্ঞের গান গুনে মুগ্ধ হরে পড়েন। এত অল্প বহুসে সাধনার মাধ্যমে জনপ্রিয় হওয়া



बैक्षण्यक्यांव वत्मांभाषांव

ৰায় ! প্ৰদিন হতে তিনি ক্ষত্ম করলেন কঠসসীত—বন্ধসঙ্গীত বন্ধ বেখে। কিশোবটি হসেন আজিকার ভারতের প্রধ্যাত কঠনিত্রী প্রশাসনকুমার বন্দ্যোপাধ্যার আর ত্রয়ী ভঙ্গণ সঙ্গীতক্ত ছিলেন কুমারগন্ধর্ব, ডি, ভি, পালুসকার ও শ্রাক্থ হোসেন। বলেন প্রস্নকুমার—

পঞ্চাশ বৎসর আগে বাবা শ্রীক্ষীলকুমার বন্দ্যোপাধ্যায় কার্যাব্যপদেশে পাটনায় এলে স্থারীবাদিশা হলেন তথাকার। চার ভাই ও চার বোনের মধ্যে তৃতীর সন্তান আমার জন্ম হয় সেধানে ১৯২৬ এর ১৫ই আগষ্ট। নিজেদের বাড়ী আছে এখনও বারাকপুর মহকুমার এডিরাদহতে। প্রবেশিকা পারীক্ষার পাশ করি ১৯৪২ সালে, আই এস সি '৪৪ সালে। বিরাদ্ধিশের আন্দোলনে বোগ দিরাছিলাম বলে কলেজ থেকে নাম কেটে দেওরা হয় সত্য কিন্ত বোগ দিই নাই। বি, এস-সির কোর্থ ইয়ারে পড়ার সময় অন্থব হল—তজ্জ ফাইন্যাল পারীক্ষা দেওরা হল না। গানের ঝোঁকও কিছুটা দারী ছিল এজন্য।

ছেলেববরেস বাবা ও কাকাবাবুকে গান গাইতে গুনেছি।
কিছ থ্ব গভীৱ ভাবে তাঁরা সাধনা করেননি। বড়িশ-বেহালার
কল্যা মা প্রীমতী অঞ্চমতী দেবী রাগ-রাগিণী ভালই বোকেন—
কিছ নিজে কখনও গান করেননি। তবে গান শুনতে থুবই
ভালবাসেন। কিছু বড়দাদা প্রীপ্রণব ব্যানাচ্জির কাছ থেকে
আমরা পেরেছি গান শেধার উৎসাহ। '০৯ সালে বাড়ীতে এলো
বেতারবল্প আব দিদির পরীক্ষার "মিউজিক" ছিল অভিরিক্ত বিষর,
তাই বাড়ীতে আসতেন গানের শিক্ষক। বেতারে গানের প্রভিটি
প্রোগ্রাম শুনে ও মাষ্টার মহাশরের গান শেধান শুনে আমার মনে
এস বাগা ও তাল এব জ্ঞান। দিদির গান গাওয়ার সময় 'ঠেকা'ও
দিয়েছি কত দিন। সেকেও ক্লাসে পড়ার সময় এপ্রাক্ত বালী
বাজানর চেষ্টা করতাম। কিছুদিন বাদে পাটনার বালী বাজিরে
বলে একটু-আধটু নামও হল। আন্তঃকলেজ প্রতিবোগিতার
এপ্রাক্ত বালীতে প্রথম হলুম।

নিজের গলাব গান গাইব-এ বোধ কোন দিন হয়নি। কিছ এর পত্তন হ্ল ১৯৪৩ সালে পাটনা বিশ্বিভালয়ের ব্রুভ-करकी छेरमत्व रेक्बाक थी, श्रामाम कामी थी, एकावनाथ भहेवर्छन, নাবায়ণ রাও ব্যাস প্রভৃতি দিকপালগণের সঙ্গীত শুনে। কিছ মোহিত হরেছিলাম শুরু গানে নয়—তাকুণ্যের উজ্জ্লতায়—য়থন ভনলাম কৃমারগন্ধর্ব, ডি, ভি, পালুসকার ও শরাফৎ হোসেনের বঠসর। প্রায় প্রতিজ্ঞা করলাম বে গারক আমাকে হতে হবে। '৪৫ সালের শেবাশেষি গান আরম্ভ করে দিলাম এপ্রাজ ও বাঁশীকে এক পালে সরিয়ে রেখে—বোরাঘুরির ফলে গাইও ও শিক্ষকও পাই পণ্ডিত বামপ্রদাদ পাণ্ডেকে। কিছুদিন পরে এক বন্ধুর প্রবোচনার কলিকাতার হাজির হলুম কিছ বাড়ীর লোক হলেন অধুনী। এখানে চেষ্টা করপুম গ্রামোকোন কোম্পানীওলিভে গান ও ফিলে জভিনয়ের জন্ম। তাতে সুবিধা হল না। হঠাৎ সুহোগ হল ঐনুপেন্দ্রনাথ মৃত্যুদারের সহিত সাক্ষাতের। তিনি ভাষার পাঠালেন বেভিওতে—'অভিশন' দিশাম কিছ ক্ষবাৰ না পেরে ফিবলুম পাটনায়। সেধানে '৪৬র মেপ্টেম্বর সংখ্যা 'বেডার অগত'এ (मर्बि ३६ मि: खक् "व्यंत्रुन शांनाव्यि" (श्रेत्रांन भारमर्श्यक्र निर्मिष्ठे

হয়েছেন। তাই সামি বা মাল কেছ বৌল নেওয়ার কর এগাম ক্লিকাতার। মহুসমানের পর মামাকৈ গান গাইতে হল।

এর পর প্রথাত ভবনা বাজিয়ে শ্রীহীক্ন পাসুনীর সঙ্গে তাঁর গৃহে দেখা—তিনি পাঠালেন উষ্টব শ্রীবামিমীনাথ গাস্থুলীর কাছে। পুরুরেহে স্বপুত্র বেথে দবদী শিক্ষক হিসাবে আমার শিবিরেছেন তিনি আর সেই সঙ্গে 'টিউপানী'রও বাবছা করে দেন। মধ্যে মধ্যে বেতার কেন্দ্র থেকে গান গেয়েছি। ছ'বৎসর বাদে নিজ বাসস্থানে চলে আদি মীৰ্জ্জাপুৰ ষ্ট্ৰীটে। সেটা ১১৪১ সাল। তাঁৱই উলোগে প্রথম 'বলবেক্স মিউজিক কনফাবেন্দ'ও পরে 'বল ইপ্রিয়া তানদেন কনফারেশ'এ বোগ দি। বলতে লক্ষা করে কিছ জামার demonstration এ শ্রোভার। হরেছিলেন থ্ব গুনী। এর পরেই 'ঝকার' ও 'সঙ্গীভ' চক্রমতে বোগদানের স্মবোগ পাই। সেই সমর শতীরটা বিশেষ ভাল বাচ্ছিল না। ফিরলুম পাটনার। ফালকাতা বেতার কেক্সে গান গাওয়ার জন্ম মধ্যে মধ্যে আস্কুম। প্ৰে পাটনা কেন্দ্ৰে বোগদান করি। ১১৪১ সালে প্রান্তর প্ৰীজানপ্ৰকাৰ খোবের সঙ্গে প্ৰিচ্যু হয়। 'e - সালে কলিকাভাষ এনে তার শিক্ষাধীন ছাত্র হলুম। তার পরিচালনার ও সাচচার্য। লামাৰ প্ৰিয় খেয়াল ও ঠুংবীৰ উন্নত স্তব্য বিভিন্ন ৰূপ, উচ্চতৰ ৰিক্ষা পাই। মনে হল খেন এত দিনে সঠিক সন্ধান পেয়েছি আমার দাপনা, আমার সঙ্গীতের চিন্তাবারা, আমার ভবিষাতের কথকে সলস সার্থক রূপায়ন ক্রার জন্ত। আর বেতারশিল্পী হিসাবে দিন দিন আমার লোকপ্রিয়তা বেড়ে গেল। মনের বাসনা হল পুর্বতর। ১৯৫৭ সালে সঙ্গীততক হিসাবে পেলুম ওস্তাদ গোলাম আলী থা সাহেবকে। আমার ধারণা থাঁ সাহেব ভবিষ্যৎক্রী, আজ তিনি ভাৰতীয় সঙ্গীতবাজ্যে বা দিয়ে ৰাচ্ছেন—তা ভাৰতবাসী পূৰ্ণ উপলব্ধি করবে ত্রিশ বংসর বালে। এতে বড উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতজ্ঞ আমরা পাব কিনা জানি না। ইতিহাস তার সাক্ষ্য দেবে।

এঁর কাছে শিধলেও জানপ্রকাশ বাবুর সঙ্গে আমার নিয়মিউ বোগাবোগ আছে এখনও।

'চুলি' ফিলে আমার নেপথা সঙ্গীত আমার জীবনে এনে দিল এক বিরাট পরিবর্তুন। স্থরকার রাজেন্দ্র স্বকারের সাহচর্য্য— শ্রোতাদের নিকট আমার গাওরা গানের উচ্চ-প্রশানা—আর আমার নিজের দরদ দিয়ে গানগুলি গ্রহণ্ট্রনা—'বছ ভট্ট'র নেপথা গায়ক হিসাবে উচ্চতর আসনে প্রতিষ্ঠা করল আমার। এর পর হল 'আশা' ও আরও বছ ছবিতে কাল করার স্থবোগ। ক্ল্যাসিকাল গায়ক হয়েব দর্শক্ষাযো তল আমার প্রচুর পরিচিতি আর স্থবোগ এনেছিল চিত্রে নারক হিসাবে অবতরণ কিন্তু উচ্চাল সন্নীতকে করেছি জীবন-পাথেয়—ভাই বিলিষ্ট চিত্র-পরিচালকদের নিরাশ করকে বাধ্য হয়েছি।

ভারতের বিভিন্ন স্থানের সঙ্গীতাসরে বোগদান করেছি।
দিল্লী বেতারের 'লাতীয় প্রোগ্রামে' ১১৫৮ সালের নভেবরে অধ্য যোগদান করি।

১১৫৭ সালের ফেব্রুবারী মাসে তীম্মদেব-ছাত্র ব্রীনৈকে প্রক্রুবার চটোপাণ্যায়ের কল্প। ভারতধ্যাতা উচ্চাঙ্গ সঙ্গীতজ্ঞা জ্ঞীমতী মীরা দেবীকে বিবাহ করি। স্তাব, এ, কানন, চিন্মহদা ও রাধিকাদা ব সাহচ্য্য আমার সঙ্গীত পরিবেশকে করেছে স্মমধুর।

ভগিনী কল্পনা মুথাজিল, জাতা প্রজোৎ বাানাঞ্জি, বেলা বাল্প আমার কাছে সঙ্গীত শিক্ষা করেছে। আবস্ত ছাত্র-ছাত্রীকে শিক্ষা দিই। বর্তুমানে আমি Calcutta Academy of Indian Music শিক্ষকতা করি।

কলিকাতার অনুষ্ঠিত গানের ভাসরগুলিতে ছানীর শিল্পীদের অংবোগ না দেওরা বড়ই দৃষ্টিকটু লাগে আমার কাছে।

শে বে তিনি বলেন বে, উচ্চাঙ্গ সঙ্গীত আৰু লোকপ্ৰিয় হয়েছে বৰেষ্ঠ —কিছ বসগাহী শ্ৰোতার প্ৰয়োজনও বয়েছে সেই সঙ্গে।

গ্রামে

কেশব চক্রবর্ত্তী

আমি এখনই গ্রামে বাবো। সেধানে ডালপালা
দিবে একটি কুটার গড়বো।
আব মাঠে সারি সারি বীক্ষ বপন করবো।
আব কুটাবের সামনে, রঙ-বেরঙের ফুলের বাগান করবো।
আমি এখনই গ্রামে বাবো, সেধানে উবার ঘোমটা ভূলেই স্বপ্ন খুলবে।
সেধানে প্রথম সূর্য্যের আলো পড়বে।

তথন আমরা স্বাই,

বনবীধিকার জমরের মতো আপন মনে গান করবো।
আমি এখনই গ্রামে বাবো। সেধানে ঝিলের জলে আন করবো।
আর জলের টেউরের সাথে আপন মনে দোল থাবো।
সেধানে কপোরেশনের জলের বছণা নেই।

त्मशेष्ट्र करियातम्बद्धाः अध्यात् विद्यात् । जिथान्य जाजारिक्षयः स्थानित जीवकात्र ।

चामि अथनहे खाद्य वाद्या,

সরকারী পক্লী উন্নয়নের সাথে হাস্ত মিলাবো। অথবা: পদ্মীন্তননীর পদপ্রান্তে বসে শ্রীতির কর্ম দেবে।।



মৃণালিনী সেন

[ব্যালিনী বশবিনী কবি ও মহিলাদের মধ্যে প্রথম বাঙালী বিমানারোহিণী]

বিশ্বসাহিত্যের দরবারে বাঙলা কবিতার আৰু বিপুল সমাদর।
বাঙলা কবিতার রসাখাদনে বিখের মানুষের মন-প্রাণ আৰু
ব্যাকুল। বাঙলা কবিতার সারমর্ম উপলব্ধি করার জ্ঞে পৃথিবীর কত
মানুষ বে আৰু উন্মৃধ তার ইয়তা নেই। বিশব্দোড়া অভিনন্দনে
বাঙলা কবিতা আৰু পরিপূর্ণ, রবীক্রনাথের দেশে যে কবিতা জ্মার
ভার প্রতি মর্ত মানবের আৰু জসীম শ্রম্ম, জগত সাহিত্যের আকাশে
আৰু সগর্বে উত্তে চলেছে বাঙলা কবিতার বিভাগ পতাকা।

এই বে সমাদর, এই যে প্রতিষ্ঠা, এই বে জরবাত্রা—এ কোন পটড়্মিকার উপর রূপ নিয়েছে? জগতের সাহিত্য-সভার বাজলা দেশের কবিতা সম্মানের আসন লাভ করেছে কোন একক প্রচেষ্টার মর, ছ'-চারটি ভাষার কৌশলে শক্ষণভূর্যে নয়, কয়েকটি ভক্ষগভীর বাক্ষের সমাবেশে নর—এ জিনিব আজ সন্তব হয়েছে বহু শিল্পীর, বহু জ্ঞার, বহু সাধকের কল্যাণে, সন্তব্পর হয়েছে অসংখ্য কবির সাধনার, হয়েছে সরস্থীর অগণিত ভক্ষের হুস্তর তপ্তায়। বাদের অমৃল্য অবদানে বাঙ্গা সাহিত্য এক নতুন পথের সন্ধান পেল, ভারা কালজ্মী, সকল কালের নম্যা।

এ কথাও অনস্বীকার্য নয় বে, বাঙলা কবিকার গঠনকর্মে,
পুটির ক্ষেত্রে, বিকালের পথে সহায়তা করার জন্তে প্রাপা সমানে
ক্ষেত্রমাত্র বাঙলা দেশের ছেলেদেরই অবিকার নেই। বাঙলা
দেশের মেরেদেরও তাতে সমান অবিকার। সরস্বতীর সেবার
পুক্ষবের সঙ্গে নারীও সমান অংশ গ্রহণ করেছে। পুক্ষবের
মন্তই নারীও সমান অংশে লাভ করেছে সরস্বতীর আন্মর্বাদের
উদ্বাবিকার।

সাধারণ পাঠক নারী-কবিদের কবিতা খেকেও অফুপ্রেরণা, মতুন পথের নির্দেশ বলিষ্ঠ দৃষ্টিভকীর প্রভ্যক পরিচয় কিছু কম পান নি।

বাঙলার ববেণা নাবী-কৰিদের মধ্যে আজ "চাবজন" এর মাধ্যমে বীর জীবন কাছিনী আলোচনার প্রবৃত্ত হয়েছি তাঁর নাম মৃণালিনী দেন মহালরা। আজকের দিনের অলীতিববীরা খনামবলা কবি মৃণালিনী দেন, প্রসঙ্গতঃ বলে রাখি বে বাঙলা দেশের মহিলাদের মধ্যে প্রথম বিমান আরোহণকারিণী মৃণালিনী দেন ও কবি মৃণালিনী দেন পুথক নন, অভিন্ন!

১৮৭১ শুঠান্দের ওরা আগঠ মুণালিনীর জন্ম হর। বুণালিনীর পিতৃদেবের নাম অগাঁর লাজনীমোহন ঘোর। মাত্র তেরো বছর বরসে মুণালিনী বিবাহবন্ধনে আবদা হন। মুণালিনী ঘোর ইন্দেন মুণালিনী সিংহ। পাকপাড়ার দেশবিধ্যাত অভিজ্ঞাত সিংহ-পরিবাবের দেওয়ান গলাগোবিক সিংহ ও সর্বত্যাগী মূপ-তাপস রুক্ষ্যক্ত সিংহ লালাবাব্ব অবোগ্য বংশগর বশসী ভূম্যবিকারী সাহিত্য-অভিনয়-সংস্কৃতির পুঠপোবক অগীর ইন্দ্রন্ত সিংহ্র সংহর্থিনী।

ভূজাগ্য সিংছ-পরিবারের বিবাহের ছু' বছর পরেই ইক্সচক্র আত্যন্ত অকালে শেষ নি:শাস ত্যাস করলেন। জীবনের শ্রেষ্ঠ তম সঙ্গীকে হারিরে ফেলে দিশালারা হরে পড়লেন বালিকা মৃণালিনী আর সেই পঞ্চলীর ভগ্নছারের কবিতার জন্ম হ'ল। বিধবা মৃণালিনীর মধ্যেই ভখন আর এক মৃণালিনী ফুটে উঠলেন, কবি মৃণালিনী। বিরহের তীব্রতার উপশম বেন খুঁজে পেলেন কবিতার মধ্যে, কবিতার মধ্যেই আবঠ ভূবে গেলেন মৃণালিনী, কবিতার মধ্যে তাঁর আবঠ নিমজ্জনের ফলে প্রভূত পরিমাণে উপকৃত হ'ল বাঙ্গা সাহিত্য, উন্নত হল, পুষ্ঠ হ'ল, সমৃদ্ধ হল। পর পর করেক বছরের ব্যবধানেই তাঁর লেখনী খেকে জন্ম নিল প্রতিধান, নিন্ধিনী, কল্লোসেনী (গাভিকাব্য), মনোবীণা প্রশ্ব কাব্যগ্রন্থলি।

প্রায় এগানো বছর কঠোর বৈধব্য জীবন ধাপনের পর তিনি
প্নাপ্রিণীতা ছলেন খগীর নির্মান্ত সেনের সঙ্গে। খগীর
নির্মাচক্র ক্রমানক কেশ্বচক্রের ছিউর পুত্র। ব্লিডীর খায়ীর সঙ্গে
কবি মৃণালিনী দীর্ঘদিন ইউবোপে অভিবাহিত করেছেন।
সমাজনেবার কার্বে, নারী ভাতির স্ববিব উন্নয়নকল্লে, জনগুণর সোবার
মৃণালিনীর উৎদাহ আন্তবিক্তা ও কার্য্যাবলী বেমনই প্রশাসনীর
তেমনই সাম্বাদার্হ। করেক দিন পূর্বে বিভিন্ন সংবাদপত্রের মাধ্যমে
জানা গেল বে প্রদীয় রক্ষানক্ষের পাঞ্লিপি ইনে জাতীয় গ্রন্থাগারে
উপহার দিয়েছেন।

মৃণালিনীর কাব্যাবলীকে সাধারণতঃ হ'টি ভাগে ভাগ করা বার। প্রথম জীবনে প্রথম স্বামীর প্রকোকগমনের ফলে বে নিদাকণ আবাত বালিকা-বধ্ব মনে বিরহ বেদনাকে ঘনীভূত করে ভূলেছিল তারই সমাক্ প্রতিছ্ঠি কুটে ওঠে প্রথম ভাগের কবিতাগুলির মধ্যে। বিতীয় ভাগের কবিতাগুলি পাঠ কংলে দেখা বার বে, কেবলমাত্র বল্লনাবিলাসী হয়ে থাকতে মৃণালিনীর কবিমন নারাল, কর্ময়র জগতে কর্মের মধ্যে লিরেই আপন জীবন সাধনার সিদ্বিলাভ করতে চান কবি মৃণালিনী। সকলের মন্ত নিজেকেও কর্মের মধ্যে নিয়োজিতা রেখে জগতের সেবা করে বাওয়াই তার মতে জীবনের মুখ্য কর্ত্ব্য।

এই অশীতিববীরা মহিলা-ক্বির আরও দীর্থজীবন কামনা করে তাঁর উজেশে শ্রমা নিবেদন ক্রি।

রেভারেণ্ড অরবিন্দনাথ মুখোপাধ্যায়
[কলিকাভার বিশপ ও জারভ-ব্ল-সিংহল-পাকিভানের
প্রধান ধর্মাধ্যক]।

ত্য্বাৰসায়, সকতা, সেবাব্ৰত, ধর্মপ্রবণতা, মানবভাবোধ, সম্বদম্ভা ও শ্রচাববিমুখতা বাঁহার মধ্যে দেখা বায়, নি:সম্পেহে তিনি দশের মধ্যে এক বছর মধ্যে খতন্ত্র গভান্থগতিকতার মধ্যে বৈশিষ্টাবান। কলিকাতার বিশাপ এবং ভারত, বর্মা, সিংহল,

পাকিস্তান, এর মেট্রোপনিটান প্রথম ভারতীয় বেভারেও **অর্থিননাথ** মধোপাধার ভাঁচাদেংই একজন।

বেভাবেশু মুখোণাধার ১৮১২ সালের ২৩শে মে কলিকাভার অগগ্রহণ করেন। স্বপ্রাম বংশবাটী ও মাতুলালর বলাগড়। তিনি ১৯১০ সালে কলিকাতা দেউপলন বিভালর হইতে প্রবেশিকা, ১৯১২ সালে দেউপলন, কলেজ হইতে আই, এ ও ১৯১৪ সালে ছটিশ চার্চ্চ কলেজ হইতে বি, এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন। ছই বংসর ভাগলপুর টি, এন, স্থুলে শিক্ষকতা কবিয়া তিনি কলিকাভার ফিবিয়া আনেন এবং ১৯১৭ সালে বি, টি, পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন।

প্রবর্জী ছুই বংসর আগ্রা সেট জন স্কুলে শিক্ষকতা করার পর ভিনি ১৯১৯ সালে দিল্লী সেট উচ্চেন্স বিভাগরে বোগদান কবিরা সাত বংসর তথার অবস্থান করেন। ১৯২৬ সালে দিল্লী ইউনাইটেড ক্রিন্টিরান উচ্চতর মাধ্যমিক শিক্ষাসম প্রতিষ্ঠা কবিয়া ১৯৩৬ সাল পর্যান্ত তিনি উল্লাব অধ্যক্ষ হিসাবে নিযুক্ত থাকেন।

চাত্রতীবন হটতে রে: মুখোপাধার বান্ধকর ন্ত্র (Priesthood) প্রতবের জন্ম নিজেকে যথোপযোগী গঠনে প্রহাসী হন। দীর্ঘ দশ বংসর কুচ্ছদাধন, মানসিক গঠন, আধ্যাত্মিক জ্ঞানার্জ্মন ও ধর্মপুস্তক পঠনে নিজেকে নিয়োজিত হাখার পর ১১২৪ সালে দীকা গ্রহণাস্তে জিনি ষাক্তক ভিলালে পরিগলিত ভন। ইভার বাব বংসর পরে তিনি এছ বংশবের জন্মত্রিই কেমব্রিক মিশনের অস্থায়ী প্রধান হিসাবে কালা করেন। ভংপরে ট্রার অর্থ-বিষয়ক স্চিবরূপে তুই বংসর ধাকার পর প্রথম ভারতীয় হিসাবে ১৯৩১ সালে পাকাপাকিভাবে উঙার সংক্রান্ত পদ গ্রহণ কবিয়া ১৯৪৪ সাল পর্যান্ত অবস্থান करवन। किनि मान करवन (इ. Rev. Canon U. King बद्ध शिका তাঁগ্ৰাহে উক্ত প্ৰেব উপ্যোগী কবিয়া ভোলে। ১১৪৪ সালে नाःकाःतव मक्कावी दिम्भ छ ১৯৪९ माल मिल्लोव विम्भ किमारव কাৰ্য্য কবিয়া ভিনি কলিকাতার বিশপ ও ভারত-বর্দ্মা-সিংহস-পাকিস্থানের মেটোপলিটনরূপে ১১৫০ সালে কার্যাভার গ্রহণ ক্রেন। প্রথম ভারতীর হিসাবে উক্ত হুই পদে জাঁহার নিয়োগ বাঙ্গালীর বিশেষ গর্মের বিষয় বলিংটিমনে হয়। সুশুগুল কর্মধারা, সুমধুর ব্যবহার, সুদৃপ্ত আগাপ-আলোচনা, সুষ্ঠু বাচনভন্সী ও নিবলন সাংনা—ভাঁচাব মেধা ও প্রভিতাকে বিশ্ববন্দিত করিত্বা ভোলে। তাই কানাডার ট্রোণ্টো বিশ্ববিদ্যালয় সাদরে ভাঁচাকে ভূষিত ক্রিলেন Doctor of Divinity উপাধিতে আর গত বংসরে লণ্ডন সহরে বে: মুগোপাধায়িকে স্মানিত করা হইল Doctor of Divinity Laueleeth স্বীৰ্ক ধ্যীৰ জগতেৰ সৰ্বোচ্চ সমানে। সেই সভার উপস্থিত ছিলেন আচ বিশপ অফ ক্যাণ্টারবেরী ও বিশেব অক্তান্ত মেট্রোপলিটানগণ। অরবিক্ষনাথ ছাত্রবয়নে হকি, ক্রিকেট ও ফটবল খেলায় খবই পারদর্শী ছিলেন। ভিনি উর্দ্ধ ভাষাও দক্ষভার সভিত আয়ন্ত করিয়াছেন। ভিনি করেক বার মুরোপ ও এশিরার বিভিন্ন দেশ পরিভ্রমণ করিয়াকেন।

সিমলার পাইনবংশের ছৃত্তিতা প্রীয়তী প্রণরপ্রতিমা দেবীকে জনবিক্ষনাথ বিবাহ করেন। জননী ঐবসন্তবালা দেবীর কথার সৌমাম্তি রে: জনবিক্ষনাথ বলেন বেঃ মাত্র সাড়ে ভিন বৎসর বরসে পিতৃদেব অবোধনাথ মুখোপাধ্যারকে হারাই—তাই তাঁর কথা বিলেব মনে পড়ে না। কিছ দুঢ় দুঝাপপরারণা ও বিশেষ ব্যক্তিম্বন্দারা



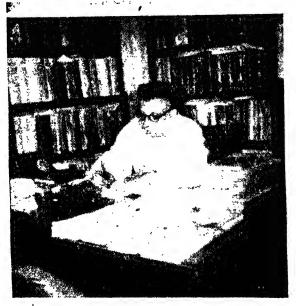
বেভাবেও অববিন্দনাথ ৰু'ধাপাধ্যার

মা আমাদের পাঁচ ভাইবোনকে মাম্য করেছিলেন নিজের প্রথ বিসর্জন দিয়ে বাবার সামান্ত পুঁজি সম্বস করে—আর তাঁর অপাধ ভগবৎ সাধনার উপর নির্ভির করে। ডাক-কলেজে পড়ার সময় বাবা বধন পৃষ্টবর্ম গ্রহণ করেন—তথন রক্ষণশীল হিন্দু-পরিবার তাঁকে প্রহণ করতে পারেনি—িক্ত পরিবারের ছোট বধৃটি সেদিন অভয় দিয়েছিলেন আর সাহস যুগিয়েছিলেন তাঁর আমাকে। জীবনের প্রথম থেকে আমাদের মাম্য হওয়া পর্যান্ত মা কি কট্ট না করেছিলেন! শেষের কথাগুলি বলার সময় তাঁহার অঞ্চাসজ্ঞানর আর বাশাকৃত্ব কঠন্বর, অকপটে স্বীকার করি আমাকে রীতিম্বত বিচলিত করিয়া তুলিয়াছিল।

বিচারপতি বিনায়কনাথ বন্দ্যোপাধ্যার [নিরশেক, ভারনিষ্ঠ, সভারতী আইনবিদ]

কি দেখলুম কি ? ভূল দেখলুম না তো ? কিছ তা কি কৰে হয়—অথচ নিজেব চোথকে অবিধাসই বা কৰি কি কৰে ? খীবে থীবে আমাৰ মনটা পৰিণত হল এক বণালনে—আৰ সেই বৃদ্ধেলে প্ৰেচণ্ড সংগ্ৰাম চলতে থাকে এই ঠিকে আৰ ভূলে। কিছুকাল পৰ এই সংগ্ৰামেৰ হল সমান্তি বখন ভিনি নিজেই বলতে লাগলেন তাঁব দৈনন্দিন কৰ্মণ্ডীৰ কথা—তিনি বললেন, আগে বাভ ভিনটেৰ সময় এই টেবিলে আমাৰ দেখা খেত। খখন একটু দেখী হয়—ভবে চাৰটেৰ পৰ বিহানাৰ আৰ আমাকে পাঙৱা বাৰ না, ভোবে পদবলে আমি বেডাতে বাই, ভাৰণৰ বাড়ী কিবে আসি টামে চড়ে জাই লাইক এ কমন মান। পঞ্চাল পেখিৱে এসেছি ভবে

এখনও আমি অনাহাসে অভতঃ সিকি মাইল হৌড়তে পাৰব। ৰুখলুম চোৰ আমাৰ ভুস কৰে নি, ঠিকট দেখেছে কোন श्रम नकारन अवि है। हम अक्षि निर्मिष्ठे बाखीब मिटक टार्च नएए দ্বাপ্তবার চোৰ ছটো বমকে গিরেছিল, ভাল করে শব্দ্য করতে না ক্ষরতেই ট্রাম ছেড়ে দিবেছিল, সেই অল্ল দেখার মধ্যেই বাত্রীটিকে এ বির্বে দেলিন মনে মনে বে অনুমান করেছিলুঘ ভাঁব কথা क्षरत द्वल्य बहुमान बाह्यांव बद्धांच, निश्नेनएरहद निक्टेरकी ব্লৱালার অঞ্লে একটি বাড়ীতে নানাগ্রন্থ শোভিত काक वास कान अक विवादिक सकारण बाब मान कार है जीवन-क्रांक्रिनीटक क्रिक्स करत जामारशय जानाल-जालांक्सा हमाब, जाबि काँदिको स्वर्थिक । स्वर्थिक विमाशक वान्त्रांशाधाराक । स्वर्थिक क्रमकाका काकेटकार्टीय व्यक्तकम विकासभाकि प्रकारिनांचा कारावार्थ प्रकाणप्रक । माराज्य stere fure এक्किक व प्रक्रिकांत देखर कांच अवमानकार्य वार, मिन्रानका ও সভ্যের আসনে খিনি স্থাসীন, মান্ত্রের স্কল 'হল্ব সম্ভার ছীঘাংসা করার জন্তে যিনি লপ্ত গ্রহণ করেছেন, মান্তবের কর্মক উপলক্ষ্য কৰে বাঁকে এক স্থাচিখিত সিম্বাম্থে উপনীত চয় প্ৰস্থ বিলোবণের সাহায্যে তাঁর গতিবিধি তো মানুবের অগতের মধ্যেই, জাব খেকে পুরে নম্ব সাধারণ মানুষের পরিচিত সীমার মধ্যেই তাঁব প্দক্ষেপ্ণ। মানুষকে নিয়েই তাঁর কারবার, মাত্ৰে মাত্ৰে মুক্ত হয়ে কথনো কথনো যে জটিলতা গড়ে তোলে তারই স্মাধান ক্ষার ভার বাঁর উপর ক্ত — ভাঁর চলার পথ হবে মাল্লবের কাছেই, মাতুবের আশেপাশে, মাতুবের মধ্যেই। তাইতো সেদিন বিচারণতি বিনায়কনাথকে ট্রামে দেখলুম, সকলের সঙ্গে চলেছেন বেন তাঁদেবই একজন, তাদের প্র নন। তাদের কথা গুনতে ভনতে, ভাদের ভাষা বুঝতে বুঝতে, তাদের চিস্তাধারা উপদ্বি कराज कराज ।



বিচাৰপতি বিনারকনাথ বস্যোপাথায়

আদিনিবাস চক্ষিশ-প্রগণার বাবাসতে। প্রশিত্যমহ বাবাসত কোটের মোক্তার কাসির ঠাকুবলাস বন্দ্যোপাধ্যার, পিতামহ চাইবাসার উকীল অগাঁর বোগেক্সনাথ বন্দ্যোপাধ্যার, পিতামহ চাইবাসার উকীল অগাঁর কেতীক্সনাথ বন্দ্যোপাধ্যার। সমগ্র পরিবাবিট এক কথার আইনজ্ঞের পরিবাব, এঁবা ছাড়াও পরিবাবের আবও অনেক সদত্য আইন র্যবসার মধ্যেই কালাভিপাত করেছেন। পূর্বপুক্রদের যে অনলস সাধনা ভিলে তিলে সমৃদ্ধির অভিমুখে এগিরে গেছে, সেই সাধনাবিই সফলতা, বিকাশ, ও পূর্বতা দেখা দিল উত্তরপুক্ষমের মধ্যে। আইন ব্যবসারে লাফ্স্য জাতের বীজ্ঞ বিনারক্ষনাথের হক্ষে অক্তি দিবার শ্বমনীতে হ্যাইনজ্ঞ মৃত্তে তিনি মুখারী, সক্ষপ্রতিষ্ঠ অনামবন্ধ ছবেন না তো ছবেন কে?

বারাসতে আদিনিবাস হলেও জন্মেছ্ন কৃষ্ণনগবে।
১১-৬ সালের ২৪০ জুন ভারিখে। মাদের নাম শতদলবাদিনী
দেবী। এঁর শিভামহ তৎকালীন নগর-জীবনে বিলিট্ট পুরুষ
বাঙলার অংশীর নাগ্রিক প্রলোকগত রার্বাহাত্র জগদানক
ছবোপাধারে।

বিনায়কনাথ প্রবেশিকা পরীক্ষার উদ্ভীশ ছলেন ১১২৩ সালে বজনাসী কলেজিয়েট স্কুলের ছাত্র হিসেবে। প্রেসিডেন্সী কলেজে ভাতি হলেন, সেখান থেকে আই, এ পাশ কর্মলেন ১৯২৫ সালে। এর পর অস্ত্রন্থতা বলভঃ এক বছর পড়াওনা করতেই পারেন নি, গেই জভ্যে ১১২৭ সালের পরিবর্তে ১১২৮ সালে বি, এ পাশ করলেন ইতিহাসে অনাস নিয়ে। ১৯৩০ সালে প্রাচীন ভারতীয় ইভিহাসে অম, এ পরীক্ষার প্রথম স্থান অধিকার করলেন। আইন পরীক্ষার উদ্ভীশ হলেন ১১৩১ সালে, য্যাডভোকেট হিসেবে গুহীত হলেন ১১৩৩ সালের মার্চ মাসে।

ছাত্রজীবনে দেখা বাছে ইতিহাসের প্রতি বিনায়কনাথের প্রবল জন্মবাগ, পরবর্তীকালে তাঁকে দেখা গেল খ্যাভিমান আইনজ্ঞরপে— কিছ তাঁর বছমুখী প্রতিভাব পরিচর শুধু এইটুকুই নর। ইতিহাস ও আইনের জন্মরপ সংস্কৃত লাস্ত্রেও তাঁর দক্ষতা কম নর। রীতিমত টোলে অধ্যয়ন করে সংস্কৃত লাস্ত্র সম্বদ্ধে শিক্ষালাভ করেছেন। মহামহোপাধ্যায় ডক্টর বোগেন্দ্রনাথ তর্কবেদাস্কতীর্থের টোলের ছাত্র ছিলেন বিচারপতি বিনায়কনাথ। ১১২২ থেকে ১৯৩০ সাল পর্যন্ত উপ্রোক্ত লাছের পাঠ নিয়েছেন অপ্রিসীম নিঠা সহকারে। কাব্যতীর্থ প্রীক্ষার উত্তীর্থ হলেন ১৯২৮ সালে।

আইনজ্ঞ হিসেবে ইনি গোড়া থেকেই সহকারী ছিলেন প্রতিভাগর আইনজ্ঞ অগীর বীরেশ্বর বাগচীর। (স্বনামধন্ত ডাঃ সভীনাথ বাগচী ও অধ্যাপক হবিদাস বাগচী এঁরই প্রাতা) ওরুর প্রতি তিনি বে কতথানি প্রশ্নীল তা সেদিন তাঁর সভে আলোচনার মধ্যেই বোঝা গেল। ১৯৪০ এ বীরেশ্বর বাগচী মহাশরের স্বর্গলাভ। এর পর স্থাবছর এঁকে দেখা গোল প্রাক্তন প্রধান বিচারপতি প্রীর্থা ফণিভ্যণ চক্রবর্তীর সহকারী হিসেবে। কুশলভা, নিস্থতা ও তীক্ষতাকে মূলধন করে বিনারকনাথের সাধনার ধারা এগিরে চলতে ধাকে সিভির অভিমুখে। আপন প্রতিভার অবর্ণনীর ঔক্ষলো গৌরবের স্থাট্ট আসনে অধিষ্ঠিত হলেন বিনারকনাথ, চতুর্দিক ংগোদিত হ'ল কীতিমান বিনায়কনাথের আইনজ্ঞ-থাতির মধ্ব
দারতে। অবলেবে ১১৫৭ সালের লেব মাসটিতে উকীল
বনায়কনাথের নাম ঘোষিত হ'ল বিচারপতিরপে। বিনায়কনাথের
ক্রেই শ্রীবিমলকুমার ভটাচার্য ও শ্রীউমাচরণ লাহা মহালর্বরও
বিচারপতিপদে নিযুক্ত হলেন, এঁরা তিনজন বিচারপতিপদে নিযুক্ত
হবার অল্ল করেক দিনের মধ্যেই আরও হ'জনের নাম বিচারপতিরপে
ক্রেবিত হ'ল, তাঁরা হলেন শ্রীশহরপ্রপাদ মিত্র ও শ্রীঅজিতনাথ
বায় মহাল্যভার।

১৯০৯ থেকে ১৯৫৭ সাল পর্বস্ত বিশ্ববিভালেরের স্বাত্তকান্তর (বাণিজ্য) লাধার অধাণকের আসন অলম্বন্ধ করেছেন বিনারকনাথ। ১৯৫৫ থেকে ১৯৫৭ পর্বস্ত ইনি ছিলেন কলকাতার ক্রমার করাথ। ১৯৫৫ থেকে ১৯৫৭ পর্বস্ত ইনি ছিলেন কলকাতার ক্রমার সরকারের প্রধান কৌন্তান সমিতির ইনি অক্তম সজ্যের পদ অপক্ষত করে আছেন। ১৯৫৯ সালেই অনিয়াটিক লোনাইটির বোরায়কের আদনে ইনি অধিন্তিত হরেছেন। ছাত্রজীবনে ইনি অক্তন আগতার সেক্রেটারী এবং কার্যনির্বাহক সমিতির অক্তম সদক্ষ ছিলেন। কর্মনীবনে বার ন্যানোসিয়েলানের সেক্রেটারীপদেও এঁকে দেখা গেছে।

দেদিনকার আলোচনার কাঁকে বিনারকনাথের কাছে তাঁর নিজের বিচারকঞ্জীবনে লব্ধ অভিজ্ঞতা বিবরে কিছু জানতে চেয়েছিলুম। তিনি জানালেন যে, আজকাল জজদের প্রতি তাঁদের দৈনন্দিন কাক্ষের সময় বাড়াবার চাপ পড়ছে এবং স্বভাবত:ই তাঁদের ছটীর পরিমাণও কমিয়ে দেওয়া হচ্ছে—অভিজ্ঞ বিচারক বিনায়কনাথের **অভিন্যতাক্ষাত অভিমতে এই নিয়ম থেকে হটি কৃফল দেখা দিতে** পাবে, প্রথমত: জনসাধারণ ভাবতে পারেন বে এতাবংকাল ভাতলে ^{বিচারকর।} আপন আপন কর্মে শৈধিল্য দেখিয়ে এলেছেন বভক্ষণ কাজ করার কথা ততক্ষণ তাহলে তাঁরা কাল করতেন না, এটি একজন বিচারকের কাছে সম্মানের দিক থেকে শত্যন্ত হানিকর। খিতীরত:, একটি লোকের ভার বভধানি সামর্থ ভার চেয়ে বেশী কাজ বদি তাকে দিয়ে করানো বায়—তাহলে সেই বাড়তি কাজের नश्नाहेक चलावल:हे निरवण हरव। विनायकनांच वरनन, रम्बून সাধারণত: তাইকোর্টে আপীলের মোকদ্দমা আসে তু'টি স্তর **শভিএন করে (মুন্সেফ কো**ট ও ডিষ্ট্রির কোট) **অর্থাৎ হাইকো**টে অধ্যায়টি হচ্ছে সেই মামলার ভূতীর স্তর বুবে দেখুন পর পর ছটি কোটে বে মামলার চুড়াস্ত নিম্পত্তি হবে আছে সেই মামলার নিথ্ত বিচার করতে গেলে কি পরিমাণ প্রস্তুতি ও অগায়ন দরকার-হাইকোর্টের আগোকার লখা ছুটিগুলিই ছিল ঐ অধ্যরনের প্রকৃষ্ট অবসর। আইনজগতের সঙ্গে বিনারকনাথের প্রত্যক্ষ বোগাবোগ আজ দীর্ঘ পঁচিশ বছবব্যাপী। বিচারশালার পারিপায়িক আবেষ্টনীর সম্পার্ক তাঁর অভিমত জানতে চাওয়ায় তার কাছ থেকে জানা গেল যে, অসংখ্য আইনজীবীর মধ্যে কেউ কেউ কেউ গভায়ুগতিকভাবে কাজ করে বাচ্ছেন ভাছে স্পদন নেই, নত্নত্ব নেই, বৈচিত্র্য নেই। কেউ কেউ স্থুল বসেই মজে পাছেন ষ্ণাবার কেউ কেউ সন্ত্যিকারের সাধনার মাস্থ্যমগ্ন । জিগ্যেস করলুম— শাইনজগত সম্বন্ধে বাইরে থেকে তো নানারকম গলদের কথা শোনা বার, এর সভাতা কভথানি—বিনায়কনাথ বললেন, গলদ ভো সব

জগতেই আছে, পুন্তবাং এ জগতে বে নেই এ কথা জোৱ কৰে वना बार ना ; करव अब कावन सारान म द्यंशन कावन सर्वज्ञहरे. অনেক ক্ষেত্রে দেখা যার সাধারণ মধাবিত চেলেরা উকীল হয়ে আবে, মক্কেৰে পক্ষে কাল কৰে বাব, অনেক কিছুৰ ভাৰেই ভাৰ উপর ক্সন্ত হয়—বেচারারা ভূল, করে বঙ্গে, ভানের পরিকল্পনা বার্থ হয় হিসেবে হয় ঠিকে তুল ফলে এমনি করেই বাইবের জগতে আইনজগত সভ্যে এক প্রতিকৃত মতের সৃষ্টি হয়। আৰও একটি প্ৰশ্ন কৰেছিল্ম জাঁকে আভকেব দিনে স্বকাৰ পক (थरक म्हान्य काइराम केंद्रकिकाम व क्राइम्री हलाइ काशमांव महत्व ভা কভধানি তাৎপৰ্গুৰ্বা কতন্ত্ৰ বা আদে সাৰ্থক কি নৱ ? বিচাৰপতিত কাম থেকে উল্লৱ আমে—বিচাৰ বিভাগের ফ্রটি-বিচাতি चछाव-चढिरमां पृतीकदानंद चा प्रकार म कशिमन करराह्म, धीता সার্থক হর ভো এখনও হয়ে উঠতে পারেননি—ভবে চেষ্টা করে हालाइन, के कशिमन स्थान बारांदर क्रक्तियांक दिल्माहिंहे क्षेत्रामिक হয়েছে, রিপোটটি অনুধাবন করলে এইটকু বেল বোঝা যায় বে, অভাব-অভিযোগগুলির প্রকৃত বরুপ অনুদ্ধাটিত নহ: তা ছাতা এই মহৎ কাৰ্যে এখনও প্ৰস্কু ভো ভাঁদের কোন বকম ওঁনাসীতের পরিচয় পাওয়া যাহনি ?

দেশীর পণ্ডিত সমাজের অদের প্রদ্ধান্তাক্তন বাঙালীর নমস্ত বাণীসেরক, পুণালোক বিভাসাগর মহালবের প্রথম্য ওক্তদের পূজনীয় ভারানাথ তর্কবাচন্দাতি। তাঁরই প্রপোত্র ক্যাঁর পঞ্চানন ভটাচার্যের ক্যা প্রীব্কা ইন্দিরা দেবীর সঙ্গে পরিণর স্থাত্ত আবন্ধ হলেন বিনায়কনাথ। সে আজ ভেত্রিশ বছর আগের কথা। বিংশ শতাকী তথ্ন পঁচিশটি বছর অভিক্রম করে ছাকিশে পা দিয়েছে।

' ডাঃ শ্রীনীহারকুমার মৃস্গী

[প্রধাত চকু-চিকিৎসক ও বিশিষ্ট সমাঞ্চকর্মী]

প্রেশার সঙ্গে সমাজসেবা চিকিৎসককে এনে দিরেছে শ্রেষ্ট আসন—তাকে অসুধ্র রাধার জন্ম চাই স্থগভীর জ্ঞান, শিষ্টাচার, মানবভাবোধ আর আন্তি আতুরের সেবা—নিভের ভুগজ্জিজ চিকিৎসাগারে কথা ক'টি বললেন ভারতের অন্তথম বিশিষ্ট চাঙ্গু-চিকিৎসক ডা: নীহারকুমার মুজী।

১১০৩ সালের ২৮শে ভাষ্যারী নীহাবকুমার টাসাইলে জন্মগ্রহণ করেন। পৈতৃত নিবাস ছিল কালিহাতি গ্রামে—বাবা ননীরদকুমার মুলীর কর্মকেত্র রাজশাহীতে তাঁর বাল্য ও কৈশোর কেটেছে। দাদাম্হাশর ছিলেন বিল্বাসিনী উচ্চ বিভালরের প্রধান শিক্ষক ওগোবিশ্বচন্দ্র নিরোগী। ১৯২০ সালে নীহারকুমার রাজশাহী কলেজিরেট তুল থেকে প্রবেশিকা ও ১৯২২ সালে রাজশাহী কলেজ থেকে আই, এস-দি পাশ করে কলকাতার কারমাইকেল (বর্তমানে ভার, জি, কর) কলেজে ভর্ত্তি হন। ১৯২৮ সালে এম-বি পরীক্ষার উত্তীর্গ হরে তিনি এক বছর হাউস সাজ্যেন ও এক বছর রেজিপ্রার হিসাবে কাঞ্চ করে ১৯৩১ সালে ইংল্যাণ্ড গমন করেন। মুবফিন্ড চকু হাসপাতালে ত্ব' বছর দশ মাস অবস্থান করে তিনি D. O. M. S ভিগ্রী লাভ করেন। ১৯৩৫ সালে কারমাইকেল কলেজে (ভার, জি, কর) ভূনিয়ার



ডা: নীহারকুমার মুক্রী

চকুটিকিংসক হিসেবে যোগদান করে পরে উক্ত শিক্ষা প্রতিষ্ঠানের Prof. of Opthalmology ও বিভাগীর প্রধান হন। এ ছাড়া চিত্তবঞ্জন সেবাসদন, ইসলামিরা ও ডাঃ এম, এন, চ্যাটার্চ্চি চকু-চিকিৎসাসয়ে তিনি যুক্ত ছিলেন বা আছেন।

ছাত্রজীবনে তিনি স্থবিধাত প্রধান শিক্ষক ৺চিছাবৰণ
চক্রবর্তী ও গৃহশিক্ষক শ্রীমাধনসাস সাহার আদর্শে অন্ধ্রপ্রাণিত হন
ভার বাড়াতে মা হিরগ্রেরা দেবীর অসীম ধৈষ্য, বাবার স্থকটোর
নীতিবাধ ও সততা এবং জ্যাঠামশার ৺অভরকুমার হুলীর ওদার্ঘ্য
ভার মানসিক গঠনে সাহায্য করে। বিভালতে তিনি নানাব্যাপারে
নেতৃত্ব প্রহণ করতেন—তাই ক্রমশ: তিনি বিশিপ্ত হাজনৈতিক নেতা
ও কলেজের তৎকালীন ছাত্র ৺সত্যপ্রির বন্দ্যোপাব্যায়ের সংস্পর্শে
এসে সমাজসেবক-সত্য গঠন করেন। তাঁর পরিবারে কেউই
চিকিৎসক ছিলেন না, কিছ এ বিব্যরে রাজ্ঞ্ঞাহীর সার্জ্ঞেন ৺ডাঃ
উপেক্স রারচৌধুরী ও প্রধ্যাত চকু চিকিৎসক ৺ডাঃ স্থলীসকুমার
মুধোপাধ্যারের প্রভাব ভার উপর ছারাপাত করে।

১৯৩৫ সালে আসামের চিকিৎসক ওঁসুরেশ বারের বস্তা ও কলিকাতার অন্ততম বিশিষ্ট শিশু-চিকিৎসক ডা: সুনীল বারের ডগিনী শ্রীমতী অরুণা দেবীকে ডা: মুলী বিবাহ করেন। নীহারকুমারের অনুক্ষ হলেন শ্রমিকনেতা শ্রীসুনীল মুলী।

১৯৩৩ সাল থেকে ১১৪২ সাস পর্যান্ত অক্লান্ত পরিপ্রমের পর তাঃ মুলী নিজের পেলার প্রতিষ্ঠিত হতে সক্ষম হন। চকুর গঠন হরেছে কুলু লিরা-উপলিরার বার'—আর চকু মামুষকে সালাব্য করে জগবানের কৃষ্টি গভীংভাবে উপলব্ধি করতে ও কুলু কর্ম সম্পালমে। তাই নীভাবকুমার আরুই চহেছেন চকু সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞানসাত্তে—আর দৃষ্টিভাবাদের পুন: দৃষ্টিলাতে সহাযতা করতে। বিলাতে তিনি প্রশাস্ত চকু-চিকিংসক অধ্যাপক ফ্রোর মুব, আর ভিত্তিক গ্রন্থার, তার জন পারসনস্ প্রভৃতির প্রিয় ছাত্র ছিলেন।

বিজ্ঞানকে জনপ্রির করা ও সচপাঠীদের সঙ্গে একজিত চংবার
ভক্ত ডাঃ মুঙ্গী, প্রীব্যরেশ হজুমদার (দিল্লী বিশ্ববিজ্ঞালয়), ডাঃ
উমাপ্রসন্ত বস্থু (বেলল ইমিউনিটি), প্রীন্নদীয়া অধিকারী (বেলল
কেমিকাল). প্রী কে. শান, সেন, প্রী বি, কে, বস্থু প্রভূতির
সচারহার Science Club গঠন করেন ১৯৪০ সালে। হর্ত্তমানে
প্রহিষ্ঠানিটি পেরছে বাজ্ঞাসরকান, জাতীয় বিজ্ঞান পরিষদ গুড়াতর
আর্থিক সাহার্য আরু জনসাধারশের সচার্ত্তিত। এর মুখপত্রের
বিভার হুগালী, "কলিকাভার হায়।" ইত্যাদি বিশেষ সংখ্যাগুলি
সরকারী ও বেস্বকারী মহলে জনপ্রিয়ন্তা লাভ করেছে।

কলিকাভার আগত ছাত্রদেব চিকিংসার ক্সবিধা দ্বীকংশে সেবার্ভী ডা: নিলারকুমার মুলা ক্ষেত্রজন ছাত্রসহ নিজের বাড়ীতে ১৯৫২ সালে Students Health Home স্পষ্ট করেন। করেক বছরের মধ্যে এটি জনসাধারণের ও সরকারী সাংগার কাভে সক্ষম হয়েছে। কলিকাভা করপোরেশন নাম্মার পাজনায় জ্মির, আজ্জোতিক ছাত্রপ্রিষ্ক হল্পাকির ও পিকিংস্থ এশিয়ান ষ্টুডেন্ট্র আলটোরিয়াম প্রতি বছর প্রশাসি ভারতীয় ছাত্রের চিকিৎসার ব্যবস্থা করেছেন। ১৯৫৪ সালে ডা: মুলী চীনদেশের বছ স্থান প্রিজ্মণ করেন।

তাঁৰ সহপাঠীদের মধ্যে ডাঃ নির্মান্ত স্ বার, ডাঃ মোহিনীকাস্ত মন্ত্রুমনার, ডাঃ অমির সেন, উড়িয়ার বিশিষ্ট চিকিৎসক ডাঃ মনসাচরণ মাসাকার প্রভৃতির নাম উল্লেখবোগ্য।

১১২৮ সাল থেকে ডাঃ মুন্সী ইণ্ডিয়ান মেডিক্যাল এসোসিয়েশনের সম্বত্য এবং ১১৫৩—৫৪ সালে প্রতিষ্ঠানটির বন্ধীয় শাধার সভাপতি ছিলেন। বর্ত্তমানে তিনি অটোমোবাইল এসোঃ অব বেঙ্গলের সভাপতির আসনে সমাসীন।

বাহারা ছ:খ স্বীকার করিতে পরামুখ তাহারা কোনদিনও জাতির তুর্গতি দ্ব করিতে সমর্থ হইবে না। বাঁহারা ভগীবথের মন্ত তেজামর তুর্ধর্য-প্রবাহ চালিত করিবাছেন, তাঁহারা কেইই সহজে ও অলায়াসে সেই ছ:সাধ্য ত্রত উদ্বাপন করিতে পারেন নাই। পদে পদে পরাজিত ও বিক্লস করীবাও তাঁহারা অবিচলিত চিত্তে অগ্রসর ইইরাছেন, সহজ্র বিশ্ব-বিপদের মধ্যেও শির উন্ধৃত করির। রহিরাছেন। — আচার্ব জ্পণীশচক্ষ বস্থ

শ্বতির টুকরো

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর]

সাধনা বস্থ

বিবিইয়ের ছায়াছবির বাজাবে প্রবোজক হিসেবে চিমনলাল বি, দেশাইয়ের নাম যথোচিত বিশিষ্টতার দাবী রাখে, এক কথায় চিমনলাল বোমাইয়ের ভখনকার দিনে পংলা নমবের প্রবোজকদেরই একজন। তাঁর পুত্র স্থবেন্দ্র বি, দেশাই। আমরা কলকাতায় ফিবে আসবার পর মধুর কাছে স্থরেন্দ্র রীতিমত আসা-যাওয়া শুকু করলেন। যাতায়াত খনিষ্ঠ থেকে ক্রমেই খনিষ্ঠতর হয়ে উঠতে লাগল। এই প্রসঙ্গে, আজ দীর্ঘ বিশ বছর বাদে একটি মন্ত্রার কথা মনে পড়ছে, এই তরুণ ভদ্রলোকটিকে বুলবুল ক্রথাং তাঁর ডাক্নামে ভাকা হোত। তিনি আমাদের বাড়ী থেকে চলে যাবার পরেই আমার বেশ মনে পড়ে মধুকে জিগেস করভুম বে বুদবুল যার নাম সঙ্গীতে ভার তো একছত্র আধিপত্য থাকা উচিত তা এই বৃষ্ণবৃদ গান গাইতে পারে তো ? এই রকম মজা করতুম প্রারই। কোখার চলে গেল সেই সব দিনগুলো, কোখার মিলিরে গেল সেই সব পরিবেশ, কোথায় হারিয়ে গেল সেই অস্থ্য চেনামুধ---কাল এগিয়ে চলছে যথানিয়মে তার সঙ্গে ভালে তাল রেখে চলতে মান্ত্ৰ বাধ্য--ৰে দেই বাধ্যতাকে মানতে চাব্ন না বা পাবে না--তাবেই ঠহতে হয় সব চেয়ে বেশী। হারা মিলিয়ে গেল, হারা মিশিয়ে গেল, যারা হাবিয়ে গেল তারা ভাসন পেল স্মৃতির স্বৰ্ণসিংহাদনে। সুলবের দিক দিয়ে তারা অবল্পু, পুক্ষাদ্ব দিক দিয়ে তারা মৃত্যুঙ্গরী।

মধুর কাছে দেশাইয়ের লাস্-যাওয়ার পিছনে আত্মগোপন করেছিল একটি প্রস্তাব, বধাসময়েই প্রস্তাবটির হ'ল আত্মপ্রকাশ। ["]অভিনয়" ছবিটি দেশাইয়ের মনে ছারাপাত করেছিল গভীরভাবে, নেই খেকেই মধুব কাছে ভাব আধা-বাওয়ার স্ত্রপাত। মধুব কাছেই শুনলুম যে এখন তার ইচ্ছে বে মধু বোমাই গিয়ে তাদের সাগর মুভিটোনের পক্ষে একটি চিত্রনির্মাণে হাত দের, ছবিটি বাঙলা ও হিন্দী উভয় ভাষাতেই ভোলা হবে। সাগর মৃভিটোন থেকে ছবি তুসলে আমাদের বোখাইতে বাসা বাঁগতে হবে, কলকাতার বাস তুসতে হবে। কলকাতা ভ্যাগ মানেই চৌরকী প্লেসের বাড়ী ছাড়া। এই বাড়ীতে প্রার ছ'টি वहत चामात्मत्र (करिंद्ह, चामात्मत्र देश्व कीव्रत्न धत्र क्षांच्य শনতিক্রম্য, এ বাড়ীর গুরুত্ব আমাদের কাছে বে কতথানি ভা বর্ণনার অতাত, তা উপ্লব্ধির বিষয়। আমাদের জীবনের কত হাসি, কত গান, কত কথা, কত কাহিনী, কত টুকরো টুকরো ঘটনার माविवद चुळि धरे वांड़ीव घःव घःत, এशान-त्मशान, चांनाक-কানাচে, প্রতিটি ইট-পাধরে অঙ্গাঙ্গীভাবে একীভূত হয়ে গেছে। এ বাড়ীর সঙ্গে স্পার্কভেষ আমাদের পক্ষে বে কভথানি কটকর ভা আমরা ছাড়া বিনি জানেন ভিনি বয়ং অন্তর্গামী ছাড়া কেউ নন। এই বাড়ীতে পারিপাধিক পরিবেশ ভাষার একান্ত পরিচিত, কতকালের আগন, চিরকালের চেনা। এ বাড়ী ছাড়তে হবে—**এই** চিন্তাই বে আমার মনের সমস্ত উদ্দীপনাকে দমকা হাওৱার মত क्रकारत अःकवारत निविद्य निम । आमारनय रा मन मनाजिनत · ও চিআভিনর সাণাবণের অনাবিল স্বেহবনে অভিসিক্তি **হরেছে**—



সবই এই বাড়ী থেকেই, আর একটি চিন্তারও বীরে ধীরে আবির্ভাব ঘটল আমাদের হর্ববিষদগ্রস্ত মনে—কলকাতা ছাড়া মানে আমাদের মঞ্চাভিনর প্রচেষ্টারও ইভি মকাভিনরের প্রতি আমাদের বে অপবিসীম অমুবাগ—ভার সেইখানেই শেষ বল্পমঞ্চের দ্বো করার সৌভাগ্য থেকে আমাদের হতে হবে বঞ্চিত, প্রকাপ্ত বল্পমঞ্চে অভিনরের মাধ্যমে সুবোদ্ধা জনমণ্ডলীকে প্রদ্ধানমন্ত্রার ভানাবার বে স্থবোগ এতকাল ধবে পেরে এসেছি—এবার ভো ভাও ছাবাডে হবে ।

জাবার এদিকে উভর ভাষার ছবি করার বাসনাও জন্তরে প্রবৃষ্ণ, বিশেষ করে হিন্দী ছবির নির্মাণে জসাধারণ আগ্রহ। উভর ভাষার এবং বিশেষ করে হিন্দীতে ছায়াছবি তোলার একটা জনম্য বাসনা মনের মধ্যে লুকিয়েছিল, দেশাইরের সঙ্গে



স্থার ধীরাজ ভটাচার্য ও প্রীমতী সাধনা বস্থ "কুমকুম"এর একটি বৃত্তে

বোগাবোগের এবং তার প্রভাবের ফলে সেই বাসমাটাই यम मार्चा-अगाथाइ अक्टा विवाह विमान क्रम मिन। वाचाहे ষাওয়াই আমবা ঠিক করলুম। মধু একা না, দে চাইল সসপ্রানারে বেতে, ছবি সে হিন্দীতে করবে, সাগর মুভিটোনের পক্ষেই, তবে সেই ছবিতে স্পর্ণ থাকবে ভার নির্বাচিত কুশলীদের কুশলী হাতের, সেই ছবিভে মিশিরে থাকবে তার নির্বাচিত কুশলীদের কর্মকৃতিখের স্বাক্ষর, ছবিব প্রেখম দুগটি থেকে শেষ দৃগটি পর্যন্ত গৃহীত হবে ভার নির্বাচিত কশনীদের স্থিলিত প্রচেষ্টার। সে চাইল ভার স্পূর্ণ সম্প্রদার্থকে সুর-সংবোজক এবং সহকারীদের। স্বামার মনে স্বাছে, এই প্রসঙ্গে चानां भारताहमात त्र कि नमार्ताह, मधुव नत्न थ विवरत चनत পক্ষের তথন কথাবার্তার সে বে কি ব্যস্ততা তা ভারসেই বিশ্বর म्रात्य मार्था समा नाम स्वाज्ञ । हिरीलक होत्र मानन, प्रीहरून 6িঠির শুল ছান পূর্ণ করল তুলনামূলক স্থবিধা ও সময় সংক্ষেপণের প্রতিক্ষতি নিয়ে। আমাদের মধ্যে এক কথায় তথন বাস্তভার সমাবোহ, জীবনীশক্তি বেন তথ্য বেগপ্রাচুর্বের জরগান আর ক্ষোক্তম খেন ফ্রন্তার নিদর্শন।

জাংশ্বে মধুব প্রত্যেকটি প্রস্তাব মেনে নিলেন প্রথোজকবর্গ।
সে বা চেমেছিল, তাই সরববাহ করতে তাঁবা হলেন প্রতিশ্রুত,
ভার প্রতিটি সস্ত্ তাঁবা মেনে নিলেন সম্পূর্ণরূপ। নির্মিতব্য ছবি
হিলেবে নির্বাচিত করা হল— ক্মকুম দি ভালাব বাব স্থাই
ভয়েছে শ্রীমন্মধ বাবের লেখনীর মাধ্যমে।

আগেই বলেছি, ছবিটি উভর ভাষাতেই (বাঙলা ও হিন্দী) ভোলার কথা হয়েছিল অর্থাং গল একটি হলেও দেখা বাচ্ছে ছবি হছে ছটি। একটি কাহিনীৰ ভাৰতীয় হটি পুথক ভাৰাৰ চিত্রারণ : এই ছটি ছবিতেই নায়কের ভূমিকায় নির্বাচিত হয়েছিলেন সম্প্রতি প্রলোকগত শক্তিধর অভিনেতা ধীবাজ ভটাচার্য, সেকালের অপবিভার্য চিত্রনায়ক। স্মৃতির টকবোতে এই প্রদক্ষ (বিশেষ করে ধীরাজের প্রাসঙ্গ) বধন লিখে চলেছি তথন মনের মধ্যে বিগত কালের অজ্ঞ শুভির মন্থনে একটা অনতাশাধানে আনন্দ জন্মেছে ঠিকট, সেই সঙ্গেই বাদের খিবে সেই সব কাহিনীর স্টাই, বাদের স্পরে দেই সব কাহিনী দানা বেঁধে উঠেছে, বাদের কল্যাণে সেই কাহিনীওলি অধিষ্ঠিত হতে পেরেছে অমরত্বের আসনে তাদের बात्मक्रे बाक गार्थिय (मना-भारता, हित्मर-निक्म नय इकिस এক অজানা মহাশুরের উদ্দেশে বাত্রা করস, কায়িক উপস্থিতি তালের কোননিন ঘটবে না এই পার্বিব পৃষিবীর বুকে, ধরণীর অনিত্য এই (बनाच्रवंत शनिष्ठ, कान्नाय, चानत्म, तमनात, शर्व, विवास অংশগ্রহণ করতে তাদের আর দেখা বাবে না-এই বিরাট ছ:খ সম্প্র আনদকে ছাপিয়ে উঠে মনকে ভীবভাবে ভারাক্রান্ত করে ভোলে। এই তাদেরই মধ্যে নিঃসন্দেহে ধীরাক অক্তম। স্মৃতির টকবোর গত বে কিন্তিতে ধীরাজের নামোলেখ করা হরেছে জন্তমন্ত্ৰ জীবিত। স্বপ্লেও ভাবি নি বে এত আক্সিক ঘটবে ভার জীবননাট্যের পরিসমান্তি। তার আত্মার শাস্তি হোক।

উভর ভাষাতে গৃহীত কুমকুম মুক্তিলাভ করল ভারতের বিভিন্ন শ্রেকাপুতে।

বিংশ শতাকী তথন উনচলিশটি বছর অতিক্রম করে চলিশের উপর দিয়ে এগিয়ে চলেছে।

অমুবাদক—কল্যাণাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়।

ষ্টারে ডাকবাংলো

প্রথিতখনা সাহিত্যশিলী শ্রীমনোক বন্ধর 'বৃষ্টি বৃষ্টি' শীর্থক উপজ্ঞানটি বহুজন-সমাদৃত। 'ভাকবাংলো' এই উপজ্ঞাসটিরই নাট্যরুপ। বর্তমানে ষ্টারে সংগীববে অভিনীয়মান।

এক ডাক্তাবের ইতিহাসের গবেষণারত পুত্র এর নারক ও এক আত্মভোলা এতিহাসিক গবেষণার নিমগ্ন সমাহিত স্থীর কলা এর নায়িক।। নারক ও নায়িকার পিতার আদিনিবাস এচই গ্রামে। বৃষ্টির বেগ বৃদ্ধিতে বাধা হয়ে নামিকা ইবা আতার নের নারক অফুণাক্ষের বাজীতে। এই ভাবেই উভয়ের প্রথম দিনের প্রথম পরিচর। অভণাক্ষের বাবা অনুদাক্ষ নির্বাচনপ্রার্থী। কিছ মনোন্যুন্পত্ৰ পাৰ্যায় তাঁত্ৰ প্ৰবল বাধা হল তিনি কাণীখবের পৌত্র বে কাৰীশ্র ইংবেকের চর বলে খ্যাত এবং প্রামের সকলের ধারণা যে নিদে বি, সভ্যপরারণ ও দৃত্তেতা রামনিধির ফাঁসির মূল ভিনিই-এই রামনিধিই নায়িকা ইরার বাবা বিষেধ্যের পিতামছ। বিশেষরের লেখা 'ভারত ও ইংরেজ' গ্রন্থে তিনি অবশা কাশীখরের কলকমোচন করেছেন। কাশীখবকে তিনি রামনিধির খনিষ্ঠ বন্ধু বলেই উল্লেখ করেছেন। এই গ্রন্থ পাঠে বিষেধ্যের প্রতি আকুষ্ট হল অগুলাক তিনি স্বগ্রামে নির্বাচন কেল্ডে বিখেল চকে নিয়ে বান দেখানে গবেষণার উপকরণ স্বরূপ দীর্ঘকাল ধরে সংথক্ষিত বছ কাগলপত্র বিখেধবের হাতে সমর্পণ করেন সেইগুলি দেখতে দেণতে বিখেখৰ আবিকাৰ কৰেন যে কাশীশ্ব সম্বন্ধে তাঁর ধারণা সুস, ভিনি ইংরেজকে সাহাধ্য না করলে ইংরেজের সাধা ছিল না জনব্বির রামনিধির কেশ্লপর্ণ করে! সপ্ত অযুক্তাক দেদিন বিধেধবের বাড়ী এদেছেন ইরার সঙ্গে পুত্রের বিবাছের প্রস্তাব নিয়ে কিছ সেইদিনই বিশ্বেধর জানালেন সে সভ্যের প্রকাশ ভিনি করবেনই, কাশীশবের প্রকৃত চিত্র উদ্ঘাটন না করলে তাঁর ঐতিহাসিক সাধনার প্রতি চরম বিখাস্বাতকতা করা হবে। স্বভাবত:ই মিত্রকার অবসান। বাসগৃহ অনুজাক্ষের হস্তগভ হওরায় তাঁর ধারা অপমানিত হতে পারেন এই আল্সার ন্ত্ৰী-কলা নিয়ে পৈত্ৰিক ভিটেম ফিন্তে গেলেন বিখেখন। এর প্র অকুণাক্ষের মায়ের দ্বারা প্রেরিড তাঁর পিতদের (অরুণাক্ষের মাভামহ) গোবিন্দ ঘোষের প্রচেষ্টার অক্তণের সাক্ষ ইরার বিবাহ। পুথিমধ্যে আবার এক বড়বৃষ্টির রাতে ঘটনাচক্রে সন্ত্রীক অণুক্ষাকের সকে নবদশভির সাক্ষাং এক ডাকবাংলোয় এবং পুত্রবধুদর্শনে অংকাক্ষের মন থেকে সকল বিরোধের স্তানাল।

এদিকে সারা নাটক জুড়ে জারও হটি বিশেষ ধরণের চরিত্রের সন্ধান মেলে। এই হুই পরিবারের সঙ্গে উাদের সমান বোগাযোগ (জবভা বিশেষরের সঙ্গে একটু বেশী নিবিড়) এবং এই প্রসঙ্গে এদের উল্লেখন বিশেষ ভাবে করণীর। এবা হ'লন হচ্ছেন যুগচক্র পত্রিকার সম্পাদক ও তার সহকারী। এই সম্পাদকই বিশেষরের প্রস্তের হোকাশক।

নাট্ডটি বুসিক্ষহৰে বথোচিত সাভা জাগাতে সক্ষম চবে ▲ হিখাস আমবা বাবি, নাটকটির পরিণতি জানার জল্ঞে দর্শকচিত্ত ব্যাকল হরে ওঠে। মনোজ বস্থুর মনোজ্ঞ কাহিনী ও কুতী নাট্যকার এবং স্থাতি সাহিত্যিক দেবনাবারণ গুংপ্তর সার্থক নাট্যরূপদান ও পরিচালনা এই ছয়ে মিলে এক অপরূপ রস সমন্ত নাট্যসন্তারের স্কট্ট করেছে। নাটকটি মূলত: তিনটি ধারার ববে চলেছে-একটি বিখেশবকে ও তৎপরিবারকে কেন্দ্র করে, একটি অনুস্থাক ও ভংপরিবারকে কেন্দ্র করে এবং আর একটি কুতাস্তকে কেন্দ্র করে. সক্ষাণীর এই, তিনটি ধারা সমান তালে তাল রেখে চলেছে অসমভার চিফ্ল কোথাও ধরা পড়ে নি। শিল্পকলার, বসক্ষচিতে, প্রবেগ নৈপূণ্যে, চরিত্রস্ট্রতে, ঘটনাসমাবেশে নাটকধানি এক অসাধারণ কতিত্বের স্বাক্ষর বহন করছে। কি বচনার, কি প্রবোজনার, কি প্রিচাসনায়, কি অভিনয়ে এক কথায় সারা নাটকটিতে এক অফুপ্য ছন্দোযুক্ত আন্তরিকভাপূর্ণ প্রাণের স্পর্শ পাওয়া বার, কুত্রিমভার, আড্ট্রতার, অসারতার লেশমাত্র নেই। নাটকটির উত্তরোত্তর সাফ্রম আমরা একান্তভাবে কামনা করি।

নারক নারিকা ভূমিকার হটিব রূপ দিরেছেন বথাক্রমে আশীবক্ষাব ও সন্ধ্যা বার। বিশেষর ও অবুজাকের ভূমিকার অবতীর্ণ হয়েছেন বথাক্রমে ছবি বিশাস ও অজিত বন্দ্যোপাধ্যার। সম্পাদক রুতান্ত ও তদাঁর সহকারী পঞ্চাননের ভূমিকার দেখা গেছে ব্যাক্রমে ভাল্প বন্দ্যোপাধ্যার ও অনুপক্ষারকে। এ বা ছাড়া আরও বে সং শিল্পী ভূমিকালিপিতে সমৃদ্ধ করেছেন তাঁদের মধ্যে প্রেমাকে বহু, কুক্ষন মুখোপাধ্যার, চন্দ্রশেধর দে, তুলসী চক্রবর্তী, জাম লাহা, শৈলেন মুখোপাধ্যার, পঞ্চানন ভট্টাচার্য, শিবেন বন্দ্যোপাধ্যার শীক্ষ গুলু, প্রীতি মজুমদার, নকুল দন্ত, শৈলেন ভটাচার্য, অপ্রাবিত্তর মান্ত্রী, মিতা চটোপাধ্যার প্রভৃতির নাম উল্লেখযোগ্য। নাটকটির প্রসংযোজনা ও নৃত্যপরিকল্পনা করেছেন বধাক্রমে মানবেন্দ্র মুখোপাধ্যার ও মিতা চটোপাধ্যার।

রঙমহলে—এক মুঠো আকাশ

["]এক মুঠো আকাশ" এর বিষয়বস্ত সম্বন্ধে মাসিক বস্থমতীর স্পদ্ধ পাঠক-পাঠিকাকে নতুন করে কিছু বলা অনাবশুক। শ্বরণ থাকতে পারে অল্লকাল এই সর্বাঙ্গস্থশন উপত্যাসটি ধারাবাহিক ভাবে মাসিক বন্মমতীর পাতায় প্রথম প্রকাশ লাভ করে। ধনপ্তর বৈবাগী ছল্মনামের অস্তবালে শক্তিমান নাটাবিদ সাহিত্যিক তরুণ রায় এর রচ্যিতা। আঞ্জেব যুব স্মাজের চারিত্রিক অংগাগতি নৈতিক মানের ক্রমাবনতি, উচ্চুখ্যসতা ও অসংবমের পারে আত্মসমর্পণ প্রার্থ সমাজের একাণিক খন ছংৰাগের এক বাস্তব চিত্ৰ উদ্বাটিত হয়েছে ^{উপ্রাস্}টির মাধ্যমে। এই উপ্রাসের নাট্যরূপ বর্তমানে প্রভূত খ্যাতির সঙ্গে অভিনীত হচ্ছে বঙ্গহলে। আককের দিনের সমাধ্যের ^{রংগ্ন} রংগ্ন হনীভির বিববান্দোর প্রভাব আর তারই ছারাপাত ঘটছে মপরিপক শিশু মনে, বাদের বলিষ্ঠ নেতৃত্বের ছব্তে অপেকা করে খাছে খাগামী দিনের সোনালী স্থাল তারা খাজকের এই ফাল-বাজিছে সৰ্বনাশা রপোৰ কাঠির স্পর্ণে ভিলে ভিলে বিনাশের দিকে এগিরে চলেছে। আর ভঙ্কণ সম্প্রাণারকে এই সর্বনাশের দিকে এগিরে বেতে অনুব্রেরণা বোগাছে, উৎসাহ দিছে, সহারতা করছে মানুবের মুধোসপরা কতকগুলি দানব —নিজেদের স্বার্থসিদ্ধির জন্তে জগতে করতে পারে না—এমন কোন কাজ নেই।

আঞ্জকের দিনের এই ক্ষয়িষ্ণু, ঘূর্ণবা সমাজের বাস্তব চিত্র জঙ্করে অপবিসীম পাবদর্শিতার পবিচয় দিয়েছেন বচরিতা। এর কাছিনী কাগজ-কালি কলমে লেখা বলে সময় বিশেবে মনেই ছয় না, দৰদ. অফুভৃতি, দ্রুবর দিবে দেখা বলে মনে হর। তাঁর নাট্যরপদানও বধাৰধ রসোত্তীর্ণ হয়েছে। নাটকটি আবেগে সমুদ্ধ, গভিব দিক দিরে বেগবান, খত:'ফুর্ত। নাটকটির সব চেরে বড় সম্পদ নড়নখ। আক্রিকে বিশ্বাসে, প্ররোগ কুশলতার সকল দিক দিরেই নাটকথানি বেন এক মালিকহীন নতুনবের দুপ্ত জয়ধানি। নাটকথানির অন্তানহিত আবেদন, আমাদের দুঢ় বিখাদ, অন্তর্দ ইসম্পন্ন বে কোন দর্শকের মনে গভীর ভাবে বেখাপাত করতে সমর্থ চবে। উৎকর্ষে, ঔজ্জ্বলো বৈচিত্র্যে, বৈশিষ্ট্যে, শোভনভার ইভালির সমন্বরে সমগ্র নাটকথানি এক প্রভাববান বলিষ্ঠ ৰসক্ষিত্ৰই নামান্তৰ মাত্ৰ। প্ৰসঙ্গতঃ একটি কথা এখানে বলাৰ আছে প্রস্তের নামকরণ সম্বন্ধে "এক মুঠো আকাশ" নামকরণের তাৎপর্ব লেখকের ঘারাই বিল্লেষিত হয়েছে মূল উপভাসে এবং সেই অধ্যাত্রে তদমুধায়ী বধোপযুক্ত পরিবেশও স্পষ্ট হরেছে কিন্তু নাটকের ধর্ম অনুসারে উপভাসকে অনেক অদল বদল করতে হয়, এই কাতিনীটির বধন নাটারণ দেওরা হ'ল তথন যে অংশে প্রস্তের নামকরণটি বিশ্লেষিত হরেছে সেই অংশটিও বাব দেওরা হরেছে. ফলে উপস্থাসের মধ্যে যে পরিবেশের সাহাব্যে নামকরণের ভাৎপর্র ব্যাখ্যাত ভয়েছে, নাটকে তা হয় নি, সেই অংশটিই নাটকটি খেকে বাদ দেওৱা হয়েছে; ফলে সেই পরিবেশটিও এখানে অভুপত্মিত (বার সাহাব্যে নামকরণের অর্থ স্পষ্ট হরে ওঠে) এবং সবিনরে বলছি আগাগোড়া নাটকের মধ্যে এ নামকরণের কোন অর্থ ই স্পাষ্ট হয়ে ওঠে না। এ বিষয়ে তরুণবাবু দৃষ্টি দিলে আমরা খুৰী হতম। বাঙলার স্থবোদা প্রাণবস্ত বসিকসমাজে এই যুগোপবোগী নাটকটি সমাদরের সঙ্গে গৃহীত হোক এই কামনাই করি। বাঁদের কেন্দ্র করে এই কাহিনীর স্থাষ্ট, বাদের অবঃপতন সারা দেশের পক্ষে ক্ষতিকর, বাদের ক্রমনিমুগামিতা তরুণ রারের শিল্পিমনকে ব্যবিত করে তুলেছে এই নাটকটি দেখে তারা অর্থাৎ পভনোমুখ যুবশক্তি বদি আত্মগচেতন হয়ে অনিবাৰ্য ধাংসের হাত খেকে নিজেদের বক্ষা করতে পারেন তা হলে তার চেয়ে বড আনন্দের বার কিছু থাকতে পারে না।

কেই ও গোরীর অর্থাৎ নামক নামিকার ভূমিকার অবভার্থ হরেছেন ভক্ষণ বার স্বয়্ধ ও তাঁর স্করোগ্যাসহধর্মিণী প্রীমতী বার। বিশিষ্ট চরিত্রগুলিতে দেখা দিয়েছেন রবীন মন্ত্রমার, নবগোপাল লাহিড়ী, সত্য বন্দ্যোপাধ্যায়, বিশ্বন্ধিও চটোপাধ্যায়, লহর বার, হরিধন মুখোপাধ্যায়, অন্তিত চটোপাধ্যায়, শিকলু, সমরকুমার, মিন্টু, কেতকী দত্ত, কবিতা সরকার, শীলা পাল, তক্লা দাস, প্রভৃতি। এঁবা ছাড়াও অক্তাভাংশে ভূমিকাগ্রহণ করেছেন কার্তিক সরকার, গোপাল মন্ত্রমার, স্থনীত মুখোপাধ্যায়, অঞ্চ ভটাচার্থ, বলীন সোম, আশা দেবী ইত্যাদি শিলিকুল। এই প্রাণস্পর্নী নাটকটি দর্শক সমাজে উপহার দেওরার জয়ে। আমরা রঙমহলের অভিজ্ঞ কর্তৃপক্ষ এবং তরুণ বারকে সর্কাল্ড:করণে অভিনশিত করি।

দীপ জেলে যাই

ভ্যাপ, সেবা ও করুণাই বাঙলা দেশের নারী সমাজের চিরম্ভন दैविषष्ठी, अडे जिरिश कर्मत माराजे वांडला क्रांसत नातीत्वत विकास । বিশেষ করে সেবাধর্ম নারীছের প্রধান জঙ্গ। বশস্বী সাহিত্য শিল্পী আভতোৰ মুখোপাধ্যারের লেখনীর মাধ্যমে সাহিত্যের পাতায় এই চিবকালের সভাটিই নতুন করে দেখা দিংহছে। তাঁর বিখ্যাত প্রস্থালির মধ্যে "নাস^{*} মিত্র" অক্সভম। স্থারণ থাকতে পারে, বহুকাল আবো মাসিক বলমভীতেই এই গল্লটি প্রবাদলাভ কবেছিল। বর্তমানে জীঅসিত সেনের স্থপরিচালনায় ঐ গল্পটিট "দীপ কেলে বাই" নাম নিয়ে ছারাচিত্রে রূপায়িত হয়ে শহবের বিভিন্ন প্রেকাগৃতে সমারোকে প্রদর্শিত হচ্চে। আশুতোর মুখোপাধ্যায়কে কেবলমাত্র ক্রশনী সাহিত্যিক বললে ভূল করা হয় এক অভুলনীয় অভিনব আফুভতি সম্পদের তিনি অধিকারী। নারীর একটি রূপ তিনি অনুভ্রমাধারণ দক্ষভার সঙ্গে এখানে ফুটিয়েছেন। নারীফীবনের খাতপ্রতিঘাত, অন্তর্থন্য এবং পরিণতির এক নিখুঁৎ চিত্র এখানে উদ্বাটিত। বে সব জীবনে দীপ নিভে যার সেই নিভে যাওয়া कीश **कारांत्र करन ७८**५ (व कनांश्मशोस्त्र मङ्गलप्यां स्त्रहे মমতামনীদের জীবনের সবকটি দীপ যদি এক এক করে নিভে হায় তথন তাৰের জীবনদীপ আবার আলিয়ে দেবে কে? জীবনের গুড়ভূমির উপর করুণাধারার মত হবে কার আবির্ভাব স্থানের সেই ওকনো মরুভূমির উপর কি এক কোঁটা জলের মতও পড়বে না কারোর সহায়ভুতি, অনুকম্পা বা সান্তনার চিহ্ন গ এই প্রামটিই লেখক এখানে উত্থাপিত করেছেন পাঠক সাধারণের দরবারে।

নারিকা বাধা মিত্র এক মানসিক চিকিৎসালরের এক প্রধান ওপ্রধাকারিকী। মানসিক বোগে আক্রান্ত হয়ে তাপস এল চিকিৎসার ক্ষতে। আপন প্রধারিকীর ঘারা প্রত্যাধ্যাত হওয়ার কলে তার এই অস্বাভাবিক অবস্থার ডাক্ডার বিধান নিজেন যে সাধারণ ওর্ণ পত্তর তো চলবেই তা ছাড়াও ওপ্রধাকারিণীকে অভিনয় করতে হবে প্রেমিকার আর রোগীর স্বস্থতা লাভে সাধারণ ওর্ণ পত্তরের তুলনার সেই অভিনয়ই সহায়তা করবে সব চেরে বেশী। বাধা মিত্রের উপর ভাগবের ভার পড়ল, বাধা সে ভার নিল না, তাপসের আগে

দেবাশীয় এগেছিল, এক অবস্থা, অভিনয় করতে করতে রাধা অনেক পরে ববতে পারল বে অভিনয়ের সীমা ভো ভার কাচে অভিক্রাম্ভ তথন সে চরম সভ্যের মুখোমুখী। কিছ দেবাশীয়কে ভো সে পেল না, দেবাশীৰও দিতে পাবল না ভাব প্রেমের মূল্য, সেইকছেই স্বাৰ স্বভিনৱের মধ্যে বেভে চাইল না রাধা। বার হাতে তাপসের চিকিৎসার ভার প্রভা তিনি তাকে সামলাভে না পারার সেই রাধাকেই নিতে হ'ল তার চিকিৎসার ভার। তাপস সেবে উঠল তারপর ? তারপর বাধার আশক্ষাই সত্যে পরিণত ভ'ল। তাপস্কে ডাক্টার জানালেন বে বারা তাকে আসলে ভালবাদেনি, তাকে সারাবার জন্মে অভিনয় কংছেল মাত্র। তাপস কথাটা বিশ্বাস না করলেও ঘটনাচক্রে করতে বাধ্য হল। কিছ বাধার মনের প্রকৃত ভাষা একমাত্র অন্তর্গামী ছাড়া কেউই বুঝতে পারল না ৷ এদিকে ক্রমান্নরে মানসিক আঘাতের ফল রাধা মিত্র নিজে হয়ে পড়ল মানসিক ব্যাধিগ্রস্তা। সম্পূর্ণ উন্মাদ অবস্থায় ভাপদের পরিভাক্ত কামরায় দে স্থান নিল, ভুশ্রাকারিণী হিসেবে নয় ভক্রাবাপ্রার্থিনী হিসেবে। গল্পাংশটি বথোচিত দক্ষতার সংক্র চিত্রায়িত হয়েছে। পরিচালক সেন বথাষ্থ মুজীয়ানার পরিচয় দিয়েছেন। আলোকচিত্র গ্রহণও উচ্চাঙ্গের। স্থর বোজনার হেমন্ত মুথোপাধারিও কুতিত্বের পরিচয় দিয়েছেন। কলা-কৌশলে, অভিনয় সম্পর্কে এবং কাহিনীর গভীরতার দিক দিয়ে বিচার করলে দেখা যার যে দীপ ছেলে ৰাই একথানি যগোপৰোগী, প্ৰাণম্পৰী ও সাৰ্থকনামা ছায়াছবি। কাহিনীর সঙ্গে জড়িত চঠিত্রগুলির বংগাচিত বিকাশে ঘটনাটির শুবিভাগে, রূপালী শর্দার বুকে গল্পের মূল বক্তব্যের সমাক প্রকার ভবিটি সর্বতোভাবে সাফল্যের স্বাক্ষর বহন করেছে।

এই ছবিব মা প্রচেরে বড় সম্পদ তা হচ্ছে স্কৃচিত্র। সেনের জনম্বল্ল আভিনয়, জীমন্টা সেন বাধার চহিত্রটিকে অসাধারণ নৈপুণ্যের সঙ্গে কুটিয়ে তুলেছেন, জীমন্টা সেচিত্রার অভিনয় সমস্ত ছবিটিকে নানা দিক দিয়ে ভবিয়ে তুলেছে। নায়কের ভূমিকায় অভিনয় করেছেন বসস্ত চৌধুরী অক্যান্যাংশে অবতার্ণ হয়েছেন পাহাড়ী সাক্যাল, দিসীপ চৌধুরী, অনিল চটোপাধ্যায়, তুলসী চক্রবর্ত্তী, আম লাহা, অজিত চটোপাধ্যায় প্রতোব রায়, চজ্রা দেবী, নমিতা সিংহ, কাজমী গুহু, অপর্ণা দেবী প্রভৃতি। এ প্রসঙ্গে স্বর্থার একটি কথা বলতে হচ্ছে বে ছবিটিয় গতির দিকে পরিচালক দৃষ্টি দিয়েছেন বলে মনে হয় না। ছবিটিয় গতির দিকে পরিচালক দৃষ্টি দিয়েছেন বলে মনে হয় না। ছবিটিয় গতির স্বতঃক্র্ত্র নয়, বলতে বাধ্য হচ্ছি, অত্যন্ত শিধিল হয়ে গেছে।

তোমবা দেখিতেছি স্বাই স্মান। বেমন স্ক্রীতে, তেমনই
অক্টান্ত সকল বিবরে। তোমবা বৃঝিবার চেষ্টামাত্র কর না। তোমরা
বল আমাদের দেশের ধর্ম ধর্মই নর, আমাদের কাব্য কাব্যই নর,
দর্শনশান্ত্র দর্শনশান্তই নর। আমবা ইরোবোপের সকল জিনিষ্ট বৃঝিবার এবং আদের ক্রিবার চেষ্টা করি। কিছ তাই বলিয়া একথা
মনে করিও না বে, ভারতবর্ষের জিনিয়কে আমরা অপ্রভা বা অনাদর
করি। আমাদের কাব্য, ধর্মশান্ত্র, দর্শনশান্ত্র বিদি পড়, তবে দেখিতে
পাইবে যে আমবা হিদেন নই। সেই অচিন্ত্য অনির্বচনীয় ইশবের
সক্রপ সম্বন্ধে আমাদের ধারণা তোমাদেরই মৃত,—চাই কি কোন
কোন বিবরে আমাদের জ্ঞান ভোমাদের চেয়েও গভীরতর ও
নিবিড্তর। ১লা বৈশাৰ (১৫ই এপ্ৰিল): বিপুল উৎসাহ ও উদ্দীপনার মধ্যে কলিকাতা ও পশ্চিমবঙ্গের সর্বত্ত বাংলা নববর্ব উদ্বাপন।

মুখামন্ত্ৰী ডাঃ বিধানচন্দ্ৰ বায় কৰ্জ্ক জোড়াসাঁকো ঠাকুৰ বাড়ীৰ (কলিকাতা) পলিতে নৃত্য, নাট্য ও সঙ্গীত একাডেমী ভবনের উল্লেখন।

২বা বৈশার্থ (১৬ই এপ্রিল): কেরল শিক্ষা বিল অমুধারী কেরলে স্কুলের ছাত্র ও শিক্ষকদের সরকার-বিরোধী সভা বা আকোসনে বোগদান নিষিদ্ধ।

তরা বৈশার (১৭ই এপ্রিল): বম্ভিলা ত্যাগ করিয়া তিবেতী ধর্মগুরু দালাই লামার খেলং উপস্থিতি।

৪ঠা বৈশাৰ (১৮ই এপ্রিল): অগ্নিযুগের বিপ্লবী নায়ক ও দৈনিক বন্নমন্তীর প্রাক্তন সম্পাদক জীবায়ীক্রকুমার ঘোষের জীবনদীপ নির্বাণ।

খালের জলের বিরোধ সম্পর্কে পাক্-ভারত অন্তর্কর্তীকালীন চুক্তি স্বাক্ষরিত।

৫ট বৈশাৰ (১৯শে এপ্রিল): দালাই লামার নিকট মার্কিণ প্রেসিডেট আইদেনভাওয়ারের পত্র (সীল করা)প্রেরণ।

হুর্গাপুরে ডি. ভি. সি. কর্ম্মণারীদের সভায় ডি. ভি. সি'র সদর দপ্তর স্থানাস্তরকরণের মিষ্কান্তের প্রতিবাদ জ্ঞাপন।

৬ট বৈশাধ (২০শে এপ্রিল): দিল্লীর অদ্ববর্তী হিসার জেসার পাক বিমান কর্ত্ত পুনরার ভারতীয় আকাশ-সীমা দুজ্বন।

ভারতের সমগ্র পুর্বে সীমান্ত সামবিক বিভাগের তত্তাবধানে ছক্ত।
 লোকসভায় অর্থন:চব প্রীমোরারজী দেশাই বর্ত্ক ব্যাক্ত সমূহ
ভাতীয়করণের কয়ান্তিই প্রস্তাব প্রত্যাধ্যান।

৭ট বৈশাথ (২১শে এপ্রিল): মুসৌরীতে সদলবলে দালাই লামার উপস্থিতি এবং বিড্লা ভবনে অভ্যর্থনার ব্যবস্থা।

লোকসভার শ্রীনেহরুর বোষণা—কোনপ্রকার পাজাবী স্থবা (পাঞ্জাবী ভাষী রাদ্য) গঠিত হইতে দেওরা হইবে না।

স্বৰাষ্ট্ৰ সচিব পণ্ডিত পন্থ হৃদ্ৰোগে আক্ৰান্ত হ্ৰীয়া উইলিংডন নাসিং হোমে (দিল্লী) ভব্তি।

৮ই বৈশাধ (২২শে এপ্রিল): সংসদীর সরকারী ভাষা কমিটির রিপোট প্রকাশ—কেংল্র ইংরেজীর স্থলে হিন্দী ও রাজ্য সমূহে শাঞ্চলিক ভাষা ব্যবহারের স্থপারিশ।

১ই বৈশাপ (২৩:শ এপ্রিল): ভারত কর্তৃক আমেরিকার নিকট পাক্-মার্কিণ সামরিক চুক্তির স্থল্পষ্ট ব্যাধ্যা দাবী।

· •ই বৈশার্থ (২৪শে এপ্রিল): তিবতে প্রসঙ্গে মুর্গোড়ীতে দালাই লামার সহিত প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহকর অকরী বৈঠক।

বিবাহে যৌতুক দেওয়া ও লওয়া নিষিদ্ধ করিয়া লোকসভায় শাইন সচিব জীৰশোককুমার সেন কর্তৃক বিল উপাপন।

১১ই বৈশার্থ (২৫শে এপ্রিল): কলিকান্তা কর্পোরেশনের কমিশনার শ্রী বি, কে, সেন কর্তৃক পশ্চিমবঙ্গের মুধ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র বাবের নিকট পদন্ত্যাগ পত্র পেশ।

মুনৌ নীতে উচ্চ শবস্থ ভিকাঞ্জ উপলেপ্তাদের সহিত লাকাই লামার বৈঠক।

১২ই বৈশাধ (২৬লে এপ্রিল): জলের নিদারণ অভাবে . আর, জি, কর হাসপাতালে (কলিকাতা) অচলাবস্থার উত্তর।

© (फ्रान-तिर्फ्राम **o**

বৈশাখ, ১৩৬৬ (এপ্রিল-মে, '৫৯)

আগরতলার অনভিদ্বে হরিয়ারত্বলার সদত্ত পাকিস্তানীদের হানা ও ভারতীয় পুলিশের সহিত গুলী-বিনিময়।

পশ্চিমবঙ্গের থাতা পথিস্থিতি সম্পার্ক মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচক্ষ বাবের সহিত কেন্দ্রীর থাতাসচিব জ্ঞীক্ষতিপ্রসাদ কৈনের বৈঠক।

১৩ই বৈশাধ (২৭:শ এপ্রিল): তুর্গাপুর ইম্পাভ কারখানার এক শোচনীয় তুর্ঘটনার ১৩ জন হতাহত।

১৪ই বৈশাথ (২৮শে এপ্রিল): পশ্চিমবঙ্গের সর্বত্ত জলের জন্ম হাহাকার—আসানসোলে এক টাকায় এক বাসতি জল বিক্রয়।

১৫ই বৈশাধ (২১শে এপ্রিল): কলিকাতা কর্পোরেশনের নলকুপ বড়ংস্ত মামলার জাসামীগণ (করেবজন জকিসার ও ১ জন কাউজিলার সমেত ১৮ জন) বিভিন্ন দণ্ডেড।

ু ১৬ই বৈশাধ (৩০শে এপ্রিল): সরকারী শিক্ষা নীতির প্রতিবাদে কলিকাতা ও পশ্চিমবঙ্গের বেসরকারী মাধ্যমিক ও প্রোথমিক বিভালরের শিক্ষকদের প্রতীক ধর্মঘট ও অনশন।

১৭ই বৈশাধ (১লামে): আসামের পাথারিয়া বনাঞ্চল পাকু সণাত্র বাহিনীর পুনরায় গুলীবর্ষণ।

ভারতীর কোম্পানী ছাইন সংশোধনার্থ লোকসভার বাণিচ্য ও শিল্পসচিব গ্রীলালবাহাত্তর শাস্ত্রী কর্ত্তক বিল উত্থাপন।

১৮ই বৈশাধ (২বা মে): কণিকাতার বিড্লা পার্কে ভারতের প্রথম বৈজ্ঞানিক ও কাহিগরী বাত্ববের (সাগ্রহশালা) উদ্বোধন।

বিষড়ায় কেন্দ্রীয় অর্থসচিব জ্রীমোরারজী দেশাই কর্তৃক ভারতের প্রথম পলিখিন কারখানার উলোধন সম্পন্ন।

১১শে বৈশাধ (৩রা মে) : কলিকাতার 'বিশ মিলন উদ্দেশ্তে বিশ্ব কংগ্রেদ'-এর উভোগে ভারত পাকিস্তান পুনম্মিলন মহাসভার দিতীয় অধিবেশনের অফুষ্ঠান।

দক্ষিণ কলিকাতার রবীক্স সরোবর (কেক) মহলানে কলিকাতা ইমপ্রভাষেক ট্রীষ্ট পরিকল্লিভ টেডিয়ামের ভিভিত্ত ন্তর স্থাপিত।

২০শে ^{হৈ}শাথ (৪ঠা মে) ঃ হাওড়া জেলা শাসকের ভবনের সম্মুখে শ্রমিক-বিক্ষোভকালে পুলিশের লাঠিচালন:— ২৪ জন আহত ও ৩১ জন গ্রেপ্তার।

প্রধানমন্ত্রী শ্রীনেহন্ধ কর্তৃক ভারত-পাকিস্তান বৌথ প্রতিরক্ষার পাকিস্তানী প্রস্তাব প্রত্যাধ্যান।

২১শে বৈশাধ (৫ই মে): পশ্চিমবন্ধ সরকারের ক্রাট্টপূর্ণ ধাল্ডনীভিব কল বাভোৱ বিভিন্ন বাজার হইতে চাউল উধাও।

ভারতে তিন শক্ষ সেবা সম্বান্ন গঠনের জন্ম রাজ্যসভার সরকারী ভাবে ধসভা পরিকল্পনা পেশ।

২২লে বৈশাৰ (৬ই মে): নদীরার কাজিলনগরে বিধাংসী অগ্নিকাণ্ডে ১১জন নিহত ও ১৫ শত গৃহ ভত্মীভূত।

२०८म देशनाथ (१३ रम) : माथाई व्यंत्राज करक विर्शार्टित छेलत क्रिल्डक्क मच्चरा—क्रिमाथाई (व्यंशन मक्कीर क्षृक्तपूर्व विरमय महिन क्रिक्क माथाई) मतकारी भक्षर्यागांत स्वरंत्रांत्र बहुन करवन नाई। বাঙরালপিণ্ডির নিষ্ট গুলীবর্ধণে ভারতীর 'ক্যানবেরা' বিমান বাংসের ষষ্ঠ পাকিস্তানের নিষ্ট ভারতের ক্তিপুরণ দাবী।

২৪শে বৈশাধ (৮ই মে): কলিকাতা ও হাওড়া এলাকার এনফোর্সমেন্ট পুলিশ ও বাজ্য-সরকারের খাত দপ্তবের অফিসারগণ কর্তৃক যুগপৎ চাউলের মূল্যবৃদ্ধি নিরোধ অভিযান চালনা।

২৫শে বৈশাধ (১ই মে): দেশের সর্ব্ত বিশ্বকৃত্তি বৃষ্ট্রিকাথের নব নবভিতম অম্বজন্ত সাঞ্চলতে উদযাপন।

লোকসভার বাজেট অধিবেশন অনির্দিষ্টকালের অক্ত মুসতুবী।

২৬শে বৈশাৰ (১০ই মে): হাভড়া পোৰ এলাকার পানীর জলের ভীব সৃষ্ট উদ্ভব।

নয়াদিলীতে শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধীর সভানেত্রীম্বে নিধিস ভারত কংগ্রেস কমিটির তিন দিবসব্যাপী অধিবেশন আরম্ভ।

২ ৭শে বৈশাৰ (১১ই মে): কলিকাভার প্রধ্যাত কবি ও সাহিত্যিক শ্রীবসম্ভুকুমার চটোপাধ্যাহের প্রলোকগমন।

২৮লে বৈশাপ (১২ই মে): উত্তেজিত জনতার উপর নাগপুর ষ্টেশনে পুলিশের লাঠিচালনা ও কাঁছনে গ্যাস প্রয়োগ।

২১শে বৈশাথ (১৩ই'মে): খালের জলের বিরোধ-মীমানোর মরাদিরীতে প্রধান মন্ত্রী জীনেহর ও বিশ ব্যাহ্ন প্রেসিডেট মি: ইউজেন ব্লাকের বৈঠক।

৩০ শে বৈশাৰ (১৪ই মে): সাংবাদিক বৈঠকে প্ৰবান মন্ত্ৰী শীনেহক্ষৰ খোষণা—"খালের জল সম্পর্কে বিশ্বব্যাক্ষের সর্বলেষ প্রস্তাৰ প্রহণবোগ্য নহে।"

ভারত সরকার কর্তৃক শিলিগুড়ি-মালদহ নৃতন রেলপথ নির্মাণের সিমান্ত।

৩১শে বৈশাধ (১৫ই মে): কেন্দ্রীয় পুনর্বাসন সচিব ব্রীমেহেরটাদ ধালা কর্তৃক পশ্চিমবঙ্গের উবাস্ত শিবিরগুলি আপাস্ততঃ বন্ধ না করার সরকারী সিধান্ত ঘোষণা।

উড়িব্যার কংগ্রেস-গণভন্ত পরিষদ কোরালিশন সরকার গঠনের শুক্ততির অক্ত কংগ্রেসী মন্ত্রিসভার সদস্যদের পদত্যাগ-পত্র পেশ।

পশ্চিমবঙ্গ বিধান সভার স্পীকার জীশঙ্কবদাস ব্যানাজ্জীর পদভ্যাগ।

बहिर्दिनीय़-

১লা বৈশাধ (১৫ই এপ্রিল): অসুস্তা নিবন্ধন মার্কিণ প্রবাষ্ট্র সচিব মি: জন ফ্টার ডালেসের পদত্যাগ।

২রা বৈশাধ (১৬ই এপ্রিল): ভিবরতে বিজ্ঞোহীদের সহিত চীনা সৈক্তদের অব্যাহত প্রচণ্ড সংগ্রাম।

ত্বা বৈশাৰ (১৭ই এপ্রিল): পিকিং-এ চীনের গণ-কংগ্রেসের (তৃতীয় জাতীয় কমিটি সম্মেলন) অধিবেশন প্রকৃ।

ম্যাক্সিকোর বিমান তুর্ঘটনার ২৬ জন জারোচী নিহত।

৪ঠা বৈশাধ (১৮ই এপ্রিল): পাক্ প্রেসিডেন্ট জেনারেল আয়ুব থাঁ কর্তৃক নিরাপস্তার নামে সংবাদপত্তের কঠরোবে নৃতন অভিযান জারী।

মার্কিণ প্রেসিডেন্ট আইসেনহাওরার কর্তৃক মি: ভালেসের স্থলে পরবাষ্ট্র সচিব পদে মি: ক্রিন্চিয়ান হার্টারকে নিরোগ। ৬ই বৈশাৰ (২-শে এপ্রিল): মন্ত্রিসভা সহ 'আজাদ কাশ্মীর' প্রেসিডেণ্ট সর্দার মহন্দদ ইন্রাহিম থার পদভাগে।

১ই বৈশাৰ (২৩ শে এপ্রিল) তিবত প্রসঙ্গে ভারতীয় 'সম্প্রসারণবাদীদের' বিহুদ্ধে চীনের ভূঁসিয়ারী।

১•ই ^{বৈ}ৰাধ (২৪শে এপ্ৰিল): পাক্ **থেসিডেট ছে: জা**য়ুব থাৰ নৃতন আদেশক্ৰমে অবোগ্যভাৰ জন্ম সরকারী কর্মচারীদের দণ্ডের ব্যবস্থা।

১৩ই বৈশাথ (২৭শে এপ্রিল): চীনের রাষ্ট্রপজিপদে মাও সে-জু-এর ছলে মার্কসীয় ছড়বিদ লি শাও-চী নিযুক্ত। প্রধান মন্ত্রীর পদে পুনরায় চৌ এন-লাই-এর নিয়োগ।

জার্মান প্রসংক্ষ ওয়াবশ-এ ওয়াবশ চুক্তিভূক্তি দেশসম্ছের (ক্সশিয়া সহ) পরবাষ্ট্র পরিবদের বৈঠক এবং এই বৈঠকে বিশেষ স্থামশ্রণে গণ-চীন প্রতিনিধির উপস্থিতি।

১৫ই বৈশার্থ (২১শে এপ্রিল): তিববতের পাঞ্চেন শামা ভারত পরিদর্শনের আমন্ত্রণ গ্রহণে অসমত।

ত্বৰ্গম গিরিপথে ভিব্বতী উথান্তদের পশ্চিমবঙ্গ অভিমুখে বাত্রা।

১৬ই বৈশাথ (৩-শে এবিলে): নেপালের রাজা মহেক্স কর্ত্ত্ব ভীমনগরে কোনী বাঁধের ভিত্তি-প্রস্তর স্থাপন।

১৮ই বৈশাৰ (২বা মে): ত্ৰফে গণতন্ত্ৰকে বক্ষাব জন্ত আন্তিন প্ৰধান মন্ত্ৰী উ মু কৰ্তৃক অহিংস আক্ষোসন আবস্তেব সিদ্ধান্ত বোৰণা।

করাচী বার এসোসিরেশনের শক্ষ হইতে পাক্ দামরিক শাসনের নিশা এবং অবিলম্বে পাকিস্তানে গণপরিষদ গঠন ও গণভাত্তিক সরকার প্রবর্তনের দাবী।

২ • শে বৈশাধ (৪ঠা মে): ইজ-মার্কিণ জ্বা বাহিনীর সহবোগিভার করাটীতে পাকিস্তান, ইরাণ ও তুরত্বের বৃহত্তম বিমান মহড়া।

২২শে বৈশাধ (৬ই মে): তিকতের প্রাল্ল ভারতের প্রধান মন্ত্রী জ্রীনেহকর সহিত বাদ-প্রতিবাদ হওয়ায় 'পিকিং ডেলী'র হঃশ প্রকাশ।

কেনিয়ার বন্দী শিবিবে মাউ মাউদের উপর বৃটিশ সাম্রাজ্য বাদীদের চরম অক্ট্যাচার।

২৫শে বৈশাধ (১ই মে): রুণ প্রধানমন্ত্রী ম: নিকিন্তা কুন্চেডের ঘোষণা—"পুনরায় যুদ্ধ বাধিলে পশ্চিমী শক্তিবর্গ নিশ্চিহ কুইয়া বাইবে।"

২৭শে বৈশাধ (১১ই মে): জার্মাণ প্রসঙ্গে জেনেভার প্রাচ্য-প্রতীচ্য চতুশেক্তি (কশিয়া, বুটেন, ফ্রান্স ও আমেরিকা) পরবাষ্ট্র সচিবদের গুরুষপূর্ণ বৈঠক আরম্ভ ।

২১শে বৈশাধ (১৩ই মে): পূর্বে পাকিস্তান আইন সভার অটনাবলী সম্পার্ক তদস্ত কমিশনের রিপোর্ট—ক্ষমন্তার সড়াই-ই পূর্বে পাকিস্তানে শাসন ব্যবস্থা বিপর্যায়ের কারণ।

৩১শে বৈশাধ (১৫ই মে): ক্রিমগঞ্জ সীমাজ্যে নবোজ্তমে পাক্ সম্বস্ক্রার আরোজন।

'ক্যানবের।' বিমান ধ্বংস সম্পর্কে ভারতের প্রতিবাদ ও ক্ষতিপুরবের দাবী পাকিস্তান কর্ত্তক অগ্রাহ্ন।

নেহেরুর রাজনীতি

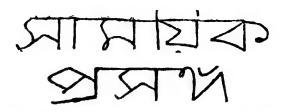
⁴⁶িমানি ভূগ কবিয়াছেন, ভিনি পদত্যাগ বেচ্ছার কবিবেন না—অধিকত্ব আপনার অকার কাজের সমর্থনচেটা করিবেন। পশুন্ত নেহেক অস্বীকার করিতে পারেন নাই প্রস্তাবামুদাবে বে ভূমি হস্তান্তব হইয়াছে, তাহাতে পাকিস্তানেরই সাভ इडेबाट - "It was some what in favour of Pakistan in regard to the territory gained although not much territory was involved." পাকিস্তানেরই লাভ হইরাছে। তবে সে লাভ অল। পাকিস্তান বেমন অলে তুঠ হইতে পারে না-পণ্ডিত নেচকুও তেমনই পাকিস্তানকে অৱ দিয়া ডাই হইতে পাবেন না। কাজেই বেরুবাড়ী দিভে হইবে। ইহাই পণ্ডিত নেহকর দেশপ্রেমের দৃষ্টাক্ত। স্মতরাং ভারতবাসীকে সাবধান হইতে হইবে। সাবধান চইবারও অনেক উপার আছে :-(১) লোকসভার প্রতিনিধিদিগকে নির্দেশ দিতে পারা বায়—তাঁহারা বেন বেকবাড়ী —ভারতের স্চার ভূমি দিতে সম্মন্ত না হ'ন। (২) তিনি বে অনগত কাম কবিয়াছেন, সে জক্ত প্রধান মন্ত্রীকে পদত্যাগ করিতে বলা। (৩) ভিনি পদস্তাগ না করিলে তাঁহার সম্বন্ধে খনাস্বাজ্ঞাপক প্রস্তাব লোকসভার উপস্থাপিত করিয়া বছমতে তাহা গ্রহণ করা। এ সকলের কোন উপায় ভাল সে সম্বন্ধে স্মুখীম কোর্টের মন্ত জানিবার প্রয়োজন নাই। মামুষ কি ভাবে খার কি হয় বঙ্গা হায় না। পার্ণেল একদিন আইরিশ নেতৃত্ব তাগে করিতে অদমতি জানাইরাছিলেন। ফল-কি হইরাছিল'? ভগবানের বিচার স্থন্ম।" -रिविक राष्ट्रमञी।

কথা উঠিতে পারে

ঁবাহা হউক, ভারত-পাক শীৰ্ষক সম্মেলনে রাজী না হইয়া পশুত নেচক কেবল সঙ্গত কাজ্ট করেন নাট, ভারতের জন-সাধারণকেও উদ্বেগ ও আদিস্কা হইতে মুক্ত ক্রিয়াছেন। কারণ, পাক প্রধান মন্ত্রীর সহিত শাস্ত্রি ও বন্ধতার আলোচনার মাধ্যমে শামাদের উদার এবং বিশ-মৈত্রীর সাধক প্রধানমন্ত্রী ভারতের ভারার কোন অঞ্চল দান কৰিয়া আলেন কিনা, কে বলিভে পাৱে? ক্থাটা সভাবতটে উঠিতে পারে বেক্রবাড়ী সম্বন্ধে পণ্ডিত নেতকর শাম্প্রতিক অভিমন্ত শুনিয়া। আলোচ্য সাংবাদিক সম্মেলনে তিনি পাকিস্তানের আপত্তির উত্তরে এইরূপ বলিরাছেন বে, সুপ্রীম কোর্টে বেরুবাড়ীর সম্বন্ধে আইনের প্রশ্ন উত্থাপিত করার উদ্দেশ্ত কেবল শাইনের গগুগোল এড়ান। কিছ বেক্সবাড়ী পাকিস্তানকে দান ক্রার কথা ঠিকই আছে। অর্থাৎ বেক্রবাড়ী হস্তাম্ভরের বিক্লছে দেশব্যাপী প্রতিবাদ অগ্রাহ্ম করিয়াই আমাদের গণভান্ত্রিক দেশের প্রধানমন্ত্রী পাকিস্তানকে খুসী করিবার বস্তু বেরুবাড়ী হস্তান্তর ক্ৰিতে বছপবিকৰ ।" —বৃগান্তর।

চুরি! চুরি!!

শাকিস্তান নব-উৎসাহে বিজ্ঞা প্রচারে, বিজ্ঞা বিভরণে লাগিরা গিরাছে। সেই সংবাদ আমরা বছদিন হইতেই পাইরা আসিতেছি। তবে সেই বিজ্ঞাটা বে-সে বিজ্ঞা নয়, একেবারে বিজ্ঞার সেরা, চুরি-বিজ্ঞা। পাকিস্তান রাষ্ট্রের সর্বময় কর্তা জ্ঞনার আইর্ব ধান একবার ঢাকা গিরা পূর্বক্ষের সাহিজ্যিকদের সাবধান ক্রিয়া দিরাছিলেন বে, ভাঁহারা বেন কলিকাতার লেখকদের পৃস্তকাদি পাঠ না ক্রেন।



আমরা ভাঁছার উপরোক্ত উক্তিটির প্রসংক্রই বলিয়াছিলাম-কলিকাভায় প্ৰকাশিত পুত্তক না হয় নিবিদ্ধ হইল, বিদ্ধ কলিকাভায় প্রকাশিত বিবিধ প্রস্ত প্রস্তৃকারের বিনা অনুম্ভিতে বেমালুম চরি করিয়া বে পাকিস্তানের পুস্তক ব্যবসায়ীরা ছাপাইতেছে, ভাষার প্রতিকার কি ? সম্প্রতি কলিকাতার পুস্তক পাকিস্তানে কি ভাবে ছাপা হইয়া বিক্ৰয় হইডেছে, তাহাই ঢাকা লাদাণতে লানীত এক মামলায় প্রকাশ। কলিকাতার প্রকাশক এ টি দেবের প্রথাত चित्रान () English to Bengali (२) Bengali to English,—ঢাকা, মন্তমনসিংহ ও লাহোবের পুস্তক ব্যবসায়িগণ বিনা অমুম্ভিতে হুব্ছ ছাপিয়া প্ৰকাশ কৰিয়াছে এবং বিক্ৰয়নৰ অৰ্থ স্থীত হইতেছে। ঢাকা জেলা জল মি: এম ইজিল বাদী এটি দেবের অভিবোগ অমুবায়ী পাকিস্তানের ৫টি বিজ্ঞা বিভয়পকারী পাবনিশাসে ব উপর উপরোক্ত তুইটি অভিধান প্রকাশ ও বিক্রন্ত নিবিদ্ধ করিয়া এক সাময়িক ইনজাসেন জাবী কবিয়াছেন। শেব পর্যন্ত মামলার কল বাহাই হউক, চবি বিভা প্রচাবের বিক্তমে এইরপ মামল। দারের ক্রিয়া কলিকাতার উক্ত প্রকাশক কর্তব্যই ক্রিয়াছেন।"

- আনন্দবাজার পত্রিকা।

তিব্বত সম্মেলন

"পরম স্থবিধাবাদী পার্টির উজোগে কলিকাভার এক ভিবান্ত সম্মেলনের আয়োজন হইতেছে। আচার্য্য কুপালনী এবং জয়প্রকাল নাবাহণ উহার উদ্যোক্তা। ভারতের উপর পাকিছানী আক্রমণে ইহাদের মধ্যে কোনরূপ চাঞ্চ্যা কিন্তু দেখা যায় নাই। সম্মেলনে দলাই লামার প্রতিনিধি আমন্ত্রণ করা হইয়াছে। কলিকাতার এই সম্মেলনে আমাদের ঘোরতর আপত্তি আছে। উনবিংশ শভাকী পর্যান্ত বাজনীতি ছিল রাজার রাজার বন্ধুত্ব এবং শত্রুত। ব্যক্তিবিশেবের বন্ধুম, মার্থ এবং শক্রতার উপর বিমের কোটি কোটি মানুষের স্থাপান্তি এবং জীবনধন সব কিছু নির্ভৱ করিত। বিংশ শতাকীর দিতীয়ার্দ্ধে গণচেতনার যুগে এই রাজনীতি বন্ধ হইবে, বাজার বাজার বন্ধুত্ব বা শত্রুতার উপর গোটা জাতির অভিছ নির্ভর করিবে না, ভার স্থান গ্রহণ করিবে জাভিতে জাভিতে বন্ধুত্ব, এই বন্ধুত্ব অসম্ভব কৰিয়া ভূলিবে ঠাণ্ডা এবং গ্ৰম উভৱ প্ৰকাৰ যুদ্ধ। কতকগুলি মতলববাজ এবং বিদেশীয় ভাঙাটিয়া লোক বদি এই ধারার বিরুদ্ধে দাঁভাইতে চায় ভবে তাহাদিগকে আমথা দেশের শত্রু বলিয়াই অভিহিত করিব। বাঙ্গলাদেশে এই সম্মেলনের অধিবেশনে আমাদের আরও আপতি আছে। আধানককালে ববীক্রনাথ চীনের সঙ্গে ভারতের মৈত্রীর জন্ম শান্তিনিকেতনে চীন সংস্কৃতি ও চীনাভাষা চর্চার ক্ষেত্র চীনা ভবন স্থাপন কবেন। বে বাঙ্গলা দেশ ভারত-চীম থৈত্ৰী-বন্ধন দুঢ় কৰিছে চেষ্টা কৰিবাছে সেই বাজলা দেশে ঐ বন্ধন ছিব কৰিবাৰ ছবিকা উজত কৰিতে দেওৱা খুব তুল হইবে।"

বাধ্যতামূলক অবৈতানক শিক্ষা পারকল্পনা

^ৰপশ্চিমবঙ্গ রাজ্য স্বকার ভূতীয় পঞ্চবার্ষিক পরিক**র**নায় ৰাজ্যের ৬ হইতে ১১ বৎসরের বালক-বালিকাদের বাধ্যতামূলক चरिवछनिक भिका निवाद श्वादी वादश शहर कदिशाहन। अह পরিকল্পনার সরকারের বার্ষিক ২৬ কোটি টাকা বার ভউবে বলিয়া शाना बाद । वर्त्तवादन व्यामाश्वःत मत्रकाद्यत উল্ভোগে चरेतकांनक প্রাথমিক শিক্ষা থিশের প্রদার লাভ করিয়াছে। কিছু সহরাঞ্জ এই ব্যবস্থা পৌৰসভাগুলির উপর ক্সন্ত। তাহাদের এই বিষয়ে উদাদীনতা সর্বাঞ্জনবিদিত। এই কারণে সহরাঞ্জ প্রাথমিক শিক্ষার অবনতি ঘটিতে আরম্ভ করিয়াছে। এমতাবস্থায় সরকারের बहै बार्क् शतिक्वनाहिक मक्लहे बिल्नमन छालन कतिरव ! এই পরিকল্পনা কার্যাকরী করিতে বন্ধ শিক্ষক ও শিক্ষিকার প্রেরোজন ছইবে। বর্ত্তমান বেকার সমস্থার যুগে বহু শিক্ষিত বেকারের '(बकारच प् 6ca। ইहांव कनाकन व्यवश्री-वाहात्मव छेनव डेडांव পরিচালন ভার অপিত হটবে তাঁহাদের সভতা ও আফরিকভার উপর নির্ভব করিবে। এই প্রসঙ্গে শিক্ষানীতির বিষয় কিঞিঃ আলোচন। করিতে হয়। সহসাবের শিক্ষা বিভাগ বর্ত্তিয়ানে ৰুৱেকটি পুস্তক প্ৰকাশের দায়িত্ব নিজেরা বাহণ করার জনসাধারণ আলেৰ জৰ্মণাৰ পতিত হইবাছেন। সামাক আহাথমিক বিজালয়ের একধানি পুস্তক "কিশুসম" পাওৱা এক তুজ্ব ব্যাপার। উঠা नाकि চাहिन। अञ्चलाए हाला हव ना। बायांकरन ऐक शुख्रकव দর্শনও মিলে না। ফলে গ্রামবাসীদের একথানি "কিশ্লর" আনিতে কলিকাভায় রাইটার্স বিভিংয়ে বাইয়া লখা লাইন —বর্ত্তমান ভারত (ভগলী)। লিতে হয় ।

একটি আবেদন

"বর্ষা শুরু হুইয়াছে। সেই সঙ্গে পথচারীদের অবস্থাও হুইয়াছে শোচনীর। ইহারও কাবণ আছে। পথে-ঘাটে জল জমিরা যায়-चीभ-नदी त्यांदेवकांव निर्विवादम जारे कामा क्रिटेरिया हिनदात्छ। মনার উপস্রব অত্য'ধক বাড়িয়া গিয়াছে—অথচ কোন প্রচেষ্টা নাই— ভোন কাৰ্যক্ৰ নাই সকলেই বেন জড-পিণ্ডে প্ৰিণত চইয়াছে। অক্তান্ত বছরের মতন বর্তমান বছরেও মাত্রব তঃথকটের হাত হইতে वृक्ति भारेरव विवा मान हम ना। मासूरव पूर्व व क्यवर्षमान। क्वनाव कहवीभानाव जिल्लाथ भूट्सई कवा इटेशाहिन। अलाविध क्षे জাবর্জনা পূর্ববৎ বহিয়াছে। স'শ্লিষ্ট কর্ত্তপক্ষ হয়তো বা জাবও অবর্ণনীর বর্ণণের অপেকার আছেন-তাহা হইলে বিনা পরিশ্রমে ৰুচবী-পৰা ভাগিয়া ঘাইবে। পৰিশ্ৰম (কাৰিক) কৰিতে হইবে না। মশা অমিভেছে তাহাতে কর্তৃপক এবং স্বাস্থা বিভাগের ক্রিবার কিছুই নাই। প্রকৃতির কল্যাণে ক্ররণানা পরিভার ছইবে এব হিং আশার কর্তৃপক্ষ অপেক্ষমান থাকিতে পাবেন কিছ মশার উপদ্রা ও পথ ঘাটের অবাবস্থা কিরণে দ্বীভত চ্টবে ? क्रमाङालक वर्डमान व्यवस्था थुवर माठनीय वरेया छिटिशाक । कल कन बाहे. मनाव উৎপাত, खत्र वर्षां भारत कम कमिया याव এতংস্তেও বদি অধিক সুধ কাম্য হয় ভাষা হইলে 'নাছ: পদ্ব। ।"

—বার্ভা (बनभाई 🐯)।

আসানসোলে সূৰকারী দরদ

"আসানসোলে জলকট্ট বেমন চরমে উঠিয়াছে খাত্য-সর্কটঙ তেমনি প্রকট আকার ধারণ করিরাছে। আমাদের আসানসোলের সংবাদদাতা জানাইভেছেন, আসানসোল বাজারে কনটোল দরে চাউন একেখবেই পাওয়া বাইতেছে না। খোলা বাজাবে মোটা ठाउँन २७८ **ढोका मर्स्य श्रद्ध नक ठाउँन ७०८ ढोका म**र्स्य विक्रम করা হইতেছে। মডিফায়েড রাশন দোকানে চাউস একেবারে দেওয়া হইতেছে না। নিমুমধাবিত্ত ও প্রামবাসীদের আর্থিক অবস্থায় এই দবে চাউল কিনিয়া সংসার প্রজিপালন করা ছংসাধ্য হটবা উঠিয়াছে। আনাননোল প্রস্তা নোলালিষ্ট পার্টি অবিলয়ে नियञ्चित्र एटव ठाउँम मवनबाह कविनाव धना मवकाटबब निकडे भगनवशास्त्र मह मारी कविशाहित। जामानामान क्षेत्रा माणानिहै পার্টির নেততে আসানসোলের দাকুণ জলকট্রের প্রতিকারের দাবীতে বিগত করেক বংসরট আন্দোলন চলিয়া আসিতেছে এবং এ বংসরও কয়েকটি গণ-অভিযান প্রিচালিত চুটুরাছে। বিধান সভায় প্রজ। সোন্তালিষ্ঠ স্বতাবুক আসানসোলের জলকণ্ঠ নিবারণের সমস্তাকে অগ্রাধিকার দিবার দাবী করিয়াছেন, কিছু প্রতিবাবই व्यटिक्षिकि मान कां वा गवकाव व्रहेरक थ भवंख कि हुई कवा हव নাই। বর্ত্তমানে আকাশছে বা চাউলের দর সংখও সরকার এখনো উদাদীন। আসানদোলের স্থায় শিল্পনারীতে এবং উহার শশুগীন পত্নী অঞ্চলর থাজাভাবের অবস্থা পূর্ব হইতে জান। সংখণ্ড সে বিষয়ে সরকারের কোন দায়িভবোধ নাই।"

-- मात्यामत (वर्ष्वधान)।

সম্বায়িক সমাধান

^{*}কংগ্রেদের ভিভরে ও বাভিরে ধৌ**ও** চাব লইয়া সমালোদনার বড উঠিলাছে, পশুভক্ষী মহোৎসাহে বৌধ চাব চালাইবার জ্ঞ কোমৰ বাৰিয়াছেন। এমন কি বদি কংগ্ৰেস বিধাবিভক্ত হয় ভাচাও তিনি গ্রাহ্ম করেন না। কংগ্রেসের ওয়ার্কিং কমিটির প্ৰস্তাবে অবগ্ৰ সুৰ একট নৱম হইয়াছে। সমবাধিক কুবি প্ৰবৰ্তনের পূর্বে সাভিদ কোপারেটিভ থলিয়া বৌধ চাবের বনিয়াদ গঠনের कथा वना हरेबाहि। कःश्विम कन छपु कृषिष्ठिहे नमवास्त्रव व्यवर्तन , কবিয়া ক্ষান্ত হটবে না, ভাহারা শিলকে ও সমবাবিক কবিভে চান। গ্রাম পঞ্চারেত ও সমবার সমিভিকে বধোচিত ক্ষমতা দিয়া দেশকে পুনর্গঠন করাই বর্তমানে কংগ্রেস দলের লক্ষ্য ও সাধনা। সম্বার ভারতবর্ষে নুজন নছে। বদি কংগ্রেস দল এই রূপে সমবার সমিতি হাজাবে হাজাবে থোলেন তবে বলিবার কিছুই থাকে না। বিশ পश्चिक्को मर किছवरे সমবাदिक সমাধান চান। এখন দেখা বাক সমবায়িক সমাধান কি? আমাদের মতে প্রথমে খানীয় লোকেবা তাহাদের সম্প্রাপ্তলি বাহিব করিয়া, নিজেবই সমাধানের উপায় বাহির করিবেন ও খেচ্চায় একবোগে কাল করিয়া সমস্তাগুলির সমাধান ক'রবেন। রাষ্ট্র কেবল ভাহাদিপকে সাহাষ্ট্র করিবে, রাষ্ট্র কোন কাজের সূচনা করিবে না, উজোগ স্থানীয় লোকের নিকট चात्रितः। हेरात्कहे बल वित्कलीकवनः कावन हेरात्क कमका স্থানীয় লোকের হাতে বিচ্ছরিত হইবে। করেকজন ব্যক্তি শার্বা

গঠিত প্লানিং কমিশনের কোন পরিকলনাকে সাহাব্য করাকে সমবার্থিক সমাধান বলা চলে না। বত দিন না স্থানীর লোকের প্রিকলনা বচনা ও সম্পাদনে পূর্ব কর্ত্ত্ব থাকে তত দিন সমবারিক সমাধানের কথা বলা নিতারোজন।" — জনমত (ঘাটাল)।

প্রসঙ্গক্রমে

"সহবেব বাজারগুলির নরকসদৃশ অবস্থার প্রতি পৌর কর্তৃপক্ষের বার বার দৃষ্টি আকর্ষণ করা হইরাছে। কিছু আরু পর্যান্ত প্রতিকারের কোন ব্যবস্থা গ্রহণ তাঁহারা করেন নাই। একে ত রাজ্য ও প্রেণৰ অবস্থা সঙ্গীন, তাহার উপর বদি নিতা অক্সম্র আবজ্জনা ডেপ অবক্ষম করিয়া, রাজ্যার অধিকাংশ দখল করিয়া দিবারাত্র বিরাক্ষ করে তাহা হইলে সহবের স্বাস্থ্য কি ভাঙ্গিয়া পড়িবে না, কলেরা, বসন্ত মহামারী আকার ধারণ করিবে না, পথচলা কষ্ট্রপাধ্য হইবে না? পৌরপতি আখাস দিয়াছিলেন বে পৌর উপবিধি সংশোধন করিয়া বাজারের পরিচ্ছন্নতা রক্ষার জন্ম বিহিত ব্যবস্থা শীঘ্রই অবলম্বিত হইবে। সে আজ করেক মাস প্রের্বির কথা। আজ পর্যান্ত কোন দাড়া-শব্দ ও বিবরে পাওয়া বার নাই। কয়েকবার পৌরপতি বয় বাজারগুলি পরিদর্শন করিয়া গিয়াছেন। কিছু পৌরপতি বয় বাজারগুলি পরিদর্শন করিয়া গিয়াছেন। কিছু পৌরপতি বদি ভাবিয়া থাকেন পরিদর্শন করিয়া গিয়াছেন। কিছু পৌরপতি হদি ভাবিয়া থাকেন পরিদর্শন করিয়া গিয়াছেন। কিছু পৌরপতি হদি ভাবিয়া থাকেন পরিদর্শন করিয়া প্রায় নাই ভইতে পাবে, কয়দাতা ও সহরবাসীর কোনো লাভ হইবে না।" —বর্দ্ধমান বাণী।

তৃফার জল ও আমলাতন্ত্র

["]মহকুমার চারিদিকে সামাত্ত পানীয় জলের **অক্ত** হাহাকার। এই শক্ষাকর বেদনাময় আর্হনাদের মধ্যে আমলাভয়ের এক অব্যবস্থা এবং বেষাবেষির গোপন ইভিহাস আমরা পাইয়াছি, যাহার ফলে পানীয় কলের জন্ম সরকারী বরাদ অর্থ খরচ না হইরা ফিরিয়া গিয়াছে, পানীয় জলের ব্যবস্থা হর নাই। 'করাল ওয়াটার সংপ্লাই' বিভাগটি পূর্বে জেলা ম্যাজিট্রেটের অধীনে ছিল কিছ গত ১১৫৭ সালের ১লা নভেম্বর क्टेंट (क्या माक्षिरहेर्देव ठांठ ठहेंट भावनिक (ठनरबंद ठीक ইফিনিয়ারের হাতে গোল। আবল্ল হইল গোলমাল। দেই সময়ের এবং তাহার আগের কাজের বকেবা কোন টাকা ঠিকাদারেরা আজও পায় নাই, কেন না দপ্তার গেলেও চিদাব নাকি চন্তান্তর হয় নাই। কেবল ভাষাই নভে ১১৫৮ সালের মার্চ্চ হইতে ১১৫১ সালের মার্চ্চ পৰ্যান্ত ৰাজ্ঞাম মহকুমাতে ৩১টি কুৱার মঞ্ব হইবাছিল, টাকাও আসিরাছিল। '৫৮ সালের এপ্রিল মাসে করেকটির ওয়ার্ক অর্ডারও দেওরা হইল, কিছ দীর্ঘ এক বংসরের মধ্যে একটিবও কাজ হয় নাই। স্বীম মঞ্জুর করা ও টাকা দেওবার মালিক পাবলিক হেলখ কিছ কোন প্রামে হইবে এবং গ্রামের কোনপানে হইবে ভাছার ব্যবখার মালিক জেলা ম্যাক্রিটে। क्षान निर्वाहन ना क्षत्रात खड़ काछ क्त नाहे, प्रतिक व्यापवात्रीत्पत भानीय वन कार्ड नाहे। व्यक्त प्रतिक तम्मानीय वर्ष इडेर्ड এই মহকুমার জন্ত পাবলিক হেলও বিভাগের কেবল বেতন বাবদ মাসিক খবচ ছব শত টাকা! আৰু সধ খবচা ধবিলে মাসে ৰালাব টাকা। উদাহৰণ্ডরপ আববা বাড়গ্রাম মহকুমার নাম কবিলাম। गांवा स्वनार्छहे अहे व्यवस्था। छन्बर्छव आंग वाहरव छाहारक অমৃতাপের কিছু নাই, ভবে বাজ্য ভালই চলিছেছে শীকার করিতে বাধ্য।" — নিভীক (বাড়গ্রাম)।

শুভ বিবাহ

উত্তরপাতা বাল-পরিবারের জীলম্বনাথ মুখোপাধারের কনিষ্ঠ পুত্র জীমান শমীজনাথের সহিত পাকুড় পরিবারের জীপ্রী তকুমার সুকুলের জ্যেষ্ঠ কলা শুচিমি চার শুভ বিবাহ উপলক্ষে উত্তরপাড়ার वांक्य विश्वास क्र मताछ थी। ज चमुक्रांतिय चार्याक्रन क्रश इस। এট অমুষ্ঠানে এবং বিবাহ বাসবে বে সকল বিশিষ্ট সমাজসেবী, সাহিত্যিক, সাংবাদিক, শিল্পী ও ক্রীডাবিদ স্বয়ং উপস্থিত থাকিয়া অথবা নৰ দম্পতিৰ সুধ-সমৃদ্ধি কামনা কৰিবা শুভেচ্ছাৰ বাণী প্ৰেৰণ কৰিবা প্রীতি অনুষ্ঠানটিকে গৌরবমন্তিত করিয়া তোলেন তাঁচাদের মধ্যে ভারতের উপরাষ্ট্রপতি ডাঃ বাধাকুকান, ভারতের উপমন্ত্রী শ্রী শনিলকুমার ठम. औ श्रक्तारम (मन, औ बड़ना त्वांत, महाताकाविताक, औडेनश्रेताक মহতার বাহাত্র, বর্দ্ধনানের মহারাণী অধিরাণী, মহারাজকুমার সংযুটাল মহতাব ও মহাবাজকুমারী, লালগোলার রাজারাও शीरबक्तनावादन वाद, निज्ञी প্রবোধেনুনাথ ঠাকুব, মাসিক বস্কমতীর সম্পাদক শ্ৰীপ্ৰাণভোষ ঘটক, পাইকপাডাৰ শ্ৰীক্ষগদীশচন্দ্ৰ সিহে. প্রীক্রীবাণীতোর ঘটক, প্রীনির্বাণীডোর ঘটক, প্রপ্রিয়তোর ঘটক, প্রীভেমেক্সপ্রধান বোষ, ডাঃ হেমেক্সনার দাশগুপ্ত: প্রীসন্ধনীকান্ত দাস, শ্ৰীমতী সুধারাণী দাদ, শ্ৰীযুক্ত প্রদোষকুমার বাজপেয়ী ও রাজকুমারী वमः व कः भवी, भहिशामानव वस्वांनी छिनी (मवी (भर्ग), वाकक्मांबी त्वन हाडीभाषाय, औरमीरमञ्जनीय ठीक्स, औमरकास्ट्रांसन बरम्माः, चाहे-ति-अत्र, कवि नायुक्त त्वय, महिचानत्वय क्यांत नाव्किथानान गर्ग, বাারিষ্টার সোমনার চ:টাপাধারি, বাাবিষ্টার রাখবেন্দ্রনার বন্দ্যোপাধার, क औप को प्रवमा वान्सानाधारिक, त्यांक्रम हिनाहाई। क विहादनकि हा: শন্তুনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়, আলিপুরের ব্যবহারজীবী জীল্পীলকুমার वत्मााभाषात, व्याक्ति अम-अन-नि, अपनीनकृषात वत्माभाषात, ডা: গোপাৰ বন্দ্যোপাধাায়, জীৰজিত চাটাপাধাায়, অভিনেতা শ্ৰীনীতীৰ মুখ্যোপাধ্যায়, পাথবিবাঘটোর শ্ৰীমন্মধনাথ ঘোষ, কাশীপুরের **बीभग बनाब मृत्यालागाय, ठकनीविव वायवाहाछव निकानम जिल्ह्याय.** শ্রী প্রভানার সিংহবার, শ্রীপশুপতি সিংহবার, শ্রীপুনীলকুমার সিংহবার, खी ल खीयको मारामा मान, मित्रो खीनकोन्स्याच माहा, खीकनाांनाक বন্দোপাধার, প্রীরমেন্দ্রনাথ মারক, বন্ধীর সাহিত্য পরিবদ সম্পাদক बीपर्नहस्य मुस्थापाधारित, बीशमपुरतत बीरमाहित्स लायामी । জ্ঞীঃবীন্দ্রনাথ গোলামী, কেলিনীপাড়ার প্রাক্তন চেয়ারম্বান জ্ঞীসন্তোষ व्यानाधार, উত্তर्गाहार औदारमनहत्त्र मूर्यानाधार, औहन्त्रनाथ মুখোপাধার, জীপ্তামাপ্রসাদ মুখোপাধার, প্রাক্তন পৌরপতি लाजामहत्त्व मुत्थाभाषाच, औद्दिद्द (मर्ट, जा: औकान्निमाम नात्र, মোহনবাগানের প্রাক্তন অধিনারক ঐপ্রেমন মুখোপাথার ও বর্তুমান অধিনায়ক জীগনর বন্দ্যোপাধাায়, উত্তরপাড়া পৌর সহ-সভাপতি क्षेक्मनाकाच ठळवळी. खेलरवस्त्र नाव त्याव, खेरिकरकुमाद गूरवा:, ও जीवरीख (शावामी (शोव मनजदम), छा: अमन मुखाशावाद, ডা: দেবত্রত মুখোপাধার, ডা: পাঁচু বস্থ ও ডা: দেবত্রত মুখোপাধার (२), छा: नीनक्छ त्याबान, छा: वाबीन बाब ७ छा: हिछ बाब. विधीदक्कनात्रावन मूर्याभाषात अम-अन-अ, विननारेनान मूर्याभाषात

(ইজেডার) শ্রীবস্থাকুমার চটোপাধারে, বারবাহাত্ব থগেজনাথ কুখাপাধারে, বি পি সি সি সদত শ্রীব্রারি মিত্র, পোভার কুমার বিক্রানার বার, সাংবাদিক শ্রীসমর চটোপাধ্যার, ও শ্রীবন্ধর বার, সালিসিটর আবাবন গলোপাধ্যার ও শ্রীস্থানকুমার মুখোপাধ্যার, নিবিল ভারত বন্ধ ভাবা প্রসার সমিতির সম্পাদক শ্রীক্যোভিবচন্দ্র খোব, শ্রীভবানীমোহন মতিলাল, এডভোকেট শ্রীবিমল চটোপাধ্যার প্রভৃতির নাম উল্লেখযোগ্য।

প্রীরমেজনাথ মুখোণাধ্যার ও প্রীমতী সুধীরা মুখোণাধ্যার সক্সকে আদর অভার্থনাদি করেন।

শোক-সংবাদ

বারীস্তকুমার বোষ

ভারতের প্রথবীণ বিপ্লবী নায়ক দেশের স্বাধীনভা-২জ্ঞে উৎস্মীত-প্রাণ লাভীয় বৃদ্ধি আন্দোলনের অঞ্চম প্রধান পুরোধা ৰাৰীজ্ঞকুমাৰ খোৰ ৪ঠা বৈশাৰ সন্ধায় ৮০ বছৰ ব্যুসে শেব নিংখাদ ভাগে করেছেন। বারীক্রকুমারের জীবনেভিহাদের সঙ্গে তদানীস্থন বিপ্লবান্দোলনের ইতিহাস ওতলোত ভাবে কড়িত। পুণ্যলোক খৰি বাজনাবারণ বস্থ এঁব মাভামহ, যুগঋষি জীজববিশ वंद खब्ब । ১৮৮ नालद १३ काइदावी हेलाए वंद बना। ধৌবনের অর্ণাক্ত দিনগুলি অব ও ভোগের সহল পথ ত্যাগ করে বাঁৱা অভিবাহিত করেছেন বিপ্লবের ছুডুর পরে স্বাধীনভার অনংজ তপ্রার দেশের স্বাসীন জাগরণকরে বাঙ্গার সেই নমস্ত সম্ভানদের মধ্যে বারীক্রকুমার অক্তম। আন্দামানের ছীপান্তরবাস শেষ করে দেশে ফিরে এসে বারীজ্রকুমার প্রত্যক্ষ বিপ্রবের পথ ত্যাগ ক্তবন এবং কিছুকালের মধ্যেই দেশবন্ধুব 'নারায়ণ' পত্রিকার अल्लावनजात कर्न करतन; "विक्रमी"त मह्मल वातीत्रक्माद्यत বোরাবোর বিজমান ভিল। কেবলমাত্র বিপ্লবের ক্লেতেই নর, কাব্যে, সাহিত্যে, সঙ্গীতে, ঢিঙ্কশিল্পে এবং পত্রিকা সম্পাদনার ক্ষেত্রেও বাৰীস্ত্ৰকুমাৰেৰ প্ৰভিভাৰ পৰিচয় পাওয়া গিয়েছে। শেব জীবনেও জাঁর লেখনী সচল ভিল। একাধিক আত্মকীবনীমূলক তথ্যপূর্ণ স্থপাঠ্য প্রস্থেব ভিনি প্রপেতা। ১১৫০ থেকে ১১৫৮ সাল পর্যন্ত বারীজক্ষার দৈনিক বন্মমতীর সম্পাদকের আসনে সমাসীন ছিলেন। আমরা বিপ্লবীর বিদেহী আত্মার শান্তি কামরা করি।

স্থার উবানাথ সেন

চানের বিষয়ে তেনে আন ইন্ডিরার (বর্তমানে প্রেস ট্রাই
আন উন্নিয়া ম্যানেজিং ডিরেক্টার ভারতীর বেডক্রনের ভূতপূর্ব
বিভাগ কৈ ব ভ্রেবর্ধের বিশিষ্ট সাংবাদিক ভার উবানাধ সেন
আন কি নিয়াল ক বছর ব্য়নে প্রলোক সমন করেছেন। ভারতের
সাংবাদিক-অগতের এক বিয়াট আসনের অবিকারী ছিলেন ভার
বিবারণ, সাবাদিক জগতের আভাজ্ঞরীশ কার্বকলাপশুলি
সাকিলাসনার কেন্তের উধানাধের অবদান অনেক্থানি।
বিবারণ ক্রিয়াল কর্মপ্রিচাদেন প্রভুক্তি নুব্গ্রহানর ক্রেনে ক্রিয়াল

নাম চিবস্থলীর হয়ে খালালকে ক্ষেত্র ক্ষেত্র কর্ম কর্ম কর্ম করে। উলিবান লীগ অব নেশানস ইউনিবার অধ্যক্তিনিক সম্পাদক ই কোৱাব্যক্ষেত্র পদও কিছুকাল তার ঘারা আনিক হয়েছে। আছে ৪৪ সাতে এ বৈ বৃটিশ সংকার আর' উপাধিতে ভ্রিত করেন।

চন্দ্রকুমার সরকার

বর্ণীয়ান বান্ত-বিজ্ঞাবিশারদ ও খ্যাতিমান স্থপতি চক্ষকুমার সরকার ৫ই বৈশাধ ৮৬ বছর বয়সে দেহবক্ষা করেছেন। ইঞ্জিনিয়ার ও স্থপতি-সমাজে ইনি অশেব শ্রন্থার পাত্র ছিলেন এবং দেশে উক্ত শিল্প গুটির উন্নয়নকল্পে এব আন্তরিক প্রচিষ্ঠা এবক মহণীয় করে রাধ্বে। কর্মজীবনের প্রথম অধ্যায়ে ইনি লোকমাজ ভিলকের সংস্পর্শে আসেন ও তাঁর হারা বিশেব ভাবে অন্ত্র্প্রাণিত হন। ইনি বারাণসী ও ব্রহ্মদেশও দীর্ঘদিন কর্মস্থত্তে অবস্থান করেন। দেশের ও বিদেশের বহু স্থব্যা অটালিকা, অলাধার, চলার পথ এব অনবজ্ঞ স্বন্ধী প্রতিভাব পরিচর বহুন করছে।

বসম্ভকুমার চট্টোপাধাায়

স্থাত কবি, 'দীপালি' ও 'মহিলা'র প্রতিষ্ঠাতা, বন্ধীয় সাহিত্য পরিবদের ভূতপূর্ব সহ-সভাপতি বসস্তকুমার কটোপাধার ২৭শে বৈশাধ ৬৮ বছর ব্যুসে আকৃষ্মিক ভাবে লোকান্তরিত হয়েছেন। আক্ষমান্তের স্প্রেসিছ পায়ক ৺বিকুরাম চটোপাধ্যার এঁর পিতাণছ। ইনি সবসমেত প্রায় চলিশধানি প্রস্থের রচরিতা। কবিতা, উপজ্ঞাস, গল, কিশোর-সাহিত্য, প্রথম, জীবনী প্রভৃতি সাহিত্যের সকল বিভাগেই এঁব' সমান দক্ষভা ছিল। দীর্থকালবাণী দীপালির সম্পাদনার ক্ষেত্রেও ইনি ব্যোচিত নৈপুণা প্রদর্শন করেছেন। বসস্তকুমারের মৃত্যুতে বান্তলাদেশ জ্মারিক সদালাণী নিরহন্ধারী প্রভৃতি নানাবিধ গুণের অধিকারী একজন ব্যার্থি বাণীসেবককে হারাল।

হেমন্তকুমারী দেবী

বিগত ১১ই বৈশাধ ১৩৬৬ সাল (ইং ২৫শে এপ্রিল ১৯৫১)
শনিবার সকাল ৫।৪৫ মিনিট সমরে খগাঁর কুফলাল বাগ্টার সহধর্মিনী
হেমস্কুমারী দেবী তাঁহার ৭ নং চৌরলী টেরেস্ছ বাসভবনে
সজ্ঞানে সাধনোচিত ধামে গমন করিরাছেন। মৃত্যুকালে তাঁহার
বরস ৭৮ বংসর হইরাছিল। ইনি জীরামপুরের স্থনামধক্ত
জমিনার ঘগাঁর নন্দলাল গোখামীর কনিষ্ঠা কলাও ঘগাঁর রাজা
কিশোরীলাল গোখামীর জাতুম্পুত্রী ছিলেন। ইনি ধার্মিধা,
দানশীলা, পরোপকারিনী ও ভক্তিমতী ছিলেন। গৃহিনী হিসাবে
ইনি আদর্শহানীরা ছিলেন। বছ ছুঃছ্ পরিবার তাঁহার নিকট
নির্মিত সাহাব্য পাইত। মৃত্যুকালে ইনি ভিন পুত্র, জিন কলা,
হই জামাতা, পোত্র, গোত্রী, দোহিত্র, দোহিত্রী ও বছ জান্ধার-খজন
রাগিতা গিতাছেন। আমহা তাঁহার কাপ্রার স্পৃত্যন্ত কামন। কবি



মাসিক ৰন্তমতী (本) ॥ देखाई २०७७॥

—শ্ৰীমহিতোৰ বিশ্বাস অক্কিত



৩৮শ বর্ষ—ক্রৈচ্চ, ১৩৬৬]

॥ স্থাপিত ১৩২৯॥

প্রথম খণ্ড, ২য় সংখ্যা

कशाभृज

গ্রীক্রী: মিরুফ পরমহংসদেব ভাঁহার দিব্যোশাদ অবস্থার কথা শুরণ করিয়া আমাদিগকে কত সময়ে বলিয়াছেন—"আধ্যাত্মিক ভাবের প্রাংল্যে সাধারণ জীবের শরীর-মনে এরপ হওয়। দূরে খাকুক উহার এক-চতুর্থাংশ বিকার উপস্থিত হ**ইলে শরীর ভ্যাগ হয়। দিবা-রাত্রি**র অধিহাংশ ভাগ, মা'র কোন না কোনকপ দর্শনাদি পাইরা ভূলিয়া থাকিতাম তাই রক্ষা, নভুবা (নি 🖷 শরীর দেখাইয়া) এ খোলটা ধাকা অসম্ভব হইত। এখন হইতে আহত হইয়া দীৰ্ঘ ছয় বংসৰ কাৰ তিৰমাত্ৰ নিজা হয় নাই! চকুপলকণ্ৰ হইয়া গিয়াছিল, সময়ে সময়ে চেষ্টা করিয়াও পলক ফেলিতে পারিতাম না! কত কাল গত হইস, ভাহাৰ জ্ঞান থাকিত না এবং শ্রীর বাঁচাইয়া চলিতে চইবে এ কথা প্রার ভূলিরা গিরাছিলাম। শরীরের দিকে বধন একটু-আগটু দৃষ্টি পড়িত তথন উহার অবস্থা দেখিয়া বিবম ভর হটত; ভাবিতাম, পাগল হইতে বসিয়াছি নাকি? দৰ্শণের সমুৰে দীড়াইয়া চক্ষে অসুলি প্ৰদান পূৰ্বক দেখিতাম, চকুৰ পলক উহাতেও পড়ে কি না। ভাহাতেও চফু সমভাবে পদকশ্ভ হইয়া ধাকিত! ভরে কাঁদিরা কেলিভান এবং মাকে বলিভান— মা, তোকে ডাকার ও তোর উপর একা**ন্ত** বিখাস নির্ভর করার কি ^{এই ফস হ'ল ?} শ্রীরে বিষম ব্যাধি দিলি ?' আমাবার প্রক্রণেই বলিতাম, 'তা বা হবার হকুগে, শ্রীর বার বাক, ভূই কিন্ত আমার ছাড়িন নি, আমার দেখা দে, কুণা কর, আমি বে মা তোর পাদপল্পে

একান্ত শবণ নিষেছি, তুই ভিন্ন জামার বে জার জন্ত গতি একেবারেই নাই!' একপে কাঁদিতে কাঁদিতে মন জাবার জন্তুত উৎসাহে উত্তেজিত হইয়া উঠিত, শ্রীরটাকে জন্তি ভুক্ত হের বলিয়া মনে হইত এবং মা'র দশন ও জন্তুয়বাণী তানিয়া আখন্ত হইতাম!"

শীত্রীজগন্মান্তার অচিন্তা নিয়োগে মথ্ব বাবু এই সময়ে এক দিন ঠাকুবের মধ্যে অভুত দেবপ্রকাশ অবাচিতভাবে দেখিতে পাইরা বিশিত ও স্তান্তিত হইরাছিলেন। কিরপে তিনি সেদিন ঠাকুবের ভিতর শিব ও কালীম্তি সন্দর্শনপূর্বক তাঁহাকে জীবস্ত দেবতাজ্ঞানে পূজা করিয়াছিলেন, তাহা আমরা অক্তর বলিয়াছি। ঐ দিন হইছে তিনি বেন দৈবিজে প্রভাবে ঠাকুবকে ভিন্ন নয়নে দেখিতে এবং সর্ববা ভিন্ত-বিশাস করিতে বাধ্য হইরাছিলেন। ঐরপ অঘটন ঘটনা দেখিয়া প্রপাঠ মনে হয়, ঠাকুবের সাধকজীবনে এখন হইতে মথ্বের সহায়তা ও আয়ুকুল্যের বিশেষ প্রয়োজন হইবে বলিরাই ইচ্ছামরী জগন্মতা তাঁহাদিগের উভরকে অবিচ্ছেত প্রেমবন্ধনে আবদ্ধ করিয়াছিলেন। সন্দেহবাদ, অঙ্বাদ ও নাজিক্যপ্রবিশ বর্তমান যুগে ধর্ম্মানি দ্ব করিয়া জীবন্ত অধ্যান্ধশক্তি সাক্রমণের জন্ত টাকুবের শরীর-মনরূপ বন্ধটিকে ঐপ্রীক্রপদ্যা কত বড়ে ও কি অভুত উপার-অবলম্বনে নির্মাণ করিয়াছিলেন, ঐরপ ঘটনা সকলে ভাহার প্রমাণ পাইরা স্তম্ভিত হইতে হর।

का भी गेरिक श्रेष्य की बर्क व मूं । कि की भी

ভক্তর অবিনাশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

ত্যুগ শহাকী অভিক্রান্ত চইতেছে। ১৯১১ অক্ষের কুলাই মাসের শেষ দিকে আর্মানির হালে বিশ্ববিভালরের কেমিক্যাল ইনষ্টিটিউট গ্রীত্মের দকণ বন্ধ হইলে আমি আমার অধ্যাপক প্রফেরর ডেইর ক্রেল্যাপ্রারের (Vorlander) নিকট চইতে একখানা পত্র লাইর ক্রেল্যাপ্রারের (Vorlander) নিকট চইতে একখানা পত্র লাইরেটিইটের লাইবেটিরীতে অধ্যাপক ক্রেগ্টল্যাপ্রার (Voegtlander) আমাকে বিভিন্ন প্রকার প্রপনিবেশিক পদার্থ—হথা চা, কফি, কোকো, হৈলবীক্ষ, লাক্ষা এগং সেই সকল উৎপাদনের উপধানী মাটি পরীক্ষার অভিজ্ঞতা অর্জনের স্করোগ প্রদান ক্রেন।

ঐ সমধে হামবুর্গে আমার পরিচিত কেই ছিলেন না। একস হালের ভারত-হিতিষ্থী মহিলা গেখিকা ফ্রাইন্ডানা মেরী সিমন (Frau Anna Marie Simon) জানার ভলিনীপতি হার নিদেমায়ারের (Herr Niedemayer) নিকট একথানা পরিচর্মনার দিয়া দেন। হারে নিদেমায়ার তংকালে কলিকাভার জার্মাণ এশিরাটিক ব্যান্ধ (Deutsche Asiatische Bank, বাহা কলিকাভার ডাট এশিরাটিক ব্যান্ধ নামে বর্ণিত হইক), স্রোডার শ্বিথ (Schroeder Schmidt) প্রভৃতি ব্যবদা প্রতিষ্ঠানের সঙ্গে সংশ্লিষ্ঠ একজন প্যাতনামা ব্যবদারী ছিলেন। জাহার সহিত সাক্ষাতে তাঁহার এবং জাঁহার বিদ্ধী পত্নীর উদার মধুর বাক্যালাপ ও আদর আপ্যারনে আমি সবিশেষ মুগ্ধ হই এবং জাঁহাদের অনুবোধে তৎপরে সন্তাহে তৃ-একবার তাঁহাদের সঙ্গে আকোনোয় কানা বিষয়ে জ্ঞানগান্ত করিতে সক্ষম হই।

ছার নিদেমারার করেক দিন পর জামাকে সইয়া জার্মানির প্রেষ্ঠ ধ্রীমার কোম্পানী চামবুর্গ-আমেরিকা লাইনের জেনারেল ম্যানেজার হার জালবার্ট বালিনের বার্টাতে বাইয়া তাঁহার সঙ্গে পরিচিত করেন, হার বালিন জার্মানীর একজন বিরাট কর্মনীর পুক্ষ ছিলেন। জার্মানীর সাম্রাজ্য বিস্তৃতি, ছার্মাণ ভারধারার স্প্রসার, এবং শক্তি ও সম্পন বৃদ্ধি করার জন্ত জহার্নিশি কার্ম করিজেন। তিনি প্রীতিপ্রকৃত্র হানরে জামাকে সম্বর্ধনা করিলেন এবং প্রথম সাক্ষান্তেই তাঁহার পত্নী এবং একমাত্র পালিতা ক্যার সঙ্গেলও পরিচয় করাইয়া দিলেন। এরপ একজন আভিজ্ঞাত্য গৌরবের অধিকারী সাম্রাজ্যবাদী পুক্ষ দীনা ভারতমাতার একটি দীনতম ছাত্রকে কেন এক সৌরজ্য প্রদর্শন করিজেন, ভাহা তথন উপলব্ধি করিছে পারিলাম না।

প্রত্যাবর্তন কালে গাড়ীতে হার নিদেমায়ার বলিলেন, ছার বালিন প্রাচ্যের পরপদানত জাতি সমূহের ওরণদিগের সঙ্গে নিয়তই সাগ্রহে মেলামেশ। করেন। তাঁহাদের ছঃখ-দৈন্তের প্রতি তিনি সবিশেষ সহায়ুভূতিশীল। তাঁহার বাটাতে চীন, মিশর, ইন্দোচীন, জাভা, স্মাত্রা এবং অভান্ত দেশের বিভার্থী, ব্যবসা প্রতিনিধি এবং সর্বপ্রেমীর লোকজন আগমন করেন। তিনি তাঁহাদের পিতৃভূমির অবস্থা সম্বন্ধে জ্ঞান অর্জন করেন এবং কি ভাবে দেশের মঙ্গল হইতে পারে, সে-সব বিষয়ও আলোচনা করেন।

সংগ্রই এক দিন নিদেষায়ার তাঁহার গাড়ী নিয়ে অপরাহু ৪টার

ল্যাবরেটারী ছুটি হওরার প্রাক্তালে বাইড়া স্থামাকে লইড়া বালিনের বাটাতে উপস্থিত হইলেন।

ল্যাবরেটরী হইতে বালিনের বাটা নিকটেই, শহরের মধ্যস্থলে।
আলষ্টার হ্রংদর ভীরে আলষ্টারডাম (বর্তমানে 'বালিনডাম') নামক
স্থবমা স্থানে অবস্থিত।

চা ও অলবোগের পর হার বালিনই আলোচনা আছে করিলেন, রাত্রি ৮টা পর্যন্ত বিভিন্ন বিহয়ের অবতাবণা করিলেন। প্যারিদে গ্রামাজী কুফার্য্মা, ম্যাডাম কামা, বীরেন্দ্রনাথ চটোপাধ্যার প্রভৃতি বিপ্লবিগণ সম্বন্ধেও বিবিধ তথ্য জানিবার অক উদ্গ্রীব হইলেন, কিছ আমি বাহা উত্তরে বলিলা্ম, তিনি তাহা হইতে সঠিক তথাই অবগত ভিলেন।

সাধা ভাজেও ফ্রান্ট বাসিন আমাদিগকে আণ্যান্তিত করিলেন। বহু পুরহ গান্ধনৈতিক বিষয়ের আলোচনার বাত্রি ১১টা বাজিরা গেল। আমি বিশেষ ভাবে উপলব্ধি করিলাম বে, তিনি জাতীয়ভাবাদী ভাবতীয় দল গঠনের প্রযাসী। হার নিদেমারার গাড়ীতে বলিলেন বে, হ্লার বালিন নব্যতুকী নারক এনভার বে (পরে পাশা), মিশরের জাতীয়ভাবাদী ফরিদ বে এবং অভাত দেশের মুক্তিকামী যুবকগণকে আর্থ ও অল্পন্ত দিরা সাহায় করেন। আমরা ভারতীয়গণ বদি গোপনে ভারতে কিছু অল্পাদি প্রেরণ করিতে অভিলামী হই, ভবে তিনি হার বালিন হইতে সাহায্য লইয়া ব্যবস্থা কবিতে পারেন।

ঐ দিনের আকোচনার পর হইতে হার বালিনই আমাকে ল্যাংবেটরীতে ফোলে উাহার বাটীতে বাইবার ছত্ত অনুবোধ করিলেন।

স্থাই ত্রিপোলী নিয়ে ইটালী তুরস্থকে আক্রমণ করিল। বার্দিন আমাকে জিজানা করিলেন, ইহাতে ভারতীয় মুসলমানগণের উপর কিরপ প্রতিক্রিয়া চইবে ? তাঁহার সঙ্গে আলোচনায় জ্ঞাত হইলাম বে গেট বুটেনই ইটালীকে এই কার্বে প্রবাচিত করিয়াছে বেন জার্বাণী হু দিক রক্ষা করার চেষ্টায় বে-কায়দায় পড়ে, ইটালীর সঙ্গে জার্বাণীর মিত্রতা আবার নব্য তুকী দলকেও আর্বাণী স্থাঠিত করিতেছে, এই বুদ্ধে জার্বাণী হয় ইটালীকে নয় তুরস্থকে ত্যাগ করিতে বাধ্য হইবে। বালিন ও নিদেমায়ার ইংরাজ এবং ফ্রাসীর ছুই শভ বংসরের ইত্যাকার রাজনৈতিক আ্রিপিডেরে বিক্তরে তীব্র মন্তব্য করিলেন, আমার মনে হইল বেন তাঁহার। উক্ত তুই জাতির প্রোগ্য ধর্ব করার জন্ত বে কোন পথা অবস্থন করিতে প্রস্তুত্ত প্রভাতর প্রাণায় ধর্ব করার জন্ত বে কোন পথা অবস্থন করিতে প্রস্তুত্ত প্র

ভার বালিন ছিলেন জার্মাণ নেভি লীগের উৎসাহী পৃষ্ঠপোষক এবং পৃথিবীতে জার্মাণ-প্রভাব বিভার সমিভির প্রেসিডেউ। জাভিডে তিনি ইছদী ছিলেন। কিছু জার্মাণ কাইজারের জন্তবন্ধ বন্ধু ছিলেন। কাইজার তাঁহাকে মন্ত্রিভাবে ক্যাবিনেটে গ্রহণ করার জন্ত পূন:পুন: ক্ষেমা করিয়াও সফল হন নাই। তিনি সর্বদাই বলিভেন বে, তাঁহার দীনসেবা পিতৃভূমি এবং কাইজারের জন্ত আমরণ অব্যাহত থাকিবে। সেইরুপই ছিল। প্রথম মহাযুদ্ধের শেষে কাইজার সিংহাসন ভ্যাগ করিয়া হল্যাওের ভাষাবান্ধন (Amarongen)

চলিয়া গিরাছেন—এই সংবাদ প্রচারিত হওরা মাত্র তিনি বিভলবাবের গুলীতে আত্মহত্যা করেন।

১৯১১ অব্বের সেপ্টেম্বর মাসে তিনি একদিন মিশ্বের ফবিদ বে ও অক্স কয়েকজন মিশরীয় ব্বকের সঙ্গে আমাকে পরিচিত করেন। রামবৃর্গে তথন মনিষ্ট (Monist) কংগ্রেদ হইতেছিল। তুই জন আইবিশ বিপ্লবীর সঙ্গেও তিনি আমাকে আলাপ-আলোচনার স্বরোগ দেন। ঐ কংগ্রেদ উপলক্ষে বেমন শান্তিকামী এবং 'এসপারেক্টো' (Esperanto) ভাষা প্রচারকামী সদস্যগণ উপস্থিত ছিলেন, তেমনই নানা দেশের বিপ্লমীবও আগমন হইমাছিল। স্থার বালিন একদিন মনিষ্ট নামক বিশ্ববিধাত প্রফার আর্থেছিল। স্থার বালিন একদিন মনিষ্ট নামক বিশ্ববিধাত প্রফার প্রায়রনিক গুরুভান্ত (Ostwald) প্রভৃতি প্রায় ৫০ জন প্রতিনিধিকে সাদ্ধ্যভোজে সম্বর্গিত করেন, ভাষতে দেশবাদী ভাবিল বালিন শান্তিকামী হইতেছেন।

ত্রিপোলীর যুদ্ধ

ত্রিপোলীর যুদ্ধ সম্পর্কে হার বালিন অভ্যন্ত উৎকৃতিক চইরাছিলেন। নব্য তুকী দল (Young Turks) বিছুত্তেই ত্রিপোলী ইটালীর হল্পে সমর্পণ করিতে সম্মত ছিল না। এই সমরে দিল্লার ডক্টর আনসারী (পরবর্তীকালে মহাত্মা গাদ্ধা বাঁহার বাটাতে প্রার্ম: আগ্রর গ্রহণ করিতেন) ত্রিপোলী যুদ্ধ লইরা মুদ্দদান সম্পারর মধ্যে বিজ্ঞাত স্প্তীর চেট্টা করিতেছিলেন। ইচা অবগত হইরা হার বালিন বিশেষ উল্লানত হইলেন। কারণ আনসারী তুরস্কের আহত সৈনিকগণের সেবার ক্রম্ম "রেড ক্রিসেন্ট সোনাইটি" গঠন করিয়া অর্থ সংগ্রহ করিতেছিলেন। ভারতের প্রাক্তন বিক্লামনী মোলানা আবুল কালাম আকাদ ইটালীর বিক্লাক এমন কি ইংবাজ নীরবে ইটালী কর্তৃক তুর্দ্ধের অবমাননা সহ করিতেছিলেন বলিয়া ইংবাজদের বিক্লাক্ত আলামরী স্কৃত্যা দিয়া ভারতের মুদলমানদিগকে "রোমের বাদশাহের" রাজ্য রক্ষা করিতে উদ্বন্ধ করিতেছিলেন।

ভারতীর মুস্পমানপণ জুরক্ষের সাহাব্যার্থ একদল ক্ষেত্র শৈকিক প্রেরণের দিছাত্ত করিলে ভারত সন্তর্গমেন্ট তাহাদের নিরপেক্ষতা ভক্ত হইবে বলিগা তাহার উজোগ বন্ধ করেন। ইহাতে ছানে ছানে মুদলমানগণ বিশেব উত্তেজিত হয়। এই সকল সংবাদ লগু:নর সংবাদপত্তে পাঠ করিয়া হার বালিন বিজ্ঞাসা করেন বে মুস্পমান সম্প্রায় হইতে ইংরাজ-বিরোধী দল গঠনের মত যুবক সংগ্রহ করা সন্তর্গর কি লা।

বালিনের বন্ধত-ক্ষয়তী ১৯১২ অব্দে বালিনের ইংমবুর্গ আমেরিক।" লাইনের কর্তৃ ওভার গ্রহণের ২৫ বংসর পূর্ব হয়। এই উপলকে তাঁহার সহকর্মী, বন্ধু বাদ্ধর ও ওভারুধ্যারিগণ একটি বন্ধত-ক্ষয়তী অয়ৣয়্রান করিতে উজ্ঞাসী হন। স্থার বালিন এই কার্বে প্রতিনিবৃত্ত হইতে বিশেষভাবে অমুবোধ করেন, কিছু উজ্যোগিগণ ভাবিলেন বে, ইহা মামুলী সৌজ্ঞ প্রকাশ মাত্র। ভাঁহার। সোৎসাহে কার্বে প্রবৃত্ত হইলেন এবং জার্মাণ কাইজারকেও উৎসবে উপস্থিত সইতে সম্মৃত করাইলেন। বাব বালিন অভি বিনীত ভাবে এই অবাহিত ব্যাণার হইতে

ভাঁহাকে মুক্তি দিবাব ভব্ত কাইজাবের নিকটও নিবেদন করিলেন। কাইজার তথন গাঁহাকে হর্ত্ত:এণীভূক্ত করার প্রস্তাব ফন" (Herr Von) উপাধিতে ভূমিত করার প্রস্তাব দিলেন। বালিন সম্মানে তাহা হইতে অব্যাহতি দিবার জন্ত প্রার্থনা জ্ঞাপন করিয়া কাইজারের মটোগ্রাম সহহিত একথানা কটো পাইবার আকাষ্যা জ্ঞাপন করিলেন। দেশ্বাসী তাঁহার এই বিনত আচরণে ক্রুক্ত হটলেন।

জুবিলী উৎসবের অন্বর্গান্তাগণ কিছুতেই উৎসবের আয়োজনে বিবত হইলেন না। কিছু অকুমাৎ ভাঁহাদের সকল উল্লোগ আয়োজন বার্থভায় পর্যাবদিত হইল। হার বালিন ভাঁহার স্ত্রীও ক্লাসহ একখানা ছোট সমুজগামী ভাগাজে চড়িং। জ্জাত পথে যাত্রা কবিলেন। এক পক্ষকাল উতাদের কোন সংবাদ দেশবাসী পাইল না। উৎসবের নির্দিষ্ট দিন অভিক্রোন্ত হওয়ার ১০ দিন পর জার্মাণীর তৎকালীন সংবাদ সরবরাহ প্রতিষ্ঠান উলক্ষ ব্যুরো' প্রচার কবিল বে হার বালিন হামবুর্গে প্রভ্যাবর্তন কবিয়াছেন।

তিনি গৃহে উপনীত হইয়া পুনরার এক বিনীত টেলিপ্রামে কাইজারের নিকট ক্ষমা প্রার্থনা করিলেন। এই নিরাড্যর আল্বাট বালিন।

গুপুদল পঠনের প্রস্তাব

অক্টোব্রের প্রথম দিনেই হার বালিন এবং হাব নিদেমায়ার পরিষার ভাষার বলিলেন যে যদি আমি কভিপয় ভারতীয় বন্ধুসহ একটি গুপ্ত দল গঠন করিতে প'বি, তবে তাঁছারা কোন কোন ধনী বাজিব নিকট চটতে অর্থ সংগ্রন্ত কবিয়া আমাদিগকে সাভাষা কবিতে পাবেন। এমন কি, জ্ঞাদি প্রেরণ করিবারও ব্যবস্থা ক্রিছে পাবেন। কিছু আমি উৎসাহ অপেশন ক্রিলাম না। কারণ ১৯০৬ আন্ধে অভি নগণ্য কারণেই তংকালীন 'গোলামধানা' স্থলে ধৰ্মবট ৰাধাইয়া ছাত্ৰজীবনে বহু লাঞ্চনা গঞ্জনা সন্থ ক্রিয়াছি। পঠনমূলক কার্বের মধ্যে বছাপ্লাবিত অঞ্লে ভিক্লালত্ত থাত বিভয়ণ, সন্ধান সমিতি ও জাতীয় বিভালয় ভাপন কংিয়া অবশেষে সহকর্মী ও অর্থের অভাবে দারুণ অশান্তি ভোগ করিয়াছি। সর্বশেষ নিজের উল্লভিসাধন মূলমন্ত্র লইয়াও কত ৰাধা বিপণ্ডি ক্রিয়া জাঠ ভাতাগণের বক্তসম অর্থ লইয়া জার্মাণীতে আসিয়াছি। বিশ্ববিভালয়ে ওতি চইয়া শিক্ষার দিকে আশাতীত সাক্ষ্যান্ত লাভ কৰিয়াছি। আশা ও আকাশা 'ভক্টৱেট' লাভ কৰিয়া म्मा व्यक्तांवर्शन किवत, श्रव माना देवल्लाविक कार्य एकारवाक्तांव নিযুক্ত হইলে নিজের ও পরিবারের প্রতি দারুণ বিশাস্ঘাতকভা করা চটবে, সুত্রাং জামি ইডস্কত করিলাম।

১১২২ অব্দে আমার বাচনিক অন্ত্রপপ্ত প্রেরণের স্থবোগ স্থবিধার বিষয় অবগত হটয়া অন্ত করেক্তন জাতীরভাবালী বধা দাদা চাঞ্জী কেবাসাম্পা, জ্ঞানেল্ডচন্দ্র দাশগুণ্ড প্রমুখ জার বালিনকে পত্র দিতে বলিলেন। বালিন তাঁহাদের আকাত্মা মতে করেক্টি প্যাকেট বিভলবার ও শিক্তন ভারত উপকৃলে প্রেরণের ব্যবস্থা ক্রিলেন। লে সকল কলিকাভার প্রোভার সিধ কোম্পানীর বেনিয়ন ব্যানগরের নারারণচন্দ্র দত্তে আন্মোরতি সমিতির সমস্ত প্রভাসচন্দ্র দেব (বি, এ) প্রযুধ সদস্যগণকে দিরাছিলেন।

কিন্তু তথন দেশের অবস্থার অনেক পরিবর্তন ইইয়াছে।
বঙ্গের অঙ্গজ্ঞেদের প্রতিকার ইইয়াছে। স্মতরাং প্রকৃত বিপ্রবিগণ
ব্যতীত সাধারণ স্বদেশক্মিগণ বৈপ্রবিক কার্ষের দিকে দৃষ্টি দিবার
আকান্দা পরিত্যাগ করিলেন। নেতৃত্বল তাঁহাদের আলোলনের
ফলেই যে বুটিণ জান্তিস মাটি ফুড়িয়া বাহির ইইয়াছে, তাহার
প্রচার করিভেছিলেন। বদিও স্বর্গার মতিলাল ঘোষ সম্পাদিত
অমৃতবালার পত্রিকা ভাজা বাংলা জোড়া দেওয়াকে বাংলার
পূর্বার অঙ্গছেদ (Re-partition of Bengal) বলিয়াই
দৃচ্কঠে অভিমত প্রকাশ করিতেছিল, তথাশি ধারপত্বী নায়কগণ
সবিলেয আনন্দ প্রকাশ করিতেছিলেন। স্বদেশী যুগের উগ্র
সঞ্জীবনী পত্রিকা পাঠে সপ্তাহের পর সপ্তাহ লও হাডিজের সদর
ব্যবহারের দুটাস্ক ভাত ইইতাম।

লর্ড হাডিঞ্জ ভারতের ধীরপন্থী নারকগণকে নানা ভাবে পকেটভার করার প্রবাগ দিভে লাগিলেন। তার আশুতোর মুখার্জী বিশ্ববিজ্ঞালয়ের ফুলারী আমলের বহিন্দুত ছাত্রনিগকেও ভভি করিয়া লইলেন, জাতীয় বিজ্ঞালয়ের অধ্যাপকমণ্ডলীর মধ্যে আনেকেই শিক্ষা বিভাগে কর্ম সংখান করিতে সক্ষম হইলেন। প্রতরাং আপাতদৃষ্টিতে মনে হইল, দেশে শান্তির হাওয়া বহিতেছে। বিপ্লববাদী বা উগ্রপন্থী বন্ধুগণও পত্রে আনাইলেন যে, দেশের পরিবর্তন হইয়াছে, প্রতরাং আধিক সংখ্যক প্যাকেট অস্ত্র ভারতে প্রেরণ করা হইল না।

চীনে রাষ্ট্রবিপ্লব

১৯১৩ অবে চীনে নব্যচীন দল ভক্তর সান ইয়াৎ সেনের নায়কছেই প্রথম রাষ্ট্রবিপ্লব চালাইতেছে, এই সংবাদ পাইয়া আমরা উল্লাসিত হইলাম, ভাবিলাম "দিন আগত ঐ", এশিয়ার কালঘুম ভঙ্গ হইবে, কোটি কোটি নরনারীর মহাদেশ গাঝাড়া দিয়া উঠিবে, হয়ত বা এই গা ঝাড়াতেই ভাবতবর্ষত নড়িয়া উঠিবে।

সহসা আমাৰের পৃঠপোবিকা ভারত-হিভৈষিণী ফ্রাউ দিমন আমাকে ফোনে আহবান কবিলেন । তাঁহার বাটাতে উপস্থিত হইলে ভিনি তাঁহার ভগিনীপতি হার নিদেমায়ায়ের এক পত্র দেখাইলেন. পত্ৰ বিশেষ জক্ষী, স্বামাকে পথৰৱচ দিয়া স্ববিসংস্থ হামবুৰ্গ পাঠাইবার নির্দেশ ভাহাতে বহিয়াছে। আমি প্রদিন প্রথম গাড়ীতেই হামবুৰ্গ ৰাত্ৰা কৰিলাম। বুৰা ফ্ৰাউ দিমন ট্ৰেণ ভাড়া ব্যতীত হোটেল চার্জের জন্ত অর্থ দিয়াছেন, নিদেমায়ারকে একথানা টেলীও করা হইরাছে, অপরায় ২টার হামবর্গ ষ্টেশনে পৌছিয়াই বিশ্বয়-বিক্ষাবিত নেত্রে লক্ষ্য কবিলাম যে, প্লাটফর্মে হার নিবেমায়ার স্বয়ং উপস্থিত। তিনি 'আলষ্টারডামে' হার বালিনের বাটীতে আমাকে লইয়া গেলেন। স্থার বালিন অগোণে বাধকমে বাইয়া আমাকে হাত-মুখ ধুইয়া আসিতে বলিলেন, তারণর টেবিলে ষ্ববাহ্ন ভোজনের খাত্ত পরিবেশন করাইলেন। হ্যার বালিন বাতীত তথার অন্ত এক ব্যক্তি উপস্থিত ছিলেন। পোবাকে মনে ছইল 'লেডি অফিয়াব'—নাম গেয়স বাওৱাব। তাঁহাবা ভিন জন 🕶 ফেনিল বিয়ার পান করিতে লাগিলেন।

স্থার বালিন বলিলেন বে, এক অভাবনীয় স্থবোগ উপস্থিত।

চীনের বিপ্লবের অভিজ্ঞতা অর্কনের অন্ত করেকজন আইরিশ বিপ্লবী চীনদেশে বাইতেছেন, আমরাই প্রেরণের ব্যবস্থা করিছেছি। আপনি এ সমরে ছই-চারি জন বন্ধুসহ তাঁহাদের সহবাত্রী হইলে বিশেব ভাবে বিপ্লবের জ্ঞানসাভ করিতে পারিবেন, এ অন্তই আপনাকে আহ্বান করা হইরাছে।

তিনি আরও আনেক কথা বলিলেন। এমন কি, ভাষার অস্মবিধাও বে কিছু নয়, কারণ নব্যচীনের কর্মবীরগণ ইংরেজী এবং জার্মাণ ভাষার দক্ষ; তাহাও বলিলেন।

বালিনের প্রস্তাব শোনামাত্র জামার শবীর কাঁপিয়া উঠিল, আমি কঠোর পরিশ্রম করিয়া ইউনিভাগিটির অংকাশকাল পর্যান্ত ল্যাংরেটরীতে কাজ করিয়া আমার গবেষণা প্রায় সম্পূর্ণ করিয়া আনিয়াছি। আশা করি, ১১১৪ একেই পরীকা উত্তীর্ণ হইয়া বহু-আকান্তিত 'ডুকুর' উপাধি লাভ ক্ষিতে সক্ষম হইব। এই সময়ে আমি অক্তাৎ সৰ বন্ধ কৰিয়া চীন ধাতা কৰিব ? আমাৰ খাছ এবং ছুবি-কাঁটা ক্ষচল হইল। মুহুর্তে ভাসিয়া উঠিল আমার চকুত সমক্ষে বিপুল ক্ষেত্তের আধার আমার বৃদ্ধ শিতৃদেবের সৌম্য মৃতি, অন্তরে জাগিয়া উঠিল ভাঙাও ভ্রাতৃবধুগণের সাঞ্চনরনে বিদাহদানের করুণ দুগু। বাল্যকাল হইতেই আমি ছিলাম অস্হিষ্ণু, উচ্ছুখান এবং বিচারবৃদ্ধিবিবজিত অর্কাটীন। বধন জ্ঞান লাভের সময় ভখন জ্ঞান বিস্তাবের জন্ম বার্থ চেষ্টা করিয়া নিজের জ্ঞানভাণ্ডার শুক্ত রাখিয়াছি। আবার, কি উন্মাদ হইব ? আবার কি আত্মীয়-মঞ্জন সকলকে হতাশ করিব ? আমার পিতৃতুল্য অধ্যাপক আমার গবেষণা পরিচালনা কার্যে নিভ্য উৎসাহ দিয়া আমাকে অগ্রসর করিতেছেন। আমিই তাঁহার প্রথম হিন্দু ছাত্র (ভারতীয়)। আমা হারা তাঁহার গৌরব বৃদ্ধির আশা তিনি পোষণ করেন, উ'হাকেও প্রভাবিত করিব ?

না, কিছুভেট না, আমি অসমত হটলাম, পরিভার বিনীত ভাষায় বলিলাম, 'আমা হতে এই কর্ম হবে না সাধন।'

আমার আরও একটি কথা যুগণৎ মনে উদয় হইল, তাঁহারা কি আমাকে গুপুচরে পরিণত করিতে প্রানী? আমার দেশসেবা, দেশমুক্তির কামনার কি এই দক্ষিণা?

ছার বালিন অন্বর্থামী। তিনি বলিলেন, হার ভটাচারির। আপনি নিশ্চিন্ত থাকুন, আপনাকে গুলুচববুলিতে নিমুক্ত করা আমাদের অভিপ্রায় নতে। বিপ্লবের সাক্ষাৎ জ্ঞান অর্জনের বন্ধ চাই। নায়কগণের নিকট আপনাকে প্রেরণ করিতে চাই। আই নৈ বন্ধুগণের বিশেষ অন্ধ্রোহেই আমরা এই ব্যবস্থা কবিরাছি। আপনি সেথানে আমাদের বিশ্বন্ত বন্ধুগণের সঙ্গে নিরাপদে থাকিতে পারিবেন, ইত্যাদি বহু কথা তিনি বলিলেন। আমি কিছুতেই সম্মত হইলাম না। আমি বলিলাম, সর্বাত্তে আমার 'ডক্টবেট' পাইতে হইবে, ইছার অক্তই আমার বিস্তৃত পরিবারের সকলে উৎক্তিত ভাবে অপেক্ষা করিতেছেন, তাঁহাদিগকে ১৯০৬ অব্দের মত অবিস্বাকারিতার পুন্রায় হতবুদ্ধি করা আমার পক্ষে মার্জনীর অপরাধ হইবে।

ছার নিদেমারার এ সমরে কথা বলিলেন। তিনি আমানের পরিবার, সমাজ প্রভৃতি সম্বন্ধে ফ্রাউ সিমনের নিকট হ^{ইতে} বিশেষ ভাবেই সকল তথ্য জাভ আছেন। ফ্রাউ সিমনের গৃহে ^{বৃহ} ভারতীর ছাত্র সম্বর্ধিত হইবাছে। তাঁহার বাটাতে ভারতীর ভোজ্যে বন্ধুগণ পরিভৃত্ত হইরা প্রশংসা করিবাছেন। ডক্টর জ্ঞানেক্রচক্ষর দাশপ্তর, ডক্টর বীরেক্রনাথ চক্রবর্তা, ডক্টর তুকারাম লাভড়, ডক্টর হরিশ্চক্র, অধ্যাপক গুনে, ডক্টর সোরাবজী, (ইনি পরে নাম পরিবর্তন করিরা ডক্টর ভারাপোরগুরালা নামে কলিকাতা বিশ্ববিভালরে অধ্যাপনা করেন) এমন কি বর্তমানে বম্বে ষ্টেটের গভর্বর প্রিপ্রকাশপ্ত সিমন-পরিবারে আমৃত হইরাছেন। প্রভরাং ফ্রান্ট সিমন বেমন আমাদের পারিবারিক বন্ধন বিবরে অভিজ্ঞ ছিলেন, নিদেমারার ভভটা না হইলেও কতকটা জ্ঞাত ছিলেন। তিনিই আমার পক্ষ ধরিয়া বালিনকে বুঝাইলেন। বলিনের আজ্ম হুই বংসর পর সম্ভবতঃ প্রতীতি হইল বে, আমার দেশপ্রেম প্রকৃত নহে। দেশোছারের চেষ্টা আমি বাম হস্তে করিতে ইচ্ছুক, দক্ষিণ হস্তু নির্ভই আম্মেন্তি ও পরিবারের উন্নতির জন্ম কর্মে রত থাকিবে।

নিদেমারাবের বাটাতে নৈশভোজন সমাপ্ত করিয়া রাত্রি ১১টার প্যাসেঞ্জার গাড়ীতে বাত্রা করিলাম এবং পরনিন প্রাতে ভটার হালে পৌছিলাম। হালে পৌছা পর্যন্ত আমার উদ্বেগ ঘুচে নাই।

তৎপরে হার বালিনের সঙ্গে আমার সকল সম্পর্ক ঘৃতিয়া গিয়াছে এরপই মনে হইতেছিল, কিছা গৃষ্টমাসে তাঁহার প্রীতিপূর্ণ পত্র পাইয়া মনে আবার আশার সঞ্চার হইল। অধ্যয়ন শেষ হইলে বালিনের সাহাব্যে অনেক কার্য উদ্ধার হইবে, এই কথাও মনে আগিল।

প্রথম মহাযুদ্ধ

১১১৪ অবদ প্রথম মহাযুদ্ধ বাবে। সে সমরে থিপ্লবী বীবেক্সনাথ চটোপাধ্যার জার্মাণীতে ছিলেন। তাঁহারই নেতৃত্বে আমবা বার্লিনে ভারতে বিপ্লব সংঘটনের জন্ম বে দল বাঁবি তাহার প্রেসিডেট পদে ছার বালিনকেই নির্বাচিত করা হয়। বালিন তখন বার্লিনেই ছিলেন। বীবেক্সনাথ সহ আমি ছার বালিনের সঙ্গে সাক্ষাৎ করিলে বালিন দীর্ঘকাল বীবেক্সনাথের সঙ্গে করাসী ভাবার আলোচনা করেন এবং সকল বিধরে তাঁহাদের সাহাব্য দেওয়ার প্রতিশ্রুতি দেন।

প্রভাবর্তন কালে বীরেজনাথ জিজাসা করেন বে, এই বিরাট প্রতিপত্তিশালী পুরুষের সঙ্গে কি ভাবে আমার পরিচর হইল। সকল বিবরণ শুনিয়া তিনি আমাকে ভর্মনা করিলেন। কারণ উহিারা প্রারিসে থাকিয়া দারুণ অর্থকট্রের মধ্যে কোন প্রকারে শামান্ত অন্ত্ৰশন্ত ভারতে প্রেরণ করিতে পারিতেন আর আমি স্থরোগ পাওয়া সত্ত্বও কিছু করিছে পারিলাম না, ইহা বে আমার পক্ষে পহিত অপবাধ হইয়াছে, ভাহা বলিলেন। ১১১२ ज्यस जामि বর্ধন প্যারিদে তাঁহার দলের সঙ্গে সাকাৎ করিতে যাই, তথন শামারই মত খার একজন সংসাধী বিপ্লববাদী সঙ্গে ছিলেন। তিনি মহারাষ্ট্র ছাত্র ভটর ভুকারাম কুফ লাড্ড্। বীরেন্দ্রনাথ ভধন অনুণাত্ত ছিলেন। ম্যাডান কামা, সদারসিংহ রাওজি বাণা, জ্ঞানটাদ বর্মা প্রয়ুধ করেকজন বিপ্লববাদীর সঙ্গে আলোচনা ক্রিয়া আমরা প্রভ্যাবর্ত্তন ক্রি। ভিনি বলিলেন, তথন বদি তোৰৰা ম্যাডাম কামাৰ নিকট হাৰ বাগিনেৰ প্ৰস্তাব ব্যক্ত কৰতে ^{তবে} শামরা করেকজন মধ্যাতকর্মী পাঠিরে এমন ব্যবস্থাই করতে

পাৰতাম বে, প্ৰচুৱ অল্পন্ত ভাৰতের বিভিন্ন উপকৃলে পৌছে আংগদের ভাৰতে অবস্থিত সহক্ষী দলের শক্তি বৃদ্ধি করতো।

ভিনি আমাকে ডক্টর উপাধি লাভের আকাতকার জন্ত নিকা করিলেন। এমন কি হেলার স্বর্ণ স্ববোগ নষ্ট করার অপ্রাধী এবং বিশাস্বাতক্ পর্যন্ত বলিয়া মুখ ভার করিলেন।

তিনি আমাকে কনিষ্ঠ ভাতার মত দেখিতেন, স্করাং তাঁহার বিষয়তা সম্বই কাটিয়া গেল।

স্থার বালিন আমাদিগকে সতর্ক কবিলেন বে তিনি বা আর্থেণ গভর্ণমেণ্ট আমাদের বিপ্লবী দল "ভারত বন্ধু জার্মাণ সমিতি"র পশ্চাতে আছেন, এই কথা বেন প্রচার না হর। কারণ কোন দেশেই গভর্নেট অন্ত দেশে বিপ্লব বাধাইবার চেটা করিতেছেন, ইহা জারসঙ্গত বিবেচিত হর না। বদিও প্রভাতে দেশই নিয়ত এরপ চেটা এক একটি তথাকথিত কমিটি ধারা করান, বেমন ইল্যোণ্ডের বান্ধান কমিটি। দিবারাতি বালকান রাজ্যে বিশ্বমালা ঘটাইয়া নিজেদের প্রভূত্ব বিস্তাবের চেটা করেন। প্রথম ও দিতীয় বালকান মুদ্ধে প্রতিনিয়তই বান্ধান কমিটির লর্জ বান্ধানের গতিবিধি সংবাদপত্তে প্রকাশিত ইইত। প্রথম মহামুদ্ধের প্রাঞ্জালেও তিনি বুলগেরিয়ার রাজধানী সোফিয়াতে বিপুল অর্থরাশি সহ উপস্থিত থাকিয়া বুলগেরিয়াকে জার্মাণীর পক্ষে যুদ্ধ ঘোষণা করিতে বাধা দিতেছিলেন। অবশেবে জার্মাণ বন্ধু জনৈক ভক্ষণ কর্ত্ত তিনি নিহত হইলে বুলগেরিয়া জার্মাণীর পক্ষ অবলয়ন করে।

মা-ঝ মাধ্যে বীরেজনাথ সন্তানিব রাও, ধীরেন সরকার (অধ্যাপক বিনয় সরকারের ভাতা) কেরসাম্প মনস্ব আংম্মদ এবং অক্তাক্ত সহক্ষী সহ আমি স্থার বাদিনের বাটাতে উপস্থিত হইতাম। তিনি ভারতে বিপ্লব স্টের সম্পর্কে নানারূপ প্রাম্প দিতেন।

আরল থের উপকৃলে তার রোধার কেইসমেন্ট (Sir Rojer Casement) রে সশস্ত্র যুদ্ধাহাক কইবা অবতহণের চেষ্টা করিরাছিলেন তারা বার্থ হয়। বিচারে কেইসমেন্টকে কাঁনী-বেজুতে প্রাণ দিতে হয়। তাঁনার সঙ্গে আর বাঁহারা ছিলেন তন্মধ্যে আমার পরিচিত ডে কুর্টিন (De-Curtin) নামক একজন বিপ্লবী ছিলেন বলিরা আমার ধারণা হয়। একজন ডে কুর্টিনকে আমি বার্দিনের বাটান্ডেই জানিতে পারিরাছিলাম। তিনি ছিলেন শতকরা ১০০ ভাগ দেশপ্রীতিপূর্ণ তাকরের অবিকারী। আমরা বার্লিন ভ্যাগ করার পূর্ব অকস্থাৎ এক মোটর ধাক্তায় তাঁচার সঙ্গে সাক্ষাৎ হয়। তিনি সহাত্যে বলেন, আপনারা রে পথের বাত্রী আমরাও সে পথের। আপনাদের গাড়ী এবং কুরিয়ার (Courier) আমাদের পরিচিত, কারণ বছবার এই গাড়ী আমরা পেরেছি।

আমাৰ দৃঢ়বিশাস এই বে, হার বালিন ভার রোজার কেইসমেণ্টকে অর্থ ও অল্পন্ত দিয়া সাহাব্য করিয়াছিলেন।

ভিনি আমাদের পরম হিতৈথী ছিলেন। ১৯১৯ জন্দে বুদ্ধর আবহাওরার পরিবর্তন হইলে আমি ফ্রান্ট বালিনকে এক পত্তে ভাহার মৃত আমীর প্রতি প্রজ্ঞা জ্ঞাপন করি। তিনিও একধানা পত্ত্র লিখিরা আমীর আত্মহত্যার কাহিনী জ্ঞাপন করেন। তিনি এবং তাঁহার পালিতা কলা উভরেই পরলোক গমন করিবাছেন। একটি মাত্র বিবাহিতা দৌহিত্রী বর্তমানে অধীরার ইল্ক্রুকে (Innabruck) আছেন। ইল্কুকে রাশিরার অধীন।

(नक्न प्र)-वाहरमन (हार

ডক্টর শম্ভনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়

(কলিকাতা বিশ্বিভালয়ের প্রাক্তন উপাচার্য্য)

বেকবাড়ী হস্তাস্থর প্রান্তীর ভিনটি দিক ব্যেছে: (১) আইনগত, (২) বাগুনৈতিক ও (৩) নৈতিক বা নীভিগত। প্রধমোক্ত বিষয় খেকে ছটি কথা ওঠে: (ক) ইছ। কি সীমানা পুনর্নির্ধারণ সংক্রাম্ভ একটি প্রশ্ন ? বদি ভাই হয়, সেক্ষেত্রে এর সমাধান নির্ভয় করবে রাডিক্রিফ ও বাগে রোয়েদাদের ব্যাখ্যার উপর। তবে একটি বিষয় স্পষ্ট—বাগে রোয়েদাদের পূর্বে পাকিস্তান এ ব্যাপারে কোন বিরোধ ভোলে নি। আলোচ্য বিষয়ে র্যাড্ক্রিফ বে রোয়েদাদ দেন, ভা বেশ পরিছার। পাকিস্তানের ৰদি বিশ্বাত্তও সন্দেহ থাকতো যে, তাৰ অঞ্চলৰ একটি আৰ ভারতে চলে গেছে, এ অবস্থায়ও দে বিরোধ তুলতো না, এমনটি ভাবাই বায় না। আমরা গ্রাম্য ইউনিয়নের প্রেসিডেন্টের বিবৃতি পেয়েছি। ইউনিয়ন প্রেসিডেন্ট হিসেবে সকল ব্যাপার্টা সম্পর্কেই এই ভদ্রলোক অবশ্র ওয়াকিবহাল খাকবেন। বিবৃতিতে তিনি বলেছেন যে, তিনটি পরিকল্পনা (১৯১৬,১৯২৩ ও ১৯৪৭ সালে রচিত) অমুসারে পাকিস্তানের এক একর জমিও ভারতের দ্ধলাধীন নেই। বাগে বোয়েদাদের আগে বেরুবাড়ী সম্পর্কে পাকিস্তান কেন কোন দাবী ওঠায় নি, সে প্রশ্নের জবাব এইখানেই রয়েছে। কোন বিরোধ ছিল না বলেই বাগের পক্ষে এ ব্যাপারে কোন সিন্ধান্তে আসার কারণ ঘটে নি। স্থতরাং বাগে রোয়েদাদের অস্তৰ্ভু ক্ত কোন বিষয় এ কখনই হতে পাৱে না।

(খ) সীমানা প্ৰবিকাপের প্রশ্ন বদি এইটি না হলো, ভা হলে এ নিশ্বরই ভারতভূমির একাংশ পাকিস্তানকে প্রত্যূপণের প্রশ্ন। গভ ৩০শে ডিসেম্বর বন্ধীর বিধান পরিবদে প্রশ্নটি মখন উত্থাপিত হয়, সে সময়ে পরিষদের একজন সদত্য হিসেবে আমি আমার অভিমত প্রকাশ করি। আমি বলি বে, ভারতের সংবিংগন অন্তসারে এরপ হস্তান্তর, চলতে শারে না। ভারতের কোন একটি অংশকে বিদেশী বাষ্ট্রের ছস্তে প্রভার্পণের অধিকার বাষ্ট্রপতি কিংবা প্রধান মন্ত্রীর নেই: এমন কি. এ কার্যা সম্পাদনের অন্ত বর্ত্তমান সংবিধান অনুবায়ী পার্লামেন্টও কোন আইন প্রণরনের অধিকারী নছেন। পরে অপর আইনজাবীদের প্রকাশিত অভিনত সংবাদপত্রে পাঠ করে আনন্দ পাই। ৩০শে ডিসেম্বর আমি যে বক্তবা পেশ কবি, জারা সফলেই ভার সংক্র একমত হন। আলিপুর বারের একজন অভিজ্ঞ ব্যবহারজীবী জাতুরারীর মাঝামাঝি আমার অভিংতেরই অফুরপ মত ব্যক্ত কংবন। পবে অভিজ্ঞ চাসম্পন্ন অক্সাক্ত আইনজ্ঞানের মুখেও একই অভিমন্ত প্ৰকাশিত হয়। এ প্ৰশ্নে আমরা কিছ একে আন্তের সাথে প্রামর্শ করি নি। অথচ আমাদের সব ক'লনার একই মত হয়ে খাড়ায় যাতে আমাদের ব্যক্ত অভিমন্তটি নিভূল হওয়ার সম্ভাবনাই প্রমাণিত হয়।

সংবিধানের তনং ধারার পার্লামেন্টের আইন প্রণাংনের অধিকার বিল্লেখন করা আছে। আইনের একটি স্থিদিত স্ত্র রয়েছে, ধার আই—বে আইন স্থান্টি, সেধানে নতুন কোন ভাষ্যের অবকাশ নেই। আইনের শাসনের ক্ষেত্রে পরিচার কথা বেটি, সে হচ্ছে—আইনসভা বেধানে সম্পত্তি সংক্রাম্ব ব্যাপার নিশান্তির এক বা ভতোধিক প্রতি ম্পাঠভাবে নির্দারণ করে দিয়েছেন, সেক্ষেত্রে উল্লিখিত স্থানিন্দিষ্ট গৃছতি ছাড়া অপর বে কোন পছতিই বর্জন করতে হবে বরাবর। সংবিধান বারা স্পাঠ ভাবে ক্ষমতাপ্রাপ্ত না হলে পার্লামেন্ট কোন আইন প্রণায়নে সক্ষম নহেন। ভারতের একটি অংশকে কোন বিদেশী রাষ্ট্রের হস্তে হস্তাম্ভরকল্পে আইন প্রণায়নের অধিকার সংবিধানে পার্লামেন্টকে দেওরা হবনি।

(২) রাজনৈতিক: ব্যাপারটি বেক্ষেত্রে ভারতের একটি আভ্যন্তরীণ সমস্তা, সে অবস্থার এর সমাধান থুব সহজেই হতে পারে।
ইহা বেশ প্রাপ্ত বে, নিজের শাসনতান্ত্রিক ক্ষমতা ও তথ্য সম্পর্কে ভাস্ত বিখাসের বশেই ভারতের প্রধানমন্ত্রী আলোচ্য চুক্তিতে আবদ্ধ হয়েছেন। তিনি ভাবেন বে, তাঁর ক্ষমতা হয়েছে, কিছা সংবিধান অসুসারে চলতে পারে—অবশু এ খুব একটা বেশিরকম কল্পনা, তর্ সংশ্লিষ্ট বাজ্যের আইন সভার মভামত না নিলেই নয়। আবার বলতে হয়, এই বিষয়টিও সংবিধানের ৩নং ধারারই অস্তর্ভুক্ত। প্রধান মন্ত্রী তাঁর ভাবণে বলেছেন বে, তাঁর ধারণা ছিল বে, এই হস্তাস্তরে পশ্চিমবঙ্গের সম্বৃতি রয়েছে।

অথচ আমাদের মুখ্য মন্ত্রী লগাই আনিয়েছেন বে, পশ্চিমবঙ্গ কথনই প্রতে সম্মতি দেয় নি এ বিবরে পাচিমবঙ্গ আইন সভার মতামত স্থাবিদিত। প্রকৃত প্রভাবে এখানকার আইন সভা এক বাক্যে উক্ত হস্তান্তরের বিবোধিত। আনিয়েছেন। এমনটি মনে করা চলে না বে, পাকিস্তানের তংকালীন প্রধানমন্ত্রী মি: নূন আমাদের সংবিধানের তনং ধারাটি সম্পর্কে ওয়াকিবচাল ছিলেন না। লগাই প্রতীয়মান হয় ধ আমাদের প্রধানমন্ত্রীর ক্ষমতা সম্পর্কে তিনিও তুল ধারণার বশব্রী ছিলেন। এই অবস্থাধীনে কোন চুক্তি ছলেও সেটি নাকচ হয়ে বায়। আয় সংশ্লিষ্ঠ পক্ষতলি এমন ক্ষেত্র আপন আপন দায়িত্ব পালনে অহীকার করলেও কাউকে দোষ দেওরা চলেনা।

এ ছাড়া আমার ধারণা—প্রধানমন্ত্রী একমাত্র অক্ররী অবছাতেই ভারতের নামে কাজ করতে পারেন। অন্তথা এরপ ক্ষেত্র উাকে পার্লামেটের মতামত গ্রহণ করতেই হবে। চুক্তি অমুষ্ঠানের পূর্বে ভারত সরকার ও পাকিস্তান সরকারের ভেতর পত্র-বিনিময় হয় নি, এমনটি কিছুতেই ভারতে পারা বায় না। আমি মনে করি, আলোচ্য প্রদাদক স্ব দেশের অভিমত জানবার জন্ত আমাদের প্রধানমন্ত্রী ও পাক্ প্রধানমন্ত্রীর হাতে সময় ছিল প্রচুর। বলতে কি, সংশ্লিষ্ট জনগণের মতামত না নিয়ে এ ধরণের একটি চুক্তিতে আহ্ব হওরার কোন জক্রী কারণই ছিল না আমাদের প্রধানমন্ত্রীর সামনে।

বলা হয়েছে বে, আমাদের প্রধানমন্ত্রীর চুক্তিটি বদি কার্যকরী করা না হয়, তাহলে আন্তর্জ্জাতিক ক্ষেত্রে ভারতের মর্য্যাদা ক্ষ হবে। আমি বৃথি বে, দেশের কল্যাদের মন্তামত নেবার সময় বেখানে নেই, সেক্ষেত্রে—অক্তাবে বলতে পেলে জক্তরী অবস্থায় ভারতের প্রধানমন্ত্রী ভারতের নাম করে বা কিছু করবেন, তা কার্যকরী করা আমাদের একান্ত কর্তা।' এ বিষয়ে সক্ষেত্রে বিন্দুমাত্র অবকাশ নেই।

প্রধান মন্ত্রী বদি বোষণা করেন বে, তথ্য ও আইন সম্পর্কে লান্ত ধারণা নিয়ে তিনি চ্জিটি করেছেন, সে ক্ষেত্রে আন্তর্জ্ঞাতিক মধ্যাদ: পূর হবার কি কারণ থাকতে পারে ? মান্তব মাত্রব হত্ত হয়, ভূলের স্বীকৃতিতেই মহন্ত । প্রধানমন্ত্রী বদি আংশুক বোষণাটি করেন, তা হলে আন্তর্জ্ঞাতিক মধ্যাদা তাঁর পূর হবে না। পক্ষান্তবে বিভিন্ন জাতি বলবে: "এই একজন মহাপুরুষ বিনি মনুষাস্থলভ ভূল করতে পারেন কিছু নিজের ভূল স্বীকার করার সাহস তাঁব আছে এবং দেশের সংবিধান-বিরোধী কোন কিছুই তিনি করবেন না।" নেপোলিয়নের মতো একজন প্রমান প্রতিভাবান ব্যক্তি—ইতিহাসে বাঁব ভূজ্ নেই, তিনিও ভূল করেছিলেন, বার জন্ত তাঁর সাম্রাজ্যের বিলোপ পর্যন্ত ঘটেছিল।

মিউনিক চুক্তির সঙ্গে এই চুক্তির তুগনা করা হয়েছে। কিছ কোনরণ তুলনাই হয়ত সম্ভবপর নয়। ভারে উইনষ্ঠন চার্চিগ ভাঁর 'দি গ্যাদারিং ষ্টর' গ্রন্থের 'দি ট্রাজেডি অব মিউনিক' ('মিউনিকের সর্বনাশ') শীর্ষক অধ্যায়ে বলেছেন—সর্বোপরি চেকোমোভাকিরার প্রতিরক্ষায় বুটেনের কোনরূপ চুক্তিগত বাধ্যবাধকতা ছিল না কিংবা কোন প্রতিশ্রতি দেওয়া ছিল না তাঁর দিক থেকে, এমন কি বেশ্বকারী ভাবেও। কিছু জার্মাণী যদি চেকোলোভাকিয়াকে আক্রমণ কবে, সে ক্লেত্রে ভার উপর যুদ্ধ অভিযান চালানোর স্পষ্ঠ দায়িত চুক্তি অনুষায়ী ফ্রান্সের ছিল। এরপ বলা হয় যে, ঠিক মুহুর্তে ফ্রান্স নিজের বাধ্যবাধকতা অনুসারে কাঞ্চ করেনি। এই বিরোধ প্রামাণিক অন্থ-রচয়িতা তাঁর নিজম্ব ভঙ্গিতে ফ্রান্সের প্রতিবক্ষার ব্যবস্থা সম্পর্কে এইরূপ বঙ্গেন: "চেকোমোভাকিয়া যদি আগ্রসমর্পণে (আর্শ্বাণীর নিকট) অস্বীকার করে থাকে আর ভার পরিণতিই যদি হ'ল যুদ্ধ, সে ক্ষেত্রে ফ্রান্সের পক্ষে তার প্রতিশ্রুতি বক্ষা কৰা উচিত ছিল। তবে চেক্রা যদি চাপে পড়ে আত্মমর্শণের পৰ্য বেছে নিয়ে ৰাকেন, সে অবস্থায় ফ্রান্সের মর্য্যাদা টিকে গেলো।"

তংপরে তিনি ষধারীতি বলেন, "আমরা এই ব্যাপারটির (প্রতিরক্ষা) বিচারের ভার ইতিহাসের হান্ডেই ছেড়ে দেব।"

শ্পষ্টই মিউনিক চুক্তির সমর্থনে বুটেন ও ফ্রান্সের অপক্ষে কিছু বলবার বরেছে কিছা বেরুবাড়ী চুক্তির সমর্থনে বলবার মন্তো কিছু আছে কি ? বেরুবাড়ী ভারতেরই একটি অংশ। আমাদের সংবিধানের ভপশীলেই এইটি শ্পষ্ট করে বলা আছে। বর্তমান চুক্তি অফুর্চানের আগে পাকিস্তান এ ব্যাপারে কোন দাবী পেশ করে নি। অভবাং দেশের জনগণের মতামত্ত না নিয়ে এই বে চুক্তিটি হয়েছে- মিউনিক চুক্তির সঙ্গে একই পর্ব্যারে এ দাঁড়াতে পারে না। সেই কারণেই একটি অচল চুক্তি অফুর্সারে বে প্রতিশ্রুতি দেওরা আছে বলে বলা হছে, আমাদের প্রধানমন্ত্রী বদি উহা কার্যকরী করতে নারাজ হন, সেক্ষেত্রে তাঁর আন্তর্জাতিক মর্ব্যাদা ব্যাহত হওরা সম্ভব নয়।

(০) কিছ স্বচেরে গুরুত্বপূর্ণ—বিষয়টির নৈতিক বা নীতিগত
দিক। একণে এইটি ছর ভাগে সমর্থিত হরেছে বে, ভারত দালাই
লামাকে এদেশে আশ্রর দিরেছে। আমাদের প্রধান মন্ত্রী সুন্দর
ভাষার বলেছেন—কোন অবস্থাতেই ভারত দালাই লামাকে
চীনের হস্তে ভূলে দিবে না। ভারত বে স্বাধীনতা অর্জ্ঞানের
পর একজন উদাত্তকে আশ্রয় মঞ্জুর করেছে, এ স্তিয় একটি

চমৎকাব কাল, একটি বিগাট অনুষ্ঠান। নিজেব বে শ্লেষ্ট ঐতিজ্ ররেছে, তার সঙ্গে মিদ রেখেই হরেছে এই ব্যবস্থা। কাহিনী চলতি আছে—ভারতের এক মহান নৃপতি একটি বাজ্প পাথীর আক্রমণ থেকে একটি পারাবতকে বাঁচাতে গিরে নিজের দেহ-মাংস বিলিয়ে দিরেছিলেন। আক্রান্ত পারাবতটি রাজার নিকট আগ্রার চাইলে পরই এ ব্যবস্থা অবল্যিত হয়েছিল। আমার ধারণা বে, আমাদের প্রধান মন্ত্রীর এই একটি কাজেই ভারতের মর্ব্যালা অনেকগুণে বর্বিত হরেছে। নেপোলিয়ানের পতনের পর তিনি বথের সম্বন্ধ ও সাহস নিয়ে পত্র মারকত বথন আশ্লয়ের আবেরন জানিরেছিলেন, প্রেট বুটেনের তাঁকে আশ্রম দিতে পারেনি —হতে পারে তিনি ছিলেন বুটেনের পরম শক্র। সেদিনে প্রেট বুটেনের উত্তর ছিল সেণ্ট হেলেনা।

দালাই লামাকে আশ্রয়দানের পরিণতি আমাদের প্রধান মন্ত্রী বেল ভালভাবেই উপলব্ধি করেন। চীনের এ অসম্ভব্নির কারণ ঘটাতে পারে—আমি বলি না বে, ঘটাবেই। এই নিরে চীনের সঙ্গে ভারতের ঘল্ম বাধতে পারে অবচ সেদিন মাত্র ঘটি রাষ্ট্রই 'পঞ্চশীল' স্বাক্ষর করেছে। পরিণতি ক্লেনেও আমাদের প্রধান মন্ত্রী ভারতের পক্ষে কান্ধ করার ক্লোর সাহস দেখিয়েছেন এবং আশ্রম মঞ্ব করেছেন দালাই লামাকে। তিনি এ-ও বলেছেন বে, মহান লামার প্রতি বধেষ্ট্র শ্রমা দেখানো হবে।

দালাই লামা একজন মহানু ধর্মীয় নেতা ও তিকাতের রাজ।। আলোচ্যক্ষেত্রে অবশু তিনি একজন সাধারণ মামুষ হিসেবেই আশ্রয় চেয়েছেন এবং ভাবত ভা দিবেছে। বেক্বাড়ীর আট হাজার নৱনারীর প্রতি আমহা কি একই নীতি সম্প্রারিত করতে পারি না ? প্রায় বারো বছর আংগ এই হতভাগ্যরা পাকিস্তানে তাদের পৈড়ক বর-বাড়ী ছাড়তে বাধ্য হয়। তারা ভারতে চলে আসে এবং আশ্রর চার। ভারত সে সময় তাদের আশ্রয় দেয়। **হিল্ল** হতভাগ্য এই মাতুবগুলি থাকবার ঠাই পেয়ে খ্রদর**ভা** ও কুঁড়ে তৈরী করে নিয়েছেন এবং ধর্মনিরপেক্ষ আমাদের ভারতের নাগরিক বলেই নিজেদের ভাবছে। তারা এ-ও ভেবে নিমেছিল বে, পাকিস্তানের তুর্ব্যবহার তাদের জার পেতে হবে না। ভারা কঠোর শ্রম করে জীবিকা নির্বাহ করে এবং ন্ত্রী-পুত্র পরিজ্ञন নিবে শান্তিতে বসবাস করে চলেছে। ভারতের প্রতি ব্যেছে ভাদের আয়ুগভা। ভারা ভোটাধিকারও পেরেছে এবং গত সাধারণ নির্বাচনে ভোট দিয়েছেও। এতে ভারাবে ভারতের নাগবিক, সেইটি পবিদার প্রমাণিত হচ্চে। একণে, তাদের একথা কি বলা ঠিক হবে—পাকিস্তানে ফিরে হাও ? ভারত তোমাদের যে আশ্রর দিরেছিল, এখন আর তা দেবে না ? মানবভার দিক থেকে দালাই লামার ব্যাপারওএ ব্যাপারটির মধ্যে কোনরপ পার্থক্য আছে কি ? আমি অবভ কোন পার্থক্য দেখি না। এই মস্ত নৈতিক প্রশ্নটি উঠেছে। মানবিক দৃষ্টিভন্নী নিষে আমারা বেন সমস্যা সমাধানে এগিয়ে বাই।

একথা বদি ধবেও লওয়া গেল বে, সংবিধানের উপযুক্ত সংশোধন মারকত আবগুরু আইন প্রণয়নের প্রয়োজনীয় ক্ষমতা পার্লমেন্টকে দেওরা হবেছে, এ-ও বদি ধরা গেল বে, একটি অচল চুক্তির প্রতিশ্রুতি ভারত রক্ষা করতে পারলো না বলে আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে আমাদের প্রধান মন্ত্রীর মর্য্যাদা কুল্প হবেছে, তথনও জিজ্ঞাসা ওঠে—জাপনি কি ভাবে এই বিবাট নৈতিক প্রান্তাটির সমাধান করছেন ? প্রান্তাটি হলো—কভকগুলি মান্ত্রকে আশ্রম দেওরার পর বাদের কাছ থেকে ভাবা পালিয়ে এসেছিল, ভাদের হাতেই আবার প্রভার্গণ করা।

কেউ কেউ হয়তো বলবেন বে, ভারতের খাতিরে বেরুবাড়ীকে উৎসর্গ করা প্রয়োজন। এই ক্ষুদ্র ভূগগুটি বিদি পাকিস্তানকে দিয়ে দেওরা হর, তা হলে পাকিস্তান সম্বাধ হবে। কিছ তোবণ নীতিতে পাকিস্তানের সঙ্গে কথনই কাজ হবে না। ইহা খুবই স্পাধ। গত বাবো বছরে বা ঘটেছে বলে আমরা জানি, তা খেকেই এ ধারণা সন্দেহাতীত হয়। আমাদের স্বরাধ্র সচিব পশ্তিত পত্ন বা বলেছেন এব দেশরকা সচিব প্রীমেননের বে উজি—এক ইঞ্চি পরিমিত ভারতীর জমির উপরও বিদেশী আক্রমণ তাঁরা বরদান্ত করবেন না, এর পর জেনারেল থিমারা সেদিন খলেছেন বে, ভারতের সৈনিকরা পাকিস্তানের আক্রমণ প্রতিহত করতে সম্পূর্ণ সক্ষম, একথার পরও বেরুবাড়ী হস্তান্তরের কোন কৈ ফির্মিং থাকতে পারে কি ? পারে বলে অক্তঃ আমি মনে করি নে।

স্মতবাং বাংলার জনগণ এই প্রেমটি সম্পর্কে সম্পূর্ণ একমত ও

বছপরিকর হয়েছে। বেরুবাড়ী পাকিস্তানকে কোন অবছাতেই দেওয়া হবে না। পাকিস্তান তার বা ইচ্ছে হয়, করুক।

আমি আবার এ বিষয়ে বিশেষ জীবিতদের ভেজর সর্বশ্রেষ্ঠ নির্ভরবোগ্য লেখকের করেকটি অববায় কথা উদ্ধৃত করব: অপর জাতিগুলির সঙ্গে আচরণে মন্ত্রীদের প্রথম করণীর—সংঘর্ষ ও মৃদ্ধ এড়িরে চলা আর সর্ববিধ আক্রমণ পরিহার করা—সে আতীয় কারণেই হোক, কি আদর্শগন্ত লক্ষ্য থেকেই হোক্। ক্রম্ম রাষ্ট্রের নিরাপত্তা ও অদেশের জনগণ বাঁদের নিকট থেকে তাঁরা ক্ষমতা পেরেছেন, তাঁদের রক্ষার নিমিত্ত সর্বশেষ উপায় হিসাবে এইটি বেখানে সক্ষত ও অপরিহার্ষ্য মনে হবে কিংবা যে স্থলে মনের সঙ্গে ভূগন্ত ও অপরিহার্ষ্য মনে হবে কিংবা যে স্থলে মনের সঙ্গে ভূগন্ত ও স্থল্পাই বোঝাপড়া হরে যাবে, সেক্ষেত্রে বলপ্ররোগ বাদ দিলে হবে না। অবস্থা তেমনি অনিবার্ষ্য হয়ে বদি দাঁড়ায়, তা হলে বলপ্রহাগ চলতে পারে।

ভারত বদি এই নীতি অনুসারে কাজ করলো, একটি বুহৎ, মজবুড ও স্থানিশ্চিত ভিত্তির উপর সে দাঁড়াতে পারবে। এই স্থদ্ট ভিত্তির উপর দাঁড়িয়েই ভারত আপন কর্মধারা দ্বির কক্ষক, আর ভাতে করেই সে সমগ্র বিশ্বকে টেনে আনতে পারবে নিজের দিকে।

মনের আকাশ

স্থপ্ৰিয়া

थूर (यभी मृद्य नय, এক দিন চাদ আর সন্ধান্তারা উঠেছিল ফুটি থ্ব কাছাকাছি। মনের আকাশে লাগে তার এ আলোর ঝলকানি নীরব নিথবের মাঝে বহে চলে ভ্রু না-বল। ঈথাবের বাণী। ঈধারের বিহাৎস্পর্শে উঠেছিল ভাসি একটুকু হাসি ত্ত্রনার মুখে। এক কলি গান আর একটুকু ছোঁয়া ত্ৰনারই প্রাণে এনেছিল বসস্ত রাগিণী। একখানি বাঁকা চাদ আর একটি কবিভায় কালো আঁথির স্বপ্নালু মায়া আর শুভ রজনীগদ্ধা মনের আকাশকে ভরিয়ে দিয়েছে পরিপূর্ণ আলোর অতল ছায়ায়। হঠাৎ থেমে গেল গান এলো বুঝি বিচ্ছেদ-প্ৰাহৰ নিবে গেলো ভালো ক্ৰিতাও হ'ল না পূৰ্ব।

আচম্কা ঝড়ের তুর্বার ঘূণিতে মনের আকাশে নেমে এল খন কালো মেখ। কালো মেখের জন্ধকারে ঝড়ের ঝটকার টাদ আৰু সন্ধাতাৰা হয়ে গেল লীন মদের পেয়ালা গেল ভেঙে अर्थ (शत्ना हेट्हे। থামলে। ঝড়, কালো মেখ গেল দূরে সরে মনের আকাশ খিরে চলছে ভধু প্ৰথমে হাওয়া। হাওৱার আফাগনে ঝড়ের ঘূর্ণাবর্তে টাদ আর সন্ধাতারা কিন্তু বয়েছে ঠিক সেই ভাবে বেমন ছম্বনে উঠেছিল ফুটে कीवरनव व्यथम मक्ताव। হায়, নেই শুধু আলো আর গান তথু নেই ইথারের অদৃগু পুলক নেই তবু একটু ছোঁয়া আর একটি কবিভা মনের আকাশ হারিরেছে সব মধুরতা। মনের আকাশ খিরে বরেছে তথু হিসাবের থাতা।

শিক্ষায়তন

প্রতিষ্ঠান মাত্রেই আক্ষ কাল বিবোধ-বিশ্যাল ও ধর্ববটাদি প্রার লেগেই আছে। বিশেষ করে শিক্ষারতনগুলিতেও তার ধারা প্রবহমান হতে চলেছে। দেশের বিশ্ববিত্যালয়গুলি আকারে বৃহৎ হতে বৃহত্তর হতে গিয়ে প্রকারে সংগতি রেখে চলতে পারছে না; দিনের পর দিন স্থানে-স্থানে কর্তৃপক্ষের সঙ্গে শিক্ষার্থী বা শিক্ষাসেবী-কর্মী সাধারণের নানাদিক দিয়ে বোঝা-পড়াভেই কাল কেটে বাছে, কাল এগুছে অরই; সম্ভার সমাধান কোধার, অনেকেই তা ভাবছেন। ক্ম-বেশি এমন ঘটনার আভাস বধন প্রায় প্রতিষ্ঠানের পিছনেই ধ্যায়িত, তথন এটিকে সাধারণ সম্ভার মতো ধ'বে নিয়ে সমাধানেরও স্ক্র-নির্ণয় করা আবিঞ্চক সাধারণ ভাবেই।

মনে করা বাক, 'নিধিস জ্ঞানায়তন' একটি বন্ত্দিনকার শিক্ষাপীট। শিক্ষা প্রতিষ্ঠানে বিভা চর্চা হয়ে থাকে সর্বত্রই ; কিছ বিভার সঙ্গে প্রভাৱের জীবনবাত্রাকেও পুগুথিত ক'রে সর্বাস্থীন শিক্ষার মাস্থ্যকৈ বিকশিত করে ভোলবার লক্ষ্য গ্রহণ করেছিল এই 'জ্ঞানায়তন', এবং এই মর্মে তাকে বিশেষ ভাবের একটি আপ্রমের লাবাসিক রুণও দেওয়া হয়েছিল প্রতিষ্ঠার দিন থেকেই। কালের বারায় প্রতিষ্ঠানের বর্তমান গঠন-কাঠামোটি গাঁড়িয়েছে এসে এইরুণ : ১। সর্বোচ্চ প্রতিনিধি-পরিষদ ২। ব্যবস্থাপক সমিতি ৩। বিভাগমিতি ৪। প্রাক্তন-মন্থলী। এ ছাড়া আরেকটি সংস্থাও এর মধ্যে এক পালে গড়ে উঠেছে। সেটি শিক্ষা-সেবক-সংঘ'; শিক্ষক বা অশিক্ষক বিনিই হোন, কর্মীমাত্রেরই এটি সাধারণ মিসনকেন্দ্র। প্রস্তাবিত সমাধান-চেষ্টার প্রতি নিহিত রয়েছে শেবোক্ত এই সংবেষই মধ্যে। এক্ষয় এবই কথা আন্ধ বিশেষ ক'রে আলোচনার বিষয়।

प्रथा बात, व्यक्तिंतिष्ठित विकास निरकत बावकात क्रम निकत ররেছে একটি বিশেষ মপ্তলী—'বিভাগমিতি'; অফুরূপ ভাবে এর দিন-চৰ্বাৰ দিকটিৰও দেখা-শুনা প্ৰব্যোজন, কিছ সেজত কোনো বিশেষ মণ্ডলীর ব্যবস্থা লক্ষ্য করা বার না। অপর পক্ষে, বিশুঝলা বনীভূত हत्क मिनव्यां किक (थरकहै विनि । मिनव्यां हत्क मितन्य विश्वा-ভাবনা ও কাল-কর্মের প্রবিহিত উদ্বাপন ব্যবস্থা। 'আনায়তনে' এই দিকের বিশৃষ্টলা বিভাচর্চার দিকটাকেও দিনে দিনে ব্যাহত করে জুসছে। স্বতঃই মনে হয়, 'বিতাসমিতি' আছে বলেই পড়াওনা ও পরীক্ষাবাহিত পাশের কাঠামো তবু একটা কিছু খাড়া রয়েছে, কিছ, দেকেত্ৰে দৈনশিন জীবন**ৰাতা বা পরিবেশ ব্যবস্থার জন্ম তেমনি** একটি সমিতির অভাবেই কি ভবে অগ্র দিকে ভাঙন লাগল ? পরিবেশের দাহিত্ব-রক্ষার স্বেচ্ছ:-আরোপিত আদর্শ নিয়েছে দেখানে শিক্ষাদেবী-সংঘ। কিন্তু কাৰ্যত নৈমিত্তিক উৎস্বাদি অমুঠানেই তাঁদের কাঞ্চকৰ বরেছে সীমাবত। পরিবেশের এই দিনচর্যাগত নিত্য অফুষ্ঠান পৰিচালনার দায়িত্বও বর্তার অস্থায়ী এক নিজস্ব সংবিধানে লিৰিত আদৰ্শ অনুসাবে, স্বভাৰত সাধারণ কর্মীদের সংস্থা এই শিকাসেবী সংঘে'র উপরেই। সে ছলে, কথার থাকলেও, কালে সেই দারিছ বন্ধার স্কৃত্তি পরিচর কিন্তু তেমন অংগাচর নর। এখন, পরিবেশের দাবিখ বকা বলতে কথাটা কতদ্ব বার, সেটুকুতে অবহিত হওব। আব∌ক। কেন না, দেখা বার, আতিঠানটি বধন কুলতর ছিল,

निकार निकारा

শ্রীঅবিনাশচন্দ্র রায়

দেদিন সর্বান্ধীন শিক্ষার বিজ্ঞা ও জীবন সমঘয়ী অথও আদেশই প্রতিষ্ঠাতা বর্ত্তমানে ছোট ছোট শিক্ষার্থীদের মধ্যে বিজ্ঞাচর্চামূলক ছোটখাট সাপ্তাহিক রচনা পাঠ সভাব পাশাপাশি জীবনচর্চামূলক মানিক শিক্ষার্থী সম্প্রিকানীর ব্যবস্থাটিও প্রবৃত্তিত হৃহেছিল। কিছ প্রতিষ্ঠান এখন বড় হয়ে গেছে; কেবল বয়নে বা সংখ্যায় ছাত্রছাত্রী সমাজই নর, সঙ্গে সঙ্গে ছানীর পরিবেশটিও বদলেছে এবং বেড়েওছে। স্তর্তাং এখনকার আহোজনও স্বলিকে এর অভ্যুক্ত বং বেড়েওছে। স্তরাং এখনকার আহোজনও স্বলিকে এর অভ্যুক্ত হয়ে আবিজ্ঞক। কিছ ছোটই কি আর বড়োই কি, ছানীয় লোকসমাজ সমগ্রভাবে সমতালে মূলত: এইরূপ সর্বান্ধীন চর্চার অত্যুক্ত ব্যবস্থা স্থ্যাবৃত্তি হয়ে না চললে, কোনো দিকটাই স্পরিণত হয়ে উঠবার নয়; তাতে তৃ-একদিকের কান্ধ চলাটাও ক্রমে অচল হয়ে জানো; বিশেষ করে এ কথাটা ক'জনে সেখানে ভাবছেন, ভাও আজ্ব প্রতিষ্ঠানের হালচালে স্পষ্ট বোঝবার উপায় নেই।

পাঠানিবাঁচন, প্রতিদিনের পড্ডনা, সাম্বিক প্রীকা, পাশ-ফেল,--এ সবের ব্যবস্থা ক'রে থাকেন সেখানে "বিজ্ঞা-সমিতি"। কিছ ভাদৰ্শে বা উদ্দেশ্যে বা-ই বিজ্ঞাপিত থাকুক, স্ভাবচ্বিত্ৰ সম্বিত জীবনধাতাৰ দিকটাৰ কাৰ্যত উদাসীন হ'ছে হ'তে আৰু এই 'নিধিল জানায়তনে'ও খেবে পাশ-কেল-এর অর্থাৎ ডিব্রি-কেল্রিক মাছলি লক্ষ্যভেই এনে ঠেকেছে বিভাচচার বা-কিছ উভ্য। এর প্রতিক্রিয়া সমূলে এতিষ্ঠানের আদর্শধ্বংসী। সেই প্রতিক্রিয়াকে রোধ করতে পারে এবং একই কালে বিভাচর্চাকে রোধ. চৰিত্ৰ ও ব্যৱহাৰের সঙ্গে সুসংগত ক'বে স্বাঙ্গীন শিক্ষাকে জীবনে সর্বক্রোভাবে সার্থক করতে পারে,—'বিভা-সমিভি ও 'শিক্ষাসেবী সংঘ'-এর সহযোগনুলক যুক্ত-ব্যবহাই তার একমাত্র উপার। এই জন্তই প্রতিষ্ঠানের মধ্যে এই ছটি-সংস্থারই সমমর্বাদাসম্পন্ন হওব। আবশুক। कांडे विन इस. 'निकारमयी मरदा'य-छ काम हरन एवन, 'विणामिषि' ৰজু ক নিধাবিত পাঠ্যসূচীৰ মতো প্ৰতিষ্ঠানেৰ সৰলেৰ আচাৰামুষ্ঠানেৰ বীতি-নীতিক্রম নির্ণয় করা এবং প্রতি মাসে বড়োদের নিকট খেকে সংগঠীত প্রত্যেকটি পরিবার ও ছাত্রাবাসের ছাত্রছাত্রীদের দিনচর্বা-লিপি,—অর্থাৎ বিভাবিবরণী রূপ প্রপ্রেস বিপোর্ট-এর মতো চার্ট একটি পুৰণ ক'ৰে বড়ৱা বা দেবেন সেগুলি (ক্ৰমে সম্ভবমতো বড়দেৱ নিজেদের চার্টও) পরীক্ষা করা। সে সঙ্গে কর্তপক্ষেরও রীতি ছবে.—'বিজাসমিতি' পবিচালিত বিজাপবীকার নম্বরের সহিত সমান গুরুত দিয়ে 'শিক্ষাদেবী সংঘ'—পরিচালিত এই দিনচর্যালিপি পরীক্ষার নম্বর মিলিরে ছ'দিকের বাচাই-করা ফলের উপর নিম থেকে সর্বোচ্চ মানের সমস খ্রেণীর ছাত্র-ছাত্রীদেবই শেব পাশ-ফেল নিরপণ করা।

মনে বাধা দবকার, শিকা জিনিবটি বেমন একটি সাধনা, ভেমনি শিকা একটি বিজ্ঞানও। স্থতবাং বৈজ্ঞানিক ভাবে এ বিবহটির অনুধাবন ও নিয়ন্ত্রণের প্রেরোজন আছে। নম্বর-দেওয়ার বৈজ্ঞানিক রেকর্ডের ভিত্তিতে বিভার দিকটা বদি চলতে পারে, ভবে দেথানে এ পদ্যভিক্ষমেই আচার-ব্যবহারের অভ-অর্থাংশ্র সমান ভাইে নিয়ন্ত্ৰণসাপেক। অভনব এটা অবান্তব কিছু নয়।
পরত এরপ দিনচর্যার চার্ট-পরীক্ষার ব্যবস্থা করা হলেই আশা
করা চলে বে, ছাত্র-ছাত্রীর। এব পর থেকে জানায়তনে এসে
আর কিছু না হোক, অস্তত বিভাব মতোই পাশের নত্তরের
অনিবার্গভার দারে পড়ে হলেও, মনন এবং আচার-ব্যবহার সমুদ্দ
চরিত্রবানকেও সমান গুরুত্বপূর্ণ ও অপরিহার্য বিষয়রূপে জানাবে
এবং শুরু থেকে শেষাব্রণি, বিভার ও জীবন্যাত্রায় তুদিক দিয়েই
সম্ভাবে উত্ত্ব ও নিয়ন্ত্রিত থেকে নিঠাপবার্থ হরে চলবে। তথন
সেই অনিয়ন্ত্রিত জীবন্যাত্রা বেমন তাদের বিভার উন্নতিলাভের
সহার্ক হবে, তেমনি অনিয়মিত সেই পরিবেশে সংবত ও নিবিষ্টচিত্রের বিভানিষ্ঠাও জীবন্যাত্রাকে উন্নত করে তুলবে।

मका करवात विवय (व, जाल-काम (यमनहे (मर्म माहिन्छ) ৰাড়ছে, জীবনে মাতুৰ হুলছাড়া হচ্ছে, তার্ই পাশে তেম্নিত্র স্থল কলেজের এলাকার বাড়ি হর, আসবাবপত্র, বই থাতা, সংস্থাম, পরীকা, ও প্রাইভেট মাঠারী কত না বহিবজীর দিকে ছাত্রছাত্রীদের বিভাকেন্দ্রিক বিষয়গুলির বাহুলা দেখা দিয়েছে এবং ভা বেডেচে ব্যব্যক্ষ ছলড়াড়া কুপে; স্বই ভালো, এবং অনেক বিভূত্ই প্রচ্যেকন না আছে অমনও নয়, কিছ এতংসত্ত্বেও বিভার মান, এবং তৎসংশ অমুবাগ এবং নিষ্ঠা বে সেই পরিমাণেই কুর হচ্ছে এইটিই ভাববার বিষয় ৷ একে তো জীবনবাত্রার মানের সঙ্গে এসব ব্যাহিক্সীয় আড্মবের সংগতি থাকার প্রশ্ন একটা আছে, অবস্থা ৰবো ব্যবস্থার কথাও মনে রাখতে হয়। সময় বুঝে কাঞ্চের বহুর বাড়ানো ক্মানোর ক্থাটাও হেছাৎ অবাস্তর নহ—তা ছাড়া আরও একটি কথা আছে। ছাত্রছাত্রীদের মন আজ এমনিতেই বাইরের বভ বিষয়ের জাকর্ষণে বহুদিকে বিক্ষিপ্ত ; বিষয় ও ব্যবস্থা প্রাচর্ষের প্রভাবে পড়ে পড়াগুনার ক্ষেত্রেও মনের নিবিড়তা ও একাগ্রতা ভালের বাড়ছে না কমছে, সেটাও দেখবার বিবয়। এক কথার বিজার মন বসভে না, এইটেই দাড়াছে সম্প্রা। ব্যক্তি আছে, বিষয় আছে, ব্যবস্থায়ও কার্পণ্য দেখা যাছে না, বিশ্ব অভাব দেখা बाक्क अकृषि जिन्तरमयः त्मि क्ष्य मायनाय विवरत यन वमानाय উপায়-এক কথায় আছে সবই,-নাই'তথু সব দিকে সামজত বাৰা নির্মিত মনোবোগ ও বতু।

মনোবোগ ও যত্ত থাবা বছবিবর্কে অন্তরে আয়ত্ত করা থার। বিবরে সহজ অনুবাগ ও অধিকার অভাবতঃ বাঁর। জন্ম থেকেই পেরে থাকেন তাঁদের কথা আলাদা। বাঁরা তা থেকে অভাবতই বঞ্চিত, তাঁদের ভক্ত, কুজুদাধ্য হলেও, কুত্রিম উপায়ের পথ একটি থাকে—দেই পথই হচ্ছে শিক্ষা বা মনোবোগ ও বজুর পথ। বিভার ক্ষেত্রেও ছাত্রছাত্রীদের কাছে এই যত্ত ও মনোবোগের প্রত্যাশা আমরা করি, কিছ প্রক্রিয়ার দিকে কিছুই বিশেষ করি না, উপদেশ দিয়েই থালাস,—ভাদের উপরই আর-স্বটা ছেড়ে দিই। অথচ দেখা বায়, অভাবে বাদের সে-ভিনিস নেই, সমাজে ভাদের সংখ্যাই বেশি। এবং শিক্ষারও প্রবোজন হয় মেধাবীদের চেরে এই দাধাবণদের অন্তই বেশি মাত্রায়। এই সহজ সংস্কারবর্ভিতদের মন বিভার সংখ্যুক্ত করাতে হলে, গুলু বিভার দিকে পড়ান্তনার বিশেষ একটি ক্ষেত্রেই নয়, উঠজে-বস্তে চলভে-ক্রিরতে এমন কি থেকে-কৃতে—সব দিক দিয়েই স্ববিষ্যে ভাদের স্বস্ময়ের মনোবোগ

ও বড়ের অভাগে অভাত করানো দরকার। কেন না,—বিশিষ্ট শিক্ষাচার্ব বলছেন,— বার নাম শেখা, ভারেই নাম শিক্ষা। ইহাও জানি, অভাসে হারা অর্থাৎ পুন:পুন: করিয়া কর্ম শিথি। মান্থবের এই বে শক্তি হারা কর্ম অভ্যাস হইয়া হায়, দেহের বৃত্তিবিশেষে পরিণত হয়, যে কর্ম ইছোপুর্বক বতুপুর্বক করিতে করিতে অনিছাত্বত ও অবতুক্ত হইয়া পড়ে, সে শক্তি হেতু মান্নব পণ্ডকে হাড়াইয়া উঠিয়াছে। (বোগেশ বিভানিধি, শিক্ষাপ্রবল্প, পু: ২০)

প্রাত্যহিক অভ্যাসের থারা মন অভাবতই নিষ্ঠাবান না ছ'লে সেই বিক্ষিপ্ত মনের থারা বিভাসাধনাও চিরদিনই এমনি ব্যাহত হবে, তাতে আদ্র্য নেই। এইজ্ছুই কেবল বিভায় উন্নতির প্রশ্নের ক্ষেত্রেও, বিভার্থী ও তার পরিবেশের সর্বান্ধীন জীবনবাত্রার ব্যবস্থা আবিশ্রিক রাধা অপরিহার্য হয়ে পড়ে। পক্ষান্ধরে, বিভাকে বারা জীবনের লক্ষ্য না করে লক্ষ্যলাভের একটি উপায়-অরপ মাত্র দেখে থাকেন, সেই জীবনধর্মাদের অথও-দৃষ্টিতে জীবনবাত্রার সংগতি শিক্ষাটাই, নিছক পুঁথিগত বিশেব শ্রেণার বিভার চেন্তে, মহতর মনে হবে। তাঁদের কাছে দিনের প্রভিত্তি চলাক্ষেরাই হবে বিশেবভাবে মৃল্যবান। প্রভ্রাং তাঁরা অভাবতই বিশেব-বিভাগর চেবে, সর্বান্ধীন জীবনবাত্রাবেই অক্মাত্র-বিভাগরপে সাধনা করবেন, বার মধ্যে বিশেব-বিশেষ বিভাও এক একটি বিশেব স্থান পাবার কথা। তাঁদেরই অভিমত এই বে, বিভার জাহাক্ষ, ও জানের ভাগার হওয়া অপেকা প্রচরিত্ত-অন্ত্যাস লক্ষ গুণে গ্রেইং। স্টাচার ও সদ্ব্যহার বাবতীর ধর্মের মুল ।"—(বোগেশ বিভানিবিং শিক্ষাপ্রকর্ম পৃ: ৭।)

দেখা বাচ্ছে, বিশেষ-বিজা বা স্বাসীন-জীবন বে— সক্ষ্য ংরেই বিনি দেখুন না কেন, শিক্ষায়ভনে জীবনহাত্তা প্রণালীর সঙ্গে বিজার ব্যবস্থা সংগতিপূর্ব হওয়া চাই,—একথা স্বভাস্কি।

এখন কথা হচ্ছে চবিত্ৰ বা জীবনবাত্ৰাৰ এই দৰকাৰী ব্যবস্থাটি সমাজে চালু কববার ভার গ্রহণ করবেন কে, এবং কি-ভাবেই বা তিনি চালু করবেন। একের নয়, এছনেই প্রয়োজন আঞ্চ,--সকলের। প্রতিষ্ঠানের কোনো-বিশেষ এক-খ্রেণীর কর্মীও নন, পরিবেশের সর্বাদ্ধীন বিশুদ্ধিতার অন্ত শিক্ষকপ্রেণী ছাড়াও নানাক্ষেত্রের নানাশ্রেণীর কমি-সমাবেশে গঠিত সর্বাঙ্কীন-সমাধ্যের পরিচালনায় চলতে প্রতিষ্ঠানের এই স্বাস্থীন জীবন। নানাদিক থেকে নানা অভিজ্ঞতার সাহায্য দিয়ে নানাজনে চাত্র-অভিভাবক-শিক্ষক-কর্মী-সম্বলিত এই গোষ্ঠীজীবনটিকে রচিত, নিয়ন্ত্রিত ও সেবাসমন্ত ক'বে বিচিত্র ঐখর্ষে দশ দিকে প্রসারিত ক'বে ভলবেন। তাহলেই দেখা বাচ্ছে 'জ্ঞানায়তনে'র বিশেষ ক্ষেত্রেও আগে এই বিশেষ কালে 'শিকাসেবী-সংখে রই দায়িখের কথা। এবং সেই দায়িত্বের মূল্যবিচারে স্বতই পরিক্ষুট হয় প্রতিষ্ঠানের 'ব্যবস্থাপক-সমিতি'তে 'শিক্ষাসেবী সংঘে'রও প্রতিনিধি থাকার ওরত। বিভ এই আবিভাক গুরুবিষয়েই দেখা যার 'ভ্রানায়ভনে'র গঠনভায় অস্বীকৃতির কাঁক পড়ে আছে।

আফদিকে দেখা বার, স্বীকৃতি আছে প্রতিনিধিসভা এবং ব্যবস্থাপক সমিতিতে বাইবের লোকের, এবং পরিবেশ-পবিজ্ঞানী প্রাক্তন ছাত্রছাত্রীর আর ডিপ্রিধারী বর্তমান শিক্ষকপ্রেণীবঙ! এই গঠনভন্তই সাক্ষ্য দিছে কোন্ বিশেষ-বিশেষ কোঠার এসে ঠেকেছে এখানে মাসুহের মূল্য। চাকুরিক্তে ক্লাসের

প্রভাক-সংস্রথ-ছাড়া হয়েও বহু মাত্রুব আছেন পরিবেশের মাল্য - প্রতিষ্ঠানেরই প্রবোজনীয় নানা কাজে। জীবনধাতা প্রণালীর মুল্য আজ শিক্ষায় বদি প্রকৃত প্রস্তাবেই স্বীকৃত হঙ, তবে ভালমক প্রভাব সাধারণের দিক থেকেও ছাত্ৰ-ছাত্ৰীদের দ্রৈপর প'ডে বাকে বলে, শিক্ষক ব্যতিথিক সাধারণ কর্মী ও অভিভাবকদেরও অবধি প্রতিনিবিখের অধিকার প্রতিষ্ঠানের সকস সংস্থার স্বীকৃত হত। তাঁরোও তাতে স্থাহ ও স্থানালে ধাকার কর্তব্যের মতোই প্রতিষ্ঠানে বাস করার ও কাব্দ করার সমশ্রেণীর দায়িত্ব উপদ্বব্ধি করবার তাগিদ ভিতর থেকে পেতেন এবং উপযুক্ত হয়ে চলবার কিছু-কিছু চেষ্টাও হয়তো আপনা থেকেই তাঁরা করতেন। সেই ব্যবস্থা না থাকাতে, এক-পাথাওয়ালা পাথিব মতো বিভা এখানে জীবন-নিরপেক হরে, উড়তে গিরে ধুলোয় গড়িয়ে এগোবার উপক্রম করছে। অথচ, ইতিহাসের নজির খাঁটলে দেখা যায়, এই প্রতিষ্ঠানেই একদিন প্রতিষ্ঠাতা বর্তমানে সাধারণ-কর্মীদেরও পক্ষে প্রতিনিধিখের সেই স্থযোগ ব্যবস্থিত ছিল; 'শিক্ষক-সভা' বলতে শিক্ষক ও সাধারণ সকলেরই সম অধিকাবের একটি ঢালাও-ক্ষেত্র বোঝাত। কর্মীমাত্রেই তথন ছিলেন 'শিক্ষক'-নামাহিত। এতদ্ব ছিল এখানকার স্বীকৃতির পরিণি। এখন মহোচ্চ-ডিগ্রিখারী হলেও চাকুরীতে ছাপমারা 'শিক্ষক' না হলে 'বিজাসমিতি'তে প্ৰবেশাধিকার পাবার উপার নেই। সাধারণ কর্মীর স্বীকৃতি তো কোন দরের কথা। ঠিক এই অবস্থার একটা কথা ভেবে দেশবার আছে বে, গোডা থেকে বিজার সঙ্গে জীবনযাত্রার দায়িত্ব স্বীকার করে নিয়ে, কার্যত ভগু বিজ্ঞার একটা দিক মাত্র সরকারী স্বীকুভিতে ব্যবস্থিত রেখে জীবনবাত্রার শগু দিকটাকে বেসবকারী ভাবে এমনি শিধিলভার পথে গড়াতে দিলে দেটাভে প্রতিষ্ঠানের দায়িত্তীনভারই পরিচয় বাডানো চর कि ना। वना वाहना, विकानियालक कीवनवाजाय कथा ध-পালোচনার উদ্দেশ নয় মোটেই। তবে আশু-আশস্কার বিবয় হয়ে দীড়িরেছে এই যে, জীবনযাত্রামানের দায়িত্ব এড়ানোর ফল এখনই অবিভারণ ধ'রে এলে বিভার বাতে চাপছে,--এইজন্ম এমিক দিয়ে প্রত গ্রেমা শিক্ষাপ্রতিষ্ঠান মাত্রেরই অবিলয়ে প্রয়োজন, আর দেই অব্যেজনেই, ভুধু শিক্ষক আর ছাত্রসম্প্রদার নয়, শিক্ষাক্ষেত্রে **শ**ভিভাবক এবং পারিপার্শিক সমাজের সাধারণের সক্রিয় বোগ অবগ্রস্থাবী। তাঁদের সকলেরই মধ্য থেকে পরিচালক-সমিতিতে ন্দত্য গ্রহণ ক'বে, বোধে ও ব্যবহারে বিজ্ঞা ও জীবনের সংগতির ব্যবস্থা করা শ্রের:।

এই বিচাবে দেখতে গেলে, স্বতঃই প্রতিভাত হবে বে, আল কোনো মতে খুঁড়িরে চলতে থাকলেও সমগ্র 'জানায়তন'-প্রতিষ্ঠানের সর্বোত্তম কল্যাণ ও গৌরবের বিষয় হচ্ছে একান্তের অবহেলিজ শিক্ষাসেবী-সংখ'ই। কেন না, প্রতিষ্ঠানকে আপনার নীড় ব'লে সকলেই বাতে অমূভব করেন ও পরম্পার সেই অভিন্নসভার আবহু থেকে এর অক্স কাল করতে প্রভাতে আনন্দ পান, প্রত্যক্ষ সেই সংঘলীবনটির বিকাশের ক্ষেত্র হচ্ছে এই 'শিক্ষাসেবী-সংঘ'। উচ্চতম থেকে নিয়ন্তম,—সকল ক্মীই এখানে সক্ষ্যেক স্বাধীনমত-প্রকাশের সমান অধিকারী—এবং প্রতিষ্ঠানের সর্বদিকের গত-আগভাত খুঁটিনাটি সর্ববিব্রেই উাদের সেই অধিকার প্রহোগ করতে পারার

কথা কর্মীদের মতো অভিভাবক এবং স্থানীর সমাজের স্থায়ী-বাদিশাদের পর্যন্ত এই 'সংখে'র অন্তর্গতী ক'রে গ্রহণ করলে ভালো হয়। প্রতিষ্ঠানের দায়িছে এঁদের সকলকে পারিবারিক সভ্যের অংশ নিতে বলতে হলে মতামত প্রকাশের এই সার্বভৌম অধিকার প্রয়োগের ক্ষেত্র একটা-কোথাও তাঁদের জন্ম কিছু থাকাই চাই। धरेष्ठिहे इस्क्र 'मिक्सारमयी मः एवं मुक्ता मार्थक छ।। (**म मस्मि**हे ধাকা চাই স্বজ্ঞা-বৃদ্ধির জন্ম সামাজিকভা-প্রসায়ের জায়োজন। উৎস্বামুষ্ঠান ধেলাধূলা, ভ্ৰমণ, বনভোজন, বঞ্জভা, পাঠসভা, অভিনয়, জলসা কুথে হুংথে পারস্পরিক সহায়তা ও সেবাও্ডারা ইত্যাদির মধ্য দিয়ে বৌধ মেলামেশা ও চিন্তাধারা বিনিময়ের সাহাব্যে এই সামান্দিকভার প্রসার হতে পারে। কিছু নিতাকার জীবনধাতা সম্বন্ধীয় চার্ট-পরীক্ষার প্রশ্নের সমূখীন হলেই তথন দেখা বাবে 'স্বীকৃতি'র কার্যকরী জাসল দাহিছের ঝামেলা রয়েছে কোনধানে। এই কাজটির স্বীকৃতি পেলে পাড়ার পাড়ার ও ছাত্রাবাস সমৃত্ আঞ্চলিক কমিগণ 'শিক্ষাসেবী সংঘে'র পক থেকে নিজ নিজ অঞ্চলে শাখা ভাপন ক'বে চাট পরীকার কাজ চালাবেন। ভগু পরিবার বা ছাত্রাবাস থেকে দোলাত্রজি ঘর পূরণ ক'রে চার্ট পাঠিয়ে দিলেই চলবে না, অভিভাংকদের দেওয়া সেই নম্বর আঞ্চলিক শাখার সভ্যদের ঘারাও পরীক্ষিত হওয়া চাই, ভারপরে তা আসবে সংঘে'র কেন্দ্রীর-সমীকাগারে; সেধান থেকে অনুমোদিত হ'বে বাবে তা দগুৱাধাক্ষের অফিলে। সেথানেই বিভার নম্বরের সহিত বাচাই হবে সে-নম্বরের পারম্পরিক প্রভাব ও উপবোগিতা। কে কি ভাবে চলে-ফিরে, শুধু খবোরা ব্যক্তিগত দিক থেকে নর, পাড়া-প্রতিবেশী এবং সমগ্র প্রতিষ্ঠানবাসীর সামাজিক বিচার থেকে অভিমত এ ভাবে চোলাই হয়ে এলে ভার মূল্য হবে। সে অধুবায়ী সকলের জীবনবাত্রা এবং বিভাসাধনায় একট সঙ্গে এর স্বায়া পরিওছ ও উন্নত হতে পারবে, তাতে সম্পের নাই। এই সুত্রে বাডিয় অভিভাবক এবং স্থল কলেজের শিক্ষকদের কাজের পরিচয় পরস্পর चवाना थाकरर ना । लान कांक मन कांक,-- नकल दहे नय-किह উপযুক্ত ব্যবস্থা পাবে। কোন পক্ষই কোনো পক্ষের উপর অবথা দোৰ চাপিৰে বেহাই পাবেন না। সাধাৰণ কটি-অভাব-অভিৰোগাদি সমবেত সকলের উদ্ধাবিত অচিভিতে উপায়ে ও সহবোগী বাবস্থার ক্রমে ক্রমে নিশ্বর্ট নিরাকৃত হবে।

ই শিক্ষালেবীসংঘ

সাধাবে সমস্থার শিক্ষাসেবী-সংখ আলোচনার ক্ষেত্র বিশেষ একটি আবাসিক প্রতিষ্ঠানের কাল্লনিক উদাহরণের অবভারণা করার সার্থকতা এই বে মূল সমস্থাটির গুরুত্ব সাধানণের কাছে এতে অসম হবে। জীবনবাত্রার লাহিড-নিরপেক্ষ বিজ্ঞাচর্চার রেওয়াজই আল বরে-বাইরে প্রাদমে চলছে; ডেমনি, আর সকল ছলে তুর্গজিও বা ঘটছে তার তো কথাই নেই, কিছ বেথানে আটবাট-বাধা হয়ে হাতের মুঠোর বরেছে সংশিষ্ট ছাত্রছাত্রী-অধ্যাপক-কর্মী ইত্যাদির সমগ্র দিনখাত্রার হাল, চোখের উপরে চলছে সকলের চলাক্ষেরা সেথানেও চোখ কেরালে মিলবে আছ একই ধারার অমুর্থনে ইতিহাস। স্কত্বাং সকলে কুর্তে পারেন সমস্থাটা কড

শক্ত, সংক্রামক এবং গভীর ভাবে ব্যাপক, জার সেইজগুই সমাজের সকলে মিলে কড শীল্প ভার সমাধান চেঠায় অগ্রনর হওয়া আফগুক।

সমতা সমাধানের জন্ত বে উপায়ের প্রভাব করা হরেছে, সেটি কেবল চিরাচবিত মতে ছাত্র ও শিক্ষককেন্দ্রিক নয়, তাঁরা তো আছেনই, তংসহ অভিভাবক এবং কর্মাণেরও এতে ডাক পড়েছে—এক কথার প্রভাবটি হছে সংশ্লিষ্ট সকলেরই সহবোগযুক্ত সাধারণ পরিবেশ-কেন্দ্রিক। বৌধ চেষ্টায় অঞ্চলে অঞ্চলে সর্বাসীন-শিক্ষাযুক্ত সামাজিক জীবনহাত্রা নিয়ন্ত্রণ হল তার সার কথা। একদিকে এজন্ত চাই সমাজ-সংস্থারণ একটি ত্রগঠিত সাধারণ জনমন্ত্রণী, জ্ঞানায়তনের সীমাধে আবাসিক ক্ষেত্রে বাকে বলা হয়েছে শিক্ষাসেবী-সংঘ অন্তর্গিকে চাই তারই সামাজিক কৃত্য—যবে ব্যক্তিগত জীবনহাত্রা বা দিনচর্যার সংগঠন ও তদমুবায়ী চাট সংগ্রহ ও তা প্রীক্ষার ব্যবস্থা করা।

তথু শিক্ষকদের উপর শিক্ষার ভার সবছেতে দিয়ে নিশিক থাকার মধ্যে আসলে দায়িত্ব এডানোর ভাব কডটা থাকে, তাও খুঁটিরে দেখা দরকার। বর্তমান সামাজিক বিপর্যস্ত অবস্থায় স্বদিকেই সকলে বানচাল। বস্তুত, শিক্ষকমণ্ডলীও সামাজিক লোকবিশেষ ; জীবিকা এবং জীবনের নানা দায়ে পড়ে, শেষ পর্যন্ত অনেকেই ভারা শিক্ষাকেই একমাত্র জীবন সাধনার বিষয় করে নিতে পাবছেন না, নিলেও অনেকক্ষেত্রেই লক্ষ্য হিব বাধতে পারছেন না। ভীবনসংগ্রামে যুকে যুকে আপনার ব্যক্তি ও পরিবারপত সীমাবদ্ধ সতাকে বজার রাধবার বা বাড়াবার জন্ম সমাজের আর দশক্ষনের মতোই তাঁদেরও থাকতে হর বাস্ত। সমাজের কাজে আসা নেহাৎ ষেটুকু না হলে নয়, অনেকেই আগে জাঁৱা কর্তব্যহিসাবে ক্লাদের কৃটিন মাফিক সেইটুকুভেই দৃষ্টি রাখেন নিবম্ম; শিক্ষকতা এতে জাতীর সাধনার মর্যাদা হারিয়ে ব্যবসার ছাপ নিতে চলেছে—এটা আদর্শ বা কাম্য না হতে পারে, কিছ বাদাত্ববাদের পাবে এটাই আঞ্চকের বাস্তব অবস্থা। জাতির দিতীর জন্মদাতা এই শিক্ষকসমাজের মর্বাদা ও সর্বাঙ্গীন ভরণপোরণের ৰথাবোগ্য দায়িত্ব পালন থেকে সমাজ যথন হাত গুটিবে নিয়েছে, ভথন শিক্ষকরাও দেখা বার নিজেদের সাংসারিক সর্বাঙ্গীন দার নির্বাছ করতে নিজেরাই অল্লবিশুর উত্তোগী হয়ে চলেছেন। এর পরিণতিতেই জীবাও এরপ বৈষ্মিক হরে উঠেছেন। তাছাড়া, চাকুরিব হিডিকেও এপথে বেনোজলের মতো কাঁকে কাঁকে চুকে পড়েছেন অনেক লোক,—শিকার আদর্শ বা সাধনার বারা স্বভাবতই উদাসীন। ভাই ব্যাপারটা এখন পক্ষাপক্ষে-দোবারোপের ব্যাপার নৱ; সমরের ফের বলেই বাস্তবকে গ্রহণ করা ভালো। এর মধ্যে কাজের কথাটা হচ্চে এই বে,—শিক্ষক-সমাজের পাশে এসে পাড়িরে নিজের দারেই এ অবস্থার ব্যবস্থাভার নিতে হবে এখন অভিভাবক-মাত্রকেই; এবং পারিপার্ষিক সমাজকেও সমষ্টিগত-ভাবে এরিরে আসতে হবে জাতীয় কল্যাণার্থে জাতির ভারী বুনিয়াল মজবৃত করবার অক । শিক্ষার ইমারতকে স্বাঞ্লেই উল্লভিকর কার্যধারার সমূরত বাধতে দলে মিলে দেখে গুনে বথোচিত সাহাব্য দান করা हाहे ;─ 'छ्वान'-'कीवनवारन'व हारत थ नान चारवा नामशिक, मिनिक ও कक्षि। कांबन, अ माहित क्षमि नवः अ रव भागत क्षियां। अहे नात्त्रहे क्षत्रात्र कार्यक्री क्ष्म त्यात्,--कि कारात्रिक

আর কি-বা শহরে-মফ:খলে, সর্ব্জেই আঞ্চলিক পাড়ায়-পাড়ার সংগঠিত 'শিক্ষাসেবী-সংঘ' ও ভার পূর্ব্বোক্ত পদ্ধতিতে দিন-চর্চার চাট-পারীকার কাজে। নিজ নিজ পাড়ার দাহিত্বীল ছেকেমেরে, অলিভাবক ও নেতৃস্থানীর ব্যক্তিদের সমবারে বদি পাড়ার সকলের দিনচর্চার দাহিত্বালনের কাজটি সভাই দৃচ্নিপ্তার অপুঅল ভাবে পরিচালিত হয় ভবে দেশের ভাবী নাগরিক ছেলেমেরেদের এরপ বিয়ে বাওরা'র দিন বে ফিরে বাবে, এ কথা নেহাৎ আকাশ-কুসুমের পোষকভা নয়, কেন না, জাতীয় আন্দোলনের প্রারম্ভ থেকে খামী বিবেকানন্দের ও গান্ধীজির সংগঠনী প্রেরণার যুগেও এই ধরণের অমুকুল নজির পাড়াগাঁয়ের প্রভাজ অঞ্চল-অবধি কিছু-কিছু পরিদ্রশান হরেছিল। তেমনি হবার আবহাওয়া স্প্রিকর। চাই আগে। পঞ্চ বা বঠ—কোনো বাধিকী পরিকরনা'র ভাপের অংশুক্রাই এ কাজ প'ড়ে থাকবার নয়।

পাশকরা পেশাদারী শিক্ষকেরা যেমন আছেন তেমনি থাকবেন ক্লাল নিয়ে ;-- পাল-অপাল স্বার্ট আপোবে কাজ করার নৃতন স্থান হবে এই প্রস্তাবিত 'শিক্ষাসেবী-সংখ'। ওরু শিক্ষক নন, শিক্ষার সঙ্গে বাঁরাই সংশ্লিষ্ট থাকবেন, তাঁরাই শিক্ষাসেবী নামের অধিকারী; আৰু ঠিক মতো তাঁৰা তাঁদের অধিকার প্রয়োগ করলে (मथा शांत्र, (इटलामदारामय मान्न वर्ष्टामय ममास्त्रदेख चार्यशांद्य। किर्य গেছে; খনের খেকে, পাড়ার খেকেই পুর্বোক্ত সংগঠক ক্মীদের উল্লোগে নুভন ধরণের আনক্ষমর এক সুনির্মল শিক্ষাজীবন গড়ে উঠেছে— তুল-কলেজ আশ্রম মুনিভার্সিট ইত্যাদি বনেদী বা সরকারী শিক্ষালয়গুলি তথন কেবল সাহিত্য-বিজ্ঞানীদের টেকনিক্যাল ब फुरक्मालय श्वान निष्युष्क, क्वींप विश्मय विश्मय विवास विवास ফ্রনুলা বা 'পুত্রে'র এবং 'আঙ্গিকে'র (কৌশ্লের) সম্বন্ধে বিশেব জ্ঞানটুকু বিশেষক্ষণের নিকট থেকে বুবে নেবার স্থান বিশেষ হাওরাতেই ভানের নীমাবন্ধ মূল্য দাঁড়িরেছে। প্রকৃত শিক্ষা চলছে স্থুল-কলেজের বাইবেই। অগোচরে দেখানেই গড়ে উঠেছে বরে বরে বে ন্তন্তম এক বিশ্ববিভালয়, তার নাম গৃহভারতী। আর বলতে গেলে এই 'গৃহভারতী'র আচার্য, উপাচার্য হবেন অন্ত কেউ নন,— অভিভাবক পিতামাতা; এমন কি, নির্ক্র মায়েরাই কার্যতঃ নেবেন ভার মামুষ-গড়ার; সে কাজে আপরিক বিভা তত নয়, বত বেশি আবত্তক হবে দায়িত্বোর ও দাহিত পালনের নিষ্ঠা। বেমন পরাকার্চা দেখিবেছেন মহীহসী মহিল। বিভাসাগর জননী ভগবতী দেবী। এই দুঠাত সামনে বেথেই আবো মনে হব কবিব কথা কত সভ্য-না জাগিলে আজ ভারত-ললনা, এ ভারত বৃক্তি জাগে না জাগে না।" বাষ্ট্রীর জাগরণের এক পালা চুকিয়েছি, কিছু মান্তবের বুনিরাদী পালার আসর তেমন অমছে কৈ ? ভজাবোবে দাপাদাপি করি, জাগরণ নৱ, অনেকটা এব ঘূমের ব্যারামেরই নানা প্রতিক্রিরা মাত্র। খবে খবে মারেদের কাছ থেকে মাত্রুয় বখন দৈছিক জীবনের আরের সঙ্গে মানসিক জীবনের অর্থকণ সর্ববিষয়ে যত ও মনোযোগের প্রসংগত অভ্যাসে পরিপুট হয়ে উঠবে, সেদিন থেকেই প্রকৃতপক্ষে পূর্ণ স্বাস্থ্যে ও মনুব্যবে স্থপ্ৰতিষ্ঠ হবে সকল মানুষ। এবল শিতামাতা বিশেষ কৰে মামেদেরই বেশি উদ্বোগী করে তোলা চাই।

এমনিতেও দেখা বার, দিনের ২৪ ঘণ্টার মধ্যে মাত্র ৫।৭ ঘণ্টার মেরাদ হচ্ছে ছুল-কলেজে, বাকি ১৭৷১৮ ঘণ্টার বড় পর্বচাই ছেলে মেরেদের কাইছে ঘরে বা বাইরে-বাইরেই। শ্বভরাং সেথানকার পরিবেশ ও শিক্ষার সম্ভাবনা কিছুমাত্র উপেক্ষণীর হতে পারে না। এতদিন ঘরে বাইরের সেই মহৎ সম্ভাবনা শিক্ষাক্ষেত্রে একাস্ক উপেক্ষা পোরে এসেছে বংলই ছাত্রছাত্রী তথা সমাজেরও পক্ষে এই ছুর্গতিভোগ অনিবার্য হয়ে এসেছে। প্রস্তাবিত শিক্ষাসেরী সংঘে সম্মিলত হরে সাধারণ সকলে দেশকে এই ছুর্গতি থেকে শুরু বিপদমুক্ত করকে পারেন ভাই নয়, জারা শিক্ষার ক্ষেত্রে মৃল্যুবান এক গোরবমর ভূমিকা নিরে লাভিগঠনে নিজেদেরও নৃতন মৃল্যু উপলব্ধি করতে পারবেন। সেই আত্মন্তির উন্নত প্রোণালক্তি। আজ সেই শক্তির উপ্লোধনই দেশের প্রত্যেকটি শিক্ষায়তনের পরিবেশে একাক্ত কামনার বিষয়।

কিন্তু এ-ও জানা কথা, কামনা হলেই হয় না, কাজে লাগবার উপধোগিতা দেশ-কাল-পাত্রামূলারে সে কামনা নিজের মধ্যে বহন করে কিনা সেটাই আসল কথা। কোনো দিক দিবে অমুপ্যোগী হলে কামনায় কান দেবার লোক মিল্বে না, যদি ৰা তা মিলে, দে অফুসারে কাজ করবার লোক মিলবে ক'জনা, তা ৰলা কঠিন। এজন্মই বলে বলে অনেকের অনেক কামনাই উবে বার, কিছ লোকসাধারণকেই তার জ্বন্ত দারী করা সব সমর ঠিক হর না। তবে দেখা যায়, সকলেই বে প্রথমে একবোগে সব কাজে ষত্নীস হয়, তাও নয় ; অনেক ক্ষেত্রে নৃতন কিছু প্রবর্তনায় সমাজের কুত্র একদলই অগ্রণী হয়ে ক্ষ-ক্তি স্বীকাষের দায় খাড় পেতে নেন এবং সেই করেই কাজের পত্তন করেন। জেল, ফাঁসি, কবর চাপায় তাঁরা তলিয়ে গেলেও তাঁলের মৌলিক ধারাটি তল পড়ে না। ক্রমে সেই মণ্ডদীই এক এছ স্থলে আত্মপ্রসাবের দ্বারা স্বাসীকৃত করেন বুহৎ স্থাক্তক। দেশে এই অগ্রাণিদের জাত আজ নেই এমন হতে পারে না,—স্বাছে তাঁরা,—নানা কারণে আছেন স্বপ্ত হয়ে; খাণীনতার প্রথম ধাপ জয় করে দিয়ে তাঁদেরই পূর্ব-একধারা জাভিকে উত্তীর্ণ করে দিয়েছেন মহন্তব সম্ভাবনাময় উত্তক্ষ পরে। অতঃপর ষধাবোগ্য ভাবে প্রমাণ দিয়ে দিয়ে বাপে বাপে সে-পথ অতিক্রম করে মানবমহিমার মিলন-মন্দিরে আমাদের ষ্পাস্থানে পৌছতে হবে। এই সংগঠন ও উত্তৰণের কাবে প্রধানত স্থানেই দাহিদ্বোধী অগ্রণীদের ভরসাতেই দেশব্যাপী চার্ট-পরীক্ষক 'লিক্ষাসেবী সংখ' প্রসাবের এই আন্তরিক কামনাটির বহিঃপ্রকাশ।

ভাব এক ক্ষেত্রেও কিছু কান্ধের প্রভ্যাশা থাকে,—সেটি সংকারী দপ্তর। সেথান থেকে জনেক কিছু পরিক্রনাই আজ চালু হছে। জকলে অঞ্চল এই প্রস্তাবিত শিক্ষানেবী সংঘ' বিস্তাবের সার্থকতা তাঁদের বিচারের প্রাপ্ত স্পর্শ করন্তে পারলে তাঁরাও এই প্রচেষ্টার, তব্ প্রোৎসাহ নয়, একে বথোচিত প্রগতি দান করতে পারেন। তবে কিনা, সাধারণ হোক, ছাত্রসমাজ হোক, আর শিক্ষক কিখা সরকারী মহল বেদিকেরই লক্ষ্য-মূল খুঁড়ে দেখা বাক্,—দেখা বাবে সকলেরই নিগৃচ থোঁক আজ—টাকার উপর। টাকা চাই, আর তারই জন্ম চাই ডিগ্রি এবং চাকরি;—এই হছে শিক্ষার যোদা কথা। এ লক্ষ্য ভোলাতে পারে এমন পরিবর্ত এখন আর-কিছুই নেই বারে-কাছে। ডিগ্রির জন্মই বেটুকু বিভার বার। সেই দার-সারা কাজে ধেবাৰ্থি, চুরিচামারি, যুব, জালিরাভি, যারণিট, রাহাজানি, গুল্ধবারৎ বে-উপারেই হোক,

পড়ান্তনার পবিবর্ত-হিসাবে স্থাগত করা হচ্ছে সকল পথকেই। নাবার এর পান্টার শুনা যাচ্ছে, কোন প্রদেশে নাকি সম্প্রতি আইন হচ্ছে,—ছাত্র ফেল করলে সরকাংকে জবিমানা গুণে দিতে হবে মাষ্ট্রাবদের পকেট থেকে। কিছ সমাধানটা কি এডই সহল ? 'ফেল-করা'দের নিয়ে ঝামেলা আছে; ভাববার কথা এই বে, 'পাশ-করা'রাই কি নির্ভরবোগ্য ? বে-বোগ্যতার মান নিয়ে ছাত্র-ছাত্রীরা পাশ ক'বে বেরুবেন এবং অদুর ভবিষ্যাতে সেই যোগ্যভার বলে এঁবা বাজা প্রিচালনার বে-সব পদ অধিকার করবেন ভার करन एकिन वादन अँदमय हाएक भाष्ठ शाकी बादमाय मगावि। हरन কী ? তথন বে অবিমানার উল্টা ফেরে পড়বেন সরকার নিজেই। ত্ৰিল থেকে ক্ষতির থেসারত গুণতে হবে তাঁদের পদে-পদেই; সে দুবলুট্টি সন্ধাগ থাকলে, এভাবে একখ্রেণার উপরেই শিক্ষার দায়িছ আবোপ ক'বে দিয়ে তাঁৱা দার সারতেন না। ছ'-সাভ ঘটার জন্ত কাছে পেয়ে শিক্ষকরা ষতই ভালো পড়ান, আর বভই কড়াকড়ি ক'বে পড়া আলায় করতে লেগে থাকুন, বাড়ির ১৮ ঘণ্টার ধবরলারি করা তাঁদের পক্ষে কত্তপুর সাধ্য, সেটা সহজেই অভুমের। সেই ১৮ प्रकारहे कारक प्रम पिरकर व्यक्तिका काककाकीत्मय मरशा त উড়োমনের পাকা-দধল কারেম করে চলেছে,— পড়াওনা বা কোনো নিষ্ঠাসাধ্য গভীর বিষয়ই কোনোদিন তার কাছে আমল পাবে না। বিব্যে মন না বসলে কেবল উপদেশের তাগিদেই কাঞ্চ হবার নয়, ঘরে-ঘরে সে তো প্রমাণিত হয়েই চলেছে। কেবল অভিভাবক, বা, পাড়াপড়শীর,—বিক্ষিগুভাবে কারে। কথাছেই কিছু হবার নর। व्यक्त चरव-चरव व्यक्तारकवृष्टे थवः म्हानवन व्यक्तान महत्त थहे हात-ছাত্রীদল। ভাদের চরিত্র ও বিভার বংখাচিত উন্নতি না হলে, সকলেরই পক্ষে প্রত্যক্ষে বা প্রোক্তে ক্ষতিগ্রস্ত হ্বার কথা। এই क्रिक निरंद प्रविज्ञीन मन्तिर्दाश ও वज्र ज्ञांग-विधायक 'निकारनदी-সংখে'ব সারবস্তা বদি কিছুমাত্র বিবেচিত হয়, ভবে সকলেরই वकारवाति माचदक हाय वकारक नागाल हार । (क समाद, (क मा छन्द, वना मा शिर्मछ, এর স্বিবভা বিবেচনার पश्च नकरमत গোচৰে প্ৰস্তাৰ্টি বলে বাখাৰ কাজ সেৰে ৰাখা গেল, এই সাৰ্থকভাটকুই আপাতত ব্ৰালাভ।

ছোটোরা শ্বভাবতঃ এমনিছেই চঞ্চল আর বহিষু্থ। তার উপর আল ঘরে-বাইবে চারিদিকে বে চাঞ্চল্যকর পরিছিতি, এর আকর্ষণ তাদের উপর ছর্ষার; তারা বদি বেসামাল হয়, কাল যত কঠিনই হোক তাকে সামলাবার দারিল প্রধানতঃ বড়দের; কারণ, সসোরে তাঁরাই এসেছেন আগে, আর পরিছিতির লভ দায়ীও অনেকটা তাঁরাই। তাঁলের দায়িল ছোটোদের যথোচিত পরিচালনা ও প্রতিপালন হারা সসোরে প্রতিষ্ঠিত ক'রে বাওরা। সত্যই তাঁরা ছোটোদের কতথানি আপনার এবং কতটা তাঁরা হয়দী ও দায়িল্পীল, তারই সত্যতা-প্রমাণের আহ্বান এনেছে এই 'নিক্ষাসেবী-সংঘে'র প্রবর্তনা। এর মধ্যে অতিতাবক, নিক্ষক, পাড়াপ্রতিবেশী ও সরকার—সকলেবই কর্তব্যের দায় আছে, একথা কোনোমতেই ভোলবার বা এড়াবার নয়। ভিতরের চাঞ্চল্য ও বাইবের বিষয়-প্রাচূর্বকে আল ঠিক মতো ব্যবস্থার কালে লাগিরে ছোটোদের অন্তর্নিহিত লক্তিকে ভেমনি বিপুলবিচিত্র ভাবে বিক্লিভ ক'রে ভোলবার দিন আলই; এই আধুনিক্-কালের

অংবাগের দিকটাও, আমাদের স্থাগত ক'রে নিজে, সবই আবার তেমনি
মঙ্গপতর হবে। টাকা প্রসা, জমিজমা, মানসমান, মুক্রবির,—সব
কিছুব চেরে বড়ো মৃলগন হচ্ছে মায়ুব। মৃলগনকে ঠিক মতো
না আটিয়ে দেউলে-সাক্ষা বৃদ্ধিমান বা অধ্যবসামীর পরিচয় নয়।
আর, বাদের জন্ম এত কথা, বড়দের ভাবী স্থান অধিকারী
আজকের এই ছোটরা যথন একবার ভেবে দেখবেন বে তাঁরা
ভাতির কতথানি, এবং কী সম্পদের উৎস তাঁবা, আর সেরক্ত কী

ভাঁদের দায়িত, তথন নিজেদেরই উন্নতির সহায়ক এই 'সংখে'র সাফ্স্যের কাজে তাঁদের স্বাগত-সহবোগ ক্রমে অফ্রস্ত হরে শক্তি কোগাবে। কিছ তার আগে বৃদ্ধিয়বস্থা ক'রে কাজের কথাওলি তাদের শোনানো চাই; বড়দের কাজ হবে বৈর্ধ ধ'রে স্থাক'রে ছোটদের ব্যক্তিত ও দায়িত্বের সম্বন্ধ ছোটদের সচেতন ও অভ্যন্ত ক'রে তোলা। এ কাজে পরাত্ম থ হলে জাতির ক্ষর অনিবার্থ, অগ্রসর হলে জাতীর উন্নতি অবধার্ধ।

রাজধানীর পথে পথে

উমা দেবী

তিনটি চিত্রিত পুতুল

উত্তর চিংপুর বোডের

আদ্ধনার ক্রফ পটভূমিতে

কড়া বড়ের ছোপ দিরে আঁকা

লাগ নীল সবুজ শাড়ীপরা

দাঁড়িরে আছে তিনটি চিত্রিভ পুতৃল।

—চমকে উঠল চাবুক-খাওরা মন।

আহুব্দেশ গ্যাসের আলোর থাম খেঁসে

ট্রীমের তার চলে গেছে টলতে টলতে
লোকান-পশবার বিচিত্র সন্তাবের পাশ দিরে।
সেধানে তামাকের গলের সঙ্গের মাশেছে ফুলুরিভাজার গদ্ধ—
বাজনার দোকানের শিরীষের আঠা তৈরীর গদ্ধে মিশেছে
ক্লের দোকানের বেল-চাপার গদ্ধ।
ট্রাম চলেছে থিমিয়ে ঝিমিয়ে ঝমর ঝমর শদ্ধ তুলে,
বলে উঠে সরে বাছে বেলোয়ারি চুড়ির রন্ত-ঝলসানো দোকান—
ভারই মধ্যে মধ্যে এক একটা সক্ সক্ষ কানা গলি—
ভারই মধ্যে মধ্যে এক একটা সক্ সক্ষ কানা গলি—
ভারই মধ্যে মধ্যে এক একটা সক্ষ কানা গলি—
ভারততন মনের কানা ইচ্ছের মতন।
ভার সেই অবচেতন মনের অন্ধলারের পাকে জড়ানো গুটিপোকার
প্রজাপতি হওরার বপ্লের মতন—
সেই গলির অন্ধল্যবের পটভূমিতে আঁকা হ'বে আছে—
লাল-নীল-সবুল শাড়ী-পরা তিনটি চিত্রিত পুতুল।

তাদের ঠোঁটে বড়, চোথে কাৰল, বেণীতে বভিন ফুল, তবু তাদের দৃষ্টিতে দিখাহারা বিহ্বলভা---তবলায়িত দেহবল্লমীর অভিব কম্পন তাদের আড় লে আডুল্ল ---নীরব---নিধর তিনটি চিত্রিত পুতৃল। উত্তর চিংপুর বোডের এক অজ্বার গলিব ছারার। ষেন অককারের সমুদ্র ঠেলে সামনে আসতে পারছে না তিনটি রক্তপন্ন, তিনটি বক্তিম হাদ্যের অস্তিম বাসনা হারিয়ে গেছে বাত্রির হতাশার, তিনটি জীবনের বঙিন মোমবাতি বীরে বীরে গলে বাচ্ছে অতলান্ত থাদে, বেন মেখনা পদ্মা বৃত্তীগঙ্গার তিনটি হারিরে বাওরা ঢেউ আহতে পড়েছে ত্রী গলির অককারের সমুদ্রে।

জান ঐ অন্ধনার সমুদ্রে জোয়ার এসেছে অনেক বার,
অনেক বৈশালী উজ্জনীর রাজগৃহ বারাণসীর
আমপালী জামা স্পসা শাসবজী পদ্মাবতীর দল
ভাসিরে দিয়েছে স্বর্ভি কামনার মদির মালিকা বৌবনের উদ্ধাম প্রোতে,
বাদের চোঝে অসন্ত নীলকান্তমণির রক্তিমাভ জ্যোভির স্কুলিক,
অধ্বে স্ক্রিত হত পদ্মরাগমণির কঠিন রক্তিমা,
বাদের টক্ত-বিচূর্ণিত মনঃশিলার তুলনা রক্তবর্ণ চীনাংভকের বহিত্তে
দক্ষ হয়ে যেত প্রেটিনক্তনের রত্বের ভাতার।

জানি এই অন্ধকারের জোরার হয়তো কোনো দিনই নি:লেব হবে না, ছড়িরে বাবে গলার তীর থেকে মহানগরীর দক্ষিণে পূর্ব উত্তরে রাজপথের কঠে-উপকঠে বিবামৃতের আলা-মধুর বন্ধণা ঢেলে দিতে, — জানি হয়তো ঐ তিনটি চিত্রিত পুতুল চিরদিনই আঁকা থাকবে নিশীথের কৃষ্ণটে উত্তর চিৎপুরের অন্ধকার গলিতে—বেথানকার অন্ধকারের সমুদ্র ঠেলে ঠেলে তুবে বাবে ভিনটি রক্তাক্ত কৃষ্ম, তিনটি বভিন মোমবাতির বিমর্ব আলো গলে গলে নিবে বাবে অন্ত কিজানার

ভাৰণৰ—আবাৰ দাঁড়াবে আবে। ভিনটি চিত্ৰিভ পূডুল বাদেৰ ঠোঁটে বঙ, চোখে কাজল, বেণীতে ৰঙিন কুল, তবু বাদেৰ ঘৃষ্টিতে দিশাহাৱ! বিহ্বলতা, আৰু দেহবদ্ধনীৰ কম্পনে কম্পনে বুক্তিৰ পিপাসা।

माहिएए ३ मिस्न हित्र छन्छ।

জ্যোতির্ময় রায়

मिहित्काव म्लाविकांव नमस्यव नस्य পরিবর্তনশীল, না ভারমধ্যে একটা সর্বকালীনত্ব আছে, তা নিয়ে অনেক বাস্তব্বাদীর মনে একটা প্রশ্ন আছে। এতকাল সত্যম শিব্ম স্থন্দ্রম সাহিত্যের সংজ্ঞা হিসেবে স্বীকৃত হয়ে আসছে এবং সভ্য ও শিব বেহেতু নিত্যবন্ত, কাবাবসও গণ্য হহেছে কালমালিকের উ।ধ্ধ। আধুনিক বাস্তববাদীরা ধোঁরাটে সংজ্ঞার বিখাসী নর, তারা বস্ভটাকে লোকোন্তর থেকে লোকায়ত স্তবে নামিয়ে এনে বাস্তব ব্যাখ্যায় প্রিচ্ছর করে°দ্বেখতে চান। তাঁরা বলেন সাহিত্য হল সমাজসঞ্জাত বল্প—সংবাতের ভেতর দিয়ে সময়ের সঙ্গে সমাজের কাঠামো বিবর্তিত চচ্চে এবং সেই বিবর্তনই নিয়ন্ত্রিত করছে সমাজ-মানসের সতা, কল্যাণ এবং বসবোধকে—অর্থাৎ সত্য শিব সুন্দর সময়োচিত। ফুচি-কল্যাণ-বীতি নীতি এবং বসবোধই যখন পরিবর্তনশীল তথন এক্যুগের কাব্য অভযুগে মিমি'এই মতো মৃত জীবনের সাক্ষ্য দেবে অনেকে এমন কথাও বলেন, বে-সাহিত্যের স্টি আন্তৰ্বাদেৰ আওতায়, বার ভিত প্ৰমন্ত্ৰেৰ আধ্যাত্মিক অবস্থায়—হথন জানা গেল প্রম বলে কিছুই নেই, স্বই প্রিবর্মনীল, তথ্ন এই নব চেতনার আলোতে অজ্ঞতাপ্রস্ত দেই আনন্দলোক অর্থীন হরে বেতে বাধ্য।

থালিক বল্লবাদকে জীবনদর্শনের ক্ষেত্রে অনস্বীকার্য্য সতা বলেট মনে কবি, কিছা সাভিত্যের ক্ষেত্রে ভার এ-জাতীয় প্রেরোগের বিৰুদ্ধে আপত্তি তোলার ষথেষ্ট অবকাশ আছে। বাঁরা জীবন-দর্শনের পরিবর্তন দিয়েই প্রাক্তন এবং প্রভাবিত আধনিক সাহিত্যকে বাজিল করতে চান—অৰ্থাৎ বারা গাণিতিক নিশ্চয়তার সংস বংলন এক জীবনদৰ্শনে পুঠ সাহিত্য সম্পূৰ্ণ বিপৰীত-ণ্ডী জীবনদর্শনের মগতে গিয়ে পড়লে কোনো আবেদনই তার ধাকতে পাবে না, মূল ভিত ধ্বলে গোলে কাঠামো দাঁড়াবে কিনের ওপর—তাঁদের জবাবটা খুব সহজেই দেওয়া বার। প্রকৃতির চরিত্র মাতুবেৰ বিলেষণ বা ভৱ আবিভাৱে নির্ভরশীল নয়। মাধ্যাকর্ষণ ভব বাতিল হয়ে গেলে বস্তুর পত্রন পদ্ধতি পালটে বাবে না, পদার্থ-বিজ্ঞানের পূর্বান্তন ধারণা অমুবায়ী বস্তু ও শক্তির বিভেদ আধুনিক ^{মতে} লোপ পেয়ে গেছে, তাতে প্রাকৃতিক হালচাল কিছু বদলে যায়নি। ভাবনে ভত্তজানের পরিবর্ত্তন মামুবের শীবনে নিচ্ছিন্য এমন কথা শামি বলছি নে। বৈজ্ঞানিকের পক্ষে এ ধুবই বড় কথা, প্রকৃতিকে পারতে থারা প্রয়োজনে ভাকে নিরন্ত্রিত করভে চান। সাহিত্যিকের কারবার কি ভাবে ঘটছে ভার বিচার-বিল্লেষণ বা পরীক্ষা-নিরীকা নিরে নর, তার বিষয়বস্ত মান্তবের মৌলিক ভারাবেগের বিভিন্ন বিকাশ নিয়ে—নৈস্গিক বা পারিপার্থিক পরিবর্তনশীল ঘটনা নেহাংই ভার কাছে অবলম্বন মাত্র। স্বাভাবিক প্রহোজন স্বার বৈজ্ঞানিক এ হ'বের নিয়ন্ত্রণাধীন এই অবসম্বতার বৈজ্ঞানিক এ ছুয়ের নিয়ন্ত্ৰণাধীন এই অবলম্বন ভাবে বসফ্টিব বেথানে বভটুকু অংশ জুড়ে ^{বলে ভ}তটুকুর মৃল্য যে স্থায়ী নয় লে কথাও সভিয়।

বিশ্বলগতের প্রতিটি বস্তুক্তে প্রতিনিয়ন্ত পরিবর্তন চলছে, নিমেৰের জন্তে তা বন্ধ হলে বিশ্বটা ববীক্রনাথের বাঁশির মতোই

চেচিরে উঠতো হারিরে গেছি আমি' বলে। এই পরিবর্তনের হোচাই দিয়ে হেবাক্লিউদ পাওনাদারদের দেনা অস্বীকার করার মতো বাতুলতাও করে বদেছিলেন—সভ্যোপলবির প্রথম উচ্ছালে ভার প্রব্যোগের এ জাতীয় বাড়াবাড়িও হবে গেছে। পরিবর্ত্তনও কতকললো অপরিবর্তনীর বিধি মেনে চলে বলেই নিজেকে এবং বহির্জগতকে প্রতি মুহুর্জে নতুন করে শামাদের চিনে নিতে হয় না। প্রতিনিয়ত দে পরিবর্তন চলছে তা পরিমাণগভ, এই পরিমাণগত পরিবর্ত্তনই পৃঞ্জীভৃত হরে একদিন গুণগত পরিবর্তনে রুপাস্তবিভ চর। বারা রসস্টি এবং রসবোধের আপেক্ষিক চিবস্তনভার বিশাসী নন, ভাঁদের মতে সেই গুণগত পরিবর্তন আমাদের সমাজমানদে এদে গেছে, বদিও এখনও তাকে আমূল বলা চলে না। ৰদি প্ৰশ্ন করা বাহা, প্রাচীন মহাকাবা পড়ে আৰও আমৰা বস পাই কেন ? তাহলে তাঁদের ক্ষবাবটা হরে পড়ে অঞ্চানা বৰুমের। আমরা রস যে পাইনে সেটাও নাকি বুঝি না, 'ওটা 'নাকি বিশুদ্ধ সাহিত্যবস নয়; ঐতিহাসিক কৌতুহল, পুরান্তনের প্রতি মোহ, ইত্যাদির মুখবোচক একটা মিশ্রিত পানীর মাত্র। আনন্দ পেরেও যদি স্বীকার করতে হর পাইনি, তবে দেকেত্রে তর্ক না তোলাই শ্রের:। তবে এটা দেখা বার কাব্যের मुना दिहारत व्याहीरनत मरन जातुनिक घटनत जांकल कारना देवनमा বান্মীকি, চোমার, কালিদাস, শেশুপীয়বকে আছও আমরা মহাকবি বলে গণ্য কবি-কালপ্রবাহে অপবিবর্তিত এই অভিমত বসবোধে মিলেইই পরিচায়ক I

সাহিত্যের কারবার মাতুবের চিত্তবৃত্তি নিয়ে, অভএব সেধানে পরিবর্ত্তনের প্রভাব কভটা পতে, দেটাই আগে বিচার্য। সেদিক দিরে মান্তব বেদিন থেকে আবেগকে ব্যক্ত করতে পেরেছে উপযক্ত ভাষায়, ভারপর থেকে আৰু অবধি তার চিত্তধর্মে পরিবর্জন ঘটেছে তেমন কোনো প্ৰমাণ পাওৱা বায় না৷ প্ৰেম-উৰ্বা-ছেচ-ছেব কাষ-ক্রোধ দেদিন বেমন ছিল আজও তেমনি আছে, বদলেছে ওব আবেগগুলোকে উদ্রিক্ত করবার উপকরণ আর উদ্রিক্ত আবেগের প্রকাশভঙ্গি। এককালে বে ভাবা বা ভঙ্গিতে মনে প্রেম সঞ্চারিত হতো আৰু হয়তো তা কোৰ বা হাত্ৰসের কারণ হয়ে দাঁড়ার। উপকরণ ও পারিপার্দিকে এ ধরণের ভ্রান্তিকারী পরিবর্তন হয়েছে অসংখ্য কিছ দে পরিবর্তন মায়ুযের আদি চরিত্রকে স্পান করেনি-করে করবে. আঞ্চও তা জামাদের ধারণাতীত। পশু বিবর্ত্তিত হয়ে মানবীর স্বাভয়ে পৌছতে প্রয়োজন হয়েছে ক্রনাভীত কাল-মামুষ দেহে বা মনে বিবঠিত হয়ে কবে চবিত্রাপ্তরকারী অন্ত কোনো স্বাভন্তা লাভ कदर्द वा स्मार्टिडे कदर्द कि वा ता जन्मर्क खिदरायांनी कवाद मरखा সম্পূল আজও আমাদের হাতে জমা হয়নি। ক্রমবিবর্তনে বানর মানুষ হয়েছে আবার বানর বানরই থেকে গেছে, গতএব আক্তি-প্রকৃতিতে नकृत ध्वेती উद्धारक পরিবর্তন আসবেই, खোর করে বলা চলে না। ৰদি কোনো দিন আগে তবে সেদিন হয়তো আজকের চিত্তবৃত্তির চাহিদা তথনকার চিত্তধর্মের কাছে একেবারেই অর্থহীন হয়ে বাবে। এমন কি, অভুক্ষেৰ যোগপুত্ৰটুকু কোধাও ছিল্ল ও লুপ্ত হলে আম্বরা ৰে ভাদের পূৰ্ব্যপুক্ষ সেটাই আহিছার ক্ষতে হবে গবেষণা দারা।
কিছ আমার কথা এই, বিবর্জনের ইভিছাসে মান্থ্যের ব্যস্টা
নিভাস্থই নগণ্য এবং ভার মূল আকৃতি-প্রকৃতির ওপর পরিবর্জনের
প্রভাবটা শীভলভামুখী প্র্যেবই মতো নির্ভাবনার গ্রহণ করা
বেতে পাবে।

মাহিতার'সর সম্বিকভার বারা বিশাদী, তাঁরা অত-বড় জৈব বিপ্লবের দোহাই দিরে তাদের বিশাসকে সমর্থন করেন না। তাঁরা বলেন, স্মাক্তদ্পাত বল্পদ্মাক বিবর্তনের সঙ্গে বিবর্তিত হতে বাধা। যক্তি তাদের গ্রাহ্ম হতো কাবা বা শিল্পের এক মাত্র অবলম্বন হতো ষদি সমাকের পরিবর্তনশীল বচিবক। বচিবক সেধানে উপকরণ মাত্র, ভাই এই উপকরণের স্বল্পতা সর্বকালীন শিল্পের একটি প্রধান লক্ষণ। শিল্প উপক্রণ সংগ্রহ করে ছাটো তহবিল থেকে, এক প্রকৃতির শার মান্নবের। প্রকৃতির ভত্তবিল থেকে যে উপকরণ সংগৃহীত হয় সে দের অমরত, মাঞ্বের তৈরী তচবিল থেকে যতটা আসে সে করে তোলে ভাতটা অনিভাংমী। আদি যগল-শিল্পের অভাদর প্রাকৃতির দেওবা উপ হর্থকে অবসম্বন করেই। স্থব আব চিত্রে মানবনিয়ন্ত্রিত উপকরণ আশ্রম পার বিশ্ব এক মাত্র অবস্থন হয়ে সম্পূর্ণরূপে তাকে দেশগত ভাতিগত বা কালগত কৰে ভোলাব মানো প্ৰতিপত্তি ছণ্ডাতে পাৱে না। বস্তুদলীত সঙ্গীতের সর্বৃধালীনত এবং সার্বভৌমিকতের অবিস্থাদী প্ৰিয়। এই স্থবলোকে বিভিন্ন স্থান-কালের বিভিন্ন ভাব-ভাবা চ:-চাল আগ্রাম নিয়ে আমাদের কচিকে যতই বিভাস্ত করুক আপাত বিচাবে তাকে বতই দেশ বা কালগত মনে হোক মৌল সম্ভাৱ সর্বসাসীনত্ব ভার অকুর্ট থাকে। কেউ হয়তো বলতে পাবেন সঙ্গীতে আবার সার্বভৌমিকত কোধার, আপানি গান বা বাজনার তো তাব হাসি বা বিবক্তিব উল্লেক হর মাত্র। তা इवारहे कथा। मकीएकद दम्हाहे मार्यक्रमीन, लायाहै। नय। বিজ্ঞাতীর ভাষাও হাসির কারণ হয় কিছ সেই ভাষার দেওবাল ডিভিয়ে অক্ষরত ভাবের মুখোমুণী গাড়ানো মাত্র তাকে অভবের আত্মায় বলে চিনে নিতে বুচুর্ত দেরি হয় না-শাকিক কৌতকের মুক্তমুড়িট্রুও হর তথন অভুহিত। ভাবই সার্বভৌমিক কিছ ভাষাটা নর। প্রত্যেক শিরেরও তেমনি একটা আনন্দবাহী ভাষা আছে যার সঙ্গে অপরিচয় আনন্দলোকের পথ রোধ করে থাকে। এ রকম আপাত দৃষ্টিতে দেখতে গেলে স্বজাতীর শিল্প-কলায়ও সার্বস্থানতার সাকাৎ মিলবে না। প্রতি শিকের উন্নত ক্ষরের ভাষা বিলেব একটা শিক্ষার দাবি করে। রবীন্দ্রনাথের কবিভা বা বামিনী বাবের ছবিও বহু লোকের কাছে অর্থহীন বা হাস্তকর। কিছ বখনট দেখা বার কোনো শিলের ভাষার সঙ্গে একবার পৰিচিত হলে ভার বিশেষ পদ্ধতি বিশেষ এক জাতীয় আনন্দ বে-কোনো লোকের মনেই সঞ্চার করতে পারে, তথন মানভেই হবে সব শিরেব মৌল শিল্পভেই সার্বভৌমিকত বর্তমান। সাথি ভাবে মানংচিত্তে এই একা আছে বলেই বিভিন্ন দেখে বিভিন্ন জাতির মধ্যে একট জাতীর কতকগুলো শিরের উদ্ভব সম্ভব ছয়েছে। অবিভি কোনো কোনো শিল্পের ভাষায় স্বভারতই একটা সার্বস্থনীনতা বিজ্ঞমান, বেমন চিত্রক্লায়।

চিত্রের উপকরণ রং ভার ভাক্তি-প্রকৃতির ভাণ্ডারের এই ছটি ্রিপকরণই নিত্য বস্তু। কালোপবোগী ভাতিবাজি এবং পরিবর্তনশীল সমাজোপকরণ বছাই তাকে আগ্রহ কলক তা গৌণই থেকে বার—
সেধানে আনন্দলোক স্মৃষ্টি করে রেধাবছ বা বর্ণবিক্তন্ত বল্তসন্তা।
বল্তসন্তার রূপারণ সার্থক হলে চিত্র চিরন্ধন হরেই বেঁচে থাকে।
গুহাবাসীর চিত্রও অতি আধুনিক চিত্রসমালোচকের নরনকে নন্দিত
করার ক্ষমতা রাথে—গুহা থেকে অভ্যর্থনা করে তাকে এনে
আসন দিত্তে হর, সভান্তগতের স্টুরত চাক্রকলার আসরে।
মাইকেল এপ্রেলোর চিত্র বা অলম্ভার গুহাচিত্র আধুনিক প্রেষ্ঠ শিল্পীর
আঁকা, আধুনিকতম বিষয়বস্তর পাশে অণুমাত্র সান মনে হবে
না। মহাকাব্যের কিছুটা অংশের বদ সমরের সঙ্গে হিকে
হরে বার কিন্তু মহাচিত্রের রূপ কার্তিকের বৌবনের মতোই
কালপ্রণাহীন। এ দিক দিয়ে শিল্পের প্রগতে চিত্রের সর্বকালীন্দ
এবং সার্বভৌমিক্ত সর্বাধিক।

সঙ্গীত এবং চিত্রকলার বিষয়বস্ত এবং বীতিপদ্ধতি সমাজজীবন খাবাই নিয়ন্ত্ৰিত হয় বটে, তবু সমাজের পরিবর্তনের সঙ্গে সঙ্গেই ভাগের মূল্য পরিবর্ত্তিত হয়ে যায় না। কারণ এ ছটি শিরের কোনটিরই সমাজজীবনের উপকরণকে সবিস্তাবে বা প্রগভাবে অসীভত করার ক্ষমতা নেই। পরিবর্ত্তনশীল উপকরণ সুগ্ম হতে গিয়েই সময়ের উদ্ধে চলে যায়। কাব্যেও এ গুণ বর্তমান, যদিও দঙ্গীত বা চিত্রের মতো অতথানি নয়। কাব্যে চিত্তবৃত্তি তার প্রকাশের অবস্থন হিসেবে সমাঞ্জ-জীবন থেকে যদিও উপকরণ আহরণ করে ভখাপি পুরোপুরি বল্পনির্ভয়শীল নহ-বিশেষ করে লিরিক কবিতায়, পরিবর্তনশীল উপকরণের নির্যাসকে শান্ধিক বাজনা এবং ইন্সিতমরতার ভেতর দিয়ে প্রকাশ করাই তার ংর। উপাধ্যান-কাব্যের উপাধ্যানভাগকে মানিমার হাত থেকে বাঁচায় ভার ছলের বস্তার, শাব্দিক ব্যঞ্জনা এবং ইলিভময়তার আনন্দলোক। বিভ উপকাস বা গল-সাহিত্যের বেলায় সমাল-জীবনের পরিবর্তনদীল উপক্রণগুলোই সবিস্তাবে মুখ্য অবলম্বন হয়ে দাঁভার চিওবুডিকে সাড়া দেবার। গতের অবাধ আভিথেরতার ভাৎকালীক সমাজ-জীবনের বীতিনীতি সম্ভা সব এসে ভিত ভ্যাহের বসে কথাশিরে আসরে, তাতে করে সমসাময়িকের অভার্থনায় অভিময়ভাট দেখা দেয় কিছ পরবর্তীকালের পাঠকের কাছে ভার রূপ ও বস বচলাংশেই ফিকে হয়ে বায়-কারণ তথনকার সমাজ-জীবনের বীতিনীতি হয়তো গেছে পান্টে, সেদিন বা ছিল সম্ভা ভা হরে এসেছে সহজ, তাই অত জাঁকিয়ে অত কথা বলার কোনো সার্থকভাই খুঁছে পারো ৰায় না। তবু এই পৰিবৰ্তনশীল ঘটনাৰ ভেতৰ দিয়েই মায়ুৰেৰ চিত্তবৃত্তির কতকগুলো অপ্রিবর্তনীর অভিযাক্তি প্রকাশ পায় এবং তারই কোরে গতাসাহিত্য সময়ের পিছিল পথে চলে প্রনেও একেবারে গড়িয়ে বায় না। পল্লী-সমাজের সমস্তাগুলো একালের কিছ বমা-বমেশের সম্পর্কের মাধুর্ব্যটুকু সর্বকালের।

কবিতা এবং কথা শিলের তফাৎটা হোমিওপ্যাথিক জার এনে পার্যাথিক ওমুধের মতো, হোমিওপ্যাথিক ওমুধে হস্ত তার খান-গন্ধ-রূপ হারার বটে কিন্ত বৈশিষ্ট্যটুকু তার প্রোমাত্রার বজার থাকে স্ক্লেতম সন্তার, এনে পার্যাথিক-এ বস্তার স্থান অভিত্তির অংশও অনেকটা পরিমাণেই থেকে বার এবং গ্রহণকালে আপাতক্ষচিতে সেই সুল অভিত্তিই খান-বিশাদের অবতারণা করে। কিন্তু একবার উদ্ধর্ম হলে মূল ক্রিয়ার ছুটোই সমান। জীবন প্রবাহের উপক্রণের নির্যাগ

নিয়ে গড়ে ওঠে কবিতা আৰু কথাসাহিত্যের অবশ্বন তাদেরই সুস প্রকাশ-বার বহিরক্ষের ওপর পড়ে কালের ছাপ। তবু বিগত বংগ্র কথাশিলেও মনটাকে একবার প্রবেশ করতে দিলে বস আমরা সেধানেও পাই, তবে কিনা সেটা অবিচ্ছিন্ন এবং অনাধিল নয়, প্রিব্তিত সমাজ-জীবনের উপক্রণগুলো প্রতিপদে রস্বোধকে ব্যাহত করতে চায়। কিন্ত শিল্পমাত্রেবই এমন একটা গুণ আছে, বা আমাদের ব্যক্তিগত্তাকে সাম্যায়ক ভাবে স্বস্থিত করে মনটাকে তুরীয় অবস্থায় উন্নীত করার ক্ষমতা রাখে-অলকারশাস্ত্রে বাকে বলা হরেছে विकिश्वि वन। मानुद्वत योग ठिखवृखित व्यवाद चाक्रव काथाव ছেল প্রেনি বলেই বে কোনো কালের স্থধ-ছাথ হর্ষ-বিবাদ তার বাত বিস্তাব করে এনে স্পর্ক করতে পারে বে কোনো কালের মনকে —সম্ধর্বে এ এক অপুর্ব সম্প্রদারণ ক্ষতা বা **আপাত**বৈৰ্মাের বাধাকে অভি দম করেও আত্মিদ বোগসূত্র স্থাপন করে। রূপকথার बार्तिक नव-नावी वा कोव-मंद्रव मार्था नमध्य हिन्द्रविव शविहत्र (वर्गे बाब भारे, अपनि आञ्चयत्नव व्याक्रमन पिरवर तहे कवालाकरक খাম্যা খাপনার করে তুলি এবং তা খেকেও খানক পাই

প্রচুষ। চিন্তবৃত্তিতে মিল পাওয়ামাত্র করনাই সাহায্য করে মনকে অভিকাশ্ত বা অনাগত যুগের সলে থাপ থাইরে নিভে। প্রগতিশীল সাহিত্যের অনাগত কালের করনার বলি আমরা আনন্দ পাই তো বিগতদিনের সভ্যের সংস্পর্ণাই বা আমাদের আনন্দেহে উদ্বৃদ্ধ করবে না কেন ? ছটোর কোনোটাই উপস্থিত আবনে সভা নর।

সাহিত্যে চিম্বন্ধন হার স্বচেরে বড় পরিচয় তার সার্বন্ধনীনভার । ভাবার প্রাচীয় ঘোরতনে আবদ্ধ থেকেও প্রবাপ পাওরামাত্র অম্বানের গ্রাফ্রণ্ড নিরেও সে তার আত্মীয়তা ঘোরণা করে বিশ্বমানবের সঙ্গে। যা সার্বন্ধনীন তা-ই সর্বকালীন । পৃথিবীর বিভিন্ন আংশের বিচিত্র পরিবেশ বে ঐক্যে দাগ কাটতে পারেনি কালের বৈচিত্রা ও তাকে বৃগবৈধ্যায় রেখার বাধকে পারবে না। তাই কথালিরকেও স্পপ্তায় আমি বলব না, বলব তার বহিরালিক বোবন দীর্ঘ নয়। মানুষ্য যত কাল মানুষ্য থাকবে তত কাল তার স্থিতি কোনো সার্থক শিরকর্মের মৃত্যু নেই, বৌবনোচিত রূপ-রস্ক্য বেশী ফিকে হয়ে বেতে পারে মাত্র।

भन

নীহাররঞ্জন হালদার

क्षेत्र हरन, (अन हरन व्याव हरन मन ; মনের সমান ক্রভ কে করে ভ্রমণ ? চান্ধার মাইল দুরে--শত্রুর দেশ কলেৰ বোতাম টিপে কৰ ভূমি শেষ ! মন বলে, সর মিছে व्यामि विभ वाहे लिए সৰ কিছু হয়ে যাবে ছাই; মনের সমান জোর আর কারো নাই। কভো দিন কভো কথা। মাবে মাবে নীববভা গড়ে ৬ঠে সুমধুর মিভালি। দেখিৰে ভাহার শেবে यात्रात्रात केंद्राह ता मन बदव इद्यु वात्र शास्त्र । দেখা-শোনা ভাগা-ভাগা, জানা নেই তাব ভাষা: কতো ব্যধা মনে ভাগে বিদেশেতে বিদাবের আঙ্গে!

জানি না কিসের তরে বেদনায় আঁখি ঝরে নাহি বুঝি তার কোন মানে। হয়তো তাহার মন দেখে:ছু সবুজ বন উবর মকুর মাঝধানে।

মনের কোরেই ত সে রকেটে চড়বে,
চাদের সোহাগ-টিপ কপালে পরবে।
মনের নাবিক হরে কতো উন্জান্ত
কতো বাধা পার হলো কতো মক-প্রান্ত
মনেতে ভংগা রাধি
প্রিংজনে দূবে ছাড়ি
কতো জনা কতো দৃরে দিরেছেন পাড়ি;
বারে বারে পরাজয়,
প্রেচিকুলে প্রোভ বর,
তবু ত বিলীন নর লক্ষ্যের পথ;
জেগেছে কেবল মনে নুহন শপধ।

মন—মন—মন, হে আমার মন,
তুমি ছাড়া এ জগতে কে আছে আপন ?
আমার কথার মানে
একজনা ভালো জানে
সাগর বে ছর বাবে পাড়ি দিরেছেন,
হরতো ডুমিও জানো,—বীর সে মিহির সেন।



নেতাজী সুভাষ্চন্দ্র বস্তু ও মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধীর পত্র-বিনিময়

নেতাজীর পত্র—৬

ব্বিয়ালগোড়া পো:, ড্রে: মানভূম, বিহার, ১০ই এপ্রিল, ১১৩১।

প্রিয় মহাস্থাক্রী,

তাঃবাৰ্ত্তা এবং সংক্ষিপ্ত পত্ৰ ব্যতীত আমি আপনাকে हार्तिष्ठि क्लच्युर्व भव भिष्यक्षि—वथा, २०८म मार्क (२७८म मार्क জাকে ফেলা হয়), ২১ শা মার্চ্চ, ৩১ শে মার্চ্চ এবং ৬ই এপ্রিল। পত্রগুলিতে সাধারণভাবে কংগ্রেসের বিষয়ে এবং বিশেষ করিয়া ওয়ার্কিং ক্থিটি গঠন সম্বন্ধে আলোচনা করিয়াছিলাম। পত্রালাপ দীর্য এবং বিসম্বিভ হওয়ার জন্ম আমি হঃথিত। একটিমাত্র দীর্য পত্রের মধ্যে সকল কথা বলিতে পাবিলে সুখী হইভাম: কিছ ছুইটি বাধার জন্ম তাহা হয় নাই। প্রথমতঃ একটি দীর্ঘ এবং সম্পূর্ণ পত্র গিৰিতে গেলে শহীর মনের উপর চাপ পজে। ধিতীয়ত: আপনার পত্তে উল্লিখিত নৃতন নৃতন বিষয়গুলি সম্পর্কেও আমার পক হইতে অবাব দেওৱার প্রবোজন। আলা করি এইটিই আমার শেষ পত্র ছইবে। যে বিষয়ে আমাকে ভুল বুঝিবার সম্ভাবনা আছে, এই পত্ৰে আমি দেই বিষয়গুলি সম্পৰ্কে আমাৰ বক্ষবা পরিকার করিয়া বৃধাইয়া বলিভে চেষ্টা করিব। ইহা ভিন্ন, আমার পূর্ববর্তী পত্রগুলির মূল বক্তব্যগুলির পুনরালোচনা ক্রিয়া, আপনার निकृष्ट (भव भारतस्य कार्याहर ।

(১) ছুর্নীতি এবং হিংসা

জামি যদি আপনাকে ঠিকভাবে বৃথিয়া থাকি, ভাহা হইলে চরমপত্র দেওয়া এবং সংব জাভীর সংগ্রাম আরম্ভ করার আপনি বিবোধী, কারণ আপনি মনে করেন বে, আমাদের মণ্যে বপ্রেষ্ট ছুনীন্তি এবং হিংসাত্মক মনোভাব প্রকট। গত করেক মাস ঘাবৎ ওয়ার্কিং কমিটিতে এই তুনীতির বিষয়ে আমরা আলোচনা করিয়া আসিছেছি এবং আমার মনে হয় এবিষয়ে আমরা সকলেই একমততে পার্থকা তথু এইটুকু বে, আমার মতে, উহা (তুনীতি) এত ব্যাপক নহে বে, পূর্ব স্বরাজ লাভের অভ সম্বর সংগ্রাম আরম্ভ করা ভাহা অসম্ভব করিয়া তুলিবে। অপরপক্ষে, আমরা যদি নিয়মতান্ত্রিকভার পথে আরও দীর্থকাল গা ভাসাইয়া চলি, জনসাধারণ বদি আরও দীর্থকাল বাবৎ উচ্চ পদের স্থব-সম্ভোগের মোহে আচ্ছর থাকে, ভাহা হইলে আরও অধিক পরিমাণে তুনীতি বৃদ্ধি পাইবার সম্ভাবনা আছে। আরও, আমি একথা বলিভে পারি বে, বর্তমান কালের ইউরোপের রাজনৈতিক দলগুলি সম্বন্ধে আমার প্রত্যক্ষ অভিক্রতা আছে।

প্রতিবাদের আশকা না করিয়া আমি এ দাবী করিতে পারি বে, নৈতিক দিক হইতে বিগাব করিলে উহাদের অপেক্ষা কোন অংশেই আমবা নান নহি ববং করের বিষয়ে অপেক্ষাকৃত উন্নতও বটে। স্তবাং তুনীতির বিভীষিকা আমাকে ভীতিগ্রস্ত করে না। অধিক জ, দেশের মুক্তির জন্ম আরও আত্মত্যাগের ও তুঃখক্টভোগের আহ্বান ছুনীতির সর্বোৎকৃত্ত প্রতিবেধক হইবে এবং প্রেমন্তঃ উহা আমাদের মধ্যে কোনও তুনীতিগ্রস্ত ব্যক্তি চুপিসাড়ে প্রবেশ করিয়া থাকিলে বা পদাধিকার করিয়া থাকিলে, জনসাধারণের সম্মুখে তাঁচাদের মুপোন খুলিয়া ফেলা সম্ভব হইবে। তুলনামূলক ভাবে বলা ঘাইতে পারে বে, ইতিহাসে এইরূপ উশাহরণের অভাব নাই যখন ধুবন্ধর ক্টনীতিগ্রগণ খবের শত্রুর হস্ত হইতে নিক্ষতির জন্ম বৈদেশিক শত্রুর বিক্রমে আহ্বাণ করিয়াছেন।

আমাদের মধ্যে হিংসাত্মক মনোভাব থাকা সম্পর্কে, আমি শামার পূর্ববর্ত্তী পত্রে উক্ত মতই দৃঢ়ভাবে পোষণ করি। কংগ্রেস-সদস্যগণের তথা কংগ্রেদের সমর্থকগণের মধ্যে, মোটের উপর, পূ-বাপেকা এখন হিংসার ভাব কল্লই। অস্তত:পক্ষে পূর্বাপেকা ভিংসার ভাব অধিক নাই—এ কথা নিশ্চয় কবিয়া বলা যায়। এবিব্যয়ে আপনা। মতের সমর্থন আমি কেন করি না, সে সম্পর্কে যুক্তি দেখাইয়াছি; তাহা পুনরাবৃত্তির প্রয়োগন নাই। কংগ্রেস-বিরোধীদের মধ্যে হিংদাত্মক মনোভাব বর্ত্তমানে হয়ত আছে, বাহার ফলে দাঙ্গা-হান্সামা ঘটিতেছে এবং যাহা কংগ্রেন সরকারগুলিকে কঠোর হত্তে দমন করিতে হইতেছে। কিন্তু উহা সম্পূর্ণ ভিন্ন ব্যাপার। উহা হইতে আমাদের এই অভিমত পোষণ করা ঠিক হইবে না বে, কংগ্রেসীদের মধ্যে বা তাহাদের সমর্থকদের মধ্যে হিংসার মনোভাব বাডিয়াছে ৷ যে সকল রাজনৈতিক দলের সহিত আমাদের কোনও সম্পর্ক নাই, বেমন মুসলিম লীগ,—ভাহারা বভক্ষণ পর্যান্ত না ভাবে এবং কর্ম্মে অহিংস হইতেছে, ততকণ আমাণের স্বাধীনতা-সংগ্রাম মুলত্বী রাধা কি মাত্রা ছাড়াইয়া বাওয়া হইবে না ?

(২) পণ্ডিত পম্বের প্রস্তাব

পণ্ডিত পদ্বের প্রস্তাব সম্পর্কে আমি আপনার নিকট জানিতে চাহিরাছিলাম বে, বে-রূপে উক্ত প্রস্তাবটি উপাণিত এবং শেব পর্যান্ত পাশ হইবাছিল, সেই রুপটি আপনি সমর্থন করেন কি না অথবা কম-বেনী আমাদের নির্দ্ধেশাম্বায়ী উহারই একটি সংশোধিত রূপ আপনি পছন্দ করিতেন বাহা সর্ব্বসম্বতিক্রমেই পাশ হইতে পারিত। আমি আরও জানিতে চাই বে, আপনি পছ্ প্রস্তাবটিকে আমার প্রতি

অনাস্থাস্চক বলিয়া মনে করেন কি না। আপনার অবগতির অস্ত আমি উক্ত প্রভাবটির মূল ধসড়াটি এবং তাহার একটি সংশোধিত ধসড়াও উদ্ধৃত করিলাম।

মূল খসড়া

বাষ্ট্রপতি নির্মাচন এবং তৎপরবর্তী ঘটনাবলী সম্পর্কে বে সকল বাদার্থাদ চলিতেছে এবং বে জন্ম কংগ্রেস মহলে এবং দেশের মধ্যে নানারণ ভ্রাস্ত ধারণা দেখা দিয়াছে, ভাহার জন্ম কংগ্রেসের পক্ষ হইতে প্রিস্থিতি বিশ্লেষণ করা এবং ভাহার সাধারণ নীতি ঘোষণা করা আবগ্রুক।

শিক্তীত বংসরগুলিতে মহাত্মা গান্ধীর নেতৃত্বে যে মূল নীতিগুলি কংগ্রেসের কার্যস্তীকে প্রভাবিত করিত, বর্তমান কংগ্রেস সেই নীতিগুলির প্রতি দৃঢ় আস্থাজ্ঞাপন করিতেছে এবং এই সুস্পষ্ঠ জ্ঞিমত পোবণ করিতেছে যে, সেই মূল নীতিগুলির ধারাবাহিকতা নষ্ট করা চলিবে না এবং ভবিষ্যতেও কংগ্রেসের কর্মস্টীকে তাহা বেন প্রভাবিত করে। গত বংসর বে-ভরাকিং কমিটি কাল চাগাইরাছিল তাহার কর্মক্ষমতায় এই কংগ্রেস আস্থাজ্ঞাপন করিতেছে এবং তাহার বে কোনও সদত্যের প্রতি কটাক্ষপাত করা হইরা থাকিলে, ভজ্জভ তুঃৰ প্রকাশ করিতেছে।

"আগামী বংসর স্ফটাবছার স্টি হইতে পারে মনে করিয়া এবং একমাত্র মহাত্মা গান্ধীই সেই স্কটে কংগ্রেসকে এবং দেশকে উপযুক্ত নেতৃত্বের বীরা জয়যুক্ত করিতে পারেন মনে করিয়া, কংগ্রেস ইচা অভ্যাবভাক মনে করে বে, তাহার কার্যানির্কাহক স্মিতি তাঁহার পুরা বিখাসভাজন হওয়া প্রয়োজন এবং সেজভারাষ্ট্রপতিকে এই অমুরোধ করিতেছে বে, গান্ধীজীর ইচ্ছামুসারেই বেন তিনি ওয়ার্কিং ক্মিটি গঠন করেন।"

সংশোধিত খসড়া

"রাষ্ট্রপতি নির্ন্ধাচন এবং তৎপরবর্তী ঘটনাবসী সম্পর্কে যে সকল বাদাপুরাদ চলিতেছে এবং ষেজন্ত কংগ্রেস মহলে এবং দেশের মধ্যে নানারপ ভ্রান্ত ধারণা দেখা দিয়াছে, তাহার জন্ত কংগ্রেসের পক্ষ ইইতে পরিস্থিতি বিশ্লেষণ করা এবং তাহার সাধারণ নীতি ঘোষণা করা আবশ্রক

"প্রতীত বংসরগুলিতে মহাত্মা গান্ধীর নেতৃত্বে বে মূল নীতিগুলি কংগ্রেসের কার্যাস্থাীকে প্রভাবিত করিত, বর্তমান কংগ্রেস সেই নীভিগুলির প্রতি দৃঢ় আছাজ্ঞাপন করিতেছে প্রবং এই স্থান্দার্ভ শভিমত পোবণ করিতেছে বে, সেই মূল নীতিগুলির ধারাবাহিকতা নট করা চলিবে না এবং ভবিব্যুতেও কংগ্রেসের কর্মাস্থানিক তাহা বেন প্রভাবিত করে। এই কমিটি গত বংস্বের ওরাকিং কমিটির কার্যাক্ষমতার আছাজ্ঞাপন করিতেছে।

"আগামী বংসর সঙ্কটাবস্থার স্থাষ্ট হইতে পাবে ভাবিরা, এই কংগ্রেস মনে করে বে, অতীতের স্থার ভবিষ্যতেও মহাত্মা গান্ধীর নেতৃত্ব এবং সহযোগিতা অত্যাবগুক।"

(৩) কংগ্ৰেস সমাজভন্তী দল

গত ৩১শে মার্চের পত্রে কংগ্রেস সমাজভন্তী দল সম্পর্কে বে মন্তব্য করিয়াছিলাম তাহা ঐ সমরের সংবাদপত্রে প্রকাশিত সংবাদ

এবং সাংবাদিক জন্মনা-কল্পনার উপর নির্ভন্ন করিরাই করিরাছিলাম। আমার তৎকালীন এই ধারণা হইয়াছিল যে, সি, এস, পির প্রকাপ্ত নেতারা মনস্থির না করিয়াই চলিতে থাকিবেন এবং ভাহার পরিণামে ভবিষাতে এক নতন নীতি অনুবর্ত্তন করিবেন, বেমন, পুরাতন নেতৃত্বকে সমর্থনের নীতি। আমি ভাবিয়াছিলাম বে. ভাহা হইতে আপনার মনে এই ভ্রান্ত ধারণার সৃষ্টি হইতে পারিত বে, সমগ্র সি, এস, পি পুরাহন নেডুছের পরিচালনাধীনে চলিয়া ৰাইবে: সেই জন্মই আমি আপনাকে বলিতে চাহিয়াছিলাম বে, সি, এস, পির উপরের তলার নেতারা যাহাই বরুন না কেন, ঐ দলের এক বুহদলে আমাদের সৃষ্টিত কাল করিয়া ঘাইবেন। ত্রিপুরীতে এই নেভাদের নিরপেক্ষতার নীতির প্রতিক্রিয়া তাঁহাদের দলের উপর কিরূপ হইয়াছিল ভাহা ভনিয়াছিলাম বলিয়াই আমি এরণ বলিতে পারিয়াছিলাম। কয়েকটি প্রদেশ এই নেতাদের আদেশ অগ্রাহ্য করিয়াছিল—সাধারণ সভাদের অনেবেই তাহা ক্রিয়াছিলেন। অনেকে আবার নিচ্মায়বর্ত্তিভার অনুরোধে অথবা নৈতিক চাপে নেভাদের আদেশ শিরোধার্যা করিয়াছিলেন। আপনাকে পত্র শিবিবার পর বে সংবাদ আমি পাইয়াছি ভাষাতে সি, এস, পির নেতাদের ভবিষাৎ নীতি সম্পর্কে আমার বে ধারণা হইয়াছিল তাহা ভুল প্রমাণিত হইয়াছে। এমতাবস্থায় কংগ্রেসের মধ্যে ভাঙ্গনের প্রশ্ন উঠিতেই পারে না।

(৪) একদলীয় বনাম সর্ববদলীয় ক্যাবিনেট

এ-সম্পর্কে জাপনার যুক্তিগুলি জামি মনোবোগের সহিত পাড়িরাছি এবং বিচার করিয়াছি বিশ্ব তৎসন্ত্রেও এ-পর্যান্ত জামার মত-পরিবর্ত্তন হয় নাই। হয়ত জাপনার জাবও যুক্তি জাছে বাহা জাপনার অভিমত জামার পক্ষে স্বীকার করার সহায়ক হইতে পারে। জাপনার মৃল বক্তব্য এই বে, প্রধান প্রধান বিষয়গুলি সম্পর্কে জামাদের মধ্যে মহভেদ এতই গভীর বে, আমাদের পক্ষে একবোগে কাল্ল করা জনজ্ব। হরিপুরা কংগ্রেসে জাপনি জামাদের সহিত একমত ছিলেন এবং বাষ্ট্রপতি নির্কাচনের পূর্ব্ব পর্যান্ত জামাদের পক্ষে একবোগে কাল্ল করা সম্ভব হইরাছিল। তাহার পর হইতে কি এমন ঘটনা ঘটিয়াছে বাহার ফলে একবোগে কাল্ল সম্ভব নহে ? জাব, জাপনার মতে, জামাদের মধ্যে মৃল বিষয়ে মতানৈক্যন্ত্রিই বা কি কি ?

আমি জানিতে চাই, এবদনীয় ওয়াকিং কমিটি গঠন সম্পর্কে আপনার প্রতিবাদ কি নীতিগত না আমার ২৫শে মার্চ্চ তারিবের পত্রে উল্লিখিত ৫০-৫০ আমুণাতিক হারের জক্ত। ঐ পত্রে আমি লিখিয়াছিলাম বে, আমি সাভটি নাম উল্লেখ কবিব আর সর্কার পাাটেল করিবেন সাভটি, আপনার সমর্থনের জক্ত। কিছু আপনি বদি উপবিউক্ত অমুপাত স্থীকার করেন, তাহা হইলে আপনার পক্ষেও ঐ চৌদ্দটি নামের প্রকার করা সমন্তাবেই সম্ভব। আপনি বদি প্র্কোক্ত অমুপাত খীকার না করেন এবং বদি মনে করেন বে, সর্ক্রসম্মত সর্ক্রদলীয় ক্যাবিনেট গঠনের পথে ভাহা অম্ভবার, তাহা হইলে অমুপ্রহ করিয়া ভাহা আমাকে আনাইবেন। বিবয়টি ভাহা হইলে পুন্বিবেচনার প্রবাস আমি পাইতে পারি।

(৫) শ্রীশরৎ বস্থর প্রতি উপদেশ

২৪শে মার্চের পত্রে আপনি আমার স্রাতাকে লিবিয়াছিলেন: িছভবাং আমি এই প্রামর্শ দিতেতি বে, হর তোমরা সকলে এক বৈঠকে সমবেত হটয়া প্রাণখোলা আলোচনা-মাধ্যমে একটা বোঝাপড়া **क्र चथरा दिराव जम्मक्राटाम विम এउनव इहेन्रा थाटक बाहाब करन** ভাহা বাহিব করা অসম্ভব হয়—ইত্যাদি ইত্যাদি।" আপনার প্ৰবন্ধী পত্ৰগুলিতে কিন্তু এই যজ্জির জন্মধাবন করেন নাই। আমি আপনাকে একাধিক বার লিখিয়াছি বে, আমাদের দিক হটতে, ক্রেনের মধ্যে একা পুনঃস্থাপনের জন্ম চরম চেটা করিতে আমরা প্রতে। আমি আরও বলিয়াচি বে, আমাদের পক্ষে, আমাকে শ্ট্রা এমন বছ বাজি আছেন বাঁচারা আপনাকে পক্ষপাত্তই বলিয়া মনে কবেন না। ই হাবা মনে করেন যে, যদ্ধান দলগুলিকে শাণনি একাবৰ করিতে পারেন। আমি খারও বলিতে পারি বে, একমাত্র পুরাক্তন নেতৃবুলকে এংং তাঁহাদের অফুগামিগণকৈ আপনি গানীবাদী মনে করিবেন-ইভার কোনও যক্তি নাই। শাপনি বদি আমাদের করেকটি ভাবাদর্শ এবং পরিকল্পনা প্রতণ করেল. ভাছা হটলে সমগ্র কংগ্রেদকেই গান্ধীবাদী মনে কবিতে পারেন।

আমার বিকল্প প্রস্তাবগুলি

- (ক) আমার প্রথম প্রস্তাব এই বে, মৃক্তিস:গ্রাম পুনরারছের
 আন্ত ব্যবস্থা অবলবন করা উচিত। এই বিবরে আমাদের নিকট
 ছইতে বে কোনরুপ আয়ুত্ত্যাগ প্রবোজনবোবে দাবী করিতে পারেন
 এমন কি বর্ত্তমানে বে সকল পদাবিকার আমাদের আছে
 ভাষার পবিত্যাগও। মৃক্তিসংগ্রাম পুনরারছ করিলে, তাহা
 বিনাসর্তে সমর্থনের প্রতিশ্রুতি আমরা দিতেছি।
- (খ) আপনি বলি মনে করেন বে, সংগ্রাম এখন আংজ করা সভব নয় এবং আপনি যদি পুরাতন নেতৃত্বকে পদাধিকার দিতে চান, তাহা হইলে আমার অমুরোধ এই বে, আপনি চারি আনার কংগ্রেস-সভ্য হউন এবং ওয়ার্কিং কমিটির পরিচালন-ভাষ নিজের হাতে গ্রহণ করুন। উহা হারা কতকগুলি বাবা দূর হইবে, বে বাবাগুলি দূর হইবার আবে সভাবনা থাকিবে না যদি আপনি নিজেকে দূরে স্বাইয়া বাবিরা পুরাতন নেতৃত্বকে গদীনদীন করেন।
- (গ) আমার এই প্রস্তাবন্ত বদি আগনার নিকট গ্রহণবোগ্য বিবেচিত না হয় এবং আপনি যদি আমাকে একদলীয় ক্যাবিনেট গঠনের জন্ম পীড়াপীড়ি করেন, তাহা হইলে আমার জন্মবোধ এই বে, আগামী কংগ্রেদ পর্যন্ত আমার প্রতি আন্থাজ্ঞাপন করুন। আপনি আন্থাজ্ঞাপক ভোট দিলে, আপনার "গোঁড়া" অমুগামিগণও এ, আই, দি, দিতে আমাকে সমর্থন করিতে বাধ্য হইবেন। উহা বারা জাঙ্গন একা এবং নির্ম্মাটে কাজ করিরা বাওয়া সম্ভব হইবে। গত এই প্রপ্রিলের চিঠিতে আমি আপনার নিকট সবিনরে জানাইরাছি বে, পশুত পছের প্রস্তাবান্ধ্যারে শুর্ বে আপনার ইচ্ছামুসারেই গুরার্জিং ক্মিটি গঠন ক্রিতে হইবে তাহা নতে, উহা আপনার বিশাসভাজনও হওরা চাই। একবার বদি এই প্রস্তাবটি অমুধাবন করেন, তাহা হইলে আপনার প্রাপৃধি বিশাসভাজন নয়, এমন ওয়ার্জিং ক্মিটি গঠনে পরামর্শ দেওয়া আপনার পক্ষে সম্ভব হুইবে না।

(খ) আপনি বদি ভিন্তি প্রভাবই বাতিল করেন, ভাচা হইলে আর একটিমাত্র পথই থোপা থাকিবে—আপনাকে ওয়ার্কি কমিটি গঠনের পুরা দায়িত্ব লইতে হইবে। আপনার সিভাভ ঘোষণার পর আমার ভবিষ্যৎ কর্ডব্য ছির করিবার ভার আমার উপরই থাকিবে।

(৬) আপনার মৌনতা

আপনার এক পত্রে লিখিড়াছেন বে, আমার ভমুরোংই আপনি মৌনব্রত অবলম্বন করিয়াছেন। কেন এরপ অমুরোধ করিয়াছিলাম ভাহার ব্যাখ্যা করা প্রহোজন। ত্রিপরীতে পরিস্থিতি এরপ দাঙাইয়াছিল এবং কংগ্ৰেদীদের মধ্যে বিভেদ এত গভীব হইয়াছিল বে, আমি মনে কবিয়াছিলাম বে, এক্যবক্ষার একমাত্র আশান্তল আপনিই ছিলেন। তথন ভাবিয়াছিলাম বে, সমগ্র পরিছিতিটি নিরপেক এবং শাস্ত মন লইয়া বিচাব হবা আপনার পক্ষে কর্ত্তব্য। পছ-প্রস্তাবের সমর্থকগণ তথন দিল্লীর দিকে ছটি:তছিলেন। তথন আমি স্বভাবতঃই ভাবিয়াছিলাম বে, ত্রিপুনীর ঘটনাবলী সম্পর্কে একতব্যা একটা ব্যাখ্যা দিয়া জাঁহাৱা জাপনাকে প্রভাবিত কবিবার চেষ্টা করিবেন। সেই জন্মই আমি আপনাকে অমুরোধ করিয়াছিলাম বে, ত্রিপুরী সংক্রাম্ভ সমগ্র ঘটনাটি কর্থাৎ এ সম্পর্কে বিভিন্ন কাহিনীগুলি প্রবণ না করিয়া জাপান যেন কোন সাংবাদিক বিবৃতি না দেন বা কোনও উল্ফি না করেন। আমার অমুরোধ রক্ষা কংব জর আপনার নিকট আমি অহাত কৃহজ্ঞ। উচার ফল এট দাঁড়াইরাছে যে, সমগ্র দেশ কংগ্রেসকে গুরুষুদ্ধর হস্ত হইতে বক্ষা কবিবার অলু এবং একা পুন:স্থাপনের জলু আপনার মুখের দিকে চাহিরা আছে। ভগবান না করুন কিছ চুর্ভাগা বশত: বদি সেই সমর আসে, বর্ধন আপনার দৃষ্টি পৃক্ষপাত্ত্বপ্ত চ্টবে, তথন ঐক্যের সকল আশা ধুলিসাৎ হইবে। এবং সম্ভবতঃ আমরা গৃহযুদ্ধ निश्च कड़ेव।

এখন আমি অমুভব করিতেছি বে, আপনার মুখে চাপা দেওয়া আর আমার পক্ষে উচিত ছইবে না। আপনি বদি মনে করেন বে, আপনার মৌনতা ভালা উচিত অথবা আপনি বদি মনে করেন বে, ত্রিপুরী সংক্রান্ত সকল কাহিনীগুলিই আপনি শুনিয়াছেন, তাহা হইলে আপনি আপনার খুলিমত বিবৃত্তি দিতে পাবেন। আমি শুগু আপনাকে এই অমুরোধ করিতেছি বে, কংগ্রসের সকল দল (মাত্র পুরাতন নেতৃত্ব নহে) আপনার স্বদ্ধে কি ভাবে এবং আপনার নিকট কি আলা করে, তাহা স্থবন রাখিবেন।

পরিপেবে আমি বলিভে বাধ্য বে, ৭ট তারিখে সহসা রাজকোট বাইবার প্রাক্তালে দিল্লী হইতে বে তারবার্ত্তা পাঠাইরাছিলেন, তাহাতে আমি অত্যন্ত নিবাশ হইরাছি। ৭ই সকালে আমার পক্ষেতাঃ বাজেপ্রপ্রাাদ বিড়লা হাউসে টেলিফোন করিয়া ভানাইরাছিলেন, আমি আপনার সহিত সাক্ষাতের জন্ত কতথানি উদ্প্রীব ছিলাম। আমি ব্রিয়াছিলাম বে, আমাদের পত্রালাপে কোনও ফল হইতেছে না; প্রাণথোলা, মুখোমুখি আলোচনা দরকার। ঐ দিনই একটুবেলার আমার ডাক্ডার বিড়লা হাইসে আপনাকে টেলিফোন করিবাছিলেন। অপর প্রান্ত ইইতে শ্রীমহাদেব দেশাই তাঁহাকে জানান বে, এথানে আসিবার জন্ত আপনি প্রাণপণ চেট্রা করিবেল।

অন্তত্যপক্ষে আগামী দিনের পূর্বে অর্থাৎ ৮ই পূর্বের আপনি দিল্লী ভ্যাস করিবেন না। বাঙ্গকোট আপনাকে সরাইরা লইবাছে,—এজভ আমি ছংখিত। আমি শুধু এইমাত্র আশা করিছে পারি বে, রাজকোটের নিকট বাহা আশীর্কাদ স্বরূপ হইবে তাহা বেন কংগ্রেসের পক্ষে মারাত্মক না হয়। ফেব্রুবারীতে রাজকোট বদি আপনাকে সরাইরা লইয়া না বাইত, তাহা হইলে ত্রিপুরীর ইতিহাস অক্তরপ কইত। এ সকট হইতে রক্ষা করার ক্ষমতা আপনাব ছিল কিছ আমার নিকট হইতে এবং অভার্থনা সমিতির পক্ষ হইতে পূন:পূন: অমুরোধ সত্ত্বেও আপনাকে পাওয়া গেল ন!। বখন আপনি ঠাকুর সাহেবকে চরমপত্র দিয়াছিলেন তখন বদিও স্বভ:স্কৃত্তি ভাবে সমগ্র দেশ আপনার পালে আসিয় দাছাইয়াছিল, তথাপি আপনার দেশের এক বিরাট জংশ মনে করিয়াছিলেন এবং এখনও মনে করেন বে, রাজকোট রাজ্যের অবিবাসীদের কোনওরপ ক্ষতি না করিয়াও আপনি রাজকোট সংগ্রাম করেক সপ্রাহ পিছাইয়া দিতে পারিতেন।

(সার মবিস্ গাহাবের রায়দান সম্পর্কে আমি এই বিহার আপনার দৃষ্টি-আকর্ষণ করিতে চাই বে, তিনি উহা ব্যক্তিগত ভাবে স্বাক্ষর করেন নাই, করিয়াছেন ভারতের প্রধান বিচারক ক্ষপে)।

আমার পত্র অত্যন্ত দীর্ঘ হওরার, এখানেই থামা উচিত। আশা করি ভ্রমণে কোনওরপ কঠবোগ কবেন নাই এবং স্বান্থ্যেরও ক্রমোল্লভি ইইতেছে। আমি বীরে ধাবে স্কুষ্ট্রা উঠিতেছি।

প্রণামান্ত-- - জাপনার ম্রেহের মুভার

পান্ধীক্ষীর উত্তর—৪

প্রিয় স্থভাব, রাজকোট, ১০। ৪। ৩১ তোমার ৬ তারিখের পত্র এইখানে পাঠাইয়া দেওয়া হইবাছে।

প্রাণ থুলিয়া পাবস্পরিক আন্সোচনার শুক্ত বিবোধীদের এক বৈঠকের প্রস্তাব আগম ক্রিছাছিলাম। কিন্তু ভাহার পর এত ব্যাপার ঘটিয়াছে বাগার ফলে আমি জানি না উহার এখন কোনও মূল্য আছে কি না, বৈঠক হইলে তাঁহারা প্রস্পারের শ্রেতি শপথবাক্য প্রয়োগ করিবেন এবং তাহার ফলে ভিজ্ঞতা বাড়িয়াই ঘাইবে। বিভেদ অভান্ত বাপেক এবং অবিশ্বাস অভান্ত গলীব। মিলনের কোনও

অবেগণ কারবেন এবং তাহার ফলে তিজ্ঞতা বাড়িয়াই যাইবে।
বিজেদ অভান্ত ব্যাপক এবং অবিখাস অভান্ত গন্তীর। মিলনের কোনও
পথই আমি দেখিতে পাইতেছি না। আমার মনে হর একটি মাত্র
পথ আছে এবং তাহ। ইইতেছে এই মতপার্থকা স্বীকার করিয়া
প্রতিদলের নিজ নিজ পদ্ধতিতে কাজ করিয়া থাক্রা ?

আমার বোধ হইতেছে, বুগমান দসগুলিকে এক্যবদ্ধ করির।
এক বোগে কাজ করাইবার ক্ষমতা আমার আদে নাই। আমি এই
আশা করিতে পারি বে, তাঁচাবা শালীনতা বজার রাখিরা নিজ নিজ
নীতি কার্ব্যে পরিণত করিবার চেষ্টা করিবেন। বদি তাঁহারা তাহাই
করেন, তাহা হইলে দেশের পক্ষে তাহা কল্যাণকর হইবে।

পণ্ডিত পদ্ধের প্রস্তাব আমি ব্যাখ্যা করিয়া উঠিতে পারিতেছি
না। বতই আমি তাহা পড়িতেছি ততই উহার প্রতি আমার বিত্কা
আমিতেছে। প্রস্তাব-রচনাকারীদের উদ্বেশ্ত ভালই ছিল। কিন্ত বর্ত্তবান সমস্যার মীমাংসা উহার মধ্যে নাই। প্রতরাং নিজ বৃদ্ধিতে ছুমি উহার ব্যাখ্যা করিও এবং কোনওরপ ইতন্ততঃ না করিয়া কাজ ক্রিণা বাইন।

ভোষার উপর একটি ক্যাবিনেট চাপাইরা দিতে আমি পারি মান

দিব না। তোমার উপর ক্যাবিনেট চাপাইতে দিও না। তোমার নির্বাচিত ক্যাবিনেট এবং তোমার নীতি এ, আই, সি, সি, সমর্থন করিবে এমন কথাও আমি দিতে পারি না। উহা অবদমনেরই সমত্ল্য হইবে। সদস্তগণ নিজ নিজ বিচার বৃদ্ধিত কার্য্য করুন। তুমি বদি ভোট না পাও, তাহা হইলে বতক্ষণ পর্যন্ত না অধিকাংশ সদস্যক নিজ মতাহ্ববর্তী করিতে পারিতেছ ভতক্ষণ বিরোধিদলের নেতারপে কাক করিয়া বাও।

তুমি কি জান না বে, বেধানে বেধানে আমার প্রভাব আছে, সেধানেই আমি আইন অমার আন্দোলন বন্ধ করিয়া দিয়াছি ? ত্রিবাকুর এবং ক্ষরপুর ভাহার উচ্ছল দৃষ্টান্ত। এখানে শাসিবার পূর্বে রাজকোট আন্দোলনও বন্ধ করিয়া দিয়াছিলাম। আমি পুনুৱার বলিতেছি বে, বালাসে আমি হিসোর গন্ধ পাইতেছি। অহিংস আন্দোলনের উপবোগী আবহাওয়া আমি দেখিতেছি না। রামহুর্গের শিক্ষা কি ভোমার পক্ষে বথেষ্ট নর ? আমার মতে, উহা অগন্তব ফতিসাধন কবিয়াছে। আমি বভদুর বুৰিডে পারিতেছি, উচা পূর্বকল্পিত ছিল। উডিব্যার রণপুরের ভার এখানেও কংগ্ৰেদীবাই দাবী। তুমি কি দেখিতে পাইভেছ না বে, শামরা ছইজনে একই বিষয়কে ছইটি বিপরীত দৃষ্টিকোণ হইতে দেখিতেছি এবং এমন কি, বিপরীত সিদাস্তও প্রহণ করিভেছি ? বাজনৈতিক ক্ষেত্ৰ কি কবিয়া আম্বা মিলিড হইতে পাৰি? ঐক্তেত্তে আমাদের বিভেদ স্বীকার কবিয়া লওয়া উচিত। সামঃভিক, নৈতিক এবং পৌরলাসনের ব্যাপারে অংগ্র আমরা মিলিয়া মিলিয়া কাল কবিতে পারি। অধুনৈতিক দিকটির কথা আমি এখানে উল্লেখ করিতে পারি ন!। কারণ, এ বিধ্যেও বে আমাদের মতানৈক্য আছে তাহা আমরা স্বিশেষ ব্রিডে পারিরাছি।

আমার দৃঢ় বিধাদ এই বে, আমাদের নিজ নিজ মত ও পথারুনারে বদি আমরা কাজ করিয়া বাই ভাহা হইলে আমরা দেশের সেরা ভালভাবেই করিতে পারিব। জোড়াভালি দিয়া জোরপূর্বক একটি সর্বদদ্যাহ্ম নীতি এবং কার্যস্থাই করিবার করিয়া ভাহা বিভিন্ন বিবোধী দলকে দিয়া কার্য্যে পরিণত করিবার চেষ্টা অপেকা উহা প্রেয়: হইবে।

দিল্লী হইতে ভাষব,র্তার আমি থোমাকে আনাইয়াছিলাম বে, ধানবাদ বাইতে আমি সম্পূর্ণ অকম। রাজকোটকে অগ্রাহ্ম করিবার সাহস আমার নাই।

ভাল আছি। কল্পবা ভীষণ ম্যালেরিয়ার শ্ব্যাশায়ী। আজ লইয়া পাঁচদিন হইল। অসুধ বধন সুকু স্বেমাত্র হইয়াছিল, তথনই আমি ভাঁছাকে এখানে কইয়া আসিয়াছি।

আমার ইচ্ছা এই বে, স্থিরসিদান্ত গ্রহণ করিরা ফলাফল ভগবানের উপর ছাড়িরা দাও এবং তদ্বারা তোমার স্বাস্থ্যক্ষা কর। তোমার পিতার সম্বন্ধে উল্লেখ আমার জনর স্পর্শ করিয়াছে। ভাঁহার সহিত সাক্ষাতের সৌভাগ্য আমার হইবাছিল।

একটা কথা বলিতে ভূলিরা গিরছি। কেইই আমাকে ভোমার বিক্লছে লাগার নাই। সেবাগ্রামে ভোমাকে বাহা বলিয়াছিলাম, ভাহা আমার ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতাবশেই। ভূমি বদি মনে করিয়া থাক বে, পুরাতন নেভূষের মধ্যে ভোমার একটি ব্যক্তিগত শত্রু আছে, ভাহা ইইলে ভূমি ভূল করিতেছ। ভাগবাসা আমিও।

ধারাবাহিক জাবনী-রচনা

Modleres Erras.

22

স মি ত্যি ক'দিনের অম্বথে জগরাথ মারা গেলেন। শোকে মৃছিত হয়ে পড়লেন শচী দেবী।

নিনাই বললে, 'মা, চোথ চাও। আমাকে দেখ। আমি যত দিন আছি তত দিন তোমার সব আছে। তুমি কৃষ্ণ-কৃষ্ণ বলো। হরি-হরি বলো।'

হরি শব্দের তুই মুখ্য অর্থ। এক, সর্ব-অমঙ্গল হর। করে; ছই, প্রেমে মনোহরণ করে। কৃষ্ণনাম ? 'কোটি অংমেধ এক কৃঞ্চনামসম।' অশ্বমেধ্যঞ্জের ফল কি ? সর্বপাপবিনাশ। সর্বকর্ম অনুষ্ঠানেই ক্র.টবিচ্যুতির ভয়, উচ্চারণে স্বরস্রংশের ক্রটি, নিয়মে ক্রমভঙ্গের ক্রটি, দেশকালপাত্র প্রসঙ্গে বস্তু ও দক্ষিণাদির ত্রুটি। সমস্ত ত্রুটির প্রতিকারের উদ্দেশে 'অচ্ছিদ্র-মন্ত্র' পাঠের নির্দেশ। এই অচ্ছিদ্র-মন্ত্র আর কিছু নয়, হরিনাম-সঙ্কীর্তন। 'মন্ত্রতন্ত্রন্ত দেশকালাইবস্তুতঃ। সর্বং করোতি নিশ্ছিত্রং নামসন্ধীর্তনং তব।' নামের ফল শুধু পাপনাশ নয়। আরো আছে। নামের ফল চিত্তে প্রেমের আবির্ভাব। আর প্রেমের আবির্ভাবে সান্তিক ভাবের প্রকাশ। সাত্তিক ভাব আট রকম। স্বেদ, কম্প, রোমাঞ্চ, অঞ্চ, স্বরভেদ, বৈবর্ণ্য, স্তম্ভ আর প্রলয়। তাছাড়া আর কী লাভ? 'অনায়াসে ভবক্ষয় কুষ্ণের সেবন। এক কুঞ্চনামের ফলে পাই এত ধন॥' প্রেমের উদয়ে ঘুচে যায় সংসারবন্ধন, দূরে যায় তুর্বাসনা। একমাত্র কামই তো হৃদ্রোগ, নামে সেই রোপের অস্তর্ধান।

কল্মষ কি ? ভক্তিবিরোধী কর্মই যে কর্মের উদ্দেশ্য শুধু আত্মেন্দ্রিয়শ্রীতি তাই चिक्-বিরোধী। হয় পার্থিব ভোগ দাও, নয় স্বর্গ দাও,

নয় বা মোক্ষ এই কামনায়ই তো ধর্মান্মন্ঠান। ভাৎপর্য স্বশ্বখসাধন বা স্বহঃখনিবৃত্তি। যতক্ষণ মনে ভুক্তি-যুক্তির স্পৃহা, ততক্ষণ ভক্তি নেই। ভক্তি ভো আত্মমুখ নয় কৃষ্ণস্থুখ। ভক্তি তো আত্মপ্রীতি নয় কৃষ্ণগ্রীতি। ভঙ্ক ধাতু থেকে ভক্তির উৎপত্তি। আর ভঙ্ক ধাতুর অর্থ সেবা। সেবার উদ্দেশ্য শুধু সেব্যের প্রীতিসাধন। স্থতরাং ভক্তি মানে কৃষ্ণকে সুখী করা। কিসে কৃষ্ণ সুখী গু মমত্বুদ্ধিতে। কৃষ্ণ আমারই, আমারই একলার, আমি ছাড়া কুন্ফের কেউ নেই। কৃষ্ণ আমারই লাল্য, পাল্য, অমুগ্রাহ্য। আমার লালন-পালন-অনুগ্রহের বস্তু। কুফে আমার ঐশ্বৰ্যজ্ঞান নেই না বা স্বস্থ্যাসনা। 😎 ধু প্ৰেমাত্মিকা দেবা। ভত্ত:পক্ষপাতিত্বই ভগবানের গুণ।

'আমার দিকে তাকাও।' বাছ তুলি হরি বলি প্রেমনৃষ্টে চায়। করিয়া কল্মধ-নাশ প্রেমেতে ভাসায়।

মন্দ-মন্দ হাসি নিমাইয়ের কটাক্ষে আর সেই দৃষ্টি যার উপর পিয়ে পড়ে তার সর্বশোক দূরে পালায়। শোকের মূলই হচ্ছে কলায। সে কলাম, সে ভক্তি-বিরোধী কর্মের বাসনা বিধ্বস্ত হয়। আর তার তখন ব্রজপ্রেমে নিমজ্জন। পৌরের কথা বলবে কি, বলতে উন্ভোগ করা মাত্রই, কুশল-পটলী অর্থাৎ সর্ববিধ মঙ্গলের অভ্যাদয় ঘটবে।

শুন মাতা! মনে কিছু না চিন্তিহ তুমি। সকল তোমার আছে যদি আছি আমি॥ ব্রহ্মা-মহেশ্বরের যে ছল'ভ লোকে বলে । ভাহা আমি ভোমারে আনিঞা দিব হেলে॥ কিন্তু ক্রোধে একেবারে তপ্ত ডাগুব। সংসারের অবস্থা বুঝতে চায় না, একটা জিনিসের আবদার করেছে কি, তথুনি তা মেটানো চাই। নইলে ঘর-ত্যার ভাঙা ঝড়ের আকার ধারণ করবে নিমাই।

পঙ্গামান করতে যাচ্ছে, মাকে বললে, 'মা, মালা-চন্দন দাও। গঙ্গাপুজা করব।'

প্রমাদ পণলেন শটা। বললেন, 'বাবা, একটু অপেক্ষা কর, মালা নিয়ে আসি।'

'নিয়ে আসি! এখন তুমি আনতে যাবে?'
নিমাই, এগারো-যারো বছরের ছেলে, রুদ্দুর্তি
ধারণ করল। 'এতক্ষণ আনোনি কেন? কী করছিলে
ঘরে বসে?'

ক্রন্ত শব্দে ঘরে ঢুকল নিমাই। যত পঙ্গাজ্বলের কলসী ছিল একের পর এক ভ:ঙতে লাপল। ছোট-বড় যত ঘট ছিল ঘরে, কোনোটার মধ্যে বা তেল ফুণ বা ঘি, সকলের গায়ে মারতে লাপল লাঠির বাড়ি। যত সিকা ছিল, বড়ি বা মণলাপাতির, সব ছিঁড়তে লাপল টেনে-টেনে। শুধু সিকা নয় হাতের কাছে যত কাপড় পেল একটাও আন্ত রাখল না। তারপর আর যথন ভাঙবার জিন্সি নেই তথন আক্রোশ পিয়ে পড়ল খোদ ঘরের উপর, ভার দরজা-জানলার উপর। ঘর-দোর ভেঙেও ঠাণ্ডা হল না। সামনে যে পাছ ছিল তাকেই পিটতে লাপল নিম্মের মত। পাছ পেছে, এবার মাটিকে প্রহার করো। লাঠির ঘায়ে জর্জর হল পৃথিবী।

জননী শচী দেবী ভন্ন পেয়ে গৃহের উপান্তে পিয়ে লুকোলেন।

ভঙ্গন-যজ্ঞ সাঙ্গ করে নিমাই দাঁড়াল অঙ্গনে। অহপ্ত বোষে ধুলোয় গড়াগড়ি খেতে লাগল। কনক-অঙ্গ কালি হয়ে পেল মুহূর্তে। বৈকুণ্ঠপতি ধরিত্রীকে শ্যা করলেন।

চারিবেদে যে প্রভূরে করে অৱেষণ। সে প্রভূ যাশ্য়ন নিজা শচীর অঙ্গন॥

শটা দেবী মালা আনালেন। নিজিত পুত্রের শ্রীঅঙ্গে হাত রেখে ধীরস্বরে বললেন, 'ওঠ বাপ ওঠ, এই ছাথ মালা এসেছে। যা এবার পিয়ে ইচ্ছেমত পুজো কর।'

ধড়মড়িয়ে উঠে বসল নিমাই। ছি ছি, ঘরদোরের এ কী হাল করেছি। লজ্জায় মাটির সঙ্গে মিশে যেতে চাইল

শ্চী দেবী বললেন, 'বেশ হয়েছে, ভালো হয়েছে। ভোর আপদ-বালাই কেটে পেছে।' ভাল হইল বাপ! যত ফেলিলা ভাক্সিয়া। যাউক ভোমার সব বালাই লইয়া॥

সংসারের এত অযথা অপচয় করল নিমাই, ভবু
জননীর আপশোষ নেই। ক্রীডাময় চঞ্চল বালকের
জন্মে আবার রান্নার আয়োজন চলল। পোকুলনগরে
যশোদাকে কভ সত্য করতে হয়েছিল কৃষ্ণচাপল্য।
আমিও সত্য করি।

গঙ্গামান করে বাড়ি ফিরল নিমাই। তুলসী-জল দিয়ে বিফুপুজা করল। খেয়ে-দেয়ে ছন্তিমনে পান চিবুতে বসল।

শচী দেবী কাছে এসে ভয়ে-ভয়ে বললেন, 'ঘরের জিনিসপত্র নষ্ট করে লাভ কি ? এ সব ভো ভোমার নিজের জিনিস। নিজের জিনিস কি কেউ নষ্ট করে ?'

মৃত্-মৃত্ হাসতে লাপল নিমাই। 'ঘরে আর কিছু নেই, কাল খাবে কি ?' 'কৃষ্ণ খাওয়াবেন।'

প্রভু বলে কৃষ্ণ পোষ্টা করিবে পোষণ।

সন্ধ্যের বিকে নাকে নিভৃতে ডাকল নিমাই। তু' তোলা সোনা মার হাতে দিয়ে বললে, 'কৃষ্ণ পাঠিয়ে দিলেন। এ দিয়ে যত দিন চলে, সংসার খরচ করো।'

'সে কি!' অবাক হয়ে গেলেন শচী: 'এ সোনা তুই কোথায় পেলি ?'

নিমাই উত্তর করে না। পাশ কাটিয়ে চলে যায় হাসতে-হাসতে।

এ কি বিপদের মধ্যে এনে ফেলল। শুধু একবার নয়, যখনই অভাব হয় সংসারে, সম্বল-সকোচ হয়, নিমাই সোনা নিয়ে আসে। কার সোনা কোথা থেকে আনে কে বলবে! ধার করে, না, এ কি কোনো অমার্থী বিভূতি! ভাঙাতে ভয় পান শচী। হিন্তু না ভাঙালেই বা চলবে কেন? যাকে সোনা দিয়ে পাঠান বাজারে, ভাকে বলে দেন, পাঁচ-দশ ঠাই দেখিয়ে-শুধিয়ে ভবে ভাঙাবি। আমাব ভারি ভয় করছে।

ভয়ের কিছু নেই, নিমাইই সব ধরে আছে, আচ্ছাদন করে আছে।

ইন্দ্রযজ্ঞ বন্ধ করে দিল কৃষ্ণ। মহেন্দ্র: কিং করিষ্যতি ? জীবের পালন-পোষণের ব্যাপারে ইন্দ্র কি করবে ? সুভরাং ভয় পেয়ে ইন্দ্রকে পূজো করবার কোনো প্রয়োজন নেই। স্বয়ং ঈশ্বর বলে ইন্দ্রের পর্ব, ভাই কৃষ্ণাধীন গোপেদের উপর ভীষণ ক্রুদ্ধ হল দেবরাজ। প্রশায়কর মেঘসমূহকে আদেশ করল, প্রবল বেগে বর্ষণ করো, বিধ্বস্ত করো গাপরাজ্য। বাচল বালক, অবিনীত, পণ্ডিতমানী, অজ্ঞ, মর্ত্য কৃষ্ণকে অবলম্বন করে পোপেরা আমার পূজা বন্ধ করেছে, এ অপমান অসহা। বনবাসী পোপের ধনৈশ্বর্ষা বেশি হয়েছে বুঝি? ওদের ঐশ্বর্যামদ নিশ্চিচ্ছ করে দাও।

মেঘসমূহ বন্ধন থেকে মুক্ত হয়ে ছুটে এল দিখিদিক ছেয়ে। ছুটে এল প্রচণ্ড প্রভঞ্জন। বিজ্যমালায় উজ্জ্বনীকৃত হয়ে ছুটে এল বজু। জল আর শিলা ঝারতে লাগল অবিচ্ছেদে। গোপগোপীরা প্রথমে গৃহমধ্যে আশ্রাম নিয়ে আত্মরক্ষা করতে চেষ্টা করল কিন্তু ক্রমে সমস্ত পৃথিবী পরিপ্লাবিত হলে, উচ্চাবচ সমস্ত স্থান একাকার হয়ে গেলে ভারা বাতে ও শীতে কাঁশতে-কাঁপতে ক্ষের শরণাপন্ন হল। বলতে লাগল, 'হে কৃষ্ণ, হে মহাভাগ, হে ভক্তবৎসল, কুপিত ইন্দ্রের থেকে এখন আমাদের রক্ষা করা ভোমারই কর্ত্তব্য:'

'থামরা ইন্দ্রের যক্ত হতে দিইনি, তাই ইন্দ্র আম.দের ধ্বংস করতে অকাল প্রবৃত্ত হয়েছে, তাই এই অহ্যপ্র অভি ভিসহ শিলা-জল বর্ষণ।' কৃষ্ণ অভয় দিল সকলকে। 'আমি নিজ ক্ষমতায় এর প্রতিকরে করব। যে সব দেবতার সদ্ভক্তি আছে তারা পর্বভরে কথনো নিজেদের ঈশ্বর বলে ভাবে না। কিন্তু ইন্দ্রের মোহ জন্মছে। আমি অভিমান ভঙ্গ করি, অসাধুর তাতে বিনয়ই উৎপন হয়। আমিই গোষ্ঠের শরণ্য ও নাথ, পোষ্ঠই আমার পরিবার, আমিই আল্পযোগ দ্বারা এই পোষ্ঠ রক্ষা করব, এ আমি নিশ্চয় করছি।'

বালক যেমন অনায়াসে একহাতে ছাতা মেলে ধরে তেমনি অবলীলায় সাত বছরের কৃষ্ণ বাঁ হাতে গোবর্ধ নিগিরি উত্তোলন করল। দক্ষিণ হাত দক্ষিণ কটিতে রেখে দাঁড়াল বঙ্কিম হয়ে। গোপগোপীদের সম্বোধন করে বললে, 'সমস্ত লোকজন শকট পোধননিয়ে গিবিকন্দরে প্রবেশ করুন। আপনারা ভয় করবেন না যে আমার হাত থেকে পাহাড় পড়ে যাবে। বাত ও বৃষ্টি থেকে আপনাদের উদ্ধার করবার জ্বতেই এই ব্যবস্থা।'

যথাশ্বথে ত্রজবাসীরা ভ্তা পুরোহিতসহ সমস্ত উপজীবীদের নিয়ে পিরিকন্দরে আঞায় নিল। কুধা তৃষ্ণা ব্যথা ও মুখেছহা ত্যাগ করে কৃষ্ণ সাত দিন পর্বত ধরে রইল, মুহুতের জন্মেও স্থান থেকে বিচলিত হল না। কৃষ্ণের বিক্রম দেখে ইন্দ্রের মোহ দুরীভূত হল, ভ্রষ্টমঙ্কল্ল হয়ে মেঘসমূহকে প্রত্যাহার করল। বাতবর্ষণ পেমে গেল, নির্মেব আকাশে দেখা দিল সুর্য। ব্রজবাসীরা স্ত্রী-পুত্র ধনসম্পত্তি গো-শকট সব কিছু নিয়ে বেরিয়ে এল একে-একে। সকলে স্তব করতে লাগল, ইন্দ্রের পর্বাপহারী গোবিন্দ আমাদের প্রতি প্রসন্ন হোন। 'পিতাগুরুন্তং জগতামধীশ'— এই বলে ইন্দ্রও শরণ নিল কৃষ্ণের।

সকলের সমক্ষে কৃষ্ণ গিরিপোবর্ধ নকে তার পূর্ব-স্থানে নামিয়ে রাখল।

'এই অনাথ ছেলেটাকে তোমার হাতে সঁপে দিলাম।' শচী দেবী কেঁদে পড়লেন গঙ্গাদাসের কাছে। 'একে যদি তুমি একটু যত্ন করে লেখাপড়া শেখাও—'

'নিশ্চয়ই শেখাব।' গঙ্গাদাস মহা খুশি। 'নিমাইয়ের মত ছাত্র পাওয়া;ভাগ্যের কথা। আপনি কিছু ভাববেন ন।। এর বাপ নেই বলে কোনো বিল্ল হবে না।'

টোলে সর্বোত্তম প্রথম ছাত্র নিমাই। বয়েস আর কত হবে । তেরো-চৌদ্দ। ঢের-ঢের বুড়ো-বুড়ো ছেলেরাও পড়ছে সেই টোলে, কমলাকান্ত, কৃষ্ণানন্দ, মুরারি। কিন্তু বিভায় নিমাই সর্বপ্রধান। সর্বক্ষণ ড়বে আছে বিভারসে। সানে ভোকনে পর্যটনে সর্বত্র শাস্ত্রকথা। সকলকে তর্কে নামাও। ভারপরে পরাস্ত করো। অতা টোলের ছাত্র হলে ভো কথাই নেই। পায়ে পড়ে যুদ্ধ করবে। স্নানের ঘাটে হলেও ছাড়বে না। এ ঘাট থেকে ও ঘাটে ভেসে যাবে। এমন কি দরকার হলে সাঁতরে পঙ্গা পার হয়ে চলে যায় ওপারে, সূত্র স্থাপন করে নিজের বাাখা আবার নিভেই খণ্ডন করে আসে।

না ছাড়েন শ্রীগন্তে পুস্তক একক্ষণ।
পঢ়েন পোষ্ঠীতে যেন প্রত্যক্ষ মদন॥
ললাটে শোভয়ে উদ্ধি ভিলক স্থানর।
শিরে শ্রীচাঁচর কেশ সর্ব-মনোহর॥
ক্ষম্ধে উপবাত, ব্রহ্মাতেজ মৃতিমন্ত।
হাস্তময় শ্রীমুখ প্রাসন, দিব্য দন্ত॥
কিবা সে অন্তৃত হুই কমল নয়ন।
কি বা সে অন্তৃত শোভে ব্রিকচ্ছ-বদন॥
যেই দেখে সেই এক দৃষ্ট্যে রূপ চায়।
হেন নাহি ধক্ত ধক্ত বলি যে না যায়॥

অবৈত আচার্যের আঞ্রিত কমলাকাস্ত।
কমলাকাস্তর উপরই অবৈতের ব্যবহারিক বিষয়ের
ভার। কমলাকাস্তই অবৈতের সাংসারিক আয়ব্যয়ের হিদেব রাখে। অবৈতের সঙ্গে কমলাকাস্ত
এসেছে নীলাচলে। অবৈতের তখন কোথায় তিন
শো টাকার মত ঋণ ছিল, অবৈতকে না জানিয়ে
কমলাকাস্ত রাজা প্রতাপরুজের কাছে চিঠি লিখে
পাঠাল টাকা চেয়ে। লিখে পাঠাল, অবৈত স্বরূপতঃ
ঈশ্বরতত্ত্ব, দৈবে তার কিছু ঋণ হয়েছে—ভিনশোর
মত টাকা পেলে তার ঋণ পরিশোধ হয়, রাজা যদি
অনুকুল হন।

চিঠি প্রতাপরুদ্রের কাছে পৌছুবার আগেই কি ভাবে কে জানে পৌরাঙ্গের হাতে এসে পড়ল। এ কি অস্থায় কথা। পত্রে অবৈতকে ঈশ্বর বলা হয়েছে, তাতে না হয় কিছু দোষ নেই, কেননা, 'আচার্য দৈবজ ঈশ্বর,' কিন্তু তাই বলে দৈন্ত জানাবার কী হয়েছিল? যে ঈশ্বর সে ফ্ দরিদ্রেণ শ্বিতের দারিদ্রোর ইন্ধিত করে কমলাকান্ত তার ঈশ্বরছকে শ্বি করেছে। এ অপরাধের শাস্তি বিধেয়।

মহাপ্রভূ তাঁর সেবক গোবিন্দকে বললেন, জ্ঞীঞ্চ থেকে কমলাকান্তকে এখানে আসতে দেবে না।'

'হারমানা' হয়ে পিয়েছে জানতে পেরে কমলাকান্ত য়ান হয়ে পেল। কিন্তু অহৈত আচার্য আনন্দিত। বললে, 'কমলাকান্ত, এ দণ্ড তোমার প্রতি প্রভূর অসীম অমুগ্রহ। স্নেহ না থাকলে কি এমন দণ্ড কেউ দেয় কখনো ? তাই এ তোমার দণ্ড নয়, এ প্রসাদ। হুমি ভাগ্যবান।

কমলাকান্তকে ডেকে পাঠালেন গৌরাঙ্গ।

দণ্ডিভকে আবার ডেকে পাঠালেন! অদ্বৈত অম্যোগ করতে লাগল, 'এর উপর আবার দর্শনি দিচ্ছেন কমলাকাস্তকে!'

মহাপ্রভু হাসতে লাগলেন।

'ক্মলাকাস্ত ছ ভাবে আমাকে বিড়ম্বিত করেছে।' বলতে লাগল আচার্য, 'প্রথমত আমাকে না জানিয়ে রাজার কাছে অর্থভিক্ষা করেছে; দ্বিতীয়ত, আমি ঈশ্বর নই অথচ আমার ঈশ্বরত্ব প্রতিপাদনের চেষ্টা করেছে।'

প্রদন্নবরদ মৃতিতে তাকিয়ে রইলেন মহাপ্রভু। এ তো অদ্বৈতের অভিযোগ নয়, কুপালুর প্রভি প্রণয়কোপ। যে দণ্ডার্হ তার প্রভিত্ত করুণার উৎসার। ^{যে বিভাড়িত} তাকেও আবার নিমন্ত্রণ! 'ও রকম করে। কেন ?' মহাপ্রভু কমলাকান্তকে বললেন, 'এতে আচার্যের লজ্জা ও ধর্মহানি হয়না ? নিজের অভাব জানানোই তো লজ্জা আর রাজার ভিক্ষা গ্রহণ করাই তো ধর্মহানি। শোনো, বিষয়ীর অন্ন খেলে মন মলিন হয়, আর রাজার মত বিষয়াসক্ত আর কে আছে ? আর চিত্ত যদি মলিন হয় ক্ষণুমারণ হয় না। আর কৃষ্ণুম্বৃতির স্কৃতি যদি না হয় তা হলে জীবন অর্থহীন।'

> প্রতিগ্রহ না করিয়ে কভু রাজধন। বিষয়ীর অন্ধ খাইলে হুষ্ট হয় মন॥ মন হুষ্ট হৈলে নহে কুফের স্মরণ। কুফুস্মতি বিন্থ হয় নিক্ষল জীবন॥

শুধু কৃষ্ণভন্ধন করে। অস্ত কামনা করেও বদি কেউ কৃষ্ণভন্ধন করে, কৃষ্ণরসে কাম ধুয়ে যায়। কাচের অধ্যেশ করতে-করতে গ্রুণ পেয়ে পেল পরমরত্ব। পিতৃসিংহাসন পাবার জত্যে কৃষ্ণকে ডেকেছিল, কৃষ্ণ এসে দাঁড়াতে অার সিংহাসনের বাসনা রইল না। বললে, আমি কৃতার্থ, আমার আর অস্ত বরের প্রয়োজন নেই।

কুষ্ণ তো বলতে পারতেন, তুমি সিংহাসন চেয়েছ, সিংহাসন নিয়েই তুষ্ট থাকো, আমাকে কোন হিসেবে ? কিন্তু না, কৃষ্ণকুপার এই ভো বৈশিষ্টা। না চাইলেও দিয়ে দেন যা সভ্যিকার চাইবার। ছেলে মাটি খাচ্ছে দেখতে পেয়ে মা ভার মুখের মাটি ফেলে দিয়ে মিষ্টি পূরে দেন-এও তেমনি। বিষয়সুখের জন্মে কৃষণভদ্ধনা করছে, অমৃত ছেডে বিষু এ তো মুর্থের আচরণ। কৃষ্ণ তো সর্ববিজ্ঞ, তিনি মুর্যভাকে অনুমোদন করবেন কেন ? সর্বকামনার আচ্ছাদক, সর্বকামনার পরিপুরক নিজ পাদপল্লব দিয়ে দেবেন। 'আমি বিজ্ঞ, এই মূর্খে বিষয় কেনে দিব। স্বচরণামৃত দিয়া বিষয় ভূলাইব।' 'অফ্রকামী যদি করে কুফের ভজন। না মাগিডেও কৃষ্ণ ভারে দেন স্বচরণ ॥' সাধক প্রার্থনা না করলেও যা সজ্যি প্রার্থিতব্য, সেই তুর্ল ভ সেই অপ্রাপ্য সেই অগোচর বস্তুই তাকে দিয়ে দেন বাস্থদেব। 'কামলাগি কৃষ্ণ ভব্বে পায় কৃষ্ণরসে। কাম ছাড়ি দাস হৈতে হয় অভিনাবে ॥'

রায়-স্বরূপের গলা ধরে মহাপ্রভু কাঁদছেন আর বলছেন, বান্ধব, আমার কৃষ্ণের মাধুর্যের কথা শোন। আমার কৃষ্ণ সর্বচিতাকর্ষক, সাক্ষাৎ মন্মুখ-মন্মুখ। 'শৃঙ্গার-রসরাজময় মৃতিধর। আত্ম পর্যন্ত সর্বচিত্তহর।'
যে আমার কৃষ্ণের মাধ্যের কথা কণামাত্র শুনবে তার
এই মাধুর্যের লে'ভে সব কিছু ছাড়তে হবে, লোকধর্ম,
বেদধর্ম, দেহ-পেহ-ভোগ-ভৃষ্ণা। নিজিক্ষন যোগী হয়ে
ভিক্ষা মেগে থেতে হবে। কায়ক্রেশে জীবন ধারণের
জন্মেই তো ভিক্ষা, দেহ না দাকলে কৃষ্ণমাধুর্য
আস্বাদন করব কি করে? গোণীরা আর
কী তথস্যা করেছিল ? শুরু নেত্র ভরে কৃষ্ণরপমাধুরী
পান করেছিল আর নিজেদের নয়নমন-ভমুকে শ্লাঘা
করেছিল অমুক্ষণ। 'কাস্তাভাব সাধ্যনিরোমণি।'
যে রাগমার্গে থেকে শুরু অমুরাপে কৃষ্ণকে ভঙ্কনা করে
তারই কাছে কৃষ্ণমার্গ স্থলভ্য। 'কেবল যে
রাগমার্গে, ভক্তে কৃষ্ণ অমুরাপে, ভার কৃষ্ণ-মাধুর্য
স্বাভ।'

মুরারি গুপ্তের সঙ্গেই নিমাইয়ের বেশি ঝপড়া। শিশুজ্ঞানে নিমাইয়ের সঙ্গে তর্কে নামতে চায় না মুরারি, আর তারই জয়ে নিমাইয়ের আক্রোণ। আমি শিশু!

'যাও, যাও, বিজির ছেলে, রুগী-পত্তর নিয়ে থাকো: ।' নিমাই গঞ্জনা দিয়ে ওঠে, 'লতা-পাতা ঘাঁটো পে যাও। এ ব্যাকরণ শাস্ত্র, এতে ভোমার কফ পিত্র-অজার্ণের কথা লেখা নেই। যাও ফিরে যাও, তোমার রুগীদের নিয়ে পড়ো পো।'

রুদ্র-অ'শ মুরারির হঠাৎ চটে ওঠার কথা। কিন্তু মুরারির কি হয়েছে, নরম হয়ে পিয়েছে।

বেশ, যথন বলছ এত করে, ধরো তর্কের সূত্র ধরো। অর্থ বলো, আমি তা থণ্ডন করব এবং যথন আমার যুক্তিতে তোমার আস্থা হবে তথন দেখবে তোমার প্রথম অর্থ ই আবার প্রতিষ্ঠিত করেছি নতুনতরো যুক্তির জোরে। বেশ তো, এ পদ্ধতি উভয়ত।

কেউ কারু দঙ্গে এঁটে উঠছে না। তথন হঠাৎ নিমাই মুরারির পায়ে হাত রেখে স্পর্ম করল।

শিহরভরা সর্বাঙ্গে শুরু হয়ে বসে রইশ মুরারি। প্রাকৃত মানুষ নয় এই পুরুষ। তা না হোক, কিন্তু মুরারি কি জানে কার প্রভাবে তার এত পাণ্ডিত্য। এত চাত্র্য-প্রাচুর্য।

'মুরারি, কৃষ্ণ ভঙ্গনা করো।' দিনের পর দিন বলছেন মহাপ্রভূ।

'কৃষ্ণ ?' দিধায় জড়ানো মুরারির কণ্ঠস্বর।

'হাঁ। কৃষ্ণই স্বয়ং ভগবান। সর্বাংশী, সর্বাঞ্রয়, সর্বরসময় নির্মল প্রেম।'

'তুমি বলছ, কৃষ্ণকে ধরব ?'

'হাঁা, কৃষ্ণ বিনা উপাসনা নেই। কৃষ্ণই বিদয়-মধুর রসিকশেখর।'

'আচ্ছা, তুমি যখন বলছ—' মহাপ্রভুর প্রতি গৌরববৃদ্ধির বলে শেষ পর্যন্ত রাজি হল মুরারি। বললে, 'আমি তোমার কিন্ধর, কত আর তোমার আদেশ লভ্যন করব। কালই দীক্ষা দিও আমাকে।'

ঘরে পিথে কাঁদতে বদল মুরারি। সমস্ত রাত কোঁদে কাটাল। তার রঘুনাথের কাছে প্রার্থনা করতে লাপল, 'হে রাম, রঘুনাথ, ভোমাকে আমি কোমন করে ছাড়ব ? তোমার চেয়ে আমার কাছে আর কেউ বড় নেই, কালর হতে নেই ভোমাকে ছেড়ে আমি বাঁচব না কিছুতেই। যদি ভোমাকে ছাড়তে হয় ভা হলে আজ রাত্রেই ধেন আমার প্রাণ যায়।'

প্রদিন স্কালে উঠে কাঁদতে-বাদতে মহাপ্রভুর পায়ে এদে পড়ল মুরারি। বললে, 'ভোমার বাক্য লজ্মন করি এ আমার সাধ্য নয় অথচ আমার রামত্যাগও অসাধ্য। এখন তবে উপায় কাঁ! একমাত্র উপায় আমার মৃত্যু। আমাকে এখুনি শেষ নিশাস তাগ করতে দাও।'

মহাপ্রভু মুরারিকে তুলে নিলেন ধুলো থেকে। আলিঙ্গন করে বললেন, 'গুপু, তুমি ধন্য। আমার কথায়ও তোমার মন টলল না, তোমার স্থান্ট ভজনকে সাধুবাদ করি। তুমি জীরামিকিঙ্কর হন্থমান, তুমি কেন আমার কথায় তোমার রঘুনাথকে ভ্যাপ করবে? তোমার ভক্তিনিষ্ঠা দেখবার জন্মেই আমি তোমাকে কৃষ্ণভজ্ঞনের কথা বলেছিলাম। তোমার রামই তোমার তত্ত্ববস্তু।'

মুরারি রাম বলুক, রাম ভজুক, তুমি দেহ ধরেছ কি করতে, যদি না কৃষ্ণ বলো! 'একই বি এই ধরে নানাকার রূপ।' আর তোমার এই দেহই সেই বিগ্রহের মন্দির। এই দেহের মধ্যেই সেই আনন্দ-সন্দোহের বাসা।

> হেন দেহ পাইয়া না হইল কৃষ্ণে রতি। কতকাল পিয়া আর ভূঞ্জিব হুর্গতি॥ যে নর-শরীর লাগি দেবে কাম্য করে। ড়াহা ব্যর্থ যায় মিধ্যা সুখের বিহারে॥

> > [ক্রমশ:।

মহামহোপাখায় এইরিদাস ভট্টাচার্য্য সিদ্ধান্তবাগাল

[বেদব্যাসকুত সটাক মহাভারতের একক বঙ্গামুবাদক]

সাংবি প্রীকৃষ্ণবৈপারন বেদব্যাস লিখিত মহাভারতের যাট লক্ষ লোকের মধ্যে এক লক্ষ্য পেয়েছিল এই মন্ত্রা ভূমি। যুগ যুগ ধ্বে মবলোক বুসাধানন করেছে পঠনে বা প্রবণে এই অমৃতমন্ত্রী কিছু ঋৰিদেৰ ভাষা সংস্কৃতেৰ হতে লাগল লেখনীসম্বাব। দ্বপান্তর সারা আধাহানে—উদ্ভব হল বিভিন্ন ভাষাভাষীদের। যুগপুং রাজনীতি, অর্থনাতি, কুটনীতি, ধর্ম হল্পালোচনা, দর্শন ইত্যাদির আগার মহাভারতের প্রাদেশিক ভাষার অম্বাদের প্রয়োজনীয়তা (मर्गा फिल। हेमांनी: कारन वर्षमात्नव महावाजा छाव्यिन वहुरव, তের জন পশুতের সহায়তায় মহাত্মা কালীপ্রসন্ন সিংহ সতর বছরে, সতের জন পণ্ডিকের মাধামে পুনার ভাগুরিকর সমিতি সতের জন শশু:তর সহবোগিতায় মৃদ ও অমুবাদ করেলেন-কিছ একক প্রতিষ্ঠার-–বিশ বছর দশ মাস সভের দিনের পরিশ্রমে— এক লক্ষ শ্লোকের মূল, তংব্রচিত নুতন টাকা ও বন্ধায়বাদ, নীলক্ষ্ঠকুত প্রাণ্ডীন টাকা আর পেবে মুক্তের পাঠান্তব—বর্ত্তমান শতাব্দীর এক অগাণাসাংন ও প্রমহান অবদান। এই তুরুহ কর্মসম্পাদনায় হোতা হলেন মতামতোপাধাায় জীত্রিদাস ভটাচার্য সিভাক্তবাগীল মহাৰয়—তিয়াৰী বংগৰ বয়স্ক যে মহামানৰকে প্ৰথম দৰ্শনে আমাৰ প্রণতি প্রানাতে তিনি উচ্চারণ করলেন স্বস্থিতাচন।

ভাগদাব বিজ্ঞাগন্ধার ও ভবিষুষ্ধী দেবীর তিন প্তের মধ্য দেবীর হিনিপ্রের মধ্যে দেবীর হিনিপ্র দেবীর ক্লোর কেটালিপাড়া প্রগণার উন্নিপ্রা থানে ১৮৭৬ সালের ২৪শে মক্টোরর রবিবার জন্মগ্রহণ করেন। নব ভারতের বৈনিষ্যারেশ কোটালিপাড়া প্রগণার কল্যাণে জামরা গেরেছি কামনাথ সিন্ধান্ত পঞ্চানন, জন্মারারণ তর্করত্ত, শনিকুমার শিরোমণি, আন্তর্ভোর তর্করত্ত হারিকানাথ আর্মপ্রানন প্রভৃতি নিমারিককে, নালকঠ তর্কগাসীশ, সীতানাথ বিভাত্রণ প্রভৃতি নিমারিককে, নালকঠ তর্কগাসীশ, সীতানাথ বিভাত্রণ প্রভৃতি নিমারিককে, নালকঠ তর্কগাসীশ, সীতানাথ বিভাত্রণ প্রভৃতি শার্মাক্রেন, কালিনার বিভাবিনোদ প্রভৃতি জালভারিককে, কালিনার বিভাবিনোদ প্রভৃতি জালভারিককে, গলাধর বিভালভার প্রভৃতি জ্যোতিবীকে। পাশ্চাত্য বৈদিক শ্রেণীর বজ্ববেদীয় কালপ্রান্তর্বা ব্যানান প্রথমহান পরিভাজকারার্যা মনুস্কন সরস্বভীর ক্লেন্তর্বা সাহাদ্যর বাদ্যান্নম্য ভারাচার্য্যের জন্মজন হাদশ পুক্র হলেন শ্রীহানার বিদ্ধান্তর্বানীশ।

ভিনি পাঁচ বংসর বহুসে পিতামছের নিকট অব্যরন আরম্ভ করেন। পরে পাঠশাসার বাংলা—এগার বংসরে কলাপব্যাকরণ ও টে:লে সন্ধিবৃত্তি—পরে ব্যাকরণ পড়া শেব করেন। পনের বংসর বহুসে প্রাণমর আর্থানিকা সমিভিতে উপাধি পরীক্ষার প্রথম জানাবিকারী হিসাবে শুকাচার্য্য উপাধি ও ছ'ল টাকা পান। সেই সময় ভিনি অনুর্গল সংস্কৃত ভাষার গল ও পল্ল রচনা করছেন এবং কংসবর নাটক রচনা করেন। আঠার বছুরে সংস্কৃতে জানকীবিক্রম' নাটক রচনা করেন। আঠার বছুরে সংস্কৃতে জানকীবিক্রম' নাটক বিহোল বৈভ্র' থপ্তকাব্য ও 'বৈদিকবাদ-মিমানা' ইভিহাসগ্রন্থ বচনা করেন, ক্রমণা ভিনি কাব্যের মধ্য ও উপাধি পরীক্ষা পিভার নিকট পুরাণ ও আ্যাতিরশাল্প পাঠ, আনশচক্র বিভাবত্বের নিকট খুভিশান্ত, ব্যাকরণতার্থ উপাধি লাভ, চাকা সারস্বতসমাজের প্রধাণাল্প উপাধি পরীক্ষা, খুভিশান্তের পরীকা, সাংখ্যত্ব উপাধি, সিভান্তবাসীল উপাধি পরীকা, খুভিশান্তের পরীকা, সাংখ্যত্ব উপাধি, সিভান্তবাসীল উপাধি প্রীকা, খুভিশান্তের



গুণপণার পরিচয় দিয়ে বৃত্তিলাভ করেন। ১৩২৩ সালে কাশীধামস্থ ভারতধর্ম-মহামগুল তাঁকে 'মহোপদেশক' উপাধি দেন।

তাঁর পাভিত্যের সঙ্গে বাগ্মিতাও প্রকাশ পার। বধন ডিনি শুভিপাঠরত, তথন সেনদিয়া গ্রামে অধিকাচরণ মজুমদারের মায়ের শ্রাদ্ধবাসরে শশধর তর্বচুড়ামনির তল্পশান্তথগুন বজুতার বিক্লাছ এবং পরে চন্দ্রপ্রতাপ প্রগণার ব্যণীয়োচন বাবের মাত্রাছের সভাব মহেশচন্দ্র তর্ব চূড়ামণি ও জগদন্ধ তর্কবাগীল মহালয়দয়ের সংক সমস্তাপুরণ বিষয়ে আলোচনার বিশিষ্ট পণ্ডিতদের নিকট সমানৃত হন। ১৩১২ সনের বৈশাধ মাসে এক অফুঠানে সিদ্ধান্তবাগীশ মহাশর মহাভারতের পাঠক হিসাবে এক দিনে এর পাঠ সমাপ্ত করেন। ১৩১২ সালে কোটালীপান্তার আঠাবিত্যালরের অধ্যাপক হিসাবে কাজ করে পরের ২ছর অর্থ উপার্জ্ঞানের ভারে কলকাভার আদেন। সেই সময় কালীখাটে খণ্ডবালয়ে খেকে ভিনি নইকোঠী উদ্ধার ও হস্তরেখা বিচার করতে আরম্ভ করেন। ১৩১৪ সালে তিনি নকীপুরের জমিদায়েগছের পুরোহিত, ও মভাপণ্ডিত এবং স্থানীর টোলের দায়িত্ব ভার গ্রহণ করেন। এথানে থাকার সময় তিনি মহারাজা প্রভাপাদিভার সম্বাহ্ম নানাবিধ বাতিকাছিনী শুনতেন এবং বিজীয় প্রতাপ নাগে সংস্কৃত নাটক রচনা করেন। এর



बिहाबिमाम दक्षांश्रं

নকীপুরে থেকে কলকাভার বই ছাপাতে অসুবিধা হওরার ১৩২৭ সালে ভিনি একটি মুদ্রণাগার স্থাপন করেন।

১৩৩৬ সালের বৈশাৰ মাসে ডক্টর স্থার দেবপ্রসাদ সর্বাধিকারী শ্বভিবদ্ধ মহাশরের উত্তোগে তিনি স্থরী লেনে বসবাস আরম্ভ করেন। কোকিলেখন শান্ত্রী ও ভাবে দেবপ্রসাদের উৎসাহ উদ্দীপনার সিদান্তবাগীশ মহাশয় বেদব্যাস প্রণীত স্টীক মহাভারতের মূল, নীলকঠকুত প্রাচীন টীকা ও সর্ক্ষনিয়ে মূলের পাঠান্তরসহ বঙ্গায়ুবাদ ১৩৩৬ সালের তরা আবিল ভারম্ভ ও ১৩৫৭ সালের ১১'শ ভৈ) ঠ সমাপ্ত করেন। আদিপর্কের প্রথম খণ্ড প্রকাশিত হয় ১৫৩৬ সালের ১লা পৌৰ ও স্বৰ্গাৰোহণ পৰ্কেৰ শেষ খণ্ড মুদ্ৰিত হয় ১৩৬৬ সালেৰ জৈ। দ্বাস্থ্য মহাযুদ্ধে কাগজের অভাব ও ১৩৪৬ সালের দালাহালামার দক্রণ সাত বছর কাগজ বন্ধ থাকে। ১৫১তম খণ্ডে मन्नामिक शायवाम्मक च्युवारम चार् ১٠٠ डेननर्का, २३७० অধার ও এক লক্ষ্ণ লোক (হরিবংশ সহ), এই পুরুহ কর্মে ভিনি বার করেছেন দেও লক্ষ টাকা-ভন্মধ্যে কেন্দ্রীয় ও রাজ্যসরকার দিয়েছেন উনপ্রধাশ ভাজার আর জনসাধারণ দিয়াছেন চ' ভাজার विका ।

সাংসারিক অভাব-অন্টন, অর্থাভাব, স্ত্রীর ও মাধের মৃত্যু, পর পর মারাত্মক বসভাও কলেবার আক্রান্ত হওর। সত্ত্বেও সিভাভবাগীশ মহাশয় প্রাত্যহিক পূজার্চনার পর প্রতিদিন সাতে পাঁচ ঘটা মহাভারতের অন্তবাদ কর্মে মগ্ন থাকতেন।

প্রথম আরম্ভের সময় তিনি প্রায় ছ'শো জনকে মহাভারতের প্রাছক হিসাবে পাবার নিশ্বয়তা পান। তথ্যব্যে মহামহোপাধার কামাৰ্যা ভক্ৰাগীল, প্ৰমণ্ডনাৰ ভক্ত্ৰণ, মহামহোপাধ্যার ডাঃ হরপ্রসাদ শান্ত্রী, ববীক্রনাথ, ডা: আক্তোব শান্ত্রী বেদাওবদু, हीरबळनांच पछ, क्वांकिलचंच भाक्षी, धांठांचा श्रेष्ठक्रक बांद्र, ভার দেবপ্রদাদ সর্বাধিকারী, ডা: স্থনীতিকুমার চটোপাধ্যার প্রভৃতির নাম বিশেষভাবে উল্লেখবোগ্য। বধন সিদাস্থবাগীশ মহাশরের কাজ সমাপ্ত হ'ল, তখন পুরোন গ্রাহকদের মধ্যে অনেকেই পরলোকে।

ভটাচাৰ্য্য মহাশ্ব বিভিন্ন সমরে বারটি মূলগ্রন্থ, পাঁচটি অমুদ্রিভ ৰুগগ্ৰন্থ ও চৌদটি মুজিত টাকাগ্ৰন্থ লিখেছেন। তথাখ্যে ক্সিণীছবণ পরীকার পাঠারণে নির্দিষ্ট আছে এবং তংপ্রণীত 'বঙ্গীরপ্রভাপ', ও মেবার প্রতাপ' নাটক্ষয় মিনার্ভা ও রার মঞ্চে স্থ-ছভিনীত হর। ভগবান শহরাচার্যোর পর তাঁর মত সংস্কৃতে বহু গ্রন্থকার ভারতে चांव (मधा वांव ना ।

সারা বাঙ্গালার সংস্কৃত্তের বিশিষ্ট অধ্যাপকদের মধ্যে অধিকাংশই তাঁৰ ছাত্ৰ এবং বিভিন্ন স্থান থেকে এ পৰ্য্যন্ত তিনি এগাৰটি উপাধি দারা ভবিত হয়েছেন।

তাঁৰ প্ৰথম ছুই ছেলে শশিশেশর ও হেমচক্র সংস্কৃত সাহিত্য ও শাস্ত্রে স্থপতিত, তৃতীয় বোগেশচন্দ্র ছিলেন জিয়াগঞ্জ কলেজের অধ্যক্ষ ७ ठकुर्व छरवन्द्रस करवन चशानना ।

অশেষ ব্যক্তিবসম্পন্ন এই বৃদ্ধ জ্ঞানতপস্থীৰ আদৰ্শ ও নিঠা অভুলনীর! আর্ত্তকর্ম সুসম্পন্ন হওয়ার আরু ভিনি আনস্থিত-বলের সংক্রম্ভ শিক্ষাবাদ্ধা অব্যাহত বাধার মহাক্বি সম্বষ্ট কিন্তু বিগত

পর ক্লিবীর্বণ মহাকাব্য ও খতিচিপ্তামণি ব্যবসাধার বচনা ক্রেন। জিশ পুরুবের এই গরিমা কি ভবিষ্যতে বজার থাকবে। আসাব সময় মনে হ'ল বাংলা তথা ভারতের এই কৃতী সন্তানের স্থামে বেন এই চিন্তাই বাব বাব চারাপাত করছে।

ডা: ঞীশিবপ্রসর মিঞ্জ

[বিশিষ্ট স্ত্রীরোগবিশেষক্ত ও ধাত্রীবিত্তাবিশাবদ]

প্রেভ্যক চিকিৎসাধীনা বোগিণীকে ভোমার মাভা বা ভগিনীর ভার দেখিবে ও তাদের সহিত সেই মত ব্যবহার করবে—নিজের মা বা বোন ছমুদ্বা হলে ভোমার বেরপ মানসিক অবস্থা হয়—বোগিণীর আত্মীয়ত্বজনেরও ঠিক সেই রকমই। সেই জড়ে শেবোক্ত জনের প্রতি সহামুভূতিসম্পান হবে-জার চিকিৎসাঞ্চীবনে चर्यां कि किया ना"-वावाव (मध्या देशाम्यांनी चाक्छ चक्रा অক্ষরে পালন করে চলেছেন বাংলা তথা ভারতের অঞ্চম খেঠ



काः निर्थश्य मिन

স্তীরোগ-বিশেষজ্ঞ ও ধাত্রী/জাবিশারদ ডা: জ্রীশিবপ্রসন্ত মিশ্র । নিজের চিকিৎসাশালায় প্রকৃত স্বভিত্রপ্রভা হৃঃছা রোগিণীদের প্রায়ই ডিনি চিকিৎসা করে থাকেন বিনা দক্ষিণার।

১৯১১ সালের ফেব্রুহারী মানে বংশাহর জেলার সামটা গ্রামে প্রীসতীনাথ মিশ্র ও জীমতী রামলতা দেবীর বড়ছেলে শিবপ্রসর জন্মগ্রহণ করেন। মাজুলালয়ও সেই প্রামেই। বাবা সভীনার্থ বাৰু ১৯ • ধ সালে আবিভাৱ করেন চকুরোপের জগদিখ্যাত গুৰধ 'পল্লমধু'। এঁবা হলেন কাক্তজীর ত্রাহ্লণবংশ। বাঙ্গালার चारमन मुबाढे चाकरत्वत मगरा। चित्रश्रमत खारमत पूर्णः ৰশোহৰ জেলা স্থান ও মিত্ৰ ইন:-এ কিছুদিন পঞ্চিবাৰ পর স্যালেরিরার আক্রান্ত হওরার কুলটি বিভালরে বোগদান করেন। সেধান থেকে ১১২৭ সালে প্রবেশিকা ও খটিশ চার্চ

কলেল চ্ইতে ১১২১ সালে আই-এস-সি প্রীক্ষার উদ্ভীপ ছইরা ভারমাইকেল (বর্ত্তমানে আর-জি-কর) মেডিক্যাল কলেজে প্রবেশ করেন। এখানে পড়ার সময় তিনি বরাবর পদক ও ধাত্রীবিজ্ঞার বুক্তিলাভ করে ১১৩৫ সালে এম, বি, পাশ করেন। পুরে সেখানে ছ বছর ছ মাস রেসিডেট হাউস সার্জ্জেন হিসাবে যুক্ত থেকে ১১৩৮ সালের আগষ্ট মানে যুক্তরাজ্যে উচ্চশিক্ষার্থে গমন কবেন। সেধানে দশ মাসের ভিতর L. R.C.P. M. R. C. S. & M. R. C. O. G. (3 33) 4 3(3 এডিনববার গমন কবেন কিছ দিতীয় মহাযুদ্ধ আবিভ হওয়ায় ভারতে ফিরিয়া আসিতে বাধ্য হন। আর, জি, কর কলেজের চারদের মধ্যে তিনিই প্রথম M. R. C. O. G. এখানে এনে তিনি উক্ত কলেকেই প্রথমে প্রস্থতিবিভাগে বেসিভেট সার্জ্বেন, পরে ভিটিটিং সার্ভেম ও হর্তমানে অধ্যাপকরূপে কারু করছেন। এচাড়া তিনি অস্থায়ী তেপুটি সুপারিনটেডেক (১১৪২), ভাইস-প্রিজিপালে (১১৫৭) ও অধাক (১১৫৮) পদে বৃত হন। ১১৫৩ সালে তিনি F. R. C. O. G. হন। স্ত্রীবোগ ও ধাত্রীবিভা সম্বন্ধে তাঁর দেখা বছ প্রবন্ধ ভারত ও বিদেশের বিভিন্ন পত্রিকায় নিয়মিত প্রকাশিত হয়ে থাকে। তাঁর লেখনী চালনায় মুগ্র হইবা নিউইয়ৰ্ক মেডিক্যাল কলেকের বিখ্যাত অধ্যাপক ও বছ গ্রন্থপ্রেতা ডা: বিকি (Ricei) ডা: মিশ্রকে নিজের লেখা করেকটি মূল্যবান গ্রন্থ উপহার দিয়েছেন। ১৯৫২-৫৮ সাস পর্যান্ত তিনি আর, ঞ্জি, কর কলেজ পরিচালনা পরিবদের সদতা ভিলেন। ছাত্রমহলে, অধন্তন-কম্বচারীমহলে, সহক্ষীদের সঙ্গে ও আর্ত্ত-লাতুরদের মধ্যে তাঁর খাস্তরিকতা, স্মধুর ব্যবহার, পরিচালন-দক্ষতা ও দরদ সকলের দৃষ্টি ষাকর্ষণ করে থাকে।

নিজের পেশা ছাড়াও সমাজদেনী হিসাবে শিবপ্রসন্ধ এক উল্লেখবোগ্য স্থান অধিকার করে আছেন। প্রথম বেসরকারী সেবা প্রতিষ্ঠান I. N. A. C. ১৯৪৫ সালে করেকজন সহকর্মীসহ ডা: মিশ্র গঠন করেন। ১১৪৬ সালে ডা: মুবোধ মিল্র, ডা: মিশ্র ও অভাক্ত করেকজন মিলে R. W. A. C. প্রভিষ্ঠা করেন। প্রনিহক এব প্রধান পৃষ্ঠপোরক। কলিকাভার দালায় পালার, দিল্লী, আন্দামান-নিকোবর দ্বীপপৃষ্ণ প্রভৃতি স্থানে উক্ত প্রতিষ্ঠান সমাজ্যবোর কাকে সরকারী ও বেসরকারী মহলের বিশেব দৃষ্টি আবর্ষণ করতে সমর্থ হয়। ডা: মিশ্র প্রতিটি স্থানে দলের পুরোভাগে ছিলেন। তিনি ইডেটেন হেল্ব হোম, রামকৃষ্ণ শিত্মক্সল প্রতিষ্ঠান প্রভৃতি সংখ্য সঙ্গের সংক্ষেকী ভাবে জড়িত আছেন।

পাঠ্যাবস্থায় ভিনি নাট্যাভিনয়ে অংশ গ্রহণ করভেন এবং বর্ত্তনানে থেলার মাঠে ও বিশিষ্ট মঞ্চাভিনয়ে তিনি নিয়মিত দর্শক হিসেবে উপস্থিত থাকেন। এ ছাড়া ছবি ভোলা ও বঙীন মংস্থা-পালন—ভাঁর অবসর বিনোদনের অক্সতম অস্ত্র।

ভারত বিভাগের পর তাঁর স্বপ্রাম পাকিস্তানের অন্তর্ভূ ভি ইওরার তিনি ভার দেখানে বেতে পারেন না—কিন্তু বাল্যা, কৈশোর ও বৌরনের অধিকাংশ সমর বেখানে কেটেছে—সেই বাড়ী, বাগান, গাঁহণালার কথা আন্তর ভার মানসচক্ষে উদিত হর—ভার বে গৃহে বিক্পাল সাহিত্যিক ৺বিভৃতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যার অতিথি হতেন— বে হানে স্বিদিত মধুস্কন কিরবের চপ প্রথম স্ক্রছ হর—সেই স্কর, স্থসন্দিত, কেলে-খাসা প্রামের কথা বলতে গিয়ে ডাঃ মিপ্তার প্রাণম্পর্শী বেশনাবোধ সমগ্র অস্তর্যক অভিতৃত করে জোলে।

শ্রীযতীম্রনাথ সরকার

[অমৃতবাজার পত্রিকার সহবোগী সম্পাদক]

সূত্রাদপত্রকে বলা হয় Fourth Estate. কারণ সমাজ্ব গঠনে, জাতি গঠনে, দেশ গঠনে ও জনমন্ত গঠনে ইহার প্রভাব অনম্বীকার্য। কিন্তু স্পরিচালিত সংবাদপত্রের পিছনে থাকেন একদল নির্লম প্রচারথিমুখ কর্মী—বাঁহাদের দেশান্তবোধ রাজনৈতিক নেতাদের অপেকা কোন অংশে কম বা হীন নর। এইরূপ একজন হইলেন অমৃতবান্ধার পত্রিকার সহবোগী সম্পাদক ও বর্তমানে অস্থায়ী সম্পাদক প্রবিতীক্রনাথ সরকার।

৺রামচন্দ্র সরকার ও ৺রাধারণী দেবীর কনিষ্ঠ পুত্র বভীজনাথ
১৮১৮ সালের জুলাই মাসে উড়িব্যার জাজপুর সহরে জন্মগ্রহণ
করেন। পিতৃত্মি রাণাখাট কিছ ডাক বিভাগে চাকুরীর জন্ত
পিতার সহিত তিনি বঙ্গ-বিহার-উড়িব্যার বহু ছানে অবছান করেন।
দাদামহাশর ৺কুফকান্ত সংকার কটক সহরের একজন বিশিষ্ট বাসিন্দা
ছিলেন। বভীজনাথ ১১১৪ সালে বিহার শরীক স্কুল হইছে
প্রবৈশিকা, ১৯১৬ সালে বঙ্গবাসী কলেজ ও ১১১৮ সালে ইরোজীতে
জনাস্সহ সেট পলস কলেজ হইতে বথাক্রমে আই, এ ও বি. এ পাশ
করেন। ১৯২১ সালে ইরোজী সাহিত্যে এম-এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হন।
চাকুরী করার জন্ত মধ্যে চারি বংসর পড়ান্তনা বছু রাখেন।

বিভালরে পাঠকালে ভিনি ইংবাজী সংবাদপত্র পড়িতে আরম্ভ করেন এবং ক্রমণ: অর্থিন্তর সাংবাদিকতার প্রতি অমুংক্ত হন। সুবোগ পাইয়া ভিনি ১৯২৩ সালে অনুতবাজার পত্রিবার প্রকার কিসাবে বোগদান করেন। ১৯২৫ সালে উহার সহ:-সম্পাদক ও ১৯২৮ সালে এ্যাসিন্টান্ট অভিটর ১৯৫৩ সালে ভিনি প্রথম অস্থায়ী সম্পাদকের কার্যভাব গ্রহণ করেন।

মার্কিণ সরকারের টেট ডিপার্টমেন্ট কর্ত্ত্ব নিমন্ত্রিত ছইরা তিনি ১১৫৮ সালে ছই মাসের অন্ত যুক্তরাব্র পরিভ্রমণ করেন। তথার প্রথিয়াত সংবাদপত্রগুলির দপ্তরে ভাহাদের উল্লেভ্রতম কর্মপদ্ধতি দক্ষ্য করেন কিন্তু উহাদের সংবাদ পরিবেশন (Display of News) ভাহার ভাল লাগে নাই। ভাহাড়া ভারতবর্ষের স্ববাদ প্রই ক্ষ্ম প্রকাশিত হয়। সেই সময় টেট ডিপার্টমেন্টের ব্যবস্থাপনার ভিনি



প্রীবতীক্রনাথ সরকার

আমেরিকার প্রতিষ্ঠিত রামকৃষ্ণ মিশনের অধিকাংশ ক্ষেত্রশিল পরিজ্ञমণ করেন। এই কেন্দ্রগুলির বেদান্ত চর্চা আমেরিকার শিক্ষিত ও বিশিষ্ট ব্যক্তিদের নিকট খুবই গ্রহণযোগ্য হইরাছে এবং পরমপ্রক্ষ ঠাকুর রামকৃষ্ণদের ও স্থামী বিবেকানন্দের ভাবসাধনা তাঁহারা অন্তরের সহিত গ্রহণ করিয়াছেন, ইহা শ্রীসরকার লক্ষ্য করেন। তিনি মনে করেন বে, তথার ভারতের বেদান্ত চর্চার প্রসাবের প্রচাবের ভবিষাৎ উজ্জ্ব উল্ত মিশনগুলি হইতে দীক্ষাপ্রাপ্ত ব্যক্তিরা একেবারে পরিবৃত্তিত জীবনবাত্রা বাপন করিয়া থাকেন। ফিরিবার পথে তিনি তুই সপ্তাহ ইংস্যাত্তে স্বাস্থান করেন কিছু যুদ্ধান্তর প্রেট ব্রিটেন তাঁহার মনে কোন বেখাপাত করে নাই।

বর্ত্তমান বংসবে তিনি পশ্চিম ভার্মাণ সরকারের নিমন্ত্রিত অভিধি হিসাবে কিছুদিন তথার অবস্থান করেন। তথাকার সংবাদপত্র সমৃহ আকারে এদেশীর সংবাদপত্রাপেকা অনেক কুজ কিছ তদ্দেশীয় ভাষা আয়ন্ত না থাকার শ্রীসরকার সংবাদ পরিবেশনা সম্বন্ধে বিশেষ কিছু জানিতে পারেন নাই। তিনি গভীর তাবে লক্ষ্য করেন বে, যুদ্ধবিধনত ভার্মাণীর বিদেশীয় ভার্থিক সাহায়ে প্রকৃতান। আমেরিকার বেকারের সংখ্যা বথেষ্ট কিছ ভার্মাণ জাতির বৈজ্ঞানিক জ্ঞান, পরিশ্রম, বৃদ্ধি ও আবালবৃদ্ধ-বনিতার কর্মাতংপরতার তথাকার বেকার সমস্যা নিশ্চিছ। আছে ভার্মাণী শিল্প ও বাণিজ্যে পৃথিবীতে অক্ততম শ্রেক্ট্রান অধিকার করিয়াছে। তিনি মন্তব্য করেন বে, ভারতের বাহিরে বদি কোন উন্নত দেশ দেখিতে হয়, তবে প্রথমেই জার্মাণী পরিদর্শন প্রয়োজন। কারণ, অল্প সময়ে একটি পভিত দেশ ও জাতি কি ভাবে সর্বাদিকে উন্ধরনের পথে ভাগ্ডান হইয়াছে ভাহার উজ্জল দৃষ্টান্ত পশ্চিম জার্মাণী।

ৰভীজনাথ আকাশবাণী হটতে "আন্তর্জাতিক বিৰয়ে" প্রারই বজ্জা দিয়া থাকেন। "মাসিক বন্ধখতী" বে বিবিধ রচনাসভাবে আল সংর্বাচ্চ স্থান অধিকার করিয়াছে, ইহা জীসরকার স্বতঃপ্রবৃত্ত ভটরা আমার কাছে বাক্ত করিলেন।

শ্ৰীশৈলেন্দ্ৰনাথ মান্না

[প্রাক্তন ভারতীর দলের অধিনারক স্থবিধ্যাত কুটবল থেলোরাড়] সুশ্বান ও অয়ের উচ্চ শিখরে উঠেও অহমিকাকে শূরে ঠেলে

নিজের নিরভিমান ব্যবহার ও মধ্ব স্বভাবে লক্ষ ক্ষরকরকে জর করেছেন এননি এক'বিবল ব্যক্তিত্বের অধিকারী হলেন স্থবিশ্যাভ কটবল ধেলোরাড জীলৈজেজনাধ মারা।

হাওড়া জেলাব বাঁটবা প্রামে ১১২৪ সালে শ্রীমারা জন্মগ্রহণ করেন। তাঁর পিতার নাম শ্রীকণীক্রনাথ মারা। ছোটবেলা থেকেই শ্রীমারার ফুটবল পেলার বেশ সোঁক ছিল। তিনি সুলের পড়াওনা শেব করে কলকাতার বিপণ (বর্তমানে স্থরেক্রনাথ) কলেজে পড়তে জালেন। তাঁর থেলার খ্যাতি তথনই এখানে ছড়িরে পড়েছে। কারণ, এর কিছুদিন খাগেই মাত্র ১৫ বছর বহুলে Wallace Regiment-এর বিক্লছে খেলে তিনি সকলের মনে সাড়া খাগিরে দিলেন। কলেজের বিভিন্ন প্রতিযোগিতার তিনি খাল গ্রহণ করতে খাকেন এবং পরিশেবে খান্তঃবিধবিভালর প্রতিযোগিতার কলিকাতা বিববিভালর দলের খবিনায়ক মনোনীত হন। ১৯৪২ সালে তিনি মোহনবাগানে বোগ দেন। তাঁর উন্নত ধ্রণের খেলা

क्राया नर्नकान्य किया सर করতে থাকে। 338F তিনি লগুন অসিম্পিকে ভাৰতীয় দলের সহ:-অধিনায়ক মনোনীত হন ইংলাংও বছ ৰোগিতামূলক থেলাব र्याशमान करत विष्यंत দরবারে নিজেকে তলে ধরেন। অলিন্সিকে বলিও ভারতীয় দলের পরাক্ষয় ঘটেছিল তবু মারাব कोडारेनश्रा मकरन युक्ष হয়েছিলেন। ইংল্যাণ্ডের



ক্রীশৈলেজনাথ মারা

পরলোকগত রাজা বঠ অর্জ্ঞ মারাকে অভিনন্ধন জানিরে ব্যাকিংহাম রাজপ্রাসাদে এক চা-এর আসরে তাঁকে আমন্ত্রণ জানান।
১৯৫২ সালে তিনি হেলিসিকি অলিম্পিকে ভারতীর দলের অধিনারক্ষ করেন। তাছাজা বাংলাদলের স্থাবি কালের অধিনারক লৈলেন মারা, এশিরান চ্যাম্পিয়ানশিপে ভারতীর দলের অধিনারক ছিলেন। তিনি রাশিয়ার আম্প্রণমূলক থেগার ভারতীর দলকে পরিচালনা করেন। ভারতের ফুটবল থেলার ইতিহাসে এতিজ্ঞ্মর ও গৌরবোজ্ঞল অধ্যায়ের স্টেকারী মোহনবাগান দলে তিনি দীর্ঘ ১৮ বছর ধরে থেলে আসছেন। তাঁর নেতৃত্বে তাঁর প্রির্দান বহু বার লাগা ও আই, এক, এ শীতে তারযুক্ত হরেছে।

তিনি বন্দণ ভাগের থেলোরাড়। দলকে পতনের হাত থেকে বন্দা করাই দল ভাগের কাজ। দার্থ থেলোরাড়-জীবনে তাঃই স্ফুঠ পরিচর তেনি সব সময়েই দিরে এসেছেন। তাঁর বিচি ক্রিকিক ভারতের বে কোন পোলবন্দকেরই আতঙ্ক। বহু বার ভার ক্রিকিকে বছু ওক্তমুর্গ খেলা নিম্পত্তি হরেছে; এমন বি দার চ্যাম্পিরানশিপও। তাঁর ব্যক্তিগত ভাবে কোন খেলাটি ভারনের প্রেছে, প্রেম্ন করার তিনি জানান, ফ্রান্সের বিক্লম্বে ধেলাটি তাঁর ছীবনের স্বর্গাপেকা উত্তেজনাপুর্গ খেলা

ভারতীর ক্রীড়াজগতের বহু বল ও কীতির অধিকারী প্রীমারা বিশ্বের নানা প্রান্তে থেলেছেন। লক্ষ্য দর্শকের অকুঠ প্রান্থা জাঁকে সব সমরেই উৎসাহ দিয়েছে। তিনি থেলেছেন—ইংল্যাণ্ড ওরেলস, হল্যাণ্ড, ডেনমার্ক, স্থইডেন, অষ্ট্রিয়া, জার্ম্মাণী, স্থইজারল্যাণ্ড, রাশিরা, ইন্দোনেশিরা, সিক্ষাপ্র, হং২ং কলছো, বার্ম্মা, পাকিস্থানি ইত্যাদি স্থানসমূছে। তাছাড়া ভারতে আগত বৈদেশিক দলভানির বিক্লছে ও থেলেছেনই, ব্যক্তিগত জীবনে তাঁর মধুর স্বভাবে ও মিটি ব্যবহারে তিনি সকলেরই ক্রিয়। বর্তমানে তিনি জিওলাজক্যাল সার্গ্রে অব্ ইন্ডিয়ার একটি বিশিষ্ট পদে অধিষ্ঠিত আছেন।

বছ বৃদ্ধে করী সেনাপতি শৈকেল মান্না ক্রীড়ান্সলে থেলোয়াট ছব্লে হয়ত কাব নামবেন না, তবে তাঁকে থেলার মাঠেই দেখা বাবে এবার অন্তরূপে। ক্ষাই, এফ এ ও যোহনবাগান কর্ত্ত মনোনীত ছব্লে তিনি ইংল্যাও চলেছেন ফুটবল কোচিং শিকা কর্তে।

আময়া তাঁর উজ্জল ভবিষ্যৎ কামলা করি।

প্ৰাথিবীতে সৰ্ব্যাপ্ৰথম ৰে মানব গৃহ নিৰ্মাণ কৰিবা বাস কৰিবাৰ প্রিকল্পনা কবিল অথবা নিজের প্রায়েলন মত জমি বছ ছো हिन्न करिया महेन, एवन बायकाकत (Rectangle) बाकारके ৯বিল। তাহার অভনিহিত সৌশ্বাবৃদ্ধি ভাহাকে এইরূপ আৰাদ निस्तिन कविवाय धक्करे द्यानामिक कविन। धरे कवित प्रभी বায় আয়তক্ষেত্রই মানবের চক্ষে ক্ষমর দেখার। হয়ত উহা চকুর ্পত্রী ও ধননীর উপর অভুকুল ক্রিয়া করে। আমরা চকুর সমূরে মচবাচর যে সমস্ত জিনিস **কেখি, অথবা যে সমস্ত জিনিস বাবহার** ক্ষাৰ জাতাৰ অধিকাংশত আহতক্ষেত্ৰ আকাৰেৰ বধা- মহলা, জানালা ্টেল, আসমারী, খাট, কপাট, চৌকাট, বই, কাগল, ছবি, াল্ল, থামপোষ্টকার্ড, দীঘি, খেলার মাঠ প্রস্তৃতি। এ সমস্ক লিনেস আমরা গোলাকার তিকোণাকার বা সমচতুত্বি করনা ক্রি না তাহার কারণ ভাহতেে তুল্র দেখাইবে না বলিয়া মনে করি। আহতক্ষেত্রের দৈর্ঘাও গ্রন্থ কিরুপ অমুপাতে তইল জধিক ফুন্দর দেখার ইহাও মনজ্জুবিদ পণ্ডিতপণের গবেণার বিষয় চট্যা দাড়াইয়াছে। অব্য বিশেষ বিশেষ প্রায়েক আকারের জিনিসও উদ্ধাবিত চুটুয়াছে বটে।

মানব সাধাবণত: একটি জিনিস্কে মনে মনে ছুইটি সমান ভাগে বিভক্ত কৰিয়া দেখে এবং একটি ভাগের সহিত অন্ত ভাগের কোনও থিয়া পার্থকা হইলে ভাষা অকুন্দর বলিয়া মনে করে। এই কারণে দেব বার সামঞ্জাতার কল্পনা সৌন্দর্যাবৃদ্ধির একটি ধর্ম। ভামাদিগকে কেচ বলি একটি কলুসীর চিত্র **আঁ**কিন্তে বলে ভাহা হইলে আমরা ভাগা একেবাংটে আঁকিতে আরম্ভ কবি না। আমরা প্রথমতঃ रमग्रीहित रिवर्शाकुमारव अविक स्था (vertical) त्या चौकिया জারাতে কল্মীটির মধ গলা ও পেটের স্থানে একটি করিয়া সমাজুরাল (horizontal) রেখা টা ন এবং গলা ও পেটের মাণ ঘুট দিকে সমান ভাবে নিদিষ্ট কবিয়া একদিকে যে স্থানে বেরূপ लाख बाँकारेया खबा है। जि बगामितक एकन लाख है। नि वर्षार गराउथाय काशको। जीव कतिएम त्यन पृष्टेते पिक मर्साटाखाद খিলিয়া বার। অবশেবে ভিতরের রে**ধাগুলি ববার বারা মুছিয়া** দিট। একটি মানুবের ছবি আঁকিতে গিরা বদি আমরা একটি হাত একটি চোধ ও একটি কান বিশিষ্ট মাত্রৰ আঁকি তাহা স্থাৰ इन्दिन भी, अनुन्नि न्हेटल ने फ्रोमर्चा नामि इत्। कार्टित अविपटक একটা পৰেট আছে এবং অন্ত দিকে পকেট নাই, একটি পায়জামার धकिमित्कद भा जिल कहे जवा ७ व्यक्तिकद भा मिछ कुछै, व्यथवा একদিকের বন্ধ সাদ। অভ দিকের বন্ধ লাল, একটি নারীর वर्गनिक्त काल बक्षि कुल्ल बदः बन्न मिक्त काल बक्षि ফুল লৌন্দর্যা বিধান করে না কারণ এথানে সামগুলের অভাব। ষ্পামঞ্জ হাজ্যেরও কারণ হইরা থাকে।

এইবার একটি জটালিকার দিকে চাহিয়া দেখুন, এথানেও দেখা বাস আমরা উচাকে হুইটি সামগ্রস্থার্প সমান ভাগে কল্পনা করিভেছি। সৌধটির একদিকে বদি একটি পুড়ালের পারী, সিংহ বা সৈনিক থাকে ভাগা চইলে অপর দিকেও জল্প একটি করিয়া থাকিতে হুইবে। একদিকে একটি সৈনিক, অন্তদিকে একটি সাধা একদিকে একটি চূড়া অভাদিকে একটি সোলাকার আম অন্ত দিকে একটি লিকোলাকার আম অন্তদ্ধিক একটি লিকোলাকার আম থাকিলে স্বাস্থান্থানি ও হাজ্মের করিব হয়। ওয়ু একই প্রকারের জিনিস হুইলেই চলিবে না, একই

আমাদের সৌন্দর্য্যবুদ্ধি

শ্রীদেবেন্দ্রনাথ মিত্র

মাপেরও হওরা চাই। একদিকে একটি বুহদাকার সিংহ এবং অঞ্চাকি একটি ইত্বের মাপের সিংহ বসাইলে চলিবে না। ইমারতের মব্যেও একটা সমীত থাকে বাহাকে architectural harmony বলে।

একই জিনিদের নিয়মিত বিকাস সৌন্দর্বের কারণ হয়। রাভার তুই দিকে অথবা পুক্রিণীর চ চুর্দিকে বদি সমাস্তরাল গাছ থাকে তাহা হইলে সুত্র দেখার, একট রকমের গাচ হইলে ভারও সুত্রর দেখার এবং একট মাপের গাছ চইলে আরও স্থলর দেখার। একট রকম পোষাকে সন্ধিত একটি সৈকের সারি সম্পর দেখায়, ভাচারা একসঙ্গে এकहे क्रभ भगाव्याभ हिलाम छाम मधाव। विश्व माविश्रामिक প্রভ্যেকটিতে যদি নিদিষ্ট সংখ্যক গৈয় না থাকিয়া কোনওটিতে ১০ জন, কোনওটিতে ৩ জন, কোনওটিতে ৭ জন এইরপ বিভিন্ন সংখ্যার হয় অথবা একটি সারির মধ্যে একজন সৈয়ের পরিবর্তে একটি বাঁড বা মছিব বাঝা হয় তাতা সুন্দর দেখাটবে না। একই ছত্তের মধ্যে ছাপা বা হম্বলিখিত ছোট বড অক্ষর ভাল দেখার না। বাডির মধ্যে সিঁভিগুলির বাবধান একট মাপের না হটয়া ৫, ৬, ৭, ৮ ইঞ্চি প্রভৃতি বিভিন্ন মাপের হইলে তথুই যে উঠানামার পক্ষে অপুবিধান্তনক এর ভাহাই নহে, চোবেও ভাল দেখার না ৷ প্রকরের শানবাধান ঘাটের একদিকে একটি বসিবার স্থান থাকিলে অক্রদিকেও ভদ্রপ একটি থাকিতে হইবে।

বঙ্ ৪ চকুবিলিয়ের গ্রাহ্ম একটি জিনিস। প্রাকৃতিক দৃশু ও
জিনিস হইকে মানবের মনের মদে; হতের অরুভৃতি জাগিতে
লাগিল। তাহারা বড় চিনিতে লাগিল এবং তাহাদের নামকবণও
কবিতে লাগিল, ওরু তাহাই নর তাহারা বড়ে বড় মিশাইরা
বিভিন্ন নৃতন নৃতন রঙের পরীকা করিতে লাগিল এবং তাহাদের
মধ্যে ফিকা ও গাঢ় রঙের স্কবও উপলব্ধি করিছে লাগিল।
কোন আতি কোন বঙটি পচ্ন্দ করে দে সক্ষদ্ধে নিশ্চিত ভাবে কিছুই
বলা বার না তবে মানব সাধারণতঃ মিশ্র বঙ্গ অপেকা মৌলিক
রঙটাই অধিক পছন্দ করে। আবার কোন বঙের পাশে কোন
রঙটি দিলে মানার অর্থাৎ দেখিতে স্থন্দর হর তাহার পরীকাও
হইরা গিরাছে। সঙ্গীতের বেমন বাদী প্রর থাকে রঙেরও পরিপ্রক
রঙ আছে বরা হলুদ ও নীল। সাধারণ ভাবে দেখা গিরাছে
পরিপ্রক রঙ পাশাণালি থাকিলে ভাল দেখার।

ভতংপর কর্পেজিয়েরাফ জিনিসের সৌল্পের্য কথা মানব প্রথমত: সাতটি বর উপলব্ধি করিতে পারিল বাহাকে জামরা সা রে পা মা পা ধা নি বলি। তৎপরে তাহারা জারও পাঁচটি বিকৃত অরেরও উপলব্ধি করিতে পারিল। ক্রমল: তাহারা ছিনটি প্রাম জাবিদার করিল বাহাকে জামরা উদারা মুদারা ও তারা বলি। ভংপরে তাহারা বাদী সম্বাদী ও বিবাদী অরের সম্বন্ধ ও পার্থক্য ব্রিজে পারিল। তার বন্ধ সা জর্গাং অরে বাধিয়া তবলা মধ্যম পর্দার বাধিলে ফ্রান্ডিম্বুর্গের ব্যাঘাত হয় না কারণ মধ্যম একটি বাদী অর কিছা তৎপরিবর্গে তবলাটি কোমল বৈবজে বাধিলে ক্রান্ডিয়ের করিছের অরে বাধিয়া করেরকান সামক বাদি

একসঙ্গে বিভিন্ন হবে গান গাইতে আৰম্ভ কৰেন তাহা হইলে বেৰূপ অবস্থা হয় তাহা কলনা কৰা হার না। এইরপে কণ্ঠসঙ্গীত ও বাজসঙ্গীতের পূর্ণাঙ্গ স্থাই হইল এবং ভারতবর্বে হয় বাগ, ছব্রিশ্বাগিণী, তান, মান, লয়, গমক, একুশ মৃদ্ধ্না, উনপঞ্চাশ কুটভান প্রভৃতির স্থাই হইল।

কঠ সঙ্গাত ও বছ্র সকীতের মাধুর্বাও পরিপ্রক হিসাবে ভালেষও প্রি ইইল। সমরের নির্দিষ্ট বিভাগের নাম তাল এবং এই নির্দিষ্ট নিরমে বিভাগ মাধুর্বার কারণ হর। একটি রাগিণীতে বেমুরা পরদা লাগাইলে বেমন বাগিণী কাটিয়া যার তালেও নিরমের ব্যক্তিক্রম হইলে ভাল কাটিয়া যার এবং মাধুর্ব্য নষ্ট হইয়া বার। গানের বাগিণীতে বাগিণীতে মিশ্রণ চলে বথা ছায়ানট, কিছ এক প্রকার তালে আর এক প্রকার তাল মিশাইলে বিশৃষ্টলা পৃষ্টি হয় এবং কোনও ভালই থাকে না। বাঁণভালের সহিত ধামার মিশাইয়া বাঁণ-ধামার নামক কোনও ভালের স্পষ্ট হইতে পারে না। ভাল-বছ বিবরে দেখা যার জ্বছাত্ত দেশের অপেকা ভারতবর্ষে বে সমস্ক ভাল-বছ্র স্থাই হইয়াছে ভাহাদের আওয়াজেরও একটা পৃষক মিষ্টছ ছাছে বথা—পাধোয়াক, থোল, ভবলা, ঢোলক প্রভৃতি।

কবিভাব বাজ্যে আসিয়া আমবা দেখিতে পাই এখানেও নির্দিষ্ট সংখ্যক মাত্রা এবং বিভিন্ন স্থানে শেবাক্ষরের মিল প্রভৃতি সৌন্দর্য্য উৎপাদন করে। কবিতাতেও সেই তালের খেলা। আকর সংখ্যার ছব্দ বাহাকে সংস্কৃতে বৃত্ত বলা হয় তাহাতে বিভিন্ন হত্রে বদি বিভিন্ন সংখ্যক আকর দেওরা বার আখবা মাত্রা সংখ্যার ছব্দ বাহাকে সংস্কৃতে বভি বলে তাহাতে বিদিবিভিন্ন ছত্রে বিভিন্ন সংখ্যক মাত্রা দেওরা বার তাহা হইলে মাধুর্ব্য নাই হইবা বার।

সৌন্ধাৰ্থি স্থাক আম্বা এত কথা বলিলাম বটে তথাপি দেখা বার অধিকাংশক্ষেত্রে সামাজিক অবস্থাও অনুশীলন সৌন্ধা-জ্ঞানকে বিশেষভাবে প্রভাবিত করে সেক্স বিভিন্ন দেশের লোকের বিভিন্ন বিবরেব সৌন্ধাজ্ঞান ক্তক্তলি ব্যাপারে বিভিন্নকশ

হইতে দেখা বার। বিভিন্ন দেশের ইমারতের style বা বীভি বিভিন্ন প্রকার। পাশ্চাভাদেশের মহিলার গাউন পরা ও ভারতীয় নারীর শাভি পরা বিভিন্ন রক্ষের। বঙ পছক্ষ সম্বন্ধেও ক্লচি বিভিন্নরূপ দেখা **যায়। জাবার একই সমাজে ব্রসের ভারতম্য জ্ঞুসারে** বঙের ক্ষতির ভারতম্য দেখা যায়। একটি শিশু চড়া লাল বঙ্কের জামা পৰিয়া আসিলে বেমানান দেখায় না, কিছ একজন বুছ একটা লাল জামা গাবে দিয়া একটা আসবে উপস্থিত হইলে সকলের উপহাসের পাত্র হইয়া উঠে। সঙ্গীত সম্বন্ধেও এরপ। আঘৰা ভাৰতবাদিগৰ ছাৰমোনিষমেৰ যে প্ৰদাৰ পৰে যে প্ৰদা বাঞাইলে বেন্দ্র হইরা গেল বলিয়া মনে কবি অন্ত দেখে হয়ত সেইটাই মধুর বলিয়া গণ্য হয়। একজন বিলাভী মেম গান গাহিতে থাকিলে আমহা মনে করি ভিনি নাকী ম্ববে কাঁদিতেছেন, পকাস্তবে বিলাভিগণও আমাদের সঙ্গীতের মাধুর্বা উপলব্ধি-করিতে পারেন না। আবার কেহ কেহ বলেন, একদেশের লোকের নিকট অন্ত একটি দেশের সন্থীত প্রথমতঃ উৎকট মনে হয় বটে কিছ সেই দেশের সঙ্গীত দীর্ঘকাল গুনিতে গুনিতে ভাচাতেই কৃচি আসিয়া বায়। আৰও দেখা বায় একটা style বা বীতি পৰিবৰ্তিত হটয়া অক বৰুম বীতি সুক্ষৰ ৰদিয়া গুহিত হয়। যথা সেকালের গ্রনা ও এ কালের গ্রনা। নাচের ভঙ্গী সম্বন্ধেও। বিভিন্ন কাতির দৌকর্বাজ্ঞান বিভিন্নরপ।

তবে বান্তব সৌন্ধর্বোধ বিষয়ে কবিশ্বণের করনাকে বাদ দিতে হটবে। একটি আজাফুলখিত বান্ত, আক্বিহুত নয়ন শাগপ্রাংক মানব যদি সহসা সত্য সভ্যই আমাদের সমুখে আবির্ভূত হয় ভাগে হইলে আমাদিগকে মুদ্ধি বাইতে হইবে।

মাজিতক্তি মান্ব স্থানৰ জিনিসই দেখিতে চায়—এবং মধুর শক্ষ ভানিতে চায় এবং তথাবা ভাষাব মনও স্থান হইয়া উঠে। ভাই উপনিষ্দের ক্থায় বলিব—

> ভদ্ৰং কৰ্ণেভিঃ শৃণুয়াম দেব। ভদ্ৰং পঞ্চেমাক্ষতি ব্ৰতা।

হে শ্রমিকবৃন্দ !

'হে ভারতের শ্রমিক সম্প্রদায় ৷ তোমাদেরই নীরব, নির্বস পরিপ্রমের ফলে ব্যাবিলন, পারত, আলেকজান্তিরা, গ্রীন, রোম, ভেনিস, জেনোয়া, বাগদাদ, সমরখন্দ, স্পেন, পর্তুগাল, ফ্রান্স, ভেনমার্ক, হল্যাও এবং ইল্যাও পর পর খ্যাতি ও আহিপতা লাভ ক্ৰিয়াছে। আৰু তোমৰা ? তোমাদের কথা কে ভাবে ? বাহার। বকের বক্ত দিয়া অগতের সর্ববিধ উন্নতির উপকরণ যোগাইতেছে. ভাহাদের সুবাতি করিবার জন্ত কে মাধা বামায় ? কাষ্য, সংগ্রাম বা ধার্মর ক্ষেত্রে জগৎকরী বীরগণের শ্রেতিই সকলের দৃষ্টি। বভ লোকের উৎসাহ-বাকো অফুপ্রাণিত হইয়া কাপুরুষও অনায়াসে নিজের জীবন বিসর্জন দিতে পারে। থোর স্বার্থপর ব্যক্তিও নি:খার্থ আচরণ করিতে পারে। কিন্তু সকলের দৃষ্টির অগোচরে সামান্ত কাম্বেও বে ব্যক্তি ঐ প্রকার স্বার্থপুরতা কর্তব্যপরার্থতার পরিচর দিতে পারে সে-ই বর্ধার্থ বক্ত। হে ভারতের চিরপদদলিত #মিকৰুক। ভোমাদের কর্ম ৰাজবিকই এই পর্বাহের। ভোগাদের -- वामी विद्यकालकः। অভিবাদন করি।



ফুল ওয়াড়ী

— শ্বরণকুমার দত্ত

॥ আলোকচিত্র॥

স্থপ্তি

কাজল-দিঘী —আওডোৰ সিন্হা

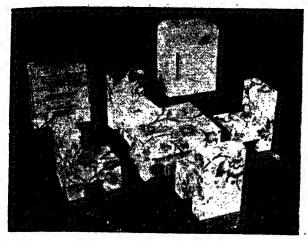


—শুকুষাৰ বাব





–অনিলকুমার বোৰ



ডুইং ক্লম (সিগারেটের প্যাকেটে তৈরী)
—শিল্পী ৰবীন বাধ-চৌধুবী (সঞ্জোধ)



কাজ কার আনন্দে



ভুগাৰকাতি লভ





সিমলার তুষারণাত মৎস্তজীবি

—শান্তি তও —মুশীল বন্যোপাধ্যার



করে ! কাল সকাল থেকে গভীর বাত পর্বস্থ মীনাক্ষীর মন
তথু একটা প্রস্থাই বিলেবণ করে ফিরেছে: প্রপ্রের কী ওর কাছে
ভার আসবে ? মীনাক্ষীর দিখিল ওঠ অক্টে উচ্চারণ করেছে—না ।
সেই প্ররে প্রর মিলিরে প্রক্তিধানি করেছে ওর অস্তর, না-না-না ।
তব্ কাকডাকা ভোরে উঠেছে মীনাক্ষী, আর সদরের করাট
যতবার আওরাজ তুলেছে—ততবারই ক্রম্বাসে ছুটে গেছে ও ।
তারপর গুপুর হলো, গুপুর গড়ালো, বিকেল হলো, বাত্রি কাটলো,
একটি ভীক উমুধ মন তার কীণতর প্রভাশাকে প্রাণের উত্তাপে
জীইরে বাধলো দীর্ঘ স্থাছে এসে প্রপ্রির বার্ডা বিভাস
তার পরদিন দীন্ত মধ্যাছে এসে প্রপ্রির বার্ডা বিভাস
করলো ওর বান্ধবী প্রমনা । প্রমনাকে একান্তে নিজের বরে
ডেকে এনেছিলো মীনাক্ষী, কিল্পের বেন ওর পাছক্ষ হলো না।

চল না বারান্দার বসেই গল্প করিগে, ববে বড্ড গরম,—হভাশ হ'লেও আপজি করেনি মীনা। একটা বিবাট ব্যগ্রতার ভাব মুখে নিপ্নে স্বর্গবালা মেয়ের ঘরের দিকে আসছিলেন। স্থমনাকে নিয়ে মীনাকে বেরিয়ে আসতে দেখে গাঁড়িয়ে পড়লেন, বললেন, এখুনি চললে নাকি স্থমনা ?

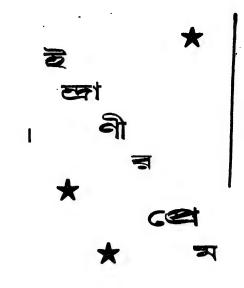
না, মাসীমা, খবে বড্ড গ্রম।

এলো, এসো, দক্ষিণের বারান্দার বসো এলে, ভারি মোলারেম ঠাণা এখানে—পরম সমাদরে মেয়ের বান্ধবীকে ডাক দিলেন স্বর্ণবালা।

শুবু তাই নর, ওঁর পক্ষে যন্ত ক্রন্তগতিতে চলা সম্ভব ততথানি ক্রিপ্রাধার নিজের হার থেকে ওঁর তুপুরে গড়ানো শীক্তলপাটিখানা এনে বিভিয়ে দিলেন। ওখানে বারান্দার এক কোণার বসে শিশিবকণা মহাভারত পড়ছিলেন। কোনো বাধা-বিপত্তি না হুটলে এসমধ্টা শিশিবকণা মহাভারতই পড়ে থাকেন। কাকীমা, আপনিও পাটিতে উঠে বন্থন, আবাম পাবেন—স্বর্ণবালা বললেন শিশিবকণাকে।

শিশিবকণা হাসিমুখে বললেন—না বৌমা, তোমবাই বস। গৰমের দিনে ধোওয়া-মোছা সিমেণ্টই আমার ভাল লাগে বেশি—তারপর মীনা সুমনার দিকে তাকিরে সম্প্রেহে বললেন, গীড়িরে বইলে কেন ? বস মা তোমবা সব বস।

মীনা ভেতরের অন্থির চাঞ্চল্যে অন্থির হরে উঠেছিলো, স্মনার হাত ধরে টেনে পাটির ওপরে ছলনে বসে পড়লো। স্বর্ণবাদার আচরণে মনে মনে বেশ বিশিক্ত হলেন শিশিরকণা। প্রথমতঃ স্বর্ণবাদার তৃপুরের টানা ঘূমে কেউ রাাঘাত ঘটালে তার আর বিশে ছিলো না, মায়ের দৈর্ঘ্যে প্রেছে ফ্লীতি দেখে এনাকী একদিন হপুরের ঘূমের মৃত্ব প্রতিবাদ করতে গিরে বকুনি খেরেছিলো খুব। আর দিতীয়তঃ গ্রীশ্মের তৃপুরে গড়ানো ওর শীলতপাটিধানি উনি প্রাণ ধরে কাউকে কথনও হাতই দিতে দেন না, নিজেই শীতসপাটিধানি গামছা ভিজিয়ে ভিজিয়ে মোছেন, সেই পাটি নিজের হাতে বিছিয়ে মীনার বান্ধবীকে বসতে দিলেন এবং নিজেও না ঘূমোতে গিয়ে বসলেন সেখানে। অবাক লাগে বৈ কি! মীনাকীর অন্থিরতা আরো বাড়লো, মার সামনে মান্তারমানাইর কথা কিগ্যেস করাও বার না, আবার খেমে থাকাও বেন বার মা। কিছ স্বর্ণবালাই শুক্ত করলেন।



(উপস্থাস)

[প্ৰ-প্ৰকাশিতের পর] নীলিমা দাশগুপ্ত

ভোষাদের মাষ্টারমশাই আজ-কাল ভোষাদের ও্বানে আসে-টাসে ?

ও মা! স্প্রিয়দা'র কথা বলছেন ? রোজ আসেন, একটি দিন বাদ বার না।

রোজ এসে এখন করে কী ? পরীক্ষার পরও পড়ার নাকি ভোষাকে ? স্থবর্গবালার সূব পেঁচালো।

প্রথিমন। বাদার বন্ধ তো, ভাছাড়। ধখন আবার প্রথেমন। পড়াবেন কী মাসীমা ? এক মাসে আমাদের বাড়ি থেকে বে টাকা পেতেন, একবেলার তার চেরে বেলি থবচ করেন প্রথেমন। বোজই বিকেলে বের হবার মুখে ফিরপোতে হয় চা, না হলে কিরবার মুখে ডিনার খাছি।

বোলই বেড়াভে ৰাছে। বুঝি ভোমরা ? স্থবর্ণালার আগ।

বোজ, জানিস মীনা, নাইস একথানা বুইক কিনেছেন স্প্রেম্বলা, বোজ সংল্য থেকে বাত দল্টা পর্যন্ত জামরা ঐ বুইকে চেপে বেড়াই। একটু বাঁকি নেই, এক কোঁটা শক্ষ নেই, গ্রাপ্ত গাড়িখানা হয়েছে। জাজ বিকেলে ভোর এখানে জাসবো জামার প্রোপ্তাম ছিলো, কিছ স্থপ্রিম্বলা শুন বললেন—অসভ্য, বিকেলের টিপে ভোষাকে জামি বাদ দিভেই পারিনে, ভূমি সকালে তুপুরে বধন বেধানে খুলি বাও কিছ বিকেলে নম্ন। মীনাকী ঠোঁট খুলেই জাবার মুখ বছ করে ঢোক গিললো একটু।

উচ্চাজের হাসি হাসলেন স্থৰণবাদা, ভোমাদের ব্যুসী স্ব মেরেদের সঙ্গেই বৃঝি থুব ভাব ভোমাদের মন্তারমশাইর ? শিশির কণার বসার প্রভটা দেখে নিরে স্থমনা সম্প্রভিত উত্তর দিলো, আপনি সেকথা জানলেন কী করে মাসীমা ? বিশ্ব সব চেয়ে স্থানিরদা'র বেশি ভাব হ্রেছে মেজর জেনারেল চৌধুরীর মেক্ষের দলে, না ভূদ বল্লাম, ভার চেরেও বেশি হ'রেছে জাইস মিজার মেয়ের নকে। স্থপ্রেরদা' তৈবী বাড়ি কেনার জন্ত দালাল লাগিরেছিলেন,
তা শুনে মিস মিত্র বলেছেন,—তোমার আর থাড়ি কিনে দরকারটা
কী ? বাবাই বখন অত বড় বাড়ি বোতুক দিছেন আমাদের
বিরেতে। মিস মিত্রের বৃদ্ধিতে খুব খুলি হরেছেন স্থপ্রেরদা'—
প্রব্ববালার ঠোটের হালি একেবারে ফিকে হ'রে গেলো, বিরসমুধে
জিগ্যেস করলেন, বিরের দিনও কী ঠিক হরে গেছে নাকি ?

—লা, দিন বোধ হয় এখনও ঠিক হয়নি, ভাহলে দাদার কাছে ভনতাম।

ভা সে মেরে দেখতে কেমন ? দেখেত নাকি তুমি ? স্থবর্ণবাদার জনদ পলা এবাব শিশিবকণার কানে পৌছুলো, মহাভারত পাঠ বন্ধ করে হাসিমুখে ওখোলেন, বউমা, কোন মেরের কথা জিগ্যেস করছো স্থানাকে ?

স্বৰ্ণবালা বাঁকা হেসে বললেন, মীমুদের মাটারমশাই বড় বড় সব ভারণার এখন টোপ ফেলছে কি না বিবের ভর—তাই জিগ্যেস কর্মিলুম।

আহা, ভগবান করুক, তাই হোক বাছার, অমন চমৎকার ছেলেটি বেন অকুলে ভেনে ভেনে বেড়াচ্ছিলো, মানী খণ্ডর পেলে হিমালর পর্বতের আড়াল পাবে বাছা—কাকীমার আলীর্বাণীতে মনে মনে ভরানক চটলেন অবর্ণবালা, কিছ বিরক্তি চেপে অমনাকে উদ্দেশ্য করে একটু বেশি বোঁক দিয়ে বললেন, ভা বা-ই বল অমনা, টাকাকড়ি ছলো বেনো জল, ও ছদিনের কিছ গৌশর্ষ হলো চিরদিনের—কথা বলভে বলভে মেরের দিকে এক পলক তাকিয়ে নিলেন স্মর্থবালা, ভারপর আবার প্রশ্ন করলেন, তা, তোমার দেই মিত্রর মেরে দেখতে কেমন ?

স্থমনা মুখের চেহারা নিরীষ ক'বে বললো, থুব স্থস্থরী না-ও হতে পারে, বিদ্ধ দেখতে অভূত স্থস্থরী লাগে। বড়লোকের বউ-বিরেরা তো নানান কেতার সাজগোল করে, ঠিক স্থানের পরযুত্ত হাড়া ওদের বিউটি কোনোমতে ধরার বো নেই!

ধুব বুঝি পালে ঠোঁটে বং চড়িয়ে পদ্মিনী সেক্ষে বসে থাকে দিন-বাত ? কথা শেষ করে স্বর্ণবালা মেরের সাধারণ আইপৌরে শান্তিপরা চেহারাধানির দিকে গর্কমিশ্রিত দৃষ্টিতে তাকালেন। উত্তরে নীৰৰে একটু একটু হাসলো সমনা। চিরচঞ্চলা লোভস্বিনী বেন হঠাৎ গজিবেগ ক্লব কৰে একেবাৰে স্তব হয়ে গেছে, শুধু চোৰ গুটিতে কিসেব একটা ব্যাকুল প্রভ্যাশা জেগে বয়েছে এখনও। মেয়ের চোখের ভাষা কিছ উপলব্ধি করতে পারলেন না পুরর্ণবালা, অপবিস্কৃট একটা হাই তুলে আড়বোড়া ভেডে উঠলেন, নিজের বরের দিকে বেডে বেতে ভাবলেন: মীয়ুর মত সুক্ষরী মেরে আর পেতে হয় না। আর স্থমনা বিদার জানিরে বখন বাড়ি বাওরার জক্ত উঠে পাড়ালো, তথনও মীনাক্ষা মৌন বইলো, আর সদর পর্যান্ত এগিরে দিতে এসে বৰ্ষন ভার বান্ধবীকে একা পেলো মীনাক্ষী, তথন গুরু শ্বংশিণের গতি জ্বত্তর হলো, বুকের আলোড়ন এত প্রচণ্ডতর হলো বে তা ঢাকবার প্রাণান্তিক তাগিদে ও ওর বাছবীকে সামার কোনো কুশলও জিগ্যেস করতে পারলে না, সাধারণ সৌম্বটুকুও দেখাতে পারলে না ।

আবো সাত দিন কাটলো মীনাকীর। তারপর আরো ছদিন। প্রমে মনে তাবে মীনাকী, সেদিন সুমনার সব কথা কান প্রেড ভনলো ও আর মনে মনে তথু সহু করলো, প্রশ্নের কোনো ভাষা কেন ও খুঁজে পারনি? একটা প্রশ্নের প্ররোজনীয়তা নিরেই ওর মন এখন আকুলি-বিকুলি ক'রে ফিরছে: মাষ্টারমশাই আমার কথা কিছু বলেননি স্নমনা?—মাষ্টারমশাই আমার কথা কিছু—। সারাদিন এই প্রশ্নটা ওকে বেন তথু তাভিরে নিরে বেড়ার আর নিজক রাত্রে ওর অতক্র চোথের পাভার সেদিনের সেই আবেগতপ্ত স্থানর মুহুর্ভগুলো অবিরত তরসায়িত হবে ওঠে আর ভারপর নিঃশব্দে মুঁপিরে ফুঁপিরে কাঁদতে থাকে মীনাকী।

সেদিন ছুপুর গড়িরে বিকেল হওরার মুখে আবার এলো অমনা, ওকে দেখে মনে হলো অনেক সময় দিয়ে আর অনেক মন দিয়ে আলকের বেশড়্যা সম্পন্ন করেছে ও। মীনাক্ষীকে সঙ্গে করে নিয়ে বাওরার জন্ম অনুমতি প্রাথনা করলো ও অ্বর্ণবালার কাছে, মাসীমা, আল আমাদের বাড়িতে একটা উৎসব, মীনাক্ষীকে আমি নিজে এসেছি, আবার আমি নিজে সঙ্গে করে পৌছে দিয়ে বাব।

উৎসবটা কিলের শুনি ? বার তিনেক স্থমনার আপাদমন্তক দেখে নিয়ে প্রশ্ন করলেন স্থববিলা।

এই আমার পাশের উপলক্ষ্যে—একটু আমতা-আমতা করে বলে শেষ করলো অমনা, যা না পাশ-তার অভ আবার উৎসব-বাৰার বেমন কাণ্ড। মেয়েকে সাজিয়ে গুলিরে পাঠানোর জন্ত একটা মৌন প্রতিদ্বন্দিতা ঠেলে ভুললো স্থবর্ণবালাকে। বিদ্ধ ঐ এককোঁটা মেয়ের জেদের সঙ্গে আজ আরু পেরে উঠলেন না স্থবর্ণবালা। মীনাকে—স্থমনার সঙ্গে বেতে থালি করাভেই মুবর্ণবালার অনেক শক্তি ধরচ করতে হলো, ঠিক বে সম্ভাবনা মনে করে স্থবর্ণবালা মেয়েকে পাঠাতে এক উৎসাহী ঠিক সেই কারণ শ্বৰণ করেই মীনাক্ষী এত অনাপ্রতী। শেব পর্যন্ত সাধারণ একথানা আকাশী রংএর শাড়ি পরে আর মাথার চুলে ছবার চিক্লণী বুলিবে টান করে একটা হাতথোঁপা বেঁধে সুমনার সঙ্গে গেলো মীনাক্ষী। বাড়ীর রাজাটা পেরিয়ে বাঁদিকে বাঁক নিতেই অদুরে দাঁড়ানো একটি মোটর গাড়িকে স্থমনা হাতহানি দিয়ে আহ্বান করলো। পাতি এনে দাঁডালো সামনে, মীনা ভীব প্রভিবাদ করলো, আবার গাড়ি চেপে অনর্থক খরচা করা কেন ? বাসেই দিব্যি বাওয়া বাবে। ক্রন্ত হাতল বুরিয়ে গাড়ির দরজা খুলে তাগিদের স্থরে বললে স্থমনা, চটুপটু উঠে পড় মীনা, মেলাই দেৱী হয়ে গেছে তোকে খোসামদ করতে করতে। দেরী দেখে বাড়ীর সবাই নিশ্চরই ভারতে গুৰু করেছে। আর আপত্তি করলো না, মীনা গাছিতে উঠে বসলো, গাড়িখানা বে বাড়ির গাড়ি, আনমনা মীনা ভা খেরাল করলে না আদৌ। সারা পথ মীনাক্ষী একেবারে অভুত নিশুর। হঠাৎ একটা স্বপ্নের নেশা ওকে এখন পেন্নে বসেছে বেন, বেন নিস্করভার প্রতিটি মুহুর্ত ও সেই সোনালী স্বপ্নের নেশার মাভাল হ'রে থাকতে চার্যু সংগ্ৰৰ নেশাৰ ভৃত্তি এক, এত স্থৰায়ভূতি ?

মীনা! নাম, এসে গেছি আমরা—

চুটে গোলো দিবাৰণা। স্থলৰ আধুনিক ডিজাইনের একধানা বাজিব গাড়ি বাবালাব নিচে এনে থেমেছে। কিছুটা আছ্প্লেব মন্ত মীনা স্থমনাব পেছন পেছন গাড়ি থেকে নেমে এলো, ভাবপ্ৰ চোথ বিকাৰিত ক'বে তাকিবে বইলো এল্ প্যাটার্ণের বাড়িধানির দিকে, এ আমরা কোধার এলাম স্থমনা ? চল্ চল্—খুনীর কোরারা বেন মুক্তি পেলো স্থমনার গলার, বুরলিনে, এটা স্থপ্রেরদা'র বাড়ি। নিজেই বাড়ি কিনে কেলেছেন স্থপ্রেরদা', আর স্থপ্রেরদা'র প্রেরিভ গাড়ি চেপেই আমরা এলাম—মানীমা বলি কোনো আপত্তি ভোলেন, সেবল আগে বলিনি।

আবার এক বাঁক ভ্রমর গুনৃ-গুনৃ গুরু করলো মীনাক্ষীর মনে — লাছে, লাছে, স্থপ্রিয় ওরই লাছে। এদিক সেদিক তাকিরে মীনা উজ্জ্বল প্রসন্ন মুখে বান্ধবীর পাশে পাশে সিঁজি বেরে উঠতে লাগলো। শুমনা পাশে না থাকলে, ও ছুট দিয়ে সিঁড়ি পাৰ হ'য়ে ওপৰে উঠে বেকো কখন। বাড়ি সাজানোর ব্যাপারে ভারি স্থন্দর শিৱিষনের পরিচর দিরেছে স্থপ্রির। সিঁড়িতে ওধুরঙীন তেলরভের পাধির আর ফুলের ছবি। সেদিকে চেয়ে চেয়ে মীনাক্ষীর টোটের কোণার একটা ছোট হাসিব ঢেউ উঠলো। ওপরেব টানা বারান্দা পার হ'তে হ'তে অনেকের উচ্ছল কলগুলন কানে এলো। **আ**র ভারপরই মীনাকী দেখলো ওয়া ভাইনিংক্লমের উন্মুক্ত কবাটের সামনে ভেতরে বিবাট ডিমাকৃতি জাকারের টেবিলকে খিবে ওর জচেনা মেরে-পুরুষ স্বাই ব'সে আছে, কী অঞ্জ তাদের ছৌলুস আর কী অনর্গল তাদের কথার বংকার! ন ধধৌ ন তক্ষে ভাবে দরজার সামনে গাঁড়িরে বুইলো মীনা। ভ্ৰমৱকুল হুল ফুটিয়ে উড়ে গেলো ডানামেলে। টেবিলের দৈর্ঘের একদিকের মাঝধানের চেরাবে স্ক্রমজ্জিতা মেরেদের মধ্যমণি হরে আসীন স্থপ্রিয়। স্থপ্রিয়র দিকে ঝুঁকে সকলের কথা বলার আগ্রহী ভঙ্গি দেখে প্রথম দৃষ্টিপাতেই মনে হয় বে স্থপ্রিয়ই সেখানে বিশেষ ব্যক্তি। **আ**ৰু মেয়েৰা এমন চোখেৰ চেছাৰা ক'ৰে ম্মপ্রিয়র বক্তব্য শুনছে বে, এ তোকধানয়, এ বেন মহাপুরুবের বাণী।

স্প্রিয় কথা থামিয়ে মীনাক্ষীর আধঝানা মুখ পর্বস্ত চৌথ তুলে বললো, শুরু তোমাদের জন্ম চা থেতে আমরা বিলম্ব করছি, শীগ্রির চটপট বলে পড়ো। একবার চকিত দৃষ্টি-বিনিময় হলো মীনাক্ষীর সঙ্গে। স্থপ্রিয়র মুথের ভাবে কিছু পেলো না মীনাক্ষী। স্থমনার হাতের আকর্গণে পাশাপাশি হুটো চেয়ারে এলে বসলো ওরা। চা-পর্ব্ব শুক্ত হলো। বন্তচালিতের মত একটু-আগটু থেরে চলেছে মীনাক্ষী, আর অপান্তে আসাপ্যয় উজ্জ্বল স্থ্রিয়কে বাবে বাবে দেখছে।

ভূরোন - ভূরোন - ভূরো ওর্ অ ভূটো শব্দে ওর মন ওকে একেবারে কাব্ করে ফেলেছে। থাওরার মাঝখানে বর এসে সেলাম দিরে ওকটা কার্ড স্প্রিয়র হাতে দিলো। কার্ডের ওপরে ছাপার হরফে লেখা স্থনীল বদাক, বি-এস-সি, গ্লাসগো। ঠোটের কোপে অভূত বিচিত্র একটা নীরব হাসি ফুটি-ফুটি করে মিলিরে গেলো স্থপ্রিয়র। কার্ডবানা বরের হাতে ফেবং দিরে মন্থর গলার বললো, সাবকো কহেনা, আপকা কৃছ গড়বড় হোগিরা, আপকা সাথ সোম সাবকা বিস্কৃত্য জানপ্রছান নেহি হার—কার্ড হাতে নিরে বর আবার সেলাম দিরে চলে গেলো। ভূর্জমনীর ইচ্ছে ছচ্ছিলো স্থপ্রিয়র, ওব জবারে স্থলীল বসাকের গোল মুখখানি আরো কতথানি গোল হয়, ছোটো ছটি চোধে আরো কতথানি ছারা ব্যায়—তা বেখার, কিছ না, না দেখেই ও জা বেশ ক্রনা করতে পারছে। বন্ধু অস্থণেব্র কথা বারে বারে বারে সনে 'প্রকা, আহা! আজ বিদ

জকণেশ এথানে থাকভো। বে মেরেটির সঙ্গে মুখ ঘুরিছে স্থপ্রিয় খনিষ্ঠ জন্তঃসভার সঙ্গে কথা বলছিলো, ভার সাজের দিক্তে ভাকিরে লাল হয়ে উঠলো মীনাক্ষী, কানের ছুপাশ বাঁ-বাঁ।

সক্ষার মার্কিণীদেরও হারিরেছেন তিনি। ও মেরে হ**রে চোর্** ভূলে তাকাতে পারছে না, ভার ও খেয়েটি কিনা এত অসংখ্য পুক্ষবের সামনে ঐ পোবাক প'বে অনারাস ভক্তিতে বসে হেসে হেলে কেবল গল্প কৰছে স্থাপ্ৰিয়ৰ দক্ষে। তাৰপৰ চোৰে **পড়লো** মীনার, সক্ষায় প্রতিটি মেষেই মার্কিণী শুধু ওর বন্ধুনী শুমনা ছাড়া। স্থমনাৰ বেশভ্ৰা চটক্লাৰী হলেও অতথানি প্ৰমোশন পায়নি এখনও। ভরা পেয়ালা শেষ হলো, কিছ সৌশ্বভ্ৰস্চক এমন ৰাকে গলেব কী শেব নেই! এত তীৰ অস্বাচ্ছণ বোৰ করছে মানাকী। আনন্ধ। আনন্ধ। এত অভ্য আনন্দের হাট বসেছে এখানে, কিছ ও ওর গুংগিণ্ডের রক্তক্ষরণের পরিমাপ চেঠা ৰবছে বেন নীৱবে, আৰু, প্ৰাৰপণ চেষ্টান্ন চোথ ফেটে আসা অঞ্চটাকে ঠেকিয়ে বাধছে; তাই চারের আসরের কোনো উচ্ছাস আলোচনাই ওর কানে পশলো না। আর, ভারপর, স্বাই বথন চেয়ার ছেছে ডাইনিং হলের এক দেয়ালের হাতে-জাঁকা অনবত্ত একথানি ছবির নিচে দাঁড়িয়ে আলোড়ন ভূলে নানান ভাষায় ভাষিক করছে লাগলো, আর অপ্রির সেই পাশে বসা মেডেটির একেবারে গা খেঁসে পাঁড়িয়ে অনুচ কঠে কী একটা কথা বলে গলা মিলিয়ে **একসজে** হেদে উঠলো, তথন পেছনে দাঁড়ানো মীনাকী আর দাঁড়িয়ে ধাকতে পারলো না।

এই বংগুশির মেলায় ও ওধু নিম্প্রভ প্রাণহীন পুতুলই নয়, ওর উপস্থিতি অবাঞ্চিত, হাত্রকর। এই আনন্দের হাটে ওর প্রবেশ নিবেধের অদৃগু বিজ্ঞপ্তি বেন সর্বাত্র বুলছে।

: গুরো- - গুরো! অবোর ওর অক্ষর মহলের সিংহ দর্জায় ঢাকের বাড়ি দিলো কে বেন! নিঃশব্দে ভাইনিং হল থেকে বেরিরে এলো মীনাফী। কোনো শব্দ না তুলে পাগল-পারে নামতে লাগলো নিচে। বিভলভিং ষ্টেজের মঞ্চ ঘূরে গেলো বেন। পঞ্চেক্তির দিয়ে বেন স্থপ্রির মীনাকীর অভিত্ব অমূভব করছিলো। সঙ্গে সঙ্গে ভিড়ের বাইরে চলে এলো স্থপ্রিয় খার ভারপরই পেছনের যোরানো সিঁড়িতে ক্ৰন্ত অনুত হয়ে গেলো স্থপ্ৰিয়র স্থদীৰ্ঘ শৰীর। সদৰ দরজার কাছে পৌছে মীনাক্ষী দেখলে, হাত তুথানি জড়িয়ে বুকের ওপর রেখে পা দিয়ে দরজা আটকে ঋজুভঙ্গিতে দাঁড়িয়ে আছে স্থলিয়। মুখে মিটি মিটি ছ্টুমীর হালি। চোথের জলের ছ্রক্ত প্লাবনটা কিছুতেই আর রোধ করতে পারলে না মীনা, ভাড়াতাড়ি **ছহাত** ভুলে যুখ ঢাকলো। সরে এলো স্থপ্রিয়, নিজের ছহাত দিয়ে মীনাক্ষীর চোধ থেকে হাত তুথানি নামিয়ে কৌতুকের স্থরে বললো, ছি: ছি: মীনা, এমন বোৰা ডুমি! একটু ছুইুমী ক্রছিলেম তোমার সলে—মীনাকীর হাত ধরে সামনে আকর্ষণ কংতেই, ওদের সামনে ছুটে এলো স্থমনা, স্থপ্রেরদা', আমার অভিনয় সাফল্যের বকশিস? ভারপর হাসতে হাসতে বেন কৌতুকে ফেটে পড়লো স্থমনা।

ভূই তো ভারি ইরে রে মীনা, ভোকে বাড়ি থেকে কার্লা করে এনে প্রপ্রিরলা'র কাছে পৌছে দিলেম, আর ভূই আমাকে না বলে পালাছিদি ? ওদের একলা থাকার প্রবোগ দিরে আবার ছুট ৰাগালো স্থমনা, কিন্তু ঘৰ পাৰ হবাৰ আগেই স্থ**প্ৰিয় ভাক** দিলো।

স্থানা, শোনো, শোনো। ভেতবে বাওরার দরকার কাছে কাঁড়িয়েই জিজান্থচোথে তাকালো স্থানা।

মলরকে বলো বে এদিকটা বেন সে ম্যানেক্স করে নের অর্থাৎ সম্মানিত অতিথিদের সমাদরে বিদার জানার বেন, আমি এখন মীনাক্ষীকে পৌছে দিতে চললাম। স্থমনা বাদ্ধবীর উদ্দেশ্তে চোথ টিপে একটু হেসে নিয়ে উত্তর দিলো। ঠিক আছে স্থপ্রিয়দা, আমি দাদাকে বলে দেব।

মোন মীনাকীর হাত ধবে গাড়িতে উঠে বসলো পুপ্রিয়। গাড়ি চললো। আতে হাত ছাড়িয়ে গাড়ির এক পাশ বেঁসে বসলো মীনাকী।

এ কী! এমন গিরি-সাগর ব্যবধান কেন রচনা করলে মীনা ।

স্থাপ্রিয় সরে এসে বাঁ-হাত বিছিরে মীনান্দীর কাঁধে হাত
রাখলো। মীনান্দী মুখ ঘূরিয়ে পথের চলমান পথিকদের খুব
মকোরোগ দিয়ে দেখতে শুরু করলো, হো হো করে হেসে মীনান্দীর
চিবুক ভান হাত দিয়ে ধরে মীনান্দীর মুখ নিজের দিকে ফিরিয়ে
নিলো স্থাপ্রিয়, চোথের দীখির বাঁকে বাঁকে অনেক জল জমেছিলো,
স্থাবাদ শুরু হলো প্লাবন, মীনান্দীর কাঁধে আবেগের সলে একটু
চাপ দিয়ে স্থাপ্রেয় স্মাতিমুখে বললো, মীনান্দী, মীনা! লোনো,
কোঁদ না লক্ষীটি, আমার ছটো কথা আগে শুনে নাও—আমি একটা
দিন ভোমার কাছ খেকে আত্মগোপন করেছিলেম, সমাজের আর
একটা পিঠ দেখার জল শুরু দেখলাম, কী অভ্তুত পৃথিবী! কী
ভাজ্জর সমাজ! নিচুগলির মান্ত্রই আমি, চাল নেই, চুলো নেই,
ঘর নেই, ছরার নেই, সেই মান্ত্রই বাতারাতি হয়ে গেলেম সমাজের
মুকুটমণি, শুরু তাই নর মীনা, অনেকের আলা-শুরসার পাত্র পর্বস্তঃ।
বলোভো মীনা, কী অভ্তুত মন্তালার ছনিয়ার আমরা বাস করিছি!

মীনাক্ষী নিকতর। চোধের দীবির কানা থেকে জল অল্প নিচে নেমেছে। স্প্রপ্রির তাকিরে আছে মীনাক্ষীর দিকে। বেন হিমে ভেলা ভোরবেলার শিউলী ফুলের মত শাস্ত মুখখানি। হঠ'ৎ কী বেন মনে পড়ে গেলো স্থান্থির। মুখ টিপে হেনে পকেট থেকে একটা ভারি ওক্তনের মুখখোলা খাম টেনে বার ক'রে মীনাকে উদ্দেপ্ত ক'রে বললো, নিক্রেকে এমনভাবে ধরে না রাখলে তোমার মা'র কাছ থেকে এমন একথানি অপূর্ব স্কলর চিঠি আর এমন আশ্চর্য সম্মান পেতেম কী করে? একেবারে অদিতীর আমি, আমার বিতীর নেই। এমন কোনো বিশেষণ নেই বাংলা ভাষার বা নাকি আমার নামের আগে পিছে জোড়া লাগাননি তিনি। প্রথমেই আমার কলপ্রান্তি দিরে ওক্ত করেছেন আর একেবারে শেষ পাতাটার, আমার প্রতি ভোষার অতল অনুগু টান আর আমার বিরহে ভোমার ক্লান্ত ভাষার করেকটা হালকা টান আছে—নান্ত প্রভ্ দেখো, অস্ততঃ শেবের পাডাটা গুরু পড়ো।

মীনাকী এবার নিজয় ভলিমার থিল-থিল ক'বে হেলে উঠে
চিটিখানা স্থানিবর হাত থেকে নিরে স্থানিবর গকেটে বেখে নিলো।
মীনক্ষিম অপরণ মুখখানি হাত দিরে তুলে ধরে গুনগুনিরে বলল
স্থানিব, এমন ভোরের আকাশের আভা বে মুখখানিভে, এমন স্লিপ্ত
অপ্রাধী চাউদি বে চোধ ছটিতে, এর তুলনা আর কোথাও মিললো

না মীনাকী! আসন্ত আনকে মীনার মুধ রামধন্ত রঙো হরে গোলো। পুরির পেছনফেরা পাঞ্জাবী ডাইভাবের দিকে এক পলক তাকিরে নিরে মীনাকীর আরো কাছে সরে এলো। মীনাকীর কাঁপে আরো একটু চাপ দিরে কানের কাছে মুধ এনে অকুট গলার বললো, তা হলে মীনা কি ঠিক করলে? ফ্যানস্থদ্ধ ভাত ধাবে না ভাতের ফ্যান গালবে?

শজ্ঞায় পূলকে ডাইভাবের অন্তিত সম্পূর্ণ বিশ্বত হয়ে স্থাপ্রের প্রশস্ত কাঁধে মুখ সুকোলো মীনা।

সিমলার কালীবাডির প্রধাত ট্রেন্সে সংঘমিত্র ক্লাবের পরিচালনার 'চিত্রাঙ্গল' নৃত্যনাট্য অনুষ্ঠিত হচ্ছে। অভিনয় সুকু হবার মিনিট কৃতি বাকী এখনও। সংঘমিত্রের সদত্য এবং সদতারা সকলেই নিঃশব্দে ব্যস্ত, ভবে ব্যস্তভাটা বিশেষভাবে প্রকট। বাড়ভি ব্দসংখ্য চেয়ার দেওয়া হয়েছে অভিটোরিয়ামে তবু বেন তিল ধারণের স্থান নেই। প্রায় হাজার লোকের ভিড়। রমেন সর্বাণীরা যথন এসে পৌছোলেন, তখন আর ভারগা বিশেষ নেই। রমেনকে জী-বভা নিয়ে এগোতে পিছোতে দেখে কেশ্বশংকর বাবু অমুচ্চকণ্ঠে ডাক দিলেন, এদিকে চলে আমুন—দ্বিতীয় সাবির প্রথম সোফার বসেছিলেন কেশবশংকর, তার পরেই আর একটা ছোটো সোফার জরুণেশ ভারপরের বড় সোফাটার এক পাশে বদেছিলেন মিসেস ভক্রবালা বিশাস। সে সোকার আবো হুজনের জাইগা থালি রয়েছে। নীলা আর শেলি গ্রীণক্ষমে। কেশবশংকর বাবু তরুকলোর পাশের জায়গা নির্দেশ করে ইন্দ্রাণীর দিকে তাকিয়ে হাসিমুখে বললেন, তোমরা ওখানে গিয়ে বসো আর খোকন—খোকনকে জারগা চাভার কথা বলাব আগেই লোফা ছেড়ে সরে এলে গাঁভিয়েছে ও। বিব্রত রমেন অক্লণেশের সোফার বসতে বাবে বাবে অস্বীকার করলেন। क्ष्मवन्दक्त वाव स्माखकार्थ वान दिशालन, व्यामनि वान भएन वरमन वातु, हेश्:मानिस्मत शुंख हे एक निरंत्र कायुना शानाफ करव বসা ভাল। ভক্রবালা স্বামীর এ-ছেন আচরণে মর্মান্তিক চটে ছিলাপরা ধন্তকের মন্ত ভুক্ত হুটো বন্ধিম হলো মিসেস বিশানের। একটু ইডভভ: করে সর্বাণা, ইন্দ্রাণা এগিয়ে এলেন লখা সোফাটার দিকে।

সেই ভূক বাঁকানো অবস্থায় চোথে বিয়ক্তি-মিঞ্জিত তাছিক্য দৃষ্টি হেনে ভক্ষবাসা বিখাস ধর গলার বললেন—এখানে বসবে কী করে তোমরা? এ জারগা মিনেস তালুকদারের জন্ত রাখা আছে এবং পাছে ওরা কাণ্ডজ্ঞানহীনা হয়ে কেউ একজন বসে পড়ে, সেজ্য ঐ গলাতেই ক্রভলরে শেষ বর্গেন।

মিনেস ভালুকদার ঠেসাঠেসি করে সকলের সঙ্গে বসতে পারেন না—স্ত্রীর কথা কানে না গেলেও, তক্সবালা যে ওঁর পাশের খালি ভাষগাটা ছেড়ে দিলেন না, সেটা ব্যক্তে পেরে বেশবশংকর তাঁর বিরাট শরীরটা নিরে ব্যস্তসমস্ত ভাবে উঠে গাঁড়ালেন।

আপনারা এখানেই বন্ধন, আমরা পেছনে গিয়ে বসছি।
এবার রমেন গুরু বিব্রভই বোধ করলেন না, গুরু বেশি রকম লচ্চিত
হলেন। সে লজ্জার দার উত্থার করলেন সর্বাণী, ভাড়াভাড়ি বলে
উঠলেন, আপনি ব্যস্ত হবেন না, ঐ বে মিনেস গুপ্তার পাশে
জারগা ররেছে আমরা সেখীনে গিয়ে বসছি—কেশবশংকরকে লক্ষ্য

কৰে কথা ক'টি বলে ফ্ৰন্ত ও পালে বাওয়াৰ জৰ চলতে শুকু কৰলেন সর্বাণী, ইন্দ্রাণীও চললো। মালতী গুপ্তা বসেছেন দ্বিতীয় সাবিব ওদিকের কর্ণারে। প্রথম সাবির মাঝথানে হিমাচল প্রদেশের ত্তন বিশেষ অতিধির সঙ্গে বসেছেন মি: গুপ্ত। হিমাচল প্রদেশের প্রধান অতিথিম্বয়কে আত্মকের অভিনয়টি ইংরিজীতে ইণ্টারপ্রেট করবার ভার নিয়েছেন উনি। নৃত্য-নাট্যে বোঝাবার ব্যাপার थव कमड़े थांक, पर्टेनांटीय क्षिष्ठे बल्ल (मश्रया चाय कि। সামনে **जराकत जिज्ञ। नर्काणी ध्यादाक निरंग्न (शक्न पिक पिरंग्न गुर्व** চললেন। গভকাল মালভী গুপু তুপুরে এলে সন্ধা স্কাণীদের ওধানে কাটিয়ে গেছেন, তথু তাই নর, কোমবে কাপড় बिहार भाक्षावीत्मव अकि विश्मव खिद भावाव 'वाटीवा' चहरस থানিবে সর্বাণীদের খাইয়েছেন। কালকের দিনটা ভারি আনক্ষে কেটেছে ওঁদের। সর্বাণীর কাছে আগের দিনের প্রস্তুত পিঠা মতুত हिला, त्र भिर्शेष नाम ভाषि मसाय-भविष्यश्यिमी। अधिम-, कवर মি: গুপ্ত ত্ৰীকে নিতে এসেছিলেন, সেই বৰুম কথাই ঠিক ছিলো ভাগে থেকে। এই পিঠার নাম নিয়ে চারের টেবিলে হাসির বড় তুলেছিলেন। ঐ প্রসঙ্গে কত মজার মজার পিঠার নাম স্বরণ হরেছিলো চারের টেবিলে ভার পর। ভার পর অভীভের কভ কাহিনী উদগীরণ হলো—মি: গুল্ব ছোটো ভাইকে পাহারা রেখে ছোটোবেলায় তাক্ বেয়ে পাটিদাপ্টা চুবি কবতে গিয়ে তাকের আলগা ভক্তা খ'দে পদ্ধার সঙ্গে সঙ্গে নিজেও কি ভাবে চিৎপটাং হ'রে পড়ে গিয়েছিলেন আর তাম পর পিঠা খাওয়ার বদলে পিঠে কেমন যা কতক খেয়েছিলেন, সে ঘটনা বৰ্ণনা ক'বে তেলে আৰু বাঁচেন না মি: গুপ্ত। মালভা-সর্বাণী জরেউলি বডবন্ধ ক'রে একটি শাস্ত ঠাণ্ডা মেরের টিফিন থেকে আমের আর আনারসের আচার চরি ক'রে থেবেছিলেন। হীরের কুটির মত অসংখ্য অভীত কাহিনী বিকমিকিরে উঠেছিলো কাল চায়ের পেয়াসায়। বিদায়কালে মি: গুপ্ত সহাস্তে বললেন: বান্ধবী পেলে তোমার মুখের অনাবিল আনন্দের আলো বৰ্ষন এ ভাবে বিচ্ছুৱিত হ'তে থাকে, তখন বান্ধবীৰ সঙ্গে ৰোগাৰোগটা ভারো ঘন ঘন করলেই তো পার। তার পর, সপ্তাহে এক দিন ক'বে কে কবে কার কাছে যাবে, সেই ব্যবস্থার রফা হলো মালভী-দৰ্কাণীর মধ্যে। পেছন দিক থেকে প্রায় তৃতীয় সারির কাছ বরাবর এনে সর্বাণী হাসিমুখে অফুটে ডাক দিলেন, মালভী !

মিসেস গুপ্ত ঘাড় ফিবিরে বাদ্ধবীকে দেখে চোখের ভারা নাক পর্বস্থ নামিরে এক মুহূর্ত ভাবলেন। তার পর মুখের ভাব হাসি হাসি ক'রে অফুচ্চকঠে বললেন, সা—বি, দেরি করিস নে আর, শীগৃগির চেযার দেখে বসে পড় ভোরা—এভ দেরী ক'রে আসতে হয় কথনও ? মুখ য্বিরে বাঁ পালে বসা মিসেস আরাঙ্গারের সঙ্গে আগের মন্তই কথা বলতে লাগলেন মিসেস গুপ্ত। বিমৃত-বিশ্বরে তৃতীর সাবির আরগ্রেই সকল্যা সর্বাণী গুল্ক হ'রে দাঁড়িরে গেলেন। অবশু সর্বাণীরা নিয়মমান্তিক আসতে পারেননি, একটু দেরী ক'রে ফেলেছেন ঠিকই। মিসেস বে'দের জল্ম ওঁরা অপেক্ষা করছিলেন, একসঙ্গে মিট ক'রে কালীবাড়ীর হলে আসার কথা হয়েছিলো ওঁদের। আজ মি: রে'র এক মাস্তৃতো বোন ও ভাগনীপতি দিলী খেকে মাত্র স্বাত দিনের জল্প বিডাতে এসেছেন। কথা ছিলো তাঁদের সঙ্গে নিরেই স্বাই একসজে হ'রে আসবেন, কিছু শেব মুহূর্তে মি: রে'দের প্রোপ্তাম ক্যানসেল

করতে হলো, বোন-ভাগনীপতি ছলনেই শারীরিক কিছু অযুত্ব বোষ করছেন। সেই জন্ম সর্বাণীদেরও দেরী হ'রে গেলো। কিছু তাই বলে বাছবী মালতী তার পাশে জারগা থাকা সত্ত্বও। চিন্তাপুত্র ছিল্ল হলো একজন ভলে কিরারের আহ্বানে। পাশ কিরে দেখলেন একজন ভলে কিরার ছটো হাতস্বিহীন চেয়ার হাতে ক'রে গাঁড়িরে আছে আর তার একটু দ্বে অরুণেশ গাঁড়িরে আছে তকনো মুখে। বোঝা গেলো অরুণেশই ভলে কিরারেক বলে বলে চেয়ারের ব্যবস্থা করেছে। ভলে কিয়ারের অন্ধরোধে মন্তালিতের মত একটু সরে গেলেন সর্বাণী, ইন্দ্রাণী আগেই দেয়াল খেঁলে গাঁড়িরে গিয়েছিলো, সেই সারিতে পাশ্রাণাশি ছটো চেয়ার পেতে দিলে ভলে কিয়ার। সর্বাণী ব'লে পড়লেন কিছু ইন্দ্রাণী বলা, আপনি ও চেয়ারখানা নিরে বান, চেয়ার আমার লাগবে না। ভলে কিয়ারটি বিনীত গলার প্রতিবাদ জানালো।

না, নিবে বান বলছি, এথানে চেয়ার পেতে লোক চলাচলের অস্থবিধে করবেন না—ইন্দ্রাণীর কঠিন কণ্ঠম্বর তনে তলে টিয়ার হকচকিরে চেয়ার নিবে পাশের দরজা দিরে অদৃগু হ'রে পেলো। সর্ববাণীও বাধা দিতে গিয়ে মেরের গলা তনে চুপ করে গেলেন। মেরের জেদের সঙ্গে উনি সবিশেষ পরিচিত। তাছাড়া বাদ্ধবী মালতীর বহুত্তময় ব্যবহারের খোর বেন তথনও উনি কাটিয়ে উঠতে পারেন নি। আতে আতে বিশ্লেষণের সদ্ধ আলোর প্রতিভাত হলো সব সর্ববাণীর কাছে। পাঞ্জাব গভর্ণমেতের সেক্টোরী-জায়ার আচরণ স্বরণ ক'রে একটা নিখাস ফেললেন সর্ববাণী। মঞ্চপর্দা উঠে গেলো। সর্ববাণীর চিজ্ঞার দিক্পরিবর্তন হলো কিছুটা। মনোবোগ দিতে চেষ্টা করলেন দৃশু এবং দৃশুপারিত

দেয়াল ঘেঁনে আবো অনেকের সঙ্গে একেবারে ঋতুভঙ্গিতে দাঁডিরে আছে ইন্দ্রাণী। অভিটোরিয়ামের উজ্জল আলো নিবে চারা-চারা অন্ধকার ঘনালো, ভারপর ফিকে হলো আরো, অকুণেশ কথন এসে विन मांकिरवर्ष देखांनीय भारत । वृष्टि (बर्म वास्त्रा अवह आवार বেন এখনি বৃটি নামবে আকাশের মত ইক্রাণীর মুখের দিকে তাকিরে আছে অরুণেশ। সকলের কান বাঁচিরে খুব অসূটে **ডाकला, हेक्कानी। ७४न क्षेत्र बर्ब्ड्न वनाइ,—'बाहा की प्रःमह** ম্পদ্ধা!' অরুণেশের মনে হলো পাল কেরা ইম্রাণীর কণ্ঠ চিরে এ শব্দ চারটে বার হ'বে এলো, কণ্ঠস্বর তো নর বেন ভেরী বাজিরে ঘোষণা করলো। অধচ পাষাণ-প্রতিমার মত গাঁড়িরে আছে ইন্দ্রানী, নিখাস-প্রখাসের উত্থান-পতনটুকু পর্যন্ত বেন বোঝা বার না। এর আগে আর একদিন এমনি গ্লানিকর খটনার সামনে উপস্থিত ছিলো অক্রেশ। সেদিন ইন্দ্রাণীর অস্থিকতা উত্তেজনার বিকি-বিকি করে অলে উঠেছিলো ওব তু' চোধের মণিতে, ৰুখের বেথায়। সে ছবি এতট্রু মান হরনি অরুণেশের কাছে। মা'র আত্মপ্রসাদের এমন ছল প্রকাশ নিয়ে অনেক ভেবেছে অঞ্বলেশ, প্রতিরোধের উপায় সম্বন্ধের ভেবেছে অনেক। মাকে একলা পেয়ে কত দিন অকুপেশ দৃচ্প্ৰতিক্ষ হ'বে এগিবে গেছে, কিন্তু ওব বক্তবোৰ বিন্দুমাত্ৰ উচ্চাৰণ ना करत हैं-होत्रां वात्क कथा वरन कावात वाथिल-शकीत बूर्व किरत এসেছে নিজের খবে আব নিজেব ভীক্তাকেই নিঃশব্দে ভারপর পালাগাল দিয়েছে। মার কাছে ঐ প্রসন্থ নিয়ে আর্জি পেস করভে গেলেই কী একটা অন্তত লজ্জা ও সংখ্যাতে কঠবোধ হবেছে বাৰ বাব।

নিজের নির্জন ঘরে এনে অনেক বিল্লেষণ করেও সঠিক কারণ অস্থ্যান করতে পারেনি অরুণেশ। ওর প্রতি মারের অস্ক ভালবাসাই ওর কঠবোধ করছে নাকি কথার কাঁকে ওর গোপন প্রেম প্রকাশ হরে বাওরার আশ্বো

এক হাত পুরে শাড়ানো পাশফেরা ইন্দ্রাণী, অস্থিৰতার বিকৃষতার কোনো একটা ঢেউও ওঠেনি ওর মুখের বেখায়, শরীরের ভঙ্গিমার। ছ'চোৰে উদগ্রীব ব্যাকুলতা নিয়ে তাকিয়ে আছে ব্দক্রণেশ পাবাণ-প্রতিমার দিকে। সেদিন ব্লপরাত্ত্বে জাভার ওর निष्मत्र होत्थत बाला म्हल्हिला ७ हेनात हुई होत्थ, म बाला निराष्ठ भारत ना-निर्वात नत्र, विभ रह्द्द्र अञ्चलभ छ। मेन पिरत জানে, বুক দিয়ে বোঝে, তবে কীও ভল দেখেছিলো? না, ভুল ওর হয়নি। নিয়তি ওর জীবনটা কী আশ্চর্য ভাবেই না নিয়ন্ত্রিত করছে! ও আর ইক্রাণী কাছাকাছি হলেই নিয়তি তাব নিষ্ঠুর হাতের থাবা মেলছে ওলের মাঝখানে, টেনে-হিঁচড়ে সরিরে নিচ্ছে একজনকে জার একজনের কাছ থেকে। প্রেমের কিশলর জেগে উঠলেই সমূলে কঠিন ককল পায়ে নিম্পিষ্ট করছে। নিজের মনও निःभए (वन वाहाई करव हमामा अकराम । ना, এই ভাঙা-গড়ার অন্তত সমস্যা থেকে ওদের জার বেহাই নেই। এক হাত দুরে **অভ আর এক মৃতিতে গাঁড়ানো ইন্দ্রাণী ক্রমে ক্রমে ঝাপদা হরে** একেবারে বেন মিলিয়ে গোলো অরুণেশের চোখে। অরুণেশ বিক্ষারিভ চোৰে দেখলো, সেধানে ভধু একটানা না অকরটা দৈৰ্ঘ্যে প্ৰস্তে বড় হ'তে লাগলো ক্ৰমশ:। ক্ৰীত হতে হতে না শব্দটা প্তর সামনে এসে সজোরে ধাকা দিয়ে গেলো ওকে। ও বেন সংক্ষম সাগবের মধ্যে নির্জন দ্বীপে ববে গেলো একাকী। কুড়ি বছবের অঞ্লেশ আর দাঁড়িয়ে থাকতে পারলো না। ঝাপসা চোৰে বেরিয়ে এলো কালীগাড়ির অডিটোরিয়াম হল থেকে। **অভিটোরিরামের বাইরে এলেই কি সব কিছুর বাইরে আসা বার** ? একটা অসহ বাত্রি বাইরে বিস্তীর্ণ হয়ে ছড়িয়েছিলো বেন। ভারণর কথন ও পা বাড়ালো, গেটের কুগুলী-পাকানা কুকুরটিকে ষাজিবে চলে গেলো, কিছুই খেয়াল নেই। সমস্ত চেভনায় ওয়ু অন্ধকার, ধুসর, সর্জ, অসহ অন্ধকার!

চিত্রাঙ্গলা অভিনয়ের তিন্দিন পর কেশবশংকর অফিস থেকে বখন ফিরলেন, তখন সিমলার আশ্চর্য স্থন্দর বিকেল শেব হয়ে প্রেছে। লাঞ্চের পর একটা অরুরী মিটিং কল করতে উনি বাধ্য হ'রেছিলেন। একজন কর্মচারী তার নিজের অপরাধের প্রমাণযুক্ত কতকগুলি অফিনিয়াল রেকর্ড পোড়াতে গিয়ে ধরা পড়ে বায়। সেই সব ব্যাপারের বিলি-ব্যবস্থা ক'রে কেশবশংকরের অফিস র্মধেকে বেক্তেত অনেক দেরী হ'রে গেছে। তারপর ম্যালেও মৌতাতে মজে গিয়েছিলেন বন্ধু-বাদ্ধবের 'সঙ্গে, থেয়াণ বখন হলো তখন হাত্যভিতে চোধ ফেলে দেখলেন বিলম্ব হ'রে গেছে প্রচ্ব। দেরী হলে বাড়ি ফিরে আর কাউকে পান না, ইভনিং-ওরাকে বেরিয়ে বান স্বাই। বার্চি বৈজ্বাম থালি বাড়িতে মনিবকে অনেক বেন্দী মনোবোগ দিয়ে চা-খাবার পরিবেশন করে, বর দিলারাম সাবের আহ্বান শোনার জন্ত অনেক বেন্দি উৎকর্ণ হয়ে থাকে, কিছে তব্, সেদিন বন্ধ-বানুচিয়ে অসংখ্য গলতি ওঁর চোথে পড়বেই।

এ নিরে কথনও কিছু বলেননি উনি বৈজুবাম-দিলারামকে।
কিন্তু, সাবের না বলা মুখের রেখার, কপালের থাজে বে বির্তি
কুটে ওঠে, তার জন্ম ওরা সভরে সম্বন্ধ হুকে প্রাকে দেখতে পারে
বিশ্বিত হওরার চেরে আনন্দিত বেশি হ'লেন, হাসিমুখে বললেন—

একটা মঞ্চাৰ খবৰ ওনেছো ভক্ত, আমাদেৰ ৰমেন বাবুৰ প্তী সৰ্ব্বাণী দেবী ফিলোজফিতে ঈশান-জলাব। তক্তবালাৰ কোনো সাড়ালক না পেয়েও কেশবশংকৰ খুলিয়ুখে বলে চললেন।

দিল্লী থেকে মি: বে'ব বোন আৰু ভগনিীপতি এসেছেন—মি: থ্যাও মিলেদ কল। মিলেদ কল ছিলেন দর্বাণী দেবীয় ক্লাশমেট। সন্ত্রীক এবং সবোন ভগিনীপতি ম্যালিং এ বেরিয়েছেন মিষ্টার রে, আমাদের পরিচিত প্রায় সকলেই ছিলেন সেধানে। সাহেব সি:-এর দোকান থেকে রমেন বাবু ও সর্ববাণী দেবী কি খেন ওযুধ কিনে বেবিরেছেন। বান্ধবীকে চিনতে পেরে মিসেস কল্ল হৈ-হৈ করে এগিরে গিয়ে কর্মদুনি কর্লেন, তারপর সব প্রকাশ হরে গেলো-একেবারে অচল অন্ড হরে স্ত্রীকে বলে থাকতে দেখে উচ্চান স্তিমিত হরে গেলো কেশবশংকরের। জীর একেবারে সামনে এসে-সংশয়ী গলার প্রশ্ন কবলেন, কি হয়েছে ভক্ন, ভোমার সেই পুরোনো মাধার বস্ত্রণাটা আবার ওক হয়েছে বুঝি ? তক্ষবালা নীরস গলায় তবু ছোটো উত্তর দিলেন, না। তব্দবাদার এ সময় বাড়িভে বসে ধাকার আর সুধভারের কি কারণ ঘটতে পারে, মনে মনে ভাই চিস্তা করতে করতে'কেশবশংকর পাশের ঘরে জামা-ঝাপড় ছাড়তে গেলেন। বছর ছ'রেক আপে ভরুবালার দুর সম্পর্কের এক ভাই ইভিহাসে ঈশান-ক্ষপার হয়েছিলো। সে ধবর বধন উনি ষ্টেট্সম্যান মারফং পেলেন, কাগজে ঈশান-স্বলারের পিতৃপরিচয় পড়েই উনি হিসেব করে দেখলেন, ছেলেটি সম্পর্কে ওঁর ভাই হর। তখন কিছুদিন ওঁর গল শুধু গ্রম হয়ে খাকতো অদেখা ভাই-এর ঈশান-স্কলারশিপের আলোচনার। একদিন অফিস-ফেরৎ কেলবলংকর পালের হর থেকে ন্ত্ৰীৰ আলোচনাৰ কিছু অংশ গুনে ফেলেছিলেন।

ং বাকে এড়ুকেশন এাট্মসকিয়ার বলে, সে হলো সিরে আমার বাপের বাড়িতে। বে ঘরেই আপনি চুকবেন, দেশবেন ভূপীক্ষুত বই বাতা টেবিলে ছড়ানো আর ভার মধ্যে ময় হয়ে আছে হয় আমার কোনো ভাই না হলে কোনো বোন। আর ফলও সব করছে তেমনি, ইউনিভার্সিটির পরীক্ষাগুলোভে ফার্ট সেকেও ছাড়া হয় না কেউ! এই তো আমার ভাই অভিজিৎ এবার উপান-কলার হয়েছে— ষ্টেট্সম্যানে দেখেছেন নিশ্চমই ? ফটো দেখে মনে হয় বেন এখনও বোলো বছর পেরোম্বনি ওর। গ্রন্থান হয়ে আরও কিছু বলতেন মিসেন ভর্মবালা বিশাস কিছু কথার মাঝখানে ঘ্রের অনেকের মধ্যে কেনে একজন জিগোন ক'রে বললেন, আপনার নিজের ভাই ?

মনে মনে চট্লেন তক্ষবালা। কথার মারখানে এ ধ্বংশ্ব সভরাল সিমলার সমাজে কেউ করেন না। খুড়ড়তো ভাই বলতে সিবে গলার বিধা জাগলো। কারল, পরিচিতাদের মধ্যে জনেকে ওঁর পিতার পদবী জানেন। কিছুটা থভিয়ে সিয়ে জক্ষবালা জবাব দিলেন, না, নিজের ভাই নয়, মাসভূতো ভাই—ভা অভু জামার নিজের ভারের চেয়েও জনেক বেশী। অভিজিৎকে অভু বলে তক্ষবালা। নিজের উভিতে জবগু একটু জোর পেলেন কিছু আগেকার কথাব গ্রন্থীর বে আদৌ বোগাবোগ রইলো না, ভা বিশ্বত হলেন সম্পূর্ণ।
পাবের ঘরে চা থেতে থেতে কেশবশংকর মুখ চিপে হাসলেন এবং
অভাগতারা বিদার জানিরে চলে গেলে দ্বীর কাছে এসে সহাত্যে
বললেন, তরু, অভিজিতের সঙ্গে ভোমার সম্পর্কটা ঠিক মাসভুতো না
পিসতুতো, হিসেব কবে দেখো দিকিনি, গ্রামদেশের একটা মজার
ছড়া আছে জানো ভো? 'মামার ক্ষেতে বিরোলো গাই, সেই
সম্পর্কে মাসভুতো ভাই'—কথা শেব ক'রে হো-হো ক'রে হেসে
উঠেছিলেন কেশবশংকর।

ধুব বেশি সেদিন রাগ করতে পারেননি ভক্নবালা। আড়াল ধেকে ওঁর কথা স্বামী কতথানি ওনেছেন তা জানেন না বধন, তথন চেপে বাওবাই ভাল। চট ক'বে অভ একটা প্রসঙ্গের অবভারণা করেছিলেন। কেশবশংকর রমেনদের বাভির সকলের প্রতিই একটি প্রজন্ম শ্রদ্ধা করেন এবং নীলা বে ইভনিং ওয়াকের নাম ক'বে ইস্তাণীর কাছে বাংলা শিখতে বার সে ধবরও স্বিশেষ জানেন, প্রকাশ করেননি তা মেয়ের কাছে। वे अक (कां)। पारत हेन्द्रानीय व्यक्तिकात वक्त वाक्किक मान मान ইন্দ্রাণীকে আন্তরিক শ্রেহ করেন কেশবশংকর। স্ক্রীর মনোভাবের পরিবর্তন ঘটাবার জন্মই ইন্দ্রাণীর পরীক্ষার থবর সেদিন বাড়িতে এসে বাবে বাবে উল্লেখ করেছিলেন এবং আছকেও অত্যক্ত আগ্রহের সঙ্গে সর্বাণীর থবর ব্যক্ত করার পেছনে ঐ একই উদ্দেশ্য নিহিত ছিলো, কৈন্ত স্ত্ৰীকে এমন ধমধমে মুখে নিৰ্বাক ধাকন্তে কথনও দেখেননি কেশবশংকর। কোনো অশুভ সংবাদের আশংকার বিচলিত হ'বে তাড়াতাড়ি পোষাক পবিবর্তন ক'বে ফিবে এলেন স্তীব কাছে। উৎক্ষিত গলায় প্রশ্ন করলেন, কি হয়েছে ভক্ন ? একটু নড়ে চড়ে বলে তক্ষবালা ধরা-ধরা গলায় বললেন, ভূমি, চা থেয়ে নাও, ভারপর শুনো--কেশবশংকরের কপালে রেথা পড়লো করেকটা। হাক দিয়ে বৈজুবামকে ডেকে চা-জলধাবার এ ঘরে দিয়ে বেভে বললেন। ন্ত্রীর দিকে সপ্রশ্ন চোখে তাকিরে শুধোলেন, কী ব্যাপার ঘটেছে ভাড়াতাড়ি বল ভক্ন, ভ্রানক অস্থিবতা শুকু হয়েছে— সেই আগের গলাভেই ভক্ষবালা বললেন, খোকন কিছুভেই বিয়ে করবে না, শুধু थर्भनरे नय, **७ नाकि कोवत्न**७ विदय कवाद ना।

হেসে ফেললেন কেলবশংকর। ও! এই কথা, আমি ভেবে মবছি না জানি কী কাও ঘটে বদেছে। তোমার মাধার পোকা ^{চুক্তেছে}, না হলে খোকনের বিয়ের জন্ত এমন করে ক্ষেপো ভূমি? ^{এই} বয়েসে কোনো ছেলে আজকাল বিয়ে করতে চার না কি?

এ কথার তক্ষবালা কেঁলে ফেললেন, না গো, তুমি জানো
না, থোকন বলেছে জাজীবন ও চিরকুমার থাকবে জার—জার
বলেছে ওব সিমলা ভাল লাগছে না, ও সাত দিনের মধ্যেই
কলকাভার ফিরে বাবে। বে ছেলে মা-বাবাকে ছেড়ে কভকালের
জ্ঞুত্র বিলেত বাছে কে জানে, ভার বাবা-মা-বোনেদের কাছ
ভাল লাগছে না, ভার ভাল লাগবে কলকাভার এই ভ্যাপসা
গরমে শৃজ হোষ্টেলবাড়ি, এমন মতি থোকনের কবে থেকে হলো।
ফুলিরে ভঠলেন ভরুবালা। বৈজ্বাম চা-থাবার নিরে ববে ঢোকাভে
জ্ঞুবালা মুখ খ্রিয়ে নিলেন। কেলবশংকর ছেলের কথা জার
হাসি দিয়ে উড়োতে পারলেন না। চিভিত্মুখে চারের পেরালা
ছলে চুমুক্ দিলেন একটা, থোকন আৰু গেছে কোথার ?

চোথের জল মুছে ভঙ্কবালা ভয়-ভর ব্যস্ত গলার বললেন, ও মা তাইতো! এতকণ তো খোকনের কেরা উচিত ছিলো, ওতো তুপুরে খাওয়া লাওয়া করেই তোমার বন্দুক নিয়ে বেরিয়েছে।

মানা করলে না কেন তুমি ? ক'দিনই বা থোকন হাতের চিপ প্রাাকটিন করেছে, ওতে কী পাথী মারা বার ? কেশ্বশংকরকেও ভাবিত হ'তে দেখা গেলো।

তক্ষবালা বললেন, নীলার কাছে খোকন বলেছে, কাল কিমা পরত চুকুট-নালার ও লক্কড্বার শিকার করতে বাবে, আর ভূমি বলছো কিনা, ওতে কী পাখী মারা বার ? আমাদের কথায় কাজ হবে না, ভূষি বাপু ছেলেকে চুকুট-নালা'য় বেতে মানা ক'বে দিও, আমার তো শুনে অবধি বুকে কাঁপুনি কেশবশংকর চিন্তিত মুখেই চা-মলখাবার হরেছে। কলিংবেল ভার অভিত ঘোষণা করলো। শেষ করলেন। পরেই দিলারাম এসে স্বিনয়ে জানালো,—টেলার জানতি-প্রসাদ এসেছে। দিলারাম মারফৎ টেলারকে বসতে ব'লে क्मिन्य केंद्र अफ़्लिन। (थोरून ना वलाल कि इर्द्र, ট্রপিকালের কোটটা একটু আঁটো-আঁটো হয়েছে, আৰু টেলারকে বাডি আসংত বলেছিলেন সেজত সংস্কার পর। থোকন এ সময়ের অনেক আগেই রোক বাভি ফিরে আসে। এক মিনিট কি ভেবে নিরে কেশবশংকর ছেলের খবে চলে এলেন। ওরার্ডরোব খুলে দেখলেন, না, ট্রপিকালের কোট প'রে বারনি থোকন, ওটা ছাঙ্গারেই ঝলছে। ছেলের মাণ তো কান্তিপ্রসাদের কাছে আছেই, কাজেই খোকনের গায়ের মাপ এখন না পেলেও কিছু এসে বাবে না। স্থাসার থেকে কোট থুলে নিরে ছ'পা এগিয়ে আবার দীড়িয়ে গেলেন কেশবশংকর, পকেটে কিছু আছে কিনা হাত প্রলিৱে দেখতে লাগলেন। বাইরের পাশের ছটো পকেটও বুকপকেট---তিনটেই থালি। কোটের ভেতর-পকেট থেকে কাল কাগছে মোডা একগোছা ফটো বেরিরে এলো। কাগজের আবরণ উন্মোচন করতেই অন্তুত বিশ্বয়ে একেবারে স্তব্ধ হ'য়ে গেলেন কেশবশংকর। প্রথম কটোধানা ফুলের বাগানের মারধানে বসা हेक्कानीय करहे।, जावनय अरक अरक आरबा इ'बाना करहे। स्वर्णन, সব ক'থানাই সালোয়ার কামিজ পরা ইন্দ্রাণীর বিভিন্ন ভলিমার ফটো। ফটোর চোধ বেখে অনেকক্ষণ একেবারে ভির হ**'বে** পাঁজিয়ে উইলেন কেশবশংকর। হঠাৎ থেয়াল হলো জানতিপ্রসাদকে অনেককণ বসিয়ে রেখেছেন। দিলারামকে আবার ভাক मिर्द्य वर्ष्ण मिर्लन-(हेमांबरक कांव अक्षिन कांगरल वर्ष्ण मांक, हाटी मार अवनल चरती करवित । विमानाम जारमम जानारक চলে গেলো। ইন্দ্রাণীর বসা ফটোখানা ছাড়া বাকী আর ছ'ঝানা करहे। वश्राचात दार्थ मिलन । वजा करहे। बाना निस्कद भरकरहे ज्या ফিবে এলেন স্ত্রীর কাছে।

থোকন ফিরেছে? উদ্বেগ-ব্যাকুল গলা তরুবালার। চেরার টেনে জীর খুব কাছাকাছি বসলেন কেশবশংকর।

অধীর হরে বললেন ভক্তবালা, তুমি বা বা খেতে ভালবাস এক মাস ধরে রোক তাই থাওয়াবো—ভারপর মুখ টিপে হেসে বললেন, ছেলে মুখন আমার, তথন ভোমাকে থাওয়াতে হবে বৈ কি!

ছেলেমায়ুবের মত উচ্ছল গলার হেনে উঠলেন তরুবালা। স্বামীর কথার প্রেচ্ব আস্থা আছে। মুখ দিয়ে বধন একবার ওকথা বলেছেন তথন ধোকনের মত আদায় করে ছাঞ্বেনই।

কিন্ত গলার গান্তীর্থ জানলেন কেশবশংকর, কনে পছন্দ করতে ছেলেকে ঢালা স্বাধীনতা দিতে হবে।

নিশ্চর্ট, আমি মেরেকে স্বাধীনত। দিরেছি ও বিবরে, ছেলেকে পারবো না ?

মৃত্ হাসলেন কেশবশংকর, বললেন, এ ব্যাপারে ছেলে-দেরের প্রাশ্ন ঠিক এক দাঁড়ার না তক্ত, তুমি ভূলে বাছো সে ক্থা। বাই হোক, ধরো—ইতিমধ্যে থোকন বদি কোন মেয়েকে পছক্ষ করে থাকে?

ভঙ্গবালা বললেন, তুমি হাসালে দেখছি ৷ থোকনের কোনো মনোনীতা থাকলে অন্ততঃ ভার একথানা চিঠিও ভো আসবে কলকাতা থেকে ? জানোই ভো, চিঠির বাঙ্গের ভালা আমি নিজের হাতে থুলি ?

আহা, দিমলায়ও ভো.ধোকনের মনোনীতা ধাকতে পারে ?

ভদ্দবালা লঘুকঠে বললেন, সিমলায় থাকলে তো কথাই নেই, মেয়ের বাবার বাভারাতের প্রসা থবচ হবে না। তোমার কথা আমি বুঝেছি, ছেলের বিয়েতে অত অমত শুনে তুমি মনগড়া ভাবনা ভেবে এসব কথা বলছো।

কেশ্বশংকর হাসলেন, ভোষার বধন ছেলের বিবে দিতে ইচ্ছে নেই, তথন আর করা কী ?

এবার ভক্ষবালা ভূক কোঁচকালেন, ব্যাপার বী বলতো ? ভূমি কি ধোকনের টেবিলে কোনো চিঠি-ফিটি দেখে এলে নাকি ? মৃছ মৃছ হাসতে লাগলেন কেশবলংকর।

ভঙ্গবালা উঠে গাঁড়িরে ব্যগ্রগলার বললেন, বাই, খোকনের আলার আগে আমিও দেখে আসি তাহলে।

বলো, বলো, ব্যস্ত হরো না--বাধা দিলেন ক্রেশবশংকর। নিদর্শন আমি প্রেটে করেই নিয়ে এসেছি।

ভক্ষালা ধপ করে চেয়ারে বদে পড়ে ব্যস্ততার সক্ষে স্থামীর দিকে হাত প্রদারিভ করলেন। দেখি দেখি চিঠিখানা—কেশবশংকর বললেন, এবার তুমি হাসালে তক্ত্ন, ছেলের লাভ লেটার বাবা লুকিরে পড়ে এমন ভাজ্জবের কথা আমার জানাও নেই, শোনাও নেই, ওস্ব মায়েদের একতিয়ারে। তক্তবালা হতাশ হরে আবার ওটিরে বসলেন।

ভবে ? কেশবশংকর স্মিতমুখে বললেন, চিঠি নর কটো।

দেখি দেখি ? আগের মতই ব্যক্ততা কুটে উঠলো তক্ষবালার কঠখরে। পকেট থেকে কাগজে-মোডা কটোখানা তক্ষবালার হাতে তুলে দিয়ে স্থিয়টুটিতে স্ত্রীর দিকে চেরে রইলেন কেশবশংকর। আবরণ সরাতেই একেবারে বেন রক্তপুত্ত ক্যাকাশে হরে গেলো তক্ষবালার মুধ। কেশবশংকর ভক্ষবালার মনকে তার নিজের মুখোমুখি হবার সময় দিয়ে পকেট থেকে পাইপ বার করে ধীরে-জন্থে তামাক তরে তাতে অগ্নিসংবাগ করলেন। হঠাং কি বেন

মনে পড়লো ভক্ষবালার, চেক্টা করে মুখে কীণ হাসি ফুটিরে বললেন, এ ফটো থোকনের টেবিলে থাকলে কি হবে, এ নিশ্চরই নীলার কাও! ইন্দ্রাণীর সঙ্গে ওর ভরানক ভাব কি না, ওই ফটোথানা ভূলে টেবিলে রেথে গেছে। কেশ্বশংকর পাইপ থেকে থোঁয়া উদ্গীরণ করে বললেন, আর ফটো যদি থোকনের কোটের বুক্পকেটে থাকে, ভাহলেও কি ভূমি বলবে—নীলা ভূলে ফেলে গেছে ওথানে ?

থোকনের বুৰপকেটে । তরুবালার কঠ দিরে বীবে বীরে কথা
ক'টি বার হলো । কেশবশংকর আবার সময় দিলেন তরুবালাকে ।
ইন্দ্রাণীর এই ফটোথানা অনেক হাঙ্গামা করে বোগাড় করতে
হরেছে অরুপেশকে । মিসেস রে নীলা ও ইন্দ্রাণীকে নিজের বাগানে
বসিরে যুগা ফটো তু লছিলেন একথানা । অরুপেশ একদিন বেড়াতে
গিরে ফটোথানা দেখে কেলে । তারপর, নীলার ফটোর পোজের
উচ্ছু, সিত প্রশংসা করে একদিনের কডারে নেগেটিভথানা নিয়ে
আসে মিসেস রে'র কাছ থেকে । সেই যুগা ফটো থেকেই অরুপেশ
ইন্দ্রাণীর আলাদা ফটো প্রিণ্ট করিয়ে নিয়েছে । অবগ্র যুগা ফটোও
প্রিণ্ট করিয়েছে একথানা । নাহলে নীলার কাছে যদি মিসেস রে
কোনো দিন ফটোর কথা তুলে বসেন, তাহলে বেমকা বিপদে পড়ে
বাবে ও।

এক-পাইপ ভাষাক পুড়লো, তবু ভক্ষবালা ফটো কোলে ক'রে একই ভাবে বনে আছেন !

কী হলো তরু ? পাইপ থেকে ঠুকে ঠুকে ছাই বার করতে করতে প্রশ্ন করলেন কেশবশংকর। তবু নিরুত্তরে রইলেন তরুবালা।

ইস্রাণীকে পছন্দ হচ্ছে না তোমার ? গুগো না—না—বেন কেঁপে উঠলেন তক্ষবালা। শামরা রাজি হ'লে কী হবে, প্রিরা সম্মতি দেবে না।

ওরা মানে রমেন বাবু, সর্বাণী দেবীর কথা বলছো ? নি:সংশয়ের স্থবে বললেন কেশবশংকর। নিশ্চরই মত দেবেন, অমত করবার কোনো কারণ তো খুঁজে পাচ্ছিনে আমি। বিয়ের পর খোকন বিলেত থেকে না ফেরা পর্যস্ত ইক্রানী ওঁদের কাছে থেকেই পড়ান্ডনো করবে। তরুবালার ভেতরে ধেন অস্বভিকর ছটফটানি শুকু হলো, কী ক'বে মুখ ফুটে পরাজর ঘোষণা করেন স্বামীর কাছে! কি ক'বে বলেন, রমেন-সর্বাণীর মতামতেই চুড়াস্ত নিপান্তি হবে না, আরো একজন আছে, জারো একজন থেকে বায়—সে ইন্দ্রাণী। মেরেমাছব হ'রে মেরে ষ্টাভি করতে দেরী লাগে না। ত্র-চারবারের দেখাতেই উনি বুৰেছেন কী ইম্পাতের মত শক্ত এই বোলো বছরের वक्कांठा हेन्द्रानी, की हेकीश वृद्धिनीश काव! विविन क्यांत्रश्यन পার্টির পর ফটোতোলার জন্ত আরু স্বাইকে আহ্বান করেছিলেন, দেদিন ঐ এককোঁটা মেয়ের ঠোঁটের বাঁকে অভুত বাঁকা হাসির থেলা দেখেছিলেন ভক্ষবালা। এই মুহূর্তে সেই দৃশ্য স্পষ্ট ভেসে উঠলো তক্ষবালার মনের আয়নার। এ সমস্তা এমন ভাবে দেখা দেবে ওঁর সামনে, এ বে একেবারে অকল্পনীয় ভক্তবালার কাছে! ছেলের হঠাৎ মন ধারাপের কারণ, 'চিত্রাঙ্গদা' নৃত্যনাট্য না দেখেই বাড়ি ফেরা এবং না খেয়েই ওঁরা আসার আগে দরজা বন্ধ ক'রে ওরে পড়া, এবং 'অনেক ভাকাভাকি করেও কেন গেদিন পুত্ৰের কাছ থেকে সাড়া পাননি, একে একে সৰ বছ হ'য়ে ধরা

দিলে। তক্ষবালার কাছে; আব কোনো কুছালা ইইলোনা। তক্ষবালার মন অসহ উদ্বেগে ছটকট করতে লাগলো। এয়াকাউন্টেণ্ট-জেনারেল-ভাবা, মিসেস তক্ষবালা বিখাস, বিনি বেমলোর বাঙলোতে থাকেন, তিনি হেরে গেলেন ক্যাথলিক ক্লাবের সাত নবর আইটের এক্টোটা ইন্দ্রাণীর কাছে? তক্ষবালার প্রেহান্ধ মন ব্যাকৃল হ'রে উঠলো।

: ওঁব জন্ত ওঁব নাজিছেঁড়া ধন অন্থবী থাকৰে—তাও কী হব ? ক্যাথলিক ক্লাবে বাওয়াৰ জন্ত শাজি পাণ্টাতে উঠলেন তক্ষৰালা। ন্ত্ৰীকে কাণড় ছাড়াৰ খবেৰ অভিন্তুৰে বেতে দেখে, তক্ষৰালাৰ উদ্দেশ্য আঁচ ক'বে কেললেন কেশবশংকৰ। মিগ্ৰ গলাৰ বললেন, লোনো তক্ষ, ভোষাৰ বাওয়া এখন ঠিক হবে না, কাল অফিলে আমি বমেন বাবুৰ কাছে কথাটা পাজি, ভাৰপৰ বেও।

তুমি ব্থবে না, আমারই আগে বাওরা দরকাং—ছেসিংক্ষমের দিকে এগিয়ে আবার স্বামীর কাছে সরে এলেন তক্ষবালা।

এই নাও, ফটোখানা আগে ঠিক জায়গায় বেখে দাওগে, আৰ খোকন-নীলাব গলা শুনছি, ভূমি কিন্তু আমাৰ বাওয়াৰ কথা জানিও না ওদেব, কিন্তু ভক্ষবালা গেট-পাৰ হৰাৰ আগেই কেশবলংকৰ ছোট কলাকে ডেকে চূপি চূপি শুখোলেন, নীলা, তোৰ বান্ধবী ইন্দ্ৰাণী বদি ভোৱ বৌদি হয়, কেমন হয় বল দেখি ?

· সূর্য-কবি আবহুল মঞ্জিদ

হে অফুবস্ত জ্যোতির উৎস, ভোমার বৌদ্র-কবোজ্জল সে এক প্রভাতে व्यथम (मथनाम ज्याने । शृथिवीतः। তোমার আলোর বিজুগণে আমার কুঞ্জে-কুঞ্জে ফুটলো অসংখ্য কিশলর ; সবুজ সবুজতর হ'লো। প্রতিদিনই অক্স আলোর উত্তাপ অহুভূত হ'লো ধ্যনীতে। তোমার আলোর কণিকা আমার আকালে আকালে রচনা করে ব্দপর্ন ইন্দ্রধন্ত্র-সেতু। উত্তাপের উত্তেজনায় ভূলে পেরাম ষঠবের নির্মম-জকুটি। তোমাৰ আলোব আবীৰ মুঠি-মুঠি ছড়িয়ে দিলাম আকালে-আকালে। শালোর তীক্ষতীর কবিতা তোমার বিদ্ধ করে জাধার-ঈপল। ছে সবিত। সুস্বর, ভোষার সফেন সমুদ্র-ভরঙ্গে অবগাহন করে তৃপ্ত, মহাতৃপ্ত আমি। নিভ্য বিকিরণে এভ আলো-প্রেম-ভাপ ভোষাৰ অভৱ দীন্তি হবে না নিঃদেব ? হে অন্দর জ্যোভিন্মর, লছ মোর পূর্ব-প্রাণার। এর চেরে তাল আর কিছু হর না বাবা! লাফিরে উঠেই নীলা ভীক্সংশর চোথে বাবার দিকে তাকালো, কিছু, মা কিছুভেই রাজি হবেন না, আমি জানি—

বাজি হবেন না কি রে ? তোর মা এই বিয়ের প্রস্তাব করজেই তো ক্যাথলিক ক্লাবে এখন গেলেন।

সন্তিয় বাবা ? আব এক লাফ দিবে ছুটে বাছিলো নীলা, মেবের এক হাত টেনে ধবে বেধে কেশবলংকর হাসি-হাসি মুখে আবার বললেন, আব একটা নোতুন ধবব শোন্, ইন্দ্রাণীর মা সর্বাণী দেবী ফিলোঞ্চিন্ডে ঈশান স্কলার। বা, দাদাকে ধবর ছটো দিসে বা—ভতকণে নীলা অনুভ হ'বে গেছে, একটা আবামের নিখাস কেলে কেশবলংকর পাইপ ধবালেন। এই বিরেভে ভক্রবালা এত সহজে সম্মতি দিরে বিবের প্রভাব করতে নিজেই ক্যাথলিক ক্লাবে বাবেন, এতটা আশা করেন নি উনি। ক'দিন ধবে ছেলের মুখে হাসি নেই, খুলি নেই, খাওরা নেই, ভূতি নেই, বোনেদের সমের হাসবিক্ষ নেই, মা-বাবার সঙ্গে কোনোরকম ছুঠুমী নেই—কোনো কিছু আশংকার আঁচ ক'বে ক'বে ইাপিরে উঠেছিলেনে কেশবলংকর। পাইপ মুখে দিরে প্রশান্তমুখে কেশবশংকর আরামকেদারার গা এলিরে দিলেন।

किमनः।

গরীব

অশোকা দেবী

কুটপাতে পড়ে থাকা জীবন, করেছে অনেক আশা সে-ও। নিবে গেছে ছোট দীপশিখা ছোট হাওয়া লেগে। অৰ্থহীন জীবনের পটে এঁকে দেওয়া আছে— বার্থতার ছবি। কাডালের কন্ধ ধার তবু কথা কয়, আধো-আধো স্বরে। ক্লান্তিভরা কঠোর জীবন মধুও ঢেলেছে অস্তরে। হীনভাব নাই ববনিকা---তবু তারা সহিছে বেদনা লাঞ্ছিত বিদ্বেৰ পৃথিবীতে। গভীৰ ছংখের কলনার ভারা কাঁদে। ব্যৰ্থভার মন্দিরে নিবাশার স্বপ্রের জাল ব্নে। ভূ:খেব চিকার बल-भूष इद शहे ভবু সংয় ধার নীরবেভে।



[Osamu Dazai's "The Setting Sun"-এর অন্ত্রাদ] দিতীয় অধ্যায়

ৰাঙন

স্বাপের ভিষেব ব্যাপারের পর দিন দশেকের মধ্যে একটার পর একটা ছবটনা ঘটতে লাগল—ফলে মারের শোকবৃদ্ধি ও আয়ুক্তর সমান তালে এগিয়ে চলল।

থবই মধ্যে একদিন এক অগ্নিকাণ্ডের প্রপাত হয়। বাড়ীতে আঙন লাগানোর মত এমন অপকর্ম আমার ধারা সম্ভব হ'তে পারে এ ধারণ। স্থপ্নেরও অতীত ছিল। আমার চারপাশে আর পাঁচজনের জীবন বিপন্ন করে, নিজেকে কাঠগড়ায় গাঁড় করাবার প্রবোগ নিজেই ডেকে আনলাম।

ছেলেবেলা থেকে এমন একটি "শিশুমহিলা" তৈবী হয়েছিলাম বে অনবধানতা থেকে অগ্নাৎপাৎ হতে পাবে, এ ধারণাই আমার ছিল না। একদিন অনেক বাত্রে হাত ধুতে উঠে বদার ব্যৱের পরদা পেরিয়ে এগুতে গিরে আনের বর থেকে আলো চোথে পড়ল। এমনি একটু দেখতে গিরে আবিভার করলাম সেবরে দরজার কাচ পুড়ে লাল হরে উঠেছে—এতক্ষণে সশক্ষে ফাটতে ক্ষক করল। পালের দরজা দিরে থালি পারেই ছুটে বেরিরে গেলাম। তথন আমার নজরে পড়ল চুলীর পালে ভুলীকৃত ভালানিকাঠ দাউনাট করে অনহে।

বাগানের প্রান্তে এক কৃষক-পরিবাবের বাস-সেই বাড়ীর দরকার প্রানপণ শক্তিতে বাঞ্চা দিয়ে টেচাতে সাগলাম,—মিষ্টার নাকাই, আগুন। আগুন। দয়া করে উঠে আস্থন, আগুন লেগেছে।

মিষ্টার নাকাই বোধ হর স্বেমাত্র শুরেছিলেন, ভেতর থেকেই টেটিরে জ্বাব দিলেন—একুণি আসছি। আমি তাঁকে আবার ভাগাদা দিতে বাচ্ছি, এমন সমরে রাতের পোবাকেই ভন্তগোক বেরিরে এলেন।

আমবা আগুন লক্ষ্য করে দৌড় দিলাম। পুকুর থেকে ছজনে বালতি ভরে জল ভূলেছি, এমন সমরে মারের খরের পাশের বেলিং-এর কাছ থেকে সাড়া পেলাম। জলভরা বালতি ছুঁড়ে ফেলে দিরে দৌড়ে গিরে মাকে ধরে ফেললাম, নইলে তথুনি অজ্ঞান হয়ে পড়তেন। বাজ হয়ো না মা, সব ঠিক হয়ে ধাবে। তুমি ভরে থাক। কোনরকমে তাঁকে জোর করে বিছানায় ভইয়ে দিরে আগুনের দিকে ছুটলাম। এবার আমি প্লানের ঘর থেকে বালতি জল মিষ্টার নাকাইকে এগিয়ে দিলাম, উনি অলক্ষ কাঠের বোঝার ঢালতে লাগলেন। কিছু আগুনের এত জোব হয়ত ঐ ভাবে নেবানো বেভ না।

নীচে 'আগুন আগুন' বব উঠল। হঠাৎ চার-পাঁচ জন চাযা আমাদের সাহায্য করতে এগিয়ে এল। করেক মিনিটের মধ্যে হাতে হাতে বালতি বালতি জল চালু হরে গেল। আগুন নিবল। আর একটু দেরী হলে আগুন ঘরের ছাতে গিরে ঠেকত।

প্রথমেই মনে মনে ভগবানকে গছবাদ দিলাম। কিছ পরমুহার্ত এতবড় একটা অগ্নিকাণ্ডের কারণ থুঁজতে গিরে অস্তরাত্মা ধিলার দিয়ে উঠল। এতক্ষণে মনে পড়ল গতরাত্রে চুল্লী কেড়ে পরিলার করে আধপোড়া কাঠজলো নিবে গেছে ভেবে হাতের কাছে অভাকরা জালানিকাঠের স্তৃপের কাছে রেখেছিলাম। এই তথ্য আবিদার করে আমার চোল ফেটে জল এল। চলংশজি রহিত অবস্থার সেধানে দাঁড়িরে রইলাম। ওনলাম সামনের বাড়ীর মেরেটি চেঁচিরে বলছে—কেউ নিশ্চর্যই চুল্লী ঠিকমত সাফ করে নি। জারগাটা একেবারে পুড়ে থাক হরে পেছে।

প্রামের মেয়র পুলিশের লোক, দমকল বিভাগের বড় কর্তা স্বাই এসেছেন। স্বভাবোচিত মৃত্ ছেলে ভদ্রলোক ভি^{ত্রেস} ক্রলেন—থুব ভর পেয়েছ মা! কি করে এমন হল ?

আমারই দোব। ভেবেছিলাম কাঠগুলো বৃঝি একেবার্জ নিবে গেছে।

এব বেশী কিছু বলা তখন আমায় সাধ্যের বাইবে। মাটি:

দিকে চোখ নীচু করে, বাক্শক্তি রহিত অবস্থার দাঁড়িরে রইলাম
মনে হল পুলিশ আমায় এই দতে হাতকড়া পরিরে টেনে নিরে বেচি
পারে। গেই সংল হঠাৎ থেয়লি হল আমার পারে ভূতো নেই
গারে ভদ্র পোবাক পর্যান্ত নেই। রাতকামিজ পরে কি লজাক
অবিশ্রন্ত চেচারা নিয়েই না এতগুলো লোকের সামনে দাঁড়ি
আছি! দিশাহারা হয়ে পড়লাম। মেয়র মশায় দরণভরা কর্ত্রণ
বল্লেন—বুবেছি। তোমার মা ভাল আছেন ভো?

মানিজের খনে বিশ্রাম করছেন, তাঁর ওপর সারাম্ম^{ক ধার} গেল।

জন্নবৰসী পুলিশটির কথার সান্তনা কেবার চেষ্টা—বাক ^{পেত} বাজীটার বে আঞ্চন ধ্রেনি—এ এক ভ্রমার কথা। ইতিমধ্যে মিষ্টার নাকাই পোষাক বদলে এসে প্রচণ্ড টেচামেটি ভুড়ে শিলেন—ব্যাপার কি ? এত গণ্ডগোল কিনের ? থানিকটা কাঠ পুড়ে গোল, একে তো আর আশুন লাগা বলে না। বেচারা ভুদ্র-লাক আমার দোষ ঢাকার আপ্রাণ চেষ্টা করছিলেন।

মেরর মশায় মাধা ছেলিয়ে সায় দিলেন—বটেই তো। এর পর পুলিশকে করেক মিনিট কি সব বুঝিরে আমার বললেন—এবার আমবা আদি। মাকে আমার নমস্কার দিও।

স্বাই এগিছে গেল, কেবল সেই পুলিশটি আমার কানের কাছে এনে কিস-কিস করে জানিছে গেল—আজকের ঘটনার কোন রিপোর্ট করা হবে না। সে চলে যাবার পর মিষ্টার নাকাই অমথমে গলায় জিজ্ঞেস করলেন, পুলিশটা কি বলে গেল ?

আমি উত্তর দিলাম, ও বললে কোন বিপোর্ট হবে না। প্রতিবেশী ধারা এককণ ভিড় করেছিল, ভারাও সম্ভবতঃ আমার জবাব ওনল। কারণ এব পরেই স্বস্তির নিংখাস ফেলে বে বার বরে ফিরে গেল। মিষ্টাব নাকাই আমার কাছে বিদার নিমে চলে গেলেন। তারপর ভন্মীভূত কাঠের স্তুপের পালে। একাকী শৃত্ত মনে আমি দীজিরে বইলাম। চোধের জলের ভেতর দিয়ে আকাশের দিকে চেরে দেখি ভোর হয়ে আলছে।

আমি হাত-মুখ বুতে গোলাম। মার সামনে সিরে দীড়াতে কেমন বেন ভয় পাছিলোম, স্নানখরে চুল বেঁবে খানিক সময় নষ্ট ক্রসাম। বারাখবে চুকে বায়ার বাসনপত্র শুভিয়ে নিভে আরও কিছুটা সময় গোল, একটু হাঝা বোর ক্রলাম।

তারপর পা টিপে টিপে মারের ঘরে উ কি দিয়ে দেখি, এবই মধ্যে জামা-কাপড় বদলে পরিপাটি হয়ে জারামচেয়ারে গিরে বসেছেন, মৃথে অপরিসীম রাস্তির ছাল। জামার দেখে হাসলেন বটে কিন্তু সে মুথ কাগজের মন্ত সাদা। প্রত্যুক্তরে জামি কিন্তু হাসতে পাবলাম না। চূপ করে তাঁর চেরারের পেছনে গিরে দাঁড়ালাম। খানিক পরে মা বসলেন, বিশেষ কিছু হয়নি—না ? ওধু ঐ জালানি কাঠজলোর জন্তেই তো—লামার সারা মন জুড়িরে খেল। ছেলেবেলার রবিবারের ইস্কুলে শেখা বাইবেলের লাইন মনে পড়ে পেল, একটি সমরোপথালী বাকোর মূল্য রোপ্যমন্তিত চিত্রে অর্থমর জাপেরের সমান। ভামার প্র-হেন মাতৃভাগ্যের জন্য ঈশ্বরকে জন্তরের জন্তন্ত থেকে ধন্যবাদ দিলাম।

জনধাবাবের পাট দেরে পোড়া কাঠ সাফ করার কাব্দে হাত
দিলাম। গ্রামের সেই হোটেলে বুড়ি ওসাকি বাগানের দর্মা ঠেলে
ফ্রিল—কি হরেছিল । আমি এইমাত্র খবর পেলাম। গভরাত্রে
কি সব গোলমাল হরেছিল। বলতে বলতে ওর চোখে জল
ভবে এল।

অপরাধ স্বীকাবের ভঙ্গীতে আমি উত্তর দিলাম, আমি অভ্যস্ত লঙ্গিত।

ব্দুজা পাবার কি **আছে ? কিছ প্লিশ কি বলল ?** ওয়া বলল সব ঠিক আছে ।

আঃ বাঁচলাম। অকুত্রিম থুলির ভাব ওর মুখে-চোখে ক্টে উঠা। কি করে পাড়া-প্রতিবেশীকে ধরুবাদ জানান বায় আর আমার অপক্ষার জন্ত মাপ চাওয়া বায়, ওদাকির সঙ্গে সেই পরামর্শ ব্রলাম। সে বৃদ্ধি দিল বে, টাকাই এর স্বচেয়ে ভাল দাওয়াই। করেকটা বাড়ীর নাম করে বলদা, সেই সব বাড়ীতে আমি বেন টাকা নিবে গিরে মাপ চেরে আসি। বেচারী এব পরেও বলল—ডোমার বদি একা ঘুরতে খারাপ লাগে, আমি বরং ভোমার সঙ্গে বেছে পারি।

বোধ হয় আমার একা বাওয়াই সবচেয়ে ভাল দেখায়, কি বল ? । একা পারবে ? পারলে সভিয় খুব ভাল হয়। আমি একাই বাব।

পোড়া কাঠের জ্ঞাল সাফ করে, মারের কাছ থেকে টাকা নিরে একশ' ইরেনের করেকটা ছোট ছোট থলি বাঁধলাম। বাইকে লিখলাম—ক্রটি স্বীকার করত:। প্রথমেই প্রামের সদরে সিম্বে মেরবের থোঁজ করলাম; তাঁকে না পেরে অভ্যর্থনাকারিণী মেরেটির ডেক্সের কাছে সিরে বললাম—জামার গতরাত্রের জপনার ক্ষমার জ্বেরাগ্য, কিছ এর পর থেকে আমি ঢের বেশী সাবধান হব। জ্ম্পুরু করে আমায় মার্জ্জনা করবেন এবং মেয়বের কাছে আমার জ্ম্তুক্তও জন্তবের সংবাদ পৌছে দেবেন।

এর পর গোলাম গ্রামের মোড়লের কাছে। ভন্তলোক নিজে দরজার এসে আমায় অভ্যর্থনা করলেন। তাঁর অধরপ্রাস্তে করুণ হাসির রেখা ফুটে উঠল কিছ কোন কথা বললেন না। কি জানিকেন আমি কেঁদে ফেলগাম, অমুগ্রহ করে আমার গত রাজের, অপরাধ মার্জ্বনা করুন।

কোন বকমে বিদাব নিবে বাস্তা দিবে দৌড় দিলাম—আমাব গাল বেবে অবোবে কাল্লা ববে পড়ছিল। মুখ-চোথের এমন বিজ্ঞী অবস্থা হ'ল বে বাড়ী গিয়ে আবার নতুন করে প্রসাধন করতে হল। বেক্লতে বাব, ঠিক দেই সময়ে মা এগিয়ে এলেন—এখনও শেষ হ'ল না ? এবার কার কাছে যাচ্ছ? মুখ না তুলেই জ্বাব দিলাম— এই তো সবে স্কুল।

ভোষার এক শান্তি হল। মারের মত এমন দরদ নিরে আমার বুঝবেই বা কে? তাঁর ভালবাসার জোরে মনে বল পেলাম এবং পরবর্তী বাবতীর সাকাং নির্কিপে চোথের জল না ফেলেই সঙ্গে করলাম।

সর্বাত্ত সংগই আমার সহামুভ্তি দেখাল, সাস্থনা দিতে চেষ্টা করল একমাত্র মিষ্টার নিশিয়ামার (Nishiyama) তক্ত্রণী স্ত্রী, বলছি তক্ত্রণী, আদলে বর্দ্দ তাঁর চল্লিশের কোঠায়—আমার তিরস্কার করলেন, দল্লা করে ভবিষ্যতে সাবধানে চলো। আমি বদ্ধ আনি, তোমরা বড় ঘরের মেরে। কিছ তোমাদের কাণ্ডকারখানা দেখে আমি তো প্রাণ হাতে নিরে বদে আছি। ভোমাদের বেমন আনাড়িপণা। তাতে বে এত দিন আগুন লাগেনি সেই আশ্রহ্ণা! দল্লা করে এব পর থেকে খ্ব সাবধান হতে চেষ্টা করে। গতরাত্রে জ্যোর বাতাস থাকলে সারা সাধানা জ্লে-পুড়ে ছাই হরে বেত।

নিশিরামা-গিল্লিব তিরস্কাবের মর্থ বুরতে কট হ'ল না। তিনি বা বললেন তার এক বর্ণও মিধ্যা নর। এত রচ কথার পরেও তাঁর শুতি আমার মন বিরপ হয়নি।

আলানি কাঠ অলবে এ ভার বিচিত্র কি ! এই রক্ম পরিহাসের মধ্যে দিরে মা আমার অপরাধের বোঝা হাড়। করতে চেটা করতেও নিশিরামা-পিরীর কথাটাও না মেনে পাবলাম না । বাভবিক হাওয়ার জোর থাকলে রাত্রে প্রলয়কাণ্ড ঘটে বেতে পারত। তাই বদি হ'ত

তবে আমার আত্মহত্যারও কোন কমা থাকত না, কারণ ওয়ু বে আমার সক্ষে মাকেও শেব করতাম তাই নর, বর্গত পিতৃদেবের নাম পর্যন্ত কপুবিত হ'ত। জানি আজ বংশমর্যাদার মৃল্য ভোবে হরেছে, এর ধ্বংস অবধারিত, তবু ধীরে ধীরে স্থন্ত, ভাবে সমাপ্তি নেমে আস্থক, এইটুকুই আমার প্রার্থনা। অগ্নিকাণ্ডের প্রপাতের প্রার্শিত্ত করতে গিরে মরেও আমি শান্তি পাব না।

পর্দিন থেকে উঠে-পড়ে মাঠের কাব্রে লেগে গেলাম। **শাবে মাবে মি**ষ্টার নাকাই-এর মেরে আমার সাহাব্য**়করতে** আসত। সেরাত্রের সেই লজ্জাকর ঘটনার পর থেকে কেমন বেন মনে হত, আমাৰ বজেব বং গাঢ় হবে গেছে আৰ দিন দিন আমার চেহারার বিশ্রী জংলী ছাপ পড়ছে। বেমন ধকন বারাক্ষার মারের পাশে বসে উপ বোনার সময় আমার দম বন্ধ হয়ে আসে, বরং মাঠে গিয়ে কোলাল কুপিয়ে নিলে নিজেকে বেশ সহজ মনে হয়। লোকে বলে প্রমিকের কাল। আমার পক্ষে এই কি**ত প্রথম** নর · যুদ্ধের সময় আমার তাক পড়ে। সেধানে কুলির কাব্দ করতে হয়েছে। এই বে ববারসোল্ দেওরা কাপড়ের ব্যুক্তো পরে মাঠে কান্ধ করি, এটা যুব্বের সময় পাওয়া। জীবনে দেই প্রথম এ ধরণের জিনিব পারে দিলাম কিছ বেশ আরাম লাপে। এই ভুতো পাৰে দিয়ে বাগানে বুবে বেড়াবাৰ সময় আমি মুক্তপক বিহঙ্গীর মত হাড়া বোধ করি অথবা বন্ধনহীন জন্তদের মাটিতে চবে বেড়ানোর অকুত্রিম আনন্দের স্বাদ পাই। ৰুছের এই একটি মাত্র স্থাধর স্বাত বামার লাছে। উ:, যুদ্ধ কি বীভংগ ব্যাপার!

> গত বংসর কিছু হয়নি তার আগের বছর কিছু হয়নি। এবং তারও আগের বছরও কিছুই হয়নি।

যুদ্ধ শেব হবার ঠিক পরেই থবর-কাগজে এই মজার কবিতাটি বৈরিয়েছিল। অবঞ্চ অনেক ঘটনাই ঘটেছিল, কিছু মনে করতে গিরে সেই একই উত্তর পাই, হরনি কিছুই। যুদ্ধের কথা বলতে বা ওনতে আমার বিত্রণ আসে। জানি বছ প্রোণ নই হরেছিল, কিছু সবই এই মারাত্মক ব্যবসার অল এবং যুদ্ধের কথা ওনে ওনে এবন আমার একঘেরে লাগে, লোকে ভাববে এ আমার আর্থপরের মত কথা হ'ল। ওধু বথন আমার জোর করে ধরে নিরে গিরে কাপড়ের জুতো পরিয়ে কুলির মত থাটিরে নিল, সেই সমরে এর বীতৎসভা ছাড়াও অভাভ দিক আমার চোথে পড়েছিল। মুটে মজুরের কাজকে অনেক সমরে ঘুবার চোথে দেখেছি—কিছু এর প্রতি আমি কৃতজ্ঞ। আমার আহা কিবে গেল এবং এখনও মাঝে মাঝে ভাবি, উপার্জ্জেনর অসুবিধা বদি কথনও ঘটে, আমার মুটেগিরি কেউ কেছে নিজে পারবে না।

একদিন, যুদ্ধ বধন ছংসাহসিক মোড নিচ্ছে তথন বোছার পোবাকপরা এক ভদ্রগোক আমাদের নিশিকাতা স্থাটের বাড়ীতে এনে আমার যুদ্ধে বাবার বাধ্যতামূলক এক পত্র দিলেন—ভাতে বে কর দিন আমার কার্যক্ষেত্রে উপস্থিত থাকতে হবে তার তালিকা দেওরা ছিল। আমি দেখলাম একদিন অন্তর আমার তাচিকাওরা (Tachikawa) পাহাছের নীচে গিরে রিপোর্ট করতে হবে। চেট্রা

করেও চোথের জল বাথতে পারলাম না। কাঁদতে কাঁদতেই জিজ্জেন করলাম,—আমার জারগায় আর কাউকে পাঠালে চলবে না ?

ভদ্রলোক কঠোর স্বরে উত্তর দিলেন—সৈক্ত বিভাগে কাঞ্চ ঠিক হরেছে—ভোমাকেই বেতে হবে।

পরদিন বৃষ্টি পড়ছিল। পাহাড়ের নীচে সবাই আছো হয়েছিলাম,
সেধানে এক অকিসার বক্তৃতা দিলেন। জয় অবগুন্তাবী—এই দিয়ে
বক্তৃতা ক্ষক কয়লেন,—জয় অবগুন্তাবী—কিছ সৈত্রবিভাগের
কর্তৃপক্ষের আদেশ পৃথায়পুথ্য মেনে না চললে আমাদের সমস্ত
কার্যপ্রধালী বিপন্ন হবে এবং বিতীর ওকিনাওরা সংগঠিত হ'তে
পারে। ভোমাদের নির্দিষ্ট কাজ অবগুই ভোমরা সম্পন্ন করবে।
বিতীয়তঃ পরম্পারের হাত খেকে নিজেদের রক্ষা কয়বে। কোধার
বে গুপ্তচর বৃরে বেড়াছে—এখবর কেউ জানে না। এখন খেকে
প্রকৃত সৈনিকের মৃত ভোমরা কাজ কয়বে এবং বা দেখবে তা
কোনমতেই বাইরে ক'কয় কাছে প্রকাশ কয়বে না—এ বিবরে
ভোমাদের সতর্ক করে দিতে আম্বা সব রকম শক্তি প্ররোগ কয়ব।

আমরা প্রার পাঁচল' নরনারী পাহাড়ের নীচে দাঁড়িরে অবোর বৃষ্টিতে ভিজতে লাগলাম। প্রচণ্ড বৃষ্টির তোড়ে সব ভিজে গেলেও এই বাণী আমরা দ্রশ্রদ্ধ অস্তবেই গ্রহণ করেছিলাম। এর মধ্যে ইন্ধুলের ছেলে-মেরেও ছিল—বেচারীদের কচি কচি সব মুখ নীজে দাঁদি-কাঁদ অবস্থা। বৃষ্টির জল আমার কোটের ভেতর দিরে চুকে গারের জামা ভেদ করে শেষে অস্তবাস, অব্ধি জবজবে করে ভিজিবে দিল।

সেদিন সাবাটা দিন পিঠের ওপর মাটির ঝৃড়ি বরেই আমার কাটল। প্রদিন পাহাড়ের নীচে এফদল শ্রমিকের সঙ্গে দড়িটেনে টেনে কাটালাম। এই কাঞ্চট আমার স্বচেরে পছক্ষ ছিল।

পাহাড়ে কাজে। সময় ছ' তিনবার আমার মনে হরেছে ইন্থানর ছেলেরা আমার নিকে কেমন ধেন চেরে চেরে দেখে। একদিন মাটির ঝুড়ি কাঁধে চলেছি এমন সমরে ছ'টি ছেলে আমার পাশ দিয়ে বেতে বেতে কিস্ফিস করে বলল—তোমার কি মনে হর এ মেরেটি জ্বাচর ?

থ্ব অবাক হয়ে পাশের মেয়েটিকে জিন্ডোস করলাম, এরকম কথা কেন বলে ওরা ?

সে গন্ধীর মুখ করে জবাব দিল— বোধ হয় তোমায় দেখে বিদেশী মনে হয়, সেইজন্ম।

তাই নাকি ? তুমিও কি আমার গুপ্তচর ভাব নাকি ? এ^{বার} একটু হেসেই সে জবাব দিল—না।

পামি তো পাপানী! বলে নিজের বোকার মত কথা ভনে নিজেই হেনে ফেললাম।

এক দিন সকালে ছেলেদের সঙ্গে কাঠের গুঁড়ি টেনে টেনে জড়ো কঃছিলাম, এমন সময়ে এক অল্পবয়সী অফিসার ভূরু কুঁচকে আমার দিকে চেয়ে আঙ্গুল নেড়ে আমায় ডাকল—এই ভোমায় ডাকছি, এদিকে এস।

ভাড়াভাড়ি পা চালিরে পাইন-বনের দিকে সে এগি^{রে চল্ল}, আমি ভার পেছন পেছন গেলাম—এদিকে ভো ভরে, আ^{তরে বুক} চিপ ডিপ করছে।

করিখানা থেকে সভ চেরা ভূপাকার এক কাঠের গাদার ^{কাছে}

এসে সে আমার দিকে ফিরল, প্রতিদিন এত ভাবি কাজ করতে নিশ্চর থ্ব কাই হয়। আজ শুরু এই চেরা কাঠ পাহারা দাও—কেমন? বাকবাকে গাঁতের পাটি বের করে হাবল।

তার মানে এখানে গাঁড়িয়ে থাকব ?

এ জাইগাটা বেশ ঠাণ্ডা, গোলমাল নেই—কাঠের গাদার ওপর উঠে একটা ঘুম দাও। যদি একা—একা থারাপ লাগে— এই বইথানা পড়ে দেখতে পার। এই বলে একথানা বই পকেট থেকে বের করে সসক্ষোচে তক্তার ওপর ছুঁছে দিল। বই এমন কিছু নয় তবে পড়া যায়।

বই-এর নাম ছিল "ট্রাইকা", আমি তুলে নিলাম। অনেক ধন্তবার, আমাদের বাড়ীতে একজন আছে, খুব বই পড়তে ভারবারে, এখন অংগু নে দক্ষিণ প্রশাস্ত সাগরে।

দে আমার কথা ধরতে পারেনি,—তোমার স্থামী ?
দক্ষিণ প্রশাস্ত সাগরে ? কী কাণ্ড! সম্বেদনার মাধা নেড়ে
বলগ—বাই হোক, আজ ভূমি পাহারা দাও, থাবার সময়ে আমি
নিজে গিয়ে তোমার ভাগ নিয়ে আসব। এখন তোমার কিছু
ভাবতে হবে না, চূপ করে বিশ্রাম কর। এই কয়েকটা কথা
বলে হন-হন করে চলে গেল।

গাণার ওপর ব'লে প্রায় আধ্বানা বই পড়া হয়েছে, এমন সমরে মচমচ অনুভার শক্তে বুঝলাম অফিগার আসছে। ভোমার ধাবার। একা-একা খুব ঝারাণ লাগছে না ভো? থাবার বাল্লটা রেথে দিয়ে আবার হন-হন করে চলে গেল।

খাওয়া শেষ করে কাঠের স্থপের ওপর লম্বা হ'লাম। বই শেষ করে ঘ্মিয়ে পড়লাম। বেলা তিনটের সময় ঘুম ভাঙ্গতেই মনে হ'ল, ছেলেটিকে আগে দেখেছি—কিছ কোথায় কিছুতেই মনে করতে পারলাম না। ওপর থেকে নেমে সবে চুলটা গুছিয়ে নিজ্—আবার সেই মচমচ শব্দ কানে এল।

আজ এথানে আসার জন্ত অনেক বক্তবাদ। ইচ্ছে হ'লে এবার বাড়ী ষেতে পার।

আমি দেবিড় গিরে বইখানা বাড়িবে দিলাম, ধ্রুবাদ জানাবার জন্ত মনটা আকুল হরে ওঠা সংস্ত্রে কিছুই বলতে পারলাম না। চুপ করে তার মুখের দিকে চেরে রইশাম, ভার চোখে চোখ পড়তে, আমার চোখ জলে ভরে এল—ভার চোখও ওকনো ছিল না।

নিঃশব্দে এ ভাবে আমবা বিদায় নিলাম। এর পর আমাব কালের জারগার ওকে আর কথনও দেখিনি। সেই একটিমাত্র দিন আমি ছুটি পেরেছিলাম, তারপর থেকে আবার একদিন অন্তর তার্চিকাওরার গিরে নিজের ভাগের কঠিন পরিশ্রম সেবে আসতাম। আমার অস্থ্য সম্বন্ধে মারের ছুল্টিজার অস্ত রইল না। কিছ আসলে কঠিন পরিশ্রমে আমার শরীর আগের চেরে অনেক শক্ত ইল এবং আক অববি মাঠে, ময়দানে শারীরিক পরিশ্রম আমার করি করতে পারে না।

^{বৃদ্দের} কথা আলোচনা করতে বা ওনতে আমার অসহ লাগে, ^{এক}টু আগে সেই কথাই বলেছিলাম—এখন দেখছি আমার ^{জীবনের} "অমূল্য অভিজ্ঞতা"র কথা সুবই বলা হরে গেছে। কিন্তু বৃদ্ধের স্মৃতির মধ্যে এই স্বটনাটুকু বলতে আমার ভাল লাসে। বাদবাকী সবটা সেই কবিতার মধ্যেই সীমাবদ্ধ:—

গত বৎসর বিছুই হয়নি। তার আগের বৎসর বিছুই হয়নি। এবং তারও আগের বৎসর বিছুই হয়নি।

বললে বোকার মত শোনাবে—যুদ্ধের অভিজ্ঞতার আমার বেটুকু
অবশিষ্ট আছে, তা হ'ল একজোড়া কাপড়ের জুতো। এই জুড়োর
কথার প্রসঙ্গান্তরে চলে এলাম। যুদ্ধের অপূর্বে সৃতিচিছ্ন এই
জুতো পরে মাঠে ময়দানে ঘুরে ঘ্রে মনের উদ্বেগ ও হাদরের গভীর
অশান্তি ভূলে থাকতে চেষ্টা কবি বটে, কিছু মা আমার দিন দিনই
রোগা হরে বাভ্ছেন।

সাপের ডিম।

चारुन ।

মারের স্বাস্থ্য ক্রমেই ভরাবচ বক্স থাবাপ হরে চলেছে. এদিকে উপ্টে আমি আবার দিন দিন নিয়প্তেণীর মেরেদের মত থটথটে শক্ত হরে উঠছি। মারের জীবনীশক্তি শোষণ করে মোটা হচ্ছি। এ বারণা বছসুল হরেছে।

আলানি কাঠ অলে যাওয়ার হাল্যকর মন্তব্য ছাড়া এ পর্বান্থ
আওনের ব্যাপার নিয়ে মা আর একটা কথাও বলেন নি। আমাকে
তিরন্ধার করা দূরে থাক, করুণাই করে চলেছেন। কিছু তার মনে
এই বারা আমার চেতে দলঙা বেলী বেজেছে। অগ্নিকাপ্তের পর
থেকে মা ঘুমের মধ্যে আর্তুনাদ করে ওঠেন, বেদিন বাতাসে ভোর থাকে, সেদিন বত বাভেই হোক, বার বার বিছানা থেকে উঠে এসে
সব ঠিক আছে কিনা দেখে যান। কোন সময়ে তাঁকে কুছু দেখার
না। কোন কোন দিন মনে হয় তাঁর বেন হাটতেও কাই হছে।
মাঠের কালে আমার সাহায্য করার কথা বলেছিলেন, আমি
নিবেধ করা সত্ত্বে থেকে জল এনে দিলেন। পরদিন পিঠে
এছ অসহ্ত বল্লণা হল বে নিখাস নিতে পর্বান্ত কাই হছিল। তারপর
শারীরিক পরিপ্রমের থেবাল তিনি ছেড়ে দিলেন। থেকে থেকেই
মাঠে নেমে এসে দেখে বেভেন আমি কি করছি।

আৰু আমাৰ কাল দেখতে দেখতে হঠাৎ ২লনে—লোকে বলে গ্ৰীত্মেৰ কুল বাৰা ভালবাসে তাদের মৃত্যুও আসে গ্ৰীত্মকালে—আনি না কথাটাৰ কত দূব সভিয় !

আমি ফলের চারার ছল দিছিলাম, কোন উত্তর দিলাম না। সবে গ্রম পড়ছে। সূতৃক্ঠে মা আবার বললেন,—হিবিয়াস আমার অত্যন্ত প্রির ফুল, আমাদের বাগানে একটাও দেখি না।

ইচ্ছা করে নীবস কঠেই জবাব দিলাম, বাগানভরা ওলিকেপার আছে।

ও ফুল আমার বিশেষ পছল হর না। গ্রীমের প্রায় সব ফুড়ই আমার ভাল লাগে, কিছ ওলিয়েন্তার বড় বেশী রচোড।

গোলাপ আমি স্বচেরে ভালবাসি। কিছ সে কুল ভো সারা বছরই লোটে। কে আনে গোলাপ যাদের প্রিয় ভারা হয়ত বছরে বার চারেক মরে।

ছু' জনেই হেলে উঠলাব। হাসতে হাসতেই মা জিজেস ক্রলেন তুমি একটু বিপ্রাম করবে না ? তোমার সংস্কৃত্য হিল।

কোন্ কথা ? ভোষাৰ মৃত্যুৰ থবৰ হ'লে ভনতে চাই না।

মটবফুলের মাচার নীচে বেঞ্চে সিরে ছু' জনে ব্ললাম। ফুলগুলো প্রার শেব হ'বে এল, বিকেলের রোল পাতার ছাঁকনি দিবে যে।লারেম হ'রে এলে আমাদের কোলে জামা-কাগড় সবুজে রালিরে দিল।

আনেক দিন থেকে ভোষার একটা কথা বলি-বলি করছি, কেবল ছু' জনেওই মন কথন হাঝা পাব ভারই অপেকার ছিলাম। বুঝভেই পারছ চট করে এসব কথা বলা বার না কিছু আছু কেমন মনে হচ্ছে এখন হয়ত বলা চলে। শেব পর্যান্ত বৈর্ঘা ধরে কথাটা শোন,—নাওজি বেঁচে আছে।

আমার সারা শরীর পাধর হবে গেল।

পাঁচ-ছয় দিন আগে তোমার ওবাদা মামার চিঠি পেক্সেছি। মনে
ছছে ওব কোন কর্ম্মচারী দক্ষিণ প্রশান্ত সাগর থেকে ফিরেছে। সে
ভোমার বাবার অফিসে দেখা করতে এসেছিল, হঠাৎ কথা প্রসক্ষে
কাণা হরে পড়ে লোকটি নাওজির সঙ্গে একই ইউনিটে কাজ করত।
নাওজি ভাল আছে, শীগগিরই ফিরবে। একটা মন্ত থবর তার কাছে
পাওরা গেছে। লোকটি বলছে নাওজি দারুণ আফিংথার হয়েছে।

খাবার ?

আমি তেকো থাওয়ার মত মুখ বাঁকালাম। হাইছুলে থাকতে নাওজি কোন এক ওণভাসিককে নকল করে নেশা আরম্ভ করে। শেব অবধি ডাক্তাবধানার এমন একটা মস্ত বড় দেনা করে বসে বা মাকে ছু'বছর ধরে শোধ করতে হয়।

হাা, আবাব নেশা করছে বোঝা গেল। কিছু সেই লোকটি বলছে বে এখানে আসার আগেই নেশা তাকে ছাড়ভে হবে, নইলে থেশে আসা তার বছ। তোমার মামা বলছেন বে ভাল হরে ফিরলেও তার বে মনের অবস্থা তাতে এখনি কোন চাকরি হওরা সম্ভব নম্ম। আলকের দিনে টোকিও সহরে স্কন্থ মামুষ কাল করতে এসে বিগড়ে যার। আর তার মত ছেলে—আগণালা ছেলে, সবে নেশা কাটিয়ে উঠেছে, ও তো হু' দিনেই বছ উন্মাদ হরে উঠবে। সে কি করে কি না করে, কিছুই বোঝা যার না। নাওলি ফিবে এলে কোণাও বেতে না দিয়ে আমাদের এই পাহাড়ী জারগার ববে বাধাই ভাল। এই গেল এক নম্ম।

আরও একটা কথা, তোমার মামা লিখেছেন বে, আমাদের সব টাকা ফুরিরেছে, বেথানে বা পুঁজিপাটা ছিল, সবই প্রার ফুরিরেছে, আগের মত টাকা পাঠানো আর সন্তব নর। নাওলি এলে আমাদের তিন জনের মত থবচ পাঠানো তার পক্ষে অসম্ভব। তার প্রস্তাব ছ'ল এই বে, বথানীর সন্তব হয় তোমার পাত্রস্থ করা, নর কাক্ষর বাজীতে কোন কাক্ষ জোগাড় করে দেওরা উচিত।

বি-গিৰি ?

না, ভোষার মামা আমাদের দূব সম্পর্কের অমিদার আত্মীরের কথা লিথেছেন—তার বাড়ীতে ছোঠ ছোট ছেলে-মেরেদের দথা-শোনা করতে পার। তাতে তোমার গ্র মন ঘারাপ বা দক্ষোচ হবে না।

আৰু কোন কাজ কৰা বাব না ?

ভোষার মামার মত, জার বে কোন কাজ ভোষার পক্ষে লস্থবিধাজনক হবে।

অস্থবিধা কিসের ?

भान रहरत या हुन करवह बहरतन ।

আমি এলোপাথাড়ি টেউবে উঠলাম—না, এ ধরণের কথা আমি
আনেক শুনেছি। ব্রাতে পারছি আমার পাক্ষে এন্ড উত্তেজিন্ত হয়ে
পড়ার কোন কারণ নেই—এর জন্ত পরে অফুতাপ করতে হবে, ওর্
নিজেকে থামাতে পারলাম না—আমার পায়ের দিকে চেরে দেখ, এই
বিজ্ঞী কাপড়ের ভূভোর দিকে তাকাও। আমার ছচোখ বেরে কাল্লা
ঝরে পড়ছে, হাত দিরে মুছে নিয়ে সোজা মারের মুখের দিকে
ভাকিয়ে বইলাম, আমার ভেতর থেকে কে বেন ব'লে উঠল,—
কথনও না, একাজ আর কখনও করব না।

কিছ বা বলতে চাইছি, ভার সঙ্গে এ কথাগুলোর কোন বোগ নেই, কাজেই আমার অবচেতন মনের অস্কুত্তন থেকে টেচিয়ে উঠলাম, তুমিই উপুতে এসেছ ? তুমি বলেছিলে আমি না থাকলে তুমি মৃত্যু ববল করতে।. গুরু সেই জেল আমি লা থাকলে তুমি মৃত্যু ববল করতে।. গুরু সেই জেল আমি ভোমার পাল হেড়ে এক পাও নড়িনি। আর আজ আমার পারে কাপড়ের জুড়ো, কারণ তুমি বেসব তরকারি থেতে ভালবাস, আমি কেবল সেই সব ফসল ফলাবার কথাই চিন্ধা করছি। আজ হঠাৎ বেই শুনলে ভোমার নাওলি আসছে—অমনি আমি ভোমাদের স্থান্থর পথে কাঁটা হয়ে গেলাম। তুমি কি করে উচ্চারণ করতে পারলে—বাও বি-গিরি করগে বাও ? অসম্ভব, এ সহু করা অসম্ভব! নিজের কানেই কথাগুলো বংপরোনান্তি কটু শোনাল, কিছ কোথার বেন ভারা বাস বেঁধেছিল, অলাস্ভে বেরিয়ে এল, থামান্তে পারলাম না।

অবস্থা যথন পড়ে গেছে, তথন আমাদের দামী দামী আমাকাপড়গুলো বেচে দাও না! বাড়ীটাই বা বেচব না কেন? আমি
বা গোক কিছু তো করতে পারি। গ্রামের আফিসে চাকরী করতে
পারি, মুটেগিরি করতে পারি। দাহিত্য এমন একটা কি ব্যাপার?
বতক্ষণ তোমার লালগাসা আছে, ততক্ষণ তোমার পাশে জীবন
কাটিয়ে বাওরাই তো আমার একমাত্র বাসনা। কিছু তুমি তো
নাওজিকে আমার চেয়ে বেলী ভালবাস। আমি চলেই বাব।
নাওজির সঙ্গে আমার কোন দিন বনবে না, মার থেকে তিনজনের
জীবন অতিষ্ঠ হয়ে উঠবে। আমরা ছ'জন এতদিন একসজে আছি,
তোমার সঙ্গে আমার বে বন্ধন তার মধ্যে ভেজাল নেই। এখন তুমি
আর নাওজি, গুরু তোমরা ছ'জনে থাক। আশা করি, তোমার জভ
অস্তত সে তার চরিত্র সংশোধন করবে। আমার আর সহু হয় না,
আমি চলে বাব। আমি আজই এক্ষ্পি চলে বাব। বাবার
জায়গার অভাব হবে না। সঙ্গে সঙ্গে আমি উঠে গাঁড়ালাম।

কাজুকো! কঠোর স্ববে মা ডাক্লেন। তাঁর মুখে এতথানি ব্যক্তিত্ব এর আগে কথনও দেখবার অবকাশ হরনি। মুখোমুখি দাঁড়াতে আমার চেয়ে মাধায় বেন উঁচুই দেখাল।

ক্ষমা চাইবার ইচ্ছেয় বৃক কাটতে লাগল কিছ মুখ ফুটল না। ববং উপ্টে সম্পূৰ্ণ ভিন্ন কথা বললাম, তুমি আমার ঠকিয়েছ মা, তুমি আমায় ঠকিয়েছ। নাওজি বত দিন আসেনি, তত দিন তোমার আমায় প্রয়োজন ছিল। আমি ভোমার দাসাম্থদাস ছিলাম। এখন বথন প্রয়োজন ফুরিয়েছে, আমায় দুর করে দিলে।

ফুঁপিরে উঠে আমি পরমূহুর্তে কারার তেকে পড়দাম।

তুমি অভ্যন্ত নির্ব্বোঞ্চলার, উল্লেখনার মায়ের হুর কেঁপে উঠন। সামি মাধা তুলে চাইলাম। হাা, আমি ভো বোকাই। আমায় বোকা পেরে সবাই ঠকিরে নেয়। আমি চলে গেলে সব ঠিক হরে বাবে, না? দাহিদ্রাই বা কি, স্বাচ্ছস্ট বা কি ? আমি ওসব বুঝি না। চিরদিন আমার মায়ের স্বেহটুকুই একমাত্র ভরসা, সেইটুকুই আমার লোর।

আবার আমি এমন নির্কোধের মন্ত কথা বললাম যার কোন মানে হর না। মা হঠাৎ মাধাটা ব্রিরে নিলেন—চোথে জল। আমার ইচ্ছে চল, লৌড়ে গিরে পা জড়িরে ধরে ক্ষমা চাই, কিছ মাঠের কাজে হাতে ময়লা ছিল, অনিচ্ছাসত্ত্বও অপ্রস্তুত হয়ে দূরে সরে রইলাম। আমি এখান খেকে দূরে গেলে সব ঠিক হয়ে যাবে। আমি বাবই, আমার বাবার জাবগা আছে।

এই কথা বলভে বলভে কলববে গিরে কাঁদতে কাঁদভে হাত-মুখ বুলাম। ঘবে কাপড় ছাড়ভে গিরে আর এক দছা কেঁদে নিলাম। সারা শরীরে যত কারা ভয়ে আচে সমটুকু উজাড় করে দিতে ইচ্ছে তল। দোভলায় বিদেশী পাটোর্ণের হবে চুকে বিছানায় উপুড হরে শুরে মাধা পর্যান্ত কম্বল মুডি দিয়ে প্রচশু বেগে কাঁদতে লাগলাম। ভারপর আমার মন যত্র-ভত্ত চরে খেডাভে লাগল। ক্রমে ক্রমে হুংখের ভেতার দিবে একটি বিশেষ মামুবের জন্ত মন আমার পুড়তে লাগল, তাব মুগধান। একবার দেখতে, তার ৰুঠম্বৰ শুনতে ব্যাকুল হয়ে উঠলাম। ভাক্তাৰ বৰ্ণন পাৰেব নীচেৰ চামড়া লোহা দিয়ে পোড়াতে বলেন, তথন যেমন পা এতটুকু না কুঁচকে বাধা সইতে হয়, আমার কেমন যেন তেমনি একটা আশ্চর্যা অমুভতি হল। সন্ধাবেলা নিঃশদে খবে চুকে মা আলোটা বেলে দিলেন। বিচানার কাছে এসে খুব মিষ্টি কবে আমার নাম ধরে ডাকলেন। আমি বিছানার ওপর উঠে বলে ছই হাত দিয়ে মুখের ওণর থেকে চুল সরিয়ে দিলাম। তারপর মারের মুখের দিকে তাকিরে জেব ফেললাম।

মৃহ তেসে মা জানালার পাশে একটা সোডার বসে পড়তেন।
জীবনে এই প্রেথম তোমার মামার কথার জন্মথা করে এলাম।
ভার চিঠির উত্তরে জামি লিখলাম, জামার সন্তানদের ভার জামার
ওপরেই সে যেন ছেড়ে দের। কাজুকো, আমরা আমাদের সব দামী
পোবাক বেচে ফেলব। একটা একটা করে ভাল জামা সব বিক্রি
করে জামাদের যেমন খুশি তেমনি খরচ করব। অদরকারী যা ইচ্ছে
ভাই কিনব। বেশী বেশী খরচ করব আমরা। ভোমায় আর
মাঠে কাজ করতে দেব না। হোক না তরকারীর দাম চড়া, তবু
আমরা কিনেই খাব। রোজ ভুমি চাবার মত খাটবে, এরকম
জাশা করার কোন মৃক্তিসঙ্গত কারণ নেই।

সত্যি বলতে কি প্রতিদিন মাঠে থেটে থেটে ইণানীং আমার শরীর ধারাপ হরে আসছিল। আমার দৃঢ় বিশাস, এই জন্মই আমি এক সামান্ত কারণে অমন একটা কুক্তকত্র কাণ্ড করে বসলাম। তথন আমার মাথার ছিবতা ছিল না, তার সঙ্গে শারীরিক চরম জান্তি আর আমার ব্যক্তিগত জীবনের ছঃখ, সর মিলিরে আন্ত-কাল আমি সর কিছুকেই দুণা করতে, প্রভিবাদ করতে শিখেছি। চোধ ফিরিরে আমি বিছানার ওপর বসে রইলাম। বাজুকো! বল।

তুমি বে তথন বললে,কোথার বেন তোমার ধাবার জারগা আছে ? টেব পেলাম আমার বাড় অবধি-লক্ষার লাল হরে উঠেছে। মিষ্টার হোনাড়া ? আমি এর কোন অবাব দিলামনা। দীর্ঘনাস কেলে বা ব্ললেন—বহু কাল আগে একটা ঘটনা ঘটেছিল—শুনবে ?

वन । किन-किन करत्र खवाव किनाम ।

নিশিকাতা দ্বীটের বাড়ীতে বধন তুমি স্বামী ত্যাপ করে কিরে এবল, তধন আমি তোমায় একটা কথাও বলিনি। কারণ তার কাছে ওনেছিলাম, চিত্রকর হোসাডার সঙ্গে ভোমার গভীর ভালবাসার সম্পর্ক গড়ে উঠেছে। কথা ওনে বংপরোনান্তি আঘাত পেরেছিলাম। মিষ্টার হোসাডা বিবাহিত পুরুষ, সম্ভানের পিতা। আমি জানতাম তোমার দিক থেকে যত ভালবাসাই থাক্ না কেন, এ প্রেম ব্যর্থ হতে বাধ্য। প্রেম ? কি অন্তার কথা! এ আমার স্বামীর মিখ্যে সন্দেহ ছাড়া কিছুই নর।

বোধ হয় তাই। আমার ধারণা ছিল আজ অবধি মিষ্টার হোসাডার কথা তোমার মন থেকে মুছে বারনি। ভবে ভূমি কোখার বাবার কথা বলছিলে ? মিষ্টার হোসাডা নর।

সত্যি ? ভবে কোথায় ?

মা, সম্প্রতি জামি এমন এক পথ জাবিকার করেছি, বেধানে মায়ব জ্ঞান্ত প্রাণীদের থেকে সম্পূর্ণ ভিন্ন। জানি, মায়বের ভাষা, জান, ধর্মবৃদ্ধি, সামাজিক ব্যবস্থা সব জাছে, কিন্তু এ সমস্তই কি জন্ধবিস্তব্ধ পরিমাণে জীবজগতের সর্ব্বত্তই বর্তমান নর ? বোধ হর জন্তবের ধর্মবৃদ্ধিও জাছে। মায়বের গর্ব্ধ সে বিশ্বজগতের অধিকর্ত্তা, কিন্তু প্রক্তব্যক্ষ জ্ঞান্ত ও দর সঙ্গে তার বিলেব প্রভেদ নেই! কিন্তু মা, জামি এক উপার চিন্তা করেছি, হয়ত তুমি বৃববে না। এ শুরু মন্থবা জাতিতেই বর্তার। সে হ'ল গোপন করার ক্ষমতা। এবার বৃবলে তো, জামি কি বলতে চাই ? অপ্রত্তত হয়ে মা মৃত্ব্ হাসলেন—তোমার গোপন কথা বদি মঙ্গল বরে জানে, ভবে ভার চেয়ে জ্বিক কাম্য জামার কিছুই নেই। প্রতিদিন সকালে জামি তোমার বাবার জাতার কাছে প্রার্থনা করি—ভূমি সুখা হও।

হঠাৎ মনে পড়ল, বাবার সঙ্গে নাম্মনো' (Nasuno)-র পাড়ী করে বেড়াতে বেরিয়ে পথে এক জায়গায় নেমেছিলাম। শরুতের মাঠ-ঘাট কি জপুর্বাই না লেগেছিল সেদিন! এটাইব, পিকে, জেন্সিয়ান, ভেলেরিয়ান্ শরভের সব ফুলে ফুলে চারিদিকে কি. শোভাই না হয়েছিল! বুনো আঙ্বে তথনও রং ধরেনি।

পরে বাবা আর আমি 'বিওরা' (Biwa) ভুলে মোটর-বোট নিয়ে বেড়ালাম, আমি জলে ঝাঁপ দিলাম। জলের মধ্যে আগাছার বে-সব ছোট ছোট মাছেদের বাসা, ভারা আমার পারে পারে থাক থেল, আর কাকচক্ষ্ জলের তলে আমার পা ছ'থানার ছারা কেনে ফেলে সাঁতরে বেড়ালাম। মারের আর আমার বর্ত্তমান আলোচনার্চ সঙ্গে এর কোন বোগ নেই, কিছ হঠাৎই কেমন ছরির মত সবটুর্ছ মনের মধ্যে জেসে উঠেই মিলিয়ে গেল! আমি বিছানা ছেড়ে উর্টে এসে মারের হাঁটু ভুটো জড়িরে ধরে বললাম—মা গো, আমায় ক্ষ্ম করো, শেষ পর্যান্ত ঐটুকুই আমার মুখ দিয়ে বেজলো।

আৰু মনে পড়ে, সেদিন প্ৰান্ত আমাদের নিবস্ত আনক্ষয় দিনগুলির শিধা তথনও পুড়ে শেষ হয়নি। নাওজি দক্ষিণ প্রশাদ সাগর থেকে ফেয়ার পর আমাদের নরকবাস ক্ষম হ'ল। [ক্রম্মঃ

অমুবাদ : ক্রনা রায়

ভাবি এক, হয় আৱ

षिनी शकुमात्र ताग्र

ত্রিশ

প্রির এ পর্বন্ধ আইরিনের ছবে একদিনও বার নি। প:থ বেতে বেতে ভাবে: নাতাশা বে ওকে আইরিনের ছবে একা বেতে মানা করেছিল, আইরিন কার কাছে ওনল ? নিশ্চর কাতিরা কি মাশার কাছে। ওর ভারি ছ:থ হয় নাতাশার কথা ভেবে।

আইবিনের ঘরটি নিচের তলার—এক কোণে। একটা করিভোর দিয়ে বেতে চয়—পর পর চাব-পাঁচটি ঘর পেরিয়ে। আইবিনের ঘরের সামনেই কথা ওর নাম। দোরে ঘণ্টার বোভাম টিপ্তেই দোর ধূলে গেল, কিন্তু ঘারী কই ?

ও একটু আশ্চর্য হয়ে ঘরে চুকল। কী ব্যাপার ? কেউ
কোথাও নেই। কী সুন্দর ঘর। এক কোণে একটি কটেজ
পিরানো। তার উপরে কুলদানীতে গতকাল ওরই দেওয়া গোলাপ
কুল। পিরানোর পালে একটি টিপরে রূপোর ফ্রেমে বাঁবানো পরবের
ছবি। তার সামনে একটি ওরই উপস্তত মোরাদাবাদী ধুপলানীতে
ছটি ধুপ অলছে। আর এক কোণে একটি বিছানা। আর এক
কোণে একটি সোলা নীলয়ভের। তার পাশেও একটি জাপানী
ফুলদানীতে সালা লিলি। আর এক কোণে একটি পরিপাটি ভেলিং
টেব্ল আরনাও টুল। ঠিক মারখানে একটি চমৎকার টেবিল।
ছবির মতন ঘরটি—চুকলেই ওধু চোধ জুড়িয়ে বাওয়। নয়, মনও
ভুত্তিতে ভবে ওঠে। গৃহের প্রভারতি আলবাব ওধু বে বছরত্বে
নির্বাচিত তাই নয়, প্রভাবেকই বেন গৃহিণীর ক্রচির সাক্য বিছে
মোন আলগোনবে।

পরব থানিক পরে ছাড় কেরাতেই রূপালী হাসির বান ডাকিরে ছটি ছাত পিছন থেকে ওর গলা জড়িরে ধরে। পরব ফিরে হেসে ওকে বাহুবন্ধনে বন্দী করে বলে: এমনি করে বুঝি ভয় কথার ?

আইরিন সাভিমানে বলে: আদরের মানে বুবি ভর দেখানো ? বিশা আর দেখাব না। ছাডো।

পরব ছেসে বলে: আমাদের শাস্ত্রে বলে—ব্যুহ্র মধ্যে চোকা লোজা, কিন্তু রেজনো ভার।

আইবিন না ছেদে বলে: আব আমাদের দেশে বলে—বে পাথী ববা দিতে চার না তাকে বাঁচার লোভ দেখানো বুখা।

া ভূগ। অসীম চিবদিনই মাধা কৃটছেন সীমার থাঁচা মধ্যে ঠাঁই 'হণুছে। প্রমাণ—সৃষ্টি।

আর বে চার অনাস্টি ?

ভাৰ নাম অচেদ: আমাদের ভাষায়—ঘোহিনী, রোমিওর ভাষায়—ইনকাস্তাত্রীচে।*

আইবিন বাগ করে ঠোঁট কোলার: বা-ও!

পল্লব ওর ওঠে চুখন করে বলে: অমন করে লোভ দেখালে বাই

কী করে বলো ? বিজ-মাংসের শরীর জো ! বলেই খেনে:
আমানের দেশের এফ গ্রাম্য কবি গেরেছেন—বলে গুন-গুন করে :
আমি বে বেসেছি ভালো আমারি কি দোব ?

ठीकुवानी ! र्छकारेवा वृथा करव द्याय।

व्यन भारती वृक्षित्र त्मव क्वांत्रि ভाषाद्य।

আইবিন হেসে ওকে প্রতিচ্ছন করে বলে: আছো, এ বাত্রা ক্ষমা করলায়—কিছ আব অমন কোরো না, সাবধান!

(क्यन ?

পরের কথার কান দিরে সামাকে দ্রে সরানোর চেষ্টা—আর কেমন ?

আমি বুঝি তাই করি ?

করোনাভোকী 📍 আমি বুঝি টের পাই নাভাবো ?

यथा ।

বোলো, বলছি। ওরা পাশাশালি সোকার বলে। আইরিন বলে: রুত্বক এইমাত্র টেলিকোন করেছিল আমাকে।

যুক্ত ? হঠাৎ ?

বলল: তুমি তাব সংক্ল দিন করেকের জন্তে রোম বেতে রাজি হরেছ, আমি বেন বাধা না দিই—এই তার মিনতি। ব'লে একটু চুণ ক'রে ধেকে: কী? কথা কইছ নাবে? আবর একটা আছিল। থুঁজছ বুঝি?

অছিলা? কিসের?

আৰু কিনের ? আমাকে ছেড়ে কোণাও বাবার—আমাদের প্রেমকে বাচাই করতে। বলো তো—কাল সকালে কেউ দেয়নি তোমাকে এ-উপদেশ ?

তুমি জানলে কী ক'ৱে ?

ৃষি ফ্রাউক্রামাবের ওধান থেকে চলে বাওয়ার পরেই আমি
বাই তাঁর কাছে পড়াপ। তথন তোমার সঙ্গে তাঁর কী কী কথা
হরেছিল বলেছিলেন স্মামাকে। বলেই রাগ করে: বাও তুমি—
বেধানে তোমার প্রাণ চায়।

প্রব ওব কটি বেষ্টন ক'রে বলে: ভালোই হ'ল—কথাটা তুমিই তুললে। কিছ পোনো বলি। আমার এক বন্ধু—বার কথা তোমাকে বলেছিলাম মনে আছে? বে বিতা ব'লে একটি ফ্রামী মেরেকে বিরে করেছে?

আছে। নাম মোহনলাল না ?

সেই। ওরা আসছে বোমে—আজই সকালে তার চিঠি পেলাম। বিতার শবীর ভালো নয়। তাই ভাবছিলাম—বদি তুমি অনুমতি দাও তবে দিন করেকের জঙ্গে বোম ঘুরে আসি।

আইবিন ওর চোথের দিকে সোজা চেরে বলে: অছিলাটা খুঁজে পেরেছ ভালো – মানছি।

অছিলা! মোটেই নয়।

আইবিন বাব-বাব করে কেঁদে ফেলে: পল! পেবে তুমিও?

না, ছেড়ে দাও আমাকে। বাও—বাও বেখানে বেন্তে চাও!
কেবল-নিজেকে সামলে নিয়ে অঞ্চন্দ্র কঠে: কেবল এ-মিথ্যে
অঞ্হাতের কী দবকার ছিল? না, ভোমার কোনো কথা শুনব না।
আমল কথা—তুমি সমর চাইছ—না থাক, ঢের হরেছে। যে
ভালোবেনও ভেবে অস্থিয—এ প্রেম, না মোহং "আমাকে না বলে
আগে বোম বাওরা ঠিক করে পরে ঘট। করে অস্থয়তি চাইতে আনে—

Incantatrice - enchantress

নিজের শ্বণধের সাক্ষ্য লা থেলে এক পাকাচুল বুজিব উপলেশই করে। বিবোধার্য—ভার পক্ষে কী না সম্ভব ? বাও ভূমি বাবে—ভিশ্ব। আম কোথাও গিয়ে চুপটি করে বলে দেখতে থাক একটি বংসর— আমার প্রেমের জোরাবে ভাটা আসে কি না।

প্রবের মন কোমলতার ছেবে বার। গুকে আলিক্স করে বলে: এমন কথা বলতে নেই, আইরিন! আমি নিজের মনকে অবিধান করলেও করতে পারি—কৈছ তোমাব ভালোবাস আমার কাছে বরংগিছ। না, শোনো লক্ষ্টীট! আমার সাজ্য কিছু বলার আছে। কিছু তুমি এমন অধীর হলে কা করে বলব বা বলতে চাই? আমি তোমার কাছে আজ এসেছি প্রার্থী হয়ে—বিধাস করে।

আটবিন ক্ষালে চোথ মুছে বলে: প্রার্থী ? কিসের ? বলের।

বুল ?

হা। বল। ভবে বলি শুনতে না চাও, বলব না। বাব না কোধাও।

আইবিন আথত জংবে বসল: বলো, আমি ওনব আবীর না হরে—কথা দিছিত। না, এখন আরে চুপ করে গেলে চলবেন; বলভেট হবে।

প্রব ওর হাত ছটি গালে ঠেকিরে বলে: শোনো আইবিন!
আমি বা বলতে এসেছি বলতে বাবে—কেন না এ বরণের কথা বলব
ভাববার সময়ে এক রকম মনে হয়—কিন্ত বলতে বাবার সময় কেমন
কুঠা আনে—মনে হয় বেন ছোটমুবে বড় কথা। তবু চেটা করব
সহজ ভাবে বলতে—না ফেনিয়ে—বদি—

হবেছে, হয়েছে, বলো—আমি কথা দিছি—শাস্ত হয়েই গুনব ।
পাল্লব ওব হাত ছটি নিজের তুহাতের মধ্যে টিনে নিরে বলে চলেঃ
আমাদের দেশে বলে—নারী পুক্বের শক্তি। এদেশে এসে দেখি,
নারী পুক্রের চিন্তরঞ্জিনী, সংসার-সঙ্গিনী। কিন্তু আমরা তাকে
দেখি আরো বড় করে, বলি—সহধর্মিণী। কুকুম বলে এ বুগের
পুক্র—বিশেব আমাদের মতন প্রাথীন দেশের পুক্র—তার কাছে
আরো কিছু দাবি করে, চার—সে হবে সহদেশিনী—মানে দেশের
সেবার সহার, প্রেরণা—এক কথার বলদাত্রী।

ধুর্ম? ভোমার সেই দেশভক্ত বন্ধু?

বজুব চেরে অনেক বড়। তাকে কী উপাধি দেব জানি না।
তথু বলতে পারি—তার কাছে আমি গভীর ভাবে ঋণী। তার ছৈতি
করতেও আমার ভর হয় পাছে ছোট করে ফেলি। ওর কঠখর গাঢ়
হয়ে আনে: যৌবনেই বে বড় চাকরি ছেড়ে ফেল্লার দেশের জল্জে,
চুর্গতের জন্তে করল দু:খবরণ—বে বিলাসের কোলে মানুব হরে ও বড়
নিল পরাধনিচার—এই আড়াই বছরের মধ্যেই ছু বংসর কাটালো
জেলে—জেল থেকে সবে ছাড়া পেরেছে স্বাস্থ্যভলের দক্ষণ—তবু ভরকে
বে ভর করে না—কে জানে ছয়্ড ফের জেলে বাবে ছ-চারদিনের
বধ্যে—

(करन ? भारत ति विश्ववी ?

ভাই। শোনো। কাল রাভে ভার এক চিঠি পেয়েছি, ভাতে নে আমাকে নিখেছে বে, আমার কাছে দেশ স্কুনেক কিছু চার, আমাকে গান গোয়ে দেশকে আগাতে মাভাতে হবে শাবো লিখেছে, বে কথা বদলায় এইমার, বে আমাদের প্রত্যেক্তর সহধ্যিণীকে হতে হরে সহদেশিনী • • • এই সব বলে তার নামিছে নিতে ঃ ওকে আমি দিখে বিতে চাই—বিদ ভূমি অনুষতি লাভ—বে ভোমাকে সব কথা বলে যাজি করিছেছি—ভূমি হবে আমার সহধ্যিণী তথা সহদেশিনী। এত বড় ভাকে দেবে না ভূমি সাঙা ?

আইবিন ছহাতে মুধ ঢ়েকে অনেক্ষণ চুপ করে বইজ, পরে মুধ তুলে লান্তকণ্ঠে বলল : জুমি ডোমার কথা বললে ঢাকাচণাক মা করে না পল, ডোমার আন্তরিকভাকে অবিষাস কংবাং কথা আমি ভাবতেও পারি না। কিন্তু বে প্রেশ্ন ভূমি করেছ খোলাখুলি—ভার উপ্তরে আমারও বা বা মনে হর বলব খোলাখুলি—'কছুই না ঢেকে। ভারপরে জুমি বা বলবে—করব। কেবল একটা কথা ছে আমি বা নই জামাকে ভাই ভেবো না ভাবতে ভালো লাগে বলে। বাক শোনো বলি।

বলে গলা পহিচার করে মিরে আইরিম বলে চলে: সব আগে একটা কথা ডোমাকে আমার বল্ডেই হবে—তুমি মনে আঘান্ত পেলে কমা কোবো আমাকে নিক্ষপায় বলে—কথাটা এই বে আমি বভাবে দেশভক্ত মই। দেশভক্তির নামে এক নিঠ রতা, লোড, হীনতা, মিথ্যাচারের জয়ক্ষনি শুনে এগেছি ছেলেবেলা খেকেইল-কিছ্ত সে অন্ত কথা। আমার বলবার কথা এই বে, আমার চোগ্রে মুগ্র নেই বলব না, কিছ সে মুগ্র দেশের সেবা নম্ম। আবাল্য আমি চেনেছি—লিল্লীর জীবন বরণ করছে, গানে স্পৃষ্টি করছে। নাভাশা উঠতে বসতে বলে—মেরেরা গানে স্পৃষ্টি করছে। নাভাশা উঠতে বসতে বলে—মেরেরা গানে স্পৃষ্টি করছে লা কিছ, আমি বলছি আমার ক্রাশার কথা—তুরাশা বলছি এই ছল্ডে বে, হ্রড পারব না বা হতে আমার ক্রাশ চার। কিছু সে যাক, এবার তোমার কথার আসি।

তোমাকে আমি কেন ভালোবাসনাম বলতে পারি মা ভার করে —তবে একথা বলতে পারি বে, ভোমার কঠ ভনে বখন আমি রুগ্ধ হই তখন থেকে কেবলই চেয়েছি—তুমি আমার সাখী হও সহলিদ্ধীরণে। না, সবটা বলা হল না। আমি ঐ সঙ্গে চেয়েছি তোমাকে আমার জীবনের সহযাত্রীরূপে, বেদনার ব্যখার ব্যথীরূপে পথে পথের পাথেররূপে, আনকে নিভ্যসাথীরূপে। দেশ—তথু ভোমার দেশ নর, আমার নিজের দেশও—আমার কাছে, অস্তত্ত এখন পর্যন্ত, অভ্যন্তই বলব। ভোমানের কাছে বদেশ জীবস্ত মা, আস্থার আত্মীরা, আমার কাছে বড় জোব ভূমিখও—বে ক্লের হলে চোখকে খুলি করে, অছলর হলে—বিরক্ত। মুথ অমন কোরো না, লন্ধীটি! নৈলে বা বলতে চাই বলব কেমন করে? আমাকেও একটু বুবতে চেটা কোরো।

করছি—কেবল একটা কথা : দেশকে নিম্মাণ ভূমিথও ছাড়া আব কিছু মনে করা ড়োমাদের পক্ষে এত কঠিন কেন ? ইংলণ্ডেও ভো প্রকৃতিপূজা আছে বার প্রধান পুরোহিত ওয়র্ডসওর্থ— Something far more deeply interfused.

জানি জানি। আমাদের দেশেও আছে। তথু আছে ময়, এমন প্রচণ্ডভাবে আছে আমাদের মুজিকদের গ মধ্যে বারা দেশ ভো দেশ আইকনকেও পূজে। করে, ভার্জিন মেরির সামনে ধৃপদীপ

[•] Moujik-কুব কুবক।

আগাৰ, ঘটা বাজাৰ—এক কথাৰ সব বিজুৰ মংগ্ৰাই বেৰে বা খুই ঘুইমাতাৰ আধিন্তাৰ। তইবেডাছৰ বইবে হুৱে হুৱে পাবে এই মেচাৰ-তহশিপ—আমানের অনেক বিপ্লবীর মনেও সে-ভাবের হোঁষাচ লেপছে। আমাব দাদায়ই এক বন্ধু ছিলেন এই জাতেব বিপ্লবী—তিনি পাছাড়-মনীর সামনে ঠার চেবে চেবে থাকতেন আর ছুগাল বৈরে চোথের জল গাড়রে পড়ভ—ইংরাজিতে বাকে বলে ট্রাল। কিছ আমার মনে সে ভাবের ছোঁহাচ কোনোদিনই লাগেনি বে—কী করব বলো? তাই বলাছলাম—আমি বা নই আমাকে ভাই বলে কলনা কবে আমাকে ভোষার মান সী প্রেভিমা দীড় কবিয়োনা, কেন না, করঙো লেবে মনে আ থাবে। তোমাকে আমি আনক্ষ দিতেই চাই পল, বুথা দিতে নয়।

গলব চূপ করে রইল মুখ নিচু করে। আইবিন ওর গালে গাল রেখে কোমলকঠে বলে: আমাকে কমা কোরো পল, কিছ আমি বা পারি তার চেবে বেশি তো পারি না—উপার কী? তাই তোমাকে ওরু বলতে চাই বে, আমি তোমার সহদেশিনী হতে পারব কি না জোর করে বলতে পারি না এখন। কেবল সভ্যের অপলাপ না করে এইটুকু বলতে পারি না এখন। কেবল সভ্যের অপলাপ না করে এইটুকু বলতে পারি বে আমি চেটা করতে মাজি আছি—আর সে ওরু এইজরে বে, আমি তোমাকে ভালোবাসি, নৈলে জোমার মনের মতনটি হতে চাইবই বা কেন বলো? কিছ আমার নিজের কথা বলি বলো তবে আমাকে, বলতেই হবে বে, আমার প্রাণের কামনা তোমার সহদেশিনা হওরা নয়—আমি চাই ভোমার সহম্মিণী হতে।

সহম্মিণী ?

হ্যা। সহধ্মিণী কথাটা আঘার কাছে এথনো—কী বলব ? বৃদ্ধ লোর একটা স্থানর কথা, রঙিন ছবি, ভার বেশি নয়। ও আমার মন টানে না কারণ ধন বলতে বে ঠিক কী বোঝায় আমি আজো জানি না। করনা দিয়ে তাকে বুয়তে যে চেষ্টা ক্ষিনি ভানর। ক্ষেছি—হন্ত্বারই। কিন্তু কল্পনাতো বাস্তব নয়, উপলব্বির কোঠার পড়ে না, কাজেই ধর্ম আমার কৌজুহলের উদ্ৰেক কর্পেও মন টানতে পারে নি—শস্তুত আৰু প্রস্তু। আথার মনকে টানে—ভোমার ব্যক্তিরণ, অর্থাৎ ভূমি বা হ'রে তিঠা ভাই। এই ভোমাকে—বাকে আমার প্রেমের চোখে দেখেছি, **অেমের কানে শুনেছি, প্রেমের স্পর্লে চিনেছি—চাই আমি আজ** আমার হাদরের বেদীতে বসাতে: ভোমার দেশ আমার কাছে অবাতর। আমাকে ভুল বুঝো না-এটুকু অত্থান করবার কল্পনা শক্তি আমার কেন, ভোমার বা ভোমার আদর্শ বন্ধুর কাছে দেশ একটা জীবন্ত প্রভীক। কিছ আমি বুদি কোনো দিন ভোমাদের লেশকে সে ভাবে দেখতে পারি-ব্যানি কানি না শেষ পর্যন্ত পারব কি না—ভবে দে-পারাটা সম্ভব হবে তথু তোমার জভে। অর্থাৎ ভোমাদের দেশকে বলি পরে কোনো দিন ভালোবাসি—তো বাসব en জুমি দেশকে তালোবাসো ব'লে। আর আমার মনে হর--बहै-है व्यंकि व्यंभिकांत भरनत कथा। चानर्नतानी गूक्व चावर्नत्क कारमावारम जानरर्भव होरन, व्यवस्त्रज्ञ नांशे त्र-जानर्भक वदन करव ত্যু বলভের টানে। ভাট আমার মিনজি-জুমি আর বাই বলো না বেন একথা বোলো না বে, তুমি হা চাও আমাকে ঠিক ভাই চাইতে হবে, ভূমি বে-জতে চাইছ হবহ সেইজতে। বৃদি বলো

ভবে বৃশ্বৰ-নামাকে ভূমি ভালোষালো মি, ভবু চেবছ মিজেই ভাববিদাদের কোগানদার কলে। জানি না আমার মনের কথাটা পরিছার ক'বে বোঝাতে পেরেছি কি মা—ভবে মনে হব ভূমি বদি একটু বোলা মন নিবে আমাকে ব্রতে চেটা করে। ভবে বৃরতে গারবেই পারবে কোথায় আমাকে বাধছে। আইরিন অঞ্চাণান করতে মুখ কেরার।

পদ্ধৰ ওব হাত ছেড়ে দিৰে একটু চুপ ক'বে খেকে ধলক:
আমি বোধ হয় বুঝেছি ভোমাকে অমার বুকের মধ্যে কেমন বেন
খালি থালি লাগছে ''ঠিক বুঝতে পাবছি না—কী বলব এর
উত্তরে তথ্য এই কথা ছাড়া বে আমাকে এবটু সময় দাও।

चाहेबित्नव मूथ भाग ह'रत्र लिन: नमत ? की करड़ ?

পল্লব একটু ইতন্তত ক'বে বলল: আমি নিজের মনের সঙ্গে একটু মুখোমুধি হ'তে চাই—একেবাবে একলা।

আইবিন কর ঝর ক'বে কেঁদে ফেলল।

পল্লব ওর মুধ বুকের মধ্যে টেনে বলল: তুমি চোধের জল ফোলে আমার কা বে হয়, কেমন ক'রে বোঝাবো আইরিন? বলেছি—আমাকে শক্তি দিতে হবে তোমাকেই। ভাছাড়া আমাকেও তুমি একটু বুঝতে চেষ্টা করো, লক্ষ্মটি! আমি… আমি···মানে, তুমি আজ বা বললে তার জরে-·আমি একেবারেই প্রেক্ত ছিলাম না।

আইবিন অসভবা চোখে পলবেব চোখের দিকে তাকিরে বলস:
আব আমিই কি প্রেপ্ত ছিলাম তুমি বা বলসে তার জন্তে ? আমি
তোমাকে ভালোবাসি জেনেও বলসে কেমন ক'বে—সমন্ত চাও
নিজেব মনেও সঙ্গে মুখোমুবি হ'তে ?

প্রব কী বলবে ভেবে পার না। আইবিন বলে: কিন্তু না, ভোমাকে দোব দেব না। হয়ত তুমি ঠিকই বলেছ ক্রানি না। আমি এখন পরিকার ক'বে ভাবতে পারছি না। ব'লে প্রর নামিয়ে নিয়ে থেমে থেমে ক্রেব বলে: হয়ত তুমিই ঠিক হয়ত এ ক্রেবে এ ছাড়া উপার নেই, কারণ কিনের টানে বে আমরা চলি কেমন বোগাযোগে বে কে বী ভাবে গ'ড়ে ওঠে কেউ কি জানে ? তাই ভোমার কথাই থাক, তুমি বাও বেখানে বেতে চাও—এমন কি বলি সোলা দেশে ফিরলে ভোমার পক্ষে নিজের মনের সঙ্গে একলা মুখোমুখি হওয়া সহজ হয় তবে তাই করো, আমি ভোমার পিছুটান হ'রে থাকব না।

পদ্ধবের ব্কের মধ্যে ধ্বক ক'বে ডঠে: তার মানে ? বিদার ? আইবিন গাঢ় কঠে বলে: ছি:, জমন কথা বলে ? পুক্বের বেলার কী হয় কেমন ক'বে বলব ? কিছু মেরেরা কি এক কথার বিদার দিতে পাবে পল ? বলতে বলতে ওর চোখে ফের ছল ডরে ডঠে: তুমি কী জানবে পল, তোমাকে আমি কোখার বিসরেছি ? তা ছাড়া ওর কঠে ফুটে তিঠে 'উদাস স্থব—তা ছাড়া আঁকড়ে ধরা আমাদের বভাব, তুমি কাছে থাকলে হয়ত তোমাকে আরো বেশি করে আড়েরে ধরব, কে বলতে পাবে ? বলে চোখ মুছে শাক্ত কঠে বলে: আমাকে আমার তুর্বলতার জল্ঞে ক্ষমা কোরো তুমি। বারা মুক্তি চার, ক্রেম হয়ত তাদের বল দের কিছু বারা বছনের মধ্যেই আস্বামর্পণ না ক'বে পারে মা তাদের প্রেম শক্তি দের না—হিক্তই করে।

शहर अधीर ह'त्र अत कर्छ (बहेन क'त्र वाल: आमि अ शांवर

না। কুছুমকে আজই লিখে দিছি বে এখান থেকে ভোমাকে নিরেই গোগা দেশে ফিরব। আর আঞ্-পাছু করব না।

আইবিন দ্লান শান্ত কঠে বলে: সে হ্ব না পল। একবাৰ বধন হুধ কুটে সমর চেরেছ—সমর ডোমাকে নিতেই হবে। আমি বাই হই—তোমার চুর্বলভার কাঁক হিবে ডোমার মনের চুর্বলভার কাঁক হিবে ডোমার মনের চুর্বলভার কাঁক হিবে ডোমার মনের চুর্বলভার করে না, চোধের জল দিরে ডোমাকে বাঁধব না। এমন কি, দুবে গিরে বদি আমাকে পরীকা করতে চাও • তাও মেনে নেব—বািও চুঁ দিন আগেও কেউ বদি আমাকে বলত আমার ভালবাসাকে বাহাই করবে তা হ'লে তাকে বলভাম বল্যবাদ! ধল্লবাদ। তোমার নিজের পথেই চলো। কিছ ডোমাকে সে কথা বলার সাধ্য আমার নেই • তোমাকে বে ভালোবেলেছি আমার দেহ-মনের প্রেভি অগুটি দিরে। না, ভোমাকে কথা দিছি তুমি বা চাও ডাই করব—ভাতে বতই কেন না বাধা বাজুক। বলে ফের চোথ মুছে নোজা হ'রে ব'লে মুখে হানি টেনে বলে: তা হলে যুখফের সঙ্গে রোমেই বাছ—না, সোজা দেশেই ফিরবে ?

(मर्म ! मिकिक्था ?

আইবিন সান হাদে: ক্ষতি কী ? তুমি বোমে খাকলেও চোখের আড়ালে। দেশে খাকলেও চোখের আড়ালে, তাই বরং সেখানেই যাও না কিবে —বিশেষ বখন তোমার আদর্শ বন্ধু এমন প্রাণকাড়া ক্ষরে ডাক দিছেন ?

পল্লব ওর হাতের পরে হাত রেখে বলে: তার উপর কেন অনর্থক রাগ করছ আইরিন ? সে তো তোমার বিক্লমে একটি কথাও বলেনি ?

আইরিন কি একটা উত্তর দিতে গিয়েই থেমে বলে: থাক্, ভূমি বুঝবে না।

ना, तत्ना। यनएउ३ हरत।

না, পদ! ভোমার মনে কেন জার মিধ্যে ছঃধ দেই ? কেবল আমাকে একটা কথা দেবে ?

को कथा १

বে, বেখানেই থাকে। না কেন, প্রতি সপ্তাহে আমাকে অস্তত একটি ক'বে চিঠি দেবে ? আমি পথ চেয়ে থাকব।

পল্লব ওব হাত ধ'বে বলে: আন্মি বাব না।

আইবিন পল্লবের ছাত চুখন ক'রে বলে: সে হর না। এখন ভোষাকে বেভেট হবে। ভোষার বন্ধু-বান্ধবী ইতালিতে অপেকা করছেন তোষার ভরে।

ভারা গ্রধানে জাসবে।

बुष्काक कथा मिरवह १

(हानेत्कान क'रत राव--- जमत चार्छ।

বিদ আমি তোমার বজুর মনের মতন মেরে না হই ? না, ঠাটা
নয়। তুমি বাও—আমি প্রসন্ন মনেই বলচি। এত তর কিসের—
বথন আমাদের এ ভালোবাসা সতা ? আগুনকে থাদই তরার,
সোনা তরাবে কী ছু:বে ? ব'লে জোর ক'রে হাসতে চেট্রা
ক'রে: কেবল চিঠি লেখার কথাটা এখনো দাও নি, মনে রেখো।

দেব—কেবল এক সর্ত্তে।

को १

क्या माठ (र, जानि जाक्लिहे जुनि जागर ।

আইবিন ওয় দিকে এক দৃষ্টে তাকিবে বলে: তুমি ভাকৰে অধ্চ 'আমি আসৰ না, এ কথা কি তুমি সত্যি ভাৰতে পাৰো বে কথা চাইছ ?

পল্লব আইবিনের কঠালিকন ক'বে বলে: আমি জানভাম--ভূমি বুঝবেই বুখবে।

বোঝা তো কঠিন নর পদ, কঠিন হ'ল অভিমানকে জয় করা। ব'লেই আইনিন ভেঙে পড়ে, পদ্ধবের কোলে মুধ ড্বিয়ে কেবল চাপা কান্নায় ওয় দেহলতা থেকে থেকে কোঁপে ওঠে।

প্রব ওকে সাধানা দেবার চেটা করে না, ওর পিঠি, মাধার, চুলে হাত বুলোর। খবের মধ্যে গুধু খড়ি করে টিক টিক ট

আইবিন বধন মুখ তুপল তখন ওব চোধের জল ত্রিরে গেছে। পান্ন ওব[্]দিকে একদৃষ্টি চেরে থাকে।

আইরিন ওর হাতে হাত বুলোতে বুলোতে বলে: আমাদের হানি-হালাকে বেশি বড় ক'রে দেখো না। এমনিই মন আমাদের দ্বতের আকাশ: এই আলোর আলো, তার প্রেই খনখটা। তোমরা আমাদের কুপালৃষ্টিতে দেখ কি সাধে ?

পল্লব ওর ৰূখ চেপে ধরে: নিজেকে খনন ক'বে ছেটি করেনা।

কিছ ৰে সভািই ছোট —

ভোমার মতন বে ভালোবাসতে পারে সে ছোট ?

আইবিন বিষয় হাসে: কোথার ভালোবাসা 'পল । সজি ভালোবাসার এক মন্ত্র—'ভূমি ত্রি'। বে 'আমি আমি' করে সে মিথ্যে—হর্বল ভালোবাসা।

তা হলে আমাকে ছেছে দ্বার বল পেলে কোপেকে ?

বল পাই নাবার আমরা কোধার ? তবু পাবার ভঞ্জি করি বৈ তোনব।

ভঙ্গি করো গ

নর ত কী ? ভাবে কি—ছেডে ন' দিবে বদি বেঁধে বাধজে পারতাৰ তা হ'লে তোমাকে চোধের আড়াল হ'তে দিতাম আজা ?

চোধের আছাৰ মানে কি মনের আছাৰ ?

কী খানি ? কিংস কী হয় কেউ কি বলতে পাবে ? বলে একটু থেমে: খাব তাই তো ভব খানে পল ! দিনের পর দিন ভবু উদ্বেগ খালবে খামাব সঙ্গী হ'বে—যদি নিজের মনের সভ্দে মুখার্থি হতে না হতে ভামি তোমাব পর হ'বে বাই · · যদি ভোরাকে পেরেও হারাই ?

পরবের বৃক্তের মধ্যে কি একটা তার বেক্তে ওঠে, বলেঃ না—আমি বাব না—কিছুতেই না।

আইবিন দীর্ঘ নিংখাদ ফেলে বলে: এখন আর হর না---এখন তোমাকে বেতেই হবে-- অস্তুত কিছু দিনের জভে।

কেন ভনি ?

কারণ—এখন বলি তুমি না বাও তবে লে হবে আমাব ভোমাকে জার করে ধবে বাধারই সামিল—বাব ফলে তোমার চোধে আমি ছোট হ'বে বাবই বাব। শ্রহার ভিৎ বিনা কি প্রেমের ইয়ারত পড়া বার পল ?

भद्रव की वनरव एक्टर शांत्र ना। चाहितिन अकट्टे भरत वरन :

এই মাত্র ভূমি বলছিলে দাবীকে ভোমাদের পাল্লে পুরুবের দান্তি। বলে। আমার তথন কী মনে হরেছিল বলব ?

की ?

বে আম্বা তোমাদের পজি হতে পারি কেবল তথন বখন ভোমবা পালে এসে দ্বাড়াও। তোমবা ভাব নিলে তবেই আম্বা সরলা, নৈলে স্বলা। এক কথার: ভোমবা দাড়াও নিজের পারে আম্বান দ্বাড়াই ভোমাদের পারে—সাইভিল্ভার মত—ভোমাদের স্থাকড়ে ধরে। ব'লে দ্ববং ব্যক্ত ছেসে; এই-ই হ'ল শক্তিম্থীর দ্বাজ্যির নিজ মুর্ভি, মুখলে ?

পদ্ধৰ পাল দৃঢ় বৰে বলল । আইবিন । আমি হাব না।
মুপুৰকে এখনি টেলিফোনে আসিছে দিন্দি, আৰ কুনুমকেও আন্তই
দিখে দেব সহ কথা খোলাগুলি—এই কথা হলে যে, দেশেৰ কালে
আয়াকে বলি ও চার কবে ভোষাকেও গ্রহণ করতে হবে। ভোষাকে
বিদায় দিয়ে আধ্যানা মন দিয়ে কী দেশের কাল করব বলো ৪

चाहेतिस्मन सूच रेक्टन हरत छेळेहे निरंद लोग: रनन मा পল, সে ভূমি পারবে না। কারণ এখন হঠাৎ কুতুমকে স্বক্ধা निर्द बिरन म बूब स्वतार्वह रक्तारव-चामारक कामांव 'निन' ভেৰে। তথ্য দেশেৰ কাজে বোগ দেওয়াৰ পথও ভোমাৰ বাবে ৰত্ম হয়ে। পুৰুষ মাছুষ বল পায় মেছেদের কাছ থেকে নর---ও একটা কৰাই নয়—তোমৰা বল পাও তোমানের ধন বেকে, তপত্ৰা (थरक। धड़े সবই ভোষাদের আদর্শ থেকে, সর্বস্থ ৷ তা ছাড়া আমাকে সেকিমেন্টাল হঃধ থেকে বাঁচাতে গিয়ে यनि ज्यि नर्वचाच इंड का इंटन मत्न करता कि-नामारक धनी করা হবে ? মেরেরা বভই ছুর্বল হোক না কেন-বেথানে সভিয় ভালোবালে সেধানে সব আগে ভাবে নিজের কথা নয়-বাকে ভালোবাদে ভারই কথা। ভাই ভো বুগে যুগে নায়িকারা নায়ককে নিজে হাতে বৰ্ম পৰিবে পাঠিবে দিবেছে মৃত্যুৰ মূথে। পাঠিবেছে কেন ন। ভারা ভাদের অস্তব-গভীবে একটি কথা লানতে: বে, বল্লভকে যদি নিজেদের জন্তে বুণছোড হ'বে প্রোণে বাঁচতে বলে তবে त्म इरवडे इरव चन्नथी, चांचविकारत झान, चवमत-चांव उथन **क** व्यवभाषात कावन इत्व (क ? श्रिवा, बाव व्यव्य त्म कर्डवाखंडे श्याह । ভার পরে কী হবে ভাও সে প্রিয়া জানে—বে, অবসন্নকে নিরে বর করলে প্রসন্ত্রতা আসতে পারে না, ধতিয়ে জ'মে ওঠে গুধু আম্মগ্রানি : কী করলাম ! বাকে ভালোবাসি তার জীবন বার্থ ক'বে দিলাম নিজের অধের জন্তে ? না পল-জাইবিনের মুখে ফুটে ওঠে বিষয় হাসি--ভাষি ভোমাকে মন থেকেই বলছি-বাও বেথানে বেতে চাও, নিজের মনের সজে হও মুখোমুখি, তোমার শুভার্থীদের, বজু-বান্ধবদের, আত্মীয়ত্তমনের পরামর্শ নাও বদি চাও-ভাষার তথ-ছঃখের কথা ভেবো না, হিসেব ক'বে দেখ—কিনে ভোমার জীবন সাৰ্থক হ'বে। যদি ভেবে-চিছে দ্বিব করো-ভোমার বাত্রাপথে আমি ভোষাৰ সহৰাত্ৰিণী—ভোষাৰ ভাষার, সহদেশিনী হ'তে পাৰৰ না-তবে আমাকে জানিও, আমি ভোমাকে পিছু ডাক দৈব না-নিজে এগিরে আসতে।—না, এ মহত্ত্বে কথা নর, শক্তিময়ীর অপরাজের শক্তির কথাও নর-এ হ'ল ছুই আর ছুৱে চাবেৰ कथा, जक्षित्रां वृक्तित कथा : जबीर निक्षित क्रायंत्र रावशा कत्रक বদি আমি তোমাকে অন্ত্ৰী কৰি, তবে তাতে ক'ৰে আমাৰ স্থৰ

হবে না, হবে পাজি। আত্মবিকারের মধ্যে বাঁচার চেয়ে গড়ীর বেদনাকে বরণ করাও শ্রেহা, কারণ সেখানে অভত আছে ভুড়িয় সাত্ম।—এ নিঃস্থসভার ভগতে বার দাম কম নত্র।

আইবিন উঠে গাঁড়ার, পরবত। আইবিন জোর ফ'রে ছেনে বলে: এ দেখ---আমাকে নিয়মিত চিঠি লিখনে কথা দিলে না।

পাৰবও জোৱ ক'বে কেনে বলে: লিখব—কেবল জুমিও ভুখা য়াও স্থায়ার চিঠির জবাব দিজে দেবি করবে না।

বিক্। ভোষাদের গীভার থাগী নিয়ে না কথার কথার গর্ব কবো—নিভাম বর্গ না, আমি চিঠি লিখবই কথা দেব না। বীবপুরুব। এটুকুও পাববে না—সপ্তাহে একটি ক'বে চিঠি লিখে বেতে—আমার চিঠি পাও বা না পাও ?

ওব চোথের জলের মধ্যে দিয়ে হাসি ফুটে ওঠে। পল্লব ওছে আলিজন করে, আইরিল ওর বুকে মাথা রেথে থানিক চুপ ক'রে বাঁজিরে থেকে বলে: এলো পল, একটা গান গাই ছুজনে মিলে... কে জানে আর কথনো একসজে গাওরা হবে কিনা—না না, জমন কথা বলব না আর, জমন মুখ কোরো না, কল্মীটি। এলো, খুলিমনেই বিদায় নিই—'ফিরে এলো' ব'লে অবগ্য। উচ্ছোনের ইশ্রেগছবিলাস তো ঢের হ'ল, এবার মাটির মানুষ মাটিতে নামুক একট।

প্রবের মনের ভার একটু কমে খাসে, সহজ হেসে বলে: ডুমি বড় চমৎকার কথা বলো খাইরিন! মজেছি কি সাধে ?

় আইবিন আঙ্ল তুলে শাসিরে বলে: এবার আমাকে ছোট করছে কে তনি ? তথু কথা ? তোমাকে গান তনিরে শিধিরেও কি মলাইনি ?

প্রব হেসে কেলে: একশো বার। তবে কি জানো ? ভোমার তুলনা এক তুমি—বধন বেরপ ধরো মনে হয় সেই ভোমার সেরপ। বধন গান গাও—পান করি ভোমার কঠ, বধন হেলে তুলে চলো—বান করি তোমার দেহলতা, বধন কটাক করো—অমুভব করি তোমার বিহুতে, জাবার বধন বিদার দাও তথনো তনি সেই সঙ্গে ভোমার কিবে এসোঁ বলা—বা এক ত্মিই পারো—বেন গানের হরে।

আইরিন ওর হাতে ছোট একটি চড় মেরে বলে: আর তু¹মই বুবি মুখচোরা ভালো মান্ত্ৰটি! গান ভালোবাসলাম আরো কার অভে গো ?

এই দেখ-चार একটা রপ-বহস্ময়ীর।

আইবিন কৃপিত হাবে বলল; "বহন্ত ? তোমাকে বলি নি—তোমাদের গানের হাবে আমার হাদর কী ভাবে ছলে ওঠে ? না, ভোমার কাছে ভোমাদের দেশের করেকটি গান শিখতে গিরে আমার মন বে কোন্ রতে বভিবে উঠেছে—তুমি কী জানবে ? হরেছে—এনো এ গানটি আর একবার গাই ছজনে—ওর শেব স্তবকটির করেকটি মীড় আমার গলার এখনো তুলতে পারিনি—ঐ তোমার কাছে বে হাব মানি"—কী হালর গান—ভাবে, হাবে, ভালে, হল্কি চালে! ব'লে ওকে টেনে নিরে বার পিরানোর কাছে: তুমি জাড়িরে শোনো, আমি গাই, কেমন? তুমি প্রথমেই ধোরো না কিছ—ভোমার কঠ শুনলেই আমি হ্বর-তাল ভুলে বাই। একবার আমি একলা গেরে নিই, তারপর ভূমি ধ্ববে—তুরেট ভালিভে, কেমন?

এবার কেনবার সময়

13

गूऊ फार्थ कितावत というとうできると

कलिकाठा-३ **बस, बल, बस्नु ग्रा**छ कार आरेख्डे लिः

भवत बार्क्ट हैरद ७३ बानकरीश मूर्वित भारत छटा वार्क : এ কি সেই মেরে বে ছ'মিনিট আগে ভেডে পড়েছিল কারার ? चार्डेविन शिवादनाव कु'-छिन मिनिडे कर्ड मिटबर्डे च्रव शरद, किन्ह পল্লব ওৰ স্থবভালের ভূলচুকের কথা ভূলে গিয়ে যুগ্ধ হ'বে চেৱে थारक। की व्यवक्रभ श्रूथ, तक, ठाइनि ! धहे स्मरवारक छ विमान দেবে কেমন ক'বে--কী অপরাধে !--ভারতবর্ষকে ভালোবেনে যদি ७ भन्नत्व 'महामिनी' इ'टक ना भारत धहे छरत ? याहनमारमव अक्षे श्राद्यांकि मन्न भ'रक बाद : माधूम वक, मा तम ! कि व्यवित जरक जरक घरन भएक कृत्रुरम्ब कथा: First things must come first -- चारन चारीन कहे, कांबनरत कांवा बारव विषयानत्वव कथा। উत्तर्व धाइनमाम्बद कर्कवृक्ति यस्न शर्फ : 'त्रवाद উপৰে মাতুৰ সভ্য, ভাৱাৰ উপৰে নাই।' দেখেৰ সেবা কৰতে भारत माह्न जबनहे नथन तम माह्न हरित अर्ध : किरमन लाक কৰিল ভাই ? আবার ভোৱা মান্ত্ৰ হ': গিবেছে দেশ, ছ:খ নাই—লাবার ভোরা মাত্রব হ। প্রভাতরে উদীপ্ত মুখে কৃত্য वनष-मान भाष-कि मान्य काव की काव किन विक नामापन চাপে আত্মসন্থান মারা পড়ে Putting the cart before the horse । ও হয় না মোহন, হয় না। স্বাধীন দেশের লোকের মুখে বে-কথা সাজে পরাধীন দেশের মুখে সে-কথা সাজেনা। জাতিই গড়ে উঠন না—আন্তর্জাতিকভার সংপ্র পা-ভাগিয়ে চললাম মহামানবের সাগ্রতীরে ৷ বা নয় তাই ৷ পল্লব পান ভনতে ভনতে অন্তমনত্ব হয়ে পড়ে।

হঠাৎ আইরিন থেমে তুম্-তুম্ ক'রে পিয়ানোয় কর্তস দিয়ে বাড়ি মেরে বলে: তুমি কিছে, ভনছ না! যাও!

পল্লব চমকে বলে: কী ?--ইাা, ই্যা গুনছি বই কি ।

ছাই ওনছ। স্থামার এ-ভালটার কেবলই ভূল হর স্থামি স্থানি। ছই-ভিনের কলম তো স্থামানের সঙ্গাতে নেই—কী বেন এ-ভালটার নাম? ঐ দেখ ভূলে—গ্রা গ্রা, মনে পড়েছে— স্থাপতাল, না?

ৰাণতাল। জ-ৰ পৰে হ জুড়লেই বা হয়—ৰ, ঝাপ, ঝাপ।
আইবিন বাগ কৰে বলে: ও আমি পাবৰ না উচ্চাৰণ কৰতে।

পরব দেনে বলে: ছুবদৃষ্ট বাংলা ভাষার। না, লক্ষাটি, রাগ কোরো না। আমি শুনছিলাম বৈ কি।

কেব মিথ্যে কথা ? তুমি কিছু শোনো নি—ভাবছিলে আখাল পাথাল।

না না, বলে পল্লব ভবে ভবে, ভোমার শেব অভবটির উচ্চাবণ এখনে নিপুঁত হ্বনি। আছো আমি গাইছি—সাও সঙ্গে সঙ্গে— কবেক বাব গাইলেই জি:ভব আড় কেটে বাবে।

আইবিন কেনে উঠে গাঁড়িবে বলে: আছো। আবাৰ তুমি পিরানো ধবো, আমি গাঁড়িবে গাই। আমবা গাঁড়িবেই ভালো গাই, আনো ভো ?

পদ্ধব 'জানি' বলেই হেসে টুলে বসদ পিরানো বাজাতে।
জাইবিনের নিধুঁত সরদতার মন ওর জার্ক্র হ'বে ওঠে। কী জগরণ
কিন্নবী-কঠ। একে বিদার দেওবার কথা কি ভাবা বার ? জথচ
তবু কিবে কিবে মনে ধুবোর মতন বাজে জাইবিনের একটা কথা:
বদি তোমাকে পেরেও হাবাই ?

আইবিন থেমে বলে: কের অভ্যমনত ? ধরে। পল্লব চমকে উঠে, 'হাা হাা', বলেই ওর সভে ধরে:

প্রির! তোমার কাছে বে-হার মানি—সেই আমার জর। প্রেমে জর পরব সাধে বে—জর নর সে জয়ী নর।

মানি তোমার কাছে বে পরাভব, সেখা আমারি করোৎসব, পরের মুখে বিজয় বব চিত্তে বিঁধে রয়:

ভবু ভোষাৰ সাথে আমাৰ নহে নহে সে পৰিচয়।

व्यित पृथि व वत्रमान चायात छत्त्र थ-जनहः

ভাৰ প্ৰতিদানে সে নোয়াতে মাথা বাসে কি লাক ভয় ?

তুমি ব্যবমালা দিবে আমাবে নিবভিমান ছবভিসাবে।
দেখালে আলো অভকাবে—নাই তো তার লয়:

नित्न मीका-- (क्षाय क्रिकित्न क्रांति, क्रांतित्न तमहे **वर्ष**।

গানের শেবে পর্ম মুখ ভুলভেই দেখে— মাইরিনের চোখে জগ ও উঠে গাঁড়াভেই আইরিণ ওর বৃকে মাধা রেখে বার বার করে কেনে ফেলেন্ড

কিং • কিং • কিং • •

আইরিন নিজেকে ছাড়িরে নিরে চোধ মুছে, দোর খোলে। নাভাশা ! কী ব্যাপার ?

পদ্ধব সকুঠে বলে: এই যে নাভাশা, এলে ভালোই হ'ল: আমি ভোষাকে টেলিফোন করব ভাবছিলাম—মানে আজ রাজ্যে টোণে আমি বোম—

নাতাশা স্নান হেদে বলে : জানি—সেই ভতেই আমার আসা— রুস্ফে তোমার ওধানে টেলিফোন কবে না পেরে আমাকে টেলিফোন করছিল—তোমার নাকি এখন বিস্মার্ক শ তা সে—

ওহো ! . ধধ দেখি— স্ত্রেক ভূলে বঙ্গে আছি—পাসপোট অফিস—
ইয়া—সেইজন্মেই—যুক্ত সেথানে থেকেই টেলিফোন করে বলল
ধে আজ শনিবার—একটাব পরে অফিস বন্ধ। আজকে যদি বেতে
হয়— একুণি বাও ছুটে টাালি নিয়ে—এখন শ' বাবোটা—আব দেবি
কোবো না । বলেই থেমে : তুমি আজ বোম বতনা হছ , কাল
সকালেও তো বলো নি ?

কাল ভানতাম না—ভাজ সকালেই হঠাৎ বাওয়া ভির হল— যুক্তফ হঠাৎ এনে এমন ছেঁকে ধরল—

নাতাশা ওর চোধের দিকে চেয়ে বলল : আভই ?

জাইবি ব বলল: নৈলে কি ও মিখা কথা বলছে ? নাতাশা জকুটি কৰে বলল: না। মিখা কথা কি এ লগতে

কেউ কথনো বলে থাকে ? স্বাই প্ৰেভি পদে সভিয় কথা বলে বলেই নাজগতের আজি এ অবস্থা।

পল্লৰ কৃষ্টিত স্থৰে বলল: সন্ত্যি বলছি নাতাশা, বিশাস না ইব সুস্কুককে ভিজ্ঞাসা কৰো—

নাতাশা বাধা দিয়ে বলে: আমার বিখাস করা না করার কী আদে-বার পল ? বলেই কেমন একরকম হেসে: ইতালি এ সমর্থে বড় সুক্ষর! আইবিনকে:নিয়ে বাও না।

আইরিন বলে: 'আমি! তোর মাধার কথন বেকী ভূক চাপে— মাতাৰা তীক্ষকঠে বলেঃ কত আৰু অভিনয় ক্ষীৰ আইনিস! বলেই নিজেকে সামলে নিয়ে পজবেব নকে কিবেঃ কিবছ কবে!

আইবিদ বলে: হয়ত না ফিবভেও পাবে i

না ফিরতেও পারে ? সে কি !

আইরিন বলে: সে কি-মানে ?

নাভাশা বলে: ভাও কি খুলে বলতে হবে না কি ?

আইবিন লালঃহ'বে উঠে বলে: বলা না বলা ভোমার ইচ্ছা— কেবল ওকে জেবা কবা কেন ?

নাতাশাৰ মুখও রাঙা হ'রে ওঠে: জেরা আবার কি ? আমার বোনের সঙ্গে তার খোবার হরে এসে বে গলাগলি করে—ভাকে জিজানা করার আমার অধিকার আছে।

আইবিনের মুখও লাল হ'রে ৬ঠে: না, কোনো অধিকার নেই—দিদি কি বোনের অভিভাবক নর ?

নাতাশা একথার জবাব মুসতুবি বেখে পল্লবকে বলে স্বোবে: ওর কথা আমি ধরি না। কিছ তোমাকে একটা শ্রেশ আমার করবার আছে।

আইরিন বাধা দিয়ে বলে: না, কোনো প্রশ্ন নর। ব'লেই ফিরে: পল, তুমি যাও, পাসপোট আফিস—

নাতাশা বাধা দেয়: না, আমার কথাব উত্তর নিয়ে তবে বাবে। ব'লেই প্লবকে: শোনো পল, এদেশেও কুমারীর শোৰার খবে বে-নে আংস না। ছুমি বলি ওকে ছেছেই বাবে তবে কি জিল্ঞানা। কবি—এতদিন ওকে নিয়ে তবু খেলাছিলে ?

বিদি ! আর বা কবে করে।— ওরু আমার মাখা থেট কোনো মা।
মাখা থেট—এর পরেও । বে-মেরের এভটুকুও আত্মসন্মান বোব
আছে—

আইরিম বাঁকা ছেসে বলে: আত্মসমানের কথা ভোষার মতন্স মেরের মুখেই মানার বটে—বে—ব'লেই নিজেকে সামলে প্রবেদ্ধ দিকে কিরে: ভূমি আর দেরি করলে পাসপোর্ট পাবে না প্ল! বাও এফুণি।

পদ্ধৰ বলে: ৰাছি। ব'লে টুপি উঠিয়ে নিয়ে নাডাশার দিয়ে কিবে: বাবার আগে কেবল একটা কথা ব'লে বাই নাডাশা। আমি আইবিনকে নিয়ে খেলাই নি। রোম খেকে ফিরেই লাইবিনকে নিয়ে দেশে কিরব—বিবীহ এথানেই হবে কিখা সেখানে — ওর বা ইছে।

নাতাশার মুখ চা-খড়ির মতন শালা দেখার, আইরিনের দিকে ফিরে বলে: সতিঃ কথা গু

সভিয় হোক, মিধ্যা হোক—ভোমার কী ওনি? ব'লেই পল্লবকে: বাও ডুমি—খার পারো ডো ওকে ক্ষমা কোরো—ও বড় ছংব পেরেছে। ইয়া, পাসপোট নেওরা হ'লে খাজ এবানেই বেরো—আমার ঘরে, কেমন?

পরব বেরিরে বার। এনাতাশা হ' হাতে মুখ ঢাকে। কিমশ:।

অভিসারিকা

এঅনিল চক্রবর্ত্তী

বাত্রিব নিত্য অভিসাব বনানীর বুকে শাস্ত আশার, অরণ্যে অরণ্যে আর পাহাড়ের অবুব নীড়ে শুবু ভর পার জন-অরণ্যের ভীড়ে ভীড়ে।

ভাই--

বাত্তি নামে ন। হেখা অভিসাবিকা ওপাবেই থাকে শুৱ আলোক-পরিধা। বিজ্ঞার থিব-থিব আলো সাবি সাবি বলে যেন 'এই ভালো।' মুতের নিআন্ত আঁথি ভাবনেবে দেব কাঁকি।

তবুও পরিধার ওপারে নিতাই আসা চাই বলিও হেথার অভিসারিকার প্রবেশ নাই। এ কথার কানাকানি আকাশে বাতাসে মুক্তে-যেকতে-নতে হতাশে হতাশে।



মহাশ্বেতা ভটাচার্য

B

(এ) বেন ত্জনে মিলে বালুব খর বাঁগা। কত ক্ষণস্থারী এর আয়ু, সে হিসেব কে করে ? সে হিসেব চল্পা আরে চলনের মনে নেই।

ব্যারর ছেলে ব্যর বুঝিরে দিরে ফিরে গিরেছে চমন। বড়
হংবে স্থীকার করে গিরেছে প্রতাপের কাছে, বে—না, আমি
বুঢ়া হরে গিরেছি। আমার বা শেঝাবার লিখিবেছি ভোমার
ছেলেকে। ভাগ ভাগ সাহেবের সঙ্গে আগাপ করিরে ধিরেছি।
সেলাম লাগাতে আর ত্যালুট বাজাতে শিখিবেছি—পারেড
কাওরাজের কারদাটা বদি ভাল করে রপ্ত করতো তাহলে
রংকট থেকে বেগুলার সিপাহী হতো ঐ হতভাগা। কিছু বাড় বাঁকা,
বুনো ঘোড়ার সামিল! ডিল হাবিলদার সব রংকটকে দাবড়াছে,
ভা ওর সম্ম হলো না। বেগে স্কুঁদে বেরিরে এলো! আমি থেকে
গিরেছি প্রতাণ!

বাণের কথা ভনে প্রতাপ মনে মনে ভাবে, ছেলেকে ঐ স্বভাব দিয়েছ তুমি। স্বামার সঙ্গে ওর মিলটা কোনখানে ?

মুখে বলে—তুমি আর কাজ করো না শিতাজী! তুমি-ও ছুটি ক্রিয়ে চলে এগো!

চম্মন পাগড়ী-পরা মাধা নাড়ে। এ বড় হুঃধর কথা। তবু শীকার করতেই হয় বে বাপ আর ছেলের মিল কোনোধানেও নেই। ছেলে বোঝে কিছু টাকা জমিরে নিরে খরে বসে খি-মিঠাই খাও, মামলা করো। পুজো-গ্যান করো! সে জীবনের কথা ভাবলে গায়ে ধ্বর খাসে চমনের। তার শরীর খাজও শক্ত। দেহে আলগা চবি এভটুকু নেই। কাজ ছাড়া কিছু বোবে না চম্মন। কৌজীজীবনটা ভার সঙ্গে বেইমানী করেছে। কিছ সেই সংস্থ তার স্বভাবটা-ও তো দিরেছে বদলিরে। তার মধ্যে চেলে দিয়েছে ছটফটানি, অন্থিয়তা। ভিন পাৰেড আৰ উৰ্দি ভনলে লাফিয়ে উঠে ঘুমচোৰে পারে পটি বেঁবে ভৈনী হরে বাওয়া। নিজেকে কাজের মানুষ করে তৈরী করা আর সর্বদা হুই গোড়ালি মাটিতে বিঁধে নিম্পালক কাজের পুডুল হবে গাঁড়িবে থাকা। কোন উন্নতি হলো না। স্মবেদার ছেড়ে হাবিলদার হরেও উঠতে পারলো না চমন। বেইমানী ক'বে ভাকে ফিবিবে দিলো কেতী আৰ মাটিতে। তাই বলেই বে কিখাণ বনে বাবে চমন, তাই বা কেমন क'रव हव १ हम्मन का भावरव मा।

চত্মন চলে বাবে নিশ্চিত জেনে প্রতাপ সংসারী লোকের মডো বাপের কাছে হিসাব দাখিল করতে বসলো।

— চাচাজীর দরণ বে জমিটা ছিলো ভাতে এ বছর অভহর আর বুট দিলাম। রিষ্ণ হ'বানা লাঙল দিলো। বলদ আমার। গেঁচ এবার ভাল পাব না ব'লে মনে হয়। মতুন জমি এ বছর পড়ে থাকবে ? ভাই মনে করছি ভূটা দিরে দেব কিছু—

চন্মন এ সব সংসারী কথা শোনে না। হঠাৎ বলে—একটা সুন্দর মেয়ে দেখ।

— কি বললেন ?

প্রতাপের দিকে চেরে হঠাৎ চম্মন কথে উঠে। বলে—চোধ নেই ? দেখতে পাও না ? স্থান্দর মেরে নিসে এসো বৌ ক'রে। ও ছেলেকে বরে রাখতে পারবে না !

চখন ছেলের বিখিত মুখের দিকে চার না। বলে—ছুটি ফুরিরে গেল, আমি চলে বাছি। ছেলেকে এবার পাঠিরে দিতে দেরী করে। না। তি প্রার নখন নেটিভ ইন্ফ্যান টি কানপুরে রয়েছে। হুইলার সাহেরে রেজিনেট বাবুকে আমার ভাক্তার সাহের জানেন। খ'রে ক'রে বে ক'রে হোক, আমি ঠিক ভর্তি করে দেব। জোরান ঘোড়া, জওরানীর মন্তিতে বিগজে বেতে কতক্ষণ ? ভোমার ছেলের গরম বেলী, এ পারেভ হাবিলদারের ছপটি না খেলে ও ঠিক থাক্রে না।

চত্মন চলে গিরেছে, আর সামীর জন্তে অপেকা না ক'বে হুর্গা দাই সাগিরেছে মেরে থোঁজবার জন্তে। দাই পান-ভামাক আর গুড়ের নাগরী থেঁথে নিয়ে ভরদা দিয়ে গিরেছে বর্বাটা কাটসেট সে এমন একটি মেয়ে এনে দেবে, বার 'বদন উজালা, নৈন বিশালা, চন্দাক বর্বী গোরী।' এক বৌ বর আলো করবে।

সেই ভবসার বৃক বেঁধে বরেছে তুর্গা। একটি কুন্দর মুখের মার।
দিরে ছেলেকে বাঁধতেই হবে। নইলে শান্তি নেই ভার। এবার ছেলের মনও কিরেছে কান্ধে, চাবে বাসে। কেতী দেখাশোনা করতে দে নিভা বার আব সাঁঝি কাটিয়ে কেবে।

প্রথম বৌবন। বড় স্থৰ ভালোবেলে। শৈশবের ছই সাধী মাবে কবে জোড়ী ভেঙে গিছেছিলো। মনে মনে চল্পা ভাবে, ভা^{লই} হয়েছিলো। নইলে বৃঝি এত ভালোবাসা বেত না।

নবীন প্রেম। নিশাপ ও পরিভ্র ভালোবাসা। চোৰে চোৰে চেরে কভ সময় কেটে বার। চেরে থাক্তে বাক্তে চলন কেমন বেন হারিরে বার। টান-টান বাবা চুল, স্বাস্থ্য-লাবণো ভরপ্র এক কিবাণ-খবের গরীব মেরের এক এবর্ধ ? বসেছে
বরাল গাড়ীর ছই-এ হেলান দিরে। জলে-ভেজা সবৃত্ব কেতের
পটভূমিকার এই কালো ওড়নী আর লাল আলিবার সাজে চন্দাকে
মনে হচ্ছে বেন কোন গর্মধার মেরে। কোনো রাজকভাই বা
হবে। নইলে চন্দনের প্রেমে এমন এবর্ধমন্বী সে হলো কেমন করে ?
এমন অ্লা ভলীটি চন্দার বেন এই সবৃত্ব কেতী, নীল আকাশ
আর প্রালী বাতাসে ধাওরা ছনিরাটুকু সে কিনে নিরেছে।
গমের শীব ভেডে দে ছলনা ভরে টোকা দের চন্দার গালে। বলে,
—এত অহলার কিসের ? বেন মালকিন সাহেবা ভূই!

—কিশ্চয়।

চম্পা একটু হাসে। বলে হাত ছড়িয়ে, সবটুকু দেখিয়ে— এই সব কিছু আমাব, জানো ?

- —আমাকে দাও কিছু। হাত পাতে চন্দন। সহ**লাভ নীলা**-বিভ্ৰমে বাধিকা হয়ে ওঠে চন্দা। চোথ টান করে বলে—চাও ? এই নাও দিলাম।
 - -- कि मिल १
 - এই, वा ছিলো जामात।
 - --- मव बिद्ध बिद्ध १
- —নিশ্চর। তর পাই না কি ? আমার কি ফুরিরে গেল ওঁাড়ার ?
 মেব যধন খনখোর হরে ঝেঁপে আদে, ত্-ছ বাতাসে স্চনা করে
 হরি।গা। তথন চম্পা আর চন্দন নির্ভরে চলে বার প্রাম ছাড়িরে।
 নির্জন অরণ্যের সীমান্তে। এখানে গাঁরের মানুষ কোন দিনও আদে
 না। বহু অপবাদ আছে এই মাঠটুকুর নামে।

কিছ সে ভরের কথা এদের মনে থাকে না। আকাশে বিহাৎ বিলিক দেয়। বাক্ত গর্জে ওঠে। চম্পা আর চন্দনের সঙ্গার গান ভেসে বার বাতাসে। তুজনে হাত ধরাধরি করে ছুটে চলে। চম্পার চেরে চন্দনের গঙ্গার গান অনেক বেশী খোলে।

বিছুড়ী জোড়ী মিল বাতি সৈঁরা',—এই গানটি সে আহরণ করে এনেছে। এই গানটি বার বার গুনেও তৃত্তি হর না চম্পার। চম্পনও গুলা ছেড়ে গার। মুধে বৃষ্টির কাপটা নিতে নিতে চম্পা ধুলীতে ছালে।

আবার কথনো কোনো আবেগ মধুব বিপ্রহর বা সন্ধা। কথা নেই মুখে। ছটি-একটি কথা, তাও বেন সুবে বাঁথা মিঠি মিঠি বোল। ছজনে ছজনকে দেখা আর অবাক হরে বাওয়া। ভালবাসার প্রতিশ্রতি—ভূলব না, কোন দিন ভূলব না। বখন বেখানে থাকি, বতদ্বে থাকি।

— b=भा, कान मिन नत्र।

ভবুষেন বিখাদ হয় না। আবার ক্ষণিক বিষ্ঠিত বাদে ভীক ধাম-বদি আর দেখা না হয় ?

—চম্পা, ভবুও নয়।

এবাব গভীর স্থাধ নিজেকে এলিয়ে দেওরা চলে গালছুর গারে। চন্দন বলে—এত দেশে গেলাম, এত মামুব দেখলাম, এত রক্ষ জীবন কাটালাম, ভূগতে পারলাম কই চন্দা। গুমি জামার মনে ছিলে।

—करव (कम काम शिरविक्**ल** ?

এ কথার জবাব নেই। চন্দনের বড় কাছে চন্দা। এবার চন্দার স্থারের মণিকোঠার বে কথা মাথা কুটে মর্বেছে দিবা বাত্তি, ভাই-ই জরে ভরে উচ্চারণ কবে—স্থামাকে ওরা নিরে বাবে, স্থানো ?

- —কে বলেছে ?
- -वामि वानि।

চন্দন হাসে। বলে—কেন? তোমার সদে মিশলে আমার জীবনে হংগ আসবে? কেন এসব কথা বিখাস করে। চন্সা! আমি বিখাস করি না। দেখো, আমি এবার কাজ করতে চলে বাব। আর তারপরে তোমাকে ঠিক নিরে বাব।

-কোধার ?

জবুৰ এক বালকের সঙ্গে খেন খেলা করছে চল্পা। চন্দনের গলার কিছ কোঁতুক নেই। চন্দন বলে—কত জারগা আছে। ছনিরাটা কি ছোট ?

তা হয় না। তুনিয়া যত বড়ই হোক না কেন, এক তুনিয়ায় চল্পা আর চল্পনের ঠাই কোন দিনও হবে না। কিছ সেকথা বলে এই মধু মুহূর্ত্ত নষ্ট করে কে? চল্পা তা করবে না। কেন করবে? জীবনে সে কি ভালবাসা আব দবদ এমনই অঞ্চলি ও'রে পেরেছে? বে ভবিব্যতের কথা তুলে এই সময়গুলোকে সে আশ্রায় ভারাতুর করবে? চল্পন বতই ভবিব্যতের কথা বলে আর প্রথম্বপ্রের ছবি আঁকে, চল্পা ভতই বর্তমানের মুহূর্ত্তিলোকে মুঠা ক'রে ধরতে চায়। চল্পন বলে—ছনিরাটা তো এই সেক্সারনদীর থাবে ছোট ডেরাপুর গাঁখানার মধ্যে কয়েদী নয়? অনেক দেশ আছে। তুমি আর আমি সেখানেই চলে বাব চল্পা!

- —ভা হর না।
- —কেন ?
- ---ना।

আসলে অতথানি অথেব স্বপ্ন দেখতে ভর পার চন্দা। অত বড় কথা ভেবে কি হবে ? তা হ'লেই তো তার চ্র্ডাগ্য কোন দিক থেকে ফ্লা তুলে ফুঁসে উঠবে আর জখম করবে চন্দনকে। অথচ সে কথা বললেই চন্দন হা-হা ক'রে হাসবে। ঐ বক্ষ মাহ্র চন্দন। সে ভাবে, সবগুলো কালো মেম্বই বুঝি ঐ হাসিব হাওয়ার উড়িরে দেওয়া চলে।

ছঃসাহসের দিন। বেপরোরা জোরারের চেউ বৃকে নিছে উত্তাপ প্রদর। কে জানে আজকের সত্যি কালই মিখ্যে হরে বাবে কি না নসীবের বামধেরালে। তাই আজ, এই যুহুর্তিটাই সভ্যি। চন্দন বলে—রম্মলাবাদে বালনের মেলায় বাবে চন্দা। শোন, তুমি বেও ঐ বুড়ী কৌলল্যাদের সঙ্গে। আমিও বাব। ঠিক গুঁজে নেব।

- --- हेम्. गाँ-छद मासूर वाद्य ना १
- —গেলেই কি। আমি প্ৰোয়া কৰি? তুমি দলচুট হয়ে বেতে পাৰো না!

মেলা, লোকজন, বাজনা, বাতি, কাচের চুড়ি হাত ড'বে পরবার লোভ, সবগুলো একসঙ্গে মনে করে চম্পার চোখ ছটো তৃষ্ণার্ক্ত হরে ওঠে। কিছু চম্পা ক্ষণিক ভাবে। বলে—তার চেরে সেদিন আমি ভূমি নোকো নিয়ে ওপাবে বাবো, কেমন? কেউ থাকবে না সাঁরে। বেশ ভালো হবে।

ঝলনের রাত। এমন বাতে আকাশ ভবে ভার। থাকভে পারতো। তারা নেই। মেখনা আকাশ। টিপটিপ বৃষ্টি। ভব্ চন্শার মনের খুণীতে এ আকাশকেও পরম স্কের মনে হয়। বাতাসকে মনে হর স্থগকে মদিব। মাটিতে উপুড় হয়ে ভবে কাৎ ্ছরে চেরে থাকে চম্পা। এখন বাতে ভার চোথে বুম জাগবে না। জাককের দিনটা তাত্ম মন এথনো ভবে রেখেছে।

আৰু তারা হ'জনে চলে গিয়েছিলো বনে। জুর হারিরে বনের নিগৃঢ় অন্তবে পৌছে, সবুজ ঘাসের ওপর বসেছিলো। গ্রাম ও রাবার বুলনের দিনে তালের মনও মেতেছিলো, ছলেছিলো ভালে তালে। চলনের বুকে লীন হরে ভালবাসার প্রতিটি কথা নিজের বুক ভরে ওনেছে চল্পা। অন্থির হরে অশাস্ত হরে চলন বলেছে—মনে হয়, ভূমি বেন আমার ভেতরে আছে। চাইলেও বেন উপড়ে ফেলতে পারি না ভোগাকে, তোমাকে ছেড়ে আমি থাকতে পারি না চল্পা।!

সে হুর্ভাগিনী। তার নি:খাসে বিব। তার স্পর্শে মৃত্যু।
তবু আত্মকের দিনে চম্পাসে কথা বলতে পারেনি। বলেছে—তুমি
বাবে তোমার পথে। আমি আমার ভাগ্য নিরে থাকবো। তার
চেরে বেশী আমি চাইতে পারি না। তর পাই।

- ভব পাও, চম্পা? ভব পেও না।
- कि**ड** इन्त---
- —দেখো। এইদিন ওদিন নয়। আমি একদিন ভোমাকে এই সব কিছু থেকে উপজে টেনে নিয়ে চলো যাবো।
 - -তিমার বাবা, মা---
- —কিসের কে চম্পা ? স্বামি তো একবারই বাঁচবো। এই স্বীবনই বদি বুধা চলে গেল—
- —বেশ। বলে গন্ধীর হয়েছে চম্পা। ছলনেই গন্ধীর হরে সিরেছে। ভার পর সমর চলে বার দেখে নৌকো নিরে ফিরে অসেছে।

চম্পা ভাবে, ভানলাম ভো ভাল করেই ভালব। ভূবলেও আফলোব করবো না।

ভা কো পিয়া চাহে ওহি স্থলাল'—প্রিয় বাকে কামনা করেছে সেই বমণীট দোঁভাগাবতী—দেই প্রেয়নী। চম্পার বোঁবন বেন জনাদরে মলিন ছিলো। সহসা একজনের প্রেমে দে বোঁবন মুকুলিত হলো। চম্পার সেই বছ জনমনীরতা ঢাকা পঙ্লো লাবণ্য ও স্থমার। এখন তার চলনে হাজহানীর গরিমা। চোখে জতল বহুছা। কাজল বিনাই সে চোখ কালো। প্রসাধনের উপকরণ নেই। তবু গরীব কিবাণী-মেরের মামুলী পোশাকেই তাকে মানার ভালো। যে গোঁৱবর্ণ ইন্তের এত কদর দেও বেন চম্পার উজ্জল ভাম মুখখানির কাছে হার মেনে বায়। চক্রন বলে, লারলী কো মজহুঁকে আঁথোসে দেখনা চাহিরে।' বারা ছোমার মধ্যে রূপ দেখে না চম্পা, আমার চোখ দিয়ে তাদের দেখতে বলি।

না। একেই গাঁরের মাছবের মুখকে ভর করে চম্পা। কথা ছড়ালে বড় বালা।

তব্ও কথা উঠলো। প্রথমে বুথে বুথে চুপে চুপে। তারপর ছড়িরে পড়লো কথা। মান্তবে আগে দেখলো চন্দনকে। প্রতাপের জোরান ছেলে, বে নাকি এত দেশ-বিদেশ পুরে লারেক হয়ে ফির:লা, সে কেন এই গাঁরের মধ্যে এমন আটকে রইলো, কোন আকর্ষণে পড়ে, ভাবতে স্কুক করলো ছ'-একজন। বুড়োরা অবিভি প্রতাপের উঠোনে চওড়া হাতে চন্দনের পিঠ চাপড়ে তারিফ করলো বে হাঁ, বেটার মডো বেটা। এমনিধারা ছেনেই চাই। বে এক সাহেব দেখোওনে, এত দেশ-বিদেশ ঘুরে, তবুও নিজের শিখাবং-সহবং ভোলেনি। নিজে জোরান, তবু পাকাচুলকে প্রাণ্য সমান দিতে জানে। তারা বলে পেল—হাঁ প্রতাপ এই ছেলের হাতের আওন পেলে বাপ-দাদার মনটা শান্তি পার বটে পরকালে। এবার ছেলের বিরে দাও।

ছেলের প্রশাসার জবাবে জন্মর থেকে কঠিকরলার আলোঠি, আগ্রার মণছর তামাক আর ছিলিম এলো। কিন্তু সকলে তো বিজ্ঞান্ত হয়নি। তারা দেখলো চন্দনের চাল-চলন। আর দেখলো চন্দাকে। দেখলো যে মেয়েটা আছে কি না আছে বোঝা বেন্ত না এত দিন, সেই মেয়েই সহসা থাপথোলা ছুরির মতো বিলিক দিয়ে উঠেছে। কুলে কুলে ভরে উঠেছে বৌবন আর চলছে-কিরতে লাভ বেন উছলে পড়ছে।

কানে কানে কথা উঠতে দেৱী হলো না হুৰ্গার কানে।

চম্পাকে অনেক ভরসা দিয়ে চম্পন তথন এলাহাবাদে গিয়েছে।
চম্মনের প্রনো জিমারেংদার বুড়ো ম্যাকমোহন সাহেব এলাহাবাদে
রয়েছেন। তাঁর কাছ খেকে একখানা চিঠি নিয়ে চম্পন কাজের জ্ঞান্ত আসবে কানপুর। সে চম্মনের নাতি। সেটাই একটা ছাড়পত্র বুড়োর কাছে। তা ছাড়া কাজ যদি পায়, তো সে ডাক্ডার সাহেবের মুজী হবে। রংকট হয়ে রেজিমেন্টে চুক্তে'সে চায় না। এমন কি, বেজিমেন্টের মুনসী হতে-ও ভার আপত্তি নেই। তারপর চম্পাকে বিয়ের করে সে শহরে ঘর বাগবে। চম্পা তত দিনে নিম্চয় ঘুরে আসবে লালার মারের সঙ্গে। বাড়ে তো তুই-তিন মাসের জ্ঞাে।

চম্পা সেই আশার বলে বরেছে। নদীব ভাকে ওধুই ঠোর্কর লাগাছে। এবার সে-ও নদীবকে দেখিরে দেবে।

ভীর্থে বাবার সব ঠিকঠাক। লালা বৈজনাথের দোরে বহাদপাড়ী তৈরী। লোকজন জোগাড় হয়েছে। গাঁরে এমন বর
নেই, বে বর থেকে ছই-একজন মামুব জোগাড় না হয়েছে।
ব্রহ্মাবর্ডে স্নান-দান ক'বে ভীর্থ স্ক্রফ। পুকরে স্পান। আবার
উত্তরে ছবিধার স্থবীকেশ। ভীর্থবাত্রার পাথের সঞ্চর করে
সকলেই এনে দিয়েছে লালার মার কাছে। সব টাকা নিয়ে
পেটকাপড়ে বেঁধে রেখেছে বুড়ী। পথের জন্ত কিছু রসদ নেওয়া
হয়েছে। কয়দিন ধরে বাওয়া-আসা কলহ কলরব জার হাকডাকে
সরগরম রয়েছে মহলা।

বাবে বলে চম্পাও তৈরী। এমন সমন্ত হুর্গা এলো বিহাৎ
ও বক্সবাহী মেখের মতো থমথমে মুখ করে। চম্পার ওপরে ফেটে
পড়লো। তীব্র জার বিবাক্ত ক্ষাতলির খারে প্রথমটা কালো
হরে গেল চম্পা। কিছ সে তার মাহের মতো সহনশীল নর।
হুর্গা বধন বললো—সর্বনাশী, এবার নিঃখাসের বিবে জামার
ছেলেটার অনিষ্ট করবি ভেবেছিল ?

চম্পা'প্রথম আঘাতের ধারী সামলে নিলো। তারপর জবাব দিলো—ক্ষমতা থাকে তো ছেলেকে কয়েদ করে রাখো। আমার ওপর হামলা করবার তোমার এক্তিয়ার কোথায় ?

ছুৰ্গা আশা করেনি চম্পা তার কথার জবাব দেবে। তাতেই সে আরে। চটুলো। একে সে স্বভাব-কলহল্পির। তাতে সে আছুবিক কুম হরেছে। ছুর্গার সলা এবার খুলে গেল—এই বে তুই বাজিস আৰু বেন গাঁৱে মুখ দেখাতে না হয়। হতভাগী, তুই বাজারে বা। বমজানী হ'। শহরের মানুহের কাছে রপবৌবনের বেলাতী ক্রগে বা! গাঁরের দশজনকে জালাবি কেন ?

কথা শুনতে শুনতে চম্পার মূথ-চোথে লজ্জার অপমানে বক্ত ক্রেটে পড়তে লাগলো। ছুর্গা বেতে বেতে ফিরে বিব ঢেলে দিরে গেল-চিরদিনের মতো যা।

মনের বিব ঢেলে দিয়ে তুর্গা কোনো শান্তি পেলো কি না তা চল্গা জানে না! ভবে তাকে সর্বনাশী বিষক্তা ব'লেই জানে দুৰ্গা। সে-ই যদি একবাৰ ফিৰে এসে দেখতো তাকে ভবে নিশ্চয় দে ভ্রাম্ভ ধারণা পরিহার করভো ছর্গা। বে মেরের মনে প্রক, নি:খালে মৃত্যু ও ছর্ভাগ্য, সে সামাক্ত কয়টা কথার খারে-ই এমন ক'বে লুটিয়ে থাকে মাটিতে? নিঃখাস থেমে শ্রীরভার এমন হিম হুয়ে বার ? চোধের জল কোঁটা কোঁটা গড়িয়ে পড়ে মাটিতে ? এ কেমন বাৎসঙ্গা তুর্গার, যে বাৎসঙ্গা তাকে নিষ্ঠার ও স্বার্থান্ধ ক'বেছে? এ কেমন মা, যাব মন আব এক ছডাগিনীৰ ছঃখে काए ना ? पूर्वी कानरना ना त्रहे किन त्र व्यक्तारख ठम्मारक छेरन मिला ভবিষ্যভের হাতে। b=भा चांत्र b=भांत्र बहेला ना। ছনিবার কোনো আকর্যণে চম্পার চারি পাশ থেকে গণ্ডী গেল ভেডে। ভার ভবিষাভের অদূব প্রান্তে চম্পার সঙ্গে সঙ্গে তুর্গারও অর্থ-তুঃখ এক গ্রন্থিতে বাঁধা হয়ে বইলো।

আজ অবগ্য চম্পা-ও তা জানলো না। ভবিষ্যৎ নয়, বর্তমান

ছাপিরে জার কোন কিছু ক্ষেতে পেলো না চম্পা। সন্তিটি ভৌ নে তো হুর্ভাগিনী-ই। মনে পড়লো ছোটবেলা খেকে কেমন ক'ৰে ভূর্ভাগ্যের বাছছারাতে সে বড় হরেছে। মনে প্রুলো তার জন্মের স্ট্রনাতে-ই তার পরিবারে নেমেছিলো অভিশাপ। মনে প**ডলো** ভার সঙ্গে বিবাহের কথাতে-ই কেমন ক'রে জনেক কথা উঠেছিলো। মনে হলো সভাই ভো, কোন মা কামনা করে বে ভার ছেলেছ সর্বনাশ হোক ? যদি চন্দনেরও কোন বিপদ হয় ? চন্দার বিজ্ঞান্ত ও উত্তেজিত মাথার মনে হলো, এত দিন ধরে সে স্বার্থান্ত হয়ে নিজের বঞ্চিত জীবনটার কথাই ভেবেছে। তাই চলনকে সে নিজের জীবনে টানতে চেরেছে।

চম্পার মনে হলো, বদি কপালে থাকে সে বমজানী হবে। **অথবা** ষা হয় হবে তার। কিছ চন্দনকৈ তার মধ্যে টানবে কেন ? এই কি ভালবাসা? তার চেয়ে চম্পা চলে বাক লালার মা-র সংক। এত তীর্থ, এত দেবস্থান, সেখানে এত মামুব রয়েছে- তার একলা জীবনের একখানা কিন্তি কি কোন বাটেই বাঁধতে পারবে না? তাৰখনো হয় ? চম্পা মনে মনে সংক্লাকরলো, আর कथाना किराय ना त्म। या-त्क (इस्छ त्वर्ष्ण करे हरव ; वर्ष इःर्थ হাসি পেলো ভার। কীণ চাদধানির মতে। হাসি ঠোটে লেগে বুইলো। চম্পা ভাবলো, আমাকে নিষেই মা-ব বন্ধ ভাবনা ছিলো। আমি না থাকলে মা-ও দারমুক্ত হতে পারবে।

चात्र किरम कहे हरद ? हम्ला छात्र भनशानि निष्त नव हुँ द्व

जिप्त लावगा व्यापनात्ररे जना

বোরোলান

আপনার লাবণাময় প্রকাশেই সৌন্দর্যা। কিন্তু রোদ আর শুষ্ক হাওয়া প্রতি-দিন আপনার সে মাধুরী মান করে দিচ্ছে। ওষ্ধিগুণযুক্ত সুৱভিত বোরোলীন এই করুণ অবস্থার হাত থেকে আপনাকে রক্ষা করবে। এর সক্রিয় উপাদানগুলি আপনার ছকের গভীরে প্রবেশ করে শুকিয়ে ন্নেহজাতীয় পদার্থ ফিরিয়ে এনে আপনার তককে মথমলের মত কোমল ও মসণ কোরে সজীব ও তারুণোর দীপ্তিতে উজ্জ্বল ক'রে তুলবে। আবেশ-লাগা সুরভিযুক্ত বোরোলীন কীম মেথে আপনার ছকের সৌন্দর্যা রক্ষা করুন আর নিজেকে রূপোজ্জল করে তুলুন।





পরিবেশক : कि, पछ এও কোং, ১৬, বনফিড লেন, কলিকাডা-১

ছুঁৱে দেখলো, অনেক দিন ধৰে চন্দনের সুঁভিজ্ঞিত মাঠ, বন, বটগাছ । আর নদী—এ সব জারগার মনটা শিক্ত বেঁবেছে বটে। তবে সে বাঁধন উপড়ে ফেলতে ছবে। সে না থাকলেও এই সবই থাকবে। এমনি সুন্দরই থাকবে।

আর কে বইলো? চন্দন ? হাঁ। তার কঠ হবে বটে প্রথমে। কিছু তার পরে দেও ভূলে বাবে। পালকিতে বৌ বসিরে নিজে বোড়া চড়ে পালে পালে আসবে। হুর্গার হাতে বৌ ছূলে দিতে দিতে হরতো তার একবার-ও মনে হবে না, এই মা বদি মার্থানে না থাকতো তার একবার-ও মনে হবে না, এই মা বদি মার্থানে না থাকতো তার আজ চন্পা থাকতো তার পালে। রাতে বৌরের মুখ থেকে ওড়নী সরিয়ে মুখখানা দেখে হয়তো চন্দন বলবে—'জা কো পিরা চাহে ও-হি অহাগণ।' তথন চন্দনের এমন কথা একবার-ও মনে হবে না, এই কথা দে আর একজনকে আর একদিন বলেছিলো। চন্পা কোখাও থাকবে না! না এ গাঁরে। না

সেই নিঃশেষ বিশ্বতির কথা মনে করতে বুকথানা ছেন্ডে গেল
চল্পার। তা বদি সত্যি হর, তবে ? তবে চল্পা সেদিনই মরবে।
ভারপর ভার বেঁচে থাকবার কোন মানে হয় ? চল্দন বদি চল্পাকে
ভাষন করে-ই ভোলে, তাহলে চল্পা তার সমাধিতে কোন সামান্ত সৌধ-ও চাইবে না। সে সমাধিতে কোন বক্তগোলাপ ও বুলবুল প্রশ্পারের প্রেমে ভাকুল হয়ে সৌরভ ও সলীত বিভরণ করবার
ভারকার নেই। তেমন সমাধিতে কাঁটাগাছ্ই ভালো।

আকাশ-পাতাল ভাবে চম্পা। তারপর পিদিম ছেলে হাত-আয়নাধানা ধরে। নিজেকেই দেখে। এই কপালে হুর্ভাগ্যের শিধন ? কোধায় কোন আধরে লেখা ?

চোৰে ত পড়ে না। চোৰে পড়ে একথানা অঞ্চলান্তিত
অপরপ বুধ। আরনাধানা ত' মিথ্যে কথা বদছে না। সুন্দর
বুধখানি এখন বেদনা-মলিন, চোধের ছুটি আহত। এই
বুধ আরো সুন্দর হতে পারে, বন্ধি একজন পাশে থাকে।
নে নেই বলে-ই তো জোর পাছে না চন্দা। সে নেই বলেই
তো অসম্ভব সংকল্পে বুক বেঁধে চন্দা। নসীবের কালোদবিরার ঝাঁপ
দিতে চলেছে।

তাৰে-ও ধিক্কার দিলো চম্পা। প্রথের ঘর বাঁধবে বলে কোথার গেল চন্দন—এদিকে বে বাঁধা ঘর ভেঙে গেল, চম্পার সাধ্য কি একা এই ছবস্ত প্রতিকূল কোরার ঠেকার ?

इन्मा এछ मिल जामला।.

আজমীর পর্বন্ত আর পৌছরনি চন্পা। চন্পাকে পণ ধরে বাজি ফেলছে বে বাজিকর, তার থামথেরালীর নিশানা কে করবে? আজমীর পৌছুবার আগেই সেই তীর্থবাত্রীর দলে ডাকাত পড়লো। অরক্ষিত পথ—বাট। রাজহানের মক্ত্মি আর নির্জন বসতিবিরল ধূ-বৃ বিস্তৃতি ভারতের অন্তাভ ঠাই-এর মতোই দম্মর উপদ্রবে ডীতি-সকুল। তীর্থবাত্রীদের সঙ্গে লাঠি ছাড়া অন্ত ছিলো না। অলঙ্কার ও অর্থ ছিলো বিশ্বর। অতর্কিত আক্রমণে বিপর্বন্ত কল ছত্রভক্ষ হলো। করেকজন মাটি নিলো সেথানেই। চন্পাকে দম্মরা ধরে নিরে গেলো। মারণথে বোঝা মনে হওরাতে চোট দিয়ে ফেলে বেথে গেল তাকে। উত্থার করলো কোন্পানীর অমিজবিশের

একটা দল। মেসসাহেব আব সাহেবের বড়ে সুস্থ হলে। চলা।
কিন্তু গ্রামে আর সে কিরলো না। কাাপ্টেন ও মিসেস ইর্কের সজে
এলো কামপুর। সেধানে এক রিসালার বাবুর মারবং চিঠি লিখিয়ে
ধবর আনলো লালা বৈজনাথের বাড়ী থেকে। চলা না কি
ভাকাতদের দলের সঙ্গে চলে সিরেছে। ছয় মাস কোন ধবর না
পারে এই সেদিন মনের ছঃখে মরেছে চল্পার মা শোধ অর বিমারীতে
ভূগে ভূগে। সে বাড়ী সল্পার্ক আর কোন ধবর জানাবার নেই।

খবর জেনে চল্পা বেন বাঁচলো। বাঁধন কেটে নিশ্চিন্ত হলো।
আর কিছু ভাববার নেই। রেজিমেন্ট বাজারের কাছে খরভাড়া
নিলো। ইর্ক সাহেবের বিবির কাছ থেকে বে টাকা মিচেছিলো,
থানিকটা ভাই দিয়ে জার খানিবটা নিজের বাছকরী বাঁবনের
টানে সারেজীয়া জোটালো। চোখে বিলিক মুখে হাসি। গাদে
মুর কমভি পড়ে বা নাচতে ভাল কাটে—সে লোব বােবনের বিজম
দিরে পুরিরে দের চল্পা। কটাক্ষের বাণ মুঠো-সুঠো ছুঁড়ে মারে।
রাভারাতি ভাক পড়ে বেজিমেন্টে, বিসালার। মাসে ছুঁ-চারটে

কি বালালী বাবুৰা, কি ফোজী দিশী অফিসাররা বা ছ'-চারজন কিরিলী গোরা, চন্দার সঙ্গে একটু ঘনিষ্ঠ হ'তে সকলেরই সাধ বার। কিছ কোমবে বিছুয়া নিরে ঘোরে চন্দা। কথা কইতে সে নারাজনম, তবে মারধানে থাকে ঐ ছুরিধানার অভিছ। ২ড় ধারালো মেরে—বটে বেতে দেরী হয় না।

এ এক জীবন! তেমন তেমন হয় তো বিঠুর অবধি চলে বার চল্পা, তার সারেজীয়া নিয়ে। পেশোরা প্রাসাদে কথনো সধনো সেলে সোনার বালাটা, রূপোর তোড়াটা, মিনে-করা পান-ডাবরটা মেলে।

সকলে বলে চম্পা বড় প্রসা চিনেতে। চম্পা ঘরে এসে হাসতে চার। একদিন বলেছিলো না হুর্গা ? বে রমজানী হবে চম্পা, বাজাবে নাচ দেখাবে ?

ভাই হরেছে চম্পা। এখন সে প্রোদন্তর বাঞারের মেরে। কানপুরে ভাকে না ভালে কে? সভীচৌরার স্নান করে চম্পা। শিবচভূদ[্]শীতে আক্ষণকে পানফলের ক্ষিলিগী ভলপানি দের। সে কাকু চেরে কম বার না।

ছুৰ্গাৰ কথা মনে কৰে হাসতে চায় চম্পা। কিছু বুৱে এসেই হাসিটা বেন কেমন কৰে নিবে বায় তার। জানালা দিয়ে চেবে গলা নয়, জাৰ একটা নদী মনে পড়ে। জাৰ একটা ঘৰ মনে পড়ে, একথানা মুখ মনে পড়ে। সেদিন জাৰ ব্বে বাতি জালে না চম্পা।

কানপুরের বাজার-মাতানো রমজানী চম্পার কেন বে সংসা ডেরাপুরে বাধার ইচ্ছে হলো !

গিরেছিলো ক্যাপ্টেন বাইটের বিবি ব্রিক্ষ্ লারীর কাছে।
এই একটা ভারগাভেই বার বার হার চন্পা। ব্রিক্ষ্ লারীরে
ভালোবাসে বলে নর। একটা কেতি্হল ভারেছে তার মেরেটার
সম্পর্কে। আর সামান্ত পরিচয়ের পর মনে একটা ভাবোর করণাও
ভোগেছে। ব্রিজ্জ্লারী কি ভানে, বে চন্পা তাকে মনে মনে
করণা করে ? সন্তবন্ধ নর। ব্রিজ্জ্লারীকে কানপ্রের সকলেই

্চনে, জানে। এই সাতার সালে কানপুরে বেজিবেণ্টে ভারতীর নিগানীয়া আছে অনেক। আৰু কৌজ ও ফৌজী-জীবনের সঙ্গে ব্দিষ্ঠ এবং অন্তবন্ধ বন্ধ ভাষতীয় বরেছে। ভাষা বিষয়ুলামীকে পোৱা করে। খেলা করে ভালোবাসে না, বিখাস করে না। কেন करत जा, तम मत कथा हम्मा जामा-जामा स्थलाइ । कांत्र मत कथा ট্রভ রেখে এই বলা চলে বে বিজন্তলাতী বে-সাহেবের বিবি, সেই প্রাইটকে কেউ দেখতে পাবে না। নিজের ভাচরণে প্রাইট সকলের দ্বৰা এবং অপাড,ক্ষেয়। রক্তে বেশ খানিকটা ভারতীয় ভেজাল ভাছে বাপের দিক থেকে। ভার বাপ, ত্রাইট সিনিয়র হলে। মালান্ত পোর্ট থেকে চালাই হাত-ফেরতা গোরা। গোরা বললে ভুল বলা হবে। কোনো মান্তাজী কনকাল্মা এবং কোন প্রমোদপ্রিয় গোৱার বিচ্যুতির ফলে সিনিয়র পুধিবীতে আসে। বাপের কাছ থেকে কৰ্মল লালচে চামড়া আৰু মাৰেৰ কোঁকড়ানো কালো চল নিয়ে। অরফানেতে বড় হয়ে রেভিমেন্টের ইংরেজ ক্লার্ক হয়ে জৌনপুর হলট-এ ম্যাকমোহনের বোনের সঙ্গে আলাপ। এমিলি মার্গারেট মাাকমোজনের সৌন্দর্য ছিল না। স্বভাবত: ভীক হওয়াতে ব্রাইট সিনিয়র সহজেই প্রভাব বিস্তার করতে পারলো ভার ওপরে, ভারতে ফোজী-ইংরেজদের বিয়ে করবার উদ্দেশ্যে বিলেত থেকে বে সব মেরেরা আসতো এমিলি ভাদেরই একজন। তবে লক্ষো-এ লা মাটিনিয়ার আর কলকাতার ম্যাডাম ছেনীর স্থলে সেলাই ও বাইবেল-টিচার হয়ে বয়সটা কেমন করে ছাবিল খেকে ছত্রিশ হয়ে গেল। বিবে আর ছলোনা। শাদা লেদের কলারে বুকটা ঢাকা খাব খাড়। কুন্ত্ৰী কাঁবে 'He loveth best' লেখা ব্ৰন্থ আঁটা। ভবু এমিলির বুকেও বে পার্থিব সাধ-আহলাদের কামনা কিছু বেঁচে ছিলো, তার প্রমাণ হলো সহসা ভিক্টর আলবার্ট ব্রাইটের সঙ্গে বিষে হওয়াতে। ডিকেন্স এবং অর্জ ইলিয়ট পড়া ক্যাণ্টনমেণ্ট-সমাল বিশ্ববে মৃছ্। গেল খেলিং-সন্ট এবং নক্তিম্বান ভূকে। ম্যাৰমোহনকে প্রচুর সমালোচনা ওনতে হলো। অপমানে ম্যাকমোহনের থাড়া শি দারী গোঁফ বলে গেল বটে. তবে ভা একান্ত সাময়িক। পরক্ষণেই বোনের জন্তে চিস্তিত না হয়ে পারলেন না তিনি।

থমিলিবও বলবার ছিলো। সবটাই কিছু প্রেম নর। আর জৌনপুরে সে ছিলো একলা। আইট ভূবে ছিলো বাং-দনার। থমিলি বে ভাইরের কাছ থেকে বেশ কিছু টাকা পাবেই, তা সে জানতা, থমিলির নীতিমূলক উপদেশ ওনতে বৈর্ব ছিলো। না ভার। এমিলির জীবন সম্পর্কে কোন অভিজ্ঞতা ছিলো না। বাইট সিনিরর ভার স্মবোগ নিলো নির্মম ভাবে। থমিলি পড়লো বিপদে। এক চুড়ান্ত অবস্থার বিয়ে হলো ভাদের। আট মাসের বিবাহিত জীবনে অনুশোচনা করতে করতে এবং বাইটের স্বেছাচারী স্বভাবকে মুণা করতে করতে বাইট জুনিররকে পৃথিবীতে থনে মারা গেল এমিল।

দিনিয়বের আব বাই হোক, বাছাকে মান্ত্র করবার বৈর্ব ছিলো
না। কিছুদিন ছধ-ধাই আর তারপর লক্ষো-এ মিদেদ ব্লাদের
হোম। বাঁচবার কথা নয়। তবুও বে বাঁচলো বাইট, দে ওবুই
দীবনীশক্তির জোরে।

এখন অবশু অনেকেই কটুক্তি করে ত্রেপথ্যে, বলে—ভগবান নর, শর্ডান থকে বাঁচিয়েছে আমাদের আলাবে বলে। সিনিরবের কপালে এমিলির ভাইরের টাকা জুটলো না। বেশ্বী দিন সং-জীবনের বিধি-নিবেধ মেনে চলতে পারলো না সে। বেজিমেন্টের ইউবোপীর অফিসারদের রসদ সর্বরাছের ভার নিয়ে করেক শো' টাকার গোলমালে পজে ব্রধান্ত হলো সিনিয়র, উপযুক্ত কার্য্যকারণ না দেখিরে।

এমিলির ছেলে মিসেল ব্লুসের ওখানে টাকা বিনে কঠে থাকৰে ?
সহু হলো না ম্যাক্ষোহনের। বোনের অমুতপ্ত হৃদয়ের চিঠিওলো তাঁর কাছে জমা করা ছিলো। হাজার হলেও তাঁরই বোন! জার তাঁরই ভরদার এলেছিলো ভারতে।

মিলেস ব্র সের হোমে এবার টাকা আসতে লাগলো ম্যাক্ষোহনের कोइ (थरक। किছुकान भरत। वहत्र हरदक हरत-नितिद्वरत्वत মৃত্যু-সংবাদ এলো বম্বের বন্দর থেকে। জনশ্রুতি শোনবার দিকে ৰোঁক ছিলো না ম্যাকমোহনের। তবু সংবাদ কানে এলো। कांनरक प्रवी हरना ना रव, इठीए वक्रालाक हवांत भव छहा विक्रम हरन পৰে সিনিয়ৰ ঘূৰে ফিলে পোৰ্ট-এর জুবাড়ী-মাড্ডা এবং মন্তান্ত চোৱাই মাল পাচার ও বেচা-কেনার কালে ভূবেছিলো। ১৮২ সাল। এ-দেশ ও-দেশের মহুষ্য-সমাজের আবর্জনা বোঝাই করে তুলে ভারত, চীন সিলাপুর-এই সব উপনিবেশের বন্ধরে বন্ধরে নামিরে দিরে বার জাহাজগুলো। পূর্তুগীজ, আর্মেনিয়ান, ইংরেজ, করাসী, ভাচ,—ভিন্ন ভিন্ন দেশের মামুর। স্বভাব-চরিত্র এবং জীবন-বাপনের বীতিনীতি কিছ একেবারে এক। জাহান্তের উলকি-আঁকা খালাসী নাবিকদের সঙ্গে এদের দোভি। ভারতের কাঁচা মাল চলে বার। বিলেভ খেকে আদে সৌধিন প্রগন্ধি, মদ, সিন্ধ, কাচের জিনিব। ভারতবর্ষে ধাকতে হচ্ছে, সে ভ' কাল্পের পাভিরে-এবং জাভীর-কর্তব্য পালন করবার তাগিদে। তাই বলে এই ৰোগী, তান্ত্ৰিক, সতীদাহ, সাপ ও বাবের দেশে এসে ভো জীবন-যাপনের মান নামিরে ফেলা চলে না। আর বংশদে বার বেমন অবস্থাই হোক না কেন-এথানে এসে नकरनहे विल-लॅंडिन क्रम ठांकत-मानी बाद विलान वांश्ला-वांकीरक পাকাসাহেব। দেশের হাজারটা জিনিব তাদের প্রয়োজন।

তাই ভারতের বন্দরে বন্দরে—বন্ধে, মান্তান্ধ, কলকাতার মাল-বোবাই জাহাজ আগছে আর নামিরে দিছে মাল।

কাদার পা পুঁতে দাঁড়িরে কালো গা ভারতীয়-কুলী সেই মাল নামাছে গাঁঠিবি-গাঁঠিবি। চাবুক হাতে দাঁড়িরে আছে বে গোরা কুলী-কটু ক্রিব তার আনা-জানতিতেই হুটো-একটাই গাঁঠিবি চলে বাছে এদিক-ওদিক! কিছু মাল চলে বাছে আর হাত-বদল হবে বাছে টাকা! সকলেই বে সেই চোরাই-মাল নিম্নে থৈর্ব ধবে বাবসা ক্রছে, তা নর। বাইট-সিনিররের মতো বারা ফুভির পক্ষপাতী মাহুব—তারা হাতে টাকা নিমে সোজাম্মলি চলে বার কাঠের দোতলা ঘ্যে—সেধানে কেরোসিনের ভিবরি বোলে ছাল থেকে, আর গলার কালো স্তোর ক্রশ-বাধা, হাতে নীল উল্কি জাঁকা নানা জাতির মাহুব একই মাতোয়ালা স্থিব ভাষার ক্যাকর।

সে সৰ মান্ত্ৰ শেষ অবধি একই পথ ধৰে। কেউ শেষ হয়ে বার পিঠে চাকু খেরে—দেহটা তার জেলে-ডিভি করে নিয়ে দূর সমুক্রে ফেলে দেওরা হয়। অথবা দাতব্য মিশনারী হোমে— বোপে ভূগে শেষ হয়ে বার মান্ত্র। বাইট সিনিয়বের শেব পরিণতিটার আসল কথা জানেননি ম্যাকমোহন। নোংবা অস্থ্ৰ, না পিঠে-পেটে ছুরি, না আরো বিশ্রী কিছু! তবে কল্পনা করে নেওরা চলে—গলায় কালো প্তো, বলিঠ লাল চেছারা, নোংবা এবং বদমাইস কোন প্রোন থালাসীকে জিজ্ঞাসা করলে লে নিশ্চয় বলতো—He has gone the old old way?

দিনিরবের মৃত্যুতে নিশ্চিন্ত হরে ম্যাক্মোহন তুনিরবের দিকে তাকাতে সমর পেলেন। বোনের প্রতি অকরণ হরে বে দিনপুলো দিরেছে, সেগুলোর হুছে তিনি ক্ষতিপূরণ করবেন। এমিনির ছেলেকে মান্ত্র্য করে তুলবেন। হাজার হলেও মাত্র জাট বছর বরদ সে বালকের। বাপের ছেলে তো বটেই! কিছ সেকলংই কি সব? তাঁর বোনেরও ছেলে তো? মারের জঠবে দে শিশু বড় হরেছে! মারের সদগুণাবদীর কিছুই কি পারনি? জার তাকে বদি ভিন্ন পথে, ভিন্ন শিকার মান্ত্র্য করা বার, নিশ্চর সম্কল হবেন ভিনি। পর-জ্বান্ন তাকে বিবাস করতে নেই। কিছু এমিলি বেন তাঁকে ক্ষা করেনি। স্বর্গেই কি বাবেন তিনি? না গেলে শান্তি পাবেন?

বাইট জুনিয়র কিন্তু বাপের ওপরে-ও টেক্কা দিতে পারে।
বস্তুতঃ এ কথা বললে অত্যক্তি হবে না বে, বাইট সিনিয়র বাদের
মধ্যে পরে ভিড়েছিলো, বারা তাকে মুগ্ত করেছিলো—সেই সব থালাসী
ও বরণাস্ত জাহাজী-গোবা.দর চনিত্রের সবটুকু নিঠ রতা, এবং
পশুশক্তি সমবেত হয়েছিলো জুনিয়বের চরিত্রে। ম্যাকমোহনের
নিরাশ হতে বেশী দিন পাগেনি।

ইভি—ব্রাইট-কথা। বর্ত্তমানে ক্যাপ্টেন ব্রাইটের অবস্থিতি কানপুরে। আর তার নিভাসজিনী এক প্রকারী উত্তরপ্রদেশের হিন্দুছানী মেরে ব্রিজহুলারী। ব্রাইটের জীবনে ব্রাইট আনেক মেরে নাড়া-চাড়া করেছে। এই মেরেটা টি'কে গিরেছে কেমন করে বেন শেষ অবধি।

বিজত্পারীর চোধের নীচে কালি। পাণুর ফর্স। বঙ। স্থন্দরী, কিছ নিক্তাপ ও মলিন। সর্বাক্তে গছনা। বাইটের কোন কুৎসিত কচি সম্ভবতঃ পরিতৃপ্ত হয়। তার বিবিকে সে সালক্ষতা রাধতে এবং দেখাতে ভালবাসে।

বাইটের সম্পর্কে বত অবিধাস ও ঘুণা আছে কানপুরের ভারতীর কৌজ ও কৌজী-জীবনের মনে—সবটুকু বিজহুলারীর ওপর এসে পড়েছে। বাইটকে ঘুণা বা উপেক্ষা দেখাতে তারা ভর পার। কিছ বিজহুলারীকে মুবোগ পেলেই উপেক্ষা ও তাজিল্য দেখিরে আবাত

ব্রাইটের কাছে কোন স্থযোগ-স্থবিধার দরকার হলে ভারা আনে বিজহুলারীর কাছে। বিজহুলারী বধাসাধ্য চেষ্টা করে। মানুষগুলো পরিবর্তে তাকে কুভজুভা জানার তথু মূথে। কিছ এভটুকু অস্তব্যস্থ হতে দের না ভাকে।

তার সম্পর্কে চম্পার কৌতৃহল হোলো। ব্রিক্স্থলারীও তাকে জানতে উৎস্ক ছিলো। ছ'জনের প্রথম সাক্ষাংকার এবং পরিচয় হয়েছিলো বেশ মনে রাধবার মতো এক পরিস্থিতিতে।

তু'টি মেরের মধ্যে বেমন হওরা স্বাভাবিক, তেমনই ভাবে। সজ্মবর্ধের ভেতর দিয়ে। তিমন:।

তোমার ব্লদ্ধকালে

[When you are old কবিতার ভাবামুবাদ] (W. B. Yeats লিখিত)

চক্ষস বৌধনের শেবে প্রোচ্ছ এসেছে,
তোমার দেহের সীমানার।
বৌধনের মস্থা দেহরেখার পড়েছে ভাঁজ
অকালে আঁখি ঘোর তন্তার।
সোনালী রেশমী চুল হয়েছে পউগুড়,
এমনি সময় একদিন ভাগুনের ধারে,
ভূষি আমার বই পড়বে, ভোমার-মন
ভূটে বাবে বিগত বৌধনের বাবে।

তোষার এই মুখন্তীকে কন্ত জন
ভালবাসতো, দেহের সুবমার
কন্ত জন ছিল মুদ্ধ। প্রভাতে বিহঙ্গকাকলীজে
ধেমন স্থিতিত হর মন,
ভোমার কথার অবণাধায়ার কন্ত জন
ক্রেগছিল পড়ে মনে সারাক্ষণ।
একজন শুরু একজন ভালবাসতো ভোমার,
ভোমার মুখন্তীকে নর, আত্মাকে,
স্থার দিরে সে ভোমার ভালবাসভো।
ধৌবনের মুখরবি আর এই বুক্কালের ছবি
সভা দিরেই সে ভালবাসভো।

আন্ত শীতের সন্ধ্যার আগুনের থাবে বনে
তাঁকে তোমার মনে পড়বে।
তার প্রেমমর মুখ, তার প্রদরের প্রেম,
তোমার মনে আন্ত, বরা ফুল হরে বরবে।
কিছ তবু তার প্রেম দে আন্তি অতি তুল ভ।
দে বেন উঠেছে পর্বন্ত-চূড়ার।
অন্তর্বাবির মত দে মিলিরে বাচ্ছে,
তোমার বৌবন প্রেম তথনই ফুরার।

অমুবাদক-প্রীকল্যাণ সরকার

গৃহাস্ত্র

ত্যা ক ৩১শে ডিসেম্বর। বছরের শেব দিন । বাক্ত বিছানার
তরে বছরের হিসাব নিকাশ চলছে। অদৃত্তের তাজনার
কথাই ভাবছি। বিছানা মানে, জাহাজের ভিতরকার দোলনা।
উপর নীচে ছটো। মোটা পাইপ দিরে সমুজের ভাজা হাওরা
লাসছে। পাম্প করে পাঠানো হয়। পাশে অনেক ফোকর।
ও দিরেও কুর্ম্ফুর করে ভাজা হাওরা চুকছে। ওর ভিতরে সমুজের
দুপ্য চোথে পড়ছে। ঝড়-ছুকানের সমর ওওলো বদ্ধ করে দিতে হয়।

মনে পড়েছে পুৰোন দিনের কথা। এ সেই বোম্বাই সহর। এখানে চাকুৰী কবেছি বহু দিন। সেই চাকুৰী ছেড়ে আৰ্মিভে। আবারও সেই বোখাই। এখানকার এক খবরের কাগজ। মালিক ছিলেন একদা এক কাগজেবই হকাব। বাত কেটেছে কোনো সময় কারও বাড়ীর বারাশায়, দিনের অবিক্রী কাগজের পাতাপ্রলো পেতে। অভি দ্বিস্তা। অভুত চবিত্র! আরও অভুত তাঁর কপালের বোগাবোগ। ক্রমে চুকেছেন এক বইয়ের কারধানার কম্পোজিটার হয়ে। মাইনে খুব কম। জদয়ে প্রেমের ভোৱার ঢেউ থেলে বার। ওটা বথাসময়ে আসবেই। বাধা পার-না দাবিছ্যে। বরং হুঃখের সময় বান ডেকে আসে। প্রেম ভোরালে। হয়। বৃদ্ধিও ঘোরালো হয়। কথায় বলে—পিঁপড়ের বল, আর প্রেমিকের বৃদ্ধি। তুটোই ধুব বেশী। প্রেমে না পড়ে বৃদ্ধি খোলতাই কম হয়। এত কবেও কিছ বিয়ে হয়নি। প্রেম গভীর হলে তথন না কি তা ফস্কায়। "বাল্য প্রেমে অভিশপ্ত"— বলেছেনও এক মহিলা-বন্ধ। বুদ্ধির জাহাত। নিজেব স্তানম চিবে তা দান করেছেন এক বন্ধুকে। নিজে রয়েছেন চিরকুমার। দুবের বন্ধু নিকট হলেন। বন্ধু পেলেন বান্ধবী। বন্ধু বান্ধবী সবাই এক বাগতে, ধুব অক্তরঙ্গ ভাবে কাছাকাছি। বান্ধবী হলেন নিকটভমা। ধ্য প্ৰেম! ধ্য প্ৰেমেৰ বিচিত্ৰ গ**ভি**!

"রদরে প্রেমের আবির্জাবে ক্ষুদ্র **জলাশ**রও সমুদ্র হয়^ম—কে যেন বলেছেন। উনিও প্রেমের জাহাজে চড়ে বৃদ্ধির সমুদ্রে পাড়ি অমিবেছেন, চা খাইবেছেন, দল গড়েছেন। নেতাদের দালা ^{বলে} জ্জান হতে হয়। তাও হয়েছেন। তারপরই ছাপাধানার মালিক, কাগজের মালিক, এবং কাগজকলেরও মালিক। মস্তিকে গোবরের ভার পদার্থ কম থাকলে ও থেকে অনেক কিছুরই মালিক ^{হতে} পারা হায়। পুতরাং অনেক কলকারখানা, আফিস আহালত, গাড়ী বাড়ীরও মালিক হয়েছেন ক্রমে। স্বামার এবং স্বামার মন্ত খনেক হতভাগারাও মালিক'হয়েছেন। ভদ্রগোক টাকার কুমীর এবং আৰও কুমার। ছকে আঁটো টাকার কাঁদ। ধনভাগুার, **প**র্বভার, সাহাব্যভা**ণার, দ্**রিদ্রভাণার, দানভাণার ইক্যাদির ভাণার ধুলেছেন হাজারে হাজার। দাভাকর্ণ আরু কি! শেবে শমস্ত ভাণার গিরে এক ভাণারে কমত। সর্বদা চিনি চিনি হাসি। ^{পার} সব চাইতে মজার, তাঁর মনভূলানো মিটি কথার ভূবড়ী। ^{দিনে-রাতে} সে ৰৈ ফোটাৰ বিয়াম নেই। হাতে স্বৰ্গ পাইয়ে ছাড়েন শার কি। কিন্তু কাল্কের শেবেই হাত-পা বেড়ে ধালাস। তথন ম্বৰণ ক্ৰিক কমে বাৰ। চিনকে পাৰেন কম। Bluff এর ৰাত্কর। ^{ক্ৰা ও} কাজে বার ভ্র**ভ** ব্যবধান। সেই ঝা**ছ** পলিটিসিয়ান্! ^{ওঁদের} কথার চোৰ বু**লে সার দেও**য়া বার। পদতে হয়। কি**ছ** মনে मत्न वाप निरक्ष इद शांत्रमर्किय-वार्गनारम्य प्या गर्छ।

ना=जाना=काश्नि-

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] তাল-বেতাল

কথার দাম বার। তার চাকুরীর ভরদা কি? স্থতবাং ও মারা ছাড়তে ছোল।

নন্ষ্প রিডিং

পূবে যুদ্ধের সবে ক্সক। জাপানীয়া যুদ্ধে নেমেছে। চালের বাজাৱে হঠাৎ আগুন। ভিন টাকা থেকে এক লাফে সাভ টাকার। একেবারে ডবলেরও বেশী। চালের বান্ধারে চালের যুদ্ধ। কোধার পৌছবে কেউ জানে না। মহাত্মা বলেছেন—নিউটাল। আমরা लाक (पर ना। চার্চিলের সেই इक्षांत—"I know how to recruit." "ভববারি দিরে আমরা ভারত জব করেছি, তরবারি দিরেই আমবা তা দথলে বাধবো।" বাঙলার Famine হলো। কবি বে ভার আগেই গাইলেন—মুজনাং সুফলাং শভগামলাং—সেই লোনার বাঙলার তুর্ভিক। কারণ, বাঙলার যোরান হাত ছাড়া করা বার না। বর্ধার শিক্ষা। জাপান প্রোবর্ধা জর করেছে মাত্র সাত দিনে। বাওলায় ভুই নেতা দকিণ-পূর্ব এশিয়ার। কেলে আসা ভারতীয় সৈত্ৰ দিয়ে লিবংবেশন আৰ্মি ভয়ের হয়েছে। আমাদের স্বাধীনতাৰ জ্য। সে খবর বৃটিশ জানে। স্থভাষের নামে বাঙলার বোরান পাগল হবে বার। দে-ও বৃটিশ জানে। পাগল ডাই ওরাও হবেছে। স্তবাং ধান চাল সব হাতের মুঠোর পুনতে চার। At any cost. তিন টাকা চালের মণ। একশ টাকা হলেও ক্ষতি নেই। সে টাকা দেবে গ্ৰৰ্থমেন্ট। উপৰস্ত ধৰচা আৰও লাভ। জুটে গেলেন কন্টাকটার। সরকারকে সাহাব্য করতে। চাল বাসাবার কন্টাকট। স্থক হলো কর্ডন। চাল গিংহ পৌছল আলীভে, আর শ্বে। বিজ্ঞাপনের চটক। যুবকদের ধরা হোল সেই ফাঁদ পেভে। ধরে ধরে পাঠান হোল পাহাড়ছেরা ভারতের নিরাপদ পশ্চিম সীমা। কাটনী অব্বসপুৰ আৰু পিণ্ডি। বিজ্ঞাপনেৰ মোহ, আৰু পোড়া পেটের টান। বুব ভীরাও বন্দী কোল ওয়াকাইতে। ওয়া অফিসারদের চোৰের রঞ্জনী সুরমা। বাধক্যে রিছ্যুভেনশান। কাজে আনে উংগাহ, আগত্যে দেৱ উদ্দাপনা। সামনে বভক্ষণ অস্তভীন উংগাভ Fatiguee कम । भवन वान कारन । वाडना चाद चानाम होका ছড়ানে। হলো প্রতি ইঞ্চি মাটিতে বর্মা ক্ষরের পুনরাবৃত্তি ভারতে ঠাণ্ডা করতেই হবে। বাঙ্গা ও আসাঘে যুবকরা ঘুরে দীড়াতে পারে ञ्चारव नारम, यनि छत्र। सारम, ज्ञान स्थाद ऋत्ते। छानव "पित्री চলে।" ধ্বনি ক্ৰ'ডেই হবে বিহাবে। বাঙদা আসাম এত কৰেও বদি बाव। बाक।

চাল ধরার কনট্রাক্টে থারা এগিরেছেন সাহায্য করতে, জাঁরা সবাই উপর তলার প্যাসেঞ্জার। বদেছেন আরও উপরে ভূঁড়ি ছুলিরে ফুলিরে। নীচের তলায় হাহাকারের মহত্তম। আরও নীচে পথের উপর। শিশু বুদ্ধ নারী পুক্ষের মিছিল। বত সব হততাপার মল। পান ধরেছে—মা, ফ্যান লাও। একটু ফ্যান লাও মা, করে। এ যুদ্ধের বাজার। টাকা আরের সময়। সে কি ঐ গানের সময় ? টাকা চাই। আবও টাকা চাই। এখন শুধু টাকার পান চলবে। স্মুক্তরাং দে ভাতের ক্যানের গান কাবো কানে চুকলো না। ছড়িরে গেল অনম্ভ শৃক্তে। এবং আজও তা বুবে বেডার হাওরার।

হতভাগারা ফ্যান পারনি আবও। স্থকনা স্ফলা শুস্তামলা নাকি বাঙগাদেশ। সে ভৈরী হলো শুশান। নৃত্য চললো প্রেতের। নন্টপ্, রিজিং।

এপ্রিল ফুল !

একদা এপ্রিল মাসে। এক জিপন্ এসেছিলেন ভারতে! কী উদ্দেশ্য নিরে?

এক বাঙালী মন্তিকের চিন্তাধারার প্লাবনে। সমস্ত বেতহন্তী ভেসে চলেছে এশিরা হতে। ওরা ভাড়া বেরে পালাছে।

পুরোনো ইভিহাস। ডিসেখবে পার্স হারবার ধ্বংস হোল ভাপানের হাতে। শরৎ বস্থ চার দিন বাদে বন্দী। ভাস্করারী স্থভাবের অন্তর্ধান, বৃটিলের কড়া পাহারার কলা দেখিরে। পেশোরার কাব্লের পথে ভিনি বার্সিনে। ক্রেক্সরারী মার্চে সিঙ্গাপুর, রেষ্ক্রের পতন। অতি ক্রন্ত ভাপানীরা এসে পৌছেছে ভারতের ভারপ্রান্ত। এনে হাক দিরেছে।

প্যারীর পন্ধনের পর। ইউরোপেও বৃটেনের চরমতম ছু:সমর। লগুন বোমার উড়েছে। রাজধানী শিক্ট হয়েছে, তবু অফিসিরাল স্বীকৃতি নেই। প্যারীর বেলার ফরাসীরা স্বীকার করে ঠকেছে। স্বতরাং বৃটিশ ঠকতে পারে না। (বৃটিশ রাজধানী সরিরে দিস কলকাতা থেকে দিল্লী। তারও স্বীকৃতি দিরেছিল, পরে।) এদিকে জাপান, ওদিকে জার্মাণ। ত্র্দিক থেকে সাঁড়ালী দিরে কোপঠাসা। ভারতের অসজ্যোব। ক্রিপসের ভারতে না এসে উপার ছিল? বে ক্রিপস কশকে সাগিরেছে কাজে—জার্মাণীর বিপক্ষে।

চরমতম ছ:সধর বুটেনের। চার্চিলের চুক্টের ধোঁয়। গোলা পাকার শৃষ্টে। বাঙলা কি কবে ঠাণ্ডা হব, সেই চিস্তার। গোলার বাক্ বাঙলা! স্মঞ্জনা স্থলা সোনার বাঙলার সেই গোলা টেনে আনলো ছণ্ডিক। চার্চিলের মনোনীত পাঁচজন কনটাক্টর। ধান-চাল ধরে ধরে ছণ্ডিক স্টির কাকে মেতেছেন ওঁরা।

অতি দ্রুত বটে চলেছে বটনার সংবাত। আবর্ত উঠেছে গভীর, গন্ধীর হরে।

এ-হেন পট ভূমিকার ক্রিপস এলেন ভারতে। হাতে করে বাধীনভার স্থবর্গ স্বাধীনভার প্রবর্গ স্থানার। নেভাদের মনে পড়ে গেল ছেলেবেলার মোরা থাওরার কথা। বাধীনভার প্রস্তাব। কথার বলে—'দেধা, দেখো, ভাত থাবি?' 'না, পাভা পেড়ে বসে আছি।' পাভা নিরে বলে রয়েছেন দলগুলো সব। ভাতের ধামা কাঁবে নিয়ে বোরাক্রের করছেন বিনি, তিনি ক্রিপস। কারো পাতে পড়েনি কিছু। 'ভাত থেতে পাবে সবাই। তার আগে কথা দাও। ভোষরা কি জাপানী সামাজ্যবাদ চাও?' সবাই সমন্বরে কানে ভালা লাগিরে, চোথে ঠুলি পরে—'না, না, না, না'।

'তবে ঐ বে স্থভাব আগতে জাপানী সেনা নিবে ?'
(ওরা মনে করেছে নেজাজীও জাপানে। বার্লিন থেকে অদৃগ্র পথে আকাশের বৃক্ চিরে পৌছেছে। ওথানে বে রাসবিহারীর চিন্তাধারা কাজ করেছে বছ দিন ধরে, বুটিশ ভা স্থপ্তে ভাবেনি।) কেউ বললো—ও ফিফৰ কলাম্নিই। কেউ বললো—আমার হাতে বিভলভার দাও। আমি ওকে নিজ হাতে ওলী করবো। কেউ চাপালো উন্টো গাধার পিঠে। কেউ করলো নেতাজীর বহু যংসব। ভাতের ধামা ধামা-চাপা বইল। মহাসভার পাতা বড়ে উড়লো। বিল্ বিল্ বিল চাপা হাসি হেসে ভোজের সভা ছেড়ে বেরিরে এলেন বিনি, তিনি ক্রিপন।

শ্বং বক্স আব বাবা তাজা খুন সবববাহ করেছেন বৃক্ষ চিবে
বাবীনভার যুদ্ধে, তাঁরা সবাই জেলে পচছেন। ভাতের লোভে
বারা কথা বলছেন, তাঁরা সবাই নেতা। পাওরার পাওরার
লোভে। জেলের ভেতর বলী মাম্ব। জেলের বাইরে প্ল্যান করে
ডেকে আনা হুর্ভিক। আব এই পটভূমিতে ওঁরা চালিয়ে চলেছেন
বা, তার নাম—আলোচনা। আ-লোচনা। আব অভূত! কেউ
বলেন নি, রাজবলীরা বলী থাকতে আলোচনা চলতে পারে না
কেনো। উচিতও নয়। আরও অভূত, ক্রিপস আজাদে ফিসির
কিসির, কানাকানী আলাপ—সভাবের মৃত্যুতে মহাত্মার লোক
প্রকাশ উচিত হরন।

'সভাবের মৃত্যু হরেছে বার্লিনে'—ধবর রটার রয়টার। জার
মহাত্মার শোক প্রকাশ শবৎ বাবুর কাছে, সেই সংবাদ শুনে।
ওরা লোক চেনে। তাই বেছে বেছে আমাদের কানে কানেই
কথাটা বলেছে। কোন কথা কোধার বলতে হয়। নার্ভ চেনে
তার ভাল করে। সভাবের মৃত্যুতে আমাদের শোক প্রকাশ
করতে নেই। সে আজও আমরা তার অভে ভাবি না। ট্রেটর।
সভাবের মাথার বৃটিশ তাড়ানোর প্রান। আর আমরা তাড়িরে
চলেছি তাঁকে। প্রান করে। তাঁর প্রান বানচাল। ছই বাঙালী
ব্রেনের বিক্লছে পলা চিবে চিবে গলা ফাটিরেছি, তাই আমরা না
নেতা নামে অভিহ্নি হতে পেরেছি। ওঁকে চাপিরেছি উন্টো
গাধার পিঠে। প্রদক্ষিণ করাও সহর। দাহন কর সদর রাভার
গাধার টুলি মাথার দিরে। সর্বস্বত্যাগী সর্বশ্রেষ্ঠ ভারতীর সন্ন্যানীর
স্মান কি আমরা দিইনি ? ভ্রো স্বাধীনতা প্রস্তাব। তার
পেছনে করে আনা আশ্নাল আর্মির কররধানা।

চার্চিল হেসে নিরেছেন প্রাণপণে। মিশন শেষে ক্রিণস ফিরেছেন দেশে ব্যর্থতা নিরে ? ইতিহাস বলে,—ভাই।

কিছ ওঁর জমাট নাটিকা! অলস্ত জকরে লেখা তার খবনিকার ছিল—

"APRIL FOOL 1"

কে ? ক্রিপ্স, ? চাচিল ?

না, নেভারা ?

নার্ভবিহীন নেতৃত্ব। চার্চিলের প্রেতাত্মা হাসছে—

शः। शः। हाः। शः।

খমকে গেছে বে ফ্রন্তগতি ইতিহাসের চাকা। ভারতের খারপ্রান্তে পৌছে। মার্চে পৌছেই হল্ট। ক্রিপসের ভারতে না এনে উপার ছিল? নেতারা বন্দী হলেন আগঠ। হিড়িকের মাবে বাকার ধাকীর অনেক দরভার গড়াতে গড়াতে ঠেকেছি এনে আর্মিতে।

কিপ্স, গিরেছেন বিফলতা নিরে! ভারই নাম এপ্রিল ফুল¹

বৰ্ষ-বিদায়

কথন নিজাদেবীর আকর্ষণ ঘটেছিল। বুংমর মাথে চার্চিলের প্রেক্টায়া। ছংম্পন। অধ্চ চার্চিল আজও বহাল ভবিষ্ঠতে বেঁচে।

হঠাৎ বিকট ক্ষরের আর্জনাদৃ। ছংলপ্রের থোর কাটেনি । হাজার হাজার সাইবেন আর জাহাজের বানী। বেজে উঠসো
একসাথে। সমুদ্র ও সহর থেকে। জাপানীরা এসেছে নোমা
ফেলতে। হঠাং মাঝরাতে অভগুলো বিকট আর্জরর হতচকিত
করে দিয়েছে স্বাইকে। কর্কশ সেই আর্জনাদ আজও আমার মর্মে
মর্মে বাধা। উঠে বংসছি। শত শত সাইবেন আর বানীর রেশ।
ছুটে আসছে জাহাজ স্তীমার আর সহর থেকে তীফ্র হরে। সে
তরঙ্গে তুবে গেছে সমস্ত পৃথিবী, বেরিয়ে এসেছি, জাপানী প্লেন থেকে
বহু পড়ার আগেই।

বীপীর রেশ তথনো থামেনি। টেন চলেছে সমানে। সমুক্রে শীত কম। তবু সে নিক্ম। একমাত্র আওরাজ ঐ সাইবেন আর বীপীর। একটানা আব বিকট হবে। আকাশে চাদের চাদি নিয়ে থেলা। কিছ বাতাসের ঐ আমন্ত্রণ স্বড়িতে রাত বারটা। জালা গেল, এ বর্ধ-বিদায়ের ধ্বনি।

পুরাতন, জীর্ণ ক্লান্ত, অলেধ ছংগ্কর, অন্তত অভিশপ্ত দীর্ঘ বংশবের বিদায়। আব নব ২২সবেদ সাদর আবাহনী। ওঃ! ভাই এত সাইবেন আব বংশীধননি। নমক্তে! বিদায়!

জাপানী টর্পেডো

সকালে সূৰ্ব ভাগৰ আগেই জাহাক চলতে অক করেছে। বিকি
বিকি এজিন চলার শব্দ আসছে। জাহাজ চলেছে, কিছু থুব আছে;
কারণ কলে শব্দ হবে না। শব্দ করার উপায় নাই। বর্গা জাপানের
দবলে। আর ভারত মহাসাগরে জাপানী সাবমেরিনের অপ্রতিহত
রাজ্য। ওরা অনেক জাহাক ভূবিয়েছে। বর্গা করের পর। এখন
অনেক জাহাজ এক সাথে ছাড়ে কনভরে। ডেব্রুয়ার থাকে। ভারতের
উপকৃস বরাবর দক্ষিণে চলেছি। ক্রমে জাহাজ পুবে ঘ্রেছে। কোন
দিকে চলেছি । মনে হয়, এবারও সেই বর্গার জলস। সূর্য জাহাজের
মাধার ওঠেন, আর লেজের দিকে অন্ত বান। ক্রমে ভারতের উপকৃসও
অন্ত গেছেন, তুই-একদিন আগে। ওদিক, ওদিক, ভাইনে, বারে,
সামনে, পিছনে বেদিকে তাকাও সমানে জল। তথ্ জল আর জলপ



কৃপকিনারা পাছ-পালা বা ধড়-কুটা কচুরী পানা, কোধাও নজরে জাসে ন।। কোনো ট্রিফ নেই। সব লেপে পুঁছে একাকার। এক কথার অকৃস পাথার। ভাসহি আমরা, আমাদের আহাজধানা ধোলামগুটি।

চার দিনের দিন। জাহাজের গতি আরও মহুর। শক্ষ আরও গঞ্জীর। চারি দিক নিজক। চার পাশের জাহাজওলো বছ দূরে দূরে, ওরাও তেমনি নিঃশক্ষে চলেছে। দূর থেকে দেখা বার মাত্র। কোনো কাল নেই, নিশ্চিল্প আরাম। খাও দাও ঘুমাও। তাদ পেট, বই পড়ো আর করে। বা খুনী। কাল রাতে হাওরা ছিল। জাহাজ ছলেছে। আহাজ খেরেছে খুব। কি বিশ্রী আওয়াজ। কে বেন ধোপার পাটে আছড়েছে মনে হর। সারারাত ঐ আওয়াজ শুনে কেটেছে। ঘুম হরনি। ওবকম আহাজ খেলে ঘ্ম হয়ও না। সমুক্রে মাঝে মাঝে হাওরা হয় ঐ রকম। ঝড়-বর্ষা হলে ত'কথাই নেই। জাহাজ খুব দোলে। বমি হয়। ভাই জাহাজের ঠিক মাঝখান বরাবর এক গোপন জায়গা খুঁজে পেয়েছি। ওখানে দোলা কম হয়। সী সিকনেস নেই। নতুবা এ-ওর ঘাড়েছড়-ছড় করে অয়প্রাশকের পদার্থ তুলছে। কিছু বলবারও নেই। কারণ, সক্রকরার ঐ এক অবস্থা।

সেদিন কি বাব ছিল ? মনে নেই। সকালে কার মুখ দেখে উঠেছি। তাও মনে পড়ে না। তুপুরের আহার সেবে সবে দোলনার চেপেটি। মাধার কাছে ফোকর। খুলে দিতে এক ঝলক সমুজের ঠাওা হাওয়। প্রাণ জুড়ার। মাধাটা পরিভার মনে হছে, ওর ভিতর দিরে সমুদ্র দেখ। কি চমৎকার দৃগু। বেন একধানা ছবি। সমুদ্র আর আকালে মেলামেলি। তুই অনস্ত এক সাথে। ঐ এক বাঁক উড়স্ত মাছ। তা তুই তিন মাইল আরগা ভূড়ে ওরা ভেসে চলেছে। ওরা কি জানি কেন, উড়ে উড়ে আহাজও পার হতে চাইছে। মনের আনক্ষে ওরা জলের উপর দিরে বছ দূর উড়ছে। আবার জলে গিরে পড়ছে। আহাজে ঠোকর থাছে অবিরত। ক্রক্ষেপনেই। সালা সালা রূপোর মত গা। চকচক করছে। দেহ-সমান লখা পলা। ডেকের উপর পড়ছে। আর ছট্রুট করছে। থালাসীদের মহা তুরি। ওরা সেগুলো ধরে ধলের প্রত্যে। পরে বালা করে খাওয়া হবে।

দেখতে দেখতে ঘূষণ্ড এসেছে। বিরাট একটা কাপুনী দিরে আমাদের জাহাল থেমে গেছে। সঙ্গে সঙ্গে প্রচণ্ড বিক্ষোরণের আওয়াল। বজের আর্তনাদ কি এর চাইতেও কঠোর? সেই আওয়াল তন্তার বোর কেটে গেল। ধড়মড় করে উঠে বসেছি দোলনার। এজিনের আওয়াল থেমেছে। বদলে বেলে উঠেছে এলার্থ। সবস্তলো এলার্থ একসঙ্গে বাজছে। এ হচ্ছে চরম পরিণতির এলার। প্রস্তুত হও। সব কিছু ছেড়েছুড়ে—জামাকাণ্ড, টাকা-প্রসা, বন্ধুক-পিন্তল। বন্ধু-বাদ্ধব পর্যস্ত ছেড়ে। চরম ডাকের প্রস্তুত্তির কলে এলার্থ। এখন নেওরা চলবে ওরু মাত্র লাইক্ জাকেট। আর কিছুর মারা করা চলকেনা। জিলার্থ সমর নেই। জাপানী টর্পেড়ো বসান দিরেছে জাহাজের ঠিক মার্থানটিকে।

আমাদের জাহাজধানা ছিল থুব বড় আর ভারী। টনের কথার বলা ঠিক হবে না। নীচে থেকে উপর পর্যন্ত পাঁচতলা সমান উচি।

সবেব নীচে ওর নিজের বল-কভা। তার উপর বেঁলান, গ্রীর, কর্বচারীদের বারগা। তিনের তলার গোলন্দান্ধ। আর চারের তলার আমরা। এর মারখানে সান্ধান গোছান বিবাট ডাইনিং। পাঁচের তলার কমাপ্রারদের কেবিন। আর একেবারে উপরে নীরস গভের ব্যাপার। বড় বড় কামান আঠাল পাউপ্রার। এ্যাক এ্যাক্ মানে এ্যাণ্টি এরার ক্রাফট্। বেভিও ব্যাডার প্রভৃতির এ্যানটেনা। আর আছে জাহাজের নাক। বা দিরে ভিতরে হাওরা পাঠানো হর পাম্প করে। দেখতে ঠিক বেন কান। অব্যর্থ ওদের লক্ষা। ভেকে সমান হুই টুকরো হয়েছে। জলে ক্রমাগত ভ্রছে। রবার্য-নলে হাওরা ভরে নিরে আমিও উপরে উঠিছ স্বার মতো।

উপবে উঠবাৰ সিঁড়িতে পা দিবেছি। অভ্তপুর্ব সে দৃশু।
করুণ, আর বীভংগ। আমাদের ক্যাপ্টেন বোর। হুটো ঠ্যাং
সিঁড়ির ধাপের উপবে দিরে মাধাটা ডেকের পাটাতনে, নীচের দিক
দিরে শুরে আছেন। ওঁর মাধার splinter লেগেছে। সেই অবস্থার
উপবে উঠতে গিরে মাধা ঘ্রে পড়েছেন মনে হর। আর মাধার
থূলিটা হু ফাঁক হরে বিলুটার ছুড়াছড়ি। কাপড়-চোপড়ে প্রচুর
রক্ত। উরুতে না কোধার আরও splinter লেগেছে। মস্তিকের
পদার্থ ছুড়াছড়ি হরেও বে লোকে বাকরোব হর না, তা দেবলাম এই
প্রধম। ওই অবস্থাতেও তাঁর পিপাসা। "পানি দেও" "ওরাটার
ওরাটার" বলে চীংকার। কে কা'কে পানি দের? চাচা আপনার
প্রাণ বাঁচা। স্বাই নিক্তের নিক্তের প্রাণ পদার্থ হাতে নিবে পলারনে
ভংপর। কিত্ত বাবে কোধার?

ভড়মুড করে স্বাই উপরে ধাওয়া করেছে। লক্ষ্য সেই मार्डेक्टवाहे। ह्यांप्रधाना मार्डेक्टवाहे किम बड़े काहाटक। माधारनसः পাঁচ ছয় থানায় বেলী থাকে না। এই ভাহাজে সৰ চেয়ে বেলী দেখতি। বড বছ কমাণ্ডার চীফদের জাহার বলে সম্ভবত এই वावन्ता। चिक विवस रे अक भूटूर्छ। भव क्राय मृत्रावान अहे মুহুর্তটুকুন। একজনের অভিম শরান। তার শেষ প্রার্থনা এক কোঁটা জল। ভার জগু কত কাকুতি। কিন্তু কে দেয় ? সময় কোথার? আপনার জীবনের চাইতেও কি ও মুল্যবান? এক नारक श्रव भव छेभरव छेर्छि। किन्द नाइकरवाँ काथाय ! একধানাও নেই। নামিয়ে দেওৱা হয়ে গেছে সব কথানাই। শেৰখানাও ছাড়ছে লোক-বোঝাই। অনেক হালকা কাঠ ছিল। नाइकदर्ने किन। किन (सहै। भर ज्ञान जानिएस व्यवसा कासर्ह। প্রত্যেকে নিজের প্রাণ বাঁচানর চেষ্টায় অভির। কে কা'কে দেখে ? কত সময় লেগেছে আমাৰ উপৰে আসতে ? মাত্ৰ এক পলক ওই ক্যাপ্টে:নৰ দিকৈ চেৰেছি। তাৰ ভিতৰ এত কাণ্ড। জাহাঞেৰ কৰ্মচাতীৰা নীৰবে দণ্ডায়মান সাবিবৰ ভাবে। আহাভণ্ড ভূবু-ভূবু। জনের তলার টাই পাতবার আশার ও অভি ক্রভ মেমে চলেছে। উপরে এখনও হাজার হাজার প্রাণ-প্রাণের আলার আকৃলি বিকুলি ছুটাছুটি করছে। উদ্জান্তের মতো সে ছুটাছুটি। ওরু নিজেব প্রাণটুকু নিয়ে একটুধানি বেঁচে থাকার আশার। নিয়ভির ^{আমোঘ} বিধান। কারও পরিত্রাণ নেই। এবার জাহাজ ভুরবে। মাধার উপর পূর্য কিঞ্চিৎ হেলৈছে। আর উপায় নেই কোনো। জলে वाँभ विष्ट हे हरत। विधायि चात्रल चात्रक। चार्म (^{ध्र}र

ৰবাৰ-নলে হাওৱা ভবে নিবেছি। ওটা একটা কৰে প্ৰভ্যেককে দেওৱা হয়েছে জাহাজে ওঠবাৰ সমৰে। ওটাই একমাত্ৰ ভৱসা। কোমবে জড়িয়ে নিবেছি। সাঁভাৰ কাটতে আৰু পাঁচ জনে আমাকেই আঁকড়ে ধৰেছে। স্কুক হোল জীবন-সংগ্ৰাম। সভ্যিকাৰের জীবন-সংগ্ৰাম।

অকৃল সমুদ্রের মাঝধানে। তিন-চার দিন কৃল ছেড়ে এসেছি।
সামনেও তিন-চার দিনে কৃল পাবার কথা। বদি জাহাজ চলতো।
বারা দেধাদেখি জলে ঝাঁপ দিয়েছে, বেনীর ভাগট পায়াবী আর
মালালী। ওরা সাঁতার জানে না। ওরা নিজেরা পরল্পর জড়াজড়ি
করেছে, ধরেছে, মরেছেও। ডুবেছে সরাই। জামাকেও ধরলো।
সাঁতার জানলেও ও অবস্থার ডুলে বার সরাই। ভরে ভুলে বার।
জাপটাজাপটিও করে সরাই বাঁচার আশার। করে মরে। কিছু
বা হোক ধরে বাঁচার আশা, আর সাঁভার জানকেই বা কি! অকৃল
সমুদ্রে সাঁতার কেটে বাঁচার আশা বে কভথানি? বিশেবতঃ হালর
ক্মীরের দেশে? ওদের জাপটাজাপটির হাত হতে নিস্কৃতি পেরেছি
বহু কটে। মুঝ তুলে দেখি, জাহাজের অভিছ্ব ভতক্রণে বিলুগ্ত
হয়েছে। এ কর দিন বে ছিল সাথী, ডুবে বাবার সময় সে একগাছা
বড়-কুটো বা দেশলাইরের কাঠিটা পর্যন্ত রেখে বায় নি বা ধরে বাঁচতে
পারি। সরই সাথে নিয়ে ডুবেছে। সরে এসেছি আগেই। নতুবা
আমাকেও টেনে নিয়ে বেজ সমুদ্রের ভলার। ওর সাথী হব বলে।

শেব প্রাণতরণী ছেড়েছে আমার চোখের সামনে। আর একটু আগে এলে ওতে আমার জারগা হোত। বহু মূল্যবান সময় নই করেছি ক্যাপ্টেনকে দেখতে গিরে। কিছু সে-ও তো মুহুর্তমাত্র। আর সহজ মানবিকভাবোধ। হেলার সুবোগ ছারিয়েছি। সাঁতার কাটছি প্রাণপণে। শেব ভরণী কোথার আছে? কিছুই দেখা বার না। অর মর টেউ, চোখে-মুখে আছাড় ধার। হাত তুলে নাড়ছি। বদি ওরা দেখতে পার। দরা করে একটু তুলে নেয়। অকুল সমুদ্রে। লক্ষ্য বিহীন সাঁভার। ওদের সাথে লড়াই কবেও থুব ক্লাক্ত। প্রতি মুহূর্তে মনে হচ্ছে, হান্তব আর কুমীবের শামন্ত্রণ। শেব পর্যন্ত দল বেঁধে আক্রমণ চালাবে। আর সাবড়ে দেবে। আছো, কর মাইল জল পারের ভলার? সেকথা মনে হলে আমও প্রাণ থালি হয়ে বায়। কুমীরের ভয় তার কাছে অতি ভুচ্ছ। অগাব অপার সমুদ্র। আর আমি কুল্রাতিকুল মাহুব। হীনবদ ছলচর প্রাণী মাত্র। ঘণ্টার পর ঘণ্টা সাঁভার কেটে বাঁচার দাশা। হাক্সর কুমীর তিমির দেশে। আবও কত বক্ষের প্রাণী व्याष्ट्र, यांदा माष्ट्रय थांदा। अद जनादा, रू कारन! हांद रद कीरन! ভারত মহাসাগরের মাঝবানে। অলের সাথে লড়াই চলছে প্রাণপণে। প্রাণের আশা ছেছেছি। বতকণ ভেসে থাকা বার, সেই একমাত্র আশা। ততকণে এ-ও আশা করছি হাসরের দল বেঁধে আগমন। ওরা জাহাজেই মহোৎসব চালিয়ে বাছে। নতুবা হুই-একটার দেখা এতকণে মিলতো। এই কুল্র দেহ। ওদের স্বার প্ররোজন হরতো মিটবে না। দূর হতে তেড়ে আগমন। আর দেহ হতে এক থাবলা মাসে তুলে নেওয়া। দেহ থেকে ছাড়িরে ছাড়িরে। মনের আনক্ষে লেজ নেড়ে নেড়ে তাই থাওরা। রক্ষে চার দিক ভাসছে। ছবিতে দেখেছিলাম। ভারই প্রতাক্ষ অমুভৃতি আজ মিলবে। না:। ওরা এড়িরে গেল। হরতো দেখেনি। পরমেখরের অসীম দয়া। শেব ভরণী বেখা গেল। সেই ভরণী কাছে এলো। অথবা আমিই কাছে গেলাম। অথবা আত বা হাওরা আমাকে ঠেলে নিরেছে। সে বহস্ত আজও অজ্ঞাত ও ভগবান শেব পর্যন্ত সাহাব্য পাঠালেন। কী প্রয়োজন ছিল।

প্রাণতরণী হাতের কাছে। প্রাণের ভার নিরে তিনিও ডুব্-ডুব্।
'ঠাই নাই, ঠাই নাই, ভরা সে ভরী।' সোনার থানে নয়, প্রাণের
ভারে। কাব্দেই কট করে আর নোকোর উঠতে দিলো না কেউ।
কারণ ইঞ্চি করেক ডুবলে তিনিও মহাসাগরের তলার দিকে গিয়ে
আসর জমাবেন। অনেক দড়ি ছিল ভার চার পাশে। তথন ভার
মানে ব্রিমি। এখন ঐ ধরেই ফুলে আছি। ভালো। অনেক
সাঁভার কেটেছি। খুব ক্লান্ত। কুলেই বইলাম ঘণ্টার পর ঘণা।
একলা নয়, এই বা স্থা। আরও ডুই-ভিন জনা ঝুলছেন।
বীতের সন্ধা। ঠাণার সমন্ত শ্বীর অসাড়, অবসর। দড়ি ধরেও
বে ঝুলবো, সে আশাও কম। আর বেশীক্ষণ আশা নেই।

প্রোপ্রি অককার হতে কথনো বাকী। মাধার উপর দেখা থেল প্রেন। আমাদের না ওদের ? গ্র-বুর চক্টর দিল করেক। কি বেন দেখল। কি দেখল না। বলতে পারি না। চলে গেল প্রেচণ্ড শীতে, সমৃত্যের জলে ভিজে করেক ঘটা। আর জল থেরে, চেউরে চেউরে, আমার তথন চরমতম অবস্থা! প্রাণ বার-বার। বৈচে আছি, কি মরে আছি সে অফুভ্তিও তথন ল্প্রপ্রার। একথানা জহাজ এসেছে। দড়িও ফেলেছে। কিছু আমার শরীর মন, সমস্ত সন্তা তথন আছের, অবসার। বথন জ্ঞান কিরেছে, তথন জাহাজের নরম বিদ্যানার, গরম কাপড়ে জড়ানো, তরে। কথন কি ভাবে জাহাজে উঠেছি, সে আমার জানবার কথা নর। কিছুবা খানিকটা গরম হব আর ব্রাণ্ডি দিলে মনে হোল, বমপুরীর দক্ষিণ দরজা দেখে ফিরে এসেছি। কিছুটা আরাম মনে হচ্ছে। গুমিরে পড়েছি ক্রান্তিতে।

শুভ-দিনে মাসিক বস্মতী উপহার দিন-

এই অন্নিম্ন্যের দিনে আত্মীয়-বজন বজু-বাছবীর কাছে সামাজিকতা বজা করা বেন এক ছবিবহ বোঝা বহনের সামিল হবে গাঁড়িরেছে। অথচ মান্তবের সঙ্গে মান্তবের থৈনী, প্রেম, প্রীতি, বেস আর তক্তিব সম্পর্ক বজার না রাখিলে চলে না। কারও উপনর্নে, কিবো জন্মদিনে, কারও ওজ-বিবাহে কিবো বিবাহ বারিকীতে, নরভো কারও কোন কুজকার্য্যভার আপনি মানিক বন্নমন্ত্রী উপহার দিতে পারেন অতি সহজে। একবার মান্ত্র উপহার বিনে, সারা বছর ব'বে ভার স্বৃত্তি বহন করতে পারে এককার

মাসিক বস্নয়তী। এই উপছাবের জন্ত সুস্পা আবরণের ব্যবস্থা আছে। আপনি শুধু নাম ঠিকানা টাকা পাঠিরেই থালাস। প্রমন্ত ঠিকানার প্রতি মাসে পত্রিকা পাঠানোর ভার আমাদের। আমাদের পাঠক-পাঠিকা জেনে ধুশী হবেন, সম্প্রতি বেশ করেক শত এই বরণের প্রাহক্তপ্রাহ্নিকা আমবা লাভ কবেছি এবং এখনও করছি। আদা করি, ভবিব্যতে এই সংখ্যা উভন্মোত্তর বৃদ্ধি হবে। এই বিবল্প বে-কোন কাভব্যের কর্ত লিখুন—প্রচার বিভাপ, নাসিক বস্তব্যা। ক্লিকাভা।

কবি কর্ণপূর-বিরচিত

আনন্দ-রন্দাবন

[প্^{র্ব-}প্রকাশিতের পর] অমুবাদক—শ্রীপ্রবোধেন্দুনাথ ঠাকুর

৫২। পুরেও, ষে গাঁব গৃহ থেকে বেবিয়ে এনে, বালাসচচরেরা মিলিক হতেন কৃষ্ণ-বলরামের সঙ্গে। কিন্তু স্বধ্না, ঐকুঞ্জ যথন স-বলরাম স-বালাসচচর, ও স-বালবদাস দল বাধলেন লেলুড়েনের নিয়ে, তখন তিনি হয়ে উঠলেন রাজা আর অলাক সকলেই যেন তার মন্ত্রী। তারপর লজপুরের প্রত্যেক স্পলিতে গলিতে ধূলো নিয়ে সে কা তাঁদের গ্লোট-খেলার ধূম! কা ছড়াছড়ি, মত্তভা! সঙ্গীদের মধ্যে কর-দণ্ডের চপল তাওের দেখিরে ক্রা যথন নাচতেন, নিজের গারে প্রের গারে ধূলো মাঝাতেন, গুসর করে দিতেন সকলকে, তখন মনে হক ওঁড় উঁচিরে গজরাজের বাছোটি ঐ নাচছেন।

আর জার খেলার সঙ্গিনী হতেন ব্রজবালিকারা। নিঃস্ফোচে জারা খেলতেন। সক্সেই শিশু, একরে ওল্লেব্সে স্বাই মায়ুষ। সঙ্গীদের বে চোখে দেখতেন প্রীকৃষ্ণ, সেই চোখেই দেখতেন সঙ্গিনীদের, উ।র চোখে বে স্বাই স্মান। স্কলেই মহাধুসী হয়ে উঠতেন খেলার।

কথনও কথনও ছেলের দলের আর মেরের দলের সঙ্গে কুফোর ঝগড়া লেগে ধেন্ত। তথন তিনি তাড়া লাগাতেন গুটো দলকেই। কিন্তু তাঁরাও কেন্ট্র কম বান না। উলটে তাঁরাও কুফকে তাড়া মেরে বসতেন। কথনও হোঃ হোঃ করে হাসি, কথনও মুধ ধমধ্যে ছেলেমান্থী রাগ। বাগতেন না কিন্তু কুঞ্।

৫০। নন্দ-ত্লাল কথনও গুলো জড় করে করে পাঁচিল বর গড় ইত্যাদি তৈরী করে বসভেন, কথনও আবার অল্যের গড়া ধুলোর পাঁচিল গড়া ইত্যাদি ভেঙে দিতেন। বাঁদের গড়া ভাঙতেন তাঁরাও আবার তাঁর গড়া ভাঙতেন। কিরে আবার কুফচন্দ্র বসে বেতেন ধুলোর গড় ইত্যাদি গড়তে। আবার নিজেই ভাওতেন। এই রকমের ভাঙাগড়া গঙ়াভাঙা থেসা খেলতেন বালকুফ, আর দিবালোক থেকে দেবতারা দেখতে খাফতেন সে কৌতুক। তাঁদের কৌতুহল বেড়ে বেড, আপনমনে তাঁরা বলতেন— বাঁর একটি কটাক্ষেনা—লানি কত-শত বলাতের স্পিই হয়, স্থিতি হয়, লয় হয়, তাঁর আল সে বিষয়ে বয় নেই এত্টুকুও! তিনিই এখন ধূলি-তুর্গ ধূলি-ত্বন গড়তে আরম্ভ করে দিয়েছেন! অভিশ্রান্ত হয়ে আমছেন, তবুও নাম নেই বিরামের। গগনপাবের দেবতারা দেখতেন আর হাসতে খাকতেন আনক্ষে।

৫৪। দীর্থ দিন ধরে ধ্লোট চলত জীকুকের। ধরে ক্রিতেও ভিনি ভূলে বেতেন। পথে পথে গলিতে গলিতে তিনি খেলতেন। আকাশে খেলা করে যে ঐ শিশুস্থ তার্ট মতন প্রথেব আবেশে তিনি খেলতেন। খেলা দেখতে দেখতে অজপুরের পুর্থাসিনীদের মনে সঞ্চার হত মাতৃভাবের, আদ্বভবে তারা বলতেন—আর রে আর, আমাদের নক্ষ্মাল আর। আমাদেরও আভিনাটি ভারী স্কর্মর, ভারী নরম।ছেলেদের নিরে খেলা করবি আর। আহা কিছু খা মা। ত্তনে একগাল হেলে বলে উঠতেন 🗐 কুফ,—না, শামি সাসব না। আমার বে এতটুকুও সংস্থ নেই।

৫৫। কিছ তাঁরা কানেও নিভেন না কুফের কথা। তাঁরা বে বিভামরী মাধের জাত। অধীর আগ্রহে তাঁদের প্রেণ্ডার করে ফেলত। তাঁরা জারজবরদন্তি করে কুফের পদ্মের মত হাত ত্থানিকে ধরে ফেলতেন; ধরে ঘরে নিয়ে তুলতেন কুফফের, • • হাছী বেমন করে ঘরে তোলেন সৌভাগ্যকে। তার পরে ঘটা করে আনকরিরে দিতেন, গা মেজে দিতেন কুফের। চতুর্দিকে বেন আথোরে করে পড়ত সীমাহারা এক অহসাব। দর্ববিতীরা বৃহ্দকে থাইরে দিতেন স্বননী-ছানা। খাইরে-দাইরে স্হচ্রদের সঙ্গে পাঠিরে দিতেন ব্রে।

৫৬। সেদিন ব্লোধেসায় মেভেছিলেন জীরুক। হঠাৎ তাঁব কী বেন কী থেয়াল হস। জফুরাগিণী প্রক্ত্মির মাহাত্ম্য বাড়ানোর উদ্দেশ্তেই হোক্ বা নিজের জঠরগত বিশ্বজ্ঞানিউটিকে পবিত্র করবার উদ্দেশ্তেই হোক্ বা নিজের জঠরগত বিশ্বজ্ঞানিউটিকে পবিত্র করবার উদ্দেশ্তেই হোক্, এক থাম্চা মাটি তুলে হঠাৎ তিনি পুরে দিলেন মুখে। আশ্চর্যা, থেরে ফেললেন মৃত্তিকা! জীবলাম দেখে ফেললেন কীর্ত্তি। সহচরেরা সকলেই ফ্রেমি বালক। তাঁরা আর সহু বর্তে পারলেন না। গ্রহণ করলেন চরের বৃত্তি। তাঁরা বে স্বাই ওত্বে চর, অক্ততের চর: বলরাম তাঁদের স্থে: নিয়ে একদেগড়ে পৌছে গেলেন প্রজ্ঞানীর কাছে। বললেন—মা, মা, কুফের লোভ কিছুতেই কমবার নর। এই এফুণি সে মাটি থেরছে। আমাদের কথা গ্রাহুই করছে না। যতই বলি থেও না থেও না, ততই তার প্রবল হচ্ছে লাল্যা।

৫৭। এমন কথা শুনতে ভাল লাগে কোন্ মারেব ? শুনেই ছো মা একেবারে রেগে টভ। দৌড়ে গিয়ে একগাছি লাঠি নিয়ে চললেন। চোথের উপর ভূক বাঁকিরে 'চোখ পাকিরে ভর দেখিরে বলনেন—ওবে অদান্ত ছেলে, মাটি খাচ্ছিস কী বলে ? পৃথিবীতে চিনি-মিছবি কি কিছু মেলে না ? মাটিভে কোন স্বাদ ? পরেব বরে ছকে, চুবি করে অপরাধ করে, সেদিন আমার ঠকানো হয়েছিল, এবার আর পাব পাবে না। দোব ঢাকা দেখাছি। আগে ভো এমন ছিলি না ? এই ভোমার দাদা বরেছে, এই ভোমার সাধীরা রয়েছে, সবাই ভো ভাবা সাকী।

৫৮। জননীর ভবে কৃষ্ণ তথন জ্বীকার করলেন সমস্ত।
জ্বপানী হয়েও নিরপরাধীর মত ছল করে ছ'নরন ভাসিরে ফেল্পেন
জ্বলীক নরন-জলে। বেন জনীতি দোব খণ্ডনের জ্বেট বললেন—
মা, কই, আমি তো মাটি ধাইনি। এরা স্বাই মিধ্যে কথা বলছে।
বিদ না বিশাস হয় আ্মার মুধের ভিতর্তী চাও, দেখ। এজরাজম্মিরী
বললেন—বেশ, হাঁ কর দেখি ?

বলতেই, নিখিল সোভাগ্যবান প্রীভগবাদ অমস্তগ্রন বাঁগ তথ

ভিনি প্রথবে একটু হাসলেন, ভারপর ব্যাদান করলেন তাঁব বদন।
এবং সেই ইা-টির মধ্যে বশোমতী প্রথমে দেখতে পেলেন ভূর্কোক।
সেই অচলা পৃথিবীতে কত পারাবার! সাগরঘেরা সপ্তাস্তরীপ!
ভরী ভীর মাম্ব! পভীর গর্জানে ভূটে চলেছে নদ-নদী! বিপুল
ভালের দৈর্যা। কত কানন, কত উপবন! বাতাসে ত্লছে লভা
ভক্তলা। মৃগ, মৃগরাক ঘুরে বেড়াছে, দ্ব মেরুলোক পর্যান্ত কত
পাহাডে।

তারপবে তিনি দেখতে পেলেন নাগলোক। নাগনায়কেরা উজ্জ্পক্ষের র্য়েছেন পাভাগ, কাছে বদে দেবা করছেন নাগ-নাগরীরা।

ভারপরে রশোমতী দশন করলেন ভ্রলেকি। সেই ছত্ত্রীক প্রকেদিন করে রেখেছে কত ভারকা, কত গ্রহ, কত নকত্ত্র!

ভারণরে দেখলেন স্বলেকি। গন্ধ সিদ্ধ বিরর চারণ বিভাধরেরা দেখানে রাজমান। বিভার আধাবভূত মরীচি আদি মুনিগণ তথার ধ্যানসীন। তাঁদের দিব্য অভিতেই স্বর্গ এত শোভামর, যশের এত আভাময়।

দেখলেন মহর্লোকাদি অন্ত লোক। দেখলেন অধাগামী ও উর্বপামী জীব নিক্ষের কায়ায় ভরা এই জ্ববিল একাণ্ড। তারপরে দেখতে পেলেন নিজেকে নিজের পতিকে, নিজের ছেলেকে, এমন কি সমগ্র অ্লুলোকটিকেও।

१४। (मर्थडे,---

এ কি আমার ভ্রম না খপন ? এ কি দেবতার মারা, না ইন্দ্রভাল ?

না, না, এ কি আমার এই গোপালেরই জামক-শক্তি ?

ভেবে কিছুই নির্ণর করতে না পেরে বশোমতী খোর মোহে আছের হরে পড়ালন। ভারপর প্রশিধান করলেন অনস্তবেগমরের বৈভব! কিছে এত দর্শন এত পাণ্ডিতা সংস্তব্য তিনি কিছুই বেন ভ্লতে পারলেন না। তাঁর কেবল মনে হতে লাগল—শার আমি আধীনা, বাঁর কাছে আমি আ-নতা, তাঁর কুপাতেই আহা, আমার এই দর্শন হল। তিনিই আমার শরণ। তিনি অভ্তুত, অত্যাশ্চর্য্য, মহান্। অলোকিফ ঐথর্য্য দেখিয়ে তিনি নিশ্চয় মোহে ফেলতে পারেন মহেশ্বকেও। এই প্রভাই তাঁকে বেন জানিয়ে দিল, তাঁর নক্ষনটি অতথ্য ইশ্ব।

কৈছ জননী শ্রীবশোদার মন চাইল রুক্তকে পুত্রভাবে। ঈশরভাব ও পুত্রভাব—তৃই ভাবের শোভার অতি ভারে তিনি বেন একেবারে ভেঙে পড়লেন। পুত্রভাবটিকে বিসর্জ্জন দিয়ে আঁকিড়ে ধরে রইলেন চরম ভাবটিকে। বেমন করে আঁকেড়ে ধরে রইল তাঁর কোল— তাঁর লীলা-শিশুটিকে, তাঁর নন্দ-ছলালটিকে।

> ইভি মৃংভক্ষণ-সক্ষণো নাম পঞ্চম: স্তবক:। ষষ্ঠ স্তবক

১। একদা,—বাল-ভগবান তথন শৈশ্ব-কলার কৌশলী হয়ে উঠেছেন, নশ্বাণীর সথ ফল, নিজেই দ্বিমন্থন কর্বেন। ব্যভতি দাসী। তিনি ভালের কার্যান্তরে পাঠাতে চাইলেন, বললেন, বা ভোৱা—কিন্তু বললেই কি তারা বেভে চার ? শেবকালে ত্কুম কর্লেন। ত্কুমেরই ক্ষয় হল। হেরে পালালেন দাসীরা।

মা তথন বদলেন দই মইতে। আর নশ-ত্লাল **দীড়িছে** দীড়িরে দেখতে লাগলেন—দংমিখন।

শোভায় প্রথব

সুকর মনোচর--

(महे परिषयन ।

নন্দবাণীর অমলকোমল ত্থানি করণ লব একবার টানে একবার ছাড়ে মন্থনদাম তারপবে আরও জোবে, থামার আর নাম নেই । । একটু একটু একটু এবে ভেবে আলে হাতের পাতা। তব্ও এই আকর্ষণেরই কেমন বেন একটি মহিমা আছে। জাগার আনন্দ । মণিবজের বলনিছে তাই ঝলার দিরে নাটুকে নাচ নেচে ওঠে পালার গোছা-গোছা বালা, আর ঝলারের লালত ব্থবতার মান হরে বায়—পালের পাপড়িকে ঘিরে ভামরের নেশা ধরালে ওঞ্জন-পান। হাতাজনক হয়ে ওঠে নন্দরাণীর ত্থানি সেই ভোগের বাছর ব্যবহারের বহর। ত্তিই বেন দওন-পশ্তিত। খামে ভেসে খার প্রীর্শোদার গা।

দুই মুইতে থাকেন মা।

আর তাঁর কপালের অলকওচ্ছ লাফিরে লাফিরে নাচতে থাকে লালিত-লালিত। বে মণিছার কাঁবের উপর দিরে তাঁর পীবর স্তনতট ঘিরে নেমে এগেছে, ঘন-ঘন আন্দোলিত হতে থাকে সেটি; দোলনের মিশ্রছন্দে সঙ্গে হঙ্গে ছুলতে থাকে তাঁর ক্ঞুলিকা।

তথন কী স্থান্দর বে দেখতে হয় কানপাণার মণি-কিরণ মঞ্জী। হু কানের কক্ষকে পাশ বেয়ে অবিছিন্ন করে পড়ে সে লাবপাের স্থাধার। মাধুথের আজে, ছিটিয়ে আয়ে। বেন মাহন করে ভালে নন্দরাণীর বাড আর কাঁধ।

ভার তথন মণি-মেথলা বাজতে ধাকে কণ্, কণ্, । মঞ্লা ও পৃথ্লা ভোণির শোভার গরবে গরবিণী সে। মণিমেধলা বেঁকে বেঁকে বাজতে থাকে কণ্,কণ, ।

দই মইতে থাকেন মা ৷—

শিথিস হয়ে বায় কবরীর শিল্প-বিশ্রাস, চুল থেকে থসতে থাকে মণি আব ফুস; রাত্রিব ভারাদল বেন সোপান বেরে নেমে আসেন ধর্মীতে।

আর একটা মন্ত থা-করা দবির ঘড়ার দই মইতে থাকেন মা বিভাব মধ্যে গুলে গুলে ফুলতে থাকে খন-খোর এক শব্দের সমুদ্র। ছলাং ছলাং উথলে উঠে ছিটকে পড়ে বোল গোনার শাড়ীর ভেসে বায় আঁচলা। আর দেই সঙ্গে মারের মনেও চলকাতে থাকে গর্বা। বলি, এমন নতুন চঙে আর কি কেট তুলতে পারেন ননী! এত ননী? আঃ মরি মবি, তনরটি আবার্য সূত্রী চোখে গাঁড়িয়ে গাঁড়িয়ে দেখছেন, ঘামে ভেসে বা নক্ষরাণীর গা।

মারের চোঝে চোঝ পড়তেই বাস্কুঞ্বের কেমন বেন হঠা। ছলছলে তরল হয়ে বার মন। তার সাধ হর, মারের বুকে: তুব থাবেন। ভাই নেই-কিলের অভিনর করে বলেন---

মা মা, আর মই দিসনি মা। দেরী হরে বাছে। আদ আমাকে কট দিসনি মা! আমি বে ভোর হুব থার। বৃলুতে বুলুক্তে মারের হাতের মন্ত্র-ক্ষেতিকে আঁক্ডিরে ধ্রেন কুক। আ নে কি বে আঁকিড়ে-ধরা! উপস্থিত দাসীদের এক নিমেবেই বেন^র হবে বার---মনোমন্ত্র।

২। কী অনস্ত রমণীর চরিন্তির বাবা ছে:লর! ছেলে উঠলেন দাসীর দল।

बै এक व्रखि इतन अदर कि !

ব্ৰহ্মাণী তথন মন্থনদণ্ডীকে বিস্ঞান দিয়ে কোলে তুলে নিলেন ভাঁয় কুফকে। কী কোঁকড়ানো কোঁকড়ানো একমাথা চুল! ছুধ দিতে লাগলেন মা।

এমন সময় প্রীৰশোদার কানে এল, কোথার যেন সোঁ-সোঁ করে একটা শব্দ হছে। ঐ বে, ঐ বুঝি হুব উপ্লোলো। নিজের মবের কাছেই উন্থনে হুব চাপিরে এসেছিলেন—পুত্রের জ্ঞা । বাতাস পেরে অলে উঠেছে উন্থন, সনগনে আঁচে সোঁ-সোঁ। করছে ছুবের কড়া। কুফকে স্তন-ত্যাগ করিয়ে তিনি তথনি তাঁকে বিনিরে দিলেন মবের ভিতর এবং ছেলে কেলে চলে গেলেন হুব সামসাতে।

নন্দ হুলাল বেগেই লাল! নিমেবে এঁটে ফেললেন মতলব।
তাবপর উঠে পড়লেন সেধান থেকে। ভাড়াভাড়ি। তার পরে
নিলের নোড়া দিরে ফাটিয়ে দিলেন দই-এর বড় থোয়া। ভাড়লেন
তো বটে, কিছু রাগে জার ভরে তাঁরও মনধানি ভাড়তে লাগল।
কারণ, চছুর্দিকে তথন সাপের মত এঁকে-বেঁকে ছুটে চলেছে
মাঠা-ভোলা দই-এর শতধারা। ধুরে বাচ্ছে চৌকাঠ, এখন কি

নক্ত্লাল বন্ধ করে লক্ষ্ণ দিলেন পালের ববে। ববে লুকানো ছিল, মান্থবের চোৰে না পড়ে এমন স্থানে, নবীন নবনীতোলা মৃত। নব প্রবাদ্ধে ননীর বি-টিকে নামালেন। একটু থেলেন, হাতের তেলোর সংগ্রহ করলেন একটু। নিতে নিতেই বেন মন থেকে সম্পূর্ণ দূর হবে গেল বাগ। মা দেখলেই কিছু বিপদ! অতএব তিনি, বিনি দেব-দেবেক্রাদি-বন্দিত নক্ষ্ত্লাল, তিনিও মারের তব্বে ছি-টিকে হাতে নিরে চরণ ফেলে পালালেন।

প্লাবনের সপক্ষে ব্বের পালেই ছিল পক্ষার। বার দিরে বেরিরে একলন বাইবের আডিনার। রঙ্গমঞ্চে দেখাবার মত কীর্তি বটে নক্ষ্পালের! আডিনার ছিল উদ্ধল। গম ভাঙবার সমর মন্ত্র তথন। তাই আধাম্থী ছিল। সেই উদ্ধলের পিঠে হস্তদন্ত হরে চড়ে বসলেন খলনিহন্তা প্রীকৃষ্ণ। এবং জননীর ভাগমন-প্রের পানে সাবধানী নয়ন হানতে হানতে খাওয়াতে লেগে গেলেন নবনীত, বাঁদর-ছানাদের।

৩। এদিকে নন্দরাণী জাল থেকে হুধের কড়া নামাতে এলেছেন।

নিজের সৌভাগ্যমহিমার জগৎজনের বিনি ত্রাণকর্ত্রী, তিনিও কড়া নামাতে নামাতে ভাবতে লাগলেন—

ভাগ্যদেবতার কী অপার কৃষণা। এমন ছেলে কি কারো ঘরে বরেছে, না কেউ পেরেছে? অগ্নাস্তবের পূণার জোরেই আত্ত আমার এত মান, বল:। ভারতে ভারতে বলোবিভার সৌল্ব্য-ম্বাতা হরে উঠলেন জীবলোলা।

তুধের কড়া নামিরেই, কুফকে কোলে তুলে নেবার জন্তে নকরাণী কিরে গোলেন দেই খবে, বেধানে ভিনি বদিরে বেখে এসেছিলেন তাঁব ত্লালকে। সিমেই দেখেন তনর নেই। চমকে উঠল অন্তর। কোধার গেল সে, অন্থলনান করলেন। তারপরে হঠাৎ তাঁব ক্ষমটিকে বাধিত করে দিয়ে তাঁব চকু তৃটি তাঁকে দেখিরে দিল, সামনে ভেডে পড়ে বয়েছে দধি-গর্গরী; ঘোলের মোটা মোটা অকস্রধারা ছুটে চলেছে; ধারার ভেলে গেছে ঘরের মেঝে, শাদা হয়ে গেছে, পিছল হয়ে গেছে। গুরুতর ব্যাপার! কী জোরেই না ভেভেছে ঘড়া! ধোলামকুটি হয়ে গেছে।

মারের বিশ্বর বলে উঠল, কী করে হল ? হঠাৎ কেমন করে ভাঙল এত বড় বোলের বড়া ? রীভি নির্ণর করতে পারল না। তারপরে ফিরতেই বিশ্বরের চোখে পড়ল, নোড়া!

এ আমাৰ হুষ্টিৰ কাজ ছাড়া আৰু কাৰো নয়।

ে বিশ্বয়-চিকুর হেলে উঠল মারের নরনে। বাম হাতের লগিত তেজ্ঞানীটি লটকিয়ে গেল নালার শিখরে। চকিত অভিমানের আঘাত লাগা সত্তেও মলিন হল না তভ্জেদর। বরং স্থানের দরা হল।

কুত্রিম ক্রোধে হুদ্ধার বিরে বেই তারপরে নক্ষরাণী ছেলের সন্ধানে বাইরে বেরিরে এসে গাঁড়িয়েছেন, অমনি তিনি দেখতে পেলেন—তাঁর ছেলেটি—তেজের প্রভাপ বাঁর অপ্রভিহত, চুরিব লীলার বালাই নেই বাঁর গ্রেবির, তিনি সভরে লাফিরে নেমে চঞ্চল পারে ছুটে পালাছেন।

মারের বজুনিকে বড্ড ডর, না ? পরাক্ষমের অন্ত নেই, না। পাছু পাছু ছুটলেন জননী। কিন্ত জননীটি পটীরসী মহীরসী মহিবী হলে হবে কি ; তিনি তাঁর ভাম রঙের ছুধের শিশু মোহন দেবতাটিকে ডাকতে লাগলেন —

भाषा, भाषा, জগতের প্রলা ধৃত্ত, ধরে আর দৌড়স নি।

৪। মা বত ডাবেন, ছেলে তত পালায়। বাঁকা অভিমানে উঁচিয়ে উঠেছে ছেলেথ মন। গৌড়ন আৰু ফিরে ফিরে যাড় ফিরিয়ে তাকান, মা আসছেন কি আসছেন না। বখনি গেখেন, থেয়ে আসছেন মা, আলোয় ঝলমল করছে মায়ের গা, ডখনি আবার নতুন করে অতি ভয় জাগে মনে। আবার কৃষ্ণ পালান। ঐ দেখ—

নশহলাল তুর্ণ গতিতে দৌড়ছেন, মারের দিকে মুহুর্ছ:
চকিত নরনে চাইছেন, মনোহবণ ভঙ্গিমার গ্রীবাধানি স্বরোছেন।
তার পরে ঐ দেধ কাণ্ড—শিছন দিকে চোধ হুটিকে নাচিরে নাচিরে
বেন চুঁড়ে ফেলে দিরে—ছঁম, ও:, আ:, হা: কাতরাতে কাতরাতে
বেন চেঠার ঘটেছে কতই না ব্যাঘাত—হঠাৎ তিনি জমে গেলেন!
চলে পড়লেন আভিনার। আর, কৃত্রিম কোধে ভরা জননীর মন
শীতল হবে গেল মুহুর্তে।

ল নন্দ্রাণী তথন বললেন—ওরে ধৃষ্ঠ ছেলে, অমনি করে আর
কত-নিজিবি, কোখার বাবি ? আর দৌজসনি বাছা, জিরো।

কথাও বলছেন মা, আর ভার নশস্ত্লালও ভডক্ষণে হাত ফাকরে নাগালের বাইরে দীড়িরে বলছেন—বদি মা আমার না মারিস—আর হাত থেকে লাঠিটা বদি ফেলে দিস, ভবেই আমি পালাব না েজাবে - প্রে।

মা। মার থেতেই বিদি ভোর এত ভর, ভাহলে আল খোলেব বড়া ভাঙলি কেন ? কু। সন্তিয় বলছি মা, জার জামি করব না, হাত থেকে মা সাঠিথানা কেলে দে।

৬। প্রের কথা তনে কিঞ্চিং আশ্চর্য হয়ে গেলেন ব্রজ্বাণী। বাইরে ক্রোধের তাণ ফলিরে বেই কাছে এগিরে পিরে ধরতে বাবেন জার ছেলেকে, অমনি কৃষ্ণ টেনে দৌড়। পাছু পাছু দৌড়লেন মা। মারের দৌড়নি দেখে সত্যিই ব্যাকুল হল কৃষ্ণের মন। এবার বললেন—মা, ভোর হাভ থেকে ঐ ভয়য়র ধরথরে লাঠিখানা কেলে দে মা! আগে সত্যি করে বল আমার মারবি না মা, তাহঙ্গে আমি ভোর কাছে বাব। তুই তো বা আর পাপ করিস নি।

কচি কচি কাতর কঠের মিন্তি শুনে ব্রজ্বাণী হাত থেকে শেষে কেলে দিলেন লাঠি।

দূর থেকে দাঁড়িরে শাঁড়িয়ে বালকৃষ্ণ দেখলেন, দৌড় বন্ধ করে এবার বসলেন জিরোতে।

৭। কৌতুকের এই আতিশবাটি দ্ব হ্যলোকে বসে অবলোকন করছিলেন দেবভারা। প্রথমে তাঁদের মুখে ফুটে উঠল প্রম বিশ্বর, তারপরে বিশ্বরের হাত্য, ভারপরে হাত্যের প্রীতির প্রসরতা। আহো আহো, করে তাঁরা মুখচাওরা-চাওমি করে বলতে লাগলেন— আত্যাশ্চর্ব্য, আত্যাশ্চর্ব্য। আহের কথা ছেডে দিন। বে ভর প্রাক্ত্র্ব্যের অব্যানে ব্রহ্মারও স্থানের আব্যে প্রম বৈকল্য, সেই ভরই আবার নিত্যকাল ধরে ভর করে চলেছে বাঁকে, সেই তিনিই কি না অভি ভাত হরে পড়েছেন ক্যারের হাতে ঠ্যাকা দেখে। আত্যাশ্চর্ব্য, আত্যাশ্চর্ব্য,

৮। নশ্বাণীর তথন নিংশাসের বাতাসে ঘল ঘন কাঁপছে কঞ্লিকার অঞ্চন, শ্রমজনের ক্লিকার অলক্ষত হয়ে উঠেছে বদন-সবোজ . শিথিল হয়ে পড়েছে কুম্বলকলাপ ; ঐ একটুথানি দৌড়োনতেই অবসর হয়ে পড়েছে চরণ-ক্মল।

ধীবে ধীবে তিনি ছেলের হাতথানি ধরলেন। দীন-নহনে কৃষ্ণ তথন বলে উঠলেন—মা, আর আমাকে মারবি না মা, বল্ ? আমার কৃষ্ণো মারিসনে মা।

বলতে বলতে প্তের পদ্ম-আঁথি পূর্ণ হরে পেল অঞ্চৰণার।
নবীন পদ্মের পাণড়ির মক্ত ত্থানি করতল দিরে তেলের তথুন সে
কী চোধ-পোঁছবার ঘটা ! কঠের দে কী আধ-আধ গুলন !
ফোলা-ফোলা চাদমুখে সে কি স্থাবিন্দ্র নিজন্ম ! ভীত-ভীত সে
এক অভিনব ক্রন্দন ৷ বিলোধনীর হরে উঠলেন শ্রীমান নম্প্রদাল।

মা তথন ঠিক করলেন—কিছুকণ একে বেঁধে রাখতে হবে। বিদি না বাঁধি, ভাহলে বা রাগী ছেলে, কথন আবার কোথার বনে অঙ্গল রাগের ঝোঁকে পালাবে। সম্প্রতি ওকে বাঁধি। ছেলের মহিমা বোঝা ভার!

শত এব বিকশিত চাক্ল-দম্ভ ক্ষমন্ত ত্লালটিকে নিয়ে নন্দরাণী নিকটে এলেন উপ্ধলেষ। কথন আবার কি বেংকরে বদবেন ছেলে। বন্ধনের বিহিত ব্যবস্থার উদ্দেশ্যে তিনি ভাক দিলেন— ওলো কুষ্প্ৰতি, লব্দ্বতি, বেশ নর্ম আর মোলায়েম দেখে। এক গাছি পাটের দড়ি নিরে আর তো•••তাড়াতাড়ি।

১। পট-দাম নিবে তাঁবা এলেন। জগতের বিনি অবিতীয় বন্ধু, তাঁকেই বাঁধবার জন্তে এত বহু এজেখনীর ৷ চাতের ভিতরে দড়ির কোমলতা অফুডব করে তিনি আনন্দিত চয়ে উঠলেন।

দেখতে দেখতে আঙিনার উপস্থিত চরে গেলেন ব্রন্থপুরের করেকটি পদ্ধীবাসিনী। জাঁবা সকলেট বেন সম্পদের লীলাবনী, বাংসল্যবসের সাবমণি। জাঁদের ছেলেরাও এসেছেন জাঁদের সঙ্গে। তারপর বা ব্যাপার ঘটল। সেটি এই—

পটদাম দিয়ে প্রথমে বেই কুফের কটিদেশটিকে বেইন ক্রছে গোলেন ব্রহাণী, দেখলেন ত্'আঙ্ল ক্ম পড়ে গেছে ঘেরে। আর একগাছি দড়ি আনিয়ে গিরো দিয়ে আবার ভঙালেন কটিদেশ, দেখলেন সে দড়িও খেরে ক্ম পড়ে বাছে ত্'আঙ্ল। আর একগাছি ভোড়া দিলেন দড়ি। তাতেও সেই ত্'আঙল ক্ম। ব্যাহের মত হান-বৃদ্ধি বহিত হয়ে বইল পট্নাম।

১০। শিভিয়ে শিভিয়ে ঠার দেখতে লাগলেন পৃষ্ট্রীরা। কিছ ব্রজ্বাণীর কোপাবেশ কিছুতেই কমছে না দেখে ক্রোবটিকে নির্মৃত্য করবার উদ্দেশ্য পদ্ধীবাসিনীরা বলে উঠলেন—

ধন্তি মহাবাণী ধন্তি। জগতে এমন ভাগি। আব কেউ কথনও করেননি। আশ্চর্য কাণ্ড। কুফোর কোমরে ঐ ভোন-শ্রভার মতন্দ পড়ে ররেছে সোনার মেথলা। ঐ ভো আভ ভোট। কিছু আবাক কাণ্ড, এখন ঘ্তরে সমস্ত দড়ি দিবেও--বাধন ভোল না গো, ক্রেলালো না। বলেন কি মা-জননী, সারা দড়ি জুড়েও সেই তু'লাজ্ল কম। নিশ্চবট বহু এ আছে মা, রহন্ত আছে। আব থাক্--এবার কান্তি দিন।

পল্লীবাসিনীদের ক্ষান্ত হল বচন, কিছু জনস্ত হল ব্রজ্বাণীর বিশ্বর। ক্ষেত্র কীর্ডিটি কম্বন্ধ গড়াব, দেখতেই হবে, এই দ্বির করে মুখে হাসি টেনে তাই বললেন, আমার ববে এই বক্ষের আর তো দড়ি নেই। আপনাদের বাব বাব ববে আছে, নিবে আস্থন তো সেগুলো।

প্ৰকাৰা পদ্ধীবাসিনীৱা দড়ি জানতে বে বাঁৱ ঘবে দেছিলেন। বাগের মাধার বা শক্ততা কবে বা ব্রক্তেশ্বীৰ জাদেশে ভর পেরেই বে তাঁরা দড়ি নিয়ে কিবে এলেন তা নর, জানজের পরম কোডুহল এবং লোকাতীত চবিত্র দর্শনের উপ্ত জাগ্রহ, তাঁদের দড়ি হাতে কিরিয়ে নিয়ে এল ব্রন্থবাণীর জাভিনার। নক্ষ্কলালের কারা তথনো ধামেনি। শৈশব-নাট্যের পারিপাট্য দেখিরে তিনি তথনও জ্বোবে ব্রাচ্ছেন নরনকমলের জলকণা, চোথ ঘবতে কতই না বেন ব্যথা পাছে তাঁর পালার মত কোমল হাত। তাই কাদছেন। কারাও এত মিটি হয়। সেই কারার সারগাম কোমলের চেয়েও কোমল, সেই কারার জ্বাক থ বেন গদগদগদন-বাণী ভাষর!

ক্রমশ:।

পুণ্যে-পাপে ছথে-ছথে পভনে-উপানে মাহ্ব হইতে দাও ভোষার হস্তানে।



প্রিদিন বথানিরমে গুরু হলো ওদের বারা। একটু পরেই তিয়েলিং বলকেন, আজকের আবাশটা বড় ভালোমনে হছে না। আকাশের রাটা গেন ঘোলাটে হায় আসছে। বৃষ্টি গুরু: হলে আমি আশ্বর্ধ হবোনা।

সভিটেই তাই, আধ খণ্টার মধ্যে বিম্-বিম্ করে বৃষ্টি আরম্ভ ছলো। একে এ তুর্গম পথ, আপনা হতেই পাশ্লিপ করে, তার , ওপর আবার বৃষ্টি! একটা টাট একবার পা হড়কে ত্মড়ে পড়লো।

সকলেই আড়েই হয়ে উঠলো ভয়ে। থুব সাবধানে হাঁটছে আর পথের দিকে প্রথম দৃষ্টি রাধতে হয়েছে।

ক্রমে বৃষ্টির পরিমাণ বাড়তে থাকে। তিয়েলিং বললেন, বেশী দূর বাওয়া যাবে না এ-ভাবে।

উপায় ? বিগে:স করে শাস্তম ।

কোনো জায়গায় তাঁবু থাটিয়ে বসে জপেকা করতে হবে। বললেন তিয়েলিং।

কৈন্ত, কোথার বদবে তারা, দাঁড়াবার স্থান পর্যন্ত নেই। এদিকে একটানা বিংববিধে বুটি চলছে। চোধের সামনে সমস্ত



[প্ৰ-প্ৰকাৰিজ্যে পৰ] জ্ঞীশৈল চক্ৰবৰ্তী দৃশুপটি বেন মুছে দিয়েছে কে! একটা বোলাটে পাওে বাবের বাপা-বৰ্ষনিকা বেন চারি দিক আছুর করে বেথেছে।

হঠাৎ একটা শ-শ-শ করে শব্দ ভেলে এল সবার কানে। শেরণাদের নেতা টংংকার করে উঠলো, সাবধান। ধ্বস নামছে।

কোথার ? কোন দিকে ? সকলের বঠ থেকে বেরিয়ে জাসে ঐ একই প্রেয়।

চোধের সামনে তিবিশ গঞ্জ পুরের জিনিস নন্ধরে আসে না। দেখবেই বা কি করে ? ওদের পারের তলার মাটি সরছে নাকি ? বিদ সরেই বা, যদি ওদের ঠিক ঐ জারগাটি পাহাড়ের গা থেকে খসে নেমে বার, তা হলেই কি ? করবার কি আছে ? আগে পোলেও বিপদ। পেছনে হটলেও বিপদ থাকতে পারে। তিয়েলিং বললেন, চওড়া বাস্তা হেড়ে সক প্রধার এসে দাঁড়াও, রক্ষা পেতেও পারি।

লালীর মনে হলো, বেন তার সর্বাঙ্গ পাথর হয়ে গেছে। কিশোবেরও বুক শুকিয়ে গেস। বেঁবার্ঘেঁষি করে দীড়ালো সকলে, বার ভো সকলেই মরবে একসঙ্গে।

আবার একটা আওরাজ ধদ-দ-দ। আকাদের দক্ষিণ দিকে
মেবের একটা ফাঁক দিরে এক বসক স্থানোক এনে পড়লো।
সে আলোটা বেধানে এসে পড়েছে, গলানো রপোর মন্ত সেধানটা
ঝক্-ঝক্ করে উঠলো। সেই আলোর দেখা গেল প্রার হু'দ ছাজ্ব
দরে পাহাড়ের গা থেকে পাধর আর বরফের বিরাট একটি অংশ
ঝরে রাছের নীচে। ক্ষীণ একটি আওয়াজ আর তার সজে মনে
হলো, কী মোলায়েম ভলিতে নেমে চলেছে। সঙ্গে বা পড়ছে,
ভাকে নিয়েই নামছে। হু' হাজার ফুট নীচে এক বরফগলা নদীর
শ্রেণ্ডের সকে নিশে গেল ও-গুলো।

ওরা দেখলো এই দৃগু পাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে। এ যেন স্ভার প্রতীক্ষায় দাঁড়িয়ে থাকা।

ক্ষকণ বে এই ভাবে ছিল জা ওরা জানে না। ভবে কুষ্ণ ঝটিকা সবে গিরে আবার যথন রোদে ঝল্মল করে উঠলো চারদিক, আর আকাশটা হয়ে গেল ঘন নীল, তথন ওরা বুঝলো বে ওরা নিরাপদ হয়েছে। জ্ঞান্ত: তথনকার মত।

ভিয়েলিং বললেন, মনে রেখো, আমরা ব্রফের রাজ্যে পা
দিছেছি। বে দৃশু তোমরা দেখলে, এ সব এখানকার নিজ্য ঘটনা।
এখানে আছে ব্রফনদী, আর আছে ছুটস্থ ব্রফের পাহাড়, যাকে
বলে গ্লেলিয়ার। এরা হচ্ছে মৃত্যুর দৃত। আমাদের ভীবন
এখানে অভি তৃক্ষ জিনিস। এক সুংকারেই তা নিবে যার।
আমাদের দেহের কতটুকু সামাল উত্তাপ। এক নিমেষেই তা জ্লে
হিম হয়ে বেতে পাবে। বেঁচে থাকা এ বাজ্যের নির্ম নর।
তাই তাকে গ্রাদ ক্রতে শত শত মৃত্যুক্ত ছটে আসে।

তিরেলিং-এর কথাগুলি ধরা মন দিবে গুনছিল। চোধের সামনে ওরা দেখলো, তুবাবধবল শিথবের পর শিথব। উঁচ্-নীচ্ সাবে সাবে দাঁড়িয়ে। তাদের গারে অপরাত্নের সূর্য্যালোক বেন সোনা চেলে দিয়েছে।

ঐ হচ্ছে কাঞ্নজ্ঞা। বলগেন তিয়েলিং। হত কাছে অধ্য কত দূরে। রূপকথার হত গল্প আছে ওকে ছিলে। ঐ বে দেখছো ব্যক্ষের ওপর সাদৃ৷ ধোঁয়া, ওপ্তলো নাকি চিমপরীদের নিঃখাস। মানুবের প্রাপের উত্তাপ নেই এখানে।

একটি-মাত্র ছেলে এখানে এসেছিল। কন্ত দিন আগো, কেউ ভা জানে না। তার মা ঐ রপোলি বাপা হয়ে তাকে নাকি বিরে বিরে থাকভো।

সেই ক্সভিং, আশ্চর্যা ছেলে এ ক্স-ভিং! শুধু বরফের ওপর দিরে নেচে বেড়াভো! থেশা করতো ত্বার নিরে, সাঁতার কাইছো হিমপ্রবাহের জলে। তবু সে জমে বারনি। তার বুকে ছিল মান্তবের জলে। তবু সে জমে বারনি। তার বুকে ছিল মান্তবের জলে। ছিল সেধার ভালবাসা। কাক্ষনজ্জার সোনালি সোনালি পরীলের সঙ্গে ছিল তার ভাব। ছাই হিমপরীরা তার কোনো ক্ষতি করতে পারেনি। দিনে দিনে স্ম-ভিং বড হলো। দীর্য ঋচু পাইন গাছে উঠে বেত তর-ভর করে বুনো ভালুকের মত । আবার তেমনি অবলীলাক্রমে ভর-ভর করে উঠে বেত পাহাড়ের ধাড়া চুড়োর। কী ছাই টিল স্ম-ভিং!

কাঞ্চনশুভ্বা তথন নাকি ছিল তথু সোনার পাহাড়। তাই নাম সংয়ছে কাঞ্চনজ্জ্বা। তথু তাই নয়, দেখানে এক রাজার নাম শোনা যার যার গুগার শুলায় ছিল অপরিমিত সোনা। সেই সোনা দিয়ে দে তার সমস্ত প্রাসাদ মুড়ে রেখেছিল।

ভোমরা বলবে, এই কন্কনে সাণ্ডা বরফের দেশে এ কেমন বালা! এ কেমন বাজ্য ? প্রেয় করতে পারো। কিছ, বে সময়ের কথা বলছি, তখন হয়তো এমন মাত্ম ছিল বারা বরফের বাজ্যেই বাস করতে পারতো। আজও ত চির্হিম মেরুদেশের কাছে এক্সিমোরা বাস করে। পৃথিবীতে কোনটাই বা অসম্ভব!

ভিষেত্রিং একটু চুপ করতেন। হঠাং তাঁব দৃষ্টি পড়তো দূবে কিনেব ওপর।

লাসী অধীর ছবে বলে উঠলো, কট, লামাজী মাকপথে ধামলেন কেন? আপনি স্থেশর গল বলেন কিছ একটা আপনার দোৰ, আপনি শেষ করেন না।

কিশোর বলল, ঠিক ভাই। মিমি আহার এর গ**রটা বেমন।** ৬দের শেষ পর্যন্ত কি চলো, ভা আহার বললেন না।

তিরেলিং একটু হেসে বললেন, ও তাই নাকি ? এটা আমার ভারী আছার হরেছে বলতে হবে। কিছু, কি জানো, ওদের শেষটা আমারও জানা নেই। আমার মনে হয়, পৃথিবীর বেলির ভাগ গয়ই শেষটা অআনা থেকে যায়। কি যেন একটা বহুত্তে ঢাকা পড়ে যায় শেষটা। জোর করে শেষ করলেও একটা বহুত্তের বেশ থেকে যায়। যাক, এখন আমি আছ কিছু ভাবছি—এ বৈ নীচে একটা কি পড়ে আছে মনে হছে ? শেরপাদের সঙ্গে নিরে তোমরা কি একট অফুসন্ধান করবে ?

নিশ্চমই। কিশোর লাঞ্চিয়ে উঠলো। শাস্তমুকে নিয়ে আমি গান্ধি।

পুরা হন্ধনে ঢালু পাহাড়ের গা বেরে নামতে লাগলো নীচে।
খনেকটা নীচে নামতে গুরা স্পষ্ট দেখতে পেল, একটা মৃতদেহ পড়ে
আছে। আর সেটা আর কেউ নর, সেই শংকরীপ্রসাদের। সবচেরে
আন্চর্গ হলো গুরা, যথন দেখলো যে শংকরীপ্রসাদ কোনো আক্ষিক
হর্ষটনার মারা যায় নি। পরীক্ষা করে তারা দেখলো, কোনো
আতহায়ীর পিন্তলের গুলীতে মারা গেছে।

এ অভূত হত্যাকাণ্ডের মধ্যে থাকার দরকার নেই: বললে কিশোর। চলো আমরা ভিরেলিংকে থবরটা দিই। শাস্তম্ব বললে, না, শংকরীপ্রসাদের দেইটা থুঁ ছে দেখতে হবে।

আমাদের সেই নক্সাটা বদি পাওয়া বার। তা ছাড়া অন্ত কিছু
গোপন তথাও পাওয়া বেতে পারে। এই বলে সে মৃতদেহের আমার
মধ্যে হাত দিয়ে দেখতে লাগলো। একটা ঘড়ি কিছু কাগজপাত্তা,
পেন্সিল, একটা বড় ছুরি। অক্সিজেনের সরপ্রাম ইত্যাদি আছে দেখা
গোগ। তাছাড়া একটা বাগা ছিল। সেটার হাত দিতে বাবে এমন
সময় শুড়্ম করে এক আওয়াজ! শাস্তমুর মনে হলো তার কানের
কাছ দিয়ে যেন একটা শুকী চলে গেল। ব্যাপারটা অত্যন্ত
শুকুতর। শাস্তমুর বুরতে দেরী হলো না বে, তারা এখানে এসে
একটা মস্ত বিপদের সম্মুখীন হয়েছে। আল্লে-পালে একজন বা
একাধিক শক্ত লুকিয়ে আছে।

চিন্তা কৰাৰ সময় নৱ। শান্তমু পৰেট থেকে পিন্তলটা বাৰ কৰে নিল। ভাৰ পৰ আশে-পাশে তাকালো। দূৰে একটা আঁকা-বাঁকা খাড়া কুংসিত পাহাড়েৰ চূড়ো। ঠিক হান্তৰের মুখেৰ মত দেখতে। ভাৰ ধাৰে ধাৰে কালো কি এক গাছেৰ ঝোপ-ঝাড়। এখানেই কোনো শক্ৰ লুকিয়ে আছে, আন্দান্ত কবলো শান্তম। এ দিকে পিছন ফিৰে পালানো কাপুক্ৰেৰ কান্ত, নিৰ্ছিতা ভ বটেই।

শাস্তম্ শিস্তল সামনে ধরে এগুতে লাগলো, পিছনে কিশোর। হাঙ্গরমূখো শিলাগণ্ডের কাছাকাছি হতেই ওবা দেখলো তৃ ধন বেন ঝোপের আড়াল থেকে সরে গেল একটা ছহার মধ্যে।

বাক, আততায়ীরা ভয় পেরেছে, শাস্তমু আখস্ত হলো। সে একটা কাঁকা আওয়াজ করলো। তারপর ওয়া লক্রদের জয়ুসরপ করলো গুছার মধ্যে। গুছার অভ্যন্তর ভিল্লে সাঁতিসেতে আর অন্ধকার। গুলু একদিক থেকে দেখা গেল একটা আলোর আভাস। সেই দিকে অপ্রসর হতে ওয়া এসে পড়লো একটা খোলা আকালের মধ্যে। এখানে ওপরের জল চুইয়ে পড়ে পড়ে অসংখ্য খামের স্প্রী হয়েছে। সেই সব থামের আশ-পাশ দিয়ে দেখা যার নানা স্রড্ল-পথ। হাজার হাজার বছরের গ্রাওলা জমে আছে কোথাও। কোথাও বা জল বালু পাথরের জমে হাওয়া নানা আকারের বিচিত্র স্থাপত্য।

তুই বন্ধু বিশ্বিত শুস্তিত হয়ে এদিক সেদিক ঘ্রতে লাগালো। আনেকক্ষণ এই ভাবে কাটবার পব, কিশোর বলে উঠলো, মিধ্যা অন্তসন্ধান, শাস্তম্প, চলো আমবা কিবে ষাই।

ফেরবার রাস্তাই তো আমি খুঁলছি, কিংশার ! শাস্তম্ বললে।
কুধা তৃষ্ণা ও পরিশ্রমে কাতর হুই বন্ধ্ব বহির্গমনের পথ পেলো
না। বেদিকেই বার দেখানটাই নতুন মনে হয়। অপরিমের
ক্রান্তিতে বদে পড়ে কিশোর।

এদিকে লালী অনেককণ ওদের আশার পথ চেরে থাকে।
কিছ বেলা যথন গড়িরে পড়লো তথন তার চোথ ভরে এলো জলে।
সে কাঁদতে থাকে। তিরেলিং সান্তনা দেন। কিছ শেব পর্বস্থ
ভিনিও চিন্তিত হয়ে পড়লেন। তিনি ভাবলেন, শংকরীপ্রসাদকে.
কেন্ত্র করে এ কী নাটকের মধ্যে জড়িয়ে পড়লেন ভিনি।
বৃদ্ধ লামার কপালের চর্ম কুঞ্চিত হরে কয়েকটি চিন্তারেধা ফুটে
উঠলো। না, এখনই কোনো বাবস্থা করতে হবে। শেরপাদের
ভাকলেন।

চার জন শক্ত-সমর্থ শেরপা বেরিরে পড়লো। হাতে ভালের নালো জার ধারালো কুকরি।

তারা জানতো, ওখানে ঐ হাররমুখ কুৎসিত শিলাখণ্ডের চলদেশে এক ভয়ন্তর গুহা আছে। লোকে তাকে ক্ষণ্ডফা বলতো। চার মধ্যে বে প্রবেশ করবে, সে আর বেরিয়ে আসতে পারবে না। ওলের মনে হলো, নিশ্চরই ওর গহরার পথ হারিয়ে ক্ষেলছে শাস্তমু ভার কিশোর।

আব তা না হলে কোনো হিংল্ল ইয়েতির কবলে পড়েছে ওরা। বাই হোক, তন্ত্র-তন্ন করে চাবদিক খুঁজে দেখতে কাগলো। কিছ কোথাও ওদের কোনো চিহ্ন নেই। অবশেষে সতর্ক পদক্ষেপে তারা প্রবেশ করলো কুফ-গুকার গহবরে।

একজন শেরপার হাতে ছিল একটা শাদা নরম পাথব, যেটা দিয়ে খড়ির মত দাগ টানা যায়। গুলা-গহরুরের দেয়ালে দেয়ালে দেশুদাগ দিয়ে যেতে লাগলো। পথ চেনার নিশানা।

বভ্ৰুণ নিখাদ অবেষণের পথ, তাদের কানে গেল অভ্ত আওরাজ। মাুহুবের কথাবার্তা গুচার দেয়ালে দেয়ালে প্রতিধ্বনিত হয়ে গম্ গম্করে উঠছে।

সেই খর লক্ষ্য করে চলছে শেরপারা, হাতে ঝুলছে আখালো! আবার আন্ত হাতে উত্তত কুকবি।

কাছে গিরে তারা বা নেখলো, সে এক অভ্যাশ্চর্য দৃশ্য !
কিশোর আর শান্তমু হজনেই দড়ি দিয়ে বাঁধা। আর তাদের
বিবে আছে তিনটি বলিষ্ঠ চেহারা। আগছক শেরপাদের দেখে
ভারা পিন্তল উচিয়েছে।

[আগামী বাবে সমাপ্য

আকাশপারের দেশে

সুধাংশু ঘোষ

শ্বিন পড় ছিল— পৃথিবীর বছ স্থান হইতে "উড়স্থ পীরিচ" দৃষ্ট হইবার সংবাদ পাওয়া বাইতেছে। অনেকের ধারণা, পীরিচণ্ডলি মঙ্গলপ্রহ হইতেই আসিছেছে। ১৯৫৬ গৃষ্টাব্দে মঙ্গলপ্রহ ঘণন পৃথিবীর অতি নিকটে আসিবে এবং পৃথিবী ও মঙ্গলের মধ্যে ব্যবধান দাঁড়াইবে মাত্র সাড়ে ভিন কোটি মাইল, তথন সম্ভবতঃ অধিক সংখ্যক উড়স্ত পীরিচ পৃথিবীর আকাশে উড়িতে দেখা বাইবে।' অমল ভাবল, ওদের একটার চড়ে মঙ্গলে পাড়ে জ্বমাতে পারলে বেশ হয়।

মাঠের ওপরে ছারার ঢাকা গ্রাম। বেখানে অমলের দিনির বাড়ী। অমল চলেছে সক পথ ধরে একা। প্রারই ত বার। হঠাৎ অমলের চোধে পড়ল আকালে বলর-বেইত গণ্ডল। সম্পূর্ণ নিঃশব্দে নেমে আসছে মাটির দিকে, বেন তাকেই লক্ষ্য করে। আখিনের পরিছার স্থাালোকে ঝলমল করছে তার দেহ। অবাক হরে অমল চেরে বইল জিনিবটির দিকে; পালিয়ে বেতে ইছে থাকলেও, পা তার নড়ল না। এদিকে গম্মটি মাটিতে নামার সঙ্গে সঙ্গেই একজন খেকজার ব্যক্তি অমলকে টেনে তুললে তার মধ্যে। অমল ব্বলে দেবরা পড়েছে। তাকে কোবার নিরে যাওরা হবে কে জানে! কিছ অমল জরে চীৎকার করবার প্রেই গম্মটি ভরানক বেগে সোজা আকালে অনেক উচ্তে উড়ে গেল। অমলের দৃষ্টি হতে ভামল

ধৰিত্ৰী কখন সৰে গিয়েছে। ওধু নীল আকাশ দেখা যায় বদ্ধ জানালা দিৱে।

অমলের এবার মনে হল গন্তুজটি আর বেন উড্ছে না। কারণ, পৃথিবীর উড়ো জাহাজের মত গন্তুজটি গর্জনেও করছে না নড়ছেও না। এ বেন রূপকথার বাত্ কার্পেট। নিঃসন্দেহে পৃথিবীর আবোহীবাহী মিটিওর' উড়োজাহাজ অপেকা এই গন্তুজ ওড়া অনেক আবামের। অমলের ভুল হয়নি—অমল উড়স্ত পীরিচেই বন্দী।

উড়ত্ব পীরিচ ক্রমশাই উঁচুতে উঠছে। তবুও অমলের মাধা
গ্রছে না। অমল আনে, পৃথিবীর বিমান-চালক ও আরোহীকে
অনেক উঁচুতে উঠলে কুত্রিম উপায়ে অক্সিজেন গ্রহণ করতে
হয়। কারণ পৃথিবীপৃষ্ঠ ছাভিয়ে বতই উপারে ওঠা বায় ভতই
অক্সিজেনের অভাব অমুভূত হয়। কিছু উড়ত্ব পীরিচটির নির্মাণকৌশলই নিশ্চর আরোহীকে সকল হাওয়ার স্তরেই খাসকট হতে
বক্ষা করে। এখন হতেই অমলের ধারণা হল, মললের মায়ুর পৃথিবীর মামুর অপেক্ষা বিজ্ঞানে অনেক উন্নত। অমলের খাসকট
হয়নি অব্দ্য, কিছু সে একটু বাদেই গ্রমিয়ে পড়ল, আর বধন
চোধ মেলল, দেখল পীনিচটি আবার মাটি স্পর্ণ করেছে। অমল
এদিক ওদিক চেয়ে বুরলে এ মাটি পৃথিবীর নয়, মললের।

গাঁ, মঙ্গলই ত', দেই মঙ্গলগ্ৰহ থাকে অন্ধনার বাত্তে, পৃথিবী হতে আকাশের গারে সাধাবণতঃ লাল দেখার। আর লাল দেখাত বলেই স্থান্ত রোমকগণ যুদ্ধের দেবভা মনে করে মঙ্গলকে ভরে পুজো করত। কারণ যুদ্ধ মানেই ত রক্তারক্তি, সব লালে লাল! মঙ্গলের সব কিছুই অমলের চক্ষে শুধ্ নৃতন নয়, শুভুওও ঠেকল। অমল এখন লক্ষ্য করল তার বিশ্বকারীর, ভার পরিবারবর্গের ধ্যমন কি কোন মঙ্গলবাসীর মাথার একটুও চুল নাই। বিবর্তনের সঙ্গে নাকি প্রণীর দেহ হতে চুলের ও লোমের পরিমাণ কমভে থাকে। বদি ভাই হয়, তবে নিঃসন্দেহে মঙ্গলবাসী পৃথিবীর মাহ্য অপেকা অবিকতর আধুনিক, স্থতবাং অবিকতর সভ্য ও প্রফেসর কামিভল-লোরেল মনে করেন মঙ্গলে অভিশয় বুদ্মান প্রাণীর অবস্থিতি থ্বই স্বাভাবিক।

বিমানঘাটি হতে অমলকে বে মোটংগাড়ীতে বাড়ী নিয়ে বাঙা হল তা বেশ ছোট এবং চলবার সময় সামাল্ল শব্দও করল না। রাস্তা ববাবের লায় পদার্থে তৈরী, পরিছার, মত্থন, কোথাও একটুও উচ্নীচু নয়। বাড়ীও ছোট, মঙ্গলের সব বাড়ীই ছোট এবং অপেকাকৃত নীচু। বাড়ীওলি ধাড়ুনির্মিত এবং উজ্জ্ল বিস্তু তাদের উজ্জ্লগতা চকুর পীড়াদায়ক নয়। কাংণ প্রেত্তাকেই নীলাভ, বাড়ুর তৈরী হলেও বাড়ীগুলি শীতে অত্যাধিক শীতল হর না। কাংণ ত্র্যা মঙ্গল হতে প্রায় চৌদ কোটি মাইল পুরে অবস্থিত হলেও মঙ্গলের উপরের বায়ুত্তর মাত্র বাট মাইল পুরু অথচ পৃথিবী ও ত্র্যের ১,২৫,০০০,০০ মাইল দ্রম্বের মধ্যে প্রোয় ৩০০ শত মাইলের বায়ুত্তর রয়েছে।

বাড়ীর প্রত্যেকে অমলকে খিবে গাঁড়াল। বেশ বোরা গোল সকলেই থুব আশ্চর্য্য হয়েছে। গাঁলভাবের মত অমল বেন অভূত দেশে এসে পড়েছে—অবজ্ঞ দেশটি লিলিপ্টও নয় ব্রব্ডিংনাগাও নয়। তবে মনে হছে এদেন কাকর চেয়েই কম আশ্চর্যাজনক নয়। বৃদ্ধিনা বালক সমল বেশ শীঘ্রই মঙ্গলের ভাষা কভকটা আয়েও

করে কেললে, সারাটা মঙ্গলে একটি মাত্র ভাষা। বাড়ীর ছেলেমেরেদের সাথে থেলা করতে অমলের কোনরূপ অস্থবিধা চল না। শীঘ্রই অমলের নাম মস্ত খেলোরাড় বলে মঙ্গলের সহরে, সহর ছাড়িরে দূর প্রামেও পৌছে গেল। বাবেই না বা কেন ? পৃথিবীর বালক হয়ে অমল অনেক উঁচু ও দূরপালা লাফাতে পারে এবং সে মঞ্চলবাসী অপেকা ক্রন্ত ছুটতে পারে। কারণ অমল শুর্ মঙ্গলের বে কোন শিশু অপেকা মাধার উঁচু নয়—পূর্ণবিষ্ক কোনও মঙ্গলবাসীই পাঁচ ফিট্রে অবিক লখা নয়—পৃথিবী অপেকা মঙ্গলে মাধাকর্ষণ শক্তি অনেক কম। বলি কেও পৃথিবীতে উচ্চে মাত্র দেড় ফুট লাফাতে পারে ভাহলে সে মঙ্গলে কমপক্ষে চার ফুট লাফিরে উঠিতে পারবে। পৃথিবীর সাধারণ খেলোরাড় হয়ে অমল মঙ্গলে কত্রকগুলি রেকর্ড করে ফেললে।

উৎস্থক দর্শকদের প্রশ্নবাণ এড়াবার ব্যক্ত গগুরা এত দিন অমলকে বাড়ীতে রেখেছিল কিছ এখন অমল গগুরার স্ত্রী ও সম্ভানদের সাথে বাইরে বায়। গগুয়ার স্ত্রী বেমন স্ক্রন্মরী তেমনি বুদ্ধিমতী ও শিক্ষিতা এবং বাচ্চাদের ব্যবহারও চমৎকার! अपन এদের সাথে মোটরে থরে বেডার। মঙ্গলে কন্ত মঞ্জার জিনিব। মঙ্গলে পৃথিবীর মত এত বেৰী লোক নাই। বাড়ীগুলি প্ৰায়ই সবই একতলা। মাটির অভাব নেই বলে লণ্ডন, নিউ ইয়ক বা কলকাতার মত আকাশ দখল করবার হিডিক মঙ্গলে নাই। সহর হউক বা গ্রাম হউক, বেশ নালান-- এখানে ওখানে মনোর্ম উত্তান, দুর খেকে ছবির মন্ত মনে হয়। অধিবাসিগণ বেশ সুজী ও বলিষ্ঠ। মঙ্গলে লম্বা গাছ নাই বললেই চলে। সেখানে এক প্রকার ভাওলা খুব বেশী, মাঠে মাঠে ভাওলার চাষ হয়। ওই ভাওলাই মঙ্গলবাসীর প্রধান থাত-পৃথিবীর বৈজ্ঞানিকগণও আবিষার করেছেন বে এক প্রকার জাওলায় সর্বাপেক্ষা অধিক থাতাপ্রাণ বয়েছে। वाखार्शक मवहे माखा। वामक-वृद्ध नव-नावी मकल्महे (रम विनयी। ৰাভাষ ঘোটৰবাস আছে, ভবে কোথাও ভীড় নাই। ধাকাধাকি নাই। পদচাবিগাণ বাস্ত বটে কিছ ধাক্তা দিয়ে এগিয়ে চলে না---এরা শান্তিপ্রির, কেন্ত কলন্তপরায়ণ নয়। হাটবাজার আছে কিছ দ্বাদ্বি নাই। কোনও কোনও দোকানে মালিক নাই, ভবে লোকেরা জিনিব কিনে দাম একটি বাজে ফেলে দিছে—সেই বাজ নিংগ কেউ সরে পড়ছে না। বাস্তায় কচিৎ পুলিশের লোক দৃষ্ট হয় অবগ্য বানবাহন নির্ম্প্রণের জন্ত চৌমাধাগুলিতে পুলিল আছে। উচ্ড পীরিচগুলি, অবগু ৰারা আকারে কুন্ত, রাস্তায় সাধারণ মেটিবের ন্তই চলাফেরা করে। আকাশে ছোট-বড় অনেক পীবিচ, তারা অনেক রকমেরও, দুরপাল্লা ও কাছাকাছি উড়ে বাবার জন্ত। মোটববাদ ও উড়স্ত পীরিচের অনেকগুলি কারধানাও খনগ দেখন। একটি কারধানার প্রতি দশ সেকেণ্ডে গড়ে একটি ৰবে উড়স্ত পীরিচ তৈরী হচ্ছে—আমেরিকার ফোর্ড কোম্পানী গড়ে প্রতি সাত সেকেণ্ডে একটি করে মোটরকার তৈরী क्रब याज !

প্রতি গৃছে কমপক্ষে একটি বেতার-গ্রাহক-বন্ধ ররেছে। মঙ্গলের বার্মগুলে বিশেষ পোলমাল নাই, স্করাং অমল ওথানে রেডিও তনে ভারী থুনী। বধন পৃথিবীর পাল দিরে উড়ম্ভ পীরিচ উড়ে বার, তবন ভার আরোহিগণ স্পাই শুনতে পার পৃথিবীর বেতার পোগ্রাম।

কিছ মন্ত্রাসী অন্ত কোন গ্রহের ভাষা জানে না—মন্ত্রাসিপ্র মনে করে সবগুলিতে না হলেও, জন্তত: কভকগুলি গ্রহে ভাদের মত মায়ুব থাকা আশ্রুক্তা নয়। পৃথিবীর বেভার প্রোগ্রাম মঙ্গলবাসীর নিকট অবোধ্য। মঙ্গলে বে পশু তুধ দের দেখতে পৃথিবীর গঙ্গ-মোবের মত নয়, কিন্তু তুধ দের অনেক। মঙ্গলে চোর-ভাকাত নাই। মঙ্গলে রাজা নাই, সমগ্র মঙ্গলে একই শাসন এবং নির্ব্রাচিত শাসক। প্রত্যেক প্রোপ্তে সায়গুলাসন বর্ত্তমান এবং শাসকগোষ্ঠী নিজেদের জনসাধারণের স্তি্যকারের সেবক ভেবেই শাসনকার্য্য চালার। মঙ্গলবাসীরা মনে করে, ভারা একটি উচ্চতর শক্তি থাবা পরিচালিত, ভবে ভারা কোনও ধর্ম নিয়ে দলাদলি বা চেচামেচি করে না।

মঙ্গলবাদিগণ ভয়ানক শক্তিশালী আগ্লেগ্লন্ত ভৈত্ৰী করতে জানে। পৃথিবীর এটম ও হাইডোজেন বোমা অপেকা অধিকতর মারাত্মক বোমাও তৈরী করতে পারে। তবে নিজেদের ধ্বংস করার জক্ত তারা এরপ ভয়াবহ স্প্রীধ্বংসী মারণাম্র তৈরী করতে চার না। তারা আণবিক শক্তি দেশের মঙ্গলের জন্মই ব্যবহার করছে। এলে ম্বলে অন্তরীকে মঙ্গলের ধান-বাহন কোথাও শব্দ করে না। কারণ এরা চলে আণবিক শক্তির সাহায়েই। মঙ্গলবাসীদের ডুবো-काराक नारे, এদের প্রয়োজনও নাই। মঙ্গলবাসীরা বলে, আমাদের গ্রহে শান্তি বিয়াজিত এবং কোন গ্রহের প্রতি আমাদের লোভও নাই। বিশেষ করে স্থ্য-পরিবারভুক্ত পৃথিবী আমাদের নিকটতম আত্মীয়। পূথিবীর প্রতি মললবাদিগণ সতাই খুব বন্ধভাবাপন। তবে বে কোন গ্রহ থেকে মঙ্গলের বিরুদ্ধে অভিবাল চালালে সেই গ্রছের অধিবাসীদের সমূচিত শিক্ষা দেবার ক্ষমতা মঙ্গবাসীদের যথেষ্ট বয়েছে। মঙ্গলের ছেলে-মেরেরা পারা থেকে সোনা ভৈত্ৰী করতে জানে কিছ মঙ্গলে সোনা প্ৰচুৰ; স্মুতবাং কুত্ৰিম উপায়ে গোনা তৈরীর প্রয়োজন কোধায় ? বাচ্চারাও এটম ও হাইড্রোবেন বোমা তৈরী করার পদ্ধতি স্কুলে শেখে। কারণ বিজ্ঞানের প্রতি শাখার উপরই স্কুদ হতেই তাদের কিছু কিছু দখল ঘটে। বিজ্ঞানের জ্ঞান লাভের সংক সঙ্গে বাচ্চারা এ-ও শেখে যে বিজ্ঞানের चनवारात कोरव स्थान चनियाया । मन्द्रान कुन-करनाक कीवरक, বিশেষত: মামুষকে, ভালবাগতেও শেখান হয়।

মঙ্গল আয়তনে পৃথিবীর প্রায় আর্দ্ধক। পৃথিবীর ব্যাস ১১২৭
মাইল, মঙ্গলের ৪২১৫ মাইল। মঙ্গলে সাগর আছে গভীর ও
প্রান্ত, নদীও ওধানে অনেক। মঙ্গলের মাটি লালচে, তবে বসন্তে
মঙ্গলকে আকাশ হতে কতকটা সবুজ দেখার। কারণ নৃতন
লতাপাতার ও খাত-ভাওলার প্রাচুর্য্যে মঙ্গল তখন ভবে ওঠে।
মঙ্গলে মাত্র তিনটি ঋতু ই শীত, বসন্ত ও শরং। আমলের
ঘড়ি অমুসারে মঞ্চল নিজের কক্ষের উপর ২৪৭টা ও ৩৭ই
মিনিটে একবার আবর্তুন সম্পন্ন করে। সেকেন্ডে ১৫ মাইল
বেঙ্গে মঙ্গল ৬৮৭ দিনে স্থাকে একবার প্রদক্ষিণ করে—পৃথিবী
স্বর্য্যর চার দিকে একবার খুরে আলে ৩৬৫ই দিনে, প্রতি সেকেন্ডে
১৮ মাইল বেগে। মঙ্গলের তুইটি চাদ—পৃথিবীর ভো মাত্র একটি।
একটি চাদ মঙ্গলকে ৩০ ঘটার সামান্ত একট্ বেশী সমরে একবার
প্রদক্ষণ করে কিছু অপরটি মাত্র ৭০ই ঘটার এক পাক নিয়ে নের।
ইহা ছাড়া আবহাওরা পর্যবেফণের জন্ত মঙ্গলবাসী বেশ করেন্টট

কুত্রিম উপপ্রস্থ মঙ্গলের আকাশে সর্বনিট উড়িয়ে রাখে। মঙ্গলে আবহাওরার পূর্বোভাষে সামান্ত গর্মানত হয় না।

মঙ্গলে অভ্যুচ্চ পর্বতিমালাও আছে—কম্টো ওদের সর্ব্বোচ্চ পর্বত। মিট্ট জলের ঝর্ণা ও জনেক মক্ত্মিও আছে, তুরার-ক্ষেত্রও আছে। আকালে মেঘও ওড়ে, বৃষ্টিও হয় সারা বছরই; বর্বা বলে শতু নেই। মঙ্গলে অক্সিজেন নেই বললেই চলে। মঙ্গলের বাতাস নাইট্রোজেন ও জার্গন গ্যাসেই প্রায় পূর্ণ। সামান্ত কার্বণ ও হাইড়োজেন গ্যাসও আছে। মঙ্গলবাসীরা, এমন কি অমলও কিরপে ঐ প্রায় অক্সিজেন শৃক্ত বাতাস সেবন করে জীবিত আছে, ভেবে অমল কম আশ্বর্যা হয়নি। গগুয়ার জী অমলকে বললেন ভোমাদের পৃথিবীতেও নিশ্বর নানা প্রকারের আবহাওয়া আছে। পৃথিবীতেও বালুকামর মক্ত্মিও তুরারভূমি কম নেই। মঙ্গভূমিও তুরারভূমির বৃক্ষ ও তুগল্ঞাদির মধ্যেও অনেক পার্থক্য। আবার বে লোক পাহাড়-পর্বতে থাকে তারা সম্ভূমিতে থাকতে কটবোৰ করে। আমরা এই আবহাওয়ার থাকতে পারি এবং বিচে আছি। কাবণ এখানে বা জয়ায় আমরা তাই বাই। তোমার কি এখানে শারীরিক কোন কট হছেছ গ

নিশ্চর না, অমল বললে।

কারণ কি ? কারণ এখানে যা খাচ্ছ তাতে এমন পদার্থ আছে বা ভোমাকে এখানকার আবহাওয়ায় বাঁচতে ও বাড়তে সাহায্য করছে এবং সর্কোচ্চ ও সর্কনিয় ভাগমাত্রার মধ্যে ১৮০ ডিগ্রীর পার্থক্য থাকলেও ভোমার বিশেষ কট হচ্ছে না

আমল বললে, মনে হড়ে মঞ্চলবাসীরা বিজ্ঞানে খুবই এগিয়ে গিয়েছে।

বিজ্ঞানে আমাদের উন্নতির নমুনা ত তুমি স্বচক্ষে আনক লেখলে। তিতামাদের উঁচু বাড়ীগুলো আমাদের শক্তিশালী দূরবীশগুলো দিরে পরিকার দেখা বায়। দেখবে না কি ? তোমাদের ঐ বাড়ীগুলো দেখলে মনে হয়, তেঃমরাও বিজ্ঞানে অনেক এগিয়েছ।

ভদ্রমহিলা অমলকে নিকটবর্তী একটি মানমন্দিরে নিরে গেলে সেধানে একটি বৃহৎ প্রবীশের সাহাব্যে—দ্রবীশটির ব্যাস ৪০০ ইঞ্চি—পৃথিবীর বালক মগল থেকে দেখতে পেল পৃথিবীর বৃক্তে একটি শু-উচ্চ অটালিকা। অমলের মনে গড়ল শিশু ভারতীর কলিত চিত্র—বাতে একটি শিশু অসীম আকাশের এক কোণে বসে গোলকাকৃতি পৃথিবীকে লক্ষ্য করছে।

আমল প্রশ্ন করলে, ওটা কি নিউইরর্কের এলপারার টেট বিভিং?
নাম ত জানি না। গত বছর আমাদের জন হুই লোক এই
বাড়ীর নিকটে কোথাও নেমেছিল কিছ নাম না জেনেই ফিরে এসেছে।
কারণ, অত্যধিক সাহস দেখাতে গেলে ধরা পড়বার ভর ছিল বে।
বিদেশে সম্পূর্ণ আচেনা অভান্যদের হাতে ধরা পড়া কি বিশক্ষনক
নয়? এই ত সেদিন আমাদের জনৈকা মহিলা বৈমানিক পৃথিবীতে
নেমে সেখানে একটি লিপিকা রেখে ফিরে এসেছে।

অমল বললে, ঐ চিঠি পড়েছি। পৃথিবীতে কেউ ওটা পড়তে পারেনি। ফিরে গিয়ে চিঠিটা পড়ে শোনাল।

অমল মঙ্গলে বেশ ছিল কিছ মাকে না দেখে আৰু কন্ত দিন থাকবে? একদিন গণ্ডৱাৰ স্ত্ৰী গলা জড়িয়ে ভাৰি গলায় বললে, ভোমাৰ কাছে কন্ত আদৰ পাছি! মঞ্চলবাদীৰা স্বাই আমায় ভালবাসে। আমার আরও অনেক দিন মললে বাস করতে ইছে। কারণ মলল তথু অন্ধর দেশ নর, অধিবাসীরাও বেশ পাছিলির। কিন্তু তবু মন চাইছে পৃথিবীতে ফিরতে। কারণ আমার মা সেধানে আমার অত্য কত কাঁদছেন নিশ্চর।

গগুয়ার প্রী অমল চলে বেতে চাইছে শুনে থুব ছংখিত হলেন কিছ ছংখ চেপে বললেন, ভালবাসা—মা ও সম্ভানের মধ্যে বে ভালবাসা— নিশ্চয় এখানে বা কিছু দেখছ স্বার চেয়ে ভা অনেক উদ্ধে। ভারপর স্বামীকে ডেকে বললেন, অমল মার কাছে বেভে চাইছে। ওকে পৃথিবীতে রেখে এস।

গগুৱা উত্তর দিলে কিছু জামরা বে ওর ভাষা ভাল করে শিখতে পারিনি ! পৃথিবীর ভাষা শেখবার ছাত্রই ত ওকে এখানে নিয়ে জাসা। বদি জামরা পৃথিবীকে ভাল করে জানতে চাই, এবং জানা উচিতও, তাহলে জামাদের উচিত ওথানকার জন্তত একটি ভাষার সম্যক ব্যুৎপত্তি লাভ করা।

অমলের কাছে আমরা ওদের একটি প্রধান ভাষা, ইংবেজী, কন্তকটা শিবেছি, অমলও আমাদের ভাষা বেশ শিবে কেলেছে। এতেই আমাদের হুই গ্রহের মধ্যে প্রাথমিক সংবাদ আদান-প্রদানে বথেষ্ট সাহাষ্য করবে। আমরা স্বার্থপর নই। স্বার্থের জন্ম পৃথিবীর ছেলেটিকে কন্ত দিন আর আটকে রাথবো ?

এবারে অমন বললে, কিছ আমি যে এখনও ব্ৰেষ্ট বয়স্থ হইনি। যদি বলি মঙ্গলের ভাষা শিখেছি পৃথিবী লোকে আমাকে পাগৰ বলে উড়িয়ে দেবে। হাঁ। মা, আমাকে সম্পূর্ণ বিখাস করবে।

বৈজ্ঞানিক হয়ে উপযুক্ত ষ্ম্ম তৈরী কর, যার সাহায্যে পৃথিবী থেকে সেই আমাদের সাথে বাক্যালাপ করতে পারবে। পৃথিবীর থেকে সেই কথাবার্ত্তি। ভনে স্থার ভোমাকে অবিধাস করবে না। আর পৃথিবীর লোককে বলতে ভূলো না ধে, আমরা সৌর জগতের কোন গ্রহেরই শক্তিনই।

অমল ভারি গলায় বললে, তোমাকে ও তোমার উপদেশ কথনও ভুলব না মা !

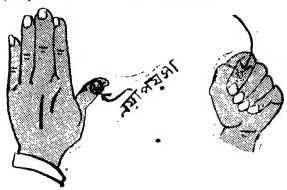
শমল বধন চোধ খুললে, দেধল মা তার মুখের উপর ছয়ে। মা বললেন, ঘূমের মধ্যে কি সব বকছিলে, শমল ? শমল চার্নিকে একবার চেরে নিয়ে বললেন, আমি বে একুণি মঙ্গলে ছিলাম মা! মা শমলকে চুমু দিয়ে বললেন, বড় বৈজ্ঞানিক হবার চেষ্টা কর। চেষ্টা করলে মঙ্গলে হয়ত একদিন সতাই বেতে পারবে।

নয়া পরসার নয়া যাত্র যাত্রব্যাকর এ, সি, সরকার

ন্মা প্রসার বাজারে নয়া প্রসার একটা খেলা না শিথলে চলে কেমন ক'রে বল ? ভাই তো আজ এখন একটা ধ্ব মজা^{নার} নয়া প্রসার ম্যাজিক শেখাছি। খেলাটা যদি ভাল ক'রে জভাাস ক'রে উপযুক্ত পরিবেশে দেখাতে পার, তবে থারা দেখবেন তাঁরা ^{এবই} জ্বাক হবেন, ভাতে কোঁনও সন্দেহ নাই।

খেলাটাতে কী দেখানো হবে, তাই শোন আগে। প্রথম

ৰাতৃক্য ভাব^{তু}বাঁ হাভের চেটো খুলে দেখাৰে ভাৱ দৰ্শকদের। এর পরে হাত মুঠো ক'বে ফুঁদেবে জাব ম্যা**লিকের মন্ত্র প**ড়বেঃ



চিচিং ফাঁক,
চিচিং ফাঁক,
নয়া পয়না ভায়।
উই চিংড়ি,
ভূই চিংড়ি,
ব্রহ্মদৈত্য খায়।

মগ্র বলে হাত খুসলে দেখা বাবে বে, বাছকবের হাতে সত্যি সত্যিই একটা নহা প্রসা এসে গেছে। এ দেখে কি দর্শকেরা অবাক না হয়ে পারবেন ?

কেমন ক'বে এই পেলাটা ক'ববে তাই বলি এবার শোন।
থেলা দেখানোর আলে গোপনে একটু ভেন্না কাপড়কাচা সাবানের
টুকবো লাগিরে রাখবে বা হাতের বুড়ো আঙ লের নথে আর এই
সাবানের উপরে দেঁটে রাখবে একটি নরা পয়সা। হাতের চেটো
থুলে দর্শকদের যখন দেখাবে তখন নয়া পয়সা খাকবে পেছনের দিকে।
কাজেই তাঁরা দেখতে পাবেন না। হাত মুঠো করার সময়ে বুড়ো
আঙু লটাকে ক্ষণিকের জল্পে মুঠোতে। হাত মুঠো করার সময়ে বিদি হাতটা একটু আন্দোলিত করা বার, তবে বুড়ো আঙ ল ঢোকানো
আর বের করা দর্শকেরা বুবতে পারবেন না!

বাহুবিভার উৎসাহী পাঠক-পাঠিকারা অবাবের জক্ত উপযুক্ত ডাকটিকিট সহ আমার সঙ্গে পত্রালাপ করতে পার A. C. Sorcar, Magician Post Box 16214, Calcutta-29 এই ঠিকানার)

প্রান্তরের স্থর অশোককুমার চৌধুরী

্বাৰও বৃঝি বাজে সেই স্থান · ·

ভোরের টুকটুকে লাল আলোর পর্দার স্পষ্ট হল সিংহগড়।
মাবাঠা-মাতার অস্তব ভবে উঠল অভূত আনন্দে। কিন্ত পরক্ষণেই
ভার মুখ হয়ে এলো বর্ধাক্লান্ত মেঘের মন্ত বিবয়-গন্তীর। দৃত ছুটল।
মাবাঠা-যালা এলেন তাঁর ঘরে। এব মুহুর্ত্তের জলে কি ভাবলেন
নাবী। তার পর হঠাৎ দাবা থেলার আমন্ত্রণ জানালেন আগভাকক।

আগত্তক কৌতুক মনে করে থেলতে বসলেন। তার পর হেরে গিছে বললেন—কি বাজী চাও তুমি ?

সিংহণ ড। গভীৰ স্থাবে কথাটা বংসই মুখ ঘুরিয়ে উঠে: দাঁড়ালেন। এ আদেশ রাখতেই হবে, মনে মনে বুঝলেন মাধাঠা-কালা। তবু তবু শেষ চেষ্টা ক্যলেন,—কিন্ত ভটা যে এখনও মোগলদের হাতে।

তার ভঙেই ত আরও চাই, সিংহগড় আমার চাই-ই।

চিন্তিত মুখে বেরিরে গেলেন রাজপুকর। মনের আয়নার খুঁজতে লাগলেন একটা মুখ, যে পারবে এই জসাধ্য সাধন করতে। হাা, হাা, পেরেছি—'ডাক—ক', হঠাৎ চীৎকার করে উঠলেন মারাঠা পুকর, আবার ছুটল দৃত। দেই ভাগ্যবান পুকর তথন কাজে ব্যস্ত, তাঁর ছোট ছেলের বিয়ে। রাজার ডাক পৌছল তাঁর কানে। ভেঙে দিলেন বিয়ে, ছুটে এলেন কর্তুব্যের ডাকে। কিন্তু তাঁর সঙ্গে সারা রাস্তা চীৎকার করতে করতে এলো একটা 'কপার্মিথ' পাধী। ভতাকাখীরা বললেন 'জভত লক্ষণ'। মারাঠাবীর হাসলেন—হোক, তবু কর্তুব্য বড়। এগিরে গেলেন তাঁর রাজার সামনে। অভিবাদন করে জিল্ডাম্ব চোধ ভূলে ধরলেন। 'আমার নর ভাই, মায়ের প্রয়োজন'—রাজা বললেন।

কপালে পঞ্চলিধার মঙ্গলশের দিবে জিজ্ঞেদ করলেন মারাঠা-রাজমাতা— তুমি কি ওই সিংহগড় আমার জর করে দিতে পারবে ? এক মুহূর্ত। না, ভাও বুঝি না! বাড় নেড়ে মাধার নিরন্তাণ রাজমাতার পারের কাছে রেখে বললেন—না, সিংহগড় আপনারই হবে।

—মারাঠার ধৃসর, কক্ষ, কর্ব পথে আবার উঠল ধ্লোর বাড়।
চলেছে একদল পাহাড়ী বোদা। সামনে তাদের অবিনায়ক, ধীর,
গন্তীর, সদাহাত্মায়, অথচ কর্ত্তব্য-কঠোর। ওই তুর্গটা কাদের
গো? মোগলদের না কি গো? ওতে কত লোক হবে গো?
ওখানে ধার কি করে গো? এই রকম নানা প্রকার প্রশ্ন কর্ছিল
একটা চাবাভূযো মানুষ। এই হয়ত প্রথম দেশল অভ-বড় ছুর্গ,
ভাই অত কৌতূহস, সিংহগড়ের আলে-পালের লোকেরা ভাবল!

—পাহাড়ী ঝর্ণাগুলোর শেষ বিলিকটুকু কেটে মিলিরে গেল দিনের আলো। ঘনিরে এলো অন্ধকার, গাছের আড়ালে আড়ালে, ঝোপের ফাঁকে লুকিরে আছে তিনশো মারাঠা থোদ্ধ। তাড়াতাড়ি লুকিরে বনের দিকে এগিরে এলো সেই চাষা। ফিস-ফিস করে স্বাইরের কানে কানে কি কথা হল।

থধনও করেক ঘণ্টা কাটাতে হবে। বাত গভীর হোক, যোড়ার ওপর চেপে চাপাগলায় বলে উঠল দেই চাবা। মাঘ মান, প্রচণ্ড শীত, কাঁপন-ধরানো হাওয়।। মাথার ওপর নক্ষত্রধচিত চন্দ্রাত্তপ, তার নীচে তিনশো বীর, নির্ভীক, নির্ভয়। তৃতীয়ার বাঁকা টাদের বিবন্ধ আভা তাদের কঠোর মুখগুলোকে আরও কঠোর করে তুলেছে।

এগিরে চলো সব, রাত্রির দিভার বামের মাঝামাঝি আদেশ হলো। সিংহগড়ের দিকে এগিয়ে চলল ভারা, তথন বদি সেধানকার কোন লোক ভাদের দেখতো তা হলে সেই নিভান্ত বোকা চারীটাকে ভাদের স্পাব দেখে সে নিশ্চর ঘার্ডে বেভো।

লালো-আঁধারীতে দৈত্যের মত দাঁড়িয়ে লাছে লাকাল-ছোঁৱা

ছুৰ্গতা। মহতা, থাজহীন, প্ৰায় থাড়াই বিষাট পাঁচিলটা চক্চক করছে টাদের আবছা আলোর। কোন মান্ন্যের পক্ষেই এবের ওঠা সম্ভব নয়। নিরে এসো ওটা, আদেশ করলেন চাষারুলী মারাঠা বীয়। থাঁচার মত একটা জিনিষ নিয়ে এলো ক'জন মারাঠা। খুলে দাও, খুলে দেওয়া হল খাঁচা। বেরিয়ে এলো চিত্রবিচিত্র বশোবস্তা। মারাঠা-বীর ভার গলার ফলিয়ে দিলেন নিজের মুক্তোর মালা, ভারপর তার সঙ্গে শক্ত করে বেঁবে দেওয়া হল একটা দড়ির মই। মারাঠা-বীর আদেশ দিলেন, উঠে পড়।

আহেনে উঠতে আৰম্ভ কৰল বশোৰত, গিৰগিটীৰ মন্ত। দক্ষিণ-পশ্চিম ভাৰতেৰ এ বোৰপান'গুলো অত্যন্ত ক্ষিপ্ৰভাব সঙ্গে মন্ত্ৰণ ৰাড়াই প্ৰাচীৰ বেৱে উঠতে পাৰে।

কিছ আন্তর্ব্য, অত শিক্ষিত বংশাবস্ত হঠাৎ কেন ভাড়াতাড়ি তর পেরে নেমে এলো ! অক্ট গুল্পন গুলু হলো মারাঠাদের মধ্যে—
না, না, আপনি বাবেন না সর্দারজী, এটা বিশ্রী সংকেত, তবুও
কর্ত্তব্য-কঠোর মারাঠা-বীর । 'উঠে পড়, তা না হলে তোকে কাটব।'
তিনি ভর দেখালেন জন্মটাকে—হশোবস্ত ভর পেয়ে ভাড়াভাড়ি উঠে
অন্বুভ হরে গেল হুর্গপ্রাচীবের ওধারে। গুরু ঝুলে বইল দড়ির
মুইটা।

এই, তুমি এদিকে এসো; মারাঠাবীর একজন বলিষ্ঠ, নির্তীক মারাঠা-বোদ্ধাকে আদেশ করলেন, তাল ভাবে বেঁধে এনে। ওই মইটা।

আর একটু! আর একটু! ক্লছ নি:খাসে অপরের দিকে চেরে অপেকা করছে তিন শ'লোক। তুর্গের মধ্যে মাবে মাবে ছ-একটা আলোর রেখা। গগুজে গগুজে ভীগ্রুচক্ষু প্রাহমী। প্রাকারে প্রাকারে সদস্ত পাঠান প্রহমীর দল। খুব সাবধানে উঠতে ছবে। একটু! আর একটু! হঠাৎ দাভিওলা একটা মুখ ওপর ধেকে মুখ বাড়াল, দেখতে পেল সেই যুবক মারাঠাকে। চীৎকার করতে গেল--করলেও চীৎকার—একটা অক্ষুট আর্তিনাদ মাত্র। মারাঠাবীরের অব্যর্থ লক্ষ্য তার কঠ কল্প করে দিয়েছে চিরদিন। ছুর্গপ্রাচীর থেকে ভার দেইটা ঘুরতে ঘ্রতে নিচে পড়ল—ধপ্।

বৃংক বীর দড়ির মইটা ভাল ভাবে বেঁধে দেওরার পর, তিন জন বাছা বাছা বোছা নিয়ে সেই মইয়ের সাহাব্যে তুর্গে চুকলেন মারাঠা-বীর। তাঁর মুখ পাগড়ীতে ঢাকা, হাতে তলোয়ার।

কিছ সেই হুর্গঃক্ষকের চীৎকার ও পতনের আওয়াক হুর্গরক্ষকদের সচেতন করে তুলল। গুখুজে গুখুজে অরজ করল মশালগুলো। করেক জন মোগল শান্ত্রী সেই মারাঠারীরকে সামনে পেয়ে হত্যা করল। পড়তে পড়তে চীৎকার করে উঠলেন মারাঠারীর; হুর্গ জয় করতেই হবে। তারপর তাঁর গুগালহীন দেহটা ধপ করে মাটিতে পড়ল।

ইতিমধ্যে কিন্তু মারাঠা বাহিনীর হুর্গণথ খোলা হবে গেছে, চুকে পড়ল তারা, রাত্রিব নিস্তব্ধতাকে ভঙ্গ করে চীৎকার করে উঠল হর, হর মহাদেও!' আকস্মিক আক্রমণে বিপর্যন্ত করে দিল এক হাজার হুর্গবাসীকে মাত্র তিন ল' সৈতা। সৈতদের খড়ের মুর্গুলোর আগুল দিরে দিল। তারপর জ্মধ্বনি দিল, 'হর, হর, মহাদেও'!

বাত্তি নিশীথে সেই জাগুনের শিখা উজ্জল হবে উঠল।

মারাঠা-রাজা দূর থেকে সেই আগুন 'বেথে মা'র দিকে চৈয়ে বললেন, গুই তুর্গ এখন ভোমার।

হড় ম! হড় ম! ভোপধানি হল সিংহণড় থেকে, এবার জার মোগল নর, মারাঠারা করছে ভোপধানি। জন্তিম-শর্নে জভিভ্ত তাদের সর্জাবের মৃত্যুকে সম্মান জানাছে হড় ম! ছড়ুম!

সমস্ত মারাঠা জনতার মুখে কালার জাভাস, কঠোর মারাঠা-রাজার চোথটাও জলে ভরে উঠল। সিংহগড় পেয়েছি কিন্তু সিংহ আমি হারিয়েছি, কালা-ভেজা কঠে বললেন মারাঠারাজা, এক ঝাপটা হাওয়ার কালার প্রর উঠল বেজে।

আজও বৃথি বাজে সেই স্থব ভয়ত্বের প্রাকারে, শিলাপ্রাকারে, পর্বতের কন্সরে, মহারাষ্ট্রের পথে-প্রান্তরে, হঠাৎ উদাস হওরা চাবার মনে, প্রচলা বাউলের অতীত-মুভিমুধ্ব গানে—মহারাষ্ট্র তোমার ভোলেনি, তানাজী! ওগো মহাবীর তানাজী!

ভক্ত ক্বীর বাস্থদেব পাল

ব্ৰামানশ্যে শিষ্যদের মধ্যে ক্বীর অভ্তম। ক্বীরের ৰশ্মকাহিনী সম্পৰ্কে একটি কিংবদন্তী প্ৰচলিত আছে। ষথা: - কবীর ছিলেন এক ব্রাহ্মণকলার পুত্র। ব্রাহ্মণকলা নিজের বৈধব্যের কলম্ভ-কালিমা মোচন করবার জন্মেই সভোজাত পুত্রকে কাৰীয় লহৰ-ভালাৰ পুছবিণীতে একটি পদ্মপাতায় শুইয়ে ভাসিয়ে দের। পরদিন অতি এড়াবে নিমা নামে একজন ভোলা-ভাতীর ক্টলোক ও ভার স্বামী মুরজালি ঐ পুছরিণার ধার দিয়ে নিমন্ত্রণে বাঞ্চিল। সহসা নিমা তৃষ্ণান্ত হয়ে ঐ পুছবিণীতে অল পান করতে গিয়ে অক্সাৎ এরুণ অভাবনীয় দৃগ্যে অত্যন্ত মুগ্ধ ও স্নেহাক্স হ'য়ে উক্ত সভোজাত কমনীর শিশুটিকে স্ব-গ্রহে নিয়ে গেল। অহ:পর জোলা-দম্পতি শিশুটকৈ পুত্রবং পালন করতে লাগলো। কিছুদিনের মধ্যেই শিশুটির নামকরণের জন্মে তারা একজন কাজীকে ডেকে আনলো। শিশুটির নাম-নির্কাচনার্থে 'কোরাণ-শ্বিক' থুলডেই महमा काकी मारहरवत पृष्टिभाड चढेरमा—'कवीत' भाषात छे॰रत। (महे :चक्टे मिछिंद नाम ह'ला, क्वीद। क्वीद चादि मक। এর অর্থ হচ্ছে, মহান, বুহৎ বা ব্রহ্ম, প্রমেশ্র।

কানী হিন্দুপ্রধান স্থান । নিক্ন শেশের (কবীরের পালক পিতা) প্রতিবেদীদের মধ্যে প্রায় সকলেই ছিল হিন্দু। কাজেই বালক কবীরের থেলার সাথী ছিল অধিকাংশই হিন্দু বালকেরা। কিছ ভাদের থেলা সাধারণ থেলা ছিল না! ভগবৎ-পূজন ও ভগবানের নামকীর্তনই ছিল তাদের থেলাধুলার বিষয়বস্তু।

ক্রীর জাতে জোলা বলে জনেকেই তাঁকে উপহাস ক্রতো। ক্রীর কিন্তু তাতে জাদৌ কুত্র হতেন না। কারণ তাঁর কথার:—

> ধরণী আকাশ কী কারগাহ বানায়ী— চন্দ্র স্বন্ধ গুইনাৰ চালায়ী।

অর্থাৎ, এই পৃথী ও নীল অথও আকাশকে ভগবান কারথানা বানিয়ে চস্ত্ৰ-স্থারপ 'মাকু চালাছেন অবিরত। ক্বীর লেথাপড়া জান্তেন না। কিছ সরল জান ও আছে বৃদ্ধির বলে স্ক্লাতিস্ক্ষ গভীর তাত্ত্ব শাখত-রণকে সত্য ও মধুর করে তিনি প্রকাশ করেছেন। তাঁব ব্যাখ্যার রাম-বহিম, কৃষ্ণ-ক্রিম, কাশী-কাবা সবই একই! একের-ই ভিন্ন ভিন্ন নাম। বেমন:—মর্ম্বা ক্রিনিষ্টি এক। কিছ তা থেকে ছাহার্য্য প্রস্তুত হর বিভিন্ন প্রকারের। ক্রীরের সময়েই হিন্দু মুসলমান প্রস্পার প্রভিবেশী হওরার একের ধর্ম-প্রভাব জ্ঞপরের উপরে পরোক্ষ ভাবে প্রভাবাহিছ করেছিল। মুসলমানগণ তথন দেশের লাসক। তাঁদের ধর্ম-প্রভাব ও গোড়ামির-প্রাবল্য রাজ্যপত্তির বলে জ্যুন্ত প্রকট। এ-ত্রে জ্বুদ্বার দেশের সমাজপ্রেষ্ঠ ব্রাহ্মণগণ নিজ্ঞেদের সামাজিক আচার-জ্যুষ্ঠান দৃঢ়তর করতে সচেষ্ঠ হরেছিলেন। এই সময়েই রামানন্দ ও কার শিব্যগণ এক ধর্ম-জালোড়ন ভুলে সর্ক্রধর্ম-সমন্ত্র করার এক মহান প্রচেষ্ঠার স্টুচনা দেখিরেছিলেন।

কবীবের[,] প্রভাব অনেক মহাপুরুষ ব্যক্তির উপর প্রভাব বিস্তার করেছিল। আহমদাবাদের দাতু সাহেব কবীরের ভাবে অনুপ্রাণিত হ'য়ে কবীরপত্তী শিষ্যরূপে পরিগণিত হয়েছিলেন। হিন্দী রামায়ণ ২চয়িতা তুলসীদাসও তাঁর বাণীমাধুর্য্যে বিশেষ ভাবে আরুই হরেছিলেন। একদা বুন্দাবনবাসিনী মীরা বাঈও কবীরের ভক্তিশারা বিশেষ ভাবে উপলব্ধি করে মুগ্ধা হয়েছিলেন! গুরু নানক বিভিন্ন দেশ পৃষ্টিন করে অবশেষে কাৰীতে উপস্থিত হয়ে কবীরের ধর্মচর্চার ব্যাখ্যা প্রবণে তথায় হয়েছিলেন। অংবাধ্যার জগজীবন দাস ক্বীরের ভাবে অফুপ্রাণিত হরে: সংনামী সম্প্রদায় প্রতিষ্ঠা করেন। এ ছাড়া মালবদেশের বাবলাল বাবলালি प्रशासक तीवक्रम नाधु-मध्यमात्र, गांकीशूद्वव निरमावायन निरमावायनी সম্প্রায়, আলোয়ারের চরণদাস-চরণদাসী সম্প্রদায় প্রতিষ্ঠা করে কবাবের মহৎ উদ্দেশ্যকে বছল পরিমাণে দিছ করে গেছেন। এঁথের প্রত্যেকের ধর্মব্যাব্যার মূলেই ছিন্দু-মুসঙ্গানের মধ্যে ধর্মের একটি সমন্বর-সাধনের চেষ্টা দেখা গছে।

অপর দিকে মনকে পবিত্র, কলঙ্কমুক্ত না ক'বে কেবল বাহ্মিক গুরুগস্তীর আড়ম্বরের প্রাবল্যভার ঈশ্বর-দর্শন পাওয়া বার না। এই বাণীই কবীর প্রচার করতেন। তিনি বলতেন,—

ভীরধ-মে ভো সব পানী হৈ

হো বৈ নহী কছু হায় দেখা। প্ৰতিমা সকল তো জড় হৈ,

বোলে নাহি বোলায় দেখা।

অর্থাৎ, তীর্থ তো থালি জল। আমি তাতে ড্ব দিয়ে দেখেছি। ফল তো কিছুই হয় না ? প্রতিমাকেও ডেকেছি, কোন সাড়া পাইনি !—

পুরাণ কোরাণ সববান্ত হৈ

রা ঘটকা পরদা খোল দেখা।

অমুভব কী বাত কবীর কঠেই—

বহু সব হৈ ঝুঠী পোল দেখা।

ূ্বাণ-কোরাণ সব তো কেবল কথা। আমি প্রদা খুলে তাদের আসল রূপ দেখে নিরেছি! কেবল অনুভব করবার কথার কবীর বলেছেন। আর সব মিথা। নিছক ভ্রাস্ত!

শক্ষাৎ মুসলমানগণ ক্বীবের বাঙ্গ-বিজ্ঞপে বিজ্ঞত হ'রে রাজার কাছে নালিশ জানালো। দিল্লীর সমার্ট তথন সিকক্ষ্যা লোণী। তাঁরই আদেশে ক্বীরকে বন্দী ক'বে জোনপুর দ্ববাবে হাজিব ক্রা হ'লো ৷ বন্ধপঞ্জীর নিনাদে ক্রীরকে শুধোনেন সিক্সরসা, 'তুমি হিন্দু না মুসসমান ?'---সম্রাটের এ-হেন প্রশ্নের জ্বাবে ঈর্থ মুদ্ধান্তে ক্রীর বলেন,---

> হিন্দু কভঁতো ম্যার পঁহী, মূসলমান ভী নাহি। পাঁচ তত্তকা পুতলী গৈবী খেলে মাহি।

আমি হিন্দুও নই, যুসলমানও নই। পঞ্জুতাত্মক পুত্তলিকা আমার মধ্যে অদুভ রহজের থেলা থেলে চলেছে। তাই,—

हिन्मू शारित (पहता, मूनलमान है मनील, ।

দাস কবীর তহাঁ ধাবিহী জঁহা দোনকী পরতিভ, ।

হিন্দু মন্দিরে ঈশ্বরের ধ্যান করে। স্থুসলমান করে মসজিলে।—
দাস করীর সেইখানেই ধ্যান করে, বেখানে উভরের-ই প্রভীতি।

সিকশ্বসা গোদী স্মচত্র, বৃদ্ধিমান, কৌশলী সমাট। অভএব তিনি সম্মানেই কবীরকে বিদার সন্তাবণ জানান।

ক্ৰীবেব স্ত্ৰীর নাম ছিল লোজ। ভিনি ছিলেন বনখণ্ডী বৈরাগীর ক্লা। তাঁদের এক পূত্র ও একটি কলা জ্বাে। ক্ৰীর পূত্রটির নাম বেখেছিলেন 'ক্মাল' জাব কলাটির নাম 'ক্মালী'। ক্মালী এক দিন কৃপ থেকে ক্লল জানতে গিরে কোন এক ত্রাহ্মণের জ্বলের কলসীতে একটু জ্বলের ছিটে লাগে। এতে উক্ত ত্রাহ্মণ ক্লোেধে অগ্নিশা হ'বে ক্বীবের কাছে জভিবােগ ক্রেন। ক্বীর সমস্ত ঘটনা হুদ্যুক্সম ক'বে, সহাত্যে প্রাহ্মণকে বলতে থাকেন:—

> পণ্ডিত তুম বুঝ পিষপানী। তোহে ছুং কহা ৰুপ্টানী? জামাটিকে ঘৰমে বৈঠৈ তামে স্বান্ট সমানী।

হে পশ্চিত, তুমি বুঝে-ছবে ধল খেও। এ জলে কোথা থেকেই বা ছুং লাগলো? বে মাটির ঘরে তুমি বাস করো, সেই মাটির সঙ্গেও তো সমগ্র পৃথিবীর সংবোগ বরেছে। এই ভাবে কবীর সমাজভাঠ পশ্চিত ও মোলাদের মহামূল্য উপদেশ দান ক'রে, তাঁদের জ্ঞাননেত্র বিকশিত করতেন।

একদা কবীর তাঁব প্রাণের আলা জুড়াবার জন্তো কোন প্রমণ্
পুরুবের সন্ধানে ভিবরত, আফগানিস্থান, তুর্কিস্থান, বুধারা, ইরাণ
প্রভৃতি বহু দেশ পর্যাটন ক'বে শেবে গোরকপুরের কাছে হিমালরের
পাদদেশে মগহর প্রামে উপনীত হন এবং তথারই নির্জনবাসে
ভীবনের অবশিষ্টকাল অতিবাহিত করবার সম্বন্ধ করেন। প্রবাদ
আছে, কাশীতে দেহ বাখলে নাকি শিব হয়। ভেমনি মগহরে
মরলে মানুষ নাকি গাধা হয় পরজ্বে। তাই কবীর কাশী
ত্যাগ ক'রে মগহরে বাস করতেই ক্ষম্ক করলেন। শিব্যদের ভিনি
বলেন, ভগবানের সাধন-ভঙ্কন না ক'রে কেবল স্থানমাহাত্যো দেহ ত্যাগ
ক'রে মৃত্তিলাভ আমি চাই না। বদি আমার ভগবৎ-প্রেম অটুট থাকে
ভবে মর্গহুর থেকেই আমার মৃত্তিলাভ আমি আদার ক'বে নেব।'

অবশেবে একদিন মগহবে এক নদীর তীবে পূপাশগা ক'বে ক্বীর তাঁব শেষের গান গাইলেন,—

> গাউ গাউরী ছলহনী মঙ্গলচারা। মেরে গৃহে আরে রাজারাম ভভারা।

অর্থাৎ, হে কন্সাবাত্তিগণ! তোমবা আমার বিবাহের মঙ্গলাচার গান করে। । কারণ; আমার ওর্জা বাজারাম আমার গৃহে এসেছেন! এই ব'লেই কবীর নিজের শরীরে বল্লাফাঞ্চিত ক'রে বিজ্ঞান্ত হ'বে গেলেন। তাবপর সেই দেহের সংকার নিয়ে হিন্দু ও মুসলমানদের মধ্যে বিভার বাক্বিতগু ক্ষুক্ত হ'লো। হিন্দুরা দাহ করতে চার। মুসলমানেরা চার কররত্ব করতে। কিন্দু অকমাৎ বল্লাকাদন উন্মুক্ত করতেই এক অভ্যাশ্চর্যা, অভাবনীয় ও অলোকিক দৃশ্রের ভীক্ষভ্টার সমবেত ভক্তবৃন্দ পরম-বিম্মরে পাবাণবৎ দাঁড়িবে থাকল। সেই বল্লের ভলদেশে করীরের শ্বদেহের পরিবর্ত্তে প'ড়ে আছে গুছু গুছু পুল্পানি।

সেই পূজা ভাগ ক'বে কতকগুলি পূজা তিন্দুগণ কাশীতে দাহ কাৰ, বৰ্ত্তনানেৰ কবীৰ চোৱা—নামক স্থানে সেই ভাৰ সমাধিত্ব কৰে এবং অৰ্থ্যেক পূজা মুদলমানগণ মগছবে কবৰত্ব কৰে।

নেই থেকেই কাশীৰ 'কবীৰ-চৌৰা' ও মগহৰ উভৱ স্থানই ক্ৰীৰপত্তীদেৰ পৰিত্ৰ ভীৰ্জেভ্ৰন্নপে চিৰুম্বণীয় হয়ে বিবাক কৰছে।

ঐতিহানিকদের মতে : — কবীরের জন্ম — ১৪৪০ খুষ্টাব্দে মৃত্যু — ১৫১৮ খুষ্টাব্দে।

গিবনের আত্মগ্রীবনী

সুনীলকুমার নাগ

ত্ব বেক্সী ভাষার ত বটেই এবং গোটা পৃথিবীর আত্মজীবনী— সাহিত্যের ও অক্সতম শ্রেষ্ঠ বচনা গিবনের (Edward Gibbon 1737—1794) আত্মজীবনী।

গিবনের মৃত্যুর হু'বছর পর তাঁর এক বন্ধু এ বইখানা প্রকাশ করেন। কাগল-পত্র ঘেঁটে দেখা গিবেছিল বেন গিবন তাঁর আত্মকীবনীধানা ছটি ভিন্ন ভিন্ন ভাবে লিখে বেথে গেছেন।

পিবনের বইয়ের প্রেচছের প্রথম কারণ, তাঁর জীবনের জানা ষ্টনাঞ্জি ভব্ত তাঁর আত্মজীবনীতে স্থান পেয়েছে দেখা যায়। কাজেই নিজের সম্বন্ধে কোন প্রাসন্ধ বাড়িয়ে বা কমিয়ে বলাব বদনাম জাঁকে কেউ দিতে পারে না। আর দিঙীয় কারণ बाहे रा, शिव नव व्यविषयवीय की िं The Decline and Fall of the Roman Empire—এর বেমন তার বাজিপটি ফুটে এই আগ্নমীবনীতেও সুকু থেকে শেব পাতা পৰ্যান্ত আমরা সেই ব্যক্তিত্বে আবাদ পাই। ধৈহা ও সহিফুতা, অধাবসায় ও প্রথমীলতা, ভানবার অনস্থাধারণ ইচ্ছা আর সেই সঙ্গে স্ব মিলিয়ে সাফল্যের মৃগমন্ত্রস্বরূপ নিজের কাজ সুষ্ঠ ভাবে সাঙ্গ করবার জন্ত একটা অনভ, স্থদ্য ও স্থিব প্রতিজ্ঞার প্রশ আমরা এ আত্মতীবনীর সর্বত্র পাই। গিংনের আত্মতীবনীর আর একটি বৈশিষ্ট্য এই যে, উনি যে ভাবে নিজে তাঁর বিরাট ইতিহাস একেবারে গোডার কথা থেকে আরম্ভ করে রচনা শেষ করা প্রকাশ করা এবং সে বইরের জনপ্রীতি, বিক্লম সমালোচনা এবং নিজের নাম ধাম খাতি প্রভৃতির কথা বলে গেছেন, খুব কম লেখকই সাধারণতঃ এ কাজ করে থাকেন।

একেবাবে ছেলেবেলা থেকে বোল বছর বরদ পর্যন্ত গিবনের শ্বীবের অবস্থা ধুব থাবাপ ছিল। অক্সফোর্ড ছাত্রাবস্থার গিবন একবার ক্যাখেলিক হ'বে বাবেন মনস্থ করেছিলেন। বাতে ক্যাখেলিক না হ'বে বান দেই জন্ম ওঁর বাবা গিবনকে পাঠিরে দেন জেনেভার। একেবাবে বাল্য বর্ষ থেকেই গিবন নানা রক্ষ বই প্রতে আরম্ভ করে দেন। কি প্রতা উচিত না

অমৃতিত, এ কথা বলে দেবার কেউই ছিল না। গিবনের কচি ক্রমণ: ইতিহাসকেন্দ্র করে গড়ে উঠতে থাকে। "My indiscriminate appetite subsided by degrees into the historic line, and arrived at Oxford with a stock of erudition that might have puzzled a doctor,.....এ হলো গিবনের বখন মাত্র পনেরো বছর বয়স। কাজেই বোমান সামাজ্যের অধিভার ঐতিহাসিক যে অজ্ঞাতসাবে কড দীর্থ দিন ধরে তৈবী হচ্ছিলেন তা সহজেই অমুমের।

ক্যাথেলিক প্রভাব থেকে রক্ষা করার জন্ম বাবা গিবনকে সুইজারল্যাণ্ডে পাঠিয়েছিলেন। এখানে পাঁচ বছর থাকেন উনি। ফরাসী ভাষাটাও গিবন এই সময় ভালো ভাবে শিখে নেন। পড়াগুনাটাও একটা নিয়মের আওতায় আনবার চেষ্টা করলেন। অনেকে বলতেন, পড়ার সঙ্গে লিখে গেলে পঠিত বিষয় দীর্ঘ দিন মনে থাকে। কিছু গিবনের ব্যক্তিগত অভিজ্ঞতা অনেকটা ডাঃ জনসনের মত। অর্থাৎ কি না লিখবাব কোনই প্রয়োজন নেই—পর পর ত্বার পড়লেই জিনিস্টা ঠিক ঠিক মনে থাকে।

সুইন্ধাৰল্যাণ্ডে থাকবাৰ সময়েই গিবনের জীবনে প্রথম প্রণুবের স্থানা হয়। বদিও এ একটা নিভাস্ত ব্যর্থ প্রেমের কাহিনী, কিছ তবু সেদিনের কথা শরণ করে প্রোচ, জ্ঞানবৃদ্ধ ঐতিহাসিক লিখছেন: I am rather proud that I was once capable of exalted sentiment.

স্থানীর এক পুরোহিতের একমাত্র মেরের সঙ্গে গিবনের প্রেম জ্বো। মেয়েটিকে বিয়ে করবার জন্ম গিবন কম চেষ্টা করেন নি— কিছু বাবার জ্মতের জন্ম শেব পর্যস্ত এ বিয়ে হলো না।

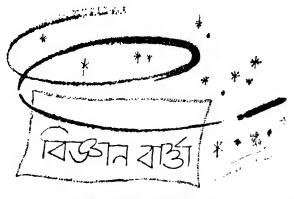
করেক বছর গিবন সৈনিকের কাজ ক্লুবেছিলেন। সৈক্ত বিভাগ থেকে ছুটি পাবার পাই দেশ ভ্রমণে বেবিরে পড়েন। ঘুরতে ঘুরতে চলে আসেন রোমে। বোমে এসে After a sleepless night, I trod, with a lofty step, the ruins of the Forum; each memorable spot, where Romulus stood, or Jully spoke, Q Caesar fell, was at once present to my eye. ১৭৬৪ খু:-অব্দের পনেবোই অক্টোবর রোমে বসেই গিবনের মনে রোমান সাম্রাজ্যের একখানি ইভিছাস লিখবার প্রেবণা আসে।

বোম খেকে দেশ ফেববাৰ পাঁচ বছৰ পৰ ১৭৭০ খুঃ-অফেব নভেম্ব মাসে গিবন জাৰ The Decline and Fall of the Roman Empire জিখতে আৰম্ভ কৰেন। বইখানা লেখা শেব হয় ১৭৮৭ খুঃ-অফেব ২৭শে জুন। এ বইবেৰ প্ৰথম খণ্ড প্ৰকাশিত হবাৰ পৰ বে আলোড়ন স্থাই হয় সাবা দেশে, সেম্ছন্তে গিবন লিখছেন: I am at a loss to describe the success of the work......My book was on every table; nor was the general voice disturbed by the barking of any profane critic. গিবন জাৰ বইবেৰ শেব খণ্ড প্ৰকাশ কৰাৰ পৰ আছোটাবনীতে লিখছেন: Twenty happy years have been animated by the labour of my history; and its success has given me a name, a rank, a character in the world to which I should not otherwise have been entitled.



খোন পিভার নিমিটেড, কর্ত্বৰ প্রবেড।

L. 278-×52 BG



ডক্টর বীরেশ্বর বন্দ্যোপাধ্যায়

্ৰিপ্ৰিড বানের গল নিশ্চরই আপনাদের জানা আছে। পৃথিবীর এক অঞ্লে সোনার খনির সন্ধান পাওয়া গেল, অমনি करन करन लाक बाबा कदरना त्मरे चकरनद किरक। छैत्कन वर्ष আহবণ। এবার আব গোল্ড বাশ নয়—সোনার চেয়েও দামী হীরের কথা বলছি। আগামী যুগে একদল মান্ত্ৰহ হয়তো হীবের সন্ধানে মহাশুভে বাত্রা করতে পাবে। আমেরিকার একজন বিজ্ঞানী সম্প্রতি টালের লেছে হীরের ধনি থাকার সভাবনার কথা ঘোষণা করেছেন। এই বিজ্ঞানীর নাম ডা: জি নি কুইপার (Dr. G. P. Kueiper) এवः छै। व क्यंवन छेडेमक्निमित्नव डेवार्ट्स (Yerkes) প্রেব্ণাগারে। ভিনি আনিয়েছেন বে, চাদের উপরে অবস্থিত আল্লেব্সিবির আলামুখ সমূহের কতকগুলি দেখতে অনেকটা বিবাট বড় আইসক্রামের কোণের মতো এবং সঙ্গে দক্ষিণ-আফ্রিকার হারের খনিব যথেষ্ঠ সাণুগ্র বর্তমান। জাশনাল আকাডামি অব সামান্তের এক আলোচন:-চক্রে বিজ্ঞানী কইপার তাঁর এই আবিভারের কথা বোষণ। করেন। ভিনি বলেন যে, পর্যবেক্ষণ করে দেখা গিরেছে বে, চালের দেহে অবভিত আগ্রেয়-গিবির আগার্থ সমূহকে প্রধানত: হু ভাগে ভাগ করা বার। এক শ্রেণীর মুধ হলো বাটির মতো, সাধারণত: বিজ্ঞানীরা বিশাস করেন বে, মহাশু ল' ভ্রমণকারী দেহপিও সমূচের আঘাভের ফলেই এই শ্রেণীর আলায়ুখ সমূহের দৃষ্টি হয়েছে। বিতীয় শ্রেণীর আসায়ুখ সমূহ হলো কোণাকুতি। চাদের অভ্যস্তবের গ্যাদের বিক্লোবণের करनहें जारमय रही। अहे विरक्तांत्रन यथन हत जबन है। म सरबहे গ্ৰম ছিলো। টেলিকোপের দাবা এই দিতীর শ্রেণার আলামুখ ममृञ्य भरीदिक्य बदा विद्यावन्य छाः कृष्टेभाद्यव व्यविकाद्यव व्यथान ভি.তা। অবল হীবে বে সেধানে আছেই, তা নিশ্চিত ভাবে বলা সম্ভব নর। তার নিশ্চিত ধারণা অর্জনের জন্ত মায়ুব্বে প্রথমে है। दिय (मार्ड व्यवकाष क्रांक हात ।

বিজ্ঞানের কর্মধারা এবং প্রগতির সঙ্গে সাধারণ মানুষকে পরিচিত করবার জন্ত আমেরিকার শিক্ষা প্রতিষ্ঠান সন্তের চেষ্টার জন্ত নেই। এ বিবরে বিজ্ঞানকর্মীরা সভীর ভাবে চিন্তা করেন। প্রতিষ্ঠানগত ভাবে জারা সাধারণ মানুষ্বের সঙ্গে সংযোগ বাধতে চান এবং বিজ্ঞানের ক্স্যাণকুৎ পথে জারা কি ভাবে কাল করছেন, তা সকলের সামনে উপস্থিত করবার জন্ত বিশেব ভাবে উৎসাহী। বিজ্ঞানের প্রগতির উপস্থ হওয়া উচিত জানের সংপ্রসারণ এবং মানব-ক্স্যাণে সেই

সমগ্ৰ বান্ব-স্থান্থের অভিনিধির:প জানের এই স্পাসারিত পথে কাল করেন। স্থতবাং মানব-কল্যাণে তারা কি করছেন বা না করছেন, তার এক উপলব্ধি মাধুবের কাছে পৌছে দেওয়ার একটা দারিখ ও তাঁলের আছে। তার একটা খোলা দিক এ দেশে আমার कार्य भएक्छ-भारवयना-मन्त्रिय वा निका ध्वण्डिंग धरे माहिक्क খীকার করে এগিয়ে বেতে চান। কিছুদিন আগে বর্ণেদ বিশ্ববিভালবে কার্ম আৰ্থি হোম উইক পালন করা হোল। এই বিশ্ববিজ্ঞাপরের কৃষি-বিজ্ঞানের বিভাগটি ধুবই বড় এবং তাঁরা কৃষি-বিজ্ঞানের নানা কেতের নানা সমস্তা নিয়ে কাল করেন। বছরে তাঁরা একটি সপ্তাহ ব্যয় করেন, কি করছেন তা জনসাধারণের কাছে উপস্থিত ক্রার জন্ত। এই সপ্তাহে তাঁদের সমস্ত গবেষণা-মন্দির জনসাধারণের পরিদর্শনের জন্ম খোলা থাকে। বিভিন্ন অঞ্ল থেকে কুবকেরা এবং কুষি-বিজ্ঞানের কর্মধারায় উৎসাহী লোকেরা এসে দেখে বান বে তাঁদের কল্যাণে বিজ্ঞানীয়া কি ভাবে প্রকৃতির জটিল জ্ঞানভাগ্রারের উল্মোচন শ্টাচ্ছেন। এর থেকে তাঁরা নিজের৷ বা ক্রছেন, তার পেছনে অবস্থিত মূল সভাটি উপলবি করবার পথের সন্ধান পান, তাদের অভিজ্ঞতার সঙ্গে প্রকৃতি-রাজ্যের মৌলিক জ্ঞানভাগুরের সম্মেলন ঘটে। চারি দিক ঘুরে দেখে,— বিজ্ঞানক্মীদের সঙ্গে কথা বলে জাদের মনে আস্থার ভাব আগে,— সকলে বিখাস করতে পারেন বে, তারা বা করছেন তার উন্নতির জন্ম বিজ্ঞানের সভাদৃষ্টি নিয়ে একদল ক্ষীও কাঞ্চ করে বাছেন। প্রায়েজন হলে এ দের জ্ঞানভাগারের সহারতা থেকে তাঁরা বঞ্চিত হংবে না।

কর্নেরে একটা সপ্তাহের শেষ পালন কর। হোলো অভিভাবকদের দিন হিসাবে। এ আবেক ভাবে জনসাধারণের কাছে নিজেদের কর্মাবা উপস্থিত করার আয়োজন। তারা উদ্দের ছেলেমেয়েদের লেখাপড়া শেখার জন্ত এখানে পাঠাছেন,— কি ভাবে তারা এখানে খাকে, কি ভাবে এই বিশ্ববিতালয়ের কর্মধাবা এগিয়ে চলেছে তা একটি সপ্তাহ শেষে তারা নিজেরা এসে দেখে বান। কিছু জানার খাকলে এই সময় বিশ্ববিতালয় পরিদর্শন করে অভিভাবকেরা তা জানতে পারেন। প্রশ্ন করে তাদের সন্দেহ এবং উৎস্কৃত্য নিংসনক্রতে পারেন—সম্ভব হলে নতুন কিছু পরামণ্ড বিতে পারেন। সকলের সঙ্গে এই রক্ম বোগাবোগ শিকা প্রতিষ্ঠান সমূহের পশ্বেমক্রবের পার মধ্যে দিয়ে তারা সাধারণ মাছুবের আস্থা অজনকরতে পারে।

M. I. T অর্থাং ম্যাসাচ্সেটস ইকটিটিউট অফ টেকনোলনির নাম আপনারা নিশ্চরই শুনেছেন ? কারিগরী বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে শিকাগানের অন্ত এই প্রতিষ্ঠানটি আমেরিকার শিকা প্রতিষ্ঠান সমূহের মধ্যে এক মর্ব্যাদাপূর্ব আসনের অধিকারী। 'মে' মাসের প্রথম সপ্তাহে একটা দিন ছিলো তালের 'ওপন হাউস' বে কোন লোক সেদিন তালের শিকা ও গবেবলা-মাল্যের কর্মধারা মূরে ঘূরে দেখতে পারেন। হঠাং সেদিন গিরে পড়েছিলাম বোট্ট ল-গিরে শুনাম সেদিনই M. I. T-এর 'ওপেন হাউস'। অন্তান্ত কাল কোল চলে গোলাম M. I. T। অনুসংবাগের দিন সেদিন সমস্ত প্রতিষ্ঠানটি মূরে দেখার এবং তালের কর্মধারা এবং পরিবেশের সক্ষে পরিচিত হওরার এক প্রবেশ্য ঘটনাচক্রে মিলে গির্মেটা এ হারানো উচিত নয়।

আহাত এতো কথা বলার মূল উদ্দেশ্ত হলো আমানের খেশেও প্রভোক বিজ্ঞান শিক্ষা প্রতিষ্ঠানের এবং গবেষণ-মক্ষিয়ের লনসাধারণের কাছে নি'জদের এই ভাবে উপস্থিত করার চেই। থাকা हिकिए। विन नव, बहुत्व अकडी कि कुछी मिन कांवा शहे छात्व জনসাধারণের ভন্ত আলাদা করে রাখতে পারেম। অনেকে হয়তো रहार्वन-- श्रष्ठ चालक चयुविश चाह् । এর चत्र नगरत्त्व श्रास्त्रका ভাছাড়া জনসাধারণ সব সময় উৎসাহী না-ও হতে পারেন। আমার ক্ষু ধাবণা কিন্তু অন্ত,-মনে হয় বছ লোকই এণ্ডে উৎসাচী হবেন धर इन काम्ब (श्रांक हात्यां क्रम (बेंर्स धरम शांकनामा रिकान-প্রেগণা প্রতিষ্ঠানের কর্মধারার সঙ্গে পরিচিত হতে পারবেন। আগে থেকে কাগজে বিজ্ঞাপন দিয়ে সেদিন শুৰু গবেৰণা প্ৰতিষ্ঠান এবং গবেষণা প্ৰতিষ্ঠানের কর্মধারার পরিচয় সকলের সামনে খুলে ধরা। मछन किछ करवार पाछ धार (प्रवादार पाछ नमय बाद करवार प्रवाद নেই। বা আছে তাই কেবল একটু সালিয়ে গুছিয়ে সকলের সামনে বাধা। প্রথমে হয়তো লোকসমাগম কম হতে পারে। কিছ মনে চ্ব ক্রেট জনসাধারণ এতে উৎসাহী হয়ে উঠবেন এবং এই ভাবে গবেষণা-মন্দির এবং শিক্ষা প্রতিষ্ঠান সমূহের সঙ্গে জনসংযোগ বেডে বাবে। সাধারণ লোক গবেষণা-মন্দির সমৃহের কার্য্যকলাপের ব্যাপারে অধিকতর উৎসাতী হরে উঠবেন। এর সঙ্গে দেখের चाव এकि मच वर्ष উপकाव श्रव-- अब माथा मिरव शीरत शीरत সাধারণ মানুষের মধ্যে ঘটবে বিজ্ঞান-চেডনার সম্প্রদারণ।

'ওপেন হাউদে' আর একটা জিনিধ লক্ষ্য করেছি। এরা
নিজেদের কর্মণারার পরিক্রেক্ষিতে বিজ্ঞান-ছনিরাটাকে লোকের
চোধের সামনে তুলে ধরতে চায়—বিজ্ঞান-জগওটাকে সঠিক ভাবে
লোকের চোধের সামনে উপস্থিত করে। দৈনন্দিন জীবনের প্রতি
মৃহুর্ত্তের পেছনে প্রকৃতির কি জন্সৌকিক বহস্য বিরাজ করছে তা
লোকের চোধের সামনে সঠিক ভাবে উপস্থাপিত করা এবং বিজ্ঞান
রাজ্যের অস্থানা বহস্যের সঙ্গে লোককে পরিচিত করে দেওরাই ইলো
তাদের প্রধান উদ্দেশ্য।

'ধপেন হাউদের' দিনে—নানা বক্তম পথীকামূলক জনপ্রির বক্তাবলীরও আহোজন করা হয়। আমাদের দেশেও 'ধপেন হাউস' আতীর কোন কিছু অমুঠান করতে হলে এদিকে স্তর্ক নভর রাধ্তে হবে—কারণ ম্যাজিক দেখানোর অভাবটা আমাদের মজ্জার হজ্জার।

বিজ্ঞানের কোন কিছু পরিবেশন কবতে পেলে এখন কিছু আমরা উপস্থিত ক্ষতে চাই, বাজে লোকের তাক লেগে বাছ। এই কলটা টিশলাম—একটা **অন্ত** কিছু করে গেল। লোকে বাহবা দিলো, আৰু পাঁচভনকে ভেকে এনে দেখাল। এর কিছ এনটা অভাছ থাৱাপ দিকও আছে। এর ফলে লোকে ভূলে বার বে বিজ্ঞানের পরিবেলটা ভার আপন পরিবেশ এবং বিছুটা ভার নিজের চাভে গড়া পরিবেশ। বিজ্ঞানকে সে অলে)কিক ভাবে--সমন্তছে দুরে বাবে। বিজ্ঞান-চেতনার সম্প্রদারণ ঘটাতে গিরে এই ভাবে বিজ্ঞান পরিবেশ সম্বন্ধে প্রায় অজ্ঞ সাধারণ লোককে বিজ্ঞান উপ্লব্ধির ক্ষেত্র (थरक चांवल पूरव मविषय मिल्या हव। चामारमव मिल्या माथावन লোক বিজ্ঞানেৰ আপন পৰিবেশ সম্বন্ধে পুৰুই কম সচেতন-সুত্ৰাং সেই অবস্থায় সরল সহজ সভ্য পরিবেশন করার পরিবর্তে ম্যাজিক मिथानात व्यक्तितेत कनायन थुवह माताक्षक। चूकवाः मान इतः রাজসিক বিজ্ঞান-প্রদর্শনীর দৃষ্টিভলীর পরিবর্তে সাধারণ বিজ্ঞান-চেতনার সম্প্রদারণ এবং নিজেদের কর্মধারা ব্যাধ্যার বিকে বদি দৃষ্টি রাখা হয়, তাহলে মনে হয় 'ওপেন হাউস' দিন উদ্বাপনের জন্ম কোন অসুবিধারই স্টেই হওয়া উচিত নয় এবং ভার প্রস্তৃতিতে সময় নই হুভয়ার সম্ভাবনাও অনেক কম।

দেশের একটা থবর এদেশের পত্রিকাতে জামার চোথে পড়লো।
মতুন নরে হা জাবার জাপনাদের প্রিকোন করছি। বঙ প্রকৃত্ত
করবার হুল বোহাইরে এটিক ইনভাস ট্রিস প্রাইন্ডেট লিমিটেড (Atic Industries Private Ltd.) নামে একটি কারখানা প্রতিন্তিত
হরেছে। এই কারখানা খোল, হয়েছে গত ১ই এপ্রিল। এর
নির্মাণে সময় লেগেছে ত্'বছর এবং এর হুল খবচ হরেছে প্রায় ১ কোটি ৩০ লক্ষ টাবা। এই কারখানার নীল, কালো, বাদামী, অলিভ, হল্পা, কমলা ইন্ডাদি নানাবকম বঙ প্রকৃত করা হবে।
ইন্পিরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদি নানাবকম বঙ প্রকৃত করা হবে।
ইন্পিরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদি নানাবকম বঙ প্রকৃত করা হবে।
ইন্পেরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদি রালাবকম বঙ প্রকৃত করা হবে।
ইন্পেরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদি রালাবকম বঙ প্রকৃত করা হবে।
ইন্পেরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদি রালাবকম বঙ প্রকৃত করার হবে।
ইন্ডাদিরিয়াল কেমিক্যাল ইন্ডাদির একটি স্থিলিক প্রকৃতি বিদ্যালিক স্থানীন ভারতবর্ষকে জন্ত গেলে সাহাহ্যের উপর
ক্রিক্ত করতে হয়। সভবাং নতুন এই দিল্ল প্রস্থিতিন বে ভারতের
দিল্লক্ষেত্রের মর্য্যালা সম্প্রদারিত করবে, ভাতে সন্দেহ নেই।

বারিঝরা আষাড়ে

থবাবেও আলা বে ছিল মনে
বারিবরা আহাচে ছ'টি হক্তগোলাপ মোরা
দেব ছ'জনে।
দেবে ভূমিও
দেব আমিও,
দেব ছ'জনার ভালোবেসে

ছ'জনে; বুঝি হ'ল না শেবে
হায়, সেই দেওৱা নেওৱা,—
নিরালায় ছ'টি কথা কওৱা,
আজ মনে হয় তোমা হ'তে তুমি বেন মোবে
সরায়ে দিয়েছ বছ দূরে;
ভাই ভো আমার দীর্থবাসের তথা ঝড়ে!

জন্ম-শাধার স্বপ্ন-বক্ল প্রথান্তে ঝ'রে পড়ে। এস সে ফুল কুড়িয়ে নিতে স্নামায় দিভে।



महीन विश्वाम

্ৰিকট কাঁদ। কেবল আমানই জলে একটু চোণের জল ক্ষক ভোমান। ভূমি পৃথিবীর মম্ভা নিয়ে চলেছো। ক্মান্যালা গোলেলে। জামি মম্খা পেতে চাই, আন ভাচবাসা।

কানটো পুৰা বাছনি কামার। বেস মা, কামার করে এক কমও ক্রেনেছে। কাণার চলে বার্যা করে চোরের ক্রাট্রেন ক্রেছে। স্থানি টোনা দুলি চলে বাই।

জুল মাই বা কৃটল জীবলে । জাচমকা একটা ফুল কলতে পাৰে লা কি । আমি ক্লেগ্ৰ কল দেখি । একটা মুহুৰ্তের ক্লন্তেও পৃথিৱী খনকে গাঁডিয়ে আমার চলে-বাওৱা পথের দিকে কি ভাবিয়ে থাকতে পাবেনা ? ভূমি পৃথিবীর মমতা পেয়েছো, ভূমি একটু ভক্ক হও ।

আর তুমি একটু কেনো,—আমার অন্তে চোথের অল কেলো।

হ-ভ বরে গভীর রাজের বাতাস বরে বায়। মহানগরীর
পাঁচথানা বািন্দ উপর দিয়ে মাথার বায়া খেরেও সে বাভাস এসে
আছড়ে পাড় এ বাড়ির আনলার। বড় আনলাটা থোলা থাকলে
ববের ভেতর চোকে বাতাস। ববের ভেতর চোকে আর থাতাবই-পত্তরের পাতা উড়তে থাকে। আলগা পাতাওলি ও পাশের
বেওয়ালে গিয়ে জড়ো হয়। বেওয়ালে টাজানো ক্যালেগারের মাসওলা
ভীবণ ভাবে ছট্ণট করে। সমর বেন ক্রন্ড চলে বেতে চায়—
আরও ক্রন্ত। মে মাসের আজ উনিশ আর বারটা বিনও অপেকা
ক'রে বেতে চায় না। ও-পাশের খাটের মাথার উপরে এবড়ো-থেবড়ো
ক'রে গুটোনো মশারিটা এলোপাথাড়ি ওঠা-নামা করে।

বীথের গভীর রাভের বান্তাস বরে যার। এত বাতাসেও খাম মবে না গায়ের। কপালের প্রতিটা শিরা ক্লেপে ৬ঠে। পেশীওলো দশ-দশ করে। খাম জমে কপালে, নাকের ডগার ভার বুকে, পিঠে, খাড়ে। এত বাতাস, তবুও গুমোট-গ্রম কাটে না একট্ও।

বিকাস ই লিচেয়াবের মধ্যে পড়ে পড়ে ছটফট করে বামে। তবুও

বিলাস। ভাষবাজাবের বিখ্যাত মজুমদার-বংশের শে**ব সলতে।**



অবশ্র এখনও তার আলো দেওবার ক্রাবাচন হবনি। কেন দা, বেডলো একবার আলছিলো ভাবা এখনও ডেলেন্ডলে দশ্যপ করে জান্তিক আলোর বিভাব করে জান্তে। দেবীপ্রকের মন্ত্রনারের জীবন ও খৌবনের সার্থক উপ্তর্গাকোরের করেব দেবীপ্রকের মন্ত্রনারের জীবন ও খৌবনের সার্থক উপ্তর্গাকোরের করেব দেবী দান হবে ব'লেও মনে হয় না। করেব বিভাবের আই থালে। এ বারণা ভার কাছে অভিযানের হলেও মিধ্যে নয়। মিধ্যে নয় বলেই বেঁচেছে বিলাস। না হ'লে বিলাস নাম্টি ব্যম একটা বাল হ'বে উঠলো পাড়ার, পাড়া থেকে বে-পাড়ার, ভখন দেবীপ্রকরের সর্বলের পুত্র হবে সন্ত্র করেতে পারতো কি করে । সন্ত করেতা না হয়ত। হয়ত আনককে সে গুলী করে মারতো। বিজ্ব ভাবে বাল করেবে কট মারা গোছে, এমন জপ্রাদ বেউ ভাকে দিতে পারবে না। তার অভি-বড় শত্রুও না।

সে ব্যক্তের পাতা। আশ্চর্য! মাছুবের ঘুণাকে কোন্ গুণ থাকলে উপেক্ষা করা বায় । ভেবে দেখা হয়নি বিলাসের, এত দিন ত্রদীর্ঘ ত্রিশটি বছর পেরেও সে ভাবেনি। নিজের সম্বন্ধে এতটুকুও ভাবেনি। অথচ সে তো ঠিক উঠেছিলো সুর্য্যের মত না হ'লেও তার ওঠার মধ্যে দীন্তি ছিলো না কি । না হ'লে অপ্র আর আশা ওর জীবনকে বিষেধ্যরে কেন । কিছু বাছতে না বাছতেই মেখে-ঢাকা সুর্যার দিকে লোকে বেমন ক'র অবজ্ঞার দৃষ্টিতে তাকার, তেমনি ওর দিকেও অবজ্ঞার দৃষ্টিতে সকলে তাকিরেছে। আর দেবীশংকরের ছোট ছেলে বিলাস নীরবে সম্বাক্তরেছে সে অপ্যান। অবজ্ঞা।

অবছ-বর্বিত চুলগুলি কপালে এসে আছড়ে পড়েছে। বিলাস গভীর মমতা চেলে নিজের চুলগুলি সহিয়ে দিলো। বেন নিজের চুল নয় এগুলি। এই ত সেদিনের কথা। মাত্র ক'টা দিন আগেও বদি আর একটা কপালে অমনি ভাবে চুল উড়েগে শুক্ত-বিশ্বরে চেয়ে থাকতো বিলাস। এই চেয়ে থাকাই ভার বিলাস। মুখোমুধি চেয়ে থাকাই তার আভিজ্ঞাতা।

এक ट्रे काँग। आभावरे खान এक ट्रे काँग पृथि।

নড়ে-চড়ে বসলো বিশাস। মায়বের জীবনে অনেক সময় এমন ঘটনাও ঘটে বায় বা পরে ভেবে দেখলে নিজেবই কেমন বিখাস হয়।। এই বিলাসই কি এত অফুনর—এত আর্ডল্ব জীবনে কথনও ভনেছিলো ? শোনেনি। বে ভারতী সেন ওকে বিয়ে কবতে চেরেছিলো তার মুখেও শোনেনি। নন্দিতা নন্দীর মুখেও না। সেখানে শোনেনি, কেন না তাদের ছিলো জীবনের আশা—আর পাখি বসাকের মুখে ভনলো, কেন না এখানে মুডার হতালা।

আমি আর থাকছিলে—থাকবো না। আর এ বিখাস আমাকে বড় পীড়া দেবে বদি জানতে হয় আমি ছিলামও না। কোন দিন থাকতে চাইনি। তোমার বেদনার অঞ্জয় মধ্যে আমি থাকার ভাষা শুনতে চাই। আমারই জয়ে তুমি একটু কাঁদ। বিলাস চমকে ওঠে। কতো দিন পরে আবার ওদের কথা মনে পড়লো। ভারতী সেনকে মনে পড়লো। পাথি বসাকের পালে। এব মধ্যে কি ভালগারিটি আছে ? ভারতী শুনলে হয়ত বলবে, আছে। তুমি নোংবা, তাই আর একটি অভিজাত মেরেকে বসিরেছো এ নোংবা গলিব মেরেটার পালে। এত সাহস পাও তুমি ?

সাহদ না পাবে কেন বিদাস । তুমি মেরে নও । পাবি কি থেরে নর । মেরে। নারী। এই ত তার বড় পরিচর। নে কুধা চাদতে পারে। বিষও। সমর-বিশেষে বিষও কুধা। কেন না, আঘি কি ঋধু পুরিই চাই, কর চাইনে । কর করতে না পাবাটা বে আমাকে হতভাগ্য করে তোকে। সকলেই করে করে। টাকা। বেহ। যন—

কি বা-ভা বলছো বিলাম ! ভোষার শিক্ষা বার্থ। ভারতী দেন নিশ্চয়ই নাক কুঁচকাবে।

वार्थ । ना जावजी । तकन ना व निका तक तक ना । व निका আমার পেশীতে, রজে, আর ধ্যকে মাধার একটা টোকা দের বিলাস, শার এধানে, বৃদ্ধিত। ব্যাপারটা একটু নাটকীয়াহয়। তা হোক। ভবু ষদি একটু বোঝে ভারতী দেন। বুঝলো না। ওর মত একটি ডাল্হেডেড মেরের পক্ষে অবএ বোঝবার কথাও নয়। ও ভয় পেরেছিলো। বিলাদের ক্ষয় করার প্রবল বাসনা ববি বা ওর দেহেম্ব উপর এসে শাহড়ে পড়লো হাউ নন্:দন্স। একটু ঠোটজোড়া এগিয়ে দিলে শায় একটু বৃকে মুখ গুঁজ:ত দিলেই কি ক্ষয়ের পথগুলো সব শালগা হয়ে পড়লো নাকি ? তা হয় না কোন পুরুবের। বৈখানর বে আপন অগ্নিভেজে দগ্ধ হয়েছিলো,— কেন ? 🐧 টা, ভার বদলে বদি একটা চড় মারতো ভারতী দেন, খুসী হতো বিলাস। বুৰতো, না, ভারতী সেনেরও কিছু দেওয়ার আছে। কিন্তু তা ও করেনি। কেবল ভয়ে পালিয়ে গেলো। নিছক ভয়ে—বোকামি নিয়ে। विनान हानतन, प्रवकी शास ताले आदित सम माहे क्यांडान গ্রাস্প। ভালো হরেছে। বেঁচেছে ভারতী সেন। এম-এ পাশ করে क्ति वित्न छ- क्वर छ हे क्षिनी बात्रक विषय करबर छ । आब शहे बुहूर छ এফটনাত্র প্রস্ন তাকে করতে ইচ্ছে হয়, কেমন আছো ভারতী সেন !

ভারতী সেন হয়ত বলবে, খুব ভালো আছি বিলাস! গাড়ি-বাড়ি, গরনা-শাড়ি, লোসাইটি, আভিজাত্য,—আর স্বামীর সোহাগ, ছেলেপুলে আর কি ?

থমন মেরেকে জিজ্জেদ করাও বুখা। বে আর কিছু চার না, তাকে ওর জায়গাতেই থাকতে দাও। কিন্তু থমন কি হর না? হতে পারে না? স্থ সতিটে নেই বিলাদ, মাত্র এইটুকু বুকেছি। কেন নেই একটু বলবে?

থমন হ'লে বেশ হর। কিন্তু ওরা বলবে না। বলতে ভর পার ওরা। পাছে পেছনের টুকু হারার। কিছু হারাতে বাজি নর ওরা। কেন না পেরেছে বে সামাজই। ওটুকু হারিবে বিজ্ঞ হওরার সাহস কোধার সামাজ একটি মেরের ? স্বার্থনর সে।

কিছ এই পাৰি ? একটু কাঁলো। আমারই জঙ্গে একটু চোধের জল ফেলো ভূমি।

ওপাশের দেওয়ালে সেই থেকে ছাংগারটা, কেবলই এট-এট লক্ষ করছে। বেন ওর চেভনা রয়েছে। ও বেন কিছুর সাকী হতে চার—বিলাসের বেদনার সাক্ষী থাকবে নে। কিছ ও কি ভূলতে চাইছে কিছু ? পাৰি বসাত কে ? পাৰি নামটি ওব দেওবা। বলেছিলো, ভূমি পেছনের, তোমাকে ভূলতে পারিনি, কিছ ভোলা উচিত নর কি ? ভাই ভূমি পাৰি। অলক। নামটা ভূলে বেতে হ'বে বে ভোমার।

পাৰি তথন মুচকি হাসে। কবেই তো জুলে গেছি, তোমাকে পেরে জুলেছি। তুমি তো সমাজের, তোমার ছোঁয়ার আমি সমাজের আর্থা পাই। বিকার আর আডিছাতোর। অহংকার করি। অহংকার কর। কিন্তু দেখিন আমনি ক'রে জেগ্ণে পড়লে কেন। অমনি করে বলুলে কেন।

ভারও লভে তুমি দারী। তুমি দর্দী। আয়ার কথা তুমি
লা শুন্ম (কন ? জান্মে না কেন আজও আমি অভিসম্পাত
দিই ভাষীকে ? বাবাকে আর স্মাতক। আয়ার নিখাসে বলি
আগুন থাকে তবে ওরা পুড়বেই একদিন। ওরা বলে-পুড়ে থাক
হ'বে বাবেই; তুমি দেখো।

এইটি ভার একমাত্র অহংকার। এ জীবনের সবই বধন ধুংংছুছে গেছে, মান-স্মান , সামাজিক মর্বাদা সব, তখন এ একটি
মাত্র গর্ব। সচেতন জিখাসো। পাখি বলে, তুমি ক্ষরে বাছো,
এতে আমি খানন্দ পাই। আমার কাছাকাছি তোমাকে দেখতে
পাই বলে। বসতে! গ

ব্রেভো! বিশাস ওর পিঠ চাপড়ে দেয়। আবেগে উচ্ছাসে ওর মাথাটা টেনে আনে বুকের উপর। গন্ধতেলের একটা উগ্র ঝাঁঝ

বাসবী বস্তর

বন্ধনহীন গ্ৰন্থি

["]প্রতিভার প্রদীপ নিয়ে সাহিত্যের আঙ্গিনায় যে সমস্ত শক্তিময়ী দেখিকার পদম্পর্শ পড়েছে জীমতী বাস্থবী বস্থু তাঁদেরই এবজন। বিশ্ববাদ নয়' নামক লেখিকার নিবেদন পাঠে জানা যায় যে ভিনি ছন্মনাম গ্রহণ করে সাহিত্যের আসরে অবতীর্ণা হয়েছেন। আলোচ্য গ্রহটি মাসিক বস্তমতীতেই এক সময় প্রকাশিত হয়েছিল; স্বতরাং এর বিষয়বস্তও ব্যালা করি আমাদের পাঠক পাঠিকাদের অজানা নয়, আনন্দের সংগে সংগে লক্ষ্য কথেছি যে মাসিক বস্তমতীতে প্রকাশিত হওয়ার পর বন্ধন-হীন গ্রন্থি যথন গ্রন্থরপ নিষে আত্মপ্রকাশ করল তথন সে ঘণোচিত পরিবর্ধিত, পরিবজ্ঞিত ও পরিমান্ডিত। লেখিকার রচনাশৈলী বর্ণনভংগী এবং ঘটনার ধারারক। বিশেষ প্রশংসার দাবী রাখে, সহজেই বোঝা ধার যথাযোগ্য গাম্প্রীর্যাপুর্ন ১০এক রসবোধের তিনি অধিকাবিণী, তাঁর ইচনায় কোন কুত্রিমতা, জটিলতা ও আছেইতার সন্ধান মেলে না। লেথিকার ভাষা স্বতঃ সূর্ত, জনমুস্পার্শী ও মনোরম। চিত্রিত চরিত্রগুলি অতি স্বাভাবিক, এক সময় জীবস্ত হয়ে ওঠে। লেথিকার ২ক্তব্য জ্বস্তুরস্পার্শ করে এবং বিচিত্র বৈশিষ্ট্যের জ্বালোয় উদ্ভাসিত এই গ্রন্থটির ভূমিকা লিখে দিংয **শ্রছের কথাশিল্পী** তারাশঙ্কর বন্দ্যোপাধ্যায় মহাশয় গ্রন্থের সৌষ্ঠব বুলি করেছেন। অতীব স্থপাঠ্য এই উপক্রাসটির আমরা বছল প্রচার কামনা করি এবং প্রসংগত জানিয়ে রাখি ধে দেখিকাব কাছে ঝংলা সাহিত্য আরও অনেক কিছু আশা করে।"—মাসিক বস্তমতী, পৌষ, ১৩৬৫। माम छ' डीका माज।

প্রকাশক: वलाका श्रकामनी, २१नि, আমহার্চ द्वीते।

নাকৈ লাগে। সেই জান্তই তো ওলের থেকে ভোমাকে এত বৃদ্ ক'বে দেখি। অথচ ভয়পাড়ার মেবেলা এটা বৃদ্ধতে পাবে না। ভাল কেন্তেড ননসেভাগুলো। ওবা ভাগাতে পাবে না কোন পুক্ৰের চেডনাকে। কেবল ভীবন দিতে চার। আবে, একটা মানেপিশু খাড়ে নিবে বিলাস মন্ত্যদাবের কোন্ কর্মে লাগুবে, বলো ?

পাৰি জাবার হাস। জন্তুত সুক্তর করে হাসে।

কিছ ওব ভাবনেও বেদনা আছে। উপৰ থেকে দেখে বুঝবার উপায় নেই এতটুকু। সকলকে বলাও ভ বার না সে কথা। টাকা দিয়ে স্থিতি কবতে এনে কেই-ই বা ছিঁচকাঁছনি জনভে চায় ? কেউ না। ভেমন কাউকে পায়নি জলকা। অথচ সে বলতে চেয়েছে, ভনাতে চেয়েছে, ও ভাদের ক্যা করেনি। ওর স্থানীকে জার সরকাবের বড়ো জফ্লিগার, ওর ব্বোকে ও বাল করে। ওর নির্বিকার স্থাককে ও অভিসম্পাত দেয়। যাত্র এইটুকুই ওর বজ্ববা।

বিলাদ বিদ্ধ আরও ফেনেছে। ওনতে হেল ডালোই লেগেছিলো তার। বিলাস পাথি বসাকের মধ্যে নিজের জীবনের সমর্থন পায়। ইন্দার কোক, অনিজ্যার হোক, কেউ বন্ধু-বাছন, সমাজ-সংখার থেকে ফুক্ত হ'তে পেবেছে ভানলে ওর আনল হয়। ও নিজেও তো তাদের কেউ নয়। জান হওয়ার সংগে সংগেই নিজের ভেতরকার একটা মা হাল থেকে তাভিয়ের নিয়ে বেড়াছে। ধরা যে পড়েনি, বাধা যে পড়েনি, সংসাবের আর পাঁচটা লোকের মন্ড, এর জন্তে মনের পাইন কোণার কি বেদনা নেই? আছে হয়ত। কিছ আফ্রেনার করে না ও। কেবল সে সাধী খোঁলে। নিজের জীবনের কাছাকাছি এক জনকে পেতে চার। অলকাকে ঠিক এইজভেই ওর এত ভালো লাগে।

তাই ত'নছে সে। মন দিয়ে তনেছে অলকার জীবনের কয়টি কথা। দে-ও একদিন একজনের মনের কাছাকাছি আসতে পেনেছিলো। ওব দেহ-মনে সেদিন জোরারের কলোল সুক হ'রেছিল। কুলে কুলে কুলে উঠেছে তেউ। টেউ-এর পর টেউ, তাই দেখেই মুখ্র হরেছিলো পাড়ার কলেজে-পড়া সুকাল্প বসাক। অলকাকে সেকাভ ডেকছিলো, কাছে নিয়েছিলো। বিখ্যাত পুলিশ-অফিসাবের মেরে সে ডাকে সাড়া দিতে গিরে নিজেকে হারিয়ে কেললো। স্থকাল্পর কাছে দে ভরলা পেরেছে। পড়াতনো পড়ে থাকলো। স্থকাল্পর কাছে দে ভরলা পেরেছে। পড়াতনো পড়ে থাকলো। জীবনটাই বদি একজনের হাতে তুলে দিতে পারে সে, কি হবে ছাই কতমন্তলো আজে-বাজে বুলি মুখ্য করে ?

এই করেই ওর পড়াওনো বন্ধ হ'লো। আর তাতে খুসিই হ'লো অসক।। মান্মবা মেরে অসকা বাবার কথা শোনেনি, দাদার কথা হেনে উড়িরে দিরেছে, বৌদির উপদেশকে করেছে ব্যঙ্গ। জীবনটা ও কোন ভাবেই গলা টিপে হত্যা করবে না। মিথ্যে হ'তে দেবে না ওব প্রেমকে।

সেই কথাটাই একদিন সে শুনিয়ে দিলো পুকাস্ককে। আমাকে তুমি উদ্ধাৰ কৰ। বাবা-দানাৰ সংসাৰে এক মুহূৰ্তও আমি থাকবো না। অসকা প্ৰকাশ্বৰ বুকে মাধা বেখে আশ্ৰয় থোঁজে।

আছা, কেন? বিলাগ উৎসাহ দেখার।

অকান্ত এমনিতে ধ্ব সাহনী আৰু বৃত্তিমান। কিন্তু বিৱে ? বাবা মাকি এ বিৱে খাকার করে নিতে পার্বেন ? একটু বেশ হমে বার সে। কিছা দে কথা অসক। ভনবে কেন ? আর ভনলে বে তথ্য চলবে না অসকায়।

বলসায়, এখন তো পিছ-পা হ'লে তোমাৰ চলবে না ? আমাক আত কাছে টানলে কেন তখন ? একটু দূরে রাখলে তো পারতে ? স্থকান্তর মুখর একেবারে কাছে মুখ এনে অলকা ছোট ক'বে বলেছিলো, আমি বে মা হ'তে চলেছি।

বিলাস থঘুকে চেয়ে থাকে অলকার মুখের দিকে। অলকা একটু থেমে বলে, তার পর এক দিন স্থকান্তর হাত ধরে ছঞ্জনে রাজার এসে গাঁড়ালাম, আর পেছনের সব ক'টা দরজা তাড়াতাড়ি বন্ধ হরে গোলো। স্থকান্তর মনে জোর ছিলো, সে বললো, ঠিক আছে তোমাকে নিরে আমি নতুন বাসা বাঁথবো। নতুন বাসায় কেবল ছমি আর আমি—কেমন ?

বৃক্টা দেখিন ধেন একটু কেঁপে উঠেছিলো অলকার। মাধার ডেডবটা একটু ঝিন-ঝিন করে উঠেছিলো বৈ কি। অনিশ্বিত ভবিষাৎ,—রহজ্যের অজকারে হাতড়ে অলকা কুল-কিনারা দেখতে পারনি। এক ভবসা স্থকান্ত। অলকা বললো, আমি ওর হাত ধরে অজকারেই এগিরে চললাম। ভূললে চলবে কেন, আমি বে তাকে ভালবাসি।

একটু খেমে জলকা বললো, তা আলো অনেছিলো বৈ কি? অলেছিলো, কিছ তা কত দিন আৰু থাকলো ? যে আলো এক দিন সামনে অলেছিলো, দপ করে তা নিবেও গেলো। পুৰিবীটা মনে হলো বন-বন করে ঘূরছে, কেবলই ঘূরছে। আর আমি সেই ঘুৰীপাকে ঘ্ৰতে ঘুৰতে বেখানে এসে ছিটকে পড়লাম দেখান খেকে ৰত দূরে তাকালাম—কোন স্থানেই আমার স্বামীকে দেখলাম না। সে তখন বাবার অপুত্র হয়ে বাড়িতে গিয়ে উঠেছে। সেধানে আমাকে নিরে : ২তে চার না। বুঝলাম, আমাকে আর ভালো লাগে না হৃষান্তর। কিছ বিলাস, ভেবে দেখো, ভোমাদের ভা.লা লাগা ৰদি এমনি ধেয়ালী হয়, আমাদের প্রাণটা কোধায় ঠাই পার ? ২ল ? পাথি হাসি-হাসি মুখ করে বলেও মনে হয় সে বেন কাঁদছে। ভার সারা দেহ-মন বেন অপরিসীম বেদনায় তুলে তুলে উঠছে। বাবাৰ আশ্রয় থেকে আগেই বঞ্চিত হয়েছি। ভোমাদের এমন সমাল, আমাকে কোন বাঁচার প্রই বাভলে দিতে পারলো না বিলাস! তাই এই পথ,—মৃভার পথ ছাড়া আৰ কি-ই বা এছণ কৰতে পাৰি বল ৷ এই ভাবেই মৃত্যুৰ দিকে চলেছি।

এই অলকার কাহিনী। তার পর পাথি। বিলাস এমন কিছু মাথা ঘামার না পাথিব অতীত জীবন নিয়ে। ওর অভিশাপ আব ওব অভিমান হুটোই সমান হাসির ব্যাপার। ওর প্রেমের কাহিনীও সন্তা এক প্রেমের উপজাসের কাহিনীর মত। অভ কেউ এ কাহিনী বলতে এলে মারপথেই বিলাস হয়ত থামিরে দিতো তাকে। কিছু পাথিকে সে থামাতে পারেনি। পাথিকে ওর নিজের চাইতেও অসহার মনে হয়। কেবল সায়াপরা পাতলা অরগ্যাণ্ডির একটা ছোট ব্লাউল গারে বে নারীদেহটা বিলাসের বুকের উপর পড়ে পড়ে সেদিন কেনেছিলো, তাকে দেখে বিলাসের মনে হ'ছেছলো, পাথির বুকেও সন্তিয় বছুলা আছে। তাই সে পার্থির পিটে হাত বুলিরে দিরেছিলো, আদর করে চুল্ভলি নাড়াটাড়

ता, ता ! ब 'डानडा' तरा ! 'डानडा' कथन3 स्थाना चतस्रारा विक्री रस्ना ता !

আছে ই্যা, ডালডা বনস্পতি আপনি কেবল শীলকরা টিনেই কিনতে পাবেন। এই জন্যেই এতে কোনও ধুলো মধলা লাগতে পাবে না আর না পারা যায় একে নোরো হাত দিয়ে ছুঁতে। তাছাড়া থোলা অবস্থায় 'ডালডা' কেনার দরদারই বা কী যথন আপনার স্থবিধের জন্য ভারতের যে কোন জায়গায় আপনি ১০, ৫, ২, ১ ও ১ পাঃ টিনে 'ডালডা' কিনতে পাবেন।





হাঁা, এই তো 'ডালডা'! এর হলদে টিনের ওপোর খেজুর গাছের ছবি দেখলে সবাই চিনতে পারে।

মনে রাধবেন 'ডালডা' কেবল একটি বনস্পতির নাম। আপনার এবং পরিবারের সকলের স্বাস্থ্য স্থরক্ষিত রাখতে সব সময়েই ডালডা বনস্পতি কিনবেন শীলকরা বন্ধ টিনে। কেন না কোন রকম ভেদ্ধাল বা দোযযুক্ত হবার বিপদ এতে থাকে না আর যা কিছু এই দিয়ে রাখবেন সেই সব খাবারের

প্রকৃত স্থাদ বজায় থাকবে।

ডাল্ডা বনস্পতি দিয়ে রাঁধুন—আর স্বাস্থ্য ও শক্তি সঞ্চয় করুন।

হিন্দুহান নিভার নিমিটেড, বোবাই।

ক'বেছিলো অনেকক্ষণ। সেই খোহাছের তদ্রায় চ্লু-চ্লু বাভটা অনেক দিন মনে থাকবে বিলাসের।

বিলাস আবার একটু নড়ে-চড়ে বসতে চাইলো। দেইটা ভারমাধা তার হরে আছে। বিলাস ইজিচেয়ারেই পড়ে থাকে। বাতাস
সমান তালে ছ-ছ করে বরে বাছে—ঠিক আগের মতই।
বিলাসের হঠাৎ মনে হলো, বাতাসে বেন কা আর্তম্বর ভেসে আসছে।
অগংশুদ্ধ স্বাই বেন একটু অঞ্চর জন্মে কাত্র প্রার্থনা জানাছে,—
আমাত জন্ম একটু কাঁদ তুমি। বিলাস বেন স্পষ্ট শুনতে পেলো
একটি ম্বর, জীবনে কোন মানুষ্ট তো তোমাকে ধ্রতে পাবলো না।
একবার এই মানুষ্টির জন্মে বদি একটু কাঁদতে পাব, জীবন ভোমাব
ভবের যাবে।

তবুও পারে না বিলাস। কোন দিন কারো জ্বল্যে তার চোধে জ্বল আনেনি। কারার কথা ভনে মাঝে মাঝে হাসি পার বিলাদের। টাকা দিরে স্কৃতি করতে গেছে দে। জালা জুড়ুতে গে:ছ। কাঁদতে বারনি। বোকা মেরে! তুমি কাঁদতে বল কা'কে? পারাণের বুকে ফি করণা থাকে? বল?

করণা! কথাটা কর বার মনে মনে আওড়ার বিলাস। অন্তক্তের করণা করবে! করণার পাত্র সে কি নিজেই নর ? কি পরিহাস!
এক বল্লণাকাতর নোংবা গলির হতভাগ্য মেরে বিলাসের কাছে চার
করণা! একটু অঞ্জ ব জন্তে আকৃতি জানায়। আর বিলাস
সভ্য সমাজের ভন্ত মানুষ, ভার অত্যে এতটুকুও করণা দেগাতে
পারলোনা!

বিসাস ভেবে দেখলো পারা যার না। কেউ-ই পারবে না। ভবানে কি মনের ব্যবসা করতে কেউ বায় ? বার না। নতুবা ভব ঐ শেব ক'দিনের কথা করটি ভো আঞ্চল মনে আছে, এই ভো আমাদের জীবন-বিসাস, অভ্যাচারের ভিপো। কবে ভনবে আমি মরেছি। মরাই ভালো,—দৈহিক মৃত্যুই। মনেব কথা ছেড়েই দাও। দৈহিক মৃত্যুই ভাড়াভাড়ি চাই আমবা। বৌবন চলে গেলে বে বেঁচে থেকেও মরা আমবা। মরণ ভার থেকে ভালো নর ?

কাবো মুখে এমন ক'রে মরণের কথা শোনে নি বিলাস।
ভারতী সেন মবতে চারনি। শুক্লা চ্যাটার্জি মরতে চারনি।
মরতে চারনি নন্দিতা নন্দীও। কুৎসিত চেহারা নিরেও সে বেঁচেই
থাকতে চেরেছে। শুনা বার, তারও জীবনে বিরের কুল ফুটেছে।
বিলাস ভেবে দেখে এ নন্দিতার জঙ্গে বরং একটু কাঁদা হার। সেই
ভো সভ্যিকার করুণার পাত্রী। হক্ত শরীরে রইলো, মাংস থরে
থরে সাজানো থাকলো। যৌবন তার আলোর রশ্মি ছড়ালো
অধচ জীবনে ছটফটানি এলো না! কী ব্যর্থ জীবন, কী সন্ত।
জীবন!

পুরুষ কি এমন জীবন সহা করবে ? পুরুষ মাত্রেই নর অবঞ্চ। ক্ষে-বাওয়ার সাহস অনেকের থাকে না। হিক্ত হ'বে বাওয়ার আনন্দ অনেকে পায় না।

অধ্য সে করে গেলো। বিক্ত হলো। জীবন ধরে কেবল হারালো। ওকে তো অনেকেই দিতে চেয়েছিলো। বৌবনের বছ্রণার কাছাকাছি তো অনেকে আসতে চেয়েছিলো। ধরতে পাবলো না বলেই তো ভারতী সেন পালিয়ে গেলো। শুক্লা চ্যাটার্জি পালিয়ে গেলো, কেউ অপমান করে গেলো, কেউ কাপুক্ষর বলে অবজ্ঞা করলো। মন্দিতা তে। বীভিমত গালাগালিই করেছে তাকে। ওর মাঞ্চি বার্থতার বড়ো আলা। বিলাসকে ধরতে পারলো না, বাঁধতে পারলো না বালে বালা। এ-ও এক হাসির ব্যাপার। বিলাস সেদিন হাসতে হাসতেই বলেছিলো নন্দিতাকে, তোমার সম্পদ বলতে তো ঐ দেহটা। তাও আবার কুৎসিত বিড়ম্বিত—

রাগে ফেটে পড়েছিলো নশিভা।

বিলাস হাসতেই থাকে, কিছ ভাতে এতটুকু আরামও ৰে তুমি দিতে পাবনি নশিতা, তা বদি জানতে। কেউ-ই পারে না। তুমি কেন, কোন মেরে পারে না।

ধ্নে পারে না ? রাগে কাঁপছিলো নন্দিতা নন্দী। ছেলেরা দেহ চায় না।

मन ?

মন চার না। .

ভবে ?

বঙ্গণ।

কী সাংঘাতিক তুমি বিলাস ! নিদ্দিতা নন্দী দেদিন কেঁদেছিলো।
রাগে তৃংথে অভিমানে। রাউস ছিঁড়ে, শাড়ি ছিঁড়ে শণ্ডণু
করতে চেবেছিলো। তাতেও রাগ পড়ে নি, জালা মেটে নি।
বা-তা ভাষার বিলাসকে গালাগালি ক্রেছিলো নিদ্দিতা নন্দী।
এই তোমাদের স্বরণ নন্দিতা। আবরণ আলগা করতে পেরেছো,
এই জন্তে ভোমাকে বছবাদ দিই।

নন্দিতা সেই বে পালালো আর আসে নি। কোন দিনও আসবে না জানে বিশ্বস। বার কাছ থেকে কিছুই পেলো না, কেনই বা যুৱবে সে তার পেছনে পেছনে ?

আব এক মেরে এই পাখি বসাক। আবার একটি আর্ত্রর ওনতে পার বিকংস। জন্ম নিলাম—মৃত্যু হলো। মাঝের ক'টা দিন কাবো মান এন্টুকু ছাপ পড়লো না আমার,—আমি থাকলাম না, হিলাম না—ছই গাল বেদ্বে তার জঞ্জর বক্সা নামলো। ফুলে ফুলে উঠলো তার সারা দেহটা। বড় কট্ট, মৃত্যুর চেন্নেও এবড় কট্ট, তুমি বুঝবে না বিলাস!

काँक, आमात कत्त्र कृषि अक्ट्रे (केंग्रा विनात ! आमात्रहे अस ।

গভীর বাতের শাস্ত পৃথিবী এখন ঠাণ্ডা বাতাস ছেড়েছে। বিবর-বিবর—মৃত্ মৃত্য—গা-লিব-শির বাতাস। একটু বেন মাদকতার স্পর্ল ব্যরেছে। তন্ত্রা আনে,—দেহ-মন ক্লাস্ত হয়। মাণার শিবাগুলির দশ-দপ ভাব কেটে বার। তন্ত্রা আনে।

ঠাণ্ডা ফুঞ্চুরে হাওরা ছেড়েছে পৃথিবী। বিলাস বেন জ্পাই কা'র স্বর শুনলো। একটা বেন গানের কলি,—বেল মিটি।

—ভোষবা শাস্ত হও। তোমবা বাবা ঘুমতে পাব নি—ভোষবা বাবা যন্ত্ৰণা পাছে। পেয়েছো। বাবা মান্ত্ৰের মন পাও নি। তোমবা বাবা নিজেব মন পাও নি। তোমবা শাস্ত হও। ঘুমোও। এ হাওৱা মাহের স্নেহ, এ হাও^{টা} প্রেইসীর প্রেম। স্থবা। অমৃতের আবাদ নিতে নিতে ঘুমিয়ে পড়ো। ঘুমই অমৃত। ঘুম মহাকালের অকুপণ দান। তুমি নিজেকে এ দান থেকে ব্জিত ক'বো না, পুৰিবী স্নেহেব হাত বুলোছে, প্রেমের শ্পার্শ দিছে।

—তোমবা হতভাগা, তোমাদের কোন কংণীর নেই। পৃথিবীর

কোন প্রয়োজনেই তুমি এলে না। তুমি তোমার নিজের কোন প্রয়োজনেও আসনি। তব্ও ঘ্মিয়ে পড়ো। তোমার জাগ্রত পেশীগুলি এখন শিধিল হোক। তোমার ভেতরকার বে অপদেবভাটি তোমাকে কোনো দিনও শান্তি দিলোনা, সে কয়েক মুহুর্তের জন্তেও তোমার দেহ ছেড়ে চলে বাক।

পৃথিবী তোমার দেহ-মনে স্লেহের হাত বুলোচ্ছে, প্রেমের স্পর্ণ দিচে।

তন্ত্রার জাবেশে তুমি চলে পড়। তোমার জলে পৃথিবীর করণ।
আছে, মমতা আছে। এই মহাকালের অরুপণ দান—প্রকৃতির
অরুপণ দান। তুমি তো স্থ চাও না, বন্ত্রণা চাও। তুমি বে
ভানক চাও না, বেদনা চাও। কিছু তুমি বে ব্যও চাও।
তোমার মন বলছে তুমি চাও। না হলে তুমি পাগল হয়ে বাবে
বে! তুমি পাগল হয়ো না, তুমি যুমিয়ে পড়ো। স্লেহ-প্রেমের
লগল লাগছে।

— শভীত ভূলে বাও। গত কাল বিশ্বত হও। বেদনা ভূলে ভূমি বিশ্বতির কোলে ঢলে পড়ো।

কিছ কে কাঁদে না ?

—কাঁদে। ওকে কাঁদতে দাও। ও বে তোমার থেকেও চতভাগা। ও কাঁদবে না ? ও বে ভোমার থেকেও দীন-রিক্ত। জীবনে সে কিছুই পারনি, আরও পেতে চেরেছিলো, তাই সে হতভাগা। ও পৃথিবীর স্থেবে আফাদ পেতে চেরেছিলো, পারনি বলে কাঁদছে। ওব অক্তরাত্মা মানুবের বৃমন্ত বরের দর্জার দর্জার করণা-ভিন্না করে ক্রিছে। একটু ভালবাদা চার সে। আর, মানুবকে সে ওর জব্জে একটু কাঁদতে বলে।

না, তুমি উত্তেজিত হয়োনা। তব্দাতোমার ভেজে ধাবে। তুমি গুযোও।

প্রকৃতির অকুপণ দান বারছে।

ন তুন বৌদি বিলাসকে এখনও বোধ হর ভালো করে চেনেনি।
এই তো দে দিন সে এ-বাড়ীর বধু হ'রে এসেছে। এসেই সে হরে
চাকরটাকে সকালের বিভ্ন্ননা থেকে মুক্তি দিয়েছে। বাবুর ধমকানি
প্রত্যেক দিন সকালেই তার ভাগ্যে ছুটে আসছিলো। বধু দেদিন
নিজের চোথেই দেবে ফেলেছিলো। সেই থেকেই তার এ নব
পরিকরনা। বিদাস প্রথমত রাজি হয়নি! বাড়ির কারো সংগে

ভাব বোগ থাকুক, এ সে চায় না। কিছ এ বধ্টি ছাড়বার পাত্রী নয়। একটিই তো মাত্র দেবর—ভারও মন সে পাবে না, কেন সে দ্বে দ্বে থাকবে? বিলাসকে শেষ পর্যন্ত রাজি হতে হরেছে। ভবে অস্কতঃ সাড়ে আটিটার আগে ভার ঘবে বেন কোন প্রকারেই চানা আসে। কেন না ভার আগে সে উঠতে পাবে না।

নতুন বেণি সীকৃত। কেন বে এই কিন্তুত কিমাকার দেববাটকে তার থ্ব ভালো লাগে! সে এ বাজির কেউ নয়। বাজির এক প্রাস্তে এই নির্জন ঘরণানা তার পরিচিত। আর পরিচিত হরে চাকরটা কেন তার এ পালিরে থাকা। কেন সে আর সকলের মত নয়? বধ্ব কোত্হল বাড়ে। কেমন বেন মমভাও হয়। সকলেই আছে, অথচ তার কেউ-ই নেই। এ কেমন কথা!

নিত্যকার মত আঞ্চও সে এক কাপ ধুমারমান চা হাতে হাসিমুখে খবে চুকেছে। আর চুকেই সে থমকে দাড়িরেছে দরজার
পাশে। বিছানা থালি। মশারিটা খাটের উপর বলছে। বালিল
ছটো এদিক ওদিক ছড়ানো। সারা খবমর বই-খাতাপত্তর ছড়ানো।
জলের কুলোটা আলগা হাঁ হরে পড়ে আছে এক পাশে। মেবেতে কর্মটা
সাট আর পাণ্ট পুটোছে। বধুর মনটা কেমন বেন বেদনার ভরে বার।
কিছ সে আজ ফেরেনি না কি ? সারা রাত কোথার থাকলো সে?

কিছ না, কিরেছে বিলাস। ওপাশের দরজার পাশ ঘেঁসে ৰে একটুথানি বাালকনি, ওথানে তার ইজিচেরারথানার মধ্যে পড়ে আছে বিলাস। অসাড়, লপকনহীন লোকটা। দেখে মারা হর বধ্ব। সারা রাত সে এমনি ক'রে পড়ে আছে! মা গো! পুরুষ মাছবের বিরে না হলে কি ছয়ছাড়াই না তারা হর!

চাবের কাপ হাতে নতুন বেদি আরও এগিরে এলো। দাঁড়ালো বিলাদের পাশে। পূর্য অনেকটা উঠে এসেছে। উঠে এসে ও পাশের কাচের জানলাটার উপর থমকে দাঁড়িয়েছে আর তারই একটা লাগচে আভা এলে পড়েছে বিলাসের মুখে, খবের পাশে। এ কি ক্লান্ত মুখের চেহারা! বৌদির বুকটা হাহাকার ক'বে ওঠে।

একটু ঝুঁকে পড়ে মাধার হাত বাধতে বাবে, ঠিক এমনি সমরে বৌদির চোখে পড়লো দৃহ্যটি। ছই পালের পাশ দিয়ে ছই সারি অঞ্জর ধারা গড়িয়ে এসে থমকে আছে চিকের শেব প্রাস্তে।

এক পা পেছনে সরে বেদি অনেককণ শুরু হরে গাঁড়িরে থাকে। একটা দীর্থধাস আপনা হতেই তার বুকের কাছটা থেকে বের হ'রে আনে, কতো অসহার ও, আহা!

আকাশ ঃ্মাটি কুতী সোম

তোমার খপ্পের দেশে বার কথা জাগে সে তো নর রাজপুত্র, আমি। উজ্জল হীরের মতো দীপ্ত জন্তুরাগে ভূমি তো প্রেমিকা এক, রামী। তোমার বৌবন-চুক্তি মহামৃল্য দান কেম না তা খক্ত আর বাঁটি। অথচ এথনো তাখো, কত ব্যবধান ভূমি তো আকাশ, আমি মাটি।



(মোপাসাঁ অবলম্বনে)

বৃহর ছই আগেকার কথা।

বসন্তকালে ভ্ষম্যাসাহের উপকৃলে বেড়িরে বেড়াছি। আহা, কি মধ্বইনো লাগে জনহীন পথে একা-একা হরতে! বে কোনো অধ্যপ্তের চেরেও এ মনোরম। সমুদ্র-সৈকতে বেড়াবার কিংবা পর্বভশুনে আবোহণের সময় মৃত্ব-মন্দ্র বাতাসের সমাদর, তথ্য ক্ষিরণের চূপন জলর-মন ভরিয়ে তোলে। এই প্রচলা হয়ত ত্'বটার জক্রে, কিছা তারি মধ্যে কতো সম্ভব অসভ্ব, দিবাখণ্ড, রঙিন কল্লনা, রোমাঞ্চব অফুভ্তি ভাগে প্রচলা মানুষ্টির মনের গোপনে। বাসনা কামনা, আলো বাতাসের সংগে সংগে অন্তরে দোলা জাগার, ব্যথাও বয়ে আনে। ভ্রমণের কল্যাণে ক্ষ্যার মাত্রা বেমন বেড়ে বার ঠিক তেমনি ভৃত্তির পাত্র কানার কানার ভবে ওঠে প্রকৃতির চিত্তহারিণী শোভার মুখ্যামুখি হয়ে। প্রকৃতিপরিবেশের সাথে যতো সম্বর্গ কনীভ্ত হয় ততোই অনাখানিত আনক্ষে অন্তর হয় পরিপূর্ণ।

সেইন্ট ব্যাফেল থেকে ইটালী অভিমুখে যে রান্ডাটি এগিরে গেছে সেই পথেই আমি অগ্নসর হতে থাকি—না ভূল বলা হোলো, বরং বলা বার, দেই অপরপ সরণি দিয়ে আমি এগিরে চললাম, যার বলনার কবিরা মুখর হন সব সময়। অর্থাৎ সে পথটি এমনই ফুলর বে, কবির কবিতার ছাড়া অন্ত কোথাও তার দর্শন পাওরা সহজ্ঞ নয়। কেনল থেকে মোলাকোর বেতে ভূলেও কেউ এ দেশে পা বাড়ার না, লোকগুলির মনোরুত্তি দেখে করণা হয়! এমন উদার আকাশ, ফুলে ফুলে তরা গোলাপ, কমলা-থাগিচা—কিছ ওবা মিথ্যা অহমিকার, নির্বোধের অবিবেচনার অনারামে এড়িরে চলে প্রকৃতির নিবিড় সংগ। অজুহাত ওলের ফুলর—জ্জু আছ্কুরা মানুরের বেমনটি সচ্বাচর হরে থাকে।

প্রবহণান উপসাগবের একটি বাঁকে সহসা চোথে পড়লো কতকগুলি কুটাবকে—পাশাপাশি তারা বেন জটলা করছে। সংখ্যার তারা চারটি কি পাঁচটি হবে, পাহাড়ের পাদদেশে সমুদ্রের দিকে মুখ করে গাঁড়িয়ে। এর পেছনে পাইনের জগেল তার গভীরতার বিরাট ছটি উপত্যকার পথের নিশানা নিশ্চিক্ত হয়ে গেছে। একটি কুটারের দরকার সামনে আমি অনিচ্ছাকৃত ভাবে গাঁড়িরে পড়ি। ধবধবে শালা বাড়িটির গায়ে বাদামী রজের কারুকার্ব, গোলাপগুছি লভিবে উঠেছে ছাতের আলিসার—কী স্কল্পরই না দেখতে হরেছে! পাশের বাগানটি বেচ্ছাকৃত অবিভ্রম্ভার নানাকাতের নানা আকারের মুলে সাকানো। সামনের লানটিও পরিছের পরিপাটি—বাবান্দার সিঁড়ির ওপর পাত্রে থচিও জাক্ষান থা, জানদার ওপর থোকার থোকার আত্তর ফলে আছে। রক্তরাঙা মর্নিং গ্লোরিভে এই মনোরম বাড়িটির বাকী দেওয়াসগুলি সমাকীর্ণ। ওধারে পেছন দিকে প্রেম্কটিভ কমলাবীধি দূরের পাহাড় পর্যন্ত বিস্তৃত।

কুটীবের দরজায় গিণিট করা ছোট হরফের কথাগুলি আমি পড়লুম: ভিলা জ আানটান!

এ কোন কবিকুল্প না পরীস্থান—স্থাপন মনে প্রশ্ন করে উঠি। কোন অন্তপ্রেরণায় এমন স্থান নির্বাচন সম্ভব হয়েছে, এই স্বপ্লের বাসভূমি রচনাই বা হয়েছে বাস্তবায়িত।

অদ্বে পথের ধারে এনৈক শ্রমিক বঙ্গে বঙ্গে পাথর ভাঙছিলো। তাকে জিগগেস করার জানতে পারলাম ওই কুটারের মালিক হচ্ছেন স্থনামধক্ত জুলি রোমেন—মাদাম জুলি রোমেন।

ভুলি বোমেন! ভেলেবেলায় কভোই না ওনেছি বিখ্যাত এই অভিনেত্রীটির নাম। র্যাসেলের বোগ্য প্রতিশ্বনী জুলি বোমেন। জনস্তুতি ও সমাদর এঁর মতো এতোটা আবু কারুর ভাগ্যে তথনকার দিনে জুটেছে বলে আমার জানা নেই—বিশেষ করে সমাদর। ও:, কভো ধন্ধ-যুদ্ধ আত্মহত্যা কতো প্রতিবোগিতা না অনুষ্ঠিত হয়েছে শুধু ৬ই নারীটিকে কেন্দ্র করে! এখন এঁর ব্যেস কভো ভোলো ? যাট, না, সত্তর পঁচান্তর হবে। রোমেন তাহলে এখানে, এই কুটারে ! গোটা ফ্রান্সে যে তীত্র আলোডন জেগেছিলো (তখন আমার বয়স বড়ো জোর বারো) এক কবি-প্রণয়ীর সংগে সিনিলিতে এঁর পলায়ন উপলংক্য-শুতীতের দেই রোমাঞ্চকর কাহিনী শামি মুরণ করি। ৬ই ঘটনার ঠিক আগেই অপর এক প্রেমাম্পদের সংগে হয়েছিলো ওঁর বিজ্ঞী রকমের কলহ। ধাই হোক, উনি ওঁর নতুন প্রেমিকটির সংগে একদিন সভাব সরে পড়লেন। সে সময় রংগমঞ্চে খ্যাভি ওঁর ধর্মিকো না ! ঠিক ওই ঘটনার আগের সন্ধার অভিনয়ের সময়ে আধ ঘণ্টা ধরে একটানা অভিনন্দন জানিয়েছিলো ধার করে धनारता वात्र, अँरक मर्नन मिर्ड इरहिल्ला छनहुत्र मर्नकरमत्र ।

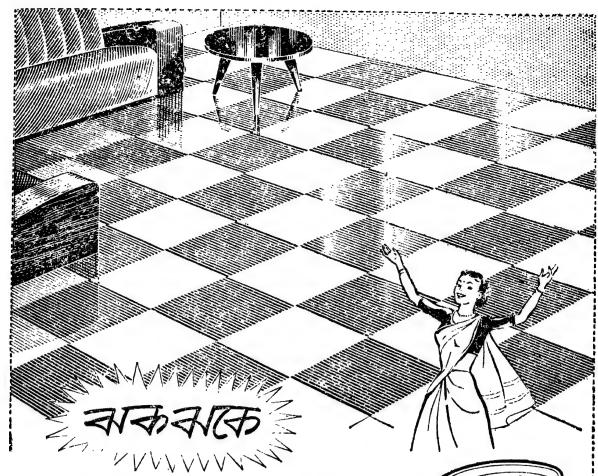
ওঁর উবাও হওয়ার থোঁজাথুঁজি চললো, ওঁরা সমুজ পার হয়ে কন্ক ডি-ওভ-এর কমলাকুঞ্জে—সেই প্রাচীন ঘাপে পৌছলেন। জনক্রতি রটে গেল, হাত ধরাধরি করে উভরে থাঁপ দিয়েছেন খেন বহি-সাগবে!

সেই অনমপ্রাহী কাব্য-বচমিতা এখন প্রলোকে। ওঁর কৃতিছ সম্বন্ধে সন্দেহের অবকাশ মাত্র নেই। বাস্তবিক ওঁর মনোরম মোহম্ম বচনার সকলের চোখ ধাঁধিরে গিয়েছিলো, উনি অক্সান্ম কবিদের সামনে অক্ত এক জগতের দার খলে দিয়েছিলেন।

অপর প্রত্যাখ্যাত প্রেমিকও বেঁচে নেই। তিনিও তাঁর প্রথারনীর মনোরঞ্জনের জতে বে অপূর্ব স্থরের ঝংকার ভূচেছিলেন, তার বেশ আজও ভেগে আছে খ্রোতাদের কানে।

ভিনিই—সেই নারীই এই কুসুমান্তীর্ণ কুটারে বাস করেন। আর বিধা না করে ঘণীধ্বনি করলাম। বছর আঠারোর একটি লাজুক কদাকার পরিচারক এসে দরজা থুলে দিলো।

আমি আমার কার্ডের ওপর অভীত দিনের রূপশিলীটির অভ্নত্র প্রশংসাবাণী লিখে শেষে আভিনিক অভুরোধ জানালাম দর্শন দেবার



যা একমাত্র ভিন্মই করতে পারে!

ঝকমকে, নিখু ত পরিষ্ণার মেনে স্থক্তীসম্মত জীবনধাত্রার পরিচায়ক। আপনার বাড়ীর মেনে ভিম দিয়ে পরিষ্ণার করে দেখন— মরলা আর তেলতেলে ভাব তাড়াতাড়ি উূবে ধাবে— আপনার বাড়ীর মেনে অকমকে পরিষ্ণার হয়ে উঠবে। মন্ত কোন উপায়ে আপনি কমনই মেনে এত পরিষ্ণার করতে পারেননি। আপনার বাড়ীর মেনে আপনার গর্বের বিষয় করে তুলুন—সপ্তাহে একদিন মেনে ভিম দিয়ে পরিষ্ণার করা অভ্যাস করুন।

আপনার চিনেমাটীর বাসন, কাঁচের জিনিষ, রান্নাঘরের বাসনপত্র এবং বেসিন পরিষ্ণার করার জন্তেও ভিম ব্যবহার করুন। সর্বদা ভিম্ হাতের কাছে রাখুন।

আপনার বাড়ীর জন্মে দরকার ভিস্ম



জন্তে। হয়তো আমার নাম তাঁর অজানা নর, কাজেই এই সাক্ষাতে আপত্তি হবে না।

ভূত্য ফিবে এসে আমার একটি সুদক্তিত বৈঠকধানার পৌছে দিলো। দেখলাম, ঘর্টির আসবাব-পত্র বিশেষ ফ্যাসান-ছ্রস্ত। দেগুলিকে আমার সম্মানে আবরণমুক্ত করে একটি মাঝারি চেহারার বোড়নী পরিচারিকা গাঁডিরে ছিলো।

আমি আসন গ্রহণ করতেই ভৃত্যেরা অন্তর্ধান করলো, আমিও সাক্সহে ব্যবের প্রতিটি জিনিস পূজায়পুত্র ভাবে লক্ষ্য করতে থাকসুম। দেয়ালে ছবি টাঙানো রয়েছে তিনধানা। অভিনেত্রীটির গুক্ধানা, বিশেষ অভিনয়ের গুংগীতে গৃহীত, গুক্ধানা কবি-প্রেমিকের তৎকালীন সাক্ষমজ্জার, অপরটি অর্থাৎ ভৃতীয়টি সেই সুর্বিলীর, ক্যাভিকর্ডের সামনে মায়ুষ্টি ব্যে আছেন।

ভক্রমহিলার ছবিতে তাঁর রূপের প্রমাণ এখনও বিজ্ঞান, বিশ্ব ওই হাবভাব এখনকার দিনে সমালোচনার দাবী বাখে। ওঁর আকর্ষণীর মুখনী, নীল অফিতারকা আপন মচিমার উদ্থাসিত, চিত্রকরের নৈপুণাও ভাতে বড়ো কম নর। ছবি ভিনটি বিশ্বত অতীতের পারিপার্থিক আবহাওয়ার মাঝে আগামী দিনের বংশধরদের দিকে বেন ভাকিরে আছে।

দরজা থুকে একটি ইংকাষা নাবী ববে চ্কলেন, বার্ধকোর চিহ্ন তাঁর জ্র-যুগলে, মাধার কেশে পরিস্ট। এতে। বয়সেও তাঁর সলক্ষ ভাবটি কাইট রয়েছে। হাতটি বাড়িয়ে দিয়ে ড্রমসিলা অপূর্ব স্থবেলা কঠে বললেন: ধলবাদ মঁদিয়ে। বিগত দিনের একটি নাবীকে আক্রেস লোকের স্থাণ করা বড়ো কম কথা নর। কাডিয়ে বইলেন কেন, বস্তন।

আমি বললাম, তাঁর বাড়ির শোভা দেখে মুগ্ধ হরে গৃহসামীর নাম আনতে গিয়েছিলাম। এবং তাঁর পরিচয় পেয়ে কিছুতেই নিজেকে সম্বয়ণ করতে পারিনি।

আপনি আসায় আমি ব্বই থুলি হয়েছি মঁলিয়ে, জানালেন বৃদ্ধা: কেন না, এ ধরণের ঘটনা প্রথম ঘটলো। আপনার ছাতিন্তবা কার্ডধানি হাতে পেয়ে আমি তো একেবারে চমকে উঠেছিলাম! স্থণীর্ব কৃতি বছর পরে বেন কোন পরম বাজর আমার আহবান জানাজেন। আমি তো বিশ্বত—সম্পূর্ণরূপে জন-মনের অন্তবালে চলে চলে ছি। কাঙ্কর শ্বতিপটে আমার কথা উদিত হয় না। আর এটাও জ:নি, বতো দিন না আমার মৃত্যু-স্বোদ ঘোষিত হছে এই ভাবেই চলবে। আমি মাহা গেলে দিন ভিনেকের অত্তে পত্রিকার-পত্রিকার জ্লি রোমেনের জীবন-কথা ছালা হবে, আলোচনা করা হবে তার সম্প্রে সম্ভব-সমন্তব কাহিনী-উপকথা-কুৎসা—ছ'-চারথানা বইও ছালা হবে। ব্যস, সেইখনেই চিরতরে নেয়ে আসবে বিশ্বতির ব্রনিকা। ভার পরেই আমি শেব হয়ে বাবো।

কিছুক্শের নীরবতার পর আবার তিনি ওজ করেন: আব সেদিনের বেশি দেবিও নেই। করেক মাস কিংবা করেক দিনের ভেতরেই এই ফুলু নাবীটির সঙ্গীব দেহ শবে পরিণত হবে।

দেয়ালে টাডানো নিজের ছবিস দিকে আকালেন জুলি বোমেন— আককের এই িশীর্ণ পরিণতির দিকে ব্যাপ তবে দে বেন চেয়ে আছে। পর মুহুর্তে তাঁর দৃষ্টি নিবছ হোলো খান্তিক কবি এবং উৎদাঙী

স্থবশিলীর দিকে। ভারাও বেন বলছে: এই ক্ষয় কি প্রশ্ন করে আমাদের ?

অবর্ণনীর একটা বিবাদের ভারে মন আমার আছের হরে বার— বারা আত্ম আর মরজগতে নেই এবং বারা অভীতের স্থৃতির সংগে তৃবস্তু মান্নুবের মত প্রাণপণে সংগ্রাম করে বেঁচে আছে, তাদের গভীর বেদনা আমাকে আবেগ-আকুল করে ভোলে।

নাইস হতে মণ্টি কার্লো অভিমুখে ছুটে চলেছে কতো বিচিত্র বানবাহন—ব্বের ভেতরে বসে স্পষ্ট দেখতে পাই স্ববেশা আনক্ষমুখর আবোহীদের। জুলি বোমেন আমার দৃষ্টি অনুসরণ করে ওই দৃগু দেখে অনুমান করলেন আমার ডিস্তাধারা। স্মিভহাত্যে মৃত্যুরে বলনেন: কভোক্ষণের জন্মেই বা এই স্থবের জীবন!

আমি বলি: আপনার জীবন নিশ্চরই থুব রমণীর ছিলো।

একটা গভীর নি:খাস ফেললেন মহিলাটি। বললেন : প্রকৃতই সুন্দর ছিলো—ছিলো মধুর। আর সেইজ্রন্তেই তো আমার এই আফ্রেনায়।

অমুভ্য করলাম বৃদ্ধা তাঁর জীবনকথা খেছোর জানাতে পারেন, প্রেরোজন শুরু হাদর-ভত্তীতে আঘাত করা। গভীর সহায়ভূতি ভবে সম্ভর্গণে ব্যথা পারেরা জারগাটি যেমন ছুঁরে দেখতে হর, সেই বকম মমতার একে একে প্রশ্ন করে বাই। তিনিও অকপটে বলে বান তাঁর অতীত কাহিনী, তাঁর বর্ণোজ্জ্বল অভিত্যের কথা। সে বে কী অপরিসীম জানন্দ, কী অভ্তপূর্ব সাফল্য—ভাব পরিচয় পাই তাঁর বর্ণনার।

আছে। আপনার পরম আনন্দ এবং চরম প্রথের জন্মে কি আপনি বিষ্টোরের কাছে বিশেষ ভাবে ঝণী ?—প্রশ্ন করি আমি।

क्षताई मग्र- - ७२ऋगार উखर भारे।

शिनित चाः। म खार्श चामात पूर्व।

ভূলি বোমেন বিষাদভাৱাকাস্ত চোপ দেয়ালে বিলম্বিত ছবি তৃটির দিকে ফিরিয়ে বলেন: ওই তৃজনের কাছে সেজতে আমার বাবতীয় ঋণ!

কিছুতেই আত্মসংবরণ করতে পারি না। জিজেস করি, ওঁদের মধ্যে কাব কাছে ?

ত্'বনের কাছেই মঁসিয়ে! সময় সময় মনের মধ্যে ওদের ত্রনের বিবরে সংশয় জাগে, তা ছাড়া আজ পর্যস্ত আমি একজনের কথা ভেবে জমুতাপ করি।

তাহলে মাদাম, স্থাপনার কুভজ্ঞত। ওঁদের প্রতি নয়, ভালোবাদার কার্যকলাপের প্রতি। ওঁবা ভো ছিলেন প্রেমের ক্রীড়বক।

ভা হতে পাবে। কিন্তু অপরূপ সেই ক্রীড়ণক! জাহা!

ভালোবাদা পাইনি, বা পাবার উপার ছিলো না—এ কথা কি আপনি নিশ্চয় করে বলতে পাবেন ? ধকন কোনো সাধারণ মানুষ তার জীবনের সকল আশা-আকাংখা দিয়ে প্রতিটি মুহুও দিং—এক কথার যথাসর্বন্ধ দিয়েও কি আবো বেশি ভালোবাদতে পারত না? অবিভি অ্বসাধক এবং কাব্যের উপাসকরপে এই ছু'জন খোবতর প্রতিষ্কাই হয়ে আপনার জীবনে দেখা দিয়েছিলেন।

টীংকার করে উঠিলেন জুলি—এখনো ওঁর মধুর কঠছবে বোমাঞ্চ জাগে। বললেন: না মঁদিয়ে, না। সাধারণ মার্ব হয়তো বেশি ভালোবাসভো, কিন্তু ৬দের মডো করে পারতো না। ভাহা, অপরণ! প্রেমের রাগিণী এ পৃথিবীতে একমাত্র তারাই দিরেছিলো, দে স্থবে আমার মাতাল করে ত্লেছিলো তারাই! কথা এবং স্বরের সম্পর্যের মারে ভারা বা বাস্তবায়িত করেছিলো তা কোন্দাগাবণ মান্ত্রের পক্ষে সভব ? পার্থিব, অপার্থিব অন্তভ্তি কাব্যে ও সংগীতে যদি মূর্ত না করতে পারে তাহলে ভার পক্ষে ভালোবাসার সভাবনা কোবায়? জানভো—নারীকে আনক্ষে বিহবল করতে জানভো একমাত্র ওই মান্ত্র্য ছু'টিই! গানে-কথায়-আচরণে ওরা ভাকে সার্থক করতে পারতো। আমাদের বাসনা-কামনার মারে বাস্তবের চেরে কল্পনার আহিবের। আমাদের বাসনা-কামনার মারে বাস্তবের চেরে কল্পনার আহিবের পাকে পড়ে মন মাথা খুঁড়ে মরে এই পৃথিবীর গুলোবালিভেই। ওদের ভালোবাসায় চিনেছিলাম ভালোবাসাতে; ভাইতো অক্তের পক্ষে আমার আবো বেলি ভালোবাসা সন্তব হতে পারতো।

সহসা নিঃশব্দ কান্ধায় ভেঙে পড়লেন তিনি—ছু:সহ বেদনা উৎসাবিত হতে থাকে অঞ্চর আকাবে। আমি সেদিকে দৃষ্টি না দিরে চেয়ে থাকি খোলা জানালা-পথে। কয়েক মুহূর্ত অভিবাহিত হয়, আবার উনি শুক্ত করেন: জানেন মঁসিয়ে, সাধারণত মান্ধবের দেহের সংগে সংগে হাদয় জবাগ্রস্ত হয়ে থাকে—কিন্তু আমার বেলায় তা হতে পারেনি। আমার এই শ্রীবের বরস উনসন্তর হলেও হাদেবের বরেস কুড়ি পেরোয়নি। এই বে ফুলের হাটে স্থাপের সাথে মিহালি পাতিরে নিঃসাগে পড়ে আছি—এর কারণ হচ্ছে ৬ই-ই!

নীর্থ সময় নীরবে কেটে ধার। উনি ইভিমধ্যে ভাবাবেগ সংবত করে নেন। এক সময় সহাত্তো বলতে থাকেন: প্রকৃতি-পরিবেশ ধ্বন চিত্তহারী হয়ে ওঠে, ভথন কি ভাবে আমি সময় কাটাই, সেক্থা শুনসে আপনি হয়তো হাসবেন মঁসিয়ে! আমি নিজেই নিজেব নির্শিষ্ঠায় হাসি, করুণা করি নিজেকে।

দেধলাম, আব কিছু বলবাব জন্তে অমুবোধ করা বুধা, উনি বাজী হবেন না। অভ এব উঠে পড়লাম।

উনি টেচিয়ে ওঠেন : সে কী ৷ এতো ভাড়াভাড়ি ?

মণ্টি কার্লেণ্ডে সাদ্য ভোজন সেরে নেবার অভিপ্রায় জানালাম। উনি তৎক্ষণাৎ কিছুটা ভয়ে ভয়ে বলে ফেলেন: জামার সংগে খেতে কি জাপনার জাপত্তি জাছে? জামি কিছ ধ্বই থুলি হবো।

ষিক্ষজি না করে তাঁর নিমন্ত্রণ গ্রহণ করি। খুলি হয়ে উনি ঘণ্টাধ্বনি করলেন। সেই অন্ন বয়সী পরিচারিকাটি হাজির হতে ভাকে নিমন্তরে কি সব আদেশ করলেন। ভার পৰ আমার জানালেন, তাঁর বাড়ির সব কিছু দেখাবেন।

খাবার-ঘরের সামনে বিশেষ ধরণের কাচে-ঢাকা বারান্দার রাজ্যের গাহপালা; ভারই অদ্বে কমলাকুঞ্জ একেবারে পাহাড়ের গাদদেশ পর্যস্ত বিস্তৃত। লভাগুন্মের শাদালে একটি নীচু আসন পাস্তা—গৃংহর কর্ত্রী মাঝে মাঝে এখানে এসে বলেন—এ ভারই নীরব সাক্ষী।

এর পর হাজির হলাম আমরা বাগানে ফুলের শোভা দেখতে।
দিনের আলো বীরে বীরে মান হরে আসছে, কোমল চরণে নেমে
আসছে মনোরম উফ সন্ধ্যা—ঠিক এমন সংগ্রই পৃথিবীর সব কিছু
মধুর বলে মনে হর।

থাওরার টেবিলে এসে স্থান গ্রহণ করলাম আমরা, ঠিক জককার বনিয়ে আসার পরই। এথানে কাটলো দীর্ঘ সমর—আরোজনও হয়েছিলো থুবট কুন্সর। অন্তরংগতা গভীর হয় আমাদের মধ্যে, এক পাত্র মদের কল্যাণে উনি আরো অন্তরংগ হয়ে ওঠেন। ওঁর প্রতি অন্তরের অন্তন্তলে আমার গভীর সহামুভূতি জেপে ওঠে।

অবশেষে জুলি রোমেন কথা কইলেন। বললেন: চলুন বাইরে
পিরে টাদ দেখিগে। টাদ আমার বড়ো প্রিয়—৬ই পাপল-করা
টাদ! আমার শ্রেষ্ঠ স্থাবের নীরব সাক্ষী একমাত্র ও— ওর মাবেই
অতীতের রমণীর স্মৃতির সম্ভার সন্ধিত হয়ে আছে, ওর দিকে চাইলেই
ভারা আমার এলে ধরা দেয়। আর সমর সমর এই সন্ধোবেলার
আমার নিজের জন্তে এমন একটি মধুর দৃষ্ঠের আরোজন করি, তা
বিদি তুমি জানতে—না না, তুমি খুব ঠাটা করবে—সে কথা আমি
বলবো না—আমি সাহস করি না—না না, কিছুতেই ভোমার তা
বলবো না!

অমুনর করি: গোহাই আপনাব, থামবেন না! কি সে গোপন ব্যাপারটা ? আমাকে বললে বিচ্ছু হবে না, প্রতিজ্ঞা করছি হাসবো না—এই শপথ করলুম!

তবু তাঁর বিধা বার না দেখে ওঁর হিম-শীতল ক্ষুত্র হাত ছটি তুলে নিলাম ; অদূর অভীভের সেই প্রেমিক-যুগলের মতো গভীর চুখনে হাত ছটি প্লাবিত করে দিই। উনি অভিতৃত হরে পড়েন--ভারি



মাবে জেগে থাকে সংকোচ। স্কীণ কঠে প্রশ্ন করেন এতিজ্ঞা করছো তুমি হাসবে না ?

है। कव्हि-भूभूष कव्हि।

হাসি ফুটে ওঠে মুখে। আহ্বান জানান: ভাহলে এসো।
আমবা উঠে গাঁড়ালাম। সবুত্ব পোবাক-পরা সেই কদাকার
চাকরটা তাঁর চেয়ার সরিয়ে দেয়। উনি সেই অবকাশে কিপ্রকঠে
কি বেন তার কানে কানে বলে দেন।

সসম্বানে সে উত্তর দেয় : হাা মাগাম, একুণি।

উনি আমার হাত ধরে বারাশা অভিক্রম করে চললেন।
কমলাবীথি পথটি ভাবি রমণীর ? চাঁদের রপালি হাসি সীণ ভাবে
ছড়িয়ে পড়েছে বুডাকার গাছগুলির শাখার-পাতার, মুকুলিত কমলাপ্রভি আকুল করে তুলেছে আকাশ-বাতাস। অদ্বে থোপের
অক্কারে অগণিত জোনাকিকে মর্জের ভারকা বলে মনে হচ্ছে।

আমি টেচিরে উঠি: অপরপ ! প্রেমের উপর্ক্ত এই পরিবেশের ভুলনা হর না !

সহাত্যে জুলি বলেন: ভাই নয় ? ভাই নয় ? এখুনি দেখতে পাবে তুমি।

ওঁব ঠিক পাশটিতে আমাকে বসিরে দিরে বিড়-বিড় করে বলেন: এই সকল দৃশ্যের স্মৃতিই আমার জীবনে হঃধভারাক্রাম্ভ করে তোলে। আজকালকার মামুষ ভোমরা দে সব জিনিস স্বপ্নেও ভারতে পারবে না, টাক্য-আনা-পাইএর কারবারীদের পক্ষে তা সম্ভব নর মোটেই। আমাদের সংগে—মানে আমার মতো বৃদ্ধা নর, তক্ষণীদের সংগে ভোমরা কথা কইতে পর্যন্ত জানো না। প্রেম আজ দেহের ক্ষ্ণার পর্যবিস্তি হ্রেছে; নারীদের পণ্য হিসেবে বদি ভোমরা মনে না করে দাও প্রকৃত সন্মান স্থদর ব্যবহার তবেই তো।

আমার হাতটা হাতে টেনে নিয়ে এক সময় উনি বললেন: ওই. ভাৰো।

অপরূপ এক দৃশ্যের অবতারণা হতে দেখে বিশ্বরে আনস্পে

অভিত্ত হবে গোলাম। আমবা বেখানে দাঁড়িরেছিলাম ভাব নীচের দিকে গলিপথে চাঁদের আলো শতধা হবে ছড়িরে পড়েছে। তারি শেব প্রান্তে অল্লবয়সী একটি পুরুব ও নারী আলিংগনাবছ হবে আমাদের দিকে এগিয়ে আগছে। আরো অপ্রসর হলে দেখতে পেলাম উভরের হাত দৃঢ় আবছ—আর মাতাল করা জ্যোৎসাধারার স্নান করে ভাদের দেখতে হয়েছে অপন্তপ!

করেক মুহুর্তের জন্মে ভারা জন্ধকারে হারিরে গেল, ভার প্রই জাবো নীচের রাস্তার দেখতে পাওয়া গেল তাদের। যুবকটির পারনে শাদা সার্টিনের পোবাক, মাধার চওড়া হুটি উটপাধির পালক লাগানো—সবই গত শতাকীর নিদর্শন। মেরেটির সাজসজ্জার বিজ্ঞোর আমলের ছাপ।

ওয়া ছ'বনে আমাদের কিছুটা দূরে থেমে পড়লো, ভারপর মধ্র অভিবাদন জানিরে নিবিড় আলিংগনে আবদ্ধ হোলো।

হঠাৎ ওদের ছজনকে এ বাড়ির পরিচারক-পরিচারিকা বলে চিনতে পারলাম। সংগে সংগে সজোবে হেসে ওঠার অদম্য ইচ্ছা ছতে লাগলো, বহু কটে আত্মসংবরণ করলুম। অপেকা করতে থাকলাম পরবর্তী দৃশ্যের জন্মে।

এইবার প্রেমিকযুগল সেই সরুপথের প্রান্তে এগিয়ে বার, আবার ভাদের মৃতি রমণীয় হয়ে ওঠে। পূবে বছদূরে মিলিয়ে বেতে বেতে এক সময় স্বংগ্ন দেখা দৃঞ্যের মতো হারিয়ে বায় তারা।

আমিও আর অপেকা করি না, তৎক্ষণাৎ উঠে পড়ি। ওরা বেন আর আমার দৃষ্টিপথে না পড়ে। সুদ্র অতীক্তকে আহ্বান জানাবার জয়ে আমাকে অবসম্বন করে বৃদ্ধা এই রপশিলীর অস্তবে কারিয়ে যাওয়া স্থান্থের আলোড়ন জাগাতে এই বে মিধ্যা দৃশ্রের অবতাপোর ব্যবস্থা—নিশ্চর এ বছক্ষণ স্থারী হবে। কাজেই আমি বিশার নিই নার্যার বিশেষ তৎপ্রভার সংগে।

অমুবাদক-রমেন চৌধুরী।

থেয়াল

(সরোজিনী নাইডুর কবিত।)

আহা অনুপম বনের কুমাটিবে
ধরেছিলে তুমি গুটি অসুলি নিরে,
উলাসীন ঠোটে ছুঁইরে অকমাং
কি বেয়ালে তুমি ফেলেছিলে ছিঁড়ে ছিঁড়ে ?
জানলে না তুমি, কোনো দিন জানবে না—
এ বার্ত্তা জানি সুগোপন প্রির্ভম !
নয় নর তাহা এতটুকু বনকুস—
সে আমার মন, সে বে অস্তব মম।

ত্ব' আছ লে ধৰে মদের পাত্রধানি
অবহেসা ভরে হোঁয়ালে ভোমার ঠোটে,
ছুঁড়ে ফেলে দিলে ক্লান্তিতে অবসাদে—
ভাঙা-ভাঙা কাচ ৬ই ভো ধূলার লোটে।
জানলে না তুমি, কোনো দিন ভানবে না—
এ বার্ত্ত। জানি স্থগোপন প্রিয়তম!
নর নয় ভাহা মদের পাত্র শুরু—
দে আমার প্রাণ, সে বে গো হলর মম।



PSTP. 3-X52 BG



শ্রীসম্ভোবকুমার ভট্টাচার্য্য

ত্বিপবাদে ভরা এ নাম, তবু সময় কাটায় সন্ধ্যার প্রায় বোজই হাইড পার্ক কর্ণাবের এক বেঞ্চিতে। বিচিত্র আবেষ্টনী ! একবেরেমীর হাত থেকে বাঁচার সব চেয়ে সোজা পথ তার কাছে এটাই। ব্যক্তিয়াধীনতা উগ্র রক্ষের। ছোট-ছোট টুলের ওপর গাঁড়িয়ে বজুতা করে চলেছে বছ জনেই, নানান বিষয়ে প্রোতার সংখ্যা নির্ণর না করেই। ঋতু পরিবর্তনের বোষণা করে চলেছে মোহময়ী নারীরা বেশভ্বার মধ্য দিয়ে। দিনের আলো, রাতের অন্ধায়—বাধা বলে কিছু নেই। মাটার নীচে দিয়ে রাস্তা পার হয়ে সহজ্ব মনে চলে বাগুরার পথও প্রিদ্ধার। স্মড়সের অপর দিকে বাধার আগোই সাধী জুটে বায় অনেক সম্বেই। দোকান বাজার সাজানো বয়েছে বল্মল-করা আলোর মাঝে—ক্রেতার অভাবও নেই এখানে।

নবেন বসে আছে অনেককণ। সিনেমা বাওরার কথা—
সমর শেব হতে চলেছে তবু দেখা নেই ডরখির। হাইড পার্ক
কর্ণারেই আলাপ। অথম দিনে তর বে ছিল না তা নর কিছ
অল্ক করা রপের জৌলুব আর স্থান কাল আলোড়ন এনেছিল—
ভরকে ছাপিরেই সামার পরিচয় ছাড়া আর কিছুই হয়নি দেদিন।
মিখ্যা ভাবনা আনেনি কিছুই, বরং মন আরও চঞ্চল হয়েছে বিলশ
হতে দেখে। বিদেশে এসে প্রেমের হোঁরাচ সাগার মত অবকাশ
থাকলেও অবলম্বন মেলেনি এত দিন। আক্মিক আকর্ষণ
আফুভুতিকে তাই বাজিরে ভুলেছে অনেকধানি। বাছর বন্ধনে
বিলিয়ে দিয়ে অনেকেই চলেছে পার্কের ভেতর দিকে—অস্তস্তলে



যাওয়ার কামনা সম্ভবতঃ। প্রকৃতির মোহিনী ছন্দের মধ্যে মাযাজাল ছড়িয়ে প্রকৃতি-বিলাসিনীরা মিলিয়ে দিয়েছে রূপ্যোবন, মান্ত্রের সাজানো কৃত্রিম আলো উপহাসের নীচে। প্রকৃতির অনুশাসন মানার চেষ্টাও নেই কোথাও একটুকু। অসময়কে বিলাসিতা দিয়ে সময়োপধাসী করার প্রচেষ্টাই প্রবল হয়ে উঠেছে।

মোহ কেটে বার মিটি ডাকে—কারে। বস্তু অপেকা করছে। বুঝি ? উত্তর দেওয়ার ইচ্ছা হয় না এ মিটি ক্ষরের পরে বেক্সরো ডাল আনতে।

খ্ব মিটি না হলেও বেশ স্থন্দরী বলা চলে। বেঞ্চির ধারে এসে কথন বঙ্গেছে নরেন জানতেও পাবেনি।

আবার প্রশ্ন হর—অন্থবিধা করলাম বসে ?

- জন্মবিধা হলেই বা শুনছে কে ? পার্কের জাসন তো জার জামার একার জন্ম ?
- —তা সত্য, তবু ভাবি মধ্যে ত্মখ-ত্মবিধা দেখাব চেষ্ঠা করা মঙ্গল। আপত্তি নাথাকলে বসতে পারি।
 - —আলাপেও আপত্তি নেই।
- —বিদেশীরা সভ্যিই অক্ষর! আমাদের দেশের সোকেরা আমাদের এমন সম্মান দিতে জানে না।

বিদেশী দে নিজেও। আরল্যাণ্ড থেকে পালিরে এসেছে নানান কারণে। লণ্ডনের সমাজের থাতার নাম না উঠলেও পরিচরের গণ্ডী ছাড়িরে গেছে গনেকথানি। তাই বলে ছারিছ নেই বসবাসের। বহু জারগার ছাছে তার নাম ও থাকার কাহিনী। আপাততঃ বর ভাড়া করেছে লণ্ডনেই। হুপুর পর্যান্ত এক পোষাকের দোকানে থাকে বিকালের দিকে প্রায়ই আসে পার্কে। বেশি ছুর নয়। হেঁটেই আসে আবার বেড়িয়ে ফিরে বার। বাঁধন কোন নেই নেই, কোন বাধাও।

নবেন বিজ্ঞানা করে, এই একক জীবন ভাল লাগে ?

বোৰ হয় শিহরণ আনে প্রান্তের বাঁকে। উদ্ধামতা প্রকাশ পার রমণীর মুখে-চোধে।

জেনী বলে—একক জীবন ভূগৰ বলেই তো জাসি বছর লার্শে বেরা এই চঞ্চলতার মধ্যে। তাইতো নিজেই আলাপ করতে চাই অপবের সঙ্গে।

- —ভব কৰে না ?
- —ভর ভো বৌবনের। কিছ এককছ বোচাভে গেলে বৌবনকে উপঢ়োকন দিভেই হবে।
- —সে হলো প্রতিদানে উপহার। অথচ দান-প্রতিদানের কর্থা ওঠার আগেই ভো হারাভে পার তোমার এত দিনের সাজিরে রাধা সম্পদ অজানিত অভ্যানের আজিজনে।
- —বৌৰন চিবছায়ী কিছু নৱ। হাৰাতে একদিন হ^{বেই।} ক'দিন আগে না হয় পৰ্বে। তথন আৰু স্বংখাগের অপব্যবহার ক্রে

কি লাভ ? এই ধর না তোমার কথা। তোমাদের আচার বিচার জানি না, না মানি তোমাদের ধর্ম। তবু আলাপের লোভে পড়ে ভালবাসার খেলার বলি তুমি চেষে বস আমার সকল সন্তাকে—বোবনকে বাঁচিয়ে বাধব মনে করে প্রতিহত করব তোমার অগ্নসকে। অমন বোবন থাকার দুল্য কিছুই নেই।

- —ভা হয়তো সভ্য । কিন্তু এ-ও তো হতে পারে, গুরু বৌবনকে বেচেই গেলে, মূল্য কিছু না পেয়েও।
- মৃল্য পাবই, কেন না তার বিনিময়েই বে বেচা-কেনা। ধারের ব্যবদা অক্ত সব কিছু নিবে হতে পাবে কিছু নারীয় নিয়ে নয়। বগতে পাব তবু খেকে বাব অচেনার রাজ্যে। যাক ও সব কথা। বল কার জন্ম অপেকা করছ ?
 - —নাম বললেই কি চিনতে পারবে ?
- —নাম জানার উৎসাহ জানার এতটুকু নেই। সম্পর্কটুকু ওরু জানতে চাই।
 - —সম্পর্ক গড়ে ওঠার স্থযোগই মেলেনি।
 - --- তার মানে স্ত্রপাত ভুধু।
- —তাও ঠিক বলা চলে না। এই প্রথম আলাপের অভিলায অথ্য অপেক্ষমান অভিধির আরাধনা বার্থ হতে চললো আর একজনের ভ্রান্ত প্রচলাব দোষে।
- আমারও বে এমন ভূগ কোন দিন হয়নি তা কে বলবে ? তাই এ ক্রটি সমর্থনে যুক্তির অবভারণা করে কোন লাভ নেই, বরং অফুরোধ করে আমাকে অভাত: একবার আলাপের অবোগ দেবার জন্তা। সম্পর্কহীন আমিও—বিধান কিছুই আনতে পারিনি ভোমার মনে। তবে অবিধানের কোন কথাও তো তুলতে পার না আমার বেলার ? বজুত কামনাই বিদি উদ্দেশ্য হয়—বাধা কেন আসবে তোমার আমার অভিধানে ?

নবেন কথার জোরাবে ভেসে বার। বাধা দিতেও পারে না আর। জেনি দুরত্ব কমানোর বাসনার কাছে আসে।

আকাশের দিকে তাকালেও অন্ধনের কথা মনে হয় না।

কৃত্রিমতা মাটি ছেড়ে অত উঁচু পর্যস্ত ছড়িরে পড়েছে। পার্কের

চারিদিককার রাস্তা পেরোলেই চোখে পড়ে ভরাটকরা গাছওলো।

মার্রেরই আনা আচ্ছাদন আড়াল করে রেখেছে প্রদারিত দৃষ্টিকে।

তারই নীচে চেরার পাতা, বলতে হলে সময় অনুসারে অর্থ দিতে হয়।

ভীড় নেই সেধানে। আমাদের মাঝে অমন সীমারেখা টানার ইছ্যা

হয় না। নরম বাসের উপর বলে পড়েছে স্বাই প্রার।

হাতের পরশ পেরে বিচলিত হবার আগেই শুনতে পার জেনির কথা—তোমরা ভো হাতের রেখা বিচার কর ?

- —বিদি বলি ভোমার ভাগ্যে ভারতীয় স্বামী **আছে ?**
- वर्गक हर ना ।
- –সভাই পাব কলনা করতে ?
- —বাস্তবভায় স্বীকার করতেও আপত্তি নেই।
- —ভোমার সাহস আছে।
- সাহদের পরিচয় কি পেলে ?
- শামি ভো পারতাম না।
- শংর দেখা বাবে। আপাততঃ প্রথম পরিচয়ের ওজকণকে ক্রার কি করছ বল ?

- —সাহস হয় না আমার, বাড়ীতে ভোমার নিয়ে বেছে।
- —সাহস ভোমার নেই, তা বুকেছি।
- —ভাৰ চেয়ে চল কোন গিনেমার।
- —সে ভো হবে ছবি দেখা। আমাদের আলাপের মাঝে প্রেরাজন কি ঠৈতী করা কথাবিজ্ঞাসের। তোমার ভো বাড়ী নিয়ে বাওরার সাহস হর না কিন্তু আমার হয়। যাবে আমার খবে ?
 - -- थूनीहे इव।
- ক্লিওপেটা নই বিছ। কপ-বৌবনের পঠিচয় শেহেছ, সেই সঙ্গে প্রলোভন-ভরা মনের দেখা পেয়েছ কি না তুমিই জান। তবু বলব, সে মাদকতা নেই, বাতে এণ্টিনিওর মত সব কেড়ে নেওয়ার ম্পার্থ করতে পারি।

বেঞ্চি থালি হয়ে বার নিমেষেই। পড়ে থাকে মন-বিনিময়ের চিহ্ন—ভবিষাৎ রচনা করার প্রয়াস। বাস্ত কোলাহলের মাঝে হিসাবও থাকে না, কারা ফণিকের চাহনীতে ভরিরে নিল নিজেদের সব কিছু কাঁকগুলোকে, জীবনের স্বাদ বৃস্তে শিথল বরজের মত জ্বাট হরে থাকা অব্যবহুত মনের জানালা দিয়ে। অভ্যাস করা চলাফেরার মাঝে মাঝেও আসে আকম্মিক পরিবর্তন—সময় নেবার অবসর দেয় না—ভাসিরে দিয়ে বায় উদ্দাম উচ্ছলতার বভার। একের ব্যবসা অপ্রের সম্প্রা এনে দেয়, তরু পবিত্তির বোঁজ মেলেনা। আহ্বান দিয়েই গুরু কান্ত হয় না, তার প্রের কথা ভেবে বস্বন গণ্ডী টানে ঠিকই।



বিখ্যাভ গঙ্গি প্ত পাদ্যু

মার্কা গেঞ্জী

রেজিষ্টার্ড ট্রেডমার্ক

वावशंत्र कक्रन

ডি, এন, বস্থুর

হোসিয়ারি ফ্যাক্টরী কলিকাতা—৭

–রিটেল ডিপো–

হোসিয়ারি হাউস

৫৫। >. करनव श्रीरं, कनिकां ।— > २

ফোন: ৩৪-২৯৯৫

চলার ছলে ছিল তালের পরিকল্পনা **অধ্য চলাব আনন্দ** মধুর থেকে মধুবতর হবার আগেই এসে যার থামার ইঙ্গিত।

লোক-সমাগম ভালই বলা চলে। হাতের মধ্যে হাত বেথে চলতে গিরে দৃষ্টির অপবায় হয়। দরজার কাছে এলেও নরেন থেয়াল কয়তে পারেনি পথের নিশানা কিংবা পথিকের আনাগোণা।

অজকার সামাত্ত একফালি গলি দরজার পরে।

সিঁড়ি দিয়ে উপরে ওঠে আরও কয়েকটা বারাশা। ব্যস্তভা বেন সকলেই ওসব কাজেই—

চাৰী খুগতে বেটুকু সময়। বিশ্বয় কাটার আগেই আলো অংশ উঠে ভরিয়ে দেয় মনের অজানা জানার স্পর্থকে।

স্থাপর করে সাঞ্চানো সে খর।

--- বস !

নরেন স্বপ্লাবিষ্টের মত বলে ওঠ---স্পেনী তৃমি কোধায় ?

—আমি আসছি। ভূমি দহা কবে বদ একটুথানি।

নানান ভলিমার ভোলা ছবি সারা ব্রময়। নিজেরই সৌন্দর্যের ওপর মে'ল আছে বলতে হয়। ছোট টেবিলের মাঝে এক শিশুর ফটো। কিছ'না ঢাকা রয়েছে রেশমের কাজ-করা চমৎকার এক চাদর দিয়ে।

এত ঐধর্ব্যের মধ্যে একক উপস্থিতি বোঝার মতন হয়ে উঠছিল নরেনের কাছে।

জগার টানতেই গুমরে ওঠে কাঠের পাঁজরগুলো। সে আওয়ান্ত পৌছার গুহুত্বামিনীর কানেও।

স্বৰ ভেঙ্গে আঙ্গে-ভৱ পেও ন। বেন।

নবেন ভাগ করে দেখে। কাণো এক বিভগবার। ভরে ভাঙাতাভি বন্ধ করে দেয় ভাগা।

জ্বেনী খবে ঢোকে। বলে—কি সভিঃই ভয় পেলে নাকি? দেখছ তো একা বাস করতে হয়। তাই বিপদের দিনে হাতিয়ার রাধা আর কি।

নবেনের জড়ত্ব ধার না তবু।

জেনী কাছে আসে। সোফার বসিরে দের। নিজেও বসে। এবই মধ্যে পোষাক বদলে এসেছে। মিটি গন্ধ বেকছে মুখের চারিপালে। ঝসমসানি সেগেছে সারা অঙ্গে।

—কি কথা, বলবে না বুঝি ?

নরেনের কংঠ অদ্ভুত এক স্বর!

- —জেনী, আমার সংসহ হয়—
- ---থামলে কেন ?
- শামি বরং বাই। আবে এমন ভূল করব না।

জেনী বাধা দেয়—কিদেৰ এত কুঠা ভোমাৰ ?

সামনে পড়ে ববেছে বিভেগীর এক ছবি। সিনেমার কোন আংশ হয়তো। সমূজের বেলাভূমিতে প্রেমের পেলায় মত হয়ে উঠেছে প্রণয়িম্পল। ভূলে গেছে সমাজ সংস্কার।

নবেন প্রশ্ন কবে—সভ্য জবাব দেবে ?

- —সভ্য মিখ্যা বাচাই করবে কো**খা** থেকে গ
- —দে ভাবনা আমার। তুমি সত্য উত্তর দাও।
- —তোমার ছেড়ে দেবার ইচ্ছা বদি না থাকে আমার ? তোমার খুৰী করতে বদি ভোমার মনবাধা কথা বদি ?

—দে ভূমি বলবে না।

ন্দেনীর চোখে-মুখে কিসের প্রতিচ্ছারা !

বলে—যাকে সন্দেহ করছ ভার ওপর আবার এতথানি বিখাস। জেনীর হাসি বিহবস করে ভোলে নরেনকে। জেনী দৃষ্টির সংস্কৃতি মিলিরে নিজেই ইভিহাস বচনার চেষ্টা করে।

—তুমি কি শুনতে চাইছ জানি। ভাবছ আমি হয়তো ভাদেরই একজন, বারা পরের মনোবঞ্জন করেই দিন কাটার। চলার পধ মিধ্যা দিয়েই তৈরী—সম্মানের চেরে অসম্মানের বোঝাই বেশি।

নবেন বাধা দেয়—না আবি শুনতে চাই না। শুধু বল ভুমি আমাৰই মতন সাধাৰণ একজন।

জেনী ^নঠে বার। পাশের খব থেকে নিবে খাসে ছোট এক থাতা। জনেক সেথা—জনেক ছবি তার মধ্যে। নবেনের হাতে তুলে দের সে শুভিমর চিহ:!

বলে— অবসর সময়ে পড় এ-ধানা। সত্যকার পরিচর পাবে আমার। তবে এটুকু জেন, কলদ্ধিনী হলেও আর্থ সিন্ধির উদ্দেশ্য প্রান্ধ কবি না মাধ্যকে। বন্ধু এই আনি চাই—চিল্লেয়িছ হলে খুনীই হব কিছু না হলেও আণতি নেই কিংবা না হওয়ার শোকে পিছিরে পড়ব না পথের পাশে প্রবাজনের পারে কুড়ল মেরে।

নরেন মুধ তোলে। জানায়---এ পরিচয়ের পরও জুমি জাশা কর বন্ধুত্ব ?

— শাজই না হয় পরিচরের কথা উঠেছে। কিছা ওরু নারীণ্ট বর্ধন জতীতের ছবি ছিল, তথনও তো বন্ধুদ্বের ছল্পবেশে পশুত্ব এসেছিল আমার ঘরে। ভোগ জার ত্যাগের মধ্যে ছিল না কে!ন ব্যবধান। সময় বলে ইইল না। পড়ে ইইলাম জামি জার আমার সেই জাশা—বন্ধুদ্ব।

আসন শৃক্ত হণ আবার। নবেন পাতা উল্টাতে ক্ষক করে। ছবিগুলোবেন জীবস্ত হরে তার সামনে উপস্থিত হতে চার। লেখাগুলো ক্রমণা বড় হতে আবস্ত করে। সমস্ত লায়ু অকেলো হবার উপক্রম। পঞ্জির পাবার সঙ্গে সঙ্গেই পরাজর আন্সে তার সকল শক্তি নিরে।

জেনী ফিবে আদে স্নিগ্ধ কোমলতা নিষে। স্নেহের ছারা পড়ে তার মৃত্ চাহনিতে। হাতে পানীয়-ভর্তি গেলাস। তৃকার আগেই তৃষা হরণের আয়োজন।

নবেন এক নিঃধাসে শেষ করে অফুরোধ ব্যতিরেকেই। নিবেধ-বাধ;-নীতি, সময়কালে কোধায় ভেসে যায়, বোধ হর স্রষ্টাও জানে না!

জেনীহাদতে হাদতে এগিয়ে দেৱ আবার। বলে—কত ধুৰী হলাম তুমি নিজেই নিলে বলে।

নংবন আবেশে স্পূর্ণ করে স্নেহ্ময়ীর মাধ্য্তকে। উত্তর দেয় আমায় ক্ষমা কর। তুমি সভাই ব্রুংখর যোগ্য।

- —কি তোমার এমন করেছি বন্ধু, বার জন্ম এত অবিধান গ্^চ গোল এক লহমার ?
 - --উপহাস করছ ?
 - —তোমার উপহাসও তো বুঝলাম না এখনও ?
- —উণহাস নয়, বিখান কর। কি হবে তোমার শতীত নিয়ে, কি করব তোমার ইতিহাস গুনে ? . ভূমিই কি আমার

বাধতে চেরেছ আমার সব কিছু শোনার পর ? বিখাস অবিখাসের প্রেস্তাছি আমিই মিধ্যা পুরুষকারের দছে। আর ভূস করব না।

- —এত সহজে আত্মসমর্পণ করা কি উচিত হবে? আমার দক্ষ অভিনয় তোমায় হয়তো বিচলিত করেছে তোমার ত্র্বলতাকে নাড়া দিয়ে। এটা ভো মিথ্যা নয়, আমি প্রচারিণী ঘরণী হবার অযোগ্য।
- অক্স পাধারে তোমার তরীতে দিরেছ আসন। সে তরীর ছিদ্রের হিসাব নিয়েই বা কি হবে, আর বর্ণজ্ঞীর সমাসোচনা করেই বা কি লাভ? তরীর শীতল ছাউনি বে আছে, স্থানিজার সকল স্ববিধাটুকুও সে রয়েছে এটা তো মিধ্যা নয়।
 - —অফুডাপ করবে না ভো পরে ?
- —তরী বলি ডোবেই ভর পাব না তাতে। তুমি বে থাকবে সঙ্গে।
 সমরের হিদাব নেই। বাতের আলো-ছারার খেলা চলেছে
 অনেককণ ধরে। পরিচিত প্রথম পর্ন পেরিয়ে গেছে অনেক আগেই।
 দৃষ্টিব আবর্ষণ সীমাবন হয়েছে মনের সোণানে। অজানিত অজতা
 শেব হরেছে কথার আলোড়নে।

জেনী বলে, সাতের আতিখ্যে নিমন্ত্রণ করব না প্রথম আলাপেই। ভবে থুনীই হব ধদি থাক। ভর নেই, সাতিমর ফেলাক রাভ হবে না এ বরং অপ্নমর করে তুলব করনার কাব্যজালে।

- --না আজ থাক।
- ---সাহস হয় না নিশ্চয়ই ?
- —স্তাই তাই। আলাপন প্রণোভনে আসতে আর কভক্ষণ।
- -- ७८व वां । कथा मां आवां व आगर्व ?
- -- बागर, যত দিন না অখোতন কিছু আসে আনাগোণায়।
- -कि, शहरत ना आमात क्या ?

—পড়ে তোমার বিচার করতে চাই না। বা পেরেছি, বা দেখেছি বা জেনেছি তাই বংগঠ আমার সংযোগ রাধার পক্ষে। মনে পড়ে, তুমি জানতে চেয়েছিলে আমি হাতের রেখা পড়তে পারি কি না। হাতের বেখা পরিবর্তনশীল—দিনের পর দিন বেখা বদলে বায় মনের সঙ্গে তাল মিলিয়ে। তাই বিচার করতে বসে, পুরানো রেখার সন্ধান করে কি লাভ? তোমার আগ্রহ এত তীর ধে অজ্বের অমুগ্রহ বড় হয়ে দেখা দিতেই পারবে না কোন দিন—তোমার নিজের তর্কের দোব-ক্রিটি তো পরের কথা।

কথা শেষ হয় সেইখানেই। নীড়ভাঙ্গা পাৰীর মতন নারী বিদায়-ব্যথা ভূগতে চায় পুরুষকে অবলখন করেই। চিরাচরিত প্রথা ও পথ। দেশ কাল কোন বাগা আনতে পারে না। চোখের জলই পুরুষের পুরুষার—এই দূরে চলে বাবার সন্ধিক্ষণে।

বাড়ী ছেড়ে পথে নেমে পড়ে নরেন। দ্বে হাইড পার্কের
সতেক্স আলো চোথে আসে। ওরই পাশ দিরে বেতে হবে এবার
শৃশুতা নিয়ে। ভরসা তব্—আগামী কালের পরিপূর্ণ আলোর
বালকানি দেখা দিছে দিগস্তের কোলে। নারীছের পূর্ণ আবেদন
ঐ হাইড পার্ক কর্ণারে—আবার নারীর জন্ম আতিখ্যে নিজেকে
সম্মানিত করার স্ববোগ দিরেছে ঐ হাইড পার্ক কর্ণাহই। হয়ভো
ওর নাম ছড়িরেছে চারি দিকে, শুধু ঐ ভিন্নমুখী সতার জন্ম।

হাইত পাৰ্ক কৰ্ণাৰ-হাইত পাৰ্ক কৰ্ণাৰ।

হাইভ পার্ক কর্ণারকে বিদার জানিয়ে পিছন ফেরে নরেন রাভের আশ্রয় অভিমুখে। হাইড পার্কের আলো ক্রমশ: নিভেজ হরে বার—
দ্বে অনেক দ্বে এখন। ফিরবেও না আপাতত। পরের দিন
আবার আসবে ফিরে—দেখা হবে—পরিচয় ঘন হবে। রখের চাকা
চদবে ধীর গভিতে। এই ভাবেই বত দিন না রখ পৌছার পিখর
দেশে। চালক পাবে দেদিন যোগ্য পুরস্কার—চলার সঙ্গিনীই দেবে
মাস্য, জরের শুভ নিশান।

অন্ধকারে উপবিষ্ট থ্রাসপক্ষী

[हेमान शाखित "The Darkling Thrush"- बत ভाব अवनयान]

অর্জনারিত দেহধানি ছিল ঝোপের বেড়ার হারদেশে,
পৃথিবী ধূদর দেক্তেছিল ববে তুহিনাবরণ বেশে।
শীতের দিনের স্তিমিত আঁথিটি প্রাণহীন নিবু নিবু,
পাবক পরশ লভিবার তরে মিলিতেছে দবে কতু।
ছোট ছোট দব ডালপালাগুলি চোথের স্মুখ্যে ভাদি,
ছিল্লবীধার ভারদম ভারা আকাশেতে পরকাশি।
পৃথিবীর এই স্পষ্ট প্রতীত অবরবর্ধানি বেন,
চলে-বাওরা দেই শত বরবের শবদেহ গণি হেন।
আকাশে আকাশে মেহেরা তাহার রচেছে দমাবি-গৃহ,
বারু পেরে চলে শোক-পাথা ভার চলে গেছে বেন প্রির।
অর্ব আর জন্মের দেই প্রচলিত প্রথা স্তর্কন
পৃথিবীর বুকে প্রতিটি প্রাণীই প্রাণহীন বেন ক্ষুক্ত।
সহসা আমার মাধার উপরে প্রকাশিল এক কঠে,
ধোলা ছিল ভার প্রাণের হুরার মুথবিত ছিল ওঠা।

সাম তাহার ভরেছিল উঠি আশা আনন্দ প্রীতিতে,
মুখরিত তাই করিল সহসা মর্ব সন্ধা-গীতিতে।
ক্রম অনায়িত অন্ধকারের পীড়ন করিতে দৃষ,
কঠে তাহার অরিল এমন আশা-আলোংকের অর।
ছোট ও প্রাচীন জীর্ণ-গীর্ন পাখীটি ছিল গো হস্ত,
ঝড়ের আখাতে ডানা ছটি ছিল এলোমেলো বিস্তম্ভ।
কাছে বা দ্বের পাখিব সব ছিল বে সবই গো নীবস,
আনন্দ-মুখর সংগীত তরে দেবে না প্রাণের প্রশ।

(তবুও) প্রাণহীন এই পরিবেশ মাঝে ঝরিল মধুর কঠ, ভাহাতে ছিল গো আশার বারতা ভনাইল বাহা মিট। স্থদর-কুটারে ছিল গো ভাহার আশার নতুন বারতা

(তাই) শুভবাত্তির বারতা জানাল আমার ছিল না জানা তা। প্রকৃতির সাথে বোগ ছিল তার জেনেছিল তার জনমের কথা, (জামি) পারিনি জানিতে ছিল জানা তার শুধ্মর আশা-বারতা।

অমুবাদক-শ্রীসুনীতিকুমার গুড়িয়া

অঙ্গন ও প্রোক্তণ



যুবারিকা বিবি

শিবানা ঘোষ

্রিকে একে দবজার কাছে এসে দাঁড়াচ্ছে মুসাফিরের দস। তাদের দান করা হছে কটি খার মাসে। খাজ ঈন। বছরের এই দিনটিতে শাহ্ মনস্থর আগত্তককে পরিত্তা করেন এই ভাবে। তাঁর একথাত্র ক্ষা মুবারিকা বিবির ভতাবধানে দাসীরা কটি আর মাসে দিয়ে আসে মুসাফিরের হাতে।

আজ বাজের দেশের ওপর খনিয়ে এসেছে চরম ছর্দিন ! বাদশাং, বাবর ভারতবর্ষ জয় করার অভিপ্রাবে রওনা হয়েছিলেন কাবুল থেকে। হঠাৎ যাবার পথে তাঁর ভোনদৃষ্টি পড়ল ছর্ভাগা এই দেশটার ওপর। এর অপবান, এর অধিবাদিবৃন্দ ইসলাম ধর্মের অজ্ব বিশাস অফুকরণ করে না। তাই বাবর স্থির করেছেন, ভারতে যাবার পূর্বে তিনি নিশ্চিষ্ঠ করে যাবেন এর ইউস্কুঞ্জাই অধিবাসীদের।

এই চরম তুর্দিনে সকলের মুখ থেকে মিসিরে বাচ্ছে হাসি। তর্ আজ বছবের পবিত্র দিন। শত ত্রংশের মাঝেও তাই বিবি মুবারিকা অবহেলা কবেননি তাঁর মুদাফির সেবার কাজে। তিনি দাসীদের হাত দিরে হাসিমুখেই পাঠিয়ে দিচ্ছেন তাদের প্রাপা বস্তু।

হঠাৎ এক সময়ে চমকে উঠেছেন মুবারিকা বিবি। এ কি! দরজার এত কাছে এসে একজন মুসাফির এ ভাবে তাঁব পানে তাঁকিয়ে দেখছেন কেন? মুসাফিররা তো এমন বেয়াদলি কথনও করেন না? তিনি ভাড়াভাড়ি মুখের ওপর নেকাবটা টেনে নিরে তাঁর এক দাসীকে বলেন—ফিরোজা, বা শীগ্লির ফটি আর মাংস দিরে লার দরজার নিকট দুগারমান এ মুসাফিরকে। আর আসবার সময়

বলে আসৰি জন্ত:পূবে প্ৰবৈশ কৰে মেষ্টেম্ব পানে তাকিয়ে থাকাটা অত্যন্ত গঠিত কাল, ভবিষ্যতে তিনি বেন একাজ আৰু না কৰেন।

কটি ও মাংস নিষে চলে গেল ফিরোজা। মুসাফিরের হাতে সেগুলি দিয়ে ফিরে আসতে তার বিলম্ব হল কিছুস্পণ। তার আসতে দেরি দেবে সুবারিকা বিধি বলেন—এতকণ মুসাফিরের সাথে কি করছিলি ফিরোজা ?

কিংবাজা বলে—তিনি কভকগুলো প্রশ্ন জিজ্জেদ করছিলেন, তার উত্তৰ দিবে স্থাদতে দেবি হয়ে গেল।

বিশিতা হরে মুবারিকা বিবি বলেন—প্রায় জিজ্ঞেদ করছিলেন ? কি প্রায় !

- এই জি:জন কওছিলেন তোমার সহদেই, মানে তোমার নাম কি, বরদ কড, তোমার মেজাজ কেমন, ভূমি বিবাহিতা কি না, এই সব প্রশ্ন।
- —ছি ছি ছি, মুণ্টা বিকৃত করে মুবারিকা বিবি বলেন—আমার সম্বন্ধে এই সব প্রশ্ন কর্নছিলেন মুসাফির ? তা তুই কি বললি ?

কিবোক্স বলেন—যা সতি। কথা তাই বললাম। বললাম তোমার নাম মুবারিকা, বরদ বোল বংসর, তোমার মেজাজ এমন শাস্ত ও ধীর বা পুর কম মেরের মধ্যেই দেখা বার। আর তোমার এখনও বিবাহ হয়নি এবং উপস্থিত তুমি কারও বাগ্দন্তা নও, সে কথাও বললাম।

—ছি ছি ছি, এ সব কথা বলে তুই মোটেই ভাল ক্রিসনি ফিরোজা! কোথাকার কে একজন মুনাফির, তার কাছে আমার পরিচর দেওয়াটা অত্যন্ত অলার হয়েছে। আছো এখন বা তুই।

চলে গেল ফিবোলা। বিবি মুবারিকা তথন একাকিনী বলে ভাবতে থাকেন ঐ মুদাফিরের কথা। উনি তার সম্বন্ধ এত প্রশ্ন কেন করপেন? তবে তাকে কি তাঁর মনে ধরেছে? ছি!ছি!ছি! ঐ আগবুডো লোকটাকে স্বামিরণে করনো করতেও বেন গা শির-শির করে।

বাজোর দেশের অধিকর্তা মালিক আহ্মেদ, শাহ্মনত্র প্রযুধ ব্যক্তিগণ অত্যন্ত বিষয় বদনে বংগ বংগছেন একটি কক্ষে। বাবংর হাত থেকে ইউপ্রক্ষাইদের রক্ষা করা আর বোধ করি সন্তব হবে না। তিনি যে মূর্তি নিয়ে যুদ্ধে অবতীর্ণ হয়েছেন, তাতে আর সাত দিনের মধ্যে এক মহাস্মাদান ভূমিতে পরিণত হবে এই বাজোর।

--- সালাম জালেকুম।

চিন্তার জাল ছি ড়ে বার মালিক আহ্মেদের। তিনি চেরে দেখলেন তাঁদের সামনে এসে গাঁড়িরেছে বাবরের এক গৃত। হঠাও তাকে দেখে অত্যস্ত বিশিত হলেন আহ্মেদ। তিনি প্রশ্ন করলেন— কি আছে?

বাববের বার্গাবহ পুনরায় কুর্ণিশ জ্বানিরে বাদশাহের ফরমানটা এগিরে দিলেন মালিক আহ্মেদের দিকে। পত্তি পড়ে চমকে উঠলেন বাক্রোব-অধিপতি। তিনি পত্রবাহককে বললেন—আহা ছুমি আসতে পাব, এর ধ্ববাব আমি এথুনি সমাটের কাছে পাঠিবে দিছি।

শত্রবাহক চলে গেলে মালিক আহ্মেদ তার সহক্ষী শাহ্ম মনস্বকে বলেন—অভ্যন্ত সাংঘাতিক এক প্রভাব পাঠিয়েছেন বাদশাহ্মবাবর ৷ —কি প্রস্তাব ?

—দে প্রস্তাব হচ্ছে তোমার মেরে মুবারিকা বিবির পাণিগ্রহণ করতে চান সমাট। শাহ্মনারর গর্জে ওঠেন—অসম্ভব, এ হতেই পারে না।

মালিক আহ্মেদ বলেন—অনন্তব বলে গর্জন কবে উঠলে কোন ফল হবে না। তাতে বাজীব অধিবাসীদেব পক্ষে হবে আবও ফভিকর! তাব চেয়ে এই মর্মে বানশাহ্কে পত্র লিখে দেওয়া বাক বে স্থাটেব সংধ্যানী হতে পারে এরপ মেয়ে শাহ্মনত্মব বা অক্সান্ত অধিহতাদিব নেই। এই কাবণে স্থাটেব অভিপ্রার পূরণ না করতে পাবায় তাঁবা ছংবিত।

মালি ই আহ্ মেণের যুক্তি স্ক'সই সম্থন করলেন স্বাদ্ধিকরে। কাজেই তথুনি পান চলে গেল বাব্রের নিকট। কিছা প্রনিন আবার এল স্মাটের ক্ষমান। ভাতে তিনি লিখেছেন, শাল্ মনজ্বের ম্যারিক। বিবি নামা এক যোড়শী কলা আছেন, এ ব্যর তিনি ভাল করেই আনেন। গত ঈদের দিন তিনি মুলাফিরের ছ্লবেশে গিরেছিলেন তাঁর গৃহে। স্বোনে তিনি অভ্যাপুরের ঘার প্রস্তু গিয়ে বচকে দেখে এলেছেন কুমানীকে এবং তাঁর দাসীর মুখে তিনি স্ব কিছুই জ্বগত হয়েছেন মুবাহিক। বিবির স্বজ্জন। পরে তাঁর পাঠানোকট ও মাণ্য নিয়ে তিনি চলে আদেন স্বোনা থেকে। সেই কটি ও

মাসে মনক্ষবের গৃংহর পশ্চাদ্ দেশেবে ছটি প্রস্তৱন্ত পড়ে আছে, তার 'মাঝে থোঁজ করলেই পাওৱা যাবে। দেখানে তিনি রেখে এসেছেন ওগুলি। কাজেই শাহ মনজুংহর ক্যা নেই, এই বলে তার চোখে মিথো ধূলো দেবার চেট্টা করে কোন লাভ নেই। এবং স্থাবিক। বিবিকে যদি তিনি না পান তবে তিনি সমূলে উৎপাটন করবেন ইউল্ফল্ডাইদের।

সমাটের পত্র পাঠ করে অবাক হয়ে গেলেন সকলে। তাঁর কথা প্রেক্ত সত্য কি না, তা বাচাই করবার জলে শাহ্ মনস্থর লোক পাঠিয়ে দিসেন তাঁর গৃহহর পশ্চাদ্দেশে নিক্ষেণিত প্রস্তিয়নগুর মধ্যে কটা ও মাংদের সন্ধানে। ধরর পাওয়া গেল এ কথা মিখ্যে নয়। এবং মুবারিকা বিবির কাছে লোক পাঠিয়েও যে সংবাদ পাওয়া গেল ভাতে বোঝা গেল, বাদশাহ, বাবর মুশাফিবের ছল্লবেশে সভিটেই দেখে গেছেন তাকে। তবে এখন উপায় ? যদি এ মেরেকে তাঁর হাতে না দেওয়া যায় তবে বাজীর তথা ইউম্ফজাইদের যে কি অবস্থা হ'বে তা সহজেই জমুমেয়। এখন এই চয়ম বিপদ খেকে দেশকে বন্ধা করতে পারে একমাত্র শাহ্ মনস্থরের কল্লা মুবারিকা। তথন তাকে য'বে বসলেন সকলে। বাড়ী গিরে তিনি যাতে মেয়েকে ব্রিয়ে-মুঝিয়ে বাবরের সহধ্মিণী হতে রাজী করান, তবে এ এক চয়ম উপকার করা হয় বাজীব-এর পক্ষে। আর তাঁর কলা ম্বারিই



"এনন প্রন্থর গইনা কোলায় গণালে?"
"আনার সব গইনা মুখার্জী জুয়েলাস নিরাছেন। প্রত্যেক জিনিষটিই, ভাই, মনের মত হয়েছে,—এসেও পৌছেছে ঠিক সমন। এঁদের প্রচিক্তান, সততা ও দানিববোধে আমরা সবাই মুসী হয়েছি।"



টেলিফোন: ৩৪-৪৮১০



বিবেক-বৃদ্ধিদম্পন্না, কাজেই দেশের এই বিপদের কথা শারণ ক'বে তিনি এতে নিশ্চয়ই অমত করবেন না।

শাহ, মনশুর গৃহে ফিরে সেই দিনই একবার প্রবেশ করলেন কলা মুবারিকার কক্ষে। মেয়েটি তথন একাকিনী বসেছিলেন জানাগার পাশটিতে। হুঠাং পিতাকে ঘরে আসতে দেখে ভাঙাতাড়ি উঠে এসে দীয়াল তাঁর সমূধে।

শাহ্ মনস্থর একবার ভাগ ক'বে চেয়ে দেখেন মেয়ের মুখের পানে। রূপে গুণে অতুগনীয়া এমন মেয়ে বোধ করি সারা আফগানিস্তা:ন আর দিতীয় নেই। ধেমন স্থির, ভেমনি বিচক্ষণ। কিছ এই মেয়েকেই আল দঁপে দিতে হবে এক মোগলের হাতে। ইউপ্রকলাই হয়ে এ অপমান সে হয়ত স্বীকার ক'রে নেবে নিজ্ঞান কিছ তিনি পিতা হয়ে এ কথা মেয়েকে কেমন ক'বে জানাবেন ?

- —বাবা, আমাকে কিছু বলবেন :—ধীর কঠে এখ করেন মুবারিকা বিবি।
- —ই। মা, একটা কথা বলতে এদাম তোমাকে। শুনেছো বোধ হয় কাবুল-অধিপতি বাবর ধ্বংদ করে দিতে চান আমাদের এই বাজোর দেশ এবং নির্নাশ ক'রে দিতে চান এর ইউত্মক্ষাই জাতিকে। ত।' এই দেশ এবং জাতিকে রক্ষা করতে পার মা, একমাত্র ভূমি।
- —আমি ? বিশ্বিতা হবে মুবারিকা পিতার মুখের পানে ভাকিষে বলেম—পিতা, আমি অবলা নারী, আমার কি এমন শক্তি আছে বে বাদশাহ, বাবরকে পরাজিত করবে। ?

মনত্বৰ বগলেন—শক্তি দিয়ে নর মা, তোমাকে সে কাজ করতে হবে হালর দিয়ে। অবগু আজ তোমাকে যে কথা নগতে এসেছি তা তোমার পক্ষে কেন সমস্ত ইউন্দেক্ষাইদের পক্ষেই একটা অপমানস্চক কথা। তবু এই বাজোবের মুখের পানে চেয়ে তা ভোমাকে মানতেই হবে মা!

শ্বাবিকা বললেন—আপনি থিধা বোধ করছেন কেন পিতা! আমি তো আপনার কথার কথনও অবাধ্য হইনি । আমাকে বা বলবেন তা আমি হাসিমুখেই মেনে নেবে।।

মৃত্ হেদে মনক্ষর মেষের মাধায় হ'বার হস্ত সঞ্চালন ক'রে বলেন— আমার কথা ভূমি বে হাসিমূখে মেনে নেবে তা আমি আমান। কিছ কথাটা বলতে যে আমার সংজাচ হচ্ছে।

--তবু বলুন পিতা!

শাহ মনস্বর আব একবার স্থির দৃষ্টিতে দেখলেন মেয়ের মুখের পানে। তারপর বনগেন—স্থাট বাবর তোমাকে সহধ্যিণীরূপে পেতে চান। বদিও এতে আমাদের কারও আত্তরিক মত নেই। তবুদেশের প্রতি চেয়ে তুমি এতে গালী হও মা!

কথাটা শুনেই কেমন বেন শিউবে ওঠেন মুবারিক। বিবি। ইতিপুর্বেই তিনি কিবোকার মুখে শুনেছেন সেবিনের সেই মুবাকিরই সমাট বাবর। তাঁর সেদিনের বেয়াদিণি তিনি মোটেই ক্ষমা করতে পারেন নি। তা ছাড়া তাঁর যোবনকাল গেছে উত্তীর্ণ হ'রে, আর দ্রীও আছে গুটি পাঁচেক। এ অবস্থায় তাঁকে স্থামিরপে বরণ করতে অস্তব ছেপে ওঠে কাল্লায়। তবু নিজেকে সংযত করে নিরে মুবারিকা বলেন, তাই হবে পিতা।

ব্যথিত কঠে শাহ, মনপ্রর বলেন—বেশ, তবে এর জন্তে প্রস্তুত হরে নাও মা ! প্রদিন সকলের নিকট বিদার নিয়ে শিবিকার গিয়ে উঠপেন মুবারিকা । আজ আর বাধা মানছে না অঞা। ওড়নাঞ্চলে ঘন ঘন মুক্তে হয় চোপ। আজ তিনি রাজনীতির দাবাধেলায় একটি বু'টি ছাড়া আর কিছুই নন। তাঁকে লোকে যে ভাবে চালিড করছে তিনিও সেই ভাবেই চালিত হছেন। তাঁর নিজম্ব সন্তা বলে আজ আর কিছু নেই। হায় বিধাতা ! শেষ পর্যন্ত এই কি ছিল ভোমার মনের বাসনা !

এগিয়ে চলল শিবিকা। সংশে চলল জাঁর ভিন জন দাসী। পশ্চাতে চললেন মালিক আহমেদশাহ মনস্থর প্রয়েশ অধিকর্তাগণ। এবং ভার পশ্চাতে চলল বাঞ্চোরের অধিবাদিরুক্ষ।

শিবিকা এগিরে চলল থানা গ্রাম থেকে চাকদারা গ্রামের পথে। সেখানে এক কুজ প্রোক্তক্ষী পার হ'য়ে তাঁরা গিরে পৌছালেন তাতাস গ্রামে। এখানে সাক্ষাং হ'ল সমাটের দলটের সাথে। তাঁরা এঁদের আম্ববিক স্থান্ধনা জানিরে এগিয়ে নিরে চললেন বাববের শিবিবের দিকে। মালিক আহ্মেন, শাহ মনস্থর কুমারীকে বিদার দিয়ে ফিরে এলেন সেখান থেকেই।

বাববের শিবিরে একটি তাঁবুতে অস্কান্ত আতিশব্যের মারধানে
নিয়ে গিয়ে বসানো হল সুবারিকা বিবিকে। সেধানে এসে
আড়ো হলেন দেশের প্রধান প্রধান আমাতাগণের সহধর্মিণীগণ।
তাঁরা প্রত্যেকেই মুগ্র হয়ে গেলেন নববধুর রূপ দেখে! কিছ তাঁদের সাথে আসাপ করবার মত মনের অবস্থা তথন সুবারিকা বিবির ছিল না। তিনি নীরবে বসে থাকেন অবনত মন্তবে। তাই দেখে বিবি-বেগমরা মন্তব্য করেন রূপের সাথে এর অহকারও কিছু কম নেই। না হলে হ'-একটি মুখের কথাও কি থসতে নেই? এর কোন উত্তর দিতে পারেন না সুবারিকা। তথু ফুঁপিরে উঠতে থাকে কার স্বস্তর। তাঁরা একে একে চলে গেলেন তাঁরু থেকে। তথন একজন দাসী এসে জানালো—আগনি প্রস্তুত্ব থাকুন বেগম সাহেরা, এখুনি এখানে সম্রাট আসবেন।

দাসীর কথা ভনে চমকে ওঠেন মুবারিকা বিবি। বাদশাই এখুনি আসবেন এখানে ? তাঁকে সে কেমন করে বংশ ক'রে নেবে স্বামিরপে? কিছুনা, না, না। এখন একথা তার মনে আসছে কেন? আজ সারা বাজোর দেশ চেয়ে আছে তাঁর মুখের পানে। এ অবস্থায় তাঁর কাছে কামের বলি না হয়ে উপায়ই বাকোখা?

— আগতে পারি বেগম সাহেবা ?

ধড়মড়িরে জালিম ছেড়ে উঠে গাঁড়িরে কুর্নিশ জানাল মুবারিক। বাদশাহ বাবর মৃত্ব হেদে প্রবেশ করেন তাঁবুর মধ্যে। মুবারিক। তাঁকে সম্মান জানিয়ে গাঁড়িরে থাকেন অবনত মস্তকে। বাবর জাজিমের ওপর বদে বলেন—আফগানিয়া, বোদ আমার পাশে।

মুবারিকা তবু দাঁড়িয়ে থাকেন অবনত মস্তকে। বাবর চেয়ে দেখেন তাঁর নেকাব-ঢাকা মুখের পানে। ভারপর আবার বলেন —বোস আফগানিয়া!

এবাবেও নিম্পাদ হয়ে গাঁড়িয়ে থাকেন আফগান-রমণী। তথন বাবর উঠে তাঁর কাছে এসে মুখ থেকে সরিয়ে দেন নেকাবটি। মুবাবিকা অত্যন্ত লচ্চিতা হয়ে। বাবর একর্ঠে চেরে থাকেন তাঁর গোলাপের মন্ত আরক্ত কোমল মুখের পানে। ভারপর জাবার বলেন—জামার পাশে বসবে না জাফগানি!

এইবার কম্পিত অধ্বে মুবারিক। বলেন—আমার একটা নিবেদন আছে।

বাবর অভ্যন্ত সহায়ভৃতির কঠে বলেন—কি নিবেদন আছে বল না প্রেয়সি, ভূমি অভ ভীত হছে কেন ?

মুবাবিকা এইবাৰ একবার সমাটের মুখেব পানে চেয়ে পুনরায় নত করে নিলেন মাধা। তারপর ধীরে ধীরে ধুলে ফেললেন তাঁর পরিধানের বোগখাটি। বহিবাবরণ হতে মুক্ত হয়ে তখন বেবিয়ে আদে স্বচ্ছ মসলিনে-ঢাকা তাঁর ভবী দেইটি। বাবর হতবাক হয়ে চেয়ে থাকেন তাঁর অর্থনিয় দেহের পানে। নেশা লাগে তাঁর চোখে। মুবারিকা ভখন তাঁর দেহের পানে। নেশা লাগে তাঁর চোখে। মুবারিকা ভখন তাঁর দেহের সামুখে এগিয়ে ধরে বলেন—জাঁহাপনা, আপনার বাজের দেশের প্রতি যত তোব আজ তা আমার এই দেহের মধ্যে বিদর্জন নিয়ে উট্পুফ্জাইদের বক্ষা ককন।

বাবর সানন্দে জাঁকে বাছ শাবেইনে জড়িয়ে ধরে বলেন—ভাই হবে আফগানি, ইউ সফ্টাইণের আর কোন অপকারই আমি করবোনা।

তথন জানদের অঞ্নারে পড়ে মুবারি চাব চোধ থেকে। সত্যি তবে আজে বাজৌর রক্ষা পেল নিশ্চিত মৃত্যুর হাত থেকে। কাঁপতে থাকে তাঁর জ্বর। বাবর সেই কম্পিত ওঠে এঁকে দেন তাঁর প্রীতির চম্বন।

ক্ষমণ নেমে আদে বিপ্রাহর । হয়ে আদে প্রথমনা করার সময়।
সমাট উঠে গাঁড়ান জাজিম ছেছে । মুবারিক। ভাড়াভাড়ি উঠে
গিরে পাইকা এনে পরিরে দেন তাঁর পারে । তাঁব ব্যবহারে
অভ্যন্ত তৃপ্ত হয়ে ওঠেন বাদশাহ । তাঁর চিবৃক ধরে মাধাটা জল্ল
একটু ছুলিয়ে লিয়ে আদর করে তিনি বলেন—ভোমার প্রতি আমি
এছ সম্ভষ্ট হয়েছি যে ভোমার দেশবাদীর অপকার ভো গ্রের কথা,
ভাবের বাতে সকল বিরয়ে উল্লভি ঘটে সেই চেটাই আমি করবো।

সেই কথা শুনে মুবারিকার চোধ থেকে গড়িয়ে পড়ে সমবেদনার

দিনে দিনে মুবারিকার প্রতি ভালবাসা গভীর হয়ে ওঠে সমাটের।

ইতিপুর্বে মন্ত কোন মহিনীই ক্রাকে পরিতৃপ্ত করতে পাবেন নি এ ব

মত। আর্রেসা, মাহাম, মাত্রমা, গুলক্ষা বা দিলদর এই পাঁচ
বেগমের তুলনায় মুবারিকা যেন মূলে প্রভেদ। যেমন তাঁর অভাব
তেমনি ব্যবহার। ক্রার চরিত্রের সাথে তুলনা করবার মত কোন
বমণীই ক্রার চোঝে পড়েনা।

সে বার ভারতবর্থ অভিবানে যাওরা আর সপ্তব হল না বাবরের পকে। তিনি বাজোর থেকেই ফিরে এলেন কাবুলে। কিছ কাবুল এসে জার অভান্ত মহিষীদের বাগ গিঁটো পড়েল মুবারিকার প্রতি। কোধাকার একটি মেবে বুড়ো বরুলে সমাটের প্রিয়পাত্রী হয়ে উঠবে এ তাঁদের সন্থ হয় না। তাঁরা প্রত্যেকেই চেষ্টা করেন এ নববণ্টির ক্ষতি করতে। কিছে মুবারিকা আপন চরিত্রগুণে বৃশতে পাবেন না তাঁদের শক্ততা।

পদিকে ভার একটা ভস্মবিধা বোধ করেন মুবারিকা বিবি।

সমাট তাঁকে ৰত বেশী ভালবাসেন ততই তাঁর ছোট মনে হয় নিজেকে। সমাটের ভালবাসার প্রতিদান ভিনি ঠিক মত দিতে পাবেন না। কত বার ভিনি তৈরী ক'বে বেংখেছেন নিজের মন। কিছ সমাটের বিগত বোবনের পানে তাকাতেই তা ধূলিসাৎ হয়ে গেছে তধুনি। তাই এক একবার তাঁর মনে হয় সমাটের একটি সন্তান বদি তাঁরে কোলে আদে, তবে তাকে প্রাণ দিরে ভালবেসে তিনি প্রণ করে দেবেন এই অপবাধ। কিছু স্তিটই কি তিনি জননী হতে পারবেন কোন সন্তানের ?

সেদিন সমাটের পাঁচ মহিষা প্রবেশ করলেন মুবারিকার খরে। তাঁর চিন্তাখিত মুখমগুলের পানে তাকিয়ে মান্তমা প্রলভানা বেগম বলেন —কি ভাবছিল রে ছুটি ?

ক জ্বার খেমে ওঠেন মুবারিকা। দিলদর বেগম বলেন— কি ভাবছিলি বলু না লো ?

ম্থারিকা বলেন--- লাচ্ছ' দিদি, আমার একটি সন্তান হবে কি না বলতে পারেন ?

মাহাম বেগম বলেন—তা আবার হবে না ? তোমার সন্তানই বে হবে ভাবীকালের সুমাট, কাজেই তা না হয়ে কি থাকতে পারে ?

ভাঁব কথা ওনে অহাস্ত লক্ষিত। হবে মুবাবিকা বলেন—
ছি! ছি! ছি! একি আপনি বলছেন দিদি, আপনাদের উপযুক্ত
সন্তান থাকতে আমাব সন্তান ভাবীকালের সমাট হবে কেন?
আমি গুরু সমাটের প্রেমের প্রতিদান দেবার জন্তেই একটি শিশুর
মা হতে চেয়েছি।

মাত্রমা ত্রহতানা বেগম বলেন—তা সেবার জ্ঞেট চাও।
তুমি শিশুর মা হতে চেহেছো বলেই তো আমরা ছাকিমকে বলে
তর্ব আনিয়েছি। তানাও এটা খেয়ে নাও।

মুবাবিকা হতবাক্ হয়ে চেয়ে থাকেন বেগমদের মুখের পানে।
এঁবা এ খবর জানলেন কি করে। এর আগে ভিনি এ কথা
কাউকে তো বলেন নি? মান্তমা বলেন—ভর নেই, এ বিব নর,
ভোমাকে মারবার বড়বল্ল করে জামরা আদি নি।

— ছি! ছি! এ কি কথা বলছেন! মুবারিকা ভাঞাভাড়ি বাটিটা নিয়ে নিঃলেয়ে পান করে নেয় ওযুংটুকু।

এবার হাসি ফুটে ওঠে বেগমদের মুখে। তাঁরা একবাক্যে বলেন—এবার তোমার কোলে নিশ্চয়ই সন্তান আসবে আফগানি, এতে আর কোন ভুগই নেই। বলেই তাঁরা হাসতে হাসতে বিদার হন একে একে।

তাঁরা চলে বাবার পর হঠাৎ এক সমরে ঝড়ের বেগে বরে থাবেশ করে ফিনোজা। বাপের বাড়ীর লোক বলতে এই একটি মাত্র দাসীই আছে তাঁর সাথে। আপদে বিপদে অভাভ বেগমদের বড়বন্ধ থেকে দে প্রতিনিয়ত বক্ষা করে চলে ভার মনিব ঠাকরুণকে। সে এসেই সামনের উচ্ছিষ্ট বাটিটা দেখিরে বলে—এটা কি সাহজাদী ?

মুবাঞিল। হেসে বলেন—কানিস ফিরোজা, আজকে স্থাটের সব বেগমরাই এসেছিলেন জামার খবে। জামি সন্তানের জননী হতে চেরেছি জেনে জারা হাজিমের কাছ থেকে ধব্ধ এনে দিরে গেলেন জামাকে। সামি একটু জাগেই তা পান করেছি।

-कि नर्वनाम । हम्दक छाठे किरबाका।

বিশ্বিতা হয়ে মুবারিকা বলেন—কিসে সর্বনাশ হল ফিবোজা ?

- —উ: শাচজাদী, তুমি আমাকে লিজ্ঞেদ না করে কেন খেতে গেলে বেগমদের দেওরা ওষ্ধ ?
 - ---কেন ওবুণে কি ছিল ফিবোজা ?
- আ: শাহভাদী, ভোমাকে ওরা আজ যে ধ্যুব থাইরে গোল, তাতে আর কোন সম্ভানই আসবে না তোমার গর্ভে। ভোমাকে ওরা ওযুব বাইরে করে দিরে গেল বন্ধ্যা।
- —বন্ধা। শিউরে ওঠেন মুবারিফাবিবি। তিনি বিশিতা হবে বলেন—শক্তিনা কি ফিবোজা?
- ই্যা ই্যা, সব সন্তিয়, তাদের বড়বজ্বের কথা শুনেই তে! আমি ছুটে এলাম তোমার কাছে। দিন্ত শর্তানীরা যে তার আগেই কাজ হাসিস করে চলে গেছে তা ভাবতেও পাবি নি।

ফিবোজার কথা তনে নির্বাক হয়ে বনে থাকেন মুবারিকা বিবি।
আত্ম আর তিনি কিছুই ভাবতে পারছেন না। দেশের মঙ্গলের
অন্ম তিনি আপন ভাত-কুগ-মান বিসর্জন দিয়ে বরণ করে নিজেন
এক বিগতবোধন পুকরকে। তানপর একটি সন্তানের জননী
হওয়ার আশাও তাঁর নিম্পি হয়ে গোল চিরভরে। হায় এর পর
নাবী হয়ে বেঁচে থাকার লাম সার্যজ্ঞা নোধার ? মুবারিকা বিবি
কাল্মার শক্তিটুত্ পর্যন্ত হল হাবিয়ে জেলেন। জাঁব অভবে
তথন শুধু প্রবাহিত হয়ে চলে ছঃখ-বেলনার ভুজান অটিকা।*

মহিলা কবি চন্দ্রাবতী জীবহিচ চক্রবর্তী

তানেক বান্ধালী মেটেই কবি হিসাবে বেশ নাম করেছেন।
কিন্ধ অনেক নিন আগে হণন বান্ধলা দেশে মেয়েদের মধ্যে
স্বোপড়ার প্রচন্দন ধ্রই কম ছিল, তথন একটি বান্ধানী আম্যমেরে
বে কবিপ্রতিভার পরিচর দিবেছেন তা থুবই প্রশংসনীয়। অবচ
অমনই তুংবের বিষয় বে কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের বাংলা অম, এ
ক্লানের কতকতলৈ ভাত্র-ছাত্রী ও অধ্যাপক-অধ্যাপিকা ছাড়া আর
বিশেষ তেউই এই প্রতিভালালিনী কবির নাম শোনেননি।

এই মহিলা কবির নাম চক্রাবতী। বোড়শ শভাকীতে বাঙ্গলার এক গরীব আক্ষণের ঘরে চক্রাবতীর জন্ম হর। বাঙ্গলা দেশের পাড়া-গাঁরের সাধানণ একটি গৃহত্বরে জন্ম নিরেও চক্রাবতীরে কবিপ্রতিভা ও চরিত্রবল দেখিয়ে গিরেছেন তা' প্রত্যেক মেয়েরই জানা উচিত। চক্রাবতীর জীবনী খেকে প্রত্যেক মেয়েরই জনেক কিছু জানবার ও শেখবার জাছে।

বৈষনসিংহ জেলাব পাতৃষাবী গ্রাম নিবাসী প্রানিদ্ধ মনসামজল গায়ক ও বচিয়তা বংশীদাস বন্দ্যোপাধ্যায় (উপাধি চক্রবভী) চক্রাবতীর পিতা। চন্দ্রাবতী ও জাঁব পিতা এক সজে ১৫৭৫ খুটান্দে মনসাদেবীর ভাগান গান বচনা করেন। এ ছাড়া চন্দ্রাবতী মধুয়া ও

কেনারামের পালা নামে ছইটি গাধাকাব্য রচনা করেন। পিডার আদেশে চন্দ্রাবতী একটি রামারণ রচনা করেন। এ সমস্ত কাব্যট তিনি নিজের দেশের প্রচলিত ভাষার রচনা করেভিলেন। সাধারণ প্রচালত গ্রাম্য ভাষায় যে কভ উৎকৃষ্ট কাব্য রচনা করা বেতে পারে. চন্দ্রাৰতীর কাব্যগুলি তা'র নিদর্শন। চন্দ্রাৰতীর রচিত পালাগীতি মলুয়া ও কেনারামের পালা বাঙ্গলার প্রভ্যেক নারীরই পড়া উচিত। এত ভল্ল জায়গায় পালাগুলির সম্পূর্ণ বিবরণ দেওয়া সম্ভব নয়। মৃদ্যা পালাতে চক্রাবতী একটি আদর্শ পহিত্রতা ব্যনীর ছবি অভি সাধারণ বর্ণনা ও প্রাঞ্জল ভাষার মধ্য দিরে ফটিয়ে তুলেছেন। মলুয়ার তঃখে স্বায়ই চোথে জল আস্বে আবার সঙ্গে সঙ্গে মলুয়াৰ কঠোর বর্ত্তব্যনিষ্ঠা ও পতিভক্তি প্রভাকে বানানী মেরেরই অনুকরণীয়া কেনারাহের পালায় বিখ্যাত দখ্য কেনারাম কি করে বাদীদাসের মনসাভাসান গান শুনে দক্ষাবৃত্তি ছেড়ে দিয়ে বংশীদাসের শিষ্যথ গ্রহণ করেছিল, তারই বর্ণনা করেছেন চন্দ্রাবভী। এই পালাটির ছত্রে ছত্রে পিতার প্রতি ক্রোবতীর প্রহাঢ় শ্রন্ধার পরিচয় পাওয়া বায়। চক্রাবতী বে রামারণ বচনা করেন ভাতে অনেক নতুন্ত পাওয়া ধায়। দেশপ্রচলিত জনেক কাছিনী তাঁর এই বামায়ণে স্থান পেয়েছে। বামায়ণ রচনায় প্রচলিত ক্তিবাস ও বালীকির রামায়ণকে সর্বাংশ অনুসরণ না করে তিনি সে মৌসিকতার পরিচয় দিয়েছেন তা' তার নিজন্ম প্রতিভার। পরিচাইক। চন্দ্রাবাহীর এই রামায়ণটি প্রতাস তাঁর গভীর স্মবেদনাশীল মনের প্রিচয় পার্থা যার। প্রভাক বালালী মেয়েই চলাবভী হচিত এই কাবা ক'টি পড়া উচিত। আমাদেরই মত একটি সাধারণ ঘবের মেধে কি গভীর নিষ্ঠার সঙ্গে এই কাব্যগুলি স্থাষ্ট করে গিয়েছেন ভা' প্ৰভােদ মেশ্বই ম্বানা উচিত।

চন্দ্রাব্তী নিজের জীবন বড়ই ছ:খমর ছিল। আরু সেই ত্রথের ছারা তাঁর কাব্যগুলির মধ্যেও পাওয়া যায়। মলুয়া, সীজা, এঁদের হঃও তিনি নিজের অন্তরের হঃথ দিয়ে অমূভব করেছেন ও তাকে ভাষায় রূপ দিয়েছেন। জয়চন্ত নামে একটি ব্রাহ্মণপুত্র চন্দ্রাবতীর ছেলেবেলার খেলার সাথী ছিল। বয়োবছির সজে সঙ্গে উভয়ের মধ্যে গভীর ভালবাসা জ্বা। তথন ব্যালাস জ্বচনা ও চন্দ্রাবতীর বিয়ের দিন ঠিক করে ফেললেন। কিন্তু হঠাৎ এই সময় জয়চন্দ্রের কি তুর্ঘতি হোল, তিনি একটি মুসলমান যুবতীব প্রতি আসক্ত হয়ে মুসলমান ধর্ম গ্রহণ করলেন। এ থবরে চন্দ্ৰাবতী পাধ্ৰেৰ মত স্তৱ হয়ে গেলেন। তিনি নাওয়া-খাওয়া সব ছেড়ে দিলেন। কিন্তু চন্দ্রাবতী বড় পিতৃভক্ত মেয়ে ছিলেন। ভাই ভিনি বংশীবদনের উপদেশ অফুসারে জগতের অক্ত সমস্ত 6িস্তা ত্যাগ ক'বে একাস্ত মনে শিবপুঞ্জায় বত হ'লেন ও রামায়ণ রচনা করতে শুরু করলেন। নিষ্ঠা ও চৰিত্ৰবলে চন্দ্ৰাবভীকে রামায়ণ, মহাভারভের সীভা, সাবিত্রীর সঙ্গে এক **আসনে বদান বায়। কিছুদিন প্রে জ**য়চন্দ্র অমুত্ত হ'রে ফিবে এলেন চন্দ্রবিতীর কাছে। কিন্তু ছ:খে চন্দ্রবিতীর বক ভেঙ্গে গেলেও পিতার অদম্বতি জেনে তিনি অয়চক্রকে ক্ষমা করতে পারলেন না। তিনি তাঁ'র পিতার সভষ্টির জন্ম অম্লানবদনে সববক্ষ তুঃধ সইতেই প্রস্তুত ছিলেন। এথনকার দিনে এ-রকম দৃষ্ঠান্ত একা^{ন্তুই} বিবল। চন্দ্রাবভীর কাছে প্রভাগোত হ'রে জয়তথ্য জয়চন্দ্র ^{জ্ঞা}

^{* (1)} Asiatic Quarterly Review, April 1901, An Afghan Legend.—Mr. Beveridge. (2) The Humayun-Nama of Gulbadan Begam—Mrs. Beveridge. (3) History (of India (Vol. 1)—Erskine.

ড়ুৰে আত্মহত্যা করসেন। এ আঘাত চন্দ্ৰাবতী সইতে পারলেন না। নীৰবে চোথের জগ ফেগতে ফেগতে একদিন তিনিও অকাগেই পুথিবীয় মায়া কটিালেন।

এত আন বয়দে এ ভাবে চন্দ্রাবতীর মৃত্যু না হ'লে তিনি আরও আনেক প্রতিভাব পরিচয় দিতে পারতেন। জ্বচন্দ্রের ক্ষণিক আয়বিশ্বতির ফলে এত বড় একজন প্রতিভাশাদিনী বাঙ্গাদী মেয়ের প্রতিভা প্রায় অন্ত্রেই বিনষ্ট হোল।

চন্দ্রবিতীর রামায়ণ এখনও থৈমনসিংহের প্রামাঞ্জের মেরেরা অনেকেই মুখস্থ বলতে পাবেন। আমরা আজ স্থুল-কলেজের শিক্ষা ও ডিগ্রী নিরে গর্বে অফুত্তব করি। কিছে স্থুল-কলেজে শিক্ষা না পেরেও সাধারণ প্রাম্য আবহাওয়াতে সেকালের মেরেরা কত জ্ঞানী, গুণী ও আদর্শপরায়ণা হ'জেন, কবি চন্দ্রাবতীর জীবনী তা'র উজ্জ্বল দুষ্টান্ত।

পথে পথে

শ্ৰীশ্বনীতা দত্ত .

শীতের বেলা হ'রে এল শেষ, সন্ধাকাশে অন্তমান প্রের শেষ আলোকছটা—বাতালে শিবলিরে ঠাণ্ডা। আকাশ ভরা মেঘ-স্তবকের দিকে তাকিয়ে থুনীর আনন্দ উছলে উঠল। বিকেল তথন পাঁচটা—আমাদের যাতা হ'ল শুরু। উদ্দেশ্য পথে পথে যুরে বেড়ান—দৈনন্দিন জীবনের মাথে বৈচিত্র্য আনা।

২২শে জাগুৱাধীর জাদর সন্ধ্যা আমাদের চোখে রভিন হরে উঠল। আমরা দেধলাম মেছ্ব বৈকালের রক্তিম আভা—ভূত হাওয়ায় নতুন খুদীর ইঙ্গিত, পথের বাঁকে বাঁকে জীবনের সাড়া। ছুটে চলেছে গাঞ্চী বর্ধ মানের দিকে। মেঠো রাস্তায় ধুলো উড়িয়ে, দাশে-পাশেষ স্তর্কাকে মুখর ক'রে আমরা এলেম বর্ধমানে। এখানে কিছুক্ষণ বিশ্রাম নিলেম. ডাল, ঝেটা আর গোস্ত খেয়ে ষাবার গাড়ীতে। রা**ত তখন খন হ**য়ে এসেছে, বড় বড় গা**ছের** থাকড়া পাতার ফীকে ফাঁকে চাঁদের আলোর আলপনা। কলকাতার মাকাশে টাদ দেখি কিন্তু এমন ভাল লাগাব মোহ কই খুঁজে পাইনে —থ বেন নতুন আবিভার! ভাবে ভরা কবিতায় নতুন ছলেব বোগ। একদৃষ্ট ভাকিয়ে থাকভে থাকতে চোখে চুঙ্গ এন-রাস্ত অবসম হ'বে এল ছটো চোধ। আমি স্পষ্ট অনুভব করলেম, মনোবীণার ছটি ভাবে ছটি ঝকার। একটির স্থবে ক্লান্তির আমেজ, ৰকটিতে নতুন মোহেব লহবী। তাই সেই আধো-ঘুম আধো-জাগরণে অনেকখানি পথ পার হতে হতে দেখলেম, মিটমিটে আলো-খনা কুঁড়েঘর, কেটে-নেওয়া ধানের স্কুপ, ছ-একটা প্রান্ন ভেতে পড়া ণাকা বাড়ী, ভাষ্যমান মেখস্তবকের খেলা—আরও কত কি ! বাত তথন সাড়ে দশটা---অজয় নদীর ওপরে অসমাপ্ত বাঁশের সাঁকো পেছলো আমাদের গাড়ী। আর ভারপরেই একটু একটু ক'রে শাষ্ট হ'ল ইলমবাজাবের ছোট ভাকবাংলো। সবুৰ বাসে-ঢাকা লনের মাঝে চারটি খবের বাংলো। চেরে চেরে দেখলেম নভুন ৰান্তানাটিকে। বাইরে তথন টালের আলোয় বক্বক করছে নীল আকাৰ। গাছে গাছে অৰ্থ-ভূট কলি-সোলাপের হালকা মণির গন্ধ। অনেক রাভ অববি শুনলেম ব্রিকিপোকার অবিশ্রাভ একাতান—শ্বে কোথাও শেরাল তেকে গেল—গাতে হঠাৎ ভানা বাণটে উঠন কোনো পাধী—তারণর আর মনে নেই—আমি বুমিরে পড়লেম।

২৩শে জানুষারীর সকাল এল ছুটার সাড়া নিরে। সোনালী আলো কুয়ালা ভেদ করে এসে আমাদের খাগত জানলে। শিশির-ভেজা সবৃক্ত খাসে আর বাভের শেষ আঁগারে জাত কুমুমকলি চোঝে নেলা ধরাল। শীভের হাওয়া এসে বাইরে দিরে গেল ভকনো মরাফুলের পাণড়ি। হালকা রোদের ফিকে গরমে আর ছুটার আসমে আমেজে মন বুঝি আবার নতুন করে মুগ্ত হল—হরতো সেই জন্মেই ডাকবাংলোর সন্তা মোটা কাচের শীহীন কাপের গঙ্গাজনের মত পাতলা চা-ও মন্দ লাগল না।

বেলা হ'ল—রোদও গরম হ'ল। সেই গরম রোদে আমাদের আলমেমি কেটে গেল—প্রসাধন সেরে আমরা সঙ্গে আনা কেক প্যাটিদ থেরে বোলপুরের পথে পাড়ি দিলেম।

জনেক দূবে পড়ে বইল ইলমবাজার, জামবা দেখলেম খন শাল গাছের মাঝে পড়ে থাকা রাস্তা। জারও দেখলেম, গাছের বাঁকড়া মাথা ভরা সুক্র, সভেজ, নবীন পত্র জার তারই তলে ওকনো ঝরা পাতার স্তৃপ। ভাবলেম, এমন কেন হয় ? ওকনো পাতার স্থাপ হাওচা বইছে, কেমন বেন এক বিচিত্র সুঃধায়ুভূতিতে শ্বরণ করলেম:

কার যেন এই মনের বেদন চৈত্রমাসের উত্তল হাওরার ঝুমকো লভার চিকণ পাতা কাঁপে রে কার চমকে চাওরার। হারিয়ে বাওয়া কার দে বাণী কার সোহাগের অরণবানি, আমের বোলের গদ্ধ মিশে কাননকে আল কারা পাওয়ার ?

ভাবছিলেম, পথচলার এই সুফুটুকু থাকলে অনস্তকাল পথ চলতে পারি আর বাবাবর জীবন বলি এমনি মধুর হয়, আমি ছাড়তে পারি ছায়ী নাগরিক জীবন। দূরে বখন নীল দিগস্তের শেষ প্রাপ্তে ভেদে উঠল বোলপুরের ঘোঁয়াওঠা চিমনি, ঠিক সেই সময়ে গাড়ী থেমে গেল। দেখা গেল পেটুলের ট্যাক্ষ শৃষ্ঠ। হঠাৎ যেন আমাদের মনটাও শৃষ্ঠ হয়ে গেল। সমস্ত সৌন্দর্যবোধ স্তিমিন্ত হ'য়ে এল, থবর এল ভিন মাইলের মধ্যে নেই পেটুলের দোকান। ছটি ছেলে বাজ্ঞিল বায়পুরের দিকে সাইকেলে, তাদেরই একজন রাজি হ'ল সাইকেল দিতে। সেই সাইকেলে পেট্রল বখন এল, তথন বেলা প্রায় ১১টা।

মাবের পূর্ব ঠিক মাধার ওপরে, আমরা মুখ ওকিরে কিরে এলেম বিশ্বভারতীর অভিথি-ভবন থেকে। জারগা নেই। কিছ কণাল ভাল বলতে হবে, প্রায় শান্তিনিকেডনের পাশেই একটি আবপুথোন বাংলোর আমরা জারগা পেলেম। বাংলোর চারপাশে ধৃ ধু মাঠ, নিশ্চিস্ত আস্তানা পেরে বীরভূমের রাঙা মাটাতে জাবার নতুনদের লাড়া পেলেম।

বিকেল চাবটে। ঠোডে চাবের গ্রম জল চেপেছে। পড়ত বোদে জর ঠাণ্ডা—জনেক দূরে পূর্ব প্রায় নেমে এলেছে দিগতে।
ভাস পেলতে খেলতে ভাবছিলেম, কি করি সায় সন্দা!

থ্ব ছোট জারগা বোলপুর, দেখবার মধ্যে শান্তিনিকেতন, কিছ দে-ও তো কাল সকালের জাগে হবে না। এমন সমরে মাইকে গানের স্থর তেসে এল—সামরা মন ছির করে কেলনেম। বোলপুরের এক থাত্র চিত্রগৃহ "বিচিত্রা"র সংজ্যেটা কাটালেম। কখন রাভ এল জানতে পারলেম না। সাড়ে জাটটার ছবি শেব হ'লে বেরিরে দেখি কৃটকুটে টালের আলো। সেই স্বস্কু আলোর দিকে ভাকিছে থাকতে থাকতে মনে হ'ল, বড় ক্লান্ত—বিশ্রাম চাই।

নতুন ভারগার নতুন মাধুর্ধ ব'য়ে আনগ ২৪শে জায়ুরারী। আল সরকারি ছুটার দিন নয় কিন্তু তবু ছুটা—বেজাইনী ছুটা। এই অবৈধ ছুটাটাকে পেরে আল অনেকেই দৈনন্দিন আটপোরে ভারনের একথেরেমি থেকে মুক্তি পেতে, সোন্দর্ম আর কয়নাকে উপভোগ করতে এনে দাঁড়িয়েছে, মাধা নভ করেছে কবিগুকর শান্তিনিকেতনে। শান্তিনিকেতনের লাল মাটাতে দাঁড়িয়ে মনে হ'ল কয়নার এমন বাস্তব রপ কথনও দেখিনি। প্রাকৃতিক সৌন্দর্যা আর শিল্পমনের স্থাই-সৌন্দর্যের কি অবাধ মেলামেশা! "উত্তরার্থের" সিঁজির ধাপ অভিক্রম করতে করতে ভাবলেম—কবিগুক—

ভাল তুমি বেসেছিলে এই গ্রাম ধরা, তোমার হাসিটি ছিল বড় স্থবে ভরা। মিলি নিধিলের স্রোতে জেনেছিলে খুসী হ'তে, স্থদয়টি ছিল তাই স্থদি প্রাণহরা। তোমার ব্যাপন ছিল এই শ্লাম ধরা।"

"উত্তরারণে" কবি ধাকভেন। এধানে তাঁব সব ক'টি বচনা গ্রন্থাকাবে আছে, সেই সঙ্গে অফ্বাদও। যুবে মুধ্-বিশ্বয়ে দেখলেম।

ভারপর এলেম স্থলর সাজান বাগানে একটি ছোট কুত্রিম বিলে—ভাতে ভাসমান ছ'-একটি পদ্মকলি। সেই বিলের ঠিক মাঝবানে ডাল পালা-খেবা ছোট ছীপ। এ পার থেকে ভাতে জাবার একটি সেতু আছে, ভার জপরপ গঠন দেখে মনে হয় এক-একটি নিটোল পদ্মপাতা বৃঝি পড়ে আছে এ পারের বাত্রীকে ওপারে পোঁছে দেবার জভে। দেই ছীপে দাঁড়িরে কবিব লাজিনিকেতন দেখে চোধ জুড়িরে গেল, মনে মনে বলনেম—কবি! বে মন আর চোধ নিয়ে তুমি এই সৌল্রের্বে স্থাই করেছিলে, আমার দাও ভোমার সেই মন, সেই চোধ! নামনা-জানা বিচিত্র ফুলের মাঝে আমার চোধ গেল হারিয়ে; সমস্ত ইন্দ্রেরে ইন্দ্রিরে ধনিত হ'ল জানন্দ, বিশ্বর, তৃত্তি, লাজি। জাবৃত্তি করলেম—কবি!

তিমার সে ভাস লাগা মোর চোঝে আঁকি আমার নয়নে তব দৃষ্টি গেছ রাখি। আজি আমি একা একা দেখি ছজনের দেখা, ভূমি করিতেছ ভোগ মোব মনে থাকি— আমারে ভাকার তব মুগ্ধ দৃষ্টি আঁকি।

ৰড় বড় গাছের তলার শীতের বোদে পিঠ দিরে বসেছিল ছাত্র-ছাত্রীরা। মাঝে মাঝে আসছিল তাদের হাসির শব্দ, আনন্দ বেন উছলে পড়ছে • । কি বে ভাল লাগল ওদের সহজ বেশভূবা— রূপের চটকে নর, স্থিত্র কল্যাণঞ্জীতে মন বেন ভ্রিয়ে দের।

কণাত্বনে চুকলেম গভীর প্রদা নিরে। ভাবগন্তীর ভবনটি বেন শিল্পউতে বলমল করছে। নন্দলাল বন্ধর অন্ধিত চিত্রই এবানে বেশী! তাঁর সার্থক শিল্পস্থাটী মনকে ভূলিরে দেয়, তিরাচবিত্ত বাস্তব পৃথিবী বেন স্বপ্ন হয়ে সিরে সত্য হয়ে ওঠে, কাল্পনিক জগত বাতে আছে রূপ রসের ইন্দ্রধন্ধ—বা তুনু শান্তিতে ভরা।

ভারপর ঘূরে ঘূরে ছাত্রাবাস দেখলেম; চীনান্তবন, হিন্দীন্তবন কিছুই বাদ গেল না। আমার মনে হল প্রভ্যেকটি ভবনের গঠনভঙ্গি বেমন আলাদা, ভেমনি পুথক ভার ভাবগান্তীর্য।

আন্তানায় ফিরলেম সকলে, সারলেম ছুপুরের থাওয়। তুর্ব পশিচমে বথন প্রায় বাব-বাব করছে আমরা এসে হাজির হলেম জীনিকেজনের থারে। এখানে ছাত্রছাত্রীরা কারিগরি বিভা হাতে-কলমে শেখে। তাদের তৈরী নানান জিনিস সাজাম দেখলেম। এখান থেকে বাড়ীর কাছ বরাবর এসে আমরা ইটিতে বেরোলেম। মেঠো পথে চোরকাঁটা ডিভিরে অনেকখানি ইটিলেম—ঠাণ্ডা হাওয়ার সোঁলা মাটার গন্ধ ভাল লাগার নেশায় মন বেন মাভিরে দিলে। ভারপর ধীরে ধীরে বিশ্বচরাচর ঢেকে গেল পাত্লা আঁধারে, ঘরে ফেরার আগেই হাল্কা টাদের আলোয় আকাশ ভবল।

দেড় দিন কটোলেম বোলপুরে। ২৫শে ছপুরে আবার পথকে আশ্রর করে আমাদের গাড়ী ছুটলো। পথের পর পথ পেরিয়ে আমরা সিউড়ি এলেম বখন তখন ছপুর শেষ হ'য়ে বৈকালের আমেজ লেগেছে এই ছোট সহরটির পথে-ঘাটে। কিছু চেষ্টা করতে হ'ল ইলেকটিসিটি বোর্ডের ডাকবাংলোটির জ্ঞান্ত। চমংকার সাজান ছোট বাংলো—সামনে একফালি ফুলের বাগান, ঘরগুলি আধুনিক আসবাবপত্তে মনোরম। শান্তিনিবেছন দেখে মন উচ্চতানে বাধা ছিল। মালীর হুরে থড়ের চালার কবিষমর পরিবেশ থেকে এক সুহুর্তে আধুনিকতম পরিবেশ! এ পরিবেশে এসে বেন হঠাই মনে পড়ে গেল কলকাতাকে, যেখানে হুরে ঘরে চকচকে পালিক্রা সোফা-কোচ, মোজেকের ঝবঝকে মেঝে, ক্যানের হাওয়া। তবু 'আমরা এই রক্ম জীবনবাতারই অভ্যান্ত—কবিঠাকুরের মন্ত আমরা বল্পনাকে বাস্তব রূপ দিছে পারি কই ?

কিছু দূরেই কুলকুল করে বইছিল নাম-না-জানা নদীর ক্ষীণ শ্রোভ—তারই ভীরে বুরলুম কিছুক্ষণ, তারপর কি বে খেয়াল হ'ল বীরভূম টকীজে গিয়ে টিকিট কিনলেম খিরেটারের—সে এক বিচিত্র অভিজ্ঞতা। ওনলেম ছ'টায় থিয়েটার ওক, নাম-সরমা। পৌণে ছটায় হাজিব হ'বে দেখি—হা ভগবান! সবে লাইট ফিট করা হচ্ছে। কেঠো চেয়ারে বসে আছি ক'জনে, মাঝে মাঝে মশা তাড়াচ্ছি, ছারপোকা মার্ছি, এমন সমরে খোলা দর্জা দিয়ে চুকলো একটা বাস্তার কুকুর, বোঁষা-উঠা, বিজ্ঞী! স্বাই মিলে ভাড়ালুম তাকে। ওদিকে বড়ির কাঁটা বুরে বুরে ৭টার কাছাকাছি। আলো লাগান হ'ল, এবাব পদা খাটাবাব পালা। দেখতে দেখতে মেবের আড়ালে টাদ উঠল, দিগস্ত পার হ'বে এল মাধার ওপর, ৮টা বাৰল। এবাৰ ওক হ'ল রেকর্ডে গান। আমহা মনে মনে অধীর হয়ে উঠছি। সারা হলে জনাকৃতি মাত্র লোক। সাড়ে ৮টার থিয়েটার শুরু হ'ল অবশেষে। কেমন লাগল ব'লভে চাই না তবু বলি বাত সাড়ে দশটার অসমাপ্ত নাটকের রসভল ক'রে আমরা বাঙী কিবলেম।

২৬লের সকাল এল সমস্ত মাধুর্বচুকু মুছে নিরে। আছই কলকাতা কেরার কথা—কাল থেকে আবার সেই পুরোন জীবন। কিছু আলতা কাটিয়ে পথে বেরিয়ে ধুব ভাল লাগল। শীতের সকালকে উপেক্ষা করে ছোট ছোট ছেলেরা মিছিল করে চলেছে তেওঙা পতাকা হাতে জাতীয়তা দিবস পালন করতে। সিউড়িথেকে মেসেঞাের বাঁর অবধি একাধিক মিছিল চােথে পড়ল। অনেক ঘ্রেই দেধলেম পতাকা উড়ছে। মন থেকে ত্:থের সুরটা কেটে গেল।

চোৰ-মন জ্ভিবে গেল ময়ুবাকীকে দেখে। সুদ্ব-বিভ্ত লাল জল—শাস্ত নিনীহ চেউ-এ ভরা! ঈবৎ কুঞ্ন জাগিয়ে বাতাল বইছে। তারই ওপর বাঁধ—বিজ্ঞানের জয়বাত্রা। এবানে ত্'টি বাংলা আছে (বাংলা ও বিহার)। সে ছ'টির অবস্থান বেমন স্থল্ব, তেমনি মনোমুগ্ধকর প্রাকৃতিক পরিবেশ। আমব। এখানে বেশীকণ থাকিনি, একটু ঘ্রে পথে বেরিয়েছি।

এম পর তাড়াহুড়ো ক'রে ছুটেছি। আনেক জনপদ, ছোট-খাট সহর পেরিয়ে তিনটে নাগাদ এসেছি আসানসোলে।

যাত্রা শেষ হ'ল বাত সাড়ে আটটায় কলকাতা পৌছে। ক্লান্ত দেহে বিগত তিনটি দিনের মৃতি রোমন্থন করতে করতে ভারলেম— কর্মমুখর দিনের একংবংঘমি থেকে মুক্তি পেতে তিনটি দিনের চিস্তা আবার চিবদিনই আনক আব বৈচিত্রের স্বাদ দেবেই—এ পাথেয় তো হারিয়ে যাবার নয়।

ভক্তকবি জয়দেব ও ভাগ্যবতী পদ্মাৰতী শ্ৰীপুৰবী পাঁজা

্রীপারে কেন্দ্বিল, ওপারে শিবপুর। মাঝে অলম নদ। ধেন
গোঁচুল আর মথরা। মাঝে ধমুনা। এপার হতে ওপার
শ্বায় ঘেন মথুরা। ওধানে ধেন সেই কুজবন, সেই শুক-সারী পাখী,
'গেই বাঁকা ভাম বিরাজমান। বর্ষাদিনে জল পড়ে, বিছ্যুৎ দেয়,
অন্ত্যের বান শন-শন করে ডেকে উঠে। ওপারের ভামল গাছপালার
দিকে চেরে কবি দেখতে পান ভ্যাল বিপিনে ভামছারা, পূর্ণমেঘে
মেহর অথব।

ইতিহাস-প্রসিদ্ধ স্থান কেন্দুবিল। এরই আশাপাশকে নিরে একদিন গড়ে উঠেছিল ধর্মফল কাব্যের কাছিনী। মধাযুগীর বাংলা সাহিত্যের প্রেষ্ঠ উপাদান। প্রাচীন ধ্বংসাবশেষ আজও বিক্ষিপ্তভাবে বিবে আছে কেন্দুবিলকে। ধর্মফেলের কথা বাদ দিলেও কেন্দুবিল আপনাতে আপনি বিকাশ।

মধানুগোর বাংলা, প্রজা ক্ষলা শত্রগামলা বাংলা। নাই অনন বসানর ঘনঘটা, ছিল না বর্ত্তিমান যুগের দৈলের নিদারণ নিপোরণ। সাধারণ ভাত-কাপড়েই সম্বন্ধ সকলে। আরই সম্বন্ধ বিধান এক সাধারণ পরিবারে আবিভূতি হন জয়দেব গোআমী। অক্ষরের তারে এক সাধারণ কুটারে জার বাস। সাধারণ জীবন বাপন। বাড়ীতে আছেন প্রাবৃত্তী আর আছেন আবাধ্য দেবতা বামাধার। কুটারের অনতিমূরে বাধামাধ্যের মন্দির। প্রাবৃত্তী পূর্ণার যোগাছ করেন, নৈবেল সাক্ষান, জয়দেব ভৌগ দেন। নিজ কুতি পূর্ণা না দিলে বেন জয়দেবের তৃত্তি নাই, মনে শান্তি নাই, স্পার ধোগাছ করতে না পেলে পল্যাবতীও বেন মনে শান্তি পান না।

ত্রবোদশ শতাকী। লংগ্রণসেনের সভাকবি জয়দেব। সর্গ অনাড়বর জীবন বাপন। আইক্ফের প্রতি তাঁর একাগ্র নিঠা। প্রাণ মন তাঁর সব কিছু আকুফের চরণে। তাঁর উপর ভরসা থাকলে আবার চাই কি ? তিনি বে পতিতপাবন হু:খহরণ। তাঁর উপর ভক্তি থাকলে, তাঁকেই প্রাণ-মন সমর্পণ করলে তিনি বে নেমে আসেন ভক্তের বাড়ীতে।

ন্ত্রী পদাবতীও হিন্দুনারীর প্রতিমৃত্তি ! স্বামিসেবাই তাঁর প্রম ধর্ম। পতিই প্রম গুরু। নিজের হাতে স্বামিসেবা করতে তাঁর মত পুণাবতী আর কে আছে ? তাই স্বামিসেবাতেই প্রাণ-মন সমর্পণ করেছিলেন তিনি। বাড়ীর প্রতিটি কাজ তিনি করতেন, আবার পুজা-অর্চনা, ব্রত-পার্ক্বণ তাও তিনি বাদ দিতেন না।

খামী গিরেছেন গঙ্গাধানে। এইমাত্র তাঁকে পুঁৰি হতে তোলা হল। সান সেরে আসবেন। প্রাবতী নিজ হাতে তাঁর সেবা করবেন। তারপর প্রসাদ নিয়ে নিজে থেতে বসবেন—'বিজ এ কি! আজ এত তাড়াহাড়ি ফিরলেন!' আশ্চর্ব্য হয়ে ভিজ্ঞাসা করেন গ্লাবতী। আজ আর সানে বাবরা হয় নাই। পথে মনে পড়ল সেই সোকটা। তাই তাড়াহাড়ি ফিরে এলাম। প্লাবতী সর্লমতি। বুবে না অত শত লীলা। তাই বুসলেন ভিনি। তাই হবে হয়ত। এতে আর আশ্চর্ব্যের কী আছে! চলে গেলেন ধাবরার বোগাড়ে! তারপর ধাইরে বিশ্রামের ব্যবস্থা করলেন।

প্রাহতী দেবার মৃত্তিমতী, কিছ এ কি ! আপ্র্যাহরে গোলেন জরদেব। 'একি ! প্রাহতী ! আজ আমার আগেই খেতে বসেছ ?' হতভম্ব হন প্রাহতী । 'এ কি দেব ! এ কি তোমার বাকা ? এই মাত্র সেবা সেবে বিশ্রাম করতে গোলে !' জরদেব বিশ্বিত, প্রাহতী নিস্তর । পুঁথি সিথে সেবা সেবে এই ত বিশ্রাম করতে গোলে!

অবাক হলেন অয়দেব। মুহুর্প্তে চৈতক্ত কিবে আসে তাঁব, জয়দেব পাগলের মত ছুটে বান বেখানে অসমাপ্ত পদ পড়েছিল। দেখেন, ইাা সহিটেই, পুঁথি লেখা হয়েছে। তবে বুঝি তাঁব প্রাণের ঠাকুর এনেছিলেন তাঁবই বেশে ? সেই অসমাপ্ত পদ পুরণ করতে, দৈহি পদপল্লবমুদাং ম্"। ছুটে বান পদ্মাবতীর নিকট। বলেন, পদ্মাবতি! তুমিই ভাগাবতী, তুমিই জ্ঞীগোবিদ্দের সাক্ষাৎ পেরেছ, তুমি সত্যিই তাঁব প্রসাদ পাবার অধিকাবী! আমি অবম, আমি পাশিষ্ঠ, দাও দাও আমাকে তাঁব প্রসাদ খেতে দাও।" বসে বান অয়দেব পদ্মাবতীর সাথে।

জন্মদেবের এই গীতগোণিক, জীকুকের এই লীলা আর পদ্মাবতীর এই পতিপরাহণতা বুগ যুগ ধরে মাত্বকে মোহিত করে আসছে। পৌবের শেব দিন কেন্বি:ল লক্ষ লক পুণাধার সমাগম হর। অভারের তুহিন জলে স্থান করে জন্মদেব-পদ্মাবতীর রূপ দর্শন করে। রাধা-মাধবের মন্দিরে গিরে সকলে ধন্ম হয়। আর সাথে সাথে মাধাটা আপনা আপনি ফুয়ে পড়ে সেই পরম-পুক্রের দিকে।

জলযাত্রা

ৰুমা দেবী

ক্তিটা শুনে আপনারা বিরাট একটা কিছু মনে করবেন না বেন। অলবাত্রা মানে বিদেশ বাত্রা, সাধাবেশত মান্ত্রে মনে করে থাকে, আমি সিখতি সামাত একটা বাত্রা। বাত্রার উদ্দেশ্য ভ্রমণ এবং বনভোজন করে কিছুক্ষণের জক্ত আনক্ষ উপভোগ করা।
আমাদের দৈনক্ষিন জীবনে সুধ-তৃঃধ আছে, তার মধ্যে আমরা
আনক্ষ পেতে চাই সব সময়। আমাদের গন্তব্যন্থান একটি
বিশেষ স্থান নয়, ধ্যাভিও তাব বিশেষ নেই। প্রাকৃতিক সৌক্ষ্য
স্পৃষ্টকর্ত্তা সেধানে ঢেলে দিহেছেন জকুপণ হস্তে।

কটক সহর থেকে আমরা বন্ধু-বান্ধব মিলে প্রার ৩০ জন।
একটি বড় লঞ্চ ঠিক করা হল। ভ্রমণ ও বনভোজন করতে যাওয়াতে
অনেকে একসঙ্গে না গেলে আনন্দ পাওয়া যায় না। আমাদের
মধ্যে সব রকম বয়সের ছিলাম। ছোট মেয়ে কয়েকটি ছিল, ভাদের
চেয়ে বড় ছেলে কয়েকটি ছিল, আমরা মেয়েয়া ছিলাম, বয়য় ভয়াল
কয়েকজন ছিলেন, সব বক্ষেষ সমাবেশ, কার্করই অসুবিধা নেই,
সকলেই পেয়েছে ভাদের বন্ধ।

ষাত্রার আগেই এক বাধার সৃষ্টি হল, সেইটাই আগে বলি। ধুব ভোবে উঠে বওনা হবার কথা, মাঝ বাজি থেকে আবন্ত হ'ল মুসলধারে বুষ্টি। আমরা আশা করে রইলুম। সকালবেসার নিশ্চ্যেই বুষ্টি থেমে যাবে, সকাল হ'ল, বুষ্টি থামলো না, নিরাশ হয়ে বলে বইলাম, বৃষ্টি বোধ হয় জার থামবে না, যাওয়াও বোধ হয় षांत इल ना। यू'-जिन कन दक्ष शान तृष्टि । मार्थ किरत शालन, । भव প্রস্তে ভাদের আর বাওয়াই হ'ল না। কিছুক্ষণ পর বেলা প্রায় ৮টার সময় বৃষ্টি বানিকটা কমে এল, বর্ণমুপর প্রভাতবেলা বাড়বার সঙ্গে সঙ্গে খানিকটা শান্ত হল। আমরা ষ্টিমারছাটে বাবার জক্ত সাইকেল-বিশ্ব ভাকতে পাঠালাম। বিশ্বাভয়ালাও বেঁকে বলেছে, সাধারণতঃ ছয় আনাতে অভটা পথ ধায়। সেদিন এক টাকার কমে বাবে না, আমরা তাতেই বাজি। খাটে এসে দেখি অন্য বন্ধবাও এসে গিয়েছেন, সকলকে দেখে তথন মান বেশ আনন্দ হল। লক প্রস্তুত, সকলে ভঠা হল। খাওয়ার জিনিয়পত্র, ষ্টোভ, চায়ের সর্ব্বাম, বি'চুড়ির সর্ব্বাম সব ওঠান হল। গ্রামোফোন ভাস ইভাদিও নেওবা হয়েছিল। তার পর যাত্রা হল ওক। আমরা যাজ্যি নাবাল নামক একটি স্থানে। মহানদী ও কাটজুৱি উড়িব্যার ছু'টি বিশ্বাত নদীর সংযোগস্থল ওটি। মহানদীতে আমরা চলেছি বেয়ে, সামার বৃষ্টি ভবনও পড়ছিল। নদীর এক পাবে সমতল ভূমি ও গাছ, অপর পাবে দূরে পাহাড়। পথে একটি ক্রদুল শিবমন্দির পড়ে, নাম ধ্বলেশ্ব। এ অঞ্জে খ্যাতি আছে, শিবরাত্রির সময় দলে দলে বাত্রী ওবানে বার শিব দর্শন করবার জন্ত। নদীর ধার থেকে বেশ উঁচু জায়গাতে মন্দিরটি অবস্থিত।

আমবা বেতে আবস্ত করলাম, তাস খেলা ওর হয়ে গেল। ভারপর রসগোলা, ডিম, ডালমুট সহংবাগে চাহের পর্বে আবস্তু হল। বাড়ীতে তো সর্বাদাই মেয়েরাই চা খাবার বাল্লা-বাল্লা করে, এখানে এই সব কাজ পুক্ষরাই করতে আবস্তু কর্লেন। এই সব ব্যাপারে এখানে আমাদের ছুটি।

বেলা প্রায় ১১টার সময় আমরা নারাক্তে এসে পৌছোলাম।
নদীর ধার থেকে খানিকটা উঁচুতে ডাকবাংলোটি অবস্থিত।
বাংলোটি খুব সুন্দর, টেবিল-চেরার বারনিশ করা, সামনে গোল বড়
বারান্দা, বাধকম তিন-চারখানা ঘর, সুংগ্রন্থা। এখানকার প্রাকৃতিক
দৃগু খুবই সুন্দর, পাহাড় নদী গাছপালা সবের সমাবেশ। দৃষ্টি
প্রসারিত করলে দেখা যাবে দ্রের পাহাড়, সব্জ আকাশ, ইটের
খাঁচা এসে বাধা দেবে না। সেই দিনটি ছিল মেঘলা, সেজক্ত আর্ড
সুন্দর লাগছিল।

বাদ্ধার ভার দেওয়া হয়েছে ছেলেদের ওপন, সেজত আমহা বেডিরে বেড়াতে লাগলাম। পাহাড়ের গা বেরে চলেছে আঁঝা-বাঁকা পথ, সেই পথ বেরে আমরা গল্প করতে করতে চলতে লাগলাম। কিছুক্রণ বেড়াবার পর আমরা ডাকবাংলোতে কিরে এলাম। কিছুক্রণ বেড়াবার পর আমরা ডাকবাংলোতে কিরে এলাম। বেড়াবার পর নদীতে স্নান করা হল, বাঁরা সাঁতার আনেন, উারা সাঁতার কাটলেন, খুব হৈ-চৈ করে স্নানের পর্বে সমাধা হল। স্নানের পর এবার ভোজনের পালা, রাল্লা প্রেক্ত, মেখলা দিন, বিচ্টু পাণড় ভাজা, ডিমের তরকারি আলু-পেরাজের চচ্চড়িও চাট্রান, ভ্রিভোজন আর কি। সকলে থেতে বসা হবে, এমন সময় দেখা গেল আমার স্বামীর দেখা পাওয়া যাছের না। কিছুক্রণ তার ছয়্য অংগ্লা করা হল। এমন সময় তিনি এলেন, হাতে প্রায় পাঁচ সের বড় বড় চিড়ি মাছ, রাপার দেখে তো সকলের চক্ স্থিব! সবাই কুধার্ত—মাছের অন্ত কিছুক্রণ অপেকা করতে হবে।

উনি সোজা চলে গিছেছিলেন প্রায় ছুই মাইল দূব প্রামে, দেখান খেকে মাছ জোগাড় করে এনেছেন। বেড়াতে যাওয়ার ব্যাপারে ওঁর উৎসাহই সব চেয়ে বেশী। কাজেই সকলে হল ওর অভিধি, অভিধিদের মাছ খাওয়াতে না পারলে খাওয়ানোর অঙ্গলান হবে যে। মাছ এলা বেসন দিয়ে ভেজে খাওয়া হল। রায়ার পক্ষে এটা সব চেতে শীত্র হয়ে গেল, থিচুড়ি দিয়ে টাটকা চিংড়ির মাছের পোরের ভাজা স্বযাহও খুব।

ধারে। দার্যার পর তাস থেলা, প্রামো-ফানে গান শোনা, গর চললো কিছুক্ষণ। আর একজনের কথা এক্ত্মণ কোই হয়নি, সে আমাদের পপে, দেও এসেছে আমাদের সংস্ক, তার আনন্দ সবচেরে বেশী। সাঁতার, বেড়ান সবের মধ্যে যোগ দিছিল সেত্র। বেলা গড়িয়ে এল, এবার ফেরার পালা। আমরা সব লঞ্চে এসে বসলাম। এক্তমণে আমাদের থেরাল হল তুইটি ছোট মেরের দেখা পার্যা যাছেনা। ভাদের থোঁজ কর্বার জন্ম লঞ্চ নামা হবে, এমন সময় দেখা গোল, দ্ব পাহারের ওপর তাদের ফ্রকের লাল ও নীল রং। তারা বুঝ্ত পেয়েছে, আমাদের যাত্রার আয়েজন, তারা ভাড়াতাভি নেমে আসছে। সন্ধ্যে নেমে এসেছে, আকাশের তারা কাল্মল করছে নদীর বুকে। এবার আমাদের যাত্রার বাঙ্গার পরে।

সমষ্টির জীবনে ব্যষ্টির জীবন। সমষ্টির প্রধে ব্যষ্টির প্রধ।
সমষ্টি ছাড়িরা ব্যষ্টির অভিছেই অসম্ভব। এই অনস্ত সূত্য জগতের মূল ভিডি।
— স্বামী বিবেকানন্দ।

फित्तव भव फिल প्राणिपित ...



क्षाचीन तथा, निः, चार्डेनिशांत गर्म हिन्दुशंन विकास निः, कर्नुक व्यास्त श्राप्त

RP. 158-X52 BG



বৃষ্ণিসিক্ত মাঠে এবাবকার প্রথম ভিভিনন খেলাগুলি বেশ ক্ষমে উঠেছে বলা বেতে পারে। মধ্যে মধ্যে প্রবেল বৃষ্টিপাতের জন্ত থেলা বন্ধ করে বাচ্ছে বটে কিন্ত ছ'-একটি অপ্রীতিকর ঘটনা ছাড়া এবারকার ফুটবল মরশুম এখনও বেশ শান্তিপ্রদ বলা বেতে পারে।

মোহমবাগান দল এ পর্যাস্ত অপরাজিত থেকে দীগ কোঠার শীর্বে আছে। ইষ্টবেঙ্গল, মহামেডান স্পোটিং প্রত্যেকেই একটি করে থেলার পরাজর বংশ করেছে। গতবারের লীগবিজয়ী রেল দল ইষ্টবেঙ্গল ও মোহনবাগান দলের নিকট প্রাক্তর বর্ণ করেছে।

রাজস্থান দল এবাবে মোটেই আশাপ্রাদ খেলতে পারছে না— ভবে বর্ষণসিক্ত মাঠে ইষ্টবেঙ্গল দল ৩-১ গোলে পরাব্রিত কবে এবারকার লীগ মরক্তমে চমকের স্মষ্টি কবেছে।

মর ওমের প্রথম দিকে খেলার মধ্যে বে উৎসাহ ও উদ্দীপনা দেখা বাদ্ধে, তাতে আলা করা বাচ্ছে বিশেব কোন অপ্রীতিকর ঘটনা না ঘটলে এবারকার ফুটবল মরশুম দীর্থদিন বাদে বেশ অমে উঠবে আলা করা চলতে পারে। কারণ বড় বড় দলগুলির সংগে তক্ষণ খেলোরাড়-পুষ্ট দলগুলির প্রতিদ্বিতা সভাই প্রশংসনীয়।

ভক্ষণ থেলোরাভৃপৃষ্ট বালী প্রতিভা ও ইণ্টাপ্রকাশানাল দল হাটি লীগ কোঠার স্ক্রনিয়ে আছে। এই দগগুলির শক্তি কম হলেও বৃদ্ধ বৃদ্ধ দলগুলিকে এদের কাছ থেকে পয়েন্ট নিতে বেশ বেগ পেতে হছে। ১ই ভুন প্রান্ত কোন দলের স্থান লীগ কোঠার কোথার, তা নিয়ে দেওরা কইল।

| | (ৰ: | ₩: | y: | প্রা: | %: | ৰি: | পয়েণ্ট |
|-------------------|------|----|----------|-------|-----|-----|----------------|
| যোহনবাগাল | ٥ د | ۴ | 2 | • | ১৩ | 2 | 36 |
| ইষ্টবেঙ্গল | ٥, د | ٦ | 2 | 2 | 24 | ٦ | 2.4 |
| ইষ্টার্থ রেলওয়ে | ۲ | 49 | 2 | 2 | 20 | 8 | 26 |
| মহাঃ স্পোটিং | 1 | 19 | • | ۵ | 36 | 2 | 25 |
| বি- এন- আব | 5 | ¢ | 5 | • | 20 | 30 | >> |
| शंउषा हेडिनियन | ١ | ৩ | \ | ર | ٦ | a | ь |
| রাজ স্থা ন | ۵ | હ | \$ | 3 | > 0 | 20 | l _y |
| च्या ञी | ь | ٠ | > | 8 | า | 1 | 1 |
| বিদিরপুর | ۶. | ş | 4 | a | q | b | 3 |
| স্পোটি: ইউনিয়ন | ь | ٠ | 3 | 8 | 149 | ٥ د | 9 |
| এ বিশ্বান | ۵ | ર | 19 | R | 2 | ٩ | 9 |
| काञ्च हिनिश्रीक | ۴ | > | ર | ¢ | 8 | 5 | 8 |
| পুরিশ | ي | 0 | > | 8 | 2 | > | 1 |
| বালী প্রতিভা | ٩ | • | Ž, | ¢ | હ | 25 | 4 |
| ইন্টাৰ্জাশাসাস | ь | • | ર | • | > | 20 | 4 |

নিধিস ভারত ফুটবল ফেডারেশনের বার্থিক সভা বসেছিল শিলং-এর শৈলাবাদে। তুদিনের অধিবেশনে বর্থকর্তা নির্বাচনের পর্বা ছাড়াও ১৯৬০ সাল থেকে ভারতীয় রেল দলকে সাভিসেস টিমের অফুরপ মর্যাদা দান করেছেন আরু 'কেবালা ট্রফি' ও 'নিজাম গোল্ড' কাপের খেলাকে প্রথম শ্রেণীর খেলা বলে মর্যাদা দান করেছেন। ছ্বাও বোতার্স, আই, এফ, এ, শীল্ড প্রায়ুখ খেলাগুলির সময় নির্দেশ করে দিয়েছেন এ ছাঙ়াও জাতীয় প্রতিবোগিভার আঞ্চলিক বিভাগের পুনবিস্থাস ও নানা উপসমিতি গঠিত হয়েছে কিছ এবারকার স্ব্রাপেক্ষা গুরুত্বপূর্ণ বিষ্কৃত্তি বাদ সিয়েছে এ আলোচনার আলর খেকে। সেটা হল একই ব্যক্তি বিভিন্ন ক্রীড়াসংস্থার সংগে যুক্ত খাকতে পারবেন কি না। আলোচনা না হওরার কাবে কিছু জানা যারনি। শৈলাবাদে বোধ হয় ধামাচাপা বা বরফ চাপা পড়েছে ব্যাপারটির উপরে।

বাইটন কাপ

এবারকার বাইটন কাপের ফাইজালে ভারতীয় সামরিক বাহিনীর ছ'টি দলকে প্রতিদ্বন্দি চা করতে দেখা গিহেছে। যোগ্যতর দল হিসেবে বিরক্তির কোর অফ ইঞ্জিনিয়ারিং দল ফাইজালে ইণ্ডিয়ান জার্মি টামকে > ১ গোলে হারিয়ে এবারকার বাইটন কাপ গাভ করেছে। এ প্রসংগে উল্লেখবোগ্য, কোর অফ ইঞ্জিনিয়ারিং দল গতবাবে বাইটন কাপের খেলায় রার্ণাস বাপ লাভ করেছিল।

এবারকার বাইটন কাপের খেলা ঠিক মত জ্বমে উঠতে পারেনি। তার কাবণ করেকটি শক্তিশালী দলের খেলায় জ্বংশ গ্রহণ না করা। যাই হোক্, এবারকার খেলার সংক্ষিপ্ত জ্বালোচনা করে হারতের স্ফরকারী ক্রিকেট দলের প্রথম টেষ্টের আলোচনা করব।

কিবকিব ইন্মিনিয়াহিং দলটি সামবিক বিভাগের ইঞ্জিনিয়ারিং বিভাগের থেলোয়াড়দের নিম্নে গঠিত। এবার এরা চতুর্থ রাউ.ও ধেলার হুযোগ লাভ করে। চতুর্থ রাউওও পালার পোটসকে ১০০ গোলে, কোছাটার ফাইছালে গতবারের বাইটন কাপবিজয়ী মোহনবাগান দলকে ৩০০ গোলে এবং সেমিফাইলালে কাইমস্দলকে ২০০ গোলে পরাজিত করে ফাইছাল থেলার বোগালা ভাজান করে। গতবারের মাত্র ৮জন নামকরা থেলোয়াড় ছাড়া ভাজান করে। গতবারের মাত্র ৮জন নামকরা থেলোয়াড় ছাড়া ভাজান করে। গতবারের মাত্র ৮জন নামকরা থেলোয়াড় ছাড়া ভাজান বরে। গতবারের মাত্র ৮জন নামকরা থেলোয়াড় ছাড়া ভাজান বরেনায়। ভালর প্রথম জাতীর হকি প্রভিয়োগিতার রাণাস শাক্তিশালী ভামি দল ফাইলালে মোটেই আশাপ্রাদ থেলতে পারেনি। এবারকার তালিকার মোট ৪১টি দলের নাম ছিল বিজ্ঞানে প্রথম ভালাক থাতনামা দল আন্ধ্র গ্রহণ করেনি।

ক্রিকেট

ইংলণ্ডে সফরকারী ভারতের ওরুণ পেলোরাড়নের নিরে গঠিত দলটিকে নানান সমালোচনার সম্মুখীন হতে হছে। ইংলণ্ডের ধুবন্ধর ক্রিকেট সমালোচকেরা নানান মতামত প্রকাশ করছেন, তা দৈনিক সংবাদপত্র মারকং পাঠকমাত্রই সবিশেষ অবগত আছেন। এই দলটির বিদেশ সফরকালীন সময় ভারতের নানান পত্র-পত্রিকার সমালোচনা হয়েছিল।

করেকটি কাউণ্টি খেলার ভারতীয় দল বেশ কুভিছের সংগে থেলেছে। কাউণ্টি খেলাগুলির বিশদ আলোচনা সম্ভব নয়, তাই এবার প্রথম টেপ্টের আলোচনা করব।

প্রথম টেষ্ট—নটিংহামের টেণ্ট ব্রীক্ত মার্চে ৪ঠ। জুন থেকে প্রথম টেষ্ট ম্যাচের থেলা প্রকৃত হয়। নির্দ্ধারিত দিনের একদিন পূর্বেই এ থেলার সমাপ্তি ঘটে। এই থেলার ভারতীয় দল এক ইনিংস ও

এবারকার টেন্টে ইংলগু দলে প্রাভূত থেলোরাড়ের রদবদল হয়।
তর্ল থেলোরাড়দের ভারতীয় দলের বিরুদ্ধে থেলার প্রযোগ দান
করে ইংলগু দল আলাছুরূপ ফল লাভ করেছে। বেইলী, লেকার,
গ্রেভনী, লক, টাইসন প্রভৃতি ইংলগুর বৃরন্ধর থেলোরাড়রা
এবারকার বৈষ্ট থেলার নির্কাচিত হননি। এঁদের পরিবর্তে বে সমস্ত
ভরুণ থেলোরাড় নেওরা হয়েছে ভার মধ্যে উদ্ভারশারারের অফ বেক
বোলার মার্টিন হটন, ল্যাকাশারারের টমি গ্রীন হফ প্রবং
ইয়র্বশারারের ওপেনিং ব্যাটসম্যান কেন টেলরের নাম সবিশেষ
উল্লেখবোগা। ফাষ্ট বোলিং-এর বিরুদ্ধে ভারতীয় দলের হুর্বলভার
থারাগ নিয়ে ইংলগুর নির্কাচিক্মগুলী মিভিল দেশের পেল
বোলার এ্যালান মসকে দলভুক্ত করেছেন। ইংলগু দলের পরী
রদবদল আগামী 'ওয়েষ্ট ইগ্রিক্ত' দলের বিরুদ্ধে পরীক্ষামূলক
ব্যবস্থা বলে ধরা বেতে পারে। অপর পক্ষে ভারতীয় সকলেই
ভরুণ থেলোরাড়।

ইংলণ্ডের অধিনায়ক পিটার মে 'টনে' জন্মলাভ করে নিজ্ঞ দলকে ব্যাট করতে পাঠান। কিছু প্রক্লেডই ইংলণ্ড দলের ব্যাটি-বিপর্যার ঘটে। মাত্র ৬০ রাণের মাধার ইংলণ্ড দলের টেলর, মিণ্টন ও কাউড়ে ভিনটি মৃদ্যবান উইকেট হারায়। এর পর অধিনায়ক দে, ব্যারিংটন ও হটন দলের পতন রোধ করেন। অধিনায়ক পিটার মের সেঞ্রী প্রথম দিনের খেলায় সর্বাপেক্ষা উল্লেখবাগ্য ঘটনা। মিটার মে দেঞ্রী করার কিছু পরেই আউট হয়ে পেলে গড়ফে ইভান্স ঘোগদান করেন। বেপরোয়া ভাবে পিটিয়ে খেলে ৪২ মি: ৫০ রাণ ভোলেন। এর পর ৭৩ রাণের মাধান্ম নাদকার্দির বলে উমিগড়ের হাতে ক্যাচ ভূলে বিদান্ন গ্রহণ করেন। শেষ পর্যান্ত দিনের শেষে ইংলণ্ড দল এটি উইকেট হারিরে ৩৫৮ রাণ সংগ্রহ করেন।

বিতীয় দিনে ইংলপ্ত দল ৪টি উইকেটের বিনিমরে আরও ৬৪
বাণ সংগ্রহ করলে ৪২২ বাণে ইংলপ্ত দলের প্রথম ইনিংসের
সমাপ্তি হয়। এর পর ভারতীর দল ব্যাট করভে নামে। কিছ ভারতীর দলের স্চনা খুব আলাপ্রাদ হয়নি। ভারতীর প্রথম ছটি বায় ও কটাকটর উইকেটে ১০০ মিনিট টিকে থেলে মাত্র ৩৪
বাণ সংগ্রহ করেন। কণ্টাকটরের ব্যক্তিগত ১৫ বাণের মাথায় আউট হরে বান। শেষ পর্যস্ত দিনের শেষে ভারতীয় দল তিন উইকেটের বিনিমরে ১১৬ রাণ সংগ্রহ করে। এর মধ্যে প্রজ্ঞ রারের ৫৪ রাণ সবিশেষ উল্লেখযোগ্য। পদ্ধ রার যথেষ্ট বৈশ্য সহকারে ও সতর্কতার সংগে থেলে ৫৪ রাণ সংগ্রহ করেন। প্রথম টেষ্টে পদ্ধ রায়ই একমাত্র থেলোরাড়, বিনি নিজের উপর বর্ষেষ্ট আল্লা রেখে ভাল থেলেছেন।

তৃতীর দিনে টু,মান, মস আব গ্রাধামের মারাক্ষক বোলিশে । ভারতীর দলের ভারতীর দেলের ভারতীর দলের অধিনারক গাইকোরাড় এই বিপর্যারের মুখে থৈর্য্য সহকারে উইকেটে টিকে থাকতে চেপ্তা করেন। তিনি ২ বঃ ৩৩ মিঃ কাল উইকেটে টিকে থাকতে চেপ্তা করেন। তিনি ২ বঃ ৩৩ মিঃ কাল উইকেটে টিকে থেকে ৩৩ রাণ সংগ্রহ করতে সমর্থ হন। ভারতীর অক্তম নির্ভর্বাগ্য ব্যাটসম্যান চাছ বোরদে টু,মানের চাম্পার বলে হক করতে গিরে হাতে আঘাত পাওরার অবসর গ্রহণ করেন। শেষ পর্যান্ত ভারতীয় দল ২১৬ রাণে পিছিরে থেকে ফলো অন' করতে বাধ্য হন। দিনের শেষে তিনটি মূল্যবান উইকেট হারিরে মাত্র ১৬ রাণ সংগ্রহ হর। তন্মধ্যে বারের ৪৯ রাণ সবিশেষ উল্লেখবাগ্য। এ প্রাসংগে উল্লেখ করা বার, পর্ক্ত রাম টেই ক্রিকেটে ছ' হাজার রাণ করার গোরব অর্জ্ঞন করলো।

একদিন বিবৃতির পর ৪র্থ দিনের ধেলা স্কুক হোল। এই দিন ই্যাধাম মারাক্ষক মারমূর্তি বারণ করলেন। মার্ক্র ৩১ রাণের বিনিময়ে ভারতীয় দলের ৫টি উইকেট লাভ করেন। লেব পর্যান্ত ৬১ রাণ বোগ করে ভারতীয় দলের ইনিংস শেব হয়। হাতে আঘাত পাওয়ার দক্ষণ বোরদে বিতীয় ইনিংসের খেলায় আংশ প্রহণ করেন নি। ১৫৭ রাণে ভারতীয় দলের বিতীয় ইনিংসের সমান্তি হয়।

ইংলগু ১ম ইনিংস—৪২২—(পিটার মে'১০৬, ইভান্স ৭০, , হটন ৫৮ ব্যারিংটন ৫৬, গুপ্তে ১০২ বালে ৪ উইকেটে নাদকার্শি ৪৮ বালে ২ উইকেটে)।

ভারত ১ম ইনিংস—২০৬, (পি, বার ৫৪, গাইকোরাড় ৩৩, উত্রিগড় ২১, বোলী ২১, টুম্যান প্রিথ বাণে ৪ উইকেট, মস ৩৩ বাণে ২ উইকেট)।

ভারত—২র ইনিংস—১৫৭, (পি রার ৪৯, মঞ্জেরকার ৪৪, গাইকোরাড় ৩১, ষ্ট্যাধাম ৩১ বাবে ৫ উইকেট টু,মান ৪৪ বাবে ২ উইকেট)।

(এক ইনিংস ও ৫১ বাণে বিজয়ী)



কালকা। সুপারিসাল কেং প্রোইটো) লিঃ ফোল-৬৫-১১১৭ প্রতিষ্ঠান্ত: সাং কার্ডিক্র ক্রের ক্রম ক্রম-বি । ে মান-কলমানিক। ১৫ নং



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] নারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

না কঠিন ব্যাধিতে আক্রান্ত হলে দেইটার সঙ্গে মনের অবস্থাও এমন হয় যে, মনে হয় না দেইটা আবার স্থপ্থ-স্বল'হবে, বেন ভাবতেই পারা যায় না অস্থদেহের আরামটা ঠিক কি রকম। কিছ ব্যাদি সারে, আবার অস্থদেহের আরাম ফিবে আনে, — আর তথন আবার যেন ভাবতেই পারা যায় না ব্যাধিগ্রস্ত দেহের অবস্থাটা ঠিক কেমন লাগতো।

ঠিক তেমনি,—দেড় মাদ বন্ত্ৰণা, অপমান, নির্জন কারাবাদ ভোগের পর অন্তরীবের সীমাবদ্ধ স্বাধীনভার ঝোলা হওয়ার বেরিয়েই একথাটা ভূলতে বেলী দেরী হল না বে, ঐ দেড় মাস কী গভীর অন্ধকার আমার সমগ্র অন্তর বাহির জুড়ে জগদ্পের মতন চেপে ছিল,—ভবিষতের আশা-আবিজ্ঞা-ক্রনা দ্বে থাকে, চিস্তারও ধেই খুঁজে পেছুম না।

অন্তরীলে এসে অল্লদিনের মধ্যেই মনটা আবার চাঙ্গা হয়ে উঠলো
— আগের ধারার চিন্তা অফ হল। মনে হল বিপ্লব প্রচেষ্টার এক
আফ শেব হয়েছে প্রথম ব্যর্থহায়,—এখনও ধ্বনিকাপাতের অনেক
দেরী,—নতুন অফে নতুন সাঞ্চে আবার বিপ্লবের ভত্তক্তনার উথোধন
হবে,—কবে, কেমন কবে, জানি না—কিছ হবেই—তার জন্তে
বেন প্রস্তুত্ত ধাকতে পারি।

অবস্থাটা ছিল অমুকুল তু'দিক থেকে। দারোগা আনন্দমোহন
মিত্রের স্ত্রীর অনন্ত বা ঐ রকম কি একটা ব্রস্ত,—ধানাটা শান্তিপুরের
এক সীমানার ধারে,—হাতের কাছে প্রাহ্মণ নেই, আমি বোল
সকাল ১টার হাজিরা দিতে বাই—স্তরাং আমিই কলুম প্রাহ্মণ,—
সারা বৈশাধ মাস ভাব, সন্দেশ, পৈতে ও পাংসা প্রভাত পেলুম,
—শেব দিনে বোর হয় একখানা কাপড়ও। অভ্যন্ত নিরীহ ভক্ত
এক প্রাহ্মণ সন্তানকে গোরেক্ষা বিভাগের শ্রতানগুলো বে মিছিমিছি
কষ্ট দিছে,—ভদ্রমহিলার এ বিষয়ে বিন্মান্তর সন্দেহ ছিল না।
মারের জাত ভো!

বজ্ঞত সাধাৰণ লোকের ধারণাও সাধারণত এই বক্ষই।
কিছ বাবা কিছুটা ওয়াকিবহাল, তারা আমাদের ক্লিরাম—
কানাইলালেরই সগোত্র মনে করে শ্রছা করতো, ভালবাসতো,—
আমি সত্যি কভটুকু, সে থোঁজে তালের কোন গরজ ছিল
না। বিশেষত শান্তিপুর বিপ্লব আন্দোলনের ঐতিজ্ঞেও দরিস্ত
ছিল না। "যুগান্তর" পত্রিকা এবং আলিপুর বোমার মামলা

সম্পর্কে যে কার্তিক দত্ত ছিলেন এক বিধাত কর্মী, তিনি এই শান্তিপ্রেরই ছেলে। ১৯০৭ সালে মুরারিপ্কুরে বোমার আছ্ডা ধূলে বখন বারীন ঘোষ, উপেন ব্যানাজি প্রভৃতি যুগান্তব পত্তিকার কাজ ছাড়েন, তখন থেকে "যুগান্তব" পরিচালনের ভার পড়ে তারানাথ বার্ডোধুরী (সিনিয়র—বস্ত্রমতীর ভূতপূর্কে ম্যানেজার জুনিয়ার ভারানাথ নর), নিথিল রায় মৌলিক, কিরণ মুখাজি এবং কার্ভিক গত্তের উপর। আলিপুর বোমার অভতম আলামী ছিলেন এই শান্তিপুরের কার্তিক দত্ত। ছগলি জেলার বিঘাটী প্রামে এক ডাকাতি হয় এবং সেই মানলায় কার্তিক দত্ত সাজা পান। শান্তিপুরের পাশে বাদ-আঁচড়া প্রামের নিরাপদ রায়ের কথাতো আগেই বলেছি। তাঁত বোমার মানলার ১০ বছর ধীপান্তর সাজা হয়েছিল।

সভাবাং বেমালুম আগের মতন ছেলে রিক্টু করার ধাদ্ধা আবার দেখা দিছেছিল। পারবভীকালে অন্তরীপে পাঠাবার সমর গোছেন্দা অফিসাবরা ঠাটা কব:তা,—"বান,—সরকারী খরচে আবার দল গড়ুন গিছে।" আমরাও বলভুম, "আমরা ধর্মঘট করলে তো ইলিশিরাম রো-তে ঘুলু চববে।"

বাই হোক, আমাদের সময়েই হোমকল আন্দোলনের নেত্রী আ্যানি বেশাস্তও ডিফেল আ্যাক্টে আটক হয়েছিলেন। ফলে কলকাতার কংগ্রেসের অধিবেশনে তাঁকে সভানেত্রী নির্বাচিত করা হয়, এবং তাঁর অবর্তমানে সবোজিনী নাইড় অধিবেশনে নেত্রীর করেন।

মহাত্ম। গান্ধীও ঐ সময়েই ভাবতে আসেন এবং চম্পারণে নীলকর সাহেবদের অত্যাচারের বিরুদ্ধে কুষকদের সন্ত্যাগ্রহ সংগ্রাম সংগঠন করেন। '২০ সালে কিছু শাসন সংস্কার দিরে ভারতবাসীকে একটু ঠাণ্ডা করার পবিকরনা নিয়ে ভারত সচিব মন্টেগু ভারত পরিদর্শনে আসেন, এবং কংগ্রেস ও মোসলেম লীগ তাঁর হাতে এক সন্মিলিত দাবী-পত্র পেশ করেন। আমাদের মনে পড়তো—"আবেদন আর নিবেদনের থালা বহু বহু নতাশির।"

জেলে তথন রাজবলীয়া সহনাতীত অবস্থার মধ্যে সংগ্রাম
করছেন। কারাবাসের অব্যবস্থা-কুষ্যবস্থার সংশোধনের জন্তে, প্রধানত
ভালার খ্রীইক করে। ভূপেক্রকুমার দত্তের ৭৮ দিনব্যাপী হালার
খ্রীইক এবং জোর করে থাওয়ানোর বিক্লম্বে হল্ডাহ্বজি একটা
ইতিহাস বচনা করেছে।

বাই হোক,-বছৰ ভিনেক অভবীণ থেকে ১৯১৯ সালের

্মান্ড স্থরের নাচের তালে ামান্ড মুখের খেলা আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



स्थितिक (क) (ल



াবস্কুটএর

প্রস্তুকারক কড় ক

আধুনিকতম যদ্ধপাতির সাহাব্যে প্রস্তুত

কোলে বিষ্কুট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০

প্রথমে কিবে এলুম। দেখলুম, পাড়ার সকলেই কিবেছে। দিনি আগে থেকেই মনে মনে ডালছেন এইবার একটা বিশ্বে দিতে পারলেই এক রকম নিশ্চিত হওয়া বায়।

একদিন সকালে হঠাৎ দিদি বলছেন, ভাষাটা গায়ে দিয়ে একবার ও বরে বা। আমার সংক্ত হয়েছে, বললুম কেন ?

দিদি বললেন, দেখতে এসেছে। আমি যাবো না বলাতে দিদি বিপদে পড়ে জোড়হাত করে বললেন, একবার দরা করে মানটা বাঁচাও, আর এ গুর্বি করবো না। একটু ভেবে নিরে গেলুম।

দেখি তৃজন ভদ্রলোক এসেছেন। নাম জিজ্ঞাসা করার পর বললেন, কাজকর্ম কিছু কর? আমি—না ঠিক করেছি, ব্যবসা করবো।

ৰাবদার কিছু জাম ? আব মূলধন কভ, কিদের ব্যবদা ?

খ্যবদা, করতে করতেই দিখবো, কিসের ব্যবসা করবো, তা এখনো ঠিক করিনি। আর মূলধন সংগ্রন্থ করতে পারবো এই বাড়ী বেচে।

ভন্তলোকদেব চৃষ্ণু চড়কগাছ! ছেলেটি ভাল, আর কলকাতার ৰাড়ী—এই ছটি খুঁটির ওপর তাঁরা তর করেছিলেন। এখন আমার কথা ওনে ভ্যাবাচ্যাকা থেরে ছন্ধনে মুখ চাওরা-চাওরি করে আন্তে আত্তে সরে পড়লেন। আমিও বীরদর্শে দিদিকে শাসিরে দিলুম কের এমন কাল করলে আমি বাড়ী ছেড়ে পাসারো। দিদি একা-একা আর ঘণ্টা ধরে গলর গল্পর করে ঠাণ্ডা ছলেন।

তথন সারা দেশে একটা থমথমে ভাব—কোধাও কোনো আন্দোলন নেই। শুরু মৌলবী লিয়াকৎ হোসেন রোজ বিকেলে একদল সুলেব ছেলের প্রোসেশন নিরে রাজার রাজার গুরে poop students fund-এর র্লালা ছুলে বেডান। ছেলের দল খদেশী গান গেয়ে চলে, ২।৪ জন রাজার লোকও পেছন পেছন চলে। পথে কোকনা থামা পেলে প্রোসেশনা নেথানেও ঢোকে এবং বন্দে মাতরম্ ক্ষনি দের। মৌলবী সাহেব থানার অফিসারদের কাছ থেকেও কিছু টালা না নিয়ে হটেন না—বলেন, ইস ফাওমে তুমলোক কেঁও নেহি চালা দেগা ? ইয়ে কুছ বোষওয়ারি ছায় ?" পুলিস অফিসার ভারাভাড়ি কিছু দিয়ে রেহাই পান। ভর্ক করলে, ছেলের দল বন্দে মাতরম্ ধ্যনি দিয়ে হারিয়ে দের।

মেছুর। বাজাবের বাস্তায় মার্কাস কোরাবের সামনে প্রকাশ একটা লোভলা ব্যাথাকংগড়ীর এক খুণরীতে ছিল তাঁর আন্ধানা। ৰাঞ্জীটাতে ২।৬ শো গরীব মুসলমানের বাস ছিল। নিঃসম্বল পরীব ছারেরা হিলু-মুসলমান নির্বিশেবে তাঁর কাছে সাহায়্য পেত। স্ত্যুকাল পর্বস্ত তিনি এই কাজ নিরেই ছিলেন। এই একজন দরিক্ত একনিষ্ঠ খনেশী নেতা, খুরেন বাঁডুব্যু— বিলিন পালের মন্তই বাকে জাপামর সাধারণ সকল শ্রেণীর মান্ত্রইই আন্তরিক শ্রন্থা করতো। তিনি ছিলেন বেপরোৱা

বাজদোহকর বক্তা দিরে তিনি অং ক বাব জেল খেটেছিলেন।
প্রথম মহামুদ্ধের সময়ে বখন এখানে মডারেট নেভারা এবং
আফ্রিকার গান্ধী সরকারকে রিক্টিংরে সাহাষ্য করছিলেন, তখন
এক বিবোধী সভার এক বক্তার মেলিবী সাহেব বলেছিলেন,
বে ইংরেক্তর পক্ষে লড়াইরে বাবে, সে বাপকা পুত নেহি—মুদ্ধ কা

মুক্ত।" (অর্থাৎ কার কার বাংগার বীর্ব্য থেকে সর, প্রান্তীর থেকে)
এই বহুতোর কলে তারে ছু' বছর সপ্রম কারাদণ্ড হয়। কোল থেটে বেরিরে তিমি ঐ "বংলশী" কাজে জাত্মনিয়োগ করেন—ভিক্ষা করে টাদা তুলে দবিক্ত ছাত্রদের সাহাব্য করা।

বোজ বিকেশে বেড়াতে বেরিরে আমি মৌলবী সাংহবের
মিছিলের পিছনে চলতুম। মৌলবী সাহেব থাকতেন সামনে,
কিছ তাঁর নজর থাকতো সব দিকে, এবং জনবরত প্রারোজনমত
নির্দেশ দিতেন। করেক দিন তিনি আমাকে লক্ষ্য করেছিলেন।
একদিন হঠাৎ আমাকে ধরে বলেন,—"এই—তুম সিআইডি ছার ?
পিছে পিছে কেঁও চসতা ?—বাও—সামনে বাও।" আমি
অপ্রতিভ হরে সামনের সারিতে গেলুম, এবং ছেলের দলের সঙ্গে
বন্দে মাতরম্ ধনি দিরে রেহাই পেলুম। এই ছিল তাঁর কাজের
থাবা।

সকল বিষয় জানবার বোঝবার জাগ্রহ তথন জসীম। ববিবারে সাধারণ প্রাক্ষ সমাজে বেতুম—প্রার্থনান্তিক বক্তৃতার ধর্ম ও সমাজ সফোস্থ নানা বিষয়ের আলোচনা বড় ভাল সাগভো। বিশেষ ভাবে জাকুই হয়েছিলুম জাচার্য ডাক্ডার প্রাণকুষ্ণ জাচার্বের বড়েভার। শের পর্যন্ত একদিন তাঁর হাবিসন রোডের বাড়ীতে হানা দিরে জালাপ করলুম। তিনি বর্ণমিজ্ঞতাসাঁ পড়তে দিলেন। হিন্দু পৌত্তলিকতার জাফুইানিক ধর্মব্যবস্থার জক্ত্র তথ্য ও কেলেয়ারীতে বইটা ঠাসা। প্রাক্ষ সমাজের ধর্ম ও সামাজিক বাবস্থা সম্পর্কিত জারো কয়েকথানা বইও পড়লুম। শের পর্যন্ত জামাকে এক জুনিয়ার জাচার্ব দেবেজ্রনাথ মিত্রের হাতে ভিড়িয়ে দেওয়া হল। তিনি জামাকে প্রাক্ষধর্মে দীক্ষিত করার চেষ্টা করে হাল ছেড়ে দিলেন। জামিও বাওয়া বন্ধ করলুম।

করালীর সঙ্গে আমার তথন খনিষ্ঠ মেলামেশা ছিল। তারা ছিল শাজ—এবং তার বাবা ছিলেন একজন তান্ত্রিক পণ্ডিত ও সাধক। আমি করালীর কাছে ব্রাহ্মধর্মের পক্ষে ওকালতী করে হিন্দু, শাক্ত, তান্ত্রিক-ধর্ম ব্যাধ্যাও ওনভূম এবং তান্তের যুক্তিগুলো ব্রাহ্ম আচার্বের কাছেও হাজির করতুম। মজা হত এই বে, এই তুই পক্ষের সমস্ত যুক্তির মধ্যে নিজ্ঞ নিজ স্থপনীয় যুক্তির চেয়ে অপর পক্ষের বিরুদ্ধে যুক্তিগুলোই হ'ত জোবালো,—আর আমার মনে তুই পক্ষের বিরুদ্ধ যুক্তিগুলোই ধীরে ধীরে শেকড গাড়িছিল।

সংক্র সক্ষে একটা কথা মনকে অধিকার করছিল,—এই সব তথাকথিত আধ্যাত্মিক, পারত্রিক, অবাস্তব ব্যাপারগুলো আমার জীবনাদর্শের বাস্তব ইহলোকিক ধান্ধা,—দেশের হুদ্লা, পরাধীনতার বিশ্বনা, স্বাধীনতার আদর্শ, বিপ্লব প্রচেষ্টা, রাজনৈতিক ও অর্থনৈত্তিক জ্ঞান প্রভৃতির পক্ষে একেবারে অবাস্তর। ফলত, হুনিয়ার সর্বপ্রকার আমুষ্ঠানিক ধর্মের সম্বন্ধে সর্বপ্রকার মোহ মন থেকে একেবারে মুছে গেল। মনটা বেন একটা ব্যাধিমুক্ত হরে প্রম সন্তোবে গেরে উঠলো,—"দেবী আমার, সাধনা আমার, স্বর্গ আমার,

নিজেকে তৈরী হতে হবে—জন্ম হাটতি পূরণ করতে হবে। বর্তমানে সর্বপ্রধান কাজ দেখাপড়া। জবকাশরঞ্জিনী নাটক-নডেল মহ,—"নীরস" প্রবৈদ্ধ—বই এবং মাসিকপঞ্জ। বস্তুত, লোকে বাকে সাধারণত নীরস বলে, সে সব বিষয়ের মধ্যেই আমি সবচেরে রস গুঁজে পেড়ুম। একটা নজুন কথা বৃহজে, নজুন কিছু নিখলে পড়া সার্থক মনে হত, আনন্দ পেড়ুম।

লেখাও অভ্যাস কর। দরকার,—ভবিষ্যতে প্রব্যাক্তন হবে।
১৯১৩।১৪ সালে লাইবেরীর সাম্লিট্ট ডিবেটিং ক্লাবে আমি ছিলুর
জ্নিরারদের মধ্যে একজন উৎসাহী সভ্যা, বাংলা প্রবন্ধ লেখক বা
সমালোচনা লেখক। তার পর "অঞ্জলি" নামে হাতে-লেখা মাসিক
বেহলো—ভাতেও লিখডুম। সে কাগজ বন্ধ হবে গিরেছিল।

১১ সালে খাবার কাগল বেকলো—নাম "প্রাঞ্জনি"—এবং সম্পাদক করা হল খামাকে—দারিখ চাপিরে দিলে বে ঠিক সমহমন্ত কাগল বেবোবেই,—এটা সকলেই বুবজো। কিছ সমহমত লেখা খাদার করা শক্ত —কাজেই একটা প্রবন্ধ, একটা কবিতা,—কিছু 'ধবর' এবং কিছু 'চাটনী'—খামাকেই লিখতে হন্ত।

লাইব্রেরীর স্ম্যানিভারসারী এল। অভিনরের ছব্তে নবীন সেনের 'বৈবতক' এবং 'প্রভাস' থেকে করেকটা 'সিন' নিয়ে "অভিশাপ" নামে এক নাটক থাড়া করে অভিনর করলুম। মহাভারতের রাজনীতি—কত্রির রাজশভিত্র বিক্লছে হুর্বাসা-বাস্থকির বড়বন্ধ। আমি হুর্বাসা, এবং বঙ্গুর দাদা নন্তুদা' বাস্থকি। নর্থ প্রবারবান স্থান চিবসঞ্জীর হেড্মান্তার আমার সঙ্গে আলাপ ও অভিনন্দন করলেন। বিছ হু'দিন পরে এক I B officer বুই-এর সন্ধানে এলেন। বৈবতক-প্রভাসের নাম করে তাঁকে ই।কিয়ে দিলুম।

ইতিমধা আন্তর্জাতিক ক্ষেত্রে কন্তকগুলো বিবাট বিরাট পবিবর্তন ঘটে গেছে। ক্লনিয়ায় বললেভিক বিপ্লব সফল হয়েছে— নিওমূণ বেচ্ছাচাবলন্ত্রী জাবের শাসনের উচ্ছেদ করে বিপ্লবী বললেভিক সরকার প্রতিষ্ঠিত হয়েছে।

মগাগুদ্ধর অবসানের (নভেমর ১৯১৮) পর দেভার্স সন্ধিতে বিজয়ী রুটেন ফ্রান্স ভূরুক্তের রাজ্য ভাগাভাগি করে গ্রান্স করে নিরে অসভানকে ক্ষুত্র থশির অংশটুকুতে কোণঠারা করেছে। কিছু নবীন ভূকীগলের নেতা কামার পাশা বিজ্ঞান্ত করে সেভার্স চুক্তির বিক্তম্বে ক্ষুত্র করেছেন—ক্শিয়ার বলশেভিকরা তাঁকে মদৎ দিছে।

যুগ্দব আগে ভারতে সৈত্ত সংগ্রহের সময় বৃটিশ সরকার ভারতের যুগসমানদের কাছে প্রতিশ্রুতি দিরেছিলেন, তুরস্কের স্বলতানের রাজ্যে হস্তক্ষণ করা হবে না—কারণ যুগলমানরা তাদের ধর্মগুল্পার বিরুদ্ধে যুদ্ধে বেতে রাজী হছিল না। কিছু এখন সে প্রতিশ্রুতি ভঙ্গ করে থলিফার হাড়ির হাল করাতে ভারতীর যুগসমানেরা ক্ষেপে পেল—মোলানা মহম্মদ আলী, সোকত আলী প্রতিব নেতৃত্বে তারা থিলাকং আন্লোলনে সংঘরত হতে লাগলো—একটা বিস্তাহের বড় আলয় হবে উঠলো।

আর এক দিকে,—ভারতে বিপ্লব প্রচেষ্টার ম্লোছেদের জন্তে সরকার এক বংশছাচারী বে-আইনী আইন—(রোলট আইন) গাশ করে পুলিদের হাতে অবাধ ক্ষমতা দিরে সর্বসাধারণের অসস্তোব জাগিবে তুললে।

কলে একদিকে কলকাভার টাউন হলে ব্যোমকেশ চক্রবর্তী ও

বি আর দাশের নেতৃত্বে এক বিরাট সভা করে প্রতিবাদ করা হল,

ত্বাং অনেক দিন পরে যেন বাংলার রাজনৈতিক ক্ষেত্রে নব

দীবনের সঞ্চার হল—ভয় কেটে গেল—উত্তেজনা বাড়তে লাগলো।

আর এক দিকে হল এক বিরাট ব্যাপার। মহাত্মা পাঁত্রী বৌলট আইনের বিক্লতে প্রতিবাদের জন্তে '১১ সালের ৬ই এপ্রিল সারা ভারত জোড়া হরতাল সংগঠিত করলেন। এই উপলক্ষে বিপ্লবী পাঞ্চাবের বিপ্লবাকাজনা ফেটে পড়লো—অমৃতসরে—এবং দিল্লীতেও—জনগণ সরকারী ভবন, ব্যান্ত, বেললাইন প্রভৃতি আক্রমণ করে ভেঙ্গে পুড়িরে একাকার করলো। সরকারও মার স্কল্প করলো বেপরোরা। অমৃতসরে এরোপ্রেন থেকে বোমা ফেলা পর্বত হরেছিল।

১৩ই এপ্রিল জালিয়ানওয়ালাবাপে স্বকারের নির্বিচার
অভ্যাচারের প্রতিবাদে সভা হল, এবং জেনারেল ভারার সেথানে
মেসিনগান চালিরে ১২০০ লোককে হভ্যা করলে। ভারপর চললো
মার্লাল ল'র অভ্যাচার। ফলভ জনগণের অসভোষ হরে উঠলো প্রার
সার্বজনীন। উপার কি?

মার্শাল ল'ব আমলে এক এক গাঁ শুভ লোককে বাভার বার করে পুক্ষগুলোকে বুকে হাঁটানো হচ্ছিল। অসংখ্য লোককে প্রকাশ ছানে খোঁটার বেঁধে বেত মারা হচ্ছিল। নেতাদের সামরিক বিচারের প্রহুদন করে দশু দেওরা হচ্ছিল যাবজ্জীবন যীপান্তর। তার মধ্যে স্তাপাল কিচলুব সজে সরলা দেবীর যামী পশুভ রামভ্জ দশু-চৌধুরীও ছিলেন।

এই অত্যাচারের প্রতিবাদে রবীস্ত্রনাথ বড়লাটকে এক চিঠি
লিখে সার উপাধি বর্জন করেন। তাতে তিনি লেখেন, তারতল্পীনীর
অসহায় অবস্থা পাঞ্চাবে বেরকম নগ্নতাবে ফুটে উঠেছে—ভাতে
সরকারী খেতাবে ভূষিত হয়ে চূপ করে বসে থাকার লক্ষা সম্ব
করা আমার পক্ষে অসম্ভব—হামিও এ লাহিত অসহায়
ভারতবানীদেরই একখন,—এবং আমার স্থান তাদের পাশেই।

তাঁর ভাষাটা ঠিক মনে নেই—কিন্ত ভার মর্বকথা ওই। সারা ভারত ধক্ত করে উঠলো। নতুন যুগে রবীক্সনাথ নতুন করে জনগণের মধ্যে এদে দাঁড়ালেন। পরবর্তী কালে হিজ্ঞলী বন্ধ নিবণ্দে সরকারী গুলী চাঁগাবার প্রতিবাদ সভারও রবীক্সনাথ নেতৃত্ব ক্রেছিলেন।

কিছ আমার কিছু একটা করতে হবে তো! বঙ্গে খেলে তো চলবে না, কিছু বোজগাবের ব্যবস্থা দরকার। চাকরীর চেষ্টা বুধা —কয়েকটা টাকার বিনিময়ে সমস্ত সময়, শক্তি, সন্মান ধুইরে 'বেমন তেমন চাকরী বি-ভাত' বলে মামূলী সংসার ধর্মের থাতাকলে পিষ্ট হওরা পোবাবে না। স্মতরাং ব্যবদাই কিছু করতে হবে, এবং তার জন্তে বাড়ী বিক্রিও করতেই চবে।

মন দ্বির করে বাড়ী বেচে কেললুম,—এবং কোটের inside পকেটে নগদ ১৮৫০ ১ টাকা নিয়ে হেটে কাশীপুর সাবরেছেই। অকিস থেকে বাগবাজারে এসে ট্রামে ভ্যালছাউদী কোয়ারে টাটা ব্যাক্তে পুলিনের কাছে এসে ব্যাক্তে টাকা জমা দিলুম। সে ১১২০ সালের কথা,—ভখন টাটা এবং কার্ণনি ব্যাক্ত নতুন হরেছে, এবং পুলিন এলাহাবাদ ব্যাক্ত থেকে টাটা ব্যাক্তে Passing officer হরে এনেছে।

পূলিন অকিসে বলে অতি সন্তৰ্গণে কিছু কিছু share কোনোৱা করতো। সে প্রামর্শ দিলে,—আমি যদি share market a বাতায়াত ত্বি এবং তাকে information এনে দিট.

ভারতে ছ'কনে মিলে কিছু বাবদা করা বেভে পারে। ভরত্যারে ভার সক্ষে কিছু দিন অলবল্ল shareএর বাবদা করসুম, এবং লাভ লোকদান হেরকের করে টারে টারে টাকা বজার রেখে ভারই প্রামর্থে কেটে গডলুম।

গোদে বলে, বাড়ী গেলে আবার বাড়ী হওর। শক্ত । মাধা পৌজাব টাট থাকা চাই। জ্বতনাং বরাহনগর কৃতিঘাটার কাছে এক বাড়ী এবং সিঁথিতে সাতপ্ত্বের বাগানের পিছনে কিছু জমি কিনলুম। বাকী টাকার কিছু ছোট বোকানদারী ব্যব্যা করাই ছিন ক্বলুম। প্রসা নিই ক্ষে ব্যব্যা শিথকে হবে,—জ্বতবাং ছিল-দ্বাকী চলবে না। তেবে ডিজে ভাষবাকারে আম্বর্থ মন্ত্রিকের চক্ষে বাজার ওপর একখানা ঘর খালি পোরে ভাড়া করে ফেললুম। ভ্রমণ টালায় থাকি।

ষ্বাগনগরের বাচী ঘেরামত করে নিলাবে কিছু ফার্লিচার কিলে

যব সাভিয়ে ডুগড়িসুর। নিলাবে বাওয়ার নেশা হয়েছে,—কিছ

যবের কিছু মাল না বেচে ফেলতে পারলে আর কিছু কেনা

চলে না—এই চরেডিল অবছা।

শান্তিপুৰের করেকজন শ্রেষ্ঠ কারিগর তাঁতীর সঙ্গে আলাপ হবেছিল—ভারা পরামর্শ দিরেছিল শান্তিপুরের কাপড়ের ব্যবসা করাব। প্রথমে ঠিক করপুম ভাই করবো। করেকশো টাকার লামী ধৃত্তি শান্তী এবং চালরও কিনে কেলপুম। কিন্তু কাপড়গুলো ছজন জুবাচোবে কাঁক করে দিলে।

একদিন বান্তার এক বেকার জন্তলোক সাহাব্য ভিন্না চাইলে,—
ছেলে যেরে নিরে আনাহার চলছে। একটি নিকি দিরে নাম-ঠিকানা
ছেনে নিলুম এবং তৃ-একদিন পরে আমার ঠিকানার দেখা করতে
বলে দিলুম। ভার ঠিকানার খোঁজ নিরে দেখলুম—পাকপাড়ার
এক বন্তির একটা খোলার বাড়ীর ভাড়াটে—বা বা বলেছিল
সব সন্তিই।

স্থাত বাং ছদিন পরে দে বধন জামার কাছে এল,—একটা নজুন চারড়াব স্টাকেল ভবে ভাকে একগালা দামী কাপড় দিরে বলে দিলুম—বড় বড় বাড়ী দেখে ঘূরে বদি রোজ একথানা কাপড়ও বেচে জাসতে পারো, ভাচলে এমন কমিশন দোব, বাতে ভোমার চলে বার। সে ভাক্ত ভবে পারের ধূলো নিয়ে বিদার হল।

কিছ সেই প্রথম দিন বে গৈল, আর তার দেখা পেলুম না,— কোনো বকমেই ধরতে পারলুম না। তার বাড়ীতে গিরে থোঁজ নিই—ভনি সে কয়েক দিন অন্তর এদে কিছু ধরচপত্র দিয়েই আবার চলে বার। মনকে প্রবোধ দিশুম,—ব্যবসার বাই হোক, কাজ তো কিছু হল!

বাকি কাপছের বেশীর ভাগ ধারে কিমলে টালার কণী রুণুজ্যের ছোট আই পাগলা— মামানের ছেলেবেলার একজন থেলার সাধী। বিক্রী তো হল.—কামটা না হর পেতে একটু দেরীই হবে। কিছ কিছুতেই একটা প্রসা আলার করতে পারপুম না। লুভোর বলে কথাটা মন থেকে বেডে কেলপুম। ভতদিনে ব্যবসার আর একটা নতুন ক্র পেরেছি। সে কথা পরে বলছি।

ধশ্যিক কংগ্রেস থেকে একটা অন্তসন্ধান কমিটী তৈতী হল। পাঞ্জাবে সরকারী অভ্যাচার সহক্ষে ভদন্তের জন্তে। ভাদের বিপোর্টও বেছলো। ১১২০ সাল শেব হবে আসছে। সেপ্টেম্বরে কলকাভার কংপ্ৰেদের এক বিলেব অধিবেশন হল। আমেবিকা থেকে সঞ্চ অভাগত লালা লাজণং বায় হলেন সভাপতি।

কংগ্রেসের মৃদপ্রকার হল মহাস্থা পান্ধীর অহিংম অসহবোগ।
উ-ছগু পাঞ্জার ও বিশাক্ত সংক্রান্ত অভারের প্রতিকার। বিলাক্ত
আন্দোলনে মুনলমানেরা পাছে হিংসার পথ অবলয়ন করে,
ভাই মহাস্থা গান্ধী ভালের কংগ্রেসের ব্যর্থন ও সহবোগিভার
প্রতিশ্রুতি হিরে হলে টেনে নিয়ে অহিংস অসহবোগ আলোলনটাকে
হিল্-মুসলমানের র্মাবেড আলোলনে গ্রিণ্ড করার ব্যবস্থা
করলের।

বালোর নেভারা যুল-প্রভাবের নালোরনী প্রভাব করে পরাক্ষের বারীটাও পুড়ে বিজে চাইলেন। কারণ পরাক না হলে কার অভারেরই পারী প্রতিকার হবে না। গারীকী এটা যেনে নিলেন।

প্রকার প্রমানে তুল-কলেজ, আনাগত ব্যক্ত করতে লবে, বিলাতী কাপড় বর্জন করতে হবে, জাতীয় বিভাগের প্রতিষ্ঠা করতে হবে, সালিশী আনালত করে যামলার নিশ্পতির ব্যবস্থা করতে হবে, চরকার প্রচলন করে থক্ষর উৎপাদন করে ব্যৱসম্ভার স্থাবান করতে হবে, হিন্দু-মুস্পমান গ্রক্ত করতে হবে।

মহাত্মা বদদেন, এই কাৰ্যক্রম একটা বছর বীভিমত ভাবে চালাতে পারলেই অরাজ হবে বাবে। কিন্তু তার জন্তে কংগ্রেমের নতুন গঠনতছ্র তৈরী করে কংগ্রেমের পান-প্রতিষ্ঠানে পরিণত করতে হবে এবং কংগ্রেমের আদর্শেরও পরিবর্তন (creed change) করতে হবে। স্থির হল এছটো ব্যবস্থা ডিনেম্বরে নাগপুরে সাধারণ অধিবেশনে করা হবে।

একটা বড় আন্দোলন আসছে বোঝা গেল, কিন্ত স্বরাজ-মরাজ বাই হোক, স্বাধীনতা বে অহিসেপহার হতে পারে না, এ বিবরে কোন সন্দেধ থাকতে পারে না। কিন্তু সরকারবিরোধী একটা দেশজোড়া লড়াই তো বটে! দেখা বাক—

আলামান থেকে স্ত-প্রত্যাগত শচীন সান্ধাল ছিলেন কলকাতা কংগ্রেস ভলান্টিরারদের ক্যান্টেন। মহারাষ্ট্রীয় ডেলিগেটরা ভলান্টিরারদের মেবেছিল, তিনি থামাতে গিরেছিলেন, এবং তাঁর মাথারও তারা লাঠিব বাড়ি মেবে মাথা ফাটিরে নিরেছিল। ভলান্টিরাররা পান্টা মার নিতে চেরেছিল, কিন্ত ভানের থামানো হয়েছিল এই বলে বে, বদি মারতে হয়, তাহলে নাগপুর কংগ্রেদে গিরে মারবো।

ভখন নৰবিধান আক্ষমশিবের পিছনে (মেছোবাজার ট্রীট) বোধ হর পূলিন দাস থাকতেন। স্টান বাবুও বোধ হর সেইথানেই উঠেছিলেন। আমি ঠিকানা নিবে সেথানে গিরে ভার সংক্ষেত্রাণ করে একুম।

২০ সালের আগষ্ট মাসে সভুম শাসন সংখ্যর (মটেও চেমসকার্ড) বোবিত হরেছে। বিপ্লবীরা মুক্ত হরেছেন। বিপ্লবীরাতের ভরক থেকে সাজপং রারকে ইন্ডিরান আাসোসিরেশন হলে সম্বৃত্তিত করা হল। সেই সভার বসন্ত মজুমদার সর্বপ্রথম বৌদিকে (হেমপ্রভা মজুমদার) প্রকাশ সভার হাজির করলেন। বৌদি কিন্তু একগলা বোমটা দিরেই বসে থাকলেন, কোলে শিক্ত, বোধ হর স্থাল। স্বরেন বোব (মধুদা), নরেশ চৌধুবী প্রভৃতির সজে আলাণ হল।

আমি কংগ্রেদের ভিজিউারের টিকিট কিনেছিলুয়। বেথে ন্বেল্লা বললেন, কেন ? ঐ দশ টাকাডেই ভো ভেলিগেটের টিটেট পাওবা বেড—চাইলেই দিত। এই ছিল ভথনকার কংগ্রেদে। পঠনভাত্তিক বাবস্থা। বে কেন্নই ডেলিগেট হতে পারভো ভবু ডেলিগেটের নাম ঠিকানা খাডার লেখা খাকভো।

এই সময় জীবনও কেল থেকে যুক্ত হবে এল, টালায় ভার হামাব বাজীতে উঠলো। ওদিকে যাথার দেশের (নড়িরা, কবিলগুর) দোকগোপাল ভটাচার্ব (জ্ঞান-বিজ্ঞানের বর্তমান সম্পাদক, বোষ ইনইটিট্টের অক্সরম বৈজ্ঞানিক গবেষক, পরিমল গোলামীর "খুভিকথার" গোপালদা") কলকাভার এলে ঐথানেই উঠেছেন ভাগা আহমণে। আসাব পরে করেকদিনের মধ্যেই কানীপুরে হালী স্থাগাদের কর্মটিতে টেলিফোন সার্কের কাল জুটিরে নিরেছেন।

ভাবনের মাবকং আলাপ হল। নির্ভেশন বভাঙিক চ্টিড্রার পরিচর পেরে বেশ ভাল লাগলো এবং ছ'-চার বিবেই বন্ধুত্ব ভবে উঠলো। বিজ্ঞান ও কারিগরীবিভার কিকে তাঁর হিল আনাবাল বোঁক, এবং প্রামে থেকেই বৈজ্ঞানিক ও কারিগরী সংক্রাভ্ত পুঁথিণজের সাহাব্যে ও ঐকাভিক নিষ্ঠা ও অধ্যবসারের বলে তিনি হরে উঠিছিলেন বেশ একজন ছোট থাটো বৈজ্ঞানিক ও বন্ধবিদ। কীটণতক বিশেষত মাকডসাগোঠীর আচার ব্যবহার ও নানা অভ্তত কাওকারধানা সম্বন্ধে তাঁর পর্যবেক্ষণের কলাকল সম্পর্কে তিনি প্রবাসতিও করতেন।

আমি ব্যবসা করতে নেমেছি,—পদক্ষেপ নেহাৎ কম হ্রনি,—
কিছ কল এপর্বস্ত হয়েছে অপ্রগতির বদলে যুবপাকমাত্র—ভানে তিনি
বললেন—কলকাতার ঘড়ির কাজ প্রচুর—বলি ঘড়ি মেরামতের
দোকান করেন, আমি সকালে-বিকালে গিয়ে বসতে পারি।
—লামিও কাজ করবো, আপনি শিখে নিতেও পারবেন। উৎসাহের
চোটে ভাই স্থির করে ফেললুম।

নিলাম খেকে আলমারী-দোকেস কিনলুম, রাধাবাজার খেকে, একসেট বছও নিলুম। এক সাইন বোর্ড বানিছে কেললুম, গোপাস বাবু পরামর্শ দিলেন, রং ও ভূলি কিনে দিলে ভিনি সাইন বোর্ড লিখে দেবেন। সেই ব্যবস্থাই হল।

প্রথম দিন তাঁর সঙ্গে হাত লাগিরে বোর্ডটার ক্ষমি রং করা হল। পরদিন সকালে তিনি খড়ির দাগ দিরে নাম লিখে নাম হল B. Narayan & Co.)—প্রথম অক্ষরটার রং দিরে অফিলে চলে গেলেন—এবং বিকালে এসে দেখলেন, আমি লেখা সম্পূর্ণ করে কেলেছি—স্নানাহার হয়নি। এলেম এবং অধ্যবসার দেখে তিনি থব তাবিফ করে বললেন,—স্বদেশী হালামা ছেড়ে এই সব ব্যবহাবিক কাজের পথ ধরলে আমি থ্ব কাজের লোক হতে পারি।

লোকেব বাড়ী বাড়ী ঘূরে জনেকগুলো নানাবক্ষের ছোট বড় বিষ্কু ঘড়িও বোগাড় করে ফেসলুম। কিন্ত হঠাৎ সমগ্র পরিস্থিতি সেল বলসে— ঘড়ির দোকান হল না।

বিপ্লবা নেতা পূলিন দাস গোপাল বাব্য দেশেব লোক। আচার্য দ্বানীৰ বস্থ উাকে অর্থ সাহাব্য করার উদ্দেক্তে ব্যবস্থা করেছেন, প্রচাচ বৈকালে পুলিন বাবু বোস ইনটিটিউটের ক্যাঁদের একটু করে লাটি খেলা দেখাবেন--প্ৰেয়ফলের ওপরও জার ভ্তুম, সকলকেই বিকালে একবার লাঠি নিয়ে মাঠে নামতে হবে।

পোপাল বাবু সেখানে গিয়ে পুলিন বাবুর সঙ্গে দেখা করে, তাঁর সালাবো Laboratory Assistant এর এক চাকরী জোগাড় করে কেললেন। তাঁর আর লোকানে বসা সভব হল না। পৃজ্ঞার বলে বাড়ী থেকে কিছু কার্বিচার নিছে লোকানে ভূললুম—এই ব্যবহাই করবো। ভালীজায়াইকে বসালুম লোকানে।

ইভিমধ্যে এনে পড়লো নাগগুর কংগ্রেষ। মনটা চকল করে উঠেছে। গোলুম ডেলিগেট হরে। জন পঞ্চাথেক বাছা বাছা ডেলিগেট চললেন, হাজে এক একটা মহবুত ছোট লাঠি। সেধানে মাবাঠিকে সঙ্গে বাড়াও হল, ভাকের বীতিম্বত মাব কেওচাও হলক্ষ্ম কলকভাৱ জবাব কেওবা হল।

ম'পশ্ব কংপ্রেসে ছটো বড় বড় ব্ল কাজ হল,—(১) কংপ্রেসের আন্তর্শের (creed) প্রিবর্তন,—আর (২) মড়ুন গঠনতন্ত্র। ব্যবছা হল,—কংগ্রেসের আন্তর্শনের সই দিলে এবং বাৎস্বিদ্ধার আন। চাদা দিলে বে-কেন্ট্ট কংপ্রেসের সভ্য হতে পারবে। এই ভাবে কংপ্রেস হবে সারাভারতব্যাপী জনসংগঠন। বিভাবিত ভাবে গঠনতন্ত্র রচনার জন্তে কমিটি তৈরী হল।

আর,—কংগ্রেসের creed আগে ছিল—"Attainment of Self Government within British Empire by Constitutional means." পরিবর্তন প্রভাবিত হল—"Attainment of Swaraj by peaceful and Legitimate means." আপত্তি করলেন ছজন নেত!—বিপিন পাল ও জিরা। বিশিন পাল বললেন,—"এতে সরকার কংগ্রেসকে বেজাইনী করে দেবে—আমাদের সর্বনাশ হবে।"

মহাস্থা জবাব দিলেন,—"এই বে-আইনী করার ভয়টা ভূল, এতে বে-আইনী কিছু নেই। আমরা বৃটিশ সাম্রণজ্ঞার মধ্যে থাকবোকি না,—সেটা একটা থোলা প্রাশ্ন থাক—তার মীমাংসা নির্ভর কঞ্চক সরকারের ব্যবহারের ওপর।"

জিল্পা বললেন "within British Empire" কথাটো তুলে দাও, কতি নেই,—কিন্তু তার ছলে লিখে দেওরা হোক, "বৃটিশ সাত্রাজ্যের বহিন্তুত স্বরাজ—কারণ তা না হলে কর্মীয়া ও জনসাধারণ দিশেহারা হবে,—কেন্ড "within," কেন্ড "without" মনে করে কান্ধ করবে,—কাজে গওগোল ও বিশুখলা হবে। সরকার বে-আইনী বোবণা করে তো, আমরাও তার উপবৃক্ত জবাব দেওরার ব্যবস্থা করবো।"

মহাস্থা জবাব দিলেন, "আমরা বে বুটিশ সাত্রাচ্চ্যের বাইরেই বেকে চাই, একথাই কি ঠিক ? একথা ঠিক করার সময় এখনো আসেনি—বধন স্বরাজ হবে, তথন জনগণ সেটা ঠিক করবে।" —প্রস্তাব পাশ হরে গেল।

কিবে এসে দেখি, দোকানের চেহারা বেমন ছিল, অবিকল ভেমনি-আছে। ফার্লিচারের ব্যবসারে আমার পাণ্ডিত্য নিলাম চেনা পর্যান্ত, ভাষীকামাই তভোবিক পণ্ডিত—ভিনি নিলামণ্ড চেনে না।

দোকানের পিছনে চকের মধ্যে ছটো বড় বড় ডেক্টের-এর ব্যবসা ছিল। দেখতে দেখতে মনে হল-এই ব্যবসাটা বেল। একদিন দ্বির করে কেলনুম-এই ব্যবসাই করতে হবে। ক্রিম্ম:।

শীতের

পড়ন্ত

त्वाश

माधवी छह्नागर्या

্রিক্সন ভদ্রলোক। এক্সন ভদ্রমনিলা।

ভ্রমহিলার বরস অন্ত্রমান করে বলা বার ভিবিশ থেকে পরিজিপের মধ্যে। চেহারাটা কীপ, ক্লক—বভাববিক্লম সংব্যের টানে জীলা। গাল ছটো বসা। চোহালের হাড় বেরিয়ে পড়েছে। বঙটা মরলার বার বেঁলে গেছে। চেহারার বার্নী বলতে কোথাও কিছু নেই—সমন্তটাই প্লথ, চিলে-ঢালা। চোথের দৃষ্টিটা এমনিডে মনে হবে উলাস, কিছু একটু নিরীক্ষণেই বরা পড়বে সে দৃষ্টিতে রয়েছে বালা—একটা সর্বগ্রাসী কুবার আলা।

জন্তলোকটির বরস অন্ত্রমান-সাংশক্ষ মর। কেম না, সৌম্য, প্রশাস্ত মুখখানার দিকে এক নজর ভাকিরেই বলে দেওরা বার জন্তলোক এই সবে পঞ্চাশের কোঠার পা দিরেছেন।

মহিণাটি বদে আছেন। সামনে চাষের পেরালা। পেরালার চা পেরালাতেই জুড়িরে বাছে। মহিলা বদে আছেন। বদে আছেন টেবিলের ওপর কুম্ই-এর ভর দিরে বাঁ হাতথানা গালের ওপর রেথে। দৃষ্টি মেলে দিয়েছেন ফানালা পার করে অনেক দূরে।

দরকার সামনে বসে আছেন ওল্লোক। তাঁর সামনেও এক পেরালা চা। ধীরে ধীরে সেই চা তিনি আহেস করে পান করে বাচ্ছেন। স্বাংগে একটা আমেজী ভাব।

মধ্য প্রদেশের পাহাড় আর জঙ্গল দিরে বেরা ছোট একটি সহর, আর দেই সহবের উপকঠে একটি নির্জন সরাইখানা। সরাইখানার মালিক এক বৃদ্ধ গড়জাতি রাজপুত। মেরে তার ক্ষলিণী। মা-মরা মেরে। বাপের আদরে, পাহাড় আর জঙ্গলের পরিবেশে বড় হোরে উঠেছে। যেথন পাহাড়ী, তেমনি বক্ত।

ভদ্রগোণটির নাম ঋমির বাবু—ঋমিরকুমার খোব। উড়িব্যার কোন এক জেগায় বাড়ী। জমি জরীপ সংক্রান্ত কাল নিয়ে এথানে এসেছেন। ঋান্তানা নিয়েছেন এই সরাইখানাটিতে।

ভরমহিলাটি সরকারী গ্রামোল্লয়ন পরিকলনার কান্ধ নিরে এসেছেন। মাধা ওঁজবার দিতীর ঠাই না ধাকার, তাঁকেও এইখানেই অস্থায়ী ভেরা বাঁধতে হোরেছে। ভল্তমহিলার নাম মণিকা ওপ্ত।

শীতের এক পড়স্ত বেলা। সেই পড়স্ত বেলার আধো-শছকার স্বাইধানার নির্জন এক কক্ষে প্রার পাশাপাশিই বসে বরেছেন বাব্ শমিরকুমার খোব—পঞ্চাশের কোলখোঁসা এক প্রোচ, এবং কুমারী মণিকা গুপু, বি, এ—জীবনের ভিরিশটি বসম্ভবে শহুড: বিনি অসীম গুগান্তে উপেক্ষা করে এসেছেন।

শমির বাবু আরেস করে চা পান কোরছেন আর আড়চোথে লক্ষ্য কোরছেন মণিকা দেবীর হাব-ভাব।

শনেকটা সমর কেটে পেল। শমির বাব্র চা-পান পর্ব শেব হোস। নির্কন ব্রের সভ্কার আর একটু ব্নীভূত হোরে এল। वेनिका त्रवीत आत्कन ताहै। जिनि वाहेत्वत गृथियी है कार्य कर तर्थ निष्कत।

এক সময় অমিয় বাবু উঠে গাঁড়ালেন। শব্দ কৰে দেশলাই আলিয়ে সিগারেট ধরালেন। বুধা, মণিকা দেবীর স্পাদন নেই। অমিয় বাবু আর থাকতে পারলেন না। কঠবৰ এক পদা ওপরে ভূলেই বললেন: আপনার চা কুড়িয়ে গেল মিস ওও!

চমক নর। দীর্ঘাস। প্রকাশু একটা দীর্ঘাস ফেলে মণিকা দেবী বাইবের দৃষ্টিটাকে শুটিরে নিরে চারের পেরালার কেন্দ্রীভূত কোরলেন। মুখ দিরে শুধু অস্টু কাওয়াক বেকলো ধ্রুবাদ।

বৃষ্টি নামলো। পাহাড়ী বৃষ্টি। অমির বাবু কথা জমাবার জন্তে বোললেনঃ এ সময় এখানে বৃষ্টি হয়, জানা ছিল না তো ?

অপর পক্ষে নীরব। বাইবের অজন্ত বৃষ্টিধারার মধ্যে চোথের দৃষ্টি আবার কোথায় গিরে কারিবেছে !

ববে চুকলো . রুক্মিণী। গড়জাতের পাচাড়ী বালপুতানী মেরে—তার সভেবো বছরের বৌবনকে দপ্দিনির হাতের জাবিকেন লঠনটাকে উঁচিয়ে একবার দেখে নিলে ঘরের পরিবেশ, তারপর ইাটুর একটু নীচে পর্যন্ত নামা ঘাঘবটো ঝলমলিবে সোজা জমির বাবুর টেবিলের সামনে গিরে এক কাপ চা ঠক করে নারিবে দিরে বোললে: এই নাও বাবুজী, ভোমার চা।

প্রদল্প হাত্যে অমিয় বাব চঞ্চল হোরে উঠলেন।

—বা:, বা:, বা:, ভাই ভো বলি, কুক্মিণী নইলে মনের কথা ভার এমন করে কে বুকবে।

চারের কাপে চুমুক দিয়ে বললেন: এই জঙ্গলে তোমার মতো একটি মেয়ের দেখা বে পাবো কুক্মিণী, এ কি আমি কখনো ক্লনাতেও আনতে পেরেছিলাম?

—নসীৰ ভাহলে ভোমার ভালই বল বাবুজী <u>!</u>

ছেলে হেলে মূৰিকার দিকে একবার কটাক্ষ করে কথাটা বদলে কুক্মিণী।

—হাঁ। সে কথা আৰু বলতে ? অৰ্থপূৰ্ণ হাসি হেসে ৬ঠেন অমির বাবু।

হঠাৎ এই সময় মণিকা দেবী চেয়ারটা সশব্দে পেছন দিকে ঠেলে, উঠে গাঁড়িয়ে গট গট করে খর খেকে বেরিয়ে গেলেন।

মণিকা দেবীর এই চলে বাওয়াটা এমনট বেধাপ্লা আর বেরগড়া ধরণের বে, অমির বাবুকে রীতিমত অপ্রতিত হতে হল। বিভ ধিল-ধিল করে হেসে উঠলো ফুক্মিণী। তাবপর এক সময় বললে: বাবুলী ও বাইটো ভাল নয়। ও একটা টড়াই।

— টঁড়াই ? টঁড়াই কি ব্যাপার কক্মিণী! অমিয় বাবু সহল হবার অভে হেসে ফেলেন।

— তুমি হাসছ বাবুজী ! তুমি জানো না টাঁড়াই কি জিনিব !
চোধ-মুখ বৃরিয়ে রুক্মিণী বলতে থাকে : টাঁড়াই কাদের বলে জানো !
টাঁড়াই বলে দেই মেয়ে মান্ন্যদের— বারা বস্তব-মস্তর জানে । পুরুষ
মান্ন্য দেখলেই বাদের জিও লক্ লক্ করে ওঠে । অন্ধ্বার ছাড়া
বারা জালোতে বেরোতে চার না । বেরোলেও— হাদের এবমার
গস্তব্য স্থান শুনু শানু শাদান ।

—বটে ! তা' হোলে তো খুবই ভারের কথা ! অমির বাবু কৌতুক ছলে বলেন।

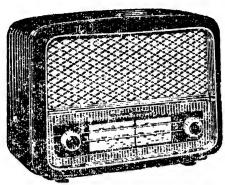
—ভয়ের কথাই তো। মাধা ঝাঁকিয়ে বলে কক্মিণী: ^{তুরি} সাবধান।



उपिएं अका कार्य प्रकार द्राप

কাজে সেরা ও দামে স্থবিধে ব'লেই ক্যাশনাল-একো রেডিও এবং ক্লিয়ারটোনের জিনিস বিখ্যাত। আর তা-ও এত বিভিন্ন রক্ষের পাওয়া যায় যে আপনার যেমনটি চাই বেছে নিতে পারবেন।

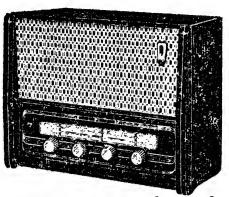
ন্যাশনাল একা



ছাশনাল-একো রেডিও মডেন ইউ-৭১৭-এসি/ ডিসি; ৫ ভালভ, ৩ ব্যাণ্ড, ছাশনাল-একোর বড় সেটের মত অনেক বিবি-ব্যবস্থা এতে আছে। মনস্বাইজ্ড

Œ

ৰেডিও



ছ্যাশনাল-একো মডেল ৭২২-এসি অথবা এসি/ ডিসি; ৬ ভালভ, ৩ ব্যাণ্ড; খুব ভাল কাজ দেয়; এই ধরণের রেডিওর মধ্যে সেরা। মনহনাইজড্

Weerlove क्रियाता होन वाठि ३ व्यनगाना मतक्षाप्त

ক্রিয়ারটোন বৈহাতিক ওয়াটার হীটার— কল ঘুরালেই পরম জল পাওয়া যায়: ৫ থেকে ১৮ গালেন কল ধরে

ক্রিয়ারটোন বাতি, ফুরেসেণ্ট টিউব এবং ফিব্রু চার-পরিধার ঝকথকে আলো অথচ বরচ কম পড়ে ক্রিয়ারটোন সিংক্রোনাস বৈছ্যাতিক দেওয়াল ঘড়ি— অসাধারণ নির্ভরবোগ্য। ৭ রকম সাইজে এবং সুক্রর ফলর রঙে পাওয়া যায়

ক্রিয়ারটোন ঘরোয়া ইন্তি— ওজন • পাউও; ২০০ ভোণ্ট— ৪০০ ওয়াট : খুব পুরু জোবিয়ান কলাই করা



ক্লিয়ারটোন
কৃকিং রেঞ্জ—
ছটো প্লেট দেওলা
উন্ন, প্রত্যেকটির
আনাদা নিচমণ
বাবরা আছে।
শক্তি ৭,০০০ ওয়াট পর্যন্ত



ক্লিয়ারটোন বৈছ্যতিক কেট্লি — ক্লোমিয়াম কলাই করা; ত পাইট জল ধরে; ২৩- ভোন্ট—==• ওয়াট



জেনারেল রেডিও আণ্ড আপ্লায়েনেজ প্রাইডেট লিমিটেড ৩ মাডান খ্রীট, কলিকাতা ১৩ • অপেরা হাউস, বোখাই • • ফ্রেকার বোড, গাটনা ১/১৮ মউট রোড, মাহাজ • ৬৬/৭৯ সিলভার জুবিলী পার্ক রোড, বাজালোর বোগবিয়াৰ কলোদি, টাবনি চক, বিলী • বাষ্ট্রপতি রোড, সেকেন্দ্রবাবার --- (कन, जायात छवड़ी किरमेरे हैं

—বা: তর তো তোমাকে মিরেই। তুমি বে প্রথ মাছব— মরদ।

হ সতে গিরেও হাসতে পারেম মা ডপ্রলোক—সংকৃচিত হোরে পড়েন। অভাতীয়া মহিলা সফোন্ত আলোচনাটার এইবানেই ইভিটানবার ইছে নিরে তাড়াতাড়ি বলেন: আত্তই তোমাদের দেশে এসে পৌছুলাম ফক্মিণী—কিছ দেশ কি বৃষ্টি। একটু বে বাইরে বেরিরে চারিদিক মুরে-ফিরে দেশবো—তার উপার নেই। ফক্মিণী অন্তর দিয়ে বলে: এ বর্ষায় ভর পারার কিছু নেই বাবৃত্তী! পাহাড় দেশের মেষ—ও এখুনি সাফ হোরে বাবে!

— বাক্ বাঁচা গেল। উঠে গাঁড়িরে বলেন অমির বাবু: তা কোন দিকে বাঙরা বার বলো তো কক্মিণী। জংলী জারগা। বাজা-ঘাটও চিনি না। কোধা থেকে কোথার গিরে পঞ্বো। শেবটা হয়তে। বাবের মুখেই প্রাণটা বাবে।

বাইবের দিকে কানটা খাড়া করে কি একটা শোনবার চেটা করে কুক্মিণী, তারপর বলে: তুমি একটু গাড়াও বাবুজী, আমি আস্তি: আমি তোমার সঙ্গে বাবো।

— সে কি । তুমি কোধার মাবে জামার সঙ্গে ? বিশ্বিত কঠে। জমির বাবু প্রশ্ন করেন।

দরজা পর্যন্ত এগিরে গিহেছিল ফুক্মিণী। সেধান খেকেই ঘুরে দাঁড়িয়ে বলে: বাবোই তো। পাহাড়-জঙ্গল দেশ। জন্ত-জানোয়ারের ভয় তো আছেই, আর আছে টুড়াই। একলা মরদ কি এমনি এমনি ছেড়ে দিকে আছে ?

খিল্-খিল্ করে জার এক ঝলক হেসে ছুটে মেয়েটা ঘর থেকে বেরিরে গেল। বিশ্বর হতথানি, তার থেকে জনেক বেশী পূলকে নির্দ্ধন ঘরের মধ্যে জমির বাবু লিউরে ভিউতে লাগলেন।

পাহাড়ী বাত। আকাশে মেবের চিহ্নমাত্র নেই। সিগ্ধ জ্যোৎসায় মাঠ, বন, পাহাড় ভবে সেছে। চারিদিকে একটা নিরবচ্ছির সৌক্রালোক।

অমির বাবু (২টে চলেছেন। পালে ফক্মিণী। ফক্মিণী এক নাগাড়ে বকে চলেছে। অমির বাবু তবু বাড় নেড়ে সার দিরে বাছেন। মাবে মাবে এক-আবধানা প্রশ্ন কোরছেন। ফক্মিণী বোঝাছে: এই বে এখন আমর। বে ভারগাটা দিরে হেঁটে বাছি বাবুলী, এটা হোছে ভার্কের আন্তানা। এখন অবগ্র ভরের কিছু নেই. কেন না ভাল্ক এখন শিকাবের থোঁজে বেরিরেছে। ফিরবে সেই ভোবের দিকে।

অধির বাব্ব মুখের দিকে একবার তাকিরে নিরে বলে:
আর এর মধ্যে যদি কিরেই—তাতেই বা কি! আমরা তো
আর ওর কোন কতি কোরতে বাচ্ছি না। ওই বা তথু তরু
আমাদের কেন কতি কোরতে আসবে, না বাবজী!

—- গা। অঞ্চনক ভাবে অমির বাবু উত্তর দেন।

ক্ৰমণী বলে চলে: বুৰলে বাব্দী, ভালুক হোছে সৰ থেকে শান্ত জানোৱাব। ওব ডেবাব ওপৰ গিৱে হাম্লা না কোবলে, ও কাউকে কিছু বলে না। আছো বাব্দী, ভূষি ভাষ্ক কেৰেছে। ? জাচমকা অমির বাবুঁব চোৰে চোৰ বেৰে প্রয়টা করে কর্মিণী।

চাকবী-জীবনের অবে কটাই কেটে গেছে বনে জগগে। অমির বাবু খাড় নেড়ে বলেন ঃ দেখেছি।

—লেখেছ ? সভ্যি দেখেছো বাবুজী ?

প্রশাস ধরণে এবার ছেলে কেলেন অমিয় বাবু। বলেন: হ্যা, সভ্যিই দেখেছি।

—আছা, কখনো সামনা-সামনি পড়েছ ?

আবার হেলে কেলেন আমির বাবু। বলেন: না। ভা' পড়িনি।

—পড়োনি ? সন্তিটে পড়োনি ? হঠাৎ এক বিচিত্র ধরণের কোঁতুকে ক্ক্মিণীর চোধ ছ'টো চক চক করে ওঠে। অমির বার্ব পথ আগলে ও রাস্তার মাঝধানে দাঁড়িরে পড়ে। অমির বার্ব বিভিত্ত হোরে ওব দিকে ভাকান। ক্ক্মিণী এক পা এগিরে আসে। বন হোরে মুধোমুখী দাঁড়ার। কণ্ঠস্বরকে নামিরে নিরে আসে নিধাদ অন্তল। বলে:—আল একটা ভালুক দেখবে বার্কী—পাহাড়ী জংলী ভালুক—একেবাবে সামনাসামনি।

চার পাশে একবার সচকিত সৃষ্টি নিক্ষেপ করেন আমির বার্। ভারপর বলেন ফিস্ ফিস্ কোরে: কই, কোধায় ?

শ্বিষ বাব্ব চোৰের দিকেই তাকিয়েছিল কক্মিণী। এবাবে ছিল্-ছিল্ করে হেসে ওঠে। তারপর সমন্ত শরীবে একটা হিল্লোল তুলে শ্বিষ বাব্ব একখানা হাতকে নিজের হাতের মধ্যে জড়িবে নিয়ে, ঢালু প্রভী বেরে ভবী কক্মিণী তব্ তর্করে এগিয়ে বেতে বেতে বলে: চলো, তোমাকে দেখিয়ে শ্বনি।

ভারী দেহটা নিয়ে বিজ্ঞান্ত শমিয় বাবু শগত্যাই অনুসরণ করেন।

পণ্টা কিছুদ্ব নেমেই একটা বালির চরে ঠেকে গেছে।
আর একটু নীচেই ছোট-বড় অজস্র পাধরের মারধান দিয়ে
পথ করে বরে বাওরা একটি শীর্ণ অসধারা। পাহাড়ী নদী
এবং তার বালুচর। অমির বাবুর হাত ধরে ফুক্মিনী ঠাঁকে
সেইধানে টেনে নিরে আসে। নিজে গড়িরে পড়ে ভেজা-:ভলা
নরম বালির চাদরে। হাত বাড়িরে পাশের জাহগাটা দেখিরে বলে:
এইথানে চুপটি করে বসে থাক বাবুজী! এখুনি ভালুক আসবে—
ভূমি দেখতে পাবে।

ক্ষ্মিণীর আক্ষিক বিচিত্র ব্যবহার প্রোচ্ন আমির বাবুব হিসেবের বাইবে। এতক্ষণ নির্বাক হোরেই তিনি ভিলেন। এবার বললেন: ভারুক না হর দেখবো কুক্মিণী, কিছ—হঠাৎ খতমত খেরে চুপ করে বান ভক্তলোক। এমন বিজী আর বেরাড়া ভাবে শুরে আছে মেরেটা!

আবার বিল-বিল করে হেলে ওঠে কক্মিণী। অমির বার্ব হাতের আঙলগুলো নিরে নাডাচাড়া কোরতে কোরতে বলে: কিছ কি, বলো না বাবুলী, কি বলছিলে?

চাদের আলো পড়েছে পাছাড়ী নদীর আলে। সেখানে এক বার্ণ বিকিমিকি। চাদের আলো পড়েছে পাছাড়ী মেরের চোখে। সে চোখেও অজস্র প্রতিবিশ্ব। কিছ অমির বাবু আর ওদিকে কি: তাকালেন না। সোলা নদীর ওপারে দৃষ্টি মেলে দিরে বলেন! না, এই বলছিলুম কি—ভিজে বালির ওপর ওবে পড়লে—ঠাণ্ডা ফাণ্ডা লেগে বেতে পারে তো ?

ভিজে । ভিজে কোধার দেখলে বাবুজী ! কী স্থলর আবে নরম বিছানা। তুমিও ওবে দেখো না বাবুজী! অমির বাবুর অ'ঙ্গগুণোকে মৃত্ আকর্ষণ করে কুক্মিণী।

—ভা: কৃক্মিণী! প্রগদভা মেয়েটাকে শাসন করবার টেটা করেন অমির বাবু।

—বোকো না বাবুলী! ভূমি বোকলে আমি কেঁলে ফেলবো। বোলেই পাশ ফিবে সবে এসে বাঁ হাতথানা দিয়ে অধিয় वावव এको। शेंहिरक अफ़िरह शरत सूर्यभाना वानित मश्य अंस्म मिन क्रक्मिनी।

পাহাড়ী রাভ আর পাহাড়ী নদী। সময়কে সঙ্গে করে প্রোভ ব্য়ে চলেছে একটানা শব্দের স্থাষ্ট করে, আর অসহ একটা নীরবভার টুনুগ চেন্তনা নিয়ে আড়েষ্ট হোয়ে বলে আছেন অমিয় বাবু।

ভা:, মেরেটার কি কাণ্ডাকাণ্ডি জ্ঞান নেই। পাখাড়ী বোলে কি শাসীনভার ছিটে-কোঁটাও অবশিষ্ঠ বাথতে নেই ?

নদীর ওপারে দৃষ্টি ঝাপসা। কুয়াস। জমতে কুকু কোরেছে। আকাশের মাথায় রয়েছে চাদ। সেই চালের দিকে হামাগুড়ি দিয়ে এগিয়ে আগছে একটা ঘন কালো মেঘ। ওটাকে দেখাছে একটা কেঁদো ভানুকের মভো।

অমির বাবু বিচলিভ হয়ে ওঠেন। আল্ভো ভাবে কৃক্মিণীর গারে নাড়া দিরে ডাকতে চেঠা করেন। আর ঠিক সেই মুহুর্তেই কাণ্ডটা ঘটে বার।

বিছাৎপতিতে উঠে বসে কক্ষিণী। ভূই হাতে অমিল বাবুৰ ৰঠ বেষ্টন করে সবলে ভাঁকে ধরে বুকের কাছে টেনে নিল। অস্ট বিচিত্র স্বরে কানে কানে বলে: বাবুজী, ভালুক-পাহাজী অংশী ভার্ক—শিকার খুঁজতে বেরিয়েছিল,—ভিন্দীর প্রেলী শিকার। সেই শিকার ওর মুখের সামনে এসে গেছে। তুমি বাধা দিও না বাবু**জী— ভ**ধু দেখে নাও— সামনাসামনি দেখে নাও।

সময় বুঝে মাধার ওপরের কেঁলো ভার্কটা প্রকাণ্ড একটা ধারা ক্ষমিয়ে বসলো চাঁদ মামার মুখে।

বিপর্যস্ত সময় গড়িয়ে চললো। গড়িয়ে চললো পাহাড়ী নদীর স্রোত—ভারুকের মতো কেঁলো কেঁলো পাথবের তলাকার মাটা ক্ষয়িয়ে, গলিয়ে, ঝাঁঝরা করে।

—সেদিন বাত্রে স্বাইখানার নির্ক্র খবে বসে অমিয় বাবু বধন মনে মনে আঞ্চকের সন্ধ্যার ঘটনাটা পর্বালোচনা করছেন—নি:শ্রন্থ খবে চ্কলো কুক্মিণী। বিভাস্ত অমিয় বাবু উঠে দাড়ালেন। কিছু একটা বোলভে বাবেন—কুক্মিণী ঠোটে আঙ্গুল ভুলে ইংগিতে তাঁকে নীরব করে দিলে। ভার পর নি:শব্দে দরজাটা ভেডর থেকে বন্ধ করে मित्त, हिवित्मय उभव वांचा आदित्कन-क्ष्रेनिरिक शक मित्र निवित्त, অমিয় বাব্র বুকের কাছ খেঁসে এসে দাঁড়ালো। অমিয় বাবু বোৰা হয়ে গেছেন। তাঁর কিছু বলবারও নেই, করবারও নেই। অভাধিক সায়ুপীড়নে ইতিমধ্যেই ভিনি ক্লান্ত, অবসন্ধ—কিন্তু বক্তের স্বাঞ্চ পেয়েছে বছব্যাত্রী—সে তাঁকে রেহাই দেবে কেন ? তু হাতে অমির বাবুৰ গলাটা অড়িয়ে ধৰলো কুক্মিণী।



^{ে আট্ৰ}স শিশি কাৰ্টন সমেত ও ১০ আউন শিশি কাটন ছাড়া

পাওর। ধায়।

BHRIN-IA /59

पिं • क्यानका**ं। कि**मिक्यान कांः निः , कनिकाडा-२>

জমির বাবুর ধরের দবজা খুলে রুক্মিণী ধণন বেরিরে এল, মনে হোল একটা ছারাম্তি বেন হন্ হন কোরে বাবানদার ওপাশের জন্ধার কোনের দিকে গিয়ে জনুগু হোরে গেল।

ক্লক্মিণীর পেছনে অমিয় বাবুও বাইবে বেরিয়ে এসেছিলেন। ফিসফিসিয়ে ভীক্সলায় বোললেন: নিশ্চয়ই কেউ ভোমাকে এ খরে ছুক্বার সময় দেখেছে।

কে আবাব। ওই ট'ড়াই আউরবাৎটা হবে। চাপা কঠে বাজ্যের বিষেষ আর সুণা সুটিয়ে নিজের মরের দিকে রুক্মিণী পা বাড়ালো।

মণিকা গুপ্ত নামে একটি বালালী মহিলা বে এই সহতে তাঁর সজে একই ছা:দব নীচে বাস কোবছে—এ কথা অমির বাবু বেন ভূলেই গিয়েছিলেন। কক্মিণীই তাঁকে সর্বন্ধণ দখল করে আছে। অন্য দিকে তাকাবার তাঁর ফুরসংই নেই।

সেদিন সন্ধায় একটু আগে অমির বাবু নদীর ধাবে পায়চারী কোরে বেড়াছেন, হঠাৎ পেছন কিরতেই নম্বরে পড়লো—চালু পথটা বেয়ে তর তর কোরে নেমে আসছেন মিকা দেবী। বিশ্বিত অমির বাবু হাত উঠিয়ে নমন্ধার কোরতে যাবেন, আক্মিক ভাবেই পাশের এইটা পারে-চঙ্গা পথের দিকে বাঁক নিয়ে জঙ্গলের মধ্যে অদুভা হোরে গেলেন মণিকা দেবী।

পবের দিন তুপুরেই কিছু মণিকা দেবীর আবির্ভাব—আব কোধাও নম্ব—একেবাবে অমিয় বাবুর শহন কক্ষে।

থাওৱা-দাওৱাব পৰ নিজেব ঘরে শুরে বিশ্রাম কোরছেন অমিয় বাবু, দরজাটা চাত দিয়ে ঠেলে ভেতরে চুকলেন মণিকা দেবী বিনা এরেলায়। অমিয় বাবু বিশ্বিত চোলেও, সে ভাব কাটিয়ে, তাড়াতাড়ি বিছানার ওপর উঠে বোদে, তুছাত জোড় করে নমজার জানিরে সম্বর্ধনা জানালেন: আহ্বন মিস হুপ্তঃ ব্যান। দুয়োর পালেই চেরার। সেটা দেখিরে গলার অন্তর্গতার পুর এনে বোললেন: কি খবর বলুন তো মিস হুপ্তঃ আপনার বে দেখা পাওরাই ভাব। সারাদিনটাই ভিউটি করেন নাকি ?

মৰিকা দেবী চেয়াবের ওপৰ বোসে অপ্রতিভের হাসি হাসেন।

—না, ডিউটি আর এমন কি। কথাটা অর্থসমান্তই থেকে হার। মণিকা দেবী হাতের নথ খুঁটতে থাকেন। অমির হাবু নীরবে একটা মাসিকের পাতা উল্টে বান।

এক সময় মণিকা দেবী উঠে দাঁডান। বলেনঃ আমি বাছি। নমস্বার। অমিয় বাবুকে কিছু বলবার অবকাশ না দিয়েই তিনি বাইবে বেবিয়ে আসেন।

সেইদিনই সংখ্যবেলা। অমির বাবু বেজিরে ফিরছেন, সরাইবানার মুখেই মণিকা দেবী। ওঁব ভংগীটা প্রতীক্ষাপর! জমির বাবু কোন কথানা বলে পাশ কাটিরে এগিরে বাচ্ছিলেন— বাধা পড়লো।

- একটা কথা ছিল। প্রার ফিল-কিল খোনালো মণিকা দেবীর গলার আওয়াল।
 - —বলুন। অমিয় বাবু গুরে গীড়ালেন।
- —এথানে গাঁড়িরে বলা বার না। একটু বলি—ভীক আর কাঁপা-কাঁপা গলার এই পর্যস্ত বোলেই থেমে গেলেন মণিকা দেবী।

- —বেশ তো চলুন না আমার ববে। সঞ্চিত কঠে আহ্বান জানালেন অমির বাবু।
- —না, না, ওধানে নর। ঘাড় নেড়ে প্রবদ আপত্তি জানান মণিকা দেবী।
- —ভার চেরে ওই নদীর ধারটার—জাবার কথা হারিরে কেনে, জন্মহিলা।
 - —বেশ তাই চলুন।

ছু অনে পাশাপাশি হেঁটে চলেছেন। কাবো মুখে ভোন কথা নেই। ভিতরের কৌতৃচল আর উদ্বেগটাকে চাপা দেবার ভল্তে চোখে-মুখে একটা নিবাসক্ত ঔদাসীক্ত ফুটিরে পথ হাঁটছেন অমিয় বাবু। মণিকা দেবীর দৃষ্টি পুবায়ক, ভাবলেশহীন।

কখন সন্ধাব আবছার। অন্ধনার কৃষ্ণপক্ষের বাত্তির খন অন্ধনার ভলিরে গোছে, কখন দ্বাগত পাচাড়ী নদীর কুলু-কুলু ধ্বনি, অনবরত পাথর আছড়ানো গর্জনে পরিণত হোরেছে, কখন পায়ে পায়ে এগিয়ে চলা বনবীধি ধৃ-ধৃ বিস্তার বালুচরে রূপাস্তরিত হোছেছে—মণিকা দেবী তো নয়ই, অমির বাবৃত্ত যে এদিকে তেমন সচেতন ছিলেন—ওঁদের ভাব-ভঙ্গী দেখে অস্ততঃ একথা মনে করবার কারণ নেই। এমন কি, জলের প্রায় ধার খেঁসে হ'টি প্রাণী বথন মুখোমুখী দাঁড়িয়ে আছেন—তথনো বেন চেনা-জানা এই চেতনার রাজ্য খেকে ওঁরা বেশ খানিকটা দূবে।

শাস্তি ভঙ্গ করলো নিশাচর এক পাথী প্রচণ্ড আর্তনাদ ভুলে।

অমির বাবু চমকে উঠে চার পাশের অক্ষকার পরিবেশটাকে একবার ভাল করে দেখে নিলেন। তারপর কৃষ্ণ স্বরেই বোললেন — এবার আপনার বা বলবার আছে বলুন। তাড়াতাড়িই বলে ফেলুন। বেশীক্ষণ এ জারগার থাকা নিবাপদ নর।

মণিক। দেনী বেন এই মুহুর্তটির অপেকাতেই ছিলেন। হঠাৎ প্রায়ত দৃষ্টিকে একটি সীমিত কুন্ধিত বেধার প্রসারিত কোরে বালে উঠলেন: কেন বলুন তো, জারগাটা হঠাৎ এমন বিপক্ষনক হোরে উঠলো ?

শমির বাবু নির্বাক। মণিকা দেবীর কাছ থেকে এ ^{ধ্রণের} কথা তাঁর প্রত্যাশার বাইরে।

শত:পর উত্তর-ভিরিশের কুরণা মণিকা দেবী তাঁর বিচিত্র গ্রীবা সঞ্চালন ও পুরু ওঠাপ্রের তির্থক হাসি দিরে পঞ্চাশোন্তর প্রেটি শমির বাবুকে শাহবান জানালেন:—স্থাস্থন না একটু বসি। কাল তো কিছু নেই।

সচকিত হোৱে ওঠেন অমির বাবু।—না, দেখুন, আমার বংৰী কাজ বোরেছে। আমার এবার ফেরা দরকার।

- —কাজ তো কুক্মিণীকে নিয়ে এবং দ্যকারটাও বোধ করি ভারই সঙ্গে।
- —ভাৰ মানে ? কঠে জোৰ না পেলেও বিৰক্তিটা **অ**মিয় ^{বাৰু} অস্পত্ত ফুটিৰে তুললেন।
 - —মানেটা কি আমিই বোলে দিবো অমির বাবু ?

খলিত বুকের ওপর হাত ছু'টো জড়ো করে নিঃশক্ষে জমির ^{বাবুর} মুখের পানে চেরে থাকেন মণিকা দেবী।

—দেখুনী আপান অন্থক অন্ধিকার চর্চা বো^{রছেন।} আপনার মতো একজন ভ্রমছিলার— —পক্ষে বেটা একান্ত ভাবেই গহিত, এই তো ? কথাটা সমাপ্ত হবে বিচিত্ৰ খবে ছেসে ওঠেন মৰিকা দেবী। ভাষপ্ৰই গন্ধীৰ হোৱে বলেন: আছো, কোনটা গহিত, কোনটা গহিত নয়— দে জানটা তো আপনাৰও থাকা উচিত। হাজার হোলেও আপনি একজন প্রবীণ, বিজ্ঞ ভদ্রগোক।

বেশ চিবিরে চিবিরে কথাওলো ছাড়তে থাকেন মণিকা দেবী :
আপনি হংগ্রে বুঝতে পেথেছেন, কোন কথা বোলতে
আপনাকে আমি এথানে ডেকে এনেছি। একথাও হয়তো আপনি
বুমতে পারছেন, কোন প্রয়োজনে আজ তপুরে আপনার ঘরে
গিরেছিলাম। কিছ তথন বে কথা বোলতে পারিনি সংকোচে,
এখন এই রাতের অক্ষকারের আড়ালে গাঁড়িয়ে সেই কথাই বোলছি
আপনার মুখের ওপর অসংকোচে—আপনি অত্যন্ত অভায় কাজ
কোরছেন। রক্মিণীর মতো নিতাস্তই একটা বাচা বয়সে বে হয়তো
আপনার প্রীর কোলের মেয়ের বরসী, ভারই সঙ্গে কিনা আপনি—।

আচমকা থমকে থেমে পড়েন ভক্তমহিলা।
—কিনা আপনি—কি ? হা হা কোরে হেসে ওঠেন অমিয় বাবু।

—বোলতে পারলেন না তো। আবারো দেই সংকোচ? অমির বাবুর উচ্চহাতা নদীর ওপারে প্রতিধ্বনিত হোরে ফিরে আসে।

আব কিছুক্ষণ অমিয় বাবুর মুখের ওপর অসম্ভ তুটো দৃষ্টি নিক্ষেপ কোরে মনিকা দেবী বলেন: আপেনি বে এত হীন আব এত নীচ ভা আমার জানা ছিল না। বুড়ো হোলে লোকের ভীমরতি হয় ভবেছি—আপনারও তাই হোরেছে।

বংশই আর শাঁড়ান না ভিনি সেখানে। ক্রাত পা চালিরে বানির চড়া ভেঙ্গে ওপরে উঠতে থাকেন। অমির বাবুর উচ্চ হাত্র ভঙ্গণে নীরব হোরে গেছে।

গরাইখানায় ফিরে এই গরাই অমির বাবু বেশ বসিরে বসিরে তনাছিলেন রুক্মিণীকে। মণিকা দেবী সটান ভেতরে চুকে কোন ছ্মিলা না কোরে বোললেন: হঠাৎ উদ্ভেজনার মুখে অনেকগুলো কথা আজ আমার মুখ দিয়ে বেবিরে গেছে, আপনি সেজতে আমাকে মার্জনা কোরবেন অমির বাবু! কথাগুলো বলার আমার সভ্যিই হৈছে হিল না। অমির বাবুকে উদ্ভরের অবকান না দিয়ে, বে ভাবে এসেছিলেন মণিকা দেবা, সেই ভাবেই বেরিরে গেলেন।

শ্মিয় বাবু মুচ্কি হাসলেন। গাঁত দিয়ে গাঁত চেপে স্বগভোক্তি গোলন ক্ক্মিণা: বুজ্জী! জাইনি!

কিছ একটু পরেই কক্মিণীর মুখভাবের পরিবর্তন হোল। একটা কিছু আবিছারের আনন্দে ওকে উচ্ছল দেখালো। জ নাচিত্রে, চাধ গ্রিয়ে বোললে: বাবুজী, আওবাংটা একেবারে দিওয়ানা নারে গেছে।

- **–সেটা কি ব্যাপার ?**
- ब्रुक्तर वात्को, ब्रुक्तर ।
- 713 7CF ?
- –ভোমার সঙ্গে, জাবার কার!
- —বটে! ভবে ভো বড় বিশদ হোল দেখছি! একটা লোক

ক'টাকে সামলাবো। পরিহাস-ভবল কঠে অমিয় বাবু হাসভে থাকেন।

- —হাসছো বাবুজী, বেশ। কিন্ত কথাটা আমার মোটেই মিধ্যে নৱ। জুমি পৰীক্ষা কোৱে কেথতে পাবো।
 - --পরীকা! মুহকতের ? ভঙ্কেট ধান অমিধ বাবু।
 - --- हैं।। धकते। काम (कांत्रत वावृक्ती ?

অমিয় বাবু জিজ্ঞাস্তাবে ওর মুখের দিকে ভাকিয়ে দেখেন।

ক্রক্মিণী চট করে একবার উঠে গিরে বাইরেটা উ কি মেরে দেবে 'আসে। ভারপর বনিষ্ঠ হোয়ে কাছে বোদে বলে:—কাল বিকেলে ওই অউরাৎটাকে সঙ্গে কোরে নিয়ে তুমি বেড়াতে বাও।

- —না, নাও সব আমি পারবে! না। প্রবস আপত্তি তোলেন ভক্তলোক। আব তা' ছাড়া আমার সঙ্গে বাবেই বা কেন ও ?
- —বাবে বাবৃত্তী, বাবে। তুমি একবার ভাকলেই বাবে। মিনভিতে গলে পড়ে মেরেটা।—একবার-ভেকেই দেখো না বাবৃত্তী! আমার মাধার দিব্যি—তুমি একবার ওকে ভাক।

নারীচরিত্রের এই বৈচিত্রের সামনে গাঁড়িরে, অমির বাবু আপত্তি করবার ভাষা হারিয়ে ফেলেন।

বৈ'চ ত্রার থানিকটা বাকী ছিল, কেন না প্রদিন বিকেলে বেড়াতে যাবার মাত্র দারগারা গোছের আমন্ত্রণ নিয়েই মণিকা দেবী চোথ-মুথ উজ্জল কোরে বেরিয়ে এলেন।

অমির বাবুকে আজ কথার পেয়েছিল। জীবনের ক্ষণস্থায়িত্ব এবং তাঁর ও মণিকা দেবীর এই জঙ্গল-পাহাড়ের দেশের এক নিভূত স্বাইখানার স্বরন্থায়িত্ব মিলনের সং।তি দেবিরে তিনি পথ চোলতে চোলতে একটা ছোটখাট বজুতাই দিয়ে ফেলনে।

মণিকা দেবী আজ দিব্যি সেকে বেরিয়েছেন। অনজ্যন্ত হাতে মুখে পাউডারের প্রত্যেপ বেল স্পষ্ট হোরেই মুটে বেরোছে। সাড়ী আর ব্লাউস—হ'টোই বহু আয়াস স্বীকার কোরে নির্বাচন করা, কিছু পরবার ধরণটা হাল্ডকর ভাবে আনাড়ি। চাটোলো বুকটা ভরংকর রকমের বে্পর্না। অপাঙ্গে সেই দিকে টেয়েই চোখটা ফিরিয়ে নেন অমিয় বাবু। বফ্তার গতিতে বতি পড়ে। অলুত রকমের একটা গ্লানিতে মনটা রী-বী কোরে ওঠে।

মাঝ পথেই থমকে শীড়ান ভদ্রলোক। অসংবস্ত কঠে বলেন ই চলুন, এবার কেরা যাক।

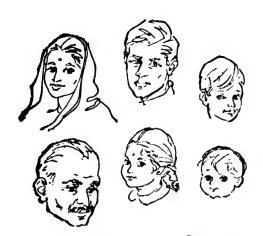


"দাাখ্, আমি না হয় মুখ্যস্থা মানুষ তাই বলে আমি কি এউই বোকা যে আজে বাজে কিছু বুঝিয়ে দিলেই বুঝব ? রাশিয়া নাকি আকাশে একটা নতুন নক্ষত্র ছেড়েছে আর তার মধ্যে নাকি একটা কুকুর

আমি যখন রানীমাকে ম্পুটনিক আর লাইকা সম্বন্ধে সব কিছু বুঝিয়ে বললাম রানীমা একেবারে হতবাক বললেন "আমায় আর একট খুলে বলতো, আমার মাথায় অত চট্ করে কিছু ঢোকে না।" রানীমা কিন্তু সেটা বললেন নেহাৎই বিনয় করে। বুদ্ধিত্বদ্ধি ওঁর বেশ ভালই আছে। ছেলে মেয়ের। যখন চেঁচিয়ে ওদের গড়া মুখস্ত করে উনি তখন ওদের

পোরা! হাঁ। ঃ যত সব—"।

9: 261A-X52 BC



वासारम्ब बानीसा

নানারকম প্রশ্ন করে নানা বিষয়ে জেনেছেন। অন্যান্য মহিলাদের মত বাঁধাধরা গতে চলতে উনি ত্যামাদের বাড়ীর কাছেই ছোট একটা বাড়ী আছে। মোটেই রাজী নন। সেদিন আমি যাচ্ছিলাম সে বাড়ীতে থাকেন রানীমা। আমরা যখনই ছাদে কেনাকাটা করতে। রানীমা আমায় উঠি দেখি রানীম। বাডীর উঠোনে বদে হয় বললেন "আমায় একটু কাপড় চরকা কাটছেন নয় সোয়েটার বুনছেন। কাচা সাবান এনে দিবি ভাই ং" একদিন ছাদে রোদ্ধরে চুল শুকোতে উঠে আমি দেখি রানীমা চরকার সামনে চুপ করে বসে আছেন। আমি ভাবলাম ওঁর সঙ্গে গিয়ে একট্ট গপ্পসপ্প করা যাক। আমি যেতে আমাকে শসার একটা আসন দিয়ে রানীমা বললেন

আমি অভ্যাস বেশে ফিরে এলাম সানলাইট সাবান কিনে। রানীমা সানলাইট সাবান দেখে অনেকক্ষণ প্রাণ খুলে হাসলেন তারপর বললেন—"এত দাম দিয়ে সাবান কিনে আনলি; কিন্তু আমাদের বাড়ীতে সিক্ষের জামাকাপড় তে। কেউ পরেনা।" ঘষেই জামাকাপড় কেচেছি···তাতেই জামাকাপড় এত পরিষ্ণার আর উস্থল হয়ে উঠেছে··হাা কি যেন বলছিলাম, আচ্ছা বলতো সানলাইট সাবান এত

শক্তি রানীমা, আমার বাড়ীতে সব জামা-হ্বাপড়ুই কাচা হয় সানলাইট সাবান দিয়ে ।" বানীমা কিছুক্ষণ চুপ করে থেকে দীৰ্ঘনিশ্বাস ফেলে বললেন— ংবোনটি তুই বোধ হয় আমাদের বাডীর व्यवद्या कानिमना । আমরা এত দামী সাবান দিয়ে জামাকাপড় কাচব কি করে ?" আমাকে ভাডাতাড়ি ফিনতে হোল বলে ওঁকে সব কথা বুঝিয়ে বলতে পারলাম মা। আমি রানীমাকে প্রতিশ্রুতি দিলাম যে আবার ফিরে আসব কিন্তু কাজে এমন আটকে গেলাম যে আমার আর রানীমার কাছে যাওয়াই হোলনা। বিকেলে আমার বাড়ীর দরজায় कड़ा नएड छेठेल । पत्रका शूल पिथ রানীমা। বললেন—"ভগবান তোকে আশীর্বাদ করুন। সানলাইট সতি।ই

রানীমার উঠোনে গিয়ে দেখি সারি সারি পরিফার, সাদা, উল্ফল কাপড় টাঙানো—যেন একটা বিয়ের মিছিল চলেছে। রানীমা আমার কানে কানে বললেন—"আমি এত কাপড়জামা ধুয়েছি কিন্তু এখনও কিছুটা সাবান বাকী আছে…এ সাবানটা দামী নয়, মোটেই নয়—বরং সম্ভাই।"

আশ্রেয়া সাবান। একবার দেখে যা !"

বানীমা বসে পড়লেন, তারপর বললেন "আমাকে

একটা কথা বল তো। আমি শুনেছিলাম সানলাইট দিয়ে কাচার সময় জামাকাপড় আছড়াতে হয়না। সেই জন্যে আমি ওধু সানলাইটের ফেণায়

दिन्दार निया मिरिएक, कर्डक अस्य।

ভাল হোল কি করে ?" আমি রানীমাকে বৌঝালাম— "রানীমা, সানলাইট সাবানটি একেবারে খাঁটি; তাই এতে ফেণা হয় প্রচুর। আর এ ফেণা কাপড়ের স্থভোর ভেতর থেকে লুকোনো ময়লাও টেনে বের করে।"

"ও! এখন বুঝেছি সানলাইট দিয়ে কাচলে জামাকাপড় কি করে এত তাড়াতাড়ি এত পরিষ্কার আর
উজ্জ্বল হয় ওঠে। আর সানলাইটে কাচা জামাকাপড়ের গন্ধটাও আমার পরিষ্কার পরিষ্কার লাগে।"
কিছুক্ষণ চুপ করে থেকে রানীমা বললেন—"এবার
কি বদরি বদ। আমার হাড়ে স্থানেক সময় আছে।"

মণিকা দেবী এক মুহূর্ত ওঁর চোধের দিকে ফিরে দেখেন। ভারণর বলেন: বেশ চলুন।

দিনশুলো বেশ ভালই কেটে বাছে অমির বাবুব। সরকারী কাল—সে সামালটো হাতে রোরেছে অফুবস্ত অবসর। আর রোরেছে স্বাইশানার নির্জন একটি কক্ষ আর তার অভ্যস্ত র পাহাড়ী একটি মেরের উদ্ধাম সাহচধ।

প্রথম প্রথম নিজের ওপর ক্রুর হোরে উঠেছিলেন ভস্তলোক।
মনে হোরেছিল, জেনে-শুনে একটা চন্দ্রায়কে তিনি প্রশ্রের দিয়ে
বাচ্ছেন। ইদানী দে সব চিন্তা দুবে সবিয়ে দিয়েছেন। জ্ঞারনীতির হিসাব—দে ভোলা থাক লোকালয়ের জ্ঞান এখানে, এই
বক্ত পরিবেশে তা নিয়ে মাথা না ঘামালেও চোলবে।

মাথা তাঁকে মাথে মাথে কিছ ঘানাতে হোচ্ছে। না ঘামিয়েও উপায় নেই। হেতু—মণিকা দেবী। অথচ মজা এই, চু'জনেই ছু'জনের ব্যবধান বাঁচিয়ে চোলতে সমান ভাবে উংস্ক।

মৰ্শিকা দেবী বদি এ পথে ইাটেন—অমির বাবু দশ কদম কারাকে পাল কাটান। নড় যড়ে ধাবার টেবিসটা হ'জনের কেউই ব্যবহার করেন না, কোরলেও সমরটা হ'জনেই বদলে ফেন্ডেছেন। তবু কি বে হয়। কথন কোন অসতর্ক মুহুর্তে হয়তো পাল ফিরে ভাকালেন অমির বাবু। দেখলেন এক জোড়া চোখের দৃষ্টি ছির ভাবে তাঁর মুখের ওপর নিবদ্ধ। হয়তো কোন রাত্রে কক্মিণী এসেছে তাঁর ক্ষে। বসেছে তাঁর ল্যার ওপর। মাধাটা এসিরে দিরেছে তাঁর ক্ষে। রোমল ভাবী হাভের মোটা মোটা আঙ্লগুলা দিরে তাঁর ক্ষে। রোমল ভাবী হাভের মোটা যোটা আঙ্লগুলা দিরে প্রনা কর্মান বিল্ল তার সর্বাঙ্গ—হঠাৎ নজর সিরে পড়লো উঠোনের দিককার জানালাটার দিকে—বেখানে অসছে এক জোড়া তীর চোখের দৃষ্টি—অমনি হাভটা সংকোচে গুটিরে নিতে হয়; ঠেলে স্বেরে দিতে ইর ক্ষ্মিণীকে। ক্ষ্ক্মিণীর চোখ বোলা রোমাঞ্চিত দেহ আপত্তি ভবে হাওটাকে টেনে অস্থানে নামাতে চার—ক্ষম্ব অমির বাবুর জার এক ইঞ্চি অগ্রসর হবার স্পৃহা নেই। ক্ষমতাও নেই।

বাইরে বেরিয়েও স্বস্থি নেই। মণিকা দেবীর চোথের দৃষ্টি তাঁকে অহরহ অফুসরণ কোরে চোলেছে।

কাজে গিরে প্রথ নেই। তেরার ফিবে শান্তি নেই। সদ্ধার জন্তকারে কুক্মিণীর হাত ধরে নদীর ধার পর্যন্ত গিরে মনের এই অসম্ভ অবস্থাকে একটু বে মুক্তি দিবেন ভদ্রগোক—তার পর্যন্ত অবসর দিছেন না ভস্তমহিলা।

ফটিছাড়া এক দৃটির দহনে পুড়ে প্ড়ে শেব হোতে সাগলেন ভদ্ৰলোক।

অবশেষে ভিনি ছুটার দর্থান্ত কোরলেন। করেক দিনের ছন্তে স্থান পরিবর্তন একেবারেই অপ্রিহার্য চোরে উঠেছে।

সরকারী ছুটা মঞ্ব হোল। ফ্যাসাদ বাধকো রুক্মিণীর কাছে ছুটা মঞ্ব করাতে গিরে। কেঁদে, ককিয়ে, মাথার দিবিয় দিরে বীতিমত একটা বিয়োগান্ত নাটকের ব্যাপার কোরে তুললো মেরেটা। শেবে বোললে: আমি জানি তুমি কেন বাছে। বাছে ওই বুঙী ডাইনীর ভরে। আমি ওটাকে খুন করবো। ও তোমার লোভ থেতে চেরেছিল—এবার আমি ওর লোভ খাবো।

অনেক কট্টে কুক্মিণীকে শংস্ত কোবতে হয় অমিয় বাবুর।

প্রদিন সকালে অমিয় বাবু বাত্তা কোরবেন। জিনিসপত্র বাঁধা হোয়ে গেছে। বাইবে সরকারী জীপ অপেক্ষা কোরছে তাঁকে ষ্টেশন পর্যন্ত নিয়ে বাবার জন্তে।

শেব বাবের মতো ক্রকমিণীর মাধার গারে হাত বুলিরে, আনেক 'কিরা' আর শপথ উচ্চারণ কোরে, অমির বাবু বেরিরে এসে জীপে উঠতে গিরে কেবেন—মণিকা দেবী ভেতরে বোসে সহাত্মে তাঁকে সম্ভাবণ জানাছে: আত্মন, বড্ড দেরী কোরে কেলনেন। মাইল পনেবো পথ তো ভালতে হবে।

শমির বাবুর বিমায় সীমা ছাড়িয়েছে। **থতিয়ে বলেন:** শাপনি।

—হাঁ। আমিও আজ ছুটি নিবে বাড়ী বাছি। হাসিমুৰেই বলেন মণিকা দেবী: ছুটি কি সহজে পাওৱা বাব ? প্রবর্ণমেন্টের জ্যাপার। ভানেন তো সব। তারপর ছুটি বদি বা পেলাম, ভেবে মিনি—এতথানি পণ একা-একা বেতে হবে! নির্দোম জ ছুটো নাচিরে বলেন: কৈছ কি বিচিত্র বোগাবোগ দেখুন! আপনিও ছুটি নিরেছেন, আর ঠিক আমার সঙ্গেই একদিনে বাত্রা কোরছেন। কিছ আপনি আর দেরী কোরবেন না। গাড়ীতে উঠে পড়ুন। ভাইভাবের দিকে একটু চেপে বোসে অমির বাব্র ব্যবার জারগা কোরে দেন মণিকা দেবী। কলহাত্যে বলে ওঠেন: টেণ মিন কোরতে চাই না বাপ।

নি:শব্দে অমির বাবু গাড়ীতে ওঠেন। ডাইভার টার্ট দেয়।
অমির বাবু সামনের উঁচু-নীচু পথেব দিকে চোৰ মেদে বসে আছেন।
স্বাইধানার দরজার বাপের পাশে এসে গাঁড়িরেছে কুক্মিনী।
ভার ত্চোথে নির্বোধ দৃষ্টি। অমিয় বাবু আর ওদিকে ফিরে
ভাকান্না।

একটি জার্মাণ কবিতা

(बारमक कन चाइल्मनकर्)

বেন মনে হর আকাশ
পৃথিবীকে নীরবে করেছে চুখন,
আর পৃথিবী রক্তিমছাভিতে
আকাশের খপ্নে হরেছে বিভোব!
বায়ু বরে চলেছে প্রান্তবের উপর দিরে
কানে এসে লেগেছে তার মূহু দোলা,

বনে বনে উঠেছে মৃত্-মর্থব নক্ষম্বধচিত আকাশ হরেছে উজ্জ্বল। আর আমার জনর মেলেছে দ্রান্তে তার পাথা চলেছে উড়ে কর প্রান্তবের উপর দিরে বেস সে চলেছে কিবে বরে।

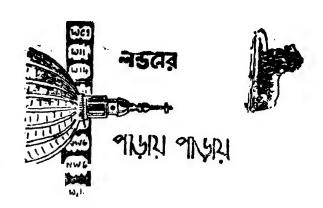
অমুবাদ—ইন্দিরা চটোপাধ্যায় ও মানল রাম !

বুবার্ট দুই ইন্ডেনসনের একটি গল আছে স্থান্ত এবন পৃথিবী
বব্যাত। গলটির নাম ডক্টর জেকিল আগও মিটার হাইড।
একই লোকের কাহিনী। ওবুধ থেরে ডক্টর জেকিল হ'তেন মিটার
হাইড। ডক্টর জেকিল ভক্ত, কিছু মিটার হাইড পিলাচ। একই
মান্ত্রের মনের মধ্যে এই হ'বকমের ভাবই আছে। ডক্টর জেকিল
দ্যার অবভার, কিছু মিটার হাইড খুনে। ব্যাপারটা একট্
জ্বাভাবিক মনে হয়, একই লোক কেমন করে ভার চেহার। পর্যন্ত ভব্ব থেরে পালটে কেলতে পারে। কিছু বারা লগুনে অক্তর এক বছর থাকেন ভারা বুনতে পারেন বেন্তা সন্তব। প্রীম্মকালের লগুন প্রান্তির রূপসাল, ফুল গাছের সবুজ পাতার মৌমাছির গুলনে, ধোলা হাওবার থিয়েটারে, টেমস নদীর ধারে, হাইড পার্কে বা রীজেন্ট্র পার্কের কনসাটে, বিদেশী লোকেলের গল্পজ্জবে হাসিভে লগুনের একরকম সাজ কিছু শীতকালে লগুন বদলে যার। ডক্টর জেকিল বেমন বীভৎস হয়ে মিটার হাইডের রূপ গ্রহণ করে লগুন তেমনি হ'রে পড়ে।

ঠাণ্ডা, প্লো, ভ্ৰাব-গদা জল, তাব সজে ধ্লো মিশে কাদাব স্থি হব কিছ সেণ্ডলো সহু কবা কঠিন নয়। সহু কবা কঠিন লগুন কুবালা। সে কুবালা দার্জিলিঙের সাদা কুবালা নয়। লগুনের কুবালার বস্ত হলুদ। কুবালার বাদ থেমে বার, ট্রেন চলা বন্ধ হয়, এরাবোপ্লেন নামতে পাবে না। এই বোঁয়া জার কুবালার ফলে কুদকুসের নানারকম ব্যাবি হব, বহু লোক মারা পড়ে। কুবালা লগুনের জভিশাপ। কুবালা হ'ছে মিটার হাইড। এই সময় ছবুভেরা তৎপর হ'রে ওঠে, জন্ধকাবের অবোগে রাহাজানি হয় প্লিশ সেখানে নিক্ষশায়। খ্ব শক্তিশালী জালোও কয়েক গজ্পব থেকে দেখা বার না। হঠাৎ কুবালার জাটকে পড়া বাসগুলি চলে বাবে ধীবে—সাম্বনে কণ্ডাক্টর মশাল জেলে চলে। তাতে প্রধানার না, কিছু মশালটা একটু চোৰে পড়ে।

এমন কুরাসা বেশিক্ষণ থাকে না। সাধারণতঃ আট দশ ঘটা वा अक्षित्मव मध्याष्ट्रे हरम बारा। किन्नु ১১৫२ সালের ডিসেশ্ব মানের কুয়াসা লগুনে ইতিহাস ক্ষম্মী করেছিল। এর ফলে প্রার চার হাজার লোক মাবা পড়ে দম বন্ধ হরে। এর স্থায়িত্ব ভিল ভিনদিনের বেশি। গোক, ভ্যাড়া, শ্রোরদের প্রদর্শনী হচ্ছিল তখন লণ্ডনের অলিম্পিয়া হলে (এভনমোর রোডের ধুব কাছে)। ক্ষেক্টি গোক ভাতে মারা পড়ে। হাজার হাজার গাড়ি লোকেরা বাস্তার ফেলে চলে বার, অফিলে লোকেরা দেরি করে আলে, কোন লোক বাড়ী থেকে বের হ'তেই ভর পায়। এই ধরনের কুয়াসার নতুন নামকরণ হয়েছে smog—Smoke এবং fog এব সম্বর। Smokeই বেশি বলে মনে হয়। কুরাসা স∾পংক আচুৰ কথা হ'ৰেছে লণ্ডনে। চালসি ডিকেন্স কুয়াসার 🌬 ভূত বৰ্ণনা ^{দিয়ে}ছেন। টি, এস, এ*কি*য়ট কুয়াসা সম্পকে মক্তব্য করেছেন। খাবহাওয়া বিশারদেরা কুয়াসার পুর্বাভাষ থবরের কাগভে, রেডিওতে প্ৰচাৰ কৰেন। বাৰ বাৰ প্ৰচাৰ কৰা হয় বেডিওতে: কুয়াৰা वाग्रहः अविश्वान ।

কুষাসা কেমন করে আসে? একবার তাও দেখেছিলাম। আমি এবং নটবাক শরা শেকার্ডস বৃশ থেকে বাড়ী ফিবছি থেটে। বাজি তথন বাবোটা। পুরস্ক তিন মাইলের বেশি। বাস সমস্ক চলে



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] হিমানীশ পোস্বামী

গিরেছে, টিটব বন্ধ হয় হয়। প্রদিন ছুটি, অভএব নিশ্চিত্তে আমরা কোন এক বিষয়ে আলোচনা এবং তর্ক-বিতর্ক করতে করতে প্রথ হাঁটছিলাম। কিছুদূর এভাবে হাঁটবার পর নটবাক্ত হঠাৎ উত্তেজিত হয়ে বললো, ইপ ় ইপ !

অর্থাৎ আমার মতামত তার সহ হচ্ছিল না। আমার মত গ্রহণীয় নয় একেবারেই, অতথ্য ইপ! অর্থাৎ, অমন কথা বলা বন্ধ কৰো!

কিন্দ্র ঠিক সেই সমরে একটি ট্যালি বাচ্ছিল—গর্মার উত্তেজিত হরে হাত নেড়ে ইপ! ইপ! বলাতে ট্যালি থেমে পড়ল। শর্মা হঠাৎ কেমন শাস্ত হরে গেল। এমন সমর এমন একটা কাণ্ড সে আশা কবেনি। ট্যালিডে গেলে দশ মিনিটে বাড়ী পৌছে বাব, এবং এত কম সময়ে তর্কের কোন মীমালো হবে না মনে করে ছলনেই দমে গেলাম। কিন্তু তবু আমরা ট্যালিভে বসলাম! ট্যালিওরালাকে হতাশ করতে ইচ্ছে হ'ল না।



কুয়াস৷ (খুব খন নয়)

ট্যাক্সিতে আমবা আর মিনিট উঠেছি মাত্র, ট্যাক্সি আর একটু চলেছে হঠাৎ ট্যাক্সি একেবাবে আাবাউট টার্ণ! এজওরার বোড চওড়া ছিল—ডাইভার অতর্কিতে ট্যাক্সি ঘূরিরে নিরেছে। ট্যাক্সি ডাইভার বললো: নেমে পড়—আমি বাব না।

নটবাজ আমাকে বলল, ব্যাটা মদ টেনেছে নিশ্চর ?

আমি ট্যান্সি ডাইভারকে বলনাম, নামব না।

ড়াইভার বললো, ব্লাইমি। (কী বিপদ!) কুরাসা আসছে— তার ভেতর দিয়ে গাড়ি বাবে না।

আমরা আবার কুটপাথে দীড়ালাম। বলতে হর পথে বসকাম, কারণ একটি খন কুরালার দেওরাল আমাদের খিবে ধেকল। ট্যাজি ডাইভার পালিয়ে গেল বিহুাৎ গড়িতে।

কুরাসার দেয়ালটা এল আন্তে আন্তে। এলে আমাদের খিরে কেলল। আলোকিত কারগাটি হঠাৎ এক মুতুর্তে অন্কার হরে গোল। তর্ক ভুললাম।

এবার?

নটবাক শৰ্মা উদ্বেশের সঙ্গে বললো, এবারে আর বাড়ীতে পৌছুনো বাবে না। বিছু দেখা বাছে না। এ কুরাসা কখন বাবে কেউ কপনো বসতে পারে না।

আছে আছে ফুটপাথ দিরে ইটিছি। লগুনের ফুটপাথ কোলকাতার মত নয়, প্রতি তু ফুট দূরে সেধানে গর্ভ থুঁছে রাধা হর না ন্যাপারটা থুব আশ্চর্যজনক বচ্চেট এখানে উল্লেখ করলাম। জনেকেই এজন্ম ইংরেজদের বৃষ্ণতে পারেন না। ফুটপাথে যদি গর্জ না থাকবে তাহলে আদৌ ফুটপাথ রাধা কেন ? কিছাবে কোন পরিবেশে মান্ত্র নিজেকে মানিয়ে নেয়, ছত্ত্রব গর্তহীন ফুটপাথকেও আমরা মানিরে নিয়েছিলাম। নিজে বাধ্য হরেছিলাম। আমরা ইটিছি। সে পথের শেব নেই বলেই মনে হল। আলো, ইিভেনসনের ভাষার glimmered like carbuncles—বোধ হয় মিনিট পোনেরো চলেছি। এমন সমর হঠাৎ কানে এল কথাবাঠার ভারাক।

এই রাত তুপুরে হঠাৎ তা অসম্ভব বলেই মনে হল। একটু এগিরেই বুঝকে পাবলাম বে ব্যাপারটা স্বাভাবিক। একটা সারাধাত ধুলে রাধা 'স্যাক্যার' সেটি—ভাতে প্রচুর লোকের সমাবেশ। প্রভ্যেকেই বিস্বাদ চা থাছে স্বাব কাশছে। কাশছে অবগু কুরাসার জন্ত। সেধানে আমধাও দাঁড়িয়ে পঞ্চলাম আর বিস্বাদ চা ধেতে লাগলাম। বিস্বাদ না হলে সম্ভবত ইংরেজরা সেটাকে চা বলেই মনে করে না।

সেধানে ছ-চার জন লোকের সঙ্গে আলাপ হল। বিপদে ইংরেজরা ভূলে বায় বে জাত হিসেবে তাদের গন্ধীর থাকবার কথা, আলাপ না কবিয়ে দিলে কথা বলা উচিত নয়। তারা তথন প্রগলত হয়ে ওঠে—কথা কইতে স্ফ করে। পুর থারাপ আবহাওয়া, ভাই নয় ৄ—এক জন প্রতাল্পি বছরের যুবক জিজ্জেস করলো আমাকে। পঞ্চাল বছর পর্যন্ত বা জনেক সময় পঞ্চায় বছর বয়সের লোকও বিলেতে ইয় ম্যান। আমি উত্তর দিলাম, না বেশ ভালই ত লাগে এই রকম আবহাওয়া। শুনে ইংরেজরা আর কথা বলল না। লগুনের আবহাওয়াকে থারাপ না বললে বে চটে না সেইরেজই নয়।

ব্যাপারটা ব্রুতে পেরে ভদ্রজোকের কাছে প্রচুর ক্ষা প্রার্থনা কর্ষাম। বল্লাম, লগুনটা নর্কের সমান । এমন আবহারের শ্রুতানেরই কেবল পছক হ'তে পারে। এই গুনে ইংরুছটি বেজার খুসি। আমাকে জিজ্ঞেস কর্লেন, ভূমি কি পাকিস্থানী ? আমি বল্লাম, না আমি ইণ্ডিয়ান।

প্রায়ই এমন প্রশ্নের জবাব দিতে হরেছে। পাকিভান ব্যাপারটা বহু ইংবেজ ঠিক বুকতে পারে না। তাদের ধারণা ৬-ছটি একই দেশ। ভারতীয় মানেই পাকিভানী, পাকীভানী মানেই ভারতীয়। আমরা বলি, তাই ছিল বটে বিশ্ব এখন আর তা নেই। এখন ভারতবর্ষ ছোট হ'রে গেছে—সমস্যা আরো বেড়েছে। সীমান্ত-সমস্যা, জলসমস্যা ইত্যাদি।

ঘন ক্রালার পথ চলা বার না, অথচ বাড়ীতে পৌছুভেই হয়।
আমি এবং নটরাল বাড়ীর পথ খুঁজতে আবার চেটা করলাম
আ্যাকবার থেকে বেরিয়ে। কিছ ইটিটি সার হল। করেব ঘটা
এদিক-ওদিক ঘ্রলাম—একই পথ ধরে কত বে ঘুরণাক থেলাম তার
তার সংখ্যা নেই। অবশেষে রাস্তার ধারের একটি বেঞ্চে প্রান্ত
হয়ে বসে বসে ঘুরতে লাগলাম। পরদিন স্কালে কুরালা কেটে
বাওরাতে দেখতে পেলাম আম্রা বাড়ী থেকে মাইল খানেক দ্বে
একটা ক্রবধানার কাছে বসে আছি। এই ক্রবধানাটির সামনে
লর্ডস ক্রিকেট গ্রাউণ্ড।

কুমানার অনেক গর আছে। চুরি ডাকাভি রাহাছানি ছাড়াও
অহা গর। গভীর কুমানার গাড়ি সব আছে আছে চলেছে। একটি
গাড়ি অহা গাড়ির পেছনের আলো দেখে এগছে আছে আছে।
হঠাং সামনের গাড়িটি থেমে গেল। অনেকক্ষণ চুপচাপ—পেছনের
গাড়িচালক তখন অছির হয়ে উঠেছে—বলছে, কী হ'ল, এখানে
হঠাং গাড়ি ধামশ কেন । উত্তর এলো। গাড়ি হঠাং থামেনি—
আমি ইছে ক'রই থামিরেছি, কারণ এটা আমার গ্যারাজ।

আর একটি গল আছে—কুয়ানার দিগ্ডান্ত একজনকে দেখে আন্ত একজন অপরিচিত লোক বললো, আপনি কোধার বাবেন ?

— শামি বাব প্যাডিংটন ষ্টেশনে।

—আমার হাত ধরে এসে।, আমি নিয়ে বাচ্ছি।

নানা পথ ঘূরে প্যাড়িংটন ষ্টেশনে পৌছে দিল লোকটা ছতি সহজেই। অবাক হরে গেল লোকটি। বললে, আপনি নিশ্চর্ট এই ঘন কুরাসাতেও স্পাঠ দেখতে পান ?

লোৰটি উত্তর দিয়েছিল: না, তা নর। এমন ভাবে বাওয়া আমার অভ্যেস আছে—কারণ আমি অন্ধ।

লগুনের বেশি পাড়ার আমি থাকিনি। ব্রানমোর, এজধার, মিলহিল, টটেনহাম, ছারিডে, ইলফোর্ড, গ্রীনিজ, টুটিং, ক্যাপাম, বিমেশু, উইবল্ডন, উলিং হেলুন, কেণ্টন, পপলার ইত্যাদি কত পাড়া বে আছে তার হিলেব নেই। লগুনে সাঞ্চাল হালারের বেলি রাজাই আছে—রাজাগুলির নাম প্রচুব পরিমাণেই বিদেশী। আবিসিনিরা রোড, আ্যাবিইটল রোড, বাটাভিয়া রোড, ব্যাডেরিয়া রোড, বেরম্ডা স্লীট, বর্নিও স্লীট তো আছেই, এমন বি মুদ্ধা রোড পর্বস্ত আছে। মুদ্ধা রোডটি বেজধ্রাটার টিউব ক্রিশনের কাছেই। সেধানে আমি, আহাজীর আংকেলসেরিয়ার সঙ্গে এবটি ক্রাবে বেতাম। ভাহাজীর আতে পাশি, ধরে কমিউনিই-বিরোধী।

অভিনয় করার দক্ষকা ছিল, বি, বি, সি-তে টেলিভিশনে কিছু
অভিনয় করেছে। কিছু তার কমিউনিষ্ট এবং কমিউনিজম সম্পর্কে
এত ঘুণা ছিল যে মন্তো রোডে কথনো বাহনি। এ রাজাটির
ছোঁয়াত বাঁচিয়ে চলবার জন্ত সে অপর দিকের ফুটপাথ দিয়ে বেত।
আমরা তাকে এই বাাপারে থ্ব ঠাটা করতাম। বলভাম, জাহাঙ্গীর,
একটি মাট পাওরা বাজে, ছখানি ঘর—ঠাণ্ডা জল গরম জল সব
পাওরা বার, নিজস্ব ফোন আছে, কাপেট দেওরা মেবে ভাড়া মাত্র
তিন পাউপ্ত। ফ্লাটিটা নেবে ?

জাহান্সীর বলভো, নিশ্চয় নেব। কোথায় ?

—মন্তো বোডে।

লাহাসীর তা গুনে মারতে শাসত। বলতো, এমন ঠিকানার শামি কিছুতেই থাকব না।

লগুনের প্রতিটি পাড়ার বৈশিষ্ট্য আছে। বেমন আছে প্যারিসে বার্নিনে বা কোলকা ভার। কিছ চার্চ এবং মদের দোকান সর্বত্রই এক বক্ষ মনে হয়েছে। চাচ গুলি সংখ্যায় এত বেশি কেন তার ন্ধ্ প্রথমে বুঝতাম না, পরে বুঝেছি। চার্চ গুলির মধ্যেও জাতিভেদ প্রচা। ক্যাথলিক চার্চ, মেখডিষ্ট চার্চ, চার্চ অফ ইংল্যাও, क्षातिक्षा के हे छा। कि नाना ब्यास्क्रिय कार्क । कि प्राप्त पाकारन বেমন বিক্রি কমছে বিশেষ করে বীয়ার, তেমনি চার্চেও লোকে কম বাছে। বেকার না হ'লে চার্চে বাবার কি প্রয়োজন আছে ? চার্চে অবল গিয়ে এককালে প্রচয় গোকে বিয়ে করত, এখন তা কমে যাছে। চার্চের বদলে হয় টাউন হলে। চার্চগুলির আর হয় সব চেয়ে বেশি তথন, যথন দেশের লোকেরা বেশি মাত্রায় বেকার হয়। বেকার হ'লে লোকে তুর্বল হয়ে পড়ে, বলে, ভগবান আমাকে একটা চাৰবী দাও। চাচে গিয়ে বীভিমত প্ৰাৰ্থনা মুক্ত করে। অবস্থা ধ্ব ধারাপ হ'লে হত্যে দিয়ে পড়েও ধাকবে হয়ত কাভারে কাভারে লোক। ওজন চার্চের বারা মোহ।ত্ত তাঁরা চান বাতে দেশের অবস্থা ৰ্ব থাবাপ হয়। আয় ভাহ'লে বেশি হয়। শিক্ষিত হওয়াটাও ভাই গঁচ পছন্দ করে না। কারণ শিক্ষিভেরা বড় অন্মবিধেজনক প্রশ্ন করে বলে।

থকটি অসম্ভব জিনিস আমার চোথে পড়েছে। একজন লোক বিনা চিকিৎসায় বা কর্তৃ পক্ষের অবছেলার এদেশে মারা পড়লে তা নিবে এমন হৈ-চৈ করে ওঠে লোকেরা বে তা একজন ভারতীর হিসেবে বাঙাবাড়ি বলে মনে হয়। এব ফলে পবর্গমেন্ট সম্রস্ত হ'বে ওঠে, গওলিমন্ট জনসাধারণের কাছে ক্ষমা প্রোর্থনা করে, এমন বাতে আর না হয় তার বাবস্থা করে। এতে গণতপ্রের ত্বর্ল দিকটা স্পাই হয়ে ওঠা। সামাল্য মামুবের অবছেলায় মৃত্যুর জন্ম বিদি চাড়তে হয় ভাহ'লে সে দেশের লোকেরা নিভান্তই কিন্তুত তাতে আর সন্দেহ কি। গোকেরা না থেরে রান্তার পড়ে খাকবে, বৃষ্টিতে, কাদায়, জলে বিনা চিকিৎসার বছ লোক মরলেও আমাদের দেশের গভর্গমেন্ট কেমন টিকে থাকে। এ বে শক্ষ গভর্গমেন্ট তাতে আর সন্দেহ কি। ইংরেজদের উচিত আমাদের দেশে এসে এসব শিবে যাওরা। আমাদের দেশের বীতিকে আদর্শ বলে প্রহণ করা। কিছ ইংরেজের কি শেখবার শত সামাল্য মাত্র বিভিও আদেছ ?

ণিওকীন্ত গার্ডন্দে আমরা প্রায় এক বছর ছিলাম। মিসেদ ফুইনের পোশাক বা চরিত্র ওর মধ্যে পরিবর্তন হয়নি। আমাদের ভাড়াটে হিসেবে পেয়ে তাঁর ভালই লাগত। বিশ্ব তাঁর ছেলে হলকোর্ড হঠাৎ স্থির করল আমাদের এ বাড়াতে দে অল একটি ভাড়াটেকে আনবে। তারা নাকি আবো বেশি ভাড়া দিতে রাজি হ'রেছে। আমরা নোটিল পেলাম অভএব। আমরা কালো ব'লে নয়। বারা টাকার দাম বোঝে ভাদের কাছে কালো সাণার ভেদ না থাকারই কথা।

কালো সাদার সম্পর্কে ইংল্যান্ডে নতুন করে চিন্তা করা হ'ছে। ক্যাসিষ্ট মোসলের দল ব'লছে, বৃটেনকে সাদা রাখে। আন্দোলন করছে, বিজ্ঞাপন দিছে বেন তেন প্রকারেণ তাদের মারতে হবে। প্রয়োজন হলে বলপ্রয়োগ করভেও এবা উন্মানি দেয়।

খুবই ধারাপ। কিছ এ ব্যাপারে ভারতীয়রা খুব জানন্দ পায়।
দায়েবরা বে ভারতীয়দের কালো মনে করে না এতে তারা খুব প্রীত।
নিপ্রোদের জক্ত খুব কম ভারতীয়ই সহায়ুভূতির সংল কথা বলে।
কালোবিরোধী জান্দোলন হ'লে ভারতীয়রা বড়জোর বলে, কী বিপদ
মামাদের জক্ত জামাদেরও করে বিপদ হয় কে জানে।

মামা, অর্থাৎ কালো আফিকান বা জামাইকান। বাঙালীর আবিভার এই কথাটি ব্যক্ত করে আফিকানদের কিছে বলা হয়। সাধারণদের জন্ম নাচ ঘরে ভারতীয়রা সহজে বেতে চায় না, তারা নাচের বিরুদ্ধে বলে নয়, বা ভাদের মেয়েদের সঙ্গে মিশবার ইছে নেই বলে নয়, কারণ সে সব নাচ ঘরে আফিকানদের বাতায়াত।

কেবল যাতায়াত নয়—আফ্রিকান ছেলেদের সঙ্গে ইংরেজ মেরের। বেশি নাচতেও চায় কারণ সাধারণত তারা নাচতে জানে, ভারতীয়র। নাচতে জানে না তেমন।

কালোর বিরুদ্ধে আফ্রোশ ভারতীয়ানরই বেশি, সেটা আমি বিশেষ করেই শক্ষ্য করেছি। দিল্লিতে চার জন আফ্রিকান ছাত্রও দেখেছিলেন আমাদের যোরতর কালোবিথেব।

আফ্রিকানদের মামা বলা ভাই জাত্মীয় সংখাধনে নর। কথাটি মাউ মাউ নামক আফ্রিকার অনুনত সম্প্রদায়কে ব্যঙ্গ করেট তৈরী।

লগুনে গিয়ে ধধন ল্যাগুলেভি কালো রঙ বলে কোন ভারতীয়কে ফিরিয়ে দেয় তথন রাগ না করে এই কথাটি বেন মনে রাখেন।

বর্ণবিধের আমাদেরও কম নয়। এর পর বে বাড়ীতে গোলাম এবং তারপর আরো পাঁচ বছর ধরে কোন কোন

বাড়ীতে কেমন ভাবে ছিলাম তার ইভিছাস বলবার ইছে রইল। আপাতত: আমার কাহিনী এধানেই শেব কবছি। কারণ অনেক কিছু বলা হলেও অনেক কিছু বাকি থেকে বায়। অতএব আসলে কাহিনীর কোনদিনই শেব লয় না। আমি ত্র'-একজন ডেম্বালাককে জানি উারা ইংল্যাও

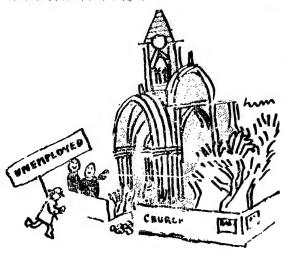
 জ্যামেরিকা সম্বন্ধ হ' একটা কথা, কথাপ্রসঙ্গে না বলে পারেন না। একজন বলেন, বর্থন লগুনে হিলাম MOSCOW ROAD

খাংকেল দেবিয়া

তথন থুব একটা আশ্চর্ব ঘটনা ঘটেছিল। বলে একটি ঘটনা শোনান। তাঁর সঙ্গে বছদিন এর আগো দেখা হ'রেছে আধ্চ সেই আশ্চর্য ঘটনাটি আগো বলেননি। আগো তাঁর মনে পড়েনি। খুবই স্বাভাবিক। আমি কাহিনী বলতে গিয়ে দেখছিরেনিম ক্রেসেট সম্বন্ধে হরত আবো অনেকথানি বলা বেত। এজনমোর রোজেও তো আবো কত কি ঘটেছে সেগুলো বলা হ'ল না। এজনমোর রোজের কাছাকাছি অলিম্পিরা একজিবিশন হল সম্পর্কেও কোন মস্তব্য করিনি। তা ছাড়া অনীল চ্যাটার্দ্রির ১৯৩১ সালের বিশাল এক ফোর্ড গাড়িতে চড়ে লগুনের পথে পথে নানা কাপ্ত করে বেড়ানো (ছ্র্ণটনা করতে করতে বেঁচে বাঙরার প্রার্থির পটিশটি ঘটনা হ' ঘটার ঘটেছিল), আর বাঁরা বোসের নানারকম আলগুরী গল্প। বাঁরা বোসের আসল নাম কেউ এখন আনে না—বর্ষস তাঁর প্রায়—বছর চল্লিশেক বিলেতেই আছেন।

লগুনের স্বচেরে ভাল লেগেছিল প্রার অবাধ স্বাধীনতা।
আর ভাল লেগেছিল এর ছটি গরম কাল আর ছটি বসস্ত কাল।
ভাল লেগেছিল সংস্কার ক্লাসগুলি। বেখানে টিচারদের সঙ্গে
মেলামেশার স্থানাগ ছিল প্রচুর। ছাত্রবা ক্লাসে পাইপ এবং
সিগারেট বা চুক্লট থেতে পারত। এত বনুত্পূর্ণ আবহাওরা
আমি আর কোধাও কল্পনা করতে পারি না।

ভারতবর্গ থেকে বে ইংল্যানেগু প্রতি বছর প্রচুর ছাত্র বাছে তার এই একটা কারণ। আবো অবগু অন্ধ কারণ আছে। আমাদের দেশের টিচারদের সহদ্ধে আমাদের ভর আছে। কিছ একেবারে অন্তেত্ত্ব বোব হর নয়। ব্রুডে না পারলে কানমলা, চাটি, বেকের উপর পাঁড়ানোর বারস্থা আমাদের দেশে। অভএব ছাত্ররা ব্রুডে না পারলেও বলে ব্রেছি। এবং বিশ্ববিতালয়ে গিয়ে নকল করতে না পারলে টেবিল চেয়ার ভাঙে। ইংরেজয়া বে সবাই খব শিক্ষিত হয় তা নয়, কিছ শিক্ষিত হতে ভাদের বাধা নেই। খাবীন বৃত্তিগুলিকে হুমড়ে ভেঙে দের না তারা। আমাদের দেশে শিক্ষা বলে একটা জিনিল চলে—বা বিলিভিও নয়, এদেশীয়ও নয়। একটা অন্ত জ্বাধিচ্ডি। অনুমার রায় হয়ত একটা নামকরণ করতে পারতেন। তবে বিলেতে স্লালে সিগারেট চুক্ট বাওয়ার জক্তই বে দেশের শিক্ষা ভাল তা বলছি না।



কিছ বিলিতি শিক্ষার দোষও আছে। আমাদের দেশে বিলি শিক্ষা চলবে না, কারণ আমাদের দেশের সমাজ অক্সরকম। তা আনেকেই বিশেত থেকে ফিরে এসে বেশ বন্ধ পান নানা ব্যাপারে ছ' তিন বছর ওথানে থেকেই এখানে এসে কাঁটা-চামচ-ভূবি ছাং তাঁদের থাওরা হয় না। বিলিতি থাবার বা অথাত ভাই শ্রেষ্ঠ বা এঁবা গ্রহণ করেন। তাঁবা ক্লটি মাখন দিয়ে মাসে সেছ খান বিলিতি নাচ নাচেন।

তব্ও অধিকাংশ লোকেরই বিলেত দেশটা দেখা উচিত। বিলে
আামেরিকা বা বে কোন বাইবের শিল্পে উন্নত দেশে থাকলে সে:
দেশ সম্পর্কে একটা ধারণা করা বার—সেই সঙ্গে ভারতবর্ষকেও চে:
বার ভাল করেই। ভারতবর্ষকে চেনবার জন্মই ভারতীরদের বাইন
বাওয়া উচিত এবং বেশ কিছুদিন থাকাও উচিত। অবঞ্চ আন
সম্মান বজায় রেথেই সেটা করা উচিত। অনেকেই এখনো সাহে
দেখলে গদ গদ ভাব—সে অফিসের মেসেঞ্জারই হোক বা ভোটেছে
বি চাকরই হ'ক। এই গদ গদ ভাবটি বতদিন না কাটবে তহদি
আমাদের উন্নতিও হবে না, চরিত্রও গড়ে উঠবে না। ইংরেজদে
মধ্যে অনেকগুলি ভাল জিনিস আছে—বেমন আছে জার্মাণ্য
মধ্যে, রাশিয়ানদের মধ্যে বা আ্যামেরিকানদের মধ্যে, সেগুলি নিং
হবে—নকল নয়, গ্রহণ করতে হবে। তবে ভ্রমণ সার্থক হয়।

ইংবেজদের সাম্রাজ্যবাদী রূপের বীভৎসভা বেমন খুলে ধরতে হত ভেমনি ভাদের দেশের শিল্পপ্রিয়তা, সাহিত্য, মানবিক্তা বোধকে প্রশংসা করতে হবে। নানাদিকে বিচার করতে হবে—না সময়ে, নানা ভাবে। সপ্তন বা প্যাবিসকে ব্যতে দেখা কয়তে ে হবেই—বেমন বুৰতে হবে মঞ্জো ওয়াশিংটন বা পিকিংকে, কি ভুললে চলবে না আমাদের স্থান কোলকাভায়, দিলিতে : त्वाचाहेरछ- এই ভারতবর্ষে। বিলেত দেশটা সম্বন্ধে নানাক লেখা বোর্যেছে। নানা ভাবে নানা লোকে দেখেছেন—এ: দেখা ফুরোয়নি, কোনদিনই ফুরোবে না। নতুন ঘটনা, নডু भाक्ष्य नजून जारव निश्रादन तम (मामा कथा। हैश्रादक्या निस्त्रवी ভাদের দেশ সম্পর্কে কত বই যে বার কবে তা একজনের ^{প্ত} পড়ে ফেলা সম্ভব নয়। নানা সমস্তার কথা, রাস্তার কথা, আর্গ কথা, রোগের কথা, কালোবিছের কথা, বেকার সমস্থার কথা তারা নিভাঁক ভাবে অস্তত নিজেদের মত প্রকাশ করে। অরু দলে বলে তার মতামত প্রকাশে বাধে না। হাইড পার্কে কনসারভেটি (थरक चाउछ करत चार्गार्किहे भर्वछ मराहे रक्तका सन । लाकि প্রাপ্ত করে বটে, কিছ বক্তাকে লক্ষ্য করে ইট ছোঁছে না। এ দেশে মামুবের জন্ত নানারকম ব্যবস্থা আছে—বেমন আছে কুক্^{রদে} জন্ত। অনেকে অবাক হন এই ভেবে বে এদেশে কুকুর বিড়া^{লে} এত থাতির কেন ? ভাদের জন্ত এত খরচ না করে পূর্ব আফিকা বে বৃটিশ প্রজা না খেয়ে মবছে বা ক্রীতদাসের মত অবস্থায় পা ভাকে বাঁচানো হয় না কেন ? প্রেশ্বটা ভাল এবং এমন প্র করাও হয়। ভার অস্ত নানারকম কাগজ ররেছে বেমন ^{ডেনি} ওয়ার্কার, ম্যাঞ্চেষ্টার গাড়িয়েন বা নিউ ষ্টেটসম্যান। একথা বলা^ট তাদের কেউ দেশফ্রোহী বলে আখ্যা দেয় না।

ইংরেজবা বজুতা দিজে ভালবাসে, তার প্রমাণ পাওর ^{বা} সভা সমিতির বিজ্ঞাপনে। জামাদের দেশের মৃত সেধানে ^{বো} সভা প্রায় হয় না। সভাতে বক্তৃতা শুনতে গেলো সাধারণত টিকিট লাগে। সাধারণত বক্তাদের বক্তব্য বলে কোন বস্ত থাকে। আমাদের সভার সঙ্গে তুসনা করা ভূস। আমাদের সভা সমিতিতে প্রায় সময়েই উদ্দেশ্য থুঁজে পাওয়া যায় না বিশেষ করে রবীক্ত জমতিথির সভাগুলিভে। শেক্ষপীয়ারের দেশে শেক্ষপীয়ার সম্পর্কে এত সভা হয় না, কারণ সেক্ষক্ত পড়াশুনা করতে হয়। একমাত্র বিশেশজেরাই সেধানে বক্তৃতা দেন।

ল্ভন সম্পর্কে এ সবই হয়ত পুরনো কথা—জামাদের কাছে ল্ভন এখন অতি নিকটে। খুব কম লোক আজকাল পাওয়া বায় বাবাল্ভনে বাননি বা বাবার কথা ভাবছেন না।

লগুনকে অবখাই ভোলা শক্ত। লগুনকে পুরোচেনা বাংনা, কিছুনাকিছু বহুপ্ত এর আহেই। বত বই-ই লেখা হোক, এর পুরোচবিত্র একদিনে ধরা পড়বে না। বেদিন পড়বে সেদিন লগুনও পুরোনো হ'য়ে বাবে। তাই লগুনকে চেনাবার উদ্দেশ্য আমি কিছু লিখছিনা—সে চেষ্টা করা বোকামি। লগুনের ল্যাগুলেণিড়ের আমি কিছু চিনেছি, তারই বর্ণনা করতে গিরে সে প্রসংগে কিছু অন্য কথা এসে গিরেছে। ছর বছর বাস করে দেড় বছর আগে লগুন থেকে ফিরেছি—এখন মনে হয় (অস্বার স্থামারপ্তাইনের প্যারিসকে বদল ক'রে) লগুনকে শেব বখন দেখেছি তখন তার স্থামর ছিল উক্য এবং আনক্ষময়। তাকে বভই তারা বদল কর্মক না কেন আমি সেই তাবেই তাকে মনে বাধব:

The last time I saw London Her heart was warm and gay No matter how they change her I'll remember her that way.

সমাপ্ত

শুধু রাতটুকু পার হ'লে

বাহটুকু পার হ'বে বলে' সেই চিগদিনের অন্ধকারের মাত্রগুলি এক জস-যৌবন নদীর পারে **অটলা করছিল**

বাহটুকু পার হ'বে বলে।

সাধাটা জীবন ওদের কটিল বঞ্চনায়,
এ ওর মুখের আদল ঠাহর করতে পাবে না
সবই অন্ধকার,
এক বধির দৃশ্যের জগত।
কোনো শব্দও বেখানে পৌছর না,
কোনো পাখির ডাকও না।
এক পাল ধুনো মোবের মতো জমাট রাতের পাঁচিল,
ওরা এ ওর গারে ঠেন দিরে বদে আছে।

কোধার কথন ভোব হ'ল ভাব থবর ওরা রাখে না। এক কংস্ক অন্ধকারের পাশে শুরে আছে দেন কভকশুলো জীবস্ত মাঞুবের শব।

একদিন কী ক'বে দেন টেব পেল,
কারা বন জৈবী নোকোয়
কেই টাসমাটাল নদীটা পার হছে।
তবা বসলে: আমবাও বাবো,
আমাদের এই রাভটুকু পার করে দাও।
আমবা নদীর শ্ব শুনতে পাজি
টেউয়ের কোলাহল কানে লাগছে।
আমাদের পার করে।

ভারণর সেই রাভ আর দিনের নদীর ওপর তৈরী করল ওয়া বিশ্বাদের এক দেতু, সেই পুলের ওপর দিয়ে হাত ধরাধরি করে মান্ত্রগুলি নদী পার হ'ল। দেখানে এক উজ্জ্বদ দিন অঢ়েল-খুলি নিয়ে বলে আছে, ওয়া এন্ডদিন জানতেও পায়েনি, তধু বাতটুকুর জন্স। বিশস্ত বন্ধুর মতো দিন अरमय शहल कवन, ওদের জীবনের রাক্ত এবার শেষ হ'ল এক উজ্জ্বলতর দিনের আলোতে। ওবা জীবনের ভিতরে গিয়ে বসল, এক গদা আলোর ভিতরে। মাধার ওপরে এফ ফাঁক পাৰি শিস্ দিতে দিতে উড়ে গোল, ওরা বললে, এদো আমরা গান গাই। অক্সাবের মানুষ্তলো তথন গভীৰ বিশাদে, গলা ছেড়ে গান গাইভে লাগল, रेड रेड खागरमः ত্ত্ব বাডটুকু পার হলেই এডদিন, এড ভার অফু:স্ত খুশি 🕕 হে ঈশ্ব, আমরা বেঁচে গেছি, আমাদের অন্ধকার ঘটেছে, ভধু রাভটুকু পার হ'বে।



ভবানী মুখোপাধ্যায় পঁচিশ

১৯১৬ খুঠান্দে যুদ্ধের প্রচাণ উত্তাপ সারা সুবোপকে দাবানলে আলাছে, সেই দাবদাহের মধ্যে প্রাশাস্ত চিত্ত নীলকঠের মতো দেউ লবেন্সের শাস্তি নীতে সমাছিল হতে আছেন ব পার্ড শ'। Common sense about the war-এর জন্ম একদিক থেকে আসছে গালাগাল আর জন্সদিকে আগতে শমিক সভার প্রশাস্তিন্দ্রক প্রভাব, সারা দেশ জুড়ে বেখানেই ভাষের সভা হয়, ভারা বার্ণার্ড শকে ধঞ্চাদ ভানিয়ে একটি প্রভাব পাশ করে।

ক্রমনই একদিনে হেসকেশ পীয়বসন বার্ণার্ড শার সঙ্গে দ্বা করতে ক্রমেছেন। তিনি মেসোপটেমিয়া যাবেন তাই একবার দেখা করতে ক্রমেছেন। কথার বধায় শা বললেন, সৈগ্র জীবন কি ব্রুম লাগছে তোমার ?

পীঃবদন বললেন, ভালো নয়, তবে প্রতিবাদ করার সাহস্ও নেই।

শ' নললেন, ওদের অবগ ডিসিপ্লিনটা চমৎকার, কিন্তু 'সট' হল উলটো দিক। যুদ্ধ বে কেন হচ্ছে ওরা বোঝে না। একজনের পক্ষে মন্ত্রি নিরোধের জন্ম বধাসাধ্য প্রতিষ্ঠেমকের ব্যবস্থা করা সম্ভব, কিন্তু বাড়িতে আন্তন লাগলে আর প্রতিষ্ঠেমকের ব্যবস্থার প্রয়োজন কি গ তথন সে আন্তন নিভানোর চেটা করবে। কে এই যুদ্ধ বাধালো, কার জন্ম এই যুদ্ধ এই সব বলে বা এই যুদ্ধ করাটাই জন্মার এ সব কথার যুদ্ধ থামানো যাবে না। আমরা সহাই জানি এটা জন্মার, তবু আমাদের সকলকে আন্তন নেবানোর কাজেই লাগতে হবে। তবে এ কথাও বলবে। এ আন্তন আন্তনক ভাড়াভাড়ি নেবানো বাবে যদি ত্ব'-চাব জন বাজনীতিককে হন্যা করা বেত।

পীয়বদন প্রশ্ন করলো—এখন নতুন কি লিখছেন ?

শ'জবাবে বললেন—শেখতের ভঙ্গীতে অবসর সময়ে একটি নাটক বচনায় হাত দিয়েছি। এ আমার একটা বিশেষ উল্লেখযোগ্য গাহিত্য কীর্ত্তি। তোমার শেখতের নাটক পড়া আছে। অভুত নাট্যকার। একেশবে তোমার উপযুক্ত। থিয়েটার সম্পর্কে অপুর্ব জ্ঞান। শেখন পড়ে মনে হয় যেন নাটক রচনার আমার সবে হাতেথড়ি হয়েছে। একটা ধর্মসূক রচনার হাত দিতে হবে। হাতে সময় থাকলেই বাইবেল পড়ি।

পী ব্ৰসন বদলেন—ছোট বলায় বা পড়েছি ও-সব তাভেই আমার জীবনটা কেটে বাবে।

— এই বই ছোটদের বই নয়। বতক্ষণ না নভেল আবার নাটক ইত্যাদি অসংখ্য ট্রান পড়ে ফ্লান্ত না হছে ততক্ষণ এই বই তুমি কি করে বুঝবে ?

Heart break House নাটকের ভূমিকার খেবে বার্গার্ড ল' লিখেছেন—You cannot make war on war and on your neighbour at the same time. War cannot bear the terrible castigation of comedy, the ruthless light of laughter that glares on stage.

এই নাটণটি আকারে স্থাপির, এই নাটকটি নাট্যকারের মতে শেখড়ীর জন্ধীতে বৃচিত্ত—a Fantasia on english themes in the russian manner—এই নাটকেই বার্ণার্ড শ'ব পৃথিবী সম্পরিত হতাশা ও অবিশাসের প্রথম অভিব্যক্তি লক্ষিত হত। এইচ, জি ওরেলসের মতো প্রথম মহাযুদ্ধের কাল পর্বস্ত বার্ণার্ড শ'বিশাস বাধানেন যে মহাজাগতিক বিশ্বর অবশু ঘটবে কিছ প্রগতি স্থানিন্দিত। কিছ এই কাবের পর তাঁর বিশাস স্থাণ হরে এল, একেবারে অবশু ভাঙলো না, এই কারণেই বার্ণার্ড শ' লাবো ঘনিষ্ঠ-ভাবে কম্মানিজ্যের প্রতি অভিযুখী হলেন।

Heart break House ব্ধন কেথা শেষ হল তথন বাণির্ড শ'ব ব্যুস ঘাট অভিক্রম করেছে। Heart break House বাণির্ড শ'ব চোথে দেখা ১৯১৩-র ইংলণ্ড। লাইট হাউদেব সূতর্ক-আলোর ঐলিত উপেক্ষা করে ইংলণ্ডের ভ্রুণী এগিয়ে চলেছে পাহাড়ের গ'র চূর্ণ হলে। হেকটব হুলাবি ভাই—কাণ্ডেন সট ওভারকে বলে—And this ship we are all in, this soul's prison we call England •

নাটকের মধ্যে অসামাশ্র সৌদর্ধ ও বৈদক্ষের পরিচয় আছে, কিছ অভ্ত এর ভূমিকা। নাটকটি লিখিত হওয়ার দশ বছরের আগে অভিনীত হর্দী, কারণ মহাযুদ্ধ এবং তার পরব্তী প্রতিক্রিয়া। ১৯১৯ পৃষ্টাব্দে নাটকই ইংল্প্তে প্রকাশিত হ্র এবং দেই সঙ্গে প্রফ হল সুতীব্র উত্তেজনা।

W. H. Auden Transfer all his theatre about propaganda, his writing has an effect nearer to that of music than the work of any of the so-called pure writers.

বার্ণার্ড শ'র ব্যবহৃত সংলাপের ছন্দ এবং স্থর মাধুরী তাঁব বজাবাকে দৃঢ়তর করেছে। Auden-এর উল্লি বার্ণার্ড শ'বে সঙ্গীতকার হিসাবে বিচারে সহারতা করে। বার্ণার্ড শ'ব সমসামহিক বন্ধ, সভীর্থ ও শিবাবুন্দের রচিত 'সমস্থামূলক' নাটকের সঙ্গে বার্ণার্ড শ'ব মৌন শ্রেন্ডেদ অনেকথানি।

শ'ব পরিণত বচনার সঙ্গীত একটি বিশেব লক্ষণ। নাটকে ভার উপস্থিতি পাদপ্রণের প্রচোজনে নর। সর্বপ্রাসী সার্বভৌমত্বের দাবীতে। সমালোচকদের মতে এবই নাম sharian sonata বার্ণার্ড শ'ব' এই জাতীয় সকল নাটকাবলীর অক্সতম Heart break House, আর এই নাটকে শেভিয়ান ভাববাদের প্রাধান্ত বেশী। এই নাটকের উপ-সামকরণ a Fantasia in the russian manner on english themes দেখেই বোঝা বার বে এই সময় বার্ণার্ড শ' প্রেচ্ব পরিমাণে টলগ্রন্থ পড়েছেন, শেখভের নাটক দেখেছেন। Heart break house সচনার সময় The Light shines in darkness এবং The Cherry Orchard ভার চোখের সামনে ভাসচিল।

বার্ণার্ড শ'ব থেরাল এবং রসিক্তা থেকে মুক্ত Heart break House. নাটকটি পরিপূর্ণ ভাবে শেখভীর, পাত্র-পাত্রীর সংলাপ, ভন্তর, সংবত, এরা ক্ষীয়মান বনেদী-বংশের নমুনা, ভারা সবাই অকর্মা, নাটকের দৃশু গ্রামের বাড়িতে নাটকের ভলিম। করেকটি বিছিন্ন সংলাপের বিচিত্র মালা হরের হুভোর বাঁধা। কিছু এই নাটকের শেখভত বাহ্নিক, গভীর ভাবে বিচার করলে এই নাটক পরিপূর্ণ রূপে শেভিয়ান। The shewing up of Blanco Posnet নাটকে বার্ণার্ড শ' হয়ত টলাইয়ের Power of Darkness অহুসরণের চেষ্টা করেছেন কিন্তু আসলে ভিনি The Devil's Disciple নাটকই নতুন' করে লিখেছেন। Heart break house র বার্ণার্ড শ' আপনাকে ইংরাজ শেখভ মনে করলেও আসলে ভিনি Getting Married এবং Misalliance-এর প্রবার্থি করেছেন। এই ভিনটি নাটক নিরে একটি triology এবং Heart break House তার চুড়ান্ত পরিণ্ডি।

আঙ্গিক ও বক্তব্যের দিক খেকে এই তিনটি নাটকে এর অবও বোগস্ত্র ব্যরছে। এই তিনটি নাটকই বিদয়জনের ছার্র বিচত। তিনটি নাটকেই আছে একই হরণের আদি-রসাক্ষক ভংসাহসিকভা। তিনটিতেই ড্রিংক্সমের কথাবার্তার ভিতর নাটক গড়ে উঠেছে এবং উচ্তলার সমাজ সম্পর্কে বার্ণার্ড ল'ব অপরিবর্তনীয় মনোভাব স্পষ্টতরো হরে উঠেছে।

Getting Married বা Misalliance এই ছটি নাটকের
মধ্দে এতটুকু সাফল্য ঘটেনি। তবে ১৯৫৪ গুটাকে বধন
টেনিভিসনে প্রদানিত হয় Misalliance তখন ভার অসীম
জনপ্রিয়তা লক্ষ্য করা গেল, মনে হয়েছিল বার্ণার্ড ল' বেন
বেতারে প্রচারের জল্প সন্ত এই নাটক লিখেছেন। লেখভের বে
সব নাটকের আদর্শে বার্ণার্ড ল' এই Heart break House
নাটক বচনা করেছিলেন মন্ধে বা সেন্ট লিটস্বার্গের রঙ্গমঞ্চে তার
বেমন সমাদর হয়েছিল বার্ণার্ড ল'ব নাটকেরও সেই ছর্মলা
ঘটেছিল লপ্তনের রঙ্গমঞ্চে। লেখভ এই অসাফল্যে এমনই মনস্তাপ
পেয়েছিলেন বে' আত্মহত্যা করতে সহল্প করতে পারতো না।

এই নাটক স্থামার স্মীথের লিরিক খিরেটারে অভিনীত হওরার কথা ছিল, এলেন ও'মালিকে এলি ডানের ভূমিকা দেওরা স্থির হর, এই আইবিশ স্থলরীর বর্ষটা কিঞ্চিৎ বেশী হওরার নিগেল প্লে ফেরার ও আর্ণিণ্ড বেনেটের মতে এই ভূমিকার জক্ত জল্ল বর্ষী মেরে প্রব্যোজন। কম বর্ষেষ্ঠ মেরে খুঁজতে গিরে এত সমর লাগল



বেং আলষ্টারের নাট্যকার জেমদ কাগান বখন কোট থিয়েটারে এই নাটক মঞ্চল্ করার প্রস্তোব করলেন বার্ণার্ড শ'রাজী হয়ে গেলেন। ১৯২১এর ১৮ই অক্টোবর লশুনে এই নাটক প্রথম মঞ্চল্প হল। ভতদিনে ফ্লাইরর্কে এই নাটক ১২৫ রঞ্জনী অভিনীত হয়েংগেছে।

এই নাটক লগুনে অসফল হল। প্রথম কারণ চরিত্র বর্টনের ক্রাটি, বিতীর কারণ লগুনের দর্শকের গ্রহণ ক্রমতার অভাব। এই অসাফল্যে বার্ণার্ড শ' ক্র হরেছিলেন বা তাঁর পক্ষে কিফিং অস্বাভাবিক, কিছ কারণপ্র আছে, বার্ণার্ড শ' এই নাটকটিকে তার শ্রেষ্ঠ রচনা মনে করভেন, সেই কারণেই তাঁর তৃঃথটা এক তীর হরেছিল।

ৰাণিৰ্ছ ল'ব ১২তম জন্মদিনে একটি নতুন নাটক বচনার হাত দিবেছিলেন। ২৬শে জুলাই তারিখে দি আর্ট থিবেটার ক্লাব— Too me to be good জভিনয় করলেন। প্রোগ্রায়ে হেসকেথ শীম্বসন একটি হোট নিবছে দিখেছিলেন—The main theme of too true to be good is the wretchedness of the rich, and the play is therefore a variation of development of Heart break House, ইকালি।

এই Programme কেউ বার্ণার্ড খ'কে হয়ত পার্টিরেছিলেন ভিনি ক্লেকেথ গীয়বসনকে একটি পোই কার্ডে লিখলেন Why ? বুৰতে না পেরে পীয়বসন লিখে পার্টালেন What ? বার্ণার্ড শ' জ্বাব লিখলেন Yes, এবাব গীয়বসন লিখলেন God knows! সঙ্গে স্থাব লিখেন শ' He does not—শীয়বসন কি জাব করেন লিখলেন—Nor do I:

বার্ণার্ড ল'র এই সংক্রিপ্ত চিঠি লক্ষ্য করার মতো।

মি: ই, ট্রাউন Bernard Shaw's Art and Socialism নামক চমৎকার প্রছে বলেছেন—Back to Methuselah আর Heart break House বার্ণার্ড শ'ব সাহিত্য জীবনের সর্বশ্রেষ্ঠ কীতি।

বার্ণার্ড শ'নিজে বলতেন আমার কোন বটটা বে প্রেষ্ঠ তা শেষ বিচারের (Judgement Day) দিন পর্বস্ত বলা বাবে না। আবার মাঝে মাঝে সোলাস্থালি বলতেন। ফ্রাক্তহারিসকে প্রাপত প্রস্তে নিজে লিখেছিলেন Rightly spotted by the infallible eye of Frank Harris as my best play—'' Back to Methuselah লেখার আগে পর্বস্ত বার্ণার্ড শ' Heart break Houseকেই তাঁব প্রেষ্ঠ রচনা বলে খীকার করতেন। বর্ণার প্রধানমন্ত্রী থাকিন স্থাকে একথণ্ড Back to Methuselah উপহার বিবে বলেছিলেন—এই আমার মার্ধার শীস।

ব্যবের সঙ্গে শ' ক্রমশাই বে আঞ্তি এবং জীবন সম্পর্কিত দৃষ্টি ক্রমীতে প্রকৃতিতে বে তাঁর পিতৃদেবের মত হরে উঠছেন এটা গ্রেছিলেন। বার্ণার্ড শ'ব পিতৃদেব কার শ' সব কিছুতেই শ্লেষ করে বলতেন—everything was a pack of lies, Heart break House এক বৃদ্ধ কার শ'কে আদর্শ করে ওলড্ টেসটামেন্টের বৃদ্ধের মতো পৃথিবীর সব কিছুবই বিরোণী Captain Shotover ক্রম্বাই

ব্যস্ত, জাসলে পথের ধারে মন্তপান কয়টাই তাঁর সর্বশ্রেষ্ঠ কর্ম, বেরিরে এসে অপেকারত মান্ত্বের উদ্দেক্তে বাণী নিক্ষেপ করে জ্বাবের জন্ত জার দীড়াতেন না।

Captain Shotover antique It confuses me to be answered, it discourages me, I cannot bear the men and women, I have to run away, I must run away now.

ভক্ষাদের সম্পর্কে বার্ণার্ড শ'ব মনোভংগী Captain Shotover এর মুখ দিয়ে বলা হয়েছে—I see my daughters and their men living foolish lives of romance and sentiment and snubbery...I did not let the fear of death govern my life, and my reward was, I had my life—

সাসে টি এই নাটক সর্বপ্রথম পড়েছিলেন। মজপ মান্ন্বকে তিনি চিবদিনই সইতে পারতেন না। Captain Shotoverকে পৃত্নদ না করলেও তার উচ্চারিত প্রতিটি কথা তাঁর ভালো সাগতো।

চেকোলোভাকিয়ান গৈনিকরা একটা চিটিছে লিখতেন—Your work has always philosophical basement of our life, day by day, endeavouring to follow our great Irish teacher...

বলাবাছলা এই চিঠিতে শ' দম্পতি অত্যন্ত আনন্দ পেয়েছিলেন।
কিছ Heart break Houseকে গ্রহণ করার অন্ত মান্ত্র্য তথনও
তৈরী হরনি। জীবনের কঠোরভা, বিপদ, আতংক, মৃত্যু ইত্যাদির
আলায় ভারা এখন বিপ্রত। জীবনের গভীরভার দিকে মান্ত্রের
তেমন আগ্রহ নেই, ভারা চার আনন্দ, হাসি এবং সরসভা। ভারা
চায় সব বিভু স্মৃতংবে গ্রহণ করতে, Shotoverএর বাণী শোনার
মভো উপযুক্ত মনের অবস্থা নর ভখন। ক্লান্ত তকণ দল প্রশ্ন করে
—And who was Shaw to preach to us? ভারা রণক্ষেত্রে
মৃত্যুর মুখোমুখি হয়ে ফিরে এসেছে Arms and the Man পড়ে
ভারা আনন্দ পেয়েছে, ভারা হাসতে চায়, ভুংখ ভুসতে চায়।
ভক্ষপত্নীর বিবযুকে বিব মনে করে পুর পরিহার করতে চায়।

বার্ণার্ড শ' এই মনোজ্ঞাতি কিছ বিজ্ঞান্ত হননি। তিনি জানতেন, জোয়ারের পর ভাটা আছে, এমন কি যে তরুণ শেধক ভাঁকে এখন ভীত্র ভাষার আক্রমণ করছে, সেই লিটন খ্রাচীকেও তিনি প্রশাসা করছেন।

কিছু দিনের অন্ত লেখনী ধামালেন বার্ণার্ড শ'। এর প্রারোজন ছিল। এখন একটা বড়ো নাটক লিখতে হবে যা অভিনয় করতে বারো ঘটা সময় লাগবে। নাজিকতা, অংশাস এবং নিহিলিজম ইত্যাদির ভূমাবশের থেকে বিংশ শতাব্দীতে যে নতুন ধর্মশ্রাস গড়ে উঠছে, এই নাটকের ভিত্তি তার ওপর প্রতিপ্তিত। এই নাটক অমর রচনা হবে এবং তাঁকে অমরত্ব দান করবে। Candida, Man and Superman এবং Ileart break House এ স্বই সেই নতুন নাটকের প্রস্তৃতি। বার্ণার্ড শ'র মতে এই নতুন নাটক Exploit the eternal interest of the philosopher's stone which enables men to live for ever—



অন্ত্যাশ্রহণ কাপড় কালা পাউডার সাফে কাল কামা-কাপড়ের অপূর্ব শুল্রতা দেখলে আগনি অবাক হয়ে शास्त्रम । এक शास्त्रके गानशेष क्वरन जानमारक मानरकर

আপনি কথনও কাচেননি নামানাপড় এই কক্ষেক সাধা, इ.व (व এত সুন্দর উজ্জন করে। সার্ট, চাদর, শাড়ী, তোগালে — নবকিছ काराव करग्रहे अहि जामर्ग !

আপনি কখনও দেখেননি এত ফেল — গাড়া বা গরুৰ

জলে, ফেণার পক্ষে প্রতিশুস জলে, সঙ্গে সঙ্গে, আপনি পাবের क्षणाद अक मन्तः!

আপুনি কখনও জানতেন না বে এত সহতে কাণ্ড কাচা যায়। বেশী পরিত্রম নেই এতে! সাক্ষে ক্রামাকাপড় কাচা মনে ৩টি সহল প্রাপ্তিমাঃ ভেজানো, চেপা এবং ধোওয়া মানেই আপনার জামাকাপড় কাচা হয়ে গেল।

আপনি কখনও পাননি আপনার প্রনার মূলা এত চমং-কারতাবে ফিরে। একবার সাফ বাবহার করতেই আপনি এ কথা বারতাবে ফিরে। একবার সাফ বাবহার করতেই আপনি এ কথা বেনে নেবেন! সাফ সব জামাঝাপড় কাচার পক্ষেই **আদর্শ**!

SU. 25-X52 BG

विकर नवथ कार्व दिस्पर आर्थि जाजाकाश्र खन्द मान करत काठा यार !

হিন্তাৰ লিখিটেড কৰ্তৃক প্ৰস্তুত

Heart break House-এর যত ক্রটাই থাকুক নাটক হিসাবে অপূর্ব। Captain Shotover বার্ণার্ড শ'র অপূর্ব সৃষ্টি। এই চরিত্রের মাধ্যমে বার্ণার্ড শ' মাছুবের প্রেডি উার ব্যক্তিগত অবিধাস ক্রটিরে তুলেছেন। এই নাটকে ভিনি এক অপূর্ব পরিবেশ স্টিকর ছেলেছেন। তাই এই নাটকের শেবে এলি বধন বলে—This silly house, this strangely happy home, this agonising home, this house without foundations. I shall call it Heart break House—তথন পাঠক ও দর্শক নিকের মনে তার প্রতিধ্বনি পার।

ছাবিবশ

১১২০, ২৭শে মার্চে৽৽

সাউথ লগুনে ভেনমার্ক হিলে বার্ণার্ড শ' মৃত্যুন্ধ্যায় শায়িত বোন লুসীকে দেখতে গেলেন। এই ডেনমার্ক হিলের কাছেই জমেছিলেন র্বাট ব্রাউনিং এবং বাস্কিন তাঁর বাল্যজীবন কাটিয়েছেন।

নুসীর বয়স তথন ৬৭ বছর, বার্ণার্ড শ'র ৬৪। বার্ণার্ড শ' পৌছে দেখলেন, পুসী অত,ত হতাল ভঙ্গীতে বোগলবায় পড়ে আছেন। বার্ণার্ড শ' কিছুক্ষণ চুপ করে বলে থাকার পর সুসী মুদ্ব সদায় বললেন—আমি এইবার মারা বাব। আর বেশী দেবী নেই।

বাৰ্ণাৰ্ড শ' সাম্বনার ভঙ্গীতে বলেন—না, না, ভব কি, শীপ্,গিৰ সেবে উঠবে।

তারপর হলনেই নীবব। চাবিনিক নিজৰ। পাশের ৰাড়ীতে কে একজন মতি বিজী ভাবে পিয়ানো বাজাছে। চমৎকার সক্ষা-চার দিকের জানলা উন্মৃক্ত। লুসী বার্গার্ড ম'র হাত ধরে মাছেন। সহসা মনে হল যেন ভার ঝান্ত সন্তলো শক্ত হরে গেছে। লুমীর প্রোক্টীন দেহ পড়ে খাছে।

বার্ণার্ড শ' সবিশ্বয়ে ভাব:লন কি করা ধায় ! ভাক্তারকে ডাকা হল। বার্ণার্ড শ' বললেন—সম্ভবত: টিউবার কুলেসিনই মৃত্যুর কারণ। কিছু নিন আগে নিউমোনিয়া হয়েছিল, তার পরই টি, বিতে আক্রান্ত হয়েছিলেন লুনী।

ভাক্তার গভীর গলার বদলেন—না, সৃত্যুর কারণ অনাহার টি. বি দেরে গিয়েছিল।

বার্ণার্ড শ' প্রতিবাদ জানিরে বললেন—দে কি! জামি একে থাওয়া-দাওয়া বাবদ রথেষ্ট টাকা দিই। জনাহারে মরবে কেন?

जिक्कांत्र जिन्न नाम्यान कार्या कार्या कार्या

মহাযুদ্ধের পর লুসীর কুধা একদম হ্রাস পার, জনেক কটে তাকে
কিছু থাওয়ানো বেত। তার মনে এবং দেহে 'শেল-সক্' অর্থাৎ
গোলা-বাক্লের বিভীবিকা লাগে। বিমান জাক্রমণের সময় বাগানে
বিমান প্রতিরোধকারী এাালি এয়া।ক্রাকট-এর বিজ্ঞোরণে খবের
জানালা-দরজা, থালা-বাসন সব ভেঙে চ্বমার হয়ে যায়। সেথান
থেকে বিভোনে পাঠানো হল কিছু জাহারে অনিজ্ঞা হুচলো না।

এই লুসী একদিন উদীয়মান লোক জীবনসংগ্রামে বিধান্ত বার্ণার্ড শ'কে বাড়ি থেকে তাড়িয়ে দিতে চেয়েছিল। আর শেব দিন পর্যন্ত নেই ভাই—বোনটির সমস্ত থয়চ বহন করেছেন এমন কি শেব সময়ে প ইতহাজি র থেকে বচকে মৃত্যু দেখলেন। সংসাবের এই সর্বন্ধে বা হার

সুসীর নির্দেশ ছিল আন্তাষ্টিকালে কোনো প্রার্থনা ব্যবস্থার আবোন্ধন না করা। বার্ণার্ড শ' ক্রিমেটোরিরমে পৌছে দেখলেন সুসীর বন্ধুবান্ধবে সেই শক্ষানভ্মি পরিপূর্ণ। তারা কেউ হয়ত বার্ণার্ড শ'কে চিনতে পারেন নি। এই জনতা একটা কিছু প্রার্থনা ব্যবহার জন্ত জন করলেন। তখন বার্ণার্ড শ' বেদীর ওপর গাঁড়িরে সেন্ধুসীররের Cymbelline খেকে উর্তি দান করে বললেন—

Fear no more the lightning flash, Nor the all-dreaded thunder-stone.

বহিমান শ্বনেংহর দিকে ভাকিয়ে বর্ণার্ড শ' দেখলেন বে আভি ক্লান সেই আগুনের শিধা, কয়লার অভাব। হতাশ হলেন শ'। তিনি বলেছেন—Steady white light like that of a wax candle!

শ' পরিবারের এই মেরেটির মাধার চুলের বং ছিল শালা। বার্ণার্ড শ' জননীর ধারণা ছিল দে একদিন নাট্য-সমাজ্ঞীর সম্মান লাভ করবে, কিছ আম্মান পেশাদারী দলের হালকা ধরণের জপোরার ছোটধাটো ভূমিকা ভিন্ন আর কিছু পাননি লুসী। সারা জীবনটাই ব্যর্থতার ভরা। আবাতের পর আঘাত জীবনটাকে ভেডে-চুরে বিপর্যন্ত করেছিল, আজ একান্ত আপন জন ছোটভাই বার্ণার্ড দ'র হাতটি ধরে শান্তির পারাবারে পৌচলেন।

বার্ণার্ড শ' বলেছেন দেদিন ডেনমার্ক হিলে নিভান্তই Lifeforce এব নির্দেশে তিনি গিরে পড়েছিলেন। বেনী বার্ণরা আসা
করতে পারতেন না, একরকম অবহেলিত ছিলেন। বার্ণার্ড শ'
বলেছেন—property, property, property, the real
secret of my withdrawal from all human intercourse except with people I have actually to work
with. এখর্ব্য আমাদের এমনই ভূলিয়ে বাবে বে, আত্মীর অজনকে
বিশ্বত হরে, কাজ আর কাজের লোক নিরেই আমরা কর্মজীবনটাকে
ভরে বাধি। বার্ণার্ড শ'র জীবনেও তাই ভার ব্যক্তিকম
বটেনি।

হেসকেল পীর্বসন বধার্থই বলেছেন লিল্লী এবং মহাপ্রুষ এই ছই সন্তার মধ্যে একটা হল্দ উপস্থিত হয়, ফলে লিল্লীর অপমৃত্যু ঘটে, মহাপ্রুষ মধ্যে উচু করে দাঁড়ায়। বার্ণার্ড দাঁ উভয়ের মধ্যে এক অপূর্ব ভারসাম্য রক্ষা করে বলেছেন। আমাদের দেশে বরীক্ষনাথকে এই হিসাবে বার্ণার্ড দাঁর সমকক বলা চলে। মাননিক ভারসাম্য তিনিও দাের পর্যন্ত বক্ষার রেথেছিলেন। আর বেথেছিলেন ভলটেরার। তাই ১৯১৪—১৮-র মহামুছের কাঁকে দাঁ Heart break House রচনা করতে পেরেছেন আর মনে মনে পরিকল্পনা করেছেন Back to Methuselah মহানাটকের। Heart break House প্রথমটার কাউকে পড়তে দেননি বার্ণার্ড দাঁ বন্ধুদেরও নয়, অথচ ভিনি সব নাটক স্বাইকে পড়ে শোনাতে ভালোবাসতেন। স্বী ম্যাথ্ড ১৯১৬ খুরাকের ডিসেম্বার মানে অমুবোর জানিরে বললেন—আপনি স্বরং উপস্থিত হয়ে উল

গোগ্রাইটিতে মাটকটি পড়ে শোনাম। উত্তরে বার্ণার্ড শু'

াত একেবারেই অসম্ভব ব্যাপার। ট্রেম্ব সোগাইটি বদি তার
সদস্যদের নিয়ে At-home-এ আপ্যারিত করতে চান, কোন
সাফল্যার উৎসব উপলক্ষ্যে তাহলে একজন প্রথাতে লেখকের
অপ্রকাশিত, অ-অভিনীত নাটক পড়ে শোনালে প্রোভারা হয়ত
সলাধ্যকরণ করবেন। কিছু সম্পূর্ণ নাট্য-প্রদর্শনের জন্ম চাদা আদার
করে চাদা প্রদানকারীদের গুরু নাটক পাঠ করে শোনালে, পচা
ভিম এবা মৃত বিড়াল ছাড়া লেখকের ভাগো আর কিছুই জ্ববেনা।
সভ্যতা বধন সংকটাপন্ন তথন আমি আমার কনপ্রিহতা কুর
করতে পারি। এ তোমার জানা আছে, কিছু সভার অংশীদারদের
ভেকে এনে ভাদের বলা বে ভোমানের টাকা ভছ্ত্রপ হরেছে, সেই
সভার সভাপত্তিক করা অভিশ্ব কঠিন। •••

নাটকটি প্রবোজিত হয় বার্ণার্ড শ'ব সেই ইচ্ছাও ছিলনা। লীলা মাককার্থিক শ'বলেছিলেন—We must be content to dream about it. Let it lie there to show that the old dog still bark a bit. বার্ণার্ড শ'বলভেন Captain Shotover হলেন কিং লীয়রের আধুনিক সংকরণ। একজন ব্রবেন, তার মানে ?

বংগ ডি শ' জবাব দিলেন—"আমি কি করে জানবো ? আমি ভ লেশক মাত্র।"

১৯২১-এর ১৯শে অকটোবর তারিখে আবনসভ্ বেনেট লিখেছেন "গন্ত রজনীতে শ'র Heart break House দেখতে গিবেছিলাম। লাড়ে তিন ঘণ্টা অতি ক্লান্তিকর অবস্থার কাটিরেছি। গৌতাগ্যক্রমে ত্বার যুমিয়ে পড়েছিলাম।"

বারা সপ্তাহে বিক্রী মাত্র ৫০০ পাউও। ক্যাগান শেব পর্বস্ত অভিনয় বন্ধ করতে বাধ্য হলেন। এর পরেট বার্মিটোম বেপারটরী বিষ্টোর-এর ব্যারী জ্ঞাক্ষম ব্যান Heart break House মুক্ত করেন, বার্ণার্ড ল' স্যাটিনী বেধতে সিহেডিলেন।

ভাব ব্যাহী ভাকসন বলেছেন — অভিনয়াছে বার্ণার্ড ল'বেশ ধুনী হবেছেন দেখে সাহস করে বললাম Back to Methuselah মঞ্চ কথার অনুমতি দিন।

বার্ণার্ড শ' ট্রেণের জন্ম অপেক্ষা করছিলেন। এর কিছু আনগই ফ্রাইংক থিছেটার পিল্ড, Back to Methuselah জাভিনর করেছেন।

বার্ণ উ শ' ভার ব্যারীর অনুহোধ ওলে তর্বললেন—ভোষার পরিবারবর্গের ভিবিষ্যতের কিছু সংস্থান করা আছে ?

ব্যামী জবাব দিলেন—সর ব্যবস্থা আছে। বার্ণার্ড দ' হেসে বসকেন—তথাত্ত।

বাণার্ড ল' এতই উৎসাহিত হরেছিলেন বে, লেব বিহাসেলৈও এসেছিলেন। অথচ তা ই বিছু দিন আগে আহার্লাংও পড়ে গিয়ে ভীষণ আঘাত পেয়েছিলেন। সর্বাক্ষে বায়ন বেদনা।

Saint Joan লেখার কালে বার্ণার্ড ল' কাউণ্টি কেরীয় পার্কনাশীলার থাকতেন সেই সময় চীৎ হবে একদিন পড়ে বাম, কাঁবে বে ক্যামেরা ঝোলানো ছিলো, সেটি পিঠে চুকে বায়। পিঠে প্রকাশ গওঁ হবে গিছল।

সালোটি বলেন—পিঠে এতবড় একটা গর্ভ হবেছিল বে, তার তিন্তর অনায়াসে একথানি চিঠি ফেলা বার। আইরিশ ডান্ডাররা কিছু করতে পারেন নি, বার্মিংহামের অভিবিশারদ ডাঃ এলমার ফেলিস ৭২ মিঃ চেটা কবে কোনো বকমে বার্ণার্ড শ'কে দীত করিবেছিলেন।

এই অবস্থায় বার্ণার্ড ল' Back to Methuselah নাটকের বিহাসেল দেখেছেন।

বৈধব্য

সজলকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

বিছু দিন আগেছেও দেখেছি তো তাকে, অসক হা, ওঁৰতোৰ চিমনী মৃত্তিতে। কাঁকন কনকন, চোখে মানা আঁকে, সে এক অপূৰ্বা নানী আপন কীৰ্ত্তিতে দেহে তাৰ বসস্তেব উন্নাদ প্ৰাবন, চোখে তাৰ উজ্জল বিবহী প্ৰাবণ।

দেশিবও তো দেখলাম তাকে,
চিন্মরী-মূন্মরী বেন নিঠুর আবাজে।
মনে হ'ল পত্রশৃত্ত কোন বৃক্ষণাথে,
বাইছে হিমেল হাওৱা, পাথী নাই তাতে।

এর মধ্যে খটে গেছে বিরাট ভাজন, বে ছিল বৈত-পূর্ণা, আন্ত সে একেলা। ছটি প্রাণ এক ছিল, ছিল ছটি মন, আন্ত নেই, বেসা গেছে, আন্তকে অবেলা। বসন্ত দেহেতে তবু নীতের উল্লাস, মনে হর ব,র্থ প্রেম কেলে দীর্থবাস।

নারীখের ঔজ্জল্যে যে ছিল উজ্জ্বন, নিঠুর বৈধব্য ভাবে করেছে বিফল। বিলাসিনী ছাড়ি আল দেহের বিলাসে, উপভোগ-মৌনা মন-স্থৈব্যের উল্লাসে।



শর্করা-শিল্প ও পশ্চিমবঙ্গ

জাগেশ্যক পণ্য-তালিকার মধ্যে শর্কা বা চিনিব স্থান নিশ্চাই প্রথম পর্যারে। অন্ততঃ আমাদের দৈনন্দিন ব্যবহারের অন্ত চিনিও গুড় কিছু না কিছু চাই-ই। অন্ত সব বাদ দিয়ে সকাল-বিকাল চা থেতে এব প্রয়োজন, হুংবর সংলও এর সংমিত্রণ না হলে হয় না। চিনি বা শর্করা-নিয়ের গুক্ত এই থেকে অবগ্র খানিকটা উপলব্ধি করা বার।

এনটি কথা আগেই বলতে চর, বিধের চিনি উৎপাদক কেন্দ্র হিসাবে ভারত মোটেই পিছিরে নর। এই উপ-মহাদেশটিতে শর্কবার মোট উৎপাদনের পরিমাণ বিছু দিন পূর্ণ্ণেও ছিল ১১ লক্ষ্টনের বেশী। ভারতের ভেতর উত্তর প্রদেশেই (প্রাক্তন যুক্ত প্রদেশ) চিনিকলের সংখ্যা তুলনার অর্গেক বয়েছে। ভার পর ক্রমান্থরে বিহার, মাদ্রাল, বোখাই, বাংলা, উডিয়া প্রভৃতি রাজ্যের নাম করা বার। পাশ্চম্বল সম্পর্কে বিশেষভাবে বলা চলে, এখানে লোকসংখ্যা প্রার ভিন কোটি আর বছরে চিনির প্রয়োজন কর পক্ষে ৭০ হালার টন। চিনি বা শর্করা উৎপাদনেও এই রাজ্যে উত্তয় বয়েছে অনেক্রধানি।

এ কথা বা দার্ব্য বে, চিনি বা শর্কথাব দিক থেকে পশ্চিমবঙ্গ এখনও স্বহংসম্পূর্ণ নয়। বাইবে থেকে প্রচুব চিনি আমদানীর প্রেক্ষন হয় এবানে আমও অবসি। এই অবস্থার অবভা কভকগুলি কাবণই ব্যৱহৃত্ব। একটি মূপ কাবণ—এই রাজ্ঞটিতে শর্করা উংপাদনের জন্ম আবৈশ্রক প্রাপ্ত ইক্ষুব অভাব।

ধা ভবে দেখা গেছে— ১জদকলে (পশ্চিমবঙ্গ) বে ইকু উৎপাদিত ছব, গড়পড়তা তাব প্রতি দশ টন থেছে চিনি পাওৱা বাব এক টন। এভাবে এখানকাব সমস্ত ইকুটাই বদি চিনিতে দ্ধপান্তবিত করা গেলো, তাহলে দেই চিনিব পরিমাণ গাঁড়াতে পারে ২৫ কোটি পাউ গুঃ মতো। বিপুল চাহিন্য তুলনার এই উৎপাদনও ব্ধেষ্ট বলা বেতে পারে না।

প্লিচন্বক বাজ্যের একটা মন্ত প্রশ্ন — এবানে অন্ত অন্ত অঞ্চল থেকে খন বসভি, চাবের উপথোগী ক্ষমির অভাব বভাবকটে একানে বেলী। সেনিক থেকে ইন্তে কবলেই বাভাবাতি ইক্ষ্ব উৎপাদন বাভাবার উপায় নেই। উত্তর প্রদেশ, পাঞ্চার, অনুপ্রদেশ, বিভার— এ সকল বাজ্যে ইক্ষ্ব চাব খুবই অধিক. এ ব্যাপারে পশ্চিমবঙ্গের ছান উল্লেখ্য পর। কেন্দ্র একটি বিব্র স্ক্ষাণীর বে, ইক্ষ্য ফলন পশ্চিমবঙ্গে বভাবেলী অন্তর আনক ভাষণার ভেমনটি দেখা বার না। এখানে এক একর ভারি থেকে ইক্ষ্ উৎপাদিত হয় প্রার ২০ টন। শর্করার সঙ্গে ইফুর সম্পর্ক একান্ত নিবিড় বলেই ইফুফ প্রসঙ্গে এত কথা। পশ্চিমবঙ্গে শর্করাশিল্পকে ভাবেও ব্যাপক ও দৃঢ়ভিত্তিক করতে হলে ইফু চাই ভারও বহুল পরিমাণে। চাবের জমি বেখানে ইচ্ছা মাত্র বাড়াবার উপায় নেই, সে ক্ষেত্রে বিবল্প ব্যবস্থা খুঁজে না পেলে নর। প্রথমতঃ একটি পরীক্ষা চলতে পারে—এক ব-পিছু উৎপাদনের হার ভারও কি ভাবে বিছিত করা বার, এই নিরে। বলা বাছল্য, এই জন্ম উপযুক্ত সেচ ও সার সরবরাহের নিশ্চিত ব্যবস্থা চাই। সরকারী দাহিত্বের কথা এইখানে ভাপনি উঠছে বিশেষ ভাবে।

পশ্চিমবঙ্গের স্ব অঞ্চাই ইক্ষু চাবের সমান উপথোগী নর, উৎপাদনও সর্বাত্র একই হারে হয় না। ইক্ষু চাবের করেবটি বথার্থ উপবোগী স্থান—বর্ষমানের কাটোয়া, কালনা ৫ছাত এলাকা, মোদনীপুরের ঘটোল ম্চকুমা, বীরভূমের একচি বুঃতর অংশ আর পশ্চিম দিনাঞ্জুর ও মুনিদাবাদ। এই অঞ্চল্ড উন্ধুর চাব বাছাবার অভ্য আরও সংহত উভ্যান, ও সুচিত্তিত পারেক্লনা ক্রকার।

আবও একটি দ্বা, ইক্ষু উৎপাদন বৃদ্ধির সকল চেটা বেমন থাকবে বা থাকতে হবে, ডেমান পাশ্চমবঙ্গের শক্রার িপুল চাহেলা ভল্ল ভাবেও কিরপে মেটানো বায়, না দেখলে নয়। এই রাজ্যর সীমানার ডেতর বছ অঞ্চলে ভাল ও খেজুব গাছের চাব আছি। আব এই গাছের সংখ্যাও অবলি কম নয়। ভাল ও খেজুব গুড় আশাস্থরণ পাবার জ্বলে এই চাবও বাড়াতে হবে আরও বছলালে— বাড়ানো দ্বাবারত বিদ্বাবার আচেটার ক্ষেত্রে স্বকারী সাহাব্য ও সহবোগিতা বাদ খাদ্রে। অব্যাহত ভাবে, ভাহলে শক্রার দিক থেকে পশ্চমবল প্রোপ্রি স্বাব্যখা না হোক আরও অনেক দ্ব এগিয়ে বেতে পাববে, এ নিশিকত।

পারিবারিক বাজেটের কয়েকটি দিক

বাজেট কথাটি বদলে সাধারণতঃ সরকারী বাজেটের কথাই মনে হয়। কিছ স্বকারী বাজেটের মতো পাহিবারিক বাজেট বলেও একটি কথা আমরা জানি—পরিবারের সীমাবছ ক্ষেত্রে বার মৃদ্য এতটুকু কম বলা চলে না।

ৰে কোন বাজেটের মূল কথাই—জজিত বা দস্ত আহের টিক অনুপাতে ব্যর-বর্গন। ব্যাহর মাঞা বেন কোন অবস্থাতেই আহলে অভিক্রম করে না বায়। কি ব্যাক্তগত বা পারিবারিক বাডেট। কি আতীয় বা সরবারী বাজেট—সর্গেজে এই পুঞ্জি প্রবেগা। বেধানে এইটি অভুসরণ না করা হলো কিংবা অনুসংশের সন্তিয় পুরোগ না থাকে, দেখানেই গোল্যোগ, দেখানেই অবস্থি।

আর বৃষ্ণে ব্যর করার দাবীটি অবশ্র বছ যুগ থেকেই চলে আসছে।
এইটি অমূল্য শিক্ষাই বলভে পারা বার—প্রতিটি মাত্রব বা পরিবারকে
গাধ্যমত মিতব্যবী হতে হবে, বংরের উপর চাই বংধাচিত নিংল্লণ।
এব সঙ্গে বাঞ্চেট কথাটির বোগাবোগা ও সম্পর্ক বরেছে বিশেষ
রক্ষ। অথবা সংক্রাবে এ-ও বলা চলে—বাজেটের যুল সভাটি
এরই ভেতব নিভিত।

এঞ্চা ঠিক বছ পৰিবাৰ ববেছে, নিয়মিত ধাৰাৰ বেখানে জ্ঞাধৰচ বাথা চন্ত । সকলেই একই পদ্ধতিতে এইটি (জ্যাধৰচ বা
জাৱ-বাবেদ চিনাৰ) বাথেন, ক্ষেমন দাবী করা চলে না। এই
ধৰণৰ চিনেৰী পৰিবাৰেন সংখ্যা আশাস্থ্যকপ বথেষ্ট নয়। কেন না,
'ঋণং কুলা লুড়ং পিনেৰ' জোণীৰ লোকও কিছুমান্ত কম নয় সংখ্যার।
প্ৰদ্ধ বাণ বাব, ৰেশিৰ ভাগ লোক বা প্ৰিবাৰই বেছিদেৰী পৰ্যাৱে
না পড়লেও সঠিক বাজেট কৰে চলতে অভান্ত চন্তু নি এখন অবধি।

বাজেট করে চলাব যে চিবস্তনী দাবী বাধা হয়েছে সামনে—ধনীদবিন্ত মধাবিত্ত —কাউকে কিন্তু এব বাইবে ধরা হছে না।
দীবনগারার সর্ব্যয়ের সকলেব ক্ষেত্রেই আগরেব মধ্য থেকে বারমিটানোর প্রেটা নিজান্ত শ্রেষ্টা। হিসেবের লাগামটি ছেডে দিলে
বাজাব দীলভও ফ্রিরে খেতে কভক্ষণ। 'গৌরী সেনের টাকা'ডেও
দিব অঘনি চলঙে পারে না। মোটের উপর ধরচের আগেই বাজেট
করা চাই। জীবনের অপর সকল ব্যাপারে যেমন, এই ক্ষেত্রটিতেও
সম্ভ অগ্রগতির ক্লম্ভ পরিকল্পনা অম্বায়ী পদক্ষেপ প্রেরাজন। আর
আবায়ণাতিক বায়—একটু আগেই ব্লাহল, যে কোন স্থাচিত্তিত বাজেট পরিকল্পনার ইঙাই মৃল কথা।

এ প্রসঙ্গে এ-ও বসতে হর—বান্ধেট করতে বেখানেই চাওৱা হবে, কার্যাবন্ধের আগে মনের ভিতরে করেকটি বিশেষ পুত্র গাঁথ। না ধাকলে নর। মাস মাহিনার অক্ষটি একদিকে রাধা হ'ল, অপর দিকে প্রথমেই ধরা চাই খরচের অপবিহার্যা রড বড় বিষরগুলি। বেঘন, বাড়িভাড়া, খাত্ত-বাবস্থা, কাপড়-চোপড় সংগ্রহ, ছেলে-মেবেদের নিক্ষা-সংগ্রাম, ও স্কুল-কলেকের মাইনে, ওব্দ-পত্রের বিল, জীবন্বীমার প্রিমিয়াম—এগুলির বায়-ববান্দ হর্বাপ্রে প্রবিব্র বানি ক্রম্বাবিত্র পরিবাবে অবগ্র সে আশা বুরা,) তথনই অক্সাক্ত বান্ধ-ববান্দের প্রশ্ন উঠিতে পারে।

থমন অনেককে দেখা বাব বাবা, কোনরপ বাজেটের ধার ধাবে না, বথন বে ধরচের প্রবোজন হর বিনা ক্রাক্ষপে করে বান। আচেল টাকা থাকলে এমন সংহল, কতক কাল চলতে পাবে, কিছু আর বিদি সীমাবছ হয় (অধিকাংশ ক্ষেত্রেই বেটি সভা), সেধানে থমনি করতে চাইলে অর্থাৎ ভবিষাতের দিকে না তাকিরে বংখছে খরচে টংগাহী হলে, খাশের বোঝা মাখার উপর চাপলেই। আসল কথা—অনিতবায়ী হলে কিছুতেই চলবে না, অমিতবায়িকা শেষ অবধি তুংগকে ডেকে আনে। বতদ্ব সন্তব আর অধ্বাবেই বার করতে হবে, জানতে হবে মিছবায়ী হলেই বিপদের বিকি কম।

य अन्योकांश रा. भाविताविक शास्त्रहेव क्षांक्रम अस्तरम

ভতথানি মেই, বডটা দেখা বাব অগ্রগামী দেশগুলিতে। ইউরোপের বিভিন্ন ছানে এই নিবে চিন্তা-আলোচনা ও গ্রেব্গ: চলে আগছে প্রচুব। স্বাভাবিক অবছার বাজেটের ধরণও হবে স্বাভাবিক— সেধানে অণ হতে পারে, এমন ভাবে বায়-বরাদ্দ হলে চলবে না। আব্দ্রর জুলনার ব্যবের দাবীগুলি বলি অভ্যাধক থাকে, সে ক্ষেত্র হিসেব করে বে বে দাবীটি বাদ দেওয়া সভ্যপর, সে কয়টি ছাটকাট করতেই হবে। অপ্রয়োজনীয় বা নির্থক ধরচের অবকাল বেন সা থাকে, সেদিকে গোড়া থেকেই দাহিছকীল গুহুস্বামীর গ্রহত্ব চাই।

ভূকতোগী ও অভিজ্ঞ ব্যক্তির। দেখে এগেছেন—সীমাবদ্ধ আরু বেগানে, সীমার বাইরে বেরে থরচের বাজেট বা আধিক বার-বরাজ সেথানে করতে বাওনাই নিভান্ত ভূল। অভ্তঃ এরপ ক্ষেত্রে কার্য্যবন্ধ। অবস্থানের আগে বছবার নিবিভ্ভাবে না ভাবলে নর। অস্বাভাবিক অবস্থার উত্তা হলে ব্যবস্থাও অস্বাভাবিক নিতে হবে, এ প্রশ্নে অবস্থা হলে ভূলে লাভ নেই। সরকারী ক্ষেত্রেও অক্ষরী আমহার অক্ষরী বাজেট প্রশহনের রীতি চলতি আছে। কিছু সাধারণতঃ আর-ব্যর বা বাজেট-বাবস্থার মূল নীভিটি অন্তসংগ্রু স্বর্গালে সমীচান। মোটের উপর—আধিক সীমাবদ্ধতা বেথানেই থাকছে, সকল রকম সৌধিন বা অপ্রয়োভনীয় ব্যয় প্রিবর্জন সাক্ষরেল সেথানে চলতে পারে না।

আদর্শ-বাজেট কি ধরণের হতে পারে, বিলেব ভাবে বিলেভের



মাসিক বস্তুমতীর এতো•উ-তালিকা জুমেই বর্দ্ধিত হইতেছে

| বর্তমানে মাসিক বন্ধুমতীর ব্যাপক ও বিস্তৃত প্রচার বাঙ্কার সাময়িক পত্রের ইতিহাসে বিশ্বয় স্ | 18 |
|--|------|
| ক্ষরিয়ালে। আমাদের প্রক্রিরার গ্রেক্ট-ডালিকা লক্ষা করিলেই আমাদের ক্থার সভাতা অন্যা | 14 |
| ক্ষরে। ক্রিকানার বাহিত্রে জানীয় বাসিন্দান্তে মা!স্ক বসুম্ভা প্রাথির প্রাথবার জভ আন | 1111 |
| র্কমান সংখ্যা হইতে আমাদের একেণ্ট-তালিকা নিয়মিত প্রকাশ করিব। মাসিক বসুমতীর সন্তা | 4 M |
| পাঠক-পাঠিকা এজেন্টদের ঠিকানায় যোগাযোগ করিছে পারিবেন। | |

| ।। खोळना | CHAI 11 | | stant • | | वक्रमान |
|------------------------------------|-----------------------|----------------------------|------------------------|------------------------|------------------------------|
| ** | | ता क्षम मूक देल | — श्रुतिशाम | विवारकृष म्य | চিক্তরঞ্জ |
| लः कृतिः | काफां (कुरुखं) 🔘 | वा कारनव गांधी | - কেন্ত বিজ্ঞ লেন | মেনাৰ ৰাগচী আনাৰ | 一東河南 |
| জিচলকাৰ ভটাচাৰ্য | क्रमहे। जिल् ा | के कि यानाम्ही | - अग्रहलागी क्षत | এ ভূতনাথ দাস | |
| ইছটিকচন্দ্ৰ পাল | रण्या विश्व | a fe, stivisi | —সারক্লার রোড | विकृषणायन अवकात | —খাতীগ্ৰাম |
| জিফুলটাদ তেওয়ারী | -BIFPSIN | के वि. ति. त्मरे — बोब | • | 🚉 वन, भारत | |
| যে: জাতীয় পুস্কাশয় | টা জিগম | জ্ঞাবি সি পাস | – জি টি রোড | ত্রীরেণুপদ পাল | শে, কে, নগৰ |
| ब वि मान | —শেক রোড মার্কেট | बै ७, अन, महिक | — শিৰপুৰ | ঞ্জারাপদ বাব | —-বরবণি |
| 🖣 ভ্যাৎ সিং | —বালিগঞ | व्या व्या व्या प्राप्त | | এডপনজ্যাতি চ্যাটালী | —গীতাবামপুৰ |
| এভাগীৰৎ মাইতি | —গভিয়াহাট | | হগলী 💿 | শ্রীসুরেক্তকুমার দে | —বাণীগ |
| এ ভগারাম | —-বালিগঞ্জ | এ অমূল্যচরণ বড়া | —শেওড়াফুলি | 🔊 বি, কে, আইচ | —বৰ্তমান |
| মেঃ দামোদর লাইত্রেরী | | ঞ্মদনমোহন গাসুলী | — মগরা ও ত্রিবেণী | গ্রীপঞ্চামম মোদক | —কালনা |
| শ্রীকটিকচন্দ্র পাল | — টা <i>লি</i> গঞ | এ গঙ্গাধর দে | 🗃 রামপুর | 🔊 এইচ, সি, ঘোষ —বার্ণ | ধুর ও আসানসোল |
| विभिगठस त्याप | —টা লিগঞ্চ | শ্ৰীবিশনাথ ভটাচাৰ্য্য | —ভদ্রেশ্বর ও বৈত্যবাটী | শ্রীসুন্দরগোপাল সেন | —গলসি |
| এ বাজবল্লভ সিং | —বালিগঞ্জ | গ্রীললিতমোহন দত্ত | — হগলীঘাট | ঞীসুশীলকুমার হারচৌধুরী | — জামুবিয়া |
| এ সুকুমার ব্যানক্রি | —বালিগঞ্জ | গ্রীগোবিশচন্দ্র কুমার | — সিঙ্গুর | | नजीया 🌑 |
| ब िमञ्चरक मख | —চেত্ৰা | এ মণিভূষণ সিং | - আরামবার | 2 | _ |
| এ সুভাব চন্দ্ৰ উ কিল | —-বালিগঞ্জ | গ্রীবৈতনাথ মুখাজ্জী | —নবগ্রাম, কোননগর | ঞ্জীগোপালচন্ত্ৰ সেন | —শান্তিপূৰ — নবদ্বীপ |
| শ্ৰীশত্তনাথ দত্ত | — আলিপুর | ব্ৰীকুলাৰ ঘোৰ | —গোষাট | গ্রীহরিচরণ প্রামাণিক | — নব্ ছা প — বন্গা |
| শ্ৰীমাখনলাল নাথ | —টালিগঞ্জ | 🗟 বি, ভূষণ চ্যাটাৰ্জ্জী | —হবিপা ল | 🗟 এ, বি. মুখাৰ্জী | —ব্নুগা —বাণাংট |
| ঞ্জীবনকৃষ্ণ প্লব | —টাঙ্গিগঞ্জ | প্রীমুরারীমোচন মুগার্জী | —কোন্নগর | 🗃 এস. কে, চৌধুরী | |
| • | কাতা (বুহন্তব) 🌑 | 🗐 পি, মুগার্জী | — 🗷 রামপুর | মে: পত্ৰিকা প্ৰতিষ্ঠান | — কুঞ্নগৰ — কুণোঘাট |
| J. 4101. | | এ প্রভাত ব্যানার্জী | — চন্দ্ৰনগ্ৰ | ত্রী এন, এন, ঘোষ | — বাণাণাচ — আড ঘাটা |
| 🗬ভগবৎ বাবিক | —বে≉ি য়াখাটা | এ পি চন্দ্ৰ | <u>—</u> বাস | 🖻 বি, কে, সাহা | |
| 🕮 বিমল সরকার | —বেলিয়াখাটা | শ্ৰীস্পীপ চক্ৰবৰ্ত্তী | — 🗐 রামপুর | মে: চাৰদহ বুক ডিপো | —চাকদ হ —বাণাঘাট |
| শ্ৰীকান্ত ব্যানাৰ্জী | —বেলিয়াঘাটা | শ্ৰী বি, দি, তালপত্ৰ | —উত্তরপাড়া | শ্ৰী বি, চন্দ্ৰ দাস | |
| | হাওড়া 🍙 | ডি, পি, ব্যানাৰ্ক্সী | — চন্দ্ৰনগৰ | | মেদিনীপুর 🗨 |
| একাশীনাথ সাহা | —আমতা | | মূর্শিদাবাদ 🌑 | এপঞ্চানন চৌধুরী | —বাড়গ্ৰাম |
| এললোককুমার চ্যাটা | ., . | এঅহিভ্ৰণ মালাকার | —বেলডাঙ্গা | মেঃ মিশ্ৰ নিউৰ একেনী | —কলাইকুণ্ডা |
| এস, বি, সিং | — ফুলেশ্ব | শ্ৰীবিশ্বনাথ দাস | —ধুলিয়ান | ত্রী জে, এন, আচার্য্য | —মহিষাদল |
| এ রামপৎ সিং | —চেঙ্গাইল | শ্রীক্ষীরোদচন্দ্র ওপ্ত | — মুর্শিদাবাদ | 🗐 আই, বি, ঘোৰ | —চক্রকোণা রোড |
| এরামহরি নাথ | — সাঁতবাগাছি | শ্ৰীছবিপদ সাহা | — জিয়াগঞ্চ | 🕮 হরিসাধন পাইন | — ঘাটাল |
| 🖣 পি, কে, সিংহ | — বেলিলিয়াস বোড | মে: বোৰ লাইবেরী | —বহরমপুর ও খাগড়া | শ্ৰীমতী কনকলতা দেৰী | — খড়াপুৰ |
| | ব্যুনারায়ণ সরকার লেন | | মালদহ 🙃 | এ প্ৰবোধচন্দ্ৰ চৌধুৰী | — (यिनिनी पूर्व |
| 🗟 अम, मान | —পঞ্চাননতলা রোড | | | 91 | দিনাত্রপুর 🗨 |
| শ্রীমাভাদিন পাঙ্ | —চিন্তামণি দে বোড | 🗐 श्रम, श्रम, ठक्कवर्खी | —হরিশ্চন্দ্রপুর | • | |
| এ কার্ত্তিকচন্দ্র দাস | —নরসিং দত্ত বোড | শ্রীন্মনীলকুমার শেঠ | —মালদা কোট | 角 এ, কে, চাটাৰ্জী | —ৰালুৱবাট |
| | | | | | |

| চৰিবাশ | প্রপণা 🗇 |
|---------------------------------|----------------------|
| এ ত্ৰীলকুমাৰ ভটাচাৰ্য | —ইছাপুৰ |
| बै शांबक्क मांग | কাকৰীপ |
| মে: বি, এল, সাহা এশু সভা | —ব্যারাকপুর |
| এ বায় ৰূপেক্সনাথ চৌধুবী | — हे1की |
| (E: A, वि हेन — | দক্ষিণ-বারাগত |
| 🗿 वि. होधुवी | যাণৰপুৰ |
| 🔊 वि. ति. ए य | ৰা-ৰপ্ৰ |
| শ্বীবিজয় ভটাচার্য্য —বি | া, ডি, কলোনি |
| (চ: বি এন, লাইজেবী | কাৰীপুৰ |
| शिक्सामान् मानवश्र | — कमानी |
| श्री हिं, बस, की लिया | — मामन्य |
| 🗿 ব্যি, গি, পণ্ডিত | — यामवभूष |
| মে: ডি. জি. সাইবেরী | मधामवाम |
| 🗿 कि, मि, वर्षत | — श्रायमगर |
| था: शह कृतिव | বজবৰ |
| মে: গুহ টোর | —ব্যারাকপুর |
| এ ছব্লিপদ খোৰ | —ব্যাদাকপুদ |
| শ্ৰীইন্দ্ৰপাল সিং | — स्थान्य |
| 🕾 এন, দাস | — कन् रानी |
| শ্ৰী জি. আর সিংহ | — নৈহাটী |
| শ্ৰী কে, বাৰ | <u>— কসবা</u> |
| 🗐 কে, সি, ব্যানাৰ্জী | —ব্বাহনগৰ |
| खी (क, ज़ि, नख ममन म (न | |
| <u>জ</u> ীকা ণীনাথ শ্ৰমা | —হেষ্টিং ষ্ট্রীট |
| শ্ৰীলোকনাথ চন্দ্ৰ | —ব্ৰব্ |
| শ্রীমাধনকাল নাগ | —বারাসাত |
| শ্ৰী এদ, চক্ৰবৰ্ত্তী | —বেলঘণ্ডি য়া |
| শ্রী এন, পি, সাউ | —ভামনগৰ |
| नै धन, हाति। जी | —ব্যারাকপুর |
| জী এন, লি, মুখাজ্জী | —ঢাকু বিশ্বা |
| 🗟 এন, কে, কুণ্ডু | —ব্যাহনগৰ |
| মে: নবাবগঞ্জ নিউজ এজেজী | —ইছা পু ব |
| শ্ৰীনিমাইচন্দ্ৰ দাস | — नमनम |
| 🖣 এন, জি, দাস | —ৰাদবপুৰ |

ৰী এন, এন, ছোহ

শ্ৰীরামনারায়ণ দীক্ষিত

শ্রীর'ঞ্জংকুমার রক্ষিত

🖣 এদ, বি, বাষচৌধুরী

थी शम, वि, ताग्रत्कोधूती

ब এস, ডি, প্রসাদ সিং

শ্ৰীনতীশচন্দ্ৰ ভৌমিক

শ্রীসন্তোষ ঘোষ

গ্রীরামচন্দ্র খান

ই স্ধীর বিশাস

ৰীসভু ভৌমিক

শীশকর প্রসাদ দাস

क्रियंभ शत्रशंगा - 45412 এ এস চাকলাদার শিকুমাৰ অধিকাৰী - ব্রাহনগর — পাণিহাটি ত্ৰীভাষাপদ পাল

শ্ৰীভাপস ব্যানাৰ্জ্জী —কাচডাপ ডা — দমদম **এ**বুধুনরাম बौतकुभ 💿 ---বামপুরহাট এমাৰিকচন্দ্ৰ সাহা —নলঙারী এমণিমোহন চল -- শিউতি অম্বর্থকুমার ব্যানাক্ষী

মান্ডুম - কুমাবধুৰি ও বরাকৰ **এ**বিয়লকান্ত বাস -- পৃঞ্চির विवयनीयां इस मान

- বিবৃঞ্জুর ত্ৰীগলেশচল কৰ্মকাৰ **ब** वि. शांन —দোনামুখী —বাকুড়া এ বিজ্ঞান বাস

জলপাইগুডি

বাঁকুড়া 🙃

🔊 এ, धत्र क्रीधती -জালিপুরত্রার শ্রীসভীশচন্দ্র বোস — মল-ক্রংশন --কালচিনি শ্রীমতিলাল সরকার

माञ्ज्जिलः —কালিম্পাং খ্রী ডি. এন, বড়াল শ্রীমতী শচীরাণী দেবী –শিশিগুডি টাউন — দান্তিটিং রামপ্রসাদ সেন

কুচবিহার 📵 --দিনহাটা শ্রীঅমুঙ্গবেতন বারগুপ্ত —কুচবিহাৰ প্রীঅনিলয়ন্ত্রন চক্রবর্তী

🗟 ভে, এন, সাহা <u>—পাকৃড়</u> —বৈজ্ঞনাথধাম গ্রীমন্মথনাথ দাস

সাঁওতাল পরগণা 🙃

প্রীবটকুক মিত্র —মধুপুর ত্যিপুরা 🌑 — আগর তকা শ্ৰীমাণিক ভট্টাচাৰ্য্য

—ব্যাবাকপুর

---বাটানগর

---ব্রাহনগর

—কেলঘরিয়া

—ভাটপাঙা

---ব্যারাকপুর

--- ষাদবপুর

— দম্দম

—হাবড়া

—দমদ**ফ**

ষাদবপুর

—খড়দাই

উড়িখ্যা 🐽

—বৌচকেরা **ब** वि• मफ মে: এ, এইচ, মিজ সরকার এও কোং

--ব্ৰজৱাজনগৰ বোম্বাই 🙍

🗟 জি, এম, খোৰ চৌধুরী — বাইকুলা, বোখে এস, বি, মোদক -- (atca

মধ্য প্রেদেশ মে: এ, এইচ, মিত্র সরকার এশু কোং —ভিশাই ও ডাগ

এওনীলকুমার মজুমদার

-यमप्राच

| শ্ৰীপুৰীৰ চকাৰ্ডী | —ডিগৰৰ |
|---|----------------------|
| वैद्यामानवमन रानक्ष | —হাইলাকাশি |
| মেসার্স শিকা স্পোর্টস | ——শিলাং |
| এনরেন্দ্রনাথ শেখ | কমলপুর |
| बै वि. त्क. कोधूबी | শিলচৰ |
| এমতী কনকরাণী গাছ্দী | —ভিনস কিয়া |
| র এম- আরু ভটাচার্যা | মাকুম লং |
| ইচিভর্মন ভারেল | —- কেন্ত্ৰ |
| য়েঃ পি, এস, জৈন এশ্ব কোং | <u>\$10</u> 4 |
| এ তে চক্ৰবৰ্তী | —গোয়ালপাড়া |
| য়ে: ভাগাভাল লাইৱেৰী | —ডিব্ৰগড় |
| ঞ্জাভতোৰ মিত্ৰ | — 5 41 |
| बि वि, ठकवर्डी | —মোচনবাড়ী |
| क्षेकानाठाम वनिक | —ক্ৰিম্পঞ |
| <u> অিলোচন বার</u> | —ধুবড়ী |
| विवरमणहत्व कारेह | —কোভবাঝড় |
| | বিহার 💿 |
| ঞ্জিসভীশচন্দ্র রাষ্টোধুরী | —রঘ্নাথপুর |
| শ্রীপরিতোষ মুখাক্ষী | —ধানবাদ |
| শ্ৰীস্বন্ধিতকুমার সরকার | —কাত্রাসগড় |
| এমনোমোহন চাটাৰ্জী | — মক্তঃফরপুর |
| মে: ক্যাপিটাল বুক ডিপো | — বাচী |
| মে: গয়া মিউজিক্যাল ষ্টোরস | |
| শ্রীসভোজনাথ মজুমদার | —কাটিহার |
| শ্রীরাধারমণ মিত্র | — মুসের |
| মে: অমৃতলাল থ্যাকার এও | কোং —ঝরিয়া |
| প্রীরামব্রিচ প্রসাদ | —শেহারদাগা |
| ত্রী এইচ, এন, চ্যাটাক্রী | —ধানবাদ |
| | হাজারীবাগ টাউন |
| প্রীদেবনারায়ণলাল | — দিনাপুর |
| ৰীবাচ্চ সিং | —পটনা |
| • | ন্দ্রি ও পাথার্নদিহি |
| 🕮 করুণাসিন্ধু রার | – বেরমো |
| একু জবিহারী গাস্সী | —ভামালপুর |
| औषोत्नमहस्य विश्वाम | —ব্রজামদা |
| নে: ইউনাইটেড ডিট্রিবিউট | দ — টাটানগর |
| राज्य | ST STEEL ES |

উদ্বর প্রদেশ 🐽 মেসাস মিকাডোস বেনারস নিউজ পেপার এভেন্সী --বেনারস —লক্ষে 🗐 এস, বি, মৈত্র —নিউ দিলী শ্রীস্বচাকমোহন গোসামী —निष पिद्री প্রীনগেন্দ্রনাথ দাস —নিউ দিলী নে: সেণ্ট্ৰাল নিউজ এজেলী মে: কিতাব খর --निड पिछी -এলাহাবাদ মে: ইন্টারভাশানাল দ্রোস --=(m)

মে: এক ক কাউস

অর্থনীতিক্স মহলে এই নিয়ে পর্যালোচনা হয়েছে বেশ কিছুটা।
অবশু সকল পরিবারের জন্তেই একটি ধরার্বাধা বাজেই থাকডে
পারে না, বাকে বলা বেতে পারে আদর্শ বাজেট বা অক্সকরীর
বাজেট। এর প্রধান কারণটাই হল—সকল ক্ষেত্রেই ব্যবের
চারিলা একরপ নর, মালিক আবও হয় না সকল পরিবারের হ্বছে
একই প্রকার। কেট অপ্যকে বলে দিতে পারে না এই অবস্থার
সাংলাবিক থবচটি ঠিক এমনি হবে; গৃহবামী ও গৃহক্রীর এবং সেই
সঙ্গে পরিবারের লোকদের ক্লিও ও দায়িছবোধই এক্ষেত্রে বড় কথা।

বেদন দেশা হাব, এঘন অনেক আছে, বাজে থবচা (হাত-থবচ)
বলতে বাদেব কিছুই তেঘন নেই—পান, সিগারেট, চা-কৃষ্ণি কিবা
দেশ পাইডাব এ সংবর জন্ত বাবা তাগিদ অন্তব করে না।
আব একটি প্রেণীব নাম করা চলে, বাদের বাজে থবচাব অবাধ নেই,
চা নিগারেট ইডাালি প্রোয় সর্বকণ মূথে মুখে, সেট পাইডাব ও
অভাত বিলাস সাময়ীও না চলেই নয়। একটি প্রিবারকে চহতো
কেলেমেরেদের সর্বোজ্য শিক্ষাগানে প্রচুর অর্থ ব্যয়েও বর্ণবিক্র
কেবা গেলো, আবার অল্যর এও দেখা দেখতে পাওরা বিচিত্র নর,
বেখানে ভেলেমেরেদের শিক্ষাগানের ব্যাপারে ররেছে একটা অনিছা
বা ঔগাণীত কিবো নিভান্ত সাধারণ চেটা ও অর্থবার মাত্র।
পোবাক পশিক্ষ্প ও গাওরা-দাওরার মাত্রাভিবিক্ত অর্থবার হরে
আন্তে কোন কোন পরিবাবে, আবার অনেকগুলি পরিবাবে এসব
অচ্যাবগুক থাতেও বেশ ভেবে-চিন্তে অর্থ প্রারের দিকে তাকিরে

থবচ করতে দেখা বার। সামার ডাল-ভাতেই স্বই এমর পরিবারের বেমন অভাব নেই, অপর দিকে তেমনি কতকওলি পরিবার দেখা বাবে, বাদের দৈনন্দিন খাতভালিকার মাছ-মাংস ছুর্থ ডিম এওলি প্রার থাকা চাই-ই।

বন্ধ সংসাধ বা প্রিবারেট একটি অভিবোগ বা পবিভাপের প্রথ ভনতে পাওয়া বার—বাস্তবক্ষেত্র ভালের বাভেট অচল অর্থাৎ আবের সলে ব্যবের একান্ত প্রবোজনীয় মিল বা সমলা নেটা। বিশেষজ্ঞার এক্ষেত্রে বলতে চেরেছেন, এমনি ধেগানে অবস্থা, সেথানে হর থবচের বিষয়গুলি কাট ভাট করতে হবে, নর ভো পাবিবারিক আর বাড়াতে হবে বেমন করেই ভোক। জীবননাত্রাব মান যভটা উরত রাথতে চাওয়া হবে, আবের পতিমাণও দেট অনুপাতে বর্ষিত করার বাংলা বদি না হলো, সেক্ষেত্রে বাজেট অর্থহীন না হবে পাবে না। একা প্রবের বোজগারে প্রদ্বিত্তবে সংসার চলা বেথানে কঠিন, নারীকেও সেধানে আগিয়ে আলতে হবে অর্থ উপাবের আভে, প্রসালতঃ এইটি বলতে চর।

সর্বোপরি ঘরোর। বা পারিবাহিক বাভেটের সাফল্য নির্ভর করে পরিবারের কর্ত্তা ও আরু সদস্যদের শুভবৃদ্ধি ও গ্রীকামতের উপর। বে কোন মোটা বাংষত তেলার প্রেছেকের মনের ভেতর পরিকার বোঝাপ্ডা হওয়া চাই এবং সেটি আন্দোভালেই। বাঙেট করে চলার পরিবর্ত্তে জীবনে বংখাভাচার ও অমিত্বারিতাকে স্থান দিলে স্থবের আশা সুদ্বপ্রাহত, এ ভূসলে চলবে না।

ক্লান্ত বীণায়

কুক্ষা বন্দ্যোপাধ্যায়

বাৰ্থ প্ৰাণের বার্থভা নিয়ে কি হবে গো আঞ্চ গান গেয়ে 🔈 জীবন-যুক্ত হাল ভেতে গেছে দিকহাব। আঞ্চ আমি নেয়ে। ফিবে গেড ভূমি মুছে গেছে প্রেম, মিটে গেছে সব ভালবাস।। সা কিছু মোৰ নিষে গেছে হার অহপ্ত বাহ সংলাশা। তবুও বলাও ভনত বন্ধু হবে হবে শেব এ ব্যব্যাই। एक्टि (। अवनव क्रान्त वीनाव শেব কবিনিকো দববারী। এম'ন দিনে ধে তৃথিও বদ্ধ আত্মগ্রহীর গোপন বেশে মিখোট ঘূরে মরবে দেখেছি निक्टक कि शत करदर (मृद्ध १ ভবুও ডাক্ছি শুনছ বন্ধ ফিবে গুসো ভূমি ভাষার মাবে। ক্নাপিত এ প্রাণ জ্ডাও জুডাও ডুব দিজে হবে জীবন-সাঁখে।

বেকার

বীথি বস্থ

বন্ধু, তুমি এ তুর্দিনে ठिकाना निरम्भ वात्र, শতেক চেষ্টা করেছি হবুর দেখা হয় নাই তার ! আমি যে বেকার, বড় ঘুণা ভাই ক্লেণেছে ভাগাৰ প্ৰাণে, ভাই ববি আৰু দেখিয়া দেখে না বুঝি কোন অ'ভমানে। মাথা ন'চু ক'বে ধাই আমি তাই তবুও ভাৰার প্রাণ-একট গলে না, ভাবি আজ বসে এই কি প্রীতির দান ? সিক্ত-প্রাণের বিষ্কু ভাষা থুলিয়া বলেছি বাবে, ক্সৰ-কাথাৰ গোপন ব্যথাটি অর্থ দিয়েছি ভারে। প্রীতির আখাতে শ্বতিরে চেম্বেছি (यत्न जांहे कि हू धांत, স্কলে বেমন চাহিয়াছে বুকে ভেমনি চেয়েছি ভোর।



जवाछत कि महत?

ব্ৰহ্মচারী মেধাচৈত্তগ্য

ক্রেম বলিতে সাধ রণত উৎপত্তিকেই বুঝাইরা থাকে। বে বন্ধ পুর্বেছিল মাডাহার সভা সম্বন্ধ (লাভ) বা পুর্বে ব্স্তটি থাকিলে ও ইন্দ্রিয় মন প্রভৃতির হারা ধাহার জানিবার মত অবস্থা ছিল না, ভাহারই (সেই বস্তবই) ইক্সিয়াদি দারা জানিবার মত বোগ্য অবস্থা। পূর্বের মতটি অনংকার্ববাদীর মন্ত। এই মতের সমর্থক চার্বাক, বৌদ্ধ, নৈয়ারিক, বৈশেষিক প্রভৃতি। দিতীর মতটি সংকার্যবাদীর মত। সাংখ্য, বোগ, মীমাংসা, বেদাস্ত * ইত্যাদি। পূর্বমতে উৎপত্তির পূর্বে ঘট কথনই ছিল না। দ্বিতীরমতে উৎপত্তির পূর্বেও चहेति चन खिराक चरशा विभिन्नेतरभ हिम। धन धराक कीरवर धन्न, অন্যান্তরই আলোচা; অপরের উৎপত্তি আলোচনীর নর। আমরা প্রভাকের হারা জীবের জন্ম জানিতে পারিতেছি, সুভরাং এবিবরে সাধাৰণত সংশহ নাই; কিছ জ্যান্তৰ কৰাৎ এই বৰ্তমান জন্ম ৰাজীত পূৰ্ব ও পংক্ৰম সম্ভৱ কি না ইহাই জিজ্ঞাতা। আবাৰ - জন্মান্তব বলিতে একট সম্ভানেব (ধারাব) ভিন্ন ভিন্ন সম্ভানী অর্থাৎ ব্যক্তির জন্ম এইরপ, বৌদ্ধমত অনুসারে জনান্তর ববিলেও সংক্র · পুরীভূত চইবে না। কারণ বৌশ্বমতে সম্ভানী ব্যতিধিক্ত সম্ভানের পুথক সত্ত। না থাকার আবার সন্তানী মাত্রই ক্ষণিক বলিয়া · टोक्डभरक कारावेश समासन नारे। अवह समाखेव नरेवा वि বাৰামুৰাৰ ভাহা এক স্বাধী আন্তাকে সন্দেহ কৰিয়াই ভাচাৰ পুংক্ পৃথক্ নৃতন প্ৰাতন স্বাম সম্মে সন্দেহ হইতে উন্তত।

কেছ কেছ বলেন, 'জনান্তব নাই অর্থাং একটি জীবের এই জন্মের সঙ্গে সঙ্গে ভাহার সব কিছুর আরম্ভ, জাব ভাহার মৃত্যুর সঙ্গে সঙ্গে সব কিছু শেব।' এই মতের সমর্থকগণ লোকারত বা চার্বাক্ নামে প্রসিদ্ধ। এই নাম কোন ব্যক্তি বা দলের নাম নর, কিছু বে মত লোকে জায়ত অর্থাং ব্যাপ্ত ভাহার নাম লোকারত। মোট কথা, বাহা জবিকাংশ লোকেই মানে ভাহাই লোকারত মত। জবিকাংশ লোকেই শরীর, ইন্দ্রির, প্রাণ, মন, বৃদ্ধি প্রভৃতিকে জাত্মা মনে করিয়া ভাহারই সুধবিধান ও তুংধ দূর করিবার চেষ্টা করে।

আবাৰ কেছ কেছ বলেন, এই শরীর, ইন্দ্রিয়, মন, বুদ্ধি প্রভৃতি হইতে মতিরিক একজন আত্মা আছেন।

অপূর্ব দেহের সহিত সেই আত্মার সম্বদ্ধকে তাহার (আত্মার) জন্ম বলে। এই বর্তমান দেহ ভিন্ন পূর্ববর্তী বা পরবর্তী দেহের সম্বদ্ধই জন্মান্তর। ইহা ভার, বৈশেষিক সাংখ্য, পাতঞ্চন, মীমানো, বেদান্ত, শৈব, বৈহাব, শাক্ত প্রভৃতির মক্ত। কিন্ত জন্মান্তর ভবেই সম্ভব হয়, বদি দেহের অভিবিক্ত জাল্লা থাকে ও দেহ-উৎপত্তি বিনাশের সজে সঙ্গে এ দেহধারীর উৎপত্তি বিনাশ না হয়। দেহই আত্মা ছইলে বে দেহের জন্ম বা মৃত্যু হয় ঠিক সেই দেহের পূর্বজন্ম সম্ভব

নায়। বিহেছু আমানা কোবাও এখাপ দৌৰ না—সাবাইছি ওঁছ
প্রাকৃতির মধ্যে বে বট মই হইলা বার, সেই ঘট পুননার উৎপন্ন
ইয়। শ্রীরও সাবর্ব, স্থাত্রাং ভাষার পুনর্কান সক্তব মর।
আবার দেহের মৃত্যুর সঙ্গে সংস্প বেমন দেহের ছারা বা রূপ প্রভৃতি
নাই হইলা বার, আআও বদি সেই ভাবে নাই চইরা বার ভাষা হইলেও
ভাষার ক্যান্তর সন্তাবিত হইতে পারে না। স্থাত্রাং দীভাইল
এই বে, দেহাদি-অভিবিক্ত আত্মা থাকিলে এবং ভাষা অবিনাশী হইলে
অমান্তর সন্তব্য ক্যান্তর অসিত্ব। এখন দেখা বাক এই
ছুইটি সন্তব্য কি না।

পূর্বপক্ষ

দেহ-অতিরিক্ত আত্মা অসির। কারণ সকলেই দেহকে আত্মা বলিরা অভুভব করে; দেহের অভিরিক্ত আত্মার প্রায়ে হর মা। দেহের মৃত্যুর পর দেহ হইতে আত্মাকে পৃথক্ ভাবে বাহির হইয়া বাইতে বা অংশাৰ সময় দেহের মধ্যে ৫ইবিট হইতে দেখা বার না। সকলেই শ্রীরকে আমি বলিরা বুবে এবং তাহারই স্থ হ:ধ প্রভৃতিতে নিজেকে সুখী, হু:খী প্রভৃতি মনে করে। বেমন লোকে মনে করে আমি মানুহ, আমার নাম সুতাহ, আমি কলিকাতার বাস कति, आमि थर जूबी, आमि पृत्वी हेळानि। भवीत, हे सिय मन, বুদ্ধি ব্যতিবিক্ত মাত্মৰ বলিয়া কোন পদাৰ্থ নাই, বা ভভাব নাম, কলিকাভার বাস প্রভৃতিও শরীর হইতে কোন অতিথিক আত্মার সহকে বুকার না। জার জামি বলিতে আত্মাকেই বুকার; আত্মা ভিন্ন কোন পদাৰ্থকে লোকে আমি বলে না। স্মত্ত গং এই দেহট আত্মা এবং ভাষা চেভন। বেমন এই সাধারণ জলে বিহাৎ পরিলক্ষিত না হইলেও যথন ভাহা মেখ-ৰূপে পবিণত হয় তথন ভাহাতে বিঘাৎ উৎপদ্ম হর, সেইদ্ধপ বে পঞ্চভূতের বারা দেহ উৎপদ্ম হয়, সেই পঞ্চভতে চৈত্ৰ না থাকিলেও দেহরপে পরিণত হইলে ভাহাতে চৈতন্ত্ৰ উৎপদ্ম হওৱাৰ কোন বাধা নাই।

উত্তরপক্ষ

বুদি শ্রীরই আত্মা হইত, তাহা হইলে আমার শ্রীর এইরগ বাবহার সম্ভব হইত না। কাবণ আমি বলিতে বধন আতাকে বুঝান হয়, আর সেই আত্মা বখন শ্রীর হইতে অভিন্ন, তখন "আমি भवीय वा भाष्ट्रव" এই क्रम बावहावह मञ्चव, "आभाव भवीव" এই वादहाव কিন্তপে সম্ভব হুইবে ? কেছ কি 'ঘ.টর ঘট, বা ঘটের কলস' এইরপ ব্যবহার করে ? অবচ লোকে সকলেই 'আমার শবীর' এইরপ ব্যবহার করে। বেখানে বল্লী ও প্রথমা বিভক্তির প্রহোগ হর দেখান বঠান্ত ও প্রথমান্ত পদার্থ চুইটি পরস্পার ভিন্নই ।ইয়া থাকে। আমার পিতা, আমার গৃহ ইত্যাদি। অতএব আমার শরীর কুশ, ^{দুগ} ইত্যাদি প্ৰবোগেৰ বাবা শৰীৰ হইতে বে শাসা অভিবিক্ত ভাষা বুৱা বার। বদি বলা বার একই অভিন্ন বছতে লোকে অনেক স্থাল গৌণ ভেদ ব্যবহার করে। বেমন রাছর মস্তক, পাথবের প্রতি^{মা} ইড্যাদি। বাছ ও মন্তক অভিন্ন বন্ত, পাণৰ ও প্ৰতিমা একই ^{বন্তু ।} ভথাপি লোকে রাহুর মন্তক, পাথরের প্রতিমা বলিরা ভেদের বা^{বহার} করে। সেইরপ শ্রীর ও আত্ম অভিন্ন প্রার্থ হইলেও আমার শ্রীর এইরপ গৌণ ভেদ ব্যবহার অসিত্ব হর না। বেখানে পরিকার ভাবে সকলের অভেন জ্ঞান থাকে সেথানেই গৌণ জেদের ব্যবহার হর। বেংন-বাছ ও মন্তক অভিন্ন বলিবা সকলেংই জানা আছে, এইবৰ ৰাছৰ মক্তক-এইৰণ পৌণ জেদ ব্যবহাৰ সিদ্ধ হয়; কিন্তু ^{(মৃত্ত}

অবৈতবেদান্ত ভিন্ন অভাত বেদান্তবাদীদের মতে কার্য সং।
 আবৈতবেদান্তে বে সংকার্যবাদের কথা আছে তাহা অসংকার্যবাদ প্রশাসন অভিপ্রাবে। অবৈতবাদী বাভবিক পক্ষে সংকার্যবাদী।
 জন্মতে কারণ হইতে কার্যের পুরক্ত সভা নাই।

ৰাঝা বে ৰভিন্ন, তাহা পরিষার ভাবে সর্ববাদিসম্বভরণে জানা নাই। অতথ্য এখানে দেহকেই অবলম্বন ক্ষিয়া 'আমার मरीव' बहे वावहात मछर हहेत्व ना। एक ও आचात অভিন্ন জ্ঞান অবিদংবাদিরপে সকলেরই আছে—ইहा ভীকার क्षिया महेला एक्टक व्याचा वना याहेरव ना। वथा--- एक्टक আত্তা বলিলে প্রশ্ন হইবে যে, আত্মা চেতন বলিয়া দেহও চেতনসিদ্ধ segia সাব্যব দেহের প্রত্যেক অবহবে এক একটি পৃথক পৃথক চৈত্র আছে অথবা দেহের সমস্ত অবয়বে মিলিয়া একটি চৈত্র। দেহ বে সাবধুব তাহা প্রভাক্ষাছ। বদি বল প্রভাক অবহুবে এক একটি পুথক চৈত্তা থাকে, ভাষা হইলে এই দোষ হইবে বে একটি দেহে অনেক চৈতক্তের সমাবেশ হওরায়, বহু চেতন পদার্থের নিম্না বাতিবেকে একামত না হওয়ায়, শানীবিক ব্যবহার ষ্ণাংপ ভাবে সম্পন্ন হইতে পারিবে না। একজন চেম্বন যদি পূর্বদিকে হাইতে ইচ্ছা করে আর একজন যুবকও পশ্চিম দিকে যাইতে ইচ্ছা কবিজে পাবে। ভাহার ফলে শ্রীবটি বিধ্বস্ত হইয়া ষাটবে নতবা সকলের সমান বল হইলে শ্রীর আর কোন দিকেই অগ্রসর হইতে পারিবে না।

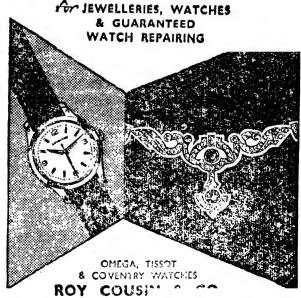
আর যদি বল শরীবের সমস্ত অবয়ব অর্থাৎ রক্ত, মাংস, মেদ, অস্থি, নাড়ী, স্নায়ু, ওক প্রভৃতি সমস্ত অংশ মিলিয়া শ্বীরে একটি চৈত্তক উৎপন্ন হয়—তাহার উত্তরে বলিব— যেমন প্রদীপ, সলতা, তেল, অগ্নি মিলিত হইয়া একটি প্রকাশ-কাৰ্য সম্পাদন ক্রিলেও কোন একটি বা ছুইটির অভাব হুইলে আর প্রদীপ অলে না, সেইরপ শরীরের কোন এছটি ছাত বা পা কাটিয়া গেলে, তাহাব অভাবে চৈতক নষ্ট হইয়া ষাউক। অলচ বন্ধ সোকের কাটা হাত ভাঙ্গা পা ইত্যাদি সত্ত্তে বাঁচিয়া খাকে বা (B इन हें बादक। विभ वन भनोदात क्रभ मधक्क भनीक्रक वार्श করিয়া থাকে, শরীরের একাংশ নষ্ট হইয়া গেলে সেই জংশের রণ না থাকিলেও অন্ত অংশে বেমন রূপ থাকে সেইরূপ হৈত্ত ও সৰ্ব শ্ৰীৱের গুণ বলিয়া শ্ৰীৱেৰ একাংশ নষ্ট হইয়া গেলে ও জ্বপুয় অংশে চৈত্ত থাকিতে বাধা কি ? ভাহার উত্তর এই বে, মৃতশ্রীর ষধন গড়িয়া থাকে, তথন তাহাতে রূপও থাকে; সেইরূপ চৈত্তগুও থাকে না কেন ? অভবাং হৈতভ, রপের মত, দেছের গুণ নয় বা দেহের ধর্ম নমু--ইহা সিদ্ধ হওয়ার, দেহ-অভিবিক্ত আত্মা স্বীকার কৰিয়া চৈতক্সকে তাহার ধর্মবা শভাব বলিতে হইবে। ষদি বল, অন্ম হইতে মৃত্যু প্ৰস্ত চৈতত থাকাই শ্বীবেৰ স্বভাৰ, এই জন্ম মৃতদেহে চৈত্ত থাকে না। ইহার উত্তরে বলিব —বিষ নট (অদ্ভ) না হওয়া পৰ্যন্ত বে ংশ বল্পতে অমুভ্ত হয়, তাহাই ভাহার অভাব হয়। বেমন অগ্নির উক্তা, জনের শীতগতা ইভাদি। বস্ত বিজ্ঞমান থাকিতে তাহার স্বভাব ক্থনও নট্ট হইতে পারে না। স্থতরাং মৃতশ্রীর পড়িয়া ধাকা সংস্থেও বধন চৈতক্ত অহুভূত হয় না, তধন বুঝিতে পায়া ষার বে, চৈডক শরীরের স্বভাব নয়।

পূ্বপক্ষ

বন্ধ আনুভূত হইলেও কোন প্রতিবৃদ্ধক বশত আনেক সময় ভাহার বভাবের আদর্শন দেখা বায়। বেমন উক্তাও দাহক্তা ৰছির খভাব কিছ সেই বছি বিশেষ মণি বা মন্ত্রাদি বুক্ত হইলো
ৰছি থাকা সত্ত্বে তাহার দাহকতা বা উক্ষতা অনুভূত হর না।
কাবণ বিজ্ঞমান সত্ত্ব বাহার জন্ত কার্ব উৎপন্ন হর না—
তাহাকে প্রতিবন্ধক বলে। বহিন্তরণ কারণ থাকা সত্ত্বে মণি
বা মন্ত্র বশত দাহকার্ব উৎপন্ন হর না বলিয়া দাহের প্রতি মণি
প্রতিবন্ধক। সেইরণ শরীবের খভাব চৈত্তা; কিছ মৃত্যু,
মৃত্র্য বা স্বর্ধীরকণ প্রতিবন্ধক বশত মৃত্যাদি শরীবের চৈত্তা
অনুভূত হর না। এই ভাবে চৈত্তাকে শরীবের খভাব বলিলো
কোন অনুপ্রপত্তি না থাকায় শরীবের অতিবিক্ত আত্মার করনা
করা অনুর্থক রেশমাত্র।

উত্তরপক্ষ

কারণ বিজ্ঞমান সন্তে, বাহার জন্ম কার্য উৎপন্ন হয় না—জ্ঞাচ বাহাকে পরিহার করিয়া কার্য উৎপাদন করা সম্ভব তাহাকেই প্রেভিবন্ধক বলে। বহিন বিজ্ঞান সত্ত্ব চক্ষকান্ত মনির সংবোগ বশত দাহ উৎপন্ন হয় না, সেই চক্রকান্ত মনিকে সরাইয়া দিয়া বা প্র্রেকান্ত মনির হারা চক্রকান্ত মনির শক্তি অভিত্ত্বক করিয়া বহিন্দ দাহ-উৎপাদন করা বায় বলিয়া চক্রকান্ত মনিটি প্রেভিবন্ধক হইজে পারে। কিন্তু শরীর বিজ্ঞমান সত্ত্বেও সূত্র বশত শরীরের চৈত্ত্ব উৎপন্ন হয় না—এই কথা বলিলে চৈত্ত্বের প্রভি মৃত্রুকে প্রভিবন্ধক বলা বাইবে না। যদি এমন হইত, মৃত্যুকে দূর করিয়া বা অভিভূত্বকরিয়া শরীরে চৈত্ত্ব উৎপন্ন হয়ত তাহা হইলে অবশু মৃত্যুকে চিত্ত্ত্বর প্রভিবন্ধক বলা বাইত। কিন্তু তাহা ভ্রম্বত হয় না।



4 DALHOUSIE SQUARE, CALCUTTA-I

আত পর্ব মৃত্যু চৈতলের প্রতিবন্ধক নর কিছ শরীরের সহিত প্রাণের আত এব মৃত্যু চৈতলের প্রতিবন্ধক নর কিছ শরীরের সহিত প্রাণের শেষসংবাগের ধ্বংসই মৃত্যু । আবও কথা এই বে, ভাবপদার্থ ভির বাহার অত্যন্তভাবিটি কার্বের প্রতি কারণ হয়, ভাহার প্রতিবোগীকে প্রতিবন্ধক বলে । বেমন চন্দ্রকান্ত মণির অত্যন্তভাভাব দাহের প্রতিকারণ হয় বলিয়া তাহার প্রতিবেশ্গী চন্দ্রকান্ত মণিটি প্রতিবন্ধক হইতে পারিস । মৃত্যু হইতেছে প্রাণের শেষ সংবোগ ধ্বংস । ঐ ধ্বংসের প্রাণ্ডাবকে অর্থিৎ মৃত্যুর প্রাণ্ডাবকে শরীরে চৈতলের প্রতিকারণ বলিলেও বেহেত্ মৃত্যুটি প্রাণ্ডাবকে শ্বীরে চৈতলের প্রতিকারণ বলিলেও বেহেত্ মৃত্যুটি প্রাণ্ডাবের প্রতিবেশ্গী আবার মৃত্যুর প্রাণ্ডাবটি ক্ষলত, শ্বীবের সহিত প্রাণের শেষ সংবোগরূপ ভাবপদার্থ হওয়ায়, তাহার প্রতিবেশ্যী মৃত্যুকে প্রতিবন্ধক পদার্থ বলা বাইবে না । আর মৃত্যুক প্রতিবন্ধক বলা বাইবে না ।

পূর্বপক্ষ

ছই বা তাহার অধিক বন্তব সংবোগে নৃতন নৃতন গুণ বা খণ্ডাব উৎপন্ন হইতে দেখা বার। বেমন চুণের সহিত হলুদের সংবোগ ছইলে লাল বং উৎপন্ন হর। কেবল দৰি কফাদি বর্দ্ধক হইলেও শর্কবাদি সংযুক্ত ঐ দবি অবাদি নাশক ও পৃষ্টিকারক হয়। আধুনিক চিকিৎসক্সণ মান্তবের শরীরের অংশবিশের অকর্মণ্য হইয়া গেলে অনেক সমর বানর প্রভৃতি পশুর অংশবিশের শরীরের সংযুক্ত করিয়াদেন। তাহার ফলে অনেক সমর তাহার (রোগীর) পূর্ব ভাবের পরিবর্তন হইরা বার। বৃদ্ধের শরীরেও বৌবনের আবির্ভাব হর ইত্যাদি। সেইরূপ কেবল শরীরে চৈতত্ত না থাকিলেও প্রোণ, মন, বিশেব আয়ু বা শরীরের কোন পৃন্ধ অংশ (বাহা মৃত্যুকালে থাকে না) প্রভৃতির সংবোগ বশত শরীরে চৈতত্ত উৎপন্ন হয়। মৃত্যুকালে শরীর হইতে ঐ প্রাণ প্রভৃতি বিযুক্ত হওরার, কারবের অভাববশত চৈতত্ত থাকে না ইহাই মৃক্তিনক্ষত। অভ্যাং শরীর, ইন্তির, মন, প্রাণ ইত্যাদি হইতে অভিনিক্ত আত্মার প্রমাণ না থাকার সমান্তব্যাদ অস্থি।

উভরপক

চুণ বা ছলুদে পূর্ব ইইডেই লাল বাটি জনভিব্যক্ত অবস্থার ছিল;

এ উদ্রেব সংবোগরণ অভিবাঞ্জকের ফলে অভিবাক্ত হর মাত্র।
বিদ্ চুণ বা ছলুদে লাল বং না থাকিত তাহা হইলে তাহাদের
সংবোগ বলত উহা কথনই উৎপর হইকে পারিত না। কারণ গুণ
বা অভাব কথনও কেবল সংবোগের ঘাবা উৎপল্ল হইতে পারে না।
গুণ প্রবোর ধর্ব এবং প্রবাকে আগ্রের না করিল্লা থাকিতে পারে না
বিলিল্লা গুণের প্রতি প্রবাকে অবগ্রই কারণ বলিল্লা খীকার করিতে
হইবে। বলি প্রবা গুণের প্রতিকারণ না হইজ, তাহা হইলে চুণ ও
হলুদের সংবোগের ফলে লাল রংটি ঐ চুণে বা হলুদে উৎপল্ল না হইল্লা
জলে বা মাটিতে উৎপ্ল হইতে পারিত। কিন্তু তাহা হ্র না।
অভগ্রব বলিতে হইবে বে, লাল রংগ্রব প্রতিকারণ বলিল্লা খীকারই
করিতে হইল, তথন তাহাদের সংবোগকে কারণ খীকার না করিল্লা
জানিবালক মাত্র খীকার করাই যুক্তিযুক্ত। আর এইরপ দেখাও

বার—কুষ্নে পূর্ব হইতে পদ্ধ থাকে, গবা ঘৃত সংযোগ কবিলে সেই
পদ্ধ অভিব্যক্ত হব বলিরা গবা ঘৃত বা তাহার সংযোগটি গদ্ধের
অভিব্যক্ত হব বলিরা গবা ঘৃত বা তাহার সংযোগটি গদ্ধের
অভিব্যক্ত মাত্র। দধি শর্করাব সংযোগ, মান্ন্য-শরীরে বানরের
থারর্ড গ্লাণ্ড সংযোগ ইত্যাদি ছলেও এইরূপ ব্বিতে হইবে। শরীর
বা মনে নানা প্রকার গুণ বা খুভাব অনভিব্যক্ত অবস্থার থাকে।
হথোচিত অভিব্যক্তক (Operation প্রভৃতি) হারা সেই সম্ব গুণ
বা ঘুভাবের অভিব্যক্তি হর মাত্র। কেবল সংযোগবশভ কোন ঘুভাব
উড়িয়া আসে না। শুকুরাং শরীর, ইপ্রিয়, প্রাণ, মন প্রভৃতির
সংযোগ বশত বদি চৈতক্ত উৎপন্ন হর, ইহা খীকার করা বায় ; হায়া
হইলে বলিতে হইবে, ঐ চৈতক, শরীর, ইপ্রিয়, মন বা প্রাণ প্রভৃতি
বন্ধর এক বা ভভোধিক বন্ধতে পূর্ব হইতে অনভিব্যক্ত ভাবে ছিল।
সংযোগের ফলে অভিব্যক্ত হয় ; বিয়োগের ফলে পুনরায় ভিরোহিত
হয়। কিছ শ্রীরে বে চৈতক্ত থাকিতে পাবে না, ভাষা পূর্বই
দেখান হইবাছে।

ইন্দ্রির চৈতত স্বীকার করিলে শ্রীরের বেলার বে দোব হয়, ইন্দ্রিরপক্ষেও সেই দোবের আপতি হইবে। ইন্দ্রিরের চৈতত্তপক্ষে আরও দোব এই বে, চকুরিন্দ্রির পূর্ব বছ বন্ধ প্রত্যক্ষ করিয়াছিল; পরে যথন চকু ইন্দ্রির নাই হইয় বায়, তখন মামুর পূর্ব প্রত্যক্ষীকৃত বল্পগুলি অরণ না কর্কক; কারণ চকুরপ আত্মা ত মবিয়া গিয়াছে। কর্ণ প্রভৃতি ত চকু হইতে ভিন্ন। চকুর অমুভৃত বল্প করিও পারে না। অত্যের অমুভ্ত বল্প অব্যাক্ষ করে করে। আবচ মামুর পরে বখন চকু হায়ায় তখনও চকুর খায়া পূর্ব অমুভৃত বল্পর অরণ করে। ইহা হইতে বুঝা বাইতেছে বে, চকু প্রভৃতি ইন্দ্রিয় হইতে ভিন্ন স্থামী কোন চেতন পদার্থ আছে; বায়া প্রবিধরের অমুভ্ত আরু করিতে পারে।

চৈতভ ৰে মনের ধর নর, তাছা একটু পরে দেখান হইবে। বাকি থাকিল জাণ। এখন দেখা বাক্ চৈভভটি প্রাণের ধর্ম বা পভাব কি না। প্রাণে চৈতভ থাকে না। কারণ স্বয়ুখ্যির সময় প্ৰাণ শৰীৰে সংযুক্ত থাকে অৰচ ডাকিলে সাড়া পাওৱা বাব না বা পুৰু বি কালে কোন জান অৰ্থাৎ হৈতত থাকে না। বলি বলা বাক-পুৰুত্তি হইতে উঠিয়া লোকে নিজের সভা বা জানন্দ প্ৰভৃতি খ্ৰণ করে বলিয়া সুষ্থি সময়ে সামান্তভাবে চৈত্ত বা জ্ঞান থাকে, মনেৰ সংৰোগ না থাকার বিশেষ জ্ঞান হয় না। প্রাণরূপ আত্মার সামার জ্ঞানের প্রতি শরীর সংযোগটি কারণ, আর বিশেষ জ্ঞানের প্রতি প্রাণে শরীর ও মনের সংবোগই কারণ। অভরাং চৈতত প্রাণের ধর্ম প্রাণে চৈত্ত স্বীকার করায় প্রাণকে আত্মা বলিতে হইবে। করিণ আত্মা চেতন বলিয়া প্রসিদ্ধ। অথচ অন্মান্তর স্বীকার না করার ल्यानिक विनामनीम रख विमिश्न श्रोकांत कविष्क इट्टेंदि। প্রাণকে নিত্য স্বীকার করিলে শ্রীরের জ্যের পূর্বে বা পরে প্রাণের সভা থাকার অন্যান্তর নিম হইতে পারিবে। প্রাণ বিনাসী হ^{ইলে,} विनामी छावनमार्थ माळहे छेरनिखनीन हम्न, এवर छेरनिखनीन দ্রব্য সাবন্তব হর বলিয়া প্রাণের উৎপত্তি এবং সাবর্^{বর্ষ} স্বীকার করিতে হইবে।

সাবয়ৰ স্বীকাৰ কয়ায় পূৰ্বের মত প্ৰাপ্ত হাৰে ৰে প্ৰা^{ৰ্বের} প্ৰাত্যেক অবস্থাৰে ভিন্ন ভিন্ন চৈতত উৎপান্ন হয়, জধৰা সম্ভ জনবাবে একটি তৈতক্ত উৎপন্ন হয়। প্রত্যৈক জনবাবে ভিন্ন তির ভিন্ন চৈতক্ত স্থাকার করিলে এক শরীরে অনেক চেতনের সমাবেশ বশত পূর্বের মত শরীরবাত্রার জন্যবন্ধা হইবে। আর সমস্ত জনবাব একটি চৈতক্ত স্থাকার করিলে বাল্যা, বৌবন, বার্দ্ধার প্রাণের এক বা একাবিক জনবাবের বিনাশ বশত চৈতক্ত নাই হইরা বাইবে। অথচ তাহা হয় না। স্তত্তরাং প্রাণে তৈতক্ত নাই বিনি বলা বায় সমস্ত বল্লে একটি রূপ ব্যাপ্ত হইরা থাকে; বল্লের একাশে ছিন্ন হইলে বা বল্লে কিয়নংশ বোগ করা হইলে নূতন নূতন রূপ উৎপন্ন হয়; বল্ল কথনও নীরূপ হয় না; সেইরূপ প্রাণের সমস্ত জনবাবের একটি চৈতক্ত ন্যাপ্ত হইরা থাকে। ভাহার (প্রাণের) একাশে নাই হইলেও চৈতক্ত নাই হইবে কেন ? বতক্ষণ প্রাণের একটি জনবাবেও থাকিবে ততক্ষণ ভাহাতে চৈতক্ত থাকিবে; অথবা নূতন নূতন চিতক্ত উৎপন্ন হইবে। স্ক্তরাং চিতক্তের একেবারে বিনাশের আপত্তি হইতে পারে না।

ইহার উত্তরে বলিব বে, জ্রব্যের অবরবের ব্রাস-বৃদ্ধি হইলে

অবরবী পরিবর্ত্তিত হয় অর্থাৎ পূর্ব-অবরবী থাকে না নৃতন

অবরবীই উৎপল্ল হয়। পূর্বে বে বল্লে বতগুলি প্রে ছিল, পরে

এক-হই বা অধিক প্রে বদি সেই বল্ল ছইতে বিচ্যুত হয়

বা তাহাতে সংবৃক্ত হয়, তাহা ছইলে ঠিক পূর্ব-বল্ল আর থাকে

মা, নৃতন বা অন্ত বল্লই উৎপদ্ধ হয়, মোট কথা, বল্লটি ভিন্ন

হইয়া বার। বল্ল ভিন্ন হওয়ার ফলে তাহার রং-ও পরিবর্তিত হয় অর্থাৎ অভা বং তাহাতে উৎপন্ন হয়। দ্রবা ভিন্ন হইলে তাহার গুণও অবশুই ভিন্ন স্বীকার করিতে হইবে। শেইরূপ প্রাণ সাবরব বলিয়া বাল্য বৌরন, বার্দ্ধ**র** প্রভতি অবস্থাতে তাহার অবয়বের হ্রাস বা বৃদ্ধি হওরার অবয়বী কুপ আণও ভিন্ন ভিন্ন উৎপত্র হয়—ইহা স্বীকার করিতে চইবে। অবহবী ভিন্ন ভিন্ন ভাবে উংপন্ন হওৱায় তাহার চৈত্যাখন্ত্রপ গুণ্ড ভিন্ন ভিন্ন উৎপদ্ম হইবে—ইহা অনমীকার্ব। ভাচা চইলে বালো বে চেতন প্রাণরণী আত্মা ছিলেন বৌবনে দেই আত্মা না থাকার, পংস্ক ভিন্ন জাত্মা উৎপন্ন হওরায় লোকে বাল্যের জন্মভৃত বিষয় বা ঘটনাকে থৌবনে খন্ত্ৰ করিতে পারিব না। কারণ বাল্যের প্রাণাত্মা ভিন্ন, যৌবনের প্রাণাত্মা ভিন্ন বলিয়া বাল্যে অনুভূত আত্মার বিষয়কে বেবিনের আত্মা ছবণ করিতে পারে না। অথচ সকলেই বাল্য বৌবনের ঘটনা রোগাদি বিশেষ-প্রতিবন্ধক না থাকিলে বৌবনে বা বাৰ্দ্ধকো শ্বৰ কৰিবা থাকে। এই শ্বৰণেৰ নিয়ম বশভ শ্বীকাৰ করিতে হইবে—লম হইতে মৃত্যু পর্যন্ত এক অপরিবভিত্ত স্থানী নিব্ৰব্ৰ আত্মা থাকেন-বাহাৰ ফলে পূৰ্ব-ক্ষাণ প্ৰভৃতি সম্ভৱ হয়। শ্রীর, প্রাণ, ইল্লির প্রভৃতি সাবয়ব বলিয়া পরিবর্তনশীল ছঙরার সর্পের ব্যবস্থা সিদ্ধ হয় না। প্রতরাং ইহারা আত্মা নয়।

ি আগামী সংখ্যার সমাপ্য।

মহাপ্রস্থানের পথে

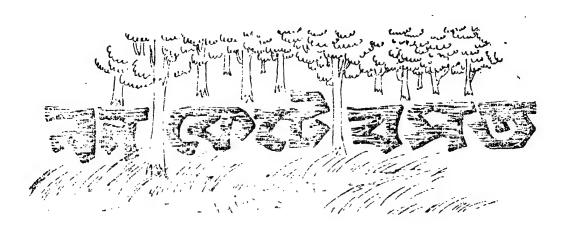
হে চিরপথিক, পথ চল, পথ চল।
ছটি নরনের কাজল মারার
ছি ছি বেগুইন, বাঁবিবে তোমার
অপ্র ভাকিছে হাতহানি দিরে
চল চল ভুমি চল।

ভূবন-ভরা সে রূপের মাধুরী
পান কর ভূমি, হুটি আঁাখি ভরি
পিপাসা মিটিবে; অমির-ধারাতে
প্লাবিবে হৃদয়তল।
অরপ রতনে খুঁজেনেবে বদি
পথ চল, পথ চল।

ওই শোন ভার বাঁশরীর ধ্বনি
ভূবন ভরির। উঠে রণি' রণি'
মধুর সে বাণী তনিতে দের না
ধরণীর কোলাহল।
ভোমার আশার, তাকে সে তোমার
চল তার কাছে চল।

সারাটি জীবন বাবে ফির থুঁজে মরণের বেশে আসিবে সে নিজে মিলন-সোহাগে ধল্ল হবে বে বিবহের জাঁবিজল।

াপ্যবেশ আব্দেশ। তীর্থরাক্ষের চরণে ঢালিবে সকল তীর্থফল।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] মনোঞ্জ বস্থু

ভেরো

চিপুরিগঞ্জ করণি রাস্তার নিশানা। জগা দেই রাস্তা ধরে
চলেছে। চলা জার কি, একরকম দৌহানো। রাস্তার বেক্লেই লগার এই কাণ্ড, থীরে স্থান্থ পা ফেলা কোন্তিতে লেখে না। পিছনে বলাই, দে হাপাছে। জান্তে রে জগা, জাস্তে। জাবার ওরই মধ্যে বসিক্তা করে নের একটু: এত ভূটছিস কেন বে । দক্ষাল মেরেটার ভবে । উঁভ, দে পিছনে নেই। জাস্তে চল।

উচুঁ জারগা হল তো বন-জঙ্গল, নাবাল হল তো জল। বনের গাছ-পালা কেটে নাবাল জমির উপর মাটি ফেলে হাত চারেক চওড়ারাজা টেনে নিয়ে গেছে। সেই জাবো বিপদ। কাটা গাছের গোড়াগুলো শৃলের মতন পায়ে গোঁচা দের। নতুন ভোলা মাটিতে টোক্টর লাগে পারে। জগার লাগে না, বোদ করি শহরে যোড়ার মতন পারের তলায় লোহার নাল বাঁধিরে নিয়েছে। নয়তো ছোটে কেমন করে ঐ রাজার? বলাই পারে না—রাজা ছেড়ে সে পাশে জপথে চলে বার, জলে নেমে পড়ে। গোটা ছুই-তিন ঝাল বাঁধা ছছে, কাজ শেষ হরনি এখনো। তা জগার কাও দেখ, তিলেক বিধা না করে থালে মুঁপ দিয়ে পড়ে তবনতর করে সাঁতের চলে গোল পানকৌড়ির মতন। রাজাটা করেছে কিছা নাকের গোচে গাঁচে বত ঘ্রুতে হত, সংক্ষেপ হয়ে গিয়ে বোধ করি তার সিকিতে গাঁড়িয়েছে। আর সত্যি সত্যি বর্ধন পাকা রাজা হয়ে মোটর চলবে, তথন কুমিরমারি একেবারে ঘরের ছয়ারে। পলক ফেলতে না ফেলতে পৌছে দেবে।

দাইতলা পৌছতে গুপুৰ গড়িয়ে গেগ। বিস্তৱ ক্ষণ আগে এসেছে তবু। নৌকো হলে দিনের মণ্যে আসা ঘটত না। জগা বলে, আসায় চল বে বলাই আগে। এত বেলি উতলা হরে পড়ল কেন বড়দা ? পলের-বিশ হাত বাঁধ ভেড়েছে, তার মধ্যে আজব ব্যাপার কি হল ? মাটির বাঁধ ভাঙবেই জলের তোড়ে। ধানকর নর বে লোণা জল চুকে সবুন্ধ ধানচারা রাভা হয়ে মরে বাবে। চারা মাছ কিছু বেবোতে পারে, কিছ ওঁড়ো ডিমও চুকবে তেমনি জলের সঙ্গে। ভাঙনের মুখে গোটাকরেক থোঁটা পুঁতে থোঁটার গারে খড় জড়িয়ে দিরে জলের টান কৰে দাও আপে। মাছ ঠেকাও। ধীরেস্বছে মাটি এনে ঢালো ভারপরে। ধানচারীর মতন বুক চাপড়ে হাহাকারের কোন হেছু নেই।

আগায় এছলা পচা। গগন বাঁধে গেছে লোকজন জোগাড় কানিয়ে। ভাঙা জাহগায় মাটি ফেলছে, আব পুঁজে থুঁজে দেখছে থেই হয়েছে কিনা জন্ম কোথাও। জ্বাং কোনথানে ছিল্ল হয়ে গাছে জল চুইরে আগছে কিনা ভিতরে। মাটি ধুয়ে ধুয়ে এ সমূদ্রে বড় হরে নগীলোতের পথ করে দের। গোড়া থেকে সহ হলে আথেবে হালামা ও থরচান্ত হয় না। বাঁধের জ্বাগাগোড়া চাক দিয়ে বেড়াছে তাই গগন। পচা বাবু-মামুয—পেটের দায়ে ভাবে বাই বটে কিন্তু জলকাদা মাথতে সে বড় নাবাজ। আলার পাহার বহুছে সে। বলে, কালীতলার এ দিকটা চলে বাও জগা-দা। বে দুব বাহনি, পেয়ে যাবে।

বলাই বলে, গিয়ে কি হবে । হাক্লাস্ত হয়ে এলে আমরা ে আর কোদাল ধরতে বাব না। পেট চৌ-চৌ করছে—ঘরে চা জগা, ভাত চাশিয়ে কি গো। চালও বুকি বাড়স্ত ! চাটিট চা দিয়ে কে পচা।

ভাত নামিয়ে হয়া-কেঁছুল এবং ২ড়-তেঁডুল দিয়ে খেয়ে নিট এই তো ছ-খানা তরকারি। চেষ্টা করলে মাছও মিলত, কিছ ট সবুর সয় না। পরিতোষের খাওয়া সেরে গড়িয়ে পড়ল মাহুর পেটে ঘুম তো নর, কেউ বেন মেরে রেখে গেছে দৈতাসম ছোঁড়া ছটোহে ছুটোছুটি করে কত কাতর হয়ে পড়েছে, ঘুমের এই ধরন দেখে বেং খাছে। অনেকফণ ঘ্মিয়ে চোখ রগড়ে জগা উঠে বসস, তি বেশ রাত্রি হয়ে গেছে।

ওঠ বে বলাই। কি হল ? জাগবি নে মোটে তুই ? বলাইৰ পা ধৰে ঝাঁকি দেব। উ—বলে একবাৰ চোৰ ^{হে} দৰাজ মাহুৰ পেয়ে পা ছড়িয়ে সে পাশ ফিবল।

এক ছিলিম তামাক খাওয়ার দরকার মউজ করে। ব্যের খা বেটুকু হল, তাতে জুত হয়নি। তামাক আছে, কিন্তু গুড় গু^{ট্} গিয়ে বিশ্বাদ। তামাক টানছি না গুকনো লাউপাতা—সেঁ লাগে না গলায়। ক'টা দিন ছিল না, সমস্ত গগুগোল হার দে এব মধ্যে।

বলাই যুগোক, জগা আলার চলল। গগন ফিরেছে এতকণে। আছতা জমবে, তামাক কত থাবে থেও না। গগন দাসের আলা বেছোবেরির আর দলটা আলার মতন



स्यान इस्टिंग्ड

> হিমালয় বোকে শ্রেষ্ঠ প্রসাধন



শ্লিদ্ধ এবং স্থগদ্ধ হিনালয় বোকে স্মো আ<mark>পিনার</mark>

ত্বককে মহণ এবং মোলাদেম রানে। মহন্যনের মত হিষ্টালির বৈতি বির্তিট

পাইডার আপনার লাবণ্যর স্বাভাবিক গৌ**দর্য্যকে** বাভিয়ে ভোলে।

शिवालय खांक स्त्रा अवश् ऐय़त्लिं शाउँउात्र



श्वामिक को। मधाना नोक रिन्द्रान विखान कि कर्ष ह

ছ-চালা খব। সাঁইতলা তল্পাটের মধ্যে খবের মতন খব বটে একধানা! বাহারটা আন্তে আন্তে জমেছে। তিন দিকে এখন মাটির দেয়াল। এক পাশের দাওয়া গরানের ছিটের জব্দ করে খিরে নিরে চৌকাঠ-পরজা বসিয়েছে। গগনের শোবার খর, খাতাপত্র এবং হাতবাল্প সেধানে। এই ফরে তালা দিয়ে রাখে বখন দে বাইরে কোধাও খার।

আলা চুপচাপ একেবারে। এ সময়টা এমন হওয়ার কথা নয়। কালামাটি-মাধা জন ভিন-চার পুকুরবাটে হাত-পা ধুছে। জগা জিজ্ঞাসা করে, মাটি কাটছিলে তোমবা? কাজকর্মের কত দূর?

আৰু শেব হয়ে গেল।

বড়দা নেই ?

আছে বই কি ? হিসেবপত্র হল এভক্ষণ। পরসা-কড়ি মিটিরে দিরে ঘরে চুকে পড়েছে।

কামরার উঁকিথুকি দিরে জগা হেসে উঠল: একা একা ধ্যানে বিসেছ নাকি বড়লা ? স্থালা ভৌ-ভৌ করছে, মানুহজনের কি হল ?

সভিত্য, হানির ব্যাপার নর। এত দিন সঙ্গে সংক্র আছে, এমন ারা দেখা বারনি আর কথনো। কামরার মাঝখানটার টেমি অলছে, ভা লাল কেরোসিনের ঘোঁরা উঠছে গলগল করে। আলোর সামনে ভোতে মাখা চেপে গগন বিম হরে বসে। খাওরার সমরটাও বালো আলে না, মাছের কাঁটা আছকারে আলাজে বেছে ফেলে, সেই ভিত্র অহেভুক কেরোসিন পোডাছে। ভর হল জগরাথের।

इन कि कामाद ? कि खावह ?

া গগন ক্ষীণকঠে বলে, আর জগা! মনটা মিইরে আছে।

দলের নিচে বথাসর্বস্থ চেল্লে দিরেছি। ত্-চার প্রসা এজিনে বা
রাজগারপভারে হল, বাঁধের ঘাটি থেরে নিল সমস্ত। উপ্টে পাঁচটাকার মতন দেনা। তার উপরে পিওন এসেছিল আজ আবার।

দল আমারই। বড় বড় পারশেষাছ খাইরেছিলাম সেদিন, সেই

নাতে পিওন নিভ্যি নিভ্যি আসতে লেগেছে। এসে মাধার মুশল

ারে গেল।

हिर्दि १

ু এক্ৰ আসছে, থালি হাতে আসে কি করে । সেদিন, এই ধরো,
নাটে থামের চিঠি নিরে এলো। উন্ননে দিরে অবসর হলাম।
বার আজ। আগের চিঠি বরারখোলার তৈলক্ষের বাড়ি থেকে
হানা কেটে এথানে পাঠার। এবাবে সরাসরি চলে এসেছে। ভার
নে, এই আভানাও জেনে কেলেছে। কেমন করে জানল, রোজ
আ এত সমস্ত কি লেখে—দেখিই না খুলে। ব্যুলি জগা, এ
ছটাই হল কাল। চিঠি পড়ে ফেলে সেই থেকে মাথা ঘ্রছে আমার।
জগার ভাল লাগে না। জুত করে এক ছিলিম তামাক থেতে
দ একবেরে কাঁছনি ভনবে এখন বসে বসে । সংসার জোটানোর
রটা মনে ছিল না বে ফ্যাচাং আছে পিছনে । বলে, করে ফুর্ডি
নাও বড়লা। মাথা খোরার জ্বর ওব্ধ। মালুবজন দেখতে
জনে—কটা দিন ছিলাম না, ভার মধ্যে মরে গেছে নাকি সমস্ত ।
মাছের থাতা বন্ধ হবার দাবিল। মালুব আসতে বাবে কোন
ভিল এখন ।

বলতে বলতে গগন কাঁলো-কাঁলো হয়ে পড়েঃ বালাবনের বেলোরে দাট্যি দাট্যি যেয়ে কেলবি ? এই ভোর ধর্ব হল যে জ্পা ? অগা বলে, আমি ছাড়া আর লোক নেই ? বলাইটাকেও বদি রেখে বেডিস—

জগা-বলাই একই কথা। এ তোমার জন্তার বড়দা। জগা ভোমার চিবকাল আগলে এক জারগার বলে থাকবে ?

কিছ চাসায় কে? তৃ-ত্বার পার মধ্যে লোক বদলেছি।
ছাগলের পারে বদি ধান পড়ত। বারোবেঁকি পার দিরে মাছ্
নিরে পৌছতে বেলা তৃপুর করে গেলে। পদের নেই আর তথন,
মাটির দর। ব্যাপারিরা তাই মাল কিনবার গা করে না এখানে।
লোকেও তেমন জাল নিরে বেকছে না।

জগা উঠে দাঁড়াল বলে, বাবোবেঁকি আব ক'দিন ? তোমার রাজ্ঞা
——ডাঙার পথে আমরা এলাম। মাছ এর পরে এক দণ্ডে পৌছে
দেবে। বেরিরে এগো দিকি। গানবাজনা হোক একটু। নর তো
পৃড়। কী ব্রের মধ্যে বলে প্যানপ্যানানি!

বাইবে এসে উচ্চকঠে বলাইবের নাম ধারে ডাকে। পচাকে ডাকে। রাধেগ্রামকে। থোল দেরালে টাঙানো। চাটি মেরে পাড়ামর জানান দিয়ে দিল। গগনকে বলে, জুত করে এক ছিলিম চড়াও দিকি বড়দা। তামাক না খেরে পেট কুলে উঠেছে। মুম ভেডেই ভোমার কাছে ছুটেছি।

ভাষাক সেকে টানভে টানভে এসে গগন কগার হাতে হঁকো দিল। হঁকো দিয়ে ওছ কঠে বলে ওঠে, দলটা টাকা কর্ম দিতে পারিস ক্ষপা ?

জগা বলে, বড়মায়ুৰ তুৰি বড়লা। শীতলপাটি বিনে বুৰ হয় না। হয় বড়ুই কাঁহা-কাঁহা যুসুক থেকে তোমায় জভ শীতলপাটি বয়ে আনে। তোমায় আবায় টাকায় কি টাম পড়ল গ

শীতলপাটির কথার গগনের লক্ষা হর। কৈফিয়ৎ দিছে ফলাও করে: সে এক কাও হল। তুপুরবেলা মুম হছে না, গরমে-এপাশ-ওপাশ করছি। হর মড়ই সেই সমরটা এলো। বলে, সামনে বোশেখ মাস, গরমের হয়েছে কি এখন? ফুলতলার তোফা শীতলপাটি পাওরা বাছে। চোদ্দ সিকের প্রসা তখন গাঁটে, পাশ কিরতে গারে কোটে। ঝড়াকসে বের করে দিলাম মড়ইরের হাতে। আথের ভাবলাম না। আবার তা-ও বলি তখন ভো জানি নে বাঁধ ভেঙে এক কাঁড়ি প্রসা গুণোগার বাবে। আব পিঠ পিওন শালা এসে পড়বে। মাছ খেতে এসেছে! মাছ না দিরে ছড়ো ভেলে দিতে হর বেটার মুখে।

পরক্ষণেই আবার অন্নরের প্রবে বলে, দশটা টাকা দিবি আমার জগা ? পিওন বেটা অনেক দূর থেকে আশাপ্রথে এসেছিল। কিন্তু থাতা একমার বন্ধ এই ক'দিন—ভাল মাছ কোথা ? তুলো-চিংড়ির ঝোল থেরে গেল বেচারা। কোটালের মুখে আবার আসতে বলে দিলাম। হয়তো বা বাত পোরালে এসে পড়বে। দশ টাকা ভাব কাছে দিরে দেবো মণিজার্ডার করতে।

বলাৰ ধবনে জগা জবাক হয়ে তাব ৰূখে ভাকায়: ৰূখেই তোমার বত কড়কড়ানি! বউরের জন্ম মন কেমন করছে—উঁ?

গগন না-না কৰে না অন্ত দিনের মতো। একটুথানি চূপ কৰে বইল, বলে ধরেছিল ঠিক। চিঠি পড়ে বেলেই বুশকিল হল। বউ একা লেখেনি। আঘার বোন লিখেছে। বেলো সম্বাটি লিখেছে। সেটা এক গোঁৱাৰগোবিশ্ব, সম্বন্ধ না থাকলেও ওটাকে শালা ব্লভাষ। সংসাৰ ভাসিৰে দিবে আমি নাকি পালিৱে বসে আছি।

সজোবে নিষাস ফেলল একটা। জগার হাত থেকে হঁকো
নিরে ফড়ফড় করে ফ্রন্থ করেকটা টান দের। বলে, বউ আছে
বোন আছে, খববাড়ি বাগান-পুকুর পড়শী-কুটুখ সমস্ত নিরে
দিবিা এক সংসার বে! কেউ কি শব করে সে জিনিস ছেড়ে আসে,
বাইবে তাড়াবার জন্ম সকলে ওরা উঠে পড়ে লাগল। আমি নড়ব
না, ওরাও ছাড়বে না। গাঁরে জাগ্রন্থ রক্ষেকালী ঠাককন,
কালীভক্ত আমরা। তাঁর পাদপত্মে রেখে চলে এলাম।
ঠাককণ দেখেও আসছেন এত বছর। মাগ্রিগ গণ্ডার বাজারে
ইলানীং একেবারে জচল অবস্থা নাকি, খন খন চিঠি হাঁটাছে।
বানাইপানাই করা মেরেমামুবের খভাব—আমি জামল দিইনে।
চিঠিই খুলিনে, দেখেছিল তো! নিজের একটা পেটই চলে না,
বারো ঘাটে ভেনে ভেনে বেড়াছি, খুলে কি হবে?

জগাৰ মনটাও কেমন হয়ে গেল আজ। কোন এক *দ্*ৰদেশে প্রগন ঘবসংসার ফেলে এসেছে, টাকা পাঠানোর দরকার। সেই টাকার ধান্দার কত জায়গায় পুরল, কত বকম চেটাচরিত্র করছে— কিছুতে কিছু হর না। আব জগাব ট্যাকে টাকাপয়সা আপনি গড়িরে আসে। বাদাবনে ভোমরা দেখ তথু অসল-অসলে বাঘ-কুমির দেখতে পাও, আর শুলোর খোঁচার পা জখম করে বাপ-বাপ বলে টেচিয়ে ওঠ। ভিতরের মঞ্চাটা জান ক'জনে? ঢোকবার মুখে টাকা দিয়ে লাইসেন্স করবার আইন। অনুষ্ঠে কী ঠিকঠিকানা নেই, আগেভাগে •গাঁটের টাকার সরকার সেলামি দিয়ে বাও। আছে। আইন বে বাপু। বাখ-কুমিব ভো লাইসেন্স করে ঢোকে না, বিনা ট্যান্সোর খেরেদেয়ে চবে বেড়িরে এই তাগাড় হচ্ছে। তাদের কারদার চলাচল করে। লোকসানের ভর নেই, যা-কিছু সওলা বোলআনা লাভের অঙ্কে পড়ল। টাকা আৰু নোট কোধাৰ বাধা বার, সেই তথন সমস্তা হবে দীড়াবে। ও-বছর গগনের এসে পড়বার আগে—গোলপাতা কটিতে গিয়ে কি হল ? সরকারি খাভার বেবাক শৃত, বনকরের বাব্দের পান-খাওরা বাবদ বারো কি ভেরো টাকা সর্বসাকুল্যে। নিংসাড়ে মাল বেরিয়ে এলো বিশ কাহন। বড়লোক হতে ক'দিন শাগে হেন অবস্থার ? মোটামুটি বকমের গেঁথে নিবে বোসো ; ভারপরে পাৰের উপর পা চালিরে ৰাওদাও আর ফুভিসে ঢোলক বাজাও। শহবে পাক'দিরে এসো মাঝে মাঝে তু-পাঁচ দিন। টাকা ফুরোকে চার না। আর এমন কপাল জগার, মনিঅর্ডার করে কিছু বে হালক। হয়ে ৰাবে, ভূবন চুঁড়ে তেমন একটা লোক মেলে না। গগন বিধান্ শাস্থ--বাদার কাঞ্জ তাকে দিয়ে হয় না। ভার কাঞ্জ ডাঞাবি কিখা মাষ্টারি। বড় জোর এক মাছের খাতা খুলে মাচার উপর হাতবাল কোলে নিয়ে ঝুড়ি আহতি এক এক পয়সা উপার্জন। विखाहे कान इरहरक, बन रविन अभास्वरक पिरव इस ना।

ছিলিম শেষ করে জগা উঠল। গগন বলে, বাস কোথা ?

টেডিয়ে গলা চিবে ফেললাম। পাড়াত্মছ ঠিক মরেছে, নয়ভো

থমন নিয়র্ম হয় না। দেখে আসি বড়দা।

আৰু ঐ যে টাকাৰ কথা বলদাম। প্ৰায় স্থদ দেবো। হবে, হবে। সে তো কালকেৰ কথা। হল-হল করে সে বেক্স। পাড়ার নর, চলল উপ্টো বুঝা—
কালীতলা বেদিকটার। থানিক দ্বে সিরে এদিক-ওদিক তাকিরে
গেঁরোবনের ভিতর চুকে পড়ে। কাটারি নিয়ে এসেছে পগনের
রালাঘর থেকে। চিহ্নিত করা এক গাছ, তার গোড়ার মাটি খুঁতছে।
এদিক-ওদিক তাকার, আর নিঃসাড়ে মাটি ভুলে রাশ করে। বেক্সল
মাটির ঘট একটা। ঘটের বুখ টাটি দিরে ঢাকা—আধাআথি টাকার
ভরতি। নোট নয়, রুপোর টাকা শুধু। মাটির নিচে
কাগজের নোট নই হরে বার, নোট ভাজিরে টাকা করে ঘটের ভিতর
ঢোকার। আজকালকার টাকা—রূপা নামে মাত্র, থাদবস্ত বেলি।
টাকার রং কালো হয়ে বার ভু-পাঁচ দিনে। তেঁতুল বা আমক্রল-পাতার ঘবে চকচকে করো, নয়তো বাজারে নিতে চার না।

কম নয়, থোক কুড়ি টাকা নিয়ে এলো জগা। গগনের হাতে দিয়ে বলে, মেকি নয়, বটো এই রকম। বাজিয়ে দেখে নাও বড়দা। স্থানত সন্তা করে দিছি—এক পরসা হিসাবে। বিশ টাকার দক্ষন পাঁচ গণ্ডা প্রদা খাতা থেকে রোজ ফেলে দিও। চুকে গেল। আসল বদ্দিন খুলি রেখে দাওগে, তাগিদ করব না। স্থানটা ঠিক ঠিক দিয়ে বেও।

টাকা গগন বাজিয়ে দেখে না। গুণে নিল। কুড়িই বটে।
চাইল দশ, দিয়ে দিল তার ওবল। সাক্ষাৎ বল্পতক্ষ। এক দিনের
স্থান এক পর্যা—এক রক্ষ বিনা স্থানট বলা বার। এমন হলে
বাদা অঞ্চলের স্বাট ঋণ করে হাতি কিনে বসে একটা। জগার
গুলার্যে গগন অবাক হল। থুশিতে আকর্ণস্থিত হাসি হেসে
বলে, আঞ্চকের দিনের স্থান কুড়ি প্রসা—নিয়ে নে স্টোনগদ—

থলি ঝেডেঝ্ডে প্রদা ভাতটার বেশি হল না। তাই তো ! তথন আর এক পদ্বামনে এসে গেল।

ডেকে এলি, তা আসে কই ওরা ? গানবাজনা নর, থেলা হোক এখন। থেলার রোজগার করে তোর অদ ওধবো। অুণই বা কেন, আসলের আধাজাধি ঝেডে দিক্তি এখনই।

এগিরে গিরে নিজেই টেচামেচি করে এলোঃ চলে আমি কোন কোন মরদের বেটা আছিল। প্রদা নিয়ে আসবি।

শেব কথার মধ্যে ব্যাপারটা পরিকার। জগা ইভিমধ্যে রেজের মাছর বিভিরে ছক পেতে বসেছে। বলাই এলো। জারও জন

—- স্ত্রীরোগ, ধবল ও বৈজ্ঞানিক কেশ-চর্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্দ্মরোগ ও চুলের যাবতীর রোগ ও জ্রীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসার পত্তালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ড়াই চ্যাটাজীর ব্যাশন্যাল কিওর সেণ্টার ৩৩, একডালিয়া রোড, কলিকাতা-১৯ সদ্মা ।।—৮।।টা। কোন নং ৪৬-১৩৫৮ চার-পাঁচ---আন্তকে বারা আলে বারনি। গাঁটে বাদের পরসা তারা থেলবে, বাফি লোক বিবে গাঁড়িরে সম্প্রদেশ ছাড়বে,--বে লোক কিতবে তুড়িগাফ দেবে তার পক্ষ হরে।

কুজি কুজিটা টাকা গগনের হাতে এক গলে, অভিশর উঁচু
মেলাক, আপাতত সে খোড়াই কেয়ার করে ছনিহাটাকে। বলে,
দশ টাকা এই আকালা করে কাপজের খুঁটে বাঁধি। বাগের হাড় রে
বাবা। পিওন এসে গেলে তখন গাঁট খুল্ব। বাকি দশ এই
ছুঠোর—বংশ এসো বাগধনেরা। দেখিস কি জগা— আংগভাবি নয়,
তোর পুরো দেনা শোধ করব। দেনা শাড়াতে দেবো না।

চলন কছপেলা। ক্রমেই গগনের মুখ শুকাছে। বাং শালা।
কি বিজী পড়তা, উপ্টোপাণ্টা দানই পড়ে কেবল। টাকা সমস্ত খোরা গোল, একলা জগাই তাঃ মধ্যে আট টাকা পনের আনাব মত জিতে নিল। বেটা সব দিকে তুথোড়, ফড়ের গুটিও বেন কথা শোনে ওর। এখন কি উপার? কানে জল চুকলে আবার খানিক জল চুকিরে মাগের জল বের করে ফেলে। ইত্তত করে গগন শেষটা কোঁচার খুঁট থলে বাকি দশ টাকা বের করে ফেলল।

তা-ও খতম। নেশাজনে গেছে তখন। ছাড়বি নাকি বে জগাজাৱ কিছু? বাঁহা বাহার তাঁহা তিপার। বিশ বর্জ হয়েছে, নাহর পঁচিশই হবে। সবই তো চেটেপুঁছে নিলি তুই।

জ্বপাচটে গিয়ে বলে, থোঁটা দেবার কি আছে বড়দা? চুরি-জোচ্চবি কচেছি? আইনদন্তর খেলা খেলে জিতে নিইছি।

প্রসন বলে, তাই দেখলাম বে অগা, প্রসাক্তি ভোর পোৰ্মানা। ভোকে বিষম চেনা চিনে ফেলেছে। বার কাছে বা থাকুক, পারে হেঁটে বেন ভোর গেঁজের গিরে উঠে বলে। তা পাঁচ টাকা না হোক, হুটো টাকা ছাড়। পিওন বেটাকে আগতে বলেছি —পোড়া অদৃষ্টে হবে না কিছু আনি—আরও একটুথানি চেটা করে দেখা।

জ্ঞা উঠে দীড়াল তো গগন তার হাতে চেপে ধবে। জ্ঞা মুখ বিভিত্র বলে, টাকার আমি গাছ নাকি—নাড়া দিলে জমনি ব্রব্ধ করে পড়বে ?

এই ভো জিতে নিলি এতগুলো টাকা। ধর্মপথেই জিতেছিল, আমি বলছি। বউ বা হোক, মারের পেটের বোন আমার মিছে কথা লিখবে না। বড়লোক শালাবা দেখান্তনো করত। কী নাকি বাল্ডাবাটি হরেছে—এক পরসাও নেবে না শালার কাছ থেকে, না খেরে গাঁতে কাঠি দিরে পড়ে থাকবে। তা সে পারে, বড়ুড় জেদি মেরে। উঠিসনে জগা, বোস আর একটু। টাকা দিরে লোকসান কিসের তোর ? থাতা বয়েছে, ভেষির মাছ বড় হচ্ছে—এ ক'টা টাকা ভূলে দিতে পারব না ?

হেন কালে মান্ধবের শব্দসাড়া উঠানে। খেলায় মগ্ন ছিল, নক্ষর তুলে দেখেনি।

কারা গো ?

হর ছড়ুই দীতলপাটি ছাড়ে নিয়ে আগে আগে আগছে। বলে, বাইয়ে এসে দেখ বড়দা, তোমার আপন লোকেরা সব এসে পড়ল।

বাগারাজ্যের ভিতর কুটুর জাসা একটা সমারোহের ব্যাপার। ছড়বুড় করে স্বাই দাওয়ায় চলে এলো। জ্ঞার চকু কপালে উঠে গেছে। কী আশ্চৰ্য, কুমিরমারি অবধি টাপুরে নৌকোর বাদের সাল বাসছে সেই ছটো মেয়ে লোক এবং পুক্ষটি। ভাদেরও বে সাইতলার গতি, কে ভারতে পেরেছে ?

চাক্সর একেবারে চোঝোচোথি পড়ল জগা। বিনি-বউকে চাক্স বলে, সেই লোকটা বউদি। চিনতে পারছ না—ভামার যে কাদার মধ্যে ফেলে দিল। দাদার কাছে এসে ভূটেছে শহতান।

ষে জগা বাছ দেখে ভবার না, মেহেলোকের মুখোমুখি সে জবুখবু হয়ে গেছে। চেহারায় মেহেলোক, বয়সও কম বটে— বিভ্রূ পি'ত আলা করে কথাবার্তার। নতুন ভাগোর পা দিয়েই সকলের সামনে ভার সহক্ষে পরতা উল্লেখ হল শর্ডান বলে। নেহাৎ লোকে কি বলবে, নয় ভো ছুট দিয়ে পালাত। ভবে বউদি মাহ্যটি দেখা গেল মিটমাটের পক্ষপাতী। চাপা গলায় তাড়া দিয়ে ২ঠে, ঝগড়া বাধাবিনে বলছি ঠাকুরঝি। চুপ কর। বেখানে পা দিবি সেইখানে গওগোল।

জগাকে ছেড়ে চাক্ব তথন নিজের ভাই গগন দাসকে নিরে পড়ল: কী মাত্ব তুমি দাদা! আমরা আছি কি মবেছি, চিঠি লিখে একটা খবর নাও না। জায়গা একটা বেছে নিয়েছ বটে! স্বত্যি স্বত্যি খুঁজে পাব, একবারও তা ভাবতে পারিনি।

নগেনশনী পিছনে পড়ে ছিল, পা টানতে টানতে দাংবার ধারে এসে দাঁড়ার: হুঁ, ধুঁজে পাব না! আজ মানহে টাদ-তারা তাক করে ছুটোছুটি করছে, এ তবু মাটির উপরে। খুঁজে পাবে না তো আমি সঙ্গে রয়েছি কি জন্তে? বিনিকে তাই বললাম, চোধ-কান বুঁজে আমার পিছু পিছু চলে বায়। হাজির করে দিলাম কি না বল এবারে।

গগন গবম হবে বলে, যা লিখেছ নগেনশনী, গেইটে অক্ষরে করে ছাড়লে? ছি-ছি, গেরস্তখরের মেরেছেলে জললে এনে ভূপেছ ; তোমার বোনকে নিয়ে এসেছ, আমি বিছু বলতে চাইনে। কিছ আমার গোমত বোনকে নিয়ে এলে কোন বিবেচনার ?

নগেনও সমান তেকে জবাব দেয়, ভোমার বোনেরই তো গবজ বেশি। ভার ঠেলায় ভিন্নাবার না। তথন বিনি বলে, চলো মেজদা, পৌছে দেবে আমাদের। সাধী না জুটলেও একা-একা চলে বাবে চাক।

চাক ঝন্ধার দিয়ে ওঠে: আসব না ? কাদের কাছে কোন্ ভরসার বেথে এসেছিলে শুনি ? এদিন তবু চাটি চাটি ধান হরেছে, ভেনে-কুটে চলে গেছে এক বকম। এবারে ধরার মাঠ শুকনো, এক চিটে খবে উঠল না। বড়লোকের হাততোলা হয়ে থাকার চেয়ে মরে বাওয়া ভাল দাদা।

খাড় বেঁকিরে তাকার নগেনশুলীর দিকে। নগেন সরে গিরে হবর কাছে দাঁড়োয়। গগন বেকুব হরেছে, ঠাণ্ডা করতে পারলে বাঁচে। জিন্ত দিরে ঠোঁট ভিজিরে বলল, চলে এসেছিস সে তো ভালই। ক্ষেত্থামারের এই হাল, জামি তা ভানব কি করে? কুটুম্ব হাততোলা বেন হতে হবে? কাল সকালেই মণি জ্র্ডার হয়ে টাকা চলে বেতো। ধ্বর জাস্তেই লাগল কত দিন!

জগা হঠাৎ কভকণ্ডলো টাকা ছুঁড়ে দের গগনের দিকে। না বুর্বে গগন ফাল-ফাল করে তাকার। তোমারই টাকা বড়দা। একটু আলে বা তোমার বেকে আমার ট্রিটক চলে এলো। খবে তোমার কুটুম—টাকা দইলে মন্ত্র হবে কি দিবে?

দাওয়া থেকে সঙ্গে সজে তড়াক করে লাফিয়ে পড়ে উঠালে। পৈঠা দিয়ে নামবাব ভাগত নেই, চাক্ন সেই দিকে। ও বা বস্তু,— চোধ দিয়ে পোড়াছে— নাগালের মধ্যে পেলে কি করে বসে, টিক কি?

অন্ধনারে বেন চেট তুলে দিয়ে ভার মধ্যে ভাগা ভূবে গোল। বেতে বেতে থমকে দাঁড়ায়। বাইরের স্বাই চলে গোছে, আপন লোকেরা এইবার কথাবার্তা ব্লছে নিজেদের মধ্যে। জ্বগা আলাব্যরের কানাতে এসে দাঁড়াস।

বোন বলছে, দালা, কি করছিলে এতজনে খারের মধ্যে মিলে ? ভাবি মঞালার ভবাব ভাইছের: নামগান হচ্ছিল। কই, আওয়াজ পাইনি তো ?

বিভৃত্তি করে হ**ভিত্র। ভাতে যা ভাব আংস, টেচামেচিতে** তেমন হয়না।

দেয়ালে-ঝোলানো খোলখানা—ভাত ল তুলে নিশ্চর সেটা দেখিয়ে দিয়েছে। ২৬৬ কাজে লেগে গেল খোলটা—প্লার বাছল জাত্মভানর কাছে। বিশ্ব ফডের ছকওঁটি কোনু কায়লায় তিন জোড়া চকুর সামনে খেকে বেমালুম সহিয়ে ফেলল, সেইটে এক দিন বড়দাকে জিঞালা করতে হবে।

(DIW

ভোষবাত্রে ডাকাডাকি, জগা কোথা ? বলাই কোথা বে ? সাডা দিছে না ওরা ঘরের ভিতর থেকে। পচা জালে বেরিংছিল, হংছেও বা-কোক কিছু। ভার স্বার্থ রয়েছে, তাকেই পাঠাল থাতা থেকে। অন্ত কেউ এসে ঘুম ভাঙালে জগা কড়মড় করে চিবিয়ে থেডে চাইবে, ভাবের মামুব পচাকে কিছু বলবে না। মাছের আমদানি বড়ে কমে গেছে। দে-ও জগার দোষ। ফুলতলায় নিজে গেল, জাবার লেজুছ করে নিয়ে গেল বলাইটাকে। ছ-দিন বলে প্রোপাঁচ পাঁচটা দিন কাটিয়ে দিল। মাছের নৌকো এদিকে কুমিরমারি পৌছতে ছপুর হয়ে বায়। ভাল খাদের তথন থাকে না, কিছু

ছাতি ছা খন্দের খোরাকেরা করে। ঐসর মাম্ব ইচ্ছে করেই মেছোহাটে দেরি করে আসে। এসে হরতো দেখে মাছই নেই তখন। বেদিন খাকে, সন্তা দরে পাওরা বার। বেদি থাকল তো বেদি সন্তা। কাঁচা মাল রেখে দেওরা চলে না, দরদাম বা-ই হোক ছাডতেই হবে। দর পাছে না বলে মাছ-মার্লেরও টেৎসাহ নেই জলে নামার। খাতার কালকর্ম তাই বসতে না বসতে চুকে গেছে। গাডে একপো জোরার। এই বে দেবি হছে, সে কেবল জগাইই জলে।

ভগা চোৰ বৃহতে মুহতে সোলা গিবে ডিঙিব গলুবে বোঠে ধৰে বসল। অভ দিল বীতার বনে একটি ছিলিম অভত তামাক বেৰে তবে থাটে নানে। আজকে—ভবে থাবা, দাভয়ার কামহাল্প চাক্ষবালা ঘাটি পেতে হয়েছে হয়তো। তা ছাড়া দেখিও হয়ে গোছে, মাছের খোড়া নিবে হয় ঘড় ই উঠে বলে আছে আনেক কণ।

काकि शुर्ज रह वजाहै। शांक वहत यहता

চাক্রবালা উপর থেকে ডাকছে, শোন, কানে বাছে না ও-লোকটা ? বোঠে একট খামাওনা—

নাম থাকে মাছুবের। নাম না-ই ব্লি জান, তবে কি তাল্ছিল্য করে 'লোকটা' বলে ভাকবে ? বয়ে পেছে বোঠে থামাতে। বলাইকে বলে, তুইও ধর বোঠে। থালের এইটুকু উলান, কংব টান দে।

চাক বাঁধ থেকে থাকের গতে নামল। হাত উচু করে টেচাছে: শোন, ফাঁটা নিয়ে এসো একগছে। বাঁধা বাঁটা না পাও তো নারকেলের শলা। বালার জন্তে হাতা, খুতি আর কাঁটা এনো---

কদ বলতে বলতে আসছে। ভূট-ভাট-ভটাস আওংকে উঠছে কালার; বাঁবে—হেই ভগবান, আৰ থানিকটা বাঁবে নিষে যেল দক্ষাল মেয়েটাকে। বাঁবে বিষম দোপি—উপর থেকে কিছু মালুম হবে না। কোমৰ অবাধ বসে যাবে, কালার মধ্যে আটকে থাকবে। আনা চাবেক মরদ-কোষান পাঁঠার ছাল ছাড়ানোর কাহলার টানাটানি কবে তবে ভূলবে। এই কাছটি করে দাও হে মা কালী। চাক্ষবালার হুর্গতি দেখতে দেখতে আর বোঠের আগায় অল ছিটাভে ছিটাতে মনেব খুলিতে ওবা গাডে গিয়ে পড়বে। ভোরবেলাকার অ্যাত্রার দিনমানটা তাহলে কেটে যাবে ভালো।

গাঙে পড়ে জগা বলে, ঝাটা চায় কেন বে ?

বলাই হেলে বলে, পেটাবে বে রকম পিরীত তোমার সঙ্গে— গুধু-হাতে স্থুৰ পাবে না, হাতের কাছে অন্তোর জুটিরে রাখছে।

হর ঘড় ই বিষম খাড় নাড়ে । উঁক, কি বসছ ভোমরা। ভাল খবের মেয়ে—আমাদের আবাদ আরগার বলচণ্ডী পেছেছ নাকি? কোন্তা দিরে ঝাঁট দিছিল—ভাঙা কোন্তা, মাধা ক্ষরে গেছে। বাঁট দিতে দিতে ঝাঁটার কথা মনে হরেছে বোধ হয়। রাল্লা করবার সময় অস্থবিধা হয়েছে, হাতা-শুভির গরক তাই।

আবও গদ গদ হবে বলভে লাগল, এসেছে কাল হাতে। সকালবেলা তুমি—দেধলে না জগা, ধুলোমাটি পোড়া-বিড়ি ম্যাচের

পেটের যন্ত্রণা কি মারাঅক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন ! যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দুর করতে গারে একমার

ৰহু গান্ধ গান্ধুড়া দারা আয়ুর্বেদ মতে প্রস্তুত

वामण गवा क्रिक्श नर २०५७८८

ব্যবহারে লক্ষণক রোগী আরোগ্য লাভ করেছেন

অক্সমূল, সিত্তমূল, অক্সসিত, লিভারের ব্যথা, মুথে টকভার, ঢেকুর ওঠা, রমিভার, বমি হওয়া, পেট ফাঁপা, মন্দারি, বুকজুন্ধা, মাহারে অরুষ্টি, স্বন্ধনিদ্রা ইত্যাদি রোগ যত পুরাতনই হোক তিন দিনে উপশম। ছুই সন্তাহে সম্পূর্ন নিরাময়। বহু চিকিৎসা করে যাঁরা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও স্বাস্থ্যলা সেবন করলে নবজীবন প্রাপ্ত করবেন। বিফলে মূল্য ফেরেং। ৩২ ভোলার প্রতি কোঁটা ৬-টাকা, একলে ৬ কোঁটা ৮টাকা ৫০ নংগং৷ ডাং. মাঃ,ও পাইকরি দর পৃথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। হেডঅফিস-করিশান্তা (পূর্ব পাকিস্তান)

কাঠি কিছু আর নেই। কক্ষীর আংশ হলেন ওঁরা তো, কন্মী-ঠাককনের পা পড়েছে সেটা বেশ বোঝা বাচ্ছে।

ৰুমিরমারির গঞ্জে এগে মাছ সমস্ত বিক্রি হয়ে গেছে। প্রসা হয় অজুইরের গাঁটে। ভরা ভোরার। কিন্তু ভগার ফেরবার ছাত দেখা বাছে না। হর ভাগিদ দিছে: উঠে পড় ভোমরা অবার। গোন বরে বার, দেরি কোরো না।

क्रश बरन, चार.मा १

খাবে বই কি ! মুজি কিনে নাও, জার বাতাসা। দানাদার কিনে নাও কিছু। কোঁচড়ে করে খেতে খেতে বাবে।

बंधि मद, लांड बार ।

উঁহ, ভাতের হাঙ্গামা কেন আবার এখন ? ভাত খাবে এক খাতাও হুমে উঠছে। হছে এবারে হুটো পর্যা।
স্থাইতলা গিরে। পুরো গোন তার উপরে পিঠেন বাতাগ—ভিডি তো হুগা ক্রান্ত করে বলে, হতে আর দিল কই ? না উক্তে গিরে পৌহবে।

এক শত্রু চৌধরিরা। নারেব পাঠিরে চবি করে খেরির

খগা বলে, হাঙ্গামা তো সেধানেই। উত্ন খালো, বাঁবো-থাড়ো, বাসন ধোও—হবেক ব্যাপার। এথানে কি, গদাধর ঠাকুরের কার্টেলে ভাত রেঁধে বলে থাওয়ার মান্ত্র ডাকছে।

কিছ আৰু দিন তো সাঁইতল। গিয়ে বাঁথাবাড়া কৰ। ক্লাটেলেৰ ভাতে মন বাৰ না।

জগা এবাবে বীতিমতো চটে গিবে বলে, জান তো বড়ুই, নির্মের বাঁধাবাঁবি জামার সহ হর না। হুটো দিন সাঁইতলা গিবে থেরে থাকি তো পাঁচটা দিন থেরে বাব গদাধবের ছোটেলে।

জেদ বধন ধবেছে নিরস্ত করা বাবে না। হর বড়ই হোটেলে গিরে ডাড়া দের: হাত চালিরে ভটচাজিন। ভাত আর ডালটা লেবে গেলেই বসিরে দাও এদের গুজনকে।

জগা-বলাইও পিছু পিছু এনেছে। জগা বলে, উঁক, মাছ বাৰ, মুড়িকট ধাব, অধন ধাব।

বেশ, খাও যোড়শোপচারে। বেগোন হরে বাবে, বুকবে ভখন ঠোলা।

ভোমার কি ভাবনা ঘড়ই ? আমার ডি ডি আমি কি মাঝপণে কেলে যাব ? বেগোন হোক বা-ই হোক এমন কথা বলব না বে বড়ুই মশার ডাঙার নেমে গিয়ে হুটো বাঁক ৩৭ টেনে দাও।

গদাধৰ কাঁটা পাকাজে কুটজ ভালে। কম পরিমাণ ভাল দিরে প্রথনে খন করবার এই কারদা। জগা বলে, খালের নাম কে বে বারোবেঁকি রেখেছে। সে বেটা শভকে জানত না। গণে দেখেছি ভটচাজিদ, বাবো ছনো চবিবশ বাঁকেও বেড় পার না।

বলাই বলে, উ:, বোঠে মেরে মেরে লবেলান। রাস্তাটা এক রকম পাঁড়িয়ে গেছে, তাজাতাভি এবাবে থোয়া ফেলে দিক। নোকো হেড়ে তাহলে গাড়ির কাব্দে লেগে বাই, কল হেড়ে ডাঙার উপর উঠি।

ভালের কড়াই নামিরে দিরে গদাবর বলে, খোরা ফেলা পর্বস্ত লাগবে না রে ৷ বর্বা কেটে গিরে রাজা খটখটে হরে বাক। খানও পেকে বাবে ভদ্দিনে। সাভ রাজ্যি ব্বে নৌকোর এবাবে ধান বঙার্বি নয়। গল্প গাড়িতে। এর মধ্যেই সব গাড়ি বানাতে লেগে গেছে। কভ গাড়ি নেকে বাবে দেখো মরওবে। আমি ভাবছি, ছ-ভোড়া গল কিলে গলৰ গাড়ি কৰে ফোল বান ছই / ভাড়া বাটবে।

বলাই পুলকে ওগমগ ই করৈ ফেল ভটচাজ্জি, মুনাকা হবে।
গাড়ি চালানোর মন্ধা। ডাডা-ডাডা, ডাইনে-বিয়ে—থালি মুখের
খাটনি। বাব্যানবের কাল। বোঠে মারতে মারতে হাতে এমন
ক্ডাপড়ে বার না।

আদরমণি গগনের কথা জিজ্ঞাসা করে, ডাক্টারের কি ধ্বর । অগা বলে, ডাক্টার এখন সর, বেরিদার। মাথে গুরুমশাই হয়েছিল।

चानव (कान वान, अब शाव चाराव कानी धवाद ?

বলাই বলে, জার কিছু নর। পরমন্ত মাধুব বড়লা। ছোটখাট এক খাতাও জনে উঠছে। হচ্চে এবারে হটো পরনা।

জগা জভিল করে বলে, হতে জার দিল কই ? নানান শক্ত।
এক শক্ত চৌধুরিরা। নারেব পাঠিরে চুরি করে খেরির বাঁধ ভেঙে
নানান রকমে নাস্তানাবুদ করছে। তার উপর নতুন উৎপাত—
বাড়ির মান্ত্রকন এসে পড়েছে। নতুন ব্যবসা, এত থকল কাটাক্তে
পারবে কেন ?

পদাবর বলে উঠল, হোটেলের প্রাপ্য এগারো টাকা ছ' পানা দিরে দিজে বোলো হ'-পাঁচদিনের মধ্যে।

জগা বলে, টাকা কেউ বাড়ি বরে দিরে বার, গুনেছ কথনো ? নিজে গিয়ে পড় একদিন, বদ্ধ ব পাবো থাবা মেরে নিয়ে এলো।

বলাই বলে, টাকা না পাও আকণ্ঠ মাছ ঠেলে খেরে উওল কবে এলো খানিকটা।

জগা বলে, বন্ধুলোক জোমার তো ! বড়দার বৃদ্ধি মতোই গঞ্জের উপর বা-ই হোক জমিরে বসে আছে। বিপদে পড়েছে—জাঁতিকলের মতন তু'দিককার দাঁতে এসে আঁকড়ে ধরছে। এ সমরে একবার চোবের দেখাও দেখে আসা উচিত। বেও ভটচাচ্ছি, বুঝলে ?

পনের

সাঁইতলা ক্ষিত্ৰতে বেশ থানিকটা রাত হল সেদিন। বলাই বলে, আলা চুপচাপ, গানবালনা নেই। বোধ হয় ওবা ফডু খেলছে।

জ্পা নজর করে দেখে বলে, খেলা ছলে তো আলো থাকবে। নর তো কোট দেখবে কেমন করে ? গালে-মুখে হাত দিরে বলে আছে বড়দা। নয়তো কোনখানে বদি বেরিরে থাকে। কিন্তু রাতিরবেলা লখ করে বেছবার মায়ব তো বড়দা নয়।

লোক্ষা চলেক্ষে ব্যের দিকে। বলাই হাত ধ্যে টান দেৱ: একুণি ব্যে চুকে কি হবে ? চলো, আম্বা গিয়ে জ্মাই গে।

ভবে পড়ব। গা বাৰ -ব,ধা করছে।

বলাই হি-হি করে হাসে: ভা নয়। থাগুরিনি মেটোকে ভর লেগেছে ভোষার। ঝাঁটা দিয়ে পেটায় নি তো এখনো, এর মধ্যে গা ব্যথা কেন ?

হাত ছাড়িরে নিবে জগাঁচলল। খিরে গিরে সভ্যিই গড়িরে পড়ে। বলে, ভুই বনে বনে কি পাহার। দিবি ? ভুই চলে বা, আমি ঘুমোর।

আমি গিরে কি হবে ? তুমি না হলে স্থৃতি তমে কথনো ?

অগা চটে উঠল: স্থৃতি না হলে বেতে নেই ? তোরা কেবল
স্থানিবের সাধী। বড়লা মীমুবটা বিম হয়ে কোধার পড়ে আহে—
অসম্বে হুটো ভাল কথা বলে আসার মানুব হয় বা।

চিএতারকাদের মত

নিখুঁত লাবন্য

আপনারও হতে পারে



হিন্দুখান লিভার লিমিটেড এর তৈরী

LTS/P3-X52 B

বলে পাশ কিবে ওস জগা। আয় কথাবার্তা বলবে লা। একটুথানি বলে থেকে বলাই উঠল। দেখে আলা য'ক গগনের লগা। আপন মাস্যদের সঙ্গে কেমন মজার ভূবে এম'নধারা নিঃসাভ হবে পড়ল।

নিঃশক্ষ বাত। কাঁকা আকালের মধ্যে বাতাসও কঠাৎ কেমন ব্যু-পাছের ভালপাতা নড়ে কিস্কাস শক্টকুও উঠছে না। বাতে ক্ষোৱার—ভাঁটার জল নামার বে কলকল শহ্য ভা-ও নেই এখন। আলার দিক থেকে—হাঁ, খোলের আওচাক্ষ আসছে বটা । বাজনার ব্যাপারে বে একটু-আগ্রু জগার মাগ্রেছি করে, খোলের চাঁটি যেরে বোকা ভুলতে সিয়ে গালি খার। জগা নেই আগরে, অকএব পথার ভুলির আল সে বাজাছে। গানও বেন বাজনার মঞ্জে—খড়ইড়িয়ে উঠে জগা বাইবে চলে এলো। বিভ্বিত্ব করে গাল—কান সেন্ডে খেকে একটু একটু ভুনতে পারেমা যায়। সাজ্যতর বলাই, এবং গানেম্ব মায়ুহও পেরে গেছে। জগাকে বাল নিসেই খাগ্র করতে পারে বরু।। কোন ন্বকার নেই ভবে আৰ জগার।

টিপিটিপি চলেছে মে চোবের মজো। দেখে আসা বাক—
থলাট এসে বলবে, তভক্ষণের সব্ব সর না। সোজাসুজি বাঁধ ববে
না গিরে ঝুপসি জল্পান আছে-আবভালে চলেছে। কেউ
না দেখতে পার। আলাখবের থানিকটা দূবে গিরে গাঁডাল।
খালুম পাওৱা হাল্কে এবাব—গগনের গলা। আবও আছে— কিছ
ভিন্ন গোঠের গরুর মতো তার কঠ একেবাবে ভিন্ন পর্থ ধরেছে। হার
মা বনবিবি, হার মা রক্ষেকালী, ভোমাদের মহিমার বড়দাও কিনা
পার্ম হরে উঠল। গান অবভা নর—হত্তেক্ক হরেরাম বাবেগোবিশ
—নামগান। বিভ্-বিভ্ করে গাইছে কত্তকটা মন্তের মতো।

বলাই এলে জগা হাসিতে ফেটে পড়ল: দেখে এসেছি। চার জন দেখলাম জাসবে। তুই ছিলি, বড়দা ছিল, জাৰ ছটো কে বে ?

একজন আমাদের পচা। পচা ওদিকে মুখ করে ছিল। আর ছিল বড়দা'র মেজো সম্বন্ধী, নগেনশ্বী ভার নাম।

বলে গন্ধীর হরে বার: পাঁচে ফেলেন্ত্র বড়গাকে। ফড়ের গুঁটি
লুকিয়ে ফেলে কাল দেই যে নামগানের কথা বলেছিল, দেইটে হল
কাল। পচা আগে ডাগে গিরে গরুড় পক্ষীর মতে। অন্ধকারে বলে
আছে! আমার দেখে বলল, এই যে, খোল বাজানোর মান্ত্র্য এলে পোল। আর দেই সম্বন্ধী বলে, রোজ নামগান কর, আভকেই বা
হবে না কেন? লাগাও। পচা ধরল, সম্বন্ধী ধরল—বড়দা কি করে,
ভারও দেখি টোট নড়তে লেগেছে। আমার মুখে ওসব বেরোর না,
খোলটা কোলের মধ্যে টেনে নিলাম। ভাই ভো বলছি বে, বড়দা
মুদ্ধ গান গার। বাদার কী ভাক্ষর বে বাবা!

বলাই বলে, সাধে কি বাবা বলি, গুঁতোর চোটে বাবা বলার। বাইরে এ সম্বর্গী, আর কামরার ভিতরে বউটা আর বোনটা টেমি জেলে বসে গান শুনছে, আর ভাটার মতন চোথ ব্বিরে দেখছে। কি করবে বড়দা ? একবার হয়তো একটু খেমেছে, চমক খেরে তকুশি আবার হবেকৃষ্ণ হবেকৃষ্ণ করতে লেগে বার। ভাল করে দেখিসনি ভূই—বড়দার করে পাবাণ ফেটে বার।

জগা বলে, তৃল করল বড়দা, আথের ভেবে দেখলি না। দেশে ঘবে বন্ধন রেখে এলেছে—হাতে টাকাপবদা আদা মাডোর ওদিকে কিছু কিছু ছাড়লে তবে এই খোরার হত না। বেড়াল ভাড়াবার ভাল ক্ষিত্র হল, নাছের কাঁটাকুটি দ্বে ছুঁজে বেওরা। দূর থেকে কাহজা-কামড়ি ককক, কাছ থেঁনে ঝামেল। করতে আগবে না। টাকা পাঠাতে বঙ্গা গাকিলতি করল, ভার এই ভোগান্তি। সম্বন্ধী কালকেও আবার বেতে বলে দিল। বলে, গোরস্কব্বে হন্ধার পর ঠাকুরের নাম, ধুব ভাল কাল্প করছ ভোমবা। কথনো কামাই পড়ে না যেন।

জগা শিউবে ওঠে: আবে সর্বনাশ! একদিন ছ-দিন মন্ত্র, বোজ বোজ এখন অভগুলো পাছাবাব মধ্যে বড়গাকে বাবাজি হতে বুলে পাকড়ে হবে! বড়গা বাঁচুৱে না।

আৰু ভোৰবাত্ত্ৰেও আণের বিষেষ মজো। কণা বোজাস্থল্লি আটোর উপৰ ভিত্তি চেপে বনেছে। বলাই আলা যুবে আসছে। গণায় ফর্ম লিখে দেখে, কড খোড়া মাছ বাছে কি বক্ষ দৰে কেৱা।

এবং ঠিক আগের দিমের ছাজো বাঁধের উপরে চাছ। আলক্ষে
আর কাগের নামল না, নোনা কালার মহিমা কাল বুল্ল নিগেছে।
বাঁধের উপর থেকে টেচাক্রে, বাঁটা আর চাজা-বুল্ল-কাটা। কাল
জুলেছ, আলকে জুল না হর। এমন জুলো মান্ত্র কেন তুমি। ভগার
ব্যথ বাঁ-না কিছু নেই, লোহার মৃতির মাজা ছির। কানে গেল কিনা
বোঝা বার না। পচা নেমে আসছে, সে বাবে। কুমিরমারির হাটবার
আছ। ডিগ্রিতে এই নিনে কিছু ভিড হয়। লোকে হাটবেসাভি
করতে বার, বোরাগ্রি করে নজুন মান্ত্রজন দেখতেও বার জনেক।
পচাকে ভেকে চাল বলে, কালা নাকি নোকোর ঐ লোকটা।
রা কাজে না। একগাছ বাঁটার কথা বলছি কাল থেকে—

জগা কালা নর, লে তো ভাল মতোই বুঝে নিরেছে সেদিন। কুলতলার ঘাটে, টাপুরেনৌকার ভিম্বর, এবং বিশেষ করে কুমিরমানিতে। এটা হল নিজের মনের ঝাল মেটানো কথা। আকালে সূর্য ওঠেনি—ন হুন দিনের সবে স্ট্না—এর মধ্যে অকারণ গালিগালাক ভনিয়ে মন্টা খিঁচড়ে দিল একেবারে। ভিডিছেড়ে দিয়েছে। পচা বলে, খেরাল করে ঝাঁটা আনতে হবে আল।

জগা গর্জন করে ওঠে, আনবি ভো ধাক্কা মেরে ফেলে দেবো তোকে । গাডের জলে। মরদ হয়ে মেরেমায়ুবের বাঁটা বইতে হজাকরে না ?

পচা বলে, পুৰুষে না জানলে মেরেমানুবেই বা পার কোণার ?
বুঝে দেখ সেটা। ছটো দিন মাত্র ওরা এসেছে, ঠাট বদলে গেছে,
এর মধ্যে জালাবরের। মেরেকাত হলেন লক্ষ্মী—লক্ষ্মীর চরণ পড়েছে
জার লক্ষ্মী ফুটে উঠেছে। বাও না তো ও-মুখো, দেখে এসো
একটিবাব গিরে।

বলাই হেসে ওঠে: খববদার জগা। দেখতে পেলে তোকেও
কিছ ছেড়ে দেবে না। গানেব গলা গুনেছে সেদিন নৌকোর মধ্যে!
আলাঘ্রের সকলে আম্বা নামগানে মাতোহারা হয়েছিলাম, ভা-ও
গুনল ঘ্রের মধ্যে প্রথম পা দিয়েই। বাবাজি করে ভোকেও ঠিক
আমাদের সঙ্গে বসিরে দেবে।

জগা বৃক চিভিয়ে বলে, কে বসাবে ? কার খাড়ে ক'টা মাধা ? টের পাবে আমার সঙ্গে লাগতে এলে। বলে দিস সেকধা।

বলাই বলে, বড়দাও অমনি কবত। কী হাল হবেছে এই
ছটো দিনে! বেন এক ভিন্ন মানুৰ। কিছু বলা বার না বে ভাই,
গারের জোবের কথাও নয়। কামরূপ-কামাখ্যায় পুক্ষকে ভেড়া
বানার। পাহাড়ের নিচে ওনেছি, বত ভেড়া সারি সারি দড়ি দিরে
বিধে রেখেছে। হল কি করে?

्रव्याद चनवि अक कृष्णान्यव वावका कालः चक्रः व्याचकः এস-ডি-ও. ডি-এস-পি, ফ্যানেবিশ্বা অফিসার কুদ্ধ স সাছেব। ভাঁকে নিভে হোল—কাৰণ ভাৰ ছাতে বিশাল ওবেপৰ কেবিবাৰ আছে যোটৰ কেন, জীপও দে পথে ৰেছে পাৰে না। সামনের অকল নদীতে পুল নেট, নেকিও নেট, ভবে বার্থীর वक् है।कृष्टेव मारक ठांव किंहे कम बिरव (बर्क भारत. मिहा मान मरन बारव जामा कर बाकी रक रहेरन नहीं भार करवार जार बाजि वा कानाव बाहेटक (शरम (हेटन बाब करवांव करा । जिल्लीक कथ बान ৱা. কাঁব পাভালো হাতী মেখনাম, এতটি ভোটিবা খোড়া ও क्षकृष्ठि जात्मा (याजा थाकरव । अक्षव आफोरफ वनक चारमंडे वस्त्रा ক্ষরে কেন্দ্র। কোল। এবার জোপধানার পালা। বাংজীব कांत न क्यांत प्रमान वाहेक्क च्यांत है है बांत बाहेक्क, स्थानना দুট্গান - আৰু বিভেশ্জাৰ। সিংস্কীৰ বোনলা আৰু তাঁৰ ভাইএৰ अन्त्रत्रा । आधार स्त्रीः क्षित्र शहेरकन, सार महित्यक्रि रमुक चकित्राश्टमय घटना फि-अत्र-शिव बागूक, बांहेटक्क, विक्रमखाब, धम-फि-धर विक्रमकात । रमुक। सर्मन ७४ विक्रमकात। शुर्मरकः किन्ते (नहे। उँदा इ'सन सामास्त्र बसूक, क्ष्मी बादशंद

অন্ত্রপত্র সঘেত বথন আমরা তুপুর বেলার গাড়ীতে উঠলাম, সে এক দেখনার জিনিব। কিছু একটা হিসেবে ভূল হংবছিল, প্রেক্তাক ভজুন বে একটি করে আর্দাগী নেবেন দেটা ভাবিনি। কাক্তেই তালের রসদের কথা ওঠেনি। বারক্তীকে চূপি চূপি বসতেই, তিনি অন্তর দিলেন, বা রুগদ আছে তাতেই কোনোমতে চলে বাবে—আন আমার মত শিকারী থাকতে ভাবনা! শিকার ক্ষেত্রে পৌহ্বার আগেই ঘৃদ্ মারতে মারতে বাবো। আর পৌহবামার একটা শুগাব বা চবিশ মেরে ফেলনেই হবে।

কৃদ্স সাহেব গাড়ী দিয়েছেন, কিছ ম্যালেরিয়া ধরার আসভে পারেন নি। আফুশোর জানিরেছেন। জার নিশ্চিস্ত হতে বলেছেন, মুসসমান ডুটিভার আছে, কোনোই অসুবিধে হবে না। সেবে ফোনো আগত জানোরারকে এক নিমেবে জ্বাই কর্জে পারে। জার—কাবাবও ভাল বাঁধতে পারে।

সহব কেন্ডে ওরেপন্ কেরিরার ও ট্রাকটর নদীর ধারে এল।
দেখি—এক বাঁক শাষ্কধোর পাথী বসে আছে। দেখতেও
বেমনি বেবাড়া মা'দেও তেমনি আঁশিনে গদ্ধ। ডাইভার গাড়ী থামিয়ে
বলাল, সাহেবের জন্মে কয়েকটা মেরে দিছে। একসলে তিনটে ফারার
টোস। চারটে তৎক্ষণাৎ মবল, আর পাঁচটা আনত হয়ে ডানা
বাপটাতে লাগল। সলে সক্ষে চুটল ডাইভার, দেডফুট লখা এক
ডারব ছোবা নিরে—ম্বাপ্রলোকে ভবাই করে, ভ্যান্তর্ভাবেক করল।

পাখী তো হোঞ—এবার ফার্ন্ন গীরার আর কোর ছইল ডাইডে, বালি উড়িরে অন্ধনার করে আমরা নদীতে প্রবেশ কংলাম। নদীতে মাত্র তিন ফিট অল ভিল, অক্লেশে সেটা পার হরে বেতে, ডি এস-পি, প্রস্তার করলেন, ট্রাকটর ক্ষেবৎ বাক কোনো দরকার নেই। ওবেপন কেরিয়ার অন্ধলে এ সব নদী পার হবে, আর ট্রাকটরের বিনালে, একমাইল দ্ব থেকে পাখী আরু আনোরার পালাবে।

এ কথা বায়জীর মন:প্ত হোল না। ভিনি বললেন, কেন এই শায়ুক্থোয়ঞ্লো ত পালালো না।

শিকার কাহিনী

একমলেশ ভাহড়ী

জনসাহেব ৰায় দিলেন বে— তালেব মৃত্যু এলে গিংছিল, তাই ওড়েনি। আমলে তুমি আমি কে মাৰবাৰ ৷ হঠাৎ সিংকী টেচিয়ে উঠলেন—হবিবাল ৷

সভ্যি—সামনে বটপ'ছে এক বাঁক চরিবাৃদ। ঠিক চোল, এস-ডি-ওই মারবেন। জাঁব নিশানও ভাল। এক ফায়ারে ভিনটে পড়ল। আৰু আবার ছাইভার সেই ভয়ন্তব ভোষা নিয়ে ছুটল—জবাই করভে। পেড়ন পেড়ন বুনসেক। গাড়কদার পৌছে বুনসেক বলনেন, পাখী তো মরে পাধর অবাই করে কি হবে। ছাইভাব হুব ভারী করে পাখী নিয়ে ছিবল

যুনসেক ফিস কিল করে বায়জীকে বসলেন, ডাইডাবের উদ্দেশ্য থাবাপ। আমালের থেডে দেবে না। অর্থাৎ যুনসেক গোড়া হিন্দু, অবাই মাসে থান না।

চলেছি—সামনে কিছুবুর মঞ্জুমির মঞ্চ, সাদা থক্ থক্ করছে বড়দানা বালি, অন্তকুচি মেশানো। সাড়ী আবার স্পোলাল সীরার দোর হুইল ডাইভে, গর্জ্জন করতে করতে চলল। পাবও চোল, না হলেও ভর নেই—সলে টুংক্টর আছে। সামনের প্রামে এইটি লোক, হাত ডুলে গাড়ী ধামিরে চিৎকার করে বলল, স হ'আনা প্রসা দেবে, তাকে সাহার্সা পৌছে দেওয়া হোক। ডাইভার গাঁভ বিভিন্নে উঠল। আবার চসলাম।

কুশীর অসংগ্য ধারা বইত আংগ, এখন তারই মবা ধাকওলো বরে গেছে। স্রোভ নেই, কোনোটার এক হাঁটু, কোনোটার এক কোন জল। না থেমেই চললাম গোগহো নদী পাব হরে। এই গোবহো দশ বছর আগে অবধি কুমীবের ডিপো ছিল, এখন কেবল ধৃ-ধৃ বালি আর মধ্যে এক হাঁটু জল। গোবহো পার হয়ে ওকনো ধৃলোর বালির রাজ্য শেব কবে, বখন আমাদের গল্পব্য মহিবি প্রামের তিন-চার মাইল কাহাকাছি এলাম, ভখন সবারই পারে খ্যাতলানো, টাটানো বাধা, আর ধৃলোর নাক-চোধ আলা করছে। এ জেলার এছদিনে পথ তৈবী আরম্ভ হয়েছে, এখনো অগম পথ নেই। ১১০৪এর ভৃষিকল্প আর সেই সমর কুলী আগমনের পুর্বে ভাল পথ অবপ্ত ছিল। এখান থেকে আরম্ভ চোল বর্তমান কুলী রণজ্যের সীমা। শল্পবার্টার দাক্ষিণাত্য থেকে শান্ত আলোচানা করতে পারে হেটে মহিবি প্রামে এনেচিলেন। মণ্ডন মিশ্র আর উভরতারতীর প্রামে—তারা দেবীর মহাপীঠছানে।

মহিবিতে মন্দির আছে। দেবীর তাল পাধ্বের মৃতি। পুকুর খুঁড়তে গেলে অনেক মৃতি ও স্কুত্ত বেবোর। আর্থা সভ্যতার অসংধ্য আলানের মধ্যে মহিবিও একটি। জ্ঞান সভ্যতা, সম্পদ, সুখ, আনন্দ — মামুবের, গোষ্ঠার, সমাজের, দেশের ক্ষণিকের অস্তে আসে। আর ক্ষণপ্রভার মতই মিলিরে বার।

শহরের ও রাহ্মণদের বাতিল করা অনেক বৃৎসৃতি মন্দিরের বাইরে কিন্দু দেহতাদের হল্লবেশে পুন:প্রতিষ্ঠা লাভ করে থ্ব ফুল, সিঁপুর আর প্রধাম পাছেন যেরেকের।

আৰ একবাৰ শিকাৰ কৰতে গিছেছিলাম এথান থেকে বছ দুৰে উত্তৰ পশ্চিমে, দ'হভালা ভেলার সীমানার। সেধানেও এক ছল্ল'বনী বিপ্ৰদ দেখেভিলাম। সে বাৰ চাৰ বন্ধু ডিলাম। এক ডেপান্ধৰে বাজিব হয়ে গেল, আমবা ক্লান্ত হয়ে খ্বতে পুরতে এক প্রামে পৌচাই। দেখানে এক মন্দিরে রাত্রির মত আঞ্রর নিই। मिनि कि वह गाम चालांव टेडवी। भारत ছোট प्रवामान, त्यांव ছব ৰাজীনিবাস ভিল। বর্তমানে সেধানে প্রামের যোজলের ছটি বলদ আর হটি মহিব থাকে। সারা দিন বুলোর আর ৰাত্ৰি গভীৰ হলেই বাবেৰ মন্ত প্ৰেৰ কসলে গিৱে পড়ে। खांव करण रफरव । करण खारमय अखिरवंश ऐटेक्ट:अवांव चांच जाहेक ঐবাবতের। আমরা বধন সেধানে পৌরলাম, গো-পালক ভধন পঞ্জেৰ দক্তি খুসছে। বললে—এ কোনের থড়েৰ পাদার ওপৰে আঘণা নিশ্চিন্ত হয়ে গ্ৰোডে পাৰি। তাৰ প্ৰই লাইট জিগেডেৰ **ठार्त्या**व मछ, ताविष्ठ लक्त क्षताव निरंत छीमरवरन **छेद्व**भूरक् हाँ है करन। স্বচেবে মাভব্বৰ মছি।টাৰ পিঠে গো-পালক। ভোরবেলার ফিৰে আসা মহিবদেৰ গৰ্জানে বুম ভাঙগ। বেরিবে দেখি, **हमश्कार हैगाता, लरिकार कल, लाट्यांडे कटक कल. बुकुरा जार जाता** গোলাপ। চাণ্ডিকে সবুদ্ধ শংখ্যর শোড়া, বেন একধানি মন্ত বড় कार्लिंग्रे विद्याता रखाद्य । (करन উত্তর-পশ্চিম निक् कार्णिय सक्रन, ৰতদ্ব দেখা বার।

বহুল্বে—সোজা উত্তরে গৌবীশস্কর শৃঙ্গ আর উত্তর-পূর্বেকাঞ্চনজ্জনা ভোবের আগলার রলমল করছে। মন্দিরের দরজা খোলা, দ্ব থেকে প্রায়ের প্রোহিত এসেছেন, প্রভাব বসেছেন, ব্রছার কাল। আমিও প্রাক্তঃরাদি সেরে ভিজা গারে ভিজে আগারওয়ারে, পূজো করতে মন্দিরে চুকলাম। পুরোহিত অপ্রসর দৃষ্টিতে আমার বর্ববোচিত বেশের দিকে তাকালেন, তার পর কি ভেবে মুখ্ ঘ্রিরে প্রভাব মনোনিবেশ করলেন। তাঁর পূজো শেব হবার পর, বুরে বিসে আমার অঙ্গলাস প্রভৃতি করতে দেখে নিশ্চিত হলেন। পূজোর শেবে তাঁকে নৈবেতার জন্ম আগ সের চিনি, শিকারের কোলা থেকে দিয়ে খুণী করলাম, গল্প শোনার উদ্দেক্ত। পুরোহিতের পিভামহ, প্রশিতামহ এ বিগ্রহের পূজা করেছেন, কিছু কেউই মন্দিরের বা বিগ্রহের ইতিহাস জানতেন না। পুরোহিতবে জিজেন করার বললেন, মুর্জি হ'ল শিবের।

বললাম তা কি কবে হয় ! চড়ামুখ, লাড়ি আছে, গলায় উপবীত, হাতে ভপের মালা ভার কমগুলু হংস্বাহন, এ তো ভ্রন্নার মৃতি। ভ্রন্নার মৃতি কলাচিং দেখা বার। ভার এত স্থশ্ব ভার বড়, কাল-পাধবের নিখুত মৃতি, ভামি ভ দেখিনি!

অন্তব্যন্ত হবে অন্তব্যবের শিকাবের কথা ভাবছিলাম। স্বাই, এই অঞ্চলব নিজ্ঞা প্রকৃতিব মধ্যে এসে উনাস বোধ করছিলেন। এমন সমন্ত ভাউভাব একটা তলামত জারগাব সামনে গাড়ী থামালো। কতটা জল আব পাঁক আছে দেখাব জ্ঞা ট্রাক্টর থানিকটা পিছিলে পড়েছিল, তবে তার ব্যানক শোনা বাছিল। ডাইভার জ্ঞাে থলে জলে নেমে দেখল, জল এক হাঁটুর কিছু বেশী তবে নীচে নবম, পেছল কালা। বাই হোক, আবাব ফোব হুইল আব প্রশাল গীয়াব দিয়ে মন্ত মাতকের মৃত গাড়ী প্রায় তুশ

গঞ্চ ভাগার ভেত্তর বেতে, কৃট বোর্ড ছাড়িবে ভল উঠল। গাড়ী ক্রমণঃ
লীকে বসছে, সাইলেজারে ভল চুকে. এপ্রিন থামবার মত অবস্থা,
তথন চাফুলাচ আর ফুল এক্সিলেটার দিরে বাথতে গাড়ী আবার
থানিকটা এগিরে গেলে. ভল প্রায় এককোমর চল। মাঝ জলার এপ্রিন
বন্ধ হল বলে। কিন্তু ট্রাক্ট্রর এসে পড়ল আর সামনে গিয়ে ভাবের
মোটা কাছি দিবে টানতে লাগল। গাড়ী কাদা, দলিত মথিত করে
আকর্ষিত হোল। বারম্বীর অচন্ধার দেখে কে। খেন তিনিট টানছেন,
খললেন, দেখা দালা। বলতে বলতেই, ট্রাকটবেও থামার উপক্রম।
গিরার নিউট্রাল বেথে, স্পীড়ে এপ্রিন চালু বাথা হল একবার বন্ধ হলে
ওথানে আর ট্রাট হবে না।

কি অবস্থা। সামনে পেচনে চুল' আড়াইল' গছ জলা আৰ ছু'
পালে কয়েক মাইল জলা। চুট বছৰ আগেও অলব লালবন ছিল,
আৰ তাৰ মধ্য দিয়ে কুৰীৰ ছোট লাখা পুনানী নদী ছিল। হঠাৎ
কৌৰিকি' মহাবাণীৰ, কি উদ্ধা হল, তিনি পুৱানীৰ খাত দিনে আয়
জল নেবেন না, অবিলম্থে বালী দিয়ে পুৱানীৰ মুখ বন্ধ কৰে, এক অভি
ল্পা জলাৰ স্তি কবেছেন।

এদিকে অবস্থা সঙ্গীন, মহিবি তো কাছে, কিন্তু সন্ধা হয়ে আসছে, আমতা সকলেট কুধ'-তৃঞান কাতন। বাংকী সিংদীন মুখ ওকিয়ে গেছে, ভারা চুপি চুপি পরামর্শ করছেন উভাবের উপার, ভাইভার গ্রহগন্ধ করছে পেট্রল পোড়ায়। মা ভৈ:— মহিষি থেকে আমাদের লোকেরা ট্রাকটর, লগীর গর্জ্জন শুনতে পেরেছে। দেখা গেল বিশাল কালো মেবের মত মেবনাদ মভিষিত্র দিকের শালবন থেকে বের ছচ্ছে। চার চার ফুট লখা ছুটি দাঁত, মেবের কোলে বিভাতের মত ঝলসে উঠছে। পেইন পেছন আমাদের লোকলন, আদালী ও গ্রামবাদী ছেলের। মেখনাদ জলাব ছেত্র দিবে এগিবে এল। স্থির কবলাম, গাড়ী মাধা দিয়ে ঠেলতে, পেছন থেকে। আর সামনে থেকে ট্রাকটর টানবে। মেখনাদ মান্তভের ইসাবার গাড়ীর বডির নীচে গাত তৃটি ফিট কবে, গা টটা আগে পাঁক থেকে ছাড়িয়ে নিল। ভারপর ট্রাকটবের টান মারার সঙ্গে সঙ্গে কপাল দিয়ে গাড়ীকে ঠেলতে লাগল। অল ভেদ কৰে, পাশে চেউএর মত কাদা উঠতে লাগল। আৰু মধ্যে মধ্যে চাকা শ্লিপ করে ফোরারার মত জল কেলে গাড়ী ৰুগিয়ে চলল। জলা থেকে গাড়ী বের হল। বাব হতেই মেখনাদ গাড়ী ছেভে দিয়ে ওঁড় উঁচু করে ভীম বৃংহণ করে উঠল। আনকে অধীর হয়ে বনু সিংজী গাড়ী থেকে নেমে তাঁর হাতীকে আদর করতে গেপেন। আর হাতীও আহ্লাদ করে বসে পড়ল তাঁকে পিঠে নেওয়ার ছয়ে। বন্ধু হুজুবদের অরুমতি ক্রমে, হান্ডীর পিঠেই চললেন। আগামী কাল বিকেলের মধো গান্ত জলাৰ মধ্যে মোটৰ বাবাৰ মত পথ কঞ্চি, ডালপালা আৰু বড় কাল পেতে তৈরী থাকে ভার বন্দোবন্ত করা হল।

নালা. খন্দ, মাঠ দিয়ে সটকাট করে হাতীব পিঠে সিজী, জাগেই মহিষি ডাকবাংলায় পৌছলেন। আব আমরা প্রার দেড় মাইল পথ, চার মাইল ঘূরে, পৌছতে দেখি ডাকবাংলায় মেলা বনে গিয়েছে। করেকটি পেটুমাাল্ল আব কাববাইড জ্লাহো। প্রামের ছেলে, মেয়ে, বুরু, বুলা ভামালা দেখতে এসেছে।

গাড়ী থেকে নামলাম স্বাই, অবস্থা সভ্যিই কাছিল আর মেলাল

বারাণ। চা-বাবার বেরে ভরেই প্রসায়। ওদিকে 'ভাস' আরম্ভ হল।

জন্ধকার থাকতে ঘুঁম ভেঙ্গে গেঁল। জলাই ইাসের খোঁকে চললাম, একলাই। আবহা জন্ধকার আর কুরাশার ভেডর দিরে একলা চলেছি, গাছের পাতা খেকে টুপ টুপ করে জল পড়ছে আর ছ-ভ করে ভীক্ম হাওরা বইছে। মিনিট আইেকের ভেডর জলার খারে গিয়ে দেখি ঘন কুরাশায় জলা আছের। আর সেখান খেকে আগছে বছ বি'চত্র ধ্বনি। একটা টিপির আড়ালে গাঁড়িরে তীক্ষ দৃষ্টিতে দেখছি—দেখি সামনেই মাত্র ত্রিশ গল দ্বে এক ঝাক চথা অলপ্তল বলে আহে। টিপির পাশ খেকে নীচু হরে, রাইকেল জলের সমাস্তবাল করে নিশান নিরে ট্রিগার টিপভেই, সামায় কট্ করে শক্দ হোল, আর সামনের চখা নিঃশক্ষে ঘাড় ওঁজে পড়ল, ভার পেছনেরটা একবার ক্যান্ত—করেই স্থির হবে গেল। পাবা ছটো হাতে নিয়ে দেখলাম প্রথম চথাটির মাথা কুটো করে, বুলেট বিভায়টির বুকে প্রবেশ করেছে।

স্পোন্ধরে একটু পরেই আবো তিনটে হাতী এল, মেখনাদ ত' আছেই। সব চেরে বড় হাতী প্রন্কুমারে চড়লেন জেলাকজ ও রারজী। মেখনাদে আবোহণ করলেন এস-ভি-ও এবং ভি-এদ-পি সেজ হাতীতে মুস্ফে আর সিংলী। হাতীতে উঠবার আগে মুস্ফে চুলি চুলি আমার বললেন, মিঞা ছাইভার বাকে আমি সজে নিজি, সে বেন ভাল পাবীগুলো আর হরিণগুলোকে জ্বাই করবার ম্বোগ না পার। সব চেরে ছোট একটি ধ্রখুরে হাতীতে চড়ে আমি বেশ নিশিন্ত বোধ করলাম, পড়ে গেলে খুন হবো না। কোন হাতীতেই হাওদা নেই, ওধু সদী। ছাইভার আমার পেছনে ব্যস্ত্র।

গ্রামের বাইরে বেভেই শহ্মকত থেকে একটি ছুর্গত পাখী "ক্ষিকাট" উড়ল। তংক্ষণাং ডি-এন-পি এবং এন-ডি-ও একসঙ্গেই ফারার করনেন। পাখী পড়ল। কিছু কার শটে ? হাওরা গ্রম, বিহাতের ঝগহু, থ্যথমে ব্যাপার। ডাইভার নেমে, পাখী তুলে আনতে, ছোট ছুরা দিরে আঘাতের স্থান চিবে পাঁচটি ছ্রৱা পেনাম। তিনটি, চার নম্বর ও ছ'টি বি, বি ছ্রৱা। ছ'বকমই ব্রেছে। হাওরা ঠাণ্ডা হল, বিহাৎ মিলিরে গেল, আর ক্লোবেলাকার পনের কুড়ি মিনিট সমর্ম নই হোল।

এক ঘটা পরে বোঁচা নদীর ভীরে পৌছলাম। সুবাই হাতী থেকে নেমেছি, এমন সময় আমার অভ্যস্ত চোঝে পড়ল। অলের ওপার থেঁলে ভিনটি বিন্দু আর ভার পেছনে করেকটি কাঁটা —শ্রোতেও স্থব—এক জারপার বরেছে। অর্থাৎ মায়্রথেকো কুমীর জলে ঘা:টি মেরে বরেছে। কাউকে কিছু না বলে—রোজ পরেক বুলেট রাইকেলে ভরে, তিনটি বিন্দুর—সামনেরটি নাক আর পেছনের ছটি চোঝ পেছনটায় ফারার করলায়। জলের মথ্যে বেন বোমা ফার্টল। বুলেট কুমীরের চোঝে চুকে, মাঝার খুলির খানিকটা হাড়—নদার পাড়ে কেলে, বোঁ করে ওপরে উঠে গেল। আর দানবীয় লক্তিতে জল মথিত করে, চাপা, কুছ গাঁ গাঁ শহ্ম করে কুমীরটা ড্ব মারল। এস-ভি-ও ভাবলেন, ক্রকাল, বিলাম, এখন খানিকটা উদ্ধির গিরে উঠবে আহত কুমীর

বেকিকণ জলের নীটে ঘাঁকতে পাঁরে মা, উজিরে বেতে চেটা করে।
মিনিট বালেকও হর মি, প্রার হুল'গল উভিয়ে কুমীটো ওপারের কাছে উঠগ। মিমেরে হাউভেলোসিটি মণকুম' বৃংলট ওর ঘাড় আন্দাক্ষ করে কারার করলাম। ডিগবাকী বেরে জাবার ভূব মারল। কঠিন প্রাণ বটে! মুখ্যেক আর সিংজী একটি নোকো নিরে কুমীরের পেছনে ধাওরা করলেন। পাড় দিরে উাদের হাতী চলল। বড় কন্তারা রাম্ভীন্য নোকোর পার হরে গেলেন। হাতীরা সাভার দিল। ওপারে আবার স্বাই হাতীতে চললেন। আমি এপারেই হাতীর পিঠে, নদীর পাড় দিরে, দক্ষিণ দিকে চললাম।

মাইল পাঁচেক গিরে কাশের জলল জার মধ্যে মধ্যে সঞ্চলালার মত, জল্প গভার জল, কুনীর জসংখা ধারা। বরফের মত ঠাণা। জলের তলে সাদা বালি চক্ চক্ করছে। ছোটবড় রকমারি মাছ ছুটোছুটি করছে। হাতী খামিরে মাছ দেখছি, এমন সমন্থ মাছত চাপা গলার বলল, সামনে "একার" (দলছাড়া দাঁতাল বনভরার) আমার মনে হল, ছোট মহিব বললাম তাই, তবু মাছত জিল্ করার, পাঁচটা বাইফেন্ড লাগে ভরা, আটোমেটিক গান ভুলে ভাল করে দেখতে লাগলাম। কারণ এরকম ক্ষেত্রে কখনে কখনো ঝোপের ভেতর মান্ত্র, আর গক্ত মোর খুন হয়। ইতিমধ্যে বনভরারটি বনে প্রবেশ করল।

থানিকটা এসিরে ভাষালা প্রভৃতি ছোট হাঁস আর মর্রের মক্ত সুন্দর কিছ পেথমহীন, অতি সুন্দার "কারণ" পাথী (প্যাভি ফাউল) পেলাম।

এখানে কিছু গোৱালা জনেক গরু ছিব নিবে কাশের জঙ্গলে থাকে। লোকসংখ্যা বৃদ্ধি জাব ট্রাকটবের কল্যাণে পড়তি গোচর ভূমি জাব কোথাও নেই। সেজন্তে এইখানে ত্ব বিনা প্রসার খাওয়া বার। এই গোরালা জার গরু মহিবের জন্তে, বভই ভাল লক্ষ্য হোক না কেন, শিকার একেবাবে পরিভাব নজর না হংল তুর্ঘটনা হতে পারে। তাই মধ্যে মধ্যে চকিন্তে হবিণ দেখা গেলেও ওসী চালালাম না। উদ্বিভাল (ভোদড়) মারার চেটা করলাম, কাবণ, পাথী মরে থেই জলে পড়ে জমনি টুপ করে নিম্নে জলে ভূব মারে। তু'বার মিস করলাম। চলমান হাতীর লিঠ থেকে, অব্যর্গ লক্ষ্য সেই দাবী করতে পারে, বে ভূমিকশ্লের সমন্ন জল ভরা গ্লাস হাতে নিয়ে বেড়াতে পারে, না ফেলে।

বেলা তিনটে আশান্ত, গোটা ত্রিশেক সুথান্ত পাথী নিরে, বাটের কাছে ফিরে দেখি মুক্ষেফ ও সিংলী কুমীর উদ্ধার করে, গোকসাড়ী বোগাড় করে বওনা হবার উপক্রম করছেন। একটু পরেই, ডি-এস-পি আর এস-ডি-ও একটা বড় হরিণ নিয়ে এলেন। আবার তাতে ছ'জনের গুলী। এবার সঙ্গে লোকেদের আনা বাছেটে, থাওয়ার সব সমলাম ছিলই, টোভ জ্লেলে ছুধ গ্রম করে, কৃদি, ফুটা, মাথন, জাম প্রভৃতি থেয়ে তৃত্তি করে সিগানেট বরিয়েছি আর—অজ ও রায়লীর অপেক। করছি, এখন সমর ক্ষেকটি গোহালা মহিবির দিক থেকে গাঠি বাড়ে করে উচ্চৈ: ছরে গাইতে গাইডে আসছিল:

'বেলন পর বেলা রোটা, বাবি উলা, বাবিম মোটা'। আমানের নেখেট চুপ হরে গেল। ঝুর্ডির কারণ বিজ্ঞানা করার, বেচারাদের মুখ ওকিয়ে গেল। খলল, তারা ছক্তন হাকিমকে, বরেল গাড়ীতে মহিবি গোঁছে দিরে আসছে—বয়েল গাড়ীও আনছে, পেছনে আছে।

ব্যাপার এই বে, হাতীর পিঠ খেকে জ্বন্ধ পারের আর রার্মী একটা দাঁতাল বনভ্রাবের ওপর কারার করেন, গুলী ঠিকমত লাগেনি, সামাল আহত কুছ দাঁতাল ভীবণ ভাবে হাতীকে আক্রমণ করে আর তার বড় দাঁত ছটি হাতীর গোদা পারে এমন সেঁথে দের, বে হাতী ক্ষেপে ভঁড় দিয়ে আট-দল মণ ভারী দাঁতালকে ডুলে আহাড় মারে। দাঁত ছটি দাঁতালের ভেকে হাতীর পারেই খেকে বার। হাতী বল্লার ক্ষেপে ভঁড় দিরে মাহতকে বরার চেঠা করতে খাকে, না পেরে পাগলের মত উত্তরে তার প্রামের দিকে ছুটতে খাকে। পথে একটি ভকনো আমবাগান ছিল, তার নীচু ডালে আঘাত লাগার সম্ভাবনার মাহত ভাল থবে উঠে বার। বার্মী মাহতের অল্পরণ করতে গিরে, হাতে-মুখে ডালের আঘাত পেরে নীচে পড়ে বান আর পা মচকে বার। জ্বালাতে বৃদ্ধি করে গণীর ওপর চিৎ হরে ভরে পড়েন, কলে তাঁর বোধাও চোট লাগেনি।

তীয় দেহ ডালে আটকৈ বার আর অফান হয়ে হাতী বেকে পড়ে বান।
নীচে কালা বাকার কেউ খুন হনমি। হাতী আর মাছত কেরার।
থবর তনে গ্রলাদের পানের আর্থ ব্রলাম। কিছু আমাদের মুখ তকিয়ে
গেল। অবিলয়ে বতনা হলাম। মহিবি কিবে দেখি স্থানীর ভাতোর
ভালের ওয়েপন্ কেরিয়ারে তুলে, ফ্রাক্টরের ডাইভার দিরে চালিরে
সাহার্সা চলে গেছে। বাবার সমর কোনো জ্পুবিষে
হয়নি। ঝাউ আর কাল বিছিয়ে, জলার পথ ঠিক করাই
ছিল।

আমাদের থাবার তৈরী ছিল, বললাম ট্রাক্টর চড়ে আমি সাহার্স।
রওনা হচ্ছি। দেখন, বাতে ভোরবেলাতেই ওয়েপন্ কেরিরার উাদের
নেবার জন্তে এলে বার। সাহার্স। হারপাতালে গিরে দেখি, জন্ত আর রায়ন্তীর জ্ঞান কিরে এলেছে, তেমন সাংঘাতিক কিছু হয়ন।
রায়ন্তীর মুধ-হাত ব্যাতেকে মোড়া, পারে স্পুট। জন্ত সাহেবের
তবু উদরদেশে ব্যাত্তেক।

আমবা গাড়ী আৰু ডাইভার নিরে বাত এগাবোটার মাধীপুৰার বাড়ী ফিবলাম। গাড়ী পেট্রল ভবে আবার মহিবি চলল, ভোরবেলার দেখানে পৌছতে হবে।

ফুল ফোটানোর গান

অশোক ভট্টাচার্য

কিসের স্পর্শ থুঁজে বেড়াই সারাট। দিন— সারাটা পৰ কার সন্ধানে হাঁটি ? সে কী জীবন না মৃত্যু !

বৈশাধের রোদ মানি না, মাবের বাছ কাটাই থোলা আকাশের নিচে। তবু তাকে পাই না। যাকে পাই না কিসে মন ভারী করে থাকে ?

রাতের টালোরা খনে পড়ে। ঝিরিঝিরি বাতানে পাঝি তাব ভোবের গানে স্থর চড়ার। দূবে কাছে ধীরে ধীরে কোলাহল জাগো— ব্যর্থ তবুঃ অনুসর্ম খনে ফিরে আদি।

ধুসর শহবের পিচ-সলা পথে রাজ আমি
দেহ টেনে টেনে পথ চলি। বেলাশেরে
পার্কের বেজিতে বঙ্গে বিপ্রাম নিই—
আয়লি ভবে জল করি পান। তারপর শুক্র
আবার দে দৃগ্ত অভিবান। কিন্তু, কিন্সের বাদনা বল
আমার এ বুকে, সে কি ভালোবালা ?
মরা গাছে ফুল কোটানোর গান।

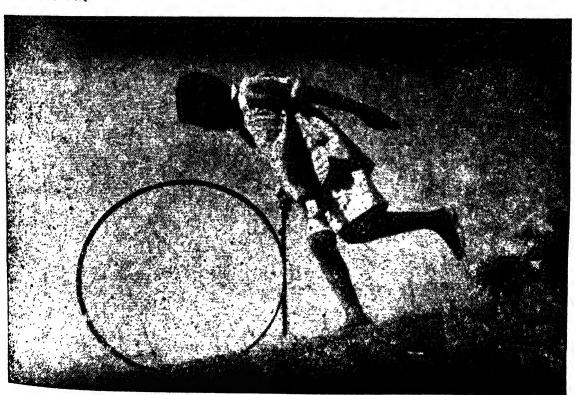


ছবি পাঠানোর সময়ে ছবির পিছনে নাম ধাম ও ছবির বিষয়বস্তু যেন লিখতে ভূলবেন না।)



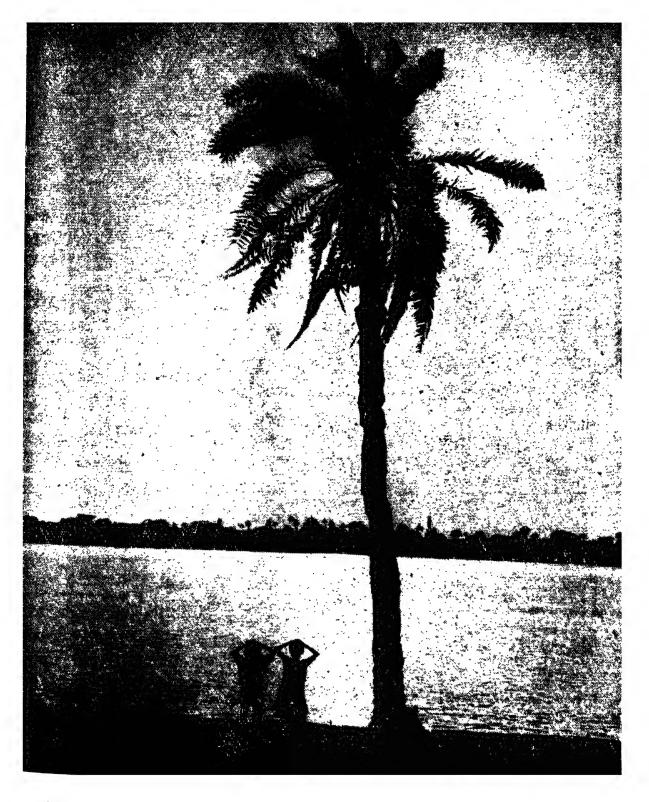
-বিভাষ **মি**ত্র

কেবল খেলা —বাৰকিছৰ সিংহ





জল থেকে ডাঙ্গায়





পারাপার

—বি, দাশ (পুরুলিয়)

অজ্বর নদী (বীরভূম)

—নিমাইবভন ওপ্ত





উল্লেখযোগ্য দাম্প্রতিক বই

রবিতীর্থে

विशेक्तनाथ मर्वकारमञ्ज मनीयी, मर्वकारमञ्ज व्कारिक, मर्वकारमञ প্রণমা। ভারতীয় সনাতন সভ্যতার তিনি ধারক, বাহক, প্রচারক,শাখত সংস্কৃতির তিনি বাণীমূর্তি, নবচেতনার তিনি জন্মদাতা, তাই তাঁব দেহাত্বের পূর্বে বেখানেই ঘটেছে তাঁব বহু আকামিত উপস্থিতি, সেই স্থানই ভবে উঠেছে এক মাহাত্ম্যে, উন্তাসিত হয়েছে আলোয়, পরিণত হয়েছে ভীর্বে। এই রবীক্রতীর্বের ভীর্বস্করদের মধ্যে বাঁদের স্থান শকলের পুরোজাগে তাঁদের মধ্যে ভারতের প্রবীণ শিলাচার্য স্থকবি শ্রীন্সসিতকুমার হালদার অক্তরম। ববীন্দ্রনাথের প্রপ্রান্তে বদে জীবনের দীক্ষালাভ করেছিলেন যে জীবন-পথিকের দশ অদিতকুমার জাঁদেরই একজন তা ছাড়া রবীজুনাথের সঙ্গে শামীয়তার ঋক্তেজ বন্ধনেও অসিতকুমার আবন্ধ। শিল্পীর মাতামহী ছিলেন কারে সংহাদরা। শিল্লীব জন্মও ক্লোড়াসাঁকোর ঠাকুর-वांडीएडडे, च्रडवार प्रकामिक (बरकडे पावा बाल्ड् रा, व्रदीक्रमाथरक ধ্ব কাছেব মাতুৰ হিসেবেই পাবার সৌভাগ্য হয়েছিল অসিতকুমারের। ব্ৰীন্ত্ৰনাথকে কেন্দ্ৰ কৰে নিজেৰ চোপে দেখা বিগত দিনেৰ ঘটনাগুলিকে শ্বভিব পাত্র থেকে সাহিত্যের আসনে অধিষ্ঠিত ^{করেছেন} অসিতকুমার উপরোক্ত প্রস্থের মাধ্যমে। শা**ভিনিকেতন** থেকে অণিতকুমারের বিদায়গ্রহণের পূর্বমূত্রটি পর্যন্ত এই গ্রন্থে অগিতকুমার স্থনিপুণ দক্ষতার সঙ্গে বিস্তারিতভাবে লিপিবন্ধ করে:ছন। শান্তিনিকেতন স্বাশ্রমের গোড়ার দিকের প্রায় সমগ্র ^{ইতিহাস} এধানে পরিনেশিত হয়েছে। এ **ছাড়া হালণার প**রিবারের ও ^{ঠাকু}ৰ পৰিবাবের বহু কীঠিমান পুৰুষ ও কীঠিমতী মহিলাদের বসংক্ষ সাবগর্ভ আলোচনাও গ্রন্থের অক্সক্তম সম্পদ্ধিশেব। অদিত্রুমার শিল্পী, ভাঁরে তুলি কথা কর, কিছ কলমও তাঁর নীবৰ নয়। জাঁৰ ভাষা, বৰ্ণনভন্নী, বচনাশৈলী ৰথোচিত প্ৰতিভাষ, বাকর বছন করে। গ্রন্থটিকে ঠাকুর পরিবার, হালদার পরিবার, ববীশ্রনাথ, শান্তিনিকেতন, শান্তিনিকেতনে অধাণকগণ, অভ্যাগভবুক, বিচিত্রার কাহিনী প্রভৃতি সম্বন্ধীর শৃষ্ণকিংসার অবসান বলে অভিহিত করলে অত্যুক্তি হয় না। অদিচ্ছুমারের শিল্পন্ন বৰ্ণনায় ব্বীক্সনাথ বেন নভুন মৃতিতে ^{নেখা} নিচ্ছেন। শান্তিনিকেডন বেন আবার কিবে গেছে ভার ^{নেই}ুফ্লে খানা দিনগুলিভে, খালোচ্যমুান খটনাগুলিব খেন পুনবভিনয় ছ**ছে পাঠককেঁ**র চোধের সামনে। ভবে করেকটি

গুক্তর মুজুণ প্রমাদ বিশেষভাবে চোখে পড়ে, ভারপ্রাপ্তগণ এ দিকে একটু অবিক মন: সংবোগ করলে আমরা খুনী হতুম। অসিতকুমারের আঁকা বছজনের বেখাচিত্র প্রছের মর্বাদাবৃদ্ধি করে। অসিতকুমারের পরিকল্পনাম্বারী প্রছেদচিত্র অক্ষন করেছেন প্রীপ্রভাসচক্র বন্দ্যোপাধার। এই স্বাক্ষত্মদর ওথাবছল, অর্বিত প্রছটি ত্রে ত্বে সমাদর লাভ করুক এই আমাদের কামনা। প্রকাশক—অ্থনা প্রকাশনী, ১৮ ছামাচরণ দে খ্লীট। দাম—পাঁচ টাকা মাত্র।

ব্রহ্ম প্রবাদে শরৎচন্দ্র

একথা আৰু নতুন কৰে বলতে হবে না বে, শ্বৎচক্রের চমকপ্রাদ कीवरनव क्षेत्रमार्थिव व्यानककृष्ण। मिन व्यक्तिशहिक इरहाइ बकामण। সাহিত্যিকরপে বাঙলা দশে পাকাপাকিভাবে বসবাস শুকু করার चारा भव १ ठन्य वर्गाव व्याव साम्री वाशिकार वर्ष शिखिकितन । वर्षा, স্থোনকার মাত্র্ব, সেধানকার জীবনধারা, সেধানকার ভাব কল্লনাও তাঁর সাহিত্যে নানা পরিবেশের মধ্যে দিয়েই ফুটে উঠেছে। তবে শ্বংচন্দ্রের ত্রন্ধ প্রবাদের খুঁটিনাটি ঘটনা সংক্রাস্ত বিশদ ধারাবাহিক বিবরণ থব বেশী জানা যায়নি—যা জানা গেছে তা থব বিভারিত নর, উপরোক্ত গ্রন্থণানি সেই অভাব পূর্ণ করবে বলে আশা করা যায়। গ্রন্থটির মাধ্যমে লেখক স্বর্গীর বোগেন্দ্রনাথ সরকার শরংচন্দ্রের ক্রন্ধ প্রবাস সম্বন্ধে অনিসন্ধিৎস্থ, জিজ্ঞাস্থ ও সন্ধানী ব্যক্তিদের কৌতুহল নিবসন করে বাঙালীর ধন্তবাদ লাভ করার দাবী বেখে গেছেন। वाशिक्षनां किलन त्रथात भदरहाक्षत कर्मकीवानत प्रकीर्थ, বোগেন্দ্রনাবের কলামুরাগই তাঁকে শ্বৎচল্লের মনের একটি বিশ্বেষ স্থানে উপনীত করেছিল, লেখক দীর্ঘদিন শরংচন্ত্রের সঙ্গে ঘনিষ্ঠভাবে মেশবার সুবোগ পেরেছিলেন, ত্রহাদেশে বাস করা কালীন শরংচন্ত্রের জীবনে ঘটে বাওৱা এমন জনেক ঘটনা, কাহিনী আছে বা হয় ভো সাধারণে স্থবিদিত নয়। সেই সকল তথাগুলি গ্রন্থে পরিবেশিত হরেছে। প্রসঙ্গতঃ গ্রন্থটিতে ব্রহ্মদেশ সম্বন্ধেও তথাাদি সন্নিবেশিত হরেছে। শরংচক্রকে কেন্দ্র করে বর্ধা সক্ষমণ তথ্যাদি এই প্রস্তের মাধ্যমে পঠিক সাধারণের সামনে তুলে ধরা হয়েছে। সর্বোপরি শরংচন্দ্রের প্রতি লেখকের অসীম প্রতার ছাপ বইটির প্রতিটি পংক্তিতে কুটে ওঠে। প্রকাশক-মিত্রালয়, ১২ বৃদ্ধিন চ্যাটালী স্টাট। शाब-वाजारे होका माता।

বাঙলা নাট্যবিবর্ধ নে পিরিশচক্ত

সকস দিক কেন্দ্র করা বাঙ্গার ও বাঙালীর নব জাপরবের ইতিহাসে উনবিংশ শতাকীৰ অবদান অসামার। স্টেব, প্রগতিব ও অপ্রগমনের এক অভিনৰ চেতনা বাঙালীর জনজীবনে বে কি অভ্তপুৰ্ব প্ৰতিক্ৰিব। সঞ্চাৰ কৰেছিল ভা বৰ্ণনাৰ অভীত। বাঙলার দিকপাল সম্ভানদের কল্যাণে এ সময় দেশের কার্য, সাহিস্ত্য, শিল্প, সঙ্গীত, নাইক, অভিনয় প্রভৃতির ক্রমোল্লয়নের ফলে জাতীর সংস্কৃতি ভবে উঠৰ এক মহিমাবিত দীপ্তিতে। **ভাতীর সংস্কৃতি**র এট ব্যাপক ভবু বাত্রাই দেশের প্রীবৃদ্ধির নামান্তর্মাত্র। এই দিকপাল সম্ভানণের মধ্যে নট-ভৈরব গিবিশচন্ত্র খোব জাভিয় নমক্তা বাঙ্গাম বৃদ্ধাঞ্চৰ ইতিহাসের পাতায় গিবিশচন্ত্র ৰোষ একটি বিশেষ স্বাক্ষর। ১৮৭২ পৃষ্টাব্দ থেকে অভিনয়ন্ত্রগতে বে ধারার পুর্পাত চল পিবিশচলে দেই গাণার প্রথম পুরুষ ৷ বাঙলা নাটা বিবর্ধনে জার অবদান কতথানি ওক্তপূর্ণ এ সম্পর্কে উপরোক্ত প্রছের মাধ্যমে মনোজ্ঞ, সারগর্ভ, তথ্যপূর্ণ আলোচন। পরিবেশন করেছেন তাঁবই প্রদর্শিত পথের আৰু একজন বর্ণীয় প্ৰিক वांद्रमात्र स्र क्षेत्रिक कांद्रित्वरा, नांद्रारवांका नहेल्या जी बहेला होयते। ১৯৫৭ সালে বিশ্ববিদ্যালয়ের গিবিশ লেকচাথার ফিসেবে ভিনি যে সুচিব্রিত ভাষণ দেন, আলোচা প্রস্তৃটি সেই বজুতামালার গ্রন্থরূপ। चहीन्त्र (होंबुरी अहे न्ध्रशंत्र नाहानात्त्वत्र छेडत, विकान, वानिक ল্যবারা সম্পর্কে আলোকপাত করে স্ম্পাচীনকালের এক ধারাবাহিক ইতিহাস এখানে তাল ধারছেন। অষ্টাদশ শতাব্দীর শেবপ্রান্তে দেনেদেকের আবিভাবের পর ও গিবিশচন্তের আবিভাবের পূর্বে भग्नावत विजिन्न विष्णांश्माणी धनवान वाक्तित्वत প্राप्तश्रीत, गण्डवाणिकांच ও পুর্ব:পাষণায় বাঙগাদেশের বঙ্গমঞ্চ কি ভাবে ভিলে ভিলে গড়ে উঠে সমৃত্যিৰ আলোকধারায় স্নাত হরেছে সে সম্পাৰ্ক আমুপুৰ্বিক ইতিহাস বর্ণনার জেগক জনতাসাধারণ দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন : প্রান্ত হাত্রা, গান্তন, পাঁচালি পালাগান প্রযুধ সৌকিক সংস্কৃতির অঙ্গগুৰিও অনীৰ্ঘকালের এক ইতিহাস সন্মিবেশিত চয়েছে। গ্রন্থটি লেখকের অভ্তপূর্ব প্রমন্ত্রীকারের নিদর্শন, নানাবিধ তথাের সমষ্টি এই জ্ঞানপ্রস্থ গ্রন্থটি কেবলমাত্র নাট্যবলিকদেবট তথ্য করবে ना, গবেৰ কমাত্ৰেই এই প্ৰস্থেৰ ৰখোচিত মূল্য দিতে কাৰ্পণ্য করবেন না বলে আমরা বিখাস রাখি। এই জাতীর প্রস্তের বত সংখ্যাবৃদ্ধি ছর তত্ই মঙ্গল। পরিশেবে জাতীর দববারে এই প্রছটি উপচার (मश्रांत करन नहेर्ग्रंक स्थापाद स्थिनसन स्थापन करि। व्यकानक-वक्नां थ व्यहिष्डि निमिएरेफ, १ मदद वाद लग। দাম-পাচ টাকা মাত্র।

সাহিত্যে ছোটপল্ল

সাহিত্যের অঙ্গান্তীতে হোটপরের অবদান অনপ্রসাধারণ।
বিশ্বদাহিত্যের দরবারে বাঙলাসাহিত্যের বে ব্যাপক প্রভাব ভার
করে বাঙলা ছোটগরে অনেকখানি দারী, শুরু বাঙলাদেশে নর, অঞ্চার
দেশেও ছোটগরের মধ্যে দিরে বিখের বহু দিকপাল সাহিত্যান্তকের
আবির্ভাব ঘটেছে। ভারভবর্ষকে ছোটগরের ক্মভূমি বলে অভিহিত
করলে অভিরঞ্জনের দোবে ছাই হতে হর না, ও কথাও অনস্থীকার্ব
বে ইরোরোপীর ছোটগর সাহিত্যের ক্মণাভা ভারভীর ডোটগর

সাহিত্য। প্রাচীনকাল থেকে ভোটগারুর ভারুপুর্বিক ইছিছাস ইত্ত:পূর্বে ক্রান্সে ও মার্কিণমুলুকে রচিত হলেও আমাদের দেলে ঠিক ঐ জাতীয় গ্ৰন্থ গভাবং কাল রচিত হয় নি বললেই চলে। ন্দানন্দের কথা, বাভদাদেশের চোটগরদাহিজ্যের ছত্তুতম্ শ্রেষ্ঠ শিলী স্থগাত অধ্যাপক নাৰাষণ গংলাপাধায় সাহিত্যের এই অভার মোচন করতেন। ভার এই বিবাট ও মহৎ প্রাচষ্টায় ভিনি জরলাত কৰলেন-এ কথাও আমহা অনাহাসেট বলতে পারি। গ্ৰন্থটি লেখকের প্রাণপাত পরিপ্রমের নিদর্শন! যুগের পর ষগ ধবে অসংখ্য ঘটনার প্রবাহের মধ্যে দিয়ে বিভিন্ন সময়কে সাক্ষী বেখে মানুবের ধানি-ধারণার ক্রমপরিবর্তনের সাজ সজে ভোটগরুও কি ভাবে সমুদ্ধ থেকে সমুদ্ধনে হতে লাগুল তাবই এক জালোকোজন ইতিহাস কুশলী সাহিত্যিকের বাবা লিশিবদ্ধ হয়েছে এই গ্রান্ত। ছোগৈলের এই ইতিহাস গ্রন্থটিকে যুগের ইতিহ'স বলে অভিহিত করলেও অভ্যক্তি হয় ন!। এদেশীর ছোটগ্রেব ক্রমবর্ধনের এরকম তথাপুর্ণ, সারগর্ভ, বিস্তাবিত ইতিহার সাহিত্য সমাজে পৰিবেশন করে নারায়ণ গঙ্গোপাধ্যায় পাঠক সমাজের স্কুভজ্ঞ ধক্ষবাদ লাভ করবেন- এ বিখাদ আমরা মনে মনে পোষণ করি। এই স্বাঙ্গস্থাত গ্ৰন্থটি পাঠতমহলে ৰথোচিত সাছা ভাগাক ও সমাদ্র-লাভ করুক—এই স্থামাদের প্রার্থনা। প্রকাশক—ভি, এম, लांडेंग्जदी, हर दर्बद्यालिल हीते। माम-सांते तेवा माज।

এক অঙ্গে এত রূপ

আধ্নিক বাঙ্কা সাহিত্যের ইতিহাসে জরপ্রতিষ্ঠ কথাশিলী **অভিন্তঃ কুমার সেনভথ্ত এক বিশে**য় পুরুষ। বাছলা সাহিত্যে ছেণ্টপ্ৰের ক্ষেত্তেও ভারে দান অপ্রিসীম ৷ ভারে সাভটি ভোটগল একবিত করে উ°্রাক্ত গ্রন্থটিঃ সৃষ্টি। গরগুলি অচিন্তারুমানের প্রমনী প্রতিভার স্থাকরে উদ্দীপ্ত' তিনি যে একজন প্রথম खिरीत खोदननिही, छोदनन्त्रनी उ छोदनभूकांदी शहसनि वह महाहे প্রমাণিত করে। গরগুলি অভিনগতে মগ্রিত, বৈশিষ্টো উজ্জন, বর্ণনার প্রাণৰস্ত । জীবনের এক-এফ দিকের প্রতি লেখক সকলের দৃষ্টি জাকর্যণ করেছেন, তিম্ন ভিম্ন চরিত্রের মাধ্যমে জীবনের অতলনীয় বৈচিত্রাকে প্রকাশ করার চেষ্টা করেছেল। বৃশিষ্ঠ প্রাণের ভিনি নিতা উপাসক ভাই জীবনকে জটিকভাব বাভগাস থেকে উদাব করতে তিনি বেন কুডসকল। সংগাণরি দেখা বার অভিস্তৃত্যার সন্ধানী। দ্দীবনের এক তুর্বার বহুত্মের উৎস সন্ধানে তাঁর লেখকচিত্ত ব্যাকুল। পুত্র অন্তর্গৃত্তির সাহাব্যে জীবনের গহন অন্তর্গেকে বাসা বাঁগজে সমর্থ হওরার জীবনরহক্ষের অনেকশুলো মুসস্ত্তের উৎস বেন चित्राकृमात्वव कारक चाव मृत्रिशमा नव । क्षक्षाव रर्ग निर्वाहन अ কেবলমাত্র অক্ষরের সাহাব্যে প্রচ্ছদ্চিত্র পরিক্রনায় জীবিনয় সাহা ষ্থেষ্ট নৈপুণোর পরিচয় দিয়েছেন। প্রছের নামকরণ ও ^{হথেষ্ট} তাৎপর্বপূর্ব। প্রকাশক—নাতানা, ৪৭ গণেশচক্র গাভিনিট। দাম-- জিন টাকা মাত্র।

সিশ্বপারে

অনেক বছর আগে বাঙলা সাহিছ্যের দংবারে প্রথম প্রকাশের সঙ্গে সংকট সুলাভ সা'বে অভ্তপূর্ব আলোড়ন গনেছিল ভাব শ্বতি মিলিরে যাবার নয়। অশাস্ত সা'র স্বাকীণ অভিনব্দ লেখক প্রাধাত আইনজীবী নীংদর্থন দাশ্তপ্তকে সাহিত্য জগতে এক বিশিষ্ট আদলে প্রতিষ্ঠিত করেছিল। আলোচা উপস্থানটি তুলাস্ত সা'র পৌত্র বিকাশকে কেন্দ্র করে দেখা। ভাক্তারি পাস ক্রুর অভিবিক্ত অধ্যয়নের জল্ঞে বিকাশ বিশেত চলে বার দেশে ন্ত্রী ও শিশুপুত্র রেখে। বিলেভেই সে রয়ে গেল দেশে আর ফিবে এল না, এখন বিলেতে তার জীবন কি ভাবে কাটল, কি পরিবেশে, কি ধ্রণে—ভারই ইতিবুত্ত উপরোক্ত উপস্থাসটির আলোচ্য। উপজাসটি আগাগোড়া চিঠির আকাবে লেখা। বিলেভ জীবনকে ক্ষেত্র বিকাশের আত্মগৃহিনী অকপটে কোন বিছু না বুকিছে গোলাথলি ভাবে সে চিঠির দাহাব্যে জানিয়ে বাচ্ছে ভার বোন বুলাকে। চরিত্র স্থাষ্ট, ঘটনাবিক্সাস, বর্ণনভঙ্গী নীংগরঞ্জনের দক্ষতার পরিচর বল্ল ক্রছে। একটি ভারতীয় উচ্চশিক্ষা লাভার্থে বিলেত গোল, সেধানে একটি মেয়ের সঙ্গে তার খনিষ্ঠতা হ'ল, ধীরে ধীরে সেই থেয়ের মাকর্ষণ তার কাছে অনতিক্রম্য হরে উঠল ভারপর খনিষ্ঠতা প্রিণ 5 ছল বিহাতে- এ দিকে ভার অভীত ভীবন, ভার খর-বাতী, সরাখ, তার সাধনী অমুবস্তা জ্বী, প্রাণাধিক শিওপুত্র সব মুছে গেস ভার মন থেকে। এই ঘটনাগুলি বে ভাবে ধারামধারী সাকানো ভয়েছে এবং কাভিনীর গতি বে ভাবে লেখক পরিচালিত করেছেন তা প্রশংদার দাবী রাখে। উপক্রাসটির আরও এ≉টি ক্তিছ খাছে-মানবভার দিক দিয়ে এর খাবেদন খনখীকার্ব। সমঞ ট্রাক্রির মধ্যে দীর্থ জীবনের জবানবন্দীরই কাঁকে কাঁকে প্রতিটি ৯০র ফটে উঠছে, একান্ত আপনজনদের প্রতি চরম অবিচারের অক शकुरनाइना, तमान श्रक्ति এकता अक्टूल दोन, क्षोवरन अधिकि প্রাণাতিক প্রির প্রাকে দেখার এক অনুমা ব্যাকৃষ্ড!, অব্রথরের নিক দিয়ে এর আবেদন অনখীকার্য। এ ছাডাও লখন ও ইংল্যাও সম্বর্ধীয় বছ তথা এখানে পরিবেশি হ তয়েছে, লখানর ভারতীয়দের জীক্ষাত্রা সম্বন্ধেও লেখক আলোকপাত করেছেন। প্রসঙ্গতঃ বলা প্রয়োজন যে এই উপজ্সাটিই অলহাস আগে মাসিক বত্রমন্তীতে ধারাবাতিক ভাবে প্রকাশিত হয়েছে। প্রাক্তদটিত অঞ্চন করেছেন শী গগেদ চৌধুৰী। প্রকাশক—নিও-লিট পাৰলিলাস প্রাইভেট শিমিটেড, ১ কলেজ রো। দাম-নাত টাকা মাত্র।

সমুজ সফেন

আন্দানান— বত হতভাগ্যের অসমর্থের নির্বাসিতের নীড় — প্রাক স্বাধীনতা মৃগে এই নামটি বীতিমন্ত আন্তরের বাড় তুলত। ভাবে এর সাজে সংলগ্ন এই ধীপপুঞ্জিই বেন আকৃল আগ্রহে, পরস্ব রেও হাত বাড়িয়ে লগাটে অপরাধের লাভি চিহ্ন আনা হতভাগাদের কোলে তুলে নিত, বুক দিরে রাগত তাদের আগলে। দেগতে দেগতে এদের সংগাবৃদ্ধির সঙ্গে লাজাদানের বুকে নতুন লগলন এল, মাতে আভে বেন নতুন জীবনের সন্ধান পেল, মনপ্রাণ বেন তরে গেল নব নব অথে। সমরের অপ্রস্বানের সঙ্গে সঙ্গে আন্দামানও এগিয়ে চলল। তার রূপ, তার অপ্রস্বানের সঙ্গে পারিপার্থিক আবেইনী, তার দৈনন্দান জীবনধাত্রা, তার চিন্তা—ক্রনা-ভাবধারা স্ব কিছুই পরিবর্তনের ছোঁরায় ক্রমেই উন্নত থেকে উন্নত হব হতে ধাতে। বতল্ব জানি, এ বাবং সাহিত্যে আন্দামান একরক্ষ

অসুপশ্বিতট ছিল বর্তমানে বশসী সাহিত্যিক জান্ততোত্ব মুখোপাধ্যাংহর ৰল্যাণে আনামান সাহিত্য স্টির পটভ্যিকার পরিণত হল। আলোচা উপভাগটি আলামানকে কেন্দ্র করে লেখা। একদিকে বিবর্বস্কর অভিনব্দ, অভুদিকে আশুভোর মুখোপাধায়ের কেংনীর চমৎকারিত—এই তুইরের সন্মিলনে এক মর্যপালী অভুলনীর সাহিত্যের ৰম হল। তাঁকে কেবলমাত লেখক বললে বললে ভূল হবে এক শভাবনীয় অনুভৃতি সম্পদেরও তিনি বোগা অধিকারী আরু এই পমুভূতির উদাত্ত আলোকেই ভিনি প্রত্যক্ষ করেছেন মায়ুবের জীবন, তাৰ প্ৰেমেৰ শ্বৰণ, তাৰ ভাবধাবাৰ বৈচিত্ৰ-এই সভ্যেৰ প্রতিষ্ঠাই আমরা দেখতে পাই এই উপত্যাসের বিভিন্ন পাত্র-পাত্রীর हैन्युमरी, महाराव, व मिन, मा-माहेन, दिन्द्रार्ड द्वरुष्डि চবিত্তভাল লেখকের অন্বল্প চরিত্র স্থানীর করেকটি নিদর্শন মাত্র। সেদিন অপরাধীদের কোলে তলে নিত আনামান, আছও আর এক ধ্বণের হতভাগাদের আশ্রন্ন দিছে আকামান। এই আকামান সম্পাহিত বিস্তাবিত তথা জানার কৌতুহল থাকাটা জাশ্চর্যের নয় বাঁরা সেই বৌতুহন পোষণ কারন এই উপভাষটি পড়লে তাঁরা উপকুত হবেন। গ্রান্থর প্রায়ভেই পৌরাধিক যুগ থেকে ঐতিহাসিক যুগ, ঐতিহাসিক যুগ খেকে বর্তনান যুগ পর্যন্ত আন্দামানের সংক্ষিপ্ত ইতিক্থা সংযোজিত হবে সাহিত্য পাঠকদের ইতিহাস সম্বন্ধ জ্ঞানলাডেও সহায়তা করেছে। প্রীকানাই পাল প্রেছদ চিত্র অন্তন করেছেন ৷ প্রকাশ চ— মিত্র ও খোষ: ১০ ছামাচরণ দে স্লীট, দাম-সাভে চার টাকা মাত।

কথাকলি

বাঙলাদেশের শক্তিমান সাহিত্যকদের মধ্যে ইমাপদ টোধুরীর নাম সবিশেষ উল্লেখনীয়। ছোট গল্প ও উপজ্ঞানের মাধ্যমে বাঙলা সাহিত্যকে বারা ক্রমেই সমৃদ্ধির পথে অপ্রগমনে সহায়তা করছেন অসাজভাবে, রমাপদ চৌধুরী তাঁদেরই একজন। উপরোজ্ঞ প্রস্তুটি রমাপদ চৌধুরীর করেকটি সার্থকনামা ছোট গল্পের সংকলন। প্রতিটি গল্প লেখকের অকলীশক্তির পরিচায়ক। গল্পকলি অংগাঠ্য, উচ্চাঙ্গের ও ভাবসমৃদ্ধ। এদের আবেদন স্পাই, বলিঠ ও জোরালো রমাপদ চৌধুরীর কল্পনা অমুভূতি ও ব্যক্তনা বংগাচিত বৈশিষ্ট্য বহন করে। নতুন চশ্মা, ঈর্বা, রায়, প্রক্ষ বসন্ত, উদরান্ত, তুংবর আদ, হুটি বোন বিশেষ উল্লেখ্যে দাবী রাবে। প্রকাশক— ত্রিবেণী প্রকাশন, ২ ভামাচরণ দে দ্বীট। দাম তিন টাকা মাত্র।

রবীক্রনাথের রক্তকরবী

জগতের শ্রেষ্ঠ সাহিত্য কৃষ্টিগুলির মধ্যে রবীজনাথের বক্তকরবী জন্তম। বণিও গোড়ার দিকে বক্তকরবী হুর্বোধ্য বলে জতিহিত হরেছিল কিছ আশ্চর্বও এই বে এর অবর্ণনীর আবেদনে পাঠক-পাঠিকা সাড়া না দিরেও থাকতে পারেন নি। বিভিন্ন সমালোচক বিভিন্ন আদিকে এর সমালোচনা করেছেন, বিভিন্ন দৃষ্টিকোণ থেকে একে দেখেছেন, বিভিন্ন ভাব অবল্যন করে এর মর্মার্থ উদ্ঘাটনে বভী হরেছেন। বক্তকরবীকে কেউ বলেছেন সীতি নাট্য, কেউ বল্যনে ক্লপক, কেউ বা সম্ভেতধর্মী, কেউ বা বাস্তব, বিভিন্ন ব্যক্তির ভিন্ন जित्र मञ्चात्मय करण बक्तकववीय महस्त्र अक (बांबार्ट) धावनाव স্টি হল, আলার কথা সে ধারণা এখন ক্রমেই কেটে বাচ্ছে। **থো**মবাদের সঙ্গে **বল্ল**বাদের, দেবশক্তির সঙ্গে পশু শব্দির, উন্মুক্ত প্রাণের জয় গানের সঙ্গে কঠোর নিয়ম শৃথ্যলের দারুণ সংঘর্ষ বক্তকরবীর প্রধান উপজীবা। একদিকে শক্তি ও সম্পদের প্রতি মামুবের কুৎসিত লোলুপতার অন্তদিকে কঠোর নিয়মায়বর্তিভার শৃথ্যে মায়ুবের প্রাণের খাবেদন বার্থ হতে চলেছে, স্বাভাবিকতা মবে বেতে বদেছে, সহজতা লোপ পেতে বদেছে, এ অবস্থায় মাহ্ৰকে মুক্তি দিতে পাৰে প্ৰেম, সঙ্গীত, বৌৰন। মৃত্যু সম্বন্ধে ব্ৰীক্ৰনাথেৰ চিস্তাধারা বে কভথানি গভীর ভারই প্রমাণ মেলে বক্তকরবীতে। বক্তকরবীর মধ্যে মৃত্যুর বে অমান আলেখ্য আমরা দেখতে পাছি এক কথার তা অনহত। কবির মতে মৃত্যুই মাত্রুবকে অন্ধকার থেকে নিয়ে বার আলোয়, মৃত্যু মোচন করে জীবনের জড়খ, মৃত্যু মামুখকে দের পূর্বভা। অধ্যাপক, বিভাগ বারচৌধরী বাঙ্গাদেশের একজন প্রধাতে শিক্ষাবিদ সাহিত্যক্ষেত্র বশস্বী পুরুষ। উপবোক্ত প্রস্তৃটি বক্তকরবী সম্বন্ধে ভাব আলোচনাৰ গ্ৰন্থকা। বক্তকব্বী সম্বন্ধে তাঁৰ আলোচনা বেমনই গুরুত্পূর্ণ তেমনই বৈশিষ্ট্যবান। সমগ্র নাটকটির অন্তনিহিত ভাব, মর্মার্থ, মূলসূত্র অভি প্রাঞ্জল ভাষায় ব্যাখ্যাত হয়েছে। লক করবার বিষয় বে গ্রন্থটি অবথা ভারে ভারাক্রাস্ত নর বভটুকু বলা দরকার ঠিক ভভটুকুই বলা হয়েছে ফলে चारमाठनाथम् हिरमस्य वहेषि मर्साम्यमस्य हस्य छेर्छरम्। সাহিত্যবসিক এবং ছাত্রছাত্রী এই উত্তর সম্প্রদায়ই এই প্রস্থৃষ্টি পড়ে উপকৃত হবেন। অধ্যাপক বারচৌধুরীর ত্মশর বিলেবণে বক্তকর্বীর নাট্য ও সাহিত্যবস আমাদনে সাধারণ পঠিক সফসকাম হবেন বলে আশা করা যায়। প্রেমেক্স মিত্রের 'পরিচিতি' প্রস্থের মর্বাদাবৃদ্ধির ক্ষেত্রে সহায়তা করেছে। व्यक्षांभक-- श्रीभेषद वादाठीवृदी, ১२१४ तिविष्णुव কলকাতা--০১, প্রাপ্তিস্থান, মডার্ণ বুক এজেনী প্রাইভেট निमिट्डिफ, ১ - विक्रम छाछोको क्षेत्रि। नाम छ'ढोका माज।

জেলডায়েরী

সত্য, তার ও বিবেকের সেবার বাঁদের জীবন জতিবাহিত, জারামলব্যা ছেড়ে ত্যাগের কঠিন পথে বাঁরা পা ফেলেছেন, দেশের সর্বৈর কল্যাণকামনার ব্যক্তিগত স্থা-স্বাচ্ছল্য বাঁদের মনে বিল্মাত্র বেখাপাত করতে পারে নি তাঁরাই আদর্শ নেতা। ভারতের এই বরণীর সন্তানদের মধ্যে সতীক্রনাথ সেন জন্তুতম। দেশবাসীর ভিনি নম্মা। সকলেই অবগত আছেন যে মাত্র চার বছর আগে ১৯৫৫ সালের ২৫লে মার্চ জেলের মধ্যে কতথানি জনসাজের মধ্যে

উপেক্ষার মধ্যে, অবিচারের মধ্যে এই প্রান্তর নেতাকে সূত্যুবরণ করতে হয়েছে। আজীবন সর্বতোভাবে দেশ ও জাতির সেবা করে এসে বিপ্লবী বীরকে মৃত্যু বরণ করতে হল অসহায় বন্দী অবস্থায়। ১৯৫৪ সালের ১লা জুন অর্থাৎ বেদিন তিনি বন্দী হন সেইদিন থেকে মৃত্যু পর্বস্ত জেলের মধ্যে কি ভাবে তাঁর দিন কেটেছে উপৰোক্ত ভাষেৰী পাঠে সে সম্বন্ধে বিস্তাবিত ভাবে খুঁটিনাটি পর্যন্ত জানা বাবে। দেশকে আর জাতিকে সভীক্রনাথ বে কতবানি ভালবাদতেন, দেশীয় ও জাতীয় মঙ্গলকর্মে নিজেকে তিনি, কতথানি নিয়োজিত রেখেছিলেন বা আরও রাখতে চেয়েছিলেন দেশগত ও জাতিগত কল্যাণে তিনি কতথানি উৎস্থক ছিলেন ভাষেরীর প্রতিটি ছত্র সে বিষয়ে সাক্ষ্য দেবে। এই দেশপ্রীতি তাঁর অন্তিমমুহূর্ত পর্যন্ত অমান ছিল। পাকিস্তান সরকারের মদগর্বী নীতি, অজ্ঞতা, ভ্রাস্ত পথাবলখন, হঠকারিতা ও বাজাশাসনে সর্বতোভাবে অক্ষমতার একটি পূর্ণাঙ্গ চিত্র এই ভায়েরীর মাধ্যমে ফুটে উঠেছে। এই মূল্যবান ডায়েরীটিকে গ্রন্থরূপে সকলের সামনে তলে ধরার জন্ম প্রকাশক নি:সন্দেহে আমাদের ধ্রুবাদভাজন। সভীজনাথের ঘটনাবছল জীবনের একটি সংক্ষিপ্ত কাহিনী গ্রন্থে সন্নিবেশিত হ'লে গ্রন্থের মর্যাদা আরও বৃদ্ধি পেত। দেশের মুক্তিবজ্ঞের অন্ততম ব্রেণ্য ঋত্িকের অন্তিমকালীন আত্মবিবরণী এই প্রস্থৃটি বাঙলার ব্যবে হ্যা ব্যাপ্রাপ্য সমানর লাভ কক্ষক এই আমাদের কামনা। প্রকাশক—মিত্রালয়, ১২ বঙ্কিম চ্যাটাফী 🕽 ট। দাম—তিন টাকা মাত্র।

থেরেসা

বিশ্বসাহিত্যে উন্বিশে শতাকীর অক্তম শ্রেষ্ঠ অবদান এমিল জোলা (১৮৪০-১৯০২)। পৃথিবীর সকল কালের শ্বরণীয় সাহিত্যিকদের মধ্যে এমিল জোলা অক্তম। খেরেসা তাঁর শ্রেষ্ঠ সাহিত্য স্টির এক অসামার নিদর্শন। এই উপভাবের মধ্যে দিয়ে জোলা মামুবের হৃদয়ের সুম্মাতিকুলা অমুভৃতির উৎস সন্ধানের हिही करवछन, छेनकारनव मरशु मिरत लिथरकत कीवन मकानी রুপটি কু:ট ওঠে, জীবনের গোপন রহস্তের আবরণ ভিনি ষ্ট:মাচন করেছেন প্রকাশ আলোয়। মামুধের নিজের জ্জাতে ভার অবচেত্তন মন ভিতরে ভিতরে কাঞ্চ করে বার, এই ক্রিয়াশীলতাই জীবনস্পদ্দনের নামান্তর। উপরোক্ত উপকাসটিকে ভারই বিশ্লেষণাত্মক কাহিনী আমরা বলতে পারি। উপভাসটিব অমুবাদে যথাৰথ শক্তির পরিচর দিরেছেন অবিনাশচন্ত্র বোষাল। তাঁর আন্তরিকতা, নিষ্ঠা ও প্রমন্ত্রীকার অভিনন্দনবোগ্য। তাঁব व्यक्षावा উচ্চাবের, প্রাপ্ত মূল প্রস্তকারের একটি সংক্ষিপ্ত জীবনী महाराक्षिक हार्य शास्त्र वर्शमानुषि करत्रक । क्षेत्रांभक-योजाम কর্ণার, ৫ শক্তর ছোব লেন। দাম-পাঁচ টাকা মাত্র।

'ছি'ড়িয়াছে পাল, কে ধরিবে হাল, আছে কার হিন্মং ? কে আছ জোরান, হও আগুরান হাকিছে ভবিবাং। এ তুকান ভারী দিতে হবে পাড়ি, সিতে হবে ভরী পার।'

--काकी मक्कन हेननाम ।

কবি ও গীতিকার নজরুল ইসলাম

বাঁৎ লার প্রতিভাবান কবি নক্ষল ইনলাম ১৩০৬ সালের ১১ট জৈট তারিখে বর্গমান জেলার চকলিয়া প্রামে রুগুগ্রুণ করেন । তাঁর পিতার নাম কাজী ফ্কির আহমদ এবং মাতার াম জাহেদা থাতুন। শৈশবকালেই তাঁর পিতার মৃত্য হর এবং ঠার বাল্যজীবন ছঃখের মধ্যেই অতিবাহিত হয়েছে। ালে দশ বংগর বর্ষে গ্রামের মক্তব হ'তে নিয়প্রাথমিক পরীক্ষায় াল কবেন এবং পবে এ মক্তবেই শিক্ষকতা কবেন। পুলিল নাবট্ট প্রেট্টার কাজী রফিকুদ্দিন সাহেবের চেষ্টার তিনি ময়মনসিংহ জেলার দরিবামপুর হাইস্কুলে এবং পরে ১৩২০ সালে বাণীগঞ্জের সিয়ারদোল হাইস্কুলে ভতি হল। তিন বৎসর অধ্যয়ন করার পর ১৩২৩ সালে তিনি ৪১নং বাংগালী পণ্টনে যোগ দিয়ে করাচী গমন করেন। প্রথম মহাযুদ্ধের সময় তিনি যুদ্ধকেতেই কাব্য চর্চ্চা ভবতেন। একজন পাঞ্জাবী মৌলভী সাহেবের সাহায্যে তিনি ফার্লি কবিদের বিখ্যান্ত কাবাগুলি পড়েন এবং 'বিক্তের বেদন' গল্পমাট লেখেন এবং দেশে ফিবে পুস্তকাকারে প্রকাশ করেন। ১৩২৬ গালের প্রাংণ সংখ্যায় 'মুক্তি' নামক তাঁহার একটি গাধা-ফাভীর দীর্ঘ কবিতা প্রকাশিত হয়। পরে তিনি অবিবাম গান, কবিতা, নাটক ও গল লিখতে থাকেন। তাঁর সম্পাদিত ধুমকেতু, লাভল প্রভূতি পত্রিকা বাজ্বোবে পড়ে বন্ধ হয়ে বায়। বাজ্যোহমূলক কবিত। প্রকাশ করে ভিনি এক বংসর কারাদও ভোগ করেন। তার নির্তীক জবানবন্দীতে বিজোহের ভাব পরিলক্ষিত হয়। জেগ্ৰানায় তাঁৰ বচিত শিক্ষ প্ৰাৰ গান বচিত হয়-

'এ শিকল পরা ছল মোদের

এ শিকল পরার ছল।
এই শিকল পরেই শিক্ষল তোদের

করব বে বিকল।' ইভাাদি

প্রথম থেবিনে বিজ্ঞাহী কবিতা সিথে ভিনি বিজ্ঞোহী কবি নামে
প্রিচিত হন। যুক্তক্রের পরিবেশে তাঁর যে কাব্যজ্বল হয়,
ভার অন্য প্রাণশ ক্তির বলে কাব্যথারা বভার আকার ধারণ করে
এবং ঘোললেম ভারতে সেগুলির প্রকাশে সাহিত্যক্ষেত্রে সাড়া পড়ে
বায়। ববীপ্রনাথ তাঁরে ভাবা ও ছন্দ নামক কবিতার কবি প্রাভিত্যা
সংক্ষে সভ্যবাণী উচ্চারণ করেছেন—

'অস্টেকিক আনন্দের ভার বিধাতা বাহারে দের, ভার বক্ষে বেদনা অপার, ভাব নিত্য জাগরণ! অগ্নিসম দেবতার দান উর্দ্ধনিখা আলি চিত্তে অহোবাত্র দগ্ধ করে প্রাণ।'

আজ পর্যন্ত কোন কবি বা সংগীত বচয়িত। এক কভাবে এত গুলি গান বচনা করতে সক্ষম হন নাই। তাঁর গানের সংখ্যা প্রায় ভিন হালার, কবি প্রেষ্ঠ রবীন্দ্রনাথও এত গান বচনা করেন নাই। সংগীত বচরিতা হিসাবে তিনি প্রভূত খ্যাতি অর্জ্ঞন করেছেন। অসংখ্য গামা সংগীত ও নাটক রচনাতেও তাঁর অসামান্ত দক্ষতার পরিচয় পাওয়া বায়। তাঁর রচিত অগ্নিবীণা, বিবের-বাঁশী, সর্বহারা, সঞ্চিতা, ভাঙার গান, বুল বুল, সিদ্ধৃহিল্লোল প্রভৃতি কাব্যপ্রস্থাতিলি বিশেষ প্রসিদ্ধ।

ববীক্ত যুগে বে কয়জন কবি নিজেদের প্রভিভার বৈশিষ্ট্যে বাংলা কাবের ইভিহাসে নিজেদের স্থায়ী জাসন স্প্রভিত্তিত করতে সমর্থ



হয়েছেন, নজকল তাঁদের অন্তম। ববীক্স বুগে নজকল কৰীর বৈশিষ্ট্যের প্রতিভার ভাষর। কিছু প্রকৃত পক্ষে নজকলের কৰি প্রতিভার প্রেষ্ঠ পরিচয় অন্তর। পদ্দী, প্রকৃতি ও মালুবকে নিরে তিনি বে বছনিঠ কাব্য সৃষ্টি করেছেন এবং ববীক্রনাথের সর্বগ্রামী প্রতিভার প্রভাব হ'তে মুক্ত হয়ে বে একটি স্বতন্ত্র কবি পরিচিতি গড়ে তুলেছেন, সেইটাই নজকলের সর্বপ্রধান কৃতিছ। এ ছাড়া জাতিগত বৈবন্যের প্রকাশ কবিব সার্থ রুচনাকে অনবত্ত করে তুলেছে আলোড়িত করেছে সমাজচেতন ও সংবেদনশীল কবিচিন্তকে। জগতে আক অবেতিক অসান্যের উপ্রতা সর্বত্ত। কৃত্রিম বিভেদের প্রাচীর মাথা তুলে সর্বত্ত বিভামান এবং এবই ফল স্বরূপ আক মালুবের মানুবে বিষম বিচ্ছেদ, ছন্তর ব্যবধান। মানুবের মধ্যেই আক এক দল আক্রমণকারী, আর একদল আক্রমণ ক্রিটিন্তক আর একদল নিপীড়িত। এ বেদনা স্বতঃস্কৃতি হয়ে ক্রটে উঠেছে তাঁর কবিভার।

'এই ধরণীর বাহা সম্বল বাসে ভরা ফুল, রঙ্গে ভরা ফল স্মরসাল মাটি, সুধা সম জল, পাশীর কঠ গান, সকলের এতে সম অধিকার, এই ভার কর্মান।

বাঁবা আত্মকেন্দ্রিক ও স্বার্থকেন্দ্রিক, পাশবিক বলের সহায়তার বাঁবা মায়ুবের অন্থির উপর সৌধ নির্মাণ করতে কুঠা বোধ করে না, কবির বিক্ষোভ তাদেরই বিক্লন্ধে, ইতিপূর্বে এমন বিক্ষোভের প্রর ও অপরাজের বিক্রোহের রূপ কথনও বাংলা ভাষার দেখা বারনি, দেখা বারনি কথনও হুবার খৌবনের জয় ঘোষণা। এই বিক্ষোভ ও বিক্রোহের পিছনে আছে সব রক্ষ অস্তার অত্যাচার ও নির্বাভনের নির্ম অভিযান। ভাই এ সবের বিক্রন্ধে কবির বিজ্ঞোহ, ভাই ভিনিবিজ্ঞোহী কবি বলে সমধিক প্রসিদ্ধ।

বাংলা সাহিত্যে নজকলের আবির্ভাব কাল বাংলা দেশ ও ভারতের বাজনীতি ক্ষেত্রে অসহবোগ ও থেলাকং আন্দোলনের বৃগ। সেই সময়ে কবি জাজীয় আন্দোলমকে দিয়েছেন অভ্তপূর্ব প্রেয়ণা জীয় পানে।—

'কাদিবনা মোরা বাও কারা মাবে বাও তবে বীর সম্প্রতে, ঐ শৃখ্যসই বরিবে মোদের ত্রিশ কোটি ভাতৃ অঙ্গ হে! মুক্তির লাগি মিসনের লাগি ভাত, ত বাহারা দিয়াছে প্রাণ হিন্দু মুদ্লিম চলেছি আমরা গাহিয়া তাদেরই বিজয় গান।'

প্রথম বিশ্বযুদ্ধের শেষ ও বিভীয় বিশ্ব যুদ্ধের আরম্ভ — এই কুড়ি বংসর কাসই নজকল ইসসামের প্রেষ্ঠ কাব্য স্থাটিয় যুগ এই বুগে বিশ্বন্দিত কবি রবীক্ষনাথ ছিলেন স্থাটিয় অঞ্চলভার যুগপ্রেষ্ঠ এবং কবি সংত্যক্তনাথ দত্ত ছিলেন স্থাটিশীস। এই কাব্যমুখন যুগে দেখা দিলেন কবি নজকল তার ক্ষনজাগরণের বাণী নিয়ে, গণক্ষাগরণের গান নিয়ে।

দেশাত্মবোধের বলিষ্ঠ প্রভাব তাঁর কবিতার ও সানে শক্ষ্য করা বার। দেশাত্মবাধের আদি গুরু অবি বহিমচজ্রের ভার ভেনবৃদ্ধির উর্দ্ধে দেশসোর কাজে উপদ্ধ হতে এবং এক মারের সন্তানরূপে গণ্য করবার উদাত আহ্ব'ন তিনি জানিয়েছেন। জাতীর জীবনের সন্ধানর কালে কবি দেশনে হা ও দেশ কর্মীদের প্রতি সাধধান বাণী উচ্চারণ করেছেন তাঁর স্ম্বিধাত কবিতায়,—

'গুর্গমিসিরি কান্তার মঙ্গ, তুস্তর পারাবার
লিখিতে হবে রাত্রি নিশীখে, বাত্রীরা ছ'শিরার !
তুলিতেছে তারী, কুলিতেছে জল, তুলিতেছে মাঝি পথ,
ছিঁ ড়িরাছে পাল, কে ধরিবে হাল, আছে কার হিমং ?
কে আছে জোরান, হও আগুরান, ইংকিছে ভবিবাং ।
এ তুফান হারী, দিতে হবে পাঞ্জি, নিতে হবে তারী পার ।
তিমির রাত্রি, মাত্মন্ত্রী শান্তারা, সাবধান !
যুগ্যুগাস্ত সঞ্চিত ব্যথা ঘোষিয়াছে অভিযান ।
কেনাইয়। উঠে বঞ্চিত বুকে পুঞ্চিত অভিযান,
ইহাদের পথে নিতে হবে সাথে, দিতে হবে অধিকাম ।
অসহার জাতি মরিছে তুবিয়া জানেনা সন্তর্গ,
কাপ্রারী! আজি দেখিব তোমার মাতৃর্ভি পণ!
হিল্ম না ওরা মুগলিম ? ওই জিল্ডানে কোনজন ?
কাপ্রারী! বলো, ভ্বিছে মামুর, সন্তান মোর মার ।'

বিজ্ঞোহ, বিপ্লা ও বৌৰন শক্তির জর খোষণার অভারালে, সাহিত্য স্পটির মৃ-ল দেখা যার তাঁর সংবেদনশীল অধ্যা। তক্ষণ দলের অপ্রগতির সুব ধ্বনিত হয়েছে তাঁয় গানে,—

'চল চল চল ! চল চল চল ।
উদ্বিগানে বাজে মাদল
নিয়ে উত্তলা ধ্রণীতল
অকণ প্রোত্তের তক্ষণ দল
চল্যে চল্যে চল ।
চল্য চল্য চল্য

উবার হুয়ারে হানি আখাত আমরা আদিব রাভা প্রভাত

আৰৱা টুটাৰ ভিমিৰ রাভ বাধাৰ বিদ্যাচল।

নৰ নবীনের পাহিরা গান সজীব করিব মহাশ্রশান আমরা দানিব নৃতন প্রাণ বাহুতে নবীন বল। চলবে নওজোয়ান শোনবে পাতিয়া কান বৃত্যু ভোরণ হুয়াবে হুয়াবে জীবনের আহ্বান। ভাঙ্কে ভাঙ আগল চলবে চলবে চল।

DA DA DA I,

ক্বেল থেবিন শক্তিয় নয়, দেশের সব বকম শক্তিয়ই উরোধন সংগীত সেরেছেন কবি । অনিক, কুবক, নাবী ও ছাত্র সমাজ অুগিরেছে কবি মানদে অকুবল্প কাব্য ও সংগীতের প্রেরণা। শত তুঃধ দৈয় ও লাজনা জর্জাবিত মানুষকে শুনিরেছেন তিনি আশার বাণী, কোখাও তাঁর কাব্যে বা সংগীতে নৈরাজের ফিশপ ধ্বনিত হয়নি। সব জারগায় ভিনি শুনিরেছেন উজ্জ্বলতয় ভবিষ্যতের বাণী। ববি কঠে ছাত্র জীবনের মর্যবাণীধ্বনিত হয়েছে এক অপরূপ ভাষায় ;—

'আমরা শক্তি আমরা বস
আমরা ছাত্রদল।
মোদের পারের তলায় মুচ্ছে তুফান
উঠ্চে বিমান ঝড় বাদল।
আমরা ছাত্রদল।

আমরা রচি ভালবাসার আশার ভবিবাৎ, মোদের স্বর্গশথের আভাব দেখার আকাশে ছারাপথ! মোদের চোধে বিশ্ববাসীর স্বপ্ন দেখা ছোক সঞ্ল আমরা ছাত্রদল।'

স্বাতিভেদ এখা, ছ্যুৎমার্গ প্রভৃতি কুসংস্থারের বিস্কৃত্র কবি পেরেছেন সমাজ সংস্কৃতি মূলক গান,—

'বাতের নামে বজ্ঞাতি সব ভাত ভালিয়াত খেলছ জুয়া ছুলেই তোর ভাত বাবে ? জাত ছেলের হাতের নয়ত মোয়া। ছ'কোর জল আর ভাতের হাঁড়ি, ভারাল এতেই ভাতির জান, ভাইত বেকুর, করলি ভোৱা একজাতিকে এক্শ' খান।

> এখন দেখিস ভারত জোড়া পচে আছিস বাসি মড়া,

মান্ত্র নাই আজ, আছে ওধু জাত শেরালের ত্রাত্রা।' উবরান্ত্তিও কবির কাব্য প্রেরণা হতে বাদ বায়নি ;—

> 'বহু পথে কিবিয়াছি প্রভু জার হইব না পথ হারা বন্ধু খজন সব ছেভে ধার ভুমি একা জাগো দেবতার। ।"

ভূতের ভর নাটকে কবি রূপকের বাহাব্যে দেশের নি^{র্}্যাতি^ত প্র**ন্ত**াক্তকে জানিরেছেন জাগুতির আহ্বান, তাঁর গানের মাণ্য^{মে,}

'মোরা মারের চোটে ভূত ভাগাব

মন্ত্র দিরে নর।

মোরা জীবন ভবে বাব খেরেছি

জার প্রাণে না সর।' ইভ্যাদি—

মানবাস্থার নানা আকৃতি, বেদনা, ও বিচিত্র অমুভূতি নানা স্থবে, ছলে, কাব্যে ও গানে কোমলে কঠোৱে কন্তভাবে রূপায়িত হয়েছে তার মস্ত নেই। দাসত্বের বিক্লে, পরাধীনতার বিক্লে, কুসংখার নির্বাতন ও গভালুগতিকতার বিলুছে কবি বল্লকঠে খোষণা করেছেন বিদ্রোহ। জাভীয়ভা ও বীবরসের সঙ্গে সঙ্গে কৰি র্গেপ্তেন স্বজন্ত গানের মালা, যা আছও মহা-গরীর প্রমোদকক হতে সুদৃঃ পল্লীপ্রামের কুঁড়েখর পর্যান্ত সমভাবে জনব্রিয় ও আদৃত। কাজী নজকুৰ ইবলামের গানের সঙ্গে পরিচিত নর এমন বাঙালী খঁলে পাওয়া বাবে না। ববীজ-পুৰব্ডী মুগে গীতিকারদের স্বার আংগ্ নজকুৰ ইৰুবামের নামই মনে পড়ে কারণ, ডাঁব গান বে নানা সম্পাদে সমৃদ্ধ। এই ভাবের সঙ্গে স্থবের ও বাণীর সমন্বর সাধন কবি মানদের শক্তিশাসী প্রতিভার পরিচারক। বাংলার মুদ্রমান সমাজে সংগীক বিমুখতা ভেদে গেল তাঁর ক্ষত্ত গানের र्रेनिहरता ७ छोव वकाय । डिनि व्हर्गान बहना करवरहन नुडन সুরে, নুষ্ঠন ছন্দে। বাংলা ভাষায় গঙ্গল গানেরও তিনি প্রবর্তক। এ ছাড়া ভিনি বৈদেশিক ভাষা সহযোগে ও হার সংযোগেও বচনা কংছেন জন্ম বাংলা গান। তাঁর বছ গান বেকর্ড সংগীত ও সিনেমা চিত্রের জন্ম তিনি বচনা করেছেন। তথু তাই নব, তিনি ছাত্রের রচিত বছ গানে। সুধ বোজনা করেছেন—ভাঁর নিজম স্কর। একদিকে তিনি বেমন প্রতিভাবান কবি অপ্যদিকে তেমনই গীতিকার ও সুৰক্ষ সুরশিল্পী।

কেবল নজকলের গান নয়, বাঙলা গানের বৈশিষ্ট্য এই বে, বাঙলা গান কোনদিনই স্থানবস্থা নয়। এ গান কোনদিনই স্থানবস্থা নয়। এ গান কোনদিনই স্থানবস্থা নয়। এ গানে কথা বা পদই প্রধান, স্থানের সঙ্গে থাকে ভার জপ্র সঙ্গিও। জয়াবে ও চণ্ডাবাসের প্রাক্তিন ব্যানের গান, আগমনী ও বিজয়া গান, আর কবিগুরু ববীক্রনাথের গান প্রভৃতি বে গানই হোক না কেন, ভার পদজলৈ সর্বনাই স্থানের সঙ্গেভ বে ও কাব্যবসের সঙ্গতি বেখে চলেছে। ভাই বাঙ্গানীর গান ভঙ্ গানই নয় সাহিত্য বেশেও খোরাক। কবিকৃতির মৌলিবছ ও অভিনবছ ছিল বলেই ববীক্র যুগের পরিপূর্ব প্রভাবের মধ্যেও তিনি ছিলেন রবীক্র-প্রভাব মুক্ত। রবীক্রনাথ স্বয়ং নজকলের কবিকৃতিছে সানন্দ অভিনক্ষন আনিয়েছেন। জনপ্রিপ্রতায় তিনি কবিগুরুকেও ছাড়িয়ে গেলেন, স্বাই সীকার করে নিল ক্রাকে প্রভাবর কবি বলে। কবি লিখলেন,—

মহা বিদ্রোহী বণক্লান্ত আমি সেই দিন হব শান্ত, ববে উৎপীড়িভের ক্রন্দন বোল আকাশে বাতাদে ধ্বনিবে না অভ্যাচারীর থড়,গ কুপাণ ভীম বণভূমে বণিবে না বিজ্ঞোহী বণক্লান্ত আমি সেই দিন হব শান্ত।'

নিজেকে নিঃশেবে বিলিয়ে দিয়ে তিনি দেশ ও জাতিকে সমূদ্ধ করে ডুলেছেন একথা জনস্বীকার্য্য। আজ বদি তিনি ত্র্য দেহে থাকতেন তবে ক্রিকৃতির নব বিবর্তন হয়ত দেশতে

পেতাম। ক'বা সাহিত্য ও সংগীত জগতে হয়ত আবও নৃতৰ ক্ষি কিয়ে অব্য সাজাতে পাবতেন, ভরিয়ে তুলতে পারতেন কুনের সালি নৃতন নৃতন কুলে, কিছুতা আব সন্তব হ'ল না তাঁর অস্কুতার অভ।

আববী ও ফাংশী সংগীত থেকে তিনি একাধিক পুংস্টি করেছেন। বিশেব ক'রে গজল গানে তাঁর আসন পুপ্রতিষ্ঠিত করেছেন সংগীত-জগতে। গজল গান বাওলার সংগীত-জগতে এক অমৃদ্য সম্পান। কেবল তাই নয়, ভামা সংগীত রচনাহও তিনি বথেষ্ট দক্ষতার পরিচয় দিরেছেন বাঙলা সংগীতে নজকলের অকুপ্রদান প্রস্থার সঙ্গে স্থাবার সংল স্থাবার্গা। স্থাবালিশি সহবোগে তাঁর গানওলিকে শাবত ক'রে বাখা দেশবাসীর অব্ভ কর্ত্তর। আর সেই সজেনজকল স্থাই কাব্য-সাহিত্যের আলোচনা ছারা কবিকে স্থাবীর করার ব্যবস্থা কবাও দেশবাসীর কর্ত্ত্য। কবির গান সম্বন্ধে স্বচেয়ের বড় কথা এই বে, ভিনি বাঙালী জনসাধারণের একান্ত আপনার, একান্ত অন্তর্ম গীতিকার। তিনি তাঁর গানকে সহজ্ববোধ্য ক'রে বচনা করেছেন। সেই জন্তই নজকলের গান এত প্রিয়।

তাঁর হাসির গান বাঙলা সাহিভ্যের এক বিরাট সম্পদ।

'০র্মকার আর মেধর চাঁড়াল ধর্মঘটের কর্মগুরু!

পুলিশ শুধু করছে পরধ কার কতটা চর্মপুরু!

চাটুযোরা বাধ্ছে দাড়ি,

িঞ্জা যান নাপিত বাড়ী।

সঙ্গীত-যন্ত্র কেনার ব্যাপারে আগে মনে আসে ডেইইইকিনের



কথা, এটা
খুবই খাভাবিক, কেননা
সবাই জানেন
ডোয়াকিনের
১৮৭৫ সাল
থেকে দীর্ঘদিনের অভিভভার ফলে

তাদের প্রতিষ্টি যন্ত্র নিশুত রূপ পেস্থেছে। কোন্ ষত্রের প্রয়োজন উল্লেখ ক'রে মৃল্য-তালিকার জন্ম দিখুন।

ডোয়াকিন এণ্ড সন্ প্রাইভেট লিঃ শোক্ষ:—৮/২, এস্প্ল্যানেড ইস্ট, কলিকাডা ৰোট,কাগন্ধী ভোকপুৰী কয় বাঙালীকে, 'হৎ ছুঁইয়ে !' (কোবাদ) :---দে গছৰ গা ধুইয়ে ।

বাঙালী চাকুৰি-স্পাৰীৰ সম্বন্ধে তাঁৰ হাসিৰ পান---

ন্ধ-দন্ত-বিহীন চাত্রী ঋধীন আমরা বাঙালী বাবু।
পাবে গোল গাবে ম্যালেবিরা,
বুকে কালি লয়ে সলা কাবু।
ডিলে ঢালা কাছা কোঁচা সামলাবে
ভূবি ববে ছটি নিট পিটে পাবে,
আকিনে বসিরা কলম পিশিবা
খবে এসে খাই সাবু।

চা-প্রীতি বিষয়ক আর একটি গানে প্রচুর হাস্ত রসেূর খোরাক জোগান হয়েছে।

চাবের পিরাসী পিপাসিত চিত আমরা চাতক দল।
দেবতারা কন সোমরস বাবে, সে এই গ্রম জল।
চাবের প্রসাদে চার্কাক মুনি ঋষি বাক বণে হল পাল
চা নার্ভি পেরে চারপেরে জীব চর্কণ করে খান।
লাথ কাপ চা খাইয়া চালাক
হর, সেই প্রমাণ চাও কত লাধ ?
মাতালের দাদা আমরা চাতাল, বাচাল বলিস বল।

ইত্যাদি---

ভালক নামক মধ্ব সম্পক্তি ব্যক্তিটি তাঁব ব্যক্ত মধ্ব গানে কান্ত বদেৱ ও শালা শক্ষেব নানা অব্যেব প্রহোগ নৈপুণ্যে মধ্ব হয়ে উঠেছে,—

গিন্ধীর ভাই পালিয়ে গেছে গিন্নি চটে কাঁই।

'শালায় কোথায় পাই---

কাব্যে বারা ভাবের গভীরতা চান, তাঁদের অক্ত নজকল নন। তিনি মূলত বোরনের কবি, ভাই তিনি গেরেড্র বোরনের অয়গান। তাঁর কবিতার রবীক্রনাথের মত অনংক্ত নিরুত্রণ, পরিমিত বোধ ও হুলাদি সম্বন্ধে সচেতনতা না থাকলেও নজকল বে তাঁর যুগের একজন প্রেষ্ঠ কবি সে বিবরে কোন সন্দেহ নেই। বোরনের কবি,

চার। শালার কোথার পাই ॥²

সহক্ষপ্রাণ ধর্মের কবি, ছাখী নিপীড়িত জনগণের মুখপাত্র কবি, বিজ্ঞোহী কবি নজকলের কবিতা বাওলার কাব্যসাহিত্যের জ্ঞুভর শ্রেষ্ঠ সম্পদ।

কালীপদ লাভিতী।

রেকর্ড-পরিচয়

হিজ মাষ্টার্স ভয়েস

N 82820—ভামল মিত্রের গাওয়া হ'ঝানি আধুনিক গান—
"মন মেতেছে" ও "সুর্বমুণী সুর্ব থোঁজে।"

N 82821—"গীতালি গীতাঞ্জিন" ও "একটি ফুলের মত"—
আধুনিক গান ছ'টি মিটি স্থায়ে প্রিংশন করেছেন কুমারী বাণী
আবালা।

N 82822— তু'ধানি আধুনিক গান—"কালো মেখে ডমক্র" ও "ওগো শক্তলা" গেয়েছেন ঝাতিমান শিল্পী স্ববীর সেন।

N 82823—কুমারী পূহবী দত্তের স্করেঙ্গা কঠের স্থন্সর ছ'ধানি আধুনিক গান—"আৰু হনেব ফালধে" ও "হারিয়ে গেল জীবন।"

N 82824—ভালাত মামুদের গাওয়া মধুর ছ'বানি গান— "তুমি স্কল্য যদি নাহি হও" ও "বেগা যামগত্র ওঠে।"

N 82825—ন্বাগত। মঞ্লা সেনগুপের মধ্করা কঠের আধুনিক গান—"কুর্যুবী সোনাখুবী" এবং "থেলা বদি সারা হলো।"

N 76083 to N 76085—ব্রেক্টগুলিতে "দেড্শো খোকার কাণ্ড" বাণীচিত্রের গানগুলি শ্বিবেশিত হয়েছে।

কলম্বিয়া

GE 24943 — প্রীমতী গীতা দত্তের (বার) কঠে আধুনিক গান—"থানিতে চেরেচ তুমি" ও "মাটিব তুবনে বদি।"

CE 24944—"তুমি মধুর অঙ্কে" এবং "ওগো আমার নবীন সাথী"—গান তু'থানি অতুসপ্রসাদী, স্থাবলা কণ্ঠে পরিবেশন করেছেন জীমতী নীলিমা বংশ্যাপাধ্যার।

GE 24945—গীতনী সন্ধা সুখোপাধাবের গাওয়া ত্বানি মধ্ব আধুনিক গান—"গুম নামে পথের ছায়ায়" ও হাতে কোন কাছ নাই।"

GE 30420 এবং GE 30421—বেক্ট ছুটিতে "জল জলল" বাণীচিত্রের গানগুলি পরিবেশন করেছেন—হেমন্ত মুখোপাধ্যায় ও গীতত্রী সন্ধ্যা মুখোপাধ্যায়।

আমার কথা (৫৩)

শ্ৰীকাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়

কোন কোন শিল্পী সন্থীতকে নিষেছেন জীবনব্যাপী সাধনার মাধামে—তার জন্ম তাঁবা দৃক্পাত করেন না জ্ঞাব, জ্মুবিধা জ্ঞানম ইত্যাদিব প্রতি। এইরূপ একাপ্রতাই তাঁদের উপস্থাপিত করে জনসমক্ষে পূর্বিশে জাব প্রোতারা তাঁদের প্রত্ন করেন প্রতিভাবান শিল্পী হিদাবে। জীবাশীনাথ চটোপাধ্যাহকে জামি তাঁদেরই একজন বলে •মনে করি। জীচটোপাধ্যায়ের নিজেষ কথার বলি:—

53.08 সালের ১লা সেপ্টেবর কলিকান্তার মামার বাড়ীতে জন্মগ্রহণ করি। বাবা ৺কানাইলাল চটোপাধ্যার শেরার মার্কেটে বিশেব পরিচিত ছিলেন। আমাদের পরিবাবে গানের চর্চা ব্রাবর ছিল। ছেলেবেলা থেকে আমিও গানের দিকে ঝুঁকে পড়ি। সেইজ্রে মেজকাকা এ্যাডভোকেট জীপারালাল চটোপাধ্যার আমার কেবল উৎসাহ দিয়ে ক্ষান্ত হন নি—আমার মারের ইছ্ছার বিকর্ছে চুপিচুপি আমার গান শেখাতেন।

বাবাকপুর মহকুমার আসমবাজাবে আমাদের নিজবাড়ী। সে বাড়ীতে বরাবর গানের আসর বসত। বরাহনগরের বিশিষ্ট সঙ্গীতত্ত জীজমুস্যধন দত্তকে প্রথম আমার শিক্ষাতক হিসাবে পাই।

সেকেশু ক্লাসে উঠিয়া আমি বিপণ কলেজিয়েট ছুল থেকে বরাহনগর ভিক্টোরিয়া বিভালরে ভত্তি হই ও সেধান থেকে ১৯১৯ সালে প্রবেশিকা পরীকার উত্তীর্ণ হই। তারপর কিছুকাল নানারকম কাক্রকর্ম করি। কিছু গান শেখার আগ্রহে পড়ান্তনা বা কাক্রকর্ম করি। কিছু গান শেখার আগ্রহে পড়ান্তনা বা কাক্রকর্মে ঠিকমন্ত মনবোগ দিতে পারি নাই। ইতিমধ্যে একদিন প্রধাত সঙ্গীতশিল্পী জীরাইটাদ বড়ালের গৃহে গানের আগরে আসকাক্ হোসেন ও ভাহার ছই মামা মুস্তাক হোসেন ও। ও স্বর্গত আসাক্ হোসেন ওার গান শুনিয়া মুদ্ধ হই। ইকার কিছুদিন পর আসকাক্ হোসেন সাহেবের ছাত্র হিসাবে শিক্ষা গ্রহণ করিতে থাকি। আর ছইজনের নিকট বছদিন শিবিবার স্থবোগ পাই। জী বড়ালের উৎসাহ ও সাহাব্য আমার সঙ্গীত সাধনার অগ্যতম পাথের। মধ্যে কিছুকাল সেনী হরোয়ানার ওন্তাদ দবীর থার কাছে গ্রুপদ ও ধামার শিক্ষা করি।

এইসংগ আর একজনের কথা আমার মনে পড়ে। তিনি হলেন স্থান্থ ৮/ম্মখনাথ গলোপাব্যার মহাশর। তাঁহার স্থেপ্তে আমি নিজেকে কৃতার্থ মনে করি। তাঁহার স্থাপ্র সদালাপী, বন্ধুবংসল জীহীক গাসুসী ও আমি একরে কভদিন সঙ্গীত-সাধনা করেছি মন্মথ বাবুর গৃছে। হীক বাবুর ভার এমন উচ্চমনা শিল্পীকে বন্ধুরণে পাওয়া খুবই আনন্দের কথা।

নিখিলবঙ্গ সঙ্গীত সম্মেলনের ১১৩৭ সালের অধিবেশনে আমি অধ্য শিল্পী ছিসাবে বোগ দিই। তাহাতে আমার গাওয়া উচ্চাঙ্গ-সঞ্জীত প্রোতাদের মনে বিশেষ বেধাপাত করে। এ ছাঙা



গ্রীকাশীনাথ চটোপাবাার

বাংলা ও বহিবাংলার বছ সঙ্গীতাসরে আমি অংশ গ্রহণ করেছি।
১৯২১ সালের ৫ই এপ্রিল প্রথম আমি কলিকাতা বেভারবেজে
গান করি। বিগত করেক বংসর কলিকাতার বছ সঙ্গীত-সম্মেলন
অন্ত্রন্তিত হইতেছে। এগুলি বাঙ্গালী শিল্পীদের একত্রে উপকার ও
অপকার করিতেছে। উপকার হয়—কারণ করেকজন সত্যকারের
প্রবীণ গুণীর সমাবেশ হয়—বাদের গাওয়া গান থেকে তরুণ শিল্পীরা
অনেক কিছু শিখতে পারেন— আর অপকার হয়—কারণ এই সর
আসরে সমাগত কিছু সংখ্যক অবাঙ্গালী নৃতন শিল্পীদের
পরিবেশিত গান দোবমুক্ত হয় না."

পরিছর অংচ অরগজ্ঞিত শিলীর গৃহে ক্রমণঃ উপস্থিত হতে লাগলেন তাঁহার শিক্ষাধীন ছাত্রবুক আমাদের আলোচনাও শেব হরে এসেছিল তাই বিদায়াস্তেচলে এলাম।

গীতাপাঠ

बीनिवक्षत्राम वस्मानिशाग्र

উৎপীড়িতের উপর ক্রপার, ভোমার বদি চোখেই আসে জল, ছাড়োই বদি নিজের দাবী, ভীকুর মত থাকতে দে.হর বল। ধন্ম তোমার বলবে লোকে, উল্টোবে না পরের পাতা আর পড়বে গীতা, পালিরে সিরে, খুলবে গুরু প্রথম পরব তার। নিত্য মায়ুব হত্যা করার এখন বদি পেবাই তোমার হর, সাংখ্য বোসই দেখবে পড়ে জাত্মা জমর মরার পরেও বরু । সিঁদ কাটো বা প্ৰেট মাৰো, কণ্ম সংই কণ্মৰোগেই পাৰে, "স্বভাব তাহার কণ্ম করাম" বেকুব নিজে কণ্ড। বলে তাৰে। ধৰ্ম মানো নাই মানো জার সভার বলি তাগ লাগাতে চাও গীতাব থেকে হু'-চাব গোক নিজেব মতে বাাধ্যা করে বাও। বেকার হরে ছাড়তে ছলে, অপোগও আল্পানিজন, রাজার হালে ধাকতে মঠে, ধাকার বলি বোকাই প্রয়োজন,

ভজিবোগে মুক্তি পাবে, শিব্যগুলার পড়িরে ধাবে সেটি উইল লিখে ভোষায় মাধে ভূটবে এনে দেখবে কভো বেটা।

(फ्राय-तिरिक्राय)

देकार्छ, ১०५५ ((य-क्नून, '१३)

অন্তর্দেশীয়---

১লা জ্বৈষ্ঠ (১৬ই মে) : কলিকাতার ইডেন উত্তানস্থিত রঞ্জি ট্রেমে সাড্মার পশ্চিম্বস যুব উৎস্বের নয় দিবস্বাদী অধিবেশন করু।

২রা ক্রৈষ্ঠ (১৭ই মে): প্রিজেদ জাহাজ ঘাটের (কলিকাতা) নিকট ডক-শ্রমিকের উপর পুলিলের গুলীচাপনা—১ জন নিহত ও ২৫ জন আহত।

ত্রা জ্যৈষ্ঠ (১৮ই মে) : পুজিশ-জনতা সংঘর্ষের ফলে হাওড়া-ব্যাপ্তেস ও তারকেশ্ব সাইনের সমস্ত ট্রেণ তিন ঘণ্টাকাল জাটক।

৪ঠা জৈ ঠি (১৯শে মে): শিক্ষা আইন ব্যর্থ করার জন্ম সুস বন্ধ রাখা হইলে ধথোচিত ব্যবস্থা অবলখনে করা হইবে বলিয়া কেরল সরকাবের সত্তর্বাণী।

৫ই জৈয় (২০শে মে): কাটিখাবের নিকট ট্রেণ (নর্থ বেলল এক্সপ্রেল) চুর্বটনার ১ জন নিহত ও ৩০ জন আছত।

৬ই জৈ। ঠ (২১ শে মে): কলিকাত। ও সহরতনীতে অভা ানীর বাত ও শিলাবৃষ্টির ফলে ৮জন নিহত ও শভাধিক আহত।

৭ট জৈঠ (২২শে মে): ডা: হতেকুক মহতাবের নেড্ছে উড়িবাাব তিনজন সম্ভ সম্বিত কোৱালিশন (কংগ্রেস-সণ্ডল প্রিবদ) মল্লিখভার শপ্পগ্রহণ।

মুসৌরীতে তিবাতী বাষ্ট্রগুক দাসাইলামা কর্ত্ত ইং৫০০তম ব্যবস্থা উৎসবের উগোগন।

৮ই জ্যৈষ্ঠ (২৩ শে মে): বিভন স্বোহাবে (কলিকাতা) পশ্চিম বঙ্গ প্রেদেশ রাজনৈতিক (কংগ্রেদ) সম্মেলনের তিনদিন্দ ব্যাপী অধিবেশন স্থক। উদ্বোধন—কংগ্রেদ সভানেত্রী জীমতী ইন্দিরা গান্ধী ও সভানেত্রীয়—জীমতী স্থচেতা কুপালনী।

১ই জৈ ঠি (২৪ শেমে): পশ্চিম বঙ্গ কংগ্রেদ রাজনৈতিক সম্মেলনে তুই দলের মধ্যে প্রবল সংঘর্ষ—১৫ জন আছত।

রাউরকের। ইম্পাত কারধানার ধর্মধটী শ্রমিকদের উপর পুলিসের লাঠিচাক্ষ ও কাঁহনে গ্যাস প্রয়োগ।

১০ই জাষ্ঠ (২৫শে মে): মহাজাতি সদনে কলিকাতার মেয়র শীবিজয়কুমার বন্দ্যোপাধ্যায়ের পোরোহিত্যে বিপ্লবী মহানায়ক বাসবিহারী বস্তব ৭৪ তম জন্মতিশি উদ্বাশিত।

১১ই জাঠ (২৬:শ মে): কলিকাতা পৌরসভার একটা প্রভাবের উপর ভোটাভূটির সময় কংগ্রেদী কাউন্সিলরদের অক্সাৎ সভাকক ভাগে।

বিজোহী কবি কাজী নজকলের ৬১ভম অন্মদিবস স্ঠুভাবে পালন।

১২ই জৈঠে (২৭শে মে): ভারতীর বেলওরেসমূহের চীক ইনস্পেটাবের বিপোর্ট—১১৫৭-৫৮ সালে ভারতে বেল পুর্বটনার ৮০ জম নিহত ও ৫৬১ জন আহত।

১৩ই জৈট (২৮শে মে): প্রথম ভারতীয় নৌবাহিনী অভিযাত্রী দলের সাক্ষ্যোর সহিত নক্ষাকোট শুলের শীর্ষে (২২৫০০ ফুট) আরোচণ।

১৪ই জৈঠ (২১শে মে): বার্ত্তাজীবী সাংবাদিকদের বেভনের হার সম্পার্কে বেভন কমিটির স্থপারিশ (ভারত সরকারের অনুমোদিত) প্রকাশ।

১৫ই জৈঠ (৩-খে মে): রাউরকের। ইম্পাত কারধানার শ্রমিক ধর্মান্ট প্রত্যাহ্রত।

১৬ই জৈচি (৩১শে মে): জীবনবীমা কর্পোরেশন-ছুক্রা লেনদেন ব্যাপাবে ভিভিয়ান বস্থু ওদস্ক বোর্ডের বিপোর্ট প্রকাশ।

১৭ই জৈঠে (১লা জুন): ভারত ইন্স্যবেশের ভর্থ সম্পর্কে বড়ংছ ও বিখাসভক্ষের অভিযোগে রামকুক্য ডালমিয়া ছই বংসর বিনাশ্রম কারাদণ্ডে দণ্ডিত—দিলীর অভিবিক্ত ভেলা ও দাহরা ভ্রমের বার।

দিল্লী কর্পোরেশনের মেয়র প্রীমন্তী ছকুণা ছাস্ক ছালির প্রত্যাগ।

১৮ই জৈঠ (২বা জুন): বাইটার্স বিভি:স-এ পশ্চিম-বন্ধ খাত্ত-উপদেষ্টা কমিটির বৈঠকে ভূমূল উত্তেজনা—চাউলের মূল্যনিয়ন্ত্রশে সরকারী চেষ্টা ব্যর্থ হইবাছে বলিয়া খাত্তসচিব শ্রীপ্রফুল সেনের খীকুতি।

১৯শে জৈ। ঠ (তবা জুন): প্রবোজনীয় বাঁধ নির্মাণ সাপেকে পশ্চিম-বঙ্গ সরকার কর্জ্ক ফরাকার নিকট গঙ্গা-ভাগীর্থী মোহনায় দীর্ঘ ধাল ধননের প্রস্তাব।

শ্রী সি, রাজাগোলাচারীর সভাপতিবে অমুপ্তিত সভার কংগ্রেসী শাসক দলের বিরুদ্ধে জাতীয় বিরোধী দল ('বহুদ্র দুগ') গঠনের সিদ্ধান্ত।

২০শে জাঠ (৪ঠা জুন): বাজ্যের সম্বটজনক থাত পরিস্থিতি সম্পর্কে দক্ষেত্রিংক পশ্চিমবঙ্গ মন্ত্রিসভার দীর্ঘ আলোচনা।

২১শে জ্যৈষ্ঠ (৫ই জুন): কেবলে কয়্টিট শাসনের উচ্ছেদকরে কেবল কংগ্রেদ কর্তৃক প্রথম পর্যারে ১২ই জুন য়ুভিদ্ দিবস' পালনের আহ্বান।

কলিকাতা পৌরসভায় কলিকাতা তথা পশ্চিমবঙ্গ থাজ্যের ভয়াবহ খাজ সঙ্কট সম্পর্কে গভীর উদ্বেগ প্রকাশ।

২২শে জৈ (৬ই জুন): করিমগঞ্জে জী এন, সি, চ্যাটার্জীর সভাপতিতে ভারত-পূর্বে পাকিস্তান সমস্যা সম্মেলনের তুই দিবসব্যাপী অবিবেশন স্কুল।

২৩শে জৈঠ (१ই জুন): পশ্চিমবঙ্গে সেবা সমবার ও বৌধ থামার পরিকলনার জপায়ণের জন্ম আবৈশ্রক আইন প্রথারন বিবরে সংশ্লিষ্ট সচিব ও অফিসারণের সহিত দার্জিলিংএ মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র বালের বৈঠক।

২৪শে জৈ ঠ (৮ই জুন): কেরলে ভূমিহীন কুবকদের মধ্যে জমি বন্টনের ব্যবস্থাকরে বিধান সভার আইন-বিধি গৃহীত।

২৫শে জৈঠ (১ই জুন): ভারত পাকিস্তান থালের জল বিরোধ মীমাংসা চেটার বিশব্যাক কর্তৃক বিপাশা নদীর জলাবাত নির্মাণের নৃত্তন প্রস্তাব। ২৬শে জৈঠি (১০ই জুন): জমুৰ স্পোশাস জেলে জমুও কাশ্মীবের প্রাক্তন মুখামন্ত্রী শেখ আব্দুরার সহিত কাশ্মীবে সফারত ভূসান নেভা আঠাঠ্য বিনোবা ভাবের সাক্ষাৎকার।

২৭শে জৈ। ১১ই জুন): গুদীবর্ষণ বিবৃতি চুক্তি ভঙ্গ করিয়া ক্রিমগঞ্জ দীমান্তবর্তী হরতকিটিদার পাক্সৈতদের পুনরার গুদীবর্ষণ।

২৮শে জৈ ঠি (১২ট জুন): কংগ্রেস সচ কেবলের বিবেশী দসগুলির সংগ্রাম কমিটির উজ্ঞোপে রাজ্যের (কেবল) বিভিন্ন স্থানে আংশিক হয়তাল।

পশ্চিমবঙ্গের শোচনীয় থাত্ত পরিস্থিতি সম্পর্কে রাইটার্স বিক্তিংস-এ কেন্দ্রীয় থাত্ত দপ্তবের সেক্রেটারী জীবি, বি, যোবের সহিত মুখ্যমন্ত্রী ডা: বিধানচন্দ্র রায় ও থাতাসচিব শীপ্রাফুলচন্দ্র সেনের কর্করী বৈঠক।

২৯শে জৈঠ (১৩ই জুন) : কেবলের এর্ণাকুলাম জেলার বিক্র জনতার উপর পুলিশের শুসীবর্ষণ।

৩ লৈ জৈঠ (১৪ই জুন): ক্সিকাতা বিশ্বিভালরের ইণ্টারমিডিরেট পরীকার ফলাফল প্রকাশ:— শাই, এ পরীকার ৩৮ ৩ ও আই, এদ সিতে ৫ • ১ জন উত্তীর্ণ।

৩১শে জৈঠে (১৫ই জুন): ত্রিবাক্সম (কেরল) শ্রেলার সুইটি ছানে পুনবার পুলিশের গুলীবর্ষণ—নিরাপভা ব্যবস্থা হিসাবে রাজ্য সরকার কর্ত্তক সৈক্ত আহ্বান।

ম্গার্দ্ধি ও ত্তিক প্রতিরোধ কমিটির ভাহবানে সরকারী
অগণতান্ত্রিক থাতানীতির প্রতিবাদে সমগ্র পশ্চিমবঙ্গ ব্যাপী প্রতিবাদ
দিবস উদ্বাপিত।

বহির্দেশীয়---

১লা ফৈ ঠ (১৬ই মে): খালের জলের বিবোধ প্রান্তক করাচীতে পাক্ প্রেসিডেউ জেনারেল আয়ুর খানের সহিত বিশ্বব্যাক প্রেসিডেউ মি: ইউজেন ব্ল্যাকের বৈঠক।

২বা জৈ ঠ (১৭ই মে): আণ্ৰিক প্রীক্ষা বন্ধের প্রাক্ত মার্কিণ প্রেসিডেট জাইসেনহাওরার ও বৃটিশ প্রধান মন্ত্রী মি: ছাবজ মাাক্ষিপানের নিকট ক্লশ প্রধান মন্ত্রী ম: নিকিতা কুণ্চেভের ন্তন প্রভাব পেশ।

৪ঠা জৈঠ (১৯শে মে): বজ-বাইল্যাপ্ত-লাওদ সীমাক্ত পুনবার চিয়াং বাজিনীর হামদা ও বুমা বাহিনীর সহিত সংগ্রাম।

৭ই বৈগ্ৰন্ত (২২শে মে): তিবৰতে বিজ্ঞোহ চালনার জন্ত বিদেশ (সামাজাবালী) হইতে সাহাব্য সংগ্রহ সম্পর্কে ভূতপুর্ক তিব্যত সংকারের বিক্লজে চীনের অভিবোগ।

১ই জৈচি (২৪শে)মে: ভ্তপূর্ব মার্কিণ পররাষ্ট্র সচিব মি: জন ফটার ভালেদের মৃত্য়। ১০ই জোঠ (২৫শে মে): সোভিসেট প্রধান মন্ত্রী ম: নিকিন্তা ক্রুপ্তেম্ভর ১২ দিনের অন্ধ আাস্বনেরিয়া সক্ষরে যাত্রা।

মি: ডালেসের মৃত্যুর দক্ষণ জেনেভা চতুঃশক্তি প্ররাষ্ট্র সচিব সম্মেলন (ভাশ্বাণ প্রাসকে) ছুই দিনের শুক্ত স্থাতি ।

১১ই জৈাষ্ঠ (২৭শে মে): এ বি, পি, কৈবালার নেতৃত্বে নেপালের সর্ব্বপ্রথম নির্কাচিত স্বকারের শপ্ত গ্রহণ।

১৩ই কৈটে (২৮শে মে): 'জুপিটাব' নামক মার্কিণ কেপণাল্লে মহাশুনা পর্যটনাক্ষে তুইটি বানহীর জীবস্ত প্রভাবর্তন।

পূর্বে পাকিস্তান গভর্ণবেব অভিক্রান্সে ছয় মাসের জন্ত ঢাকা । বিশ্ববিদ্যালয় কোর্টেব সভা বন্ধ।

১৪ই জৈঠ (২১শে মে): মঙ্খো-এ ভারত-দোভিয়েট নুতন অর্থনৈতিক চুক্তি স্বাক্ষিতি।

১৬ই জৈ ঠ (৩)শে মে): বাষ্ট্রণংখের প্রাকাশিক বিবরণ— বর্তমানে পৃথিবীর জন সংখ্যা ২৪০ কোটি—ভন্মধ্যে চীন ৬৪ কোটি এবং ইছার প্রই ভারত ৫০ কোটি।

১৭ই জৈঠ (১লা জুন): নিগণতার নামে স্থবাদে ঘুট জন মন্ত্রীসহ ১৮ জন অফিসার প্রেপ্তার।

১৮ই জৈ। ঠ (২রা জুন): জারাপাতার জন্ম পূর্ব পাক্ সরকার কর্মক ৭ জন অফিসাথকে শাভিদান।

১১শে জৈঠে (০বা জুন): কমনওরেলধভূক্তে একটি স্বাধীন বাব্ধী হিসাবে সিলাপুরের অভ্নেহ—বামপন্থী পিণল্স একলন পাটি কর্তুক নূতন সরকার গঠন।

২০শে জৈঠ (চেঠা জুন): লাওস পরিছিতি প্রান্ত জেনেভার বুটিশ পরঃাষ্ট্র সচিব মি: সেলুইন লয়েড ও রুশ পররাষ্ট্র সচিব ম: আঁণজে প্রোমিকোর বৈঠক।

২১শে ছৈয় ঠ (৫ই জুন): তিকাতীদের মৌলিক মানৰিক অধিকারে চীনা হস্তক্ষেপ হইয়াছে বলিবা আন্তর্জ্ঞাতিক আইনবিদ্ কমিশনের বিপোটে মস্তব্য।

২২শে জৈঠ (৬ই জুন): বৃটিশ অভিযাতী দলের আমাদেবসাম শৃঙ্গ (২২,৩০০ ফুট) ভয়ের চেষ্টা ব;র্থ—ছইজন সদত্যের মৃত্যা।

২৬শে জৈর (১০ই জুন): তিন দিবস্বাাপী নেশাদ স্কর উদ্দেশ্তে প্রধান মন্ত্রী প্রীনেহকর কাটমাণ্ডু উপস্থিতি।

২১শে কৈ:ঠ (১৩ই জুন): তিন্তত ও মন্তান্ত আন্তর্জাতিক পৰিস্থিতি সম্পর্কে কাটমাণু-এ প্রধান মন্ত্রী প্রী বি, পি, কৈবালার সহিত প্রধান মন্ত্রী প্রীনেহকঃ (ভাবত) আলোচনা।

৩১শে কৈঠে (১৫ই জুন): ইরেমেনী গৈলবাহিনী কর্ত্ত ইরেমেনের প্রধান বন্দর হোদিদাও অভ্তম বৃহত্তম সহর ভাষাক দখলের সংবাদ।

••• अ मामत् श्रह्मभोरे • • •

এই সংখ্যার প্রান্ধনে কাশ্মীরের একটি আলোকচিত্র যুক্তিত ইইরাছে। চিত্রটি প্রহণ ক'রেছেন শ্রীবিভাগ দ্বি।

क्रिवाश है शार्छ

य ता स

कलकाठा পूलिশ

ডঃ পঞ্চানন ঘোষাল

যে সকল মামলা সম্বন্ধ এই কাহিনীগুলিতে বলা হয়েছে উহার সব কয়টিরই তদস্ত-কার্য্য কলিকাতার আরকা পুস্বদের খারা সমাধা হয়েছিল। তুলনামূলক ভাবে বিচার করলে দেখা ৰাবে বে কয়েকটি বিষয়ে কলিকাতা পুলিশ বছক্ষিত ইল-স্থানীর স্ক্রিল্যাণ্ড-ইয়ার্ড অপেকা বছন্তবে শ্রেষ্ঠ। কাবণ, বে সকল ভদন্ত-কার্যা য়ুরোপীয় "ববি"গণ অত্যাধুনিক বৈজ্ঞানিক উপকরণের সাহাব্যে করে থাকেন সেইরূপ তদস্ত-কার্যাই ভারতীর পুলিশকে করে বেতে হয়েছে এ সকল আধুনিক মন্ত্রণাতির সাহাব্য বাতিবেকেই। ৰ্ভতপকে বেতার-বন্ধ প্রভৃতি বিবিধ বৈজ্ঞানিক পন্থা এই দেশের স্বাধীনভার পরই মাত্র প্রকৃতপক্ষে গৃহীত হরেছে। উপরস্ক শণ্ডন পুলিশ অনুসাধারণের নিকট বে সহবোগিতা বছকাল পূর্ব হতেই পেরে এসেছে, সেইরূপ স্বর্থকির সহবোগিতা ভারতীয় পুলিশ বহু দিন পার নি। এ'ছাড়া কলিকাতা পুলিলের অপর আর এক অন্তবিধাও আছে। কারণ তাদের অনেককেই এই শহরে মাতুষ হয়ে ও লেখাপড়া শিথে এই শহরের পুলিশেই ভর্তি হতে হয়েছে। শহরে অগণিত পরিচিত ব্যক্তিদের মধ্যে কাজ করার অবিধান স্থায় অন্মবিধাও অনেক থাকে। এই কারণে ভাদের মুক্রুছ: লভ্ ও ডিউটির মধ্যে বেছে নিতে হয়েছে ডিউটিকে। এ-ছাড়া এদের পুরাতন ট্রেনিং স্থলগুলিতে পুলিলি আইন-কামুন, ডিগ, প্যাবেড ও ডিসিপ্লিন শেখানো হলেও পুলিলি তদন্ত বীতি কোনও দিনই শিখানো হয়নি। এই তদভ-কাৰ্য্য ভাবের শিবে নিভে হয়েছে ট্রেনিং স্কুলের বাহিরে এলে ভৎকালীন স্থাক দেশীর অফিগারদের নিকট হতে। এই সকল পুরাতন অফিসারগণ গুরু প্রস্পরায় বে জ্ঞান অর্জ্বন করছেন, সেই জ্ঞান আবার জারা দিয়ে বেভেন এই বিভাগের নবাগত অফিসারদের। এই জ্ঞান কর্তৃণক্ষের অগোচরে যুগ যুগ ধরে চলে এসেছে, কিছ উহার স্বট্কু বছদিন পর্যান্ত সিপিবদ্ধ করা হয়নি। এখানকার এই সকল শিক্ষাগুরুদের নথাগুডদের শিক্ষিত করে ভুলভেও বেশ কিছু বেগ পেতে হভো। কারণ ইহাদের অধিকাংশই ছিল স্থশিক্ষিত সহবের যুবক। বহু প্রকার চিত্ত-প্রস্তুতির কারণে এই সকল আত্মাভিমানী যুবক আপন আপন ধারণা অনুষায়ী কাজ করতে চেয়েছে। এই জন্ম তাদের এই সব বন্ধুল ধারণা বদলে ভাদের মধ্যে নৃত্তন দৃষ্টিভঙ্গি আনতে ভাদের এরপ শিক্ষ। দিতে গুরুদের বহু সময় অভিবাহিত কবতে হয়েছে।

—কিছ এতে। অশ্ববিধার মধ্যেও কলিকাতা পুলিল বেরপ কৃতিছ দেখাতে পেরেছে তা বিলাতী, ফটল্যাও ইয়ার্ড পুলিশের কৃতিছের তুলনার ক্মাতো নয়ই বরং উহাদের অতুলনীয়ই বলা বেতে পারে, ব্রিটিল সরকার ব্রিটিল পুলিশের পিছনে বেরপ বরচ-বরচা করেছেন, তাঁরা সেইরপ বরচ-বরচা তাঁদের ভারতীর পুলিশের জন্ত কোনও দিনট করেন নি। এই সকল বন্ধ বেজনভোগী ভারতীর ভদস্ককারী অফিসারদেরই বরং ভদস্ত-কার্ব্যে সাফল্যের জন্ত ব্যং জনসাধারণের উপকারার্থে নিজেদের প্রেট হতেই প্রসা ব্যুচ করে ব্যাভাতা দেখাতে হয়েছে। ভারতীর কৃষ্টি অনুবারী এই সকল পুরান্তন অকিসারগণ তাঁদের সহকারীদের তাঁদেরই মত তদন্তকার্ব্যে শিক্ষিত করে তোলা তাঁদের শুরু কর্ত্তব্য নর ধর্ম মনে কর্তেন। এই জল্প প্রতিটি ভদন্তকার্ব্যে এরা নবাগতদের তাঁদের সঙ্গে সঙ্গে রাখতেন। এই নবাগতবা শুরু দেখে বেজা তাঁরা কেমন করে কি করছেন এবং কি-ই বা তাঁরা করছেন না। বছক্ষেত্রে ভারা নবাগতদের ভিজ্ঞাসা করেছেন, 'বলতো এইবার কি করতে হবে ?' নবাগতগণ এই প্রেশ্নের উত্তর দেওয়া মাত্র তংক্ষণাং তাঁরা বলে দিতেন, এইরূপ করলে এই এই জন্মবিধা আছে। নচেং এই এই স্থবিধা হয়—বুঝলে । এই ভাবে কলিকাতা পুলিশ তাদের বা কিছু শিক্ষা দীকা ভা পুলিগত ভাবে পার নি, স্থদক ও অভিজ্ঞদের কাছেই তারা এ তদন্ত-কার্য্য শিখেছে হাতে কলমে।

এখন জিজাক্ত হতে পারে অধুনাতম বৈজ্ঞানিক বল্পণিতির সাহাব্য না নিয়ে কলিকাতা পুলিশ এত বেশী দক্ষতা দেখাতে পারে কি করে ? এর একমাত্র উত্তর হচ্ছে বে, কলিকাতা পুলিশ বল্পণিতির উবক্রির উপর নির্ভর না করে তারা নির্ভর করেছেন উহাদের ব্যবহার চাতুর্যোর উপর । অল লাইন ঘারা বে ব্যক্তি অধিক এফেক্ট প্রকাশ করতে সক্ষম সে-ই প্রস্তুত আটিই । তাই বল্পণিতি ব্যবহার করেতে নিজেদের তৈরী অতি সাধারণ (Simple) বল্পণিতিই তারা ভদক্ত কার্য্যে ব্যবহার করেছেন । তবে বল্পণাতির উপর নির্ভরশীল না হয়ে তারা নির্ভর করেছেন, নিজেদের প্রত্যুৎপল্পমতিত্ব পূর্ব্য-অভিজ্ঞতা এবং স্বর্যাকর সমাজ-বিজ্ঞান, নৃত্ত্ব ও মনোবিজ্ঞানের জ্ঞানের উপর । দৃষ্টাক্ত অবপ নিম্প্র একটি ঘটনার উল্লেখ করা বেতে পারে ।

বিতীয় মহাযুদ্ধের মধ্যকালে জনৈক আমেরিকান জেনারেল বন্ধুগণ সহ কলিকাভার এসে কানীখাটের মন্দির পরিদর্শনে ধান। মন্দির কর্তৃপক্ষ অবশু জুভা খুলে তাঁদের প্রাক্ষণে গুরাফিরা করার জন্ত কোনও আপত্তি করেন নি। তাঁরা বেইনীর হুয়ারের নিকট জুতা খুলে রেখে প্রাক্তাপর চতুর্দিক পর্যাবেক্ষণ করে ফিরে এসে দেখলেন বে, জেনাবেল সাহেবের মূল্যবান 'অ' জোড়াটি অপহাত হয়েছে। মন:কুর ভাবে জেনারেল সাহেব কলিকাতা পুলিশের য়ুরোপীয় কমিশনারের নিকট জুতা চুরি সম্বন্ধে অভিবোগ জানানে৷ মাত্র পুলিশ বিভাগে ভোলপাড় শুক হয়ে গেল এবং ভিনি অভিমন্ত প্রকাশ করলেন বে, ছবিত গতিতে ঐ জুতা উদ্ধাৰ কৰে দিতে না পাবলৈ বিদেশীয়দেব নিকট কলিকাভা পুলিশের মান ইচ্ছভের সম্ধিক হানি হ্বার সম্ভাবনা। এই তদন্ত-কাৰ্যো বিশেষ করে আমারই ডাক পড়েছিল। আমাকে কমিশনার সাহেবের নিকট নিয়ে বাওয়া হলে, তিনি বললেন, 'লগুন পুলিশ এই জুতা ভিন ঘটার মধ্যে উদ্ধার করতে পারত, ভূমি কতক্ষণে উহা উদ্ধাৰ কৰতে পাৰবে ?' উত্তৰে আমি তাঁকে জানাৰুম, আৱ, এ জুতা পূৰ্বে দিন বেলা তিনটা জাকাল সময় অপস্ত হয়েছে। ভাই ভিন ঘটার উহাদের খুঁজে বার করা সম্ভব নর, কারণ ইতিমধ্যেই বহু দেরী হয়ে গিয়েছে। আমি অন্ততঃপক্ষে ছর সাত বা নর খণ্টা সমর চাই। কমিশনার সাহেবের মনে কি किन स्नानि ना, किनि स्नामात्र छेखरत दत्तः भूती इरहरे दरन छेर्ररनन, বৈশ বেশ সে তো ভালই। এখন সকাল দশটা—আছ্না, ভাহলে मह्याद शूर्व्वहें अक्ट्री अथवत भाव जाना कति।

এর পর লালবালার হতে সোলা আমি ভবানীপুর থানার চলে এলাম। সেধানে এসে দেখলাম ভারপ্রাপ্ত অফিসার এই জুডা-চুরি সম্পর্কে বিশেষ চিভিড, কারণ তাঁবই এলাকাধীন স্থানে এই

অপকাৰ্য্যটি সাধিত হয়েছে। আমি ভাঁকে সাধনা দিয়ে ভিজ্ঞানা ক্রলাম, 'ঠিক ক'টার সময় এই চুরিটে হবেছে বলে আপনি মনে করেন ?' উত্তরে হতাশ হয়ে তিনি আনালেন, 'টিক ভুইটার সময় ৷ তিনটায় আনেরিকান মিলিটাটা পুলিশ এসে কেল লিখিয়েছে।' ভি তাহলে ঠিক হয়েছে,'— স্বামি উত্তর ক্রলাম, 'আপনি এক কাজ করুন এফুণিই। জন দশবারে। জমানার ও পুরানো অভিজ্ঞ সিপাহী একুণি পাঠিরে দিন। ভারা একটা হতে তিনটা প্রাস্ত অর্থাৎ বে সময়ে চুরি হয়েছে ঐ সময়ে মন্দির ও উহার চড়দিকে যুৱাফিরা করে যে কোন ব্যক্তিকে ভ্যাগাবশু বা জুতা-চোংদ্ধপে সন্দেহ হবে, তাদের সব ক'লনকেই ছাঁকা জালে মাচ ভলার ভার ধরে ধরে ধানায় নিয়ে আত্মক। প্রকিসার-ইন্-চার্জ্ঞ ভদ্রলোকের নানা কারণে আমার উপর আছা ছিল। ভাচাড়া গোরেলা বিভাগের ব্যক্তি বিধার আমাকে সাহাষ্য করা ছিল তাঁৰ এক অক্তম কর্তিয়। তিনি সানন্দে বাছা বাছা দশ বারো ভন জমাদার সিপাহীকে জন্তরপ আদেশ সহ এ সময়ের মধ্যে মন্দিরে পাটিয়ে দিয়েছিলেন। এর পর আমি খাওয়া দাওয়া শেব করে নিশ্চিম্ব মনে ও স্থির মন্তিকে একটি পুঁটুলী হাতে নিয়ে থানার এসে দেখি, প্রার ত্রিশ জন জমুরূপ ব্যক্তিকে ধরে ধনে ধানার একটা পুথক কামবায় জমা করা হয়েছে। জামি ঐ নির্দিষ্ট কামবার এসে কিছুক্ষণ নিত্তীক্ষণ ও ভিজ্ঞাসাবাদ করে ওদের মধ্য হতে মাত্র এগারো জন বাজিকে বেছে নিয়ে বাকি সকলকে মুক্তি मिट्ट राज बानाव अधिमाव-देन-bileक्वंव डम्म निमिष्ठे पाव अस्म বসলাম। এই হবে আমার সঙ্গে করে আনা পুঁটুলীটি ইতিপূর্বেই আমি রেখে গিয়েছিলাম। সকলে বিশ্বিত হয়ে দেখল, আমি পুঁটুলী বুলে ভাল ভাল আনকোৱা নৃতন ময়কো ও অকাল ভেদায়ের দশ বারো পাটি জুতা বার করে খরের একপাশে দেওয়ালের ধারে ঘড়ো করে রাখছি। সকলে জিজ্ঞান্মনেত্রে আমার দিকে ভাকালে, আমি তাদের কথা বলতে বারণ করে পাশের ঘর থেকে আমার বাছাই করা এগাবো জন ব্যক্তিকে এই খরটিতে এনে দেওয়ানের এমন এক ধারে সারিবন্দী ভাবে হাদের গাঁভ করাতে বললাম. বেখান হতে উপ্টো দিকে রাখা জুতা কয়টি সহজেই তাদের নজবে পড়তে পারে। এইভাবে ঐ এগার জন সম্পর্মান ব্যক্তিকে দেওয়ালের পালে সারবন্দী ভাবে দাঁড করানো হলে, আমি বছক্ষণ ছুতা করে একটি কাগল দেখতে সাগসাম, বিস্তু মধ্যে মধ্যে আমি ভাদের হাবভাব বে লক্ষ্য না কর্ছিলাম তা'ও নয়। এর পর আমি মুধ তুলে অস্তমনত্ম ভাবে অধচ তীক্ষ দৃষ্টিতে সংশ্বমান প্রত্যেকটি বাজির মুখের দিকে চেয়ে দেখতে থাকি। হঠাৎ আমার লক্ষ্য পড়ল এদের এক ব্যক্তির মুখ-চোখের দিংক। লোকটি খন খন প্ৰসূত্ৰ দৃষ্টিতে ঐ নৃতন জুতা জোড়া কয়টিয় দিকে বারবায় চেয়ে (मर्थाइन । वे शांत चठशन कृषा (मर्थ थान-व्याखित महारता, বেমন বৃভূকু মান্ত্ৰকে উভলাকরে ঠিক ভেমনিকরে ঐ জুতা-বছানীকে উত্তলা করে তুলেছে। কারণ, জুতা-চুরি করে করে (অভ্যাস জনিভ) ভার বেনের 'সেট-লাপ' লাপনিই এমন হরে গেছে বে, সহজেই তার মান্তবের পারের দিকেই আগে নক্ষর পড়ে। এই অবস্থায় ভার চকু চৰ্চকে হয়ে উঠবে এবং মুখে নাল পড়বে ভাতে আর আশ্চরোরই বা কি আছে। আমি

ধীরভাবে উহার অপরাপর সঞ্চীদের মুধাবরবের সহিচ্চ উহার মুখ চোখের তুলনা করে বুঝলাম বে, আমি কোনও ভুল সিম্বান্তে আসি নি। আমি ভংকণাং এ ব্যক্তিকে রেখে বাকি সকলকে বললাম, বাও ভোমরা। বা বিছু দোব এই লোকটির; ভোমরা कान जनवार करने नि। ये नकन वास्तित्व रिनाय मिरव দরজা বন্ধ করে আমি নিভুতে সেই জুতা-চাংটিকে বল্লাম, 'বাপু জুতা-চার! দেখটো ভো এতগুলা লোকের মধ্য হতে আমি ভোমাৰেই কেমন িনে নিলাম। এতেই বুকভে পারছো বে, আগে থেকে আমাদের এ ধবর ভানা ছিল (य. कृषि औ मिन औ क्षोकी मारहरवत क्का कृ'ति। प्रश्निव হতে চুরি করেছো, তা না হলে কি অহতলো লোকের মধ্যে গুধু ভোমাকেই বেছে নিভে পাৰতাম ? দেখলে ভো ওগু তোমকেই বেছে নিয়েছি। এখন এছটা বখন জানি তখন এ'ও জানি তুমি কোথায় ও-ছ'টো বিক্রয় করে এসেছ। এখন তুমি নিজেই বলি লোকানটা দেখিয়ে দাও তা'হলে আর আমাদের ইন্ফরমারকে কট্ট কমে সেই বেলগেছে থেকে ডেকে ভানতে হয় না। কেন মিছামিছি অঞীতিকর (१) ব্যাপারের স্টে করবে ভার চেয়ে নাও একটা বিভি টিড়ি খাও, জার শান্তশিষ্ট ছেলের মত সেই দোকানটা দেখিরে দেবে চলো।' জুভা-চোর মহাশর সত্য সভাই আমাদের এই কাশুকারখানা দেখে অবাক হয়ে গিয়েছিল। তার এ'ও মনে হয়েছিল বে, ঐ চোরাই মুখা কোথার আছে তা এ ইনফ্রমারের সাহাব্যে ভামরা ইভিমধ্যেই ভেনে নিয়েছি। একটু ধ্রদিক ওদিক চেয়ে বিশ্ব-বিশ্ব করতে করতে জুভা-চোরটি জন্তুংখাল করে জানালো, 'হা ছ'জুর সবই ব্ধন আপ্নারা জেনে গেছেন, তথ্য আপ্নাদের আমি আর কট (मर्दा ना। एटर अक्टो कथं, अ एक्नार्टेड (मधानांता मर कामारक একজন বড়দরের চোর বলে জানে ও খাতির করে। আমি বে জুতা-টোর তা জানাজানি হলে সকলের কাছে জামার বড় বলনাম হবে। চলুন, আর আমি দূর হতে সেই চিনামানিটার দোকানটা (मिथिर्य (मरवा। थेव मस्टदण: এव मरवा (म ६-इ'रो) रिकी করতে পাবে নি।' আমি উৎফুল হয়ে তৎক্ষণাৎ এক টাালি एएक चनवाबी क निरंत्र थे मार्कानत निकृष वाहे धरः थे দোকান হতে তুইখন স্থানীয় সাকীয় সামনে অংগ্ৰন্ত জুতা ভোড়াটি উদার করতে সমর্থ হই। এর পর আমেরিকান ছেনাবেল সাহেব এ জভা চ'টে৷ আপন দ্রব্য বলে সনাক্ত করে স্বীকার করেছিলেন ৰে, চবিব পৰ এভ শীল চোৱাই তাৰ্য উদাৰ কৰতে মুৰোপীয় বা ব্রিটিশ পুলিশ কম ক্ষেত্রেই সক্ষম হয়েছেন।

এইখানে সাধারণ মনভত্ব বা মনোবিজ্ঞানের জ্ঞানের সহিত্ত
আমাকে গুরুপংস্পারা অজ্ঞিত অভিজ্ঞতাও কাজে লাগাতে হয়েছিল।
এই সহজে আমাদের পূর্ব্ব-অভিজ্ঞতা ছিল বে, জুকাটোংগণ একক চোর
হর এবং ভারা দলবত্ব চোর নয়। ভায়তীর অপরাধী সমাজে ইহা এক
আতি ট্রিটেও নোরো কাজ বিধার একে অপবের অজ্ঞাতে এই
প্রকার চুরি করে থাকে। এইজন্ত একজন জুত-টোর বেথানে
কর্মান্ত থাকে, সেইখানে অপর এক জুতা-টোর প্রায়ত্ত
না। এদের অকজন অপর জনকে এই ছোট কাজে লিপ্ত দেখলে
উত্তরেই লক্ষিত হয়ে উঠে। এইজন্ত এরা প্রশার প্রশারের

আগোচরেই দ্বে চলে সিয়ে পৃথক কর্মকেত্র বেছে নেয়। এ'ছাড়া বড়
বড় চোরদের মনের বে 'গার্ট' থাকে জুতা-চোরদের তা থাকে না।
ভাবা অভাবত:ই ভীক প্রকৃতির ও সরল অভাবের হরে থাকে।
এইজক আমি তদমুরপ বাক্বিভাসেই তার উপর প্রবোগ করেছিলাম।
আমার এবংবিধ কুতকার্ডার উহাও একটি অক্তম কারণ।"

উপরের দৃষ্টাস্ত থেকে দেখা যাছে কিরুপ সরল ভাবে সামান্ত সমরের মধ্যে কলিকাতা প্লিল কার্য্য করতে সক্ষম। কিন্তু এইস্থলে লগুন প্লিলে হুলুত্বল লড়ে বেতা। তাঁবা প্রথমেই ঘটনাস্থলে এসে এই ডের মধ্যে পদচ্চিত্র সংগ্রহের জন্ত বার্থ প্রহাস করতেন। তারপর তাঁরা বহু ব্যক্তিকে ক্লিন্তানাল করে কোনন্ধ হিলিস না পেলে ছুটে বেতেন মোডাস জপারেগুই ব্যুরোতে বা অপবাধীদের কার্য্য-পদ্ধতি সম্পর্কীর বেকর্ড অফিসে। এই কার্য্য-পদ্ধতি অফিসে বিভিন্ন অপবাধীদের বিভিন্ন জার্য্য-পদ্ধতি সম্পর্কীর সহস্র সহস্র কার্য রাকের বিভিন্ন জোপে বা পিজিয়ন-হোলে রক্ষিত্ত আছে। এইখানে কোন্ অপরাধী কত লখা, কার চূলের রঙ কিরুপ, কোন ব্যক্তি নেগ্যে বা থম্ম, ইত্যাদি সংবাদও নথিভুক্ত আছে। সাধারণতঃ অপরাধীদের অপপদ্ধতিসমূহ অনুসরণ করে উহাদের নাম ধাম সম্বন্ধ অভিহিত হওরা বেতে পারে।

এইরূপ বিবরণ সম্বলিভ বহু কার্ড পর্য্যবেক্ষণ করে জাঁরা সম্ভব্মত প্রার আট নয়টি অপরাণীর নাম থাম বিবরণ ও উহাদের বন্ধবান্ধবদের নাম সংগ্রহ করে ঐ অপস্থাত জুতার বিবরণ সহ ঐ সকল সংবাদ ভংকণাৎ পেভেটে ছাপিয়ে উহা ভাান, মেল বা লোক মার্ফং প্রতিটি খানার পাঠিয়ে কিবা টেলিফোন বা রেডিও বোগে ঐ সকল ধানার এই সম্পর্কে সংবাদ প্রেরণ করতেন। তার পর একে একে ভাদের পাকড়াও করে অকুছলের লোকজনদের এবং ফরিরাদীকে সনাজিকরণ মিছিলের (Test Identification Parade) সাহাব্যে তাদের সনাক্ত করাবার চেষ্টা করতেন। এরপর শশুন পুলিশের অপর একদল হয়ত প্রকাণ্ডে বা ছল্পবেশে এ জুতার বিবরণ সহ ছুটভেন সাথা শশুন শহর বা শহরতলীর সন্দেহমান জুতার দোকান বা উহার গ্রাহকদের সন্ধানে। এইরপ ক্ষেত্রে বিলম্বের কারণে ঐ জুডা কোনও এক ক্রেডা ইতিমধ্যেই কিনে निरंद (मान्य विवाध कनमभाक्य माथा विनीन इस्त शिख शाकरव কিংবা বামাল-গ্রাহক'গণ উহা অক্ত কোনও এক নিরাপদ স্থানে ছবিত গভিতে পাচার করে দিয়ে থাকবে। এ'ছাড়া এই সকল স্থচতুর ধনী বামাল-প্রাহকগণের দিকে দিকে চর স্বাছে এবং ভারা চোৰ কান খুলে বেণেই বাবদা চালায়। ইতিমধ্যে সংবাদ পেরে फोर्मिक मार्यमान इरव वास्त्रांस व्यमक्षर नव। এव भवस विम क्यान দোকান হতে মাত্র উহার বিবরণের সাহায্যে ঐ জুতা উদ্বার ৰুৱা সম্ভব হয়, তাহ'লে উহা বে ক্রিয়াদীৰ জুতা তা প্রমাণ করা হবে এক সমস্তার বিষয়। কারণ, এরণ জুতা বাজার সমূহে স্কলের কাছেই নির্বিঠারে বিক্রম করা হয়। তথন পুলিশ্কে দেখতে হবে ঐ জুতার স্থকতলার ফরিয়াদীর পায়ের অমুরূপ চিহ্ন পরেছে কি'না ? অভথায় তাঁরা ঐ ছুতার তলদেশ-সংলগ্ন মৃতিকা টেছে বার করে বাসায়নিক পরীক্ষার পর প্রমাণ করতে চেষ্টা করতেন বে, ঐ মাটির কেমিক্যালের সহিত ঘটনাত্ম বা ফরিরাদীর ধুহপ্রাক্তবে মাটিব কেমিক্যালের সাকৃত আছে। করিরাদীর পারের একটি লোম দৈবক্রমে এ জুতার মধ্যে পাওয়া পেলেও হয়ত

তাঁরা এরপ পরীকা যাবা প্রায়াণ করতেন ঐ চুলটির দ্রাব্যগুণ করিরাদীর পারের **অভান্ত চুলে**র অনুরূপ। এই সম্প:র্ক ফোরেন্সিক সারেন্সের সাহাযো ঐ জুতো ভোড়াটির বর্ণচ্টোর সহিত ফরিহাদীর পুত্রে অক্যাক জুড়াবা ফ্রব্যের বর্ণজ্ঞার তুলনা করেও হর্ত ভাঁরা প্রমাণ করতেন বে, ঐ জুতা ঐ কবিয়াদীবই। কোনও প্রকারে বিবিধ-বিজ্ঞানের সাহাধ্যে এ জুতাটি করিয়াদীর জপহাত জ্ঞবারূপে কথঞ্চিত প্রমাণ করার পর তাঁলের এইবার অংগত হতে হবে, ঐ জুতা অপবাধীমক ব্যক্তিদের মধ্যে কোন ব্যক্তি চুরি করে ঐ দোৰানে থিকুর করেছে। অবগ্য ঐ জুভার কোনও স্থানে ভাগাক্রমে বদি তাদের কোনও একজনের আকুলের ছাপ পাওয়া হার, ত'হলে সে কথা সহস্ত। ভবে ১ হণ ত্রব্য নয় বলে ঐরপ কোনও ছাপ না পাওয়ার সম্ভাবনাই বেশী! কিছ বর্ত্ম-সিক্ত হল্পে জুতা ও কাগন্ধ প্রভৃতি স্পর্ণ করিলে উহাতে আঙ্গুলের ছাপ সরিবেশিত হওয়াও অসম্ভব নয়। সাগারণত: মনোবিজ্ঞানের নিয়ম অভুসারে ঘটনার অব্যবহিত পরেই অপরাণী ধরা পড়লে তারা একটি স্বীকৃতি দিলেও দিতে পারে। কিন্তু বহুদিন বা বছক্ষণ সময় অভিবাচিত হটয়া গেলে তালের মনোবল অট্ট হয় এবং তারা কোনও স্বীকৃতি প্রদান করে না। এইরূপ অংস্থার দ্রব্যাদির চোর ও উহাব গ্রাহক; উভয়েই প্রায়শ: ক্ষেত্রে অপরাধসমূহ অস্বীকার করে থাকে। এইরূপ অবস্থার সোপদীকরণের পর বিচারের সময় ডিফেন্স হতে একটিমাত্র কথা বলা হয়, 'হাঁ, এ কথা সত্য; জুতায় আসামীরই ঋসুলিটিপ পাওয়া গিয়েছে।' কিছ এ আসামী এ দিন সকালে হয়তো জুতা কিনতে গিয়ে এ জুতাটি দে পরীকা করেছিল এবং সবিশেষ পছক না হওয়ার কারণে দে আর উগ কিনে নাই। এ সময়ই তার আঙ্গুলের ছাপ ঐ জুতার বর্তিরে থাকবে। ঐ জুতার গ্রাহকটিও সমধর্মীয় বাক্তিবিধার অপরাধীটিকে সমর্থন করে বলবে যে, তার ঐ উচ্ছি সর্টের্নর সভ্যা, উপরস্ক আত্মপক্ষ সমর্থনে সে এও বসবে বে, পুর্বদিন কনৈক অজ্ঞাতনামা ব্যক্তি এ জুতা তাকে বিক্রম্ন করেছে এবং দন্তরমত খাভাপত্তে এই সম্পর্কে লিখে উচিত মূল্যে সে উহা ক্রয় করেছে। বছ দাজি ব্যক্তি প্রসার অভাবে এইরূপ জুতা বিক্রয় করে থাকে, স্মৃতবাং দে এই বিষয়ে একান্তরূপে নির্দোষ।

এইরপ অবস্থার আদাসতের বিচাবে উভর আসামীরই সন্দেহাতীত প্রমাণের অভাবে মুক্তি পাওয়াই বাভাবিক। এইবার এই বর্ত্তমান মুরোপীর এবং প্রাচীন ভারতীর তদস্ত-পছতির এবং সোপদীকরণ রীভির তুলনামূলক আলোচনা করলে বুঝা বাবে বে, ভারতীর পূলিশ সরল, সহস্ত ও অকট্য সাক্ষ্য প্রয়োগ করে এই উভর আসামীর বিক্তেই মামলা প্রমাণ করতে সক্ষম। উপবোক্ত ভারতীয় তদস্তরীতি অমুধাবন করলে এই সভাটি সমাক্ষরণে উপলব্ধিক বরা বাবে। এই ক্ষেত্রে তদক্তকারী অফিসার আদালতে সাক্ষ্য দিয়ে বলে থাকেন বে, আসামী তাঁর নিকট একটি বিবৃতি দেয় এবং ঐ বিবৃতি অমুধারী সে ঠিক বে স্থানটি হতে ঐ জ্বা চুরি গিরাছিল, সেই স্থানটি তো সে দেখিরে দেয়ই এবং উপরক্ত সে তাকে ঐ চীনাম্যানের দোকানেও নিয়ে গিরেছিল এবং ঐ আসামীর বিবৃত্তি অমুধারী হ'জন হানীর সাক্ষীর সমূথে সে ঐ দোকান হতে ঐ জ্বালাড়া উদার করতে পেরেছে। তদক্তকারী অফিসারের এই বিবৃতির সহিত ফরিরাদীর এবং তৎসহ ভলাগী-সাক্ষীক্ষের বিবৃত্তির বার্থ

অপরাধীদের বিক্লছে অপরাধ সহজে প্রমাণ করা গিরেছে। এই क्टात विচারকের মনে মাত্র এই প্রান্ন উঠবে বে, চোর নিক্ষে এ দোকান না দেখিরে দিলে এ অপস্তত জুতা ফিবে পাওয়া অসম্ভব ছিল এবং চোর নিজে না চুরি করলে সঠিকভাবে ঘটনাম্থানটিই বা সে विश्व बिट्ड भारत कि करत ? अतः छात्र निरक्ष वसन औ लाकान क्षे जाकानीत्क जिल्हा किरहारक का हरन के जाकानी किन्छ में जवा ভার নিকট হতে কিনেছে। এবং এরপ নিমুক্রেণীর ব্যক্তির নিকট ঐরণ দামী যুবোপীর জুতা বখন দোকানী কিনেছে তখন সে চোরাই দ্রান্ত্রপেই তা ভার নিকট হতে কিনেছে। এইভাবে জামবা জায়ও দেখতে পাবো বে ভারতীয় পুলিশ সাক্ষ্য পর্যন্ত নিজৰ পস্থায় মনস্তাত্তিক পরিবেশের ভিত্তিতে পরিবেশন করতে সক্ষম। এই স্থলে আমরা দেখতে পাবো বে, মুরোপীর পুলিশ কামান-বন্দুকের সাহাব্যে বে সাক্স্য অর্জন করেন, ভারতীয় পুলিশ ভার চেয়েও অধিক সাফ্সলোভ করে থাকেন বিজ্ঞহন্তে। তাই আছও প্রবীণ ভারতীয় श्रीमादा द्वाशीय श्रीमादाद कार्या-शब्द डिटक डेशराम करत राज থাকেন বে, তাদের কার্যালমূহ মশা মারতে কামান দাগা'র সম্পর্যাত্তে পড়ে। এইরূপ সাঞ্ল্যের সম্পর্কে যদি কেন্ত চান্দের কথা তুলেন ডা'sলে আমি বলব যে, উভয় পছডিভেই চান্দের ভাগ থাকে প্রায়ই সমান। তবে একথা সকলকেই স্বীকার করতে হবে যে ভারতীয় তদস্তবীতি অতি সরল এবং যুবোপীয় তদস্তবীতি অতীব বক্ৰ এবং উহা সময় ও বার সাপেক। বে সাফস্য ভারতীয় পুলিশ তদন্তের সারল্যের কারণে বিনামূল্যে অর্জ্রন করে, দেই সাফস্য যুবোপীয় পুলিশকে অর্জ্জন করতে হয় বহু রাষ্ট্রীয় মুদ্রার বিনিময়ে ! বাঁৱা অভিৰোগ করেন বে, ভারতীয় পুলিশ আসামী বা অভিযুক্ত ব্যক্তির বিবৃতিঃ উপর যত নির্ভয়শীল ভত নির্ভরশীল তারা অপরাধ সম্পর্কীর স্বত্রের উপর নম্ব ; তাঁদের সময় ও অর্থের এইরূপ অর্থা শশ্চয়ের দিকটাও ভেবে দেখতে আমি অমুরোধ করি। ভারতীয় আদাসত সমূতে প্রায়ই দেখা যার বে, অপরাবীর স্বীকারোক্তির ফলেই মামলা বিশেষের কিনারা করা মন্তব হয়েছে। কিন্ত ইচ্ছা করে কি কেউ নিজের মৃত্যুবাণ নিজে বাতলে দেৱ, ভারতীয় পুলিশ তবু তাদের মধ্যে নীতি ও ধর্মবোধ এনে তাদের বিরুদ্ধে অপরাধ व्यमान करत ना, जारमत माक्षा नीजि ७ वर्षाताव अस्त जारमत च्यातक দিয়ে থাকেন। ভবে আইনের দাস জারা তাই আদালতে এদের পেশ করতে তাঁরা বাধা। এর পর যদি আদালত তাদের শোধরাবার মুৰোগ না দিয়ে জেলে পাঠায় তা'লে ঔচিত্য বা অনৌচিছ্যের যা কিছু দায়িত্ব তা রাষ্ট্রের (ব্রিটিশ প্রবর্ত্তিত) আইন সভার। কারণ ষ্বোপের স্থার ভারতীয় আদালতসমূহও বাঁধাধরা আইনের দাস মাত্র : কিছ প্রাগ,-বিটিশ ভারতীর গ্রাম্য পঞ্চায়েত ও অব্যাস্ত আদাশতসমূহ এই সম্পর্কে সম্পূর্ণ ভিন্নত্রণ ব্যবস্থাই আংহমানকাল হতে করে এলেছেন। এ সম্পর্কে স্বীকার করতে বাধা নেই বে, ভারতীর প্লিশ অন্ততঃ এই একটি বিষয়ে (তাঁলের বিটিশ শাসকলের অজ্ঞাতেই) প্রাচীন ভারতীয় রক্ষিবর্গের ঐতিভ্ সংস্কার ও সংস্কৃতির অধিকারী। কোনও কোনও ক্ষেত্রে ব্যক্তি-বিশেবের মাধ্যমে এসে উহা বিকৃতরূপে প্রকাশ পেলেও অধিকাংশ ভারতীর পুলিশই অপরাধীদের প্রতি সভীব সহায়ুভূতিশীলভার পরিচর দিতে থাকেন।

এইবার ভারতীয় পুলিশ-মুলভ অভীব সহজ ভদভ-প্রণালী অভ্যায়ী

কিরপে অপর একটি ছ্রুছ মামলার কিনারা করা সম্ভব হয়েছিল ভা নিরে বিষ্কুত করা হল। ঘটনাটি ভারতীয় পুলিশের অসীম থৈবা, বৃদ্ধি ও প্রত্যুৎপর্বতিত এবং মনস্তাত্ত্বিক জ্ঞানের প্রিচায়ক।

কোন এক জল, সাহেবের বাড়ী হতে জাঁর এক পুত্রবধুর মূল্যবান খর্ণ-হার চুরি বার। আমাকে বিশেষ করে এই মামলার তদত্তে পাঠানো হবেছিল। আমি জঞ্সাংহব মহাশয়ের বাটাতে আসিলে ভিনি সাদৰে আমাদের তাঁৰ উপবের বৈঠকথানায় বাস্থ্য ভানালেন, এ মশাই, পাকা পেশাৰারী বাইবের চোরেরই আশ্চর্য্য, আমার মত লোকের বাড়ীতেও দিন তুপুরে চরি! ভাদেখুন, কি করতে পাবেন । বাপ্রে বাণ্! এ ভো এক ভীবণ কাণ্ড!' লাভ্ সাহেব আরও হয়ত অনেক কথা শামাদের শুনাতেন কিছ ইত্যবস্থে পাশের বর থেকে খবর এলো বে তাঁকে টেলিফোনে কে ডাকছে। তিনি চলে গেলে আমি 🛊 আমার সহকারী নিমুখ্রে এই চুরি সম্পর্কে কথাবার্ত্তা বল্ছিলাম এমন সময় আনাদের লক্ষ্য পড়লো একটি উভিয়া চাক্তরে দিকে। সে তুরারের এপারের বারান্দার থাবে ঘর ধোরার অভিলার জল ৩% বাগতি হাতে তুৱারের কাঁক দিয়া আমাদের বাবে বাবে দেখে राक्टिन; कामि এই দেখে निम्नयदा कामात्र সহকারীকে कानानाम, ঐ লোকটাকে তো স্থবিধের মনে হচ্ছে না, পাঁড়াও দেখি। এর পর ঐ উড়িয়া চাক্তটিকে কাছে ভেকে আমি বল্লাম, 'আয় এদিকে আয়। ভুই অত ভয় পাছিল কেন ? এঁয়া: তোকে তো আমগ ধরতে শানি নি ! বোস বোস, এইখানে বোদ । হাারে তোর দেশ কোধার, আছে কে কে তোর সেধানে ?' আমতা আমতা করে ভুতাটি জানালো বে তাৰ দেশ কটক জিলাব অমৃক প্ৰামে নাবালিকা জ্ঞা ও একটি শিশুকে সে বেখে এসেছে। ভার গ্লী ও শিওপুত্ৰেৰ কথা ওনে আঁভিকে উঠে আমি বলে উঠলাম, 'এ'গি বলিস কি বে ? বাড়ীতে ভোৰ সেই বালিকা বধু ও ঐ একরভি পুত্র আছে, আর ভুই এমন একটা কাল করে বসলি। আহা আহা, ভাই ভো কি কয়া যায় বল দিকি এখন। ভা ভো'কে তা'হলে তো একরকম করে বাঁচিয়ে দিতেই হবে। তোকে ভো বাপু দেখলে ভালো লোকই মনে হয়, ভা ছুই—' এইরূপ ভারও কিছুক্ষণ কথাবার্ত্তার পর ভূতাটি এমন একটি পরিম্বিভিত্তে এসে পড়লো বে সে অপরাব স্বীকার করে আমার পা জড়িয়ে ধরে বারে বাবে তাকে বাঁচিয়ে দেখার জন্ম আমাকে অফুটোর করতে থাকলো। ঠিক এই সময় জজ সাহেব সেইখানে এসে পড়ে তাঁর ঐ ভূতাটিকে के व्यवश्वात्र (मृद्ध व्यामादम्ब व्यष्ट्रहाश कृद्ध दमहम्ब, व्याद्य मुमाहे, আপনার আবার ওকে নিয়ে প্তলেন কেন? ও'লোক ধুবই ভালো ওকে ছেড়ে দিন। ভব উপৰ আমাদেব কোনও সম্পেহ নেই। বাবে, ভজু যা, বাঞ্চীর ভিত্তরে কাজ কংগে যা।' উত্তরে আমি क्क जाञ्चरक यनमाम, ना ७ कि इ कान ना। कर ७ अको লোকের ঠিকানা জানে, ভার বাড়ীটা তথু দেখিরে দেবে। একুৰি ওকে নিয়ে আমবা আবাৰ এথানেই ফিবে আসছি।' এর পর আর জলু সাহেবকে কোনও প্রতিবাদ করবার অবসর না দিয়েই আময়া ঐ উড়িয়া ভূত্যকে নিয়ে বাইবে বেরিবে এলাম। এর পর ঐ ভূত্যটি আমাদের চিৎপুর রোডে এলে সেধানকার এক সারি পোদারের দোকানের মধ্যে একটি অর্গল বন্ধ দোকান দূর হতে দেখিয়ে বললে

(व, त्र के चर्व-हांवि हिंब करव अपन के पिनहें के प्लांकान अक नक টাকা মূল্যে ভা বিক্লব্ব করেছে। এবং সে এ দিনই বিক্রবলব এক শত টাকা জ্বীপুত্ৰের গ্রাসাচ্ছাদন ও তাদের ভয়প্রার কৃটিব মেরামত করার জাতা দেশের ঠিকানার মনি অর্ডার করে দিয়েছে। বলা বান্ত্ৰ্যা, আমার সকল্টে বেউর্নীতে তদস্তবত ছিলাম। আমি সহকারীর জিম্মার উড়িয়া ভৃত্যটিকে দূরে সরিয়ে দিয়ে সাধারণ নাগৰিকের বেশে পার্শবর্তী দোকানের এক ব্যক্তিকে বিজ্ঞানা করলাম, 'জাজ্ঞে মশাই এই দোকান তো বন্ধ দেখছি, কিন্তু এব মালিকের থাসার ঠিকানা বলতে পারেন ?' এই সব কয়টিই माकानीहे हिन अक मरनवहें मनी, छात्मव वावनावहें इस्क होताहे গহনা কিনে ছবিত গতিতে তা গালিবে ফেলা। এই কাবণে এই খানের কোনও লোকানীই—এ ভদ্রলোকের টিকানাটা জেনেও তা বলতে চাচ্ছে না বুবে আমি ব্যক্তভার সঙ্গে বলে উঠলাম, এই মুক্তিলে পড়া গেলো মুশাই। ভদ্রলোকের মাতাঠাকরণ ওঁর বর্তামে মাবা গেছেন। আমি তাঁর সেই প্রাম থেকেই তাঁকে খবর দিতে এমেছি।'—'e: ভাই নাকি,'—এই বধা ওনে এ'দের একজন বলে छेऽलिन, 'চলে বান नीश्रशिव छा'इला। अँव ठिकाना इल्ह अगुक লেনের অত নম্ব বাড়ী।' এই কথা ওনা মাত্র আমবা ছবিত গতিতে ভদ্রলোকের ঐ টকানার এসে তাঁর নাম ধরে ডাকাডাকি পুৰু করে দিলাম। কিন্তু সেই ভদ্ৰগোক ছিলেন একজন অত্যন্ত চালাক ব্যক্তি। সহস। তাঁব নাম ধবে ডাকার বোধ হয় তিনি সন্দেহই করে থাকবেন। ওদিকে ঐ বাড়ীর অকাক্ত ভাড়াটিয়ারাও আমানের বিশেষ আমল দিতে চান না বলেই মনে হল। অভগুলো ব্যের এক একটিতে এক একটি পরিবার শাস করে। কোন ব্যটিতে বে এ ভদ্রলোক থাকেন তা প্রথমে খুঁছে বার করা দরকার। এদিকে আমাদের থোঁজা-খুজির বছর দেখে ভদ্রলোকটিও হয়ত গা-ঢাকা দিরে সরে পড়তে পারেন। আমি তথন चात्र व्यानका ना करत वाच्छ इरद (हैहिस्स छेर्रनाम, चारत मनाईस দাঁড়িরে দেখছেন কি ? শীগ্রিব অমুক বাবুকে ডেকে দিন। আমি চিৎপুর বোড খেকে আসছি, তাঁর দোকানে আগুন সেপেছে।' আগুন লাগার বার্ত্ত। কানে যাওয়া মাত্র ভক্তলোকটি কোণের একটি বর বেকে मग्र श्रम ও গাড়েই বেরিরে পড়ে বলে উঠলেন, এটা ; कि বললেন আগুন লেগেছে ?' বলা বাছগা তিনি আঁৎকে উঠে বেবিয়ে আগা মাত্রা षाषदा डाँदर (श्रष्ठांव करत यत डिर्फनांम, 'बाख्ड ना बांगवा भूनिन। দেখুন ভো, চেনেন ঐ উড়িয়া ভৃত্যটিকে?' এরপর ভদ্রগোকটিকে একখন পশ্চানাগত সিপাহীর জিম্ব। করে দিবে ভদ্রলোকের কক্ষে চুকে काँव खोटक वननाम, 'बास्क, खरत्रव किंदू निरु । वे छात्रही अ नव কিছু না জানিয়েই একটা গহনা এঁকে বিক্রী করে গিয়েছে। গহনাটা আপনি আপনার আলমারী থেকে বার করে দিন, ডা'হলেই বা কিছ গশুলোন ভা চুকে বাবে।' এর পর আরও একটু বুনিয়ে বলাতে ভদ্রলোকের স্ত্রী গছনাটি তাঁর আলমারী থেকে বার করে এনে আমাদের হাতে ঐ বাটাবই ছই জন সাক্ষীৰ সামনে তুলে দিয়েছিলেন।

এইবানে ভারতীর পুলিশদের মনস্তাত্ত্বিক জ্ঞানসহ সমাজবিজ্ঞান সম্পার্কীর জ্ঞানেরও পরিচর পাওরা বার। ভারতীর পুলিশ জানে, প্রথমেই অপরাধীমন্ত ব্যক্তিকে ভার অপরাধ সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করলে কোনও কল হব না। ভার সহিত অপরাধের সম্পর্ক বহিত কথাবার্ড। প্রথম বলা দরকার। এইরূপ কথাবার্তার মধ্যে তার মানসিক ভূর্বলতা সম্বদ্ধে জ্ঞান্ত হওয়ার পর তার চিত্তপ্রস্তৃতি (Predisposition) অমুবারী তার প্রতি প্রয়োজনীর বাক্যাবিজ্ঞান প্রয়োগ করলে তবেই নে তার এক ত্র্বল মুহুর্তে জপরাধ-দুম্পর্কীর এক স্বীকৃতি প্রদান করবে। ছ'ছাড়া ভারতীর পুলিশ ইহাও অবগত জাছে বে, ভারতীর সমাজে কোনও কোনও পুক্ষরা অপরাধ-প্রথণ হলেও তাদের স্ত্রীরা প্রায়শঃক্ষেত্রে অপরাধীকে যুগান্ট করে এসেছে। এইজন্ম এক শ্রেণীর অভ্যান, অপরাধীর তাদের আপন আপন স্ত্রীর অভ্যাতেই অপরুর্ম্ম করে থাকে। এই বিশেব ক্ষেত্রে অপরাধীটির স্ত্রী সরল বিশ্বাসে এই ভাবে পুলিশকে সাহার্য করেছিল। অপরাধীটির স্ত্রী সরল বিশ্বাসে এই ভাবে পুলিশকে সাহার্য করেছিল। অপরাধীটি তার স্ত্রীকে বথা সময়ে সাংবান করে দিতে পারলে অবক্স সে এইরূপ সাহার্য পুলিশকে করত না। কারণ একক্সন ভারতীয় স্ত্রী স্থামীর জীবন ও মান রক্ষার অক্স বে কোনও কার্য্য করেত প্রত্য ইহাও ভারতীরসমাজ-বিজ্ঞানের একটি বিশেষ দিক। এই কারণে প্রত্যুৎপন্ধমতিতে সহিত ঐ বক্ষিপুক্সর তাঁর স্থামীকে অগ্রেই তাঁর স্ত্রীর সন্ধিধান হতে দূরে সরিয়ে নিয়ে গিয়েছিল।

এইভাবে আমরা দেখতে পাবো বে, যে বীতিতে ইঙ্গস্থানীর পুলিশ তদম্ভ করে দেই বাঁতিতে ভারতে তদস্ত-কার্য্য করা হয় নি। ইহার কাৰণ সম্বন্ধে ইতিপূৰ্ব্বেই আমি বলেছি। এইজন্ম ভাৰতীয় পুলিশকে অপবাধী ও তাদের গোষ্ঠীয়দের আচার-ব্যবহার রীতিনীতি ভো জানতে হয়েছেই, উপরত্ব ভারতীয় নিরাপরাধ মত্য সমাজেরও রীতিনীতি সম্বন্ধে ভাষের অবহিত হ'তে হয়েছে। কোনও অপরাধ সংঘটিত হওয়া মাত্র ভদস্ত-কার্যা স্থক হলে যুরোপীয় বৈজ্ঞানিক প্রাস্মূহ যে বিশেষ কাৰ্য্যকরী তা'তে সন্দেহ নেই। কিছ এমন বহু অপরাধ সংঘটিত হয়েছ ষাহার থবর পুলিশের কাছে ছরমাসের পর কিংবা এক বৎসর পরে পৌছিরেছে। এই ক্ষেত্রে এমন কোনও স্থত্তের সন্ধান আয়ই পাওয়া ষায় নি হার উপর বৈজ্ঞানিক পরীক্ষা চলতে পারে। এইরপ কেত্রে ভারতীঃ পুলিশের নিজম্ব তদস্তরীতিঃই প্রয়োজন সর্বাধিক। তবে ভারতীয় পুলিশ বৈজ্ঞানিক পদ্বাসমূহের উপর সম্পূর্ণরূপে নির্ভরশীল না হলেও প্রয়োজন মন্ত তারা সকল ক্ষেত্রেই তদস্ত-কার্য্যে বিজ্ঞানের সাহায়া নিয়েছে। বিশ্ববিধ্যাত পদ-চিহ্ন'শান্ত এই দেশেরই প্রাচীন বংশারুগভা টিটেকটিভগণ কর্ত্তক স্বষ্ট। আঙ্গুলের টিপ-িফ শাস্ত্রও नर्स्तव्यथम এই দেশে रुष्टे इत्य अहे प्रत्महे नर्स्तव्यथम ठानू करा इय । বন্ধীর ফিলার প্রিণ্ট ব্যুরো পৃথিবীর মধ্যে সর্বাপেক। প্রাচীনভম ব্যুরো। উক্ত বিজ্ঞানম্বর সহ, অপশন্ধতি বিজ্ঞান, ফোরেন্সিক শাস্ত্র, প্রভৃতি বিভিন্ন অপবাধ-তদন্ত সম্পর্কীর আধুনিক বিজ্ঞান সমূহের সাহাধ্য অধুনাকালে যুয়োপীয় প্লিশের ভার ভারতীয় প্লিশও গ্রহণ করে থাকে। তবে ভাদের এই সকল শান্তকে ভারতের উপবোগী করে ঢেলে সাজিয়ে নিতে হয়েছে। কিছ তা সংস্ত ভারতীয় পুলিশ ভদন্ত-কার্য্যে নিজেদের মূল পছতি আন্তও ভাগে করে নি। আমি এই কাহিনীসমূহে যে সকল বিখ্যাত মামলার তদস্ত ও উহাদের বিচাবের কাহিনী বিবুত করবো তাহাদের প্রায় সব কয়টির ভদত্ত, অধিক ক্ষেত্ৰেই ভারতীয় নিজস্ব ভদস্ত পদ্ধতিতে পৰিচালিত হয়েছে।

> —আগামী সংখ্যায়— প্ৰাগলা হত্যা মামলা

ত্ব পরিচালনাই বলুন, অনহত্ত অভিনয়ই বলুন বা কলাকৌশলের চমৎকারিছই বলুন—এক দিক দিরে দেখতে গেলে
ছবির সাফল্য সম্পূর্ণ ভাবে নির্ভর করে দর্শকদের ভাল লাগার
উপর, দর্শকদের নির্বাচনের মধ্যেই ছবির সাফল্যের চাবিকাঠি।
সক্ষ দিক দিরে ছবি পূর্ণ হওয়া সভ্তেও যদি সে দর্শকদের দরবারে
গৃগীত্ব না হয়—ভেবে দেখুন ভা হলে—এক দিক দিয়ে দেখতে
গেলে ছবি বার্থ। ঈশবের করুণায় কুমকুম দর্শকদের কাছ থেকে
প্রচ্বাপরিমানে সমাদর পেল—অভিত্র সমালোচকের দলও কুমকুমকে
সভ্ত. শুর্ঠ অভিনন্ধন জানাতে কুঠাবোধ করলেন না। দর্শক-সমাজে
ঠাকুরের আনীর্বাদে, বিপুল সমাদরে গৃগীত হ'ল কুমকুম।
আমাদের জীবনকে বেইন করে সেই একই কর্মের চক্র প্রাক্ষণ
করতে থাকে, ভাতে লাগে না কোন পরিবর্তনের ছোঁষাচ।

বদতে বাধা নেই, সমান, খাভি, হশ সেই সময়ের মধ্যেই আমি যা পেয়েছিলুম তা ধারণার অতীত, আমাকে দর্শক-সমাজ বে এর সমাস্বের সংক্র গ্রহণ করবেন তা আমি ইত:পূর্বে ভারতেই পারি নি। আমার মত একজন নগণ্য শিল্প-উপাসিকার প্রচেষ্টা বে দর্শক-স্বাক্তকে তৃত্তি দিতে পারবে-এ আমি সভ্যি বলছি স্থাপ্ত ভাষতে পারি নি কিন্ত আজও ব্যতে পারি না কেন-কি কারণে-কি জ্ঞাত ভই স্মান, এই থাতি, এই বল আমার মধ্যে কোন বিশেষ প্রতিক্রিয়া সঞ্চার করতে পারে নি, খুব ষে काराय काकर्रन करवाह छाउ मन्न इय नि, कामाव मन श्व अकहा রেখাপাত করতে পেরেছে বলেও বোধ হয় না, কিছু দর্শকের মতাৰতের উপর আমার সুগভীর আস্থা ভাতে বিন্দুমাত্র কমে বাঃ নি, আমার সম্বন্ধে দর্শকের স্থাচিন্তিত মতামত আমি আশীর্বাদের নামান্তর বলেই ভেবে এসেছি। বৈচিত্রোর মধ্যেই জগতের সৌন্দর্ব, এ-9 বোধ হয় সেই শাখত সভ্যের একটি উদাহরণ বিশেষ। আজ প্রৌচ্থের কেন্দ্রবিন্তুতে অবস্থান করেও কিছতে আমার বোধগম্য হচ্ছে না কেন সেদিন সাধারণের দেওৱা সন্মান আমার মনে বেধাপাত কবতে পাবে নি, এই বছস্তের স্ক্রসন্ধানে এখনও আমাৰ মন মাঝে মাঝে মেতে ওঠে। নিজেকে সরিয়ে রাধার ম্পাহা আমাৰ বাল্যকাল খেকে, এক কথাৰ চিবকাল ৰে কোন ব্যাপারে নিজে সম্পূর্ণ ভাবে ঋড়িত থেকে, ওতঃপ্রোভ ভাবে ভার সঙ্গে মিশে থেকে আশ্চর্য ভাবে নিজেকে তার্ট মধ্যে থেকে আবার স্বিবে বাধা আমার স্বভাবই বলুন ইচ্ছাই বলুন বা চারিত্রিক বৈশিষ্টাই বশুন। স্নার্থিক চঞ্চলতাও এর জ্ঞাকে কম দারী-এমন কথাও জোর দিয়ে আমি বসতে পাবি না; বোধ হয় সেই জন্মেই আমার মনে হয়, সাধারণ দর্শক আমাকে সশরীরে ধুব বেশী একটা দেখতে পেতেন না। ব্**হল**নের ^ইস্মিসন থেকে নিজেকে দূরে স্বিয়ে বাধার স্পৃতা আমার মধ্যে ছিল সম্ধিক, আর সেই স্পৃতার বিকাশে বৰ্ণেষ্ট পরিমাণে সহায়তা করল আমার স্নায়বিক চাঞ্স্যবোধ। আমাকে বারা স্নেহ করেন, আমার বারা গুভাকাতকী, আমার অভিনয়ের বারা উৎসাহদাতা, সেই সাধারণের মারখানে নিজেকে মিশিরে দেবার অঞ্জল্প স্থবোগ এসেছে আমার জীবনে, বিভিন্ন অনুষ্ঠান উপলক্ষ্য করে বিভিন্ন স্থান থেকে, বিভিন্ন প্রক্ষিষ্ঠান মারফং অক্স আমন্ত্র আমার কাছে, জানি না সে আমন্ত্ৰণ বকাকরতে আমার মন উলুধ হবেছে কিনা। ভবে এটুকু বেশ জানি বে বলি বা কথনও সাধারণের জামন্ত্রণে আমি সাড়া



স্মৃতির টুকরে৷

[গ্ৰ-প্ৰকাশিতের পর] সাধনা বস্থ

দিতে গেছি দকে সঙ্গে আমার কঠবোধ করেছে আমার আবাল্য-লালিত নিজেকে দূরে সরিয়ে রাধার স্পৃহা। আমার মধ্যে বিশেষভাবে তখন জেগে উঠল এক অস্বাভাবিক সাহবিক চাঞ্চল-বোধ। কিছ সেদিনের আমির সঙ্গে আঞ্চকের আমির আকাশ-পাতাল ব্যবধান। ধ্যান ধারণা, চিস্তা কল্পনা, স্বপ্ন দৃষ্টি, ভাবছঙ্গীর দিক দিয়েও সেদিনকার সাধনার সঙ্গে আক্রকের সাধনার কোনও মিল্ট পাওয়া যায় না, আজকের সাধনার কাছে সেদিনের সাধনা ওণু স্বৃতি ওধু ইতিহাস, ওণু পিছনে ফেলে জাসা বুগ তাই সেদিনকার সাধনার এই আচরণ আজকের সাধনার মনে জন্ম দের এক অবর্ণনীর অমুশোচনার, আজকের সাধনা ভাবছে যে সেদিনকার সাধনার এই আচরণ বোকামী ছাড়া কিছুই নয়, ভ্রান্তির পরিচায়ক সেদিনকার সাধনার সেই আচরণের জন্তে আলকের সাধনা সবিশেব অমুতপ্ত। সভিচ কি ভূগই না করেছি তথন ? আজ ভার আজ অফুতাপ কর্ছি, কিন্তু এই অফুতাপের পূর্বাভাগ বদি সেদিন পেডুম এবং সেই অনুসাবে বদি চলতে থাকতুম তা হলে নিশ্চরই আজ আমাকে বেদনার বাণে বিশ্ব হতে হোত না। এই প্রসংক আজ त्रव (ठरव (वने घरन भक्षक वावादक "Chautaux Marine" ब সে সমরে ভিনি আমাদের কাছেই ছিলেন। সাধারণ্যে আমি বাতে বথেষ্ট মেলামেশা করতে পারি সেজতে বাবার সে কি আগ্রহ. কি তৎপরতা, কি ব্যাক্ষতা যা ভাবলে আল ছ'চোৰ দিয়ে ক্রমাগত জলের ধারা নামতে থাকে। আমার বেশ মনে আছে, সাধারণ্য মেলামেলার বাসনা আমার মনের মধ্যে চুঢ়ভাবে প্রতিষ্ঠিত করার জ্ঞান্ত বাব। প্রায়ই বলতেন, "পোষ্টপনমেন্টস আব ত ওরাসটি মিসটেক ওয়ান কুড মেক সাধনা"— তবু মনে আছে বললেই ভুল इत् कथांकि राम कर्गकृहत्व विश्वकारणय करण श्वातिक निरम्रह् ।

জামার প্রকৃতির একটি দিকের খাবোদ্বাটন করলুম আপনাদের সামনে কিভ আমার সনির্বন্ধ অন্ধ্রোধ এই বিবরণী থেকে কেউ বেন না ভাবেন বে আমি মিণ্ডকে নই। সাধারণ্যে মেলামেশা ক্রভে আমি সংকাচবোধ কয়তুম কিছ তাই বলে এ ধাংণাও আমার
সম্বন্ধে প্রব্বেষ্ট্র নর বে, লোকের সঙ্গে আমি মিশতুম না ি তবে
কি আনেন, সবই একটা নির্বাধিত গণ্ডীর মধ্যে। বামায়ণ মনে
কলন, গণ্ডীর মধ্যে সীতার প্রম শান্তি কোন ভর নেই, বেমন
ভাবে ইচ্ছে চলাফেরা করতে পাবেন, গণ্ডীর বাইরে পা দিরেছেন
কি সাভ্যাতিক বিপদ, আমার বেলারও কথাটা নেহাৎ অপ্রবোজ্য
নয়। আমার বন্ধু-বান্ধরী অনেকেই ছিলেন, সংখ্যার দিক থেকেও
ভারা নগণ্য নন, ভাঁদের সঙ্গে আমার মেলামেশাও ছিল বেমনই
গভীর তেমনই নিবিড়। কিছ এ বে আগেট বলেছি—গণ্ডী—সবই
সেই সীমার মধ্যে, সীমা অভিক্রমণ ভো বাস অমনি সঙ্গে সঙ্গে

রাজ্যের সংকাচের সক্ষমৰ আক্রমণ। সেই বন্ধুদের কথাও কি আজ কম মনে পড়ছে, তাঁদের কেন্দ্র করে কতগুলো দিন বে কি আনন্দের মধ্যে কেটেছে তা বক ভাবছি অলস মুহূর্ভগুলো বেন তত ভারাক্রান্ত হরে উঠছে। তাঁদের মধ্যে বাঁবা মৃত, তাঁবা তো আজ সর্বপ্রকার বরা-ছোঁওরা. আসা-বাঙরা, বোগাযোগের উধে, তবে বাঁবা আজে ইহলোকে বর্তুমান সেই সব দিনগুলোর সাক্ষী হিসেবে—কালের চক্রে তাঁবা কে কোখার চতুদিকে ছড়িয়ে আছেন তার না আছে ঠিকানা, না আছে নিশানা না আছে সঠিক সন্ধান।

Chautaux Marine এ আম্বা ছাড়া চিত্ৰজগতের আৰও বহু জন বাস ক্ষতেন। প্ৰাধাত প্ৰবোজক প্ৰিচালক মিঃ কাদ্যি,

> অনামণ্ডা গারিকা ও অক্তম প্রথম মহিলা প্রবোজিকা পরিচালিকা জদ্দন বাঈয়ের নাম এ প্রসংক মনে পড়ছে। আর ই্যা-ই্যা এই প্রদক্ষে আর একজনের কথা 'বেশ স্পষ্ট মনে পড়চে। একটি মেয়ের কথা, তখন সে বালিকামাত্র, टेकटबारदात्र चार्क्यां एक উপনীতা। সমুদ্রের দিকে মুখ করা আমার বারাক্ষা থেকে সেই ফ্রক পরা মেয়েটিকে এদিক-দেৰিক ছুটোছুটি করে প্রায়ই খেলতে দেধতুম। সে দৃগু তো আমার চোধের সামনে ভাসছে। তার নাম উল্লেখ করা মাত্রই আপনারা ভাকে চিনভে পারবেন, কারণ চলচ্চিত্র-জগতের একজন প্রথম শ্রেণীর অভিনেত্রী হিসেবে সারা ভারতে এবং ভারতের বাইরেও আজ সে স্থপরিচিতা। পুর্কোন্ডা জন্মৰ বাইবের মেয়ে সে। তার নাম এই মতী ক্ৰমশ:। নাৰগিন।

অমুবাদ-কল্যাণাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়

অপুর সংসার

দিকপাল সাহিত্যশিল্পী বিভৃতিভ্ৰণ বন্ধোপাধারের স্প্রেথমী লেখনীর জনবল নিদর্শন অপু-কাহিনীর চলচ্চিত্রারণে এইবার সমান্তির বেখা পড়ল। অপুর মাড়বিরোগ প্রভা ছবি অপরাজিততে দেখান হরেছে। এখানে, এই ছবিতে ছালর প্রধানশে শালা অঞ্চলে এক ভাঙাটে বাড়ীর জন্তম বাশেলা, জীবেকাষেমী এবং গৃহস্বামীর শিকার হিসেবে অপুকে দেখানো হাছে পরবতী আংশে দেখাট বন্ধু প্রণবের এক বোনের বিবাহোপসকে বন্ধুর সালে বিরে বাড়ীতে অপু গেল ও ঘটনাচকে পাত্রীকে দেই বিরে করে নিয়ে গোল—এবং তর্ক হ'ল ভাদের মধুম্ম দাম্পতাজীবন, তারও পরবর্তী আংশে দেখছি সন্তানের জন্ম দিয়ে



গীতা পিক্চার্য (প্লাইডেট) নিমিটেড পরিবৈশি

পরবর্ত্তী আকর্ষণ।

রূপবাণা

অরুণা 🏭 - ভারতাতে 🟥

অপর্ণার লোকান্তবারা ও সেই সংবাদে অপুর মধ্যে এক বিশেষ পরিবর্তনের ঢিছে দেখা বায়, এবং সে বেরিরে পড়ে বাজী থেকে, বছর পাতেক বাদে অনেক অন্থুসন্ধান করে প্রণব তাকে খুঁজে পায় বহু দ্বে কোন একটি স্থানে উদাসনয়ন অপুকে, অপুব মুখমগুল তথন গোঁক-দাভিতে ভর্তি। পুত্রের সম্বন্ধ অপু বেন কেবদমান্ত টাকা পাঠিয়েই খালাস। অপর্ণার মৃত্যুর মঞ্জে পুত্রকেই সে দায়ী করে, প্রণব খুব দক্ষতার সঙ্গে অপুন-মন্দন কাছল সম্বন্ধে অপুব চেতনার গভীবে ঘা মারে; সর্বশেষ অংশে দেখছি মন্তবালরে অপুব আগমন ও অনেক সাধনার পর সদা পলায়নপর পুত্রের সক্ষে শিতার বহু আকাজিত মিলন ও পুত্রকে নিয়ে কলকাতা ভিরিপ্রথ অপুব যাত্রা।

অপু-কাহিনীর অমর স্রধ্ন বিভৃতিভ্রণের লেখনীবাত একটি লাইন আৰু বাব বাব আমাদের মনে পডছে—"গতিই জীবন, গতিব দৈয়ই মৃত্য"—থাবাই জাঁব কাছে স্বাক্ষরের জন্তে খাতা পেল করতেন তাঁদের প্রত্যেকের খা চাতেই (আমরা যতদুর জানি) বিভৃতিভূবণ এই কথাটিই লিখে দিতেন। গতির উপাসক বিভৃতিভূরণের অক্তম শ্ৰেষ্ঠ সাজিতাকীভিত্ত পৰিণতি-অধ্যাহের চিত্রায়ণে গভিত্ত অভাব বে কভথানি ব্যাপক ভাবে ঘটতে পারে, তা বলে বোরানো বার না। ভবে দে বিষয়ে বারা মনে মনে জিজ্ঞানা পোষণ করেন, "অপুর সংসার" कीरण्य मिहे बिकामाय (अर्ड ऐखर । जीमा करे ? अनुत व हिस्टिय বিভূতিভূষণ রূপ দিয়েছেন, সেই চরিত্রের সার্থক বিকাশে দীলার আবির্ভাব অপবিহার্ব, লীলাকে বাদ দেওবার ফলে অপু-চবিত্রের সম্যক প্রস্টন অসম্পূর্ণ, অপু-চরিত্রে সীলার প্রভাব অসামার। অপু-চবিত্রের উপর স্বচেরে অবিচার করা হয়েছে অপুকে দিয়ে এ চড়টি মারিরে। ঐ পরিবেশে চড়টি মারানোর ফলে ছবির গুরুত্ব, সম্ভয়, मर्वाण (व कारमद शरदद मज धृतिमार इस्त भएएक, এ दिवस्त कि সংশহ থাকতে পাবে ? চিত্রপরিচালক ছাড়াও সভাজিৎ রায়ের আর একটি পরিচয় আছে তিনি লিপ্ত্রী, শিল্লিমনের অধিকারী একজন শিল্পীৰ খাৰা এ জিনিষ হে কি করে সম্ভব হ'ল খীকাৰ করছি সভিচই ভা আমরা বুরে উঠতে পার্ছি না। প্রহারকে বদি শোকের অভিব্যক্তি বলে মেনে নিতে হয় তা হ'লে সব চেয়ে অপমান করা হর মাছবের আত্ম-অমুভ্তিকে। পুৰিবীর মধ্যে অপুর সব চেরে প্রির অপর্ণ। তার মৃত্যু অপুর কাছে নিজের মৃত্যুরই নামান্তর। সচরাচর মহব্যসমাজে আমরা দেখে থাকি বে এই অবস্থায়, আক্মিকভাবে এই সংবাদ প্রবণে মান্তব হতবাক হয়ে পাধ্যের মত হ'য়ে বার, জন-প্রত্যক তার জন্ম হ'য়ে বায়—: দ হ'লে বায় বিমৃত, প্রাণ খুলে ভথন সে কাঁদতেও পারে না-শে অবস্থার তার মনে প্রহার-প্রবৃত্তির উৰ্ব অস্বাভাবিক। তবে হাা, ষ্টেশনে অপুৰ কাছে অপুণাৰ শেষ বিদারদৃশ্রটি পরিকরনা ও পরিবেশন হারয়কে বিশেবভাবে স্পর্ণ করে। এই দুরুটিকে সাফল্যের স্বাক্ষর হল। বার।

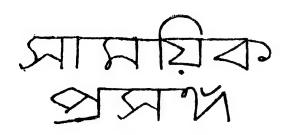
সত্যজিৎ বার প্রবোজিত—পরিচালিত এই ছবিতে প্ররকাররণে দেখা গেল পশ্তিত রবিশঙ্ককে আলোকচিত্র গ্রহণে অসামাল নৈপুণ্য প্রদর্শন করেছেন প্রবৃত্ত মিত্র। তাঁকে আন্তবিক অভিনন্দম আমরা আনাই।

নায়ক-নায়িকার ভূমিকার উত্তর শিল্পীতই এই প্রথম চিত্রাবতরণ।
অভিনয়ের ক্ষেত্রে উপস্থানের পাঙ্গিপির পাতাগুলি হাওয়ার উড়িয়ে
দেওরার দৃশ্যে অবিশ্বরণীয় অভিনয় প্রতিভার পরিচয় দিলেন সৌমিত্র
চটোপাধার আর চড় মারার দৃশ্যে অভিনয়ে সব চেরে ব্যর্থটা বরণ
করলেন সৌমিত্র। ঐ দৃশ্যটিতে তাঁর অভিনয় অভি পীড়ালার্ক
আর বলেই কুত্রিমতালোধে হুই। অপুণার ভূমিকার রূপ দিরেছেন
শ্মিসা সাকুর, প্রণবের ভূমিকার নবাগত স্পন মুখোপাধ্যার যথেই
গান্তীর্বৃত্তি অভিনয় করে চিন্তিটির মর্বাদা অনুত্র বেণেছেন।
এ ছাড়া ধীবেল ঘোষ, ধীবেশ মন্ত্র্মার, শান্তি ভটাচার্য, ভ্রার
বন্দ্যোপাধ্যার, পঞ্চানন ভটাচার্য, বেচু সিংচ, শেফালিকা, বেসারণী,
আশা প্রভৃতি শিল্পীনের বিভিন্ন চরিত্রে অভিনয় করতে দেখা গেছে।
ছবিটি নায়কপ্রধান এবং ছবিটিকে one man show ব্লুকেও
অত্যুক্তি হর না।

কুধার পাঁচ শ' সাত রজনী অভিক্রেম

বাঙলাদেশে একটি নাটকের পেশাদারী ভাবে একটানা মঞ্চাভিনয়ের সর্বোচ্চ বেকর্ড স্থাপন করল "কুখা" অল্পকাল আপে পাঁচ দ' সাত অভিনয়-বাত্তির অভিক্রমণে। এব আগে আব কোন নাটক একই ম:ঞ নিববছিল ভাবে এতকাপ ধরে একটানা অভিনীত হওয়ার সৌভাগ্য লাভ করে নি। সে জভে কুধার সাফলা নি:সংক্ষতে অভিনন্দনযোগা। এই 'উপলব্দে বিশ্বরপার এক প্রীত্তি উৎসবের সর্বাঙ্গস্থন্দর আরোজন করা হয়। সভায় সভাপতি ও প্রধান অভিবির আসন অবক্ষত করেন মন্ত্রী প্রীবিমলচন্দ্র সিংহ ও পৌরপ্রধান 🕮 বিজয়কুমার বন্দ্যোগাধার। অমুঠানে বক্তভা করেন প্রদ্ধাভালন খ্রীছেমেন্দ্রপ্রসাদ বোব, জ্রীশচীন সেনগুর, জীলহীক্র চৌধুরী ও লীহেমেন দাশগুর। সভাল্পে অভিনয় শুকু হয়। ঐ দিন ঐ উৎসব উপলক্ষে বিশ্ববর্ণায় সাহিত্য অগতের, অভিনৱ জগভের ও মহানগরীর বছ বিশিষ্ট ব্যক্তি ও স্থীর আগমন ঘটেছিল। অনুষ্ঠানে বিশ্ববপার অক্তম কর্ণবাব প্রীয়াসবিহারী স্বকার স্কলকে স্বাগত জানান ও অভ্যাগতদের শ্রেতি যথেষ্ট বছ নেন। এই অমুষ্ঠানের কয়েক দিন পরে বিশক্তপার চতুর্ব প্রতিষ্ঠা বার্বিকী উপদক্ষেও এক প্রীতি সমেলনের আয়োজন হর দেদিন সভাপতি ও প্রধান অতিধির আগনে দেখা গিয়েছিল ব্যাক্রমে গ্রীষহীক্র চৌধুনীকে ও জীল্ফু মিত্রকে। কুধা নাটকটিকে পূর্বে আমবা আলোচনা কবেছি সেই অন্তেই এবাবে বিশ্ব আলোচনা ধেকে বিষত বটলুম ৷ তবে এ কথা বার বার বঙ্গি— জুগার মত যুগোপবোগী তাৎপ্রপূর্ণ নাটকের জ্বরাত্রা পরোক্ষ ভাবে ভাতীয় শ্ববাতা। সংস্কৃতির পূজারী বাঙাগী উচ্চাশ্রণীর এবং ক্ষমপূর্ণ শিলোপহার আবেদনে সাড়া দিতে কার্পণা করেন না, ফুবার বিজয়বৈজয়ভাই প্রমাণ। বাঙালীর জাতীয় জীবনের কল্যাণকলে কুণার অন্তর্নিহিত বক্তব্য আবেদন ও আদর্শ এবং কর্তৃপক্ষের ভভপ্পচেষ্টা नर्रकाछार्य नाकनापूर्व उ सर्युक्त होक - नर्राजीन ভाবে आयरा এই কামনাই করি।

ৰ্বিধ অনুবাগে—অনুষ্ঠানে নছে। প্ৰগৱেৰ পৰিত্ৰ ও অবপট কোমই ধৰ্ব।" —ৰামী বিবেদানৰ।



ফাঁকি।

"প্রতিমবঙ্গে রাজ্যব্যাপী হ্বতালের প্রতি সহায়ুজ্তি জানাইয়া মন্ত্রীরা কি গত বৃহস্পতিবার হ্বতাল পাসন করিবাছিলেন ? বাপ্ত-মন্ত্রী ও উপমন্ত্রীদের মধ্যেও অবিকাংশ প্রমুপন্থিত ছিলেন; করেকজন আবার একবার করিয়া কাজিয়া দিয়া চলিয়া পিয়াছিলেন। একমাত্র পুলিশ দপ্তবের মন্ত্রী প্রীকালীপদ মুখোপাধ্যায় ব্যারীতি দপ্তবে হাজির ছিলেন। একা কুম্বের উপর নকল বুঁদিগড় রক্ষার ভার পড়িয়াছিল কেন কে বুলিবে? অভতঃ মুখোপাধ্যায় মহাশয় এই অবস্থার কোন কারণ ব্যাখ্যা করিতে পারেন নাই। অনেকে বলিতেছেন, অবস্থা অনেকটা বামুন গেল অব তো লাওল তুলে ধর গোছের। কণ্ডা দিল্লী, তাই কাজে কাকি দিবার লোভ কেইই নাকি সামলাইতে পারেন নাই।

--- দৈনিক বন্ধভী।

উপদেশায়ত

ক্ষেত্রার রেলমন্ত্রী প্রীজগঞ্জীবন বাম গরা বাজেন্দ্র-আপ্রমে ক্ষেত্রেসক্ষীদের এক সভার বক্তৃতাকালে বলেন, কংপ্রেসক্ষীদের উচিত, অপরের দোব দেখানোর চেরে নিজেদের দোব সংশোবনেই বেশী অবহিত হওরা। কেননা, তাঁহার মতে, সরকারী মহল অপেক্ষা অনেক কংপ্রেসী আছেন, বাঁহারা দশগুণ বেশী তুনীতিপ্রস্তা। প্রীজ্ঞপঞ্জীবন রামের এই ভাবণের লক্ষ্য কাহারা জানি না। নিক্ষর তিনি এই হিত্তবাক্য কেরালা কংগ্রেসীদের উদ্দেশে বলেন নাই। আর সরকারী মহলের তুলনার বে কংপ্রেসীদের মধ্যে তিনি দশগুণ তুনীতিপরারণতার সন্ধান পাইরাছেন, নিক্রর সে তালিকার তিনি কংগ্রেসী মন্ত্রীদের ধরেন নাই! প্রেক্সই সমালোচনা ত তাহাকেই বলে, বাহা সংগ্রিষ্ঠ মহল ছাড়া আর সকলেরই চরতেদ করে।

জনকল্যাণী সরকার

"উপর হইতে দেখিলে দীবি নিস্তংস, কিন্তু তাহার তলার বৈবালদান প্রাছর থাকে, জনেক পর, নিছিল ক্লেদ। সমাজেরও জন্তু-গোপন ভবে ভবে জনেক গ্লানি, বঞ্চনা জার বিড্মনা, হতাশা জার পাপ জমিরা আছে, আমরা সব সময় টেব পাই না। দীবি:ত মাঝে মাঝে বুদবুদ্ ফুটিরা উঠে, তাহার অন্ধকার অন্তভ্জের থবর দিরা চন্দিতে মিলাইরা যার। সমাজজীবনের ও নীচের মহলের ছই-একটা থবর জানালানি হইরা আমাদের চন্দিত বা স্তস্তিত করিরা তোলে। ক্লেছ বিক্লার দের, কেছ দীর্ষখাস কেলে। কর্তব্যের ওইখানেই শেব। মীরা মুখোপাধ্যার নামে এক ব্যশীর বে কাহিনী গত বুহুম্পতিবার আলালভে শুনা গিরাছে, ভাহা লাইনা ও ব্রুনার ইতিহাস।

আপাতদৃষ্টিতে কলক্ষনী এই নারী মহানগরে এক ঘুণা পরিবেশে উচ্ছু-আল আচঃণের দারে অভিযুক্ত হয়। আত্মপক সমর্থন করিতে গিয়া সে কি ভাবে তাহার খামী তাহাকে ত্যাল করিয়াছে, তাহার মর্মন্দানী বিবরণ দেয়। ছই নাবালক পুত্রের ভরণপোষণের জক্তই তাহাকে লক্ষাকর জীবন যাপন করিছে ইইয়াছে, সে কথা সে অকপটে বলে। ম্যাজিট্রেট তাহাকে সাবধান করিয়া ছাড়িয়া দিয়াছেন। কিছু কাহিনী একা মীরা মুঝোপাধ্যারের নয়, কলিকাভার ইটের পালরে আর রাজপথের পাথরে এমনই বছ স্থামি-পরিত্যক্তা নামীর করুণ কায়া হয়ত চাপা পড়িয়া আছে। ইহারা বিবপান করিয়াছে, কিছু নীলক্ষ্ঠ হইতে পারে নাই, অস্ত্লি প্রসারিত করিয়া আমাদের সমাজবারহায় বে বিরাট একটা কাঁক আছে, ভাহা দেখাইয়া দিছেছে। মীরা মুঝোপাধ্যায়কে যে বিচারক মুক্তি দিয়াছেন ভিনিও বিচারকে, পাপপথ ছাড়া অক্স কোন বিকল্প পদ্বা সে হয়ত থুজিয়া পাইবে না। বিচারকের এই আশহাকে মিথ্যা করিয়া তোলার দাছিছ সমাজের এবং সরকারের, জনকল্যাণের ভার বাঁছারা লইয়াছেন।"

--- আনন্দবান্ধার পত্রিকা।

হুঁ সিয়ার

"কমিউনিষ্ট মন্ত্রিসভাব বিক্লছে এই ভাবে প্রীনেষক মান্তবের মন ভৈরী করার চেষ্টা করিতে পারেন, কিছা ইহাতে ভারতের গণবন্ধ ও সংবিধানকে যে প্রতিক্রিয়াশীল শক্তি জালাত করিতে চার তাদেরই সাহায় করা হয় মাত্র এবং প্রীনেহকর উপরেও এই জালাত যে পড়িবে ভাহা তিনি ভূলিয়া যাইতেছেন জধবা তিনি স্বেচ্ছায় ভাবতের রাজনীতিতে এই তুর্দের ডাকিরা জানিতেছেন। কমিউনিষ্ট-বিষেবের ফলে প্রীনেহক নিজহাতে এই ভাবে ফাফেনষ্টাইন তৈরী করিতেছেন। ভাই আমরা বলি, পরিস্থিতি জতীব জটিল করিয়া ভোলা হইতেছে। জবস্থা জায়তের বাহিবে চলিয়া যাইবার পূর্কেই প্রীনেহক ও কংপ্রেস ছাইকমাণ্ডকে জামবা ভূমিয়ার হইতে বলি। জাপনাদের নিজেদের তৈরী সংবিধানকে, জাপনাদের নিজেদের প্রতিশ্রুত গণভাত্রিক পছতিকে নিজহাতে জালাভ করার পর জাপনারা পরিত্যাস কক্ষন—ইহাই আজ সমগ্র ভারতের দাবী।"

কেরলে কংগ্রেস

"সংবাদে প্রকাশ, কেবলে শিক্ষা বিস নিয়ে আশান্তির সৃষ্টি হয়েছে। এই অশান্তিতে কংগ্রেস, পি, এস, পি, মুস্নিম সীগ ও ক্যাধিলিক দল অংশ গ্রহণ করেছে। বিলেব উপকারিতা বা অপকারিতা নিয়ে আলোচনা না করাই ভাল। কাবণ একদল এটাকে ভাল মনে করে দেশের মঙ্গলের অন্ত এই আইন চালু করতে চলেছে। অপর দল এটাকে মক্ষ বলে আইন চালু না করার অন্ত কর্যুনিষ্ট সরকারকে চাপ দিছে। ভাষা ধ্যো ভুলছে এটা চালু হলে দেশের চরম স্বর্ধনাশ হবে ইত্যাদি। আল সব চেয়ে আশ্চর্যের বিষয় হয়েছে কংগ্রেস কেরলে মুস্নিম সীগ ও ক্যাধিলিক দলের সঙ্গে হাত মিলিয়ে আক্ষোলন চালাছে। ধর্মের উপর ভিত্তি করে দীড়িয়ে আছে বারা ধর্মের দোহাই দিয়ে ভাষা ভাষতের চরম সর্ব্ধনাশ করেছে। ভাদের সঙ্গে হাত মিলারার কথা কংগ্রেসীদের নম। কংগ্রেস ধর্মনিরপেক্ষ দল। মুস্নিম সীগ চায় ভারতের ভিতরে পোলমাল লাগিয়ে অশান্তির স্থিটি করে কোন ক্রোগ্রহির নিজে। বে প্রতিষ্ঠান ভারতের বুকে মামুস হয়ে ভারতের

জন্মলে বড় হয়েছে সেই প্রতিষ্ঠান ভারতের বুকে ছুরি বসিরে বিভক্ত করেছে। যে প্রতিষ্ঠান ভারতের প্রতি বেইমানী করেছে, সেই বেইমানীদের সঙ্গে হাতে হাত মিলিয়ে কংগ্রেস আন্দোসন চালাছে না নিজের খেয়াল-খুনি মত তারা কাজ করছে, সেটা জানবার বিষয়। যদি নির্দেশ না নিয়ে তারা এই আন্দোসন চালাছে তবে তাদের কাছে কৈফিয়ৎ করা হোক, কেন ভারা বেইমানীদের সঙ্গে হাত হাত মিলিয়েছে।

--গ্ৰামেৰ কথা (তুবৱাজপুৰ)

খাতাসস্কট

"করেক বংসরের উপর্গুণিরি অভিজ্ঞতার দেখা গিয়াছে বে এদেশে অঞ্জন। বা শতাহানি স্থায়ী আসন পাতিয়া বনিষাছে অথচ থাতাচক্ষেত্রের স্থায়ী প্রতিকার পাওয়া যাইতেছে না এবং গাঁহারা উৎপাদক
উহারাই সর্বাপেকা অবিক ক্ষতিগ্রস্ত হইরা আসিভেছেন। জমির
মালিক আজ রাষ্ট্র বা সরকার। সরকার বেমন উহার অবীনস্থ
চাকুরিয়াদের মাহিনা ছাড়াও ভবিষ্যুতের আপদ বিপদের অভ্ত প্রভিত্তেই কাণ্ডের ব্যবস্থা করিয়াছেন অনুরপভাবে বাক্ত বা থাতা
উৎপাদকদের জন্তুও প্রতি প্রামে প্রভিত্তেই গোলা বা সম্ভট্রোণ
গোলা স্থাপন করত উৎপাদকদিগকে আপদ বিপদে রক্ষার ব্যবস্থা
করার প্রয়োজনীয়তা দেখা দিয়াছে। প্রভিত্ত গোলা বা সম্ভট্রাণ
গোলা স্থাপিত হইলে ওয়ু উৎপাদকেরাই থাতাসঙ্কট হইতে ত্রাণ
পাইবে।" —প্রলাণ (মেদিনীপুর)

জানিতে চাহি

"পঞ্চাবেত নির্বাচনে প্রতিনিধিত কবিবার ভক্ত হরিজন সম্প্রাবের মধ্যে আগ্রন্থ লক্ষ্য করিয়া আমরা বিশেব আনক্ষ বেংব করিতেছি। অত্যক্ত তু'বের বিষয় এই বে, স্থানে স্থানে গ্রাম্য মাতক্ষরগণ এখনও তাহাদের পূর্ব-জভ্যাস পরিত্যাগ করিছে না পারিয়া হরিজনদের উপর নির্ব্যাতন করিছে আরম্ভ করিয়াছেন। কোথাও কোথাও সরকারী কর্মচারিগণের অসহায়ভার ফলে জ্বত্ত হবিজন ভোটারগণের ভোট সইয়া নানারপ কারসাজি করা হইয়াছে। রাজনৈতিক দলের ২প্লবে পড়িয়া দলীয় প্রচাবে সাহাম্য ক্ষা হইয়াছে ও পক্ষপাতমূলক আচরণ করা হইয়াছে বলিয়া জভিষোগ পাওয়া বাইভেছে। গুলুরা, গ্রুজ্বাম ও ভাতাভ খানার নারায়ণপুর হইতে এইল্লণ অভিষোগ পাওয়া গিয়াছে। এইল্লপ অবোগ্য অসাধুসরকারী কর্মচারী সম্পর্কে সরকার কি ব্যবস্থা প্রহণ করেন তাহাই আমরা জানিতে চাই।" —ব্রহ্মান।

সত্যের অপলাপ

"বৰ্ষি ঈদ ১৮ই জুন বৃহস্পতিবার। এই ঈদ উপলক্ষে এক সপ্তাহ পূৰ্বে বে সাপ্তাহিক বন্ধের দিন পাঁড়িবে বদি কোন দোকানী ইচ্ছা ক্ষেন ভিনি ঐ দিন খুলিয়া ঈদের সপ্তদা সাধারণে সরব্যাহ ক্ষিতে পারিবেন। এই সম্পর্কে বর্তমান বংস্কের ঈদের বিষ্ঠি

লইতে মুসলিম হইতে বহু হিন্দু দোকানীরা বিভাগীর কর্ত্তপক্ষের নিকট দৰখান্ত কৰিয়াছেন। আবাৰ কলিকাভায় ২ভুগ্ৰাক দোকানীরা ঈদের বিরতির নাম করিয়া "ভামাইংগ্রীর" মরভুমের এক দঢ়া কেনাবেচা করিয়া লইয়াছেন। ঈদের প্রতি প্রথার দোহাই দিয়া **জামাই**ণ্ঠীর জন্য ছুটির দিনে দোকান খুলিয়া সাধারণের গাঁটের প্রসা শোষণ করিয়া লইবার দোকানীদের এই ফ্লি একেখারে নতন! দোকান আইনের নিয়মাবলীর বিধানে জামাইফ্টার জন্য কোন বিয়তি নাই। কাজেই বকরি ঈদের দোহাই দিয়া ভামাইয়্চীর বিয়তি লইয়া দোকান থুলিয়া কেনাবেচা বয়া কত অশোভন বা সভোৱ অপলাপ সাধিত চ্ট্রাছে, ইচা বারা এই কাও করিয়াছেন তাঁদের মধ্যে সকলেই জানেন যে উদের নাম করিয়া জনসাধারণ ও শ্রমিক ঠকাইবার কিরুপ অন্তত্ত মায়াভাল বিস্তার করিয়া সাধারণের চোৰে ধুলা দিয়াছেন। প্রমাণ-ছরুপ বলা যাইতে পারে বারা केलव नार्य सामाहें गठी कविदाहि छात्र। केलव शुक्रिन न वा केलव দিনে দোকান খুলিবেন না। কারণ ভারা সরকারী থভে দিখিয়া দিয়াছেন পরবর্তী স্থাতে ছুটির সংক পূর্বের কণ্ডিত ছুটি অবগ্র কর্মচারিগণকে দিবেন। বাঁছারা বিবৃতি এইরা আংসেন তাঁছাদের মধ্যে অধিকাংশ মালিক বিয়ভিতে অভিনিত্ত খাটুনির মজুরী বা ছটি প্রমিকগণকে দেন না। এবং এ সব আদার করা বে বিধান আছে ভাহা সম্পূর্ণ অচল ও মালিকের অতুকুল। এই অপকৌলল বদ্ধ --- (দাকান-শ্ৰমিক (কলিকাতা)। হওয়া সকত ।"

পরীক্ষায় অপুরণীয় অপচয়

"গভবার আই-এ পরীকায় শতকর। ৫১৩নে পাস হইরাভিল। এবার শতকরা ৬২জনকে ফেল করান হইরাছে। পাদাপাদি আই-এস-সি পৰীকাৰ হাব কিছ ৫১জন। কে ইহাৰ বছতা ভেদ করিবে ? ছেলেরা না পড়িলেও পাস করাইতে ছইবে, এমন কথা কেছই বলিবেন না, কিছ ছুই বংস্থ কাল খবচ বহুনের পর এই শোচনীয় ফলের অক কৈফিছৎ দাবী সকলেই করিতে পারেন। আশ্চর্যার বিষয়, ইহাদের পালের বোগ্য বলিয়া বে সব প্রফেনার च्रभादिम करवन, बदः (र मर व्यिमिश्रांत रहे भवीकारच हैशामत উপযুক্ত বলিবা ছাড়পত্র দেন, ভাছাদের শতকরা ৬২জন ফেল ছয় কেমন কবিরা ? একথার কোনই জবাব নাই। ফাইজাল পরীকার ভো কলেজের এই সব প্রেফেসার ও প্রিলিণ্যাল মহালরেরাই থাডা দেখেন। টেষ্টে তাঁহারা বাহাদের উপযুক্ত সাব্যস্ত করিয়াছিলেন, তু'-এক ক্ষেত্ৰে হয়ত ব্যতিক্ৰম হইতে পাৰে, বিশ্ব শতক্যা ৬২খন সম্বন্ধেই বা তাঁহাদের মারাত্মক ভুগ হইয়াছিল কি কবিয়া ? আৰ বদি ভাঁচারা টেটে অমুপযুক্তই ঠাওরাইয়া থাকেন, তবে ভোঁনা পাঠাইলেই অভিভাৰকদের আর সম্বিক অর্থণণ্ড হইত না ? আজ विष कर्छ भक्तिय विषिष्ठ दिकारिय माथा। कम मिथाई राजिक बाक, करव का भन्नीकार्थी निक्ताहरनन भूर्क्ट क्क बाहेकाला किछ । काहारक विश्वविकालस्त्रवेश कृतीय वक्त क्य, व्यक्तिविकालस्व অপুব্ৰীয় আহিক ক্ষতি সহু ক্ৰিতে হয় না। বিজ্ঞান শিক্ষায় উৎসাহ দিতে হইবে সত্য, কিছ তাই বলিয়া চাক্ষকৰা বিভাগের প্ৰতি এডটা নিঠ ৰ হওৱা কি ঠিক ? পেটেৰ ভাতেৰ জভ বিজ্ঞানেৰ pifent difutite not, few wifes ufirit we nifest o সংস্কৃতিৰ দিকটা উপেকা করা বার না। তা'ছাড়া বিজ্ঞান শিক্ষার উপবোগী সংস্থা ৰত দিন না বাড়িতেছে, তত দিন এদিকে উপেক্ষা বৃদ্ধি খৃ'ই ক্ষতিকর নহে কি ? সমাল আল জ্বাভাবে মুমুর্। অভিভাবকেরা অতিকঠে ছেলেমেয়েদের শিক্ষার বরচ লোগাইতেছেন।" —প্রীবাসী (কালনা)

সেটেলমেণ্ট

কুবিপ্রণান অর্ফাল আমাদের এই মহকুমার ভাষিজ্ঞমার माणिकांना च्याच्य नाशार्याय निकृष्टे विस्मृत खक्यपूर्व, कीवन-प्रदर्भ সমত্রা পর্যায়ভুক্ত বলিলেও চলে। এ-হেন বিভাগের কার্য্যকলাপ আৰম্ভ হটতে বেন এক ভীষণ অবন্দোবস্তা বাজত্বের কাণ্ড কার্থানার মতই চলিতেছে। এরকম মানুষ এতদ্বে:শ বোধ হয় খুঁজিয়া পাওৱা ঘাইবে না বে এই ত্রিভাপ্দন্ত সংসংবে সেটেলমেন্টের থব ভাপে ভাপিত চইয়া কিঞ্চিৎ কষ্ট ভোগ করেন নাই। মাঠের কার্যারম্ভ হইতে ধারার পর ধারার কার্যাক্রমে অভিক্রম করিতে করিতে এখন ৪৪ ধারা ও ৪৪ ১ ধারার ও ৪৪ ২ ধারার বিচার ব্যাপার এমনভাবে হইতেছে বে জনসাধারণ উহাকে অঞ্ধারার মতই মনে কৰিতেছে। বিশেষ এ ধারাৰ বিচার কালের নোটিশ আৰি ও নকল পাওয়ার ব্যাপার নাকি অসহনীর অবস্থার উল্লেককর। প্রকাশ, নকল পাইতে ২০১ মাস বা ততোধিক সময়ও প্রার লাগিয়া যায়। আর সে নকল যদি জেলার হয়ত ২।৩ মাস বা ভভোষিক সময়ও বার। জকুরি ফি দিরা ও ভবিরে মাসাধিক সমরের মধ্যে পাওয়ার সম্ভাবনা হয়। সাধারণের ধারণা বল্ডামত অনৰ্থক অৰ্থার জন্ত, বামের জমি ভামের নামে বা কমবেশী করা হইয়াছে এবং পিতা-পুত্ৰের পদবী ভূগ লেখা হইয়াছে, ইজাকার কার্বাদিও বাহা অতি অল সমার সম্পন্ন করা বাইতে পারে তাহার জন্তও পক সাধাবণকে প্রায় ইচ্ছাকৃত ভাবে একাধিক বার হারবাণ ছইতে বাধা করা হয় বে ভাহা সম্ভাতীত-প্রায়। এমনি ঘটনার অভিবোপ আছে বে, প্রথমে বা সহজমিনে বে নাম বা বাছা লেখা इडेबाहिन छाहार यनवनन इटेबाट्ड वा शास्त्र शास्त्रीहे दनन হইরা গিরাছে কোন অজ্ঞাত ব্যবস্থার হস্তস্পর্শে। সর্বোপরি আছে পুকুর চুরির মত কথা। কাঁথি অফিস হইতে গোটা হুই ছাতে লেখা বেকৰ্ড ভলিউম উবাওর কথা, বাছা লোকে বিশাসই ক্রিতে চায় না, প্রকাশ ভারা সভাই হইয়াছে। ইহাতেই প্রমাণ ছইতেছে এই বিভাগে কি তুর্নীতির ব্যাপার চলিতেছে ও কত ছুর্নীভিপরারণ লোক ইহার মধ্যে রহিরাছে! সেইজক্ত মনে হর, বিভাগের কর্মচারীরা অধিকাংশই কি নিজেদের ভবিবাৎ বন্দোবস্ত কবিয়া লইভে বছপবিকর হইরাছেন ?" -मात्राद्र (केंबि)

পাঠ্যপুস্তক ও ব্যবসা

্ৰ বংসৰ এত বেশী সংখ্যক পাঠ্যপুত্তকের সংখ্যা বাজিরাছে বে উহার সংখ্যা নিৰ্ণৱ করা কঠিন! কি প্রাথমিক, কি মাধ্যমিক

বিভালয়ে একই শ্রেণীতে ছাত্র-ছাত্রীদের হরেক রকম বই দেখিলে আশ্চর্যাথিত হইতে হয়। নূতন পাঠ্যপুস্তক সংগ্রহের ধাক্সা অভিভাবকগণকে বিজ্ঞত কবিয়াছে। কোন কোন স্থানৰ পড়ার দেখা যায়, একখানি বটার হয়ত আংশিক পড়া হইয়াছে বা বইটির পড়ার অনেক অসমাপ্ত রহিয়াছে নৃতন সেসনে স্থল কর্তৃপক্ষ উহা পরিবর্ত্তন করিয়া পুনরার নৃতন বই চালু করিতেছেন। ইগতে অভিভাবকবৃদ্দের মনে একটা বিভৃষণ ভাব আগিতেছে এবং ছেলে-মেয়েদের প্রস্তুক সংগ্রহ বেন সমস্তারণেই দেখা দিয়াছে। দেখে শিক্ষিত লোকের সংখ্যাবৃদ্ধির সঙ্গে সঙ্গে একশ্রেণীর পুস্তকলেখকের সংখ্যাও বাড়িয়াছে। পুস্তক প্রকাশকগণ স্থলে স্থানভাসার পাঠাইয়া বইগুলি যত বেশী তদ্বির করিতে পারিয়াছেন, ভাহাদের বইগুলিও সেই মত মনোনীত হইয়াছে দেখা বার। বই মনোনয়ন লইয়া বেন একটি ব্যবসা চলিভেছে এবং শিক্ষাক্ষেত্রেও বেন উহার প্রসারলাভ ঘটিতেছে। কিছু সংখ্যক শিক্ষক নাকি এ বৎসর প্রাথমিক স্থলে পাঠ্যপুস্তক বিক্রম দারা ব্যবসায়ী নীতি অনুসরণ ক্রিরাছেন জানা যায়। ইহাতে শিক্ষার পরিবর্তে শিক্ষাক্ষেত্রে অর্থোপার্জ্ঞানের পথই প্রধান লক্ষ্য হইর। উঠিবে। এ বিবরে প্রকৃত শিক্ষামুৰাগী ও শিক্ষা বিভাগ কর্তৃপক্ষের তীত্র দৃষ্টি দেওয়া প্রয়োলন ।" —নীহার (কাঁখি)।

শোক-সংবাদ

প্রবোধচন্দ্র চৌধুরী

বাঙলার ২বীরান লিল্লপতি প্রবোধচক্র চৌর্বী গভ ২৪এ ক্রৈষ্ঠ ৮৪ বছর ব্যুসে প্রলোক গমন করেছেন। ব্যবসায়ী হিসাবে কুম প্রিসংর জীবন শুকু করে অসামাল প্রতিভাব প্রিচর দিরে অসান্ত সাধনার স্বীকৃতিস্বরূপ প্রবতীকালে ইনি শুওরালেস প্রের্থ একাধিক ব্যবসায় প্রতিভানের ডিয়েক্টারের আসন গ্রহণে সক্ষম হয়েছিলেন ও ভারতের একজন অভিজ্ঞ ও বিচক্ষণ লিল্লপতি হিসেবে বছজনের শ্রম্ভা লাভ করেছেন। সমাজোগ্রনে এঁর দান কম ছিল না, বছ জনহিত্তকর প্রতিষ্ঠান এঁব দানে পুট হয়েছে। করেকটি গ্রন্থেও তিনি রচ্যিতা ছিলেন।

নিৰ্মলাবালা ঘোষ

মহাত্মা নিশিবকুমার খোবের ভাতৃপাত্র বর্গীয় পরিমলকান্তি খোবের সহধর্মিণী এবং বিনিষ্ট সংবাদপত্রসেবী শ্রীস্থকমলকান্তি খোব ও শ্রীপ্রাক্তমান্ত খোবের জননী নির্মলাবালা খোব মহাশায়া গত ২২-এ জাৈ ৬৬ বছর বরুসে দেহরকা করেছেন। ইনি অভিশয় ধর্মপানা ছিলেন, অপবের হু:খ-কষ্ট এঁকে বিশেষভাবে বিচলিত কর্ত, সমাক্ষােরহনেইও জনহিতকর মহৎ প্রচেষ্টার প্রতি এঁর সহায়ুভ্তিও আন্তারিকভা ছিল অপরিসীম। শোভাবাজারের প্রাভঃমরণীর বালা তাার বাধাকান্ত দেব বাহাছুরের বংশে ইনি অন্তাহণ করেন।



বৌদ্ধ পঞ্চশীল

গত চৈত্ৰ সংখ্যার (১৩৬৫) গ্রীমতী আলা বাবের "বৌৰ পঞ্চনীস" নিৰদ্ধটি স্থলিখিত। তবে কয়েকটি বিষয় আলোচনার বোগ্য বলে মনে কবি। আধুনিক Political মার্কা 'Panch Sila' নযু-विद्मारत प्रमि मीलव উल्लंथ चाट्ड। शामनीय-चहिरमा, मछा, অল্ডের, ত্রন্নচর্য ও অপবিপ্রত। বর্জনীর-স্থাবান, অপবাহ ভোজন, ৰুত্য-গীত, উচ্চাসন গ্ৰহণ এবং স্বৰ্ণ-বৌপ্য ধাবণ। পৃথিবীৰ প্ৰায় সকল ধর্মের ভিতরই এই দশ বনাম পঞ্চনীল এমন কি আরও অধিক সংখ্যক শীলাচরণের বর্ণনা আছে ৷ বৃদ্ধ-জন্মের হাজার হাজার বছর আগে হিন্দু বনাম আর্থবর্মের প্রাতি ও মুতিগ্রন্থ বচিত হরেছে। মুতি-গ্রন্থ বলতে-গীতা, ভাগবত, পুরাণ, মহাভারত ইত্যাদিকে বুঝার। এ সব গ্রন্থে অভিংগা থেকে আরম্ভ করে বৌদ্ধশালে বত শীলের উল্লেখ করা হয়েছে, এ ছাড়াও আরও বস্ত পালনীয় ও বর্জনীয় লৌকিক শীগ-জ্ঞানের বিশুত উল্লেখ আছে। বস্তুত পাতঞ্জল দর্শনের অষ্টাঙ্গ যোগমার্গ ও বৌদ্ধ পালনীয় পঞ্চশীলের অনেকটা সাম্বর্গ আছে। অভগ্র শীল্ভত্বের দিক থেকে উহা 'সর্বপ্রথম ভগ্বান বুজেবই শ্ৰীৰ্থ-নি:স্ত' এরপ উক্তি ঠিক নয়। পৃথিবীর প্রার সকল ধর্মেই विषयक शाक्षक मान करताक। (बोधनावय देवनिहा-क्रेमबहच. बाब-भवमाबाहक बर: बक्त-मायुक्तानि भक्षित मुक्तिकव बरकवारर বৰ্জিত। আছে—"ঐাবের আত্যক্তিক ছুংখের হাত খেকে ছুক্তি পাবার ঘর একমাত্র নির্বাণ্ডর ," কেবলমাত্র 'শীল' সাংলাই 'শতীব্রির জান, শান্তি, শান্ত সভ্যের উপদক্তি আনরন' করতে সমর্ব হয়। শীল-সাধনা লৌকিক বা ব্যবহারিক সভ্য সাধনার প্রতীক। পাৰ্মাৰ্থিক সতা সাধনাৰ আন্তৱ বে শীলসাধক নয়-এ কথা শক্তিশালী বৌদ্ধ লামা-বোষীয়াও (অবশ্য 'God-King' নয়) খীকার করবেন। বৌদ্ধ শাল্পে বোগাচার আছে। অভীন্তিই জ্ঞান বা নিৰ্বাণ মুক্তিৰ জন্ম ব্যান, প্ৰজ্ঞান, প্ৰণিধি, পৰিমিতা ইত্যাদিৰ অমুশীলন বা সাধনার প্রয়োজন স্বীকৃতিও আছে। ভুকুত্তর নিকারে বেছিলাম বগণে ৬ বিও'দ্ধ মার্গে ±ই সাধন প্রণালীর উল্লেখ আছে। অব্যাস্ব সাংলই ওকুষ্মী। পুৰিগত নয়। বৌদ্ধর্মেও এব ^{ব্যাত্}ক্ৰম নাই। মুক্তিভত্ত সম্বন্ধ জাত মত—^{*}তমেব বিদি**হাতি** মুকুমেতি নান্য: পদ্ধ বিভতেহ্যুনায়^{ত্ৰ}—স্চিদানন্দ্ৰন প্ৰব্ৰুত্তক্ জানাই সংসার নিবুভির কারণ। এ ছাড়া জার কোন পথ নেই। 'হিলুগর্মের পরিপূর্ণ বিকাশ' কি করে বৌদ্ধবর্মে হল—এ ছর্মোরা। শধাতা বাভ্যের ছত্ত্ব অবস্তা। হিন্দুধর্ম ধে সকল তত্ত্বভাভ করেছে তমধ্যে—ব্ৰহ্মতত্ত্ব প্ৰভীবতত্ত্ব বা আবাতা ও প্ৰমাতা বিষয়ক তত্ত্ব **অব্যিত ও বৈত্তব্ এবং এজ-সাব্দ্যাদি পঞ্**বিধ মুক্তিতক্তের স্থান

বৌদ্ধর্মে নেই। বদিও হিন্দ-শীল ও বৌদ্ধ-শীল একাকার হরে গিরেছে কিছ বৌহধর্মের এ নির্বাণ মুক্তি ও ছিলুধর্মের ব্রহ্মদাযুক্ত্য, সাষ্ট্রি, সামীপা, সার্ণ্য ও সালোকা মুক্তি এক জাতীয় নয়। নির্বাণের লক্ষ্য-জীবের আভ্যস্তিক হুংখের নিবৃত্তি। হিন্দু চায়-বিবর-ভুষ্ণার নিবুত্তি। 'আবৃতং জ্ঞানমেতেন কোমরপেণ কতুপুরেণানলেন চ।' গীতা, ৩।০১। বিষয় বাসনা জ্ঞানকে অর্থাৎ আত্মজ্ঞান বা পর্:-জ্ঞানকে আবুত করে রেখেছে। এই কাম বা কামনা বা বিষয়তৃকাকে জর করতে পারলেই সমস্ভ হঃথের শাস্তি হর। বৌদ্দান্তে এই নিবৃত্তির পরে স্বার কোন উল্লেখ নেই। কিম হিন্দুধরে তু:খ-নিবৃত্তিই একমাত্র চরম তত্ত্বর। ত্রাথ নিবুত্তির অভীত হরেও হিন্দু চায় पूर्व। व्यक्त छेड्। वहे बन्नाटक Materialistic 'कुन्न' नहु, छेड्। ^{*}ব্ৰন্ধানশং প্ৰমুখ্ণদ্ম^{*}—-মুখ তথা ভগ্ৰদপ্ৰেম-বাসনা সুধ। অভগ্ৰ 'প্ৰিপূৰ্ণ বিকাশ' বা 'Fulfilment of Hinduism' ওধু মাত্র ভাব প্রবণ উচ্ছাস বা কৈতববাদ ছাড়া আর কী হতে পারে 🕈 हिन्द्र अकृति Democratic ६४। महाराज्य मक अहिल अकृति মহাংম। অভ সব ভগু গম। ৰাজিবিশেষের মতবাদ বা creed নিবে হিল্পাৰ্য ভৰাক্ৰিভ Religion নয়। এ ধাৰ্মার বাালি ও প্রসার কল্পনাতীত। এ ধর্মে আছে স্বাধীন চিম্বাধান ও বক্তিবাদ। चाडि-चाचिकाराम, निर्वित्मव बन्नवाम, प्रवित्मव बन्नवाम, प्राकावशाम, নিবাকাৰবাদ, চাৰ্বাকীয় নাজিকাৰাদ ইত্যাদি। বৌদ্ধৰ্ম বিশাল হিন্দুধৰ্মের একটি অল ছাড়া আর কিছুই নর। বদিও বৌদ্ধর্মক हिन्यूपर्न (क्ट्रक विक्रिय करा) इत्याह—अवश कावनहा Political. পরিশেষে, মানবের জীবন-মরণ স্থপতঃখের চক্তের চেত পরস্পরার জটিল সমভাব সকল সমাধান বদি কোথাও চইয়া থাকে, ভাচা ভগবান বুংছৰ নিৰ্দেশিত মাৰ্গেই হইবাছে। এ উক্তি ভতি উচ্চ-প্রবৃত্তি বাচক---সম্পের নেই। কিছু চুংখের বিষয়, ছিলু দর্শনের ক্ষিপাধ্যে এই অত্যক্তির স্বর্ণ-মেধলা খেকে ২৮ অসমভির ধাদ নিৰ্গতিত হবে। অভ্ৰব তেখিকা বেদাক্তদৰ্শন, উপতিষদ, গ্ৰীভা, ভাগ্ৰত, পাত্ৰল দৰ্শন এবং মহাভাগতেৰ ছম্ভত শাল্পিবটা পাঠ ককুন; তবে বিচাবসহ প্রকৃত 'মার্গ' টুপল'র কংতে পাববেন। —হেম স্থাবদার, মহাজাভিনগর কলোনি, কলিকাতা—২৮।

জানতে চাই

আপনার কাছে বিনীত নিবেদন এই বে.—(১) আপনার সম্পানিত "মানিক বস্থমতী" বেশ ভাল মানিক পত্রিকা। আমি বইখানি এইধানে গ্রীশক্ষর রাধের নিকট হইতে লইরা পড়ি। ইছাতে গ্রীপ্রবোধেন্দুনাথ ঠাকুর লিখিত "থানদ্দ-বৃদ্দাবন"এর বাংলা অমুবাদ পড়িয়া বি: শব তৃতি পাইরা থাকি। শুনিলাম, পুশুকাশারে

এগুলি প্রকাশিত হুইরাছে। (২) বস্থুমন্তী সাহিত্য মন্দির হুইন্ডে প্রকাশিত বাংভীর ভক্তিমূলক প্রস্থের একথানি Catalogue দ্বা কবিয়া আমার নিকট পাঠাইলে বিশেষ অমুগৃহীত হইব। আমি কয়েকখানি ভভিগ্ৰন্থ বধা—বাংলা পতে জীমদভাগবত, জীকুক, ভকুমাল, নীলাগুলে শ্রীমং হৈতন্যদেব ইত্যাদি বৈক্ষ সাহিত্য ও শ্ৰীগৌ শ্ৰীকৃত্ত পৰাৰলী সাহিত্য বাহা আপনাৰা ছাপাইয়াছেন জাতা আমাদের বাজবাড়ীর লাইত্রেরীর জন্য কিনিবার ইচ্ছা পোষণ कृति । आधारण्य Superintendent, Jambari Estate (Sri Jagannath Dhabal Deb)- ag aten utatera acet হটতে "নৈনিক বন্ধনতী" নিয়মিত ভাবে লওয়া হয়। (৩) একটি কবিতা, আনার শুতি চইতে বিচ্যুত হইরাছে—উবার বর্ণনা ১ম লাইন "প্ৰভাগুতিভাৱকা 'ফুটভটি---উবা করোতু-মতিম (। মক্তসম) উষা বাত্রার সমর উহার প্রয়োজন হয়। স্থাপনাদের শ্মাচার্য মতোলয় অবশ্র জানেন, মনে কবি। আর একটি কবিতা "চবিবেৰ জগং জগদেৰ হবিঃ, হবিতো জগতো ন ছি ভিন্নত :। ইতি যাত্ত মতি: প্রমার্থগতি: স নরে। ভবদাগব-মুদ্ধবৃতি।" এই স্লোকটি কোনধানে আছে দয়। সদ্ধান দিলে বাধিত হটব। আপনার মাসিক বস্থমতী একাধারে रक বিষয়-সম্বিত, বাল বৃৎ-মহিলা সকলেরই উপবোগী **ধাত** উহাতে স্প্রিবেশিত। বর্তমানে উহা যে অতুক্নীয় ভাষা অনখীকার্য্য --প্ৰত্ৰ-প্ৰস্থাবেশ পাল। (M. A. B. T. Guardian Teacher to the Raj Estate for past 3 decades)

পত্ৰিকা সমালোচনা

মঙাশয়, ছেলাবেলা থেকেই আমি মানিক বলুমতীর'
নিষ্ণমিত লাঠক। প্রতি মানেই বলুমতীর অভ উদ্প্রীব হরে প্রতীক্ষা
করি ভবু আমি নয়, বাঞ্জীর অনেকেই। কিছু এক বছুরের উপর
কোল বোগাশবার বলুমতীর গুছু ব্যগ্রতা বেন আরো বেড়ে গাছ।
দিলীপকুমার বায়ের ভাবি এক, হয় আর, লুলেখা দাশগুরের
বৈলিী, নীলিমা দাশগুরের কিলাবীর প্রেম, লুখপাঠা। বারি দেবীর
বাভিত্বর' কি আর বের হবে না ? হিমানীশ গোস্থামীর লগুনের
পাড়ার পাড়ার' অনেক বাল্যবন্ধুদের কথা মনে পড়িরে দেয়।
দিনগুলি যোর কোথার গেল। সাবনা বলুর 'মুভির টুকরো' মনটাকে
দ্বের অতীতে টেনে নিয়ে বার, আনন্দের সংগে বিবাদের সংমিশ্রণে মন
এক অভুত অনুভৃতিতে উপ্রেল হরে ডঠে—এ বেন ৪weetest song
telling of saddest thoughts. আমার এ রোগশ্বার সহচর
আমার মত আবো অনেকের প্রাণে আনন্দের উৎস হয়ে উঠুক।
—শীতেন চক্রবর্তী, ওয়ার্ড বি—১, কাঁচড়াপাড়া টি, বি,
হাসণাতাল, নদীয়া।

গ্রাহক-গ্রাহিকা হইতে চাই

I am now sending Rs. 15/- towards next one year's subscription and have to request you to kindly continue sending me copies of Monthly Basumati from the month of Baisakh.—Mrs. Kamala Ganguly, Balajinagar, Madras.

Please accept my half yearly subscription of M. Basumati—Mrs. Suprova Chowdhury M. A. D. Litt.—Delhi

I am remitting herewith the subscription of Monthly Basumati for the year 1366, kindly arrange to send the magazine.—Arati Rani Sinha—Allapalli P. O. Dist. Chanda.

বার্ষিক মূল্য ১৫১ পাঠালাম। বিলম্বের ক্রটি মার্জ্জনা কোর্বেন— জ্রী ক্রিনাকান্ত ভটাচার্য্য, জবনগুর।

Sending Rs. 7/8/- by M. O. as six monthly subscription from Baisakh. Please continue Masik Basumati—Mrs. Kanak Maitra, M.A.—Kanpur.

Remitting Rs. 15/- only towards yearly subscription for the Monthly Basumati for the year 1366 B. S.—Hena De, Berhampore, Murshidabad.

বৈশাপ হইতে আখিন মাদের বস্তমতী পাঠাইহা বাধিত করিবেন।—Sm. Gouri Gupta, Dhanbad.

Reading Basumati reminds me of my child-hood days in Bengal. Kindly renew subscription for another year.—Mahasveta Dutta, Sholapur (Bombay State).

বিশেষ কাষণবলত: টাৰা পাঠাইতে দেৱী হইল। সেজত ক্ষা ক্ষিবেন।—Bina Dutta, Ahmedabad.

আপনাদের স্তিত অদীর্থ কালের সম্পর্ক আরেও ৬ মাস বাড়াইতেছি—মাধবী ঘোর, কলিকাতা।

মাসিক বন্ধমভীর টাকা পাঠালাম। বৈশাধ থে:ক পাঠাবেন----জীমত্যা লতিকা বিশাস, নৈহাটা মিত্রপাড়া।

বৈশাৰ মাস হইতে এক বংসারে গ্রাহক মূল্য ১৫১ টাকা পাঠাইগাম। নিয়মিত ভাবে মাসিক বস্মতী পাঠাইয়া বাধিত ক্রিবেন—অপুণা ক্রিবেদী, Churchgate, Bombay.

নতুন বংসরের বৈশাথ হইতে ভাষিন প্রান্ত বাগ্যাসিক চালা গা। পাঠাইলাম।—প্রীমতী অপুণা সার্যাল, হাজাবিবাগ।

বৈশাৰ ১৩৬৬ হটতে ১ বংসবের প্রাছক মৃল্য ১৫ টাকা

মাসিক বস্থয়তীর ৬ মাসের শব্রিম মৃগ্য ৭:10 টাকা পাঠাইলাম। বৈশাৰ হইতে বস্থমতী পাঠাইয়া বাধিত করিবেন—জীসাবিত্রী বাজপেয়ী, মূর্শিদাবাদ।

Remitting half-yearly subscription of my monthly Basumati from Baisakh to Aswin.—Nilima Bose—Thanjhora Tea Estate.

Kindly continue to send Masik Basumati for a further period of one year.—Mrs. Lilabati Mukherjee.—Kanpore.

Sending herewith Rs. 7.50 N.P. as subscription for the monthly Basumati for six months from Baisakh to Aswin—Sm. Alo Sen Gupta. B. A.—Bombay.

অন্ত বাৰ্ষিক দেৱ ১৫১ পাঠাইলাম। বৈশাধ হইতে সংখ্যান্তলি সূত্ৰৰ পাঠাইবাৰ বাৰ্ছা কৰিলে বিশেষ আনন্দিত হইব — Sm. Lakshmi Rani Devi, Midnapore.



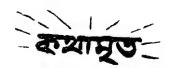
শতীশচন্দ্র মুখোপাধ্যায় প্রতিষ্ঠিত



৩৮শ বর্ষ—আষাত, ১৩৬৬ 1

॥ স্থাপিত ১৩২৯॥

প্রথম খণ্ড, ৩য় সংখ্যা



রাভ প্রার সাড়ে আটটা। মারের ভক্তপোবের পাশে নীচে বললেন, "এস, এস, আমার কাছে এসে বস। একে একটু মিট্টি দিবে বল থেতে দাও ভ সবলা, সাবা দিন থেটে আৰাব এই ছুটে খাসছে।" খামি খল খেতে খাণত্তি ক্রলুম, কিছ ভা কানেও ভূললেন না; বললেন "দেছের প্রতি একটু নজর রাখতে হর মা, অমতি ভিন ছেলের মা হয়েই বেন বুড়ীহয়ে গেছে।" মা ঠাঁর শামবাতের কথা তুলে বললেন, "এ কি হল মা, লোকের হয় বায়, আমার বেটি হবে সেটি আবে ছাড়তে চার না। ঠাকুর বে বলতেন 'ৰভ লোকে বোগ, শোক, পাপ, তাপ নিয়ে ৰত কি করে এসে ছোঁৱ সেই সব এই দেহে আশ্রের কবে,' তাই ঠিক মা—আমারও বোধ হর ভাই হবে। ঠাকুরের ভথন অন্তথ্য কে সব ভজের। (দক্ষিণেখ্রে) মারের (কালীর) ওধানে প্লো লেবে বলে জিনিবপত্র এনেছিল, ভাঠাতুৰ কাৰীপুৰে জেনে সেই সৰ ঠাতুৰেৰ কাছেই ভোগ লাগিৰে প্রসাদ পেলে। ঠাকুর বলতে লাগলেন, 'লেপেছ, কি অভার করলে? কাৰবাৰ কৰে এনে এখানেই সৰ দিবে দিলে।' আমি ভ জৱে ৰবি, ভাৰি—এই ভ অনুধ, কি জানি কি হবে। এ কি বাগু, কেন

ওরা এমন করলে। ঠাকুরও তখন বার বার তাই বলতে লাগলেন। মাছৰ পাতা হয়েছে। মা শোৰাৰ উত্তোগ কৰছেন। আমি বেতেই 🅻 কিছু পৰে বখন বাত অনেক হয়েছে তখন আমাকে বললেন, দেখ-এর পর বর বর আমার পূজো হবে। পরে দেখবে-একেই সবাই মানবে, তুমি কোন চিক্তা কোরো না।' সেই দিনই 'আমার' বলতে ওনলুম। কখনও 'আমার' বলভেন না। বলভেন এই খোলটার,' বা আপনার শরীর দেখিয়ে এই এর।' সংসারে কত রকমের লোক সব দেখলুম। ত্রৈলোক্য আমাকে সাভটি করে টাকা দিত । ঠাকুর দেহ রাধার পর (দক্ষিণেখবের) দীয় খাজাকী ও অক্ত সকলে লেগে ঐ টাকাটা বন্ধ করলে। আত্মীর বারাছিল তারাও মাত্রব-বৃদ্ধি করলে ও তাদের দঙ্গে বোগ দিলে। নরেনও কন্ত বলেছিল, মায়ের ও টাকাটা বন্ধ কোরো 📑 🍐 তবু করলে। তা দেখ, ঠাকুবের ইচ্ছার অমন কত সাত গণ্ডা এল. গেল। দীমু ফীছু সব কে কোথার গেছে। আমাব ত এ পর্ব**ত্ত** কোন হয় নি। কেনই বা হবে ? বলেছিলেন, 'আমার চিন্তা বে করে সে কথনও থাওয়ার কঠ পায় না।"

রাষ্ট্রভাষা বিজ্ঞান ও বিচারপদ্ধাত

এপুলিনবিহারী বস্থ

ভারতীয় ভাষাসম্প্রায় মূলে প্রধানতঃ তিনটি প্রশ্ন (১)
ভারতে কোনও জাতীয় ভাষা সম্ভব কিনা (২) সর্বভারতের
সংযোগ সাধনের জন্ম এবং কেন্দ্রীয় শাসনের জন্ম কোন ভাষা প্রহণীয়
(৩) প্রাদেশিক শাসন ও শিক্ষা কোন ভাষায় ইইবে ?

কাতি হিসাবে ভারতীয় কাতির অভিত কোনও দিন ছিল না, বর্ত্তমানেও নাই। হয়ত একটা কাতি গঠনের চেটা হইতেছে। সাফল্যের আশা কতটুকু বা গৃহীত ব্যবস্থা আমাদিগকে সত্যই কোন পথে লইয়া বাইতেছে সে আলোচনা বর্ত্তমানে না করিলেও ভারা আন্দোলনে ভাহার কতকটা আভাস পাওয়া বাইতেছে। কারণ, ভাষাগত একা সাধন শাসক সম্প্রদার বর্ত্ক গৃহীত উপার্ওলির মধ্যে একটি।

বাঁচারা এক ভারতের স্থপ্নে বিভোর তাঁহারণেও এই অবিসংবাদিত সত্য স্থীকার করিবেন বে, ভারতে বিভিন্ন জাতি বাস করে। ভারতীর মহাজাতি বিভিন্ন জাতির সমষ্টি মাত্র। এই সব বিভিন্ন জাতির মহাজাতি বিভিন্ন জাতির সমষ্টি মাত্র। এই সব বিভিন্ন জাতির মধ্যে ধন্মীয় ও সাংস্কৃতিক একটা ঐক্যের ভাব থাকিলেও পার্থক্যের জভাব নাই। ধন্মিচরণে, সামাজিক আচার-ব্যবহারে এমন কি জীবন বাপন প্রধানী ও আদর্শে এই পার্থক্য স্পাইই প্রতিভাত হয়। এই সব পার্থক্যের মধ্যে ভাষা একটি। ভারতে একটি জাতীর ভাষা প্রচলিত হইলে এই সব ভাষার পরিণতি হয় অবস্থি না কথিত ভাষারপে অবস্থিতি। আইনের বলে ইচা কি সম্ভব হইবে ? এই সমস্ত ভাষাই বহু পূর্কে সাবালকও প্রাপ্ত হইয়াছে এয় এই ভারতে বাঁচিয়া থাকিবার শক্তি ভাষাদের আছে।

ভাষাগত ও অন্তাভ পার্থকা একদিনের স্ঠি নর। প্রাকৃতিক ও সামাজিক শক্তি স্থানীর প্রয়োজন ও বৈশিষ্ট্য, বহিদেশি হইতে আগত নতন নতন জাতির সহিত সংমিশ্রণ ইভ্যাদি নানা কারণে এই পার্থক্য গড়িয়া উঠিয়াছে এবং ক্রমে ক্রমে বিভিন্ন জ্ঞাতির স্বাষ্ট ছটবাছে। সকলেই বলেন বে, সংস্কৃত আমাদের আদিভাষা। বখন সেই এক আদিভাবা হইতে এতগুলি বিভিন্ন ভাষার উৎপত্তি ছটবাছে তথন ইচা মনে করিলে অস্বাভাবিক হটবে না বে. আজ বদি সর্বভারতের অন্য একটি ভাষা গৃহীত হয় তাহাও কালক্রমে বিকৃত হইতে হইতে বিভিন্ন দেশে বিভিন্ন রূপ 'বারণ করিয়া বিভিন্ন ভাষায় পরিণত হইবে। নৃতত্ত-বিজ্ঞানও এই পার্থক্যের জন্ম অনেকটা দায়ী। একটু লক্ষ্য করিলেই দেখিতে পাওয়া যাইবে বে, বহু অবাঙ্গালী এই বাঙ্গালাদেশে পুরুষামুক্তমে বাস করিয়াও এই দেশের নামটা ঠিক উচ্চারণ করিতে পারেন না এবং বাঙ্গালীরাও বচ ছিন্দী কথা ছিন্দীভাষীদের মন্ত বলিতে পারেন না। অহম থেকে হাম হামি, আমি ইচ্ছাকৃত নয়, বৈশিষ্ট্যর ফল। অভীতে বেমন এক ভাষা হইতে বিভিন্ন ভাষাৰ স্ষ্টি হইয়াছে ভবিব্যতেও ভাছারই পুনরাবৃত্তি নিশ্চিত। আজ বদি বাছবলে এক ভারতীয় ভাতি ও এক ভাষার সৃষ্টি হয় কাল সেই একত থাকিবে কিনা সন্দেহ! বাহার স্থায়িত সন্দেহের বিষয় ভাহা গড়ার চেষ্টা নিক্ষল পরিশ্রম মাত্র।

আশার চশমা চোথে পরিয়া তবিষ্যতের দিকে না তাকাইয়া নগ্নচক্ বর্ত্তমানের উপর নিবন্ধ রাধাই শ্রেয়:। আশার চশমা পরিয়া দেখিলাম, দেশ ভাগ করিলে হিন্দু-মুস্লমানের সব হল্থ মিটিয়া বাইবে আর চারিদিকে বিরাজ করিবে চিংশান্তি। কিছ এখন দেখিতেছি, সেই বল্থ হালামা হইতে বৃদ্ধের পর্যায়ে উন্লীত হইয়াছে আর শান্তির মাধুর্বো মান্ত্র হারাইতেছে মন্ত্রমুল, নারী হারাইতেছে নারীছ; চতুদ্ধিকেই উৎপাটিত ছিন্ন্সল মান্ত্র—বাহাদের পক্ষে জীবন বারণ হইয়াছে গ্লানি ও অপমানকর। দশ বৎসরের স্বাধীনতা ভারতবাসীকে সাম্প্রদারিকতা ও প্রাদেশিকতা বর্ত্তমানের ভাষার আঞ্চলিকতা হইতে কতটা মুক্ত করিয়াছে এবং জাতীরতার কতটা অন্ত্রপ্রাণিত করিয়াছে তাহা নগ্লচকু দিয়া দেখিলে এবং ভাব ও সংস্থার-বিজ্ঞিত মন দিয়া বিচার করিলে এই কথাই বলিতে হয় বে, এক ভারতীয় জাতি আজও অনুবের আশা ও কণ্টকল্পনার বিষয় এবং একজাতীয় ভাষা অসম্ভর।

কিছ ছাতীর ভাষার জভাবে সর্বভারতের ছক্ত একটি ভাষার প্রয়োজনীয়তা জনস্বীকার্য। কারণ, এই ভাষা হাবা ভারতের বিভিন্ন জাতির সংযোগ সাধিত হইবে এবং ইহাই হইবে কেন্দ্রীয় শাসনের ভাষা। এই ভাষাটি এমন হওরা চাই বাহা প্রদেশগুলি নিজ স্বার্থে ও প্রয়োজনে বতদ্ব সম্ভব জন্ন জাহাসে এবং স্বেক্তার গ্রহণ করিতে পারে।

ভাষা সম্বন্ধ বাঁহারা আলোচনা করিভেছেন ভাঁহারা সকলেই ঘার্থহীন ভাষার বলিতেছেন বে, প্রাদেশিক শাসন ও শিক্ষা প্রদেশের মাতৃভাগতেই হওয়া উচিত। ইংরাজী ভাষার মাধ্যমে শাসন ও শিক্ষা বে কারণে আপতিজনক, মাতভাষা ছাড়া জন্ম ভাষার শাসন ও শিক্ষা ঠিক সেই কারণেই আপভিজনক। মাতৃভাষ। ছাড়া অর সব ভাষাই বিদেশী। হিন্দীভাষীর পক্ষে ইংবাদী বেমন বিদেশী ভাষা, বাংলাও ভেমনই বিদেশী ভাষা; মান্তাজীর পক্ষে ইংরাজী ও হিন্দী कुटे वितमनी ভाষা। इटेल्ड भारत, बक्डी वितमनी ভाষার সঙ্গে निष মাতৃভাষার সম্বন্ধ নিকট্তর কিন্তু তাহার হৈদেশিকতা ক্রমে লোপ পায় না। ভারতের বিভিন্ন প্রবেশভাষী বিভিন্ন ভাতির সর্বাসীন উন্নতি এবং স্ক্রনী শক্তি বিকাশের ক্রক্ত শাসন ও শিক্ষার মাতৃভাষার ব্যবহার বে অপ্রিহার্য্য এবং মাতৃভাষা ব্যতীত তাহা সম্ভব নয়, ইহা সর্ববাদিসমত। মুভরাং সে সম্বন্ধে আলোচনা নিভারোজন। এই প্রসঙ্গ শেষ করিবার পূর্বের এইটুকু বলিতে চাই বে, মাতৃভাষার শাসন ও শিক্ষা মায়ুবের জন্মগত অধিকার। মাতৃভাবা ব্যতীভ অগ কোনও ভাষা হইবে পৰাধীনভাষ শৃত্যল। স্বেচ্ছান্ত কি কেহ এই অধিকার বৰ্জ্জন করিবে এবং প্রাধীনভাব নিগছে আবন্ধ হইবে ?

তবে ত্থের বিষয় এই বে, এই সমস্ত প্রাদেশিক ভাষার মধ্যে কোনটাও এত উন্নত নর বে তাহার মাধ্যমে প্রয়োজনীর শিক্ষা সম্ভবপর। শিক্ষার থাতিবে বর্তমানে ও ভবিষ্যুতে বছদিনের জন্ম ইংরাজী বর্জন অসম্ভব। অতি বোর ইংরাজী-বিষেবীরাও বলেন বে, মাধ্যমিক শিক্ষার ইংরাজী আবন্তিক হওরা উচিত। প্রতরাং আপাতত শিক্ষার্থীকে হুইটি ভাষা শিধিতেই হুইবে—মাতৃভাষা ও

ইংরাজী। কিছ ইংরাজীকে চিরকাল এই উন্নত স্থানে বদাইর।
রাখিলে চলিবে না। শাসনকার্ব্যে ইংরাজীর ব্যবহার বন্ধ হইলে
তাহার গুরুত্ব অনেকটা কমিয়া বাইবে। বর্ত্তমানে আমাদের উদ্দেশ্য
হইবে বত শীঘ্র সম্ভব শাসনকার্ব্যে মাতৃভাবার পূর্ব প্রচলন এবং
তদ্ধারা মাতৃভাবার উপর রাজনৈতিক গুরুত্ব আবোপ এবং শিকার
মাধ্যম হিসাবে বারে বারে ইংরাজীর উদ্ভেদ।

ইংরাজীর আর একটি দিক আছে। ইহা একটি আন্তর্গান্তিক ভাষা। এই ভাষার মাধ্যমে পৃথিবীর অধিকাংশ দেশের সহিত আদান-প্রদান সন্তব্পর এবং পৃথিবীর প্রাকৃষ্টতম ভাষার করেকটির মধ্যে ইহা অক্সভম।

চীন জাপান প্রভৃতি দেশে বাহারা ইংরাজীভাবী নর, তাহার। বহিবিখের সহিত সংবোগ সাধনের জন্ত এই ভাষা ব্যবহার করে। ইংরাজী ভাষার এই গুক্ত জামাদের উপর নির্ভর করে না; জামাদের শত বিজেবে তাহার এই গুক্ত ক্মিবে না এবং গৌরবও ফুল্ল হুইবে না।

বধন দেখিতেছি বে, সুইটি ভাষা মাতৃভাষা ও ইংরাজী আমাদিগকে শিখিতেই হইবে এবং এই সুইটি বাষা বখন আমাদের সব উদ্দেশ্য সাধিত হয়, ভখন কেন্দ্রীয় শাসন ও সর্ব্বভারতের জক্ত আর একটি ভাষার প্রয়োজন কি শি অধ্যা আর একটি বোঝা লোকের মাথার দিতে বাই কেন ?

হিন্দীকে সর্বভারতীয় ভাষা করিবার ব্যগ্রহার আমাদের রাজনৈতিকগণ অরবয়ঙ্ক বালক-বালিকাদিগকে হিন্দী শিখিতে বাধ্য করিকেছেন। কলে ভাহাদের মন্তিক্ষের উপর কি কঠিন চাপ পড়িতেছে এবং প্রকৃত-শিক্ষা ব্যাহত হইভেছে কিনা, ভাহা ভাবিয়া দেখি:ত অম্বোধ করি। তিনটি ভাষা শিখিতে আমাদের বে শক্তিও সময় নই হয় তাহা অন্ত শিক্ষার প্রয়োগ করিয়া ভাহাদের এবং শিক্ষার প্রকৃত উন্নতি বোধ হয় বেশী কাম্য।

এই প্রবিদ্ধ শেব করিবার পূর্বের সংবাদপত্ত্র দেখিলাম বে, ভারত সরকার প্রদেশের শাসন ও শিক্ষার প্রাদেশিক ভারার ব্যবহারে সম্মত আছেন কিন্তু কেন্দ্রীর শাসনের জক্ত তাঁহার। হিন্দী ব্যবহার করিতে চান। স্মতরাং আমাদের তৃতীর প্রশ্নের সমাধান হইয়াছে। এখন প্রশ্ন ক্রেক্সে হিন্দী বনাম ইংরাজী এবং কেন্দ্রীর ভারার ব্যবহারের সীমা নির্দ্ধারণ।

কেন্দ্রীর ভাষা সম্বন্ধে আমাদের প্রথম লক্ষ্য হইবে বে, তাহার বাজনৈতিক গুৰুত্ব জনসাধাৰণের মনকে বেন ভারাক্রান্ত করিয়া না 'ভোলে। প্রদেশের শাসনকার্ব্যে প্রাদেশিক ভাষা প্রচলিত হইলে জনগণ অনেকটা ভাষাগত স্বাধীনতা পাইবে। কিন্ত ক্জৌর শাসন ও রাজনীতির ব্যাপারে এমন ব্যবস্থা হওয়া চাই বে, ভাহাদের এই স্বাধীনতা বভটা সম্ভব ক্ষুব্র না হর। কেন্দ্রীয় আইনসভার সদস্যদিগকে বে কোনও ভারতীর ভাষার বকুতা দিবার অধিকাৰ দিতে হইবে, আইনসভার দায়িত্ব হইবে তাহার নঠিক অন্থবাদ করা। কেন্দ্রীয় সরকার রাজ্য সরকারের সহিত পত্রাদি বিনিষয় ও আলাপ-আলোচনা কেন্দ্ৰীয় ভাষার ক্রিবেন কিছ প্রেয়েজন হইলে রাজ্য সরকারের ভাষার ক্রিবার ষ্ট্ৰত থাকিতে হইবে। জনসাধাৰণেৰ জন্ত বাহা প্ৰচাৰ ৰবিতে হইবে তাহা প্ৰাদেশিক ও কেন্দ্ৰীয় ছুই ভাবাতেই হওৱা

চাই। কেড়াবেল কোটে নিজ মাতৃভাষার বক্তব্য পেশ করিবার অধিকার সকলের থাকিবে। অর্থাং এইরপ অ্বোগ ও ব্যবস্থা সর্কানাই রাধিতে ছইবে—বাহাতে কেন্দ্রীর ভাষা অনভিজ্ঞ লোকও কেন্দ্রীর লাসন ও আলোচনার সক্রির অংশ গ্রহণ করিতে পারে। এক কথার কেন্দ্রীর শাসন কর্তৃপক্ষকে ভাষার ব্যাপারে সর্কানাই একটা নমনীর ভাব গ্রহণ করিতে ছইবে। হিন্দীকে কেন্দ্রীর ভাষা করিলে এই সমস্ত ব্যবস্থার প্রয়োজন আরও বেন্দ্রী। কারণ প্রাদেশিক ভাষার শাসন ও শিক্ষার ব্যবস্থা প্রচলিত ছইলে বছ অহিন্দ্রীভাষীর হিন্দ্রী

এইবার প্রশ্ন, হিন্দী কি ইংবাছী? হিন্দীর পক্ষে বৃক্তি এই
(১) বাধীন ভারতে ভারতীয় ভাবাই ব্যবহার করাই উচিত (২)
ভারতীয় ভাবা সমৃদ্দের মধ্যে হিন্দী সংখ্যাগরিঠের ভাষা এবং
বহুলোকের বোধগম্য; প্রভরাং হিন্দীই একমাত্র গ্রহণীয় ভাষা।
এই যুক্তির প্রথমশে বিশ্লেষণ করিলে বক্তব্য এই গাঁড়ার বে, বাধীন
লাতি লাতীর ভাবা ব্যবহার করে, আমরা বাধীন কিছু আমাদের
কোনও লাতীয় ভাবা নাই; প্রতরাং আমরা একটি প্রাদেশিক ভাবাই
ব্যবহার করিব। লাতীয়তা ও প্রাদেশিকভারে সংমিশ্রণে এই যুক্তির
উৎপত্তি। এই যুক্তি এক দলের প্রাদেশিকভাকে প্রশ্রম দের অভ্ন
দলকে লাতীয়তাকে বিস্কল্পন দিতে বলে এবং হুই দলের মধ্যে একটি
প্রদ্ধের প্রত্তি করে। সেই বিরোধের আভাস পাইরাও হিন্দীসমর্থকগণ যুক্তির অসারভা খীকার করিতেছেন না, সর্ভ, সীমা ইত্যাদি
আরোপ করিয়া ভাঁহাদের পুরাতন সিছান্ত ছির রাখিছে চান।

যুক্তির বিতীরাংশ হিন্দী সংখ্যাগরিঠের ভাষা। দশীর শাসনে সংখ্যা থারা নীতি নির্দারিত হর সত্য কিছ ধর্ম, ভাষা, সমাজ ইত্যাদি বিষয়ে সে নিরম অচল। সেই জন্তই সংখ্যাসঘিঠের জন্ত রক্ষাকরচ। এই যুক্তি জাতীর আধিপত্য বিভাবের বা হিন্দী সাম্রাজ্যবাদের যুক্তি এবং ইহার মধ্যে যুক্তি অপেনা শক্তিই বেনী। বিদ অহিন্দীভাষীরা স্বেচ্ছার হিন্দী গ্রহণ করেন, কোনও আপত্তি নেই। কিছ এক ভোটের পার্থক্যে হিন্দী রাষ্ট্রীয় ভাষা হওয়ার হিন্দীভাষীদের শক্তিরই পরিচয় পাই আমরা।

ভারপর হিন্দী বছলোকের বোধগম্য। কিছ এই বোধগম্ভা এক অভিকৃত্র গণ্ডীর মধ্যে সীমাবছ। সামরিক একটা প্রবোজনের কথা কোনওরপে বুবিতে পারি বা বুঝাইতে পারি। কোনও আলোচনার অংশ গ্রহণ করা দ্বের কথা, সব সমরে মনের ভাষা প্রকাশ করিতেও পারি না। নগরবাসীর কভকাংশ সম্বন্ধে ইহা হরতো প্রবোজ্য নর কিছ সাধারণ মাধ্য সম্বন্ধে ইহার কোন ব্যতিক্রম আছে কি না সন্দেহ। হিন্দীর প্রকারভেদে আমাদের বোধগম্যভাও কম-বেশী হয়। ধে হিন্দী আমরা বলি বা বুবি ভাষা আমাদেরই স্টে একটি কথিত ভাষা, বাহার সহিত প্রকৃত ভাবার সম্পর্ক থবই কম।

মধ্যে মধ্যে হিন্দীৰ সমর্থনে কতকগুলি ব্যবহারিক স্থবিধার কথা শুনি। সেগুলি বে কি, তাহা কোথাও স্পষ্ট শুনি নাই। ভাষা-কমিশনের বিপোটে হিন্দীভাষীদের স্থবিধাগুলি বুঝিতে পারি কিছ অহিন্দীভাষীদের স্থবিধা কি, তাহা বুঝিলাম না।

ভাষা হিসাবে হিন্দা ও ইংরাজীর তুলনা নিচ্ছারোজন। ইংরাজী গ্রহণে আমাদের প্রধান আপত্তি, ইহা আমাদের জাতীর ভাষা নহে। ছুই শত বৎসবের ইংরাঞ্চ শাসন ইংরাজীকে বে আমাদের বিভীর মাতৃভাষা করিয়াছে অন্ততঃ জাতীয় ভাষার ঠিক নিয়েই বে তাহার ছান করিয়া লইয়াছে, সে বিষয়ে কোনও সন্দেহ নাই। ইংরাজ-বিবেব আমাদের থাকিতে পাবে কিছ ইংরাজী বিবেবের কোন কারণ আছে বলিয়া মনে হয় না। বহু বিষয়ে এই ভাষার অবদান অনস্বীকার্য্য।

ইংবাজী বনাম হিন্দী এই বিতর্কে এই বলিলে বধেষ্ট হইবে বে, একটির সমর্থন ভাবপ্রবণতার অপরটির সমর্থন ব্যবহারিক স্থবিবায়। প্রক্যের জন্ত অনেকে হিন্দী সমর্থন করেন। ঐক্য ভাব। বা ধর্ম আশ্রর কবিরা গড়িরা উঠে না। স্বনীশ্বক ঐক্য মাছুবে মাছুবে হব না, জাতিতে জাতিতেও হব না। ঐক্যের উৎপত্তি উপলব্ধি ও অফুভ্তি হইতে গড়িরা উঠে এক বিশেষ উদ্বেশ্তকে অবলম্বন কবিরা। ঐক্যের জন্ত চাই এক দেশ, এই উপলব্ধি এক ভাষার কোনও প্রয়োজন নাই।

হিন্দী সমর্থকগণের নিকট আর একটি নিবেদন—হিন্দী রাষ্ট্রভাষার উল্লীত হইরা বে ঔষত্য, অসহিষ্ণুতা ও কোনও ক্ষেত্রে বে নীচতা দেখাইরাছেন ভারতীয় ঐক্যের উপর তাহার কি প্রভিক্রিয়া, ভাহা অস্ততঃ এখনও বুঝিবার চেষ্টা করিবেন।

সনাতন গোস্বামীর গৃহত্যাগ

উমাপ্রসন্ন দাশগুপ্ত

বিশার বিশেষ অমুরোধ উজীর সাহেব, আপনি আর একবার বিবেচনা করে দেখুন-এই পদমর্যাদা, বিপুল এবর্ব্য এসব কি ভাষ মাত্র একটা আদর্শের জন্ত ছেড়ে বাওয়া উচিত ?

আমি স্বেচ্ছায় ছেড়ে বাজি না কোতোরাল সাহেব, সেদিন বামকেলি প্রামে আমি আমার সব হারিবে ফেলেছি। সেই তপ্তকাঞ্চন-গৌরাক সম্নাসী আমার সব কিছু ছিনিবে নিয়ে গেছেন। এই বে দেখছেন দেহটা—এটাও তাঁর সম্পত্তি, এটাকে, তাঁর চরণে কেলে দিরে আমি ঋণমুক্ত হতে চাই।

মাঞ্ করবেন উজীর সাহেব, আমি আপনার কথা ঠিক বুরতে পারছি না।

ভাপনি ভানেন না—গোড়েখবের অমাত্যরূপে এঁব সহজে পুর্বে ভামি অনেক কথাই ভনেছিলাম। ভনেছিলাম দিবিজয়ী পণ্ডিত, সরস্বতীর মানসপুত্র কেশব কাল্মীরীর শোচনীর পরাজর—ভনেছিলাম পরাজিত পণ্ডিত সাঞ্রনরনে সরস্বতীর ধ্যান করে বলছেন—মা, শেবে তুই একটা বালকের হারা আমার পরাজিত হরলি! সরস্বতী উত্তরে বললেন, ওবে, এই পরাজয়ই ভোকে অমর করে রাহবে। হুংধ করিস না, আমি নিজেই বে তাঁর কাছে নিজ্য পরাজিতা, তুই আমার পুত্র আর তিনি—তিনি আমার স্বামী, সাক্ষাৎ নারারণ। তথন বিশ্বাস করিনি। তারপর সেদিন রামকেদি প্রামে সহস্র সহস্র লোকের মধ্যে ছ্মবেলী আমাদের হু'ভাই-এর হাত হুটি বরে বথন তিনি বললেন, ওবে তোরা বে আমার বজের সাথী, কেমন করে ভূলে রবেছিস? আমি মৃত্তিত হরে পড়লাম। জ্ঞান হতে অমুভব করলাম—আমি সম্পূর্ণ বিক্তা—নিংস্ব। বাক, অমুগ্রহ করে আপনি আমার মুক্তির ব্যবস্থা করে দিন কোভোরাল সাহেব।

আপনি আমার অবস্থাটা ঠিক বুবজে পারছেন না। নবাব বলি ঘুণাক্ষরেও এই বড়বজের কথা জানতে পারেন তবে আমার প্রাণদণ্ড নিশ্চিত। আবার এ-ও আমি ভূগতে পারছি না উপ্পীর সাহেব বে, আপনার নিকট আমি অনেক উপকৃত। আপনার অমুগ্রহে আমার এই পদোরতি। আমি আপনাকে কথা দিছি—আর আপনিও জানেন সাকর মলিক জীবনে কথনও মিখ্যা কথা বলেনি, আপনাকে

আমি এমন উপায় বলে দেব বে সকলেই জানবে সাক্ষ মলিক মৃত। এই নিরপরাধ বন্দীকে মৃক্তি দিলে আপনার পুণাই হবে—তাছাড়া আমি অর্থ দিয়ে আমার মৃক্তির মৃল্য দেব। আমি আপনাকে পাঁচ হাজার টাকা দেব।

নিভূত কারাগারে, গভীর নিশীথে কথা হচ্ছিল এক বন্দীর সঙ্গে কারারক্ষী কোতোরালের। বন্দী হিন্দু, তাঁর সর্বাক্তে আভিজাত্যের ছাপ, পোবাক-পরিচ্ছদেও তদমুক্তপ।

ধর্ম ও অর্থ একসঙ্গে প্রাপ্তির স্থবোগ জীবনে বড় একটা আসেনা, তাই কোতায়ালের পক্ষে এ লোভ সংবরণ করা একটু কঠিন হয়ে গাঁড়ালো। সে একটু ভেবে উত্তর দিল—তাই ত ! আমি ঠিক অর্থের কথা ভাবছি না—আমি ভাবছি আপনি আমার ভ্তপ্র মনিব—বদি কোনরকমে আপনার একটু উপকার করতে পারি। বলুন কি উপায় আপনি স্থির করেছেন ?

বন্দী চাবি দিক একবার ভাল করে দেখে নিয়ে ধীরে ধীরে বললেন, কাল সন্ধার আপনার লোক আমাকে গলার ভীরে ছেড়ে দিরে এসে প্রচার করবে বে সাদ্ধাকুত্য করতে বাবার সমর হস্ত-পদ-শৃথলিত বন্দী গলার বাঁপিয়ে পড়েছে—উদ্ধারের সকল চেটা বার্থ করে বন্দী ধরস্রোতে ভেসে গেছে। আমি নদী পার হয়ে বনপথে বৃশাবনের দিকে যাত্রা করব। কেউ দেখবে না—কেউ জানবে না। আপনি শুরু এই পত্রধানা আমার ভৃত্য ঈশানকে দেবেন, তবেই সে আপনার হাতে নির্দিষ্ট মুলা দিরে আমার সঙ্গে মিলিত হবে।

কোন্ডোয়াল একটু হেসে উত্তর করল, টাকার লোভ আমার নেই মলিক সাহেব, ভবে আপনি ভ' জানেন, সাধারণ প্রহেয়ীরা বড় গরীব ভাই—।

বন্ধী বৃষতে পাৰলেন বে ওব্ধ ধরেছে, তাই ভিনিও একটু হেনে বললেন, তা ত' নিশ্চরই—তাদের জন্ত আমি আবও ছ' হাজার টাকা দেব—আপনি আর থিধা করবেন না।

কোনোরাল এদিক-ওদিক চেরে ফিস-ফিস করে উত্তর দিল, তা আগনার অন্তরোধ কেমনু করে অবহেলা করি? ভবে একথাই ছির--কাল সন্ধ্যায়-- গৌড়েখবের ভ্তপূর্ক প্রধান অমাত্য সাকর মন্ত্রিক চলেছেন অলানার পথে গণ্ডীর অরণ্যের মধ্য দিরে। পরিধানে শতছির মন্তিন বসন, ক্ষেতভোধিক মন্তিন কছা আর সঙ্গে চলেছে পুরাতন ভ্তা উলান। সে জানে না কোথার চলেছে তার প্রভ্, কোন মুরলীর মোহন তান তাঁকে এমন করে পাগল করেছে!

প্রভূব কটে তার চোথে কল এলো। করেক দিন আগেও
বাব একটি অকুলি হেলনে সারা গোড়ে একটা ভূমিকম্প হরে বেত—
বার পোড়েশর ছিলেন বার হাভের ক্রাড়নক—তিনি কি না চলেছেন
দিনের পর দিন কটকাকীর্ণ বনপথে, পদত্রজে—অনাহারে—
অর্ছাহারে! কোন দিকে ক্রক্ষেপ নেই। মাবে মাবে বথন ক্ষ্ণার
ভূকার অবসর হরে পড়েন, কতবিক্ষত দেহটাকে আর টেনে নিয়ে
বেতে পারেন না, তথন হয়ত কোন বটক্ছারার বনে পড়ে বলেন,
ঈশান, বৃন্ধাবন আর কতন্ত্র? আর কি তাঁর সঙ্গে দেখা হবে না—
আমার খণ কি শোধ হবে না? ওগো প্রভূ! ভূমি আমার
শক্তি লাও। চোথ মুছতে মুছতে প্রভূকে পান্থনা দিরে ঈশান ভিকার
চলে বার।

মুহুর্ত্তের জন্মও সনাতন ভূগতে পারেন না বে তিনি পলাতক রাজবলী। ধরা পড়লে জীবনে আর তাঁর দর্শন পাওয়া বাবে না। ধণ শোধ হবে না, তাই তিনি সবছে বর্জ্ঞন করে চলেন রাজপথ আর জনবহুল লোকালয়। বেছে নেন খাপদসমূল নিবিড় জরণ্য। কোন দিন ভিক্লা জোটে—কোন দিন বা জোটে না।

এ ভাবে করেক দিন চলার পর তাঁরা পাতজা (বঙ্গ-বিহারসীমান্তে) পর্বতের পাদদেশে এসে উপস্থিত হলেন। স্থানটা
অতি ভরক্কর এক ভূঞার জমিদারী। ধনরত্ন নিরে কোন পথিক
এ পথে চলা-ক্ষেরা করতে পারত না। সনাতন এ সংবাদ জানতেন
কিছে তিনি নিরূপার—প্রেকাত রাজপথে চলার উপায় নেই, তাছাড়া
এখন তিনি কপর্দকশৃত ভিধারী আক্ষণ; তাই ভয়েরও বিশেষ
কারণ নেই।

ছ'দিন ভিকা জোটেনি—শ্বীর অবসর—আব চলতে পাবেন না। ঈশান প্রভুকে এক গাছতলার বসিরে চলে গেল ভিকাব স্কানে। আৰু কিছু জোটান্ডেই হবে। এদিকে ভূঞা কোন বক্ষম জানতে পেরেছে বে তার জমিদারীতে এসেছে ছ'জন নিবল্ল গোড়ীর—আর তাদের নিকটে আছে আটটি যোহর। শোণিতের লোভে শার্দ লের মন বেমন নেচে উঠে তেমনি উৎকৃত্ব হরে উঠন ভূঞা। কোন ছলে সন্ধ্যা পর্ব্যন্ত আটকে বেশে বাজের অক্কারে কার্য্য শেষ করতে হবে।

মতলব ছির করে সে সনাতনের কাছে এসে সাঠাকে প্রবিপাত করল ও তার আতিথ্য গ্রহণের জন্ম বিশেষ অন্থরাধ জানাল। তার ইঙ্গিতে এলো নানারকম উপাদের আহার্য। সনাতন কিছুই গ্রহণ করলেন না, তথু বললেন আমি অতি দিয়ে আমার পক্ষে বুটি আতপ তওুলই জামার পক্ষে বংগ্র এবং ভাত আমার ভ্ততা ভিক্ষা করে সংগ্রহ করেছে। আপনি বদি একান্তই আমার অনুগ্রহ করতে চান তবে একজন লোক সঙ্গে পর্বভিটা পার করে দিন—আমি কৃতার্থ হব, ছ'হাত তুলে আশীর্বাদ করে।

ভূঞা অভ্যন্ত আনন্দের সঙ্গে এ প্রস্তাবে সমত হরে বসল,

আপনাবা সানাহার করে নিশ্চিত মনে বিশ্রাম করুন, সন্থার আমার লোকেরা আপনাদের হাত্রার সমস্ত ব্যবস্থা করে দেবে, তথ্য ভূঞা সেধানে ছ'জন প্রহরীকে রেখে প্রস্থান করল।

গোড়েখবের ভূতপূর্ব অবাত্য সনাতন—বিহান, বৃদ্ধিমান, কৃট।
তাঁর মনে সন্দেহের একটা কালো-ছারা উঁকি মারতে লাগল—
কেন এই অতিবিক্ত সৌজন্ত, অসাধারণ ভক্তি। তিনি ঈশানকে
একটু আড়ালে ডেকে নিরে বক্লগন্তীর কঠে ভিজ্ঞাসা করলেন,
ঈশান, তোর সঙ্গে ধন-বত্ন কিছু আছে ?

প্রভাৱ এই কঠমর ঈশানের পরিচিত—তাঁর চোথের এই অতলম্পানী দৃষ্টি বছ বার দেখবার মধােগ তার হয়েছে! সে ভরে কাঁপতে কাঁপতে কলল প্রভু, বদি আপনার সেবার প্রয়োজন হয় তাই সাভটা মােহর সঙ্গে এনেছি—আমার অপরাধ নেবেন না।

সনাতন তথন ধীরভাবে বললেন মূর্থ, এবই ব্লক্ত আৰু
আমাদের জীবন বিপর। জানিস না অর্থই অনেক সমর অনর্থের
মূল হরে দাঁড়ার, দে আমাকে। ঈশান তার উত্তরীরের প্রাপ্ত
থেকে সাতটা মোহর বের করে প্রাক্তর চরণে রাখল।

কোন বৰুমে তাড়াতাড়ি সানাহার সমাপন করে সনাতন সেই জমিদারের নিকট উপস্থিত হরে বললেন ভাই, ভোমার সৌজ্ঞে জামি পরম পরিতৃপ্ত হরেছি—জানীর্কাদ করি চৈতত্তে মতি হোক—এখন দয়া করে আমার সঞ্চিত এই সাতটা মোহর প্রহণ করে জামাকে পর্বাত পার করে দাও। তাঁর বদন প্রশাস্ত, ভাবে ভাবার অভিবাগের কপটতার লেশমাত্র নেই—সরল, স্বচ্ছ নীল আকাশের মত।

নেই ভূঞা বিশ্বিত দৃষ্টিতে তাঁর মুখের দিকে চেরে রইল—
সেধানে মিধ্যা বা ভীতির কোনও চিহ্ন ধুঁজে পেল না—শাস্ত, সৌম্য,
সুন্দর। তথন সে নতজামু হবে তাঁর পা তথানি ধরে বলল, ঠাকুর
ভূমি কি মান্ত্র? আমি তোমার হত্যার বড়বল্ল করেছিলাম আর
তার বিনিমরে ভূমি করলে আমার অবাচিত আক্মির্কাদ—আমার
হাতে ভূলে দিলে তোমার সারা জীবনের সঞ্চয়! বল আন্দণ, এ শিক্ষা
ভূমি কোধার পেয়েছ?

সনাতন তাকে আলিখন করে উদ্ভৱ দিলেন, ভাই! আছেন। আছেন—এ জগতে ওধু একজনই আছেন বিনি শিক্ষা দিতে পারেন।

কে তিনি ঠাকুৰ? ভিনি কি তোমাৰ চেয়েও মহৎ ?

মহন্দ্ৰ আমি কোধার পাব ভাই ! তবু বদি বিলুমাত্রও আমার মধ্যে দেখে থাক তবে জেনো—এ তাঁবই জপার করণার এক কণা। বাক ভাই ! দ্যা করে আমার পর্কতিটা পার করে দাও।

আমি তোমার পাতড়া পর্কত পার করে দেব কিছ বাহ্মণ, তার আগে আমার প্রতিশ্রুতি দাও তুমি আমার সংসারসাগর পার করে দেবে—আমি মহাপাণী।

ভর কি ভাই—তিনি বে পাণীদের স্ব চেক্স বড় আপনার অন— আর তাঁর তর্নীতে সকলেরই সমান অধিকার। সময় হলে আমি ভোমার তাঁর কাছে নিয়ে বাব।

নিশাবোগে ভূঞাৰ সাহাব্যে পাতভা পৰ্বত পাৰ হয়ে প্ৰদিন

প্রভাতে স্থাতন আবার ঈশানকে বিজ্ঞাসা করলেন, তার কাছে আর কোন ধনরত্ব অবশিষ্ঠ আছে কিনা।

ঈশান ভীত-কম্পিত ভাবে উত্তর দিল আছে—আর একটি মাত্র অর্ণবৃদ্ধা অবশিষ্ট আছে। আর সেটি সে রেখেছে একাপ্ত ভাবে প্রাভৃত সেবার অক্ত—বদি কখনও ছেমন সময় উপস্থিত হয়।

সনাতন একটু ছেসে ঈশানকে আলিজন করে বললেন ঈশান, বন্ধু আমার ! ভাই আমার ! স্বৰ্ণমূলার প্ররোজন আমার চিরদিনের মত শেব হয়ে গেছে—তোমার সেবারও আর প্রয়োজন হবে না। প্রার্থনা কর, আমিই বেন সকলের সেবাৎ করতে পারি।

ঈশানের মুখে কোন কথা বেকল না—লে' তার প্রভূর পারে মুখ ওঁজে ফুঁপিরে ফুঁপিরে কাঁদতে লাগল।

সনান্তন তাকে সংস্নহে বুকে জড়িয়ে ধরে বললেন ভাই, তুমি দীর্ঘ দিন জামার সেবা করেছ, প্রতিদানে জামি দিয়েছি গুরু কাচ— এবার ঘরে কিরে গোবিন্দের সেবা কর, তিনি দেবেন ভোমায় কাঞ্চন —জার সেই হবে তোমার পাথের।

ঈশান তার প্রভূকে ভালরকমই জানে, তাই আর কোন কথা বলতে সাহস করল না। পাঁজরভালা দীর্ঘাস ও করেক কোঁটা তথ্য অঞ্চ দিরে সে কানাল তার বিদার সন্তামণ।

সন্ধ্যা অনেককণ উত্তীপ। নিজ্ঞান অন্ধনার বনপথে মাথে
মাথে গুলু শোনা বার বঞ্চপক্ষীর কর্কণ চিৎকার। এক স্থঠাম
মথেশ যুবক ক্রন্ত অখাবোহণে এগিরে আগছিল। ভার পোবাক
পরিছেদে প্রতীরমান হয় বে, যুবক একজন হিন্দু—উচ্চপদস্থ
মাঞ্চর্মানিটারী। হঠাৎ ভার কানে ভেসে এলো এক করুণ ক্রন্দান।
সে ঘোড়া থামিরে ইতভাত দেখতে লাগল—এই অন্ধনার রাত্রে
খালদসমূল নিজ্ঞান বনে কে কাঁদছে! ভাড়াভাড়ি মশাল বেলে
এদিক গুলিক খুলতে খুলতে সে দেখতে পেল—এক ধূলি-খুস্বিভ
ছিল্ন মলিন বস্ত্র পবিহিত্ত পথিক গাছতলার পড়ে কাঁদছে আর
বলছে ওগো প্রাভূ, আর ব্বি দেখা হ'ল না। ঋণ ব্বি আর
শোধ করতে পারলাম না। উঃ, বুলাবন আর ক্রন্দ্র!

যুবক ধীরে ধীরে সেই অবসর পথিকের কাঁথে একথানা হাত রেখে জিজ্ঞাসা করল, তুমি কার সন্ধানে চলেছ পথিক ? কে তোমার মহাজন—কার কাছে তুমি ঋণী ?

হঠাৎ সংস্নহ স্পর্ণ পেরে, দরদন্তরা কণ্ঠসর গুনে সনাতন আনন্দে উৎকুল হরে উঠলেন। বদলেন, কে তুমি ভক্ত, আমার প্রভ্রের করুণা-ধারার মত আমার সামনে এসে দাঁড়িরেছ! আমাকে বাঁচাও— আমি আজ তিন দিন উপবাসী, এক মুষ্টি অন্ন আর রাজের মত একটু আগ্রম আমার ভিক্ষা দাও। আমাকে বে বাঁচতেই হবে—প্রভ্রম অনুমতি ব্যতীত মরবারও বে আমার অধিকার নেই।

যুবক সেই অবশ পথিকের একথানা হাত ধরে ধীরে ধীরে নিয়ে সেল তার প্রামাদে, তারপর নারায়ণ নিবিবশেবে তাঁর সেবা করল।

প্রদিন প্রভাতে বাত্রার পূর্বে পথিক গেলেন সেই সহাদর বুবকের নিকট বিদার নিতে—ভাকে আশীর্কাদ করতে। ভার কক্ষে প্রবেশ করেই সনাতন চমকে উঠলেন। আনন্দে চিৎকার করে বললেন এ কি! কে ভূমি ? জামি কৈ ঠিক দেখেছি—ভূমি, শ্ৰীকাৰা।

যুবকও ভাল করে লক্ষ্য করে পধিককে চিনতে পারল। তাঁর পারে লুটিরে পড়ে বলল একি দাদা ভূমি। শেবে ভিধারীর বেশে ভূমি আমার বাড়ীতে অতিথি হয়েছ। এ-ও কি তোমার পরীকা নাকি। হলেও ভূমি ত তা সসমানে উত্তীর্ণ হয়েছ আর তা বিদ হয়েই থাকি, ভাও ত তোমার আশীর্কাদেই দাদা। আমার বেশ মনে আছে, বেদিন ভোমারই প্রদত্ত রাজকর্ম নিয়ে বিদেশে বাত্রা করি সেদিন ভূমি আমাদের আমিন্তীর মাথার হাত দিরে বলেছিলে—প্রীকান্ত, সব সমর মনে বেথো অতিথি নারারণ আর অতিথিসেবাই গৃহত্বের সব চেয়ে বড় বর্ম। দাদা, অনেক দিন পরে তোমার পেয়েছি আর ছেড়ে দেবো না—কিছ দাদা ভোমার এ বেশ—এ চেহারা কেন ?

জীকান্ত ভাই—আমার বে খেতেই হবে, আমার ব্রন্ত শুক্ত করবার চেষ্টা করো না ভাই! আমি বে সব সমর আমার প্রভূব ডাক শুনতে পাছি। স্পষ্ট দেখতে পাছি তিনি করুণ নরনে আমার দিকে চেরে বলছেন—রূপ, সনাতন! ভোরা বে আমার ব্রজের সাধী—কেমন করে ভূলে ররেছিস ? ওরে আর, আর তোরা, না এলে বে আমার দীলা পূর্ব হবে না—কান্ত সারা হবে না।

যুবকের চোধে জল এলো—সে ক্লিভ কঠে বলল দাদ। আমি তোমার ধরে রাখব না কিছ কয়েক দিন এখানে থেকে সুস্থ হয়ে যাও।

ভাই, আমাকে আর মায়ায় বেঁধো না, তাছাড়া আমি পদাতক রাজবনী। আমাকে আশ্রহদানের বিপদ নিশ্চরই ভোমার অজানা নেই।

শংবার পরীকা দাদা ? বেদিন এক সহার-সম্বলহীন বুব্দ তোমার বাবে আশ্রবধারী হয়ে গাঁড়িয়েছিল সেদিনও তাকে আনাতীত প্রভার—সম্প্রদান করেছিলে তোমার প্রাণের পুত্রিল ক্রিছ। ভগিনীকে।

আমার নির্বাচনে ভূল কিছুই হয়নি ভাই—আশীর্বাদ করি নিরাশ্ররের আশ্রয়স্থল হয়ে দীর্যজীবী হও। আমাকে হাসিমুখে বিদার দাও ভাই!

কিছ দাদা, পশ্চিমের এই এচণ্ড শীতে কেমন করে ভোমার প্রভুব কাছে পৌছুবে? অনুষতি কর অন্তত একধানা শীতবন্ত ভোমাকে দিই। আর কিছু না হোক হোট ভাই-এর প্রণামী হিসাবে ভা ভোমাকে গ্রহণ করতেই হবে। একথা বলেই জীকান্ত ককান্তর থেকে নিয়ে এলো একধানা বহুমূল্য ভোটক্ষল, ভারণর সনাতনকে প্রণাম করল।

চৈতত্তে মতি হোক, বলে সনাতন তাকে আশীর্কাদ করনেন ও স্থক্ষ করনেন তাঁব বাত্রা। এ স্লেহের বন্ধন আর তিনি সহু করতে পাবছিলেন না।

শ্রীকান্ত সাঞ্চনমনে তাঁর পথের দিকে চেরে চেয়ে ভাষল—কে সেই নররূপী নারায়ণ, বিনি গৌড়েশবের প্রধান অমাত্যকে করেছেন সর্বহারা পথের ভিধায়ী—আকাশচুখী মহীক্ষক্ত নিরে এসেছেন ভূপের চেয়েও নীচে—ভাঁর চরণে কোটি কোটি প্রণাম!

বারাণসী—শহরের মহিমামণ্ডিত, বহুণা অসি প্রকাশিত প্রতির্থান। বিতীর কৈলাস। এই বারাণসীতে এসে সনাতন লোকমুখে ওনলেন এক নবাগত আলোকিক সন্নাসীর কথা—বাঁর চল্লক বরণ ভেদ করে ফুটে উঠে নীলকান্ত মণির জ্যোতি, বিনি মণে কলপের চেয়েও সুন্দর, বিভার সরম্বতীর চেয়েও বড়, প্রেমে ব্য়ং শ্রীবাধা। সনাভনের ব্রতে দেরী হল না বে, ইনিই তাঁর হারানিথি—সেই প্রোণের ঠাকুর, প্রেমের ঠাকুর, দীনের ঠাকুর। কিছ এই বিশাল সহরে কোথায় তিনি তাঁকে খুঁজে পাবেন! তিনি নিজে দেখা না দিলে কে তাঁকে বেখতে পারে, নিজে বরা না দিলে কে তাঁকে বর্ষতে পারে, কিলে বরা না দিলে কে তাঁকে বর্ষতে পারে, কথনও অন্নপূর্ণার চম্বরে—কথনও বিশ্বনাথের মন্দিরে, কথনও জন্মপূর্ণার চম্বরে—কথনও বা জনাকীর্ণ রাজপথে কিছ কোথাও খুঁজেও পোলেন না তাঁর হারানিথিকে।

দিনের শেবে অবসর স্নাতন পাছতলার ওবে ওবে ভাবেন— ওগো ঠাকুর, আর কি ভোমার সঙ্গে দেখা হবে না—আমার সব চেষ্টা কি বার্থ হবে ? আমি বে অনেক দীনতঃখীকে কথা দিয়ে এসেছি ভোমাকে ভাদের সামনে ভুলে ধরব—ভোমার মহামন্ত্র ভাদের বিভরণ করব। ওগো, তারা ভ জানে সাকর মল্লিক মিখ্যা কথা বলে না ?

এভাবে ঘুরতে ঘুরতে একদিন প্রভাতে তিনি চল্লদেশবের বাড়ীর সামনে এক গাছতলায় বসে বসে ভারছেন—ঠাকুর, ধরা বদি দেবে না ভবে কেন দেখা দিয়েছিলে, কেন দিয়েছিলে ছটি বাছ
—আর বদি দেখাই দেবে না ভবে এ চোখ ছটি এখনও অন্ধ করে দাওনি কেন ?

থমন সময় চন্দ্রশেধর সদর দরজা থুলে বাইরে বেরিয়ে এসে থদিক ওদিক চেয়ে আবার ভিতরে চলে গেলেন। ভাগ্যবান পুক্ষ চন্দ্রশেধর। বিনি চঞ্চ গোবিন্দকে অস্তত একদিনের অস্তও অচঞ্চল করতে পেরেছিলেন—খ্যাং ত্রজেন্দ্রনন্দন বাঁর গৃহে অস্তত কয়েক দিনের অস্তুও অভিথি হয়ে অবস্থান করেছিলেন।

গৃহাভ্যস্তবে গিয়ে চন্দ্রশেধর মহাপ্রভুর ঐচরণে নিবেদন করলেন, কই কোন বৈফবকে ত দেখতে পেলাম না প্রভু! মহাপ্রভু হন্তাশার স্থরে উত্তর করলেন কেউ আসেনি—তবে আমার মন আৰু এত চঞ্চল কেন ? নিশ্চরই আসবে—আমার প্রিয় কেউ আসবে।

শ্বন্ধণ পরে আবার চন্দ্রশেধরকে আদেশ করলেন ভাল করে থুঁকে দেখতে। ব্যাকুল হরে বললেন নিশ্চরই কেউ এদেছে— আমার ডাকছে—আমি যে আর থাকতে পারছি না—বাও, বাও।

চন্দ্রশেধর আবার ঘূরে এসে বললেন প্রভূ, কোন বৈকার ভ আদেন নি—ভবে গাছতলায় একজন দরবেশ বলে আছেন। মহাপ্রভূ ইভভাত করে সেই দরবেশকে ভিতরে আনতে অফুরোধ করনেন।

চন্দ্রশেধবের আমন্ত্রণে সনাতন বীরে ধীরে অঙ্গনে প্রবেশ করলেন—ভারপর ডিক্সুকের সামনে উন্মুক্ত হল অঞ্বন্ত রত্নের ভাগোর —যুগ-যুগান্তের তৃষিত্ত চাতক পেল নবা জলগবের সন্ধান। সনাতন বৃদ্ধিত হরে পড়ে গেলেন মহাপ্রাক্তর শ্রীচরুণে।

দীর্ঘ দিন পরে সনাতন ক্ষোরকর্ম করলেন—করলেন প্রাণভরে

গঙ্গামান। ওছ হল তাঁর মন—দেহে কিবে এল ন্তন শক্তি।
চন্দ্রশেধর তাঁর জন্ম সংগ্রহ করে এনেছিলেন ন্তন পটংস্তা ও উত্তরীর
কিছ তিনি বিনীত ভাবে প্রত্যাধ্যান করে গেই সিপ্ত বস্নেই চললেন
মহাপ্রভূব পশ্চাতে তপন মিশ্রের গুড়ে ভিন্না গ্রহণ করতে।

তপন মিশ্র এই নবাগত অতিথিকে সাদর অভার্থনা করলেন—
নিয়ে গ্রিলেন নৃতন বল্ল ও উত্তরীয়। সনাভন তাঁকে প্রণাম করে
নিবেদন করলেন—মহাত্মন! বদি এই ভিক্নুককে একান্তই বল্ল দানে
বাসনা, তবে দেও তোমার নিজের পরিতাক্ত একধান ছিল্ল বসন।
তপন মিশ্র তাঁকে আলিক্ষন করে বললেন গোঁসাই! তুমিই পেরেছ্
তৈতন্তের প্রকৃত করুণা।

বছজনের নিমন্ত্রণ সবিনয়ে প্রত্যাধান করে সনাতন চলেছেন মাধুকরী করভে—পরিধানে শতছির মলিন বহির্কাস—ক্ষদ্ধে বছম্ল্য ভোটকখল। বাবার পূর্বে ভিনি মহাপ্রভূকে প্রণাম করলেন। মহাপ্রভূ কুফে মতিরভাইবলে আশীর্কাদ করে একটু হাসলেন।

এই ইঙ্গিত ধরতে না পাবলেও সনাতন ব্যালেন এ তাঁর সহজ সরল হাসি নর কিছ ব্যালে পারলেন না কি তাঁর অপরাধ—কোধার তাঁর কটি। এ ভাবে বিবর্ধ চিত্তে গঙ্গার মধ্যাহ কুত্য সমাপন করলেন। উঠে বাবার সমর হঠাৎ তাঁর দৃষ্টি পড়ল বছমূল্য ভোটকম্বলধানার প্রতি, তিনি শিউরে উঠলেন। নিজেকে শৃত্ত শত বিকার দিলেন—কেন এতদিন তাঁর ধেরাল হরনি বে তাঁর অঙ্গে এধনও ররেছে বিলাসিতার প্রভালেক। ভিধারীর এই বিলাসিতা তর্ম মাত্র অশোভন নয়—অপরাধ। সেই কম্বলধানা তথন তাঁর কাছে মনে হল উভ্ভত্তকা বিবর্ধর কালসাপের মত। এবার তিনি ব্রুতে পারলেন কেন মহাপ্রভুত্ত হেসেছিলেন। কিছ বিনা গাত্রবন্তে বারাণসীর প্রচণ্ড শীতে কেমন করে দেহ ধারণ করবেন। ভারপর মনে ছির করলেন বে বিদি শীতে মহাপ্রভুত্ব জ্ঞাচবণে দেহপাত হর তথাপিও তিনি উহা জার স্পর্শ করবেন না।

থমন সময় তিনি দেখতে পেলেন আশার আলোক। আদৃরে এক বৃদ্ধ সোড়ীয় তার শতছিল মলিন কছাবানি ওকোতে দিয়ে বসে আছে। তিনি ধীরে ধীরে তার নিকট উপস্থিত হরে বললেন ভাই, আমার একটা উপকার করবে ?

বৃদ্ধ অবাক হবে তাঁর দিকে চেয়ে উত্তর দিল বাবাঠাকুর, আমি নিজেই ভিধারী—এ পর্যান্ত কেউ ত আমার কাছে কোনো উপকাব চারনি? বস কি তোমার প্রার্থনা—বদি সম্ভব হয় নিশ্চমই করব।

তথন সনাতন আরও কাছে এসে ধীরে ধীরে তার হাত ছটি ধরে সকাতরে বললেন ভাই, আমার প্রার্থনা অভি সামার, দরা করে আমার এই কম্প্রধানা নিয়ে ভোমার কাঁথাধানা আমায় দাও।

বৃদ্ধ এবার গঞ্জীব হয়ে গোল—অভ্যন্ত মর্মাইত হয়ে তাঁকে বলল বাবাঠাকুর! আমি অভি দরিদ্র, মূর্য আর ভোমাকে দেখে মনে হচ্ছে তুমি পশ্তিক, অভি সম্রাস্ত —আমি ত ভোমার পরিহাসের বোগা নই ?

সনাতন বুছের কাঁথে একখানা হাত রেখে সম্প্রেছে বৃজ্জেন, আমার বিখাস কর আমি তোমার পরিহাস করছি না ৷ এই ক্ষুলটা আমার কাছে বিবধর সাপের মত মনে হছে, আমি আর এটা ব্যুল করতে পারছি না। তোমার পারে পড়ি, দরা করে এটার বদলে তোমার কাঁথাঝানা আমার দাও।

এবার তাঁর আম্বরিকভার বুদ্ধের আর কোন সন্দেহ রইল না। ভাই সে বলল, ভোমার বা ইচ্ছা কিন্তু দেখো বাবাঠাকুর, পরে আবার চোর বলে ধরিয়ে দিয়ো না বেন।

স্নাত্ন একটু হেসে জ্বাব দিলেন চোর! ভাই জামি বে নিজেই এক চোবের সন্ধানে জাহার-নিজা ভ্যাগ করে স্পূর্ব সৌড়দেশ থেকে বারাণদী পর্যান্ত ছুটে এসেছি। ভার দেখাও পেরেছি কিছু ধরতে পারছি না।

छ। (मधा वधन পেষেছ—धवा त्म निक्वहे পড़द्य।

না ভাই, তুমি জান না সে অতি পাকা চোর — জাব ভগু এ জীবনে ময়। জন্মজনান্তর থেকে সে চুরি করে আসছে। কত নারীর, কত পুক্ষের কত কি বে সে চুরি করেছে তাবলে শেষ করা বার না।

ভা হোক—ভোমার এভ চেষ্টা এভ কট কথনও ব্যর্থ হতে পারে না। সে বত বড় চোরই হোক না কেন, তোমার হাতে তাকে ধরা দিতেই হবে।

ভোমার আশীর্কাদ ভাই, বলে সনাতন সেই কাঁথাথানা একবার মাধার ঠেকালেন, ভারণর বছন্দ্য রডের মত বুকে জড়িরে ধরলেন। কবির ভাষার বলতে গেলে দিরিজ পাইল বেন ঘটভয়া হেম'। তিনি মনে মনে বললেন—প্রির আমার, তুমি আমার শেষ বিষয়কণ্টক উৎপাটিত করেছ। বৃদ্ধ সেই বহুমূল্য ক্ষমণানা পাবে জড়িবে বেশ আরাম উপভোগ করল, তারপর বিশ্বনাথের উদ্দেশ্তে হাত জোড় করে বলল বাবা, তুমি নিজেও পাগল আর ভোমার মত কত পাগলই না সংসাবে স্পট্ট করেছ !

আনক্ষে স্নাতন আর নিজেকে সামলাতে পারলেন না, পেরে উঠলেন আর এক পাগল স্ম্যাসীর অমৃত্যুর মহামন্ত্র—আধিব্যাধির মহৌবধি।

> 'ভদ্ধ গোৱাল কহ গোৱাল লহ সোৱালের নাম বে বে জন গোৱাল ভল্পে লে হয় আমার আগে বে।'

সেদিন খার মাধুকরী করা হল না। আনেক দিন উপবাসে কেটেছে, নর খারও একদিন কাটবে কিন্তু এ খাপার খানস্ব প্রাভূর চরণে নিবেদন না করে থাকতে পার্লেন না। ক্রন্তপদে চলে এলেন চন্দ্রশেথরের বাড়ীতে।

মহাপ্রভূ তথন ভিক্ষার বাবার উচ্ছোগ করছিলেন, এমন সময় সনাতন তাঁর চরণে পড়ে কাঁদতে কাঁদতে বললেন ওগো ঠাকুর ! ওগো প্রভূ ! এবার আমি তোমার চরণে সম্পূর্ণরূপে আত্ম-নিবেদন করলাম—ভূমি আমার প্রহণ করো।

মহাপ্রভৃ বিশ্বিত হবে দেখলেন ভোটকখনের পরিবর্তে সনাতনের অঙ্গে রয়েছে একথানা শতছিল মলিন কছা! তিনি তাঁকে বুকে জড়িয়ে ধরে বললেন সনাতন, আমার প্রাণের দোসর, এবার ত ভোষার আমার মিলনে আর কোন বাধা নেই!

তাঁর নীলনলিন নর্নবুগল জলে ভরে উঠল।

পুণ্যভূমি ভারভ

যদি পৃথিবীৰ সধ্যে এমন কোন দেশ থাকে বাহাকে পুণ্যভূমি নামে বিশেষিত করা হাইতে পারে—হদি এমন কোন স্থান থাকে, বেখানে পুৰিবীৰ সকল জীবকেই তাহাৰ কৰ্মফল ভূগিতে আসিতে হইবে-বদি এমন কোন স্থান থাকে, বেখানে ভগবলাভাকাভকী জীবমাত্রকেই পরিণামে আসিতে হইবে—যদি এমন কোন স্থান থাকে, বেথানে মুদ্রাজাতির ভিতর সর্বাপেকা অধিক ক্ষান্তি, ধৃতি, দরা, শৌচ প্রভৃতি সদত্তবের বিকাশ হইরাছে—বদি এমন কোন দেশ থাকে, বেখানে সর্বাপেকা অধিক আধ্যান্ত্রিকতা ও অন্তর্গৃষ্টির বিকাশ হইরাছে, তবে নিশ্চর করিয়া বলিতে পারি ভাচা আমাদের মাতৃভূমি—এই ভারতভূমি ' অতি প্রাচীন কাল হইতেই এধানে বিভিন্ন ধর্মের সংস্থাপকগণ আবিভাত হইবা সমগ্র জগৎকে বারংবার সনাত্র ধর্মের পবিত্র আধ্যাত্মিক বঁকায় ভাসাইয়াছেন। এখান ছটতে উত্তর-দক্ষিণ-পূর্ব্ব-পশ্চিম সর্বতি দার্শনিক জ্ঞানের প্রবল তরক বিস্তৃত হটয়াছে। আবার এইথান হইতেই তরঙ্গ ছটিয়া সমগ্র অগতের ইহলোকসর্বায় সভাতাকে আধ্যাত্মিক জীবন প্রদান করিবে। অপর দেশীয় লক লক নরনারীর হাদয়দগ্মকারী জড়বাদরূপ অনল নিৰ্মাণ কবিতে বে অমৃত-স্লিলের প্ৰব্ৰোজন, তাহা এইখানেই বর্তমান। বন্ধুগণ, বিখাস করুন ভারতই অপংকে আধ্যাত্মিক -चात्री विस्कानक। ভক্তৰ ভাগাইখ্য।

नि नि त= जा नि तथा

রবি মিত্র ও দেবকুমার বস্থ

প্রিক আকাশের অন্তগামী প্র্য, শুধু একটু মান বজিমাভা, ভার আলোর অন্ধকারের প্রথম স্পর্শ । তার নেই দাহ, শুধুই মৃত্ উত্তাপ। নেই চোধ-ধাধানো উজ্জ্বলা, শুধুই রাস্তিহরা স্নিগ্ধ আলো। তবু ক্ষণিকের জন্মও উপযুক্ত পাত্রে মধ্যাফ মার্ডগ্রের প্রচণ্ড তেজের প্রকাশ দেখা যায়, একটি প্রচণ্ড শক্তির আবেইন স্বাজে অনুভূত হয়। সন্ধার অন্তাচস-আর্চ রান ববিই প্রভাতের প্রশাস্ত মিহির, বিপ্রহরের কল ভাকর এই ক্থাটিই নতুন করে মনে পত্তে যায়।

নাটাচার্য শিশিবকুমার বেদিন হাসি-কারার বঙ্গুড়মিতে প্রথম নেমেছিলেন আমরা তথনও কপ নিইনি। এমন কি, আমাদের জন্মণাতারাও তথনও বোষ হয় করনা, তথনও ইচ্ছা হরেই ছিলেন। তারপর দিনে দিনে শশিকলার মত বেড়ে উঠলেন তিনি, বাল্য কৈশোরের নানা বঙ্গ সেবে যৌবনের প্রথম উচ্ছাসের আমেজে ভরপুর হয়ে আছেন। তিনি তথন শিক্ষক, রসিক, নাট্যক্ষীর দীনভক্ত। তথন চলেছে ভবিষাতের প্রস্তা। তারপর একদিন এলো সেই বিশেব দিন যে দিনটির কথা জন্মগগ্রেই বিধাতাপুক্ষ তাঁর ললাট-লিপিতে উজ্জ্বস অক্ষরে সিথে দিরেছিলেন—তাঁর জীবনের মহাক্ষণ। সে পরম লগনকে তিনি হেলা করেননি আর তাই দিকে দিকে সেদিন জয়ডঙ্কা বেছেছিল। সেদিনকার আনশ্য উৎসবে যোগ দেবার সোভাগ্য আমাদের হস্যনি।

আমরা বধন ধরণীর আলোক দেখসাম শিশিরকুমার তথন মধাক্র মার্কণ্ডর প্রবল তেজে দেশীপ্রমান। তিনি নিজেই বলেছেন ১৯২৯ পর্যন্ত জাঁব কোন নাটকই অসফল হয়নি। জাঁর সেই অপ্রতিহত বিজয় অভিযানের কিছু কিছু হয়ত অবোধ আমরা মা'র কোলে বলে দেখেছি। দেখেছি কিছু বৃঝিনি; বৃঝিনি কারণ বোঝার বয়স সেটা নয়, তথন মায়ের প্রেহ-আদরের দাম পৃথিবীর সবকিছুর চেয়ে বেশি। অবগু বয়ল হলেও বে ব্যতাম•এমন কোন কথা নেই, কারণ্টবোঝার চোধ সকলকার ধাকে না।

তারণর বরস যথন বাড়ল, বোঝবার সমর যথন হ'লো, তথন শিশিরকুমার জার সাধারণ পর্যারের মামুব নন, তিনি তথন উপকথার দেশের মামুব। তাঁর স্বকিছুতেই তথন একটি অতিমানবীর স্পর্শ লাগতে সুক্ল করেছে। তাঁর কথা তাঁর চলন, তাঁর বসন, এমন কি তাঁর ব্যক্তিগত জীবন সম্বন্ধেও তথন এমন স্ব কথা মুখে মুখে চলতে সুক্ল করেছে যাতে তাঁকে সাধারণ মামুবেব ধেকে পুথক বলেই মনে হরেছে।

তথনকার দিনে সাধারণ মধ্যবিত্ত ঘরের ছেলেদের হাতে আজকালকার মত এত সহজে পর্মা আসত না। অনেক খোসামোদ, অনেক দ্ববার করে ভবে ত্'-চারটে পর্মা পাওয়া বেতো। কাজেই থিরেটারের সব চেরে কমদামী টিকিট এক টাকা প্রসা পাওয়াও ক্রনাতীত ব্যাপার ছিল। তাছাড়া থিরেটার বাবোজোপের উপর ওক্তলনরা মোটেই থুমী ছিলেন না; ওসবে নজর গেলে ছেলেরা উদ্ধ্রে বার। ভাই থিরেটার দেখা আর বিশেষ হরে উঠত না।

মাঝে মাঝে গুরুজনদের সঙ্গে এদিক-ওদিক থিয়েটার দেখিনি এমন নয়, আর তার মাঝে শিশিরকুমারের অভিনয়ও ছ'-একবার দেখেতি।

শবগ বিচার করে দেখবার মত বৃদ্ধি তথনও হয়নি, তবু বধনই তাঁব অভিনৱ দেখেছি, তখনই মনে হয়েছে অক্যদের থেকে বেন পৃথক তিনি। অল্প দামের সীটে পেছনে বসে কদাচ কখনো তাঁর পলা বদি কানে না-ও পোঁছে থাকে, কি বলতে চাইছেন বৃহতে কঠ হতো না। আর ভাতেই মনে হতো সভিচ্বার বড় অভিনেতা নিশ্চরই, নইলে অক্সরা বেখানে হৈ-চৈ করে চেঁচিয়ে অক্সভন্তী করে একটি চরিত্রকে প্রোপ্রি খাড়া করতে পাবে না, সেখানে কত সহজে কত সামান্ত পরিপ্রমে প্রো চরিত্রকে চোখের সামনে জীবস্ত করতে পারতেম। ভাই কৃড়ি-পাঁচিশ বছর পরেও আলমগীরের স্প্রদৃত্ত আমাদের চোখের সামনে ভাসে, আজও যেন দেখতে পাই বন্দী আলমগীরকে; চোখের সামনে ভেনে ওঠে রামের সেই ব্যাকুল কথা—কার কঠনর!

আবো বড় হলাম, বৃদ্ধির বিকাশ ঘটল কিনা জানি না, তবে মনের ভিতর আধুনিকতার নানারকম পাঁচি থেলতে অফুকরল। বৃঝি না বৃঝি বিদেশী কিছু কিছু লেখা পড়ে পণ্ডিতখন্য বনে গেলাম। তখন মনে হল, শিলিরকুমারের জভিনর ঠিক খাভাবিক নয়, তাঁর প্রযোগরীতি সকেলে বস্তাপচা, তাঁর শিক্ষাদানের হীতি অচল হয়ে পড়েছে। লে যুগটি নবনাট্য আন্দোলনের শুকুর যুগ, নবাল্লর যুগ, গণনাট্য-সংখের প্রসারের যুগ। আমাদের মত তক্ষণদের বোঝানো হয়েছিল আর আমরা ব্রেও ছিলাম বে, বালোর নাট্য আন্দোলনের নতুন মোড় ঘুরছে।

কোন কিছুব অগ্রদ্ত হবাব একটি আনক্ষ আছে, আছে উন্নাদনা, আছে উদ্ভাস। এই তিনটির একত্র সমাবেশ আমাদের মধ্যেও হবেছিল। কিছ অল্পদিনের মধ্যেই নতুন কিছু করার মোহটি চলে গেল, দেখলাম নতুন বলে বাকে ধরতে গেছি সেটি আসলে নতুনই নয়। ভুলটি ভাল করেই ভেঙে দিলেন শিশিবকুমাব—নবাল্লবই সমশ্রেণীর ছংখীর ইমান প্রবোজনা করে। দেখা গেল বাঁকে বাতিলের দলে কেলা হ্রেছিল তিনি সেদিনও সকলের আগে।

বাদের আমাদের চেরে জ্ঞানী মনে করভাম, হঠাৎ তাঁদের জ্ঞানের পরিমাণ ও গভীরতা সম্বন্ধে সন্দেহ জাগল। থিরেটারের বিষয়ে বিদেশী লেখকদের লেখা বই কিছু কিছু পড়তে ওক করলাম, ভার থেকে এই বোধটুকুই জন্মাল বে, নাটক সম্বন্ধে বত আলোচনাই করা বাক না কেন, নাটকের অভিনয়ের মূলস্থ্র তা থেকে আবিদার করা সক্তব নয়। এর ভক্ত প্রয়োজন নিয়মিত ভাবে নাটক পড়ার, অভিনয় দেখার ও সম্ভব হলে অভিনয় করার।

এবার থেকে সেই প্রচেষ্টাতেই বত হলাম। দেশী বিদেশী বহু নাট্যকারের বহুরকম নাটক পড়লাম স্থার ভার থেকে স্থারো বিপদে পড়তে হলো। এতদিন পর্বস্ত একটি ভাসা-ভাসা ধারণা ছিল দে, বক্তব্যের উপরই নির্ভর করে নাটক, একই কথা বার বার বললে বক্তব্যের মাধুর্য নষ্ট হয় আর বক্তব্যবিহীন নাটক নাটকই নর। অবশ্য বক্তব্য বলতে, কেন জানি না, ব্রতাম—প্রগতিশীল বক্তব্য। কিছ পৃথিবীর বছবিধ্যাত নাটকের মধ্যে অভ্ত রকম মিল নজরে পড়ল আর আমানের ধারণা অভ্যায়ী তাদের মূল কথাকে বক্তব্য বলে স্বীকার করাও কঠিন ছিল। ভাহলে কি লেওলো ভাল নাটক নর? তাহলে ভাল নাটক বলব কা'কে?

মনের মধ্যে বখন এই বজম দোটানা, তথন আমাদের প্রস্কাপ্তিন একজন এসে বসলেন—ওছে, শিশিবকুমাবের সঙ্গে অভিনয় করবে? মনে হংলা ধেন উত্তর এবার পাওয়া বাবে। শিশিবকুমাবের বিক্রমানীয়া আব ঘাই বলুন, নাটক সম্বন্ধে যে তাঁর পড়ান্ডনার অভাব ছিল এমন অপবাদ অভি বড় নিন্দুকেও বিতে পারত না। তাই এক কথায় তাঁর সংক্র দেখা করতে রাজী হয়ে গোলাম।

কোন বিপ্যাত লোককে কাছে খেকে দেখতে পাওৱা খুবই সোভাগ্যের কথা, কিছু অধিকা"শ ক্ষেত্র দ্রের মান্তব কাছে এলে দ্রেরে মোহজাল কেটে গিয়ে রচ বাস্তবের সংশ্পর্শে করনার স্থান্নদির ভেঙে বায়। ওরার্ডদওরার্থ তাই বোধ হয় বলেছিলেন যে, "ইয়ারো" না দেখাই ভালো। অবলবকালে মন বখন ক্লাম্ভ হয়ে পড়বে তখন আমাদের না দেখা "ইয়ারো"র কথা মনে ডবলেই ক্লাম্ভি দ্র হবে। (কথাগুলো মুভি খেকে বলছি, ফাজেই আক্রিক সত্য না-ও হতে পারে, তবে ভাবটি মোটাষ্টি বোধ হয় ঠিকই আছে।)

শিনির কুমারের কাছে গেলে বে আশাভক্ষ হবে এটি ধরেই
নিয়েছিলাম আর নিয়েছিলাম বলেই খুব বেশি আশাহত হইনি।
মনের মধ্যে অনেক দিন আগে বে অতিমানবীর কথাটি বাদা
বেঁখছিল, দেটির অভাবই প্রধম চোবে পড়েছিল। দেশে ছিলাম
মধ্যবিত্ত খরের শিক্ষিত ক্ষচিবান এফটি মানুষকে, বাঁর ঘর বই-এ
ঠালা। ইজিচেয়ারে বলে চুকট হাতে, মোটা চলমা চোবে এই
মানুষ্টিই বে অপ্রতিধন্দী নট ও নাট্যাচার্য শিশিবকুমার, বিশাল
করতে ইছে করেনি। কিছু কথা বলতে বলতে চোবের বিদ্যুৎ
বধন বলসে উঠেছিল তথন ব্যুতে শেরেছিলাম—touch of
madness তাঁর ভিতরেও আছে।

প্রথমেই বলেছিলেন—নাটক পড়-টড় ? আমতা আমতা করে বলেছিলাম—একটু একটু। খুলি মনে বলেছিলেন—হাঁ।, হাঁ। পড়বে। নাটক বত পড়বে ততো তাল ব্যবে। তাবপর নাটক সম্বন্ধ সাধাবণ আলোচনা করতে করতে বলেছিলেন—রবীক্রনাথের মালিনী পড়েছ ? মাথা নেড়েছিলাম, অবগ্য তাতে হাঁ।, কি না বোঝায় তা বোঝা বায় না, আমাদের মধ্যে একজন বলেছিল—পড়িনি তবে অভিনর করেছি। ধানিকটা বেন অবাক হয়েছেন এই ভাবে আবার হেসে বলেছিলেন—বলা কী হে, তোমার তো থ্ব সাহস দেখছি ? রবীক্রনাথের বই-এর মধ্যে মালিনীর কদরই সবচেয়ে কম, অথচ তুমি তা অভিনর করেছ। তা পড়নি কেন ? সেই চইপট জবাব দিয়েছিল—ব্যতে পারি না। হেসে উঠেছিলেন—ব্যতে পার না কেন ? বেশ, পড়ে শোনাছি। বই নিরে এসে বলেছিলেন—এটি পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ নাটকের একটি, অথচ এর কোন খোঁছেই রাখে না কেউ।

সেদিন তাঁৰ পড়া শুনে আৰু তাঁৰ ব্যাখ্যা থেকে নাটকেৰ বস

গ্রহণ সহজ হরে গিয়েছিল, আর সেই-সঙ্গে সন্দে মনের প্রশ্নেরও সমাধান হরে গিয়েছিল। বুঝেছিলাম বক্তবাই নাটকের মূল কথা নয়, মূল কথা স্কঠু বিক্তান আর চরিত্র স্পষ্ট। এই স্টি গুণের সঙ্গে নটেব অভিনয়কলা আর স্থারোগরীতি বদি মেলে তাহলেই নাটক শ্রেষ্ঠ নাটক হয়ে দাঁড়াতে পারে।

সেদিনের পর বছবার বছভাবে শিশিরকুমারের সঙ্গে মেশবার করেছি। মঞ্চ তাঁর দিনের পর দিন অভিনয় দেখেছি; তার পরও বছবার আমাদের তাঁর সালিধ্য লাভের সোভাগ্য হরেছে। প্রথম দর্শন থেকেই তাঁর সঙ্গে যে সব আলোচনা হয়েছে তার কিছু কিছু লিশিবছ করে রাধবার চেটা করেছি। কিছু ছর্ভাগ্য বশতঃ তার সবটাই আজ খুঁজে পাওরা যাছে না। মোটামুটি উনিশ শ' ছাপ্লায়র শেষ দিক থেকে আটাল্ল সালের শেষ পর্যান্ত তাঁর সঙ্গে যে সব কথা হয়েছে তারই কিছু কিছু জংশ এখনো আমাদের কাছে আছে।

উনিশ শ' আটার সালের জুন মাস নাগাদ নাট্যবসিক ও নাট্যামোদী একটি গোষ্ঠী গড়ে ভোসবার জন্ম তিনি নব্য বাংলা নাট্যবিষদ প্রতিষ্ঠা করেন। এধানে পুরোনো 'নাটক পাঠ, নাটক সম্বদ্ধ আলোচনা ও নাট্যাভিনরের ব্যবস্থা করে বর্তমান যুগের বাঙালী নাট্যবিসিকদের পুরোনো যুগের সঙ্গে যোগাযোগ ঘটিরে ভবিষ্যতের পথ নির্দেশ্যের ইছা তাঁর ছিল। এই প্রসঙ্গে ষে-সর আলোচনা করতেন তিনি দেগুলো সবই লিথে রাধবার চেষ্টা করেছি। প্রথম প্রথম সঙ্গে লপোর চেষ্টা করেছি, কিছ শেষের দিকে এত কথা বলতেন যে, সঙ্গে সঙ্গে লেখা বাতুলভার নামান্তর মাত্র হরে দাঁড়াত। তাই পরে শ্বতি থেকে লিথেছি। তার ফলে হরত অনেক সময় কোন কোন কথা একট্-আবট্ অদল-বদল হরে গেছে। তবে যতদ্ব সম্ভব তাঁর মুখের কথাই লিথে রাখতে চেষ্টা করেছি। হয়ত কোন কোন ফেত্রে তাঁর বক্তব্য ঠিক মত ব্রুতে না পেরে ভুল করেছি। তার জন্ম দোবটা আমাদের।

অনেক বিশ্বতপ্রার কাহিনী সম্বন্ধে শিশিরকুমারের মন্তামত কৌতুহলোদ্দীপক মনে হবে। বাঙলা দেশের কোন কোন মনীযার কথা আবু আমরা ভূলতে বলেছি, তাঁদের সম্বন্ধেও শিশিরকুমারের কাছ থেকে অনেক কথা জানা গিরাছে। আমাদের সংগৃহীত তথ্যাদি বাংলা দেশের তৎকালীন বিদগ্ধ সমাজের আচার-ব্যবহার আলাপ-আলোচনা সম্বন্ধেও কিছুটা আলোকপাত করবে বলে মনে হর।

তবে শিশিবকুমাবের জীবনী-গ্রন্থ রচনার প্রচেষ্টা জামরা করছি না বা শিশিরকুমাবের নাট্যজীবনের মৃল্যায়নের দায়িছও এখন নর। এসব কাজের জঞ্চ উপযুক্ত পাত্র জনেকেই জাছেন। জামাদের একমাত্র উদ্বেগ্য মাসুধ শিশিরকুমাবের চরিত্রের বিভিন্ন দিকের উপর তাঁরই কথার সাহাব্যে কিছুটা জালোকপাত।

তাঁর কোন কোন কথা স্পষ্টত: অভিভাষণ দোষে গৃষ্ট বলা বেতে পারে। কিছ বে পরিবেশের মধ্যে তিনি কথাগুলি বলতেন তাঁ বিবেচনা করলে বোধ হয় তাঁর এ দোব অপ্রাহ্ম করা বেতে পারে। তিনি বলতেন আমাদের মত বর:কনিষ্ঠদের কাছে, বাদেব গুরুর অনুকরণ করার স্পূহা অভ্যন্ত উপ্রভাবে বর্ত্তমান; তাছাছা বিরেটার এমনই একটা জারগা বেখানে, নইওক গিরিশাচক্রের মধ্যে

বলিঠেবও পদখলন হয়, কাজেই কোনলমতি ভক্তণ-ভক্তীরা বাতে পথ না হারার ভাব জন্মই অনেক সময় অনেক কথা হয়ত কিছুটা বেখে-চেকে বলতেন 1

আমাদের কথা হয়ত একটু বেশী বলা হয়ে গেল, কিছ
শিশিরকুমার সহজে আমাদের কিছু বলবার অধিকার স্থাপন করবার
লক্ষ্ট এত কথা বলতে হলো। অধিকারী বিবেচনা করলে হয়ত
বলবার অধিকার আমাদের কিছুই নাই, তবু তাঁর ক্ষেত্র আমরা
পেচেছিলাম এবং সেই ক্ষেহের দাবীতে এই লেখাগুলি প্রকাশ করছি।

লিশিবকুমারের কথা বলার আগে বোধ হয় সে সময়কার বাংলা রঙ্গমঞ্চের অবস্থা বর্ণনা করা অক্সায় হবে না। শিশিবকুমারের সাধারণ রঙ্গমঞ্চের অবস্থার সময়কার অবস্থার সঙ্গে আক্সেরের সাধারণ রঙ্গমঞ্চের অবস্থার বেশ একটা মিল আছে। মাত্র এক বৃগ আগে বাংলা দেশের সাধারণ রঙ্গমঞ্চে শিশিবকুমারের নেতৃত্বাধীনে বহু-বিখ্যান্ত অভিনেতা-অভিনেত্রী জনসাধারণকে আনক্ষদান করছেন। অবচ আজ তাঁদের প্রায় কেউই আর রঙ্গমঞ্চে অবতরণ করেন না। সেদিনও রঙ্গমঞ্চের এইরকম অবস্থা। গিরিশচক্র, অর্থে লুকুমার, অমৃতলাল মিত্র প্রমুধ প্রথম মৃর্গের দিকপাল অভিনেতার তথন গত হয়েছেন। রসরাজ অমৃতলাল বস্থ তথনও জীবিত, কিছ রঙ্গমঞ্চ অবতরণ আর বিশেষ করেছেন না। সেই যুগের একমাত্র প্রতিনিধি হিসাবে গানীবাবুই তথন নিরমিত অভিনেয় করছেন। কিছ গিরিশ্যুগের গৌরবোক্ষলে অধ্যায় তথন স্থক্থার প্রবিস্তি হয়েছে।

গিরিলমুগে সাধারণ অভিনেতারাও পরবর্তীমুগের বছ স্থপরিচিত অভিনেতার চেয়ে ভাল অভিনর করতেন। কথাটা লিশিরকুমার নিজেই বলেছেন। কিছা মিলিভভাবে অভিনয়ের উন্নতির কোন প্রচেটা তাঁরা কথনও করেননি। গিরিশচ্জ নিজেই বলভেন— এগিরে গিরে টেচিয়ে বল্। তাঁদের ব্যক্তিগত অভিনয়ের মান অবলু ধুবই উন্নত ছিল, কিছা সমগ্রতার দিক পেকে কোন রকম ইন্নতির চেটা তাঁদের হিল না। এমন কি. অনেক সময় ধদি মনোমত দর্শকসমাগম না হ'তো তাঁরা অভিনয় সংক্ষেপ করে কোন বক্মে জোঙাতালি দিয়ে শেষ করতেন। অভিনয়ে একটি ভোলেবও প্রবর্তন করেছিলেন তাঁরা। প্রথম মুগের বিধ্যাত অভিনেতারা অবলু এ ভোলের ফেরে পড়ে গিয়েছিলেন। এমন কি, দানীবার্ও তার প্রভাব নড়াতে পারেন নি।

ক্ষমতাগালীর ক্ষমতা প্রকাশের প্রয়েজন হর না, লোকে তার ক্ষমতার কথা জানে বলেই তাকে সমীহ করেই চলে, কিছু অক্ষম বর্ধন তার ক্ষমতার কথা বলে তথন প্রনির্দিষ্ট পঞ্জীর মধ্যেই ক্ষমতার প্রকাশ করে। সেইজন্ম অক্ষমের ক্ষমতার প্রকাশ একটি ভোলেই হয়। শক্তিশালীর সে ভোল মেনে চলবার প্রয়োজন হর না, কিছু তারাই ভোল বেঁধে দেয়। শিক্ষক-ছাত্রর প্রহণবোগ্য করেই শিক্ষা দেন, কেতাবী শিক্ষায় দে হিসাব থাকে না, কাজেই সেধানে মুড়ি-মিছরির একই দর হরে পড়ে। মিছরির অবগু তাতে কোন অপ্রবিধা হয় না, কিন্তু বিপদে পড়ে মুড়ি। তুর্বল অভিনেতারা ভাই ভোলের বাঁধনে পড়ে ইংস্কাঁস করত আর সামগ্রিকভাবে অভিনরের অবনতিই ঘটত।

অর ব্যুস থেকেই বাংলা বৃঙ্গমঞ্চের এই তুর্বপতা শিলিবকুমারের

নকবে পড়েছিল। পরীকার পড়ার দিকে তাঁর ঝোঁক না ধাকলেও কবিতা ও নাটক জাতীর অপাঠ্য বইরের উপর ঝোঁক ছিল ধুবই বেশি। তাছাড়া অভিনয়, নাট্যপ্ররোগ ইত্যাদি সম্বন্ধে অত্যন্ত মনোবোগের সজে পড়াভনা করেছিলেন তিনি। সে সমন্ত্রের বালো রঙ্গমঞ্চে অভিনতি প্রায় সব নাটকট ভিনি দেখেছিলেন। ভংকাদীন বিধ্যাত অভিনেতার অভিনয়কলাও ভিনি ভীক্ষপৃষ্টিতে লক্ষ্য করতেন। বার ফলে দীর্ঘ আট্যলিশ—পঞ্চাশ বছর পরেও বিভিন্ন অভিনেতার বাচনভঙ্গীর নির্মৃত ভাবে নকল করতে পারভেন। এতদিন পরে বদি অভকাল আগের কথা মনে থাকে, ভবে সেই সময় আবো কত বেশি মনে ভিল তা সহভেই অমুমের।

ষ্টিশ কলেক্ষে ছাত্র থাকাকালীন শিশিংকুমার সর্বপ্রথম জুলিয়াস সিজার নাটকে ব্রুটাসকে রূপান্থিত করেন। কিছু বত্তপুর জানা বার, সে সময় প্রয়োপের কোন দাহিছ বােধ হয় ভাঁর উপর জ্পিত হরন। পরিচালক হিসাবে শিশিবকুমারের প্রথম আবিভাব বংশ্র জানা বার, নবীন সেনের কুকুক্ষেত্রের নাট্য রূপারণে। ইউনিভাবালটি ইনষ্টিটিউটের পক্ষ থেকে এই নাটকটি মঞ্চন্থ হয়। এর পর নাট্য-পরিচালক ও নট হিসাবে শিশিবকুমারের খ্যাভি চভুদিংক বিভ্ত হতে থাকলো।

ইতিমধ্যে এম-এ পাশ করে শিশিবকুমার তদানীস্তন মেট্রোপলিটান কলেজ (বর্তমানে বিভাসাগর কলেজ)এ ইংরাজী সাহিত্যে অব্যাপনার কান্ধ নেন। তাঁর ছাত্রদের মধ্যে অনেকেই তাঁর অব্যাপনার ভ্রমী প্রশংসা করেছেন। কিন্ত নোট-পড়ানো তিনি পছন্দ করতেন না আর সেজত ছাত্ররা তাঁর কাছে অমুবোগও করত। অব্যাপনার কাজে লেগে গাকলে শিশিরকুমারের পাক্ষ বিশ্ববিভাস্তরেই ইংরাজী ভাষার প্রধান অধ্যাপক হওয়ে অস্তব্য ছিল না। শোনা বায়, তিনি বখন সাধারণ রঙ্গমঞ্জে অবতরণ করতে প্রস্তুত হাছেন, তখন আওতোৰ তাঁকে নির্ভ্ত হতে অমুবোধ করেন এবং তাঁকে বিশ্ববিভাস্তরের অধ্যাপকের পদ দেবার প্রতিশ্রুতিও দেন। অধ্যাপনার কালে খুব বেশি চাপ না থাকায় তাঁর পক্ষে অভ কাল্ক করেও প্রত্ত আধিক আর্থিপার্জন করাও সন্থব ছিল, আর তিনি তা' করতেনও। তব্ আধিক ক্ষতি স্বীকার করেও তিনি রঙ্গমঞ্চে যোগ দিলেন। তাঁর রক্তে বে তখন অভিসারের ভাক এসেছে। কামুর বাঁশী শোনার পর রাধা কি জার ঘরে থাকতে পারে।

শোনা বার, ইনষ্টিটিউটে তাঁর নাট্য-প্রয়োগের কালে তিনি অধ্যাপক বিনয়েন্দ্রনাথ সেনের কাছ খেকেই সবচেরে বেলি সাহাব্য পেরেছিলেন। বিনর বাবু তাঁকে অভিনয় করা ও করানোর কালে উৎসাহ সকলের চেরে বেলি দিরেছেন। কিছ তিনি জীবিত থাকলে শিলিরকুমারের শক্ষে বোধ হয় সাধাংণ রঙ্গালয়ে অবতরণ মন্তব হতো না। তাার গুরুলাস বন্দ্যোপাধ্যায় তাঁকে বলেছিলেন—You are wasting yourself, Sisir, your true vacation is on the stage. কিছু সাধারণ রঙ্গালয়ে অবতরণের উচিত্য সম্বন্ধের প্রশ্ন করলেন শিলিরকুমার, তথন গুরুলাস বাবু তৎকালীন রঙ্গালয়ের অবস্থা বিবেচনা করে তাঁকে বলতে পারেননি বে, তুমি নেবে বাও শিলির! বরঞ্চ বোধ হয় বাবণই করেছিলেন।

আল্পকে বিংশ শতকের বর্চ দশকেও, শিক্ষিত বাঙালী তার আত্মীর-স্বলনের কাউকে পেশাদারী রঙ্গমঞ্চের গণ্ডী পেরিয়ে বাওয়া পছক্ষ করে না। কাজেই আরও চল্লিশ বছর আগেকার কথা সহজেই অসুমের। অথচ আক্রর্যের কথা, সেই সময়েও শিশিরকুমারের মাতা তাঁব কতা সন্থানের এই জাভিচ্যুতির কথা জেনেও কোন আপত্তি করেননি, বরং তাঁকে আক্রিবানই করেছিলেন। শিশিরকুমারই বলতেন বে, যত রাত করেই ফিফুন না কেন তিনি, তাঁর অভ জেগে বলে থাকতেন মা।

মারের আশীর্বাদ মাধার নিয়ে, পদের মোহ, সামাজিক প্রতিষ্ঠার মোহ করতলগত আমলকের মত ভ্যাগ করে, নিশ্চিত বর্তমানকে ছেড়ে অনিশ্চিত ভবিষ্যতের বুকে নাট্যকলার উন্নতির মন্ত্র মুখে নিয়ে প্রার আট্রিশ বছর আগে সেই বে ঝাঁপিয়ে পড়েছিলেন ভিনি আর কোন দিনও পিছন দিকে কেয়েননি। বাব বাব বাবা প্রেছেন, বার বাব সাফল্যের ভুক্ত শিধর খেকে চরম অসাফল্যের মধ্যে হারিয়ে গেছেন তিনি। কিছা কখনো হার মানেননি।

ম্যাভান কোম্পানীর চাকরীতে ঈর্বাতুর সঙ্গীদের চেষ্টার নিজের ইচ্ছামত উরতি করা সম্ভব হ্রনি বলে চাকরী ছেড়ে দিতে বাবেনি তাঁর। একজিবিশনে ছিজেন্সলালের 'সীতা' অভিনয় করার পর বখন তাঁর অভিনয়খ্যাতি, পরিচালনখ্যাতি আর প্রয়োগনৈপুণ্যের খ্যাতি চারদিকে ছড়িয়ে পড়েছিল আর সেই খ্যাতির স্থবোগ নিতে তাঁর বিক্লমপক বখন আইনের কাঁকে কোশলে সীতার অভিনরের স্বন্ধ কিনে নিয়েছিলেন তখন বেমন অদম্য উৎসাহে অলানা অচেনা যোগেশ চৌধুরীকে দিরে রাভারাতি নাটক লিখিরে অভিনয় করেছিলেন, তেমনি অল্পকাল আগে জরাল্লর্জর ভল্লদেহে নির বাংলা নাট্যপরিষদ স্থান করে আমাদের উপর যুগ্ম সম্পাধকের দায়িছ চাপিয়ে, সোৎসাহে রবীন্দ্রনাথের "মালিনী"র বিহাস্তালের কাজ নিজের কাঁধে নিয়েছিলেন এবং দিনের প্র দিন বৌবনের শক্তি নিয়ে স্থারিচিত ও অপ্রিচিত অভিনেত্রী-অভিনেতাদের একই ভাবে অভিনয়ের স্থ্ম কাককার্য শেখাতে চেয়েছেন।

উৎসাহের আধিক্যে ভাঙা হাতের কথা ভ্লে গিয়ে, বরসোচিত দৌর্বল্যের কথা ভ্লে, প্রারাদ্ধ দৃষ্টির কথা বিশ্বত হয়ে বেভাবে তিনি লাকালাকি করতেন তাতে তাঁর পরিচিতেরা কথন কি তুর্ঘটনা ঘটে এই ভেবে সলন্ধিত হয়ে পড়তেন তিনি কিন্তু তাতে ভ্রহ্মেপও করতেন না। বে মন্ত্রশক্তির প্রভাবে অব্যাপক শিলিরকুমার ভাত্তি নাট্যাচার্য শিলিরকুমার ভাত্তিতে রপান্তরিত হয়েছিলেন তাঁর সেই ক্ষমতার পরিচয় জীবনের প্রায় শেব দিনটিতে পর্যন্ত দিয়ে গেছেন।

শিশিবকুমার ছিলেন চির আশাবাদী; বাংলা বঙ্গমঞ্চের ভবিবাৎ সহজে কোন সন্দেহই ছিল না তাঁর। তবে তিনি এ কথাও বিষাস করতেন বে, নতুন নতুন পথ নির্ণবের জন্ত পরীক্ষা নিরীক্ষার প্রবোজন থুব বেশি। সাধারণ বঙ্গালয়ের পক্ষে সে দায়িছ পালন করা সন্তবপর নয়, একথাও তিনি জানতেন। তিনি জায়ও বিষাস করতেন বে, উপযুক্ত অর্থাভাবের জন্ত কোন এক বা একাধিক সৌধীন নাট্য সম্প্রদারের পক্ষেও এ দায়িছ গ্রহণ করা সন্তবপর হবে না। এ কাজের জন্ত প্রযোজন সরকারী সাহাব্যপুষ্ট জাতীয় নাট্যশালার। সরকারী পরিচালন ব্যবস্থায় তিনি আছাবান ছিলেন না। তিনি জানতেন সরকারী লালফিতার চাপে জনেক সদিছো লোকচকুর অন্তরালে জাত্তে আছে লোপ পার। এই জাতীয় নাট্যশালা সরকারের আর্থ সাহাব্যে গড়ে উঠলেও তার দারিত্ব থাকবে প্রোপ্রি নাট্যরসিক মহলের হাতে। তাঁর থিরেটার বাবার পর এই জাতীর নাট্যশালার কথাই বার বার বলতেন তিনি।

কিছ একলা খাংণ্য বোদন সার হয়ে পড়েছিল। বহু জনে জাঁর মতের বৌজিকতা মেনে নিয়েছিলেন এবং তাঁকে তাঁর কয়নাকে বাস্তবে রূপায়িত করার কাজে সাহার্য করার প্রতিশ্রুতিও দিয়েছিলেন কিছ তুর্ভাগ্য বশতঃ কোন প্রতিশ্রুতিই কার্য্যকরী হয়নি, বার বার এই ভাবে আশাহত হয়ে শেব পর্যান্ত তিনি হতাশ হয়ে পড়েছিলেন। আর আমাদের মনে হয় এই হতাশাই তাঁর মহাপ্রয়াণকে খরাখিত করেছে।

শিশিবকুমাবের হাই বে চরিত্রটির সঙ্গে তাঁর নিজের জীবনের মিল সব চেরে বেশি তা বোধ হয় বাংলাদেশের আর এক হুর্ভাগ্য প্রতিভা মাইকেল-মধূক্দন দত্তের চরিত্র। সেই জন্মই বোধ হয় জীবনের শেষ পর্যন্ত মাইকেলকেই সব চেরে ভালো করে ফুটিরে তুলেছিলেন তিনি'। বিরূপ নিয়ভির সঙ্গে যুদ্ধ করে জয়লাভ বে হয় না এ থবর শিশিবকুমাবের জজানা ছিল না। তাই নিজেই হুঃখ করে বলেছেন, হাজার বছরে এমন একজন লোক আসে বাকে দেশ, সমাল, রাষ্ট্র, ধর্মনায়করা পথ ছেড়ে দেয়, সে সোভাগ্য আমার নয়। তরু দৈবের কাছে হার স্থীকার করেননি কথনো, কর্ণের মত মৃত্যুক্ষণ পর্যন্ত যুদ্ধই করেছিলেন।

অনেকের মুখেই শোনা বার, শিশিরকুমার বে সমান পেয়েছিলেন সে সমান বরীন্দ্রনাথ ছাড়া জার কোন সাহিত্যিক বা শিল্পী পাননি। কথাটা হয়ত মিথ্যা নয়, হয়ত, হয়ত কেন, দেশবাসীর প্রীতির দানে তাঁর ভাগুর ভবে উঠেছে, কিছু তিনি রাজোচিত মুভাবের অধিকারী, মুষ্টিভিক্ষার দানে তাঁর মন উঠবে কেন ? অছাড়া সাধারণ পাঁচ জনের মত ভ:গুর ভবে রাখতে তো শেখেননি তিনি। তিনি তো কেবল দিয়েই গোছেন, বে ভাবে তিনি দিয়েছেন তাতে কুবেরের ভাগুর ফুরোতেও দেরী লাগে না, এ তো সামাত্র মানুষ। একদিন বাঁরা তাঁর দান নিরেছেন তাঁরা তাঁকে বেহিসাবী বলাতে পারেন, মুর্থ বলতে পারেন, কিছু অখাভাবিক বলেন কি করে ?

মান্ত্র হিসাবে শিশিরকুমারকে বিচার করা জামাদের পক্ষে গুইতা মাত্র, কাজেই সে চেষ্টা করবো না। শুনেছিলাম ভিনি দর্শী, ভিনি দাভিক। কিছু জামাদের পরম সৌভাগ্য বে, জামরা তাঁর স্নেহাতুর রূপটাই দেখেছি। জ্বাচিত জ্ঞাপ্য স্নেহের দানে জামাদের মন ভরিবে দিয়ে গেছেন। তাই তাঁর কাছ থেকে বা পেরেছি ভা জম্ল্য।

শিশিরকুমারের পঞ্জুভের নখনদেহ প্রকৃতির বুকে মিলিরে গেছে কিছ নাট্যাচার্য অমর হরে রইলেন আমাদের মধ্যে । বতদিন বাঙালী আতি থাকবে, বাঙলা ভাষা থাকবে, বাঙলার থিরেটার থাকবে, ভত দিন শিশিরকুমার ছির অবিনখন ধ্রুবভাষার মত বাঙালী-মনে উজ্জল হয়ে থাকবেন।

শিশিরকুমারের অমবন্ধ প্রায়াতীত ছলেও সাধারণ মাছ্য তাতে থুশি হতে পারে না। ভারা চার অরণীর ও বরণীয় মামুবের অভিচিহ্ন হিসাবে ইন্দ্রিরগ্রাহ্ম কোন কিছু। তাই আন্ধ নানাদিক থেকে প্রভাব আসছে, শিশিরকুমারের নামে রাভার নামকরণ করা হোক, বা শিশিরকুমারের নামে পার্কের নামকরণ হোক বা শিশিরকুমারের ,নামে অধ্যাপক নিযুক্ত হোক বা শিশিরকুমারের চিতাস্থলে শুভিজ্ঞ গড়া হোক।

এই ধরণের স্থৃতিচিছের উপর শিশিবকুমারের মোহ তো ছিলই না উপরছ ছিল বীতহাগ। তিনি বলেছেন বে, তাঁর মত দেখতে হবে কি না হবে এমন একটি মৃতি খাড়া করে বছরে গলার একদিন মালা দিয়ে বাকে তাকে দিয়ে প্রাছ না করাই সমীচীন। রাজার নামকরণেও তাঁর বিশেষ আপতি ছিল। বলতেন, প্রস্তার নামে লাখি মারানোর দরকার কি? বে অধ্যাপনার কাজ ছেড়ে একদিন তিনি নাট্য উন্নরনের কাজে আজ্বনিহোগ করেছিলেন সেই অধ্যাপকের পদের সঙ্গে তাঁর নাম জড়িত করলেই কি উপযুক্ত সম্মান দেখানো হবে তাঁকে?

একদিন বেমন গিবিশচন্তের অসমাপ্ত কাল নিরে শিশিরকুমার গিরিশচন্তের খাতির প্রতি উপযুক্ত সম্মান দেখিয়েছিলেন, তেমনি শিশিরকুমারের অসমাপ্ত কাজের দাহিছ নিতে পারকেই বোধ হর তার মাতির প্রতি উপযুক্ত সম্মান দেখানো হর, অংগু আজকালকার দিনে ঠিক শিশিরকুমার গিরিশচন্তের সম্প্রেণীর মাত্র্য পাওয়া কঠিন, কাজেই তারা বে কাজ একলা করেছিলেন দে কাজ পাঁচজনে করতে হবে। তাছাড়া বুগটাও গণতজ্ঞের, এখন কাজ করতে হলে পাঁচজনের সাহায্য সর্বাপ্তে প্রয়েজন। শিশিরকুমারের খাভিরক্ষাব ব্দক্ত একটি কাতীয় নাট্যশালা স্টেই বোধ-হয় তাঁর কাছে স্বচেরে প্রির হতো। তাঁর শেষ কথা বলতে গেলে, জাতীয় নাট্যশালা স্টের প্রত্তাব। কাজেই শিশিবকুমারের নামে কলকাতার জাতীর নাট্যশালা স্টেই করার চেষ্টাই বোধ হয় আমাদের পক্ষে সমীচীন হবে।

হয়ত কোন দিন আমাদের জাতীর সরকারের টনক নড়বে,
আমাদের রাজ্যে রাজ্যে সৃষ্টি হবে জাতীর নাট্যশালার, কিছু শেব
পর্যন্ত পর্যন্তর মৃষ্ঠিক প্রস্করের মত বাঙলা নাটকের উন্নতি কতদুর হবে
তা সহক্ষেই করনীর। বাংলা দেশে রসিক লোকের জ্জাব বোধ হর
এখনও ঘটনি, আর বাংলা দেশের আকাশে বতই ঘর্ষোগ ঘনিরে
আমুক, আজও প্রয়োজনের ক্ষেত্রে হাত পাতলে থালি হাতে বে
ফিরতে হয় না এ কথা আমর। বিশাস করি। নাট্যাচার্যের শ্বতিরক্ষার
দায়িত্ব কেউ নিলে জাতির ঋণ শোধের দায়িত্বই নিয়ে ধরা হবেন
একথা বসা বার।

নাট্যাচার্যের কথা শুনে নজুন কোন মানুষ বদি এগিরে এসে তাঁর অসমাপ্ত দায়িত কাঁবে ভুলে নের তাহলেই আমাদের কর্তব্য কিছুটা পালন করা হয়েছে বলে মনে করবো। অকাংণ বে প্রেহ আমরা পেয়েছিলাম তার প্রতিদান দেওয়া সম্ভব নর, তবু ওক্ষকুত্য পালন করে অন্ততঃ প্রেহের ঝণ শোধের চেষ্টা করছি। কিমশং।

ত্রয়ী

বিমলচন্দ্র ঘোষ

মনে রেখো মহাপ্রসর তিমিরে জীংন মৃত্যুহারা,
আগুনের রস গুবে গুবে বাঁচে মক্ততে খেজুর চারা।
মনে হয় পাহাজ চিবুই,
গ্রহণিণ্ড ওঁড়ো করি গাঁতে।
স্বাশিখা ফুঁ দিয়ে নিবুই,
ব্যোম চেটে খাই তমিস্রাতে।

ঢোকে ঢোকে নোণা সমুদ্দ ব ধরত্রোতা ক্যাপা নদ-নদী, গিলে থাই ঝঞ্চা মক্ত্রুর গতিমর কাল নিরবধি।

পিরে মধ্ বিখ-কুস্থমের এ কল্পালে বানাই মোচাক। বাজাই প্রচণ্ড প্রদরের বল্প দিরে আকালের ঢাকা একের সাধ্য নেই ছুই হ'তে পারে। একে একে তিন হয় প্রেমের পাধারে।

নাট্যাচার্য শিশিরকুমারের সঙ্গে কিছুক্ষণ

এঅমিয়কুমার মুখোপাধ্যায়

১৮ই ক্ষেত্রহারী ১১৫৮, একটি পোঠকার্ড হাতে এনে পড়ল। ন মহাশ্যেয়ু,

পত্র পেলাম। আমি কিছুদিন কলিকাতার বাহিবে ছিলাম তাই উত্তর দিতে দেরী হোলো। আগামী শনি ও ববিবার, ২২শে ২৩শে মার্চ আমি বাড়িতে থাকিব। বিকালে কার্ববশতঃ বাহিবে থাকিতে হইবে। সকালে ১২টার মধ্যে আসিলে আমার সহিত সাক্ষাৎ হইবে। ইতি—

শিশিবকুমার ভাগুড়ি

পু: বৃহস্পতিবার ও শুক্রবার ২০শে ও ২১শে মার্চ ও ওই সমরে আসিলে নিশ্চরই দেখা হইবে।

fw:

সেদিন ছিল মংগলবার। অজিত চিঠিখানি দেখে বলগ— সেও আমার সংগে বাবে, গুরু তাই নয়—বেভে হবে নিকটভম 'বুহুম্পতিবাবেই

চিট্টিখানি দেখে একটু ধাঁধায় পড়েছিলাম। ভাবলাম শিশির বাবু হরত ভূকক্রমে মার্চ মাস লিখেছেন, কারণ ফেব্রুরারীতে ঐ দিন-ভারিখণ্ডলি ছবছ মিশে বার আবার মার্চের পাতা তুলে দেখি ২০, ২১, ২২, ২৩ একট বার। তবু আমরা ভোর না হভেই ছুর্সা বলে বেরিয়ে পড়লাম ঐ নিকটতম বুংম্পতিবারেই।

নাম বলব না, পথে বেক্তেই কিছ এক ভদ্রগোক আমার ভীবণ চমকে দিলেন। বললেন—বাচ্ছ বাও কিছ শিশির বাবুর অর্ছচন্দ্র ভোমাদের কপালে আছে। এও বললেন—সাবধান! শিশির বাবু 'পৌহমানব' কাউকে বেয়াত করে কথা বলেন না।

নিকৎসাহিত হলেও গাড়ি চাপশাম।

দমদম থেকে ওঁব বাড়ি পৌছুলাম—তথন আটটা। একটি যুবক পড়ছিলেন – তিনি দংবাদ দিলেন। প্রার ছ'মিনিটের মধ্যেই শিশির বাবু বিতল থেকে নামলেন। সিঁড়িতে পা দেবার পূর্বেই তিনি আমাদের জন্ত একটু বিশেষ ধর্বের কণ্ঠশ্বর পাঠিরে দিলেন বেন। আম্বা তটন্থ হয়ে বস্লাম।

তিনি চেরারে বসতে বললেন — কি দরকারে জাসা হয়েছে— জমিয় কার নাম ?

কঠম্বরে কল্পনাভীত গান্তীর্য। ভয় পাবারই কথা। ক্ষণকাল আমরা মৌন হয়েই রইলাম।

শিশির বাবু পুনবার প্রশ্ন করলেন—বলো কি প্রয়োজনে জাসা হয়েছে। জাবার বেন মেঘ গর্জন করে উঠল।

সভরে কি নির্ভয়ে বলি এই চিন্তা তথন মনে তৃকান ভুলেছে জার কি দিয়ে কথা ওক কবি তারও দিশা পাছিলাম না বেন।

মাধা চুগকে সবিনরে বলগাম—ছেমেন বাবুর একটা ব্ইরে আপনার কথা থব অল টুকরো টুকরো পড়েছি। ভেবেছিলাম উনি হয়ত দিকীয় পর্বে আপনার জীবন কাহিনী বিস্তৃত লিখবেন। কিছ ওঁর দিকীয় পর্বে আপনাকে পেলাম না। দিতীর বইটি আপনার নামেই কেবল উৎসর্গ হয়েছে।

—ভূমি কি কেমেনের বাড়ি গিরেছিলে ? প্রশ্ন করলেন উনি।

—-ওঁকে চিঠি দিয়েছিলাম, অবক্ত দেখা পাইনি। তাই আপনার কাছে এলাম। যদি আপনার জীবন কাহিনী—

— পাড়ার লোকের কাছে আমার জীবন কাহিনী বলতে বাবো কেন? প্রচনার শিশিব বাব্ব মুখ থেকে এরকম কথা ভনে সতি।ই এবার থ্ব খাবড়ে গেলাম। এর পর তিনি দশ পনেরো মিনিট থবে আমাদের একটু টুঁ শব্দ পর্যন্ত দিলেন না। সাইক্লোন বইয়ে দিলেন নিজেই।

সীখিব চৌরাস্তার মোড়ে শিশির বাব্র বাড়ি। বলি কেউ ভেবে থাকেন একটু কিছু বৈশিষ্ট্য দক্ষ্য করব, তিনি আমাদেরই মত অবাক হ্বেন। ধিতল। আপনার আমার মতই বাড়ি। দেখানে আভিজাতা বা মুশিয়ানা খুঁজে পাবেন না কেউ-ই।

চুক্টটা নিয়ে বসজেন চেয়ারে। মোটা কাচের চশমার ভিতর দিয়ে প্থোচুপ্থেরণে দেখে নিজেন আমাদের আশাদমভক।

সেই পড়ুষা ছেলেটি গোপনে বাইরে দাঁড়িরে, বাসন মাজতে মাজতে একটি স্ত্রীলোক তথাৎ হতে আছে আমাদের দেখছিল। হয়ত ভাবল ওবা, এ তুটোর আজু মরণ পাখা উঠেছে।

সোজা কথা সাফ কথা শিশির বারু বললেন—আমি কাজের মান্ত্র, বাজে কথা পছল করি না। আমার কাছে হদি কাজের কথা থাকে চটপট বলো। হাতে আমার পাঁচটা কাজ আছে। আমার পড়ান্তনো, ষ্টাডি করতে হয়, রিহার্সাল দিতে হয়, পাঁচটা চিঠি পিথতে হয়, আড্ডা দিতে পারব না। সত্তর বছর হ'ল আর তোমাদের সংগে আড্ডা মারার বয়সও নেই।

আমি অভিনয় করি, কাহিনী লিখি, প্রবোজনা করি। এই বিষয়ে কিছু জানজে চাও ভো বলো। যদি বইয়ের নাম চাও তু-একটা বইয়ের নামও দিজে পারি।

আমি হতবাক। অজিত তথন নতমুখে বসে আছে। শিশির বাবু মুখ ঘূরিয়ে পুনরার প্রশ্ন করলেন—কি কি অভিনয় দেখেছ ?

বসলাম— আপনার শেষ অভিনয় দেখি প্রফুর। সম্ভিনিত অভিনয়।

— সমিলিত অভিনয় আবার অভিনয় নাকি। সমিলিত অভিনয় হয় না বেমন হয় না সমিলিত ক্রিকেট থেলা। তবে ওরা বলে, শ্রুভিনয় করি। ভাল টাকা দেয়। জীবনে সঞ্চয় করতে পারলাম না। আমাকেও তো বাঁচতে হবে।

ৰজিত বলল—আপনার শেষ ৰভিনর দেখি চন্দ্রগুপ্ত। ৰামি সীতার কথাও বললাম।

উনি বললেন—খাক সে কথা।

ভাবলাম শিশির বাবুর কোপ বোধ হর একটু প্রশমিত হয়েছে।
চন্দননগরের বিখ্যাত জলভরা সন্দেশ ওঁর জন্ত সামান্ত নিয়ে
গিয়েছিলাম। জর্পি করে কিছু বলবার আগেই বললেন—না না,
এ সব সন্দেশ-টন্দেশ আমি পছ্ল করি না। তোমরা কেন বে এ
সব আনো। মনে হল সেগুলি এফুণি বুবি আবর্জনাকুণ্ডে ফেলে
দেবেন।

वनामन-वार्ष वरक कि इत् ? त्यामात्मत यक विव विभ धन

আনে অত সময় কোধা আমার ? তাছাড়া মধ্যে মধ্যে আমার বাইরে বেতে হয়।

ভূজুগে মেত না। আমরা বড় স্তজুগব্রির। কে কোধার কি একটা কাজ করল আমনি আমবা ভাকে মাধার ভূলে নাচি। আমাদের দেশের যুবকদের কোন স্থচিস্তা পরিকল্পনা নেই। গুরু উদ্দেশ্রীন ভাবে ঘ্রে বেডার।

জাবার সব বে এই সই নের, জাচ্ছা এই সই নেওরার কি মৃদ্য জাহে বলতে পারো ? তু'বছর, পাঁচ বছর, জাঁট বছর পরে কেউ জার সইয়ের খোঁকে রাখে ? ভবু পাতা নিরে সইয়ের জন্তে সামনে ধ্রে—এ সব কি ?

শিনির বাব্য অভিমানী আর ক্ষর মন বারে বারে আমাদের প্রতিহত করে, নতুন কিছু বলতে কইতে পারি না। অধচ বেটুকু সময় পেয়েছিলাম বাড়ি থেকে ভেবে গিয়েছি এক বাশ কথা।

শিশির বাবু বললেন—আজ বাঙ্লার সব চেয়ে ছদিন। বাসালীর ছেলের আজ একটি চাকরী পাধার উপায় নেই, তবু এটাই ভার নিজের দেশ। দেশ স্বাধীন হবার পর শিক্ষার উন্নতি হরনি এক কোঁটা। তুর্ হয়েছে শিক্ষা সংকোচন। ছোট ছোট ছেলেদের প্ডার পথ বন্ধ করে তুর্ বাড়িয়ে দেওয়া হয়েছে মাইনে চার টাকা, ছ'টাকা।

পৃথিবীর অন্ত কোন দেখে শিক্ষা আহংগের এ রকম বল্লাবন্ত আছে কি বলতে পারো ? আমার অন্ততঃ জানা নেই। সব দেশে কিশোররা বিনাম্ল্য শিক্ষা পার শুরু তঃই নর, বাধ্যতামূলক ভাবে। আর আমাদের দেশ।

পাঞ্জাবে মাজাজে বা পারেনি, বোস্বাইবে যা ভয়নি তা হ'লো পশ্চিমবংগে। হিন্দী জোব করে তাদের শিখতে হ'বে।

বাঙালীর সর্বনাশ সামনে। তোমরা সুসম্প্রদার এর প্রতিবাদ প্রতিকার করছ না কেন ? তোমরা সংযক্ত হও সংবমী হও। দেশে ছেলে নেই এমন কথা বঙ্গছি না, কিছ ঐ ক্ষুব ছলে ভিড়ে মাটি হয়ে গোছে।

এক্টেবারে অচেনা পরিবেশের মধ্যে এরকম নির্ভেক্স অভিনব আলোচনা চলতে পারে আমাদের কল্লনায় তা আসেনি। আমরা ধেমন বিশ্বিত হ্রেছিলাম, সন্তিয় কথা অস্বস্থিও বোধ করছিলাম বেশ। উভরে এই ফাঁকে ভেবেছিলাম এখানে কোন কথা না বলাই বৃদ্ধিমানের মস্ত কাজ হবে।

স্তবের আরকে জরান এই মাত্র্যটি কিছ তেজীয়ান সাতাশের মতই। ভাবলে বিশ্বর হয় ঐ বয়সেও মাইকেল এবং রামের ভূমিকার তাঁকে দেখতে পাওয়া সিয়েছে। সত্তর আমাদের কাছেই আনে সভ্য।

মনে হ'ল চুকটটা হয়ত নিবে গেছে। কিন্তু শিশির বাবু টান দিয়ে বললেন—পড়ো ভাল করে। বদি অভিনয় করতে চাও, ষা অভিনয় করবে সেই চবিত্র ভাল করে বুরভে হবে প্রথমে, তা নিয়ে বিশ্লেষণ করতে হবে। 'সন্তিয় নাটক'—সেই বই নির্বাচন করতে হবে। বললেন—সবই ভজুগে। বাবোরারী সার্বজনীন পুজো— ঠিক বেন বিরেটারও তাই। জারে বাপু, ভজ্জি থাকে পুজো করো, ছজ্জি না থাকলে পুজো করো না।

হঠাৎ বললেন—এতদ্ব থেকে যখন সময় আৰু প্রসা নিষ্ট করে এনেছ তুটো প্রশ্ন কর, সাধ্যমত জ্বাব দেব।

— আপনি কি উল্লেখযোগ্য পরিবর্তন দেখছেন ?

এই প্রশ্নে তিনি বললেন—তথনকার দিনের চেরে এখন বেশী নাটক হয়। তথন প্রসা পাওয়া বেত না, এখন প্রসা পাওয়া বার। তথনকার দিনে একাংক নাটক ছিল না কে বলে । ভবে তোমরা মনে কর রিভলভিং টেজ মানে কি না কি । মৃঢ়রা বোবো না বে, রিভলভিং টেজ মানে—ছোট টেজ। শিশির বাবু এই সমরে হাত হুটি স্থল্পর করে কেমন ছোট দেখালেন।

নাটকের উপথেগী নর, অংচ সাজাহান, টিপু সুসভান, এই ছ'টো নাটক অভিনয় হয়। সব চেরে মজা ১৮৮০ সালে যে নাটা প্রতিষ্ঠানটির অভিছ ছিল আজ ভাগা এমন অভিনয় করছে বে নাটকটির মধ্যে নাটকীয় পদার্থ কিছু নেই। বিশটা চবিত্র আর বিরাট ব্যাপার নিবে অভিনয় হয় না, তবু তাই হছে।

শিশির বাবু বললেন—তোমান্তের নতুন করে কি জার বলব, সবই তো পুরনো কথা। জন্ম দেশে বে রিভলভিং ট্রেছ নেই তা বলছিনা। তাড়ান্ডাড়ি এবং বিশেব কোন দৃখ্যের জন্ম মঞ্চ ঘোরান প্রয়োজন হয়, বিল্ক তা নিয়ে সনাসর্বদা কাজে লাগানো কোথাও হয়না।

একটি কথা বলতে ভূলে ৰাছিছ। শিশির বাবু একবার বললেন— আছকাল সাহিত্য স্টি হছে না কেন জানো ? ভাতে দেশের কথা নেই বলে।

আমরা তো পূর্বেই কথা বন্ধ করে বসেছিলুম এবার নাট্যাচার্থ নিজে একেবারে থেমে গেলেন।

ভাবলুম আমবা আসব জেনে আমাদের গুলু বরাত্ব বডগুলি কথা ছিল ভা তিনি সবই নি:শেষ করে দিয়েছেন।

শিশির বাবু উঠে পড়লেন। বললেন—এখন ভাহলে উঠি ? আমাদের উঠে পড়তে দেখে তিনি বললেন—আবার এলো, কল্যাণ হোক।

আতি অলকণ বড় ভোর আধ ঘণ্টা প্রবস প্রতিভাধর মামুষ্টির সালিধা পেবেছিলুম কিছ সেই স্মৃতিটুকু এমনই বৈচিত্রামর আমি তো নয়ই, অজিতও কোন দিন ভূলতে পারবে কি না সংক্ষেত্র।

৮ই মে গিরেছিলাম মহাভাতি সদনে। সেদিন ভাবভেই
পারিনি আমাদের ভতা এক মর্যান্তিক সংবাদ প্রতীক্ষা করছে।
সর্বজনপূজা মহান শিল্পী আমাদের প্রের নাট্যাচার্য সে দিন এসে
গাঁড়িয়েছিলেন মঞ্চের আভিনার। আমরা দেখেছিলার
আলমসীরকে। আজ ব্যথিত মর্বাহত। আলমসীর আর নেই
ভবু তাঁর শৃষ্ঠ সিংহাসন পড়ে আছে। কালের এ এক করুল
বিচার।



গিরিশচন্দ্র ঘোষ ও নবীনচন্দ্র সেন মহাকবিযুগলের পত্র-বিনিময়

Rangoon, 11 York Road.

ভাই গিথীশ,

২৫শে ফেব্রুরারী ১১ • ७।

২০ বংসর ব্য়সে পলাশীর যুদ্ধ লিখিতে আরম্ভ করিয়াছিলাম।
১০ বংসর ব্য়সে তুমি সিরাজদ্বীলা লিখিয়াছ শুনিরা ভাহার
একধানি আনাইরা এইমাত্র পড়া শেব করিয়াছি। তুমি আমার
অপেকা অধিক শক্তিশালী, আমার অপেকা অধিক ভাগ্যবান।
আমি বধন পলাশীর বুদ্ধ লিখি ভখন সিরাজের শক্রচিত্রিক আলেখাই
আমাদের একমাত্র অবলম্বন ছিল। শুনিগ্রান ভোমাকে আরও
দ্বীর্থনী করিয়া বন্ধ সাহিত্যের মুখ্ আরও উজ্জ্বল করুন।

আমি নব যুবক সিবাজের পত্নীর মুখে শোকসঙ্গীত প্রথম সংখ্যাপ পলাশীর যুদ্ধে দিয়াছিলাম। শোকের সময়ে সঙ্গীত মুখে আসে কিনা বড় সংশংহর কথা বলিয়া বল্লিমবাব বলিয়াছিলেন। সেই জন্ম আমি সঙ্গীত পরে উঠাইয়া দিয়াছিলাম। তুমি চিবদিন গৌরার। দেখিলাম তুমি সেই সন্দিশ্ধ পথ অবলম্বন কবিয়াছ।

ভোমার গীতাবলীর সহিত ভোমার জীবনী প্রকাশিক হইগাছে দেখিয়া উহার একথণ্ডও পাঠাইতে ওক্সদাস বাবুকে লিখিলাম। এই স্থাব প্রবাস হইতে ঈখবের কাছে প্রার্থনা কবি, ভোমার অন্ত জীবন বেন স্থপান্তিতে শেষ হয়।

> ম্বেহাকান্ডী শ্রীনবীনচন্দ্র সেন

১৬ নং বস্থপাড়া লেন, কলিকান্তা। ৭ই'মার্চ্চ ১১০৬

কবিবর প্রীৰ্ক নবীনচক্র সেন সহাদরেব্— ভাইদী!

ভোমার পত্র পেরে আমার পত্রের উত্তরের আনন্দে নর সভ্যই আনন্দ হরেছে। তার বিশেব কারণ, বধন তোমার সঙ্গে হামেশা দেধা হবার সন্তাবনা ছিল তথন ভোমার প্রতি আমার বে কিরণ প্রছা ও তালবালা আমি ভূলিতে পারি নাই, কিছ বধন বছদিন তোমার কোন সংবাদ পেলেম না, আর কোধার আছ, তাহাও জানভেম না তথন আমার মনোভার আমি আপান ব্রতে পারলুম। আমি অনেক দিন হ'তে মনে করি বে আমার ছন্দের সম্বদ্ধে ভোমার সভিত একটা বাদামুবাদ করব কিছ আমার হভাব কাল বা করলে হয়, আছে তা করব না। এ রকম প্রকৃতির লোকের কাল বড় শীত্র হয় না। আমার মনোগত ইছা সাহিত্য সম্বদ্ধে এই দ্ব হতে ভোমার সঙ্গে কধাবার্তা কই, কিছ কতদ্ব হরে উঠবে ঈশব জানেন। তুমি আমার সিরাজভৌলার প্রশংসা করেছ,

আমি তোমার একটি প্রশংসা কবি, তোমার "পলাশীর যুঙ্ধ"
সিরাজদোলার চিত্র অক্সরপ হলেও ভোমার স্বদেশ-অমুরাগ ও নেই
ফুর্লান্ত সিরাজদোলার প্রতি অসীম দরা রাণী ভবানীর মুখে প্রকাশ
পার। আমার ধারণা, অনেক দেশামুরাগী লেথকের তুমি আদর্শ।
আমার উপর ভোমার অকুত্রিম ভালোবাসা, এ আমার গুণে
নর, এ আমি সম্পূর্ণ বুনি তুমি ভোমার মাহাত্মা! লেখা ও
ব্যবহারে তুমি একজন প্রকৃত বৈক্ষর। ভোমার পত্রখানি আমি
সকলকে দেখাই, তারা আনক্ষ করে কিনা জানি না। কিছ
আমার বড় আনক্ষ হয়।

ভুমি আমার বই কিনে পড়েছ; আমার সঙ্গে প্রথম দেখা হ'ছে তুমি জানো, আমি একটা বৈষ্টিপুলে তুমি আপনার গুণে আমার ক্ষমা কর। কেমন আছে ? পরিবারবর্গ কেমন ? উত্তরে **অ**ণমায় সংবাদ দিও। জামি হাঁপানিতে ভুগছি। ঈখবের কুপার বদি আবার তোমার সঙ্গে আমার দেখা হয় আমার মনে হচ্ছে তিন নিনেও তোমার সঙ্গে আমার কথা ফুরোবে না। তুমি ছানো কি না कानि ना, कामांत्र रक्षुताकात तक कम, तम क्रम कारता लाख नत्न, আমার দোবে। আমি মনে মনে তোমার পরম বন্ধু বলিয়া জানি। এ পত্রধানি আমার হাতের লেখা নর, আমার হাতের লেখা পত্র আমি না পড়ে দিলে মাহুবের সাধ্য নাই বে পড়ে। যার হস্তাক্ষর সে আমার সন্তানের তুল্য। আমার সঙ্গে বলে লেখে। আমি বে বে কথা বদলুম, তাহা আমাব অন্তরের কথা, এই লেখকই ভার সাক্ষী। আমি সিরালকৌলার ভূমিকায় ছোমার সম্বন্ধে অক্রতার বে কটাক্ষ করেছেন—ভারই প্রতিবাদ লিখছিলেম বিষ এই লেখকই আমায় নিবুত করে। এর নাম অবিনাশচল্র গলোপায়ার। অবিনাশ আমায় একটি উপদেশ দিলে; বললে—মশাই স্বভাবকবির "পলানীর যুদ্ধ" কাব্য আরু সিরাজ্ঞালার ওকালভি ভুইটিভে বিভার প্রভেদ, জাপনি সে সম্বাজ সমালোচনা করিলে কাব্যের সম্মান বৃদ্ধি না করে, ওকালতির সম্মানই বেশী বাড়াবেন।

আমার "পলাশীর বৃদ্ধ" সম্বন্ধে বজ্ঞব্য ছিল, বা ইন্তিপূর্বের বললেম—তোমার সিরাজের প্রতি স্নেহ ও তোমার দেশামুরাগ। শ্রীমান নিবিলনাথ বার ও সমাজপতি আমার এই মতের সম্পূর্ণ সমর্থন করেন। আজু রাত ছরেছে ওইলো! শ্রীরটে বড় ভালো নর। ছল নিবে একটা বাদাম্বাদ করব শাসিরে রাধসুম। কাজ এ বাউণ্ডলে ঘারা কভদুর হবে তা ঈশ্রকে মালুম। ইতি।

নেহপ্রাপ্ত

গিবিশ

Rangoon, York Road,

काई शिविणा

তোষার ৭ই মার্চের পত্রধানি বধাসময়ে পাইবাছি। ছুমি বেরণ ভোলানাথ তুমি বে আমার পত্রের উত্তর দিবে, আমি কথনো মনে করিয়াছিলাম না। অতএব এই ত্যাস স্বীকারের হল্য আমার বছবাদ বলিব কি । তাহার অর্থ তো বুবি না, আমার বাছবিক প্রীতি গ্রহণ কর।

কেবল সিরাজকোলা নহে, তোমার বখন বহি বাহির হর, আমি তাহা কিনিয়া আনিরা আগ্রহের সহিত পড়ি। তানিরাছি, আনক "সাহিত্যসিংহ" অল্পের লেখা বারলা বহি পড়েন না। কেবল নিজের বৃতিই পড়েন। অনেকের বহির পাঠকও বোব হর নিজে গ্রন্থকার। কিছু আমি কুলু লোক, আমার সে বড়মাছবী নাই। তোমার "গীতাবলী"র একখণ্ড আনাইরা তোমার জীবনীটি পড়িলাম। ঠিক কথা, তোমার বজুবাছব বড় কম। তুমি পীঠছান কলিকাতার এক জীবন বলিদান করিলে। কিছু কলিকাতার অল্পোকেই বোধ হর তোমাকে চিনে ও আমার মত তোমার শ্রহা করে।

প্রনেশের (সমাজপতি) দ্বারা জ্বন্ধর বাবু এক দীর্থ পত্র লিথিয়া
জামি কেন এরপ ভাবে সিরাজকোলার চরিত্র জ্বন্ধিত করিবাছি,
ভাহার লখা চওড়া কৈকিবৎ চাহিয়াছিলেন। জামি বলিয়াছিলাম—
ভিনি লিথিয়াছিলেন ইতিহাস, জামি লিথিয়াছি কাবা। ভ্রথন
পড়িরাছিলাম মার্সমান। ভ্রথাপি বাঙালীর মধ্যে বোধ হয় জামিই
প্রথম পরীব সিরাজকোলার জ্বন্ত এক কোঁটা চক্কের জ্বল
কেলিয়াছিলাম জ্বন্ধর বাবু ভাহার পর জামাকে ক্ষমা চাহিরা
অক পত্র লেখেন এবং জামার এক পত্র ছাপাইতে চাহিরাছিলেন।
জামি লিথিয়াছিলাম বে পলাশীর যুদ্ধের জ্বন্ত প্রবর্থনেন্টের বিষচক্কে
পড়িরা এক জীবনে জ্বন্ধে হুর্গভিজ্ঞাপ করিবাছি। পত্রধানি
ছাপাইলে আমার জায়ও ছুর্গভি বাজিবে মাত্র।

ভাল, আমাৰ কুলুকেত্ৰথানি কি তুমি অভিনয় ক্যাইতে পাব না ? ভাহাৰ বাতা হইবা ভো ভূনিভেছি কলিকাভা ও সমস্ত ব্লন্দেশ কালাইভেছে। হাতের দেখা স্থামে আমিও ভোষার ফলিষ্ঠ কি জাঠ আতা । ছাকার কালীপ্রসন্ন বোব একবার নিবিরাছিলেন বে হাতের দেখার উপর বিধাহ নির্ভর করিলে আমার বিধা হইত মা।

ভবসা কৰি এখন ভালো আছ। গীতাবলীর ছবিঙে বেশিলার বে শ্রীষটি একেবারে থোরাইরাছ এবং মৃতিধানি গণেশের মত করিরা তুলিরাছ। এখন কোন নৃতন খেরাল লইরা নিজে মাটিমার ও বঙ্গদেশ নাচাইবার চেটার আছ।

জমৃতবাবুকে ২ থানি পত্র শিখিরা উত্তর পাই নাই। দেখা হইলে বলিও। ভারা, বোধ হয় এখন খদেশী বদের বসিক। ভোমারই নবীন

> ১৩ নং বন্ধপাড়া লেন, ক্লিকাডা ! ২৩শে এপ্রিল ১৯০৬

कविदत क्रीवृक्त नवीनहत्त्व श्मन नमीरनव् लाईको.

ভোষার পত্তের উত্তর দিই নাই, ভাহার কারণ মীরকাসিই লিখিতে ব্যক্ত ছিলাম। কুক্সক্ষেত্র ভাল করিরা দেখিবার অবকাশ ছিল না। পুন্দর নাটক হয় নিশ্চর, কিন্তু এখন ভেসে বাবে। এখনো পদেশের মৌধিক অমুরাগ খুব উচ্চ। বভবুর নাটক হোক বা না হোক, নাট্টোরিখিত ব্যক্তিগণের এইরপ মৌধিক কাঁর এখন সাধারণের প্রিয়। মহাভারতের বেরুপ প্রকৃত ব্যাখ্যা ভোষার কুক্সক্ষেত্র হরেছে, তা বলি সাধারণে ব্যক্তে পারত, তাহলে প্রকৃত নীতিশিক্ষা ও কর্ত্তব্য অহুটান ভক্ক হোত। ব্যক্তো ধর্মপ্রাণ হিন্দুর ধর্ম ব্যতীত উপার নেই। সমর ব্রচে—মহাভারতের দিন সমর কিরবে। কাব্যখানি নাটকাকারে পরিণত করার ইছা আমার বহিল। হ'টি প্রমের উত্তর হ'ল। দেহের অবস্থা নিজ দেহের অবস্থার অমুত্র করো।

তুমি যুদ্ধ না কবিলে কি হব ? আমি যুদ্ধ করবো যুদ্ধ আদি কিছু নর, গৈরিনী ছল্পের একটা কৈকিরং, "গৈরিনী ছল্প" বলে বে একটা উপহাস আছে তার প্রতিবাদ। প্রতিবাদ এই, আমি বিজ্ঞর চেটা করে দেখেছি, গভ নিধি সে এক খড়ন্ত, কিছু ছলোবছ বাতীত আমরা তাবা কথা কইতে পারি না। চেটা করলেও, ভাষা কথা কইতে পেলেই ছল্প হবে। সেইজভ্রে ছল্পে কথা নাটকের উপবোগী। উপস্থিত দেখা বাক কোন ছল্পে অবিক কথা হয়। দীর্ঘ ত্রিপদী কয় ত্রিপদী বা বে বে ছল্প বাওলার ব্যবহার হয়, সকলগুলি প্রারের অন্তর্গত। অমিত্রাক্ষর ছল্প পড়িবার সমর আমার বেষন ভালা লেখা, তেমনই জ্বেল ডেলে পড়ভে হয় বেখানে বর্ণনা, সেখানে খড়ন্ত, কিছু বেখানে কথাবার্তা, সেইখানেই ছল্প ভালা। ভারপর দেখা বাউক কোন ছল্প অবিক। দীর্থ ত্রিপদীর বিলালীর ছিতীর চরণের সহিত শেব চহনে মিলিত হটুরা অবিকাপে কথা হয়।

দিধিলাম স্বোব্যে ক্মলিনী বান্ধিয়াছে ক্মী।" লবু ত্রিপদীর বিভীর চরণ ও লেব চরণ অনেক সময় মিলিভ হয়। "বিবস বদন বাণীর নিকট বার।"

এ সভয়ার পরার লগু ত্রিপদীর এক-এক পদ বিশেষতঃ পেব পদ

পুন:পুন: ব্যবহাত হয়। জীমার কথা এই বে, এছলে নাটকেয় চৌদ অক্ষরে বাবা পড়া কেন ? চৌদ অক্ষরে বাবা পড়লে দেখা বার— সময় সময় সহল যতি থাকে না !

> বীরবাহ চলি ববে গেলা ব্যগুরে অকালে।

অরপ হাঘেদাই হবে । বাঙলাণ্ডাবার কিবা হিইবাছিল, প্রভিভ অনেক সমরেই বতি জড়িত করিবে। কিবা গৈরিলী ছলে দে আললা নেই। বতি সম্পূর্ণ করিয়া সহজেই লেখা বাইবে। আর এক লাভ, ভাষা নীচ হ'তে বিনা চেটার উচ্চ বরে সহজেই উঠবে। সে প্রবিধা চৌদ্দর কিছু কম। কাব্যে ভার বিশেব প্রয়েজন নাই; কিব নাটকে অধিকাংশ সমরে ভার প্রয়েজন। তাই ভো পাতনামা করিলাম। বদি ভূমি হই-এক ঘাতীর ছাড়, আমিও হ'-একটা কাটান তীর ছাড়ব। ভবে বদি ভোমার ফুরস্থ না হর, শরীর ভালো না থাকে, যুংল আহবান করি না। "আম গেলে আমসি, বৌবন গেলে কাঁগতে বিনি।" বতদিন ভোমার সঙ্গ করা অনারাস্যাধ্য ছিল ভতদিন ভা উপেকা করেছি। কিব এখন এই দ্রদেশ ব্যবধানে কথা কইছে ইছা করে। ভোমার ভো পত্র লিখতে ক্লান্তি নেই। বদি মাঝে মাঝে লেখ, শোবার সমরে পাঠ করে ভতে বাই। ভোমার সমস্ত কুশল সংবাদ প্রতীকার বহিলাম। ইতি—

তণাদ্ধ

গিবিশ।

১৩ নং বহুপাড়া লেন, কলিকাতা। ২০লে জুলাই, ১৯০৬

ক্ৰিবৰ প্ৰীযুক্ত নবীনচক্ৰ সেন। ভাষা

ভূমি আমার বুদ্ধের আহ্বান ঠিক বুকতে পাবো নাই। যুদ্ধে আপোবে অন্ত পরীকা করবার আমার ছিল, হারজিতের প্রতিক্রনো আমি লক্ষ্য বাধি নাই। বাই হোক, তোমার শ্রীর অসুস্থ এ সম্বন্ধে কথার আর প্রবিধানন নাই। আমি ভাবিয়াছিলাম, আ.ড আন্তে সমরান্ধনারে এ বিবরে কথাবার্তা কহিলে ভাবার কোন নাকোন উপকার হইতে পারে। এই তো যুদ্ধের কথা।

সভিটে ধ্ব ব্যস্ত ছিলাম, এখনও আছি। মীরকাসিম লইরা ব্যক্ত ছিলাম, এখন আবার পরের কাজে পড়িরাছি। "মীরকাসিম" স্থকে বাজারে অ্থাতি শুনিতে পাইতেছি। আর বে কর রাত্রি অভিনর ভইরাছে, লোকেরও বথেষ্ট ভীড়। আকরা পর্বন্ত সম্ভষ্ট। এ আমার সামান্ত ভাগ্য নহে। আমান্থ ছেলে দানী, মীরকাসিমের অলে লইরাছিলাম, তাহার অ্থাতি একবাক্যে।

মীরকাসিম ছাণাধানার পাঠাইয়ছি, তবে কতদিনে প্রশ্ন বেবিরা উঠিতে পাবিব, তাহা আমার আমারী মেজাজের উপর নির্জন। তুমি তো জাল "Never do to day what you can put off till tomorrow"—আমার মটো। এইতে বতদিনে ছাণা হয়। তবে অবিনাশ বাবাজী বে আমার লেধক তার কল্যাণে নেছাৎ আমারীতে চলবে না। মীরকাসিম ছাণা হুইলেই আমার 'বলিদান' ও 'বাসবের' (বিক্রমাদিত্য) সহিত্ত পাঠিবে দিব।

আমি তো হাঁপে ভুগছি। তোমার কোন বন্ধু আছার করেছে ?
আমার এক দানীর কথা বলসুম, আর তো কারো কথা বলবার
খুঁজে পাই না। তোমার পরিবারবর্গ ছেলেপুলের আরুপ্রিক সংবাদ
লিখবে। সকলের ওত-সংবাদ ওনলে মনটা একটু খুলী হবে, ভাববো,
বা হোক একটা বুড়ো আছে বে পরিবারবর্গ লয়ে একটু শান্তিতে
কাটার। বোধ হর বুঝতে পেরেছ বে, এ পত্রের লৌকিক উত্তর
নয়। বন্ধুবান্ধর তো বেলী নাই—এ একজনের সঙ্গে তবু কথা কই।
কবিগিরি—কাজটা কি বুঝলে ? আমি কি বুঝিছি বলি—একটু
দৃষ্টি খোলে তাতে একটু আনন্দও আছে। কিছ অন্তর্দু গুল
আপনার পেটের ময়লা দেখে ঘোর আলান্তি হয়। মনে হয়, বুড়ো
হলুম, তবু অভাব ওধরোলো না। ইতি—

মেহাম্পদ গিবিশ Rangoon, 11 York Road, "Palm Grove", ২৭৮/৩৬

ভাই পিরিশ,

ভোমার ২০এ জুলাইরের পত্র পাইয়াছি। আমি কিছু অস্তত্ত্ব ছিলাম। তুমিও মীরকাসিম লইরা ব্যস্ত, ভাই এতদিন উত্তর লিখি নাই। সংবাদপত্রেও দেখিতেছি বে, মীরকাসিমের বেশ প্রতিপত্তি হইরাছে। তুমি ক্ষণজন্মা লোক, এই ব্যসেও বেন ভোমার প্রতিভাদিন দিন আরও বৃদ্ধিত হইভেছে।

আমার অমুরোধ, তুমি সাত দিনে এমন না করিয়া, কিছু বেশী निन नमय नहेवा जामास्य (मर्मय वर्डमान दावनीकि, नमाकनीकि, শিল্পনীতি, ধর্মনীতি, দরিক্রতা, অল্পনীনতা, শিক্ষাবিজ্ঞান, চাকুরী-विखाहे, छेकीनि-छाक्कावि-दिखाहे, विहात्रविखाहे, छेभावि-वार्षि- नवन विषय्य बामर्भ शक्ति अवः म्हामाद्ये देशाह मधाइया अवश्राम Comico-tragic नाहेक निश्चिया (मणदका कर । वर्डमान चामणी আন্দোলনটা স্বায়ী করা উহার প্রধান লক্ষ্য হইবে। স্বামরা এতকাল সাহিত্য ও বৃদ্ধকে বে খদেশ লইবা কাঁদিয়াছি, এতদিনে শ্রীভগবান বেন তাহা শুনিহাছেন এবং দেশের হাদরে এই নবশক্তি সঞ্চারিত কবিবাছেন। উহা বৃদ্ধাঞ্চৰ খাবা তুমি বেরপ স্থায়ী ও বন্ধিত করিতে পারিবে, ভার কেত পারিবে না। নীলদর্পণের মত এই একথানি বহি ভোমাকে অমর করিবে। উহা নগরে নগরে, গ্রামে প্রামে অভিনীত হইয়া দেশে নৃতন জীবন সঞ্চার করিবে। তুমি বলমঞ্চের ছারা ধর্মে ও প্রেমে দেশ বছবার মাতাইয়াছ। এবার স্বদেশপ্রেমে মাতাইয়া তোমার জীংনত্রত উদ্বাপন কর। তুমি এই বহিখানিতে নির্মিত অমিত্রাক্র ও মিত্রাক্তর গভের সহিত চালাইবে। আমার কুত্রশক্তিতে বতর্ব পারি তোমার উচ্চ রচনার আমি সাহাধ্য করিব। আমার অন্তবোধটা বক্ষা করিবে কি ? আমরা এরপ পেডাপেডির দর্মণ বৃদ্ধিন বাবু আনন্দলঠ লিখিয়াছিলেন। ভাঁহার হাভের চিটি আমার কাছে আছে। এত বংসর পরে উহার কি অমৃত্যুস ফলিরাছে দেখিতেছ। ভবে ভিনি আনন্দমঠে দেশোছারের উপার দেখাইতে পাবেন নাই। তুমি সেই মাতৃপুজার সঙ্গে পুজার প্রতি⁶ त्मबाहेद्य ।

দানীবাবালীর মীরকাসিমের অভিনয় এত ভালো হইয়াছে

ভানিয়াছি, বড় সুখী হইলাম। বাৰাজীয় অভিনয় দেখিয়া বছপুৰ্বে আমি ছিব করিয়াছিলাম বে অভিনয়ে বাবাজী পিভার বোগ্যপুত্র হইবেন।

আমার আব ছেলেপুলে কি ? বদিও প্রীভগবান একটি কুরু সৈত্বৰ প্রতিপালনভাব আমি দবিক্রের হুদ্ধে অর্পণ করিয়াছেন আব উহাই আমার জীবনের এক সাহ্বনা—আমার নিজের এক সন্থান মাত্র। নির্দ্ধলকে তুমি কলিকাভার বড় ভালোবাসিতে এবং ভাহার গানের প্রশাসা করিছে। বিলাক হুইতে ব্যাবিষ্টার হুইরা আসিলে এক বংসর কলিকাভার নিজানবিশী করিয়া, নির্দ্ধল এখানে ব্যবসার করিতে গত বংসর আলে। আমিও Extension of service অস্বীকার করিয়া ভাহার সঙ্গে এখানে আসি। তুমি ভনিয়া স্থবী হুইবে—নির্দ্ধল প্রথম মাসেই ১২০০ টাকা পার এবং এই দেড় বংসর বাবং ভাহার আর ১২০০ হুইতে ২০০০। ভাহার মাসিক ব্যৱই প্রায় ১৫০০। ভাহার এই আশাভীত কুত্রকার্বতা প্রীভগবানের কুপা, আমার পিভার পুরুক্ত অবস্থা। কি আশ্রের্ণ, এই মাত্র ও বংসরের বড় নাতনী ঠাকুরাণী আসিয়া বলিল—"ভাভা, ভাভা, এই প্রহাকী নেও"—দেখিলাম—"সিয়িল প্রহাবলী।" স্প্রেহাকাভানী

बीनवीनहन्त्र (मन।

York Road, Rangoon

2512-1-4

ভাই গিরিশ.

তুমি এই নির্বাসিতের স্প্রেম বিজয়ার আজিলন গ্রহণ করিও। বাড়ীতে পুলা, কিছু পুত্ৰ ছুইটি বড় মকৰ্দ্মার আবন্ধ হঙরাতে এ বংসর বাড়ী বাইতে পারি নাই। পূজা—এই নির্ব্বাণের দেশে নিরাপদে কাটাইরাছি। ইছার মধ্যে আনন্দ বাহা-তোমার পাঁচধানি নাটক পূজার উপহার পাইয়া অমুভ্র ক্রিয়াছি। কিছ এ অপ্রার কেন ? তুমি ভো মহাপুরুষ কখনো আমাকে ভোমার কোন বহি উপহার পাঠাও নাই। আমি বরাবর ভোমার বধন যে বহি বাহির ইইবাছে কিনিয়া পজিয়াতি। আমিও কথনো জোমাকে উপচার পাঠাই নাই, কারণ তুমি পড়িবে না। বাক মীরকাসিম নুতন পঙিলাম। অভ বহি সকল আর একবার এই নিরানন্দের সময় পড়িয়া বড়ই আনন্দ পাইলাম। 'ভ্ৰান্তি' ও বিলিদান' আমাব বড়ই ভালো লাগিল। 'অর্ণলভা'র পূর্বে কি পরে হতভাগিনী বাঙলার वरः भठतनत अमन कीवस इवि वृवि कात्र (मधि नांहै। धक्कन क्रिक्रामन নাম দিয়া সেক্সপীয়রের ওথেলোর অফুবাদ করিয়াছেন। ভূমি উহা একবার পড়িয়া দেখিবে কি ? ভরসা করি ভাহাতে তুমি অমিত্রাক্ষর ইশ ও তোমার অমিত্রছলের তারতম্য কি বঝিতে পারিবে।

মীরকাসিমও সিরাজদ্দোলার সমকক্ষ বলিরা বোধ হইল। তবে মীরকাসিমের প্রস্তাবনা (plot) অধিকত্তর আটিল। তাল, ইঁহারা উত্তর বে এরপ দেবচরিত্র ও দেশহিতৈষী (Angel and Patriot) ছিসেন, তাহার প্রমাণ কি ? যদি কিছু থাকে সে সকল একটা পরিশিষ্টে দিলে ভালো হয়।

উপহাবের সঙ্গে ভোমার কোন পত্র পাই নাই। ভবসা করি, ভাহার কারণ শারীরিক অসুস্থভা নহে। ,শারার কি কোন নাটকী নিশার পড়িয়াত্ব ? ভোমাৰ আছি নাটকের ষটোটাও বি আছি । এব-এফটা ফটো বেন নিভাস্ত আছিই বোধ হইল। আপনি মহাপুদ্ধ বলিহা মুর্ভিটাও এব-এক সময়ে এক বক্ষ হয়। প্রেহাকাল্যী

बैभवीनध्य जन

পু:—কাউণ্টেন পেনের কল্যাণে লেখাটাও আগাগোড়া ভোষার ফটোর মন্ড নানা মৃত্তি ধারণ কবিল। ক্ষমা কবিও।

13 Bosepara Lane, Calcutta 16th October 1906.

ক্ৰিবৰ জীমুক্ত নবীনচন্দ্ৰ সেন ভাষা,

ঠিক ধবেছ, শরীবের অন্থাবে দক্ষণ পাত্রের উত্তর দিতে পারি দাই। সহজ উত্তর সহজেই দেওরা বেতে পারত। কিন্তু তোমার করমাস সহজে ছুঁকথা বলব ও ছুঁকথা জিগেস করব, এই জড়েই শরীবের আরার অপেকা করছিলেম, সে অবধি আর সে আরাম পাই নাই। পুরীতে হাওরা বদল করতে গেলেম, শ্ব্যাগত হয়ে ফিরে এলেম। লাভের মধ্যে অগ্রাথ দর্শন হয়েছে। ব্যামো আমার পুরোনো কুটুম। ইাপানি। প্রসা ব্যর করে তার পরিচর্ব্যা হছে।

নির্মানের উন্নতিতে আমি আশ্চর্য হই নাই। ভোমার টেবিলে আমার পাশে সেই বালককে এখনো আমি দেখছি। সে বে Mathematics তখন পারত না, তার মানে Drudgery করা তার বভাবসঙ্গত নয়। তোমার বলা বাহল্য Mathematics এর সার আলে লাইরা আইনের তর্ক করিতে হয়। সে তর্কে অবস্থই নির্মাল সম্পূর্ণ পট্ট ইয়াছে। আমি কায়মনোবাক্যে তাকে আলীর্কাদ করলেম। তাকে জিল্ঞাস। কোর এ বুড়োকে কি তার মনে আছে ?

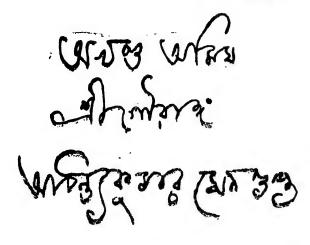
সাত সমূল তেরে। নদীব জল থেরে তুমি বে তোমার পুত্রের কল্যাণে এরপ পুথী হয়েছে, এ তোমার-বৈদ্যাত্রেই আনন্দের বিষয়। আমি ঈশবের কাছে প্রার্থনা করি, এ পুথ বুড়ো-বুড়ীতে অবাধে ভোগ কর। একটা কথা জিজ্ঞাসা করি, ডেপ্টি ম্যাজিট্রেটী করে এখন ভাজা প্রাণ কি করে বেথেছে? আমার ধারণা সচরাচর ডেপ্টি ম্যাজিট্রেট বে রূপ দেখি, তাদের সংসর্গে যদি প্রেরো দিন বাস করতে হয় ভা হলে পাগল হয়ে বাই। কোন কাজের কথা বলবার শক্তি নাই।

তোমার প্রস্তাবিত নাটক যদি ভগবান আমার হারা দেখান আপনাকে ধন্ত জ্ঞান করব। কিন্তু দেখবার আমি ক্তণ্ব বোগ্য, তা বিশেষ ভাবনার বিষয়।

তোমার বই বে আমি পড়ি না—এমত নর। কিন্তু পড়ব পড়ব করে অনেক সমর পড়া হয় না। অনেক দেখলে ওনলে বটে কিন্তু আমার লোড়া আলসে-কুঁড়ে দেখেছ কি না সন্দেহ! পিঠে চাবুক্ব না পড়লে আমি নড়বার বালা নই। তোমার পত্রের উত্তর দিখৰ কল্পনা করেছি, এমন সমর ভোমার পত্রের উত্তর এল। সমুদ্র ব্যবধানে বদি মনে মনে কোলাকুলি হয়, তুমি নিশ্চয় জেন, সে কোলাকুলি হয়েছে। আর এক মলার কথা, আমার হাওরা বদলাবার প্রয়োজন, তাই ভাবছিলাম, রেলুন বাব। অনেকেই বেতে পরামর্শ দেয়, তবে বাবা নাচবে কি না জানি না। সকাল সকাল ওতে চললুম, প্রস্তাবিত নাটক সম্বদ্ধ আমার অনেক কথা আছে, একটু শুভ হয়ে ভোমার সঙ্গে আলোচনা করবো। নমস্বার। সেহাকান্থী

গিবিশ

बाबाबादिक जीवनी-ब्रह्म



35

হৈ প্রাণপ্রিয়, আমি জোমাকে ছাড়া আর কিছু
আনি না। যদি ডোমার ইচ্ছে হয়, আমাকে আলিক্স
খরো, নয়তো মদন করো পদতলে। নয়তো
আদর্শনে রেখে মর্মাহত করো। হে প্রেমলম্পট, যা
করলে তুমি স্থী হও, তাই করো নিবিচারে। কেন না
জোমার স্থই আমার একমাত্র কাম্য যেহেতু ভূমিই
আমার একমাত্র। তুমি ছাড়া আমার আর কেউ
নেই।

যদি চিন্ত স্থির না হয়, নির্দ্ধিত না হয় তবে তপস্থায় কি দরকার ? আর যদি চিন্ত হরিম্মরণে না মগ্ন হয় ভবে চিন্ত স্থির হবে কি করে ? আর যদি চিন্ত আর্দ্র না হয় তবে আর হরিম্মরণে প্রয়োজন কি ? আর যদি কামনা ক্ষয় না হয় তা হলে চিন্তই বা আর্দ্র হবে কি দিয়ে ?

ৰিক্তা কি ? হরিভক্তিই বিভা। বেদাদিশাত্ত্রে পাণ্ডিভ্যের নাম বিভা নয়।

কীৰ্ত্তি কি ? ভগবৎপরায়ণ বলে খ্যাভির নামই ভীৰ্ত্তি। দান বা সেবা থেকে যে খ্যাতি তা কীৰ্ত্তি নয়।

· এই কি ? কৃষ্ণত্থেমই এই। ভূয়িষ্ঠ ধনজনগ্ৰামও বিভ নয়।

ছংখ কি ? ভক্তের বিরহই ছংখ। হুদ্রণের যন্ত্রণাও ছংখ নয়।

মৃক্ত কে ? ভক্তসামীপ্যে যার অবস্থিতি, প্রেম-ভক্তিতে যে প্রীতিমান, সিদ্ধদেহের প্রতি যার আস্থা, হরিনাম খনে যার চিত্ত সরসত্রব, সে।

পান করবে কি ? ব্রজকেলি।

আই বিধে আয়ে কি ? সাধুসজ।
পারণীয় কি ? নাম।
অন্তথ্যয় কি ? প্রীকৃষ্ণচরণ।

স্থের কি ? তার মানে, বাস করবে কোপার ? অস্ত্রধানে।

শ্বাবণের আনন্দী কি ? বৃন্দাবনলীলা। উপাস্থ্য কে ? বাধাকুষ্ণ ।

ৰলো বলো, আরো বলো। রসে বারা অনভিজ্ঞ ভারা নির্বাণ থিকজন চুবুক, আমরা রসভব্বিদ, আমরা কেন ডা করতে যাব । মদনমন্থ্রা পোপরামা নয়নাঞ্চল যে শ্রামায়ত পান করেছে, আমরা ভার অবশিষ্ট কিঞিৎ পান করে।

বোল বছর বয়স, পলাগালের টোল ছেড়ে নিজেটোল পূলল নিমাই। নিজের বাড়িডে জায়পা নেই, মুকুন্দলজয়কে ধরল। ভোমার চণ্ডীমণ্ডপ আছে, সেইখানে একটু স্থান দাও না, একটা বিভার মন্দির ভূলি।

নবন্ধীপে কভ বড়-বড় পণ্ডিতের টোল, এই কোমলকান্ত কিশোরের স্পর্ধা কি নতুন টোল চালাবে। তবু, কি জানি কেন, রাজি হল মুকুন্দসঞ্জয়। যিনি ধন দিয়েছেন ভিনি যদি আমার গৃহে বিভার সমাজ বসান আমি ভো কৃতকুভার্ধ।

'আমার ছেলেরাও কিন্তু পড়বে।' আবদার করল । মুকুন্দ।

'ভা আর বলতে।' সায় দিল নিমাই।

কিন্তু শিখবে কি ? লোকে দেখবে, শাস্ত্র আর ব্যাকরণ, কিন্তু, প্রস্তরের নিচে নিঝর, শিখবে আসলে ভক্তির মধুরিমা।

ভগবান একই বস্তু কিন্তু জ্ঞানী যোগী আর ভত্ত — ভিন জনের ভিন রকম অন্থভব। একজন আম দেখল, আরেকজন আম শুকল, তৃতীয় ব্যক্তি আম খেল। সব চেয়ে বেশি জিতল কে ? নি:সন্দেহ, তৃতীয় ব্যক্তি। তৃতীয় ব্যক্তিই ভক্ত।

জ্ঞানী অমুভব করে ভগবানের অঙ্গকান্তিরূপ নির্বিশেষ ব্রহ্মকে, যোগী অমুভব করে ভগবানের অংশস্বরূপ পরমাত্মাকে আর ভক্ত অমুভব করে ভগবানের সর্বৈশ্বর্থপরিপূর্ণ বিগ্রহস্বরূপকে। নির্বিশেষ ব্রহ্মে রূপ নেই লীলা নেই বিলাস টুনেই। পরমাত্মায় রূপ আছে, স্পৃষ্টির ক্ষেত্রে লীলাও আছে কিন্তু জীব সম্বন্ধে সে নিস্পৃ হ, উদাসীন, সাক্ষিমাত্র। কিন্তু ভক্তের ভগবানে জীক লীলাবিনোদ বৈচিত্র্য, অধ্ও আনন্দ্ৰম আখাদ। ভক্তের অনুভাব ভিতরেও ভগবান বাইরেও ভগবান জানে।

জ্ঞানীর কাছে ত্থ গুধু শাদা, যোগীর কাছে ত্থ শাদা আর তরল, কিন্তু ভক্তের কাছে তুথ শাদা, তরল আর মধুর।

ভোমার কাছে পড়া মানে কৃষ্ণলেবার পাঠ নেওয়া। কৃষ্ণদেবার জল্মে যে বেগবভী বলবতী 'কুফেন্ডি ঐীতি-ইচ্চা ৰাসনা ভার নামই প্রেম ' ধরে প্রেম নাম।' ক্রিয়ের প্রীতিবিধানই প্রিয়োপাসনার ড়াৎপর্য। যদি প্রিয়ের কাছে নিজের জত্তে কিছু চাই তা প্রিয়ন্ত্রপরিপত্তী। তা হলে তা প্রিয়ের করে সাধন নয় নিজের জন্মে প্রসাধন। প্রিয়ম্পাদীত।' যারা মোক্ষ চায় ভাদের কি কুষ্ণে মনতা আছে ? মমৰবৃদ্ধি ছাড়া প্ৰেম কোথায় ? তুমি আমার আপন জন অফুভাব এই ভীব্রতা না এলে তোমাকে ভালোবাসি কি করে? তুমি আমার স্থা। তাই তো আমি তোমার কাঁধে চড়ি, চড়তে সাহস পাই, মুখের ফল মিষ্টি লাগলে সেই উচ্ছিষ্ট ফলই খাইয়ে দিই তোমাকে। তারপর তোমাকে যখন গোপালরূপে বাৎসল্য করি তখন ডোমাকে তাড়ন-ভর্পন করতেও ছাড়ি না। তারপর আবার তোমার দঙ্গে মধুর হই। আর এই মাধুর্যেই আমার আস্বাদের আধিক্য। উজ্জ্বশতম সমৃদ্ধি। জ্ঞানে-যোগে কামে-মোক্ষে এই সমৃদ্ধি কোথায় ? মধুমত্তম রসই হচ্ছে প্রেম।

বনমালী ঘটক শচী দেবীকে এসে বললে, 'ছেলের এবার বিয়ে দাও।'

'না, না, ছেলের এখন বিয়ে কি!' শচী দেবী কথা মোটে গায়ে মাখলেন না: 'ছেলে আমার আরো বড় হোক, বিদান হোক।'

বনমালী বললে, 'যে পাত্রীর সন্ধান এনেছি তার জুড়ি তুমি পাবে না নবদীপে।'

শচী দেবী ভবু কান পাতলেন না।

বিল্লভ আচার্যের মেয়ে লক্ষ্মী। একেবারে লক্ষ্মীর প্রতিমা। রূপে-শীলে কুলে-মানে অদ্বিতীয়া। নিমাইয়ের সঙ্গে অপরূপ মানাবে।'

তবুও প্রশ্রয় দিচ্ছেন না শচী।

রাস্তায় নিমাইয়ের সঙ্গে বনমালীর দেখা। নিমাই উধোল: 'কোথায় গিয়েছিলেন্ ?'

'ভোমাদের বাড়িতে।'

'কেন, কি ব্যাপার ?'

তোমার মাকে ভোমার বিয়ের কথা বলতে। হাতে একটা খুব ভালো সহন্ধ ছিল ভার হদিস দিতে। ভা মা কি বলল ?' মৃছ্-মৃত্ হাসতে লাগল নিমাই।

'শ্ৰেদ্ধা করে কথাই কইলনা। উড়িয়ে দিল এক-বাকো।'

গন্তীর মুখে বাড়ি ফিরে নিমাই মাকে জিগালেস করলে, 'বনমালী আচার্যকে ফিরিয়ে দিয়েছ কেন ?'

এ কী ইঙ্গিত। উৎফুল চোধে ছেলের মুখের দিকে ভাকিংয় রইলেন।

ঠা, আমি তো এখন গৃহস্থ। ভাই আমার গৃহধর্ম পালন করা উচিড।' নিমাই বললে, 'আর গৃহিণী ছাড়া গৃহধর্ম কোথায় ?'

বনমালীকে ওয়ুনি ডেকে পাঠ লেন শচী দেবী। বনমালী বল্লভ মিশ্রকে খবর দিলে।

বল্লভ লাফিয়ে উঠল। 'সেই পরম পণ্ডিত সর্ব-গুণের সাগর বিশ্বস্তর আমার জামাই হবে? কিন্তু বনমালী, আমি যে নিধন, পাঁচটি হরীতকীর বেশী যে আমি দিতে পারবনা।'

'দিতে হবেনা ভোমাকে।'

গঙ্গায় যাচ্ছে লক্ষ্মী আর টোল থেকে ফিরছে
নিমাই, পথে হঠাৎ দেখা হয়ে পেল। মুহূর্ডে
'পূর্বসিদ্ধ ভাব' মনে পড়ে পেল হজনের। নিমাই
শ্রীকৃষ্ণ আর লক্ষ্মী শ্রীলক্ষ্মী। আর তাদের স্বাভাবিক
ভাব কান্তাভাব। 'কান্তাপ্রেম সর্বসাধ্যসার।' ব্রজের
শ্রীভিই কেবলা প্রীভি। কান্তাভাবের সেবা
প্রেমান্নপা। তাতে আছে নিষ্ঠা, পরিচর্যা, মমন্বর্জির
গাঢ়তা, পৌরববৃদ্ধির হীনতা, নিবিচার অনুগতি।
কান্তাভাবেই মধুরতার স্ব্রাভিশয়।

শুভদিনে পোধৃলিসময়ে বিয়ে হল। চারদিকে 'লেহ-দেহ' রব পড়ে গেল। পড়ে গেল হরিংধনি। গন্ধে মাল্যে চন্দনে কজ্জলে উজ্জল হয়ে বসল তুক্সনে। কেউ বললে, হর-গৌরী, কেউ বললে রভি-মদন, কেউ বা শচী-ইক্র। কেউ বা রাম-সীতা, কেউ বা রাধা-মাধব, কেউ বা লক্ষ্মী-নারায়ণ।

মা-শব্দের অর্থ লক্ষ্মী। যিনি লক্ষ্মীর ধব বা পতি তিনিই মাধব। মা-শব্দের আরেক অর্থ বিভা। বিভা বা সরস্বতীর যিনি পতি তিনিই মাধব। লক্ষ্মীর মড সরস্বতীও বিফুর পত্নী। শ্রুতিতে ব্রহ্মবিভার নাম মধ্বিছা। যে বিছায় আনন্দচিন্ময়রসের আবাদন করা যায় তা মধ্বিছা নয় তো কি। মধ্বিছায় যিনি অবপম্য তিনিই মাধব। মা-শব্দের আরেক অর্থ, ধী, বৃদ্ধি। যিনি মৌনের সাহায্যে বৃদ্ধির ধবন বা দূরীকরণ করেন তিনিই মাধব। অর্থাৎ স্বল্লফলদায়ী কর্ম থেকে যিনি জীবকে নিজের দিকে আকর্ষণ করেন তিনিই মাধব। ধব-শব্দের আরেক অর্থ বস্ত্র। বস্ত্র শরীরেক আচ্ছাদন করেই শরীরের শোভা বিস্তার করে। তেমনি যিনি মা-কে বা জীরাধাকে তেকে রেখেছেন আলিঙ্গনে, সেই নিত্য দীলাপরায়ণ খ্যামস্থলরই মাধব। মা-শব্দের অর্থ ফ্রাদিনী বা আনন্দিনী শক্তি। সেই শক্তিই জীমতী।

মুশে করবে মাধবের নাম, মনে করবে মাধবের ধ্যান আর সকল কালে স্মরণ করবে মাধবকে।
মাধবই পরমানন্দ, তাকেই বন্দনা করো—তাঁরই
কুপায় মৃক বাচাল হয়, পঙ্গু যায় পিরিলভ্যনে।
তিগ-তুলসী দিয়ে এই দেহ মাধবকে উৎসর্গ করে দাও
আর বলো, হে মাধব, তোমাকে বার বার মিনতি
করছি, তোমার দয়া যেন আমাকে না ছাড়ে।

আর নারায়ণ কে ?

নর থেকে উত্ত বলে নার। তাই নার অর্থ জীবসমূহ। অয়ন অর্থ আশ্রয়। সমগ্র জীবসমূহের আশ্রয় বা আলয় বলে নারায়ণ। নার-শব্দের আরেক অর্থ জল। জলে অর্থাৎ কারণ-জলে অবস্থান করেন বলেও নারায়ণ। নারায়ণ শ্রীকৃষ্ণেরই বিলাস। অধীশ, অথিললোকসাক্ষী শ্রীকৃষ্ণ। আশ্রিতাশ্রয়-বিগ্রহ। শ্রীকৃষ্ণই সর্বধাম—জগদ্ধাম। অনাদিরাদি-র্গোবিন্দ, সর্বাশ্রয়, সর্বকারণকারণ। শ্রীকৃষ্ণ নারায়ণেরও আদি, নারায়ণেরও মূল, নারায়ণেরও অবতারী। নিখিল শক্তির অধিষ্ঠানই শ্রীকৃষ্ণ।

গোবিন্দ কে ?

পো অর্থ পরু, পো অর্থ পৃথিবী, পো অর্থ ইন্দ্রিয়।
আর বিন্দু ধাতুর অর্থ পালন। যিনি পো-পালন
করেন তিনিই পোবিন্দ। বিশ্বের পালনকর্তা বলেও
গোবিন্দ। সর্বইন্দ্রিয়ের অধিষ্ঠাতা বলেও গোবিন্দ।
পরিকরবর্গের ইন্দ্রিয়সমূহকে আনন্দে পালন বা পোষণ
করেন বলেও গোবিন্দ।

শচীর গৃহ পদ্মগদ্ধে ভরে উঠস, দূরে পেস দারিদ্যের মালিন্য। আনন্দের বিহ্যুৎ খেলতে লাগল অন্ধারে। বুঝি কমলা এসেছে দীনের আলয়ে। দীন কে ? নিরুপম লাবণ্যের আহলাদমূর্তি নিমাই, মেঘমালিন্যের লেখমাত্র নেই। কোটি কন্দর্পের রূপকেও যেন হার মানিয়েছে। ব্যক্ত হয়েও যে ব্যক্ত নয় তাকে বোঝে এমন শক্তি কার ? নিমাই নিজেকে জানাচ্ছে না বলে লক্ষ্মীও মুথ ঝেঁপে আছে। না জানালে জানে এমন সাধ্য কার ? যার প্রতি কৃপা হবে শুধু সেই পাবে জানবার অধিকার। 'যারে তান কুপা হয় সেই জানে তানে।'

বিতারদে কখনো নিমাইয়ের পরিহাস কখনো বা অটল নিটোল গান্তীর্য। নবদীপে এমন পণ্ডিত নেই य क्रम कांब्र होतम अरम ना वरम, अरन ना यात्र তার আখ্যান-ব্যাখ্যান। বৃদ্ধ, বিজ্ঞ, অভিজ্ঞ, বিখ্যাত কেউ উপেক্ষা করতে পারে না নিমাইকে। সাহস নেই কোথাও দম্ভস্ফুট করে। বিভার নিশ্ছিত্র শুস্ত। কিন্তু যখন বিভার আসনে নেই তখন চাপল্য-ভারল্যের প্রতিমূর্তি। শিষ্যদের নিয়ে পঙ্গায় লাফাচ্ছে-ঝাঁপাচ্ছে, কখনো বা রাজ্বপথে ছুটোছুটি করছে। এত বড় পণ্ডিভ, আর অধ্যাপক, তার এ কী লঘু-চিত্ততা। কে কার কথা শোনে। গালমন্দ করলেও নিমাই চটে না। বরং উল্টে সে নিজেই ঠাটা থিজপ করে, বিশেষত যাদের বাড়ি শ্রীহট্ট, যাদের কথায় পূর্বাঞ্চলের টান। আর নবদীপে শ্রীহট্টের লোক তো কিছু কম নয়।

'থমি যে ঠাট্টা করো তোমার বাড়ি কোন জেলায় ?' এইটারা পালটা আক্রমণ করে।

প্রশ্ন শুনে আবার নিমাইয়ের পরিহাস।

লাঠি নিয়ে তেড়ে আসে শ্রীহট্টরা, নিমাই ছুট দেয়। সাধ্য কি তার সঙ্গে পাল্লা দেয় কেউ। অনুপায় হয়ে শ্রীহট্টরা আর্দ্ধি করে দেওয়ানে। তদন্তে দারোগা-পেয়াদা আসে, কিন্তু তারাও নিমাইয়ের পক্ষ হয়ে হাসে। বলে, এ আবার একটা মামলার বিষয় নাকি ?

কিন্তু এত বিভায়ই বা হল কি, কি বা হল এত সারল্যের ভূমিকায় ?

कुकादम कहे ?

'হেন দিব্য শরীরে না হয় কৃষ্ণরস। কি করিব বিভায় হইলে কালবশ॥'

কুষ্ণই সমস্ত রসের বিষয় ও আশ্রয়, সমস্ত শাস্ত্রের প্রতিপান্ত, তার কথা কই ?

সাধন-ভক্তির থেকেই রতির উদয়, সেই সাধন-ভক্তি

অমুষ্ঠানই প্রবণ-কীর্তনাদি সাধন-কোথায় ? ভক্তির অঙ্গ, তাও ত দেখিনা। ও সব অমুষ্ঠানে চিত্তশুদ্ধি হলে রতির আবির্ভাব। রতি পাট হলেই প্রেম। যাতে চিত্ত স্লিগ্ধ হয়, কুষ্ণে আ'ত্যস্থিকী মমতা জন্মে রতির সেই প্রগাঢ়তাই প্রেম। প্রেম যথন চিত্তকে দ্রবীভূত করে তথন তা ক্ষেহ। স্নেহে ক্ষণকালিক বিচ্ছেদ্ও সহনাতীত। মেহ থেকে মান। নবীনতর আম্বাদ করবার চেষ্টায় যখন অন্সিক্ণা ধারণ করে তখন তা মান। মান যদি বিশ্বাস করে যে প্রিয়জন এই অদাক্ষিণা মোচন করবেই তখনই তা প্রণয়। প্রণয় থেকে রাগ। মিলনের আশায় যথন ত্রঃথ ও সুথ বলে অমুভূত হবে তথনই তা রাগ। রাগের বৃদ্ধি অমুরাগ। প্রিয়জনকে যখন বারে-বারে নিত্য-নতুন বলে আশ্বাদ হবে, প্রতি দর্শনেই সে অভূতপূর্ব, তখনই অমুরাপ। অমুরাপে সমস্ত 6িত যথন বিভোর, টইটুখুর, তখনই তা ভাব। আর ভাবের পরমকাষ্ঠা মহাভাব।

केन वर्ष थायाह. 5066]

এসব লক্ষণ কোথায় নিমাইয়ে ?

মুকুল দত্ত কেমন কুষংগীত পাইছে। যে শুনছে সেই তন্ময় হয়ে যাচ্ছে। কেউ কাঁদছে কেউ হাসছে কেউ বা উদাম নৃত্য করছে। কেউ পড়াপড়ি খাচ্ছে, কেউ বা হুলার করে মালসাট মারছে, কেউ বা মুকুন্দের ছ'পা ধরে লুটিয়ে পড়ছে। ওসব কিছুতেই যেন নিমাইয়ের মনোযোগ নেই। মুরুন্দ তার সহপাঠা, পথে দেখা হলেই তার সঙ্গে শুধু ব্যাকরণের ভর্ক চালায় নিমাই। যে অদ্বৈত্তসভায় মুকুন্দের গান হচ্ছে ডার ধার দিয়েও সে হাঁটে না। শ্রীবাস পণ্ডিত যার প্রবণে ক্রার্ডনে আনন্দ, যে নিজের ঘরে ক্রার্ডন করে ও প্রবণ করে গিয়ে অদৈতসভায় ভার সঙ্গে দেখা হলেও নিমাই শাস্ত্রের ধাঁধা জিগগেস করে, দিগগেস করে ব্যাকরণের ফাঁকি। কুষ্ণকথা মুখেও আনেনা। সবাই কৃষ্ণকথা শোনবার জন্মে উৎসুক কিন্তু নিমাইয়ের কাছে কেবল ভাষাতত্ত্বের কচকচি। এই মিথ্যা বাক্যে কারু রুচি নেই। ঐ 'ফাঁকি' আসছে রে, দূর থেকে নিমাইকে দেখে সকলে কেটে

একদিন অমনি পালিয়ে যাচ্ছিল মুকুন্দ।

'ও আমাকে দেখে পালায় কেন ?' পালের লোককে জিগগেস করল নিমাই।

পদান্তানে যাচেছ বোধ হয় 🖋 বললে পার্থবর্তী।

'ওদিকে পঙ্গা কোথায় 🤫 'তবে বোধ হয় অম্যত্র কাল আছে।'

'না, না, আমাকে দেখে পালাচেছ।' নিমাই, 'দেখা হলে আমি শাস্ত্ৰ-ব্যাকরণ বলব কৃষ্ণকথা বলবনা, তাই এড়িয়ে যাচ্ছে আমাকে। 'ওহে মুকু**ন্দ** পণ্ডিত'—গলা তুলে হাঁক দিল নিমাই!

মুকুক শুনেও শুনলনা, বেরিয়ে গেল হ্নহ্ন করে। 'আমার থেকে পালিয়ে পালিয়ে এমনি থাকবে किष्मन ।' मुकुरमात्र छिष्मर्भ एएँकि दलाल निमार्थे, 'ক্দিন পর এমন বাঁধনে বাঁধব ছেড়ে যেতে পথ পাবে ना। प्रथरव रेवछव कारक वरन। प्रथरव ध रेवछरवत्र ঘরের দরজায় "অঙ্গ ভব" দাঁড়িয়ে আছেন পাহারায়। দেখবে—'

যারা শুনল ভারা রুষ্ট হল নিমাইয়ের উপর। কী স্পর্ধা, ত্রন্ধা আর শিবকে দ্বারস্থ করে! দেবদেবী মানেনা নিমাই। নিমাই নান্তিক।

শ্রীবাসেরও সেই আক্ষেপ। আহা, নিমাই যদি বৈষ্ণব হত কভ স্থাথের হত। বিহার নেশাই ওর কাল হল। বিভার তৃপ্তি ছাড়া আর কিছুই ওর কাছে লোভনীয় হল না। এত বড় পণ্ডিত, কিন্তু সারশস্থানুন্ত, কুষ্ণে রভি নেই এক্বিন্দু। 'মনুষ্যের এমন পাণ্ডিত্য দেখি নাঞি। কৃষ্ণ না ভঞ্জেন সবে এই তঃখ পাই ।' সকলে মনে মনে প্রার্থনা করে. হে কৃষ্ণ, নিমাই অধ্যয়ন ছেড়ে তোমার রুসে মত্ত হোক, নিরবধি প্রেমভাবে ভজনা করুক ভোমার। 'কেহো বলে, হেন রূপ হেন বিভা যার। না ভজিলে কৃষ্ণ নহে কিছু উপকার u'

সমস্ত নদীয়া তখন ধন-পুত্রংসে মন্ত, কিন্তু শ্রীবাস আর তার তিন ভাই—শ্রীরাম, শ্রীপতি আর শ্রীনিধি —রাতে নিজগৃহে উচ্চস্বরে কীর্তন করে একতা। কীর্তনের পোলমালে পাষ ীরা ঘুমুতে পারে না। বাপু, ধীরে ধীরে মৃত্তম্বরে কৃঞ্নাম করলে হয়না, প্রমন্ত হয়ে নাচতে কাঁদতে লাফাতে-ঝাঁপাতে হবে ? দাঁড়াও, তোমাদের বাড়ীঘর পঙ্গায় টেনে নিয়ে ফেলব, সবংশে তাড়িয়ে দেব নবদ্বীপ থেকে।

জীবের কৃষ্ণহীনতা দেখে বুক ফেটে যায় শ্রীবাসের। দীনদয়ান্ত নাথ, কবে আসবে তুমি, কবে জাগবে তুমি, অলোককাতর আমরা, কবে দেখব ভোমাকে ?

একদিন পথের মধ্যে নিমাইয়ের সঙ্গে জীবাসের (मथा। मिया हलाइ इन-इन करता औ्राम्स्क দেখে নিমাই জ্রুত একটা নমস্কার করল। **জ্রীবাস** বললে, 'কি হে উদ্ধতের চূড়ামণি, চলেছ কোথায় ?'

নিমাই কোনো উত্তর দিলনা। মৃত্ মৃত্ হাসতে লাগল।

শ্রীবাস বললে, 'কি ছার বিভার লোভে দিন কাটাচ্ছ? বিভায় কি হবে যদি কৃষ্ণভক্তি না হয়? 'পঢ়ে কেন লোক—কৃষ্ণভক্তি জানিবারে। সে যদি নহিল তবে বিভায় কি করে।' কভই তো পড়লে কিন্তু পেলে কী? যদি কিছু পেতে চাও তো কৃষ্ণভজন শুক্ত করো। 'ডেকে সর্বথা ব্যর্থ না গোঙাও কাল। পড়িলা ত এবে কৃষ্ণ ভক্তহ সকাল।'

নিমাই দাঁড়াল না। চলে যেতে যেতে বললে, 'পণ্ডিত থৈৰ্য ধরো, ভোমার কূপায় ভাও নিশ্চয়ই হবে একদিন।'

তারপর সেদিন আবার গদাধরের সঙ্গে নিমাইয়ের দেখা।

গদাধর পালিয়ে যাচ্ছিল, নিমাই ছুটে পিয়ে তার ছুহাত চেপে ধরল। 'কি হে পণ্ডিভ, শাস্ত্র ব্যাখ্যা করে যাও। মুক্তির লক্ষণ কাকে বলে গু'

কিছু না বলেও ছাড়ান নেই। আমতা-আমতা করতে লাগল গদাধর। বললে, 'আত্যস্তিক হুংখ-নাশই মুক্তির লক্ষণ।'

আর যায় কোথা। নিমাই গদাধরকে পেড়ে ধরল। ব্যাখ্যার এমন সব দোব ধরতে লাগল যে গদাধরের সাধ্য নেই তা খণ্ডন করে। সাধ্য নেই ধূলিজালের মধ্য থেকে মুক্তির পথ দেখে।

'বাবা, পালাভে পারলে বাঁচি।' মনের পোপনে মিনতি করতে লাগল গদাধর।

ছেড়ে দিল নিমাই। বললে, 'আৰু ছেড়ে দিলাম ৰটে কিন্তু কাল আবার ধরব।'

সবাই অবৈতসকাশে গিয়ে নালিশ করে, 'কই, তোমার কৃষ্ণ কই ?'

হুকার করে ওঠে অবৈত। 'আসছে, আসছে, বৈর্থ ধরো, নদীয়া শহরেই আছে সে প্রচ্ছর হয়ে। কী হয় দেখবে সকলে চোখ খুলে—ছুই চোখে সে দেখা আর শেষে কুলিয়ে উঠবে না। 'করাইমু কৃষ্ণ সর্ব-নয়ন-গোচর। তবে সে অবৈত নাম কৃষ্ণের কিন্ধর। আর দিন কথো গিয়া থাক ভাই সব। এথাই দেখিবা সব কৃষ্ণ অমুভব॥'

শিভূকার্য করে গয়া থেকে গৌরাঙ্গ যথন ফিরে

এল তথন ভার পর্ব অকে প্রেমবিকার। শটী মাতা মনে করলেন ভার বায়ুরোগ হয়েছে, আত্মীয়-বদ্ধরাও তাঁকে সমর্থন করল। কেউ বললে, ডাব-নারকোলের জল খাওয়াও, কেউ বললে শিবাদি-ঘৃত মাখাও এবং কেউ বললে বেঁধে রাখো দড়ি দিয়ে। জ্রীবাসকে ডাকা হল—ভোমার কী মনে হয় ?

তুলসী প্রদক্ষিণ করছে গৌরাঙ্গ। শ্রীবাসকে দেখে কাঁদতে লাগল গৌরাঙ্গ, কম্প আর রোমহর্ষ হতে লাগল সর্বাঙ্গে। শ্রীবাসকে নমস্কার করতে পিয়ে মুর্ছিত হয়ে পড়ল। বাহ্যজ্ঞান ফিরে পেয়ে গৌরাঙ্গ শ্রীবাসকে উদ্দেশ করে বললে, 'সবাই বলছে আমি বায়ুরোগে আক্রান্ত হয়েছি, আমাকে বেঁথে রাখতে চাইছে। তুমি কী বুঝছ?'

'ভোমার শরীরে মহাভক্তিযোগের আবির্ভাব হয়েছে।' গলাদস্বরে বললে শ্রীবাস, 'মহাকৃষ্ণ-অন্তগ্রহ।'

স্বস্তির নিশ্বাস ফেলল গৌরাস। বললে, 'তুমিও যদি বলতে আমার বায়ুরোগ হয়েছে তাহলে আমি গলায় প্রবেশ করতাম।'

'আহা, তোমার যেমন বাই তাহা আমি চাই।' শ্রীবাস বললে যুক্তকরে।

আর গদাধর ?

পদাধর ছায়ার মত ফিরতে লাগল পৌরের সঙ্গে। সেবায় ঢেলে দিল মন-প্রাণ। নীলাচলে এসেছেন মছাপ্রভু, সেখানেও পদাধর। নীলাচল ছেড়ে বাচ্ছেন কুলাবন, পদাধরও সঙ্গ নিয়েছে।

বাধা দিলেন মহাপ্রভূ। বললেন, 'গদাধর, তুমি ক্ষেত্রসন্ন্যাস নিয়েছ, নিয়েছ টোটাগোপীনাথের সেবা। ভোমার নীলাচল ছাড়া চলবে না।'

প্রভূর আদেশ কোনদিন লভ্যন করেনা পদাধ্য, আজ কি হল কে জানে, বললে, 'না, থাকব না নীলাচলে, প্রভূহীন প্রাণহীন নীলাচলে। যাঁহা তুমি সেই নীলাচল। ক্ষেত্রসন্মাস মোর যাক রসাতল।

'ছি, ও কথা মুখে আনতে নেই।' প্রভূ প্রবো^{ধ্রে} স্থুরে বললেন, 'গোপীনাথের সেবা করবে কে <u>?</u>'

'জানি না। ভোষাকে দর্শনই আমার গোপীনা^{থের} সেবা।'

'ত্মি যদি গোপীনাথের সেবা ত্যাগ করো লোকে আমাকে নিন্দে কথবে।' প্রভূ বললেন অম্ন^{রের} স্থুরে, 'আমার উপর গোষ আসুক তুমি কি ভাই চাও' 'গৰ্ব লোৰ আগার। ইদি ভূমি গলে না নাও মি একা-একা চলে যাব।'

সহাপ্ৰভূ সঙ্গে নিলেন না পদাধরকে। দলছাড়া বাধর একা-একা চলল।

ফটকে তাকে ডাকালেন মহাপ্রভূ। বললেন, গুমি শুধু নিজের সুখ চাও ? আমার সুখ চাওনা ?' অঞ্চলরা চোখে তাকিয়ে রইল পদাধর।

'বলো, আমি যাতে স্থা হই তা চাওনা তুমি? গ্মি নিজেব স্থা চাও বলেই আমার সঙ্গে থাকতে চাও ছিনিব। যদি আমার স্থা চাইতে—' গদাবর মাথা নত করে রইল।
'চাও আমার স্থা? যদি আমার স্থা চাও
নীলাচলে ফিরে যাও। আর কোনো কথা বোলো
না।' বলে মহাপ্রজু জডগায়ে দৌকোর গিরে
উঠলেন।

নৌকো ছেড়ে দিল। নৌকোর উদ্দেশে ছুটতে পারলনা গদাধর। পা উঠলনা। ছিন্ন एকর মত পড়ে গেল মুছিওঁ হয়ে।

किमभः।

নীল পাথি

দানকে সে এসেছিল—সেই পাৰি বাব ভাষা মীল অলেক সাগর ছেলে—অথবা সে আকালের বঙ জমাট মোমের মত জমা করে ভানার পালকে, আমাদের ছোট মাঠে নীল পাৰি এসেছিল কাল। টেউ-এর ফেনার মত সালা বুক--- ব্রথবা সে মেখ, স্থৰতী মন কাৰো খেৱালের আতে ভেনে চগা চোৰের সুদুরে অলে লাল ভারা—ইসারার মত। হরতো কোৰাও কোন দিশাহারা দ্বীপের জগতে নীল টেউ বেৱা মাটি, নীল ছাৱা আকাশ ব্রানো আলো দিয়ে নীড় বেঁধে ভার পর নৃতন আবেপে অনেক পৃথিবী যুৱে আমাদের ছোট মাঠে এসে সারা বেলা ইসারাত্ব বলে গেল আলোর ঠিকানা---ৰে আলোর অভিসারে ভারা নিয়ে বাতের বিলাস। আমার ছু' হাতে তাকে ধরি নাই, মনের নদীতে স্থাবের নীল ছায়া ঝরেছিল সোনালী বেলায়। নিমেবের রূপকথা শেব হলে 'হঠাৎ আকাশ হারানো শিশুর মত টেনে নিল আদরের হাতে। দিন কাটে ভারপর—ছোট মাঠে সকাল ছুপুর বিকেলের রেশটুকু অলে জার কন্ত বার নেবে। ভৰু স্বৰণেৰ পাতা বাৰ বাৰ খুলে কভ ভাবি कानरक ता अरमिक्न-ता भावि, बाव खाना नीन।

••• এ মদের প্রছন্পট •••

এই সংখ্যার প্রাক্তনে বাঙ্গা তথা ভারতের গর্ব ও গৌংব বিশ্ববন্দিত নাট্যাচার্ব শিশিরকুমার তাহ্তী মহাশ্রের মহাপ্ররাণ উপলক্ষে তার একথানি আলোকচিত্র রুক্তিত করা হ'ল। চিত্রখানি বিখ্যাত সাহিত্যিক শ্রীপরিমল গোখামী কর্তৃ গুহাত।



ডাঃ যোগেশচন্দ্র গুপ্ত (প্রথাত স্থান্থাগবিশেষ্ক্র)

ক্রিকারনে আবিক অন্টন সংগ্রেও স্থপ্রসর ভাগা ততুপবি গভীব আগ্রহ ও একান্তিক প্রচেটাই অল সময়ের ব্যবধানে এনে দিল নাম, বশং, অথ ও পশার। ভারতের অগ্রতম বিশিষ্ট চিকিৎসক জীবোপেশচন্দ্র ওপ্র সম্বয়েই এই কথাগুলি বলছি।

বরিশাল জিলার গৈতা নিবাসী ঐউমাচরণ গুপ্ত ও ফুল্লন্মী গ্রামের কল্পা শ্বাসমানভারা দেবীর পাঁচ পুত্রের মধ্যে কনিঠতম বোগেশচন্দ্র ১৯০২ সালের ১৭ই নভেম্বর মগুহে জন্মগ্রহণ করেন। ভেদানীস্কন বন্ধলাটের খাস দপ্তরের কর্মীদের মধ্যে বাবা উমাচরণ ছিলেন



काः (गात्रमध्य दश

चलका। धी नमाब वीर्वात मान केंद्रत-कावरका नियंनी, नवात অভৃতি হানে গুরে ভিনি উর্দু ও হিন্দী ভাষা ভাল ভাবে ভারছ करवन । व्यार्शमध्य रेशमा एक है दानी विकास हरेए ३३२० সালে প্রবেশিকা ও কলিকাতা স্কটিলচার্চ্চ কলেজ চইলে ১৯২২ সালে আই, এস, সি পাল করেন। অর্থাভাবের ছয় কলেজ পাঠ্যপুত্তর কিনিতে পারেন নি এবং সহপাঠীদের কাছ খেকে বই সংগ্রহ করে পাঠাভ্যাস করেছেন। পরে তিনি কারমাইকেল মেডিক্যাল কলেছে (আর, জি, কর) ভর্ত্তি হল এবং ১১২৮ সালে সসম্মানে এম, বি, পরীশার উত্তীর্ণ হন। ভিনি ডা: বিধানচন্দ্র হায়ের জন্তকম প্রিয় হাত্র ছিলেন এবং তাঁহার অধীনে 'হাউস-ফিজিসিয়ান' ও পরে বেভিষ্টাবের কার্যাভার প্রহণ করেন। সেই সময় ভিনি বৈসদ ইয়ানিটিতে কমপ্রাণী হন, এবং সেধানকার মগ্রহালক ও তাঁহার অধ্যাপক ডা: ইল্ভুষণ বন্ধ চাকুরীর জন্ম চেটিত হন বিভ শেষ পর্যান্ত বোগোশচক্রকে নিরাশ হইতে হয়। ইতিমধ্যে পথে উপবিষ্ট এক বৃদ্ধ জ্যোভিষী একদিন ডা: গুপুকে ডেকে বলেন বে, তিনি ভিন মাসের মধ্যে বিদেশে হাবেন—ভিন বছর পরে ফিরিয়া ক্রমশঃ পশার জ্মিয়ে ভূলতে পারবেন আর ২র্ডমানে চাকুরী পাওয়ার কোন সন্তাবনা নেই। ভাগোর পরিহাস মনে করেই বোগেশচল ব্যহর কথাওলি অগ্রাহ্ম করেন। করেক দিন পরে বন্ধা ডা: গিৰীক মুখোণাধাৰ আৰ্মাণী খেকে সেধানকাৰ Deutche Akademie-তে বুতিলাতের ছত্ত তাঁহাকে একটি আবেদনপত পাঠাইতে লিখেন। আবেদন পাওয়া মাত্র আকাডেমী রবীক্রনাধ, আচার্য্য জগদীশচন্দ্র, গান্ধীজী, সি, ভি, রমণের একটি সাটিফিকেট অবিলয়ে পাঠাতে জন্মুনোধ করেন। মহাসমতা উপস্থিত হল-কাবণ চার জনের মধ্যে এক জনের সঙ্গেও কোন পরিচয় বোগেশচলের ছিল না। একদিন সাহসে ভর করে তিনি আচার্যা জগদীশচলেব সংজ সাক্ষাৎ করে সাটিফিকেট পান "I know Dr. B. M. Gunta, the brother of Dr. J. C. Gupta". & প্রশাসত্তই তাঁকে এনে দিল উক্ত আকাডেমী থেকে জাগাণ সরকারের বুত্তি। সেই সমর ৬ডা: ভারক দাস ভারতীয় ছাত্রণের স্রবেগ্য ক্রবিধার ক্ষত্র বধাসাধ্য চেষ্টা করিছেন।

১৯৩১ সালের আগত্তে তিনি জাত্মাণী পৌচান এবং অক্টোবৰ মাস হটতে কলোন (KOLN) বিশ্ববিভালত্বে বোগ দেন, কিছ সেধানকার সরকারী হিসাব বিভাগ তাঁহার বুতি পাওয়া স্থ্যে আপত্তি তোলেন। বিশ্ববিভালয়ের রেক্টর Kuske সঙ্গে সঙ্গে উ'তাকে Guest-Professor করে দেন। করেক মাস পরে অবর তাঁহাকে বৃত্তি দেওয়া হয়। সেধানে প্রথম বছবে ভিনি Prof. Epingera अशेष्व Medical Clinic & Pharmacology Instt. এ ও দ্বিতীয় বছরে সম্পূর্ণ কাডিওলজী শিক্ষা প্রহণ করেন। পরের বছরে উক্ত প্রতিষ্ঠানের সর্কোত্তম হচনা হিসাবে কার্মাকলোজীর উপর ডক্ট.রট পান**া অধ্যাপক এপিনজারের জান্ত**িক সাহাব্য ও निकांगानित कथा छा: ७७ व्याव्य अञ्चल्छार वन করেন। এই স্থানে থাকাকালীন অধ্যাপক স্থাবোধচক্র মহলানবীশের **প্র**চেষ্টার কলিকাতা বিশ্ববিভালর থেকে তিনি হাইভেন^{বার্গ,} লিপ, জিগ ও ব্যাড়কান্হিন্-এ ব্যহারিক শিক্ষালাভ করেন। এই সময় কামাণ জাতিব ভাগ্যবিধাতারণে ছিটলাবের অভাগর হর। কলে হিটলাবের তিনটি, আদেশ ডাঃ বোগেশচতের উপরও জারী

हा हन-() देहती महकादीत्वय भक्तारमध्य करांत्र हेन:-(वर्डेश ज्यानिक Epingerca नश्रम ठाक्वी होएए इन-(२) ान जिल्ल Vinisection नवकावी जारमम वक्त कवा इय-(७) Winter Hilpe" (अहीदामद सम् त्रांचय दिवाद উপवान) चारमण ডেন। বিদেশাগভ শিক্ষার্থী হিসাবে ডাঃ ওপ্ত বেহাই পান। ক্ষা শেষে তিনি যুরোপের করেকটি দেশ পরিজমণ করে ১৯৩৪ ালে দেখে ফিবিয়া আনেন। ডাঃ বায়ের প্রামণাফুষায়ী তিনি ার্মাইকেল কলেজে বিনা বেতনে জেনারেল মেডিসিন ও tomach Juice প্রীকা করিতে থাকেন। এ ছাড়া তিনি মধ্য লিকাতার নিজম চিকিৎসালয় খোলেন। কিছুকাল পরে ডা: ধ্রের তোলা একটি রোগীর ইলেকৃ টিক কার্ডিওগ্রাম সহকে र्गित एक्त्राम रहाद्राइड ७ चशानक V. R. Vrehodge विक्रन चरा করেন। আইনজ্ঞের পত্র পাইরা Prof. Vrehodge ভা: থের সহিত বোগাবোগ স্থাপন করিয়া হদানীগুন ছোটলাটের াদেশ নিয়ে ১১৩৬ সালে শৈলেশ চন্ত্ৰকে মেডিকেল কলেজের ্যাপক হিসাবে নৃতন পদে গ্রহণ কবেন। নানা অসুবিধার ধ্যে সেধানে ছ' বছৰ থাকেন। ১৯৪০ সালে আব, জি, কর লেকে কার্ডিওসকী বিভাগের প্রধান হিলাবে যোগদান করেন ও গধান থেকে ১৯৫৫ সালে পি, জি, (বর্তুমানে S.S.K.M.) াসপাতালে Director of Cardiology ৰূপে যুক্ত হন।

১৯৩০ সালে তিনি শ্রীমতী আশালতা দেবীকে বিবাহ করেন। গোকা ৮তটিনী দাশ ছিলেন ডাঃ গুপ্তের খুড়তত বেংন।

পিরানো বাজ্ঞান ও থেলাধূলা দেখা কাছার অবসর বিনোদনের ইপার-বিশেষ।

শ্রীবিষ্ণুচরণ বাগচী

[কলিকাডঃ পুলিশের সদর কার্যালয়ের ডেপুটি কমিশনার]

বিশ্বিক ভাবে এক আর হয় এক। যিনি একদিন রাজ্য পরিচালনা সংক্রান্ত ব্যাপারে সচিবের দায়িও গ্রহণ করতে বিব্রুতন, ঘটনাচক্রে দেশের আইন ও শুখালা সংবক্ষণের কঠোর বিঘিতার গ্রহণ করতে হ'লো প্রত্যক্ষভাবে তাঁকেই। ঘাখানাগরিকদের ধনসম্পত্তি মান ও প্রাণরক্ষা করেই যিনি তাঁর জীবনের প্রাঠ দিনগুলো কাটিয়ে দিছেন আজও নিক্ষা বা প্রশংসার অপেক্ষা বা করে, তাঁকে ঠিক সাধারণ পর্য্যায়ে ফেল্তে পারি না। ঘাখীনাট্টে পুলিশ জনসাধারণের সেবকমাত্তা। এ উন্নত দৃষ্টিভঙ্গী ও নাগর্ণের ভিত্তিতে যিনি পুলিশ বাহিনীকে গড়ে তুলতে চাইছেন বিব্রুতন কাশিক্ষা পুলিশ অফিলার হছেনে কলিকাতা পুলিশের হেড কোরাটার্স-পর ডেপ্টি কমিশনার প্রীবিষ্ণুচরণ বাগচী।

গাঁকে কলেজ-জীবনে একদিন বৃটিশের হাজতে বেতে
হংবছিল সন্তাসবাদীদের সজে সংশ্লিষ্ট থাকবার অভিযোগে এবং
একজে বৃটিশ আই-বিদের প্রথান কার্য্যালরে ভিন দিন
হাজত বাস করভে হয়েছিল (অবগু তৎকালীন কলিকাতা
বিশ্ববিজ্ঞালরের উপাচার্য্য ভক্তর শ্রামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যার ও
তৎকালীন প্রেসিডেজী কলেজের অধ্যক্ষ শ্রী বি, এম সেনের
প্রচেষ্টার শেষ পর্যন্ত বৃত্তি বন্ধ হয়ুক্তি), তাঁকেই বে একদিন

আবার পুলিশ বিভাগে চাকরি গ্রহণ করতে হবে, বোধ হয় শ্রীবাগাটী কর্বনও স্বপ্নেও এ ভাবেন নি, একেই বলে অদৃষ্ট ! ভারণয় কলিকাতা বিশ্ববিভালরের ঈশান ক্ষণার হবে পুলিশ বিভাগে চাকুনী গ্রহণ খব সম্ভব এবও প্রথম পথ প্রদর্শক বিষ্ণু বাবৃই । সাধারণতঃ ছাত্র ও লিক্ষক অধ্যাপক সমাজ আশা করেন বে বিশ্ববিভালরের ঈশান ক্ষণার হ'লে ভবিষ্যৎ জীবনে ভিনিদিকা ক্ষেত্রে অন্তভঃ অধ্যাপক কিম্বা অব্যক্ষ হবে ভিনি দিকা বিভাগের উদ্ধৃতি বিধান ক্রবেন কিন্তু এক্ষেত্রেও তাঁর জীবনে হয়েতে ব্যক্তিক্রম।

জীবাগচীর জীবনে মহাস্থা গান্ধীর সাম্নিষ্য লাভ করবার ক্ষরোগ এসেছিল। নোরাধালীর নারকীর দাঙ্গাব জ্বাবহিত পরে নাহাব্য ও উদ্ধারকার্ব্যের সহারতা করবার জন্ত ভংকালীন লীগ সরকার তাঁকে নোরাধালীতে নিযুক্ত করেন। জীবাগচী দিনের পর দিন নোরাধালীকে গান্ধীজীর সঙ্গে অতিবাহিত করেন। মহাস্থা গান্ধী বাগসীকে খুব স্নেহ করতেন। আজ একথা বললে কেউ বিশাস করবে কি না জানি না কিছ এই নোরাধালী দাঙ্গার কার্য্যের সমর জীবাগচীর সংকারী চাকুরী বাবার উপক্রম হয়েছিল। এ সমর জিনি ছিলেন প্রথম শ্রেণীর সাবডেপুটি ম্যাজিট্রেট ও দাঙ্গানিধ্যত্ত এলাকার সাহাব্য ও উদ্ধারকার্যের ভারপ্রাপ্ত জ্বিসার।

অবিভক্ত বাদালার প্রধানমন্ত্রী তথন ক'লকাতা হত্যাকাণ্ডের নারক কুখ্যাত শহীব সরাবদ্দি সাহেব। মহাস্থা গান্ধীর হন্তক্ষেপের কলে সে:াবের মত শ্রীবাগচী লীগের মহিমার শহীদ হ'তে পারলেন না। এবাবে এই কম্মনিষ্ঠ ও কর্মদক্ষ পুলিশ অফিসারের সংক্ষিত্ত জীবন-কথা পরিবেশন কর্বা বস্তমতীঃ পাঠক-পাঠিকাদের কাছে। শ্রীবাগচী একজন স্থাদর্শ অধিসার।



ৰিবিফুচরণ বাগচী

১৯১४ मारमध २७८५ सूमाई विविक्तनर वाश्री प्रदर्शनीय बरीश किनाव अधर्वेड त्यरहर्यनुव थाना अगानाव चानवनुव खारव ब्राकुमानदा क्वबार्व करवन। शामी वर्षमाता गुर्क शाकिशात भाष्ट्र विवासकीय चारिनियांत्र स्वीता क्यांत कृतियश्व बाता এলাকার দোপাছি আমে। পিতা পিলবিদ অসভাচৰণ বাগচী। बक्रकान नशेवा किनाव शिकावश्व छेक्र हेरवाकी विकासरा अधान श्रिकरक्य कार्या करव व्यवस्य क्षाप्त करवाकृत। विक्रकांक व्यवस्थ 🛃 ৰাগটীৰ জীৰনে জাঁৰ পূজাপায় পিজুৱেৰের প্ৰভাৰ পজে। সমীয়া শ্বিশার জিকাবপুর উচ্চ ইংবেকী বিজ্ঞালয় থেকে ভিনি ১১৩। নারে श्रिष विकाल व्यविक्ति भड़ीकांड देवीर्स हात दुविकांक कार्यस । ष्ट्रावश्य पुर्वि वर्णन अर्ग बाबताबी शवर्गात्र करन्द्रक विकारम्ब श्राक विद्याद । अवाम (पट ३३७२ मारण क्षेत्र विकाश बाहै, क्षत्र. वि भश्रीकाष देखें ने इत्य विकाशीय पुष्टि मांक करवत्र। नकाकत्वांव प्रवित्वव करण कैवानही हरन क्रानम क्रान्याचा धरा कर्ष करणम पहिन आर्क WINTEN FE-4 अनिक्रमारक व्यवस्त्र गर ১৯७३ সালে विमान ক্সাৰ হম। ভাবপৰ প্রেসিভেনী ফলেজ :থকে ১১৩৬ সালে এমৃত্য পরীক্ষার অভ্যান্তে প্রথম শ্ৰেৰীতে বিতীয় স্থান অধিকাৰ কৰেন। এবানেই জীবাগচীৰ কলেজীর জীবন শেষ হ'লো। ১১৩৮ সালে জুনিয়র সিভিল সার্ভিদ পরীকার উত্তীর্ণ হরে কর্মকেত্রে প্রবেশ করেন এবং সাৰভেপ্টির চাকুৰী গ্রহণ কবেন। ভারণর অভিবক্ত বাজালার करवक्ति जात्म कार्या करव ১১৪७ जारन ध्यंत्र स्थापित मार्गाकर हेडे ভিসেবে নোৱাৰালীৰ নাৰকীৰ সাম্প্ৰদাৱিক দাঙ্গাৰ অব্যবহিত পৰে দালাবিধান্ত এলাকার সাহাব্য ও উদাবকার্ব্যের ভারপ্রাপ্ত অফিসার হিসাবে কাৰ্য্য কৰেন প্ৰায় এক বংসর। এই সময় ভিনি महाचा शादी टायून वह लिखांव मःन्नार्ज चारमन। विस्तव পৰ দিন জীবাগটী নিজেব সুধ-স্বাজ্ঞ্য ত্যাগ কৰে দালাপীডিত আর্ত্তকরপথের সেবা ও সাহায্য করেন নির্দস ভাবে। বিশিষ্ট স্বকারী কর্মচারী হয়েও ভিনি মাহুবের বে কর্ত্তব্য ভা বিশ্বত হননি। মহাত্মা পাছীর নোমাধালী সক্ষের সময় এবাগচী ভাঁহার সহী ছিলেন। এই দিনগুলির কথা জীবাগচী আজিও শ্বৰ কৰেন বিশেষ ভাবে। জগতের শ্বন্তম প্রের্ড মানবের সঙ্গে দিনের পর দিন অভিবাহিত করা সকলের ভাগ্যে হবে উঠে না। এদিক থেকে 🛍 বাগচী ভাগ্যবান-এ কথা অবঙ্ট बनाड इरव ।

ভাবপর দেশ বিভাগের পর শ্রীবাগতী চলে আনেন পশ্চিমবঙ্গে এবং ১৯৪৮ সালে উষাত পুনর্বাসন বিভাগের স্পেপ্তাল অফিসার হিসেবে বোগলান করলেন, বাইটার্স বিভিন্নেও। তারপর পশ্চিমবংক্ষের পুনর্বাসন বিভাগের মন্ত্রী মহোলরের একাত সচিবের কার্যাও তিনি কিছুদিন করেন। ১৯৪৯ সালে ভেপুটি-ম্যাজিট্রেটের পদে উন্নীত হন এবং এসিট্রান্ট-সেক্ষেটারী হিসাবে উষাত্ত পুনর্বাসন বিভাগে কার্যা করিতে থাকেন। এই সমর সর্বভারতীয় চাকুরীতে বোগলানের স্থবোগ আনে শ্রীবাগর্চীর। তিনি ভারতীয় পুলিশ সার্ভিসের তন্ত্র নির্বাচিত হলেন ১৯৪৯ সালে এবং আরু মাউণ্ট শিক্ষা-শিবিবে হয় মাস শিক্ষালাভ করেন। ১৯৫০ সালে চার মাস

তিনি থকাপুৰের মহকুষা পুলিৰ অধিকর্জা হিসেবে কাল করে।
১৯৫১ সাল থেকে ১৯৫২ সালের যে যাস পর্বন্ধ মুলিবাবার বিলায়
পূলিন অপার ছিলেন। ভারণম চলে থেলেন হাজিলিং-এর পূলিনঅপার হয়ে। ১৯৫৫ সালের ফেব্রুরারী মাস পর্বন্ধ হাজিলিং-এ
থেকে কলকাভার চলে আসেন শেলভাল রাজের ডেপুটি-কমিলনার
হ'বে এবং ১৯৫৮ সালের যে মালে কলিকাভা পুলিলের সহর
কার্য্যসন্তের ডেপুটি-কয়িলনারের গুরুরারিছ ভার গ্রহণ করেন। সেই
থেকে জ্যাবিধি ভিনি কলিকাভার নাগ্রিকদের হন, সম্পতি ও
ভাবন বজার গুরু হাছিছ এর বহন করে চলেচেন নির্দ্য ভাবে।

व्यक्तिम क्षेत्रच क्षेत्रांगही मनानानी, मित्रहक्कान, कर्जवार्वि क्षंक्षि मन्द्रः पृष्टिन "Plain living and high thinking"- वर कक्षि समस्य पृष्टेश्व किविक्ष्यत्व वागती। केळपर क्षिकित इरवन क्षिम त्व कार्य क्षेत्रस-वागम करवम का निक्षिक मारक कार्यका क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां क्ष्रां कार्यका कार्यका

শ্ৰীরবীক্রনারায়ণ চৌধুরী

[অমৃতবাজার পত্রিকার বার্ত্তা-সম্পাদক]

কাকি সব সময় গুকুগড়ীর—আর সর্বাদা চড়া— মুখাবরর
কাকি সব সময় গুকুগড়ীর—আর হাল্ত-পরিহাসের ধার
কিরেও নাকি বান না। এই মনোভাব নিরেই করেক দিন পূর্বে দেখ
করি কলিকাভার উপকঠে প্রাম্য-পরিবেশের মধ্যে গৃহদেবভার মনোমে
মন্দিরসহ আপন গৃহে সেই ব্যক্তিটির সঙ্গে। থানিকটা পরিচরের পরই
প্রকাশ পেল নরম মেজাজের—সবল প্রকৃতির—বস্ববেভা সাংগদিব
ও অমুকবাজার পত্রিকার বার্দ্তা-সম্পাদক শ্রীরবীক্রনারারণ চৌধুরীর

ফ্রিদপুর জেলার কালামূধা প্রামের ৺বামনচন্দ্র চৌধুরী ও শেষপুর অমিদারীর সেবেন্ডাদার ৶গপনচজ বারের কভা স্বর্গপতা মনোয়েয দেবীৰ বড ছেলে ববীন্দ্ৰনাৰাৰণ ১৩১০ সালের ১৭ই আবণ বগুটে क्या बहुन करवन । ১১२ - जारन भव्यमितिः ह किना कुन (४८६ প্রবেশিকা পরীকার পাশ করে স্থানীর আনন্দমোহন কলেজে তিনি ভর্তি হন। কিছ দেশব্যাপী অসহবোগ আন্দোলনের এর ১১২১ সালে কলেজ ছেতে দেশের কাজে লিগু হন। মধ্যবিত গৃহস্থ^ব বাবার বত ভেলে—ভাই ঐচেবিরী ছির করেন বে কলিকাভাব সম্প্রতিষ্ঠিত National Medical School থেকে চিকিংসা বিভা ভারত করে প্রাম্য চিকিৎসক হবেন। কিন্তু মাতুর ভাবে এক হর আব এক। বাবাব মৃত্যুব পর তাঁর উপর পড়ল ^{এই} বিবাট সংসাৰ প্ৰতিপালনেৰ ভাব, নিজেৰ ছোট ছোট ভাইবোনেলে মাছৰ কৰে ভোলাৰ দায়িছ। তাই পড়াৰ আগ্ৰহকে ভিনিত ^{বেখে} চাকুৰী থোঁছা ভাৰত হল। ১৯২২ সালের ১৯শে সেপ্টেম্বরে ^{কুড়ি} টাকা বেতনে অবুভবাজার পত্রিকার Copy Holder হলেন। তথন সম্পাদক ছিলেন ৺গোলাপলাল বোব। কিছুদিন পরে ^{হলেন} প্ৰফ বীভাব—১১২৪ সাংল উক্ত পত্ৰিকাৰ সহ:-সল্প দক। সেই সৰ্ব তাঁকে বিপোটাবের কালও ক্ষরতে হয়েছে। ১১৩৫ সালে বর্ত্^{গর্ক}

তাৰুবীকে এক নৃত্তন পালে বসালেন কৰ্মকভাৰ প্ৰতিকানে---है वे १६ वर्षा प्रतिभूवकार्य त्म वाविष भागम करव हरमरहम বৰীক্সনারারণ পত্রিকার বার্জা-সম্পাদকরণে। বিভালরের পত্রিকা প্রকাশের মব্যে সাংবাদিকভাব বে বীক অভুবিভ হবেছিল स्वीलमात्राद्यत्व माया जात भून क्षेत्राम पहेन काँव भववर्ती ছীবনে। ১৯২৩ সালে ক্রওবার্ড কলেজের কর্তৃপক্ষের অংহরামে দেখানকার কর্মাধ্যক ভুতাব্চজের (নেডাজী) সকে তাঁব विश्व भविष्य क्या किन्द्र छिनि त्रथात्म स्वाम स्वम माहै। बहुठवीबाद बांत्व कांक इंडबांव बित्मव चरमद कर्पमत्वातम ভব ১৯২৪ সালের মতেত্বে তিনি "বলুমতী-সাভিত্য-মনিং"-এর चवाहिकांची भवत्माकवाक मछीमाठळ शुर्थाभावाच मकामायच मान ज्ञाकाम्हण नेहिम होका विकास अवहि अन नाम करवम। ভিত্তকালের মধ্যে সভীল বাবু জীচৌধুরীর দক্ষভার ৩৬ ভাঁর বেভন क्षकि होका वृद्धि कविद्या (बन । ১৯২৭ সালের ভালুবারী মাসে श्रःथानांशांत्र प्रहामत कांटक है।ताको "रेममिक रलप्रकी"व प्रम्मामकीत বিজ্ঞালে কাল দেন, তখন জীচেবিবী "পত্তিক।"ৰ কালটি ছেডে লেন। ঐ বছর 'ক্র্নরার্ড' কাগজ পুনরার তাঁকে জ হ্বান কংলে। ইতিমধ্যে বাতের কালে অনুবিধা হওৱার 'পত্তিকা' বর্ত্তপক পঁচাত্তৰ টাকা বেজনে ববীজনাবাহণকে বাত্ৰিকালীন সম্পাদক হিসাবে পুননিয়োগ করেন।

শ্রীত্র বির্বাদিন কর্মানির কর্মানির কর্মান কর্মান কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির ক্রিকার ক্রিকার কর্মানির ক্রিকার ক্র

১১৩৪ সালে তাঁতই উল্লোগে 'পত্রিকা'র রবিবাবের সাহিত্য-বিভাগ হল—পর পর এল শিশু-বিভাগ, মহিলা-বিভাগ, সিনেমা-বিভাগ, খেলাধলার পাতা।

ববীজ্ঞনাবারণ "থাসিক বস্থমতী"র শুৰু একজন পুৰাতন জন্মাগী পাঠকই নন—"বস্থমতী-সাহিত্য-মন্দির"-এর স্মৃতিবিজ্ঞায়ত বহু ছোট ছোট ঘটনার কথা আথার বললেন ভিনি—একজন ভ্তপূর্ব ক্রী ভিসাবে।

Life & work of J. M. Sengupta (বাজেরাপ্ত), Ploughboy to President (V. J. Patel), Mahatma Gandhi & India struggle for Swaraj, Motilal Nehru প্রভৃতি প্তক সমূহ জীচৌধুরী সকসন করেন।

১৩০ সালে পরিবিন্ধাকুমার চক্তর্মীর বল্লা শ্রীমতী লাবণালতা দেবীকে তিনি বিবাহ করেন। বাগান- করা ও সব রকম পুক্তক পাঠের মধ্যে তিনি অবসর বিনোলন করেন। শেবে সাংবাদিক শ্রীচোধুরী অমুবোগের স্থরে বলেন, "পুক্তি সাংবাদিকরা যড়ির কাঁটার কাল পছক করেন—কিন্ত প্রকৃত্যু, সাংবাদিক হলে হলে প্রতিটি



প্রীরবীজনারারণ চৌধুবী

বিভাগের কাম জানা— প্রচুব পড়াওনা— মার নিষের সভাকে কর্তব্যের মধ্যে ডুবিয়ে দিতে হবে। ভাতে সাংবাদিক ও সংবাদপত্র যুগপং হবে অন্প্রিয় ও লোক্যঞ্জ।"

শ্রীআবছদ সাতার

[পশ্চিমবাওলার বর্তমান শ্রমমন্ত্রী]

১১১১ সালের ৩বা মার্চ্চ বর্দ্ধমান জেলার কালনা থানার অন্তর্গত টোলা গ্রামে এক সাধারণ পরিবাবে পশ্চিমবঙ্গের শ্রমমন্ত্রী শ্রীশাবছস সাহোর জন্মগ্রন্থ করেন। ১১২০ সালে প্রাম্য পাঠদালা থেকে ছাত্রর্ব ও লাভ করে বৈজপুর হাইস্কলে তিনি ভর্তি হলেন . ১৯২১ সালে দেশমর বে অসহবোগ আন্দোলন স্তক্ত হল বৈত্তপুর গ্রামেও তার টেউ এলে পৌছলো। ১০ বংসরের কিশোর সান্তারের প্রাণও সে ধবরে উত্তলা হয়ে উঠলো : মনে মনে প্রতিজ্ঞা করলেন দেশের সেবা করবো। তথন থেকেই তাঁকে দেখতে পাওয়া পেল বিভিন্ন খলেম-সম্ভাৱ স্বেক্তাসেবকরণে। ১১২৩ সালে বঙ্গীয় পরিষণের নির্বাচনে ভাঁছে মরাজ্য দলের প্রাথীর অমুকুলে কাজ করতে দেখা গেল। ১১২৫ সালে সাকোপাঞ্চ নিয়ে তিনি বর্ত্বমানে ছুটলেন মহাত্মা গাছীকে দেখা ও তাঁৰ বক্ততা শোনার জন্তে। আতে আতে ছিনি বথা করতে লাগলেন কি ভাবে দেশসেবা করবেন। ১১২৬ সালে যেদিনীপুরের বক্তার আচার্যা প্রফুরচক্তের নেতৃত্বে বভার্তদের সেবার করে বে সকট্রাণ সমিতি গঠিত হল, সান্তার সাহেব নিক্ষে অঞ্চলে বাড়ী বাড়ী বুরে অর্থ সংগ্রহ করে সমিতিকে পাঠিয়ে দিলেন। ১১২৮ সালে সাইমন কমিশনকে বর্জান করার জন্তে ভিনি कथा क्षानित्व मिलान । यो वश्यवह देवक्ष भूव पूज व्यक्त मा। प्रक

শ্বীকার উত্তার্থ হয়ে বর্ষধান বাষক্ষেক্তে আই-এ ক্লাসে ভর্তি হলেন। কলেজে প্রাকালীন ডিনি বর্ষধানের ক্ষপ্রেস নেডা প্রীবানবেক্সনাথ পাঁজার সান্থিয়ে এলেন। ১১৩০ সালে বে আইন অমাজ আন্দোলন ক্ষক হয় সান্তার সাহেব ভাতে সক্ষিত্রভাবে অংশ প্রহণ করলেন এবং তখন থেকেই ক্ষবকা হিসাবে তাঁর ব্যাভি চারিলিকে ছড়িবে পড়লো।

ভাঁব তেজবিনী বক্তৃতার ইংবেজ সরকার পর্বাস্ত বিচলিত হারেছিলেন এবং সভা-সমিভিতে ভাঁকে বক্তৃতা দেওৱা বন্ধ করার জন্তে কালনার মহকুমা ম্যাজিট্রেট ভাঁবে উপর ১৪৪ বারা জারী করলেন। কিছু ভিনি মহকুমা শাসকের সে আদেশ মানলেন না, বৈজপুর রাসভলার জীবাদবেজনাথ পাঁজার সভাপতিছে অনুষ্ঠিত এক জনসভার জিনি আইন অমান্ত করে বক্তৃতা করার প্রেপ্তার হন। বিচাবে এক মান সম্রম কারাদণ্ড ও ১০০, টাকা জানিমানা, জনাদারে আরও ৬ সপ্তাহ কারাদণ্ডের আদেশ হ'ল। সাভার সাহেব জরিমানা দিলেন না, কলে ভাঁর কারাদণ্ডের মেরাদ হল আছাই মান। এর পর ১১৩২ সালে আইন অমান্ত আজোলনে বোসদান করে ভাঁকে সাছে চার মান কারাদণ্ড ভোগ করতে হল। জেল থেটে বেরিরে এনেই জেলের কটকের কাছে জাবার ভাঁকে নিরাণ্ডা আইনে প্রেপ্তার করা হল, এবার কারাদণ্ডের মেরাদ হল ৬ মান।

১৯৩৫ সালে তিনি সিটি কলেজ থেকে বি-এ পাশ করলেন এবং
১৯৪০ সালে কোলকাভার ল' কলেজ থেকে বি-এল প্রীক্ষার উত্তীর্ণ
হরে কিছুদিনের জন্ত বর্জমান জাদালতে ওকালতিও করেন।
'৩৫ সালে তিনি বর্জমান জেলা কংগ্রেস কমিটির সম্পাদক নির্কাতিত
হন। তারপর সভাপতিও নির্কাতিত হন এবং ঐ পদেই জাসীন
ছিলেন পশ্চিমবঙ্গের মন্ত্র হওয়ার পূর্ব পর্যস্তঃ। '৩৫ সালে বর্জমান
টাউন হলে ভার নলিনী চ্যাটাজীর সভাপতিতে ক্যানেল
করের বিক্তমে বে সভা হয়, ভাতে সাভার সাহেব এমন
বন্ধুতা দিরেছিলেন বে ভার নাজিমুদ্দিন প্র্যান্ত মুগ্র হয়েছিলেন।
ভার নাজিমুদ্দিন সাভার সাহেবের মতের পরিবর্জনের জঙ্গে



শ্ৰী ৰাবছদ সান্তাৰ

চেষ্টা কৰেছিলেন, কিন্তু পাৰেন মি। কেনে বৰ্ম মুসলিয় লাগের আধিশত্য ভখনও সাজার সাহেব পাকিছান স্কীব বিজ্ঞান কিন্তি

সাভাব সাহেব ১৯৩৭ সাল থেকে এ মাই সি সির সভা निर्दािक इत्य चानत्हन; 'धर नात्न वाचाहत्त्व अ चाहे नि निव रेक्ट्रंक व्यानमान करव महारमय रम्माहेरव्य माक्रमखांव व्यक्तका कवाब बाब वर्षपात शामन किन्द्र श्रीम काँटक श्रीका कवामा। विहास এক মাস মেল হল ; কিছ নিৱাপতা আইনে তাঁর জেলের মেরার शिरा केंक्रिका ३६ मोरन। करलान बचन देवह ह'न स्थल खरक किरव शाम भूनवाव कराकाम (वांश मिरमन । এই मधव खाक वर्षमान त्थना त्यार्क, चन त्यार्क श्वर रह भानीय समहिकस्य मास्याप সঙ্গে তিনি ওডিত হলেন। ১১৫• সালে অস্থারী পার্লামেন্টের फिनि महा निर्दा: 6% इलन। ১১৫२ मालद मांवादण निर्दाहरन লোকসভার কালনা-কাটোয়া কেন্তু থেকে নিকটভম প্রাথীকে ২২ চাৰার ভোটের বাবধানে পরাজিত করে নির্বাচিত হলেন। 'ং৭ সালের নির্মাচনে ভিনি কেতগ্রাম কেন্দ্র খেকে বিধানসভার আগনের জার প্রতিছলিয়া কবেন এবং নিকটভম প্রাথীকে ১৯ হাজার ভোটের ব্যবহানে প্রাজিত করে প্রমাণ করে দিলেন বে, কেন্দ্রের শতকরা ৭৫ জন হিন্দু তাঁদের কাছেও তিনি কভ প্রির। তাঁর ব'লঠ মতবাদ ও উদার দৃষ্টিভঙ্গী বে এই জনপ্রিরতার অস্ততম কারণ, এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নাই। প্রমমন্ত্রী হিসেবেও তাঁর সেই মৃষ্টিভক্ষী ও মাতবাদ দলমত নির্বিশেষে সকলের জনপ্রিয়তা অর্জন করেছে। প্রমন্ত্রী ভিলেবে তিনি মনে করেন—মেহনতী জনতার ন্যারদঙ্গত অধিকার বক্ষা করাই তাঁর কান্ত্র, কাল্লেই যে কোন শ্রমিক তিনি বে ইউনিয়নেরই অস্তর্ভুক্ত হোন না কেন, তার অভিযোগের প্রতিকার করতে তিনি বা তাঁর দপ্তর সকল সময়েই সচেষ্ট । শ্রমদপ্রবকে জনপ্রিয় করে তোলার জন্মে তার চেষ্টারও অন্ত নেই। শ্রমদপ্তর থেকে এখন 'সেবার গেজেট' শ্রমিক বার্তা' প্রকাশিত হছে, শ্রমিক আইনগুলি বিভিন্ন ভাষার অনুদিত হছে। সাত্তার সাহেবের সভাপতিত্বে রাজ্য শ্রম উপদেষ্টা বোর্ড গঠিত হরেছে শুর কলকারথানার শ্রমিক বা সভদাগরী অফিসসমূহের কর্মচারীদের करक है नय, भाकान कर्यातारी ७ कृषिश्रमिकरमय करक आक आहेन তৈরী হচ্ছে। প্রমিক নেভা ছিলেবে সান্তার সাহেবের এক সময় ব খাতি ছিল সে অভিজ্ঞতাকে তিনি এখন কালে লাগাছেন।

সাংবাদিক হিসেবেও সান্তার সাহেবের খ্যাভি কম নর।
১৯৫০ সাল পর্যান্ত তিনি বৈদ্যান কথা কাগানের সম্পাদক ছিলেন;
তাঁর পরিচালনাধীনে 'বৰ্দ্যানবাণী' ও জনস্থাতে প্রতিষ্ঠা কাভ
করেছে।

সান্তার সাহেব বলেন, 'বে জনসেবার পথে পা দিরেছি ভাকে মনে করি আমি বৃশাবনের পথ, এ পথ শেষ না হাওৱা পর্যাত ভাতেই আমি চলবো, এই পথে চলাতেই আমার আনন্দ।'

পেব মুহূর্তে শ্রমমন্ত্রী জীনান্তাব মাসিক বক্ষমতী'র কথা তুললেন।
বললেন পরিকার—'মাসিক বক্ষমতী জামার কাছে থব প্রির।
জামি জাগ্রহ নিরে বছ-প্রচারিত এ সাহিত্যপত্রটি নির্মিত পর্ফে থাকি।
জাবসর বিনোদনের প্রচুর খোরাক জামি এতে পাই এবং
এই পত্রিকাটির জারও উর্লিডি খবে, এ সম্পর্ক খামি নিঃসংলহ।'

ইঠ উৰিণ কোনের ভবিতা করে বিশ্বরাণী ওবন কলাকোনল সহকাবে সমস্ত দড়িভলিতে গিরো বাবলেন। একটি একটি করে প্রত্যেক্টিভে। আপে জড়ানো দছিটির সলে দৃত্র দড়িটিকে জুড়ে দিরে কুফের কটিভটে বেই পাক দিরে সিরো বাবজে গেলেন ব্রহাণী, অমনি সহন্তন এক আন্তর কোতুকে বিলম্ভি হরে উঠল পল্লীবাদিনীদের হাদর। হবিশের মন্ত বিলাসী চোব করে তাঁরা হাসভে লাগলেন। কিছা কুফের বালক-স্থার দল বন্ধ্-কুফের কারা দেবে বেই ভালের কর্বকে দাঁত চমকিরে সমবেদনার কারা ভুড়েছেন অমনি সকলে দেখলেন, • কছা দড়ি কিছা সেই ছ-আভুল কম!!

ব্রক্রাণীরও তথন দর্শনীয় দলা। তিনি পুনর্বন্ধনের উপায় চিস্তা করতে বদলেন। চিস্তার শাসন-সমীরবেই বেন বেগে বেসামাল হতে লাগল তাঁর বক্ষঃস্থল, কিল্লরের মত জীক্ষ থেকে ববে পড়তে লাগল শ্রমজনের শিশির, কবরীভার থেকে থসে পড়ল মালতীর মাল্য।

বজরাণী বুৰতে পারলেন, এক রাপ দেখিরেও তিনি কেবল কল পেরেছেন কপালের ঘাম, নিফল হয়েছে তাঁর সমস্ত প্রয়াস। তবুও উপার চিস্তা করতে লাগলেন কুফকে বাঁধবার।

এবার খেলার বাগ অলেছে মারের মনে। অন্তৃত শিশুটিকে পুনর্বার বাঁধতে গেলেন ত্রজরানী।

আর আণ্ডীর-স্নদারীরা ? কী স্থানর উদ্দের ভূকর ভলিমা ! তাঁলের রাঙা-রাঙা চোৰগুলি নীথর হয়ে গেল; গলে গেল, করে গেল খরের প্রতি তাঁলের মানসিক শ্রম্ভা; সমস্ত বিষয়ে পূর্ণলুপ্ত হয়ে গেল সংস্কার; বেন বন্ধনরজ্জুন্ত হয়ে গেল ভাঁলের ভবনগুলিও।

১২। কেউ কি কখনও চৈতল্যকে বাধতে পেরেছেন ? না। আনন্দকে ? না।

कानक ? ना।

ভেল:কে (মহ:কে) না।

তাহলে এপবাণীই বা কেমন করে বাধবেন চিদানকজ্ঞান মহোময়
বপুধান ঐ তাঁকে ? তথাপি—বার অস্তব নেই বার বাহির নেই,
অথচ বিনি আনক্ষেও তেলে অস্তবে বাহিরে সমান, বিনি পূর্ণ, বিনি
অপবিজ্ঞেদবান বাঁর পূর্বে নেই, পর নেই:—তাঁবি কুপাশক্তি আজ
বিষয়িনী হলেও ভাবতে লাগল, আহা মা কি আমার কখনও বাঁধতে
পাবেন রাগ করে ?

১৩। তাই বন্ধন প্রসঙ্গে জননীর পরিশ্রমলুলিত জনগানি নিরীকণ করে প্রীকৃক্ষের মধ্যে সঞ্চাত হল করণ-বস। ওবে, তগবান প্রীকৃক্ষকে বাঁধতে পারে হুটি গুণ, ভক্তের পরিশ্রম, ও নিজকুপা, অগ্রথা নেই। বছকণ এই ভ্রের অনুৎপত্তি ঘটেছিল ততক্ষণ হু আঙ্গ কমই ছিল বজ্জু, কিছা সম্প্রতি হুটিবই বেই আবির্ভাব ঘটলা, অমনি নিক্রণাল স্বীকার করে নিলেন জননীর উত্তত পুনর্বন্ধন।

১৪। সিদ্বার্থা হলেন অন্ধবাণী। সহচর বালকদের বললেন—
শামি এখন আসি। তোমবা এঁকে দেখো। নিজে বেন নিজের
বাধন কেটে না পালার। বদি পালার, আমার ডেকো। আজিনার
খেকে উঠে বরের ভিতর চলে গেলেন অন্ধবাণী। মা-ও গেলেন আর
কক্ষের চাদ-মুখ খেকে কলছের মন্ত ক্রন্সনটিও মিলিরে গেল প্রতা
থবং অতি প্রস্তার ব্যাণী বেক্লল—মারের দেওরা বাধন ভবে আর
এক কাজে লাগাই।

পূৰে পি:উবেছিপ ছটি ডক্সাপ্ত । কুবের-পূত্র 'নলকুবর' ও 'মণিত্রীবের' তার। মৃতক্তি। তগবানের প্রমঞ্জির ডক্স নাহদ বিনি

কবি কর্ণপূর-বিরটিউ

वानम-राम रन

[পूर्व-क्षकामित्कव भव]

অমুবাদক—জীপ্রবোধেন্দুনাথ ঠাকুর

ধ্বকদা শাপচ্ছলে থণ্ডন করেছিলেন মদিবার বিক্ষেপ—সেই নীতি-প্রেণেকা প্রম বোগীক্ষের বচনামৃত্তকে স্তাস্তাই সত্য-প্রতীত করবার উদ্দেশ্তে এঁরা তুজনে লাভ করেছিলেন ঐ অভিশপ্ত তক জন্ম।

হঠাৎ কুফের থেয়াল হল, ঐ হটি ভক্তকে ভিনি **অনুগ্রহ** করবেন। অভএব হামাগুড়ি দিয়ে, বীরে বীরে উদ্বলটিকে চানভে টানভে ভিনি চলতে লাগলেন ভক্ন হুটির দিকে।

১৫। পিছনে পিছনে চলতে লাগলেন বালক-সহচার্যা।

বছ প্রাচীন তক ছটির একটি মাত্র মূল, সদসতের মত; পৃথক্
পৃথক্ ছটি কাও বেন জ্ঞানকাও ও কর্মকাও; সামবেদ বজুর্বদের মত
অভস্র ভানের শাঝা! ব্রজরাজের কীতি-প্রভাপের মত বছদ্ব তালের
বিভার; মহাসারবান বেন পাহাড় বেন মেল, মহাছুল ব্রজাও ও
বিরাটের বেন বিগ্রহ। ভীমামুল ও কার্ত্ববীর্ষ্যের একই অর্জ্বন
নামের মত এ ছটিরও নাম অর্জ্বন। নকুল ও সহদেবের মত এ
ছটিও ব্যক্তা।

সেই বমলার্জ্নের দিকে কৃষ্ণকে বেতে দেবে বালক-সহচরদের মনে তৃলে উঠল সংশব।

ভবে কি কুন্দের অন্য হরে উঠেছে রৌক্রের ভাপ, তাই আশ্রম নিভে চলেছেন ওক্র্লে ? বিভর্কের মধ্য পথেই ক্লার নেত্রে জারা দেখতে পেলেন তক্ষ হটির মৃলের মধাস্থান উপবেশন করলেন কুক, ভির্যক ভাবে স্থাপন করলেন উপ্থলটিকে। ভারপরে এভটুকুও আরাস না করেই সেই খলনিহস্তা অপূর্ব চিত্রচরিত্র আশ্রম্কার বালক নীচের দিকে লখা হয়ে ঠুকে পড়েছে বার চূর্কিক্রল, অসান বার শ্রী অক্রের লাবণি, উদ্ধলের এক সংঘটনেই সমূলে উমুলিভ করে কেললেন ব্যলার্জন তক্ররহক।

১৬। কুক্ষনাম সংকীর্তন করলে বেমন বাসনা ও পাপ - ছই-ই
সম্মূলিত হরে বার ডেমনি হল সেই তক্ষমরের দশা। মড়মড়
করে লাফিরে উঠল এক হুর্জান্ত খনি। সে ধানিতে বেন নির্বাপিক
হরে পোল একাণ্ডভাশু-বিবরবর্তী শব্দপ্রাম। প্রলর্মেশ্ব-নির্মুক্ত
মহাবত্ত্রের ভৈরবরবের অন্তুকরণ করতে করতে তেতে পড়ল
ব্যলার্জ্ন।

ছু' ছুটো বিষাট মহীক্ষাহ্ব পতন হল বটে, কিছ কুক্ষে বালকসহচবেরা দেখতে পেলেন—ছুটি গাছের মাৰখানে ভিনি বনে ববেছেন, পটনামে পূর্ববং বাধা ববেছেন উদ্ধলে বিষাট ভৈরব ববেও এডটুকু ঘটেনি ভাব মানসিক উবেগ, এডটুকুও চমক্ষিছন নি ভবে, মুখে হালি, ছির ভাকিবে ব্যেছেন ভক্ষবের সৃষ্টিমন্ত মুগল আছার মত, প্রম ভেজবী ছুটি নিবাপুক্ষের দিকে।

এবং ভারণরে তাঁরা অবাক হরে ভনলেন,—অভিশাপর্জ্জ দিব্য পুরুষ ছটি ভব করছেন তাঁলের নক্ষ্ণাল কুক্কে : জগৰকসমোচক হতেও বিনি আৰু বন্ধন শীকার করেছেন মাজুবাংসল্যের।

নিত্যমুক্ত হয়েও বিনি আৰু বন্ধ, নিত্যক্তর হয়েও বিনি আৰু ননীচুবিৰ অপবাধে অপবাধী সেই তাঁদের নকত্নাল কুককে!

১৭। ধানিত হয়ে উঠল ভব,---

জির জর সচিদানক-খন, খনখটামেত্ব, জর হে জর হে জর হে । হে ছববগাহ লীলামর, লীলার শ্রেষ্ঠ সাধন-পথে তৃমি অবভঞ্জ করেছ ধরাধামে। হে বণ-নবীন, ভোমার চাতুর্থ-চটুল ভূজবল, · · · সংগ্রামে ঘটিরেছ দানবদের পরাভব। বেগ-বলের কণামাত্র দিয়ে ভূমি উৎধাক করেছ মহান্ বমলার্জ্ন।

ছে অবিতীর, অসীম অশেষ তোমার কুপা। ছে কুপ্রজনবংসক, সাধারণ মন্থ্যের মন্তই তুমি আঞ্চ বরার প্রকাশ করেছ লিভ-বিলাস। তা পুরের তুমি মঙ্গলাবতার। তোমার আনন-আভার বাখা পার আকালের চাদ। বিবফল ও বাঁধুল ফুলর মন্ত ঐ কুচির অধ্রের মাধুগ্য ছড়িরে তুমি অলম্প্রত করে রেখেছ বরাজল। অকারণ কুপা-কুপাণে তুমি অনাদি অবিভাব উদ্দেদ করে দাও বলেই আনন্দিত হয়ে ওঠেন মন্তিমানেরা। বিবহাতীত ভোমার লালা-সমূত্র, সেখার স্মান করে আত্মমরী প্রজ্ঞা। বাঁরা পার্মহত্তে পথের পথিক একমাত্র তাঁরাই চেনেন ভোমার পারের প্রতিক। তোমার ওপগুলিকে কঠাভরণ করে রেখেছেন ক্মলাসন-শিতিকঠাদি দেবগণ।

ছে গণনাতীত লোকোত্তবপ্রভাব ! ছে প্রভাবছল ! ছে বছদনিতবিহার ! বুগচতুকে আগনিই অবতীর্ণ হরেছেন অংশরপে । আপনার নাম ও রপ নকত্রের মত অগণের । নির্মল বংশামজিরার আপনি গুজারিত । আপনিই দান করেন বিখের আকাভিম্বত অভিমানের বিধরগুলিকে । হে অধিললোকনাথ, হে প্রাভু, নমস্তে, মরস্তে ! এই বিশ্বর্জাপ্তে তুমি ছাড়া আর কে ররেছে, কোথার ? হে প্রমণুক্ষ, কে না ভোলে ভোমার কুহকে ? কার হুদর না আতুর হয়ে ওঠে ভোমার তুর্বট-ষ্টনের চতুরভার ?

হে মনোরম! হে মৃষ্ঠানক নক্ষনক। হে নক্ষনবন-বিহারীদের মৌলিমুক্টমহামারকত! ছক্ষে ছক্ষে কে গাঁথতে পারে তোমার বলোমাল্য? মৃষ্ঠ ও অমৃষ্ঠ আনক্ষমর রূপে, ব্যক্ত ও অব্যক্ত আকারমর রূপে ভূমি বিভয়ান। ভূমিই আনক্ষ ভোমার ভক্তের, অধ্যাত্মবিদের। অভএব তোমার ঐ চৈতভ্তমকরক্ষ-মক্ষাকিনীর অপ্রাত্মবারা-মেছুর চরণারবিক্ষে চিরলগ্ন হয়ে থাকুক আমাদের উভরের রতি। এবং অসীম কুপার হে প্রভু, দুর করে দাও অবতি।

হে আর্ত্তলের বন্ধু, আমাদের অন্ত কোনো প্রার্থনা নেই, এক্যাত্র প্রার্থনা- - বং-পাদপকল-নিবেবি সঙ্গ। আমাদের পক্ষে আজ প্রসাদ হরে গাঁড়িবেছে বুনীবর নাবদের অভিশাপ। অভএব মহৎ-প্রসঙ্গের সমাদর অনিবার্থ।

আমাদের বাণী ভোমার শুভিগীতে শীন হোক, আমাদের মন ভোমার শ্রীপালপদ্মের খ্যানে সমাহিত হোক, আমাদের কর্ণ ভোমার কীর্ভিশুভিতে অচক্স হোক, হে শ্রবীকোন, আর কন্ত চাইব, আমাদের ইতিম্ববর্গ সেধারদের মহনীরভার বসিক হোক।

দেবৰ্বি নাৰণ, বিনি ভোষাৰ চৰণকমলেৰ মধুকৰ, তাঁৰ অভিনাপ আৰু বৰ হৰে আমাদেৱ গুড়ু অনুপ্ৰত্ ক্ৰেছে। নেই প্ৰাৰটুকু পেলে আম্মা কি চতুনে ত্রি দেবতে পেতেই সেই আক্র্য-বাল্টেই থেলা, বার সীলার একটি কণিকার বিশ্বত ব্যেছে সহস্র সহস্র প্রকাপ্ত স

হে ভগবন, বর্ণনাতীত আপনার জননীর সৌভাগা। তাঁর মহা-মহা সৌভাগা বে তিনি আপনাকে বেঁধেছেন। সেই সৌভাগা-ক্ৰিকার শভাংশের একাংশও ইহলোকে লাভ করেননি একা, শিব, এফন কি ইল্ল ও মহর্ষিয়াও।

হে জ্মন, জানীদের, সর্ববেদবিধানদের ও বোলৈকনিষ্ঠচিওদের প্রথমতা নন আপনি। ইহলোকে আপনি উাদেরই নিতাম্ব প্রথমতা, বাঁদের বভি পূর্ব-নিবেদিত হয়েছে আপনাতে, বিনি আজ নব-শিশুর আকাবে নক্ষাক্ষকরপে সীলাধেলার বিতোর।

১৮। অতথ্য হে প্রভূ, আমাদের উভরতে অফুজা কল্পন, কী এমন মনবামনা কবি আপনার চরণে, বার প্রভাবে আপনার চরণপল্মের আবারেই শাখত রতি বহম করতে করতে, এবং বংঘাচিত প্রারক্ত ক্স উপভোগ করতে করতে কালাভিপাত করতে পাবি আম্বা হুজনে ?

১৯। অবসাম হল বন্দনার। অতঃপর গুন্ধনেই নিজেদের অন্তবিত করে নিয়ে প্রেছান করলেম উত্তর দিকে।

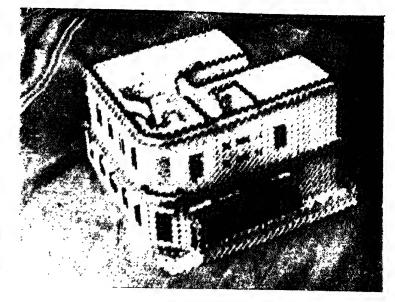
আর সঙ্গে সঙ্গে অভিশাপমুক্ত বমলার্ক্ত্রের খোর পতন শক্ষে ত্রন্ত হরে উঠল নিখিল গোকুল, বেন বধির হলেন স্বর্গের দেবতারা, দিঙ্নাগেরা,—পাতালের নাগিনীরা। বালক-বৃদ্ধ-নবনারীর এমন কি ত্রজেশ্বীরও বেন ভক্তিরে গেল বল। করেক জন অধীর হরে দেখতে দৌঙ্লেন। দৌঙ্লেন বটে, কিন্তু তাঁদের প্রোভাগে বেন ধেরে চলল বিতর্ক, কেমন বেন নৃত্য-পরাত্ম্থ হতে চাইল তাঁদের জ্বর, বেন তাঁদের জ্বর চড়ে বনল পরম শকা।

২০: তাঁৰা এসে দেখলেন,—ছটি মহাক্রম পড়ে বরেছে। বেন বালকুক ভগবানকে দশুবৎ প্রণাম নিবেদন করছে ধরণীদেবীর ছথানি হস্ত, বেন পাতালের বিবর থেকে যুগপৎ উদ্ধে লাফিরে উঠে ছদিকে পালাতে চাইছে ছটি প্রকাশ্য অঞ্চগর সর্প, বেন ভগবদ্ধিপাতিত আদিকৈত্য মধু-কৈটভের এ ছটি সাক্ষাৎ প্রতিমৃষ্টি!

আৰ ছটি গাছেৰ মাৰথানটিতে দেখলেন বলে বলেছন উাদেৰ বালমুক্ল - - আইনিধির বেন অভতম নিধি মুকুল। এতটুকুও চাঞ্চা নেই, এতটুকুও বিয় নেই, এতটুকুও তর নেই, বহং তিনিই বেন বৰণীদেবীকে দান করছেন অভয়। বিশ্বর কুটে উঠল উাদের ঠোটে, বললেন—

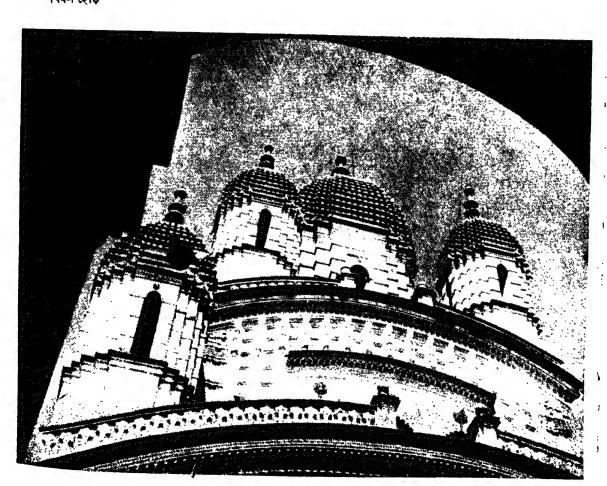
কী আন্তর্ব্য, কী আন্তর্ব্য । বড় নেই, বাদল নেই, চু-ছটো মহার্জ্বন গাছ হঠাৎ মড়মড় করে উপড়ে পড়ে গেল মাটিছে ? এ বে একেবারে প্রেলবকাও ! ছ দিক থেকে ছটো পড়েছে। একদিকে বন তর, অঞ্চাকে বন ব্যথা। আর তার মধ্যে বনে রয়েছেন আমাদের লিওটি বেন পটে-আঁকা এক টুকরো নতুন মেব! বাড়ছেন ! বলভেই হবে এ আমাদের কপালের আের। আন্তর্ব্য, এই টুকুও আকুল হরে পড়েনি ছেলে! মহাপ্রাচীন এই ছটি গাই তবে কি জনার প্রেলোপ মূল থেকেই করে গেল ? না আপন বিভাবের ভারে আপনিই নিপাত গেল ? ভা ভো মনে হর না! ছটিবই মূল সবস ব্যেছে, লিকড়ওলিও তেমনি মিল্ল, ভেমনি মূল! কী করে এমন ব্য হয় !





বোভামের বাড়ী —শৈলেক্সনাথ মিত্র

দক্ষিণেশ্বর কালীমন্দির —বিমন হোড়

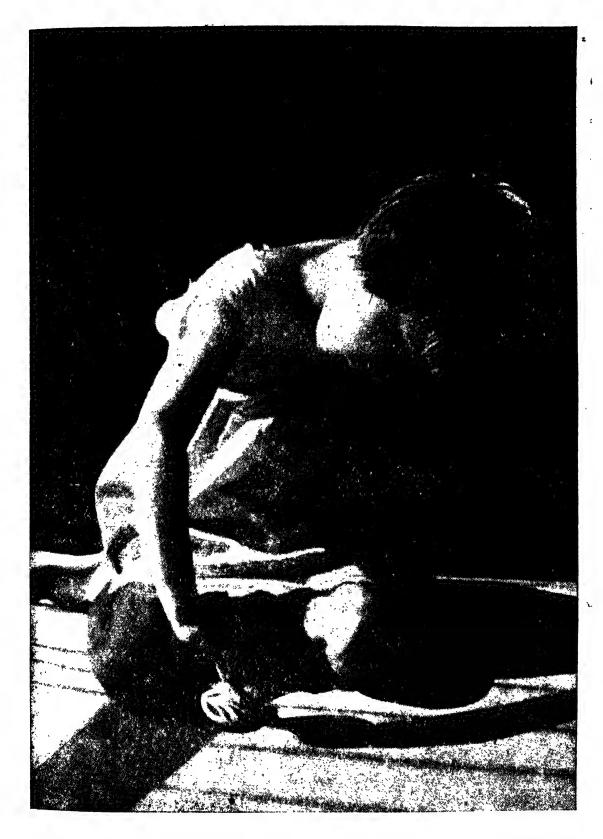




ভাস্বর্য। একাকী

—মীরেন অধিকার







ভিত্ৰ-ভরিত্তে বর্ণবোধ ও সাম্যদর্শন

স্মভাবে ভাবিত হ'য়ে স্মষ্ট হ'ল রূপ, বস, গন্ধ ভরপুর বিধাতার বৈচিত্রময় জগৎ। স্টির সেরা জীব রূপমুগ্ধ মাত্রৰ পেল ভার বাদ, গ্রন্ধ প্রকাশভঙ্গিতে বেরুল অভূট বর, তা বুবল বে বার জাপ্রে। গভীর মর্মবেদনা অহুভূত হ'ল মানব-চেতনামূলে, কি করে স্বাই স্বাইকে জানাবে জাপন মনের কথা ও ব্যথা। পেশ প্রকৃতি-সহায়তা,--একই দৃত্ত দেখে সকলে হাসে কাঁদে। একই ঘটনার সকলে চম্কিত বা আত্ত্বিত হয়। 'একরপে' বছর মিল কিছ 'এক' বে কি বস্তু তা তারা জ্ঞানে না। ৰাত্রা স্কুক্ হ'ল জন্তানা সন্ধানে আনবার প্রবাসে। ঘাত-প্রতিঘাত মধ্যে ঠেকে ঠকে পৌঙাল এলে এক দীমানায়, প্রকৃতি বলে দেয় ইলিতে বিশ্বপ্রকৃতি গ্রন্থ পাঠ করতে। স্বাই বে, বার ক্রচি, বিভা বৃদ্ধি সামর্থে ব্রতী হ'ল একের সাধনায় বিভিন্ন পথের প্রচারী হ'য়ে। পেতে চার সহজ-মুক্তরকে প্রকৃতি সাহাব্যে। চলার পথে সঞ্যিত ব্স্তুগ্রু সমূহেত হ'ল সংখ্যসনে। স্ক্রিাদিস্থাত বাহা গ্রহণ করে গঠন হল সমাজ ও গ্রহণ-বর্জ্জনরূপ-প্রাকৃতি, যাহা নাকি গড়ে তুলবে কালে শিল্প-চিংত্র। বং-এ ভরপুর প্রাকৃতি শিখাল বরণ করে গ্রহণ করতে আর প্রাণের ওঞ্চন মুর আলপনার ছলে প্রাণপ্রতিঠা ক্রতে। রূপ্যুদ্ধ প্রাণের আবেগ প্রকাশ হল আলাপে,—সুর मर्प । क्षत्रवृक्ती सूत्र-बिकारत सूर्व इम रागी, कर्छ शम स्त्र। ा कार्या हम तिर्वाष्ट्र मात्रम ख नीवम । क्रा वममा विष्यु विवा फालाय व्यव कदल म्युडिंग्स, कार्थ इस छात्र चामन। ट्रेनिटे বাগ্ৰেবী, বীণাপাণি সরস্বতী, বিজ্ঞার অধিষ্ঠাতী দেবী। রূপসজ্জার স্থিত প্রকৃতি শিখাপ প্রকাশ করতে রূপ বর্ণনায় জীবনের ভভিব্যক্তি শব্দ, স্পর্ণ, গল্পে। বসবাদে মাতোরারা হরে চাইল রণকে স্পর্ণ করতে। বিতা চিনাল বস্ত অবস্তু, দর্শন পেল দিব্য-দৃটিতে সত্যের জীবন্ধ প্রতিমৃত্তি,—সৌন্দর্য্য, বার জ্যোতি ঘুচার এক নিমেবের অজ্ঞান-অন্ধকার।

কিছ কেমন করে রূপায়িত হবে জীবস্ত সত্য জীবনগতিছন্দে, অমুস্থিৎস্থ মন স্থক করল যাত্রা রহস্ত উদ্বাটনে। সাধনার পেল পথের সন্ধান রূপ ও শবে।

क्षि, तम, शक्त व्यामण्यर्गत क्ष्मकाव,—हिज्ञिनही चार मक, ম্পূৰ্ণ, গন্ধ প্ৰেমাকৰ্ষণে শব্দকার,—কথালিল্লী ত্ৰতী হল দৌল্ব্য উপাসনায়, হ'ল বোধোদয় ছন্দোবদ্ধ গছি-ভঙ্গিমায়; পেল পরিচয় গৌতে। হানয়-দর্পণে প্রক্তিবিম্ব দেখে বোধ ও বোধব্য বেদীমূলে স্টির শেষ পরিণতি (Perspective) প্রিতপ্রক্ষিতরূপ ত্রিভূজ প্রতীকে করল বোধন ঘটস্থাপনে, পুসার বর্ষ, ভাব ও ভক্তি। ভাব, পুষ্প; ভক্তি,—চশ্দন; ভাব ভাষায় প্রকাশ, ভক্তিরপে প্রকাশ। ভাব বিশাস ও রূপ বিলাদ। ভাব অপ্রক্রাক, রূপ প্রতক্ষ ; ভাবে রূপ দর্শন আর রূপে ভাব কথন। এ যুগ কাল্লনিক ভাববিদাদের যুগ নয়, বিজ্ঞানমর বাক্তবংশ্মী রূপ বিলাদের যুগ; ^{তার} বিধকে ফুলে ফলে স্থাশান্তন করে রূপকার। বা**ন্ত**বে জীব**ন্ত** সঙ্য রূপায়িত করবার গুলুলায়িত রূপকারের উপর **ভত**।

রপমুখ ভার হৃদরসর্বাধ উজাড় করে সাজার পৃতা-অর্থ, ^{বদস}ভার বরণ**ডালা। আ**বাহন সঙ্গীর স্থর-গুঞ্জনে মুখবিত করে

আকাশ-বাতাস। সেই সুংমুছ নার মাতুর জাগে, গুমার; হাসে, কাঁদে। শিল্প, সঙ্গীত, নৃত্যকলা, কাব্য, উপনিষদ একই স্থৰ, ভাল, মান, লয় বিভিন্ন প্রকাশ। সব কিছুই বিভিন্ন ধারার বর্ণ-বিকাশ বা রূপবিলাদ। স্থান, কাল, চেতু--- অবস্থাভেদে মাছুবে এস কামনা, চাইল ভোগ-বিলান। পূজার অর্থ—উপচারে ভোগ্যবস্থ সন্ধানে প্রাপুর মৃঢ়-মন গাহিল বেছরা সঙ্গত। সঙ্গীত হার মেনে হারাল সক্ষতি। থিধা হল সৃষ্টি। অভেন পুরুষ-প্রকৃতি হল ভেল। ভোগলিজামন্ত অমুরে পরিণত হ'ল মুরলোক, প্রকৃতি বিরূপ বড়বিপু প্রকোপে। বর্ণ বিবর্ণ হ'ল ভাব হ'ল অভাবহার। অভাব প্রকাশে। অভাবের অর্থ ঘটাল অনর্থ। মানবংশ্মে ধমিষ্ঠ, সৌন্দর্য্য পূজারী ভাব, ভাষায়, জাচার, ব্যবহারে এবং কর্ম্মে কুরূপ ও ক্যর্থের ছারছ হরে অভ্সর্কম হ'ল কদর্যক্রপে। সেদিন হতে মাতুর ব্যাপুতলিকার মত মানবধর্ম কুরূপে ও কদর্থে ব্যবহার করে আসছে এবং আমাদের সম্মুখে জীর্ণ, ভবিষ্যুৎ শুনা দেউলিয়া 'বর্তমান' জমবাত্রা সুক্ করেছে দিখিজরে। অতীতের ঘূণধরা, মরিচাপড়া কাঠামো আজ রং-শুতা মৃতপ্রার। মহুষ্য-সমাজ আজ কুরূপ, কর্মপূর্ণ জীবন বাপনে আপত্তি জানায় না, তার মূল কারণ, মনের দেয়ালে হিংসা, দ্বেব ও স্বার্থপরতারপ ঝুল, কালি, আলকাতরা প্রলেপে রং গেছে লুপ্ত হ'য়ে, বং আর ধরে না। মৃতকর—ভাবঘোর পরিভ্যাগ ক'রে জীবস্ত সতা জীবন গতিছদে রূপায়িত করবার মত্ত প্রকৃতির কয়। ভাগিদ।

বিশ্বাদী বিপরীতগামী প্রগতি-লোভে গা ভাসিয়ে, কভুরী মুগের मक इटिट्इ काम निग्तिनिग् कानगृत ह'रत । सारन ना निटक्बरे মধ্যে সেই রূপ, বস, গদ্ধে ভরপুর সত্যের জীবস্ত প্রতিমৃতি;--সৌন্দর্যারণ বিবাল্নমান। প্রকৃতিত্ব হলেই অবশু সচিচ্চানন্দ প্রতিবিখিত হবে অদয়-দর্শণে। এ-ছেন বিপর্ব্যয়ে যদি জাতিকে জাগাতে হয় তবে মনের ভিতর বাহির সকল মলিনতা দুর ক'রে বর্ণ বিকাশ করতে হবে। আঞ্চকের বর্তমানে সর্বপ্রথম চাই শিকাপ্রতিষ্ঠান সমূহের কাঠামো মেরামত। কাঠামোতে আছে কর্ত্বণক ও পরিচালকবর্গ, লিক্ষকমণ্ডলী এবং ছাত্রবুন্দ।

ভদানীস্তন বিজাতীয় প্রাণহীন মামূলী নীতি-বিধানে,—বর্তপক ও পরিচালকবর্গর অধীনে শিক্ষকমণ্ডলী এবং শিক্ষকমণ্ডলীর অধীনে ছাত্রবৃদ। এটা পুরাপুরি মেনে চললেই শিষ্টারার পালন করা হ'ল, ব্যতিক্রমে বিপরীত। কথাটা সঙ্গতই বটে, কিন্তু খদেশে খজাতীয় নীতি-সাম্য ভাৰত্ত্ব প্ৰীতিবন্ধন পরিবর্ত্তে মমন্ববোধ-শৃক্ত কর্তৃত্বরূপ বিজ্ঞাতীর নীতিবৈষ্মা ত্রুম তামিল হুমকী লাজ স্বাধীন রাষ্ট্রে শিক্ষাপ্রতিষ্ঠান সমূহে জাতির প্রেষ্ঠ সম্পদ ও আ'তজাগবণে অগ্রদ্ত অফুচিসম্পন্ন সৌক্ষ্যের পূজাতী ত্যাগ'নঠ প্রকংবাধ শিক্ষাব্রতী শিক্ষক এবং সৌন্দর্যের আণার অনাছাত পবিত্র প্রদয়-কুমুম আত্মবীলদানে पृक्ष-भाष काळ्यानावृं जनम्मस काळ देखते ना क'रव पानगरानावृंख-अण्लात (अक्रम्खाने क्रम् अन्यत्नोर्वाला भवन्यकाका वार्वास्त्री প্রতিখন্দী কেরাণী তৈরী কারধানার পরিণত করেছে।

চিত্র-শিল্পের গঠন-পরিচর্যায় তিধারা সম্বিত - হলুদ, নীল আর লাল মূল ভিনটি বর্ণ, গোত্র সাম্য পরিচয়ে ক্লাভীয় নীভির অর্থবোধ। হসুন—দেহ অর্থাৎ কর্ত্পক ও পরিচালকর্ম ; নীল,—শিবা উপশিরা অর্থাৎ শিক্ষকমগুলী। লাল,—রক্তপ্রবাহ অর্থাৎ ছাত্রবুক্ষ। একটি পূর্ণাক প্রক্রিচানের ত্রিধারা-সময়িত প্রচেষ্টার মূলে শিলীর গঠনমূলক ক্রিবোধের উৎস,—প্রথক্ষনীন ভাবধারার সার্ক্রিকীন অর্থবাধ ও বর্ণবোধে সার্ক্রিকাল প্রাম উন্নয়ন করা। একটি শিক্ষাপ্রতিষ্ঠানের পক্ষে বাহা সভ্য, একটি গোটা বাষ্ট্রের পক্ষেও ভাহা ক্ষাষ্ট্য সভ্য।

সংবিধানে—বাষ্ট্রপরিচালকগণ,—দেহ, ফর্মিগণ,—শিরা উপশিরা; সমগ্র দেশবাসী,—রক্তপ্রবাহ। এই ২ক্ত যদি দ্বিত ও ছর্মাল হর ভবে স্থাবৃহৎ হরকে বিজ্ঞাপনী অভ্যবাণী ও নীতিবাক্য ভনিরা দেশবাসীকে স্থায় ও শাস্ত বাধা সভব নর।

আছকের বর্ত্তমানে ব্যোপবোগী সার্ক্তিনীন ভারধারার জীবনবিজ্ঞান শিক্ষার কোন্ কথার কি অর্থ, কোন্ বর্ণের কি রূপ-বর্ণনা
ভার বর্থার্থ তাৎপর্য অফুলীলন ক'বে কার্যক্ষেত্রে ব্যবহার করতে
হবে। চিত্র-শিক্ষা, সাহিত্য, সঙ্গীত নৃত্য সবকিছুর কার্যকরী অর্থবোধ
ও বর্ণবোধ একান্ত প্রয়োজন। সাহিত্য, কাব্য বচনার বর্থার্থ অর্থ
প্রেক্তনা হলে জীবনের সহিত সম্পর্ক-বহিত হবে। চিত্রশিক্ষে
বর্ণবাল্পনার কোন বর্ণের কি গুণাগুণ ও প্রয়োগবিধি তাহা সম্যক
জানা না থাকলে ব্যবস্থতক্ষেত্র স্বাধীন সন্তার পরিবর্গে
দাসমনোভাবপূর্ণ পরিবেশে শান্তির আসনে প্রান্তি আসবে, প্রান্তিতে
অবসাদ এনে জন্ধ করে ফেলবে। প্রয়োজন মন্থব্যোচিত সার্ক্তনীন
চরিত্র পঠন। নিষ্ঠা সহকারে চিত্রশিক্ষ মাধ্যমে রূপ বর্ণনায়
স্ক্রপকে আঁকতে আঁকতে স্থভাব প্রকটিত হরে সার্ক্তলনীন চরিত্র
পঠিত হর।

বিশ্বশিল্পী বচিত, চিত্রিক বিচিত্রিত জগৎ সংসাবে আমন। আত্মপরিজন, প্রতিবেশী সহ আবহমান বাদ করে আসন্থি এবং নানা প্রচেষ্টার পরস্পার মিলিক হতে পারন্থি না। কেন না, প্রস্পার পরস্পারকে স্বর্গে ও সংগোত্রে চিনি না বা জানি না বলে। আছকের দিনে দেশজোড়া সার্বজনীন উৎসবের ছড়াছড়ি কিছ সার্বজনীনভার অর্থ কদর্থে ব্যবস্তুত হবে গর্বজন্মনীনভার পর্বাবসিত হয়েছে। ভবু আমরা গরীয়ান, স্মহান! বলি কম কি সে?

কোন উদ্দেশ্য সাধনের জন্ম কার্য প্রায়ম্ভে বিশেষ আমন্ত্রণ কিছু সংখ্যক ব্যক্তি সমবেত হর বটে, কিছু অন্তিবিলম্বে গ্রন্থিল দেখা দের ও পরস্পর বিভিন্ন হরে উদ্দেশ্য পশু করে। উদ্দেশ্য সিদ্ধিলাত করতে হলে সর্বপ্রধার গ্রন্থালের কথা ভূলে কোথায় আমাদের সাধারণ মিল ও মিলনস্ত্রটি কি, তাহা জানবার জন্ম আগ্রহী হ'তে হবে এবং স্বর্গ সন্তার সন্ধান করতে চাই চলার পথে বাধা-বিপত্তি দমনকারী চরিত্রের শিষ্টাচারপূর্ণ মজবৃত কাঠামো। আমরা সকলেই শিল্পী, সৌন্ধর্যের উপাসক, একথা স্বরণ রাথতে হবে। আমরা বে বা কাল্ক করি তাহার ভিতর বে অক্তন ও বর্ণনি বিধি আছে তাহা খুঁজে বাহির করতে হবে।

মাৰ্চ্ছিক ক্ষচিবোধে কৰ্ম্মের বিষয়বন্ধ ব্যবচ্ছেদ ও বিশ্লেষণ ক'রে দেখতে হবে প্রাণরজ্ কোধার। বাহাতে আমাদের বাস্তব জীবনে কালে, চিন্তার, কল্পনার, আচার-ব্যবহারে, আকার ও প্রকারে সভ্যের জীবন্ধ প্রতিজ্ঞ্বি, সৌন্ধ্য বিকাশ হল্প, তারই নক্সা দেখে পড়েক্সন্তভন হ'রে পথ অভিক্রম করতে হবে।

অড়—চিন্তা, কার্য্য, কুণা অভিক্রম করতে না পারলে বস্ত লাভ করা সন্তব নর। চাক্র চিত্রশিল্পে বর্ণবিধান অড় অভিক্রমণের পথে পূর্ণ সহায়তা করে ও সকল বৈষম্য দ্রীকরণে সাম্য প্রতিষ্ঠা করে। চিত্রচিবিত্রে বে সমতা বা একড় তাহা মুক্তিপূর্ণ বর্ণবিধানের উপর প্রতিষ্ঠিত। সমগ্র বিশ্ব স্ক্রেরহত্তা একই বর্ণবিধানের উপর প্রতিষ্ঠিত বলেই প্রকৃতিপূঞ্জে বিভিন্ন দ্বপ একেক্যতানে শান্ত সৌম্য প্রশান্তমূর্ত্তিতে বিরাজমান। সৌন্দর্য্য উপাসনায় ইমানব-চেতনা-মূলে বর্ণবেধ্ব উদয় হলে বিজ্ঞান লাভ হবে। বিজ্ঞানময় জীবনে স্ক্রের বিভিন্ন রহত্ত বর্ণবাঞ্জনার অক্যতান, সাম্যদর্শনে একেক্রীড়ত হ'রে সকল সমতা লর প্রাপ্ত হবে।

"What is really essential to the modern conception of a state which is also a nation, is merely that the persons composing it should have, generally speaking, a consciousness of belonging to one another, of being members of one body, over and above what they derive from the fact of being under one government, so that if their government were destroyed by war or revolution, they would still tend to hold firmly together. When they have this consciousness, we regard them as forming a 'nation', whatever else they lack."

—Sidgwick

নিংহ মণাই, সিংহ মণাই মাংস বলি চাও।

রাজহাস খেতে দেব

হিংসা ভূলে বাও।"

चामां कोवान मिरह भारत मान ध्रेथ भविष्य हत, अरकवाद চোট কালে হাসিথশী ছডাছবির পাতার অরুত্বর (ং) শিকার সমর। তথন সূর করে মুখস্থ করেছি, সিংহ বা হিংসা কোনটিকেই ভাল কৰে বুঝি নাই। গ্রামের পাড়ার রাম বাবুর বাজীতে তুর্গা-পুলার, আর দীয়ু দাসের বাড়ীতে জগন্ধান্তীপুলার সময় সিংহের মাটির মর্ত্তি দেখেই চিনতে পেরেছিলাম বে ওগুলি সবই সিংহ। সহবে সার্কাদ পার্টি এলো, বাবার জামার কোণ শক্ত করে ধরে বলে গালোৱীর উপর থেকে আফিড-খাওয়ানো নিজেজ সিংছের খেলা দেখে তপ্ত হতে পারিনি, বেমন তপ্ত হ'তে পারিনি কুকনগ্রের কুমোবদের তৈরী আলমারী সান্তানো সিংহ দেখে। আগীপুৰের চিড়িরাধানায় সি'হ দেখেছি, দে-ও এ সার্কাসের আর আগমারী সাজানো সিংহেবই কপাত্তর। একটি সামার নডাচডা করে, অপর্টি পাধ্বের মত নিশ্চল—বেমন দেখেছি রাজবাটীর रेकेक्शानात्र 'हीक्क्ता' मि:इ वा शूबीव मन्दिवव व्यव्यव्यवादव शायद्वव তৈবী সিংহ। নভাচভা না করলে, না ভাকলে, সেটা সিংহ হ'ল কেমন করে। ভাই বলে কলিকাভা নিউ এম্পায়ারে আমার ইন্দ্ৰাল প্ৰদৰ্শনীতে (Lady and the Lion প্ৰলাভ) বে সিংহ দেখানো হয়েছিল সেটাও আসল সিংহ নয়, বভই ভাকুক আর নড়াচড়া কলক না কেন। হিংল না হলে মন তাকে সিংহ বলে মানতে বাজী নয়। বাঞ্ভোগ খাবার লোভে হিংলা ভূলে গেলে সে সিংহের সিংহত তাকে না। আবার তথু দৈবের উপর নির্ভর করে থাকাও কাপুক্ষতার লক্ষ্প। উত্যোগী পুক্রসি:ছই লক্ষ্মীকে লাভ করতে পাবে। বীর্ষাবান, পৌরুষদম্পন্ন লোকেয়াই দিংহ উপাবি পার। বীবসিংহের উপরচন্দ্রকে লোকে পুরুষসিংছ মনে করতো, ইদানীং কালে সন্ধার প্যাটেল সিংহ বলে পরিচিত হয়েছিলেন।

নিংছ কথাটাই শক্তিমন্তার পরিচায়ক। অনেক দিন আগে মাসরের জঙ্গলের প্রান্তে এক ছোট্ট দ্বীপ দথল করতে গিরে ইংবেজ-সৈক্তরা বেল প্রথব প্রতিপক্ষের সম্মুখীন হরেছিল—তাই দ্বীপ দখল করে নাম দিয়েছিল City of the Lions নিংহপুর, আগু যা সিন্ধাপুর নামে পরিচিত। তারপর থেকেই ঐ সিংহপুর (সিন্ধাপুর) বৃটিশ্নিংহেরও প্রবল প্রভিরক্ষা-বাঁটিতে পরিশত হয়েছে।

ইংবেদরা ক্ষুদ্র বীপের অধিবাসী হরেও, শৌর্থ-বীর্ষ্যে পৃথিবীতে নূত্র বেকর্ড স্থাপন করেন, তাঁদের বাক্তে পূর্বা অন্ত বার নি। বাজেট তাঁদের প্রতীক চিচ্চ 'সিংহ' বথাবোগ্যাই বলা চলে।

আমরা আফ্রিকান্ডে এসে সন্ত্যিকারের সিংহের চাফুর পরিচর পেরেছি। আফ্রিকা বনজঙ্গদের দেশ, এ দেশের রালা শুর্ বৃটিণসিংহ নর—পত্যিকারের জঙ্গদের রালা শিঙ্গদেরটাবারী পত্তরাক্ত সিংহ। আফ্রিকার জঙ্গদ আর আফ্রিকার সিংহ তাই আছে জগংপ্রসিদ্ধ। অনেক সময়ে মনে হল্ল—এই গভীর বনভ্রিতে উত্ত রক্ম জন্ধ-জানোরার আছে। হাজী, গণার, জঙ্গহন্তী, বাব, আরিও কত শত পশু বাদের আর্জন সিংহের চাইতেও অনেক বড়, বাদের গারের শক্তি সিংহের চাইতেও বেনী, কাজেই আদিম নীতি

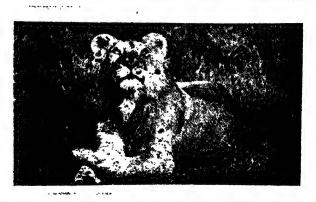
আফ্রিকার সিংহ

যাহসমাট পি, সি, সরকার

'লোব বাব মুলুক তাব' অমুবায়ী এই বাজ্যের অধিকণ্ডা সিংছ অপেকা হাতী, গণ্ডাবেবই হওয়া উচিত ছিল। 'লোব বাব মুলুক তাব' নীতি আদিমকালের হলেও, বর্ত্তমানের সভ্য অসংস্কৃত বিশে শতাকীতেও তাব পরিবর্তন দেখছি কোধার? নইলে পূর্বেশিলিম সর্বত্ত মারাত্মক অল্পন্ত তৈরীর অভ্য এত ঘটা কেন? নববাতী বোমা ফাটানোর আত্মঘাতী প্রতিবাগিতা হচ্ছে কেন চারদিকে? বিদি গারের জোবই পৃথিবীতে বড় কথা হ'ত তবে আত্মলালের বাজা হ'ত ঐ হাতী অথবা গণ্ডার। বদি বৃদ্ধি বা কৌশলই প্রেঠতের মান নির্দেশ করতো তবে অসলের বাজা হত বানর, শৃসাল বা কাক। বদি কুবতাই এর মাপকাঠী হত তবে অসলের বাজা হ'ত আজ বিবধর গোধুরা সাপ বা অজগর।

হিংস্ৰভাই বদি প্ৰাধান্যে মাপকাঠি হত তবে বাৰ বা বক্তম্ভিবই ঐ স্থান অধিকার করতো। গ্রাহ্মণমূলোভী বিশামিত শত চেষ্টা করেও বলিষ্ঠের নিকট দীকুতি পান নাই.— তাঁৰ শৌৰ্যা-বীৰ্ষা দেখিৱেও কোন ফল हव मार्ड-क्रि স্ক্ৰেৰে ক্ষাৰণ প্ৰমাণিত করে 'ব্ৰাক্ষণ' নাষে তিনি ৰীকৃতি পান। 'দাতের বদলে দাভ নেব' এটাই বড় কথা মর। ক্যাওণ চাই। শক্তিমান বধন অপের ক্যভাশালী হয়েও ক্মাণ্ডণের অধিকারী হর, ছার বিচার করে, তুর্বলের রক্ষা ও ষ্ক্রারের প্রভিবোধ করে, তথনই সে শ্রেঠছের মর্ব্যাদা পারু। ভারতের নীতিশাল্পে সেইএপ উল্লেখ আছে। ছুই পক্ জুসি-যুদ্ধ করা কালে হঠাৎ এক শক্ষের আন্ত্র ভেঙ্গে গোলে ভাকে অনুদ্ধণ নুতন আত্ৰ না দেওৱা পৰ্যান্ত বুদ্ধ হুলিত বাধাই হ'ল ভারভীর নীভিয় লকণ। নিজিত লোককে ছুবিকাবাত করা, বিৰবাপা দিয়া বৃদ্ধ क्वा, चांगविक त्यांमा निवा नावा संत्रश्रक छेकाछ कृत्व (मह्वा, बहा আধুনিক কালের ব্যাপার। পিতাকে বন্দী করে, ভাইকে হত্যা করে সিংহাসন লাভ, শত্রুপক্ষের উৎকোচ নিরে আমবাগানে নিজের নবাবকে বিখাস্থাতকতা করা এটা ভারতে খটলেও অভারতীর ঘটনা। আজকালের যুদ্ধে অসি অপেকা মসীই বেৰী চলেছে, ঠাপা লড়াইয়ে এই নীতিজ্ঞানের অভাবই চক্ষতে পতে বেশী।

অগলের রাজতে সিংহ পশুরাজ। ভার বেমন গারে জোর



छक-पृष्टि



স্ভিত্তিকার Lions' Club-এতে সভ্য হতে চালা দিতে হবে
না। প্রাণ দিলেই বথেট।

আছে—হিশ্রেষ আছে—সংস্ন সংক্ষ ক্ষাণ্ডণও আছে। কুধা নিবৃত্তির

মন্ত্র সিংক্ষ ক্ষান্তেন পশু শিকার করে। সে কথনও তুর্বলি

হাগল হত্যা করে না—তার কুরিবৃত্তির জল্ম হতাটা দরকার তার

চাইতে বেশী হত্যা করে না। বাঘ বদি একটা হরিণ থার সে দদটা

হরিণ মারতে হিধা করে না—পাইকারী ভাবে নিরপরাব হত্যাই

শক্তিমান ব্যান্তকে সমাকে উচ্চপদ থেকে বঞ্চিত করেছে। "কাজের

সমর কাঞী কাজ কুরোলে পাঞ্জী'—বা উপকারীকে থেরে নিয়ে
বাঘ অঙ্গলে তুর্নাম বটিয়েছে। সিংহ উপকারীকে ভোলে না।

জঙ্গলের হাতীও তার প্রবল শ্বতিশক্তির জন্ম প্রসিদ্ধ—কিছ্ এই

ছইরের এই মনে রাখা ব্যাপারে জনেক স্থানিমন্ত্রি পার্থক্য আছে।

সিংহ তার বন্ধকে ভূলে না, আর হাতী তার শক্তকে ভূলে না।

অঞ্চলের ইতিহাস নিলে এর প্রমাণ পাওয়া বাবে।

একবার একদল শিকারী জন্সলে শিকার করতে গিরে একটা হাতীকে গুলী করে,—হাতীটা গুলীবিদ্ধ হয়ে গভীর জন্মলে পালিরে যার। অনেক বছর পব শিকারীদল আবার বধন জন্মলে আদে তখন ঐ হাতীটা তার সেই পূর্পেকার গুলীকর। শক্রটিকে চিনতে পেরে দৌজে এসে তাকে ভূঁজ দিরে ধরে পায়ে মাজিয়ে হত্যা করে চলে বায়। হাতী বধনও ভূলে না Elephant Never Forgets ক্ধাটা



নিংহ-মহিবীরা আহার সে:ব নিংজ্ঞ্ন, স্থামী কোথার বাজকার্য্যে সিয়েছেন

তাবাদে পবিণত হয়েছে। সিংহের সম্বন্ধেও তেমনি গল্প আছে—
সিংহের পারে কাঁটা কুটেছিল, জললের লোক এণ্ডেক্লিল সেটা থুলে
দিরে বে উপকার করেছিল সিংহ ভা ভূলে বারনি। উপকারীকে
ভূলে বাওয়া রাজোচিত গুণ নর। বহু বংসর পর পিঞ্জরাবছ হি ত্র
ঐ সিংহের বাঁচাতে এণ্ডোক্লিসকে হণ্ডার জল্প পাঠিয়ে দিলে সিংহ্
সেই উপকারী বন্ধুকে স্থাকুতি দিয়ে তার পশুরাক্ত আলারে সমাক্র
পরিচয় দিয়েছিল। সবলের পক্ষে ক্ষমাগুণ সর্বায়ে প্রবাজা।
হাতে বন্দুক আছে—বাকে ভাকে গুলী করলাম। ভামাসা দেখার
জল্প তিল ছুড়লাম কিছ ভেকের দল ভাতে প্রাণ দিল—এটা অমুটিত।
তোমাদের প্রবাজ অন্তন্ত্র আছে—ভোমরা বোমা ফাটিয়ে পৃথিবীর
আকাশ বিবাক্ত করবে কেন? আমরা নির্দোষ নিরীহরা দলে দলে
মববো কেন? এই পৃথিবী সকলের সমান—কামাদের বৃদ্ধ,
আমাদের গান্ধী সেই শিক্ষাই দিয়েছেন।

সিংহ জঙ্গলের প্রাণী কিছ আমাদের মানবের সমাজ-জীবনের সঙ্গে এদেরও অনেক মিল আছে। বাডীতে কর্ত্তা বাজার করে ভানেন, জার গিন্নী তাকে বান্ন। করে খাবার তৈরী করে পরিবেশন করেন। বাড়ীর কর্ত্তা নাথেলে গিল্লীরাতা থান না। অঞ্চলের শিকার বেমন হরিণ, জেবা বা জিয়াক বা মহিষ তাড়া করে আলাদা করে বের করে এগিয়ে নিয়ে জাসে পুরুষ-সিংহ। আড়ালে সুকিয়ে থেকে সিংহী তা দেখতে থাকে, পরে স্থবোগ বুঝে স্বহত্তে সেটিকে বধ করে। সিংহী নিজে বধ করলেও সিংহ মণাই নিজে না খাওরা পর্যান্ত সে উহা স্পর্শ করে না। সিংহ খেরে গেলে ভারেপর সিংহীরা দল বেঁধে খেতে আইন্ড করে। এক পুরুষ-সিংহের এক বা একাবিক স্ত্রী-সিংহ থাকতে দেখা গেছে। বড় বড় লোকদেব বেমন মোসাহেব থাকে, আজ-কাল বাদেরকে 'ল্যাটেলাইট' বললে সহজে বুঝা বার। সিংহণলের 'আটেলাইট' হ'ল শুগালদল (black-backed jackals) সিংহ-সিংহী উদৱপুত্তি করে খেরে বধন দুরে বিপ্রাম নিতে যায়—তথন এ উচ্ছিষ্টভোকী মোসাহেত-দলের আবিভাব হয়। অন্যের কটার্জিকে থাড়ের ট্রুকে অংশ স্বে छथन धरे गृगानम्हलय भाषा भाषाभाषि वादा। शाक्रक्रमा धरा হাজির হয় ঐ খাবার টেবিল পরিছার করতে—ভারা হাড়-গোড় পরিকার করে দিয়ে দল বেঁধে চলে বায়। সভাই শকুনিরা ওদের वाकी चरण, शनिक पृथिक, दर्शक्षमञ्जान चरण (शरत भविकात करत দিয়ে সমাজের ধাঙ্গড়ের কান্ধ করে বায়।

আরিকাতে প্রায়ই কালমাথা শক্লি (griffon vulture)
এবং এক জাতীয় সাবস (Marabau stork)কে এই
বাসড়েব কাজ সাবতে দেখা বাব। পুরুষ-সিংহ সাধাবেতঃ
লখার (লাকের থেকে লেজের ডগা পর্যান্ত) নর ফুট হর
এবং এদের দেহের ওজন হর ৩০০ থেকে ৫০০ পাউগু। বী
সিংহ লখার ফুটথানেক ছোট হর। পুরুষ-সিংহের গলার বড় বড়
কেশর থাকে, বার জন্ম ভার জন্ম নাম "কেশরী।"। বীসিংহ দেখতে
বাখের মত। তবে জন্মবন্নসে পুরুষ-সিংহেরও কেশর থাকে
না—ফুতীর বংসরে কেশর জন্মান্তে আবস্ত হর আব ৫।৬
বছর বরসে সেগুলি বড় হতে থাকে। সিংহী দেখতে বাংগর
বন্ত হলেও বাংকর পারে জ্যোর মত ডোবাকাটা থার্মে
জথবা কুল-ফুল ছাপ থাকে বিশ্ব সিংহীর গা সম্প্রটা পুস্ববর্ণ

রং। সিংহ-শিশুর গারে কিছ বাংখর গারের মত ভারারা ছাপ থাকে। প্রাণিতভ্বিদগণ বলেন বে, এ দাগ বড় হলে
সরে বার। কিছ এর থেকে প্রমাণিত হর বে এবা আসংল
পুরুবে একই শ্রেণিভূক্ত ছিল। সিংহীরা ছই বংসরে একবার
ন সঙান প্রস্কার করে এবং ছটি থেকে চারিটি করে বাচ্চা একসঙ্গে
রি। অ্যান্ত ভছ-জানোয়ারের তুলনায় এদের জন্মসংখ্যা খ্রই
— এরা ভগবানের নিয়মেই 'পরিবার পরিক্লনা' করে নিরেছে,
ইন করতে হরনি।

প্রস্গেতঃ এ প্রশ্ন হওয়া সাভাবিক বেসিংহ কি মানুষ ানা ? জিম কোরবেট তাঁর বিখ্যাত পুস্তকে (The Manters of Kumaon) লিখেছেন—"হিসাব করে দেখা গেছে বে টি বাবের নয়টি বাদ নরখাণক হয়েছে আঘাত পেয়ে, আর মটি হয়েছে বৃদ্ধ হরে।" সিংহের বেলাতেও তাই হয়ত শিকারীর ী, সঞ্চাক্তর কাঁটা, ভ্রিণের বা বনমহিষের শিং-এ আঘাত পেরে হ তার স্বভাবসিদ্ধ কর্মতৎপরতা হারিয়ে ফেলেছে নতুবা বৃদ্ র গেছে, নিজের গৌববময় বলবান ঐতিহ্য হারিরে ফেলেছে, ত ক্ষরে গেছে--তথন সে মাতুর খেতে আরম্ভ করে। কেউ উ মনে করেন, হঠাৎ মামুধের রক্তের স্বাদ পেলে বাব, চিতাবাব দিংচ নরখাদক হয়ে উঠে। কোরবেট সাহেব লিখেছেন যে, পাদক বাঘ বা সিংহরা পুরুষামুক্তমিক ভাবে নরধাদক হয় না। বা-মা মাত্রুব থেয়েছে, ছোটবেলায় ভার সন্তানরাও সঙ্গে সঙ্গে ামাংস ভোজন করেছে—কিন্ত উত্তরকালে ঐ সব সিংহকে কথনও ামাংস থেতে দেখা বায়নি—এমন প্রমাণ অসংখ্য আছে। মোট কথা ্র তুর্মলকে হত্যা করে নিজের মর্বাদা নষ্ট করতে চায় না। সে যুগ বুদ করে জেবা জিয়াফ বনমহিব হত্যা করে, তাকে অব



জঙ্গলের বৈঠকখানার ছয়টা সিংহ আরাম করছে

করে হত্যা করে। বাবের মত পেছন থেকে পালিয়ে জতর্কিতে আক্রমণ করে হত্যা করে না। সেদিন তুই জন লোক সাইকেলে আসার পথে হঠাৎ সিংহের সঙ্গে ধাক্রা থার। ভয়ে তু'জনেই সাইকেল থেকে পড়ে গিরে সিংহের মুথের সামনে মৃত্যুর জগু প্রস্তুত হরে বিমর্বমুধে নীচু হয়ে বসে থাকে। সিংহ ঐ নিগীঃ বিপদগ্রস্তুত্ব বিমর্বমুধে নীচু হয়ে বসে থাকে। সিংহ ঐ নিগীঃ বিপদগ্রস্তুত্ব বিমর্বমুধে নীচু হয়ে বসে থাকে। সিংহ ঐ নিগীঃ বিপদগ্রস্তুত্ব মানবদেহীর প্রতি অমুকল্পা প্রদর্শন করেলা। তাদেরকে কিছু না বলেই চলে গেল—তুর্বল, নিরন্ত, আগ্রয়প্রার্থী, অসহারকে অভ্য দিয়ে বক্ষা করে সিংহ তার বাজোচিত গুণ প্রকাশ করেলা। আফিকাতে সব সিংহ কি প্রজাদের প্রতি বাজকর্ত্ব্যা, রাজোচিত ভারনিষ্ঠ ভাবে পালন করছে। নইলে সেথানে এত চাঞ্চ্যা কেন।

বৈশালী

ত্রীনৃপেন্দ্রনাথ রায়চৌধুরী

্তিন হাজার বছরেরও আগের কথা। পুর্ববংশে ইক্ষাকু নামে এক রাঞ্চা বাস করতেন। ভাঁর বাণী ছিলেন অলখুবা। বিষ্ট গভে বিশাল নামে এক প্রম ধামিক পুত্র জ্ঞো। এই রাজা ^{বশাসই} ভিলেন বছবিশ্রুত বৈশালীর প্রতিষ্ঠাতা। পুরাণে আবার ^{]ই} নগরী বিশাস ও বিশালা নামেও অভিহিত হয়েছে। শ্রীমভাগৰত ^{গ্ডুসারে} মহারাজা বিশাস কিছ ইক্ষাকুর পুত্র ছিলেন না। ইক্ষাকুর াই দিষ্টের ২১তম বংশব রাকা তুণবিশের পুত্র ছিলেন তিনি। গাগবতেও বিশালবাজের মাতার নাম 'অলগুবা' রূপে বর্ণিত হরেছে। ীনি ছিলেন বিষ্ণুপুৰাণ মতে প্ৰমা স্ক্ৰবী অন্ধৰা। সভপ্ৰ আক্ষণ বৰ্ণখনে জানা ৰায়, সরস্বতী-তটবাসী বিদেহ মিথি নামে এক রাজা ^{ভিসেন।} গোতম্বছগণ তাঁর পুরোহিত ছিলেন। অঁরা ছিলেন ^{্দর বৈখানবের ভক্ত}। কোনো এক দিন এঁরা বৈখানবের **অন্ন**সরণ ^{ক্রতে} ক্রতে স্থানীয়া নদীর তীর পর্যস্ত এনে পৌ**হলেন।** বৈখানর ^{শ্বস্থান} করার রাজা মিথিও সদানীরার তীরে বাস করতে সাগলেন। তারা ষেধানে ব্যবাদ ক্রতে লাগলেন, সে ছিল সদানীবার পূর্বপার। সেই থেকে ঐ দেশের নাম হল বিদেহ অথবা মিথিলা। কালকেমে

এই স্থান পূর্ব ও পশ্চিম-মিধিলার বিভক্ত হবে বায়। এলেনবুগের এই মিধিলার পশ্চিম অংশই পরে বৈশালী নামে খ্যাত হয়েছিল; আর বৈদিক বুগের সদানীরা নদীই বর্তমানে গণ্ডকী নাম ধারণ করেছে। রাজা বিশালের প্রতিষ্ঠিত বলে এই নগরকে "রাজা বিশাল-কা-পাঢ়"ও বলা হত।

বরাহ, মার্কণ্ডের, নারদীর পুরাণে এবং শ্রীমন্তাগবত ও রামারণে বৈশালীর প্রাচীন ইতিবৃত্তের কথা লিপিবছ আছে। রামারণের আদিকাণ্ডে দেখা বার, দেব ও দানবেরা ক্ষীরদমূল মন্থন করবার জন্ত এখানে বদে মন্ত্রণা করেছিলেন। তা' ছাড়া দানবমালা তেজবিনী দিতি আপাল পুত্রদের নিঃশ্রুক করবার জন্ত দেবরাজ ইল্রের বধোপবালী পুত্র কামনার ঘোর ভপালা করেছিলেন। আর ভাঁর ভপালার হান ছিল ভাম-নিক্লবেরা প্রম-রম্ণীর এই বৈশালী। অবভা ইল্রের চাতুরীতে দিতির তপালা বার্থ হরে বার।

রামারণ অনুসারে রাজা বিশাল হতে বংশাস্ক্রমিক দশম এবং শ্রীমন্তাগবত অনুসারে সপ্তম নুপতি ছিলেন স্মতি। ইনি ছিলেন শ্রীরাষ্চন্তের সমসাময়িক। মহারাজ দশরথের অনুমতি নিয়ে মहायुनि विश्वामित रथन राजनामकारी साक्रमण्य नियन करव औसाय-লক্ষণকে নিয়ে মিথিলায় (জনকপুরে) বাইতেছিলেন, সেই সময় श्वविवद छारमवरक जातक नमीद निश्रं छ পবिচद बिरद्यक्रियन। ভনিয়েছিলেন, গলা, ব্যুনা, শোন ও কৌশিকী মদীর কথা। খবিরা বর্তমান হাজীপুরের নিকট গঙ্গার নৌকা চড়ে পার হরে বর্তমান রাষ্চ্রেডা নামক স্থানে অবভরণ করেন। আর এর ঠিক পাশেই প্রভাই নদী গলাবকে মিলিভ হছে। এই গগুফা নদীর ভটোপরে ভারা দেখতে পেয়েছিলেন বৈশালীর অভভেদী স্থরম্য সৌধরাজি। বৈশালীর দুখ্য দেখে তিনি মুগ্ধ হয়ে গিয়েছিলেন কিছ বে নদীভটোপরে এই স্থপাচীন বৈশালী বিহাজিত ছিল তা'ব কথা বামচন্দ্র জিজ্ঞানা করেননি আর ঋষিও অনেক নদীর পরিচয় **मिराइडिलान किन्छ अधको नमीय नाम अर्थन्छ करत्रनान। इंडा इंडेप्ड** অনেকে অমুমান করেন, হয়তো তখন গণ্ডকী নামের উৎপত্তি হয়নি। শতপথ ত্রাহ্মণ অবলম্বনে অবগ্য ইহা জানা যার বে, সদানীবা নদী কোলল ও বিদেহকে আলাদা করছে আবার রামারণ প্রভৃতি কাব্যে সর্যুকে কোশলরাজ্যের পূর্বসীমা বলা হরেছে। এর ৰাবা প্ৰসিদ্ধ পশ্তিত ডাঃ বেবর অফুমান করেন বে বর্তমানের সরযু অধবা গশুকীই প্রাচীন কালের সদানীরা। এই নদীর বিস্তার ছিল ৭০/৮০ মাইল।

বিশালনগবের পূর্বে ছিল পূর্ব-বিদেহ জার পশ্চিমে ছিল পশ্চিম-বিদেহ ও কোশলরাজ্য—এই উত্তর রাজাই ছিল বৈদিক-সভ্যতার কেন্দ্রক্রন। জার বৈশালী এদের মাঝখানে অবস্থিত থাকার অভুলনীর জীবৃদ্ধিসম্পন্ন হরে উঠেছিল। জার তাহাড়া স্টিনটি রাজ্যেই একই ইক্যাকুর্বনীর রাজারা রাজ্য্য করতেন। সেই সমর বৈশালীর রাজা ছিলেন স্ময়তি। ঋবি বিশ্বামিত্রের উদ্পৃতি হতে জানা বার, বৈশালীর সকল রাজাই দীর্ঘানু, মহাল্পা, বীর্ববান ও স্থার্মিক ছিলেন।

প্রাচীন যুগের বৈশালীকে কেন্দ্র করে কতকণ্ডলি পুরাণ-কাহিনী আজও অমান হরে আছে। এই স্থান কামাশ্রম নামে খ্যান্ড ছিল। আজ হতে চার হাজার বছর পূর্বে শিব-তুর্গার এই মিলনক্ষেত্রে মদন ভ্যান্ডিক হরেছিলেন। এই স্থানই ছিল দিভির পুত্র মক্ষতের জন্মস্থান। এই মকহ ও অক্সান্থানের ঘারা মন্দর পর্বতকে দশু করে পূর্বাগার মন্থন করা হরেছিল। গলা ও গশুকী সঙ্গমে অবস্থিত বৈশালীকেই পৌরাণিক "গন্ধকজ্ঞপের" যুদ্দক্ষেত্র বলে বর্ণনা করা হরেছে।

আৰু হতে থু:-পু: ২০০০ বছর পূর্বে মহেন-জো-দরোর সভ্যতার শেষভাগে অথবা প্রাক্-আর্ব্য সভ্যতার সমর উত্তর-ভারতের এক বিরাট অংশ কোনো রাজাদের বারা শাসিত হত না। বস্তত: নির্বাটিভ মহুবাই তথন দেশ শাসন করতেন। থু:-পু: ২০০০— ২১০০ শতাকীর মধ্যে ৬ জন মহুর বিবরণ পাওরা বার। আবার সকল মহুই একই বংশোভূত ছিলেন। পুরণ অন্থসারে বলা চলে, মহু ভাঁদের প্রিবাবের সময় ও ঘটনার কথা বৈশালীকেই কেন্দ্র করে প্রথম উল্লেখ করা হ্রেছে। আদিপিতা মন্থুর পরে বাজা নাভাগের বংশধরেরা রাজত করতে থাকেন সমগ্র উত্তর-ভারতে। আর এনের বিংশতিভয় বংশল বালা তৃপবিন্দের পুত্র অলম্বা নামক অপ্যার পর্ভলাভ রাজা বিশালই ছিলেন এই নগরীর প্রতিষ্ঠাতা। বা'হোক, এই স্থানে মন্থদের যে সব কাহিনী ছাড়িয়ে আছে তাদের আলোচনা করা হয়তো অপ্রাসন্তিক হবে না।

আদিমনুর প্রপৌত্র ভিলেন বিখ্যাত রাজা উত্তানপাদ। এঁরই দিতীয়া পদ্দীর গর্ভে উত্তম নামে এক পূত্র জন্মে। তাঁর সাথে বাভব্যা পরিবাবের বেহুলার বিবাহ হয়। এই বেহুলা ছিলেন অসামালা সুন্দরী। মহাবাক উত্তম তাঁকে খুবই ভালবাসতেন কিছ বেহুলার স্বামীর প্রতি কোনো অন্তরাগ ছিল না। ফলে মহারাজ তাঁকে নিৰ্বাসিত করেন। এই সময় এক কাণ্ড ঘটল। বিশালা নগরে সুশর্মন নামে এক ভ্রাহ্মণ বাস করতেন, তাঁর স্ত্রীকে বলাকা নামে এক রাক্ষদ চুরি করে নিরে বায়। তথন তাঁর মুক্তিয আশার ব্রাহ্মণ মহারাজ উত্তমের বাবস্থ হলেন। বলাকার কবল হতে মহারাজ বাভবলে আক্ষীকে উদ্ধার করলেন। বলাকা জাঁর বীরত্বে মুগ্ধ হরে বন্ধুত্ব স্থাপন করেন। আবার ঠিক এই সময়ই নির্বাসিতা রাণী বেছদা ও পাতালের নাগরাজ কপতকের ছারা হুতা হলেন। বাণীৰ ভাগ্য ছিল সুপ্ৰসন্ন, তাই নাগৰাজের কলা। নন্দা ভার মারের মঙ্গদার্থে রাণীকে লুকিরে রেখে নিজে বোবার ভাণ করে রইল। এই সংবাদ পেয়ে উত্তম অবিলয়ে বন্ধু বলাকার সাহাব্যে পান্তাল হতে বেহুলাকে উদ্বাব করলেন। এর পর হ'তে উভবে মনের স্থাধ বাস করতে লাগলেন। কিছুকাল পরে এঁদের এক পরমন্থদ্দর পুত্র জমে—তিনি পৌরাণিক ইতিহাসে দ্বিভীর মন্থ নামে খ্যাত।

মহারাজ উত্তানপাদের ভার এই বংশে জারও একজন রাজা ছিলেন, কাঁর বানীর নাম ছিল গিবিভজা। জানন্দ নামে তাঁদের এক পূত্র জয়ে। এই জানন্দই বঠ মছরণে পরিচিত। উগ্রহাজ-কভা বিদর্ভার পর্ভে উক্ত নামে তাঁর এক পূত্র জয়ে। জঙ্গাদি প্রখ্যাত রাজারা ছিল তাঁর পরবতাঁ বংশবর। এইরপে প্রথম মন্ত্র করেক পূর্কবের মধ্যে খবভ এবং তাঁর পূত্র ভরত রাজ্য করেন। খবভ বিমবর্ষের রাজা ছিলেন। তিনি অতি বৃদ্ধ বরসে ভরতকে রাজ্য দিরে বানপ্রস্থ প্রহণ করেন। এই সময় তাঁর প্রধান আশ্রম ছিল গোলগ্রাম। মহারাজ ভরতও বধাসমরে পূত্র স্মান্তির নাম ছিল শালগ্রাম। মহারাজ ভরতও বধাসমরে পূত্র স্মান্তিরে বাজ্য দিরে এই জাশ্রমে সম্যাস-জীবন অভিবাহিত করেন। প্রাণ্যুগের এই সব শ্বতিকধা আজও তাকে জময় করে রেবেছে।

বালীকি রাষায়ণ, শতপথ ত্রাহ্মণ, মার্কণের,
শীমণ্ভাগবভাদি পুরাণ, ডা: এস, সি, সরকার এবং রাহণ
সাংকুল্যাহনাদির প্রবন্ধ ও পৃত্তক।

[ঁ]কি সামাজিক, কি আগ্যাত্মিক, কি বাজনীতিক— সকল ক্ষেত্ৰেই বৰ্ধাৰ্থ ফলল স্থাপনেৰ একটিয়াত্ৰ পুত্ৰ বিভয়ান,—সে পুত্ৰ হইতে এইটুৰুজানা বায় বে 'ৰামি ও আমাৰ ভাই এক ।" — স্বামী বিংবকনিক।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর]

[সি, এফ, স্থ্যাণ্ডুক লিখিড 'What I Owe to Christ' গ্ৰন্থের ৰঙ্গানুবাদ]

যীশুখুষ্ট ও নবযুগ

শার সমগ্র জীবনের সবচেয়ে গুরুত্বপূর্ণ পরিবর্তনের দিন এল, বেদিন শেব পর্বস্ত কেম্বিজ মিশন জাতৃসংঘকে পরিত্যাগ করব বলে আমি মন স্থির করলাম। স্থির করলাম, কোনো বিশপের জ্বীনে নিদিষ্ট ধর্মধাজকর্ত্তি আর আমি করব না, জীবনত্রণীকে জ্জ্রাত সমুদ্রে ভাসিরে দেব বৃহত্তর ও মহন্তর পৃথিবীর সন্ধানে। বৈর্হীন হঠকারিতার সঙ্গে এই পদ্ধা আমি বেছে নিইনি। মানসিক অস্থিরতা ও সংশ্বের মধ্যে বহু বংসর কেটেছে। সমুশ্রে জ্ঞাসর হরেও শারীরিক কারণে আমি নিরাপদ আশ্রব্রের মধ্যে পশ্চাদপদ হয়েতি। কিছ হুদতটে আমার জীবন-প্রভুর সেই প্রভূষে মুহুর্তের ডাক বারে বারে আমার কানে বেজেছে,—প্রাণের মধ্যে বংকৃত হরেছে সেই আহ্বান, চলো চলো, জন্মুসরণ করো জনোকে। শেব পর্বস্ত সাড়া দিয়েতি সেই আহ্বানে।

শামার জীবনের এই পরিবর্তন সামাক্ত একটা ঘটনা মাত্র। সেই ঘটনার বিবরণ অকিঞ্চিৎকর। কিন্তু তার পূর্বে বতোদিন শামার অস্তরের অন্ধকারে পথ থুঁজে খুঁজে আমি কাটিরেছি, সিন্ধান্ত এবং সংশরের দোলার তৃলেছি, ভভোদিন শামার পরম প্রাক্ত থীতথুঠের বে মৃতি খামার অস্তর-দর্শণে অহরহ প্রতিফ্লিত হরেছে, সেই মৃতির পরিচয় আমি দিতে চাই। থুইর এই প্রেভিন্তুভির করেকটি প্রধান বেবা শালবাট স্থুইটজাবের প্রস্তে স্পষ্টরপে আমি দেখেছিলাম, কিন্তু পূর্ণিক চিত্রটি আমার নিজেরই দেখা। সেই মৃতি আমার অন্তপূর্টীর সামনে উন্তাসিত হয়েছিল, সেই মৃতির বিবরণ থেকেই বোরা বাবে কোন পথে আমি চলেছিলাম, কেন নিরাপদ আশ্রেরকে পরিত্যাগ করে অপরিচয়ের পথে পা বাড়িরেছিলাম, কে আমাকে জীবনের স্বচেরে বৈপ্লবিক সংকল্প গ্রহণের নির্দেশ দিয়েছিল।

বর্তদান শতাকীর প্রথম করেক বংসর বধন আমি দিল্লীজে ছিলাম, তথন দেখিছি এই ভারতবর্ধের চেহারা ঠিক বেন উনিশ শতাকী পূর্বেকার রোমক সামাজ্যের মতো। বাহিবে এক বিরাট নিভিন্ত সামাজ্যবাদী শান্তি, অছিরতার চিহ্নমান্ত চোথে পড়ে না সেই কঠোর শান্তির বাজতে। কিন্তু এই শান্তি নিতান্ত বাজ । মাটির নিচে আয়েরগিরির গহরবে বেমন সাভা-প্রবাহ কোটে, তেমনি এই শান্তির গোপন কলবে এক মহা জ্পান্ত অভ্যানা তীবণ প্রদাহে

টগবগ কবে কুটছে, কোথাও কোথাও মাটি কেটে ফুঁসে ফুঁসে উঠছে ছবজ আবেগে। লোকমুখে এব নাম জাতীর আন্দোলন,—কিছ আমার মনে হরেছে এই আন্ফেপের শক্তি ও বিস্তার নিতান্ত আন্দোলনের পরিচয়ে সমাবদ্ধ নর। আমি ছিব বুকেছিলাম, এক বিবাট মহাদেশবাপী মানবসমাজ এক ছন্তগৃঁচ সাধনার আবেগে মধিত হচ্ছে, সে সাধনা নৃতন ক্রপে নৃতন ধারার আত্মবিকাশ ও আত্মপ্তিষ্ঠার সাধনা।

মানবভার এই আত্মসন্ধানের নিগৃত আবেগ বাইবেলের আন্ত গ্রন্থে সম্পষ্ট বলিষ্ঠভার সঙ্গে চিত্রিত হয়েছে। স্টেপ্রের নিরাবরর অন্ধনার বিশ্লালার রাজ্যে পরমাত্মার অনন্ত স্ক্রনী শক্তির কী অনির্বচনীয় প্রকাশ। 'সেই চরাচরবিছীন অন্ধনার-সমুদ্রে পরমেশরের ম্পর্শ জাগল, ঈশ্বর বললেন, আলোকের জন্ম হোক। আলোকের জন্ম হোলো।'

বোম সামাজ্যের বাছিক শান্তি ও শৃথালার কোনো অভাব ছিল
না। কিছ গ্যালিলিও সমগ্র মধ্য প্রাচ্য তথন বিস্ফোরণের নিগৃঢ়
আবেগে স্পালিত হচ্ছিল। সেই সমরে থৃষ্টের আবির্ভাব হোলো।
মানব-সমাজের এই অন্তরিপ্রব গ্যালিলিতে ধর্মের পথে
অগ্রগতি থুঁজে পেল। ক্যালারেলের ভক্তণ স্তর্থর বীশু তাঁর
গভীর অন্তর্গৃত্তি মেলে মানবমনের এই বিশাল উৎকেন প্রশুক্ত করলেন, লক্ষ্য করলেন সমাজের মধ্যে নব নব শক্তির সন্ত জাগারণ।
অকুভোভরে ভিনি ঝাঁপিরে পড়লেন সেই বিক্তৃত্ব আন্দোলনের
মধ্যে—সেই আন্দোলনকে পরিচালনা করলেন স্বাহরাজ্য প্রতিষ্ঠার
পর্বে।

বীত একলা ছিলেন না। তিনি ছিলেন জননেতা, নিঃসঙ্গ পথিক নন। ঈশ্বরাজ্যের বোষণা তথনই ধ্বনিত হয়েছিল আর্তমানবের জন্তব-জন্ধকারে। ঈশ্বর জাসবেন, যুগে যুগে মানবাত্মার বিপদে তিনি বেমন এসেছেন, উদার করেছেন স্টেকে, তেমনি জাবার তিনি জাসবেন। গ্যালিগির দিকে দিগত্তের পথে প্রান্তরে সর্বমান্তবের মন এই জাশার উদ্ভ হয়েছিল। হাটের পথে বা সাদ্ধ্য সভার প্রামের চাবীরাও এই আশার কথা আ্লোচনা কর্জ।

এই বাস্তব পরিছিভির মধ্যে বাঁপিরে পড়েছিলেন বীও। এক বিপুল বুগনাটোর অবভারণা করে ভিনি বোঁবণা করেছিলেন উৎস্ক প্রাণের সেই মহা স্থান্থবাদ,—তিনি আগছেন, মুক্তির আর বিলম্ব নেই। ডাক দিয়েছিলেন তিনি অবজ্ঞান্ত নিপীঞ্জি সাধারণ মান্ত্রক। গ্রামের কৃষক আর হ্রনের বীবরদের মধ্য থেকে তিনি বেছে নিমেছিলেন তাঁর তরুণ শিব্যগোষ্ঠী। বীক ছিলেন সমর্থ যুবা, ভার শিষ্যবাও ছিলেন বলিষ্ঠ ভরুণ, পরিশ্রমী ও ক্ট্রসহিষ্ণু। মন্ত্রান্ত্রদর কর্ষণ করবে ভারা, ভারা হবে—মন্ত্র্যভাগ্য-জলবির নিঃশকে বীবর।

ভক্ন হোলো বীতর অভিযান। অক্ষ পেল দৃষ্টি, রোগাঁ পেল পরিত্রাণ। অবমানিত দরিদ্রের কানে ধ্বনিত হোলো মুক্তির মহাখাল। ঈশবের নবরাজ্যের ফর্ণসিংহ্বার ঐ বৃঝি দেখা বার! ঐ বৃঝি নবজীবনের ইশারা। ভক্ষণ ভক্তগণের বাঁধনছেঁড়া উন্নাদনা। পুরাতনের অর্গলকে তারা খলার, সংকারকে তারা পালে ছুঁড়ে ফেলে জয়বাত্রার উন্নুক্ত পথ থেকে। জীবনে লেগেছে নব জোয়ার, চেতনার ও আদর্শের নব নব রূপ তারা স্থাই করে চলে। ঈশবরাজ্যের আনক্ষর্থা অস্তর পরিপূর্ণ করে উপছিরে পড়ে,—প্রাচীনের ছিল্লভিন্ন জীর্ণ বদনকে পরিত্যাগ করে উৎসবের নবীন রভিন পোষাকে সজ্জিত হয় মামুয়। বৌবনের অমিত বলিষ্ঠতার মুক্তির এই অভিযানে সন্মিলিত আকাজ্যার নেত্র গ্রহণ

করেন বীও। এই दिপूत्र सानसनारिंग्र धानीख চलिकुकांत मरश्य धार्थम বেদনার ছায়া পড়ল, যখন মৃচ শিশুর মতো ভথাক্ৰিভ পশিত আর ফ্রীশীর দল ছোনো আহ্বানে কর্ণণাত ক্মল না, প্রাচীন कोर्व शादनात्क चौकिए शदत पूर्व किविदत वहेन अकशाल, নবজীবনের উভাদিত ক্রীড়াঙ্গনে জনগণের সঙ্গে এসে বোগ দিল না। বাবে বাবে ভাদের ডাকলেন সাধু জন, ডাকলেন প্ৰভূ যীও নিজে,—কিৰ ঈশব-বাজ্যের প্রম সভ্যের আহ্বান তাদের নিরুদ্ধ অস্তবে কোনো সাড়া জাগাতে পারল না। যুগ-স্কিত সংস্কারের স্তৃপ পাধ্বের মতো ভাদের বুকে বসে আছে। আভিডে:দর সংকীর্ণভায় ভাষা আবন্ধ, ভাদের অন্ত চৈত্ত বিবে স্কৃতিভেত্ত শৌরাণিক অন্ধকার, সেই অন্ধকারে নবাকণের আলোক-ম্পানন জাগে না। অন্ধ প্রকার অন্ধ বাজাব মতো তারা জন্ধকারে ঘুরে বেড়ায়, মূর্ৰ আস্মানরে ভাবে বে জ্ঞানভাগুরের চাবি বুরি ভাবের হাছেই আছে। সে চাবি চিরকালের মতো ভাবের বছযুট্ট থেকে কবে খদে পড়েছে ভা ভারা জানেও না।

কিছ বীত ও তাঁব শিষ্যবা বোবনের অক্তোভর অভিবানে অগ্রস্ব হয়ে চলেছেন। মৃত অতীতের মলিন চাঁর থসে পড়েছে উানের দৃগু অঙ্গ থেকে। তাঁরা নবীন মুগের প্রতিভূ। ঈশ্বরের রাজ্যে নৃতন শক্তি নবোগাদনার ক্ষুবদ লক্ষ্য করে বীতর উল্লাসের অবধি নেই। এই নবমুগের বাতাসকে হয়ন্ত অটিকার মতো দিকে দিগন্তারে বিভ্তুত করতে বীত চান, এই নবমুগের নবীন বিশাসীদের তিনি সাঞ্জনে আহ্বান করেন। একবাও তিনি বলেন, বারা ছদ'াম, স্বর্গরাজ্য তাদেরই, শক্তির ঘারা এই রাজ্যকে জন্ম করতে হয়। পুষ্টের এই বাণী বোবনের প্রতি বোবনের আহ্বান। স্মুবে জীবন-মরণের লড়াই, হর জন্ম না হন্ন প্রাজন্ম, হর আলোক না হন্ন আহ্বার।

বীও পৃষ্ট নব বিখাসের বে অভিবানে আগুরান হলেন, সেই অভিবানে অন্তরপ্রাবী আনক্ষ ছিল পাথেয়। মৃত্যুপণ জীবনলীলা এই অভিবান, এ বেন এক বিবাহ-উৎসব। বাঁশী বালছে, চলেছে ব্যবাত্রীদের শোভাবাত্রা। এসো এসো, বিলম্ব কোরো না কেউ। অনিত হচ্ছে আশার গান, চোধ কান বন্ধ করে উপবাসী মন নিয়ে দূরে সরে থেকো না কেউ। আজ উৎসব-ভোজের দিন, উপবাসের দিন নয়।

উপবাস করতে হবে বৈ কি, সইতে হবে অনেক বন্ধা। আথাছভির বন্ধা-শিহবিত আসম মুহূর্তও ব'ত তাঁর দিবাদৃষ্টিতে দেখেছিলেন। এই বেদনা এই আথদান ঈশবরাজ্য প্রভিত্তারই ভিত্তি। কিন্তু সেজনা হংগ নেই, ভম্ন নেই। প্রথ আপুক হংগ আপুক, বন্ধা আপুক আনন্দ আপুক, ভাগ্যে জুটুক আহার বা অনন্দন, ভক্তের কঠে নিত্য ধ্বনিত হোক পিতার নাম, অর্থবাজ্যের মতো মর্ভভূমিকেও প্রতিতিত হোক পরম পিতার সিংহাসন। বিভ্রুবনে বিস্তৃত হোক তাঁর একছত্র সামাজ্য।

এই নাটকের প্রমতম ঘটনা, শ্রেষ্ঠতম সংলাপ বীশুর একটি কথা একটি ডাক। পিতা বলে তিনি ডেকেছিলেন ঈশ্বরকে, এই ডাকই নব্যুগের নববিধান। নিপুণ স্থাকার বেমন তাঁর বীণাবান্ত্র একটি বাগিণী বাবে বাবে বাজান, থেলাছলে রাগিণীর মধ্য থেকে সমুক্রসঙ্গীতের স্থাষ্ট করেন তেমনি বীশু নান। ভাবে নানা মূছনার ঐ 'পিতা' নামটি উচ্চারণ করেছিলেন, এক স্থানম্ভ গৌরবে মহিমাধিত করেছিলেন ঐ নাম।

বীও অপেকা এই আহ্বানের মহন্তর অধিকারী কে ? তাঁর মতো করে ক্ষারকে পিতা বলে আহ্বান করতে আর ফে পারে ? বীওরই মধ্যে লিও মানবাত্মার প্রেষ্ঠ প্রকাশ, বে লিও নির্ভীক ও নিত্য বিশ্বত দৃষ্টি মেলে ঈশবের স্থাইর দিকে তাকায়, বে লিও সরল বে লিও সত্যকাম, অকুঠ আহা ও সহজ্ব সাহসে বে লিও প্রহার চরণে প্রধামিত। বে লিও তার সহজ্বাত অমুভূতি দিরে জানে বে এ সংসার ক্ষার, কেন না এ সংসার তার লিভার স্থাই। পিতার প্রাসাদে সে জন্মছে, কতো বিচিত্র হর্ম্য, কতো মনোরম প্রকোঠ এই প্রাসাদে, এ কী মনোরম তার আশ্রয়! পিভার প্রতি শ্রমার ও প্রেমে আপ্লাপ্ত তার হাদয়, স্থির বিশ্বাসে সে পিতৃ-আ্রা

পরমণিতাকে বীও বেমন জানেন তেমন জার কেউ জানে না।
পরমণিতার মহিমা বীও বেমন প্রকাশ করতে পারেন, তেমন জার
কেউ পারে না। যাওর এই শক্তির মূলে রয়েছে তাঁর জাশর্ষ
জন্মরহন্ত। বীও ও তাঁর শিতা, তাঁরা ছজনে এক। পরমশিতার সাক্ষাং পুত্র তিনি, এ কোনো হছকথা নয়, এ কোনো
পণ্ডিতের তর্কের বিষয়বন্ত নয়, এ উপলব্ধির কথা। ভিনি প্রমশিতাকে ধ্যানোপলব্ধি করেছেন, পরমণিতায় অভিজ্যের মধ্যে
বিজীন তাঁর অভিজ্য, কী চরিত্রে, কী ইছোর, কী সাধনার বীও ও
পরমেশরের মধ্যে কোনো জনৈক্য নেই।

এই উপলব্ধির মধ্য দিয়ে যীও জগৎ-সংসারের স্^{ন্তু(ব} পরমেশবের বে রপ প্রকাশ করেছেন তার তুলনা নেই। স্টেক^{র্ত্তা} সম্বন্ধে পূর্ববুসের সমস্ত ধারণা ও সংকারকে ধূর করে এক প্রমান্চর্ধ ধর্মবিশাদের প্রভিষ্ঠা করেছেন হীত । মানব ভাবনার এই বে প্রিবর্তন,—এ প্রিবর্তন এতো মৌল্ক, এতো উদার অধ্চ এতো সহজ ! ধৃষ্টীর ধর্ম পূর্বতন ধর্মবিকাশের চর্বিক চর্বণ নর, এই ধর্মে মানব-ইতিহাদের এক-নবীন অধাায়ের সূচনা।

क्त मा, बील शह रचायना करविकालक - देशरवर हरिख निक চবিত্রের মজোট সরল, অস্তব বাদের পবিত্র ভাষা ভাদের ধ্যান-দৃষ্টিতে উখবের শিশুরপই দেখতে পার। শিশুর মতো নিক্সুব বার চবিত্র, সেই কাভ করে ঈশ্ব-সন্মিধ। ঈশবের রাজ্যে সেই পাছ প্রবেশাবিকার। এই রাজ্যের নামই অর্গরাচ্চা। বলেছেন,—'বজেগদিন ভোমাদের মনের পূর্ণ না পহিবর্তন ঘটে, বভোদিন না ভোমবা ফুল্র শিশুর মতো इ. छट्टामिन किन्नुट्ड छामवा चर्तवाल्यां ब्यारमादिकात भारत मा।' भारक स्मांटक मा त्याद्य काहे यह देशएमम विमि वाद्य वाद्य विद्य वर्ष्यक्रम, कांग्रे हुछ, अवस्र कृद्या নিজেকে; যে এ ফুল্ল শিশুটির মতো অবনত, সেই পাবে স্বর্গরাক্তো সর্বোচ্চ স্থান। আবায় ভিনি বলেছেন,— এ কুন্ত শিশুর মতো না হলে লে স্থারীক্ষা লাভ করবে না, দে করবে না আর কিছতেই।

আমরা সকলেই জানি, শিশুদের মধ্যে সংস্কাবের কোনো বাধানিবেধ দেই। অর্থিস ভাঙার সরলতা শিশুদের মধ্যেই আছে। ঈরুরের সংভার কেন্দ্রেও এই সংবারবিহ্নীন সারল্য। আধুনিক যুগের বিবাট বস্তুতান্ত্রিক প্রগতি বেমন বিজ্ঞানের করেকটি অভি সরল পুর ধেকে বিসর্পিত হয়েছে, ভেমনি এই অসীম আব্যান্মিক জগৎও ঈরুরের অতি সহজ্ঞ ও অবিনশ্ব সভ্যের উপর প্রাভিত্তি। এই সভ্যকে বীশু মানবজীবনের বাস্তুবভার সন্মুপে উদ্বাতিত করেছেন।

বীও এই আশর্ষ সত্য প্রচার করেছেন বে, বেমন স্বর্গরাজ্য তেমনি ঈশর। স্বর্গরাজ্য সরল লিওদের প্রবেশাধিকার সর্গরে। ঈথরও এই লিওফুই মতো সরল। লিওরই মতো তিনি সহনশীল, শিওরই মতো তিনি আস্থানমর্শিত। তিনি নক, তিনি নম। ভক্তের স্থায়েক তিনি বখন বাচ্ঞা করেন, তথন তাঁর নমভার অন্ত নেই। ভক্তের জন্তে তিনি প্রতীক্ষা করে থাকেন, অনন্ত সহিষ্ণ্ এই প্রতীক্ষা। তাঁর স্বচেরে বিজ্ঞাহী স্ভানদেরও তিনি শাসন করে বলে আনতে চান না। প্রেমেই তাঁর শাসন, প্রেমেই তাঁর অর।

বিশ্বগামী সন্তানের প্রতি তাঁর কী আন্তর্ম মধ্ব ব্যবহার !
কী প্রেম, ভিতিক্ষা ! পুত্র আবার গৃহে ফিরে আদছে এই সংবাদ পেরে পিতা ছুটে বার ছলেন পথে। এখনো অনেক পথ বাকি, পিতা সেই পথ পার ছলেন গৌড়তে দৌড়তে। স্নেহালিসনে প্রকে জড়িরে ধরলেন বৃকে। না, না পুত্র, অপরাধ স্বীকার করতে হবে না, অম্তাপ করতে হবে না, বা ঘটেছে তা মৃত অতীত, অতীতকে ভূলে বাও।

সত্যই ৰীণ্ড বলেছেন, অনুভগু পাপী বেদিন পিতৃগৃহে ফিরে আসে সেদিন অর্গরাজ্যে মহা উৎসবের দিন।

ঈশবের অনুকল্পার সীমা নেই, ক্ষার সাগর তিনি। এই ক্ষার কণাটুকু মাত্র মানুহ তার হাদরে ধারণ কঞ্চক। হীত বলেছেন,— ধারা ভোমাকে গুণা করে তাদের কল্যাণ করে। বারা ভোমার সঙ্গে মন্দ ব্যবহার করে, ভোমাকে অভ্যাচার করে তাদের জন্ম প্রার্থনা করে। ভবেই ভূমি প্রমণিভার উপযুক্ত সন্ধান হতে পারবে। ভালো ও মন্দ, উভয়েরই মাধার ইমরের সূর্য কি ওঠে না ? সং ও অসং, উভয়েরই শিরবে ইম্বরের বর্ষা কি বারে না ? প্রমেশ্ব সর্বক্রটিহীন, স্ব্দোবহুর তিনি। ভোমাকেও হতে হবে ভোমার পিতারই মতো।

থমন সহজ্ঞ ভাবে ইশ্বা সহজে এই সব কথা বহুতে বীশুর পূর্বে থার কোনো মানব-সন্তান সাহস করেনি। কিন্তু ঈশ্বের এই ধ্রে সহজ্ঞ সরল প্রেমবিহ্বেল চরিত্র, এই চরিত্র নিষেষ্ট স্বাহ্বির মন্মুলে ভিন্নি আসীন। তিনি উপলাজি-পারের দ্ব-দ্বাংস্তার উপাসীন স্থাইকার্তান না একটি পানীর মৃত্যু-বেংনা তাঁর প্রোণে স্পাদ্দত হর, একটি মাহুবের মাথার কটি চুল ভাও ভিনি গুণে রেকেছেম। ভাই বধ্যম মথার মাহুব তার অন্তরাপ্রার জমোগ আহ্বানে পুরাতনকে ধর্ম করে নবীনের অভিযানে আগুরান হয়,—সে আহ্বান ঈশ্বরেরই আহ্বান। সেই আহ্ব ন স্থাইর প্রথম বাণীর প্রতিধ্বনি, বে বাণীর নির্দেশ্য চরাচরবাপী অন্ধাবের গর্গে আলোকের ক্রম হরেছিল। সে আহ্বানে যারা অবিধাস করে, তা ঈশ্বরের স্থাই-প্রভিভাকে অ্যাকার করে, আলোককে অন্যাকার করে অন্ধানার করে, আলোককে অন্যাকার করে অন্ধান এই ভবিষ্যুক্তের পথ নির্দেশ। এই ভবিষ্যুক্তের পথ নির্দেশ। এই ভবিষ্যুক্তের স্বাহ্বান হতে হয়।

ঈশবের স্থিতীলার ছেদ নেই। পুরাতনকে তিনি নবীন করেছেন, মৃতকে তিনি সন্থীবিত করছেন পুনক্জীবনের মন্ত্রে। মাসুবের মধ্যে বে ক্রমবর্ধ মান নিতা-ভাগুরান শিশুমন ভাছে সেই মন তাঁর ভাগন মনের ভাবেগে স্পিল্ড হোক, এই তাঁর ভাতলার। এই শিশুমন নিয়ে বখন তাঁকে পিতা বলে ডাকি, তখনই তাঁর মনে মন মিলাই, তখনই তিনি চবিতার্থ হন।

ঈশবের এই প্রম-শুভ নব-আহ্বানের প্রমাণ বদি আমরা চাই, দার্শনিক তত্ত্ব ও তর্কের বাগাড়বরে যীও সেই প্রমাণ দেননি। প্রমাণ জাঁর জীবন। ঈশবের বাগাই তাঁর জীবন। তাঁর জীবন দিরেই তিনি তাঁর প্রমাপিতার সেই আহ্বানের সত্য প্রমাণ দিরেছেন। তাঁর নিজের পার্থিব জীবনে প্রতি মুহূর্তের পরীক্ষার মধ্য দিয়ে তিনি সত্যকে উদ্বাটিত করেছেন। এই পরীক্ষার পথে কোনো বাবা কোনো বিপদকে তিনি মানেননি। এই পরীক্ষার চমম আ্যানিবেদনের অটল সংকল্প তিনি গ্রহণ করেছেন। মানুষকে কোনো মহৎ বিখাসে উদ্বুদ্ধ করতে হলে সে বিখাসের জন্ম জীবন নিবেদন করতে হয়। বীও তা করেছেন।

বীত্ব এই দৃঢ় প্রতার আর সাধাবণ মান্নবের স্থলত ভবসাবাদ এক নর। তিনি জানতেন, জীবনের প্রতি মুহুর্তে জানতেন, বে চরম মূল্য তাঁকে দিতে হবে। তর ঈশ্বপুত্র হয়েও জন্তবে অন্তরে তিনি মানুহ, ভাই আলংকাকেও তিনি গোপন করভে চাননি। চরম বন্ধণার মুহুর্ত বধন খনিয়ে এল, তথন তাঁর নির্তীক আন্তর্গুণ শিহ্বিক হোলো,—পরমণিতার উদ্দেশ্যে আর্থ নিবেহন শ্বনিত হোলো,—'হে পিতঃ, ভোষার ঘারা সকলই সম্ভব, এ পানপাত্র সরাও তুরি ভাষার মুখের সামনে থেকে।'

আবার বেদনার অবসানে শক্তি বধন ফিবে এল তথন তিনি মহান কর্তু থের সঙ্গে পিটারকে বললেন, 'থাপের মধ্যে পূরে ফেলো তোমার তরবারি। বে পাত্র পিতা আমাকে দিয়েছেন, তার পানীর আমি পান করব না।'

এক নি:খাসে শেষ চুমুক পর্যন্ত পান করলেন বীও।

ধর্মপ্রত্তে খেত পাধ্রের পাত্র ভাঙার একটি কাহিনী আছে। তথ্ন নিস্তার সপ্তাহের প্রায় অবসান, বীশুর চরম আম্মুদানের ক্ষণ খনিয়ে এসেছে। সেই আসম প্রহরে বীশুর মনোভাবের পরিচর এই কাহিনীর মধ্যে মেলে। মহার্থ গলজ্ঞাপুর্ব খেড পাধবের ক্রম্ব পাত্রটি চূর্ণ করে এক নারী বীশুর মন্তকে সুগন্ধি তৈল মাৰিয়ে দিল। পাত্ৰটি চুৰ্ণ হবার সঙ্গে বীশুর মনে হোলো তাঁৰও মুক্তা খনিরে এলেছে। অগন্ধি আসব লাভ করতে হলে বেমন নিক্তৰ প্ৰস্তৱ-পাত্ৰকে চূৰ্ণ কৰতে হ্ব, তেমনি তাঁৰ মৰদেহকেও চূর্ণ করতে হবে। তবে না তাঁব অস্তব-সংভি ব্যাপ্ত হবে দিকে बिटक। एक नातीय थेई व्यवनान मक्ता करत ये तनलान,-'আহা, এ আমার প্রতি ভতি সংকার্য করেছে, আমার দেহে এই ত্মপদ্ধি ভৈগ ঢেলে আমার সমাধির উপবোগী কাজ করেছে। বিরক্ত ভক্তর। অফুটসবে অনুবোগ কবল, এ বে অপব্যয়। এই অপব্যৱ কথাটি বীশুর মর্মে গিয়ে বিবল। না, না, অপব্যৱ নয়। তাঁর ছিণাহীন আত্মদান, ভাও অপব্যয় নয়। নারী ঠাঁব পুশা অনুভূতিশীল মন নিয়ে তাঁর প্রাণের কথাটি বুঝি ঠিক বুঝেছে ! স্পর্শকাতর অন্তরের কোমল অন্তুভি দিয়ে প্রকাশ করেছে ওঁ.রই আভারের বেদনা। কিছুনাভেবে মুটিমাত্র সঞ্চর নাকরে উদার হাতে त्रव किंदू विनिद्य त्रख्या, ध का चनवाय नय-नेत्रवजूज योख नान করেছেন তাঁর জীবন, বিলিয়ে দিয়েছেন তাঁর সন্তা, কুলের কাঠে চুর্ণ করেছেন তাঁর দেহ—পুরুষের বলিষ্ঠতার আর নারীর্য়অকুণ্ঠ দাক্ষিণ্যে।

ক্ষারও কিছুই রাখেন না। তাঁর উনার কল্যাণ-আশীর্বাদ তাঁর জনীয় কল্লা তিনি আত্মহারা আনন্দে মনুব্যসমান্তে বিতরণ করেন, এই সত্য বাও পাথিব নরনারীর প্রাণে জাগ্রত করতে চেরেছেন। বাও বেন কবি, বাও বেন লিল্লা, সমগ্র জীবন বরে শিল্লঘমা প্রেরণার তিনি নিজেকে ব্যাপ্ত রেখেছেন, অবিধাদীর জনমনীর প্রস্তর-কঠিন মনকে ক্ষরুরের প্রেমশ্রণাত্র উপবোগী নমনীর করে গেছেন। যে মন জনড় নিজ্ঞাণ, সেই মনকে জাপন প্রাণান প্রথম করেছেন, ভাস্কর বেমন জবরহান জড়পিও থেকে রূপস্থাই করে। কবি বেমন কাব্য রচনা করে, শিল্লী বেমন বীণার ভোগে প্রবের লহরী, তেমনি তিনি রচনা করেছেন মহান জীবনকাব্য, তেমনি মানবভাগ্য জুড়ে তিনি বহিরেছেন জনির্হনীর স্তর-মন্থাকিনী। বাওর এই স্ক্রীলা আমবা বান্তব ইলির দিরে উপলব্ধি করিনে, জন্তর দিরে অনুভব করি। মানবভাগ্য পুরজ্বের সভ্রত্ব করি।

ঈশবের কল্যাণ স্পর্শ কেবল মাত্র কোমল নয়, অভাবের মুখোমুখি এই স্পর্শ বজনটিন। বীশুর প্রেম শিখিল ভাবালুভা ময়। এ প্রেম কথনো বা ব্যথার মতো, ব্যথার মতো। মধ্য আফ্রিকার আালবাট সুইটজারকে বছ সমর তীক্ষ ছুরিকার আবাত দিরে শল্যচিকিৎসা করতে হয়। সেই আঘাত কেবল মাত্র ক্ষত স্থাই করে না, কতের গভীরে প্রবেশ করে ব্যাবির মূলকে নির্মূল করে ক্ষতকে সারিয়ে তোলে। ঈশ্বের করণাও একই প্রকারের। এই করণা বেদনাকে ধ্বংস করবার ক্ষতেই বেদনা হানে। এই ক্ষত প্রম বন্ধুর বিশ্বস্ত ক্ষত।

ঈশবের এই কঠোর প্রেম উপলব্ধি করেছিলেন সাধু পল। হিন্দগণের প্রতি পত্রে ভিনি লিখেছিলেন,—'প্রত্ বাকে প্রেম করেন তাকেই তিনি শাসন করেন,—বে পুত্রকে তিনি গ্রহণ করেন, তাকেই তিনি প্রহার করেন। ঈশবের শাসনকে বিদ সম্থ করেন, তাহলেই হবে ঈশবের পুত্রোপম। পিতা বাকে শাসন করেননা, এমন পুত্র কোধার ?'

বীওও বলেছেন,—'বে সমস্ত তক্ন তাঁর পিতা রোপণ করেননি, সেই সব ওক্ককে নির্দ্ করতে হবে। এই সংসারে অভার ও পাপের উৎস চেতনার গভীর অন্ধকারে, পাপের রহস্তকে যুক্তিতর্কের সোভা কথার ব্যাল্যা করা বার না।' আশ্চর্ম, উপমার সাহাব্যে প্রভূ গুষ্ট এই পাপের অবসানকে চিত্রিত করেছেন। গর্ভিনী নারীর প্রসব্বর্ষণার আনক্ষমর অবসানকে তিনি চিত্রিত করেছেন, ওছ তৃণকে পরিত্যাগ করে হেমন্ত-ক্ষেত্রের সোনার কসল সংগ্রহের ছবি তিনি এক্ছেনে, বীজের মৃত্যুর সঙ্গে সংস্কে ফ্লের জানের গান তিনি

বীণ্ডর প্রাণ ছিল কবির প্রাণ, তাঁর প্রকৃতিতে ছিল কবির অন্নত্তি। নিজেরই অভাতে কথনো তাঁর মন হোতো হর্ষোল্লাসে উৎফুল, কথনো বা হতাশ বিষয়ভার ক্রিয়মাণ। এইখানেই তাঁর মানবংঘর পরিচর, মামুষেরই ছংখ-সুখে আপ্লুত ছিল তাঁর হাদর। তাঁর স্কেনী-প্রতিভা ছিল বিশাল, নির্ভীক ক্রন্তভার সঙ্গে সঞ্জের আকাশচুমী সৃষ্টি তিনি করে গেছেন, একমাত্র শিল্পীর ছর্দমনীর আবেগেই তা সন্তব। বে আশ্চর্য পূর্দৃষ্টির ফলে তিনি মানব-ভাগাকে প্রদীপ্ত ভবিষ্যতের পথে আকর্ষণ করে নিরে গেছেন, সেই দৃষ্টি অলম্ভ শিলার মতো। সে দৃষ্টিশিখার দিকে চোধ রেখে আমানের ইন্দ্রির ব্রিরাম্যতে অন্ভ হয়ে বার। কিছু সেই অনভ্যে প্রোণ সঞ্চার ক্রেন তিনি। তিনি দেখেন, তিনি কাক্ষ করেন, মানব ঐতিহ্নকে তিনি গঠন করেন নৃতন রূপে।

শিষ্যবৃংশ্বর প্রশ্নীবর্তনে তাদের সঙ্গে জারের জানশে উল্লাসিত হরে বীশু বললেন,—'আকাশ থেকে বজ্র বেমন খলে পড়ে, তেমনি জামি শরতানকে খলে পড়তে দেখেছি।' ঈশ্বকে উদ্দেশ্ত বরে তিনি বললেন,—'পৃথিবী ও হর্গের একেশর হে প্রমণিতা, জামি তোমাকে বল্পবাদ জ্ঞাপন করি, কেন না বারা প্রবীণ, বারা তথাকথিত জ্ঞানী, তাদের কাছে না প্রকাশ করে শিশুর কাছে নিজেকে প্রকাশ কংছ তুমি।'

আবার এক সম্পূর্ণ বিভিন্ন মুহুর্তে তাঁর মনের পরিবর্তন আমর। লক্ষ্য করতে পারি তাঁর ক'টি কথার,—'আমার মনে ছঃথের শেব নেই, মৃত্যুতে বে ছঃথের সমান্তি।'

কথনো হতালা, কথনো আলা, কথনো আনন্দ, কথমো বিষয়তা
—মনের এই আলো-জন্ধকারকে বীও আমাদের কাছে চেকে রাণেন

না। শিশুর মজো সরল তাঁর স্থায়। বধন বা তিনি অভ্তর করেন, তা তিনি অকপটে প্রকাশ করেন। তবে মনের দাস্য তিনি করেন না। সঙ্গীতশিলী বেমন প্রতিটি বংকারকে আরত্ত রাঝে, তেমনি আপন মনের প্রতিটি অভ্তৃতি তাঁর আরত্তাথীন। নিপুণ গীতকারের মতো ছোট-বড়ো বাদী-স্থানী প্রত্যেকটি শ্বর ব্যবহার করে তিনি মহাস্থাত ত্থলন করেন। জীবনের সর্বপ্রকার অভ্তৃতি দিরে তিনি পরিপূর্ণ করেছেন নিজের জীবন, এমন কি বধন ক্র্শাভিছ হরেছেন, তথনো কোনো বেদনা-নিবারক ঔবধ তিনি চাননি। তিনি খোষণা করেছেন,— নাম্য বাতে জীবন লাভ করে, বিচিত্রতর বিভ্তুতর জীবন, তাই আমি এসেছি।

চরিত্রের এক অপূর্ব ভারসাম্য ছিল বীণ্ডর। কথনো আনক্ষ কথনো বেদনা,—কিছ এই ছুই-এর মধ্যে সমতা রক্ষা করে চলেছে আছা। জীবনের বা গভীর এখর্ব,—তার মহার্যতা নেই, তা সরল তা মৌলিক। এই গভীর এখর্বের কথা বীণ্ড তাঁর অনবত্ত ভাষার প্রকাশ করেছেন,—ভাই তাঁর বাণী চিরকাল মায়ুবের অন্তরে জাগরক থাকবে। সেই জন্তে তাঁর বাণী ভিল্ল ভাষার অনুদত হরেও সমস্ত ভিল্ল ভিল্ল জাতির অন্তর স্পার্শ করে। মানবহাদর তার মহার্যতম মুহুর্তে বে বাণীর প্রত্যাশা করে, সে বাণী বীণ্ড খুটের বাণী।

শান্তিনিকেতনে কবি ববীক্রনাথ ঠাকুবের জ্যেষ্ঠ জাতা থিজেজনাথ গৃষ্ঠবাণীর জালোচনা প্রসঙ্গে এই কথাই জামাকে বলতেন। থিজেজনাথ ছিলেন বৃদ্ধ দার্শনিক ও ঋষি,—বৌবনকালে তিনিও ছিলেন সংগ্রুক কবি। তিনি গুবু ববীক্রনাথের নয়, জামাদের সকলের জ্যেষ্ঠজাতা ছিলেন, তাঁর পরিচিত জাময়া সকলেই তাঁকে বঙ্গাদা বলে ডাকতাম। তিনি হিন্দু ছিলেন, কিন্তু পরধর্মের প্রতি উনার্ব ছিল তাঁর বিশিষ্ঠ জন্তর-ভূবণ! তা ছাড়া তাঁর মন ছিল শিশুর মতো। দার্শনিক হিসেবে তাঁর জান ছিল গভীর, বিভা ছিল জনীম। বৃদ্ধ বয়সে তিনি প্রতিদিন খন্টার পর খন্টা জন্ধ হয়ে বারাজার বসে থাক্তেন,—পাথী আর কাঠবিড়ালীরা নির্ভয়ে তাঁর জালেপালে থেলা করত। এই ভাবে নিন্তর গ্যানের মধ্য দিয়ে তিনি তাঁর মরজীবনকে পরিসমান্তির পথে নিয়ে চলেছিলেন। এই শেষ জীবনে প্রশান্ত পরিবেশের মধ্যে নীয়ব সাধনার তিনি কালাভিপাত করতেন,—এই সাধনার তাঁর আত্মা ঈশ্ব-সামীপ্য লাভ করত।

প্রণাঢ় জানের অধিকারী হয়েও সারল্য ও বিনয় ছিল তাঁব অভব-ভূবণ, বধন বে কথা তিনি বলতেন সেকধার সত্য উড়াসিত হোতো। প্রতিদিন স্থান্তকালে সাথা দিনের মতো সামার আহার সাক্ত করে তিনি আমাকে তাঁর কাছে ডাকতেন। সারাদিন বতো প্রকার চিন্তা তিনি করতেন দিনাস্তে সেই সব চিন্তাকে তিনি প্রথিত করে আমার হাতে দিতে ভালো বাসতেন। জীবনের শেষ কর বৎসর তিনি কেবলই 'সার্মন অন দি মাউট' পাঠ করতেন ও এই ধৃষ্টোপদেশের সারাৎসার নিয়ে আলোচনা করতেন।

ছিলেক্সনাথ একদিন আমাকে বলেছিলেন, 'বীশুর এই উপদেশাবলী আমার থাত আমার পানীর। বীশুর বাক্য এতো সরল সে শিশুও তা বুরভে পারে, কিছু আবার অস্তানিহিত অর্থে নে বাক্য কতো গভীর। উপনিবদের মতো পৃথিবীর মুট্টমের মহাসাহিত্যের অন্তর্ভুক্ত বীশুর এই বাক্য। কভো বড়ো স্পর্কান্তরে বীশু বলেছিলেন, আমার বাক্য কথনো মুছে বাবে না। কতো বড়ো সন্ত্য কথা ভিনি বলেছিলেন। সত্যই অবিনয়র তাঁর বাক্য। দিনের পর দিন তাঁর বাণী নিয়ে আমি চিন্তা করি, গভীর রাত্রের নিজাহীন প্রহরে তাঁর বাণী আমার অন্তরে এসে বাজে। তাঁর বাণীর ব্যাখ্যার অন্তে কোনো টীকার প্রয়োচন নেই, অথ্য ভাদের অন্তর্গু অর্থেবন্ড কোনো সমান্তি নেই। বীশুর বাণীতে সেই সভ্যের স্থানিক আছে বা মানুহকে চিরদিন পর্য দেখার, স্ত্যুর অক্ষরারকেও অপনোদন করে।

ৰীণ্ডৱ ৰে বাণীটি বিজেজনাথের সবচেয়ে প্রিয় ছিল ভা হোলো এই,—

'অন্তর বাদের পবিত্র ভারা ভাগ্যবান, কেননা, ঈখরের দর্শনলাভ ভারা করতে ।

এই বাণীর পরম সম্পূর্ণতা তাকে চরম তৃত্তি দিত,—ভিনি বারে বারে এই বাণী উচ্চাচরণ করতেন। আর একটি বাণীও তাঁর অন্থরণ প্রের ছিল,— উম্মরর রাজ্য তোমারই অন্তরে প্রভিতিত। এই বাক্যটি বখনই তিনি আমার সামনে উচ্চারণ করতেন, তাঁর প্রভা-বিমর্থন কঠে এই বাক্য বেন অচিন্ত্যপূর্ব রহস্তমভিত হরে প্রকাশ পেত। উম্মরের রাজ্য কোনো বাহ্নিক বাত্তব রাজ্য নর, মানুষ্বের মনোরাজ্যই সেই রাজ্য,—প্রতি মানুষ্বের হাদরক করেই উম্পরের সিংহাসন—এই সব কথা বাবে বাবে বহুতে গভীর আনক্ষ লাভ করতেন বড়দাল!

গভীর দার্শনিক উপলব্ধি ও নিবিড় কবিচিতের সহবোগে বিজ্ঞেন্তনাথ গুইবাণীর মধ্যে নৃতন অর্থ ও নৃতন ইলিতের সহান পেতেন। তার ভাষ্য ও আমার ধারণার সঙ্গে কথনো কথনো মিলছ না;—কিছ তিনি তর্ক কয়তেন না, লাছ তাবে আমাকে বৃথিরে বলতেন বে বীওর মতো মহাপ্রভুব বাণীর পভীরত্ব অপাহিসীম। কোনো মায়্য এক নিঃখাসে বোষণা করছে পাবে না,—তাঁর বাক্য আমি সব ব্রে নিয়েছি। বীওর বাণী অমৃত-নির্থিণী —পিয়াসী মানব যুগে যুগে সে নির্থিণীর পানীর প্রহণ করে। প্রতি বুগের মায়্য প্রতি বার নৃতন করে এই সভ্যা—উৎসের সম্মুখে অঞ্জলি পাতে,—এবং মায়ুবের পরম প্রয়োজনের ত্যা যুডোদিন না নিযুভ্ত হবে ততোদিন যুগে যুগে মায়ুয় এই মন্ধাকিনীর তীর্থসলিলে পুত হবে।

বীতর জীবনে বধন কুশের আঘাত পড়েছিল তথন জিনি বৌবনের শীর্ষদেশে। বৌবনাবস্থাতেই তিনি আক্সান কবেছিলেন।
মধ্য বহদের দীর্য ছারা জাঁব জীবনপথে পড়েনি। তাই জাঁব প্রজি
বাব্যে বৌবনের স্পর্শ। এইখানেই কুসের সবচেরে বড়ো বেদনা,—
এই কুস বৌবনকে হনন করেছিল, মানবপ্রেমিক কবিকে হনন
করেছিল। দৈব বজ্ঞার কথা বীতর বেদনার চরিভার্থ হয়েছিল,—
'লক্ষ্য করো আমার বেদনার চেয়ে গাঢ়তর বেদনা আর কোধাও
আছে কি না।'

বীশুর আনন্দ-বেগনা বিকশিত যৌবনের প্রথম ইন্দ্রিয়োপ্সন্থিয় বেগনা। এই জয়েই এতো আনন্দ তিনি বিচ্চুয়িত করেছিলেন, আছে। বেগলা তিনি সন্থ কৰেছিলেন। বৃদ্ধ বৈৰাগ্যসাধ্যেৰ মডো
তিনি ইন্দ্রিবের বারকে কছ ৰাখেননি,—প্রত্যাগ করেননি "পানডোজনের" পরিতৃত্যি। জীবনের বর্ণরূপ হ্রমার প্রতি তিনি পরিপূর্ণ
সচেতন ছিলেন। তীরের মডো তীক্ষ ছিল তার বান্তর
বিচারবৃদ্ধি, উদাসীনতা দিরে এই বৃদ্ধিকে তিনি আবিল
ভবেন নি। মানসিক স্বাধীনতার জমর বেংবণা তিনি
ভবেদ্নে,—'সতাই তোমাকে মুক্তি লেবে, মিখ্যাই বছন।'
ম্বীত সেই নিজ্যকালের নিজীক খৌবনের প্রতিভূ, বে বৌবন
জকুডোত্তর আত্মবিখা স অকলনীয় বাণার সন্থান হয় এবং
আত্মার অপরাক্ষেয় বীর্ষে সহ বাণা জয় করে। জলাল বিষধ্যের
বীবা বাব্যক, নিজ নিজ কেরে তাবান্ত মহান প্রথম বিশ্বান্তর
বিষ্কারের পৃথিবীতে ক্লমীর্য জীবন বাপান ক্রেছিলেন এবং ধর্মপ্রান্তর
অবসানে স্ক্রব্রেস দেহবক্ষা করেছিলেন। কিন্তু বীণ্ডর চরিত্র এক
আনতিক্রমণীয়ে উপ্রতিষ্কার প্রতিন্তিস, ক্লেচিনন্তন ধৌবমনীর্গের সিংভাসনে
ভাবে আসন।

প্রতিধুগের সাধারণ মাছুখ খুইচরিত্রের এই উত্তুপ উচ্চতাকে
নিজের সাধারণ থর্কচার ভারে নামিরে আনবার চেটা করেছে.—
ভার বাণীর নির্ভীক মহত্তকে শৃংধনিত করতে চেয়েছে আপন সম্ভত্ত
অভিক্রভার কারাগারে। কিছ খুইকে বাধা বার না, মাহুবের
চিত্তকক্ষরের অসম্ভবের নিযুক্ত প্রেরণাকে তিনি জাগ্রত করেন।
বাবে বাবে মুগে বুগে তিনি ঘোষণা করেন,—বিখাসের অমোঘ
শক্তিবলে অসম্ভবকে সম্ভব করো, বিখাসের আকর্ষণে স্থাণু
প্রবৃত্তক করো চলমান।

'প্রথম অর্গ ও প্রথম মর্তের অবসানের পর এক নৃতন অর্গ ও নৃতন পৃথিবী আমার চোথে প্রতিভাত হোলো।'—গৃষ্ট বাণীর এই সঙ্গীত নব নব যুগের মাছ্যকে নব নব কর্মের অভিবাতার উদ্বৃদ্ধ করেছেন, অন্ত স্বরনির্বরে অভ্যবীক ও পৃথিবীর বুকে জাগিয়েছে চলিফ্রতার ছন্দিত শুকান।

ৰীত খুঠ জগতের প্রেষ্ঠ বিপ্লবী ধর্ম প্রবর্তক, এই তাঁর আশ্চর্য বৈশিষ্ট্য। এই বৈশিষ্ট্যকে আমি ইউবোপে থাকতে ততো বৃথিনি বাজা বৃষ্টের প্রাচ্চদেশ এসে। মানবসমাজে বৃদ্দের প্রসন্ন আশাস্তিবও সভ্য প্রয়োজন আছে—এই প্রয়োজন জ্ঞানতৃ দ্বর। কিছ বীতর প্রেমোগ্রাদ আহ্বান বৌবনের ভাষা। এই বাগা বাজিব মতো বেগবান, বিহাতের মডো প্রধার,—মামুবকে চলিফুভার অণুপ্রাণিত করতে হলে এই আহ্বানের প্রয়োজন।

ঈশবের রাজ্যে অক্সারের প্রতি বিক্রুক ঘুণারও স্থান আছে, বে মুণা বৌৰনের বলিষ্ঠতা থেকেই সম্ভব। আত্মন্তরী করাসী:দর বীশ্ব বে ভাষায় তর্থসনা করেছিলেন বে ভাষা বিক্রুক কটিকার মতো ভয়ংখন, সে বিচাৰে অভয়োজা পর্যন্ত কেঁপে ওঠে। এই ভয়ংখন ভংগিনার শেবে নীও আবার বৃক্ফাটা বিলাপ করেছেন, ক্রোধ তথন অঞ্জলে বৃরে গেছে। দীর্ঘধান আব অঞ্জলের সংল তিনি বলছেন,—

হা জেকসালেম ! ঈশব বে সব সভ্যন্তইাবের তোমার কাছে প্রেরণ করেন ভাগের তুমি পাশব ছুঁছে হত্যা করে।! কুল্টীবেমন ভার শাবকণের পক্ষের নিচে একতা করে, তেমনি আমি কভোবার ভোমার সভানদের একতা করবার ইছে। করেছি। বিদ্ধাত্মি ভাতে সম্মৃত হলে না। ভাই দেশ, আছে উছিল বিধান্ত মক্ষমর কোযার গুড়।

ৰীক্তৰ মানসিক উত্তেজনা ছোৰ বিবে আবছ, ককণাৰ ভাৰ
কৰ্মান। থানৰাস্থাৰ আজি তাঁৰ মহাৰ্থ মহাসময় দান প্ৰথমে
ভংকৰ বছুবিনাজেৰ মতো আহাত কৰে, পৰে তা দাভ বৰ্ষাধানাৰ
মতো কঞ্পালানে প্লাবিত কৰে। তথন পাছিল ভন্ন বাকটো,
মেথবিধীন নীসাকাশ ঋণকিত হল পূৰ্যেই উজ্জ্বল দাজিলা।
ভ্ৰদণ্ডেৰ গভীৰতৰ কল্পৰকে প্ৰিত্ৰ কৰাৰ ভাল ভূংবেৰ কলাৰা তৰ
প্ৰবোধন, সেই সলে প্ৰহোজন আনক্ষ প্ৰভাষা সৰ ব্যাধা প্ৰতেপ।

খুষ্টচবিত্রের বিশিষ্ট গুণ সাহস, বীরত্ব, অকুভোভরতা। এই গুণ মানব-অন্তরের গভীর গুহালারে আঘাত করে, আবার অন্তর আকাজাকে অসীম উচ্চতার প্রতি আকর্ষণ করে। খুষ্টচিনিত্রের এই মোলিক মহিমা ধর্মছের মূল প্রত। খুষ্টমহিমা এক সর্বজ্ঞী বিপ্লবের হুরস্ত প্লাবন বা প্রাচীন জীর্ণভাকে ভাগিয়ে নিয়ে ধার। বজার মজো তা পুরাতনকে বিধ্বস্ত করে। ঈশবের নবীন বাজোর অমৃত্ত প্রভাধারাকে প্রাচীন পাত্রে অবক্তর রাখা বায় না। সেই পাত্র কে নির্মিতই হোক আর প্রস্তর নির্মিতই হোক, বিশ্লোরণের মতো চূর্ণ হুর ভার আবরণ।

পৃথিব চিত্র অভ্যন্ত বীভংস বিকৃতভাবে মাঝে মাঝে চিত্রিভ হরেছে। এই চিত্র আনুসারে তিনি রক্ষণশীল নীতিবাদী, সাংধানী ধর্মপরারণ ও অসম্ভ রক্ষের শাস্ত্রসন্ত । এই চিত্র মিথ্যা, এই চিত্র ইতিহাসকে বিকৃত করে। এইরূপ বৈশিষ্টাহীন ত্র্বল চহিত্র কখনো পৃথিবীর অভ্যারের শক্তিকে পরাভূত করতে পারত না, যুগে যুগে বৌবনের উদরকে উদ্বৃদ্ধ করতে পারত না।

নবজন্মের বীজকে সংখ্যাহের খোসা সর্বত্ত বন্দী রাধতে চেষ্টা করে।
সেই আছোদনকে বিদীর্ণ করে জীবন নবাক্লণের আলোকে চোধ
মেলে। প্রাচীনের জীর্ণ আবিরণ সর্বদাই চেষ্টা করে মামুন্বের
অভিযাত্তী আত্মাকে অনভ্তার কারাগারে বন্দী করে রাধতে। বিজ্
প্রতি যুগে নৃহন করে বীক্ত এসে উপস্থিত হন। তিনি আসেন
আমাদের সংস্থাবের বন্ধন থেকে স্কুক্তি দিতে।

[ক্রমশ:।

অনুবাদ: নির্মলচন্দ্র প্রেপাধ্যায়।

"A great city is that which has the greatest men and women. If it be a few rugged huts it is still the greatest city in the whole world."

-Whitman.



সাত্যকি

78

ঠিক আমি বা আগত্বা করেছিলুম, তাই হোল শেষ পর্যন্ত : বোডাতে সামান্তিক গণ্ডগোলের ক্তরপাত করলো পামার উপস্থিতি। অথত এতে পামার লোব কডটুকুই বা।

নিমন্ত্রিকের। জলম্পর্শ করতে অস্থীকার করলেন। আমাদের শত অন্তরোধ, অন্থনর জাঁদের টলাতে পারলো না। এই অভ্যাগতদের মধ্যে কতক্ষন বে থাঁটি চরিত্রের অধিকারী, কে ভা বলবে ? কে ভার হিসাব করবে ?

চোধের জল কেলে পামা বাড়ির বাইরে চলে গেল। পামার সামাজিক মূল্য স্বীকৃত হলো না। ওর ভ্যাগ, দেবা, স্নেছ কেউ দরদ দিয়ে বোঝবার চেষ্টা করলো না।

কানাই হু:খিত হলো। হু:খিত হলুম আমরা সকাই।

কথন অদাস অলক্ষ্যে বেরিয়ে গেছে, টের পাইনি। অনেক রাজে বাড়ি ফিরে ছবে চুকতে বাব, এমন সময় অদাসের কঠন্বর শুনতে পেলুম—দেশলে তো, ভোমার সম্মান ওদের কাছে কভটুকু ? কেউ ভোমার হয়ে একটা কথাও বললে না। অন্ততঃ নয়নের উচিত ছিলো, ভোমাকে নিয়ে বেরিয়ে আসা।

পামার উত্তর শুনতে পেলুম না। পরে স্থণাসের আবো কথা থেকে ব্রতে পারলুম বে, পামা ছিল নিরুত্তর। স্থণাস বলে চললো, এ বক্ম ভাবে অপমানিত হ্বাব চেয়ে আমার সঙ্গে চলে চলো। আমি ভোমায় রাণীয় মতো করে রাধব।

পামা বগল, মুদাস বাবু, আমার এন্টা অমুগ্রন্থ করবেন ? উৎসাহে বলমল করে উঠল মুদাস, আরে, আদেশ কর। এন্ড কুঠা কেন ?

- ভাপনি এবার বান। ভার কখনো এখানে ভাসবেন না।
- ---ভূমি আমার বেতে বলচ ?
- —হা। নিক্তাপ গলার পামা বলন।

থত সহজে এমন মর্মান্তিক কথা শুনতে হবে, স্থান বুঝি জীবনে কথনো করনাই করেনি। জীবনে বে নারীর মূল্য কেবলমাত্র টাকা দিরে মেপেছে, সে হুদরাবেগ কী জিনিস, তা জানবে কেমন করে ? স্থান বথন দেখলো পামার মন কোন কিছুর বিনিম্বেই পাওরা সজব নর, তথন সে জন্ম রাস্তা ধরলো। সমাজের ওপর বিবিরে দিতে চাইলো পামার মন। ভেবেছিলো সামাজিক জাবাতে নিশ্চরই ওর মন ভেকে পজুবে। ভাই জামার ওপর দোষ

চাপিরে দিলো অনাহাসে। আমি দাহিত্তীন। পাহার প্রতি উদাসীন। ভার সন্মান আমি বথাবধ বাধতে পারি না। আমি তাকে বাড়ির বাঁধুনী কিংবা কি'র চেরে কেনী মর্বাদা দি' না। পকান্তরে স্থানস পামাকে বাণীর মর্বাদা দেবে বলে প্রতিশ্রুতি দিল।

বেশ থানিককণ সদাস বব থেকে বেক্সল না। আমি আমার উপস্থিতি ভানাবার জন্তে গলাধীকারি দিলুম। ওরা কেউ শুনজে পেরেছে বলে মনে হোল না। কারণ কোন পক্ষ থেকেই ব্যস্তভার লক্ষণ দেখা গেল না।

অত্যন্ত বিরক্ত হয়ে পামা বললো, কৈ গেলেন না ?

মরিরা হরে জুলাস বললো, আমি যাবার জন্তে আসিনি। বাই তো তোমাকে সঙ্গে নিয়েই যাবো।

স্থলাসের সীমাহীন লপথার আমি অন্তান্ত অসন্ত হলুম।
অসহার একটা মেয়ের ওপর তাহলে সে বসপ্রয়োগ করছেও কুটিত
হবে না। এ কেমন মামুর ? ভালবাসা দিয়ে বাবে পাওরা গেল
না, তাকে ভাবে করে পাবার প্রস্তুতি হয় কেন ? দেহ কি
মনের বিদে মেটাতে পাবে ? স্থলাস কী মারাত্মক ভূলই
না করল। সে বে আর কোন দিন পামার মন কর করতে
পাববে না, তাতে আর আমার কোন সন্দেহ বইলো না।
স্থলাসের চাওরা দেহ-সর্বস্থ। বে—হান্তা দিয়ে গেলে পামার মন
পর্বন্ত পৌতুতে পারতো, তুর্ভাগাক্রমে স্থলাস সে-হান্তা মাড়াল না।
আমি তা হলে ভিতেছি। স্থলাসের স্বন্ধপ প্রকাশ পেরছে।
নিজেকে এমন শোচনীয় ভাবে স্থলাস হারিয়ে দেবে ভাবতে পারিনি।
পেশা ওর দালালী। একটা দালালের পেশাগত বে বাক-চাতুর্ব,
বৈর্ধা আর সংব্দ থাকে স্থলাসের তা নেই বোঝা পেল।

আর বাইরে দাঁড়িরে থাকা বৃত্তিসঙ্গত মনে করলুম না।
পামার মন নিরে বে পরীক্ষা আমি করেছিলুম, তাতে পামা
প্রথম শ্রেণীতে উত্তীর্ণ চয়েছে। এর পর আমি একুণি বদি
নিজের উপস্থিতি না জানাই, তবে সুদাস একটা কিছু করে কেলতে
পারে। সুদাস এখন একটা আহত বাংঘর মতোই হিংল্ল হয়ে
উঠেছে।

পারের আওরাঞ্জ তুলে আমি খবের ভিতর চুকতেই ছ্ডানে সচকিত হয়ে উঠল। স্থলাসের উদ্বত্যে তথন ম্পষ্ট অসহার লক্ষার হাপ। আমি সহজ স্থাবে বলনুম, আবে স্থলাস বে! পামাকে পৌছে বিতে এসেছিলে বৃঝি ? আমতা-আমতা করে পুলাস বললো, এই—ইরে, সামে— ববের মধ্যে বে গুমোট হাওরা জমেছিল, দেটা কাটিরে দেবার জয়ে পামাকে বললুম, এক গ্লাস জল দাও তো।

পামা জ্বল গড়িরে জানজে গেল রারাধর থেকে। এই জ্বনরে জ্বলাসকে আমি বললুম, তা হলে, স্থণাস, তুমি হেরে গেলে ?

অবাক হয়ে গেল জুবান।

ধনের দালাল স্থলান এখনো বৃদ্ধে উঠতে পাবছে না আমি কী করে ওর মনের কথা বৃষ্ধতে পেবেছি। ওর চোখে প্রথমে ফুটে উঠল বিষয়, তারপর ইবা আর তারো পরে লক্ষা। মাধা নীচু করে বইল স্থান।

এ অবছার প্রাজিতের মনে আঘাত দেওর। ঠিক ময়।

ভবে সমবেদনার ভেজে পড়তেও ইচ্ছে হলো না। নিজের

দক্তির ওপোর অগাধ বিশাস ছিলো পুলাসের। কোনদিন
কোন মেরের কাছে মাকি চাব স্বী হার করেনি। তাই হেরে বাওরা

কী জিনিস স্থলাসের তা জানতে বাকী ছিল। আজ বধন ব্যতে
পারলো পাথাকে লোভ দেখিরে বক্ষীকৃত করা সভ্যা নর, তখন আর

ভার কৌশল বদলাবার সমর ছিল না। বড় দেরীতে পুলাস ভার

ভূল ব্যতে পারলো। ভালবাসার বেলার বে-কোন ভূলই ধ্ব

কতিকর। সব মেরেই বে এক রকম হতে, সে মেরে ভালোই

হোক আর মন্দই হোক, ভার কোন মানে নেই। আহা,
স্থলাস বদি এটা আগে একটু ব্রতে পারতো।

পারলেই বা। কী আর হোত ? আমাকে না হয় আর একটু সতর্ক হতে হোত। আরো তীক্ষ নজর রাগতে হতো পামার মনের ওপোর। বে সভাবতই গঞ্জীর অথচ পরিহাস-নিপুণা তার সংজ্ সাদামাটা সুদার পাল্ল। দিতে পারবে কেন ?

জল থাবার পর পামাকে বলসুম, তুমি গুরে পড়। আমি আসছি। চলো স্থাস, তোমাকে একটু এগিরে দিয়ে আসি।

—নানা। রাত অনেক হরেছে। তোমার আব কট করে বেতে হবে না। জনাস ভাড়াতাড়ি বললো।

বৃষতে পারলুম, সুদাস আমার সঙ্গ এখন এড়িয়ে বেতে পারলেই বাঁচে। কোন কথা বলতে রাজী নয়। মনে মনে সে বে কী পাঁচি ক্যন্থে বৃষতে পাবলুম না। সাজ্যাতিক কিছু আবার কবে বসবে না তো ? অবল্প আজকের মতো বা হবার হরে সেছে। তবে ভবিষ্যতের কথা বলা বার না। যদি এ পরাজরের প্রতিশোধ নিতে গিরে পামার দৈহিক কোন কতি করে বলে? আজকাল তো প্রায়ই এসিড দিয়ে মুখ পুড়িয়ে দেওরা, ভুরি দিয়ে দেহ কত-বিক্ষন্ত করে দেওয়া একটা বেওয়াল হয়ে গেছে। আমি বৃষতে পারি না, এ আবার কী ধরণের ভালবাসা বে, বাঞ্চিত জনকে না পেশে তার কোন ক্ষতি ক্রতে হবে! এটাকে মনের কোন বিকার হয়তো বলা চলে। কী আনি! আমি মনস্তাত্তিক নই। হয়তো মনস্তত্বিদেরা এর কোন মানে খুঁলে বার করতে পারেন। বাই হোক, পামাকে মোট কথা সাবধান করে দিতে হবে।

স্থদাস চলে বাবার পর ভারী মন নিবে পামার কাছে ফিরে এলুম। এতো রাভ হয়ে গেছে, অথচ বুম আসছে না। পামা আমাকে দেখে উঠে বসল। হাঁটুর ওপোর থৃতনি বেখে আমার দিকে চেয়ে বইল।

একটা নিগাবেট ধরিবে একটু অভ্যমনত্ব হবাব ভাগ কর্নুম। কোন বক্ষেই পামার সঙ্গে আর স্ফোসের প্রসঙ্গ নিরে আলোচনা কর্বার প্রবৃত্তি আমার হলো না। বেশ ব্যুত্তে পার্হি, পামা আমার পরীকার ব্যাপার অনুমান করে ফেলেছে এর মধ্যে। নইলে বে-কোন পুরুষ এভক্ষণে একটা কুঙ্গক্ষেত্র বাধিয়ে ভূলত।

--কী বুঝলে ভূমি ?

---ব্ৰদাম, মেয়েদের ভোমরা বালারের পণ্য ছাড়া আর কিছু ভাবো না।

—তা হলে ভূগ বুখেছ।

—মেরেরা বে স্বাভাবিক অমুভ্তি নিয়ে অমার, তাহলে সেটাও জুল, কী বলো ?

—কী অমুভূতি নিয়ে মেরের। জনার জানি না। তবে এটুকু জানি বে, মেরেরা সভি্যকারের কাউকে ভালোবাসলে, তার প্রতি কথনো বিখাস্থাতকতা করে না।

—পরিবেশ কিন্ত বিশাস্থাভকতা করতে সময় সময় বাধ্য করে।

পামাকে আর খাঁটাভে সাহস হলো না। হরতো বিগত জীবনের কথা মনে পড়বে। আর একবার বা হারিরে গেছে, বা কোন দিন কোন অবস্থাতেই কিরে আসবে না, ভা মনে পড়কেই কাঁদতে বদবে। ওকে হুঃখ দিতে মন চাইল না। অমনিতে আজ ও অনেক হুঃখ পেরেছে। আফর্ষ্য এক অনুকম্পার ছেরে গেল মন।

—তুমি ঘূমোও। আমি পামাকে বললুম, আমি একটু কাজ সেবে নি। অন্ত সময় ভোমার কথাৰ উত্তর দেওৱা বাবে।

উত্তর ওর জানা আছে। মর্মান্তিক ভাবেই জানা আছে। পরিবেশ কেমন করে ইচ্ছার বিক্লছে কাজ করার। আমার ইত্তরের অপেকার ওকে ধাকতে হবে না।

ভোব হৰাৰ একটু প্ৰেই কানাই-এর বাড়িব উদ্দেশ্য বেরিরে পড়লুম। কানাইকে সাহাব্য করা আমার উচিত। তাছাড়া ওব আত্মীর বলতে, বদ্ধু বলতে আমি ছাড়া আর কে আছে ? ঘর-সংগার গুছিরে দেবার জব্য অবশ্ব ব্রীলোকের সাহাব্য ছাড়া চলবে না। ভবু একজন পুক্ষমান্ত্বের উপস্থিতি মনের জার আনকটা বাড়িরে দেব। আর কিছু না হোক পরামর্শ দেবার মত একজনকে চাই-ই চাই। আনেক সময় নিজের মনের কথা কাউকে শোনাতে পাবলেও লাভি পাওবা বাহা।

কানাই উপহার পাওর। লরীটার তদারক করছে দেখে থুনী হলুম। নতুন বৌ নিশ্চর দিন করেক বাদেই বুরতে পারবে বে দে বাপের বাড়ী থেকে আসবার সমর একটা সতীন সলে করে এনেছে। তথন নিশ্চরই তার আর লরীটাকে ডালো লাগবে না।

স্বামাকে দেখে কানাই হাসিমুখে এগিয়ে এলো।

- -- मत्रन, शाखीहात शक्षा मात्र मात्र।
- --नाम का वा वद अक्षा मिलके होने।
- —না না। নামকরণের জন্তে দল্ভব্মতো আমি ঘটা করব।
- —দেকি ! আমি কানাই-এর উড্ট থেরাল দেবে অবাক হলুম।
- ভূমি বৃঝতে পারছো নী, নয়ন! থাবার দাবার তো অনেক বেঁচে গেছে। ভাই দিয়ে আজই আমি একটা উৎসবের আবোজন করতে চাই। বাড়তি থরচা তে। আর লাগছে না। মাঝধান থেকে বাদের বাদের বলা হর্মি, তাদেরও নিমন্ত্রণ করা বাবে এই উপলক্ষে।

আমি ওর বৃদ্ধির প্রশংসা করে চললুম, বেশ ভো। এটা উত্তয় প্রভাব। ধাবারের সন্গতি করতে আমি কোনদিন পেছপা হইনি। লাগাও ধুম ধাড়ারা।

- —দে তোহোল। কিন্তু খাদল কাজটা কর। একটা নাম ঠিক কর।
- —নামের জ্বন্ধে ভাবনা কি ? 'দীনবজ্ 'প্ৰের সাথী', এরকম যাত্র একটা দাও।
- উঁত। ও সব বস্তাপচা নাম চসবে না। আমাদের জীবনের সঙ্গে মিল আছে, এমন একটা নাম দাও।
 - —দেটা ভাই, ভেবে বলতে হবে।
 - —ভাবো একুৰি।
- —আবে এফুণি ভাবা যার নাকি ? আমি অসহারের মতো বলি । জীবনে এরকম অবস্থার কধনো পড়তে হবে জানলে ত্'-চারটে নাম না হর আগে থেকে বানিরে রাখা বেত। কোনদিন কেউ নামকবণের জতো আমার সাহার্য এ ভাবে চাইবে স্বপ্লেও ভাবতে পারিনি। নাম দের নামা লোক। আমি ভো অভি সাধারণ একটা লবীওয়ালা। অহস্তার একট্ হোল মনে মনে।

কানাইকে অভৱ কিরে বসলুম, তুমি জোগাড় যন্ত্র করে ফেল উংশবের। আমি ভোমার সরীর একটা অসাধারণ নাম দোব। যার মানে বসতে বসতে তুমি অভিষ্ঠ হয়ে উঠবে।

স্থামাকে সঙ্গে নিধে কানাই কয়েক জারগার নিমন্ত্রণ করার পর বসলো, চলো স্থামাদের পুরানো বাসার যাওয়া বাক।

বাভিত্তে এসে কানাই পামার কাছে বনে পজে বললো, বৌদি, আমার ক্ষমা চাওরার মুখ নেই। কিছু তুমি নিশ্চরই জানো বে, কালকের ব্যাপারে আমার বিন্দুমাত্র দোব ছিল না। আমি ধুব অসহার ছিলুম বলেই তোমার চোথের জ্ঞল ফেলে আমার বাজি থেকে ফিরে আলতে হরেছিল। আমি আজ একটা উৎসবের আরোজন করেছি। উৎসব আর কিছুই নর, আমি বিরেতে বে লরীটা পেরেছি, তার নামকরণ করা হবে। তুমি হবে প্রধান শতিধি। ভর নেই, আজ তোমাকে কেউ কিছু বলার স্পর্ধা দেখাতে পারবে না।

—কেউ কিছু বললে, ভার মূব আটকাবে কেমন করে, । ঠাকুবপো! পামা বিবল্লহেরে জানভে চাইল।

— স ভাব আমাব ওপোব দিবে নিশ্চিত্ত থাকতে পাবো, বৌদি! আমি জান কথুল ক্রলাম তোমাব কাছে। দেখে নিও, ভোমাব ঠাকুরণো আজ ভাব কথা বাথতে পারে কি না পাৰে। দুঢ় গদায় কানাই পামাকে আখাদ দিলো।

- —ঠাকুরপো, কিছু মনে করো না। পামাকে পার কিছুর মধ্যে জড়াতে চেও না। তুমিও হংধ পাবে, আমিও পাবো। তুমি জানো না পামি কী হুউগ্যে নিবে জমেছি। তাল হবে কেনে বে জিনিসে হাত দিতে চাই, তাই মক হরে গাড়ার।
 - —ভার অত্যে ভূমি তো দায়ী নও, বৌদি !
- —কাউকে আমি দায়ী করতে চাই না, ভাই! আমি তরু এ-জীবন থেকে মুক্তি চাই।

युक्ति ठारे वनामरे--

আমি এডকণ নির্বাক প্রোতা ছিলুম। কানাইকে বাধা দিরে বলসুম, কানাই বধন এত করে বলছে তথন আজকের দিনটা অক্তত কানাই-এর আজার তোমার বাধা উচিত। পামা, চলো আমরা স্বাই মিলে সকলের স্বাস্থ্য পান করে বিগত দিনের আলা ভূলে বেতে চেষ্টা করি।

কানাই আমার দিকে চেরে রাগতপরে বললো, স্বাস্থাপান আল সকলের সঙ্গে বৌদি করতে পারবে না। অস্তভ আমি তাভতে দেবোনা।

—বেশ বেশ। ভোষরা নিজেরা ঠিক কর কী করবে। জামি ওতে জার নেই। জামাকে নাম ঠিক করতে বলেছ। জামি নাম ঠিক করে পামাকে দিয়ে দোব ? পামা নামকরণ করে দেবে।

আমি ওদের রেখে বাইরে বেরিরে পড়লুম কাজের সম্ভানে।

শেব পর্বস্ত কানাই পামাকে হাজির করলো নামকরণ অন্ধানে প্রধান অতিথি হিসাবে। সভাপতি হলো মহিম হালদার। লোকজন বেশী নর—জন তিরিশেক হাজির হলো। বেশীর ভাগ মহাজন আব লরীওরালা। তা হাড়া দর্শক হিসাবে মজা দেখতে এলো কুড়ি-পঁটিশ জন। আর কোধাও কখনো লরী নামকরণের উৎস্বামুগ্রান হরেছে কি না জানি না! এই জন্তুত ব্যাপার দেখবার জল্ঞে আরো বেশী সংখ্যক লোক দর্শক হিসাবে উপস্থিত হবে এ আশাই করছিলুম।

পুরোহিত ভোত্র পাঠ করা শেষ করবার পর, নামকরণের জ্বলে পাঁচটা ঘি-মর প্রদীপ জালানো হলো।

লরীর বনেটের সামনের দিকে সিঁদ্রগোলা দিরে স্বস্তিক চিহ্ন এঁকে পামা ভরে-ভেন্সা গলায় ঘে.বণা করলো, নাম দিলুম, 'ঐরাবত'।

সঙ্গে সন্দে নাবকেল ভালার আওবান্ত মিশ্লো শাঁথ আর কাঁসর-ঘটার শন্দে। ধুপধুনা গুগগুল চারদিকে একটা পবিত্র আবহাওরার স্ঠা করলো। হৈ-হৈ করে জয়ধনি দিলো উপস্থিত সকলেই।

কানাই-এর অন্ধ্রেধে পামা স্বাইকে মিট্ট দিলে। আমি
আশকা করছিলুম, হরতো বৌভাতের রাতে বে কুংসিত দৃগ্ত
অভিনীত হরেছিলো আজা তাই হবে। কিছ দেখলুম আমার
চেরে অনেক বেশী বৃদ্ধি কানাইরের। এটা কোন সামাজিক
অমুঠান নর। কানাই পামাকে দিরে প্রমাণ করাতে চাইলো বে
সমাজবন্দকেরা নিজেদের অহমিকা বজার বাথবার জল্জে বে-দৃশ্জের
অবতারণা করেছিলো, ব্যবহারিক জীবনে তার কোন দামই নেই।
বারা পামার উপস্থিতি সন্থ করতে পারেনি, আজ তারাই নিঃশক্ষে
বিন্দুমাত্র প্রতিবাদ না করে তারই হাত থেকে মিট্ট নিয়ের থেছে
আপত্তি কর্লোনা।

পামাকে লালপার গরদের শার্জীতে অতি অন্ধর মানিবেছিল।
প্রকে দেখে বে-কোন লোকের মনে হবে বে বড় একজন মোটরচড়া
সমাজনেবিকা—বে অবসর বিনোদনের জলো একটা কিছু করার
দরকারে সমাজ কলাাণের পথ বেছে নের। আচা, প্রাণের ভাগিদে
ক'জনই বা কাজে হাত লাগাতে চার! ভাই বদি হোত তবে
দেশের অবস্থা কত আগেই না ভাল হয়ে বেত। বার অংশে বভটুক্
পড়েছে, দে বদি ভভটুক্ই ভাল লোবে করতো, তবে পঞ্বাবিকী
কল্পনাগুলির সার্থক রূপায়ণ কত সহজ্ঞেই, কত কম খবচেই না
হোত। যদি ইঞ্জিনিয়ার কাজে কাঁকি না দিতো, অথবা ঠিকাদার
ক্ষ্যাথের মাল না চালাতে চেটা করতো।

সভাব কোন ভারগা থেকেই বথন কোন গোলমাল দেখা গেল না, তথন অন্তির নিঃখাদ ফেসে বাঁচলুম। অনাস এক অবসরে আমার চুলি চুলি বলে গেল, বাক পানার সমাজ প্রতিষ্ঠা হয়ে গেল। আর কোন তয় নেই।

ভয় নেই বলগেই ভো আৰু ভয় চলে বায় না !

সংটে চলে ধানার পর পামাকে মহিম বললো, পোন বৌমা, বৌভাতের রাতে বে অভক্র ব্যবহার পেয়েছো, তার অভ্যে মন থারাপ করো না। আমহা স্বাই তার জতে ভোযার কাছে ক্ষমা চাচ্ছি।

পামা থোমটা শুধু একটুখানি টেনে মাটির দিকে ভাকিলে এইল। কানাইবের বৌলের সজে সৌজগুস্তক ছ-চারটে কথা বলে জামরা—জামি জার পামা ফিবে চললুম বাড়ির দিকে।

মৌনী পামা অত্যস্ত ভরাবহ। আজ এতদিন ধরে ওকে দেখছি, কখনো, হাজার হুঃখের মধ্যেও, হাসি ছাড়া কথা বলেনি। আমার অক্ষমতা ওর কাছে প্রচণ্ড কৌতুক। কখন কথন আমাকে রাগানো ওর বিগাদ। ওর মানসিক পরিবর্তন আমার দাহণ ভাবিরে তুলল।

হঠাৎ গলা পরিষ্ণার করে পামা **খা**মায় বললো, রাগ করোনি তো?

আমি ব্ৰতে পারপুম, কেন এ প্রের পামা আমার করল। কানাইরের লথীর নাম আমি যা ঠিক করেছিলুন, পামা তা রাখেনি। ও নিজের ইচ্ছে মতো একটা নাম ফিরেছে। নিশ্চর ওর কোন মঙলব আছে ভেবে আমি কোন উচ্চবাচ্য করিনি।

—না। রাগ করবো কেন? তা ছাড়া, ভোমার দেওরা নাম ধুর স্থার হয়েছে। স্থামি ওকে সান্তনা দিরে বলি।

কৃতজ্ঞতার ওর চোধ ছুল্ছল করে উঠল। আমার দিকে ধানিকক্ষণ তাকিরে থাকার পর হঠাৎ নীচু হয়ে প্রণাম করলো।

আমার বিত্রত ভাবকে আমল না দিরে পামা বলে চললো, তুমি তো কৈ জানতে চাইলে না, কেন আমি তোমার দেওরা নাম পাল্টে দিরেছি? তুমি জানতে না চাইলেও আমার বলা দরকার হরে পড়েছে। তুমি তোমার দেওরা নামের বে মানে করেছ, তা তোমাদের জীবনে খাপ খার না। ঠাকুরপো বিরে করে সংসারী হল । তুমিও মনে মনে সংসারী হতে চাও, কেন না আমাকে তুমি বহুবার অনুবোধ করেছ। ত্ব ছেড়ে তোমরা বাইরে বাও, করেক ঘটা বা করেক দিন বাদে কিরবার জন্তেই। কিন্তু ভাবোতো সভিত্রের 'অনিকেত' কে? তুমি তো এ নামই আমার বলতে খলেছিলে?

পামার মানসিক ষশ্ব অন্ত ভাবে ওব বাবা অঙ্গ-প্রতাক জুড়ে বঙ্গেছে। ও আজ কেবল ছ:বের কথাই আমাকে বলবে। আর বলে শান্তি পাবে। বলি এভাবে ও শান্তি পার, পুরানো ঘটনা ভূলে বেতে চার, তাহলে আমার কোন আপন্তি নেই। কাউকে না ফাটকে মনের কথা খুলে বলা দরকার। তাতে পুঞ্জীভূত বেদনার ধানিকটা উপশম হতে পারে।

কিছ ভূগ ভাগল পামার পবের কথার।

- —তোমার জিনিবপত্র কোখার কী আছে দেখে নাও। পামা আমাকে একেবারে ধরাশারী করে দিলো।
- —সে সব বে বোঝবার তাকে বোঝাও গো। আমি কোন দিন ওসব নিবে মাথা ঘামাইনি। আছও ঘামাতে পারব না। আমি পরিকার ছবাব নিয়ে দিলুম।

বিদ্যাত বিচলিত দেখা গেল না পামাকে । আমাকে এক মাস মিছবিব স্বৰ্ত এনে দিলো। তাবপ্ৰ সভাদীপ আলিরে শাখ বাজালো। ঘবেব নিভানৈমিডিক কাজে সে বখন মন দিলো, তখন আমি নিশ্চিন্ত হবে বাইবে বেরিয়ে গেলুম। একটা জক্ষরী মাল গৌছে দিতে হবে কলকাতার।

গোলা থেকে মাল বোঝাই করতে করতে ভাবছিলুম, এবার যধন আমাদের ছটো লগ্নী হল, তথন একটা সমবার সমিতি করে পরিবহন ব্যবসাটাকে আবো বাড়িয়ে দিলে কেমন হয়। কানাইকে বোঝাতে হবে ব্যাপারটা। তাহলে 'সিভিকেটওয়ালা'দের সঙ্গে সমানে সমানে পালা দেওয়। যাবে।

বঙ্বা চালান হাতে নিষে ফিবে এলো। মাল তোলা বেশ তাড়াভাতি তা হলে শেব হয়েছে বলতে হবে। গাড়ীতে ষ্টাৰ্ট নিয়ে কলকাত । বিশ্বে এওতে লাগলুম। জাবার সেই নিশুতি রাত। হায়েনার থেকে থেকে বিজ্ঞী হাসি। হঠাং বৃষ্টি হয়ে গিয়ে রাজা শিছল হয়ে গেছে, ধারে ধারে জনেক জারগার জল জমেছে গর্তে, কাদায় ভর্তি জারগায় গাড়ীর চাকা একবার পড়লে তুলতে বেশ বেগ পেতে হবে।

নির্জন বাস্তা দিয়ে বেশ আস্চিল্ম। পথের ধারে দেখি গ্রুরাম ঠেলাঠেলি করছে ভার একটা লবী। চাকা পিছলে বাছে। রাস্তার উঠাতে পারছে না। আমি নিজে খেকেই গাড়ী থামিয়ে এগিয়ে এলুম ওর দিকে।

- —কী ব্যাপার, ভারা ? নীচে কী জহরৎ খুঁজতে নেবেছিলে নাকি ? আমি ঠাটা করে বলি।
- —না ভাই! একটা গাড়িকে পাশ দিতে গিরে ^{এই} হাল হয়েছে। গঙ্গুৱাম আনুমায় বল্ল।
 - —ৰেজুবপাতা দাও চাকাৰ ভলায়- নইলে চাকা উঠবে না।
- —তুমি একটু ভোষাব গাড়ী দিয়ে ঠেলে দাও না, ভাই! সকাতরে অমুবোধ করলো গঙ্গুরাম।
- আমে বাপদ। আমার বোঝাই গাড়ী। বোঝাই গাড়ী নি^{রে} আমি বিসক নিভে পারবো না, ভাই!
- —ভব তুম ভাহাল্লমঙে বাও । একেবারে রাইভাবা ছাড়^র পঙ্গুবাম।

'ভয় বামজীকি' বলে পাড়ী ছাড়লুম।

'কাগুলিয়া' চেক-পোষ্টে এসে গাড়ী থামিরে আমি একবার গ্রেট কালীতারা কেবিনে ভাছড়ী মশারের কাছ থেকে একটা বোতল নিরে চললুম পামার উদ্দেশ্যে। প্রেট কালীতারা কেবিনের অমজমাট জনতাকে পেছনে ফেলে যেতে এডটুকু মারা আমার হোল না।

ভাড়াভাড়ি বাড়ি ফিরে দেখি দরজা খোলা। আশ্চর্য হয়ে দরজা খুলে ভেতরে গিয়ে দেখি সন্ধ্যাদীপ তথনো অলছে। এমন ভা কখনো হয় না! পামা কোন দিন এরকম অবিবেচনার কাল করেছে বলে তো মনে পড়লো না ? পামা! পামা! বলে নিজেয় অলান্তেই আমি জোরে চীৎকার করে উঠলুম। 'কা-কন্ত-পরিবেদনা'! কেউ নেই, কোথাও নেই। মাথা আমার বিম-বিম করে উঠল।

শোবার ঘরের মারখানে একট। জলচোকির ওপোর চাবির গোছা চাপা দেওরা একটা চিঠি পেলুম। মিটমিট করে জলা জারিকেনটার পশতে আবেকটু বাড়িরে পামার লেখা চিঠিটা পড়তে লাগলুম:
শ্বীচরণের,

সময়ের সঙ্গে সজে মায়ুবের মন কতই না বদলে যায় ! কাল যা দত্য ছিল, সুন্দর ছিল, আজও তাই ভা থাকবে—এ আশা করা যায় বটে, কিছু আশা আশাই থেকে যায় ।

প্রথম বেদিন ভোমার হাত ধরে এ বাড়িতে উঠি, তথন আছা ছিল, বল ছিল, ছিল বিশাস। আজ আমি চলে বাজি, এধনো ভোমার ওপোর সবটুকু দোর চাপিয়ে দিরে বেতে মন সায় দিছে না। কোধার বাবো জানি না। কিছ বেতে আমার হবেই ভোমার শক্তির জোবে তুমি আমার নিয়ে পরীক্ষা-নিরীক্ষা চালিয়েছ। স্থলাস বাবু ভোমার বৃদ্ধির প্যাচে পড়ে নাজেহাল। আমিও ক্লান্ত হয়ে পড়েছি। বেথানে, বে-সমাজে আমার স্থান নেই, সেধানে, সে-সমাজে আমার মন আর সমাজমুখী হয়ে উঠতে পারলো না। আমার আফ্লোর রয়ে গেল।

তুমি আমাব অতে কত কী করেছ। কিন্ত বা করে উঠতে পারোনি, হরতো সেটা একান্তই তোমার দোব নর, সেটার প্রতি আমাব মন বিদ্রোহী হরে উঠলো। স্থদাস বাবু ঠিকই বলেছেন; তুমি অন্তত আমার হরে বোঁভাতের দিন কিছু একটা করতে পারতে। আছো, হটো সান্তনার কথাও কী বলতে পারতে না ?

ঠাকুবপো বৃদ্ধি কবে আমার সামাজিক প্রতিষ্ঠাব আরোজন কবলো। আব তুমি ? ও:গা, ভোমার ওপোর বে আমার অগার বিখাস ভিলো।

নামকরণের দিন তুমি অভ্ত একটা নাম দিলে সরীটার— 'অনিকেত।' মানে বললে, গৃহহীন। আমি তা মেনে নিতে পারি নি। তাই তোমার দেওরা নাম বদলে দিয়েছি। আমার ক্ষা করো।

আজ আমার ষেতে কষ্ট হছে। ক্ট হছে কোমার জন্তে, কানাই ঠাকুবপোর জন্তে। জানি না কোথাও আবার আমার ঠাই হবে কি না। তবে আবার আমার ঠাই দিয়ে কী হবে? আমি তো তোমার ভাষার 'অনিকেত।' নিকেতন হীন পথই আমার সম্বল, ভাই পথের মেয়ে পথেই বেরিয়ে পড়দাম।

আমার সপ্রস্থ প্রণাম নাও-পামা"

চিঠিট। পড়ে অনড় হয়ে বসে বইলুম। চাবির গোছার হাত বুলিবে দেখলুম কী ভীষণ ঠাণু। আমার চটিজোড়া, গামছা, বিছানা পরিপাটি করে সাজানো। মনে হলো কে যেন আমার জন্মে ঘর সাজিয়ে প্রতীকা করছে।

কী হোল ? পামার হঠাৎ এ ধরণের মন্তিগতি কেন হল ? আমি তো ওকে ভালবাদি! আমার পরীক্ষা-নিরীক্ষার পালার ও অসভট হয়েছে বলে আমাকে একবারও জানাবার দরকার মনে করলো না ? কী নিমকহারাম মেয়েরা ?

আবার ঘরের দিকে দৃষ্টি কিবে এলো। মেকেটা কী সুক্ষর
পবিদার আর ককরকে। হারিকেনের চিমনি অভুত ভাবে সাদা।
নাঃ! আমি আর ভারতে পারলুম না। একটানে বোতলের
ছিপি থুলে গলার মহো নির্ভেঞ্জাল মদ ঢেলে দিতে লাগলুম। বুক আলে গেল। এ অলাব সঙ্গে সঙ্গে বদি পামার শুতি, তার স্পর্শ বিলুপ্ত হয়ে বেতো ? বদি বেতো বিগত দিনের সব হাসি-কায়াব মুহুতিভালি এমনি করে পুড়ে থাক হয়ে। বে জীবন কামনা

করেছিলুম অথচ পাইনি আর কথনো পাবো না বলে জানি, সে জীবনের কথা যদি খার ভাবতে না হোত !

বাক সব শেব হয়ে। বাক নি:শেব হয়ে চেডনা লোপের প্রম বন্ধ। জ্ঞান হারিয়ে ফেলতে চাই, জনাগত ভাবে অভার্থনার আশার নর, বর্তমানকে মুভি থেকে মুছে ফেলভে। জীবনের পাত্র শৃশ্ব হতে আর কভটুকুই বা বাকী!

শেষ

"আমি প্রাচ্য ও পাকাত্যদেশ অনেক ঘ্রিয়ছি, অগতের সম্বন্ধে আমার একটু অভিজ্ঞতা আছে। আমি দেবিলাম, সকল জাতিরই এক একটি প্রধান আদর্শ আছে, তাহাই সেই জাতির মেরুলগুসরুপ। রাজনীতিই কোন কোন জাতির জীবনের মূল ভিত্তিমন্ত্রপ, কাহারও কাহারও বা সামাজিক উন্নতি, কাহারও কাহারও আবার মানসিক উন্নতি-বিধান, কাহারও বা অভ কিছু আতীর জীবনের ভিত্তি। কিছু আমাদের মাতৃভূমির জাতীর জীবনের মূল ভিত্তি ধর্ম-- একমাত্র ধর্ম। উহাই আমাদের জাতীর জীবনের মেরুলগু, উহারই উপর আমাদের জাতীয় জীবনের মূল ভিত্তি স্থাপিত।"

-शामी विष्कानम् ।

भागमा रायान ७: श्रकानन श्रीयान

বিশেষ স্থান অধিকাতা তথা ভারতীর পুলিশের ইভিহাসে বিশেষ স্থান অধিকার করে আছে, পাগলা মার্ডার কেস" বা পাগলা হত্যার মামলা উহাদের মধ্যে এক অক্তম। এই মামলাটি সম্পূর্ণরপেই পারিবেশিক প্রমাণের উপর নির্ভির করে আদালতে সোপদ্দীকৃত হর। মানুষ মিধ্যা কথা বললেও, পরিবেশ মিধ্যা বলে না। তাই এই হত্যাকাগুটির কোনক প্রভাকদর্শী না থাকলেও এই মামলার একজন আসামীর প্রাণক্ত এবং স্থই জন আসামীর বাবক্জীবন দ্বীপান্তর সম্ভব হয়েছিল। এই থেকে বুঝা হাবে, কিরপ গৈর্ধা ও চাতুর্ধ্যের সহিত এই মামলা ভদন্ত ও সোপদ্দীকৃত হয়েছিল। এই মামলার তদন্ত সম্পূর্ণরপে ভারতীয় পদ্ধতিতে সমাধা করা হলেও এই ভদন্তবীতি পৃথিবীর ইতিহালে অত্লনীয়। ভাই মহাধন্মাধিকরণ আছিল থেক্ষকার সাহেব হাইকোটের সেসেন কোটে উহার রায়-দান প্রসাক্ষ এই অললিত ভদন্তকে পুলিশি ভদন্তের জংহাত্রারণে অভিহত করেছিলেন।

এই মানলা সম্পর্কিত ঘটনা ও উহার তদন্ত জনসাধারণের মনকেও
কম জাসোড়িত কবে নি। কারণ, এই মহাতদন্তে পুলিশের ন্যার
জনসাধারণেরও বহু বাজি জাল গ্রহণ করেছিল। ঐ ঘটনার পর বহু
বংসর জতিবাহিত হরে গিয়েছে, কিছু ঐ হতভাগ্য নিহত ব্যক্তি ও
উহার হত্যাকারীর বিষর জনসাধারণ আজাল ভূলে নি। উত্তরকলিকাতার গৃহে গৃহে এই ঘটনাটি আজার আলোচিত হরে থাকে।
এই ঘটনার নারিকা ছিল এই শহরের এক অপুর্কা স্থলরী নারী।
এই নারীর আলমা ভালবাসা একাধারে নিহত ব্যক্তি ও তাহার
হত্যাকাথের মূল কারণ। ভাই বহু বংসর ধ'রে বহু সাহিত্যিকও ঐ
ঘটনাটির সন্ব্যবহার করেছেন। উপরছ এই মানলার তদন্তে পুলিশ
বিশেষরণে জনসাধারণের সক্তির সাহাব্যলাভ করেছিল। তাই
মানলাটিকে এই সম্পর্কে আজ পর্যান্ত একটি উদাহরণস্বরণ উল্লেখ
করা হয়।

এইবার মৃল ঘটনা সম্বন্ধ বিবৃত করা বাক। এই সমর আমি ভামপূক্র থানার একজন অফিসাররপে কর্মবহাল ছিলাম। এ দিন তারিথ ছিল ১৯৩৬ সালের এই সেপ্টেরর। সকাল আটটার সময় আমরা থানার অফিস-ঘরগুলিতে নিজ নিজ কাজকর্মে মনোনিবেশ করছি, এমন সমর কলিকাতা করপোরেশনের ওভারসিয়ার বার্ বিনরকুমার বার হস্তশন্ত হরে সেথানে উপস্থিত হলেন। ভদ্রলোক্তর সঙ্গে আমার পূর্বে হতেই পরিচর ছিল। বিমিত হরে আমি জিজাসা করলাম, 'আরে ব্যাপার কি মশাই! আপনার আবার কি হল!' ভদ্রলোক নিজের সম্বন্ধে কোনও কথা বলতে আসেন নি। তিনি চোথ ছটি বছ বছ করে বলে উঠলেন, 'সাংঘাতিক কাণ্ড মশাই, জীবনে এ আমি দেখিনি। মুণ্ডা পর্যান্ত কেটে নিরেছে!' এক সঙ্গে

আমাদের সব কয়জনেরই হাতের কলম থেমে গেল। ঘটনাটি তাঁর নিকট তুনা মাত্র আমি হবিলদারকে একজন জমাদার ও দশজন কনেষ্ট্রক তৈরি করবার জন্ত আদেশ দিরে, ত্রিত গতিতে সংবাদ-বহিতে প্রাথমিক সংবাদরণে তাঁর নিয়োক্ত বিবৃতিটি নিখে নিলাম।

শামি একজন করপোরেশনের ওভারনিয়ার। সকাল ছয়টার সময় আমি প্রভিদিনের মত এই দিনও মেধরদের কাজে ধ্বরদারী করতে বার হই। ঘূরতে ঘূরতে আমি বলরাম মজুমদার স্টাটে এসেছি, এমন সমর আমাদের ঝাড়াদার মোহন সম্মুখের মেধর-গলি হতে ছুটে বেরিয়ে এসে আমাকে বলল, 'বাবু বাবু, ভিতরে একটা য়ুভুকাটা লাস পড়ে ররেছে।' আমি সাহদ করে এ গলির ভিতর কিছুদ্র এগিরে গিরে দেনি, একটি মুভুহীন দেহ দেওয়ালের ভিতর একটি গর্ভে চুকানো রয়েছে। এর পর আমি মোহনকে বাইরে অপেকা করতে বলে আপনাদের ধবর দিবার অন্ত ছুটতে ছুটতে ধানায় এসেছি।"

উপরি-উক্ত প্রাথমিক সংবদটি থানার নথিভুক্ত করে আমি
ইনেস্পেরীর স্থনীন বার এবং অক্তান্ত অফিলারদের সহিত ছবিত
গতিতে ঘটনাস্থলের উদ্দেশ্যে রওনা হলাম। কোনও গুকুতর
অপরাধের তদন্তে স্কাপেকা প্ররোজন বর্থাস্থর ঘটনাস্থলে গমন, তা
না হসে বিলম্বের কারণে বহু সাক্ষ্যপ্রমাণ বিনষ্ট বা অন্তহিতি হয়ে
বার। ঐ সময় অধুনাকালের ন্তার থানার থানার যন্ত্রশক্ত দেওরা
ছিল না। এই অন্ত নিজ্ঞ খরচার ট্যান্ত্রি করেই আমরা ঘটনাস্থলে
গমন করি। তা'ছাল্লা অধিক অফিলার সঙ্গে নেওরার একটি কারণও
ছিল। কারণ, ঘটনাস্থলে এমন অনেক সংবাদ পাওরা বেতে পারে,
বার জন্ম এক একজন অফিলারকে এক এক দিকে বিদ্যুৎগতিতে
পাঠানোর দরকার হতে পারে। এইবান্ত সংল বলে মাত্র পাঁচ বা ছর
মিনিটের মধ্যেই আমরা ঘটনাস্থলে এসে পৌছিরেছিলাম।

ঘটনাস্থলটি ছিল একটি অপবিসর মেধ্ব-সলিতে। এই অধ্যাত (পরে প্রধ্যাত) সলিটি কুমাবটুলি অঞ্চলের বলরাম মজুমদার ষ্ট্রীট হতে নির্গত হয়ে ছই সারি বৃহৎ বিতল জটালিকার পশ্চাল্ভাগের মধ্য দিরে বহুল্ব পর্যান্ত চলে গিরেছে। এর অপর মুখটি থ'রে কিছুটা দ্ব এগিরে গেলে শোভাবাজার ষ্ট্রীট পর্যান্ত অনারাসে চলে বাওরা বার। কিছ আশ্চর্যোর বিবর, এ সকল বাটার পশ্চাল্ভাগে এমন একটিও দরজা ছিল না, বেখান দিয়ে কেহ এই সলিভে বেরিয়ে আসতে পারে। বস্ততঃ পক্ষে এক করপোরেশনের মেধ্ব ও ঝাড়দার ছাড়া এই মেধ্ব-গলি বা সুয়ার্ড-ভিচ অপর আর কারও ছারা ব্যবস্ত হ্বার কথা নয়।

এই মেথব-গলিটা দিয়ে কিছুটা দূব অগ্রসর হরে আমার মনে হল বে, এই গলিটার সহিত্ত একমাত্র সিঁদেল চোরগণ ব্যক্তীত আর কারও পরিচর থাকবার কথা নর। এইজভ বেতে বেতেই আমি

ইনেসপেক্টার বার্কে বল্লাম, 'দেখুন আমার মনে হর হত্যাকারী একজন সিঁদেস চোর বা ডাকাতও বটে।' বিশ্বিত হবে আমাকে স্থনীল বাবু বললেন, 'এ কি বলছো তুমি ? বে সি দেল চোর সে তো খুনে-ভাকাত কখনও হয় না ? এই সম্পর্কে বিলাতী বইপ্তলো তো ৰৱ বুকুম বলে।' এই সম্বন্ধে কয়েকটি বিলাতী কেতাৰ আমারও প্তা ছিল। কিছ তাদের সহিত স্ব ক্রটি বিষয় আমি এক্মত হতে পারিনি। কারণ ঐ সম্বন্ধে আমার নিজেবও অনেক অভিজ্ঞ ছা हिन। छारे छेखद बामि रममाम, प्रथम मिर्मिन कार्य, छाकाक छ খুনে আমার মতে এক শ্রেণীরই তিনটি উপশ্রেণী। কারণ এরা সকলেই বস্ত কিংব। ব্যক্তির উপর বলপ্রকাশ করে খাকে। এইজন্ম বে নিদৈল চোর লে খুনও করতে সক্ষ। তালাভোড়রা নিপ্সরোজনে আঘাত না হানলেও প্রয়োজন হলে আঘাত হানে। এইজভ উহাদের মধ্যবর্ত্তী অপরাধী বঙ্গা হয়ে থাকে। ডাকাভরা একাধারে দরজা-জানালা বা দেওগাল ভেডে সম্পত্তি অপহরণ করে প্রয়োজন হলে ভয় দেখায় বা খুনও করে। তবে একজন নির্বাগ চোর, মর্থাং বে কোনও বস্তু কিংবা ব্যক্তি, কারও উপর কোনও অবস্থাতেই বলপ্রকাশ করে না, সে সম্পূর্ণ এক বিভিন্ন শ্রেণীর অশ্বাধী। এইখন্ত এরা কথন্ত হত্যাকার্যা কগবে না। এই কারণে আমার মনে হয় যে, এমন ব্যক্তি এই হতাংকাও করেছে যে এই অঞ্জে সাস বা সিঁনেল চোরের কার্যোর জন্ম এই গসিটি পূর্বে ব্যবহার করেছে।'

এই ভাবে কথোপকখনের মধ্যে আমরা মৃল ঘটনান্তলে এসে স্তম্ভিক হয়ে দাঁড়িয়ে পড়সাম। গলির তলদেশ হ'তে প্রায় চারি ফুট উদ্ধি একটি বাটার শিছনের দেবালের ভিতরকার একটা গর্প্তে উপুড় অবস্থায় একটা মুগুইন দেহ বাধা রয়েছে। মন্তক্টি বেশ বড়-সংকারে স্বক্ষদেশ ঘেঁসে পেঁচিয়ে কেটে নেওরা হয়েছে। ঐ মৃতদেহের নিয়ে কোনও বক্ত দেখা না গেলেও উহা হতে মাত্র পাঁচ ফুট দ্বে তইটি রজের চাপড়া দেখা যায়। সত্তর্ক দৃষ্টির সাহার্যে আমরা ঐ স্থানের বাটার দেওরালেও রজ্জের কোঁটা দেখতে পেলাম। বেশ বুঝা গেল, এইস্থানেই ঐ ব্যক্তিকে হত্যা করা হয় এবং তার ফলে বক্ত ফিনকি দিয়ে উঠে দেওরালের গায়ে লাগে। এর পর এই মৃতদেহটিকে ধ্বাধবি করে ভূলে ঐ গর্জের মধ্যে ঘুসটে রাখা হয়। কিছ এই ভারি মৃতদেহটি অত উপরে ভূলে রাখার অভ একাবিক লাকের প্রয়োজন। এইজাত আমরা ঐ সমরেই বুঝে নিই বে, হত্যাকারী একজন নয়, ভারা নিশ্চয় গুই ভিন বা ভতোবিক ব্যক্তি।

এইবার কেছ কেছ এ দেছটি নীচে নামিরে পরীক্ষা করতে চাইলেন। কিছু আমি ও স্থনীল বাবু এই সম্বন্ধ একমন্ত হতে পারলাম ইনা। এইজন্ত আমরা ফটোপ্রাফার, প্লানমেকার ও কিলার ও কৃট প্রিণ্ট এক্সপাটের জন্তে অপেক্ষা করা সমূচিত মনেকরলাম। বলা বাহুল্য, আমরা ঘটনাস্থলে রওনা হবার পূর্বেই এই তিন ব্যক্তিকে সোজা ঘটনাস্থলে আনবার অন্ত ফোনে বলে দিরেছিলাম। করেক মিনিটের মধ্যে এ অক্সপাটিত্রয় অকুস্থলে উপস্থিত হলে আমরা প্রথমেই এ পর্ত্তিসহ মৃতদেহটির একটি আলোকচিত্র তুলবার বন্দোবন্ত করলাম। কারণ তা না হলে অজ্ব ও জ্বিগণ প্রেল্ডনাকনেবাধে ঘটনাস্থল পরিদর্শনে এসে হয়ত আপন আপন ধান-ধারণা বলভঃ বলে বস্তেন বে, এ অপ্রিদ্বর পর্যেত অল

বড় একটি দেহ প্রবেশ করিয়ে রাখা সম্ভব ছিল না। আমার বেশ মনে পড়ে, এই সম্পর্কে আমার সহকারীদের এ সময় আমি বলেছিলাম, 'আমাদের প্রেভিটি সাক্ষ্য-প্রমাণ সংগ্রহ করতে হবে তাদের কথা ভেবে যাদের কাছে শেষ বিচারের ভার আছে। তা না হলে আমাদের সকল পরিশ্রম এক দিন ব্যথভার পর্যুবসিত হবে।'

এইথানে ফটোতোলা কার্য্যের পর এ গর্ভ, মৃতদেহ, অনুরম্ভ রজের চাপ এবং ছই পার্যের বাটাগুলির পরিখেক্ষিতে এ গলিটির আরও ছই-ভিনটি ফটোও আমরা উঠিরে নিলাম। এর পর প্লানমেকার এসে উপরোক্ত প্রতিটি পদার্থের পারস্পরিক দুর্ঘ দেখিয়ে অভি সাবধানে ঐ গলির পরিধি ও দৈর্ঘ্যের মাপসহ ঐ পর্ভেরও একটি প্ল্যান এঁকে নিলেন। এ ছাড়া সমধিক আলোকের অভাবে ফটো ভোলার অস্বিধা হওয়ার আমরা কুমান্ট্রলির বিখ্যাত শিল্পী গোপেশ্বর পাল ও তাঁর ভাতুপাত্র মণি পাল মহোদয়দের ডাকিয়ে এনে এ গুর্ভ ও গলিটির একটি প্রাণবস্ত পেন্সিল স্কেচও তাঁদের ধারা আঁহি যে নিই। এই চুই ভদ্রলোক সানকেই বিনা পারিশ্রমিকে এই বিবয়ে আমাদের সাহাব্য কবেছিলেন। এর পর সাবধানে আমরা এ মৃতলেইটিকে নামিরে এনে উহা ভীক্ষদৃষ্টিতে পরীক্ষা করতে থাকি। স্বামরা প্রথমে রক্তের চাপের উপর বা জন্ত কোনও স্থানে কোনও ফিলার বা ফুট প্রিণ্ট পছেছে কিনা তা খুঁলতে চেষ্টা করি; কিন্তু কোধাও এক্লপ একটি টিপচিছ আমহা পাইনি। আমাদের মধ্যে কেই কেই মত প্রকাশ করেন বে, হরত কোন বাছীতে হজাকাও করে মাধার করে কিংবা শকটে ভূলে দেহটি ঘটনাম্বলে আনা হয়েছে। কিছ বণিও দেশুয়ালে বজের কোঁটা স্থিতিবিভ থাকার ঘটনাত্রল সম্বন্ধে আমরা ধিমত ছিলাম না, কিছ তাহা সত্ত্তে এ গলির ৰাইরের বাস্ভাব উপৰ শক্টাদিৰ চাকাৰ চিহ্ন আৰিছাৰ কৰ্জেও চেঠা কৰি। কিছ কোথাও এরপ কোনও চিহ্ন আমরা খুঁজে পেলাম না। এর পরে দেহটিকে উল্টেপাল্টে পরীক্ষা করে দেখতে পাই বে, উচার বক্ষে তুইটি গভীব ক্ষত আছে। এবং তত্নপৰি উহাৰ উভৰ পাৰেব টেওন বা শিরাও কেটে দেওয়া হয়েছে। দেইটি পুরাপুরি নগ্ন থাকদেও ভদদেশ হতে আমৰা একটি বক্তদিক গেঞ্জি ও একটি পৈতা আবিদাৰ क्वि।

এই মামলা প্রমাণ করতে হলে প্রথমে আমাদের বার করতে হবে, এই নিহত ব্যক্তিটি কে? নিহত ব্যক্তিটির নাম, ধাম ও পরিচর বার না করতে পাবলে হত্যাকারীকে থুঁজে বার করা তো শক্ত হবেই, উপরত্ব এই মামলাটিও সমাকরণে প্রমাণ করা বাবে না। একথে মৃতের দেহাবরবের ও উহার সন্ত্রিকটে প্রাপ্ত গৈতাটি পরিলক্ষ্য করে মাত্র আমরা এইটুকু বুরতে পারলাম বে, লোকটি একজন ২৭ বা ২৮ বংসরের দেশীর প্রামণ যুবক, কিছ সে প্রকলন দেশবালী, মাত্রাজী, উদ্বিধা কি বাঙ্গালী তা বুরা গেল না। এখন আমাদের প্রথম সমত্রা হল, বৃত্বাজ্বির পরিচর বার করা। এই উদ্দেশ্ত আমরা মৃতদেহের পারের ও অঙ্গুলির ছাণগুলি সবত্বে সংগ্রহ করতে থাকি। কারণ, বহু ক্ষেত্রে বারা নিহত হর, তারাও সং ব্যক্তি থাকে না। এদের কেছু কেছ বিবিধ অপবাধ করার তাদের অঙ্গুলি ও পদ্চিছ গৃহীত হয়ে পুলিশী দপ্তরে রক্ষিত আছে। অনেক সমর প্রকৃত অপরাধী না হলেও এরা মাত্রদানী গোলমাল বা মারণিট করার অপবাধে থানা সমূহে ধৃত্ব হয়ে থাকে। এই ক্ষেত্রে এদের আম্বীনের কাগজে এদের সহিব বন্ধের

টিপদহি পাওরা গেলেও বেতে পারে। এতবাতীত কোনও দলিল প্রভৃতিতে এদের দম্ভথতের বদলে অসুলের টিপ পাওরা অসম্ভব নর। বেহেতু দেহ পুড়িরে ফেলার পর ঐ সকল চিহ্ন পরে প্রয়োজন হলে আর আমরা পারো না, দেই হেতু আমরা পূর্বাস্থেই ঐ গুলি সংগ্রহ করে নিয়েছিলাম। অনেক সমর নিহত ব্যক্তিদের পদ-চিহ্ন তাদের ব্যবস্থাত জুতার অথতলাতেও সন্নিবেলিত হয়ে থাকে। পরে বদি আমরা ঐ নিহত ব্যক্তির একজোড়া জুতা আবিফার করজে পারি, তা'হলেও ঐ স্থতলার উপর অক্তিও পদচিছের সহিত এই মৃতের পদ হতে সংগৃহীত চিহ্নের তুলনা করে বলে দিতে পারবো বে, ঐ মৃত ব্যক্তিটিই ছিল জুতার অধিকারী।

এর পর ইনেসপেক্টার বার দেহটি আরও পরিদর্শন করে দেখনেন বে, মৃত ব্যক্তির একটি পা কুশ-পা, এবং উহাব বাম বাছর উপর একটি ফুলের উল্লিচিছত আছে। এ'ছাড়া আমরা মৃত দেহের বক্ষে ও বাছতে প্ৰচৰ লোম দেখতে পেলাম! কিন্ত এইখানেই আমৰা ক্ষান্ত হইনি। আমরা মৃতদেহের ওলন, দৈর্ঘ ও প্রস্থের মাণও গ্রহণ করতে ভুলনাম না। কারণ কে বলতে পারে বে সংধর কারণে বা চুরি করার জন্ত কোথায়ও ভার দেহের ওজন গৃহীত হয়নি। এ'ছাড়া অভ কোথাও হতে মৃত্যাজিব জামা প্রভৃতি উদ্বার করে উহাদের মাপ হতে আমরা প্রমাণ করতে পারবো বে, এগুলির অবিকামী এ মৃতব্যক্তিই। এইবার আমরা একটি ভাল দক্তিকে ডাকিরে এনে ঐ মৃতব্যক্তিব দেহামুষায়ী কোটের ও সাটের এক একটা মাপ তুলেও নিই। এই ভাবে বর্তমান ও ভবিষ্যতের প্রয়োজন কয়শায়ী কার্য্য সমাধা করে মৃতদেহের বিভিন্ন অবস্থার আরও ছইটি আলোক-চিত্র গ্রহণ করে আমরা আমাদের পুলিশ সার্জ্জেনকে ডেকে আনবার বস্ত ট্যান্ত্রি সহ একজন জুনিরার অফিসারকে পার্টিয়ে দিলাম। কারণ সঠিকভাবে কোন্ সময় হতভাগ্য লোকটি নিহত হয়েছিল ভা ভদন্তের কারণে আমাদের আন্ত জানা দরকার। ডাক্তার সাহেব অনতি-বিশব্দে ঘটনাস্থলে এসে মুভের দেহের কাঠিছা ও রভের জমাট পরীকা করে বলে দিলেন যে, ঐ ব্যক্তিকে গতকাল সন্ধ্যা নয়টা আন্দাজ সময়ে নিহত করা হরেছে। কিন্তু আশ্চর্ব্যের বিষয়, ইনেস্পেন্টার বার নিজে একজন ডাক্টাব না হলেও স্বকীর অভিজ্ঞতা প্রস্তুত इे जिपूर्व्य इंपनंद नमद्रक्राल के नमद्रकों है निर्प्तम करविहालन।

প্রব পর ধরাধরি করে আমরা মৃতদেহটি রান্তার উপর এনে হাজির করলাম। সভাবতটেই প্রথম হতে একটি বিরাট জনতা দেখানে জড় হরেছিল। একংশ এই জনতা বহুগুণে বর্ষিত হরে উঠল। আমরা জনতা জপসারিত ত কবিইনি বরং চাইছিলাম বে, আরও অধিক সংখ্যক লোক এসে মৃতদেহটি দেখে বাক। বন্ধতপক্ষে করেক ঘটা বাবং নিকট ও দূর হতে জাগত বহু নাগরিককে আমরা ঐ মৃতদেহটি দেখে বাবার স্থবিধে করে দিলাম। এই খুন সম্পর্কিত সংবাদ ইতিমধ্যে সহরের নানা দিকে রটে গিরেছিল। এইজঙ্গ বিশেষ করে নির্যোজ ব্যক্তিদের আত্মীয়রা দলে দলে অকুস্থলে এসে উপস্থিত হচ্ছিল। কিছু ঘুর্ভাগ্যের বিষয়, তাহাদের মধ্যে কেইই ঐ মৃতব্যক্তিকে সনাক্ত করতে পারলো না। এই কারণে স্থতক্ষ্পত্ত ভাবে স্বভাবতটেই ধারণা হবার কথা বে, ঐ মৃতব্যক্তি ঐ অঞ্চলের কোনও বাসিকা ছিল না। কিছু শান্তিরকীদের মন কথনও চিতপ্রশ্বতির ছারা অভিভূত রাণা উচিত নর। এইজঙ্গ

আমরা তথনও পর্যস্ত কোনও স্থির অভিযত মনের মধ্যে পোষণ করিন।

এর পর আমরা ঐ মেধ্ব-গাঁচিটি পুখামুপুখরপে আর একবার পরিদর্শন করি। কিছু খুন সম্পর্কে কোনও প্রমাণ বা চিহ্ন আমরা আর একটিও পাই নি। ভবে নিকটে অপর একটি প্রাচীরের গর্ভের মধ্যে আমরা একটি কুকুরকে মোহাছের অবস্থার শারিত দেখি। সভবত: আসামিগণ ব্যতীত এই একটি মাত্র জীব ঐ বীভংস হত্যা দেখে থাকবে, কিছু এই ভীত ও ত্রস্ত কুকুরটি মৃক বিধার সে আমাদের কোনও উপকারেই আসিল না।

আমরা প্রথমে এই কুকুবটির মালিক সম্বন্ধে থোঁজ খবর করবো মনস্থ করেছিলাম। কিন্তু করপোরেশনের মেথর মোহন আমাদের জানিয়ে দিল বে, এ কুকুরটির কোনও মালিক নেই এবং সে উহাকে প্রতিদিনই এ গলিতে ঘ্রাফিরা করতে দেখেছে। কুকুরটিকে এ স্থানেরই একজন পুরাতন বাসিকারণে বুবে আমরা ভদল্ভের এই সন্থাব্য পথটি তথনই পরিভাগি করি।

এর পর আমরা অকুস্থলের প্রার প্রতিটি বাড়ীর বাসিন্দাদের এই ধুন সম্পর্কে জিজ্ঞাসা করি, কিছ তারা এই হত্যাকাণ্ড সম্পর্কে কোনও সংবাদ দিতে পারে না। বস্ততপক্ষে এ হত্যাকাণ্ড রাজিবোগে এ নিরালা পলিতে সমাধা হওয়ার এই সম্পর্কে তাদের পক্ষে কোনও ধ্বর না রাধা থুবই স্বাভাবিক ছিল।

ঐ দিন ঐ মুগুহীন দেহটি পরিদর্শন করে মাত্র এইটুকু জেনেছিলাম বে, মুক্তব্যক্তি জনৈক ২৭ বা ২৮ বংশবের মধ্যবিত্ত পরিবারের রাক্ষণ যুবক ছিল। এবং উহাকে সম্ভবতঃ পূর্ববাত্রে জাট বা নর বটিকা জালাজ সমরে নিহত করা হয়ে থাকবে। ঐ মৃতদেহের হাতের বজ্ঞোপরীত (লৈতা), রক্তের জসম্পূর্ণ জমাট এবং মৃতদেহের হাতের ও পান্ধের চেটো সহ দেহাবয়বের স্বরূপ প্রভৃত্তি হতে জামরা এই করটি সিছাস্তে জাসি। এই দিন তদন্ত সম্পার্ক জার কোনও সক্ষতা লাভ করা জামাদের পক্ষে সম্ভব হরনি। তবে পরে মৃতদেহের লোমাকীর্ণ বাম বাছতে উল্ফিলারা উৎকীর্ণ একটি বেলফুল জামরা জাবিছার করতে পেরেছিলাম। মৃতদেহের বাছর ঐ উল্কি-চিহ্ন হতে একদিন তাকে সনাক্ত করানো সম্ভব হবে বুবো জামরা মৃতদেহটি কলিকাতার পুলিশ মর্গে পাঠিরে দিই। এই সম্পর্কে ঐ পুলিশ মর্গের রক্ষককে জামরা জারও জমুবোধ জানাই বে, শব-ব্যবজ্ঞেদের পর বেন ঐ দেহটি তাদের বরফ-যুক্ত ঠাণ্ডা খরে জম্ভতঃ পনের দিন রক্ষা করা হয়।

এর পর বধারীতি মৃতদেহের পোষ্টমর্টমের জন্ত পুলিল সার্জ্ঞেনের নিকট প্রয়োজনীয় নথীপত্র পাঠিয়ে আমরা তথনকার মত একটা অক্মতার গ্লানি নিয়ে কুন্ত মনে থানার ফিরে এলাম। প্রয়োজনীয় কার্ব সমাধা করতে করতে এই দিন রাত্রি নয়টা বেজে গিয়েছিল। এইজন্ত তথন্তসম্পানীয় পরবর্তী কার্যাকরণ সম্বন্ধ চিন্তা করতে করতেই আমরা বে বার নির্দিষ্ট বাস্তবনে বিশ্রামের জন্ত কিরে এলাম।

প্রদিন ৬ই সেপ্টেম্বর—প্রাত্যের ভোর হুটার সময় আমরা বে বার কোরাটার হতে নেমে থানার অফিসে এসে পুনরার এই হত্যাকাও সম্বন্ধে ভদস্ভবত হলাম। ইতিমধ্যে লালবাজার গোরেলা বিভাগ হতেও সুইজন অফিসার আমাদের সাহাব্য করবার জন্ম এসে সিরেছিলেন। ইনেস্পেক্টার স্থনীল রার, আমি স্বরং এবং ভারা— এই চারজন অফিসার দত্তবমত সেখানে একটি বাউও টেবিল কন্দারেক বসিয়ে দিরেছিলাম। কারণ, টিমওরার্ক ভিন্ন এই সকল চুক্রহ তদন্তের সমাধা করা হুঃসাধা ছিল। আমাদের সমূধে প্রধান সমন্তা ছিল তিনটি, বধা,—প্রকৃতপক্ষে থুনী কে ? কে খুন হলো ? এই সময় কলিকাতার গোয়েকা বিভাগে উন্নত বরণের কার্য্যপদ্ধতি কেন্দ্র এবং কোরেকাক ল্যাবোরেটারী স্থাপিত হয় নি। এইজন্ম প্রক্রপ আলোচনার জন্ম আমাদের স্বকীর অভিজ্ঞতাসমূহই একমাত্র সম্বল ছিল। তবে বতটা বৈজ্ঞানিক সাহাধ্য পাওয়া বায় ততটাই স্থবিধা। এইজন্ম ছই জন পোয়েকা আমি ও স্থনীল বারু পোষ্টমর্টমের বিপোটের পারিরে কিয়ে আমি ও স্থনীল বারু পোষ্টমর্টমের বিপোটের অপেকার থানার উপস্থিত থাক্লাম। বেলা প্রার নমটার সময় দেহব্যবচ্ছেদ সমাধা হবার পর আমাদের বহু-আকাজিক পার্র্যক্রি বিপোটের সারবজ্ঞর প্রকটি অম্বলিপি নিমে উদ্যুত করা হলো।

"মৃতব্যক্তির বাসে অনুমান সাতাশ বা আটাশ। পাকস্থনীর পাচ্যমান থাতের অরপ ও বজের অমাট প্রভৃতি হতে বুঝা বার বে ৪টা সেপ্টেম্বর রাত্রি আন্দান্ত আট বা নর ঘটিকার ঐ ব্যক্তিকে হত্যা করা হরেছে। অধিকছ ইহাও জানা গিরাছে বে, প্রথমে ঐ মৃতব্যক্তির বক্ষে ছুরিকাঘাত করা হর। ঐ সময় মৃতমক্ত ভাবে সে পভিত হলেও তার মৃত্যু হর নাই। ইহার কিছু পরে তার মৃত্টি কেটে নেওয়া হলে সে প্রকৃতপক্ষে মৃত্যু বরণ করে। অর্থাও তার মৃত্টি তার জীবিত অবস্থাতেই কর্তান করা হরেছিল। বিশেষরূপে পরীকা ভারা বুঝা গিরেছে যে মৃত্টি তার মৃত অবস্থাতে কর্তান করা হর নি।"

এইবার আমরা বুঝতে পারি ষে, ৪ঠা সেপ্টেম্বর ১১৩৬ সনে রাত্রি ৮ বা ১ খটিকার ঐ মেধর-গলিতে একজন ২৭ বা ২৮ বৎসর বয়ন্ত যুবককে ছোর করে বা ভূলিয়ে নিয়ে এনে প্রথমে ছুরি ছারা **অ**হিত ও পাতিত করা হয় এবং তাহার কিছু পরে ভার **মুগুটি** কর্তুন করে ভাহার মৃত্য ঘটানো হয়েছে। এই সম্পর্কে আমরা ষ্পারও একটি বিষয়েও বিবেচনা করি। ঐ ভারি মৃতদেহটি মাত্র একজনের পক্ষে দেওয়ালের এ গৃহববের মধ্যে হস্ত করা সম্ভব ছিল न। ऋडवार निक्षय এकाधिक राक्ति खे कार्या नियुक्त श्रद्धिन। এই তথাটি হতে আমরা সহজেই অমুমান করতে পারি যে, হত্যাকাণ্ডটি হুই তিন বা ততোধিক ব্যক্তি দাবা সমাবা হয়েছে। কি**দ্ৰ** এই সকল বিষয় অবগভ ছওয়া সত্ত্বে আমাদের সমুখে মূল ভিনটি প্রাই অমীমাংসিত বয়ে গেল। বধা-ধুন হলো কে? কে বা কারা পুন কৰল ৷ এবং কি উদ্দেশ্যে তাৱা এই খুন কৰলো ৷ এই তিনটি বিষয় অবগত হওয়া মাত্র ষে, এই থুনের কিনারা করা সহজ হরে উঠবে তা একজন সাধারণ মামুবও বোবে, কিছু এই গুরুহ তথ্য তিনটির ন্মাধান কে আমাদের করে দেবে ? কোনও এক অজ্ঞান্ত বিবর্-বস্তু অমুসন্ধান দারা ভ্রাত হতে হলে গবেবকগণ গবেবণার উদ্দেশ্যে ধাৰ্ষমে কয়েকটি সম্ভাব্য পরিসংজ্ঞা করনা করে নিয়ে পাকেন। তথ্যাত্মদ্ধান ও গবেষণাকার্য্য এই নিয়মেই পরিচালিত হবে থাকে। ভদস্তকারী বৃক্ষিগণ এক একটি কবে প্রতিটি খিওরী ব্যুসরণ করে প্রকৃত সভ্য নিরূপণ করতে প্রয়াস পেয়ে থাকেন। অকটি খিওরী কিছুটা দূর অমুসরণ করে যদি বুঝা যায় যে, সমুখে আর পথ নেই বা উহা বন্ধ, তা'হলে তাকে ফিরে এসে বিভীয় এক খিওরী অমুযারী তদন্তের কার্য্য করে বেতে হয়েছে। এমনি করে একটির পর একটি খিওরী পর্যালোচনা করে রন্ধিপণ পরিশেবে দেখতে পান বে, তাদের একটি খিওরী অপরাধ-নির্বরের ব্যাপারে ফ্রন্সন্দ হতে চলেছে। জর্থাৎ এ অপরাধ সম্বন্ধে তাঁরা যা অমুমান বা খিওরী করেছিলেন, তাদের মধ্যে একটি মিখ্যা নয়, সত্য। এইজ্ল এই হত্যাকাশুটি সম্পর্কে তদন্তের স্থবিধার জন্ম প্রথমে আমরা নিয়োক্তরণ করেকটি খিওরী তৈরি করে নিই। বলা বাহুল্য, বে সকল তথ্য বা ছাটা আমরা পরিদর্শন ও অমুমান দারা ইতিমধ্যেই সংগ্রহ করতে পেরেছিলাম উহাদের উপর নির্ভর করেই আমরা এ সকল খিওরী স্পিই করি।

(১) নিহত ব্যক্তি হয়তো নিকটন্থ কোনও অমিদার বা ধনীর বাড়ীতে রাঁধুনী আহ্মণ ছিল এবং তার নিরোগকর্তারা ধনীই হবে, তা না হলে রাঁধুনী বাধবে কি করে? এদেশে আহ্মণদিগকেই বাঁধুনী নিযুক্ত করা হয়। চাকররূপে তাদের নিরোগ প্রায়শঃ করা হয় নি। পূর্ব্ব-অভিজ্ঞতা হতে আমাদের এই সত্য জানা আছে। অতএব এই থিওরী অনুসারে নিহত ব্যক্তি বে রাঁধুনীছিল তাতে সন্দেহ নেই। ঐ জমিদার বা ধনী ব্যক্তির কোনও বিধবা বা অনুঢ়া কক্সার সহিত হয়তো ঐ নিহত ব্যক্তির প্রেম হরে থাকবে। ঐদিন রাত্রে বাড়ীর লোকেরা এই গোপন প্রেম ধরে কেলে ঐ রাঁধুনী বামুনকে ভাদের বাড়ীতে বা ঐ মেথরগলিতে হত্যা ক'রে চার পাঁচ জন মিলে দেহটাকে বাত্রে এইখানে কেলে রেথে গিয়েছে।

এই বিভরী অমুধায়ী আমরা সমুখ এবং বিপরীত, এই উভর প্রকার ভদন্ত সুকু করি। স্থামরা চর লাগিরে জানতে চেটা করি বে, অক্সলে কেই এইরপ অবৈধ প্রেমের ব্যাপার অবগত হয়েছে কি না বা এইরপ গুপ্ত-প্রেম সম্বন্ধে পাড়ায় কোধারও কথনও কানাকানি বা জানাজানি হয়েছে কি না? এ খন যদি কারও বাটার মধ্যে সংঘটিত হয়ে থাকে ভা'হলে এপানে প্রভৃত ২ক্ত পড়বে এবং এই বক্ত ভারা গোপনে ধুয়ে বা মুছে ফেলে দেবে। আমরা জ্মুসন্ধান থারা জানবার চেষ্টা করি. কেউ কারও বাড়ীর সম্পুথের নালা বা নৰ্দমাৰ জল অস্বাভাবিক ভাবে লোহিতাভ দেখেছে কি না? আমরা করপোরেশনের মেধরদের জিজ্ঞাসা করতে থাকি, কেউ ব্ৰক্তমাৰা কাণ্ডা কোৰাও পড়ে থাকতে দেখেছে কি না ? বদি আমহা উপহোক্তরণ কোনও সংবাদ পেতাম তা'হলে বুৰে নিভাম বে, আমাদের উপরোক্ত বিভরীটিই সভ্য এবং উহাকেই আমবা আমাদের শেষ সিদান্ত করে—এ বিশেষ পথেই আমবা: ভদত্তবন্ত থাকভাম। বিজ্ঞ তথ্য-তলাস ও অনুসন্ধান খাবা আমরা এইরপ কোনও সন্ধানই পাই নি। ব্যর্থমনোরণ হয়ে আমরা তথন নিমোক্তরণ আমাদের ঘিতীর পরিসংক্রা বা থিওয়ী অমুবারী তদন্ত সুকু করে দিই।

(২) নিহত ব্যক্তি হয়তো কোনও এক ছুর্কৃত্ত অবচ প্রভাবশালী ব্যক্তির জাতা। পৈতৃক সম্পত্তি হতে চিরভরে ব্যক্তিক করার উন্দল্ভে ঐথানে বা অভ কোধাও তাকে হত্যা করে, পরে সহকারীদের সাহাব্যে তাকে এইখানে এনে কেলে রেখে গিরেছে। ইহা সত্য হলে ধবে নিতে হবে বে, ঐ নিহত ব্যক্তি কোনও এক ভন্ত ধনী পরিবারের পূত্র ছিল। কিছ ঐ নিহত ব্যক্তির দেহটার এবং হাতের ও পারের চেটো পরিদর্শন করে বুঝা গেল বে ঐ ব্যক্তির ধনীর ঘরে বর্দ্ধিত না হওরাই স্বাভাবিক। কারণ তার পারের চামড়া স্থুল ও কর্কণ এবং বিক্ষত দেখা গিরাছে। এই থেকে নিহত ব্যক্তিকে বরং একজন ভব্দুরে বা অধঃপত্তিত মধ্যবিত্ত খবের সম্ভান বলেই প্রতীত হয়। এইজ্ঞ এই থিওরী বা পরিসংজ্ঞাটি আমাদের নিকট গ্রহণ্যোগ্য মনে হয়নি।

(৩) হয়তো নিহন্ত ব্যক্তি একজন অসংচরিত্র বৃবক। কোনও দ্বীলোক ঘটিত ব্যাপারে তার কোনও এক প্রতিঘন্দী প্রেমিকপ্রবর শ্বয় কিংবা লোক মারফং তাকে নিহন্ত ক'রে ঐধানে ফেলে রেখে গিয়েছে।

এই ব্যাপারে আমরা পুলিশ সাজ্ঞেনকে শ্বব্যবজ্ঞেদের সময় তার বৌনদেশ পরীক্ষা করে জানাতে অনুরোধ করি বে, এ নিহত ব্যক্তির কোনও বৌল-রোগ ছিল কি না। এবং নিকটছ বেখাশর সমূহে এরপ কোনও বাজি বন্ধু-বান্ধবসহ হামেসা কোনও বেখা-গৃহে গমন করত কিনা, তা'ও আমরা অবগত হতে চেষ্টা করি। এইরপ ছুই-একটি বাগড়া-নাটির সংবাদ আমরা কয়েক স্থানে পাই বটে; কিছ অনুসন্ধানে জানা বায় বে বিবাদীরা বহাল তবিরতে জীবিত আছে। এইরপ কোনও এক ব্যক্তি নিক্লেশ হ'রেছে বলে একদিন জানা বার, কিছ এ বেখা-নারী এবং দালালেরা মৃতদেহটি এ নিক্লিটি ব্যক্তির নয় বলে বিবৃতি দের।

(৪) হরতো বা নিহত ব্যক্তি কোনও এক ব্যবসায়ী বা শিল্প-প্রতিষ্ঠানের অংশীদার এবং তাকে ঐ ব্যবসায় প্রতিষ্ঠানের অধিকার হতে বঞ্চিত্ত করবার জন্ম এই ভাবে হত্যা করেছে। এই থিওবীটি বিশাস করনে বুবে নিতে হবে বে নিহত ব্যক্তি অপুত্রক বা আত্মীর ও উত্তরাধিকারী বিহীন।

উপরোক্ত থিওরী অমুষারী অমুসদ্ধান করে এরপ কোনও নিক্দিষ্ট ব্যক্তির সন্ধান আমরা পাইনি। বড় বাজারে এরপ এক নিথোঁজ মাড়োরারী ভদ্রগোকের সংবাদ পাওরা গেল বটে, কিন্তু ভদত্তে জানা গেল বে নিক্দেশের সমর ঐ ব্যক্তির বয়দ ছিল ৬৫ বংসর। ভত্তপরি মৃত যুবকের দেহাবয়ব ও আকৃতিও এই থিওবীর পক্ষে অমুক্ত ছিল না।

এই সকল কারণে এই সকল থিওরী সম্পর্কীর তদন্ত আপাতত স্থাসিত রেপে আমরা নিয়োক্ত থিওরী বা পরিসংজ্ঞা অমুবারী তদন্ত সুকু করে দিই।

- (e) হয়তো বা সে কোনও বাজনৈতিক দলাদলি বা শ্রমিক-বিজ্ঞাটের কারণে নিহত হয়ে থাকবে। কিন্তু নিকটে কোনও কলকারধানা ছিল না এবং তার চেহারা হতে কোনও রাজনৈতিক ব্যাপারে সে জড়িত থাকতে পারে বলে মনে হলো না। এইজভ ঐ বিহারে কোনও তদস্ত আমরা নিপ্রযোজন মনে করেছিলাম।
- (৬) ছরভো বা নিহত ব্যক্তি কোনও পুরানো চোর বা তত্ত্ব ছিল। লুঠিত জ্বোর ভাগ-বাঁটোরারার ব্যাপারে কিংবা দলের সহিত বিখানবাতকভা করার কিংবা অপরের হিল্লা আত্মসাৎ করার জন্ত ভার দলের অপরাপর ব্যক্তিরা ভাকে ঐ ভাবে হত্যা করে ঐ ছানে কেলে রেখে সিরেছে।

এই সম্পর্কে আমরা রক্ষিপুসবদের তাদের কোনও জানা চোর বা 'ইনকরমার' এদিন হতে নিথোজ হরেছে কি না সেই সম্বদ্ধে অবহিত হবার কম্ম অমুরোধও করেছিলাম, কিছু কোনও স্থান হতেই এইরূপ কোনও সংবাদ আমরা সংগ্রহ করে উঠতে পারিনি।

বদিও উপরোক্ত কঃটি খিওরী বা পরিসংজ্ঞার উভাবক আমি নিজেই ছিলাম, ভাহলেও পরিপূর্ণভাবে উহাদের কোমটি, আমার নিল্ফেরই মন:পুত হচ্ছিল না। কারণ একটি বিষয় পুন:পুন: আমার মনোমধ্যে আঘাত হান্তিল; সাধারণত: মৃতদেহ হতে মস্তক বিচ্ছিন্ন করার একমাত্র উদ্দেশ থাকে, বাতে ভাকে কেউ সনাক্ত না করতে পাবে। বছদর হতে মৃতদেহ ঐ স্থানে নীত হলে মুও কর্তনের কোনও প্রয়োজন ছিল না। এইজন্ত স্বভারত:ই সনে হতে পাবে বে নিহত ব্যক্তি ঐ স্থানেরই কোনও বাসিলা ছিল। কিছ একটি বিশেষ কারণে এই মত সম্পর্কে আমার মন সায় দেয় না। কাৰণ হত্যাকাৰী এমন এক বিজাতীর খুণাৰ সহিত এই হত্যকাণ্ড সমাধা করেছিল যে, প্রথমে সে তাকে ছবিকাঘাত করেও ষথেষ্ঠ মনে করে নি । সেইজন্ম মুগুটি কেটে নেওয়ার পরও মৃতদেহের তুইটি পাবের শিবা পর্যন্ত কেটে বেখে গিয়েছে। এই ক্রটি তথ্য হতে আমি বৰতে পেবেছিলাম যে হত্যাকাৰী একজন দুৰ্দান্ত প্ৰকৃতির ব্যক্তি তো বটেই, অধিকল্প সে মান্ত-মনের একজন অসাধারণ অবস্থার সন্ততি। এই ধরণের ব্যক্তি প্রেম খটিত ব্যাপারে কোনও এক ভদ্ৰ নাৰীৰ সহিত নিশ্চয়ই জড়িত থাকবে না। তাহলে কি এ নিহত ব্যক্তি এবং উহার হত্যাকারী, এই উভয় ব্যক্তিরই বাতায়াত হামেসা বেখাপল্লী ক্ষণেই সীমাবদ ছিল ? বিবহ চিম্ভা করে ইনেসপেক্টার স্থনীল বায়কে আমার অভিমন্ত জানালে তিনি আমাকে স্বাস্তঃকরণেই সমর্থন করেছিলেন। এইজন্ত পাৰিন হতে সোনাগাছি প্ৰভৃতি বেখাপদ্ধীর প্ৰতিটি গুহে আমরা জোর তদন্ত চালাতে ত্মক করে দিলাম।

এই ভাবে তদন্ত করতে করতে সভ্য সভাই একদিন আমরা আককারের মধ্যে আলোকের সন্ধান পেলাম। এই সমর সোনাগাছি অঞ্চলের অভিকা নামক এক বাসিন্দা একটি উল্লেখবোগ্য সংবাদ শ্রেদান করলো। বস্ততঃপক্ষে অভিকার বিবৃত্তি আমাদের তদন্তের মোড় সম্পূর্ণরূপে ঘ্রিরে দিয়েছিল। সাক্ষী অভিকার বিবৃত্তির প্রয়োজনীয় অংশটি নিয়ে উদযুত করা হলো।

"আমি অতৃপ বাবু ওরফে পাগলা নামক এক ব্যক্তিকে চিনতাম।
৪ঠা সেপ্টেম্বর বাড়ী ফিরবার সময় আমি তাকে ভীত ও এন্ডভাবে
সোনাগাছি অঞ্চলের একটি বাটার বোরাকে মণীন্দ্র বাবু নামক পাড়ার
এক মাতবের ব্যক্তির নিকট বসে থাকতে দেখেছিলাম। ঐ সমর
উহাদের চতৃদ্দিক ঘিরে করেকজন গুণা ব্যক্তি তাকে বকাবকি
করছিল। তাদের মধ্যে একজন এপিরে এসে বললো, মনে রাখিস,
আমি বে লোক নই। আমি হচ্ছি খোকা! আমার নাম ওনেছিস
তো! আমি তোকে খুন তো করবোই, 'সেই সঙ্গে তোর নাকও কেটে
নেবো!' উত্তরে পাগলা বলছিল, আমাকে আপনি এবারকার মত
মাপ কলন। আমি জীবনে আর ঐ প্রীলোকটির ব্রিসীমানাতেও
বাব না।' মণীক্র বাবু মধ্যস্থতা করে এই সময় লোকটিকে অন্থ্রোধ
জানালো, আছো বাকগে বাক। এবারকার মত ওকে মাপ করে দিন।
মণীক্র বাবুর অন্থ্রোবে ঐ লোকগুলো পাগলাকে মুক্তি দিয়ে চলে গেলে

পাগলা আমার পালে পালে চলে গরাণহাটা ব্লীটের দিকে এগুডে থাকলো। আমরা কিছুদূর মাত্র অপ্রসর হরেছি, এমন সমর ঐ থোকা নামক ব্যক্তি গৌৰবৰ্ণের অপর আর এক ব্যক্তির সহিত একটি ৰাড়ীর রোয়াক হতে পাগলার উপর বাঁপিরে পড়লো। খোকা পাগলার খাড় ধরে ঝাঁকুনি দিতে দিজে ওই গৌরবর্ণের লোকটিকে ছবুম করলো এই জলদী গিয়ে একটা ট্যান্ধি ডেকে নিয়ে আয়। ব্যাপার বেগভিক ব্যু আমি স্থে পড়েছিলাম। কিন্তু গৌরবর্ণের লোকটি আমার পথ আগলে বলে উঠলো, ডুই শালা যাস কোথায় ? আমি প্রতিবাদ করে তাকে বল্লাম, গালি দেন কেন, মশাই। উত্তরে সেই লোকটি বলে फीला, बाद अक्टो माज कथा कहेल कारक थून कदाया। यह সমর খোকা ওই লোকটিকে বললো, ওকে এখন বেতে দে, ওকে পরে ঠিক করা বাবে অথন। তুই ভাড়াডাড়ি একটা ট্যাঙ্গি ডেকে আন। এই ভাবে মুক্তি পেরে ভামি ফিরে গিয়ে ঘটনাটির কথা মণীক্র বাবুকে ভানিরে ভাসি। এর পর বাড়ী ফিরবার পথে আমি দেখন্ডে পাই বে খোকা এই গৌরবর্ণের লোকটি এবং আরও চার পাঁচ ব্যক্তি পাগলাকে একটি ট্যাক্সিভে বসিয়ে গরাণহাটা রাস্তা থেকে বেরিয়ে বাচ্ছে। আমি এমনই অভিভূক হয়ে পড়েছিলাম বে ট্যাক্সিটির নম্বর নেবার কথা একৰাৰও আমার মনে আসেনি।"

ভারতীর পদ্ধতিতে তদস্তরীতির নিয়ম প্রথমে সাক্ষীকে বিনাবাধার তার বক্তব্য বিবরে বলে বেতে দেওরা। তার পর তাকে জেরা করে সে বা বলেনি বা বলতে পাবে নি তা বার করে নেওরা। এইজন্ত প্রথমে একদল সোমাম্তি বক্ষী হাস্তালাপ দারা সাক্ষীদের প্রারম্ভিক বিবৃতি গ্রহণ করে। কিন্ত বেহেতু ওই প্রথম রক্ষীর পক্ষে সহসা ভিন্ন মৃত্তি ধারণ করা সম্ভবও নয়, উচিতও নয়; সেই হেতু জেরার জন্ত পরে গল্পার মৃত্তিতে জ্বপর একজন রক্ষীকে জাসরে অবতীর্ণ হতে হয়। এইজন্ত ভারতীর অফিসারদের অভিনয়-চাতুর্বোও শিক্ষিত হতে হয়েছে। এইজন্ত ভারতীর অফিসারদের ভিন্ন কৃষ্টি জন্ত্ববারী তাদের ভিন্ন পরিবেশেরও স্থাই করতে হয়েছে। এইজন্ত ভারতীর অফিসারগণ সমাজ-বিজ্ঞান ও লোকচরিত্রে জভিজ্ঞ হয়ে থাকেন। প্রথম অফিসারটি বন্ধ্বানে সাক্ষীদের বিভূটা তাঁবে রাখে, দ্বিতীর জফিসার গল্পীর বিবরণ স্থাই ক'রে তার কাছ হতে কথা বার করে।

এই ভাবে ভাৰতীর পস্থার আমরা ওই অতি প্রয়োজনীর সাক্ষীর নিষ্ট হতে যে সকল বাড়তি তথ্য সংগ্রহ করি ভাহা নিয়ে উদ্ধৃত প্রশ্নোত্তর হতে বুঝা বাবে।

ত্থ:—ছঁ, তুমি বে সন্ত্য কথা বললে তা আমরা ছীকার করি। কিছু করেকটা কথা আরও তোমাকে আমরা জিজ্ঞানা করবো। এখন স্তিয় করে বলো করেও কোথার তোমার সক্ষে ওর প্রথম আলাপ হ্রেছিল ?

উ:— শাজ্ঞে, বখন কিছুটা বলেছি, তথন বাকিটাও বলবো।
পাগলার সঙ্গে আমার এই পাড়ারই এখানে ওখানে দেখা হতো।
তার ভালো নাম ছিল অতুল বাবু। এসব পাড়ার মেরেরা ভাকে
আদর করে পাগলা বলতো। লোকটা বাবু ভালো তবলা বাজাতো।
তবলচিরপে এপাড়া ওপাড়া, সব্ পাড়াতেই সে নাম
করেছিল।

প্র—শাছা ! ভোমার তো সে একজন শস্তবক বন্ধু ছিল।
^{তুমি} কি শোননি বে সম্প্রতি ঐ পাড়ার কোনও স্বন্ধরী নারীর

সংক্তার ভালবাসা জংগছিল ? এইরপ কোনও গল কি সে ভোমার কথন বলে নি ?

উ:—আজ্ঞে, সে আমার অভ্যস বন্ধু ছিল না। তবে তার সঙ্গে আমার সাধারণ ভাবে জানাগুনা ছিল। এ পাড়ার মেরেরা তাদের গুকলী বা ওভাদের সঙ্গে এরপ কোনও কাল করে না। এতে ঐ সব মেরেদের মত তাদের ওভাদদেরও বদনাম হয়। এইজন্ত ঐরপ কোনও ঘটনা ঘটলেও লজ্জার থাতিবে সে তা আমার নিকট গোপন করেছে।

প্র:—আছা, তুমি তো অনেক বার পাগলাকে দেখেছো। বিজ্ব নয় অবস্থার তার মুশুহীন দেহটা দেখে কি তুমি তাকে সনাক্ত করতে পারবে? তুমি বে তাকে কিছুটা মেহ করতে তা তো বুঝতেই পারছি। এখন পুর্ববিদ্ধারে খাতিরে তার উপর ভোষার একটা কর্ত্তবা আছে; এখন তুমি বদি তার কোনও প্রেমাম্পদ নারীকে খুঁজে বায় করতে পারো তা'হলে ভাল হর। হয়তো তারা ভাকে বছবার নয়গাত্রে দেখে ধাকবে। সেইজভ তাদের পক্ষেনয়গাত্র ফ্রেমান্ত করা সম্ভব হবে।

উ:—আজে, অধিকাংশ সময়েই আমরা তাকে বৃতি, ভামা ও চাদরে আবৃত দেখেছি। তাকে নয়গাত্রে তালোরপে না দেখলে তার মৃতদেহ সনাক্ত করার অস্থবিধা আছে শীকার করি। কিছ সত্য কথা বলতে গেলে অন্দেহত তাকে নয়গাত্রেও বছরার আমাদের দেখার স্থবোগ ঘ টছে। ইদানীং পাগলা অভিরিক্ত মন্তপান করতে আমন্ত করেছিল। করেক বার মাত্রা ছাড়িরে তাকে জানহারা ও অর্জনয় আবছার বাভপথে গঙাগড়ি থেতে আমরা দেখেছি। এই লম্ব তাকে তর্থসনা করেও পথ থেকে উঠিরে নিকটের কোনও নাতীর বাছীতে এনে আমরা তার ভশ্লাবাও করেছি। এই সমর আমরা তার সারা দেহ ও বাছ লোম ঘারা আবৃত্ত এবং তার বাম বাছতে উক্তি ঘারা কুল-চিত্ত উৎকীর্ণ আছে দেখেছি। তার শরীরের গঠনসহ এ সকল চিত্ত হতে তার মুপ্ত না থাকদেও তার দেহ আমরা সকলেই সনাক্ত করতে পারব।"

সাক্ষী অধিকার উপরোক্ত বিবৃতিটি আমাদের অনেকটা জাখন্ত করলো। আমরা ব্রুভে পারলাম বে, ঐ সাকীর ক্লার সোনাগাছি জঞ্জের বছ নামীও পাগদার মৃতদেহটি ঐ একই কারণে সনাক্ত করতে পারবে। বলা বাহুল্য যে, মৃতদেহটি সত;ই কাহার তা প্রমাণ করতে না পারলে এই খুনের কিনার! করা সম্ভব ছিল না। ইভিমধ্যে পুলিশমর্গের ব্রফ-ঘরে আমরা মৃতদেইটি বক্ষা করার এই কয়দিন উছা অবিকৃত অবস্থাতেই ছিল। এই কারণে আমি প্রস্তাব করলাম বে এখনই ঐ পাড়ার বাড়ী বাড়ী তদন্ত করে কোনু কোনু সারীকে পাগুলা গান শেখাতো বা তাদের কার কার বাড়ীতে সে ভবলা বাজাতো তা জ্বেনে ঐ সকল নামীদের পুলিশমর্গে নিয়ে গিয়ে ভাদের সাহায়ে ঐ মৃত-দেহটি সতাই পাগলার কি'না তা অবহিত হওয়া বাক। কারণ ভারা বঢ়ি বলে বে এ মৃতদেহ আদপেই পাগদার নয়, ভাছলে ভখনই বুঝে নিতে পারবোবে আমরা এই কয় দিন ভূল পথেই ভদত চালিয়ে এসেছি। এইরপ ভবস্থায় অনর্থক আর সময় নষ্ট না করে আমর। ভদক্ষের মোড় ঘ্রিরে নিরে অব্য আর এক পথে ভা পরিচালিভ করতে পাবৰো। কিছ ইনেস্পেন্টার স্থনীল বাবু এ বিবরে আয়ার সঙ্গে একমত হতে পারলেন না। তিনি বললেন বে এই পাড়াভে বধন আসাই হয়েছে তথন সাক্ষী মণীস্ত্রকে থুঁজে বার করে তার বিবৃতিটি নিয়ে বাওয়া উচিত। সনাক্তকরণের পর্বে বরং আবও ছই এফদিন পরে করলেও চলবে। এ সম্বন্ধে তিনি আবও বললেন বে তার অন্তরাত্মা তথা ইনিটিকট্ বলছে বে এইবার আমরা ঠিক পথেই তদক্ষ ক্ষেক্ত বৈছি।

বস্তত:পক্ষে অভিজ্ঞতা হতে আমরা দেখেছি যে, ইন্টেলিছেন্স ৰা বৃদ্ধিবৃত্তি ভূস করলেও সহজাত বৃদ্ধি (ইনিষ্টিকট্) বা প্রেরণা কদাচিৎ ভূগ করেছে। স্ব স্থ ব্যবসায়ক্ষেত্রে বৃদ্ধির চেয়ে অনেক ংেশী সাচাধ্যে আনে এই প্রেরণা। প্রভ্যেক প্রফেশনাল ব্যক্তিই স্ব স্ব প্রফেশনের ক্ষেত্রে এই সহজ্ঞতা প্রেরণা লাভ করে থাকে। সকল প্ৰফেশনের লোকেবাই স্ব স্থ প্ৰফেশন বা ব্যবসা সকোন্ত ব্যাপারে পুধক পুধক ইনিষ্টিস্কৃট্ অর্জ্জন করেছে। এমন অনেক ডাক্তার আছে ৰাবা দ্ব হতে বোগীকে দেখে বলে দিতে পাবে যে ভার বোগ কি। এমন অনেক পুষ্পবিক্রেতাকে আমি জানি বে ধরিদারদের দেখে वाम पिएक পেবেছে, 'म कून किनाव कि नां। धवः किनामध म ভার দাম দেবে কভ ? বছদিন একই প্রফেশনে নিযুক্ত থাকলে মামুষ এইরপ পেশাগত ইনিটিফট হাভ করে। এমন বহু পুরাতন পুলিশ-জ্বিসার আছেন, বাঁদের নিকট দশ বার জন গৃহ-ভৃত্যকে 🎙 🔖 করিয়ে দিলে তাঁরা বলে দিতে পারেন বে এদের মধ্যে ঐ লোকটিই চুরি করেছে। এ সম্বন্ধে ভাদের জিজ্ঞানা করলে তাদের একমাত্র উক্তি হয় যে তাদের মন বা ইনিষ্টিষ্ট্ এই কথা বলেছে। পরে প্রমাণিতও হয়েছে বে এ পৃথকীকৃত ভৃতাটিই মাত্র এ চ্বির কর দায়ী ছিল! বছদিনের অভিজ্ঞ ডাক্তার, উকিল, বাবদায়ী প্রভৃতি লোকেরা প্রায়ই এই সহজাত প্রেয়ণ। লাভ করে। কারণ মাঞুদ্দর **অন্ত:স্বভাব তাদের মুখের ভাব, চালচলন ও দৃষ্টিভঙ্গির** মধ্যে কিছু**টা** পরিস্কৃট হল্তে বাধ্য। কিন্তু ঐশুলি এতো সৃন্ধভাবে পরিস্কৃট হয় যে সাধারণ দৃষ্টিতে সকল মাহুবের নজরে পড়ে না। তবে বে সকল পুলিশ-অফিসার পুলিশী-কার্য্যকে চাকুরীরপে গ্রহণ না করে প্রফেশন বা পেশারণে গ্রহণ করে, তাদের চক্ষে ঐগুলি নিজেদের অজ্ঞাতেই ধরা পড়ে।

এই সকল কারণে প্রবর্তীকালে এই সকল কর্মদক্ষ পুলিশঅধিসারদের মধ্যে বারা পুলিশী-কার্যকে নিজেদের স্ত্রীপুত্ত-কলা
— এমন কি নিজেদের প্রাণেব চেরেও ভালবেসে ফেলে তাদের
মধ্যে এরপ এক প্রেরণা জন্মায়। এইরপ অবস্থায় কোনও একটি
ঘটনা দেখে বা ওনে তারা বলে দিতে পারে বে ঘটনাটিতে প্রকৃতপক্ষে
কি ঘটেছিল। হিন্দু, বৌদ্ধ ও মোসলেম ভারতে এবং বুটিশ রাজ্তবে
প্রায়ন্তে গোয়েন্দাগিরী করা ছিল এক শ্রেণীর নাগ্রিকদের প্রকেশন
বা ব্যবসারের অন্তর্গত। এই একই কারণে তাদের মধ্যে প্রায়ন্ত্র প্রক্রপ সহজাত বুদ্ধি দেখা বেতো। এইজক্স ভারতীর পুলিশ আজও
পর্যন্ত তাদের ঐ সকল পূর্ববিভিগণের অমুকরণে তাদের অভিক্রতাল্বর
প্রেরণার উপর বিশেষরপে নির্ভরশীল ধাকে।

এই সকল কাবণে আমি অভিজ অফিনার ইনসপেক্টার স্থনীল বাবুর মতেই মন্ত দিই। বছত:পক্ষে বন্দিপ্রব স্থনীল বাবুর মধ্যে আমি প্লিমী তদন্ত সম্পর্কীর বহু অতীন্তিরতা (Hiper Sensibility) লক্ষ্য করেছিলাম। তাঁর চক্ষু ও কর্ণ আমি সামান্ত একটু সন্দেহের উদ্রেক হওরা মাত্র শিকারী মান্তবের স্থায় সন্তেম্ভ হয়ে উঠতে দেখেছি। এই জন্ম আমি তাঁর উপদেশ মন্ত মণীক্র বাবুকে খুঁজে বার করে তার একটি বিবৃতি লিপিবছ করে নিতে মনত্ব করলাম। এই মণীক্র বাবু ছিলেন এই পাড়ার একজন শক্তিমান ব্যাহামবীর। এইজন্ম তাঁকে খুঁজে বার করতে আমাদের কিছুমাত্রও দেরী হয় নি। তাঁর বিবৃতির উল্লেখবোগ্য অংশটুকু নিয়ে উদ্ধৃত করা হলো।

"আমার নাম শ্রীমণীন্দ্রনাথ পাল, পিভার নাম শ্রী---পাল। × নং--বাস্তায় আমি সপরিবারে বাস করি। আমার পেশা--। এই দিন (৪ঠা সেপ্টেম্বর ১১৩৫) আমি ঐ রাস্তার অভো নম্বরের বাড়ীর বোরাকে সন্ধ্যা আন্দাজ সাত বা সাড়ে সাতটার সময় বিশ্রাম কর্ছিলাম। এমন সময় পাগলা দৌড়ে এলে আমার পাশে বসে পড়ে বলে উঠলো, কর্ত্তা, রক্ষে করো আমাকে। ভূমি ছাড়া আর কেউই আমাকে রক্ষা করতে পারবে না। **ধ্**দিকে ভার পিছু-পিছু ধোকাও তার সাত আট জন সাকরেদসহ সেধানে এসে উপস্থিত হয়েছে। খোকা টেচিয়ে উঠে বললো, আৰু আৰু কাৰোও সাধ্য নেই যে ওকে বাঁচায় আমার কবল হতে। ওকে আমি অনেক বার সাবধান করেছি "কিন্ত ও কোনও কথা আমার ওনেনি। কালও ও গোপনে মলিনার ঘবে গিয়েছিল। - না, আজ আর আমি ওকে কিছুতেই ছাড়বো না। আমি তখন খোকাকে অনুরোধ করে বললাম, আরে ভাই! এবারকার মত ওকে ক্ষমা করে দে। ব্যার ও কক্ষণো মলিনার ত্রিসীমানাতেও বাবে না। মলিনার সঙ্গে ভোর প্রকৃত সম্পর্ক কি, ভাও নিশ্চয়ই জানে না। জামার মধ্যস্থ ভার ৰোকা একটু শান্ত হয়ে বললে, আচ্ছা। আপনার কথা মত আজ ছেড়ে দিলাম ওকে। কিছু পরে ওর কপালে কি আছে তা আমি বলতে পারছি না। এই ভাবে মুক্তি পেয়ে পাগলা ভয়ে কাঁপতে কাঁপতে সেধান থেকে সরে পড়লো। ঐ সময় সেধানে পাগলার বন্ধু অধিকাও এনে গিয়েছিল। আমার বতদ্র মনে পড়ে, শাগলা ও অম্বিকা একসঙ্গেই গরাণহাটার দিকে প্রস্থান করলো। এর পর থোকাও তার সাঙ্গোপাঞ্চ নিয়ে ঐ একই দিকে রওনা হয়। এই ঘটনার প্রায় আব ঘণ্টা পর অম্বিকা হস্তদন্ত হয়ে এসে আমাকে জানালো যে থোকা ও তার সাকরেদরা পাগলাকে একটা ট্যাক্সিভে তুলে ধরে নিমে গিয়েছে।"

এই প্রাপ্ত বলে মণীক্র বাবু চুপ করলেন। বেশ বোঝা গোল, তাঁর আরও কিছু বলবার ছিল। কিছু বলি-বলি করেও তিনি তা আমাদের বলতে চাইছিলেন না। আমরা তথন চতুরতার সহিত করেকটি প্রশ্ন করে তাঁর নিকট হতে আরও করেকটি প্রয়োজনীয় তথ্য জেনে নিলাম।

প্র:— পাগলাকে আপনি বত দিন পূর্ব হতে চেনেন ? আর ঐ ধোকাবাব ! ধোকাবাব লোকটা কে ? সে থাকেই বা কোথার ? আপনি এই ধোকাব পরিচয় কতটুকু জানেন ? তাড়াভাড়ি এই সংবাদ কয়টি দিলে আমাদের উপকার হয়। আমরা তা'হলে এখুনি ধোকাকে গ্রেপ্তার করে তার বাড়ীতে ধানাভদ্লাস করতে পারি।"

উ:— পাগলার পিত্মাত পরিচর আমি জানি না। তবে শুনেছি তার এক ভাই ধশোহরে ডাক্তারী করেন। ভার ভালো নাম ছিল অতুল বাবু। লোকটি ভদ্রবংশ্লাত হলেও ধুনীমত অবংণাতিত হরে এই পাড়াতেই এধানে ওধানে বাস করে। এই পাড়ার নারীদের বাটাতে বাটাতে উৎসবে ও জলসার সে তবলা বাজাতো।
তবলা সম্বন্ধে সে একজন গুণী ছিল। সে বে চরিত্রহীন ব্যক্তি ছিল
তা জামি বলবো না। বরং সে চরিত্রবানই ছিল। তবে
চরিত্রবানবাই একনিঠ হরে একটি নারীর সলে বসবাস করতে
চেরেছে। এইজল জামার মনে হর, সে মলিনাকে গান শিখাতে
গিরে তালবেসে ফেলেছিল। তবে তাকে এই পাড়ার সকল
মেরেরাই পাগল বলে ডাফ্তো। তবু তাই নয়, তাকে ভারা
তালবাসতো ও প্রন্ধা করতো। এ ছাড়া পাগলা সম্বন্ধে জার কোনও
সংবাদ জামি দিতে পারবো না। এই তো গেল পাগলার কথা।
এইবার থোকার কথা বলবো। এই থোকা হচ্ছে—তার, একজন
জেলথারিজ গুণা। কিছু দিন বাবৎ পুলিশের নজর এড়িয়ে সে
কলকাতার কিবে এসেছে। এখন তার এই পাড়াতেই জানাগোণা
বেশী। জামি গুনেছি, সে মাঝে মাঝে মলিনার ব্যর এসে রাত্রবাস
করে। এই মলিনা হচ্ছে একজন নূতন চিত্রাভিনেত্রী। ৩৫নং
ইমামবাড়ী থানাদার লেনে সে থাকে।

"প্রশ্ন—পাগলাকে তো আপনারা প্রতাহই দিনে ও রাত্রে এই পাড়াতেই দেখতেন। ঐ দিন সন্ধ্যা হতে এখন নিশ্চরই আব তাকে আপনারা এ পাড়ার দেখেননি। তবু ওই ঘটনা সম্বন্ধ অবভিত্ত হয়েও আপনারা কেউ থানার গিরে এই সম্পর্কে সংবাদ দিলেন না কেন? তা'হলে কি ব্যুতে হবে আপনার সঙ্গে খোকার বিশেষ বন্ধত ভিল?"

উ:— আজে না না, তা নর। পাড়ার কেউ কেউ হিংসা কবে

আমাকে মণি গুণ্ডা বৈলে। আমি একটু ব্যায়াম-ট্যায়াম করি কিনা,
ভাই লোকের এতাে হিংসা। তবে কি জানেন? কোনও গুণ্ডালাক
রাতবিরতে এসে এখানকার মেরেদের উপর জ্পুম করলে সেই সব
বাড়ার বাড়াওয়ালীরা চাকর মারফং আমাকে ধবর পাঠায়। আমি
তথন এ সকল অবাঞ্চিত ব্যক্তিদের ঘাড়ে ধবে বার করে দিয়ে তাদের
রক্ষে করি। সপরিবারে এই পাড়াভেই আমি বসবাস করি, তাই
ওদের পড়ন্দী হিসেবে ওদের উপর আমার কর্তব্য করি, এই বা।
তা না হলে থানা হতে পুলিশ আমারে কর্তব্য করি, এই বা।
তা না হলে থানা হতে পুলিশ আমাতে আসের অনেকেই শেষ
হবে বেভা। কিছ তা বলে এই সব জেল-খারিজ খুনে গুণ্ডাদের
সঙ্গে কে পেরে উঠবে বলুন ? এদের কি কোনও বাড়ী-ঘর আছে
বে আপনাদের তা জানাবো ? জন্তা দিকে এই সব ব্যাপার থেকে
আমারই প্রোণটা বেরিয়ে বাবে। এই বাড়াওয়ালী মারেরা একটু
ভক্তি-টক্তি আমাকে করে, তাই তাদের কাছে বা বা গুনেছি তাই
আপনাকে জানালাম।"

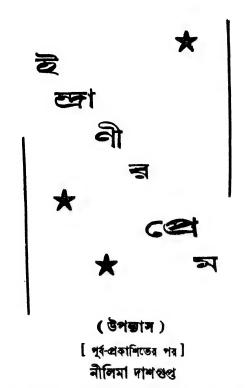
প্র:—"হঁ, একংণ বুকতে পারলাম আমি সব। এখন এই মানলাতে আর কোনও সংবাদ 'এমি আমাদের দিতে পার কি না বলো।"

টঃ— "আজে! আৰু একটা কথা আমাৰ জানা আছে। প্ৰে শুনতে পোলাম পথ হতে একবাৰ মুক্তি পেয়ে পালালা এই পাঢ়ায় 'নাকি-বীণা' নামে একটি নাৰীৰ বাড়ী চুকে পড়ে আত্মায় ভিক্তে কৰে। কিছ তারা তাকে আত্মায় তো দেৱই নি বৰং খোকাৰ ভ্যকীতে ভয় পেয়ে চাকৰ দিয়ে ভাষা তাকে বাব কৰে দিয়েছিল। কিছ এখন একথা তাৰা খীকাৰ কৰবে কিনা জানি না। কাৰণ এ পাড়ায় কেউ সহজে এসৰ ঝামেলাতে জড়াতে চাইবে না।"

এ পাড়ার ওজ্ঞ পরিবাবের লোকের। হচ্ছে সংখ্যাসন্। এ জন্ত থধানকার সাক্ষীদের চরিত্র সম্বন্ধেও কিছুটা তদন্তের প্ররোজন হয়। কারণ আমাদের বাবতীয় তদন্ত করে বেতে ছবে তাদের কথা তেবে বাদের কাছে শেব বিচাবের তার আছে। তা'না হলে একটি মাত্র ভূলের জন্ত আমাদের বাবতীয় পরিশ্রম একদিন ব্যর্থতার পর্যাবসিত হয়ে বেতে পারে। কোনও এক সাক্ষী বিধাসবাগ্য কিনা তা পুর্কেই আমাদের জেনে নিতে হয়েছে। অবগ্র সমাদ্রের বিভিন্ন স্তর আছে এবং উহার প্রতিভাবের মামুবেরই একটি নিজম্ব মৃল্য আছে। একথা স্থীকার্য্য হলেও সাক্ষী সমাজের কোন স্তবের ব্যক্তি, তা জ্বীদের প্র্নাহ্রেই জানিয়ে দেওয়া ভালো। অগ্রখায় বিচাবের সমন্ন বিপরীত তথ্য প্রকাশ পোলে বিচারকমণ্ডলীর ভাল্ক ধারণা হওয়া অসক্ষর নয়।

আমবা সংবাদ নিয়ে জানলাম বে, মণীক্র বাবু হামেসা এথানকার নাবীদের সংপার্ল একেও নিজে তিনি একজন সাধু চরিত্রেরই লোক। এছাড়া এ-ও জানা গেস বে, এই ব্যারামবীরকে পল্লীর গুণাঞ্জীর লোকরা রাতিমত তর করে। কিছ তা সংত্ত্ তিনি নিজে জেল-খারিজ থোকা গুণার ভরে সর্বাদাই ভীত ছিলেন। খুব সম্ভবতঃ তিনি প্রাণভ্রের কারণেই ঘটনাটি পুলিশেব নিকট জানাতে পারেন নি। মণি বাবুর মত সাহসী ও শক্তিমান ব্যক্তিও বার ভরে সর্বাদা ভীত ও সম্ভস্ত, সে বে একজন সহজ ব্যক্তি নর, তা আমবা মণি বাবুর কথোপকথন হতে বুবে নিতে পারলাম। এই সঙ্গে আমবা এ-ও বুবুতে পারলাম বে, এখানকার ভীতা অভা নামীবাও এই একই কারণে এ হত্যাকারীর বিক্লমে কোনও বিবৃতিই প্রদান করবে না। সকল দিক বিবেচনা করে সহকারীদের দ্বের একটি মোড়ের নিকট জপেকা করতে বলে আমি এবং ক্রমীস বাবু ছ্মবেশে হত্যা সম্পর্কে কিছুটা গোপন তদত্তে মনোনিবেশ করলাম।

"Education is not the amount of information that is put into your brain and runs riots there, undigested, all your life. We must have life-building, man-making, character-building, assimilation of ideas. If you have assimilated five ideas and made them your life and character, you have more education than any man who has got by heart a whole library." —Swami Vivekananda.



ক্রবালাকে হাসি দিয়ে অভার্থনা করলেন মিসেস অনীতা রে।
অনীতা বসেছিলেন ষ্টেইব্যাক্ষের একেবারে সামনের লনে।
সবে-নামা সন্ধ্যের আলোয় সামার-হিলের সাজসক্ষা দেখছিলেন।
তক্ষবালা ভূইংক্ষমে বেতে নারাজ। একটা লন-চেরারে বঙ্গে বল্লেন,
অ্থানেই বসি মিসেস রে, বেশ ভাল ওয়েদার আজকে"—

বিশ তে।"—তক্ষবালার পাশে বসে অনীতা অহুচ্চগলার বয়কে ভাক দিলেন। দ্রুতগলার বাধা দিলেন তক্ষবালা, আজ আর কিছু থাওয়া চলবে না মিদেস রে—

তৰু এককাপ কফি নাহলে একটু ককো—

না না, আন্ধ একেবাৰে কিছু না। একটা অনুবোধ করবো আপনাকে, বদি একটু কষ্ট করে—

ঠিক এই গলায় জার এত ক্রতলারে তর্নবালা কথনও কথা বলেন না, জন্ততঃ জনীতা মিসেদ বিখাদের এ কঠন্বর কথনও লোনেন নি। চোথ বড় করে জনীতা তাকালেন তর্কবালার মুখের দিকে, চোথের দিকে—মিসেদ বিখাদের বে পরিভ্তা মুখের চেহারা দেখতে জভান্ত জনীতা—তা নর, একেবারে জভারকম। বেন মেঘে মেঘে থমথমে হরে উঠেছে তর্কবালার মুখ, জার চোথে বেন কেমন ছটফটে একটা অন্বন্ধির ছারা। ক্রমিত মুখে জনীতা বললেন, জাপনি জমন করে কেন বলছেন মিসেদ বিখাদ, বলুন না কী করতে পারি জাপনার জভ—তর্কবালার চোখের ছটফটে ছারাটা জারো বেন চঞ্চদ হলো, জারো ব্যাকুল। জনীতার চোথের দিকে তাকিরে নিজের বক্তবাটা জারার বেন ওছোতে লাগলেন, ভনেছেন বোধ হর, জামি থাকনের বিরে দিরে তারপর ওকে বিলেভ পাঠাবো—

তক্ষবালার কথার অনীতা হাসিমুখে বললেন, বাবে! সেদিন আমাকে কত মেরের ফটো দেখালেন আপনি, আমি ভাবতি,

অনীভার কথা কেটে তরুবালার ইাক্ধনা গলা বলে উঠলো, ইন্সাণীর সঙ্গে থোকনের বিরে দেব—অনীভার চোথ ছটি আরো বড় ছলো। চোথের মণিতে ভর করলো অনেকটা অবিধাস, কিছুটা বিশ্বর আর ছিটেকোটা কৌডুফ। অনীভাকে নিরুত্তর দেথে তরুবালা আগের গলাতেই বলে উঠলেন, আপনি কী বলেন? ইন্সাণী কেমন মেরে? "আপনার তো ওবাড়িতে অনেক বাতারাত—

এক মুহূর্ত বিবৃতির পর অনীতা বললেন, "এত)স্ত চমৎকার মেরে, সব মিলিরে এত ভাল মেরে সহজে চোধে পড়ে না"—

—কথা শেষ করলেন অনীতা, কিছ বেন শেষ হলো না। অনীতার কঠের এই বিধাটুকু তরুবালার কানে এড়ালো না। ভুরু ছটি নিজের অক্তাতদারেই স্পিল হলো, মুথে ছায়া ঘনালো,

"আপনি কী খোকনকে ইন্দ্রাণীর অযোগ্য মনে করছেন <u>)"</u>

ভক্ষবাগার গলার জোরালো অভিমানকে চাপা দিয়ে সজোরে হেলে উঠলেন অনীতা, "কী-ই বে বলেন মিসেস বিশ্বাস, ত অকশেশ। অকশেশের তো তুলনাই মেলে না—সেদিন আমার কাছ থেকে ফটোর নেগেটিভ নিজে এসে গল্প করছিলো; ওর কথার আর ব্যবহারে আমি আর উনি তো মুগ্ধ একেবারে। ভারি ভাল, ভারি স্কল্প মনের ছেলে আপনার অকশেশ।"

ভক্ষাসার সপিস ভূক্ন একেবাবে সোজা, মূথের ছায়া একেবারে নেই, আনন্দ-আপ্লুভ কণ্ঠস্বরটা কিছু হোঁচট খেলে গেলো জিভের আগার এসে, তাকে সবিয়ে অমুসন্ধানী গলা ঠেলে বেরিয়ে এলো, "কিসের নেগেটিভ নিলো খোকন আপনার কাছ খেকে?"

"এ, নীলার ভার ইনার একথানা ফলো তুলেছিলুম বাগানে, নীলার নাকি ভাত ভাল ফটো ভার ওঠেনি। ভারুণেশ নীলার ফটো এনলার্জ করবে ব'লে নেগেটিভধানা নিয়ে গিয়েছিলো।"

ত।" তরুবাসার কঠেব ছোট শক্টা বেন সাফ দিরে বার হরে এলো। অনীতার চোধের দৃষ্টি চট ক'বে একবার তরুবাসার মুখের চারি পাশ মুরে এলো, আমাকে ভাহলে ঘটকী হ'তে বসছেন?" অনীতার গসার হাল্কা পুর।

"শুষ্ ঘটকী হ'লে চল্বে না, ব্যের খ্যের লিসি ক'নের খ্যের মাসী হ'তে হবে, কোমর বেঁধে ধাটাখাটুনী করতে হবে কিছ আপনাকে—" অনীতার মত হালকা খ্যুরেই কথা শুক করেছিলেন জুলবালা কিছ কথার শেবে গলাটা খেন হঠাৎ ছলছলিয়ে উঠলো। আবার চকিতে অনীতার দৃষ্টি তরুবালার চোধ মুখ জনীপ করলো। উঠে শাড়ালেন অনীতা, "চলুন না, গুলনেই একসঙ্গে বাই, একেবারে বিয়ের তারিখ ঠিক ক'রে ফিরবো।"

"না, আদকে আপনি একলাই বান, কথাবার্তা পাকা হ'বে গৈলে তারপর আমি বাবো—হাঁ ভাল কথা মিসেল রে, যদি ইক্রাণীর বাবা মা মেরে ছোটো ব'লে আপত্তি ভোলেন, বলবেন, ইক্রাণী বিরের পর ওঁলের কাছে থেকেই পড়ান্তনো করবে, —থোকন বিলেভ থেকে না ফেরা পর্যন্ত ওঁলের কাছেই থাকবে ও আর না, আর কিছু নয়—একেবারে বিরের কথা পাকা করে আসা চাই কিছু মিসেল রে।"

হাঁক-ধরা গলাটাকে মুক্তি দেওয়ার জন্মই বোধ হয় তরুবালা ভাড়াভাড়ি চেয়ার ঠেলে লনের এক পালে এগিয়ে এলে পাইচারি শুকু করলেন। বিশ্বিতা জনীতা কাপড় বলগাতে ভেত্তরে চলে গেলেন আর ভাবতে লাগলেন—কত কিছু বে ভাবতে লাগলেন, কিছ ছই আর ছই-এ কিছুতেই বেন আর চার হর না! আর, অনীতা বায়ের শরীরটা বেই পথের বাঁকে অন্গু হয়ে ক্যাথলিক রাবের পথ ধরলো, ভক্তবালা পাইচারি বন্ধ করে চেরারে এসে বদে পড়লেন। কেবলই একটা কথা পাক থেতে থাকলো ওঁব মনে। উনি নিজে গেলেই ভাল করতেন বোধ হর, ক্যাথলিক রাবের গেট থেকে ফিবে না এলেই পারতেন।

ঘটাধানেকের মধ্যেই ফিরে এলেন অনীতা রার। বললেন, রমেন শর্কাণীর কোনো অমত নেই, এ বিয়েতে সাগ্রহে সম্বতি मिरवरहरून खेवा, व्यवक्ष वरमन क्षेत्रम এक ह्याँदे। वदान स्मायव বিয়ে নিয়ে একটু কিছ-কিছ কর্ছিলেন, কিছ অনীতা ধর্মন ভক্ষবালার অবানীতে বললেন-বিয়েটা এখন হয়ে যাক, ইন্দ্রাণী বেমন পড়াছ তেমনি আপনাদের কাছে থেকেই পড়বে, ভারপর বি-এ পাশ করার পর আসংব শশুরবাড়ি, তত দিনে অঞ্লেশও বিলেভ থেকে ফিরে আসবে পডাশুনো শেব করে। এ কথার সানকে সার দিয়েছেন রমেন শর্কাণী। তাহলে বিয়েটা কবে হলে স্থবিধে হয় এই নিয়ে বখন আলোচনা শুকু হলো, গুটু আলোচনার মাঝধানেই পালের বর থেকে ইন্দ্রাণী মা বলে ডাক দিলো। শব্দাণী সঙ্গে সঙ্গে উঠে গেলেন এবং তার পাঁচ মিনিট পরেই ফিরে এলেন শুকনো করে। স্বাধীর দিকে তাকিয়ে নীবস গলায় বলদেন,---ইমুর এখন একেবারে বিয়েতে মত নেই। রমেন স্ত্রীর সঙ্গে দৃষ্টি-বিনিময় করে ভাবতে লাগলেন। কারণ, ইন্দ্রাণীর বয়েস ৰত অল্লই হোক, বিষে নিয়ে পীড়াপীড়ি করতে 'ওঁরা নাকি কেউই পারবেন না, ওঁদের অভারের ধর্মে ভা বাধে। অনীতা ভারপর বলেছিলেন, — চলুন মিসেদ রার, ইন্দ্রাণীর সঙ্গে আমি নিজে একটু কথা ক'য়ে দেখি। কিছ, ওঁয়া স্বাই পাশের খরে এসে দেখলেন, ইন্দ্রাণী সে ঘরে নেই, তারপরের ছোটো ঘরেও না, বারান্দাভেও না। ভৃত্যকে ডাক দিয়ে ভিজ্ঞাসা ক'রে জানা গেলো—মিস সাব বাওয়ার সময় বলে গেছে, মাজী পুছলে বেন বলে দেওৱা হয়, ও ভীনা কাপুৰজীৰ কাছে বেড়াতে গেছে। ব্যেম বাবু এবং শৰ্কাণী ছ'লনে বেমন লজ্জিত হ'রেছেন ভেমনি বিব্রস্ত, বারে বারে আপনাকে বলতে বলেছেন, কথাটা এখন পাকা হ'য়ে থাক, বিলেভ থেকে অৰুণেশ क्टिंव चानाव शबहे विष्युद्धे। हत्य ।

া দানা আব প্রান করবে কত ? বাধক্ষের বন্ধ দর্মার কাছে দাঁড়িরে ছটকট করছে নীলা। ওর মনের অসন্থ উলাসটা বেন একটা আফ্রাদে পানি হ'রে ডানা ঝাপটাছে। দাদাকে বেমন ক'রে হোক এ বিরেজে মত করাতেই হবে, কিছুতেই কোনো আপতি শোনা হবে না দাদার—উ: !—কী বে মজা হবে তাহলে—ইনা বদি আমার বৌদি হর, কী মজা! কী মজা! নীলার মনটাই বেন হাততালি দিতে তক্ষ করলো। তর-তর ক'রে নিচে নেমে গোলা নীলা। না:! দিদিটা এখনও আসেনি, 'কী বে এত বেঙার দিদি বুঝিও না আমি—সিমলার আবার দেখার কিছু আছে নাকি! আনন্দ-পাথিটার ডানার ঝাপটে নীলা বেচারি অন্থির, ও আর করে কী—ডেকে ডেকে পরিচারক পরিচারিকাদের স্ক্রেলটা বিক্লাস করলো, তারপর আবার লাফাতে লাফাতে সিটি বেরে উঠে এলো ওপরে। বাধক্ষের করাট আল্গা দেখেই

ঠ কল পাৰে বাদাৰ বৰে ছুট দিলো, "হুঁ, হুঁ, দাদা, কী থাওৱাছো বল ? ভোমাৰ বিষে একদম পাকা। এবাৰ এক ঠোডা কাজুবাদামে চলবে না, এক-ডড়ে চাই—"

ক্লান্ত অকণেশ চোধ বদ্ধ রেখেই মিন-মিন ক'রে বললো, "তবে তো একবৃড়ি ভালের খোঁজ করতে হয়, সিমলায় কি ও ফল মিল্বে)"

"আহা, চোখ খোলোই না দাদা—" চেরারের পেছন ধরে বার করেক অরুণেশকে কাঁকি দিয়ে দিলো নীলা।

ও, ভাবি ভো হটো তিতির মেরে এনেছো, এমন চেহারা ক'বে বলে আছো চেরারে বে মনে হছে বেন অলম্ব-বনের বরেল বেজল টাইগার বৃক্তি মেরে এলে ভূমি—চোথ বৃক্তেই উত্তর দিলো অল্পেশ, কাল দেখিল চুক্টনালার ভঙ্গল থেকে লক্তড় বাঘ নিকার ক'বে কাঁথে ঝুলিরে ফিরবো। বিরের কথার দাদা মোটেই আমল দিছে মা দেখে, নীলা চেরারের বাজু ছেড়ে অল্পেশের গলা অভিয়ে ধরলো, দাদা লন্দ্রীটি, এ বিরেতে বাজি হ'রে বা, আমার কী বে মন্তা লাগছে!

আঃ নীলা, গলা ছাড়, বিশ্লাম কবতে দে আমাকে। ছবাবে টকি
আছে, ধা নিগে বা। অক্লেণের গলা ছেড়ে দিরে বাশক্ত গলার
নীলা বললো, আমার কোনো একটা আব্দার রাখবে না, আর
ভোমার কেনা টফি আমি থাব, আমার বরে গেছে। রোজ রোজ এক
কোল ঠেলিরে বাংলা শিখতে বেতে হবে না, বাড়িতে বলে বলে মজা
কবে শিখতে পারবো, ইক্রাণী আমার বৌদি হবে এত ভাগ্য কী
আমি কবেছি না কি ?

কে ? কে বৌদি হবে ? চোধ খ্লে ইঞ্জিচেয়ার থেকে একেবারে পিঠ-টান করে বসলো অকণেশ্ব।

ইন্দ্রাণী। মা তোমার সঙ্গে ইন্দ্রাণীর বিষের প্রস্তাব তুলতে ক্যাথলিক ক্লাবে গেছেন—নীলার গলার অভিমান। অবিধানের হাসি হাসলো অক্লেশ, বললো, কী আজে-বাজে বকছিল নীলা! মা যাবেন ক্যাথলিক ক্লাবে—নীলা জোর দিয়ে উত্তর দিলো, বাবা আমাকে নিজে ডেকে ধবরটা দিলেন, বাবা বুরি মিছে কথা বলবেন? অক্লেশ ফ্যাল-ফ্যাল ক'রে বোনের দিকে তাকিয়ে যাপারটা বোধপম্য করবার চেষ্টা করতে লাগলো। দাদার মুখের ভাবের অক্ত অর্থ করলো নীলা, আবো অনেক বেশি জোর দিয়ে বললো দাদা, তুই রাজি হয়ে বা লক্ষ্মীটি, এমন মেয়ে আর হয় না। তুই তো একদিন বাজে বাজে কথা বলে তথু চটিরেই দিলি ইন্দ্রাণীকে, না হলে একদিন ভাল ক'রে আলাপ করলেই দেশতিস এমন মেয়ে আর হয় না। শক্ত ক'রে হেসে উঠলো অক্লেশ।

না দাদা হাসিদ না, সত্যি দত্যি বলছি আমি। অকণেশ কৌতুক গলায় বললো, তোৱ সেই ডেঁপো বন্ধকেই বিষে কৰতে হবে শেষকালে ?

নীলা কুর পলার বললো, জল্ল বরেদে জনেক বেশি জানা খুবই আশ্তর্বের দাদা, ভাকে ভেঁপো বলে না।

বোনের মুখের চেহার। এক পদক দেখে নিয়ে অক্লেশ সহাত্তে বললো, আহা, বোদ না নীলা গাড়িয়ে আছিদ কেন ? বলে বদে ভোর বন্ধুর গুণারলী দাখিল কর দিকিন, আমি ভেবে-চিন্তে দেখি ও আমার ক'নে হতে পাবে কি না। নীলা খনের কোণ থেকে একটা ঘোড়া হিড্-হিড় করে টেনে এনে দাদার সামনে মুখোমুখি বনেই বললো, আনিস্টাণান, ইন্সাণীয় মা মানে মাসীমা ফিলোজফিডে ঈশান-ক্ষণার, এ সংবাদে অরুণেশও মনে মনে কম বিম্মিত হলো না, ক্রি মুখের ভাব সহজ রেখেই চোখে হুটুমির হাসি ফুটিরে বললো, ইফ্রাণীর মা'র গুণ নিয়ে আমার কীহবে?

না, মানে, মাসীমার কথা এমনি বসসুম, ইন্দ্রাণীও কি ডিগ্রিভে কিছু কম বাবে না কি মনে করিস ? ইংরিজীতে ইউনিভার্সিটিভে কার্ত্র হয়েছে।

আছো, এক হলো, থামিসনে তুই নীলা, তোর বন্ধুর গুণাবলী দাবিল করে যা।

অমন স্থার মুখ বাঙালীদের মধ্যে চোনেই পড়ে না !

আছে। হুই, তারপর ? এমন সময় সিঁড়িতে তক্কবালার পায়ের
শক্ষ হলো। ঐ বে, মা এসে গেছেন—মোড়া ছেড়ে উঠে দৌড় লাগালো
নীলা। চেরারে বসা অক্লণেশর বুকে যেন বেতালা মাদল বাজতে
লাগলো, বিশ্বিভালয়ের পরীক্ষাগুলির ফলাফল বের হবার আগের
রাজিতেও এমন বেতালা বাজেনি। আব নীলা মায়ের ঘরের দরজার
চুক্কেই বেগ থামিরে একেবারে থমকে দাঁড়িয়ে গেলো। চেরারে এসিয়ে
বঙ্গে পড়েছেন তরুবালা, কী করুণ আর বিবাদ-বিশ্বর মায়ের মুখ!
অভিমানিনা নীগা নি:শব্দে হিবে এলো মায়ের ঘর ঘর থেকে। নিজের
ঘরে বিছানা আশ্রয় ক'রে কোঁটা কোঁটা চোখের জলে উপাধান ভিজিয়ে
দিতে লাগলো। দাদার কথার প্রের অনেক ভরলা পেয়েছিলো নীলা,
বুরলো, দালা ইন্দ্রণীকে বৌদি করে এনে দিতে রাজি হলে কী হবে,
ইন্দ্রাণী ওর বৌদি হ'তে বাজি নয়। বাজবীর প্রতি গোণন অভিমানে
ফুলে ফুলে কাঁগভে লাগলো নীলা। এর পর, সবিস্তাবে সব ওনজেন
অভরশ্বেকর। নীলা শেলির মারফতে অক্লণেশর কানেও সব কিছুই
এসে পৌছুলো।

প্রদিন অপরাষ্ট্র বেলার রামদরাল ইন্দ্রাণীর হাতে একটা মুখ-বন্ধ করা সাদা থাম দিলো। থামটা উন্টেপান্টে দেখে নিরে ইন্দ্রাণী ভূক কুঁচকে জিগ্যেস করলো, চিঠিখানা ওব হাতে দিতে কে বললে ? রামদরাল স্বিন্ত্রে জানালো, বে, সাব ওর হাতে চিঠিখানা দিরেছে, সেই বাবে বাবে বলে দিয়েছে বে, চিঠিখানা বেন শুধু মিস সাবের হাতেই দেওরা হয়।

७ जाका--राम हिठी निष्य निष्यय चरत ह्कामा हेन्सानी।

ঃ নিঃসন্দেহে অকণেশের চিঠি এখানা। অকণেশ ওকে চিঠি লিখেছে, অকণেশ • অকণেশ নিস্কাই অকপেশ। খুলবো না। বধাশক্তি দিয়ে মনের হয়ারে কপাট দিয়ে দিলো ইন্দ্রাণা। ও খাম আমি খুলবো না—খুলবো না—খুলবো না। টেবিলের জয়ার টেনে বন্ধ খামখানা ঠেলে একেবারে ভেতর দিকে রেখে ঝপাং করে বন্ধ করে দিলো ইন্দ্রাণা। আবার তথুনি অর্জেক খুলে আবার বন্ধ করেলা। আবার খুললো।

: নিজের শক্তিতে বিশাস থাকলে কালির অক্ষর কী করতে পারে ওকে! থামথানা বার করে কস্ করে একটানে ছি'ছে ক্ষেলো মুখটা। বার হলো চিঠি। ভালধোলার আগে ওর হাত কাপলো নাকি?

: না, ও কিছু নয়। "ইক্ৰাণী,

তোমার কাছে এই আমার প্রথম চিঠি। নিশিটকে জন্ততঃ লাবণ্যলিপি করার প্রবাদে এক প্রহর রাত্তি থবচ করলুম—কিছ আৰু বাগ্দেৰী দামার প্ৰতি নিভাছই অকঞ্গ, টেবিলের ওপর, এপাল-ওপাল স্বটুকু এলোমেলো কাগজে ভবে গেলো কিছ, মামার মনোমত একটা সংখাংনও মামার কলমের মুখে এলো না।

ভবুমনেৰ কথা জানাৰো ভোমাকে। যে করেই হোক, শুকুকৰি।

আজ সন্ধ্যে থেকে বাত্তি আটটা পর্যন্ত আমি বেন জমুক্ল-প্রতিকৃল চুই বিপরীত স্রোতে ভেসে বেড়িয়েছি। আজ বারে বারে বাস্যের থেবা চু'বানি ছবির কথা মনে পড়েছে। ছোটবেলার চার পর্মা বাক্সলালাকে দিয়ে কাচের ঢাকা বাক্সের ছবি দেখবো বলে বড় সেই গোল চোডার চোথ রেখেছিলাম। বাক্সের মালিক প্রসাটা প্রেটে রেখে তার স্বভাব জমুবারী চিত্রবিভাস শুরু করে দিলো।

ঃ রামরাজ্ঞাকে রাজ্য দেখো - সীতা মারীকি প্রসৃন্তা দেখো। আমি তুথানা ছবি দেখেছিলাম, বক্ককে সোনার সি হাসনে সীভাকে পাশে নিয়ে রাময়াজা বলে আছেন, সে ছবির ছৌলুস বর্ণনার কাজ নেই, সে বয়েলে অস্ততঃ আমার চোঝে মনে হয়েছিলো-এমন স্থলর ছবি আমি আর দেখিনি, রাম-সীতার দিব্যকান্তি, ওঁদের আশ্চর্য সুন্দর বলমলে ভূষণ, রামের পৌক্ষা, সীভার মুখের প্রসন্ন দীপ্তি,— হঠাৎ ঘ্রে গেলো ছবি—ঘুটঘুটে কালো রঙের একথানি ছবি. আকাশের পুঞ্জীভূত কালো কালো মেবঙলিই বেন সমস্ত ছবিটাকে কালো করে দিয়েছে। দেই আশ্চর্যস্থার বসন-ভ্রণে সালানো প্রসম্ন দীপ্তিময়ী সীভা—একেবাবে বিক্তা এ ছবিতে, ক্রুব কর্বশ বাবণ রাক্ষস এক হাতে কী নিদ'য়ভাবে জাপ্টে ধরেছে সীতাকে আর এক হাতে ভতোধিক নিদ'রভাবে পক্ষছেদ করছে জটারূপক্ষীর, আকাশ থেকে ক্রমাবরে পক্ষেব ছিল্ল আশ পড়ছে আর ভার সাথে ভাজা ভাজা লাল ঃক্ত। এ কা অভুত ভীৰণতা! এক মুহূর্তের বেশি আমি দে ছবিডে চোথ বাধতে পাবিনি, বাকী ছবিগুলি না দেখেই ছুটে ঘরের ভেন্নর পালিয়ে এসেছিলেম। সেদিন সেই বাক্সখানাটাকে একটা নিষ্ঠ র ক্সাইরের চেয়েও বেশি সাংঘাতিক মনে হয়েছিলো আমার। অমন সোনা-রঙা বসমঙ্গে অভূত স্থক্ষর ছবির পর এই কিভুত কিমাকার কটের ছবি। একটু পরে দেখালে কী হতো! বাব এতটুকু সামঞ্জক্ত, এক বিন্দু সঞ্চিবোধ নেই, তাকে ও ছাড়া আর কি ভাবা বেতে পাবে—ভাই বোধ হর তথন ভেবেছিলো আমার মন। কিন্তু আমাদের এই পৃথিবীতে বান্তবে অহরহ এমনি ঘটে থাকে এবং ঘটছে। বেশ তো শিকারের খেলার মেতে গিয়েছিলেম আমি। সেই অভিনয়ের প্রদিন থেকে এ ক'দিন আমি আমার শরীর ও মন ছটোকেই ভাড়িয়ে ফিবেছি পাৰিব পেছনে। ভারপর অবিশ্রাস্ত ছুটোছুটি ক'রে একটি কি ঘটি পাৰিব হৃৎপিশু বিদীৰ্ণ করে বাড়ি কিবেছি অসহ ক্লান্তি নিবে। খার বাড়ি ফেরার পথে ভারতে ভারতে এসেছি, হুংপিণ্ড কি রক্তাক্ত হয় শুধু গুলীতেই ?

কাসও সন্ধ্যের পর মৃত্যুর মত রুক্তি নিরে শরীরটাকে এলিরে দিয়েছি চেয়াবে, নীলা ছুটে এলো। দাদা কী মলা! ইন্দ্রানী আমার বৌদ হবে, মা বিয়ে ঠিক করতে নিজে ক্যাথলিক ক্লাবে গেছেন। কথাটা বিখেদ করতে সমর লাগলো একটু. নীলা বাবার জ্বানী উল্লেখ করার ভার সংশ্র রুইলোনা। তথুনি মনে হলো, ভামার কোনো পূণ্যকলে কোনো দেবতা বদি

আবিত্ত হ'বে আমাকে বর দিতে চাইভেন, আমি ও ছাড়া আর কি চাইভেম ? আর ভারপরই সিঁড়িতে মারের পারের ক্ষনি ভনলাম—কিছ বড় বেন ঢিলা-ঢালা-"গ্লথ পারের ক্ষনি। নীলা ছুটে 'গেলো। আমি একলা ঘরে বসে বসে শুনতে লাগলাম নিজের ব্কের শব্দ। নীলা আর ফিরলো না দেখে ব্কতে আমার আর কিছু বাকি বইলো না।

ভারণর সবই ভনে ফেলাম, ধে সুবভি কান্তনীকে সাড়খবে খাগতম জানানোর ভল্প প্রেছতি ভক্ত করেছিলো মন, অকমাৎ অজম হিম ঝরিয়ে কে খেন সমস্ত বসন্ত-ভাণ নিমেবে লুগু ক'বে দিলো, মনের সাতরজা খুগুটা যেন ক্ষুত্র চিল হ'বে ক্রুত্ব ঝাণট লাগিরে হঠাৎ উধাও হলো শুলে। মনে হলো 'প্যাহাডাইস্ক'ই' আর অসংখ্য বার মনে পড়লো বাজ্যের দেখা সেই ছবি ছখানির ক্রা।

কিন্তা, এটাই ঠিক ইন্দ্রাণী! তোমাকে পেরেছি বলেই তোমাকে হারাতে চাইনে। স্থির চিত্তে ভেবে দেখলেম, তুমি বদি এখন সমতি দিতে, তাহলে তোমার নিষ্ঠার প্রতি আমার বোধ হর প্রাধারোধ কমে বেতো। থাওরার টেবিলে বাবা মাকে প্রো আমান দিরেছেন—তুমি ভেব না তক, কাল বিকেলে আমি নীলুকে নিয়ে ইনামারের সমতি আদার ক'রে তবে বাড়ি কিরবো। আমার চিঠিলেখা তথু এইছয়, ... মুদ্দিল হলো এই—আমার বাবাকে তুমি বোধ হর তেমন দেনার স্ববোগ পাওনি ইল্রাণী, আমার নিজের বিজেন, বাবার কথার কিছু বাড় 'আছে, বাবার কথার না করতে আমি কাউকে এ পর্বস্ত দেখিনি। কিছ, আমি এ ভাষে পেতে চাইনে ভোমাকে। অনেক দিনের অনেক ছোট বড় অভিযোগ তোমার মনে অনে অনে পাহাড় হ'রে গেছে—সেওলি ধূলিরাৎ হ'রে গেছে—সেওলি ধূলিরাৎ হ'রে গেছে তোমার থোলা পিঃপূর্ণ মনধানি আমি চাই।

আমার স্থপ্তর এক মহলা প্রাসাদ তত দিনে হ'তে থাকুবে সাত মহলা। আমি থাছি, আমি থাকবো ইন্দ্রাণী, আমার সাত মহলার সাতটা দংকাই তোমার জন্ম থোলা বইলো।

- **चक्**रवंग ।"

সমাপ্ত

তিমিরাভিদার

(Last ride together. R. Browning.)

জেনেছি জেনেছি জামি প্রিয়তমে,
প্রতীক্ষার দীর্ঘ দিন গিয়েছে হারিছে
নিক্ষা সন্ধার। কোন ক্ষোভ নেই;
ক্ষার গাহিছে জাজি তোমার মধুর নাম
জাকাশে বাতাসে। ভরিছে পেয়ালাখানি
মুতির সৌরভ নিরে। ফিরারে দিরো না
তারে। নিয়ে বাও কার বত আকুল
কামনা ক্রারের বৃস্ত 'পারে ফুটেছিলো
রজনীগদার সম। শুরু মোরে
দিরে বাও—একবার—তোমার
পরশস্থা বজনীতিমির মারে
বৈত্ত-শুভিগারে।

ভ্রথমু বাঁকিস তার। গভার-কাঞ্চল
আঁথি বিক্ত করি মাধুর্থের শেষ বিন্দু
রাতিরা বক্তিম বাগে নির্নিমেষ নির্ভাবন
চেরে থাকে মোর মুখ পানে।
হাররের ভটপ্রাক্তে প্রাণেব হরিণ নির্বাধবিশ্বরে স্থিব। 'ভাই হবে'—চক্তিতে হবিণ
পোলা জীবনের স্থাদ পরম আখাসে
প্রিরজন সুবে। অভিযুক্তামনা মোর হারাহানি
আনারব-ভাজে। মোর স্বর্গ হ'তে বিনারের
কণ আসেনি এখনও; প্রেম-পাত্র বিক্ত নর;
আবো আছে দোসর বাত্রির কোলে
নিঃধাসনিবিদ্ধ-ল্পর্য। কে বলিতে পারে

পৃথিবীর প্রমায়্-কথা ? শেব বলি হরে বার এ রজনী সাথে।

প্রতীচ্য গগনবক্ষে তথসিত মেঘমালাসম,
সহত্র আশীব ভাবে আনমিত ববতমু—ভামুর
কিবণ বেন গোধৃলি-লগনে, মেশে আসি
যোহনার সাথে উদার আকাশে। সেই
শুভকণে, প্রেমের পুলকে রান্তি, কামনার
দীপশিবামাথে, সাথে লবে মেঘমেত্বতা,
দ্ব-অস্তাচল-পাবে তপনের বক্তরশ্মি-লেখা,
নিঃশব্ম অন্ধণোদর, তারকার জ্যোতি,
থীবে বীবে নেমে এলো মোর বক্ষে
সভন-আনশে দেহভাবহীন বেতদ-ত্রতভী
বিচিতে অক্ষর বুর্গ।

ষাত্রা হ'লো হ্রফ। দুরে ফেলে
হতাশার আবর্জনা, পূলকে ভাগিল
আশা অন্তর-আকাশে। জীবনের
লেন-দেন-কী পেয়েছি আর
কী পাইনি-লাভ ক্ষতি, টানাটানি,
মিলনবিবহু মুছে ফেলে, ভাবনাবে
দিয়ে নির্বাদন, প্রম লগনে জাগি
প্রিক্তমা পাশে।

এ জীবনমাঝে ঋক্ষমত:-অভিশাপ আমারই ত নয় তথু ? হাজার জীবনে তার বিবাদের ছারা। কত দেশ এলো
কত্ত নদী গেলো। মোরা শুরু বৃহি
কাছাকাছি চেতনাবিহল-সম নীলাকাশ-মাঝে।
মনে হ'লো জীবন-সাধনা কতু বার্থ নর।
বার্থ নর আকুল কামনা। বা কিছু
সেধেছি মোরা দে ত এক জতি
কুল্র ভগ্ন-জংশ ভাগ—জ্ঞানা
বৃহৎ। শুরু জানি অতীতের
পুরু আশা বাঁচিয়ে রেখেছে ভার
শিশু-বর্তমানে জন্তর-মাধুর্য দিয়ে।
কেন জানি মনে হলো এইধানে এই ক্পে
হারানো দে প্রেম ফিরিতে পারে ত কভু?

ভাবনার সত্যক্রপ দিয়েছে কি
কেন্ট আপনার হাতে ? ত্বিতল্পর
প্রেছি কি তার আপন-প্রিরারে
বিনা-আকর্ষণে ? কর্মের বারিধি-মারে
কক্তক্রণ থাকে চিস্তার তরঙ্গ ? লামীরপাবাণে বন্দা মানববিহন্দ কোথা বেতে
পারে ? কাছে পেরে দয়িতের তত্ত্বেহ ;
নারবে হেরেছি তার গতিস্বাত পীনোরত
পরোধর ! সাম্রাক্ত্য রয়েছে সেখা,
কে পৌছিতে পারে ? কত বোদা হারারেছে
প্রাণ ৷ অন্তির কবরে লোভে বিক্তর নিশান ।
ভাবনের বিনিময়ে পাবাণ ফলকে লেখা
তক্ষ নামধানি এই কি সাম্বনা ? কামনার
বন সাথে রক্ষনীভিমির-মাবে
এই মভিনার, মোর কাছে অতি প্রেরতর ।

অভিসাবলিপি কে ব্বিতে পাবে ?
কবিব ভাবনা, প্রাণ পার ছব্দের বন্দনে
জানি। অহুভৃতি-গাঁখা মধুর স্থন্দর
হর কবিব লেখনীস্পর্ণে। হয়ত
অনেক কিছুই আছে নয়ত বিশেব
কিছুই নর। শুধু বল দেখি কবি,
তৃমি কি পেরেছো কভু স্থন্দরের
প্রোণস্পর্ণ ? বৃঝি বা বেদনা-গভীর প্রাণে
অবলে রেখে দীনভার দীপ চলেছে
মৃত্যুর পানে ? তাই বদি হয়,
জেনে রাখো ছব্দের সাধনা নর,
প্রাণের সাধনা এই আনন্দের
অভিসাব, প্রিয়ন্তমা-পালে।

হার বে ভারব । ভোমার সাধনা ব্যর্থ। আরাধ্যা দেবীর রূপ পার্মন প্রকাশ জ্ঞান্তে প্রবে। হের আজি প্রেরসী মোদের প্রপুদদে
অতিক্রমে কীণ প্রোতোধারা।
কোনো ক্ষতি নেই বলি তোমার বিবর্ণ
দৃষ্টি না বৃক্তি পারে ?
সঙ্গীতসাধক! নীবদ সঙ্গীত-লিপি
নিরে কেটে গেলো সাধনার দিন।
কী পাইলে বলো ? প্রেশংসার ভোকবাণী ?
সঙ্গীতের রূপ কোথা ? সে বে এক
অরূপ সাগর। ভোমার সঙ্গীত-শিশু
ভূবে গেলো গভীর অভলে।
দিয়েছি বৌবন আমি। পেরে গেছি
তাই অভিসার-অধিকার, হোক ভাহা
মুহুর্তের ভরে।

নিয়তির কথা কে বলিতে পারে ? কে জানিত হার এই ক্ষণে ভরিয়া উঠিবে হুদি সহল আশীৰে ? কৰে নাই কেউ হেন অস্টাকার ? এ জীবন থেকে অনস্ত-যাত্রার কণে মানব বাত্রীরা ভাবে এ জীবনকথা। মনে পড়ে দ্ব স্বতি সম কবে কোন অজানা লগনে লক্ষ্যে পৌছেছিলো তার অনন্ত কামনা। বিজয়ের পুণ্যস্পর্ণ লভেছিলো কবে কাব অন্তরের গৃহলন্দী। অনন্ত জিজাসা জাগে আকুল পরাপে। সভর আনন্দে চুপ করে বছে व्याप्तिय हविन। समूसस सक्तीत धृति ; পুস্কিত নভত্তর অনিশ্য স্থবমারাগে। নে স্বৰণ আৰু এ প্ৰেয়দীৰ স্পৰ্নলোভ ছুটেছে বিহন্ত মোর অনস্ত আকাশ-মাঝে ধুমকেতু সম।

নির্বাক বঁবুরে বিবের রচেছে
স্থপন মোর দ্ব নভোচারী। জীবনের
লীর্বোপরি জকর জনিক্যাবাম, বেধা
থেকে কলে কলে বাবে পড়ে জীবন-চেজনা।
প্রান্তবার কালে, দেই বদি স্বর্গ হয়
তবে তাও মিলে গেছে কাজিত
দেহেরে বিবে। উদ্ধ পানে চেরে
আছি লাইত স্থানে, কামনার
আতুর জ্ঞানি, গুণু বেন জীবনে মরণে
পালাপালি রাবে অচিহ্নিত ধারমান
প্রোতোরাগে। মুহুর্তে মুহুর্তে বেধা
জ্মা গভে নভুন জীবন, তারি কোনো
প্রান্ত বাগে বৈতভাবহীন একক জীবন।

অমুবাদিকা--- স্কুমারী দাশ।

यवाद (कतवाद अध्य

त्रु जु

जिल्यान-अध्या कार्षि युक्त प्तांथ कितावत

कलिकाछा-३ नुस, नुल, वृज्जू याष्ट्र (कार् आरे(ड्रो) लिः



[Osamu Dazai's "The Setting Sun"-এর জন্বাদ] তৃতীয় অধ্যায়

চন্দ্ৰমলিকা

তাংশর এমন অসহার অবস্থার সন্মুণীন হ'লাম, বেথানে বেঁচে থাকা অসন্তা। প্রচিণ্ড বড়ের পর সাদা মেবের দল বে ভাবে আকাশের গায়ে এলোমেলো ছুটে বেড়ায়, ভেমনি আমার বুকের ভেতর বেদনার তরঙ্গ উথাস-পাথাল করে ফেবে। মারাত্মক এক অমুভ্তি, অজানা এক আকত্মে আমার নাড়ীর গতিতে ছক্ষপাত হয়, নি:খাস ক্রিয়া ব্যাহত করে বুকের ভেতরটা নিউজে ছেজে দেয়। মাবে মাবে চতুর্দিক অন্ধকারে কুয়াশাভ্রয় হয়ে আসে, আর মনে হয় বেন আমার আঙ লের প্রাত্ত-পথে সারা দেহের শক্তি নি:শেষে বেরিয়ে বাছে।

স্প্রতি বিজ্ঞী একঘেরে বৃষ্টি হক হরেছে। আমি বা করি তাতেই মন খারাণ হরে বার। আজ আবার বেতের চেরারখানা বাবালার টেনে নিরে বদলাম—ইছে গত বদত্তে প্রক করা দোরেটারখানা এবার শেব করব। হাঝা গোলাগী রং-এর সঙ্গে গাঢ় নীল উল মিলিরে আমা বৃন্ছি। বছর কুড়ি আগে, আমি তথনও ইমুলে পড়ি, সেই সমরে মা আমার একখানা আফ বুনে দিরেছিলেন—গোলাগী উলটা তার্ই আর্ফের শেরের দিকে ছোট

টুপির মত করে বুনেছিলেন, সেটা পরে আরনাতে নিজের চেহার।

'দেখে নিজেকে মনে হত কুদে শ্রতান। আমার ইন্ধুলের বন্ধুরা বে সব

কার্ফ গারে দিত, আমারটা তা থেকে সম্পূর্ণ ভিন্ন বত বলে ওটা
আমার হ'চক্ষের বিব ছিস। ঐ থাফ গারে দিরে কাঙ্কর সামনে
বেকতে এত লজ্জা হ'ত বে বছ দিন ব্যবহার না করে দেরাজে ফেলে
রেখেছিলাম। সম্প্রতি বসন্তকাল পড়তে হঠাই আমি ওটা খুলতে
বসসাম, মৃত সম্পত্তি পুনক্ষাবের সদিছা নিয়ে, নিজের জন্ত একধানা সোরেটার বুনব ছির করলাম। কি জানি কেন, ঐ কিকে
রঙটা আমার স্পদ্ধরের পথে জন্তবার হওরার আবার উলটা বান্ধবনী
হ'ল।

আৰু অন্ত কাজের অভাবে হঠাৎ বের করে বুনতে বসলাম। বুনতে শুকু করে খেয়াল হ'ল, মেবাছের আকাশের গাঢ় রভের পাখে উলের রংটা চমৎকার খুলেছে, রঙের এমন অপুর্ব লিখ সামগ্রস্ত ভাষার বোঝান শক্ত। আকাশের রঙের সঙ্গে এ-হেন সামঞ্জন্তর প্রয়েজনীয়তা এর আগে কখনও বুঝিনি। অবাক হরে ভাবলাম, বিচিত্ৰ বডের শোভন সংগতি কি অপরপই না হ'তে পারে ৷ আকাশের ধনর নীলিমার সঙ্গে ফিকে গোলাপীর বোগাবোগ, ছটি রঙকেই ফুটিরে তুলেছে। আমার হাতে দে উল জীবস্ত হরে উঠল, মেখলা আকাশ মধমলের মত নরম। ফরাসী চিত্রকর মনে'র (Mone't) একখানা ছবির কথা মনে এল, কুয়াশার মধ্যে একটি গির্জা; জীবনে প্রথম উপলব্ধি করলাম স্থক্তি কা'কে বলে, মনে মনে উলটাকে ধক্যবাদ দিলাম। শীতের ভ্যারাক্তর আকাশের নীচে ঐ রঙ বে কত অপূর্ব দেখাতে পারে সে জ্ঞান ছিল বলেই মা ফিকে গোলাপী পছন্দ করেছিলেন, কিন্তু আমার নির্ব্ব ছিতার আমি তথন ব্রুত্তে পারিনি। চিরদিন নিজের খুসীমত চলেতি, মা কোন দিন বাধা দেবার চেষ্টাও করেননি। এত কাল ধরে আমার কথনও বোরাতে চাননি ওধু অপেকা করেছিলেন, কবে নিজে থেকে আমার চোৰ বুলবে। ভাবলাম, আমার মারের মত এমন মা আর কোবার! সঙ্গে সংস্থ নিদারুণ ভয় আর আতকে শিউরে উঠলাম, তবে কি নাওজি আর আমি ছ'জনে মিলে মাকে অবধারিত মৃত্যুর পৰে এগিয়ে নিয়ে চলেছি? ৰঙই ভাবি ভতই দৃঢ় বিৰাস জনায় ভবিষ্যৎ আমাদের জন্ত ছুর্দিন বরে আনছে। আকৃসঞ্জ ব্দশাড় হয়ে এল, কোলের ওপর বোনার কাঁটা ছটো পড়ে গেল। মস্ত এক দীৰ্ঘাদ বুক ঠেলে বেরিয়ে এল। চোধ বুজেই মাধা তুলে নিজের অজ্ঞান্তে চেচিয়ে উঠলাম মা গো।

বংরে কোণে ব'সে বই পড়তে পড়তে মা অবাক্ হয়ে জিজেস করলেন—কি হ'ল ?

কেমন বেন সৰ গোলমাল হয়ে গেল। অহেতৃক উঁচ্ গলার জবাব দিলাম—শেব অবধি গোলাপগুলো ফুটল, জান মা ? আমি এইমাত্র লক্ষ্য কর্লাম—এত দিনে ফুটল তবে !

বছ কাল আগে ফ্রান্ড কিয়া ইংল্যাণ্ড এরকম অনেক দূর থেকে ওরাদামামা এই ফুল এনেছিলেন। আমাদের নিশিকাতা স্থীটের বাড়ী থেকে তুলে এনে আমি এখানে পুঁজেছিলাম। সকালেই আমি একটা ফুল দেখেছি, কিছ বর্তমান অপ্রস্তুত ভাব কাটাতে বেল একটু উচ্ছালের সঙ্গেই বললাম—এইমাত্র দেখেছি। খোর বেগুনি রং-এর এই ফুলগুলিতে কেমন বেন দল্প ও শক্তির প্রকাশ আছে।

শাস্ত কঠে মা উত্তর ছিলেন,—স্বামি জানি, ভোমার কাছে এ-সবের মূল্যই জালালা।

বোধ হয়, আমার জল্যে ভোমার হু:ধ হয় ?

না, আমি শুধু বলতে চাই, এ ভোমারই উপবৃক্ত উচ্ছান।

টিক বেমনটি তৃমি বালাববে দেশলাই-বাজের গাবে বেনোরা'র ছবি

দাটো, কিখা পুতৃলের জন্ম কমাল তৈরী কব। বাগানে গোলাপের
কথা তৃমি এমন ভাবে বল বেন কোন জীবস্ত মানুবের বিষয় বলছ।

আমার নিজেব কোন ছেলে-মেরে নেই বলেই বোধ হর।
এ আমি কি বললাম ? কোলের ওপর বোনাটা নিরে নাডাচাড়া
করে অপ্রস্তুত ভাবটা লুকোতে চাইলাম। মনে হল টেলিফোনে
কোন পুক্র মামুর কৃষ্ণ করে আমার সম্বন্ধে মস্তুব্য করছেন—এ আর
বেশী কথা কি ? ও মেরের ব্য়সের গাছ-পাথ্য আছে ? উনত্রিশ
বছর ভো হ'ল !

কোন কথা না বলে মা আবার বইরে মন দিলেন। কিছুদিন বাবং মা মুখের ওপর দিরে একখানা পাতলা জালের ঢাকনা পরে থাকেন। দেই জন্তেই বোধ হয় কথা কওয়া আবিও কমে গেছে। আসলে নাক্ষির কথায় মা ঐ ঢাকা পরতে স্তক্ত করেছেন।

করেক সপ্তাহ আগে ও প্রশাস্তসাগর থেকে ফ্যাকাশে চেনারা
নিবে ফিরেছে। গ্রীমের এক সন্ধার কোন খবর না দিরেই,
কাঠের ফাটকখানা দড়াম্ শব্দে বন্ধ করে দিরে নাওজি বাগানে
চকল।

কি কাণ্ড! বলিহারি ভোমাদের পছন্দ! বাড়ীর গায়ে একটা সাইনবোর্ড টাঙ্গিয়ে দাও না কেন[®]চীনাভ্বন, চাণ্ডমিয়েন !

প্রথম দর্শনে এই সম্ভাষণ। গত ছ'-ভিন দিন হল জিভে একটা ব্যথা হয়ে মা শ্বা নিয়েছেন। জিভের ওপর কিছু দেখতে পেলাম না, কিছু মা বললেন, নাড়াতে গেলেই অসহ বল্পণা হছে। এ কয় দিন খ্ব পাতলা ত্প খাছিলেন। ডাক্তার ভাক্তে চাইলে মা বাধা দিলেন, জোর করে হেসে বললেন—ডাক্তার আমার দেখে চাসবেন।

তুলি করে জিভের আগায় লুগোল মাধিয়ে দিলাম—কিছ ভাতে কোন ফল হল না। মারের অস্থাধে বিপন্ন বোধ করছি— ঠিক এই সমরে নাওজি এল।

মারের বিছানায় মিনিট ধানেক ব'সে বালিশে মাধা ছেলিয়ে ছটো সম্ভাবণের কথা বলল। ব্যস ঐ পর্বন্ত —পরস্কুর্ত্তে লাকিরে উঠে বাড়ী দেধকে বেরিয়ে গেল। আমি পেছন পেছন গেলাম।

মাকে কেমন দেখলে ? বদ্লে গেছেন, না ?

বদলেছেন বৈ কি, বোগা হ্রেছেন থ্ব। অনেক আগেই এ ছনিয়া ছেড়ে মারের চলে বাওয়া উচিত ছিল। আলকের এই ছনিয়াতে মারের মত লোকের বেঁচে থাকার কোন অর্থ হয় না। তাঁর মুখের দিকে ভাকাতে আমার মত হতভাগারও বুক কেটে বার।

আমার কেমন দেখছ ?

ভোমার চেহারা কৃষ্ণ হয়ে গেছে। মুধ দেখে মনে হয় খন ছ'-তিন পুক্ত-বন্ধু জুটেছে। এথানে ধেনোমদ পাওয়া বায় ? বাজ রাভে মাতাল হব ঠিক করেছি।

বাষের হোটেলে চুকে হোটেলওয়ালীর কাছে ভাই-এর নাম করে বেনোমদ চাইলাম, কিছ সে বলল একুণি পারবে না বিচে, ফুবিরে গোছে। নাওলিকে একথা বহুতে রাগে ওর মুখ কালো হ'বে গেল—এমন আমি ওকে আগে কথনও দেখিনি, এ বেন আচনা মাহুব।

দ্ব বোকা! ওদের কি করে সায়েন্ডা করতে হয়, তুমি জান না। ছোটেলের ঠিকানা জেনে নিবে ছুটে বেরিয়ে গেল। ঐ পরাস্ত। ওব জন্ম অংশকা করে নিবাশ হ'লাম। নাওজির প্রিম্ন থাবার সেঁকা আপোল, ডিমের মামলেট আগলে বড় আলোথানা জেলে বলে রইলাম। হোটেলের মেয়ে ওসাকী রাল্লাঘরের দরজার মাথা গলিয়ে জিজ্রেস করল—মাপ করবেন। এটা কি উচিত হছে ? তিনি তো সেদিকে বসে বলে জিন্ টান্ছেন। ওব ছানাবড়া চোধ ছটো ঠিকরে বেরিয়ে আসছে।

জিন—মানে মেধিল এলকহল ? না মেধিল নর ঠিক, কিছ জনেকটা ভাই। ধেলে জন্মধ করবে না তো ?

না, কিছ তবু••

ভা হলে থাকু গো।

माथा (नएड 'हाँक शिल उनाकी हरन तन ।

মাকে জানালাম ওদাকীর ওখানে মদ খাছে।

মারের ঠোটের কোণে হাসির রেখা ফুটে উঠল—আফিং ছেড়েছে নিশ্চয়ই। বাও ধেরে এস। আজ আমরা ভিন জন একখবে শোব। নাওজিব বিছানা মাঝধানে দিও।

আমার বৃক ঠেলে কারা এল।

খনেক রাতে ধপ ধপ করতে করতে বাবু বাড়ী ফিরলেন। বরজোড়া মশারি ফেলা ছিল—খামরা তিন জনে ভেতরে চুকলাম।

শুরে শুরে বললাম—তোমার দক্ষিণ-দাগরের গল্প মাকে শোনাও না ?

বলার মত কিছে, নেই—একেবারে কিছুই না । ভূলেও গেছি সব। জাপানে ফিবে টেনের জানালা দিরে ধানকেভ দেখতে ভাষী ভাল লাগছিল। ব্যস। জালো নেবাও, হ্মতে পারছি না।

অগত্যা আলো নিবিরে দিলাম। গ্রীম্মকালের জ্যোৎসা মশারি ভেদ করে বিছানার ওপর আছড়ে পড়ছে। পরদিন সকালে বিছানার ওবে সমুজের শোভা দেখতে দেখতে নাওজি সিগ্রেট টানছে! বেন এই প্রথম থেয়াল হ'ল মা অমুছ—শুনলাম তোমার জিভে কি একটা ব্যথা হয়েছে! মৃত্ব হেসে মা চুপ করে রইলেন।

ন্দামি ঠিক জানি, এ ভোমার মনের রোগ। খুব সম্ভব রাজে ই। করে ঘুমোও। বড্ড অসাবধান তুমি—একধানা জালি-ঢাকা মুধের ওপর পরে থেকো। বিভানলের (Rivanal) জলে ডাক্তারধানার শোধন করা এক টুকরো কাপড় ভিজিরে ঢাকাটার ভেতরে নিও।

আমি সজোরে প্রতিবাদ করলাম—এ তোমার কোন দেকী ভাক্তাবী?

এর নাম সৌখিন চিকিৎসা।

আমি জানি ঢাকনা পরতে মা'র খুব খারাপ লাগবে।

মা মুখের ওপর কোন জিনিব বরণান্ত করতে পারেন না। চশমা পর্যান্ত না।, চোধ ফুলে ব্যথা হলে স্তোধনা নীকার দিয়ার লাভি রাথতেও মায়ের আপত্তি, মুখের ঢাকা পরা তো দ্বের কথা। মাকে ক্রিপ্যের করলাম—মা তুমি পথেব ?

সোৎশাহে মা खरां**र किल्लन--**পরर বট कि ।

আমি তো হাঁ! নাওজির আদেশ পালন করার জন্ত মা বেন ব্ৰপ্ৰিকৰ হ'ষেছেন।

জলধাবারের পর নাওজির নিদেশ্মত বিভানলের জলে ভিজিরে ধানিকটা গল-কাপড় মুখচাপা দেওয়ার মত ভাঁজ করে মার কাছে নিয়ে গেলাম। বিন্দুমাত্র ভাপত্তি ন। করে ঢাকটো নিয়ে কানের পিছনে দড়ি টেনে বেঁধে নিলেন। ভারপর ছোট অসহায় বালিকার মত ওয়ে রইলেন।

সেদিন বিকেলে টোকিওতে বন্ধবান্ধবের সজে দেখা করা দরকার—এই অজুহাতে মায়ের কাছ থেকে ছুই হাজার ইয়েন (জাপানী মুজা, ডলারের প্রায় সমান) নিয়ে নাওজি রওনাহ'ল।

এর পর দশ দিন কেটে গেছে, কিছু তার ফেরার কোন লক্ষণই নেই। প্রতিদিন মুখে ঢাকা বেঁধে মা ভার ঋপেক্ষা করেন। তিনি আমার বোঝালেন—ওব্ধটা বাস্তবিকই ভাল, ব্যধাটা অনেক কম। আমার মনে হয়, মা ঠিক বঙ্গছেন না। বিছানা থেকে উঠেছেন ৰটে, কিছ থাওয়া দাৰুণ কমে গেছে, ক্চিৎ কথনও কথা কন। মারের জন্ম আমার চিস্তার অবধি নেই, এবং নাওজি কেন এত দেরী করছে ভেবেই পাই না।

নাওজি বে উপভাসিক উরেহারার (Uehara) সঙ্গে হৈ-হৈ করে টোকিওর পাগদকরা জানন্দের স্রোচে গা ভাসিরেছে, এ বিষয়ে আমার কোন সন্দেহ নেই। এসব কথা মনে এলে নিজের জীবন আৰও ছবিবছ ঠেকে। গোলাপের কথাপ্রসঙ্গে উত্তেজিক হওয়া, বা সম্ভানের অভাব স্বীকার করার মত গড্জাকর ঘটনা যথন আমার षারা সম্ভব হচ্ছে—ভখন আমি বে ক্রমশ: নিজের ওপর সংবম ছারাচ্ছি—এ তো ম্পট্টই বোঝা বাচ্ছে। নতুবা এ ধরণের ক্রটি আমার হারা কধনই সম্ভব হত না। একটা হতাশাব্যঞ্জক শব্দ করে উঠে পাড়াতে গিয়ে বোনাটা পড়ে গেল। নিজেকে নিয়ে কি করা ষার, ভেবে পেলাম না। কাদতে কাদতে সিঁড়ি বেয়ে তেতলার विषम् भारतिर्दित चरत्र हिस्क छेर्छ श्रमाम ।

 चत्रधानात्रं नालिक थाकर्य। ठात-नीठ मिन व्यारण मा व्याद আমি এই ঠিক করে মিষ্টার নাকাই-বের সাহাব্যে ধরাধরি করে ৰাওজিৰ আলমারী ও বই, কাগজ, অসংখ্য জ্ঞাত জিনিবে বোঝাই করা কাঠের বান্ধ, আমাদের আগের বাড়ীতে ভার যা কিছু ছিল, সব সে হরে এনে ফেললাম।

টোকিও থেকে ফিরে এই লালমারী, বইয়ের বান্ধ, কোথার কি বাৰতে চায় সেই মত ব্যবস্থা কয়লেই হবে,---এই ভেবে আমরা অপেকা করে বইলাম। খবের অবস্থা বা দাঁড়াল, ভাতে সেথানে নড়াচড়া হ:সাধ্য হ'ল। একধানা ধোলা কাঠের বান্ধ থেকে জন্ম-মনস্ক ভাবে ভার নোটবইধানা তুলে নিলাম। মলাটের গারে লেখা-- চল্রমলিকা পত্রিক। । বে সমরে নাওলি ঘুমের ওবুধ খেবে तिमा क्वक-- अ कांत्र (महे अभरत्व ताढेवहे वर्ण भरत ह'न।

ध को प्रवर-वर्ग प्रहन-काला ।

অসম্ভব হয়। মানব-ইডিহাসে অধিতীয়, অতুলনীয়, অতল-পদী এ নরক বন্ত্রণার হাত হ'তে মুক্তি পাবার প্রয়াস কর না।

पर्वत ? मिथा। धर्म ? मिथा। जामर्थ ? मिथा। अभृष्यना ? मिथा। जङ्का निथा। ७ हिला मिथा। गरेर्सर मिथा। লোকে বলে উসিপিমার মটৰ ফুলের বয়স সহস্র বৎসর এবং কুমানোর মটরফুলের বংস শক্ত শক্ত বৎস্বেরও অধিক। শুনেছি উসিথিমার মটৰ লতা নয় কিট এবং কুমানোর লভা পাঁচ ফিট পর্যান্ত দীর্ঘারিত হয়। ঐ মটর ফুলের শোভায় আমার মন-প্রাণ নেচে ওঠে।

নে-ও তে: কাবও সস্তান! তাবও প্রাণ আছে।

যুক্তি, একমাত্র যুক্তির প্রতি অমুবাগ, মানবাত্মার প্রতি দরদের একান্ত অভাব।

অর্থ ও নারী। যুক্তির সঙ্গে মৈত্রীস্থাপন করে জয়ায় অন্তহিত इयू ।

ভাক্তার ফাউঠের তেজোদীপু এক উক্তি আছে—নাথীর সিত-হান্তের তুলনায় ইতিহাদ, দর্শন, পাণ্ডিত্য, ক্যায়, বাজনীভি, অর্থনীতি আদি বিজ্ঞানের আরও বিভিন্ন শাখা সকলই তুচ্ছ।

দক্ষের আব একটি নাম পাণ্ডিত্য। মাছুষের আপ্রাণ চেষ্টা, মাছ্য না হওয়া।

গোটের সামনে শুপুথ করে বলতে পারি, আমার মধ্যে অসাধারণ সাহিত্য-প্রতিভা সুপ্ত আছে। নিভূলি বাক্যবিকাস, বসের মাত্রাবৌধ, পাঠককে অভিভৃত করার মত করণ বসের অবভাবণা-অথবা ক্রটিহীন, অসামাজ এক উপ্রাস, উপযুক্ত প্রদার সঙ্গে যা পড়া বার উদাত্তকঠে—(অথবা চলচ্চিত্ৰের আবহবার্তা) এমন কিছু লেখা আমার ছারা জসম্ভব নয়, যদি না কব্জা এসে বাধা দেয়।

ক্ষাসলে প্রতিভার এই সচেতনত। খিরে কেমন বেন চাপল্যের ভাব আছে। পাগলেই শুধু গভীর প্রদা নিয়ে উপতাস পড়ে। এসব ক্ষেত্রে শোকষাত্রার বিশেষ পোষাক পরার রীতি চালু করা উচিত। দারুণ কিছু লেখার দম্ভ ষ্তক্ষণ না থাকে, ভতক্ষণই ভাল। আমার উপস্থাস হবে এলোমেলো। ইচ্ছে করে জ্বস্তু লেখাই নিখব व्यामि, तक्त मूर्थ क्रिंट डिर्राट व्यादिन व्यानन-माधात हुन वि एए ছিঁড়ভে অভন তলে ভলিয়ে যাব। আ:— বন্ধুর দেই আনন্দিবিহাল क्रि (मर्ब क्षांन क्ष्मार्वा ।

অত্যম্ভ বাজে লেখা ও কুচরিত্তের ছে.ল-ভোলানো বাঁশি বাজিয়ে ৰে বলব জাপানের শ্রেষ্ঠ নির্বোধ এখানে উপস্থিত-জামার তুলনার ভোমরা সবাই ভাল—তোমাদের মঙ্গল হোক'—এ কোন্ ছলনা !

বন্ধু, আত্মত্ত মুখে তুমি বখন বল—'এ ভো ওর বদরোগ। আহা। কি ছ:খের কথা।'—ভুমি জান না তখন লোকে ভোমার ওপর প্রেসর হয়।

জানি না, কে মন্দ নয়। ক্লান্তিকর এই তুশিন্তা। होका हाई। টাকা না পেলে— বুমের মধ্যে স্বাভাবিক মৃত্যু !

ডাক্তারখানার হাজার ভলার ঋণ হয়ে গেছে। আজ ^{এক} বেদনাৰ ভাড়নাৰ 'অসহ বছণা' কথাটুকু পৰ্যাত উচ্চাৰণ কৰা বছকেৰ দোকানে কেরাণীকে বাড়ীতে চুকিবে আমাৰ বৰে ^{এনে} জিগ্যেস করলাম—এথানে বন্ধক দেওরার মন্ত দামী কিছু চোথে পড়লে
তুলে নিয়ে বেভে পার। এখন আমার টাকার বিশেব দরকার।
ব্রের মধ্যে আল্গোছে চোথ বুলিয়ে কেরাণীটা বেহারার মন্ত বললে
—এ মন্তলব ছেড়ে দিন বাবু, এ আসবাব তো আর আপনার নর।
আমিও ক্ষেপে উঠলাম—বেশ ঠিক আছে। আমার নিজের হাতধরচের টাকার বা বা কিনেছি, তাই ভবে নিয়ে বাও।

টুকিটাকি অজ্ঞ জিনিব ভার সামনে ভূপ করে দিলাম—যার কোন বন্ধকী মূল্য নেই।

জিনিবের তালিকা— প্লাষ্টারের তৈরী একধানা হাত—ভেনাসের দক্ষিণ হাত। ষ্ট্রাণ্ডন্তম তালিয়া ফুলের আকারে শুক্ত একধানা হাত। চক্ররেখাবিহীন অসুলিপ্রান্ত, রেখাবিহীন করতল সম্মিত এই ত্বারণুক্ত সুক্ষার হাতথানিকে লক্ষ্য করে বেদনা ও লক্ষায় দর্শক এমন অভিত্ত হয় বে, ভেনাসের বেন দম বন্ধ হয়ে আলে। তার পরিপূর্ণ নপ্পতা বে মুহুর্তে একজন পূক্ষরের দৃষ্টিগোচর হর, ভেনাস সসকোচে দেহের ভঙ্গী পরিবর্তন করে। বিশ্বরের রোমাঞ্চকর উত্তেজনায় আবক্তিম অবস্থা, অপবিসীম লক্ষার তাড়না এবং নগ্নতার বেদনা—একার্যারে সমস্ত অমুভৃতি বেন এ হাতথানির মধ্যে পরিকৃত্ত।

ভান্ধব্যের এ অসামাক্ত নিদর্শন্টির জক্ত কেরাণী বৎসামাক্ত পঞ্চাশ সেন (জাপানী ভাত্রযুক্তা) দিতে রাজী হল।

জনার জিনিসের তালিকা,—প্যারীর সহরতনীর এক বিরাট মানচিত্র। প্রায় এক ফুট বেড়ের সেলুলয়েডের লাষ্ট্র। বিশেষ এক রকম কলমের মুখ—বা দিয়ে স্ভোর চেয়েও মিহি লেখা বার। দারুণ সস্তায় পাছি ভাবে এককালে আমি এসব কিনেছিলাম।

কেরাণীটা হেসে বলল—এবার তবে আসি। শীড়াও—বলে লোর করে একগাশ বই ভার ঘাড়ে চাশিরে দিরে মাত্র পাঁচ ইরেন উভার হল। সর্ব-সাকুল্যে আমার মূল্য প্রায় এই রকম দীড়ার। হাসির কথা নয়।

করেক জন আমার সমালোচনা করে আমার কাছকে সমর্থন করে বলেন—জ্বংপত্তনই বাঁচিবার একমাত্র উপার। এর চেরে আমার মরতে বঙ্গলে অনেক বেশী খুলি হই। সে অনেক সোজা রাভা। কিছু মান্ত্র কথনও বলে না—মর।

শর্কাচীন, পণ্ডিত ভণ্ডের দল। বিচার ? এখানে তৃমি শ্রেণীগত দশ্বের সন্ধান পাবে না! মন্ত্রাত্ব ? তুমি অভ্যন্ত নির্বোধ। আমি শানি, তোমাদের স্বার্থপর স্থাবের কারণে স্থাগাত্রীর মানব বলি হর। লে বে মৃত্যু। একমাত্র রার সেখানে—মৃত্যু। এ ভিন্ন এর কোন শর্প হর না। প্রভারণা নিশ্রভারাত্রন।

আমাদের মধোও কোন ভদ্রলোক নেই। নির্বোধ, ভূক, প্রেড, কুপ^ন, উন্মান, হামবড়ার দল, কেবল বড় বড় কথা বলে, মেঘের গুপর থেকে নাক উঁচু করেই আছে।

মব। শুধু ঐ কথাটি স্বীকাৰ করতে পারলে আমার ছাব্য পাওনা থেকে অনেক বেশী লাভ হয়। যুদ্ধ, জাপানী যুদ্ধ, জীবন-মরণ সম্ভার যুদ্ধ। এ বক্ম মবিরা কাল্কের ভেতর আত্মলাং করে নিয়ে মারবে ? ধ্যুবাদ, ভারে দরকার হবে না, বরং নিজের হাতে মরা ভাল।

মিখ্যা কথা বলার সমরে মান্ত্ব গভীর হরে বার। আমাদের বর্তমান নেতাদের কি দাক্ষণ পাভীর্য ! ছি:! বাদের কেখে সম্মানের কোন প্রশ্ন ওঠেনা, আমি ভালের মধ্যে বাঁচভে চাই।

বে সময়ে আমি অসামাক্ত বৃদ্ধিমান হবার ভাগ করতাম, তথাৰ সবাই ধবে নিত, সত্যি আমি তাই। বথন অলস ভাবে দিন কাটিয়েছি, ভথন সবাই বলল 'অলস'। বখন তাদের বোঝালার, উপকাস লেখা আমার আয়ন্তের বাইরে, সবাই ধবে নিল, হয় ত তাই। মিখ্যে কথা বলতে স্থক করলাম, সবাই বলল, 'মিখ্যেবার্লি'। বখন মস্ত বড়মামুবী চাল দেখালাম, লোকে বলল—'বড়লোক'। উদাসীত্যের ভাগ করতে, সবাই ধবে নিল—লোকটা 'বৈরাগী'। কিছ অসতক মৃতুর্তে বেদনার কাতর হ'লে লোকে বলল—ওটা হলনামাত্র।

ছনিয়ার বাঁধন আখ্লা হয়ে এসেছে। তবে কি মোট-কথা এই দীড়ার না—বে আত্মহত্যা ভিন্ন আমার গতি নেই ? এত যন্ত্রণার মধ্যেও আত্মহত্যার কথা মনে হ'তে ভ-ত করে কেঁলে উঠলাম।

একটা গল আছে, বসস্তের কোন সোনালী সকালে ছু'-ভিন্তি সভ মুকুলিত প্রাম কুলের শাধায় হিডেলবার্গ (Heidelberg)-এর এক ভক্ত ছাত্রকে মৃত অবস্থার স্কৃতে দেখা বার।

মা, লক্ষ্মীটি আমায় গাল-মল কর।

কেন গ

সবাই বলে আমার চরিত্রে দৃঢ়ভার অভাব আছে :

বলে না কি ? ছুৰ্বলচিত্ত ? আমার মনে হয় ন', সেজতে তোমার বকবার আর কোন কারণ আছে। মারের ভালমানুষীর কোন সীমা নেই। তার কথা মনে হলেই আমার চোখে জল ভবে আলে। আম'র মৃত্যুর মধ্যে দিরে তাঁর কাছে ক্ষমা চেরে নেব।

দরাকরে আমার ক্ষমাকরো। এই একবার **জন্তত: আমার** ক্ষমাকরো।

> (ন্ববর্ধের ক্বিভা) অসংখ্য বংসর ভবু ভো খোচে না আঁ।ধিয়ার ছোট বকের ছানা

বাড়তে তাদের নেই তো মানা

হার! কেমনে পায় দেহের এমন প্রতা!

মধিন্, এটোমল্, মার্কোপেন, ফিলিপিন, প্যাক্টোপন, পাবিনল, পানোপিন, এটোপিন।

আত্মর্য্যাদ। কি ? আত্মর্য্যাদা। সমাজের শীর্ষ্যান অধিকার করে আছেন বাঁবা, আমি উাদেরই একজন, আমার মধ্যে কত সদ্পুণ আছে—এ ধাবণা ভিন্ন মানবজাভি, বা কোন প্রকৃত মামুবের পক্ষে জীবনধারণ ছবিবহু হয়।

আমি মাতুৰকে ঘুণা করি, ভারাও আমার ঘুণা করে।

বুদ্ধির লড়াই।

গান্তীর্য-নিবু বিভার প্রতীক।

বাই হোক, বেঁচে থাকতে হলে মাত্ত্বকে ছলনার **দাখ্র নিভেই** হবে, এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই।

খণ-ডিক্সা করে দেখা একটি চিঠি। ডোমার উত্তর। দরা করে উত্তর দাও। এখন উত্তর বেন, আমার মন ধুশি হরে ওঠে। অপমানের আশকার আপন মনে দথ্যে মরছি। অভিনর নর। আলপেই নর।

প্রতিদিন, প্রতিদিন তোমার উত্তরের অপেক্ষার কাটে; অহোরাত্র ভরে কাঁপতে থাকি।

আমার ধুলো মাধতে বলো না। দেওরালগুলো আমার দেখে চাপা হাসি হাসে। গভীর রাত্রি বিহানার ছট্কট্ করে কাটে। আমার অপমান করো না। বোন আমার।

এ অবধি পড়ে আমি 'চন্দ্রমঞ্জিকা পত্রিকা' বন্ধ করে কাঠের বান্দ্রের কাছে ফিরে গেলাম। এগিরে গিয়ে জানালা খুলে দিলাম এবং বৃষ্টিধারার ধোঁরাটে বাগানের দিকে ভাকিয়ে সে-সব দিনের কথা ভাবতে বসলাম।

ভারপর ছয় বছর পার হয়ে গেছে। নাওঙ্গির এই নিদারুণ লেখাই আমার বিবাহ বিচ্ছেদের মৃত্য কারণ। না, একথা আমার বলা উচিত নয়-—আমার মনে হয় জন্মের সময় থেকেই বিবাহ-বিচ্ছেদ আমার কপালে লেখা ছিল। নাওজি যদি নেশা না-ও করত ভবুও কোন না কোন দিন আর কোন কারণে আমার বিবাহ বিচ্ছেদ ঘটত। ভান্তারখানায় ঋণ করে নাওজি প্রায়ই আমায় উত্যক্ত করত। আমার তথন সত বিয়ে হয়েছে, কাজেই টাকা-প্রসা নিরে যা থুসি করার ক্ষমতা আমার ছিল না। তাছাড়া স্বামীর টাকা এভাবে লুকিরে ভাইকে দেব, ভাবতে ধুব ধারাপ লাগত। স্বামার বাপের ৰাড়ীৰ ঝি ভিসাকী ব সঙ্গে প্ৰামৰ্শ কৰে নিচ্ছেৰ বালা, হাৰ, দামী পোষাক ইত্যাদি বিক্রি করাই স্থির করলাম। শেষ চিঠিতে নাওজি লিখেছিল-আমার অত্যধিক লজা ও মানসিক উদ্বেগের জন্ম তোমার সঙ্গে দেখা করা বা টেলিফোনে কথা বলা সম্ভব নর। ওসাকীর মারকৎ গুণ্মাসিক উরেহারা জিবোর ঠিকানায় টাকা পাঠিও। আলা করি ভক্তলাকের সংক্ত তোমার আলাপ অন্ততঃ নামের পরিচয় আছে। মিপ্তার উরেহারার মন্দ্র লোক বলে বাজারে বদনাম আছে, আসলে ভ্রমলোক ঠিক সে বৰুম নন, তার ঠিকানায় টাকা পাঠাতে ছিল করো না। তাঁর সঙ্গে বন্দোবস্ত আছে টাঝা পেলেই আমায় ফোন করে জানিরে দেবেন-কাজেই সেই রকম ব্যবস্থা করো। মাহের কাছ থেকে অন্ততঃ আমাৰ এই নেশাব কথা গোপনে বাধতে চাই। ভিনি জানবার জাগেই জামি নিজেকে সংশোধন করতে চাই। ভোমার টাকা দিয়ে ডাক্তারখানার ধার ওধব। ভারপর স্বাস্থ্যোদ্ধার করতে আমাদের পাহাড়ী বাসার গিয়ে উপস্থিত হব। সত্যি আমার এ বক্ষ একটা ইচ্ছে আছে। বে দিন আমি ঋণমুক্ত হব, সে দিনই त्मा (इएड (मर । जेबरदव कांट्ड मान्ध कर्वाड-- मश्रा करत खाशांत्र বিশাস করে।। মাকে জানিও না, জার টাকা মিপ্তার উরেহারার কাছে পৌছে দিও।

চিঠির মোট বক্তব্য এই। ওসাকীর মারফ্ মিষ্টার উরেহারার কাছে টাকা পৌছলো বটে, কিন্তু বরাবরের মত এবারও নাওজির প্রতিজ্ঞা মিধ্যা হল। স্বাস্থ্য পরিবর্তনের আলার আমাদের বাংলোর সেপেল না, বরং ভার নেশার প্রতিক্রিয়া স্করু হরে ক্রমেই মারাক্ষক অবস্থার দাঁড়াল। টাকার ভাগিদে ভার চিঠির বাবা উদ্বেগের এমন ক্রপ নিল, বাকে আর্জনাদ বললেও অত্যুক্তি হর না। প্রতি চিঠিতে আমি নেশা ভ্যাগের শপথ নিলাম, এর পরেই এমন এক স্থার

বিদায়ক শৃপথ ক'রে বে চিঠির থেকে মুখ ফিরিয়ে নিজে ইচ্ছে হয়।
ব্বজে পারি এবারেও মিখ্যা বলছে, তবু নিজের খার একখানি
গছনা ওসাকীর ছাতে তুলে দিই, টাকাটা মিটার উয়েহারার কাছে
ঠিকই পৌছর।

মিষ্টার উরেহারা কেমন লোক ?

বেঁটে, কালো, বিজ্ঞী বলে ওসাকী কিছ আমি বে সময়ে বাই, বেশীর ভাগ দিনই ভিনি সে সময়ে বাড়ীতে থাকেন না। তাঁর স্ত্রী আর বছর ছয়েকের কচি মেরের সঙ্গে দেখা হয়, স্ত্রী বে থুব স্ক্রুরী ভা নয়, কিছ ভারী মিটি আর বুছিমতী। তাঁর মত মহিলার হাতে টাকা তুলে দিতে ভাবনা হয় না।

বর্ত্তমান আমি'র সঙ্গে সেদিনের আমি'র বদি তুলনা কর, ভবে দেখবে অসম্ভব, কোন সাদৃশ্যই থুঁজে পাবে না। উচ্চশির আমার ভবন আকাশে ঠেকভ এবং অত্যন্ত স্বন্ধুন্দ ছিল আমার গতি। তা সত্ত্বেও দাক্ষণ ভর পেলাম, আমার শোষণ করে বে পরিমাণ টাকা এক একবারে বেরিরে বাছিল, তাতে রীতিমত তুঃস্বপ্নের মত মনে হল। একদিন থিরেটার থেকে বেরিয়ে গাড়ী ফিরিয়ে দিয়ে হেঁটেই চললুম মিয়ার উরহারার বাড়ীর উদ্দেশে।

মিষ্টার উরেহারা নিজের ঘরে বসে ধবং-কাগজ পড়ছিলেন। জাপানী পোষাকে জাঁকে একাধারে বৃদ্ধ ও তরুণ দেখাছিল। বেন জীবনে কথনও দেখিনি এমন এক জীবের সামনে এসে দাঁডালাম।

আমার স্ত্রী মেয়েকে নিয়ে রেশন আনতে গেছেন। ঈষৎ নাকিস্থারে কেটে কেটে কথাগুলি বললেন। আমার দেখে স্ত্রীর কোন বন্ধ্
বলে ভূল করেছিলেন। নাওজির বোন বলে নিজের পরিচয় দিতে
অট্টহালি হেলে উঠলেন। শ্রীরের ভেন্তর দিয়ে না জানি কেন একটা
ঠাঙা স্রোভ ব'য়ে গেল।

বেকলে হয় না ? কথাটা বলেই, উত্তরের অপেক্ষা না করেই, একপানা ক্লোক গায়ে চাপিয়ে নিয়ে, নতুন এক জোড়া চটি পায়ে আমার আগে-ভাগে বারাকা পেরিয়ে রওনা দিলেন।

আন্ত শীতের সন্ধা। হিমেল হাওয়া মনে হ'ল সোজা নদীর ওপর দিরে বয়ে আসছে। মিষ্টার উয়েহারা হাওয়া বাঁচাতেই বেল ছটো কাঁধ ভূলে নিঃশব্দে ইটিছেন। প্রায় দৌড়তে দৌড়তে তাঁর পেছনে চলেছি।

টোকিও থিয়েটারের এক তলার গিয়ে চুকলাম। লয় সফ ঘরখানায় চার পাঁচ দলে বিভক্ত হয়ে থদেররা নিঃশব্দে বসে মদ থাছে।

মিষ্টার উরেছারা মদের পেরালার বদলে গেলাসে চেলে থেনোমদ থেলেন। আর এক গেলাস আনতে বলে আমার থেতে অফুরোই করলেন। ছু' গেলাস থেরে নিলাম কিন্ত বিশেষ কিছু ভফাৎ বুঝলাম না।

মিষ্টার উয়েহারা নিঃশব্দে খেনো আর সিগ্রেট চালাভে লাগলেন।
জীবনে প্রথম এমন জারগার পা দিয়েও আমার ক্সিত্র মোটেই থারাপ
লাগছিল না। বরং ভালই লাগল।

ভাল মদ খাওয়াতে পারলে খুলি হভাম কিছ---বলুন।

মানে তোমার ভাই। সে যদি মদের দিকে ঝুঁকত তবে ভাল হত। বহু কাল আগে কোন সময়ে আফিং-এর নেশা আমারও ছিল, আমি জানি লোকে একে কড হীন চোখে দেখে। মদ প্রায় একই জাতীয় পদার্থ, কিছ তার প্রতি মামুবের আশ্চর্য্য পক্ষপান্ত দেখি। আমার ইচ্ছে আছে, ভোষার ভাইকে মদের নেশা ধরাব। তমি কি মনে কর ?

ভামি একবার এক মাতাল দেখেছিলাম। নববর্ষের দিন বাড়ী বাড়ী দেখা করতে বেরুব এমন সমরে ভামাদের গাড়ীর ভেতর কুংসিত লাল মুখওবালা একটা লোক দেখলাম, নাক ডাকিরে ঘ্যোচ্ছে ভামাদের ডাইভারের বন্ধু। ভামি ভয়ে চিংকার করে উঠেছিলাম। ডাইভারের মুখে ভনেছি, লোকটা পাঁড় মাতাল। পাড়ী থেকে হিচড়ে বের করে তার কাঁথ ছটো ধরে প্রচণ্ড বাঁকানি দিতে লোকটার দাবীর এমন তাবে ভেকে মুচড়ে পড়ে গোল, বে মনে হল—হাড়গোড় বৃষ্ধি কিছু নেই।

জার সারাক্ষণ কি বেন বিড়-বিড় করতে সাগস। সেই প্রথম আমি মাডাস দেখে থব আশ্চর্য্য হয়েছিলাম।

জান বোধ হয় আমিও মাতাল ?

না, সে কথা সন্তিয় নয়। আমি আসল মাতাল দেখেছি। তার চেহারাই ভিন্ন।

এই প্রথম ভদ্রলোক মন খুলে হাসলেন।

ভাহলে হয়ত ভোমার ভাইকে মদের নেশা ধরানো বাবে না, তব্ মদ ধরলে ওর উপকার হবে। চল এবার ওঠা বাক।

দেরী করতে চাও না আশা করি।

তাকে কিছু এদে বায় না।

সভিয় বলভে এ জারগাটা বড্ড বেশী ভিছ। ওয়েট্রেস,—বিল জানো।

অনেক থরচ হল ? খ্ব বেশী না হলে আমার কাছেও তো কিছু আছে।

ভবে বিলটা ভূমিই চুকিয়ে দাও।

শতটা না'ও থাকতে পারে। ব্যাগের ভেতর চোথ বুলিরে মিষ্টার উয়েহারাকে শামার টাকার আন্দান্ত দিলাম।

এ টাকার আরও তু' জারগার মদ খাওরা চলে, বোকা মেরে কোথাকার! জ কুঁচকে বলেই ভদ্রলোক হেদে কেদলেন।

আৰু কোধাও যাবেন মদ খেতে ?

উনি মাধা নেড়ে আপত্তি জানালেন—না বৰেষ্ট হয়েছে। তোমার জন্মে একটা ট্যাক্সি ভাকি। তুমি বাড়ী বাও।

অন্ধনার সিঁড়ি তেঙ্গে একতলা থেকে উঠে এলাম। মিপ্তার উরেরারা আমার এক ধাপ ওপরে ছিলেন। হঠাং পেছন কিরে আমার অবর স্পর্গ করলেন। ঠোঁট শক্ত করে চেপে তাঁর চুম্বন গ্রহণ করলাম। তাঁর প্রতি বিশেব কেনে আকর্ষণ আমার আনেনি, কিছ সেই সমর থেকে আমার গোপন কথার স্বত্রপাত। মিপ্তার উরেহারা সিঁড়ি বেয়ে তর-তর করে উঠে গেলেন, আমি ধীরে ধীরে তাঁকে অম্বরণ করলাম, মনের মধ্যে সম্পূর্ণ কাঁকা। বাইরে বেরিরেনিটার হাওয়ার প্রাণ ভুড়িয়ে গেল।

মিষ্টার উরেহারা আমার জন্ত একটা ট্যাক্সি গাঁড় করালেন, কোন কথা না বলেই আমরা প্রস্পারের কাছ থেকে বিদার নিলাম। পুরনো নড়বড়ে ট্যাক্সিতে বেতে যেতে মনে হল, এই মুহুর্তে সমুদ্রের মন্ত বিশাদরপিনী সমুদ্রের হার আমার চোথের সামনে থ্লে গেল।

একদিন স্বামীর সঙ্গে বাগড়া হয়ে মন থারাপ করে বাসে আছি, হঠাং কি মনে হতে বলে ফেললাম,—একজন আমায় ভালবাসেন।

জ্ঞানি, হোৰাভা না ? তুমি কি তাঁকে ভূৰতে পাব না ? এ কথাৰ কোন জ্বাব দিলাম না।

যধনই আমার আমীর সঙ্গে গোলমাল হত, তথনই এই কথা উঠত। মনে ভাবলাম—সব শেষ।

এ বেন পোবাকের অভ ভূগ করে কাপড় কেনা, একবার কেটে ফোলে ভোড়া দেওর। চলে না। সবটা ফেলে দিরে নতুন করে কাপড় কিনতে হয়।

এক বাতে স্বামী জিজ্ঞেদ করলেন, আমাস পেটের সন্তানটি কার 📍 হোসাডার ? ভয়ে আমার সর্বাঙ্গ ধর-ধর কেঁ:প উঠল। এখন বুরতে পারি দে সময়ে আমি এবং আমার স্বামী ছ'লনেই কড ছেলেমায়ুব ছিলাম। সহল প্রেম কথাটার ভাৎপর্ব্য আমাদের জানা ছিল না। মিষ্টার হোসাভার ছবির সম্বন্ধে এমন ক্ষম ভক্তি ছিল বে, চেনা-শোনা স্বাইকে বলে বেড়াতাম অমন লোকের স্ত্রী হ্বার সোভাগ্য থাকলে জীবনে প্রতিটা দিন অপরপ সৌন্দর্য্যে ভরে ওঠে। তাঁর মত কচি বাঁর নেই, তেমন মাতুৰকে বিয়ে করা অর্থনীন। কাব্দে কাব্দেই দ্বাই ভূল বুৰত, আর আমি স্লেছ ভালবাসা সম্বন্ধে সম্পূর্ণ অনভিজ্ঞ ছিলাম বলেই নি:সংস্কাচে স্বার সামনে বলে বেড়াতাম আমি হোসাডাকে ভালবাদি। এ ধরণের মন্তব্য কখনও প্রত্যাহার করার চেষ্টা পর্যন্ত না করার ব্যাপার জটিল হত্তে পাঁড়াল। সেই কারণেই দেহের মধ্যে ঘুমস্ত ক্ষুদ্র মানব-শিশুর প্রতিও আমার স্থামীর মনে সন্দেহ আগে ৷ ছ'জনের মধ্যে क्छेडे विवाह-विष्कृतनः कथा जूनलाम ना, **चथ**ह भिरन मिरन আবহাওয়া ধমধমে হয়ে উঠল। আমি আমার মারের কাছে ফিরে এলাম। মৃত শিশুৰ জ্ঞাৰ পৰ ক্ষত্ত হয়ে শ্ৰা নিলাম, স্বামীৰ সঙ্গে আমার স্বামীর সম্পর্ক খেব হ'ল।

আমার বিবাহ বিচ্ছেদের ব্যাপারে নিচ্ছেকে অপরাধী ধরে নিরে নাওলি গলা ফাটিয়ে নিজের মরণ কামনা ঘোষণা করল—কারার ভাব মুখ বিকৃত হল। আমি তাকে জিজ্ঞেদ করলাম, ডাক্তারখানার আর কত ঋণ আছে? ধারণাতীত এক বিবাট টাকার জঙ্ক আমার কাছে দে স্বীকার করল। পরে শুনেছিলাম দে মিধ্যা বলেছিল, আদল অবটা ভারও তিনগুণ।

আমি স্বীকার করলাম, তোমার মিপ্তার উ: ছহারার সঙ্গে দেখা হরেছে ? চমৎকার মাছব ! মাঝে মাঝে তিন জনে মিলে বারে আডা মিতে বেঙ্গলে মক্ষ হর না ! বেনোমদ এত সন্তা, আমার কোন ধারণাই ছিল না ৷ এতে তোমার অকৃতি না হলে ধরচ পোবানো আমার পক্ষে কঠিন হবে না ৷ ডাক্তারধানার টাকার জন্ত তেবো না ৷ একটা কিছু বাবস্থা হয়েই বাবে ৷

মি: উরেহারার সঙ্গে আমার পরিচয় আছে এবং তাঁকে আমার ভাল লাগে তনে নাওজির তো গণগদ অবস্থা! সেরাতে আমার কাছ থেকে টাকা আদার করে ভন্তলোকের বাড়ী ধাওরা করল।

নেশাটা বোব হর মনের বোগ। মিষ্টার উল্লেহারার প্রশাসার পঞ্চমুব হরে উঠলাম। তাই-এর কাছ থেকে তাঁর লেখা বই ধার করে পড়তে অফ করলাম। পড়া হলে মন্তব্য করভাম—এমন লেখক ভার হর না। আমি জন্তলাকের লেখার একজন সমস্বধার,

এ কথা আৰিছার কবে নাওলি তো অবাক! থুলিব চোটে আমার উর আরও সব উপভাস জোগাড় কবে দিতে লাগল। নিজের আলভে আমি মিটার উরেহারার গুণপ্রাহী হরে উঠলাম, তাঁর সমস্ত উপভাস মন দিয়ে পড়ে নাওলির সঙ্গে সমালোচনা করি। প্রার প্রতি রাত্রে নাওলি মিটার উরেহারার সঙ্গে মদের আড্ডায় চলে বার। ক্রমে ক্রমে সে মদের নেশার মশগুল হয়ে এল। নাওলিকে না আনিরে মাকে কিজেস করলাম, ডাজারখানার খারের কি হবে ? এক হাজে মুখ ঢেকে কিছুক্ষণ চুপ করে মা বসে রইলেন; তারণর মুখ জুলে স্লান হেসে জবাব দিলেন উপার কি ? মাধার তো কিছুই আসছে না। জানি না কত বছরে এ বোঝা নামবে। বাই হোক, প্রতি মাসে সামান্ত কিছু করে লোধ করভেই হবে। এর পর ত্'বছর কেটে গেছে। জীবন ত্র্বিবহ হয়ে উঠেছিল।
চক্রমলিকা। নাওজির পক্ষেও কথাটা সন্ত্যি, আজ অবধি ওঃ
উদ্ধারের সব রাস্তা বন্ধ, কি করে কি করা বার, এ ধারণাই ওর
নেই। মৃত্যুর আশান্তেই সে নিশ্চর রোজ মাতাল হয়। নিজেকে
নাই হতে ছেড়ে দিসে আমিই বা কোধার সিরে দাঁড়াতাম, কে জানে।
বোধ হয় তাহলে নাওজির পক্ষে সহু করা সহজ হতা।

নাওজি নোট বইবে লিখেছে—কি বে মন্দ নর তা তো জানি না। এই কথা পড়ে নিজেকে জামার কাকাকে, এমন কি জামার মা জননীকেও বেন বিখাদ কয়তে পারি না। বোধ হয় এখানে জ্ঞষ্ট কথাটির সংজ্ঞা মারার বন্ধন মাত্রই হবে।

ক্রমশ:।

অমুবাদ: কল্পনা রায়।

রাজধানীর পথে পথে

উমা দেবী

हाम ७ हीत्नगाहि

বড় বাভার ধারে ঐ বে সকু গলি—
বার সামনে কৃটপাথের উপর লোহার চোকো চাকা দেওরা
সভাজলের কল—
ঐটেকে ওরা তুলে কেলল অবলীলার,
বৃতে বলল কাচের গেলাস আর সভা দামের চীনেমাটির বাদন।
আকাশে তথন চাঁদ অলছে।
গ্যাসের বাভির চেরেও অনেক জোরে আর অনেক দ্রে অলছে চাঁদ,
তার আলো ওদের গারে ছড়িয়ে গেছে—
ছঙ্কিয়ে গ্রিরে বিকঝিকিয়ে উঠছে চীনেমাটির চক্চকে প্লেটে।
ওরা অনেক রাত্রে কাজ করতে বসেছে পথের ধারে
চারের দোকানের সামনে— কাঁচা-বর্সের ত্'টি ছেলে—
বাদের মুখের ফ্যাকাশে রত্তে ভীতিজনক অবাহ্যের আশকা,
ঐ সামনের অভ্যার আঁকা-বাঁকা গলির মতনই
বাদের ত্বিয়ং স্পিল ও অভ্যার,

বাদের গারে এই শীভের বাত্তেও ছেঁড়া গেঞ্জী,
বঙ্ক উঠে বাওরা বোভামথসা ছেঁড়া প্যাণ্ট পরনে,
ঐ কাঁচা বরসের ফ্যাকাশে রঙের ছটি ছেলে—
বারা এত রাত্তেও হাসি হাসি মুখে কাচের ও

চীনেমাটির বাদন থুছে, নিশ্বধপ্রায় শীতের রাজের কুরালা ছড়ানো চাদের ভালোর তলার।

ওদের বর্সী অনেক ছেলেই এখন ঘূমোচ্ছে আরামে লেপের ভলায়—বাতি কেলে অনেক পড়ার শেবে— বারা জানে মিশরের পিরামিডে কারা থাকে ঐ হলদে মলমল ছড়ানো প্রেভমৃতির দল স্থাদি মশলার ঝাঁঝে বাদের দেহ জরজর হ'বে আছে, স্পার বাদের গলার তুলছে ফিকে সবুজ পাধরের ঘরা মালা। বেথানকার উদ্ধাম প্রাপাতের কাছে নরম কাদার জন-হন্তার দল পা ভূবিয়ে আরামে চোধ বুঁজে আছে। এদেঃ বাসন ধোরার ট্র:-টাং শব্দ মিশে গেছে ওদের পড়ার হুরে বৰন ওবা পড়েছে—কোথার কোনো সিংহল দেশের আরক্ত চুণি গোলাপের চেয়েও লাল আর বকরকে---কোণার গজমুক্তার মালা শাদা হাঁদের ডিমের মতন বড় বড় কোধার নীলা-পাধরের ত্যুতি সমুদ্রের স্থনীলভার চেরেও প্রগাঢ় আর কোধার নলবনে ছরস্ত হাওয়ার জ্ঞল-ফড়িং-এর মাতামাতি। ওদের কানে বার না এ সব কথা---ভবা জানে আৰু এক সেট বাবু ব'লে আছে পিপাসাৰ্গ হ'ৱে ভানে দোকানের মালিকের চড়া মেভাঞ্চ ব্দার চেনে ছ-একটা পরসার বধশিয়— ৰা ওদের কাঁচা বয়সের সমস্ত স্বপ্পকে কেড়ে নিয়েছে---জীবিকার দারে রোগা হাতে ফ্যাকাশে মুখেও বারা খুশি।

ওরা চারের চীনেমাটির বাসনগুলি ধুরে ট্রেভে থাক দিয়ে সাঞ্চাল,
ভারপর একটু আড়াল হরে হু-জনে হুটো বিডি ধরাল—
লাগুন ধরিরে ধোঁরা ছুঁজে দিল চাদের দিকে—
ছাই থরিরে দিল নীচের মাটিতে
ভারপর ধোঁধাবেঁবি করে কাড়িরে বলল শীডের প্রকোণের কথা,
লার লামি পাড়ার লোক—আমাকে দেখে লজার হেনে কেলল
লার ওদেরকাকাশে রুধের হাসি দেখে কারার বুক আমার ভেকে পেল।

কোবণারা হাতে আলো আর কুকরি নিরে চুকলো সেই অন্ধনার ওক্ষার। কাছে গিয়ে তারা বা দেখলো, সে এক অন্ত্যাশ্চর্য দৃগু! কিলোর আর শাস্তম্ম ছকনেই লড়ি দিরে বাবা। তাদের বিবে আছে তিনটি বলিঠ লোক। আগত্তক শেরণাদের দেখে তারা শিস্তল উচিয়েছে।

শেরণাদের দেখে কিশোর, শাস্তমু ত্রনেই আখস্ত হলো। শিস্তলগুলো অগ্নিবর্ষণ করার আগেই তারা চিৎকার করে বলে উঠলো: মারবেন না! ডু নট ফারার আ্যাট দেম। ওরা আমাদের লোক।

কিছুক্ষণ ধরে সেই স্থিমিত অন্ধকার গুহামধ্যে সকলেই ভব হরে বইলো। তারপরে, কথা বললো প্রথমে শাস্তম্। সে বললে, আমাদের নিরে কি করতে চান আপনারা ?

ভোমাদের উদ্দেগ্ট। আগে ভনতে চাই, বললে ওদের মধ্যে বয়ন্ত লোকটি। ভার মুখধানা দাড়ি-গোঁকে আছের, চোখ ছটো অগ্রিপ্রাবী—আমবা বে উদ্দেশ্যে এসেছি, ভোমবাও বদি সেই মন্তল্যে এসে থাকে। ভাহলে ভোমাদের এধানেই থেকে ব্যক্ত হবে।

শাস্তম্ বললে, অনুগ্রহ করে বলবেন কি, আপনাদের উদ্দেশ কি ? আমাদের তর্ক থেকে বলতে পারি, আমরা অস্তত স্বর্থনির সন্ধানে বা প্রশম্পির সন্ধানে এথানে আসিনি।

ভবে ? অপর পক্ষ থেকে প্রশ্ন এলো।

শাস্তমু বললে, জামরা পর্যকের উদ্দেশু নিষ্টেই এসেছি। জামাদের লক্ষ্য বলতে এক কথায় বলতে পারি, সোনালি ঝরণা।

খপর পক্ষের একজন একটু হেসে বসলে, এতো কট্ট করে সোনাসি বরণা দেখতে ভাষু কেউ খাসে কি না খামরা জানি না। এ কথা বিশাস করাও শক্ত !

শান্তমু বললে, বিখাস করা না করা আপনাদের ওপর নির্ভর করে। তবে আমাদের সঙ্গে এক বৃদ্ধ লামান্তি আছেন। ভিনি ত মিধ্যা বলবেন না ?

কোন লাম। ? নাম কি ?

তিয়েলিং।

তিবেলিং-এর নাম শুনে ওরা একটু চুপ করে থেকে একটু দ্বে সরে গেল এবং সেধানে চাপা গলায় কিছুক্ষণ পরামণ করে ফিরে এল। সেই বরস্ক লোকটি বললে, ভোমাদের ছেড়ে দিতে পারি ছটি সর্তে। প্রথম, আমাদের কাজে ভোমরা কোনো বাবা দেবে না। বিত্তীয়, শংক্রীপ্রসাদের হত্যার কথা ভোমরা প্রকাশ করবে না।

শাভিত্ব বললে, শংক্রীপ্রসাদের মৃত্যুতে আমরা খুশি হরেছি,
আপনারা তাকে হত্যা না করলেও আমার হাতে সে নিহত হতো।

ও! ভোমাদের সঙ্গেও ভার পরিচর হয়েছিল ?

শাস্তম তথন সবিস্তাবে শংকরীপ্রসাদের কথা বললো এবং ওদের কাছে বা ভনলো, তা আবো চমকপ্রদ ! ওরা আটজনের একটি দল এই অভিবানে বেরোর ! তারপর, লক্ষ্যুহলের বকই কাছাকাছি আমরা হরেছি ততই শ্রতান হরে উঠেছিল সে । লোভের করলে পড়ে আমাদের কাঁকি দেবার চেপ্লার সে পর পর তিন অনকে হত্যা করেছে। প্রবাপ পেলে আমরা তিন জনও থাকতায় না। কিছু তার চ্র্ভাগ্য, তাকেই সরে বেতে ইলো।



শান্তম্ বললে, ভাহলে, খার কি বলার প্রয়োজন খাছে বে আমরা আপনাদের ঘৃটি সংগ্রহী রাজি ?

সকলেই একবার হেসে উঠলো এবং তাদের বাঁধনগুলো খুলে দেওরা হলো।

কিশোর এতক্ষণে বলে উঠলো, ভাহ'লে আমরা এখন বন্ধু, ভাই নয় কি ?

मकल वरन छेर्रला, निक्त्यहे। भाक्ते हरव शन।

শাস্তম্ বললে, অন্মাদের কিন্ত এখনি বেকে হবে ক্যাম্পে।
আমাদের এক বোন আছে আর লামাজি আছেন। ওরা আমাদের
জন্তে এতক্ষণ উৎকটিত হয়ে আছে। আপনারাও কিন্তু আসবেন,
চারের নিমন্ত্রণ ইইলো।

মেষ্টি, গ্ল্যাডলি, বলে উঠলো এরা। একজন বললে, সোনালি বরণা দেধবেন না ? এধান থেকে সহজে বাওয়ার পথ আছে।

তাই নাকি? হররে: । শাস্তম্ উচ্চৃসিত হরে উঠলো। দেখবো, নিশ্চরই দেখবো। কিছ স্বাই মিলে: । এই বলে শেবপাদের নিরে শাস্তমু, কিশোর ওপরে উঠতে লাগলো ক্যাম্পের উদ্দেশে।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] জ্ঞীশৈল চক্ৰবৰ্তী দূৰ খেকেই ওৱা চিৎকাৰ কৰে উঠলো, লালী, লালী, দাকৰ হুঃসহ স্থানবাদ!

লালীর মুখধানা ভারী, চোধ হটো ফুলো-ফুলো।

ভাকে ঝাঁকুনি দিবে শাস্তম বসলে, ধ্ব কালা হয়েছে, ব্ঝতে পাছি: • কিছ, এবাবে জার কালা নর। একেবাবে হাসি। কয়েক ঘটা পবেই আম্বা সোনালি ঝবণা দেখতে বাবো।

রাখো ভোমাদের সোনালি ঝরণা, মুখ বেঁকিয়ে বললে লালী। এমন জানলে কে আসতো তোমাদের সংক!

কেন, কি হয়েছে ?

বেশ স্তিতে মৃশগুদ হরে আছে, আর আমাদের কাল থেকে কী তৃশ্চিস্তার কাটছে!

ও, এই কথা ! আমবা আসতে পাবলে তবে তো, ঐ শেবপাদেরই জিগোস করো না। সে এখন থাক, পরে বছরো। কিছু খাবার আর চারের জোগাড় করো দেখি, তিন জনকে নিমন্ত্রণ করে এলুম। চল কিশোর, লামাজির সঙ্গে দেখা করতে হবে।

লামাজি সব বৃত্তাস্ত ওনেও বিশেষ বিচলিত হলেন না। ওধু বললেন, এখানে এ ধবণের ঘটনা বিবল নর। মান্থবের অর্থলোভের হি'শ্রম্তি কত অনর্থই যে করেছে! লোভ তার প্রসারিত হাত ছটি হিংলার কল্যিত করে কত বজু যে বারিয়েছে, কত প্রাণ বিনষ্ট করেছে, কে তার পরিমাণ করবে? ভগবান বৃষ্টের অপার আশীর্কাদে তোমবা কিরে এনেছ।

আর একটা সুসংবাদ আছে লামাজি, বললে কিশোর। ঐ গুল্ফার মধ্যে দিয়েই সহজ পথ আছে, সেটা আমরা জেনে এনেছি।

তা হবে, বললেন তিয়েলিং। ওটা আমার জানা নেই।

ষধাসময়ে ভূগর্ভ থেকে তিন জন শতিথি এসে হাজির কলো।
তিন জনই ভারতীয়, বাঙালী নয়। ছজন বোষাই, একজন
উত্তরপ্রদেশের লোক। ওঁরা ঐ নির্বান্ধর জনহীন প্রদেশে মায়ুবের
সাল্লিয়া পেরে থুব উৎকুল হল্পে উঠলো। চা-পানের সঙ্গে বেশ আলাপ
আমে গেল। লালী জনেক দিন পরে অপরিচিত শতিধিদের
পরিবেশন করলো।

সেই দিন তৃপুরে অনেকগুলি মামুবের একটি দল চালু পথে পা বাড়ালো। কিন্তু দৈব-তৃর্ব্যোগের কি এখনও শেব নেই ? হঠাৎ আকাশ আছের হলো মেঘে। কুরাশার মন্ত পাতলা মেঘ। বৃষ্টি এলেই বিপদ, নামার পথ শিছল হলে সে মারাত্মক হয়।

বাই হোক, প্রকৃতি তাঁর চরম অভিশাপের মধ্যেও আশীর্ষাদ রেখে দেন। তা না হলে পৃথিবীর বত তুর্গম স্থান আজও মারুবের কাছে অনাবিকৃত থেকে বেত।

গুদ্ধার অন্ধকার সর্লিল পথে কিছু দূর বেতেই একটা গর্জন অংতিগোচর হলো।

শংকরীপ্রসাদের দলের একজন বিনি উত্তরপ্রদেশ থেকে এসেছেন তাঁর নাম মি: কাপুর। তিনি বললেন, আমরা ঝরণার নিচে দিকে বাজি বলেই এতো শব্দ পাওয়া বাছে।

ঝংলাকে মাঝণথ থেকে দেখার সব চেরে ভাল। আর একজন মস্তব্য করেন। ওরা বতই এগুছে ততই গর্জনের শব্দও বাড়ছে। এদিকে পথের মুপাশে সেই স্কুড়কপ্রার গহবরের রপও অপূর্ব। জলের ফোটার সঙ্গে চূণ বা সিলিকা জাতীর পণার্থ জমে জমে জ্য লক্ষ স্তান্তের মন্ত স্থান্ত করছে। ওপর থেকে সেগুলি ঝুলছে। কতকণ্ডতি মাটি স্পার্শ করেছে, কতকগুলি করেনি। সেগুলির জাকার জায় গঠন কী বিচিত্র !

কতক্ষণ চলার পর তীর জালো হঠাৎ যেন ঝলসে উঠলো ওদে চোঝে। শান্তমু বললে, সুড়ঙ্গর শেষ হলো। আমরা বাইরে এল পড়েছি। এ আকাশের জালো।

ভিষেত্রিং বললেন, না শাস্তমু, ভূল করছো, সামনে চেয়ে দেখ।
সভ্যিই তাই পর্বভগতের স্থড়ক তথনও শেব হয়নি। কিং
সেধানকার একটি বন্ধপথ দিয়ে দেখা যাচ্ছিল একটা আলোকোজ্জ জলধারা। শাস্তমু আনন্দে চিৎকার করে উঠলো। ভিরেদি বললেন, এটিও একটি শ্রস্তব্য, ধবলগিরির বুক থেকে নেমে আসছে।

আবো কিছুক্রণ পরে সভিটে অভ্যের শেষ হলো। ওরা বেধার দ্বীভালো, তার মাধার আকাল। সেধান থেকে দ্বে দেখা গেল একটি সক্ষ সোনার স্থতো বৃসছে—ওপরে নিক্ষ-কালো পাথরে পর্বতশৃক্ষ, বৈহু নিম্নে নীলাভ কুমালা। তিরেলিং মন্ত্রমুগ্ধের মং দীড়িরে পড়েন। লালী, কিশোর, লাভ্যমু বসে পড়েন-একদৃষ্টিং ভাকিয়ে আছে সকলে। বাক্যনীন।

কথা বলার প্রয়োজন কোথা ? স্বার মন তথন চোখেঃ ভারায় !

জক্ট ভাষার ৩৪ শাস্তম্ বললে, সোনালি ঝরণা, সোনালি ঝরণা---!

একটি অর্ণরশ্মি বেন অর্গচ্যুক্ত হয়ে গড়িয়ে পড়ছে, সাবলী-গভিতে, নিচে, জনেক নিচে বেখানে সে মুছে গেছে কুরাশার জন্পঠিতায়। মন-প্রাণ ভবে দেখলো ওরা।

মিঃ কাপুর বললেন, শুনেছি ওটা জল নয়, জল ছাড়া অন্য কিছু, এই বেমন সভিয়কার সোনাও হতে পারে।

সেটা কি কৰে সম্ভব ? বাও বললে। গলিত সোনার টেম্পায়েচার কত ? বরং এটা হতে পারে যে স্বর্ণবেশু মিশ্রিত জল।

কাপুর প্রতিবাদ কবে, তাও সম্ভব নয়। ওটা লাইটের কোনো অভূত প্রতিফলনের জন্তেই ওরকম দেখার। আসলে হয়তো ওটা জলই।

তিরেলিং এতকণ শুদ্ধ হয়ে ইঠ্মন্ত জপ করছিলেন। শুধু তার গুঞ্জন শব্দ শোলা বাছিল। উনি বললেন, কোনো ব্যাখ্যাই বিশাসবোগ্য নয়, বেটি বিশাসবোগ্য সেটি আমার কাছে শুমুন।

আদলে, ওটি কোনো সাধারণ ঝরণা নয়। অনেক কাল আগের কাঞ্চনমালা। কাঞ্চনজন্তার একমাত্র আদেবের তুলালী কাঞ্চনমালা। কাঞ্চনজন্তার একমাত্র আদেবের তুলালী কাঞ্চনমালা। কাঞ্চনজন্তার একমাত্র আদেবের তুলালী কাঞ্চনমালা। কাঞ্চনজন্ত গোঁও রেখেছিল তারা হিমাল্লিরাজের ঐশ্লুটিকে। রাজা কাঞ্চনজন্তার রজে রজে জমে আছে সোনার স্তূপ। অর্থিয়ী কাঞ্চনমালা ছিল উচ্চতম শিখরের একটি কক্ষে। কত রাজা, কত রাজপুত্র এলো তার পানি প্রার্থনা করেন ক্ষিত্র কেউই পারলো না তাকে লাভ করতে। দলে দলে তারা প্রাণ দিল, তাদের অন্থিপন্তর পড়ে আছে প্রায় প্রায় ক্ষিত্র ক্ষাছে বি কৃষ্ণকাঠিন শিলাহাশির ক্ষারে ক্ষারে।

তারা এসেছিল স্বর্ণের আকর্ষণে। তারা চেয়েছিল কাঞ্চনমালাকে আত্মসাৎ করতে, তাকে লোভের কঠিন নথর দিয়ে ধর্জেণ্ড কাঞ্চনমালা ওবু দিউরে উঠতো। মেবলোকে ডেকে বাধতো ভার

শেষে এলো এক পৃথিবীর কুমার এতঃসাহদের কঠিন বর্ম তার সর্বাক্তে এতুল পদ করে সে উঠলো ঐ মত্প শিলাগাত্র বেরে। সে বললে, ভালবাসা দিরে আমি জর করবো মৃত্যুভরকে, কোনো বাধাই মানি না আমি।

শিলার পাঁজরে পাঁজরে তৃণ পাজালো, তার পা রাধবার জন্তে। শেবে জয়ী হলো দে, কাঞ্চনমালার হাতে দিল একটি রক্তগোলাপ। মুহাতে বেষ্টন করলো দে কাঞ্চনমালাকে। বললে সোনা চাই না, অর্থিয়তি চাই। জামি চাই তোমাকে, নিয়ে বাব পৃথিবীতে।

কোমল হয়ে গলে গেল কাঞ্চনমালা। প্রেমের স্পর্ণে কি যে উত্তাপ আছে কে জানে ! গলে ভয়ল হয়ে করে পড়লো---আজও পড়ছে। আজও নামছে লে পৃথিবীতে।

विद्यितिः हु क्वरणन । दन शानक । नवारे निर्वाक !

তার পর ? ভার পর আর নেই।

শুধু আছে শাস্তমুদের ফিরে আসার পালা। সেটা কল্পনা কবেই
নিতে হবে। শুরা ফিরে এলো কলকাতার, নিবাপদেই ফিরেছিল।
শাস্তমুর ব্যাগ ভত্তি হবেছিল নানান পাধ্যে—তার করেকটি দেধা
গিবেছিল থুবই মূল্যান। তাতে ছিল অঞ্জিত করেকটি জীবের
জীবানা।

ভিয়েলিং কিবে গিয়েছিলেন তাব আন্তানা দেই বৌদ্ধনঠে, আব বাদেব কথা না ব্ললেও চলে, সেই শ্কেরীপ্রসাদের দলের ভিন জন, কাপুর, বাও আব পাণ্ডে এঁবা এঁদেব স্বর্ণবানিব অভিবান তাগি কবে শাস্ত্রপুদের সঙ্গে ফিবেছিলেন। শাস্তমুর সঙ্গে স্কুর্ত্তিম ব্যুক্তা সূত্র আবিদ্ধ হয়ে পড়েন।

সমাপ্ত

মাস অদৃশ্য করার যাতু যাত্বত্বাকর এ. সি. সরকার

স্বৈব টোকিওতে থাকাকালে একটা মন্তার খেলা দেখিবে বন্ধহলে খ্ব চাঞ্চল্যের স্টে করেছিলাম। স্বার চোধের সামনে একটা কাচের গ্লাসকে বেমালুম অনৃষ্ঠ করেছিলাম। স্বার চোধের সামনে একটা কাচের গ্লাসকে বেমালুম অনৃষ্ঠ করে দেওরার বাছ। দিনটা ছিল মেঘলা-মেঘলা, মাঝে মাঝে ছিল ছিল করে বৃষ্টি পড়ছিল। পথঘাট ভেলা আর বেল একটু ঠাণ্ডার আমেন্ডও মেলানো ছিল বাতালে। ছ'-ভিনজন জাপানী সাংবাদিক বন্ধু এসেছিলেন দেখা করতে। তাদের সঙ্গে গল্প করিছিলাম হোটেলের থাবার ঘরে বলে করি থেতে থেতে। আসাহী সিম্নের অক্তমা রিপোটার মিস্কিওকো কথা প্রস্কুল আমাকে অম্বরোগ জানালেন একটি ম্যান্তিক দেখানোর জন্ত। আমি তাদের একজনের কাছ থেকে চেরে নিলাম একটি একল ইয়েন মুলা আর সেটিকে রাখলাম টেবিলের উপরে। আর একজনের হাত থেকে নিলাম একটি থববের কাগজ। এই বাগল ঠোলা পাকিরে নিলাম আর কাচের গ্লাসটাকে উপুড় করে নিবে ঠোলা দিয়ে ঢাকা দিসাম সেটিকে। এর পরে স্বার মৃষ্টি আকর্ষণ ক্রলাম মুলার প্রতি। আর কাগজের ঠোলার মোড়া



প্রাস (ঠোলাকর) তুলে

থানে তাই দিরে চাপা

দিলাম মুলা টা কে।

চোকাদ-পাকাদ-হোকাদপোকাদ বলে বেই মাল

ঠোলাকর প্রাসটা (?)

তুলে নিলাম তথন

সবাই কী দেখলেন
বলতো । মুলা অগ্ন হরে

পেছে । না মোটেই তা

নর ! বেমনকার মুলা

তেমনি পড়ে আছে।

ভাই তো ! ভবে কি

ম্যাজিক ব্যর্থ হল ? একটু অঞ্জনত হবে আমি বন্ধুদের ব্ললায় বে আমার মন্ত্র কথনও বিফলে বার না। হরতো বা যুজার বদলে অন্ত কোনও কিছুব উপরে এ মন্ত্র কাল করে থাকবে। কিসেবউপরে ? কাগজের ঠেকোটা থুলতে দেখা গেল ভার ভেজরে ব্লাল নেই। কাণ্ড দেখে স্বাই হলেন হত্বাক্। এত বড় একটা ব্লাল চোখের সামনে খেকে কেমন করে উরাও হল ?

খৃণ্ট সহজ একটি কৌলল প্রয়োগ করেছিলাম। সেদির আমার পরা ছিল বৃতি। আর আমি বলেছিলাম টেবিলের এক ধারে। কাগজের ঠোলার ভেতরে গ্লাস ঢাকা দেবার পরে বধর আমি সবার ভৃতি মুজাটিব দিকে আকর্ষণ করি, তথন সবার অপোচরে ঠোলাক্তর গ্লাম টাকে কেলে দিই কোলের উপরে—কোঁচড়ের ভেতরে তা নের নিরাপদ আপ্রয়। বলা বাছলা বে, এ কাক্ষ আরি করেছিলাম বেশ ক্ষিপ্রতার সঙ্গে আরু আমার চোখ ছিল দর্শকরেই উপরে, ভধুমাত্র বাঁ হাতেই সেরেছিলাম এই গ্লাস লোপাটের কাক্ষ। ধ্রতি পরা না খাকলেও বে এ খেলা আমি দেখাতে না পারভাম এমন নয়। তথন আমাকে কোলের উপরে বিছিয়ে নিতে হত একটি বেশ বড় সাইক্ষেব ক্যাস বা ঝাড়ন। খেলা শেব হবার পরে সকলের অলক্ষ্যে কোল খেকে গ্লাসটাকে সরিয়ে ফেলাটাও কিন্তু কম অভ্যাসের কাল এয়।

ৰাবা যাত্তিতা বিবরে উৎসাহী, তারা আমার সঙ্গে আবাবের আছ উপাযুক্ত ডাকটিকিট সহ পত্রালাপ করতে পার A. C. SORCER, Magician, Post Box 16214, Calcutta—29 এই টিকানার।

অভিশপ্ত হুর বার্কারোল

দেবত্রত ঘোষ

হ্নিবাসী স্থবকার জ্যাকি অফেনব্যাখ-এর নাম ইউরোপের
সঙ্গীতামুবাগী ও বিদ্যু সমাজে আজকের দিনে স্থপবিচিত্ত
না হলেও একেবারে অপরিচিত নর। উনবিংশ শতাকীর মধ্যতাপে
তার বচিত অপূর্ব স্থবসমূদ লগু অপেরাগুলি ইউরোপের সমীত-বসিক
মহলে এক প্রচণ্ড আলোড়নের স্টি করেছিল। কালের কৃষ্টিপাথরে
তারা হয়ত বুগোতীর্ণ হতে পাবেনি, তবে রুসোতীর্ণ হ্রেছিল,
একথা নিঃসলেহে বলা চলে।

১৮১৯ গৃষ্টাব্দের ২১শে জুন জানীণীর কোলন সহবের এক সম্ভান্ত জানিণ-ইত্ত নী পরিবারে জ্যাকি অফেনব্যাণ জ্যাহ্রণ করেন। জীর পিতৃনত নাম ছিল জ্যাক্ব লেভি এবার্ট। মাত্র পনেরের বংসর বর্গে তিনি তারোলিন সেলো লিক্ষার জ্বত্ত ফ্রান্সের হাজধানী প্যানী নগরীতে জ্ঞানেন। পরে এই পারী নগরীই তাঁর জীবনের কর্মকেন্দ্র হয়ে গিড়োর ও তিনি ফ্রাসা নাগরিক্ত গ্রহণ ক্রেন।

অকেনব্যাথ তাঁব সুনার্থ সগীতমন্ত্র জীবনে বছ জনপ্রির অপেরার স্থব-সংবোজনা করে গেছেন। তার মধ্যে উল্লেখবাগ্য হল—
"পেপিটো" লাবেলে হেলেন" বারবে রুঁ, লা প্রাণ্ডে ভাচেদ ডি
কেরোগাঁইন", "কেনেভিন্নেভ ডি বারবাঁ", "ম্যানাম কাবরা" প্রভৃতি।
তবে জীবনের শেবভাগে "টেলস অব হক্ষ্যান" অপেরার স্থর স্থাই
করে তিনি বে প্রভৃত খ্যাতি ও সম্মান লাভ করেছিলেন সেকালের
ইউরোপে তাঁর তুলনা মেলা ভার! অখচ বড়ই তৃঃখের বিবর,
অকেনব্যাথ তাঁর সংগীত-জীবনের সর্বন্দেঠ কীতি এই অপেরার
মঞ্চাক্ষ্য দেখে বেতে পারেন নি। কারণ বে মূল স্থরটিকে
ভিত্তি করে তিনি টিনস অব হক্ষ্মান" অপেরার স্থর সংবোজনা
করেছিলেন সেই স্থঃটি হিল অভিশ্ব্য। ফলে উক্ত স্থবের
অভিশাপেই তাঁর মৃত্যু হর।

১৮৭০ খুটালে অফেনব্যাধকে মটালেশ লতাকীর জনৈক বিখ্যাত জার্মাণ আইনজ্ঞের প্রাণয় কাহিনী মবলম্বনে বচিত "টেসস অব হফম্যান" অপেরায় স্থার স্থাইর ভার দেওয়া হয়। মনেক ভেবে-চিস্তে ভিনি প্রথম দিকে করেক বংসর আগো শোনা একটি বিশ্বভগ্রার গানের মিটি স্থাকে ভিত্তি করে "টেসস অব হফম্যান" অপেরার আবহ সঙ্গীত রচনা করবেন বঙ্গে মনম্ব করেন। কিছু করেক মাস ধরে বহু চেট্টা করেও মাকেনব্যাধ কিছুতেই সেই প্রোনা গানের প্রো স্থাটি মনে আনতে পারলেন না। এমন কি, সুরকারের নামটি পর্যন্ত ভিনি বেমাগুন ভ্লে গিরেছিলেন।

এদিকে বিয়েটার কোম্পানী নতুন অপেরার জন্ত ক্রমাগত क्षांत्रामा पित्क नागानन। कार्क्य वावा श्रव এकविन व्यक्तवाधिक ভাষানো স্থবের সন্ধানে বেবিয়ে পড়তে হল ইউরোপের দেলে দেলে। বিখাত সুৰকাৰ ও পুৰনো সংগীত স্বৰ্লিপি বিক্ৰেতাদেৰ দোকানে খুবে খুবে তিনি থোঁক করতে লাগলেন তাঁব ঈপ্সিত সুৰ্টিব। কিছ কেউ তাঁকে সন্ধান দিতে পারল না সেই হারানো স্থরের। অবনেবে ভয়োৎসাহ হয়ে তিনি ইউরোপের সংগীত-নগরী ভিষেনার এসে উপস্থিত হলেন। এবাবে ভাগালক্ষী বেন किकिश कक्ना वर्षन कवलान काँव छेनव। जिल्लाब এक পুরনো স্বর্জিপি বিক্রেচা অংকনব্যাখ-এব কাছে হারানো পুরের করেডটা লাইন গুনে তাঁকে জানালেন এর রচয়িতা ক্ষুড় লফ্ জীমার। তবে তিনিও স্থবকাবের কোন সদ্ধান দিতে शांबरम्ब ना । चरम्यांब् गीयाशेन चक्रकारवय मरवा राज भाषाच আলার আলে। দেখতে পেলেন। ভাই লাবার উৎসাহিত হয়ে তিনি নবীন উভমে জীমারের থোঁজ করতে লাগলেন।

প্রায় ছব বংসর পরে ১৮৭৬ প্রাক্তে অংকন্ব্যাধ্ জীমারের সন্ধানে এসে উপস্থিত হলেন মার্কিণ মুর্কে। এখানে অনেক খুঁজেও তিনি জীমারের কোন হদিশ করতে পারলেন না। কাজেই বাংয় ছয়ে জাধার তাঁকে কিয়ে বেতে হল পাারী নপরীতে। ইতিমধ্যে বেশ কিছুদিন কেটে গেছে। একদিন গভীর বাঝে অন্বেন্যাব্ বিরেটার ফান্তাইজ বেকে অনুঠান সেরে বাড়ী কিরছেন। প্রবাধ কর্নবিরল বাকার তার ক্রঃইন্ন্ গাড়ীবানি বেন হাড়া হাওয়ার ভর নিরে পাঝীর মত উড়ে আগছিল। হঠাৎ রাজার মোড়ের মাধার তাঁর গাড়ী বাকা মারলো একজন প্রচারীকে। বাকার বেগ সামলাতে না পেরে গোকটি একেবারে ছিটকে পড়লো পথের বারে। সঙ্গে সঙ্গে গাড়ী বামিরে অফেন্যাব্ ছুটে গেলেন আহত লোকটির কাছে। ভারপর কালবিলম্ব না করে তিনি সংজ্ঞাহীন অবছার লোকটিকে গাড়ীতে তুলে বাড়ী নিরে এলেন। বেচারী—কোন ভববুরে হবে বোধ হয়। আনমনা হরে প্রধান লাছিল। ভাই এই বিপত্তি! মাধাভর্তি একরাশ অবছ বিভিত্ত চুল। মুবে বোঁচা বোঁচা লাড়ি। পরনে শতছিল পোবাক। বাই হোক, অফেন্যাথের সেবা-যত্বের গুলে অল্লেনির মধ্যেই তিনি স্কল্ব হরে উঠলেন।

এই ঘটনার করেক দিন পরে। যোজকার মত সেদিনও
আকেন্ব্যাথ গভীর রাত্রে অমুষ্ঠান সেরে বাড়ী ফিরেছেন।
ঘরে চুকতেই অবাক হরে তিনি শুনতে পেলেন তাঁর শিয়ানোর
কে বেন বাজাচ্ছে সেই বছ-আকাম্বিত প্রবটি—বার সন্ধানে তিনি
ইউরোপ ও আনেরিকার প্রতিটি সহর দীর্ঘদিন ধরে ভন্ন ভন্ন
করে থুঁকেছেন। আরো অবাক হলেন বধন তিনি দেধতে
পেলেন যিনি পিরানো বাজাচ্ছেন তিনি আর কেউনন, গাড়ীর
ধার্কার আহত সেই ভ্রলোকটি। এ বে একেবারে অবিখাত্র
—অপ্রতাশিত। এক অবাক্ত পুসকে অফেন্বাধ-এর সারা
দেহ বোমাঞ্চিত হরে উঠস।

উত্তেজিত হরে তিনি জ্ঞিজানা করলেন—এ স্থর আপনি কার কাছে শিখেছেন ?

কাজে কাছে নয়। এ সূত্র আমাত্ত হচনা। আমাত্র নাম কুডুসফ্, জীমাত্র।

কী বসলেন — আপনার নাম কড্লফ্ জীমার ?

আজে হা। মৃত্ হাসি ফুটে উঠস বজার মুখে। কথাটি শেব হতে না হতেই আনন্দে আন্থানার হবে অকেনগাৰ জড়িয়ে ধবলেন জীমারকে। ভগবানের অদীম করুণা, তাই আপনার দেখা পেরেছি। আমি বে স্থাবি আট বংসর ধরে ইউরোপ, আমেরিকার সহরে সহরে আপনাকেই খুঁজে বেড়াছিঃ।

অফেনব্যাথের আন্তরিকতার হুগ্ধ হলেন জীমার। তার পর
অনেক কথা হল তু'জনে। জীমার অফেনব্যাথের সব কথাই
মনোবোগ সহকারে তনলেন। কিন্ত প্রার্থিত সুবটির স্বর্যাপি
কিছুতেই হাতছাড়া করতে রাজী হলেন না। বললেন—সুরটি
অভিশপ্ত। আমি চাই না আমার মত আপনারও স্থেবর সংসারে
আন্তন লাভক। কারণ ওই সুরটি রচনা হরার পর থেকেই আনার
বাস্থ্য, সম্পদ, সুনাম, সামাজিক মর্য্যাদা সব কিছু নত্ত হরেছে।
এমন কি, প্রাণাপেকা প্রিয়তমা পত্নীকে প্রান্থ আমি হারিবেছি
তর্ম ওই সর্কানাশা স্থরের অভিশাপে। বিশাস কক্ষন আর
নাই কক্ষন।

এবার অফেনব্যাথ বাধা দিরে বললেন—দেখুন ও-সব একেবারেই বাজে কথা। স্থর কথনো অভিশপ্ত হতে পারে না। আপনার মুর্জাগ্যের জন্ত দারী আপনার পারিপাদিক অবস্থা বা ওই জাতীর কোন ঘটনাবলী। অবলেবে অফেনব্যাখ্-এর পীড়াপীড়িতে জীমার কথা দিলেন স্ববলিণিটি সম্পূর্ণ করে দেবেন। বাড়ী কিরে বাবার দিন বিদার বেলার তিনি অফেনব্যাখ্,কে বলে গেলেন দিন দশ-বাবো বাদে তাঁর বাড়ী থেকে স্ববলিণিটি আনতে। অফেনব্যাথ্ও সানদ্দে এই প্রস্তাবে সম্বতি দিলেন।

কথামত দিন দশ-বাবো বাদে একদিন সকালে পাাবীর কুথাজে দ্বার্থ অঞ্চল জীমাবের বাড়ীতে গোলেন অফেনবাাথ। দবজার কড়া নাড়তেই এক সোমানর্শন বৃদ্ধ এসে দবজা থুলে দিলেন। অপ্রসম্ন মুখ। অফেনবাাথের প্রশ্নের জবাবে ভিনি জানালের—গতকাল রাজে হঠাৎ স্থাপব্রের কিরা বন্ধ হরে জীমার মারা গেছেন। জীমাবের এই আক্মিক মৃত্যু সংবাদে অফেন্ব্যাথ বেন বিশ্নরে হতবাক হরে গোলেন। কিছুক্রণ বাদে একটু প্রকৃতিস্থ হলে ভিনি শেখবাবের মত জীমাবের দেখার জন্ধ বাড়ীর ভিতরে প্রবেশ করলেন। ব্রে চুকে দেখেন, জীমাবের বিছানার উপর সেই অভিশপ্ত স্ববলিপিটা পড়ে লাছে। তার এক কোলে ছোট করে তাঁরই নাম লেখা—জ্যাকি অফেনব্যাথের কন্ত। তার পর অফেন্ব্যাথ, স্বরলিপিটা হাতে করে সেদিন ছেলেমামুবের মতই কাদতে কাঁদতে বাড়ী ফিরে এলেন। কারণ সত্যি কথা বলতে কি, তাঁরই খামবেরালীর ভন্ত একটি অমূল্য প্রতিভার এই ভাবে অকালে জীবনাবসান হল। একথা আর কেউনা জানলেও তিনি বেশ ভালোভাবেই ব্যতে পেরেছিলেন।

বাই হোক, জীমাবের স্বর্গালির মূল সুরটিকে ভিত্তি করে
স্বাহ্নের টেলস লব, হৃষ্ণ্যান অপেরার জন্ধ বে অপূর্ব সুবসমূদ্দ
সঙ্গীতের স্পৃষ্ট করলেন ভার নাম দেওয়া হল বাঞাবালা
(Barcarole)। কিছু আগেই বলেছি এই অপেরার অভাবনীর
মঞ্চনান্ধল্য ভিনি দেখে বেতে পারেন নি। ১৮৮০ খুঠান্দের ৫ই
স্বান্ধের মৃত্যু হয়। তাঁর মৃত্যুর পাঁচ মাল পরে
লিঁয়া ভেলিবীর পরিচালনার টেলল অব, হৃষ্ণ্যান অপেরা পারী
নগরীতে প্রথম মঞ্চাছ হয়। পারীর পর ভিরেনার। ভিরেনার রিং
বিরেটারে প্রথম অঞ্চান-বঙ্গনীতে বার্কারোল বাজাবার সময় হঠাং
এক ভরানক অগ্রিকাণ্ডের ফলে প্রার্থ দেড় হাজার নর-নারী
প্রাণ হারান ও সেই সাথে সমগ্র প্রেক্ষাগৃহটিও ভত্মীভূত হয়।
এই ঘটনার ভীত হরে পরবর্তীকালে ইউরোপ ও আমেরিকার
স্বার কোন স্বর্জার বা বাদক বার্কারোল বাজাতে রাজী হননি।

এর পর বার্কাবোল-এর অভিশাপে চীনদেশেরও বহু প্রবকার প্রাণ হারিরেছেন। উনবিংশ শতাব্দীর শেষভাগে চীনদেশের মাঞ্ রাজবংশে জুসাই * নামে এক সম্রাক্তী ছিলেন। ঘটনাক্রমে তিনি একবার করেকজন ইতালীয়ান ভাস্করের মুখে বার্কারোল তনে এতই মুগ্ধ হন বে সঙ্গে সঙ্গে আদেশ দিলেন চীনা প্রবকারদেরও এই প্রব বাজাতে হবে। চীনা প্রবকারেরা আপ্রাণ চেষ্টা করেও চৈনিক বাজ্ঞবন্ধে বার্কারোল বাজাতে পারলেন না। ফলে রাজরোবে পড়ে প্রতিদিনই ছ'-চারজন করে প্রবকার প্রাণ হারাতে লাগলেন। এই ভাবে চীনদেশের প্রায় জাটশো প্রবকার বার্কারোল বাজাতে না পেরে প্রাণ হারান।

কিছুদিন বাদে জুসাই-এর মৃত্যু হলে সান ইয়াৎ দেন-এর

পাৰ্ল বাকেৰ 'ইম্পিবিয়াল ওম্যান' ক্ষাব্য।

নেত্ৰে চীনদেশে নব প্ৰভাতদ্বের প্রতিষ্ঠা হয়। ভিনি নব প্রকাতদ্বে প্রথমেই আইন করে বার্কারোল বাজান নিবিদ্ধ করেন। ১৯০৮ লালে এই আইন বিধিবদ্ধ হয়। হতদুর জানা হার, এখনো পর্যন্ত ইউবোপ ও আমেরিকার স্বরকারদের মধ্যে অফেনব্যাথের বার্কারোশ্ ভীতি প্রোমাত্রার বজার আছে এবং ভারা কথনো মনের ভূলেও এই স্বর্টির নাম পর্যন্ত উচ্চাবেণ করেন মা।

নামের শক্তি শ্রীসদানন্দ ভট্টাচার্য্য

্ৰিকিশেশ্ব মন্দিবের দারোরান এসেছে দ্বণাগতবংসস ঠাকুবের কাছে। মল্লবীবের চেহারাধানা বভই দর্শনীয় হোক, মুধধানা বিশ্ব বেন কোন এক অজ্ঞাত আশ্লার কেম্ম শুকিরে গৈছে।

অন্থাতি পেরে সে সবিনরে ঠাকুবের জীচরণে আপনার বিপদ বৃত্তান্ত নিবেদন করল। দিধিকারী এক মন্ত'বীর পালোরান এথানে 'এসে উপস্থিত হরেছে। ভারই আহ্বানে তাকে দীয়া এক শন্তির পরীক্ষার অবতীর্ণ হতে হবে। পরীক্ষা বদি সন্ত্রম-সম্পর্কিত হয় তবে সে বড় সংকট। মন্দিবের দারোয়ান তাই বিপদভ্রমন কর্ষণাখন-মৃত্তি ঠাকুবের শ্রণ কওরা ছাড়া আর গতি দেখিনে।

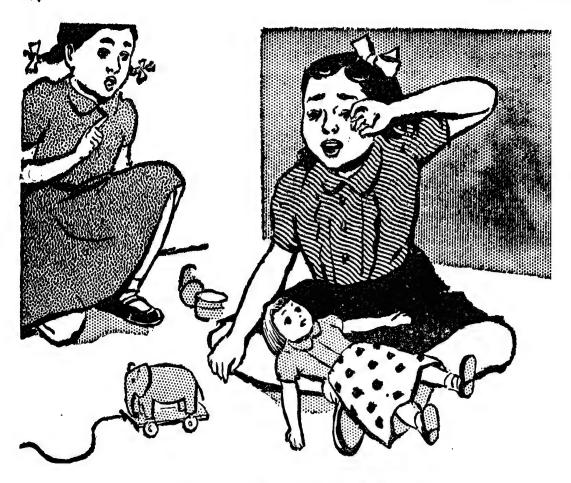
ঠাকুরের ব্যবস্থা—'থাওরা কমতি করে দিবি। বেশী করে মহাবীবের নাম নিবি। দিবাঙাল নাম খরণ চাই।'

ও দিকে দিবিজয়ী পালোয়ানের দিন্তা দিল্লা ভাল-কটার ববাদ, ত্বেলা কসরৎ আর মুগুর ভাঁজার বহর দেখে ও দেশের লোকের চকুন্থির ! এমনবারা পালোয়ানের সাথে দারোরানজীর লভাইটা নিকাল্প দেকেবেলা করে, এইটাই ভাগের স্থাপ্ট অভিমন্ত।

বধাসময়ে ছই পালোৱান গুকুকে অরণ করে নংম মাটিতে নেমে পড়ল। এমন একথানি লড়াই দেখবার জক্ত লোক কম হয়ন। এ কথা বলা বাছলা। বিশেষ করে এই বিঅহকর দিখিলয়ীর বীরংছর খ্যাতি ইতিমধ্যে আসার লাভ করেছিল—ছানীয় এলাকায় কিছু চাঞ্চলার স্টি হওয়াই স্বাভাবিক। লাবোয়ানজীর আতি সকলেরই অমুকল্পাপুর্ব দৃটি ছিল, ওবই সাথে কারো কারো কিছুটা স্বাভাবিক সহামুভ্তির খাদ মেশানো—সে বেন আবো রোগা হয়ে গেছে, বদিও চেচাবাটা আগের চেমে উচ্ছল হছেছে।

অন্ন সমবের মধোই প্রতিথিক চা কোরালো হরে উঠল। দিবিক্ষী বেল উত্তপ্ত হরে উঠেছে। ভার ধারণা ছিল আজকের লড়াইরের বলভাগটা করকলগত করেই সে প্রতিথিপিতার নেমেছে। কিছু তার লাস্ত প্রতিথিটোর চিত্তের লার্চ্চ নির্ভীক লড়াই প্রচেটা ক্ষুক্ত থেকেই তাকে শক্তিত করে ফেলেছে। ক্ষুণাস দর্শকদের সম্মুখে দিবিক্ষী দাবোয়ানজীকে মাটিতে এক আছাড় দিয়েছে। কিছু নিটু করে প্রভিগ্নীকে মাটিতে এক আছাড় দিয়েছে। কিছু নিটু করে প্রভিগ্নীকে মালারী করে চোথের পলকে তার বুক্ক চেপে বঙ্গন। এক অপ্রভ্যাশিত আনন্দাতিশন্ত্য সকল দর্শককেই অভিত্ত করল। অবসর সমরে থীর পদক্ষেপে বিজয়ী বীর এল ভক্তবাঞ্জিতক সাকুবের চরণ বন্ধনার, বেন তার বন্ধভার ব্যাহানে নামিরে দিরে খণমুক্ত হৈতে চায়। ঠাকুর সম্মেহ দৃষ্টিপাতে তার স্ক্রাক্ষ ক্ষেপ্ করেনে। কিয়ব-বিনিশ্বিত কঠে সদানক্ষম পুকৃষ্ধ ওয়ালেন—'কি রে, নামের কত শক্তি দেখলি হ'

কৃতজ্ঞতাভয়াচন্ত কৃতাঞ্চলি বীব জ্ঞীপানপদ্মাভিমুখে শবনত হল।



ছোট্ট মুন্নি কেন কেঁদেছিল

6. 258A-X52 BG

মুরি কোঁপাতে আরম্ভ করল তারপর আকাশকাটা চিৎকার করে কেঁদে উঠল। মুরির বন্ধু ছোট নিমু ওকে শান্ত করার আপ্রান চেষ্টা করছিল, ওকে নিজের আধ আধ ভাষায় বোঝাছিল—" কাঁদিসনা মুদ্দি—বাবা আপিস থেকে ৰাড়ী ফিরলেই আমি বলব—" কিন্তু মুলির ক্রক্ষেপ নেই, মুনির নতুন हन शुक्रवित पूर्य यानठात्र (मगारना गाल मत्रनात नाग त्नरगहर, পুতুলের নতুন ফ্রকের ওপর পড়েছে ময়লা আঙ্গুলের ছাপ--আমি আমার জানলায় দাঁড়িয়ে এই মজার দৃশাটি দেখছিলাম। আমি-যখন দেখলাম যে মুলি কোন কথাই শুনছেনা তথন আমি নিষ্ণে এলাম। আমাকে দেখেই মুন্নির কান্নার কোর বেড়ে গেল—ঠিক ব্যমন 'একোর, এডোর' শুনে ওন্তাদদের গিটকিরির বহর বেপে যায়। আমাদের প্রতিবেশির মেয়ে নিয়—আহা বেচারা—ভয়ে জবুণবু হুয়ে একটা কোনায় দাঁড়িয়ে আছে। আমি ঠিক কি করব বুকতে পারছি-লামনা। এমন সময় দৌড়ে এলো নিহুর মা অশীলা। এসেই মুম্নিকে কোলে তুলে নিয়ে বলল—" আমার লক্ষী মেয়েকে কে মেরেছে ?" কারা অভানো গলায় মুলি বলল—"মাসী, মাসী, নিমু আমার পুতুলের **क्ष** यवना करत निरव्रष्ट ।"



" বাচ্ছা, আমরা নিম্নকে শান্তি দেব আর তোনাকে একটা দতুন স্লব্দ এংশ দেব।"

" আ্যার কন্যে নয় যাসী, আমার পুতুলের কন্যে।"

সুশীলা মুন্নিকে, নিহুকে জার পুতুলটি নিয়ে তার বাজী চলে গেল আমিও বাঙীর কাজকর্ম স্থক করে দিলাম। বিকেল প্রায় ৪ টার সমর মুন্নি তার পুতুলটা নিয়ে নাচতে নাচতে ফিরে এলো। আমি উঠোন থেকে চিংকার করে সুশীলাকে বললাম জামার সঙ্গে চা থেতে।

पश्न चनीना जला आधि अदक वननाह

মাকটাও এই সঙ্গে কেচে দিই।"

" ডলের বন্যে তোমার মতুদ ফ্রন্ড কেদার কি দরকার ছিল ৮°

"মা বোদ, এটা নত্য ময়। সেই একই জব এটা। আমি ওপু বেচে ইন্সী করে দিয়েছি।" "কেচে দিয়েছ? কিন্তু এটি এত পরিকার ও উজ্জন হয়ে উঠেছে।" স্থানীলা একচুমুক চা খেয়ে বলল—"তার কারন আমি ওটা কেচেছি সানলাইট দিয়ে। আমার অন্যান্য জামাকাণড় কাচার ছিল তাই ভাবলাম মুদ্রির ডলের

আমি ব্যাপারটা আর একটু তলিয়ে দেখা মনস্থ

করলাম। " তুমি তখন কতগুলি জামাকাপড় কেচেছিলে ? আমাকে কি তুমি বোকা ঠাউরেছ ? আমি একবারও তোমার বাড়ী থেকে জামাকাপড় আছড়া-নোর কোন আওয়াজ পাইনি।"

স্থালা বলল, "আছো, চা খেয়ে আমার সঙ্গে চল, আমি তোমায় এক মৰা দেখাবো।"

স্থালা বেশ ধীরেস্থাস্থ চা খেল, আর আমার দিকে তাকিরে মুচকি মুচকি হাসছিল। আমার মনের অবস্থা কিন্তু অন্যরকম। আমি একচুমুকে চা শেষ করে ফেললাম।

আমি ওর বাড়ী গিয়ে দেখলাম একগাদা ইস্ত্রীকরা জামাকাপড় রাখা রয়েছে।

অামার একবার গুনে দেখার ইচ্ছে হোল কিন্তু সেগুলি এত পরিদ্ধার বে
আমার জয় হোল শুধু ছোঁয়াতেই সেগুলি ময়লা হয়ে যাবে। সুশীলা
আমাকে বলল যে ও সব জামাকাপড়ই সানলাইটে কেচেছে। ওই গাদার

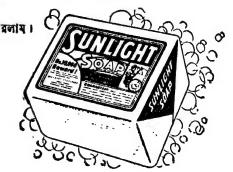
মধ্যে ছিল—বিছানার চাদর, তোয়ালে, পর্দ্ধা, পায়জামা, সাট, ধুতী,
ক্রুক আরও নানাধরনের জামাকাপড়। আমি মনে মনে ভাবলাম বাবা: এতগুলো

জামাকাপড় কাচতে কত সময় আর কতথানি সাবান না জানি লেগেছে। স্থানীলা আমায় বুকিয়ে দিল—''এতগুলি জামাকাপড় কাচতে খরচ অতি সামান্যই হয়েছে—পরিশ্রমণ্ড হয়েছে অত্যক্ত কম। একটি সানুলাইট সাবানে ছোটবড় মিলিয়ে ৪০-৫০টা জামা

কাপড় স্বচ্ছন্দে কাচা যায়।"

আমি তক্নি সানলাইটে জামাকাপড় কেচে পরীক্ষা করে দেখা দ্বির করলাম।
সতিাই, স্থশীলা যা বলেছিল তার প্রতিটি কথা অক্ষরে অক্ষরে মিলে
গেল। একটু ঘষলেই সানলাইটে প্রচুর ফেণা হয়—আর সে
ফেণা জামাকাপড়ের স্থতোর কাঁক থেকে ময়লা বের করে দেয়া
জামাকাপড় বিনা আছাড়েই হয়ে ওঠে পরিষার ও উজ্জা।

আর একটি কথা, সানলাইটের গন্ধও ভাল—সানলাইটে কাচা জামাকাপড়ের গন্ধটাও কেমন পরিছার পরিছার লাগে। এর ফেণা হাতকে মস্থা ও কোমল রাখে। এর থেকে বেশি আর কিছ কি চাওয়ার থাকতে পারে ?



হিশুখান শিকার নিমিটেড, কর্তৃক **প্রস্তৃত**।

न।=जान।=काश्नी

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] তাল-বেতাল

আমাদের কায়দা

বুৰিব কর বাঙসা থেকে ভেঁটিরে লোক দেওরা হয়েছে ১৯৪৩ নালে। মাজাক, পাফার থেকেও এসেছে। কিছ বাঙসা থেকে বে ভাবে কুড়িয়ে কুড়িয়ে নেওরা হয়েছে, গুলেশে কার ভূলনা যেলে না।

মধাবিজ্ঞের এক সংসার। পোষ্য আছে। অথচ জমিও নেই, চাকুরীও নেই। কাজও যেসে না কিছু। সংসার চালানো ভার। বিশে টাকার বিনিময়ে ভখন এম-এম-সি মেলে প্রচুর।

দেদিন হাড়ি উত্নে চড়বে, কিছ হাড়িকে কিছু চড়বে না, জল ছাড়া। কোনো উপার নেই। কর্তার এক পুত্র মাঠ থেকে গরুধরে থোঁবাড়ে দিরে এদেন। কিছু রোজগার হোল। চাল এলো তছু। সেদিন বেশী পরসা দরকার, করেকটা গরু মাঠ থেকে দড়িথুলে দাও। ওবা খুঁটার সাথে লখা দড়িদিরে বাঁগা থাকে। ঐ খুঁটা কেন্দ্র করে চার পালে ঘোরে, ঘাল খার। গরুক ক'টা তাড়িরে দুবের কোনো হাটে নিলেই পরসা আসবে ঢের। কি আর করা যাবে। এমনি করে বাহোক দিন গুজরান চলেছে। এলো ওরার। গুরার বেঁচে থাকুক। সর্বনাশা সে ওরার চুকলো বাঙলা দেশে। কানা-থোঁছা সুবই গিরে ভঠি হোল তাতে।

কর্তার বিতীয় পুত্র একটু বিক্ত তাঙ্গ নিয়ে অংশছেন। থোঁড়া। কানা-থাঁড়া এক গুণ বাড়া। ভতি হয়েছেন লড়াইসে। বর্মা ফ্রন্টেড বন জাণানীদের বস্থিং চলেছে পুরো মাত্রায়। জঙ্গলে ইউনিট পড়েরছেছে। মানের শেব দিন। পরদিন পে-ডে। হাজার লোকের মাইনে হবে। প্রায় ৮০ হাজার টাকার মন্ত। এনে জমা হয়েছে কোরটোর গার্ডে। জঙ্গলের লড়াইরে লোহার নিন্তুক থাকে না। ভারী বলে। টাকা থাকে রাইজেলের কার্ডুজের খালি বাজে, নরতো কাঠের বাজো। জনা থাকে গার্ডের কাছে, বেবানে সমস্ত আর্মন্ত থাকে। এক দিন ছলিনের মামলা। বিলি হয়ে বাবে টাকাটা সংস্থাকে। অবশিষ্ট বা থাক্রে, কেরত বাবে।

জনসের যুদ্ধ। গুলী, বাকুন, বলুদ, পিস্তুল, ষ্টেনগান জার ক'টির প্রচুর। চারদিকে ছড়ানো। হিসেবের তিন গুণ বেশী। পারী, বাব, ভালুক বা খুশী নিকার করে। তার পর ছুঁড়ে ফেলে দাও রাইকেল জললে। কে পরিছার করে। আছে জপর্যাপ্ত। অবঞ্চ অর্ডার পুঁতে ফেলার বা নাই করে দেওয়ার। তাতে পরিশ্রম হয়। এখনও পড়ে আছে বর্ধার জললে প্রচুর। টাকাটা থাকে তালাবদ্ধ হাজা বাজো। গার্ডকমে। গার্ডকম মানে, টেণ্ট বা তালপাচার কুঁড়ে। সেদিন সন্ধোবেলায় হঠাৎ সাইবেন বেজে উঠেছে। জাপানী বসার। রাইকেলটা হাতে নিয়ে সবাই করচে পাকড়ো। ওর তথন গার্ডে ডিউটি। ও গেল স্বার শেবে, বীরে-স্বস্থে। সম্ভবত ক্যালবাল্টি গছিত নিয়ে স্বার জলকো। বোমার স্বান জারগায় পুকুর জমে, আর পুকুর থাকলে তা ভরাট

ছয়। বোমা পড়লো পোটা-করেক। - স্ব ভছ্নছ্ ছয়ে গৌল। ফ্রাঁচলো, কড মরলো। ভ্লী ছুই বাদে আবার সাইরেন। এব ক্লিয়াবেজ। স্বাই কিরে আসছে। কে বাঁচলো, কে মরলো, জঃ ফোলো, ডারই হিসাব চলেছে। ও ভখনো কেরেনি। সম্ভব মবেছে, অধ্বা আহত হরেছে। শেষ প্রস্তু ফিবে এসেছে অনে বাতে নিধুঁত অবস্থায়। ক্যাশ সামলাজ্ঞিল।

প্রথিন থোঁক পড়ল টাকার বাক্সর। মাইনে দিতে গিরে
টাকার বাক্স নেই। শান্ত্রীরা পাহারা দিরেছে। প্রতরাং ওরা অর্থ-পান্ত্রীরা কেউ কিছু জানে না। সে টাকার কোনও পাতা পাও-গেল না। ও-সি দেখলেন অনেক বজাট। ক্লণ্ট-লাইনে বত ব অফিসার, কড়া হলে হাতের তেলোর প্রাণা রাতে-বেহাতে প্রাণ স্বার হাতে। তার হদিশ পাওয়া বার না পরে। কার ল্বার হাতেই অন্ধ্র নানা রক্ষমের। প্রতরাং রিপোর্ট গে-বোমার রীসর টাকা অলে-পুড়ে গেছে। আরও টাকা দরকা-দৈল্লদের মাইনে। কাটা কান চুল দিরে ঢাকা বুদ্মিনানে কার। আবার টাকা এসেছে। তাই ভাগ করে দেওয়া হরে-স্বাইকে।

মাসধানেক পরে। ঐ সিপাহীর ছুটা হরেছে— লংগিড ি মাস। পুরো টাকাটা মাটা খুঁড়ে বাড়ী এনেছে। এখন অভ নেই। ইটের দাম টাকা-টাকা। বাড়ী করে কিরে গেল চিটাগ ওধানে হাজিরা দিয়ে হাজিরে গেল জনারণ্যে, এক বোমা পড় রাতে। পাড়া পাওরা গেল না। ক্যাজুরালটা হলে তার বিপে বার না। বার ছ-ভিন বছর বাদে, লঙাই শেবে। বাড়ীতে টা allot করা থাকলে, তা ঠিক বার মানের পর মাস। তারপর ন লেখানো এয়ার ফোর্মে। অবভা নাম-ঠিকানা পালটে। সেধানে allotment করে স্থোগ ব্যোপালার। ভত্তি হর গিয়ে অভঃ দেখানেই আছে, অথবা আবারও ভত্তি হয়েছে allotment করে

জাপানী ফ্রন্টে কি ভাবে টাকা জাব লোক ফগাও করে চাট হয়েছে, এ ভাব নম্বনা। মালপত্র ? আমরা তথন বাহনারে বেষ্ট ক্যাম্পো। একটা বড় ষ্টুডিরো ছিল ওটা। ওর পিছ ডোবার জলে এখনো দেখতে পাবেন হয়ত হাজার বস্তা চাউল ই জাটা পচে সার হয়ে আছে। সারপ্রাইজ ষ্টোর চেকিংয়ের স ওগুগো পিছনের দরজা দিয়ে ওপানে গিয়ে জমত। আব সিভিং লোক ফ্যানের অভাবে মরেছে। পাচার করার মতলবেই সালপ্রাস ষ্টক টানা হোত। সাপ্লাই থেকে আসবার পথে ই রাস্তাতেই জনেক সময় বিক্রী হয়ে বেত।

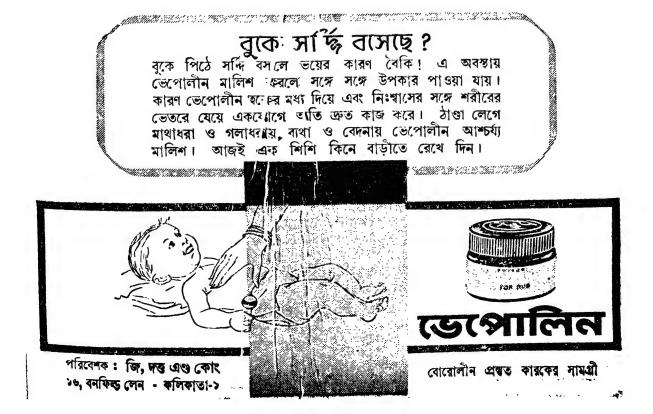
ঐ পুকুরে আন্তর পাবেন বিভগভাব আর রাইফেল। জাণ লড়াইরে বৃটিশের ইজ্জতের কাপড়ে ধরে টান পড়েছিল সেই^{রি} আবার কি তা আসবে ফিরে ?

জাপানী স্নাইপার

আরতন আব লোকসংখাব তুসনার জাপান পৃথিবীর সূত্র শক্তি। পৃথিবীর বৃহৎ বৃহৎ শক্তিজোটের বিক্তে ি ওদের এই লড়াই। ওরা পা দিরেছিল বৃট্টিশের লেজে। স দক্ষিণ-পূর্ব এশিরার ওপর আধিশত্য বিভারের পর ওরা দিরেছিল আমাদের সিংদর্জার—ভারতের পূর্বসীমান্তে। জাপানের প্রজ্ঞির উৎস কোধায় ? খারে পৌত্তে উঠি মেরে ওয়া বুঁকি নিয়ে কিনে গেলই যা কেন ?

তীর আর ধয়ুক, ধর্না আর তর্বারি। আগেকার টু:ছিব ধারা। দে বছ আগেঞার কথা। পুরাকাটোর শুভি-বিশুভির যুগে। প্রস্তারের পরের যগে। তার পরে, বত পরে কালের কেরে এসেছে वर्क्यां वी बारबहाछ । स्त्री वाक्रव, कामान, वन्तृक बाद টোটার ঘটা। অটোমেটিক সিষ্ঠেমে গুলী ছুটবে তোড়ে। পৃথিবাঞের সময়ে প্রথম আগ্রেরাপ্তের ব্যবহার ঘটেছে ভারতে মুসলমানের হাতে। ভার बाकशन है।क, काइहाब, वशाव, क्यान्टि धराव क्याक् है वा आक् शाक्, जाती कामान, घठात, एड्डेबार, भारत्यत्रिन, हैरर्भण डेलाबि रक वक्स मावनारश्चव व्यायान, व्यायाक्त चाव हिर्दायन ঘটেছে। সম্প্রতি এসেছে এটম ২খ আরু হাইডোজেন বম্ব । ইন্টার ক কিনেটাল ব্যালিষ্টিক মিদাইল, সংক্ষেপে আই-দি-বি-এম। জাপানী যুদ্ধে এ সৰ তৈথী বা প্ৰয়োগের অবসর কোথায় ? অত লোকজনই বা কোখার ? বর্গার আমরা চালিয়েছি মেলিন গানে জলের ধারায় धनी। जाद सर्वाद खबा कि निरहाइ कार्यन ? जीक कनाद हो। ছবি। গুলীর অপোজিটে ছুবির যুদ্ধ-লভাইয়ের সম্পূর্ণ নতুন বাবার অবর্ত্তন। পূর্বে ধারা, আর ভাংপর্বপূর্ব। ওয়া জিভেছেও সমগ্র पिक्- पूर्व अभिवाद (प्रमञ्जला। थूर हाउँ हृदि, अभन कि বেয়নেটের মন্তও নয়। তবু প্রাণবঞ্জ। কারণ ওতেই সাবাড় হয়েছে বৃটিশ আৰু আমেরিকার বড় বড় ডিভিশান এবং ডিভিশানের পর ডিভিবান। কোটা কোট টাকার বন্তপাতি সমেত। এক ডিডিলানে বার সৈত খাকে প্রার প্রকাশ হাজার বা ভারত।

শুনীর বৃদ্ধ। জালামী যুদ্ধশাত্র ধটা তৃতীয় শ্রেণীর। মানে, থার্ড ক্লাল। তুলী করে নরহত্যা ? রাম:। সে যে কোন বর্বর করতে পারে। ধর্বর মুগের পুরোনো কায়দায় ভন্তাদী কোথায় ? ধে মানুধের ছাতে বয়েছে পৃষ্ণাল্লার বাইফেল আর মেলিনগান, ষ্টেনগান আৰু বিভাগভাৰ। বৰং ছবি দিয়ে সেই মাহুৰ মাৰুছে পারায় বাহাত্রি আছে। আর এবপানা মাত্র ছুরি দিয়ে অনেক বেশী মাত্রুব মার্গতেই আবল ওন্তাদীর পরিচয়। সেখানে একটি শুদীতে মহবে মাত্র একজন। কিছু সতর্ক হবে জনেক বেলী। चार्य-भार्म वहतृव ७व मन बारक इंडिया। नवाहे तरब बारव तन ঢাক পিটানোর সংবাদ—শত্রু এসেছে সন্ধিকটে। আর ছবির সভাই অভর্কিতে। রাতের জাঁধারে। পাশের লোকই ঠিক পাছে না. কে মহতে। গমস্ত অবস্থার গলার নলীভে ছুরি টেনে বাওরা, আরামণ্ড আচে। উভয় পক্ষেরই। হাতের সুখ তো আছেই। বারা মরে, আবামে মরে। ওরা মরতেই তো জঙ্গলে এসেছে। গুম্পু চার পাঁচ মত লোক বাতাবাতি সাবাড হয়ে বেজে পাবে একখানা মাত্র ছবির কারদার। স্বাইপাবের ছবি চলেছে অক্লান্ত ভাবে। পাশের বন্ধ অংখারে বৃষ্ণান্ত্ন। টেবই পেলেন না, পাশের বন্ধুর মৃত্যু ঘনিয়ে এদেছে অতি নাটকীয়ভাবে। এমন কি, পরযুহুর্তে নিজের মূত্যও টের পেলেন না শেষ প্রস্তা । খেত অফিসাররা খুব চালাক। ওবা থাকে ঠিক মাঝখানে-সবার কেন্দ্রছলে। যা ঘটবে, পাশ দিয়েই



ঘটে বাক! মাঝধানে পৌছতে পৌছতে ঠিক বেঁচে বাৰয়া বাবে। কিছ সকাল বেলায় দেখা গোল, খেত ক্বা সবারই এক গাভি কবে বেখেছে স্বাইপার। এই তো যুক্ত! খাঁটি বৈক্ষবী যুক্ত আর পুবের ধারা।

मर्ग करा शंक, अरत् अराह-- ११ का कालाव रेमा कर मार्ग्य थरे अरे । मात्म, अञ्चलत करतक मं भारेन बादना कुछ गुरहद কভাব-আপ্। বৃটিন, আমেবিকান আর ভারতীয় সেনা বার্যার অঙ্গলে। এবার টেগুার ভাকা হবে। কে কত কম সৈত, বছপাতি महेरहर भित्र धरे रिवार्ड रेम्ब्राक क्च्रांड बार्ट । अत्मव छारे सम् কম সাপ্লাই আর লোকও গোণাগুণতি। তুলনার মিত্রপক্ষ খিরেছে চারদিক থেকে। অগুণতি সৈক্তসংখ্যা আর তেমনি সাপ্লাই। টেণ্ডার পড়েছে—কেউ পাঁচ শ', কেউ ছালার বা কেউ ছ-ছালার নিয়ে ওই পঞ্চাল হাজাব অনিকিত হৈত্ত কুখবে। ডাক পড়লো **हिलाबमालात्मव।** फानब सनानी होक देश्य शदब स्थलादबमानव কাছে। কার যুদ্ধের কারদ:-কাতুন কি বকম। তাবই বর্ণনা, ভার भ्रानि । विरवहना करत अकलानत छेनत ह्वा एए एउटा हरत्र नमल ভার। সে হয়ভো নগণা একজন সেপাই। ওদের লভাই থেকে বেঁচে ফিবে এলে প্রমোলন পেরে বাবে। মাত্র হাজার বীর সঙ্গে নিবেছেন সেপাইছী। বেশিও কবে পড়ে পঞ্চাশে মাত্র এক। পঞ্চাল ছাল্লাবের সুলিক্ষিত আর কামান বলুকের বস্ত্রপাতির ডিভিলানের সাথে লড়ভে। জন্ত্রশন্ত বলভে ঐ ছবি, গোটা করেক बाहेरकन, हाकरवामा बाद जिनामाहित । दम्पन करन निकृत बाता বা চালের গাড়ী নেই। ভাত জলে ফুটিরে ভকিরে থলে করে রাখা আছে। থাবার সময় এটা নদীর জলে ভেল্লালে আবার ভাকে পরিণত হবে। বরাবর ওঁরা জিতেছেনও এভাবে লড়াই করে। বারা কামান, বন্দুক, গাড়ী ঘোড়া বসদ বোঝাই, আর ওয়ারতে,স্, অণুবীক্ষণ, দ্রবীকণ, রেঞ্জ ফাইণ্ডার আরও মালামাল নিয়ে এলো লড়ভে, ভারা জাপানী ছোট ছুবির কাছে জান কোরবানু দিরে মহানু এশিয়ার মান বাঁচিয়েছে। অনেকের কাছেই মনে হবে হরতো ছোট কলকেয় বভ ভাষাকের গল। কিছ এ নির্ভেলাল খাঁটা সভ্য।

এখন চলে কলামের যুদ্ধ। পেন বা কালির কলম নর, কিক ধ কলাম—পঞ্চম বাহিনী! আমাদের ভাষার লাইন। তবে পাত পাতার লাইন নিশ্চরই নর। জাপানী ফিফ্থ কলাম আসলে ইনটেলিজেট। ওবা নারীবাহিনী। ইাভির ধবর নাড়ী চিবে বের করে। আর পেছনের লাইনওলো সবই স্নাইপার। মানে ওপ্তচর আর ওপ্তবাতকের সমবার। পর পর জনেক। এদের যুদ্ধের ধারাও রীতিমত অন্ততঃ আর নৃতন।

সেই হাজার সৈতের কিছু এসেছে সামনে—ফার্ন্ত সাইন বা ফ্রন্ট লাইন। ওরা ফ্রন্ট বরাবর মাটাতে গর্ভ কেটে তলা দিরে বসিরে বাছে ভিনামাইট। ছোট গর্ভ। কিছু মাটাতে কোনো চিহ্ন নেই। একটু ওঁড়ো বা ধুলো বা দাগ কিছুই নর। এমন কি একটা ঘাসের পাতা কাটার চিহ্ন খুঁজলেও আপনি পাবেন না কোথাও। অর্থাৎ জললে লোকের পদার্শণ ঘটেছে ক্মিনকালে, বা কার্ক্কার্য্য কবা রবেছে আপনার পারের তলার, সে সন্দেহের অবকাশ ওরা দেবে না। তার আগেই প্লে অমজমাট কাইম্যাক্তে পৌছে বতম হবে। ভিনামাইট বরাব্য কোথাও কাল ক্ষু তার ঘাসের ভিতর চলে সিবেছে। ঐ তাবে পারের চাপে বা তারী গাড়ীর চামার চাপে তিনামাইট ফাটবে। সঙ্গে সঙ্গে হাতী খোড়া, লোক লছর, মোটব গাড়ী, কামান বা ট্যান্থ সংগ্রু মিলে শৃত্তে উঠবেন মাটা ছেড়ে। আর প্রকলে ধুলোর পড়ে ধুলোর সাথে মিশে বাবেন উড়িরে উড়িরে। প্রথমে লখিমা পরে অনিমা, প্রোপ্তি, প্রাকামাইত্যাদি ঐশ্ব প্রাপ্তি।

ওরই করেক মাইল পরে ছড়ানো বহেছে জাপানী লড়াইরের দিভীর লাইন। সম্পূর্ণ ভির ধরণের। পুরোমিত্র-সৈক্ত চলেছে জঙ্গদের ভিতর দিয়ে, সামনের দিকে কক্ষ্য রেখে। পারের ভলারও নম্বৰ দিতে হচ্ছে মাবে মাবে ডিনামাইটের ভবে। আৰ সামনে নজর শক্রর জন্ত। কোথাও কিছু নেই, হঠাৎ পুরে একটা গাছের ভাল নড়ে উঠছে সামনের দিকে। দিন তুপুরে গাছের ভালে ভুড নাকি ? কিছ মিলিটারীর ভূতে বিখাস নেই। 'গুরে পড়ো সব। জমি নিয়ে।' কেউ বদলে—'জাপানী হতে পারে।' অভএব গানের সেই গাছকে হক্ষ্য করে। বেশ কয়েক ঝাঁকে। ভারপ্র চুপচাপ কেটে গেল ছুই-এক ঘটা। আর কিছুই নড়ছে না। कार्यानीया मत्रह मान काब मराहे ऐक्ष्रीह यूटना त्याकु। 'ওঠো সব, চলো।' আবার চলতে শুকু করেছি। কংহক পা বেতে না বেতেই, ও মা, ওটা আবার কি ? আর একটা গাছও নড়ছে বে! জাপানী? স্বভবাং ভবে পড়তে হোল। म्बा प्राप्त प्राप्त । जिल्ला कार्या करते । जिल्ला कार्याप्त । কারণ গুলীটা তথন বুকের ভিতর দিয়ে বাস্তা না করে মাধার উপর দিয়ে রাম্ভা বানাবে। সবাই ভারে ভারে মেশিন গানের ওলী চালাছি মনের আনন্দে। পাছের ডাল-পাডা সমেত কেটে কেটে পড়ছে, দেখতে পাছি। দেখে আৰ ওলী চালিবে স্থাও আছে। বেশ কয়েকটা ম্যাগাজিন থালি করা গেল; এর পর জাপানীরা নিশ্বর মবেছে। মরা উচিতও। স্থতরাং এবার উঠে চলা অুকু হোল। কিছুদুর বেতে আবার ভাই। এবার অক একটা গাছ। ওবা সব গাছে ধাকতেই ভালবাসে? আছে। মজাতো? আবার ভয়ে পড়ো এবং চলুক মেশিনগান। করেকটা ম্যাগাভিন থালি করে ভাবছি। জমিতে কারো দেখা तिहै। याचात्र छेलव काकाम। त्रचात्र छत्तव क्षित्र तिहै। অৰ্চ ওরা ওধু গাছেই বসে বাকে কেন ?

এই ভাবে ম্যাগাজিনের পর ম্যাগাজিনের প্রান্ধ করতে করতে জামরা অপ্রসর হচ্ছি মনের জানলে। গুলীও থতম। জাপানীরা মরে নি ? মরেছে নিশ্চর! আমাদের হাজার হাজার হলী থরচা করেও ওদের মৃত্যু হবে না ? ওরা কি অমর ? জথবা জলবীরী? ভাবতে ভাবতে চলেছি। হঠাৎ একটা জাওরাজ এলো উপর হতে। গাছের উপর স্বরং মহাপ্রত্ বসে জাছেন। এবং একজন মারা। জামাদের বুটিশ জফিসাইটিকে উনি ততক্ষণ সাবাড় করেছেন তার রাইকেলের গুলীতে। জামাদের ওপর ওঁর দয়া হোল কেন? এতজ্ঞান বহু লোক এই গাছের তলা দিয়ে গেছে। কাউকে কিছু বলেনি। সব ভারতীর সৈতা। ওদের জীবনের মৃল্যু কত্টুকু? সে কথানা বলাই ভাল। নিজের জীবন দিয়ে কচুবন সাক! সাধা রঞ্জের জাকিয়ার চাই। কাঁধে জন্তত ভিনটে ঠার। জর্মাণ

ক্যাপ্টেন। ওদেব জীবনের মৃদ্য জনেক বেশী। লড়াইরের
কী পরেণ্টগুলো জার সক্ষেত সমস্ত ওর হাজে। ওকে মারতে
পারলে ভারভীর সৈত জনহার ও ছ্তাকার হরে পড়বে। ওব
হাজা রাইকেলটা ও ভূলে নিরেছে। সাদা চামড়ার বক্ষছলের
ভিতরকার স্তংশিশু লক্ষ্য করে একটা মাত্র জাওরাজ—ক্লিক্!
জব্যর্থ ওদেব হাজের টিপ। গোরা ধরা নিরেছে পাকাপাকি ভাবে।
এবার বুনো শিরালের মহোৎসব! জললের শব সংকার!

সভ ভক্ষণ ক্যাপ্টেন। বেচারার অক্তে আকও আমার তঃখ হর। বিবে করেই চলে আসতে হয়েছে লড়াইরে। শিক্ষার পরই ছেড়ে দিয়েছে একেবারে বর্ষার জঙ্গলে। একটি পুত্রসম্ভান হয়েছে। ভার ৰুব দেখাও ভাগ্যে ঘটলো না। এক নম্বর ইভিয়ান হেটার। এবং ভার ফলেই জলদী প্রমোশন। ছাদের তলার সূত্রেছ শ্রান। ভারই ওপর গাছের মগডালে বলে আছেন মহাপ্রভু। আমরাও ভো অনেক আগে এ গাড়ের তলা দিরে এসেছি। কিছুই দেখতে পাইনি। ব্ৰতেও পাৰিনি কিছুই। আমাদের জীবনকে ও ক্মা कश्रह। क्रमाञ्चलव कोवन। बामारणव कोवरनव हाइएक खे সাধা ছীবনের মুল্য অনেক বেলী। তা ওরাও বোবে। **ছেবংফর। ভতক্ষণে আমাদের 'উপরওরালাকে' সাবাড় করে** গাছ থেকে নামানো হয়েছে। গাছের ডালে আঠেপুঠে গাঁটছড়া वैं। नित्क (वेंदर द्वरब्ह नित्करक। मत्रकात मछ हात्र हाछ-পাঁই ব্যবহার করতে পারবে—অব্নের মতো। সাবা পায়ে ওভার অল-ক্রেটন পাতার রঙের আলখালা। বার মাধার একটা (छाउँ हेनी। सूर्यक रहा।

দভি কেটে ওকে গাছ খেকে নামানোর বেলার দেখা গেছে গাছে গাছে গাছেকরেক সরু তার! গোছা করে তুই হাজের কাছে বাবা। তাবের অন্ত প্রান্ত গোলা চলে গিয়েছে বধাক্রমে ডানদিকের ও বামদিকের করেকটা গাছে। সেখানেও মগডালে বাবা। শক্রর দিকে। আমরা বে ম্যাগান্তিনের পর ম্যাগান্তিন মেশিনগানের ওলীর প্রান্ত ওকটি মাত্র লোক প্লেকরেছে চমংকার ভাবে অনেকের ভূমিকার। অনেকথানি বারগা ও সমর ভূড়ে।

কালো চামড়ার দাম ওবা দিয়েছে অনেক কম। সালা চামড়ার দাম আছে, অক্তক ওদের কাছে। কিছ টারা আদেন সবাব শেবে এবং কালোর সাথে মিলে। সে পর্বস্ত অপেকার থাকতে হতো। অনেকে সালা মুখে কালিও মেখেছে আপানীর হাতে তার খেত পরিচর চাকতে। ওদের নামের ক্যাপ্টেন মেজর পরিচরও মুছে দেওবা হরেছে জললে, বাল পেটরা থেকে। আপানীদের নকর এড়ানোর জভে। সালাকে গুলী করার পরই ওবা আত্মহত্যা করে বরা পড়ার ভরে। যুদ্ধের সমর্ আপানী বরা পড়েছে খুবই কম, শেবের দিকে ছাড়া।

দলের কমাণ্ডার থাকেন সবাব পিছনে। তাঁব হাকেই লাইন্স অব কমুনিকেলানের (L of C) সমস্ত ভার, থবরাথবর ও বোসাবোগের ব্যবস্থা। কোথার এবং কে শত্রু এবং কে মিত্র। কোথার কি ভাবে থাত, পানীর, অন্ত-শত্রু সাহাব্য আর পেট্রোল ইত্যাদি মিলবে। কোথার এরার ফোর্স, কোথার নেভী, ফার কি মাকেত। ভারই ম্যাপ আর সাংক্তেক ভাবা। কিছু ভা ভিকোড করবে কে ? থাত, জল, বিশ্রাম ও নিরাপদ আশ্রাহের অভাবে এরা তথন ছিন্ন-ভিন্ন হরে পড়তে বাধ্য। সব জলও ত আর থাওরা বার না। শত্রুর বিব অথবা বিবাক্ত জীবাণু মিশ্রিত থাকতে পারে। অবগু প্রাণ নিরে এ পর্বস্ত বেঁচে থাকলে এর পর তৃতীর লাইনও পার হতে হবে।

মিত্রসৈক্ত বিক্রেট হবেছে কোটি কোটি। ওর শেষ নেই। বাবে খেষেও কুবতে পাবে না, তো জাপানীবা। চাবিদিক দেখতে দেখতে ওয়া এগিয়ে চলেছে। কয়েক দিন কেটেছে জঙ্গলে। অবশ্র ৰদি মিত্ৰপক্ষের গুলীতে না পড়েন দুর থেকে ভূল করে। তুপুরে খাওৱা-দাওৱা সেবে সবাই চলেছে অঙ্গলের বুক চিবে। অলস মধ্যাক্ষে नवर नौवव, निश्वत । निर्धन, निर्वाक्षत । काथां कि कि निर्हे । স্বাই চলেছে নিশ্চিত্ত। হঠাৎ সামনে থেকে নেমে এসেছে চার পাঁচটা ভ্ত। ভ্ত, না ব্যদ্ত । উদ্ভে এলো । ধরেছেও চকচকে বেরনেটধানা ঠিক আপনার নাকের ডগায় বছকঠোর দৃষ্টিতে। নির্জন স্থানে হঠাৎ ভূত দেখলে আপনার ভর হয় ? ওরা পালালো থভমত থেরে। সোজা পিছনে মুখ করে দেড়ি। কারণ, শাল্তেই বলেছে বং পলায়তি স জীবভি। কিছ বাবে কোথায় ? সবাই উপুড় হয়ে মুখ ওঁজড়ে পড়ে আছে ওখানে। ঐ দেখুন। তাজ্জর ব্যাপার! সবই কি ভৌতিক ? দৌড়তে গিরে ওরা সব মাটিতে উপুড় হয়ে শুরে কেন ? আবার কি হোল ? দেখা গেল, কতকগুলো স্ট মুখ ধারালো ষ্টিলের ফলা মাটিতে পোঁতা ৰংহছে কাত করে। লম্বা খাসের ভিতরে বলে দেখা বাব না। এদিকে আসতে গেলে পারে লাগে না। কিছ পেছন ফিরে মৌডতে গেলে সোজা বিঁধে বাবে হাঁটুর নীচে। সামনে ভৃত দেখে ওবা পালাতে বাধা হরেছে পিছনে। তাই এই অবস্থা। অবগ্ৰ হঠাৎ ভূত দেখতে পেলে সাহস বৃদ্ধি কিছুই থাকে না। কাৰো নয়। সে ভাপানীবাও ভানে।

ৰাই চোক, সংখ্যার জোবে ওদের শেব পর্যন্ত সাবাড করে দেওয়া হোল। কিন্তু সেই ভূতেরা উদ্ধে এলো কোধা হতে ? গাছ থেকে পড়লো ? ওরা গাছই ভালবাসে। আরও সামনে বেতে দেখা গেল একটা উইয়ের চিবি। তা মাছ্য-সমান উচ। একটা ছোট পাছ উঠেছে ভার ভিতর দিয়ে ডালপালা মেলে। চিবিটার একেবারে কাছে গিয়ে দেখন একবার ভাল করে। উইয়ের ঢিবিই বটে। বর্ষার জল গড়িরে গড়িরে পড়ে ঢিবিটা বেশ পুরোনো মনে হচ্ছে আপনার। छ। इरवहे। जानि वेरक इत्ता । छो। छेहेरम् न हिवहे नम् । जानी স্নাইপারের হাতে তৈনী কুত্রিম কাক্কার্য। স্বার ওর ভিতরটা একেবারে কার্পা। করেক জন স্নাইপার ওতে আত্মগোপন করে থাকে। এক পালে ছোট গোল একটা ফোকর দরলা। ভার ওপরে कामामाधात्ना ठाउँव हेकरवा स्थामात्ना। कामात व्यामाल छिविव উপরকার সিমিলি বজার থাকে। সেই কাদামাধা চটের ওপর একখানা ছোট ভাজা ভালও টেনে এনে বাঁবা, সেই ছোট গাছটায়। বাতে কোনবৰুমে কৃত্ৰিম বলে সন্দেহ না আসতে পাবে কাৰো মনে। সময় বুঝে ঝাঁপিয়ে পড়ে অভকিতে। বিশেষ করে রাত্রিকালে।

নির্কন বনে হঠাৎ বমণ্ডাঞ্চি ড্র দেখাতে শিছন কিবে পদারন খুবই স্বাজাবিক। এবং ভার পরই মুখ থবড়ে পভন। ভাছাড়া ও অবস্থার ভার কি করণীয় খাক্তে পারে ? বাকীটা বলার প্রবেশন থাকে না। ওাদের কোমবে থাকে সেই চকচাক ধাবালো ফলার ছুবিধানা। প্রাক্তাকে ভখন চীৎকার জুড়েছে পড়ে গিরে সাহাব্যের আশার। সাহাত্য দিলো আইপার। সেই ছুবিধানা দিরে প্রত্যেকের গলার নলীতে। একটা করে পোচ। ভারপর সম্মুথ সমবে পতনের ফলাফল—অক্ষয় অর্গবাস। দেহটা অবগু টেনে নিয়ে হেঁচড়া-হেঁচড়ি করবে শেরালে আর ব্যানা আনোয়াবে। তা হোক। ওটুকু ছঃখ সইতেই চবে। ভাছাড়া আর উপায় কি ?

বেঁচে থাকলে বাপের নাম বজার থাকবে, কিছুটা ভরদা করা চলে। কিছ বেঁচে থাকলে এথানে সে ভরসাও কম। ওরা বাপের নামও ভূলিয়ে ছাড়ে। কারণ এখনও কয়েকটি লাইন পার হভে ৰাকী। এবাৰ চতুৰ লাইন পাৰ হতে হবে। বেঁচে থাকা বাকী দৈক্তবা এগিয়ে গেলো এবং এক বায়গায় ভড়ো হয়েছে। ওরা থাদ কেটে তার ভিতরে আশ্রয় নিরেছে। কারণ উপর দিয়ে গুলী ব্যার বোমার টুকরোরা বত খুনী বাভায়াত কক্ষ। কিছুবলার দরকার নেই। বাত্তে তিনজন দেনট্রি মালা কবে পাহারা দিছে। ষাতে কেউ না আংস ওদের ওই যুমের সময়। আর একজন বেশী পাকে, সে স্বরং গার্ড কমাশুরে। বলুকের মাধার বেরনেট চড়িয়ে এককোমর বা বুক্সমান থাদের ভিতর দাঁড়িয়ে থাকে বাইরের দিকে। তুই খড়া পর আবি একজনকে তুলে দেওয়া হয়। সে গিয়ে আবার দাঁড়িয়ে থাকবে। অমনি করে সমস্ত রাভ। কিছ বর্মার জন্মলে, বাত একটা থেকে সাড়ে তিনটা সৈনিকের পক্ষে কাশবাত্রি। জঙ্গল আর খন আক্রকার। লোকজন নেই। নিঝুম। রাত্রি ধেন কানে কানে কথা কয়। বাইবের দিকে একা একা শাঁড়িয়ে জেগে রয়েছে তথু সেন্টি। নির্জন ব্মপুধীব পাহারা যেন। ঐ সময়ে ভূত আর হুই একটা বুনো জানোয়ার ছাড়া আবে কিছুই চোৰে পড়বেনা। বেকোন শান্তীর পক্ষে ঐ সমরটাই মারাত্মক। এক মারাত্মক ঘূমের নেশার পেরে বঙ্গে। বিষোন পাঁড়িরে পাঁড়িরে ভার পক্ষে একান্ত, এবং অনিবার্য। ভাপানীবাও তা ভানে।

আশা করি, আশ-পাশ দিয়ে একটি শেয়াল বুবে বেড়াছে, দেখতে পাবেন। শান্ত্রী তৃট একবার তাড়া দিয়েছে। একটা আবটা ঢিলও ছুঁড়েছে। ওটা পালিরে গেছে। খানিক বাদেই আবার দেখা দিয়েছে। এবং আশে-পাশে পাঁরতারা কবছে। এ এক আছা উৎপাত। শত্রু নর বে, ওলী করবে। জনীর শব্রে প্রো ব্যুম্ম লোক জেগে উঠবে। নিকটে শত্রু থাকলে দশ পনের মাইলের ভিতর ভারাও জেগে বাবে শত্রুর অন্তিও কে!ন দিকে। স্বাই শশ্ব্যুন্ত হবে। খুবই risk গুলী করায়। ও ভক্তকণ কেলে আসা বাড়ীর কথাই হয়তো ভাবছে। স্ত্রী-পুত্র পরিজনের কথা ভাবতে ভাবতে গুমিরেই পড়েছে। মাখাটা বাঁকছে করেকবার বেরনেটের দিকে, রাইকেলের মাথার লাগান মাথাটা এক একবার কাত হছেে দেখে শেরাল ভাবছে, এই স্থ্রোগ। কথন সে আছীর পেছনে এসেছে শান্ত্রী টেরই পেল না। ঠিক ৮১০ হাত দূর প্রেক এক লাকে ওরই থাড়ে পড়েছে। সঙ্গে সঙ্গে বায় হাতের

ছই আঙ্গুলে চেপে ধরেছে ঠিক গলার নলীটা। তান হাতে চকচকে ধারাস ছুবিধানা বের করে সেধানেই বসিরে দিয়েছে এক টান। অন্ত কোথাও নয়। গলার নলীটা থালি ওদের লক্ষ্য। শাল্লী ছটফট করে কাত হয়ে পড়েছে মাটিতে। শব্দ করার উপায় নেই। গলার নলীতে ছুবির পোঁচ। পরের শাল্লীকে জানিরেও গেল না বে, তারও টার্প এসেছে। ততক্ষণে উপরের চামড়ার আবরণটা টান মেরে ফেলে শেরাল নিজ মুর্ভি ধারণ করেছে। পাশুব লিবিরে অখ্যামার রাত্তের অভিযান চললো এর পর। বাকী তিনজন শাল্লীরও ওই দশা করে ও চুকেছে সমস্ত বুম্জ থাদের ভিতর। পর পর ব থাদেই নির্বিরাদে ওর ফ্রেরে কারিকুরি চালিরে পেল রাতারাতি মনের আনক্ষে। কার্ব সমাধা হলে ও চলে গেল আপন স্থানে। সকালে উঠে দেখা গেল, বীভংস কাশু। সমস্ত থাদেই লোকগুলো শুরে ররেছে তথনো গলা কাটা অবস্থায়। থবর দেবার জন্তেও কেট বেঁচে নেই।

কি ভাবে বে কী হরে গেল, কেউ তার হদিশ পেলো না।
তথ্ নির্দেশ এলো সব যারগার, সেন্ট্রি পোষ্ট ডবল করতে
হবে। সেও ছর মাল পরে। হটো করে সেন্ট্রি-পোষ্ট,
একটা আর একটার বিপরীত দিকে। হজন সেন্ট্রি ব্রবে
চক্রাকারে, একে অপরের বিপরীত মুখে। ফলাফল সেই একই।
আইপার ও হটোকে এক সাথে সাবাড় করে কি জানি কোন কাহদার
ফেলো। আবারও নির্দেশ এলো শারীসংখ্যা তিনজনের বারগার
ছর জন হবে একট পোষ্টে এবং একজনের হাতে থাকবে বথারীতি
রাইফেল। আর একজনের হাতে থাকবে ত্রেন গান। রাইফেলম্যান আর্সের মতেই ঘ্র্লিয়মান। হ্লিক থেকে হজন ঘ্রতে ঘ্রতে
এক বারগার গিরে দেখা হবে। আবার দেখান থেকে পিছন করে
প্রস্থানে হ্রিরে আাসবে। বিতীরবার চলতে হবে বিপরীত দিকে।
কিছে জাগানী সাইপারের কাছে হাজারো জারি-জুরি বার্থতার
পর্যবসিত হয়েছে। শেষ পর্যন্ত এটম বোমাই দিয়েছে এ বিপদ
থেকে নিজুতি। ওটার যদি আবিহার না হোত ?

এ পর্বস্ত গুলীর কারবার মাত্র ঐ এক বারগার। সেই তৃতীর লাইনে। সে-ও একটা কি ছুইটা মাত্র। স্নাইপার ধরা পড়েছে নদীতেও। কুমীরের পোষাকপরা অবস্থার নদীর জল থেকে তোলা হয়েছে দিনের বেলায়।

ব্যবদাদায়ী অর্গানাইজেশনে বৃটিশ। কুবি-শিক্স-বিজ্ঞানে রাশিয়া। আর যুদ্ধকশিলে জাপান। জঙ্গল-যুদ্ধ এরা পৃথিবীর অন্থিতীয়। এই যুদ্ধের আগে পর্বস্ত ধারণা ছিল। যুদ্ধের কৌশলে জার্মাণরা শ্রেষ্ঠ। বস্তুত যুদ্ধের আগে পর্বস্ত আমাদের ধারণায় ছিল জাপানীরা শিল্পেই শ্রেষ্ঠ। এই যুদ্ধে নিয়তম লোকসংখ্যা নিবে ওবা দেখিবেছে, ট্যাকটিক্যাল ওয়ার ফেয়াবের নমুনা। বিশেব সেরা সেরা লড়িরে শক্তির সঙ্গে।

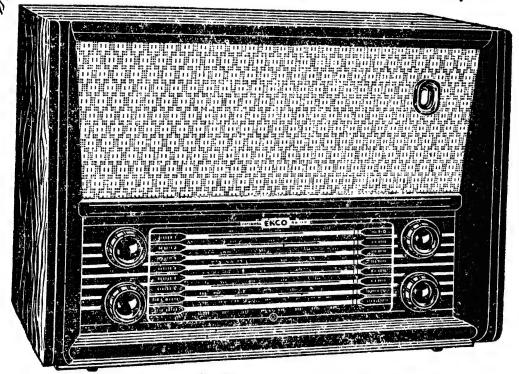
এই হোণ ওদের সড়াই। বৃহৎ শক্তি শোটের বিক্রম্ভে এক কুম প্রাচ্য শক্তির প্রাণবস্ত লড়াই। কিছ ওরা দিয়ে গেল কেন, বোমা পড়ার আগেই ?



सर्फल १७०

* নতুন 'ম্যাগ্নি-ব্যাগু' টিউনিং!

* ৪১ মিটার-ব্যাণ্ডে বিশেষভাবে ব্যাণ্ডম্প্রেড!



মডেল এ-৭৩০ : ৬ ভালভ, ৮-ব্যাও, এসি। মডেল ইউ-৭৩০: এসি/ডিসি। ঝকঝকে পালিশ করা কাঠের ক্যাবিনেট। मांग ४२८ है।का नीह

স্থানীয় কর সতম্ব

তাশনাল-একো রেডিওই সেরা—

ছোটখাটো স্টেশন ধরতেও আপনাকে আর সময় নষ্ট করতে হবেনা-- তাশনাল-একোর নতুন মডেল ৭৩০ 'ম্যাগ্নি-ব্যাণ্ড' টিউনিং সংযুক্ত! ৪১ মিটার-ব্যাতে আছে গুরুত্বপূর্ণ বহু ফেঁশন, আর বিশেষ ব্যা ওল্পেড ব্যবস্থার ফলে সহজেই স্থপইভাবে সেম্ব টেশন ধরা যায় ! আজ্ই আপনার কাছাকাছি অহুমোদিত গ্রাশনাল-একো বিক্রেডার দোকানে গিয়ে নতুন মডেল ৭৩০ দেখে আস্থন !

विश्वति मन्द्रना हे कुछ

জেনারেল রেভিও অ্যাও আন্নামেলের প্রাইভেট নিমিটেড **৩ মাজান ষ্ট্রাট, কল্পি**লাভা ১৩। অপেরা হাউদ, বোধাই ৪। তেও টেরেড, পাটনা। ১০১৮ মাউণ্ট রোড, মাজাজ। ৩৬।৭৯ সিলভার ্রিণী পাক রোড, বাঙ্গালোর। যোগধিয়ান কলোনি, চাঁধনি চক, দিরী। রাউ্র্যাতি রোড, সেকেন্দরাবাদ।



জন্মান্তর কি সম্ভব ?

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর] ব্ৰহ্মসারী মেধাচৈতগ্য

পূর্বপক্ষ

🎢 वर्ष वस्त्र डेश्लिख विनाम इद-- अ विवस्त्र मत्मह नाहे। কৈছ সাব্যব বস্তব এক বা একাধিক অব্যুবের হ্রাস বা বুদ্ধি হইলে বে দেই বস্তুটি ভিন্ন হইয়া বায় বা ভাৰা নষ্ট হইয়া নুতন अकि वस छे९ भन्न इस—हें इंक्लिनच्छ नय। (वाइकु कान अक পরিচিত মান্থবের একটি আঙ্গুল কাটিয়া গেলে বা তাহার শরীর একটু মোটা হইলে তাহাকে লোকে পূর্ব ব্যক্তি হইতে ভিন্ন বলিয়া বুংবা না ; কিছ সেই ব্যক্তি বলিয়াই বুঝে। একটি বল্পের কিরদংশ ভিন্ন হইলেও লোকে সেই বস্তা বলিয়া মনে করে। একটি পর্বতের অবয়বের হ্রাস বুদ্ধি হইলেও লোকে সেই পর্বত বলিয়া বুঝে। বলি বলা বার প্রতিক্ষণে অবহুবের পরিবর্ত্তন বশত অবহুবী বল্পও পরিবর্ত্তিত হয় ইहা যুক্তিসিদ্ধ। ভবে বে লোকে ইহা সেই পৰ্বত' ইত্যাদি রূপে অমূভৰ কৰে ভাহা পুৰ্বাপৰ বস্তব সাদগু ৰশত আছি। পুৰ্ববন্তটি (পূৰ্বক্ৰেৰ পৰ্যত) বিনষ্ট হইয়া গেলেও তাহাৰ সাণ্ড প্ৰক্ৰে উংপন্ন বস্তুতে থাকার শ্রম বশুত লোকে 'উহা সেই বস্তু' বলিয়া মনে করে। বেমন দীপের শিখাগুলি পরিবর্ত্তিত চইলেও সেই এই দীপশিধা' এইরপ ব্যবহার হয়। স্বভরাং কোন অবয়বীই স্থায়ী नव ।

ইহার উত্তরে জিজ্ঞাত এই বে, পূর্ব অবয়বীর সহিত প্রবর্ত্তী व्यवद्यीय मानुश्रुष्टि क्रियमस्य व्यवदा व्यविक व्यस्य । কিরদংশে সায়ন্ত, ভাহা হইলে সব বস্তব সহিত সব বস্তংই কিরদংশে সাদৃত থাকার সব বস্তকে সব্বস্ত বলিয়া লোকের বাবহার হউক। অগ্নিকে ইহা দেই জল' বলিয়া প্রত্যাতি হউক। আর অধিক অংশে সাদৃত্ত স্বীকার করিলে পূর্ববর্ত্তী পরবর্তী অবর্থীর বেমন প্রত্যেক ক্ষণে প্ৰিবৰ্জন হইতেছে দেইরূপ সেই অব্যুবীর অব্যুবেরও প্রত্যেক কণে পরিবর্ত্তন হর, ইহা বস্তর স্বভাব স্বীকার করিতে হইবে, তাহার ফলে পূর্ব অবয়বী ও পরবত্তী অবরবীর অধিক সাদৃগু থাকা অসম্ভব বলিয়। সাদৃত্ত বশত 'সেই বস্তু' বলিয়া প্রত্যক্ষ হইতে পারিবে না। আর শেব অবরব (পরমাণু) নিভ্য বলিরা সাদৃত থাকিবে এরপও বলা ৰায় না। কাৰণ শেব অবয়ব নিত্য কি না ভাহা নিশ্চয় কৰা বায় নাই। নিভা বলিয়া ধরিয়া লইলেও প্রত্যেক ব্যক্তির ভেদ বশক काहारमञ् সংযোগেরও ভেদ থাকায় পূর্ব-অবয়বী ও পরবর্তা অবয়বীর चविकारन मामुक बोकिरव ना। त्नव चववविका मरवाशक ব্যরহবীর প্রতি কারণ স্বীকার করিতে চ্ইবে। বিনা সংবোগে কেবল প্ৰমাণ্ডলিই অব্যবীৰ প্ৰতি কাৰণ হইতে পাৰে না। সুত্ৰাং সাদৃত্তের বারা পূর্বাপর অবরবীর একছভান্তির টেপাদান করা बाडेरव ना ।

অভাগৰ বলিতে হইবে বে সাব্যৰ বস্ত প্ৰত্যেক কণে পৰিবৰ্ত্তিত হয় না; কিছ এক সময় উৎপন্ন হইবা ভাহার ছায়িছ অভুসাবে ছিব থাকিবা শেব সময়ে কিঞ্চিৎ কিঞ্চিৎ ভাবে পরিবর্ত্তিত হইতে আরম্ভ কবিয়া নষ্ট হইবা বায়। এই ভাবে প্রাণটিও পিভার শরীবাংশ রূপ উপাদান হইতে পুত্ররূপে উৎপব্ন হইয়া কালক্রমে শ্রীর মনের সভিত সংযুক্ত হইরা চেডন জীবাত্মারণে পরিণত হর। ভারপর ভাহার স্থায়িক অমুসাবে স্থায়ী হইয়া অবলেবে মরিয়া হার। মৃত্যুর পর তাহার আর অন্ম অসম্ভব। কারণ সাবর্ব বন্ধর পুনর্জন্ম কোথারও দেখা বার না। পিতার প্রাণাংশই পুতাদিরপে উৎপদ্ম হয় বলিয়া জ্বের পর শিশু সম্ভানের মাড়স্তম্ম পানে প্রবৃত্তি, মৃত্যু ভর ক্রমে ক্রমে ক্ৰীড়া কৌতুক, বাগ, বেব, হৰ্ব স্থৰ হুংৰ, প্ৰীতি ভালবাসা প্ৰভৃতি ওণ जरून ऐसुक इद । छेभागान कांद्रालय छन छेभारत्य कार्या छेसुक हरेवा थाक । मुखिकाव ७० चरहे ; मुख्य ७० वर्ष्व छेरभन्न हरेरछ দেখা বার। পিতা শৈশবে মাতৃত্তত পান করিয়াছিলেন, ক্রীড়া কৌতুক ভৱ প্ৰভৃতিৰ দাবা আবিষ্ট হইছেন; বৌৰনে নানা প্ৰকাৰ শারীবিক কার্য ও বৃদ্ধির কার্য করিয়াছিলেন। এই ভাবে মাডার কাৰ্যও ব্যাতে হইবে। পিতা ও মাতার ঐ সকল অধিকাংশ সংস্থার সম্ভানে অনুস্ত হয় এবং পিতা বা মাতার প্রাণে বে চৈত্র ওপ আছে, তাহা হইতে সম্ভানের প্রাণরণ আত্মাতেও চৈডক উৎপন্ন হয়। সম্ভানের জন্ম মাত্রেই ভাহাতে পিতা-মাভার বাল্য, বৌবন প্রোচাবস্থার সমস্ত গুণ উৎপর হর না কেন ? এইরূপ প্রেম হইতে পারে না। বেছেতু উপাদানের গুণ উপাদেরে উৎপব্ন হইবার প্রতি কালও একটি কারণ। সেই কালের ভেদ অনুসারে পিতা মাতার সংখ্যবন্তনি সম্ভানে ক্রমে ক্রমে বাল্য বৌবনাদি অবস্থার উৎপত্ন হয়। এই তাবে পিতা-মাতার সংখ্যারের ফলেই জীব সেই সেই স্বস্তাবের অনুসরণ করে। বানবৃশিত তাহার পিতা-মাতার সংস্কারের বলেই, অন্ম মাত্রে বৃক্ শাখা ধারণ, মাতার উদরে কৌশলে সংলগ্ন থাকা ইত্যাদি পভাব প্রাপ্ত হর। হংস্পিণ্ড ডিম্ম হইতে প্রস্তুত হইরা জলে সম্ভব্প করিবার স্বভাব প্রাপ্ত হয়। এই মন্ত প্রায়ই দেখা বার, বুদ্মিন পিডা মাতার সম্ভান বৃদ্ধিমানই হয়। বোকার সম্ভান প্রায়ই বোকা হয়। বিধানের গুতে জালিখা বিধান হয়; মূর্বের গুতে মূর্ব হয়। তবে বে জনেক সময় ইহার ব্যক্তিক্রম দেখা বার অর্থাৎ মূখ পিডার সন্তান বিহান হয় বা বিহান পিতার সম্ভান মূর্থ হয়; চোরের সম্ভান সাধুহর। সং ব্যক্তির সম্ভান হুঠ হয় বা একই পিতার নানা সম্ভান প্রস্পার বিপরীত স্বভাব প্রাপ্ত হয়। ভাহার কারণ এই বে, সম্ভানের জন্মদান কালে পিতা ও মাতাব বেরপ চিন্তা বা সংস্থার প্রভৃতির উদর হয়, সম্ভানের স্বভাবও সেইরপ হইয়া থাকে। একথা আধুনিক ছনেক মনীয়ী বলিয়া থাকেন। আরও কথা এই বে, দেশ, কাল, সঙ্গ পরিবেশ প্রভৃতি কারণেও একই ব্যক্তির সন্তানগণের পরস্পর বিপরীত স্বভাব প্রাপ্ত হওরা আন্তর্ব নর। সঙ্গের দোব গুণ, পারিপাধিক অবস্থা, দেশের আবহাওয়া প্রভৃতির কলে বে জীবের স্বভাবের विभवंत्र हत्र, काहात्र वह मुहोस चाटह ।

চিকিৎসকগণ বলেন মহামারী, তুর্ভিক বা রাষ্ট্রের বিপ্লবের সমর বে সকল সন্থান উৎপন্ন হর, তাহাদের বেমন শরীরের নান;রূপ বৈকল্য উৎপন্ন হর, সেইরূপ স্বভাবেরও বিপর্বর হইরা থাকে। বেমন দৃষ্টান্ত অহুসারে বলা বাইতে পাবে, বথন ভারত পরাধীন ছিল, তথন অধিকাংশ বালক-বালিকা তীতু হইত, কিন্ত স্বাধীনতার পর ক্রমে ক্রমে বালক-বালিকারা সাহসী হইতেছে। বলি বল, পিভামাতার প্রাণাংশ সন্থানরূপে বথন উৎপন্ন হয়, আর সেই চেন্ডন প্রাণ, শরীর মনের সহিত সংস্কু হইলে প্রাণে চৈত্তের অভিবান্তি হয়, তথন মাতাশিতার শরীর ও মনের সহিত সংস্কু থাকাকালে বে প্রাণ মাতাশিতার দুও বিবরের অভুতব করিবাছিল; সেই প্রাণ বা প্রাণাশে व्यंत म्हानकरण क्याधरण कविदा कांगकरम महाराज्य भवीद-मरानद স্থিত সংযুক্ত হয়, তথন তাহাতে চৈড:তব অভিব্যক্তি হওয়ার ফলে ষাতা বা পিতার অমুভূত বিষয়ের (নিজের অংগর পূর্ব ঘটনার) শ্বৰ কৰে না কেন? তাহাৰ উত্তৰে বলিব—দেহ, ইঞ্ছিব, প্রাণ, মন ইত্যাদি হইতে অভিবিক্ত আত্মা বাহাবা ত্রীকার कविदा समाख्यवाम मात्नन, काहात्मव मत्त्र स्रोत्व भूर्वे मव ঘটুনা অংশ হর না কেন ৷ তাঁহারা বেমন বলেন, মৃত্যুক্প প্রবদ প্রতিবন্ধক বশত পূর্বজন্মের কথা শ্বরণ থাকে না অংচ বাঁচিয়া থাকিবার নিমিত্ত বে সকল ভত্তপান, ক্রীড়া, কৌতুক, নি:বাস-প্রবাস প্রভৃতি সংস্থাব, তাহাদের উবোধ হয়। সেইরূপ আমাদের (অন্যান্তর-স্বীকারকারীর) মতে মাতা বা পিতার শ্রীর इडेट्ड ब्रानार्भित विष्क्रमडे, म्लात्मत्र शक्य माठा-भिजात অমুভূত বিশয়ের অরণ না করার চেতু। মাতা-পিভার শরীর इडेट लानारम्ब विष्कृत इडेबा (महे लानारम वयन मसान রণে জন্মগ্রহণ করে, তথন তাহার মাতা-পিতার বাঁচিরা ধাকার সংস্কার, মৃত্যুভয়, সুখ, হু:খ, অভিগবিত বন্ধর ইচ্ছা বা ভাহার উপারের ইচ্ছা সাধনের অবেষণ ইভ্যাদি সংস্কার সকল প্রাপ্ত হয় কিছ তাঁহাদের অমুক্ত বিষয়ের সরণ হয় না। কতকগুলি সংখার আবার সম্ভানের নিজ পুক্ষকারের অধীন। বেমন, বিভা, ধন প্রভৃতির অর্জ্জনজনিত সংস্থার। এই জ্ঞ সুৰ্থ পিতার সন্তানও বিদ্বান হয় বা চোরের সন্তান সাধু হয় ইত্যাদি। সুভরা প্রাণট আত্মা, চৈত্তর প্রাণের ধর্ম। সভএব বর্তমান জন্ম ভিন্ন জন্মান্তর নাই। কারণ বে মাতা বা পিতার প্রাণাংশ হইতে সম্ভানের জন্ম হয়, সেই মাতা বা পিতা ভিন্ন ব্যক্তি, আর সন্তান ভিন্ন ব্যক্তি। মাতা বা পিতার মৃত্যুর পর আর সেই মাভা বা পিতৃরপ ব্যক্তি জন্মগ্রহণ করেন না। মৃত্যুই তাঁহাদের সব শেব। আর বে সম্ভান মাভা-পিতা হইতে জন্মগ্রহণ করিল, সে তাহার পূর্বে কথনও জন্মগ্রহণ করে নাই। সম্ভানের মাতা বা পিতা সম্ভানের পূর্বেই জন্মিয়াছিলেন। তাঁহারা সম্ভান হইতে ভিন্ন ব্যক্তি বলিয়া এক আত্মাব ছুই বাব বা ততোধিক জন্মস্বৰূপ জন্মান্তৰ সিভ হইল না। অভএব জনান্তরবাদটি আকাশ-কুমুম কল্লনা।

পূর্বে বে ভাবে বলা হইল তাহা দারা সামগ্রত হইরা বাওয়ার জনাভ্যবাদের সাধক যুক্তি ও থতিত হইরা বার। জর্থাৎ জনাভ্যবাদীরা বলেন—জীব জনগ্রহণ করিরা যে মাতৃত্তক্ত পানে প্রবৃত্ত হর—ভাহার কারণ কি? এই জন্মে সে ত শিথে নাই? শিশু মাতৃত্রেজ্ হইতে হঠাৎ কোন কারণে নীচে পভিত হইবার উপক্রম কালে ভবে যাভার বস্তাঞ্চল বা নিজের গলদেশে রক্ষিত পুত্র ধারণ করিরা কম্পিত হয় কেন? এই জন্মে পূর্বে আঘাতাদি জনিত হঃথ মন্থুলব করে নাই; বাহার ফলে প্তনের উপক্রমে ভীত হইজে পারে। প্রারশিত জনগ্রহণ করিরাই মাতার নিকট হইতে পলাইরা বার কেন? যাভার কঠিন জিহুবার স্পর্বজন্মের সংজার গাজ্যুক্ ছিল্ল হওরার কলে বে হঃথ হয়, ভাহা ত সে এই জন্মে মাতুক হর নাই। স্তরাং বলিতে হইবে, পূর্বজন্মের সংজার ব্যাক্তি এইরপ হইতে পারে না বলিয়া জন্মভব অব্য হীকার্য

ইত্যাদি যুক্তি সকল হের। বেহেডু ভঙ্গণানাদিতে প্রবৃত্তি প্রতৃতি। বে ভন্মান্তর বীকার না করিবা সন্তব হইতে পারে—তাহার যুক্তি ভামবা পূর্বেই দিয়াছি। অতথ্য জনান্তর অসিত।

উত্তরপক্ত

অনিতা পদার্থ মাত্রেরই প্রত্যেক কণে পরিণাম হর—ইহা স্বীকার করিতে হটবে। মতুবা কিছুকাল পরে বা পূর্বে প্রিণাম হর বর্ত্তথান ক্ষণে পরিণাম হয় না বা কতকগুলি ক্ষণে পরিণায় হয়, আবার কতকণ্ডলি কণে পরিণাম হয় না কেন? ভাহার কারণ কি বলিতে ছইবে। ইহার কারণ স্পষ্টভাবে কেহই বলিতে পারিবেন না। বেছেড় বে কারণ ভিনি দেখাইবেন, ভদ্বিয়েও ঐ প্রশ্ন উঠিবে যে এ কারণটি ভাহার পূর্বে কেন উপস্থিত হইল না। মোট কথা বে ক্ষণে বন্তর ধ্বংস হর, ঠিক সেই ক্ষণের পূর্বেই ভাহার কারণগুলির উৎপত্তি হয় একথা বলা বায় না। কারণগুলি ভাহার পূৰ্বক্ষণে উপস্থিত হইলেও ভাছাদের উৎপত্তি ভাছার পূৰ্বে বাইভাবে সম্পন্ন হর। বেমন কোন ঘটে মুদগবের আঘাত কবিলে, সেইক্লে ভাহার অবর্বের ক্রিরা লভ পূর্বস্থান হইতে অবর্বের বিভাগ, ভার পর পূর্বসংবোগ নাশ, ভাছার পরক্ষণে ঘটের নাশ হর। আর স্বাভাবিক ভাবে বে ঘটের বিনাশ হর, তাহা ঘটের সম্ভালাভের পর হইতে প্রভিক্ষণে ভাহার অবয়বের পরিণাম হইতে থাকে, সেই পবিশামের কলে একদিন ঘট অনুত হইরা বার। স্কুরাং বৌদ্ধান্ত মত প্ৰত্যেক কণেই বন্ধ নষ্ট হইয়া নৃতন নৃতন বন্ধ উৎপব্ন না হইলেও ঘট প্রভৃতি ংক্ত আমানের ইক্সিরগোচরভার বোগ্য ক্ল হইতে অদৃত হইবার বোগ্য ক্ষণের পূর্ব প্রস্তু একরূপ স্থায়ী থাকে ভাহা যুক্তিযুক্ত নৱ। এতকণ স্থানী থাকিয়া হঠাৎ অমুগ্ৰ হইরা বায় না। লোকে প্রভাক দেখাও বায় বে একটি ভটালিকা ধীরে ধীরে ভাঙ্গিতে ভাঙ্গিতে শেবে অদৃত হইয়া বার। একথানি বস্ত ছিল্ল হইতে এককালে অণুগ্ৰহয়। এই যুক্তি অনুদারে সাবয়ব প্রাণ ও ৰুম হইতে আৰম্ভ কৰিয়া থীৰে ধীৰে ক্ষুপ্ৰাপ্ত হয়—ইচা খীকাৰ। এইরপ হইলে বাল্যকালের অন্তে বৌবনে সেই বাল্যের প্রাণত্রপ অবয়বী বে আর থাকে না, তখন এক নুতন অবয়বী প্রাণ উৎপন্ন হয়—ইহা আমবা অমুমানের খাবা নিশ্চর করিছে পারি। অতএব প্রাণ উৎপত্তির পর হইতে স্থারী থাকিয়া শেষকালে কিঞিৎ কিকিং পরিবর্ত্তিত হয়, তাহার পূর্বে পরিবত্তিত হয় না—পূর্বপক্ষীর এই কথা হেয়। সাবয়ৰ বস্ত মাজেরই স্বভাব এই বে, প্রভাক কৰে ভাহার পরিণাম হয়। স্মুভরাং বৌরনে প্রাণক্রপী আছা বালোর প্রাণাম্বা হইতে ভিন্ন চওৱার বাল্যের ঘটনা মারণ হইছে পারিবে না-এই পূর্বোক্ত দোব থাকিয়াই বাইবে। র'দ বল বাল্যের অবর্বী ও বৌবনের অবর্বী ভিন্ন হইলে বাল্য ও বৌবনের শরীর পরস্পর ভিন্ন হওয়ার 'সেই এই দেবদত্ত' এইরূপ ळान इव किकाल? काहार छेखार विनय थे छेखर वारस्री जिल्ह হইলেও ডাহাদের বন্ধ অবর্থ অপরিবভিত থাকার অধিক সায়ুৱ ৰশত লোকের 'সেই এই দেবদত্ত' এইৰূপ জ্ঞান আভিবশৃতই চুইয়া श्रारक। चार वांका ७ वोराम महोत्त चरहर विश्व का অপরিবর্ত্তিত থাকে—এই প্রশ্নের উত্তবে বক্তব্য এই বে—ইয়া বস্তব স্বভাব। অর্থাৎ সেই অবস্থবগুলি চিব্রকাল অপন্নিবন্তিত না

ছইলেও ভারাদের পবিবর্ত্তনের কাল-মাত্রাটি একটু বিলম্বে হয়, ইহা সহজেই অফুমিত। ধেমন আকাশের পরিবর্তন, পুৰিবী অপেকা অভিবিল্পে হয়—ইহা অনুমানগণ্য। অথবা বেমন সিকভারানি অপেকা পর্বভরানির পরিবর্তন অধিককাল সাপেক। ইছা বস্তুৰ স্বভাব। স্বভাবের উপর অভিযোগ করা চলে না। অগ্নি কেন উষণ ক্ষল কেন শীতসং এইরপ প্রশ্ন অনর্থক। ৰদি বল-এই যুক্তিতে আমবাও (পূৰ্বপক্ষী) বলিব অবয়বী প্ৰাণ ভিন্ন ভিন্ন হইলেও তাহাদের অবয়ব অনেক বিলম্বে অর্থাৎ মৃত্যুব পূৰ্বপূৰ্যন্ত অপবিবৰ্ত্তিত থাকাৰ পূৰ্বাপৰ প্ৰত্যভিজ্ঞা ১ শ্বৰণ প্ৰভৃতিৰ অমুপপত্তি হইবে না। ইঙার উত্তর এই বে—একটি মাত্র অবয়বই অপ্রিবজ্ঞিত বলিয়া প্রমাণিত না হওয়ায়, ছুই, তিন বা হভোধিক অবহুবকে অপবিবর্ত্তিত স্বীকার কবিলে প্রত্যেক অবহুবে ভিন্ন ভিন্ন চৈতত্ত থাকার পূর্বকবিত ২ দোবের আপত্তি হইবে। আর সমিলিত অবরবে একটি চৈত্র স্বীকার ক্রিলেও দোব হর এই বে, ভাষারা অপরিবর্ত্তিত থাকিলেও ভাছাদের সংযোগ অপরিবর্ত্তিত না থাকায় চৈত্তৰের বিনাশ চইয়া-ৰাইবে। আর তা হাড়া প্রত্যেকে চৈত্তর না থাকিলে, সকলের সম্মিলনে চৈতত উৎপন্ন হইতে পারে না। ইছার যুক্তিও পূর্বে দেখান খইয়াছে। ৩

বদিও বা স্বাকার করিবা লওয়া বায় বে-- লবরবী প্রাণ প্রিবৃত্তিত হইলেও ভাহার কোন একটি অবয়ব মৃত্যুর পূর্ব প্রস্তু অপরিবজিত থাকে: আরু সে চেতন বলিয়া বাল্য, বৌংন অবস্থাব ঘটনা ধৌৰন বা বান্ধকো অৱণ সভয়ার কোন বাধা থাকে না। ভাচা চইলেও বলিব বে, না এরপ হইতে পারে না। কারণ অপরিবর্ত্তির অবরবে একটি চৈতর আর পরিবর্ত্তিত ভারবন্তলিতে ভিন্ন ভিন্ন হৈত্ত রূপ অনেক হৈত্ন্য থাকার সেই প্রদোষের আপত্তি ছইবে। আৰু বলি বল-অপরিবর্তিক অবয়বটিতেই চৈভন্য থাকে অন্যান্য পৰিবৰ্ত্তিত অবস্থাৰে চৈতন্য থাকে না। ভাহাৰ উত্তৰে বলিব একটি মাত্র চেতন অবয়ব ও অন্যান্য অচেতন অবয়ব সমূহ; **बहेबन विकालीय व्यव**प्रत्य यात्रा धक्षि व्यवये थान छेरन्य इंडेट्ड भारत ना। यमि वला यात्र कलल शृधिवीय यात्रा धक व्यवस्थी छेरश्रम ছয় বলিয়া, জলও পৃথিবীৰ মধ্যে বৈষ্ণাত্য থাকিলেও ভৃতত্বরূপ সালাভাও থাকার বেরূপ বিলাভীর অবয়ব সমূহের ধারা অবয়বী উৎপন্ন হইতে পাবে। সেইরূপ চেতন ও অচেতন রূপে প্রাণের অবয়বে বৈজাত্য থাকিলে ও ভূতত্ব বা প্রাণতত্ত্ব রূপ সাজাত্য থাকার काहारम्य द्वाया এक व्यवस्यो त्यान छेरलम हहेरव--- व विवरय व्यान्तर्य हि । देशव छेछ त्व वक्तवा अहे (व—तिहै अक्ति अवदारहे वथन হৈতন্য আছে, আর অন্যান্য অবহুব অচেতন এবং শরীর বা মনও আচেত্রন (এই পক্ষে মনকেও অচেত্রন স্বীকার করিতে চুটবে) ভখন শরীর বা মনের সংযোগ ব্যতিবেকেও ভাষাতে চৈতনোর অভিব্যক্তি স্বীকার করিতে হইবে। স্বার ভাহার ফলে সুযুগ্ডির সময় এবং পিতাৰ শ্ৰীৰ ২ইতে (ৰীৰ্ষ মধ্যে) বিষ্কুত হইবাৰ কালে ও সেই

প্রাণাংশ চৈভাগের উপলব্ধি হউক। কারণ বে বস্তব যে গুণটি স্বাভাবিক সেই হস্ত উৎপদ্ম হইবার পর ব। ভংহার সভাকালে সেই গুণটির অভিব্যক্তির নিমিত্ত অপর কাচারও সংযোগাক অপেকা করে না। প্রাণের বে অবর্বটিতে চৈততা খাকে তাহা সম্ভানের শরীরে অক্সাৎ আবিভূতি হয় নাই, কিছ শিভা বা মাতার প্রাণ হইতে আসিয়াছে, বলিতে হইবে। ভাহার ফলে সেই প্রাণা:শটিতে পূর্ব হইতেই (সন্তানের শরীরে আসিবার পূর্বে) চৈত্য ছিল বলিয়া উ**হা** পিত শ্ৰীৰ হইতে বিযুক্ত হইবাও চেতন হউক। কিন্ত ভাহা জানা বার না ৷ চুণ ও হলুদের সংবোগে বে লাল বং উৎপন্ন অভিব্যক্ত হয় তাহা সেই চুণ ও হলুদে পূর্বে অনভিব্যক্ত ছিল; আৰ ঐ সংযোগটিও লাল বং-এর আশ্রয়ীভূত বস্তব্বের সংবোগ এবং এ সংবোগের ফলে চুণ ও হলুদরূপ উভয় ফ্রব্যেই লাল রং উৎপন্ন হয়। কিন্তু ভোমাদের মতে (পূৰ্বপক্ষীৰ মতে) দেই অপ্ৰিবৰ্ত্তিত প্ৰাণাবয়বেই চৈত্য থাকে, অকাত অবহুবে চৈত্ত থাকে না বা শ্রীর ও মনেও চৈত্ত থাকে না। স্বতরাং দেই অচেতন শ্বীর মন বা অত্যাল প্রাণাব্রবর্ণ বিহ্বাভীয় বন্ধর সংবোগে অপরিবর্ভিত অবরবে চৈত্তালর অভিব্যক্তি হুইবে কিরুপে: আরু ধ্রণিও বা ভাষা হয় ভাষা হুইলে শ্রীর, মন বা অভান্য অবয়বেও চৈত্ন উৎপন্ন হউক; শরীর, মন প্রভৃতিতে উপাধিক চৈত্র স্বীকার করিলে ঐ অপরিবর্তিভ প্রাণাবহরে স্বাভাবিক চৈত্তত স্বীকার করিতে হইবে। তাহাতে যে শোষ হয়, উহা একটু পূর্বেই উল্লিখিত হুইাছে। আরও কথা—সেই অপরিবভিত একটি অবরব নিরবয়ব অধবা সাবরব। নিরবয়ব হইলে ভাহার সহিভ শরীর বা মনের সংযোগ হ∛তে পারে না। বেহেতু সাবয়বের সহিত সাব্যব জব্যেরই সংগোগ হয়। সাধ্যবের সহিত নির্বয়ধের বা নিববয়বের সহিত নিববহুবের সংযোগ অসম্ভব।

আর ঐ অপরিবর্ত্তিত অবহর সাবদ্ধর বাললে ব্যাঘাত দোর হইবে। সাবদ্ধর অথচ অপরিবৃত্তিত ইহা বিশ্বদ্ধ কথা। সাবদ্ধর হইবে পরিবৃত্তিত হইলে নিরব্রবৃত্তী হইবে। অপরিবৃত্তিত হইলে নিরব্রবৃত্তী হইবে। অতএব কোন প্রকারেই প্রোণকণ অবদ্ধর প্রাণকে অবস্থান করিবা মাতা-পিতার সংস্কার বশত সন্তানের অভপানাদিতে প্রবৃত্তি, মৃত্যু ভদ্ম প্রভৃতির উপপত্তির দারা জন্মান্তর্বাদ রগুনই অলীক কল্পনাদ্ধতি প্রবৃত্তি, নিরৃত্তি, মৃত্যু ভদ্ম প্রভৃতি চেতনেবই ধর্ম। অথচ প্রোণ অচেতন। কাজেই সেই সন্তানের প্রাণে কিলপে মাতা-পিতার সংস্কার ওপ উৎপদ্ধ হইবে? অতএব দেশ, কাল, সঙ্গা, পারিপাশ্বিক অবস্থা, আবহাওয়া ইত্যাদির দারা অভাবের পরিবর্ত্তিন হইলেও সেই স্বভাব দেহ, ইন্দ্রিয়, প্রোণ মন ইত্যাদিতে ধাকিলেও ইহাদের কোনটিতে চৈতভাসিদ্ধ না হওয়ার এওদভিবিক্ত চেতন আত্মা অবশ্র স্বীকার্য হইয়া পড়ে। ভাষার ফলে অন্যান্তর্বাদত অন্স্বীকার্য।

পূর্বপক্ষ

শবীর, ইন্দিয়, আবাৰ ইহাবা আত্মা না হইতেও মনই আত্মান মনেব অতিবিক্ত আত্মা অসিদ্ধ। আমহা হাহা কিছু অনুভৱ বা অবণ করি, সবই মনেব ছাবাই করি। মনকে বাদ দিয়া কোন জ্ঞানই হয় না। অকএব মনেই জ্ঞান অর্থাৎ চৈত্ত উৎপল্ল হয়।

১ সংস্থাৰ সহস্কৃত প্ৰেডাক জ্ঞানকে প্ৰেড্যভিক্ষা বলে।

২ বছ চে**ভনে**র ঐক্য**ভ্য না থাকা**র শরীর নষ্ট হইবে **অথ**বা কোন কর্ম নিম্পন্ন হইবে না।

৩ মনের চৈতে সপরে খণ্ডিত হইতেছে।

তবেই পাড়াইল, চেতন মনই আত্মা। 'আমি বাম,' 'আমি শোকার্ত্ত, আনন্দিত'। আমি ভানি। আমি অবণ করি। ইত্যাদি জ্ঞানগুলি মনেই উৎপন্ন হওরার মন আত্মা। অবল এই মন উৎপন্ন বিনাশনীল। পিভাব শ্রীবাংশ রূপ উপাদান হইছে উৎপন্ন হইরা অন্তিম কালে একেবারে মরিয়া বার। কাজেই জন্মান্তর অসিছ। বর্ত্তমান জন্ম প্রত্যক্ষমিছ। মৃত্যুর পর আর কিছুই থাকে না। উদাই ইহার (মনের) চরম পর্যবসান।

ৈচতভাট মনের ধর্ম হইজেও সেই চৈতত্তের অভিব্যক্তির জন্য শ্রীর ও ইন্দ্রিরের সহিত মনের সংযোগের অপেক্ষা আছে। এই কারণে পিতার শ্রীর হইতে বিযুক্ত হইরা পুরের শ্রীর সংবোগের পূর্বে ভাহার চৈত্তত্ত অভিব্যক্ত হয় না। অভএব মন হইতে অভিবিক্ত আ্যা বা নিতা আ্যা অসিদ্ধ হওচার অন্যান্তরবাদ টিকিতে পারে না।

উত্তরপক

মনকে আতা ও চেতন স্বীকার করিলে প্রশ্ন চ্টবে এট বে---ট্রা (মন) ধ্বন অনিতা, তথন সাংহত চট্টে। কারণ, নির্বর্ব ক্রব্যের বিনাশ হইতে পারে না। অবহবের বিভাগ প্রভৃতি হটয়াই দ্রব্যের বিনাশ হয়। নিববয়বের পক্ষে তাহা হটবার সম্ভাবন। নাই। সতবাং মন সাব্যব হটলে ভাহার প্রত্যেক অবয়বে এক একটি চৈতক্ত অথবা সমূচ অবয়বে একটি চৈতক ইত্যাদি পূর্বাক্ত দোষের আপত্তি হওয়ায় চৈতক্তকে মনের ধৰ্ম বা প্ৰভাব বলা ধাইবে না। অভএব জড়মন আখা হইতে পাবে না। আত্মা বে চেতন তাহা সকলের নিকট প্রসিদ্ধ। আৰ মনকে ৰদি নিৰ্বয়ৰ স্বীকাৰ কৰা ৰাম ভাচা চইলে ভাচা নিভা হইবে। নিভা হইলে জনাস্তরবাদ প্রমাণিত হটয়া বাইবে। আর অমনও বলা বার না বে—মন নিত্য, কিছ ভাগার চৈত্তাটি শ্বীবের সহিত সংযোগ বশত: উৎপদ্ম হয়, শ্রীবের বিনাশ হইলে তাহার চৈত্তপুও নষ্ট হইয়া যায়। তখন মনটি জড় হইয়া অবস্থান করে। আর জন্ম হয় না।' বেহেতু মনকে নিত্য স্বীকার করিলে ধনং চৈতদ্ৰকে ভাষার আগত্তক (শ্বীর সংবোগ বনত: উৎপর) ধর্ম মানিলে প্রশ্ন ছইবে এই বে জনাদি মনের সভিত বর্তমান मंदीरवद मरवाश 'कि कादल इट्टेंग । विना कादल मंदीरवद সংবোগ হইতে পাবে না। বিনা কারণে শরীবের সংযোগ স্বীকার করিলে এই জ্বল্মের পূর্বে এবং পরেও বিনা কারণে শ্রীর সংযোগ বীকার করিতে বাধ্য হইতে হইবে, আর তাহার ফলে জন্মান্তর শবগুই সিদ্ধ হইরা পড়িবে। শার শ্বীবের সহিত সংগোগের কারণ স্বীকার করিলে—বর্ম অদৃষ্ট ইত্যাদি দেই কারণ ছওয়ার, শ্রীর ব্যতিবেকে কর্ম সম্ভব নর বলিয়া বর্ত্তমান শ্রীর সংবোগের পূর্বেও কর্মের আশ্রম্মরক্রপ শ্রীর স্বীকার করিতে লইবে। স্থতরাং তাহাতেও মন্মান্তর অপবিহার্ষ হইরা পড়িবে। অবগু মনকে নিত্য চেতনবান স্বীকার করিলে তাহাই আত্মা হইবে। ভবে কেবল নামমাত্রে বিবাদ। ফলতঃ নিতা চেতন একটি বস্ত সিছ হওয়ার—আত্মবাদীরা ভাষার নাম দেন আত্মা। আরু মনোবাদীরা ভাহার নাম দেন মন। এইরূপ খীকারে বিশেষ বিবাদ নাই। কিছ মন বৃলিভে আমুদ্রা সাধারণভঃ ৰাহা বুঝি, বিশেষ ভাবে

চিন্তা করিকেও দেখা বাইবে বে কাম, ক্রোধ, সূখ, তু:খ, হর্ব, উবেগ প্রভৃতি বৃত্তিগুলি মনের ধর্ম বলিয়াই ত্রীকার্য। আর এই বৃত্তিগুলি বা ওণগুলি উৎপত্তি-বিনাশনীল—ইচা আমহা অন্তুভব করি। বৃত্তি বা গুণ অনিতা বলিয়া তাহার আগ্রহণ অনিতা হইবে। কানে অনিতা ওণের আগ্রহ গদার্থ অনিতাই হইরা থাকে। বেমন গন্ধ প্রভৃতি ওণের আগ্রহ পুণাদি নিতা বস্তুর ধর্ম বা ওণ অনিতা হয় না। বেমন আত্মার আনন্দ প্রভৃতি। স্তুরাই কাম, ক্রোধ, লোভ, স্নেহ প্রভৃতি অনিতা গুণের আগ্রয়—মনটি

ৰদি বলা যায় আশ্ৰয়ীভত পদাৰ্থ নিভা হইলেও তাহায় ওণ অনিত্য চ্টতে পারে। যে গুণ্ডলি সংযোগ, বিভাগ বা শ্রাদি জন্ম হয় সেইগুলি অনিভা। যেমন আকাশ নিভা অথচ ঢাক, ঢোল কাঠির সংযোগে আকাশে অনিত্য শক্ষরণ তণ উৎপন্ন হয়। অথবা বেমন আত্মান্ত মনের সংবোগে আত্মান্তে জ্ঞান, ইচ্ছা প্রভৃতি গুণ উৎপর হইয়া থাকে। এই নিহমে কাম, কোধ প্রভৃতি তণগুলি জনিতা হইলেও ভাহার আশ্রয়ীভত মন নিভা হইতে বাং কি ? ইহার উত্তরে বলিব, ধাকাশ যে নিভা ভাচা ত সিদ্ধ হর নাই। বরং ঐ শনিত্য শব্দ গুণের দ্বার। আকাশ সাবয়র এবং ভাতার কলে শনিভাই হইবে। আবে আতার সভিত মনের সংযোগ সভাটে নয় বলিয়া ভাহার ফলে আয়াভে অনিভা গুণের উৎপত্তির সম্ভাবনাই নাই। আত্মা নিরবর্ব, মন সাবর্ব ; সাব্যবের সভিত নিরবর্বের সংবোগ হইভেই পাবে না। আর বদি বা ভাতার ও মনের সংবোগ স্বীকার করা যার এবং সেই সংযোগকে জ্ঞান, ইচ্ছা প্রভৃতি গুণের কারণ বলা যায়, তাতা তইলে আপত্তি তইবে এই যে, এককণে আত্মতে সমস্ত জ্ঞান বা ইচ্ছা উৎপদ্ম হউক বেহেত জ্ঞান বা ইচ্ছার কারণ. শাত্মা ও মনের সংযোগ বহিষাছে। কাবে থাকিলে কার্য খবভড়াবী। আরও দোব হয় এই বে, আত্মা সর্ববাাপী বলিয়া ভাষার সহিত সর্বদা মনের সংযোগ থাকার আত্মাতে সর্বদা জ্ঞান, ইচ্ছা, ত্মেচ প্রভৃতি গুণ উৎপন্ন হউক, এমন কি স্বয়ন্তিতেও কাম, ক্রোধ প্রভৃতি ভাৰের উৎপত্তি হউক। তথ্চ ভাহা হয় না, বলিয়া নিত্য বন্ধতে অনিত্য ভবের উৎপত্তিপীকার করা বাইবে না। আঠও কথা এই কাম, ক্রোৰ প্রভৃতি বিকারাত্মক গুণ বাহাতে উৎপন্ন হয় ভাগা বিকারী হওয়ার অনিভাই হইবে। বিকারের আগ্রহীভূত পদার্থ বিকারী, কাজেই অনিতা হয়, বেমন দধি, মত প্রভতি। বাহা বিকারের শাশ্রর নর ভাহা নিত্য, বেমন আত্মা। সুতরাং প্রভাকের (মানস প্রত্যক্ষ) দারা অমুভূত কাম, ক্রোণ, ভয়, স্লেষ প্রভৃতি ৩৭ বা ব্যৱের আশ্রহীভক্ত মন অনিকাই হইবে। অনিকা হইলে ভাহা সাবস্থাই ছইবে। কারণ অনিভা দ্রবা সাব্যব হয়। আর সাব্যব হওৱার পূর্বোক্ত যুক্তি অনুসারে ৪ তাহাতে চৈত্ত সিম হইছে পারিবে না। অভএব মনও অনাতা। জারও কথা এই যে, কোন ক্রিয়ার প্রতি করণ এবং কর্মার অপেকা থাকে। এইরপ জ্ঞান

৪ প্রত্যেক অবহবে পৃথক পৃথক চৈতত্ত্ব থাকিলে অনেক চৈতনের ঐকমতোর অভাব বলত কার্য সম্পন্ন হইবে না। সম্ভূ অবহবে এক চৈতত্ত্ব স্বীকার করিলে কোন একটি অবহব নষ্ট হইলে, চৈতত্ত্বেও বিনাশের প্রসৃদ্ধ হইবে, ইত্যাদি।

প্রভৃতি ক্রিয়ার প্রতি সাধারণত মনকে করণ স্বীকার করার তদভিবিক্ত একজন কর্চা স্বীকার করিতে হয়। এক মনই করণ এবং কর্চা হইতে পাবে না। এই জন্ত মন হইতে অভিবিক্ত আত্মা স্বীকার্য। আরও একটি বৃক্তি এই বে — আমার মন ভাল নহ আমি কিছুতেই অভ পাঠে মন:সংবোগ করিতে পারিতেহি না ইত্যাদি—ব্যবহার হইতে বুবা বার মন হইতে অভিবিক্ত আত্মাকে আমরা আমি বলিয়া ব্যবহার করি।

এই ভাবে বৃদ্ধিকও আত্মা বদা বায় না। কারণ মন ও বৃদ্ধি প্রাইই একটি পদার্থ। কিঞ্চিৎ ডেল স্থীকার করিলেও আমার বৃদ্ধি মোটা, তাঁহার বৃদ্ধি কৃষ্ণ, সে বৃদ্ধিমান, ইত্যাদি ব্যবহার হইতে বৃদ্ধা বায় আত্মা বৃদ্ধি হইতেও অভিনিক্ত। আব বে বে বৃদ্ধিতে মনের চৈতত্ত পণ্ডিত হইয়াছে, সেই সেই বৃদ্ধিতে বৃদ্ধিরও চৈতত্ত প্তিত হইবে। অভ্যাহ্য এতদভিল্ল স্থীকার্থ।

পূর্বপক্ষ

দেহ, ইন্দ্রির, প্রাণ, মন, বৃদ্ধি হইডে আদ্ধা অতিরিক্ত হউক ।
ভবাপি তাহা নিত্য কেন হইবে ? সেই আ্মা অনিভাই হউক।
অনিভা হওরার অমাভর সিদ্ধ হইবে না। অথবা সেই আ্মা বিদি
নিত্যও হয়, তাহা হইলেও নিত্য ভাব পদার্থের উৎপত্তি না থাকার,
আ্মার অমই সিদ্ধ হয় না; অমাভর ত দ্বের কথা। কাজেই
স্বপ্রকারে অমাভরবাদ অসীক।

উত্তরপক্ষ

আত্মা বে চেতন, তাহা সর্বস্তনপ্রসিদ। অচেতন বস্তকে কেহ আবা বলিয়া বুঝে না। অনিতা বস্তমাত্রই বে অচেতন, তাহা পূর্ব বছ যুক্তিৰ বাবা দেখান হইবাছে। অনিকা বস্তুতে কোনরপেই চৈত্ত থাকিতে পারে না। ঘট, পট ইত্যাদি সাবহব, অনিত্য বস্ত চেতন নহ। এইরপ আত্মাকে সাবরব, অনিত্য স্বীকার করিলে ভারা অচেতন হইরা পড়িবে। অতএব আত্মাকে নিতা, নিরবরৰ স্বীকার করিলে ভাহার চৈতত্ত অথবা ভাচা চৈতত্ত্বরূপট সিম্ব হর। ব্যুত আত্মাৰ তুণ বা ধৰ্ম চৈত্ত্ব-এই মত বৃত্তিযুক্ত নৱ। (बार्ड्ड क्ष्मवन क्ष्यामां करें विकासी, अनिका रुक्सात, टिक्ड क्ष्मवान আত্মার অনিভাতার আপতি হয়। সঙ্গ দ্রবা নিতা হইরাছে, बहेजन महील व किया भांखा बाहरत ना। कावल कवा बहे त. আত্মা চেতন অর্থাৎ চৈতত্তগুণবিশিষ্ট হইলে, সেই চৈতত্তের থারাই আতার প্রকাশ হয় –ইহা বলিতে হইবে। আর ভারা বলিলে আত্মা হৈতত্ত্বের দারা প্রকান্ত হওরার তাহার (আত্মার) মিধ্যাছ সিছ হইরা বাইবে। বেহেতু বাহা দৃগু অর্থাৎ প্রকাশু ভাহা মিধ্যা, অনিভা। এইক:প আত্মাও অনিভা হইয়া পড়িবে। আত্মা অনিভা হুইলে পূৰ্যমুক্তি অমুসারে ভাহার চৈত্ত সিদ্ধ হইবে না। এই সব কারণে নিভাজ্ঞ নস্বরপই আত্মা প্রতিপাদিত হর।

ষ্ণি বল জ্ঞান মাত্রই অনিত্য, কোন জ্ঞানই নিত্য নর—ইহা
অনুভবসিত্ব। বেমন ঘটজ্ঞান, পটজ্ঞান; আমি ইহা জানিব।
তাহাকে জ্ঞানিরাহিলাম ইত্যালি ভম্নভবের বলে সম্ভূ জ্ঞানই
অনিত্য। ইহার উত্তর এই বে—ঘটের জ্ঞান, পটের জ্ঞান—
ইত্যাকারক জ্ঞানভালি বিশেষ জ্ঞান—ইহারা অনিত্য। কিছ
নির্বিশেষ জ্ঞান নিত্য। কথনও তাহার অ্ঞাব পাওরা বার না।

বেহেতু নিৰ্বিশেষ জ্ঞান উৎপন্ন হটবে বা নট হইয়া গিয়াছে-এই ভাবে জ্ঞানের প্রাগ্,ভাব বা ধ্বংসকে জানিতে ইইলে, জ্ঞানের দারাই জানিতে হইবে। প্রতরাং জানের জন্মের পূর্বে বা বিনাশের পরেও জ্ঞানের সন্তা থাকায় জ্ঞান সামাজের অভাব কোন কালেই উপপাদন ক্রা হার না বলিয়া নির্বিশেষ বা সামাজ্ঞান নিভ্য। বলি বল---একটি জ্ঞানের ধারা অন্ত এক জ্ঞানের প্রাগভাবাদি জানা ধাইবে। ভাহার উত্তর এই বে প্রতিযোগীর জ্ঞান না থাকিলে ভাহার অভাবের জ্ঞান হইতে পাৰে না বলিয়া, যে জ্ঞানের দারা ঋষ জ্ঞানের প্রাগ্,ভাব জানা বার, সেই জানকে প্রাগভাবের প্রতিবাগী জ্ঞানের জ্ঞানের সন্তা কালে থাকিতে হইবে এবং ভাহার ধ্বংসকাল পর্যন্তও থাকিতে হইবে। ভাহার ফলে এ প্রকাশক জানকে স্বারী স্বীকার করিতে হইবে। ভাবার ঐ ভায়ী জ্ঞানের প্রাগভাব বা ধংসেকে বে জ্ঞান প্রকাশ করিবে তাহাকে তলপেকা স্থারিতর স্বীকার করিছে হইবে। এইভাবে শেব পর্যন্ত একটি অনাদিও অনন্ত জান অবভ স্বীকার্ব। আর তাহাই আত্মা। আর বে কেহ কেহ বলে আমাদের সুযুপ্তির সময় কোন জানই থাকে না বলিয়া নিতাজান অসিছ। ইহাও বৃজ্জিনসভ কৰা নয়। বেহেতু স্মযুগ্তি হইতে উঠিয়া লোকে নামি কৰে বুমাইয়াছিলাম' কিছুই জানিতে পাবি নাই"—এই প্রকার মুধ বা অজ্ঞানের মারণ করে। অভুভব ভির মারণ হর না। অতএব অৰ্থাৎ সুযুব্ধিতে অমুভবরূপ জান সিদ্ধ হইয়া বার। বদি বল সুবৃত্তি ছইতে উঠিয়া যে শোকে স্থাধের স্মরণ বা অজ্ঞানের স্মরণ করে। সেই অভুমানের ফলে সুবৃত্তিতে জ্ঞান সামান্তের অভাব এবং হঃৰ প্ৰভৃতিৰ ভভাবই সিদ্ধ হইয়া বার। এই ভাবে অতুমান হর। বধা:—সুবৃত্তি কালের পূর্ব ও পরবর্তী কাল ছুইটি মধ্যবতী কালযুক্ত বে হেতু ঐ ছুই কাল पूर्वाभव काल।

বেমন বে রাত্রিতে আমি জাগিরা থাকি, সেই রাত্রির পূর্বাপর কাল গুইটি মধ্যবতী কাল্যুক্ত। এই ভাবে পুৰুপ্তির কালের অভ্যান। তার পর সূর্ত্তি কালটি আত্মান বেছেতু ভাহা কাল। এই ভাবে সুৰ্ব্যকালীন আত্মা জ্ঞানসামান্তের জ্ঞাবমান বেহেডু তংকালে জ্ঞানের কারণ ছিল না। এইরূপে সুযুগ্তি কালে আত্মাতে জ্ঞানের অভাব সিদ্ধ হওরার আত্মা জ্ঞান অরপ হইতে পারে না। ইহার উত্তরে বলিব অবৃত্তিকালে বে জ্ঞানের কারণ থাকে না-তাহা জানিলে কিরপে ? যদি বল জানের অভাব হইছে জানের কারণের অভাবের হারা জ্ঞানের অভাব, আবার জ্ঞানের অভাবের অভুমানরণ অক্রোভাত্র দোষ বলত—এইরণ অফুমান অসিত। সুত্রাং সুবৃত্তিকালেও কোনকণে জানসামান্তের অভাব প্রমাণিত করা না বাওয়ায়, আগ্রত, খপ্প, শুবুন্তি, দিন, ডাত্তি, মাস বংসর ইত্যাদি কালের অভীত এক নিত্য জ্ঞান সিদ্ধ হইরা বার। আরু ভাহাই আত্মা। বদি ও এই আত্মার বরণও অগ্ম অসিছ-তথাপি বর্তমান ভন্ম আমরা অমুদ্রব করিতেছি বলিয়া বলিতে হইবে নৃতন দেহ, ইন্দ্রির, প্রাণ, মন প্রভৃতির সহিত সেই আত্মার একটা কোনরপ সম্বৰ হইয়াছে: আৰু এই বৰ্তমান অনুটি ব্ৰন দেখা বাইভেছে, তৰ্ন ইহার কারণরণে কর্ম বা অদৃষ্ট ত্বীকার ক্রিডে ছ্ট্রে। করের ক্ল বে অবগ্ৰন্তাৰী তাহা প্ৰায়ই সকলের অন্তত্তবসিত্ব। সেই কৰ্ম নিজ আন্তাৰ কৰ্ম বলিতে হইবে। কাৰণ অপৰের কর্মের ধারা কেবল

অপবেষ ফল হইতে দেখা বার না। এই হেতু বর্ত্তমান জন্মের দারীর হইতে দারীরের কারণ কর্ম, আবার এই অন্মের কর্ম হইতে এই এই দারীর উৎপন্ন হয়—এইরূপ বলিলে অভ্যোত্তাপ্রায় দোব হয়। প্রতরাং এই অন্মের কারণীভূত কর্মগুলির অন্ন পূর্ববর্তী দারীর খীকার করিতে হইবে। তাহাই পূর্বজন্ম। আবার তাহার জন্ম তাহার প্রস্থান খীকার্য। এইরূপে অনাদি অন্ম বা স্থাই অর্থাপতি প্রমাণের হারা সিদ্ধ হওরার অন্যান্তরবাদ অপবিহার্য। আবার এই ক্লমের কর্মের কলে আগামী জন্ম অব্যান্তরবাদ বিভাবের না জ্ঞানের হারা সম্পূর্ণরূপে কর্মের ক্ষয় হর, তত্তদিন অন্যাধার আবর্ত্তনীয়।

পূর্বে দেখান হইয়াছে বে আত্মা চৈতক্রস্বরূপ, কাজেই উহা দেহ, हेलिय, धार, भन हेलानि हहेटल लिया चाय चायाक मर्ववाशक বলিতে ইইবে। কারণ যদি আছা মধ্যম পরিমাণ চন তবে সাব্যুব হওয়ার (মধ্যম পরিমাণ বস্তু সাব্যুবই হয়) অনিত্য হইয়া পড়ে, আরু সাবয়ব বস্তু চেতনও হয় না। অতথ্য আত্মামধ্যম পরিমাণ নছে। অণুপরিমাণও বঙ্গা যার না। অণু বলিলে সমস্ত শরীরে দ্বধ প্রভৃতির অনুভব যুগপৎ হইতে পারে না। বেহেড় অণু আত্মা শরীরের এক অংশেই যুগপৎ থাকিতে পারে বলিয়া বে অংশে আত্মা থাকিবে সেই অংশেই সুগ হইতে পারে, অন্ত অংশে ত্বৰ চইবে না। কিন্তু প্ৰীত্মহালে মহাাহে নীতল জলে স্নান করিলে বা শ্রারে চক্ষন অনুলেপন করিলে যুগপৎ সুর্বদরীতেই মুধ হয়। অতথৰ স্বীকার করিতে হইবে বে আত্মা অণু নয়। স্ক্তরাং অবংশধে দাঁড়াইল আত্মা বিভূ অর্থাৎ সর্ববাদী। সর্ববাদী বস্তুর কোন কর্ম বা ক্রিয়া সম্ভব নয়; সেরুপ দেখাও বাহ না। বজ্ঞ চুনিব্ৰহৰ প্ৰাৰ্থের ক্ৰিয়া হয় না। আহাতা হথন নিব্ৰহ্ব. চৈত্র ধরণ তগন তাহার পক্ষে বাস্তবিক কর্ম, জন্ম, ভোগ প্রভৃতি সম্ভব নয়। অধ্চ আত্মার জন্ম, কর্ম, ভোগ প্রভৃতি আমরা প্রতাক অত্বভাব করিতেছি। এই লগ্ন স্বীকার করিতে হইবে বে, এই ছন্ম, কর্ম প্রভৃতি মিধ্যাজ্ঞান বশক্তই হইরাছে। অবগ্র মিধ্যাজ্ঞান মাত্র **ষ্ট্রভেই জন্ম হয় নাকিছ মিধ্যা জ্ঞান** হইভে কামনা, কামনা ১ইতে কর্ম, কর্ম হইতে জন্ম, জন্ম হইতে ভোগ ইত্যাদি হইতেছে। আবার অপরের কর্মের দ্বারা অপরের ফল্ডোপ হর না ইহা প্রত্যক্ষসিদ। রাম খাইলে প্রামের তৃত্তি চর না। পুত্রাং বাছার কর্ম, তাহারই ভন্ম বলিছে হইবে। এই যুক্তি অমুসারে প্রত্যেক আত্মার জন্ম দেখিয়া নিশ্চয় করা বায় বে এই ৰশোৰ কাৰণৰূপে প্ৰভাক আত্মাৰ নিজ নিজ কৰ্ম অবভাই ছিল। খাবার কারণটি কার্যের পূর্ববর্ত্তী হয় বলিয়া এই খালের কারণরপ কৰ্ম এই জন্মের পূৰ্বে ছিল। আনবার শ্রীর ব্যক্তিবেকে কর্ম সম্ভব

নয় বলিয়া, এট জন্মের কারণীভুক্ত কর্মকলিয় সাধ্মরূপ পূর্ব শ্রীরও বর্তথান শরীবের পূর্বে স্ট্রাছিল। আত্মার সহিত কল্পিত শরীবের সম্বন্ধট আত্মার করিত ভন্ম। কারণ আত্মার বাস্তব ভন্ম বা কর্ম যে সম্ভব নর ভাহা উপরে বলা চইয়াছে। অভএব দাড়াইল বে বর্তমানে জ্বাের কারণরূপে কর্ম, সেই কর্মের কারণরূপে বর্তমান অন্মের পূর্বভ্যা; এইরূপ সেই পূর্বজন্মের কারণরূপে ভাচার পূর্বভয় ছৰ্থাৎ দিদ্ধ হয়। আবার বর্তমান ভালেও অনেকে নৃত্তন কর্ম করা হইভেছে। ভাহারও ফল অব্রম্ভাবী বলিয়া বর্তমান ভামের পর আগামী ভদাও অনুমানসিত্ব। পূর্বেট বলা চুটুরাছে কর্মের কারণ কামনা, কামনার কারণ মিথাাজ্ঞান। সুতরাং হতদিন মিথ্যাজ্ঞান দ্বীভূত না চইতেছে, ততদিন জীব কামনা বশত কর্ম করিতে বাধা, আরু কর্ম করিলে ভন্মও অবগুস্থাবী। এই মিধ্যাজ্ঞান আবার বথার্থজ্ঞানের ছারাই নিবুত্ত হয়। সর্বত্রই ইহা আমবা দেখিতে পাই যে, যে বিষয়ের যথার্থজ্ঞান হয় সেই বিষয়ের মিথাজ্ঞান निवल हरेया वाय । (यमन मिख्य वर्षार्थकान हरे**टन** मिख्य विश्वास्कान রূপ বে সাপের জ্ঞান তাহা চলিয়া যার। প্রকৃত স্থলে আত্মার মিণ্যাজ্ঞান বশতঃ কামনা ও কর্ম। সুভরাং আত্মবিষ্যুক ব্যার্থ-জ্ঞানের ছারাই আবাবিষয়ক মিথাাজ্ঞান নিবুত হয়; অভ কোন কারবের ছারা আত্মার মিথাাজ্ঞান নিবুত চইন্ডে পারে না—ইচা যুক্তি দিশ্ধ।

নিখ্যাজ্ঞান নিবুত চইলে ভাহাব কাৰ্য কামনাও চলিয়া ঘাইবে, व्याद कायना निर्देश इंडेल दर्भ मुख्य इंडेरिय हो। कर्म ना इंडेरिन আর হল্মও সম্ভব নয় , সুত্রাং অংজার ংথার্থজান বছদিন না হয় তত্দিন অনু অৰণজাবী। এই বঠমান জনুই সকলের শেষ ছল নয়। কাৰণ সকলেব আত্মবিষয়ক বৰ্ণাইভান নাট, বছলোক আত্মার শ্বরূপের সম্বন্ধে কোন চিস্তাই করে না, জ্ঞান ত দুরের কথা। আর পশু প্রভৃতির ত আরও দুরের কথা। অভ ধর আলু-সাক্ষাৎকাৰবান ব্যক্তি ভিন্ন সমস্ত জীবেবই ভবিবাৎ লগ্ন সিদ্ধ হওয়ায়, আর পূর্ব পূর্ব জন্মও অর্থাপত্তি প্রমাণসিদ্ধ হওয়ায় জন্মান্তরবাদ স্থান ভিত্তিতে প্ৰতিষ্ঠিত। ভাহার ফলে মাহুষের ধর্মের উপযোগিতা**ও** সিদ্ধ হইল। বর্তথান জ্ঞান থর্মের অমুষ্ঠান করিলে পরভায়ে ত্রখ ठेटेरत । अक्षार्यत करण कृत्य ठेटेरत । अन्यास्त्र ना थाकिरण धर्टे জন্ম বদি শেষ জন্ম হয় তাহা হইলে থৰ্মের কোন উপবোগিতা থাকে না। বে ধর্ম অনুষ্ঠান কবিল দেত আর থাকবে না, ফলভোগ করিবে কে? ভাষার বিনা শরীরে সুথ-তৃ:ধ হয় না। অভথৰ বৰ্তমান ধাৰ্মর ফলে ভবিষ্যৎ শৰীৰ আবভট স্বীকার্য।

मया ख

দ্বিখ্যার আদে বার না, ধন বা দাহিছ্যে আদে বার না; কারমনোবাক্যে যদি এক হয়, এক্ষুষ্টি লোক পৃথিবী উপ্টে দিতে পারে—এই বিখাসটি ভূলো না। বাধা বতই হবে, ততই ভাল। বাধা না পেলে কি নদীর বেগ হয় ? বে জিনিস বত নৃতন হবে, বত উপ্তম হবে, সে জিনিস প্রথম তত অধিক বাধা পাবে। বাধাই ভ সিদ্ধির পূর্বসক্ষণ! বাধাও নাই সিদ্ধিও নাই। অলমিতি।

-श्रामी दिवकानमः।



[প্ৰ-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] ডঃ পঞ্চানন ঘোষাল

ক্রেভাবাগানের রিপোট-রুমে প্লিশের উপনগরপাল (ডেপ্টি পুলিশ কমিশনার) প্রত্যহ ঠিক দশটার সময় উপস্থিত ভৱে জাঁর অধীনত বিভিন্ন থানাদারদের নিকট হতে তাঁদের অ অ এলাকার বাস্তীয় সংবাদ প্রংশ করে তংসম্পর্কে প্রয়োজনীয় ভক্ষনামা ভারী করে থাকেন। এই দিনও ভিনি ঠিক এই সময় তাঁর জন্ম নিৰ্দিষ্ট ব্ৰথানিতে এলে 'বাজকীয় ক্ৰাউন লাজিত' ঘূৰ্ণায়মান রকিঙ চেয়ারটিতে উপবেশন করেছেন। তাঁর সমুধের প্রশস্ত টেবিসধানার ভান পার্শে বৃক্ষিত একটি চেরারে বঙ্গে শহরের সহ-নগ্রপাল (এসিসটেউ কমিশনার) বিভিন্ন খানার অফসারদের ছারা সমাধিত বিবিধ মামলা সমূহের তদন্ত সম্বন্ধে তাঁকে ওয়াকিবলাল করে দিচ্চিলেন। এক একটি থানা তাদের আসল নাম সহ ক. খ. গ. খ প্রভঙ্কি আক্ষরিক নামেও পরিচিত। ভাই বথাক্রমে 🕿 ধানার পর ধ ধানা ধ ধানার পর গ ধানার অফসারদের ভিতরে ষাবার জন্ত ডাক পড়ছিল। সেই ডাক অনুষায়ী এক এক জন অঙ্গার কাগজপত্র পেল করার পর এ বিপোট-ক্রম হতে বেরিরে আসার সঙ্গে সঙ্গেই আর একজন অফসার তাঁর ডাইরীপত্ত সহ সেই ঘরটির মধ্যে চকে পডেছিলেন।

এই বিস্তার্থ বিপোট-কমের একাংশ একটি কাঠের পার্টিশনের বারা পৃথককত করে অপর একটি অপরিসর কক্ষের স্থাই করা হরেছিল। এই ব্যথানির ভিতর রক্ষিত একটি লখা টেবিলের তুই পার্বের চেরার ক'বানি অধিকার করে বিভিন্ন থানার অফসাররা তাঁলের ডাক আসা পর্যন্ত কাগরপত্র ও মারকলিশি সহ অধীর হরে অপেকা করছিলেন। এঁদের কেউ কেউ কাঠের পার্টিশনের মধ্যকার করেকটি ছিল্পথে দৃষ্টিনিক্ষেশ করে ঐ বিপোট-কমের ভিতরকার আবহাওরা সম্বন্ধে পূর্বেরি হতেই এই সকল ছিল্ল তাঁরা তৈরারী করে বেথেছিলেন। সহসা ছিল্লপথ হতে মুখ সরিরে সহক্ষীদের উদ্দেশ করে এঁদের একজন নিম্নররে বলে উঠলেন, উল্লু ম্বিধে মনে হচ্ছে না।' ডেপ্টি সাহেবের চল্মা কপালে উঠে গিরেছে। ওলিকে বড়সাহের (এসিসটেন্ট কমিলনার) তাঁকে শান্ত না করে তাঁর ক্রোথেইজন বোগাছেন। আবও একটা ক্যাম্বরেলটি বোধ হয় হলো। খেলে আর কি—

উপনগ্রপালের চলমা চোথের উপর হলে কণালে উঠলে ৰুবতে হবে ৰে সেই দিন কাৰণে বা অকাৰণে নিশ্চৱই ভিনি কাউকে না কাউকে সামন্বিক ভাবে বরণাস্ত (সাসপেণ্ড) করবেন। কমপকে জরীমানা প্রভত্তি বিভাগীর শান্তি বারা এঁদের কাউকে না কাউকে তাঁৰ হাতে নাজেহাল হতেই হবে। এই সকল বিয়বে আইনস্মত ক্ষমতা তাঁব অসীম। নির্ম্ম নির্মতান্ত্রিকভার নামে এই ক্ষমতা তাঁদের হাতে তলে দেওৱা হরেছে! তাঁদের এই ক্ষতা অভাব ভাবে প্রযুক্ত হলেও কাকুর কিছু বলবার বা কৰবাৰ নেই। এমন কি, ডেমক্রসীর যুগেও পৃথিবীডে এই ক্ষতা আমলাতত্ত্বে হাত হতে আঞ্চ পৰ্যান্ত কেউ কেছে নিতে পারে নি। নিরমভান্তিক শাসন ও বিচারের নামে 👻 🔻 কৰ্মক্ষেত্ৰে এঁবা ভাজও পৰ্যন্ত ধৈরতান্ত্ৰিক বা বাজভানিক ক্ষমতার অধিকারী। এই ক্ষমতা তাঁলের নিকট হতে কেছে নিলে পুথিবীর কোনও রাষ্ট্রই টেঁকে থাকতে পারে না। ভাই বিভিন্ন দেশের গভর্মনট বিভিন্ন ছাঁচে গড়ে উঠলেও তাকে তার অধীনস্থ উচ্চপদস্থ কর্মচারীদের হাতে অভীতের রাজনীয় ক্ষমভা দিতেই হবে। পূর্মকালীন রাজাদের ভায় এদের কেউ ভাল হলে রাষ্ট্রে মঙ্গল অন্তথায় উঠার সর্বনাশ। বাজতর উপরতলা হতে বিদার নিলেও নীচের তলার উহার ক্ষমতা আঙ্গুড অপ্রতিহত। রাজ্যন্ত ধনতত্ত্ব সমাজ বা সামাতত্ত্ব প্রভৃতি বিবিধ রাষ্ট্রসত্ত্ব আঞ্চও এঁদের হাতের ক্রীড়নক মাত্র। এর চেয়ে বোধ হয় বাজতগ্রই ভালো ছিল। তাই নি:সন্দেহে বলা বেতে পারে বে, রাজতভ্রই প্রিবীর এক স্বাভাবিক শ্রেষ্ঠ অবদান ৷ এই রাজতন্ত্র কথনও কোনও দেশ বা জাতিকে বিধাবিভক্ত করেনি। বরং তাদের উঠা একীভক্ত ও সম্মিলিত করে বেখেছিল। অরু দিকে বিবিধ ইজিমের পালায় পড়ে জাতিব মাধ্য জাতি সম্প্রদারের মধ্যে সম্প্রদার গড়ে দেশ ও জাতিকে টুকরা করে দিছে। দৃষ্টান্তখন্ত্রণ একদা তুর্দ্ধ রূপ্যাণ আতি ও স্থসভ্য কোবিয়ান জাতির কথা বলা বেতে পারে।

এই সহক্ষা কর্ত্ক প্রদন্ত ছ:সংবাদটি কানে বাওয়। মাত্র উপছিত অফসারদের কনেকেই সম্রন্ত হরে উঠ এসে একে একে এ ভিন্তপথে দৃষ্টি প্রদাবিত কবে ভিতরের ব্যাপার ব্রবার চেষ্টা করছিলেন। এই সময় বিপোর্ট-ক্যের ভিতর জনৈক জুনিয়ার অফসারের উপর তাঁর কাবের গাফলতির জক্ত তর্জন-গর্জ্জন চলছিল আর সেই অফসারটি পার্শ্বে তাঁর ধানার ভারপ্রাপ্ত অফসার অসহার অবহার দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে সেই বকুনী-অকুনীর প্রকৃত তাৎপর্য উপসত্তি করবার চেষ্টা করছিলেন। তাই এ দের মধ্যে বাঁরা উঠে এলেন না তাঁরা তাঁদের অস্তরাত্মাকে তাঁদের কর্বকুঞ্জীর মধ্যে অফ্পর্থবেশ করিয়ে দিয়ে রিপোর্ট-ক্যের ভিতরকার উচ্চনাদ সমূহ কর্পনিটাহের হারা ধরে নেবার জন্ত উন্মুখ হয়ে উঠলেন।

এই সময় সহসা তাঁবা শুনতে পেলেন, ডেপুটি সাহেব বিবৃত্তি স্থান কৰিছেন, 'থ' থানার সেকেণ্ড অফসার হীরালাল বাবুকে জিজ্ঞাসা করছেন, 'তাহলে তুমিই এই মামলাটির তদন্ত করেছিলে? আছা! এ এ নম্বরের বাড়ীর সামনে একটা গ্যাসপোষ্ট দেখেছিলে? উঁ, কি বললে, দেখোনি। আছা, এ বাড়ীর কাছাকাছি কোনও ভাইবিন দেখেছো? তা'হলে তুমি তা-ও দেখোনি! তুমি একটি ওরার্থলেশ অফসার দেখছি। তুমি এই মামলার এই এই সাক্ষীকে ভাইলে জিজাসাবাদ করোনি, এঁয়া? তুল-পথে তুমি এভো দিন তদম্ভ চালিরে এদেছো, আমি এথানে বসে বসেই বৈ সব খবর পাই, তুমি সরক্ষমীন তদস্ত করেও তা জানতে পারো না। মিছামিছি একটা নির্দ্দোবী লোককে তুমি চালান দিতে চাও।

এর পর তিনি একটি জর্থপূর্ণ দৃষ্টিতে চলমার তলা দিরে ঐ ধানার বজ্বাব্র দিকে তাকিয়ে বললেন, 'আপনি বজ্বাব্ এঁর কাছ হতে তদস্তের ভার নিজে নিয়ে নিন। ইা, ভালো করে এই সকল ছেলে-ছোকরাদের আপনারা কাজ লেখান না কেন? জামি চাই না যে আমার অফসারদের বিক্লছে কেউ কমপ্লেন করে। আছো, আপনারা এখন বেতে পারেন।'

সহ-নগরশালকে সাধারণ ভাষার বড় সাহেব বলে সংখাধন করা হয়। একফালে তাঁরাও ক্ষমতার ছিল অপ্রতিহন্দী। কিছ একণে আরও উদ্ধানন আফসার ডেপ্টি সাহেবদের আওতার পড়ে তাঁনের ক্ষমতা কথকিৎ কমে গেলেও অথস্তন অফসারদের নিকট উহাব তারতম্য উনিশ-বিশ মাত্র। নীচেওরালাদের নিকট উহাবে উত্তরেরই দহন বা দাহ্ম্মানি ডেপ্টি সাহেবের এইরপ এক মন্তব্যকে সমর্থন করে অফসারদের শান্তি দেবার অক্স তাঁকে প্রামর্শ দিকেন। কিছ এই ক্ষেত্রে তিনি ডেপ্টি সাহেবের এই উপদেশ্বাণীটুকু চুপ করে বদে গলাধঃকরণ করেলন মাত্র। এঁর কথা হতে তিনি কি বুবলেন তা বুঝা গেল না। তবে অলক্ষ্যে তাঁর টোটের কোণে

একটু মৃত্ হাসির বেধা ফুটে উঠে তা নিমিধে আবার মিলিয়ে গোলো। এব পর তিনি ডেপুটি সাহেবের দিকে না তাকিরেই প্রথামত বলে উঠলেন—'নেকটু ম্যান। ছল্মী—'

বিশোট-ক্ষের দরজার বাইরেই প্রের থানার অবসার মুলুকটাদ বাবু জাঁর ডাক পড়ার অপেকার গাঁড়িরে ছিলেন। ভদ্রগোক ঐ অফিস-ঘরে ছকে পড়ার জন্ম অগ্রসর হওয়ার সঙ্গে সংক্রই প্রত্বে আনা-অফিসারঘর ছবিত গতিতে বেবিরে আসছিলেন। দরজার নিকট তাঁদের বাক্ততাস্চক অম্বাভাবিক গতির জন্ম তাঁদের হইলনের মাধা ছইটা ঠোকাঠুকি হয়ে গেল। কিছ একজ্ম এদের কাক্তর অভিযোগ বা প্রতি-অভিযোগ করবারও সমর ছিল লা। একবার মাত্র মূলুকটাদ বাবুর চলার পথের দিকে তাকিয়ে জ্রুক্তিত করে 'ধ' খানার 'বড়বারু স্থীর ঘোষ তাঁর সহকারী অফসার হীরালাল বাবুর সঙ্গে পাশের কক্ষে প্রবেশ করলেন। এর পর তাঁরা সেধানে উপবেশন করা মাত্র তাঁদের সহক্ষীদের একজন মন্তির নিধান ডেলে বলে উঠলেন, 'আজ্মকের মতন চাকরী তা'হলে আপনাদের রইলো। কিছ কি নিম্নে এতো টেচামেচি ছচ্ছিল ওবানেং'

নির্বিকার চিত্তে হাতের কাগজপত্রগুলি ওছিয়ে নিয়ে করেষটি মামলার আসামীদের নামে চালান লিখতে লিখতে 'খ' থানার বড়বারু স্থবীর ঘোষ উত্তর করলেন, 'দৃ-উ-ব, ওসর হুমকী আমরা



বুঝি। সোজাস্থান্ধ বললেই হয় বে, এই আসামীটিকে ছেড়ে দাও। তা না বলে ধমকে আমাদের কাছ হতে খুলীমত দিনি কাজ আদার করবেন। কোনও এক দিক হতে এ সম্বন্ধ তাঁকে ধরাধরি হয়েছে আব কি? বাকগে, কর্তার ইচ্ছেই কর্ম হবে। এতে পাপ বা কিছু তা ওনাদেরই, আমাদের আর কি!

'খ' থানার সেকেও অফ্যার ছিলের একজন ন্বীন যুবক
অফিসার। স্বকীর ধানে-ধারণা মত সভতার সহিত জিনি ঠিক
পথেই তদন্ত করেছিলেন। এমন কি, এই মামলার আসামীর বিহুদ্ধে
বধেষ্ট সাক্ষ্যপ্রমাণও তিনি পেরেছিলেন। এই জন্ম তাঁকে আদালতে
সোপর্ক করবার লক্ষ্ম তিনি উন্ধিতন কর্তৃপক্ষের নিকট স্পারিশ করেছিলেন। ডেপ্টি সাহেবের কাছে এই অন্ম তাড়া খেলেও তাঁর
ধারণা হরেছিল বে, এই বিবার ডেপ্টি সাহেবকে সাম্রিষ্ট পক্ষের কেহ
ভূল ব্বিরে থাকবে। তথনও পর্যন্ত এই তক্ষণ অফ্যারের ধারণা
ছিল বে, এঁরা ভূল করলেও অন্যার করেন না। এক্ষণে তার
বড়বাবৃক্ষে এইরপ এক উল্জি করতে ভনে অবাক হরে সে বলে উঠলো,
'লে কি স্থার! কি বলছেন আপনি। তা'হলে সব জেনে-ভনেও
আপনি এই বক্ষম একটা অভারের সঙ্গে আপোষ করবেন।'

'আরে থামো হে ছোক্রা' 'থ' থানার বড়বাবু স্থীর ঘে'ব স্বেহস্চক স্বরে উত্তর করলেন, 'জীবনে প্রতিষ্ঠা অর্জন করতে হলে তোমাকেও এইরপ অস্তারের সঙ্গে বারে বারে আপোর করতে হবে। ক্ষেপে না, আমাদের অতোবড়ো ছর্ম্ব বড়ো সাহেব পর্যন্ত চুপ করে গেলেন।' সামান্ত দারোগার পদ হতে দলৈ: শলৈ: উঠে তাকে বড়সাহেব হতে হয়েছে ব'লে এসব পাাচ তাঁরও জানা আছে। এই ক্ষেত্রে চুপ করে থাকা ছাড়া আর উপায়ই বা কি ? 'লপর দিকে ডেপ্টি সাহেবকেও সব কথা না জেনে দোর দেওয়া যার না। এমনও হতে পারে বে, আরও ভবরদন্ত কোনও মহল থেকে অমুরোধের নামে ভার উপর এই ব্যাপাকে আদেশ এসেছে। এই সভাব্য মহল স্বরং হারবাট সাহেব হতে পারেন।

টেবিলের এক কোণে একটি বেঞ্চির উপর ক্ষুম মনে বসে জোড়াপুকুর থানার থার্ড অফসার চিরঞ্জীব বাবু এতক্ষণ নিবিষ্টমনে এদের এই সব কথাবার্তা তুলছিলেন। এইবার 'ব' থানার বড়বাবু ক্ষীর ঘোবের কথার সায় দিয়ে তিনি বলে উঠলেন, 'ই্যা তার। আমাদের বড়বাবু মহীক্র বাবু এবং আমাদের থানার সেকেও অফসার প্রেণব বাবুও এই একই কথা বলেন। তাঁদের এই সব যুক্তির সক্তাতা সক্ষে বারে বাবে আমি প্রমাণ পেরেছি, কিছ তা সত্তেও তাঁদের এই-সব ক্থায় আমার মন সায় দিতে চায় না।'

'আ:, তোমরা ছ'জনেই দেবছি ছেলেমান্ত্য! এই সবে তো কলেজ থেকে বের হয়ে এসেছো। প্রথম প্রথম একটু অপুনিধে হবে বৈ কি', নির্কিকার চিত্তে প্রথীর বাবু উত্তর করলেন, 'কলেজে এ-জন্ত ভোমাদের বা লার্গ করেছো তা এখানে আনলার্গ করতে হবে। ব্যক্তে? বাক, ও-সব কথা। এখন বলো, তুমি এখানে এসেছো কেন?'

চিরজীব বাবুকে তার গাকলতির জন্ত তেপুট সাংহবের নিকট পেশ করবার জন্ত বড় সাহেব তাঁর থানার বড়বাবুর উপর আদেশ করেছিলেন। চিরজীব বাবু তাঁলের হকুম অন্তবারী ঠিক সময় মতই বিপোট-ক্ষমে এসে গিরেছে, কিছা বে তাকে এ সাহেবদের কাছে পেশ করবে, সেই বড়বাবুরই তথনও পর্যন্ত দেখা নেই। কাল বাত্রে তিনি কোন নিমন্ত্রণ পার্টিতে নিমন্ত্রণ রক্ষা করতে গিহেছেন, কিছ তথনও পর্যন্ত তিনি থানার বা রিপোর্ট-ক্লমে এসে উপস্থিত হতে পারেন নি। এই জন্ম বেশ একটু চিন্তিত মনেই চিরঞীর বাব প্রত্যান্তরে 'খ' থানার বড়বাবুকে বললেন, 'আমাকে আজ বিপোর্টে বড়সাহেব পুটজাপ করবার জন্ম বলেছিলেন। কিছ বিনি আমাকে তথানে পুটলাপ, করবেন, সেই বড়বাবু তো এবনও এলেন না! ওদিকে আমাকের সেকেণ্ড অফ্সার প্রণব বাবু কটকে সাক্ষ্য দিতে গিরেছেন। আজ সন্ধ্যার আগে তিনিও ফ্রিডে পারবেন না। থানার এখোন আমি একাই আছি। এদিকে তো আমাদের ধানার ডাক পড়লোবলে। এগোন কি করা বার বলুন তো প্রাকৃ।

চিঃজীব বাবুর আশংকা অমূলক ছিল ন। করেক মিনিটের মধ্যেই রিপোট-ক্লম হতে বড় সাহেব ডেকে উঠকেন, 'নে আই ম্যান। ৪ ধানা—আ।' বড়বাবুর হাক-ডাক অমূলরণ করে দক্ষার সিপাহীটিও চেটিয়ে উঠলো। হজুর ! 'ঙ' খানাকে; ডাক হয়। 'ঙ' খানার বড়বাবু গ্রহাজির থাকার আর দেরী না করে চ' খানার বড়বাবু ফাগলপত্রসহ রিপোট-ক্লমে চুকে পড়ামাত্র হস্তবন্ধ হয়ে জোড়াপুকুর খানার বড়বাবু মহীক্র বাবু সেখানে এসে উপস্থিত হলেন। চোপ হটি তার তখনও পর্যান্ত লাল টকটক করছে রাত্তি জাগরণের ফ্লান্তি তবনও পর্যান্ত গ্রান্ত আছে। আর দেরী না করে তিনিও কাগলপত্রসহ রিপোট-ক্লমে চুকে পড়লেন।

'ইউ আব দেই' ভীষণভাবে থেঁকরে উঠে ডেপুটি সাহেব জিজাসা করপেন, 'এতোকণ কোথায় ছিলেন ? কোনও কাগজপত্ত আপনাব আক আমি দেখবো না। দূর করে ফেলে দেবো ওওলো। আমি আপনাকে সাসপেও করবো।'

ঠা তাই করবেন ভাব।' বিনীত ভাবে মই দ্রু বাবু উত্তর করলেন, আপনার দেওয়া ভাষ্য শান্তি আমি মাধা পেতেই নেবো। কিছ একোন এই সব আসামী ও কাগজপত্তের ভো একটা প্রবাহা করতে হবে।'

নিয়ে এসে ওগুলো এদিকে, অধিকতর বিরক্তির সহিত মহীস্র বাব প্রানত কাগজগুলির উপর তুকুমনামা জারী করতে করতে ডেপ্টি সাহেব জিজাসা করদেন, 'কোধায় ভূমি এতোক্ষণ ছিলে, এতো দেবীতে এখানে আসা হলো কেন?'

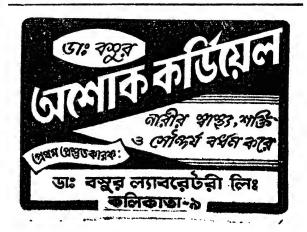
হাঁ। তার, সেই কথাই আপনাকে এখোন বলবোঁ, নিচিও ভাবে মহীস্র বাবু উত্তর করলেন, তার, আপনি জানেন ধে ফামেলী এখানে রেখে আমার সেকেও অফদার কটকে সাক্ষী দিতে গিরেছে। এখোন হঠাই আল সকালে তার স্ত্রী সন্তান-সন্তাবনা হয়ে উঠা^{ত ন}, তার বাড়ীতে অহ্য কোনও পুরুব লোক নেই। ভাই আমা^{কেই} তাকে হাসপাতালে দিরে আসতে হলো। আর এফটু দেরী হলে ভন্তমহিলাকে তার সন্তানসহ বিচানো সন্তব হতো না।

এর পর আর কারুর কোনও কথা বলা চলে না। বেশ এক গ্র অপ্রতিত হরে ডেপ্টি সাহেব বলে উঠলেন, 'তা এডোক্ষণ তা বলোনি কেন?' বিজয়গর্বে মাধা উঁচু করে বড়বাবু উত্তর দিলেন, 'আপনি ভো তা শিক্ষানা করেন নি আমাকে।' ডেপ্টি সাহেবকে বেশ একটু অপ্রত্তত করে দিয়ে মহীক্ষ বাবু বেষন বেগে বিপোর্ট-ক্ষে প্রবেশ করেছিলেন, আগোছাল কাগৰপত্রগুলি গুটিয়ে নিয়ে তিনি তেমনি বেগেট সেই খন হতে বাব হয়ে এলেন। নিয়ম মত বিদারের পুর্বে পুলিশী প্রধামত গোড়ালির সহিত গোড়ালি ঠুকে শাভয়াঞ্চ ভুলে সেলামটুকু করবার সময় ব্যতীত আর একটু সময়ও তিনি সেধানে অতিবাহিত করার প্রয়োজন মনে করলেন না। কিছ ভবিতগভিতে পাশের খবে ফিবে এসে সেধানে চিবঞ্জীৰ বাবুকে উপবিষ্ট দেখে ভিনি 440 প্তম্ভ খেরে গেলেন। অক্ট স্বার তার মুখ হতে বার হরে এলো, ভাইতো! চিরঞ্জীব বাবুকে ভো আজ পুট-আপ করা হলো না! কিছ ততক্ষণে বিপোটের কাল-কর্ম দেরে ডেপুটি সাহেব অভ কাজে বেরিয়ে গিয়েছেন। সেধানে একাকী বসে আছেন বড় সাহেব রমেশ রার। বড় রিপোটের পর তিনি দেখানে এইবার ছোট বিপোট বসাবেন। এই ছোট বিপোটটি তাঁব একছত্র ক্ষমতা দেখানোর জন্ত সম্প্রতি সৃষ্টি করা হয়েছে। তা ছাড়া তিনি এই জোডাবাগানের প্রাসাদোপম বাটীর খিতলে সপরিবারে বাস করেন। একটু দেরী করে উপরে উঠলেও তাঁর ক্ষতি নেই। অগত্যা বড়বাবু মহাস্ত্র বাবু চিরঞ্জীব বাবুকে বড় সাহেবের এই ছোট রিপোটই পেশ करत निरमन। 'रकन अँरक राष्ट्र विरमार्टी राम करा श्वानि,' हिन्नकीर বাবুকে দেখানে দেখা মাত্ৰ বড় সাংহ্ব মহীক্স বাবু চীৎকার করে বলে উঠলেন আমি আনতে চাই কচুবীগণিতে জুয়া বন্ধ হবে কি না 🏾 জানো, আমি জেড়াবাগানে একটা সিংহ বসে আছি। এখান হতে ছকার দেবো আর জামার অধীনস্থ ছ'টা থানা কেঁপে উঠবে ধর-ধর-ধর, চালাকী পেয়েছো ভোমরা ?'

'যাক্গে ভার ৷ এবাবের মত ওকে আপনি মাপ কবে দিন, অমুরোবের স্বরে বড়বাবু মহীক্র বাবু বড় সাহেবকে বললেন, কচুরী গলিব ভাব আমি নিজে নিলাম। আমি কথা দিছি জুয়া ওবানে বন্ধ হবে।' 'দেখুন এখানে আমি শাসন করতে এসেছি। কাউকে মাপ করবার জন্তে এখানে আমি আসিনি', পুনরার চীৎকার করে উঠে বড় সাহেব বললেন, পেলে কিছু আমি কাউকেই ছাড়বো না, ভা দে ৰভো বড়ো লোকই হোন না কেন'। কিন্তু বড়বাবু মহীন্ত্ৰ বাবুর অন্তরোধে পরিশেষে বড় সাহেবকে চিরঞ্জীব বাবুকে মাফ করে मिटि इला। महोस वायू अहे तम मिन ह हिल्मन वर्ष मारहरवयहे अक সমপর্যায়ের সহক্ষা। ভাগাগুণে বড় সাহেব রমেশ বাবু পেয়ে বড় সাহেব হরে বসেছেন। তাঁরা পরস্পর প্রস্পারের দোব-গুণ ও তুর্বসভা সম্বন্ধে সর্বনাই সচেতন ছিলেন, ভাই বড়সাহেবের পক্ষে চির্ঞীব বাবুকে বা বলা বায় তা বড়বাবু মহীক্স বাবুকে বলা বার না। আদলে মহীক্স বাবুর সহিত ক্চুমাগলির সম্বন্ধ বড়দাহেবের অঞানা ছিল না। আপাততঃ তিনি বি'কে মেরে বৌকে শিক্ষা দেওবার প্রণালীটা বেছে নেওয়া সমাচীন মনে ক্ষেছিলেন। এইজ্জ বড়বাবুর শেষ কথাটি ওনে আৰম্ভ হবে তিনি চিন্নঞ্জীৰ বাবুৰ সহিত বড়বাবুকেও ক্ষমা কৰে উঠে গেলেন। শাসনকাৰ্য্যের বিবিধ পাঁচের মধ্যে ইহাও বে একটি পাঁচি মাত্র ছিল ভা কিছ নবীন অফিসার চির্জীব বাবুৰ মনের অগোচরেই বয়ে গেল।

বতকণ বড়সাহের বিপোট-রুমে উপস্থিত ছিলেন তভক্ষণ টিবলীব বাবু নেথানে শাস্ত হরেই দাঁড়িরে ছিলেন। কিছ বড়সাহের ছান পরিভাগে করা মাত্র তাঁর চোধ ছ'টো হতে বার-কার করে জল গড়িরে পড়লো। কোন্ডে ও অপমানে তাঁর কঠ কর হরে এংসছে। তাঁর এই অবস্থা দেখে ব্যবিত হবে পার্য-তাঁ ব' থানার নবীন অক্যার হারালাল বাবু তাঁর কাছে এসে দাঁড়ালো। কিছ বন্ধুকে সাস্তনা দেবার কোনও ভাষাই তাঁর মুখে এলো না। অবস্থা বুঝে বড়বাবু মহীক্র বাবু এসিয়ে এসে চিন্নজীব বাবুর পিঠের উপর বীরে হাত বুলাতে বুলাতে সাহ্তনার স্বরে বলে উঠলেন, 'আরে এতে আপলোর করার কি আছে। এসো, আমরাও থানার কিরে নাচেওয়ালা অক্যারদের আর দশজন পাবলিককে বিশটা গাল পেছে দেবো আবুন। এতে আমাদের মনের শান্তি কিরে আসবে এবং নেই সঙ্গে রাত্রে ভালো ঘ্মও হবে। দশটা গাল থেমেছি বিশটা গাল দেবো। এতে আমাদের বরং দশটা লাভ থেকে বাবে। এসো, মন থারাপ না করে চলে এসো।'

চকুগজ্জা ও আত্মসম্মানের অভাব নৈতিক অসাড়ভার অভতম কারণ। এই চুইটির অভাব ঘটলে মানুষ আর মানুষ থাকে না। সে তথন পশুরও অধম হয়ে উঠে। বার নিজের আত্মসম্বান ক্রান নেই সে পরের আত্মসম্মানের মর্য্যাদা কথনও দিকে পারে না। निर्पाय सनमावादनरक बृहेबूहे शान (मध्या सनदारवरहे मामिन। এই বিশেষ ক্ষেত্রে অবিবেচক উর্দ্ধিতন অফসাররাও এই অপরাধের জন্ত দাহী কিনা তা বিবেচ্য। কারণ, অধ্যান অফসারদের মধ্যে আত্মসমানবোধের অভাব বটিবে তারো তাঁদের জনসাধারণের বদ্ধ না করে শত্রুই করে ছুলে থাকেন। কিছু এই সকল কথা এই সকল ক্ষাতায় আসীন ব্যক্তিদের বুঝিয়েই বা দেবে কে ? স্ববিধালনক স্থানে অবস্থান করার জন্ত তাদের এই সব তত্ত্বধা কার্যর পক্ষে বুঝিরে বলা সম্ভবও ছিল না। অগত্যা অফিদাররা সকলে মান হাসি হেসে একে একে বিপোর্ট-ক্লম পরিভ্যাগ করে বে বার খানার ফিরে আসতে স্থক করে দিলেন। এখন ভাদের একমাত্র চিস্তা ছিল স্নানাহার সেবে কিছুক্ষণ বিশ্রাম করার। বিশ্রামের শালসার তাঁদের সারা অঙ্গ ভরপুর হয়ে উঠেছে। অংশ বনি অভ কোনও মামলার সংবাদ ভাঁদের এই কঠাজিত বিশ্রামটুকুর ব্যাঘাত না খ্টার তবেই। আঞ্জকের মত খেন তাঁদের স্কলেরই চাকরী রইলো। **শক্ত শ**রীরে তাঁর। বে বার বাসার ফিরে খেতে পারছেন! তাই काँदमय भा (धन कांत्र हरण ना । ক্ৰমশ: ।





ভবানী মুখোপাধ্যায় সাভাশ

হা বিস বলেছেন, বাৰ্ণাৰ্ড শ' Back to Methuselah নাট্য-চক্র একেবারে অন্তরের প্রেরণার লিখেছেন। তাঁর The Philanderer बाहेक खाकि श्रीलव कांशिए विकि. त মঞ্চ করতে পারেনি। মিসেস সিজনী ওরেব 'কিলানভারার' নাটকের উৎকট-বৌনকুধা পীড়িত নারীতে বিবৃক্তি প্রকাশ করে বার্ণার্ড শ'কে বলেন আধুনিক বুগের অ-বোমাণ্টিক কঠোর এমী বাস্তব वस्तीव कृषि औं कृत, ठांव चाटाइ म' निश्चात Mrs. Warren's Profession. সেনসর তার কঠবোধ করল। পুরাতন এগালিয়া বিষেটাবের দবজা বন্ধ হওয়ার উপক্রম, ভাই মিলেস চর্বিমান ও লোৱেন কাৰকে বাঁচানোৰ জন্ম লেখা হল Arms and the Man, ভাবেট ভাচাচ-এর ছব্ত লেখা হল Candida। এলেন টেবীও বিচার্ড মানস্ফীলডের অন্ত লিখিত হার্ডিল The Man of Destiny এঁরা কেউ শেষ পর্যন্ত এই নাটকে অভিনয় করেন নি। সিডনী श्राप्त नामकृत् करवृद्धित्वन You Never Can Tell नाहित्कत, সিবিল মাডের জন্ত এই নাটক লিখিত হয়, কিন্তু ভূমিকা বন্টনের লোবে, বিহার্গেলের পর এই নাষ্ট্রক তথন অভিনীত হয়নি। दिशीन अ भागनम्मेन एवं प्रश्न The Devils Disciple निविक इद बदः चारमविकांत्र थहें नांद्रेक विवाहे जाकनानांख करत्। क्यादम-बर्वार्रमस्त्र क्य Caesar and Cleopatra निधिष्ठ ছয়। স্থামলেট প্ৰতিনয়ের পর এই নাটক তার খ্যাতিবৃদ্ধি করে। প্রথম পৌত্তের জন্মের পর এলেন টেমী বার্ণার্ড দ'কে বলেন বে পিভাৰতীৰ ভক্ত কে আৰু নাটক লিখবে, এই কথাৰ বাৰ্ণাৰ্ড দ Captain Brassbound's Conversion नाहिक बहुना करवन। Pygmalion नाहेक वृद्धिक क्व बिरनन न्या क्रिक क्यांमरतस्त्रव আছ। ভেতাৰ্থে—প্ৰান্তিল বাৰ্কাবেৰ আৰু John Bulls Other Island a Androcles and the Lion () | Apple Cart निविक इत जात गांती जाक्त्रात्व वक । च्रवताः वह সৰ নাটকের একটিও বার্ণার্ড ল' ল-ইন্মার লেখেন মি।

লিখেছিলেন অনুকৃত্ব হয়ে, প্রায়েজনের খাতিরে। ইণিত্ব ছারিগ প্রায় করেছেন বে ভাগিদে না পড়লে কোনো দিন বার্ণার্ড শ' এই সব নাটক লিখতেন কি না সন্দেহ। Man and Superman, Heart break House, এবং Back to Methuselah এই ভিনধানি নাটক বার্ণার্ড শ' অন্তরের ভাগিদে রচনা করেছিলেন। অবগু বার্ণার্ড শ'র সব নাটকই সাফল্য অর্জন করেছে, এখনও সেগুলি মঞ্চ হলে দর্শকের সপ্রশাস অভিনশন লাভ করে, কত দিন করবে সে কথা ওয়ু মহাকালই বলতে পারেন।

Man and Superman নাটকে বাৰ্ণাৰ্ড শ' creative evolution বা স্ঞানুস্ক বিবৰ্জনবাদের ইন্সিড করেছেন, তাঁর Back to Methuselah নাটকও এই স্ঞানীমূলক বিবৰ্জনের শাব এক অভিব্যক্তি।

১১২০ প্রচাম্বে ভঙ্গিনী সুসীর মৃত্যুর পর বার্ণার্ড শ'ব জীবভাত্ত্বিক পঞ্চান্ধ Back to Methuselah নাটক বচনা শেব হর, বার্ণার্ড শ' এই নাটক Metabiological pentateuch অর্থাৎ জীবভাত্ত্বিক পঞ্চান্ধ নাটক। এমন এক বিচিত্র বিবর্বস্ত নিয়ে নাটকের পরিকল্পনা করাই কঠিন, লেখা আবো শক্তা সন্দেহ নেই। স্থভরাং বার্ণার্ড শ'ব নিজের মতে এই উবে সর্বপ্রেট বচনা, লে কথা অপবে অবশ্র স্থীকার করতে নারাজ। এই নাটক অভিনয় করতে ভিনটি রজনীর প্রেরোজন। এমন একটি নাটকের প্রবেজনা করতে প্রচুর অর্থ, প্রচণ্ড সাহস এবং অপরিসীম উৎসাহের প্রবোজন।

Heart break House নাটকের জাজনয় দেখে বখন জাজিলয় প্রফুল্লচিত্ত বাণার্ড ল' ফিরছেন তখন ভার ব্যাবী জ্ঞাকসন ষ্টেশনে অংশফারত বাণার্ড ল'কে অফুরোধ করলেন এই নাটকাজিনয়ে অফুমতির জন্য। বার্ণ র্ড ল' সেদিন বলেছিলেন—ভোমার পরিবারবর্গের জন্য উপযুক্ত ব্যবস্থা আছে ভ ?

তার বারী লাক্সন তাঁকে আখন্ত করার-বার্ণার্ড দ' বললেন, ভথাত্ত। কাজ ক্ষুকু হল, বিহাসেলৈ হাজিব থাকতেন বাৰাৰ্ড শ'। শারীরিক ক্লেশ উপেক্ষা করেও তিনি বথাসমরে হাজির হতেন। প্রার ত'মাস লাগল এই নাটকের মহলা শেব করতে। ডেস বিহার্গেরে সম্ভ অফুর্চানে হাজির থাকভেন বার্ণার্ড শ'। ১১২৩-এর ১ট থেকে ১২ট অক্টোবর পর্যস্ত তিন দিনে নাটক অভিনয় হল, লেব ব্বনিকাপতনের পর অথও ভবতা বিরাদ করতে লাগল, তারপর করতালি এবং প্রশংসাধ্যনিতে রুক্মঞ মুখবিত হয়ে উঠল। 'The Times' পত্ৰিকাৰ সমালোচক "মি: শ' বথন এলে গাড়ালেন তথন তাঁকে যে ভাবে অ'ভনশিত করা চল তা সাধারণ গ্যালারীর অভিনন্ধন নর-চাপা আহেগের সংক্ষিপ্ত, আক্ষিক এবং অনিচ্ছাকৃত উচ্ছাদ। কোলো বল্পণে এমনটি আর দেখা বাহনি। বার্ণার্ড ল' সাধারণত: এই জাতীর উচ্চাসে সাড়া দেন না, এই দিন তিনি একটু বফুডাও দিলেন, বললেন—লেধক হিসাবে আমাধ স্থান কোথার ভা জানি, লেথকের স্থান বলমকে নয়। বলমক শিল্পীদের আসন, তারা লেখকের স্ষ্টিকে প্রাণদান করেন, রুপদান করেন, এঁহাই লেখকের স্টির প্রাণ-প্রতিষ্ঠা করেন। আরি আমার নাটকের অভিনয় দেখলাম,



তাঁবা থকে সঞ্জীবিত কবার আগে তারা ছিল, কিছ শিল্পীরা তাদের প্রোণ দিলেন। একটি প্রশ্ন কবার আছে, আমার করেকজন অন্তরজ বন্ধু ছাতা বার্মিংহামের অধিবাসী কেউ কি দর্শকদের মধ্যে আছেন ? এ আমার জীবনের এক অপূর্ব অভিজ্ঞতা। আমি গত চারদিনে পাঁচটি অপূর্ব অভিনর দেগেছি, আশুর্ব কাশু বার্মিংহামেই তা ঘটলো। আমি জানি, এই ধবণের নাট্য অভিনরের পক্ষে পৃথিবীর এক অসম্ভব অঞ্চল হিসাবেই বার্মিংহামকে জানি। তাই প্রেশ্ন করি আপনারা কি এখানে আগছক, না তীর্থবাত্রী, না এর ভিতর ত্ব-একজন বার্মিংহামবাসী আছেন? আশুর্কর বার্মিংহামে ঘটলো শেক্ষকিজনের সহবোগিতা ভিন্ন এই বিশ্বরকর ঘটনা সম্ভব ছিল না।

মা ইবর্কের স্যারিক খিবেটারে Back to Methuselah व्यथम चिनीक इस ১৯२२-वर २९८म क्व्याबारी। मधाइयानी অভিনয়, কিছু আমেবিকান দর্শকের কৌতৃহল অপবিদীম চলেও এক সপ্তার ধরে হাতের পর রাভ অভিনয় CHATA व्यवित्रीय देशी डाँएक्व (नहे। धहे नांद्रेक स्रमला ना. থিষ্টোর গিসভ অসফল অভিনয়ের 44 প্রায় বিশ ছান্তার ডলার ক্ষতি স্বীকার করছে ছল। এই তঃ সংবাদে বার্ণার্ড দা বিচলিত হয়ে পড়লেন। তাঁর ব্রন্থ কারে। ক্ষতি চর, এ তাঁর কাছে ছঃৰকর। ধিষেটার গিভের অব্যতম কর্মকর্তা লবেল লামোর জাঁকে বোঝালেন, ন' সপ্তাতের অভিনৱে বিশ ভালার ভুগার ক্ষতির অর্থ বিচার করে দেখলে সার্থক ভরেছে. প্লাবিক খিয়েটার আয়তনে ছোট, বদি এর বিগুণ আকারের কোনে: প্রেকাপর পাওয়া বেত ভারলে ক্ষতির চাইতে লাভই হত। স্মতরাং এই লোকসানকে ক্ষতি হিসাবে গ্রহণ করা ঠিক হবে না। ভাছাতা এই ক্ষতিপুৰণ কৰে, বে সৰ সাজ-সৰ্জাম জামৰা তৈবী কৰেছি তা चार्वाद वावजाद करा शांद्य, बिरहहे।द शिन्छ-अद क्या हिस्सिक मह ।

বিশ হাজার ওদার লোকসান দিরে কোনো সম্প্রদারই নাটাকারকে এই ভাবে আখাস জানিয়ে পত্র দেয় না। ভাই আমেরিকান ম্যানেজার সী সুবার্ট বার্ণার্ড দ'কে বখন অমুযোগ করে লিখেছিলেন, আপনার দাবী কিকিং বেশী। তখন বার্ণার্ড দ' জবার দিরেছিলেন—আমার নামের দামই দশ হাজার ওদার। থিয়েটার গিলভের ত্রিশ হাজার ওদার কভি হওয়ার কথা, সেই জারগার তাঁদের মাত্র বিশ হাজার ওদার কভি হরেছে, তাহ্লে লাভ ইল দশ হাজার ভদার! তথু আমার নামের গুণ!

বার্ণার্ড ল'ব অকান্ত নাটকাবলীর মন্ত Back to Methuselah বচনাকালে অনেক বার পরিবর্তিত হয়েছে। ২৫শে জুলাই ১১১৮ তারিখে তিনি লিখেছেন—লামি একটি নাটক লিখেছি বার হাটি অকের মধাবর্তী বিবতিকাল হাজার বছর; এখন কিছু মনে করছি প্রতিটি অককে স্থানস্পূর্ণ নাটকে রূপারিত করব।

Back to Methuselah নাটক সম্পর্কে লবেন্স লাগোর বার্ণার্ড শ'র কাছ থেকে এমন জনেক স্থবিধা লাভ করলেন বা জার কেউ পার নি। এই বিষয়ে জ্বত নেপথা থেকে সাহার্য করেছিলেন, শ'-পুহিনী সালেটি। সালেটের মন্তামতের একটা বিশেষ মূল্য বার্ণার্ড শ' চিরদিনই দিয়েছেন। Back to Methuselah এক সঙ্গে পাঁচটি নাটকের মালা, বেন পাঁচনথী হাব. লানোর এটিকে ছোট করতে চাইলেন, The Tragedy of Elderly Gentleman অংশটি তিনি বাদ দেওয়ার প্রস্তাব জানিরে বললেন—এটা অভি বিলম্বিত অংশ, প্রোতাদের কাছে এটা বিশেষ ভাব মনে হয়।

অতি কৃষ্ঠিত ওলীতে এই কাট্টাটের প্রস্তাব নিবেদন করকেন লাংনার। বার্ণার্ড শ'এই জাতীর প্রস্তাব গুনলে চিরদিনই ক্ষিপ্ত হয়ে উঠতেন। দেউ জন আর্ত্তিন বলেছেন, তিনি ল্যাংনারকে উপ্দেশ দিলেন, ভূমি নিঃশৃকে কেটে বাদ দিবে অভিনয় করে।।

উত্তরে সাংনার বসঙ্গেন—ফুা ইয়র্কে বার্ণার্ড শ'র জানৈক ভক্ত মহিলা আছেন, তিনি প্রতি রন্ধনীতে এক এও নাটক হাতে নিয়ে উপস্থিত থাকেন, কোনো অভিনেতা ভূল করে এক লাইন বাদ দিলেও তিনি বার্ণার্ড শ'কে তা লিখে পাঠান।

বার্ণার্ড শ' সাংনাবের প্রস্তাব শুনে এই বিষয়ে তাঁর যে নিজম্ব নীতি আছে তা বলতে ক্লক করলেন—

সালে তি বললেন—ভোষার Elderly Gentleman কি বলতে চান তা হয়ত মার্কিণ প্রোতারা শুনতে রাজী নন। জন নক্স সম্পর্কে একটা অদীর্ঘ অংশ আছে, ইংরাজ প্রোতারাও হর জাঁর বিষয় কিছুই ভানেন না—

লানোর এই কথা সমর্থন করলেন। তথন বার্ণার্ড দ' এই প্রস্তাব গ্রহণ করলেন এবং লাংনাবের আশাতীত অংশ বাদ দিছে রাজী হলেন। লাংনার বলেন, স্বটা বাদ দিলেই নাটকটি আরো অস্তব্যক্ত হত।

আইবিশ্ শতাকীতে ডারউইন লিখেছিলেন—The thinking few in all ages have complained of the brevity of life, lamenting that mankind are not allowed time sufficient to cultivate Science, or to improve their intellect—ভার দীর্ঘ দ্রীবন লাভের উপায় হিসাবে বিধান দিরেছিলেন সন্তাহে ছ্বার গ্রুম ছলে স্নান। বার্ণার্ড শ'রও ধারণা মানুবের জীবন অভিশ্ব ক্ষণস্থায়ী। তবে দীর্ঘ জীবন লাভ করলে মানুবের অভিক্রতা বৃদ্ধি হবে তা নয়, তাঁর ধারণা বেশী দিন বিন বাতে ভারণে অভে: তাদের নিজের অবস্থার উন্নয়নে কিঞ্ছিৎ সচেই হয়, জীবনের স্থায়িত কম বলেই মানুবের এই চিন্তা করার ভক্ত উপলব্ধি করে না। জীবনের অভিক্রতার উপর মানুবের আচরণ নির্ভরশীল নয়, তার স্থায়িত্বের প্রত্যালার তার সম্প্র কর্মসূচী নির্ধারিত হয়।

দীর্ঘ দিন ধরে বার্ণার্ড ল' কোনো আণকর্তার (Prophet) বিষয় নিয়ে নাটক লেখার চিন্তা করছিলেন। নিজের প্রফুতির সঙ্গে মিল খাইরে এমন এক সংগ্রামী সপ্তপুক্ষরের চরিত্র চিত্রণ করবেন বা অবিশ্বরণীর হবে। বার্ণার্ড ল'র মানসিক্তার দিক খেকে এই নিক খেকে আদর্শ চরিত্র হবেন ধর্নজ্ঞ মহম্মদ। ফরবেস-রবার্টসনের জন্ম এমন এক চরিত্র স্পষ্ট করার চেষ্টা করেন ১৯১৩ গুরীকে। সেনসর সংক্রান্ত পার্লামেন্টারী কমিটির কাছে এই প্রস্তাব নিবেদনও করেছিলেন। বিশ্ব ভুকী বাষ্ট্রপৃতের কাছ খেকে সন্তাব্য প্রতিবাদের আলক্ষার মহম্মদের জীরনকে

নাট্যরণ কেওবার বাসনা তাঁকে ত্যাগ করতে হয়। কিছ প্রকেটর প্রিকল্পনা তাঁর মাথা থেকে নামলো না, Back to Methuse-lah চরিত্রের Elderly Gentlemanই—এই প্রকেট, a truly wise man, for he founded a religion without a Church। The Adventures of the Black Girl— গ্রহে লেখক ব্রহ উপস্থিত, আর Saint Joan-এ কসেন এই প্রস্কই ভূলেছেন। কিছ Prophet চরিত্র নিয়ে নাটক লেখা অতিশর বিপক্তনক, পশ্চিমে বীশুচরিত্র নিয়ে নাটক লেখা চলে না, প্রাঞ্চল মহম্মদ-চরিত্র নিয়ে নাটক লিখলে হস্ত ঘাতকের ছুরি ব্কে বিশ্বর। তাই বার্গার্ড শু' Saint Joan নাটকে হাত দিয়েছিলেন।

লামার্ক এবং সামুবেল বাটলাবের কাছ খেকে একটি বিখাস বার্ণার্ড শ'র মনে বন্ধুল হরেছিল, মামুব বদি দৃচ্চিত্তে কোনো বিবর মনে মনে চিন্তা করে তাহলে তার সব বাসনা পূর্ণ হয়। সামুবেল বাটলাবের Life and Habit গ্রন্থে এই তন্ধ আছে। বা কিছু অভ্যন্ত তার সমস্যা মানবমনে একটা নিদারুল সংশর উদ্রেক করে। ঈশ্বর বদি সর্বশক্তিমান ভাহলে পৃথিবীতে এত বেগনা, আলা, দাবিজ কেন? তিনি ত সব কিছুই দ্ব কবতে পারতেন। তিনি সর্বজ্ঞ, একথা বদি সত্য হয়, তাহলে এত পাপ, অনাচার, অভ্যন্ত, অভাব ও দারিজে-পরিপূর্ণ পৃথিবী কেন স্ক্রী করলেন? সাধারণ মামুব বে প্রশ্নের কোনো উত্তর নেই, বে সম্বায়র সমাধান নেই, তা নিরে মাথা খামার না, বার্ণার্ড শ' আজীবন সেই প্রশ্নেরই জবাব খুঁজে বেড্রেছেন।

বার্ণার্ড শ' ব'লছেন, অভীতে সভাতা বাব বাব হাব হাবছে, তার কারণ প্রাচীন পৃথিবীর বাসিন্দারা ঈশ্বের উদ্দেশ্য প্রণে সহাতো করেনি, বাঁরা ধনী তাঁরা সহজাত প্রপ্তি বংশ কেবল প্রার্থনা জানিরছেন জামাদের আহার দাও, পানীয় দাও, কারণ কাল জামরা মারা বেতে পারি (Let us eat and drink; for to-morrow we die) আর বারা দিন্তি তারা কেঁদেছে—হে ঈশ্বর! আর কত কাল কত দেরী? অথচ এর অবকণ উত্তর ঈশ্বর তাদেরই সহারতা করেন বারা নিজেকে সাহায় করে। এর অর্থ এই নয় বে মামুব বিদি সমাধান প্রতি না পার তাহলে আর কোনো সমাধান পাওরা বাবে না। বানর স্পষ্টি আশাজনক হয়নি বলেই উন্নতত্তর স্পষ্ট নরের আবির্ভাব ঘটেছিল, নর বিদ্ আদর্শ মাঞ্চিক নয় নরেভেম স্প্রতিত বাধা কি?

বার্ণার্ড শ'ব সমালোচকদের মতে তিনি এই ভাবে তাঁর শিল্পিসভাকে ক্ন্ন করেছেন, মতবাদকে ভিনি প্রাথান্ত দিরেছেন শিল্পকে
পাশে সবিবে। তিনি বার বার বলেছেন বে মান্ত্র্যকে উন্নততর এবং
প্রজাসম্পন্ন করার বাসনা বদি না খাকতো তাহলে তিনি কোনো দিন
এক লাইনও লিখতেন না। Back to Methuselah নাটকের
শেব খণ্ডে তিনি শিল্পকে আবার স্থ-ক্ষেত্রে প্রভিত্তিত করেছেন।
বার্ণার্ড শ' আজন্ম-সংকারক, তাই তিনি ক্রিরেটিভ এভলুগুনরে
কোনো ক্রটী ধরতে পাবেন নি। সংভারক মাত্রই আশাবাদী, ধর্ম এই
আশাবাদের ভিত্তি—We fail, We die, it does not matter;
the ends we strive for will be attained at last by
those who come after us. The individual is of no
account.

বাঁবা শাস্ত এব স্নিগ্ধ দৰ্শনের পক্ষপান্তী তাঁদের পক্ষে ১৮১০ बूर्णव व्यवसहे बर्लाहे, वार्नार्ड म'त बात किछ भड़ात व्यक्तासन साहे । Man and superman (33.3-0) 43 Back to Methuselah (১১১১) নাটকে বাৰ্ণাৰ্ড দ' বা বলতে চেয়েছেন ভার ভিত্তি অ-বৈজ্ঞানিক। এর কৈফিরং হিসাবে বার্ণার্ড म' অন্তত্ত বলেছেনa passion of which we can give no account whatever-wid Man and superman- for Life-Force সম্পর্কে বা বলতে চেরেছেন অব্য আকারে নতুন রূপে সেই কথা খারো বিস্তাবিত করেছেন Back to Methuselah নাটতে। এই বার ভন্নীতে বৈভভাব, এখানে জীবন (Life) এবং পদার্থ (Matter) এই চুটি দিকট বাল্কবতার ভিত্তি মল। জীবন বধন পদার্থে প্রবেশ করছে তথনই এই মহাজাগতিক (cosmic) নাটকের প্রাণাত, ভারপর সে তরকারি, জীবলম, বিশ্বর প্রভতি পরিচিত বস্তব আকৃতি লাভ করে। প্রথমত: জীবন পদার্থের দাস, ইতিহাসও তাই বলে। কিছু পরম মাত্রুর এই দাসছ-শ্ৰাল থেকে মুক্তির (নির্বাণ) জন্ম সচেষ্ট হর এবং পদার্থ থেকে মুক্তির নামই মৃত্য। আবার সে জীবনের নির্মল প্রোতে ফিরে বার।

সমালোচকদের মতে এই ছটি নাটকই দার্শনিক বজ্ঞব্য ছিসাবে জনার্থক। এই নাটকের মথ্যে বিপরীতমুখী উক্তি এবং প্রচুর কাঁক আছে। চেষ্টারটন বলেছেন। এবই নাম রক্তহীন আছম্মর। না জাগ্ম এর মাঝে থাকলে ভালোই হস্ত। বার্ণার্ড শ' Back to Methuselah নাটকে বে কথা মনোহর ভন্নীতে বলতে চেরেছেন ভার চেরে একজন তঙ্গণতর লেখকের কাছে তাই এক জনহনীর Brave New World হিসাবে ভৃষ্টি হরেছে। (চেষ্টারটন আলভাস হাকসনীর বিখ্যাত উপ্রাস্টির কথাই উল্লেখ ক্রেছেন)—

বার্ণার্ড শ'র মতবাদ বে দীর্ঘ জীবনই পরম মান্ত্রের পক্ষে অন্তর্কৃত্য অবস্থা, সে কথা বিশ্ব সর্বদা সত্য নর, কটিস ছাবিশে বছর বেঁচেছিলেন, তাঁর চেয়ে আরো আনক'দিন এই পৃথিবীতে বিচরণ করেছেন এমন কবির অভাব নেই, কিছু তাঁরা বে পরমাশক্তির অবিকারী হয়েছিলেন একথা জানা বায় না। বে মেথুশেলার কথা বার্ণার্ড শ' বলেছেন তিনি নাকি ১৬১ বছর বৈচেছিলেন, কিছু এই দীর্ঘজীবী মান্ত্র্যটি কি মহৎ কর্ম করেছিলেন কিংবা কি পরম জ্ঞানের অধিকারী ছিলেন তা কেউ বলে না। তত্ম এবং দার্শনিক তিত্তি বাদ দিলে এই নাটকের বিছু থাকে না তরু নাটক হিসাবে Back to Methuselah উপাদেয়। প্রথম থণ্ডের আদম ও ইত্তের কাহিনী চমৎকার!

এই নাটকের প্রতি নাট্যকারের জসীম মমতার কথা জাঙ্গেই বলেছি। তিনি জাঙা বলংছন Man and Supermanই জামার শ্রেষ্ঠ নাটক, কিছ পরে বলেছেন Back to Methuselah জামার সর্বশ্রেষ্ঠ কীজি। তিনি এই নাটক হচনার পর বল্ছেন জামার শক্তি নিংশোবিত। অথচ তথন তার বয়স মাত্র পরিষটি বছর। এর পর ১১২৩এ তিনি Saint Joan নাটক হচনার হাত দিলেন। আটিশা

প্রতিমা গড়ে প্রে করতে হলে একটা মন্দিরের প্রয়োজন, সেইধানেই দেবতা প্রতিষ্ঠা করে শাধ-ঘণ্টা বাজিরে সমারোহ কর। চলে। তার ব্যারী ভাকসন, বার্মিংজ্বাম রেপারট্রী থিরেটাবের অধ্যক্ষ স্থিব করলেন ম্যালভারণেই এমন একটি কেন্দ্র স্থাপনা করা বাক, সেই কেন্দ্রে বার্ণার্ড দ'র নাটকাভিনর করা বাবে। Back to Methuselah নাটকের সাফলামণ্ডিত অভিনয় করে ইভিমধ্যেই তিনি বার্ণার্ড দ'র বিশেব প্রীতিভালন হয়েছিলেন, প্রতরাং সহজেই তাঁকে রাজী করা গেল, ম্যালভাবণ লাগগাটি বার্ণার্ড দ' পছক্ষ করতেন, তাছাড়া তিনি ভাবলেন এইখানে অতীক্তের বিশেষতঃ শৈশবের সঙ্গাক ও শিল্পের বে ইন্দ্রজাল স্পার্শনাভ করেছিলেন, আবার তার স্পার্শনাভ করবেন। সেই আনন্দ্র বা স্থপ্ন লাভ-ক্ষতির হিসার নিকাশের মধ্যে অক্রপ্ন রাধা কঠিন।

তথন বার্ণার্ড শ'র বয়স বাহান্তর পার হয়ে তিরান্তরে পৌছেচে, তাই ম্যালভারণ উৎসব প্রাণে একটা নতুন আনন্দ ও উৎসাহ দান করল, প্রতি বছরই একথানি করে নাটক সিধবেন, বাকী পঁচিশ বছরে পঁচিশ ধানা—(শ'র বিখাস ছিল ভিনি শতারু হবেন) আশা ছিল যে এখানে বাঁরা আসবেন তাঁরা প্রাণে সমান আনন্দ এবং উত্তেজনা লাভ করবেন! জীবনের প্রথম দিকের সমসাময়িক ঘটনার স্পর্শ লাভ করবেন। এত দিনে সারা জগৎ বার্ণার্ড শ'র চিন্তাধারার সঙ্গে পরিচিত হয়েছেন, ঘনিষ্ঠতার ফলে—তাদের আগ্রহ আবো বাড়বে হয়ন্ত।

উৎসবের উপবোগী নাটকের বাগণারে বার্ণার্ড শ'র জান্তিসন্ধি বিবিধ। জনপ্রির সরকারকে হাল্যাম্পদ করার দিকে তাঁর জাগ্রহ ছিল। বার্ণার্ড শ'রাজনৈতিক প্রতিষ্ঠান হিসাবে তাদের সম্পর্কে লজাবোধ করতেন। তাঁর ধাবণা মার্র্য এবং রাজনীতিকদের বা কিছু ধারাণ তাই এর মধ্যে প্রেতিফ্লিত। এর কলেই বিচিত হল তাঁর Apple Cart নাটক। তাঁকে বিবে ধে সমস্ত কুৎসা প্রেচলিত হয়েছিল ভার জবাব দেওরা আর এক উদ্দেশ্য। তাই এই নাটকের কেন্দ্রীর চরিত্র কিং ম্যাগনাস জ্ঞানী এবং চতুর সম্রাট। রাণী উন্নতমনা মহিমমন্ত্রী বম্বা। তবু বালা অপর এক প্রমা স্ক্রেরীর প্রতি আরুষ্ঠ। সালেণ্টি এবং প্যাট্রিক ক্যামবেলকেও এই নাটকেই তিনি রপান্থিত করলেন।

ম্যালভারণে এই নাটক অভিনীত হওয়ার পর বার্ণার্ড শ'র স্ত্রী সার্লোট এবং প্যাটিক ক্যামবেল উভয়েই বিশেষ কুর হলেন। মিলেল বার্ণার্ড শ' নাকি বলেছিলেন—Fools who came to pray remained to scoff.

মিসেদ প্যাটিক ক্যামবেদ জাগে থেকে সংবাদ পেরে বার্ণার্ড শ'কে বলেছিলেন, এক খণ্ড বই আমাকে দাও, পড়ে দেখি। এডিথ ইভান্স ওরিনথিয়ার ভূমিকায় অভিনর ক্রছিলেন। তিনি কাঁকে সংবাদ দিয়েছিলেন বে, তাঁকে নিয়েই বদিকতা করা হয়েছে।

মিসেস প্যাত্মিক ক্যামবেল এক খণ্ড বই সংগ্ৰহ ক্বতে পেৰেছিলেন, বাৰ্ণাৰ্ড শ'কে এই সব 'mischievous vulgarity and untruthfulness' মুছে ফেলতে অমুবেধৰ জানালেন, নতুন ক্ৰে লিখতে বললেন। লোকে বলবে অ-মাত্মিক অহংকাৰে তোমার সাধারণ জ্ঞানটুকুও বিশুপ্ত হ্রেছে।

किष त वार्गार्ड में अवना डेनहेब्राक अक विक्रिय विज्ञक्का करव

কুল্ল করেছিলেন। ভিনি ব্ললেন—'better to have splendid fun than dirty fun.

্ আশ্চর্য, সার্লোট বা প্যাট্টিক ক্যামবেল-এর মধ্যে কোনো বসিক্তা খুঁজে পাননি।

ম্যালভাবণে অভিনয় হওয়ার পর সমালোচকরা উচ্চ প্রশাসায় গগন মুখবিত করে তুলল, কেউ বলে চমংকার, অপূর্ব প্রহসন ! উ চু ধ্বণের বসালাপ। উাকে যেন আবার নতুন করে আবিছার করা হল। ওরিনধিয়া চকিত্র-চিত্রণের স্বচেয়ে বড় লাভ হল এই বে, বার্ণার্ড ল'ব জীবনের গোপন রহস্ম জানার জন্ম জনসাধারণের আগ্রহ বর্ধিত হল। বেধানেই তিনি বেতেন, সেধানে বিপোটাররা ছোটে গোপন তথ্য সংগ্রহের আশায়। সব জেনে-শুনে বার্ণার্ড ল'প্রসম্মিততে এসবের প্রশ্রম্ব দিতেন।

স্থানবত, স্থালোকদেবী, নগ্নদেহ, মুষ্টিবোছা বা চিত্রতারকার সঙ্গে আলাপরত নানা ভঙ্গীতে নানা বিচিত্র পোষাকে তাঁর আকোকচিত্র সর্বত্র প্রকাশিত হতে লাগল। বোনজীবন, শিশুনীবন, যুব-জীবন ইভ্যাদি সম্পর্কে বার্ণার্ড শ' নানা কথা বলতে স্থক করলেন। ফাল্ল হার্বিস বখন জীবনী লেখার প্রস্তাব করলেন ভখন বার্ণার্ড শ' সানন্দে to reveal everything সব কথা খুলে বলতে রাজী হ'লেন। বার্ণার্ড শ' সদত্তে ফ্রাল্ল হারিসকে বললেন, লগুনে এসেই তিনি যে পাঁচখান উপক্রাস লিখেছিলেন তাতে বে যৌন-জ্ঞানের পবিচর দিছেছেন পনেরটি ছেলে-মেরের বাপ হয়েও মায়ব দেই জ্ঞান জর্জন করে না। তাঁর সব অভিজ্ঞতাই আছে এবং বোন সম্পর্কিত বা কিছু জ্ঞাতব্য তা তিনি ক্লেনেছেন। বেদিন থেকে উত্তম পোষাক-পরিচ্ছদ কেনার মত অর্থ উপার্জন করেছেন সেই দিন খেকেই অভিজাত পরিবারের মহিলা থেকে স্থক্ক করে অভিনেত্রীয় পর্যন্ত তাঁর পিছনে লেগেছে।

বখন এলেন টেরীকে লেপা পত্রাবলী প্রকাশ করতে রাজী হলেন বার্ণার্ড শ', তথন একেবারে চরম পর্যারে উঠলো। এলেন টেরীর ছেলে গর্ডন ক্রেগ ভীষণ জাপত্তি করেছিলেন এই সব পত্র প্রকাশ। 'ডেলী-গ্রুকপ্রপ্রেম' পত্রিখার বিপোটারকে এবং আরো জনেককে শ' বলেছিলেন বে ভিনি কোনো দিনই এলেন টেরীকে লেখা পত্র প্রকাশে অমুমতি দেবেন না। এওলারা বার্ণার্ড শ'র জীবনের জার এক দিক উদ্ঘাটিত হল। আরো যে সব অভিনেত্রীদের চিঠি লেখা হয়েছিল জারা এগ্রিয়ে এলেন সেই সব চিঠি নিয়ে, সেগুলির বক্তব্য জারো জন্তবন্ধ, আরো ল্পান্ট। বার্ণার্ড শ' তাঁদের নিয়ন্ত করার চেঠা করলেন।

এই সব কলবৰ ছালিরে সেই Life force এব বালী খেন বালিও ল'কে ক্ষীণ কঠে বলে Fiddlesticks! what a frightful bag of stage tricks। কনাইবল কোম্পানীর জন্ত ১৯৩০-এ বার্ণার্ড ল' তাঁর প্রস্থাবলীর একটা বিশেষ সংস্করণের ব্যবস্থা করছিলেন, সেই সমরে এই কণাটাই জারো প্রভার হয়ে বাজলো। প্রথম জীবনের রচনা পড়তে বলে বার্ণার্ড ল'র সেলিন মনে হয়েছিল তিনি মোটেই বয়সে বাড়েন নি, সেই মহামানব জ্যানজালিয়র লী তাঁকে বেন সমস্ত বিষয়বন্ত দিয়েছেন জার পিতৃদেব কার ল' তাঁকে দিয়েছেন রসজ্ঞান। উভয়ের বিরাট বাজিত্বের কাছে তিনি সেই চিরস্তন শিত।

वावात वा अन्योउरतक श्रष्टावाध कत्कत।



ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড একটি মুপরীক্ষিত স্বাস্থ্যপ্রদ টনিক। পৃথিবীর সর্বত্র স্বাস্থ্যসচেতন ব্যক্তিরা নিয়মিত এটি নিজেরা ব্যবহার করেন ও তাঁদের ছেলেমেয়েদেরও খাওয়ান। ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড এমনসব প্রয়োজনীয় পুষ্টিকর উপাদান দিয়ে তৈরী যা আপনার ও আপনার পরিবারের সকলের বল, স্বাস্থ্য ও আনন্দোজ্জল জাবনের জন্ম বাড়তি শক্তি যোগায়।

ওয়াটারবেরীজ কম্পাউগু অবিরাম কাশি, সর্দি ও বৃক্তে শ্লেমা থামায়। রোগমুক্তির পর হৃতস্বাস্থ্য দ্রুত পুনক্ষরারের জক্ত চিকিৎসকেরা অনুমোদন করেন।



এখন চুরি-নিরোধক ক্যাপ এবং নৃতন লাল লেবেলযুক্ত বোতলে পাওরা বার।

একণে লাল মোড়ক বন্ধ করিয়া দেওয়া হইয়াছে

চমৎকার স্থাত্ব

ওয়াটারবেরীজ কম্মাউও

দেৱন করে নিজেকে স্থ রাখুন



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] স্থানেখা দাশগুপ্তা

সাকাত্মানাভে মঞ্পোষাকটা এমন ভাবেই করলে বেন বাড়ীতে থাকার আব পড়ান্তনা করতে বসারই বোঝায়। আবার হঠাৎ উঠে পাড়িয়ে যদি শাড়ী কাপড়টার উপর চোধ বুলোডে বুলোতে কাউকে ভিজ্ঞাসা করা যায়, যায় না এ ভাবে একটু পার্কটার ঘুরে আসা ? ভবেও বেন কেউ আপত্তি তুলতে না পারে। ছটির দিন সমস্ত সকাস তুপুর বাইরে বাইরে কাটিয়ে ফের সন্ধ্যার স্পষ্ট করে বেরুবার অন্তাই বেরিয়ে পড়বে বাড়ী থেকে, এভো সাহস মঞ্ মৌরীর কাছে রাখে না। এখন বেক্তে হলে একটু কাঁকি দিয়েই বেকতে হবে। আজ একেবারে একুণি না বেকুলে ৰে তার চলতো না তা অবভি নয়। কাল সকালে কলেকে বাবার আগে সে অনায়াসে জ্যাদের বাঙী টাকাটা পৌছে দিয়ে বেভে পারভো; ভার পক্ষে স্থবিধেও ছিল সেটাই। পড়াটা নই হতো না। কিছ প্রথমত টাকাগুলো বরে বেড়াতে হচ্ছে বুকে করে, বিভীয়ত হুঃসময়ে কারু হাতে প্রস্থাশার অভিরিক্ত টাকা তুলে দিতে পারার ভেতর বে একটা আনন্দ আছে সেই আননটা বিছুঞ্চেই বিলম্ব •সইতে চাইছিল না। ভৃতীয়ত ওব ভেতরে এমন একটা চংলতা ছিল বে ওকে স্থির থাকতে দিছিল না। এভোগুলো টাকা ওকে কেউ এভাবে দিছে পারে ও ইচ্ছেমতো টাকা তুলে নেবার বন্ত দিংভ পারে সাদা চেক—ওকে দেবার বন্ত একজনের এমন হাত বাড়িয়ে আসতে দেখার নতুন স্বাদটা কেবলি ওর হাক্ত-পায়ের ভেতর চঞ্চলতার টেউ ভূলে ভূলে বয়ে

চমকলাগা ঘটনার প্রথম পর্বাবে মান্ত্বের অমুভৃতিটা নিজ্ঞির হরে পড়ে। তার কাজ আরম্ভ হয় কিছু পরে। রজতের চেক দেওরা, সেটা দেখা, পড়া, টাকার জর লিখবার শৃক্ত সালা জারগার নরের সার বনিরে বাওরা থেকে, রজতের ওর ব্যাগে টাকা ভবে ওর কাঁবে নিজের হাতে ফলিরে দেওরার সময়গুলো পর্বস্ত মঞ্জুর সমজ্জ অমুভৃতিটাও ছিল ভোঁতা হয়ে। কিছু তারপর তুপুর বেলা বধন বিছানার ওয়ে তার চোধ বুজবার অবসর মিলল তখন জীবনের এই নভুন আখাদনটা বে তার মনকে আলোলিত করে চলছিল লে বিবরে কোন সন্দেহ নেই—তা বতই জালুক মঞ্চু, এমন না—গোণা টাকা রজত দিয়ে খাকে। ভার এই দেওরার মধ্যে কোন বিমর নেই, কোন নভুন্থ নেই। বিশ্বর বদি থেকে থাকে ভো বয়েছে এর এই নেওরার মধ্যে,—বভই জালুক সে কথাটা জানলে যৌরী

পারবার মতো গলার কঠনালী কুলিরে তুলে প্রশাসার ভলিভে বে মাধা নাড়বে ভার সবটাই নির্ভেজাল শ্লেষ বিজ্ঞপ পরিহাস লিকারার শিকার ব্যবার পছতির প্রতি তারিফ। মন এতো ওটা এটা সেটা জানার ধার ধারে না। বরং উপ্টোটা জানতে চার না, জানতে অস্বীকার করে। কে কি রক্ম মাছ্মস্থ ভার চাইভে বড় কথা মনের কাছে মায়ুবের কোন ব্যবহারটা তার কাছে কেমন লাগে। বদরাগী মায়ুবের অহেডুক মেজাজ কী জামাদের মেজাজ থাবাপ করে তোলে না । মুব পুললেই মুব জালগা কথা বলা লোকের অস্ত্রীলভা কী জামাদের মাজিভ ক্তিকে পীড়িভ করে না । তোরামোদকে মিখ্যা জেনেও কী মন খুসী হওরা থেকে বিরত থাকে । মিথ্যাচবিত্রের মায়ুবের মিথ্যাচবিত্রের কথা জেনেও তার মিথ্যা ভালোবাসার কথা শুনতে কী জামরা ভালোবাসিনে ।

সভিয় মনের কাঞ্চ শত চরিত্র বিচার করে হর না। যে ব্যবহারের বে কাঞ্চ ভাই করে চলে। উত্তেজিত হবার মজো হলে করে ভোলে উত্তেজিত। চঞ্চল করে তোলার মতো হলে করে ভোলে চঞ্চল। স্থান্দর হলে করে মুঝা। ভালো লাগার হলে বার ভালো লাগিয়ে দিরে। ভাই সব জানা সত্ত্বেও এমন দেওয়ার বে স্থান মঞ্জুর মনে কিছু এলোমেলো হাওয়া বরে আনলই। চুলগুলো সামনে এনে, বুকের উপর ফেলে মুখ নিচু করে জটুমটু শুদ্ধ বিণুনী পাকিরে চললো সে।

একটা মস্ত সবুজ বং-এর তকলো তোরালে ভিজে ঘাড়ের তুদিক দিয়ে চাদরের মতো কুলিরে স্নানের ঘর থেকে বেরিয়ে এলো মোরী। ডেসিং টোরলের সামনে দাঁড়িয়ে তোরালে দিয়ে কানের পেছনের জল মুছতে মুছতে বললো, জানিস মঞ্জু, ল'টা দল্পর মতো ইনটারেটিং সাবজেন্তা। পড়ছি জার বিষয়টা বেন আমাকে পেয়ে বসছে। 'আইনের চক্ষে চফুসজ্জা নেই' কথাটা কি স্কুল্পর! একজন জাইনক্ত কাউকে পেলে বসে বসে তার কাছে পাঠ নিতাম!

মনেবাগী শ্রোতা নীরবে কথা ওনে চলতে পারে কিছ অক্সনন্দ শ্রোতার মনোবোগ বোঝাতে অবাস্তর কথার বেতে হয়। বিগুনীতে আঙ্গুল বোঝাতে বোঝাতে মঞু বললো, চিক্ষুকজ্ঞা না ধাকা কথাটাকে ভোর স্মন্তর কথা মনে হলো। ভোর নিদায়ল মাত্রা-বোধটা তো চকুলজ্জারই রূপান্তরিত চেহারা।

আপত্তি জানালো মৌরী, ক্থনোই নর।

জানে মঞ্কধনোই বে নয়। তবু কথা বলতেই হবে তাকে। নইলে একুণি ওব দিকে তাকিয়ে মৌরী জিজ্ঞাসা করে বসবে, কি ভাবছিস খত ?

বললো কেন নয় ?

—মাত্রাবোধটা হলো ক্লচিবোধ সৌন্ধাবোধ এ একেবারে ভেতরের বস্তু। চকুলজাটুকু তো নিভাস্ত একটা হু চোথের পাতার ব্যাপার। সভ্যিকারের সংস্কৃতির ভার দরজা পর্যন্ত কথনো গিরে শিড়াতেই হর না।

—তবু দবজা-জানালার পদার মতোই দরকারী জিনিব ঐ চোথের হু পাতার সজ্জাটুকু বা তার চাইতে দরকারী। টুকু বংশই ঐটুকুও না থাকলে তার বনুস্থ ভয়াবহ।

তক্ষণি মাধা কাত করে স্বীকার করল মৌরী—সে নিশ্চর। আর আমি একিক দিরে কথাটা বলিওনি। ল'জার্ণালে এই আইনের চক্ষেত্র চক্ষ্যজ্ঞা না থাকার উপর এ্মন করেকটা ইনটারেটিং দৃষ্টাভ পড়লার না, তুই ভনত্যে— গল্প শোনার জন্ত মন্ত্র্ স্বীতের মধ্যরাতে লেপ ছেড়ে উঠে আসতে পারে কিছ এখন আর পোনেরোটা মিনিটও দে দিতে পারে না। এই মিনিট কটাই বাইবের সন্ধার শেব আলো আলো ভাবটার উপর আর বভটুকু অন্ধনার চেলে দেবে, তাতেই বেকবার কথা বললে ছ চোৰ কপালে তুলবে মোরী—এই রাতে! ভা বলুক না মন্ত্র্বরের কোণের পার্কটার কথা।

হঠাৎ একেবাবে মৌৰীর কাছে গিয়ে তার চুলের দিকে তীক্ষ লক্ষ্যে তাকাতে তাকাতে বলে উঠন মঞ্—দিনি তোর মাধার পাকা চুল না কি ?

- -- at: 1
- --- হাা, দেখলাম বে !
- —:কাথার ? মৌরী আয়নার একেবাবে কাছে এগিয়ে গিয়ে চুলের ভেতত কাঁক করে দেখতে দেখতে নিক্রেগ কঠে বললো—
 পাকলেই বা কি।

মঞ্ ততক্ষণে মৌরীর চুলের সামনেটা একটু নেডেচেড়ে দেখে নিরে বলুলো—না, ভিজে চুলে বাজির আলো পড়ে চক্ চক্ করে উঠেছিল। কিছু পাক্লেই বা কি মানে। কেন অসমরের সর্ব কিছু মিষ্টি লাগার মডো অসমরের পাকা চুলও মিষ্টি নাকি।

হেসে উত্তল মোরী। খাড়ের তোয়ালে নামিয়ে রেখে চিক্লণী হাতে নিয়ে চুলের জট ছাড়াতে ছাড়াতে বললো—বেশ মিষ্ট। কাঁচা-পাকার মেশানো নয়, একদম সাদা, নয়তো একদম সোনালি চুল আমার অপূর্ব লাগে। পিসিমার মাধার সোনালি চুলগুলো তো আমার দত্তরমতো লোভের বস্তু। কেটে নিয়ে গুছি বানাভার বলি আমার চুলের বং অমনি করে ভুলতে পারতাম। মনে মনে হিব করে রেথেছি, পিসিমার ঐ চুল আমি রেখে দেবো। ভার পর এক দিন ঐ বং তো ধরবেই চুলে।

উনধুস করছিল মঞ্। মৌরীর কথা শেব হতেই উপুড় হয়ে থাটের তলা থেকে চটিজোড়া বের করে এনে পা ঢোকাতে ঢোকাতে বললো—এক দিন বলিসনি কেন? কত অমন সোনালি চুলের গুছি জোগাড় করে দিতাম। তার পর বাগিটা হাতে নিয়ে মৌরীর দিকে আর তাকালো না সে।—এই কাছেই এক বজুর কাছ থেকে একটা বই নিয়ে একুণি আসছি রে। বলতে বলতে বেরিয়ে গিয়ে একেবারে বারালা দিয়ে লখা হাঁটা দিলো।

আব মঞ্ চলে গেলে আয়নার দিকে তাকিরে কের চুল আঁচড়ান্ডে
গিরেও বাতির আলাের রূপালী টেউ থেলে চলা সালাচুলের দিকে
তাকিরে হাতের চিক্লী নামিরে গাঁড়িরে রইল মৌরী—ইা, সে সতি্য বসে আছে 'উত্তর ত্রিশে'র দিনগুলাের জন্ত। বৌরন পার হরে 'উত্তর ত্রিশে'র কবির ভাষার বলে উঠবে সে, বেঁচেছি—বৌরন পার হরে এলে বেঁচেছি আমি। বেঁচেছি আমি নিরস্তর বাত-প্রতিষাত্ত থেকে, ক্ষণিক আক্মিক হাওয়ার আন্দোলিত হওয়া থেকে। একটি মুহুর্তের একটি অমুভ্তি আর মনকে আমার কানে ধরে নাচাতে পারবে না। আর আনক্ষকে খামধা মন-থারাপের হাওয়া

অলৌকিক দৈবপণ্ডিসম্বন্ধ ভারতের সর্বস্রোষ্ঠ তান্ত্রিক ও জ্যোতির্বিষ

জ্যোতিষ-সঞ্জাট পণ্ডিত শ্রীযুক্ত রমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য, জ্যোতিষার্থব, রাজজ্যোতিষী এম-আর-এ-এম (লণ্ডন),



(জ্যাতিষ-সম্রাট)

নিখিল ভারত ফলিত ও গণিত সভার সভাপতি এবং কাশীন্থ বারাণসী পণ্ডিত মহাসভার স্থায়ী সভাপতি।
ইনি দেখিবামাত্র মানবজীবনের ভূত, ভবিষাং ও বতমান নির্ণয়ে সিদ্ধহন্ত। হস্ত ও কপাদের রেখা, কোষ্টী
বিচার ও প্রস্তুত এবং অন্তভ ও হুই গ্রহাদির প্রতিকারকরে শান্তি-বন্তায়নাদি, তান্ত্রিক ক্রিয়াদি ও প্রত্যক্ষ ফলপ্রদ কবচাদি হারা মানব জীবনের ভূর্ভাগ্যের প্রতিকার, সাংসারিক অশান্তি ও ডান্তার কবিরাজ পরিভ্যন্ত কঠিন রোগাদির নিরাময়ে অলৌকিক ক্ষমতাসম্পন্ন। ভারত তথা ভারতের বাহিরে, যথা—ইংলেঞ্জ, আমেরিকা, আফ্রিকা, অফ্রেলিয়া, চীন, জাপান, মালয়, সিক্লাপুর প্রভৃতি দেশত্ব মনীবীবৃন্দ তাহাব অলৌকিক দৈবশক্তির কথা একবাক্যে বীকার করিয়াছেন। প্রশংসাপত্রসহ বিস্তৃত বিবরণ ও ক্যাটালগ বিনামূল্যে পাইবেন।

পণ্ডিতজার অলোকিক শক্তিতে যাহারা মুগ্ধ তাঁহাদের মধ্যে কয়েকজন—

হিজ হাইনেদ্ মহারাজা আটগড়, হার হাইনেদ্ মাননীয়া ষঠমাতা মহারালী ত্রিপুরা টেট, কলিকাতা হাইকোটের প্রধান বিচারপতি মাননীয় ভার মন্মধনাথ মুখোপাধ্যার কে-টি, সভোধের মাননীয় মহারাজা বাহাছর ভার মন্মধনাথ রায় চৌধুরী কে-টি, উড়িখা হাইকোটের প্রধান বিচারপতি মাননীয় বি. কে. রায়, বঙ্গীয় গভর্গনেন্টের মন্ত্রী রাজাবাহাছর শীগ্রসন্দেব রায়কত, কেউনঝড় হাইকোটের মাননীয় জজ রায়সাহেব মিঃ এস. এম. দাস, আসামের মাননীয় রাজাপাল ভার ফজল আলী কে-টি, চীন মহাদেশের সাংহাই নগরীর মিঃ কে. রুচপল।

প্রত্যক্ষ ফলপ্রদ বহু পরীক্ষিত করেকটি তম্বোক্ত অত্যাশ্চর্য্য কবচ

ধনদা কবচ—ধারণে বল্লায়ানে প্রভূত ধনলাভ, মানসিক শান্তি, প্রতিষ্ঠা ও মান বৃদ্ধি হয় (তন্ত্রোক্ত)। সাধারণ—৭॥৮০, শভিশালী বৃহৎ—২৯॥৮০, মহাশভিশালী ও সদ্ধর ফলদায়ক—১২৯॥৮০, (সর্বপ্রধার আর্থিক উন্নভিও লক্ষ্মীর কুপা লাভের জন্ম প্রত্যেক গৃহী ও ব্যবসারীর অবভ ধারণ কর্ত্ববি)। সার্বভাশী কবচ—মরণশভি বৃদ্ধি ও পারীকার স্বক্তা ৯।৮০, বৃহৎ—৬৮।৮০। মোহিন্সী (বশীকরণ) কবচ—ধারণে অভিলবিত ব্রী ও প্রুষ বশীভূত এবং চিরশক্রও মিক্র হয় ১১॥০, বৃহৎ—৩৪৮০, মহাশভিশালী ৬৮৭৮৮০। বর্গলামুখী কবচ—ধারণে অভিলবিত কর্মোন্নতি, উপরিস্থ মনিবকে সন্তুষ্ট ও সর্বপ্রকার মামলায় জয়লাভ এবং প্রবল শক্রনাশ ৯৮০, বৃহৎ শভিশালী—৬৪৮০, বহাশভিশালী—১৮৪০ (আমাদের এই কবচ ধারণে ভাওরাল সন্ত্রাসী জয়ী হইয়াছেন)।

(খাণিতাৰ ১৯٠١ খঃ) অল ইণ্ডিয়া এষ্ট্ৰোলজিক্যাল এণ্ড এষ্ট্ৰোনমিক্যাল সোসাইটী (রেলিইার্ড)

হেড অফিস ৫০---২ (ব), ধর্মতলা ব্লীট "জ্যোতিব-সম্রাট তবন" (প্রবেশ পথ ওয়েলেসলী ব্লীট) কলিকাতা---১৩। কোন ২৪---৪০৩৫। সময়---বৈকাল ৪টা হইতে ৭টা। ব্রাঞ্চ অফিস ১০৫, গ্রে ব্লীট, "বসন্ত নিবাস", কলিকাতা---৫, কোন ৫৫---১৬৮৫। সময় প্রাতে ৯টা হইতে ১১টা।

এসে মলিন করে তুলবে না। আৰু আমি তাব-উচ্ছলতাকে বাঁধতে পেৰেছি বৃদ্ধিৰ দৃদ্ভার। অমুভৃতিৰ সঙ্গে মিলে গেছে আমাৰ भवादक्षा । (मरहत ७ मरनत, हेक्टियत ७ विद्य भविभूष भक्ति এখন আমার দধলে। জেনেছি আমি আজ তাদের স্থমিত প্রবোগ-ব্রেচে গেছি আমি। সোনালি রংখরা চুলে কপাল-টানা ৰোপা থাকবে তথন তার মাধার। চোখে থাকবে পুরু কাচের চশমা। মুখে থাকবে মধ্য বয়সের গভীর গম্ভীর একাঞ্রতা—এইরুপ এই বৃদ্ধি, এই বরদের জন্ম বনে আছে সে। কিন্তু তার মধ্যে अ (क) ऋगर्गन! अवक्वादित आठमका घटत हरक ऋगर्गनदक শেছনে দাঁড়িরে ওর দিকে একটা আশ্চর্যা দৃষ্টি কেলে দাঁড়িরে পাৰতে দেখে একেবারে চমকে পেছন ফিরল মৌরী। বেন স্মদর্শনের উফনি:খাসে ওর বাড়ের অলকগুছুকে গুলিরে দিল-ওর তাই নর, ঠিক প্রথম দিনের মতো হুরত সাহসে ওর সহা খাড়ের উপর চেপে ধরলো সে তার চাপা ঠোট। হাভের চিক্লী কেলে দিয়ে কুৰ ভাবে গিয়ে চেয়ারে বলে বইল মৌরী ঠিক আত্মদাৰ অবাধ্য ব্যবহারে অসভ্ত অভিভাবকের মতো। বৃদ্ধি মানে না, ভালো মন্দ নিজেও বোঝে না—কেউ বোঝালেও শোনে না-এমন কাক সঙ্গে বর করার মতোই অপূর্ব আরাম এই নিৰ্বোধ মনটাকে নিয়ে খব করা।

একসক্ষে এমন ভাঁজকরা এক পাঁজা টাকা জরার মা শীগগির দেখেন নি। কথা ভোঁ নর বেন একটা কাগজ ছেঁড়া ফাাস-ফাসে আধ্রাজ বেরিয়ে এলো তার গলা দিয়ে—কত টাকা এখানে ?

তাই তো! কত টাকা এখানে জানে না তো মন্ত্। গুণে দেখেনি তো সে। গুণে দেখবার কথা মনে হয়নি তো তার। জারার মার দিকে তাকিরে একটা ঢোক গোলার আন্দাক্ষ সমর নিতেই হলো মন্ত্রুক। এতে আছে, আছো দিন আর একবার দেখে দিছি ভালো করে। বেন বতই গুণে আনা বাক, টাকা কার হাতে দেবার সমর সামনা-গোণার আর একবার গুণে তবেই দিতে হয়। জারার মার হাত থেকে টাকা নিয়ে গুণতে গুণতে একটা বোকামিই বে সে করেছে তা নর। একসঙ্গে এতোগুলো টাকা এনেও করেছে আরো একটা বোকামি। তার বোঝা উচিত ছিল দল-পাঁচ করে এনে হাতে দিতে পারার সংখার ভেডর হঠাৎ এই পাঁজা-তাঁক টাকা আভাবিক ভাবেই প্রশ্ন ভেডের হঠাৎ এই পাঁজা-তাঁক টাকা আভাবিক ভাবেই প্রশ্ন ভেডের হঠাৎ এই পাঁজা-তাঁক টাকা বাভাবিক ভাবেই প্রশ্ন ভেডের আরর এ জিল্ডাসার সংস্থাবজনক উত্তর দিতে না পারলে জয়ার মা বে কি না কি ভেবে বসবেন তাই বা কে জানে গ

হলোও ঠিক তাই। তার জিজাসার জবাবে মঞ্র জাটকে বাওরা বিষত তাবটা জরার মার দৃষ্টি এড়ালো না। 'ঘর পোড়া গঙ্গ সিন্দুরে মেঘ দেখলে ভর পার।' ভর পেরে গেলেন তিনি। কোন বিপজ্জনক পথে জজাতে গিরে জড়িরে পড়ছে না তো মঞ্ছ। তার মতো বুড়ো মামুবটাই কি প্রথম বুঝে উঠতে পেরেছিলেন কিছু। তার ভন্ত মন তো ইচ্ছে করে এ পথ বেছে নিরেছিল না— এমন কি জানিছা করেও নর। জলাত্তে গিরে পড়েছিলেন, ঠিক জন্ধকারে গিরে থানার পড়ার মতো পড়েছিলেন। উপার্জ্জনের

চেষ্টা করেছিলেন ভিনি মেয়েকে নিয়ে নানা ভাবে। পারেন নি। युगे वाकी (मध्यात विष्ठ जातम अज़िद्य क्ला वर्षन थेजिमित्नव অন্ন তার দ্বার উপর নিয়ে গাঁড় করালো তথন কোণা দিয়ে বে কি ঘটে চলতে লাগলো প্রথমে কি তিনিই ভা বুবে উঠতে পেরেছিলেন। আর তথু কি তিনিই--এখানকার তু'দিককার রাস্তার ফ্লাট**ওলো**র বছ ঘর তো ঠিক ভারই মদে। না, না বুঝতে বুঝতে গিয়ে এই একই লোকের ফাঁলে পা দিয়ে আৰু পাঁকে মুধ থবড়ে পড়েছে। মুণীর ব্যবসাটা মুণী দোকান কর, আসল ব্যবসা তার পাড়ার অভাবী ঘরগুলোকে ধার দিয়ে, বাকী দিয়ে ভাদের ভক্নী ক্রাদের খপ,পরে এনে ফেলা—ব্ঝেছিলেন কি তিনি কিছু। এতো কিছু বোৰবার মতো শক্তিও ছিল না তার। চারটে ওখনো হাড় তথন ভার দেরালে ঠেস দিয়ে ভণু ধুঁকতো। তারপর থাত পেয়ে, পথ্য পেরে শরীরের রক্তকণিকাগুলো বখন বল ফিরে পেরে সতেকে শ্ৰীর ময় চলা ফেরা করতে করতে তাকেও দেয়াল—নির্ভর ছেডে পিঠটান করে গাঁড় করিয়ে দিলেন, তখন তার সেই মরতে মরতে বেঁ:চ ওঠা বক্তকণিকাগুলো বেঁচে থাকার কথা ছাড়া কোন কথাই ওনতে চাইলে না। আব সেদিনই ভিনি প্রথম জানালেন মানুষ বাঁচার পায় সব সম্ভন সব বুভি বলি দিভে পারে। তবু ভারও মধ্যে বড় প্রশ্ন ছিলেন তিনি নিজে নন, সস্তান। এক সস্তানকে বলি দেওয়ার জন্ত মন প্রস্তুত করেছিলেন তিনি আবে এক সম্ভানের দিকে তাকিরে। তাই মঞুব লোকটাকে চড় মেরে তাড়িরে দিলে— আৰুল হয়ে কেঁদে উঠেছিলেন তিনি একুল ওকুল ছ'কুল বাওৱার চরম আতক্ষে। সব দার নেবার মঞ্ব দেওয়া ভরসারও কোন ভরসা কোন বল পাননি। কিছ আঞ্চ মঞ্জু তার সব চাইতে বড় বল। আজ মঞ্ তার কের স্বস্থ জীবনে ফিরে বেতে পারার সস্তবনাময় স্বপ্ন। দয়া ধর্ম দান উদারতাম আজ আর বিশ্বাস নেই জয়:এ মার। একমাত্র জৈর তুর্বসভার কারণ ছাড়া কোন কারণ বিশ্বাস করেন না পুরুষের দয়াত।

আছও অর্থনৈতিক জগতের একজ্ব অধিপতি পুরুষ। সে ছাড়া কে দেবে মঞ্কে টাকা। আর তাই বদি হর তবে তার হুর্বলতার ভিত্তের উপর পা না রাধলে ভার মুঠো এতটুকুও খুগবে না—এতটুকুও না। আকুল উৎকণ্ঠায় বলে উঠলেন ভিনি—কে দিলে মঞ্ তোমার এ টাকা, কে দিলে ?

ব্যলো মঞ্ সবই ব্যলো। মোরীর ধারণা রক্তের মতো লোকেরা এই এক মতসবেই বা করে সর করে। জয়ার মার অভিজ্ঞতা আরো বেশী, তাই তাঁর ধারণা সবাই, সবাই তাই। রক্ষত বলে প্রুষের জগতে কোন আলাদা জাত নেই। এই কি সত্য বলে মেনে নিয়ে মঞ্র রক্ষতের হাত থেকে টাকা নেওরার অপমানে মুখ নিচ্ করতে হবে?

না—হর্বলতার দেওরা মাত্রই নোংবা এই বদি ভার বিখাদ হতো তবে বদিও রজত ধার শোধ দেওরার কথা বলেই টাকা দিরেছে, মঞ্জু শোধ দেবার কথা মনে বেখেই টাকা নিরেছে—তবুও এ টাকা মঞ্ প্রহণযোগ্য মনে করতো না। তাহলেও সত্য বলা বার না। জরার মার দিকে তাকিয়ে কাঁচ্মাচু খাওরার অভিনয় করলো মঞ্জু—বেন বলবার ইছে ছিল না, তবু বলভে হছে এমনি ভাবে বললো—মার না ইরা মোটা একটা হার ছিল। বুড়ো আসুল আর মধ্যমার বেড়ে একটা মোটার পরিমাণ দেখালোলে। মনের ভেতরটা বেন শান্তিতে একবার চোধ বুলে নিল জয়ার মার। তবু উবিগ্ল কঠেই জিজ্ঞানা করলেন ভিনি—সেটা তুমি লুকিরে বিক্রি করে এলে নাকি ?

ঠিক আছে। এতকণে গুছিরে বঙ্গে গুছিরে বলে চললো মঞ্। না, বিক্রি করতে যাবো কেন? বেখে টাকা এনেছি। সামনের মানেই ছাড়িয়ে নিয়ে আসবো। ও হা-ভালো কথা, আপনাকে বুলাই হয়নি বে আমি একটা টুইশনের কাল পেয়ে গেছি। আর একটাও হয়ত সামনের মাদে পেয়ে যেতে পারি। একটা হলে প্চান্তোর টাকা পাবো। হুটো হলে পাবো পঁচান্তোর পঁচান্তোর করে দেড্খ'। (ভেতরে ভেতরে রজতের সাহাব্যে এমন ছটো কাল পাওয়া কিছুই বে অসম্ভৱ কথা নয়---হলেও হবে বেতে পারে এবং পঁচাজোর পঁচাজোর দেড়শ নয়, একশ একশ করে ছ'শ টাকাও माईरन इट्ड शादा। इंडेरबाशीयान महिनाता अमनि माईरनई पदा। এই একটা উত্তেজনায়ও মঞ্ব বুকটা ধেন বার কয় দ্রুত ভালে চলে নিল। ধেন এ সংসারটাত বেকার গৃহস্বামী সে।) বললো কাল এ মাসে হলেও মাইনে পাবে। তো সেই সামনের মাসে। এ মাস্টা চলতে হবে তো আমাদের। বাড়ীভাড়া জমে আছে, আরো কত কি জমে আছে। সামনের মাসে মাইনে পাবো, এ টাকা থেকেও হরতো থেকে বাবে—নিয়ে আসবো হার ছাড়িয়ে। জানভেই পারবে না কেউ। না বে জরা? জয়ার দিকে ভাকালো সে। খরের মাঝধানে একটা মোড়ায় বসেছিল ছয়। ! কিছু জড়িয়ে জানা কোঁচকানো মোচড়ানো একটা পুৰোনে কাগজের পাতা টান কবে নিয়ে বঙ্গে নিবিষ্ট মনে যেন সে কি দেবছিল। মঞ্ব সংখাধনে চোৰ তুলল। মঞ্ বললো— সিলুকে: ভেতর মরা সাপের মতো পড়ে থাকে ভো বিড়ে পাকিরে। মাথে মানে সেই অন্ধকার বিবর থেকে বেরিয়ে এসে যদি মানুবের কাজে থদে বেতে পারে, ভবে ওরই নিজেকে ধক্ত মনে করা উচিভ, নয় জয়। १

জয়া ধেনন হা:তর কাগজটার দিকে ভাকিয়ে বসেছিল তেমনি বনে বইল। কোন সাডা এলো না তার কাছ থেকে।

মঞ্ব কাল হয়ে বাওয়ার কথা ওনে এক দিকে বেমন খুনীর অন্ত গইল না জয়ার মার, অপর দিকে তেমনি পরীকার বছর ছ'ছটো মাষ্টারি করলে মঞ্ব নিজের পড়ার বে ক্ষতি হবে সে কথা ভেবে খুনীর অনেকটাই বেন উবে গোল ভার। তক্তপোবের তলা থেকে তারকটা টেনে বের করে টাকাটা তুলে রেখে দাওয়ার গিয়ে বসলেন। কিছুক্রণ আগে ধরিয়ে বেখে বাওয়া বোঁয়া ওঠা উনোনটার অসমান ক্ষুলাগুলো হান্ত দিয়ে ঠিক করে দিয়ে ওদের অল চারের অল চাপালেন উনোনে। হাতের কাজের সঙ্গে সক্ষোভে বেন বলে চললেন আপন মনে কভ কি। তার ভেতর একটা কথাই পাই হয়ে বানে এলো মঞ্ব—নিজের মেয়ের সর্বনাশ ভো করে বসে আছিই। আবার না আলের মেয়ের ভবিষাওটাও নই করি।

জয়ার দিকে ভাকালো মঞ্ । মার এ ভাতীয় কথা সহু করতে পারে না জয়া। শোনা মাত্র কথনো ওঠে ভার মুখ একেবারে সাদা হরে, জাবার কথনো ওঠে সে হুবস্ত কেপে। জয়াকে বাঁচিয়ে কথা বলঙে পারেন না জয়ার মা। সে সতর্কতা বোধও তাঁর নেই। কিছ মার কথা জয়ার কানে গেছে মনে হলো না। এতক্ষণ তার দৃষ্টিটা ছিল হাতের কাগজের দিকে, এখন দৃষ্টিটা পাঠিরে দিয়েছে সে বাইরের

আছকারের দিকে। সে আজ-কাল শৃত্য-দৃষ্টিতে বলে বলে কেবল ভাবে আর ভাবে। কি ভাবছে জিজাসা করলে ততোধিক শৃত্য দৃষ্টিতে বুবের দিকে ভাকিরে থাকে। মঞ্ চৌকি খেকে ওঠে গিরে মেবেতে বলে ওব পিঠের ওপর হাত রাধল। কি খবর আছে এই সাভ বাসি খবরের পাভার দেখি।

- --- थवद नद इवि तम्बंहि।
- কিসের ছবি ? উঁকি দিল মঞ্। পত্রিকাটা তুলে দিল ক্ষম মঞ্ব হাতে।

ছবিটা মঞ্ব না-দেখা নয়। বছদিন জাগে বেবিয়ে গেছে কাগজে। পতিতাবৃত্তি বজের প্রতিবাদে পতিতাদের নীরব প্রতিবাদের ছবি। রাজা পরিক্রমা করে এসে মাঠের ওপর বসে জাছে এক মাঠ যেয়ে, বোমটায় মুখগুলো প্রায় জাবৃত করে নিয়ে।

আচমকা থিল থিল করে হেসে ওঠল জরা ঘরে মঞ্কে চমকে
দিরে বাইবে বলে থাকা মাকে চমকে দিয়ে। তারপর বেন তার দেই পাগলা হাসি থামতে চায় না জার। দেখলি ছবিটা ?

বেন ছবিটা স্থিত্য হাসি পাওয়ার, এমনি ভাব দেখিরে জয়াকে ধুনী করতে হাসল মঞ্জ।

ভাষ ভকুণি গভার হরে গেল জরা। তীক্ষ গলার বলে উঠল— হাসলি বে তুই ? হাসিটা মুখের ভেতর—সক্ষে সঙ্গে মিলিরে দিরে জরার পিঠে হাত বুলোতে লাগল মঞ্জু—এমনি হেসেছি ভামি।

--- এমনি হাসবি কেন ?

আমতা-আমতা করল মন্ত্—ঠিক এমনি নর। তোকে হাসতে দেখে হেসেতি।

- স্বামি কেন হেসেছি তুই জ্বানিস ?
- -- at (%)
- —তবে কারণ না জেনে পাগলের মতো হাসতে গেলি কেন ? ভূই কি পাগল ?
- —সত্যি অৰ্থ হয় না; কিছ এক এক সময় কারণ না জানলেও কাউকে ভীষণ হাসতে দেখলে হাসি এসে বায় না ?

ঠাওা হলো জয়। আমি হেসেছি কেন জানিস ?

সাংঘাতিক একটা জিজ্ঞাসা নিয়ে তাকিয়ে রইল জয়া মঞ্ব দিকে।

ক্ষীণ ভাবে মাথা নেড়ে মঞ্ বললো—না।

—কি করে জানবি। থাছিস, প্রছিস স্থাধ আছিস। কিছ
চিন্তা করবার যে কত কি আছে তোরা ভেবে দেখিস না। কেউ
ভেবে দেখছে না। আছা এই দেখ—কাগজটা মেঝতে পেতে
আঙ্গুল দিয়ে দেখিরে বললো—এটা দেখার পর সেই থেকে আমি
কেবল ভাবছি—বলে হঠাৎ একেবারে চুপ করে গেল জরা।

ছুই ঠোঁট এক করে বলে বইল মঞ্ যদি এই চুপ করে থাকার ভেতর জয়া বিষয়টা ভূলে বায় সেই অপেকায়।

কিছ আশ্চর্যা। সুশৃষ্টাল চিস্তার কিবে এলো ছবা তার পূর্ব-বজ্ঞব্য। বললো—আমি কেবল ভাবছি, এবা ঘোমটার মুখ ঢেকে বনেছে। কিছ পুরুষগুলো কি নিল জ্জ বে—এই ছবিটা নিরে সবার চোধের উপর ঘোমটা ছাড়া ঘুরছে! সালের ছ'গালের, কপালের, তু চোধের তলার কালো বেধাগুলো আরো সভীর দেখাড়ে লাগল ছবার। এবার পত্রিকাটা টেনে নিয়ে আবোল-ভাবোল ভাঁজ করে
ছুঁজে কেলে দিল মঞ্ টেবিলের উপর। আদেশের হুরে বললো—
জয়া, এ সব নিয়ে আব কখনো মাধা ঘামাবে না তুমি। আমি
বেমন এ জগতের নই তুমিও তেমনি এ ভগতের কেউ নও।

আবার হেসে গড়িয়ে পড়ল জয়া—আমি নই এ জগতের ?

- —না তুমি নও এ জগতের। পড়াওনা আংছ করতে হবে তোমার, পরীকা দিতে হবে—তোমাকে।
- কি করে ? কি করে পরীকা দেবো আমি ? বেন কেঁদে উঠল জরা—আমার কিছু মনে থাকে না—কিছু ন!।
- —মনে না থাকলেই বদি পড়াগুনা না হব তবে আর কি। আমি ছেড়ে দিই পড়া। কারণ আমারও কিছু মনে থাকে না। এই ভো এই মাত্র দেথলি গুণে আনা টাকাও দিতে গিরে কের গুণে দিতে হলো। তুলে বাওরার ব্যাপারে বৌদি দিদিরা বলেন, আমার নাকি জুড়ি মেলা তার।
- —না, না, ব্যাকুলভাবে মাধা নেছে উঠল জয়। ভোর ভূলে বাওরা এক জিনিব নয়। মাধাটাকে এক এক সমর আমার কাঁকা বেলুনের মভো মনে হয়—মনে হয় থেন শৃঙ্গে উড়ে গেল বলে—মবে গেলাম বলে।

জয়ার মা চা আবে মুজি ভাজার বাটি নামিরে বেখে গেলেন। মঞ্চারের কাপ হাতে নিরে ভাজা মুজি মুখে ফেলে চলে গেল একেবারে অন্ত কথার—দাবা খেলা জানিস?

—দাবা ? তুচোৰ বড় করলো ভয়া।

— ই৷ দাবা ! দিন বাত হাবি-জাবি ভাবলে মাথা এমনি শুক্ত মনে হয় স্বাবই। দীড়া, দাবা খেলা শিখিবে দেবো ভোকে। দেশবি মনের একাগ্রতা কেমন বেড়ে বাবে। স্বস্ত কোন কথা মনে আসবেনা। নে চাবেৰ কাপ নে। জয়ার হাতে কাপ তুলে দিল মঞ্ছ। টেবিলে বলে থাকা জয়কে ডাক দিল-চলে এলে। জন্ম, ভোমার চা খাবার নিয়ে এখানে। টেবিলের সামনে সেই প্রথম (थरक वह निरंत वरमहिन कर। ७६ वरम नय, मञ्जू कान रम পড়ছিলও। স্কুলে ভর্তি হতে পারছে না সে, তার বই নেই। ভার খাতা নেই তবু দে পছছিল—কোন দিকে মন না দিয়ে পড়ছিল। শুৰু ওর প্ৰথম ঘংৰ ঢোকার সময় একবার চোখ ভুলে ওর দিকে তাকিরে হেসেছিল। তারপর এতক্ষণের ভেতর সে ভাব বই-এর পাতা খেকে চোধ ভুলেছিল মাত্র ভাব একবার —দিদির অমুস্ হাসি শুনে। মঞুর সাদর আহ্বানে হাসি মুখে চা আর মুড়ির বাটি হ'হাতে নিয়ে উঠে এসে বসদ দে মেঝের উপর। তার দিকে তাকিরে মঞ্ব মনে হলো, ফ্রণ্ট বৃদ্ধবত সৈনিকের মুখের সভক্তা সন্দেহ অবিধাস আভক্ষের মডোবে বেধাওলো সে প্রথম এনে জরের মুখে দেখেছিল, সে বেধাওলো ৰদিও আৰু মিলিয়ে গেছে ভাব মুখ হতে, তবু এখনও সেধানে যুদ্ধশাস্তির শাস্ত স্পার্শ লাগেনি। বছ ছীবন বিজ্ঞাসার ভেতরটা বেন ভাব উদ্বেশিত হচ্ছে। সে বিজ্ঞানা নিবে সে কাক কাছে বার না---বাবে না। বাব জবাব খুঁজে বের করাটা বেখে দিবেছে সে নিজের জন্ত ।

বেদির ক্রণ্টে শান্তি ঘোষিত হয়েছিল সেদিন হাতের অন্ত নামাতে পেরেই কি শান্ত হতে পেরেছিলেন হেমার্ক ? পারেম নি।

হরতো শাস্ত হতে পেরেছিলেন কিছুটা শুধু মাত্র সে দিন, বেদিন 'অলকোরাইট'শেব করে হাতের কলম নামিরে দিলেন। স্থকান্তর মুখের অলাস্ত বেথার হরতো শাস্তির টিলে ভাব আসভো তথন, বথন তার কলম ছুটে চলতো—

কলম বিজ্ঞাহ ভাখনি তুমি ? বক্তে কিছু পাওনি শেখার ?***

কলম বিজ্ঞোহ আৰ-

ত্রিভাহ কথনো দেখেনি কেউ,
দিকে দিকে ওঠে অবাধ্যভাব টেউ;
 স্থ্য চূড়ার থেকে নেমে এসো সব—
 তনছো ইন্দাম কলবব—

ভবু বৃঝি তথনই তার মুখের ভীবের মতো বে**ধাওলো গাঁ**ড়াত ভিব হরে।

এই কিছু বেশী টাকা জয়াব মা'ব হাতে দিয়ে আসতে পেরে দিন-ন-চলা বেকার গৃহস্বামীর কিছু দিন নির্জাবনার কাটাবার মত সংস্থান করে উঠতে পাবার আরামবোধ করতে লাগল মঞু। মাথাটাই বেন হাতা মনে হতে লাগলো তার। সে ধেরাল করলে না, এ টাকা ক'টা আর কাজ পাওয়ার একদিনের একটা ভিত্তিহীন অনিশ্চিত আলোচনায় যতটা হাতাবোধ করা বায়, তুলনাম্পক বিচারে তার হাতাভ্যবোধের পরিমাণটা আনেক বেশী হয়ে বাছে। আসলে ঐ টাকা নর একটা কাজ হওয়ার ভরসাও নয়—সেয়া সম্ভাবনা রয়েছে তো রয়েছেই। আর বদি না হয় ? মন তাতেও আর আরকার দেখতে না—এই হলো আসল কথা। মজত আছে, এমন একটা হিসাব, তার অবচেতন মন হিসাবের খাতার ধরে বসে আছে এবং বে আসহায়বোধ সে করছিল তা এখন আর সে করছে না। "আছে"—পেছনের এই থাকার জোরের মত জোর আর কিসে?

টেবিল বেড়ে, বইণত্র গুছিরে এমন পুশুখালার পড়াণ্ডনা আরম্ভ করে দিল মঞ্চ, বিশ্বিত হরে গেল মৌরীও। বার চোধকে কাঁকি দেওরা বার না, নিষ্ঠাও ভাব চোথেই সবার আগে বরা পড়ে। খুদী হরে উঠল মৌরী—হাঁ৷ এ ভাবে পড়লে আমি বলছি, ঠিক ভুই একটা ফার্ক কাশ পেরে বাবি।

কানে না—মঞ্জানে না, কার্ট্র ক্লাশ না সেকেও ক্লাশ, কি সে পাবে। সে জানে পড়ান্তনো ভাকে ক'বতে হবে। বত কিছুই ক্রুক, ভাব ভেতরে এ লক্ষান্তই হ'লে, ভাকে পথন্তই হ'লে হবে। বড় হ'লে হবে ভাকে, জনেক বড়। কাল ক'বতে হবে ভাকে— জনেক কাল। আব এই সবের একমাত্র পাথের হ'লো অর্থপুলি নর বিভাব পুলি। এ পুলি ভাব সক্ষরে সক্ষরে ভ'বে তুলতে হবেই। কিছ বর্তমান সময়টা মঞ্জুব ওপর নিয়ে এসেছিল একটা জ্পান্ত হাওয়ার চেউ। বেমন বৈশাধ নিয়ে জালে সক্ষে ও'বে বড়। ঠাওা হয়ে বসবার জ্বসর মিললো না ভাব। সম্বের উপর গ্রহনক্ষত্রের প্রভাবের জাঁক-ক্রা নিভুল হিসাবের মত হুর্ভাগা মালুবের—ভাব জ্মপত্রকার ভেমন নিভুল জাঁক হয় না। বিদ হ'তো তাহ'লে এমন আরোজন ক'বে পড়তে না বলে মঞ্ ভৈনী হ'তো সামনের ছুর্টে বের জ্ঞান।

फित्तत अत फिल अणिफिल ...



নোলার প্রে, নিঃ, সম্ভালিয়ার পক্ষে হিনুহান বিভার বিঃ, কর্ত্তক ভারতে প্রস্তুত

RP. 158-X52 BQ



হুন্দরীশ্রেষ্ঠা হেলেন এ্যাপোলো

টার বাজা টিনভেরিরাসের পত্নী সীভার রূপের সীমা নেই। তাঁর অপর্নপ[®] সোলর্ব্যের বাাতি চারিদিকে ছড়িরে পড়ে, দেশ বিদেশে আলোচনা চলে তাঁর রূপের, এমন কি অলিম্পাদের দেবতারাও সীভার সৌলর্ব্যের কথা আলোচনা করেন। তাঁরা বলেন অলিম্পাদের দেবীদের মধ্যেও এমন রূপ তুর্গভ। তাঁদের কথা তনে দেবীরা হিংসার অলে ম্বেন।

অবশেষে দেববাজ জিয়ুদের কানেও গিরে পৌছল লীডার সৌন্ধর্যের খ্যাতি, লীডার রূপের কথা শুনে জিয়ুদের-বাদনা হল তাঁকে দেখতে। এমন স্ক্রেরী যে ত দেবভোগা। দেবভাদের উপভোগের জন্তই না তার স্পৃষ্টি। জিয়ুদ তাঁকে দেখতে বাবেন বলে ঠিক করলেন। কিছু তাঁর এই মনের কথা তিনি মনেই লুকিয়ে রাখলেন। কারণ দেবরাণী হেরা তাঁর ইছার কথা জানলে মহা অনর্থের স্পৃষ্টি করবেন।

ভরানক ঈর্বাপরায়ণা দেবী এই হেরা। দেবরাজ মর্ত্তের কোন নারীর প্রতি আকৃষ্ট হয়েছেন তনলে আর রক্ষা রাধ্যেন না তিনি। স্থানির্য্ত জুড়ে এক বিষম আলোড়ন স্থাষ্ট করবেন। হেরার এই মানবীস্থলভ ঈর্বার কথা জিরুস জানেন। এর আগে ছ্'-একবার মর্ত্তের নারীর প্রতি ছ্র্বলতার কলে তাঁকে ভ্গতেও হয়েছে। ভাই ভিনি এখন বিশেষ সাবধান হয়েছেন।

শিখুন ক্ষবোগের অপেক্ষার বইলেন। অবশেবে এক্দিন নে ক্ষবোগ মিলেও গেল। ক্ষবোগ পেরে হেবার অগোচরে চুপে চুপে তিনি হার্ডির ইন ক্রিটির, রাজা টিনডেরিরার্সের প্রিসিটি।
সেধানে ভিনি সচকে দেখেন রাণী লীডাকে। সভিাই স্পর্কপা
স্থলরী ভিনি। তাঁকে দেখে ভির্স রুগ্ধ হন। লীডার সম্পর্কিপার
স্থার হরে ওঠে তাঁর চিত্ত। কিন্তু লীডা তথ্য রাজা টিনভেরিরাসের
প্রেমালিকনে স্থাবদা। রাজার সাথে এক বিচিত্র কেলিতে মেতে
উঠেছেন ভিনি। স্থান্থ জিয়ুস গোপনে দেখেন সে মৃত্ত।

প্রেমকেলি সমাপনাস্তে রাজা তৃপ্তচিত্তে বিদার চান বাণীর কাছে। রাজসভার তাঁর জনেক কাজ বাকী। রাণী লীডাও তৃপ্ত হরেছেন তাঁর সঙ্গ পেরে। তিনি রাজাকে বিদার দেন তখনকার মন্ত। তারপর বীরে বীরে অপ্রসর হন প্রেমাদ উত্তানের দিকে। স্বোবরে স্থান শেষ করে তিনি জাবার নৃতন সজ্জার ভূবিত হরে মিলিত হবেন রাজার সঙ্গে, তারপর জাবার মন্নংক্রীড়ার মেডে উঠবেন তাঁরা।

রাণী বান সরোবরের দিকে, সধীবাও সাথে আসতে চার, কি মনে করে তাদের বারণ করেন দীড়া। তিনি একাই বাবেন অবগাহনে, প্রিয়সঙ্গের নিবিড় স্থাধে তাঁর মন এখনো আফ্রাদিভ। অপরের সাহচর্ব্যে তাঁর প্রয়োজন নেই। একা একাই অলকেলি করবেন তিনি।

লীডা উপস্থিত হন সরোবরের তীরে। তারপর ধীরে বীরে পা ড্বান জলে। শীতল জলের স্পর্শ তাঁকে আবিষ্ট করে। তাঁর মনে হর তিনি বেন নৃতন করে অমুভব করেছেন প্রিরসঙ্গ, আপন মনে একা একাই জলকেলিতে রত হন তিনি। এমন সমর হঠাৎ তাঁব দৃষ্টি গিরে পড়ে তীরের দিকে। তিনি দেখেন সরোবরের তীরে দাঁড়িরে আছেন এক অপুর্ব স্করে জ্যোতিস্থান পুরুষ।

তাঁকে দেখে বিশিত হন দীভা। অসময়ে তাঁর প্রমোদ সংবাবরের তীরে কে এই স্থন্দর পূক্ষ। তিনি অল ছেড়ে তাড়াতাড়ি তীরের দিকে অগ্রসর হন, তাঁকে এগিয়ে আসতে দেখে সেই অপরিচিত পুক্ষ হাসতে থাকেন মৃত্ মৃত্, অপরিচিতের এই ধুইতার বিশ্বিত হন বাণী দীড়া। বাণীর প্রমোদ উভানে কি সাহসে চ্কেছে এই অলানা মান্থ্রটি। সে কি জানে না তিনি কে ? স্পাটার বাজমহিনীকে দেখে সমীহ করে না এমন তুঃসাহসী কে এই অপরিচিত ?

বাণী কোণতবে তাঁব দিকে অগ্রসর হতে বান। বিশ্ব এই অপূর্ব অক্সর পুক্ষটির মধ্যে কি বেন এক মহিমা সুক্রায়িত আছে বা তাঁকে তার প্রতি কুছ হতে দের না, তিনি ভালো করে তার দিকে তাকান, দেখেন বে অপবিচিত তথনো তাঁব দিকে তাকিরে মৃতু মৃতু হাসছেন।

গীডার সরণ হয় তাঁর স্বর অসাবরণের কথা। ভাও জনে ডিজে তাঁর দেহের সঙ্গে মিশে গেছে। তিনি পজ্জিত হন মনে মনে। তারপর মৃত্কঠে বিজ্ঞাসা করেন, আপনি কে? আর কেনই বা আমার এই প্রমোদ উত্তানে প্রবেশ করেছেন ?

সেই অপরিচিত পুরুষ তথন বাণীকে তাঁর নিজের পরিচর দিয়ে বলেন বে তিনি দেববাজ জিয়ুস, দেবসভার রাণী সীডার অপরপ সৌকর্বোর কথা তনে তিনি তাঁকে দেখতেই অভিন্নাস ত্যাগ করে স্পাটার এসেছেন। তিনি বলেন বে, রাণী সীডাকে দেখে তিনি আনন্দিত হরেছেন। তাঁর অপরপ সৌকর্বা দেবরাজকে মুগ্র করেছে, রাণী সীডার নিবিদ্ধ সন্ধ কামনা করেন তিনি।

জিমুসের কথা শুনে চমকিতা হন গীতা। তাঁর সন্থ্যে গাঁড়িবে আছেন থয়ং দেববাজ। আর তিনি কামনা করছেন তাঁর, এক মর্জের মানবীর সঙ্গ, তিনি বিচলিত বোধ করেন। কি উত্তর দেবেন টিক করে উঠতে পাবেন না গীতা।

জিত্ব আবার তাঁকে জানান, তাঁর কামনার কথা। সীভার মত রণ দেবলোকেও চূর্স ভ। দেববাল তাঁকে দেখে মুখ্য হয়েছেন। তাঁকে পাবার জন্ম ব্যাকুল হয়ে উঠেছে তাঁব চিত্ত।

ভাঁকে কি উত্তর দেবেন, ঠিক করে উঠতে পারেন না দীড়া।
দেববাল নিযুসের মহিমাঘিত মুর্ডি ভাঁকেও আকুই করেছে। আর
ভা ছাড়া মর্জের মানবীর পক্ষে দেববালের সল পাওরা ভ' ভাগ্যের
কথা। কিছ ভাঁর মনে হয় ভাঁর স্থামীর কথা। একটু আগেই
স্থামীর প্রেমালিকনে আবদ্ধা ছিলেন ভিনি। স্থামিসাহচর্যের
পরিত্তি এখনো ভাঁকে দিরে আছে। ভবে কি করে আবার ভিনি
দেববালের আলিকনে নিজেকে ধরা দেন। কোন উত্তর দেন না
দীড়া। অবনত বদনে দাঁড়িয়ে ভাবতে থাকেন ভিনি।

ভিন্ন ব্ৰতে পাৰেন তাঁৰ বিধাৰ কথা, কিন্তু তিনি ভখন উন্থু হবে উঠেছেন দীভাৰ সন্ধালদার। তাই দীভাৰ সব বিধাকে দূৰ কৰতে তিনি কোশলের আশ্রৱ নেন। তিনি তাঁকে পরিবভিত কৰেন এক বাস্থ্যদীতে আৰু নিজেও এক বাজ্ঞ্সদের ৰূপ ধাৰণ কৰেন।

এই পরিবর্তনে লীডা প্রথমে হতচকিতা হবে বান। কিছ তারপবেই তিনি বুঝতে পারেন দেববাজ জিয়ুদের কৌশল। মানবীর:প জিয়ুদের বাত্তবন্ধনে ধরা দিতে তাঁর বিধা আছে বলেই দেববাজ তাঁকে মবালীতে রূপাস্তবিত করেছেন। বাতে নতুন রূপে জিয়ুদের আলিজনে বাঁধা পড়তে তাঁর আর কোন সংকাচ না থাকে। এই সমর বাজহংসবেশী জিয়ুদ আবার আহ্বান জানান লীডাকে। লীডাও এবার আনন্দের সাথে সাড়া দেন তাঁর আহ্বানে।

ভারণর মবাল ভার মরালী সেই সরোবরে এক অভিনব শীড়ার মেতে ৬৫ । তাদের পক্ষ বিধৃননে সরোবরের জল হর ভালোড়িত। তারা কথনো পালাপালি ভেসে চলে, কথনো চঞ্ছে চঞ্ ঠেকিরে পরম্পারকে ভাদের করে। আবার কথনো বা একের উপর দেখা বার ভারেক জনকে।

লীডার সাথে দীর্ঘকাল কাট্টিয়ে অবলেবে দেবরাজ জির্দ ফিরে যান দেবলোক অলিম্পানে। রাজহংসী থেকে পুনরার মানবীতে রূপাস্তরিতা হরে লীডাও ফিরে আসেন প্রানাদে রাজা টিনডেরিরানের কাছে। টিনডেরিয়াস তাঁকে সাঞ্ছে বাছপাশে টেনে নেন। লীডাও ধরা দেন তাঁর বাহুবছনে। কিছা তাঁকে সেদিন বেন কেমন আনমনা মনে হয়।

এর পরেই লীড়া গর্ভবতী হন। এবং বধাসমরে তিনি ছটি ডিছ প্রদব করেন। এবই একটি ডিম্ব থেকে জন্ম হয় হেলেনের।

জ্মাবধি হেলেন অমুপ্যা স্থক্ত্রী, শিশু হেলেনকে বে দেখে সেই বিষিত হয়। মর্তলোকে এ সৌন্দর্য্য একেবারে ক্লনাভীত। এত রণ ত দেবলোকেও সম্ভব বলে মনে হ'র না।

ছোট হেলেন তাঁর পিতামাতার নরনমণি। তাঁদের আরো নতান আছে বটে, কিছ তারা কেউই হেলেনের মত তাঁদের তিরে নয়। অবগু একত তার তাই-বোনেরা কেউই হেলেনকে ইর্মা

করে না। হেলেন ভালেরও সকলেরই বিশেষ বিশ্বপানী। এইভাবে সকলের আদর আব ভালবাসার মধ্যে হেলেন বড় হতে থাকে।

হেলেনের ব্যুস বত বাড়তে থাকে তার রূপের থ্যাতিও ততই বেড়ে চলে। শিশু হেলেনের স্থায় রূপ সকলকে করত বিশিত ও মুগ্ধ। বালিকা হেলেনের অমুপম রূপ ও লাবণ্য এবার পুরুষকে আকুই করতে তাক করল। হেলেনের বে রূপ এব পর স্থাপতি লোকের স্থান্থ হবণ করেছে, স্থান্থ্য লোকের স্থানাশ করেছে, বিভিন্ন বাজ্য ধ্বংদের কারণ হয়েছে, হেলেনের বালিকা ব্রুসেই ভার স্থানা দেখা গোল।

হেলেনের বহুস যথন সবে রশ, তথনই তাঁর রপের আগতন পুড়ে মহতে দেখা দিল প্রথম পতল—গ্রীক-বীর থিসাস।

নানা ছংসাহসিক এবং বীর্ঘপূর্ণ কার্য্য সম্পাদনের জন্ম বিসাস ছিলেন দেশের সর্বত্র বিশেবরপে থাতে। বৌবনে অনেক ছর্দ ভি দক্ষ্য এবং অত্যাচারীকে দমন করে সকলের প্রভা এবং সম্মান অর্জন করেছেন তিনি। কিন্তু বিসাদের এক বিশেষ ছুর্বলতা ছিল। নারীর প্রতি আকর্ষণ তার অসীম, নারী বিশেষতঃ স্পুন্দরী নারীর সন্ধান পেলে তিনি আর ছির থাক্তে পারতেন না। বেমন করেই হোক তাকে পেতে চেষ্টা করতেন, এর আসেও এগারিওভেন, এণ্টিওপি এবং এনেল্লাকে তিনি হরণ করে এনেছেন।

এখেল নগরীর জন্তুতম প্রতিষ্ঠাতা প্রাসিদ্ধ বীর খিসাসের বর্ষ তথন পঞ্চাল। বাক্সবার্গাধেকে কিছুদিনের মত জ্বসর নিরে বন্ধু শেইরীথাসের সাথে দেশভ্রমণে বেরিরেছেন তিনি। গ্রীসের বিভিন্ন নগরী বাজাগুলি দেখে এড়াছেন তারা।

ধিসাস বিভিন্ন নগরী দেখেন আর তুলনা করেন তাঁর প্রির এখেন্সের সাথে তাঁর সাধের এখেনকৈ তিনি বেমন স্কলর করে গড়ে তুলেছেন ভেষন আর কোন নগরকেই তাঁর মনে হর না। এখেল হল সব নগরীর সেরা। তার সাথে আর কারুই তুলনা চলে না।

এই তাবে ঘ্রতে ঘ্রতে ছুই বন্ধু অবলেবে একদিন এসে হাজিব হলেন স্পাটার, স্পাটার তথন উংসব শুরু হরেছে আটেমিস আথিয়ার মন্দিরে। থিসাস আর পেইরীথাসও বান আটেমিসের মন্দিরে উংসব দেখতে।

জারা যথন মন্দিরে গিয়ে পৌছলেন তথন উৎসব বেশ দ্বেষ উঠেছে। স্বাই উৎসবে মন্ত। খিসাস এবং পেইরীথাসকেও তারা সাদ্রে আমন্ত্রণ কানার ভাদের সাথে উৎসবে বোগ দিতে।

থিসাস গাড়িবে গাড়িবে কেখেন ভালের উৎসব—এবার ওক হয় বালিকালের নৃত্য। কুমারী বালিকারা নানা ভঙ্গীতে নাচতে থাকে মন্দির-প্রাঙ্গণে। অভাতালের সাথে থিসাস এবং পেইবীখ্যুসও ভালের মনোহর নৃত্য কেখতে থাকেন।

হঠাৎ ঠাদের চোধ গিরে পড়ে অপরণ পুলরী এক বালিকার ওপর। কুমারীদের সাথে সেও নাচছে। কিছু ভার পালে অপর সবাইকে বেন মলিন বলে মনে হয়। থিসাস বিশ্বিত হন বালিকা হেলেনের রূপ দেখে।

এ বেন অপরণ এক ফুলের কুঁড়ি। কুঁড়িই বুদি এড প্রকর হয় তবে কুল না জানি কত প্রশার হবে, খিলাস ভাবেন মনে বলে। আঁর জীবনে অনেক প্রশারী নারী তিনি দেখেছেন। অনেক দাবীকৈ ভিনি বাছ বলে জন্ন কৰেছেন কিন্তু এখন কপ তাঁর চোৰেও আৰু আগে কৰলো পত্তে নি।

বালিকা হেলেনের রপের আগুন প্রেট্ বিসাসকে দগ্ধ করল। বেলেনকে পাবার ভঙ্ক তিনি হলেন ব্যাকুল। বন্ধু পেইরীগ্লেকে শ্বিনি জানালেন তাঁর মনের কথা।

পেইবীগালও হেলেনকে লেখে মুদ্ধ হথেছেন। তাঁৰ মনেও মূলে উঠেছে কামনায় আগুন। ছই ব্যুব মধ্যে প্ৰামৰ্শ্য চলে। বিক হয় তাঁৰা উৎসংশ্ৰুৱ খেকে ছেলেনকৈ চৰণ কৰে নিয়ে ৰাকেন। মানশ্ৰ তাঁৰ ওপৰ তাঁৰা ছজনো বাজী বাৰ্বেন। বাজীকে বিনি বিশ্ববেদ্ধ হেলেনকে ডিনিই পাক ক্ষুবেন।

ধিনাদ আৰু পেইবাল্যা ভংগানের অপেকার থাকেন। তাৰণর
এক সময় বিকারী বাজের মান কাঁপিরে পতে নুকারতা বেলেনকে
ক্রমণ করে দুই বন্ধু পালাকে থাকেন। উত্সবহার ক্রমতা এই
আক্ষমিক বিপর্যায় বিল্যু করে পড়ে। ভারা ভাল কারে অপ্তর্গক্রারীকের অন্নর্গ পর্যন্ত করতে পাবে না, দেবতে দেবতে বৃই
বৃদ্ধু হেলেনকে নিয়ে ভাকের চোলের আড়ানে চলে বায়।

ভারণর হেলেনের ওপর বাজী বাথেন চ্জন। চ্জনেবই মনে আশা বাজীতে বোধ হয় সেই জিতবে, খেব পর্যন্ত হেলেনকে পান থিসাস।

ৰালিকা হেলেন এতক্ষণ ভাদের পাশে দাঁড়িয়ে ছুই ক্রোচের বাজী ধরা দেধছিল। হেলেনকে ওরা হয়ণ করে এনেছে উৎসবক্ষেত্র থেকে। ওদের ব্যবহারে সে বিশ্বিত হচেছে বটে কিছ ভার পার্মনি। ভার তার কধনই করে না। নজুন কিছু ঘটলে সে উৎস্কা অফুভব করে মাত্র। তাতে সে ভীত বোধ করে না।

আর আক্ষকের ব্যাপার থুব নতুন কিছুও ত'নয়। সে ত'মাঝে মাঝেই লক্ষ্য করেছে তাকে দেখে পুরুষ কেমন বিশ্বিত কেমন মুগ্ধ ছর। তার মনে হরেছে তাদের মুগ্ধ দৃষ্টি বেন বন্ধনা জানাছেছ তাকে। সে ভাল করে বুঝতে পারে না ঠিকই কিছ এ অমুভূতি তার আগেই জন্মছে। ঐ মুগ্ধ দৃষ্টিতে আগুনের ফিলিকও সে আগে লক্ষ্য করেছে কি? কি জানি হেলেন ঠিক মনে করতে পারে না। তবে জাজ সে অমুভূব করে থিলাসের চোখে বেন অপ্তে কিসের আছন। হেলেন তাকিয়ে ওাকিয়ে দেখে থিদাসকে কৌতুহলী চোখে।

থিসাসও ভালো করে দেখেন হেলেনকে, দশ বছরের বালিকা কুমারী ছেলেন। কি সুন্দর, কি সুন্দর! খিসাস বলেন মনে মনে। এ খেন দেবা এফোদিতির মোহিনী মৃত্তি বালিকারণে উাড়িয়ে আছে তাঁর সমূথে। খিসাস জাবার মুগ্ত হন, জাব মনে মনে আনন্দিত হন নিজের সোভাগ্যে।

কিছ প্রবাণ থিদাসের হিদাবে একটু ভূস হরেছিল, বালিকা হেলেন অপরপা সন্দেহ নেই। কিছ সে তথনো দশ বিংসবের বালিকা মাত্র। থিসাস অচিবেই ব্যতে পাবেন তাকে এখনো অপেকা করতে হবে। হেলেনকে তথন তিনি নিয়ে বান আক্ষিত্রনীতে তাঁব মা এটার্থার কাছে। মার হাতে তিনি সমর্পণ কবেন হেলেনকে। মাকে বলেন, অতি সঙ্গোপনে হেলেনকে লুকিরে বাখতে। কেউ বেন না আনতে পাবে তার কথা। তারপর

থ্যাকিডাসের ওপর ডাদের রক্ষার ডার দিরে পেইরীথাসের সাথে ধিসার জাবার বেরিরে পড়েন দেশ জমণে। বন্ধু পেইরীথাসংহ ডিনি কথা দিয়েছেন ডাঁকেও তিনি সুস্করী কথা জোগাড় কং দেবেন। ডারই থোঁকে কাবার বেরিরে পড়েন তুই বন্ধু।

অধিকে ছেলেনের ভাইরাও তাঁলের অণ্ডতা ভাগনীর থাঁছে বেবোন। থুঁলতে খুঁলতে তাঁরা এটকার এসে উপস্থিত হন তাঁবা জানতে পাখেন ধিসাস হেলেনেক এখানেই কোথায়ও লুকিছে বেখেছেন। তাঁবা স্বাইকে জিলাসা করেন ছেলেনের কথা। কিছু কেউই বলতে পাবেন না, থিসাস ভাকে কোথায় লুকিয়ে বেখেছেন:

অবলে: য একান্ডেমাগ্রের কাছে উবা ছেলেনের থোঁজ পান। বোনকে উদ্ধার কর্জে ছেলেনের ভাইবা এফিড্নী আক্রমণ করেন। বিদান নেই। কে ঠেকারে উানের। এফিড্নী মধল করে ছেলেনছে উবার করে বিজ্ঞান গর্বে উানা ছিবে বান স্লাটায়, আর সাথে বজিনী করে নিয়ে বান খিসালজননী এয়াবাকে। পুত্রের পাপের শান্তি ভোগ করতে হল্প এয়াবাবেও। জীবনের অবলিটাপে হেলেনের ক্রীডদানীরপে কাটাতে হল্প উাকে।

বাঞ্চা এডোনিহাসের ককা কোরকে অপভ্রণ করতে থেরে পেইনীখান প্রাণ হারালেন। বন্ধুকে হারিয়ে থিসাস প্রথেজে ফিরে দেখলেন হেলেখকে তার ভাইরা উদ্ধার করে নিরে গেছেন, এবং কুছ এথেনীয়ানয়া তাঁকে করেছে রাঞাচ্যত। স্বত্যাঞ্চ অপমানিত থিসাস দেশত্যাগ করে স্বাইরোসে গিয়ে উপস্থিত হলেন এবং সেহানে রাজা লাইকোমিডিসের হাতে প্রাণ হারালেন। এই ভাবে হেলেনের প্রথম অপহরণকারী থিসাসকে লাঞ্চিত হসে মৃত্যুবরণ করতে হল।

হেলেনকে উদ্ধার করে তাঁব ভাইরা আবার ফিরে এলেন স্পার্টার, উল্লেম নরনের মণি ছেলেনকে পেরে রাজা টিনভেরিয়াস এবং রাগী লীভা বেন প্রাণ ফিরে পান। আবার পিতৃগৃহের নিশ্চিত আবামের মধ্যে বড হয়ে উঠতে থাকেন হেলেন।

দেখতে দেখতে বালিকা হেলেন কিশোৱী হয়ে ওঠেন, কিশোৱী হেলেন হন যুবতী। যে দেখে সেই বিশিক্ত হয়। আর ভাবে মর্জেব মানবী এমন দেবতুল ভি রূপ কোখা খেকে পেল গো!

তাঁব রূপের খ্যাতি আব কেবল স্পাটার ক্ষুদ্র প্রান্তবের মধ্যে আবদ্ধ থাকে না, তা ছড়িয়ে পড়ে সারা গ্রীলে, সমস্ত গ্রীলে আলোচিত হয় তাঁব রূপের কথা। সবাই বলে এমন রূপ আর আলো কেউ কথনো দেখেনি।

সারা প্রীসের বীর এবং রাজাদের কানে পৌছার হেলেনের খবর।
তাঁরাও শোনেন বিশের শ্রেষ্ঠা স্ক্ষরী হেলেনের রূপের খাতি।
শোনেন আর একে একে হাজির হন স্পাটার। এসে আতিথা
প্রহণ করেন বাজা টিনডেরিয়াসের প্রাসাদে।

শ্পাটার এনে তাঁরা দেখতে পান হেলেনকে। তাঁকে দেখে তাঁদের মনে হয় বে এডদিন বা ওনেছেন তা স্তিয় নর। স্বাই তাঁর রপের প্রশাসাই করেছে কিছ তিনি বে এত স্থার তা ত কেউ বলে নি! নারী বে এত স্থারী হতে পারে এ ত তাঁরা নিজেবাই কল্পনা করতে পারেন নি। তাঁদের মনে হয় বিগাতা বেন বিখের সব সৌন্ধর্গকে ভিলে ভিলে আহ্রণ করে ভিলোভ্যারণে গড়েছেন হেলেনকে। তাঁরা আবার দেখেন হেলেনকে। বার বার দেখেন। আরু বত দেখেন ততই মুখ্য হন।

হেলেনকে লাভের আলার মিনেলান, ভারোমিভি, কিলোকটেটন, ইভোমেনান, মেবিওপ, পেটোক্লান, এ্যাছাল, এণ্টিলোকান, ওভিসিরান আদি ঐসের তিরিল জন প্রেঠ বীর একে একে এনে হাজির হন স্পার্টায়। তাঁরা স্বাই সাথে করে এনেছেন বন্ধমূল্য স্বর উপহার। মহার্ঘ উপহার দিয়ে তাঁরা জয় করতে চান বালা স্ট্রনভেরিবাসের জলয়।

বালা টিনডেরিয়াস পানিপ্রার্থীদের তাঁর প্রাসাদে বাস করার
লভ সাদর আমন্ত্রণ জানান। তাঁবের অথআছ্নেন্ডর দিকে তাঁর
ব্রেছে সলাগ ঘূটি। কিন্তু পানিপ্রার্থীদের এই বিগুল সমাগমে
মনে মনে পভিত্ত হয়ে ৬ঠেন ভিনি। ভিনি উহিয় চিত্তে ভাবেন
সমাগত এই বীর্দের মধ্যে কা'কে ভিনি করা হেলেনের স্থামিরণে
মনোনীত কর্বেন। এক জমকে তাঁকে নির্বাচিত ক্রতে হবে।
কিন্তু ভাতে অভ্য স্বাই বিজুত্ত হবেন। তথন তাঁবা হদি সম্বেক্ত
হবে তাঁকে আক্রমণ ক্রেন ভারতে ভিনি প্রীদের রাজাদের
সম্মিলিভ এই আক্রমণকে ঠেকাবেন কি ক্রে । টিনডেবিয়াস
ভাতা বিচলিত বোধ করেন। তিনি মিট ক্থায় ভূট ক্রেন
স্বাইকে। কিন্তু ক্রেন। তিনি মিট ক্থায় ভূট ক্রেন
স্বাইকে। কিন্তু ক্রেন। তিনি মিট ক্থায় ভূট ক্রেন

এই বিপদ খেকে কি ভাবে উদ্ধার পাওয়া বাহ, চিস্তা করতে

থাকেন টিনডেবিহাস। কিছু ভেবে ভেবেও কোন উপাং ভিনি বের কয়তে পারেন না। এই সময় একদিন ওডিসিহাস একে তাঁকে বলেন বে তিনি যদি তাঁর ভাই ইকেবিহাসের কভা পেনিলোপির সাথে তাঁর বিবাচ দিতে সম্মত থাকেন তাহলে তিনি তাঁকে এই বিপদ থেকে বজা করতে পারেন। রাজা টিনডেবিহাস সাঞ্জতে গ্রহণ করেন তাঁব প্রস্কার।

তথন অতিনিয়াস তাঁকে জানান তাঁর পরিকল্পনার কথা।
তিনি বলেন, সমবেত পাণিপ্রাথানির কাছে রাজা প্রভাব কল্পনার তাঁর করা হেলেন বাঁকে পছন্দ কংবেন তাঁর সাথেই ছেলেনের বিবাহ হবে। তবে গ্রীক বীবদের এই প্রতিপ্রাতি দিতে হবে বে হেলেনের মনোনারন তাঁরা বিনা হিখার মেনে নেবেম। এখা হেলেনকে তাঁর আমীর কাছ থেকে যদি কেট হবণ করে নিমে বাছ ছবে তাঁরা সন্মিলিত ভাবে অপহরণকারীকে সালা দেশেন এখা হেলেনকে তাঁরা করতে তাঁরা তাঁর আমীকে সালায় করবেন।

ওডিসিয়াসের কথামত টিনডেরিছাস সমবেত বীর্নের কাছে এই প্রভাব উথাপন করলে তারা তার প্রভাবে সম্মন্ত হরে শপথ করলেন বেং হেলেনের মনোনয়নকে তারা অকুঠ চিতে মেনে নেবেন এবং তাঁকে তার সামীর কাছ থেকে কেউ অপন্তরণ করলে তারা সামিলিক ভাবে তার বিক্ষমে বৃদ্ধ করবেন।



"এমন স্থলর গহনা কোণার গড়ালে?" "আমার সব গহনা মুখার্জী জুম্নেলাস দিরাছেন। প্রত্যেক ফিনিষটিই, ভাই, মনের মত হরেছে,—এসেও পৌছেছে ঠিক সময়। এঁদের ক্ষতিজ্ঞান, সভতা ও দামিন্থবোধে আমরা সবাই থসী হরেছি।"



्रिमिन त्यातार भएता तिसीला ७ **३४ - सम्बद्धी** वरुवाजा**र भाटक**ि क्**लिकाजा-**>२

টেলিফোন: ৩৪-৪৮১০



পাণিপ্রার্থীদের মধ্যে কা'কে পছক করবেন ঠিক করে উঠতে পাবেন না তেলেন। এঁবা স্বাই প্রীসের নামজাদা বীর। রূপে ওপে কেউই কম নন। এঁবা প্রত্যেকেই তাঁর খামী হবার উপস্কু । অনেক ভিন্তার পর প্রীসের প্রেঠ ধনী রাজা এগাগামেমননের জাতা কুমার মিনেলাসকে তাঁর খামিরূপে বরণ করলেন হেলেন। বিপ্ল সমাবোহের মধ্যে মিনেলাসের সাথে ছেলেনের বিবাহ হল। মবক্ষণতিকে তাঁলের গুভকামনা জানিরে সম্বেক্ত বীরবা স্পার্টা ভ্যাপ করলেন।

এর কিছুদিন পরেই রাজা টিনডেরিরাস মারা যান। পুত্র ক্যাইব আপেই মারা সিরেছিলেন। তাই টিনডেরিরাসের সূড়ার পর তাঁর জামাতা মিনেলাসই হন স্পার্টার রাজা, প্রকরী রাগী হেলেনকে নিরে প্রম স্থাধ দিন কাটতে থাকে তাঁর।

ঝাড়ুদারের বউ

[একটি ষেধর মেরের জীবনের রোমাজ ও ট্রাজেডী] শ্রীঅমিতাকুমারী বশ্ব

লৈ বি কেঁদে কেঁদে ছচোৰ লাল কৰেছে। শাণ্ডড়ীৰ গঞ্জনা আৰু সহু হয় না। কাৰণে অকাৰণে কি বকুনিটাই না দেৱ। সেই কোন সকালে মুখে জলটুকু প্ৰ্যান্ত না দিয়ে ঝাড় হাতে বেৱ হয় লাবি।

শীতের প্রভাত কুয়াশার ছেবে থাকে চার্থিক, রাস্তায় ঝাড়ু চালাতে হাত আৰু উঠে না। অবশ হবে বায়। আৰু ঠাণ্ডাটা বড় বেশী, গায়ের চোলী ওড়না হিমবরফ হয়ে শরীরের রক্ত জমিয়ে দিচ্চে। মাঝে মাঝে লাবি আবক্ষ লখা ঘোমটা ভূলে এদিক ওদিক চাইছে। লারি এগিয়ে চলল ঝাড় লাগাতে লাগাতে পাকা সঙ্ক ধরে। কাহার-বস্তির ত্র-চারটে বউ উঠে বেরিয়ে পড়েছে কালে, বাসন মালতে হবে ভাডাভাভি বাবদের সবাবই অফিস আছে। বত কাহাব ছেলেটা পাডাব ছু-চারটে ছেলে-:ময়ে জমিয়ে খরের লোরে রাস্তায় খড়কুটো ৰালিয়ে অণ্ডন ধরিয়েছে। অর্থ্ধনগ্ন ছেলেমেয়েগুলো অগ্নিকুণ্ডের চারদিকে গোল হয়ে বঙ্গেছে। লাবি আগুনটার দিকে চেয়ে চেয়ে ভাবছে. সে যদি ঐ গরম আগুনটার পাশে বসতে পেত, ঐ লাল লক্সকে অগ্নিশিখাতে হাত পাগুলো একটু সেঁকে নিতে পারত। দীর্ঘনিশ্বাস ছেড়ে সে ঝাড় চালাতে লাগল। এদিকে এক ঝাপটা। ওদিকে এক ঝাপটা। বা মহলা ভাতে আলে সেট্কুই জমিয়ে নের। নিধুতভাবে ঝাড় চালাবার মত ভার মনের অবস্থা নর। লখা বাঁশের শলার ঝাড়টা দিয়ে যেন সে গাস্তাটাকে পিটিয়ে চলেছে, ভাব লাল মোটা মলিন খাখবাটা চলাব সংস্থ সাটিতে লুটাছে আর উঠছে।

চলতে চলতে লাবি সিদ্ধির ছোট লোকানটার সামনে এসে দাঁড়াল। সিদ্ধির ছোট কাঠের দোকানের হরজা থুলে গেছে। ছুচাত উঁচু করলার চুলাটাতে এরই মধ্যে করলার আগুন গনগন করছে। আর বড় কালো কেটলীটার জল ফুটছে টগবগ করে। ফুচার জন থরিদার এসে জুটে গেছে, লারি হাতের কাজ ছগিত রেশে লোকানটার বিকে চেরে বইল। সিদ্ধি লোকানদার চট করে চা
ভিজিরে কেলেছে ছোট ছোট চীনামাটির পেরালাভে ধুমাহিত চা চেলে
দিরে এক এক পেরালা ধরিকারের দিকে এগিরে দিছে আর
পকেটে ছ. ছ আনা পরসা ফেলছে। লারি লুক নরনে চেরে বইল এই ধুমারিত গরম চারের পেরালার দিকে। আহা, সে বদি প্রক্রম একটা পেরালার এখন একটু গরম চা খেতে পারত। আঃ তার
দানীরটা কেমন চালা হরে উঠত তা হলে, কিছ তার অনুষ্টে কি এই
ছখে আছে? কি জন্মই না নিবে এসেছে সে। তথু ঝাড়ু লাগাও,
আর ঝাড় লাগাও, আর বাকী সমন্তা শাগুড়ীর গঞ্জনা, আর ঘরের
কাঞ্ছ।

লাবি চাবেৰ ইল থেকে চোথ ফিবিবে মন দিল নিজ কাজে, ভাড়াভাড়ি ৰাড় চালিৱে চুটল বড় সাহেবেৰ বাংলোৱ। সেথানকাৰ কাজ লোব কৰে বাবে কোটো ঝাড় লাগাতে, বাৰোটাৰ সব কাজ শেব কৰে ফিবৰে বাড়ী, একথা ভাবতে ভাবতে মনটা একটু খুসী হবে উঠে।

কিদের পেট টো টো করে উঠছে, বাড়ীতে গিরে কানাপানি পেটে পড়লে দানীরটা একটু তাজা হবে। থুনী মনে এগিরে চলে লাবি, বম্ বম্ করে বেজে উঠে পারের পারজাড়। লাবি জলদি চলতে থাকে, সঙ্গে সঙ্গে ভারী লাল ঘাঘরাটাও তুলতে থাকে ত্রজে, মুথে একহাত লখা ঘোমটা দিয়ে ঘর্মাক্ত মুথখানা মুছে, লাবি ঘোমটা ভূলে, এদিক ওদিক দেখতে দেখতে চলল। রাস্তা নির্জন দেখলে কখনও বা গানের এক ভু কলি গেরে উঠে। ভার বয়স খুব বেনী হলে আঠারো-উনিল। সংসারের তুংখকাই ওর মনের রস এখনও নিঃশেষ করে তারে লিভে পারে নি। অকালে ভূ'-চারটে শিশুর জননী হয়ে ভার জীবন এখনও ভারাক্রান্ত হয়ে ভঠেনি, ভাই শাভড়ীর গল্পনা থেলে এখনও মুখে হাসি ফুটে, মিঠে গলার তু-এক লাইন গান গোরে ফেলে।

আজ চার বছর হল বিয়ে হয়েছে লাবির, স্থামীর সলে দেখাসাক্ষাৎ থুব কমই হয়। স্থামী বেলের ঝাড়াদার, বেল মাইনে
পায়। সন্ধার মদ থেয়ে চুর হয়ে থাকে, থেকীর ভাগ
রাতই মাতাল হয়ে এসে মাতলামী করে। যেদিন ঝাড়াদার
কিষাণের মেজাজটা থাকে বিগড়ে, সেদিন রাত্রে এসে যদি দেখে
লাবি ঘূমিয়ে পড়েছে তবে মেজাজটা যায় আবো বিঁচড়ে, ঘূমজ্ব
লাবির গায়ে পা দিয়ে একটা ঠোক্কর দিয়ে বলে, এই বেগমসাহেবা উঠ, মজাসে পড়ে পড়ে ঘূমাছে কেমন, আর আমি
শালা, খেটে খেটে মরি। চা জলদি আন, স্কটি গ্রম করে নিয়ে
আয়, ঠাণ্ডা খাবার দিলে লাখি লাগাবো জোরসে।

লাখিব নামে লাবিব চোখেব ঘুম ছুটে বার, আচম্কা লাফিরে উঠে ঠোক্তর খেরে, চোখ কচলাতে কচলাতে উহুনে ফুঁ দিতে থাকে। ধোঁবার আর মনের আলার চোখেব জল করতে থাকে। সামাদিন খেটেখুটে একটু আরামে ঘ্মাবে, সে উপায়ও নেই। মাসের মধ্যে ফু-চার দিন তার লাখি খাবার সোভাগ্য ঘটে। লাবির মনটা এক এক দিন বিবিয়ে ওঠে, মাবে মাবে মা'র কাছে চলে বেতে ইছে হর, কিছ শাক্টা মাগী বেতে দেবে না, বলে, ঘরের কাছকর্ম কে করবে ?

क्षान कान मिन कियालय समामहा दम धूनी बादक, कार्ड हान,

সেকেও ক্লাপের ধনী আঘোষীকের কামরা ঝেড়ে ত্-চার আনা বকশিব পেডে পেডে টাকা কেড় টাকায় পৌছে বায়। ধূলীমনে বাড়ী কিবে। সেদিন লাবির অণুষ্ঠটা ভাল থাকে। কিবাণের মিটি কথার আদর্বে লাবি অণ্ড অপতে চলে বায়।

এমনি এক স্থলগনে কিবাপ থূশীমনে বাড়ী ফিবে দেখে, লারি একটা কাপড়ের পুঁটুলির মত মলিন শব্যার শুরে আছে। মাথার লখা ঘোমটাটা অভ্যেলমত এখনও মুখের উপর পড়ে আছে বাঙ্গের ঢাকনার মত।

কিবাণ ধীরে ধীরে খোমটা সবিবেদের। সারা দিনের কর্মসাস্থ গুমস্ত খামল মুধধানা কিবাণের মন মারার ভরে ভূলে। ধীরে ধীরে লারির লাল-নীল কাচের চুড়িভরা স্থগোল হাতধানা টেনে ডাকে, লারি, ও লারি, ওঠ,, চলু সিনেমার ধাবি ?

প্রথম বেন লাবি ব্যতেই পাবে না কিবাপের কথা। মিটিগলার কিবাণ ডাকছে, সে বিখেস করতে পারল না। চোথ রগড়িরে লাবি ডাবে, সে স্বপ্ন দেখছে, কিবাণের হাতের এক ধাঞ্চা থেরে লাবি লাফিরে উঠে লাখি থাবার ভরে। কিছ কল্রম্ভির পরিবর্তে দেখে হাসিমুখ।

আৰম্ভ হরে চলে উনানের কাছে ঝমঝমাঝম করে, কিবাণ হাতটা টেনে ধরে বলে, কোধার হাছিলে বল, সিনেমার বাবি ? পুর ভাল ধেলা আছে।

খুনীতে লারির চোখে-মুখে হাসি ঠিকরে পড়ে। ধপ করে বসে বার কিবাপের পালে। মেহেদী-রাঙ্গানো হাতে কিবাপের হাত ধরে বলে, সত্যি ধাবে ?

সভ্যি নয়ত মিছে নাকি ? এই দেখ কতকশুলো পয়সা উপরি পেয়েছি, বলে লারিয় হাতের উপর ঢেলে দেয় কিয়াণ।

খানীব মিটিকথার, ব্যবহারে লাবি বেন খর্মে উঠে বার।
তাড়াতাড়ি কিবাণকে থাইরে পোবাক পরতে প্রক করে। বিষেব
পর কিবাণ-তাকে একটা বড় বড় গোলাপফুল-ছাপ দেওরা রঙ্গীন
টিনের বাক্স কিনে দিয়েছিল। লাবির কোমরে একটা শিকলে তার
চাবি ঝুলানো থাকত। লাবি দেই চাবি দিয়ে বাক্সটা খুলে ভার
বিষের লাল টুকটুকে ঘাঘবাটা ও নকল, ভারিব বর্ডার-দেওরা
ফুলতোলা ওড়নাটা বের করলে।

লাবির গারে সহবের হাওয়া লেগেছে, সে দেখেছে বড় সাহেবের মেরে মাধার মারখানে সী বি কেটে কি স্থন্দর ছদিকে ছটা বেণী করে। আজ সে-ও অমনি করে ছটা বেণী ছদিকে বৃলিরে দিল। কপালের মারখানে একটা বড় কুলুম-কোটা দিলে।

কিষাণ অবাক হরে বসে বসে লারির সাজপোবাক দেখছিল। ছোট একথানা কামরা, তারই এক কোণাতে একটা উনান, একপাশে একটা মাটির ভিট; তাতে থানকতক বাসন উপুড় করা আছে। ব্রের চাল থেকে একটা বাঁশ লটকানো আছে, তাতে সকালে সব বিহানা চাদর ভাঁজ করে ঝুলিয়ে রাথে। আর এক কোণায় হুটা পেরেকে রশি বাঁধা, ভাতে কিবাণের ও লারির ব্যবহার্য্য কাপড়-জামা রাথা আছে।

দেয়ালে একটা সন্তার আধনা টাঙ্গানো। পালে একটা কেরাসিন কাঠের বান্ধের উপর ছটা চিঞ্নী, এক টুকরা রঙ্গীন সাবান। ছটা চুলের ফিডা। ছ:চারটে ক্লিপ পঞ্জে আছে। কিবালের সামনে পোবাক প্রতে লারির লজা করতে লাগণঃ ভাই কিবালের একটা বুতি বালে ঝুলিরে আড় করে সে সবস্থে অসাধন করতে লাগল।

এত দিন কিবাণের চোৰে লাবি একটা বাধরা-ওড়নার পুঁটুলিই ছিল। আজ কুঁড়ে খবে সামাত এতটা কেরাসিন লঠনের মৃত্ আলোতে লাবিব সুঠাম ঋদুদেহ অপরণ হবে দেখা দিল কিবাণের সামনে। অবাক হবে গেল কিবাণ।

তারা ছজনে বধন সিনেমার সেকেও শোর জন্ম রাজায় নেমে পড়ল, তখন কে বলবে এই দম্পতি দিনের সেই নীল কুর্তা আর আসিয়া পরিহিত কিবাণ! আর মোটা লাল ঘাঘরা পরিহিতা রাড় হাতে লারি!

ত্তলনে নিবালা বাস্তার হাত ধবে চলল, বড়বাস্তায় উঠে হাত ছেড়ে পালাপালি বেতে লাগল। কিছ দেদিন বাতে লাবি আব কিবাণের মনে বে মধুর অধুভূতি খেলে গেল, দে অফুভূতি ভারা জীবনে আব কোন দিন খুঁজে পেল না।

গভ্ডলিকা প্রবাহে দিন কেটে চলেছে হুজনের। কিবাণের আর আন্ধ-কাল জনেক বেড়ে গেছে। সেই দঙ্গে বেড়ে চলেছে মদের পরিমাণ। কিবাণের মনের গতির দঙ্গে তাল রেখে লারি চলতে পারছে না। বতি ভেকে বাছে।

কথন কথনো কিবাপের আদর সোহাগে লারি মনে করে সে ভূষর্গে আছে। আর কখন কখন লাখি-বাঁটা খেরে মনে হয় সে নরকে ভূবে আছে। লাভড়ী মরেও না ভরেও না। বসে বসে খেরে খেরে এই মোটা অবরদক্ত হরেছে। ভার জিভের বোগান দিভে লারি হররাণ হঙ্গে উঠল।

সেদিন লারি অকারণে শাশুড়ীর বকুনি থেয়ে বলে ফেসলে, সারাদিন ত থেটে মরছি, তবু কেন বকে চলেছ ?

শাভড়ী তেড়ে উঠে বললে, হারামজাদী, আবার মুখকর। শিখেছিস ? বা বলব তাই করবি, নয়ত নোড়া দিয়ে মুখ খেঁতো করে দেব।

লাবি অবোরে কাঁদতে থাকে। তাব'হুংথের কাহিনী কা'কে বলবে? আমী বলতে বাকে বুরার, সে ভো রাতে মাতাল হরে ঘরে কিরে। লারি কাঁদতে কাঁদতে ঝাড় চালার আর মুখে বিড়বিড় করে বলে, কি জন্মই না এনেছি আমি! শাওড়ীর বকা আর আমীর মার খেতে খেতে মরলাম। মারে মারে লারির সেই রাভটার কথা মনে পড়ে, বেদিন হ'জনে সেজে-গজে সিনেমার গিরেছিল। আহা সিনেমাটা কি স্মুন্তর পুর্ ভাল ভাল স্কর পোবাকে সেজে-গজে নাচ আর গান। আর পিরার সঙ্গে মিলন। এক একদিন হাতের ঝাড়ু চালানো হু-চার মিনিট বন্ধ রেখে লারি সিনেমার কথা ভাবে ভার দীর্থনিঃখাস কেলে।

কিবাণ বেল ক্ষমণ: বদলে বাদেছ। একদিন লাবি বললে, চল না নিনেমার বাই। কিবাণ বমকে বললে, প্রদা বেল সম্ভা দেখেছিল, বা বালা করগে ভাল করে।

লারিতে বেন কিবাণ আর কোন মাধুর্য খুঁছে পার দা। লারি তার কাছে ভাগেনা হরে উঠেছে, বেন পাতা ভাত।

লাহিব কটিনবাঁথা জীবন চলেছে, সকাল ছয়টা ছেকে বাৰোটা জাৰ ভিনটে থেকে সজ্যে ছয়টা অবধি বড় সড়কে ৰাড় চালালো: আর বড় বড় হ'-চারজন অফিসাবের বাড়ী কাজ করা, তা ছাড়া রায়াবারা বাসন মালা সব ভ আছেই।

প্লিশ জ্মাদারের বাড়ীতে লারির ভিউটি পড়েছে মাসেক বাবং। তার ননদ ও বাড়ীতে কাল করে। ননদ এখন আঁপুড়ববে, তাই লাবি তার বদলে সে বাড়ীতে কাল করছে। বাঙীর গিল্পী কয়েছ দিন হল বাপের বাড়ীতে চলে গেছে। লাবি ছ'বেলা কাল করে। জ্মালার ভারি মিষ্টি কথা বলে মারে মারে লাবির ওড়নাতে চলে দের উদ্বৃত্ত ক্লটি তর্কাণী মিঠাই, এশব নিরে চলে বাল্প বালিয়ে।

সংলাব সময় জমালাব প্রাবাই উঠানে পায়চারী করে, ভার থাকী হাফপাটি আব চঞ্জা চামজাব বেণ্টটা বেন ভার ভূঁজিব পরিখিটা বেইন করতে পারছে না ভাস ভাবে। গোল কালো মুখধানাতে মন্ত একজাড়া গোঁকেব নীচে দাঁত বের করে হাসে, আব কুংকুতে চোৰ ছটে। দিয়ে কেমন সাপের দৃষ্টিতে চেরে থাকে। অংশভি লাগে লারিব।

শীতের সন্ধা। চাবদিকে অজকার নেমে এনেছে, লাবি তাড়াতাড়ি কাল দেবে বাহী কিরছিল। এমন সময় জমাদার গাঁক দিয়ে বললে, ফুটি-ভাজি নিয়ে যা।

মুখের ঘোষটা আবো টেনে সঙ্গিত তাবে লাবি ওড়না তুলে ধরলে জমানারের সামনে। জমানার ওড়নার কটি ঢাসতে গিয়ে তার হাতটা চেপে ধরলে, বললে, লাবি, তুই বোক্ত মামার কাছে জানবি, পা টিপে নিবি, আমি তোকে অনেক জামা কাণড় প্রসাদেব, তোর ছঃখ ধাকবে না।

লাবি হাত ছিনিয়ে ছুটে পালিয়ে এল। এই শীতের সন্ধায়ও তার শরীর দিয়ে খান ছুটতে লাগগ। পরের দিন জমাদারের ৰাজী বেতে লাবির আব পা ওঠে না, কোনরক্ষে ভরে সে কাঞ্চ করে এল। দেদিন জমাদার আব কিছু বলেলে না বটে, কিছ প্রোইই তাকে নানা প্রলোভন দেখাতে লাগল।

বাড়ু চালাতে চালাতে লাবি কোন কোন দিন খবের ভিতরটা চেবে দেখে, মাঝখানে হুটো টেবিল চেয়ার, এক পালে একটা লোহার খাটে সালা ধবধবে বিছানা, কেমন পরিছার ফিটকাট। সঙ্গে সঙ্গে নিজের খবের ছির মলিন শ্যার কথা মনে পড়ল। আহা, ঐ ছুধের মত সালা নরম বিছানার শুতে না জানি কত আরাম! কিছু আরামের জীবন ত ভগবান লাবির জন্ত রাখেন নি, নইলে লাবি মেখবের খবে জন্ম নিবে কেন? লাবি ছেড়ে দিল ননদের বদলী কাজ।

কিছ খবেও লাবির মন টেকে না, খবের আবহাওয়া বেন কেমন রহস্তমর হরে উঠেছে! প্রায়ই অপরিচিত্ত লোক আগছে বাজ্ঞে, শাশুটী তাদের সঙ্গে ফিস-ফিস করে কি কথাবার্তা বলে, লারিকে দেখলেই চুপ হরে বার।

কিবাণ ত তার সঙ্গে কথা বলা এক রকম ছেড়েই দিরেছে, সেদিন নিজের খেকেই কিবাণ লারিকে ডেকে বললে, তুই বড় ভকিয়ে উঠেছিল, বা তোর মার কাছে কর দিন খেকে জিরিয়ে আর। লারির ভিতরটা কেমন এক জ্ঞানা আশকার কেঁপে উঠে। কিন্তু ছদিনের ভিতরট লে সম্বর্গী মেধর-বৌর কাছু খেকে খব্রটা জানতে পারদ। কিষাণ জাবার বিয়ে করবে তারই আয়োজন চলছে। লারিব হাত থেকে টুকরী জাব ঝাড়টা থসে পড়ল মাটিতে, তার জার গাঁড়াবার ক্ষমতা নেই, সে ধপ করে মাটিতে বনে গেল।

হতভাগিনী লারির চোথের সামনে বিয়ের দিন এগিরে এল।
থব বাজনা বাজিয়ে ইলদি লাগানো হল কিবানকে, লারি বরের
পেছনে বলে তার পোষা ছাগণছানাট,কে বুকে জড়িয়ে কাঁদজে
লাগল অবোরে। ভগবান ওধু ঝাড়ু লাগাবার জন্তই তাকে
পৃথিবীতে পাঠিছেছেন, তার অন্তট্ট পুথ লিখেন নি। খামী
মাতাল হোক, বাই হোক, তবু ত এত দিন তার নিজ্প
একারই ছিল, সেই মাতাল খামীকেও কেজে নিতে চলেছে আর
একজন! বে নতুন আগবে লে স্বামীর সোহাগিনী হবে। আর
তাকে হতে হবে তাদের দাসী। মন বোগাতে হবে নতুন
বৌ-এর।

লাবির চোপের জগ আর বাঁব মানে না। ছ'দিনেই লাবির মুপ্রানা শুকিরে উঠেছে। চুলপুলো রুক হয়ে উড়ছে, তেলের আর আঁচড়াবার অভাবে। ছাতে নেবর হলেও সে নারী, সে অঠানশী। তার গ্রামল মুপ্রানাতে একটা কোমপ্রভা আছে। কালো চোথের দৃষ্টি স্থানর স্বান্ত, কিছু সেই গ্রামল মুপ্রানা শুকিরে উঠেছে ছংথের আওভার। ভার মুখর দিকে চাইবার, ছংথিনীকে সমবেদনা জানিয়ে সম্প্রহে কাছে টেনে নেবার কেউ নেই।

কিবাণ বিয়ে করে ফিরে এসেছে, বউ ফর্সা, স্থক্ষরী। কিবাণ ভোসওরাল থেকে একশ টাকা মুক্সরা দিরে বাঈকী আনিয়েছে, রাত্রে নাচ-গান হবে। আসর বসেছে টাদোরা থাটিয়ে। নতুন বোকে নি:ম স্বাই ব্যন্ত । মেধরদের বড় জমাদারের মেরে সে। কাজেই স্বাই তাকে একটু খাতির করছে। লারি বর-কনেকে দুর থেকে দেখতে লাগল, ভার চোখে একটা হিংল্র দৃষ্টি কুটে উঠল। আসরের চারদিকে গ্যাসলাইট আলিয়ে উজ্জ্বল করা হয়েছে, কিবাণ হাসিমুখে নতুন পোবাক পরে সব তদারক করছে। মেধরবোরা সাজগোল্ধ করে মুখের ঘোমটা কমিয়ে এক পাশে বসে আছে বাঈলী নাচ দেখতে। আনাদ্তা লারির খোঁল কেউ করলে না। তাদের আতে ত এমন হয়েই খাকে, তিন চারটে বিয়ে না করলে মরদ আবার কি? এ কি সহরে বাবু যে এক বউর আঁচল ধরে থাকবে? লারির ভাগ্য ভাল, তবু ত চার বছর একা স্থামীর বর করেছে।

থাত সব বৃক্তি লাবির মন মানে না। ছঃখে রাগে শুমরাতে থাকে। সে দ্বে খুঁটি ধরে দাঁভিয়ে থাকে, জাসরের দিকে তীর দাইতে চেরে।

বাইজীর নাচ-গান আর নৃপুর তবলার আওয়াল ওনতে ওনতে হঠাৎ বছদিন পূর্বের সেই সিনেমা-রাতের কথা লারির মনে হল, গানের লাইনটা মনে পড়ল, "পিয়া মিলন কো বানা হার"। কিছ হার, তার পিয়া কোধার? সে তো নতুন নিয়ে মশওল, লারির ছ'চোধে আবার জলের ধারা নামে।

নতুন বৌকে দেখতে দেখতে হিংসার রাগে লারিব বুক বলতে

লাগল। লারির চোধের সামনে শ্লেধের প্লকে ডেসে উঠল একটা খর। প্লিশ জমাদারের মোটা গোঁকের নীচে বাঁকা হাসি। চোধে-মুথে একটা লোলুপভা, গা শিউরে উঠল। নজুন বাের দিকে চেরে চেরে লারি ভারতে লাগল, হাা, সে প্রভিশোধ তুলবে। কিবাণ বেমন নতুন বােকে নিরে জানন্দে মশ্ভল হবে তেমনি সে-ও ভার জাবনের স্থথের পথ বেছে নেবে।

লারির ছ'চোথে আগুল বেক্সজে লাগল। সে উঠল, নিজের খবের দিকে ফিবে চলল। কোমর থেকে চাবি বের করে গোলাপ-ফুলওরালা টিনের বান্ধ খুলে ভার স্থল্পর ঘাঘরাটা বের করে পরল। ক্ষক্ল সামনে টেনে নিরে বাঁধল। লঠন ভুলে নিজের মুধধানা আয়নাতে দেখে বীরে বীরে লারি বেরিয়ে পড়ে রাজার।

কিছুৰ্ব গিবেই লাবি তাব সহত্বে পালিত ছাগলিণ্ডৰ ম্যা-ম্যা ডাক ওনতে পোন। ধ্মকে দাঁড়াল। একটা অলানা আলকার তাব মন ছেবে গেল। সে কিবে ছুটে চলল তাব কুঁড়েতে। দেখতে পোল দৰজাটা ঈবং খোলা। আব এক পাশে দাঁড়িবে ভাব ছাগলিণ্ড অসহার ভাবে ডাকছে ম্যা-ম্যা! লাবি হ'হাত বাড়িবে তাকে বুকে তুলে নিল। তাবপর তাব মলিন পরিত্যক্ত বিছানার বনে পড়ল। নধর ছাগলিণ্ডটি প্রমানক্ষে লাবিব কোলে আবামে চোখ বুজল। আব লাবি ডাকে বুকে জড়িবে ধরে ছ-ছ করে কুঁকিবে কেঁলে উঠল ব্যর্থ বোবে, কোভে।

মেয়েদের ক্যাম্পে থাকা ইন্দুমতী ভট্টাচার্য্য

চ্ হ চং—চং চং—না, না, মন্দিরের কি গির্জার ঘটা নয়—ছুলেরও না—ক্যাম্পের।

ক্যাম্পের ঘণ্টা পড়ল, পতাকা অভিবাদন করবার। স্কালবেলা উঠে এরই জন্ত প্রস্তুত হ'রে নিচ্ছিল মেরেরা তাড়াতাড়ি—এখন কেউ বা চুল কেউ বা কাপড় ঠিক করতে করতে এসে সার বেঁথে দীড়াল পতাকার সামনে।

'কর হিন্দ' ব'লে অভিবাদন শেব ক'বে মেরেরা লাইন করে চলল মাঠে—প্রক হ'ল দিনের কটিন। ব্যায়াম-শিক্ষিত্রীথা ব্যায়াম শিক্ষা দেবেন এখন মেরেদের। ব্রত্তারী নৃত্য, ডিল, তবু হাতে ব্যায়াম অথবা কুচকাওয়াক চলবে কিছুক্ষণ।

কি উৎসাহ মেরেদের— লাফাছে, নাচছে, বুরপাক খাছে—
ছলোবছ সচল ক্লের মালার মন্ত হরে অল সঞ্চালন করছে—কথনও
দাঁড়াছে সবুজ গালচে বিছানো মাঠে শালা শালা ফুলের ভীবভ ভবক
হরে। দেখছি ওদের সজীবভা, ওদের চঞ্চলতা, ওদের আনন্দ, ওদের
আাণশক্তি।

কে বলবে এই মেরেওলিই আমাদের বিভালরে ক্লাসে ক্লাসে বলে থাকে। কোলকুঁজো, বিবাদের প্রতিমৃত্তি হয়ে, বিমানো বিমানো চোথে নিস্পাহ নিরাসক্ত দৃষ্টি নিয়ে তথন ছনিয়ার ক্লান্তি

व्यप्तिठ लावना व्यापनात्रहे जना

বোরোলীন

আপনার লাবণ্যময় প্রকাশেই আপনার সৌন্দর্যা। কিন্তু রোদ আর শুক্ষ হাওয়া প্রতিদিন আপনার সে মাধুরী মান করে দিছে। ওয়ধিগুণযুক্ত স্থরভিত বোরোলীন এই করুণ অবস্থার হাত থেকে আপনাকে রক্ষা করবে। এর সক্রিয় উপাদানগুলি আপনার হুকের গভীরে প্রবেশ করে শুকিয়ে যাওয়া স্নেহজাতীয় পদার্থ ফিরিয়ে এনে আপনার হুককে মথমলের মত কোমল ও মস্থা কোরে সজীব ও ভারুণোর দীপ্তিতে উজ্জ্বল ক'রে ভূলবে। আবেশ-লাগা স্থরভিযুক্ত বোরোলীন ক্রীম মেথে আপনার হুকের সৌন্দর্যা রক্ষা করুন আর নিজেকে রূপোজ্জ্বল করে তুলুন।





পরিবেশক: জি, দত্ত এণ্ড কোং, ১৬, বনফিল্ড লেন, কলিকাভা-১

আর অবসাদ মাধানো থাকে, বেন ওলের দেহে-মনে সমগ্র সভার। সেই মেয়েগুলিই-----

ওদের চা খাবার ঘটা পড়ে—তবুও আবেকটু ব্যায়াম করতে পারলেই ওরা থুসী হয়—কিছ উপার নেই—সব বাঁবা নিরমের ছকে—একটি মিনিট এদিক ওদিক হবার উপায় নেই ক্যাম্পে—ভাই মাঠ ছেড়ে এবার আসতে হয় খাবার ঘরে।

জলধাবারের থালা, চারের কাপ-ডিস নেবার ভলী—থাবার ভলী—পরে পরিকার করে ধুরে এনে গুছিরে রাধার ভলীর ওপর নম্বর পাবে ওরা।

কি তৎপবতা, কি নিখঁত ক'বে কাঞ্চ করবার প্রচেষ্টা ওদের ।
আর ঠেলাঠেলি নেই—আগে নিজে নেব এ অভিসন্ধি নেই শিছ্নের
জনকে এগিরে দিভেই ব্যক্ত ওরা । আর জন্তর । এই মেরেরাই
করে ঠেলাঠেলি চীৎকার—আগে এগিরে দাঁড়াবার জন্ত অসভাতা ।
আশ্চর্ব্য লাগে । কোন বাহু মল্লে রেন ওরা ক্যাম্পে ঢোকা মাত্র
লিবে নিরেছে বে এটা নিরমের রাজত । অবচ এবানে কেউ নিরম
চাপিরে দিছে না ঘাড়ে । কি ভাল, দল্লী আমাদের মেরেরা ! অবচ
এদের নিরমে আনভে হিমসিম বেরে বাই আমরা স্থুলে—
কেন ?

চা থাবার পর ক্লাস। না, না, নারস পাঠাপুস্তক নিরে, 'দেখো মেবেরা, ছি:, ছি:, ভোমবা কিছু জান না', কবে আরম্ভ করা ক্লাস নর। ভেড়ার গোরালে ঠাসাঠাসি পাদাগাদি হয়ে বসে গলদথর্ম হবার মন্ত ক্লাসও নর। বা ওনতে ভাল লাগে—বেমন ভাবে ওনতে ভাল লাগে ক্লেকে আরামে বসে, তাই শোনার ক্লাস। গল্লের মাধ্যমে জ্ঞানভাগু উজাড় করে দেওয়া—ছবি, আবৃত্তি, গান, অভিনর, ডুইং ও নানা উপকরণের সাহায্যে। শেখাকে শেখা বলেই মনে হয় না—তর্মানক্ষ, তর্উৎসাহ, তর্ম্প্রস্কিৎসার মাধ্যমে কোত্ত্ল জ্ঞাগানো বিষরে জ্ঞার্জি বাড়ানো।

কোথা দিয়ে কেটে যায় পুরো একটি ঘণ্টা, তঁস থাকে না মেরেদের—শিক্ষিত্রীরও। আর স্থুলে ? ৪৫ মিনিটের পিরিয়ডেই পাণ ত্রাহি মধুস্বন! দারোয়ান ঘণ্টা দিছে না—টুলে বঙ্গে ঘুমিয়ে পড়েছে ভেবে মনে মনে দাকণ অস্বস্তি, অলাস্থি—ছাত্রীদের, শিক্ষিত্রীদেরও।

কাস শেব হলে আল্পনা আঁকা বা মাটির কাল অথবা ছইংএর কাস আবস্ত হয়। বাবান্দার ভাগে ভাগে বনে পড়ে মেরেরা, মনের মাধ্বী কৃটিরে তুলতে হাতের কাজের মধ্য দিরে। কত সৌন্দর্যক্রান, কত সভাবনা-সমুজ্বস কোরক ওলের মধ্যে। ক্রোগ-ক্ষরিধা সহামুত্তির অভাবের ওমোট হাওরায় তা আলোর মুধ দেখে না কোন দিন অথবা দেধলেও অকালে শুকিরে বার। দেখি আর ভাবি সমস্ত মন তুম্ডে ওঠে হাহাকারে।

হাতের কাল শেব হলে ভাতীর স্থীত ও জ্ঞাত বদের গান অভ্যাস করে মেরের। সবৈতে সমান উৎসাহ, সমান আনক্ষ ওলেব।

এর পর বাগানে থানিকটা কাজ করে, ঘর-দোর পরিকার করার কাজ সেরে স্নান করতে বার মেরেরা। বে দলের ওপর বেদিন ভার থাকে সেই দল রারাবারা করে রেখেছে ইভিমধ্যে। খেতে বসে ওরা। নিজেরাই ঠাই করে—নিজেরাই ভাগে ভাগে পরিবেশন। থাওরার পর বাধ্যতামূলক শোধরার ব্যবস্থা এক বন্টা। ভার পর স্থক হর কাষ্ট্র এড ও নার্সিং-এর ক্লান। প্রত্যেক মেরেটির মনের মধ্যে লুকিরে আছে একটি নেবাকাজ্বিনী নারী—এই সময় তা বোকবার মেরেদের শোধবার আগ্রহ ও রোগীকে শাস্তি দেবার উপায়গুলি জেনে নেবার আস্তবিক্লা দেখে।

এই ক্লাসের পর জাতন্ত শেলারের ক্লালের। জন্ম সমরের মধ্যে সুক্ষরভাবে সহজে বে সব সেলাই শেখা বার তাই শেখানো হর ক্যাম্পে। তারপর জাধ ঘণ্টা ওদের নিজেদের বই বা খবরের কাগজ প্রুবার সময় দেওরা হর।

বোদও পড়ে আসে ওদিকে—তথন ওরা মাঠে গিয়ে লাঠিখেল। শেখে। সামাক্সতম হলেও আত্মরকার উপায় কিছু শিখতে হবে বৈ কি মেছেদের। বে হাত আলপনা আঁকে, সে হাত লাঠি চালাতেও সক্ষম, এ দেখে আশায় মন ভবে বায় কত বে!

এর পর চুল বেঁধে পা ধুরে মেরেরা ফল আর ছধ থেরে নের ভাড়াভাড়ি। শ্রম—শ্রমের পর করপরিপূরণ—বিশ্রাম ও থাত দিরে — এসত্য ক্যাম্পে মেনে চলা হর সব সময়। আমাদের প্রাত্যহিক জীবনে আমরা ইঞ্জিন চালিরেই চলি—ভাকে বিশ্রাম দেওরা, ভেল দেওরার কথা ভেবেও দেখি না সব সমর, আমরা দেখলেও উপার থাকে না হরত তাই বেন ভাববার দরকারই নেই এমনি ভাবে থাকি — ভাই আমাদের কাজে প্রাণ থাকে না, উৎসাহ থাকে না, সোঠব থাকে না—করতে হর ভাই করি এমনি একটা ভাবই শুরু থাকে।

ক্যাম্পে প্রতিদিন নানা বিশিষ্ট লোকের আগমন হয় বিকেলের দিকে। মেরেরা বলে—তাঁদের কাছ খেকে শিক্ষামূলক বলুতা বা কাহিনী শোনে প্রত্যন্ত। এই সব লোকেদের-সঙ্গে পরিচিত হয়ে তাদের অহেতুক লজ্জা, জড়তা কাটিয়ে উঠে, সপ্রতিভ, চটপট হয়ে ওঠে এলায় ফেরায়, কথাবার্তায়—প্রেরণা পায় তাঁদের মত হবায়—আত্মপ্রতায় স্বদৃঢ় হয়ে।

—বিকেলের চা ও জনপাবার মেরেরা অভিথিনের সংল বংস থার। তারপর সাধারণতঃ সিনেমা বা ম্যাজিক দঠন দেখানো হর —আবার মেরেরা নিজেরা গান, নাচ, আবৃত্তি, অভিনর ইত্যাদির মাধ্যমে আনন্দ করে। কিম্বা দিদিরা তাদের গল্প বলেন কি তারাই গল্প শোনার। এতে মেরেদের বলার ক্ষমতা বাড়ে, সংস্কাচ কাটে— নিজেকে প্রকাশ করবার প্রেরণা ও উৎসাহ আসে।

বাতের খা বয়া হয় এর পর—একটু ইচ্ছে মত ঘূরে বেড়ানো হয় ভারপর—সব শেব পতাকা নামিয়ে ওতে বাওরা। শোবার আগে কিছ বোজনাম্চা দেখা চাই প্রভাক মেয়ের।

এই হল বোজকার মোটাষ্টি কটিন ক্যাম্পে—সুবিধা অসুবিধা অমুসারে এর অদল বদল করা হয় সব সময়ই অবঞ্চ।

বাইবে বাওরা এবং গ্রামের লোকজনদের সংক্র মেলামেশা করা ক্যাম্পের ক্রটিনের মধ্যেই পড়ে—বেদিন তা করা হয় সেদিন ভেতরের ক্রটিন কিছু কিছু বাদ পড়ে বাধ্য হয়ে। এই বাইরে বেরোনর মেরেদের সব থেকে জানন্দ উৎসাহ।

ক্যাম্পের থক একটি কান্ধের এক একজন ভারপ্রোপ্ত দিদিম^{নি} থাকেন অবগু—তাঁদের নিরলন দৃষ্টি ও পরিপ্রমে ক্যাম্পের সমর্ভ কান্ধ সুঠ্,ভাবে স্থাম্পার হয়—কিন্ত তাঁরা নিজেরা কিছু না করে মেরেদের দিয়েই সব কান্ধ করান—এইটাই নিরম ক্যাম্পে। কিছ ক্যাম্পে কি হয় না হয় ভাব বিবরণী দেখার জয়েই তথ্ এ প্রবন্ধ নিথছি না। ক্যাম্প করে যে শিকা ও অভিজ্ঞতা লাভ করেছি সেটুকু প্রকাশ করবারই আগ্রহ আমার।

ছেলেমেরেদের বর্ত্তমান কালের সমাজ-জীবনে থাপ থাওরাবার জন্ম মাঝে মাঝে ক্যাম্পে থেকে শিক্ষা লাভ করবার প্রয়োজন বে কত বেনী, তা সব সময় জন্মভব করেছি ক্যাম্পে থেকে।

স্কুলে মেরেদের সঙ্গে ভাল ভাবে মেলামেশা করবার প্রবাপ স্থিবা আমরা পাই না—কার মধ্যে কী সম্ভাবনার বীজ লুকিরে আছে—হাদরবার্ডা, দেবা, স্থলীলভার, কজনী প্রতিভার দিক দিয়ে ভাদের চরিত্রের বিভিন্নমুখী ধারাগুলির সন্ধান পাওয়াও বার না স্কুলে—পাইকারী হিসাবে মেয়েদের দেখি আমরা স্কুলে—প্রধানতঃ ভাল করে লেখাপড়া করলে ছ'-একজন দৃষ্টি আবর্ষণ করে। সমষ্টির চাপে ব্যষ্টির স্বাভন্তা চোখেই পড়ে না। ছাত্রীদের সংখ্যাধিক্য, আমাদের শিক্ষা পদ্ধতি ও বিভালয় পরিচালনার ক্রটি ও শিক্ষাত্রীদের উদার দৃষ্টি হলীর অভাব এবং ওদাসীয়া অবশ্য অনেক পরিমাণে দায়ী একল।

কিছ ক্যাম্পে প্রত্যেকটি মেয়ের স্বাভন্তা প্রকাশ করবার স্বরোগ-স্বিধার জন্ত নেই। দেখানে ব্যষ্টি হিন্নাবে তাদের দেখা হর প্রত্যেকটি ব্যাপারে। জাত্মহিশাসবোধ তাই স্থন্দর ভাবে ফুটে ওঠে এথানে। ক্লাসে যে মেরে সাষ্ট বেঞ্চে বসে থাকে মুখ লুকিয়ে এথানে তার মধ্যেও দেখেছি অনুঠভাবে নিজেকে প্রকাশ করবার জাত্মহ আয়ুপ্রভাৱে সমুক্ষক ও জাত্মপ্রকাশে উন্মুখ হয়ে।

ক্যাম্পে শুধু কাজ কাজ আর কাজ—বাজে সময় কাটাবার
ফুরসং নেই একটুও, প্রত্যেকের ওপর দারিও প্রভ্যেকের ওপর নজর।
সাবের মৃস্যবোধ। নিরমান্ত্রভিতা ও শৃষ্ণালাবোধ এখানে আগতে
বাধ্য। তারপর একসঙ্গে থাকা নানা রকমের মেয়ের সঙ্গে একসঙ্গে
কাজ করার অভ্যাস পরস্পার পরস্পারকে সহ্থ করে নেওয়া দোবঙ্গ বিচার না করে, অজ্যের দেখে নিজেকে সংশোধিত করে নেওয়া মিসে-মিশে কাজ করে গঠনমূলক মনোবৃত্তির উল্মেষ করা ইত্যাদি,
অনেক কিছুই অভ্যাস হরে বার আপনা থেকে।

স্থূলে আমর। হাজার নীতি উপদেশ দিরেও মভা সমিতিতে দীড়িবে মঞ্চ কাঁপিয়ে ফেলেও বা পারি না ক্যাম্পে থাকার ফলে সেগুলি অভ্যাসে পরিণত হয় অতি সহজে।

বৈধ্যা, সহিফুতা, ক্ষমা প্রভৃতি নারীস্থসত স্ক্রমার বৃত্তিওলিরও বিকাশ হয় এখানে। একের পর এক। ঠেলাঠেলি ধ্বস্তাধ্বস্তি না করে প্রত্যেকটি কাম্ল একজনের পর একজনকে করে বেতে হয় মুধ বৃক্ষে। আমি আগে স্থবিধা নেব, অত্যে মঙ্গক, এ প্রবৃত্তি কাগবার কোন প্রবোগই নেই ক্যাম্পে।

ক্যাম্পে মেরেরা চোধ-কান থুলে রেখেছে সর্বন।—তটছ হংর আছে সব কাজ সুষ্ঠু ভাবে হচ্ছে কি না দেখবার জক্ত—তাই ঝিমিরে বিমিরে গড়িরে গড়িরে ঘূমিরে ঘূমিরে চলে না ওরা, প্রাণ আছে ওদের চনার ফেরার কথার বার্তার।

সমবার প্রধার থাকতে থাকতে সহক্ষ কর্ত্তব্যক্তান বেগে ওঠে ওদের মধ্যে আপনা আপনি। একজন একজনের প্রতি সহামুভূতিতে ভরপুর হয়ে ওঠে। ক্যাম্প শেব হলে ভাই ওদের বড় ছঃখ, বন্ধুদের ছিড়ে থাকরে কেমন করে! স্থুলে দেখি আজ-কাল বড় বান্ত্রিক হরে পড়েছে মেরেরা— সবই করতে হয়, তাই কোন রকমে করার পর্যারে এসে পড়েছে—প্রাণ নেই, উৎসাহ নেই, শ্রদ্ধা নেই অব্যবস্থিত চিত্ততায়, অবহেলায়, অশ্রদ্ধার, অবিখাসের প্রকাশ সর্বত্ত ।

ক্যাম্পে সব সমর দেখেছি মেরেরা বড়দের সামাজ্যতম নির্দ্দেশটুকুও পালন করবার জন্ত কত তৎপর—ধন্ত হরে বাওয়া ভার বেন তালের বড়দের আদেশ পালনে। স্কুলে সেই মেরেরাই বেন পা এলিয়ে দিয়েছে—নির্দেশ আদেশ করনেই রাগ-রাগ ভাব—পালন না করতে পারলেই বাঁচে—পড়াটুকু শুনেই যেন উদ্ধার করে দিছে আমাদের। লিখে নিতে ব'লে, পড়া জিগ্যেস করে আমরা বেন অপরাধ করছি—মনের এমনি ভাব প্রকাশ করা দৃষ্টি তাদের চোখে।

বড়দের মেনে চলা—এবং মেনে চলে গর্ব ও আত্মপ্রাদ লাভ আঞ্জ-কাল উঠে বাছে বেন ভগৎ থেকে—মেনে চলাটাই নিক্লেকে ছোট করা এবং আত্মাবমাননা। এমনি একটা বারণা বন্ধমূল হ'বে বাছে আমাদের ছোটদের মনেও। ক্যাম্পে কিছ এব সম্পূর্ণ বিপরীক্ত মনোভাব জেগে উঠতে দেখেছি, এটাই আম্চর্যা!

ভাষা কাল্ক কয়তে পাবে, ভাদের ওপর বিশাস করে কাল্পের ভার দেওরা হ'ল্পে, এ বেন বাহুমল্লের মত বর্ষপক্তি প্রকাশের প্রেরণা। আমাদের বিভাগরে আমহা দেখাপড়াটুকুর ওপরই লোর দিই—অন্ত কোন দিক দেখি না—ভাই ভার ফস শোচনীর হ'রে দাড়ার। বল্পের মত বই মুখল্থ করতে পাবে বারা ভারাই উৎরে বার বিভাগরে—আর সকলের অবস্থা কাহিল হ'রে পড়ে। আমার মনে হয়, দাকণ অর্থনিংকটের দকণ বে নিদাকণ অভাব আমাদের, ভার কলে খাতা বল্প বেকে আরম্ভ করে সমন্ত কিছুতে বঞ্চিত হ'রে হ'রে এবং বঞ্চিভদের অভিভাবকৃত্বে থেকে আমাদের ছোটদেরও দেহ-মনে আপনা থেকেই একটা কৈব্য এনে পড়ছে—ভাই কোন কিছুতেই আর প্রোণ থাকছে না, আলা থাকছে না।

ক্যান্দের পরিবেশ সম্পূর্ণ বিভিন্ন। তাছাড়া পেট ভবে থেতে পাওরাটা একটা বিশেষ কারণ। ছুলে ক'টা ছেলে-মেরে ঠিকমত থেরে আসতে পার ? শিক্ষক-শিক্ষয়িত্রীদেরও সেই অবস্থা। তাই ভাল লাগানো ও ভাল লাগার ঘর শৃক্ত হ'তে বাধ্য। পৃষ্টিকর ক্ষচিকর আহারে পরিতৃপ্ত মেরেদের দেখে একথা ক্যাম্পে আমার বেশী করে মনে হরেছে।

আমি তর্ মেরেদের কথাই বললাম—ছেলেদের সম্বন্ধেও ঠিক এই একই কথান্তলি প্রেরোজ্য।—আমাদের দেশের অভিভাবকদের ছেলেমেরেদের, বিশেব ক'রে মেরেদের, ক্যাম্পে পাঠানোর উপকারিতা সম্বন্ধে বোধ তো নেই-ই, আছে অক্তভাপ্রস্ত সম্বেহ, আনাস্থা, অবিশাস ও ভাজিকা।

এনেশে এসব নতুন বলেই এবকম হব—দেশের অগ্রগতির সঙ্গে সঙ্গে আমাদের দেশের অভিচাবকরাও ব্রবেন, ছেলেমেরেদের তারু পূঁৰিগত বিভা অর্জন করবার প্রবাস দিশেই শিক্ষা দেওরা হল্ন না—শিক্ষার অপরিহার্য্য অঙ্গ আছে অসংখ্য। কাম্পে খাকতে দেওরা ভাদের মধ্যে এক বিশেব উল্লেখবোগ্য প্ররোজনীর অস।

ক্তুভোদা: আহাহা কি রানা! কি স্বাদ! কিরে বিমলা বল বল।

বিমলঃ সত্যিই অপূর্ব রালা! আমাকে আর একটু

মাছের ঝোল দিনতো।

বিনয়: আমাকেও। আর একটু চচ্চড়ী। সত্যিই ভালনা,

माह, তরকারী, মাংস সবই অপূর্ব।

ভূজোদা: ভাগ্যিস সেদিন মেনি-দির সঙ্গে দেখা হয়ে গেল।

তানাংলে এই পোড়া সহরে কি এমন রামা খাওয়া যায়।

মেনিদি ৪ মাস আগে ভোমার মধুপুরের বাড়ীতে খেয়েছি

সে রান্নার স্বাদ এখনও মুখে লেগে আছে।

মেনিদি: কি বে বল ভুতো। এত বিরাট সহর-এত লোকজন; এখানে ভাল রামার আর অভাব কি?

বিমশ: আপনাকে বে এত ভাল ভাল হাতের রালা থাওয়ালাম !

ভূতোদা: ছ্যা:! এ সহরের শোকজনের তাড়াছড়ো করেই জীবন কেটে বায়। ৱালাবালা খাওরা দাওয়া করবে কখন?

বিনয়। তার মানে ?

ভূতোদা: সবসময় পৰে ঘাটে প্রান হাতে করে চলা।
মেনিদি, সেদিন তোমার বাড়ী আসার জন্ম প্রান হাতে
করে ভো এক বাসে উঠে পড়লাম। গাদাগাদি ভীড়।
চৌরদীর কাছে, আমার পেছনের ভদ্রলোক পিঠে খোঁচা
থেয়ে হাত ঘড়ীর দিকে তাকিয়ে বললেন' আপনি আমার
পায়ের ওপর উঠে দঁড়িয়েছেন ১ টা ৪৫ মি: এখন সোয়া
দশটা দয়া করে যদি নামেন তাহলে আমি অফিস
বেতে পারি।

বিশল: হাা: হাা: হাা:

ভূতোদা: হাসছিস কি ! এরকমভাবে বাঁচলে কথনও ফাইন আট্ বাঁচে ? রান্না থাওয়া এগুলো ফাইন আটে। অনেক সময় লাগে, অনেক যত্ন লাগে। মেনিদি, যদি এই পোড়া শহরে বেশিদিন থাকেন, তাহলে এরকম রান্না করতে পারভেন ?

বিনয়: কেন না ? তাড়াহড়ো তো আমরা করছি। রারা তো করে মেয়েরা, তাদের আর তাড়াহড়ো কোথায় ? ভূতোলা: ইকনমিকা পড়েছিস ? ডিমাও আর সালাইয়ের ব্যাপারটা জানিস। বারা থাবে তারা যদি ভাল থাবার না থায় তাহলে তারা রান্না করে,তাদের ভাল থাবার করার উৎসাহ থাকে ?

DL/P. 3A-X52 BG



সহরের কার্য়াজী





আর সারাদিন বাসে ট্রামে আফিসে দোড়ঝাঁপ করে আর ভাল থাবার সম্বন্ধে ভাবার উৎসাহ কোথায় ?

বিমলঃ আপনি বলতে চান য়ে এথানে ভাল রারা হতে পারেনা ?

ভূতোদাঃ হয় তো হতে পারে কিন্তু আমাদের মধুপুরের মন্ত নয়। ওথানে দোড়ঝাপ নেই লোকে মনের আননেদ থার, মেয়েরা সব সময়ই নতুন নতুন থাবারের কথা ভাবে। এই মেনিদির রারাই দ্যখনা।

মেনিদিঃ কেন বারে বারে আমার রানার কথা বলছো ভূতো। রানা সংক্ষে আমরা কি সহরের কাছ থেকে কম শিথেছি?

বিমল: দেখুনতো মেনিদি। নতুন জিনিষতো সহরেই আগে আসে তারপর যায় মফখল গ্রামে। ইলেকট্রিক গ্যাস' গ্রালুমিনিয়াম স্বইতো সহরে প্রথম এসেছিল।

বিনয়: আপনি বারাবারার কথা বলছেন তো "ডালডার" কথাই ধকননা। 'ভালডা" এখন সহরে গ্রামে লক, লক পরিবারে ব্যবহার হচ্ছে কিন্তু "ডালডা" প্রথম এসেছিল কোলকাতা সহরেরই বাজারে।

ভূতোদা: তুমিও ক "ডালডা" বাবহার কর নাকি মেনিদি: মেনিদি: নিশ্চয়ই। আজকের সব রাহাই তো "ডালডা"য় হয়েছে।

ভূতোদা এঁা: ! ডাল, চচ্চড়ি, শুক্তো,মাছ, মাংস, সংই "ডালডা"য় ? আমিতো জানতাম "ডালডা"য় শুধু ভাজা-ভূজিই হয়।

বিমশঃ কেন ভূতোদা আপনাকে তো আমরা আগেই বলেছি যে "ভালডা" সব রালার পক্ষেই ভাগ এবং পৃষ্টিকর। সেইজন্ম এখন লক্ষ লক্ষ বাড়ীতে "ভালডা" ব্যবহার হচ্ছে।

ভূতোদা: ও: সেইজন্তে ! মেনিদি, আমি তাই ভাবছিলাম বে তোমার মধুপুরের বাড়ীর রারাটা এত বেশী ভাল হয়ে-ছিল কেন। এতক্ষণে ব্যক্ষাম

মেনিদি: আমার মধুপুরের বাড়ীতেও সব রান্নাই "ডালজার" হর। তুমি থেদিন খেরেছিলে সেদিনও সব রান্নাই "ডালজার" হয়েছিল।

विमनः कि जूरजाना, जाब मश्रतब नित्न कबरवन।

হিনুস্থান লিভার লিমিটেড নেম্বাই

বাতিঘর

(পূর্ব-প্রকাশিতের পর)

বারি দেবী

্রিই অবাহিত নতুন জীবনটার সঙ্গে আপোর করতে চাইলো স্থমিতা। হ:সহ পরিবেশকে চাইলো সহনীয় করতে। কিছ বা হবার নয় তা কোন কালে হয় না,—ভাই ওর জীবনগ্রন্থির জুট্তলো দিনে দিনে জটিল থেকে জটিলতর হয়ে উঠতে লাগলো।

দেদিন সকালে চিঠি লিখছিলো স্থমিতা, সোমনাথকে। কথন নিঃশব্দে অসীম এসে পালে দাঁড়িয়েছিলো, বৃষতে পারেনি।

—বাবাকে চিঠি লিখছো বৃঝি <u>?</u>

চমকে উঠে স্থমিতা ফিরে চাইলো ওর দিকে,—জক্ট স্বরে বললো হাা।

- —বেশ তো, বা লেখবার লেখ, আরও গোটাকতক কথা ওর সঙ্গে লিখে দাও।
 - —কি কথা ? ভব কঠে ভগালো স্থমিতা।
- —এই কথা, মানে আমি বলতে চাইছি—এ তোমাদের লালকুঠির কথাটা। অত বড় বাড়ীটা শুধু শুধু বসিরে রেথে কি হবে ?
 তথন তুমি থাকতে, সে ছিলো অক্স কথা। এখন দিদিমা থাকতে
 চান এক পালে থাকুন, বাকি অংশটা ডাড়া দিলে প্রায় ছ'-ভিন
 হাজার টাকা মাসে ভাড়া পাওয়া যেতে পারে। আজকালকার
 বাজারে ওটা নই হতে দেওয়া বুজিমানের কাজ নর, তুমি থেশ
 করে গুছিরে কথাগুলো লিবে দাও ওঁকে, বুকলে ?
- —বাবাকে ওসব লেখা মিথ্যে। কুঠিত ভাবে বললো স্থমিতা, তিনি কাক্সম মতামত নিয়ে কাজ কংখন না, প্রেরাজন মনে করলে নিজেই করবেন বাড়ীর ব্যবস্থা।
- हা ঠিকই বলেছো কথাটা। সাধু সেজে ভণ্ডামি করে বেড়ার বে লোক, সাংসারিক দায়িছ-জ্ঞান সে পাবে কোথার? কিন্তু আমাদের ভো ওসব মেনে নেওরা চলবে না। ভালো-মন্দ, লাভ-ক্ষতি, সব কিছু বিচার করে চলতে হবে। বেশ তো সাধুসিরি করছেন, তার এখন আর বিষয় সম্পত্তির প্রয়োজন কি? একটা তথু সই করে দিলেই সব কিছুর দায়িছ থেকে তাঁকে যুজি দিয়ে দেবো, নিশ্চিস্ত মনে ভীর্থবাস কলন। যত খুসি নেড়ানেড়ি নিরে হৈ-চৈ কলন, আর কিসম্বটি বলতে বাবো না—ব্রালে? যাত্র একটি নাম সইরের ওরাজা।

কথার জবাব দিলো না অমিতা। গলাটা বেন কেওর চেপে ধরেছে, চোথ ছটো হঠাৎ জলে ভবে এলো। সিগারেট বার করলো অসীম, বিরেভে থেতুক পাওরা সোনার সিগারেট-কেসের ভেতর থেকে। ছ্-ঠোটের কাঁকে সিগারেটটি চেপে ধরে এ প্রেট সে প্রেট থোঁছে রূপোর লাইটারটাকে।

—কি হোল ? পাছিছ না তো লাইটাবটা ! দেখেছো ভূমি ? সুমিভাব কাছ খেকে জবাব না পেরে, বিরক্ত ভাবে ওর সুখের দিকে চাইলো অসীম,—মাই গড়! সল্লিসি বাপেব

সিগাবেটটা মাটিতে ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে, স্থাবিতার একথানি হাত নিজের হুঠোর চেপে ধরে সগর্জনে বললো অসীম— তোমার ঐ প্যান্-পানে স্বভাবটা পালটাও মিতা, ওটা আমি মোটেই বরদান্ত করতে পারিনে। কথার কথার রাঙাপানি করিয়ে অসীম হালদারের মন ভিজোতে পারবে না, ওসব ভাকামি বাদ দাও। সভিত্য বা দিয়ে মন ভেজানো বার, পারো তো সেইটে করবার চেষ্টা করো।

একটা ঝাঁকুনি দিয়ে ওব হাতটা ছুঁড়ে ফেলে দিয়ে সশ্কে ব্য ছেডে বেরিয়ে গেলো অসীম।

কি একটা কাজে এদিকে এসেছিলেন স্থলামের মা বযুনা দেবী।
স্থমিতাকে নিশ্চল ভাবে চেরারে বসে থাকতে দেখে ঘরে এসে
বললেন—কি হরেছে বে মিজু । আমন করে বসে কেন !
কা'কে লিখছিলি চিটি । বাবাকে বৃঝি । ভা বসে কেন রে । শেষ
কর চিঠিখানা ।

দর-দর করে চোধের জলের ধারা গড়িরে পড়লো স্থমিতার হুটি গাল বেয়ে। দশটি আঙল ঢাকা দেবার চেষ্টা করলো চোধের জলে ভেসে বাওয়া মুখখানাকে। ছু'হাতে জড়িয়ে ওকে নিজের বৃকে টেনে নিলেন বমুনা দেবী।

— ও মা ! এ কি কাও রে ৷ কেঁদে ভাসিরে দিলি ৷ বলি হলো কি ৷ বাবার জল্ঞে মন কেমন করছে বুঝি ৷ না ঠাকুরপোর সঙ্গে বগড়া হরেছে ৷ বলোভো লোনামুখি কোন্টা সভ্যি !

ংমুনা দেবীর গলাটা ছ-হাতে জড়িরে ধরে ওঁর বুকে মুখ লুকিয়ে ফুলে ফুলে কাঁদলো সুমিতা !

—— ও ক নিজের ধরে হাত ধরে নিরে গেলেন তিনি। ঝিকে ডেকে বললেন— বা ভো, ছোটমার চুল বাঁধার বান্ধটা নিয়ে আর, আমি আঞ্চ চুল বেঁধে দেব। মেবের কাপেট বিছিয়ে সুমিতাকে নিয়ে বললেন তিনি।

ঝি নিবে থলো একটি চক্ষনকাঠের বাস্ত্র। ওর থেকে সোনা-বাঁথানো চিক্লি বার করে সুমিতার একরাশ চেউথেলানো চূলের জট ছাড়াতে ছাড়াতে বললেন ভিনি,—চূলগুলোতে কি তেল দিস না, এক কথু হয়ে আছে কেন বে ? সভুর মাকে বলবি, ভালো করে তেল মাধিয়ে দেবে।

স্মতি জবাব দেৱ না সে কথাব। সে তথন স্থিব দৃষ্টিতে দেবছিলো স্থলামের ফটোথানিকে। তারপর আছে আছে বলগো—কামীদা' কবে ফিরবে কাকীমা গুঁতুর চিঠি ঠিকমত পাছেন তো ?

বড় জাকে বড়দি বলতে পাবেনি স্থমিতা, চিবকালের ডাক কাকীমা পান্টে বড়দি বলা কিছুতেই সম্ভব হয়নি ওর পকে। জসীমও অত ছোট ব্যাপাব নিবে মাথা ঘামায়নি, জাব ক'দিন বা ওদের সক?

—না, নির্মিত চিঠি-পত্তর আব পাই কই ? মাসথানেক হল একখানা পেরেছি, ভোদের বিরেতে বোগ দিতে পারলো না বলে ছংগ জানিরছে। ফিরতে ওব এখনও বছরখানেক দেরী হবে, একটা পত্তীক্ষা এখনও বাকি কি না। একটা চাপা নি:খাস ফেলে জবাব দিলেন ব্যুনা দেবী।

সোনার চিক্লি দিয়ে মস্ত বড় থোঁপা বেঁধে সোনার কাঁটা গুঁকতে গুঁকতে বললেন তিনি—কি চমৎকার মানিরেছে দেখতো? রোক আসবি আমি চুল বেঁধে দেব, তেল নেই, জল নেই, কি হাল করেছিলি চুলগুলোর বল দেখি?

ওদের ছ জনকে চমকে দিয়ে বড়ের বেগে বরে চ্কলো অসীম। মহা বিবজ্জি ভরে চেঁচিয়ে বললো—আ:, কথন থেকে বে ডাকাডাকি করছি ছ'টার পার্টি আছে, ছ জনের বেতে হবে অলকাপুরীতে। এদিকে দিব্যি আড্ডা অমাছে। এথানে বসে। বা: চমৎকার ঢাকেখরী থোঁপা হরেছে ভো? ছি, ছি, বৌদি, ঐ সেকেলে থোঁপা বেঁবে ও পার্টিতে বাবে না কি? হা:, হা:, করে বিজ্ঞপূর্ণ বরকাঁপানো হাসি হেসে বসলো অসীম —তা বেশ, ভা বেশ, অলকাপুরীর নামকরা নাচিয়ে মেয়ে স্মিতাকে এক্রেবারে পাড়াগাঁরের কলসী কাঁথে বৌ সাজিয়েছ, মন্দ লাগছে না!

সসক্ষ ভাবে মাধার কাপড় টানতে টানতে বললেন বমুনা দেবী— ও মা, ভোমরা পার্টিতে বাবে ? তা ভো জানতুম না । খুলে ফেল বে মিভা, ঠাকুরপো বেমন বলে, তেমনি করে চুল বাঁধ।

- আমি এই থোঁপা বড় ভালোবাসি কাকীমা, এ থোঁপা বেঁখে বাওয়া কিছু মাত্র বেমানান হবে না। নরম গলার জবাব দিলো অমিতা।
- —এই বে বেশ বোল-চাল শিক্ষা হরেছে মিতা দেবীর !
 চমংকার ! এর কুভিডটুকু অবগু আমার বৌদিরই পাওনা,
 কি বলে। ?

বমুনা দেবীর শান্ত ছটি চোঝে ফুটে উঠলো বিশ্বয়। ঈবৎ আরক্ত মুখে দেবরের দিকে চেয়ে বললেন—তৃমি হঠাৎ অভ চটে বাচ্ছো কেন ঠাকুরণো! মিজা তো কিছু অভায় বলেনি ?

- —হাঁা, হাঁা, ওকে ভালো করে শিখিরে দাও বৌদি, কি করে
 শামার ওপর টেক্কা মেরে চলতে হবে। এ আমি অনেক আগেই
 আঁচ করেছিলাম, বডটা বোকা ঠাউরেছো আমার ঠিক তভটা
 আমি নই।
- লাব নর! লাব নর! মাপ করে। এইবার, কারাভরা গলার কথাগুলো বলতে বলতে ঘর ছেড়ে ছুটে বেরিরে গেলো স্থমিতা, দ্বামও ছুটলো ওর পেছনে। ভাবগতিক ভালো নর; কিট ভো হয়েই আছে। সবলে স্থমিতার একথানি হাত চেপে ধরে ওকে টেনে ঘরে নিরে গিয়ে বসিরে দিলো খাটের ওপর। ভারপর খানিকটা দ্বাডিকোলন ওর মাথার চেলে দিয়ে, পাথার বেতলেটরটা লেব পরেন্টে গ্রিরে দিয়ে, গলার হ্বর মোলায়েম করে বললো অসীম—কিছু মনে কোরো না বাণী, ব্যবসার ঝামেলার জঙ্গে আজ মেলালটা বড় গরম ছিলো। বিশাস করে।, ও সব কথা সভিটে দামি বলতে চাইনি। এবারে ওঠো, ভৈরী হয়ে নাও লক্ষাটি!

বারাকা থেকে ভেসে এলো মস-মস জ্জোর আওয়াক আর দামী নিগারেটের গন্ধ, তারপরই ভারি বঠকর, আসতে পারি? ^{ছলে উঠলো ঘরের পর্দাটা}।

— শাবে কে ও, খনিল নাকি, সন্তিয় সন্থিই কুটুম বনে গেছে। দেখছি! এসো, এসো— পর্দা সরিবে ঘরে প্রবেশ করলো অনিল। সুমিতা থাট থেকে নেমে এসে ওকে প্রণাম করে গেলো পারের গুলো নিতে।

ত্'পা পিছিরে গিরে উচ্চকঠে তেসে উঠলো জনিল। জারে একি একি? বটা করে জাজ জামার জাবার পেলাম কেন রে? বোস বোস! ওর হাত ধরে সোফার বসিয়ে নিজে পাশে বসলো জনিল।

—তারপর কেমন আছিন ? বল। অনেক দিন তো বাসনি ওদিকে! কি হে অসীম, ওকে বে একেবাবে হারেমের বিবিসাহেবা বানিরেছো দেখছি, বাইবে বেক্তে টেক্তে দাও না, না কি ? ভোমাদের তুজন কাকরই তো আর পাতা মেলে না!

গলার টাইটা বাঁধতে বাঁধতে জবাব দিলো অসীম। ব্যবসারী
মাহ্য কুলি-মজুব খাটিয়ে পেটের ভাত বোগাড় করতে হয়, সময়
কোধার বলো আড্ডা মারবার ? মিতা কেন খবের কোণ ছেড়ে
নড়তে চার না সে কথা তাকেই জিজ্ঞেদ করো। সারাক্ষণ থালি ঐ
বৃড়ি জায়ের পালে বদে কি বে কথা কর বৃঝি না! এই থানিক
আগেই এই নিরে আমার সঙ্গে একভরফা হরে গেলো।

- —তাই নাকি ? এমন গিল্লি মেবে হবেছিস ভূই ? নাচ-গান সব কি বাতিল হবে গেছে ?
- চিবকালই কি জাব ও-সব ভালো লাগে ছোট মামা ? মান মুধে জবাব দিলো সুমিতা।
- —তারপর ? অনিলের সর্বাঙ্গে কৌত্হলী দৃষ্টি বুলিরে বললো অসীম—তারপর ? তোমার থবর কি শুনি ? সাজে-পোবাকে, চোখে-মুখে তো হাসিধ্সি উপচে পড়ছে, বলি ব্যাপারখানা কি ? মোটা বক্ষের গাঁও টাও জুটিয়েছ বোধ হয় ?

ওর সাজে-পোষাকে সত্যিই ছিলো আৰু বিশেষণ ! দামী নীলাভ স্থাট পরনে, আঙ্গেল মৃল্যবান হীরের আংটি। গারে ভূব-ভূবে সেন্টের গন্ধ, আঙ্গেলে কাঁকে চাপা ব্ল্যাক এণ্ড হোরাইট সিগাবেট। চোধে-মুখে জলছে ওর খুলির আলো।

— গাঁও ? তা একরকম তাই বটে! হাতের আধণোড়া সিগাবেটটা ছাইদানীতে চাপতে চাপতে বললো অনিল। ধোলাধুলিই বলি তাহলে, সামনের সপ্তাহে বিরে করছি ওকতারাকে।

—স্থীরোগ, ধবল ও— বৈজ্ঞানিক কেশ-চর্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্দ্মরোগ ও চুলের যাবতীয় রোগ ও জ্রীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসায়

পত্রালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ড়াও চ্যাটাজীর ব্যাশন্যাল কিওর সেণ্টার ৩৩, একডালিয়া রোড, কলিকাডা-১১ সন্মা গা—দাটা। কোন নং ৪৮-১৩৫৮ বাড়ীতে হালামা নয়, মানে সাতপাকের বিয়ে নয়, প্রেফ লেথাপড়া স্কালে, আর সজ্যেবেলার প্রাণ্ড হোটেলে একটা পার্টি! বাব্বা:, তোমাদের বিষের হালামা দেখে, ও সাতপাকের বিষেতে আক্তর্গরে পেছে, ছ'মাস হরে গেলো গারের ব্যথা বেন মরতেই চার না!

- —ভক্তারাকে বিরে করছো ? কেন হে, আর পাত্রী জুটলো না ? ভুক ভুলে বললো অসীম।
- —জ্টবে না কেন হে, জোটাইনি। এক লাইনেই আছি ছজনে, কেট কাউকে ছ্যতে পাববে না, ব্যলে না ? ছজনেই বোজগার করবো, ভালোই চলবে ! তবে কুন্ধিল এই বে, মা বড় কোঁস-কোঁস করছেন,—ইছে ছিলো অর্দ্ধেক রাজহু আর একটি রাজকত্তে বাগাবেন ছেলের জত্তে ! কিছু এইটুকু বোকেন না বে রাজকত্তে এই সম্মীছাড়া অভিনেতার গলার মালা পরাবে কোন ছঃখে ? বাক্—মনে হয়, পরে সব ঠিক হয়ে বাবে। ক্ববিটা কিছু আছু। ভোল্ পালটেছে বে মিতা, জামাইবাব্ ৬ব কানে বে কি মন্তব বেড়ে গেছেন, দিন-রাজ দেখো ঠাকুর্ববে কি সব বিড়-বিড় করছে, আর লখা লখা উপদেশ ছড়াছে !
- —আরে আমাকেও ও আসে হিডকথা শোনাতে? বলে অভিনেত্রী বিরে কোরো না ছোড়দা, সুথ পাবে না ! শোনো কথা! —আমি বলি ভোর ঘাড়ে আমাইবাবু ভূত চাপিরেছেন, সে ভূতটা কি এবার আমার ঘাড়ে নামাতে চাস? বেশ আছি বাবা, কেন আলাছো, আমার মাথার চুকবে না!

ক্লকণ্ঠে হেসে উঠে বললো প্রমিন্তা—ভ্তটার কাছে ছোট মাসী নিশ্চরই ভালো কিছু পাছে, আমার কাছে সেটাকে পাঠিরে দাও না ছোট মামা! আর ওকতারাকে বিয়ে করছো ওনে সভ্যিই ভালো লাগছেও, ঠিক ভোষারই মত!

মনোমত কথাটার থাকার সোকা থেকে পিংএর মত ছিটকে উঠে সামনের টেবিলটাতে প্রচণ্ড একটা বৃদ্ধি মেরে বদলো জনিল। কুলদানীটা লাফিরে আছড়ে পড়লো মেঝেতে। এতক্ষণে একটা কথার মতো কথা শোনালি মিতা! আরে দেই জভেই তো ভোকে জত পেরার করি রে! তা না, মা আছেন হছুম পাঁটার মত মুখ করে, বোন আগছেন খুঠান পাল্রীদের মত স্পমাচার হাতে করে, বাপ রে বাপ, বাড়ীতে বিরের থবর দিরেছি না মরা থবর তনিরেছি পর্বতে পারছি না! তারাকে অবতা বলিনি এসব কথা, তনলে ব্যাচারী মন থারাপ করবে! গাঁটা তালো কথা, জামাইবার্ শীগগির জাগছেন, বিষয়-সম্পত্তির কি-সব ব্যবস্থা করবেন, চিঠি দিরেছেন উর জ্যাটার্গিকে থবর দিরে বাথতে!

একটা স্বন্ধির বাতাস সাগলো বেন স্মিতার অভবে ! কার্পেটে গড়াগড়ি দিছে ফুলদানীটা, ফুলগুলো ছড়িবে পড়েছে এদিক ওদিকে! সেগুলো গুছিয়ে তুলে নিয়ে ফুলদানীতে গুঁজে রাথতে রাথতে হাসিমুখে বললো স্মিতা— বাবাকেই তে৷ চিঠি লিখছিলাম ছোট মামা, বাক্ ভাহলে ওটা আর শেব করবো না, ভালোই হল, ভাঁর আসার থবটা পোষা!

—ও:, আসছেন তা হলে, আাদিনে সুমতি হয়েছে ! ধ্বরটা বেশ শ্রুতিমধুর বটে ! তবে আমি একেবারে বাত্তবংমী কি না, ও-সৰ শ্রুতিমধু, বা দুষ্টিমধুতে আমার লোভ নেই, আমি চাই একেবারে মধুভাগুটি লুঠ করতে। বুঝেছো চাল, ও ধবর টবরে মন আমার টগব্যিয়ে উঠবে না, বহুদ্দণ না সেই আসল্টি—ছ'আঙ লে টাকা বাজাবার ভঙ্গিতে টোকা মেরে, ভূক নাচিরে বিজ্ঞপের হাসি হাসলো অসীম।

টেবিলের ওপর ফুলদানীটা বসিরে দিয়ে নিঃশব্দে বর থেকে চলে বাদ্ধিলো স্থমিতা।

—বাছো কোধার? ওকে মুখিরে উঠলো অসীম, কাপড়টা ছায়বে কথন ? সময় ভো পেরিয়ে গেলো !

অসীযের এমন বিকৃত মুখভঙ্গী অনিল দেখেনি আগে!
মিতার সঙ্গে কথাবার্তার ধরণটাও বেন কেমন ধারা! নাঃ, মনটা
আক্র-কাল একটুতেই কেন ধারাণ হরে বায়, মাধার রক্ত বেন প্রম
হয়ে ওঠে!. স্থমিতার দিকে কিরে চাইলো অনিল, মানমুখে দে
দাঁড়িরেছিলো দরোজার পালে, হঠাৎ নজরে পড়লো—এই
ক'টা মাসে বড্ড বেন রোগা হয়ে গেছে ও। চোখের কোলে
কালি পড়েছে।

বিবেকের আর অন্থশোচনার কাঁটা ছটো খচ্-খচ, করে উঠলো বুকের ভেতর !

- —যা'বে মিতা, কাপড় ছেড়ে আয় ৷ প্রেহার্ক্স কর্ণ্ডে বললো অনিল,—ভোমাদের কোধাও বেকবার কথা ছিলো বৃঝি,—ভা ভো জানি না, মিছিমিছি দেরী করিবে দিলাম !
- আবে না, না, দেরী আব কি ? এই ভো মোটে ছ'টা— সাড়ে ছ'টার গেলেই চলবে ! অলকাপুরীতে মাসীমার ওথানে নেমন্তর ! কেন ডোমানের ডাকেন নি ?
- এ বাঃ ! সভ্যিই তো, একেবাবে ভূলে গেছি, আক্ষবাল কি সাংবাজিক ভূলই বে বাড়ে চেপেছে আমার ! ওদিকে শুকভারা হয়তো বেডি হবে আমার অপেকার বসে আছে ! আছা আমি চলি ভাহলে—

চঞ্চল পারে দরজার দিকে এগিয়ে বেভে থেতে, অসীমের হো হো হাসির শব্দ শুনে চমকে উঠে কিবে চাইলো ওর মুখের দিকে অনিল, হাসিটা বেন শোনালো অবিকল হারেনার হাসির মডো!

প্রের স্থাহের শনিবাবে প্রেট ইটার্শ হোটেলের সামনে ক্ষরেছে একটি কোঁতুহলী জনতা। ছবির মাছবরা আসছে পার্টিতে। তালের ধর্ণন করে মানবজন্ম সার্থক করার স্কতীর লালসা নিরে, ঘটার পর ঘটা গাঁড়িরে আছে প্রণাপিপাত্মর দলটি অপরায় কালে। লাল, কালো, লালা, সবুজ নানা রং-এর চক্চকে মটোরে চড়ে আসছেন, সিনেমা-আকাশের চন্ত্র, পূর্ব্য, তারকারা! আরো আসছেন ওলের বারা আকাশে ওড়ান, পাতালে ভোবান ওলের ঘরকার অভিনব থবর পরিবেশন করে জনসাধার্থকে তাক্ লাগিরে দেন, সেই সব সিনেমাপত্রের সম্পাদক ও বিলোটারেরা। এ ছাড়াও এসেছেন বকু-বাছবী, শিলী আর সাহিত্যিকবুজ।

অনিশ্কুমার আর ওকভারা সেন-এর বিরের ধ্বরটা বেশ বুধরোচক ভাষার অনেক আগেই বার ক্রেছিলো রিনেয়া: প্রিকাশুলো। ভার সঙ্গে ছিল ওক্ষের মানা ভ্রিমার ফটোগুলো। বিনিয়ে-পড়া বাজারটাকে ওয়া বেশ জাঁকিয়ে তুলেছিলো, সভি্নিধো মেশানো গ্রম গ্রম, নিভ্যানতুন ধ্বরগুলো পরিবেশন করে!

এমন জমকালো ভোজসভার গুধু আসেনি জনিলের কোনো আপনজন, একমাত্র জসীম ছাড়া।

স্থমিতা আসতে পারেনি, অস্ত বলে! তবে অলকাপুরীর মাসামা, একাই একশো হয়ে সবাইকে আদর-আণ্যারন করছেন, এমন সর্বস্থণসম্প্রা মহিলা বাদের সহায়, তাদের আবার ভাবনা কি! ওকতারা পরেছে রক্ত-বং বেনারদার সঙ্গে মানিয়ে হীরেচ্নির গহনা! আজ আর ওকে দেখে মনেই হছে না বে এই সেই লাভ্যময়ী অভিনেত্রী ওকতারা সেন! ওব চন্দনআঁকা কণালের উর্দ্ভাগে অলছে মুক্তোর সীথি থেকে ঝল্ড হীরের বৃষ্ক্টা। পাতলা আসমানী ওড়নার অবগুঠকে বধ্বেশে ওকে দেখাছিলো কল্যাণী গৃহলক্ষীর মতো!

প্রমোদোৎসবের ঝড়-তুফান বইছে যেন বনেদি হোটেলটিকে মাভামাতি করে! এক কোণে একটি টেবিলের ধার খেঁদে বদেছিলো অনিক্ষ্ণ, আর পশ্পিয়া। তুজনের হাতে তুজনার হাত বাঁধা!

—এবারে আমাদের বিয়ের পালাটা চুকিরে ফেলা যাক, কি বলো ? ছাতের চাণ দিয়ে বললো অনিক্র ।

—-রিন্-বিন্ ঝিন্-ঝিন্ শব্দের ঝকার তুলে হেসে উঠলো পশ্পিয়া—

— খার, এত ভাড়া কিসের খনি ? বিয়ে হলেই ভো সব

শেব হবে গেলো, বা কিছু রোমান্স তা তো ঐ বিষের আগেই!
কেমন ছজনকে পাবার জংগ্য ছজনের ছটফটানি, আবার হারাইহারাই ভয়, তার পরেই হয়তো ক্ষণিক মিলনের রোমান্টিক
পরিবেশ—এই তো বেশ। ওর চাতের আঙ্গগুলা নিয়ে
নাড়াচাড়া করতে করতে জবাব দিলো পশ্পিয়া।

ওর মুখের দিকে দঙ্গিগ্ধ দৃষ্টি মেলে চেরে দেখলো অনিক্লছ, হাসলো একটু। ভারণর আত্তে আত্তে হাতথানা সবিবে নিলো!

একটু দৃর থেকে ওদের দিকে খ্রেনদৃষ্টিতে চেরে ছিলো রন্থনলাল, ভাব পাশে বসেছিলো অসীম! ছজনের হাতে ফেনিল পানপাত্র। এক চূমুকে পাত্রটি শেব করে টেবিলের ওপর বসিরে দিরে উঠে গাঁড়ালো রন্থনলাল—কি তে, এরই মধ্যে উঠে পড়লে? আরো করেক পেগ চলুক না! অড়িরে অড়িরে বললো অসীম!

—না: ! আর নর, নতুন ক্যাডিলাক্ধানার টারাল দিতে হবে, এক্টেবারে বেছঁস হবার উপার নেই আজ, বুবলে কি না। বলতে বলতে পশ্পিরার দিকে এগিরে গেলো বতনলাল —আপনি একাই এসেছেন নাকি মিস বাও ! রাজাবাহাত্ত্ব আসেন নি ! বলগো রভনলাল।

—তাঁর আজ শরীরটা বে গোলমাল বাধিয়েছে, তাই তো একা আসতে পারলাম। তা না হলে কি বুড়োর হাত থেকে ছাড়া পাবার বো আছে? বারবা:, যক্ষির মত আগলে বেড়াং, আমার বেন সাত রাজার ধন একটি মাত্র মাণিক ওঁর! কলকঠে হেসে, সোকার গড়িয়ে পড়লো পম্পিরা।



ওর স্থারে সুর মিলিয়ে হেলে উঠলো বতনলাল।

- তা ওঁর ভরটা কিছু অনুসক নয় মিস হাও! ও মণি-মাণিকের চেয়েও আাণনি মৃস্যবান, অনেকের কাছেই! কি বলেন মিষ্টার বাসং?
 - —হতে পারে। একটু হেনে জবাব দিলো অনিক্স।
- —চলুন না মিস হাও, নত্ন ক্যাডিসাক্ধানার আজ টায়াল দিতে যাবো,—ভাবি আরামদায়ক গাড়ীখানা। যেমন হাছহাঁসের মতো গড়নটা, তেমনি ভূসতুলে নরম সিটগুলো চড়লে আবো মজা। বেন হাওয়ার সন্তুল্ভ ভেষে চলেছি। আপনিও চলুন না মিষ্টার বাস্থ, বেশ সুউকুটে চাদনী রাভটা পাওয়া গেছে।
- —না, এখন ভো আমাৰ বাবার উপায় নেই মিটার ক্ষেত্রি, জক্তি কাজ আছে আমার, পতে এফদিন দেখবো আপনার বাজহাঁদটাকে।
- —শ্মিং থব মত লাফিংয় উঠে দ্বাঁড়ালো পশ্লিষা। হাদি-খুনিতে চূলবুলিয়ে বললো,—চলুন, চলুন মিষ্টার ক্ষেত্রি। আং! কি ওয়াথাবসুস প্রান্টা বাতলেছেন আপনি,—তার পর অনিক্ষর কাঁথটি এক হাতে চেপে ধরে তুলিয়ে দিকে আছ্বী ভঙ্গীতে বললো— ভূমি দিন দিন বড্ড বাজে হঙ্গে যাছে। আনি! এমন স্থাইট ইভনিটো কি কাজ করবার জন্তে? আং, কি আলোম বছা, গুৰু ভেনে বাওয়ার বাত আজ, জার কিছু নয়।
- আপান্তত মামলার স্রোতে ভাসছি পম্। দে জল আর নতুন করে ভাসবার ইচ্ছে নেই। মৃত্ হেসে জবাব দিলো অনিক্ষ।
- —তবে আৰু কি করা যাবে ? আমন মিস রাও! হাতে হাত জড়িবে বেরিয়ে গেলো ওরা ছ জন। অনিকৃত্বকে যাবার সময় হাত নেড়ে পশ্লিয়া বাই, বাই, কবে যেতে চোলেনি।

স্বস্তির নিঃখাস ছেডে সিগারেট ধরালো অনিক্রম্ব !

- কি দিতে বদৰো ভোমার? বিয়ার? রাম? হইছি? নাজিন?
- একটু ধেন চমক লাগলো অনিক্ছর, কারণ অক্সমনস্ক হয়ে পড়েছিলো সে। কথন অসীম এসে বে ছাড়িছেছে পাশে, বুঝড়ে পাবেনি। ওর প্রশ্নের জবাবে বললো,—নাঃ, কোনটাই নয়। বরং এক গ্লাস ঠাণ্ডা ভল খাণ্ডরাতে পাবেনি ?
- —বলো কি ? ঠাণ্ডা জলে কি মনের আলা কমানো বার ? মন জুড়োবার অব্যর্থ ওষুণ হলো তো ঐগুলো, বেটা হোক একটা নিয়ে বলো। পাঁচ মিনিটেই দিল খোলসা হয়ে বাবে।
- —লাণাতত মনটা আমার বেশ ঠাগু।ই আছে অসীম, আর সে সম্পূর্ণ স্থন্থ। কাল্ফেই কোনো দাওয়াই-এর প্রয়োজন ভার হচ্ছে না। মৃত্ হাল্ডের সঙ্গে জবাব দিলো অনিক্র।
- —মাই গড়! তোমাকে কলা দেখিরে পালালো ওরা আর ছুমি এখনও বলবে, তোমার মন স্বছই আছে? আর তা বদি বলো, তবে আমি বলবো, তুমি একটা আন্ত পুক্ষমামূবই নও। বীরভোগ্যা বস্করা, বুবেছো হে? বাকে চাও, নিজের পুক্ষম ছাহির করো তার কাছে। একটা মেরেমামূবকে বলে আনবার করে খুব বেশী শক্তি খরচ করতে হয় না, একটু চাই কলাকোশল, ব্যস, সব ঠাপা। কথা শেষ করে ঢক্ চক্ করে থানিকটা ছইছি প্লার তেলে বোতলটা টেবিলের ওপর সশক্ষে বসিরে দিয়ে সোকার গা এলিরে দিলো অসীম।

- —ভোমার ম্লাবান উপদেশের অক বক্সবাদ অসীম! তবে আকশোবের কথা এই বে, উপযুক্ত ক্ষেত্রে কথার বীজনুলো বদি ছুড়াতে, তাচলে খুব উদ্ভম ফসল লাভ হতো, কিছু এটা এক্কেবারে বাকে বলে পভিত জম, বাকাবীজনুলো ভোমার ঐ মাঠেই মারা গোলো। আছা, চলি ভাই, একটা জন্মরি কেল রয়েছে হাতে। উঠে গাঁড়ালো অনিকৃত্ব। ছু'পা এগিয়ে গিবে আবার ফিরে এলো। একটু ঝুঁকে পছে নিচু গলার বললো—ভোমার ঐ গারের জারে দগল-করা মেয়েমান্ত্রর সম্পত্তির ওপর আমার কিছু বিল্মাত্র লোভ নেই অসীম! আমি হচ্ছি মনের ব্যাপারী। ফুলের মতো স্কর্ম মনের ওপরই আমার আকর্ষণ বেশী। সে রকম কিছুর সন্ধান পাও ভো জানিও। প্রাণ্যোলা হাসির ঝড় তুলে অসীমের হাতটা ধরে একটা ঝাঁকুনি দিয়ে চঞ্চল পদক্ষেণে বেহিয়ে গেলো অনিকৃত্ব।
- —হোপ্লেশ! শালা এ ক্রবারে মেয়েমামূর বনে গেছে। বিকুত স্বরে বললো অসীম।

পাণ দিয়ে বেতে ধেতে মানীমা হি-তি করে তেনে উঠে জিজেন করলেন—কার কথা বলছো জনীম ?

- —আবার কার ? ঐ অনিক্ছটার। বিলেতে বাবার আগে তবু মমুবাছ বলে ওটার কিছু ছিলো, কিন্তু এই ব্বে আসবার পর দেবি একেবারে অপদার্থ হরে গেছে—কতকগুলো বড় বড় ফাঁকা বৃদিতে পেটটা বোঝাই করে এনেছে, আর বধন তথন ওগরাছে সেগুলো।
- সাচাে বাত! আমিও ভাবছিলাম তাই, অসীমের শিঠ চাপড়ে বললেন মানীমা। কত ছেলেমেরের ভােল ফিবলাে এই মানীমার আধড়ার, শুরু হল না কিছু ঐ ছােকরার! মদ নয়, কত ভালাে ভালে। মেরেদের লেলিয়ে দিলাম, কিছুভেই কিছু নয় ? এয়েরারে কলির শুকদেব ঠাকুব! তবে মন্দের ভালাে বলতে হবে, পশ্পিরার দিকে বেন ঝোঁক পড়েছে একটু! দেবি আবার কতদ্বের অল কতদ্বে বায়!
- —হল না, মাদীমা হল না, আপনার টোপ গিলেছে একেটার রাঘব বোরালে; কই-কাতলার জ:জ ও টোপ নর ! একটু হিসেবে ভূল হয়েছে আপনার। মুচকে মুচকে হেসে, ঢুলু চূলু চোধ চেয়ে বললো অসীম।
- —মাই গ্ৰন্থ। তাই নাকি ? ব্যাপারটা কি খুলেই বলো না ভারকিং! ভাগবা-ভাগবা চোৰে চমক খেলিয়ে ভগোলেন মাসীমা।
- —বিশেষ কিছু নয়। ঐ বতনলালের নতুন সওলা করা ক্যাভিলাকে চড়ে এই চালনী বাতে একটু হাওয়া খেতে গেছে পশ্পিরা বাও। তা আমি বলি কি, ঠিকই করেছে সে, ঐ নিবিমির বোষ্টমটার সঙ্গে হালিয়ে উঠেছিলো ব্যাচারী। ছ্যাঃ, ছ্যাঃ, ডাাং, ওটা পূক্ষণ নয় মেয়েমামূষও নয়, একেবারে বাকে বলে স্নীবলিঙ্গ। কোনো মেয়েই বেশী দিন সইতে পার্বে না ওকে, এ আমি হলগ করে বলতে পারি।
- বাক্ বাঁচালে আমার। বড়ে প্রাণ এলো এডকণে। আমি ভেবেছিলাম বাইরের কেউ ছেঁ। মারলো বুঝি? রভনলাল ভো আমাদের ব্যের লোক, পাঙনা-কড়ি আমার মারবে না। বিভ অসীম, মাত্র-পাঁচ হাজার ঠেকিরে তুমি বে চুপচাপ মেরে গোলে ছে, বাকিটার কি করছো?

দাঁখান, দাঁড়ান। সব্ব ককন, মেওরা ফলতেও পারে, আবার নালও পারে। আমি পেলাম কি ? বে ভার ভাগ দেব ? শীগ্রির আনতে সন্ধািস বাটা, দেখি কি করে ? মোটারকম আদার হয়ত আপনার মুঠোও ভরবে। আব তা না হলে ঐ মৃগীক্সীর দাঁতকপাটি বিদি তুর্ববাতে আমার ঠক্ ঠক্ করে, তাহলে আপনার কপালেই বা ঝন-বন বাক্সবে কোধা থেকে বলুন ?

—ত। বটে! তা বটে! ঠিক আছে। বখন আসছেন গোমনাথ বাবু তথন নিশ্চয়ই এবাব সব লিখে-পড়ে দিরে বাবেন! ঐ তো একটা মেয়ে, প্রচুর সম্পতি আছে শুনেছি, ভাগীদারও নেই কেউ! বুরাছো অসীম!

চোৰ নাচিয়ে বিজ্ঞের হাসি হাসলেন মাসীমা।

—ভাবে চুপচাপ বঙ্গে কেন ? ইটালী, ফ্রাসী, স্পোন, স্ব কিছু ভানতে বলো, প্রাণ খুলে তোমার গুডুলাককে বিসিভ কবি !

—বেশতো অর্ডার দিন! হাসিমুখে বললো অসীম!

নিজেই গেলেন মাসীমা। পছক করে জানলেন, বেশ কয়েক বোত্তল লামী লামী মাল, বেয়ারার কাঁবে চাপিয়ে!

ভার সঙ্গে করে ভানলেন, অসকাপুথতৈ নতুন ভতি হওরা করে হজন ছেলে-মেরেকে! লাখপতি, ক্রোড়পতির ছেলেমেরেরাই মাসীমার সঙ্গে বলে পান করবার অধিকার পার। কিছুদিন বেজে না বেতে ওরা মোটা অস্কের বাজি বেথে মড়পানের পালা দিতে ক্রক্করে! এটা নাকি উচুমহলের দামী ক্যাসান! বাজি রেখে তাদের পুকার, দোণ, ভার বিজ্ঞানীত চলে অলকাপুথীতে! সকল ক্লেক্লেই বেশীর ভাগ বিজ্ঞানী হন মাসীমা। টাকার তোড়া নামিরে বেখে, শৃত্য হাতে, কিছু আহ্লোদে পূর্ণ মন নিয়ে কিরে বার ধনীর ভুলাল-ছুলালীরা!

মাসামার কাছে হেরেও স্থা!

নিজের হাতে মদ চেলে সকলকার গেসাস পূর্ণ করে দিলেন মাসীমা।

সকলে গেলাস ঠোকাঠুকি করে অসীমের সোভাগ্য কামনা করলো!

তারপর ভু-ভু করে থালি হতে লাগলো বোতলগুলো।

আর্কণ্টার বাছছে ইংরিজি প্রেমের গান! কেউ কেউ জুতো টুকে তাল দিচ্ছেন বাজনার সঙ্গে। কোধাও কপোত-কপোতী স্ম, নিরালার মুধোমুখি বলে বিমুগ্ধ প্রেমিক-প্রেমিকার! বিবের আগের পূর্বরাগ নর, নিত্য-নতুন প্রেমের হাটের ফেরী ওরা! যত দিন তৃজনে তৃজনার মনে রং ছড়াতে পারে তত্ত দিনই চাইবে প্রস্পারকে, তারপর আবার হয়তো দেখা যাবে ৪০দর স্কীবদল হরেছে!

আগেকার দিনের হতাল প্রণবীরা বিব থেকো, লেকের জলে ^{ডুবে} মরতো, এখন আর সে সব ফাগোন চলে না,—ছ'-চারদিন ব্যুজোর মদের লৈকে হার্ডুবু ধার, ভারপ্রই চাঙ্গা হয়ে উঠে ন্ডুন মুখের সন্ধান করে।

— চাবি দিকে পানোৎসব চলেছে! ওপু আন্ধ ওসবেব প্রয়োজন নেই নব দম্পত্তির! ওরা বেন সব পেরেছির দেশ খুঁলে পেরেছে! গাঁবিভৃত্তির বিমল আভা ঠিক্রে পড়ছে ওদের দৃটিপ্রদীপ থেকে! হাতে হাত রেখে পরম শান্তির কোলে অস এলিরে দিরে বসেছিলো ওরা ছজন ! আবু বেন ওরা নিরপেক দর্শক্ষাত্র আর ওদের সামনে একটি থিচুড়ী-সোসাইটির অভিনয় হচ্ছে।

ওদের চোবে আজ এ অভিনয় একেবারেই অর্থহান রসহীন বোধ হচ্ছে, এ সবের প্রয়োজন আজ ওদের ফুরিয়েছে !

ক্লিক-ক্লিক-মাঝে-মাঝে জনে উঠছে ক্লাশলাইট। ফটো নিচ্ছেন সাংবাদিকেরা, জালোকচিত্রশিলীরা।

ডিনারের শেষে আবার চললো পানোংস্ব।

জমজমাট পাটি ভাঙার মুখে স্বাইকে চথক লাগিয়ে দিয়ে এসে দীড়ালো স্থমিতা।

- —শামি এসেছি ছোট মামা!
- চমকে উঠে চাইলো অনিপ স্থমিতার দিকে। বেন কিরে এলো ওর মনটা কোন দ্র-দ্রান্তর স্থপ্রলোক থেকে।
- এত দেৱীতে এসি মিতু? শহীর এখন ভালো তো! একটু হেনে বললো অনিল।
- —হাঁ, এখন একটু ভালে। বোধ করছি। বিকেলে ২ছড মাধাটা ধরে ছিলো, ভেবেছিলান আসতেই পারবো না, নিস্ত বছড খারাপ লাগাছলো তাই চলে এলাম। নিস্তেজ গলায় বললো স্থমিতা।

—কিন্তু এমন সালামাটা বেশ কেন ভাই ? এ তো বিষেধাড়ীর সাজ নয়, এ বেন শ্রাত্মবাড়ী যাওয়ার মজ্জা।



মেকি খোলস ছেড়ে বেবিয়ে আসছে আসল ওকতারা। ঠোঁট চেপে বাঁকা হাসি হেসে বললো—ভোমার দিদিমা, মাসীমা কেউ ভো এলেন না, তুমি বদি বা মনে করে এলে, এমন উদাসিনীর বেশে কেন ভাই ?

স'তাই উদাসিনীর বেশে এসেছে স্মনিতা! সালপাড় সাদা চাকাই শাড়ী পরনে। সত্ত স্নান-করা ভিজে চুলের রাশ ছড়ানো পিঠে। হাতে অল্ল করেকগাছি সোনার চুড়ি, আর অক্লে নেই কোনো অললার। মুখখানি মান বিবর্ণ, তবুও কি অপূর্ব লাবণ্যময়! শাস্ত পবিত্র শুদ্ধ জ্যোতি বিচ্ছুবিত হচ্ছে বেন ওর সর্বাঙ্গ থেকে। সে রূপের আলোর মান হরে গেছে বহু প্রসাধন বিচিত্র বসন-ভূষণে সজ্জিতা অক্লান্ত রূপসীলের রূপপ্রভা। তারা সকলেই নির্বাক দৃষ্টি মেলে চেরেছিলো ওর দিকে।

- —শরীরটা ভালো ছিল না কি না, তাই এমনিই চলে এলাম—
 শিক্তবাত্মের সঙ্গে অবাব দিলো অমিতা। তার পর কাপড়ের চাপা
 সরিরে বার করলো একটি ভেলভেটের কেন। কেনটি খুলে শুকতারার
 মণিবদ্ধে পরিরে দিলো একটি হীরের ব্রেসলেট, তার মাঝে ছোট বড়ি
 আঁটি। আর অনিলের আন্তলে পরালো একটা হীরের আংটি।
- —এ কি ! এ কি ! করেছিস কি মিতু ? বাপ রে, এ বে দেখছি বহু টাকার ব্যাপার ! ব্যস্ত ভাবে বললো জনিল ।
- —না না, এমন আর কি ! ও তো আমার ব্রেই ছিলো, ব্যবহার হর না, তাই—লজ্জিত ভাবে জবাব দিলো স্থমিতা।

ভকতারা নিজের হাতটি ঘ্রিয়ে-ফিরিরে দেখছিলো, বেল খুলি হরেছে মূল্যবান উপহারটি পেরে। উঠে দাঁড়িরে এক হাতে স্থমিতার গলাটি জড়িয়ে ধরে বললো—কি চমৎকার জিনিবটি। ভারি পঙ্ক হরেছে আমার। বোলো ভাই, ভোমায় খাবার দিতে বলি।

— ভধু এক গ্লাদ সরবত ধাবে।। আজ আর কিছু নর ভাই! ধাওরা আমার পাওনা রইলো, বললো শ্বমিভা ভকতারার হাতটা চেপে ধরে।

একটু দ্বের কোণবেঁবা সোকার বসে ঝিযুচ্ছিলেন মাসীমা। জিল্কের মাত্রাটা একটু বেশী হরেছে, মভপানের কম্পিটিসনে বাজি অব্ভ জিভেছেন।

প্রতিষ্ণীরা উঠে গিরে ভিড় জমিরেছে অমিতার পাশে। গুরু জানীম ছিলো মাসীমার কাছে। হঠাৎ সামনে চাপা ভীড় জার মৃত্ গুলনের জাওরাজে মাথা তুলে সোজা হরে বসলেন ভিনি। চুলু-চুলু চোথে চেরে গুণোলন—ব্যাপারটা কি হে? কোথাও জ্যাক্সিডেণ্ট হল নাকি?

- —না, ঠিক তা নর—দেবীর আবির্ভাব হরেছে ওথানে—মানে অমিতা দেবীর—অবজ্ঞার হাসির সঙ্গে জবাব দিলো অসীম।
 - আঁা কি বললে ? মিতা ? বলো কি আঁা ?

খুম ভেঙে জেগে উঠলেন মাসীমা। টলতে টলতে ভিড় সরিছে এপিরে গিরে গাঁড়ালেন স্থমিতার সামনে।

কুলো বাঙা চোধ দিয়ে স্থমিভার আপাদ-মন্তক লেছন করে হঠাৎ হাউ-হাউ করে কেঁদে উঠে ওকে সবলে বুকে অভিয়ে ধরলেন।
—ভাই তো বলি, এ কি হতে পারে? মিডু আদবে নাভা
কি হয় ? আঁটা, দে কি না এসে পারে ? ও মাই স্থইট গার্ল ও

মাই ডারলিং, তোর জন্তে যে এতকণ এই বুকটা খাঁ-খাঁ করছিলো ত জড়িত কঠে প্রলাপ, বিলাপ করতে করতে অমিতাকে চুমোর চুমোর ভবিবে দিলেন মাসীমা।

—কি পান করছো মাই ডারলিং ? তোমার গ্লাসে ওটা কি ? পেরি ? অব বিয়ার ? না. না, ও তেমন ভালো নর—আমি দিছি সব চেরে সেরা মাল, ভোমাকে আল ধাওয়াবো। হাা আলবং থাবে, আমার সঙ্গে বলে এক গেলাসে থাবে ডারলিং ! ত্মমিভাকে জড়িয়ে ধরে টেনে নিবে বললেন মাসীমা।

তড়িং গভিতে এগিয়ে গিয়ে সুমিন্তার এক হাত চেপে ধরলো অনিল। ওকে ছেড়ে দিন মাসীমা, ও আজ বড় অস্তম্ভ, মিনতি ভরা কঠে বললো অনিল।

- শম্সং ? তাতে কি ? খুব ভালো দাওয়াই দেব, ওসব রোগ-বালাই পড়পড়িয়ে পালাবে ! হো-হো করে হেসে উঠলো শাশে-পাশে ছিলো যারা ।
- —মাসীমাও যোগ দিলেন ওদের হাসিতে— ঠিক বলিনি ? কি বলো ভাই তোমরা ? হা, হা, হা, হা, হি, হি, হি, হি, হাসতে হাসতে বিষম ধেরে ঠেচকি তুলতে লাগলেন তিনি। সোরগোল পড়ে গোলো ঘরে। নিরে আর জল, পাধা ? পাধা ভো নেই— ঠাণ্ডা করা ঘর, বিজ্ঞাী-পাধার প্রবোজন ফুরিয়েছে তাই। ক্ষমাল নেড়ে স্বাই হাওয়া করতে লাগলে। মাসীমার মাধার। স্বস্থ হয়ে ক্ষমালে চোধা মুছে এ-দিক ও-ছিক চাইলেন মাসীমা—মিতা! মিতা কৈ ?

তাই তো স্থমিতা তে। নেই ! গোলমালের ভেতর কথন সে চলে গেছে !

ভিড়ের ভেতর থেকে কে বেন সক্ন সলায় টিশ্লনী কাটলো— পাৰী উড়ে গেছে !

—কে বললে এমন কথা ? শুরোর, গাধা, বাংছল,—ইভিয়ট ব্লাভি আন 'কোধাকার ! ছ' কোমরে হাত দিয়ে গ্রাছন করতে লাগলেন মাসীমা,—নোরো মাতাল সব । মাতলামী করবার জারগানা জোটে তো ডাইবিনে বা, জাহারমে হ', এথানে কেন ?

আন্তে আন্তে ভিড় পাতলা হয়ে বেতে লাগলো। জনীম এগিরে এলো এক গ্লাস বাম হাতে নিয়ে। মাসীমার হাতে তুলে দিরে বললো—বেতে দিন মাসীমা, ও-সব নোংরা ঘেঁটে কান্স কি? বরং আরেকটু—

- हेद्दन । हेद्दन जावनिः !

ফেনিল পাঞ্জিতে চুমুক দিয়ে ধপ করে সোকায় বলে পঞ্চলন মানীমা। পাঞ্জি নিঃলেব করে সোকায় মাথাটি হেলিয়ে দিরে, চোধ বৃদ্ধে, ক্লান্ত ভাবে বললেন তিনি—আরেকটু ঢালো ডিয়ার! প্রম করে দিরেছে মাথাটা ছ্যাবলা মাতালগুলো,—এই বে,—এথনি সব ঠিক হরে বাবে, মানীমা ও-সব নেড়ি-কুন্তার বেউ-বেউ-তে কান দিছেন কেন? আপনার মুর্ম ওয়া জানে কি ?° গ্লাসে হইছি ঢালতে-ঢালতে বললো জনীম।

—ভা বটে ! ভা বটে ! আজ্ঞাদে মাথা দোলালেন মাসীমা।— করেক পেগ শেব বরে চকু বিক্ষারিত করে চারি থারে চেরে অভিত কঠে বিক্সরোক্তি করলেন, মাই গড় । একেবারে শুক্ত পুরী বে ! বানের জলে ভেসে গেলোনা কি সব ?

तावशत क्रकत হিমালয় বোকে ট্যালকাম পাউভার



आज़ामित সতেত্ত थाकात्रङस्तु

- येण जूशक्
- এত কম খরচ
- जाता भवितात्त्र भरमञ्चे गामर्थ



এরাসমিক লওনের পকে বিলুখনি বিভার লি: কর্তৃক ভারতে প্রক্রত

HBT 19-X52 BG



মহাশ্বেতা ভট্টাচার্য

9

দিনটা ছিলো কোনো এক পরবের। বৃক্তি বা শিবরাত্তির পর্বদিনই হবে। বিজ্ञুলারী আর চম্পা ত্রনেই এসেছিলো সভীচৌড়ার ঘাটে স্থান করতে। ঘাটে পুরোহিত বসে থাকেন ছাতার তলার চৌকি পেতে। व एक CBT4 স্থব গাইতে গাইতে ভিনটে ভুব দিয়ে উঠে এলো চল্পা গঙ্গাজলে বড় একটি ঘটি ভবে নিয়ে। তামার ছোট একটি ছড়া। গঞ্চার শাল বালিতে মেজে তাকে সোনার মতো ঝকঝকে করেছে চম্পা। ঘটের কানায় কানায় জগ। চম্পার দেহে-ও বৌবন ভরা-ভরা। একটি করে সিঁড়ি ভেডে ওঠে চম্পা স্বার শীতের আমেজ লাগ। ঠাণ্ডা বাভালে ভার চুল ঝাণ্টার। পুরোছিতের সামনে উবৎ নিচু হয়ে প্রণামী নামিয়ে দিলো চস্পা একটি কুপোর দিল্লাটাকা। মনে বেন গর্বও ছিলো। এত জন তো দিছে। কই, এই সাভার সালে এমন করে এক টাকা দি:ত পারে কে ?

সঙ্গে সঙ্গে আর একজন নিচু হরে দিছিলো প্রথামী, সে মুখ তুলে তাকালো। ভাকিরে একটা নর হুটো টাকা দিলো আরূপকে। অমনি অন্তান্ত প্রাধিনী মেরেদের মধ্যে ছোট ছোট গলার গুলন উঠলো। সোজা কথা তো নর! একটা ছেবুরা প্রসা, তামার লোহার মিশাল দেওয়া, তাই বদি পার আরূপ দিনে চারটে, ছ্-টা, তো তার দিন চলে বার। এক মণ চাল এক টাকা, চিল্লিশ সের আটা এক টাকা—তিন টাকা সকাল বেলা এমন বসে বসে পাওয়া পরম দৌভাগ্য।

চন্দা অধ্য দংশন কবলো অপমানে। ততক্ষণে তাদের গুজনকে বিবে এসেছে ভিথাবীর দল। অদ্ধ কিশোরীটি বসে আছে সিঁজির গুণবের চবুতবায়। তাকে তার মা ৰসিয়ে দিরে গিরেছে সকালে। সে শুরু বলছে—স্মরদাসকে দরা কর! বলছে আর বঁকি দিরে গেরে উঠছে একই গানের কলি।

---বদো মেবে নৈনন নক্ষাল !

ভীক্ষ মিষ্ট সেই কিশোরকঠ। গানের বৃঁকির শেবে সে উৎস্কৰ্ বৃত্ত তাকাছে সামনের দিকে। ওপাপে ভিথারীদের কলরব জনে সে ব্যপ্ত হয়ে উঠেছে। আক্ষকে তার চাদরেও পড়বে ঢেবুরা, পাই, আধলা। আর বদি আট-দশ পহসা কামাই হয়, তো যা তাকে দোকান থেকে পুরী-জিলাপী থাইরে নিয়ে বাবে। মুথ তুলে তাকাছ জক্ষ বালক। আর তুই জক্ষ চোথের ওপর সকালের আলো বুরে বাছে।

চম্পা মনে মনে অপমানে অবে বাছে। আজ তার কাছে বেশী টাকা নেই। সব প্রসা, আধলা, পাই। একটি টাকা আছে, সে অন্ধবাসককে দেবে, মনে মনে মেনে রেখেছে। এই অপ্রিচিতা প্রতিবার ব্যবহারে সে কুল্ক হরে উঠেছে।

স্ত্রদানের সামনে এসে চম্পা বাসকের হাতে একটি টাকা দের। আর অমনি বিজ্ঞানীর দাসী এসে দাঁড়ার। বলে— বিবি তোকে হুটো টাকা দিলো। ধর, স্তরদাস!

বড়লোকের দাসী! তার অহংকার কতো! চম্পার দিকে চেরে দে চোথ খোরায়। বলে—আজ বিবি দান করবে কত! পঞ্চাশ টাকা।

চম্পা না বলে পারে না—কে তোর বিবি ?

—ব্রাইটের বিবি ব্রিজ্গুলারী। কানপুরে তাকে না জানে কে?
চল্পা প্রামের মেরে। বিবৈ বিধৈ কথা করে জালা দিতে নে
জানে! সে বললো—ও! উঠতে লাগলো সিঁড়ি ভেঙে, জার বলতে
লাগলো— তবে তো চাজার টাকা দান করা উচিত। যার যত
পাপ, সে ততো দান করবে। যার পুণ্য আছে সে কি পুণ্যের
লোভে এমন কাঙাল হয়ে বেড়াবে?

শ্বসন্ধানে ভূস হয়নি। ঠিকই বিংবছে ! ব্রেজহুলারীর মুধ্
অপমানে রাডা হয়। নিআপে, বিষয় এক মর্মর-প্রতিমা যেন সঞ্জীব
হয়। কথা কইতে চেয়েও কয় না সে। ব্রুস্তে মুধ নিচু করে
সতীদের শ্বতিছ্ত্রীতে জল চালে, মিঠাই-ফুল দেয়।

কেন এমন হয় ? আজ হ'দিন ত্রাইট খবে নেই। গেছে ভগবানপুর। প্রতি রাত্রির দে তাওব, সে অভ্যাচার দেহে বছন করে মরে বায় বিজহুলারী। সর্বাঙ্গে সোনার গছনা, সে-ও ভো ত্রাইটের একটা বর্বর অছংকারের পরিচয়। ত্রাইট বে ভার বিবিক্ষেত্র ভালবাসে তাই দেখাতে চায়। ব্রিজহুলারী কি জানে না, বে ত্রাইটেরে প্রতি মায়ুবের ঘুণা ও অবিখাদ, স্বটাই ভাকেও চিরভরে কলম্বিত করেছে। তাকে-ও সকলে ঘুণা করে।

কিছ আঞ্চকের সকালটি বে তার তালো লেগেছিলো ? তালো লেগেছিলো আৰু স্নান করতে। মনটা ছিলো প্রেসর। কোনো এক শুভ সংবাদের প্রভাগে। বেন মনটাকে সোনালী করেছিলো। আর ঐ বে মেয়েটি, ও ভো চম্পা! চম্পার নাচ সে দেখেছে বটে ক্যাণ্টনমেন্টে। আৰু ঐ তরুণী মেরেটিকে দেখে বড় ভালো লেগেছিল ভার। বান্ধাকে প্রসা দিতে দিতে এখনও ভেবেছিলো সে, বিদি মেয়েটি ভার সঙ্গে ভাব করে ভো বেশ হয়।

হলো কই ? ভার নিবেবি দাসী কি বললো, আৰ এ চলা

শ্বমন করে বেগে উঠলো? বিশ্বত্লারীর মনটা নিমিবে ভারী ছরে গেল। চোথ নিচু করে দে জল দিতে দিতে চললো। শ্বার পরসার প্রত্যালার একটি ছোট ছেলে, বুঝি বা বাহ্মণই হবে, বলতে লাগলো—এইখানে সভীরা স্বর্গে গিয়েছেন। শ্বাহ্মনের শ্বায় বলে, স্বামীর পা বুকে ধরে। স্বর্গ থেকে রথ এসেছে। সভীকে নিরে গিয়েছে। এখন সভীরা শুনস্কাল স্বর্গস্থধ করছেন।

চম্পা এমন স্বাধা ছাড়ে না। বলে—বাচা। মিছে কথা বলিস না। কোম্পানী কান্তনের অনেক পরেও আমার গাঁ ডেরাপুরে এক নির্বোধ মেরেকে কেশবরামের মামা সভী করেছিলো। সে শুধু টেচিরেছিলো আর কেঁদেছিলো ভয়ে। আমাদের গাঁরের সব বুড়ো-বুড়ীরা দেধতে গিয়েছিলো। কোথার ছিল রথ ? কোথার ছিলো স্বর্গ ?

বালক হেসে বলে—ভবে তুমি জল দিচ্ছ কেন ?

— দিছিছ এই জন্তে বে, বড় জ্বলে-জ্বলে মবেছে বেচারীয়া! এখন একটু ঠাণ্ডা হোক। জানিস না তুই ? বে বাত্তির বেলা এখান থেকে কাল্লা আন চীংকার শোনা বাল্ল ? সেইজ্বল্লে দিছি। পুশ্যের দ্বকার কি আমার ? আমি তো আর পাপী নই ?

বিজ্**তুলারী আহত ও পাংগুমুখে তাকায়। বলে—বহিন,** ভূমি না মান, অভ বারা মানে, তাদের ছোট করো না।

— আমি কাকর বছিন নই। বসে বিজয়নীর মতো ভেজা শাড়ীর আঁচল ঝাপ্টে চাল বার চম্পা। ঘরে আনে সম্পূর্ণের জন্মে মিষ্টি কিনে। বলে—বুঢ়া, থাও। ভারপর বলে—ভোমাদের বিবি-সাহেবাকে আজ ঠোকর লাগিয়ে এলাম।

আজোপান্ত ভনে সম্পূৰণ বলে—শোৰ্ চম্পা, তুই ভূল কবলি।

- —কেন ?
- —ওর সঙ্গে ভাব কব তুই।
- —ওর সঙ্গে 📍

সম্পূরণ হাসে। বলে—ও থ্ব তৃ:খী। তুই কথা কইলে এক মিনিটেই ভাব করবে। স্থানলি ?

- —তা আমি ভাব করবো কেন ? বুঢ়া, কি মতলব **?**
- কি মতলব ?

চম্পা হাসে। বলে—বুঢ়া, ভোষার মতলব আমি বুঝি না ? বাত-দিন তুমি জমারেত করছ। বিসালা আর ক্যান্টনমেন্টের লোক আসছে! বাজারে গ্রম গ্রম গ্রম উড়ছে।

- —দেখে এলি ?
- —নিশ্চৰ ! আমার চোথ নেই ? তুমিও তার মধ্যে আছ । সম্পূর্ণ ব:ল—মতলব নিশ্চর আছে। কোন মতলব নেই, এমনিই তোকে আগলে বসে আছি ? তোকেও টানব।
 - —কেন, বুঢ়া ?

সম্পূরণ টেনে টেনে শক্ত হাতে থাটিয়ার বলি বাবে। তারপর বলে—কিছু কাজের কাজ করবি চন্দা। একটা জীবন তোর। টাকা-প্রসার জভাব নেই। যদি একটা ভাল কাজ করতে পারিস তো জানবি ভোগা।

- —শামাৰ ভাগ্য ?
- —গা, চম্পা! বারা ভাল কাজ করে এ ছনিরার, তাদেরই

ভগবান এমনি একলা পাঠার। এক জীবনে তুই কত গহনা প্রবি ? কত শাড়ী প্রবি ? কত মিঠাই থাবি ? তাতেই কি স্থব ?

- বুঢ়া, তুমি আমাকে সংখ্য কথা বলো না। কাজ যা বলো, কিব করবো না ?
- —ভো, এ মেরেটির সজে ভাব কর্। মিশে বা ওর ঘরদোরে।
 আমি তোকে বলি চম্পান স্থানক কথা চম্পাকে বললো সম্পূরণ।
 বললো—আমাদের কেউ বিশাস করবে না। কিছ বিশাসী মাছবের
 বড় প্রয়োজন এখন। ভোর মতো স্থাগে কার আছে চম্পা?
 আর ব্রিজহুলারী বে ওদের মধ্যে রবেছে! তুই মিশতে পারিস,
 ভাবগতিক বুরতে পারিস, ভবে ধরা দিবি না, জানলি?
- —কিছ কি আশ্চৰ্য কথা শোনালে বুঢ়া, তা কি সম্ভব ? তা কথনো হয় ?
- সম্মাণ হতেই হবে। ধর্ম গেল, আনত গেল, সবই নাশ সংস্থা গেল ! আমাদের নবাবকৈ ওরা রাজ্য ছাড়িয়েছে। আর ফোলের ওপর কি অভ্যাচার ! ক্লথে আছে সবাই। আর ফোলও হাত হরেছে। ক্লেপে আছে। জানলি ?
 - —বুঢ়া, তুমি কেমন করে জানলে ?

সম্পূৰণ সে কথাৰ ঠিক জবাব দিতে পাৰে না। একটু ভাবে। বলে—কমন কৰে জানসাম ? বলকে পাৰি না। তবে এ কথা নিশ্চম জানবি বে মন্ত একটা টালমাটাল আগছে। বতো বাজা আৰু সদাবি, তাৰা আমাদেৰ হাতী-বোড়া বসদ দেবে। ফৌজ আসবে হাতিয়াৰ নিয়ে। স্বাই মিলে একজোটে ক্লেও উঠলে। পাহাড় ধ্বসে বায় তো এ তা ক্ষটা মাত্র শাদা মানুষ। তাদের আম্বা ভাড়িরে দিতে পারবো না ?

চম্পা চিবুকে হাত বেধে ভাবে। ভারপরে বলে—ওরা রাজা, ওরা সরকার, তো চালাবে না চাবুক ?

—হাা, জরুর চালাবে। তবে ক্ষেতীক্ষমি নেই, পেটে গুরু ভূখা খাব পিঠে চাবুক! এমন খাব বেশী দিন চলবে না।

সম্পূরণের কাছে গুনে চম্পা স্বভংগ্রন্ত হরে ব্রিজ্মুলারীর সঙ্গে আলাপ করলো। উঠে এলো ভার কুঠিতে নি:সংক্লাচে। বললো—বড় টাকার দরকার আমার। একটা বালা রেখে দেবে আমাকে টাকা ? কুড়ি টাকা ?

বিজ্ঞত্লারী আশ্বর্ষ হয়ে গেল। বাইট ববে নেই, জেনে-গুনেই এসেছে চম্পা। আজ বে কি মনে আছে তার। বিজ্ঞত্লালীর দাসী উৎকুল্ল হয়ে ওঠে। মনে ভাবে বে, সেদিন বাইবে পেরে অপমান করেছিলো চম্পা। আজ বরে পেরে বিজ্ঞত্লারী নিশ্বর ফিরে অপমান করবার সুবোগ হারাবে না।

কিছ আশ্চর্য হয় সে ব্রিজ্তুলাথীর ব্যবহার দেখে। চশ্যাকে চৌকিতে বসিরে আপ্যায়ন করে ব্রিজ্তুলায়ী। বলে-পান খাবে। তামাক খাও।

—레 !

আলগোছে সুগদ্ধি এলাচি সুণাবি তুলে নের চল্পা। তারণর একটু হেসে বলে—সেদিন ঘরে ফিরে আমার ওপর বাস করেছিলে?

—না ভো! তৃঃধ হয়েছিলো।

अवात शृंखानहे हात्म । आत शर्मात वाहेरत वाखिरत संवासन

মিলিত হাসি শুনে দানী বিষর্ব হবে পানের পিচ কেলে মাথা নাডে। প্রেইনানিরন্ত সিপাহীটিকে বলে—মেরেমায়ুষটার সরমও নেই, দারীরে বেন মায়ুষের বক্তও নেই! ছি! বাজারের একটা রম্মানী, ভোকে অপ্যান করলো সেধে, আর তুই তাকেই ঘরে ডেকে··

বিজ্ঞত্সারীর প্রাসাদে দাসীর কানে, হাতে, পারে ভারী ক্লপোর গহনা ৷ সে দিকে চেরে সিপাহীটি বলে—বিবিকে বলে ছুটি মঞ্ব করিবে দাও না ! একটিবার ঘূরে ভাসি চার দিনের জন্তে ?

- ওর পা ধরে কেঁলে পড়লেই হবে! আমি জানি তো ?
- —মঞ্ব করাবে ছুটি ?
- —নিশ্চর! মেরেটা বোকা তো! আমরা স্বাই ওকে ধরে ঐ স্ববিধেটুকু আদার করে নিই!

ভবে এত নিশে কেন ওব ?

—কাজ আদার হরে গেলে কে মনে বাথে ওকে? ওকে স্বাই বেলা করে। ধর্ম নেই বার · · ·

সেদিনকার আলাপেই স্ত্রপাত হলো এক অভিনব ঘনিষ্ঠতার। বিষহ্নারী একদিন পালকী চড়ে উপস্থিত হলো চম্পার ঘরে। সাছের ছায়ায় বদে চম্পার সঙ্গে তার দেশ-ঘরের গল্প করতে থ্ব ভালো লাগলো। আর এজীবন বে সে সহু করতে পারছে না, তা-ও জানলো চম্পা।

ठण्णा वनला—हत्म (शत्मेंहे भाव ?

- —সাহদ হয় না। বলে মান হাসলো ব্রিজহুলারী। বললো —বাবার জারগা কোধার? জামাকে কি আমার বাপ-ভাই আর বরে চুকতে দেবে?
 - -- (परव ना १
 - --ना ।

সেদিন আর কথাবার্দ্রা হয় না। খবে কিবে আইট বথন জানে, এককণ সে কাটিয়ে এসেছে চম্পার খবে, অভ্যাস বশত গালি দিয়ে ওঠে না। বা মাবে না। বর্ষ্ণ বলে—মেবেটা বেশ। কি রক্ষ টাকাপ্রসা নের ভা জানো ?

—না। আব সে সব কথা তুমি ওর সম্পর্কে তেব না। বিজ্ঞত্বারী কোন দিনও এমন জবাব দের না, তাই ঈবৎ আশ্চর্য হরে চেরে থাকে বাইট। পরে শীব দিয়ে বলে—আছা!

সেদিন বাইট রাত্রির অন্তে অপেক্ষা করে না। বেমন পক্ষর, তেমনই বর্বর হয় সে। আজ বলে কি, বেদিন, যথনই ব্রিজত্পারীর মধ্যে সে কোন ব্যক্তিস্থাতন্ত্র। কোন নিজস্ব মতামত, কোন স্বতন্ত্র সন্তার আভাসমাত্র দেখেছে, সেদিনই সে এমনই বর্বর হরেছে। মনটাকে তো হাতে ধরা বায় না। ছই হাতের মধ্যে ধরা বায় বে দেহটাকে, তাকেই নিম্পিষ্ট করে আইট গোটামানুষটাকে ভেঙেচ্রে দেয়। আর সন্তি্য-সত্যিই দেহে-মনে পরাজিত হরে অবসন্ন পজে থাকে ব্রিজত্পারী। মনে হয় ভেঙেচ্বে মরে গিয়েছে সে। এর চেরে কোনো মৃত্যু ভয়কর হতে পারে না।

এখন বিজ্ঞানী খেন তবু সাজনা পার। মনে হর চল্পার সজে মিশে সে এতটুকু আলোর সন্ধান পেরেছে। একেবারে সে একাকী নর। চলার প্রাধণে তাই আবার একদিন এসে নামে বিজহুলারীর পালকী। বিজহুলারী বল্প কুঠিত, হেসে বলে,—আজ আমার উপবাসের দিন। তাই ছুই প্রহর সময় কাটাতে এলাম।

সম্পূরণ চম্পার কৃতিত্ব দেখে বড় খুনী হয়। ত্রাইটের বিবিকে একেবারে মাটির উঠোনে এনে কেলেছে সে! পাগড়ী বাঁধতে বাঁধতে সে নিজের হব থেকে বেবিরে বার।

নিভূতে চম্পার কাছে বসে ব্রিজহুলারী নিজের মনধানি মেলে ধরে। চম্পার উঠানে একটা আমগাছ। কোনো প্রতিবেশীর চাগলচানা সেধানে আলোচায়ার লাফালাফি করে। কাল বরতে কৰতে চম্পা স্থডোল হাভটি বাজিষে এক সুঠো বৰ বাজৰা ছিটিৰে দের মাটিতে। নেমে এসে কটা পারবা সেই থাবার থায় খুঁটে খুঁটে। চম্পার বর্বের পাকা দেয়াল, শানের মেঝে আর উঁচু **থড়ের চাল।** সেই চাল দিয়ে হুটো কাঠবেড়ালী ওঠে আৰু নামে। বিজ্ঞহুলারীর মনে হয়, এমন শাস্তি সে অনেক দিন দেখেনি ৷ এত অবসর কোধাও নেই। কেন বেন ভার চম্পাকে বিখাস করতে সাধ বায়। বলভে স্থক করে ভার কথা। বলে-খুব ছোট গ্রাম আমাদের সিধারণ। আৰ ছোট গ্ৰামের ঠাকুবসাহেব আমাৰ বাবা। শুনেছি আমার শৈশবে বিল্লে হলেছিল। আমি বিধবা। তবে সে আমার মনে পড়ে না। বলে-দাদা পরদাদা সবাই সাহেবদের নিমক খেরেছে। বাপও তাই বড় সাহেবদের ভক্ত। বেশ কেটে বাচ্ছিলে। আমার জীবন। এমন সময় প্রামে সাহেব তাঁবু ফেললো। সে তিন বছব হলো ৷

তার পর ঢোঁক চেপে গলা পরিকার করে। চম্পার দিকে চেরে বেন কৈফিরং দিছে এমন সায়ূনর প্রের বলে—আমি বড় প্রশার ছিলাম! আর জওরানীর অর বৃদ্ধি ছিলো। বিপদ দেখেও আমি বুঝতে পারিনি।

তার পর আর কিছু বলে না। কেমন বেন হরে বার বিজহলারী। পান ও তামাকে কালো ঠোঁট দংশন করতে থাকে। বা বলে না তা বেন চম্পাকে বুঝে নিতে অমুনর করে। আর সেই অব্যক্ত কথা বেন চম্পাও শুনতে পার। বুঝতে পারে। বুঝতে পারে, এক অনভিজ্ঞ কিশোসীকে ছিঁতে উপতে এনেছে বাইট। ছিন্নমূল দে প্রামের মেরে এখানকার জীবনে বেঁচে আছে মাত্র—কিছ বাঁচবার আনশ তার হারিরে গিরেছে। কিছু তাই কি ? এত অলহার, এত এখর্ষেও কি কিছুই ভরেনি তার ? না, আরো কথা আছে ?

ব্রিজতুলারী বলে—জামার বাপ ভাই থ্ব থুসী। কোঁজে তাদের অবোগ অবিবে আছে। অক্ত ফোঁজী সিপাহী তাদের মানে। সাহেবও তাদের দিয়েছে অনেক।

—বার তুমি ?

চৌকা আলিয়ে আগুনটা দেখে চম্পা। বলে—তুমি স্থী হয়েছ? ছোট একটি ছুবি নিয়ে বিজ্ঞহ্লায়ী স্থনিপুণ হাভে কুচিয়ে কাটে শাক-শবজী। বলে, হয়েছি ভো!

চম্পার বলতে ইচ্ছে বার, তবে কেন তোমার ব্যাবসোর বর্ণ এমন পাণ্ড্র? কেন তোমার চোধের নিচে নিরম্ভর কালিমা? কেন এক শোকের বিবর্গ বিজ্ঞান্তি তোমার মুখে? দৃষ্টি বেন সর্বদা আহত। তবে সে কথা মুখে কিছু বলে না। বলে—তবে থাবে বেতে বাধা বি? —জুমি ব্ৰবে না। আমার সঙ্গে তারা কি থাওয়া-দাওয়া করবে ? আমাকে শাদী, গাওনা, ক্রিয়াচৌনায় ভাকবে ?

না ভাকবে না। ভাজানে চস্পা। থাবো ছটো-একটা কথা বলে উঠে পড়ে বিজ্ঞানী। চম্পা বলে—ভালো লাগে ভো বসো না! ভর কি?

— তুমি বুঝবে না। বলে ত্ৰস্তে চলে যায় সে।

বিষয়কারীর সঙ্গে কথা করেই এক দিন চম্পার ডেরাপ্রে বাবার ইছে। হিছে হলো। আসলে মনে মনে ছিলো চম্পনের গবর নেবার ইছে। বিষয়কারীর সঙ্গে তথন তার খুব খনিষ্ঠতা। আবো খনেক কথা বলেছে বিজয়লারী। বলেছে—আমার জীবনটার স্বটাই পাণের। তবু তারই মধ্যে একটা খাঁটি মামুখ আমি দেখেছিলাম চম্পা। মুক্তি পাবার একটা অবোগ আমার হাতের মধ্যে এসেছিলো। বড় দরার শরীর তার, মনে বড় দরা-মারা। আমাকে দেখে সে তঃখ পেরেছিলো। কেন কে জানে ?

অবাক হবে চেরে থাকে সে। বলে—আমি আজও বুক্তে পারি না বে সে কেমন করে বুকেছিলো। অওচ তথন আমার কুঠি, দাসী, সোনা-চাদি কিছুর অভাব নেই। তবু দেখ চম্পা, সে ঠিকই বুকলো বে আমার স্থধ নেই। আমি সাহেবকে বলেছিলাম বে আমি তার কাছে উর্জ লিথবো। সেই সময়ই সে একদিন বলনো, এত তুংখের মধ্যে থাকবার দরকার কি ? কেন থাকবে তুমি ? চলে এসো। আমি তোমাকে সাহায্য করবো। সে তৈরী ছিলো। কিছু আমি সাহস পাইনি আর সেই একটা তুলের জয়ে জীবনটা আমার বরবাদ হয়ে গেস। একেবারে।

— শার কিবে বেতে পারো না ? আবার ফিবে গেলে হর না ? চম্পার সমব্যথী প্রশ্নের জবাবে বিজ্ञহুলারী মাধা নেড়েছিলো। না ভা হর না। আব সেই বিষয় মুখখানার দিকে চেরে চম্পার মনে হরেছিলো হতালার বেদনা এক গভীর, এমন স্বব্যাপী, বে তার কৃগ-কিনারা নেই। ওভ মুহুর্ত্ত একবার এসে চলে গেলে কি তাকে শার পাঙ্রা বার না ?

সম্ভবত: ভার পরেই তার মনও ধারাপ হরে গেল। সেই ভাঙাধর আর সেই ছোট নদী তার জীবনের অনেক দিনের মৃতিবিজ্ঞান্ত সেই গ্রামধানি দেধতে বাসনা হলো।

সম্পূৰণকে ভাই একদিন বললো সে—চল বুঢ়া! ভোৱ চম্পা কোন্ বাগানের ফুল, দেখিয়ে নিয়ে আসি।

ভেবাপ্র গ্রামে কিবে এসেছে চম্পা, কিবে এসেছে রাণী হবে, দাসী সঙ্গে নিরে, টাকা প্রসা ধ্রবাত করতে এসেছে, এ কথা জেনে আশ্চর্য হরে গেল স্বাই। এ বেন রূপকথার গল্প হয়ে গেল। বে মায়্ব বেঁচে আছে কি মবে আছে, তাই কেউ জানতো না। সে এসেছে এমন জাক্তমক নিরে?

চম্পার ভাঙাখরে এখন বৃড়ী কৌশল্যার পরিবার পরিজন শুরু আছে। সেখানে কেমন করে থাকবে চম্পা ? প্রামের মান্ত্র ছেন্ত এলো সেই ভাঙা উঠোনে। গ্রা, চম্পাই বটে। কৌশল্যার নাভিকে টাকা দিছে তার মারের ভাঙাখরখানি সেরে নিতে। ছোটবেলার সাথীসহেলীর থবর নিছে। বসেছে খৌনপুরী গালিচার ভাসনে। পান থাছে খাঁটি টাদির ভিবে থেকে। জই ক'জে

সাত আটটা আংটি ঝসকাচেছ। পাৰে নাগৰা জুতো। নাগৰাৰ ওপৰ ভানী টাদিৰ ভোড!।

আৰ কথার ব তাঁয় বা কি বহীস ভাব! দেখে-ওনে মানুবের তাজ্জব লেগে গেল! ভাজ্জব দেখতে বেশ্বরাম নিজেই এলো। মারের নাম করে গৈবীনাথের মন্দিরে মোহত দিলো চলা। সাঁরের দশ জনে টাকা দিরে বাঁধিরে দিলে পশ্তিজ্ঞীর বর। সেথানে ছেলেরা পভ্তে সকালে আর সন্ধায় পুরাণ পড়বেল পশ্তিজ্ঞী! ছোটবেলার পশ্তিজ্ঞীর বেত চুরি করে ভেঙে লদীর জলে ভাসিরে দিরেছে চন্দন কত বার, আর চল্লা ভাকে সাহায় করেছে। আরু সে তথা ভ্রেল চল্লা এক মোহর প্রথানী দিলো এই ভ্রুকান্ড।

আর অনেক দিন আগে, তানের সকল সম্প্রির সালে বে বাঁধানো ই দারা কিনে নিংছিল লালা, সেই ই দারা কিরে কিনলো চম্পা। প্রাথমর দশতনের সামনে সে মোহর দিলো ছ'টি কেশ্বরামের হাতে। বললো—একটুকু থিয়াদের জল ভরতে মা আমার বড় কই পেয়ে গিছেছে। এই ই দারা দেখাব আমার ধর্মভাই। কৌশ্রা। নানীর নাভি। দেখাব কি, বে কোনো ছবিয়ারী বেন অল নিতে কই না পার।

সৰ হলো, শুৰু যাব ভালে আসা, ভাৰ কোনো ধৰৰ পেল না চম্পা। আৰু যাকে দেখাৰে বলে আসা, সেই তুৰ্গান সজে দেখা হলো না। প্ৰভাপসিংহেৰ বৌতুৰ্গাৰ সৰ্ব কি আজ্ঞ ভাভে নি ?

দেখা হলো। দেখা হলো এমন প্রিবেশে, এমন করে, ৰে ভেমন করে দেখতে চণ্ণা চারনি। চন্দনের বাপকে দেখলো বটে রাস্তার। অকালে বার্কারে ছাপ পড়েছে। রগের ছুই পাশে পাক ধরেছে চূলে। কিছা তথু ভাই-ই নয়। কোধার খেন হেরে গি.রছে মানুষ্টা। পারে সে পেকলের ফুলবসানো ভারী নাগরা আলভ আছে। কিছা সে মদগবিত ভলী কোধার চলনে ? কিসে, কেমন করে হেরে গেল মানুষ্টা ?

কৌশল্যার নাতির বাচা মেরে ছিলো চম্পার সলে। সম্পূর্ণকে লুকিয়ে তার হাত ধরে বেরিয়েছিলো চম্পা। কৌশল্যার নাতি বলে পিয়েছে—চম্পাবহিন, প্রতাপ দিং রেগে গিয়েছে আনো ? ভার ইনারা থেকেই জল নেয় মানুষ। তুমি ইনারা দিছে গ্রামকে, তাতে তার অপমান হয়েছে।

— हা।, ভিচাসের জলের সঙ্গে তার বে জিভ দিবে **লাওনের** কলকা দিয়ে দিতো, সেটা ভো জার হজে না! বাগ তো হবেই।

ঘুবতে ফিরডেই চোৰে পড়লো আকাশের শ্বীর মতো এই
চম্পা এসেছে তাদের গেবস্থালীতে। বাচচা মেয়েটির মনে হছিলো
এই ক্ষের মেয়েটির আঙ্ল ধরে ইটিতেও না জানি কত গরব!
মনের ধুসীতে সে কথা কইছিল আব দেবছিল চম্পার গ্রনা!
এমনি সময় চোৰে পড়লো চম্পার।

সেই বটগাছ। তার গায়ে হেলান দিরে কপালে হাত বেশে ওপারের দিকে দিলা করে চেয়ে দাঁড়িয়ে আছে কে! মাধায় কাপড়নেই। কক্চুল উড়ছে। পালে গামছা নিয়ে ঘড়া নিরে দাঁড়িয়ে আছে একটি বালক ভ্তা।

অনেক দিন বাংগ দেখা। তবু চিনতে ভূস হয় না। ছোট ফেক্টে বলে— ও কলো প্রেড়াপজিলেত কো। কেলে কলে জিলে সে-ই কবে ! বোজ আসে আর এমনি কবে চেবে থাকে । চেবে চেবে ববে চলে বার । ওব ভেলে আর ববে আসবে না জানো ?

মান্থবের গলা শুনে হুর্গা এদিকে তাকাল কি ? চকিতে পিছু কিরলো চম্পা। তবু এক মুহূর্ত হ'লনে হ'লনকে দেখল। হুর্গার বিমিত দৃষ্টি বেদনার ভারী। মুখে-চোখে কপালে স্থগভীর হুংখের বেখা। হু ভাশা আব হুংখের কালিমা। কোখার সে গবিত নিষ্ঠব, হুর্গা ?

ছুৰ্গা দেখলো একখানা তক্ষণ স্থন্সর মুধ। সমব্যথায় কাতর, ঠোঁট ঈবং কাঁক. বৃঝি বা কিছু বলতে চায়!

হার, কোধার গেল চম্পার পূর্বসন্ধর ? সে না বলতে চেরেছিলো, চেরেছিলে বে দেও তুর্গা আমি রমজানী হরেছি। তুমি পুধাবতী, সক্ল হরেছে তোমার কথা। দেও আজ আমিও ঐথর্বে তোমার সমতুল হয়েছি। আজ কি তোমার গর্ব করা সাজে?

সে কথা বলতে পারছে নাচম্পা। সেচলে বেভে চাইছে এই হতাশ বিক্তভার সামনে খেকে। কিন্তু পারছে কই ?

-- Paoli

কানে হাত চাপা দেয় চম্পা। এমন গলার তাকে ৰদি ভাকে চন্দনের মা তবে সে কেমন করে চলে বায় ?

—**চ**न्ना (नान् !

ছুটে নেমে এসেছে ছুর্গা। মূল্যবান ছাপা শাড়ীর আঁচল মাধা ছেছে ধ্লোর পড়েছে চম্পার সামনে, দাড়ার ছুর্গা। বলে—চম্পা, আমার চন্দ্র কোধার ?

মাৰা নাড়ে চম্পা। ৰঙ্গে—চাচী, আমি জানি না।

—ভই জানিস চন্পা!

ছ্রাশার জ্ল-জ্ল করে ছর্গার চোধ। বলে—তুই এনেছিস ভ্রে থেকে জামি একটি বার দেখা করতে চাইছি। তুই বৈল্ চল্পা। কোধার জাছে দে ?

—আমি জানি না।

—ভানিস না ?

এবার হাহাকার করে ওঠে হুর্গার বিজ্ঞা কণ্ঠ। বলে—ফিরে দে চম্পা, মারের ছেলে মার কাছে ফিরে দে, তারপর আমিই জোর হাতে আবার দিরে দেব তাকে। আমি ধরে রাধব না।

সৰ সংকল্প ভেদে গিৰেছে। চম্পা ছগাৰ ছটি হাত ধৰে। বলে
—চাচী, তুমি ভাব মা! আমি ভাব নাম কৰে কসম থাছি,
আমি ভোমাৰ ছেলের কোন খবৰ জানি না। যদি জানভাম—

কঢ় হচ্ছে জেনেও না বলে পারে না চম্পা। বলে—বলি জানতাম তুমিও ধবে রাধতে পারতে না, তা হলে হরতো বা নিরে বেভাম। কিছু আমি জানি না। এবার তুর্গা অলে ওঠে। সেই তীত্র আলা ছড়িবে দের ভার কঠ। সে বলে—মিখ্যা কথা বলছিল তুই! আমি জানি না, বে তুই বাজাবে নেমেছিল আব ভাকে-ও টেনে নামিরেছিল সেই সজে? কোনু মন্তবে বাছ করেছিল সর্বনাশী! বে সে ছেলে মা ভূলে গেল, বাণ ভূলে গেল, আব এলো না?

তবু চম্পা অলে ওঠে না। আব আবাত দের না। আজ বড় ছ:বে তার ক্ষীণ হাসি আসে। সে বলে—ছুর্গাচাচী, ভূমি পুণাবতী। তোমার কথা সত্যি হরেছে। ই্যা, আমি ভেসে গিয়েছি, বে-দিশা হরে গিয়েছি। কিছ বা ক্ষতি করেছি, নিজের করেছি। কোনো ছবিরারীর ছেলেকে আমি কেড়ে নিইনি। সে পাপ আমি করিন।

চলে আসে চল্পা। এক দিনের মধ্যে আজকে প্রথম দে শৃক্তম্বের মেবেতে শুরে কেঁদে নের ধানিক। কাঁদে তার চিরত্ঃখিনী মারের জন্তে। কাঁদে আর এক হতভাগিনীর জন্তে, বে ত্রন্ত অহঙ্কারে অন্ধ হরে ছেলেকে দেশাস্তরী করে পলে পলে কিলে তিলে পুড়ে মরছে। আর কাঁদে নিজের হুংখে। এইধানেই শেষ হলো এক অধার। আর কোন দিন ফিবে দেখবে না সে চক্ষনকে। বৈশ্ব থেকে বৌধন অধধি চল্পার স্বটুকু যে নিয়ে গিয়েছে, আর বে ধেরালী ছেলে আবার বে-দিশা হরে হারিরে গিয়েছে।

কেনেকেটে সে উঠলো। প্রদিন শভূচরণকে বললো--বৃঢ়া চল।

--কাল প্ৰম ?

—খতম না স্থক, জানি না।

বাবার কালে প্রামণানিকে বত দূর দেখা গেল ফিবে ফিরে দেখলো চম্পা। বেন মনে মান মানলো এই ছলো শেব দেখা।

শিশ্ব এখানেই শেষ হলো না। তারও পরে সহসা অপ্রত্যাশিত ভাবে স্ট্রে দেখা হলো আবার চন্দনের সলে। চন্পাও চন্দনের সে বিচিত্র সাক্ষাংকার দিয়েই এ কাহিনীর মুখবন। কিন্তু পুনমিলনে নয়। সেই দিনেই নিজের অজানতে ইভান্স আরুই হলো ভার প্রতি। নানার প্রাসাদে সে উৎসব ফুরোল। কিন্তু আসবে প্রবেশ করেছিলো চন্পা মশাল হাতে, প্রদীপ আলাতে।

আ:বেব সে বাতি শুৰু সন্ধাৰ, শুৰু প্ৰমোদেৱ। কিন্তু আনভিজ্ঞ দৰ্শক ইভান্ন নিজের হৃদয়েও সেই প্ৰদীপ ধৰে আলিয়ে নিলো একটি শিখা। সে জানতো না বে আশুনের খেলায় মেতে ধনি নিজেও অসতে সকু কৰে কেউ, তবে সে আশুন নেবানো যায় না।

বিঠুব থেকে কিবলো চল্পা। আর তাকে অনুসরণ করে কানপুরে এলো ইভানস। তুক হলো আর এক অধ্যায়। অগ্নিসর্ভ লতাবনের পটভূমিকায়।

किश्नः।

Europe, the centre of the manifestation of material energy, will crumble into dust within fifty years, if she is not mindful to change her position, to shift her ground and make spirituality the basis of her life and what will save Europe is the religion of the Upanishads.

_Swami Vivekananda



অত্যান্ত্র্যা কাপড় কাচা পাউডার সাফে কাচা জামা-কাপড়ের অপূর্ব শুক্রতা দেখলে আপনি অবাক হয়ে যাবেন। এক প্যাকেট ব্যবহার করলে আপনাকে মানতেই श्रव य

আপনি কখনও কাচেননি জামাকাপড় এও মুকুমকে সাুদা, এত সুন্দর উল্কল কুরে! সার্ট, চাম্বর, শাড়ী, ভোয়ালে — স্বকিছু काठाव करमारे এটि आपनी।

আপনি কশ্বনও দেখেননি এত ফেণা — ঠাণা বা গরুষ

জলে, ফেণার পক্ষে প্রতিকূল জলে, সঙ্গে সঙ্গে আপনি পাবেৰ কেগার এক সন্ত্র!

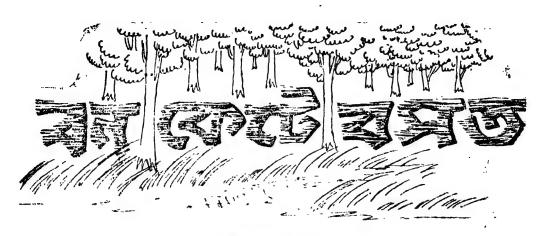
আপনি কখনও জানতেন না যে এত মহজে কাপত কাচা যায় ! বেশী পরিশ্রম নেই এতে ! সাফে জামাকাপড় কাচা মানে ৩টি সহজ প্রক্রিয়া: ভেজানো, চেপা এবং ধোওয়া মানেই আপনার কামাকাপড় কাচা হয়ে গেল।

আপনি কখনও পাননি আপনার পরদার মূল্য এত চমৎ-কারভাবে ফিরে। একবার সাফ বাবহার করগেই আপনি এ কথা মেনে নেবেন! সার্ফ সব জামাকাপড় কাচার পক্ষেই আছর্ল!

जाभाने निर्कारे भवश करत (मधून जिल्ला) जाप्राकाभड़ अभूर्व माना करत कांज याग्न !

हिन्द्रान निकार निनिष्ठिए कर्षक शहर

8V. 11-762 **20**



[প্ৰকাশিতের পর] প্ৰান্ত সনোক বস্থ

ধোল

বলেছিল অন্নদাসী—ঘর করছে এতকাল, মান্নুষ্টা চিনবে
না ? বাবেগ্রামের গারের ব্যথা কিছুতে মরে না । থোঁড়া
ভান গা ধানাও ভাল হচ্ছে না । ঘরে বসেই যখন ছু-বেলা ছু-পাধর
ভুটে বাছে, ব্যথা মন্ত্রত বাবে কেন । ভাল হরে গেলেই ভো জালহাতে বেকতে হবে বাত্রিবেলা । মাহ্ন মারো, মাহ্ন না মিলল ভো
উপোস করো । সেই পুরানো ঝামেলা । দিব্যি আছে এখন ।
অন্নদাসী সকালবেলা বাড়িন্ন পাট সেবে ছেলেটাকে রাতের জল-দেওরা
ভাত চাঙি ধাইরে দিরে চৌধুবিগজের আলার চলে বায় । ভবংগজের
বাওরা-দাওয়ার পর নিজে খেরে কাঁসরভতি ভাত-ভরকারি নিরে থরে
আসে । সন্ধ্যার পর বেরেরের, সাত্রে জাবার ভাত নিয়ে আসে
ছপুরবেলার মতো ।

चार्छ ভाলো বাবেখান। একটা মুশকিল, অন্নদাসী চলে বাবাব পর একেবারে চুপচাপ বঙ্গে থাকা। বাচ্চাটা ট্যা-ভ্যা করলে তাকে একটা তুটো চড়চাপড় দেওয়া ছাড়া অভ্য কোন কাছ নেই। মন টেকে না ঘণের মধ্যে এমন ভ'বে। ভেবেচিংস্ত এক কাজ করে। বাচ্চাটাকে ঘ্ম পাড়িয়ে বেখে সেও বেরিয়ে পড়ে চুপি চুপি। বউ টের পাবে না, ফিবে জাগতে তার জনেক রাত্রি হয়। পারে-পারে বাবেতাম চলে গেল গণ্নের আসায়। নাম-গানের আসবে গিয়ে বসল। আবাক! বুড়োঙ্র খড়ুই অবণি ইতিম'ণাগৌরভক্ত হয়ে পড়েছে। 'হরেকৃক ছবেরাম গৌরনিভাই রাহেলাম'—বলছে সকলে বিভৃথিত করে। হারিকেন-লগ্ঠন অসছে আসরের এক্দিকে-এও ভারি তাজ্জব। গগন কত বড়লোক হয়েছে বোঝ তবে—অবহেলার অকারণে কেবোসিন পে:ড়াচ্ছে। স্থার সেই আলোর দেখা যার ভাববিহ্বস সগন এবং আশেপাশে একগাদা মাহুব। বনবাজ্যে ছাঙ্গামা তো কথার কথার। মেছোখেরি হ্বার পরে কোন ভাগা অংকিত দেখলে রে-রে করে আলায় পড়ে লোকজন পিটিয়ে শড়কিতে এ-ফোড় ও-ফোড় করে এখনো মাছ লুঠ করে নিয়ে বায়। আর সেদিকে ভত স্থবিধা **হচ্ছে** না বলেই নিশিবাত্তে টিপিটিপি ভেড়িৰ খোলে ছাল ফেলে। ভাকান্ত না হতে পেরে চোর। সেই সব লোকই প্রম শাস্ত ভাবে গৌরাজ-ভজন করছে কেমন দেখ: ভজ গৌরাজ, क्रम (श्रीदान, मह श्रीदारमद नाम-बारवर्णाम क्रांबरक्, का मन कि !

ঘণ্ডেও তো একলা চুপ্চাপ ধাকা, এধানে আহৈ কি চোধ বুঁজে চুপ কলে থাক, প্ৰকালের পূণ্য লাভ হবে।

ভাষাড়া নগদ সভ্যও কিছু আছে, আসর ভাতবার মুখে সেটা জানা গেল। ওড়ে-ঢালা চিঁজে-ভাজা, কোন দিন বা মুড়ি-কুলুরি। আবার এক একদিন হরিব লুঠ দের, লুঠের বাতালা কুড়িয়ে কণিকা পরিমাণ মাধার দিরে দিয়ে কুড়মুড় করে চিবানো বার জনেকক্ষণ। ওধুমাত্র পরলোকের আলাতেই, অভএব, ভক্তদল এলে জমায়েত হল না। কিছু গগন দাস বল্লভক্ত হয়ে তু-হাজে টাকা উড়াতে লাগল, পোড়ো-টাকা পেল নাকি কোনখানে? মা রউন্তী-কালিকা নতুন-আগার চাল ফুড়ে টাকার বৃষ্টি করে গেছেন?

শাংশা থেকে যারে ফিরে গিরে রাধেগ্রাম বথারীতি মান্ত্রের উপর গিরে পড়ে। শার্লানীর ফিরবার দেরি আছে তথনো। ফুলতলার নোকো রওনা করে দিরে তবে ভরগাল রাঁগতে বসেন। রাঁগাবাড়া শেব করে তিনি থাবেন, উদ্ভিষ্ট মুক্ত করে এটো-বাদন সরিয়ে রেখে রায়াঘর গোবরমাটি দিয়ে পেড়ে ছবে তো ফিরবে বাড়িতে। রাখেগ্রাম তুমার ভতক্র। বড় সল্লাগ ঘুম—বউরের পারের শার্প পেলেই জেগে উঠে কাতরাতে আরম্ভ করে। শার্লানী এসে কাঁসরের ভাত-তরকারি পাথেরে বেড়ে রাধেগ্রামকে দের। আর চাটি কাঁসরে থাকে, সেকলো বা্লান দিয়ে মেখে ঘুমস্ত ছেলেকে ভূলে বসিয়ে গালে পুরে খ্রে থাওরায়।

একদিন গশুগোল হল। ভাত মেখে বাচ্চাকে তুলতে গিরে দেখে নেই। কোধার গেল ? রাখেখামকে জিজানা করে, তুষ্টু কোধা গো ?

আঁা, ছিল তো শুয়ে—

জন্ননানী এদিক-ওদিক উঁকি দিয়ে দেখে বলে, কোখাও ভো নেই। ছেলের খোঁজ জানো না—তুমি ছিলে কি জন্তে ভবে খরে?

রাখেশাম বলে, ঘ্ম এসে গিরেছিল। বুঝি কি করে বৈ হারামকাদা সেই কাঁকে অমনি কানে হেটে রওনা দেবে।

বাদারাজ্যে শিরাল নেই বে বৃমস্থ বাচ্চা শিরালে মুখে করে নিরে বাবে। আর হল বড়-শিরাল—কিন্ত পাড়ার মধ্যে এসে টু শব্দ না করে ছেলের টুটি ধরে সরে পড়বে, তেমন চোরাই বড়াবের ভাবা নর। গেল কোথার ভা হলে ?

1...

বাবেগ্রামও থোঁজাখুঁজি করভে লাগল। খুঁড়িরে খুঁড়িরে—বিবম কট্ট হচ্ছে নিশ্চর—ব্রের বাইরেও উঁকিঝঁকি দিরে এলো একবার। জন্মদানী চক্তিব মতন পাক দিছে ঝগড়াঝাটিন সমর আপাতিত নর, ভাঁটার মতন বড় বড় চোধ ব্লিরে ভবিব্যতের আভাস দিয়ে বাছে ওধু। বাধ অবধি চলে গিরে হাঁক পড়েছে, তুইু তুইুবে—

শিরোমণি সদাবের বউ স্থবোধবালা সাড়া দিয়ে উঠল : ফিগলি মাকিরে বউ ? কী কাণ্ড, ওবে সে কী কাণ্ড !

বলতে বলতে এদের উঠানে চলে এলো। কাঁথের উপর তুষ্ট। ব্যুছে। নেতিয়ে আছে একখানা ভাকড়ার মতো।

তুষ্ঠু ভোষার কাছে দিনি! তুমি নিবে গিবেছিলে? আর দেশ, আমবা দাপাদালি করে মবি।

পুৰোধবালা গালে হাত দিয়ে বলে, বিশ্তারি আক্রেল ভোদের দিনি। ববের মধ্যে বাচনা রেখে ত্র'জনে বেরিরে পড়েছিল। ছরোর হা-হা করছে।

ব্দর বলে, তুজনে বাব কেন? তোমার দেওর ছিল। তার জিমার বেৰে আমি চৌধুরি-আলায় বাই। পেটের আলার না গিরে উপার তো নেই?

শিংগামণি আব রাংগ্রেছামে ভাই ডাকাডাকি। ২য়দেকে বড় কে ছোট এই নিরে বিবোধ আছে। হিদাব ও তর্কাডর্কি হর মাঝে মাঝে। অরদাদীর স্বার্থ, নিজের ম্যদের ক্ম ব্যুদ্ধ বলে জাহির ক্রা। হাবেগ্রাম ভাই হল স্প্রোগ্রালার দেওব।

ষ্মদাসী বঙ্গে, ভোমার দেওর সেই থেকে নড়ে বসতে পারে না। ষামিও ছাড়ন-পাড়োর নই দিদি। ভাসে বাবে না তো ছেলে ধরো।

স্থবোধবালা বলে, নড়তে পাবে না তো ঘব ছেড়ে চলে গেল কেমন করে ? ডুইও বেমন দিদি---পুরুষ বলল, আর সেই কথার শমনি গেরো দিরে বসলি।

রাবেশ্রাম না-না--করে ওঠে: ছিলাম বই কি ! আলবং ছিলাম, তুনি দেখনি। যুধুভিলোম।

স্ববোধবালা কুদ্ধ হয়ে বলে, বা চেঁচান চেঁচাছিল, মরা মাত্রবও খাড়া হয়ে উঠে বলে। বিছের কামড়েছিল পাছাতে—কারা গুনে ছুটে এনে দেবি এই বুডান্ড। বাড়ি নিয়ে গিয়ে পাছার উপার মাধাতামাক ডগে ডলে তবে জালাটা কমল। তার পরে ঘ্মিরে পড়ল। খবের মধ্যে তুমি বুমিরেছিলে—লামি কানা কি না, পর্বতের মতন দেহধানা লামার ঠাহবে এলো না।

ছেলে দিয়ে সুবোধবালা চলে গেল। এইবারে এতক্ষণে বোঝা-বুঝি বোল-কানা—বাধেন্তাম সেটা বুঝতে পারছে। মাত্রের উপর প্রুবে না কি বপাল করে, পড়ার সঙ্গে সঙ্গে চোধ বুজে মোক্ষম ঘ্য ? ভাতে থ্ব স্থবিধা হবে বলে মনে হয় না। আঁজাকুড়ে গিয়ে দাঁড়ালে বনে বেহাই করে না, টেনে ধাড়া তুলে বলিয়ে অরদাসী কথা শোনাবে। ভার চেয়ে উন্টো চাপ দিয়ে লেই আগেভাগে ভনিয়ে কিক।

পাতমূৰ খিঁচিয়ে বাধেগ্ৰাম বলে, এত বাত অব্ধি কোনখানে থাকা হল ঠাককনের ? কি কর্ম করা হজ্জিল ?

আনদাসী এক মুহুর্ত চকচকিরে বার । শেবে বলে, ভাত এনে এনে মূখের কাছে বরি কিনা, মূখে ভাই ট্যাঙস-ট্যাঙস বুলি হয়েছে। বার ভাত এনে থাওরাই, সে মাহুবটার থাওরা শেব না হলে চলে আসি ক্ষেত্র-করে ? রাধেখাম বলে, সাত জন্মের ভাতার কি না তোর, সামনে বলে আদর করে থাওয়ান। সেই শোভাটা দেখবার জন্ম মরি মরি করে বেহিয়ে পড়েছিলাম। পায়ের দরদে বেনি দ্ব পার্লাম না। ফিরে এলাম। ফিরতে হল ভিতিরে জিরিছে। তার ভিতরে এত সব কাও!

মোটাইটি একটা কৈছিহণ্ড হয়ে জাড়াল। অন্নদাসী বিশাস
করল। রাজটা বেলি হয়েছে বটে, পুরুষদাপুরের কোণ অনলত নর।
দোষ ভর্ষাজ্বের, গড়িমবি করে রাজ করলেন। উত্নন ধরিরে জন্নদাসী
ভাকাডাকি করছে—কালকর্ম নেই, বসে রয়েছে, তবু রানাংরে জানেন
না। মতলব করে কি না কে জানে ? রানা লেব হবার পর থেজে
বসতেও বেন অকারণ দেরি করলেন। আলা নিক্রম তথন, স্বাই
ব্যুছে । গা ছমছম করছিল জন্দাসীর। ভয় ঠিক নর। জততলো
মরদ হৈত্যের মতন পড়ে রয়েছে, টেচালে ভড়াক করে লাফিরে
উঠবে—ভরের কি আছে ? তবু যেন কী বকম! সতর্ক নজন
বেধে নিজের ভাততলো গ্রাগ্র গিলেছে ভার পর। বাকি
ভাত-ভর্কারি কাঁসরে ওুলেই সাঁ করে বেরিরে পড়েছে। অসেছে
বাভাসের বেগে। এসে তো এই সম্ভ এখন।

চোমেচিতে নিজের রাত করে ফেরাটা পাড়ার মধ্যে বেশি চাউর হবে। অরদাসী টেচাল না। ভাত টিপে টিপে তুইকে খাওয়াছে। এর মধ্যে একবার হড়া কেটে উঠল:

একগুণ ব্যায়োনের ভিন ওণ ঝাল, নির্ভণ পুরুবের বচন সার।

শাসবী বস্তর

বন্ধনহীন গ্ৰন্থি

দাম ছু' টাকা মাত্র।

'বন্ধনহীন গ্রন্থি' একখানি স্বর পুঠার উপকাস। কিন্তু এই উপকাশ থানির মধ্যে লেখিকা এমন একটি ঘটনার অবভারণা করেছেন ব্রে মধ্যে এতটুকু শিধিলতা ও শালীনভার অভাব প্রকাশ পেলে বক্তবাট সম্পূৰ্ণ বাৰ্থভায় প্ৰব্সিত হ'ড ৷ সাহিভ্যাক্ষত্ৰে একজন ন্বাগ্তা লেবিকার পক্ষে আক্রম্যা স্থক্ষর লিখন শাক্তর পরিচয় পাঠকমাত্রকেই মুগ্ধ করবে। যে কাহিনীর তিনি অবতারণা করেছেন, সংসাবে এখন 👌 কাহিনী বিৱল সন্দেহ নেই, কিছ তা অবাস্তবও বে নয়, শেখার } মাধুরী নিয়ে, মদত। দিয়ে আর বক্তব্যের দৃঢ়তা নিয়ে তা প্রমাণ করে দিয়েছেন তিনি। এই প্রমাণের সাক্ষ্য নায়ক নাডিকা অজয় ও কণিকার চবিত্র ঘু'টি অতাস্ত জীবস্ত হয়ে নিজেদের প্রতিষ্ঠা করেছে। এই অজহ ও কণিকা সামী-জ্রী। দীঘাননে শাস্তিপূর্ণ বিবাহিত জীবন বাপনের পর হ'টি সস্তানের মা কাণকা একদিন স্বামী অঙ্গরের কাছে শ্রকাশ না করে পারে না, বিবাধ-পুর্ব-কালে ভার আনিছ্কার্র-র্ক্ত প্দখননের কথা; ওয়ু প্দখনন নয়, ভাব এক মেদোমহাশ্যের ওিঃস্ভাত জীবিত এক বভার কথা। অক্সাং মুর্যা, স্কুক এই কথা ডাক্তার স্বামী অজরকে কি ভাবে যে আঘাত করে তা সহজেই অনুমের। ন্ত্ৰী কণিকাও বে অবস্থার মধ্যে হ'টি সস্তানের গর্ভধারিণী হয়েও প্রাণব্রির স্বামীর কাছে এই স্বীকারোজি করতে বাধ্য হয় ভা বেমন গুৰুত্বপূৰ্ণ ও উত্তেদ্ধনামূলক, তেমনি হাদমুম্পাশী ,—বস্তুমতী ১৮.১.৫৯ প্রকাশক: বলাকা প্রকাশনী, ২৭সি, আমহার্ট ট্রীট. কলি:-৯

এই সামান্ত কথার বাবেন্তামের নিজার ব্যাঘাত হওয়ার কথা
নয়। তরে পড়ে সে পাল ফিবল। পাল ফিবতে নজর পড়ল,
বাড়া-ভাত পড়ে আছে, ভাতের ছ-পালে তরকারি ছ-খানা।
গগনের আলার মুড়ি-ফুলুরি অনেককণ হজম হতে গেছে। ভাত
লেখে বাগের নিবৃত্তি কবে সে উঠে বসে। দাওয়ায় নিরে গিয়ে
তুইুর মুখ ধোয়াছিল অয়দাসী। ভিতরে এসে সে চোখ পিটপিট
কবে লেখে। ছেলে শোয়াতে শোয়াতে মধুর এক মন্তব্য ছাড়ল:
অয়দাসীর পুরুষ অয়দাস।

সেই বাত্তেই। আরও অনেকক্ষণ কেটে গেছে। বেড়ার গারে আতে আতে টোকা দেয় কে বেন। ছ-বার এক সঙ্গে। একটুথানি থেমে রইল। আবার। বাবেগ্রাম একবার মুমালে ভারপর ঠ্যাং ধরে টেনে নিয়ে পেলেও বোধ হয় জাগবে না। আরদাসীর ঠিক উল্টো, গাছের পাতাটি পড়লে চোৰ মেলে উঠে বসবে। উঠে পড়েলে বাইরে চলে এলো।

কে ব্যা ় কোন ড্যাকরা, হাড়হাবাতে-

কিস্ফিস করে ভর্মান্ত বলছে, আমি রে আমি। একটা দরকারে পড়ে এসাম।

বাজিটা সমূথ-আঁবারি। এইবারে চাঁদ দেখা দিছে আকাশে। বাবলাতলার সাত্ত্ব ওঁড়ির সঙ্গে একেবারে সেঁটে গোলাল ভরহাজ দীড়িয়ে আছেন।

আর বলে, আপুনি বে সালতি ছাড়া চলেন না ঠাকুরম্পার। পারে মাটি ফোটে। পারে থেটে কট করে এসেছেন, বলে ফেলুন লবকাবটা।

রাখেতাম আছে কেমন ?

বজ্জ ভালবাদেন মান্নুষ্টাকে ! আমার সঙ্গে মোটেই তো দেখা-সাক্ষাৎ হর না, বাত তুপুৰে তাই খবর নিতে ঘর-কানাচে এসে গাঁজিরেছেন। বলতে বলতে অন্ধানী ফিক করে হেসে ফেললে। বলে, তাড়াতাড়ি সেরে মিন। মান্নুটা এমনি ভালো। ভস-ভস করে যুমুছে। জাগলে কিছ কুক্তকর্ণ।

ভর্মান্ত স্বাভবে বলেন, ভোর বেমন মতি হয় রে জন্ন—আমি
কিছু বলতে বাবো না। কাঠ-কাঠ উপোদ দিছিলে, জামার
কে কোন কথা বলতে গিয়েছিল ? কানে শুনেই আমি মাছুব দিরে
চাল পাঠিয়ে দিয়েছিলাম। এই বালারে ফেলে ছড়িয়ে নিজে ভুই
ভরপেট খান্ছিদ, বতগুলা খাদ তার দেড়া বাড়ি নিরে আদিদ।
চাল এত দিদ বে হাড়ি উপছে পড়ে বায়। বিনা ওজর-আপত্তিতে
আমি বেঁবেড়ে দিয়ে বাছি। বল্লে সমস্ত হথা।

অর বলে, আপনার বড্ড দহা ঠাকুর মণার।

কিছ দয়া তথু একতবফে হলে তো হবে না! বিবেচনা করে দেখ। আফাণ-সন্তান বউ-ছেলেপ্লে ছেড়ে পাশুববর্জিত জারগার নোনা জল থেবে পড়ে আছি। আমিই কেবল সকলের দেখব— আমার মুখ পানে কেউ তাকিরে দেখবে না?

অন্নদানী বলে, সবে পড়ুন ঠাকুর মশার। ঐ বা বললাম——
আমাদের মানুষটা ভালো, কিন্তু বড্ড সন্দেহের বাভিক। আমি
রাত করে আদি বলে আশনাকে স্বড়িরে আনকেই নানান কথা
বল্লিক। উঠে এনে আমাদের হ'লনকে এক সঙ্গে বলি দেখতে

পার, বন-কাটা হেসো দিয়ে মুণ্ডু ছটো কন্ধ থেকে নামিয়ে নেবে উ:, পাড়ার মধ্যে এসে চুকেছেন—এত সহিস ভাগ নয়।

পাড়ার হবে না, জালার মধ্যে নম্ব, তা কোন দিকে বাবো নেটা তো বলে দিবি—

অরদাসী ক্রত পায়ে চলে বাছে।

ভর্মান অধীর হরে বলেন, আহা, বলে যা একটা কথা। কঠ করে এদূর থেকে এলাম।

জন্নদাসী বলে, মাছ-মানা লোক ফিনছে গ্রী। গেঁরোবনের ভিতর চুকে বান, শিগসির। নয় ছো দেখে ফেলবে।

গোপাল ভবৰাক সম্ভত হবে বাঁধেব দিকে তাকান। অস্পষ্ট জ্যোংসার অনেক'দ্ব লবধি নজবে আসছে। কই, মান্নব কোধা ? হয় তো বা এই সময়টা মান্নব বাঁধেব নিচে নেমে পড়েছে। নাবেব মান্নব, সকব ফুলতলা থেকে আসছেন—চিনে ফেললে নানান কথা উঠবে। ফুড্ৰুৎ কবে জঙ্গলেব আড়ালে গিবে গাঁড়ালেন। সাপ্ৰোপ থাকা আশ্বৰ্ধ নৱ। কিছ উপায় কি ?

অরদাসী বরে চুকে পড়েছে ওবিকে।

সতের

শীত পড়ি পড়ি করছে। স্থান থখন মান্থবের। ক্ষেত্ত ধান পাকে। পাই বিষোর খবে খবে। নতুন ওড় ডালকলাই বকমারি তরিভরকারি পাইকাবের। দ্ব-দ্বন্তর থেকে নিয়ে এসে কুমিরমারির হাটে নামার-। কাঠুবে আর বাউলেরা দলে দলে জললে চুকে বোঝাই কিন্তি নিয়ে ফেরত আলে। মাল ছাড় করে দিরে রমারম ধরচ করে ত্-হাতে। ভারি জমজমাট হাট এই সম্টো।

লাটের মধ্যে ঘ্রছে জগা, কিনছে এটা-ওটা। হঠাৎ তৈলক্ষের সঙ্গে দেখা। বরারখালার সেই তৈলক। বলে, ভোমার খোঁলাখুঁজি কয়ছি জগরাধ। কোন বনবাসে গিয়ে রয়েছ, কেউ সঠিব বলতে পারে না। বাত্রার দল খুলছি, মনের মতো বিবেক জোটানো বাছে না। কী গাডে গাডে বোঠে বেরে মরছ়। চলে এসো। এইনা গলা তোমার—গেকরা আলখালা পরে বিবেক হয়ে আসরের উপর দাঁড়ালে ধয়-ধল্প পড়ে বাবে।

জগার হঠাৎ জবাব জোগার না। পুরানো দিন মনে পড়ে। বাপমা-মরা ছেলে গানের নেশার বেরিরে পড়েছিল বাড়ি থেকে। কচি-কচি চেহারা তথন, রাধা সাজত। আসর ভাঙবার পর একবার এক গৃহস্থাড়ির বউ তাকে দোতলার উপর ডেকে নিয়ে পায়েস আইরেছিল। তারপর এক নতুন পালা খুলল অভিমহ্য বধ। উত্তরার পাঠ দিল জগাকে। অভিমহ্য সমরে বাছে, সেই সমর্টা তার হাত ধরে কেলে গান:

(१७-ना (१७-ना नाथ कवि निरंत्रमन

দাসীবে বধিয়া বাও, বিচার এ কেমন—
অভিমন্তার হাত ছেড়ে দিরে তারপরে উত্তর-দক্ষিণ পূব-পশ্চিম চতুর্দিকে
কিবে কিবে গানের একটি মাত্র কলি কেঁলে কেঁলে গাওয়া: ও তুর্বি বেও না বেও না, ও তুমি বেও না বেও না··৷ আগারের মধ্যে সেই সময় একটা সুঁচ কেলে দিলে বোধ কবি শক্ষ পাওয়া বেড।

देखनक बरन, कार्ड बनहिनाय। हरना क्या जामारन

বরারখোলার। কারেমি হরে না থাকতে চাও, একজন বিবেক তৈরি করে দিরে তারপরে তুমি চলে এলো। আটকে রাথব না। তু বৈলা তুটো বোল আনা দিবে, তেল-ভামাক আর নগদ পনের টাকা। গারে ফুঁ দিরে এমন রোজগার তুনিয়ার মধ্যে কোনখানে হবে না।

জগা এর মধ্যে সামলে নিরে বলে, ক্লেপেছ ? সকলে মিলে থেরি বানালাম। ত্লজনি বনে মানবেলা হরেছে। জন্ত-জানোহার আগে চরেকিবে বেডাত, এখন মানুষ। বতই হোক, নিজের কোট—জোব কত ওখানে আমার! কোট ছেডে কোনও জারগার হাছিনে। তবে একদিন গিরে দল কেমন হল দেখে আসতে পারি।

ফেরার পথে ডিভির উপর বসে ঐ বাত্রাদলের কথা হচ্ছে। বলাই বলে, গান-পাগলা মায়ুর ছুই। একটু বেন মন পড়ে গেছে।

জগা বলে, দ্ব! আবও কিছু মানুৰ জন্ধ—দল করতে হলে আমবা দাঁইতলাভেই বরব। তৈলককে বললাম, নেহাৎ বদি দার ঠেকে বার তো একদিন তু-দিন থেকে তালিম দিরে আসতে পারি। ভার বেশি হবে না।

সাঁইন্ডলার ঘাটে ডিভি লাগল। ডিভিতে কথনোস্থনো শোভয়ার প্রয়োজন চয়, ছইয়ের নিচে সেজস্থ একটা মাতৃর গোটানো থাকে। কাঁথে সেই মাতৃর এবং হাতে পোঁটলা পচা তর্তর করে নেমে পঙ্ল।

জগা দেখৰ পাছ-গৰুই থেকে: মাছৰ নিয়ে চললি কোথা বে ? নৌকোৰ মাছৰ ?

ও, তাই তো! এতকণে বেন হঁস হল পচাব। মাত্র বেন ইটে গিরে'ভার কাঁধে উঠে পড়েছে। বেকুবির হাসি হেসে মাত্র নামিরে বাঁধের উপরে পচা গাঁড় কবাল। আঁটি-বাঁধা ঝাঁটার শলা ভিতৰ থেকে বেরিয়ে পড়ে। আছোল কবে বস্তুটা বের করে নেবাৰ মতলৰ ছিল, কিছু জগার সম্ভাৱে পড়ে বার।

উ, এই তোৰ কাও। বা মানা ক্রলাম, ভাই। ঝাঁটা কিনে ডাই শাবার মাত্র ভড়িয়ে রেখেছে, আমি বাতে না দেখতে পাই।

পচা আপাতত নিরাপদ। মুখ কিরিয়ে আদাঃ দৃহ**ংটা** ^{দেখে}ও নেয় একবার বুঝি। তাভা করলে ছুটবে।

জগা ৰঙ্গে, জামরা হাটে ঘ্ৰছি, সেই কাঁকে তুই চাকবালার কনাকাটা করছিলি। আমার লুকিরে জামারই নৌকোর ভার গঙলা নিয়ে এলি।

বসাই বলে, কি করবে ? তুমি বে ভর দেখালে, ধাক্কা মেরে গাঁওে ফেলে দেবে। সামনাসামনি পারে না বলে গোপন করে।

নিৰ্ভন্ন পটা ছ-পাটি পাঁত বের করে হানতে হানতে বলে,
নামার কেনলে ক্ষতি নেই। কুমিরে কামটে না থার তো দাঁতরে

ইক ডাঙার উঠে বাবো। ঝাঁটা ফেললে মুশকিল। দাবা হাট
ইজেপেতে এই ক'টা নারকেলের শলা পাঙ্যা গেল। ফেলে দিলে
নাবার কোথা পেতাম এ জিনিস ?

ভগা বলে, ঐ কাঁটা ভোব পিঠের উপর দেয় বেড়ে! ^{†ানী}তলার সেদিন আমি পাঁচ প্রসার ভোগ দিয়ে আসব। আছে তাই তোর অদৃষ্টে। কামকপের কথা বলছিনি বলাই, আমাদের ^{গাঁই}তলাতেও ভেড়া বানিয়ে কেলছে। মেরেমানবের ভেড়া দেধ ঐ একটা। ঐ পচা।

পচা চ্ৰপাত কৰে না। কাঁবে বাঁটাৰ আঁটি, হাতে পোঁটলা--

চাক্তর হাতা-ধৃত্তি সভ্তবত পোঁটলার মধ্যেই—বীরদর্পে সে আলাব অভিমূবে চলল।

অনতিপৰে জগাদের ঘবের সামনে পঢ়া এসে ডাকে, বলাই— হাটের বোবাঘূরিতে কিংধ আজ প্রচেও। রাভও হরে গেছে। উন্ন ধরিরে বলাই ভাত চাপিরে দিয়েছে।

জগা বলে, পথে গাঁড়িরে কেন বে পচা ? খবে উঠে জার। পচা বলে, না, তুমি গাল দেবে।

তাকিনী গুণ করেছে, মরণদশা ধরেছে তোর। পাল দিয়ে আর কি করব ? বোল বরে এলে।

পচা বরের ভিতরে এলো, বস্স না। বলে, খোল বাজাবার মানুষ নেই। একবার জায় বলাই। বিনি খোলে নামগান খোলতাই হয় না।

গুগা বলে, কাল দিয়েছিল খেয়ালখুলি মতো, তা বলে বোজ বোজ বেতে বাবে কেন ? তুই দাসথত দিয়েছিস, তুই পা চেটে বেড়া ওদের—অন্ত মানুষ ডাকিস কেন ?

বউঠাকক ন বলে পাঠালেন, গৃহস্থৰ একটা ভাল-মল আছে।
বাদা ভাষগা— ভবুমাত্ৰ ভাল-জানোয়ার নয়, কত লোক এলে
বেখোবে মাবা পড়ে, তাঁৱাও সব ব্যৱহেন। ঠাকুরের নামে
দোষদৃষ্টি ছেড়ে বায়। তাই বললেন, আংজু হরেছে ধ্বন, কামাই
দেওয়া ঠিক হবে না। বাত হরে গেছে বলে আজ না হর কম
ক্রেই হবে।



রেজিষ্টার্ড ট্রেডমার্ক

ব্যবহার করুন

ডি, এন, ব্সুর

হোসিয়ারি ফ্যাক্টরী কলিকাতা—৭

—বিটেল ডিপো**—**

হোসিয়ারি হাউস

৫৫।১, কলেজ খ্রীট, কলিকাভা—১২

কোন: ৩৪-২৯৯৫

বলাই বলে, ভালকে তুই য়া লগা। গুনিরে আর বাজনা কাঙে বলে। ভাষার এ হাত থাবড়ানোর ওদের মুখে স্থাতি ধরে না। তোর বাজনা গুনলে দখা পেরে পটাপট ওরা উপুড় হরে পড়বে।

জগা বলে, রক্ষে করো। প্রথের জালা বাঁধলাম সকলে মিলে। জালার মটকার বাজ পড়ল। বজ্জাতগুলো উত্তে এসে ভূড়ে বসঙ্কে।

পচা রাগ করে বলে, বান্ধ পড়েছে, না আর-কিছু হবেছে.
চোৰে দেখ এসো গিরে। ন-মাদ ছ-মাদের পথ নর, পরের হুংধ
বাল থাবে কেন? দোষুথো বলাইটা—ওথানে ভাবে গদগদ,
এখানে ভোমার কাছে কিরে এদে কুছো করে। এসেছে
মেরেরা ছটো-তিনটে দিন, প্রীছাদ এর মধ্যে এফেবারে আলাদা
হরে গেছে। ক্ক্রেকে তক্তকে ঘর-উঠোন—এক কনিকা
ধূলোময়লা থাকতে দেগ না। ইত্বে মাটি তুলে ডাঁই করেছিল,
সেই উঠোন লেপেপুঁছে কী রকম করে ক্লেছে—সিঁডরটুক্
পড়লে কুড়িয়ে নেওয়া বায়। পানের পিক পোড়া-বিড়ি
আপে ভো ধেখানে-সেখানে ফেলতাম, এখন মাল্যা পেতে দিয়েছে,
বি-কিছু ক্লেবে মালদার ভিতরে।

জগা বলে, বসহি তো তাই। বিভি থাবো না, পানের শিক কেলব না, চাসিমন্ববা করব না, চোধ বুঁজে থালি হবেক্ফ হবেরাম করব—সে কাল আমার হারা হবে উঠবে না।

বলাইকে বলে, মেরে মানুষ্রে সামনে গিরে ভুই গণগদ হোস, এখানে ভার চফুলজ্জা কিলের ? চলে বা ভুই।

বাৰার মুখেও পচা বলে, গেলে পারতে কিছ লগা । দেখে থব ভাল লাগবে।

জঙ্গা কালোমুখ করে বলে, চেপে এলে বসেন্তে, সহজ্ঞে নজুবে না। একে একে সংস্থাক নিহে নিজেই। বাবোট তো বটে। সিরে পজুব একদিন। ভেডেচুবে সমস্ত ভছুনছু করে দিয়ে আসব।

ক একটা দিনেই বলাইব চকুসজ্জা ডেঙেছে। ডিঙি বাটে বাঁবা হলে সে গোজা গিয়ে ওঠে আলাব। জগা একলা পাড়ার মব্যে খ্যে গিয়ে ওঠে। পচা সেই একটা দিন বার করেক বলেই দার সেবে গেল। এক সঙ্গে তো বোবাকেবা—ইতিমব্যে মক পালটাল কি না, একটা মুখের কথা কিজাসা করাব পিত্যেশ নেই। আনাড়ি লোকগুলোর আসবে বলাই বাজিরে মন্ত হয়েছে। বন-গাঁরে শিরাল রাজা। সেই আমোদে মন্ত হয়ে আছে। জগনাথকে নিবে বাওরার কি গরজ আর এখন ? সেহাজির হলে বরক পশার-হানি ওদের।

নামগান আগে নিন্দিন করে হছিল, গানের ভিতরে হছার ফুটে ওঠ:ছ ক্রমণ। স্থাৎ দল ভারী হয়ে দাঁড়িয়েছে, এবং গানের সম্পর্কে ভয়-ভয় ভারটা কেটে গেছে। গানের পরে এক একদিন বারম্বার হবিধ্বনি। তরির লুঠ—হরিধ্বনির পর উঠানে বাতাসা ছড়িয়ে দেয়, কাড়াকাড়ি করে লোকে বাতাসা কুয়ার। বলাই ক'খানা বাতাসা হাতে হরে কিবে বলে, নাও জগা, প্রসাদ নাও বাদাবনে বসত, বড়-মেজ-ছোট কোন দেবতাকে চটানো চলবে না। হাত পেতে একখানা বাতাসা নিরে—একটু কঁড়া মাধার দিবে এক কণিকা জিভে ঠেকিবে বাতাসাধানা জনা ফিরিবে দেয় আবার।

মজা দিনকে দিন বেছেই চতে ছে। আলা থেকে ব্যব ফিবছে এখন বাত ছপুৱ। নামগানের পর গরগুজৰ চলে বোধছর। রাছা শেষ করে জগা বঙ্গে থাকে, আর গর্জার মনে মনে। তালে গড়ে-ভোলা সাইজলা বেরিতে এঞ্ছরে করেছে তাকে সকলে এমন কি বলাই অবধি। সকল গোলমালের মূলে চাক্ষবালা স্বনিশে মেয়ে বে বাবা!

শেষটা একদিন জগা বাগ কৰে বলে, ভক্ত হয়ে পড়েছিস : ঠাকুবের নামে তো রাত কাবার করে ফিরিস । কাঁহাভক বড়ে আমি ভাচ পাহারা দিই ? এবার ধেকে আমি খেরে নেবো।

বলাই সঙ্গে সঙ্গে হাত ছ-খানা খরে বলে, তাই কোরো: খেয়ে নিয়ে তুমি শুরে পোড়ো। নরতো আমার মরা মুখ দেখা জগা। ইাড়িতে ভাত রেখে দিও। নিয়ে থ্যে আমি ধার।

নতুন ব্যবস্থায় ভাল হল বলাইব। জগা না খেবে আছে আগে ভাই তাড়াতাড়ি ফেবার চাড় ছিল একটা। এখন নির্ভাবনা। জগা ঘ্মিরে থাকে। খুটখাট আওয়াল হল একটু ভেলানো বাঁপ খোলার। ভিতরে এলে কপকপ করে ভাত খাছে। বাইরে দিনে জল ঢেলে আঁচিরে এলো। ঘুমের মধ্যে এই সমস্ত জ্বপা স্থপ্নের মকন টেব পার। সমস্তী দিন গাঙে খালে আর কুমিরমারিং গজে কাটে। বড়দাকে জলিয়েজালিরে এই বালা এলাকার নিয়ে এলো—সেই বড়দার পক্ষেও কি উচিত নর বাত্রে জগার ঘরে একটিবার এলে খোঁজখবর নেওরা! গাঁর অঞ্চল খেবে বড়দার আপনজনেরা এলে মিলেছে—আমে-ছুধে মিলেছে, আঁটি আর কি গরজ এখন গ লেব রাত্রে উঠে চোখ মুছতে মুছতে মাছের ভিত্তি নিয়ে কুমিরমারি ছুটুক, এই ছাড়া জন্ম কোন গ্রুজ নেই।

দেদিন থাটে ফিরে ডিঙি বাঁধতে বাঁৰতে জগা ভরাক-ভরাক কবে। বমি করে ফেলবে এমনি ভাব। ফ্রাক্ত বাঁধে উঠতে উঠতে জগা পিছন বুবে ভাকার।

ঐ বে ওল-চিংড়ি থাওবাল গদা ঠাকুত, ক-দিনের পচা চিংড়ি। আব কি রকমেব ওল কে জানে ? পেটের মধ্যে পাক দিছে। সেই থেকে।

বদাই বলে, ওল-চিংড়ি আমিও ভো খেলাম--

বলেই তাড়াভাভি ঘূরিরে নেয়। অবিশাস করা হছে, কেপে উঠবে জগা। কথা ঘূরিরে নিয়ে বলাই বলে, গুচের থেতে গেলে বি জন্তে গু আমি ডাল দিয়ে থেয়েছি, ওল থেতে পারি নে, ওলের নাম গুনলে আমার গাল ধরে। তুমি ওক টেনো না অমন করে, গলার নলি ছিঁড়ে বাবে। খবে গিয়ে গুয়ে পড় এক্ষুণি।

আঞ্জকে আর বাসনে তুট। আমি রাধতে পারব ন ^{এই} অবস্থার।

বলাই বলে, বারা আবাব কি ! ভোষার থাওয়াদাওয়া নেই। একলা আমি। গদাগুবের বাওয়ানোর চোটে ভোষার ঐ অবস্থা, আমারও গলায় গলায় হচ্ছে। চাটি মুড়ি-চিড়ে চিবিয়েও থাকতে পাবি। আমাদের ঘবে না হোক, বড়দা ওখানে মুখের কথা বললেই সঙ্গে সঙ্গে অমনি বাটি ভবে এনে দেবে।

জগা আগুন হরে বলে, খাওয়াটা ভাবলি শুবু, আমাব দশ দেখছিল নে। বমি করতে করতে মরে থাছি—



দক্ষিণেশ্বর কালীমন্দির

– 14



—ডা: রামজীবন বোষ —মানিক বার

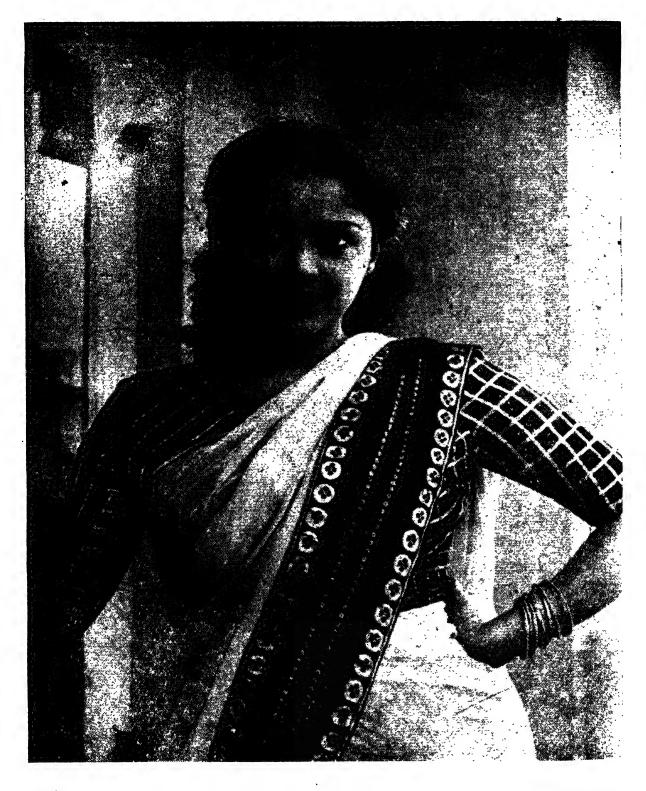


খোকা-খুকু

মধু বসাক





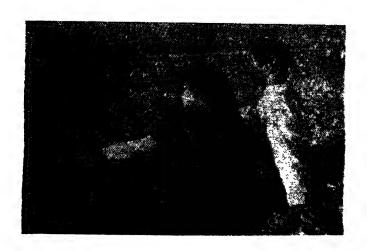


িষ্টিমূখ



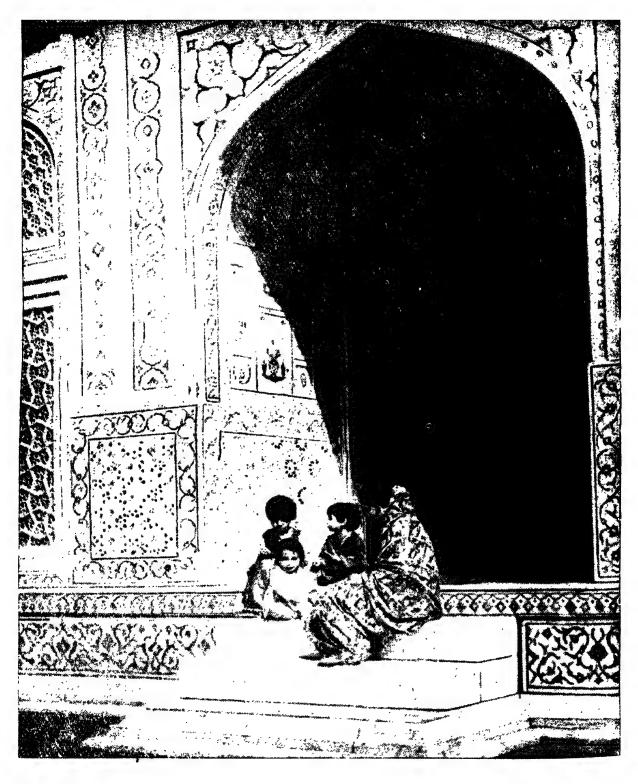
দিন আগত ঐ

—বি দাশ



—গ**চ্চিত্ৰ**মাৰ চটোপাব্যার

বালুকাবে**লা**য়



্রসমাধি (ইদ্-মুদ-উল্লার)

বলাই বলে, আমি বেতাম না। মাইবি বলছি। বাওরা বার া হেন অবস্থার একলা মায়ুব খবে ফেলে। কিছু না গেলে ঠাকুরের াম বছা। বাব আর চলে আসব। বীতরকে করে আসি। বোজ সুন্ম মতো করে এসে মাঝখানে একদিন বন্ধ করা বার না। কোন গ্র নেই, গুরে পড়গে জগা। ঠাকুরের কাছে বাছি ভো,— উনিই ভাল করে দেবেন।

বুরিরেশ্ববিরে বলাই বধারীতি আলামুখো হাঁটল। ছাই হরেছে
সার, অপুথের তান করে বলাইটাকে পরথ করে দেখল। পরীক্ষার
ল দেখে বিম হরে গেছে। অত্যাস বশে তামাক সেজে নিবেছে,
কৈ টানবার মেজাজ নেই। কলকে নিতে গেল না টানার দক্ষন।
কাস করে উপ্ত করল কলকে মেজের উপরে। বাদা অঞ্চল
ভ বড় গুণীন আছে—মস্তোর পড়ে আঁকিচোধ কেটে বাববদ্ধন
সরে। কিছু মেরে জাত বেন তাদেরও বড় গুণীন—মস্তোর পড়ে
না, আঁকচোধ কাটে না, এমনি-এমনি মারা করে কেলে।

আসি বলে তো বলাই চলে গেল। নামগানও আৰু ভাড়াভাড়ি য়াধা হয়ে গেছে, তবু ফিরছে না কেন ? কি করে না জানি নঃশব্দ আলার ভিতর বলে বলে ? পেটের মধ্যে পাক দিছে, জগা লেছিল। ঠিক উল্টো, ক্ষিধের পেটের নাডি চনমন করছে। সে াত বেঁধে বাঝে, বাতহপুর অবধি প্রাণ ভবে আছে৷ দিয়ে এসে রাঁধা াত কয়তা দেন। রোজ বোজ কেন এ বক্ষ হবে ? আড্ডা নামাই দিয়ে বলাই আৰু বাঁধাবাড়া কক্ষক, এই সব ভেবে ংলছিল অন্থের কথা। বাত বাড়তে। পিছনের বনে বাতিচর কোন াৰির দল হটোপাটি লাগিয়েছে, ঝণাস-ঝণাস করে পড়ছে ভালের উপর। হতোর, কভ আব দেবি করব,—উমুন ধরিয়ে লগা ভাভ গিপিরে দিল। ভাত আর বিভে-ভাতে। ক্রাকড়ার বেঁধে চাটি ভালও ছেছে দিল ওব ভিতরে। ভাত ঢেলে নিয়ে খেতে বসল, বলাইরের ত্র নিশানা নেই। মরেছে নাকি । অসুধ জেনে গেছে, টাড়াতাভি ফিবে আসবার কথা,—তা দেখি অক্ত দিনের চেয়ে বেশি পৰি আৰুকে। ভাই দেখা গেল, জগা ৰদি সভ্যি সভ্যি মৰে বায়, ভিলেকের ভবে ওদের আছে। বন্ধ হবে না। প্রাসে প্রাসে খেয়ে নিছে, বলাই আদার আগেই খাওয়া শেব করে শুরে পড়বে। রাত্রের মধ্যে কথা বলবে না, সকালবেলাও না—এক ডিভিডে বাবে, তবু মুখ তুলে ভাকাবে না ভার দিকে।

থাওয় শেব হবো-হবো, হঠাৎ শোনা বার শাঁথের আওয়াল। বাবার অক্সের ভিতরে শৃথাধানি শুনতে পাবে ভর সন্ধাবেলা। বাদার নোঁকোর গৃহস্থর বীত হর্ম করে। গাঁরে-খবে দারে-বেদায়ে নির্মের তর্ ব্যতার আছে, কিন্তু বনবিধি দক্ষিণরারের এলাকার নীতিনিয়ম মেনে বোলআনা শুলাচারে থাকতে হয়। মা এবং বাবা কোপের কোন কারণ খুঁজে না পান। কিন্তু মেহোঘেরির আলার মধ্যে শুখানি—হেন কাণ্ড কে কবে শুনেছে গু মেরেমায়ুর এসে পড়ে ক'টা দিনের মধ্যে নিজস্ব গাঁ-খব বানিরে তুলল।

শাঁধ ৰাজিয়ে নতুন কি একটা শুকু হল এই বাত্রে। চুলোয় বাকগো। বলাইবের বে ভাত বেঁধেছিল, জ্গা সেগুলো বেবির জলে ফেলে দিয়ে এল। আছে থাক। ভাত বাঁধবার চাকর-নফর কে ব্যেছে, থাবে ভো কিরে এসে কট্ট করে বেঁধেবেড়ে থাক।

ভাত ফেলে এনে জগা ওয়ে পড়ল। শাঁথ বালছে, আর উলু পড়ছে

ভাষ সংজ্ঞা উপু দেবার মান্ত্র জুটেছে বাদার। উপু-উপু-উপুদীর্ঘ তীক্ষ কঠ কলের উপরে অঙ্গলের ভিতরে ছড়িরে বাছে। বিষয়
জাঁক আক্রকে আলার, বাত কাবার করে দেবে মনে হছে। আবার
উঠে পড়ল জগা। উত্থনে অল ঢালল, বারার কাঠ বা আছে জল ঢেলে
আছা করে ভিজিয়ে দিল। বাঁধনে তো বন ধেকে ওকনো কাঠ
ভেঙে নিরে এলো বাছুমণি। ভিজে উম্বন্ত ধ্বানো বাবে না, ডেলা
সাজিয়ে ভার উপরে ইড়ি রেথে কাল সারবে। এত অধ্যবসার থাকে
ভো পেটে পড়বে ভাত। নইলে উপোস।

শুরে পড়ে ভাবছে এই সব। জোৎসা ফুটফুট করছে, খবের মধ্যে এসে পড়েছে জ্যোৎসা। বাঁবের উপরে মান্ত্রখন কলবব করতে করতে বাজে, ঘাড় তুলে জগা তাকিরে দেখল। পাড়া ঝেঁটিরে গিরেছিল বে আলার! জালে বেরুবে আজ কথন—আলার ফুভিতে কালকের দিন অবধি পেট ভর থাকবে তো!

বলাই ফিরছে ! আর সর্বনাশ, মেরেটাকে গেঁপে নিরে এসেছে বে ! ও লোকটা, তুমি গেলে না কেন ? সম্মীপ্লো হল, স্বাই গিয়েছিল। ওঠো, মা-সম্মীর প্রসাদ নাও উঠে।

বার গোছে শক্রর কাছ খেকে হাত পেতে প্রাদাদ নিতে। জগাতো ঘুমিরে আছে। ছোরতর 'ঘুম। বলাই তাড়াতাড়ি বলে, অকুথ করেছে, ভেবো না। রেখে যাও, পাডোটো কাল দিরে আসব।

যুম থেকে জগাকে ডেকে তৃলতে চার না বলাই। সম্ভত। জগা বেন দৈত্যদানো বিশেষ, উঠেই জমনি তোলপাড় লাগিবে দেবে চাকুবালার সঙ্গে। চোধ বৃঁজে ঘ্মিয়ে জ্গা দেখছে। পিতলের



বেকাবিতে প্ৰার প্রানাদ বেখে চাক্লবালা চলল, পিছু পিছুঁ বলাই আলা অবধি এগিয়ে দিতে চলল। তা বেশ হংহছে। বলাই আবার বখন ঘৰে ফিরবে, তাকে এগুতে আগবে না চাক্লবালা? এবং ভারপরে চাক্লবাল। বখন বাবে? চলুক না সারারাত্রি ধরে এই টানাপোড়েন!

বলাই কিবেইএসে এক ঘটি জল ছড়ছড় কবে পারে ঢেলে জগার পালে একটা চাদর বিছিয়ে ওয়ে পড়ল। ভাত রালা করা আছে কি না, দেখল না একবার তাকিয়ে। ভাতের গরজই নেই তার। লোওয়ার সলে সলে ঘুমিয়েও পড়ে বুরি!

তথন লগাকেই কথা বলতে হয়: শাঁথ পেলো কোথা রে ?

স্টিয়ে নিয়েছে। কাঠুরের নৌকো কালীতলায় নেমে মানসিক
শোধ দিছিল। শাঁথের ফুঁ ভান চাক্রবালাও গিয়ে পড়েছে। অনেক
বলেকরে কিছু দাম ধরে নিয়ে শাঁথটা ভালের কাছ থেকে নিয়ে নিল
মানবেলার গিয়ে ভারা আবার কিনে নেবে। শাঁথ স্টে গেল,
তথন ঝোঁক হল, গেরস্তাহরে লক্ষীপুজো করলে ভো হয়। দিনটাও
আলকে বিষ্থবার। এর পরে হপ্তায় হপ্তায় ফী বিষ্থবারে প্জো
করবে।

জগা বলে, শাঁথ হল, ফুল-নৈবিভিও না হয় জুটিয়েছে। কিছ বায়ুন নইলে ভো প্জো হয় না। বায়ুন পেল কোথা? ভূই গলায় জালের স্ভো ঝুলিয়ে পৈতে করে নিলি নাকি?

বলাই বলে, লক্ষ্মপুজে। শিবপুজে। বিনি বামুনে হলে দোষ মেই। ছপ্তার হপ্তার বামুন পাবে কোথা ? কিন্তু প্রলা দিন আজকে বামুনের হাত দিয়েই ফুল ফেলেছে।

হেদে উঠে বলে, জাত-বামুন রে ভাই। একেবারে জাত-গোখবো। চাকুবালা খবর বাখে সৰ, ওর সঙ্গে চালাকি চলে না। বলে, কাছেই তো বামুন বরেছে—চৌধুরিগঞ্জের গোপাল ভর্মাজ। বলে-করে তাঁকেই এনে দাণ তোমরা। সে কী কম হালামা! প্রথমটা বাজি হবে শেবে বিগড়ে গেল: জরুবি কাজ আছে, ভেড়ি সংক্রান্ত ব্যাপার। এক পা নড়তে পারবাঁনা এখন আলা ছেছে। পচা ছুই পা জড়িয়ে একেবারে ঠুশ হয়ে পড়ল তো তথন অৱ এক ছুভো; रनि, निक्या क्नोन आभि, तिही खोनित ? कांत्र नाम्य পুজোৰ সঙ্কল্ল হবে, কোনু জাত কি গোত্ৰ, কিচ্ছু জানিনে। গেলেই হল অমনি! মুখ চুণ কবে সবাই ফিবল। চাকবালাও তেমনি মেরে। বলে, আমি বাচ্ছি নিজে-গিরে মুপোমুখি জবাব দেবো। সকলে মিলে দল হরে গিয়ে পড়লাম চৌধুরি-আলায়। চারু বলে, ঠাকুরমশার, জাতজন্ম বত-কিছু মানবেলার গিয়ে। বাব হরিণ সাপ ওয়োরের মধ্যে জাত-বেজাত নেই, বাদাবনে মামুবেরও তেমনি জাত নেই। বলতে পারেন, পৈতেওয়ালা খুঁজি কেন তবে 🛽 সে আমার বউদিদির জ্বাত্ত, আর কাছে-পিঠে ঝাপনি হয়েছেন বলে। বউদিদি সারা দিন উপোদি আছে, আপনি পুজে৷ করে এলে খুঁতধুঁতানি গিয়ে মনের মুখে সে প্রাসাদ পাবে। রাভের বেলা সেই জ্ঞো আপনাকে বন্ত দিচ্ছি ঠাকুরমশার! মেরেটা বা তুখোড়, ভোকে কী বলব জগা! মিটি কথায় নায়েবকে একেবারে জল করে দিল। শালতি নিল না, বাঁধ ধৰে পাৰে হেঁটে নতুন আলার এসে প্লোআচ। কৰল। এব পৰে কী বিষ্যুৎবাৰে এসে এসে প্জো কৰে বাবে, ব্যা দিয়ে গেছে।

জগা বলে ওঠে, কী কাণ্ড বে বাবা! আলা ভবে আর রইল কোণা? আমাদের সাধের আলা বোলআনা এখন গেরস্তবাড়ি।

জগন্ধাথের উদ্মা বলাই ধরতে পারে না। পুলকিত কঠে আরও লে ফলাও করে বলে, বিজ্ঞর ক্ষমতা ধরে মেরেটা। অমন দেখা বার না। এই ধরো বাদা-জারগা—পুকোর কোন অলে তা বলে খুঁত রাখেনি। মালসার মধ্যে টিকে ধরিরে ধুনো দিয়েছে। সেই বরাপোভা থেকে গাঁদাফুল জোগাড় করে এনেছে। ঘর ভরে আলপনা দিয়েছে—পদ্ম আর লক্ষ্মীর পা। লক্ষ্মীঠাককন পা ফেলে কেলে উঠোন থেকে হরে উঠে বলেছেন, তারই খেন ছাপ পড়ে গেছে।

বিবক্তিতে জগাব মুখে জবাব আদে না। বদাই মুহুতে লাগল। জগা ভাবছে। ভারি বিপদের কথা হল বে! ভাবতে গিরে দিশা পার না। একচকু হরিপের মতো এককাল শুরু একটা দিকের বিপদ ভেবে অসেছে। চৌধুরিগঞ্জের শক্তভা। জনেক জাগে থেকে জমিরে আছেন তাঁরা—মাছের এলাকার শাহান-শা বলা বার। অভ কারও আসার পথে কাঁটা ছড়ান। কিছ এটা ছিল জানা ব্যাপার—এবাও সদাসতর্ক এইজক্ত, কাঁটা বছই ছড়িয়ে দিব পুঁটতে খুঁটতে এগিরে বাবে। চৌধুরিদের ডবার না, কিছ গাঁ-আম থেকে মেরেছেলেরা এসে পড়ে ঘ্রগৃহস্থালী বানিরে গগনকে সকলের থেকে জালাদা মাছ্য—ভল্লমান্থ্য করে তুলবে, 'এটা কে কবে ভাবতে পেরেছে গু

্বম হর না, ছটকট করছে। নানান রকম মন্তলবের ভারাগণ। ভাবত ভাবতে মাধা গরম হয়ে বার। সন্ধারাত্রে মিধ্যা করে অসংধ্য কথা বলেছিল, রাতত্বপুরে অস্থ্য করেছে সভিত্রই। সর্বাল অলছে রাগে। রাগ মেরেলোক ছটোর উপর। বিশেষ করে ঐ চাক্রবালা—সকলের বড় প্রভিপক্ষ সে-ই এখন। অমুক্ল চৌর্বির চেরেও বড়। রাগে রাগে বাইবে চলে এলো। বাধ ধরে চলল করেক পা।

নতুন আলা নি:শব্দ। ত্যুদ্ধে ওরা বিভোর হরে। জগা চোরের মতন টিপিটিপি এগোর। বাবে আলার উঠান অবধি—লক্ষীর পা একৈছে বেসব জারগার। পা ডলে ডলে যুহে দিরে আসবে আলপনা। রাগের থানিকটা শোধ দিয়ে তার পরে বদি যুম হয়।

বাঁৰের উপর রাধেঞাম। আন্চর্য, থৌড়া পা দেখি পরিপূর্ণ আরাম হয়ে গেছে। হনহন করে চলেছে। থানিকটা পিছনে অল্লদানী। অল্লদানী হেঁটে তার সঙ্গে পারছে না।

জগাকে দেখতে পেরে রাংগ্রাম বলে, ভাল হরেছে। চলে।
নিকি আমাদের সঙ্গে। হাতে লাঠি ? বেশ হরেছে, নিঃস্বলে
কেন্তে নেই। বউকে বললাম, বাড়ি থাক। তা শুনল না। পূল্ব কন্ত ! বাচ্চাটাকে সেই সন্ধ্যেবেলা স্ব্যোধবালার কাছে দিয়ে রেথেছে। রাতত্পুরে এখন মন্তা দেখতে চলল।



প্রেভলিপি

রজত সেন

ইেমস্ত আর একবার আয়নায় তার সিলে-করা পাঞ্চাবী
আর কোঁচানো ধৃতি প্রীকা করল, ক্লমালে আর একটু
এনেল ভডালো, ভরণ গোঁফে আসুল বুলালো, ভাবল: বোব হয় বার
করেক কামালে খন হবে। দওজার কাছে দাঁড়িয়ে টুন্কী তাকে
প্রীক্ষা করছিল। তেমস্ত জিজেস করল, কি বে! বাবি নাকি ?

ফ্রকের প্রাস্তটা আঙ্গুল দিয়ে গুটাছিল টুন্কী, চোধ ছলছল করে উঠন, বলল, আমায় নিয়ে বাবে দাদা ? নিয়ে চল না, মা-কে বলে আসব ?

তবে চ, কিছ ভাড়াভাড়ি কর, পাঁচ মিনিট সমর দিলাম, ভৈরী হয়ে আর।

টুনকী দৌড়ে গেল মা'র কাছে।

অনেক কটে কার্ট ইয়াব থেকে দেকেও ইরাবে উঠেছে হেমন্ত, কলেজের এক প্রোকেসবের কাছে ইংরেজী পড়তে বার। দিন করেক আগে তার বাবা প্রোকেসবের মাইনেটা তার হাতে দিরেছিলেন ওঁকে দেবার জজে, ছ'দিনেই টাকাটা কেমন করে বে উড়ে গেল কিছুতেই ছিলেব করতে পারছে না লে। হরত ভেমলোক তার বাবার কাছেই হাজির হবেন, বলা বার না! হেমন্ত অস্থির হয়ে উঠল, একটা সিগারেট ধরিয়ে ফেলল, দরজার দিকে কান আর চোধ রেথে খন ঘন টান দিতে লাগল।

বাইবে পারের শব্দ শুনতেই সিগারেটটা জানালা দিয়ে ছুঁড়ে ফেলল সে। ঘরে চুকল আগে তার মা অববাসা, পিছনে টুনকী।

কোধার বাবি ভোরা ? জিজ্ঞেস করল স্থরবালা।

আমি ত বাচ্ছিলাম আমার এক বন্ধুর বাড়ি।

মিৰো কথা। বলস টুনকা তার সমা বেণী ছলিরে, দাদা বাচ্ছে কাটলেট খেতে।

নে ভোকে স্থাপাছিলাম !

স্ববাদার ছোটোখাটো গড়ন, শ্বীবের শক্ত বাঁধুনী; কমনীয়, স্কুমার মুখ, বৃদ্ধিতে উজ্জ্ব ছটি চোখ, অবের চার্দিকে ভাকিরে বিজ্ঞেদ করল, সিগারেটের গন্ধ পাক্তি?

বাবার বৈঠকথানা থেকে আসছে! আছো মা, সব সময়ে একটা দামী নেকলেশ পরিয়ে রাধ কেন ? রাভার ঘাটে—

जूरे छ मःभ चाहिम।

চল বে টুনকী, বলল ছেমন্ত।

বাড়ি থেকে বেৰিরে সভিচই হেমস্ত ওকে বেল্পর্যার নিয়ে গেল। কি খাবি বল্ ?

মাংসের কাটলেট, বলল টুন্কী। আনেক কটে আনন্দ চেপে বাবল সে, দশ থেকে এগাবোর পড়েছে; এটুকু বোঝে—বেনী হাসলে দাদা ভাকে বেকুব বা লোভী ভাবতে পারে; বাতির আলোর হারে-বসানো সংকট বালমল করতে লাগল।

কাটলৈট এনে গেল, আড়চোৰে ভাকাতে লাগল টুনকী।

নে, আর দেরী কিংসর ?

ছুবি-কাটা চলতে লাগল।

কাটলেট শেব হবার পর হেম্স্ত জিজ্ঞেন করল, আর কি থাবি ? একটা চপ। **छ्ल बन, जारांत्र हनन छूदि-कांहे।**।

বিল চুকিয়ে ওরা এল রাস্তার। কেমস্ত জিঞ্জেদ করল, পার্কে বাবি ? ছটো জাইদক্রীম খেয়ে বাড়ি—

Del I

বড় পার্ক। চারিদিকে লোকের ভীড়; ছুটো আইসক্রীয় কিনে ওরা পার্কের মাঝখানে অগিরে গেল। পাঁচ মিনিট বসা বাবে, আইসক্রীয় থেতে থেতে ওরা কোন্ আরগার বসবে ভাই ভাবছিল, হেমল্ল একটু লোরে পা চালাল, টুনকী পিছনে; ষঠাৎ হেমল্ল বরেসী একটি ছেলে কোথা থেকে একেবারে টুনকীর কাছে এসে পড়ল, মুখ ফিরাবার আগেই ছেলেটি ছটি হাত বাড়িরে চোথের নিমেবে ওর নেকলেশ খুলে নিয়ে দেড়ি, টুনকীর হাত থেকে আইসক্রীয়-লাগানো কাঠিটা মাটিতে পড়ে গেল, চীৎকার করে উঠল সে, কি হল ? কি হল ? হেমল্ল এগিরে এল, টুনকী তথনও চ্যাচাছে; কি হল বল না ?

ঐ বে! ঐ লোকটা পালাছে আমার নেকলেশ নিরে। এতকণে কেঁদে ফেলেছে সে।

হেমস্ত তাকিয়ে দেশল—ছেলেটি ক্রত পারে পার্কের গোটের দিকে এগিয়ে যাছে, চোর, চোর ! বলে জোরে চীৎকার করে উঠল সে। লোক জড় হয়ে গেল জনেক; আরও জনেক হৈ চিশ্বলা। হেমস্ত হঠাৎ ছুট দিল গেটের দিকে, তার সংগে ছুটল আরও করেকজন; টুনকী চোখের জল সামলে জজ্প প্রশ্নের উত্তর দেবার চেষ্টা করল।

হেমস্থ কিরে এল, বলল, পালিরেছে !

পুলিশে ডাইরী করে এসো হে ! একজন বয়ন্ত লোক উপদেশ দিল। কি হবে বলুন ? বলল হেমস্ত।

তা অবগু বলতে পারিনা; তবে হতে পারে কিছু! দামী নেকলেশ, বিক্রি করতে গিরে ধরা পড়তে পারে।

ট্যাক্সী করে থানার গেল হেমন্ত, সেথানে ডাইনী করে বাড়ি ফিরল; নিচের বৈঠকথানায় তার বাবা তারিন্মী বাবু মক্কেলদের সংগে কথা বলছিলেন; তাঁকে খবরটা দেবার সাহস হল না তার, উপরে এসে মা-কে বহল; স্থরবালা একবার মাত্র ছোট একটি আর্ত্তনাদ করে চুপ করে গেল। সত্যিই, আমারই ভূল হরে গেছে—ওটা প্রতে দিরে ওকে; লকেটের হারের দামই প্রার হাজাব দেড়েক টাকা!

ইসৃ! ও কি আর পাওয়া বাবে ? বলল ছেমস্ত। টুনকী আর এক পশলা চোধের জল ফেলল।

কাঁদিস না! কাঁদলে কি ফিরে আসবে ? আর একটা পঞ্জিব দেব'খন, আমার নেকলেশটা পরতে দেব তোকে, খ্রুলার! বাবুকে বলিস না বেন!

মা, আমি বাচ্ছি প্রোক্সেরের বাড়ি।

वा ।

হেমস্ত বই গুছিরে নিবে বেরিরে গেল।

লেকের কাছে এসে বাস থেকে নেমে পড়ল সে, চারের দোকান ক'টা পেরিরে একটু নির্জন জারগায় জলের হাবে এসে বসল হাত-গা ছড়িরে, আত্তে আতে একটা সিসারেট ধরাল।

প্যাণ্ট আর ছিটের সার্ট-পরা একটি ছেলে এসে দীড়াল হেম^{প্তের} পিছনে, বাঁকড়া চুলের মধ্য আভূল ক'টা চুকিরে বলল, কভকণ ? ৰুখ তুলে তাকাল হেমন্ত, হাসল; এই ত! মিনিট পাঁচেক, বোস।

ছেলেটি বসল; বর্ষ উনিশ্-কৃড়ি হবে; সার্টের আন্তিন গুটানো, শুনা হাতে ঘড়ি; বুকপকেট থেকে চিঙ্গুলী নিরে মাথা আঁচড়ালো।

হেমন্ত সিগাবেটের প্যাকেটটা এগিয়ে দিল; অন্ত ছেলেটি একটা সিগাবেট ঠোটে লাগিয়ে বাঁ হাতে দেশলাইটা একবার বাঁকুনী দিল। ভান পা-টা লখা করে পকেট থেকে নেকলেশটা বার করে হেমন্তর কোলের উপর ছুঁড়ে দিল, অস্পাই বাভির আলোর সোনা আর পাথর চকচক করে উঠল; ছুঁহাতে নেকলেশটা চেপে ধরল হেমন্ত।

আৰু ছেলেটি অসুচ্চ গলায় হেনে উঠল, জিজ্ঞেস করল, কি বে খাবড়ে গেলি না কি ?

না, আমার দিলি কেন ? নে, রাথ ভোর কাছে।

ছেলেটি নেকলেশ ঢুকিয়ে হাৰল পকেটে, পা গুটিয়ে নিল, সিগাবেট ধৰাল।

একটু দ্বেই ছেলে আব মেরের মিলিভ হাসির শব্দ শোনা গেল; লেকের জলে ধাঁই মারল একটা বড় মাছ, ভালা চাদের ছারা টেউ-এর ধাকার টুকরো টুকরো হরে ছভিরে গেল জলের চারদিকে।

চাই-ই-ই গ্ৰম স্কৃতি ! স্বৃত্তি দেব না কি বাবু ?
মোটৰ ছুটছে, আৰ হাওৱা ছুটল ।
কাছ !
কি বলছিল ?
কাল ওটাকে খেড়ে দিতে পাৰ্বি ত ?
ভবে কি ?
দেখিল বেন—
চুপ কৰ ।

বাড়ি চুকবার আগে হেমন্ত দেখতে পেল ইংরেজীর প্রোক্ষেসর বিমাণ্ডে রক্ষিত্ত উন্টো দিক থেকে এগিরে আস্চ্ছেন তাদেরই বাড়িব'দিকে। লখা লখা পা কেলে সে সামনে গিরে দাড়াল।

মাইনের জভে একেবাবে বাড়ি ধাওরা করতে হল ভার ? টাকাটা মারা বাবে ভাবছিলেন নাকি ?

চাৰণটা গুছিবে নিয়ে প্রোচ় অধ্যাপক কি একটা বলভে বাচ্ছিলেন, কিছ স্থবোগ পেলেন না !

মাঠারদের অবস্থা কি আজ-কাল এতই থাবাপ হরে গেছে ?

বদি বলি টাকার জন্ম আসিনি, তোমার খবর নিজে এসেছি, এক সপ্তা ভোমার কলেজে দেখিনি, বাজিতেও পড়তে আসনি, ভাবলায়—হরত—

চূপ কঞ্চন, মণাই, আমার এমন গভীর ভালবাসবার কোনো কারণ নেই,—বদি না আপনার অভ কোনো মন্তল্য থাকে; বান বাড়ি বান, বাজবেকি চীকা জিলা বাজিকা। থক টু ইভজত: করে প্রোফেসর বৃদ্ধিত বৃদ্ধেন, ভন্তলোকের ছেলে মনে-প্রাণে বে এমন অগংগাতে বার—সেটা তোমাকে দেখেই বৃহতে পাবলাম। করেক মাস সক্ষা করেছি ভোমার ভিতরটা তোমার পোকার খেরে গেছে! এক পা সরে দাঁড়ালেন তিনি, চাদর দিরে নাক চাক্লেন—বেন কোনো অকথ্য তুর্গদ্ধ নাকে এসে লাগছে; ভোমার বাবাকে বলতে এসেছিলাম—তোমার পেছনে বেন অবধা আর প্রসা নই না করেন, পড়াকুনো ভোমার হবে না।

গলাব শব্দে তেমন ভোব ছিল না, উত্তেজনাও নয়; কিছ হেমন্ত আজ এই প্রথম জমুভব করল—একজন মায়ব জার একজন মায়বকে কি গভীর মুণা করতে পারে! এমন মুণা ভাকে সাপের মত জাড়িয়ে ধরল, দংশন করল তার সমস্ত শরীরে; বৃদ্ধিমান, শিক্ষিত লোকের মুণা এমনই, বে-লোককে তুমি হত্যা করতে পার, কিছ তবু সে-মুণার হাত থেকে নিম্কৃতি নেই, মুণ্ড নেই। মুথ তুলে দেখল হিমাতে বিক্ষিত চলে বাজ্ছে আর একটি কথাও না বলে, আর একবারও ভার দিকে না ভাকিয়ে।

আন্তে আন্তে বাড়ি চ্কল সে, বৈঠকধানায় তথনও করেকজন মর্কেল, কাজ সেরে তার বাবার উপরে বেতে এগারোটা বাজে। ধাবার-বরে উকি দিয়ে দেখল টেবিল খালি। উপরে এল সে; টুনকী তথনও পড়ছে শিক্ষরিত্রীর কাছে, ডাকে স্কুলে দেওরা হয়নি, মেরে বড় হচ্ছে, চোখের বাইরে জনেক কিছুই ঘটতে পারে, আজকাল ঘটছেও। পদর্শির বাইরে এক মুহূর্ত অপেক্ষা করে হেমন্ত ব্যবহ মধ্যে চ্কল। বাইল-তেইশ বছরের পরিচ্ছের মেরেটি চোথ খুলে তাকাল; হেমন্ত বলল, নম্কার!

नमकात्र ।

কেমন আছেন ?

ভাগ। এমন স্থান হাসতে হেমন্ত কোনো মেরেকে লেখেনি।

্প্ৰায় ন'টা বাজে, আজ অনেককণ পড়াচ্ছেন ?

কালো ফিভে-বাঁধা নিকেলের হাত-ঘড়িট। একবার দেখল মানসী, বলল, হাা, এবাবে উঠতে হবে। অংকগুলো করে হাধ্বে সব, কেমন ? টুনকী ঘাড় নাড়ল।



মানসী গাড়াল, হাত-ব্যাগটা তুলে নিল টেবিল থেকে; পিঠেব উপর আঁচলটা তুলে দিল; জামার নিচে ফিতে দেখবার বিতীরবার অবোগ পেল না হেমস্ত; দীর্ঘ-দেহ, সুঠাম শবীর আর পুলোর প্রাংগণে ধূপ আর ফুলের গদ্ধের মত মধুর অথচ বিচ্ছিন্ন, অমুভব করা বার, স্পন্ করা বার না; একবারও অল্য কোনো দিকে না তাকিয়ে প্রশ্যি সবিবে বর থেকে বেবিয়ে এল সে।

সিঁড়ির কাছে হেমস্ত ডাকল, দাঁড়ান।

প্রথম বাপে পা দেবার আগেই ঘূরে দীড়াল মানসী। আর হেমস্তর মনে হল এ একটি আসল মেরে, তাই তাদের ব্যবধান এত ছন্তর, এত দূরহ; রাস্তার কুড়ানো ঘুণা তাকে আবার আকঠ চেপে ধরল; আমাকে দেখছি আপনি মানুষ বলেই গণ্য করেন না!

ক্থাণ্ডলি নিজ্ঞান্ত হ্বার আগে তার জিভটা পুড়ে গেল; কিছ বুবজে পারল কাছে বাবার রাপ্তা এটা নর, এটা ভূল পথ, দূর-পথ ! কোনো দিন আপনি আমার সংগে একটি কথা বলেন নি, এফটিবার ভাকাননি আমার মুখের দিকে, আমি কি এতই যুগ্য ?

মানসীর চোধে বিশ্বর দেখা দিল, আর কিছুই নর; তেমনি প্রশান্ত হাসল দে। তেমনি দ্ব, তেমনি বিছিন্ন হাসি; আপনি ঘুণা কি প্রশাসার বোগ্য—সেটা বিচার করবার আমার কোনে। দিন প্রেক্তন ঘটেনি, এ কথা আপনি বিশাস করতে পারেন, আপনার সংগে কথা বলবার বা মুখের দিকে তাকাবার কোনে। প্রয়োজনও নর, চাকবীর নিয়ম-কান্থনের মধ্যে ওওলো পড়ে না, আছা! মানসী নেমে গেল সিঁড়ি দিরে; আর হেমছর বুকের মধ্যে অক্স একটা মানুব নি:শক্ষে চীৎকার করে উঠল, বাবেন না। গাঁড়ান এক মিনিট।

মানসীর পারের শব্দ মিলিরে গেল; হেমন্ত আছের মন দিরে আকুট ভাবে বুরতে পারদ, ভার পোবাক, চেহারা, বাবার টাকা এবং প্রতিপত্তি, ভাদের বাড়ি এবং গাড়ি—এ-সব-কিছু সত্ত্বেও হিমাংও বক্ষিত আর মানসী মিত্রের ব্যবধান সে সংক্ষিপ্ত করতে পারবে না।

জনেককণ দিঁ ড়িব বেলিং আঁকেড়ে গাঁড়িবে বইল দে।
দানা, ডুমি থেতে বাবে নাকি? আমি বাছি।
আমি পরে বাব, ডুই খেরে নে।
ডুমি এখানে গাঁড়িয়ে আছ কেন?
খেতে বা না।

টুনকী নেমে গেল নীচে। সে গেল তার ঘরের দিকে; মা'র ঘরের দরজা বন্ধ, জাফরীর ছিল্ল দিরে নীল আলো দেখা বাছে। হঠাং একটা অসহু ঘূণা আর রাগে নিঃখাস বন্ধ হয়ে এল তার, পাগলা কুকুরের মত লাফাতে লাগল হুংশিশু! আজও বাধিকা বাবু আর তার মা প্লানশেটে আত্মার সঙ্গে কথা বলছে, দরজার কান পাতল দে। অপ্পষ্ট হাসির শব্দ শোনা গেল; তার গালে বেন চাবুক মারল কেউ। বাধিকা বাবু তার বাবার তাত্রিক বন্ধু, হেমজ্বর পিঠ চাপড়ে একদিন বলেছিল, তুমি বাচা ছেলে, এ সব তুমি কি ব্রবে হে! একে বলে প্রেকলিপি।

বাধিকারমণকে সে পাঠিয়ে দেবে প্রেতলোকে। যুগা আর নপুংসক বাগে ভার সমস্ত শরীরটা কাঁপতে লাগল।

লেকের অন্ধকারে অলের ধারে হেমস্ত জিজ্ঞেদ করল, কত পেলি ?

— বাইল শ, ভাহলে ভোষ ভাগে পছল এগাবোশ, দল টাকা ট্যান্সী-ভাড়া, কান্তু ভাষ পাতলুনের পকেটে হাত চুকিল্লে নোটের ৰাণ্ডিলটা বাব কবল, নে এগাবো শ নব্বই টাকা। সব এক শ টাকার নোট।

ফিভেন্ন-বাঁধা টাকাটা হেমস্ত চুকিন্তে রাখল পকেটে।

লেকের শাস্ত জল, মৃত্বতোস, পশ্চিম আকাশে ভালা চাঁদ; আব পকেটে অনেক টাকা, এবাব ? এবাব কি করা বাব ?

কাত্ৰ বলল, বাবি এক জাৱগায় ?

কোধার ?

চল্না, কত দিন আর বোকা হরে থাকবি ? একটু অভিজ্ঞতা হোক।

কিসের অভিজ্ঞতা ? হেমস্ত সিগারেট বার করল।

ठल्ना।

টাাদ্রীতে হেমস্ত বলল, একটা লোককে মারতে হবে।

কোন লোক ? খুলে বল।

বলব, ফেরবার সময়।

কেমন মার ?

বেন আর হেঁটে আমাদের বাড়ি না আসতে পারে।

এক সকু গলিতে ট্যাক্সী ধামানো হল। হেমন্তর সমস্ত শরীরটা শক্ত হয়ে গেল, কামু ধাকা দিয়ে তাকে নামালো ট্যাক্সী থেকে।

থব হ'মাস পবে ঠিকানা থোঁজ কবে কবে একটি পঁচিশ ত্রিশ বছবের মেরে একেবাবে তাবিনী বাবুর বৈঠকধানার চুকে পড়ল; বাত্তি আটটা হবে, হ'-একজন লোকও রয়েছে ঘবে।

মেয়েট নমস্বার করল হাত তুলে, বলল, আপনার নামই কি ভাষিণা তারু?

স্বাই তাকাল এক সংগে; পোষাকটা ৰথাসন্তব ভক্ত ক্রবার চেষ্টা ররেছে, ভবু কোথার বেন একটা অসম্পূর্ণতার ইংগিত থেকে গেছে, চুলের বাঁধনটা আর একটু আলগা হলে বেন ভাল হত; সাড়িটা জমকালো নর, তবু বেন ওকে ঠিক মত মানার নি; রং ধুরে কেলার পর পাজলা ঠোঁট ছ'টি বিবর্ণ দেখাছে; পাউভাবের প্রলেপেও চোথের চার-পাশের কালো দাগ ঢাকা পড়েনি; চোথে ক্লান্তি, শরীবের ক্লান্ত ভাগিতে বাৌবনের কিছু আভাস, ধ্বংসের পবে তথনও কিছু ক্ষরিকু মাধুর্ব!

আপনার নামই কি ভারিণী বাবু ? পলার ববে কোনো সংকোচ নেই, বিধা নেই।

হ্যা, বন্ধন।

না, বসব না, একটু দবকার ছিল আপনার সংগে। ভারিণী বাবু অপেকা করতে বলনেন।

মেষেটি সারি সারি আলমারির বই দেখতে লাগল।

চেষাৰ স্বাবাৰ শব্দ হল, তাৰিণী বাবু দাঁড়িয়েছেন; গাৱে কজুৱা, কোঁচাটা পেটের কাপড়ে চ্কানো; মাঝাৰি আকাৰেব লোক, মাঝার পাঙলা চ্ল--বসের ছ'পাশে প্রোর স্বই সাদা; মোটা, কালো ক্রেমের চশ্মার ভিতরে অসাধারণ ধূর্ত চোধ ছটি অনেক কিছুই দেখতে পেল, অনেক কিছুই বুৰুতে পারল; চলুন, আম্বা বাইবে বাই!

সেই ভাল। সঞ্জিভ পলায় উত্তর দিল মেয়েটি।

বাৰাকাৰ প্ৰান্তে অম্পষ্ট আলো-অন্ধনার নিভান্ত পরিচার গলার মেরেটি বলল, আপনার ছেলে হেমন্ত কাল বাত্রে আমার ছ'হাছার টাকার গরনা চূর্বি করে নিরে গেছে, আমার গ্লানে গুমের ওব্ব মিশিরে দিয়েছিল দে; আমার গরনা ফেরৎ চাই, না হর টাকা।

গন্ধট। কিলেৰ বুষতে পাবলেন না ভাবিণী বাবু, বাগান থেকে ফুলেৰ না মেৰেটি কোনো এসেন্স ছড়িবেছে তার জামায়। বললেন, টাকা পেলেই ভোমাৰ স্থবিধে হয়, না ? জাবাৰ নতুন ভিজাইনেৰ গ্ৰনা গড়াতে পার। ভোমাৰ নাম কি ?

পুভর।।

ঠিকানা ?

সভেবো নম্বর ভূর্গাচরণ মিত্র বোড, চীৎপুর থেকে বেরিরেছে, ধাবাবের দোকানের পাশ দিয়ে ডানহাতি রাস্তা।

कान मस्तादना वावहा कवव।

(2 · 四) ?

ভারিণী বাবু তার কাঁবে হাত রাখতে বাচ্ছিলেন, মেয়েটি সরে

টাম থেকে নেমে প্রথম বাস্তাটা বাবিকা বাবু নির্বিবাদে পার হরে এলেন, দিতীর রাস্তাটা অপেকাকৃত নির্জন, গ্যাসের অফুজন আলোর রাস্তার অককার সম্পূর্ণ দুর হয়নি। পকেট থেকে ছোট শিশি বার করলেন ভিনি, মোদকের একটা গুলি, হাত্তের তালুতে নিরে মুখে প্রে দিলেন, তারপর বলে উঠলেন, কালী, কালী! মনটা তাঁর খ্রই ভাল আল, বরানগর কালী-মন্দির তৈরী করছেন ভিনি, প্রবালা প্রতিশ্রুতি দিয়েছিল পাঁচ হাজার টাকা দান করবে; আলই টাকাটা পাওয়া বাবে, মাটিতে পা পড়ছে না তাঁর, তিনি বেন হাওয়ার ভেদে চলেছেন; মন্দির প্রতিশ্র হলেই তিনি ধৃতি ত্যাগ করবেন, গেরুয়া প্রবেন, আর গলার কলাক্ষের মালা, নাম হবে রাবিকানক গিরি-মহারাজ, কিছু মড়ার থুলি জোগাড় করতে হবে, টুনকী মেরেটা দেরী করছে বড় হতে, আর ছটো বছর; তিনি আর একটা গুলি মুখে প্রলেন, কালী, কালী, তামার ইচ্ছে মা!

দেশুন ভ। এই ঠিকানাট। চেনেন না কি ?

প্রায় ছ'কুট লখা একটি জোয়ান ছেলে বাধিকারমণের সামনে এক টুকরো কাগজ মেলে ধরল।

কাগৰটা হাতে নিলেন তিনি, কালী, কা-

পিছনে বাড় আর গলার মারখানে প্রচণ্ড আবাতে শ্বন্টা তাঁর গলার আটকে বইল; সামনের ছেলেটি হু' পা সরে এসে চিবুকে ব্রি মারল, ভিনটি বাতের বাধানো পাটি মুখ থেকে ছিটকে পড়ল রাজার, মাটিছে চলে পড়ছিলেন তিনি, কোমরে শক্ত লাখি খেরে আবার সোলা হলেন, চিবুকে আর একটা ঘৃষি; মুখ দিরে বক্ত গড়িবে পড়তে লাগল; চীংকার করে উঠতে গেলেন তিনি, এবারের ব্রিটা পড়ল নাকের উপর, বড় নাকটা ছ্মড়ানো টোমাটোর মভ খেঁতলে গেল, মুখ দিরে একটি শক্ষ বার করতে পারলেন না তিনি। চোখের কৃষ্টি তাঁর বাপানা হরে গেল, খানিকটা নোণা বক্ত গিলে ক্সলেন, চোরালটা বাঁকা হরে রইল; মাধার আবার আবাত

লাগল, কাণড়-জড়ানো লাঠিব আঘাত, থুলি ফাটলো না, সমজ বিলু ওলট-পালট হরে গেল; ইাটু ভেক্লে মাটিতে পড়ে গেলেন রাধিকা বাব্, পড়বার আগে কেউ জুতোপারে লাখি মাবল মুখে, চোরালটা নোজা হল বটে, কিছ গাল কেটে মাভি বেরিয়ে গেল।

সব চ্পচাপ; চারটি ছেলে ঝুঁকে পড়ে রাধিকা বাবুকে পরীকা করন।

একটা কান কেটে নেব না কি ? ডান হাতটা ভেকে দে।

হেমস্ত হাত লাগায়নি, কেমন বেন মেকদণ্ডের মধ্যে ভার শিবশিব করছিল, সে বলল, এবার ছেড়ে দে কায়, ছেড়ে দে !

রাধিকা বাবু তেমনি নিঃশব্দে পড়ে রইলেন রাস্তায়, জাঁর সোনার আংটি আর মণিব্যাগ জাঁর কাছে রইল না।

চার বছর এমন কিছু একটা সময় নয়। হেমস্ত মা'ব কিছু গরনা আর বাবার নগদ করেক হাজার টাকা নিয়ে বাড়ি থেকে পালিয়েছে, তারিলী বাবু থোঁজ করেননি; তবে প্রবালার শোকে হেমস্তর বস্ত্র কায় তাকে অনেক সাস্তরা আর সাহার্য করেছে; পরিবারের সংগে অনেক অস্তরংগ হরে উঠেছে সে, প্রবালাকে মা বলে, আর পঞ্চলী টুন্কী কায়না' বলতে অজ্ঞান! তারিণী বাবুকে প্রছাভরে কাকাবাবু বলে, কিছু তারিণী বাবু কায়কে সংগ্রে পরিহার করেন। কায়ই একদিন হেমস্তর থোঁজ নিয়ে এল, দে থোছাইতে আছে, বাবদা করছে! তারিণী বাবুর অনেক পদার বেড়েছে, গাড়ির আকারটাও বৃদ্ধি পাছে টাকার সংগে; চার বছরে মাধার চুদ আরও পাতলা আরও সাদা হরে এসেছে। প্রভ্রা বালীগঞ্জে ছোট একটা বাড়ি কিনেছে, সামনের বছর একটা ছোট গাড়ি



আপনি ঘণ্য কি প্ৰশংসাৰ ৰোগ্য—সেটা বিচাৰ কৰবাৰ আমাৰ

কিনবারও প্রতিশ্রন্তি পেরেছে সে। রাধিকা বাবু তাঁর বরানগরের বাড়িতে আছেন, কালীর মন্দির তাঁর হরে ওঠেনি, সামাগ্র একটু মাধার দোষ দেখা দিয়েছে, সেটা আর সারবার নয়।

রাধিকারমণ গেছে, স্থববালার ভাতে ক্তিনেই, কায়ু মলিককে পাওয়া গেছে; কিছ দেদিন হেমস্ত ছিল, আত্ম আর হেমস্ত নেই। আর স্থবালাও কোনো দিন প্রেতাত্মার প্রভাব থেকে মুক্তি-পাবে না।

নেদিন প্রবালা বলল, কান্নু, হাওড়া বাচ্ছি, বাবে আমার সংগে ? হাওড়ার কেন মা ?

টুনকীর একটা বিরের সম্বন্ধ এসেছে, ছেলেটি বড় ভাস ওনেছি, বড় বংশ, তিন পুক্র জমিদার, কথাবার্তা পাকা করে আসি। বাবে ? আমি আর বেতে পারসাম না তোমার সংগে, বলল কান্তু,

আন আর বেভে পারসাম লা ভোমার সংসে, বল বিকেলে বর্ধমান বেভে হবে, মামার বাড়ি; কালই ফিরব।

কৈ আমাম ত একবারও বলনি ?

होर बावक हिक हम।

বেশ !

ভাবিণী বাবু আদাসভ থেকে গাড়ি পাঠিরে দিলেন, কামু মল্লিককে নিবে ত্মববাসা হাওড়া গেল এগাবোটার সময়, ওকে নামিবে দিল টেশনে, টেশন থেকে আরও এক ঘটার পথ বেতে হবে ত্মববালাকে।

জমিলার-বাড়ির কাছাকাছি এসে শ্বরালা ডাইভারকে বলন, গাড়ি খামাও।

বিবাট, বাকবাকে মোটৰ পাছের ছারার থামল, হাওড়া থেকে বাইল মাইল দ্বে, গাড়ির আপে-পালে লোক জমতে লাগন; এমন বড় একটা হয় না, বিল্বা এমন গাড়ি দৈবাৎ চোথে পড়ে, ঘবের দরজায় থাকে কৈ? কে জানে হয়ত গাড়ির মধ্যে মধুবালা কিবো দিলীপকুমার।

সুরবালা চোপ বন্ধ করে বলস, আমার মাধা ঘুরছে, আমি বোধ হয় অজ্ঞান হয়ে যাব।

ভাইভার ব্যস্তসমস্ত হরে বিজেপ করল, একটা ঠাণ্ডা কোকো-কোলা দেশব ?

(741 "

গাড়ি থেকে প্যাণ্ট-পরা ডাইভার নেমে পড়ল; কিছ ওরা ভনে বলন, এথানে কোকোকোনা কি মহার ? কলনীর ঠাণ্ডা জল হতে পারে, বড় জোর নেরাপাতী ভাব।

না, ডাবের দরকার নেই, ঠাণ্ডা কল নিয়ে এস তাড়াভাড়ি। ঘটির জল মাথার ঢালল স্মরবালা, গলার ঢালল; হাত-পাথার হাওয়া করল ডাইভার।

একটু স্থ হরে স্ববাদা বলদ, বাভি ফিবে চল।

ধ্লো উড়িয়ে, হর্ণ বাজিয়ে গাড়ি দৌড় দিল। একটা হাড়-জিয়জিয়ে কুকুর চীৎকার করে গাড়িটাকে তাড়া করল করেক কদম। কয়েক মিনিটের মধ্যেই আবার রাজা কাকা। এমন গাড়ি বে দরজা বন্ধ করবার শব্দ পর্বস্ত হল না। পাড়িব মধ্যে তক্স। এগেছিল প্রবর্গার, অনেকটা স্বাভাবিক বোধ করছে লে; একবার মনে হল কাজটা চুকিয়ে এলেই হত!

গাড়ি চলে গেল আদালতে; ছোট বাগানটা পার হরে স্থববাল। দোতলার উঠে এল। নিজের ঘরে চুক্তে গিয়ে বাইরেই থমকে দাঁড়িয়ে পড়ল সে, টুনকীর ঘরের দরজাটা বন্ধ কেন? জভ পারে এগিয়ে গিয়ে দরজাটা ঠেলে দেখল, ভিতর খেকে বন্ধ। বুকের মধ্যে ধক্ করে উঠল তার, দরজার ধারা মাবল করেক বার, সাড়া নেই। জোরে লাখি মাবল করেকটা, বলল, দীগ্রির দরজা খোল, টুন্কী!

ভিতৰ থেকে টুনকী বলল, খুলছি, পাড়াও।

কিন্ত একটা মৃত্ত্বিও পাড়াবার বৈর্থ নেই স্নবালার, ছুরির ঘায়ে হুংশিশু ফেন টুকরো টুকরো হয়ে বাচ্ছে!

দৰকা থুলে দিল টুনকী; ঘরে চুকে সুরবাল। একবার ভাকাল টুন নীর দিকে, আর একবার কাফু মলিকের দিকে। কাফু মলিক গাঙ্বিছিল চেয়ারের পিঠ ধরে, সাচিটা মাটি থেকে ভুলে কাঁবের উপর ফেলল সে। হিংল্ল বাঘিনীর মত স্ববাল। বাঁপিরে পড়ল টুনকীর গায়ের উপর।

টুনকী এটা আলাজ করেছিল, খণ করে মা-র হাত ছুটো ধরে ফেলল সে, হাত ছাঙিরে নেবার চেষ্টা করল প্রবালা, পারলো না। টুনকী তার মা-র চাইতে প্রায় আড়াই ইঞ্চি লম্বা, আর তেমনি নিব্তুত স্বাস্থ্য। টুনকীর হাত কামড়াবার চেষ্টা করল প্রবালা, টুনকী কমুই দিয়ে জোবে আঘাত করল প্রবালার মুখে, প্রবালা বার্য্য করে কেঁলে কেলল।

হাত ছাড় বলছি।

না ছাড়ব না, জাগে ডুমি শাস্ত হও।

স্থববালা তার পেটে লাখি মাবল, টুনকী তার মা-ব একটা হাত জোবে মুচড়ে দিল; চীৎকার করে কেঁদে উঠল স্থববালা, বসে পড়ল-মাটিভে, আঁচলে মুখ চাপা দিয়ে কাঁদতে লাগল, পিঠটা তার বার বার কেঁপে উঠছিল।

কামু মলিক প্যাণ্টের বোতাম ক'টা এঁটে নিয়ে একটা সিগারেট ধরাল।

নিগাবেটটা শেব কবে বাবার সময় সে দেখল ছ'হাতের মধ্যে মুখ গুঁলে সুরবালা তথনও পড়ে আছে মাটিতে, হয়ত ঘুমিরে পড়েছে, টুনকী বনেছে থাটের উপর পা ঝুলিরে, দৃষ্টি তার জানালার বাইবে।

পর্যদিন ঘুম থেকে উঠে জানালার নিচেই চিঠিটা পেল স্থরবালা।
"এ-বাড়ির সমস্ত দেওরাল, জানালা দরজা, সমস্ত জিনিব,
আানবাবপত্র—বিবে লর্জবিড, ভার ওপর আর এক
কোটোয় কি এমন এসে-বাবে ? আমার খোঁজ কোরো
না। টুন্কী।"

এই তো জীবন, মানব-জীবন, কুল কোটা, কুল বরা সমুধে হাড়ে, পিছনে জঞ্চ, প্রাশায়িনী জরা।

—कक्रनानिवान रान्गानावाद् ।

— श्रीणविनम जराष्ठी जन्मी जरामन-

নবজীবন আন্দোলনের (শৃপ্তস্তু) সাহায্যকলে

-**ছা**ন-

মনোরম পরিবেশ পার্ক সার্কাস ময়দান.

ক**লিকাতা**

—ভারিখ—

১৪, ১৫, ১৬, ১৭, ও **১**৮ই

আগন্ত—১৯৫৯

जिक्रम विकित्वेत हात :

0, 26, 00, 60, 96,

٥٠٠, ٥٥٠, ١

२००० होका

—যোগদান করছেন—

—কঠ সঙ্গীতে—

ওস্তাদ বড়ে গোলাম আলী খাঁ (বমে); ওস্তাদ আমীর খাঁ (বমে); ভাগর ভাঙ্ম (দিল্লী); শ্রীভীমসেন যোশী (পুণা); শ্রীমতী হীরাবাঈ বরোদেকর (পুণা); শ্রীমতী স্থনন্দা পট্টনায়ক (উড়িব্যা); শ্রীমতী লক্ষ্মী শঙ্কর (বমে); শ্রীমতী গিরজা দেবী (বেনারস); শ্রীভারাপদ চক্রবর্তী (কলিকাতা) ও আরও অনেকে।

—যন্ত্ৰ সঙ্গীতে—

সুরস্থাট ওপ্তাদ আলাউদ্দিন খাঁ। (পদ্ভ্ষণ);
ওপ্তাদ আলি আকবর খান; পণ্ডিত রবিশন্ধর;
ওপ্তাদ বিলায়েৎ খান ও ইমরাৎ খান; আশীষ
কুমার; পণ্ডিত যতীন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য (বেনারস);
শ্রীনিখিল ব্যানাজাঁ; শ্রীপাল্লাল ঘোষ (দিল্লী);
ওস্তাদ শুকুর খাঁ। (দিল্লী); ওস্তাদ মুনীর খাঁ।
(দিল্লী); পণ্ডিত শামতা প্রসাদ (বেনারস);
পশ্ডিত কিষণ মহারাজ (বেনারস); কেরামতুরা
খাঁ।ও আরও অনেকে।

এ ভিন্ন

—ৰূত্যে —

বাং**লা**র প্রসিদ্ধ শিল্পীবৃন্দ

প্রীমতী রোশন কুমারী (বছে) শ্রীমতী দময়ন্তী বোশী (বছে) শ্রীমতী নয়না জাতেরী ও সম্প্রদায় (বছে)।

— আরও অনেকে—

শ্ৰীমতী মঞ্চু ব্যানার্জি (কলিকাতা)

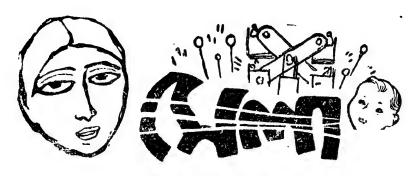
টিকিট প্রাপ্তিস্থান: শৃথস্ত কার্য্যালয়, ৬৩, কলেজ খ্রীট, কলিকাতা—১২ কোন:—৩৪-১৩৫১ নবজীবন আনুন্দোলন (শৃংস্কু) কার্য্যালয়—৫২বি, ইণ্ডিয়ান মীরর খ্রীট (ফোন:—২৪-৩৩১১)

নবজীবন আন্দোলন কাৰ্য্যালয়—৪-এ, মহানিৰ্বাণ রোড, কলিকাতা—২৯। বস্তুত্ৰী সিনেমা কোন:—৪৬-৪৮০৮

वींगा जित्नमा कान:--७८-७८२२

মভার্ণ ভেকরেটারস্ ৬৫এ, ভরু, সি ব্যানার্জি খ্রীট, ফোন :—৫৫-২৫৪৯

ভীমচন্দ্র নাগ ৬—৮, নির্মদচন্দ্র খ্রীট, ফোন:—৩৪-১৪৬৫



শ্ৰীবিবেকরঞ্জন ভট্টাচার্য

্বে বিটির নাম গোলাপ। তাকে দেখতেও ঠিক গোলাপের মন্তন। স্বাই ওয়ু ভাবে ঐ বস্তীর ভিতর অমন রূপ এলো কোখেকে ? চোৰ যেন ফেরানো যার না। তবুও তো একদিনও বেচারা একথানা ভালো শাড়ী পেলো না ভালোভাবে সাক্ষবার। ছেঁড়া টুকরো টুকরো শাড়ীর কাঁক দিয়ে উচ্ছল থেবিন যেন ঠিকরে পড়ছিল।

ক্ষককেশে শুক্নো মুখে ও আজকাল সাবাটা দিন বলে থাকে। মুহূর্ভ মাত্র বার কোনোদিন অবসর জোটেনি আজ কর্মধুধর সেই মেরে এত শাস্ত কেন? লক্ষ লক্ষ নর নারীর কলরব মুখরিত এ বিরাট শহরে এ ঘটনা কাক্সর মনে কি বিন্মাত্রও রেথাপাত করেছে ? সবট ঠিক চসছে। অদূরের ঐ বাসগুলো। কারধানার এক বেরে ঠকাঠক আওয়াজ। টাঙ্গাওয়ালাদের যাত্রী সংগ্রচের ফেরিভয়ালাদের মিষ্টি ও কর্মশ বঠ। শ্লোগান। পথচাতীর আনাগোনা। সামনের বেকারীর টুকটাক আওয়াজ। হারমোনিয়ম स्यताघरकत (माकारनत है:-हा: भका। ध विराहे भहरतत रेमनिमन প্রোগ্রামের কোনো জারগার বিন্মুমাত্র পরিবর্তন ঘটে নি। ভবুও কেন এ ক্লফকেশা আলুলায়িত বসনা গোলাপের সব কাজ কর্ম ছঠাৎ বন্ধ হয়ে গেছে ? গোলাপের দিবা বামিনী কাঞ্চের মাবে ৰে দ্বিদ্ৰ জীবন প্ৰতিক্ষণ সংগ্ৰাম কবে চলেছে তাব হঠাৎ কি অপমৃত্যু ঘটলো 🕈

— এই ভ দেদিনের কথা। সকাল নেই সন্ধো নেই মেয়েটি বসে বসে মাটিব পুতৃল হৈত্রী করে বায়। ছোট শিশুটি ভাকে পাশে বসে সাহাব্য করে। নাম ভার ঝুলন। ওরই ছেলে।

সকালে উঠে গোলাপ মাটিব পুতুল বানার। তারপর পাহাড় থেকে সংগৃহীত কাঠের আগুনে পুতুলগুলোকে ফেলে মাথার সাজি নিরে বেরিরে পড়ে পুতুল বিক্রীর আশার। ভোট ভেলেটিকে দৰজার বন্ধ করে বার। দরজা ঠিক নয় বাঁশ, লভাপাতা দিরে বেরা একটা বেড়া মাত্র। ভাই যথেষ্ঠ।

বিকেল বেলার আন্ত গোলাপ মাধার বৃড়ি থিরিরে এনে
মাধার হাত দিরে বলে থাকে! তার ঐ পোড়ামাটির সন্তা
পুতুল কেউ কেনে না। শহরের লোকের কৃতি বদলেছে। ওর
আছেক দামে তারা বিলিতি পুতুল পায়। তার পুতুলের চোধ
কান নাক নাকি বোঝাই বার না। গোলাপের কি দোর ?
পুতুল বানানো কি চারটি কথা? না আছে ভালো মাটি।
না আছে তুলি, রঙ্৷ না আছে সাজাবার অন্দর অন্দর কাগজের
বারা। তার বাপ—নকুল কুমোর কেমন অন্দর প্রতিমা গড়ত!
ঠিক বেম জীবস্ত মাহুর। নকুল আল বেঁচে নেই। বেঁচে থাকলে

কি তার গোলাপকে অমন অসহায় দিন যাপন করতে হত শহরের ঐ ছোট বস্তীতে। নকুলই গোলাপকে পুতৃস তৈরী শিধিবছে। সে শেখা সেদিন ছিল কেবল সধের পুতৃল খেলা। এতদিন সেই পুতৃল তৈরী করেই গোলাপ তার ছোট সংসারটুকু বাঁচিরে রেখেছে। আজ সেই ছোট সংসারেই খেন একটা কিসের ঝড় উঠেছে। যেন কোন মহাফালের প্রালম্ম নৃত্যে বেচারার বস্তীর প্রার্থানা চুর্গ বিচুর্গ হতে চলেছে। কিছু কেন ? বস্তীর প্রায় সব মেয়ে পুক্রই সকাল সকাল কাজে বেরিয়ে পড়ে! সকালের দিকে কসতলায় ভারি ভীড়। সকালে উঠলেও গোলাপ কলতলায় একটু দেরীতেই যায়। অভ মেয়েদের মতন ঝগড়াটা সে পছস্করে না। তা ছাড়া আরও একটা কারণ আছে। সেটা খুব কম লোকই জানে। লোকজন একটু হাজা হলে পরিধানের শাড়াটুকুরেল সে পথিকার করে। ভীড়ের ভিতর সেটুকু করায় অম্ববিধে আছে। তার বিভীয় শাড়ী নেই।

গোলাপ টুক্টুক্ করে অষ্টপ্রহর কাজ করে। ঝূলন সারাদিন বঙাটা চবে বেডায়।

মাঝে মাঝে গোলাপ উচ্চকঠে তাকে ভাকে, ঝুলন, লক্ষ্মী বাবা বুলন। ছুটে ভায় বোদে ঘোবে না। লক্ষ্মী সোনার ছেলে ঝুলন।

বুলন বলে, খেতে দিবি? বল আজ ভাত খেতে দিবি? তিন দিন শুৰুঞ্জ খেয়ে আছি। বল ভাত দিবি?

তু'গ্রাস ভাতের আশায় ঝুসন বস্তীর এদিক ওদিক ঘুর ঘূর করে। বদি কেউ ডেকে হঠাৎ কিছু দেয় খেতে।

এই ছাংলামিটুকু বুলনের ছিল না। মাছাড়া জল কেউ বে খেতে দিতে পাবে এ বাবণাটুকুও ভাব ছিল না। সেদিন বোধ হয় নবায়ই হবে। ভকনো মুখে ভাঙা লাটিম হাতে অক্ষর ফুটফুট ছেলেটিকে ঘুবতে দেখে বস্তার বাতাসীর মা ভাকে ভেকে পেট ভবে খাইরে দিয়েছে। গোলাপ ভনে খনীই হরেছিল। নবারর দিন। সবাই দোনালী বান ঘবে তুসছে প্রামে। শহরের ছীবনে ভার ছোঁরা লেগেছে দেখে খুনীই হল। ভবুও মনটাকে প্রবোধ দিতে পাবে না। খুলন ভিক্ষে চাইতে বার না ভো আজকাল? শহরের লোক এত দ্যালু ভ নয় বে ভেকে খেতে দেবে! শিশুনে। ও সব বোবে না। এদিক ভদিক উকি বাঁকি মারে। বদি কেউ ভেকে কিছু খেতে দেয়। মনের আশা মনেই থাকে। শিশুকে কেউ ভাকেও না। কেউ খেতেও দেয় না।

কুলন আবার বলে, বল, থেতে দিবি ? মা সভিয় ^{বলছি} ভারী থিদে পেয়েছে। গোলাপ মাটির ইাড়ি থেকে ই ৰুঠো মুড়ি এনে বুলনকে থাওয়াতে বসে। ছেলে কিছুতেই থাবে না। গোলাপ বলে, দল্লী লোনা আছ ওধু থাও। সামনের মেলাতে কত পুতুল বেচবো। কত দীপ গছব। কত টাকা পাব। সকাল বিকেল ভূমি আর আমি পেট ভবে ভাত থাব। ওধু ভাত নয়। কত মিটি। কত মোয়া। কত কি—

চোধ তৃটো আশায় ভবে যায়। শিশু ঝুলন আবদায় করে নতুন জামা দিবি ? লাস—নীল পুলিশ দিবি ? বালি—বেলুন দিবি—

গোলাপ বলে নিশ্চয়ই। নিশ্চয়ই। আমার ঝুলনকে ছোবো না ? ঝুলনের পুলিশ নতুন পাগড়ী প্রবে। নীল জামা প্রবে। আসুক না মেলাটা একবার।

কলন সভ্যি কথাটি বলেছে। এ গেক্ষা রঙের পুলিশ কাক্ষর ভালো লাগে ? গোলাপ কি কয়বে ? ত্ব' পয়সার গেক্ষা রঙ কিনলে জলে ভিন্নিরে তাই দিয়ে মুৎপাত্তিলি বেমন বঙ করা চলে, ভেমনই পুতৃলও গেক্ষা-রঞ্জিত করা বায়। শুধু পোড়া মাটি কেউ কথনো কেনে ? সভ্যি বলেছে খুলন—মেলার পরে কিছু রঙ কিনতে হবে। পুলিশগুলো শুরু গেক্ষা রঙেই নর এবার তাদের রঙীন পাগড়ী দিয়ে ক্লব সাজিয়ে বাজারে ছাড়তে হবে।

ছ মুঠে। মুড়ি খেবে ঝুলন পাড়া বেড়াতে চায়। গেণাপ কিছুতেই তাকে ছাড়বে না। বুড়ো মিস্ত্রীটা আজকাল আবার কালে বার না। কে জানে ওর ফি হয়েছে? সেলিন ঝুলনকে ডেকে সে তার বাপ হবার ইন্সিত নিয়েছে। ছি ছি, লজ্জার মাধাটা ইট হয়ে গেল। ঝুলন বলল, বল না মা কেন ডুই রাগ কর্মলি? বুড়োটা তো বেশ ভালো লোক। বল মা—

এমনি ভাবেই দিন কাটে।

গোলাপ অধীর আগ্রহে প্রতিদিন প্রাহর গোণে—কবে আসবে
মেলা। কবে তার পুতুলগুলো বিক্রী হবে। মাটির প্রাণীপ
আজকাল কেউ বড় একটা আলার না। মোমবাতি চলে বেলী
কেউ কেউ আবার ছোট ছোট রঙীন ইলেকট্রিক বালব দিরে ঘর
সাজার। শত আবুনিকতার মাঝেও মেলার উৎসবটুপুই আজ্ব
ডর্পুরোনোর ছোঁরা নিয়ে দেখা দেয়। গোলাপ সমস্ত বছর ধরে
মেলার দিন ক'টির স্থপন দেখে। মেলার স্বাই তার জিনিব কেনে,
পুতুল, প্রাণীপ, কাপড়ের থেলনা কিছুই কিরিয়ে আনতে হয় না
গোলাপকে।

কবে আসবে সেই মেলা ?

থাম গ্রামান্তর-থেকে লাল হলদে খাগরা পরা মেরের দল গরুর গাড়ী চেপে গান গাইতে গাইতে আদরে। নাথে তাদের খামী, দেবর অথবা খণ্ডর। গড়গঙা হাতে মাথার গাগড়ী লোকটা গ্রামের মোড়লও হতে পারে। গোলাপ তাদের ভাবা ঠিক বুরতে পারে না। তাদের পোরাক পরিছেদে, মুথের ভাব ভারতি মনে হর তারা নিশ্চয়ই স্থনী। না হলে কথনো অমন প্রাণ্থোলা হাসি হাসতে গারে। মনে হর বেন জলের ঘড়া থেকে কল কল শব্দে অল গড়িরে পড়ছে। গাঁরের মেরেগুলিই গোলাপের পুতুল কেনে বেনী।

কত লোক আসে দ্ব দেশ খেকে তার পুতুল কিনতে। তারা গোলাপের পুতুল কেনে। কেউ কেউ আবার ঘাড় কেলানো বুড়োটা দেখিরে বলে, আরে বহিনি এই পুতলিটাও তুই নিজের হাতে গড়েছিল ?

বহিনি—আহা কি মিটি লোকগুলো। গোলাপ বলে, গ। কত দাম বললি ?

m' wtat e

হু' আনা ?

म म कावरहे खैर म ।

শহরে হু'পর্যা দামেও কেউ একটা পুত্স কেনে না। তারা কেনে সন্তা বিদেশী প্লাষ্টিকের খেলনা।

পুতৃসগুলো তাড়াতাড়ি বিক্রী করে গোলাপ এদিক ওদিক ছরিণীর মতন ছুটে বেড়ার। ঝুলনকে মেলার নিরে আসতে সাহস হর না। এদিক ওদিক ছোটে।

বাং! কি স্থলর চর্কিবাজীর মতন বৃর্ছে ছেলেমেরেগুলো।
ওপ্তলোকে নাগরলোলা বলে। মাত্র হুটো পরসা দিলেই ছু মিনিট
বোরাবে তোমাকে। ঝুলনকে নিয়ে এলে মক্ষ হত না। ওকে
কোলে নিয়ে বললে বেশ হত। একবার ঐ উপরে ওঠো। জাবার
নীচেতে নামো। সে কিছ বিনি পয়লাতেই রোজ বেল চকীবাজীর
মতন ঘুবছে। কিছুই চার না সে। ঐ কোণের দোকানীর চা।
বনমালী মিশ্রের পাঁপর। মাংসের ঘুগনি। ওলব সে চার না। তার
দরিক্র জীবনে সে চার হু' মুঠো জর। ছেলেটার হু'বেলা ছুটি ভাত।
তার জক্ত এক বেলা হলেই ব্ধেষ্ট। এই বিবাট শহরের কেউ কি
জানে জমন স্থক্ষরী মেরে গোলাপের জীবনে এক দিনে হু'বেলা
জাহার একটা কত বড় বিলাস ? সমস্ত বছরে মাত্র মেলার
দিনকটি গোলাপ ছু বেলা পেট ভবে ধার।

মেলার দার্কাদ পাটি জাদে। বাব জাদে, হাতী থাকে, ভালুক নাচে, সিংহ গান গার। লোকগুলোর কথাও শোনো একবার। বলে কিনা, বাব হাতীব পিঠে চড়ে নাচবে। এক জানার প্রদা দাও। তারপর ঐ ত্রিপলের ভিতরে চুকে দেখো সত্যি স্থিয় বাব হাতীর পিঠে চড়ে নাচছে। এও কথনও হয় ?

নাচের দলও একটা জ্বাসে প্রতি বার। ঠিক সন্ধার তাদের প্রোপ্রাম স্থক হয়। সারাটি দিন স্থলর গোঁফওরালা একটি লোক

পেটের যন্ত্রণা কি মারাত্মক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন ! যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দূর করতে পারে একমার

বহু গাছ্ গাছ্ড়া দ্বারা বিশুদ্ধ মতে প্রস্তুত

ভারত গভঃ রেজি: নং ১৬৮৩৪৪

ন্যবহারে লক্ষ লক্ষ রোগী আরোগ্য লাভ করে**ছেন**

অস্ক্রপুলে, পিত্রপুলে, অস্ক্রপিত্র, লিভারের ব্যথা, মুথে টকভাব, ঢেকুর ওঠা, বর্মিভাব, বমি হওয়া,পেট ফাঁপা, নন্দায়ি, বুকজুানা, আহারে অরুচি, স্বল্পনিদা ইত্যাদি রোগ যত পুরাতনই হোক তিন দিনে উপশম। দুই সপ্তাহে সম্পূর্ন নিরাময়। বহু চিকিৎসা করে মারা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও বাক্স্লো সেবন করলে নবজীবন লাভ করলেন। বিশ্বিল সূল্য ফেরং। ৩২ ডোলার প্রতি কোঁটা ৩১টাকা,একটে ৩ কোঁটা — ৮ ।। আনা। ডাং,মাঃ,ও পাইকারী দ্য় পৃথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। হেডঅফিস-ভারিশাল (পূর্ব্ব পানিস্তান)

বেরের পোষাক পরে ছটো আছুল দিয়ে গোপটাকে চেপে, পারে
যুক্র বেঁবে হেলে ছলে নাচে। গান গেরে গেরে লোকটা মাঝে
মাঝে ক্লান্ত হরে পড়ে। গোল থেকে আছুল সরিরে তথন দে
একটা বিভি ধরার। ছ পাশের লোকগুলো তথন হি হি করে
হাসতে থাকে। গোলাপও হাসে। ঝুলনটা বড় হোক। দে
চাকরী করে টাকা আছুক। তথন গোলাপ একদিন ঐ নাগরদোলাতেও চাপবে। কিন্তু তথন কি তার বয়স থাকবে ?

ক্ত বৰ্ষের বেলুন দেখো। একটা বেলুনে জাবার বাঁশি লাগানো। ফুঁদিরে বড় করে ছেড়ে দাও। জাপনা খেকেই বালতে থাকবে। জাবার ঐ দেখো গ্যাস বেলুন। নিজে খেকে উপরে উঠবে। হতো নিরে ভূমি যুঁড়িব মতন গাঁড়িরে থাকো। ভারী দাম। ছ জানা দিরে কেনা বার ? ছ' পরসার একটা লাল বেলুন কিনে গোলাপ বরে ফেরে। ঘুমস্ত ঝুলনকে ভূলে গোলাপ ভার হাতে বেলুনটি দিল।

সে আঞ্চ তিন বছরের কথা।

ব্লনের জন্মই বোধ হয় মেলাটা একটু তাড়াতাড়ি বসছে এবার !
এপাবো দিনের মেলা। গোলাপের মরবার ক্ষমতটুকু নেই
এবার জাব প্রদীপ বানাবে না। শহরে মাটিটুকু পর্যান্ত পরসা
ধরচা করে কিনতে হয়। পুত্লগুলো সাজিতে সাজিরে ঝ্লনের
হাত ধরে গোলাপ বেকলো। শাড়ীধানা ক্ষমত মানিয়েছে।
সন্তা নকল সিন্দই হয়ত হবে। বাতাসীর মার কাছ খেকে ঘটা
তিনেকের জন্ত শাড়ীধানা সে বার নিয়েছে। শত হিল্প মলিন
শাড়ী পরে কি মেলার বাওয়া বার ?

বুলনের ভারী আনন্দ। আজ নিশ্চরই সে পেট ভরে খেতে পাবে। গোলাপ তাকে একটা বাঁশীও কিনে দিয়েছে। আজকাল সে ভারী আজার করতে শিখেছে। কিছ কোখ্থেকে কি বেন হবে গেল। অন্ত বছরের চেয়ে মেলার এবাব ভীড়টা একটু বেশী হয়েছে। নিমেবের ভিতর গোলাপের পুতুলগুলো বিক্রী হরে গেছে। এদিক ওদিক হাঁ করে করে চলতে চলতে ঝূলন কথন হাত ছাড়া হরে গেল। এদিঃ ওদিক ঝুঁজেও গোলাপ তার কোনো সন্ধান পেলো না।

সদ্ধা সমাগমে রাজার মোড়ে জীড় দেখে গোলাপ একটু দ্ দিরেই চলছিল। বজীর হরলাল হঠাৎ তাকে দেখে হিড় হিছ্ করে টানতে টানতে টানতে নিরে বলল, দেখ দেখ, শহরের লোকগুলোর কাণ্ড দেখ। ছু বেলা পেট ভবে খেজে দেবে না: রাজা দিরে পারে ইেটে চলব তাও দেবে না। দেখ এলে কাণ্ডট দেখ। লোকটাকে কেউ ধরতে পারল না। ছস করে গাড়ট চালিয়ে-চলে গেল।

গোগাণ গিরে দেখলো একটি মৃত শিশুকে বেজ করে রাস্তা জনতা ভীড় করে গাঁড়িয়ে। ছেলেটির হাতে একটি বেলুন-বাঁশি গোলাণের এক বিলু চোখের জল পড়ল না।

গোলাপের স্তব্ধতার কেউ তাকে বলল, ডাইনি, কেউ বলন মুক্তপক্ষ বিহল রূপোপজীবিনী।

দে ওর্কক কেলে ওকলো মূবে দিবা বামিনী বসে থাকে।

বস্তার বুড়ো মিস্তাটা হ' একবার এদিক ওদিক ঘ্রে ফিং
গেছে।

দিন এলো। দিন পেল। বছর ব্বে আবার মেলা এলো গাঁরের বধুরা গকর গাড়ীতে চেপে গান গেরে গেরে মেলা এলো। সার্কাসপার্টি এলো। নাচের দল এলো। বেলুনওরাল্থলো। নাগরদোলা এলো। কোনের দোকানের চাল্ডরাল্থলো। বনমালী মিশ্র পাঁপর নিয়ে এলো। মেলার এফা কেউ শুরু দেখতে পেলোনা কোনো অপটু হাতের পোড়া মাটি পেকরা রঙের পুতৃল।

দামোদর

অধীর সরকার

লক্ষার তেকেছে বুক; কখনো বা আলোকের থেকে
নিজেকে আড়াল করে সজোপনে রেখেছে লুকিরে,
কুঠিত সলক্ষ্য পারে কখনো বা ভীক চিহ্ন রেখে
অ'কে-বেঁকে গোছে চলে কে জানে সে কোন্ পথ দিরে।
কখনো বুবতী সে বে বেখিনের কছা বেদনার
আপনাকে দীর্ণ করে, মুক্ত করে, ব্যাপ্ত করে দিক;
কী কঠিন যন্ত্রণার অবলেবে দিবিদিক বার—
কী বে বাধা বুবতীর !—অসহার আমরা প্রেমিক।
অবলেবে বধু হল, অভ্তরের হুর্মদ প্রেকাশ
বেন কোন নীড়ে-বাঁধা আনন্দিত আসকের মাঝে
প্রামার কোমল হাতে ভরে দিল বুঝি বারো মাস
ক্ষম্মর প্রতাম অবে সংসাবের নানাবিধ কাজে।
কোলাহল ছিল বাহা, এতদিনে আজ হল বাধী
বুবতী নে বধু হল নবনীতা ক্ষমনী কল্যানী।



সিমেণ্টশিল্প ও ভারত

ক্রাধ্নিক যুগে সিমেন্টশিলের গুরুত্ব ও উপবোগিতা অপবিসীম। দেশেঃ অবনৈতিক উন্নতিতে ইম্পাতের ভার এবও বরেছে একটি বিশিষ্ট ভূমিকা। ২লতে গেলে, বে কোন নির্মাণ কার্ষ্যেই (পূর্ত্তকার্য্য ও গৃধ নির্মাণাদি) আজিকার দিনে সিমেন্ট না হলে নয়, দীর্যস্থায়ী মজবুত গাঁথুনির জন্মই এইটি অত্যাবশুক।

ভারতে পরিকল্পিত ভাবে সিমেণ্ট উৎপাদন স্থক্ক হরেছে,
থুব বেশী দিন নয়। এখানকার সর্বব্রথম দিমেণ্ট তৈরীর
কারখানা স্থাপিত হয় মাজাজে আর সেটি মাত্র চলিত শতাক্ষীর
প্রথম পাদে। উৎপাদন-বার বেশি পড়তে থাকায় কারখানাটি
বন্ধ হরে বার অল্পকালের ভেতবেই। তারপর আবার এক একটি
করে কারখানা (সিমেণ্ট) গড়ে উঠতে থাকে দেশের এখানে
সেধানে। ১১২৫ সালের মধ্যেই ভারতে সিমেণ্ট উৎপাদনের
কারখানার সংখ্যা দাভিরে বার ১২টি এবং উহাদের মিলিত
উৎপাদন ক্ষমতা হয় হয় লক্ষ টনের মতো।

আভ্যন্তবীণ ক্ষেত্রে সিংমণ্টের চাহিলা বেড়ে বেতে থাকে দেখতে দেখতে। চাহিলা মেটাবার জন্ত কারখানার সংখ্যাও কিছু বাড়তে থাকল ক্রমেই। ১১৪০ সালের ভেতর দেশে প্রায় ২০টি সিমেট উৎপাদন কারখানা ভাল রকম গাঁড়িরে বার। বিদেশী লাসনমূক্ত হবার (১১৪৭) পর ভারতে করেকটি নতুন সিমেট কারখানা প্রভিত্তিত হয়। এই ভাবে ১১৫৭-৫৮ সাল মধ্যে সমগ্র দেশে প্রায় ৩০টির অধিক কারখানায় প্রাদমে কাজ চলে। উৎপাদনের পরিমাণও বৃদ্ধি পেরে বিগত বর্ধে অর্থিৎ ১৯৫৮ সালে গাঁড়ায় ৬০ লক্ষ ৬০ হাজার টন।

থখন অববি বতগুলো সিমেন্ট কারখানা এদেশে স্থাপিত হরেছে, ভাদের প্রায় সব ক'টিই বে-সরকারী শিল্পসংস্থা। সরকারী উজোগেও তুইটি বুহুৎ কারখানা চালু হরেছে এর ভেজর—একটি উত্তর প্রদেশ সরকারের পরিচালনাথীন ও অপরটি মহীশুর রাজ্য সরকারের। বছির্ভারত থেকে সিমেন্ট জামদানীর বাতে প্রেলিন না হয়, সেদিকে জাতীয় সরকারের সজাগ গৃষ্টি বরেছে। তাঁরা তাই প্রতিটি অর্থ নৈতিক পরিকল্পনায় সিমেন্ট কারখানার সংখ্যা বাডানো ও উৎপাদনের পরিমাণ বুছির লক্ষ্য প্রহণ করেন। বিভার সাঁচ-সালা পরিকল্পনা কালে দেশে অভ্যতঃ ৪৪টি সিমেন্ট ক্যুবধানার ব্যবস্থা ও এক কোটি ৩০ লক্ষ্য টন সিমেন্ট উৎপাদনের সরল ভাঁদের ব্যবস্থা ও এক কোটি ৩০ লক্ষ্য টন সিমেন্ট উৎপাদনের সরল ভাঁদের ব্যবস্থা ও এক কোটি ৩০ লক্ষ্য টন সিমেন্ট উৎপাদনের সরল ভাঁদের ব্যবস্থা ও এক

সিমেটাশিরে ভারত ছবং-সম্পূর্ণ হতে পেরেছে সকল দিক ধেকে—এমনটি জোর করে বলা বার না। বুটন, আমেরিকা, জার্মানী, স্মইডেন, ডেনমার্ক প্রভৃতি রাষ্ট্র থেকে এখনও সিমেট কার্যানার উপবোগী হছ বন্ধ্রণাতি আমদানী করতে হয়। অবশ্র দেশের অভ্যন্তরেও এই শিরের পক্ষে অভ্যাবভাক বন্ধ্রণাতিও কল-কজা তৈরী আরম্ভ হয়েছে আর সেটি জাতীর সরকারের ব্যবস্থাধীনেই। এইরূপ আশা করা হচ্ছে, ১৯৬২ সালের ভেতর দেশের সিমেট কার্যানাওলার প্ররোজনীর বন্ধ্রণাতির বেশীর ভাগই নিশ্মিত হবে দেশের ভেতরেই।

সিমেণ্ট উৎপাদনে কর্মা ও কর্দম ছাড়া বিশেষ ভাবে প্রব্রোজন হয় চ্বাপাথর ও জিপসাম্। এখন অবধি ভারতে বস্তওলো সিমেণ্ট কারখানা চালু ব্যেছে, সেওলোর জিপসাম্ ও চ্বাপাথরের চাছিলা দেশের অভ্যন্তর থেকেই মেটানো চলছে। কিছু এই শিল্প আরও সম্প্রসারিত হলে, সিমেণ্ট উৎপাদন অধিকতর বর্ধিত করতে চাইলে, উক্ত ছটি উপাদান পর্যাপ্ত পরিমাণে পাওরা হতে সন্তব হবে না। সেজভ আগে থেকেই এ অপবিহার্ধ্য প্রেরোজন কিভাবে মেটানো বার, ভেবে রাধা দরকার। দেশের ভেতর অভ্যন্ধান চালিয়ে জিপসাম্ ও চ্বাপাথরের সর্বরাহ বদি বাড়ানো না সেল, সেক্ষেত্রে বিকল্প ব্যব্ছা কি হতে পারে, আগে থেকেই ঠিক রাধা চাই।

কিছুকাল থেকে দেশে নিমেণ্টের চাহিনা অভিমাত্র বেড়ে চলেছে দেখে কেন্দ্রীর সরকারের পক্ষ খেকে উৎপাদন বৃদ্ধির এক অভিনব পরিকল্পনা গৃহীত হয়েছে। নতুন নতুন কারখানা পড়ে তোলা অপেক্ষা একণে সরকার বে কারখানাগুলো চালু রয়েছে, সেগুলোর কান্ধ্র সম্প্রামিত করতে চাইছেন। নির্ধারিত ব্যবস্থামতো উৎপাদন সভ্যি বিদি সন্তবপর হয়, সেক্ষেত্রে বিভীয় পরিকল্পনা কালে সিমেণ্ট উৎপাদনের মোট পরিমাণ দাঁড়াবে ১ কোটি ৪৪ লক্ষ ১ হাজার টন। এই পরিমিত সিমেণ্ট সরবরাহ মারক্ষ দেশের বিভীয় পরিকল্পনা কালীন চাহিদা মেটানো বাবে—অভতঃ কেন্দ্রীর শিরমন্ত্রী শ্রীমান্থভাই লাহ, দাবা রেখেছেন এমনটি।

ইম্পাত সরববাহ প্রয়েজন মত না হওরার সিমেণ্ট উৰ্ভ হরেছে ভারতেই, সম্প্রতি এরপ একটি অবস্থা লক্ষ্য করা গেছে। অবশ্র এই ধরণের পরিস্থিতি সামরিক মাত্র, ইম্পাত সরববাহের মাত্রা বেড়ে গেলেই এদেশে এখন সে অবস্থা থাকতে পারে না। আর একান্ত বদি উব ভ হর, সেক্ষেত্রে বিদেশী বাজার খুঁজে পাওরা কঠিন হবে না ভারতীর সিমেণ্টের, এ ঠিক। এর ভিতর ভারতে উৎপাদিত সিমেণ্টের একটি জংশ (প্রায় ১০ লক্ষ টন) অবশ্র রপ্তানীর ব্যবস্থাও

হবেছে। কেন্দ্রীয় শিল্প ও বাণিজ্য মন্ত্রণালরের সহিত সংশিষ্ট সংসদীয় উপদেষ্টা কমিটি সিমেণ্ট রপ্তানী বৃদ্ধির ওপরই অধিক গুরুত্ব আবেল করেছেন। অত্যাবগুক বৈনেশিক মুজা অর্জন এর প্রধান করা, সহক্রেই অন্থ্যান করা চলে। সিমেণ্ট উৎপাদকগণ রপ্তানী ব্যাপারে বাতে অস্থ্যবিধায় না পড়েন এবং দেশে বাতে সিমেণ্ট উৎপাদন অব্যাহত পতিতে বেড়ে চলতে পারে, সংশ্লিষ্ট সরকারী দপ্তরের দেদিকে দৃষ্টি ও মনোবোগ না থাকলে নয়।

চাকরি প্রদক্ষ—কয়েকটি কথা

বদে থাওয়া কিছুতেই চদৰে না, কাজ করে থেন্ডে হবে —এই
নিয়ে থিমতের অবকাশ নেই। জীবনবাত্র: নির্বাহের জক্ত সাধারণ
অবস্থার চাকরি বা উপজীবিকা চাই-ই একটা না একটা। কিছ
প্রেশ্ব থাকছে এর পরও—কে কি ধরণের কাজ করবে, কোন্ কাজ
বা চাকরিটি সত্যি কার উপবোগী হবে ? এর 'সহত্তর ও মীমাংসা
আগে ভাগে মিলে গেলে কোন কথা নেই। বেখানে সে-টি না
হ'ল, কাজ সেথানে অঠু ভাবে সম্পাদিত হবার আশা কম। লক্ষ্য
করলে দেখা বাবে—এরপ ক্ষেত্রে অসন্তোবের আবহাওয়া একটা
থেকে গেছে কোথাও।

সোজা কথা বেটি দাঁড়াছে এই থেকে—মন:পৃত কাজ বা চাক্রিটি খুঁজে পাওরা চাই গোড়াতেই। এমন কার্যক্রম বেন না প্রহণ করা হর, বাতে করে পরে আফুলোবের কারণ হবে। উপযুক্ত লোকের জন্ম উপযুক্ত কাজের বিদি ব্যবস্থা হল অর্থাং বিদি বে কাজের বোগা, বাস্তবক্ষেত্রে তিনি বিদি পেরে গেলেন সেই কাজি, সব দিক থেকে ভাভ। সেক্ষেত্রে সহসা চাক্রি রদবদলের প্রশ্ন ওঠেনা, কর্তৃপক্ষ-কর্ম্বচারী তথা মালিক-শ্রমিক অসজ্যোধের অবকালও খুব কম থাকে।

আনেক স্থলেই দেখা বায়, অস্ততঃ এই দেশে, কর্মজীবনে ঠিক লোকটি এনে ঠিক বারগার পড়লো না। বার বেখানে থেকে কাল করবার কথা নর, কার্য্য-কারণে ভাই হয়ত করতে হছে বছ চাকরি-জাবীকে। বিনি শিক্ষকতা করলে সন্ত্যি ভাল হয়, তাঁর চললো বরাবর কেরাণীর জীবন, এমন আনেক দেখা বার। আবার, এমনও পরিষষ্ট হয়—ব্যবসাবুদ্ধিসম্পন্ন কোন লোকের ব্যবসায়ের স্থবোগ হরতো মিললোই না, তাকে গ্রহণ করতে হলো জীবিকার স্থাহিসাবে শিক্ষকতা কিংবা অপর কোন বেমানান (ভার পক্ষে) বৃত্তি।

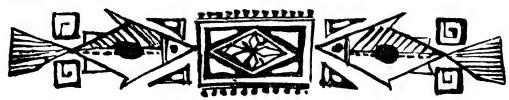
সাধারণতঃ চাকরি বদবদলের প্রশ্ন ওঠে, কোথায় এবং কেন? বেধানে থেকে থেকে দেখা বার যে, পদোন্নতি বা আর্থিক অপ্রগতির কোন সম্ভাবনাই নেই, সেক্ষেত্রে চাকরির ওপর বিতৃষ্ণ! আসতে পারে। অপর পক্ষে, কাজের ধারা ও মাসমাহিনার দিক থেকে পছ্ম্পাই চাকরি বেখানে হল না, সেথানেও চাকরি রদ-বদলের প্রশ্ন ওঠা স্বাভাবিক।

আবও একটি কথা—মনোমত চাকরি পেলে কর্মকেত্রে উন্নতিসাত ও দক্ষতা প্রমাণের জন্ম চাকরিন্দীরী অবগ্য সচেষ্ট হবেন। অপরাদিকে এ ও ঠিক বে, অসম্ভই বা অনিচ্ছুক মন নিরে কারোর পক্ষেই কর্ম-জীবনে খুব বেশিশ্ব এগিবে বাওয়া সম্ভব নয়। চাকরি রদবদস করেও বদি নিশ্চিন্ত অবস্থান্তর ঘটানো বায়, অন্ততঃ বাবে বলে বিশ্বাস থাকে, তবে সেদিকে পা বাড়ানো সমীচীন বলতে হবে। কিছু এইখানে অবল রাখবার—মা কিছু করতে হবে, বয়স থাকতে থাকতেই, বৌবন ও উল্লম বিনষ্ট হবার আগেই। বয়স বদি পেথিরে গেলো, উৎসাহ-উল্লমে যদি পড়লো ভাঁটা, ভবে নতুন জীবন গড়া তথা প্রতিষ্ঠা অর্জ্কনের স্বপ্ন বুধা।

সেই সঙ্গে এ-ও অবখ্য বসতে ছ:ব—বেকারী ধেধানে ব্যাপক, কর্ম্ম সংস্থান বেধানে কর্মপ্রাধীর তুলনার স্বল্প বা সীমিত, সে ক্ষেত্রে চট্ করে চাকরি পেরে চাকরি ছাড়তে বাওরা কঠিন। বিপদ বা অনিশ্চরতার বুঁকি সেধানে অনেকটা থেকে বার, এ অভি সহজেই অমুমের সে অভই একটা কোন কাজ বা চাকরিতে চুকবার মুহুর্ত্তেই বেমন ভাবতে ছবে ভালরকম, তেমনি সেই কাজটি (বতই অপছ্ম বা বেমানান হোক) ছাড়বার প্রাণ্মন্ত পূর্বাহে বেশ নিবিড় ভাবে না ভাবতে নর।

চাকবিজীবীদের মানসিক গঠন সম্পর্কে বিলেভের পেশা বিশেষজ্ঞরা গবেষণা ও আলোচনা চালিয়ে এসেছেন প্রচুর। তাঁরা দেখেছেন বে, মাঝামাঝি বরসে পা দেওয়ার সমরই চাকরি রদবদলের প্রশ্নটি সাধারণক্ষেত্রে মনকে আলোছিত করে বেশি। চি.মি:শত কোঠার বাঁরা পোঁছলেন, একটি জিনিদ সক্ষ্য পড়ে তাদের অনেকেরই বেলার—রে পেশা বা উপজীবিকার তাঁরা নিয়ে আছেন, তার জপ্রত তাঁদের বতটা অলক্ষটি নয়, তার চেয়ে ঐ পেশা থেকে সারা মাদ খাটার পর বা তাঁরা পাছেনে, তাই নিয়ে। এর কতকগুলো সঙ্গত কারণ বে না আছে, তা নয়। কেন না, সেই সময় মব্যে পরিবার সম্প্রদাবিত হয়, সংসাবের আর্থিক দারও আগের চেয়ে অভাবতঃই বেছে বায়।

কর্মজীবনে আত্মপ্রতিষ্ঠ হ্বার অস্ত বা কিছু করতে হবে, প্রথম ভাগেই হওরা চাই—এইটি একটি মূল পুত্র ধরে নেওর। চলে। প্রকৃত প্রভাবে, প্রথম বরসে বভটা উভ্তম থাকবে, দম থাকবে এগিরে বাবার, বরস বাড়ভির সঙ্গে সঙ্গে ভা হ্রাস পাবে, এ খ্ব আভাবিক। সর্বোপরি, জীবনারছে বভটা ঝুঁকি লওরা বার, পারিবারিক দায়িত্ব বর্দ্ধিত হলে পর সাধারণ অবস্থায় ভতথানি ঝুঁকি লওরা সন্তব নর। চাকরির ক্ষেত্রে অক্যান্ত বিষয়ের সহিত একথাগুলো অরণ রেখে কাক্ষ করা বেভে পারে এবং এতে অনেক ক্ষেত্রই স্থমসও বে না মিলবে, এমন নিশ্বেই নয়।





[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] নারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

কা নার ব্যবসার দেড়ি দেখে এন্ডক্ষণ আপনারা মুখ টিপে হেসে:ছন, কিন্তু এইবার আপনারা গন্তীর না হয়ে পারবেন না। ডেক্রেশনের ব্যবসাটা একটা পূর্ণাবয়ব বৃহৎ ব্যবসাই হয়ে উঠছিল। কিন্তু সে বিবরণের আগে স্বদেশী হাজামার বিকাশের বিভিন্ন দিকের বিবরণ কিছু দেওরা ছরকার।

বৃটিণ সামাজ্য বক্ষার জন্ম যুদ্ধে বোগা দিয়ে প্রাণপাত করলে ভারতবাদীর স্থারতশাদনের দাবী জোরদার হবে, এবং দে দাবীর স্থান রেখে বৃটিণ সরকার যে ভারতবাদীকে নিশ্চয়ই স্থারতগাদন প্র্যার দেবে, একথা প্রচার করে যে নিষ্ঠারান রিকুটিং এজেন্ট গান্ধী, তিলক, অ্যানী বেদাও প্রভৃতি কংপ্রেদী গরম দলের থেকে বিচ্।ত হয়ে পড়েছিলেন, রোলট আইন বিবিবন্ধ হওয়ার দেই গান্ধী বিগড়ে গিরে বললেন, এই সরকার আমার সকল বিখাদের গোড়া কেটে দিয়েছে। কিন্তু বৃটেন বা বৃটিশ সামাজ্যের ওপার বিশাস তাঁর শিখিল হয়নি। ভাই সশস্ত্র বিপ্রবের আশস্থাকে তিনি আহিংস অসহযোগের পথে পরিচালিত করলেন।

মডান্টে কংগ্রেস নেতা প্রভাস মিত্র ছিলেন বৌকট কমিটির অক্তম সদতা। ১৮ সালের শেবেই কংগ্রেসের এই মডাবেট নেতারা কংগ্রেস ছেড়ে পৃথক নতুন লিবার্যাল ফেডাবেশন গঠন ক্রেছিলেন।

২০ সালের আগষ্ট মাসে মণ্টেন্ত-চেম্সকোর্ড শাসন সংস্থার প্রবিত্ত হয়, এবং সেপ্টেম্বরে কলিকাতার কংপ্রেসের বিশেষ অধিবেশনে অসহযোগ প্রস্তাব পাল হয়। সংস্থার প্রবৈতনের সঙ্গে সঙ্গে আন্দামান থেকে মানিকভলা বোমার আসামীরা—বাবীন বোষ প্রভৃতি মুক্ত হন। ২১ সালে বাবীন বোষ বিক্লী নামক সাপ্তাহিক পত্রিকা প্রকাশ করেন।

শাসন সংস্থার প্রবর্ত্তিত হলে প্রথম মির্বাচনে কংগ্রেস অবতীর্ণ করে বংল নেতারা দ্বির করেছিলেন, এবং বাংলা দেশে নির্বাচন-প্রাথীদের নাম পর্যন্ত ঠিক হরে গিরেছিল,—বিদ্ধ অসহবোগ প্রভাব অফুসারে নির্বাচন বর্জনের সিদ্ধান্ত করা হর, এবং নির্বাহান ক্ষেত্রবেশন প্রভৃতি অ্যাক্ত দলের নির্বাচনের পথ নিষ্টক হয়।

শাৰন সংস্থাৰ প্ৰীক্ষা কৰে দেখা গেল,—ক্ষেক্ষন যিনিপ্তাৰ উৰাৰ ব্যবসা ক্ষাণ্ড চেন্দেন চেন্দিন প্ৰতিক্ষ ক্ষাণ্ড ক্ষাণ্ড ক্ষাণ্ড ৰাজ্য—বেমন শিক্ষা, স্বাস্থ্য, স্থানীর স্বায়ন্তশাসন, কৃষি শিল্প প্রভৃতি । বাজ্য, অর্থ, পুলিশ, প্রভৃতি প্রধান বিভাগগুলো সরকার নিজ্যে হাতেই বেখেছে,—আগেকার মত এল্পিকিউটিভ কাউপিলের খেতাক্ষদের সদত্যদের হাতে।

প্রথম বিভাগগুলোর নাম ট্রান্স্টার্ড সাবজেক্ট, জার দিতীর বিভাগগুলোর রিজার্ভড, সাবজেক্ট—ভাই এই শাসন ব্যবস্থাকে বৈতশাসন বা ডায়ার্কি বলা হত। নির্বাচিত কাউজিল সমস্ত কিছু বাড়ানো হয়েছিল।

ব্যবস্থা হয়েছিল, জাতি গঠ:নব বিভাগগুলোর ব্যর ব্যাদ করার দায়িত্ব আর্থ বিভাগের ওপর থাকবে না,—তাঁদের সংবৃদ্ধিভ বিভাগগুলোর ব্যর নির্বাহ করে যদি কিছু উদ্বৃত্ত থাকে, তাহুলে হস্তাস্থাকিত বিভাগগুলোকে কিছু কিছু বেঁটে দেওরা হবে,—অক্সথা হস্তাস্থাকিত বিভাগের মন্ত্রীদের নিজ নিজ বিভাগের ব্যর নির্বাহের ব্যবস্থা নিজেদেরই করতে হবে—দর্কার হলে তাঁরা সেজ্বন্তে নতুন ট্যান্স আদায় করতে পাঃবেন।

প্রথম মন্ত্রী হয়েছিলেন স্থাবন বাঁড়াজ্যে, প্রভাস মিত্র এবং নবাব আলি চৌধুবী (বগুড়ার নবাব)। স্থাবন বাঁড়াজ্যের হাতে ছিল সাস্থ্য ও ছানীর স্বায়ত শাসন বিভাগ। অর্থাভাবে তিনি দাভব্য চিবিৎসালরগুলো থেকে কিছু টাকা তোলার ব্যবছা করেছিলেন—প্রথম দিন নাম লেখানোর সমর বোগীদের কাছ থেকে চারটে করে প্রসা নেওয়ার ব্যবছা হয়েছিল—কলে দিনী মন্ত্রীদের ওপর সাধারণ লোকের অঞ্জা হয়েছিল।

কিছ সেই প্রথম চান্স পেরেই প্ররেন বাঁড়্জ্যে কলকাতার মিউনিদিপ্যাল আইন বিধিবদ্ধ করেন—কলকাতা কর্পোরেশ্নের উপর মেররের শাসনের বাবস্থা করেন, বে ব্যাপার্টাকে কংগ্রেস সমেত সারা দেশ তাঁর জীবনের একটা বিবাট সাফল্য বলে অভিনন্ধিত করে।

ৰাই হোক, ভাৱাকির সংস্প ভারতবাসীদের আর করেকটা বড় চাকরী-ঘুন দেওরারও ব্যবস্থা বৃটন সরকার করেছিল। কেন্দ্রে আর একজন ভারতীর এজিকিউটিভ কাউলিগার—বিশাতে ভারতসভার একজন ভারতীর সভ্য,—বিলাতে একজন ভারতীর হাই কমিশনার প্রভৃতি। কসত শাসন সংস্কারের অন্তঃসারশৃক্ততা প্রচারে কংগ্রেসকে বিশেব বেগ পেতে হরনি।

(সোয়ার নিহত ভোলানাথ চটোপাখায় বাদে) তাঁবা ফিরে না এলে সরকারও নিশ্চিস্ত হতে পারেন না,—আর বিপ্লবীদেরও বর্তমান অক্তর পরিসমান্তি হয় না। স্করাং বারীনদা প্রভৃতি সরকারের সঙ্গে কথাবার্তা চালাতে লাগলেন। একদিকে বিজ্ঞানিত বিজ্ঞাপন বেক্ততে লাগলো,—"ভাই জ্ময়, বা ভাই জ্জুল, ভোময়া বেখানেই থাক, আমাদের সঙ্গে পত্রালাপ কর"—আর একদিকে চন্দননগরের মতি রায়ের সঙ্গে অভুলদা'র গোপনে কথাবার্তা চলতে লাগলো। শেষ পর্যন্ত ছির হল, চন্দননগরে কেরারী বিপ্লবীদের সঙ্গে বৃটিশ সরকারের প্রতিনিহিদের সাক্ষাংকার হবে, এবং কথাবার্তার পর বিপ্লবী নেভাদের নির্বিদ্ধে কিরে বেতে দেওয়া হবে।

ভদমুদারে বাংলা সরকারের সেক্রেটারী এবং সোরেন্সাচীফের সন্ধে অভুলদা'র সাক্ষাৎকার ও কথাবার্তা হরে দ্বির হল, ফেরারীফের বিরুদ্ধে সকল চার্ক ভুলে নেওরা হবে,—অন্ত্রশস্ত্র সমর্গণের কথা ভোলা চলবে না,—এবং আবার কথনো তাঁদের গ্রেপ্তার করতে হলে, আগে তাঁদের বিরুদ্ধে বিপোর্ট ভানিরে তাঁদের বক্তব্য বলার সুবোগ দিভে হবে।

এই বন্দোবন্তের পর কিবে এলেন অমরেজনাথ চটোপাধ্যার, বাহুগোপাল মুখোপাধ্যার, অতুল ঘোব, সতীল চক্তবর্তী (খুলনা) পাঁচুগোপাল বন্দোপাধ্যার এবং নলিনী কর। বাহুলা মেডিক্যাল পড়তে পড়তে গা ঢাকা দিয়েছিলেন, ফেরারী অবস্থার প্রয়োজন হলে ডাক্ডারীও কিছু কিছু করতেন,—এখন হঠাও ডাক্ডারী (এম, বি) পরীকা দিয়ে কার্ষ্ঠ হয়ে স্বর্পন্দক পেশেন।

জীবনের সঙ্গে উত্তরশাড়ার গিরে অমরদাকৈ প্রথম দেশপুম। উজ্জ্বল গৌরবর্ণ, দীর্ঘাবর্ব, অপূর্ব স্বাস্থ্যবান এক বিবাট পুরুব, দেশলে মনে হয়—জহন্ত পাণ্ডুপুরানাং বেবাং পক্ষে অনার্দন—
এমন মানুহ বাদের সহার, ভাদের জর অনিবার্ধ।

দাদারা কোন্ কর্মণছতি অবলখন করবেন, তার আলোচনা হল। দেশজোড়া প্রকাণ্ড গণ-আন্দোলন স্থক হয়েছে,—সমস্ত বিপ্লবের আন্দোলন বা কর্মণছতির ক্ষেত্রেও নেই,—অহিংসার আদর্শ সামনে না বেথে "এই শর্জানী শাসন ব্যবস্থাকে হর সংশোধন, না হর ধ্বংস" করার প্রকাণ্ড আন্দোলন চলতেও পারেনা,—এবং এতবড় আন্দোলন থেকে দ্বে সরে থাকাও ভবিষাৎ বিপ্লব আন্দোলনের পক্ষে সমীচীন হবে না!—স্থতবাং তাঁবা ঠিক করলেন,—কংগ্রেসে বোগ দিতে হবে। কিন্তু গান্ধীর আহিংস সংগ্রামের এক বছরে স্থান্ধের আইভিয়াটা সম্বন্ধে আব একটু ভাল করে জানা দরকার।

স্তরাং বাছ্ণা অমর বস্থকে গানীর কাছে পাঠিরে তাঁর সক্ষে সাকাতের বন্দোবস্ত করলেন,—এবং সাকাং করে আলোচনা করে এলেন। গান্ধী বললেন, একটা বছর তোমরা আমার কর্মণছতি নিয়ে আমাকে একটা চান্দ দাও। স্থতরাং দাদারা কংগ্রেসে বোগ দিলেন।

আমি তার আগে থেকেই, ১১২১ সালের গোড়া থেকেই, ব্যবদার সঙ্গে সঙ্গেই, ব্যক্তিগতভাবে আন্দোলনের দিকে ঝুঁকেছিলুম। হিংসা-অহিংসার কথা একটা বছর পরে ভেবে দেখা বাবে। সশস্ত্র বিপ্লবের আগর্শ ও আকাজ্ফ বুকে পূবে রেখেও ভো হয়ত এখনো বছ বংসর অহিংসই থাকতে হবে। ইতিমধ্যে একটা বছর সারাদেশে প্রকাঞ্চাবে সরকার-বিরোধী মনোভাব গড়ে ভোলার

স্থবোগটার সন্থাবহার করলে কি ভবিষ্যতের সদস্ত বিপ্লবের প্রস্তুতির ক্ষেত্রই প্রশাস্ত হবে না ?

যুদ্ধের ক'টা বছৰ বিলাতী কাপড় আমদানীর অস্থবিধা হওরার দেশে বস্ত্রাভাব হরেছিল, দর চার গুণ বেড়েছিল। কিছু আপানী কাপড় এবং কিছু দেশী মিলের কাপড়ের ব্যবসার স্থবোগ এসেছিল, কিছ দর বৃদ্ধির অস্তু গরীব লোক কাপড় কিনতে পারতো না—ব্ল্রাভাবে গরীব ব্যের মেরেরা হ্বের বার হতে পারতো না—ব্ল্রাভাবে গরীব হুলে মেরার ধ্বরও কাগজে প্রকাশ হুছিল। একটা অর্থনৈতিক জাতীরতার ভাবও ধীরে বীরে গড়ে উঠছিল। বিলিতী কাপড় আবার আমদানী স্কুক্ত হুরেছিল।

এই সময়ে বিলিতী কাপড় বয়কট করা, এবং ধন্দর উৎপাদন করে বন্ধদমন্তার আংশিক সমাধানের পরিকল্পনা অত্যস্ত সমরোপবোগী হয়েছিল। বারা নতুন উৎপল্প মোটা ধন্দর পরতে পারবে না,—তারা বাতে অস্তত মিলের মোটা কাপড়ই পরে, ভার জত্তে একদল লোকের থন্দর পরা প্রেরোজন। সেটা হবে দেশ-প্রেমিকের কর্তবা। এই একটা কাজের থাতিরেই তো আন্দোলনে সামিল হওয়াচলে। চিস্তা এই লাইনে চললো।

এদিকে ডেকবেশনের ব্যবদাব জন্তে নিলাম থেকে বড় বড় সত্তবিদ, কার্পেট বড় বড় করেক জোড়া করে ফুলদান শামানান, পরলা প্রভৃতি কেনা হল,—করেকটা ইাড়িবাতি (Punch light) এবং কিছু জ্যাসিটিলিন গ্যাসের জালো কেনা হল। বিবের প্রসেশনের জালো তৈরীর জন্তে একজন মিন্ত্রিও রাখা হল এবং মোটা দামে একগাড়ী পাইপ কেনা হল। দোকানে থাকে ভাগনী-জামাই এবং একজন ছোকরা। জামি out door কাল ক্যাব জল্ভুগতে বাইবে বাইবেই থাকি এবং নানা জাড্ডার বুরে সমস্ত কাগজ ও ম্যাগাজিনগুলো পড়ি এবং বিকালে কলেজ স্বোরাবে মিটি দেবি। সেখানে পদম্বাক্ত জৈন, জে, এল, ব্যানাজি, হবিদাদ হালদার, ললিভ ঘোষাল, মোলবী জাহমদ জালী প্রভৃতি জনহবোগ জান্দোলনের প্রচার ও ব্যাখ্যা করেন। জাহমদ জালী প্রভৃতি জনহবোগ আন্দোলনের প্রচার ও ব্যাখ্যা করেন। জাহমদ জালী প্রভৃতি জনহবোগ বাজার নামে চালাতে ক্ষক করেছিলেন—পরে সেটা কোনো জ্জ্যান্ত কারণে বন্ধ ভ্রেছিল।

হরিদাস হাসদার বলতেন, বে সরকারী বছটা আমাদের হাতের জোবে চলে, হাত সরিয়ে নিয়ে সেটাকে অচল করে দিভে হবে। কাজটা অভি সহজ,—একটা negetion, inaction মাত্র!

বছটা চালাবার লোকের অভাব বে এদেশে হবে না—৩২ কোটি লোকই বে অসহযোগ করবে না,—অচল হওরাটাই বে শেব নর, সেটাকে দখল ও সচল করাই শেব লক্ষ্য হওরা উচিত,—এ সব কথা মনে হত না কারো,—্মনে হওরাটা বেন তথন দেশপ্রেমের পরিচর নয়। বক্ত হা শুনতে সকলেরই ভালো লাগতো।

সভাব খেবে খত:-সংগঠিত এক প্রসেশন বেত ওরেলিংটন খোৱাবের পূর্বনিকে Forbes mansion এ প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটার অফিসে-নতুন অফিস। আলালউদ্দীন হাসেমী থাকতো প্রসেশনের সামনে। এক পা কাটা--- crutch এ ভর দিরে চলা-বেশ একটা show হত। শ্লোগান ছিল,--বংশ মাত্তরম্, ভারতমার্ভাকি অর, হিন্দু মুনলমান কি অর।

টালা-বরানগর ছিল ২৪ পরগণার অন্তর্গত। ২৪ পরগণা জেলা কংগ্রেদের ক্রেনিডেট করেছিলেন ইংরাজী সাপ্তাহিক মুসলমান পত্রিকার মালিক ও সম্পাদক সর্বজনপ্রির জাতীরভাবাদী মুসলমান নেতা থেলিবী মজিবর রহমান। কড়েরাতে তাঁর বাড়ীতে ছিল অভিদ।

আমরা কংগ্রেদ অফিন থেকে নতুন-ছাপানো রনিদ বই এনে মেখার করতে অফ করলুম। টালার কংগ্রেদ কমিটা সংগঠন করলেন পাটু বাবু, তাঁদের বাড়ীতেই অফিন (পরাণ মুথ্জ্যের বাড়ী)। তাঁর সঙ্গে ছিলেন তাঁর দাদা অশীল বাবু (ভায়দা)—চাটবেডের (নড়াল) অমিদার জিতেন রারের ছোট ছেলে, পাটু বাবুর বদ্ধু ফটু,—আর ছিলেন জাপান প্রত্যাগত "জাপান" লেখক অবেশ বজ্যোপাখ্যার (স্বংশদা)—তাঁর মামার বাড়ী ছিল টালার। আমিও তাঁদের সঙ্গে বাগ দিরে কিছু মেখার করলুম টালাভে।

কিছ বরানগবেও তো একটা কংগ্রেস কমিটি করা দরকার ! আমি প্রথমে পেলুম বিশিনদা'র চেলা, ভূতপূর্ব আটকবন্দী বিশু দেনের বাড়ীতে । তিনি বরুসে আমাদের চেরে বড়,—জাঁর ছোট ভাইকে নিয়ে পড়লুম । জাঁবা বিশেষ আমল দিলেন না । কিছ দেখানকার আড্ডা থেকে একটা হদিস সংগ্রহ করলুম । বড়বাজাবের লোহবাবসায়ী প্রেটি-ভদ্রলোক হরিশস্কর দে, এবং জাঁব ভ্রাতুম্পুত্র কুক্ষন দেকে গাঁধতে পারলে অনেক লোক আস্বে,—কংগ্রেস কমিটী করা বাবে।

ক্ষণনের সঙ্গে দেখা করে অনেক প্রস্থের জবাব দিয়ে তাঁকে বোঝানুম, বাজী করালুম,—এবং তাঁকে সঙ্গে নিয়ে হরিশছর বাব্ব সঙ্গে দেখা করে বললুম, আপনি সভাপতি না হলে ভো এখানে কংগ্রেদ কমিটাই হল্প না,—ব্যানগরের বদনাম হয়ে বার।

ভদ্ৰলোক, ৰাকে বলে hard not to crack, কিন্তু কয়েকনিন শভান্ধন্তির পর বাজী হলেন। তিনি প্রেসিডেন্ট এবং কুঞ্চনে বাবু সেক্রেটারী—হল বরানগর কংগ্রেস ক্মিটা।

অ সমবাকারে বিপিনদা'র আর এক^ন্চেলা, ভ্তপূর্ব আটকবন্দী ছিলেন তুলনী ঘোষ—তাঁর কাছে গোলুম আলমবাকারে কংগ্রেস ক্রিটা করার জন্তে। তিনি রাজী হরে গেলেন। তাঁর দোলর (জুনিরার) লেক্ট্রাণ্ট ছিলেন ধীরেন চাটুজ্যে (বিনি এর্গে ব্রানগর মিউনিসিপাটির চেয়ারম্যান হরেছিলেন)—তিনিও ধাকলেন। শরৎ বাবু (বোধ হর চাটুজ্যে) নামক একজন সম্ভ এম-এ পাশ ভন্তলোককে সেক্টেটারী করে আলমবাকারেও এক কংগ্রেস ক্রিটা হল।

ব্যানগরের বিশু সেনের বাড়ীন্তে শুন্লুম, ডুলসী বোবের বদনাম ! বললুম, কংগ্রেস বা অসহবোগ আন্দোলন ও-সব কথার ধার ধারে না,—কংগ্রেসের কাজ ভালই চলবে এবং সেই যথেই!

ব্যানগরের থগেন চাটুজ্যেরও (থগেন বাঁডুজ্যে বা বাঁটুল বাবু নর) বদনাম শু:নছিলুম—ভিনি ছিলেন গরীব গৃহন্থ, অথচ অন্তরীণ থেকে কিবে আশার পবে নতুন বাড়ী তৈরী করেছিলেন। Theoryটা ইচ্ছে, ওঁর কাছে নাকি কোনো ডাকাভির টাকা ছিল, ধরা পড়ার নে টাকা আর পাওরা বারনি।

এ ধরণের কথা প্রভাস দে সহজেও কিছু দিন বাজারে চলেছিল ভারণর জাগনিই থেমে গোলে। কিছ সার্থ। বছবরে গভীর ভাবে সংশ্লিষ্ট চক্সকান্ত চক্রবর্তী,—
বার কথা আগে লিখেছি,—তিনি বুদ্ধের পর আমেরিকা থেকে কিরে
এনে বিবেকানক রোডে গিরীল পার্কের কাছে এক বিরাট পাঁচতলা
বাড়ী তৈরী করেছিলেন এবং এতছিন সেধানেই আছেন। তাঁর
আত্মীরম্বজনের সঙ্গে কোন মেলামেলা নেই।

বাই হোক, Forbes mansion থেকে একটা চরকা কিলে এনে দিদিকে দিয়েছিল্ম,—ভিনি বাড়ীতে চহকা কটিছেন। আমি সকালে একট চরকা কেটে পাড়ার বেহিরে একবার সেক্টোরী কুম্বন বাব্ব বাড়ীতে কংগ্রেস অফিসে গিয়ে তাঁকে একটু তাভিয়ে এসে থেরে দেয়ে কলকাতার চলে আসতুম। একবার দোকানে পদধ্লি দিরে সরে পড়তুম। থানর প্রচারের জন্তে টালা-বহানগরে খানুরের মুভি ও শাড়ী খাড়ে করে লোকের বাড়ী পৌছে দিতুম। পাটু বাবু তো খানর প্রচারের জন্তে ভামবাজার টাম ডিপোর কাছে এক থানুরের দোকানই করে বস্থানন।

দোকানে তিনি বসিয়েছিকেন সিংহশর গালুকীকে (বিনি এযুগে নারী আশ্রমের সেংফুটারীরূপে rape case-এ জেল খেটেছেন)— এবং সেই সিংহশরই শেষপর্যন্ত পাটু বাবুর খদ্দতের দোকান ভ্রাদিনেই কাঁক করে দিয়েছিকেন। কিছু অর্থনী এবং কিছু মনঃকাই হয়েছিল তাঁব নীট লাভ।

ববানগৰ ও আদমবাজাৰ কথেসে উৎসাহ স্থাবের অন্তে কলকাতা থেকে বক্তা নিয়ে যাওয়ার চেষ্টা করলুম। উত্তর কলিকাতা কংগ্রেস কমিটাতে বক্তা থুঁজে কোন বয়ংজ্যের নেতাকে পাওয়া গেল না—শেবে নিয়ে গেশুম ভগৰতী সোমকে। আমার বয়সী ২কা দেখে কুক্ধনবাবু হতাশ হলেন—তবু একটা হৈঠক হল। আলমবাভাবে কুটবল প্রাউত্তে বড মিটিংএর বন্দোবন্ত হল। প্রাদেশিক ভাইস-প্রেসিডেন্ট আক্রাম থাকে সকলের পছন্দা, কারণ Jute mill এর অনেক মুসলমানকে আকৃষ্ট করা যাবে। গেলুম আক্রাম থাঁব কাছে; তিনি ঠেকিয়ে দিলেন এক রোগা লখা ছোকরা নেতাকে—বোধ হয় তাঁব ভাষাই আবত্ব বেজাক থাঁ—বর্তমাম ক্ষিউন্টি নেতা। বড নেতা না পেয়ে উৎসাহ অম্বাল না।

এই বৃষম চলতে চলতে ফেব্রুবারী মাসে বিজে অন্ধ ওরেলসকে ভারতে এনে সরকার অনগণের রাজভক্তির উল্লেকের ব্যব্দা করলেন। বাব হর ২০ সালের শেবে এই উদ্দেশ্যে ডিউক অক কনটকে (রাজার ভাই) আনা হয়েছিল এবং কলকাভার আগমন উপলক্ষে বিক্ষোভ প্রেলগন ও আমুবলিক কিছু মারামারি, পুলিলের লাঠিবাজী ও ধরপাকড় হরেছিল। স্কুত্রাং ক্রিজা অফ ওরেলস বে'দন কলকাভার আসেন, সেদিন লোক বাভে দেখনেই না বার, হাওড়া থেকে গভর্গমেন্ট হাউস পর্যন্ত রাজা বাতে কাঁকা থাকে, ভার অভ্যাক্ষরকাভার সমস্ত পার্ক আটটা সভার বন্দোবন্ত হয়েছে, এবং নিধিলভারত নেভারা এসেছেন। এ আটটা সভাতেই তাঁরা বজ্জাকরবেন—মতিলাল নেহেক, গামী, মহম্ম আলী, সোকত আলী, ভা: সত্য পাল, কিচলু, সেরওবানী প্রভৃতি। পার্কে পার্কে বিরাট জনসমাগম ছুপুর থেকেই স্কুক্ত হয়েছে—ট্রাপ্ত বোভ কাঁকা, ব্যক্তট সম্পূর্ণ স্কুল, বিনা গণ্ডগোলেই।

নেতারা এক এক সভার বত্তা করেই **অন্ত সভার রওনা হছেন,** ধ্বরা সলো বালেকটা পার্কে সমা চকলো। আমিন এবা পর্বা প্রেল আৰু পাৰ্কে চলেছি মিটিং দেখতে। রাভ আটটা পর্যন্ত এমনি চলে সব মিটিং শেব হ'লে আমি ইডেন হসপিট্যাল বোডে এক মেসে মুখীগঞ্জেব বভীন দত্তের ববে গিরে আড্ডা মেরে দেখানেই থাওৱা-দাওরা করে গুরে পড়েছি। ভার আগের দিনও বাড়ী বাওৱা বটেনি।

সকালে উঠে টালা হয়ে কালীপুর দিয়ে ষ্টিমারে বাড়ী বাবো,—
টালার পোল পার হরেই দেখা একদল মহিলা গলালানাথীর সলে—
টালার গিলীবালীর দল। আমাকে দেখে এক দিদি জিজ্ঞানা
করলেন—"হাারা, ভোর দিদির কি হরেছিল ?" বললুম, কিছু
হরনি ভো! ভিনি বৃষলেন, আমি বাড়ীর থবর বাধি না,—চেপে গেলেন। আমি মনে করলুম, কথার ছিরি দেখ,—বেন দিদি মারা
গেছে।

কাৰীপুরে ব্যালী বাদালের গুমটিতে গোপাল বাবুর সঙ্গে দেখা করল্য—তিনি তথনও সে চাকরী ছেড়ে বেরোতে পারেননি। তিনি বললেন, বাড়ী বান শীগ্গির। বুকটার মধ্যে ধড়াস করে উঠলো। বাড়ী চলে পেলুম। উঠোনে পৌছতেই ভাগ্নী এসে হাউমাউ করে চীৎকার করে পারের কাছে আছড়ে পড়লো—পাশের বাড়ীর গিরী "লন্ধীর মা" তাকে টেনে ডুলে ঘরে নিয়ে গেলেন। আফ:শাব করে বলতে লাগলেন.—"ভাহা, মেয়ে-জামাইয়ের কথা কিছু না বলে ওর্ক্দেছে,—ধোকার সঙ্গে দেখা হল না।" দিদি আমাকে খোকা বলে ডাকতেন।

ছুটলুম বন্ধন বাব্ব খাটে—খাশানখাটে—এবং দেখলুম দাহ হয়ে গেছে—চিভার জল দিলুম, এবং বাড়ী ফিবে বেকুবের মতন বিছানার উপুড় হয়ে পড়লুম।

খটনাটা হয়েছে,— আমি বখন ষতীন দত্তের মেসে হৈ হৈ করে— সভার বিবরণ দিয়ে মাতক্ষরী ক্রছি,— ঠিক সেই সময়ে কলেরার আক্রান্ত হয়ে দিদি আমার জঙ্গে ধড়ফড় করছেন, আর ভাগ্লীজামাই সারা কলকাতার সহ জানা ঠিকানার আমাকে খুঁজে বেড়াছে— বতীন দত্তের মেসটা ভার জানা ছিল না! ভোরে দিদির মৃত্যু হরেছে,—ভালাইন ইন্জেকশন দেওরার ব্যবস্থার আগেই। অপূর্ব ঘটনাচক্র।

ছদিন বিছানার পড়ে নিঃশব্দে কাঁদলুম, আব ভাবলুম, কি হবে ! চাবদিকে বেন একটা শৃশুকা,বিজ্ঞহা, সহারহীনভার অন্ধকার নেমে এসে সবকিছু ঝাপসা করে দিরেছে। দিদি বে কি ছিল, কেমন ছিল, সে কথা এথানে বসাব অবকাশ নেই—সে একটা বৃহৎ উপস্থাসের কাহিনী হল্তে পাবে। অভি সংক্ষেপে মাত্র ছু একটা কথা এখানে বলবো।

আমি জন্মাবার বছর থানেক আগে দিদির একটা ছেলে হরে জন্নদিন বাদেই মারা গিয়েছিল। স্মতবাং আমি জন্মের পর সমানে মা ও দিদির মাই থেরেছি, এবং শেব পর্যন্ত দিদিই আমাকে ছেলের মতন করে মাম্ব করেছিলেন। মার কাছে তাড়া থেলে দিদির কাছে পালাতুম, কিন্তু দিদির কাছে তাড়া, এমন কি মার থেলেও মা'র কাতে কথনো পালাইনি। তারপর মা মারা গেছেন, আমার বরস বধন আট বছর। তার পর থেকে মাম্ব হরেছি দিদির হাতেই। ভগিনীপতি নেশাথোর হরে গিরে শেব পর্যন্ত নিজ্ঞান হরে গিরে শেব পর্যন্ত নিজ্ঞান হরে গিরেছেল।

আমার বাবো বছৰ ব্যঙ্গে ৰাবা মারা বান। মৃত্যুর পূর্ণে ভিনি বাঞীর অর্থাংশ দিদির নামে লেখাপড়া করে দিরে বাওরার ইছা প্রকাশ করেছিলেন, কিন্তু দিদিই তাঁকে নিবৃত্ত করেন এই বলে বে, আপনি বদি এই ভাবে খোকার সঙ্গে আমার একটা "দেইছি" সম্পর্ক করে দিয়ে বান, ভাছলে শেব পর্বস্ত ভার সঙ্গে আমার বিবোধ বাধবেই, আজ সে-বিরোধের কোন সন্থাবনাই নেই। এই ছিলেন আমার দিদি!

বাই হোক, ছদিন পড়ে থেকে উঠপুম, চালা হলুম, এবং সংসার ও ব্যবসার দিকে একটু মনোবোগ দিতে মনত্ব করলুম। ব্যবসার একটা স্থবোগও এসে গেল।

টালার থালধারে কাঁডির পাশে গুডের আছতে একটা বড বারোয়ারী হত, দেখানে অনেকদিন ধরে বাত্রা পুতৃসনাচ প্রভৃতি হত। দেই বারোরারীর কর্তৃপক্ষের সঙ্গে সাক্ষাৎ করে ম্যারাপ প্রভৃতির কন্ট্রাক্ট নিয়ে ফেলপুম। একটা বীতিমত খাটুনীর প্রবোজন এবং কেরামভি দেখাবার scope সামনে পেরে মেডে ১৬০০ হোগলা, ৩ গাড়ী छेरेलम। ३० গাড়ী বাঁশ, শালের খুঁটি, তিনটে বড় খুঁটি ৪০ ফুট করে, এইসব কিনে ফেললুম ম্যাবাপের জন্তে। সকু থেলো খান একগাদা কিনে লাল, নীল, হলদে বতে ছুপিরে ফেলটুন হল, বড় চঙ্ড়া খান একগাদা কিনে তৈরী হল বড় বড় চাদর এবং ফুলকাটা রঙীন Celling এর কাপড়! বাত্রার আসবের খুটাতে খুটাতে প্রদার ওপর ভোড়া আড়া ক্যাশাকাল ম্লাগ এবং জান্তীয় নেভাদের ত্রিবর্ণ ছবি—গ্রীন বোর্ড Oval কবে কেটে আমেবিকান সাদা নক্সাদার ফ্রেমে বাঁখানো। সকলে দেখে খুদী হস, আমার খদেশিতার সথও একটু মিটলো। সব মিলে কান্ডটা প্রকাশু, এবং বেশ সুশুখলে সুসম্পন্নও হল। টাকা পেন্ডেও বেগ পেতে হল না।

এই কাজের মারফং বে অভিক্রতা সঞ্চর হল, তাও সামাল নর।
চারটে বিদ্যুটে শ্রেণীর লোক নিষে কাজ—মুটে, গাড়োয়ান, খ্রামী
আর মিন্তী—প্রায় একটা যুদ্ধ ম্যানেজ করা। প্রীক্ষার উতীর্ণ হলুম।

ব্যক্ষাবির একটা উদাহরণ দেবার সোন্ত সম্বংশ করতে পাবছি
না। ধকণ আমার মিস্ত্রীর কথা। সে প্রতি সপ্তাহে শনিবারে
টাকা নের, এবং মদ খেরে এক খোলার বস্তীতে পড়ে থাকে,
তাকে খুঁজে ধরে আনতে হয়। একদিন টাকা পেরে মদ খেরে
ফুটপাথের ওপর আড়াআড়ি রাজা বন্ধ করে ভলো,—কিছুতেই
উঠবে না। চ্যাংদোলা করে তুলে তাকে দোকানের ভেতরে এক
তক্তপোবের ওপরে বড় একথানা সতর্কি ভাল করে ভইরে দেব্যা
হল। সকালে দেখা গেল, প্রস্তাব করে সতর্কি ভাসিরে রেথে দিরেছে।

ভরে ভিছু বললুম না। অনেক বেলার উঠে ছোকরাটাকে সংল নিরে কলতলার সভর্মিধানাকে কাচার নামে ভিজিয়ে নিরে ছাতের ওপর ফেললে। সদ্ধার পর তাকে মিট্টি কথার কিছু সম্প্রেল দিলুম। চুপ করে থানিক শুনে, তারপর চটে গেল—বললে, বি আপনি উপদেশ দিছেন মশাই । এই করে আমার এতকাল কাটলো, বুড়ো হরে গেলুম। ভরে ভরে কাঠছাসি হেসে রংগ ভল দিলুম। ভাল মিন্ত্রী, চটালে চলবে না। বিষেশ্ব প্রস্লোনের আলো তৈরী হতে লাগলো। এদিকে এসে গেল বরিশাল কন্দারেল। চললুম বরিশালে, বহুকে সঙ্গে নিয়ে গেলুম। সেথানে গিয়ে পাটুবাবু এবং ফটুবাবুর সঙ্গে দেখা চল। বঙ্গুব ভারি ফুর্ভি—এত বাঙ্গাল একসঙ্গে কথনো দেখেনি।

গানীজি ভখন মহালা সরেছেন, এবং আমার মুখে গভিরেছে এক প্রকাণ চাপ দাড়ি, plain living এর রূপার্ণ ! high thinking এবও বটে।

কন্কারেকের নির্বাচিত সভাপতি বিপিন পাল। তিনি অসহবোগ আন্দোলনের বিক্ল সমালোচনা করতেন এবং আন্দোলন থেকে বভাবতই দ্বে সরে যাছিলেন। প্রতিনিধি ও দর্শকে বিরাট প্যাণ্ডাল প্রিপূর্ণ,—বাইবেও বিশাল অনতা। সি আর দাশ, অধিল দত্ত প্রভৃতি নেতাবাও উপস্থিত। সভাপতির ভাষণ অক হল। যেমন দরাক কঠবর, তেমনি অকুঠ ওজ্বিনী ভাষা। বজ্তার মধ্যে তিনি বেই বলেছেন মিষ্টার গান্ধী, অমনি চারিদিক থেকে আওয়াক্র উঠলো মহাত্মা বলুন।

গোলধাল ধামলে তিনি আবার অক করলেন, আবো দৃচ্বঠে বললেন মি: গান্ধী। আবার আওরাজ উঠলো মহাত্মা বলতে হবে। গোলমাল বেশ কিছুক্ষণ চলার পর একটু ধামলে বিশিন বাবু বঞ্জ নির্বেধে বললেন, বলবো না—বলে কিনি সভাণতির আসন ছেড়ে বেরিরে গোলেন। প্যাণ্ডালের মধ্যে এবং বাইরে উদ্দাম ধ্বনি চলতে লাগলো মহাত্মা গান্ধী কি জয়। কন্ধারেজ প্রার ভেকে বার।

তখন ব্রিশালের জনপ্রিয় জুনিরার নেতা জীশবং ঘোব (বিনি
প্রবর্তীকালে খামা পুরুংবাস্তমানক্ষ হয়েছিলেন) উঠে মহান্থার স্ততি
করে বক্তৃতা শুরু করলেন, এবং তু খণ্টাবাাপী বক্তৃতা করলেন,
বিওজকি ও নন কো-জপারেশনের অপূর্ব মিশ্রণ। খরাজ পাওয়ার
অর্থ, তার মতে, নিজেকে মায়ামর বহিবিষয় থেকে স্বিত্রে এনে
সংহত করে আত্মন্ত হওয়া, খরাট হওয়া। মহাত্মা গানীকি জয়
রবে আকাশ-বাতাশ প্রেকম্পিত করে সভা ভঙ্গ হল। আবার
বর্ধন সভা বসলো তথন সভাপতিত্ব করলেন প্রীজ্ঞবিল দন্ত।
তিন মাসের জন্তে আদালত বর্জন করে অসহযোগ আন্দোসনের
কার্যক্রমে বোগ দিতে উকীলদের আহ্বান করে প্রেবান প্রস্তাব পাশ
হ'ল।

সাবজেকী কমিটার সভার পর সি আর দাশ ও অধিস দত্ত কথা কইছেন, একটু তফাতে কাঁড়িরে গুনলুম। অধিস দত্ত বলছেন, তিন মাস আদালত ছাড়লে কীই বা হবে! দাশ মহাশর বললেন,—একবার সবাই আদালত ছেড়ে বেরিয়ে আত্মক, ভারপর ভিন মাসে আমরা এমন অবস্থা করে তুলবো বে, কেউ আর কিরে বেতেই পারবে না।

কাৰ্যতও হয়েছিল কতকটা ঐ বকমই—অনেকে আদালত ছেড়েছিলেন, এবং তিন মাস পরে অনেকেই আর ফিরে বাননি।

অবঃ একথাটা মনে রাখা দরকার,—উকীল ননকোঅপারেটরদের

অধিকাংশই ছিলেন উপার্জনহীন বুভুকু শ্রেণীর,—এবং তাঁদের

অধিকাংশকেই মাসিক ১০০ টাকা পথন্ত অ্যালাউয়েল দেওরার

ব্যহা করেছিলেন দাশ মহালর।

তিনি বৰ্ণন প্ৰথমে ব্যাহিষ্টারী ভাগে করার বোবণা করলেন, ব্বং ত্যুমীও বাজার মামলা ভাগে করে তাদের অপ্রিম দেওরা ১০,০০০ টাকা ক্ষেত্র হিলেন্ড ক্ষেত্র ব্যক্তার্থটা প্রাণা একা অবাধ্য বিশ্বরে ধন্ত ধন্ত করতে লাগলো। এমন একটা ভাবাবেগের সৃষ্টি হল বে,
অসংখ্য লোক আদালত ছেড়ে, কলেজ ছেড়ে, ঘর ছেডে বেরিয়ে পড়লো
—কলেজ বরকট মোটার্টি সকল হল, অস্বোগ আন্দোলনের কাজ
হ হু করে সাফল্যের পথে এগিরে চললো। অনেকের বিখাস, সি আর
দাশ ব্যারিষ্টারী না ছাড়লে বালো দেশে গান্ধীর আন্দোলন সকল হত
না। বস্তুত আমরাও আরো আকুই হলুম স্ত্যিকারের দেশপ্রেম,
ভ্যার্গ ও নিষ্ঠার বাস্তব উদাহবণ দেখে।

ববিশাল থেকে ফেরার পরই এলো নিখিক ভারত কংগ্রেস ক্মিটির বেজারালা প্রোপ্রাম—মে এবং জুন এই ছু' মাসের মধ্যে সাবা দেখে এক কোটি কংগ্রেস সদস্য সংগ্রহ করতে হবে, তিলক খবান্ডা ভাণ্ডারে এক কোটি টাকা তুলতে হবে, এবং ২০ লাখ চরকা চালু করজে হবে। এই প্রোপ্রাম সংবাদপত্রে প্রকাশিত হওয়ার সংজ্ সজ্ সাবাদেশে এক খতঃস্কৃতি বিরাট কর্মোগ্রাদনার বক্তা বরে গেল। সব কাজ ছেড়ে দিনরাত ভৃতের মত খাটতে লাগলুম—প্রোপ্রাম সকল হল।

বৃষ্ণুম ব্যবসা এবং সংসাবের মারা কটাতে হবে। ব্যবসাটা ঠিক বখন দাঁড়িরে গেছে,—তখনই আবার সেটা তুলে দিলুম মালপত্র বাড়ীতে নিরে গেলুম। বাড়ী খেকে ভাগনীজামাই বেটুকু পাবে ভাই চলতে লাগলো। ভাবতে লাগলুম,—বদি বাড়ী ছেড়ে বেবোতে হয়, ভাহলে অপোগগুৰুলোকে দেখবে কে ?

গোণাল বাবু তথন বোস ইনটিউটে বোগ দিহেছেন, এবং ফ্যামিলি আনাব জন্তে ঘর খুঁজছেন। আমি বললুম, আমাদের বাড়ীতে একটা ঘরে ধাকতে পারেন তো ভাড়াটা লাগবে না। তিনি বললেন বরানগর থেকে অফিনে বাড়াহাত বড় অস্থবিধা, একধানা সাইকেল থাকলে চলতে পারে। তলমুসারে ১১০ টাঞা দিরে একধানা সাইকেল কেনা হল, আমি টাকা দিলুম, পরে গোপাল বাবু সেটা শোধ করলেন। মোটের উপর গোপাল বাবুকে বাড়ীতে বসিরে একটু নিশ্চিস্ত হলুম, অস্তত একটা আক্রেলভ্রালা গোকতো বাড়ীতে ধাকলো।

একটা কথা এখানে বলে রাখতে চাই। খাবের কাগজে নেতাদের সিদ্ধান্ত প্রকাশ হওয়া মাত্র দেশপুদ্ধ গোক বে বভাগুলোদিত ভাবে লৈ সিদ্ধান্তকে কার্যকরী করতে উঠে পড়ে লেগে বার, এমন কর্মোন্মাননা আমরা বারা ২১ সালে দেখেছি, আজকের চীনের কর্মোন্মাননা তাদের কাছে একটুও অসম্ভব বা ছর্বোগ্য নয়। বারা ২১ সাল দেখেনি, ভারা হয়ত আজকের চীনের ক্রোন্মাননা বুবতে পারে না। ভারাই চীনের শক্রদের এই অপপ্রচার বিভান্ত হয় বে, লোকস্তলোকে ভোগ করে বাটানো হছে।

জুনের পথেই এল বি পি সি সির উলেকশন। সিচ্ল ট্রাজফাথেবল ভোট প্রথম প্রবর্তিত হল। অভাত প্রথম কর্মী ও সংগঠকদের সঙ্গে আমিও নির্বাচিত হল্ম।

প্রথম বি, পি, সি সি-র মিটিং হল Forbes mansiona।
স্থোনে দাশ মহাশর ঘোষণা করদেন সভাব বস্থ ছাই-সি-এস পাশ
করে সরকারী চাকরী না নিরে দেশে ফিংছেন অসহবোগ আন্দোলনে
বোগ দেওরার করে। তাঁকে বি, পি, সি, সিতে নেওরা দরকার,—
সূত্রাং একটা সীট থালি করার জন্তে একজন সভাের পদত্যাগ
প্রয়োজন। শোনামাত্র করেকজন উঠে দাঁড়ালো,—আমিও—বিভ্
সার্থমেন্দ্র হাাস্যোগ এবজানেন্দ্র পদবালাগ লাখা সেয়াজা। সামার্থমান বালাহাত্র

২৪ প্রগণ কারেদ কমিটাতে কারেকজন মাত্রের ছিলেন,— প্রকৃত্র ব্যানাজি (প্রবভীকালে জেলাবোর্ডের ভাইস), ক্ষিতীশ দাশগুপ্ত (বেলল কেমিক্যাল-খাদি প্রতিষ্ঠান) প্রভৃতি, থাঁদের কাজ ছিল জেলা কমিটার সভার প্রত্যেক্টি খুঁটিনাটি ব্যাপারে হস্তক্ষেপ, বজ্বুচাবর্ণ, সংশোধনী প্রস্তাব প্রভৃতি। জেলা কারেদ কমিটা বলা হবে, না জেলা বাষ্ট্রীয় সমিতি বলা হবে, তাই নিরেই ভিন ঘটা লডাই।

কাজে কোন মুখ পেতুম না। বেজওয়ানা প্রোপ্তামে কংগ্রেসের আসল কাজ হয়ে গেছে। তার জের চলছিল সভা-সমিতিতে অসহবোগের ব্যাখ্যা প্রভৃতি। কলেজ স্বোয়ার ছিল ৩০ দিনই স্বগ্রম। অনেক নতুন বক্তা গজিয়েছিল। বক্তৃতার পর করেকটা ছোট ছোট গুপ তর্কবিতর্ক করতো এবং একখানা বেঞ্চিতে কয়েকজন বারোমেনে সিনিরর বনে অসহবোগ আন্দোলনের বিকৃত্ব সমালোচনা করতো। ইম্পিথিয়াল লাইত্রেরীর অ্যাসিট্টাণ্ট লাইত্রেরীয়ান, নাম উপেন বার্,—চক্ষননগরে বাড়ী, গ্রন্থই, কুফবর্ণ, ছোট করে চূল ছাটা,—তিনি নরম ভাবে প্রতিবাদ করে আন্দোলন সমর্থন করেছেন।

আমি থাকজুম বিতর্কের একটা গুলের মধ্যে। বহুও জালহাউনী থেকে এনে পুটতো মালে মাঝে। একদিন এক ভদ্রলোক থুব ইংরিজী থেড়ে তর্ক করছেন। বহু ইংরিজী জানে না মনে মনে চটে গেছে। এমন সমর তাকে লক্ষ্য করেই সাক্ষী মানার চংএ ভদ্রলোক কিছু ইংরেজী বলছেন। বহু কটমট করে তাকিরে বললে,—ভা ভৈত ইংরিজী বলছেন কেন? আগে বালোর বনুন,—না বৃষতে পারি, তথন ইংরিজীতে বলবেন। বিক্রমণক হো-হো করে ছেনে উঠে ভদ্রলোককে তর্কে হারিরে দিলে।

শ্বান্থের ব্যাখ্যা নিয়ে সমালোচনা চলতো সর্বত্রই। জ্ঞীনগেন গুহ বার (নোরাখালী) এক বই লিখেছিলেন "ব্বাজ সাধনায় বাঙ্গালী"—ভাতে কভকগুলো প্রশ্ন ও নেভাদের জ্বাব ছাণা হুরেছিল। বিভীয়শ্রেণীর নেভাদের জ্বাব। একটা প্রশ্ন ছিল জ্ঞাপনি কি বিশ্বাস করেন, আন্দোলনের সাফ্ল্য হিদেবে এক বছরে স্বরাজ হবে?"—জ্বাবে প্রায় সকলেই বলেছিলেন হাঁয়"। বোধ হয় কিরণশক্ষর রায় এবং জাবুল কালাম জ্ঞাজান বলেছিলেন লিলা"।

হিন্দু মুসলমান এক্যের প্রান্তির সহার ছিল প্রধান প্রোগান হিন্দু মুসলমান কি জয় । মারে মারে কোন হিন্দু নেতার সঙ্গে যৌলবী ওরাহেল হোসেন বড়েভা করে বৃথিরে দিভেন, বেদ জার কোরাণ একই কথা বলেছে। হিন্দু আর মুসলমান ভারতমাতার ছটি চকুর মত । ইত্যাদি—

আন্দোলনের ব্যাখ্যা ও স্থালোচনা ওনে জ্ঞানার্জন করি, স্থ পাই না। ঠেসে পড়াওনা করি। বঙ্কিমের গ্রহাবলীর সাহিত্য-থওকলো ভালো করে পড়লুম, এবং নানন্দ পেলুম। সবচেয়ে আনন্দ পেলুম ধর্মতত্ব পড়ে। ছোটবেলার পড়েছিলুম এওলো বাদ দিয়ে ওরু উপভাসওলো।

একবানা বই পেলুম "বোগসাধন"। বড় তাল লাগলো। বছক্ষমন মিটিক-ভাববালী কথা একেবাবে নেই,—বোগ কর্মের কৌবল, এটাই প্রতিপাত। বোগের অষ্ট তক্ত নুষ্য, নির্মা, আসন, প্রাণায়ায়্র প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান ও স্মাধি। প্রথম তক্ত বম হচ্ছে—অহিংসা সন্য, অন্তের (অচৌর্য) প্রক্ষচর্যা ও অপরিপ্রহ (বিলাস হর্জন)। বক্ষচর্যার বাগার বলা হরেছে, প্রবণং কীর্তনং কেলি প্রেক্ষণং হুহুত্ববিং, সকলোহধ্যবসায়ত ক্রিয়া নিম্পন্তিরেবচ—
এতলৈম্পুন্মটাকং প্রবদ্ভি মনীবিশঃ, বিপরীতং ব্রক্ষচর্যমন্থারিত। বিহাল তিন প্রকার—কৃত, কারিত এবং অমুম্যোদিত। দোর তিনটাভেই স্মান।

একথানা এক্সাস্থিক বুকে এক কটিন লিখলুম,—মম সাধনের প্রাত্যহিক বেকর্ড— মহিংসা, সভ্য, অভ্যেষ, ত্রক্ষচর্য, অপথিত্রহ, এই পাঁচ থাতের সাফস্য ও বার্থভার পরিমাণ বোজ লিখে বার্থভ্য।

দাগবা কংগ্রেসে বোগ দিহিছেন, অন্ত-শস্ত্র লিকের তোলার ব্যবস্থা হয়েছে। জীবন কিছু মাল বেবেছিল এক স্কুলেন হেডমাষ্টার স্থানী বাবু আমাদের লোক। জামবাজারে দীনেক্স স্থাটের মোড় বেধানে, এখানে তখন ছিল "গাঁজার গলি।" তার মধ্যে একটা হাফবজিতে ছিল এ স্কুল। মালের মধ্যে একটা রাইফেলও ছিল—বাঁট আর ব্যাবেল খুলে পৃথক ক'রে বাটো করা ছিল। সেগুলো চন্দননগরে স্বাতে হবে। জীবনের ব্যবস্থায় বোহিনী মুখুজ্যে জার আমি দেশুলো নিবে গেলুম চন্দননগরে ঘোড়াপুকুরের পালে কুড়ু বাবুদের বাড়ীর লিছনে বলাই কর্মকারের বাড়ী। তিনি ছিলেন টালার পঞ্চাননের মাডুল, জার পঞ্চাননই বাইফেলটাকে খুলে ছুটুকরো ক'রে দিয়েছিল।

বোহিণী মুখুজ্যের বাড়ী জীবনদের প্রামে, বিক্রমপুরে পঞ্চার প্রামে। সেও আমাদের সঙ্গে গ্রেপ্তার ও অন্তরীণ হরেছিল। ফিরে এনে থিজাপুর ষ্টাটে সাবিত্রী এজেন্সী নামে এক ষ্টেশনারী দোকান কবেছেল, বে দোকান ২৪ সালের কাণপুর বলশেন্তিক বড়মন্ত্র মামলার আসামীদের তরম্বের এক পোষ্ট-অফিস বলে বর্ণিত হয়েছিল। আসামীদের সংশ্লিষ্ট ব্যক্তিদের মধ্যে জীবনের নামও ছিল। ২৪ সালে জীবন ছিল বিভীরবার জেলে, ষ্টেট প্রিজনার।

বাই হোক, ২১ সালের মাঝামাঝি জীবন দৌলভপুরে (গুলনা)
কিরণলা' (কিরণ মুথাজি) কর্তৃক প্রতিষ্ঠিত সভ্যাপ্রমে বাভারাত করতো। ভার সঙ্গে আমিও একবার সভ্যাপ্রমে বুরে এলুম। ভগন শঙীন ঘোর (পরে অমৃতবাজার পত্রিকার আ্যাসিষ্ট্যাষ্ট এভিটর) সংবেমাত্র ম্যাটিক পাশ করেছে—সভ্যাপ্রমে বাভারাত স্কুক্রেছে— দৌলভপুর কলেজের ছাত্র।

ইতিমধ্যে বরিশাল শ্রুরমঠের বন্দোবস্থে বৃথিশাল থেকে কলকাতার প্রেস আনা হবেছে জাতীর সাহিত্য প্রচাবের জন্ত এবং সরস্বতী লাইবেরীও ছাপিত হরেছে মনোরন্ধনদা-অরুপ গুড়ের পরিচালনার। শ্রুরমঠ ছিল বিপ্লবীদের ঘাঁটি—ঘামী প্রজ্ঞানানন্দ (ভূতপূর্ব স্থুলমান্তার সতীল মুখুল্কো) ছিলেন নেতা। নিলি গালুনী সেধানেই থাকতেন (এখন কলকাভার হোমিওপ্যার্থি প্রাকৃতিন করেন) আর মনোরন্ধন-দা (গুপ্ত বর্তমান এম এল সি) এবং অরুপ গুছু হাতারাত করতেন।

খাৰী প্ৰজ্ঞানানখের কি একটা বই পড়েছিলুম, মনে নেই। তথু একটা কথাৰ একটা টুক্ৰো মনে আছে—"ৰণপুৰঃসৰ হত্যা কৰিবে"—একটা সংস্কৃত শ্লোকেৰ ব্যাখ্যা। আমৰা বে "অভিনাগ' নাটক অভিনয় কবেছিল্ম, ভার শেষ দৃশ্রে বাসদেব (সভাবাবু)
কৃষ্ণ (করাসী) এবং অঞুনের (প্লিন) সম্বন্ধ শিবোর কাছে
ধর্মবৃদ্ধের বাাধা। করেছিলেন—স্বামী প্রেঞ্জানানশের বউটাও সেই
ধর্মবৃদ্ধের বাাধা।। আমাদের চোধে অহিংসার বিপ্লববিরোধী
ভূমিকা ছিল স্মুম্পাই।

বিশাল থেকে প্রেন্টা এনেছিল ষ্টামারে আর্থানাবাটে এবং দেখান থেকে এক গরুব পাড়ীতে এল বেনেটোলা লেনের বাড়ীতে। বাড়ীর উঠোনে প্রেন্টা নামাবার জন্তে মুটে ভাকা হল, তারা হাকলে ৬ টাকার কমে হবে না। কথন ছ'টাকা একটা বৃহৎ ব্যাণাব: আমি উপস্থিত ছিলুম—মনোরঞ্জনলা'কে বল্লুম, আমবা মুটেলের চেরে গারের জোবে খাটো, কিছ বৃদ্ধিতে বড়,—আমবাই নামাতে পারবো,—যদি আপনিও হাত লাগান। তিনি বললেন, রাজী। আমি বললুম ছটো টাকা খরচ করতে হবে, রসগোল্লার। তিনি বললেন, রাজী। আমি বললুম ছটো টাকা খরচ করতে হবে, রসগোল্লার। তিনি বললেন, রাজী। আর কে কে ছিল মনে নেই—প্রেন্সর সঙ্গে একেটা বড় পিসই বেশী ভারী—প্রেস নামিরে কেল্লুম উঠোনে। ভারপর হল ছ'টাকার বসগোলা থাওৱা।

হারিদন বোডের কাছে বমানাথ মজুম্লাবের স্থাটের মোড়ে দবরতী লাইবেরী হল। কিরণদাকে এনে চার্জে বদানো হল। চু'লন তর্পকে সর্বন্ধবের জন্তে রাখা হল, লাইবেরীতে বই বিক্রীর লভে। তারই মধ্যে একজন ছিল গোপী লা—তে সাহেবকে টেগার্ট ভ্রমে হত্যা করে বার কাসী হরেছিল।

এই সমরে মুলীগঞ্জ (বিক্রমপুর) থেকে জীবন প্রভৃতির ভাক এল, ভাশাভাল ছুলের ভার নেওরার জন্তে। প্রাথমিক সংগঠন কবেছিলেন বছ "মাঠার মহাশ্র" শ্রীশচীন বোব, বাহেরকের জিতেন কুশারী প্রভৃতি। প্রথমে হাই সুদ থালি হয়ে গিরেছিল, তারপর স্বাবার হাইস্কুলও চালু হল। ভাশাভাল সুলে আড়াইশো ছাত্র, স্বাব হাইস্কুলে ২০০র মতন। কালীবাড়ীর সামনে প্রেকাণ্ড টিনের চালাব্বে কাঁপ বেঁধে বেঁধে ক্লাশের হর প্রভৃতি ভাগ করা হ্রেছিল।

বতীন দত হাবিসন বোডে graduates' union নামক sporting goods-এর দোকান করেছিলেন, পাটনার ছিলেন বোহিণী নক্ষা—উভরেই পঞ্চাবের লোক। বোহিণী বাব্র হাজে দোকান ছেডে বভীন দত্ত মুন্দীগঞ্জে গিরে আশাভাল স্কুলের হেডমাটার হলেন। জীবনও টিচার হয়ে গেল। কামারধারার পরেশ দেন মুন্দীগঞ্জের সরকারী উকীল উমাচরণ সেনের জামাতা—ভিনি চটগ্রাম কালেকটবেটে জ্যাকাউট্যান্ট ছিলেন—এখন চাকরী ছেড়ে আশাভাল স্কুলে বোগ দিলেন। এমনি জারো জনেকে এসেছিলেন,—সে কথা পরে বলা বাবে।

জীবনকে এখানকার কাজের অবস্থার কথা বলেছিলুম।
মুলীগঞ্জে বাওয়ার আগে আমাকে বলে গেল, আমাদের ওখানে
ক্মীর প্রয়োজন হলে তোমার লিখবো,—লিখলেই ভূমি চলে
এলো। ভাই স্থিব হলো।;

গোপাল বাবু আমাদের ববানগবের বাড়ীতে বৌমাকে এনেছেন,
—বড় ছেলে পটলও (সুধীর ?) এসেছে। ভার ভখন এডটা বরস
হরেছে বে, সে ছড়া বলতে লিখেছে—"লীত কলেলে দাদাবাই
কাখা কিছা দে,—কাখ্লে মইকে বউ ছইব, বউ কিছা দে।"

किमणः।

রন্দাবন

জ্ঞীদেবপ্রসন্ন মুখোপাধ্যায়

বৃশাবনের শৃত্য দেউলে মিলিল না তব দেখা,
ব্রজের বৃলার আছে বটে সখ', তব পদরেণু মাখা;
শৈলব ও কৈলোবের লীলাভূমি এই বৃশাবন,
বেদনা মৃদ্ধিত আজ নাহি ভার প্রাবের স্পাদন।
গোধনপুত্র গোচাবেণ্ড্মি বিরহ বেদনে কালে,
বজবালা আর ছোটে না দেখার সাজিয়া বিবিধ ছাঁলে,
রাধালরাজারে নাহি দেখা যার, ময়ুবপুচ্ছ মাধে,
হাত্ত লাত্ত লয়েছে বিদার ব্রজের কায়ুর সাধে,
বয়ুনা-পূলিনে বাঁশরী বাজারে কেহ ডাকে না ক' অভিসাবে,
নাণতকতলে মিলনের মেলা ফুরারেছে, চিরভরে;
কোধার গোলিকা কোধার রাধিকা ভোগার পরাণ প্রিয়াণ
কত মধুমান আলে আর বার আকুল করিয়া হিয়া,
নাই ভামচাল, নাই দে রাধিকা, নাহিক বশোলা মাভা,
শৃত্ত দেউলে বিরহবেদনে পধিক লুটার মাধা,
কোধার ক্রম কোধা রাধানাধ কোধায় লুকালে ডুমিণ



লীগ আসরে ছন্দপতন

ক্রিন্দাতা মন্ত্রদানে সিনিম্বর ডিভিসন কুটবল লীগের পালা প্রার শেব হরে এলো। জার করেকটি মাত্র খেলা সাল হলেই লীগ মরগুমের ওপর ববনিকাপাত ঘটবে জার সেই সঙ্গে বছজনের জন্না-কর্মা, জালা-নিরাশার দ্বন্থেরও জ্বসান হবে। এবার বিজ্ঞাণ খেলার জাসর কোন সমরেই জমে উঠলো না। নিতাম্ভ জ্ঞাপনাহীন জ্বস্থার মধ্যেই এবাবের লীগ মরগুম শেব হলো। বিভিন্ন দলের উপান-পতনকে কেন্দ্র করে অ্যুরাগী ও সমর্থকদের মধ্যে বে প্রাণ-চাঞ্চল্যের বল্লা বরে থাকে, এবার তার ক্তকটা ব্যতিক্রম হরেছে বলা বার। জ্বিভিন্ন এ ব্যতিক্রমের কারণও জাছে। এবাবের লীগ খেলার জ্প্রত্যানিত ফ্লাফ্লই লীগ প্রতিদ্বিভাব জাকর্ষণ জনেক্থানি কুল্ল করেছে।

অনিশ্যক। ক্রিকেট খেলার বৈশিষ্ট্য বলে জানা ছিল। এ উজিটি বে ফুটবল খেলার ক্ষেত্রেও প্রব্যেক্স, তা চলতি মরন্তমের ক্ষেকটি খেলা দেখে এ প্রতীতি জন্মছে। ভারতের বিভিন্ন প্রান্তের খ্যাতনামা খেলোরাড় নিরে কলকাভার করেকটি প্রখ্যাতনাম: দল ভাদের শক্তি বৃদ্ধি করে খাকে। মুখাত: এই সব খেলোরাড়দের কৃতিখে ও নৈপুণ্যে সংগ্লিষ্ট দলগুলি গৌরব অর্জ্জন করে থাকে। কিছ এছেন শক্তিশালী ও খ্যাতনামা দল বদি ছানীর খেলোরাড নিরে গঠিত অল্প্রান্ত অথবা অখ্যাত দলের বিক্লমে পরেন্ট বিস্ক্ত্জন করে অথবা প্রাক্তিত হয়, ভাহতে সমর্থক ও দরদীরা বে উন্মা প্রকাশ ক্রব্রেন, তাতে আর আশ্রেষ্ট্য কি । এবার সভ্যিই তাই হয়েছে।

লীগ তালিকার ওপর তলার বে কর্যটি থাজনামা দল
আছে তালের কথা বলতে হয়। এর মধ্যে একটা দলকেও
অহলাতে দৃদ্পতিক্ত এবং নিশ্চিত আছা ও জরলাতে
জুটি মনোবল নিরে খেলতে দেখা বার নি। অপেকার্কত
চুর্বল দলের বিক্লছে বে ভাবে কঠ করে এরা পরেন্ট সংগ্রহ
করেছে তাতে অতি বড় গোঁড়া সমর্থক নিরাশ হরেছেন।
আবার বথন এই সব খাতিনাম। দল চুর্বল দলের বিক্লছে
পরেন্ট নিই করেছে অথবা পরাজর খীকার করেছে তথনই
সমর্থক ও দরদীদের বৈর্যাচ্যুতির কারণ ঘটিরেছে। মনধারাপ
খেলোরাড়লের উত্তেজিত (সময় সময় মারমুখী) দর্শকদের সামনে
পড়তে হরেছে। ক্লাবের কর্মকর্তাদের অবাবদিহি হতে হরেছে।
কোন কোন ক্লেন্তে নিগৃহীত করার ছোটখাটো ঘটনাও হরেছে।

অবিভি কলকাতা মরদানের এ হোল'নিয়মিত ঘটনা। এবরণের ঘটনা-ছুর্বটনাকে কেন্দ্র করেই কলকাতা মরদানে কূটবল মরশুম মেতে ওঠে। এ সমস্ত কিছুকে ছালিরে একটি প্রশ্ন নিরপেক এবং সন্তিয়কারের ফ্রীড়ামোদীকে ভাবিরে ভূলেছে। কূটবলের মান কোধার ?

ক্রীড়ামহল ও সংশ্লিষ্ট অমুবাগীমহলে সর্বন্তই একই প্রশ্ন।
মূটবল খেলার বাংলা দেলের ক্রীড়ামান উন্নত না হয়ে ক্রমশঃ নিমুগামী
হচ্ছে এটা সর্ব্বলন্ধীকৃত। এ নিয়ে প্রচুব আলাপ আলোচনা
হরেছে বা হচ্ছে কিছ উপার নির্দ্ধারণ করা হয় নি । বাংলাদেশের
ফুটবল খেলার ভাগানিমন্তা হোল ইতিয়ান ফুটবল এলোসিয়েশন
বা আই, এফ, এ। ফুটবলের মান উন্নত করার এবং খেলোযাড়দের
শিক্ষাদানের জক্ত উপযুক্ত পরিকর্মনা রচনা করার দায়িও মুখ্যতঃ এই
সংস্থার ওপর। কিছ ফুটবল খেলা পরিচালনার প্রশাসনিক কাছটুক্
করেই এরা কান্ত। এর বাইবে এদের স্বন্ধু পরিকর্মনার কোন
পরিচর আজ অবধি পাওরা বায়নি। হয়ত এরা একাজে সংকারী
উত্তমের অপেকার বসে আছে। ভাই যদি সন্তিয় হয় ভাহলে মন্ত

লীগবিজ্ঞয়ের পথে মোহনবাগান

এ বংসরের দীগ খেলার স্থক্ন থেকেই জনপ্রিয় দল মোছনবাগান জয়লাভের একচেটিয়া অধিকার নিয়ে লীগ অভিযানে দৃঢ় পদক্ষেপে এগিবে বার। সমর্থককুল দৃঢ় আশার উদ্দীপ্ত হরে ওঠে বে মোহনবাগান অপরাজিত আখ্যা নিবেই লীগবিজয় করবে। কিছ विक्र क्षिक्ष के हिर्देशक का एक आभाव वाक नावरना। नीरगंव ফিবতি খেলার ভারা মোহনবাগানকে ১-- গোলে হারিরে দিয়ে অপরাভিতের গৌরব মান করে দের। কারণ তথন পর্যাত মোচনবাগানট ছিল সীগ ভালিকার একমাত্র অপরাভিত দল। লীগের পালা শেব কয়তে মোচনবাগানের বধন আর ছটা ধেলা বাকী তখন এই বিপৰ্যায় ভাষের সামনে এসে হাজির হয়। এই বিপর্যায় মোহনবাগানের গভির পথে কিছুটা প্রতিবন্ধকভার স্থাট ক্রলেও ভাদের লীগ জ্ববাতার বভির চিহ্ন টানভে পারবে না বলেই মনে হয়। কেননা বৰ্ত্তমান পৰ্যায়ে মোহনবাগান ভালের নিকটভয প্রতিৰন্দীর থেকে লীগ ভালিকার বে অবস্থানে রয়েছে ভাতে নিডাম্ভ অস্বাভাবিক ধরণের কোন অঘটন না ঘটলে ভারা বে শেব পর্যান্ত লীগবিজ্ঞয়ী হবে, তা একবক্ষ নিশ্চয় করেই বলা बाद । जीन भावाद कोए किर्द्धि एक्टी देहेरवज्ज मन, बाजनार्या মহমেডান স্পোটিং এবং গভবাবের লীগবিজয়ী ইটার্প রেলওরে দল অনেক পিছিয়ে পড়েছে। স্থতরাং বাকী পথটুকু বিপর্যায় এড়িয়ে পার হলেই মোহনবাগানের লীগ জরবাতা সফল হবে, সার্থক হবে। দবদী ও অমুবাগী দলও তাই গভীব আশার উদ্দীপ্ত হরে অপেশা कताइ तारे ठतम क्रवित क्छ, अलब बाना निश्वतरे निवर्षक राय ना।

ইংলও দলের "রাবার" লাভ

বর্ত্তবানে ইংলও সক্রবত ভারতীর ক্রিকেট বল উপর্1পবি ভিনটি টেট শেলাভেই প্রাজিত হওরার ইংলও বল বাবাব লাভের কৃতিত অর্জন করেছে। এবনও ছটো টেট্ট বৈলা বাকী ররেছে। "রাবার" প্রস্নের মীমানো হওরার অবলিট ছটো টেট্ট বেলারও আকর্ষণ অনেকটা কমে গিরেছে। অধিকাংশ তরুপ এবং উদীর্মান খেলোরাড় নিয়ে গর্বিত ভারতীর দল অলক্ষেত্রেই নৈপুণা প্রদর্শন করতে সমর্থ হরেছে। শক্তিশালী ইংলও দলের বিক্তমে ভারতীয় দল মোটেই স্থবিধা করতে পারেনি এবং শোচনীয় ভাবেই তাদের পরাজ্য স্বীকার করতে হরেছে। ভারতীয় দলের অসাকলা উপলক্ষ্য করে ইংলওের বিভিন্ন পত্র-পত্রিকা অতি রুচ এবং নির্মুমভাবে সমালোচনা করেছে।

কোন কোন সংবাদপত্র জাবার বেশ চড়া সুরেই সমালোচনা করেছে।
বে ভারতের সঙ্গে টেষ্ট খেলার ইংলণ্ডের সময়ের অপচর হয়েছে।
শুরু ভারতই না, পাকিন্তান ও নিউজিল্যাণ্ডের টেষ্ট খেলার যোগ্যতা
সম্বন্ধেও সন্দেহ প্রকাশ করা হরেছে। ভারত, পাকিন্তান ও
নিউজিল্যাণ্ড এখনও টেষ্ট খেলার বোগ্যতার অধিকারী হরনি বলে
মন্তব্য করা হরেছে। এদের সংগে খেলায় ইংলণ্ড নিজেই জারলাভ
করে বলে এদের বিক্লন্ধে টেষ্ট খেলার সময় পাঁচদিনের বদলে ভিনদিন
স্থির করার জন্ম আবদার ভানানো হয়েছে। মনে হর ইংলণ্ডের
পত্র-পত্রিকাগুলো অট্রেলিয়ার বিক্লন্ধে সাম্প্রতিক টেষ্ট খেলার ইংলণ্ডের
শোচনীর প্রাক্লয়ের কথা ভূলে গেছে। গত বংসরের শীতকালে
পাঁচটি টেষ্ট খেলার মধ্যে ইংলণ্ড দল চারটিভেই শোচনীরভাবে
পরাজিত হবে দেশে ফিরে আসে।

সেদিন অষ্ট্রেলিয়ার বিক্তম্ব ইংলণ্ডের টেষ্ট থেলার মেরাদ কমিরে আনার কোন প্রশাস ওঠেনি। অত্যীকার করার উপার নেই বে বর্তমান ইংলণ্ড সক্ষরে ভারতীর দল বার্থতার পরিচর দিংরছে। কয়েকজন থেলোরাড় আহত ও অস্তম্ব থাকার তাবের বিপর্যন্ত অবস্থার সম্মুখীন চতে চরেছে। কিন্ত প্রতিম্নিতার আসারে ভারতীর দলের তক্তপ থেলোরাড্গণ মনোবল চারাননি।

আজকের এই পরাজরের মার থেকেই ভারতীর দলের থেলায়াড়গণ বে অভিজ্ঞতা সঞ্চর করে ফিরবেন তা বথাবোগ্যভাবে কালে লাগালে আগামী দিনের থেলোরাড়রা তৈরী হবার প্রবাদ পাবেন। তাঁদের অভিজ্ঞতা সম্পদ ভারতীর ক্রিকেটের কল্যাণে নিরোজিত হোক এই কামনা করি।

ভারত-ইংলও টেষ্ট খেলার ফলাফল

প্রথম টেই—নটিংহাম

ইংলও এক ইনিংস ও ৫১ রাণে জরলাভ করে। পাঁচদিনের ধেলা চতুর্থ দিনেই মীমাংলা হর। ইংলওের অবিনারক পিটার মে এই ধেলার ১০৬ রাণ করেন। ইংলও প্রথম ইনিংলে ৪২২ রাণ করে। প্রান্তরে ভারত প্রথম ইনিংলে ২০৬ রাণ এবং ফলো অনে বাধ্য হরে বিভীয় ইনিংলে ১৫৭ রাণ করে।

বিতীয় টেষ্ট—সর্ডন

ভারতের অধিনায়ক দাতাজীরাও গারকোয়াড় অপুষ্তার অভ বিতীর টেটে থেলেননি। তাঁর পরিবর্ত্তে সহ-অধিনায়ক পত্তজ রার বিতীয় টেট্রে ভারতের নেতত করেন। চাঁত্ বোড়ে ও নাদকার্নি

করে ১৬৮ রাণে প্রথম ইনিংসের থেকা শেষ করে। প্রত্যান্তরে ইংলও প্রথম ইনিংসে ২২৬ রাণ করে। দ্বিভীর ইনিংসে ভারত ১৬৫ রাণে সকলে ভাউট হর। ইংলও ভরলাভের ভাল প্রবাদনীর রাণ করলে তৃতীর দিনে খেলার মীমাংসা হর। বিপর্যার গোধে মঞ্জেরেকার (৬১ রাণ)ও কুপাল সিং (৪১ রাণ) প্রশাসনীর ভূমিকা প্রহণ করেন। দ্বিতীর টেটে ইংলও'৮ উইকেটে জ্বী হয়।

তৃতীয় টেষ্ট—লীড্ৰ

ভূতীয় টেষ্টে ভারত এক ইনিংস ও ১৭৩ রাপে পরাজিত হয়। এই ধেলাটিও ভূতীয় দিনে শেব হয়। ভারত প্রথম ইনিংসে ১৬১ রাণ করে। প্রভ্যুত্তরে ইংলগু ৮ উইকেটে ৪৮৩ রাণ করে প্রথম ইনিংসের সমান্তি বোষণা করে, কলিন কাউড়ে ১৬০। দিতীর ইনিংসে ভারত ১৪১ রাণে পেলা শেষ করে।

রামনাথন কৃষ্ণাণের অপূর্ব্ব সাফল্যে টেনিস-জগতে বিস্ময়

দক্ষিণ আমেহিকার ভক্ষণ খেলোরাড় জ্যান্দের অসমেডো এ বংসর বিধের অক্তম শ্রেষ্ঠ টেনিস প্রতিযোগিনো উইম্পডনে বিজয়ীর কৃতিত্ব অর্জন করেছেন। ভিনি পুরুষদের সিঙ্গসস ফাইলালে কুইল্ল্যাণ্ডের (অট্রেলিরার) লেভারকে ৬-৪, ৬-৩, ৬-৪ সেটে পরাজিত করে এই সম্মানের অধিকারী হয়েছেন।

মহিলা বিভাগেও দক্ষিণ আমেরিকার প্রতিবোগিনী মারিরা এছার বুনো চ্যাম্পিরনশিপ অর্জ্ঞন করেন। তুটো বিভাগেট দক্ষিণ আমেরিকার সাফল্য এবাবের উট্টম্বলডনের স্বচেরে উল্লেখবোগ্য ঘটনা। অলমেডোর পূর্কের দক্ষিণ আমেরিকার কোন থেলোরাড় উট্মলডনের চ্যাম্পিয়নশিপ লাভ করেননি।

ভারতের পয়লা নহ'ব থেলোয়াড রামনাথন কুফাণ তৃতীর রাউণ্ডের থেলায় অলমেডোর কাছে পরাজিত চয়ে উইস্লডন থেকে বিদায় গ্রহণ করেন। তকুণ থেলোয়াড় বামনাথন কুফাণ বোগ্য প্রতিহন্দিতা করেই প্রাভব স্থীকার করেন।

উইখলভনে পরাজিত হলেও কুফাণ এই বছুরই অলমেডোকে তু' তুবাৰ পৰাজিত কৰে ক্ৰীড়াজগতে বিশ্ববেৰ সঞ্চাৰ কৰেন। লগুন প্রাসকোর্ট টেনিস প্রতিবোগিতার সেমি-ফাইকালে ক্ফাণ ৮-৬, ৬-১ সেটে অনমেডোকে পরাজিত করেন। এই প্রতিযোগিতারট ফাইন্যালে তিনি বিশেব আর একজন শ্রের থেলোয়াড নীল ফ্রেন্সারকে ৬-৩, ৬-০ সেটে পরাক্তিত করে জন্ম টেনিস চ্যাম্পিয়ানশিশের কৃতিত্বপূর্ণ সমানলাভ করেন। উইম্বল্ডনের বাছাই ভালিকার অলমেডো প্রলা নহবের এবং অষ্টেলিয়া নীল ফ্রেন্ডার (ইনি গতবাবের উইম্লডন বাধার-জ্ঞাপ) ছই নহবের খেলোয়াত। বিশের তুই প্রেষ্ঠ খেলোরাডের বিকৃত্বে ভারতের তক্ষণ খেলোরাডের এট সাফল্য ভারতকে নতুন আশার সন্ধান দিংছে। পুনরায় স্থটডেনে সুইডিশ হার্ডকোট টেনিস প্রতিযোগিতার সিক্সন দেমি-ফাইকালে কফাণ আর একবার উইম্বল্ডন বিজয়ীকে পরাজিত করেন। কুফাণের এই অভ্তপুর্ব সাফলা বিখের ক্রীডামছলে বর্জমান বংসরে এখনকার মন্ত সবচেবে বড় সংবাদ। কুকাণ ভারতের মুখ উচ্ছেল করেছেন। বিদেশী পত্ত-পত্তিকাও জাঁর নৈপণা সংখ্যা উচ্চালিক



বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে স্বরসাধনা

বিজ্ঞানিক পদ্ধতিতে খবসাধনা ভারতে ভারতীয় সঙীতের ভার প্রাক্তন নর। ভারতীয় সঙীতে গীত, বাজ, নৃত্য ও লাট্যাপাল্ডের প্রচুর আলোচনা ও বিষয়বজ্ঞর নির্দেশ আছে। কিছু বৈজ্ঞানিক পদ্ধতিতে খবসাধনা, শারীরিক সম্বন্ধ বজ্ঞার বেপে এবং পারিবেশিক অবস্থার দিকে নজর বেপে কোন শাস্ত্রকার কোন শাস্ত্র বচনা করেছেন কিনা ভার নজিব নাই। তবে সঙ্গীতক্তের বা গায়কের কঠের বিশেষ্য গুণ প্রভৃতির আলোচনা ক্থন কথন হ্রেছে।

প্রবর্তী যুগে ওন্তাদ ও পণ্ডিত মহলে শ্ব-সাধনার কিছু
প্রতির কথা শুনা বার। তাঁদের মতামুদারে কঠসাধনা বা
শ্বর্গাধনার প্রথম এবং প্রধান প্রতি হ'লো 'মবস্ক-সাধনা'।
আর্থাং উদারা বা মন্ত্র-সপ্তকে গলার অভ্যাসই কঠসাধনা বা
শ্বর্গাধনা। ঠিক এই প্রকার গলার অভ্যাস হারা গলার কিছু
উন্নতি পরিষ্ঠ হ্রতো হ'তো কিছু এই প্রকার ক্রমাগত অভ্যাধিক
ভ্যাস গলার শ্বর স্থমধূর ও লালিভাপুর্ণ হওরার বনলে ধরা, ভারী ও
কর্ষশ আওরাজ্বেই উৎপত্তি হ'তো। এই সব কারণে, অবভ্য
সমস্ত গারক মাত্রেই নর, উচ্চাঙ্ক সঙ্গাতনিদ্ধীর অনপ্রির্ভা লাভে
বিক্তি হওরার নানা কারণের মধ্যে ইহা একটি প্রধান কারণ বলা
ব্যতে পারে।

ষান্ত্রিক যুগে বন্ধের জাবিকারের সঙ্গে বেভিও মাইক্রোকোন প্রভৃতি আবিক্ষত হওরার গারক মহলেও তার প্রতিকলন দৃষ্ট হয়। রন্ত্রের প্রেচননের উদ্দেশ্য হরতো সঙ্গাতকে জনারাসে বেনী সংখ্যক প্রোতার নিকট পৌছে দেওরা। কিন্তু গারক মহলে তার প্রতিক্রিরা হিসাবে "মাইক-টেকনিক" নামক ভরেসের উত্তব হয়। এই পন্ততি হ'লো প্রধানতঃ গলাকে দাবিয়ে ও তার স্বরকে ব্যাস্থ্রব সংবত করে গান গাওরা। জার বন্ত্রের সাহাব্যে ভা প্রিবৃদ্ধিত হ'রে স্বার নিকট উচ্চ জাওরাক্তে প্রিণ্ড হয়। কোন কোন ক্ষেত্র ব্যাহর গুণাঞ্চ হিসেবে আওয়াজও সে মুল্
বাবল করে। আর শিল্পীর আসল পরিচর চাপা পড়ে বার।

এরণ ক্ষমাগত অভ্যাসে কঠ কীল হ'তে কীলভর হ'তে থাকে।

কঠবরের আয়ুও এতে কমে বার। চলচ্চিত্রশিল্পী ও কিছু সংখ্যক
বেতার শিল্পীর মধ্যে ইহা বিশেষভাবে পরিগৃষ্টমান। ভালের

ধাবণা, এই প্রথা গানে ভাব সংবোজনা করতে বেশী সহারক ও জল্প
পরিপ্রম হর। কিন্তু আসল শিকটার কথা তাঁরা ভূলে বান।

কলম্বরূপ আসল স্ববসাধনার পথ হ'তে বিপথসামী হর। প্রাকৃত
স্ববর্কঠ হ'তে নির্গত না হ'লে সুকীভের ও তৎসংলিষ্ট সাহিত্যের
ভাব সম্পূর্ণরূপে প্রকটিত হর না।

ভাবতীর সঙ্গীতে ঘরোয়ানার চলন বিশেষ ভাবে দৃষ্ট হয়।
ঘরোয়ানার উদ্দেশ্য কি এবং তার কি কি বিশেষত্ব থাক্লে একটি
ঘরোয়ানার স্পৃষ্টি হয়, তার দিকে দৃষ্টি না রেখেই ভিন্ন ভিন্ন
ঘরোয়ানার স্পৃষ্টি হয়েছে বেশীর ভাগ ক্ষেত্রে। বনেদী পরিবারে
ঘর বা বাড়ী ভাগাভাগী হ'লেই পরিবারের বংশভাত পরিচয়
বেমন আলাদা হয় ভেমনি গায়কের সামান্ত মতভেদ ভিন্ন
ঘরোয়ানার স্পৃষ্টি অমুসক। আর নিছক গায়কের মত ভেবে ভিন্ন
ঘরোয়ানার নিদর্শন হওয়া উচিত নয়।

সঙ্গীত সমাজে প্রকৃত কঠেব বিনাশ সাধন হয়েছে আনেক ক্ষেত্রে অবোয়ানার গায়কের বিশেষ্ড দেখাতে গিয়ে। শুকুজী চয়তো যে কোন কারণে হোক তাঁর গলার অর মিট্ট রা অবলানিত্যের মধ্য দিরে প্রকাশ করতে পেরেছেন বা পারেননি, কিছ তাঁর গাণ্ডিত্য ও শিল্পকৃশলতার দারা প্রতিষ্ঠা লাভ করেছেন। কিছ শিধ্য তার অবোয়ানার বিশেষ্ড দেখাতে গিয়ে তাঁর নিজের ক্ষকঠেব অপব্যবহার করেছেন, এরপ দৃষ্টান্ত বহু দৃষ্ট হয়। যে কোন বিষয়েই হোক গুণ অর্থাৎ ভাল কিনিয় নকল করা বড়ই শক্তঃ কিছে ধারাপটা নকল করতে বেশী সমন্ন লাগে না। তাই ওক্ষীর শিল্পকৃশলতা ও পাণ্ডিত্য অর্জন করার চেয়ে তাঁর দোব-ক্রটিওলি বেশী বিভাষান দেখা বার প্রক্ষায়ক্ষমে।

আমাদের নেশে ও অভাগ্য দেশে সঙ্গীতের অনপ্রিরভা দিনের নিন বেডেই চলেছে। সাধারণের দৃষ্টি শিল্পীর কঠের প্রকালিত্য ও অরসাধনার দিকে সচেতন হ'ছে। এই অরসাধনার বিবরবর্গ নিরে পাশ্চাত্য দেশে বৈজ্ঞানিক পছতিতে বংগ্র্ট্ট গরেষণা হরেছে এবং আজও হ'ছে। এ সম্বন্ধে তাঁবা বহু নিদেশ পুল্পিকাকারে দিরেছেন ও দিছেন। বাঁবা এ বিবরে গবেষণা করেছেন তাঁ দর অভিজ্ঞতা পুখারুপুখারণে বিনা বিধার শিক্ষা দিছে পরবর্তী যুংগর কর্মাদের প্রতি। পাশ্চাত্য চিকিৎসকর্পণ ও তাঁদের চিকিৎসার পেশা এই বিষয়বল্পর উপর নিবন্ধ রেখে তাঁবা গায়কদের কঠসাবনার কাজে সভারতা করেন। এই ভাবে অকুসন্ধিৎস্থ শিক্ষাবিশ্বণ বিশিষ্ট শিল্পিগণ ও কঠসাধনার শিক্ষকপন, বাঁবা নিজে গলার শাবীবিক, বৈজ্ঞানিক ও চিকিৎসা বিষয়ক শিক্ষা পুর্ণভাবে নেননি, তাঁবা চিকিৎসকের সাধ্যার প্রত্যক্ষ কঠসঙ্গীতের সাধনার পথ ও প্রতি অকুসন্ধান ক্রমে লিপিব্রু করেছেন ও শিক্ষা দিরেছেন। কল্ভঃ কঠগাধনার বিশেব উন্নতি পরিলক্ষিত হরেছে।

আমাদের দেশে এই স্বরসাধনার পছতি সম্বন্ধে অনুস্থান করতে জানা বার বে, ক্রটিপূর্ণ গলার স্বর ক্রটিপূত হরেছে শিক্ষা-শুকুর উন্নত ধরণের শিক্ষকভার। তাঁরা বলেন, কোন এক বিশেষ

ধরণের শিক্ষা পদ্ধতি আছে যার দারা এই দোবক্রটিযুক্ত গলার ছব গুৰু খবে পরিণত হয়। কিন্তু সে সব শিকাওকৰ নিকট গিরে অভুসদ্ধান কংলে তাঁদের নিকট হ'তে গলার খবল সাধনার পদ্ধতি ছাড়া অক্স কোন, বিশেষ ধ্যুপের পদ্ধতির আভাস পাওয়া ষার না। এ বিষয়ে আবো বিশেষভাবে অমুসন্ধানের পর জান। বায় বে, স্থকণ্ঠ ভগবানের দান। বে 'সব স্বর ক্রটিযুক্ত তা স্থক হতেই এবং ভা ভবিষাতে ঠিক হওয়ার কোন সম্ভাবনা থাকে না। ভবে ব্যক্তিক্রম হিদাবে কোন কোন ক্ষেত্রে কোন শিলীর গলার শিল্পন্দতা সাধনাৰ দাবা পৰিবৰ্দ্ধিত তথেছে। কিন্তু ঠিক কি প্ৰভিতে তা সমুদ্ধ হয়েছে সে বিষয়ে সেই শিল্পী নিজেই জানেন না। অনেক সময় আমরা শুনি বে ওস্তাদরা তাঁদের বিশেষত বকার রাধার জন্ম তাঁরো তাঁদের পদ্ধতি কা'কেও জানতে দেন না। কেবলমাত্র তাঁদের নিজের পুত্র বা পুত্রবং শিষ্য ছাড়া। কিছ সে ক্ষেত্ৰেও দেখা বাব বে পিতার কঠে বে শিল্পকৃশলতা স্ববচাত্র্বতা তাঁব পুত্র কিংবা পুত্রবৎ শিষ্যের কঠেও নাই। অবশেষে তাঁরা খীকার করতে বাধ্য হন তাঁদের খবসাধনার দুরদুষ্টির অভাব এবং মনে করেন স্থাহঠ ভগবানেরই দান। পাশ্চাত্য সঙ্গীতবিদ সম্বন্ধেও তাঁরা একই মত পোষণ করেন।

পাশ্চাত্য দেশে একটি গবেষণাকারীর দল বাঁদের মধ্যে বিশিষ্ট সঙ্গীতজ্ঞ, কণ্ঠধনি শান্ত্রের বিশেষজ্ঞ, শ্রবণশান্ত্রের বিশেষজ্ঞ শরীবব্যবচ্ছের বিভাবিদ শারীরিক বিভাবিদ প্রভৃতি বিশেষজ্ঞের সাহাব্যে
গবেষণার বারা কণ্ঠসাধনার ও স্বরসাধনার বে সব তথ্য আবিকার করেন, তার হারা ভগবান প্রদন্ত কণ্ঠস্বরের যুক্তি হিল্ল হরে বার।
ভবে কণ্ঠস্বরের বে ওণাগুণ থাকে তা ভগবান প্রদন্ত বলা বেতে
পারে। তাকেই বৈজ্ঞানিক পদ্ভিত্তেও কণ্ঠের ধ্বনিশান্তের দিকে
নঞ্জর বেথে শিক্ষিত করতে পারলেই স্করেরণে ও স্মন্ত্র্ভাবে স্কণ্ঠ
অর্জন করা বার; বৈজ্ঞানিক গবেষণার ক্ষান্ত্রন্ত্রণ এই সিদ্ধান্তই আক্ষ
প্রভিতিত।

থবন প্রশ্ন উঠে, ভারতীয় কঠদসীতের স্বর্থাধনার পাশ্চাত্য—
বৈজ্ঞানিক প্রতি অবলম্বন করা বার কিনা। কারণ এই বৈজ্ঞানিক
প্রতি পাশ্চাত্য সঙ্গীতের সঙ্গে ওতপ্রোক ভাবে জড়িত। তাই
সেই প্রতি ভারতীর কঠদসীতের স্বর্গাধনার গ্রহণ করলে ভারতীয়
কঠদসীতের আসস রূপ বিনষ্ট হ'বে, এরপ ধারণা অনেকেই পোরণ
করেন মনের মধ্যে। আর ভারতীর সঙ্গীতের ক্লেন্তের ঠিক এরপ
কোন গবেষণা হরনি পূর্বে। তবে আজ কেন্দ্রীর সরকারের সংস্কৃতি ও
বৈজ্ঞানিক গবেষণা-দপ্তর ভারতের বিশিষ্ট মেধাবীযুক্ত বুবক শিল্পীদের
ছাত্রবুভি দানের বারা এই গবেষণার সাহাব্য করছেন অভিজ্ঞ শিক্ষের সংস্পর্ণে রেখে এবং তবেই আজ এ বিষয়ে অমুসন্ধান
আরম্ভ হয়েছে। পাশ্চাত্য দেশে অল্পান্ত বিষয়ের উন্নভির সঙ্গে সমতা বজার রেখে কণ্ঠসঙ্গীতেরও বৈজ্ঞানিক গবেষণার বারা উন্নভি সাধন করা হয়েছে। ভাই ভারতীর কণ্ঠসঙ্গীতে স্বর্গাধনার ক্লেত্রেও উন্নভি সাধিত হওয়া দরকার।

থ বিবরে অনুসন্ধান বারা জানা বার বে, জামাদের ভারতীর কঠনসীতের অবসাধনার বৈজ্ঞানিক পদ্ধতি অবসন্ধনে পাশ্চাত্য বসীতের প্রাভাব জামরা নিজে প্রবেশ না করালে জাশার কোন সভাবনা নাই। এ বিষয়ে অভাত মুক্ত ছাড়াও সাধারণ বুছি
দিয়া আমরা দেখতে পাই বে কোন প্রকার শারীরিক অক্স্ছতা
পাশ্চাত্য বৈজ্ঞানিক চিকিৎসার তার শ্রীরের রূপ বদল হর কিনা।
আর বে বিষয়ে বে দেশে গবেষণা বেনী হ'রে তার উন্নতি সাহিত
হরেছে ঠিছ সেই বিষয়ে সেই দেশের নির্দেশ বা প্রামর্শ পৃথিবীর
সর্বদেশের সর্বলোকই গ্রহণ করে থাকে। তবে এই কণ্ঠসঙ্গীতের
ব্রসাধনার ক্ষেত্রেও তাঁদের নির্দেশ কোন ক্ষতির কারণ হওয়া উচিত
নয়। মানুবের দেহের আভ্যন্তবীণ গঠন ও খাস-প্রখাস প্রশালী
প্রাচ্য বা পাশ্চাত্য ভেলে ভিল্ল নয়। যে প্রথায় পাশ্চাত্য দিলীর
কণ্ঠবর সমৃত্ত হয় ঠিক সেই প্রথার প্রাচ্যের শিল্পীর কণ্ঠবর সমৃত্ত
না হবার কোন কারণ নাই। তবে প্রত্যক্ষ ভাবে অভিনত
ব্রসাধনার ও ধ্বনি প্রবণশাল্পের শিক্ষকের নিকটেই শিক্ষা গ্রহণ
সহারক, অভ্যথার বিপরীত ফল দৃষ্ট হয়।

——নিমাইটাদ বড়াল।

রেকর্ড-পরিচয়

"হিজ মাষ্টার্গ ভয়েগ" ও "কলম্বিয়া"র প্রকাশিত নতুন রেকার্ডর পরিচয়:—

হিজ মাষ্টার্স ভয়েস

N 82831—সতীনাথ মুখোপাধ্যায়ের গাওয়া নতুন ধরণের আধুনিক গান—"তুমি মেবলা দিনের" ও "তু'টি ঐ কাঁকনের ছক্ল,"

সঙ্গীত-যন্ত্র কেনার ব্যাপারে আগে
মনে আসে ডোয়াকিনের



কথা, এটা
খুবই খাভাবিক, কেননা
সবাই জানেন
ডোয়াকিনের
১৮৭৫ সাল
থেকে দার্ঘদিনের অভি
ভভার ফলে

তাদের প্রতিটি যন্ত্র নিখুত রূপ পেরেছে। কোন্ করের প্রয়োজন উল্লেখ ক'রে মৃদ্য-তাদিকার জন্ম দিখুন।

ডোয়ার্কিন এণ্ড সন্ প্রাইভেট লিঃ শোক্ষ:--৮/২, এন্প্র্যাদেড ইন্ট, কলিকাডা - ১

. । अस्य अस्य अस्या

N 82832—সুমধুব ছ'খানি আধুনিক গান "জনপদের ছাড়িবে সীমা" ও "বপ্ল বাঙাতে কেন এলে"—গেরেছেন ডক্লণ বন্দ্যোপাধ্যার।

N 82833—৶প্রকুমার রাবের জনপ্রির ছ'টি কবিতা "বাব্রাম সাপুড়ে" ও "এই ছনিয়ার সকল ভালে।"—প্রের মারাজালে পরিবেশন করেছেন সনৎ সিংহ।

N 82834 — ভামল মিত্রের কঠে ছল্মর ছ'টি আধুনিক গান
— "হরতে। দেদিন আগের মত" এবং "ভালোবাস তুমি শুনেছি
অনেক বার।"

N 82835—5ণ্ডিলাস ও জগলানন্দ দাস বচিত ত্'বানি মধুব কীৰ্তনগান "স্থি, কচিও নিঠ্ব আগে" ও কেন গেলাম বন্ধনায়"— গেবেছেন জীণতী স্থ্ৰীতি ঘোষ।

N 76086 এবং N 76087 বেকর্ড ছ'ধানিতে "শ্লীবাবুর সংসার" বাণীচিত্রের গানগুলি শ্রিবেশিত হরেছে।

কলপ্রিয়া

GE 24957— ৈশলেন মুখোপাধ্যাবের গাওয়া ত্'থানি আধুনিক গান—"নাগবের ত'টি টেউ" ও "ওগো লজ্জাবতী।"

GE 24958—"এই রাভ এই গান এই সন্ধা।" ও "নীল প্রশাপতি"—শাধুনিক গান ছ'খানিকে পরিবেশন করেছেন কুমারী গায়ত্রী বস্ত।

GE 24959—জ্রীমতী বেলা মুখোপাধ্যারের মধুর কঠের জাধুনিক গান—"কেন চলে বাবে" ও "ফুলের কানে কানে।"

GE 30422— 'ঠাকুর ছরিদাস' বাণীচিত্রের ছ'বানি গান গেবছেন ধনপ্তর ভটাচার্য ও হেমস্ত মুখোপাধ্যার এবং অভাত বিল্লীরা।

GE 30425—মানা দেও লভা মঙ্গেশকবের কঠে দীপ ছেলে বাই" বাণীচিত্রের হ'ধানি জনপ্রিয় গান।

षागात कथा (৫৪)

কুমুম গোস্বামী

প্রাটিক কুমুমকলি জীবনলৈশবের সহজ হাসির দিনভালিতে
ফুটে উঠেছিল পরিবারের একটি বসমধুর পরিবেশের
প্রভাবে। জন্ম হন্ন বাংলা ১৩৩১ সালের ২৮শে ফান্তন ঢাকার।
পিতামহ শবংচন্দ্র গোন্থামী ছিলেন ঢাকার স্থপরিচিন্ত সেভারী। তাঁর
কাছেই প্রথম সংগীত শিক্ষার গোড়াপত্তন। পিতা হরিপ্রসন্ন
গোন্থামী ভাল কার্তন গাইতেন, তাই সংগীত চর্চার আদিপর্বেই
কার্তন নামগান দিয়েই আরম্ভ। এদিকে আবার মাতা লাবণ্যপ্রভা গোন্থামীও পুর ভাল গাইতে পারতেন কীর্তন ভন্তন। কিছ ভংকালীন রক্ষণশীল পরিবারের পরিবেশে থেকে আসরে গান করার বেওরাল ছিল না, তাই কলাকে শিক্ষার মধ্যে দিরেই মাতার সংগীতচার সীমিত হয়েছিল। আন্দেশব বৈক্যর সাহিত্য ও কীর্তন
সংগীত পারিবারিক প্রাচীন ঐতিহ্-স্ত্রে স্থভাবতই মানস গঠনে বিশেষ সহায়তা করে। আজও মানে মারে স্থাভি-রোমন্থনে মনে
পড়ে পিতামহ ধরেছেন সেতারে তান আর পিতা মন্দির। হাতে
গাইছেন কীর্তন পান।



কুমুম গোস্বামী

বাল্যশিক্ষার প্রপাত হলো ঢাকার রাধান্তক্ষরী গার্ল: হাইস্কুলে। এথানে পরিচয় হয় বিজনবালা ঘোৰ দক্তিদারে সঙ্গে। ঢাকার বছর চাবেক লেখাপড়া করার পরে পরিজনদে সঙ্গে চলে বেভে হলে। ভখন নারাহণগজে। এখানে মরগা গাল্স হাইস্কুলে দশম শ্রেণা পর্যন্ত পড়ার স্থাবাস হয সালে পরিবারবংর্গও সঙ্গে চলে আসং হলো কলকাতায় বাগবালারে মাতুলালয়ে। হু' বছ^{র প} কলকাতা বিশ্ববিভালয়ের প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হওয়া সৌভাগ্য লাভ হয়। যদিও লেখাপড়ার মধ্যে সংগীতচচ ওি বা ৰাম্বনি, তবুও এর পর থেকে বাসন্তা বিভাবীথি সংগীত বিভাল ঠিক ধারাবাহিক শাস্ত্রীর পদ্ধতিতে স্গীত শিক্ষার অ্যোগ ফরেছে বাসস্তী বিজাবীথিতে ভতি হওয়ার পরীক্ষা সংগীতবিদ রামকৃষ্ণ মিট গ্রহণ কালে অভ্যস্ত সহটে হয়ে একেবারে প্রথম শ্রেণীতে ভ^{তি} অনুমতি দান করেছিলেন। এ সময়ে অস বেলল মিউলিং কন্দারেন্স, বেঙ্গল মিউ/জ্বক কন্ফারেন্স প্রভৃত্তি বস্ত সংগী^হ व्यक्तिविशिष्ठांत्र व्यन् वार्य करत व्यवस (अंगीत मचान ७ भूतकात गरि করার স্থযোগ ঘটে।

ব্যক্তিগত ভাবে গিরিকাশংকর চক্রবর্তী, উমাপদ ভটাচার্য বামিনী প্রকাপাধ্যায়, বীরেক্রচক্র মিজ, ভানসেন পাণ্ডে প্রস্কৃ বন্ধ সংগীত-শিক্ষকের কাছে তালিম নেওয়ার স্থবোগ আংসে, কিছ সুগীতিকার বিদ্রোচী কবি কাজী নজকুল বে দিন স্থ্য দিয়ে শিখিয়ে দিয়েছেন তাঁর নিৰে গান লিখে, ছব্টিত গান সে কথা ভোলাব নৱ। হিন্দুস্থান বেক্ডিং কোম্পানীতেই নক্তক্ষের সংস্পর্শে আসার স্থবোগ হয়। ১১৩৮ লালে প্ৰথম হিন্দুস্থানে 'সই লো আমি কৰি কী উপায়' এবং 'ভোমায় বে বধু আমি বাসিরাছি ভাল' গান ছ'খানি বেকর্ড হবেছিল। প্রথম বচৰে ছাট্ৰানার মত বেকর্ডে প্রায় পাঁচ শত টাকা পারিশ্রমিক লাভ রয়। এই সময় শচীন মেবংর্মণের সঙ্গে বিশেষ পরিচয় হওয়ায় প্রীগীতিব প্রতি পূর্বের দরদ আরো প্রসারলাভ করে। নজকলের চেষ্টায় মেগাফোন বেকর্ড কোম্পানীতেও যোগাবোগ হয়। 'মোর তঃখনিশি কবে ১বে ভোর ও সন্ধ্যা খনালো আমার বিজন খরে'— সে সময়ের হু'টি জনব্বিয় কাব্যসংগীত বেকডিং হরেছিল। এই সময়ে ভগানী দাসের দক্ষে নীলিমা দাস চল্মনামেও কয়েকটি বেকজিং হয়। দিলীপকুমার রায়ের সার সংযোজনায়ও অনেক রেকর্ড হয়। হিন্তান, মেগাফোন, ভিজ মাষ্টাদ ভবেদ প্রমুধ বেকর্ড কোম্পানীর শিল্লিম্বরণ কীর্তন, পল্লীগীতি, নজকুলগীভি, আধুনিক, ঝুমুর, রাগপ্রধান, ভাক্তপ্রধান, ধ্বদংগীত, ভাটিরালী, বাউল, ভামানংগীত, ভবন, গঞ্জ, গীত, সাবি ও অনেক ধারার বাংলা চিন্দী গানের বেকর্ড হমেছে।

দর্বপ্রথম কেভাবে গান প্রচায়িত হয় নৃপ্তেক্তর্ক চটোপাধ্যায় পরিচালিত গ্রুণাত্ব আসরে; তথন বিভাবীধির ছাত্রী। এর পর গীহছবি প্রভৃতি প্রভান ছাড়া নিয়মিত বেভাবে সংগীত পরিবেশন চলেছে। বর্তমান সংগীত লিয়ি-জীবনের আর একটি উল্লেখবাগা দিক হচ্ছে চলচ্চিত্রে নেপথাে (প্র বাক) সংগীত লিয়িরপে স্থনাম অর্জন। সেনমর বন্দী কথাচিত্রের চোথে চোথে বাধি হার বে, তবু তারে ত্লে থাকা বার বে'—গানটি এতই লোকপ্রিয় হয়ে ওঠে বে পথে ঘাটে তর্ত্বপদের মুখে বিশেষ ক'বে বা অলস বিচানায় ওয়ে তর্ক্বাদের গাইছে শোনা বেতাে। এটি গিয়ীক্র চক্রবর্তীর স্থরে জগল্মর মিত্রের সঙ্গে বৈত কঠে গীত। চলচ্চিত্রে প্রথম অবশু 'শকুস্থলা' চিত্রে মীরা দেবীর হয়ে নেপথাে গান করার স্থবােগ হয়। এর পর থেকে রাইটাল বড়াল, অনিল বাগচী, দক্ষিণামাহন ঠাকুর প্রমুখ বছ বিশিষ্ট সংগীত পরিচালক তত্ত্বাবধানে এপার ওপার, বন্দী, ভাততি, কবি, রামের স্থাতি বিরাল বাে প্রভৃতি অসংখা ছায়াচিত্রে নেপথা সংগীতে অংশ গ্রহণ করার দৌভাগা হয়েছে।

সোদপুরে মহাত্মা গান্ধীর সঙ্গে একবার সাক্ষাতে ভিনি তাঁর প্রার্থনা-সভার ভজন গানের জন্ম আমন্ত্রণ জানিবেছিলেন কিছু কার্যক্রেরে বেতে পারা বারনি। পণ্ডিচেরীর মাঁ একবার গান ওনে তল্পর হরে পড়েন। ১১৪৭ সালে মহারাক্ষা কুচবিহারের জন্মোৎসব-সভার আমারিত হয়ে বে সম্মান ও সমাদব লাভ ঘটেছে ও একজন বাঙালী মহিলা শিল্পী হিসেবে অভাবনীর! ভারতের বিভিন্ন ছালে বধা বিলাসপুর, নাগপুর, পণ্ডিচেরী, বারকা, বোদাই, মণুরা, বুলাবন, নববীপ, দিল্পী ও কলকাতার বিচিত্রাম্প্রানে সংগীত পরিবেশনের প্রভৃত প্রশাসা ও অভিনন্ধন আজও প্রতিদিনের জীবনবাত্মার পথে সংগীত সাধনার ও ছয় বাগ ছত্তিশ বাগিণীর পর্যালাভনার সদা ব্যাপ্ত বেথেছে। সংগীতের প্রবাদক ভীবনকে আলোক-উভাসিত ক'রে অজ্ঞান। একটি সুবর্ণ-সিংহছার খুলে দিয়েছে।

দেই প্রাগৈতিহাদিক মেয়ে

বিমলচন্দ্র সরকার

অন্ধনার গলিটার ররেছে। পাঁড়িরে
ভানি তুমি প্রাগৈতিহাসিক সেই মেরে
কামনার বহিংলিখা নরনের ছারে
প্রতিক্ষিতা আজ রূপের বেসাজী নিরে
আহা! ক্ষমার ভ্যাগে মৃতিমজী প্রতিমা নিক্ষেরে বিলিয়েও ঘুনাই করো জ্মা!
ভূমি ঢাকার সেই ছাত্রী মালভী সেন
বিগত দাকার কি হ'ল কি করে খেন।

ছরছাড়া ভেসে এসে এই ক'লকাতা হলে বাজহারা মামুবেরই আধিতা বেঁচেও মরলে ভূমি ওদের চক্রান্তে পসারিণী গো দাঁড়ালে আসি ংধপ্রান্তে! নিজেবে আন্ততি দিরে পাশ্ব কামনায় সেবিছো সমাজ ভূমি আল মমতার ভব্ও তোমার ওরা করে ওর্ ঘুণা জানি মূল্যে শোধ হবে না তোমার দেনা।

অমৃত ছড়িরে পাও গুরু অত্যাচার
হে ক্ষমার প্রতীক ! তোমার নমছার ।
তোমার বমনী শিরা ও উপশিবার
ভানি দীতা-সাবিত্রীর বক্ত আব্দো বর
শক্তির অংশ তৃমি দেবী মধুমিতা
সমাক্ষক্যাণী ওগো ত্যাগের সবিতা !
দীপাবিতা তৃমি গো মহিমার ভাষতী
ভানাই ভোমারে শত সহল্র প্রণতি ।



উল্লেখযোগ্য দাম্প্রতিক বই

ঢাকাই পল্ল

কাই গল চলভি গল নয়—থোল গল। অপবাদ আছে,
বাঙালী শুধু কাঁদতেই জানে, হাসতে জানে না। কিছ ঢাকাই
গল প্রমাণ করবে বাঙালী শুধু কাঁদতেই জানে না, হাসতেও জানে
এবং সঙ্গে সংস্প হাসাতেও জানে। ঢাকাই অমৃতি, ঢাকাই গহনা,
ঢাকাই লাড়ী, এব সব কিছুব মধ্যেই ব্যেছে বৈশিষ্ট্যের ছাল।
ঢাকাই গল—এব মধ্যেও ফুটে উঠেছে সেই বৈশিষ্ট্য। পাঠক কছ
নিঃখাসে পড়তে পারবেন। লেখক প্রীঅবিনাল সাহাও বাঙলা
সাহিত্যে অপবিচিত্ত নন এমন কি নবাগতেও নন। তাঁব বচনার
সঙ্গে বাঙলাদেশের পাঠক-পাঠিকার পবিচয় নেই! লেখার মধ্যে
লেখকের বর্ণনাভকী, রসস্থিত ও বিভাসচাতুর্ব প্রশাসার দানী বাখে।
প্রকাশক ভারতী লাইবেরী, ৬ বিভাস চাটুজ্যে প্রীট। নাম ছুই
টাকা মাত্র।

রোদ-জল-ঝড

মানবজীবনে ক্ষররোগকে একমাত্র ভুলনা করা চলে শনির দৃষ্টির সঙ্গে। 'এই রোগের আক্রমণ মামুবের জীবনকে কভখানি বে বিবিয়ে দিতে পারে সে বিবরে কেউই অবিদিত নন। এর স্পার্শ মায়ুবের জীবনীশক্তি তিলে তিলে ধ্বংদের দিকে এগিয়ে যায়। বিশেষ্তঃ মধ্যবিত্ত পরিবাবে এই রোগের আবির্ভাব বিধাতার চরম অভিশাপেরই নামান্তর। পাৰকাল চিকিৎসাশা:ত্ত্ৰৰ ক্ৰমোৱভিৰ ফলে এই ৰোগ দুৱীকৰণেৰ নানা পস্থা উন্থাবিত হরেছে সত্য, কিছু এর ফলে মধ্যবিত্তদের যে থব বভ বৰুমের কোন উপকাব হরেছে এমন কথা জোর দিয়ে বলা বায় না। क्न ना, अत्र वात्रजात वहन क्या माधादण मधादिख: पत्र भाक खानाचक ব্যাপার। তাই মধ্যবিত্ত পরিবারে এর আবির্ভাব এক বিরাট ভিজ্ঞ:সা চিক্রের মত, এই রোগ আদে অপ্রতিরোধ্য, এক চরম সর্বনাশের বার্তাবছ রপে, এই রোগ বিশায় নের অশেষ বিপর্যক্তে সংসারে স্প্রান্তিরিত ক্লবে—উপরোক্ত পটভূমিকা অবলম্বনে রোদ-জল-ঝভ উপক্রামটির স্টি। প্রসিদ্ধ সাংবাদিক দক্ষিণারগুন বস্থ এর শ্রষ্টা। সাধারণ মধ্যবিত্ত পরিবারের এই অনস্ত প্রশ্নটি বথেষ্ঠ দক্ষতার সঙ্গে পাঠক সাধারণের সামনে তুলে ধরেছেন দক্ষিণারঞ্জন শাস্তম্ব ও মঞ্জীকে কেন্দ্র করে। পঞ্চানন ও ফুরবার চরিত্র হুটি স্টে করে বথোচিত দুচ विनर्भ ७ पित्रमन्दर्शना मन्त्राखात्व भविष्ठ विरद्धम् विभावस्था । চিকিৎসালরের পারিপার্ষিক পরিবেশটিও লেখনীর মাধ্যমে সুচিত্রিভ হরেছে। গ্রন্থটির পাতার পাতার লেখকের মানব-দর্গী মনের আভাস

পাওয়া বার, মামুবের অসহার করুণ অবস্থা লেথকের মনে ব্যথার স্ট্রিকরে। হংখের ত্রিবাম রাত্রি অতিক্রম করে আনন্দের প্রভাত-স্থেই আলোকরশ্যি মানব সমাজ প্রাণ ভরে উপভোগ করুর—লেথকের এই মনোবাদনাই প্রস্থাটির পাতার পাতার ফুটে উঠেছে। প্রকাশক—পপুলার লাইবেরী ১৯৫। ১-বি কর্ণভরালিশ ফ্রীট। দাম সাজে চাংটাকা মাত্র।

বাঙলা সাহিত্যের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস

অধ্যাপনার ক্ষেত্রে প্রীভূদেব চৌধুরী একজন যশসী পুরুষ: সাহিত্যের দরবারেও তিনি আগ্রহ নন। সাহিত্য বিষয়ৰ তাঁর বহু রচনা বাঙলা সাহিত্যকে হথেষ্ঠ সমুদ্ধ করেছে। বাঙগ সাহিত্যের সংক্ষিপ্ত ইতিহাস তাঁর উল্লেখবোগ্যা রচনাবদীর সাম্প্রতিং নিদর্শন। সাহিত্যের সঙ্গে মান্তবের অবিচ্ছেত বোগ। সাহিত্যে ইভিহাস মায়ুবেরই ইভিহাস। মানবসভাতার সূচনাকাল থেটে বর্তমানকাল পর্যন্ত ব্যাপক জহবাতার ও ক্রমাগ্রগতির পূর্ণান ইতিহাস ওতপ্রোত ভাবে জড়িরে আছে সাহিত্যের ইতিহাসে সংক। এক-একজন সাহিত্যকার জাপন জাপন বুগকে—যুগ সভাতাকে ফুটিয়ে ভোলেন আপন আপন সাহিত্যে, বিভিন্ন কাটে সাহিত্যিকদের লেখনীর কল্যাণে বিভিন্ন যুগের, বিভিন্ন সভাতা ছবি ধরা পড়ল সাহিত্যে, এমনি করেই ২ন্ত শতাকীব্যাপী জন্মবাত্র এবং নৰ নৰ স্থাইৰ ফলে যে ইতিহাস পজে উঠেছে—সেই ইভিহাসে মধ্যে দিয়ে ফুটে উঠল সভ্যভাব সর্বকালের এক সার্থক আলেখ্য মামুবের ভার-ভারা, আনন্দ-বেদনা, চিম্বা-কল্পনা প্রকাশ কর্ছে সৰ্বশ্ৰেষ্ঠ সহায়ক হচ্ছে। আলোচ্য প্ৰন্তে অধ্যাপক চৌধুনী বাঙলা দেশ বাঙ্কলা ভাষা, চর্যাপদ বাঙলা সাহিত্যের আদিম মুগ ^{(প্রে} মুকান্ত ভটাচার্ব পর্বস্ত বাছলা সাহিত্যের এক আলোকোজ্জল যুর্গে বিবরণ লিপিবছ করে গেলেন। প্রস্থৃটি যুগপং পাঠক সমাজ [ং] ছাত্ৰ সমাজের উপকার সাধন করবে। সাধারণ সাহিত্য পা^{ঠকে} দরবারে আমাদের সাহিত্যের সুদীর্ঘকালের ইভিহাসের আলোচন ৰত প্ৰচাৰিত হয় ভতই মঙ্গল। সমগ্ৰ গ্ৰন্থটি গ্ৰন্থ কাৰেৰ ^{নৈপ্ৰেৰ} বাক্ষ বহন করছে। গ্রন্থটি অসংখ্য তথ্যের আকর, ^{বার্চন} সাহিত্যের বিরাট ইতিহাস অন্ত্রসাধারণ দক্ষতার সঙ্গে পরিবেশি^হ হরেছে। লেখকের আলোচনা বধেষ্ট গুরুত্বপূর্ণ সারগর্ভ ও মনোরম এই প্রছের বছল প্রসার ও প্রচার আমরা কামনা করি। প্র^{কাশ}

বুকলাণ্ড প্ৰাইভেট লিমিটেড। ১ শঙ্কৰ খোষ লেন, কলকাতা-৬। দাৰ সাত টাকা মাত্ৰ।

প্রেমতারা এবং এডটুকু আশা

হাজার হাজার মাতুবকে অফুরস্ত আনক দিয়ে চলেছে একদল निजी विপामय मुखायनांटक (চাথের সামনে রেখে। সার্কাদের শিলী। প্রতি মুহুর্তে এরা জীবন-ছর্বোগের মুধোমুখী গাঙিয়ে কিছ দেই অবস্থায় দর্শক দরবারে এদের আনন্দরস পরিবেশনে এতটকু ছেদ পড়ে না। শিল্পী হিসেবে এদের কুতিত্ব কোন অংশে কম নমু এবং অনেকের থেকেই বেশী। কেন না চরম বিপদের সামনে ¶।ডিয়ে 'অসংখ্য মান্তবের মনে বারা নিয়ত আনস ভুগিয়ে চলছে ভারা বে কতথানি শক্তিমান, সে বিষয়ে সন্দেহের অবকাশ থাকতে পাবে না। কিছ ভাব বিনিমরে এরা কি পার? এতথানি ছর্জর সাচস কঠোর পরিশ্রম পরিপূর্ণ নিষ্ঠা দিয়ে এরা বে কাল করে থাকে ভার জন্তে এদের জীবনে কোন নিরাপতার প্রতিশৃতিটুকু পর্যস্ত तिहै, (व क्टूर्ड अवा कोड़ार्क (बरक विषात तिव तिहै सूट्राईहै তো এরা মুছে বার মাতুষের স্থৃতি থেকে, এদের অসামাত্র শির্মনৈপুণ্য মানুবের শ্বতির ইতিহালে পায় না এতটুকু স্থান। এই পটভূমির ভিত্তিতে প্রথমোক্ত উপকাসটি বচিত হয়েছে বাঙলার প্রতিভামরী সাহিত্যশিলা এমতী মহাখেতা ভটাচার্যের লেখনী থেকে। দ্বিতীয়োক্ত উপতাসটিও তাঁব লেখনীকাত। প্ৰথম উপতাসটিতে লেখিকা সার্কাসশিল্পীদের জীবনের উপান-পতন চাওৱা-পাওরা লাভ-লোকদান এবং স.বাপৰি ভালের জীবনবৈশিষ্টাকে লেখনীর মাধামে রণ দিয়েছেন। সার্কাদ-জগতের পূর্ণাঙ্গ এক আভান্তরীণ চিত্রও গ্রন্থটিতে বথেষ্ট নৈপুণ্যের সঙ্গে পরিবেশিত হয়েছে।

ষিতীয় উপশাসটিতে দেখা যাছে যে এই যাত-প্রতিঘাতময় জগতের কন্টকাকীর্ণ পথ দিয়ে মায়ুব হাসিমুখে এগিরে চলেছে আশার একটুথানি আলো অমুসরণ করে। মায়ুবের জীবনীশক্তির বৃদ্ধি প্রাপ্তিতে এই একটুথানি আশারই প্রভাব অবর্ণনীয়। কিসের আশা? বাঁচবার আশা। জগতের বিরাটণ্ণ আল আর মায়ুবের কাছে অমুপলন্ধ নর। জগতের মায়ুব অপতের সঙ্গে তালে তাল বেখে চলতে চার, গড়ে তুলতে চার তারও একটি নিজম্ব জগত। ছোট হোক ক্ষতি নেই, কোণে হয় তো হোক না, তবু তো তার নিজম, যেখানে তার সঙ্গে একত্তে বাসা বাঁধার আনন্দ, প্রশাস্তি, নিশ্চিম্বতা এই স্কৃষ্টির ম্বপ্র অবিকার করে আছে মায়ুবের মন, মানবচিন্ত গঠনব্যাকুল। এ একটুথানি আশাকে অবলম্বন করেই মায়ুব গড়ে তুলতে চার তার আপন জগও। দেখা বাছে বে জীবনের বেঁচে থাকার ক্ষেত্রে এ এই টু আশার আনন্দ অসামান্ত। জীবনবাত্রার এক নিপ্ত হাস্তব চিত্র উপস্থাসটির পাতার পাতার মৃটে ওঠে।

উভর উপসাসই আপন আপন বৈশিষ্ট্যে ভাষর। ঘটনাবিকাস, চরিত্রস্টেতে, বর্ণনার প্রাঞ্জলভার লেখিকা অসাধারণ কৃতিখের পরিচর দিরেছেন। বঞ্চিত্র শিলিকুলকে সাহিছ্যের মাধ্যমে ভাদের বথাপ্রাপ্য সম্মান দিরে লেখিকা বহুজনের বস্তবাদ লাভ করবেন। লেখিকার বিক্তাসন্তসী অপূর্ব, প্রকাশ-দক্ষভা বৈশিষ্ট্যপূর্ব, আন্তরিকতা সাধ্বাদার্হ। প্রস্থাপ্রবিশ্যা বংগ্ট আবেদন বহন করে। প্রচ্ছেশিলিম্বর

দক্ষতার কম পরিচর দেন নি। প্রেমভারার প্রজ্নদশিলীর নাম জানা গেল না। এতটুকু জাশার প্রজ্বদ এঁকেছেন শ্রীপণেশ বস্থা। প্রেমভারার প্রকাশক এম, সি, সরকার রাগত সভা প্রাইভেট লিমিটেড, দাম—চার টাকা মাত্র। এতটুকু জাশার প্রকাশক— কক্ষণা প্রকাশনী, ১১ ভাষাচরণ দে স্থীট। দাম—ভিন টাকা মাত্র।

ক'টি কবিতা ও একলব্য

বর্তমান বাঙলায় কবিদের মধ্যে মঙ্গলাচরণ চটোপাধ্যার এক বিশেষ আসনের অধিকারী। বাঙলা দেখের শক্তিমান কবিদের মধ্যে তিনি ছক্ততম। বাঙলা কবিভার মানোরয়নের ক্ষেত্রও তিনি করেছেন বথেষ্ট সহায়তা ক'টি কবিতা ও একলবা তাঁৰ বৰ্তমান কাৰ্যগ্ৰন্থে। ক'টি কবিভা এবং "একলব্য" চৰিত্ৰকে কেন্দ্র করা একটি কাব্যনাট্য এই গ্রন্থের অঙ্গ। কবিভাওলি জাঁর বৈশিষ্টোর স্বাক্ষর বছন করছে, স্বকীয়তার আলোয় উজ্জল, ভার-প্রাচুর্বের দিক দিয়েও অসাধারণ। কবিভাগুলি বেন কবির অস্তুরের কোমলতা। পুৰিবীৰ প্ৰতি বিপুল ভালোবাসাৰ বৈচিত্ৰ্যের প্ৰতি व्यभीय वाकर्रावंत शक-शक्ति वन्छ पृष्ठीख, शक्नारतात कीरन लामन সমাক প্রাকৃটন ঘটেছে একলব্যের মধ্যে। ভাবের দিক থেকে বাজনার দিক থেকে প্রকালের দিক থেকে গ্রন্থখানি সর্বভোভাবে এক অভিনবত্বের স্পর্শ বহন করছে। अक्रम्भदेषि सम्बद्धिक, व्यक्तिमात्री यनामस्य जीबारमन कोव्यो। व्यक्तिमक- नामानाम বুক এজেনী প্রাইভেট লি:, ১২ বৃদ্ধিম চ্যাটার্মী টীট। দাম- হ'টাকা মাত্র।

রবীন্দ্রসাহিত্য সমালোচনার ধারা

সাহিত্যের মধ্যে দিরে জাতির জভে অনস্ত এবর্ষ রেখে গেলেন ববীন্দ্রনাথ। রবীন্দ্রসাহিত্য সারা জগতের সাহিত্যের বদ্বভাগুৰিকে করে তুলেছে সমৃদ্ধ থেকে সমৃদ্ধতর। রবীক্রনাথের অমুপম সাহিত্যকে কেন্দ্র করে দীর্ঘকাল ধরে বে সমালোচনার বিবাট ধারা বয়ে সেছে ভার ঘারাও সাহিত্য বিংশয ভাবে উপকৃত হরেছে, তার ফলে সাহিত্যের একটি বিশেষ দিকের হরেছে খাবোদখাটন। ববী-জনাথের সাহিত্যের আলোচনা করে ২ছ অন লেখনী ধারণ করে পরবর্তীকালে অভিজ্ঞ সমালোচক হিসেবে সাহিত্যের দরবারে বিশেষ ভাবে সমাদৃত হয়েছেন। বিদেশে এই জ্বান্তীর গ্রন্থের নমুনা জ্বামরা পেয়েছি (Shakespeare Criticism e Chaneer Criticism) विश्व विकास (मान हिक बड़े शवरनव গ্রন্থ এই প্রথম জনাল। এ জন্মে গ্রন্থবার প্রাবৃদ্ধিক ডঃ আদিত্য **ওহদেশার নি:সম্ভেদে আমাদের ধরুবাদার্ছ। বিভিন্ন যুগে** ববীন্দ্রনাথের বিভিন্ন সাহিত্য কোন রূপ নিষে ধরা পড়েছে বিভিন্ন সমালোচকের সামনে, এ সাহিত্য সমূহ কি প্রতিক্রিয়া সংগার কংল সমালোচকদের মনে, সমালোচনার ক্ষেত্রে রবীক্রসাহিত্য সমজে সমালোচকদের কি মনোভাবের প্রকাশ পাওয়া গেল, ভছপরি ব্ৰীজ্ঞসাহিত্য মূলবদ, ভাব, কল্লনা, বরণ, সাববস্তা, চিস্তাবারা কোন কোন সমালোচকের ছারা কি ভাবে বিংশ্লবিত হ'ল, ব্যাখ্যাত তল, আলোচিত হ'ল, এই সকল বিষয়ে আলোচ্য গ্রন্থটি পাঠ করলে পরিপূর্ণক্রপে আলোকিত হওয়া বার। এছটি প্রণায়নে প্রস্কার

যথেষ্ট আন্তবিকতা ও নিষ্ঠাব পবিচয় দিয়েছেন, প্রস্থকাবের প্রভুত শ্রম স্বীকার প্রস্থৃতিকে সর্বাঙ্গস্থকর করে তুলেছে। ১২৮০ থেকে তক্ষ ১৩৬০ পর্যন্ত এই দীর্ঘ জালী বছর ধরে ববীজনাথের সাহিত্যকে কেন্দ্র করে বে বিরাট সমালোচনা সাহিত্য গড়ে উঠল তার ইতিবৃত্ত এই একটি প্রস্থের মাধ্যমে মথেষ্ট স্বষ্ঠু ভাবে পরিবেশন করে প্রস্থকার শক্তির স্থাক্ষর রেখে গেলেন। প্রচ্ছেদিন্ত অক্ষন করেছেন শ্রমতা মৈত্রেরী দেবী। প্রকাশক—শভাবেষ্ট বৃক হাউস, ১৪ সাউধার্শিধি রোভ। দাম—সাত টাকা মাত্র।

সেখিন নাট্যকলায় রবীম্রনাথ

সাহিত্য সংস্কৃতির বে বিভাগে ববীন্দ্রনাথের স্কৃত্তীধর্মী হাতের ছোঁয়া লেগেছে দক্তে দক্তে দেই বিভাগ সমর্থ হয়েছে পূর্ণভার বুসাস্থাদনে, সংস্কৃতির সকল গুয়ারই সংদা সমস্থানে উন্মুক্ত ছিল ক্ৰিক্তৰ দ্বাস্ত্ৰে, দেশীৰ নাট্যকলাৰ ইতিহাস স্টেতেও ব্ৰীজনা থব चयमान चनायाचा त्रीशीन नाहे।कनाव महत्र ववीसनारथव জীবনবাপী হোগাযোগের এক অনবত আলেখা তেথনীর মাধ্যমে এই श्राष्ट्र कश्चिक करवाह्न औरहरमखकुमांव दांव । वदीखनात्थव नाह्य-জীবন সম্বন্ধে তাঁর স্থগভীর আলোচনা এই গ্রন্থটির আকারে রূপ নিষেছে। হেমেক্সমার বার কেবলমাত্র শিওসাহিত্যের বাতুকরই নন, রবীক্সবোদ্ধাদের মধ্যেও তাঁর আসন প্রথম সারিতে; এ ক্ষেত্রে ভার চেরেও বড কথা বে আমাদের নাটাশালার এই স্থদীর্ঘ কালের ইতিহাস সম্পর্কে তিনি বিশেষজ্ঞ অর্থাৎ অধ্বিটি তৎস:খ্লিষ্ট বিভিন্ন ঘটনাৰলী এবং কাহিনীৰ সঙ্গে হিনি স্থপবিচিত, নাট্যশালাৰ সংস - আছিত বিভিন্ন ব্যক্তিবৃদ্দের বিবরণীও তাঁর অকানা নয়-- স্টেক গ্রন্থ चार्यात्मव मत्न इयु, ववील्यनात्थव नांहाकीयन मद्यक्त (इत्यलक्रमात्यव আলোচনা বেমনই মুলাবান তেমনই গুরুত্পূর্ণ। আলোচ্য গ্রন্থে আলোচনা প্রসঙ্গে রবীক্রনাথের সম্বন্ধে হেমেক্রকুমারের অবর্ণনীয় শ্রমা ও অসংখ্য তথ্যের মিলন ঘটেছে। ববীন্দ্রনাথের নাট্যজীবন ্সম্বন্ধে প্রায়প্র আলোচনা চাড়াও এ দেশে নাট্যকলার ও ্নাট্যশালার উত্তৰকাল থেকে শুকু করে বর্তমানকাল পর্যন্ত ভার 'ক্রমবর্থন, প্রভৃত প্রসার ও ব্যাপক ক্রম্বাত্রার এক প্রামাণ্য ইভিহাস পরিবেশনের ক্ষেত্রে হেমেন্দ্রকুমার ধর্বেষ্ট দক্ষতার পরিচর দিরেছেন। "নাটাকার রবীক্রনাথের বিশেষত্ব" অধ্যায়টি মনে বিশেষভাবে প্রভাব বিস্তার করে। নাট্রমগতে রবীস্ত্রনাথের ওভ স্বাবির্ভাব িবাঙলাদেশের নাট্যকোককে সমৃদ্ধির সিংহ্ছার অভিমূপে আগুরান হ'তে বে কতথানি সহায়তা করেছে, সে বিষয়ে সমাকু জ্ঞানলাভ করা বার হেমেন্দ্রকুমার রায়ের এই গ্রন্থটি পাঠ করলে। বুলিক মহলে এই গ্রন্থ তার ষধাপ্রাপ্য সমাদর লাভ করবে বলে আমরা অন্তবে বিখাস পোষণ করি। প্রকাশক—ইণ্ডিয়ান য্যাসোসিয়েটেড পাবলিশিং কোং প্রাইভেট লিঃ, ১৩ গান্ধী রোড। দাম-ভিন টাকা পঞ্চাৰ নৱা প্রসা মাত্র।

ভেলকি থেকে ভেষজ

ভেদকিতে বার স্চনা ভেবজে তারই গৌরবমর পরিণতি— আজ বিশে শতাকীর আলোর ভেবজণাল্লের বে রুণটি অ্যমানের চাবের সামনে প্রতিভাত হচ্ছে, স্প্রোচীন কালে এতথানি

আলোকোজ্জল রূপ নিয়ে তথনকার মাতুষের সামনে এই শাস্ত ধরা দেয় নি। কালের বঞ্চি পদকেপের সঙ্গে ভালে ভাল রেখে মাস্ত্র বেমন ধীরে ধীরে ভার আদিম বক্ত, অসভ্য, পশুভাব কাটিয়ে ক্রমে রপাস্থরিত হল স্থলভা, শিকিত, আলোকপ্রাপ্ত মানবে. তেমনই ভাকে কেন্দ্র করে বে সব শাস্ত্র গড়ে উঠেছে ভাষের ইতিহাসও অমুরপ। আঞ্চকে ভেষজদান্তের যে মহিমান্তিত রুপটি আমাদের সামনে প্রতীয়মান ভার ইতিহাসের প্রস্তুর্যুগের বর্বরভার অধ্যার থেকে ওক করে তার বর্তমানকালের ব্যাপক জহুহাত্তার খুঁটিনাটি বিষয়ক সারবান আলোচনা গ্রন্থটির প্রধান উপজীব্য। মান্তবের চেতনা কেমন করে সঞ্জীব হয়ে উঠল, কবে, কোথার, কি পরিবেশে মাত্রব প্রথম অর্ভব করল বে ভেলকিবাজীর কাজ শেষ হয়েছে, জীবনটা পুতুলখেলা নয়, তারপর বছকালের সেট বন্ধ সুয়ার কেমন করে থলে গেল, ভার ফলে মান্তবের মনোমন্দিরে প্রবেশ করল মুঠো মুঠা স্বপ্ন-সম্ভাবনা, প্রাণক্ষয়ী প্রভ্যালা, অগ্রগমনের অপ্রতিরোধ্য অভিলাষ তারই পুঝামুপুঝ আলোচনা গ্রংহর অঙ্গপৃষ্টি করেছে। বিভিন্ন যুগের বিভিন্ন সমাজের বিভিন্ন রোগের অভিনয় আবিষ্কার, ভেষ্ডশাল্লের ইতিহাসে দিকপাল আবিষারকদের আবির্ভাব তাঁদের সাধনাও অনুস্তুসাধারণ কাহিনী, ইভিহাদের সঙ্গে সংশ্লিষ্ঠ একাধিক কাহিনীর উল্লেখ, অসংখ্য চিত্তের সংযোজন সর্বতোভাবে গ্রন্থটির মর্বাদাবুদ্ধি করে। আনন্দকিশোর মুন্সীর অনহত্ত বর্ণনা বেমন্ট রসসমুদ্ধ, বেমন্ট ভধাপূর্ণ, তেমনই স্থারহাটী। চিকিৎসাশাস্ত্রের অতুলনীয় আবিকারগুলির সরস, মধুর ও প্রাঞ্জল বর্ণনায় ভিনি আশাতীত নৈপুণোর পরিচয় দিয়েছেন। পরম স্থপাঠা এই গ্রন্থটি সকল শ্রেণীর পংক্রদের মুগ্ধ করতে সমর্থ হবে, এ বিষয়ে আমরা নিঃসন্দেহ। পাঠকসংধারণ এই গ্রন্থ পাঠে ওবু পড়ার আনন্দই পাবেন না, প্রভৃত জ্ঞানলাভেও সমর্থ হবেন। গ্রন্থটির বছল প্রচার আমরা কামনা করি। প্রকাশক—বেঙ্গল পাবলিশাস প্রাইভেট লিমিটেড, ১৪ বহিম जा**डाकों क्री**है। नाम-क है जिना माज ।

শরৎচন্দ্রের সঙ্গে

অপবাজের কথাশিলী শবৎচক্রের ঘনিষ্ঠ সংস্পর্ণে বাঁরা বাঁরা এসেছেন বাঙলার বর্ষীরান সাহিত্যিক জীলসমঞ্জ মুখোণাধ্যার মহালর উাদেরই একজন। ধুব কাছের একটি কোণ থেকে শবৎচক্রকে বাঁরা প্রত্যক্ষ করেছেন, শবৎচক্রের জীবনে ঘটে বাঙরা বছ কাহিনীর সাক্ষিত্ররপ আজও বাঁরা আমাদের মধ্যে আছেন, এমন ঘটনা আছে বার ধারা শবৎচক্রের সঙ্গে তাঁদের উপর দিয়েও মুগাণ ভাবে বরে গেছে, অসমজ্ঞ মুখোণাধ্যার তাঁদেরই একজন। মাসিক বস্থমতীর পাঠক-পাঠিকাদের শ্ববণ করিয়ে দেওয়া বেতে পারে বে বছর তিনেক আগে শবৎচক্রে সম্পর্কিত অসমজ্ঞ বাব্র শ্বতিকথা ধারাবাহিক ভাবে মাসিক বস্থমতীতে প্রকাশিত হয়েছে। বর্তমানে তারই প্রস্থরপ আত্মপ্রকাশ করেছে। প্রস্থটিতে লেখক শবৎচক্রের সঙ্গে তাঁর দীর্ঘদিনের ঘনিষ্ঠভার এক চিতাকর্যক বিবরণী বর্ষেষ্ঠ দক্ষভার সঙ্গে লিপিবছ করেছেন। সাধারণ্যে আভানা বহু তথোর সমাবেশ ঘটেছে এই প্রস্থে। অসমজ্ঞ বাবুর আন্তর্বিকভাপুর্ণ, দরদভরা বর্ণনা দৃষ্টি আকর্ষণ করে। তাঁর আন্তর্বিকভাপুর্ণ, দরদভরা বর্ণনা দৃষ্টি আকর্ষণ করে। তাঁর আন্তর্বিকভাপুর্ণ ও

দবদভাগ বর্ণনায় এবং সর্বোপরি তাঁর বচনানৈপুণে অভীতের অঞ্চল ছটনা নতুন করে বেন জীবন্ধ হয়ে ওঠে, তাঁর লেখনীর মাধ্যমে মায়্র শবংচক্রের যে ছবি ফুটে উঠছে তা বেমনই অনবতা. তেমনই মনোজ্ঞ এবং তেমনই বৈশিষ্টাবান। বলা বাছলা, তাঁর অতিকথা বচনায় তাঁর লেখনী যথোচিত শক্তির পরিচয়ই প্রদান করেছে। যে শবংচক্রের নিবিড় সাল্লিগ্যে আপন জীবনের অনেকগুলো দিন কেটে তাঁর বিয়োগবাধা বে লেখকের মনকে কতথানি বিষপ্ত করে তুলেছে তার সমাক প্রতিচ্ছবিও প্রস্তুটি থেকে অমুপস্থিত নর। প্রকাশক—ইপ্রিয়ান স্থাগোসিংবটেড পাবলিশি কোং প্রাইভেট লিং, ১৩ গান্ধী বোড। দাম তাঁটাকা প্রধাশ নর্ম প্রসা মাত্র।

ভূমর্গের অভ্যন্তরে

আচাৰ্য ভাষাপ্ৰসাৰের অকাল প্ৰয়াণ বাঙালীকে কতথানি শুৰ করে দিয়েছে তার ওলনা মেলে না। মৃত্যু মানুষের জীবনের সার্থক পরিণতি, মৃত্যু আছে বলেই জীবন পূর্ণ, সুতরাং ক্ষোভ সেজতে নয়, কোড এট জন্তে যে, জামাপ্রসাদের জীবনে মৃত্যু বেভাবে এল তা (वम्बड़े कब्रन, (खमबड़े मर्गा खड़। विक्रम ७ क्यानमी वा**खि**मारखंडे আশ্ করি এ বিষয়ে একমত হবেন বে ভামাপ্রসাদের মৃত্যু এক কংদিত ব্রুহাল্লর মুর্যাতী পৃথিবতি। বিভ্রান্ত, বিবেচনাতীন অদ্বনশী ভ বত সংকার জনস্বার্থবিহোধী ভাগাপ্তক নীতির তীত্র প্রতিবাদ করার ফল্টেই জামাপ্রসাদকে স্থাব কাশ্মীরে স্বন্ধনহীন অবস্থায় অচেনা প্রিবেশে সম্পূর্ণ অসহায় অবস্থায় মৃত্যুবরণ করতে হল। প্রবল ব্যক্তিখের অধিকারী এই প্রছের জননেতার যুক্তিব্যী স্থালোচনায় প্রমাদ গুণলেন ভারত স্বকার-ভার পরবর্ত্তী কালের ইভিহাস কারে। অজ্ঞানা নয়। পদত্যাগী মন্ত্রী क्रामाध्यमात्मत्र क्षीवत्मव (भव क्यांच्य ववः व्यथानकः काँच कांग्रीत থাকাকালীন ঘটনাবলীর বিশ্ব বিবরণ বাঁরা খুঁটিয়ে জানতে চান এই গ্রন্থ পাঠে তাঁর। উপকৃত হবেন। সংসদে ভাষাপ্রসাদের বিত্তর্ক. ভারপর তাঁর কাশ্মীর বাতার প্রস্তৃতি থেকে গুরু করে কলকাতার ভাঁর মৃতদেহ আনয়ন পর্যন্ত প্রতিটি বিষয়ের খুঁটিনাটি বিবরণ পর্যন্ত ব্যালায় পাভায় বিভ্তভাবে দিপিবছ করে গেলেন শেখক শ্রীন্দোৎস্নামর চৌধুরী। গ্রন্থটিকে ভামাপ্রসাদের জীবনেত শেষাংশের धक्रि व्यामाना उदानकी अनावात्म वना क्रान । काँद स्व कीरानव এক পূর্ণাঙ্গ প্রভিচ্ছবি বলে গ্রন্থটিকে অভিহিত করণেও ভূস হয় না। কাশ্মীররাজ্যের সকল বিষয়ক সংক্ষিপ্ত ইতিহাস, আবহুলার জীবনের পরিচয় এবং আরও ২ন্তবিধ জ্ঞাতব্য তথ্য এই প্রন্থে স্থান পেরেছে। লেখকের বলবার ভঙ্গা ঋপূর্ব, জাগাগোড়া ইভিহাসকে ভিনি গাল্পর রূপ দিয়ে সঞ্জের সামনে তলে ধরেছেন। আয়তনের দিক দিরেও গ্রন্থ বিষয়ের প্রত্যাল বিষয়ের এত বড় একটি বিষাট বিষয়ের পৃষামূপুষ আলোচনা ও ছাবয়গ্রাহী বর্ণনার লেখক অন্তাদাধারণ কৃতিখ দেখিয়েছেন। প্রান্থের ভূমিকা বঁচনা করছেন প্রম শ্রদ্ধাম্পাণ এৰীযুক্ত হেমেক্সপ্ৰদাৰ বোৰ মহাশহ। এই যুগোপৰোগী এছটিৰ বাপেদ প্রচার আমাদের কাষ্য। প্রকাশক-জ্রীকানীপ্রদাদ দাশতত্ত্ব। २-थ करनव होंदे मार्क्ट, कनकाठा->२। नाम-किन टीका माता।

অভিযেক

বিক্লোছের ইভিহাস স্টাতে থাবাংবাড়ী বিক্লোহের অবদান কম নর। এর জন্ম ছিল ওক্ষদেশ। এতে ইন্ধন জোগাল সাইমন কমিশনের হৈটিভিকার কর জনগণ আর মুগোষিত কুষকসম্প্রদার। এই বিস্তোহের প্রধান নায়ক ছিলেন শেয়া শান। সাধারণ মা**ন্থার**র মনোরাজ্যে এই বিদ্রোহ কম প্রভাব বিস্তাব করে নি। বর্তমানে ঐ বিক্রোহের পটভূমিকা অবলম্বন করে পূর্ব্বোক্ত উপস্থাসটি বচনা কবেছেন শক্তিমান সাহিত্যিক হবিনাবায়ণ চটোপাধ্যার। প্রকাদেশের সঙ্গে ছবিনারারণ বাবুর প্রত্যক্ষপ্রিচরও অগভীর নর। ত্রদার্থবাস হবিনাবারণ বাবুর জীবনেও ঘটেছে। পটভ্মিকার উপভাগটি স্ট-স্বভাবত:ই বাজনীতিও উপভাসের মধ্যে এলে গেছে অবশু, তাই বলে সমগ্র উপকাসটি কেবলমাত্র রাজনীতির মধোই সীমাবত নয়। সাধারণ মানুষ তার জীবন, তার স্বপ্র-কল্পনা, তার আশা, আকামা, পুথ, হু:খ, আনন্দ-বেদনাও উপকালের পাতার ভালের যথাপ্রাপ্য স্থান পেয়েছে। ঐ সমাজের ওধানকার মাছবের মনের এক অনবভ চিত্র কটে উঠেছে হবিনারায়ণ বাবর লেখনীর বলিঠতার। উপভাসের নামকরণও ষ্থেষ্ট তাৎপর্বপূর্ব। উপক্রাদের মধ্যে বত জ্ঞাতব্য তথ্য সন্মিবেশিত করে লেখক যথেষ্ঠ কৃতিছের পরিচয় দিয়েছেন। সমগ্র উপস্থাসটি বছপ্রতিষ্ঠ প্রত্তাম বন্ধনে প্রভৃত সহায়তা করবে বলে আমরা বিখাণ বাখি। প্রকাশক—ইতিয়ান হাাসেদিয়েটেড পাবলিশিং কোং প্রাইভেট লিঃ, ১৩ গান্ধী রোড। দায়—পাঁচ টাকা পঁচারের নরা প্রসা মাত্র।

রবীন্দ্র-সাহিত্যে প্রেম

প্রেম রবীন্দ্র-রচনার এক প্রধান অঙ্গ। প্রেমকে কেন্দ্র করে ববীন্দ্রনাথের বক্তব্য, ভাবধারা, কল্লনা রূপ পেরেছে। ববীন্দ্রনাথের ঈশ্বাদত লেখনীর কল্যাণে তাঁর স্ষ্ট অনবত চরিত্রভলির মাধ্যমে সাহিত্যের মধ্যে প্রেম এক মহিমময় দীব্যিতে ফুটে উঠেছে। প্রেমবাদ রবীক্রনাথের চোথে ধরা পড়েছে এক অভিনব মৃতি:ত, ভার ফলেই ববীন্দ্র সাহিত্যের কোষাগারে প্রেম এক মহার্থ রত্ন হিসেবে পরিগণিত। ত্রীমতী মলরা গজোপাধারে বস্তমতীর পাঠক-পাঠিকার কাছে অপ্রিচিত। নন। ইতিপূর্বে মাসিক বসুমতীতে তার একাধিক বচনা প্রকাশিত হয়েছে। খালোচ্য গ্রন্থে ববীল্র-সাহিত্যে প্রেম সম্পর্কে আলোচনার তিনি শক্তির পরিচয় দিংগ্রুছন। ববীক্ত সাহিত্যে প্রেমের বিশিষ্টভা, বিপুলভা ও বিচিত্রভা সহক্ষে তাঁর আলোচনা বেমন্ট সারগর্ভ, ভেমন্ট মনোরম। বংক্রি-সাহিত্যের প্রেমের স্বরূপ সম্বন্ধে তাঁর মনোক্ত আলোচনা ধ্রুখাদের দাবী বাবে: ববীজনাবের প্রেম্বাদের নিখুঁভ বিশ্লেষণ্ক:ম লেখিকা কুলিংখন সাক্ষর রেখেছেন। প্রদক্তঃ রবীন্দ্রপূর্ব বাঙদা-সাহিত্যে প্রেমের রূপ ও রবীন্দ্র-পরবর্তী প্রেম সাহিত্যের প্রচনা সম্বান্ধ লেখিকার আলোচনার ফলে রবীশ্র-সাহিত্যে প্রেমের বে প্রাক্তিছবি আমরা পাই, সেই সম্পর্কে দেখিকার विस्त्रवन, वाश्वान ও ভাষাকরণ आदेश न्महे छात्रात्मा ও বিশেষমুপূর্ব হয়ে উঠেছে ^{টু}বাড়গার অক্তম প্রথম শ্রেণী সুদ্রণশিল্পী নাভানা **প্রিণিট**ং ওয়ার্কস মুদ্রণকর্মে হথেষ্ট নিপুণতার পরিচয় দিয়েছেন। প্রকাশক---ৰাভানা, ৪৭, গণেশচন্ত্ৰ এভিনিউ। দাম—ক্ষিন টাকা ফাক্ত

(एएन-विरिएण)

আষাঢ়—১৩৬৬ (জুন-জুলাই, '৫৯)

অন্তর্দেশীয়---

১লা আবাঢ় (১৬ই জুন): ছব দিবদ ব্যাপীসিংহল সফব উদ্দেশ্য ভারতীর হাষ্ট্রপতি ডাঃ বাজেল্রপ্রসাদের সদলবলে কলখো উপস্থিতি।

২বা আবাঢ় (১৭ই জুন): কলিকাতা পৌরসভার বিশেব অধিবেশনে পশ্চিমবঙ্গের উৎস্বেজনক থাতা পরিস্থিতি সম্পর্কে আলোচনা।

তরা আবাঢ় (১৮ই জুন): প্রবল বর্ধণে আসাম ও ইক্ষলের বিস্তীপ অঞ্চল প্রাবিত—বহু নদীতে জলোচ্ছাস।

৪ঠা আবাঢ় (১১শে জুন): ক্রিমগঞ্জ সীমাস্তে পুনরার সদত্ত পাক নৈজের হানা—পাথারিয়া অঞ্জে গুলীবর্ষণ অব্যাহত।

৫ই জাবাঢ় (২০শে জুন): মুর্নোবিতে সাংবাদিক বৈঠকে দালাই লামা কর্জক তিবেত প্রশ্নের সমাধানকল্পে প্রধানমন্ত্রী প্রীনেহর (ভারত)ও চীনা প্রধানমন্ত্রী চৌ এন্-লাই-এর বৈঠকে আগ্রহ প্রকাশ।

৬ই আবাঢ় (২১শে জুন): জবসপুরে ঞীনেচক কর্তৃহ সামরিক ধান নির্মাণ কার্যানার আফুঠানিক উংঘাধন।

৭ই আবাঢ় (২২শে জুন): পশ্চিমবঙ্গে দেভী প্ৰথা ও ৰাজ্যশন্ত্যে মৃদ্যনিষ্ত্ৰণ-ব্যবস্থা প্ৰভ্যাহাৰ—সাংবাদিক বৈঠকে ৰাজ্য মুৰ্যমন্ত্ৰী ডাঃ বিধানচন্দ্ৰ ৰাষের বোৰণা।

৮ই আবাঢ় (২৩শে জুন): নানতৰ বেতন আপারের জন্ত বিভিন্ন অঞ্লে পোর কর্মচারীদের ধর্মঘট।

পশ্চিমবন্ধ মধ্যশিকা পর্যতের চলিত ১১৫১ সালের সুল-ফাইজাল পরীক্ষার নির্মিত ছাত্রদের শতকরা ৪৪°৬৭ জন এবং প্রাইভেট পরীকার্যাদের ২৬°৬৬ জন উত্তীর্ণ।

১ই শাবাঢ় (২৪শে জুন): দিল্লী পৌরসভার মেরর পদে কংগ্রেসপ্রাবীকে পরাক্ষিত করিয়া প্রোপ্রেনিভ দলের নেতা শ্রীত্রিলোকটাদ নির্ব্বাচিত।

১•ই আবাঢ় (২৫শে জুন): মূস্য বৃদ্ধি ও গুভিক্ষ প্রতিযোগ কমিটির আহ্বানে বাজ্য সরকাবের জনপার্থ-বিয়োবী খাজনীতির প্রতিবাদে কলিকাতা ও মফঃসল অঞ্চলে সর্বান্ধক হবতাল।

১১ই আবাঢ় (২৬শে জুন): নয়াদিরীতে কংগ্রেস পার্লামেণ্টারী পাটির ঠিবঠকে কেবল পবিছিতি সম্পর্কে আলোচনা—প্রধানমন্ত্রী প্রীনেহরু কর্ত্তক অবস্থা বিশ্লেষণ।

তৃতীয় শঞ্বাবিক পরিক্রনায় ফরাঞ্চা বাঁধ অন্তর্ভুক্ত করা হইবে বলিয়া কেন্দ্রীয় পরিবহন ও বোগাবোগ সচিব শ্রী এস কে পাতিলের স্থান্থাই আখাস দান।

১২ই আবাঢ় (২৭শে জুন): ভারতীর ক্ষুনিষ্ট পার্টি কর্ত্ব ক্ষেলে নুজন নির্বাচন (মধ্যবন্তী) জন্মন্তান সম্পর্কে প্রধান মন্ত্রী জীনেহক প্রস্তাব অঞ্জাত। ১৩ই আবাঢ় (২৮শে জুন): পশ্চিমবঙ্গ সরকারের শ্রম দপ্তরের আবাসে পশ্চিমবঙ্গ পৌরসভা কর্মচারীদের ৮ দিন ব্যাণী ধর্মবট প্রত্যাহার।

দিল্লীতে কেরল পরিস্থিতি সম্পর্কে কংগ্রেস হাই কমাণ্ডের সহিছ কেরল কংগ্রেস নেতৃবুন্দের জন্মরী বৈঠক।

১৪ই আবাঢ় (২১শে জুন): নাট্যাচার্ব্য শিশিরকুমার ভাত্ত্বি (৭০) জনবোগে ববাহনগবে জীবন-দীপ নির্বাণ।

দিল্লীতে অনুষ্ঠিত কাপ্রেদ পার্লামেন্টারী বোর্ডের বৈঠকে প্রস্তাব – সাধারণ নির্কাচনই কেবল সমস্তা সমাধানের একমাত্র গণতান্ত্রিক উপায়।

১৫ই আবাঢ় (৩•শে ভুন): কাশ্মীর-সীমাজ্তে ছুই জন ভারতীয় পাকিস্তানীদের ধারা অপস্তত।

পাঞ্জাব ইঞ্জিনীয়ারিং কলেজ বর্তৃক মহাশৃত্তে ৪টি রকেট উৎক্ষেপণ।

১৬ই আবাণ্ (১লা জুলাই): জুন মালে (১২ই জুন হইতে ৩০শে জুন) কেবলে সরকার বিরোধী আন্দোলন সম্পর্কে ২৪,১৬১ জন প্রেপ্তার—কেবল সরকারের ইন্ডাহার।

১৭ই আবাঢ় (২রা জুসাই): বিভাবিক বোখাই রাজ্য গঠন আন্দোসন কালে আমেদাগদৈ বিগত বর্ষে পুলিশ বে গুলীচালনা করে, তাহা সঙ্গত হইয়াছে বলিয়া সরকারী তদন্ত ক্মিশনের (বিচারণতি শ্রী এস টি কোটওয়াস ক্মিশন) বিপোটে মন্তব্য।

১৮ই আবি^{চ্}চ (তরা জুলাই): নিকৃষ্ট ধরণের চাউল সরবরাহের অভিবোগে দমদম সেনটাল ভেলে করেনীদের অনশন ধর্মবট।

১১শে আবাঢ় (৪ঠা জুলাই): দিল্ল'ভে রাষ্ট্রপতি ডাঃ বাজেন্দ্রপ্রসাদ ও প্রধানমন্ত্র প্রীনেহকর সহিত অষ্ট্রেলিয়ার প্রধানমন্ত্রী মি: স্থাব জি মেঞ্জিসের পর পর বৈঠক।

২০শে আবাঢ় (৫ই জুলাই): অবিবাম বর্ধবের ফলে অবশিষ্ট ভাবত হইতে কাশ্মীব উপত্যকা একরণ বিভিন্ন।

উপরাষ্ট্রপতি ডা: সর্ব্বপল্লী রাধাকৃষ্ণণের ফিলিপাইন, মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র ও পশ্চিম জার্মানী সফরে বাত্রা।

২১শে আবাঢ় (৬ই জুসাই) পশ্চিমবঙ্গের থাতা পরিস্থিতি সম্পার্ক কেন্দ্রীর থাতাগচিব জ্রীঅভিতথ্যসাদ জৈনের সভাপতিংগ দিল্লীতে সর্ব্বদলীয় বৈঠক।

২২শে আবাঢ় (৭ই জুলাই): সাংবাদি স বৈঠকে প্রধান মন্ত্রী জ্রীনেহক্সর ঘোষণা—ভাষতে কোন তিকাতী সংকারের অভিত্ব স্বীকার করা চলিতে পারে না।

কলিকাতা বিশ্ববিভালয়ের উপাচার্যের (অধ্যাপক শ্রীনির্গল-কুমার সিদ্বাস্ত) হস্তক্ষেপের পর মহারাজা মণীক্রচন্দ্র কলেজের (কলিকাতা) ছাত্র ও অধ্যাপকদের অনশন ধর্মঘট প্রস্তায়িত।

২৩শে আবাঢ় (৮ই জুলাই): জাদাম সীমান্তের নৃতন নৃতন জঞ্চল পাকসৈত্তের গুলীবর্ধণের সংবাদ।

২৪শে আধাঢ় (১ই জুলাই): বেজীয় প্রিকরনা ক্মিশন নিযুক্ত সমাজকল্যাণ ও অন্বয়ত শ্রেণীর কল্যাণ সংক্রাপ্ত ক্মিটির বিপোটে সমাজকল্যাণ-ক্মী সংস্থা গঠনের স্থপারিখ।

২ংশে আবাঢ় (১০ই জুলাই): রাষ্ট্রপতির নিকট কেবল প্রাণেশ কংগ্রেসের পক্ষ হইতে কেবল সরকারের (ক্সুনিষ্ট) বি^{রুদ্ধে} অভিযোগপত্র (চার্জ্ঞ**নি**ট) পেশ।

মিষ্টি সুরের নাচের তালে মিষ্টি মুখের খেলা আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



च्थितिक (क) दिल



বিস্কুটএর

প্রস্তুত্ব কর্তৃক আধুনিকতম যদ্ধপাতির সাহাব্যে প্রস্তুত কোলে বিষ্ণুট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০ কেবল পরিছিতি প্রসঙ্গে দিল্লীতে রাষ্ট্রপতি ডা: বাজেন্দ্রপ্রসাদের সহিত্ত কেবলের মুধ্যমন্ত্র প্রীই, এম, এস, শ্রীনাগুলিপাদের বৈঠক।

২৬শে আবাঢ় (১১ই জুলাই): মণিপুৰের ভাষেওলঙ এ নাগা বিজ্ঞোহীদের তৎপরতা বুদ্ধি পাওৱার মণিপুর চীফ কমিশনার কর্তৃক সংশ্লিষ্ট এলাকা 'উপদ্রুত অঞ্চল' বলিরা ঘোষিত।

নিমলার প্রধান মন্ত্রী জীনেহকর সহিত কেবলেব মুখ্যমন্ত্রী জীনামুদ্রিপাদের (ক্যুটিন্ট্র) সক্ষোৎকার।

২৭শে আষাত (১২ই জুগাই): কেরলে সরকার-বিবোধী আন্দোলন প্রত্যান্তভ হইলে নির্বাচন সম্পর্কে বিবেচনা করা হইবে— দিল্লীতে সাংবাদিক বৈঠকে কেরল মুখ্যমন্ত্রী শ্রীনাণুদ্রিপাদের ঘোষণা।

২৮শে আবাড় (১৩ই জুলাই): কেরলে সরকার-বিবোধী আন্দোলনে ১২ই জুন হইন্তে এক মাস মধ্যে ১৮০৪ জন দণ্ডিত।

জনকল্যাণমূলক সংস্থাসমূহে (বিশেষতঃ শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান ও হাসপাতাল) ধর্মঘট নিষিদ্ধ করার ব্যবস্থা-পশ্চিমবঙ্গ সরকার কর্তৃক বিল প্রেণয়ন।

২৯শে আবাঢ় (১৪ই জুলাই): প্রবল বর্ষণ ও ধান নামার ফলে কালিম্পাং মহকুমার ৯ জন ফুটবল খেলোয়াড় সমেত মোট ৩২ জন নিহত হওয়ার সংবাদ।

৩ • শে আঘাঢ় (১৫ই জুলাই): কেবল মন্ত্রিলভার পদচাতি ও দাধারণ নির্বাচনের দাবীতে কেবল রাজ্যপালের নিকট বিবোধী দলগুলির প্রভিনিধিবৃক্ষ ও বিমোচন সমর-সমিতির নেতা শ্রীমাল্লাধ প্রনাতনের আবক্লিপি পেশ।

প্রবস বড়ও বুটিতে কচ্ছের সদর ভূজ বহিবিশ হইতে শিচ্ছিয়।

৩১শে আবাঢ় (১৬ই জুলাই): ২৪-পরপণা জেলার বাগলা
থানার একটি ছলে পাকিস্তানী হানা—-২জন ভারতীয়কে বলপূর্বক
অপহরণ ও ভিনজন জ্বম।

তংশে আবাঢ় (১৭ই জুলাই): কেরল পরিস্থিতি প্রদক্ষে রাষ্ট্রণতি কর্তৃক কেরলের রাজ্যপাল জীরামকুফ রাধ্বকে দিল্লীতে আহ্বান।
বহির্দেশীয়—

২রা আবাঢ় (১৭ই জুন): বালিন সম্পর্কে ও৮ দিনব্যাপী জেনেভা সম্মেলনের অচলাবস্থা দ্বীকরণে বৃহৎ চতু:শক্তি (রুলিরা, মার্কিণ, যুক্তরাষ্ট্র, বুটেন ও ফ্রান্স) প্রবাষ্ট্র সচিবদের জন্মরী গোপন বৈঠক।

ত্বা আবাঢ় (১৮ই জুন): ডারবানে একদল আফ্রিকান নারী বিক্ষোত্তকারীর উপর পুলিশের রাইফেল ও ষ্টেনগানের ওলী চালনা।

আইরিশ প্রজাতন্ত্রের প্রেসিডেন্ট পদে মি: ইমন ডি জ্যালের। (কিয়েন কেল দলের নেতা) ভোটাধিক্যে নির্বাচিত।

৪ঠা আবাঢ় (১৯শে জুন): আর্মাণী প্রদক্ষে পশ্চিমী ত্রিশক্তির প্রস্তাব ক্ষশ প্রধান মন্ত্রী মঃ কুন্চেড কর্তৃক প্রত্যাধ্যান।

৫ই আবাঢ় (২০শে জুন): বার্লিন ও জাগ্মাণ প্রশ্নে চতু:শক্তি পররাষ্ট্র সচিবদের জেনেভা বৈঠক ১৩ই জুলাই পর্যান্ত মুলজুবী।

১ই খাবাঢ় (২৪শে জুন): মার্কিণ সামরিক ও পররাষ্ট্র নীতি না মানিলে সামরিক সাহাব্য দেওরা হইবে না—খামেরিকান কংগ্রেসে প্রেসিডেন্ট খাইসেনহাওরারের বিপোর্ট। ১-ই আবাঢ় (২০লে জুন): শ্রমিক ধর্মবটজনিত আচলাবস্থার পরিপ্রেক্ষিতে কলখো বন্দবের কাজ চালু রাধার দৈক্তবাহিনী আহবান।

১৩ই আবাঢ় (২৮শে জুন): ছ্নীতি; অসলাচরণ ও অবোগ্যতার দারে পাফিস্তানে এ বাবত ২৭০ জন সরকারী কর্মচারী (জবিকা শই অফিসার) দণ্ডিভ হওরার সংবাদ।

১৪ই আবাঢ় (২১শে জুন): ওয়াশিটেনে প্রেসিডেট আইসেনহাওয়াব ও মার্কিন প্রবাষ্ট্র সচিব মি: ক্রিন্সিচ্চান হাটাবের সহিত গোভিরেট প্রথম সহকারী প্রধান মন্ত্রী ম: কোলসভের বৈঠক।

১৫ই আবাঢ় (৩০শে জুন): দীর্ঘকালব্যাপী বাণা শাসনের পর নেপালে নৃতন সংবিধান প্রথন্তন—গণভগ্রের পথে নেপালবাসীদের জরবাত্রার সূচনা।

প্রতিরক্ষাধাতে ১৯৫৯—৬০ সালের জন্ম পাকিস্তানের ৮৬ কোটিটাকা বার বরাদ।

১৭ই আবাঢ় (২রা জুলাই): ফিনল্যাণ্ডের কারাগারে কছ কক্ষে অগ্নিকাণ্ডের ফলে ১৬ জন করেদী জীবস্ত দগ্ধ।

২০শে আবাঢ় (৫ই জুসাই): গণপরিবদ বাতিল করিয়া ইন্দোনেশিরার প্রেশিডেণ্ট সোরেকার্ণো কর্তৃক ডিক্টেরী ক্ষমতা প্রহণ ।

করাসী-পশ্চিম আর্থাণ চুক্তি অনুসাবে সার অঞ্স পশ্চিম আর্থাণীর অন্তর্ভুক্ত।

২১শে আবাঢ় (৬ই জুলাই): ছইটি কুছুর ও একটি ধ্রগোস লইয়: মহাশুল্যে উংক্ষিপ্ত সোভিয়েট রকেটের নিরাপদে প্রাগ্যবর্তন।

করাচীর আন্তর্জাতিক বিমান বন্দর সম্প্রাসারণকরে মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্রের ৪৮ লক্ষ ডলার ঝণদানের সিছান্ত।

২৩শে আবাঢ় (৮ই জুলাই): আমেরিকা ও ক্লনিরার মধ্যে বন্ধুত্ব পৃথিবীতে যুদ্ধ বন্ধ করিবে—মস্কৌ-এ সফররত মার্কিণ গতর্গবদের নিকট সোভিয়েট প্রধান মন্ত্রী ম: ক্রুণ্সভের উল্পি।

২৪শে আবাঢ় (১ই জুলাই): প্রেলিডেন্ট লোরেকার্ণো কর্তৃক নিজেকে ইন্দোনেশিয়ার প্রধানমন্ত্রী রূপে ঘোষণা ও নৃতন ইন্দোনেশীর মন্ত্রিসভা গঠন।

২৭শে আবাঢ়-(১২ই জুলাই): বাগদানে অমুঠিতব্য ইবাকী বিপ্লবের প্রথম বার্ষিক উৎসবে বোগদানে সম্মিলিত আরব প্রভাতর কর্তুক ইরাকের আমন্ত্রণ প্রভাগোন।

৩ - শে আবাঢ় (১৫ট জুলাই): মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্রে ইম্পাত কারথানাসমূহে ধর্মঘট—পাঁচ লক শ্রমিকের বোগদান।

বিখবাকি কর্তৃদ ভারতকে তৃই দফার ছর কোটি ভলাব অনুসানের ব্যবস্থা।

৩১শে আবাঢ় (১৬ই জুলাই): জেনেভা পররাষ্ট্র সচিব বৈঠকে সারা জার্মাণ কমিটি গঠনের সোভিয়েট প্রস্তাব পশ্চিমী শক্তিত্রর (বুটেন, ফ্রান্স ও আমেরিকা) কর্ত্তক অপ্রান্থ।

তংশে আবাঢ় (১৭ই জুলাই): কিউবার বিপ্লবী প্রধানম্বী ভা: ফাইভেল কাথ্রো ও কিউবার প্রেসিডেণ্ট ভা: উক্লীরার প্রভাগ।

নটগুরুর দেহরকা

পক্ষে এক অপ্রবীর ক্ষতি। নিনিরকুমারের মহাপ্রারাপ পক্ষে এক অপ্রবীর ক্ষতি। নিনিরকুমারের মহাপ্রারাপ কেবলমাত্র অভিনর অগভই নয় বাঙলার সংস্কৃতির অগভও হারাল একজন নিকপাল মহারথীকে। নিনিরকুমারের মৃত্যু জাতীর জীবনে বে কতথানি শৃক্তা এনে দিল ওা ভাষার প্রকাশ করা সাধ্যাতীত। বাঙলার বে সকল কালজ্বী সন্তানদের কল্যাণে সংস্কৃতির ইতিহাসে এক-একটি যুগের স্পষ্ট হরেছে, সংস্কৃতির ক্ষেত্রে নতুন ইতিহাসের হরেছে স্টুনা, সংস্কৃতিকে কেন্দ্র করে বংঙালী পেরেছে নতুন পথের স্কান সেই পথস্রষ্টা, ইতিহাসমন্ত্রী, যুগস্ত্রীদের শেষ প্রকৃত্র নিনিরকুমার। নব নব চেডনার, চিন্তাধারার, স্বপ্রে জাতিকে উব্দ্রু করে তুলতে জাতীর জীবনের বিরাট প্রাক্রণে প্রতিভাননীয়া-মেধার রাজ্য থেকে যে নমক্ষ প্রতিনিধিদের হরেছে আবির্ভাব সেই প্রণমা প্রতিনিবিকুলের শেষ প্রতিনিধিদের হরেছে আবির্ভাব সেই প্রণমা প্রতিনিবিকুলের শেষ প্রতিনিধি শিলিরকুমার। অসংখ্য মনীবীর স্মহান অবদানে বে বিরাট ঐতিহ্নের স্পষ্ট হ'ল নিশিরকুমার

শিশিরকুমারের স্তলনীপ্রতিভা কেবলমাত্র অভিনয়কলার উন্নতি সাধনে বা নাট্যজগতে এক নতুন ধারার প্রবর্তনেই সীমাবদ্ধ নর, সমগ্র অভিনয় জগতের পারিপাধিক আবহাওয়ার আমৃল পরিবর্তন শিশিবকুমারের স্বপ্রেষ্ঠ কৃতিখ, জাতীয় দরবারে ভার অনবভা অবদান।

গিরিশ্চন্দ্র অর্থেন্শেখর তথন লোকান্তরিত। অমরেজনাথ দত্তও তথন জীবিত নেই, অমৃতলাল বস্থও তথন বিদায় নিহেছেন সাধারণ বঙ্গালয় থেকে। বলতে গেলে তথন একমাত্র দানীবাবু। অভিনেতা তিলেবে ভিনি অসাধারণ ছিলেন, এ কথা বলাই বহুল্য কিছ নতন স্ট্রী করার ক্ষমতা জাঁর একেবারেই ছিল না। সাজ্যাতিক অবস্থা তথন বাঙ্গাদেশের বন্ধানবের। প্রসঞ্জুমার ঠাকুর, নবীনচন্দ্র वयः, षडील्यः वाज्य ठीकृतः, कानील्यन्त निःहः প্রভাপচল্র निःहः, ঈचवচल्य নিংছের পুঠপোষণায় ও মধুত্বন দত্ত, দীনবন্ধু মিত্র, রামনারায়ণ ভর্ক জ, জ্যোতিবিজ্ঞনাথ ঠাকুর, মনোমোহন বস্থা, প্রভৃতির স্পর্শ প্রভাবে বান্তলার নাট্যজ্ঞগতের বে বিরাট ধারার স্কৃষ্টি হরেছিল সেই ধাৰা তথন নিব্ভিশ্ব ক্ষীণ টুহুৰে এসেছে, এ ছেন সময়ে অসাধাৰণ প্রতিভাব আধার অধ্যাপক শিশিবকুমার এই অঞ্জা রক্ত্মিতে পদার্পণ করলেন। বিশ্বপ্রের এখানেই শেব নয় নিজেই ওধু এলেন না, দক্ষে নিয়ে এলেন অসংখ্য প্রতিভাধর শিল্পীকে, বাঁরা তাঁরই পদ-व्यांत्व राम अखिनरद्रद अ-बा-क-थ मद्यक भार्व निरद्राह्न, निरद् अलन चानकारनक क्ष्मी यारवय च च च वानारन युक्रमारका मर्याना वृद्धि अन বহু ৩০ বসমক সাদৰ আহ্বান জানাল বহু সুবীজনকেও নাটক সম্বন্ধ তাঁদের মৃদ্যবান মতামতের শুক্তে, শিশিবকুমারকে কেন্দ্র করে রঙ্গ ৰগতে গড়ে উঠল জ্ঞানী গুণীর এক বিবাট সমাবেশ। হাওয়া গেল ^{বদলে,} নটগুরু এনে দিলেন নতুন সম্ভাবনা, নতুন স্বপ্ন, নতুন উপহার। ধ্বম ভাবিষ্ঠাবের সঙ্গে সঙ্গে জনতা জয়মাল্য পরিয়ে দিল नोडे। ठिर्गाट के विभिन्न क्यार विभिन्न क्यार को व्यापन विभिन्न VIDI---VICI। বাঙলাব বঙ্গালবের হ'ল এক স্থা বুগের ওভ উবোধন।

শিশিবত্যার অভিনয়কলার সর্বাসীন উন্নতি সাধন করলেন, নাটাজগতের আবহাওয়া দিলেন একেবারে বদলে, গভায়ুগতিকভার বৃলে করলেন কুঠাবাখাত, নতুন নতুন অভিনেতা-অভিনেতী



স্থাই করলেন নাটক রচনা করালেন, নভুন নতুন নাট্যকার স্থাই করলেন। সর বোজনার, শিরসজ্জার, প্রেরোগ-নৈপুণ্যে সব দিক দিরে তাঁর নাট্যোপহার বুগান্তর স্থাই করল। তাঁর কল্যাণে বাঙলাদেশ পেল বিশ্বনাথ ভাছড়ী, বোগেশ চৌরুরী, মনোরঞ্জন ভটাচার্য, নির্মলেলু লাহিড়ী, ববি রার, জীবন গালুনী, শৈলেন চৌরুরী, অমিভাভ বস্ত, শীতল পাল, তুলনী বন্দ্যোপাধ্যার, অমলেন্দু কাহিড়ী, বল্পা, প্রভাগ, মালিনী শেফালিকা প্রমুখ দিকপাল শিরীদের, শিলিরকুমারের কল্যাণে বাঙলার রক্ষমঞ্চ পেল দিনেন্দ্রনাথ ঠাকুর, হেমেক্রকুমার বার, মণিলাল গলেপাধ্যার, স্বরুবার গুলুলাল চট্টোপাধ্যার, শিল্পনি নির্দেশিক চাক্ষ বার ও রমেক্রনাথ চট্টোপাধ্যার, রুক্চক্রে দে, এম, ভহুর প্রমুখাৎ গুণীজনের সেবা।

অটল ব্যক্তিবের অবিকারী, প্রথম পাণ্ডিত্যের আধার, সাংখত সমাজের গর্ব ও গোরব এই বিরাট পুরুবের মৃত্যুতে ইতিহাসের এইটি গোরবমর অধ্যারের ব্যক্তির পতন ঘটল। লিলিরকুমারের মৃত্যুতে বাঙালী বে সম্পদ হারাল বহু বছরের মধ্যে সেই প্রস্থান পূর্ণ হবে বলে মনে হয় ন।। দেশ হারাল ভার বর্তমানকালের প্রেষ্ঠ সম্ভানকে, মাসিক বস্ত্মজী হারাল ভার একজন অলেম শুভাকাত্যীকে, ভার একজন অকুত্রিম কল্যাণকামীকে, ভার মন্তবাদের একজন বিশেষ সমর্থককে।

বর্তমানে, সারা জাতির কর্ত্ব্য নাট্যাচার্বের উপযুক্ত শ্বৃতিরক্ষার তার প্রহণ করা। অন্ত দেশ হ'লে এ বিষয়ে আম্বা সরকারের কাছে প্রভাব পেশ কর্তুম, কিছ এ দেশে সরকার কই ? এথানে সরকার বসতে বা বিভ্যমান, তা প্রকৃতপক্ষে সরকার শক্ষ্টির ব্যঙ্গ। তাই এদেশের সরকারের কাছে কি আবেদন কর্ব্ব ? বে কাশুজানশ্রু, চকুলজ্জাহীন সরকার অতবড় বিরাট পুরুষের জীবদশায় তাঁকে কোন সম্মানই দিস না, অত বড় প্রভিত্তাকে বধারথ সমাদর করতে পারল না—বে স্থায়নিষ্ঠ, আদর্শসেবী, তেজবীপুরুষের মৃত্যুতে সরকারণক খেকে কোনরক্ম শোক পালন করা হ'ল না, তারই শ্বভিবক্ষার জন্তে সেই সরকারের কাছে আবিদ্ধ আনিব্রে মাসিক বস্ত্মতা তাঁর বিরাট আন্ধার অসম্মান কোনও দিনই করবে না। আমাদের সনির্বন্ধ আবেদন অনুসাধারণের কাছে, বাদের সেবার তাঁর জীবন উৎস্থিত, বাদের প্রভাব উত্ত ক আসনে

ভিনি সমাণীন। আৰু ছেণ হ'লে শিশিকুমাবের মত অসামাত শিলীৰ শুভিৰকাৰ ধৰ্ণাগোগ্য ব্যবস্থা সৰকাৰ পক্ষ থেকেই অবলখন এ সম্বাদ্ধ আমাদের ভাববার কিছু থাকত না, কিছ এই খাণীন দেশে তা তো হবার নব, সেইখানেই ट्डा चामारमय मन क्ट्रिय व्ह वार्था, मन क्ट्रिय वह विमना, সব চেরে বড হতালা। তাই জনসাধারণ ছাড়া এ হংখ কার কাছে श्रामाव, स्रमान हांडा ब वाशा উপमृक्ति कवरव (क-कांवन छांवा প্রত্যেকেই সমান অংশে এই ব্যথার ভাগীদার। শিশিরকুমাবের জনহান ও মৃত্যন্থান জাতীয় সম্পত্তির তালিকাতৃক্ত হওয়া উচিত। বিশ্ববিজ্ঞালয়ে, ইনটিটিউটে, বিজ্ঞাসাগর কলেজে তার বধাবধ স্বভিবক্ষা ছওয়া উচিত, মহানগরীর প্রেকাগুরগুলির অর্থলোভী পরিচালকবর্গের काइ (थरक প্রকাণ্ডে কৈফিয়ৎ দাবী করা উচিত বে কোন সাহসে সেৰিন তাঁলের প্রেফাগৃহগুলি চালু রেখে এতথানি অকুভজ্ঞতার ভভোধিক অমাত্রবিকভার পরিচর ভারা দিতে পারলেন। মিনার্ভা খিরেটাবের ওনছি নটওকর নামালুগাবে নতুন নামকরণ হবে, কর্ণ ওয়ালিশ ষ্ট্রীটের নাম বদলে এ রাস্তার নামকরণ শিশিবকুমারের নামামুদারে হবে অনেকে বলবেন—ও রাস্ত। ববীক্রনাথের নামে इत्क (द, बांबदा दनद हांक ना, श्रामवाकारवद सांख (बरक বিবেকানশর মোড় পর্যন্ত শিশিরকুমারের নামে হোক, সেধান থেকে কলেছ ব্লীট সহ বউবাজাবের মোড পর্যন্ত অর্থাৎ বাঙসার সাহিত্যপদ্ধী हाक वरीक्षनात्वत नात्म, चात बक्षि त्वबाद छेनव वरीक्षनांव छ ভার অক্তম প্রধান ভাবশিব্য শিশিবকুমারের নামাহ্নিত রাস্তা ছটির পাৰাপাৰি অবস্থান হবে সকল দিক দিয়েই লোভন। লিলিবকুমাবের নামান্ত্রদারে শ্রীরঙ্গমের অদুরে নিমীরমান একটি পার্কের নামকরণের ও দেখানে তাঁৰ একটি মৰ্বৰ মৃতি প্ৰভিষ্ঠাৰ প্ৰস্তাব উঠেছে ! জনসাধার:পর দরবাবে এই আমাদের বিশেষ অনুবোধ ধেন তারা শতঃপ্রবৃত্ত হয়ে এসিয়ে এসে তাঁদের সমিলিত প্রচেষ্টায় এই প্রতিটি প্রস্তাবকে কার্বে পরিণত করে তুলুন বা নটগুরুর স্থতি ক্ষার জ্ঞা चात्र वा वा वावचा व्यवचन कता व्यवाचन त्र त्रव दिवह कांदा ৰত্নবান হবে এই 'উপেক্ষিত, অনাদৃত, অভিমানী অৰচ বাডগাব বুজালবের নতুন প্রাণের জমর প্রতিষ্ঠাতার উদ্দেশে প্রণাম নিবেদন

মৃত্যুক্তরী শিল্পীর অমর আন্ধার উদ্দেশে আমাদের প্রাণের প্রণাম নিবেদন করে কবিওকর ভাষার বলি—

> মরণ-সাগর পারে তোমরা অমর তোমাদের স্মরি---

স্মৃতির টুকরো

[প্ৰ-প্ৰকাশিতের পর] সাধনা বস্ত

আসমুদ্ধ-হিমাচলব্যাপী বে বিবাট ভারতবর্ধ—আমার জন্মভূমি, আবার মাভৃজ্মি, আমার পিতৃপুরুবের পুণ্যপবিত্র ভূমি—তার বিশিষ্টতার বেন শেব নেই, সীমা নেই, ইভি নেই। ভারতবংবির মাটিতে মাটিতে বৈশিষ্ট্যের বীজ। ভারতবর্ধ শিল্প-সৌন্দর্বের 'দেশ এক কথার (বিদেশীর কাছে বিশেষ করে) সব পেরেছির দেশ। ভারতের প্রতিটি নগর-জনপদ-প্রাথ শিল্পদ্ভাবে ভরপুর। ভারতের শিরপ্রাচুর্ব বিদেশীর মনে জুগিরেছে উর্বা অন্তদিকে বিশ্বর ও সম্রথ। ভারতের এই শিল্পরপী মনিমানিকা বিদেশের দ্বরাবে ভারতকে এক প্রধান আগনে অবিষ্ঠিত করেছে (অবস্ত এক্ষেত্রে ভারতীর সংস্কৃতির অন্তান্ত অন্তলির অবদানও কম নর)। অজ্ঞা ও ইলোরার নাম এই প্রসক্ষে দাবী রাথে বিশেষ উল্লেখের। অক্সা ও ইলোরা, বেধানে সৌক্র্র শৃক্তি অভিধানের বন্ধ আবহাওরা কাটিরে জীবস্ত হরে উঠেছে, ভারতের ঐতিজ্ঞের এক মহিমানিত রূপ বেধানে পরিদৃত্যমান, ভগরংদত্ত শক্তির অধিকারী শিল্পী ও ভাষরদের ক্রম্পৃতিভের বেন অম্পিন স্থাক্ষর। এই শিল্পীরা কাল্পরী ভাস্করবাও নম্প্রা

স্থ্ৰ বাঙলা দেশের মেরে আমি। মাইলগত দ্বছের বিরাট वारधान, किन्न राधान करायद रवांग त्मधान तम अकान्न निक्छे। (क्लार्यमा (थरकहे **७:**न जामहि जनसात गंब, हेलांबांव कथा। কত পল্লে দেখতুম অভস্তা-ইলোবার উল্লেখ, কত অনের মুখে ভনতুম অঞ্জা-ইলোৱার মাধুর্ষের বর্ণনা, কভ প্রস্থে, কভ পত্রিকার एश्कृष व्यक्ष्या-जेलावाव व्यवक विद्यन्त्राद्यत निवर्वनिराग्त। এইভাবে হঠাৎ একদিন অমুভব করলুম বে অজস্তা-ইলোরা দেখার व्यवम এक हेन्छ। शेरव शेरव व्यव्ह छेर्रह आभाव मन। বছবের পর বছর কোট বার, নিজের জীবনের ইভিহাসও কভ বিভিন্ন পরিবেশে কত বিভিন্ন রূপ নেয়, কত কিছু ওলটপালট হরে বার চোধের সামনে দিরে কত নতুন নতুন অভিজ্ঞতার ভবে উঠতে থাকে এ জীবন, কত ঘটনা-কাহিনী অধিকাৰ করে নেয় স্মৃতির মঞ্বা। তবু সেট ছেলেবেলা থেকে মনে বে তুর্বার বাসনা জেগেছে অজন্তা, ইলোরা নিজের চোখে দেখার, শেই বাদনার এতটুকু ভাঁটা পড়ে না বরং বত দিন বা**র অভভা** ইলোরা দেধার অভিপ্রার বেন প্রবল্পেকে প্রবল্ভর হয়ে ওঠে, ভীব ভাবে বেন আমায় আকর্ষণ করতে থাকে দুর থেকে অবস্থা चांत हेलाता, मानमहत्क (यन च्नाहे (यनक नाहे चचना चांत ইলোবার হাতছানি।

ছায়াছবির জগতে নিজেকে যুক্ত করেছি, সেই ছারাছবিকেই উপদক্ষ্য করে আমাদের বৈতে হয়েছে বোখাই। সেখানে কাল করতে হয়েছে, দেখানে বাসা বাঁগতে হয়েছে। চিন্নকালের জন্তে না হলেও কিছুকালের জন্তে বোখাইরের বাসিক্ষা হতে হয়েছে।

অকস্তা ইলোরা দেখার বাসনা এই সময় আরও তীব হবে উঠল, মনে পড়ে, ঐ সময় কাজে অকাজে প্রায় সকল সম্বই কথার কাঁকে কাঁকে প্রকাশ করে থাকভূম আমার বাল্যকাল থেকে অন্তরে লালিত এই ইচ্ছাটি।

কুমকুম শেষ হল। কাজের পর কিছুটাতো বিরতি, সামরিক জবকাশ ওধু বিপ্রামই জানে না সঙ্গে সংক্ষে জানে এক অভুত জানকও। এই জানককে উপভোগ করা চলেও নান রক্ষে। বন্ধুবর বৃলবুল (পুরেক্র দেশাই) তথন জানালেন অজ্ঞা ইলোগা দেখার ব্যবস্থাদি তিনি করতে পারেন। তাঁর এক ঘটি বন্ধু প্রীদতীশ হোনালি তথন জলগাঁওরের (জারক্ষরাদের কাছে) ডি, এস, পি অর্থাং Deputy Superintendent of Police. তাঁর কাছ খেকে অজ্ঞা-ইলোৱা দেখার আমন্ত্রণ এল। বাবা, বন্ধু

সভীপ এবং আমি ভলগাঁওরে সভীপের বার্ডলোতে কিছুদিন ছিলুম। এ সমর সভীপ আমাদের প্রতি বে কি বড় নিরেছেন এবং আমাদের ত্বধ ত্রবিধের দিকে বে কতথানি লক্ষ্য রেখেছেন তার ভুলনাই হর না।

সভীশের বাসলো থেকে আমরা বাত্রা গুরু করলুম অঞ্চন্তা-ইলোৱা অভিমুখে অধাৎ প্রকৃত গভব্যস্থলের দিকে, কবিগুকুর ভাষার পুনরাবৃত্তি করে বলতে হর---আমাদের বাত্রা হল ওক। আমাদের সকলের দৃষ্টি বা প্রবৈদ ভাবে আকর্ষণ করেছিল —বিশ্বরে বা হতবাক করে দিয়েছিল আমাদের—বা আমাদের একেবারে আ'শ্চর্য করে দিয়েছিল, তা হচ্ছে এই অভিবানে বাবার অসাধারণ আগ্রহ, উৎসাহ, উদ্দীপনা, বাবার সে কি कृति। थानथाहर्द, न्नम्मत्न, हैलारम वावा त्वम खरव चार्डन, অনেক বছর পিছনে ফেলে আসা দিনগুলোকে বেন আবার হাতের মুঠোর তিনি পেয়ে গেছেন, অভীতের ভারণা বেন আবার নতুন করে বাসা বেঁধেছে তাঁর মধ্যে। বাবার সে বেবিনোচিত চাঞ্চল্য আমি কোনও দিন ভুলতে পারব না। এক অবর্ণনীর গভিবেগে আমাদের অনেক পিছনে পিছনে কেলে রেখে তিনি এগিরে চলেছেন, বাস্তবিক—আমরা উঠতে উঠতেই দেখি, দে আরগা পেরিয়ে আরও খনেকধানি তিনি এগিছে গেছেন। সেদিন আনন্দের এক অপূর্ব ঔজ্বল্যের অভিনব প্রকাশ দেধলুম বাবার মধ্যে।

অন্তল্ডা-ইলোরা দেখলুম। দেখলুম চর্মচক্ষে, এতদিন বাকে মনশ্চকে দেখেছি, আন্ধ তাকে প্রত্যক্ষ করলুম চর্মচক্ষে, আবার প্রথম বৃহুর্তে বাকে চর্মচক্ষে প্রত্যক্ষ করলুম, তার পরমুহুর্তেই তাকে দেখতে পেলুম মর্মচক্ষে। এতদিনের অপ্প আন্ধ দেখা দিল সার্থকতার রূপ নিরে। আশা পূর্ব হল, চোধ ধন্ত হল, মন মুগ্ধ হল। দেখলুম ভারত্তের অসামান্ত শিরসম্পান, শিরের মারাপ্রী, শিরের নক্ষনকান্য, শিরের মহাতীর্থ। আমাকে অন্তুত ভাবে আকৃষ্ট করেছিল বৌছ ভিক্ষুদের দেওরাল চিত্রগুলি, ঐ দেওরাল চিত্রগুলি আমার মন এতথানি অবিকার করেছিল তা বল বোরাতে পারব না ঐ দেওরাল চিত্রগুলির প্রভাব আমার নতুন নতুন নৃত্যনাট্য রচনা করার সক্ষেত্র উদ্বৃদ্ধ করে, আমার চোধে আবার নতুন স্থারে অন্য দের, আমার জোগাতে থাকে অন্থন্ত অন্থেরণা আর আমি তা করেও ছিলুম পরবর্তী বছরগুলিতে।

১১৪॰ সালটি আমাদের ভীবনের একটি সর্বীর বছর।

चार्यात्मत चीवत्व अत्र क्षेत्रांत च्यानित, चोर्यात्मत कीवत्नत वह्यान ধার! এক ভিন্নতর প্রোতে হইতে থাকল এই ১১৪০ থেকেই, আমাদের জীবনের ইতিহাসের এক অবিশ্বরণীর অধ্যারের স্টে হলে এই ১৯৪০ এর কল্যাণে। ভাগ্যদেবভার মুঠো **মুঠো** আশীর্বাদে আমবা ভবে উঠলুম, প্রম কাঞ্লিকের **অপার** করুণার আমরা বন্ধ চলুম, জীবনের চলার পথের নিধারিত সীমালা পেরিবে এনে আরও বৃহত্তর পথে পদার্পণ করে আমরা পূর্ব হলুছ। এটিমনলাল দেশাই প্রস্তাব আনলেন বে এমন একটা ছবি করা ষাক বার পরিবি, বার ব্যাপকতা, বার প্রসার চবে অগৎজাড়া। এবার শুধু ভারত নর-সারা জগৎ, এতদিন শুধু ভারভের দরবাবে চিত্রাঞ্জলি দিরে আসা হরেছে। এইবার সেই **অঞ্জলি পাঠান্তে** হবে জগভের দরবারে—এক কথার বার পরিবি হবে আন্তর্পাতিক। ঠিক এই জাতীয় ছবি করার বাসনা মধুর মনে দীর্ঘকাল ধরেই বাসা বেঁধেছিল। বাডালীর ছেলে মধু, অন্নপুর্ণা বাডলা মারের সকান সে, चकारफ:ই स्मीत महात म मर्वस्थलन बत्रनास्य छेकाछ করে দিতে উৎক্রক, ব্যাগ্র, উল্লুধ। আর বুলবুলের সঙ্গে তো আমাদের বথেষ্ট ঘনিষ্ঠভাই ছিল সেই জন্তেই এই প্রভাবে সেও সম্পূর্ণক্রণে সার দিল। ছবির প্রবোজনার ভার গ্রহণ করলেন वाचारेत्वव अवानिया बृख्टिहोत्नव मि: (क, वि, এहेह, अवानिया। ছবির নির্মাণ কর্মে অনেক কীতিমান কুশলীকের নিপুণ হাতের স্পর্ম পড়গ। আলোকচিত্রের ভার গ্রহণ করে ছবির গল্লাংশকে রুণালী পদাৰ জীবত কবে কৃটিয়ে ভুললেন বাংলা দেশের ছুই বিখ্যাত ও প্রবীশ চিত্রকর--একজন জীবতীন দাস অভজন জীপ্রবোধ দাস, শুবের মারাজাল বুনে ছবির দারাটি অঙ্গে এক জনবস্ত রুসস্কার ক্রলেন প্রধ্যাত স্থকার ভিমিরবব্দ, সম্পাদনার ছ্ত্রহ দারিজভার গ্রহণ করলেন ভাম দাস, ছবির শিরের অলক্ষরণ ও শিরস্কার ভাব নিশেন স্থাংও চৌধুনী। ওয়াদিয়া মৃভিটোনের মি: টাটাকে পাওয়া গেল রেকজিংএর কাজে। প্রবোজক মি: ওরাদিরা এবং মিনেস ওরালিয়াও এগিবে এলেন খত:প্রবৃত হবে ভাঁলের প্রগতিধর্মী ষ্টিভঙ্গী নিয়ে, গোষ্ঠাৰ প্ৰভিটি কৰ্মীৰ জন্মে প্ৰাণ্ডৱা সহবোগিতা नित्य, छेश्माह नित्य, अञ्चल्दावना नित्य । अहे विवाह नविकश्चनाव বাস্তব রূপদানবন্ত প্রভিটি কর্মীর মনকে ওরাদিরা দৃশ্যতির এই সহাত্তভিশীৰ মনোভাব বে কত গভীব ভাবে স্পৰ্শ কৰেছিল-ভার উল্লেখ নিপ্সয়োজন, সে কথা বলাই বাছল্য। অত্বাদ: কল্যাণাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়

শিশিরকুমার

করঞ্জাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়

ৰ্ব সেই অভীজের বন্ধের মাঝারে
গিরিশ অবেন্দ্ আদি জ্যোতির্মর আলো প্রাকৃতিক নিরমেতে গেলে প্রপাবে অধানিশা দেখা দিল বন্ধমকে কালো। সেদিন ভাবেনি কেই দীগুরবি নব নব দেখা দিবে আর বার প্রদীপ্ত প্রভার বন্ধভূমি মুগ্র বার দানে অভিনব

বিভাব কিরণে বাব আলোক-সম্পাতে
প্রতিটা বন্দনা করে প্রাচীব সহিমা
কৃষ্টা নিল্লী অসংখ্য বে নবধাবালাতে
জাগার কলনালোকে গুরুব মহিমা ৷
বাচনে, প্রকাশে বার অপূর্ব সাধনা
দিকে দিকে শুনি বার অর্থনিন বাজে
নিশিবকুমার সে বে মুঠ আবাধনা

ভাবি এক, হয় আৱ

দিলীপকুমার রায়

ইতালি

এক

ক্রেপেতে উঠেই পল্লব দেখে যুত্মক। যুত্মক বলে জন্মনে: Gott sei dank, mein Freund! ১ ভাবছিলাম কত কী? মানে? আমি আনব না?

কে জানে ভাই? সাকাৎ শেকপীয়ৰ বখন বলেছেন: সাৰ্থান, প্ৰেমিক, পাগল ও কবি এদের মধ্যে চেনা বার না কোনটা কে।

পল্লব হালে: বলে থাকতে পারেন, কিন্তু আমি আসৰ বলে যথন কথা দিয়েছি, তোমাকে দিয়ে টিকিট কিনিয়েছি।

যুক্তৰ এবার ধরে ইতালিয়ান বৃক্লি: L'amore é divina, ma terribile হ কথা দিয়ে কথা ভাঙা কোন কথা বে হাদর দিয়ে জ্বন্দ ভাঙে দালা! কিছু ঠাটা থাক। তোমার কাছে আমার একটি মিনতি আছে।

ঐন ছাড়গ · · ·

মিনভি ?

হাা। তুমি তোমার তাঁকে লিখে দাও বে আমি জানভাম না। কী?

ৰে এরি মধ্যে ভোমার হৃদর তাঁর হয়েছে— তাঁর হৃদর তোমার।
পদ্ধর ঈবং লক্ষা পেয়ে বলে: ধ্বরটা দিলেন কিনি, শুনি?
দুক্ত এবার ফ্রাসি বুকনি ঝাড়ে: Que vous ètes indisevet, moncher। ৩

নাভাশা নিশ্চয়ই ?

তবু দ্বেরা ? শোনো, স্বামি সত্যিই হঃৰিত, বিশ্বাস করো। ছঃৰিত কেন ?

ভোমাকে তাঁর কাছছাড়া করলাম বলে।

ভাতে को ? कृषिन वामि है छ। किय मिथी हरते।

কে বলতে পাৰে ভাই ? এ হুবস্ত কৰিটিই কি ফেব কুডাক ভাকেন নি—there is a tide in the affairs of men..?

প্রবের বুকের মধ্যে ক্ষের ধ্বক করে ওঠে। মনে পড়ে বিকেল বেলা আইরিনের একটা কথা: বদি আর দেখা না হর ?

যুক্ত কটিভি হেনে বলে: ওকী শামি খভাবে প্রগণ্ড জানোই ভো—ছমদাম করে কখন কী বলি ! না না, বিবহিণীর সঙ্গে বিবহীর দেখা হবে বৈ কি বখন ভ্রসা দিয়েছেন অকুডোভরে বে সে কবি নয়, কবিদের রাজবাজ দান্তে আলগিবেরি:

L'amor che move il sole e l'altre stelle' 8

- ১। ख्लवांनरक श्लवांन, वस्तुवत्र !
- ২। প্রেম স্বর্গীর বটে, কিন্ত ভারানক।
- । अभन व्यंत्र करत, तकु ?
- ৪। বে কোমের চিব নির্দেশে ধার ছপন ও ভারাদল।

কেবল তবু তুমি ভাঁকে লিখে দিও বে প্রেমের এ ক্ষতা ভানা সংযও আমি ভার পথের কাঁটা হয়েছি ভবু না ভানার দরণ।

পরব হাসে: ভর নেই—সে নিজেই বলেছে আমাকে ইতালি বুরে আসতে।

থাঁচার চুকতে না চুকতে দোর খুলে দেওয়া ?

খাঁচাতত্ত্ব দে কী জানে শুনি বে চিবদিন গাছে পাছে কু কু কবেই বেডালো ?

যুত্তক ওর দিকে একটু চেয়ে বলে: একটু কোণঠেদা করেছ মানছি। বলেই হাই ভুলে: একটু কফি আনানো বাক, কী বলো? সারাদিন বে ছুটোছুটি করিয়েছ়। বলেই বোডাম টিপল।

উল্টোচাপ ? কব কারদা বুঝি ?

व्यथ भरिहांत्रक्त्र व्यक्तापत्र ।

যুক্ত অৰ্থন বলে: Bitte eine kaffekanne und Zwai tasse! e ।

Sofort, mein Herr! । বলেই অভিবাদন করে প্রস্থান।

যুক্ষ অভিজ্ঞ হাসি ছেসে বলে: এনটি কফিপট তিন পেয়ালা ভরিবে দের, বন্ধু! অধাচ দাম দিতে হয় ছ পেয়ালাব মাত্র! বলেই ধেমে: কিছু জর্মন টেনের এই দাক্ষিণ্যের কথা জানে কেবল—নিজের বুকে হাত রেখে—The duffer that has been taught to roam but not—প্রবের দিকে আঙুল দিয়ে দেখিরে—The duffer who sighs for home, sweet home! প্রব হেসে বলে: But who still entrains for Rome. যুক্ষক হাসে।

ছুই

ওঃ বধন বোমে পৌছল তখন সন্ধা আকাশে মেলে ধরেছে তার বিক্থিকে পাধা। টেল রোমের টেশনে থামতেই একটি স্কণা স্বেলিনী মধ্যবহুত্বা ছুটে এসে সুস্থকের ছুই গালে চুখন করতেন। বুস্থক পরবকে তার সামনে পেশ করে বথাবিধি হাকল: সিজোর পরব বাক্টি—সিজোরীনা এলিওনোরা জেনোনি— ভামার ব্লনিনির বান্ধবী তথা ছুদিনে আশ্রেরদাত্রী—1' attrice famosa e graziosa ৭।

পল্লব বধাবিধি অভিবাদন করে ট্যান্থি নিল। Albergo Luna, per favore । ৮।

পথে মন ওর একটু প্রাক্তর ছরে উঠল ভাবতে বে মোহনলাল ও বিতা হয়ত ইতিমধ্যে এলে পড়েছে।

হোটেলটি বড় নর কিছ ছবির মন্তন স্থলর। শহর থেকে এই দুরে। সামনে একটি ছোট বাগাল লন্তায়-পাতার ফুলে ভগ। জর্মনির কোলাহল ও শীতের পরে এ মনোরম উত্যান্থাটিক য় এসে পরবের কীবে ভালো লাগল—বিশেষ করে ইতালির নির্মেঘ আকিশ আর স্থিক চাওবার দাকিলো।

- थक्षिक्षिण्डे उ पृष्ठि (श्रद्रामा, भ्रदा करत्र)
- ৬। এফুণি, মহাশ্য়।
- 1। প্রধাতা ও কমনীয়া অভিনেত্রী।
- ৮। जूना कार्देल, मदा करत्।

কেবল কোথার মোহনলাল ? লুনা হোটেলের অধ্যক্ষ কোনো ধবরই দিভে পাবল না। একলা পড়ে ফের ওর মন কেমন করে ধঠে আইরিপের জঙ্গে।

ুগন্ত হবে বিছানার ওতে না ওতে ঘ্ম। স্থা দেশল: আইবিণ নাতাশার ওথানে পিরানো বাজিবে গান গাইছে, মাশা ও কাতিয়া সামোভাব থেকে চা ঢালছে, আর নাতাশা এক কোণে ছুই হাতে মুখ চেকে বলে।

ঘুম ভেঙে গেল। আইরিণের কথা ভেবে ওর বুকের মধ্যে টন টন করে ওঠে। সঙ্গে সঙ্গে মনে পড়ে নাভালার কথা: আইরিণের ঘরে ছুহাতে মুখ ঢেকে তার সেই কাল্লা, আর আইরিণের উক্তি: পারো তো ওকে ক্ষমা কোরো, ও বড় ছংখ পেরেছে। পল্লবের মনে বিহাদ ছেরে আসে • বেচারি নাভাশা!

তিন

পরব কুরুমকে রোমের ঠিকানা দিরে তার করল: মোহনলাল বঙনা হুহেছে কি না জানিও, আমি তার জন্তে রোমে অপেকা করছি। ছ-দিন বাদে তার এল মোহনলালের কাছ খেকে: ইতালী বাওৱা পেছিরে গেল। চিঠিতে সব লিখছি।

কিন্ত চিঠি আসতে তো অস্তত এক সন্তাহ। কী করা বার ? ভেবে-চিছে দ্বির কবল: অপেকা কবাই পদ্ধা বধন একেই পড়া গেছে। বোজই ইচ্ছা হয় বার্লিনে ফিরকে, কিছু আইবিণকে ব'লে এসেছে বে নিজের মনের সঙ্গে মুখোমুখি হ'তে হবে একেবারে একলা! এখন সাত ভাড়াতাড়ি ফিরলে মুখ থাকবে না। মনে মনে আভড়ায় বিষয় হ'বে: নিয়ভি: কেন বাধ্যতে ?

কিছ মানুষের মন তার উপর বৌবনের ছারোগ্য শক্তি: পল্লৰ ছ-তিন দিনের মধ্যেই থানিকটা ফিবে পেল ওর সহজ প্রাকৃরতা। কেবল একটি চিন্তা ওকে বেঁধে ক্রমাগভই: কুরুমের চিঠির উত্তর দিতে এত দেরি ও কথনো করে নি—চার পাঁচ দিন হ'বে গেল। একবার তাবল ছাইরিপের কথা সব লেখে—কিছ ভার পরেই ছাসে কুঠা: থাক্ এত তাড়া কী? মনটা ছাগে একটু ছিরই হোক! তাছাড়া কুরুম সবে জেল থেকে বেরিয়েছে, তার উপর ছাত্ত — এ সমহে কাজ কি ওকে 'লক্' ক'রে?

থকলা থকলা মন্দ লাগে না। তু-চার দিনের মধ্যে ওর মন

সারো একটু সহজ হ'বে আসতে জনারব্যের মধ্যে নি:সজতার রল

বেন আরো বেশি ক'বে পার। তবে একেবারে নি:সজ বলা বার

না—বেহেতু প্রভাহ খন্টা ভিন-চার ক'রে কাটে রুম্মকের সাহচর্ষে।

এলিওনোরার ভিলা রোম থেকে মাইল পনের দ্বে, বিস্ত সে তরে

কম্পিত হয় মুদ্দে জদর বলভ রুম্ম ওর স্বভাবসিত প্রসাভ চতে।

ব'লেই মুধে মুধে ছভা কাটত গৈনিশী ছল্পে (বছ ভাবাবিৎ হ'লে

হবে কী—ওর মাতৃভাবা তো বাংলাই বটে):

এলিওনোবার ববে আছে বন্ধু, সুইটি মোটর, ভয় কারে আর ? সিনেমার প্রাভঃকালে বার সে দিনের পরে দিন একটি ঘোটৰে বাৰ বাৰবী বধন—
বাৰ্ব্যবের দেৱ ধার বিভীর শুলন থুশি মনে,
বার বে পেট্রোল বেগে সাড়ে সাত কোল
অবলীলাক্রমে সথা, অবলীলাক্রমে।
সব চেরে ভালো গণি এই ব্যবস্থারে
পরের মোটর বানে হওরা ভ্রাম্যমান:
মোটরের ঝক্তি নাই, আছে শুধু ভ্রমণ বিহার!
চলো ভাই চলো
ইতিইভি—বধা প্রাণ চার।
ঘণ্টা ছই প্রতিদিন করা বাক বোম-পরিক্রমা,
দেখি রাশি রাশি ধ্বংসন্তুণ, ফাটাকোম্ন,
জাঁকালো ঐতিহাসিক চিত্রশালা, গির্জা, ভ্যাটিকান
গধিক চ্যাপেল-আদি—বাহা পেশাদার টুরিটের
বপ্ন পক্ষ্য ভ্রে—

বা দেখি' সে হর কাল্চার্ড, সভে জান,
বলিও কী নূল্য সেই কাল্চারের অথবা জ্ঞানের
আনে না কেহই আজো হার !
ভথাপি হবেই হবে দেখিতে সে-সবই,
বেহেডু এ সব দেখি' তবেই না বাবাবৰ উৎকৃষ্ট ডাফার
মহাগর্বে ওঠে ফুলি,' ভাবিয়া—'দেখেনি
এ সব তো গৃহাদীন নিকৃষ্ট ডাফার !'

পালব বতই যুদ্ধকে সাক্ষ মেশে ততই বেন বোবে বেশি ক'ৰে একটি কৰা: হাসতে ও হাসাতে পারা জীবনে প্রায় একটি প্রতিভাব সামিল। জবচ কেন বেন ওব মনে হব সুদ্ধকের হাসি একটা মুখোব—Laughter veiled in tears—জার ভাই জভেই ওব হাসি, বসিকতা হ'বে উঠেছে এমন সমুদ্ধ।""

চার

ৰুম্মকেৰ সক্ষে মোটবে ঘূৰে ঘূৰে পল্লবেৰ বাটিভি উৎকৃষ্ট ভাফাৰেৰ পদবী লাভ হোক বা না হোক এই একটা লাভ হ'ল বে নেহৈয় প্ৰবাট অনেকটা জানা হ'য়ে গেল। এছাড়া প্ৰভাৱ হু' ভিন বলী ক'ৰে ইভালিয়ান পড়তে পড়তে ইতালিয়ানে ফ্রাসি ভাষার মন্তন বদ্ধব্দে কথাবাঠা চালাতে না পারলেও এ শ্রুতিমধুর সাঙ্গীতিক ভাষাটির মাধুর্বরসে ওর মন রসিরে উঠল। এথানে ওথানে ইতালিয়ানদের কথাবাঠা ভনতে ভনতে ওর কানও ক্রমণ্ট খুশি হ'বে উঠতে থাকে—আৰ সঙ্গে সংস্থ অপ্ৰতিৰ গান পাপল জাভটির গুণাগুণ সহক্ষেও ওর অনেক কিছু জ্ঞান লাভ হ'তে থাকে বার মধ্যে ওধু তথাই নেই, বসও আছে। যুক্ত মিথ্যে কলেনি: এক একটা ভাষা শেখা মানে মনবিহঙ্গের একটি ক'রে নডুন আকাশের ধবর পাওয়া। ভাছাড়া শহর ছিসেবে রোমের সৌকর্বেও मिकारे मुद्ध इ'म। धर्भात (नहे वर्षे मश्चरनद वा वार्मितनद পরিভ্রতা, পকেট কাটার উপত্রব এখান দারুণ, রাজাঘাট পার হ'তে বেগ পেতে হয়, টাফিক পুলিখের চিহ্নত কোথাও নেই, বেন্তর্যাতে পরিচারকদের তৎপরতার একান্ত অভাব, বেখানে সেখানে প্ৰিকদের বগড়া—এক কথার, গোলমাল, বিশ্বলা, অসুতিলা

By H

বেমনি স্বান্শ তেমনি সৌশ্ববিলাসী; বেমন মঞ্বাক্ তেমনি সহজিয়া! আইবিণের তাড়না না ধাকলে এধানে ও সহজেই ছতিন বংসৰ প্ৰম সুৰ্থে কাটাতে পাৰত—নিশ্চৰই পাৰত।

কিছ ভবু আট দশ দিন বেতে না বেতে ওর কেমন বেন মনে হ'তে থাকে—কা করছি এথানে ? ছুটি ? কিন্ত ছুটি বখন দীৰ্ঘায়িত হ'তে হ'তে লক্ষ্যহীন আলদেমিতে পৰিণত হয় তখন বিবেক ওঠে মাথা চাড়া দিয়ে। ও স্থির করল-বদি এখানে মোহনলালের খাসা পর্যন্ত থাকছেই হয় ভাব অন্তত একটু ইভালিয়ান গান শিধলে মক কি ? কয়েকটা ইভালিয়ান গান ও ৰাৰ্নিনেই শিখেছিল ওব শিক্ষক ও আইবিশেব কাছে কিছ সে ভো উপর উপর শেধা। এবানে একটু রীতিমন্ত নিধলে এক চিলে ভুই পাৰি মারা বার—ছুটির রসও সমৃদ্ধ হ'বে ওঠে, বিবেকেরও মুৰ চাপা দেওয়া হয়। সকালটা ইঙালিয়ান পড়ে, ছুসুষটা যুস্থফের সলে এমণে কাটে, কিছ বিকেল আৰু সন্ধ্যায় কৰে কি ? এৰ একটা বিহিত না করলেই নয়।

বোজ সন্ধ্যাবেলা পল্লব পুনা ছোটেলে একাই খেতে বসভ ভাইনিং ক্ষের এক কোলে। সেধানে পালের টেবিলে দেখত একটি দীর্ঘাকৃতি, সাঞ্যান, গৌরবর্ণ মৃবককে। ওর বুবে কমনীরতার নকে ছিল তেজবিভার আন্তা। পরবের ওর সকে আলাপ করবার ইছে। হয়। কিন্তু ও পলবের সঙ্গে চোঝোচোখি হলেই এমনভাবে চৌধ কিৰিছে নেয় যে পল্লয় ভৱদা পায় না এগোতে। একদিন হোটেল ম্যানেজারকে জিজাসা করার সে বলন: সিজোরে-র নাম পাপিরো, ৰব বেশি কেউ কিছু জানে না—E molto researvato ১

দিনকৰেক বাদে যুত্তককে নিবে ভোজনককে চুকভেই চোখে পড়ে—'নিভোর শালিরে।' ত্পুর বেলারও হোটেলেই খাওরা শুরু ক্রেছে। সুস্ক একে দেৰেই চাপা স্থরে পল্লবকে বলে: ক্র।

ब्रक्षे निक्त अन्छ (शहाइन, कार्य उरक्षार उत्तर मित्क এক্রার ভাকালো, ভারপরে ভাড়াতাড়ি ভাহার সমাধা করে উঠে চলে গেল। যুক্তৰ ওৰ পাইপ ধৰিবে হেনে ৰলে: বেল চেহার। না ?

বেশ ? Damning with taint praise ? আমাৰ তো খনে হয় ওয় ৰূখ হ'ল তাই বাকে ফ্ৰাসীয়া বলে distingue, নয় ?

ৰুক্তক ভেবে বলে: তা বলা বার। কিছ---

ভুমি ৰে কী! সব তাতেই কিছ!

রুখক হাসে: বলে না—বরণোড়া গরু সিঁতুরে থেব দেখলেও ভৰাব ?

আমাৰ ঘৰ পোড়েলি। সুভৱাং আমি চাই ওৰ সঙ্গে ভাব কৰতে ! উটিভঃ, ও ধরা-ছৌওরা দেবে বলে মনে হর না। বলেই একটু থেমে: জোর করে বলভে পারি না, তবে আমার মনে হয়-ও হয় কোনো দাকণ কাজ নিয়ে আছে, নয় তোমার মতন কোনো সমস্তার পড়েছে।

আমি সমস্তার পড়েছি—কে বলেছে ? নাভাশা ?

दृष्ट्य बक्ट्रे हुल करत (बरक वरन : फूमि वबन वरतह स्करणह--चांव लुकित्व की हरव ? हैं।--- दालाइ तारे द नहें एक भारत नि---ভোষারই গান ভাই—'আপন বধুরা আন ববে বার আমাহি व्यादिना क्या ।'--ना ?

কীৰে বলোবাতা। বলো—নাতাশাকী বলেছে? অকথ্য কথা কিছু নয়। বা বটেছে ভাই, আর কী ? वनन करव ? क्यन ?

আইবিণের শয়ন ককে বে সীনটি হবে বার—ভাব পরেই। বিকেল চাৰটের ও আমাকে টেলিকোন করে দেখা করতে বলে আসতেই হবে—অত্যন্ত অঞ্চরি ইত্যাদি। কী করি-? বেতে হল। को दनम ?

এ ঠিক তোমারি মন্তন কথা হল। আমাকে বা বলেছে ভোমাকে বলতে পই পই করে মানা করে দেয়নি নাকি? বলেই

এই আর এক রীতি বেয়েদের সার্বজনীন। ভোষাকে বা বলবে বেন যুণাক্ষরেও আমি না জানতে পারি, আমাকে বা বলবে ভোমার ৰাণে উঠনেই সৰ্বনাশ! জানো না কি এখনো, ছে ভূক্তভোগী ?

জানি হে সবজায়া ৷ কেবল এইটুকু জানভেই বাকি জুমি এইমাত্র আমাব সমস্তাব কথাটা তুললে কেন? নাডাশার কাছে ওনে, নিজেরি আশাজ ?

যুত্ত একমুৰ ধোঁৱা ছেড়েছেসে বলে: কী নাছোড়বালা! কী হবে বলো তো এসব কালতো কথার ? বল একটু হেসে: তুমি নিজেই বুৰবে একদিন।

হী ? না, ছাড়ব না। অমন আড়াল দিবে লুকিরে গেলে

আরে ভাই, আড়াল আছে বলেই ভিন ভূবন চলছে।

ষাও। তোমার সঙ্গে আছি। এরই নাম বন্ধু বটে।

মুদ্ধফ পল্লবের হাতের উপর হাত রেখে বলে: আমি অনেক কিছু লিখেছি বে ঠেকে ভাই! আৰ একবাৰ নৱ বাৰবাৰ। অনেক পোড় খেরে তবে ব্ৰেছি বে, গারে প'ড়ে বন্ধু তো বন্ধু প্রিরতমা বান্ধবীৰেও কিছু বলকে বাওয়া ভূল: তাতে কাভের চেয়ে লোকসানই বেলি--ভুষু বে বলে ভার নয় বাকে বলবে ভারও।

না। বলতেই হবে আজ। আমার লোকসান হর হোক যুক্ত একটু চুপ করে থেকে নিচু করে বলে: আমার মনে হর জুমি ভূল করেছ আইরিণকে ছেড়ে এসে। ভাই ভো সেদিন ঐেণ ভোমাকে বলছিলাম আমার থেদের কথা-মানে ভোমাকে ছিনিরে আনার জন্তে।

কিছ ছিনিয়ে আনলে বলছ কেন ? আমি তো এসেছি ছদিনেৰ ব্দরে বেড়াতে। নাতাশা বলে নি ?

वामाइ, कि छ छ।है. . . वनव १

না বললে—

আছা আছা বলছি। বলে ফের পাইপে টান দিরে: আমা^র मत्त हत्र मासूरवत्र क्षोवत्त अक अक्टा मध्र अक्वांतरे जात-ছ'বার না জানি বলেই ভাকেই বে সে-লগ্ন দেখলেই চিনভে পারে। এ সময়ে ত্ৰিনের জন্তেও ভোষার ওকে ছেড়ে এন্ড দূরে জাসা উচি र्द्धन ।

না বলতেই হবে, আসি ছাড়ব না আৰু।

পল্লবের মনে কেব সেই জনামা শবার ছারা খনিবে আসে, সঙ্গে সঙ্গে মনে হয়—আজ সাত শাট দিনের মধ্যে জাইরিশের একটি চিঠিও পারনি, অথচ ও তাকে লিখেছে প্রায় প্রত্যন্ত। ও সুস্থককে বলে একথা।

যুত্ত ভনে : ভ বলেই ফের পাইপ টানা ওক করে।

ह"—মানে কী বলি ভাই ভাবছি। তবে একটা কথা বলতে পাৰি বলি কথা দাও—কিছু মনে কৰবে না।

मिकि ।

আমার মনে হয়, বলে মৃত্ত থেমে থেমে, বে, তোমাদের মধ্যে চনিয়ঁতা বে-স্তবে পৌছেছে লে স্তবে জনবের প্রামর্শ চাওরাই ভালো—বিজ্ঞ বৃদ্ধির নির্দেশে চলতে বাওরা বোকামি।

বোকামি!

Folie, folie mon ami! ফুগদী ভাষার folie pure et simple. জুগদীর বাকে বলে—Narrheit, Dummheit, ক্যাপিটাল হ্রফে, এফেনের ভাষায়—follia—জাবো ভাষা করব কি?

পলব গুম্ । রুত্মক ওব পিঠে হাত বেখে কোমলকঠে বলে:—
তাই তো বলছিলাম ভাই—জীবন এমন সময় আসে বখন প্রিয়তম
বন্ধুর কথারও উল্টো উৎপত্তি হয় । আমি তো বলতে চাইনি।

নানা। ভোমার তিরস্কার আমি মাধা পেতে নিচ্ছি। কেবল আমি কী করতে পারতাম বলো ভো বধন—বধন আইরিণ নিসে জোর করল তার আদর্শের কধা ব'লে।

যুখক আবো নরম খবে ছেনে বলল; ভাই, তোমাকে দেখে সমবে সমবে আমার বড় মারা হব। আব কেন আনো? কারণ তবলে হয়ত বিখাস করবে না, তবু এ সভিচ বে আমি এক সমবে ছিলাম প্রায় তোমারই বমজ—মানে হিবো, আইডিরাল, আট এই সব বুলিকেই মনে করতাম পথের পাথের, ভুজানে দিশারি।

পলব আহত সুৱে বলে: বুলি ? তুমি কী বলছ রুস্ক ?

যুত্রকের মুখে স্লান হাসি কুটে ওঠে; বলছি ভাই, অনেক বা খেরেই। কিছ এ বা থাওয়ারই আমার দরকার ছিল, নৈলে আমার হবত কোনো দিনই চোধ খুলত না—মানে, আমি এই পরম সভাকে সভা বলে চিনতে পারভাম না বে, খোঁহার চেরে বান্তব বড়—নীভিবাদের চেরে মাত্রব। খোনো বলি আছ বা এতদিন বলি করেও ভোমাকে বলতে পারিনি—এই ছিবার বে তুমি বুঝবে না বা ভূল বুঝবে। আছ হয়ত বুঝলেও বুঝতে পারো—আমি কী বলতে চাইছি।

ব'লে নিবস্ত পাইপ কের ধরিরে ব'লে চলে:—বছর
দশেক আপো ধথন আমি ভোমারই মতন 'সব্স্থ' ছিলাম
^{এই} ইতালিতেই ভালোবাসি একটি অটাদশী সরলাকে। সে ধর্মে
ছিল ক্যাথলিক—দেখতে স্থন্দ্রী, নাবটিও তেমনি মিটি—মারিয়া।

তথন আমার বরস বাইশ তেইশ—ঠিক তোমার বরস। তাই ভারতাম— সবৃত্ধদেরই মতন—বে জরাজীর্ণরা পুরোনো পুঁথির গাঁতার বা বা লিখে গেছেন ভারই নাম জ্ঞান পুরদর্শিতা—জীবনের অভকারে আলোর এজাহার, আর এ সবের মধ্যে সেরা এজাহার— কোরণের বাণী। কলে আমি মারিবাকে বলি ও বুসলমান না হলে আমাদের বিবাহ অসম্ভব। বিহা কেন্দ্র ভিন্ন বিশ্বাক্তিশি সবৃক। কাজেই মনে করত বাইবেলই একমাত্র সত্য। পরিবাম বা হবার আমাদের প্রেমের নরে ধর এসে হানা দিল, আমি মারিরাকে ছেড়ে চলে গেলাম অন্নফোর্ডে দর্শন প'ড়ে অশান্ত মনকে শান্ত করতে।

দর্শন পড়তে পড়তে মন আমার উঠল জেপে, কিন্তু দর্শনের কোনো বাণীর দক্ষণ নয়, তার মধ্যে কোনো বাণী থুঁজে না পাওরার দক্ষণ। হ'ল কি, দর্শন পড়তে গিরে দেখলাম দর্শন ভা নর ভাকে বা ভেবেছিলাম—অর্থাৎ ভার মধ্যে সভ্য নেই আছে ভারু সভ্য নিয়ে মারামারি, কাটাকাটি, হানাহানি।

এ মুনি বলছেন লগত বিকাশ পেরেছে একটা আইডিয়া থেকে, ও-মুনি বলছেন জগত একটা নাম-না-জানা আলোর ছারা, সে মুনি বদছেন এর সংগে এর সংখতে থেকে জীবনের বিকাশ - ইত্যাদি। এক কথার তথু কথা--কথা--কথা! ফলে আমার মন ক্লান্ত হ'বে হাল ছেড়ে দিল বখন দেখলাম এ-কথার ফুলক্রিব ঠাওা ফিনকিতে না আছে জীবনের ভাপ, না পথ দেখাবার আলো। ভখন ব্যালাম-স্থানয়কে ধর্মের বুলির চাপে পিষে মেরে কী দাক্ত ভূল করেছি। মারিয়াকে অমৃতপ্ত হরে লিখলাম বে আমি অভার ভ্ৰান্তি বলে, বলি সে আমাকে কমা করে তবে তার কাছে বিবে शांव। किन्द जबन थे स्व वननाम, नग्न छेडीन इस्त लिस्ह। त्न লিখল—সেও ভুগ করেছে বাইবেলকে গুরু মনে করে, কিছু ছার হয় না, তার শরীর মন ভেড়ে গেছে-এক লম্পটকে বিরে ক'রে। শেবে পুনন্চ দিয়ে লিখল: ভোমাকৈ ৰদি বিবাহ করতাম তাহ'লে মুসলমান হবেও সুধী হ'তাম, কারণ ভাহ'লে ইন থাকত বুলি হরে মনের নেপথো—অন্ধকারে, সামনের অলভ প্রেমের মিলনের পাৰপ্ৰদীপ। আমি ভংকণাৎ রোম বওনা হলাম, গিয়ে ভনলাম এলিও নোৱার মুখে—যে মাবিয়া টাইবাবের ঋণে ডুখে আত্মহত্যা করেছে।

এলিওনোরা।

হা।—এলিওনোরা মারিরার দিদি। তাই আবো ওর কাছে মাবো মাবো ছুটে আসি। এ লক্ষ্যহীন খুঁটিহীন জীবনে কেবল ওর দরদে ও প্রেহে বা একটু সামরিক শান্তি না হোক—সাজনা পাই।

পল্লব একটু চুপ ক'রে থেকে কিছু বলেই থেমে বার।
বুস্ফ বলে: ডুমি কী বলতে বাছিলে আমি আনি। না, আমি
বলি না দেশও ধরের মন্তনই হারাবাজি। কারণ ধরের পনের
আনা কবিকল্লনা হ'লেও দেশ ঠিক তা নর, তার অন্তত কারা
আছে—বাকে চোখে বেখা বার দিনে দিনে, পলে পলে। কিছু
তবু বলব জগংজোড়া মাছুবের প্রাণশ্শন্তিত সভ্যের তুলনার
কেশান্মবোবের সত্য একেবারে হারা না হ'লেও সে-ধরণের প্রত্যক্ষগোচর সত্য নর—বাকে বলা বেতে পাবে 'কংক্রীট'— অপ্রতিবাজ।
অন্ততঃ মারিরার অকাল মরণের পর থেকে আমার কেবলই মনে
হরেছে, উঠতে বসতে, বে মাত্র একটি মানুষকে স্থী করার অভে
বলি দেশকেও হাড়তে হর, তবে দেশের চেংও বে বড়, স্বার বড়—
মানে আমাদের অন্তর্নাল্লা, বে আছে বলেই জগং আছে—সে
প্রসল্ল হ'বে আমাদের আনীর্বাদ করবেই করবে। আমি ভার

কিছুই আদে বার, থাকে কেবল একটি জিনিব—বছর। ব্যক্তিগভ প্রেমের কেব্ল হ'ল এই স্থান্থ, ভাই ব্যক্তিগভ প্রেমের চেরে বড় এ-সংসারে কিছুই নেই। অস্তভঃ এই হ'ল আমার জীবনের স্বচেরে বড় উপলব্ধি—এখন পর্বস্থা। পরে এর চেরে বড় উপলব্ধিক আয়ন্ত করব কিনা বলতে পারি না। ভবে বেটুকু জানি বললাম— মানে আমার আভক্ষের credo:

ভনতে ভনতে পলবের মনে বিষাদ ছেরে আসে। সে একদৃষ্টে বাইবের দিকে ভাকিরে থাকে - বৃটি নেমেছে - পাভার পাভার জেগে উঠেছে বার-বার শব্দ - বেন ওর প্রদরের দীর্ঘবাসের প্রতিকানি। মুক্তবে থানিক বাইবের আকাশে খনখটার দিকে চেরে থাকে শৃষ্ট দৃষ্টিতে। ভার পর পলবের দিকে ভাকিরে বলে: ও কী । কী হরেছে ?

পল্লৰ হাসতে চেষ্টা কৰে: হবে আৰার কী ?

মূপুক কোমল কঠে বলে: এই অভেই বলভে চাইনি ভাই।
কী হবে জুংধের কথা ব'লে ? আঁথার দিয়ে আঁথার কাটে না।
ভাছাড়া—ব'লে একটু থেমে—

পবের অভিজ্ঞতা ধার ক'বে এমন মূলধন জোগাড় করা বার না ভাই, বাকে জীবনের বাজাবে বাটিরে মূলাকা মিলভে পারে।

কিছ কাছে আসে—অন্তত: কোনো কোনো সময়ে।
রুহক চিন্তিত প্রের বলে: আসে কি ? আনি না। হয়ত
কিছু কাছে আসতে পারে দৈনন্দিন লেনদেনের বেলার—কিছ
বখন আমাদের মূল শিকড়ে টান বরে ভাই, তখন সে বেদনার
স্তিয়কার আলো দিতে পারে এক আমাদের অন্তরাম্বা—অন্ততঃ
আমি তথু তাকেই মানি দিশারি ব'লে—বাইরের কাউকে নর।
ব'লে একটু থেমে:

বৃষ্টি থামল—আজ উঠি। হাঁ। আমি এলিওনোরাকে বলব ভোমার গান শেখার কথা। ওহাে, দেখ দেখি—ভূলেই ব'সে আছি: কাল বিকেলে সে ভোমাকে চারে নিমন্ত্রণ করেছে। চারটের ভার মাটির আসবে ভোমাকে নিভে। মনে রেখাে, কেমন ? কারণ কাল ববিবার, ওর ছুটি—আমি লাকে আসতে পারব না।

উন্মনা মেয়ে

উন্মনা মেয়ে নীল ঝিলমিল আকালের দিকে চেয়ে ভাবে দিনগুলো কিলোর বেলার অবসর কিছু পেরে। এ সংসারের কুটিনে অবগ্র অবসর মেলা ভার মিলেছে আজকে কি জানি কেন বে অনেক ভাগ্য ভাব। ছুশ্বিহীন নীৱস কাজেতে বাঁধা সে বে দিনে রাতে কাজের পরিধি বার শুধু খর কলতলা উঠোনেতে। কাৰ করছে তো বগতে সকলে কাব্দের অভ নাই ভধু দেখা চাই সে কাল কেমন খাদ কড্টকু পাই। শত ব্যস্তভা ভার মাবেও ভো অবাক পুৰিবী জাগে, রপ-রস-আলা-বং বাসনার চেউ অন্তরে লাগে i একদা অভীতে অংগছিল টেউ বধুৰ হাদয়তটে— পূৰ্ব সে হিয়া শৃক্ত আজকে কোৱাৰ আসে না মোটে। খর বাড়ামোছা, রাদ্ধা বাটনা, এটো বাসনের ভলে স্থদরের নদী হারিরেছে গড়ি পাঁক খোলা কাদা জলে। এই সংসার একথানি দাওয়া হব-স্বামী-ছেলেপুলে অনেক অভাব ব্যাবি-লোভ-ক্ষোভ সব কিছু অবহেলে। বলস ভাৰনা ভাৰৰে আৱামে সে সময় কি সে পায় ? ভোর রাভে উঠে করলা ভাঙার কাজ কে বা বলো নের ৷ আরো আছে ভার নিভ্য ভাবনা অন্ন পারো কোথার ? লোড়াভালি মারা এভ দারিজ্য। ভবুও বাঁচভে হর। সে আছে বলেই এখনো এ খবে স্টেব খেলা চলে বিকৃত কামনা: তার স্বাক্তর গুটি হয় সাত হেলে। মনে করতে নে চারনাকো তবু ক্ষণিকের কাঁকে কাঁকে ষনে পড়ে ভার শত স্বভিত্তরা মধুর অভীভটাকে। পথকা হাওয়ায় উচ্ছে আসে বেম স্বৃতির ছিল্পাতা সেই ৰপাৰীয়ি ছাৰাখন প্ৰায় কিলোৱ কালের কথা।

উপকারী ইংরাজ

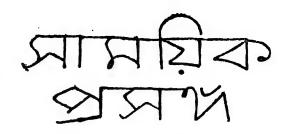
⁶⁶ সম্প্রতি কলিকাভা গড়ের মাঠ হইছে লর্ড বিপণের বে মৃতি স্থানান্তবিত কথা হইবাছে, আহার সম্পর্কে কোন পত্রলেথক ভোৱ সহবোগীকে লিখিয়াছেন-স্থাৱন্তনাথ বন্ধ্যোপাধ্যার লর্ড বিপৰের জনপ্রিয়তার কারণ উল্লেখ কবিবা লিখিয়াছেন-ভিনি বে जावजीविक्शित बाब विश्व कि क् कविरक शांविवाहित्जन, छांश नहा, The purity of his intentions, the loftiness on his ideals, the righteousness of his policy and his hatred of racial discriminations were an open book to the people of India. এই প্ৰেস্কে আৰু একটি বিষয় উল্লেখবোগ্য। লর্ড রিপণের মৃত্তিটি মুরোপীরদিগের বারা প্রতিষ্ঠিত হয় নাই—ভারতবাসীর অর্থে ভারতীয়দিগের ঘারা উচা প্রতিষ্ঠিত চুটুবাছিল। লর্ড বিপণ এ দেখ চুটুতে চলিয়া বাইবার কর বংসর পরে 'সঞ্জীবনী', পত্তে একথানি পত্ত প্রকাশিত হয়-ভারতবাসীরা দর্ড বিপণের প্রতি কৃতজ্ঞতার কোন নিদর্শন দেন নাই। দেই পত্র উমেশচক্র বন্দ্যোপাধ্যার মহাশরের বিধবার দৃষ্টি আকর্ষণ করে এবং তিনি দেখেন তাঁহার স্বামীর হিনাবে বৃত্তিরাছে-লর্ড রিপণের মৃত্তি প্রতিষ্ঠার জন্ম সংগৃহীত কর হাজার টাকা বন্দ্যোপাখ্যার মহাশরের কাছে ছিল। তিনি ঐ টাকা-চক্রবৃদ্ধি হাবে স্থানের সহিত তাঁহার এট্নীর নিকট বধাস্থানে প্রেরণ অন্ত পাঠাইরা দেন। এট্নী তাহা জানাইলে স্ববেজনাথ বন্দ্যোপাধ্যার প্রসুধ ব্যক্তিরা উচ্চোপী হইয়া ঐ মৃত্তি প্রস্তুত করাইয়া আনেন। কোন বাঙ্গালী ব্যবসায়ী প্রতিষ্ঠান এ মুদ্ধির বেদীটি উপহার দিলে—সরকারের অমুমতি লইরা বৃত্তিটি কলিকাভার গড়ের মাঠে প্রতিষ্ঠিত করা হয়। কিছ দর্ভ तिश्र है: त्रक व्यक्तां हिल्लन जांक व्यन है: त्रक्रिश्र प्रश्चि অপসারিত চইতেতে তথন-

> নগর পুড়িলে দেবালর কি এড়ার ? বিশুর ধার্মিক লোক ঠেকে গেল দার।"

—দৈনিক বসমতী।

বিশভারতী

"রবীজনাথের বিশ্বভারতীর আজ অনেক বিছু পরিবর্তন
ইইরাছে, কিন্তু বিশ্বভারতী পরিচালনার বে মূল প্রতি ছিল,
ভাহারও বলি ব্যাতিক্রম দেখা বার, তবে তাহা কবিগুরুর দেশবাসীর
পক্ষে সভাই থুব বেদনার কারণ হইরা উঠে। কবিগুরু নিরমকে
নিশ্বই উপেকা করিতেন না, নিরমান্থগতোর গুরুত্ববোধও তাঁহার
হাহারও অপেকা কম ছিল না। কিন্তু নিরম অপেকা হাদরবতাকে
আরও ব্যাপক অর্থে বলা চলে মানবভাকে তিনি উপরে স্থান
দিতেন। ভাহার ফলে নিরমভাত্তিক কাঠিগুরুত্ত হইরা আবহুভার
মধ্যেও একটা মুক্তির আবহাওরা স্টি করিত। বিশ্বভারতীর
পরিচালনে সেই বিশেবস্থাটুকু বিভিত হইবে না ইহা বভাবভই
দেশবাসীর কাম্য। কিন্তু বিশ্বভারতীর বে সব সংবাদ মাঝে মাঝে
প্রকাশিত হর, ভাহাতে সে বিশেবস্থের পরিচর পাওরা বাইতেছে,
সে কথা অনুঠভাবে বলিতে পারিলে আমরা স্থবী হইতাম।
বিশ্বভারতীর বাংলা ভাষা ও সাহিত্য বিভাপে রীডার নিরোপের
ব্যাপারেও অনুবলী মনের ত্রপ প্রকট হইতে দেখিরা বাখিত হইরাছি।



অস্থারী তাহার উল্লেখ না করার মধ্যেই প্রাথীর স্থাবিধা অস্থাবিধার প্রতি অমনোবোগের ভাব বহিবা গিরাছে। তত্পরি নির্বাচিত প্রাথীর সকত অস্থাবিধার কথাও সহালরভার সংক বিবেচিত হইবে না, কবিওকর পূণ্য স্মৃতি জড়িত প্রতিষ্ঠান সম্পর্কে একথা ভাবিরা ওবু তৃঃখিত নহে বিস্মিতও হইতে হয়। বিশ্বভারতী বর্তু পক্ষ বিষয়টি পুনবিবেচনা করিয়া দেখিবেন, ইহা কি আলা করা চলে না ?"
—আনক্ষবাভার পত্রিকা।

জ্যাচুরি

ভিনা লাইনেশ বা পারমিট লইরারলাক অসাধু ব্যবসা করে, মিখ্যা বিবরণ দিয়া কেচ কেচ নানা ব্যাপারে সরকারী ঋণ প্রহণ करत, चत्रवाकी निर्मालय कन देविन चामाव करत, किन भारत वास्क्रि বা প্রতিষ্ঠানের কোন থোঁজ পাওয়া বার না, এরপ ব্যাপার ইভিপূর্বে আনেক বটিবাছে, এখনও বটিভেছে। বাহাদের থোঁক পাওৱা বার, ভাচাদের কেচ কেচ চয়ভো ধরা পড়ে এবং ভাচাদের বিকৃত্ত মামলাও করা হয়। किছ এই সকল প্রভারণা বা বভবদ্র নিবারণের দাবিত্ব বাঁহাদের হাতে তাঁহাদের বিক্লাছ উপবৃক্ত ব্যবস্থা অবলম্বিত হুইতে কমই দেখা বার। বিভালরে উবাত ছাত্রদের নামে বভ সাহায়া প্রচণ করা হইরাছে, কোন কোন ছলে ভল্পে ধরা পভিরাছে াব, তত প্ৰাক্ত উদান্ত সে বিজালৱে নাই। ভৱা লাইনেজ পারমিটিই হউক বা ঋণ অথবা সাহাব্যের টাকাই হউক, সহতেই বুঝা বার বার বে, সংলিষ্ট সরকারী কর্মচারিগণ বথেষ্ট ভদভ না করিবাই উহা মঞ্জুর করিবাছেন। বলিও সম্প্রতি এই সব ব্যাপারে কিছ সভৰ্কতা অবস্থিত হইতেছে, তথাপি ছুনীতিপ্ৰায়ণ বৰ্ষচাৰী বা লোকের অভাব নাই। এছক বাহাদের মাব্দকে অক্যারভাবে অর্থ, লাইসেল বা পার্মিট বাহির হয়, তাঁহাদেরও উপবৃক্ত তদল্ভের পরে কঠোর শান্তিবিধানের ব্যবস্থা হওয়া উচিত ৷" --- বগান্তর।

আবার শিক্ষা-কমিশন

শিলিমবক কলেজ ও বিশ্ববিভাগর অধ্যাপক সংখ্যননে আবার একটি শিক্ষা-কমিশন গঠনের প্রভাব হইবাছে। এই প্রভাব গুরু নির্বাহ্ব নয়, প্রকৃত্ত শিক্ষাব্রতীদের পক্ষে অপমানজনক বলিয়া আমরা মনে করি। রাবাকুফণ কমিশনের মত আন্তর্জাতিক খ্যাতিসম্পন্ন বিভিন্ন দেশের শিক্ষাবিদ সইরা গঠিত কমিশন আধুনিক কালে পুর কয় হইরাছে। এই কমিশনের বিপোর্ট ভারত সরকাবের রাজনৈতিক নেভারা হুমায়ুন করীরকে দিয়া পদদ্ভিত করাইয়া ছাড়িয়াছেন। বে শিক্ষানীতি সারা ভারতে আজ প্রবর্ত্তিত ইইভে চলিয়াছে তাহা উক্তলিকা-সংহাবের নীতি প্রবং রাধাকুকশ কমিশনের অ্পারিশের

সিভিকেট অভিনিক্ত উৎসাহের সঙ্গে সরকারী নীতি মানিয়া নিরাছেন, বাধাকুকণ কমিশনের রিপোর্টের মর্ব্যাদা তাঁহারাও দেন নাই। কোন আদিবাদও শোনেন নাই। এ বিষয়ে অধ্যাপক সমাজের বে দায়িত ছিল ভাষা পালনে এ সম্মেলনের কর্মকন্তারাই বাধা দিয়াছেন। সিনেট কমিটিতে সরকারী শিক্ষা স্থীমের প্রতিবাদে বে আপত্তিপত্ত (note of dissent) দিয়াছিলাম সেইটুকুও বাতিল ক্রিবার আৰু এই সম্বেলনের বর্তমান সভাপতি প্রাণপণ চেষ্টা করিয়াছিলেন। এন্দের উপর অধ্যাপকদের কিরপ আছা আছে তাহাও ঐ সম্মেলনের কর্মকর্তা নির্বাচনে সাদা ব্যালট পেপার পড়ার বুঝা গিরাছে। অধাপক সমাজের একাংশ সক্রিয় ভাবে কেন্দ্রীয় শিক্ষাসংহার নীভিতে সাহায় কৰিবাছেন আৰু এক অংশ নিষ্ক্ৰিয় বুচিবা উভাদেৰ্ট প্ৰবিধা করিরা দিয়াছেন—ইহাই আমাদের অভিযোগ। নুতন কমিশন গঠন ইছার সমাধান নছে। ইউনিয়ন পাবলিক সার্ভিস কমিশনে পাটেলের ক্লছকালনে বিনি টেডা সই দিয়াছেন তাঁহাকে 🗳 সম্বেদনের উরোধন করিতে আনা উহার কর্মকর্তাদের উপযক্ষ কাল হইবাছে ৷ —যুগবাণী (কলিকাতা)।

কেরালার বিরোধী পক্ষের রূপ

্রেরালার কংগ্রেস, ক্যাথলিক গীর্জা, নায়ার দেবাসমিতি**,** পি-এস-পি, আর-এস-পি ও মুসলিম লীগ সংগ্রামীচক্র ভড়িৎগতিতে কমিউনিষ্ট মন্ত্ৰিগভাৱ অবসান ঘটাইবার প্রাথমিক লক্ষ্যলাভে ব্রর্থতার আক্রোপে নিজেদের বর্ষরভার ভত্রবেশ খুলিয়া ফেলিয়া আজ নিল জ হিংসাত্মক মৃতিতে আত্মপ্রকাশ করিতেছে। বিমোচন সমিতিব নেতৃবুৰ সম্প্ৰতি নৱাদিলীতে তবিব-তদাবকের পর কেবালার প্রভাবর্তন করিয়া স্পর্বিভক্রেরতার বীভংগ চিংকার ছাড়িরাছেন— অহিংসা, শাস্তি প্রভৃতির কোনও আব্রু রাধিবার কোনও প্রয়োজন নাই; বে কোন প্রকারে সরকার দখলে অগ্রসর হও! এই নৃতন নির্দেশ অনুসারে কাঞ্জ আরম্ভ হইরা গিরাছে। এই গত কর্মিন সংগ্রামী-দের কার্যকলাপে ভাহাদের এভদিন গোপন করিরা রাখা বিষদস্ভের বিকট রূপটি দিবালোকের মত স্পষ্ট হইয়া উঠিতেছে। ভাহারা মৃঢ় উন্মন্তার যে সমস্ত কাজকর্ম, করিতেছে তাহার উল্লেখ করিয়া কেবালার মুধ্যমন্ত্রী জ্রীনামুদিরিপাদ কংগ্রেসের সর্বভারতীর নেতৃত্বের নিকট প্রেশ্ন কবিহাছেন বে, বদি অন্ত কোনও রাজ্যের বিরোধী দলগুলি এই ধরণের হিংসা ও হিংসাত্মক কার্য করিভেন তাহা হইলে ভাঁচার৷ কী কবিতেন ? সকলেবই জানা আছে বে, ভারতের অভ বে কোন বাজ্যসরকার বদি কেবালা সরকারের ভায় আইন-শখলার গুরুত্বর বিপদের সমুখীন হইতেন তবে কেন্দ্রীয় সরকার জাঁহাদের সাহায্যে অগ্রসর হইতেন। সংবিধানের নির্দেশণ্ড ইহাই। কিছ কেরালার সম্পর্কে উচ্চাদের আচরণে আগাগোড়া এমন কিছ দেখা বার নাই বাহাতে মনে এই নিশ্চিত্তা আসিতে পারে বে, (मानव मःविवासिक अथवा शण्डाक ७ शार्मा (मानेवि अथाव मर्वाप) বক্ষার জন্ম জাঁহাদের মনে এতটুকু উৎবগ বহিষাছে।" —বাধীনভা।

বৰ্দ্ধমান পৌরসভার নানা কীর্তি

"বর্ত্মণান পৌরসভার অবহেলিত অঞ্চলগুলিতে উপর্ক্ত পানীর সরবরাহ, রাভা নির্মাণ ও ডেপ ইজ্যাদির কোন ব্যবস্থা পৌরসভা ক্রিতেছেন না। এই অঞ্চলগুলি পৌর এলাকাভুক্ত হইরা কেবল মাত্র ট্যান্তর বোবাই বহিরা আসিতেছে। এতদ্পল হইতে
নির্বাচিত সদত্তগণেরও কোনরপ হাঁ চা নাই। দলীর রাজনীতির
পোবণ ও দল রাখিতেই পৌরসভার অধিকাংশ সমর ব্যর হয়।
পৌরসভার এই অঞ্চলগুলির কর্দাভাগণের পক্ষ হইতে পৌরসভার
এই নিক্রিয়তা ও পক্ষপাতিত্বের বিক্রছে আন্দোলন হওরা বাজনীর।
আমরা এই এলাকাগুলির কর্দাভাগণকে সংখবছ ইইবার অঞ্চলাবেদন জানাইতেছি।"
—বর্দ্ধমান।

রাতারাতি বাড়ী উধাও!

"সিউড়ী সহবের উপকঠে সিউড়ী-ছবরাত্মপুর পাকা রাস্তার পাশে একটি পাকা বাড়ী পাবলিক ওয়ার্কস ডিপার্টমেন্ট কর্ত্তক (P. W. D.) নিমিত হয়। বাডীটি রাস্তার পাশে, মুতরাং এই পথে বাহারা সদা-সর্বাদা বাভায়াত করেন, এই নবনির্মিত স্মৃত্য সরকারী ভবনটি সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। কিন্তু হঠাৎ জানা গেল, এই বাড়ীটি হাভাৱাতি উধাও হুইবাছে। বে ঠিকাদার ইহা নির্মাণ করেন—তিনিই রাভারাতি স্থানীর বিভাগীর বর্ত্তপক্ষের বোগদান্তসে তাহা ভাঙ্গিয়া কেলেন। কিছু এই বাড়ী সংলগ্ন কুয়াটি এখনও বহিরাছে দেখা পেল! ভাহা কেন উধাও হইল না বুঝা গেল না! জানা গেল, পূর্বাহে স্থান নির্বাচনের অনুষ্ঠি উদ্ধতন মহল हरेंट ना नरेवा प्रानीय विखातीय कर्छाया हेश निर्मालय चारम्म राना । উন্ধতন কর্ত্তপক ইহাতে অসম্বৃতি প্রকাশ করেন ও চাপিরা ধরেন। ৰূপে ঠিকাদার বিভাগীর কর্তাদের সভিত বোগসাল্সে রাভারাতি ইহা ভাঙ্গিরা কেলে। এই দুক্ত দেখিয়া সাধারণ মাত্রুষ বিশ্বিত হইয়া ভাবিকেছে—ইহা কি হইল ? সরকারী বাড়ী বধন রাভারাতি উধান হইতে পারে, তথন এই রাজ্যে সুবই সম্বৰ। এই বাড়ী তৈরী ও ভাকাৰ খেসাবত কাছাৰ পকেট হইতে যাইবে ভাহা জানা না গেলেও গাই-বাছুরে মিল থাকিলে নাকি মাঠে গিয়াও গরুতে ছব দেব! এইরূপ প্রবাদ আছে। এথানেও ঠিক ভাহাই হইরাছে ৰলিয়া ৩জৰ ওনা ৰাইজেছে। জেলা-শাসক মহাশর এই সম্পর্কে অমুসন্ধান কবিলে সমস্ত বহুত প্ৰকাশ হইতে পাৰে।

—বীরভূম বার্তা।

অসহায়তার সুযোগ

"আসানসোলের নিকটন্থ বগুড়া উবান্ত শিবিরের চড়ুর্ছিকে
নিরাপত্তামূলক ব্যবন্থা না থাকার সম্প্রতি একদল গুণ্ডা প্রকৃতির
লোক নিরমিত রান্তিতে ক্যান্দেগ হানা দিরা অসহার মহিলাদের
ভর দেখাইরা সর্বান্থ অপহরণ করিরা লইরা বাইভেছে। করেনটি
পরিবার এইভাবে সর্বান্থ নিঃম্ব হইরাছে বলিরা সংবাদে জানা
গেল। প্রকাশ, ক্যান্দোর প্রহ্রারত দারোরান মহিলাদের আবেদন
সন্থেও গুণাদলের আক্রমণ প্রতিহত করিতে উভোগী হর না।
ক্যান্দোর মহিলারা অরাজকভার হাত হইতে রক্ষা পাইবার মন্ত্র সংলিষ্ট কর্তৃণক্ষের নিকট আবেদন করিরাছে। অপর এক সংবাদে
প্রকাশ, সরকারী নিরম উপেক্ষা করিরা ছানীর কর্তৃপক প্রার ৬০টি
পর্বিবারের ভোল বন্ধ এবং করেকজনকে ট্রানসিট ক্যান্দো প্রেরণের
নির্দেশ দিহাছেন। করেকজন বহিলা জানান বে, ছানীর বিলিক জহিলার মহিলাদের প্রতি সর্বসমর অসৌক্তম্লক ব্যবহার করেন। প্রকৃতপক্ষে ক্যাম্পের মহিলারা অসহার অবস্থার আপন ভাগ্যের উপর নির্ভির করিয়া দিন কাটাইতে বাধ্য হইতেছে।"

—খাগানগোল হিতৈষী।

গণতন্ত্ৰ না পাপতন্ত্ৰ ?

"বোটানিক্যাল গার্ডেনের মধুচক্রে বড় বড় রাজকর্মচারী ভঙাইয়া পড়িবার পর নানাম্বানে অধন্তন কর্মচারীদেরও তল্য ব্যজ্ঞিার কাহিনী ওনিতে হইতেছে। কামিনীও কাঞ্চন স্ট্রা সর্বত্র বে পাণচক্র গড়িয়া উঠিয়াছে, অসহার দেশবাসী শুরু তাহা দ্রুর দুর করিয়া চাহিয়াই দেখিতেছে। প্রতিকার করিতে সাহস नारे, रुप्रक मिल्हां नारे, चाट्ह छ्यू चाटमानन ও अांशान-ইনুক্লাব জিন্দাবাদ। বিজ্ঞোহ করিবে ? কর, সে তো থুবই ভাল কথা। কিছ কিসের বিজ্ঞান্ত ? কাহার বিক্লছে ? বলিতে পার ? পাপের বিক্লান্ত বিলোল করিতে লয়। সমাজ চুইতে গুর্নীতি থজনপোৰণ চুৱি জুৱাচুৱি মুনাফাৰোৱী কালোবাজাৱী—এই সব ণাণ নিৰ্মান করিতে হইলে ধৰ্মবিশাসী হইতে হইবে— পাৰ্টিপলিটিয়া এ পাপ দর করিতে পারিবে না। কেবলে আঞ্চ বে জ্বাইন এক हरेया क्यानिहेरमय खाहि यथुण्यन छाक छाषारना हरेरछरछ, উহারও মূলে তো ঐ রাজনীতির খেলা ! আজ বদি পাপের বিক্রছে এই সংগ্রাম প্রমাণিত হয়, তবে ধান্মিক অনতা পাপশাসনের অবসান নিশ্চরই চাহিবে। কিছ তৎপূর্বে যে স্ব দল সংপ্রামে ৰ পাইয়াছেন, ভাঁচাদের প্রভাককেই বলিতে হইবে—আমরা সারা দেশ হইতে পাপের বাজছ দুর ক্রিতে ব্রপরিকর। সর্ব্যত্ত পাপ বন্ধে রাজে প্রারেশ করিয়াছে। উপর হইতে নীচে পর্যান্ত পাপের প্রবল প্রভাপ। আন্দোলন করিছে তো ভইবেই-নারা त्मरांभी व्ययम भारमानम कत्र। यूर, ह्यांशकावरात्र, राज्ञित-—পল্লীবাসী (কালনা)। নির্মামহন্তে বন্ধ কর।"

টেষ্ট রিলিফ, মন্ত্রী, এম-পি, জেলাশাসক

["]প্রচার দপ্তর, সরকারী দপ্তর থেকে আরম্ভ করে শ্বরং **শেলা** শানকমশার পর্যান্ত সকলে প্রায় এক সুবে এ সম্পর্কে একটা षहुठ रश्चमनक मानाजाय (प्रशिद्धहरून । हिंहे विनिष्ठ मुन्नाविक কোন ধ্বর জেলালাসক সরাস্ত্রি আমাদের দিতে চাননি। সারা জ্লো দুরে এসম্পর্কে ধবর নেবার জন্তে ভিনি জামাদের সম্পূপদেশ বিলিরেছেন। কিছদিন আগে আনন্দবালার পত্রিকার জেলা পরিক্রমারত ত্রীফ রিপোর্টার সরকারী দপ্তর থেকে অমুরূপ ব্যবহার পেষ্ছেলেন বলে আমরা জানি। জেলাশাসকের মতে এসব ব্বৰ নাকি কাগজে সরকারী ভাবে দেওৱা বার না। অবচ অভাক্ত ^{ব্ছৰ} টেষ্ট বিলিকের কাজের শভিয়ান দিবে এত ইন্ডাহার সামাদের কাছে এসেছে বে তা আমরা ছাপিয়ে শেব কোরতে পারিনি। আমরা দানি না এবছর বহস্তমর টেষ্ট বিলিফ কোন প্রভ্রপথে অথবা শ্রমার্গে হছে কি না-প্রকাপ দিবালোকে উন্মুক্ত প্রাক্তরে সে ^{কাছ} হবার ধবর আমরা এখনও সংগ্রহ করে উঠতে পারিনি। ^{টেট} বিলিকের কাল আলকাল মিলিটারী সিক্রেসীর মধ্যে গণ্য হডছে ৰি না নে বিবাৰে সম্ভেচ হবাৰ কাৰণ ৰথে**ও হয়েছে, ডা না** হলে **ल प्रविधिक आक्रमानीस र जन्म । र प्राप्तिक कर र प्राप्तिक ।**

লুকোচুরি মনোভাব কেন? এই জবছার আমরা কার কথার বিশাস করবো? মাননীয় মন্ত্রীমহোদয়দের প্রতিশ্রুতিকে মিধ্যা ভাবণ বলে অভিছিত না করলে জেলাশাসকের ওপর উপ্পতন কর্ত্তণকের নির্দেশ প্রতিপালনে গড়িমিস মনোভাবের তীব্র প্রতিবাদ করতে হয়। কিছু নির্দেশ বাকে দেওবা হয়েছে ভিনি নির্দেশ পেয়েছেন কি না কিংবা পেলে প্রতিপালনে বাধা কোথার অথবা ওপরতলা থেকে নির্দেশ না পৌছানোর কারণ কি, বতক্ষণ না জানতে পারা বাছে ততক্ষণ পর্যন্ত স্পাইভাবে কোনও মন্তব্য করা সমীচীন হবে না। প্রতিশ্রুতি এবং কাজের সামঞ্জ্য রেথে বিস্মাত্র বিলম্ব না করে টেষ্ট বিলিক্ষের কাজ চালু করা হোক, এটাই আমাদের মূল বক্ষর।"

ক্যানাল ট্যাক্স

"গরকারের কাানেলের জলের টাাল্ল ধার্যা কবিবার একটি বাঁধা-ধরা নির্ম আছে। ক্যানেদের জল পাইবার পূর্বে চাষী বিখা-প্রতি বে হাবে ফ্লন পাইভেন ভাহার উপরে ক্যানেলের অল পাইয়া বে উদৰ্ভ ফাল পাইতেছেন লে উদ্ভ ক্সলের বাজার-দর হিসাব করিরা বভ টাকা হয় ভাহার শতক্রা ৫০ ভাগ পর্যান্ত সরকার ট্যাক্স ধার্যা করিতে পাবেন। বর্তমানে ফসলের দর এত বেশী হইয়াছে বে এ রূপ বাধা-ধরা হিসাবে ট্রাক্স ধার্ব্য করিলে চারীকে ভারও বেশী টাকা ট্রাক্স নিতে হয়—সেই জন্ম সরকার হইতে প্রতি বংসর এক একটি এলাকার ক্সাক্র বিভিন্ন ভাবে টাক্স ধার্বা করিতে হব । কোধাও একর-প্রতি ং॥ - টাকা কোথাও ৭ টাকা আবার কোথাও ৭। - টাকা পর্যাত্ত ট্যান্ধ ধাৰ্য্য হইয়াছে। অবগু এই ট্যান্ধ প্ৰতি একর বা ৩/০ বিখা ভূমির অভ ধার্য্য হইরাছে। বে সমস্ত চাৰী মৌরাক্ষী নদীর জল-ধারার স্থবোগ পান এবং বাঁহারা এই জলের স্থবোগে ঠিক সময় মন্ত **ठारबय सम भारेषा छे० इ.स. छ तरब ठाय-स्थायाम करब बाह्यमिश्राक** কেভেরার অন্ত কোন চিন্তা করিতে হয় না—বাহারা ধান্ত উৎপাদন অৰু বত বাব ইচ্ছা ততবাৰ অৰু পাইৱা থাকেন, ভাহাৱা এই টাৰু দিতে কাত্ৰ নছে। সমৰ মত সৰকাৰেৰ এই টাৰে আদাৰে चरावष्ट्रांत सम्बर्धे वदः अहे ममल हातीया विस्मय वाश हरेता शास्क এবং এককালীন আদার দিতে ক্**ষ্টকর ছইবে মনে করে**।"

—দেবা (শিউড়ী)।

ধর্মাদার বা বৃত্তির টাকা অনাদায় ?

বিশক্ত প্রে প্রকাশ বে, এখানকার ব্যবসায়ী মহল নাকি বিগত করেক বৎসর বাবৎ ধর্মাদার বৃত্তির টাকা দেন নাই। উক্ত টাকটা তাঁছারা নাকি নিজ নিজ মূলধনে নিয়োগ করিয়া আসিতেছেন। ইহা বদি সত্য হয় তাহা হইলে ইহা অত্যন্ত অভার এবং কোন্ডের বিষয়। বলা বাহল্য বে, বৃত্তির টাকা কাহারো ব্যক্তিগত বন নর, উহা সম্পূর্ণ জনসাধারণের প্রদন্ত অর্থ। অতথ্য উক্ত অর্থ জনকল্যাণমূলক কার্য্যে বাহিত হওয়াই বাহ্ণনীয়। এখানকার ব্যবসায়ী মহলে দৈনিক প্রায় লক্ষ টাকার লেন-দেন চলে বৃত্তিয়া প্রকাশ, প্রতরাং বিগত করেক বছরের হিসাব ধরিলে একটা মোটা রক্ষ অর্থ অভার ভাবে আটকাইয়া বহিয়াছে। ব্যবসায়ী মহলে

ফাণ্ডে জমা দিয়া মানবভাবোধের পরিচয় দেন। এবিবরে জামরা পশ্চিমবন্দ সরকারের সংশ্লিষ্ট কর্জুণক্ষের ক্ষিপ্রভৃত্তি আকর্ষণ করিতেছি।" —মানক (জাসানসোন)।

শিকা ও শিক্ষকত্ব

"এক কালে খুটান মিলনারী লিক্ষদের আন্তরিক চেটার ভারতবাসী স্থালিকার প্রবোগ লাভ করিরাছিল। বেলুড়ের ব্রীব্রামকৃষ্ণ বিভাগর ও কলেক্ষের লিক্ষক ও অধ্যাণকগণের আন্তরিক চেটার কলেই বেলুড় দেশবাসীর চিন্ত আকর্ষণ করিরাছে। উন্নত ধরণের লিক্ষার জন্ত কলিকাতা প্রেসিডেলি কলেক্ষের এতদিন বে প্রনাম ছিল সামান্ত কর বছরের মধ্যে বেলুড়ের নিকট প্রেসিডেলি কলেক্ষের গে গোরব স্লান হইকেছে। সমান্তের কুনিতি অধ্যা রাষ্ট্রের অব্যবহা বেলুড়ের লিক্ষকপ্রেণীর আন্তরিকভার নিকট পরান্তর স্থীকার করিতে বাধ্য হইরাছে। পশ্চিমবাংলার লিক্ষকসমান্ত বেলুড়ের লাক্ষকের বেগ্যা মর্যাদা দান করিজে এবং ভাঁছাদের দাবী মানিয়া লইতে পশ্চাৎপদ হইবে না! মান্তান্তর লিক্ষকপ্রেণী বা অভান্ত রাজ্যের লিক্ষকদের বেতনের হার কত ভাহাও বিবেচনা করা দরকার। আলা করি, সব দিক বিবেচনা করিয়া লিক্ষক সমিতি উপযক্ত সিছাও প্রহণ করিবেন।"

--वोवज्यवानी।

শোক-সংবাদ শিশিরকুমার ভাগুড়ী

বর্তমান বাঙ্গার তথা ভারতবর্ষের সর্বশ্রেষ্ঠ অভিনেতা, বাঙ্গার নাট্যম্বগতের নববুগের শ্রষ্টা, প্রতিভা-মনীবা-মেধার দিকপাল বরপুত্র প্রম ঋদ্বের নটগুরু শিশিরকুমার ভাতৃড়ী গত ১৪ই আবাঢ় সোমবার বাভ ১-২ - মিনিটে १ - বছর বরুসে কেহাছবিত হরেছেন। ১২১৬ সালের ১৬ই আখিন মাতুলালরে সাঁতবাগাছির স্বর্গীর হবিদার থাঁ ভাতুড়ীর ছব পুত্র ও এক করার মধ্যে সর্বভ্যেষ্ঠ শিশিবকুমারের জন্ম। ১১১৩ সালে ইংৰাজী সাহিত্যে এম, এ পরীক্ষার উত্তীর্ণ হরে বিভাসাগর কলেজে ইংরাজী সাহিত্যের অধ্যাপকরপে বোগ দেন। অল্পকালের মধ্যেই ঐ বিভাগের সিনিয়ার অধ্যাপকরণে পরিগণিত इन। ১১२১ সালের ১•ই ডিসেম্বর সাধারণ রক্ষালয়ে পেশাদারী অভিনেতা হিসেবে তার প্রথম আত্মপ্রকাশ। তাঁর প্রথম অভিনয়ংক লাইক আলম্গীর (ভখন নাম ছিল ভীমসিংচ)। ১১৩- সালে সসম্প্রদারে শিশিবকুমার আমেরিকা বাত্রা করেন, সেধানে "সীতা" নাটকটি ভিনি মঞ্চ করেন। শিশিরকুমারের প্রতিভার স্পর্নাংবুক্ত ৰে অসংখ্য নাটক নাট্যজগতে যুগান্তর এনেছে, ভাদের মধ্যে সীভা, আলমগীব, দিবিলয়ী, নবনাবাবণ, মাইকেল মধুপুদন, বীতিমত নাটক, প্রকৃত্ব, বোড়শী, সাজাহান, চিবকুমার সভা, বিবাজ বৌ, বশুবীর, कीवनवृत्र, (व्यवक्रा, পৃষ্টিচর, বিষয়া, त्रिवाक्रकोना, अथवाव धकामनी, চল্লগুৱ, তু:খীর ইমান, মিশরকুমারী, রমা, তথ্ত-এ-তাউস প্রমুখ নাটকগুলি বিশেষ উল্লেখযোগ্য। চলচ্চিত্ৰের আদিৰুগ থেকেই ঐ জগতের সঙ্গে শিশিবকুমারের বোগাবোগ, নির্বাক বুগে মোহিনী, কমলে-কামিনী, জাঁধারে জালো, বিচারক এবং সবাক মূপে পল্লীসমাজ, সীতা, দল্ভবমত টকী, চাণক্য, পোৰ্যপুত্ৰ প্ৰভৃতি ছবিগুলিতে তাঁর অভিনয় দেশবাসী দেশতে পেয়েছেন—এদের মধ্যে আঁধারে আলো, পদ্মীসমাজ, সীতা, দম্ভরমত টকী, চাণক্য ছবিওলির পরিচালকও তিনিই ছিলেন। ১১৫৬ সালে পেশাদারী বলম্প থেকে বিদার গ্রহণ করেন এবং গত ১-ই মে মহাজাতি সদনে নাট্যাচার্বের জীবনের শেষ অভিনয়। বর্তমান বছরে নটগুরুকে ভারত সরকার পদ্মভূষণ উপাধিতে ভূষিত করেন। বলা বাছল্য, চিষ্টন্নভশিব নাট্যাচার্য "খেতাব" এই সঙ্গে সঙ্গে প্রত্যাখ্যান করে সারা বাঙগার মুখ উচ্জল করেন। নিশিরকুমারের লোকাম্ভরে দেশ শুধু বে একজন বিবাট অভিনেতাকে হারাল, ভাই নয়—ভাঁর দেহত্যাগে বাঙ্গা দেশ এক বিহাট ব্যক্তিছকে, প্রথম পাণ্ডিভার অধিকামী এক পুজনীর পুরুষকে, বাঙ্গার বুজমঞ্চের এক অনুস্থারণ ৰুগপ্ৰবৰ্তককে হারাল। এই জাভীর ক্ষতি পূর্ণ হবার নর। (নটঞ্চ সম্বন্ধে আরও বিস্তৃত আলোচনা বৃদ্ধট বিভাগে এইবা)।

তুশসী লাহিড়ী

বাঙলার বিথাত নট ও নাট্যকার তুলসী লাহিড়ী গত ।ই
ভাষাচ় ৬৩ বছর বর্নে প্রলোক গমন করেছেন। বাঙলার নাট্য
ও চিত্রজগত স্থান্থকাল ধরে তাঁর সেবা পেরে এসেছে ও তাঁর অবদানে
রক্ষরগতের নানাদিক ভরে উঠেছে। নলডাঙার বিখ্যাত জমিদারবংশে এঁব জন্ম। তুলসীবাবুর কর্মজীবন শুক্ত হর রংপুর
কাছারির আইন ব্যবসায়ী হিসেবে, আলীপুর আদালতে কিছুকাল
তিনি ওকালতী করেন। ১৯৩০ সালে শিল্পজগতে প্রবেশ করেন
সঙ্গীত-পরিচালক হিসেবে (এইচ, এম, ভি) রক্ষকে প্রবেশ আট
থিরেটারের "পোব্যপুর" নাটকের স্থরকার্মণে। অভিনেতারপে
তাঁর প্রথম আত্মপ্রকাশ চিরকুমার সভার অক্ষরের ভূমিকার।
তারপর তাঁর প্রতিভা নানাভাবে বিকশিত হতে থাকে, চিত্রকাহিনীকার, নাট্যকার, অভিনেতা, সঙ্গীতশিল্পী, চিত্রপরিচালক
ও নাট্যপরিচালকরণে। বাঙলাদেশের অসংখ্য নাটক ও ছারাছবি
এঁব প্রতিভার স্পর্শ বছন করছে।

প্রতাপ মুখোপাধ্যায়

তুলদী লাহিড়ীকে বাঙলা দেশ বেদিন হারাল সেই দিনই আরও
একজন শক্তিমান অভিনেতা শেব নি:খাস ত্যাগ করলেন। তাঁব
নাম প্রতাপ মুখোপাধ্যার। ইনি তুলদী লাহিড়ীর মতই প্রথমে
প্রকাররপে চলচ্চিত্র জগতে বোগ দেন ও পরে অভিনেতারপে
আত্মপ্রকাল করেন। বোধাই চিত্রজগতেও প্রকাররপে ইনি ববেট
প্রসিছিলাভ করেছিলেন এবং ছবির কাহিনীকাররপেও বাঙলার
চিত্রলোক তাঁর প্রতিভাব পানিচয় পেয়েছে। মৃত্যুর পূর্বদিন
ভিনি জীবনের অর্ধশতাকী পূর্ব করেছিলেন।



বৌদ্ধ পঞ্চশীল

গত চৈত্ৰ সংখ্যাৰ শ্ৰীমতী আলা বাষেৰ 'বৌদ্ধ পঞ্চনীল' প্রবন্ধ প্রদার লৈট সংখ্যার জীতেম সমাজদার মতাশবের সমালোচনা পাঠ করলাম। ভাঁব সমালোচনা ঐতিহাসিক সভাকে ২র্জন করে ধর্মান্ধভার আশ্রম গ্রহণ করেছে। এ ক্ষেত্রে পুনরালোচনা কভদুর नमोठीन हरत कानि ना। छत्त किंहू रामा चारश्रक मरन कति। সমাজদার মহাশবের দৃষ্টিতে যাই প্রতিভাত হোক না কেন, विभाग हिन्मुनाञ्च थक निय्न भए ७ ७१५ न। নিৰমানুৰ্বৰ্ডনে ভাৰ বচনায় দীৰ্ঘকাল অভিবাহিত হয়েছে ৷ 'বুছ-দমের হাজার হাজার বছর আগে হিন্দুধর্মের শ্রুতি ও স্বৃতিগ্রন্থ বচিত হয়েছে' সমালোচকের এ উক্তি পাঠ করে বিজ্ঞ পাঠকবর্গ হান্ত সংবরণ করতে পারবেন না। ভারতে আর্ব অভিযানের আরম্ভ গু:-পু: বিংশ শতকের আপে নর এবং বুছের আবিষ্ঠাব খু:-পু: পঞ্চ বঠ শতকে! আৰ্য ঋষিৱা ভারতের মাটীতে বেদ ৰচনা কৰেন। ঐতিহাসিকগণ বৈদিক যুগের বয়ংক্রম নির্ণয় করেছেন খ্:-প্: ১৫০০ হতে খ্:-প্: ৫০০ শতক। ইন্দ্ৰ, অগ্নি, বৰুণ ও মিত্ৰ বা সূৰ্যের উদ্দেশে স্তব-ছতি, পূজা-ৰক্ত বলিদানের নিদেশ। শীলাচারের উল্লেখ তাতে নেই। উপনিষদই সৰ্বপ্ৰথম বৈদিক স্তুতি ও প্ৰাৰ্থনার সীমা অভিক্রম করে পভীক্রির সভার কথা বলে এবং উপলব্ধির জন্ত শম দম ভিতিকার নিদেশ দেৱ। কিছ সে নিদেশ সীমিত হয় বিজ্ঞ আত্মসভানীদের রেখাপাতের কোন প্রমাণ নেই। মধ্যে, গ্ৰমান্সে তার মুদ্র মতীতে কালের বিবর্তনে ধর্ণন ভারতের ধর্মদীবনে ও সমাজ-জীবনে প্লানি নেমে আলে, ধর্মের নামে অধর্মের এক বীভংগ রূপ আত্মপ্রকাশ করে, অবাধ পশুহস্কার এবং শিথিল হয়ে শাসে নীভিন্ন বাঁধন। অনাচানের আঘাতে, তথন ভারতের নিপীড়িত আত্মা ভৃষিত চাতকের মত সে ছদ'শার অংসান প্রার্থনা করে। সে-ই যুগস্থিকণে বৃদ্ধ প্ৰবৰ্তন কৰেন পঞ্জীল মন্ত্ৰ। বলা বাছল্য, থ মন্ত্ৰ ব্যাপক ভাবে ছড়িৱে পড়ে এবং সামাজিক ও ব্যৈভিক জীবনে ৰুণ্যাণের উৎসরপে পবিণত হয়। এ সম্বন্ধে শ্রীমতী বাষের উক্তি একটুক্ও অস'গভ নয়। প্রাক-বৃদ্ধযুগের শীল-তত্ত্বে ইঙ্গিত দিতে গিবে 🗟 সমাজদার মহাশর পাতঞ্চল দর্শনের অষ্টাঙ্গ বোগমার্গের ক্থা উল্লেখ করেছেন। অষ্টাব্দ বোগমার্গের প্রবেতা মহর্বি পভঞ্চলির ^{জন্ম} হয় খৃ:-পৃ: বিভীয় শতকে। তাঁর তিন শ' বছর আগে ^{জন্মগ্র}হণ করে বুদ্ধ কি ভাবে পঞ্চীলের **জন্ত** তাঁর কাছে খণী হলেন সমালোচক বলতে পারেন কি ? প্রসিদ্ধ দার্শনিক গ্রন্থ বোপবাশিষ্ট বামায়ণে ও পুৱাণ শিৰোমণিকপে সম্মানিত শ্ৰীমভাপ্ৰতে ঐতিহাসিক বৃদ্ধ প্রাসাক উদ্ভিদ বারেছে। এ সব উল্ভিকে উদ্ভিবে

দিয়ে এদের বচনাকাল বুজলমের হাজার হাজার বছর **আলে কি** ভাবে নির্ণয় করলেন তা সমালোচক বলবেন কি ?

কেবলমাত্র শীলসাধনার অভীক্রির জ্ঞান আরও হয় এবং সজ্ঞোর উপদ্ৰভি হয়-এ কথা বৌদ্ধৰ্মের কোথাও বলা হয় নি। नैन চাবিত্রিক শুদ্ধির জন্ত। শীলের সাধনার চাবিত্রিক উৎকর্ম লাভ হলে চিত্ত সমাবিভাবনার অমুকৃত হয়। সমাবিভাবনার অঞ্চর হলে লোভ ছেব মদ মাৎস্ধাাদি বিপু মনে স্থান পার না এবং মন কলত্বমুক্ত হয়ে দৌন্দর্যে স্থবমায় পরিপূর্ণ হয়ে ৬ঠে। এতায়ুন্দ মনে প্রজানের জ্যোতি বিকীর্ণ হয়, তার ওল আলোর জাগে ভবে স্তবে নিৰ্বাণের উপলব্ধি। এব বিশদ আলোচনা অস্থুত্তর নিকারের বোহিতস্প বগুগে না, বরেছে বিশেষভাবে নিকার প্রন্থসমূহের মধ্যে। সমালোচকের উক্ত বিশুদ্মার্গ পরবতী যুগের রচনা, পিটকের অন্তর্ভু লয়। বৌৰধর্মে গুরুবাদের স্থান নেই। ভগবান বুদ্ধ স্পষ্ট ভাষায় খোষণা করেছেন—তথাগত নিজেকে সংক্রম পরিচালক ভাবেন না এবং তাঁর কাছে সভ্যের আত্মনিবেদনও কামনা করেন না। তিনি আরও বলেছেন—অপ্তদীপা বিহরৎ অন্তসর্ণা অনঞ্ঞ সংগা। বৌদ্দান্তে নিবৃত্তির পরে আর কোন উল্লেখ নেই, সমালোচকের এ উক্তি নিভান্ত অবাস্তর। 'নিজাণ: শৈরম: তুখ: অভাত: অভাব: অমত: বোগকথেম: নিজাণ: ইত্যাদি উ.জিসমূহ সমালোচককে অমুধাবন করতে অমুবোধ করি। মহামানব বিবেকানক বে তাঁর চিকাগো হক্ততার উলাভ ৰতে বোৰণা কৰেছিলেন—Buddhism is the fulfilment of Hinduism, त्र वानीत्क नमारनाहक वामखावाद ভावधावन উচ্ছাস বা কৈতববাদ বলে অভিহিত করেছেন। এ উ.জি স্বামীকীর উদার বাণীর উদ্দেশে ধর্মান্ধ মনের বিবোদ্গার ছাড়া কিছই নৱ। 'বামীজী দিবাদুষ্টিতে দেখেছিলেন উপনিৰদেৰ সৰ্বভতে ত্ৰন্ধাৰ্শনেৰ চিছা বাস্তৰ ৰূপ গ্ৰহণ কৰেছে বুছেৰ মৈত্ৰী ককুণার উদার আদর্শে। বদা অপ্রাদক্ষিক হবে না, বৃহত্তে কেন্দ্র করে ভারতের বুকে সংস্কৃতির বে বিবাট আণবিক বিংক্ষারণ হয়েছিল, তা শৃক্তে মিলিয়ে বায়নি। ভারতে তথাকবিত বৌদ্দের সমাধি হরেছে বটে, কিছ সেই বিরাট সংস্কৃতি অন্তর্হিত হয়নি, তার ভাবধারা ভারতবাসীর অংলবিত ধর্মের স্কে এক হতে সিহেছে। সমালোচকের কাছে ভা ছর্বোধ্য হলেও সভাসদ দৃষ্টিসম্পন্ন লোকের কাছে দিনের মৃত উ**ল্লেল**। আর অধিক আলোচনার পত্তের কলেবর বুদ্ধি করতে চাই না। স্মালোচককে উদাৰ দৃষ্টি নিংর অনাজ্য যনে ধর্মশাল্পে অধায়ন কৰতে অভুবোধ কৰি।—শীলানক অক্ষচাৰী বন্ধনপৰ, वध्यक्षांच ।

পত্ৰিকা সমালোচনা

১৩৬৬ সালের জ্যৈষ্ঠ মাসের বন্তমতী পাইলাম। অন্সেব ধ্যবাদ প্রচণ করিবেন ৷ আমরা দীর্ঘদিন হইতে বস্মমভীর ভক্ত পাঠিকা। বস্থমতী ভূমিষ্ঠ হওৱার পর হইতে হার আমার ব্দম্মের পূর্বে হইভেই ভাহার সহিত এবাড়ীর বোগাবোগ চলিভেছে। আমরা বোধ হয় বর্ণপরিচয়-এর সঙ্গে সংকট মাসিক বস্তমতীর সহিত পরিচিত। প্রথম ভাগের সঙ্গে সঙ্গে মা-সি-ক-ব-ত্ম-ম-তী, বানান কবিয়া পড়িয়াছি এবং প্রতি মাসেই মা-কাকিমার বস্তমতীর অপেকার উৎকঠা দেখিয়া ভিতরে ভিতরে নিজেয়াও উৎক্ষিত ছইয়া উঠিয়াছি। পিওনের কাছ হইতে এই বই কে মা-কাকিমার দ্ববাবে পৌছাইয়া দিবে এই লইয়া ভাইবোনেদের মধ্যে রীতিমত ৰক্ষৰত বাধিয়া বাইত। মাসিক বসুমতী ভাহাৰ জন্মকাল হইতে এ ভাবংকাল পর্যন্ত আমানের গুড়ে গুরুমাত্র আমানের গুড়েই বা কেন সমস্ত ভারতবর্ষের পাঠক-পাঠিকার কাছে এইরূপ সমাদরের পাত্রী। স্মতবাং ব্যাভেই পাৰিভেছেন, সেই বই-এর স্থাগমন বধন অকাবণেই হঠাৎ বন্ধ হইরা গেল তখন মনের অবস্থা কি শোচনীয় চইয়া উঠিদ। বিশেষ আপনার পরিচালনার ইহা আরও মনোজ আর চমৎকার হটরা উঠিবাছে। এবছবের 'বর্ণালী' প্রতি মাসেই মনের পরতে পরতে নান। বর্ণের ছটার আলোকিত কবিয়া তোলে। এক এক সমর মনে হর মেরের কলমে এত জোর এত বস ? কি অপূর্ব ভাষা'। বচ্ছ নয় কিছ সুন্দর স্থলেখা দেবীকে আমার ধরুবাদ জানাইবেন। তাঁহার "জিজাসা" খুব ভালো লাগিরাছিল, তাহার পর 'মিত্রাণ্ড' মনের কোণার চিবভারী দাগ বাধিয়া গিরাছে, আর বর্ণালী ? বৰ্ণালীর ত কথাই নাই স্থলেখা দেবীর দোনার দোরাত-কলম হোক, আমরা বেন ভার আরও লেখা পাই এই কামনা! এমাসে বর্ণালী नाई (मिश्रा) चामारमय मरनय चाकारमध वर्गाछाव चित्र। किकिश মেঘ দেখা দিরাছে। আগামী মাসের অপেকার উদগ্রীব হইয়া আছি। এছাড়াও আছে ইব্রাণীর প্রেম অপরপ ইনা মীনা ধেন চোখের সামনে ভারাদের নব প্রেমের আনশ-বেদনা লইয়া চোখের সামনে নাচিয়া বেড়ায় আরও আছে 'বন কেটে বসত' চম্পা ভার नाम' कानहा वान निवा कानहा निधिव ? एव कि आमारनव ? ৰাড়ীর কন্তা ব্যক্তিবাও উদগ্ৰীব কম নয় 'আনন্দ বুন্দাবন' 'অৰও নিমাই' এবং চাবজন মানে প্রথম হইতে শেব পাতার বেকল কেমিক্যাল পৰ্যায় সবটা পড়িবা ভবে ক্ষান্ত হই। কাহার খব হইতে কে বইখানি চুবি কবিয়া আগে পড়িবে ভাহার প্রতিবোগিতা চলে। মার এ বস্থমতীৰ দৌলতে পাড়ার বিস্তব বান্ধবীও বোগাড় করিয়াছি বক্ষমতা পড়িতে দিবার লোভ দেখাইরা। কি অমুরাগ সকলেরই बहे वहेंबानिव क्षेष्ठि ! क्षेत्रंष B. K. Banerjees नाम अः পৰে P. K. Banerjee মানে আমাৰ আমীৰ নামে এই বই আমার শ্ভৰবাড়ীতে বোধ হব বস্থমতীর প্রথম বণ্ড প্রথম সংখ্যা ছইতে এবাড়ীতে আদিতেছে। ভাই গত মাদে না পাইয়া বিশেৰ বিচলিত চুইয়া পড়ি, আবার তেমনি এমাসের পুনরার বধন পাঠাইলেন তথন যেন আনন্দের অব্ধি বহিল না। সেই আনন্দ্রই কিছু অংশ কুভজ্ঞতার সহিত আপুনাকে জানাইলাম। धर्ण कवित्वन । विनीजा, भावा वत्नाभावाद । C/o. P. K. Banerjee. M. 46192. Hakim para, Jalpaiguri.

গ্রাহক-গ্রাহিকা হইতে চাই

লৈঠ মাস হইতে ছম্মাসের জন্ত চালা পাঠাইলাম ৷—S. S. Basu, Bombay.

গত বৈশাৰ ১৩৬৬ সাল হইতে মাসিক বস্মতী নির্মিত পাঠাইরা বাধিত করিবেন।—স্প্রভাতা বার, মালদ্হ।

১৫ টাকা পাঠাইলাম, এই বছরের গ্রাহক করিয়া লইবেন।
---Mira Choudhury, Calcutta.

বৈশাধ হইতে আগামী চৈত্র মাস পর্যন্ত এক বংসরের চাঁলা পাঠাইলাম — বকুলবাণী দেবী, Bombay.

Please accept subscription for Monthly Basumati for 6 months from Jaistha 1366 B. S. —Manjusree Ghose, Bombay.

মানিক বস্ত্ৰতীর আরও ৬ মানের চালা পাঠাইলাম ৷—বাসস্তী ভট্টাচার্ব্য, United Mikir & N. C. Hills.

বৈশার্থ – আধিন ৬ মানের চাঁলা পাঠাইলাম। পত্রিকা অবশুই পাঠাইবেন।—A. C. Chakravorty, Mongher.

ছর মালের চাঁদা বাবদ ৭-৫০ নঃ পঃ পাঠাইলাম। আশা করি সম্বর বৈশাধ, জ্যৈষ্ঠ ও আবাঢ় মালের জিন সংখ্যা পাইব।
—প্রীপ্রভাবতী দেবী, দিনাজপুর।

বৈশাধ ভইতে আখিন পৰ্যন্ত চালা পাঠাইলাম :—Mrs. Purnima Chakravorty, New Delhi.

Herewith Rs. 15/- being the subscription for Basumati for the current year. Please send the Baisakh, Jaistha and Ashar issue of Basumati. Mrs. Anjali Ghose, Patna.

I am sending Rupees fifteen only as the annual subscription for Masik Basumati.—Mrs. Bani Guha, Nagpur.

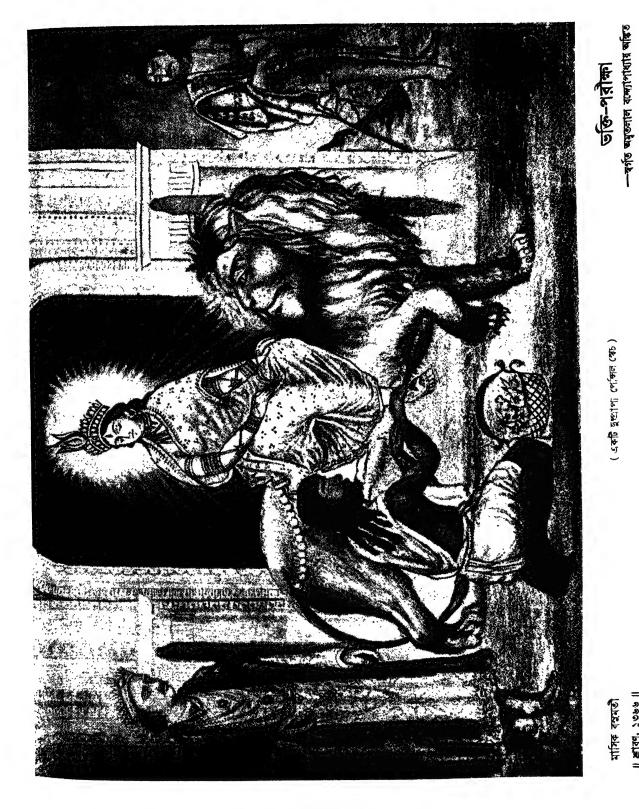
Subscription for Monthly Basumati from Baisakh to Aswin. Please send the magazine regularly.—Mohammad Hydar Ali, Murshidabad.

১৩৬৬ সন বাংলা মাসিক বস্মতীর বার্ষিক চাদা বাবদ ১৫১ টাকা পাঠাইলাম। পত্রিকা পাঠাইলা বাধিভ ক্রিবেন। —Hiranmoyee Kundu, Cacher.

Subscription for 1366 B. S. amounting Rs. 15/- is sent herewith.—Rekha Banerjee, Calcutta.

বক্ষমতীর বার্ষিক চালা বাবদ ১৫১ পাঠাইলাম। পূর্ণ সেট মাসিক বক্ষমতী পাঠাইরা বাধিত করিবেন;—Sudharani Choudhury, Cacher.

জৈঠ হইতে কাৰ্ডিক সংখ্যাৰ সভাক মূল্য বাবদ ৭-৫০ টাকা পাঠাইতেছি। নিয়মিত মাসিক বস্তমতী পাঠাইরা বাবিত কৰিবেন। —Sm. Anima Banerjee, Calcutta.



নতাশচন্দ্র যুখোপাধ্যায় প্রতিষ্ঠিত



৩৮৭ বর্ষ-শাবন, ১৩৬৬ |

॥ স্থাপিত ১৩২৯॥

[প্রথম খণ্ড, ৪র্থ সংখ্যা

কথামৃত

১৯১৬ খৃং, মঠে ছুর্গাপুজা। শ্রীপ্রীনা সপ্তনা পুজার দিন ছুপুরে মঠে আসিয়া উত্তর পাশের বাগানবাড়াতে আছেন। অঠনার দিন স্কাল বেলা আটটা-নরটার সন্য মঠ ও প্রতনা দশন করিতে আসিরাছেন। বারাগ্রের পাশের ছলেই ভঙ্কো ও সার্-একানারিগ মনকে কুটনো কুটিতেছিলেন। মা দেখিরা বলিতেছেন, "ছেলেরা ত বেশ 'কুটনো কুটে।" জগদানকজা বাগলেন, "একান্যার প্রসন্মতা লাভই হল উদ্দেশ্য, তা সাবন-ভজন করেই হোড়, আর কুটনো কুটেই হোক।"

এই দিনে বহু লোকে শ্রীশীনাকে প্রনান করিতেছিলেন। শিশীনাকে বার বাব গঞ্চাজলে পা ধুইতে দেখিয়া যোগীননা বিলয়ছিলেন, "মা, ভকি হচ্ছে? সন্দিকরে বনবে যে।"

মা বলিলেন, "যোগেন, কি বলবো, এক একজন প্রণান করে বেন গা ঠাও। হ্র, আবাব এক একজন প্রণান কবে যেন গারে আন্তন ভেলে দের। গঞ্চাজ্যলে না ধুলে বাঁচিনে।"

পরে একদিন কথাপ্রনঙ্গে শ্রীশ্রীনাকে জিজ্ঞানা করিয়াছিলান, "না, এক একজন প্রনাম করলে তোনার থুব কট হয়, একবার পুজাব সন্য তোনার এই কথা শুনেছিলুম।"

মা বললেন, "হা, বাবা, এক একজন প্রণাম করলে যেন বোলতায় ইন ক্টিয়ে দের। কাউকে কিছু বলিনে।" এই কথা বলিয়াই সংগ্রহ দৃষ্টিতে বলিলেন, "তা বাবা, তোমাদের বল্ছি না।"

আমি বল্লান, "মা, ভুয় হয়, তোনার মতুমা পেয়েও কিছু যেন হল না মনে হয়।"

मा— "छत्र कि वावा, मर्खणाव छत्व कानत्व त्व ठीकूव दशमात्मव

পেছনে ব্যেছেন। আমি ব্যেছি—আমি মা থাকতে ভর কি? সিকুব বে বলে গোছেন—'বাবা তোমার কাছে আসবে, আমি শেষ কালে এসে ভাদের হাতে ধবে নিয়ে বাব।"

ঁগে যা খুদা কর না কেন, যে যে ভাবে খুদা চল না কেন, ঠাকুরকে শেষ কালে আগতেই হবে তোমাদের নিতে। ঈশব হাত-পা (ইন্দ্রিয়াদি) দিয়েছেন, তাবা ত ছুড়বেই, তাবা তাদের খেলা খেলবেই।

একবার চাকুবকে ভোগ দিতে গিয়ে দেখি—ছবি হইতে একটা আলোব স্রোত নৈবেজের উপর পড়িরাছে। তাই মাকে জিজাসা ক্রিয়াছিলাম, মা, যা দেখি সে কি মাথার ভুল না সত্যি ? ইযদি ভুল হয় তবে যাতে মথা চাঙা হর তাই করে দাও।

মা একটু চিম্ভা করিয়া বলিলেন, "না বাবা, ও সব ঠিক।"

আমি—"তুমি কি জান, কি দেখি ?" মা—"হাঁ।"

আমি— ঠাকু মকে ও তোমাকে যে ভোগ দিই তা কি ঠাকুৰ পান ? তুমি কি তা পাও ?"

ম'—"হা।" আমি—"বুঝবো কি করে ?"

মা—"কেন গীতার পড় নাই—ফ্স, পু**শা, জ্বল ভগবানকে ডক্তি** করে যা দেওয়া যায়, তা তিনি পান।"

এ উত্তরে বিশ্বিত হইরা বলিলাম, "তবে কি তুমি ভগবান ?" এই ক্থার মা হাসিরা উঠিলেন। আমবাও হাসিতে লাগিলাম।

-विक्रीभारदत्र कथा इहरक्।

विक्रि (एवी

ত্রীশশিভূষণ দাশগুপ্ত

বাঁওলা দেশের দেবী-পূজা বা দেবী-সাধনার ক্ষেত্রে বৌদ্ধ প্রভাবের কথা আমরা নানা ভাবে বলিয়া থাকি। হিন্দু তন্ত্র-পুরাণাদিতে গৃহীত বছ দেবীকে আমরা বৌদ্ধ দেবা বলিয়া সংশ্বহ করিতেছি। হিন্দু দেবী তারাকে আমরা বহুরূপে ছিন্দু উপপুরাণ-তথাদিব মধ্যে পাই; এই তাবা দেবা যে বৌদ্ধ তারা বা উগ্রতাবা বা একজটা দেবা, দে-কথা আজ প্রার স্বীকৃত। হিন্দু উপসুরাণ-তন্ত্রে এবং বৌদ্ধ ভন্নাদিতে এই দেবার বর্ণনাম সাদৃত্ত লকণীয়। সরস্বতী ছিন্দুখর্নে পুজিতা প্রসিদ্ধা দেবী; কিন্তু বৌদ্ধতন্ত্রে এই **प्रयोद वि**क्रिन्न कार्श्य वर्षना व्यामवा प्रविद्ध भारे। পर्णनवदी দেবী হুর্গার একটি প্রসিদ্ধ নাম-পূর্ণ (হ্লুদ পাতা) পরিহিতা পর্ণশবরীর কথা আমরা বৌধ সাধন-মালার'ও দেখিতে পাই। স্থবদ্ধুর 'বাসবদত্তা'য় আমরা বেতাল-দেবীর মন্দিবের উল্লেখ পাই; বৌদ্ধ ভদ্মেও বন্ধ বেতালীর সন্ধান পাই। মার্কণ্ডেয় চিণ্ডী'তে শক্তির মায়ুরী, অপরাজিতা, বারাহী, ভামা, কপালিনা, কোবেরা প্রভৃতি নাম পাই, বৌশ্ব 'দাধন-মালা'র মধ্যেও মহামায়ুবা, অপ্রাজিতা, বজ্ববারাহা, ভামা কপালিনী, কৌবেরী দেবাব উল্লেখ পাই। চণ্ডাতে শিবকে দুতরূপে পাঠাইয়াছিলেন বলিয়া দেবী 'শিবদূতী' নামে খাতা, বৌদ্ধতত্ত্ব মহাকালের সহিত যুক্তা দেবাকে 'কালদুতা' নামে দেখিতে প্রসঙ্গর বৌদ্ধতন্ত্রের 'যমদৃতী'র কথাও শুর্বরা। ছিল্পস্তা হিন্দু দশমহাবিজ্ঞার এক বিখ্যাত মহাবিজ্ঞা, ছিল্লমস্তা দেবাকে বৌদ্ধ তথ্যের মধ্যেও পাইতেছি। বৌদ্ধতথ্যে কালিকা দেন'বও সন্ধান পাইতেছি। ইনি মহাকালের সহিত সংশ্লিষ্ঠা; ইচার বর্ণনায় দেখা যায়, ইনি ভয়ক্ষরী, নীলবর্ণা, বিভুজা, অগ্নিকোণস্থিতা, একহাতে. কল্পান ও অক্তহাতে অস্ত্র। আলাঢ় ভঙ্গিতে ইনি শবের উপর দগুায়মানা। ২

এই ভাবে বৌদ্ধ ভশ্লাদিতে যে-সকল দেবীর নান পাইতেছি, হিন্দু ধর্মে তাহাদিগুকে গৃহীত হইতে দেখিলেই আমরা সাধাবণভাবে একটা কথা বলিয়া থাকি—এই দেবী মূলত: বৌদ্ধ দেবী— বৌদ্ধর্ম ইইতেই হিন্দুধর্মে তাঁহারা গৃহীত হইরাছেন।

কিন্ত এই বৌদ্ধদেবী শব্দের অর্থ কি ? বৌদ্ধতক্সে উল্লেখ পাইলেই কি সে দেবা বৌদ্ধ দেবা হটয়া মান ? বৌদ্ধতক্সগুলিকে বৌদ্ধ বলিবারই বা তাংপর্য কি ? দেবদেবা সাদৃশু, বর্ণিত সাধনার সাদৃশু এবং গুল্প যোগবিধির সাদৃশু লক্ষ্য কবিয়া এবং প্রচলিত হিন্দুত্বশুগুলি হইতেই নবাবিদ্ধুত বৌদ্ধতক্সগুভিনির রচনাকাল প্রাচীনত্রর মনে করিয়া বৌদ্ধতক্স ইইতেই হিন্দুতক্স গড়িয়া উঠিয়াছে এইরূপ একটি মতও কেহ কেহ পোষণ করিয়াছেন। কিন্তু গ্রন্থান্তরে ৩

আমরা এ জিনিসটি স্পষ্ট করিরা তুলিবার চেষ্টা করিয়াছি যে মূরে হিন্ত্র এবং বৌশ্বতর বলিয়া কোনও জিনিস নাই, মূল দর্শনে এব সাধনায় এই উভয়বিধ তন্ত্রের মধ্যে কোনও বিশেষ পার্থকা নাই। তহু• বহু প্রাচীন কাল হইতে প্রবাহিত একটি স্বতর সাধনার ধারা ; এই সাধন-ধারার সহিত বিভিন্ন কালে হিন্দু দর্শনের বিভিন্ন তত্ত্ব যুক্ত হইয়া ইহাকে হিন্দুতত্ত্বের রূপ দান করিয়াছে, আবার প্রবর্তী কালের মহাযান বৌদ্ধধর্মের কতকগুলি চিন্তাধারার সহিত যুক্ত হইরা ইহা বৌশ্বতশ্বের রূপ গ্রহণ করিয়াছে। আর এই মূল সাধনার কথা ছাড়িয়া ভল্লাদিতে বর্ণিত দেবদেবা ও পুজা-অর্চনাবিধির কথা যদি धवा यात्र তবে দেখিব---উভয়ক্ষেত্রেই দেবদেবী, উপদেবী, ডাকিনী-যোগিনী, যক্ষ-রক্ষ প্রভৃতির বর্ণনা, পূজা-বিধি বা ধ্যান-অর্চাবিধি স্থান পাইয়াছে। এই সব দেবদেবাগণ কোনও ক্ষেত্রেই কোনও গভীর ছিন্দু-দার্শনিক তম্ভ বা বৌদ্ধ দার্শনিক তত্ত্বকে রূপায়িত করিবার জন্মত আন্তে আন্তে বিশদবর্ণনায় বিগ্রহবতী হইয়া উঠিয়াছিলেন। ঐতিহাসিক দৃষ্টিতে দে-কথা আমরা স্বীকার করি না, এ-কথা পূর্বেই বলিয়াছি। উভয়ক্ষেত্রেই বিভিন্ন সমাজস্তবের মানসিক প্রবণতায় বিভিন্নভাবে পৰিকল্পিত স্থানীয় দেবদেবীগণ এবং প্ৰচাৰ ও প্ৰসিদ্ধি হেতু সাধাৰণীকৃত দেবদেবীগণের উল্লেখ বর্ণনা ও সাধনার কথা দেখিতে পাইতেছি। বৌদ্ধ সাধন-মালায় ৪ যে সকল দেবীগণের উল্লেখ পাইয়াছি দেবী হিসাবে বত্র, শুরুতা, করুনা, বোধিচিত্ত, প্রক্রা প্রভৃতি কতকগুলি চিছান্ধন ব্যতীত প্রচলিত হিলুদেবীগণ হইতে তাঁহাদের পার্থক্য কি ? সাধনার ক্ষেত্রে অবগু বিবিধ মন্ত্র-প্রয়োগের সঙ্গে যে ধ্যান-পরিকল্পনা দেখিতে পাই তাহার সহিত পরোক্ষ ভাবে প্রাচীন বৌদ্ধর্মের 'ধ্যান'-পরিকল্পনা এবং বোগাপ্রিত মহাধানের ধ্যান-পরিকল্পনার কিছু কিছু যোগ লক্ষ্য করিতে পাবি। কিন্ত আসলে ছিন্দু দেবীগণের উৎপত্তির ইতিহাস যেরূপ, বৌদ্ধ দেবীগণের উংপত্তিব ইতিহাসও একান্তই অনুরূপ।

অশে এতিহাসিক দৃষ্টিতে এখানে একটি তথা লক্ষ্য কবিতে ইইবে। এই বৌদ্ধতপ্রের প্রচুর প্রসার ঘট্যাছিল মহাচীনে—
কর্মা বিহার-বন্ধ-মাসামের কিছু ক্ষকল এবং নেপাল-তিব্রত-ভূটান প্রভৃতি অঞ্চলে; ফলে এই মঞ্চলের প্রসিদ্ধা কিছু কিছু দেবীগণ বৌদ্ধতপ্রে স্থান পাইয়াছেন, তাঁহারাই সম্ভবতঃ বৌদ্ধতপ্রের মারফতে হিন্দু তল্পাদিতেও দেবী বলিয়া গৃহাতা এবং স্বাক্ততা হইয়াছেন। তারা বা উপ্রতার বা একজাটা দেবী মূলতঃ তিব্রতের দেবী বলিয়া ডক্টর প্রবোধচন্দ্র বাগচীর বিশ্বাস।৫ পর্ণশ্বরী দেবীও এইভাবে বৌদ্ধতপ্র হইতেই গৃহাত বলিয়া কাহারও কাহারও মত।৬ হিন্দুতপ্রে বর্ণিত ঘটচক্রের অধিষ্ঠাত্রা ডাকিনী, হাকিনী, লাকিনী, রাকিনী, শাকিনী দেবীগণের সকলে না হইলেও কেছ কেছ মহাচীনাঞ্চল হইতে গৃহীতা বলিয়া আমরা মনে করি।

বর্তমানে আমরা বহু সংখ্যক বৌদ্ধতন্ত্রের সন্ধান পাইতেছি;

১। ডক্টর বিনয়তোধ ভটাচার্থ-লিখিত Buddhist Iconography গ্রন্থখানি দ্রপ্টবা।

રા હો, ১૨૨ બુક્રા

৩। এই লেগকের An Introduction To Tantric Buddhism প্রস্থানি মাইবা।

৪। গাইকোয়াড় ওরিয়েন্টাল সিরিজে প্রকাশিত ড়য়য় বিনয়তোব ভটাচার্য-সম্পাদিত, তুই থশু।

[ে] Cultural Heritage of India, চতুৰ্থ থণে ডটুব প্ৰবোগচন্দ্ৰ বাগচী লিখিত Evolution of the Tantras প্ৰবন্ধতি স্ৰপ্তব্য। ৩। ডক্টৰ বিনয়তোৰ ভটাচাৰ্য লিখিত 'গাখন-মালাৰ' ভূমিকা এবং Buddhist Iconography বইগানি স্কুইবা।

তিবেতী অমুবাদ হইতে আরও অনেক পাইবার সম্ভাবনা। মূলতভাদির উপরে টাকা-টিরনীর সংখ্যাও কম নয়। বাঙলা দেশ তান্ত্রিক বৌদ্ধার্মের একটি প্রধান ঘাঁটি ছিল, এ সত্য আৰু ঐতিহাসিক তথ্যের উপরেই প্রতিষ্ঠিত। এই তন্ত্রসমূহ এবং ভাঁহাদের উপরে রচিত অনেক টাকা-টিপ্লনীর বাওলা দেশে এবং তংসংলয় দেশেই রচিত হুইবার সম্ভাবনা। কিন্তু এ বিষয়ে একেবারে নিশ্চিম্ভ হুইবার তথা আমাদের বথেষ্ট নাই। কিন্তু পরবর্তী কালের যে বৌদ্ধদাহিতা বাঙুলা দেশেই লিখিত বলিয়া আমরা একেবারে নিশ্চিত হুইতে পারি তাহা হইল বৌদ্ধ সিদ্ধাচার্যগণ বচিত দোহা ও চর্যাগীতিগুলি। এই লোহা ও চুধাগীতিগুলি যদিও প্রধানতঃ সহজিবা বৌদ্ধ মতবাদ ও সাবন পদ্ম অবলম্বনেই লিখিত তথাপি পরোক ভাবে ইহার ভিতরে তংকালীন দেবীবাদ সম্বন্ধে কিছু কিছু লক্ষ্ণীয় তথা লাভ করা যার। এই দোচা ও গীতিগুলি মোটামুটি ভাবে পৃষ্ঠীর দশম শতক হইতে দ্বাদশ শতকের ভিতরে রচিত বলিয়া গুহীত; স্কুতরাং এইগুলির ভিতরে প্রাপ্ত তথ্যের ভিতর দিয়া তংকালীন প্রচলিত দেবাবাদ বা শক্তিবাদের একটি বিশেষ দিককে আমরা গভীর এবং ব্যাপক ভাবে বৃঝিতে সমর্থ হই ।

বৌদ্ধ দোহা ও গীতিগুলির মধ্যে আমরা এক 'দেবী'র উল্লেখ দেখিতে পাই; এই দেবী বছ স্থানে নৈরাম্মা, নৈরামণি, ডোম্বী, চণ্ডালী, মাতঙ্গী, শবরী নানারূপে অভিহিত। সাধনতত্ত্বের মধ্যে এই দেবীকে রূপকছেলেই ব্যাখ্যা করিবার চেষ্টা করা ঘাইতে পারে; কিন্ধু সেই ব্যাখ্যা দ্বারা সিদ্ধাচার্যগণের মনোসংগঠনের সর্বধানি পরিচর পাওয়া যায় না। তৎকালে প্রচলিত ভারতীয় দেবীতত্ত্ব বা শক্তিতত্ত্বের সহিত এই বোদ্ধদেবীর নিগৃত যোগ আছে বলিয়া মনে করি। সহজিয়া বৌদ্ধগণের এই দেবীতত্ত্বকে ভাল করিয়া বৃঝিতে হইলে তান্ত্রিক বৌদ্ধধর্মে এই দেবীবাদের উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশের একটু সংক্ষিপ্ত পরিচয় দিবার প্রয়োজন মনে করি।

তান্ত্রিক বৌদ্ধবর্মের মধ্যে দেবীবাদের উৎপত্তি ও ক্রমবিকাশের ইতিহাস লক্ষ্য করিতে গিয়া প্রথমতঃ দেখিতে পাই, উত্তরাঞ্চলে প্রচলিত বৌদ্ধর্মে—অর্থাং নেপাল-ভটান-ভিন্নত এবং কতক ভাবে চীনদেশের কিছু কিছু অংশে আমরা এক আদিবৃদ্ধ এবং তাঁহার নিত্যাশক্তি আদিদেবী বা আদিশক্তির কথা জানিতে পারি। এই আদিবৃদ্ধের ধারণা বহু স্থলে পরবর্তী মহাযানের ধর্মকায়-বৃদ্ধ হুইতে উংপন্ন। যে রূপে বৃদ্ধ সমস্ত প্রপঞ্চাত্মক বছর পরমাধিষ্ঠান কারণাত্মক একনপে বিরাজিভ, সেই কারণাত্মক অম্বয়তত্ত্বই পরিকল্পিভ হইরাছে আদিবৃদ্ধরূপে। তিনি নিজে নির্বিশেষ, নির্ন্তণ, নিরাকার—কিছ সকল বিশেষ, গুণ ও আকারের তিনিই পরমাধিষ্ঠান—অভএব ^{কাঁহা} হইতেই নিখিল বিশ্ব প্রস্থত। কি**ন্ধ** সকল বিকারের মূল কারণ হইয়াও তিনি নিজে নিতা অবিকারী। কোনও কোনও ^{স্থান} আবার দেখিতে পাই, ধর্মকার-বৃদ্ধই আদিবৃদ্ধ নতেন; মহাযানের ত্রিকারের শেষকায় ধর্মকায়কেই ভান্তিক বৌদ্ধগণ ^{বুদ্দের} চরমকায় বলিরা স্থীকার করে নাই—ধর্মকায়-বৃদ্ধও যেন থানিকটা অব্যক্ত হিরণাগর্ভ-তত্ত্ব; তাঁহারও উদ্ধে হইল বুদ্ধের চন্ম স্থিতি—ভাহাকে বলা হইয়াছৈ স্বভাবকায় বুদ্ধ; এই স্বভাবকারই হইল অবিকারী শূক্তকার—ইহাই বৃদ্ধের বক্সকায়। এই শীলকায় বা বজ্ঞকায় বৃদ্ধই আদিবৃদ্ধ, ভিনিই হুইলেন ভল্লের

পরমেশ্বর । এই পরমেশ্বের শক্তি বেমন পরমেশ্বী—তেমনই অদিবৃদ্ধের
নিত্যা শক্তি হইলেন আদিদেবী । একেত্রে হিন্দুতন্ত্রগুলি ভাঁহাদের
পরমেশ্বর পরমেশ্বরীকে আদিবৃদ্ধ বা আদিদেবী বা আদিপ্রপ্রা হইতে
গ্রহণ করিয়াছে না বৌদ্ধ আদিবৃদ্ধ ও আদিদেবী হিন্দুতন্ত্রর
পরমেশ্বর পরমেশ্বরীর আদর্শ লইয়া বৌদ্ধরণে রূপায়িত ইইয়া
উঠিয়াছেন ? এই জিজ্ঞাসা এবং এ সম্বদ্ধে এ পকে বা সে পকে
দিদ্ধান্তকে ম্লেই ভূল বলিয়া মনে করি । অতি প্রাচীনকাল হইতেই
শক্তিমান ও শক্তির অভেদন্তের মধ্যেই একটা ভেদ-কর্মনা করিয়া বে
শক্তিতত্ত্বের উত্তর দেখিতে পাই, হিন্দুতান্ত্রিক পরমেশ্ব-পরমেশ্বরী এক
বৌদ্ধ আদিবৃদ্ধ-আদিপ্রপ্রতা বা আদিদেবীর পরিকল্পনায় আমবা সেই
একই প্রাচীন শক্তিতত্ত্বের বিভিন্ন কালে বিভিন্ন ক্ষেত্রে গ্রহণ মাত্র
দেখিতে পাই ।

প্রাচীন বৈক্ষর ও শৈবশান্তে বে শক্তিতর দেখিতে পাই, ভাহাতে দেখি প্রপঞ্চাত্মক যে বহি:সৃষ্টি তাহা প্রমেশ্বরের স্বরূপের সন্টিত অভিনা সমবায়িনী শক্তি হইতে হয় না; সৃষ্টি হয় বিকেপ-শক্তি বা পৰিগ্ৰহা শক্তি হইতে। এই তথ্যটি তান্ত্ৰিক বৌদ্ধৰ্মে ৰূপান্তৰ গ্ৰহণ কৰিয়াছে অক্তরূপে। আদিবৃদ্ধ ও আদিদেবী হইতে স্থান্ট হয় না; স্থান্ট হয় সশক্তিক ধ্যানিবৃদ্ধ বা পঞ্চ তথাগত হইতে। আদিবৃদ্ধের সংক্ষাত্মক পঞ্চ প্রকারের ধ্যান আছে, ইহার প্রত্যেকটি ধ্যান হইতে প্রস্তুত হন এক এক জন ধানিবৃদ্ধ, ইহারা হইলেন বৈরোচন, রম্বসম্ভব অমিতাভ, অমোঘসিদ্ধি এবং অক্ষোভ্য। এই পঞ্চ ধ্যানিবৃদ্ধই ইইলেন যথাক্রমে রূপ-বেদনা-সংজ্ঞা-সংস্কার-বিজ্ঞান এই পঞ্চস্কন্দের দেবতা ; স্থাষ্ট এই পঞ্চন্দাত্মক। এই পঞ্চ ধ্যানিবৃদ্ধের পঞ্চাক্তি; তাঁহারা হইলেন যথাক্রমে তারা বা বজ্লধারীশ্বী, মামকী, পাণ্ডরা, আর্হতারা এক লোচনা। সশক্তিক পঞ্তথাগত মনুষ্যদেহের মন্তক, মুখ, জানর, नाजी ७ भागरम्भ **এই भक्षशान व्यक्षित करत्रन । एवंड-व्यवस्थान** বৌদ্ধতান্ত্রিক সাধনার প্রারম্ভে দেহগুদ্ধির স্বারা বোগদেহ লাভ করিতে হইলে প্রথমে এই সশক্তিক পঞ্চতধাগতকে দেহের বিভিন্ন দেশে অধিষ্ঠিত করিতে হয়--তাহা ধারাই তথাগত-দেই লাভ হয়—তথাগত-দেহ ব্যতীত সাধনা হয় না।

বৌদ্ধতক্ষে আদিবৃদ্ধকে অবলম্বন করিয়া একবার এই সর্বেশ্বরী মহাদেবী আদিদেবীকে পাই। অক্সভাবেও আমরা এই সর্বেশ্বর ভগবান এবং সর্বেশ্বরী ভগবতীকে পাই—তাহারও একটু বিস্তারিত আলোচনা আবভাক।

বৌদ্ধতন্ত্র মহাযান-বৌদ্ধধর্নেরই একটি বিশেষ পরিণতি। মহাযানী বৌদ্ধেরা বাঁহাদিগকে হানযানী বৌদ্ধ বলিয়া অভিহিত করিয়াছেন, তাঁহাদিগের যান বা মত এবং পথকে হান বলিবার কারণ এই, তাঁহারা শৃক্ষতার উপরেই একমাত্র জোর দিয়াছেন এবং শৃক্ষতা-জ্ঞানের সাধনার ঘারা ব্যক্তিগত মুক্তি—অর্থাং অর্থন লাভের আদশ প্রচার করিয়াছেন। মহাযানীরা সেখানে আনিলেন বিশ্বমুক্তির প্রশ্ন—ক্ষতরাং মুক্তিদাত্রী শৃক্ষতার সহিত তাঁহারা যুক্ত কবিলেন কুশলকর্মের প্রেরণাদারক মহাকরুণা। এই শৃক্ষতা স্বইল নেতিবাচক প্রজ্ঞা, আর করুণা হইল ইতি-বাচক উপায় অর্থাং কুশল-কর্মপ্রেরণা। তান্ত্রিক বৌদ্ধাণ মহাযানের এই শৃক্ষতা-করুণার মিলনের উপরেই সম্ভ্র সাধনা প্রতিষ্ঠিত করিলেন; তাঁহাদের সাধনা হইল বোধিসত্ত হইয়া বোধিচিত্ত-লাভের সাধনা, আর বোধিচিত্তের ভাষার সংজ্ঞা নির্ণয় করিলেন, 'শৃক্ষতা-কক্ষণাভিন্নং বোধিচিত্ত।' তান্ত্রক বৌধ্যাত এবং করুণার অভিন্নত্বই হইল বোধিচিত্ত। তান্ত্রিক বৌধ্যাত ও সাধনার ক্ষেত্রে এই বোধিচিত্ত এবং শৃক্ষতা-করুণাকে নানাভাবে বহুদ্রে টানিয়া লইতে লাগিলেন। বোধিচিত্ত-তত্ত্বই ইইল তদ্রের যুগল বা বামল-তত্ত্ব; ইহাই মূল সামরত্ত্য, ইহাই মূল সামরত্ত্য ভারবাল—এই ভাগবান ভগনতা সামরত্ত্য-কর্ম মিথ্নতত্ত্বই হুইল অন্তর্ম প্রত্তাই বিন্দু; কর্ম চোদনারূপে উপায় প্রবৃত্তি-লক্ষণ—উপায় প্রস্তাই বিন্দু; কর্ম চোদনারূপে উপায় প্রবৃত্তি-লক্ষণ—উপায় প্রস্তাই নিরান্ত্রারূপিনা নির্বাণ—উপারই সর্বন্ত্ররপ ভব। এই ভব এবং নির্বাণের সামরত্তাই হুইল যুগনত্ত্ব তুইল প্রম কাম্য।

তক্ষাদ্রের (তাহা চিন্দু হোক বা বৌদ্ধ হোক— মথবা চিন্দুর মধ্যে বৈশ্ব হোক বা শৈব হোক বা শাক্ত হোক) মূল দার্শনিক দৃষ্টি ইইল অন্ধ্যবাদ! পরম সত্য অব্যত্ত্ব তথু দ্বের অভাব নয়— তাহা ব্যের মিথ্নতত্ত্ব— ব্যের নিংশেদ সমরসতা। যে দ্বের সমরসতায় অন্ধ্যমিদ্ধি হিন্দুতত্ত্ব মতে সে দ্বেত্ত্বই ইইল শিবতত্ব এবং শক্তিতত্ব— একই উৎসের যেন হুইটি ধারা; একটি জ্ঞানমাত্র তথু নিবৃত্তিমূলক— অপরটি ত্রিগুলাঞ্জিকা প্রবৃত্তিমূলা। দার্শনিক ভাষায় শিবতত্ত্বই জ্ঞান্ত পরম সঙ্কৃতিত বিন্দু— শক্তিই পরম প্রকৃতিত বিন্দু— শক্তিই পরম প্রকৃতিত নিন্দু— শক্তিই পরম প্রকৃতিত নিন্দু— শক্তিই পরম প্রসৃত্তিত নিন্দু— শক্তিই পরম প্রসৃত্তিত নিন্দু— শক্তিই পরম প্রসৃত্তিত নিন্দু— শক্তিই

ভদ্ৰের এই বে অন্বয়তন্ত্ব এবং অন্বয়ের মধ্যে অনিনাভাবে
মিখুনীকৃত দ্বাতন্ত্বের দ্বি-ধারা এই মোলিক তন্ত্বটি বৌদ্ধতন্ত্রে প্রকাশ
লাভ করিয়াছে বোধিচিত্ত এবং শূন্যতা-করুলাকে লইরা। শুধু
ভকাং এই—বৌদ্ধতন্ত্রে ভগবতী-ই হুইলেন নির্বাণরাপিণী বা বিন্দুর্নপিণী
প্রজ্ঞা আর সর্ববৃদ্ধান্ত্রক ভগবানই হুইলেন ক্রিয়াত্মক এবং প্রকাশাত্মক।

প্রজাই প্রাহক-তব্ব, আর উপায়াত্মক কর্মণাই হইল গ্রাহ্মতব্ব।

করিরা মিথন সাধনা গড়িয়া উঠিয়াছে, তেমনই বৌদ্ধতন্ত্রেও
কর্মণান্ধলী ভগবান ও প্রজাবপিনী দেবা ভগবতীকে লইয়া তান্ত্রিক
মিখুন-সাধনা গড়িয়া উঠিয়াছে। বোগ-সাধনায় এই ভগবতী এবং
ভগবান ইড়া-পিঙ্গলা গঙ্গা-যমুনা, বাম-দক্ষিনের রূপ গ্রহণ করিয়াছেন।

অধ্যতন্ত্রই ত অর্ধনারীশ্বর-তত্ত্ব—বামে দেবা ভগবতী, দক্ষিণে ভগবান

—ত্ত্ই মিলিয়া এক। একে ত্তই—ত্ত্ইয়ে এক; হিন্দুতন্ত্রেও এই
কথা—বোদ্ধতন্ত্রেও সেই একই কথা। ৭

তন্ত্রদাধনার এই ভগবান এবং ভগবতী পূর্ণালোচিত আদিবৃদ্ধ ত আদিদেবীর সহিত মিলিয়া মিশিয়া গেলেন, ফলে বৌদ্ধতন্ত্রেও আমবা এক সর্বেশ্বর ভগবান এবং সর্বেশ্বরী ভগবতীর কথা প্রচ্রভাবে দেখিতে পাই। এই সর্বেশ্বর দেবতা সাধারণত: শ্রীহেবছ শ্রীহেকক শ্রীবন্ত্রধর, শ্রীবজ্রশ্বর, শ্রীবজ্রসন্থ, মহাসন্থ শ্রীমন্মহাস্থথ, শ্রীচণ্ডরোমণ প্রভৃতি রূপে দেখা দিয়াছেন, সর্বেশ্বরী দেবী দেখা দিয়াছেন তাঁহারই অস্কবিহারিণীরূপে—অথবা মিখুনাবস্থায় তাঁহার সহিত যুক্তরূপে তিনি

। এ-বিধরে বিস্তারিত আলোচনা লেথকের An Introduction to Tantric Buddhism : जुहेता।

কোথাও বক্সধাণীখনী, বক্স-বারাহী, কোথাও ভগবতীপ্রজ্ঞা বা প্রজ্ঞা-পার্বমিতা, অথবা দেবী নৈরাখ্মা। স্বাভাবিক ভাবেই ছিন্দু মহেশ্বর —মহেশ্বরী এবং বৌদ্ধ। সর্বেশ্বর-সর্বশ্বরী বছ স্থানে মিলিয়া মিশিয়া একাকার হইয়া গিয়াছেন।

মহাভারতের মধ্যে আমরা পার্বতী-মহেশ্বর সংবাদের কথা দেখিতে পাই। সেথানে দেখিয়াছি, জগজ্জাবের প্রতি করুণায় বিগলিতা জগজ্জননী পার্বতী সর্বজ্ঞানের অধীশ্বর মহাদেবের নিকটে একটিও পর একটি প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করিয়া জীবের হিতকর সমস্ত তত্ত্ব জানিয়া লইয়াছেন। সমগ হিন্দু আগম-শাস্ত্র এই ভাবেই রচিত হইয়াছে; এখানে জগল্লাতা মহাদেবী স্বয়্র: প্রশ্নকর্ত্তা এবং শ্রোতা এবং জ্ঞানগুর স্বয়্র: মহাদেবই হইলেন এখানে বক্তা। তাবং হিন্দু তত্ত্বগুলির মধ্যে আমরা এই রীতিই লক্ষ্য করিতে পাবি। প্রত্যেক তত্ত্বেই দেখি, দেবী জালের ত্বংথে বিগলিতা হইয়া ভাহাদেব আতিনাশ্য, মঙ্গল ও মুক্তিবিধানের জন্ম মহাদেবকে অক্রম বিনম্ব করিয়া হাঁহার স্বম্থ হইতে সকল তত্ত্ব জানিয়া লইতেছেন। প্রসিদ্ধ অনেকগুলি বৌদ্ধতশ্বেও আমরা এই রীতি অনুস্ত ১ইতে দেখি। বৌদ্ধতশ্বেব মধ্যে অভিপ্রদিম গ্র্যু হেবজ্ব-তত্ত্বে দেখিতে পাই,—

কপাল-মালিনং বাব নৈরাত্মাশ্লিষ্টকন্ধরম্। পঞ্মুল্রাদবং দেবং নৈরাত্মা পৃচ্ছতি স্বয়ম।।

এখানে 'দেবের' বিশেষণ কপাল-মালিনং বীরং' কথাটিও বিশেষ করিয়া লক্ষণীয়। উত্তরে দেখিতে পাই,—

বঙ্করারাতী-কল্প-মহাতন্ত্র, একল্পরার-চণ্ড-মহারোধণ-তন্ত্র, ভাকার্থন তন্ত্র প্রভৃতি বৌদ্ধতন্ত্রগুলি এই ভাবে আগাগোড়াই দেব এক দেবীব প্রশোক ভেলেই বর্ণিত স্ট্রাছে।

্ই বৌদ্ধতন্ত্রগুলিতে আবও একটি বিষয় প্রশিধানবোগা।
হিল্পুতন্ত্রপরম-সামরতা জনিত কৈবলানন্দ লাভের জন্ত নর-নাবার
মিলিত সাধনার বাবস্থা রহিয়াছে। ঠিক এই একই সাধনা বৌদ্ধতন্ত্রগুলিতে এই-জাতীয় সাধনার ক্ষেত্রে
গুলিতেও দেখিতে পাই। হিল্পুতন্ত্রগুলিতে এই-জাতীয় সাধনার ক্ষেত্রে
সাধককে তাহাব শিব-স্বকপে প্রতিষ্ঠিত হইতে হইবে, সাধিকাকে বিশুদ্ধ
শক্তিস্বরূপা হইতে হইবে। বিশুদ্ধস্বরূপে প্রতিষ্ঠা বাতীত কখনও
বামল-সাধনা সম্ভব নহে। স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হইয়া সাধনাই ইইল
প্রচলিত তৈরব-ভৈরবী সাধনার গুঢ়ার্ম। বৌদ্ধতন্ত্রগুলিতেও আমরা বজ্
ভাবে এই তত্ত্বই ব্যাগ্যাত দেখিতে পাই। নাবা মাত্রই প্রজ্ঞান্ধশিলি
পূক্ষ বজ্বর বা বজ্বসন্ত্র; এই স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত সাধনাই হইল
প্রজ্ঞোপায় সাধনার তাৎপর্য। কোনও কোনও বৌদ্ধতন্ত্রে এই তত্ত্বী
অতি স্পন্ত ভাবেই প্রচারিত হইয়াছে। ১ একল্পবীর-চপ্তমহারোক্যাত্রের
স্পন্ত দেখিতে পাই—

'নরাঃ বজ্রধরাকারাঃ থোবিতঃ বজ্রযোধিতঃ ॥'

নাগার্জুনপাদেব 'পঞ্জম' গ্রন্থে শূলতা-রূপিণী প্রান্তা সহদ্দেবিলা হইরাছে, 'স্তা-সংজ্ঞা চ তথা প্রোক্তা।' একস্লবারচগুমহাবোৰণ তথা এক স্থলে স্বয়: বজ্রধন চগুরোষণ দেবীকে বলিতেছেন----

- ৮। এসিয়াটিক সোসাইটিতে রক্ষিত পুথি **।**
- ৯। এসিয়াটিক সোদাইটিতে রক্ষিত পুথি।

ভাবাভাববিনিম্ ক্তশ্তুরানন্দ-তৎপর: ।
নিম্পঞ্চ-স্বরূপোহহং সর্বসয়য়বর্জিত: ॥
মাং ন জানস্তি যে মৃঢ়াঃ সর্বপুরে স্থিতম ।
তেষামহং হিভার্থার পঞ্চাকারেণ সংস্থিত: ॥
আবার দেবার দিক হইতে দেখিতে পাই—
অথ ভগবতা দেববক্ত্রী সমাধিমাপজেদম্ উদাজহার—
শ্র্যতা-করুণাভিন্না দিবা-কাম-স্থথ-স্থিতা ।
সর্ব-কর্ম-বিহানাহং নিম্প্রপঞ্চা নিরাকুলা ॥
মাং ন জানস্তি যে নার্থ: সর্বন্তীদেহ-সংস্থিতা ।
তেষামহং হিতার্থার পঞ্চাকারেণ সংস্থিতা ॥

এই তদ্ধের এক স্থলে এমন কথাও দেখিতে পাই যে, মায়াদেবী-স্থত বৃদ্ধদেবই চণ্ডবোষণতা রূপ গ্রহণ করিয়াছেন, আর প্রজ্ঞা-পারমিতাত্মিকা দেবীই হুইলেন বৃদ্ধপত্নী গোপা। বিখের সকল স্ত্রী হুইলেন এই প্রক্রাপারমাত্মিকা দেবীস্বরূপা এবং দেব চণ্ডবোষণ স্বরূপই হুইলেন বিশ্বের সকল পুরুষ।

মায়াদেবীস্থত-চাহং চণ্ডরোধণতাং গত:।

সমেব ভগবতী গোপা প্রজ্ঞাপারমিতাত্মিকা ॥

যাবস্তস্ত প্রিয়: সর্বা দ্বন্ধপেণৈব তা মতা:।

মদ্রপেণ পুমাংসন্ত সর্ব এব প্রকীতিতা ॥

এই সকল ক্ষেত্রে হিন্দুহন্ত হইতে এই এই ধারণা বৌদ্ধতত্তে গৃহীত হইরাছে বা বৌদ্ধতত্ত্ব হইতে এই এই ধারণা হিন্দুতত্ত্ব গৃহীত হইরাছে, এইরূপ কতকগুলি কাটাছাটা কথা বলিয়া দিলেই সবখানি কথা বলা হইল না। আসলে তত্ত্বসাধনাকে অবলম্বন করিয়া এই জাতীয় কতকগুলি ধাবণা সমাজ-মানসে অত্যন্ত দৃঢ়বন্ধ হটয়া উঠিয়াছিল—হিন্দুতত্ত্ব ও বৌদ্ধতত্ত্ব উভর ক্ষেত্রেই আমরা সমভাবে ভাষার প্রকাশ দেখিতে পাই।

নৌদ্ধ সহজিয়াগণের তান্ত্রিক-সাধনায় আবার দেখিতে পাই, এই ভগবান ও ভগবতী বাহিরের কিছু নহেন—সাধকের ভিতরেই তাঁহাদের অবস্থান। সাধক-চিত্তই স্বয়ং ভগবান—-নৈরাত্মাই গৃহিনী। ১০ সেই নৈরাত্মার সঞ্জে সাধক-চিত্ত নিঃশেষে মিলিয়া যায় লবণ জলেব সঙ্গে।

জিম লোণ বিলিজ্জই পাণিয়েহি তিম ঘরিণী লেই চিত্ত। সমরদ জাই তক্থণে জই পুণু তে সম নিত্ত।।

অন্বয়-সিদ্ধি নামক বৌদ্ধ-তন্ত্রে বলা হইয়াছে— ভগবানিতি নির্দিষ্ট: চিত্তক্যাধিপতি: প্রভু:।

তিল্লোপাদ তাঁহার দোহায় বলিয়াছেন—

চিত্ত থসম জহি সমস্মহ পলটুঠই। ইন্দিঅ-বিসম্ভ তহি মত্ত ৭ দীসই॥

িত এবং আকাশ স্বৰূপা (শুক্ততাদ্ধপিণী প্ৰক্ৰা) বখন সমস্বংখ প্ৰবিষ্ট হয় তখন ইন্দ্ৰিয়-বিষয় তাহাতে কিছুই দৃষ্ট হয় না।

জাবার--- মণহ ভাষাবা খসম ভাষাবদী। দিবারান্তি সহজে রহিছাই।। মন ভগবান—শৃক্তারপিণী প্রজ্ঞা ভগবতী; ইহারা দিবারাত্তি সহজে (মিলিড) থাকে।

চর্যাগীতিকার কুরুরীপাদ একটি গীতিতে বলিয়াছেন— হাঁউ নিরাসী থমণভতারী মোহোর বিগোখা কহণ ন জাই।

এখানে দেবী নিজে বলিতেছেন, আমি হইলাম, আশারহিতা বা আসঙ্গরহিতা, ধ-মনই আমার ভ্রতা বা স্বামী; আমাদের মিলনানন্দের কথা কতা বায় না। ধ-মন শন্দের অর্থ শৃক্ত মন—অর্থাই তান্ত্রিকগণের চতুর্থ শৃক্ত বা সর্বশৃক্ত স্তরের প্রকৃতি-প্রভাশ্বর মন।

চর্যাপদের মধ্যে এই এক দেবীর কথা নানা ভাবে পাইতেছি; কোথাও তিনি দেবী বলিয়া আখ্যাতা—কোথাও যোগিনী বলিয়া, কোথাও 'ঘরিণী' (গৃহিণী) বলিয়া, কোথাও আবার ভোষী, চগুলী, মাতঙ্গী, শবরী প্রভৃতি বলিয়া। বঞ্ধরম্বরূপ সাধকের ইহার সহিত নাচ-গানের কথা দেখি, ১১ কোথাও জাঁকজমক করিয়া ভোষীকে বিবাহ করিতে যাইবার দৃশু দেখিতে পাই এবং সেখানে দিন-রাত্রি 'তাঁহার সহিত স্বরত-প্রসঙ্গে কাটাইবার বর্ণনা পাই। ১২ কোথাও আবার বঞ্ধর সাধক বলিতেছেন—

জোইণি উঁই বিণু খণহিঁ ণ জীবমি। তো মুহ চুম্বী কমলরদ পীবমি।।

'বোগিনি, তোমাকে বিনা ক্রণমাত্রও বাঁচিব না, তোমার মুখ চ্খন করিয়া কমল-রস পান করিব।'

কোথাও আবার ডোম্বীর 'ভাভরিম্মানী' অর্থাৎ চতুরালী দেখিয়া ব্জ্ঞধর সাধক তাঁহাকে কামচণ্ডালী বলিয়াছেন, তাঁহাকে 'ছিনালী'র অগ্রগণ্য বলিয়া গাল দিয়াছেন।

'আদত্ম বঙ্গালে' গিয়া এই চণ্ডালীকে নিজ ঘরণী' করিয়া বজ্পধর সাধক একদম 'বঙ্গালা' ('বাঙাল'?) হইয়া গিয়াছেন ।১৩ কোথাও এই দেবীকে মাতঙ্গীরূপে পাটনীর বেশে গঙ্গা-বযুনার মধ্যে নাও চালাইয়া গোগীকে লীলায় পার করিয়া দিতে দেখি।১৪ কোথাও দেবীকে নৃত্যকুশলা নোকাবিহারিণী বেদেনীরূপে বাশ-বেতের চুপড়ি-চাঙ্গাড়ি বিক্রী করিতে দেখি। ১৫ কোথাও তাহাকে দেখি উঁচু প্রত্বের শিবরে ময়ুরুপ্ছে সজ্জিত হইয়া গুজার মালা গলার শ্বরীরূপে—উদ্মন্ত শ্বরকে লইয়া তাঁহার ঘর-সংসার। ১৬

চয়াপদে নানা রূপকে এবং কবিকল্পনা যোগে বিচিত্র রূপে বর্ণিত এই দেবী কে ?

১১। নাচস্তি বাজিল গাস্তি দেবী বৃদ্ধনাটক বিসমা হোই।। (১৭ সং)

১২। ডোখী বিবাহিত্বা অহারিউ জাম জউতুকে কিত্র আগুতু বাম।। অহণিসি সরত্র পদকে জাত্র জোইণিজালে রএণি পোহাত্র।। ডোখীএর দকে জো জোই বত্রো খণহ ণ ছাড়অ সহজ উন্মত্রো।।

১৩। ১৮ সংখ্যক পদ!

১৪। ৪১ मः श्रुक भम। ১৫। ১৪ मः श्रुक भम।

১৬। ১০ সংখ্যক পদ।

সাধকগণ বৰ্ণিত এই দেবীকে বুঝিতে হইলে হিন্দুতান্ত্ৰিক সাধকগণ কতৃ ক বর্ণিত দেবী বা শক্তিকেও একটু ভাল করিয়া বুঝিতে ছইবে। হিন্দুতত্ত্বের মধ্যে এবং বিবিধ যোগ-গ্রন্থের মধ্যে আমরা কুলকুগুলিনী শক্তির কথা জানিতে পারি; এই শক্তি সর্বনিয় চক্র বা পদ্ম মূলাধারে স্পাকারে কুণ্ডলিত হইয়া নিদ্রিতা আছেন; সাধকের সর্বপ্রথম কাজ হইল এই স্থা শক্তিকে জাগ্রত করিয়া তোলা। দেবী মূলাধারে জাগ্রত হইয়া উঠিবার পূর্ব পর্যস্ত সাধনায় সাধকের কোনও অফুড়তির স্পন্দনই নাই-দেবীর বা শক্তির জাগরণের সঙ্গে সঙ্গেই আরম্ভ হয় আনন্দময় অনুভতির স্পন্দন। শক্তির জাগরণের পরেই আবস্ত হয় তাঁহার উধর্বগতি—একটি একটি করিয়া চক্রকে ভেদ করিয়া শক্তি উধের্ব উন্থিত হন—সর্বোচ্চধামে সহস্রারে গিয়া শক্তির পরমাস্থিতি। শক্তির একটি একটি চকুভেনের সঙ্গে সঙ্গে সাধকের নতন নতন আনন্দায়ভূতির স্পন্দন লাভ হইতে থাকে; সেই **জানন্দায়্**ভৃতির স্পন্দন চরমবিশুদ্ধি এব: পরমপূর্ণতা লাভ করে সর্বোচ্চধামে শক্তির স্থিতির স্থিত। এই কুলকুগুলিনীশক্তির • অধ্যাত্ম-রহস্তের গভীরে প্রবেশ না করিয়া পাই যোগ-তন্ত্রাদিতে এই শক্তির উপান বিচিত্ৰ-ম্পন্দলান্তক বিতাং-প্রবাতের বলিয়া বর্ণিত गांग হইয়াছে। এই প্রবাহের প্রতিক্ষণে সাধকের বিচিত্র দিন্যানন্দের অফুভতি। বৌদ্ধতান্ত্ৰিক সাধনায়ও এই জাতীয় একটি বিহাং-প্রবাহবং স্পন্দনাত্মিকা শক্তির বর্ণনা দেখিতে পাই। এই শক্তির ব্যশানের দক্ষে যে আনন্দানুভতির আরম্ভ, মস্তকস্থিত উষ্ণীধকমলে পৌছিয়া তাহারই পরিণতি বৌদ্ধতান্ত্রিকগণের পরমকাম্য মহাস্তবে। এই মহাস্থ্যই সহজানন। 'সহজ'ই হইল প্রত্যেক প্রাণীর-শুধু প্রাণীর নয়-সকল ধর্মের স্বরূপ; আর এই স্বরূপ হইল পি শুদ্ধ আনন-তাহাই মহাস্থ ; স্বতরাং আনন্দই হইল সহজের নিতা স্বভাব। বৌদ্ধতম্বমতে দেহমধো চারিটি চক্র বা পদ্ম অবস্থিত, নিমুত্ম ২ইল নির্মাণচক্র, ইহা নাভিদেশে অবস্থিত; তদুংধর্ম সদয়ে হুইল ধর্মচক্র, কঠে হুইল সম্ভোগচক্র—আর মস্তকে উষ্ণীবকমলে হুইল মহাস্থ-চক্র।১৭ নির্মাণ্টক ভার্থ নিয়ত্ম চক্র নয়-ইহাই সুলত্ম তত্ত্বের ক্ষেত্র। কিন্তু শক্তির জাগরণ প্রথমে এই নির্মাণচক্রের চৌষটি দলযুক্ত পদ্মে; এইখানে এই শক্তির জাগরনের সঙ্গে সঙ্গে আনন্দের উদ্বোধ। কিন্তু তথন পথস্ত এই স্পন্দনাত্মক আনন্দ বিশুদ্ধ নহে-বিষয়ানন্দের সঙ্গে তাগ জড়িত; উধর্ব গতিতে এই আনন্দ প্রমানন্দে, প্রমানন্দ বির্মানন্দে, বির্মানন্দ সহজানন্দে পরিণতি লাভ করে; সহজানন্দের পরিপূর্ণ অমুভৃতি উন্ধীন-কমলে। শক্তিই হইলেন বৌদ্ধসহজিয়া—তথা সহজানন্দায়িনী (मवी; এই জন্ম তিনি সর্বদাই সহজ-বৌদ্ধতান্ত্রিকগণের স্বরূপা বা সহজানন্দরপিণা। এই সহজানন্দের মধ্যে চিত্তের সম্পূর্ণ বিলোপেই যথার্থ নৈরাত্ম্যে প্রতিষ্ঠা। তাই এই শক্তি নৈরাজারপিণী বা আদ্বিণী 'নৈরামণি'। এই আনন্দরপিণীর প্রথম উদ্বোধের পরে তাঁহাকে ক্রমে হাদয়ে (ধনচক্রে) ধারণ-সেথান হুইতে তাহাকে কঠে ধারণ (সম্ভোগচক্রে)—এই সমস্তের ভিতর

১৭। এ-নিধয়ে বিস্তাবিত বর্ণনা ও আলোচনা লেখকের An Introduction to Tantric Buddhism গ্রন্থে ডুঠবা। দিয়াই দেবী বা বোগিনীর সহিত বন্ধ্রর সাধকচিত্তের স্থরতবােগ; এই স্থরতবােগের পরিণতি দেহ-পর্বতের উচ্চশিথর উন্ধীয়কমন্দে অচ্যুত সহজানন্দের পূর্ণাছুভূতিতে—সে অমুভূতিতে সাধকচিত্তের সহজ-স্বরূপিনীর ভিতরে সম্পূর্ণ বিলোপে অবর সামরস্তের উদ্ভব—তথনই দেবীসঙ্গে সর্বতোভাবে যুক্ত বন্ধ্রধরের যুগনদ্বস্থিতি।

এই আনন্দসন্দোহরূপিণী শক্তির বথন প্রথম নির্মাণচক্রে জাগরণ তথন সহসা অলিত অগ্নির জার জাঁহার প্রচণ্ড দাহন; সেই চণ্ডস্বলোৱা দেবীকেই বলা হইয়াছে 'চণ্ডালী'। ১৮ আবার এই অতীন্দ্রির অন্তভতিরপা দেবী ইন্দ্রিয় দ্বারা সর্বথা অম্পর্শা—এইজক্মই দেবী 'ডোম্বা'। ১৯ দেহরপ নগরের বাহিবে অবস্থিত হইল এই ডোম্বীর কু'ডেঘর--- ব্রাহ্মণ-নাডিয়া'র দল তাহাদের সকল আচার-বিচার ও পাণ্ডিত্যাভিমান লইয়া ইহাকে যেন ছ ইয়া ছ ইয়া যায়—ঠিক সঙ্গলাভ করিতে পারে না; সঙ্গলাভ করিতে পারে নিঘুণ নার্ক' (অর্থাৎ সর্ববিধ আবরণ রহিত) কাপালিক যোগী। একটি হইল পদ্ম, চৌষ্টিটি ভাহাতে পাপড়ি (নির্মাণচক্রস্থিত চৌব্টিনলযুক্ত পল্ম), ভাহাতে চডিয়া নাচে এই 'ডোম্বী বাপুডি'। ২০ যে পর্যন্ত এই নির্মাণচক্রের পদ্মেই 'ডোরা'র আনন্দ-ম্পন্দনের নৃত্য সে পর্যস্ত 'ডোম্বা' থব ভাল নহে—কারণ তথনও বিষয়ানন্দের সঙ্গে বজ্রধর সাধকচিত্তের যোগ আছে: ভাহার পরে নত্যের তালে তালে যথন উধ্বায়ন আরক্ষ হইল ততই ডোম্বী আদরিণা হইয়া হৃদরে—পরে কঠে স্থান পাইল; উন্ধীয-কমলে গিয়া---

> ডোম্বীএর সঙ্গে জো জোট রত্তো খণহ ণ ছাড়অ সহজ উন্মত্তো।।

চর্যাপদাদিতে বর্ণিত এই সহজানন্দরপিণী শক্তিরপিণী দেবীর প্রাদকে আরও ঐতিহাসিক দৃষ্টিতে আরও কিছু কিছু তথ্য লক্ষ্য করিতে পারি। দেবী এখানে 'মাতঙ্গা', 'চণ্ডালী', 'শবরা'। দেবার 'মাতঙ্গা' নামটি শেশমহাবিক্তার মধ্যে গৃহীত দেখিতে পাই। 'প্রীশ্রীচণ্ডী'র সপ্তম অধ্যায়ের আরম্ভে দেবী-ধ্যানের মধ্যেও দেবী 'মাতঙ্গা'। পুরাণাদিতে দেবীকে 'কিরাতী', ২১ 'শবরী' প্রভৃতি রূপে বর্ণিত দেখি। চর্যাগ্রীতিতে বর্ণিত শবরী দেবীও কিন্তু উচ্চপর্বত্বাসিনা, অতএব এই শবরী দেবীও পর্বতন্থা পার্বতী। এই 'শবরী'র বর্ণনায় বলা হইরাছে—

উঁচা উঁচা পাবত তঁহি সিই সবরী বালী

মোরঙ্গি পীচ্ছ পর্বহণ সবরী গিবত গুঞ্জরী মালী।।

শবরী দেবী শুধু পর্বতের উচ্চশিপরবাসিনী নন, মন্থুরপুচ্ছ পরিহিতা শবরী, গলায় গুঞ্জার মালা। সম-বিধান-আহ্মণে কুমারী রাত্রিদেবীকে আমরা কক্সাং শিখণ্ডিনীং' রূপেই দেখিতে পাই। এই শবরীর বর্ণনায় আরও দেখিতে পাই—

> নানা তরুবর মোলিল রে গত্মণত লাগেলী ডালী। একেলী শবরী এবণ হিশুই কর্ণকুশুলবক্সধারী।।

'নানা তক্ষবর মুকুলিত হইল, গগনে লাগিল ডাল; একেলা শবরী এ বনে খুঁজিয়া বেড়ায়—দে কর্ণিকুণ্ডলবন্ধধারী।' পার্বত্যবনে একাকিনী ঘ্বিয়া বেড়ায় এই শবরী বালিকা—কর্ণকুণ্ডলবন্ধধারী

১৮। 'চণ্ডালা অলিতা নাভৌ'—হেবজ্ঞতন্ত্র। ১৯। অস্পর্শা ভবতি যমাং তমাং ডোমী প্রকীর্তিতা—এ। ২০। ১০ম সংখ্যক চযা। ২১। খিল হরিবংশ।

এই শবরী। কর্ণকুলবজ্ঞধারী দেবীর বর্ণনা তন্ত্রপুরাণে তুর্লভ নহে।

তথু তাহাই নয়, এই শবরীর স্বানী যে শবর সে নেশায় উন্মন্ত পাগল, বাড়িতে বাধায় হৈ-চৈ, নিজের ঘরের স্থলরী স্ত্রীকেই সে নেশার ঘোরে চেনে না; তাহাকে সামলানই যে শবরীর এক বিষম দায়! তাই অভুনয়-বিনয় করিতে হয়—

উমত সৰবো পাগল সৰবো মা কর গুলী গুলাড়া তোহোরি। বিশ্ব ঘরিণী নামে সভজ স্তলারী।।

শবরী থাট পাড়ে—মহাস্থথে শব্যা বিছায়—তাহার পরে সেই শবর-ভূজকের সহিতই এই নৈরামণি শবরী স্ত্রী ভাবে প্রেমের রাত্রি পোহার। শবরকে আদর করিরা থাইতে দেয় তামূল—আর কপূর ; ক্ষণিকের জন্তু পোষ মানে মাতাল স্বামী—শবরীকে কঠে লইয়া মহাস্থথে বাত্রি পোহায়।

তিঅ ধাউ থাট পড়িলা মহাক্তথে সেজি ছাইলী।
সববো ভূজক গইবামণি দাবী পেন্ধ বাতি পোহাইলী।।
হিঅ তাঁবোলা মহাক্তহে কাপুর খাই
ক্তন নিরামণি কঠে লইয়া মহাক্তহে বাতি পোহাই।।

কিন্ত থেয়ালী মাতাল স্বামীর কি আর কিছু ঠিক আছে, এই শাস্তথ্শি দিব্য মানুষ, আবার কথন গুরুরোবে উন্মন্ত; গুরুরোবে ঘর ছাড়িয়া দে প্রবেশ করে গিয়া পর্বতের শিপরসন্ধিতে—কি করিয়া আবার তাহাকে খুঁজিয়া ফিরাইয়া আনা বায় !

উমত সবরো গরুমা রোষে।

গিরিবর সিহর সন্ধি পইসন্তে সবরো লোড়িব কইসে॥

সমস্ত ছবিটি তুলিয়া ধবিলাম। ইছার মধ্যে পরবর্তী কালের লোকিক ভাবে বর্ণিত হর-পার্বতীর গার্ছ স্থা জীবনের আভাস মিলিতেছে কি? পার্বতীর স্বামীকে পরবর্তী বাঙলা সাহিত্যে দেখিতে পাইতেছি নেশাথোর পাগলা ভোলা—বাড়িতে বাধান কোন্দল—নেশার ঘোরে ঘ্রিয়া বেড়ান কুচনী পাড়া, চেনেন না নিজের ঘরের স্কন্দরীকে। কত কট্টে কত অমুনরে-বিনয়ে এই ভোলাকে থুলি রাখিয়া তাঁহার সঙ্গেদালতা প্রেম রক্ষা কবিতে হয় পার্বতীকে। তাহাতেও কি মানেন, কখন আবার গুলু রোঘে চলিয়া যান পর্বতের কোনো শিখর-সন্ধিতে—কে করে আবার তাঁহার সন্ধান। চর্যাপদটির বর্ণনায় কি ভাষা-সাহিত্যে বর্ণিত লোকিক শিব-পার্বতীর সন্ধান পাওয়া ষাইতেছে ?

চতুর্দ শ শতকের শেষ ভাগে বা পঞ্চদশ শতকে মিথিলায় বিক্তাপতি মৈথিলী ভাষায় হর-গোরী বিষয়ক পদ রচনা করিয়াছেন; লোকমুখ হুইতে এই জাতীয় কিছু কিছু পদ আবিষ্কৃত হুইয়াছে। তাহার ক্ষেকটি পদ এখানে উল্লেখ করিতেছি—চর্ষার আলোচিত পদটির সহিত বর্ণনায় আশুর্ক সাদৃশু লক্ষিত হুইবে। মহাদেব গৌরীর প্রতি বাগ করিয়া কোথায় চলিয়া গিয়াছেন; গৌরী বলিতেছেন—

হমর্সো কসল মহেসে।
গোরী বিকল মন করথি উদেসে॥
পৃছিত্ব পথ্ক জন তোহী।
এ পথ দেখল কছ ় বুঢ় বটোহী॥
অলমে বিভূতি অনুপে।
কৃতেক কহব ভূনি জোগিক সূরূপে॥

বিজ্ঞাপতি ভন তাহী। গৌৰী হৰ লগু ভেলী বতাহী॥ ২২

'আমার উপরে রোধ করিয়াছেন মচেশ। গৌরী বিকল মন, ত উদ্দেশ করিতেছেন। তে পথিকজন, তোমাকে ছিল্লাসা করি, এ পথে দেখিলে কোনও বৃদ্ধ পথিককে ? অন্তে তাঁজার অন্ত্পম বিভূতি, কত আর বলিব, সেই সেই যোগীর স্বরূপ ? বিভাপতি বলে ভাঙাতে—হর লইয়া গৌরী হইলেন পাগলিনী।' অপর একটি পদে দেখি—

উপনা হে মোর কতম পেলা।
কতম পেলা দি কি দহ ভেলা।।
ভাঙ নহি বটুয়া কদি বেদলাহ।
জোহি হেরি আনি দেল হদি উঠলাহ।।
জে মোর কহতা উপনা উদেস।
ভাহি দেবঁও কর কন্ধনা বেদ।।
নন্দন বনমে ভেটল মহেদ।
গোরি মন হর্বদিত মেটল কলেদ।।

'আমার উগনা (উলক্ষ) কোথায় গেল? কোথায় গেল, তাহার কি হটল? বটুয়াতে ভাঙ নাই, ক্ষিয়া 'বসিল: যেমনই খ্ভিয়া আনিয়া দিলাম—হাসিয়া উঠিল। যে মোরে বলিবে আমার উগনার উদ্দেশ তাহাকে দিব কর-কল্পার বেশ। নন্দনবনে দেখা হইল মহেশের সঙ্গে; গৌরীর মন হর্ষিত—মিটিল ক্লেশ।' আর একটি পদে দেখি—

পীদল ভাগ বহল এহি গতী।
কথি ল'ই মনাইব উমতা জতী।
আন দিন নিকহি ছলাহ মোব পতী।
আই বঢ়াএ দেল কোন উদমতী;
আনক নীক আপন হো ছতী।
ঠামে এক ঠেসতা পড়ত বিপতী।।
ভণহি বিভাপতি স্থন হে সতী।
ই থিক বাউর ত্রিতুবন পতী।। ২৩

'পেষা ভাঙ এমন ভাবে রহিল; কি করিয়া মানাইব এই উন্মন্ত ষতিকে? অক্সদিন ভাল ছিল মোর পতি, আজ কে বাড়াইয়া দিল তাহার উন্মন্ততা? অপরের ভাল, নিজেব হয় ক্ষতি; কোথায় এক ঠোকর লাগিবে—পড়িবে বিপন্তি। বিভাপতি বলে, তন হে সতি,—এ নহে পাগল—এ যে ক্রিভ্বনের পতি।'

বসহা-চঢ়ি ৰুসিকত ভাগি পড় এলা, ক্রিভুবনপতি শিবদানী ।। ধ্বুৰ ॥।
ভাঙ ধথুর পীসি জাবে হম, আনক ঘরসঁ আনী ।
ভাবে অনট-বিনট বজুইত কুসি, কতএ গোলা নহি জানী ॥
কতবও কুবচন কহথি তদপি হম, কনিও খেদ ন মানী ।
তেহন বতাহ স্বামি মোর ভেশা, হোইছ মন জে কানী ॥ ইজ্যাদি ।
গীতিমালা, জীউমানদ্দ বা কর্তু ক স্কুলিত।

২২। অধ্যাপক থগেল্রনাথ মিত্র ও ডক্টর বিমানবিহারী। মন্ত্রমদার সম্পাদিত বিল্লাপতি।

২৩। ইহার সহিত প্রবর্তী কালের কবি ঈশনাথের এই প্রদটিব তুলনা করিতে পারি।

তথু বিক্তাপতির পদে নয়, মৈথিলা লোকসঙ্গীতের মধ্যেও ছর-পার্বতীর গার্হস্থা জীবনের এই দৃষ্ঠ দেখিতে পাই। নিয়ে এই জাতীয় একটি গান উদ্ধৃত করিতেছি।

সবকে দৌরি দৌরি পুছকিন ব্যাকুল গৌনী

থহি পাথ দেখল দিগপ্বব বে কা।
ভোহর দিগপ্বর কে কৈসন রূপ

হ্মরো দিগপ্বর কে সন সন কেস ছৈছি।

জীর সন দাঁত ছৈছি

অংগ মে ভসম বমাবথি বে কা।

সবকে দৌরি দৌরি

হাধ মে ডমফ বগল মে ত্রিস্থল ছৈছি

জটা মে গলা বিরাজ্ঞি বে কী—

च्याका तामा अवि भःथ प्रथम पिशयत त की ॥ २८ ौ

"সকলকে লোড়াইরা দোড়াইরা জিজ্ঞাসা করে ব্যাকুল গোরী— 'এই পথে দেখিলে কি দিগম্বরকে?' (লোকে জিজ্ঞাসা করিল)— 'ভোমার দিগম্বরের কি বকম রূপ?' 'আমার দিগম্বরের লগের মত্ত কেল। দাত আছে—আর অঙ্গে আছে ভন্ম মাথা।' সকলকে দোড়াইরা দোড়াইরা জিজ্ঞাসা করে ব্যাকুল গোরী, 'এই পথে দেখিলে কি দিগম্বরকে? হাতে তাহার ডমক্ল, বগলে ত্রিশূল; জাটার বিরাজ করে গঙ্গা।' 'ওহে মেয়ে—এই পথে দেখিয়াছি দিগম্বরকে।'

সভকেঁ দোড়ি দোড়ি পুছথি বিকল গোৱাঁ.
আহে এহি পথ দেখল দিগম্বৰ বে কাঁ।
দেখইত বৃঢ় সন বস্থি সভক মন,
আহে লথইত পুৰুষ পুৰুদ্ধৰ বে কাঁ।
অপনে নে অএলা শিব ঘৰ নহি কোড়া থিক,
আহে গণপতি অউরি পসারল কে কাঁ।
বসহা চড়ল শিব ফিরথি আনন্দবন,
আহে ঘুমি ঘুমি ডমক্ল বজাবথি বে কাঁ।
ভনই বিক্তাপতি সন্ত্ৰ গোৱা পারবভি,
আহে ইহো থিকা ত্রিভুবন নাথ বে কাঁ।
গীতিমালা, শ্রীউমানন্দ ঝা কর্ড ক সক্লতে।

আমরা আদিবৃদ্ধ এবং আদিপ্রজ্ঞার আলোচনা প্রদক্ষে দেখিয়া আদিরাছি যে আদিবৃদ্ধ এবং আদিপ্রজ্ঞা এবং হিন্দু পুরাণ-তন্ত্রের হর-পার্বতী বা শিব-শক্তি লোকায়ত ভাবে মিলিয়া মিশিয়া এক হইয়া গিয়াছে। পরবর্তী কালের বৌদ্ধতন্ত্রে স্থানে স্থানে আদিবৃদ্ধ ও আদিপ্রজ্ঞা শিবশক্তিরূপেও বর্ণিত হইয়াছেন। কোনও কোনও বৌদ্ধতন্ত্রে আদিপ্রজ্ঞার ত্রিকোণাকৃতি মন্ত্রেরও উল্লেখ পাই। বাঙলা সাহিত্যের মধ্যে এই আদিবৃদ্ধ এবং আদিপ্রজ্ঞার প্রভাব সর্বাপেকা স্পাই করিয়া লক্ষ্য করিতে পারি, বাঙলা বিবিধ প্রকারের সাহিত্যে বর্ণিত আদিদের এবং আদিদেবীর কল্পনায়।

২৪। শ্রীমতী অণিমা সিংহের সংগ্রহ। বিকাপতির নামেও থিইরূপ একটি পদ প্রচলিত আছে। এই আদিদেব আদিদেবীর সাক্ষাংলাভ করি বাঙলা-সাহিত্যের স্ক্রেকরণ বর্ণনা প্রসঙ্গেন। মধ্যযুগের প্রায় সকল সাহিত্যের মধ্যে আমরা এই স্ক্রের বর্ণনা পাই। শৃশ্যপুবাণ, ধর্মপুজ্ঞা-বিধান এবং ধর্মনজলঙ্গলিতে এই স্ক্রে-প্রকরণের বিশদ বর্ণনা পাই। নাথ-সাহিত্যের গোবক্ষ-বিভ্রমে স্ক্রে-প্রকরণের বর্ণনা আছে। মাণিক দত্তের ও মুকুন্দরামের 'চণ্ডীমঙ্গলে' এবং খিছ মাধবের 'মঙ্গলচণ্ডীর গীতে' স্ক্রিকাহিনী বর্ণিত আছে। কিছু কিছু মনসা-মঙ্গলেও এই কাহিনীর ছায়া দেখিতে পাই। ভারতচক্রের 'অল্লা-মঙ্গলে'ও এই স্ক্রিকাহিনী বাদ পড়ে নাই। মধ্যযুগের হিন্দী-সাহিত্যে এবং ওড়িয়া-সাহিত্যেও নানা ভাবে অমুরূপ স্ক্রিকী বর্ণনা দেখিতে পাই। এই স্ক্রিকাহের বর্ণনা এবং সেখানে বর্ণিত তত্ত্ব ও কাহিনী সমূহের উদ্ভবের ইতিহাদ সম্বন্ধে অন্ত্র বিস্তৃত আলোচনা করিয়াছি।২৫

বাঙলায় বৰ্ণিত এই স্ঠি-কাহিনীর মধ্যে এখানে-সেখানে কিছু কিছু তফাং সত্ত্বেও বর্ণনার মধ্যে মোটামুটি একটা ঐকমন্ত্য দেখিতে পাওয়া যায়। সর্বত্রই দেখি, স্ট্রের পূর্বে নিখিল নাস্তিখের অন্ধকার (ধুদ্ধকার); শূক্ততার মধ্যে ছিলেন শুধু এক দেবতা—তিনি সর্বত্রই 'নৈরাকার নিরত্নন'—তিনিই আদিদেব। সিস্কু এই আদিদেব শুক্ত-मृতि नितक्षन इटेटडें अक चानिस्नितीत रुष्टि इडेल। 'मुख-পুরাণে' দেখি, শুক্ত নিবজন ধর্মের ঘর্ম হইতে এই 'আত্মাশক্তি'র জন্ম ; বর্ণনায় তিনি 'আত্মা' নামেই খ্যাত। সহদেব চক্রবর্তীর 'ধর্ম-মঙ্গলে'ও এই কথাই দেখি। সীতারাম দাসের 'ধর্ম-মঙ্গলে' দেখি, নিরঞ্জন নিজেই এক স্বন্ধরী কন্সার রূপ ধারণ করিয়া নিজেই আবার তাঁচার সহিত মিলিত হইলেন। অক্যান্ত 'ধর্ম-মঙ্গলে' দেখি, স্পষ্টিকান নিরঞ্জন আদি-দেবের বামপার্শ্বে 'আচন্ডিতে' দেবীর আবির্ভাব ঘটিল। রামদাস আ*দ*কের 'অনাদি-মঙ্গল' অনুসারে মহামারা ধর্ম-নিরঞ্জনের বামপার্শ হইতে উৎপন্না হইলেন ! নরসিংহ বস্থা ধর্মায়ণ মতে নিরঞ্জন দেবের ইচ্ছা হইতেই প্রকৃতিরপা আন্তার উৎপত্তি। নাথ-সাহিত্যের গোরক-বিজয়ে দেখি, স্টের পূর্বে ধর্ম নিরঞ্জন নিজ্রাভিভূত ছিলেন, স্টেকাম ইইয়া জাগরণের সঙ্গে সঙ্গে তাঁহার পার্থে এক ছায়া-মৃতিকে দেখিতে পাইলেন, এই ছায়ামৃতিই দেবী আগ্ৰা। নাথ-সাহিত্যের কোথাও দেখি, অলেকনাথ নিজদেহের শক্তি হইতেই কাকেতৃকা দেবীকে স্ঠে করিয়া লইয়াছিলেন; এই কাকেতৃকা দেবী হইলেন व्यामित्मवी।

চণ্ডীমঙ্গলগুলির মধ্যে দ্বিজ মাধ্বের 'মঙ্গলচণ্ডীর গীতে' দেখি, 'হাষ্টি' হাজিতে হাসে, দেবী জন্মিল নিঃখাসে'। কবিকঞ্চণ মুকুন্দরামের মতে—

আদি দেব নিরঞ্জন বাঁর স্টে ত্রিভুবন প্রম পুরুব পুরাতন। পুরোতে করিয়া স্থিতি চিস্তিলেন মহামতি স্টের উপায় কারণ॥ তথন— চিস্তিলে এমত কাজ এক চিত্তে দেবরাজ তমু হইতে হইল প্রকৃতি।

২৫। এই লেখকের Obscure Religious Cults গ্রন্থখানি ক্লাইবা।

এই আদিদেব নিরঞ্জনের তত্ত হইতে উৎপদ্ধা প্রকৃতিই হইলেন আদিদেবী।

আদি দেববাজ-শক্তি ভ্বন-মোছন-মূর্ত্তি
উরিলেন স্টের কারিণী।
রচিয়া সম্পূট পাণি মৃত্ মন্দ স্থভাবিণী
সমুখে বহিলা নাবায়ণী।।

একটা জিনিস বিশেষ ভাবে লক্ষ্য করিতে পারি। চণ্ডীমঙ্গল কাব্যগুলিতে এবং কিছু কিছু ধর্ম-মঙ্গলেও শিব এবং চণ্ডীর পৃথক বর্ণনা দেপিতে পাই—দেস ব বর্ণনার পরে স্টে-প্রকরণকে অবলম্বন করিয়া দেখিতে পাই আদিদেব আদিদেবীর বর্ণনা। তাহা হুইতে বেশ বোঝা যায়, এই সব ভাষা-সাহিত্যের কবিগণ২৬ শিব-পার্বজীর পাশাপাশি আর একটি মুগলের পৃথক ধারা একটি সামাজিক ঐতিহ্বরূপে প্রাপ্ত হইয়াছিলেন। এই গারা বৌদ্ধতন্ত্র অবলম্বনে আদিবৃদ্ধ ও আদিপ্রজার ধারা বলিয়া মনে কবি।

আদিদেবীর উংপত্তির পরে সর্বত্রই সাংখ্য মতবাদের প্রবল প্রভাবে আদিদেবী আদিপ্রকৃতি রূপ গ্রহণ করিলেন। আদি-প্রকৃতিরূপে তিনি প্রসিদ্ধ ত্রিম্তিকে (রূলা, বিষ্ণু ও শিব) প্রসব করিলেন; এই ত্রিম্তি ইইলেন আদিপ্রকৃতির সন্ত্ব, রজ: ও তম: এই তিন গুণেরই ত্রি-বিগ্রহ।

২৬। সাহিত্য-পরিষং সংস্করণ।

একটি কবিতা অবস্তী সাম্যাল

আমি বলেছিলাম আসন।
আমি আসব, যথন থাঁ-থাঁ বোদ্দুরে
পিচ গলবে, পাতা উভূবে
ঘূর্নী হাওয়ায়, কৃষ্ণচূড়ার ডাল
সে কি দাউ-দাউ অলবে, যথন
ঘাম ঝরবে, বুক ফাটবে
তেষ্টায়।
আমি আসব।

আমি আসব, যথন আকাশের অ্যাসফল্ট স্থানের মতন বিধাবে। পথের কুকুর লকুলকে জিভে ক্লান্তি ঝরাবে। তিৰ্যক ছায়া গাছে গাছে মুখ গুঁজবে। আমি আসব। আহা, এই রোদ্ধুর, আগুন হুপুর, পাখির গান वस्त । **এখন মধ্যদিন**। ঘাম-দবদর মুখ, গুঁড়ো-গুঁড়ো কথু চুল হাওয়ায় উড়ছে। তপ্ত আঁচলে একটু বাঁচানো ছায়া রেখে দিলে বুঝি, আসব যখন আড়ালে আমাকে ঢাকবে। আমি আসব।

কত দূব, বলো, কত দূব ! এই পথ বাঁকে বাঁকে জট খুলছে। অফুবান পথ, পথ হৈটে হৈটে কাটছে। কথন মোড়ে পৌছুব। প্রাপ্ত ললাট ঘাম মুছে নেওয়া মিঠে নিঃশ্বাসে ছায়ার স্পাণ মাখবে। আমি আসব।

আহা, এই রোদ্বুব, হু-ছ করা মন
তুমি দাঁড়িয়ে।
গণগণে নীল আকাশ পুড়ছে, পাতারা
উড়ছে।
মধাদিন।
তেষ্টায় বুক ফাটছে
তুমি দাঁড়িয়ে।

আমি বলেছিলাম, আসব, ভূমি শাড়িবে।

जननी जगहाजी उ जननी श्रीशीत्रात्रहास्रि एन्ती

অধ্যক্ষ ডক্টর শ্রীযতীন্দ্রবিমল চৌধুরী

জয়দে জগদানন্দে জগদেকপ্রপৃজিতে।
জয় সর্বগতে ত্রে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে ।।
দরাদ্ধপে দয়াদৃষ্টে দয়াদ্রে ত্রংগনোচনি ।
সর্বাপন্তারিকে ত্রুগে জগদ্ধাত্রি নমোহস্ত তে ।।"
জগদ্ধাত্রীকরে জগদ্ধাত্রীভবং ।
জীক্ষীচণ্ডীতে ত্রদ্ধা জননীকে স্তুতিমুখে বলেছেন—
"মচ কিঞ্ছিং কচিকস্ত সদসদ্বাথিলাত্মিকে ।
তত্ম সর্বস্ত যা শক্তিং সা তং কিং স্তৃয়সে তলা ।।"
অর্থাৎ তে বিশ্বাত্মিকে, যা কিছু বস্তু, সং তোক বা অসং হোক, আছে,
দেই সমস্ত বন্ধুর ভূমিই শক্তি; সেই তোমাকে কি করে স্তুতি

একই ভাবে জগন্ধাত্রীকল্পে ঋষিস্তবে জননী ভগন্ধাত্রীকে সংবোধন করে বলেতেন-—

> "দ্বিসপ্তকোটিমন্ত্রাণাং শব্জিরূপে সনাতনি। সর্বশব্জিস্বরূপে চ জগন্ধান্ত্রি নমোহস্তু তে॥"

অর্থাং ১৪ কোটি মল্লেব শক্তিরপা সনাতনা তুমি সর্বশক্তির স্বরূপভূতা; তে জগন্ধাত্রি! তোনার নমস্কার। উভর মল্লেই জগজ্জননীকে সর্বশক্তিস্বরূপা বলা হয়েছে। যিনিই শ্রীপ্রীচণী—তুর্গা, তিনিই শ্রীপ্রিজগন্ধাত্রী—মন্ত্র বলে তাই প্রমাণিত হলো। কলতঃ স্বন্ধিবাচন, সহল্প প্রভৃতি সর্বত্র "জগন্ধাত্রাঃ তুর্গায়া" কলতে হয়। ক্রাণ্ডপুরাণ বলেছেন, "বিশ্বমাতা জগন্ধাত্রী বিশালাক্ষী বিরাণিণী।" দেবীপুরাণ স্পষ্ট করেই বলে দিয়েছেন—যেহেতু জননী লোক সকল শারণ করেন—এবং তাদের পরিপালনোক্ষেপ্ত জীবিকার ব্যবস্থাও করে দেন, সেজ্জুই শ্বিধান্ধক 'ধা' ধাতুনিস্পাত্র পত্র জসন্ধাত্রী জননীর নাম। "ব্যাকার্য়তে লোকান্ বৃত্তিমেনাং দদাতি চ।

ভূ ধাক্র ধারণে গাভূর্জগন্ধাত্রী মতা বুলৈ:।।"
মার্কণ্ডের পুরাণও বিশ্বমাভাবে জগন্ধাত্রী বলেছেন—"বিশ্বেম্বরীং
জগন্ধাত্রীং স্থিতিস-হারকারিণীম্।"

দশপ্রহরণধারিণী হুর্গভিনাশিনী জননী হুর্গাকে দেবীপক্ষে আরাধনা করে আবার প্রথপেরবর্তী খেতপক্ষে কার্ত্তিকী নবনী তিথিতে স্লগন্ধাত্রীরূপে আরাধনা করার বিধি-বিধানে কি তেতু থাকতে পারে, তা স্বভাবতই মনে জাগে। ঋষেদের দেবীস্ক্র প্রশাবার সিনাতন ক্রমে আদিনী শুক্লপ্রতিপদি বা সন্তম্যাদিকল্পে জননীর পূজার বিধান, রাত্রিপ্রক্রের ক্রমান্থারে মহানিশায় বা কার্ত্তিকী কুবল ক্রমান্থাদিকল্পে শুক্লপক্ষের বিতীয়া পর্যস্ত মা কার্নীর পূজা, তন্মধ্যবর্তী কোজাগরী পূর্ণিমা তিথি জননী লক্ষ্মীপূজার কারণ সব শাস্তে নির্দিষ্ট আছে। আমরা ব্যথাসময়ে বথাস্থানে তার আলোচনা করেছি। কিন্তু জগদ্ধাত্রীপূজা কে, করে, কি কারণে কোথার আরম্ভ করলেন, তার প্রমাণ পাইনে। কাত্যারনীতন্ত্রে যে উপাধ্যানের নামান্তরপূর্বক পুনক্ষক্তি মাত্র। তাতে চিন্তের ক্র্ম্থা মিটে না। তবে একটি কথা নিরস্তর মনে হয় এ বিবর্দ্ধে সেটি হচ্ছে, মহালয়ার পিতৃপ্রাদ্ধ কোনও কারণে প্রদন্ত না

শাল্কে। বদিও জগদ্ধাত্রীপূজার বিষয়ে সে রকম কোনও শাল্কীয় বিধানের উদ্ধেধ দেখতে পাই না, তথাপি যেন বারংবার না হয়—বে সাধক ভক্ত কোনও কারণে দেবীপক্ষে জননী হুর্গার বা কৃষ্ণপক্ষে জননী কালী বা লক্ষ্মী দেবীর চরণ ক্ষ্ণনা করতে পারেননি, তাঁদেরই জক্ত এ জগদ্ধাত্রী পূজার বিধান। অবস্থ এটি একটি বিশেষ বিধানক্ষপে বিবেচনা করার কথা উত্থাপন করছি। ধাঁরা উক্ত তিন ভাবে মাতৃদেবীর উপাসনা করেছেন, সামর্থ্য ও স্ক্রমোগ অনুসারে তাঁরা এই পূজাও সম্পাদনা করবেন, সে বিষয়ে অক্তথা করবার কি আছে ?

আমার এই বিশেষ বিবেচনার মূলে ছুইটি কারণ উল্লেখ করছি। প্রথমটি হলো এই যে, জগদ্ধাত্রীপূজার ক্রম একেবারে ত্রিদিবসনিম্পাত জননী হুর্গার পূজার একদিবসসাধ্য অনুক্রম, সপ্তমী অষ্টমী নবমী তিথির পূজা 'এখানে দিনোদয়-নধ্যাফ্লসায়াসদ্ধ্যাস সমাপন করে একই শ্রীগ্রন্থ শ্রীশ্রীচণ্ডীপার্চ, হোমপ্রয়োগ প্রভৃতি করতে হয়। মন্ত্রেও সর্বত্র "জগন্ধাত্রী তুর্গা" বলতে ত্র-স্বস্তিবাচন, সঙ্কল্প প্রভৃতি সর্বত্রই এই নিয়ম। বর্তমান যুগে প্রয়োগ পদ্ধতির দিক থেকে অকাট্য একটি প্রমাণ আমি উপস্থাপিত করছি। সেটি হচ্ছে বর্তমান যুগের অবতীর্ণ ভগবান শ্রীশ্রীরামকৃষ্ণ পরমহংসদেবের সহধর্মিণী নিজে স্বয়ং অবতার্ণা জগন্ধাত্রী হয়েও প্রতি বংদর জননা জগন্ধাত্রীব ত্রিদিবস্ব্যাপী আর্চনা করতেন। জননার জননা শ্রীশ্রীখ্যামাস্থন্দরী দেবী জয়রামবাটীতে শ্রীশ্রীমায়ের পূজা যথাসাধ্য উপচারে সম্পাদন করতেন। কোনও বছর বাদ দেননি। পরবর্তী যুগে জননী সারদামণি নশ্বর দেহ পরিত্যাগের সময় পর্যস্ত কেবল এক বংসর বিশেষ কারণে জগনাত্রীপুজা সম্পাদন করতে পারেননি। তজ্জন্ত পরের বংসর বহু কাল আগে থেকে জয়রামবাটীতে উপস্থিত যোড়শোপচারে জননী জগদ্ধাত্রীর অর্চনা করিয়েছিলেন। জননী পূজার সময়ে তাঁর মাতৃদেবীর দেহাবসানের পরে সর্বদাই আমার মা এই সমসে এই করতেন, এই উপায়ে জননার পূজার সামগ্রী মন্ত্রুত রাখতেন—কালীপুজার তারিথ থেকে সলতে পাকাতেন, পৃথিবা কত শত জগদ্ধাত্রীপূজার গল্প পূজাপাদ শরং মহারাজ স্বামী সারদানন্দ), যোগীনমা প্রভৃতিদের কাছে করতেন। সে সময়ে জননীর ভক্ত সম্ভানেরা অনেকেই পূজামগুপে উপস্থিত থেকে জননীর কর্মে সহায়তা করতেন। জননীর মাতৃপূজায় এত ছিল আনন্দ ও উৎসাহ। কিছুতেই তিনি ঐ সময়ে কলিকাতায় বা অন্ত স্থানে থাকতেন না; জয়বামবাটীতে পিতৃগৃহে গিয়ে যে কোনও রকমে উপস্থিত হতেন, এবং স্বয়ং উপস্থিত থেকে জননী জগন্ধারী পূজা সম্পাদন করেন।

যা হোক—আমরা আমাদের বিশেষ বিবেচনার কথা এখন বলি, বে কারণে মায়ের মাভ-পরিবারে সর্বপ্রথম জননী জগদম্বা জগদাত্তী পূজার প্রথম অবতারণা হলো, সে কারণটিই বলা প্রয়োজন। একবার জয়রামবাটীর নব মুখ্জ্যে গ্রাম্যসঙ্কীর্ণতা বশতঃ মায়ের মা অধাং ভামাসুন্দরীর চাল কালীপূজার জন্ম নিলো না। ভামাসুন্দরীর পর্ম জন্ম স্বান্ধ্যায় বন্ধে সংবিদ্যুত চাউল মায়ের পূজার লাগলো না এই চুঃথে জননী-জননী খ্যামান্তলরী নিরস্তর অঞ্জবিদর্জনে ধরণী সিক্ত করতে লাগলেন। একদিন রাত্রে স্বপ্নে দেখলেন, রক্তবর্ণা এক দেবী পারের উপর পা দিয়ে বদে আছেন এবং মাকে সান্তনা দিয়ে বলছেন— "তুমি কাঁদছ কেন? কালার চাল আমি খাব। তোমার ভাবনা কি?" খ্যামান্তলবা জিজ্ঞাসা করলেন— "কে তুমি?" দেবী উত্তর দিলেন— "আমি জগদখা, জগদাগ্রীরূপে তোমার পূজা গ্রহণ করব।" পরের দেবার বর্ণনা করতেই মা সারদামণি জননীকে বলতেন— "ঐ তো, উনিই তো জগদাগ্রী।" সেই পূজার স্বন্ধ হলো মা সারদামণির পিতৃ-পরিবারে। পূজার সময় সে সংবাদ জননী জগদখা করেকটি বিভৃতিও প্রদর্শন করালেন। অল্প চাউলে চতুপার্শ্ব সমস্ত শ্রামের লোকেরা প্রসাদ পেল। জননী খ্যামান্তলরী মা জগাই-যের কানে বাওয়ার সময় বলে দিলেন—

"মা জগাই, আবাব আব বছর এসো! আমি তোমার জন্ম সমস্থ বছর ধরে সব জোগাড় করে রাখবো"। শাস্ত্রের মত— মহাজনো বেন গতঃ স পঞ্চা"। কাজেই বর্তমান যুগের স্বয়ং অবতার্গা জগভ্জননা জগন্ধাত্রীকপা জীপ্রীসারদামণির জননী বে শিষ্টাচার পালন পূর্বক লোকশিক্ষার পথ অবারিত করে গেছেন, সে মত বে ধর্মানুশাসিত, সে বিষয়ে সন্দেহ কি ? তাঁব আচরিত পথ বলেই তো এটি শাস্ত্রসিদ্ধ পথ।

জননার পিতৃপরিবার এত দরিত ছিলেন যে, জাঁদের পক্ষে আজি ব্যয়েও জননী জগন্ধাত্রীপূজা প্রতি বংসর চালানো কট্টসাঘ্য হয়ে উঠেছিল। তাই জননী প্রের বছর "জগাই-"য়ের পূজার আপত্তি কবেন। স্বপ্নে জগাই স্থী জ্যা বিজয়াকে নিয়ে মাকে জ্জাসা করেন, সতিয় ওঁয়া তা হ'লে যাবেন কি না। জননী খননি বলবেন—"না, না, তোনৱা যাবে কেন ?"

প্রথম বছর বিদর্জনের দিন বুহস্পতিবার ছিল। জ্রীমা আপত্তি করলেন যে লক্ষ্মাবারে মাকে বিদার দেওয়া যায় না। পরের দিন শ্ফোস্তি, তার পরের দিন শনিবার থাকায় মায়ের বিদর্জন হয়েছিল ববিবার—চতুর্ম দিনে।

বাব বংসর পর পর জগদখা জননীর পূজা করে জননী ভেবেছিলেন আব জগদাত্রী পূজা করবেন না। প্রথম চার বংসর জননী-জননী আমাস্থলবা, পবের চার বংসর মা সারদামণি নিজে এবং তার পবেব চার বংসর খুলতাত নীলমাধবের নামে পূজা হয়ে গেছে। কাজেই তিনি দরিদ্র পরিবাবে আর পূজা চালাতে চাইছিলেন না। জননী সারদামণি যেদিন এই অভিপ্রায় প্রকাশ

করলেন, সেদিন রাত্রেই জননী জগন্ধাত্রী স্বপ্নে মা সারদামণিকে জিজ্ঞাসা করলেন, সতি তিনি তা হ'লে মধু মুথ্জের পিসীমাদের ওথানে চলে যাবেন কি না। জননী সারদামণি জননী জগন্ধাত্রীর শ্রীচরণকমল জড়িয়ে ধরে বল্লেন—"আমি আর ছাড়ব না তোমাকে, আমি বছর বছর তোমাকে আনব"। এই সকল্লামুসারে পূজা চালাবার জক্ত জননী সাড়ে দশ বিঘাব কিছু বেশী জমি দেবোভর করে গেছেন। এ জমির আর ও সংগৃহাত অর্থেব সাহাব্যে আজও জররামবাটাতে মাহুনন্দিরে প্রতি বংসর শ্রীক্রীজগন্ধাত্রীপূজা সম্পাদিত। অত্যন্ত আনন্দেব বিষয়, বিগত কয়েক বছর ধরে পূজাপাদ স্বামী শ্রীযুক্ত বিমুক্তানন্দজীও বেলুড় মঠে সারদাত্তর মন্দিরে জগন্ধাত্রী পূজাৰ অনুষ্ঠান করছেন।

প্রথম বারের মত প্রতি বংসর জননীর পিতৃবাটীতে তিন দিনে জগদাত্রী পূজা করা হয়—প্রথম দিন বোড়শোপচারে এবং পরের ছই দিন সাধারণ ভাবে। দেবীর উভয় পার্বে জয়া বিজয়ার মূর্তি স্থাপিত ও পুজিত হয়।

জননী দেখতে জগদ্ধাত্রীর মত ছিলেন। একবাৰ জগদ্ধাত্রী পূজার সময় তল্দে পুকুরের রামদ্রদয় ঘোবাল উপস্থিত হলেন। উভয় জননাকে বার্বোর নিবীক্ষণ করেও কোনও পার্থক্য বুঝতে না পেরে পালিয়ে গেলেন।

শেষের দিকে জননী যথন জয়রামবাটীতে বেতেন ও ভক্ত সন্তানগণ জননীকে জগদ্ধাত্রীর মত পূজা করতেন, জননী স্তামাস্ত্রশ্বরী আর অঞ্সংবৰণ করতে পারতেন না। একবার তিনি বলেছিলেন— "হাঁ গো! তথন সকলেই জামাই ক্ষেপা বলতো, সারদার অদৃষ্টকে বিক্কার দিত, আমার কত কথা শুনাত, মনের ছঃথে মরে বেতুম। আব আজ দেখ, কত বড় ঘরের ছেলেনেয়েরা দেবীজ্ঞানে সারদার পা-পূজা করছে!"

জননী জগদ্ধান্ত্রীর পূজার সময় জননী সারদানণি ঠাকুরকে সকাল সকাল ভোগ দিতেন এবং বল্তেন যে, এখন পূজার জায়গায় বেতে হ'বে। সন্ধ্যারতির কয় দিন এবং মহাষ্টমীর সন্ধ্যাপূজাকণে জননী জাসন্থাকে দর্শনপূর্বক চামরব্যজন করতেন, ভক্ত সন্তানগণ উভর জননীর মধ্যে কোনও প্রভেদই খুঁজে পেত না।

ফলত:—এ রকম বহু প্রমাণ আছে—ষাতে প্রমাণিত হর, জননী সারদামণি জননা জগন্ধাত্রীরই বর্তমান যুগের অবতীর্ণ আয়্বরূপ। উভয় জননীকেই আজ এই পুণা জগন্ধাত্রীপুলারূপে যুগপদ্ ভাবে প্রণাম নিবেদন কবি।

প্রেমের আদর জানি গো আমরা জ্ঞানের মৃদ্যা জানি,
শক্তি বখন শিবের দেবিকা তথানি তাহারে মানি,
আমরা মানি না শিখা ত্রিপুণ্ড উপবীত তরবারি,
জালা থাতার ধারি না কো ধার মোরা তথু মমতারি।
মাংসপেশীর শাসন মানি না, মানি না তক্ত নীতি,
নৃতন বারতা এসেছে জগতে মহামিলনের গীতি।

প্রাচীন ভারতে গণিকা

বৈভানাথ ভট্টাচাৰ্য

বিশেষ একটি সামাজিক শ্রেণী হিসাবে বারবনিতার উল্লেখ না করলে প্রাচীন ভারতের সমাজ ব্যবস্থায় নারীজাতির স্থান निर्धातन व्यमण्यूर्ण तरत्र वारत । क्विक्ना-नियूना च्राह्म-प्रश्चिनी হাধাকণ্ঠী নৃত্যপরা যৌবনবতী গণিকাকুল প্রাচীন ভারতের নাগরিক সভ্যতায় যেরপ উচ্চ সামাজিক প্রতিষ্ঠা লাভ করেছিল, তার তুলনা একমাত্র প্রাচীন গ্রীসদেশ ছাড়া পৃথিবীর অন্ত কোথাও খুঁজে পাওয়া ৰায় না। চরম বৈসাদৃষ্ঠের দেশ এই ভারতবর্ষ। এর একদিকে পবিত্র শাস্ত আবন্য পরিবেশে সমস্ত পার্থিব আকর্ষণ থেকে নিজেদের মুক্ত করে জিতেন্দ্রিয় তপস্বীরা ধর্মীয় বিধি-নিষেধ-সম্মত গভীর তপশ্চর্যায় অকলঙ্ক পরমার্থের সন্ধানে নিমগ্ন হতেন। অক্সদিকে নগরীর পথে পথে विवयनिপूर्वा, नुका, नुरुको, मनानममञ्ज्ञा, स्वत्यूका नगतस्याहिनीता পুরুব-ছাদয় সংহাবের নির্চুর ছলপ্রণয়-বিলাসে মত্ত হত। দণ্ডীর দশকুমারচরিত, ক্ষেমেক্সের সময়মাতৃকা, বাংস্থায়নের কামস্ত্র, কৌটিল্যের অর্থশান্ত্র, দামোশ্ব গুপ্তের কুট্টনীমতম প্রভৃতি প্রাচীন গ্রন্থের বছ স্থানে নিখুঁত নারীত্বের প্রতীকরপে এই প্রমদা পণ্যাংগনাদের প্রশংসা করা হয়েছে। ভারতীয় প্রেম-জীবন ও লাম্পট্য-লীলার প্রাণময়ী প্রতিমারূপে গণিকাকে চিত্রিত করা হয়েছে। বছবল্লভা ও কামদা হয়েও তারা শ্বন্যারূপে পরিত্যক্তা হয়নি, বরং অপার কলা-কুশলতার জন্ম বিশেষ ভাবে আদৃতা হয়েছে।

প্রাচীন ভারতের নগরজীবনে গণিকাদের একটি বিশিষ্ট সম্প্রদায় হবে গণ্য করা হত। স্থশিক্ষিতা ও স্থক্তিসম্পন্না বরারোহা গণিকারা সাধারণ্য সমাদর লাভ করলেও, প্রত্যেকটি বারবনিতাই এই সামাজিক, সন্মানের অধিকারিণী ছিল না। 'কামস্ত্র'ও 'উপমিতিভবপ্রপঞ্চকথার' সাধারণ ও অসাধারণ হ' শ্রেণীর গণিকার উল্লেখ দেখা যার। দশকুমারচিরতে বর্ণিত রাগমঞ্জরীর অগ্রজা কনকমন্ত্ররীর চরিত্র থেকে আমরা সাধারণ গণিকা সম্বন্ধে একটা স্পাই ধারণা করতে পারি। প্রভৃত লোভ আর পুক্ষ-মুগরার ছলাকলার জন্ম সাধারণ গণিকাদের যথেষ্ট তুর্ণাম ভোগ করতে হত। শুধুমাত্র একটি উদ্দেশ্য নিয়েই তাদের শিক্ষিতা করে তোলা হত। সেটি হচ্ছে, প্রণরাসক্ত পুক্ষের কাছ থেকে মিখ্যা প্রণয়ে অর্থ নিস্পেষণ।

জ্বসাহিত্যে, বিশেষ ভাবে মহানির্বাণতত্ত্ব বারবনিতাদের পাঁচটি ভাগে বিভক্ত করা হয়েছে।

- (১) রাজবেখা (নুপতির উপভোগ্যা)। নুপতির আমোদ-প্রমোদের জন্ম তারা নিযুক্ত হত এবং রাজ-অন্তঃপুরের একাংশেই অবস্থান করত। জাতক থেকে জানা যায় যে, কোন কোন নুপতির বোল সহস্র নর্তকী ছিল। কোটিন্যও রাজবেখার উল্লেখ করেছেন। রাজ-অন্তঃপুরে অবস্থান করলেও রাজা এদের মোটেই বিশাস করতেন না। এদের গতিবিধি লক্ষ্য করবার জন্ম নারী-গুপুচর ও নর্তকী নিযুক্ত করা হত। এদের আত্মায়-স্বজনকে পর্যন্ত এদের সঙ্গে সাক্ষাংকারের স্ববোগ দেওয়া হত না। এদের সম্পদের অভাব না ধাকলেও ব্যক্তিস্বাধীনতার অভাব ছিল।
 - (২) নাগরী বা নগরবেভা। এরা সাধারণতঃ নগরের একাংশে

বাস করত এবং নাগরিকেরা এদের গৃহে গমন করত। বিশেষ বিশেষ সামাজিক জমুঠানে বা প্রমোদ-বিহারে এদের জামন্ত্রণ জানান হত। রামারণ মহাভারত মহাকার্যন্তর ও 'মুদ্রারাক্ষস' নাটক থেকে জানা বার বে, উৎসব উপলক্ষে নগরীর পথে বারাংগনা সমাবেশ ঘটতো। বাংখ্যায়নের 'কামস্থরে' ও 'রতিরহন্তে' বিভিন্ন প্রমোদভ্রমণে বারনারীর প্রত্যক্ষ অংশগ্রহণের প্রভ্তুত সাক্ষ্য মেলে। সাধারণ নগরবেক্সার আর্থিক কছলতা সম্বন্ধে শপষ্ট ধারাণা করা সম্ভব না হলেও 'মুছক্টিক' নাটক বর্ণিত বসস্তসেনার প্রামাদের সমুজ্জল সমৃদ্ধি থেকে রূপসী কলাবতী নগরবেক্সার বিলাস-উছ্লে জীবনযাত্রা সম্বন্ধে একটি স্পষ্ট ধারণা করা চলে। বসস্তসেনার আবাসগৃহের গজনস্তমোভিত ক্ষাবলী, স্মরণলিগু সোপানগ্রেণী, ক্ষটিক-নির্দ্ধিত বাতায়নরাজি, মনিময় অক্ষ-সম্বিত ক্রোড়া-প্রাঠিকা—সর্বত্রই চরম প্রশ্ব প্রকাশিত হয়েছে।

- (৩) গুপ্তবেশ্য। ভদ্রপরিবারভুক্ত নারীরাও সময়-বিশেষে গোপনে দেহবিক্রয় ব্যবসায়ে লিপ্ত হত। এই প্রসঙ্গে আমরা কাদম্বরীতে' রেশমী ওড়না-আরুত মুথে তরুণীকুলের পূর্ণিমা রাত্রে প্রণয়ি-সন্নিধানে গমনের উল্লেখ দেখতে পাই। বাংশ্যায়নও উল্লানযাত্রা পানযাত্রা প্রভৃতি প্রমোদ বিহারে ব্যভিচারিণী পূরনারীদের পরপুক্তবন্যভার কথা উল্লেখ করেছেন। 'রতিরহস্তেও' ভ্রষ্টা পূরন্ত্রীব নৈশাভিসারের কথা বলা হয়েছে। 'অভিধানরত্বমালায়' একশ্রেণীর ক্রায়াজীব নটের উল্লেখ আছে। দ্রীকে ব্যভিচারিণী করে তার উপার্জনের উপর এই শ্রেণীর নটেরা অল্লসংস্থান করত। 'রতিরহস্তেও' এই অন্তৃত পাপাচরণের অভিত্ব সমর্থিত হয়েছে। মেধাতিথি বলেন, বছ গায়কের পত্নী পরিপূর্ণ বেশ্যার্ভি গ্রহণ না করলেও স্বামীদের জ্ঞাতসারে ও পরিপূর্ণ সমর্থনে নিজেদের গৃহেই উপপতিদের আমন্ত্রণ জানাতে কুণ্ঠাবোধ করত না।
- (৫) দেববেশ্রা (দেবদাসী বা দেবমন্দিরের নর্ভকী)। গণিকা বৃত্তিন সঙ্গে সমভাবে যুক্ত দেবমন্দিরে দেবদাসী নিয়োগের প্রথা প্রাচান ভারতে যথেষ্ট পরিমাণে প্রচলিত ছিল। বাস্থ্যান্টতে দেবনর্ভকীরা দেবভোগ্যারপে পরিমাণে প্রচলিত ছিল। বাস্থ্যান্টতে দেবনর্ভকীরা দেবভোগ্যারপে পরিগণিত হলেও, কার্মন্দেত্রে এদের বিগ্রাহ-পূজারীদেব আসঙ্গলিপ্সা চরিভার্য করবার জক্ত অপ্সরী-বৃত্তি গ্রহণে বাধ্য করা হত। কালিদাসের সময়ে উজ্জায়নীর বিখ্যাত মহাকাল-মন্দিবে দেবদাসী নিযুক্ত ছিল। হিউয়েন-সাওয়ের সময়েও পূর্ব-সিদ্ধুর এক নগরের স্ফর্ব-মন্দিরে দেবদাসীর অন্তিহ দেখা যার। গুপ্তোত্তর যুগেও দেবদাসী প্রথার বিলোপ ঘটেনি। মেধাতিথি ও তৎকালীন শিলালেখন থেকে এর যথেষ্ট সমর্থন মেলে। আরু জয়িদও ভারতীয় মন্দিরের সঙ্গে গণিকাকে যুক্ত থাকতে দেখেছেন। রাণী চিত্রলেখার বায়ানা স্তম্ভলিপি, পশ্চিম চালুক্যরাজ সত্যাশ্রমের তৃত্বগি শিলালিপিও দান্দিণাত্যের চোলনুপতি প্রথম পরাস্তক এবং প্রথম রাজরাজের শিলালেখন প্রাচীন ভারতে দেবদাসী-প্রথার অন্তিহ সম্বন্ধে যথেষ্ট আলোকপাত করেছে।
- (e) বন্ধবেক্সা বা তীর্থগা। এরা প্রধানতঃ তীর্থক্ষেত্রের গণিকা। নারী ও ধর্মান্ত্ররাগ পরস্পর সংযুক্ত থাকার ভারতে তীর্থক্ষানগুলি সাধারণতঃ প্রেমের লীলাক্ষেত্ররূপে পরিচিত হত এবং তীর্থক্ষেত্রে প্রভৃত জনসমাগম হেতু গণিকাকুলও তাদের দেহ বিক্রয় বৃত্তি জ্ববাধে অনুসরণ করবার ক্ষরোগ পেত। এই প্রসঙ্গে ব্যাস তাঁর কানিশণ্ড গ্রন্থে রত্ত্বেশ্ব লিক্ষ মাহাত্ম্য বর্ণনার কলাবতী নামে

এক স্থপণ্ডিতা, নৃত্যগীত-বাদননিপুণা নর্ভকীর উল্লেখ করেছেন। জাতকেও বারাণসী-তীর্মে শামা, স্থলসা অর্ধকাশী প্রভৃতি গণিকার অবস্থানের কথা উল্লেখ করা হয়েছে।

প্রাচীন ভারতীয় সাহিত্যে প্রব্রজিতা বা ভিক্কুনী নামে এক শ্রেণীর সন্ন্যাসিনীর উল্লেখ দেখা যায়। কামস্ত্রে এদের নৈতিক চরিত্রে উচ্চসমানের অধিকারিণীরূপে চিত্রিত করা হয়নি। বিবাহিতা নারীদের এদের সংশ্রব বিববং পরিত্যাগ করবার নির্দেশ দেওরা হয়েছে। কোন কোন সন্ন্যাসিনী কলাবিদ্যায় যথেষ্ঠ পারঙ্গমাছিল এবং প্রেমঘটিত ব্যাপারে কামোপহত নাগরিকেরা এদের সাহায্য নিতে কুঠিত হ'ত না। বহু ক্ষেত্রে এরা কুটনীরুবি অবলম্বন করত এবং এদের কুটার প্রেমিকদের অভিসার ক্ষেত্র ও স্বতম্বলীরূপে পরিগণিত হত। অবশ্ব সমস্ত প্রব্রজিতাই এই ভুর্নামের অধিকারিণী ছিল না। কোটিল্যের অর্থশান্ত্রে ও তবভৃতির মালতামাধ্ব নাটকে জনসাধারণের কাছ থেকে এদের যথেষ্ঠ শ্রম্বা ও সম্বান আকর্ষণ করতে দেখা গেছে।

বাংস্থায়নের কামস্ত্র ও কাত্যায়নের ভ্রাতৃকস্ত্র গণিকা-সংঘের উল্লেখ দেখা যায়। দশকুমার6রিতে গণিকাদের পালন ও শিক্ষাদান পদ্ধতি সম্বন্ধে বিস্তারিত বিবরণ পাওয়া ষায়। একটি গণিকাকস্তাকে জন্ম থেকেই নৃত্য, গীত, বাদন, অভিনয় ও চিত্রাঙ্কন প্রভৃতি স্থকুমাব কলা, মাল্য ও স্থান্ধী প্রণালী, পঠন, লিখন ও পুষ্পদার প্রস্তুত ব্যাকরণ, ক্যায় ও জ্যোতিষ শাস্ত্রাদিতে স্থশিক্ষিতা করে তোলা হত। সঙ্গে সঙ্গে গণিকামুলভ চল প্রণয়কলায় তাকে লাভ করতে হত প্রত্যক্ষ শিক্ষা, গণ-উৎসবে তাকে যোগদান করতে হত, মুগ্ন নাগরিকদের মধ্যে তার উদ্ধন্ত দেছ্নী ও গুণাবলী বিজ্ঞাপিত করতে হত এবং তার প্রণয়-লাভের উপর উচ্চ দর্শনী নির্ধারিত করতে হত। কৌটিল্যও এই শিক্ষাপদ্ধতি সমর্থন করেছেন এবং রাষ্ট্রকে শিক্ষিকাদের ভরণ-পোষণের দায়িত্ব নিতে নির্দেশ দিয়েছেন। কুট্রনীমত্তমের একটি কাহিনী থেকে আমরা গণিকাদের দৈহিক ও নানসিক উৎকর্ষ সম্বন্ধে স্পষ্ট ধারণা করতে পারি। মালতী তার প্রেমিকের কাছে যে দৃতী পাঠিয়েছিল, সে শুধুমাত্র তার বিকশিত যৌবনশীর বর্ণনা দিয়েই ক্ষান্ত হয়নি, মালতীর আরও অনেক গুণেব উল্লেখ করেছিল। গণিক। হিসাবে মালতীর বাংস্ঠায়ন ও দত্তক বিরচিত কামশান্তে পরিপূর্ণ জ্ঞান ছিল, প্রণয়-অভিনয়ের ছলাকলায় ছিল তার অনক্সদাধারণ নৈপুণ্য, ভেষজবিজ্ঞান, স্চীকর্ম, দেহ-বন্ধন, মূর্ত্তি রচনা, নৃত্য, গীত ওয়ন্ত বাদনে তার বহুমুখী প্রতিভার বিকাশ ঘটেছিল।

কুটনীমন্তমের অপর এক স্থানে প্রবারীর সঙ্গে মিলনক্ষণে গাঁণিকার সাজসজ্জা সম্বন্ধে স্থল্পর বর্ণনা দেওয়া আছে। গাঁণিকার পাঁরিধানে থাকবে ধাঁকরে মুন্দর বর্ণনা দেওয়া আছে। গাঁণিকার পাঁরিধানে থাকবে ধাঁকরে মুন্দুল অলংকার, চোথে থাকবে কজ্জল, অধর হবে রঞ্জিত, মুন্দুলিকার স্থান্ধিত হবে স্থান্ধি মুন্দুলিকা। কামস্ত্র থেকে জানা নার যে, একজন গণিকা হবে চৌবটি কলার স্থানিকিতা, তার ব্যবহার হবে বিনয়নত্র, দেহপ্রী হবে মনোলোভা ও পুরুষ-চিত্ত বিজরের অনুকুল। তার প্রসন্ধুতা, তার সংগ সকলের কান্য হবে, আর সে হবে সকলের দর্শনীয়া। লালভবিস্তার গ্রন্থে মহারাজ শুদ্ধোধন কর্তৃক

যুবরাজ সিদ্ধার্থের জন্ম সূর্বশাস্ত্রজা ও গণিকারলভ কলাবিভার পারদর্শিনা বধু কামনার কথা লিখিত আছে। গণিকার বর্ণনা প্রসঙ্গে ভরত বলেছেন, গণিকা হবে সহ্ময়া, শক্তিরূপা, বিনয়নম ও সচতুরা। সে হবে সংলবেকণা, স্তমুকা, কলাবতী, অপার রংগপারংগমা নারীরত্ব। তাকে ঘিনে স্প্রে হবে একটি রভস-ব্যাকৃল উংসব, উচ্ছলিত হবে কামাতুর মত্ত-মধ্যের গুপ্রব।

মহাকাব্যের যুগ থেকেই গণিকারা নগরজীবনে একটি বিশিষ্ট অংশ গ্রহণ করে আছে। কুরুক্তেরে যুদ্ধযাত্রার পূর্বে মহারা**জ** যুধিষ্ঠির নগরীর যৌবনক্ষচিরা রূপাতিশালিনা গণিকাদের ভভেচ্ছা গণিকারা উপস্থিত খাকত। জানিয়েছিলেন। যুদ্ধক্ষেত্রেও ছর্যোধনের সৈক্তদলে শিল্পী, গায়ক, গুপ্তচর ও বারনারীরা[.] অংশ গ্রহণ করেছিল। রামায়ণে নুপতি দশরথ পুত্র রাম**চক্রের** সৈক্সগঠনে গণিকাদের সৈক্তদলের শোভাবর্ধনের জ্বন্<mark>ত আহবান</mark> জানিয়েছিলেন। কেবলমাত্র যুদ্ধাভিষানেই বারাংগনার। স্থান পেত না, তারা ছিল নগরের প্রত্যেকটি উৎ্দব অফুষ্ঠানের মধ্যমণি। বামের যৌববাজ্যে অভিবেককালে মহর্ষি বারনারীদের উৎসব-আনন্দে যোগ দিতে আদেশ দিয়েছিলেন। সমগ্র অযোধা নগরীতে উৎসব রামচক্রের বনবাদের পর নিষিদ্ধ হয়েছিল। কিন্তু তাঁর অযোধ্যায় প্রত্যাবর্জন কা**লে** জাতা ভরতও গণিকাকুল সহ সমস্ত নগরবাসীকে রামচন্দ্রের মুখচব্রিমা দর্শনের জন্ম আম**ন্ত্র**ণ জানিয়েছিলেন। রাজা বিরাটের পা**ও**ব-সহায়তার ফলে যুদ্ধজয়ের শেবে রাজধানীতে প্রত্যাবর্তন কালে নগরের সমস্ত যুবতীবৃন্দ বারবনিতা সহ বিজয়ীদের অভার্থনার জন্ম উপস্থিত হয়েছিল। ভগবান ঞ্জীকৃষ্ণ যথন শাস্তিস্থাপনাৰ্থে কৌরবশিবিরে যাত্র_। করেছিলেন, তথন মহারাজ ধুতরাষ্ট্রের আদেশে নগৰ-মোহিনীবাও নগ্নপদে, মনোহরবেশে তাঁকে অভ্যর্থনা জানিয়েছিল।

উক্তানযাত্রা বা মৃগয়াকালেও বারবনিতারা নৃপতির অনুসরণ করত। ছর্ঘোধনের মৃগয়াকালে জ্রাকুল, নর্তক, গায়ক এবং আনন্দণায়িনী নারীরাও অংশ নিয়েছিল। মেগাস্থিনিস ও কৌটিল্য নুপতির স্ত্রী-দেহরক্ষী হিসাবে গণিকাদের নিয়োগের কথা উল্লেখ করেছেন। বারহুত ভাশ্বর্ষে এইরকম একজন অশার্চা পতাকাধারিণী দেহ্বকিণীর মৃতি চিত্রিত হয়েছে। মৌর্যুগে একজন কলাবতী গণিকাকে উঠ পাবিশ্রমিকে গণিকা সম্প্রদায়ের তত্ত্বাবধায়িকারপে নিযুক্ত করা হত। আবার তাব ক্রিয়াকলাপ প্রবেক্ষণের জন্ম অর্ধ পারিশ্রমিকে একজন প্রতিম্বলী গণিকার নিয়োগের ব্যবস্থা ছিল। রাজনৈতিক স্থবিধার্থে গণিকাদের **ত্রী**-গুপুচর হিসাবেও নিমুক্ত করা হত। রাজ-অস্ত:পুরেও উচ্চ পারিশ্রমিকে তারা কর্ম গ্রহণ করতে পারত। তারা রাজ ছব্র, স্বর্ণময় জল-পাত্র ও ব্যক্তনী ধারণ কবত, ভাণ্ডারকক্ষ, রন্ধনশালা ও স্নানাগারের বিভিন্ন কর্মে নিযুক্ত হত । 'উপমিতিভবপ্রপঞ্চকথা' থেকে জানা যায়, রাজকুমার নন্দীবর্গনের সঙ্গে রাজকুমারী কনকমঞ্জরীর ভভ-পরিণরে গণিকারা নন্দীবর্ধনকে স্নান করিয়েছিল। আবু জরিদ ও ইবন অল ফাকী বিশ্রামাণারে পথিকদের আনন্দানের জন্ম গৰিকা নিয়োগের কথা বলেছেন।

সম্মানিত অতিথিদের সেবার জন্ত পণিকাদের নিযুক্ত করার

প্রথা প্রাচীনকাল থেকেই প্রচলিত ছিল। ব্যাসপুত্র জিতেন্ত্রিয় ভবের কাহিনী থেকে জানা যার যে, বিদেহ-রাজ জনকের উল্লান-কুঞ্জে প্রবেশকালে পঞ্চাশটি স্থদর্শনা, খরুয়োবনা, 🗫 নি ভদ্বিনী গণিকা তাঁকে . অভার্থনা জানিয়েছিল। স্থরত-লিপ্সা জাগিয়ে তোলবার জন্ম তারা ঋষিকুমারকে নিবেদন করেছিল স্মস্বাত্ থান্ত, বিলাস শরনের জন্ম প্রস্তুত করেছিল কোমল শ্যাসন। ৰামায়ণে উল্লিখিত লোমপাদ রাজ্যে অনাবৃষ্টি নিবারণার্থে বিভাগুকমুনির পুত্র ঋষ্যশৃংগকে আনয়নের জন্মও কৌতৃকনয়ী যুবতী বারবনিতাদের সাহায্য নেওয়া হয়েছিল। মহারাজ যুগিষ্টিরও ব্রাহ্মণ, মন্ত্রী ও রাজগ্র-বর্গের চিত্তবিনোদন ও সাময়িক উপভোগের জন্ম সহস্রাধিক নবযৌবনা গণিকাকে নিযুক্ত করেছিলেন। স্বারকায় অন্ত্রুনের মনোবঞ্জনার্থে **ঐকুফ কর্ত্তৃক বারবনিতা নিয়োগও দৃষ্ট হয়। জনৈক রাজকুমারের ওদাসীন্ম দ্**র করবার জন্ম নর্ভকী নিয়োগের কথা 'কুল্লপলোভন' **জাতকে লিখিত** রয়েছে। যৌবনের প্রারম্ভে গৌতমকেও এই ভাবে নর্তকীর ছলাকলার সাহায়ে প্রানুদ্ধ করার চেষ্টা করা হয়েছিল।

'কামস্ত্রে' বর্ণিত 'নাগরকের' জীধনযাত্রা প্রণালী থেকে জানা যার থে, গৃহে অনুগত প্রেমমন্ত্রী পারী থাকা সত্ত্বেও নাগরিকেরা বিহারযাত্রায়, উক্তানভ্রমণে, পানযাত্রায় ও গণিকালরে বারনারীদের সঙ্গে মিলিত হত।

রতিবহন্ত থেকে জানা যায় যে, নিশাকালে প্রমোদবিলাদী ব্রক্রা আলোকোজ্জল পূল্পদার-মুর্ভিত কক্ষে নর্ভকীলের সঙ্গে নির্লজ্জ নর্শলালায় মন্ত হত। 'উপমিতিভবপ্রপঞ্চকথায়' দেখা যায় যে, বদস্ক সমাগমে পানোন্মন্ত নাগরিকেরা গণিকাদের দক্ষে নগরের বহির্ভাগে উজ্ঞানসমূহে যাত্রা করত। সেখানে তারা বক্ল ক্ষেণাক প্রেভিত বৃক্ষতলে কামোদ্দাপক ক্রীড়াকোতুকে মন্ত হত, রঙ্গচিত আধার থেকে স্থগন্ধী সুরা পানপাত্রে ঢেলে নিরে তারা লঙ্কী প্রাংগনাদের রক্তিন অধ্বে তুলে ধরত। 'মেঘদ্তে' বিদিশা নগরীর মুবকবৃন্দকে নিকটবর্তী শৈলদেশের শিলাগৃহে গণিকাদের সঙ্গে কামক্ষীড়ায় উন্মন্ত হতে দেখা গেছে। কবি রাজশেখর বিরচিত কাব্যমীমাংসা' ও 'বিদ্ধালভিজিক' গ্রন্থন্মন্ত কেলিশ্যন-ম্লোভিত লালাগৃহ সমূহের বর্ণনা দেওগা হয়েছে, নৃত্যস্থলীতে নর্ভকীব লাক্তময় নৃত্যাক্ষ্ঠান ক্ষণে ক্ষণে যুবকবৃন্দর চিত্তচাঞ্চল্য ঘটিয়েছে। মুন্তারাক্ষম, কুমারসন্ত ও কাদখরী গ্রন্থ থেকেও গণিকাদক্ত যুবকদের ক্রীড়ামন্ততার পরিচয় মেলে।

এই প্রসঙ্গে মনে বাথতে হবে যে, তৎকালীন সমাজ ছিল স্মরুচির সমাজ। এক শ্রেণার গণিকার অপরূপ দেহলাবণ্য, বিনয়-নম্র আচরণ ও বিভিন্ন কলাশাল্রে অসাধারণ প্রজ্ঞার জন্ম সমস্ত কলারসিকেরাই তাদের সংগ কামনা করত। বিস্তারিত ও পরিপূর্ণ শিক্ষালাভের মধ্য দিয়ে গণিকারা চৌধ টি কলায় যেরপ ব্যুৎপত্তি লাভ করত, অন্তঃপুরচারিণী বিবাহিতা নারীদের পক্ষে তা করা সম্ভব হত না। কারণ, তাদের উপরে ছিল সংসার প্রজিপালন ও গৃহস্থালী সংবন্ধণের গুরু দায়িছ। তাছাড়া যে সমস্ত কলাগৃহ বা গন্ধবশালায় গণিকাকক্যারা বিবিধ কলায় শিক্ষালাভ করে ধনী সন্তানদের মাঝে মক্ষিরাণার ভূমিকায় অবতার্ণা হত, সে সমস্ত শিক্ষাকেক্রে শিক্ষাগ্রহণ করাকে বিবাহিতা নারীরা স্ম্প্রচিসম্যত ও ভ্রম্ভনাচিত বলে মনে করত না। সে মুগে বিবাহিতা ক্রীর পরিক্রতা সংবন্ধকে উঠে

মর্বাদা দেওয়া হত এবং তার স্বভাব ও প্রবৃত্তিকে স্কর্চু পরিচালনার জন্ম বছবিধ বিধি-নিষেধের ব্যবস্থা ছিল। যার ফলে **এক স্বামী** ছাড়া সে আর কারও কাছ থেকে কলাবিক্তায় শিক্ষাগ্রহণ করতে পারত না। আর নাগরিক স্বামীও সামাজিক অফুষ্ঠানাদিতে এত ব্যস্ত থাকত যে তার পক্ষে স্ত্রাকে কলার্সিকা করে তোলবার **অৱ**ই স্থযোগ মিলত। সেই কারণে বিবাহিতা স্ত্রীদের চেয়ে গণিকারাই ছিল অধিকত্র শিক্ষিতা, মার্জিতা ও কলাবতা। নগরবাসী পুরুষেরাও সেজন্য গৃহে পতিপ্রাণা ঘরণা থাকলেও শিক্ষিতা বারবনিতার সংগ অধিক কামনা করত। উদাহরণস্বরূপ চারুদত্ত বসম্ভসেনার উপাখ্যান উল্লেখ করা যেতে পারে। নগরবাসী পুরুষদের গৃহে অশান্তি ছিল না, অসহনীয় ছিল না *গৃহ-*পরিবেশ। তবু তারা গণিকার সং**স্পর্ণে** আসত তাদের রুচিসম্মত গুণাবলীর জন্ম। সাধারণ মানুষে গণিকা-জীবনকে ঘুণার দৃষ্টিতে দেখলেও, তার উচ্চ কলাজ্ঞানের **জন্ম তারা** ভাকে সহাকরত ও সময় বিশেষে সমাদর করতেও কুঠিত হত না। গণিকাদের অপার কলারসের পরিচয় পাওয়া যেত বিশেব বিশেষ উংসধ অञুষ্ঠানে। ঐ সমস্ত অञুষ্ঠানে যোগ দিয়ে জনসাধারণও আনন্দ উপভোগ করবাব স্থয়োগ পেত। দশকুমারচরিতে বর্ণিত রাগমঞ্জরী নাগরিকদের আনন্দর্বদ্ধনের জন্ম প্রকাঞ্চে সংগীতারুষ্ঠানের আয়োজন করেছিল। মহাভারত ও ক্ষেমেল রচিত কলাবিলাসের একটি কাহিনী থেকে জানা যায় যে, সম্ভ্রান্তবংশীয়া নারীরা পর্যান্ত विकठ्योवना ष्यामक्रश्रिया, छत्वना क्ष्माकोवात्मव ममानवत्क केर्बाव চোথে দেখতেন।

পুরুষের বিলাস বাসনা চরিতার্থ করবার জন্মই গণিকার স্বাস্ট । মনোহারী দেহস্থধমা, কপট প্রেমের ছুলাকলা ও চটুলতার সাহায্যে তারা ত্র্বলচিত্ত পুরুষকে প্রানুদ্ধ করে। সাধারণভাগে তারা লুদ্ধা, লুপ্ঠকী ও স্বার্থপর ! পুরুষ-মৃগয়ায় তারা পায় অপার আনন্দ, কামুক সম্পদশালীকে নিগৃহ⁺০ করাই তাদের স্বভাব-বিলাসিতা। অবখ্য সমস্ত গণিকাই কপটিনী অসং ও অর্থলোলুপা ছিল না। প্রাচীন ভারতায় সাহিত্য ও জাতক কাহিনীগুলিতে বহু গণিকাই তাদের দেহশ্রী, বুদ্ধিমতা ও ত্যাগরতের-জন্ম অকুণ্ঠ প্রশংসা ও উচ্চ নামাজিক প্রতিষ্ঠা লাভ করেছে। বহু বারবনিতাই বৌদ্ধধর্মের সংস্পর্শে এসে **প্রবৃ**ত্তিকে विमर्कन निरंत्र ज्योनने जीवन। योशन। करवर्ष्ट् এवः ज्यवरमस्य ज्यञ्च लोज করেছে। জনসাধারণও তাদের শ্রন্ধাব অর্থ নিবেদনে দ্বিধাবোধ করেনি। ভগবান বুদ্ধ কাঁর সংস্ত্রব থেকে ছিন্নমুদ্ধ ও নপুংসকদেব বর্জন করলেও গণিকাদের বর্জন করেননি। এই প্রেসঙ্গে মহাভগ্গ জাতকে বর্ণিত অধপালী বা আদ্রপালার জীবনকথা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। বৈশালা নগরীব এক বিত্তবান নাগরিকের ক্রন্স এই আম্রপালা। সে ছিল রূপদী, কলাবতা, স্মকঠী ও নৃত্যপটীয়দী। বহু যুবক আদ্রপালীকে স্ত্রীরূপে লাভ করতে উদ্গ্রীব হওয়ায় তার পিতা তাকে লিচ্ছবী-সংঘের সামনে উপস্থিত করেন। বিস্তারিত আলোচনার পর আত্রপালী স্ত্রীরত্বরূপে অভিহিতা হয় এবং প্রচলিত প্রথানুসারে তাকে সমগ্র সংবের উপভোগ্যা সভা-মর্ভকীরূপে গ্রহণ করা হয়। আত্রপালীও এই বারাংগনা-জীবন গ্রহণে স্বীকৃতা হয়। তার অবস্থান বৈশালা নগরীকে সমৃদ্ধি ও সম্ভ্রমে উজ্জ্বল করে তোলে। এরপ একটি স্থোবনা কলাশীলা গণিকাকে প্রতিষ্ঠিত করে রাজবানী রাজগৃহের গৌরববর্ধনের জন্ম জনৈক বণিক নুপতি বিশিসারকে

অনুরোধ জানিয়েছিল। মগধাধিপ বিদ্বিদারও বৈশালী গিয়ে আন্রপালীর প্রণয়াসক্ত হন। 'অবদানকল্পলার' 'আন্রপাল্যাবদান' কাহিনী অনুসারে বিষিমারের ওরসে আন্রপালীর গর্ভজাত পুত্র অভয় সামাজিক মুণা লাভ না করে রাজ্যভায় সম্মানিত আসন লাভ করেছিলেন। এই প্রসঙ্গে 'ছালোগ্যোপনিষদের' সত্যকাম ও জবালার উপাখ্যানও উল্লেখযোগ্য। বহুভোগ্যা ভত্তিনা জবালার পুত্র সত্যকামকেও ঋষি গোঁতম সত্যকুল-জাত দিজোন্তমকপে স্বীকার করে ব্রহ্মবিল্যা শিক্ষালাভে অধিকার প্রদান করেছিলেন।

যপন ভগবান বৃদ্ধ বৈশালী নগরার উপকঠে উপনীত হন, তথন নর্ভকা আমপালী তাঁর দর্মোপদেশ শ্রবণে মৃদ্ধ হয়ে সশিষ্য জাঁকে তার গৃহে অন্নগ্রহণে আমন্ত্রণ জানার। ভগবান বৃদ্ধও তার অনুরোধ রক্ষা করেন। 'বিনয়পিটক' থেকে জানা যায় যে, আমপালী স্বীয় নামের একটি প্রামোদকানন বৃদ্ধের ভিক্ষুসংঘকে উৎসর্গ করে। এই আম্রপালীই পরে দিব্যক্রান অর্জনেব ছাবা অর্হন্ত লাভ করে দলা হয়।

থেরী গাথায় উল্লিখিত অনেক থেবা গণিকার জীবনও বৃদ্ধের সংস্পূর্ণে এসে পরিশোধিত হয় এবং তাবা অহবি লাভ করে। 'মহাবংশ,' 'ধম্মপদভাষা,' 'সূত্ৰ-নিপাত,' 'বোধিসন্তাবদান-কল্পতা,' 'মহাবস্থবদান' প্রভৃতি বৌদ্ধ ধর্মগ্রন্থে বত নর্হকীৰ উল্লেখ রয়েছে। উজ্জ্বিনীর সভা-নর্তকা পতুমবতী ধার্মিক সন্ন্যাসী-পুত্রের মূথে ধর্মবাণী শুনে গণিকার ঘুণা জীবন পরিত্যাগ কবে ও পথিশেষে অহাত্ত্ব অর্জন করে। বাজগুঞ্র অপক্রপ লাবণ্যম্যা নর্ভকী সিরিমাও ভগবান বন্ধের শুদ্র সংস্পর্কে এসে পবিত্রতার প্রথম স্তবে উপনীত হয়। বারাণসাব গণিকা শামা দস্য বঞ্সেনের প্রবহাসকা হয়ে গণিকা-বৃত্তি পরিত্যাগ করে। পরে নস্তাব পাশর প্রবৃত্তি ও অর্থলোলুপতা দেখে ভাব মোচভাগ হয় এবং সে ভাব পূর্ণেব জীবনে ফিবে যায়। বারবনিতা সুল্যার জাবনও শামার মত। একটিমাত্র পুরুষকে আশ্রয় করে সাধুজীবন কাটাতে চাইলেও স্থলসাকে আবার তার ঘুণা জীবনে প্রত্যাবর্তন করতে হুগেছিল। যৌবনমনে মন্তা নটা বাসবদ্ভার লাভা আহ্বান সন্ত্রাসী উপগুপ্ত প্রথমে প্রভ্রাখ্যান ফরেছিলেন। পবে বসস্তরোগাকুমণে বাসবদত্তা যথন নগর-পরিথায় প্ৰিত্যক্তা হয়েছিল, তথ্য একমাত্ৰ উপগুপ্তই তাকে দেবা দাবা বাাধিমুক্ত করেছিলেন। কাশীর বারবর্ অর্ধকাশীও বৌদ্ধর্মের প্রভাবে ধর্মপথ গ্রহণ করেছিল এবং অহ'ব লাভে ধরা হয়েছিল।

মৃদ্ধকটিকের' বসন্তসেনা, দশকুমারচবিতের রাগমঞ্চরী, চন্দ্রসেনা প্রভৃতি উচ্চ শ্রেণীর গণিকা স্বেচ্ছায় তাদের দেহ-বিক্রম বৃত্তি পরিত্যাগ করে অজপ্র নিগ্রহ স্বীকারের পর নিজেদের পছলমত প্রেমিকদের সহিত নিলিত হয়েছে। 'মাধবানল-কামকন্দলা-কথা' থেকে জানা যায় যে, রাজাকুমার মাধবানল নর্তকী কামকন্দলার প্রণয়াসক্ত হয়ে স্পদীর্ঘ বিজ্ঞান্য বিচ্ছেদের পর রাজা বিক্রমাদিত্যের আমুকুল্যে কামকন্দলাকে করেন। 'দশকুমারচবিতে' চন্পা নগরীর এক গণিকা-কন্থার স্থাক্ বিজ্ঞান্ত উল্লেখ করা হয়েছে। বিজ্ঞাপুর জেলার স্থাক্ট মন্দিরের একটি শিলালেখনে বাদামীর চালুক্যরাজ বিজ্ঞাদিত্যের দিল্যের গণিকা বিনাপটির দান-কর্মের কথা লিখিত আছে।

উপরোক্ত কাহিনীগুলি থেকে স্পষ্ট বোঝা যায় যে, প্রাচীন ভারতে গাঁণকারা মোটেই ঘুণার পাত্রী ছিল না বন্ধ শৌর্ষবান মুণতিকুল ও স্থাবিখ্যাত ধর্মপ্রকাণ ভাদের যুদ্ধেষ্ট সমাদর করতেন এবং বছ ক্ষেত্রে । তাদের অনুগ্রহ করতে দ্বিধা করতেন না বা তাদের উপহার গ্রহণে । লক্ষিত হতেন না ।

দেবায়তন নির্মাণ, পুক্রিণী খনন, উজ্ঞান রচনা, সেতু নির্মাণ, তিংসর্গ ও উৎসব মগুপ নির্মাণ প্রভৃতি সংক্রমে অর্থ নিরোগকে গণিকারা জীবনের পরম সার্থকিতা বলে মনে করত। আক্ষণকে গোদান পরম পুণাকার্য বলে স্বীকৃত হত এবং পতিতারা এই দান-কর্ম ভৃতীর ব্যক্তির মাধ্যমে সমাধা করত, কাবণ শাস্ত্রীয় মতে কোন আক্ষণই গণিকার দান গ্রহণ করতেন না। 'বিকুম্বতি' অন্তসারে বিদেশ যাত্রার সময় গণিকার মুখদর্শন শুভ বলে গণ্য হত।

প্রাচীন ভারতে গণিকাদের কর্তব্য ও অধিকার (বেগ্রাধর্ম) সম্বন্ধে একটি বিস্তাবিত বিবরণ 'মংস্থপুরাণে' লিখিত আছে। তংকালে গণিকা-বুত্তিকে একটি আইন-সম্মত বুত্তি বলে গণ্য করা হত এবং বিশেষ সর্জ-যুক্ত কতকগুলি বিধি-নিষেধ গণিকাদের প্রতি প্রয়োগের ব্যবস্থা ছিল। কেটিলাও গণিকাবৃত্তিকে স্থানিমন্ত্রিত করবার জন্ম কতকগুলি নিয়মের উল্লেখ করেছেন। তিনি বলেছেন, প্রত্যেক গণিকাকে তার **হ' দিনের** উপাক্তন মাসিক কব হিসাবে বাজকোষে জমা দিতে হবে। উপপতিদের সঙ্গে তাদের মতানৈক্য ঘটলে প্রধানা গণিকা তার সহজ নিম্পত্তি করে দেবে। গণিকাদের উত্তরাধিকাব সম্পর্কিত প্রশ্ন, তাদের অভাব অভিযোগ ও শ্রেণীগত দুর্বনীর হার গণিকাধ্যক্ষের প্রভাক্ষ তত্তাবধানে মীমাংসিত ও নির্ধারিত হবে। নভকার বিনা সম্মতিতে তার উপর বলাংকার করলে বা গণিকাকস্থার সংগে ব্যভিচারে লিপ্ত হলে অপরাধীকে রাজ্ঞারে অভিযুক্ত হতে হবে: নারদ বলেছেন, গণিকার অক্সান্ত সম্পত্তি বাজেয়াপ্ত করা চল লও তাব ব্যবসায়ের সহায়ক অলংকারাদি ক্থনও রাষ্ট্র কর্ত্তক অধিগত করা চলবে না। যাজ্ঞৰক্ষা বলেছেন, কোন গণিকা যদি কোন ব্যক্তির শ্যাসংগিনী হবার প্রতিশ্রুতি দিয়ে অগ্রিম অর্থ নেয় এবং পবে তাতে অসমতা হয়, তবে সে অগ্রিমদাতাকে দ্বিগুণ অর্থ প্রত্যূপণ করতে বাধ্য থাকবে। অগ্নিপুরাণে যাজ্ঞবন্ধোর নির্দেশ সমর্থিত হয়েছে। কৌটিলোর মতানুসারে বেশালয়গুলিকে তালিকাভক করা হত। বিগতসৌবনা গণিকাদের কর্ম-সংস্থানের ব্যবস্থাও ছিল।

শিক্ষিতা ও স্থক্ষচিসম্পন্না বাগনারীদের সাধারণ ভাবে যথেষ্ঠ সমাদর করা হলেও মহাভারতের উপদেশা মুক অংশ, বিভিন্ন পুরাণ ও সংহিতার জনসাধারণকে এদের সংস্পর্শ থেকে দূরে থাকবার নির্দেশ দেওয়া হয়েছে। মহাভারতে বলা হয়েছে, দশটি হত্যাগৃহ থেকে একটি তৈল-নিস্পেষক চক্র অধিক মন্দ; একটি অতিথিশালা দশটি তৈল-নিস্পেষক চক্র থেকে নিকৃষ্ট; একজন বেখা দশটি অতিথিশালা থেকে মন্দ, আবার একজন নূপতি দশ জন গণিকা থেকে নিকৃষ্ট। প্রত্যেক প্রজামুরক্ষক নূপতিকে পানশালা, বংরাংগনা, জুয়াড়ি, ব্যবসারী ও বিস্বকদের অন্যার প্রভাব থেকে নিজ্বাজ্যুকে মুক্ত বাগবার কঠোর নির্দেশ দেওয়া হয়েছে। নইলে রাজ্যুর ও প্রজাপুরের ধ্বংস অনিবার্য।

প্রাচীন ভারতীয় সাহিত্যের বহু খানে অফক্রীড়া ও বারাংগনাকে পরস্পর সংযুক্ত দেখান হয়েছে। দশকুমারচবিত থেকে জানা বার বে, তন্তব ও অপরাধীদের সংগে গণিকাদের অবিচ্ছেন্ত সম্পর্ক বর্তমান থাকে। যাজ্ঞবন্ধ্য বলেছেন তন্তবের চৌর্যাপরাধের চারটি প্রমানের মধ্যে একটি হচ্ছে বেখ্যাগৃহে বাস। জৈনকাহিনী 'অগলদত্তে' তন্তবের উদ্দেশে বেশ্যাগৃহহই প্রথম অমুসদ্ধান করবার নির্দেশ দেওয়া হরেছে। মহাভারত থেকে জানা যায় যে মঞ্চশালা ও গণিকালয় পরস্পর সংযুক্ত। নারদ, মন্থু, বৃহস্পতি প্রভৃতি শাস্ত্রকার 'প্রকাশবঞ্চদে'র মধ্যে জুয়াড়ি, অসাধু ব্যবসায়ী ও উংকোচগ্রহীতার সংগে গণিকারও উল্লেখ করেছেন। বাংস্থায়ন, বশিষ্ঠ, বিষ্ণু প্রভৃতি শাস্ত্রকায়তা একবাক্যে বান্ধণকে গণিকার দান ও গণিকাগৃহে অন্ধগ্রহণ করতে নিবেধ করেছেন। পরাশরসংহিতা ও মহানির্বাণতত্ত্বে গণিকার সহিত ব্রাহ্মণের স্বরত্তিয়াকে জ্বভাতম অপরাধ বলে গণ্য করা হয়েছে। অগ্নিপ্রাণেও এর সমর্থন রয়েছে। গৌতমের অভিনতানুসারে গণিকাহত্যা অপরাধ বলে গণ্য হত না।

জাতককাহিনীগুলির উপদেশায়ুক অংশগুলিতেও গণিকাদের সংস্পর্শ বিষবং পরিত্যাগ করতে বলা হয়েছে। কেন না, মায়াবিনী প্রবৃত্তি ও অপসরা বৃত্তিই বারাংগনার উপজাবিকা। পুক্ষ-চিত্ত বিজয়ের অভিযানে আয়ুণ তাদের মনোহরা মদালসমন্তর যৌবনঞ্জী, মুগাকঠ, স্পর্শন, পরিরম্ভণ প্রভৃতি ছল-প্রণয়ের লীলাকলা। তাদের প্রকৃতি বেণীবদ্ধ তশ্বরের মত, গরলমিশ্রিত পানীয়ের মত, আয়য়াঘাপরায়ণ পগ্যজীবীর মত, সর্বভৃক ভতাশনের মত, সর্বগ্রাসী স্রোতস্বিনীর মত, কুরক্সের বংকিম শৃংগের মত, চির-বৃভৃক্ষিত কুভাস্তের মত, অনবক্ষশ্বতি স্লেছাসঞ্চরমান মটিকার মত, ত্তার কলুষ-তমিস্র নরকের মত এবং চির-অত্তা নিশাচরীর মত। এদের নির্লজ্জ কেলিকপটতার পতংগবৃত্ত ধনীসন্তান সম্পদহীন ভিক্ষ্কে, ত্শ্চরিত্র মত্তপে পরিণত হয়। অর্থলোলুপা কামুকী এই নারীদের চরিত্র

শুধুমাত্র ছলনা আছে, অসম্ভোষ আছে, কৃতজ্ঞতা নেই, মমন্বনোধ নেই, নেই প্রকৃত প্রণয়ের মধুরতা।

প্রাচীন ভারতীয় সাছিত্যে গণিকাদের সম্বন্ধে পরস্পরবিরোধী অভিমত ব্যক্ত হলেও, এদের অন্তিত্ব সম্বন্ধে সন্দেহের কোন অবকাশ নেই। তাছাড়া সাধারণ গণিকা সম্বন্ধে বিরূপ মন্তব্য থাকলেও, আমপালী, বসন্তব্যনা, রাগমঞ্জরী, চক্রন্থেনা, কামকন্দলা প্রভৃতি নর্ভকীর চরিত্রের মধ্য দিয়ে উন্নতশ্রেণীর রূপাতিরম্যা, বিছ্বী, প্রশ্বর্যশালিনী গণিকাদের সামাজিক প্রতিষ্ঠা ও জন-সমাদর স্বন্দরভাবে প্রকাশিত হয়েছে। এদের সংখ্যা অন্ধ হলেও অন্মন্তেখ্য নয়। এদের কউ বা স্বেচ্ছায় দেহ-বিক্রয় বৃত্তি পরিত্যাগ করে মনোমত প্রণমীর সংগে মিলিত হয়েছে, আবার কেউ বা প্রচণ্ড ভোগের পর সাধুসংসর্গ পরম-মৃত্তির সন্ধান পেয়েছে।

- এই প্রবন্ধ রচনায় নীচের পুস্তকগুলির সাহায়্য নেওয়া হয়েছে:
- 1. History & Culture of the Indian people Volumes II, III & IV—Majumdar & Pusalkar.
- 2. Position of Women in Ancient India-Altekar.
- 3. Sexual Life in Ancient India-J. J. Meyer.
- 4. Kautilya's Arthasastra—Meyer. 5. Social Life in Ancient India—Chakladar.

প্রভূ-শিষ্য-সমাচার

বিমলচন্দ্র ঘোষ

প্রান্থ যথন হাই তোলেন শিষ্যেরা দেয় তুড়ি, এমনি ক'রেই বছর বছর প্রান্থর বাড়ে ভূ'ড়ি।

প্রভূব হাতে লাটাই যখন শিষ্যেরা হয় ঘূড়ি, শূন্মে উড়ে ছুই পায়ে দেয় নাক ঘ্যে' শুভূগুড়ি।

চালের কাঁকর যক্ষ্ণি হয় বিধ-পাথরের মুড়ি, শিষ্যেরা দেয় সোনায় মুড়ে প্রভূকে গুড়গুড়ি।

ভাতিধান ভৈরী করার মত সহিষ্ণুতার কাল আর নেই। পৃথিবীর মধ্যে নানা লোক নানা বিষয়কে পরম স্থা বলে বর্ণনা করেছেন। কেউ বা অর্থসঞ্চয় করাকে পরম স্থা, কেউ বা বৃক্ষমূলে বসে নতুন কাব্য পড়াকে পরম স্থা, কেউ বা প্রথম ছেলের মূথের আধ-আধ বুলি শোনাকে পরম স্থা-আবার কেউ বা সমুদ্রতটে বসে তরঙ্গরাশি দেখাকে পরম স্থা বলেছেন—কিন্তু অভিধান তৈরী করার যে কত স্থা তা ধারা না করেছেন—তাঁরা তা অমুভব করতে পারেন না।

অভিধান তৈরী করার মত পরিশ্রমণ্ড বৃঝি আর কোন কাজে দেখা বাম না—কেউ বলেন, বাঁরা অভিধান তৈরী করেন তাঁরা যেন বিজ্ঞার মঞ্ব—তাঁরা মাল-মদলা তৈরী করে দেন—অজ্ঞেরা সেই মদলা দিয়ে ঘর গাঁথেন। আবার কেউ বলেন—একটা স্থবিশাল গোঁধ। প্রবেশদার তার তালাবদ্ধ। দেই গোঁধের প্রতিটি ঘর অগণিত শব্দ আর ভাষার ভাষার। কিন্তু প্রবেশদার উন্মোচন করা চাই তো—তা করতে হলে চাই চাবি। এই শব্দ ও ভাষাভাগ্যরের চাবিই হচ্ছে অভিধান।

এক শব্দের অনেক মানে, এক মানের অনেক শব্দ। সেগুলি সঠিকভাবে প্রয়োগ করতে হলে মুখস্থ করা দরকার। বেদের যুগে এ রকম শব্দ মুখস্থ করার প্রথা ছিল। এই শব্দগুলিকে সন্নিবেশিত করা হয় যে বই-এ, তাকে কোষগ্রন্থ বলা হয়।

ভাগাকে স্থান্ধ ভাবে আয়ত্তে আনতে গোলে বিভাগীদের বহু বছর ধরে মুগস্থ করতে হত এই সব কোষগ্রন্থ, সে কোষগ্রন্থ আজকের কালের বর্ণান্ধক্রমে লেখা নয়। স্থললিত ছল্দে শব্দ, শব্দার্থ ও লিঙ্গ প্রকরণে সজ্জিত। ভেবে দেখুন ব্রহ্মচারী শিক্ষার্থী গুরুর কাছে দীকা নিয়ে শাস্ত্রান্ধনীলনের মাঝে মাঝে আহরণ করতে থাকে শব্দার্থ-সন্থার। এমনি করে তার মোটামুটি শব্দ প্রভৃতি সঞ্চয় করতে লেগে যেত প্রায় সাতটি বছর।

কালে সেই সব কোষগ্রন্থ রপাস্তবিত হতে থাকে। প্রাচীন কালের কোষগ্রন্থ হয়ে দাঁড়ায় আধুনিক কালের অভিধান। অভিধানগুলিকে মুখস্থ করার আর প্রয়োজন হয় না, সম্প্রবণ্ড নয়। যত দিন যায় শব্দসন্তারও বাড়ে, অভিধানের কলেবরও দীর্ঘ হয়। ধীরে ধীরে প্রাচীনকালের কোষগ্রন্থগুলির প্রচলন বহিত হতে থাকে। অনেকগুলি কোষগ্রন্থের নামও আজ শোনা যায় না অথবা সম্পূর্ণরূপে স্প্রাণ্য অবস্থায় আছে। তাদের কোন প্রাচীন মঠে বা মন্দিরে, টোলে বা যাত্ম্যরে অনুসন্ধান করলে পাওয়া যেতে পারে কিছ তা সাধারণের নাগালের বাইরে। আধুনিক ভাবে সজ্জিত অভিধানের কথা বলার আগে আগেকার কালের অভিধান কি রকম ছিল দেখা যাক। এতে দেখা যাবে বাঙলাদেশই আধুনিককালের অভিধান সঙ্কলনের এক কেন্দ্র। এই কেন্দ্রভূমিতে ছোট, বড় অনেকগুলি অভিধান তৈরী হয়েছে, দেগুলি সম্বন্ধে বলার আগে প্রাচীনকালের ক্রত্থাবলে অভিধানের কথা বলা দরকার।

অভিধান কথাটির সাবারণ অর্থ নাম। স্বতরাং নামের সংগ্রহ আর তার পরিচরই হচ্ছে অভিধান। একই জিনিবের অনেকগুলি নাম আছে আর একই শব্দের অনেকগুলি মানে আছে। ভাষার মধ্যে শব্দের ব্যবহারকে স্থানিরন্ত্রিত করতে হলে এ সম্বন্ধে সচেতন ইওয়া দরকার। বৈদিক যুগ এ সম্বন্ধে যথেষ্ট সচেতন ছিল দেখা যায়। তথ্ অর্থ নয়, লিঙ্ক সম্বন্ধেও প্রাচীন যুগের ভারানির্ভ্ গণ সচেতন

বাঙলা অভিধান সঙ্গলন

ঞ্জিশোরীস্তবুমার ঘোষ

ছিলেন। সংস্কৃতে প্রত্যেক শদেরই কোন না কোন লিক হয়-বেদাকে এটা সুপরিপ্রষ্ট হয়। তাই পাণিনিব আগে থেকে ব্যাকরণ বেদাঙ্গ নামে অভিহিত হয়। ব্যাক্রণ ভাষাকে নিয়ন্তিত করে। কি**ছ** ব্যাকরণের কাজ আর অভিধানের কাজ এক নয়। **সংস্কৃত** অভিধানে তিনটি বিষয়ের পরিচয় পাওয়া যায়, যেমন প্রায়, নানার্থ ও লিক্স। পর্যায় মানে এক জিনিয়ের অনেক নাম; নানা**র্য** একই শব্দের নানা মানে আর শিঙ্গ অর্থে কোন কোন শব্দের কোন কোন লিঙ্গ বুঝায়। প্রাচীন কালে এই তিনটি বিধয়ের পরিচয় এক সঙ্গে একই গ্রন্থে পাওয়া যেত না। এক একজন এক একটা বিষয় নিয়ে গ্রন্থ রচনা করেছিলেন। যেমন পর্যা<mark>য়ের</mark> (বিভিন্ন নামের) স্তপ্রাচীন পূথির নাম নিঘণ্ট। নিঘণ্ট, বেদেরই অজ্ব। বেদেবই মত মুণস্থ রাখতে হয় বলে এর নাম আয়ায় বা সমায়ায় (বেলাঙ্গের অভ্যাস)। নানার্থের প্রাচীন পুথিগুলির মধ্যে কালিদাসের নানার্থ-শব্দরত্ব, লিঙ্গের পুথিগুলির মধ্যে সম্ভবত: ব্রক্তিই স্প্রাটীন বলে মনে হয়। ব্যাকরণ শাল্পে যেমন পাণিনি। তেমনি অভিধানে অমরসিংকেব নাম সংস্কৃত ভাষায় স্থবিদিত। অমর সিত্ত সম্ভবত: অভিগানের তিনটি বিষয় বা কাণ্ড একত্রে সঙ্কলন ও ও গ্রথিত করেন। আর এই জন্মই তাঁব অভিগান 'ত্রিকাণ্ড' নামে সাধারণত: অমুবসিংহের •অভিধান অমুরকোষ থাত। স্থবিদিত।

অমরসিংহকে ৫ম- 2 গু শতাব্দীর লোক বলা হয়। প্রবাদ আছে—
ইনি মহারাজা বিক্রমাদিত্যের নবরত্ব সভার এক রত্ব। সম্ভবতঃ
"ধরস্তরিক্রপণকামরসিংহশঙ্কং" এই শ্লোক হতে অমুমান করা
হয়েছে। প্রসিদ্ধি আছে, ইনি বৌদ্ধধাবলাধী ছিলেন। এবং গয়ার
প্রসিদ্ধ বৌদ্ধমন্দির, যা উক্রবিত্ব। গ্রামে (বোধগয়া) আছে, তা
ইহার দ্বারা নির্মিত বলে ডাং রাজেক্রলাল মিত্র প্রভৃতি প্রেক্ততাদ্বিকগণ
অমুমান করেন। জেনারেল কানিংহাম সাহেবের মতে এই বৌদ্ধমন্দির খুং ৪র্থ হতে ৬ গুলতকের মধ্যে নির্মিত হয়েছিল।
উক্ত মন্দিরে কোনিত আছে, ইনি ৫ম শতাব্দীতে বর্তমান
ছিলেন।

আবারও প্রবাদ আছে, ইনি হেম সিংহের শিষ্য। এব বচিত আমরমালা ও অমরকোর ব্যতীত বৌদ্ধবিদ্ধেরী শঙ্করাচার্য এব সমস্ত বই পুড়িয়ে দেন।

অমরসিংহ তিনটি অংশ নিরে নামলিঙ্গার্থাসন এবং ত্রিকাও নামে বে কোবগুছ সেথেন তাতাই অমরকোব নামে খ্যাত। বইখানি ছলে গ্রথিত ও মুগস্থ করা সহজ।

বিভিন্ন কোষকার বিভিন্ন প্রাচীন কোষকাব্যের নামোলেখ করেছেন। ঐ সকল কোষকারগণের মধ্যে কাত্যায়ন, বাচম্পতি, বিশ্বরূপ, মঙ্গল ভোগীন্ত্র, সাচসাঞ্চ, শুভাঙ্ক, বরন্ধচি, রন্ধিদেব, বিক্রমাদিতা, কল্র, মাধব, গোবর্ধনি, ব্যাদি, ভাগুরি, গঙ্গাধর, তারপাল, রভস পাল, বাভট, ধর্ম, বামন প্রাভৃতির নামই বেশী পাওয়া ধার। এদের মধ্যে অমরকোষই অধিক প্রচলিত ও সোকপ্রিয় হওরায় ভারতের সর্বত্রই এর আদব দেখতে পাওয়া ধার। স্বামরকোষ তিন কাণ্ডেও আঠার বর্গে বিভক্ত। কেই কেই এই কোষকে ত্রিকাণ্ড বা নামলিঙ্গাল্পান বলে। স্বামরকোবের বর্গগুলি এই—

১। স্বর্গবর্গ, ২। পাতালবর্গ, ৩। ভূমিবর্গ, ৪। পুরবর্গ, ৫। শৈলবর্গ, ৬। বনৌষধিবর্গ। १। সিংহাদিবর্গ, ৮। মুম্ব্যবর্গ, ১। বাহ্মবর্গ, ১০। ক্ষত্রিয়বর্গ, ১১। বৈশুবর্গ, ১২। শুদ্রবর্গ, ১৩। প্রাণিবর্গ, ১৪। বিশেষবর্গ বা নিম্মবর্গ, ১৫। সংকীর্ণবর্গ, ১৬। নানার্থবর্গ, ১৭। অব্যয়বর্গ, ১৮। লিঙ্গাদিসংগ্রহবর্গ।

কেউ কেউ বলেন, অভিধানের আদি অগ্নিপুরাণ সর্বেষাং কোষানামাদি অগ্নিপুরাণোজ্ঞাভিধানং.' কিছ এটি ঠিক নছে। কারণ অগ্নিপুরাণ পৃষ্টীয় ৬৯ হতে ১ম শতকের মধ্যে রচিত চয়েছিল। বাংলাদেশ অথবা বিহারের কোন স্থানে এই পুরাণ লিখিত হয়। অভিধান সংকলনে অমরকোষ থেকে বস্তু বিষয় অগ্নিপুরাণ গ্রহণ করেছেন। এটাকে অমরকোষের একটা সংক্ষিপ্ত সংস্করণ বলা যেতে পারে। বিশেষতঃ উহাদের মধ্যে অনেকগুলি শ্লোকের সমতা দেখা যায় আর অধ্যায় বিশ্লাস-রীতিও একরপ। অমরকোষের বর্গগুলির সঙ্গে মেলালে দেখা যায়, অগ্নিপুরাণে অনেকগুলি বর্গ এক। যথা—১। স্বর্গবর্গ। ২। পাতালবর্গ। ৩। অব্যয়বর্গ। ৪। ভূমিবর্গ। ৫। বনোষধিবর্গ। ৬। মহুষাবর্গ। १। ব্রন্গবর্গ। ৮। ক্ষত্রবর্গ ১০। বৈশ্লবর্গ। ১০। শুদ্বর্গ। ১১। সামান্তনামলিক্লাদিবর্গ। ইত্যাদি—

অমরকোবের প্রায় ৪ • থানি টীকাগ্রন্থ পাওয় যায়। ক্ষীর-স্থামীর (৮ম শতাব্দী) টীকা, ভাত্নদীক্ষিত ক্লত ব্যাথাপ্রেণা, অচ্যত উপাধ্যায়ের ব্যাথ্যাপ্রদীপ, ভরতমল্লের মুগ্ধবোধিনা প্রভৃতি।

এই টাকাকারদের মধ্যে একজন প্রসিদ্ধ বাঙালী টাকাকার আছেন। তাঁর নাম সর্বানন্দ বন্দোপাধ্যার। ইনি ১২ শতাব্দার লোক। তাঁর পিতার নাম—আর্তিহর। এত্ত্বের নাম টাকাসর্পর। ১১৫৯ খ্বং রচিত হয়। তিনি অন্ত দশখানি টাকা আলোচনা করে এই টাকারক্রনা করেন। তাঁর টাকার ৩০০ সংস্কৃত শব্দের বাংলা প্রতিশব্দ দেওরা আছে। ত্রিবাঙ্গরের মহারাজার আদেশে এই টাকাথানি মুক্তিত হয়। এই বইথানি বাঙলাদেশ থেকে লুগু হরে মালাবারের কোন অঞ্চলে রক্ষিত ছিল। বইথানি সম্বন্ধে রায় বাহাত্বর বোগোশচক্র বিক্তানিধি ও বসম্ভবঞ্জন বার বিষম্বন্ধত সাহিত্য পরিবদ পত্রিকার ১৩২৬ বলাব্দের ২য় সংখ্যার যথাক্রমে গাড়ে সাত শত বছর পূর্বের বাংলা শব্দ ও বাদশ শতকের বাংলা শব্দ শীর্ষক প্রবন্ধবরে বিক্তাত আলোচনা করেছেন।

১৪৩১ খুষ্টাব্দে বৃহস্পতি মাহিস্তা (মতিলাল) 'প্লার্থচন্দ্রিকা'
নামে অমরকোষের একপানি টাকা লেখেন, এই টাকায় তিনি
মেদিনাকোর থেকেও প্রমাণ সংগ্রহ করেছিলেন। প্রস্থকার নিজেই
বলেছেন—তিনি প্রাচীন ১৬টি কোরগ্রন্থ যেনন, ফ্রীরস্বামা, সভ্তি,
কলিঙ্গ, কপ্কট, সর্বধর, ব্যাখ্যামৃত টাকাসর্বস্থ থেকে বহু তথ্য
সংগৃহীত হয়েছে। ইনি রাজা গণেশ (১৪০৫) ও তাঁর মুসলমান
প্রস্তানের সভাসদ ছিলেন। এই টাকা লিখে গৌড়ের মুসলমান
স্কাতানের কাছ থেকে তিনি 'রারমুক্ট' উপাধি পান। দেই হতে
তিনি রারমুম্টমণি নামেও পরিচিত্ত 'প্লার্থচন্দ্রিকা' বা 'অমরচন্দ্রিকার'
তাঁর এইরূপ পরিচর পাওয়া বার্ব-তাঁর পিভার নাম গোবিন্দ্য

মাতা নীলম্থায়ী দেবী এবং দ্বী রমা দেবী। তিনি বাঙ্গালী ছিলেন।
মহাত্মা হরপ্রসাদ শান্ত্রী সা-প পত্রিকায় (১৩৩৮) সম্বন্ধে আলোচনা
করেচেন।

অমরকোবের পরিশিষ্টকারদের মধ্যে পুরুবোন্তমদেবের (১২-১০শ খঃ) নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য। পুরুবোন্তম একজন বড় শান্দিক ছিলেন। তিনি অমরকোবের পরিশিষ্ট 'ত্রিকাশুশেষ' প্রণয়ন করেন। এ ছাড়াও তিনি একাক্ষরকোব, স্বিস্কাষ্ট 'ত্রিকাশুশেষ' প্রণয়ন করেন। এ ছাড়াও তিনি একাক্ষরকোব, স্বিস্কাষ্ট 'ত্রকথানি ছোট অভিধান। অভিধান সক্ষলন করেন। 'হারাবলী' একথানি ছোট অভিধান। আমাদের পকেট অভিধানের মত্ত। এখানি লেথবার জক্তে 'তিনি প্রায় ২ বছর খাটেন। অনেক বড় বড় পশ্ভিতের বাড়ীতে যাতায়াত করেন নতুন নতুন শব্দ সংগ্রহের জক্তা। যে শব্দ চলিত ছিল অথচ উঠে যাছে, সেই শব্দের অর্থ দেওয়া এই অভিধানের উদ্বেশ্ত। ত্রিকাশুশেরে কোন কোন স্থানে যেথানে অমরকোব এক পর্যায়ে ১৭টি শব্দ আছে, পুরুবোন্তম সেথানে ৩৭টি শব্দ দিয়েছেন। এ বকম ভাবে তিনি অমরসিংহের পরবর্তী অনেক চলতি শব্দ তাতে সংযোগ করেছিলেন।

নানা কারণে পুরুষোত্তমের নাম উল্লেখযোগ্য। তিনি পাণিনির বৈদিকস্ত্র ছেড়ে দিয়ে ভাষাস্থ্রগুলির বৌদ্ধমতে এক বৃত্তি লিথে যান। তার নাম 'ভাষাবৃত্তি'। বানান সম্বন্ধেও দেই প্রাচীন যুগেও তাঁর মন আরুষ্ঠ সংয়ছিল। সাধারণতঃ ব-কার (অস্তঃস্থ ও বর্গীয়), স-কার (শ, ব, স), ন-কার (ন, ণ) প্রভৃতি ভেদ করা শব্দশান্তে এক ছুরুহ ব্যাপার। ভিন্ন প্রদেশের উচ্চারণ ভেদে এইরপ বানান বিভাট সে যুগেও আরম্ভ হুরেছিল। অনেকে উচ্চারণ ধরে বানান করত আবার অনেকে বেদ-পুরাণাদির বানান ধরে চলত। আবার লিথন পদ্ধতির দোবেও র ও ক, থ, ক্ষ ও য প্রভৃতি অক্ষরকে একরপ দেখাত। পুরুষোত্তম এর সমাধান করেন 'বর্ণযোজনা' নামে এক বই লিথে। পারবর্তীকালে অমরকোবের টাকা আরও অনেকে প্রথন, ভাঁদের মধ্যে বাঙালীদের নাম পরে উল্লিথিভ হবে।

অমরকোবের পরে বছ উল্লেখবোগ্য অভিধান রচিত হয়-তার মধ্যে কতকগুলির উল্লেখ করা হল—শব্দচন্দ্রিকা (১০-১১শ ধুৱার ; এই গ্রন্থ চক্রপাণি দত্ত রচনা করেন। ইহার পিতা নারারণ কবিরাজ भाजतः नीय वाका नवभाग (मरवव भाकभाजाव मन्नो हिल्लन); নানার্থদ:গ্রহ (অজয় পাল কুত-১১৪০ খ্রঃ ইহার আবির্ভাবের কথা উল্লেখ আছে); বিশ্বপ্রকাশ (মহেশ্বর বৈত্ত, বঙ্গদেশ, ১১১১ थु:); व्यक्तिगानिक्वामि (इम्हन्य स्वि । हैनि ১১-১२म श्रष्टीत्सव लाक। अर्थाष्ट्रेम (आरमनावान) श्राप्तनाव धन्तुक शाप्म চাচিক্রের গুরুসে ও পাহিনীর গর্ভে ১০৮৮ খু: জ্বা। শৈশবে হেমচন্দ্র 'চংদেব' নামে অভিহিত হতেন। ইনি জাভিতে বৈষ্ঠ ছिলেন। देजनाठार्थ प्रतिष्य स्वति ১०३७ श्रेष्टीत्य ठःपन्तिक জৈনধর্মে দীক্ষিত করেন। ২১ বছর বরুদে বন্ত শাস্ত্র অধায়ন করার পর জৈনাচার্য তাঁকে "হেমচন্দ্র" অর্থাৎ সোনার চাদ ^{বলে} স্থবি উপাধি দেন। সেই সময় হতে চংদেব হেমচক্র স্থি ^{নামে} প্রসিদ্ধ। জৈনধর্মাবলম্বী হলেও তাঁর হিন্দুধর্মের **এ**তি **আ**ছা ছিল। তিনি সিদ্ধরাজ ও পরে কুমারপাল রাজার সভাপ**তি**ত হন। ১১৭৪ সালে তাঁৰ মৃত্যু হয়; কবিকল্পন্ম (বোপদেব মিল

১৩শ শতাবীতে দৌলতাবাদে আবিভূতি হন। পিতা—কেশব। ইনি ধনেশ পশ্চিতের নিকট শিক্ষালাভ করেন। বাদবরাজ মহাদেবের সভাপণ্ডিত। ইহার 'মুগ্ধবোধ' ও কবিকল্পদ্রম' বাঙলাদেশে বিশেষ আদত); অভিধানরত্বমালা (হলায়ুধ ভট্ট। ১০-১১শ খু:। ইনি বাজা লক্ষ্মণসেনের সভাসদ হলায়ধ হতে স্বতন্ত্র ব্যক্তি); ভূরিপ্রয়োগ (পদ্মনাভ দত্ত ছিজ। হলায়ুধ বংশধর শ্রীদত্তের প্রপৌত্র, দামোদর দত্তের পুত্র। মিথিলায় ইনি ১৩-১৪শ খুষ্টাব্দে আবিভূতি হন); ধরণী (সারসংগ্রহনামাকানেকার্থসমুচ্চয়, ধরণীদাস আহ্মণ কুত); শব্দমালা (রামেশ্বর শর্মা); বর্ণাভিধান (নন্দ ভট্টাচার্য); ভাবপ্রকাশ (ভাবমিশ্র); শব্দরক্লাবলী (মথুরেশ পণ্ডিত); রাজবল্লভ (নারায়ণ দাস কবিরাজ); নামমালা (ধনপ্তায় কবি), নানার্থরত্বমালা (দগুধিনাথ): পর্যায়নানার্থকোর (জটাধরাচার্য)। নানার্থধ্বনি-ষঞ্জরী (গদসিংহ), নিঘণ্টু অর্থাৎ রাজনিঘণ্টু (নরসিংহ কাশ্মীর পণ্ডিত); উণাদিকোষ (রাম শর্মা); আয়ুর্বেদার্ণবোপিত পর্যায় রত্বমালা (রত্বমালাকর বৈশু) ইত্যাদি। উপরি-উক্ত কোষ-গ্রন্থগুলির অধিকাংশেরই প্রচলন নেই বললে অত্যক্তি হয় না।

वाडानी कावकारवव मध्य मर्वानम वस्मानाधारवव नाम जारन वाडामी कावकात मञ्जूबत देवछ ১১১১ थुः বিশ্বপ্রকাশ রচনা করেন। এর পর মেদিনীকোর। এই কোষ্টি বুচিত হয় ১২০০-১৪৩১ পুষ্টাব্দের মধ্যে। এই গ্রন্থের বচরিতা प्मिम्नोकत । होने चामम माज्यकत स्थि भारत वर्जमान हिल्लन वरन অনুমিত হয়। মহাম: হরপ্রসাদ শাস্ত্রী মহাশয় শিথরভমির রাজা বামচন্দ্রকৃত পুঁথিথানি হতে আবিষ্কার কবেন বে প্রাণকর নামক উনৈক রাজা কর্ণগড় প্রদেশে রাজত্ব করতেন। তাঁর পুত্র মেদিনীকর কর্ড ক মেদিনীপুর নগর প্রতিষ্ঠিত হয়। এই মেদিনীকরই মেদিনী-কোষের রচ্মিতা। মেদিনীকোষেই ইনি নিজ পিতার নাম উল্লেখ করেন। (১৮৬১ খ: সোমনাথ মুখোপাধ্যায় মেদিনীকোষ সম্পাদনা কর্বেন। মেদিনীকোষ সম্বন্ধে পরে আলোচিত হবে)। পুরুষোত্তমদেব, যার সম্বন্ধে পূর্বে উল্লেখ করা হয়েছে, তিনি বঙ্গদেশীয় কোন রাজা বা মহারাজা ছিলেন—সম্ভবত: ১২শ-১৩শ পৃষ্টাব্দে। ইনিও বৌদ্ধধ্মবিশ্বস্থী ছিলেন। বাঙালী এর পরে আরও অনেক অমরকোবের টীকা রচনা করেন। বেমন অমরকোয টাকা—নয়নানন্দ শর্মা ও তৎছাত্র রামচক্র শর্মা। পদার্থকৌমুদী— নাবায়ণ চন্দ্রবর্ত্তী, ত্রিকাণ্ডবিবেক—রামনাথ বিজ্ঞাবাচস্পতি, অমরকোষ টাকা—রমানাথ চক্রবর্তী, ত্রিকাণ্ডচিন্তামণি—রঘ্নাথ চক্রবর্তী, রামলিক কৌমুদী-রামকুক, মালাখ্যা-প্রমানক শ্মা ইত্যাদি। এওলি সবই বলাকরে মুদ্রিত।

পুরুবোত্তমদেবের অভিধান প্রায় ৮০০ বছর আগোকার লেখা।
থব পর এদেশের ইতিহাসে অনেক ওলোট-পালোট হয়েছে। এখন

আর কেউ-ই অভিধান মুখন্থ করে না; অকারাদি বর্ণক্রমে শব্দালা সাজিয়ে অভিধান সঙ্কলন করা হয়। কিন্তু উনবিংশ শতকের আগে শব্দগুলিকে বর্ণনালা অনুসারে সাজাবার নিয়ম প্রচলিত ছিল না। ইংরেজরাই এই প্রথার প্রবর্তক বলে আমাদের মনে হয়। কারণ ১৮০৭ খ্যু কোলক্রক সাহেব (H. T. Colebrooke, ১৭৬৫-১৮৩৭) 'অমরকোর'কে সুস্যাজ্রত করে সম্পাদন করেন। তাতে তিনি পরিশিষ্টে বর্ণনালা অনুসারে অমরকোষের শব্দগুলি সাজিয়ে দেন। ইংরেজ মুগের আদিপর্যে কোলক্রক সাহেবের অভিধান সম্পাদনের প্রীতি জন্মাল কেন? তিনি ১৮৮২-৮৩ খুষ্টাব্বে ভারতে ব্রিহুত পূর্ণিয়ার এসিষ্টাণ্ট কালেক্ট্র হয়ে আদেন। তক্রণ বালক বললেই হয়, ১৭ বছর বয়স তথনও হয়নি—তিনি আকৃষ্ট হলেন সংস্কৃত সাহিত্যের প্রতি

সংস্কৃত শাস্ত্র ভালভালেই শিখলেন, হিন্দুর আইন সম্বন্ধে, ছিন্দু বিধবাদের কর্ত্তব্য সম্বন্ধে, জাতি, শ্রেণী সম্বন্ধে বই লিখলেন। এর পর তিনি সদর আদালতের জজ হন। পরে ফোর্ট উইলিয়ম কলেজের আইন ও সংস্কৃতের অধ্যাপক হন। এসিয়াটিক সোসাইটা অফ বেঙ্গলের সভাপতি হন (১৮٠٩—১৮১৪)। এই সময় কয়েকথানি গ্রন্থ প্রকাশ করেন—তার সঙ্গে সম্পাদনা করেন অমরকোর। তার (৩য় সং নামপত্রে এইরূপ লেখা আছে—Kosha। or। of the Sanskrit Language Dictionary | an English Umura Singha with Interpretation and Annotations. | by | H. T. Colebrooke, Esq. | Calcutta | Dec. 1883 (कालाइक ভেদাতিবিদ, সংস্কৃতজ্ঞ একাধারে হলে গাঁড়ালেন—গণিতজ্ঞ, পণ্ডিত। তিনি গ্রন্থ আর প্রবন্ধ রচনা করলেন—বেদ সম্বন্ধে, সংস্কৃত আভিধান, ব্যাকরণ, জৈন ধর্ম, আইন, হিলুদর্শন, ভারতীয় ৰীজগণিত, উদ্ভিদতত্ত্ব, ভাষাতত্ত্ব প্ৰভৃতি। তাই অধ্যাপক গোভষ্টকর একৈ Prince of Orientalists (প্রাচ্যবিভাবিদের অধিরাজ) বলেছেন।

অমরকোবের সঙ্গে সঙ্গে বাঙলা আভিধানিকদের কাছে তিনি হয়ে রইলেন অমর।

প্রায় এই সময় থেকেই বাংলা ভাষায় অভিধানের আবিভাব হয়।
ইংরেজদের অনুকরণে বাংলা অভিধানের অ-কারাদিক্রমে সাজানর রীতি
এই সময় থেকেই দেখা যায়। ইঠ ইণ্ডিয়া কোম্পানীর রাজ্য
কয়েকটি বাংলা ইংরেজি অভিধান তৈরী হয়। সেগুলি নেশীর ভাগ
ইংরেজদের লেখা। পন্তুগীজেরাও তাদের স্থবিধার জল অভিধান
তৈরী করেছিলেল। তখনকার বাংলা অভিধান মানেই মৃলগত
সংস্কৃত অভিধান—কারণ শব্দগুলির মধ্যে ১০ ভাগ-সাস্কৃত শব্দ ও ৬
ভাগ বাংলা অথবা অক্ত শব্দ থাকত।

আসিছে সেদিন, আসিছে সেদিন,
চারি মহাদেশ মিলিবে ধরে,
বেই দিন মহামানব ধর্ম
মন্তুর ধর্মে বিলীন হবে।

আলোচনা নিক্ষল করার আলোচনা

তরুণ চট্টোপাধ্যায়

সেই ইউরোপের কথা বলছি না. নেপোলিয়ন বিসমার্ক, মোটার্নিক বা হিটলাব 'ইউবোপ' শব্দটি বলতে যা বৃশতেন। বিসমার্কের মতে যাদের নিজ্ঞানের নামে যে জিনিষের দাবি করা সম্ভব নয় তাদেবই সব সময় ইউবোপের দোহাই দিয়ে সেই জিনিয় দাবি করতে দেখা গিয়েছে। জার্মাণ ভূমি দখল করে নেপোলিয়ন বলেছিলেন, তিনি ওব ইউরোপের দীমান্ত সম্প্রদারিত করছেন মাত্র। কশিয়া আক্রমণ করার সময়ও তিনি ইউবোপ কফা করার দায়িছের **কথা বলে** কশিয়ার গ্রামকে গ্রাম মাটির সংক মিশিয়ে দেন। ইউরোপের নামেই তিনি ইউরোপের অলাল দেশ আক্রমণ করেন। নেপোলিয়নের কাছে ফ্রান্সই ছিল ইউগোপ। মেটার্নিকের ইউরোপও **ছিল জার, কাইজার ও হাপস**্থ বংশের ইউরোপীয় রাজহ। নেপোলিয়নের অক্ষম ইত্রেসাধক হিটলার-হিমলার-গোয়েবেলস-রোজেনবের্গ কোম্পানীও ইউরোপের দেশের পর দেশ দথল করে লক লক লোককে বন্দিশালায় জীবস্ত অবস্থায় হত্যা করেছিলেন সেই ইউরোপেরই দোহাই দিয়ে। তাঁদের চেলারা আজ সেই ইউরোপীয় ঐতিহ্ন বজায় রাখবাব জন্মে ইউরোপের স্বার্থের নামে ইউরোপের অংশ-বিশেষের দেশগুলিকে একজোট করে, "এক্যবন্ধ ইউরোপ" মার্কা মেরে সেই ই'উরোপেরই অক্ত অংশটির বিরুদ্ধে 'যুদ্ধং দেহি' বলে ভংকার ছাড়ছেন। সেই ইউরোপের অন্তিব বজার রাখবার জন্মেই ঠাণ্ডা লড়াই এবং সেই ঠাণ্ডা লড়াইয়েরই সম্ভান পশ্চিম-জার্মাণীর আদেনাউরের সরকার। ঠাণ্ডা প্রভাইরেরই উত্তপ্ত জমি যদি সভিত্তি ঠাণ্ডা হয়ে যায় তাহলে আনেনাউয়ের সরকারের দেহে জমি থেকে রস পৌছানো থেমে বাবে। ঠাণ্ডা লভাইকে গরম লভাই-এ নিয়ে যাবার অগ্রবর্তী ঘাঁটি হিসেবে পশ্চিম-জারাণীতে এবং অগ্রবর্তী ঘাঁটির সবচেয়ে সামনের ডগা পশ্চিম-वार्नित क्रकीवारमव शाख बाटा बाँहरू ना लाश वर ठीखा युक ষাতে নির্বিবাদে চলতে পারে তার জন্মেই না হচ্ছে অন্ত্রহাস বা পারমাণবিক অন্ত্রপরীকা বন্ধ করার চুক্তি, না হচ্ছে যুদ্ধ শেষ হবার ১৪ বছর পরে জার্মানার সঙ্গে সন্ধিচ্ক্তি। পশ্চিমী গোষ্ঠী পশ্চিম-জার্মাণীর সঙ্গে সমস্ত ব্যাপারে একেবারে পেয়ারের বন্ধুর মত মেলামেশা করছেন কিছ এত গলায় গলায় ভাব হলেও তার সঙ্গে সন্ধিচক্তি করতে তাঁরা রাজী নন। বন্ধুত্ব হয়েছে কিন্তু শত্রুতা শেষ হয়নি।

मन वहत्त्वत्र ठीखा यूत्वत्र कटल मीफ़िश्चरह की ?

প্রথমতঃ, ইউরোপের দেশে দেশে মারণান্ত্রের গাদা হরেছে পর্বত প্রমাণ এবং সেগুলোর মারণশক্তি প্রচণ্ড ও দার্থকাল স্থায়ী। কথার বলে আজ হোক আর কাল হোক, কামানেরা নিজেরাই গোলা উগরোতে আরম্ভ করে। এমন কি, কোথাও কোন যান্ত্রিক গলদ বা তুল কিশ্বা কোন উন্মাদ বৈমানিকের থেয়াল বশে বদি একটা জ্যাটম বোমা বা বকেট গিয়ে পড়ে তাই থেকেই পারমাণবিক বিশ্বস্থ বেধে বেতে পারে।

দিতীয়তঃ, ইউরোপের বিভিন্ন দেশে মার্কিণ জ্যাটম বোমা ও রকেট জন্ত্রের ঘাঁটি বানানোর ফলে যুদ্ধ ও শান্তির প্রশ্ন মীমাংসা করার দায়িত সেই দেশগুলির হাত থেকে আজ আমেরিকার হাতে চলে গিয়েছে। স্থতরাং যে কোন সময়ে নিজেদের ইচ্ছার বিরুদ্ধেও তারা যুদ্ধের জালে জড়িয়ে পড়তে পারে।

ভৃতীয়তঃ, মার্কিণ, বৃটিশ ও ফরাসী সশস্ত্র বাহিনী পশ্চিমজার্মানীতে রাথা হরেছে বলে পূর্ব-জার্মানীতে সোভিয়েত দেশ তার
সৈন্ত রাথতে বাধ্য হয়েছে। এই ভাবে জার্মাণ ভূমিতে বিভিন্ন দেশের
সশস্ত্র বাহিনীর উপস্থিতি জার্মানী ও ইউরোপে উত্তেজনা বাড়িয়ে
চলেছে

চতুর্মতঃ পশ্চিম-জার্মাণীর সেই সব জঙ্গীবাদী ধনিকগোষ্ঠীর প্রতিনিবিদের হাতে পারনাণবিক অস্ত্র তুলে দেওয়া হচ্ছে যারা বর্তমান শতকের মধ্যে হ'টি মহাযুদ্ধ বাধিয়েছে। সেই সঙ্গে ইউরোপের ধনতাব্রিক দেশগুলিকে এই বলে ভারতা দেওয়া হচ্ছে যে, এসৰ ব্ৰেছা শুৰু কমিউনিষ্ট দেশগুলির দিক থেকে আক্রমণের বিরুক্তে, বিশেষ করে ভাদের "সীমাবদ্ধ" যুদ্ধের বিরুদ্ধে। প্রথম কথা, প্রথম লক্ষ্য সনাজতান্ত্রিক দেশগুলি হলেও সে যুদ্ধ শেষ পর্যস্ত মহাযুদ্ধের রূপ নিতে বংধ্য। আজকের দিনে সীমাবদ্ধ যুদ্ধ বলে কিছু নেই। ইতিহাসই সাক্ষ্য দিচ্ছে বে, ইউরোপের হটি মহাযুদ্ধই বেধেছিল হুটি কুদ্র ঘটনাকে উপলক্ষ করে (সার্বিয়ার সঙ্গে অফ্রোহাঙ্গারীর সংঘর্ষ এবং জার্মাণীর পোলাও আক্রমণ)। তবে হাঁ, যে আমেরিক্যান কুটনৈতিক পাগুারা তাঁদের রণ পরিকল্পনার প্রথম ব্যুহের তরোয়াল হিসাবে মার্কিণ সশস্ত্র বাহিনীকে এবং ঢাল হিসাবে পশ্চিম ইউরোপীয় দেশগুলিকে দেখেন তাঁদের কাছে ইউরোপের যুদ্ধ 'স্থানীয়' বা 'সীমাবদ্ধ' মনে হতে পারে। কিন্তু সে যুদ্ধের আগুন বে ধনতন্ত্র সমাজতন্ত্র নির্বিশেষে ইউরোপের সমস্ত দেশে ছড়িয়ে পড়বে থবং মার্কিণ আক্রমণের অগ্রবর্তী ঘাঁটি হিসেবে আক্রাম্ভ পক্ষের আ টম ও হাইডোজেন বোমা এবং রকেট বে সেই দেশগুলির মাণায় আগে পড়বে, তাতে গলেহ নেই।

এই বিপদ আজ এমন কি জর্জ কেনানের মত ঝুনো সোভিয়েত-বিরোধী মার্কিণ কৃটনৈতিকও উপলব্ধি করতে পারছেন। তিনি শাস্তিরক্ষার যে পরিকল্পনা দেন, তাতে বলা হয়েছে, পারমাণবিক অল্প আজকের যুগের অল্পল্পের মারণশক্তি এত প্রচণ্ড যে সশল্প শাসানিকে রপ্তের টেক্কা হিসাবে ব্যবহার করতে বাওয়া বাতুলতা। মিঃ কেনান (যিনি মক্ষোর মার্কিণ রাষ্ট্রপৃত হিসাবে কাজ করার সমর গুপুচবর্তির অভিযোগে সোভিয়েত সরকার তাঁকে 'অবাঞ্ছিত যাক্তি' যোষণা করেন) বলছেন যে, বৃহৎ শক্রুরা পশ্চিম ও পূর্ব ইউরোপ থেকে তাঁদের সৈশ্বসামন্ত ও অল্পল্প সরিয়ে নিয়ে গেলে তমু রাজনৈতিক ক্ষেত্রে হই রক্ম সমাজ-ব্যবহার মধ্যে প্রতিযোগিতা চলবে এবং তাতে শাস্তির কোন বিশ্ব হবে না এবং জাতিগুলিও নিশ্চিক্ষ হয়ে বাবার বিপ্রদ গেকে বেহাই পারে।

সোভিয়েত ইউনিয়ন জাজ বছ দিন বাবং ঠিক এই প্রস্তাবই করে জাসছে, অন্তহাসের বৈঠকে এবং জেনেভার পররাষ্ট্র সচিব-সম্মেলনেও এই প্রস্তাবই করেছে। কিছু সে প্রস্তাব প্রাক্ত হয়নি।

বৃটিশ লেবার পার্টির নেতা হিউ গেইট ছেলের প্রভা^{বও} গঠনমূলক। তিনি পূর্ব ও পশ্চিম-জার্মাণী, পোলাও, চেকোলোভাবিরা

ও হাঙ্গারী থেকে চুক্তি করে ক্রমে ক্রমে বিদেশী সৈশ্ব সরিবে নিতে এবং ঐ সব দেশকে পারমাণবিক অন্ত্র দেওসা বন্ধ করতে বঙ্গেছেন এবং পশ্চিম ও পূর্ব-জার্মানীর নাটো ও ওয়ার্স চুক্তি থেকে বার হয়ে এসে একতাবন্ধ হবার প্রস্তাব করেছেন।

পশ্চিম-ভার্মাণ পার্লামেণ্টের সদস্য হের ফ্রেইডার (শাস্তি পরিকল্পনা দেবার অপরাধে বাঁকে দেশ ছাড়তে বাধ্য করা হয়) বে পরিকল্পনা দেন তাতেও জার্মানা থেকে বিদেশী সৈক্তের অপসারণ, কতকগুলি সর্ত্তে পশ্চিম-জার্মানীর নাটো চুক্তি ত্যাগ এবং পশ্চিম-জার্মাণ বাহিনীকে পার্মাণবিক অল্পে সজ্জিত না করা ও বিদেশী সৈক্ত অপসারণের প্রস্তাব ছিল।

ভারতে নিযুক্ত ভূতপূর্ব মার্কিণ দৃত মি: চেষ্টার বোল্সও এই ধরণের পরিকল্পনা দিয়েছেন।

পশ্চিম-জার্মাণীর স্থপরিচিত ভাষ্যকার পল দেখে, কেনান, বোলদ, গেইট স্কেল ও ফ্রেইডানের যুক্তিসঙ্গত পরিকল্পনার প্রশংসা করে দেখিরেছেন যে কৃট্নীতির ইতিহাসে বরাবরই দেখা গিয়েছে কোন জটিল আন্তর্জাতিক সমস্তারই মীমাংসা একসঙ্গে বা রাতারাতি হয় না। শান্তিপূর্ণ আপোর আলোচনার দ্বারা ধাপে ধাপে আংশিক ভারে মীমাংসা হতে হতে শেব প্রস্তু চরম মীমাংসার পৌছানো বার।

আন্তে আন্তে দৈর সরানো, আংশিক ভাবে অস্ত্র হাস করা, প্রথমে পারমাণবিক অন্তুপরীকা বন্ধ করা, নাটো ও ওয়ার্স চুক্তিভুক্ত দেশগুলির মধ্যে অনাক্রমণ চুক্তি করা, সর্বপ্রথমে পশ্চিম-জার্মাণীতে পারমাণবিক অন্ত্র সরবরাহ বন্ধ কবা এবং নির্দিষ্ট এলাকাকে পারমাণবিক অন্ত বর্জিত অঞ্চল হিসাবে স্বীকার করে নেওয়া, এই সব সোভিয়েত প্রস্তাব সারা ছনিয়ার শান্তিরক্ষার কর্তব্যের প্রথম ধাপ মাত্র। কিন্তু পশ্চিমীরা দেই প্রথম ধাপটুকু কিছুতেই এগোতে রাজী নয়, কারণ প্রথম পা বাড়ালেই দিতীয় পা-ও বাড়াতে হবে। জার্মাণ জ্বাবাদ এবং পারমাণবিক অন্ত এই ছটিই আজ মায়ুবের সবচেয়ে বড় বিগদ! জার্মাণ জঙ্গীবাদের অগ্রবর্তী ঘাঁটি বা ব্রেস্তানো-ষ্ট্ৰস-ব্ৰাপ্তৰ ভাষাৰ Front Line City বিষ দাঁত ভেক্সে দেওয়ার (নিরন্ত্রীকৃত মুক্ত নগরী ঘোষণা করা) কত্রাটি তাই আজ প্রথম পালনীয়। পারমাণ্রিক অন্তের সমস্তা মীমাংসা করার প্রথম ধাপ হচ্ছে এ সব অল্তের পরীকা বন্ধ করা এবং অতর্কিত আক্রমণ প্রতিরোধ করা, এই হাট ব্যাপার নিষেই জেনেভায় হটি আলাদা সম্মেলন বসে।

প্রথমে ধরা যাক পারমাণবিক অন্তের প্রশ্ন। সমস্রাটির মীমা সা
যে সোভিয়েত ইউনিয়ন সভিত্তি চায়, তার প্রমাণ দেবার জন্তে সে
একাই পারমাণবিক অন্তর্পনীক্ষা বন্ধ করে সারা ত্রিয়ার সামনে এক
দৃষ্টান্ত রাখে। কিন্ধু সেই দৃষ্টান্ত অমুসরণ করা দূরে যাক, আমেরিকা
প্রশান্ত মহাসাগরে তার পরে আরো বেশী করে পরীক্ষা চালাতে আরন্ধ
করে এবং বৃটেনও বাদ যায়নি। সেই সঙ্গে চলতে থাকে সোভিয়েত
শীমান্তের চার দিকে আমেরিকার বে সব বিদেশী ঘাঁটি আছে সেগুলিতে
আটম ও হাইডোজেন বোমাবাহা বিমানের মহড়া এবং পশ্চিম
ভাষাণীর পারমাণবিক অন্তর্গক্তা। এই অবস্থার সোভিয়েত ইউনিয়নের
শক্ষে একা অন্তর্পরীক্ষা বন্ধ রাখা আর সন্তব ছিল না; কারণ তা
বাধলে পশ্চিমীরা ঐ সব অন্তর্গরীকায় সোভিয়েতের চেরে এগিরে
বাবে এবং এগিরে গেলেই সোভিয়েতকে আক্রমণ করবার চেট্রা করবে।

বার কলে বেধে বাবে মহাযুদ্ধ। সভরাং সোভিয়েতের একা পরীকা বন্ধ বাথা শুধু যে তার পকে বিপ্তজনক তা নয়, সারা ছনিরার পকে বিপজ্জনক। বিশ্বশাস্তি একপক্ষায় চেষ্টার ওপর নির্ভর করে না। কারণ 'শাস্তি অবিভাজ্য।' রাজাজী যথন মি: কুশ্চফকে একাই অন্ত্রপরীকা বন্ধ করার উপদেশ দেন তথন মি: কুশ্চফ ঠিক এই কথাটাই তাঁকে জানিয়েছিলেন।

পারমাণবিক অস্ত্রপরীকা বন্ধ করার অজুহাত পশ্চিমীরা দেবার চেষ্টা করেন নানা ছলে। প্রথমে তাঁবা বলেন, সোভিয়েতের একা বন্ধ করাটা প্রচারের থেলার একটা চাল মাত্র। জ্বাবে বলা বার, বেশ তো তাই যদি হয় তো সেই প্রচারের ব্যাপারে গোভিয়েতের সঙ্গে তাঁদের পালা দিতে আপত্তি কেন? তাঁরা নিজেদের "মুক্ত গণতজ্রের" কথা চাক পিটিয়ে প্রচার করেন, সোভিয়েতের "অমামূহিক" শাসন ব্যবস্থার বিরুদ্ধে এত প্রচার করেন কিন্তু পারমাণবিক অন্তর্পরীকা বন্ধ করে নিজেদের মানব হিতিহালা প্রচার করতে তাঁদের বাধলো কেন? এই প্রচারকার্য করলে পৃথিবীর মান্ত্র্য তেজক্রিরতার বিপদ্ধেকে অন্তর্জ কিছুদিনের মত রেহাই পেতে পারত। তাতে বধন তাঁরা রাজী নন, তথন মনে হয় পারমাণবিক অন্ত ব্যবহারই তাঁদের সামরিক প্রিক্রনার মেক্লপণ্ড।

আর একটি অনুহাত দেওয়া চোল বে, একপন্দীর কাজের কোন অর্থ হয় না। কারণ সেটা আন্তর্জাতিক চুক্তির বারা করা হয়নি। তাহাড়া সতিট্ই পরীক্ষা বন্ধ হোল কি না তা বাচাই করবার কোন উপায় নেই। এই অছিলা ধোপে টে কৈ না, কারণ আমেরিকা ও বটেন বিদি নিজেরা একপক্ষীয় ভাবে পরীক্ষা বন্ধ করত, তাহলে তিন পক্ষ মিলে চুক্তি কররে পথে কোন বাধাই হোত না। আর পরীক্ষা ধরা পড়ার প্রের্ম্ব এইটুকু বললেই যথেষ্ট বে, বে কোন পরীক্ষা আজকাল বন্ধে ধর। পড়ে। পরীক্ষা বন্ধ আছে কি না সেদিকে লক্ষ্য রাধবার জত্তে ১৯৫৭ সালের জুন মাসেই তো কনট্রোল কমিশন গঠন এবং সোভিয়েতে, আমেরিকায়, বুটেনে এবং প্রশান্ত মহাসাগরে কতকগুলি চৌকিদার-কাঁড়ি তৈরী করার প্রস্তাব করা হয়। কিছ্ক সেই প্রস্তাব সেদিন বাঁরা গ্রান্থ করেন নি আজ ঠিক তাঁরাই বলছেন বে একা পরীক্ষা বন্ধ করা কনট্রোল এড়িয়ে বাবার একটা কৌশল মাত্র।

এই মিখ্যেও জাহিব করা হয়েছিল বে, সোভিরেত আামরিকার চেরে বেশি বার পরীক্ষা চালিয়েছে বলে সামরিক ভাবে পরীক্ষা বন্ধ রাখলে তাব কোন অন্মরিধা নেই। পরে জানা গেল বে, আমেরিকাও বৃটেনের পরীক্ষাগুলি এক সঙ্গে যোগ করলে যে সংখ্যা দীড়ার সোভিয়েতের পরীক্ষার সংখ্যা ছিল তার চেয়ে বেশ কিছু কম। অর্থাং পরীক্ষার সংখ্যার দিক থেকে পশ্চিমের চেয়ে পেছিয়ে খেকেও সেনিজের সদিছার পরিচয় দেখার জক্তে একাই পরীক্ষা বন্ধ করেছিল।

শেব পর্বস্ত জেনেভার পারমাণবিক অন্ত্রপরীকা বন্ধ করার বৈঠক আরম্ভ হবার পর প্রায় ৬ মাস কেটে গেল। ৬০।৭০ বার প্রতিনিধিরা এক টেবিলে বসে আলোচনা করলেন। কিছ কোন চুক্তিই আছে পর্যস্ত হোল না। সোভিয়েত পক্ষ প্রথমেই বে থসড়া চুক্তি দাবিল করে, তাতে পরীকা বন্ধ করা এবং সর্ববাদিসম্বতিক্রমে নির্দিষ্ঠ সংখ্যক চৌকিদার-কাঁড়ির সাহায্যে পারমাণবিক শক্তির অধিকারী লেশগুলিতে কট্রোল ব্যবস্থা প্রবর্তন করার প্রস্তাব করা হয়। কিছ তিন সপ্তাহ ধরে পশ্চিমীরা এই বলে টাল্বাহানা করতে লাগালেন বে, অন্ত্রপরীকা

বন্ধ করা বৈঠকের উদ্দেশ্য নর, উদ্দেশ্য ইচ্ছে কণ্ট্রোল ব্যবস্থা সম্পর্কে ব্যাপারটা ঘোডার সামনে গাড়ী ভুতে দেওয়ার আলোচনা করা মত। কারণ, পরীকাই যদি বন্ধ করা না হয় তো কণ্টোল করা হবে কী? ষাই হোক, শেষ পর্যন্ত বর্থন তাঁদের বাধ্য হয়ে মেনে নিতে হোল ৰে বৈঠক বদেছে আসলে অস্ত্ৰপরীকা বন্ধ করার জন্মে, তথন তাঁরা অজুহাত দিলেন যে সোভিয়েত প্রস্তাবে কাৰ্যকরী কণ্টোল ব্যবস্থার ভাল গ্যারাণ্টি নেই। স্থতরাং কণ্টোল ব্যবস্থার সর্বগুলি ঠিক করে সেগুলি অন্ত্রপরীকা বন্ধের চুক্তির মধ্যেই লিখতে ছবে, না হয় আলাদা একটা ক্রোডপত্র হিসাবে ব্দুড়ে দিতে হবে। সোভিয়েত ষ্থন ক্রোড়পত্রের প্রস্তাব মেনে নিল তথন পশ্চিমীরা নিজেদের কথা উড়িয়ে দিয়ে জিদ ধরলেন যে ক্রোড়পত্র নর, চুক্তির মধ্যেই কণ্টোঙ্গ ব্যবস্থাকে স্থান দিতে হবে। সোভিয়েত যখন তা-ও মেনে নিল তথন মার্কিণ সরকার আতংকিত হয়ে পড়লেন। শেষ পর্যন্ত নতুন এক মৃক্তি বার হোল। তাঁরা বললেন, মাটির নিচে পারমাণবিক বিক্লোরণ সহজে ধরার উপায় নেই, বিশেষ করে সেগুলি যদি ছোট ধরণের হয়। স্থভরাং মাটিব নিচে ২০ কিলোটন পর্যস্ত ক্ষমতার বিস্ফোরণ চুক্তির আওতার পড়। উচিত নর অর্থাৎ হিরোশিমা ও নাগাসাকিতে বে মাপের বোমা পড়েছিল সেই মাপ পর্যন্ত পরীকা করা চলবে নির্বিবাদে।

এই দক্ষে মি: আইসেনছাওরার ঘোষণা করলেন যে, অন্ত্রপরীক্ষা বন্ধ করার আগে বিশেষজ্ঞরা একদক্ষে বসে ঠিক করুন কট্রোল ব্যবস্থা কি রকম হওরা উচিত। অর্থাৎ অন্ত্রপরীক্ষা চলতে থাকুক, দেই দক্ষে চলতে থাকুক কট্রোল ব্যবস্থার কচকচানি। কট্রোল নিরে মাতামাতির আসল উদ্দেশু ব্রেও সোভিরেতের মার্কিণ রাষ্ট্রপতির বিশেষজ্ঞ বৈঠকের প্রস্তাব মেনে নিল। সোভিরেতের এই মনোভাবের প্রশংসা করে নিউইরর্ক টাইমস-এর ওয়াশিটেন সংবাদদাতা কেনওরার্দি লিখলেন যে, এবার আমেরিকা ও তার মিত্ররাষ্ট্রগুলির ভাষ্যতেই অন্ত্র-পরীক্ষা বন্ধ করার আলোচনার বসা উচিত।

সোভিরেত বর্থন বিশেষজ্ঞ বৈঠকের প্রস্তাব মেনে নিল তথন পশ্চিমীরা আর একটি সর্ত্ত অর্থাৎ বাধা থাড়া করলেন। তাঁরা বললেন থে সামরিক উদ্দেশ্তে ব্যবহার্ধ কোন পারমাণবিক খনিজ পদার্থ উৎপাদন না করার প্রতিশ্রুতি দিলে তবেই অল্পেরীকা বন্ধ করার কথা উঠতে পারে।

সোজা কথার পশ্চিমীরা প্রস্নাটি এমন জার একটি সমস্রার সঙ্গে গেরে বেঁবে দিলেন, বেটি সহজে মেটবার নর। কারদা কিছু নতুন নর। জেনেভার পরবার্ত্ত্র সচিব-সম্মেলনেও একগাদা সমস্রার বাজিল তাঁরা হাজির করেছিলেন, বাতে কোনটিরই মীমাংসা করা না বার। সেই সজে কণ্টোলের প্রশ্ন নিরে হৈ-চৈ চলতে লাগল। মাটির নিচে ছোট ধরনের বিজ্ঞারণ ধরা না পড়ার অজুহাত নিরে মার্কিণ ধররের কাগজওলো বলতে লাগলো, ঐ-সব বিজ্ঞোরণ ধরা না গেলে পরীক্ষা বন্ধ করার চ্জির কোন পথ হর না। প্রথম কথা, মার্কিণ পরমাণ্ট্রেক্তানিক ডাঃ হাল বেথে বলছেন বে, ১৮০টি কণ্টোল-কাড়ি নিরে বে কণ্টোল ব্যবস্থা থাড়া করবার কথা বলা হয়েছে, তাতে ভ্গর্জের জান-পরীক্ষাও ধরা পড়বে। ছিতীরত, ধরা বদি না-ও পড়ে ভাহলে মাটির নিচে পরীক্ষা চালাবার স্করোগ তো জামেরিকাও পাবে। তবে ছক্তি লা করার কারণ করি। গার্কিণ পারমাণবিক পড়ি

কমিশনের চেরারম্যানের বুংশই ওয়ুন। তিনি গত ২১শে জায়ুরারী বলেন:—"জেনেভার চুক্তি হোক বা না হোক, আমেরিকা তার 'শাস্তিপূর্ণ' পারমাণবিক অন্তপরীকা চালিরে যাবে।"

সেনেটার গোর বলেন যে, "প্রস্তাব মত এশিরার ৩৭টি কন্ট্রোল-কাঁড়ি হবার কথা। প্রত্যেক কাঁড়িতে যদি ১০০ জন করে কর্ম্মচারী থাকে, তাহলে সেই ৩৭০০ লোকের সেই বিরাট অঞ্চলের যে কোন জারগার বাবার ও তদন্ত করবার অধিকার থাকা চাই। সেই অঞ্চলের মধ্যে চীনও থাকবে। আমেরিকা চীনকে স্বীকার করে না বলে অস্ত্র-পরীকা বদ্ধ করা সম্পর্কে সে চীনের সঙ্গে কোন রকম চুক্তি করতে রাজা নয়, একথা বললেই ত সে অস্ত্র-পরীকা বন্ধ করার চুক্তি এড়িরে বেতে পারে।"

এই চুক্তি এড়িয়ে যাবার জঞ্চেই মি: ছারল্ড ষ্টাসেনকে পারমাণবিক জন্ত্র সম্পর্কিত আলোচনা থেকে সরিয়ে নেওয়া হয়। কারণ তাঁর আলোচনায় বোগ দেবার ফলে উভয় পক্ষের মত জনেকটা কাছাকাছি এসেছিল।

আলোচনা যাতে নিক্ষল হয়, সেজন্ম পশ্চিমীয়া অস্ত্ৰপরীকা বন্ধ করার প্রশ্নটি ধামা চাপা দিয়ে কণ্ট্রোলের প্রশ্নটি সামনে তুলে ধরে যথন দেখলেন যে তাতেও বিশেষ স্থবিধা হচ্ছে না, তথন কন্ট্রোলের ব্যাপারটা এমন ভাবে দাঁড় করালেন, যাতে নিজের সার্বভৌম অধিকার অক্ষুণ্ণ রাখতে হলে কোন দেশ সেই ধরণের কণ্ট্রোল মেনে নিতে পারে না। পশ্চিমীরা প্রস্তাব করলেন যে, কণ্টোল কমিশনে সাত জন সদস্ত থাকবে। তাদের তিন জন স্থায়ী সদস্য হবে মার্কিণ, বুটিশ ও ক্ষশ। বাকি চার জন অস্থায়ী সদস্য চুক্তিকারীরা নির্বাচন করে নেবে। সেই সাত জন সদত্যের সাধারণ ভোটাভূটির দ্বারা প্রত্যেকটি কাজের ব্যবস্থা হবে। এই চতুর প্রস্তাবের আসল মানে হচ্ছে, চুক্তিকাৰ্থী তিনটি প্ৰধান বাষ্ট্ৰের মতৈক্যের অর্থাৎ সমতার ভিত্তিতে কাঞ্জ ংবে না এবং সোভিয়েতের একটি ভোটের বিরুদ্ধে ইঙ্গ-মার্কিপদের হু'টি ভোট সব ব্যাপারেই জিতবে এমন কি অস্থায়ী সদস্য নির্বাচন করার বেলাতেও। এই মতলব বুঝেও সোভিয়েত চুক্তির চেষ্টা যাতে সফল হয় সেজকু বললেন বে, কণ্ট্রোলের সবচেয়ে প্রধান বিষয়গুলিতে ত্রি-শক্তির মতৈকোর ভিত্তিত্তে কান্ত করার প্রস্তাব বলি মেনে নেওয়া হয় তাহলে অন্ত ব্যাপারে পশ্চিমীদের মানতে সে বাজী আছে। পশ্চিমীরা তাতে রাজী না হয়ে বুঝিরে দিলেন কণ্ট্রোল কমিশনে সোভিয়েতকে কোণঠাসা করার স্থাবীগ পেলে তবেই তাঁরা চুক্তি করবেন, নাহলে নয়।

কণ্ট্রোল-কাঁড়িতে কারা কাজ করবে ? এই প্রশ্ন সম্পর্কে সোভিয়েত প্রস্তাব করলে যে, প্রত্যেকটি কাঁড়ির রূপ হবে আন্তর্জাতিক অর্থাং যে দেশে কাঁড়ি থাকবে সেই দেশের এবং চুক্তিকারী অক্ত দেশ ছটির থেকে করেকজন করে অভিজ্ঞ লোক নিয়ে প্রত্যেকটি কাঁড়ির কর্মিদল গঠিত হবে । আমেরিকার দাবি হোল বে তা হবে না । কারণ, সোভিয়েত দেশের কাঁড়িতে বদি সোভিয়েত কর্মী থাকে তারা ঠিক মত তদস্ত না-ও করতে পারে । সেই জল্ঞে সোভিয়েত দেশের কাঁড়িওলিতে যে সব কর্মী থাকবে তারা হবে অক্ত দেশের লোক এবং তাদের বেখানে থুসি বাবার অবাধ স্বাধীনতা থাকবে । সোজা কথার সেই কাঁড়িওলিতে নাটোগোটার কিছু দালাল ভর্তি করে সোভিয়েত দেশ সম্পর্কে সমস্ত রক্ষেরে গোণনীর তথা সংগ্রেই করা। এই হচ্ছে আমেরিকার উদ্দেশ্য। স্থতবাং এই বক্ষ প্রস্তাব সোভিয়েতের পক্ষে মানা সম্ভব নয়। এইখানেই শেব নর। সোভিরেতের মতে কণ্টোল কমিশনের অধীনে বে তদস্তকাবী দলগুলি থাকবে, সেগুলির মধ্যেও তিনটি দেশেরই লোক থাকা চাই এবং কমিশনের স্থায়ী সদস্য ডিন জন একমত হলে ডবে সেই দলগুলিকে কোন কিছু তদম্ভ করতে পাঠান চলবে অর্থাৎ তদম্ভকারী দলগুলিকে কণ্টোল কমিশনের অধীনে কাজ করতে হবে এবং কণ্টোল কমিশন ত্রিশক্তির ঐকমত্যের ভিত্তিতে কাজ করবে। তা ছাড়া ভদস্তকারী দলগুলিকে পাকাপাকি ভাবে মোতায়েন রাথার দরকার নেই। দরকার পড়লে সেগুলি গঠন করা হবে। আমেরিকা তাতে রাজী নয়। তার মতে প্রথমত তদস্তকারী দলগুলি বরাবরের মত জেঁকে বসবে এবং কণ্টোল কমিশনের ভ্কুম মত তারা চলবে না। যে দেশে বে দল थाकरव, मिहे मिरनेव कीन लोक मिहे मिल थोकरे भावरव ना। একজন পরিচালক নিযুক্ত করা হবে, বাঁর হুকুম মত দলগুলি বে কোন জায়গার তদস্ত করতে যাবে। এমন কি, পারমাণবিক বিক্টোরণ ঘটছে এমন সন্দের না হলেও। অর্থাং কমিশনের মধ্যে ইঙ্গ-মার্কিণরা দলে ভারী থাকবে এবং তার দরুণ তারা যে সব লোককে পরিচালক নিযুক্ত করবে সাধারণ ভোটের দারা তারা তাদেরই জাঁবেদার। সেই তাঁবেদারের দল গোভিয়েত দেশের কণ্টোল-কাঁডিতে বদে রুশবিবর্জিত তদন্তকারী দলকে দিয়ে বেখানে খুসি এবং যা খুসি পরীকা করাবে এবং সভিত্য মিথ্যে যা খুসি বিবৃতি দেবে। কিন্তু আমেরিকা বা বুটেনের বেলায় তারা মুখ খুলবে না। এই হচ্ছে পশ্চিমীদের কন্ট্রোল প্রস্তাবের স্বরূপ। এই প্রস্তাব সোভিয়েত মেনে নেবে না, নিতে পারে না। সতরাং পশ্চিমীরা আওয়াজ তুলবে আমরা তো চুক্তি করতে চেয়েছিলাম কিছু সোভিয়েত তার বেয়াড়া গোঁ কিছুতেই ছাড়তে রাজী नद । व्यात्माहना मक्त्र ना श्वदाद कत्त्व माजित्यकर मात्री।

নিব্দ্তাকরণের অক্যান্য বিষয়গুলির দিকে লক্ষ্য করলে দেখা বাবে. দৈলবাহিনী ও অন্তৰ্ণন্ত <u>ছাদ ইত্যাদির ব্যাপারেও পশ্চিমীরা একই</u> মনোভাবের পরিচয় দিয়ে আসছে আব্দ ১৩ বছর ধরে। সন্মিলিত জাতিসংখের নির্ম্পীকরণ কমিশন এবং কমিশনের অধীন সাব কমিটাগুলি যুদ্ধ শেষ হবার পর ১৩ বছরে নিরন্তীকরণ সমস্তার মীমাংসার দিকে এক পা এগোন ভো দূরের কথা বরং পদে পদে বাধা স্থাষ্ট করেছে। নির্ম্তীকরণ কমিশনের ভাঁওতাবাজী করা ছাড়া জার কোন উদ্দেশ্য নেই, এটা বুঝতে পেরে সোভিয়েত ইউনিয়ন যথন সেই কমিশন থেকে বার হরে আসে তথন পশ্চিমী মহলে সোরগোল ওঠে বে শোভিয়েত আসলে নিরন্ত্রীকরণ চায় না, ভাই সে সম্পর্কে বাতে কোন চুক্তি হতে না পারে সেজন্মে সে কমিশন থেকে বার হয়ে গেল। বারা ষ্মন্ত্র ভ্যাগের চেয়ে জন্ত্র গ্রহণ বেশি পছন্দ করে, যারা মাতুষ মারার অন্ত্র উংপাদন করে ও বিক্রী করে কোটি কোটি টাকা কামায়, তারা শেই সোভিয়েতের **ঘাড়েই সমস্ত দোব চাপালে বে** সোভিয়েত অপেক্ষাকৃত অৱসংখ্যক পারুমাণবিক পরীক্ষা চালিয়েও একাই পরীক্ষা বন্ধ করেছিল যে তার সশস্ত্র বাহিনী থেকে কয়েক লক্ষ সৈক্ত কমিয়ে ^{দিয়ে} নিজেই হাস্বারী, কুমানিয়া, পূর্ব-জার্মানী ইত্যাদি দেশ থেকে ^{ক্রমশই} কিছু কিছু করে সৈ**ন্ত দেশে ফিবিয়ে নিয়ে যাচ্ছে।** নিরস্ত্রীকরণ ^{কমিশনে} নাটো এবং অক্তান্ত সাময়িক ক্লোটের দেশগুলিরই প্রাধান্ত। শ্ৰক্ষা ৫০ জন সদস্ত সমাজতাত্মিক দেশগুলি থেকে নেওয়া হোক,

এটালবেনিয়ার এই প্রস্তাব অগ্রাছ করা হয়। সোভিয়েত কমিশন থেকে বার হয়ে গেল বলে বারা হা-ছডাল করছেন তাঁলের জিগ্যেস করা বায়:—

প্রথমত তাঁরা বদি সত্যিই অন্তহাস কামনা করেন তাছলে পারমাণবিক অন্ত্রপরীকা বন্ধ করার প্রস্তাব কেন তাঁরা মানলেন না ? তবে কি কমিশনের বাইরে তাঁরা চুক্তি করতে নারাজ এবং সোভিরেড কমিশনের ভিতরে থাকলে তাঁরা চন্দ্রি করতেন ? হয়ত বা তাঁরা 'অবজাৰ্ভার' পত্ৰিকার মতই ভেবেছেন যে "ছনিয়া এখনই তো বিপক্ষনক অবস্থার এসে পড়েছে। কিছু বুটেন ফ্রান্স এবং আরো গোটা পাঁচ-ছব দেশের হাতে যথন অ্যাটম বোমা আসবে তথনকার বিপদের তলনার এখনকার বিপদ সামার ?" মি: ডালেসের ঘোষণা থেকেই আসল কথা काना यादा। जिनि किंदू पिन चारा राजन स विस्वकापन देवहरूप ফলে সারা পৃথিবীর সব জারগায় অস্ত্রপরীকা বন্ধ হবে এমন কোন কথা নেই এবং বৈঠকের সাফল্য পশ্চিমী শক্তিদের পরীকা বন্ধ করতে বাব্য করতে পারে না। নিউ ইয়র্ক টাইমস পত্রিকা মন্তব্য করে: "আইসেনহাওয়ার ও ডালেস মস্কোকে মুখে এবং লিখে জানিয়েছেন ৰে জেনেভার বিশেষজ্ঞ বৈঠকে (বে বৈঠক তাঁরাই ডেকেছেন) পশ্চিমী শক্তিরা যোগ দিছেন বলেই যে আমেরিকা-আটম ও হাইডোজেন বোমা পরীকা নিষিদ্ধ করায় চক্তি করতে প্রতিজ্ঞাবদ্ধ, তা নয়।"

দ্বিতীয়ত পার্মাণ্বিক অন্ত ব্যবহার বাঁদের নেই তাঁরা নিশ্চয়ই অতর্কিত আক্রমণ প্রতিরোধ করার ব্যাপারে চুক্তি করতে নারাজ হবেন না। সেই রকম একটা চুক্তি করার জন্মে জেনেভা সহরেই নভেম্বর ও ডিসেম্বরে দেড় মাস ধবে নাটো ও ওয়াদ চুক্তিব দেশগুলির আলোচনা চলে। তারণর পশ্চিমারা বৈঠক ভেঙ্গে দেন। অতর্কিত আক্রমণের সম্ভাবনা প্রতিরোধ করার প্রস্তাব সোভিয়েতের দিক থেকেই আসে। কারণ সে দেখলে বে পশ্চিমীরা অল্প ছাস বা পার্মাণ্টিক আলু নিবিদ্ধ করতে রাজী নয়। উল্টে জ্যাটম-বোমা-বোঝাই মার্কিণ বিমান বিভিন্ন দেশের মাথার ওপর দিরে উড়ে বেডার। সোভিয়েও পঞ থেকে বলা হোল যে, এই ধরণের ওড়া সবচেয়ে আগে বন্ধ কৰা দরকার। পশ্চিমীরা তা মানতে রাজী হলেন না। সোভিরেড প্রস্তাব করলে বে নাটো ও ওয়ার্স চুক্তির সৈম্ভবাহিনী বেখানে মুখোমুখী দাঁড়িরে সেখানে পূর্ব ও পশ্চিমে ৮০০ কিলোমিটার পর্যন্ত জায়গা হাওয়াই-ফটোগ্রাফি করে বড বড রেলকেন্দ্র, বন্ধর ও সডকে কনটোল-কাড়ি বসিরে, কোথাও বাতে আক্রমণের তোডভোড হতে না পারে সেদিকে সজাগ থেকে সেই সঙ্গে বিপজ্জনক এলাকাগুলিতে বেশি অন্ত্রশন্ত্র ও সৈক্রসামস্ত জমা হতে না দিলে, সেই জায়গাগুলিকে পারমাণবিক অন্তর্মুক্ত এলাকা হিসেবে মেনে নিলে এবং ইউরোপেৰ সমস্ত দেশ থেকে বিদেশী সৈন্মের অস্তত এক-তৃতীরাংশ সরিয়ে নিলে অতর্কিত আক্রমণের সম্ভাবনা বেশ কিছুটা কমে যায়। কিছ পশ্চিমীরা এর একটাতেও রাজী হননি। তাঁরা এই সব বাস্তব কর্ম্বরা এডিয়ে কনটোলের পদ্ধতি নিয়ে কথার ত্বড়ী ফোটাডে লাগলেন। কনটোল বাবস্থা সম্পর্কে তাঁদের আসল মতলবটা যে সোভিয়েতের প্রতিরক্ষা ব্যবস্থার তথা সংগ্রহ করা, সে কথা আগেই বলেছি। সোভিয়েত আন্তর্শহাদেশীয় রকেট নিয়ন্ত্রণ করার प्रिक्टे डाएम्ब (वर्गक एम्बा लाग मक्छाद विभि । बिपेश्व व शावमानिक

আন্তর্টির (war-head) দৌলতে বকেটের মারণশক্তি সেই আন্তর্টি সম্পর্কে বিহিত করতে তাঁরা রাজী হলেন না।

কনটোল বলতে মার্কিণ নেতারা কী বোঝেন, সে সম্পর্কে মার্কিণ প্রোতিনিধি দলের নেতা মি: ফপ্টার বেশ খোলসা করেই বলেছেন; কন্টোল ও তদন্তের মধ্যে দিয়ে প্রতিপক্ষের সামরিক ক্ষমতার খুঁটিনাটি তথ্য জোগাড় করতে পারলে সেই সব তথ্যের ভিত্তিতে প্রেচণ্ড পান্টা আঘাত হানার জল্মে আমরা তৈরি হতে পারব। সেই আঘাতের ভরে কেউ আর যুদ্ধ করতে সাহস পাবে না বলে শাস্তি বজায় থাকবে।

মন্তব্য নিশ্লারোজন! মি: ফণ্টার 'ডেটুরেট এডিসন' পারমাণবিক জান্ত্রোৎপাদন প্রতিষ্ঠানের অধ্যক্ষ। মার্কিণ পত্রিকা 'টাইমস' এর মতে পারমাণবিক অন্ত্রপরীক্ষা ও ব্যবহার বন্ধ হলে যে সব কোম্পানী ঐ সব অন্ত্র তৈরি করার বায়না পেয়েছে তারা মার থাবে বলে 'পেন্টাগণ' বা মার্কিণ সমর দপ্তর পরীক্ষা বন্ধের বিরুদ্ধে। বৃটিশ পত্রিকা 'ইকনমিষ্ট' বলছেন যে পেন্টাগণের হর্তাকর্তাদের পারমাণবিক অন্ত্রোৎপাদক প্রতিষ্ঠানগুলির সঙ্গে ঘনিষ্ঠ সম্পর্ক। প্রমাণ হিসাবে ফ্টার এবং মার্কিণ প্রমাণ্ শক্তি কমিশনের চেয়াবম্যান জন ম্যাকোনের নাম করা যেতে পারে। শুধু এ রাই নন। 'ট্রোক্য উইকলি' পত্রিকায় কর্ণেল বিশ্ববিক্তালরের অধ্যাপক প্ররিয়ার লিখছেন যে বহু মার্কিণ সেনাপত্তিরও পারমাণবিক অন্ত্রের সঙ্গে মধ্যে ব্যবসায়িক স্বার্থ আছে; যেমন সহকারী দেশরক্ষা সচ্চিত্র জনাবেল লোপার এবং প্রমাণ্ কমিশনের সামরিক প্রয়োগ বিভাগে অধ্যক্ষ ব্রিগেডিয়ার জেনাবেল ষ্টার্গর্ড। জেনাবেল ম্যাক্স- ওয়েগ টেলার, জ্যাডমির্যাল বর্গর্ক ইত্যাদি।

এই সব দেখে-শুনে আজ আবার লীগ অফ নেশলের' কথাই
মনে পড়ে। চোথের সামনে আমরা ইতিহাসের এক মারাত্মক
পুনরাবৃত্তি দেখতে পাছি। 'লীগ অফ নেশল'-এ সোভিয়েতের
নিবন্তীকরণের সমস্ত রকমের প্রস্তাব নির্ম্বক বাক্বিতশুরে সমুদ্রে
ভূবিরে দেওরা হয়েছিল এবং আসল সমস্তা এড়িয়ে সমস্ত আলোচনাকে
আজেবাজে ছোটখাটো দিকে, পদ্ধতিমূলক প্রশ্লের দিকে পরিচালিত
করা হরেছিল। আজ বেমন অন্তর্গান, পারমাণবিক অন্ত্রপরীকা

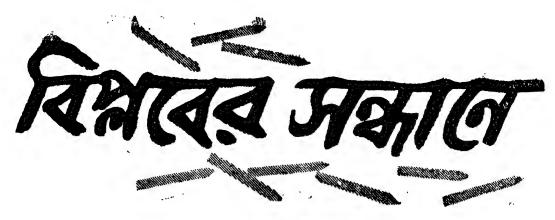
বন্ধ করা ইত্যাদি জক্ষরী প্রশ্ন নানা ছল ও অছিলার এড়িবে গিরে কনটোল ও চৌকিদারীর চরিত্র ও পদ্ধতি নিরে তর্কের স্বৃড়ি পরিবেশন করা হচ্ছে, ঠিক তেমনি লীগ অফ নেশল-এও অন্তত্যাগের প্রশ্ন এড়িরে অন্ত্রশন্ত্রের শ্রেণীবিভাগ করা ও যুদ্দের হাতিরারগুলি লেবরেটরীতে পরীক্ষা করে দেখার হাজারো রকমের প্রস্তাবের আড়ালে যে অন্ত্রসক্ষার হিড়িক লাগানো হয়, তারই পরিণতি দিতীয় মহাযুদ্ধ।

কিন্ত তৃতীয় মহাযুদ্ধ বদি বাধে, তার সর্বনাশা রূপের কাছে দিতীয় মহাযুদ্ধ যে ছেলেখেলা মাত্র সে কথা পরিষ্কার ভাবে বোঝা বাবে—যদি অবশ্য ঠাণ্ডা লড়াই-এর ঝাঁপসা চোখের দৃষ্টি ঝাণ্সা হয়ে না যায়।

একথা কেউ স্বীকার না করে পারবেন নাযে কোন অল্তের উত্তরোত্তর উন্নতিসাধন অর্থাং তার সংহারশক্তি ঝাডাবার জন্মেই সেটি নিমে পরীক্ষা চালানো হয়। জ্বেরের মারণ শক্তি আবো শাণিত করার শেষ লক্ষ্য যে সেই অস্ত্র ব্যবহার করা সে সম্পর্কেও সন্দেহের কোন অবকাশ নেই।। সেই অন্ত ব্যবহার হলে ফল কী হবে সে সম্পর্কে ৭ জন ওলন্দাজ বৈজ্ঞানিক বলছেন যে, একটিমাত্র তাপ-পাবমাণবিক বোমা রটারভাাম থেকে দি হাগ সহর পর্যস্ত সমস্ত জায়গাটা এক মহাশ্রশানে পরিণত করবে এবং সেথানে একটি ঘাসও বেঁচে থাকবে না। এথানেই শেষ নয়। সেই একটি বোমা থেকে তেজক্রিয়তার পরিমাণ দাঁড়াবে ৫·· রণ্টজেন। ১৯৫৬ সালে আইনপ্লাইন পারমাণবিক অল্পের বিরুদ্ধে পৃথিবীর বৈজ্ঞানিকদেব সম্মিলিত হবার জন্মে যে আহবান জানান, তারই ফলে কানাডার পুগওয়াশে এক আন্তর্জাতিক বৈজ্ঞানিক-সম্মেলন হয়। সেই সম্মেলনে জানা যার হিরোশিমায় ৫০ হাজার লোক ভেজক্রিয়তার প্রভাবে ভিক্লে যারা যায়। পারমাণবিক অন্তপরীকা সারা ছনিয়ার মামুখকে শান্তিকালেই ক্যান্সার ও লিউকিমিয়ার কবলের দিকে ঠলে দিচ্ছে। সারা চুনিয়ার আবহাওয়া দুষিত হওয়া ৰদি এই মুহুর্ডে বন্ধ করা না যায় ভাছলে আনাদের যুগের কথা বাদ দিলেও উত্তরকালে এবং উত্তরাধিকার সূত্রে প্রভ্যেক পুরুষে গড়ে १০ লক লোক তেন্দ্ৰস্ক্ৰান্তনিত যোগে অকালে ইহন্তগৎ থেকে বিদায় নেৰে।

সঞ্জিতকুমার চট্টোপাধ্যায়

তথনো ছিল আরক্তিম আকাশ গোধ্নিতে ক্র-ধম্ আঁকা কাজল-কালো সে তার ছই চোখে দেখল চেয়ে, সে-চাওয়া যেন ছড়িয়ে দিতে দিতে মনে, মনের গভারে আরো ! আবার ধীরে ধীরে দৃষ্টি তার চাপার কলি আন্ত্রলে সাদা নথে আনত হল। দোললো হাওয়া কয়টি যেন শাখা গুড়ালো তার চূর্ণ-চূল, আর সে ঝির-ঝিরে স্থান্ডরা মুর্ভটি বইল মনে আঁকা ! তেমনি ক'রে গোধূলি আসে তেমনি ক'বে যার
হাওরার হাতে হরত আজও স্বপ্ন বৃঝি ঝরে
সেথানে সেই নিরালা নীল হুদের কিনারায়;
সে নেই তব্, নীলাভ জলে বে ছায়া চেইনাটে
ছড়িয়ে রাখে সেখানে আজও—তাকে যে মনে পড়ে—
মনে বে পড়ে সে ছায়া শুধু ছিল বে তার-ই চোখেমুতির প্রেমে যে আজ ছবি: লাজুক পারে ইটি
——দুটিনত চাপার কলি আঙ লে সাদা নগে!!



[প্ৰ-একানিতেৰ পৰ] মারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যায়

১৯১৯ সালের শেব ও ২০ সালের প্রথমে যথন আটকবন্দীরা এবং ক্রমণ বাজবন্দীরা অস্তর্ত্তান ও জেল থেকে ফিরে আসতে লাগলো, তথন অনেকেরই অবস্থা হয়েছিল যেন জলে-পড়া। জেলে যা অস্তরাণে তবু একটা "হিল্লে"ছিল, কিন্তু মুক্ত হয়ে আসার পর দেখা গেল, অনেকেরই আপ্রয় বা জীবিকার কোন সম্প্রান নেই—বাটা গিয়ে বসে থাবার অবস্থাও অনেকের নেই, আর নানাকারণে তার অস্তর্বিধাও প্রাচুর। সরকাব থেকে অনেকের ফার্মিলি আলাউয়েল দেওয়া হত,—একজন উপার্জনশীল ব্যক্তিকে বিনাবিচারে আটক রাগলে ফ্রামিলি আলাউয়েল দিতেই হয়,—সে আলাউয়েলও বন্ধ হল। ফলে এই সব মুক্ত দেশকমীদের নিয়ে একটা নতুন সমত্যা দেখা দিল। ২০ সালের শেষ দিকে বহু মুক্ত কমীর এমনি অবস্থা।

এরকম আসন্ন অবস্থা বুঝে দেশের নেতারাও উপিয়, কেউ কেউ কারো কারো জন্মে কিছু চেষ্টাও কবছেন। সরকারও দেখছেন, এদেন জন্মে কিছু না করলে এরা আবার কোন পথ ধবে, কে জানে তাই তাঁদেবও মাথার কিছু মতলব ঘ্রছে। তার ওপর অসহযোগ আন্দোলন একটা আসন্ন রাড়ের মতন এগিয়ে আসছে— ক্ষশান কোনে মাযে উঠেছে, করতিছে গোঁ গোঁ—ওবে, ডিঙ্গা বেঁধে থো।

এই খ্রন্থার সরকাবের পৃষ্ঠপোষকতার এবং Y. M. C. Aর নতা O. R. Raha এবং বি সি চাটোর্জি, এস আর দাশ প্রভৃতি নতারেট নেতাদের নেতৃত্বে মুক্ত বন্দীদের জন্মে ইটালী-বেনেপুকুরের একটা বড় বাড়ী নিয়ে একটা ক্রি নেসের মতন ব্যবস্থা হল। ঢাকা খ্রেনীলন পার্টির একজন নেতৃস্থানার সদ্যমুক্ত রাজবন্দী নলিনীকিশোর উচ্চকে সেখানে বসানো হল প্রিচালক হিসাবে।

ছীবন জেল থেকে মুক্ত হয়ে আসার পর, কার যেন থোঁজ করতে এ মেসে নলিনী বাবুর কাছে গিয়েছিল,—আমিও সঙ্গে গিয়েছিলুম—সেই প্রথম আমি নলিনী বাবুকে চিনলুম,—হয়ত তাঁর মনে নেই।

লেগানে গিয়ে জমতে লাগলো অমুশীলন পার্টির লোকেরাই। মুগাস্থিব পার্টির ছুটকো ২।১ জনও জুটেছিল, কিন্তু ওটা হয়ে উঠেছিল, অমুশীলন পার্টিরই আড্ডা। অব্শু অমুশীলন পার্টিরও ২।১ জন লোক গিনেক যাওয়াটা পছন্দ করেননি।

^{৫ট} আড্ডা থেকেই নলিনা বাবু 'শঋ' নামে সাপ্তাহিক প্রকাশ ^{করেন।} তারপর পুলিন দাসের নেতৃত্বে ওথানেই ভারত-সেবক-সংঘ সংগঠিত ইয়, এবং তার মুখপত্র "হক কথা" প্রকাশিত হয়। উল কথারও সম্পাদক হয়েছিলেন নলিনা বাবুই। অসহযোগ আদেশেনের বিকাদে প্রচারই ছিল এই সংঘ ও পত্রিকার কাছ। এ বিষয়ে পরে অনেক ভিতরকার কথা আসবে।

এথানে আর করেকটা ভিতর্কার কথা বলা দরকার শোধ করছি,
যা আগে দরকার বোধ করিনি। যাতুদা' তাঁর বইয়ে লিখেছেন,
বাংলার মসনদে তিনজন মন্ত্রী জাতিগঠনের বিভাগ নিয়ে দিলাকা
লাজ্য চুষতে লাগলেন।" এই অল্লন্মপূর্ণ মন্তব্য শ্ববেক্সনাথ সংক্ষেও
বলা হয়েছে,—অথচ এই শাসন সংস্কার মেনে নিয়ে নিবাচনে
দাঁঢ়ানোর ব্যবস্থা কংগ্রেস থেকেও হয়েছিল, অসহযোগ প্রস্তাধ পাশ
হওয়ায় যে নিবাচন পবিত্যক্ত হয়।

তা ছাড়া আগে গান্ধীন্ধি নিজে তিলক, আানি বেশান্ত প্রভৃতি কংগ্রেস নেতৃর্দের বিরোধিতা সত্ত্বেও শাসন সংস্কার মেনে নিয়ে তাব সংশোধনের জন্ম চেষ্টা করার পক্ষপাতী ছিলেন।

ষ্ঠানার, তাঁর অসহযোগের প্রস্তাবের মূলও হচ্ছে থিলাকং কমিটির অসহযোগ প্রস্তাব। মৌলানা মহম্মদ আলী খিলাকং স্থান্ত স্থাবিচারের দ্ববাব করতে বিলেতে গ্রিয়ে বার্থ হয়ে ফিনে খালাব পর সেই অসহযোগ প্রস্তাব থিলাফং কমিটির সভায় বচিত ২০। মহাত্মা গান্ধী আগে থেকেই হাওয়া বুনে থিলাফং কনিটাৰ বগু ও পরামর্শদাতার ভূমিকা নিয়ে বিশ্বুর মুসলমান সম্প্রদায়কে ক গেসেব সহযোগিতা দিয়ে বাগ মানাবার মতলব করেছিলেন। ১৯০০ স**া**লব ১৯শে মার্চ থিলাকং কমিটার এক সভায় ভাঁদের ভাষ্ত্রনাগ-প্রস্তাব সম্বন্ধে বকুতায় গান্ধিজা বলেন,—"প্রস্তাবটাতে অতি স্মানজনক ভাবে ও षार्थरीन ভাষায় আন্দোলনেৰ কয়েকটা স্তব নিৰ্দেশ কৰা হয়েছে,—যার শেষ পর্যায়ে হবে সশস্ত বিপ্লব। ভগবান করুন. এদেশকে যেন এমন সশস্ত্র বিপ্লব ও তার আত্বঙ্গিক বিভীষিকার মুখ দেখতে না হয়। কিন্তু খিলাফং প্রশ্ন সম্পর্কে মানুষেব মনোভাব এত তীব্র যে, এ সমস্তার যথোচিত সমাধান না হলে, বা শান্তিপূর্ণ আন্দোলন ব্যর্থ হলে এমন এক সশস্ত্র বিপ্লব আসবে, যা এদেশ কখনো দেখেনি। আমি আশা করি, ক্রোধোমত্ত নির্যাতন দাবা সরকাব সে অবস্থা টেনে আনবেন না।

এই বতুতা থেকে বোঝা যায়, কেন মহাক্সাজী অসহযোগ আন্দোলনের সঙ্গে অহিংসাকে মূলনীতিরপে কুড়ে দিয়েছিলেন,—এবং কেনই বা বেপরোয়া ভাবে ১৯২১ সালের নভেম্বর পর্যস্ত বলেছিলেন। "গ্রা, আমি বিশ্বাস করি এক বছরের মধ্যেই স্বরাজ হবে।"

তাঁর অহিংস অসহযোগের প্রস্তাব ধীরে ধীরে গড়ে উঠেছিল থিলাকং কমিটারই কাজের দারা। ১৯২০ সালের ২২শে জুন থিলাকং কমিটা বড়লাটকে লেখেন,—১লা আগষ্টের মধ্যে তুরম্বের প্রতি স্মবিচারের ব্যবস্থা না হলে তাঁরা অসহযোগের কার্যক্রম স্তর্ক করবেন। গান্ধিজীও বড়লাটকে চিঠি লিখে ব্যাখ্যা করেন,—কেন তিনি থিলাকং কমিটাকে সমর্থন করছেন। ১লা জুলাই আবার গান্ধিজী হিন্দু ও মুসলমান, উভিন্ন সম্প্রদারের তরক থেকে বড়লাটকে ঐ কথা জানিয়ে দেন।

তারপর ১লা আগষ্ট পার হলে হাকিম আজমল থাঁ ঠার সরকারী সন্মান উপাধি বর্জন করেন। ৩১শে আগষ্ট থিলাফং কমিটার অসহযোগ আন্দোলন স্বন্ধ হয়, এবং গান্ধিজী তাঁর কাইজার-ই-হিন্দুপদক বর্জন করেন। সেপ্টেম্বরে কলকাতার কংগেসের বিশেষ আথিবেশনে "অহিংস" অসহযোগ প্রস্তাব গৃহীত হয়। তাতে থিলাফং কমিটার কার্যক্রমের সঙ্গে থাকলো অহিংসা, আর সেটাকে মানানো হল "এক বছরে স্বাজ"-এর "প্রতিশ্রুতি" দিয়ে। যাতৃদা'র বইয়ে "মহাআ্বাজী"র প্রতি ভক্তির অপ্রত্বল নেই।

যাছদা' প্রভৃতি ফেরারী বিপ্লবী নেতাদের মুক্তি সম্পর্কেও স্থরেন্দ্রনাথ এবং গান্ধিজীর তুলনার অবকাশ আছে।

কলিকাতা কংগ্রেসের সময়েই সন্তমুক্ত রাজবন্দী অমরকৃষ্ণ ঘোষ (অতুলদার ভাই) এবং অরুণ গুছ প্রথমে পণ্ডিত নদনমোচন মালবেদের সঙ্গের প্রশাসন করেন এবং তাঁর সাছাধ্য চান। তিনি প্রথমে ঘথেষ্ট আপ্যায়ন করে পরে যথন শুনলেন, দেশারী নেতাদের নামে সরকারের ঘোষণা আছে, ধরে দিতে পারলে ১০১০ হাজার টাকা করে পুরস্কার দেওয়া হবে, তথন ত্রিনি পাশ ফাটালেন।

তার পর তাঁরা গেলেন গান্ধিজীর পরামর্শ নিতে। তিনি পরামর্শ দিলেন, ফেরারীরা যদি তাঁর কাছে অন্ত্রশস্ত্র সমর্পণ করে স্বর্মতীতে থাকতে চান, তিনি তাঁদের গ্রহণ করবেন।

শেষে অমর বাবু এবং অফণ বাবু গেলেন হারেন্দ্রনাথেব বাড়ীতে, ব্যারাকপুরে। তিনি ওঁদের বুকে করে ভড়িয়ে ধরে আধাস দিলেন, এবং সরকারের সঙ্গে কথাবার্ভা ক্ষক করলেন, এবং শেষ প্রযন্ত ভাতেই চন্দননগরে সেক্রেটারী নেলসন ও ডি আই জি আই বি গোভির সঙ্গে অতুলদা'র সাক্ষাতের ব্যবস্থা হল।

ইতিমধ্যে নাগপুর কংগ্রেদে ভূপেক্সকুমার দত্ত এবং কুস্তল চক্রবর্তী গান্ধিজীর সঙ্গে সাক্ষাং করেন, এবং তিনি তাদের বলেন অন্ত্রসহ আত্মসমর্শন করতে।

যাই হোক,—আমরা তথন এ সব কথা ভানতুমও না, আর আন্দোলনে যথন যোগ দিয়েছি এবং এক বছর পরে পুনর্বিবেচনারও কথা আছে, তথন বিশ্বস্তভাবে প্রাণপুণে আন্দোলনের কার্যক্রম নিয়ে খেটে ইলেছি।

জীবন যান্তিগাউ ভাবে গাাধ্বজীর কাছে এক দীর্ঘ পত্র লিখে নিজের সৃশস্ত্র হিপ্পবে বিশ্বাস প্রকাশ করে পরামর্শ চেগ্নেছিল, কি করবে। তিনি স্বহস্তে জবার্ব লিখে দিয়েছিলেন,—অসহযোগ আন্দোলনের কার্যাক্রমের একটা কিছু বেছে নিয়ে একটা বছর কাজ করে যাও । সে চিঠিটা জীবন রেখে দিয়েছিল এবং পরে একদিন সেটা বিশেষ ভাবে কাজেও লেগেছিল। দে কথা যথাসময়ে আসবে।

১৯২১ সালের শেষার্থে সারা দেশে চরকা চলতে স্কুক্ষ করেছে নাটা থদ্দরের নানা রকমের কাপড় তৈরি চলছে কলিকাতা সহরেবও পাড়ায় পাড়ায়,—২।১০ থানা তাঁতও বসে গেছে। টালার ব্যায়ামবীর প্রোফেসর কে, ডি শীল বাইরের ঘরে ছ'থানা তাঁত বসিমেছিলেন। কবি সত্যেন দড়ের বিখ্যাত কবিতা চরকার ঘর্ষর পড়শীর ঘর ঘর টালার পাটুবাবুদের বাড়ীতে বসে তিনি লিথেছিলেন। "জাপান" লেথক স্থরেশদা'র সঙ্গে তিনি টালায় বেতেন। একদিন পাটুবাবু ও তাঁর দাদা ভাত্মদা' একসঙ্গে চরকা কাটতে বসলেন, আর কবি সত্যেন দত্ত কবিতা লিথলেন।

অনেক ছেলে স্থুল কলেজ ছেড়ে বেরিয়েছে,—তাদের জ্বজ্য ক্যাশান্তাল কলৈজ হল, গৌড়ীয় সর্ববিদ্যায়তন (ক্যাশান্তাল ইউনিভার-ফিটা)—সেখানে অধ্যক্ষ করে বসানো হল স্থভাবচন্দ্রকে। কিরণশঙ্কর রায় প্রভৃতি কয়েকজন হলেন প্রোফেসর।

মাথন সেন এবং এক শৈলেন ঘোষ বোধ হয় ছিলেন মানেজমেটে। স্থভাষ বাবু জেলে যাওয়ার পর (২১ সালেই) সেথানে কিছু টাকার গোলমাল ধরা পড়ে এবং শৈলেন ঘোষ উধাও হয়। পরে তিনি ভোটবঙ্গ নামে কাগজ বার করেছিলেন।

ভামস্থলর চক্রবতী সম্পাদনায় সার্ভেট নামে ইংরাজী দৈনিক কাগজ বেরোয়। সরেশ মজুমদারের গৌরাঙ্গ প্রেস প্রাদেশিক কংগ্রেস কমিটার ছাপার কাজ করে কিছু পর্সা পেতো। সেখান থেকে নাগন সেন ও সভোন মজুমদারের সহবোগিতার বেদ্লো আনক্রবাজার পত্রিকা।

সাই হন্ট ও আনন্দবাজার হল পুরোপুরি কংগ্রেসী কাগজ।
মহান্ধাজী এবং অসহযোগ আন্দোলনের প্রচার এবং প্রাসন্ধিক সংবাদই
ছিল কাগজের প্রধান উপজ্ঞীব্য ! মহাত্মাজীর ইয়ং ইণ্ডিয়া কাগজও
বেরিয়েছিল—সে ছিল আন্দোলন পরিচালনের গাইড। পড়ে
ভারিফ করতে হত—চমংকার ! কিন্তু মহাত্মাজীব রাজনীতির
অভিনব, অবিশাশ্র প্রকৃতিও ভাতে প্রকট হত।

দক্ষে সঙ্গে ইউরোপীয়ান অ্যাসোসিয়েশন ও মডারেট দল তাদের কাগজগুলোতে অ্যাণ্টি ননকোপারেশন প্রোপাগ্যাণ্ডা করে চলেছিল। কিন্তু জনগণের মধ্যে তাদের প্রচারের উপযোগী কাগজ, সংস্থা বা কর্মীদল ছিল না। ফলে আন্দোলন বেড়েই চলেছিল, এবং সরকারও ক্রমশ নির্বাতন ব্যবস্থার দিকে ঝুঁকছিল। ফলে আন্দোলন দমার পরিবর্তে আরো জারালো হয়ে চলেছিল।

২১ সালের সেপ্টেম্বর অস্টোবরে গভর্ণমেন্ট সভা বন্ধ করার জন্মে ১৪৪ ধারা জারি করতে স্থক করলে। সে বাধা প্রান্থ না করে সভা করে লোকে গ্রেপ্তার বরণও স্থক করলে। কলেজ স্বোয়ারে এই রকম নিষিদ্ধ সভাও গ্রেপ্তারের একটা চিত্র জামি জাগে লিখেছি, গভ পৌব মাসের বস্থমতীতে।

থদর প্রচারের সঙ্গে সঙ্গে বিলাভী বস্তা বর্মকটের জ্বন্তো শিকেটির এবং ধরপাকড়ও স্থারু হরেছিল। দেশী মিলওরালারা চাদাও দিছিল। ব্যবসারের ক্ষত্রে দেশী মালিকদের স্বার্থের সঙ্গে কংগ্রেসের একটা মিলনও লোকচকুর অগোচরে ধীরে ধীরে গড়ে উঠছিল পরবর্তী বুগে বেটার পরিপতি ছরেছিল দেশী ধনিকদের আর্থের সঙ্গে কংগ্রেসের আর্থের পরিপূর্ণ মিলনে।

পুলিশ পিকেটারদের মারতে ক্লফ করলে সি, আর, দাশ নিজের একমাত্র পুত্র চিররঞ্জন, স্ত্রী বাসস্থী দেবী ও ভগিনী উর্মিলা দেবীকে পিকেটিএে পাঠালেন—পরেদ্ধ ছেলেদের বিপদের মুখে পাঠাবার আগে আপনার প্রিরজনদের পাঠালেন। তাঁরা গ্রেপ্তার হয়ে জেলে গেলেন। আন্দোলন আবো জোর হল।

তখন সরকার ১৪৪ ধারা আমাশ্র করে সভা করার জববৈ দিতে প্রক করলে লাঠি চার্জ করে সভা ভেকে দিয়ে। ফল হল না, মেরেরাও সে সব সভার বজুতা প্রক করলেন। তখন হেমপ্রভা মজুমদার সভার বজুতা দিতে প্রক করেছেন। একদিন এমনি এক সভার লাঠি চার্জ হল, হেমপ্রভার একটা হাত লাঠির ঘারে জ্বথম হল। তিনি ব্যাপ্তেজ্প করা ভালা হাত নিরেই সভার সভার বজুতা করে বেডালেন।

প্রথমে মেরে বক্তা বেশী ছিল না। বৃদ্ধা মহিলা কংগ্রেস নেত্রী মোহিনী দেবী গোড়া থেকেই ছিলেন (ক্যালক্যাটা কেমিক্যাল ওয়ার্কসের অক্তম প্রতিষ্ঠাতা থগেন দাশগুপ্তের জননী—আমরণ একনিষ্ঠ গান্ধীভক্ত) আর ছিলেন বাসন্তী দেবী, উর্মিলা দেবী, জ্যোভিন্মরী গান্ধুলী, হেমপ্রভা মন্ত্রুমদার প্রভৃতি। ক্রমশা নতুন নতুন মেরে-বক্তা তৈরী হছিল।

ভেলও ছিল, যেমন সর্বত্র থাকে। একটি যোয়ান মেয়ে দিনকতকের জল্ঞে ধূমকেতুর মতন উদয় সমেছিল—চমংকার ওজিমিনী ভাষায় উপযুক্ত অঙ্গসঞ্চালন সহযোগে লম্বা বস্তৃতা গড়গড় করে আউড়ে যেতেন। এক লীডারের কক্সা। তাঁার সভায় তিনিই সাধারণত একমাত্র মহিলা বক্তা থাকতেন। তার পিতাও বক্তৃতা করতেন। সভার শেষে চাদর পেতে কংগ্রেস কাণ্ডের জল্ফে অর্থ সংগ্রহত চলতো। একটা কথা বাজারে ক্রমশ চালু হুর্ছেল, মেয়েটি বাপের লেখা বক্তৃতা মুখস্ক করে ঘরে বড় আয়নার সামনে দাঁড়িয়ে বিহাস্বাল দিয়ে তৈরী হয়ে আসে। নামে বাধ হয় স্বর্ণলতা। যাক—

শেষ পর্যান্ত বোধ হয়' ২১ সালের নভেম্বরে গভর্ণমেট কংগ্রেস ভলা টিয়ার দলকে বে আইনী ঘোষণা করলে, এবং ভলা টিয়ারদের লীডাররূপে কংগ্রেস নেতাদেরও গ্রেপ্তার স্তর্ক করলে। সি আর দাশ গ্রেপ্তার হলেন, তাঁর স্থলে একে একে অনেক নেতা বসেন আর গ্রেপ্তার ইন, শেষ পর্যন্ত স্থভাষ বাবুও গ্রেপ্তার হলেন।

এদিকে' ২১ সালের ডিসেম্বর এবং আহমদাবাদ কংগ্রেস এসে গেল। গেলুম আহমদাবাদে। বাংলার ডেলিগেট ক্যাম্পে বেদের পণ্ডিত মোক্ষদা সামাধ্যায়ী প্রমুখ করেকজন স্বরাজ ঘোষণার প্রস্তাব চাই বলে হৈ-চৈ স্থক করেছিলেন। কোথায় স্বরাজ ?

নির্বাচিত সভাপতি সি আর দাশের অমুপস্থিতিতে হাকিম আজমল থাঁ হলেন প্রেসিডেট। মূল প্রস্তাব উপস্থাপিত করলেন স্বয়ং মহাত্মা পান্ধা, কংগ্রেসের সমগ্র ইতিহাসের মধ্যে সব চেরে ছোট মূল প্রস্তাব। জেস ভর্তি করে দিতে হবে, এমন কিং থারা গঠন মূলক কাজ নিয়ে আছেন, দরকার হলে তাঁরাও কাজ ছেড়ে জেলে থাবেন। The battle may be prolonged—এই হল মহাত্মাজীর বক্তবা।

रकत्र सारांनी हत्रमथहो, छिनि मः स्थापनी श्रेखार अस्तिहिस्सन

সম্পূর্ণ স্বাধীনতার আদর্শ গ্রহণ করার, সে প্রস্তার ভোটে টিকসো না।
কংগ্রেসের পাশেই চলছিল মোসলেম লীগের অধিবেশন। হলসং
মোহানীই ছিলেন সে অধিবেশনের সভাপতি। তিনি সেথানেও
ইণ্ডিপেণ্ডেল রেজলিউশন এনে পরাজিত ছলেন। কংগ্রেসের মধ্যেকার
থিলাক্ত ওয়ালারাই সেথানে ছিল সংখ্যাগরিষ্ঠ, কাজেই তারা কংগ্রেসের
লাইনেই চললো। তথন মুসলমানের। কংগ্রেস এবং মোসলেম লীগ,
উভর সংস্থারই সভা হতে পারতো।

এই উপলক্ষে মহাস্মাজী তাঁর ইয়ং ইতিয়া কাগজে বা লিখেছিলেন. সেটা আজও কংগ্রেসের ইতিহাসের পাতা কালো করে **অকর হরে** আছে। তিনি লিখেছিলেন,—"Moulana Hasrat Mohani put up a plucky fight for independence on the Congress Platform and then as president of the Muslim League, and was happily each time defeated. He wants to sever all connections with British People even as partners and equals. and even though the Khilafat question is satisfactorily solved.....It is Common cause that if the Khilafat question cannot be solved without complete independence....there is nothing left for us to do but insist on independence.....But assuming that Great Britain alter her attitude, as I know she will when India is strong, it will be religiously unlawful for us to insist on independence."

অর্থাং মোলান। হজরং মোহানী কংগ্রেস এবং মোসলেম লীগের সভাপতিরপে স্বাধীনতার প্রস্তাব তুলে রীতিমত লড়াই করেছিলেন, কিন্তু সথের বিষয়, তিনি হু'জারগাতেই পরাজিত হয়েছেন। তিনি বৃটিশের সঙ্গে সর্বক্রার সম্পর্ক ছিন্ন করতে চান. এমন কি সমান অংশীদার হিসাবেও, এবং থিলাফং সমস্তার ক্রায্য সমাধান হলেও। অবস্তু সম্পূর্ণ স্বাধীনতা ভিন্ন যদি থিলাফং সমস্তার সমাধান না হয়, তাহলে স্বাধীনতার দাবী করা ছাড়া আমাদের আর উপার নেই। কিন্তু বৃটেন যদি তার বর্তমান মনোভাবের পরিবর্তন করে, আমি জানি, ভারত শক্তিশালী হলে তারা তা' করবেই, তাহলেও স্বাধীনতার জক্ত পীড়াপীড়ি করাটা আমাদের পক্ষে একটা ধর্মবিক্রম্ক কাক্ত হবে।

স্বরাজ যে স্বাধীনতা নয়, অসহযোগ আন্দোলন বে স্বাধীনতার সংগ্রাম নয়, তার আরো অনেক প্রমাণ ইতিপূর্বেই পাওয়া গিয়েছিল। নাগপুরের কংগ্রেমের পর থেকেই লোকে ক্রিক্রাসা করতে স্কর্ক করেছিল, স্বরাজ কথাটার সঠিক অর্থ কি? মহাস্থা জবাব দিয়েছিলেন, যথন স্বরাজ পাওয়ার সময় আসতে, তথন ভারতবাসীই সেটা স্থির করবে, আমি নয়। কিন্তু স্বরাজের ব্যাখ্যার দাবী নিস্তব্ধ হচ্ছিল না। বোখাইয়ে পার্শী এসোসিয়েশনে বস্তুতা কালে মহাত্মাজী বললেন,—তিনি নিজে সম্ভন্ত হতেন ডোমিনিয়ন স্থাটাস পেলেই। অসহযোগের বিরোধীরা প্রচার চালাচ্ছিল, আন্দোলনটা অবৈধ। তার জবাবে মান্তাজ মেলের প্রতিনিধির কাছে তিনি বললেন,—"I do not consider non-cooperation to be unconstitutional, but I do

believe that of all the constitutional remedies now left open to us, non-cooperation is the only one left for us." অর্থাৎ আমি অসহবোগ আন্দোলনকে অবৈধ মনে করি,—অক্তারের প্রতিকার আদার করার সর্বপ্রকার বৈধ উপারের মধ্যে এই একটা মাত্র উপায়ই আমাদের হাতে অবশিষ্ট আছে।

গভর্ণমেণ্ট কেন কংগ্রেসকে বে-আইনী বলে ঘোষণা করছে না.ল
া কথাব উত্তরে পার্লামেণ্টে কর্নেল ওয়েজউড বলেছিলেন যে,

মংগ্রেসের স্বভাক্তর অর্থ স্বারন্ত্রশাবন, স্মুত্রাং কংগ্রেসে বে-আইনা
ক্রিবার কোন কাবণ নেই।

থানক জনিদার-শিব্রপতিও মে জন্মধানা আন্দোলনে মোগ দিয়ে ছিন্য, ভার কারণত এই। তাগতের ভুলার ব্যবদায়ের রাজা দন্ত্রনাদাল বাজাভ ছিলেন কংগ্রেদের ভিজাক জরাজা তাওাবের পোলাক, গভায়ালীর পরম ভজা। তিনি ওয়ার্গ কটনের একচেটিরা কাবনারী হয়ে উঠেছিলেন কঠেন্স-চরকা-মন্দরের দৌলতে। কংগ্রেস ওয়ার্গ ভুলা সপ্তক্ষে অপারিশ করেছিল, সারা ভারতে গ্রামাঞ্চলের কোনান কোনার পর্যান্ত থক্ষর উৎপাদন কেল্পে কেল্পে ওয়ার্ব ভুলা বিক্রি হত্ত,—দর ছু টাকা সের পর্যন্ত উঠেছিল। বাজাজ কোটির অফে টাকা রোজগার করে লাথের অফে কংগ্রেসকে চালা দিয়েছিলেন। জ্ঞাশালাল এছকেশনের পাশ কাটিয়ে তিনি নিজের ছেলেকে পড়তে পাঠিয়েছিলেন বিলেতে।

আমরা এসব লক্ষ্য করেও একটা লড়াই চলছে এবং এগোচছে দেখে প্রাণপণে থেটে চলেছিলুম। অন্ধ বস্তু, শিক্ষা, মামলা-মোকদ্দমা প্রভৃতি ব্যাপারে সরকারী সাহায্য বর্জন করে, নিজেরাই নি.জদের ব্যবস্থা গড়ে তুলতে পারলে সরকারকে থাজনা-টেক্স দেওয়ার কোন যৌক্তিকতা বা দায়িছ থাকবে না,—এবং তথন থাজনা বন্ধ করা হবে, এই ভাবে একটা State within State গড়ে তোলা হবে, এ ধরণের প্রতারও চলছিল, কাজেই থেটে যাওয়ার একটা প্রেরণার বর্জনান ছিল।

ইতিমধ্যে আর একটা বৃহৎ ব্যাপার ঘটে গিয়েছিল, বলা হয়নি।
আসহযোগ আন্দোলনের প্রথম জায়ারের মুথে আসামের চা-বাগানের
চিন-নিলাতিত কুলারা ধর্মঘট করে একঘোগে,—এবং মালিকেরা
তাদের ঘরছাড়া করে তাড়িয়ে দেয়। তাদের প্রতি সহামুভূতি
প্রদশন হিসাবে আসাম বেঙ্গল রেলওয়ের কর্মীরাও ধর্মঘট করে,—
শেষ পর্গন্ত যে বর্মঘট বিস্তৃত হয় গোয়ালন্দ, চাদপুর প্রভৃতি স্টিমার
কর্মাদের মধ্যেও। ফলে বেল ও স্টামার চলাচল লক্ষ হয়, এবং
চা-কুলার দল পদরক্ষে বাড়ীমুখো যাত্রা স্মুক্ত করে। পথে তাদের
বিশ্রান ও পাওয়াদাওয়ার ব্যবস্থার জন্ম স্থানীয় কংগ্রেদের নেতৃত্বে
জনসাবারণ স্থানে স্থানে লক্ষরখানা স্থাপন করে। এক এক স্থানে
হাজার হাজার কুলা জমে যায়, একটা প্রকাশ্ত সমস্যা দেখা
দেয়। সভাবতই প্রাদেশিক কংগ্রেদে কমিটাতে টেলিগ্রাম আসতে
থাকে।

সি আর দাশ স্বচক্ষে অবস্থা পরিদর্শনের জ্বজ্ঞে রওনা হন, এবং গোরালনে পৌছে দেখেন ষ্টিমার বন্ধ। বর্ধার পদ্মা-মেঘনা সমুদ্রের জাকাব ধাবণ করেছে। সেই অবস্থায় তিনি নৌকায় পাড়ি দিলেন গোরালক থেকে চালপুরে—কারো নিষেধ মানলেন না। ধর্মটী ও

সাধারণ জনগণের সাহস ও উৎসাহ কতথানি রেড়ে গেল, তা সহজেই প্রমুমের।

ওদিকে চট্টগ্রামে যতীক্রমোহন সেনগুপ্ত ব্যারিষ্টান্তী ছেড়ে কংগ্রেসের হাল ধরেছেন। তাঁর স্ত্রী বিলাতের মেয়ে নেলী সেনগুপ্তা বিলাতী কাপড়ের দোকানে পিকেটিং করে গ্রেপ্তার হয়েছেন, জেলে গেছেন। ধর্মঘটের জজ্ঞেও দেনগুপ্তের প্রায় ৫০ হাজার টাকা থবচ হয়ে যায়। পরে সেনগুপ্ত ও নেলী কলকাভায় চলে আসেন, এবং তাঁদের কলকাভার লোক এক বিশাট প্রোলেশন করে ছড়ার্থনা করে। এই মর ঘটনার ফলে ডালেশননের ছোর বেড়েই চলেছিল।

কংগ্রেসের ভাৰবভার মধ্যে বিপ্লবী বিবেককে বাঁচিয়ে রাখার জতে বিপ্লবীরা নানা স্থানে আত্রম প্রতিষ্ঠা করেছিল,—মাঝে মাথে উৎসব উপলকে সেথানে বিপ্লবীদের জনাহেছে ছড়,—জানীহভাবে বিপ্লবীদের জনাহেছে ছড়,—জানীহভাবে বিপ্লবীদের জনাহেছে ছড়,—জানীহভাবে বিপ্লবীদের চলতো। আছ্মদাবাদ কংগ্রেসের পর '২২ সালের ফেক্স্মাবীতে কি মাতে লোলের দিনে বোধ হয়, ভারমণ্ড হারবাবের কাছে আবদালপুরে গলার কাছেই এক আত্রম প্রভিষ্ঠা হয়, এবং সেথানে বদানো হয় রসিক দাদকে, যিনি ৩০ সালে ভ্যালহাউসা কোরার বোমার মামলায় দ্বীপান্তর দণ্ডলাভ করেন এবং আন্দামানে নির্বাসিত হন।

আশ্রম প্রতিষ্ঠার দিন নেতৃত্ব কবেন মনোরজন দা' (মনোরজন ভপ্ত—বর্তমানে পশ্চিমবঙ্গের এম-এল-দি)—এবং আমার রচিত একথানা গান গেয়ে গ্রাম প্রদক্ষিণ করা হয়। গানটা এই:

আজ হোলীর রাঙা উৎসবে
উঠলো মেতে রক্ত-পাগল প্রাণ
তোরা আয় সবে
ফাগুনের এই রঙীন গানে
ভাগলো সাড়া বনে, মনে
ভকনো ডালে ফুটলো রে ফুল
নবীন শোভা সৌরভে।
আনন্দের এই পাগলা ঝোরা
ভাসিরে দিল সকল ধরা
বাধন ছিঁড়ে কাদন ছেড়ে
উল্লাসে আয়, আয় সবে
থ্নথারাপীর রক্ত স্থরে
বিশ্বটারে রাভিয়ে দে রে
ঘর ছেড়ে আজ আয় বাহিরে

অবাধ পানে চলবি কে।

আবদানপুরে নানা দিক দিয়ে অবস্থা এমন প্রতিকৃল ছিল বে, আর কেউ গিয়ে সেথানে থাকতে পারতো না। অর্থাৎ আন্দামানে নির্বাসিত হওরার আগে রসিক দাসের প্রকৃতপক্ষে বছর সাত-আট আবদানপুরে নির্বাসিতের জীবনই যাপন করা হয়ে গিয়েছিল।

আহমদাবাদ কংগ্রেসের পর "জেলে ভর্ত্তি করে দাও" হল প্রধান কর্মসূচী। সর্বত্র সভা এবং ধরপাকড়, পিকেটিং এবং ধরপাকড় জনেক বেড়ে গেল এবং জেলে ভর্ত্তি হতে দেরী লাগলো না। জেলের কর্মচারীরা সভ্যাগ্রহীদের ভিড়ে এবং ছল্লোড়ে উদ্বান্ত হওয়ার জোগাড়। সরকার বাহাছর খিদিরপুর মেটিয়াবুক্কজে বড় বড় গুদামে নির্মে সভ্যাগ্রহীদের পুরতে লাগলো। সভায় লাঠি চার্ক্ত করে কর্ত্তর্প লোককে ভাড়িরে ভূড়িরে বাকি লোকদের ধরে নিরে বার. এবং অনেক দ্রে নিরে গিরে ছেড়ে দের। রক্তবীকের ঝাড় নির্মূল ছর না, আবার দেখা দেয়।

এক দিকে এই অবস্থা, জার দিকে থাজনা বন্ধের মংলব পেকে উঠছে। ইউরোপীয়ান আাসোসিংমুলন প্রাণ্টি-ননকোমপারেশন প্রোপোগ্যাণ্ডার জন্মে টাকা ঢেলেও কুল পাছে না। পশ্তিত ঘলনযোহন মালবা এই সময় দ্বকাবের সক্ষে কংগ্রেসের একটা আপোন ঘটাবার চেটাম মহাত্মান্ডার কাছে এক রাউণ্ড টেনল জনফারেশের প্রস্তার জিরে এলেন। কংগ্রেস নেহাদের বিভিন্ন ভেল থেকে এক সেকিড আলী জেলে ছড়ো করার স্বকাব রাজী ছল। মহম্ম আলী, তথ্ন করাটাতে এক থিলাকাং দ্রুয়ার রাজন্মেছকর ক্রুতা ও প্রস্তার পাল করে কার্যান্ড ভোগ করেছিলেন। মহাত্মান্ত্রী ম্বলনে, ভাঁলের সভার জানতে ছবে। সরকাব রাজী হল না। জাপোর প্রস্তার ঝেলে গেল। সি আর দাল টালেন।

কংগ্রেদের থেকে নির্দেশ দেওরা হয়েছিল সারা দেশে সর্বিত্র সভা করে ঐ করাচী প্রস্তাব পাশ করতে হরে। মালারীপুরের বিপ্লবীনেতা পূর্ণ দাশ ঐ করাচী প্রস্তাব পাশ করিয়ে ভিন বছর কারদণ্ড পেরেছিলেন। অনেক দান কাজটা সমর্থন করেননি। কিন্তু পূর্ণ দাশ বলেন জেলে অসংখ্য নতুন করুন জোয়ান ছেলের ভিতৃ,—রিকুটি য়ের বিরাট ফিন্ত। বাইরে থাকার চেরে কাজ বেশীই হবে। তথন দাদারা পূর্ণ দাশের "ঘ্যত্ব" আর একবার নতুন করে আাপ্রিসিয়েট করলেন। ইতি পূর্বেই পূর্ণ দাশ এক "শান্তি সেনাদল" গঠন করে' কংগ্রেসের নামের আঢ়ালে নিজস্ব এক সংগঠন খাড়া করে ফেলেছিলেন—ভারা স্বদেশী গান গোসে সারা জেলার গ্রামে গ্রামে কট-নার্চ করে ফিবতো।

ঢাকার অনুশীলন পার্টি প্রথমে অসহযোগ আন্দোলনের বিক্রছে প্রচারের জন্মে ত্রাদের কথা চলে, বৈপ্লবিক প্রগতির মুখে এই গান্ধীবাদ দেশটাকে ক্লীবে পরিণত করবে নতুন করে। কিন্তু তথু এই নতিবাচক প্রচারের জোরেই বৈপ্লবিক সংগঠনের বাস্তব কাজ চলে না। সপত্রী-প্রতিম যুগান্তর দল গান্ধী এবং কংগ্রেসের নামের জোরে সারা দেশে গ্রামে গ্রামে ছড়িয়ে পড়েছে, টাকারও অভাব নেই, কংগ্রেসের স্থানীয় ফাণ্ডও তাদের হাতেই সর্বত্র কংগ্রেসে কমিটী করে নিজেদের লোক বসাছে, ধীরে অথচ নিরবচ্ছিন্নভাবে দলের রিক্রটিং-এর কাজও চলেছে। এ অবস্থার সঙ্গে পাল্লা দেওয়া অসম্ভব। মন তাদের আরে বিবিয়ে উঠতে লাগলো যুগান্তব পার্টির ওপর।

এই অবস্থার প্লিন দাদের সঙ্গে এস আর দাশের বন্দোবস্ত হল, তাঁর সঙ্গে (তিনি তথন আডিভোকেট জেনারেল) ইউরোপীয়ান আাসোসিয়েশনের বন্দোবস্ত হল, তারা প্রচুর টাকা ছাড়তে লাগলো, সে টাকা এস আর দাশের মারক্ষং প্লিন দাদের হাতে আসতে লাগলো, ভারত-দেবক-সংঘ গঠিত হল, মুখপত্র হক কথা সারা দেশে ছড়াবার ব্যবস্থা হল, সর্বত্র ভারত-দেবক-সংঘের প্রচারকেল গড়া হতে লাগলো সর্বত্র স্থানীয় কংগ্রেদের এবং যুগাস্তরদলের কর্মীদের সঙ্গেও তাদের চাপা টোকাঠুকিও চলতে লাগলো। কিছু গাছী, কংগ্রেস, যুগাস্তর দল এবং আন্দোলনের ভাবাবেগের বিরুদ্ধে লড়াইয়ে স্বভারতই ভারা হ'টে বেতে লাগলো। যুগাস্তর দলের বিশেষ কর্মী হল তাদের স্কুশুল।

ষাই ছোক, '২২ সালের গোড়ার দিকেই ১৪৪ ধারা ভক করে সভা করে গ্রেপ্তার হওয়া মুলীগঞ্জেও (বিক্রমপুর) চলছিল। একদিন এমনি এক সভার মুলীগঞ্জ লাশালাল কুলের প্রথম তিন শ্রেণীর ২৭ জন ছাত্র, ৪জন শিক্ষক, এবং শেষ পর্যস্ত "বড়দি" (মূলীগঞ্জের সরকারী উকীল উমাচরণ সেনের বড় মেয়ে, রেণু সেনের বা) একে একে নিবিছ সভায় বজুতা করে গ্রেপ্তার হলে জীবন আমাকে টেলিগ্রাম করলে—অবিলয়ে চলে এসো। আমিও তবিলগ্রেই মুক্তিগ্রাভ চলে গেলুফ, সংসার্থ্য শিক্ষে উঠলো। একটু হাত্রা সোব করেল্লা।

মূলীগঞ্জের অভিজ্ঞত। আমার রাজনৈতিক প্রাসনে এক মন্তাব্লাবান এবং বিচিত্র অভিজ্ঞতা। বস্তুত, দেখাসকার প্রার সকল কর্মীরট জীবন সে সম্ব ছিল নিভাস্কট রাজনৈতিক প্রীনন। ২।৪ জন বিরাছিত, এবং বে ২।৪ জনের পরিবাবের সজে কোন সম্পর্ক ছিল, সে সম্পর্কটা বেন নিভাস্কট গোণ—একবার দ্যা কবে ভাত খেবে আসা মাত্র। অধিকাংশেনট অবস্থা ভোক্তনং বত্র ভত্ত শালনং ইট্রা মন্সিরে। দিনবাত ভ্তের মত খাটুনী।

এক মাইলটাক লখা এবং আধমাইলটাক চওছ। মুজীগঞ্জ সছর, তার মধ্যে আছে সাব-ডিভিস্ফাল হেড কোয়াটার, আদাসত, থানা জেলখানা, পোষ্ট অফিস, উকীল মোক্তার সবকাবী কর্মচাবাদের বাসা, একটা বাজার, কালীবাড়ী, মসজিদ,—আব ছটো ছাই স্কুল, মেরেদের স্কুল প্রভৃতি।

আন্দোলনের প্রথমে একটা মাত্র ছাই স্কুল ছিল, এবং সেটাই ভেক্তে হ্যেছিল কাশন্তাল স্কুল,—পরে আবার হাই স্কুলটাও পুনর্গঠিত হয়—হাই স্কুলে ২০০ ছাত্র, কাশন্তাল স্কুলে ২৫০। এই বন্ধম কাশকাল স্কুল—হাই স্কুল ষ্টাণ্ডোরে—এ এক সাব-ডিভিশনে ১৭টা!

কালীবাড়ীর সামনের প্রকাণ্ড টিনের চালাঘরে হরেছে ক্যাশকাল
কুল, বাজারের পিছনে আর একটা প্রকাণ্ড টিনের ঘরে করেকটা
তাঁত বসেছে, সেখানে ছেলেরা তাঁত বোনা শেখে,—বাস্তার ধারে
আর একটা ঘরে কংগ্রেস অফিস। কংগ্রেসের ফাণ্ড প্রধানত মৃষ্টিভিক্ষা—
সকল বাড়ী থেকে নিয়মিতভাবে আদায় হয়। স্কুলের ছারবেতনও
নিয়মিত ভাবে আদায় হয়—ফ্রি-হাফফ্রি ছাত্রও অনেক আছে।
কুলের আয় যথেষ্ট নয়।

বতীন দত্ত হেড মাষ্টার বোধ হয় ৪০টি টাকা পেতেন সর্বোচ্চ বেতন। পরেশ সেন শক্তরবাড়ীতেই (উমাচরণ সেনের বাড়ী) থাকতেন এব ছুল থেকে পেতেন ৩০টি টাকা। জীবনও টিচার—তাঁব বাড়ীর ক্রেলে দেওরা হত ২০টি টাকা। জাবাণ গানাজি আগে এক জেলাবোর্ডের সেনিটারী ইন্সপেউর ছিলেন,—তিনি তাঁর কাকা গিরীক্র বানার্জির বাড়া থাকতেন, ছুল থেকে নিতেন মাত্র ৮টিটাকা। অক্যাক্স টিচার এবং এক পণ্ডিত ও এক মৌলবী ২০, ১৫, ১২, ১০—এমনি পেতেন। উমাচরণ বাব্ব এক ছেলে স্করবিন্দ্র লাশা করে বসেছিলেন—তিনি ছিলেন এক অনারারী রিলিভিং টিচার—মাসের মধ্যে ১৫।২০ দিন তাঁকে টিচারী করতে হত।

পরেশ সেন ছিলেন কাগ্রেসের থানা অফিসার—অর্থাং মুজীগঞ্চ থানা এলাকার যতগুলো লোক্যাল কংগ্রেস কমিটা ছিল, তিনি সেগুলোর তদ্বির করতেন, অর্থাং প্রয়োজনীর সাহায় দেওরার ব্যবস্থা করতেন। প্রথমে আমাকে সেই পদ দেওরা হল। জীবনদের গ্রাম পঞ্চারে যতীন দত্তের বাড়ীতে বাইরের ঘরে ছিল গ্রামের কংগ্রেস

আফিল। আমি প্রথম দিনকতক সেইখামে থাকতুম, বতীন দত্তের বাড়ীতেই থেতুম। সভা হত জিওচতসার মাঠে।

জীবন মুলীগঞ্জেই ষত্র জত্র থাকজো,—এক একদিন প্রামে এনে ভডো আমার কাছেই—বতীন দত্তের বাইরের ঘরে। সারারাভ চলতো জল্লনা-কল্পনা ও জর্জ-বিভর্ক। সেইথানেই সে গান্ধীকে দ্যতিকারের থাটমল খিলানেওয়ালা, অহিংসাপত্নী, নিপ্পব-বিরোধী বলে আমার প্রোণে ব্যথা দিয়েছিল। আমি তথনও থাজনাবদ্ধ ও খরাজের বৈপ্পবিক প্রিণতি কল্পনা করে তথ্য পেত্ম। বস্তুত "এক বছরে খরাজ" ব্যর্থ ছল দেখে দাদারা কংগ্রেমের ভেতরে থেকেই কংগ্রেমকে বিপ্লবের পথে টেনে নিরে যাওয়ার প্ল্যান নিয়েই

ৰাই হোক, কিছুদিন পরেই বক্সযোগিনী থেকে ভাশান্তাল ছলের সেক্টোরী পূর্ণ গুহু, ছেড্ডমান্তার রমানাথ মিত্র এবং টিচার ও কংগ্রেসের সেক্টোরী ফ্লী বাবু গ্রেপ্তার হরে মুলীগঞ্জে এসে থবর দিলেন,—সেথানে সেক্টোরী হবার মতন লোক পাওয়া বাচ্ছে না, মুলীগঞ্জ থেকে একজন লোক অবিলব্দে পাঠানো দরকার।

মুন্দীগঞ্জ থানার অন্তর্গত প্রাচীন ইতিহাসে বিখ্যাত এক গওগ্রাম এই বক্সযোগিনী। তিব্বতে বৌদ্ধর্ম-প্রচারের জ্বতো যে বাঙ্গালী পণ্ডিত দীপঙ্কর জীজান ইতিহাসে বিখ্যাত, তিনি জন্মছিলেন এই বক্সযোগিনী গ্রামেই। মুন্দীগঞ্জ থেকে মাইল পাঁচেক দূর—ইতিহাস-বিখ্যাত রামপাল গ্রামের মধ্য দিয়ে যেতে হয়—রামপাল দীঘির পাশ ঘূরে। দীঘি এখন মজে জ্ঞাল হয়ে গেছে।

সেখানে কংগ্রেস সেক্রেটারী করে পাঠানো হল আমাকে। বাবাব সময় স্থানীয় রাজনীতি একটু বৃঝিয়ে দেওয়া হল। পর পর করেকজন সেক্রেটারী গ্রেপ্তার হয়ে জেলে গেছে। ময়মনিদং-এর কংগ্রেস নেতা ও উকীল স্থা সোমের বাড়ী এই ব্জুযোগিনী গ্রামে, তিনি গ্রামের কংগ্রেসেরও একটু খবরাখবর করে থাকেন। তাঁর ছেলে শিশির সোমও সেক্রেটারী হয়ে জেলে গেছেন। তাঁর পর আর একজন কংগ্রেস কর্মী কালীজীবন ঘোষ সেক্রেটারী হয়ে জেলে গেছেন। তাঁর পরে ভাশভাল স্কুলের টিচার ফণা বাবু সেক্রেটারী হয়েছিলেন। ভাশভাল স্কুলই এখন কংগ্রেসের প্রধান ঘাঁটা।

ছিল হাই স্কুল, সেটাই হল ক্যাশকাল স্কুল, ছাত্রসংখ্যা ২০০র মতন। জমিদার রায়বাহাছর অনারারী ন্যাভিট্রেট রমেশ গুহ ছিলেন সেকেটারী—তিনি বাবা দেন নি। কিন্তু তাঁর জ্ঞাতি পূর্ণ গুহের সঙ্গে ছিল তাঁর বহুকালের মামলা মোকদমা। সেই পূর্ণ গুহ ক্যাশকাল স্কুলের সেকেটারী হয়ে কংগ্রেস কমিটার সাহায্যে রমেশ গুহকে নানা ভাবে জব্দ করার চেষ্টা করেন। রমেশ বাবুর মূলীগঞ্জে আসা বন্ধ হয়েছে ভূলির অভাবে, পূর্ণ বাবুর ব্যবস্থায়। রমেশ বাবুর একটা পা একটু ছোট, ব্র্ডিরে হাটেন, গ্রেট মূলীগঞ্জে আসতে পারেন না। পূর্ণ বাবু তাঁকে বেশ জব্দই করেছেন।

হাটে একটা ঘরে কংগ্রেস অফিস, অফিসের বাইরে একটা বড় বোর্ডে রোজকার সংবাদপত্রের থবর, কংগ্রেস সংক্রান্ত থবর সংক্রেপে হাতে লিখে সেঁটে দেওয়া হয়—সাধারণ লোক ভিড় করে পড়ে যায়।

আমি গিয়ে কংগ্রেস অফিসে উঠলুম, থাওয়ার ব্যবস্থা হল কাশাকাল স্থলের পণ্ডিত মশায়ের সঙ্গে। তিনি রেঁথে থেডেন। সর্বন্ধণের ভলাণ্টিয়ার কর্মী চক্রভূষণ, ডাকর্নাম গোরা, অমাবছার নিশির চেরে কালো, সভ্যিকারের কর্মী। ভোরে দৌড়তে দৌড়তে পাঁচ মাইল দ্বে মিরকাদিম স্তীমার ঘাট থেকে থবরের কাগজ এনে বাড়ী বাড়ী বিলি করে, রালা থাওয়ার ব্যবস্থা করে পশুতে মশারের সচ্ছেই খায়, এবং সারাদিন কংগ্রেসের তরফ থেকে সর্বপ্রকার লোককে ধ্যক্ষামক দিরে কংগ্রেসের কাজ করে।

আমি গিরেই চক্রভ্যণের সাহার্য্যে একথানা প্রকাশু নোটিশ লিথে বোর্ডে সেঁটে দিলুম—আমি অমুক, মুখ্নীগঞ্জ থেকে বক্সযোগিনীর কংগ্রেসের ভার নিরে এসেছি—আমি শুনলুম, কোন কোন কংগ্রেস কন্মী কংগ্রেস সংগঠনকে তাঁর ব্যক্তিগত বিবাদে হাতিয়ার স্বরূপ ব্যবহার করে প্রতিপক্ষের উপর অত্যাচার করেছেম। এ রক্ম কাজ কংগ্রেসের নীতির বিরোধী। অভ্যাপর এ রক্ম কোন ঘটনা ঘটলে কংগ্রেস অফিসে জানালে তার প্রতিকারের ব্যবস্থা হবে।

"লোকটা কোলকাতা থেকে এসেছে" এটা প্রচার হয়ে গিয়েছিল।
এখন তারা ভাবলে "লোকটা জবরদস্ত"—কাজেই সবাই হয়ে গেল
সাধু। রমেশ গুহের বাড়ী নিকটেই—তিনি বিকেলে হাটে এসে
নোটিশ দেখে আমার সঙ্গে আলোপ করলেন এবং চায়ের নিমন্ত্রণ
করলেন। গেলুম এবং অনেক কথা শুনলুম ও জানলুম।

কলকাতায় ও দারা দেশে সভা-সনাবেশে স্বদেশী গান গোয় বিখ্যাত হরেন ঘোষের বাড়ী বজ্বোগিনী থানে। তিনি এলেন, আলাপ হল—তাঁর বাড়ী একদিন নিমন্ত্রণ খেলুন।

কংগ্রেসের সব কাগজপত্র পুলিশ নিয়ে গেছে। কাজেই আনি নতুন থাতাপত্র তৈরী করলুম ছ সেট—এক সেট থাকবে কংগ্রেস অফিসে, আর সেট থাকবে গোপন। বিধ্বাবু (বোধ হয় মুগাড়ি) হলেন গোপন দপ্তর বক্ষক। তাঁর ছেলের। এখন কলেজ স্নোয়াবে ধ্র-এর কারবার করছেন।

অল্পদিন পরেই জীবন গ্রেপ্তার হল—ভলাণিয়ার আইনে। তথন পেডির স্থলে সাব ডিভিশ্মাল অফিসাব এসেছেন ফ্লী মুগাজি— উত্তরপাড়ার অমবদা'র পিসতুতো ভাই—আগে আনাদের দলেব সঙ্গে সংশ্লিষ্ট ছিলেন। মুন্সীগঞ্জেও তিনি ছিলেন আনাদের বন্ধুই।

জীবন গ্রেপ্তার হতেই আমাকে বজ্লোগিনী থেকে সরিয়ে গন জুড়ে দেওয়া হল স্কুলে, জীবনের জারগার। আমি পড়াতুম ১ম, ১য় ৩য় শ্রেণীতে বাঙলা, এবং ৪র্থ, ৫ম ও ধর্ম শ্রেণীতে ভূগোল। তা ছাড়া সপ্তাহে একদিন এক ঘণ্টা "সাধারণ" ক্লাশ—সব ছেন্দেই এসে বসতে পারতো এবং যার যা খুসী প্রশ্ন জিজ্ঞাসা করতো—সে প্রশ্নের জনাব তাদের বৃঝিয়ে দেওয়া হত।

জীবনের মামলা উঠলো কোটে—জীবন বললে, I take no part in the proceedings—কোন কথার জবাব দেবো না। প্রবান সাক্ষী গ্রামের দফাদার বললে, আমি জানি, জীবন বার কংগ্রেসের বলণ্টিয়ার। কোট প্রশ্ন করলে, কেমন করে জানলে? দফাদার বললে, উনি লোকের বারী বাড়ী বিনা পয়সায় চরকা দেন, কলেরা হলে লোকের সেবা করেন। জীবনকে খালাস দেওয়া হল। কিছু জীবন আর ছুলে যোগ দিলে না,—উত্তরপাড়া বিগ্রাপিটে চলে প্রস্ন স্থপারিন্টেণ্ডেণ্ট হয়ে। বিপ্লবীদের আড্ডা-আল্রমের অল্পতম ছিল উত্তরপাড়া বিগ্রাপিট। খরচ য়োগাতেন অমরদা'।

মুন্দীগঞ্জেও একটা ছোট পৃথক আছ্ডা করা হরেছিল জামাদের

র্দদের মিজব—মুজীগঞ্জ ষ্টোর নামে একটা ছোট ষ্টেশনারী দোকান ছিল সামনের ক্যামোক্তেজ—সেধানে বদতেন জীবনের ভগিনীপতি জীবালাল বাব্,—আর পিছনে চলতো আমাদের আডডা। দলের ছেলেরা স্থানীয় এবং বাইরেকার, ওথানে আসতো।

আমি কাজ করতুম আপ থোরাকী। দবকার মত কিছু প্রসাক্ষি থরচও করতুম। ছুলে প্রাইজ দেওয়া হবে, কিছু ভাল চাদা দিলুম। ছুলের ছেলেদের তৈরী খদরের গামছা চাদর—সরু মোটা ডায়মও কাটা, পিঁপড়া-পড়া স্পতোর প্রথম ব্যবহার রিজেক্ট মাল—একগাদা জমে গেছে কংগ্রেস অফিসে—কেউ কেনে না—আমি কিছু টাকা দিয়ে দেওলো নিয়ে বাড়াতে দিলুম—"যা খুসী কর" বলে। একটা মেস করা হল, ডাল আর ভাত—সন্তার মাছও বাদ। আমি মাঝে মাঝে মাছ কিনে নিয়ে গিয়ে ভজকট করতুম। রসগোলা আট আনা সের,—মাঝে মাঝে মাঝে কিছু থেতুম ও থাওয়াতুম।

মাইল ছ-আড়াই দূরে বেকাবীবাজার, বেশ বড় বাজার,—করেক শত মুদলমান কলুর বাদ,—তাদের ডাকাত বলে ডাকনাম ছিল,—নদীতে কিন্তা মারা যেত আগে—এখন দেখানে হয়েছে কংগ্রেদ ও খিলাকং কমিটি—একদঙ্গে একখরে—দেকেটারী একজন মুদলমান—সংগঠক ও নেতা আমাদের দলের স্থরেন মন্ত্র্মাদার—২৫০ জন কলু ভলাণ্টিরার এক কথার ওঠে বঙ্গো,—সব অহিংস। কংগ্রেদের সন্ত্রা পথাে সব জার্গার চেয়ে বেশী। বরাবরই সমানে বিলাতী কাপড়ের দোকানে পিকেটিং, বিবাদ বিদয়াদ, মামলা মোকদমার দালিশী বিচার প্রভৃতি সব জার্গার চেয়ে সফল। দোকানের সামনে খদবের হাক প্যাণ্ট কুণ্ডান্টুলী পরিহিত কলু ভলাণ্টিয়ার বসলেই হল, দোকানে কেউ যাবে না। পিকেটিং ভুলে নেওয়ার ব্যবস্থা হল, বিলাতী কাপড়ের গাঁট বেঁধে কংগ্রেদের ছাপ মেরে দেওয়া হবে, সে গাঁট

আর খোলা চলবে না, কংগ্রেস অফিসে কিছু জরিমানা দিতে হবে, আর, বে কদিন পিকেটিং করতে হ্রেছে, ভলা উরারদের মাধা-পিছু আট আনা হিসাবে রোজ দিতে হ্রে। ছরেন মজুমদারের গ্লান।

সালিশী বিচারেও ছ পক্ষই সম্ভষ্ট হয়ে কংগ্রেস অফিসে কিছু কিছু দেলামী দিয়ে ষেত্ত। সব চেয়ে সম্ভূল কংগ্রেস থিলাফং কমিটী।

আমার হাতের টাকা-কড়ি ফুবিয়ে এল; একবার বাড়ী গিরে দেখে তনে আসারও দরকার। ওদিকে জীবনেরও একবার মূলীগঞ্জে আসা দরকার। বন্দোবস্ত হল, আমি উত্তরপাড়ায় বিশ্বাপীঠে গিরে জীবনের জায়গায় দিন পনেরো বসবো, জীবন মূলীগঞ্জ ঘুরে বাবে।

গেলুম উত্তরপাড়া বিভাগীঠে। সেথানে কিছু ছেলে লেখাপড়াও লেখে, অমরদা'র ছেলেরাও সেথানেই পড়তো, আর নানা জারগার বিপ্লবী রিকুট কতকগুলি ছেলে সেখানেই থাকতো। সকালে খবরের কাগজ পড়ার মধ্য দিয়ে তাদের বৈপ্লবিক শিক্ষার কাজ চলতো। তথন সেখানে বরিশালের অনস্ত চক্রবর্তী, চট্টগ্রামের রাখাল দে প্রভৃতি ছিল, যারা পরবর্তীকালে দক্ষিণেশ্বর বোনার মামলায় দণ্ডিত হয়েছিল।

একবার বাড়ীতে গিরে সবাইকে আপ্যায়িত করে এলুম, এবং গোপনে ব্যবস্থা করে বাড়ীও জমি বন্ধক দিরে ৮০০০ টাকা সংগ্রহ করে ফেললুম। সর্তাদি মহাজন যা খুসী লিখে নিলে, আমি নির্বিবাদে সই করে দিলুম। খুব গোপনে ভাগ্নীর কাছে টাকাগুলো রেখে, কিছু বাণী-টানী দিয়ে কিছু টাকা নিয়ে মুন্দীগঙ্গে ফিরে এলুম। ভাগ্নের পড়াভনো বন্ধ হয়েছিল, তাকেও নিয়ে এলুম মুন্দীগঞ্জ। জীবনদের বাড়ীতে থেকে সে জাশাক্সাল স্কুলে পড়তে লাগলো।

ছদিন বাদে শেব সংগ্রাম আসবেই, কে কোথায় থাকবে বা মরবে কিছুই ঠিক নেই, কিদেব বাড়ী ? কিদের সংসার ? মনটা চাঙ্গাই হল। ফিমশঃ ঃ

প্রতীক্ষা

স্থদীন চট্টোপাধ্যায়

বিমর্থ বসস্ত কত বিপ্রল্কা-ময়ুবী-ডানায়
আমার আকাশে বসে উংকর্গ হতাখাস ভিড়
জমিয়ে তুলেছে স্নান অবসন্ন সন্ধার কিনারে
কত মরা কোকিলের শবে ভবে আছে মহুয়ার নীড়।

কত মীড় হারিয়েছে, কত গান হয়েছে ক্রন্সন অনামাত ফুল ঝবে শুকতারা কত হলো প্লান দ্রাবিড় আকাশে কত দগ্ধকাম অতমু কেঁদে ফেরে কত দিন নীরব সেতারে ওঠেনি কো ভৈরবার তান।

শেদিন দেখেছি কত বালস্থ্য নব আশা-বাসনা বক্তিম কত ফুল, আহা, কত স্থর—জানি, তুমি এনেছিলে মুঠোভরা প্রাণ!

এ শ্রাবণের মরা সাঁঝে অতীতের শ্মশান জাগিয়ে শবরী-প্রতীকা বদি ঝরা শিউলির পথে আদে কোন বসম্বের গান।

भातावादिक जीवनी-त्रहमा

modlings mysa.
Anda mesi

50

ম্বদ্বীপে ঈশ্বরপুরীর আবির্ভাব হল। কে ঈশ্বরপুরী ?

পূর্বাশ্রম কামারহাটি, রাটীয় ত্রাহ্মণ। আর কিছু পরিচয় নেই? আছে। মহাপ্রেমনিকেতন মাধবেন্দ্রপুরীর শিষ্য।

কে মাধবেন্দ্ৰ ?

চেননা তাকে ? মাধবেক্সই তো লৌকিক লীলায় শ্রীগোরাঙ্গের দীক্ষাগুরু।

পাকবার স্থায়ী কোনো স্থান নেই, তীর্থে-তাঁর্থে শ্বুরে বেড়ায় মাধবেন্দ্র। অ্যাচক। অ্যাচিত ভাবে ফল-ছুধ পেলে তবে খায়, নচেৎ নির্ম্বু উপবাস।

ব্রজ্ঞমণ্ডলে এসেছে মাধবেন্দ্র । পোবর্ধন প্রাদক্ষিণ করে সন্ধ্যেয় বসেছে গোবিন্দকুণ্ডের ধারে। আপনা-আপনি কিছু ক্লোটেনি, তাই রয়েছে অনাহারে। না জুটক, বসে বসে নামকীর্তন করি।

কোথা থেকে এক গোপবালক এসে হাজির। বললে, 'আমি এই গ্রামেই থাকি, আমি অ্যাচকদের খাবার জোটাই। এই নাও, একভাঁড় হব এনেছি ভোমার জন্মে। নাও, খেয়ে ফেল। ভাঁড় আমি পরে এসে নিয়ে যাব।'

কি মিষ্টি ছ্ধ! মাধবেন্দ্র খেয়ে নিল এক চুমুকে। কিরে এলে ভাঁড় নিয়ে যাবে বালক, তারই প্রতীক্ষায় বসে রইল। কীর্তন করতে লাগল।

किञ्ज, कहे, वामरकत्र आतः (मधा निहे।

শেষরাতে স্বপ্ন দেখল মাধবেক্স। এসেছে সেই বালক, মাধবেক্সের হাত ধরে—তাকে নিয়ে এসেছে এক কুন্তে, বলছে, আমি কে জানো ? C# 1

মধুর হেসে বালক বললে, আমি গোবধনৈর অধিপতি। আমি গোপাল।

তুমি ? তন্মন হয়ে তাকিয়ে রইল মাধবেতা।

জ'নো, আমার সেবক শ্লেচ্ছের ভয়ে আমাকে এই কুঞ্জে লুকিয়ে রেখে চলে গিয়েছে। আর ফিরে আসেনি। আমার ভারি কট্ট হচ্ছে এখানে।

कष्ठे ? किरमत कष्टे ?

একা থাকার কষ্ট। রোদ বৃষ্টি শীত দাবানলের কষ্ট।

আমি-আমি কী করতে পারি ?

তুমিই ভো পারো, ভোমার জন্মেই ভো আমি বসে আছি। তুমি আমাকে এই কুঞ্চ থেকে মুক্ত করো, সেবা-প্রভিষ্ঠা করো আমার।

খুম ভাঙল। ব্রজ্বাসীদের ডাকল মাধ্বেজ্ঞ। ভাদের মিয়ে আঁতি-পাঁতি খুঁজতে বেরুল। অনেক সন্ধানের পর দেখা পেল গোপালের।

আর কথা নেই, গোবর্ধ নের উপর বসিয়ে **ডার** সেবা-প্রতিষ্ঠা করল।

কিছু দিন পরে স্বপ্নে আবার দেখা দিল গোপাল। মাধবেল্রকে বললে, তুমি আমার অঙ্গের তাপ দূর করার জন্মে অনেক সেবা করেছ, কিন্তু জানো, এখনে। আমি শীতল হইনি।

কিসে শীতল হবে বলো, ?

মলয়জ চন্দন লেপন করলে বুঝি শীতল হই। আনবে সে চন্দন ?

সে চন্দন কোপায় ?

नौनाहरन।

তথুনি যাত্রা করল মাধবেন্দ্র। প্রথমে এল শান্তিপুরে, অবৈতের ঘরে। পুরীপোসামীর প্রেমাবেশ দেখে অবৈতের আনন্দ আর ধরে না। বলে, আমাকে দীক্ষা দিয়ে যাও।

অদৈতকে দীক্ষা দিয়ে মাধবেন্দ্র ষাত্রা করল
দক্ষিণে। এল বেমুণায়, বালেশ্বরের এক গ্রামে।
রেমুণায় গোপীনাথকে দর্শন করল, কি কি তার ডোগ
লাগে জানতে চাইল সবিস্তার। তেমনি ভোগ লাগাব গোপালের। জানতে পেল সন্ধায়ে বে ভোগ দেওয়া হয় গোপীনাথকে, ভার নাম অমৃভকেলি। সে আবার কী জিনিস? সে এক অপূর্ব কীর, গোপীনাথের কীর বলেই সবাই জানে। ছাদ্দ্র পাত্রে তা নিবেদন করা হয়। আহা, তেমন একটু কীর যদি পেতাম



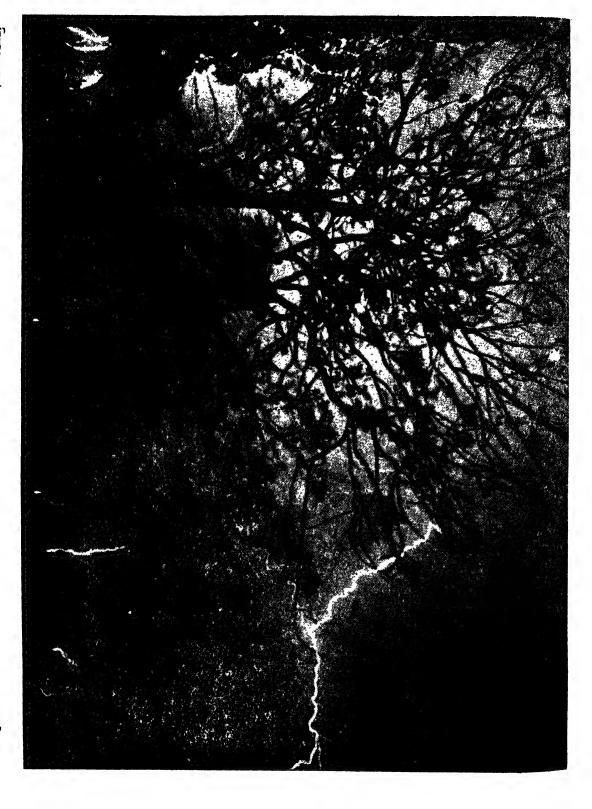
ছিবি পাঠানোর সময়ে ছবির পিছনে নাম ধাম ও ছবির বিষয়বস্তু যেন লিখতে ভূলবেন না।

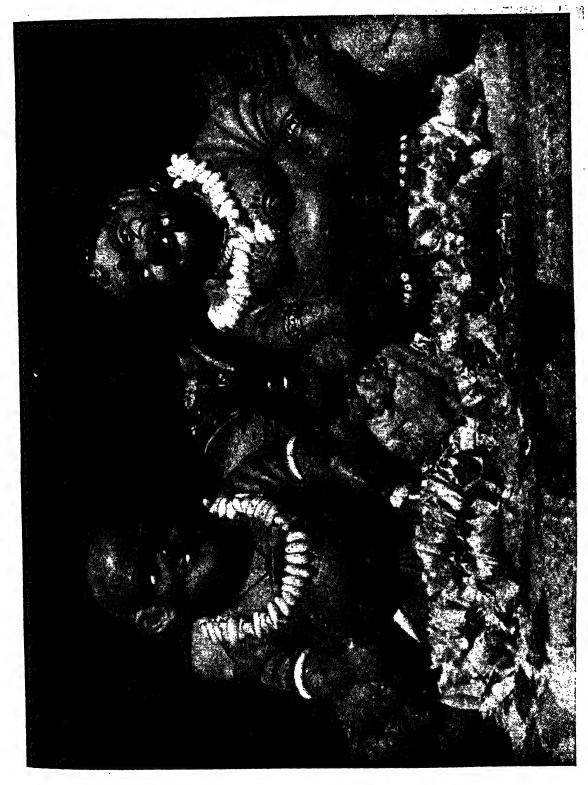
> প্র**ভীক্ষা** -বহু বন্দ্যোপাধ্যায়

দ**ক্ষিণেশ্বর কালীমন্দির** —মিহির বন্দ্যোপাধ্যার











ব্যাগ-পাইপ (নেপাল)

অ্যাচিত, দেখতাম খেয়ে কেমন তার স্বাদ-পদ্ধ। যদি ভালো হত অমনি করে রেঁধে খাওয়াতাম আমার গোপালকে।

ছি, ছি, আমি না অযাচক-বৃত্তি গ্রহণ করেছি ?
তবে আমার মনে ক্ষীর পাওয়ার, ক্ষীর খাওয়ার
বাসনা কেন ? নিজেকে ধিকার দিতে লাগল,
কাউকে কিছু না বলে মন্দিরপ্রাঙ্গণ ছেড়ে চলে
পেল অক্তমনে। গ্রামের শৃক্তহাটে বসে কীর্তন করতে
লাগল।

এদিকে পূজারী গোপীনাথের শহন দিয়ে ঘরে পিয়ে ঘ্রিয়েছে, স্বপ্ন দেখল। গোপীনাথ বলছে, ওঠ, দরজা খোল। আমার ভক্ত মাধবেন্দ্রের জ্বপ্তে একভাঁড় ক্ষীর লুকিয়ে রেখেছি। যাও তাকে দিয়ে এস। সে শৃশ্ব হাটে বসে আছে একা-একা। কোথায় ক্ষীর, কোথায় লুকিয়ে রেখেছ ? পূজারী অবাক মানল। অমার মায়ায় ভোমার ভা চোখে পড়েনি, সেই ক্ষীর আমার ধড়ার আঁচলে লুকানো আছে।

পূঞ্জারী ছুটে গিয়ে মন্দিরের দ্বার খুলল। কি
আশ্চর্য, গোপীনাথের বন্ত্রাঞ্চলের নিচে ক্ষীরভাগু।

ক্ষীরের ভাঁড় নিয়ে ছুটল পূজারী। কিন্তু কে মাধবেন্দ্র, এত রাতে কোথায় কোন তল্লাটে লুকিয়ে আছে? হাটে ঢুকে ডাকতে লাগল চেঁচিয়ে, কে মাধবপুরী, কোথায় আছ, বেরিয়ে এস শিগপির। ভোমার জ্বান্তে গোপীনাথ ক্ষীর চুরি করেছেন। চুরি করে পাঠিয়ে দিয়েছেন আমার হাতে।

সাড়াও নেই শব্দও নেই, কোথায় মাধবেজ ? গোপীনাথের স্থপন কি তবে মিথ্যে ?

িহ্বলের মত বেরিয়ে এল মাধব। এই যে আমি, কোথায় আমার গোপালভোগ ?

প্রেমাশ্রুবিপলিতনেত্র মাধ্বকে দেখে পূজারী
িমুগ্ন হয়ে পেল। প্রণাম করল দণ্ডবৎ। এমনটি
না হলে কি পোপীনাথ নিজে চোর সাজেন! চুরি
করেন ভজের জ্বতো, ভক্তপরবশ হন।

মাধবের হাতে ক্ষীরভাগু তুলে দিয়ে চলে পেল পূজার। মাধব সেই ক্ষীরপ্রসাদ গ্রহণ করল। সর্বাক্তে অমৃতায়িত হয়ে উঠল।

ভাণ্ডটা ভাঙল টুকরো-টুকরো করে, টুকরোগুলো বেঁধে নিল বহির্বাদে, ইচ্ছে একেক টুকরো খাবে প্রভাহ। কিন্তু ভয় হল, রাড ভোর হলেই ভিড় ক্ষমবে হাটে, দিকে-দিকে সুখ্যাভি কীর্তন শুক্ত হবে। পূজারী কি ঢাঁটেরা পিটোতে বাকি রাখবে ? সবচেরে ভয়, আর কিছু নয়, প্রতিষ্ঠার। ভক্তির শক্রই হল ধ্যাতি। স্নভরাং এ স্থান ভ্যাগ করো, কেউ যেন ভোমার না যন্ত্রণা বাড়ায়।

রাত্রি প্রভাত হবার আগেই মাধবেন্দ্র রেমুণা ভ্যাপ করল। কিন্তু যে প্রতিষ্ঠা চায় না, প্রতিষ্ঠা যে ভারই অনুগামিনী।

অন্তত গোপীনাথের তো প্রতিষ্ঠা হল। তার নাম হল "কীরচোরা গোপীনাথ।"

মাধবেন্দ্র নীলাচলে এল, প্রেমবিহবেল হয়ে দর্শন্ত করল জগরাথ।

পালাবে কোথায় ? গোপালের জন্তে চন্দন নিয়ে যাবে না ? চন্দনই তো এখন ভোমার বন্ধন হয়ে দাঁডাল। উপায় কি, নিজে ঠাণ্ডা না হই গোপাল তো ঠাণ্ডা হে ক। জপরাথের সেবকাদর বললে স্থারতান্ত। তারা রাজার লোকদের গিয়ে ধরলে। রাজপুরুষদের আফুকুল্যে জোগাড় হল এক মণ চন্দন আর বিশ ভোলা কপুর। বহন করে নিয়ে যাবে কে ? রাজপুরুষরাই ছ'জন বাহক দিয়ে দিল। চন্দন আর কপুর নিয়ে মাধবেক্স কিরে এল রেমুণায়। যাবার আগে আরেক বার দেখে বাই গোপীনাথকে।

রাত্রে আবার স্বপ্ন দেখল মাধব। দেখল গোপাল এসেছে। মূখে মদিরমধ্র হাসি। বলছে, মাধব, ভোমার প্রেমচন্দন কত গাঢ় তা পরীক্ষা করবার ছল্তে ভোমাকে বক্ষচন্দন আনতে বলেছিলাম। এ বৃক্ষচন্দন আর তোমাকে বয়ে নিয়ে যেতে হবে না। তুমি এ চন্দন গোপীনাথের অঙ্গেই লেপন কর। তাতেই আমার তাপক্ষয় হবে।

গোপীনাথকৈ মাথালেই তুমি শীতল হবে ? হব। গোপীনাথের আর আমার একই অল।

পূজারীকে ডাকল মাধবেক্স। শোনাল গোপালের প্রভ্যাদেশ। তৃজনে চন্দন ঘষতে বসে গেল আর তৃজন লাগল গায়ে মাখাতে। প্রভাহ চলল এমন ঘর্ষণ-অক্ষণ। যভ দিনে না চন্দন শেষ হল মাধবেক্স থেকে গেল রেমুণায়।

যখন দেহ রাখছে মাধবেক্স, এই বলে কাঁদছে, পেলাম না, পেলাম না, কৃষ্ণ পেলাম না, মধুঝ পেলাম না, কিছুই পেলাম না। হে দীনদয়ার্জ, হে কঙ্গণাকেতন, ভোমার অলোককাত্র হয়ে ছুৱে বেড়াচ্ছি পথে-পথে, কবে ভোমার দর্শন পাব ? আর যত দিন তৃমি থাকবে অদর্শনে, কি করব আমি, কোথায় যাব, কেমন করে আমার দিন কাটবে ?

সেই মাধবেক্সের আশীর্বাদধন্ম ঈশার। সর্বদা কৃষ্ণপ্রেমে মাডোয়ারা। একখানা আবার কাব্যগ্রন্থ লিখেছে, নাম প্রীকৃষ্ণলীলামৃত। চাদরের নিচে সবসময়ে রয়েছে সে পুঁথি। অন্তরে-বাহিরে সর্বত্ত অক্ষরকৃষ্ণস্পর্শ।

অলক্ষিতে আছে নববীপে। আর কেউ না পাক্লফ চিনতে পেরেছে গৌরহরি। অস্তুত ভক্ত বলে চিনতে পেরেছে।

কুপাস্থাসরিৎ জ্রীগোরাল। নদীর জল যখন ক্ল ছাপিয়ে মাঠে এসে পড়ে ভখন কী হয়? সমস্ত মঠি জলে ভেসে যায়, ডুবে যায়। কিন্তু কতক্ষণ দাড়ায় জল, কোথায় দাড়ায়? যে সব জায়গা উচু বা সমভল সেখানে দাড়ায় না, সেখান থেকে সরে পড়ে আন্তে-আন্তে। কিন্তু যে জায়গা নিচু, যে জায়গায় গর্জ বা খোদল সেখানেই জল দাড়ায়, সেখানেই জল

গৌরকৃপা সর্বত্র সমান ভাবে ব্যক্তি হচ্ছে, কিন্তু অভিমানের ফীতি, বা অহমিকার উদ্ধত্য তাকে ধরে রাখতে পারছে না। ধরে রাখতে পারছে কে ? ধরে রাখতে পারছে শৃহ্যতা, দীনতা, নিরভিমানতা। এ নয় যে ভগবান শুধু ভক্তকেই কৃপা করেন। ভগবানের কৃপা অচ্ছিন্নপ্রবাহা, নিরস্তর তার বর্ধণ হচ্ছে সর্বত্ত। ভক্তই একমাত্র পাত্র যার মধ্যে কৃপা থাকতে পারে, ক্ষমতে পারে। যেমন গর্ভের মধ্যে বৃষ্টির কল তেমনি ভক্তির মধ্যে, দৈক্ষের মধ্যে, অহঙ্কারশৃহ্যতার মধ্যে ভগবানের কৃপা।

পড়িয়ে ফিরছে একদিন নিমাই, পথে ঈশ্বরপুরীর সঙ্গে দেখা। ছিধা-কুঠা নেই, ঈশ্বরকে প্রণাম করল নিমাই।

'ছুমি কে ?' জিপপেস করল ঈশ্বর। 'আমি নিমাই।' 'কোন নিমাই ?'

'পড় রাদের পুঁথি পড়াই, আমি নিমাই পণ্ডিত।' 'ড়মি!' কত নাম-ডাক ওনেছে, দেই লোক চোথের সামনে, ঈশ্বর নিনিমেব তাকিয়ে রইল। ডাই সিদ্ধপুরুষের মত তোমার এমন পরম গন্তীর শরীর, এমন প্রোমপদ্বিপূর্ণ চোখ—' 'আপনি ?'

'আমি এক কৃষ্ণকৃথক। কৃষ্ণপ্রস্তাবই আমার একমাত্র প্রসঙ্গ।'

'ডবে আর কথা নেই। চলুন আমাদের ঘরে। সেথানেই আৰু ডিক্ষা করবেন প্রসাদ।' সনির্বন্ধ নিমন্ত্রণ করল নিমাই।

'তাই চলো। তোমাদের ঘরে পোলে সর্বক্ষণ, বহুক্ষণ ডোমাকে দেখতে পারব চোখ ভরে। ডোমার চোখের দৃষ্টিই তো আমার পরম প্রদাদ।'

প্রজ্ঞাদকে তার বন্ধুরা জিগপেদ করলে, প্রফ্লাদ,
মুখ কিলে ? প্রফ্লাদ বললে, স্বার্থপর হয়ে যদি ওধু
নিজের মুখ খুঁজে বেড়াও, মুখ নেই, পাবে না মুখ।
কিদেপাব তবে ? প্রফ্লাদ বললে, আমাদের একজন
প্রিয়জন আছে তার নাম আত্মা। দে পূর্বভূপ্ত,
নিজ্যমুখী, তার কোনো অভাব নেই আকাজ্জা নেই।
আমাদের কী এমন দেবা আছে না প্রীতি আছে যে
তাকে আমরা হখী করব। কিন্তু মঙ্গা কী জানো,
যদি আমরা তাকে মুখী করবার জ্ঞে চেষ্টা করি
তা হলেই আমাদের মুখ হয়। আমাদের মুখ ওধু
সেই আত্মাকে মুখী করবার উভ্যমে। আর কোনো
উপায়েই, কোনো রহস্তেই, আমাদের মুখ নেই।

দর্পণ দেখ, দর্পণে দেখ তোমার মুখচ্ছায়া। তোমার ইচ্ছে হল ভিলকচন্দনের ফোঁটা কেটে ঐ প্রভিবিশ্বকে সুখী করি। দর্পণের পিছনে হাত বাড়িয়ে প্রভিবিশ্বকে ধরতে পেলে, নিজল সেই ছুন্চেষ্টা। ভখন কী কর। বিসে অর্থাৎ নিজমুখে ভিলক চন্দন রচনা করো, ভাই তখন ফুটে উঠবে প্রভিবিশ্ব। তুমি হাসলেই প্রভিবিশ্ব হাসে, তুমি সুখী হলেই প্রভিবিশ্ব সুখী। ভোমার মাধ্যম ছাড়া প্রতিবিশ্বকে ধরাছোঁয়া যাবে না, ভোমার মাধ্যম ছাড়া প্রতিবিশ্বকে ধরাছোঁয়া যাবে না, ভোমার মাধ্যম ছাড়া পৌছুনো যাবে না প্রভিবিশ্ব। ভাই আত্মার সুথেই আত্মন্থ। ভাই কৃষ্ণসুখে সুখী—এ ছাড়া আর পথ নেই. কৌশল নেই।

সুতরাং বিচিত্র বাসনা স্থীকার করে কৃষ্ণস্থসাধনে তৎপর হও। যারা গোবিন্দকে ভালোবাসে তারা বাসনাকে হেয় করে না, ন্ই-দয় করে না, পূর্ণমাত্রায় বাঁচিয়ে রাখে। তারা কৃষ্ণের ক্ষন্তে ফুল তোলে, মালা গাঁথে, চন্দন ঘযে, সে মালাচন্দন কৃষ্ণের গলার ছলিয়ে দেয়। কৃষ্ণের ক্ষন্তে তারা গরু ছইয়ে ছ্ম আল দিয়ে ক্ষীর তৈরি করে। কৃষ্ণ দেখে পুলি হবে বলে নয়নে কালল দেয়, অধরে তাম্বল লেগে। ক্টা

আর হাসিকে যুগপৎ উজ্জ্বল করে। লাবণাের ফুর্তির জ্বস্থে গাত্রমার্জনায় তৎপর হয়। অশাসনের চেউ আনে বসনে। সকল বাসনা কৃষ্ণের ভৃত্তির জ্বস্থে উৎসর্গ করে। কা'কে তুমি শারীরিক ক্লেশ বলছ, এ কৃষ্ণভাগে, এ কৃষ্ণভাগে, এ কৃষ্ণভাগি, এ কৃষ্ণভাগি। এই আমার আনন্দসন্দোহ। শীতে কি করল গোপী ? গায়ের উত্তরায় কৃষ্ণকে দিয়ে নিজে রইল রিক্তপাত্তে—কৃষ্ণ যদি উত্তাপে থাকে তাহলে আর আমার শীত কোথায় ? কৃষ্ণ যদি আরামে থাকে তাহলে আমার আর ব্যাধি কি!

শান্তি শান্তি—শান্তি তো স্থ নয়। আমি স্বস্তি চাই না, আমি স্থ চাই। শান্তি মানে কি? শান্তি মানে হংখনিরতি, হংখ পরিহার। হংখ যাতে না ছুঁতে পারে তেমনি একটা স্থরক্ষিত অবস্থায় আসা শান্তি। কিন্তু আমার ইষ্ট্র, আমার উদ্দেশ্য নঙর্থক নয়, সদর্থক। আমার ইষ্ট্র, আমার উদ্দেশ্য স্থা। ঘুমিয়ে পড়া নয়, ক্ষেপে থাকা।

আর এ সুখ আমার নিত্যসুখ। এ সুখে বয়দ নেই জরা নেই মৃত্যু নেই, নেই তুর্ধ র ফালপ্রতাপ। আমার পাঁচ বছরের গোপাল পাঁচ বছরেরই থাকে। আমার কিশোরকৃষ্ণ নওলকিশোরই থাকে, নিত্যকিশোর, কোনোদিন সে বুড়ো হয় না। আর তুমি যদি তার যোড়শী সখী হও তুমিও থাকবে তেমনি চিরস্তনী স্থিরদেহী। জাপতিক সুখ পোয়ালার ছথের মড, জল-মেশানো। স্বার্থদোষ কামদোষের ছোঁরাচ লাগা। আর ব্রজের সুখ? ব্রজের সুখ খাঁটি ছ্ধ, জন্ধ-জন্দ্র-মধ্ স্বাছ, নেই একবিন্দু কামস্বার্থের গন্ধ। নিজমুখে তাৎপর্য নেই, রাধাকৃষ্ণ সুখী হলেই আমার, জনিবার্য সুধ। আমার অনিবার্য জাগুতি।

নিমাইয়ের ঘরে আভিথ্য নিল ঈশ্বর।

'ডাছলে শোনো। কিন্তু এক কথা।' 'কি কথা ?'

'কোপায় কি দোষ-ক্রটি হয়েছে বলবে সব সরল ভাবে।'

'দোৰক্রটি ?' নিমাই উত্তেজিত হয়ে বললে, 'ভক্ত কৃষ্ণের কথা লিখছে তাতে আবার দোৰক্রটি কি ! কার সাধ্য কৃষ্ণকথার দোষ ধরে ! ভক্তবাক্যে যে দোষ দেখে সেই পাণী, সেই দোষী । ভক্তের ষেরক্ষই ছন্দ-কবিদ্ব হোক, কৃষ্ণের অখণ্ড বিনোদ।'

नेयंत्रभूती हुल करत तरेन।

'যে মুর্থ সে 'বিক্ষার' বলছে আর যে পণ্ডিত সে ঠিক-ঠিক বলছে 'বিক্ষবে'।' নিমাই বলছে হাসিমুখে, 'কিন্তু বিষ্ণু কি ভারতম্য করছেন? ছুই-ই ভিনি সমান ভাবে গ্রহণ করছেন। কেন করবেন না? ভিনি যে ভাবগ্রাহী জনার্দন।'

মূর্থে বোসে বিষণায়, বিষণ্ডবে বোলে ধীর।
ছই বাক্য পরিগ্রহ করে কৃষ্ণ বীর ।
ইহাতে যে দোব দেখে ভাহাতে সে দোব।
ভক্তের বর্ণনমাত্র ক্রফের সম্ভোব ।

আরেক দিন ব্যাকরণের কথা উঠল, আত্মনেপদী না পরশ্বৈপদী। নিমাই বললে, 'যে ধাতৃর কথা বলছেন সে পরশ্বৈপদী।'

বিভারস-বিচারে ঈশ্বরও পশ্চাৎপদ নর। সে দেখিয়ে দিন ভূল হয়েছে নিমাইয়ের। ধাতু পরশ্বৈপদী নয়, আত্মনেপদী।

হার মানল নিমাই। ভক্তের কাছে ভৃত্যের কাছে হার মানতে তার বিন্দুমাত্র কুঠা নেই। কিন্তু, যাই বলো, আত্মপদ, অহস্কারের পদ নয়; পরপদ, পরমপদই নিভূল। পরমপদই স্থিরতম আশ্রয়।

শ্রীকৃষ্ণ আবার অবতীর্ণ হলেন কেন ? তার মুখ্য বা অস্তরঙ্গ কারণ কি ? শুধু প্রেমরসনির্যাসের আস্বাদন আর রাগমার্গ ভক্তিপ্রচার।

ভূভারহরণের **অ**স্থো নয়, ভক্তিযোগবিধানের **অস্থো** তাঁর আসা।

কি রকম ভক্তি ? রাগমার্গের ভক্তি। আত্মস্থ চাই না পরস্থুখেই পরমস্থুখ—এই হল প্রেমসার।

[ক্রমশ:।

[মাসিক বন্দ্বমতীতে প্রকাশিত বিজ্ঞাপন বিশ্বাস ও নির্ভরযোগ্য]

नि नि त= जा नि तथर

রবি মিত্র ও দেবকুমার বস্থ

٥

শিরকুমারের কথা বলতে গেলেই হু'টি জায়গার কথা আমাদের মনে পড়ে—৬নং বৃদ্ধির চাটার্জি ব্রীটে গ্রন্থজগতের ঘর আর ২৭৮নং ব্যারাকপুর ট্রান্ধ রোডের বাড়াতে তাঁর নিজম্ব ঘর। এ ছাড়া প্রীরক্ষম রক্ষমঞ্চের বা ওখানে যে ঘরে তিনি থাকতেন. তার কথাও হয়ত বলা চলত, কিন্তু অকারণ কথার জাল বুনে সময় কাটানোর প্রয়োজন কি ? তবে প্রথম হুটি ঘতের পরিবেশেই তাঁর কথা আমরা শুনেছি বলে, পরিবেশ বর্ণনা নিতাস্থ অপ্রাসাকক হবে না আশা করছি।

গোলদাঘির আলে-পালে নানা আকর্ষণ পথচারীদেব জন্তে অপেকা করছে, কাজেই তাদের মধ্যে ৬নং বাড়িটির নজরে পড়বার মত কোন ভবই নেই। একেবারে দেকেলে প্যাটার্নের দোতলা বাড়ি, বাইরের দিকে কাঠের বারান্দা, তার কাঠগুলোও নড়বড়ে হরে গেছে, নীচের ব্যবন্তলার সারি সারি বই-এর দোকান—অবগু নামকরা কোন কোন্দানী নয়, তাই সাধারণের সঙ্গে পরিচয় এদেব অল্প। উপযুক্ত সঙ্গ না পাওয়ার দক্ষণই বোধ হয় বাড়িটা সাধারণের চোথে অপরিচিতই রয়ে গেছে। অথচ বাঙলার চিন্তাক্ষেত্রে যে সব মনীবার দান আমহা সগর্বে বীকার করি তাঁদের জনেকেই এ বাড়িতে বত বার এসেছেন।

বাড়ির প্রথম মালিক ডেভিড হেয়াবের নাম আছকের দিনে কোন বাঙালাকেই বাব হর বলতে হবে না। এ বাড়ির প্রতিটি কংমণের দেদিন উনবিংশ শতকের নব জাগরণের অগ্রন্থরা এসে যে রীতিমত দোরগোল তুলতেন তা এই দীর্ঘদিনের ব্যবধানেও আমবা কর্ননা করতে পারি। হিলু কলেজের মাভকরেরা ছাত্রদের সঙ্গে এসে ডাম-নেটিভ দশা থেকে কি করে মুক্তিলাভ করা যায়, তার উপায় নির্ধারণ কর্পন আর নাই কর্পন, কুসংস্কারাছের বাঙলা দেশবাদীদের আলোকেব রাজ্যে আনার পদ্মা নিরে তুমুল তর্ক-বিতর্ক যে করতেন ভাতে সন্দেতের অবকাশ নেই। ভবিষ্যং জীবনের বিকাশের সম্ভাবনার প্রথম অস্ক্রোলাম কা'র কা'র এ বাড়ীতেই হয়েছিল তার ধবন আমাদের জানা নেই; জানলে সে যুগের বহু বিখ্যাত মনীবীব নামই সে নক্ষরে পড়ত ভাতে বিলুমাত্র ছিলা নেই আমাদের।

ডেভিড হেয়ারের যুগ কাটিয়ে বিংশ শতকের প্রথম দিকে এ বাড়িতে দেখতে পাই আমরা আর একজন বিখ্যাত বাঙালী মনীবীকে। কৃষ্কুমার মিত্রের 'সঞ্জীবনী' সে সময়ে বাঙলা দেশে বীতিমত আলো চন তুলত। 'সঞ্জীবনী' পত্রিকার বহু বিখ্যাত রচনাই হয়ত তৎকালীন বিদপ্ত জনসমাজের সামনে পড়া হয়েছিল এবং ফরাসের ওপর বসে পানতামাক খেতে খেতে সে সম্বন্ধে বিভিন্ন ব্যক্তিরা স্থচিস্থিত মতামতও হয়ত দিয়েছিলেন।

মেসোমশারের কাছে এজিম্বনিক্ষ বা বাবীক্রক্ষার ঘোর এসে জনেক দিন কাটিরে গেছেন, আর সেই সময় উাদের বন্ধু ও পরিচিত লোকেদের সঙ্গে আলোচনা করে বাঙলা ক্রেশ সন্তাসবাদের জন্মও বোধ হয় এই বাদিবই কোন ঘরে বসে দিয়েছিলেন হাবা।

এমনি বছ মনীবীর আনাগোণার একশ' বছরের ওপর মুখর থেকেছে ৬নং বৃদ্ধিম চ্যাটার্জি ষ্ট্রীটের বাড়িটি। অথচ সেংখনকার বোবা মাটিতে কারো পদচিছ্নই আজ দেখা যায় না। আজ ব্যস্ত-সমস্ত থবিদারের দল লিষ্টি মাফিক বই কিনতে দোকানে দোকানে হানা দিছে। তাদের প্রয়োজনের গণ্ডার বাইরে নজর দেবার মত অবকাশ তাদের কোথার? অবশ্য সে অবকাশ থাকলে এই বাড়ির একটি ঘরের বৈশিষ্ট্য তাদের নজরে পড়ত।

দরজা দিয়ে চুকে হ'পাশের কাঠ দিয়ে যেরা দোকানঘরগুলো পেরিয়ে, ওপরে ওঠার সি'ড়ি বাঁরে রেখে, তাইনের কালা-প্যাচপেচে উঠানটা পেরিয়ে যে ঘরের সামনে দাঁড়াতে হয় তার সাজসক্ষা সাধারণ দোকান-ঘরের মত নয় ঠিক। সামনের দরজার প্যাড়েলগুলোতে স্থান্দর মাতুরের টুকরো বেত দিয়ে আটকানো। দরজার ঠিক ওপরে চৌকো ভে ফিলেটারের গায়ে শোলার চাঁদমালা, তার নীচেই স্থান্গু কাপড়ের ঝালর।

ঘরের ভেতরে চুকে একটু এগিয়ে এলেই, কাঠের ওপর বেত দিয়ে আটকানো মাছর মোড়া কাউটার। কাউটারের পেছনে গোটা ছই তিন বই ঠাসা আলমারী—এইটুকুতেই দোকানের লক্ষণ। ঘরের বাকী আংশের বেশীর ভাগ জুড়ে একজোড়া তক্তাপোবের ওপর ফরাস পাতা আর তার চার পাশে কতকতলো মোড়া পাতা। পশ্চিম দিক ছাড়া বাকী তিন দিকে বুক্সমান উঁচুতে কাঠের র্যাক-প্রদর্শনীর কাজে লাগানো হয়। ঘরের এখানে ওখানে শোলার ময়ুর ও অক্তান্থ শোলার কাজ। স্বটা মিলিয়ে বৈঠকখানার চেহারাই ফুটে ওঠে। এখানে প্রারই আসতেন শিশিবকুমার। আসতেন রিহার্স্যাল দিতে, আসতেন; নাটক পড়তে, আসতেন আসর জমাতে।

এখানেই হ'ত নব্য বাঙলা নাট্য পরিষদের সাপ্তাহিক অধিবেশন, সেগানে আসতেন, অপ্রতিছন্দর শিল্পা ভোলা চট্টোপাধ্যায়—বাঁর আঁকা 'নিউ জেনারেশন' পশ্চিমের দেওয়ালের মাঝখানটা জুড়ে ঝুলছে, তাব ডাইনে রয়েছে শিশিবকুমারের বসা একটা ছবি আর বাঁরে ফরাসী শিল্পী তুলু লোজেকের 'নিজের চেহারা' আর তাঁর জীবনীকার পেরের লা মুরের ছবি—বসজ্ঞ পণ্ডিত বিনয়র্ক্ষ দত্ত, ডাঃ রামচল্র অধিকাবী লেথক ও শিল্পী দেবত্রত মুখোপাধ্যার, চিত্র ও নাটাসমালোচক পদ্ধজকুমার দত্ত, জ্যোতির্ময় বন্ধ-বার, মনুজেল্র ভঙ্ক, সাহিত্যিক শিবনারায়ণ রায়, কুমারেশ ঘোষ, গৌরীশঙ্কর ভট্টার্চার্কা, গৌরকিশোর ঘোষ, অধ্যাপক তারক গঙ্গোপাধ্যায়, হারাণ চক্রবর্তী, কাউন্সিলার তারাপ্রসন্ধ মিক্র, কবিরাম বন্ধ, অভিনেতা সৌমিক্র চট্টোপাধ্যায়, অভিনেত্রী কক্ষণা বন্ধ্যোপাধ্যায়, ছামলী চক্রবর্তী প্রেম্থ বছ বিশিষ্ট ব্যক্তি । তাঁদের মধ্যে বত্বমালার মধ্যমণির মত উজ্জল ভাস্বব হয়ে বিবাজ করতেন শিশিবকুমার।

২৭৮ নং বারাকপুর ট্রাফ বোডের বাড়িটার সর্বাক্তে যেন মাথানো আছে একটা শাস্ক বিষাদ। সামনের অধ্যথগাছটার ভেতর খোলা বাওয়া যেন সেই বিষাদের স্মর্কটাই থবে নিয়ে যায়। বাড়িটার অবস্থা খ্ব ভাল নয়, দেখলে মনে হ'ত এই বৃথি ধবলে পড়ে। খোলা নর্দমার ওপর বাঁধানো সাঁকোজাতের জিনিবটার এক পালে ছড়ানো এক রাল পাথরের খোয়া। কোন দিন হয়ত রাজাটা সারানো হবে ভারই প্রস্তাতপর্ব হিসাবে ঢালা হয়েছে ভালের। কিন্তু প্রস্তৃতিব চাপে হভভাগ্য পথের অবস্থা হয়ে ওঠে শোচনীয়। কোনরকর্মে পাল কাটিয়ে বাড়ির সর্লরে এসে দাঁড়ালে প্রথমেই নজরে পড়ে হ' পালের হটো দোকান।

করেকটা সিঁড়ি বেরে বাইবের ঘরে গিছে দাঁড়ালে দেখা যায়, প্রাগৈতিহাসিক গোটা ছই তিন চেয়ার আর রঙচটা একটা চৌকো টেবিল। সাধারণ মধ্যবিত্তের বসার ঘর। এখানে শিশিরকুমারের কোন ম্পর্শ আমাদের নজবে পড়েনি।

বাইবের ঘর পেরিয়ে দোভলার ওঠার সিঁড়ি—সরু সরু উঁচু উঁচু ধাপগুলো গোটা ছই বাঁক নিয়ে শেষ হয়েছে ছোট একটা ছাদে। ছাদের ওপাশেই শিশিরকুমারের ঘর। সে ঘর থেকে বাইরের বড় রাস্তার জীবনের প্রায় কিছুই চোথে পড়ে না। ঘরের মধ্যেও তাই অত্যাতর স্তব্ধ প্রতীকা, ভবিষ্যতের পথনির্দেশ্য অপেকায়।

খবের একটা দিক ছুড়ে একটা জোড়া খাট, মাঝখানে একটা দোফা, তার পাশে উপরে খানকতক বই আর আ্যাশট্টে। অল্প দিকে ছোট একটা খাট—উনি ঐ খাটেই শোন। ঘরে একখানি মাত্র চেয়র—কেউ এলে বসতে দেওরা হয়, লোক বেশী এলে জোড়া খাটে বসে।. ঘরের বাকী আংশে শুধু বই—অবিকাংশই নাটক, মঞ্চ সম্বন্ধীয় বা সমালোচনা, তার মধ্যে সেক্সনীয়রের গ্রন্থাবলী আছে, আছে অল্প বিদেশী নাট্যকারদের নাটক, নাটক ও মঞ্চ সম্বন্ধীয় বিভিন্ন যুগের লেখা বই, বস্থ বিখ্যাত ইংরাজ সমালোচকের রচনা সংগ্রহ, বাংলা নাটকের প্রায় সব ক'টি বই আর কিছু সংস্কৃত কাব্য ও নাটক।

খনের ভিন দিকের দেওয়ালে ভিনটি ছবি—নিউইয়র্কে পৌঁছানোর পনেই তোলা শিশিরকুমানের ছবি। মাইকেলের রূপসক্ষায় শিশিবকুমার—ছবির পাশে বোর হয় 'বঙ্গভাষা' কবিতাটি হাতে লেখা আর সমরনায়কের সাজে স্থভাষচন্দ্র।

ঘরটির সর্বাঙ্গে শিশিরকুমারের ব্যক্তিত্বের ছাপ। কিন্তু এ শিশিরকুমার গ্রন্থজগতের আসরের মধামণি শিশিরকুমার নন ইনি, এ অনাদৃত কমল হীরা যার হাতি একদিন দিগন্ত উদ্ভাসি ছিল কিন্তু বা ইতিমধ্যেই মুজিতে পর্যবসিত হয়ে পড়েছে।

(9)

প্রথম বেদিনের কথা আমাদের থাতার লেখা আছে, দেখা গাছে সেটা ১৯৫৬ সালের ৩ লে ডিসেম্বর, করেক দিন পরেই এটার্নী কালচারাল কনকারেলে (এর আর এক নাম কলিকাতা সংস্কৃতি সংখ্যান, প্রধান শিল্পী দেবব্রত মুখোপাধ্যারের দেওরা। দ্বিতীর নামটিতেও বিশেষভাবে পরিচিত উদ্ধিবিত সাংস্কৃতিক সংস্থাটি) নাট্যাচার্বের অভিনয় করার কথা মাইকেলের ভূমিকার, তাই রিহার্স্যাল শিক্ষেন আর অক্সান্ত সমস্ত চরিত্র অভিনেতা ও অভিনেত্রীকে শেখাছেন। কে একজন তাঁর নিজের ভূমিকা বলতে গিরে কথাগুলো শক্ষেত্রক একটু টেনে বলার নাট্যাচার্ব সেটি সংশোধন করে দিয়ে ক্রান্ত্রন প্রাভাবে লোকবই একটি না একটি মুদ্রানোৰ থাকে।

আকাজ্জার 'আ'টির এই টান আমার মুখে মানার, অস্তু লোকে কণি করতে গোলে মানাবে কেন? দে যে চৌর্যন্তি।

অন্ধ একজন অভিনেতার কথা উঠলো, মাইকেলে কোনো একটি চরিত্রের জন্ম তাঁর নাম করা হ'লো। একটু ভেবে নাট্যাচার্ব বলনেন—অনেক দিন করেনি, সেই ১৯৪৩এ আর এটি ১৯৫৭ হ'লো বলে।

মাইকেলের মন খাওয়ার কথা হচ্ছিল। কথার কথার বললেন—
Rosy wine কেন বলে? Rosy condition হয় বলে?
লাল বঙের এক মন আছে বটে, কিছু সে তো বাজা বাজা ছেলেনের
মন ধরতে শেথানোর জল্ঞে ব্যবহার হয়।

এই সময় চা এসে পড়লো, ওঁকে দেওয়া হ'লো এক কাপ, একটা চুমুক দিয়েই বলসে কা দিলে হে, গরম চিনির সরবং ?

ব্যস্ত হলাম—সে কি ! খুব চিনি দিয়েছে বুঝি ?

চিনি ভো বেশি দিয়েছেই, তার উপর চা একদম দেয়নি।

ইতিমধ্যে মাইকেলের সম্বন্ধে কে প্রশ্ন করেছেন, তাকে উত্তর দিলেন—মিশ্র ছন্দে প্রথম শূর্রলো ব্রজাঙ্গনা কাব্যে। তার আগে পর্যস্ত বাংলা কবিতার ছিল আইনমাফিক ছন্দ। এই লোকটাই প্রথম নিগড় ভেঙে ফেললো। বাংলা দেশে বিশেষ করে বাংলা সাহিত্যের ক্ষেত্রে তাঁকে রেনাদাদের ফাদার বলতেই হবে।

চায়ে চিনি বেশি হয়েছে বলে আমরা ওঁকে চা-টি খেতে বারণ করলাম, তাতে বললেন—খাওয়ার দিকে মন দিলে বিহার্স্যাল দেওয়া হবে না। তবু কিছুটা চা দিতে যাওয়ায় বললেন—আচ্ছা, দাও আধ কাপ, এখন আমার স্বাহ্যের দিকেই তোমাদেরই নজর রাখতে হবে, আমার এখন কেউ নেই I am all alone একটু থেমে আবার বলতে শুকু করলেন—আমার যে কর্মকর্তা ছিল, দে এখন mentally as well as physically paralysed যা করতে হবে তোমরা নিজেরাই plan করে ঠিক করে নাও।

এই সময় টাকা-পয়সার কথা উঠল, তাতে বললেন—টাকা-পয়সা হলে মামুষ মস্ত বড় একটা ভূল করে। ভাবে, তারা একটা মস্ত বড় কিছু হলো। কিন্ত বোথে না মরলে কেউ তাকে মনেও রাধবে না, সংসারকে কিছু দান করলে তবেই তাকে মামুষ মনে রাথে।

বিশ্বাস অবিশ্বাসের প্রশ্ন উঠল এবার, বললেন—কোনো বিশ্বাস সত্য নয়। সত্য হচ্ছে আপেক্ষিক, সত্য grow করছে। কেউ কেউ বলে ভগবানও grow করছে। সবাই মনে মনে একটি ঔরক্ষজেব। বে যাব বিশ্বাস আঁকিড়ে ধরে বসে আছে। আব বা হওয়া উচিত নয় তাই হচ্ছে—গৌড়া হচ্ছে।

তারপর অভিনয়েব প্রসঙ্গে গেলেন, বললেন—আমার সূত্র বছর বয়স সতে চললো। এ ভো আর মিথ্যে কথা নয় ! সত্র বছর সভা জতে চললো। আমি চাই Playিট লোলো কবতে। ভোমরা স্বাই ঠিক সময়ে চুকলে আর বেরোলেই হবে। আমি আব সৌবদাস ভো ভালোই করেছিলাম, লোকেও মন্দ বলেনি।

চা আর দেবো কি না প্রশ্ন করার বললেন—না, আর চা দিয়ো না। আমি অস্ত্রস্থ, মনেও স্বস্থ নাই। তবে লোককে বলতে ভালোবাসি না যে অস্ত্র্গু আমি।

কথা বলতে বলতে লাভ থেকে চাটা চলকে গায়ে পড়লো। হাসলেন—দেখেছ, অসংভার মতো কেমন গারে এনে পড়লো চাটা। 'মাইকেল' বইটা পাওৱা বার না এই অমুবোগের উত্তরে বললেন —হাা, বইটি ছাপাতে হবে। তারপর জানতে চাইলেন ক'টা বেজেছে, আটটা ?

বললাম-সাডে ন'টা।

চমকে উঠলেন সময় শুনে, বললেন—এতো সময় কেটে গেল, অথচ কই, রিহার্স্যাল তো তেমন হলো না ! উঠে পড়লেন।

বাবার সময় বললেন—মার কিছু গোলমাল না হয় তো আগামী এপ্রিল মাসে we shall meet under এ ছাউনী। তবে সবই ভাগ্য।

পাড়ীতে বেতে বেতে কলকাতার থিরেটাবের বি-মডেলি এর কথা হছিল, তাতে উনি বললেন—আৰু তো দেখলাম : কোন একটা বিরেটাবের বাড়ি তো খুব ভালো করেনি, এ রকম চলদে বঙ হবে ? ও বে পারখানার র:। প্রৈক্ষের কি কিছু Improvement করেছে ? তা বদি না করে থাকে, এতো হৈ-চৈ কেন ? শ্রেফ ছক্তুণ ?

পরের দিন আবার এলেন বিহার্গালে। কে একজন হঠাং হেসে উঠেছিল, শুনে বললেন—১৮৯১ সালে আমি তথন আট ন'বছরের ছেলে। একদিন এক গৃষ্টীয় সভায় গেছি, দেগানকার এক পাত্রীর প্রার্থনার সময় ভার অভ্যুত হার শুনে থুকু করে হেসে উঠেছিলাম। তোমবাসে রকম অভ্যুত শব্দ কেউ করো না।

মাইকেলের জীবন প্রদক্ষে এক সমর বললেন—দেবকী বলে কেউ নেই। ও বে কি করে মাইকেলের জীবনে এলো তা-ও জানি না। আবার এক সময় একজনের কথা সংশোধন করে বললেন—মেসো অর্থাং মাসির বর। আমি সেকেলে লোক, সেকেলে কথাই বলি। তারপর হ'নহর বাড়ির কথার বললেন—বাড়িটি তো ঐতিহাসিক বাড়ি:

আবার একজন রাজনারায়ণের পার্ট বলতে গিয়ে ভূল উচ্চারণ করেছেন, তাঁকে বৃঝিয়ে দিলেন—বস্তৃকতা নয়-—বস্তৃতা। ভূমি মধুর বাবা, হিব্রু-লাতিন জানো, পণ্ডিত লোক। অথচ বস্তৃতা উচ্চারণ করতে পারো না। নীচেকার দাঁতের পাটীতে আঙ ল দিয়ে চেপে ধরো।

ইভিমধ্যে একজন একটু স্থা করে কথা বলেছে, তাকে বললেন স্থা টেনে বলছো কেন ?

স্থার টেনে বলে যাত্রায়, কারণ, সেখানে দৃহপট নেই। কাজেই স্থান্ত করে না বললে আসত না। প্রেকে যাভাবিক স্থারে বলা দ্যকার।

এবার বললেন—দেখার চোথ সৰলের থাকে না। শার্ল ক হোমদের ছিল। আর কিছু কিছু লোকের ছিল। আর থাকে সাহিত্যিকদের।

নিজের পার্ট বলতে গিরে গৌরের জারগার গোকুল বললেন।
ভূলটি ধরিরে দিতে বললেন—কথাটি ঠেকে বললেও ক্ষতি হর না।
মধু মাতাল অবস্থার বলছে। তারপর স্বীকার করলেন—বরেন হরেছে
সব কিছু ভূলে বাচ্ছি। স্বতিশক্তিও কমে গেছে।

এর পর মধ্ব সংস্কৃত কাব্য আবৃত্তির প্রসঙ্গে কলেন-সংস্কৃতে মজা হচ্ছে বে, কোথার গিয়ে ক্রিয়াপদ পাওরা বাবে ভার ঠিক নেই। কখা প্রসঙ্গে অভীতের অভিনেতৃর্কের কথা ওঠার উনি বললেন
—১৮৮১ সালে ভারাস্কেরীর বরস সাত বছর। ভারা প্রথম
'চৈতক্তলীলা'র ফ্ল্যাগ ওড়ার। এগারো বছর বরসে প্রফুল নাটকে
প্রথম বাদব করে।

দানী বাবুর সম্বন্ধে বললেন—দানী বাবুর—গলা ! Wonderful গলা, ও রকম গলা বদি আমার দিতেন ! কিন্তু দিলেন না ।

এর পর এলো ২রা জানুরারী। প্রথমে সব লোকজন আসেনি, কাজেই রিহার্দােল না দিরে নানা রকম কথা হতে লাগল। কি থেতে ভালো লাগে না লাগে সেই প্রসঙ্গে বললেন—বাঁধাকপি-ভাতে থেতে বেশ ভালো লাগে। তবে ঈবং কাঁচা থাকা চাই। ফুলকপি নেহাংই অসভা। গাঁতে আর জোর নেই। চারটে গাঁত বাঁধানাে, ভাতে নাকি বেশ শোভা হয়।

অক্ত একটি কথা প্রসঙ্গে বললেন—চোদো রথীর কথায় আর একটি কথা মনে পড়লো। তথনও মনোমোহন থিয়েটারের ছাডিনি, হঠাং বার্মিজ দামী লুঙ্গিপরা এক ভক্তলোক হাজিয়। বৃদলেন থিয়েটাবের পোবাক করাচ্ছেন, আমাকে দেখে দিতে ভবে। ভাতে কোনো কাজ ছিল না রাজী হয়ে গেলুম, ভন্তলোক বিপণ ষ্ট্রীটেব একটি বাড়িতে নিয়ে গেলেন। তেতুলার খর, তখনও সাজানো হয়নি, শলমা চুমকির কাজ করবার লোকের। বসে। চারদিকে অনেক ভেলভেট পড়ে ররেছে। তখন সবচেরে ভালো ভেলভেটের দাম °গজ-প্রতি এক টাকা চোন্দো আনার বেশি নয়। সব জিগ্যেস করতে একশ, একশ একুশ এইবকম বা খুশি বলে গেল। আমাকে অবাক হতে দেখে তিনি বললেন—হা৷ এগুলো সবচেরে ভালো পোষাক, পাবলিক থিয়েটারের পক্ষে অন্ত দাম দিয়ে কেনা সম্ভব নয়। বলনুম--সম্ভব তা নয়ই। কাৰণ সৰচেয়ে ভালো ভেলভেট এক টাকা চৌদ্ধ খানা গজ অত দাম হবে কেন? দর আপনি জানেন না, তা টাকা আপনার যতই থাক। কথাটা তাঁর ভালো লাগল না।

এর পর কথার কথার স্বদেশীযুগের কথা উঠল। বললেন— রাজা স্থবোধ মল্লিক ছিলেন a Prince among men, ১১০৫ সালের কথা National University হবে, পাঁচ লাখ টাকা পাওরা গেছে। গোলদীখিতে সতীশ মুখ্জো মণাঁর স্থবোধ মল্লিকের টেলিগ্রাম পডলেন—Another five is to follow.

গান শেখার কথার বললেন—সন্ধ্যের মুখেই গান গেরে নেওরা ভালো। যার লজ্জা নেই তার যদি শেখবার ইচ্ছে থাকে তো তারা ভালো শিখতে পারে।

সংস্কৃতি সংখ্যানের কথা উঠনে বললেন—সংস্কৃতি সংখ্যান এখন সার্বজনীন তুর্গোৎসবের মত পাড়ার পাড়ার হচ্ছে। ও সব না করে একটা সংস্কৃতির পত্রিকা বের করে।, কাজ হবে। এর পর পত্রিকা প্রসঙ্গে বললেন—বাংলা দেশের এক শ্রেষ্ঠ ইংরাজী দৈনিকের সম্পাদকের নাম করে বললেন, ওকে বলেছিলুম বাঁধা মাইনে দিরে একজন ভালো ক্রিটিক রাখো।

মদ থাওৱার কথার বলদেন—রাম মদ খেতেন, সীতা মদ খেতেন, কেইটাকুবও মদ খেতেন; জার 'রামরাজ্যে' এঁরা মদ খাওরা বন্ধ করতে চাইছেন। গান্ধীজির Sense of humour ছিল না।

এবার বিহাস্যাল ভক্ত হলো। উনি বললেন—লোকের কথা ভান

কথার **ওপর কথা** বলবে Promptingএর দিকে কান দেবার ততো দরকার নেই। **

আবার ওঁর সঙ্গে দেখা হলো ওঁর বাসার—০১শে আছুয়ারী।
একজন কবি নাট্যকারের নাটক পড়ান্ডে নিয়ে গিরেছিলাম।
কথাকে থার শিশিরকুমার বললেন—একটা জিনিব হয়ত তুমি লক্ষ্য
করেছ, আমি কথনো মেক-আপ করে আয়নায় মুখ দেখি না। ইত্মিয়াকে জিজ্ঞাসা করি—দেখ, সব ঠিক আছে কি না। ব্যস!
নিজের যা চেহারা আছে তার থেকে মেক-আপ করে কি য়ঙ মেখে কী
স্থল্ব লাগবে! আমার তো মনে হয় তা লাগবে না। অবশ্ব অন্ত
স্বাই থেকে থেকে মেক-আপ করা অবস্থার আয়নার সামনে মুখটা
একবার দেখে নেমু—কমন হয়েছে নিজেকে দেখতে।

৮ই ফেব্রুগারী শিশিরকুমার এলেন গ্রন্থজগতে। তার ক'দিন আগে থেকে তিনি গিরিশ বাবু না অর্থেন্দু বাবুর শিষ্য, এই নিয়ে ধবরের কাগজে থ্ব লেখালেথি হয়েছে। তাঁকে এ সম্বন্ধে প্রশ্ন করায় কললেন—স্থামি গিরিশ বাবুকে জীবনে তিন-চার বার মাত্র দেখেছি সামনাসামনি। কথাবার্তাও বলেছি। অর্থেন্দু বাবুর সঙ্গে কোন দিন দেখাই করিনি।

অভিনেতা হিসেবে অর্ধেন্দ্ বাবু গিরিশ বাবুর চেরে অনেক বড়। কিছ গিরিশ বাবুর ছিল realism, ছিল দর্শক-বিচারের ক্ষমতা আরও একটি কথা, গিরিশ বাবুই বাংলা মঞ্চকে লাইফ দিরেছেন, মঞ্চকে বাঁচাবার জ্ঞান্ত স্বরক্ম compromise ক্রেছেন।

প্রত্যেক বড় অভিনেতাই অভিনয় কালে 8²8 ব্যবহার করেন অবশ্ব playকে disturb না করে। অর্থেন্দ্ বাব্ কিছ playকে disturb করতেন।

দক্ষযজ্ঞতে গিরিশ বাবুকে প্রথম দেখি, কিন্তু তথন নাটক দেখার চোথ আমার কোথায়? তবে তাঁর সেই অদ্ভূত চোথ হটির কথা আজন্ত মনে আছে।

অর্ধেন্দু বাবু কিন্তু ছিলেন অসাধারণ পণ্ডিত।

থির পর এক বছরের ওপর কোনো কিছু লেখা আপাততঃ পাওয়া যাচ্ছে না।

১৯৫৮ সালের ২১শে ফেব্রুমারী তারিখে আবার এলেন গ্রন্থজগতে। সেই সময় পিয়াস'নের লাইফ অফ ডিকেন্স পড়ছেন। গুসেই বললেন—ওহে ডিকেন্স তে। লোক স্মবিধের ছিলেন না। গ্রব্পাব নিজেই হেসে বললেন—স্কাণ্ডাল পড়তে ভালই লাগে।

নাটক পড়ার কথা ওঠার বললেন—এলিজাবেখীর মুগেব নাটকগুলো পেলে ভাল হয়। গ্রীক নাটকগু পড়া দরকার। তারপর ইবসেন, ইভাসেন ঐ সব সেনফেনের বই পড়বো।

এই সময় বিহার্স্যালের জন্ম লোক জন এসে পড়লো। ক'দিন
পরেই বেলেঘাটার সংস্কৃতি সম্মেলনে আলমগীর হবে। বিহার্স্যাল
তক হবাব আগে বললেন যে, নিকোলাই মানুচির story of
Mughal থেকে আলমগীরের অনেক কিছু নেওয়া। তারপর
তক হলো বিহার্স্যাল।

থকজনকে পার্ট বলতে গিয়ে বললেন—থাম না কেন ? Life of acting হছে pause। জীবনে বভটা থামো, ঠেজে থামবে ভার চেরে বেলি। নইলে লোকে বুঝবে না। লোককে বোঝাঝার ছল্মে revive pause,

জাবাৰ প্রোনো যুগের কথা উঠলো। বলনে— দক্ষক দেখেছি, জ্রান্তি দেখেছি। আরো বলনে——কথা বলতে বলতে আমার মাথার ছবিগুলো ভেসে ওঠে। শব্দে চিত্র হয়। অবস্থ সে চিত্র definite হয় না। এক এক বক্ম চীংকারে এক এক বক্ম বক্ম রঙের তাঠি। খুব চীংকার করলে লাল রঙের effect আসে।

তথনি গিরিশ বাবুর কথার বললেন—উনি তো রামারণ মহাভারত উগরে দিরেছেন।

আবার আগের কথার ফিরলেন—কথা দিয়েও ছবি ফোটানো বার। বাত্রাও তাই ওয়ার্ড পেইন্টিং।

নিজেদের কথার বললেন—আমরা যা কিছু করেছি, মনে মনে আর্থাং কল্পনার বা ভেসে এসেছে তাই করেছি। প্রথম open sky ব্যবহার করি সীতাতে। আলোতে shadow পড়াও বন্ধ করি। কেবল নাচের সময় shadow পড়ে।

ইংলণ্ডের অভিনেতাদের সম্বন্ধে বললেন—অলিভিয়ার ছাড়া সন্ত্যি সন্তিয় নামকরা ভালো অভিনেতা কেউ নেই। ১৯২২ সালের পর ভালো অভিনেতা আর কেউ হরনি।

দেশী অভিনেতাদের সম্বন্ধে—গিরিশ বাব্, অমৃত বাব্ আর দানী বাব্র অভিনয় বারা দেখেছেন তারা জানেন কত বড় অভিনেতা ছিলেন তারা। অমৃত বাব্র বই সম্বন্ধে আলোচনা করা বিশেষ প্রয়োজন।

বঙ্গমঞ্চ সম্বন্ধে একজনের বিরূপ মস্তব্যের উত্তরে বঙ্গজেন— বঙ্গমঞ্চকে ঘুণার চোথে দেখনে রঙ্গমঞ্চ আপনাকে দেবে কি ?

তারপর বললেন— মমর দত্তের জীবনী তাঁর ভাইপো লিখেছেন, তার মূল। আছে। মুগটাকে ভালো করে চেনা বার, অমৃত বাব্ ধুব থারাপ নাট্যকার ছিলেন না। গিরিশ বাব্কে তাঁর মুগ দিরে বৃষতে হবে। ওঁরা যদি বাত্রাকে উন্নত করবার চেটা করতেন, ইংরেজী নাটকের মোহে চোধ ঝলদে না বেত তাহলে বাংলা নাটকের চেহারা অঞ্চ রকম হতো।

সিরাজদোলা প্রসঙ্গে বললেন—গিরিশ বাবুর সিরাজ ছিরো নয়। রাণী নিতান্ত ছেলেমামূব।

পবের দিন আবাব বিহাস্তাল। বইটা তথনও শেষ হয়নি। এসেই বললেন—ডিকেন্স মানুষটা ভালো ছিলেন না। স্ত্রী স্থলরী ছিলেম, কিছ তবু এদিক-ওদিক ছিল। ঐ বে কে গকটি অভিনেত্রী, তার সঙ্গে খুব গভীর প্রণয় ছিল।

তারপরেই বললেন—রবীন্দ্রনাথ সম্বন্ধীয় অধুনা প্রকাশিত বই সম্বন্ধ—আসল কথা কিছু নেই তবে কণ্টিনেণ্টাল নাট্যকার, ইবসেন থেকে তক করে আজকালকার আমেরিকান নাট্যকার, আমার আবার নাম মনে থাকে না, পর্যন্ত স্বায়ের কোটেশনকটিকিত, অমুবান অংশটাই ভালো হয়েছে। তবে ছোকরার ক্ষতা আছে, অভগুলো বই তো প্রেছে।

ইউনিভার্সিটি ইন্টিটিউটের কথা উঠল, বললেন—আমাদের সমর ইন্টিটিউটের কি দিনই ছিল। আমি আর নরেশই ছিলাম best actor আর আমরাই সাধারণ বঙ্গমঞ্চে বোগ দিলুম।

স্পামাদের মধ্যে স্থার একজন ছিল, তার নাম ছিল জ্ঞানপ্রির। স্থামরা বলতাম গুরু। বড় মিটি ব্যবহার ছিল। কখনও দলাদুলি হতে দিতো না। তাঁৰ অপূৰ্ব কণ্ঠ ছিল। থব যে একটা সাধা-গলা ছিল এমন নয়, তবে শুনতে ভালো লাগতো। একবাৰ সেক্সপীয়রের নাটকের আগে মঙ্গলাচরণ গেয়েছিল, তাই শুনে ও দেশের এক ভদ্রলোক বলসেম—ও ছেলেটি কে? এখানে পড়ে আছে কেন? ওন্দেশে গেলে হপ্তায় একশ' কুড়ি ভলার পাবেই।

ববীক্রনাথের 'গুপতী'র কথা উর্চতে বললেন—তপতী করে আমার কোনো হুঃখ নেই। কবি অভিনয় দেখেন নি তবে নাটক পাঠি সুনেছেন। সাজ-পোষাক কেমন হবে তা নিয়ে খুডো-ভাইপোয় ঋগডা; কবি বললেন—এই তো ওঁদের জন্মে ঐ রকম পোষাক পরতে হলো। তাতে অবনী বাবু বললেন—ত্মি যা দেখো তাই প্রবে বল তো, কি করবো বলো?

দৃশুপ্টের কথা জিজ্জেদ করতে কবি অননী বাবুকে দেখিয়ে বললেন—এঁদের অক্ষমতার জন্মেই দৃশুপ্ট বাদ দিয়েছি। এঁদের তো ধারণা অজ্জার পর পৃথিবী আর এগোয়নি, তোমরা নিশ্চয়ই দৃশুপ্ট করবে, আমি এদে দেখবো।

তা জছর এমনই দৃশুগট করেছিল মে, কি বলবো। শেষ দৃশ্যের দৃশ্যপট এমনি এঁকেছিল যে শীত করতো। আমায় এমে বললে—
বড়বাবু আখরোট গাছ তো দেখিনি, তাই আপেলগাছ এঁকেছি।
অখচ দেখো, তাঁর আঁকার দাম কেউ দেয়নি এদেশে! তবে 'দীতা'র ভাঙাটোরা দৃশ্যপট দেখেই আমেরিকানবা অবাক হয়েছিল, বিখাসই করতে চায়নি যে কোনো হিন্দুর আঁকা। বলেছিল—এ নিশ্চয় কোনো পশ্চিমী শিল্পীর আঁকা। কিছু তারা অত্যস্ত সহজ কথাটি ভূলে গিরেছিল বে, তাদের দেশে তথন শুধু সমুদ্রের চেউ আর জল্প, আমাদের দেশে তখনও ছবি আঁকা হছে।

তবে একটা কথা বলবো, ওদের উৎসাচ আছে। সীতার নাচ
নাচতে চল্লিশ ডলার নিয়ে অনেকগুলো নেয়ে নাচতে এসেছিল।
রাধাচরণ আর—(নামটা বৃশ্বতে পারা যায়নি) শেখাতো। ন'টার
সময় আসার কথা, ন'টা বাজতে গাঁচ পর্যন্ত কারো দেখা নেই, আর
ন'টা বাজতে না বাজতে ঝপাঝপ বাথক্রমে পোষাক খুলে ছোটো
পোষাক পরে নাচার জন্তে তৈরী। আবার বলতো—নাচ শিখবো
কথন। এঁদের এক একজনের সিগারেট থেতে বিশ মিনিট, বাকি
সময় হ'জনে ঝগড়া করবেন তো শেথাবেন কথন আর আম্বা
শিখবোই বা কী গ

ধনগোপাল ভারতীয় অথচ মেলাটে দেখা হতে বললে—আপনার থোঁজ পাইনি বলে দেখা করতে পারিনি। দেশে ফেরার পর অমৃতবাজারে লিখেছে দেখলুম—শিশির বাব্ প্রথম শ্রেণীর অভিনেতা বা পরিচালক হতে পারেন, কিন্তু তাঁর সঙ্গীরা ছিতীয় শ্রেণীব ছিল বলেই তাঁর নাটক সার্থক হয়নি।

ভারতীয়দের কাছে বিশেষ কোনো সাহায্যই পাইনি আমরা। Crowd sceneএ যারা অভিনয় করেছিল, তাদেরও হ' ভলার করে দিতে হরেছিল, অথচ চীনা অভিনেতা—(নামটা বুঝতে পারিনি) যথন এসেছিল, তথন ওথানকার চীনারা কী সাহার্যই না করেছিল।

ওদের দেশে জাপানীদের তাড়ালেও চীনাদের অবস্থা ভা'লাই। বে জিনিব কোথাও মেলে না, তাও China town এ পাওয়া যায়।

কলকাতার China town এরও সেই একই অবস্থা। Canton Hotel ১১০৮ সালে প্রথম আবিকার করে আমাদের শিবু বড়াল।

এবার আলমনীরের রিচান্তাল সক চ'ল্। ক্ষীরোদপ্রসাদ সম্বন্ধে বললেন—ক্ষীরোদ বাবুর লেখার balance বড় ভাল, একটু ছোট হলেই কানে লাগে। তিনি লিখতে শিখেছিলেন

ভবে ওঁর একট্ অসুবিধে হয়েছিল, শ্রীরে কিছু ক্ষীণ ছিলেন ও ভাই বীরত্বের কল্পনা কিছু প্রথব ছিল। একজ্ঞন লোকের ক্ষমতা পাঁচ লক্ষণুণ না বাড়ালে তাঁব জানন্দ হয় না। রড়েশ্বের মন্দিরে রড়েশ্বর এক দলকে ঠাঙালো, ভার প্র ত্জনকে তু' বগলে তু' জনকে হুহাতে, আর আর একটাকে দাঁতে করে ধবে চললো।

তার পর রপনগরের রাজসভায় শ্রামসিংহ বেখানে রামসিংহকে কছোয়া' বলে টিটকারী দিচ্ছে সেখানটা বোঝাতে বললেন—কছোয়ারা আসলে কচ্ছ থেকে এসেছিল, হয়ত রাজপুতই নয়। তবে রাজপুতরাও mixed জাতি; কালোও আছে, ফরসাও আছে। ওরা বোধ হয় শকদের (Seythian) বংশগর।

২৩ তারিথেও রিহার্স্যাল দিতে এলেন। প্রথমেই কে একজন বুঝি বলেছে আমাদের গভর্ণমেন্টকে দেশের কেউ দেখতে পারেন না।

সঙ্গে সঙ্গে চেপে ধরলেন—কেউই যদি দেখতে পারে না ভ গভর্ণমেন্ট জেতে কি করে ?

আর একজন বললে—বোধ হয় রাস্তা করেছে বলে গ্রামাঞ্জের লোকেদের স্থবিধে হয়েছে, ভাই ভারা সরকারকে জিতিয়েছে।

সায় দিলেন তাই হবে, স্রেফ রাস্তা করেই জিতছে ওরা।
তার পরেই প্রসঙ্গান্তরে গেলেন Picture-goer বড় ভাল কাগজ ছিল,
তবে আজকাল সে ফর্মাও নেই, সে জিনিষও নেই। আবার হু:থ
কবে বললেন—আজকাল নিউ মার্কেটে সেক্সপীয়রের বড় বড়
প্রডিউসারদের ২১৷২২টা দৃশ্যের ছবিওয়ালা বই পাওয়াই যায় না।

বা'লায় কোনো ভালো থিরেটার সম্বন্ধীয় পত্রিকা ছিল কি না প্রশ্ন ববাতে বললেন—একটি পত্রিকা কিছুদিন বড় ভালো চলেছিল— নাট্যভারতী, মণিলাল বন্দ্যোপাধ্যায় চালিয়েছিলেন। ওতে (হরপ্রসাদ) শাস্ত্রী মশারের লেখা ছিল, গিরিশ বাবুর লেখার reprint ছিল।

ছ:খ করে বললেন—আমরা বেশি ইংরেজী শিথে বিপদে পড়েছি! গিরিশ বাবুদের মাটির সঙ্গে যোগ ছিল; সমালোচনা টমালোচনা পড়েন নি; সেকেলে এডিশনে সেক্সপীয়র পড়েছিলেন, কাজেই বুঝে পড়েছিলেন। ম্যাকবেথের অপূর্ব অফ্রবাদ করেছিলেন। তবে শিক্ষিতরা তাঁকে চেপে দিয়েছে। প্রমথ চৌধুরী মশায় প্রফুল্ল দেখে বললেন—এই সব 15th class বই নিয়ে শিশির কেন যে মাতামাতি করছে। রবিবাবুই তাঁকে চেপে দিলেন।

পুরোনো কোন কোন অভিনেতা-অভিনেত্রীর অভিনয় দেখেছেন প্রশ্ন করার বললেন—পুরোনো দিনের মধ্যে তিনকড়ির অভিনয় দেখেছি জনায় প্রবীর আর স্থভদার ভূমিকার। আর ক্ষেত্রমণি— ইতিহাসে তার নাম নেই, কিছ অমন গয়লা বৌ—অমন করে 'বৃক্ মধ্যে ধার' বলা থমনটি আর দেখিনি। বিনোদিনীর অভিনয় দেখিনি।

অপরেশ বাবুর গলা বড় মিষ্টি ছিল—স্থরও ছিল।

আমাদের দেশে convention বছড বেশি চলে। তারাস্থলনীর গালারও স্থর ছিল, তরে বয়স হতেই মিষ্টছ গোল। হাড় বেরিয়ে লাবণাও চলে গোল। আমি বলতুম—তারা মা, ও-সব ছাড়ো।

তা বলতো—বাবা, জামি দেকেলেই থাকবো, (মুস্তাফি) সাহেব ষা শিথিয়েছেন তাই বলবো ।

আমি বলতুম-সাহেব তো শেখায়নি, শিখিয়েছেন গিবিশ বাবু। তাবাব সঙ্গে অনেক দিন কাটিয়েছি। থিয়েটাবেব বাইরে তাকেই সবচেরে বেশি টাকা দিরেছি, মরবাব সমরও টাকা দিয়েছি। তবে নেয়েবা বলবে কিনা জানি না। ভাবা খুব বৃদ্ধিমতী ছিল, বাংলা বই সব পড়েছিল, আবু Problem তুললে এমন সব কথা বলতো যে অবাক কবে দিতো।

ইন**টি**টিউট প্রস*ক্ষে বলজেন—ইন*টিটিউটের ব্যাপারে আগে গোলমাল কৰলেই কলেজে বিপোর্ট পাঠানো ছ'তো, নাম কাটানোর জন্ম। আন্ত বাবুকে বলনুম,—থিয়েটাব, খেলাধ্লো কবতে আনে ণণানে, তাব জ্ঞাে যদি কলেজ থেকে নাম কাটা যাম, ভবিষাৎ নষ্ট চনত আব কি মেস্থাৰ পা এয়া যাবে গ

উনি ৰুবলেন—ভবে যে ওবা বললে এতে ভালো হবে গ বাদেব বাঁচালুম ভাবা কিন্ত কোমব বেঁৰে আমাৰ বিৰুদ্ধাচৰণ বৰতে লেগে গেল।

শেখানোৰ কথাৰ বললেন—এখন আৰু আমাৰ মনেৰ জোৰ নেই, অথচ একদিন অনেককেই ত তৈবী করেছিলাম।

সীতা কত দিন বিহাস'sল দিয়েছেন ? প্রশ্ন কবায় বললেন—মাসের পর মাস। মাঠে বিহার্সাল দিতে গিয়ে বই চুবি গেল। লোকে **বোগেশ** বাবুকে দৌষ দেয়, জানে না তো কন্ত অন্তবিধেৰ মধ্যে বই **লিখেছেন।** পুৰোনো কাঠামোর মধ্যে বাপ'ত হয়েছিল, তুনু যা **লিখেছিলেন** অপূর্ব! শান্ত্রীমশার বলেছিলেন—লবকে আনা খুব্র স্থলর হয়েছে।

হঠাং কেমন আনমনা হয়ে পঙলেন, বললেন-একটি জায়গা দাও, আর বছর তিনেক বোন ছর বাঁচবো, পুরোনো সত্তব বছরের কথা ভূলে নতুন উক্তমে কান্স করি।

আবাব প্রসঙ্গান্তবে গেলেন—আমি, আজাদ আর জহরলাল একবয়সী। জহব আমাব চেয়ে এক মাস কুডি দিনের ছোটো **আর** আজাদ ক'মাসেব বছ। কাশ্মীবীরা হলো কাপুক্ষ আর বিশ্বাস-বাতকেব জাত। হরিশঙ্কর কাউল আব ভাব ভাই- দেওয়া**ন হরে** নানা বাজ্যেব থবৰ দিয়েছে। আৰু হবি সিংকে মেয়ে[।] কলেভে কেউ দেখতে পাৰতো না। সে ছাত্রদেব কথা মাষ্টাবদের বলতো, প**ণ্ডিতের** বাজতবঙ্গিণীৰ অন্থবাদ দেখ, বুঝৰে আমাৰ কথা ঠিক কি না।

ক্রমশ:।

রাজধানীর পথে পথে

উমা দেবী

ডালে-লট্কানো লাল ঘুডি

পাবিপাট্য,

টদাৰ আকাশেৰ অনস্ত নালিমাৰ নয়, ঘনবিক্সস্ত প্রপুঞ্জেব গাঁও ভামিলিমায় ন্য, দৃষ্টি ওদেব আসক্ত দেওদাবেব ভালে-সটকানো এক লাল ঘূডিতে। কোনো দশন গড়েনি ওদেব ঐকাস্থ্য আকাশ ও পৃথিবীৰ সঙ্গে, কোনো কাব্য ঘনিয়ে তোলেনি ওদেব ঢোখেব ঐ বিভোব দৃষ্টিকে. কোনো বিজ্ঞান আনেনি ওদেব আকাশেব কোনো অনুসন্ধিৎসা।

ওদেব হৃদেশ চঞ্চল—ওদেব দৃষ্টি বিহুবল के (मध्माय्य एंग्लिनारकारना शकरो लाम प्रिष्ठ ।

পিতাৰ ক্রোনে আবক্ত নয়নেব কোনো ইঙ্গিত নেই ঐ লালেব মধ্যে— মাধ্যে শাসনের ভঙ্গিতে উত্তত হাতের লাল শাঁথার কোনো আভাস নেই এ লালেব মধ্যে—

শাদ্দনীৰ লাল চুড়ি আৰু লাল ফিতেৰ কোনো শ্বতিও নেই এ লালেব মধ্যে,---

ও ওধৃই লাল দৃভি--দেওদাবেব উঁচু ডালে আটকে-যাওয়া চিব-অপ্রাপ্য তবু চিক-আকাজ্ফাব ত্র্ল ভতায় স্কলব, ঐ শিভচিত্তেব মনোহাবিণী ভঙ্গিমায় সংলগ্ন— ঘনবিশ্বস্ত দেওদাবপত্রেব ঘন-আন্দোলনে বিভগ্ন, একটি উথড়ে-আসা কিংবা কেটে-যাওয়া লাল ঘূড়ি এক হাত লম্বা আব চওড়া শিশুমনেব একটি কুদ্র বর্গ— বার মাঞ্জা-দেওয়া সুতোর ঝিকঝিক করছে কাচের গুঁড়ো সন্ধ্যাকালীন বক্তিম আলোকের স্পর্ণে।

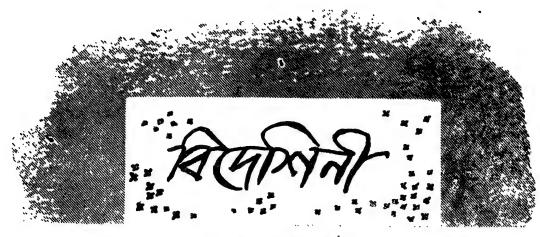
खन्नार्फ नय्-कनकालाहरन गुख वे वानचिना महाामीय कन অন্ধনয়—ছিন্ন দেহাবরণ— ^{জিমন} কাকৃব পাণে নেই **ভূতো, মাখাৰ কক্ষ** চুলে নেই স্নীিখির

পাশ্বে নেই বোভাম-পৰা জামা---ওবা কেউ বা ব্যস্ত ঘূডিব বঙেব গুণপ্ৰায়, কেউ বা মাঞ্চাব— সেই অন্ধৃত্ত অৰ্ণনায় কৃষ্ণকায় বালখিল্য সন্ন্যাসীৰ দল-পথই যাদেব তপোবন আব ছনিয়াব সমস্ত নব-নারীই পয়সা চাওয়ার মা আব বাপ।

হঠাৎ উঠল হাওয়া—মেঘ এল ঘোরালো হয়ে বিকেলেব সূর্যকে ভূবিয়ে দিল সন্ধ্যাব অন্ধকারের সমুদ্রে---শনশনে তাব-বেঁধা হাওয়াষ কাঁপতে কাঁপতে চিড খেয়ে পেল ঘূড়ির

হঠাং আঘাতে চিড ধবে যাওয়া বাক্তম হৃদয়েব মতন। ওরা পালাল উদ্ধর্খাসে বড় বড় বৃষ্টির কোঁটায় নাচতে নাচতে, ঐ অদ্বভূক্ত, অন্ধনগ্ন মানব-শিশুৰ কষেকটি কগ্ন আকৃতিৰ উপহাস, যাদেব সৰ আশাই ঐ লাল ঘূড়িৰ মতন থাকৰে অপ্ৰাপ্যেৰ উঁচু শাথায় আটকানো,

বাদের সমস্ত উত্তমই নষ্ট হবে তল ভকে পানাব পঙ্গু বাসনাধ, যাদেব জীবন হঠাৎ একদিন এক ঝডেব বাত্রে সব চেয়ে আগে ছিঁডে যাবে এ ঘৃদিব কাগজেব মতন, ক্ষার্ভ সমাজবক্ষেব ছিন্ন ফুসফুসেব বক্তিম টুকরোব মতন-উদ্ৰে যাবে অনিৰ্দিষ্ট পথে-কেউ জানদেও চাইবে না কোথায়। ঐ তাবাই নিবে যাপে সব চেয়ে আপে যাদের মন প্রাণশাক্ততে তবঙ্গিত হত---ঐ দেওদাবেব ঘনবিক্তস্ত পত্র আন্দোলিত শাথাব মতন, আৰ আকাশ ও পৃথিবীর বোগস্থত্র যারা রচনা করতে পারত ঐ বিকৃষিকে রঙিন মাঞ্চা স্থতোর মতন---ঐ অৰ্ছনঃ, অৰ্ছভুক্ত পথে মূরে-বেড়ানো বালখিল্যের দল।



(সিন্ধুপারের উত্তর **শ্বর্ক**) নীরদরঞ্জন দাশগুপ্ত

ি সুশাস্ক-সার পৌত্র বিকাশ এদেশে ডাক্তারী পাশ করে, স্ত্রী সুধা ও শিশুপুত্রকে রেখে অতিরিক্ত পড়াশুনা করার জন্ম বিলেত চলে গেল, আর ফিরল না—এদৰ থবর 'নীন শাড়ি' উপন্থাদে লেখা হয়েছে। বিলেতে বিকাশের ছাত্র-জীবনের কাহিনী নিষেই "সিন্ধুপারে" লেখা। তার পরবর্ত্তী জীবনের ঘটনা এই উপন্থাসখানির বিষয়বক্ত। কোনও বিশেষ কারণে বিকাশ তার বিশেতের জীবনের কাহিনী তার ছোট বোন বুলাকে চিঠি লিখে বিস্তারিত অকপটে দিছে জানিয়ে।—লেখক]

এক

সেণ্ট জন হোটেল সঙ্গিহল। ওয়ারউইক সায়ার

ক্ল্যাণীরাস্থ

ল্লেহের বোন বুলা !

এদেশে আমার ছাত্রজীবনের কাহিনী লিখে তোমাকে পাঠিয়েছি।
এন্ড দিনে নিশ্চয়ই পেয়েছ। এইবার পরিণত বয়সের কাহিনী
আরম্ভ করি। ছাত্রজীবনের কাহিনীটি যতটা সম্ভব বিস্তারিত করেই
লিখেছি। পড়ে জেনেছ—সে জীবনে এ দেশের কাজ শেব হলে দেশে
ফিরে যাওয়ার সব ব্যবস্থাই ছয়েছিল, কিন্তু সহসা কি রকম পড়ল
বাধা। তার পরেও দেশে ফিরে যাওয়ার কথা তেবেছিলাম কিন্তু শেব
পর্যন্ত হয়ে ওঠেনি—কেন, সবই ত জান।

আজ জীবনের অপরাত্তে দাঁড়িয়ে সমস্ত জীবনটার দিকে চেয়ে একটা জিনিব মর্মে মর্মে উপলব্ধি করেছি মে, আমাদের কোনও কর্মই আমাদের ইচ্ছাধান নয়। আগেট এক জায়গায় তোমাকে লিখেছিলাম—জীবনস্রোত্তের কোন সে অতল গভীবে কী যে তরঙ্গের ঘাত-প্রতিঘাত চলে উপরে ভেসে ভেসে আমরা কিছুই জানি না। কোনও প্রতিরোধ করার শক্তিও নাই আমাদের, অথচ উপরের ভালা-গভা সবই হয় তারই ফলে, আমরা তর্ম হাবুছুব্ থেয়েই মরি। এ কোন শক্তির মহালীলা! আজও সেই কথাই বলি। আমার সে যুগের জীবনটার দিকে চেয়ে ভেবে দেশ—যেদিন দেশের জন্ম রওয়ানা হতে গিয়েও যে আমার বাওয়ার জন্ম প্রস্তুত্ত হয়ে ট্যাক্সিতে উঠতে যাছিলাম। হঠাৎ পড়ল বাধা। আমি ত স্বপ্লেও ভাবিনি—ও ভাবে বাধা আসবে। স্বার্টনও বে ভাবার দেশে আমার কার্যানিত বে ভাবন আমার দেশে কিবে বাধ্যাটাই চেয়েছিল সেটা

সে ব্গের কাহিনী পড়ে মার্লিনের চরিত্রের দিকে একটু লক্ষ্য করলেই সহজে বৃঝতে পারবে। মনে আছে ত—শেষ পর্যান্ত আমি ধর্থন মার্লিনকে ছেড়ে দেশে যেতে একান্ত কাতর হয়ে পড়েছিলাম, মার্লিনই আমাকে ফিরে বাওয়ার জন্ম উৎসাহ দিয়েছিল, অমুপ্রেরণা দিয়েছিল। তবে ?

হাত তুমি বলবে—তুমি মালিনের সঙ্গে প্রেম করতে গিয়েছিলে কেন ? তুমি ভারতবর্ষের সন্তান, দেশে তোমার সাধনী স্থাবতী দ্রী বর্ত্তমান, তা সত্ত্বেও বিলেত গিয়ে মার্লিনের সঙ্গে প্রেম করার ফল ত তোমাকে পেতেই হবে। কিন্তু বুলা! আমি তোমাকে কথাটা আরও একটু তলিয়ে তেবে দেখতে বলি।

আমার ছাত্রজাবনের সমস্ত ব্যাপারটাই তেবে দেখ। ডডিংটনে,
মার্লিনের সঙ্গে আমার প্রথম দেখা হল। আমি যে ডডিংটনে
গিয়েছিলাম সে ত মার্লিনের সঙ্গে দেখা করতে নয়? মার্লিনের
অস্তিছই আমি তথন জানতাম না। এবং লগুন ছেড়ে ডডিংটনে
আমি যে খুব খুদী মনে গিয়েছিলাম—তাও ত নয়। লগুনে
কাজ শেব হলে, আমি প্রায় এক মাদ বদে ইংল্যাণ্ডের নানা
তাদপাতালে চাকুরীর দরখান্ত করেছি—ডাক্তারী পরীক্ষা দেওয়ার
আগে ছয় মাদ তাদপাতালে অভিজ্ঞতা সঞ্চয় করার জ্লা।
কেন না, ডাক্তারী পরীক্ষা দেওয়ার জল্ল সেটা প্রয়োজন ছিল।
আমার ইছা ছিল লগুনে কিবো তার কাছাকাছি কোনও হাদপাতালে
চাকুরী করি। কিছ কই—কোথাও ত কিছু ছুট্ল না। শেব পর্যান্ত
স্বদ্ব কেম্বি জ্লামানের গ্রাম ডডিংটন, সেইখানে হাদপাতালে
একটা চাকুরী পেলাম। কাজেই চাকুরীটি আমাকে নিতেই •হন।

বুলা ! এখন তোমাকে জিজ্ঞাসা করি, ইংল্যাণ্ডের বিভিন্ন স্থানে বিভিন্ন হাসপাতাল থাকতে, কোন শক্তির লীলায় আমাকে ডজিটনেই বেতে হল—বেখানে ছিল মার্লিন ? অন্ত কোথাও গেলে হ মার্লিনের সক্ষে আমার জীবনে দেখাই হত না।

তার পর ডডিংটনে থাকাকালীন মালিনের সঙ্গে স্বামার দেখা এবং তার সঙ্গে আমাব প্রেমের কাহিনী—সবই জান। কিন্তু আবার একটা কথা জিজ্ঞাসা করি। মালিনের সঙ্গে দেখা হওরার আগে এমি জনসনের সঙ্গে আমার লণ্ডনে দেখা হরেছিল। এমি জনসনও স্থন্দরী ছিল। মিশেছিলামও তার সঙ্গে খুব। কিছু কই, তার সঙ্গে ত প্রেম হয়নি? মার্লিনের সঙ্গেই সে গভীরে কি বা প্রেম হল কেন? কোথায় কোন যোগাযোগ ছিল আমার সঙ্গে মালিনের? আমি না হয় হুর্বল চরিত্রের লোক—সহজে অভিভূত হই। কিন্তু মার্লিন? সে ত থব তুর্বল চরিত্রের মানুষ ছিল না ? তার সেই কথাটা মনে আছে ত? আমার সঙ্গে পরিচয় হওয়ার আগেই সে তার অন্তরঙ্গ বান্ধবী ভরোথীর কাছে একদিন চুপি চুপি বলেছিল—আমি জগতে এমন একটি মামুৰ খুঁজে নিতে চাই যে, বিশেষ করে তৈরী হয়েছে আমারই জন্ম। আমিই বা সেই বিশেষ মানুষ্টি হলাম কেন ? যথন মনে মনে সে আমাকে সেই মানুষ্টি বলে বরণ করে নিয়েছিল তার ত কোনও অপরাধ ছিল না ? সে ত জানত না আমি বিবাহিত ?

আরও ভেবে দেখ—মার্লিন দেদিন শুনল আমি বিবাহিত, তারপর থেকে সে আমার সঙ্গে সমস্ত সম্পর্ক ত্যাগ করেছিল—মনে থাছে ত? যতদ্ব মনে পড়ে, তারপর ছ'মাসের উপর তার সঙ্গে দেখা হয়নি—সে আমার সঙ্গে দেখা করতে চায়ওনি। সে সময়ের আমার মনের অবস্থাব কথা ছেড়েই দাও, কিন্তু শেব পর্যন্ত আমার বে আমার সঙ্গে মার্লিনের দেখা হল—সেটা কি আমার ইচ্ছায় না মার্লিনের ইচ্ছায়? যে ভাবে আমার সঙ্গে দেখা হয়েছিল সবই জান—এ কোন শক্তির লালা? যদি ওভাবে দেখা না হত সবই বেত চুকে। আমিও এগিয়ে গিয়ের গার্লিনের সঙ্গে দেখা করতাম না, মার্লিন ত নয়ই।

হয়ত বলবে—নানি, ভগবান কথন কা'কে কি অবস্থায় ফেলেন সেটা তিনিই জানেন, তার উপর আমাদের কোনও হাত নেই। কিন্তু যথন যে অবস্থায়ই আমরা পড়িনা কেন, নিজেদের অক্সায়ের হাত থেকে বাঁচিয়ে চলা আমাদেরই কর্ত্তবা। নইলে তার ফল ভোগ করতে হবেই। কিন্তু বুলা। কোনটা ক্যায় এবং কোনটা অক্যায় পর 'কি একটা সঠিক মাপকাঠি আছে? অবস্থা-বিশেষে ক্যায়-খন্যায়ের রূপ পরিবর্ত্তন হর না কি?

নরহত্যা ঘোরতর অন্যায়, কিন্তু অবস্থা-বিশেবে সেই হত্যাই গরে দীড়ায় শুরু ক্যায়ই নয়—পুণা। এর দৃষ্টান্তের ত অভাব নাই ? আরও ভেবে দেখ—মানুষের ন্যায় অক্যায়ের মাপকাঠি যুগে যুগে বদলে বায়। স্বয়ং ভগবান রামচন্দ্র যে ভাবে শৃক্তককে হত্যা করেছিলেন, আজকের দিনে কি তুমি প্রাণ-মন দিয়ে সেটাকে সমর্থন করতে পার ? অথচ সে যুগে সে কাজের অনকার্তনই করা হয়েছে।

ৰাক। ও-সব যুগের বড় বড় মহাসমস্তার কথা ৰদি ছেড়েও দিট অবস্থা-বিশেবে জায়-অক্তায়ের রূপ বদলে যার না কি ?

মার্লিনের জীবনের দিক দিয়েই প্রশ্নটা করি। জমিদারের ^{ছেলে}, স্থবেশ, স্থদর্শন, স্থশিক্ষিত রোলাও মার্লিনকে বিবাহ করতে ^{চেমে}ছিল—মনে আছে ত ? মার্লিন তথন আমার প্রেমে ভরপুর মার্লিন তথন জানে—সামি বিবাহিত, আমার সঙ্গে বিকাহের কথা

তথন সে কল্পনাও করে না। তবুও রোলাগুকে বিবাই করছে আরীকার করল। মার্লিন লায় করেছিল না অলার ? তার মা—সংসারে তথন, তার একনার সংল্পল—বর্নীয়নী, বাতে পঙ্গু তার মা—তিনি প্রাণ-মন দিয়ে চেয়েছিলেন, এই বিবাহটি হোক, তাহলে তিনি শান্তিতে মরতে পারেন। তবুও মার্লিন বিবাহ করতে রাজী হয়িন। রোলাগুকে বলেছিল—অল কোনও পুরুবের বুকে আশ্রম নেওরার কথা আমি ভাবতেই পারিনি। আনাকে ক্ষমা করন। নিজের কাছে সে খাটী থাকতে চেয়েছিল, তাই মায়ের মনে শান্তি দিতে পারেনি সে—অলায় করেছিল ?

আমার দিক দিয়েও কথাটা ভেবে দেখ। মার্লিনকে ছেড়ে আমি দেশে যাওয়ার জন্ম তৈরী হয়েছিলাম, তথন তার প্রধান কারণ বাবা দেশে অপ্রস্থ, তিনি বেশী দিন না-ও বাঁচতে পরেন, তিনি আমাকে দেখবার জন্ম ব্যাকুল হয়েছেন—এই রকম চিঠি দাদার কাছ থেকে প্রায়ই পাছিলাম। দেশে যাওয়াতে কি ভাবে বাধা পড়ল জানই ত? দেশে বাওয়া বদ্ধ করে আমি কি অক্যায় করেছিলাম? রিউম্যাটিক ফিবারের দক্ষণ মার্লিনের হাটটা বিশেষ সবল ছিল না; সবই ত জান। তবে, উত্তর দাও। আমি অনেক ভেবেছি—এ সব প্রথার কুল-কিনারা পাওয়া যায় না।

আরও ভেবে দেখ—উইসবীচের কাজ শেষ হলে আবাৰ ত দেশে
ফিবে যাওয়ার ব্যবস্থা করেছিলান, কেন বন্ধ হল জানই ত। এখন
ভাষি—মার্লিনকে ইংলণ্ডের জাবনস্রোতে ও অবস্থার একলা ভাসিরে
দিয়ে আমার দেশে চলে যাওয়াটা কি ঠিক হত ? আমি কালো,
আমি বিবাহিত—আমাবই জন্ম স্বাই মার্লিনকে ছেডেছিল, আত্মীরযজন বন্ধ্বান্ধর, সমাধ। কেউ ছিল না আর তার। তথন আমার
কি করা উচিত ছিল—তুমিই বল।

বুলা! আজ জীবনের অপরাত্তে গাঁড়িয়ে এইটেই বুঝেছি-জগতে জীবনের ঘাত-প্রতিঘাত, এমন কি আমাদের তথাকথিত কর্ম কিছুই আমাদের ইচ্ছাধান নয়। সবই নির্ভন্ন করে অবস্থাবিশেবের উপরে, আমাদের মনের গঠনের উপরে, বার কোনটার জন্মই আমরা দারী নই। আমি অবশ্য সাধারণ মানুষের কথাই বলছি—তপশ্যাসিত্ত মহামানবদের কথা বলছি না। কেন ? আমাদেরই দেশের মহালাভ্র কেনোপনিবং-এর গল্লটি জান ত ? অগ্রি-বরুণের মত দেবতাদের পর্যান্ত একটি তণুখণ্ড নড়াবার শক্তি নাই—ভার ইচ্ছা ছাড়া। আমি materealist নই। আমি ভগবানে বিশাস করি, মাহুবের मनक व्यविशाम कवि ना । किन्ह भनत्मा मदना यम'-- मदनव मन शिनिन কর্মের কর্ম যিনি, সেইখানেই লীলা। আমরা নিমিত্ত মাত্র। অন্ততঃ আমার ত তাই মনে হয়; আমি অবশু এ সব মহাসমস্থার ক্তটকুই বা বঝি ? আমার নিজের জাবনের কর্ম্মের সমর্থনে আমি এ সব কথা ৰলছি না বলা। তা যদি মনে কর আমাকে ভুল বুঝবে। আমার ছাত্র জীবনের কাহিনীর গোড়ারই আমি তোমাকে লিখেছিলাম, আমি তোমার কাছে বিচারপ্রার্থী নই। লিখেছিলাম পুৰুনীর স্থপান্ত সা মানুবের আদালতে স্থবিচার না পেয়ে তাঁরই বড় আদরের গন্ধর কাছে বিচারপ্রার্থী হয়েছিলেন। তাই লিখেছিলেন •এত কড় দীর্থ व्याच्यकीवनी।

কিন্তু আমি তোমাকে লিখেছিলাম, আমার বিচারের ভার রইল ভবিব্যতের সর্ভে লোলা। আজও সেই কথাই বলি।

प्रहे

আমার এ দেশে ছাত্র-জীবন শেষ হয়েছে—প্রায় বাবো বংসবেরও বেশী। আমি এবন ম্যানচেষ্টাবের সন্ধিষ্ঠিত সহর সেল-এ ডাব্ডারী করি। সেলের ওক্ত হল লেনে আমার নিজেরই বাড়ী এবং সেল রেলওয়ে ষ্টেশনের কাছাকাছি আমার বাড়ী থেকে মাইলখানেক দ্রে মরদেনডেন রোডে আমার সার্জ্ঞারী।

जामात्र अथानकात्र रेपनिक्तन जीवरनंत्र स्मोठामूरि अकठा विवत्र पिटे । সকালবেলা নিজের বাড়ীতে ব্রেক্ফাষ্ট থেয়ে এই বেলা সাড়ে ন'টা আন্দাজ শামি সার্ক্ষারীতে যাই। সেখানে আমারই তালিকাভক্ত রোগীর দলের মধ্যে অনেকে এসে অপেক্ষা করে আমাকে দেখাবার জন্ম। একে একে ভাদের দেখে ফিবে আসতে আমার বোজই প্রায় একটা বাজে। বাড়ীতে ফিরে এসে লঞ্চে (মধ্যাহ্ন ভোজন) থাই। তারপর হু তিন ঘটা বিশ্রাম করি। বিকালে সাডে পাঁচটা আন্দার্জ চা' থেরে আবার যাই সার্জ্ঞারীতে। দটা ছই সার্জ্ঞারীতে থেকে বাডীতে শাসি ফিরে। বিকালের দিকে সাধারণত রোগীর ভীড কম হয়। সাৰ্জাবীতে আমাৰ একজন সেক্টোবী থাকেন—মিদ হলওয়েল। ৰবীয়সী মহিলা কিন্তু বিশেষ কন্মনিপুণা। সাৰ্জ্বারীতে একজন লোকের থাকার ব্যবস্থা আছে—তিনি সেইখানেই থাকেন। মিস হলওয়েলের বাড়ী ম্যানচেষ্টারে। প্রত্যেক শনিবার কাজের পরে ভিনি বাসে ম্যানচেষ্টার চলে যান এবং সোমবার প্রস্থাবে এসে কাজে যোগ দেন। ভাঁর প্রধান কাজ রোগীদের সঙ্গে টেলিফোনে কথাবার্তা বলে আমার সঙ্গে দেখা করাবার ব্যবস্থা করা এবং তার হিসাব রাখা। ব্রয়োজন মত তিনি সার্জ্বারী থেকে বাড়ীতে আমাকে টেলিফোন করে আমার প্রাম্শ নেন।

রবিবার দিনটা আমার ছুটী—কর্মাং সাজ্জারী বন্ধ থাকে।
বিশেষ কোনও জরুরী রোগীর একান্ত প্রয়োজনে হয়ত তাকে বাড়ীতে
গিয়ে দেখে আসি। এছাড়া সপ্তাহে আর এক দিন—ব্ধবার—
বিকেলের দিকেও সার্জ্জারী থাকে বন্ধ—মিস হলওয়েলের ছুটী। তিনি
মাঝে মাঝে ব্ধবার হুপুরেও ম্যানচেষ্টার চলে যান। সেল্ থেকে
বাসে ম্যানচেষ্টার যেতে মিনিট প্রতাল্লিশ লাগে।

সেলের ওক্ত হল লেনে আমার বাড়ীখানির একট্ব পরিচয় দিই। লাল বংরের ছোট একটি দিতল বাড়ী—ছবির মত দেখতে। বাড়ীর সামনে রাজ্ঞার দিকে একটি বাগান এবং তার পাশ দিয়ে বাড়ীর গা-বেঁবে একটি লাল ঘোরান রাজ্ঞা শেব হয়েছে রাজ্ঞার দিকে গ্রটি ফটকেন সাড়ী ভিতরে এসে বেরিয়ে যাওয়ার কল্প। এই ছটি ফটকের মধ্যে রাজ্ঞার রেলিংয়ের ধারে ভিনটি নাতিলীর্ব লার্ক গাছ—কতকটা আমাদের দেশের ঝাউ গাছের মত দেগতে। বাড়ীর ছ'পাশে সারি সারি কয়েকটি ল্পুন (Spruce) গাছে বাড়ীটির শোভা বাড়িয়ে দিয়েছে। বাগানে সবুজ্ব ঘাদের উপর ছড়ান নানা ফুলের বিছানা। একটা মালী আছে—সপ্তাহে তিন দিন বাগানের কাজ করে দিয়ে বায়।

বাড়ীটির মাঝখান দিরে সি^{*}ড়ি—এক তলায় এক পাশে একটি বড় ঘর, আর এক পাশে ছটি। বড় ঘরটি লাউঞ্জ অর্থাৎ বঙ্গবার ঘর—পুরু কার্পেট পাতা এবং খানকরেক গদিআঁটা কোঁচ দিয়ে সাজান। ওপাশের ছটি খরের মধ্যে একটি খাবার, এবং অপারটি ভাঁড়াছ ইত্যাদির কর ব্যবহার করা হয়। এই ঘরটির সংলগ্ন রারাঘর। দোতলায়, একতলারই অফুরপ—এক পাশে একটি বড় ঘর এবং অক্স দিকে ছটি। তিনটিই শোবার ঘর বড় ঘরটা আমাদের, এবং ওপাশের ছটি সাধারণতঃ পড়েই থাকে, কথনও কোনও অতিথি এলে থাকতে দেওরা হয়।

আমাদের ! হাাঁ, মার্লিন এখন আমার বিবাহিতা স্ত্রী। আজ প্রায় বারো বংসর হল আমাদের বিবাহ হয়েছে।

এই বারো বৎসরের কথা মোটামুটি বলি। মার্দিনকে ধথন বিবাহ করি তথন আমার উইসবীচ হাসপাতালের কাজটি শেষ হয়েছে। মনে আছে ত কেম্বি জসায়ারের ছোট সহর উইসবীচেব নর্থ কেম্ব্রিজ্ঞসায়ার হাসপাতাল ? মার্লিনকে বিবাহ করে চলে গেলাম, মার্টারসায়ারের একটি সহর লিডনী—সেথানকার হাসপাতালে একটা চাকুরী নিয়ে। একে ভারতবর্দের M. B. তার উপর এখানে এসে L. R. C. P. M. R. C. S. পাশ করেছি, সাসপাতালে কান্ধ করার অভিজ্ঞতাও ইতিমধ্যে হয়েছে অনেক। তাই হাসপাতালে চাকুরী পাওয়া আমার পক্ষে মোটেই কঠিন হয়ন। লিডনীর চাকুরীটি পাকা ছিল, তাই মার্লিনকে নিয়ে সেখানে প্রায় ভিন বংসর ছিলাম।

সেথান থেকে চলে যাই ম্যানচেষ্টাবের একটি বড় হাসপাতালে আরও বেশী মাইনের একটি ভাল চাকুরী নিয়ে। সেখানে বছর তিনেক কান্ধ করার পরে সেল-এর ডাঃ ম্যাকডোনাণ্ডের কাছ থেকে তার ডাক্তারী ব্যবসাটি কিনে নিয়ে স্বাধীন ভাবে সেল-এ ডাক্তারী করতে সুক্র করি।

সেল এ ব্যবসায় আমার উন্নতিই হতে লাগলো—ডা: ম্যাক্টোনাণ্ডের রোগী ছাড়া অনেক রোগী ক্রমে এসে যোগ দিল আমারই তালিকায় এবং সেল-এ যাওয়ার বছর তিনেকের মধ্যে ওক্ত হল লেনের বাড়ীখানি কিনে ফেললাম—মালিন তাকে সাজাল মনের মতন করে। সামনের **भार्तित्नवरे পরিকর্মনা**য় ক্রমে স্থলব হতে স্থলবতর হয়ে ষ্ঠীতে লাগল। বাড়ীটি কেনার পর বাড়ীর কি নাম দেওয়া হবে, এই নিয়ে মার্লিনের সঙ্গে প্রায় মাস্থানেক আমার আলোচনা চলেছিল কিছ কিছুতেই বেন একমত **গতে পারিনি। মার্লিন যেটা ব**লে আমার সেটা ঠিক মনে লাগে না এবং আমার দেওয়া নামও মার্লিন বেন তেমন উৎসাহের সঙ্গে নিতে পারে না। আমি অবগ্র ভারতীয় নাম দেওয়ার পক্ষপাতী ছিলাম। ভারতীয় নাম দিতে মার্লিনের যে কোনও আপত্তি ছিল তা নয়, কিন্তু কোনটাই যেন তেমন তার মনে লাগেনি। শেষ পর্যান্ত মার্লিন এক দিন তথাল তোমার নামটা ঠিক বেন কি বিকো?

বললাম, বিকাশ।

ভুধাল-বিকাশ কথাটার মানে কি ?

একটু ভেবে বললাম, যা আপনা থেকেই নিজেকে প্রকাশ করে। বলল তা বেশ। বাড়ীর নাম দেওয়া যাক—বিকাশ, সে ^{বেশ}

(इरन क्ललाम, ना-ना। नामहोत्र मरशु ना खारह हक, ना

আছে সূর। তার চেয়ে নাম রাধ লীনা। ভারি মি**টি** শোনাবে।

মনে আছে ত মার্লিনকে আদর করে আমি লীনা বলে ডাকতাম।

ভাড়াভাড়ি বলল না-না। ছিঃ! লোকে বলবে কি!

সেদিন কথাবার্ত্তা এই পর্যান্তই হরে রইল। পরের দিন সকাল বেলা ব্রেকফাঠ থেতে-থেতে মার্লিন বলল, বাড়ীর নাম আমি ঠিক করে ফেলেছি—আব কোনও কথা চলবে না।

ভধানাম, কি ? বলল, বিকোলীনা। তেসে বললাম, লোকে বলবে কি ? বলল, বলুকগো। সেই নামই বাথা হল।

এই বছর বারোর কথা আনার মনের দিক দিয়েও একটু বলি। মার্লিনকে বিবাহ কবার পুর থেকে মার্লিন যেন স্থুখা ঢেলে দিল আমার জাবনে। মোটের উপর কি আনন্দ কি শান্তিতে এই ক'টা বছৰ কাটিয়েছি, বুলা! আমি ঠিক তোমাকে বোঝাতে পাৰৰ না এবং এতটুকুও অতিরঞ্জিত করে বলছি না। ঘর-সংসারের কাজে নার্লিন যে এত স্থানিপুণ-বিবাহের আগে মার্লিনের এ নিকটা আমার একেবারেই জানা ছিল না। সংসারের প্রত্যেক काजीं भार्तित्नत पृष्टित मागत्न यन व्यापना य्यत्क निर्वे जात्व নিঃশব্দে হয়ে যেত—কোনও দিকে কোনও ত্রুটী ধরাব উপায় ছিল না। মার্লিন নিজেব হাতেই বান্না কবত, কথনও বান্নার জন্ম লোক রাগেনি, যদিও আমি অনেকবার তাকে সে কথা বলেছি। আজও এ কথা জোর করে বলতে পারি—সে যুগে তার হাতের রা**ন্না থে**রে বিশেষ ভৃত্তি পেতাম—কোনও দিন এতটুকুও অরুচি বৌধ করিনি। এটুকুও আমার লক্ষ্য এড়ায়নি— যে আমার পছন্দসই থাবাবগুলি সে যেন স্বাই জানত এবং প্র প্র ছ'দিন ক্থনও সে একই থাবার আনাকে দিত না, কিছু না কিছু পরিবর্ত্তন আনতই।

বসবাসের বাড়ীখানিকে স্থল্ব করে সার্জিয়ে রাখার দিকে তার দৃষ্টি সর সময়ই ছিল প্রথর এবং সে দিক দিয়ে তার কচিকে আমি সহজেই মেনে নিতাম। কখন এ-দিক দিয়ে কিছু বলার কোনও কারণ ঘটেনি। তথু তাই নয়, এক একদিন সাক্ষারা থেকে বাড়ী ফিরে গিয়ে অবাক হয়ে দেখতাম—হয় শোবার ঘরের কিংবা বসবার ঘরের সাজাবার ধরণটিতে সে কিছু পরিবর্তন এনে ফেলেছে; হঠাং এই পরিবর্তনটুকু করার কারণ যে কি তা আমি কোনও দিনই বুঝিনি।

ওক্ত হল লেনের বাড়ীতে একদিন এই বক্ষ পরিবর্তন দেখে হেসে বললাম লীনা ! তোমার মাধার কিঞ্চিৎ গোলমাল আছে।

মৃহ হেসে ভাধাল কেন ?

বসবার ঘরে বসেই আনাদের কথাবার্তা হচ্ছিল। বললাম, বড় কৌচটাকে আবার এদিকে এনে কোণাকুণি ভাবে বেখেছ কেন? আগে মন্দ ছিল কি?

বলল, তুমি তুপুরে থাওরা-দাওগার পব ত এই ঘরেই বিশ্রাম কর। আমি দেখেছি—আগুনের ধাবে ত ছোট কোচটা ছিল—তুমি ঐটেতে বদে পা হাটকে লক্ষা টেনে দাও আগুনের দিকে। কথনও কথনও ঐ ভাবে একটু ঘ্মিরেও পড়। তাই বড় কোচটাকে আগুনের কাছে দিলাম—দরকার হয় পা তুলে দিয়ে ওটার উপর একটু শুরেও পড়তে পারবে।

শুধালাম আছো, তা যেন হল, কিন্তু বড় ফুলদানীটাকে আবার ওদিক থেকে এ কোণে এনেছ কেন ?

বলল, নইলে কোঁচের পরিবর্তনের সঙ্গে মানায় না যে।

শুধালাম, ফুলদানীর ফুলের বং বদলে গেল কেন ? ওটাতে ত ববাবর লাল ফুল রাথ তুমি।

বলল, লাল ফুলটি এ ঘরে অনেক দিন থেকে ছিল ত—বড়ত একঘেরে হয়ে যাছিল। আমাদের দেওয়ালের রংয়ের সঙ্গে মানাত বলেই এতদিন রেখেছিলাম। আজ বদলে নীল ফুল দিরে দেওলাম—কি রকম হয়। কি স্থন্দর মানিয়েছে বলত—নীচের কাপে টের সজে। তার উপর বড় কোচটাতে যদি তুমি শুয়ে শড়—সামনেই দেখতে পাবে থোকা-থোকা নীল রংয়ের ফুল। তোমার চৌখ তৃটি সহজেই বিশ্রাম পাবে।

হেসে বললাম, লানা ! আমি চলে গেলে তুমি কি থালি এই সুবই ভাব ?

আমার কোঁচের হাতটির উপর বসে এক হাত দিয়ে আমার গলাটা জড়িয়ে ধরে বলল, বুঝলে না—বাড়ী-ঘর-দোর স্থন্দর করে সাজিয়ে রাথলে মনটাও স্থন্দর থাকে।

হেসে বললাম—কিন্ধ মাঝে মাঝে পরিবর্ত্তন কর কেন ?

মুখথানা আমার মাথার উপর রেখে একটু চাপা রকমের **হাসি** হেসে উঠল। বলল, তোমার মনটাকে তাজা রাথবার জঞ্জ । একছেরে না হরে যায়।

বললাম, ও: ! তাই বুঝি তুমি প্রায়ই বেশভ্ষার পরিবর্ত্তন কর— বোজই সকালে দেখি, পরিধানে কিছু না কিছু নতুনত আছেই।

এইবার পরিন্ধার থিল-থিল করে হেদে উঠল—মুথথানি বেন লচ্জার লুকিয়ে ফেলতে চার আমার মাথার উপতে। ক্রিমশ:।

জ্ঞানের নিধান আদিবিধান কপিল সাখ্যকার
এই বাঙলার মাটিতে গাঁথিল পুত্রে হারকহার।
বাঙালা অতাশ লজ্পিল গিরি তুষারে ভয়ন্তর
আলিল জ্ঞানের দীপ তিব্বতে বাঙালা দীপকর।
কিশোর বয়সে পক্ষধরের পক্ষশাতন করি
বাঙালার ছেলে ফিরে এল ঘরে যশের মুকুট পরি।
—সত্যেক্সনাথ দস্ত।

श्रावा रुगात सासवा [पूर्व-श्रावाणत श्रावाण

মাণিবাবুর নিকট হতে এই তদস্ত সম্পর্কে নাকি-বীণার নামটা আমাদের শুনা ছিল। এই মেরেটি তার টিকলা নাকের জন্ম এ'পাড়ায় বিশেষ খ্যাতিলাভ করেছিল। নাকি-বীণা ২নং নীলমণি মিত্র খ্লীটের একতলার হুইখানি ঘরে বাস করে। আমরা হুই জন জালবানুর ভূমিকায় অভিনয় করে ঐ বাটাতে প্রবেশ করি। প্রথমে নাকি-বীণার বাড়াব হুইজন ভূত্যের সহিত সংলাপ স্থক করে দিলাম। ভূত্যম্বর 'আমরা ইতিপুর্ন্নে তাদের মনিবনী নাকি-বীণার নাম শুনিনি' শুনে আশ্বর্য্য হয়ে গিয়েছিল। কিন্তু আমরা ভাদের হাতে একটি করে টাকা গুঁজে দিলে তারা খাতির করে আমাদের প্রথমনকার একটি ঘরে বসিয়ে জানালো যে আমাদের কিছুক্ষণ অপেকা করতে হবে, কারণ তাদের গৃহক্তর্নীর কক্ষে একজন ধনী জমিদার তথনও পর্যান্ত আলাপরত আছেন। আমরা এইবার আমন্ত হয়ে ভূত্য কয়জনের সহিত আলাপ পরিচয়ে জেনে নিলাম বে সত্যই প্ররূপ একটি ঘটনা প্রদিন ঐ বাটীতে ঘটেছিল। তাদের বিব্রুতির সংক্ষিপ্ত সারবার্তা নিয়ে উদ্যুত্ত করা হলো।

: ৪ঠা সেপ্টেম্বর সন্ধ্যা প্রায় ৮-৩০ সময় তারা দিদিমণির নির্দেশমত ছাদের উপর রম্মইকার্যা করছিল, এমন সময় একটা বিরাট হাল্লা শুনে তারা নাচে নেমে এসেছিল। প্রথমে তারা মনে করেছিল উহা পুলিশের হালা, কিন্তু নীচে এসে তারা দেখল তা নয়। প্রায় নয়জন গুণ্ডা প্রকৃতির লোক দিদিমণির ঘরে চুকে পড়েছে। এদের মধ্যে একজন লোককে তারা ভালো করেই চিনতো। দেই লোকটি হচ্ছে এ পাড়ার নাম করা তবলচীবাবু, পাগলাদা'। তাদের মনিবনীর পা হুটো জড়িয়ে ধরে কেঁদে উঠে বলছিল, নাকি ! 'ষদি পারিস তো বাঁচা আমাকে।' পাগলাবাবুব কথায় দিদিমণি নিশ্চল মৃত্তিতে দাঁড়িয়ে রইলেন। একটি মাত্র কথাও তাঁর মুখ হতে বার ছলো না। পাগলা কতো কাপ্লাকাটি এবং কতো আছড়া-আছড়ি করলো, কিন্তু কেউ তাকে রক্ষা করতে এগিয়ে এলো না। পাগলা নাচার হয়ে ঘরের জানালার একটা রেলিঙ জড়িয়ে ধরে ওয়ে পড়লো। কিন্তু এ লোকগুলো জোর করে তার হাতটা ছাড়িয়ে নিয়ে তাকে চেন্ডদোলা করে তুলে বাইরে এনে একটা ট্যান্সির ভিতর বসিয়ে দিলে। আমরা মনে কর্নছিলাম এদের ঐ অপকার্য্যে প্রাণপণে আমরা বাধা দেবো। এইজক্ত মনিবনীর মুখের দিকে আমরা তাকিয়েও ছিলাম। কিন্তু উনি ইসারায় এইরূপ কার্য্য হতে আমাদের বিরত্ত থাকতে বললেন। এর পর ট্যাক্সিথানা ঐ স্থান ত্যাগ করে চলে গেলে আমাদের গৃহক্ত্রী ডাড়াভাড়ি সদর দরজাটা বন্ধ করতে বলে জানালেন যে ওদের সঙ্গে থোকা গুণা নিজে ছিল। এইজন্ম আমরা তাদের বাধা না দিয়ে ভালো কাজই করেছি।

রুপোপজীবিনী নাকি-বীণা তথনও পর্যাম্ভ আপনার অর্গলবন্ধ ককে

পেশারতা ছিল। এই অসময় তাকে আমরা বিরক্ত করবো কিনা ভাবছি, এমন সময় নাকি-বাঁণা নিজেই তার কক্ষ হতে বার হয়ে এলেন। বলা বাছলা যে, পরিশেষে তাঁর উন্নত নাসিকা আরও উন্নত করে তাকে তাঁর ভৃত্যদেরই অনুরূপ একটি বিবৃতি দিতে হয়েছিল। এ ছাড়াও নাকি-বাণার উপদেশানুযায়ী—আমনা এ অঞ্চলে দিদিভাই নামে পরিচিতা অপর আর এক জনৈকা মহিলাকে জিজাসাবাদ করার জন্ম ঐ বাটীর দিতলের একটি কক্ষেও গমন করি। ঐকক্ষে প্রবেশ করা মাত্র দেওয়ালে ঝূলায়মান বিশ্বকবি রবীক্সনাথের একটি স্তবুহুং আলোকচিত্র আমাদের দৃষ্টিগোচর হয়। এ ছাড়া এ ঘরটি স্বদৃশ্য কোঁচ এবং অক্সান্ত আসবাবপরে সচ্চিত্তও ছিল। তথাকথিত দিদিভাই নাম্নী মহিলাটি একজন শিক্ষিতা নারী। ইনি গ্রে খ্রীটের একটি বাটীতে পুত্র-কঞ্চাস্থ ৰসৰাস করলেও প্রতিদিন এই কক্ষে সন্ধ্যা ছয়টা হইতে রাত্রি দশ্টা পর্যাল্ক ৰালাপছরণ করে থাকেন। বহু বৃ**ষ্টি**মনা যুবক ঐ সময় এখানে এসে এব সঙ্গে সদালাপ করেন। এই জন্ম এ-পাড়ায় তাঁর এই ৰক্ষটি এ-পাড়ার 'ওয়েসিস' নামে পরিচিত।

দিদিভাইকে দিক্সাবাদ করে নাকি-বীণা এবং তাঁর ভ্তাদের বিবৃতির সমর্থনস্চক একটি বিবৃতি লিপিবদ্ধ করে নিই। উপরস্থ তাঁব নিকট হতে ঐ সমরে ঐগানে উপস্থিত ছিলেন এমন করেকজন কৃষ্টি শু আভিজাত্য সম্পন্ধ ভদুসন্তানেরও নামধাম সংগ্রহ করে নিই। দিদিভাই-এর মতে ভদুসন্তান বিধায় লক্ষ্যবশতঃ তাঁদের পক্ষে এ-পাতার কোনও ঘটনা বাহিবের কাউকে জানানো সম্থব ছিল না। এর পর এইখানে অঘণা আর কালহরণ করা আমাদের পক্ষে উচিত মনে হয়নি। কারণ এখানকার অভাল সাক্ষীদের বিবৃতি প্রবর্তীকালে কোনও এক সময় লিপিবদ্ধ করলে কোনপ্রকার ক্ষতি হ্বার সম্ভাবনা নেই। এইজল্য ঐ স্থানে আর একটুমারও অপেক্যা না করে আমরা মলিনা নাম্মী অপর এক নাবার বাসস্থান অভিমূব্ধে রওনা হলাম। সাক্ষ্যী মণীক্রবাব্ তাঁব বিবৃতিতে এই মলিনার নাম বিশেবরূপে উল্লেখ করেছিল।

আমরা এর পর ক্রতগতিতে ৩২ নং ইমামবন্ধ থানাদার লেনে শ্রীমতা মলিনাস্থলরা দেবার বাড়ীতে এসে উপস্থিত হলাম। আমরা দেবলাম বে, ঐ বাড়ার বাদিলা প্রত্যেকটি নারা তথনও পর্যন্ত ভাতাও সম্বস্তা হয়ে রয়েছে। এমন কি, খোকাবার নামটা পর্যন্ত ভাদের ফদেরে ভাতির সঞ্চার করে থাকে। দেখা গেল যে এরা মলিনা দেবীর কক্ষটি পর্যন্ত দেখিরে দিত্তেও ভয় পার। বেশ ব্যা গেল বে থোকাবার এ পাড়ার সাক্ষার যমরাজ অপেক্ষাও ভরাবহ। আমাদের অবশু মলিনা দেবীর কক্ষটি খুঁজে বার করতে একটুমাত্রও দেবা হয় নি। কারণ আমাদের নিযুক্ত এ-পাড়ারই করেকজন ছল্পবেশী প্রাইভেট গোরেক্লা প্রয়োজন মত আমাদের গোপন সংবাদ

সরবরাহের জক্ত আমাদের আশে-পাশে ঘোরা-ফিরা করছিল। তাদের ইসারা পাওয়া মাত্র আমরা সদলে মলিনা দেবীর নির্দিষ্ট কক্ষে চুকে পড়লাম। কিন্তু সেখানে মলিনা দেবীকে কোথায়ও পাওয়া গেল না। তবে মলিনা দেবীকে না পাওয়া গেলেও সেই কক্ষে তার মাতা সরোজিনী দেবীকে পাওয়া গেল। ঐ ঘরে তখন মলিনার মাতা সরোজিনী দেবী ট্রান্ধ বাশ্ব গুছিরে পূঁটলি-পোঁটলা বেঁধে ঐ সকল দ্রাসহ অন্ত কোনও এক স্থানে সরে পড়বার জক্ত প্রক্তত হছিল। ভাগাক্রমে আমরা ঠিক সমর্ই ঐ স্থানে উপস্থিত হয়েছিলাম, তা না হ'লে আধ ঘণ্টার মধ্যে ঐ মহিলাটি কোনও এক জ্বতাত স্থানের দৈলেগে রওনা হয়ে গিয়েছিলেন আর কি! এইজক্ত ত্রহত মামলা সম্ভের ভদস্তকার্যে সক্ষলতা লাভ করতে হলে সর্বাহ্রে শিশুর বা গতির প্রয়োজন হয়ে থাকে। এর পর আমরা মলিনাস্করীর মাতা সরোজিনী দেবীকে একটু শীড়াপীভি করে নিম্নলিপিতরপ জিজাদাবাদ সক করে দিই।

প্র:—ভূমি তা'গলে মলিনার গর্ভধারিণী মা নও? তা'
ভাঙাভাড়ি এখন চলেছ কোথার? এই সব পুঁটলি-পোঁটলা মেরের ঘর
ফতে ভূমি চূরি কবে পালাছে? সত্যি সভিয় সব কথার জবাব দাও,
তা না হলে তোনাকৈ মানরা গেপ্তার কবেব। তোমার উপর আমাদের
ভ্যানক সন্দেহ হচ্ছে। এই সব দ্রুর স্বিরে নিয়ে যাবার অধিকার কে
ভোমাকে দিলে? ভূমি তো দেখছি একজন মহা চোর। মেয়েটা
কোথার বেডাতে গেছে আব এই স্বোগে ভূমি তার জিনিসগুলো
স্বিরে কেলছো, এটা ?

উল্লেখ্য আমি তানট মান বাবা! এই এতটুকু বেলা থেকে তাকে আমি মান্য কৰেছি। মা কি মেয়ের জিনিস কথনো চুবি কবে, বাবা! আমি মেয়েব কাছেই এই সব নিয়ে চলেছি। সে এখন আমার উত্তবপাঢ়াব বাঢ়ীতে কিছুদিন থাকবে কি না। ধকলে ধকলে বাছার শরীবটা বড় কাহিল হয়ে গেছে। তাই গাঁয়ে-ঘরে গিয়ে বাছা একটু বিশ্রাম করবে।

প্রা:— কি কবে বৃশবো যে তৃমি সত্যি কথা বলছো ? মেয়ের জিনিস তো মেয়েই যাবাব সময় নিয়ে যেতে পাবত। এ নির্বাৎ কোনও প্রকারে চাবি সংগ্রহ করে বা ঝুটা চাবি তৈরী করিয়ে ওর নকল মা সেছে তুমি এখানে জিনিসপত্র চুরি কবতে এসেছ। তোমাকে এই সব জিনিসপত্র স্বন্ধ জামবা এক্ষুণি থানায় নিয়ে যাব। তবে খোনব মেয়ে যদি বলে এ সব জিনিস তোমাকে সে নিয়ে যেতে বংগছে, তাহলে অবগ্র তোমাকে আমালের ছেড়েই দিতে হবে।

উ:—তা বাবা, এতোই যথন তোমাদের সন্দেহ হচ্ছে তথন গোনাদের একজন না হয় আমাব সঙ্গে চলো। আমি তো এখান থেকে গোজা উত্তরপাটার আমাদের বাড়ীতেই যাবো। ওখানে গিয়ে আমার নিয়েকে না হয় কেউ জিজ্ঞেদ করেই আম্মন না—এ সব বা আমি ক্রছি তা সত্যি কথা, কি না।

উপরেব প্রশ্নোত্তর হতে বৃথা যাবে, এই জিজ্ঞাসাবাদ ভারতীয় বক্ষীদের নিজস্ব পদ্ধতি অম্বায়ী করা হয়েছে। এই বিশেষ পদ্ধতিতে স্বাসরি মূল ঘটনা সম্বন্ধে কথনও প্রশ্ন করা ১৪ না। বরং মানুষের মনকে বাক্চাতুর্য্য সহযোগে কুত্রিম উপারে অক্তর্য বিক্ষিপ্ত করে, পরে প্রকৃত বিষয়ের অবভারণা করে তাদের মনের কথা টেনে বার করে আনা হ**রে থাকে।** এইরূপ বাক্যজাল সাক্ষাদের স্ব-স্থ কৃষ্টি অমুযায়ী পরিক**রনা করা** হয়ে থাকে। কারণ যে বাক্-প্রয়োগ স্বল্লাক্ষিত ব্যক্তিদের প্রতি প্রয়োজ্য হয় না। এই ক্ষেত্রে মলিনার মাতা চ্রির অভিযোগের কথাই ভাবছিল। এ সমর খুনের কাহিনী তার মনের মধ্যে স্থান পারনি। তা না হলে এতা সহজে মলিনার মা আমাদিগকে মলিনারহিকানা না দিত্তেও পারত।

উপরোক্ত মনস্তাত্বিক পদ্ধতিতে মলিনাব মা সরোজিনীর মনের প্রতিরোধশক্তির হানি ঘটিয়ে তার স্বাচারিক মনোবল ভেড়ে দিয়ে তার নিকট হতে নিম্নোক্তরপ একটি বিবৃতিও আমরা আদার করে নিই।

: আমি মলিনা দেবীর পালিকা মাতা। কিছুকাল যাবং আমি উত্তরপাড়ার ঘর বেঁধে বাস করছি। **আ**মার এই মেয়ের **রূপের** খ্যাতি আছে। সে নাচ-গান ভালো জানে। ছিনেমাতেও সে **নাম** করেছে। আজকাল আমায় সে ভাল মাসহারা দেয়। তাই এখন উত্তরপাড়ার গাঁরে-ঘরে বদে আমি ৩ধু ভগবানেরই নাম করি। ভবে সে ব্যবসার জন্মে কোলকা তাতেই থাকে। ৪ঠা সেপ্টেম্বর স্কাল সাতটায় সে তার মানুষকে নিয়ে হঠাং উত্তরপাডায় আসে এক স্বাস্থ্যোদ্ধারের জন্ম সেখানে সে কিছু দিন থাকতে চায়। কিন্তু 🗷 তার জিনিসপুর উভুরপাড়ার নিয়ে যেতে ভূলে গিয়েছিল। তাই আমাকে তার জিনিসপত্র আনবার জন্মে সে আমাকে তার চাবি দিয়ে এপানে পাঠিয়ে দিয়েছে। না, না বাবা। মনের মান্তব কে কার কখন কি করে হয়, তা মা হয়ে আমি জানতে চাইব কেন ? আজে না, খোকাবাবু নামে কাউকে আমি চিনি না। তবে ৰে ভদ্রলোক মলিনাকে আমার বাড়ীতে পৌছে দিয়ে গিয়েছে তাকে আমি নিশ্চয়ই চিনিয়ে দিতে পারবো। আজে হাঁ, সে কথা ঠিকই বলেছেন আপনারা। মলিনা মাদ ছয় হ'লো আমার মাসহারা আশাতীতরূপে বাড়িয়ে দিয়েছে। এছাড়া পত্ৰ দ্বারা সে এ-ও জানিয়েছিল যে ঐ সময় হতে তার আয় ঈশবের কুপায় তিন চার গুণ বেডে গিয়েছে।

এর পর আর কালকেপ না করে আমি উত্তরপাড়া অভিমুখে রওনা হয়ে যাওয়াই শ্রেয়ঃ মনে করলাম। ইন্সপের্রার স্থনীলচন্দ্র রায়কে অকুস্থলে আরও তদন্ত করার জন্ম রেগে আমি একাকী মলিনার মা সনোজিনী সমভিবাহারে একথানি ট্যাক্সিযোগে উত্তরপাড়ার বাড়ীর দালানে বসে মলিনা বিষয় মনে কি চিন্তা করছিল। এমন সময় তার মাকে নিয়ে আমি সেখানে উপস্থিত হলাম। প্রথমে মলিনা খ্ন সম্পর্কে কোনও কথা বলতে চায় নি। কিন্তু পরে শীড়াপীড়ি করার পর অনিচ্ছা সত্তেও সে নিয়োক্তরপ একটি বিবৃতি প্রদান করে। তবে তার কথন-ভিন্তি এবং মুখাকুতি হতে বুঝা ষায় যে, সে সভ্য কথাই বলেছে।

: আজে হাঁ! আমি একজন কপোপজাবিনী নারী। আমার বর্তমান মাসিক আয় এগাব বা বাব শত টাকা। বর্তমান এই টাকাটা আমার বর্তমান দয়িত থোকাবাব একাই দিয়ে থাকেন। এছাড়া সিনেমা করে যা আমি পাই তা আমার ফালতু লাভ। খোকাবাব আসলে কে এবং তিনি থাকেন কোথায় কিংবা বর্তমানে ইব পেশা কি, তা আমি জানি না এবং কোনও দিন আমি ভা জানবার চেষ্টাও করি না। আমার সঙ্গে তার টাকা নিয়ে সুন্দুর্ব।

দেয় টাকা বন্ধ না করলে এদব প্রশ্ন আমাদের মনে উঠে না। কে ভালো আর কে মন্দ আমনদের মনে এসব প্রশ্নের ঠাই तारे। जात अंकथा अकि स्था जाल लाक कामाप्तिय निकंछे কমই আসেন। ও-রকম মামুৰ ত্'-একজন এলেও তাঁরা বেশীদিন ভাল থাকতে পারেন না। আজে হা, মাত্র ছয় মাস হলো খোকাবাব কেবল আমার ঘরেই আসছে। তাঁর সঙ্গে আমার সর্ত্ত আছে এই যে আর কেউ আমার কাছে আদতে পাববে না। ওঁর দকে যারা আমার খরে গান ভনতে আসেন, তাঁরাই ওঁকে 'খোকাবাবু খোকাবাবু' বলে ডাকেন। এইজন্ম আমার কাছেও উনি ঐ নামে পরিচিত। আজ্ঞে হাঁ, মাঝে মাঝে আমার ঘবে গানের মহড়া হলে পাগলাবাবু বলে একজন তবলচী দেখানে তবলা বাজিয়ে যায়। হাঁ, খোকাবাবুর জামানতেও কয়েক বাব তিনি আমার ঘরে তবলা বাজিয়ে গেছেন। হাঁ, এ কথা সত্য যে, থোকাবাবু মধ্যে মধ্যে করেক দিন পর্যাম্ভ উধাও হয়ে থাকভেন। এ সময় চেষ্টা করলেও তাঁর কোন খৌজ বা থবর পাওয়া যেত না। জিজাসা করলে তিনি জানাতেন কাজকর্ম্মে তাঁকে প্রায়ই বাইরে যেতে হয়। আজে হাঁ, চার দিন উধাও হয়ে থাকার পর ৪ঠা সেপ্টেম্বর ভোর ছয়টার সময় তিনি হঠাং আমার নিকট এদে বললেন বে দেই দিনই তাঁকে বিদেশে যেতে হবে। ফিরতে জাঁর প্রার হুই মাদ দময় লাগবে। এই জন্ম তিনি আমায় আমার মার কাছে রেখে যেতে চাইলেন। বিশেষ পীড়াপীড়ি কবায় আমি তগুনি তীর সঙ্গে মার কাছে চলে আসি। পরে থোকাবারুর উপদেশ মত মাকে আমার ব্যবহার্যা জিনিসপত্র জানতে কোলকাতাত্র পাঠাই। পাছে খোকাবাবুর অবর্ত্তমানে আমি আর কাউকে কামনা করি, এইজক্সই বোধ হয় তিনি আমাকে আর একটুখনও ভাতন থাকতে দিলেন না। আমি থোকাকে ভালবাসি কি না তা আমাকে জিজ্ঞাসা করবেন না। তবে থোকা আমাকে অন্তরের সহিত ভালবাসে বলে মনে হয়। আজে হা, ঠিকই বলেছেন। আমরা ভালবাদা বিক্রিই করে থাকি। তবে কথনও কথনও ওটা দান যে একেবারেই করি না, তা'ও নয়। না না না, আমাকে আপনারা মাপ করবেন। এ'ছাড়া আর আমি কিছু আপনাদের বলতে পারব না।

বেশ বুঝা গেল যে মলিনাস্থলনী প্রকৃত তথ্য গোপন করছে এবং দে ইচ্ছা করেই সত্য কথা বলতে চায় না। এ অবস্থায় মনস্তাত্মিক উপায়ে জিজ্ঞাসাবাদ দারা প্রকৃত সত্য তার কাছ হতে বার করা ভিন্ন উপায়ও ছিল না। পরিশেষে আমরা তাকে নিম্নোক্তরূপে জিজ্ঞাসাবাদ স্বক্ষ করে দিই। একটা কিছু অঘটন ঘটার জক্তই যে খোকাবাবু মলিনাকে সহর হতে সরিয়ে দিয়েছে, এটুকু বুঝবার মত বুদ্ধি মলিনাস্থলনীর নিশ্চয়ই আছে। এইরপ মানসিক অবস্থার মধ্যে পুলিশের উপস্থিতি তাকে যে ভাতা ও সম্বস্তা করে তুলবে তাতে আর বিচিত্র কি? এইজক্ত প্রামর্শনাতার অভাবে তার মত একটি নারীর মনোবল যে সহজেই ভেক্তে পড়বে তাতে আর আমার সন্ধেহ ছিল না। নিম্নে উন্ধৃত প্রশ্নোত্তর হতে আমার আশা যে অমূলক ছিল না তা নিশ্চিতরূপে বুঝা বাবে।

প্র:—থোকাবাবুর দোজদের জিজাসাবাদ করার পর তবে আমি ভোমার কাছে এসেছি। কোলকাতার থোকাবাবু কি করেছেন বা না করেছেন তা তুমি বে একটুও জানো না, তা নয়। তবে খুনের সঙ্গে তুমি বে সাক্ষাং ভাবে জড়িত নও, তা আমি বিশাস করি। উ:—এটা খুন? কি বলছেন আপনি। কে কা'কে খুন করলো? বলুন না বলুন না, কে খুন হয়েছে। আমি খুনের কথা কিছু জানি না।

প্র:—জানো না মানে ? থোকাই তো পাগলাকে খ্ন করেছে। থোকাকে তুমি কতটুকু ভালবাস তা জানি না। কিন্তু তুমি বে পাগলাবাবৃকে সতাসতাই ভালবাসো তা জামবা ভালরুপেই জানি। জানো, আজ তোমার জন্তই পাগলাকে পৃথিবী থেকে বিদায় নিতে হলো। তার একমার অপরাধ ছিল, সে তোমাকে ভালবাসতো। এখনও যদি তুমি মিখ্যা কথা বলো কিংবা সত্য গোপন করে।, তাঁহলে পাগলার জমর-মাল্লা তোমাকে ক্ষমা করবে না।

আনরা খুনের কারণ সম্পর্কে কেবলমাত্র যা অনুমান করেছিলান, তাই কেবল আমি মলিনাকে বলেছিলাম। কিন্তু আমাদের এই বাাগ্যা বাকদের স্তুপে যেন অগ্নিসংযোগ করে দিলে। হঠাং লক্ষ্য করলাম, মলিনা অঝোরে কাঁদতে সুকু করে দিয়েছে। লৌহ তপ্ত থাকতে থাকতেই তাতে ঘা দেওয়ার রীতি আছে। তাই আর দেবী না করে আমি মলিনাকে জিজ্ঞাসাবাদ করে নিম্নোক্তরূপ একটি বিবৃতি লিপিবদ্ধ করে নিলাম।

: আত্রে, আত্র আনি কোনও কথাই আর গোপন করবো না।
এ কয় দিন আমি কিছুতেই বুকে উঠতে পারছিলান না মে, প্রকৃতপক্ষে
কা'কে আমি ভালবাসি, নিধ'না সহার-সঙ্গলহান পাগলাবাবুকে, না
ধনী-স্পূক্ষ থোকাবাবুকে? আত্র আর স্বাকার করতে বাধা নেই মে,
আমি পাগলাকেই বেনী ভালবাসতাম। আমি যদি জানতাম যে
থোকা এই ভাবে তাকে খুন করবে, তা'হলে কি থোকাকে আমি
আনাস গরে স্থান দিই? তবে এ ছাড়া আমার অন্ত কোনও উপার
ছিল না। থোকাকে আমি স্থান না দিলে পাগলাকে সে এর আরও
আগে খুন করে আসতো। তার পথের কোনও বাধা বা কাঁটাকে
সে কোনও দিনই ক্ষমা করেনি। এইবার হয়তো সে আমাকেই
পৃথিবী থেকে সরিয়ে দেবে। থোকাবাবু যে কা ভীষ্ণ ছদ্ধান্ত লোক,
তা আমার চেরে বেনী আর কেউই জানে না।

আছে হা, আমি যা জানি নিশ্চয় বলবো। মাঝে মাঝে থোকার ভয়ে পাগলা যে গোপনে আমার সঙ্গে দেখা করতো এ কথা সত্য। প্রকৃতপক্ষে তারই চেষ্টায় আমি গান-বাজনা শিখতে পেরেছি। মাত্র কয়েক দিন আগে থোকা আমার ঘরে পাগলাকে দেখে তাকে যাড় ধরে বার করে দের ; আর তামায় সাবধান করে দিয়ে বলে যে আমি যেন আর একটি দিনও তাকে আমার ঘরে আসতে না দিই। পাগলা এই দিন একটু নদ খেয়েই এমেছিল। অপমানিত হয়ে চলে যেতে সে-ও থোকাকে শাসিয়ে যায় এই বলে—'তুমি যে একজন জেলাখারিজ গুণ্ডা তা আমি জানি। দেখো, কালই আমি তোমাকে গোয়েন্দা পুলিশ দিয়ে ধরিয়ে দেবো।' এর কয় দিন পর একদিন রাত্রে থোকা আমার ঘরে বসেছিল। এমন সময় সাদা পোষাকে হইজন পুলিশ আমার দরজার এসে থোকার খে'াজ করতে থাকে। আমি দরজার ফুটো দিয়ে সিপাই ছ'জনকে দেখে থোকাকে তাদের আগমনবার্তা জানিয়ে দিই। খোকাবার্ত্ত তংকশাং দিতলের জানলার গরাধ সরিয়ে একলাফে নীচের রাজার উপর নেমে চক্কের প্লতক্র মধ্যে উধাও

ছরে যায়। পরে আমি শুনেছি পাগলা পুলিশে থবন দেয় নি।
দিপাই ছ'জন অন্ত স্ত্র হতে সংবাদ পেয়ে সেথানে এসে গিয়েছিল।
কিন্তু থোকাবাবু এজন্ত একমাত্র পাগলাবাবুকেই পুলিশের
সংবাদদাতারপে সন্দেহ করেছিল।

এর পর তেসরা সেপ্টেম্বর রাত্রি নয়টার সময় আমার ঘরে বসে আছি, এমন সময় খোকাবাবুৰ বন্ধু কালী এসে বললো, বৌদি! খোকা এখুনি তোমাকে আমার সঙ্গে আসতে বললো।° এই বলে কালী বাবু আমাকে নিয়ে গিয়ে সোনাগাছির উধা নামে একটি মেয়ের বাড়ীতে তুললো। এর পর রাত প্রায় দশটার সময় খোকাবাবু তার বন্ধু কেষ্ট বাবুকে সঙ্গে করে উসার বাড়ীতে এসে উপস্থিত হলো। এই সময় আমি থোকার নীল রভেব সার্টের উপরে ছ'-এক জায়গা লাল রঙে রঞ্জিত দেখি। আমি ঐ লাল রঙের দাগ সম্বন্ধে জিজ্ঞাসা করলে থোকা বললো, 'ও, না না, ও কিছু না বে। ও পানের পিচ লেগেছে।' এই কথা বঙ্গে খোকাবাবু তার বন্ধু কেষ্টবাবু এবং কালীবাবুকে নিয়ে পুনরায় কোথায় চলে গেল। তার পর রাত্রি প্রায় দেড়টাব সময় থোকাবাবু পুনরায় আমাদের নিকট ফিরে আসে। এই সময় আমি লক্ষ্য করি যে খোকাবাব চান করে মাথার গন্ধ তেল দিয়েছে। এ'ছাড়া সে তার নীল সাটটা বদলে একটা ছাই রঙের পাটভাঙা নৃতন সার্ট পরে নিয়েছে। এর একটু পরে থোকার অপর এক বন্ধু ভূপেনবাবুও সেথানে এসে উপস্থিত হলেন। ঐ উবা নামের মেয়েটি ছিল ভূপেনেরই রক্ষিতা। এর পর সাবা রাত ধরে বসে বসে আমরা সেথানে বিয়ার থাই। এবং সেই সঙ্গে বহু গল্প-গুজুবও করি। প্রদিন প্রত্যুবে ছয়টায় খোকাবাবু আমাকে জানালো যে তার নামে একটা গ্রেপ্তারী পরোয়ানা বেরিয়েছে। এইজক্ত কিছুদিনের মত সে ক্ষকাতার বাইরে গিয়ে গা-ঢাকা দেবে। এই বলে সে আমাকে সোজা উত্তরপাড়ায় এনে আমার মা'ব কাছে রেখে দিয়ে যায়। আমি সময়ের অভাবে আমার বাড়ী হয়ে আসতে পারিনি। এইজর আসবাবপত্র আনার জক্ত মাকে কোলকাতার পাঠাতে হয়েছিল। থোকাবাবু এখন কোথায় *আছেন তা আমি জানি না। তবে মামি আপনাদের সোনাগাছিতে উবার বাড়ীটা দেখিয়ে দিতে পারবো ।

এর পর আমি যে টাক্সিতে উত্তবপাড়ায় গিয়াছিলাম সেই টাক্সিতেই মলিনাকে নিয়ে কলিকাতায় উবার বাড়ীতে এসে উপস্থিত হই। এই সময় উবার দয়িত ভূপেনবার্কেও উবার ঘরে আমি দেখতে পাই। আমাদের দেখামাত্র ভূপেন সরে পড়বার চেষ্টা করছিল, কিছু পালাবার পুর্বেই আমরা তাকে গ্রেপ্তার করে ফেলি। তাকে গ্রেপ্তার করতে আমাদের বেশী বেগ পেতে হয় নি। এইজন্ত তাকে একজন হর্দান্ত প্রকৃতির ব্যক্তি বলে আমাদের মনে হলো না.! ভূপেনের রক্ষিতা উবাকে জিজ্ঞাসাবাদ করায় সে.মলিনা দেবীর অফুরপই এক বিবৃতি দিয়েছিল। এর অধিক তার পক্ষে এই হত্যা সম্পর্কে অবগত থাকাও সম্ভব ছিল না। তবে তার দয়িত ভূপেনের নিকট হতে বন সম্পর্কে একটি উল্লেখযোগ্য বিবরণ পাওয়া গেলেও যেতে পারে ব'লে আমাদের মনে হয়েছিল। এইজন্ত বিশেষ করে ভূপেনকেই এই হত্যা সম্পর্কার একটি বিবৃতি দিবার জন্ত আমি শীড়াশীড়ি করতে থাকি। এই সম্পর্কে ভূপেনের নিকট হইতে প্রাপ্ত বিবৃতিটি নিয়ে উদ্ধৃত করা হলো:

আমি থামাব বন্ধিত। উদাব সহিত তার দরেতেই বাস করি এবং বাজাবে পাটের দালালী দ্বারা জাঁবিকা নির্কাহ করি। থোকাবার এবং তার বন্ধু কেঠু, গোপী, কালা এবং সুবলবার্র সঙ্গে আমার এই পাড়াতেই আলাপ হয়। আমার ক'তন প্রায়ই সন্ধ্যাকালে নিকটছ ব্লাকস্কোরারে ব'সে আলাপ আলাচনা কবতাম। কিছু এই কয় ব্যক্তি'যে কোথায় থাকে এবং তাবা দে কি করে তা তারা কোনও দিনই আমায় বলে নি। তবে মধ্যে মধ্যে তারা আমার রক্ষিতা উষার ঘরে এসে বিয়ার থেয়ে গিয়েছে। আজা হা, তেসরা সেপ্টেম্বরও রাভ আন্দান্ধ নয়টার সময় এদের কয়েকজন উমার ঘরে বসে বিয়ার থেয়ে গিয়েছে। কিছু ঐ সময় তারা থোকার রক্ষিতা মলিনাকে কেন উনার ঘরে এনেছিল তা আমার জানা নেই। ঐদিন অনেক রাত্রে বাড়ী ফিরে দেখি থোকা, কালা এবং কেন্ঠ আমার ঘরে বসে ক্রেজলা করছে। ঐ রাত্র একটু বেশী মদ থাওয়ায় আমি আক্রাম্ভ হয়ে ব্লাকস্কোরার মাঠেই য্মিনে পড়ি। এই জন্মই বাড়ী ক্রিত্তে আমার অতে। বেশী রাত হয়ে গিয়েছিল।

মলিনা দেবার বিবৃতি অনুযারা আমরা তদন্ত করে জানতে পারি যে, কলিকাতা পুলিশের ডিটেকটিত বিভাগের গুণু শাখার ছুইজন দিপাই কোনও এক সংবাদ অনুযারী থাঁদা নামে একজন জেলা-থারিজ (Externed গুণুর থোঁজে সত্য সত্যই মলিনার ঘরে এ দিন হানা দিয়েছিল। তবে এখানে থাঁদার অবস্থান সম্বন্ধে কোনও সংবাদ পাগলাবাবু তাদের দেয়নি। এ'ছাড়া এ'ও জানা বায় যে, এ সময় বরাবর থোকাবাবুর বন্ধু কেইকেও মাতাল অবস্থায় রাস্তা হতে বটজনা থানার জনৈক কনেইবল পাকড়াও করে নিয়ে যায়। কেইকে একটি পেটিকেসে আদালতে োপার্দ্ধ করাও হয়েছিল। আদালতের বিচারে কেইর দশ টাকা জরিমানা হয়। এই ছুইটি বিচ্ছিন্ন ঘটনা পাগলাবাবুর সহিত সম্পর্ক রহিত ছুইলেও থোকাকে বেদিন সে ধরিয়ে দেবে বলে শাসিয়েছিল তার একদিন পরেই সংঘটিত হয়। এইজ্জুই বোধ হর থোকাবাবু এবং তার বন্ধু কেইবাবুর ধারণা হয়েছিল যে পাগলাই তাদের উপর প্রতিশোধ নেবার জন্ত তাদের সম্বন্ধে বারে বারে পুলিশে সংবাদ দিছে।

কোনও একটি হত্যাব মামলা প্রমাণ করতে হলে প্রথমেই প্রমাণ করতে হয় যে, ঐ হত্যাকাগুটি কি উদ্দেশ্রে সংঘটিত হয়েছে। ইংরাজীতে একে বলা হয় মোটিভ। এই মোটিভ বা উদ্দেশ্র প্রমাণ করতে না পারলে মূল হত্যাকাগুটিও প্রমাণ করা শক্ত হয়ে পড়ে। একণে উপরোক্ত হইটি বিভিন্ন ঘটনা হতে আমরা বৃষতে পারি বে পাগলা থোকাবাবুকে পুলিশে ধরিয়ে দেবে বলে শাসিয়ে আসার একদিন পরে খোকার ঘরে গোয়েলা পুলিশ হানা দেওয়ায় খোকাবাবুর ধারণা হয়েছিল বে তাহলে পাগলাবাবুই তাদের উপর প্রতিশোধ নেবার জন্ম খোকাবাবুর আন্তানা সম্বন্ধ পুলিশকে খবর দিয়েছে। এ'ছাড়া প্রথম ঘটনার হুই একদিন পরে খোকার অক্তিমে বন্ধু কেষ্টবাবুকে বটতলার পুলিশ অন্ত এক কারণে রাজা হতে ধরে নিয়ে গেলেও খোকাবাবু ও কেষ্টবাবুর ধারণা হয়েছিল বে কেষ্টবাবুর এই গ্রেপ্তারের পিছনেও পাগলাবাবুরই কারসাজী ছিল।

এর পর আমবা সন্দেহক্রমে উষার দয়িত ভূপেনকে গ্রেপ্তার করে থানায় আনি। কিন্তু বহু চেষ্টা করেও অক্স কোনও আসামীকে আমরা ঐ রাত্রে গ্রেপ্তার করতে সক্ষর হয়নি। এই সময় আহরা বৃষ্তে পারি এই কালী ও ভূপেনও এই নৃশংস হত্যাকাণ্ডেব সহিত সংশ্লিষ্ট আছে। তবে এদের চাইতেও অধিকতর দুর্দান্ত প্রস্কৃতির আরো করেকজন ব্যক্তি যে এই হত্যাকাণ্ডে খোকাবাব্র সহকারী ছিল, তাও আমরা সহজে বুঝে নিতে পেরেছিলাম।

এই দিন অধিক রাত্রি হয়ে যাওয়ার আমবা মলিনাকে তার কলিকাতার নিজ বাড়ীতে রেখে আমবা আমানের থানার ফিরে আসি। কিন্তু পাছে মলিনাকে থাঁদা পুনরার সেখান থেকে সরিয়ে নেয়, এইজন্ত সতর্কতামূলক ব্যবস্থাস্থরপ মলিনাস্থলরীর গৃহে আমরা সাদা পোবাকে ছইজন পুলিশ মোতায়েন করতেও ভূলিনি। কারণ বে নারীটিকে নিয়ে এই হত্যাকাও সমাধা হয়েছে তাকে থোকাবাবু সভ্য সত্যই অস্তরের সহিত ভালবাসতো। এই অবস্থায় থোকাবাবুর পক্ষে পুলিশের অবর্তমানে তাহার সহিত মিলিত হবার চেষ্টা করা খুবই স্থাভাবিক ছিল।

এর পরদিন ৭ই সেপ্টেম্বর ১৯৩৬, তারিখে প্রত্যুবে আমরা স্ব স্ব নির্দিষ্ট কোয়াটারস থেকে নেমে থানার অফিসঘরে এসে সমবেত হলাম। বস্তুতপক্ষে ভোর রাত্রে বাড়ী ফিরলেও আমরা কেহই ঘুমাতে পারিনি। বর মুমের জামেজের কাঁকে কাঁকে আমরা এই হত্যাকাগুটি সন্বন্ধেই চিন্তা করেছি। কিছুক্ষণ আলাপ আলোচনার পর স্থনীলবাবু প্রস্তাব করলেন যে আমাদের এখন উচিত হবে পুনরায় সোনাগাছির বেশ্বাপদ্লীতে উপস্থিত হয়ে সেখানকার বাড়ীতে বাড়ীতে আরও তদস্ত চালিয়ে যাওয়া। এইরূপ তদক্ত খারা বে কয়টি বেখানারী কোনও দিন না কোনও দিন পাগলাবাবুর সংস্পর্লে এসেছে তাদের খুঁজে বার করার আন্ত প্রয়োজনও আমাদের ছিল। স্থনীলবাবুর উপদেশ মত আমরা পুনরায় সোনাগাছি অঞ্জে উপস্থিত হয়ে সেথানকার বাড়ী वाफ़ी जनस्य करत श्रीय वारेगक्त कुन्नो नातीरक मःश्रेष्ठ कतनाम। তদন্ত দারা জানা গেল যে, ওরা সকলেই ভালরপে পাগলাবাবুকে বহু বার দেখেছে। এদের সহিত আমরা ঊষা, মলিনা এবং মৃতের অক্সান্ত পরিচিত ব্যক্তিদেরও সঙ্গে নিলাম। এদের সকলকে সঙ্গে ৰূবে কলিকাতাৰ পুলিশ-মৰ্গের বৰফ ঘরে এনে তাদেৰ একে একে পাগলার মৃতদেহটি দেখাতে স্তব্ধ করলাম। সৌভাগ্যের বিষয় যে, ঐ মুগুবিহীন দেহটি পাগলার বলে এরা সকলেই সনাক্ত করেছিল। मुखिरहोन (मह मनोप्क करा रा थुवरे कठिन छ। मर्खमारे चीकाया। কিছ নিম্নোক্ত কয়টি বিশেষ চিহ্ন হতে তাদের পক্ষে এ মৃতদেহটি বিশ্বাসযোগ্যরূপে সনাক্ত করা সম্ভব হয়েছিল।

- (১) মৃতদেহটির বুকে ও পিঠে প্রচুর চুল ছিল। দারুণ মাতাল অবস্থায় তাকে তারা প্রায়ই নগ্ন অবস্থায় পথে-ঘাটে পড়ে থাকতে দেখতো। এইজন্ম এই সৈব বৈশিষ্ট্য দেখার স্থবিধা তাদের হয়েছিল।
- (২) মৃতদেহটির বাম হাতে একটি ফুলের কুঁড়ি উদ্ধি সহবোগে আছিত ছিল। এ'ছাড়া তার বাম কাঁবে একটা গভীর ক্ষতও দেখা বেতো। পাগলাবাবুর দেহের এই সব চিহ্নগুলি এরা প্রায়ই দেখেছে।
- (৩) মৃতদেহের বাম পাণী কুশ-পা ছিল এবং উহার ডান পারে ত্রিশুলের মত একটি দাগ ছিল। এই বক্ষ পা সাধারণত মাহ্লবের মধ্যে দেখা বার না।

(৪) মৃতদেত্র মাপ, আরুতি এবং গাত্রবর্ণ হতেও উচা পাগলা-বাবুর মৃতদেত বলে তারা সনাক্ত করতে পেরেছিল। এই পাগলাবাবুকে বাবে বাবে তারা দেখেছে। এইজন্ম এই সম্বন্ধে তারা কোনওরপ ভূল বা ভ্রাম্ভি করতে পারে না।

এতছাতীত আমরা পাগলার মৃতদেহের ওজন ও মাপও
নিয়েছিলাম। কারণ কোনও দক্ষির কাছে জামার মাপ দেওরা
কিংবা কোনও স্থানে তার দেহ ওজন করানোও তার পক্ষে অসম্ভব
ছিল না। উপরম্ভ তার পদ-চিহ্ন এবং হস্তাঙ্গুলীর চিহ্নও আমরা
গ্রহণ করেছিলাম। কারণ কোনও থানায় ধরা পড়ার পর জামীনের
কাগজে তার পক্ষে টীপ্ দেওয়াও অসম্ভব ছিল না। কিন্তু তুর্ভাগ্যের
বিষয়, এই কয়েকটি স্ত্র অনুষায়ী তদস্ত করে আমরা কোনও স্বফল
পাইনি।

ইতিমধ্যে আমাদের একজন অফিসার পাগলাবাবুর এক ভাইকেও খুঁজে বার করতে পেরেছিল। এই ভদ্রলোক বনগাঁরে ডাক্তারী করতেন। এই দিন ইনিও এসে মৃতদেহটি তাঁর বিগতপ্রাণ কনিষ্ঠ প্রাতার বলে সনাক্ত করে গেলেন। ভদ্রলোকটির নিকট হতে আমরা জানতে পারি যে, পাগলাবাবুর প্রকৃত নাম প্রতুলবাবু এবং সে সতাই একটি সম্লাস্ক পরিবারের সম্ভান। কিন্তু কুলটা নারীদের গানবাজনা শেখাতে এসে সঙ্গ দোবে ধীরে ধীরে সে অধ্পোতের শেষ সীমার নেমে এসেছে।

এক্ষণে আমাদের বিবেচনার বিষয় হলো যে, উপরোক্ত করটি মাত্র চিহ্ন হতে ঐ মৃতদেহ পাগলা, ওরফে প্রতুলবাবু নামে এক ব্যক্তির মৃতদেহরূপে সনাক্ত করা সম্ভব হতে পারে কি না। এই বিষয়ে শেষ বিচারের ভার জজ ও জুরীদের ধ্যান-ধারণার উপর পরিপূর্ণভাবে নির্ভর করে। এইজন্ম এই বিষয়টি নিয়ে আর অধিক মাথা ঘামানোর আনবা প্রয়োজন মনে করিনি।

ইভিপুর্বেই আমরা পুলিশ সার্জ্ঞেনের নিকট লাস চেরাই-এর বা পোষ্টমোর্টম পরীক্ষার রিপোর্ট পেয়েছিলাম। রিপোর্টটিতে অক্সান্ত বিষয়ের সহিত নিয়োক্তরূপ তথ্যটিও লিপিবদ্ধ ছিল। এই বিশেব তথ্যটির পরিপ্রেক্ষিতে পরবর্ত্তীকালীন তদস্ত করবার জন্ম এ রিপোর্টের এই অংশটি আমরা মনবোগ সহকারে আর একবার পাঠ করে নিলাম।

আমি পরীকা খারা আরও জেনেছি বে, রাত্রি প্রায় নয় ঘটিকা আনাজ সময়ে প্রথমে এই ব্যক্তিকে ছুরিকা খার। বার বার আঘাত করে মৃতপ্রায় করে ফেলা হয়। কিছু তথ্যনও এই ব্যক্তির প্রাণ দেহ হতে বিচ্যুত হয়নি। এর কিছু পরে তার জীবিত অবস্থায় তার দেহ হতে মুখ্টি ধারালো অল্লের সাহায্যে বিচ্ছিন্ন করে তাকে নিহত করা হয়েছিল।

সব দিক বিবেচনা করে আমরা প্রায় সঠিকভাবে নির্দ্ধারণ করতে
সমর্থ ইই বে—কোন ব্যক্তি কোন সময় কার ধারা কি কারণে এবং
কবে ও কি কি উপায়ে কোথায় নিহত হয়েছিল। বত্ততপক্ষে
এই ভাবে আমরা এই হত্যা-রহত্তের উপর প্রচুর আলোকপাত
করতে পারার আনন্দে আত্মহারা হরে উঠেছিলাম। এই অবস্থার
আমাদের দলের কোনও কোনও অফিসার মতপ্রকাশ করলেন বে
আজকের মত তদম্ভ এইখানেই সমাপ্ত করা বাক। কারণ আমরা
সকলে এই স্থুই দিন বাবং বোরাগুরি করে সভ্যসভ্যই ক্লান্ত. হরে

পড়েছিলাম। প্রকৃতপক্ষে মামুবের দেহ যতটা সইতে পারে তাকে তার বেশী সওয়াতে গেলে তা সহজেই ডেক্লে পড়তে পারে। একথা নিশ্চয়ই সতা যে, নিজেদের দেহ ও মনকে স্বস্তু না রাখলে কোনও তুত্রহ কার্য্যে সফলতা লাভ করা অসম্ভব। কিন্তু তা সত্ত্বেও আমি আমার সহকারী তদস্তকারীদের সহিত একমত হতে পারিনি। আমার মতে তদন্তের সাফল্য একান্তরূপে নির্ভর করে স্পিড বা গতির উপর। অক্তথায় বস্তু সাক্ষা প্রমাণ ইতিমধ্যেই বিনষ্ট হয়ে যেতে পারে। এ ছাড়া বিলম্বের কারণে মূল হত্যাকারী পুলিশের নাগালের বাইরে চলে গেলে কয়েক বংসর পর্য্যস্ত ভার পক্ষে ফেরার জীবন অতিবাহিত করা সহজ্পাধ্য হয়ে পড়বে। ইতিমধ্যে বহু প্রত্যক্ষদর্শী সাক্ষীকেও নানা কারণে আর থুঁজে পাওয়া না-ও যেতে পারে। এইজন্ম আসামী বহু বংসর পরে ধরা পডলেও তাদের বিরুদ্ধে সাফল্যের সহিত আর মামলা পরিচালনা করা সম্ভব হয়নি। এই বিষয় কয়টি ছাড়া আমার সহকারী অফিসারদের সহিত দ্বিমত হওয়ার অপর আর একটি কারণও ছিল। এই কারণটি হচ্ছে এই যে, আমার স্থির বিশ্বাদ ছিল খোকাবার এইদিন গভীর বাত্রে তার বক্ষিতা মলিনাস্থলবীর কক্ষে নিশ্চয়ই একবার হানা দেবে। এইজন্ম আমার সহকারীদের বিশ্রাম করবার স্থবোগ দিয়ে আমি একাই কয়েকজন সিপাহীসহ মলিনাস্থন্দরীর বার্টীর নিকট গোপনে অবস্থান করতে মনস্থ করলাম। বলা বাহল্য যে, আমাদের অভিত পুরাতন ইনম্পেক্টার স্থনীলবাবু আমার মতেই মত দিয়েছিলেন। অগত্যা এই তুরুহ কার্য্য সম্পন্ন করার ভার ষেচ্ছাকুতভাবে আমি নিজের ক্ষমে তুলে নিয়েছিলাম। কিন্ত এতে যে নিজের জীবন কতদুর বিপন্ন হয়ে উঠতে পারে, তা তথনও আমি অনুমান প্রয়ম্ভ করতে পারিনি।

আমি করেকজন মাত্র সিপাহী সমভিব্যাহারে সাদা পোষাকে
মলিনাস্থলরীর বাটার নিকট যথন পৌছিলাম, তথন রাত্রি প্রায়
ছুইটা বাজতে চলেছে। হুঠাং আমরা সম্ভস্ত হরে লক্ষ্য করলাম।
দিকে দিকে ঐ অঞ্চলের নিশাচর লোকেরা এবং স্থানীর দোকানদাররা
ভাত-ত্রস্ত হয়ে ছুটাছুটি করছে। সকলের মুখে সেই একই কথা
"থোকা থোকা খোকা!" এই সময় তাদের সমবেত কণ্ঠস্বরকে
ছুবিয়ে মলিনাস্থলরীর ঘর থেকে করুণ আর্তনাদ শোনা গেল,

["]ওরে বাবা রে মেরে ফেললে রে। ওগে ভোমরা **কে কোখার** আছো-ও। শীত্র এসে আমায় রকা করে। গো"—মলিনাস্থলবীর বাটীর 'নীচের ঘরে হুই জন পাহারানার পাহারার জব্ম পুর্ব হতেই মোতায়েন ছিল। ইতিমধ্যে কে বা কাহারা বাছির **হতে** তা:দর দরজা শিকলের সাহায়ে বন্ধ করে দিরেছিল। 👌 ঘরের ভিতর হতে তারাও প্রাণপণে চীৎকার করে সাহায্য-ভিকা করছিল। এই সময় বটতলা থানার সেকেণ্ড অফিসার **আসিক্ল হক** সাহেব এলাকায় রোঁদ দিতে দিতে ওইখানে এসে পড়েছিলেন। তিনি অকৃন্তলে জমায়েৎ ভীডের ওপার থেকে প্রাণপণে এগিয়ে আসৰার চেষ্টা করছিলেন। কিন্তু ভীভ-সক্তর লোকের চাপে কিছুতেই তিনি এগিরে আসতে পারছিলেন না। এমন সময় হঠাং আমি লক্ষ্য করলাম, মলিনা দেবীর বাড়ীর দোতলার কার্ণিশ থেকে এক ব্যক্তি পিন্তল হাতে লাফিয়ে রাস্তায় পড়ে চতুর্দিকের জনতাকে লক্ষ্য করে উপর্যুপরি গুলীবর্ষণ স্তব্ধ করে দিলে। সৌভাগ্যের বিষয় বে, আমারও জামার নীচেকার পেটিকার গুলীভরা একটি পিস্তল ছিল। আমিও তংক্ষণাৎ উহা বার করে এ লোকটিকে লক্ষ্য করে উপযুগের কয়েক বার গুলী ছু ভূলাম। কিন্তু সম্মুখের জনতার জীবন পাছে অকারণে বিপন্ন হন্দ, সেই জন্ম আমাকে শীন্ত্রই সংযত হয়ে গুলীবর্ষণে বিরত হতে হলো। এই স্মযোগে লোকটি পাশের অপরিসর গলি দিরে কোথার যে উধাও হরে গেল, তা জনতার আর সকলের মত আমিও বৃষ্ণতে পারলাম না। ইতিমধ্যে থবর পেরে বটতলা থানার ভারপ্রাপ্ত অফিসার যতীক্র মুখাজ্জী বহু সিপাহী-শান্ত্রীসহ সেখানে পৌছে গিয়েছেন। এই খবর স্থামপুকুর থানাতেও পৌছে দেওয়া হয়েছিল। সেইখান ২তে ইনস্পেক্টার স্থনীল বাবুও তাঁর অক্সাক্ত সহকারীদের সহিত পরিত গতিতে অকুস্থলে এসে উপস্থিত হলেন। আমরা সকলে মিলে দ্রুতগতিতে সারা সোনাগাছি অঞ্চলটিই বেরাও করে ফেলে দেখানকার প্রতিটি বাটার প্রতিটি কক্ষ এবং তংসহ চতুর্দিককার মেথরগলি ও রাজপথ সমূহে তন্ন তন্ন করে ঐ আততায়ীর জন্ম খোঁজাথ জি করলাম। কিন্ধ কোথাও তাকে খুঁজে পাওয়া তো গেলই না; এমন কি কোন্পথ দিয়ে বে ঐ ব্যক্তি অন্তৰ্দ্ধান হয়ে গেল, তার সামান্ত হদিস পর্যান্ত কেউই আমাদের জ্ঞানাতে ক্রমশঃ পারলো না।

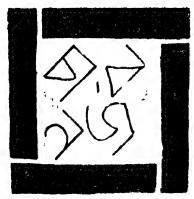
সকলই কবিতা

গ্রীনন্দলাল বেরা

এই পৃথিবীতে যা কিছু ঘটিছে সবই কবিতাব ছন্দ ছোট-বড় আৰ মান-অপমান ভালো হোক্ কিবা মন্দ। কবিৰ মানসে জাগে তাৰি ছবি ভূলিয়া বিভেদ ধন্দ।

ক্ষুত্র তুচ্ছ, কিবা ছোট-বজ়ো, গাঁথিতে তাহার করি সব জড়ো, একই সুত্রে গাঁথা সে মাল্য—কেবল নানান ছন্দ।

কিকোল-রোষ, প্রেম-ভালোবাসা, তারো মাঝে ভিত্তবিভার ভাষা, কবির বীণায় বাজে তারি স্থর হয়নি তা কভু কন্ধ।



শ্রীহরিচরণ ভট্টাচার্য্য বিত্যারত্ন স্মৃতিতীর্থ

[জ্যোভির্মিদ ও শাস্ত্রবেক্তা স্থপণ্ডিত]

"যুগে যুগে চ ৰে ধৰ্মা যুগে যুগে চ ৰে দ্বিজা:। তেখাং নিক্ষান কৰ্ত্তকা যুগৰুপা হি তে স্মৃতা:॥"

বেদের ট্রুক্সরপ সিদ্ধান্ত জ্যোতিষ শাস্ত্রের (Astronomy)
অনুশীলন আত্মভৃত্তিকর—ইহাতেই রক্ষদর্শন লাভ সম্থা। কারণ
গণিত জ্যোতিষ্পান্ত পূর্ব বিজ্ঞান সতে। প্রতিষ্ঠিত আব ফলিত
জ্যোতিষ্-বিজ্ঞান কল্পনার উপার নির্ভেরণীল। সংপথবাত্রী ও নির্লেশিতী
শ্রন্ধের জ্যোতির্বিদ জীহরিচরণ ভট্টাচার্যা বিজ্ঞারত্ব শ্বতিত্রীর্থ মহাশরের
শ্রন্ধে এই কথাগুলি মনে হয়েছিল।

গুপ্তপ্রেস পঞ্জিকার প্রধান পরিচালক পণ্ডিত ৮বামেশব বিজ্ঞাবন্ত ও প্রলোকগতা ৮শাকগুরী দেবীর পুত্র হরিচরণ ভট্টপন্নীর স্বগৃত্তে ১৮৮৯ সালের ২৫শে নভেবর জন্মগ্রহণ করেন। ইহার পিতামহ ছিলেন বিগত শতাব্দীর অক্সতন পণ্ডিত ৮রামদ্যান তর্কবন্ধ। ভাইণাড়া মধ্য-ইরোজী বিজ্ঞালয়ে পাঠকালে তিনি একবাণ বসস্তবোগে মৃতপ্রায়



ঞ্জী গরিচরণ ভট্টাচার্য্য

ইন. কৈছ চন্দানগরের বৈশিষ্ট চিকিৎসক শব্দয়াচরণ বন্দ্যোপাধ্যারের আবিষ্কৃত পঞ্চানদ বুস' সেবনে নিরামর হন.। চৌদ্দ বংসরে হুগলী সরকারী বিজ্ঞালয়ে ভর্তি হন, কিন্তু ম্যালেরিয়ার প্রকোপে এন্ট্রান্দ পরীক্ষা দিতে পারেন নাই। সেই সময় পিতার নিকট কুলবিল্পা জ্যোভিষণান্ত্র, পাড়িতে থাকেন। সঙ্গে সঙ্গে ইচ্ছাশাজ্রির সাধনা করিয়া তিনি ধ্যান-ধারণা স্তরে উপনীত হন। তিন বংসর পাণ্ডিত চন্দ্রনারারণ বিজ্ঞার মহাশরের নিকট গণিত ও ফলিত জ্যোতিবশান্তের পূর্ণান্ধ অমুশীলন ও শসিদ্ধের চক্রবর্তীর নিকট পাশ্চান্ত্য জ্যোতিববিল্পা আয়রত করেন। ১৩২১ সালে গুগুপ্রেস পঙ্কিকার গণনা, শ্বীরেশ্বর শ্বৃতিতীর্থ মহাশরের টোলে নব্যশ্বতিশান্ত্র অধ্যয়ন ও ১৩৩৫ সালে নারারণচন্দ্র শ্বৃতিতীর্থ মহাশরের টোলে নব্যশ্বতিশান্ত্র অধ্যয়ন ও ১৩৩৫ সালে নারারণচন্দ্র শ্বৃতিতীর্থ মহাশরের নিকট হইতে শ্বৃতির উপাধি পরীক্ষায় সামস্যা লাভ করেন।

১৩২৫ সালে পিতৃবিয়োগ হটলে তিনি পঞ্জিকার গণনা ব্যবস্থা সম্পূর্ণরূপে গ্রহণ করেন এবং ১৩৫৩ সালে চক্ষু:পীড়ার দক্ষণ উহা পরিত্যাগ করিতে বাধ্য হন। এই সময়ের মধ্যে পুরাতন পঞ্জিকা মিতাহ' নামে গ্রন্থ সম্বলন এবং পঞ্জিকা সংস্থার প্রদীপ' পঞ্চাঙ্গ প্রভাকরের প্রভাহরণ নামক ৭ খণ্ড পুস্তিকা তংকর্ত্তক প্রণয়ন উল্লেখযোগ্য। 'বস্কুমতী সাহিত্য মন্দির'-এর স্বজাধিকারী ৵সতীশচন্দ্র মুখোপাধ্যায়ের আহ্বানে শ্বতিতীর্থ মহাশয় তথা হইতে প্রকাশিত "স্তবক্বচমালা" আংশিক সম্পাদনা ক্রেন। সভীশ বাবু তাঁহাকে প্রীতি-উপহারম্বরূপ এক থণ্ড মনুসংহিতা, প্রাণতোষিণীতম ও স্তবকবচমালা প্রদান করেন। পরে স্বর্গীয় ভবতোর ঘটক মহাশরের সহিত তাঁহার প্রীতির সম্পর্ক স্থাপিত হয়। জ্যোতিষ্পাক্তের স্থগভাঁর জ্ঞানের জক্ত ভারত সরকার ১৯৫৭ সাল হইতে হরিচরণ বাবুর উপর Indian National Almanac প্রবৃত্তনের ভারাপণ করেন। ইহা ছাড়া ১৮৮০।৮১ শক হইতে রাষ্ট্রীয় পঞ্চার-এর সংস্কৃত ও বাংলা অত্যবাদের তদারক করিতেছেন। ১৩৫৭ সালে কলিকাতায় পঞ্জিকা সংস্কার সভার যে অধিবেশন হয়, বিজ্ঞাবত মহাশয় তাহাতে সক্রিয় অংশ গ্রহণ করেন। উক্ত বংসবে তিনি ভট্টপন্নীতে ভারতীয় জ্যোতিবিজ্ঞান পরিষদ" নামে জ্যোতিষশাল্পের একটি গবেষণা কেন্দ্র স্থাপনা করেন। বিভিন্ন প্রান্তের বহু ছাত্র উহাতে শিক্ষালাভ করিয়া থাকেন।

১৩৩॰ সালে ভট্টপন্নীতে উক্ত বংসরের রাজনৈতিক সম্মেলনের নির্কাচিত সভাপতি দেশবন্ধ চিত্তরঞ্জন দাশ মহাশয়কে পণ্ডিত সমাজ এক অভিনন্দন দেন। তক্মধ্যে তিনি অগ্রণী ছিলেন। ১০৫৭ সালে পশ্চিমবঞ্চ সংস্কৃত মহাসম্মেলনে জ্যোতিব শাখার সভাপতি, ১৯৫৭ সালে ঠাকুর শুশ্রীরামকৃক্ষ প্রমহাসদের ও ভগবতী শ্রীশ্রীমার জীবন্দর্শন আলোচনা সভার সভাপতি, ভবতারিগী পীঠ প্রতিষ্ঠা, বঙ্গীয় সংস্কৃত শিক্ষা পবিষদের পরীক্ষক, জানীয় সর্বার্ধসাদক বিস্তালরের অভ্যতম পরিচালক, ১০৬০ সালে "প্রধের সন্ধান" নামক জ্যোতিপ্রস্কৃত প্রকাশ, ১২৭০ সালে প্রথম প্রকাশিত শ্রীনারার্বচন্দ্র শ্বতিতীর্ধ সম্পাদিত নাবদ-মৃতির বন্ধান্থান সমান্তির ভট্টপ্রী পরীক্ষা সমাজের সহঃ সম্পাদিত লাবদ-মৃতির বন্ধান্থান বালা তথা ভারতের সংস্কৃত শিক্ষিত সমাজে এক স্থানী উচ্চ আসন প্রদান করিয়াছে। তিনি বন্ধীয় ব্রাহ্মণ পরিষদের সম্পাদক ছিলেন।

১৩১৭ সালে ভট্টপঞ্লীর জ্রীকৃষ্ণধন ভট্টাচার্য্যের কনিষ্ঠা কন্স জ্রীমতী স্থকুমারী দেবীকে শ্বতিতীর্থ মহাশয় বিবাহ করেন। শ্বাদশ বংসরে উপনরনের পর হইতে তিনি ধর্ম সাধনার মশ্ল হন। এই পর্যন্ত তিনি উত্তর-ভারতের বহু তীর্মস্থান পরিভ্রমণ করিয়াছেন। নবগ্রহ সাধনার তিনি সার্থকতা লাভ করিয়াছেন।

পরিণত বয়সেও তিনি জ্যোতিবশান্ত লইয়া স্থপভীর আলোচনা ও গবেষণায় নিজেকে নিমজ্জিত রাখিয়াছেন দেখিয়া কর্মকম বর্ষীয়ান ব্রাহ্মণ-পশ্তিতকে প্রণাম জানাইয়া বিদায় লই।

ডক্টর প্রীকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

[বিশিষ্ট শিকাবিদ ও স্থলেথক]

ইং বাজী ভাষা ও সাহিত্যে স্থপশুত হইয়াও মাতৃভাধা বাঙ্গালার মাধ্যমে লেখায় উদ্বৃদ্ধ হয়েছিলেন কেন ? এই প্রশ্নের জবাবে ডা: শ্রীকুমার বন্দ্যোপাধ্যায় বলেন, "ইংরাজীতে লিখে কোন স্থায়ী ছাপ রাখা বায় না বলে আমার ধারণা।" এই প্রখ্যাত শিক্ষাবিদের পরবর্ত্তী জীবনধারা লক্ষ্য করিলে উহার যথার্থতা প্রমাণিত হয়।

ডক্টর বন্দ্যোপাধ্যার ১২৯৯ সালের আখিন মাসে বীরভূম জেলার হাতিয়া গ্রামে (মাতুলালয়) জন্মগ্রহণ করেন। বাবা ৺মধুসুদন বন্দ্যোপাধ্যায় বিগত শতাব্দীর অক্তম ইংরাজী শিক্ষিত ব্যক্তি ছিলেন। আইনজীবী না হইয়াও আইন শান্ত্রের সুক্ষাতিসুক্ষ জ্ঞান তিনি আয়ত্ত করেন। মাতা Valজবালা দেবীকে পুত্র শ্রীকুমার মাত্র চারি বংসর বয়সে হারান। স্বগ্রাম বীবভূম জেলার কুশমোর গ্রাম। প্রাথমিক শিক্ষা বাবার নিকট গ্রহণ করিয়া ডক্টর বন্দ্যোপাধ্যার বাঁকুড়ার সি, এম, তারিব বিল্লালয়ের পঞ্চম শ্রেণীতে ভর্তি হন। মামা আগুতোর রায়চৌধুরী তখন উহার প্রধান-শিক্ষক ছিলেন। ১৯০৬ সালে তথা হইতে মাত্র বার বংসর বয়সে তিনি প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া জেলা স্কলার্যসিপ পান। ছই বংসর পরে হেতমপুর কলেজ হইতে ত্রয়োনশ স্থানাধিকারা হিসাবে এফ, এ, পাশ করিয়া কলিকাতা স্কটিশচার্চ্চ কলেজে প্রবেশ করেন এবং ইংরাজী সাহিত্যে প্রথম শ্রেণীর প্রথম স্থান অধিকার করিয়া থাৰুয়েট হন। এ পধাস্ত কলিকাতা বিশ্ববিত্যালয়ের ইংরাজা সাহিত্যে "ঈশান স্কলার" হয়েছেন একমাত্র ডা: বন্দ্যোপাধ্যায়। নাটাাচার্য্য সক্ত-লোকাস্তরিত শিশিরকুমার ভাহড়ী তাঁহার অক্ততম সহপাঠী ছিলেন। বর্তমানে তিনি শিশিরকুমার সধক্ষে একটি বচনায় ব্যাপৃত আছেন। ১৯১২ সালে তিনি ইংরাজ্ঞাতে প্রথম শ্রেণীর প্রথম হইয়া এম, এ পাশ কবেন। উহার ফলাফল বাহির হওয়ার পুর্বের রাষ্ট্রগুরু স্বরেক্সনাথ ও অধ্যক্ষ জানকী শাস্ত্রী মহাশয়ের আহ্বানে তিনি তিন মাস রিপণ কলেন্ডে অধ্যাপনা কবেন। উক্ত বৎসবের নভেম্বর মাদে প্রেসিডেগী কলেজের ভদানীস্তন অধাক্ষ মি: এচ, আব, জেমস-এব আহ্বানে তিনি উক্ত কলেজে অধ্যাপক হিসাবে যোগদান १५०१ मान भ्यास व्यवसान कार्यन। ১১৩৫-৪০ সাল প্রান্ত বাক্সশাচী কলেকে সহাধাক ও অধাক হিসাবে কাষা করিয়া পুনরার প্রেসিডেন্সী কলেজে ফিরিয়া আসেন এবং ১৯৪৬ সালে তথা হইতে অবসর গ্রহণ করেন। ১৯৪৬-৫৫ সাল পধ্যস্ত তিনি ক্লিকাভা বিশ্ববিক্তালয়ের রামতত্ম লাহিড়ী অগ্যাপক হিসাবে কাধ্য করে। "Critical Theories & Poetic Practice in

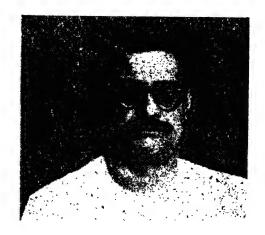
Lyrical Ballads" এর উপর তিনি ১৯২৯ সালে "ভক্টরেট" উপাধি পান।

প্রথম জীবনে প্রীকুমার বাবু বিখ্যাত সঙ্গীতজ্ঞ যত রারের মর্বজ্ঞ ষ্টেটের সভাগায়ক) ভাতুশ্র ৺আগুতোর বারের নিকট নিরমিত সঙ্গীত শিকা করেন। বিলম্বিত লরে গ্রুপদ গানে আগুতোর বাবু অধিতীয় ছিলেন।

১৯১১ সালে ডা: বন্দ্যোপাধাায় শ্রীমতী শৈলবালা দেবীর সহিত পরিণয়সূত্রে আবদ্ধ হন।

১০২১ সালে হাতিয়া প্রামে এক সাহিত্য সম্মেলন অনুষ্ঠিত হয় ৻
৺জলধর সেন, ৺অপরেশ মুখাজি প্রভৃতি সাহিত্যিকগণ উহাতে
যোগদান করেন। সেই সভার প্রীকুমার বাব্ "রপকথা" নামে একটি
ব-লিখিত প্রবন্ধ পাঠ করেন। উহা উচ্চপ্রশংসিত হওয়ার "প্রবাসী"
পত্রিকায় প্রকাশিত হয় এবং বর্তুমানে আই-এর বাঙ্গালা পুস্তকে উহা
সন্ধিবেশিত আছে। ইহার পর ডাঃ দীনেশচক্র সেনের সহিত তাঁহার
বিশেষ পরিচয় হয়। ডাঃ বন্দ্যোপাধাায় ক্রমশঃ বাঙ্গালা য়চনা
লিখিতে আরম্ভ করেন। তম্মধ্যে "বঙ্গ সাহিত্যে উপন্থাসের ধারা"
সর্বেবাংকৃষ্ট গ্রম্ব হিসাবে আদৃত। তাঁহার লেখা "উনবিংশ শতকের
গীতি-কবিতা সকলন"-এ আমরা পাই ১৮৫ • গোলের পর হইতে ১৯১৬
সাল পর্যান্ত বাংলার বছ জানা-অজানা কবির কবিতা সংগ্রহ। তিনি
বছ পুরাতন ও অধুনালুন্ড মাসিক পত্রিকা হইতে কবিতাগুলি সংগ্রহ
করেন। এছাড়া তাঁহার 'সমালোচনা-সংগ্রহ' ও বাংলা সাহিত্যের
বিকাশের ধারা' পূর্বোক্ত ত্ইটি পুস্তকের সহিত বিশ্ববিভালয় কর্তৃক
পাঠ্য হিসাবে নির্বাচিত হইয়াছে।

বাদ্যকাল হইতে ঐ কুমার বাবু খেলাধূলায় অন্তরক্ত ছিলেন এবং পরবর্তীকালে তিনি কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয় স্পোটস কন্ট্রোল বোর্ডের চেয়ারম্যান হিসাবে কার্য্য করেন। তাঁহারই প্রচেষ্টার কলিকাতার



ডক্টব শ্রীকুমার বন্দ্যোপাধ্যায়

বিভিন্ন ফলেজ কর্তৃপক্ষ ময়দানে নিজস্ব থেলাব মাঠ সংগ্রহ করিতে সমর্থ হন। রাজ্য সরকারের থেলাধূলা স্থানিয়ন্ত্রিত করার উদ্দেশ্যে বচিত বিলের উপর ভাঁচার মতান্ত লিপিবদ্ধ আছে।

১৯৫২ সালে তিনি রামপ্রহাট কেন্দ্র হইতে পশ্চিমবঙ্গ বিধান সভার সদস্য নির্কাচিত হন। সেই সময় তিনি কুত্র কুত্র রাজনৈতিক: দলসমূহের একীকরণ প্রচেষ্ঠায় আত্মনিয়োগ করেন। 'রবিবাসর,' 'নিথিল-ভারত বঙ্গ-সাহিত্য-সম্মেলন,' 'বোর্ড অব ষ্টাডিজ ইন মিউজিক'এর চেয়ারম্যান, আরও কয়েকটি প্রতিষ্ঠানের সহিত তিনি এখনও সক্রিয় ভাবে জড়িত আছেন।

শরদিন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়

বাংলা সাহিত্যে শক্তিশালী সাহিত্যিক অনেকেই আছেন কিন্তু শরদিনু বন্দোপোগার গুধু শক্তিশালীই নন নিঃসন্দেহে নিজেব স্বকীয় বৈশিষ্টো উজ্জল।

উত্তর প্রদেশের জোনপুরে ১৮৯৯ গৃষ্টাদের ৩০শে মার্চ তাঁর জন্ম হয়। তাঁর পিতা ভতারাভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায় বিহারের অন্তর্গত প্রাচীন সহর মুদ্দেরের লকপ্রতিষ্ঠ ব্যবহারজীবী ছিলেন। প্রকৃতপক্ষে এদের আদি নিবাস ছিল চকিশে পরগণার বরানগরে। তারপর সেখান থেকে পূর্ণিয়া এবং পূর্ণিয়া থেকে নিজের কর্মকেন্দ্র মুঙ্গেরে চলে আসেন সপরিবারে শবদিন্দুর পিতা। তিনি বিহারের অক্ততম শ্রেষ্ঠ উকিল ছিলেন। খ্যাতি, অর্থ ও প্রতিপত্তি কিছুরই অভাব ছিল না। তাই সমৃদ্ধ পারিবারিক পরিবেশে শরদিন্দুর বাল্যকাল ক্ষেটেছে। লেখার আগ্রহ তাঁর ছোটবেলা থেকেই। মা বিজ্লীপ্রভা কেবীর তসম্ভব বই পড়াব খেঁক। বালক শ্রদিন্দু মারেব সংগ্রহ



শ্রদিন্ কন্টাপ্রায়

করা বইগুলি পড়তেন। একদিন বৃদ্ধিমচন্দ্রের আনক্ষমঠ পুড়ে তাঁর মনে অন্তুত প্রেরণা এল। তিনি গল্প লিখবেন ঠিক করলেন। এই ভাবে ভাবী সাহিত্যিকের হাতেখড়ি হল। স্থানীয় জেলা স্কুল থেকে ১৯১৫ সালে প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হয়ে কলকাভায় পাড়তে এলেন বিক্তাসাগর কলেজে। ছোটবেলা থেকেই থেলাধূলার অনেক বিষয়ে পারদর্শী ছিলেন তিনি। বিশেষ কুটবল ও টেনিসে। কলকাভায় কেশব সেন স্থাটের ওয়াই, এম, সি-এতে তিনি থাকতেন। এবং সেখানেই বাস্কেট বলের একটি দল গঠন করেন। তাঁর নেতৃত্বে এই দলটি একাধিকবার ইণ্ডিয়া চ্যাম্পিয়ানশিপের সম্বান অর্জন করে।

কিন্তু এই সবের কাঁকেও সাহিত্যচর্চা তাঁর সমানে চলছিল।
এই সময়েই তিনি নিজের উল্পোগে 'যৌবনমূতি' নামে একটি ছোট্ট
কবিতার বই প্রকাশ করেন। তথনকার শ্রেষ্ঠ জনপ্রিয় পত্রিকা
প্রবাসীতে এর দীর্ঘ সমালোচনাও বেরিয়েছিল। মাত্র ১৮ বছর
বয়সে তাঁর বিবাহ হয়। তিনি তথন তৃতীয় বার্ষিক শ্রেণীর ছাত্র।
মুক্সেরের অক্ততম উকিল ভামলদাস চক্রবর্তীর নাতনী পারুজবালা
দেবী শর্মিন্দুর সহধন্দিশী হয়ে আসেন।

কলকাতা থেকে বি-এ পাশ করার পর তিনি পাটনা থেকে ল'
পাশ করেন। পিতা বিখ্যাত উকিল, সমস্ত রকম স্থবিধা থাকা
সন্তেও তিনি ওকালতি •করেননি। কিছুদিন বার লাইব্রেরীতে
ঘোরা-ফেরা করে পুরোপুরি ভাবে সাহিত্য সাধনায় মনোনিবেশ করলেন
এসে। করেকটি পত্রিকায় তথন তিনি লিথছেন। একদিন
কন্মমতীতে গল্প (উড়োমেঘ) পাঠালেন তিনি। প্রকাশও পেল
কিছু গল্লের শেবের দিকে সম্পূর্ণ বদলে দেওয়া হয়েছে। তিনি
কিছুটা রাগত ভাবেই সম্পাদক সতীশচন্দ্র মুখোপাধ্যায়কে পত্র
দিলেন। উত্তর এল যথাসময়ে। স্থান্দর প্রেরণাময় চিটি।
সম্পাদক জানিয়েছেন, লেখার অদলবদল করা হয়েছে লেখককে
ছোট করার জল্পে নম্ব—বচনাটিকে আরো গাতিশীল করার জল্পেই।
এর পর বন্ধমতীতে তিনি প্রচুর লিথেছেন। এমন কি তাঁর বিখ্যাত
রোমকেশের প্রথম আ্যান্ডপ্রকাশ এখানেই।

১৯৩৮ সালে তাঁর বন্ধে যাওয়ার আহ্বান আসে। বন্ধে টকিজেব তিমাংক্ত রাগ্রের একজন বান্ধালী কাহিনীকারের প্রয়োজন ছিল। ওই সঙ্গে তারাশস্কর বন্দ্যোপাধ্যায় ও সৌরীক্রমোহন মুখোপাধ্যায়কেও আহ্বান জানান হয়েছিল। শেষ পথ্যস্ত তাঁদের মধ্যে শবদিশ্ই নির্বাচিত হন। সেই থেকে তিনি পশ্চিম-ভাবতেই আছেন। উপস্থিত তিনি আর কন্টাক্তের বাঁধাবাঁধির মধ্যে নেই। স্বাধীন ভাবে সাহিত্য সাধনায় ব্যাপৃত আছেন। তাঁর বহু কাহিনী চিত্রাগ্রিত হয়েছে। তার মধ্যে ভাবী, নবজীবন, হুগা, পুন্নিলন, আজাদ, মুকাদার ইঙাাদি ছবি দশকদের চিত্তজন্ম কবেছে।

সাহিত্যের ক্ষেত্রে শর্রাদপুর স্থান একক এবং বৈশিষ্ট্রাপূর্ণ। তাঁব ঐতিহাসিক উপক্যাসগুলি সাহিত্যের দরবারে যুগাস্তব এনেছে। জাতিম্বর, বিষকক্যা, কালের মন্দিরা, গৌড়মন্ত্রার, তুমি সন্ধার নেয ইত্যাদি যে তথু রচনাশৈলীর উৎকৃষ্ট উদাহারণ তাই নয় ববং ভারতীয় সাহিত্যের অমৃল্য সম্পদ। ডিটেক্টিভ কাহিনী রচনায় তিনি ভারতের কোনেন ভারেল। তাঁর অমর স্থাই ব্যোমকেশের কার্ভিকলাপে পাঠক-সমাজ চমৎকৃত। ব্যক্তিগত জীবনে শর্দিশু অত্যন্ত সদালাপী ও বসিক। উপস্থিত তিনি পুণায় বাড়ী কবে বসবাস করছেন। তাঁর একমাত্র কনিষ্ঠ ভাতা অমবেন্দু বন্দ্যোপাধ্যায় ও ভগিনী মামুরাণী মুখোপাধ্যায় অ স্ব জীবনে প্রভিষ্টিত। তাঁর তিন পুত্র—সকলেই কৃতিমান। তাঁর মধ্যম পুত্র শাস্থু বন্দ্যোপাধ্যায় বন্ধের একজন উদীয়মান চিত্রপবিচালক।

প্রকৃতপক্ষে শ্রদিন্দু সারা জীবন সাহিত্যই করে- চলেছেন। সাহিত্যকে তিনি ভালবাসেন। গত বছর আনন্দর্বাজার তাঁকে সাহিত্য প্রস্কার দিয়ে সম্বন্ধিত করেছেন। আমরা তাঁর দীর্ঘ জীবন কামনা করি।

শ্রীপ্রসাদকুমার বস্থ

[পশ্চিমবঙ্গের গোয়েন্দা বিভাগের ডেপুটি ইন্সপেক্টর জেনারেল]

ত্যপূর্ব কর্মতংপর, সাহসী ও কর্মদক্ষ এ পুরুষটি। মুথে मर्खनारे रामि। এँ क ठिक श्रुमिन ष्यिमात हिरमत्व वसु-বান্ধব ও আত্মীয়-স্বজন দেখেন না। সাংবাদিক হিসেবে এই পদস্ত পুলিশ অফিসারটির সঙ্গে মেশবার স্থযোগ পেয়েছি দীর্ঘকাল। কিন্ত একটি দিনও তাঁকে গস্তীর হতে কিম্বা মেজাজ খারাপ করতে দেখিনি। কঠোর দায়িত্ব সম্পাদনের কার্য্যে লিগু থাকা কালে দেখেছি তাঁর সদাহাত্রময় মুথখানি। কিন্তু এঁর চরিত্রের বৈশিষ্ট্য হচ্ছে— ষথনই যে কাজের আহ্বান এসেছে তাঁর কাছে, যত কঠিনই হোক না কেন, স্মন্ত্রভাবে ও অতিশয় দক্ষতার সঙ্গে তিনি তা সম্পন্ন করে আসছেন অক্লান্ত ভাবে কোন নিন্দা বা স্তুতির অপেক্ষা না করে। যথনই প্রয়োজন হয়েছে নিজের জীবন তুচ্ছ করে তিনি এগিয়ে গেছেন কর্তুব্যের কঠোর আহ্বানে। অসাধারণ সংগঠনী শক্তি নিহিত আছে এঁর কর্মধারায় আর তার সাথে রয়েছে বিচক্ষণতা ও প্রত্যুৎপল্পমতিত। এই মূলধন নিয়েই 🗐 বস্থ এগিয়ে চলেছেন তাঁর কর্মজীবনে এবং এ কয়টি মূলধনের সহায়তার আজ তিনি পুলিশ বিভাগে এতথানি উচ্চ আসন ও মর্যাদা লাভ करतिष्ठ्त । আत्र এकि महान चामर्न तरार्ष्ट औ तस्त्र जीवरन । তিনি নিজেকে সর্বাদাই জনগণের সেবক বলে মনে করেন। ७५ भूनिन चिकिमात्र हिरमस्वरे नग्न, याधीन स्मरनत्र नागतिक हिरमस्व । নিজের কর্মময় জীবনধারায় তিনি এই আদর্শেরই একনিষ্ঠ পূজারী।

পুলিশ বিভাগে চাকরি করতে হবে এ কথনই ভাবিনি।
তথ্ আমিই নয় আমার পুজাপাদ পিতৃদেব কিয়া অন্তা কোন আত্মীরবজন কোন দিন মনে করেন নি। আমার বরাবরই ইচ্ছে ছিল
বে আমি শিক্ষা বিভাগে শিক্ষাব্রতী হয়ে কাজ করি। আমার
পিতৃদেবের ইচ্ছা ছিল অক্সফোর্ড-এর ডিগ্রি নিয়ে এসে শিক্ষা
বিভাগে আত্মনিয়োগ করি। কিন্তু লোকে ভাবে এক, আর
হয় এক। ঠিক এমনই দিনেই আমার পিতৃদেবের টাকা য়ে
বাাঙ্গে ছিল, সেই ব্যাক্ত ফেলু হলো। এদিকে আমার পিতৃদেবও
তথন বৃদ্ধ। এই পরিস্থিভিতে আমার কর্মগ্রহণ। নতৃবা
মাজ আমি পুলিশ অফিসার না হয়ে শিক্ষাব্রতী হিসেবেই
পরিচিত্ত হয়ুম।'—এ করেকটি কথা শ্রীবস্ম আমাকে বললেন
আলোচনা প্রসঙ্গে।

এবিজর পৈত্রিক বাসভূমি পূর্ব্বব্যঙ্গর (বর্ত্তমান পূর্ব্ব-পা**কিস্তান)** ৰশোৰ জেলাৰ ঝিনাইলাতে হলেও ডিনি কথনও নিজেৰ পৈতিক বাসভূমিতে যাননি। ১৯১৩ সালের আগষ্ট মা**সে কলকাভার** বাগৰাজাৰে তাঁহাৰ মাতামহ স্বগীৰ সনংকুমাৰ ঘোষেৰ বাড়ীতে তীবস্তৰ জ্যা। পিতাছিলেন স্বৰ্গীয় ডাঃ চুৰ্গাপদ বস্থু। চুই বংসর বয়সে ঞ্জীবস্থ তাঁহার স্নেহমরী জননীকে হাবান। সেই থেকে তিনি মামার বাড়ীতে লালিত-পালিত। তার পর তাঁর বাল্য, শৈশব ও **ছাত্রজীবন** কাটে এ ক'লকাতা মহানগৰীতেই। ১১২১ সালে সাউ**থ সুবার্ধন** স্কল (মেন) থেকে তিনি চারটি লিটার সহ প্রথম বিভাগে **প্রবেশিকা** পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন। ১৯৩১ সালে ক'লকাতা প্রেসিডে**নী কলেজ** থেকে আই, এ, পরীক্ষায় পঞ্চদশ স্থান অধিকার করে উক্ত কলেজেই ইতিহাসে অনাস নিয়ে বি, এ, পড়তে খাকেন এবং ১৯৩৪ **সালে** ইতিহাসে প্রথম শ্রেণীতে ১ম হয়ে সসম্মানে বি, এ, ডিগ্রী লাভ করেন। তার পর প্রীবস্থ এম, এ, কোর্স ও চুই বংসর আইনও পড়েন। কিন্ধ ১৯৩৭ সালে বেঙ্গল সিভিল সাভিস পরীক্ষায় এবং ইতিয়ান অভিট ও একাউট্য সাভিনে পরীক্ষা প্রদানের জন্ম তাঁর এমন এ, ও আইন প্রীক্ষা দেওয়া হলোনা। হাতের লেখা থারাপের **অভুহাতে** ৫ নম্বর কাটা যাওয়ার জন্মে শ্রীবস্থর শেষ পর্যাস্ত অডিট ও এ**কাউন্টস** সার্ভিসে যোগ দেওয়া হলো না।

বি, সি, এস পরীক্ষার উত্তীর্ণ হ'বে তিনি ডেপুটি স্থপার হিসেবে সরকারী কাজে যোগদান করলেন ১৯৩৮ সালে। ট্রেনিং কলেজে শিক্ষা গ্রহণাস্তে প্রথমে নদীরার তার পর সাব ডিভিশনাল প্রদিশ অফিসার হিসেবে ১৪ পরগণা জিলার ডায়মও হারবার মহকুমার যোগদান করেন। এর পর প্রী বস্তু রাজসাহী, ময়মনসিংহ এবং ঢাকায় সহকারী পুলিশ স্থপার হিসেবে কাজ করেন। তিনি মেদিনীপরে পুলিশ স্থপার থাকাকালীন ১৯৪৭ সালে দেশ স্বাধীন



প্রীঞ্চাদকুমার বন্ন

হ'বাব সঙ্গে সঙ্গে ১৫ই আগষ্ট ভাবতেব শ্রেষ্ঠ মহানগণী কলিকাভায় প্লিশের স্পেলাল বাঞ্চের ডেপ্টি কমিশনার ছিসেবে কার্য্যে যোগদান করেন। এই কাজে তিনি প্রশংসার সঙ্গে ১৯৫২ সাল অবধি কাজ করেন। তারপর অন্ধ কিছুদিনের জন্মে ২৪ পরগণা জিলার আলিপ্রে প্লিশ স্থপার হন। ১৯৫৪ সালে প্রী বস্থ প্নরায় কলকাভা প্লিশের স্পেলাল বাঞ্চের ডেপ্টি কমিশনার হ'বে আসেন। ১৯৫৫ সালে কলকাভা প্লিশের সদর কার্য্যালরের ডেপ্টি কমিশনার হল। ১৯৫৬ সালে ক্লেকাভা প্লিশের নদাণি রেজের (জল্পাইভড়ি সদর কার্য্যালরে) ডেপ্টি ইঅপেন্টার জেনারেলের দায়িবভার গ্রহণ করেন। ১৯৫৭ সালের সেপ্টেবর মাসে তিনি পশ্চিমবঙ্গের গোয়েকা বিভাগের ডেপ্টি ইঅপেন্টার জেনারেল হিসেবে কলকাভার বদলী হন এবং তথন হ'তে অল্কাবি ডেপ্টি ইঅপেন্টার জেনারেলের দায়িবভার বহন করে চলেভেন নিরলস ভাবে।

পূলিশ বিভাগে কাজ করবার সময় প্রী বস্ত্র কয়েকটি ছঃসাহসিক
কাজ করেন তা বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। কিন্তু স্থানাভাবে এথানে
মাত্র ছ'টি ঘটনার উল্লেখ করছি। প্রথমটি হচ্ছে ১৯৪৭ সালে।
ব্রী বস্ত্র তথন মেদিনীপুরে। সেই সময় খড়গপুরে সাম্প্রদায়িক দাঙ্গা
স্ক্রক হয়। পরে এ দাঙ্গা ভীষণ আকার ধারণ করে। দাঙ্গাকারীরা
উভর পক্ষেই বন্দুক, ছোরা, তরবারি, বোমা ও গোলাগুলী ব্যবহার
করে।

এই বিধ্বংসী দাঙ্গার মাঝে সহসা কোন লোক যেতে চায় না।

ত্রীবন্দ্র নিজের জীবন বিপদ্ধ করে স্বেচ্ছায় দাঙ্গা দমনে এগিয়ে
গোলেন এবং আয়েয়াল্রের সহায়তা গ্রহণ না করেই দাঙ্গা প্রশমিত
করেন। ত্রীবন্দর উপস্থিতিতেই দাঙ্গাকারীরা পলায়ন করে।
তারপর ১৯৪৮ সালে ক'লকাতার আপার সারকুলার রাছে ত্রীবন্দর
জীবন বিপদ্ধ হয়। অবশ্ব শেষ পর্যন্ত তাহার অসীম সাহস ও
প্রত্যুৎপদ্মতিত্বে তাঁহার জীবন বক্ষা পায় ও তিনি বিপদ হইতে
উত্তীর্ণ হন এবং দাঙ্গাকারীরা পলায়ন করে। ঘটনাটি ঘটে মহরমের
শোভাষাত্রার সময়। শোভাষাত্রাটি ষধন আপার সারকুলার রোছস্থ
বিজ্ঞান-কলেজের সম্মুখে উপনীত হয় তথনই ঘটনাটি ঘটে।
জনৈক ভদ্রলোক সারকুলার রোছে ফুটপাত ধরিয়া অগ্রসর
হইতেছিলেন। ইত্যামধ্যে শোভাষাত্রাকারীরা ভদ্রলোককে আক্রমণ
করে এবং ভদ্রলোকের মস্তকে আঘাত করে। ভদ্রলোক রক্তাক্ত
অবস্থায় ফুটপাতে পড়িয়া বায়। ত্রীবন্দ্র ঘটনাস্থলের অনতিদ্বে
গ্রিছাইয়াছিলেন, তাঁহার সঙ্গে সাদা পোষাক পরিহিত করেকজন মাত্র

কনষ্টেবস ছিল। এই কঞ্চণ দৃষ্ঠ দেখিয়া তিনি দ্বির থাকিতে পারিলেন না। নিজের জীবনের মাধা ত্যাগ করিয়া তিনি একাফী কুন্ধ ও নৃশংস জনতার মধ্যে ঝাঁপাইয়া পড়িলেন ভদ্রলোকটিকে বক্ষার জক্তা। দেদিন প্রীবন্ধ ঐ ভাবে অকুন্থলে না গোলে ভদ্রলোকরে জীবন রক্ষার কোনই সম্ভাবনা ছিল না। প্রীবন্ধ ভদ্রলোকটিকে ধরে তোলবার সঙ্গেই কোধান্ধ জনতা তাঁকে আক্রমণ করলো। তিনি গতান্তর না দেখে জীবন রক্ষার জন্তে। তাঁর রিভলভার থেকে ১ রাউণ্ড গুলী করেন জনতার পা লক্ষ্য করে। ফলে ১ জন পারে আঘাত লেগে পড়ে যায়। সঙ্গে সঙ্গে হাজার হাজার ম্পালমান পলায়ন করে। ক্রমে প্রীবন্ধ ভীবণ দালা প্রশমিত করেন সেদিন। স্বাই মনে করেছিলেন, প্রীবন্ধ বিঁচে আ্বানতে পারবেন না। কিন্ধ নিজের কর্তব্যের কাছে কোন শক্তিই সেদিন তাঁকে বাধা দিতে পারেনি।

খ্ব সম্ভবত: একথা অনেকেই জানেন না বে, বাল্যকাল থেকেই জীবস্থ সাহি চাচচর্চ করে আসছেন। "বন্ধন্দী" "বিচিত্রা" ও "শীহর্ষ" মাসিক পত্র-পত্রিকাগুলিতে তাঁহাব বহু গল্প প্রকাশিত হয়েছে। অন্তাবধি তিনি সাহিত্যচর্চা অক্ষুণ্ণ রেখেছেন। একদিন বর্গত কথাসাহিত্যিক শর্ৎচন্দ্র চট্টোপাধ্যায় মশাই শ্রী বস্তুৰ গল্পের প্রশাসা করেছেন।

শ্রী বস্থ ১৯৪১ সালে গৌরী দেবীকে বিবাহ করেন। তাঁহার সহধর্মিণী একজন বিহুষী মহিলা ও প্রখ্যাত শিল্পী। তিনটি সম্ভানের জননী হয়েও ১৯৫৩ সালে শ্রীমতী বস্থ কলিকাতা বিশ্ববিজ্ঞালয়ের বি. এ. পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হন। সঙ্গীতেও তিনি বিশেষ পারদর্শিনী। শ্রী বস্থার জ্যেষ্ঠ পুত্র শ্রীমান অশোক্রকুমার ১৯৫৮ সালে স্থুল ফাইনাল পরীক্ষায় পশ্চিমবঙ্গে প্রথম স্থান অধিকার করে। তার সাফল্যের মৃলে ্রেছেন শ্রীমানের মাতা গৌরী দেবী ও শ্রীবস্থ। তাঁরা উভরেই ছেলের লেখাপড়ার সাহায় করেছেন সক্রিয় ভাবে।

ব্যক্তিগত জীবনে শ্রী বস্থ অনাড্যর জীবন অতিবাহিত করেন। ক্লাব, থেলাধুলো হৈ-ছল্লোড় তাঁর ভাল লাগে না। অবসর সময়ে তিনি সাহিত্যচর্চা, পড়া ও গানবান্ধনা নিয়েই সময় অতিবাহিত করেত ভালবাসেন। নিরহকার, সদালাপী, বন্ধুবংসল প্রভৃতি বছগুণে তিনি বিভৃষিত। জনগণের সেবাই তাঁর জীবনের চরম লক্ষ্য। আমরা এই গুণী, বিধান ও সং অফিসারটির দীর্থজীবন কামনা করি এবং প্রার্থনা করি, তিনি বছদিন জীবিত থেকে দেশের ও জনগণের কল্যাণ-সাধন কর্কন।

রমণী

শ্রীমতী তৃপ্তি সোম

তুমি বে বমণী তোমার পূর্ণতা নছে রঞ্জত-কাঞ্চনে রূপের প্রবে তুমি নহ বিভারিনী।

নাৰীবেৰ মাতৃবেৰ ব্যবস্থ সৌৰব চোমাতে নিহিতঃ তব বস্তব সৌৰত।

সে স্থরতি কয় করে স্বাকার মন— মমতা ও দেবা-হন্ধ, মিঠ স্থালাপন।

শ'জ-ক্লান্ত-বিক্ত-চিন্তে স্নেহ-সঞ্চারিণী তুমি পূর্ণ তুমি বভ তুমি বিজয়িনী। বিশাবনে সিয়েও সোঁবিপ্রী

দর্শন করেনি তপন। অথচ
ভাকেই সিরে ধরলেন মোক্ষা
ঠাকুয়ানী ই আমাকে হয়িখারে নিরে
বাবি বাবা ?

শামি ?

ভূই না নিবে গেলে খামাব আৰু বাওৱাই হয় না।

কিছ আরও গুরুতর কারণ আছে ভপনের বিশ্বিত হবার। এবাও ত ই প্রকাশ হরে পড়ল তার প্রশ্নে।

এতদিন যাওৱা চয়নি কেন, মাসীমা ? তীৰ্থতো কম কয়নি ভূমি ?

আসদ কারণটা জানা গেল মোক্ষদার বাট বছর বর্সের ভোষ্ঠ পুত্র হৈলোক্যনাখের কাছ খেকে। কবল হয়িখার কেন, মাকে সঙ্গে নিরে একেবারে কেদারবছরী পর্বস্ত বাবার

একটা ইচ্ছা অনেক দিন বাবং তিনি মনে মনে পোষণ করে আসংহন বলে ত্-থকবাব অ্যোগ থাকলেও জননীকে তিনি হবিথাব বেতে দেননি। কিছা বিধি তার উপর বাম বলেই বুঝি চাকরি ছেড়ে অবসর নেবার-সঙ্গে সঙ্গেই ভিনি নিজে বাতে একেবারে অচল হরে পড়েছেন। এবকম অবস্থায় আর একজনের সঙ্গে এই সমন্ত্র মোক্ষাকে পাঠাতে না পারলে এজীবনে বুদ্ধার আর হরিথার দর্শন হয় না।

আশীর কোঠার পড়েছেন মোক্ষণা ঠাকুবানী। তাঁর জয়ান্তীর্ণ দেহধানির দিকে চেয়ে তপন মৃত্ হেসে বললে, তুমি সচল আছ নাকি মাসীমা ? হবিখার পাহাড় ভেকে ভেকে উপরে উঠে ঠাকুর দেশতে পারবে তুমি ?

পুৰ পাৰৰ বাঝ।

বেশ দৃঢ় কঠখন বৃদ্ধার। কাতনতা বেটুকু তাকেবল তার চোধের দৃষ্টিতে। সে দৃষ্টি অফুনরের।

তবু সংশয় দূর হয় না তপনের মন থেকে। কিছুক্ষণ পর সে আবার জিজ্ঞাসা করল, অত দূরে তুমি কেন বেতে চাও মাসীমা ? কি দেশবে তুমি হরিহাবে গিরে ?

ভংকণাৎ উত্তর দিলেন মোকদা, হরগোরী দর্শন করব বাবা !

সে ভোকাশীভেও দেখেছ তুমি। দেখ নি ?

দে ভো বিশ্বনাথ আর অন্নপূর্ণ।

হৰগোৱা আলাদা নাকি ?

ভাকেন ? ভবু---

বলতে বলতে থেমে গেলেন মোক্ষণা; কিন্তু একটু প্ৰেই তিনি গাঢ়বৰে আবাৰ বললেন, ছেলেবেলা থেকেই আমাৰ গৌৰী বৰ্ণন কৰবাৰ সাধ। পূঞা হত তো আমাদেৰ বাড়ীতে। তথন আগমনীৰ গান গুনতাম আৰু মনে হত বে হিমালৱে গৌৰীৰ বাপেৰ বাড়ীতে গিবে সেই কুমাৰীয়পে মাকে দুৰ্গন কৰব।

ব্ৰৈলোক্যনাথ ৰপ কৰে ভপনেৰ ভান হাতৰানা চেপে ধৰে



बैभ्गी अनातायन ताय

বললেন, তুমি তপন, কথা রাথ আমাদের, মাকে নিয়ে বাও ছবিখাৰে। ঘূরে ঘূরে বেড়ানোই তো ডোমার প্রভাব। আর হবিখার তো ভোমার বেশ চেনা আয়গা।

সেই জন্মই তো আপত্তিও আমার বেশী, উত্তর দিল ওপন : ছবিধার তো বাংলাদেশ নত, দালা! মাসীমার এ সাধ মিটবে মা সেধানে গিয়ে। মাঝে থেকে আমারই বদনাম বাড়বে। মাসীমা হয়তো শেবে বলবেন বে আমার মত পাবণ্ডের সঙ্গে গিয়েছেন বলেই গৌরী দশন দিলেন না তাকে।

কিছ কোন ওজর, কোন আপন্তিই খাটল না তপনের। শেষ পর্যন্ত বাজী হতে হল তাকে। তাবপর পাঁজি দেখে এক ভভ দিলে দেবালুন এক্সপ্রেশ বোগে হরিষার বাত্রা।

ভোব হল লাকসাব ঐশনে। তপনের চেনা পথ, পরিচিত্ত দুখা। তবুবেন মারাকাজন লেগেছে তার চোথে!

বাঁ দিকে বিচিত্ৰ দৃশ্য সব। দিগন্ত অদৃশ্য হয়েছে। বতদ্ব চোৰ বার দেখা বার তবু পর্বতপ্রেণী। অভুলনীর তার রপ! নাই বা ঝলকে উঠল ত্বাবের মুক্ট, নাই বা মেঘ মেঘলোক ছাড়িরে উঠল তার উক্ল শৃল। তথাপি সে হিমালর। বিবাট ভার গঠন, বিপুল সমৃত্বি। অবণ্য-সম্পদের আংশিক প্রকাশেও অপরিমেরতার ইলিত। শেষ বর্ষার প্রকৃতি। বিজয়ী প্রাণেশ্ব ধ্বলা উঠেছে বেন নিজাণ পাষাণের কঠিন বন্ধ বিদীর্ণ করে। ঢাকা পড়ে গিয়েছে পাছাডের শিলামর রপ। গাছে গাছে পাতার ঠাল বুননি। শ্রাম আর সব্জের নিবিড কোলাকুলি। ভবের পর স্কর ঐ ঘন সবুজের সমারোহ। উত্তাল ত্বল-বিক্ত্র সবুজের সমুজ ঘন অবসাং কোন দেবাদিদেবের দর্শন লাভ করে সমন্ত্রম বিশ্বরে নির্বাক্ত

ভোৰ খেকেই মালা জপছিলেন মোক্ষা গ্ৰুৱাৰী। ভৰাপি ভাকেই সংবাধন কৰে তপন বললে, দেব মানীমা, কি মুক্তর ৷ ৰূপ বন্ধ কৰে কিছুপৰ্ণ ভাকিছে ক্লেইলেন হোক্ষা; ভাৰণৰ বন্দেন, কি ক্ৰেভে ব্লছিস ? এ ভো বোপ।

পূথ হল তপন । কিছ হেনেই সে বললে, থাজার বাড়ীকৈ বলছ বোপ ? কোন সেপাই কোটালের কানে গিয়ে থাকলে হাতে মাথা কেটে নেবে ভোমার। এই ভো হিমালয় ভোমাদের সৌরীর বাপের বাড়ী !

चा। -- हमरक डिक्रंटनन स्माक्ता।

তপন বললে, হ্যা মাসীমা, হর্বিছার এসে গেল আর কি।

তনে ছই হাত জোড় করে উদ্দেশে প্রণাম করলেন মোক্ষণা, তথাপি বিহরল তার ভাব।

গাড়ী তথন গজেল গমনে একটি প্লের উপর উঠছে। নীচে থালের মত একটি নদী। তবু ভাই দেখেই বুবি সহবাত্রী একদল রামপুতানী সমস্বরে সজীতের বছার ভূলে জর্থনি দিল: জর জর গলা মাইকী জয়।

ৰোক্ষা চমকে উঠে বিজ্ঞানা করলেন, এই গলা নাকি বে তপু!

ত্তপন উত্তরে বললে, স্বরং গঙ্গা না হলেও তাঁরই কোন বোন হরেন।

কি বলছিল তুই ?

তাই বই কি মাসীমা ! ইনিও তো দিবের জটা থেকেই নেমে আসছেন।

উত্তর মনংপৃত হল না মোকদার, হবার কথাও নর। কিছ আবার তিনি তাকালেন নীচের সেই নদীর দিকে। গাড়ী পুল পার হরে থানিকটা এগিরে বাবার পর তা বথন আর দেখা গোল না, তথন কিরে তপনের মুখের দিকে চেরে তিনি বললেন, তেরাভাভার কথা আগে নর রে তপু। গাড়ী থেকে নেমেই আমার গলার ঘটে নিরে বাবি। কলুবনালিনী গলা। সভাই তো, লিবের জটা থেকে নেমে এই হবিখারেই তিনি প্রথম মর্তের মাটি চুঁরেছেন আমার মত পাপী-ভাপীর কল্যাণ ও মুক্তির জন্ত। আগে গলার তুব না দিরে আর কোন কাল নর।

বিল্লা গিরে থামল ভোলাগিবির আশ্রমের কাছে। বিল্লাওরালা ভাঙা বাংলার মোক্ষণাকে বুবাতে চেষ্টা করল বে নিকটেই বে ধর্মশালা আছে সেথান থেকে ভিনি রাত-দিন গলা দর্শন করতে পারবেন বলেই বিশেব করে ঐ জারগাতেই মাঈজীকে নিরে এসেছে সে।

ভতক্ষে দর্শন পেরে গিরেছেন মোক্ষা। একেবারে কুলে কুলে পরিপূর্ণ বাঁধা ঘটের প্রায় সব ক'টি সিঁড়ি অভিক্রম করেছে জল—পথে গাঁড়িছেই নীচু দেরালের উপর কিরে বেশ দেখা বার। প্রছে ভেমন বিশালভা না খাকুক, পরিপূর্ণভার কাঁক বা কাঁকি একেবারেই নেই। ওপারে কনধলের দিকে সবছ-রোপিত ভক্তপ্রেণীর নিবিড় ভামলভার অভ্যালে সিমেন্ট-ক্টেটির পাকা গাঁথুনি চোখেই পড়ে না। মারে ওবু জল আর জল। তরঙ্গ নেই, কুটিল আবর্ত নেই। আছে ওবু সভি—বিপূল, বিশাল জলধারার অবিযায় কুরবার গতি। আর আছে বেন নিখুত, ভানলরসম্বিভ অসংখ্য জলভবন্তের স্মাণ্ডিইনি প্রলালভ ঐকভান সঙ্গীত।

একবক্ষ ছুটেই ঘাটে গেলেন মোক্ষা। অথনি তবে অল তুলে ভূলে মাধার, মুখে নিঞ্ন করতে করতে তপনকে তেকে বললেন, ভোর মন না চার ভোঁ ওথানেই পাড়া ডুই। "পামি হটি ডুব বিরে সকল খালা খুড়াই।

তনে কিছ রীতিমত তর পেশ্রে গেল তপন। ওটি মানের ঘাট হলে কি হবে, প্রোত এত প্রথম যে তার নিজেরই সাহস হর না ঐ ঘাটে জলে নেমে প্রান করতে। সে তাড়াতাড়ি এগিরে এসে বললে, সে কি মাসীমা, এই সঙ্গার নেমে ড্ব দেবে ড্মি? মনে নেই ঐরাবতের কি দশা হরেছিল?

হেসে উত্তর দিলেন মোক্ষা, ঐবাবতের মনে পাপ ছিল বলেই অমন ছর্দশা হরেছিল তার। আমি হলেম সিরে মারের বেটা। আমি তো গঙ্গার কোলে গিরে বসব। আমার ভর কিসের ?

হঠাৎ বৃদ্ধি খেলে গেল তপনের মাধার। সে বললে, ডাই বলে তীর্থ, করতে এসে এই অস্থানে ডুব দেবে ডুমি? এ ভো গলা নয়, নহর—মানে খাল। মাস্থ্যে কেটেছে গলার জলকে ভাদের চাবের কাজে লাগাবার জন্ত।

আঁ। !-- চমকে উঠলেন মোকদা।

হাসি চেপে আরও গভীর ববে তপন বললে, হাঁ মাসীমা, এটি থাল। আসল ভীর্থ হল সিরে ব্রহ্মকুণ্ড। সেধানে গলা আছেন অরং ব্রহার কমণ্ডলুর মধ্যে। সেধানেই বদি তুব না দেবে তবে অরে কাছের কলকাভার গলা ছেড়ে এত দূরে এলে কেন তুমি ?

বৃক্তি থণ্ডন করবার চেট্টা করলেন না মোকলা। কিছ জেল করে বললেন, ভাহলে সেধানেই চল। মোট কথা, গঙ্গার ভূব না দিরে আমি জলগ্রহণ করব না।

অগত্যা আবার চলতে হল তপনকে; জিনিসপত্র থাকলো ধর্মশালার।

সঙ্গান নর, কিন্ত বিভক্ত হবার পূর্বের অবস্থা ওপানে গঙ্গার। স্মতবাং আরও বিপুল তার আরতন, প্রবল তার উদ্ধাস, ধরতর ভার গতি। কিন্তু সে তো অনেক দূর—হরকি পৌড়ীর প্রশন্ত ও স্মৃষ্ট বলরবেষ্টনী অভিক্রম করে অভ দূরে দৃষ্টি চলে না মোক্ষদার। সঙ্কীর্ণারতন অক্তুণ্ডের ঘাটে এসে ভিনিবেন ধ হরে গেলেন—এই গঙ্গা নাকি!

ততক্ষণে পাণ্ডা কুটে গিরেছে। সে-ই হাত-মুখ নেড়ে বৃথিরে বললে, সমুদ্র-মন্থনের অমৃত দেবতাদের ভাণ্ড থেকে ঠিক এই জাহগাতেই উপচে পড়েছিল। এখানে তুব দিয়ে স্থান করতে পার্লে মোকদার বর্গলাভ ঠেকার কে।

কিন্ত ডুব দেওরা কি অত সহজ। সেটি বোগসানের দিন না হলেও স্নানের সমর তো বটেই। স্নানার্থীর ভিড় মন্দ জমেনি। তাদের সঙ্গে আছে আবার পাণ্ডা, দোকানদার, কেরিওরালা ও ভিধারীর ভিড়। ঠেলে এগুনো বার না জলের দিকে।

অনেক চেঠার পর জলে বধন পা কেলা গেল, তথনই আর এক ফ্যাসাদ। হস করে মোকদার প্রার পারের কাছেই ভেসে উঠল গোটা ছই মাছ। অক্ট আর্তনাদ করে হাত ডুলে, পা টেনে নিরে দূরে সরে গেলেন তিনি।

হৈ হৈ করে উঠল একটি বাঙালী যুবকের দল। জনেক চাব নট করেও শেব বর্ধার যোলা জলে এতক্ষণ একটি মাছও ^{দেখতে} পারনি ভারা। এখন দেখে ভাদের জানন্দের জার সীমা নেই। কিন্ত নিষ্ঠাৰতী আক্ষণের বিধৰা মোক্ষণ। ৰাড়ীতে মাছ ভিনি
ক্ষাৰ্থত কৰেন না, দেখলেও বোধ কবি নিক্ষেকে অণ্ডচি মনে কৰেন।
আৰু এই মহাতীৰ্থ হবিবাৰে প্ৰকাৰ বাটেই কিনা—

বুৰতে শেৰে হেলে ফেলল তপন। সে বললে, এ মাছ অভটি নৰ মাদীমা। কেউ তো ধাৰ না এ মাছ—দেশছ না, বৰং থাওৱাৰ মাছেদেৰ।

ভাই বলে ছুঁৱে দেবে আমার ? আর এই জলে আমি ডুব দেব ?

বুৰতে পেৰে পাণ্ডাও অভৱ দিল মোক্ষণকৈ; আৰও একটু যাড়িরে সে বললে, ওবা তো গঞ্চাজীব সন্তান—পরম পবিত্র জীব। এ তীর্থে গঞ্চাব সঙ্গে সঙ্গে মন্থলিরও পূজা করতে হর। তুমিও ভোগ লাগাও মাউজী, ওলি কিনে জলে ছিটিরে লাও।

আটার সঙ্গে হরতো আবও কি কি মিশিরে ছোট ছোট নাড়ুর আকারে তৈরি হরেছে মাছেদের মিটার। ও-জিনিস বারা বেচছিল তাদেরও করেবজন ততক্ষণে মোক্ষার কাছে এসে গাঁড়িরেছে। বেথে তপন বেন মজা পেরে পেল। সে বললে, তাই তো মাসীমা, হবিবার-থবীকেশে এসে মাছের পূজা না করলে কি চলে? এস, আমরা হজনেই ভোগ লাগাই।

আট আনার নাড়ু কিনে নিরে এল সে; অনেকগুলি ওঁজে দিল মোকদার হাতে; তার হাত দিরে নিজেই সে অনেকগুলি নাড়, জলে ছড়িরে দিল।

এত বড় ভোজের নিমন্ত্রণ বাধার নর। ভেসে উঠল মাছ। ছটি-একটি নর, এক খাঁক। সিঁড়ি পর্যন্ত ছুটে এল করেকটি মাছ— মোক্ষার পারের ঠিক নীচেই।

বড় বড় মহাশোল সব। সাধের রং কালচে—শেওলাই জমেছে বোধ করি। কিছ লেজের দিকটা হলুদবর্ণ। সবটা মিলে বোলা জলেও চিক-চিক করছে। পাথনা মেলে, সা ভাসিরে, নির্ভয়ে সাঁভার কাটছে ওরা। মাঝে নাবে হা করছে। বেন একদল জবোধ শিশু হঠাৎ জলে পড়ে সিরে হাত-প। ছুড়ে আঁকু-শাকু করছে।

আবার হৈ-হৈ করে উঠল সেই বাঙালী যুবকের দল; তপনও উৎকুর হরে পরিহাস-ভরল কঠে বললে, ডোমার পুঞা ওরা গ্রহণ করেছে মাসীমা; দেখত না, আরও ভোগ চাচ্চে ভোষার কাচে।

ভঙ্কণে অনেক বদলে সিরেছিলেন যোকদা। তাকিরে দেখছিলেন মাছেদের খেলা। কিন্ত তপনের কথা শুনে একটু বেন শক্ষা পেলেন ভিনি। বললেন, নে বাপু, এখন ওদের সরিবে দে ঘাট থেকে। একটা ভূব দিয়ে শুদ্ধ হুই আমি।

কিছ সান শেষ হতেই আব এক গোঁ তার—ভথনই হ্রগৌরী শূর্মন ক্রবেল ভিন্নি।

অরিতে ইন্ধন দিল পাণ্ডা। সে বললে, চল বৃড়ী মারী, বিশ্বকেশবের মন্দিবে নিয়ে বাই ভোমাকে; কাছেই সভীকুও। বয়স্থ নিব আর ভারেত সৌরী। দর্শন করলে জনম সার্থক হোবে।

দিভীর গোঁ মোক্ষদার—ভিনি পদত্রকে মন্দিরে বাবেন।

তনে অমন বাস্থু পাণ্ডাও শক্তিত হরে বললে, অত গ্রের পথ কি হেঁটে বাওরা বার ? আভূবে নিরমো নাজি। বেলগাড়ীতে ^{এলে} বেমন লোব হয় না, টালার চাপলেও তেমনি। ভবে প্ৰক্ৰমে বাবাৰ সাধ্ৰ মিটল যোক্ষাৰ। যদিবেৰ কাছাকাছি এসে টালা খেমে গেল। সাৰ্বে চড়াই, গাড়ী আৰ বাবে না।

একটি টিলার উপর বিবকেখরের মন্দির। তেমন থাজা বা থ্ব লীর্ব পথ না হলেও উপরে উঠা বেল কট্টকর। লম নেবার জন্ত হ'বার থামতে হল মোন্দ্রবাকে। তাঁর ক্লান্তির চেরে প্রভাগাই তার বেশী —ব্রভাবনিস্তাভ চোথ ছটিও তার অস-বল করছে বেন।

কিন্ত বেধলেন কি ! উঁচু পাহাড় ও স্বুজের সমারোহ বা তা ঐ টিলার পিছনে। ততদূর পর্বস্ত দৃষ্টি চলে না বুছার। বে শিখবে বিশ্বকেশবের মন্দির সেটি নেড়া পাহাড়। ছ'-ভিনটি মোটে পাছ, তা-ও শাখাসর্বন্ধ। ওদের মুখে ও মাথার বিগত বসভে মলরানিলের সপ্রেম চুম্বন কোন শিহরণ্টীবেন জাগাতে পাবেনি, বার্থ হয়েছে ওদের মুলে গতবর্বার জবিবাম বাবিসিক্ষন। ঠিক বে গাছটির নীচে মন্দির তার পাতা দেখে বোরবার জো নেই বে তা বেলগাছ না নিম্গাছ।

নেড়া-নেড়া দেখার মন্দিরটিও। পাথবের দেখাল, পাথবের চূড়া, শিলাক্তত্তের উপরেই নাটমন্দির বা বারান্দার ছাদ। সব নিবেও মনে হর যেন ছোট একথানি কুটির। পাথবিগাট্যহীন গঠন, বিবর্ণ। প্রাক্তব মত্ত্ব মোটেই নর। পাথবের কোণগুলি মাঝে মাঝে বর্ণাক্তকের মত উ চূ হবে ববেছে।

বিহ্বলের মন্ত চারিদিকে তাকান্তে ভাকান্তে মোক্ষদা বললেন, এই মন্দির নাকি ?

হাঁ।, বৃড়ী মারী, পাণ্ডা উদ্ধরে বললে, মন্দিরে আছেন বিশ্বনেখর। আর এই হল গিরে কালভৈয়ব। একে আগে পূজা করে গুলী করতে পারলে তবে মহালেবের দর্শন মিলবে।

বাড়ীতে কুলুদ্বিভে বেমন বসানো থাকে সাধারণ গৃহত্ত্বে গৃহ-দেবতা তেমনই তৈববের বিপ্রহ। ফুল-পাতার ছড়াছড়ি ওব চারিদ্বিক্ট, চাপ চাপ সিঁহুবের ফোঁটা ওব সারা গাবে। পাথবের মৃতি ভাল করে চোথেই পড়ে না! মোক্ষণা অসহারের মত বললেন, কিছুই ভো দেখতে পাছিনে বাবা!

বিগ্ৰহেৰ পাৰেৰ কাছেৰ ফুলপাতা কিছু কিছু সৰিবে দিৰে পূজাৰী বললে, ভৈৱৰ বড় ভৱন্ধৰ আছে। তুমি এই তার চৰণ দৰ্শন কৰ, গড় কৰ, দক্ষিণা দাও। তাহলেই ভৈৱৰজীৰ ছকুম পোৱে বাবে তুমি।

নিদেশি পালন করলেন মোক্ষা। সংক্ষিপ্ত অচ্চান শেব হবার পর একটি সিকি রাখলেন বিপ্রহের পারের কাছে; পূজারী ও গাতাকে দিলেন এক একটি ছ'জানি।

ভাভেই খুনী ওরা। পূজারী বদলে, বো আপকী ইছো। বেমন প্রভূ তেমনি তার ভৈরব। অলেই তুষ্ট। দেকিন হাা, ভাজি চাহিছে। কিন গড করো।

মূল মলিবের কাছে গিরে জাবার মুখর হবে উঠল পাওা: এই বিবকেশর স্বর্জ্ব নিব। এইখানে সভীর তপতার তুই হবে তাকে দর্শন দিহেছিলেন ভিনি। তুমিও ভক্তি করে পূজা চড়াও মারী, ভোষারও প্রমণ্ডি হোবে। বলতে বলতে ব্লস্ত ঘটার শিকল টেনে দিল সে। চা চা করে স্বাধী বাজল। প্রভিন্ননিং বললে— ওব ওব ওব—

शांद्य कांडा किन व्याक्षनाय । किन्द्र निव कांबाद १

কালো পাধরের বাতারসহীম মন্সিরের ভিতরটা প্রার অককার।
ভাকেই বেন গাঢ়তব করেছে তেমনি কালো পাধরের এক
ব্যবহারী। তার মধ্যে সিবলিক। জীগলৃষ্টি ঘোক্ষরার চোঝে
পড়বার কথা নর তা।

তাই অষ্মান কৰে পাঞা মোক্ষণাৰ তানহাতথানি নিজেই টোনে নিৰে শিবলিকের উপর ছাপন করে বললে, বাবার থ্ব কুপা চরেছে ভোষার উপর বৃতী মারী—আপন ছোরা ভোমাকে আগে বিভে টেইছেন। এই ভো শিব,—মেবাহিছের গ্রহানের। এথম দ্বীয়ের বিকে চাও, দর্শন কর।

পর্যাপত অপ্রত্যাগিত: কাঁপতে কাঁপতে বাটু গোড়ে বললের যোকন, ভারপর একেবাবে সাঠাল প্রবিপাত। ফুলানটা ঠক ভবে পড়প বৃদ্ধি গোরী-পটের উপর। কিন্তু উঠে দ্বির হয়ে বলবার পর আবাবত ডিমি ব্যাকুলকঠে বললেন, কিন্তু মহাদেব ফোথার, হারা? আনি বে হয়গোরী দর্শন করব বলে এজদুরে এসেছি।

আশাওকের বেদনার বছার মোকদার কঠছরে। তাঁর মনের অবস্থা কিছু কিছু অভ্যান করে তপন এগিরে এনে তাঁকে বললে এই তো কার্য নির্বাণ রূপ। কানীতেও তো তাই।

পাণ্ডাও বললে, ছা মারী, হর হর মহাদেব এই তোমার সামনে। ভার সৌরী ভাছেন নীচে সভীকুণ্ড। নাও, এখন প্রা শেব কর।

পুলার অমুর্গান সংক্ষিপ্ত। ঘটভারা জল শিবলিলের উপর চাললেই হল। ফুল-বেলপাতা ইচ্ছা হর দাও, না দিলেও পুলার আকহানি হবে না। ভোগ বা ভোগম্ল্যও বাত্রীর সাধ্য বা ইচ্ছায়ুক্রণ। কোন দিকেই তেমন দাবী-দাওরা নেই।

কিন্ত মোক্ষণা পূজা করণেন ব্যাচালিতার মত। মন্দির-পরিক্ষমা শেব করবার পরেও তৃত্তির প্রসন্নতা ফুটে উঠল না তাঁর মুখে। ছটি চোখ তাঁর চঞ্চল হরে বেন তখনও তাঁর বাহিত দেবতাাকে খুঁজছে।

গোৰী কোথায় বাবা ? স্বাবার পাণ্ডাকে জিজ্ঞানা করলেন ভিনি।

নীচের দিকে অসুলি নির্দেশ করে পাণ্ডা বললে, এ সভীকুণ্ড।

কেশ থানিকটা উত্তরাই ভাতবার পর ছোট-থাটো একটি উপজ্যকার কেন্দ্রছলে বিভীর তীর্ধ। তেমন নেড়া আর নর। চারিদিকেই সর্ক্ষ পাহাড়, নীচেও বড় বড় গাছ। ওদের কাঁকে কাঁকে চোথ পড়ে ভাত্তা-চোরা কুটিবের মত একটি মন্দির আর সেই মন্দিরেই প্রান্তরে ছোট একটি পাতকুরোর মত সতীকুও। পাহাড় আর গাছের ছারার মধ্যাহত কেমন বেন জ্বকার মনে হর। পাথীর ভাক নেই, ধুপধ্নার গদ্ধ নেই। মন্দিরে পূজারী ও পথে একটি কুলের দোকান থাকলেও কেমন বেন থমথম করছে আয়গাটি।

থমথম করছে মোক্ষণার মুখথানিও। কিন্ত তাঁর দৃষ্টি নিবছ ঐ পজোবাড়ীর মত মন্দিরের গারেই। সেই দিকেই এগিরে চললেন তিনি। কুলের লোকান খেকে একটি যেয়ে তেকে বললে, কুল লিয়া নেহি, ফুল ?

যোজদাৰ হবে তাৰ পাণ্ডাই নিজেৰ গামছাথানা প্ৰসাহিত কৰে মেয়েটিৰ কাছ থেকে কিছু কুল কিনে নিল। প্ৰায় এক সাজি মূল মায় পাতাৰ দাম যে নিল ছ'প্ৰসা। তাতেই বেন খুৰীতে ডগোমগ্ৰো মেয়েটি। এবাৰ লৈ তপনেৰ দিকে চেয়ে বসলে, ডম ডি লেও।

যাথা নেড়ে অখীকার করল তপন, কিছু পকেট থেকে একটি স্বক্ষকে লগ নহা প্রণা বের করে সেটি সে ছুঁড়ে বিল যেন্টের বায়নে পাথবের উপন।

বৃহুৰ্তেঃ অভ বেন বিহুৰণ হল মেছেটাৰ দৃষ্টি; কিছ প্ৰকাশই আবাৰ উচ্ছল হলে উঠল ভা। মাগ্ৰহে হাত ৰাভিয়ে হুটাটি ভূলে নিল লে—হুটুছিতে চেপে ধৰে একেবাৰে ব্যক্তৰ কাছে।

होत्रम क्ष्मा, क्षांबशव (ज-७ कवकव करव क्षेत्र क्षेत्र होन ।

কুণ থেকে জল ভুলতে হবে—পাণ্ডা বথাৰীতি নিৰ্দেশ দিহেছিল যোক্ষাকে। কিন্তু তিনি তঞ্জনে এলিছে নিৰ্দেশ মন্দিহের বোবের কাছে। গুৰু এলিরে যাওয়া নর, বাটু গেড়ে বনেছেন চৌকাঠের এথাবে। কিন্তু সমস্ত মন তুই চোথের দৃষ্টিতে একাপ্র করেও কিছুক্ষণ পর নিরাশ খবে ভিনি বল্লেন, কৈ বাবা, গৌৱী তো দেখতে পাছি নে ?

এ তো সামনেই, উদ্ভৱ দিল পাণ্ডা, কেবল গৌরী কেন, মহাদেবজীও আছেন।

হয়তো আছেন। কিন্ত কুলপাতার স্থপ আর চাপ চাপ চলন-সিন্দুরের আবরণের মধ্যে তপনের স্থন্থ চোখের তীক্ষ দৃষ্টিতেও পরিচিত হরগোরীর মৃতি একত্র বা স্বতন্তভাবে ধরা পড়ল না। মোক্ষদা অনেকক্ষণ চেয়ে থাকবার পর আবার বললেন, এই গৌরী নাকি ?

সভীনী, পাণ্ডা নিবিকার ক্ষরে উত্তর দিল, বিনি কভী তি•িই গৌরী। তাঁরই এই মুণ্ড—এও ক্ষঃভূ। উঠ, জল তোল, পূজা কর।

সেই একই অমুঠান, তেমনই সংক্ষিপ্ত। অক্ষরে অক্ষরে পালন করলেন মোক্ষা, মন্দির পরিক্রমাও বাদ গোল না। কিছ সংই বেন কলের পূত্রের মত। বেল বুবতে পারল তপন বে বাংলা দেশের দেবদেবীর নয়নাভিরাম মৃতি দর্শনে অভ্যন্ত চোথ ছটি মোক্ষার মোটেই তৃপ্ত হয়নি। হাসি পেল তপনের; বেল একটু তীক্ষ কঠেই দে বললে, দর্শন পেলে মাসীমা,—তোমার হয়গোরীর ?

মন্দির প্রদক্ষিণ শেষ করে মোক্ষর্গা তথন ফিরতি পথে। পূজা শেষ করেছেন তিনি, ঐ সঙ্গে থোঁজাও শেষ হরে গিরেছে। উভেজনার অবসানে এখন বৃথি অবসান। ভারই প্রতিকলন মোক্ষনার মুখ্যাটোধে, গতিতে। মন্দিরের পূব দিকে উঁচু পাহাড়টির গা বেঁবে বে সক্ষ পারে-চলা পথটি এঁকে-বেঁকে নীচে নেমে গিরেছে সেই পথে পাণ্ডার পিছনে পিছনে পা টিপে টিপে চলেছেন তিনি। থমধ্যে গভীর মুখ্ তাঁর, চোধের দৃষ্টি মাটির দিকে—আর তো কিছুই দেখবার নেই।

তপনের প্রান্তের উত্তর দিলেন না তিনি। দেখে খোঁচা দেশর প্রবৃত্তি আরও বেন বেড়ে সেল তপনের মনে। আরও থানিকটা দ্বের ওর মধ্যে ঢেলে দিরে প্রশ্নটি মোক্ষদার ঠিক কানের কাছে পুনরাবৃত্তি করবার উদ্দেক্তে উপর থেকে বেশ জোর পা চালিরে দিরেছিল সে। কিছ তথনই ঐ ঘটনাটা ঘটে গেল।

হঠাৎ বেল বিভাতের বিলিক—আলোময়, ধ্যুলির বিভাৎ। প্রদালী লেও—

বাৰীর মত মিট্রি মিছি পুরের সাদর আমন্ত্রণ গুলে চমকে উঠল তপন। চমকে উঠলেন মোক্ষদাও। এছিক-ওদিক তাকাতেই প্রার একট সজে ত'জনেরই চোথে পড়ল সেই দুর্ভাট।

গাছপালার যোড়া বামদিকের পাহাড়ের গারে। অনেক উপরে কেবল পাড়া আর পাড়া—বেন ঘন মবুল বংএর একথানি ঠানবুননের চল্লাড়ল। নীচে ঝোপঝাড়—ছোট ছোট গাছ আর বড় বড় লড়ার ভড়াইছি। কিন্তু একথেরে সবুল আর নর। গাঁটে গাঁটে কুল। সবুল পাড়ার কাঁকে কাঁকে উ'কি বিচ্ছে লাল, নীল আর হলুদের বিচিত্র সম্বৃত্তি। লগ-বারো ধাপ উপরে ছোট একথানা কুটার। ভার শ্লীচে বেশ থানিকটা ভারগা ভুড়ে এই উপরল বা উভান। বুর থেকে অনেক পাথর আর অনেক গাছপালার আড়ালে এককণ বা চোনে পড়েনি, ভাই এখন দেখা গেল। পাড়া আর সভার সক্ষে ফুলই কেবল মর, বেন প্শিভা-লভার ঝালর-আঁটা একথানি ছবিও। কুলের বড়ই কোমল, ক্লমর একথানি রুখও ভার, বার কঠের সাদর আমন্ত্রণনে ভিতর দিরে বোর করি বা মোক্ষণার মর্থেই প্রবেশ করেছে। প্রসাদী লেও—

থকটি যেয়ে। বেঁটে গড়নের কিশোরী। ক্যুলের মত কালো, মোটা একথানি শাড়িই ভার কোমর থেকে আয়ু পর্যন্ত থাগরা ও উপরে বুক, পিঠ, যাড় ও গলা ভাছিরে ভাড়িরে চোলিই হরেছে বেন। নিটোল স্থগোল বাহু ছটি ঢাকা পড়েনি তাতে। মাথায়ও কোন আবরণ নেই। একমাথা চুল। বেণী নয়। অবত্বর্ধিত, অসংস্কৃত কেশরাশি ভটার মত ঝুলছে তার পিঠে, কাঁবের উপর দিরে বুকের কাছে; সাপের মত ফ্লা তুলে আছে তার সলাটের উপর। অমার্জিত মুখে বেশ দেখা বার, চাপ চাপ ময়লা।

ভব্, বোধ করি সেইজকুই আরও বেশী চোপে পড়ে তার কাঁচা সোনার মত রং, আপেলের মত গাল, কাকাভুরার ঠোটের মত টুকটুকে লাল ছটি ওঠ, মুক্তার মত ঝকরকে ক'টি গাঁত আর নৃত্যচটুলা পার্বত্য নির্মবিণীর মতই তার হাসি-বলমল চকচকে চোধ হ'টির চঞ্ল দৃষ্টি।

তথু মুখের আমন্ত্রণই নর, হাতও বাড়িহেছে মেরেটি প্রাসাদ দেবার অন্ত । বাম হাতে পিছনের সাছটির একটি ঝুলে-পড়া ভাল শক্ত মুঠার চেপে ধরে, সামনের দিকে একটু ঝুঁকে, চুলওছ মাধাটিকে ছলিরে ছলিরে বলছে, পরসাদী লেও।

বিষয়ের প্রথম বাঞাটি কেটে বেতেই তপন মুখ কিরিরে তীক্ষ দৃষ্টিতে ভান দিকে তাকাল বেধানে সভীকৃতে বাবার পথে মোকদার হয়ে পাণ্ডা পূজার ফুল কিনে নিয়েছিল। দেখলে তপন— প্রকাণ্ড শিলাখণ্ডথানি এখন শৃল্ঞ, ফুলওরালী সেধানে নেই। দেখে সহজ্ঞাবে নিংখাস ফেলল সে।

কিছ মোক্ষণার চোখে বিহরণ দৃষ্টি। স্তর হয়ে গাঁড়িয়েছেন তিনি। মেরেটি তথন গাছের জাল ছেড়ে দিয়ে ক্ষিপ্রাপদে আরও হ'বাপ নীচে নেমে এল। প্রায় যোক্ষণার পথ রোধ করে গাঁড়িয়ে আবার বললে সে, প্রসাদী লেও।

একটু খেমে আবাব: পূজা কিয়া, প্রসাদি নেহি লেওগী?

ভঙকণে পাণ্ডাও তার মন্ত্রমানের দেবী দেখে কিবে এসেছে। এখানে মেরেটিকে দেখেই মোক্ষার মুখের দিকে চেরে হেসে সে বললে, লেও বুড়ী মারী। কোই হরজা নেছি। ৬ই হৈ মালীকী লড়কী—পারবৃতিরা।

याक्ता अकृतेश्व दनानन, जी।

কিছ প্ৰক্ষণেট আবাৰ ভাকালেন তিনি মেৰেটিৰ মুখেৰ কিছে। ভাৰ পৰ পথেৰ মাৰ্থানেই ঐ পাৰ্বভিয়াৰ পাছেৰ কাছে ইট্ট্ গেড়ে বলে যুক্ত ক্ৰডল প্ৰসাৱিত কৰে গ্ৰগদকটে তিনি বললেন, ৰাথ বা. গাও।

এক বক্ষের ডালই হ্রতো হবে—গুলিরে বিবর্ণ হয়ে নিরেছে। সলে কিছু ফুলের পাণ্ডি ও করেকটি পাঙা। অঞ্চিপ্টে এইণ করে ডক্তিগুরে সে প্রসাদ মাধায় ঠেকালেন হোক্ষা। ভারপর কিছু মুখে দিলেন, অর্থিই বাংলেন জাঁচলের খুঁটে।

মেধেটি ভতকণে ভপমের কাছে এংসছে। ভার মুখের দিক্তে ভেম্মি হাসিমুখে চেয়ে সে বসলে, তুম ভি লেও।

ঠোঁটে হাসিই ক্ষেত্ৰ নৱ, মেরেটির চোখে বিহুৎ বসকাছে। করেকটি টোল পড়েছে গালে। কঠখনে ক্ষেত্ৰ অমুনর নর, একটু বেন বিজ্ঞাপরও আভাস পাওয়া বাব।

চকিতে মনে পড়ে গেল তপনের বে কিছুক্ষণ পূর্বে পূজার কুল হাতে নিরে মেয়েটি ঠিক ঐ ভাষাতেই সেধেছিল তাকে, কিছ ভথন কুল লে নেয় নি। সেই কথা মনে করে বেখেছে বলেই ঐ অতিথিক্ত অভিবাজি নাকি মেয়েটির মূখের ভাবে!

এবার আর অবীকার করতে পারল না তপন; হাত পেতে দেও প্রহণ করল ঐ প্রসাদ। তার পরেই পার্বত্য হরিণীর মন্ত চুটে ধাপে ধাপে উপরে উঠে সাহপালার পিছনে অদৃত হরে সেল মেঙেটি।

অনেককণ পর্বস্ত কারও মুখেই কোন কথা নেই। কিছ নীচে নেমে আসবার পর তপনের কোতুক প্রবৃত্তি আবার বেন মাথাচাড়া দিরে উঠল। ছষ্টামির হাসি সবংড় টোটের কোণে চেপে রেখে আবার সে মোক্ষণকে ভিজ্ঞাসা করল, হরগৌরী কেমন দর্শন করলে মানীমা ? বলছ না বে!

উত্তর দিলেন মোক্ষণা এবং ভাও ভপনের মুখের দিকে চেয়েই। বললেন, ছি: ভপু, ঠাকুর-দেবতার কথা নিয়ে কি ফাক্ষণামি করভে আছে?

ভর্মনার ভাষা। বিশ্ব স্বিশ্বরে লক্ষ্য করল তপন বে কিছুক্ষণ পূর্বেই নৈবাঞ্জের বে স্নান ভাষাখানি মোক্ষদার নীর্ণ কিছ গৌরবর্ণ মুখের উপর ভেসে বেড়াতে দেখেছিল তার চিহ্নমান্তও আর অবশিষ্ট নেই। বরং এখন বেন তৃত্তিতে স্লিগ্ধ সে মুখখানি।

তথাপি আৰও একটু কৌতুক করবার ইচ্ছা ছিল তপনের। কিছু সে শ্রহোগ আর পেল না লে।

বিল্লাতে উঠে বসবাব পর তপ্নের মুখের বিকে চেয়ে মোক্ষা আবার বললেন, ভাছাড়া মন্দিরে কার কি দর্শন হল তা কি বলতে আছে বে! পাপ মুখে বসতে নেই।

গভীব কঠখন, কিছ শাস্ত। তপনের মনে হল বেন ওঠপ্রাস্তে সলজ্জ হাসির ক'টি রেখা গোপন করবার চেষ্টা করছেন মোকলা ঠাকুরাণী।



আৰুণ সেনগুপ্ত

্ৰীৰ নাম 'মেৰিপ ভাইত'। বিলাস আৰ প্ৰাচুৰ্ব্যের জ্যোত্তর মাম্বপানে কোথায় হাবিয়েইবার বঞ্চনার কাছে বা বাওৱা ভোন জীবনের স্বপ্ন, নিজান্ত কাগ্যেকর বংবের অভাবেই পিল্লীর আন্তবিপ্রহ।

বৃধবার প্রতিবাশ সেবে বোজকার নির্ম্মত একবার ও বেবিবেছিল বাইবে। সংক্ষিপ্ত কান্দের পরে তর্তর করে উঠে প্রেছে চারতলা ল্যাটবাড়ীটার যিসেস উপাধ্যারের কাছে। তার ছোট ছেলে বাবসূর গ্রাম্পথাতা লেখেছে, আর পিকাসোর আালবাম। ভারণার কাল টেপে চড়েছে। এখন এই কলকাতার আবার।

হাটছিল অঞ্চনা, ট্রামবাসগুলোকে বেপবোরা মনে হর। হাওবার দেরাল কেটে ছুটে চলেছে। কোন এক যাত্রীর নির্লক্ষ অভয়তাকে অঞ্জাহ্ম করেও রুখ কিরিয়ে নের। চোধে পড়ল থানিক ওদিকে কারা বেন ব্যায়াম করছে।

কুটপাৰের ওপর উঠে ইটিতে লাগল অঞ্চনা। এই ন' মানের মধ্যে চাকরীর থাতিরে ছ' জারগার গুরেছে—বোগাই, মালাজ। লানাপুরে আঞ্চে বাওয়ার প্রজাবে রাজী হর্নি, সমান আর সমানী বেশী পাওয়া গেলেও। কলকাতাতেই স্থায়িভাবে থাকার জন্ত ক্ষরথান্ত দিরেছে। বিধবা মা ও ছোট ভাইবোন হুটো রুরেছে ভাষবালারে। এথানে থাকলে অনেক স্থবিধে হবে।

त्वन कहिएव वरमह्ह होडे होडे हिननावी वाकानकत्मा।



মানুবের তীড় এবামে কয় সহ। সকাল পাঁচটায় বে প্রাণ বলে ওঠে, বাভ বাবোটায় ভার সমাজি। স্কালে আবার হবে কুছ।

পরত সারাটা দিন ও কাটিরে এসেছে অনীভার বাড়ীতে। করে ছুলে পড়েছে, এখনও সে ভোলেনি। জানতে পেরে জয়তিখিতে জোর করে নিয়ে গিয়েছিল। জনীতার মামাত ভাই বিকাশ লিক্ট দিতে চেয়েছিল। ও রাজী হয়নি।

কর্মজীবনের তাগাদার মামধানে ওর জীবনের হবি এখন আচল। বি, এ পালের পর গর, কবিতা পড়বার সময় ধূব কম পেরেছে অঞ্চনা। জীবনের সব চেরে বড় সাধ সেই গানই বছ। তবু হঃথিত নর সে। সংসাবের বছনকে জিইছে বাধাটাই আজ ওয় এখান কর্ম্ববা। তাই গানের জন্ত অবসর না পেলেও আজ ও কাতর নম।

আৰ্ও একটু থেটে গাঁড়াল সে। এক গাঁগা মাসিক সাহিত্য আৰ সিনেমাৰ পত্তিকা নিয়ে বঙ্গেছে একজন। জ্ঞানা হাতে তুলে নিল মোটা একটা পত্তিকা। জলতবল। জনামী। কে চেনে এব সম্পাদক অধিলেশকে ? তবু এক টাকা শান্তিনিকেজনী ব্যাপ থেকে বাব কৰে কিনল। ববিবাবে জনেক দিন পৰে পড়া বাবে। আৰ কিনল কিছু লজেল ভাইবোনের জন।

অনেক দিন বাদে নিজের অগতে কিবে এল ভঞ্জনা। ভাইকে বাগানোর শেব ডিগ্রীতে ওঠার মাবের কুত্রিম ভর্মসনা পেল—এভদিন পরে এলি, কোথার একটু বসবি না—

ছপুরে বুমে চোধ জড়িরে আসছিল বার বার। কিছ সকালের কেনা পত্রিকাটা পড়তে হবে আফকেই।

বিছাৎ !

থানিক পরে আখন্ত হল জঞ্জনা কাৰোর কোন সাড়া না পেরে। ওব ে চিয়ে ওঠাটা নীচু পর্ফায়ই ছিল।

পাঁচ বছরের মৃতিটা আর্ত্তনাদ করে উঠল। অধ্যাত পত্রিকা জলতরঙ্গ গল্প বেরিয়েছে বিছাৎ সোমের। কোন এক সময়—এক সময় গল্পের মারাধানে খুঁজে পেল অঞ্জনা ছারিয়ে বাওয়া বিছাৎকে।

গানের আসবে আলাপ। পাটনার তথন অঞ্চনাদের বাসা ছিল।
চমংকার গাইত অঞ্চনা। ওর সুরম্প্রনার চমংকৃত হরেছিল স্বাই।
আবেগ-বিহ্বেল স্বাই। আবেগ-বিহ্বেল ক্রে তুলেছিল ওর
কালকার্য-করা গলার উপস্থিত সকলকে।

—মেখ-মেগুর বরবার...

সেই আলাপ অঞ্চনাৰ বাবা প্ৰবোধবা বুৰ কাছে ওধু সামান্ত পৰিচর হয়েই থামেনি। আছক্তিক ভালবাসার ভাব পৰিবৰ্তন ঘটেছিল ধীৰে ধীৰে।

কাৰ্থেশনেৰ পরিচ্ছর মারাবী ছারার বিহ্যাভের করেকটা কথা বড় মধুর মনে হরেছিল অঞ্চনার।

—সভিয় মাঝে মাঝে অবাক হরে বাই মান্থবের প্রকৃতি দেখে। কি কবে তাবা নকল আভিআভ্যের বেড়ার নিজেদের নিয়ে চলে স্বস্ত ভাবে। কি ভাবে তাদের চোণের মারখানে চুক্তে পার না মান্নব!

ৰানিকটা নীৰবভা। ৰাতাসে বৰে চলেছিল গভীৰ প্ৰশান্তি।
—তোমাৰ গলাৰ বেন জন-সমান্তবেৰ তপভাৰ আৰীৰ্কাদ।
একটা স্বপ্নৰ পুৰীতে বেন থাকে ভোমাৰ গানেৰ সময়।

गांजूक कांत्व (रहत कांकिस्तिक्ति जक्षना।

- ---वाष्म्रवाला मानाहे करा (थरक वाकारक ग्रेन कराह ?
- --- লাত্মার বেকে লাত্মপ্রকাশ বড় নর নিভয়ই।
- —পূব দার্শনিকের মত কথা বটে। শিশুর মত হেসে উঠল বিহাৎ।
 - —আমাদের কলেকে একটা ফাংশন আছে। বাবে ?
 - --- ভাষি কেমন করে---
 - —দেটুকু ক্মতা আমার আছে কলেজে।
 - -- (वन **छ**।

সেও আর একটা দিন। বহু শ্রোতার মারথানে হয়ত প্রকৃত ভণীও কত আছেন। কিন্তু নিজের নৈপুণ্যের প্রতি সন্দেহ রইল ন।। প্রথমে একটা মীরার ভল্পন। বহুজনের উচ্চৃসিত প্রশংসার ভরে গেল ওর সাধনা-বহুল সঙ্গীত-জীবন। তারপর অধ্যক্ষের কথার অজনা গেরেছিল তার জীবনের শ্রেষ্ঠ গান।

চলো স্থী, ৰুজ্ঞবামে খেলভ · · ·

গান শেৰে একটু আড়াসে নিয়ে গিয়েছিল বিহাৎ। হাতে একটা বাৰী।

— এই বাধীর মত চির-পবিত্র আব অমর হয়ে থাকুক ভোমার আমার ভালবাসা।

এর চেবে আর আনক কি আছে ? এ প্রেম শীভের কুরাশা নয়। রাত্রিশেবেই শুক্ত হেদে বিলায় নেয় না। গভীর ভক্তিভবে প্রধাম করেছিল অঞ্জনা বিহুংধকে ।

কিছ বসস্ত আসেনি। দিগস্ত-কপোলে পূর্ব হেসে আবির্ভূত হরনি লালরক্তিম আলোবেখা। কমনীর সানাইয়ের স্থবে আনন্দ-চলনে মুখ্র হরনি প্রবোধ বাবুর নির্জ্জন নিকেতন 'পথের শেবে।'

শশ্বনার জন্মতিথিতে বিহুাতের কাছে পাকা কথাটা বলন্দেন শশ্বনার বাবা। এই খেন ঠিক ছিল আগে হতে। বাবার গলা তনে মনে হল অঞ্চনার, এ খেন হবেই, কোন বাধা নেই।

সকালে থাওয়া হল। ছপুরে ওপরে নিরে গেছলেন অঞ্চনার যা যাত্র বিছাৎকে।

—ভোষার হাতে অপ্সনাকে দেওয়া সোঁভাগ্যেরই বিবর। কথা গবই ঠিক, সন্দেহ নেই। ভোষার ইচ্ছাও আমি জানি। কিছ আমি মা। ভোষাকে পেটে না ধ্বলেও মারেরই সমান। ভাই

সন্তানের জানী জেনে বাধা আর গর্কারে অউকে জানান বর্ষ সলে করি। তারই কল্যাণের অভা। কার্ত্ত ইরাবে পড়বার সময় অজনার একবার ক্ষরবোগের প্রপাত হয়। ডাক্ডারের পরামর্শে গান বন্ধ করে দেওরা হয়। কিন্তু ও আবার আরম্ভ করেছে। এখন অবভ ভালই আছে। বনি তাকে সভ্যিই জীবনের সাধী হিসেবে চাও, ভবে এখন থাক, আর ক'টা বছর বাক।

বোধ হর আশান্তজের ঝাণ্টা সেদিন সইতে পাবেনি স্থলার বিহাৎ সোম। থুব সকালেই এসেছিল ওদের বাড়ীতে। একটা নমস্বার করে কোন কথা বলার অবসর না দিরেই সে আটোটি হাতে বেরিরে সিয়েছিল প্রবোধ বাবুর কাছ থেকে।

—গুরে ইউনিভার্নিটিতে একটা চাল শেরেছি। সাজই রওনা হকি।

ছপুরবেলা সকল কথা বললেন মা নিজে থেকেই। অসমা জানলার কাঁক দিয়ে তাকিয়েছিল দুরে। অস্পাইভাবে কানে আসছিল ঝাউবনের দীর্ঘদা। অস্তনার মনে হল, মাতৃত্বের চরম পরীকা দিয়েছে মা। তার রোগ হওরাটা ত মিখ্যা নয়!

মাস ছ্রেকের মধ্যেই থুম্বসিসে মারা সেলেন স্লেহ্মর বাবা। ভারপর সংসারের চাকার চলে সেল পাঁচটি কান্তন। জীপিতা ওর দেহবল্লরীকে অবক্ত গ্রাস ক্রভে পারেনি। বিভাৎ আর কোন ধ্বর দেহনি। ভার ঠিকানা অবক্ত ওলের জানা আছে।

এক্ষেত্রে চিত্রিতা ভাব ভাষিত। ঠিক সেই পাটনার স্বর্জনের ইতিহাস। প্রটার শেষের দিকে একটা দার্শনিক ব্যাখ্যা দেবার প্রারাস করেছে বিহাৎ, নিপুণ ভূলির সংবত টানে।

ওই স্থন, বে সূত্র নিবিড্ভাবে বেচ্ছেছিল এবদিন মনে-প্রাণে, তা বেঁচে থাকবে চিবদিন। তার ভালবাসা সাগরের চেউরের মতই বন্ধার তুলবে অমিতের বুকে। তাল থাক চিত্রিভা। ভার কালো চোথের প্রতীকা করবে দে, বত দিন হোক।

অঞ্চনা চাপ দিলে বিছাৎ ছুটে আসত তাকে গ্রহণ করতে।
কিন্তু না—বিছাতের জীবনকে পঙ্গু করে দেবার সন্তাবনা ঘটাতে রাজী
নয় অঞ্চনা।

চিত্রিতা! দীর্থকাল পরে একটা ভাল পর পড়ল বলে মনে হল অঞ্চনার।

তুমি আছ

প্রীতিঘূষা বন্দেগাপাধ্যায়

ভোমার ঠিকানা পেলাম আজকে হঠাৎ প্রভাতের বোদ-করা আবাম সকালে, পড়ে দেখি প্রতি ছত্ত্রে অনেক তফাৎ আমার নিকট হত্তে বহু দূরে তুমি তো জন্মালে। গোলাপের বুকে দেখি আর ঐ যুঁই-মল্লিকার উদ্ধে এসে বলে কত মধুলোভাঁ মৌ, তাই দেখে কত লোক নিরাশ তাকার গুঠে নিরে মধুহাসি হানে কত বৌ! ভোমাৰ ঠিকানা পেবে ৰাত্ৰাৰ উদ্দেশে গৃহ ছাড়ি ধৃলি-পৰে বাহিৰ হলেম, চলিলাম বহদুৰ তবু অবশেৰে আমারই আবাস-মাবে ফিরিরা এলেম। এসে দেখি তুমি আছ ঠিক ৰথাছানে দূবে ৰবি খেকে থাক বহদুৱে আম তবু তুমি জেপে আছ আমারই ভো প্রাণে তুমি আছ বধাছানে অসমে আমার।

ভাবি এক, হয় पांत

ঞ্জিদিলীপকুমার রায়

পাঁচ

ুন্ধ বিদায় নেওয়ার পর প্রবেষ মন আবো ধারাপ হয়ে গল। ফিরে ফিরে মনে হ'তে লাগল ওব একটা ফথাই—

খুঁরোর মতন: লয় বখন বাজে তখন তাকে ফিরিয়ে দিলে দে
আব ফিরে আদে না। তাবতে ভাবতে ওব মনে হ'ল—আব

দেবি করা নয়—কী হবে এখানে বাজে গান শিখে? নিজেয়
মনের দলে মুখোমুখি হ'য়ে তো লাভ হ'ল দম্হ—এবার বালিনে
ফেয়াই পয়া। আব ওভতা শীঘ্র—কিছ কাল এলিওনোবার
নিমন্ত্রণ খীকার ক'বে ফেলেছে, কাভেই ওখানে চায়ের পরেই
বালিন রওনা হবে। মোহনলালের জলে আব অপেকা করা নয়।
ভব নামে একটা চিঠি লিখে লুনা হোটেলের মানেজাবের কাছে
বেখে বাবে—ও বেন বিতাকে নিয়ে সোলা বার্নিনেই আসে—

স্বোনেই দেখা হবে। সেই ভালো। ভাবতেই ওব মন অনেকখানি
হালকা হ'য়ে বায়। আইবিণকে কাল সকালেই ভার ক'বে দেবে।

সন্ধ্যাবেলা কেন্ত দেখা সেই কব যুবকের সঙ্গে। ওর সঙ্গে আলাপ করা হ'ল না। না হোক। ওর মন আইরিপের জ্ঞে উঠেছে উন্মুখ হ'রে—খাওরা শেব ক'রেই নিজের খবে গিরে বসল মোহনলালকে চিঠি লিখকে:

ভাই মোহনলাল,

আমি তোমার জন্তে এখানে দিন দৰেক অপেকা ক'বে কিবে বাদ্ধি বাৰ্লিনে কাল রাতের টেনে—

香一香一香一

পৰিচাবিকা ছটি চিঠি দিয়ে গেল।

ওৰ বৃক্তেৰ বক্ত জ্ৰুত বৰ—আইবিশেৰ চিঠি—কিন্তু এ কী ! এতদিন পৰে চিঠি দিখল তাও ছবি পোষ্টকাৰ্ডে !

কুৰ হয়ে পড়ে—চিটি জেনেভা থেকে দেখা: বিশ্ব পদ,

কাল কাজিয়া যাশা ও আমি এথানে এসেছি।
আমাধ শরীর ভালো বাচ্ছিল না বলে হাওয়া বদলাতে এসেছি।
সুইজর্ল ওে মাসথানেক এখানে ওখানে একটু ব্রব, ভাই তোমাকে
ঠিকানা দিভে পারলাম না। তুমি ফাউ ক্রামারের ঠিকানার
আমাকে লিখলে ভিনি আমাকে পাঠিয়ে দেবেন—বখন বেখানে
থাকি। এখুনি বাব লসানে। তাই ইতি কবি। আশা করি
ইতালিতে মুন্ফের সঙ্গে আনলেই আছে।

তোমার আইবিণ।

এ কী! দশ দিনের পরে প্রথম চিঠি ভাও ওরু পোইকার্ড, তার উপর এমন ওক চিঠি! আইবিণ নিশ্চর বাগ করেছে। কিছ কেন? ও আবার পড়ে: আশা করি ইতালিতে রুস্ফের সঙ্গে আনন্দেই আছ়। এ-স্থর চিন্তে কি ভূল হয়? অভিমান-হুর্জর অভিযান! তা হাড়া আর কী? किये की इंटन की कंतरव अवन वार्तिता वित्वे मिर्दि कार्रेडिशरें वयन त्रवादन (करें ? क कक क्रिकेंड शका क्षत्रक द्वारच निधन : जित्र कार्रेडिश

ভোষার জেনেভা বেকে লেখা চিঠি প্রথম চিঠি এইমান পেনেই উত্তর দিছি। পত্র পাঠ জানাবে কি কবে বার্লিনে ফিরবে ?

লিখতে লিখতে ওর মনও চুর্লর অভিমানে ছেরে বার, লিখল:
আশা করি তিন বোনে মিলে স্থকর সুইজর্মাও আনক্ষেই আছ়।
ইতি। তোমার পদ।

লিখেই মনে হল—ছি ছি! ওর শরীর থারাপ, এমন শুরু চিঠি পেলে হয়ন্ত—ভেবেই চিঠিটা ছিঁড়ে ফেলল, স্থিয় করল আইরিণ জমণ শেব করে বার্লিন ফিরে ওকে বথন জানাবে তথন ওকে লিখবে, তার আগে না। কেন লিখবে? এই কয় দিনে ওকে পাঁচ-ছয়খানা চিঠি লেখেনি কি? অভিযান শুধু ওই করতে পারে না কি?

আৰু চিঠিটা মোহনলালের বানিনি ঘূরে এসেছে। বিশ্ব ওর মনে বই আৰু আব কোনো আনন্দ জাগে না ভো়া সে আসে আগ্রেন না এলেই বা কীয় বিমনা হ'বে খুবল চিঠি, বিশ্ব এ কী!

ভাই পল্লৰ,

আমাদের আপাছত ইতালি যাওরা ছগিত হারতে হ'ল। কারণ, কুরুমকে তরত দিন কের পুলিশে ধরেছে। ওর বিশ্বছে এবার কী আভিবাগ তা ওরা প্রকাশ করেনি, তবে গুলুবন না কি বিদেশের বিশ্ববীদের গছে চিঠি লেখালেখি করছে। এবার তনছি ওর কোনো প্রকাশ বিচারই হবে না, কেন না ও আল দেশের ছিরো, কোনো কোটে ওর প্রকাশ বিচার হ'লে আন্দোলন আবো কেঁপে উঠবে। দেশবন্ধু বললেন: তিনি থবর পেরেছেন ওকে না কি এবার বিদেশে প্রিপোলাও চালান দেওরা হবে—হয় আন্দামানে, নয় মান্দালরে। তিনি আমাকে অমুবোধ করলেন কুরুমের কারামুক্তি না হওরা প্রস্থ বিদেশে না বেতে কয়েরটি কাজের ভারও নিতে হ'ল কুরুমের অবর্তনান। কাজেই ঠিক এ সময়ে কোন মুখে স্তীর স্বাস্থ্যক্ষার অক্তে বিদেশে পাড়ি দিই বলো? একেই আমাদের সম্বাদ্ধন নানালোকে বে সব মন্থব্য করছে সে যাক। কী আর হবে কাঁচুনি গেরে?

তবু একটা কথা: বলি মাস থানেকের মধ্যেও কুকুমকে না ছাড়ে তবে ভাবছি বিতাকে একাই পাঠাব, তবে স্বইল্পণ্ড নয়—নোলা বার্নিনে। তোমার সঙ্গে দেখা হ'লে সে তবু একটু ভরসা পাবে। তারপর বাবে স্বইল্পণ্ড। কিছ সে প্রের কথা—এখন তবু ব'লে রাধলাম জানতে চেরে তুমি জার কভ দিন বার্নিনে থাকবে, জার ওর একটু দেখাতনো করতে পারবে কি না ?

বিতার লভে আমার সমরে সমরে সভিত্ত ছংগ হয় আজকাল।
আমি বড় গলা করেই বলতাম একদিন বে আজকের মান্নবের গৃহ
ছবেশ নয়—সর্বদেশ। কিন্ত এখন দেখছি এ-আতীর ব্লিতে মন
মানলেও প্রাণ মানে না, ঠেকে শিখছি উঠতে বসতে বে, বে-বিশমানব
সর্বান্তঃকরণে বলতে পারেন বে, তার কাছে ছবেশের চেয়ে বিধ বড়ঃ
আমানের মনে দাগ কাটতে পারেন হয়ত, কিন্ত প্রাণে ঠাই পাবেন
না—অভত এমুগে। হয়ত ছশো গাঁচ শো বংসর পরে বিশমানবতাঃ
বানী সর্বমানবের স্বধ্র হ'রে উঠতেও পারে—হলতে পারি না, কি
একথা বলতে পারি খুব জোর ক'রেই বে, এ-মুগের মান্ত্রং
কাছে আজকের দিনে স্বচেরে বড় বানী হ'ল জাতীছতা—স্বদেশেই
আমি বেশবন্ধ বা কুর্মের সভন ছ-এক্জন অসামাত মান্তবের কং

বৃদ্ভি না, বাদের দেশভক্তি বিশ্বপ্রেমের অভবার না হ'য়ে সহার হয়: কিছ অসাধারণ ব্যতিক্রমের কাছে বা খংর্ম সাধারণের কাছে সে প্রথৰ হ'য়েই থাকবে; বডদিন না তারা সাধারণ চেতনার চলাকেরা করা ছেড়ে অসাধারণদের চেতনার উঠতে শিখবে। না, শিখবে বলি কেন, এ তো বৃদ্ধি দিয়ে গ্রহণ করার ব্যাপার নয় ভাই। বিকাশ লাভ করে হয়ে ওঠার ব্যাপার আর যে কোন বছ বিকাশ সাধারণের নাগালের বাইবে। যেহেতু সাধারণ মানেই इ'न व्यमायावाय छेट-हे। व्यर्थार व्यामायावायव कारक या क्षांकर, অপ্রতিবাত সাধারণের কাছে তা ছদুল, না-মঞ্র। বিখ-মানবভার বাণী হ'ল এট অসাধারণদের উপলব্ধ চেতনার আলো। স্ত্রাং এ আলোকে সাধারণ চেত্রনার আলো-আঁধারী মন বুরবে কেমন করে ? ভাই বিভাকে খুব অপরাধিনী মনে করভেও বাবে। বিশ্মানবভাব বাণী ওর বৃদ্ধি গ্রহণ করলেও ওর হাদয় আলো বরণ করতে পারেনি, অদূর ভবিষ্যতে পারবে কি না বলা কঠিন। কেন না কোনো মাছুবের বিকাশ কখন কোন খাতে পথ কেটে চলবে কেউই জোর করে বলভে পারে না। আমি কেবল এইটুকু বলভে পাবি বে আঞ্জের বিতা ফ্রান্স ছাড়া আব কোন দেশকে খদেশ মনে করতে পারেনি বংল ভাবে যে, ভারতবর্ষকে ফ্রান্সের মতন ভালোবাসঙ্গে সে হবেই হবে বিচারিণী।

তাছাড়া আক্ষকের ভারত্তর্যের্ধর—মানে ভারত্বাসীর বা অবস্থা ভাতে ও বদি আমাদের মনে প্রাণে প্রস্থা করতে না-ই পারে, তবে তার ক্ষতে ওকে খুব দোব দেওরা বার কি? কিছুদিন আগে মহাপ্রাণ দেশবন্ধু করুণ হেঙের কুরুমকে বলেছিলেন (তাঁর এ বক্তবাটি এখন সারা বাংলার চাপু হরে গেছে); মাত্র এক বংসর দেশকার অসহবোগীদের সঙ্গে মিশে ও'হ'রে গেছি বাবা, ও হ'রে গেছি যে-কর্মস্থা তাদের মধ্যে দেখলাম পটিশ বংসবের ক্রিমিনাল প্রাকটিসে হুবাস্থাদের মধ্যেও দেখিনি। নির্কল্ফ মান্ন্র্য দেশ ভক্তির নাম নিয়ে কী যে করে বেড়াছে দেখে গুনে সন্থিট হক্চকিবে বেতে হয়। ভারতে পারো কি কুরুমের এক বিশ্বস্ত (?) বজুই পুলিশের গুপ্তরে ই'য়ে তার বিক্লম্ফে রিপোর্ট করেছে ? নিলে হয়ত সি-আই-ডি ওকে ফের বরত না এত ভাড়াভাড়ি।

বিতা এই সব কারণে আরো বিমর্থ হরে পড়েছে। তাছাড়া নিতা চোধে দেখছে আমাদের দারিদ্রালোবো গুনরাশিনাশী, দেখছে আমাদের নোংরামি, তামসিকতা, কাপুক্ষতা আরো কন্ত কী। এক আঘটা তিলক, গান্ধী, দেশবন্ধু, কুন্তুমে কী হবে ? এ বেন ছ' চার ঘটি কলে মকুভূমিকে উর্বব করার প্রারান।

ভাষি ভারতের ভাত্মার মহিমা ভাষীকার কবি না। কুর্মের মতন ভাষিও বিধাস কবি বে ঋবিদের তপঃশক্তি এখনো এ-দেশের ভাকাশেবাতাসে ছড়িয়ে রয়েছে। কিছা থাকলে হবে কি?— ভারতের সে গহন ভাত্মশক্তিকে তো চর্মচক্তে দেখা বার না ভাই—দেখা বার কেবল প্রেমের শিবনেত্রে। এইখানেই হয়েছে বিভাব ইশকিল—ও ভাষাদের দেশের বাইবের অবস্থা দেখে এত ভা খেরেছে বে ভারতের ভাতলীন সনাতন মহিমার ভারথনিতে সাড়া দিতে পারছে না। এ রকম মনের ভাবহার ও কেমন করে ভারতকে ভালোবাসবে বলা তো? ভাব বদি ভালো না বাসে ভবে কেমন করে টিকবে

থ দেশে ? ওর শবীর থাবাপ হওরার মৃলে বরেছে এই মন:কট্ট, বপ্লজ্প । ও বড় আশা করে এসেছিল বে আমাদের দেশে ও এমন আত্মিক শক্তির দেখা পাবে বাব দেখা বুবোপে পার নি ? নে আশা ওব প্রায় নিম্ল হল ব্ঝি! তাই ও দিন গুণছে—কবে অভ্যক্ত কিছুদিনের জন্তেও ওর খদেশে ফিরে গিরে একটু জুড়োবে।

এছাড়া আর একটা কারণও রয়েছে বেটা সামস্থিক হলেও এক ত্রন্ত ও জালস্যমান বে মনে হর বৃঝি চিরন্তন। সেটা হল আমাদের বিজ্ঞাতি-বিষেব। এর জতে আমি আমাদের দেশবাসীকে খব বেশি দোব দিতে পারি না। ইংরাজের অন্তাচারে আমরা আজ অন্থিচর্সার, এ অবস্থার বিখ্যানবভার দোহাই দিরে উৎপীড়িতকে বলা বুখা বে ভোমরা উৎপীড়কদের বৃকে তুলে নাও। তাছাড়া এ অসহযোগ আন্দোলন আমাদের কছ আক্রোশকে মুক্ত করে দিরেছে বার ফলে আমরা সাহেব বা মেমসাহেব নাম তনতে না তনতে আত্তন হরে উঠি। এ আক্রোপের আঁচি বিতাকে বেহাই দের নি একখা বলাই বাহল্য। তাই ও আরো মুবড়ে পড়েছে। এক্ষেত্রে ওকে কী করে স্থলী করব ভেবে পাই নে। আক্রকাল আমার মনে সময়ে সময়ে সভিটেই গভীর সংশ্র জাগে কেউ কাউকে স্থলী করতে পারে কি না ?

ওর আর এক কঠ — কঠ কি ওর একটা ? এবানে ইউরোপীয় অপেরা, সিম্ফনি, চেম্বার্য্যসিক প্রভৃতি ওনতে পার না। র্বোপীর সঙ্গীত ও কি রক্ম ভালোবাদে জানোই ভো। ওর কাছে সঙ্গীত বিলাস নর—ত্কার জল, চোথের আলো, বুকের নিশাস। তাই কালই বলছিল ভোমাকে লিখে দিতে—তুমি শীসালির ফিরে এসো ভোমার মুখে ভনবে শ্বার্ট, শ্মান, শোপাঁয়, তর্সি, বাহ্ম, রাধ্মানিনক, পুচিনি, ভের্দি প্রভৃতির গান। তুমি এ সব স্থরকাবের গান নিশ্চরই শিখেছ? ও জিজ্ঞাসা করছে। হয়ত ছু-চার্দিনের মধ্যে ও নিজেই ভোমাকে লিখবে ওর শরীর একটু স্ক্ছ হলে।

আর কী ? চিঠি মন্ত হয়ে গোল—হাতে অনেক কাজ পড়েছে কুরুমের জেলে বাওয়ার দকণ। ভাই এবার আসি।

এ চিঠিৰ উত্তৰ পাৰে। তো একটু ভাড়াভাড়ি দিও, আর আমাকে না লিখে বিভাকেই লিখো, ও ধুব খুনি হবে। কাৰণ ভোমাকে ও আগেৰ মতনই স্নেহ কৰে। ইতি স্নেহার্থী

মোহনলাল।

ছয়

পল্লবের বৃক্ষের রক্ত বেন জল হ'বে সেল। ঠিক এ সমরে এ কী চিঠি ? চিঠিটা ও হ'বার পড়ল। বতই পড়ে ততই বেন ও চোঝে জনকার দেখে। এ অবস্থার জাইবিগকে নিরে দেশে ফিরতে চাচ্ছে কোন ভরসার—বিশেব বর্ধন কুঙ্গুম জেলে ? নাঃ কুঙ্গুম বাইরে থাকলেই বা এমন কী মস্ত স্থবিধা হ'ত ? হরত সে মুখ কেরাত—কে বলতে পারে ? কে না জানে—বেখানে মান্থবের প্রত্যালা বেশি সেধানে জাঘাতও বাজে বেশি ? মোহনলালকে ক্যা করতেই বর্ধন কুঙ্গুমকে এত বেগ পেতে হরেছিল তর্ধন পল্লবক্তে ক্যা করতে—এ চিস্তাকে ও ঠেলে দেয়। না, না, এখানে ক্ষার প্রায় জাসে কোখেকে ? কুঙ্গুম কি নিজেই লেখেনি সহলেশিনীকে বিবাহ করার কর্ধা ?

কিন্ত সেধানেই বা ভবসা কোধার ? আইবিণ তো অকুঠেই কবুল করেছে---দেশ বলতে ওর বুকের তার বেজে ওঠে না, ও চার শিল্পীর জীবন---দেশসেবিকার জীবন নর। তবে ? কী করবে ও ? আইবিণকে সব ধোলাথুলি জানিয়ে বিদায় নেবে ? কমাগতই বনে হয়---এই-ই ভো অ্যুক্তি।

কিছ হার বে যুক্তির জাক ৷ যুক্তি তো হ'ল মনেব দিশাবি---প্রাণ তাকে কবে মেনে নিয়েছে গুরু বলে ? আর প্রাণকে উপবাসী বেখে যুক্তির আধাজন খেরে কে কবে অসাধ্য সাধন করেছে ? ওর মনে দীর্ঘ নিঃখান ঘনিয়ে ওঠে, মোহ্নলালের খেন ওর জনয়ের ভারে ভাবে অনুবৰ্ণন ভোলে: মানুষ কি মানুষকে প্ৰথী করতে পাবে ? অৰ্চ তবু এই সুৰেব জ্যেই আবহ্মান কাল মানুয হাত পেতে এদেছে তো মামুখেবই কাছে। শুল হান্য আর কাব কাছেই বা হাত পাত্তবে পূৰ্বতাৰ বৰ পেতে ? ভগবান ? তাঁৰ কাছে দৰবাৰ করতে পারে তারাই বারা ওনেছে তাঁর ডাঞ্চ। পরবের মনে পড়ে **७व किलादिव क्था—रथन जीवामकुक्दमद्व क्थाप्र ७व छन्य** সাডা দিত। কিন্তু সে-ভাক আজ ওর অস্তবের কানে কই আব তোবেকে ওঠে নাভেমন ক'রে ? আজ ওর মন-প্রাণ সাড়া দেয় 👽 আইবিণের ডাকে। তাকেই ও আজ চার সর্বান্ত:করণে---চায় তাকে ভালোবেদে সুধী করন্তে, নিজেও কুতার্থ হ'তে। কিছ লেশের বে অবস্থা-তাত্তে ও কেমন ক'বে আশা করতে পারে বে আইবিণ ভারভবর্ষে গিরে স্থণী হবে ?

বোঁকের মাধার ও রুত্বককে টেলিকোন করে।

(4 ?

আমি-পরব।

भन ? की वांभाव ?

যুষ্তে পাৰছি না ভাই ! তাই তোমাকে বিবক্ত না ক'বে পাৰলাম না।

না না, বিরক্ত কেন ? এলিওনোরা ভতে গেছে। আমি আমার ঘরে একটা বই পড়ছিলাম। অথও অবসর এখন। কিছ কী ব্যাপার ?

মোহনলালের এক চিঠি পেরেছি। আইরিপেরও। মন বড় অপাক্ষ হ'রে উঠেছে।

चनाच !

(मार्त्ना मन किरब--विवक्त इरव ना रहा ?

টেলিকোনে মুক্ষকের হাসি বেজে ওঠে। কী পাগল ? ভোমার বদি কোনো কাজে আগতে পারি, অন্তত নিজেকে বলার একটু ফুর্গৎ ভো পারো—বা বে আমি!

পল্লবন্ত হাসে: বছাবাদ ক্রিয়ন্ত্রন। তবে শোনো। ব'লে প্রথমে আইরিনের চিঠি প'জে শোনালো, তারপরে মোহনলালের পড়া শেব হ'লে একটু চুপ ক'রে থেকে পল্লব বলে: কী? কথা কছে নাবে?

ভাবছি।

তথু ভাবলে চলবে না। বলতে হবে---কী করব ? এক দিকে আইনিশ বাগ কৰেছে---

ना, जामांत्र मध्न इत्र थ तांत्र नत्।

ভবে ?

ভেৰে কাল বলব।

না। কাল অনেক দূৰে। তা ছাড়া আমি ভাবছিলাম কাল বাতের টেনেই বালিনে ফিবে ৰাই।

কিছ বালিনে কিবে গিবে কী করবে তুমি বধন জাইরিণ অইজলতিও।

তৰু—

তবুনা। শোনো। কট বাড়ানো কেন? মায়ৰ কত কট পায় কাকৰ আসাৰ আশাৰ থাকলে আমি জানি। এথানে অন্তও এক বাঁটোৱা, আইবিণেৱ অভ্যুদরের আশা নেই। অপেকা বদি করতেই হয় এথানেই করা ভালো। আইবিণ বার্গিনে ফিবলৈ তথন ফিরে বেও দেখানে। এইই হ'ল সুবুদ্ধির কাজ।

একটুভেবে পদ্ধব বলে হয় তো ঠিক বলেছ। কিছাও কবে বালিনে কিয়বে জানাব কী ক'বে? ধবো বলিও না জানায়?

কী পাগলের মতন কথা বলছ ?

পাগল কেন ? ধরে বিদিও ইতিমধ্যে আর কাউকে ভালোবেদে থাকে ?

पूर्व भौगल !

ভবে চিঠি না-লেখার কারণ কী ?

আমি কি অন্তৰ্গামী ?

তবু—

না, তবু-চবু নয়। শোনো ভাই! এ ক্ষেত্রে বাস্ত হ'লে ক্ষলের চেরে কুফল ফলবারই সন্তাবনা বেলি। একটু খিতিরে বেতে দাও—তুমি নিজেই তো সময় চেয়েছিলে।

দেৱে তো ভূদ করেছিলাম—ভোমার মতে।

কিছ আমার মত তো আর অজ্ঞান্ত নর। ভাছাড়া আমি একথাও বলি নি কি বে থতিরে প্রত্যেককে পথ খুঁলতে হর নিলেবি অক্তরের কাছে ?

আমার অস্তর বে একবার বলে এ-পথে চলো, একবার বলে ও-পথে।

ভাই তো বলছি—খিছিরে বেতে দাও। তথন পাবে ঠিক পথের নির্দেশ। ব'লে একটু থেমে: আমিও ইতিমধ্যে একটু ভেবে দেখি কিছু করা বায় কি না।

পল্লব খুলি হ'লে হেসে বলে: বার রুক্তক আছে ভার সবই

রুক্তকের হাসির সাড়া বেজে ওঠে: এই-ই তো চাই, সাবাস জোরান! কিজ শোনো এবার একটা কাজের কথা বলি। এলিওনোরা বলছিল তোমার এথানে গান শেখার ব্যবস্থাও করে ফেলেছে। বিনি ভোমাকে শেখাবেন ভিনি কাল চা-বে আসছেন। তুমি বিরহের দাহনে ভূলে বেও না কাল

ভূলব না। কিছ ভূমিও ভূলো না ভোষার আধান। না ভূসব না। কেবল একটু বৈর্থ ধরে চূপ করে বসে থাকো এথানে। ভূমিই তো একটি কীর্ত্তন সাও মনে নেই: 'বাই বৈর্থ-বছ বৈর্থম্ ?' বাই এ উপদেশে কান দিবেছিলেন বলেই না ভার কুক্তপ্রাপ্তি হয়েছিল। প্রব হেলে বলে: আমারও হ'ল ব'লে। মা ভৈ:। Grazie, amicono mio ় ২

সাত

প্রবের মন থানিকটা শাস্ত হ'বে এল। মনে মনে যুক্ষের সাধুবাদ ক'বে ও বুমিরে পড়ল। অপ্নে দেখল: আইবিশ সাইছে ওবই শেখানো গান: "প্রির, তোমার কাছে বে-হার মানি---" আনংক্ষর শিহ্বণ ব'বে বার ওব দেহে—এত আনক্ষ বে ওব ব্য ভেডে গেল। এর পবে সারা রাত আর বুম হ'ল না—কেবলই বাক্ষে আইবিশের কঠে বাংলা গানের মীড়---চোধের সামনে ভেসে ওঠে তার অলভবা কালো চোথ হুটি।---

যুত্ৰক টেলিফোন করল ছুপুরবেলা: "এলিএনোরা ভোমাকে টেলিফোন করতে বলল বে ওর মোটর ভোমার হোটেলে পৌছবে ঠিক বেলা সাড়ে তিনটেয়।"

ना ना, त्यांहेरव की इरव ?

থুব ভালোই হবে, amico sciocco ় ৩ ৩র হ্'-ছ্থানা নোটব পাঠাতে চার—পাঠাক না ় বলে না—জো আপদে আরা, উল্লোজানে দে৷ ? ৪

भव्नव (करन वरन : कानि नवहै-करव-

ছানো না কিছুই, অস্তুত ছানো না সিনেমা তারকাদের মতিগতি। ওবা চায় ওদের ঐশ্ব একটু ছাত্তির করতে। করতে দাও না! You must humour the charming, amico intelligente!

পলৰ হেনে বলে: Concesso, amico insistente !

বধাকালে ভারকার রথ এসে হাজির। উর্দিপরা সারথি প্রবের হাতে দের একটি চমৎকার স্থান্ধি লেফাপা। পরুর থুলে দেখে একটি ফুল-আঁকা কার্ড, উপরে লাল হরকে ছাপা: প্রসিওনোরা কে নোনি। নীচে লেখা নীল লোহিত কালিতে: Wel Come E leonora.

এলিওনোরার ভিলাটি, রোম থেকে প্রায় পনেরো মাইল দ্বে অবস্থিত একটি মনোরম হুদের উপরে পোপের বসস্ত নিলয় Castel gondolfaর কাছেই। কী স্কর ভিলা! মোটর খামসেই চতুষ্টর জাপানি পুড্ল এল ছুটে। ও নামতেই তাদের সে কী প্লক! পল্লব একটি কোলে তুলে নিজে না নিজে এলিওনোরার আবির্ভাব।

পল্লব কুকুবটিকে মাটিতে রেখে দিভেই এলিওনোরা পরিছার ইংরাজীতে বলল: আহার। আপনি কুকুর ভালোবাসেন দেখে কীবে ভালো লাগলো।

२। रक्ताम, श्रवन्यः !

! चटवाथ वक् !

⁸। द्विमछ वक् ।

१। त्यत्न निनाम, मारहाक्वाना वकु ।

সঙ্গে সঙ্গে মৃত্তের অভ্যানয়, বলে ইতালিয়ানে: বন্ধু আহার বিশপ্রেমিক—কুকুর বেডাল কাকাতুয়া—ভালো না বাসে কী ?

এলিওনোরা স্থমিষ্ট হেলে ইংরাজিতেই বলে: তাহ'লে আমাদের বনবে ভালো।

যুত্ত বলে: ও কি ? ও ইতালিয়ান জানে।

পল্লব তাড়াতাড়ি বলে: না, ইতালিয়ানে এখনো বাক্সিছি হয়নি কাজ চালাতে পারি মাত্র। ইংরাজিতেই কথা চলুক। ব'লে হেসে: বন্ধু আমার একজন বিখ্যাত লিসুইটু—কাজেই বোঝেন না আমাদের মতন নিরীচ মান্থবের অবস্থা।

এলিওনোঠা হেঙ্গে বলে ঃ ইা, ও ভাবে—ওর কাছে **যা সহজ** তা বুরি সবার কাছেই সহজ ় কিছ চলুন—ভিতরে।

সিনেমার পূর্ণোদিতা তারকার বোগা সালঁ বটে। এর কাছে কোথার লাগে ফ্রাট ক্রামারের সেকেলে সালা। সোফা, ডিভান, পারক্ত-কার্পেট, রতিন মাছ, বিচিত্র দীপমালা—কিংসর অভাব ? গুরা তিনজনে আরাম ক'রে বসল। এসিগুনোরা হাত্রভির দিকে তাকিরে বলে: গিলো এত দেবি করছে! ব'লেই হেসে: আমরা ভ্রমণ কি মার্কিণ নই—সময় আমাদের কাছে টাকা নয়—বঃং বিহারের অস্তরীক্ষ। তাই কিছু মনে করবেন না মিষ্টার বাক্টি!

রূত্রক বলস: ওকে পলই বোলো। ও ভোষার আমার চেয়ে অনেক ছোট।

এলিওনোরা কৃত্রিম কোপে বলল: কি সাংঘাতিক মামুব ভূমি ! পাঁচ বংসর অক্সফোর্টে থেকে তবু শিখলে না—a woman is as old as she looks?

বুজফ হেনে বৰে: And a philosopher is as old as he feels! ভাহ'লে পল, তুমি মারা পড়লে, কারণ প্রাচীন দর্শনে ভমি সিদ্ধা কাজেই You are as old as the hills.

এলিওনোরা বলস : সে কি ? মিষ্টা—পল তো গায়ক।

যুত্বফ হালে : ও বছরপী। বধন বে-বন্ধুবই কাছে থাকে, ভারই
ভোপ গায়ে লাগে।

এলিওনোবা বলে: এটা কি হিরো-ওম্বর্শিণেরই ধর্ম নর ?
রুত্মফ হেসে গড়িয়ে পড়ে: ওকে এক আঁচড়ে চিনেছ এলিওনোরা!
এলিওনোবা কুত্রিম কোপে বলে: বন্ধুকে নিয়ে হাসাহাসি?

Zola-র ভিরন্ধার মনে পড়ে: J'accuse! (বিক, ধিক!)

পুরুব প্রস্থান্তরের অবতারণা করতে বলে: আপুনি ক'টা ভাষা জানেন সিজে।বিনা—

এলিওনোরা বাধা দিয়ে বলে: আমাকে এলিওনোরাই বলবেন।
আপনি যুক্ষের বন্ধু, কাজেই আপনার অধিকার আছে। কি
জিজ্ঞানা করছিলেন? আমি ক'টা ভাষা আনি? বেশি না—ব'লে
যুক্ষেরে দিকে চেরে: তবে ওব চোবে ছোট হই কি করে? ভাই
চার-চারটি বিদেশী ভাষা শিখতে হয়েছে—ফ্রাসী, স্পানিশ, ইংরাজি
আর জ্ব্রণ। কিছে ও এর উপ্রেও শিখে নিল আবো হু' হুটো ভাষা।
ও সোজা লোক নয়। জানেন তো ওকে?

পল্লব উত্তর দিতে ধাবে, এমন সমরে এক স্থদর্শন প্রকৃত্ত প্রেচ্ছ জন্মলোক ছুটে এনেই এলিওনোবার ছুই গালে চুম্বন।

এলিওনোরা ওর চুখনের প্রতিদান দিবে প্রবংক বলে: ইনি হলেন আমার মামা---সিলো বিরাংকি। বোমের একজন মন্ত পারক — শামাদের সিনেমার পানের ডিরেক্টর। ব'লেই তাকে: তোমাকে তো বলেছি মিষ্টার বাক্চির কথা ?

হা। উনি হিন্দু গান কবেন, না 📍

রুক্ষ হেসে বলে: ঠিক নর। ও মুসলমানি গানও করে— হিন্দু মুসলমান চ্ছাভের ওস্তাদের কাছেই শিখেছে কিনা।

সিল্ডোর বিবাংকি বঙ্গলেন : Scusi, Signori , ৬

পরব ইংবাজিতে বলে: আমাদের দেশে বাগ সঙ্গীতের অমদাতা হিন্দু হলেও, তার পালনকর্তা এ-যুগে মুসলমান গারকেরাও বটেন। তাই আমাদের দেশের উচ্চসঙ্গীত শিখতে হলে মুসলমান ওস্তাদের কাছেও তালিম নিতে হয়।

মামা ভাগনীয় পাশে একটা চেখায় টেনে নিয়ে ব'সে ভাঙা ভাঙা ইংয়াজিতে বললেন: উচ্চসঙ্গীত ? আপনাদের সঙ্গীত তো লোকসঙ্গীত, Primitive—নয় কি ?

পরব বিরক্ত হয়ে বলন: সেটা নির্ভর করে বে বিচার করছে তার উপরে। খুষ্ট বে খুষ্ট, একদল ফারিসী জাঁকেও বলেছিল— তিনি শয়তানের সাহাব্যেই শয়তানকে ভাডান।

থালিওনোরা ব্যক্ত হবে বলে: গিলো কিছু মনে করে বলে নি। সমনি ছমদাম ক'রে কথা বলা ওর স্বভাব। তবে কি জানেন? সামরা ভো ভনি নি কথনো হিন্দু কি মুসলমানি গান? এখনো সামুব মানুবের থবর সভিয় কত কম বাথে জানেন তো?

সিভোর বিহাংকি বললেন: আমার কথাটা একটু malaccorto ৭ হয়ে গেছি—কিছু মনে করবেন না! বলেই হাত বাড়িয়ে দিয়ে বললেন: ইংরাজিতে বলে জানেন জে—dont take offence when no offence is meant.

পারব হাসির্থে করপীড়ন করে বঙ্গে: ধছবাদ!
এই সমধে তিনটি পরিচারিকার চা কেক প্রভৃতি নিয়ে প্রবেশ।
এলিওনোরা চা ঢেলে পল্লবকে বললেন: চিনি ?
ত' চামচ!

চাপৰ্য সুক্ত হল-একথা সেকথা - - অকারণ হাসি নানা প্রসন্তের আলোচনা-কথনো ইংরাজিতে কথনো বা ইতালিয়ানে।

সন্ধা হয়ে এল। এলিওনোরা আলোর স্থইচ টিপতেই খর আলোর আলো, অধ্চ স্লিগ্ধ আলো, চোথে লাগে না।

পল্লব বলল: চমৎকার সালঁ আপনার সিজোরিনা---

এলিওনোরা বাধ। দিয়ে বলেঃ ফের ? বলিনি মুস্তকের বন্ধুর অধিকার আছে আমার নাম ধ'বে ডাকবার।

পল্লব খুশি হরে বলে: প্রাৎসিরে, এলিওনোরা! তবে আমি বিদেশী তো-তাই একটু ভরে ভরে থাকতে হর বৈ কি।

রূহক বলল: তোমার মুখে এ কী কথা বন্ধু গ তোমার হিবো না নিউকিতার অবতার—বাংলার গ্যবিবল্ডি গ

এলিওনোরা বাধা দিয়ে বলল: বাজে কথা অনেক হ'ল, এবার একট কাজের কথা হোক। ব'লেই সিজোর বিরাংকিকে: সিদো। উনি বার্লিনে বছর খানেক জর্মণ গান শিখেছেন, এখন ভালে। ইতালিয়ান গানও কিছু শিখতে চান।

সিভোর বিরাংকির মুখ গভীর ক'রে মুফ্বিরানা প্ররে বললে: জুর্মধরা রটিরেছে—ইন্ডালিরান গান শেখা থ্ব সোজা কিছু আসলে, জুগতের সব গানের মধ্যে ইন্ডালিরান গানই সব চেরে কঠিন। ইন্ডিরান গানের মন্ডন সাদামাটা নর।

পল্লবের রক্ত গ্রম হ'রে উঠল: আপনি কি জানেন আমাদের গান—ৰে এ কথা বলছেন ?

সিজোব বিশ্বাংকির ঠোঁটে অবজ্ঞার হাসি ফুটে উঠল: না, তবে নিছক মেলডি তো—তাছাড়া, কিছু মনে করবেন না মিষ্টার বাক্তি, আমাদের কঠসাধনার বীতি এত কঠিন বে বিদেশীর পক্ষে আয়ত করা কঠিন।

পল্লবের মেজাজ আবো থারাপ হ'বে গেল এ-ইলিছে, বলল: কঠদাধনার কথা যদি বললেন তবে আমাকেও বলতে হছে—কিছু মনে করবেন না সিজোরে—বে আমাদের বঠসাধনার পশ্বতি থেকে আপনাদেরও হয়ত কিছু শেষার থাকতে পারে।

সিক্টোব বিষাংকি ছই ভ্রুক ভূলে একটু বাঁকা হেসে বসলেন:

Patrottismo ĉ ammirabile—ma—Signore, ৮ আমাদের
অৱসাধনা এত অটিল বে বিদেশীর পক্ষে—বিশেষ ক'বে ওবিয়েল্টাল
গারকের পক্ষে—অরসিন্ধি—ভবে আপনি যদি বছর দলেক আঞাল
সাধনা করেন ভবে হয়ত একটু গাইতে পারতেও পারেন। কারণ
আমাদের গানে যে-সব ইন্টারভাল নিতে হয় সে অভ্যন্ত কঠিন।

পল্লবের মুথ ঈবৎ লাল হরে উঠল, বলল, ইন্টারভালের বিভীবিকার আমরা ভর পাই না দিকোরে ! কারণ, কিছু মনে করংবন না—আমাদের গানের নানা ভানালাপে বে-ধরণে ইন্টারভাল আমাদের সাধতে হয়, সে-ধরণের ইন্টারভাল আপনার হাজার চেষ্টা করলেও নিজে পারবেন না ।

সিভোব বিষাক্ষির মুখ লাল হয়ে উঠল, বাঙ্গভরে বললেন কিছু মনে করবেন না। সিভোবে, আপনাদের গান তো নিছা লোকসঙ্গীত—সহজ্ব মেলোডি—আমাদের গান উঠেছে বিকাশে এমন একটা শিখবে—

যুক্ত্ৰ বিৰক্ত হবে বাধা দিয়ে বলল: আমাদের গানের বিক: কোথায় উঠেছে, ভা ভো আনেন না আপনি—বলেই প্রা^{ব্}ে ভূমি একটা জাকালো বাগ শুনিয়ে দাও না সিকোর বিয়াকিকে।

পল্লব তৎক্ষণাৎ উঠে পিয়ানোর কাছে গিয়ে টুলে বলে বলছ সিক্তোরে, শুমুন ভবে আমাদের একটি—বাকে আপনি বলছেন সংমেলতি: এ রাগটির নাম মালকোর—বদি এর একটিমাত্র ভান গমক গলার তুলতে পারেন, ভাহ'লেই আমি হার মানব। উ প্রথমেই বলে রাধি—মেলতি বলতে আপনারা বা বোঝেন, আমারা ভা নর। রাগ বলতে কি বোঝার তু'কধার বোগা অসম্ভব—তবে একটু শুনলে হরত টেব পাবেন মেলভির বিক' কোধার পৌছেছে আমাদের রাগ। ব'লেই পিরানোর পাঁচটা গণর পর বাজিরে: শুমুন মন দিরে—মাত্র এই পাঁচটি পদ্যি ভারাগিটি গাইছি—সি, ই ম্যাট, এফ, এ-ম্যাট আর বি-ম্যাট। এ

৩। কী বললেন, মহাশয় ?

৭। বেফাশ।

৮। দেশভক্তি চমৎকার-ক্রি মহাশর,

আপনাদের কল্পনারও অভীত, কিছ আমাদের শিখতে হয় প্রথমেই।
ব'লে ঠাটটি গলার গেরে: এবার এ-ঠাটে নানা বক্ষ তান শুলুন
—মাত্র এই পাঁচটি পদাঁ, মনে রাধবেন। কোধাও বদি
এর বাইবে একটি পদাঁও লাপাই বম্কে দেবেন, আমি হার
মানব। ব'লে উমভ ঘুমড খন সরজে ব'লে একটি মালকোবের
অস্থায়ীটুকু গেরেই রক্মাবি তান ও গমক দেওরা শুলু করল।
কসরৎ-এর শেষে বলল: এটি গাইলাম আপনাদের চভুর্যাত্রিক
ছলে। কিছ এবার এই রাগেই আর একটি গান গাই শুম্ন এমন
একটি তালে বা আপনি ধরতে পারবেন না—মানে হাছে তাল
দিতে পারবেন না পাবেন তো করজোভে ক্ষমা চাইব বলেই উত্তেজিত
প্রের নাঁপতাল ধবে দিল পঞ্মাত্রিক ছলে:

লক্ষা তবে বন্ধু নহে—প্রেমের ভাকে চাই শ্বণ,
সিন্ধু তবি অক্লে কুল লভিব ববি রাঙা চরণ।
বাঁপভাল শেব করেই তাল ফের ধরল সপ্তমাত্রিক বামারে:
বৈসেছি যদি ভালো, ধার না এ তক্কর প্রভিটি অণু কেন ভোমার
পানে—ভোমার মত প্রির কেন্তু বে নাই বঁরু, একথা অস্তব বধন লানে?

গেরেই থেমে বলে: এ তাল হল বিষমপদী, দেখুন আগের তাল ছিল ছই তিনের ছন্দ, এ হল তিন ছই হই কিনা সাতের ছন্দ—এ তাল আয়ন্ত করতে আপনাদের অস্তত দশটি বংসর সাধনা করতে হবে বদি প্রবের সঙ্গে স্থাবিহার করতে চান। বলেই উদ্দীপ্ত কঠে গেরে চলে:

'তোমার শ্রীচরণে আমার আমি বদি অর্থ সম হর আপনি নত। জানি এখনি তব পরণে পরজ ফুটিবে করবে আমার বত। ডুবি না তবু কেন সাগবে তব ? চলি আজিও ভেসে ভেসে

কিলের টানে ?

তোমার ম**ভ থি**র কেহ বে নাই বঁধু_ং এ কথা **অন্ত**র বধন জানে _।"

গান শেষ করে বলে: আমি এই বে সব তান বাঁট দেখালাম, আমাদের দেশের ওন্তাদের কাছে তা ছেলেখেলা। প্রবাক নিরে তাঁরা বে কাণ্ড করেন তনলে আপনারা ন্তন্তিত হবেন। তন্ত্রন সিজারে! আপনারা মুরোপে কথার কথার আমাদের ওরিরেটাল বলে অবজ্ঞা করে থাকেন। আমরা বিদি পেট্রিরট হই, তবে আপনারা অন্ধ তথা আত্মন্তরী। কিছু দান্তিক মান্ত্র পার না সত্যের দেখা, বিনরী না হলে চোথের ঠুলি খলে না। আমি এত কথা বলতাম না—কিছু আমি এসেছিলাম শিখতে। আপনাদের কাছে আমাদের নিশ্চরই অনেক কিছু শিখবার আছে। কিছু আপনি আমাদের সঙ্গীতকে প্রিমিটিড বলে ডিলমিল করে দিলেন তার কিছুই না জেনে।

যুত্রক উঠে ওর কাঁবে হাত রেখে বলে: হয়েছে, হয়েছে— আর থাক।

ৰ্শিপ্তনোৱা বলে ওঠে: না না বলুন আপনি। সিলোর একটু শিকা হবে—ভালোই হবে।

পানব ঈবৎ লচ্ছিত হরে প্রর নামিরে নিরে বলল: মাক করবেন নিজোর বিরাংকি! আমি ভর্কান্ডর্কি কি জাক করতে সাত সাগর পেরিবে আসি নি। এসেন্ড্রি সন্তিয় শিখতে। কিন্তু আমাদের দেশের বছ বিকশিত ঐতিহের কিছুই না জেনে ধ্বন তাকে আপনারা ত্ৰধার নতাৎ কবে দিতে এগিরে আসেন, তথন একটু विवक्त श्टा श्व देव कि । जाव बक्री कथा: जामालव लिएनव সঙ্গীতের আমি বেশি জানি না, সামান্তই শিখেছি। ইচ্ছা আছে: দেশে ফিরে রীতিমন্ত শিখব। আপনাদের গানে কিছু তামিল নিজে এসেছি আপনাদের সঙ্গীত মুখস্থ করে এদেশে নাম কিনতে নয়—আপনাদের সঙ্গীভের বিশেষ করে নানা বিশ্বাস ও উভাবন থেকে বতটা পাবি গ্রহণ করে আমাদের সঙ্গীতকে আরো সমুদ্ধ করতে। কারণ জাপনাদের বন্ধসঙ্গীতে আমি মুগ্ধ হলেও জাপনাদের কঠনঙ্গীত আমার তেমন ভালো লাগে না। কঠনঙ্গীতে আপনারা আমাদের কাছেও আসতে পারেন না জানবেন, বেমন অভাবনীয় সুবসম্পাতে আমাদের বন্ধসনীত, অর্কেট্রা, আপনাদের সঙ্গীতের কাছে আসতে পারে না। ভাই দেখছেন পেট্রিয়েট আমার উপাধি নয়, আমার সভা উপাধি—সভ্যাবেষু, জিজান্ত। সভ্যকে জানতে হলে চাই বিনয়—তাই আমি নম্র ভাবেই আপনাদের সঙ্গীতকারদের কাছে শিখতে এসেছি। কিছ আপনাদেবও ঠিক এমনি নম হ'বে আমাদের সঙ্গীতকারদের কাছে শিখতে বাওয়া দরকার। विष वान, त्वर्ययन-चार्यात्वय एकन, कोर्डन, नाह्यत्रकोछ, वांशतकोछ, তাল ও তানের বৈচিত্র্য, অলঙ্কারের ঐশর্ব এসব থেকে আপনাদের অনেক কিছুই শিৰবার আছে। বলে একটু থেমে: বলি অভার কিছু ব'লে থাকি ক্ষমা করবেন এই ভেবে বে গায়ে-পড়ে জাখাত দিতে চেয়ে আমি আজ এসব কথা বলি নি।

সিজ্ঞার বিয়াকৈ মাথা নিচু করে বললেন: না সিজোরে, আপনি অন্তার কিছুই বলেন নি, তাই ক্ষমা করবার প্রায়ুই ওঠে না। রবং আপনাকে আমার বল্পবাদই দেওরার কথা বে আমাকে ব্যাহে দিলেন যে আমরা অনেক বিষয়ে আজোকী রক্ম অন্ত আছি। আপনিই আমাকে ক্ষমা করবেন বে আপনাদের এ আশ্রুব সঙ্গীত সম্বন্ধে কিছু না জেনে চলতি মতামতকেই প্রামাণ্য ক'রে বা তা বলেছি।

পল্লব মুহুর্তে প্রসন্ধ হ'বে ঈবং লক্ষিত ভঙ্গিতে বলল: সে কি কথা ? আমিও কি কম বা তা বলেছি না কি ? তাই আপনিও কিছু মনে করবেন না, সিজোবে !

দিলোর বিয়াকৈ বললেন: No, niente signore | ১
কেবল একটা কথা বলব কি ? বদি বিখাস করেন অবল

প্রতিবারা বাধা দিয়ে বলে: না করবেন না বিখাস। তুমি
 খামো। বার বার বলি বেখানে দেখানে ত্মদাম ক'রে কথা বোলো
 না—

পল্লব বলে: না না, সে কি কথা? আপনি বলুন—ব'লে যুক্ককে দেখিৱে: আমার এই অতি বিজ্ঞ বন্ধটিকে বদি বিজ্ঞাসাক্ষেন তা হলে থবর পাবেন বে বিখাস না করা আমার বভাৰ নর—বরং উপ্টো। অভ্যত ও ত আমাকে উঠতে বসতে ধম্কার বে, আমি এখনো সাবালকই হইনি—তাই এক কথার স্বাইকেই বিখাস করে আ থাই—taking them at their face-value.

ৰলিওনোৱা বলে: আপনি ওর কথা শোনেন কেন? নিজের

ना ना कथनरे नव महानव!

শ্বভাবেই চলবেন। খা ধান তাতে কী ? তাছাডা—বলে একটু থেমে: বিশান না করে ঠকার চেরে বিশান করে ঠকা চের বেশি ভালো।

ৰুত্বক আভূমি প্ৰাণত অভিবাদন কৰে বলে: একজন জানী বলেছিলেন, হায়ৰে হায়: Je me presse de rire de tout, de peur d'être obligé d'en pluerer ১ । মুক্কুগো আমি কাঁদি কাঁদৰ, আপনি বলুন সিভোৱে, আপনার অবিখাত কথা আন্ধ আমিও বিখাস কৰব, কথা দিছি ।

নিজোর বিরাংকি হাসলেন না, পল্লবকে বললেন: কথাটা এই বে, আপনাকে করেকটি শ্রেষ্ঠ ইতালিরান আমি শেখাতে চাই নিজেরি গরজে—আর কেন গরজ তুনবেন? কারণ এ রকম আশুর্ক কণ্ঠ আমি ইতালিতেও বেশি তুনিনি। তাই তুনতে চাই ভালো ইতালিরান গান আপনার কণ্ঠে কী বকন শোনার।

যুত্ত এলিওনোরাকে টেনে ধরে গাঁড় করিয়ে বলে: বলো হিপ হিপ্.---

এলিওনোরা ভংসনার হারে বলে: भू—भ। How vulgar এ সমরে তরু চাই শান্তি পাঠ—মহাকবি দান্তের 'E la sua volontale è nostra pace. ১১

আট

রিলো প্রস্থান করতেই এলিওনোরা পল্লবকে বলে: গুলুন, আপনার কঠ গুনে কী বে বলব ভেবে পাছিছ না।

রুক্ষ হেসে বলে: ওকে কেন এসব বলছ? ও হয়ত কের বিশাস ক'য়ে বসবে।

এলিওনোরা বলল: তুমি থামো: ব'লেই প্রাবকে: আমার একটা কথা মনে হচ্ছিল বলবো ?

की ?

সালভিনির সঙ্গে আপনার আলাপ করিবে: দেওরা। এবক্ষ কঠ তাঁকে না শোনালেই নর।

প্রব সভরে বলে: না না, তিনি ইতালির শ্রেষ্ঠ গার্ক— জার সামনে আমি গাইব কি ? পাগল !

এলিওনোরা ফরাসি কেন্ডার কম্প্রিমেন্ট দের: পাগল করবার মতনই কণ্ঠ আপনার—ব'লে হেসে—কিন্তু ভর নেই—সালভিনি কুমারী নন—পুক্র, তার উপরে বৃত্ত—ভিনি টাল সামলাতে পারবেন।

পদ্ধৰ সকুঠে বলে: কীৰে বলেন-

এলিওনোরা হেসে বলস: আমার বলা সহজ—কারণ রুত্বহ তো ক্লান্ট ক'রে দিরেছে বে আমার বরস বিপদের কোঠা পেরিরে গেছে। কিছু ঠাটা না। আপনাকে বলছি আমি—তিনি অস্ততঃ বুশি হবেন এমন অপরূপ কণ্ঠ শুনে। তাঁর সানও আপনাকে শোনাতে চাই।

প্রব ব্লল: আমি শুনেছি ভার গান।

কোথায় ?

বার্লিনে।

এপিওনোবার মুখ উজ্জন হ'য়ে ওঠে: বটে! কেমন লাগল তাঁব কঠ ?

পল্লৰ বলল: অপূৰ্ব! ৰেমন উদান্ত ভেমনি মধুর। মুহোপে এ প্ৰযন্ত অমন কণ্ঠ আমি শুনিনি।

এলিওনোরা সগর্বে বলল: গলার ইতালিয়ানদের কাছে কে ? আর ভাবুন--এখনো ওই গলা---বাট বংসর বয়দে। ছ-হাজার লোক শুনতে পার!

পল্লব বলল: ভা সভিয়। আব কঠস্বরের এই বোলন্ আওয়াজ বার করবার কৌশলটাই আমি ভালো ক'রে শিখতে চাই এদেশে।

তাই তো আরো তাঁর সঙ্গে আপনার দেখা হওৱাই চাই।

কিছ সালভিনি তথন যুরোপে কলার্ট-টুরে ভামামাণ। তাই অনেক আলোচনার পরে স্থির হ'ল বে তিনি তাঁর ভ্রমণাছে রোমে ফিরলেই পল্লব তাঁর সঙ্গে দেখা করতে বাবে এলিওনোরার সঙ্গে।

পল্লবের বিদার নেবার সময় হ'ল। এলিওনোরা ওকে মোটরে তুলে দেবার সময়ে হাসিমুখে বলল: এখন থেকে কিছ এখানে মাঝে মাঝে আসতেই হবে। একদিন গান ওনিয়েই পালালে চলবে না।

পল্লব খুশি হ'য়ে বলে: এ তো আমার সৌভাগ্য, সিক্তো—
ক্ষের ? তোমাকে পল ব'লে ডাকব আর তুমি আমাকে
ডাকবে এলিওনোরা, আর ভূল হবে না তো ?

মা, প্রাংসিয়ে—এলিওনোরা !

এলিওনোরা হাততালি দিয়ে বলে: পাশ।

রুত্রক বলে: এলিওনোরা! তোমার তো আজ সারারাও শৃটি:—আমি এই ত্রেবাসে পলের সঙ্গে একটা থিয়েটার দেখে আদি?

की ?

निवादमध्यात्र Sei Personaggi in Cerca d' Autore. ১२

এলিওনোরা পল্লবকে হেলে বলে: হাসতে যদি ভালোবাসো ভবে এ-নাটিকাটি দেখলে খুলি হবেই হবে—আমার আল শৃটিং না থাকলে আমিও বেভাম।

যুদ্ধ বলল হেলে: এখন ভো পল ভোমার মুঠোর মধ্যে—একে নিয়ে বেও কাপ্রিতে—ওর মন থারাপ—এ বা: ভূলে, ব'লেই এলিওনোরার দিকে চেয়ে চোখ মিট-মিট ক'রে: মন থারাপ হলেও দাস্তের মতন অবস্থা ওর এখনো হয় নি, তাই বলো না ওকে, দক্ষ্মটি: 'Tu mi Segui ed io Saro tua guida.' ১৩

ক্রিমশ:।

১০। আমি সব ভাভেই হাসি এই ভবে—নৈলে পাছে সব ভাভেই-কাদতে হবে।

১১। ভার (ভগবানের) ইচ্ছাই আমাদের শান্তির একমাত্র আধার।

১२। इति माञ्च श्रहकादात्र (वीट्यः)

১৩। এসো আমার সঙ্গে, আমি হব ভোমার দিশারিশী।



স্পেনসার স্বত্রত দত্ত

্ বি হব হল অৰ্শেষে। আবার নতুন করে আরম্ভ করতে হবে, বর্তমান জীবনকে ইতিহাসের একটা অধ্যায় করে, নতুন অধ্যারের গোড়াপত্তন। একশ' সাত্রহ টি টাকা পঁচাত্তর নহা প্রসা। সওদাগরী অফিদ পুরো একশ' আটবটি দেবে না। কি प्रकात क्रमन काट्य ?

ভাগ্য মেরেছে অশাস্তকে। চোধের পাওরার—মাইনাস আট। কমপিটিটিভ প্রীক্ষায়ও স্থবিধে হবে না! বেণীনন্দন খ্রীটে বীরেশ বাবুর মেসের বোর্ডার হয়ে সে সারাজীবন কাটাতে পারবে না। না হয় ভগবানে মেরেছে—ভবু এই তিনশ' কুড়ির বেড়ালালে ও নিজেকে র্বেধে রাখন্তে পারবে না। এ জীবন ওর নর-তর নর। তিনতলার ঘবের ছ' নম্বর খর। ভার দক্ষিণ দিকের বেডটা ওর। খবের খার ছন্ত্রন বোর্ডার কেন জানি না ওকে খাতির করে দক্ষিণ দিকের বেডটা ছেড়ে দিরেছে। তবু সন্ধার সময় অশাস্ত পশ্চিম দিকের জানলার সামনে এসে গাড়াবে। নীল আকাশ, ধৃদ্য পৃথিবী। কোলকাভার আকাশে পানকৌড়িয়া সার দিয়ে উড়ে চলে বার খনেক দূরে। কোথার বার ওরা পশ্চিম-আকাশে ? षानक मृद्द ? ष्यानक मृद्द ।

পশ্চিম দিকের বেডটা অসিত রারের। সে কি করে কোথার ধাকে অশান্ত খোঁজ নেয় না, তবে জানা আছে বে সে দশটা-পাঁচটার কেরাণী নয়। অক্ত বেডে থাকে অতুস নিয়োগী, সে ভেবেছিস খণান্ত বুঝি মেয়ে দেখে, পশ্চিমের জানলায় একদিন মুখ বাড়িয়ে দেখে সারি সারি বজীর চালা আর গ্যাবাজ। কি দেখে অশাভ?

এই পশ্চিম দিকের অনেক দূরে এক দ্বীণ আছে, সে দীপ শ্বংগ-দাক্ষ্টিনির বাভাগে মন্থ নর, সন্ধা সেথানে অসংখ্য ভারার পালোর উভাসিত নয়। সেই ঘীপের বন্ধরে জাহাজ আসে পণ্য নিরে, আর আশা নিরে সেই বন্দরের স্বপ্ন দেখে অশাস্ত, किन वनव ? हिनवादी ना नामान्यहिन ? ७ ठिक कारन ना। ওর পরিচিত করেকজন এসেছে নীল বংএর air letter এসেছে ওর নামে একাবিক বাব। তবে ভালের কেউ নেমেছে টিলবারীতে, কেউ বাদাল্টনে। মেদের ঠাকুর তথন ওকে প্রশ্ন করেছে বাবু বুবি বিলেত বাবেন ? আপনাব দেখি বাণীৰ ছাপমাবা নীল কাগজে চিটি আসে। অশান্ত অবাব দের না, অভুল নিরোগী একদিন কলভলায় গাঁভন করভে করভে আলোচনা করছিল ওর বিলিকী চিঠির কথা। অশাস্ত কিছুই বলে না এদের। ওর আরোজন ষদি মিথো হয় ? তবু আয়োলন সে এগিয়ে এনেছে অনেকথানিই।

ভোমাকে ভাচলে একটা কাজ বোগাড কবতে হবে-সন্ধা বলে, নহভো চলবে কি করে ? ভোমার বাবা যদি হঠাৎ সরকারী কাজটা না ছেড়ে দিভেন ভাহলে হয়তো ডিছু টাকার আশা থাকভো।

না, বাবার কাছে কিছু আশা নেই। বাবার নিজের সক্ষর আছে कि ना छा-७ छानि ना। वावाद घटन वेवत्रशीव दः लाशाह, चाद ভা অনেক দিন। মা বাবার পরেই, আমার নিজের সঞ্জারের ওপর ভ্রমা করতে পারি না। বলি যাই তো কাজ যোগাড় করতেই হবে।

না গেলে কি হবে অশান্ত? বিদেশ-বিভূৱে? সেখানে ভো কেউ চেনা নেই ?

জানি না সন্ধ্যা—তবু জামাকে বেতেই হবে। কাজ কি বোগাড় হবে না ? কত ছাত্ৰ তো সেধানে কাল কবে পড়াওনো করছে। আমার বোগ্যভা বেশী না হলেও কেমিপ্লীতে অনাদৰ্শ ডিগ্রী তো আছে ? আমারও কি কাজ হবে না ?

আচ্ছা খণান্ত, তুমি বদি বাও তবে কবে কিববে ? ক'-বছরের वज वाक १

জানি না তো! ভিন বছর চার বছর--হরতো জনেক বছর। খনেক বছর না ? তারপর এই খনেক বছর পরে বরে---তোমার আমার আবার দেখা হবে তথন ?

তখন কি ? অপান্ত বলে। তখন সেই তুমি আৰ এই ভূমি কি এক থাকবে? যে পথে পথ চলা হয় না--বালের অংকুর জন্মার সেধানে, পথের রেধা মুছে যায়, একদিন পূর্যও নিবে যাবে !

বাবে বোধ হয় সন্ধ্যা, তবুও। আছে। অশাস্ত, তোমার চোৰের পাওৱার কভ ? মাইনাস আট, ভাই না ?

হাা মাইনাস আট। জান অশান্ত, তোমার চোথের চল্মা খুলে নিলে ভোমাকে আমার কেমন লাগে ?

কেমন লাগে কি করে বলব, আমি তো কিছুই দেখি না। আমি দেখি ভূমি বছ শদহার, তোমাকে কেউ দেখার নেই।

আমাৰও সাহস নেই তবু যদি পাৰতাম।

অশান্ত চুপ করে থাকে, সদ্ধা ওর দয়িতা নর বাদ্ধনী। সদ্ধাকে তার তালো লাগে, সদ্ধার সংগ সে চার হরতো কিছুক্রণ বা কিছুকিন, কিছু সাবালীবনের কথা ও আলও তেবে দেখেনি। অশান্তর নীরবতা অনেক কথাই বলে। তাই সদ্ধা পুর সন্তর্গণ একটা দীর্ঘাস ফেলে। অশান্তকে সে ভালবাসে, অশান্ত তাকে তালবাসে কি না সে আনে না। বোধ হয় না। তবু সে আশা রাখে, আর অশান্ত বদি চলে বার—তাহ'লে ওর কোন আশাই থাকে না, সাতাশ বছর বরস ওর, হাদরের আবেগ তালবাস তার প্ররোজন—তার জীবনে অপ্রতার সমান্তি আনবে ভালবাসা তার প্ররোজন—তার জীবনে অপ্রতার সমান্তি আনবে অশান্তর ভালবাসা—এ তার স্বপ্ত, চুপচাপ সম্ভাবী অশান্ত ওর কাছে এসে কত কথা বলে। একদিন হয়ভো ও সেই কথাই বলবে বার অন্ত সদ্ধা বলে আছে, কবে তুমি বলবে সে কথা অশান্ত ?

অশান্তও বোঝে। সাতাশ বছর বয়স তার। ওর মাকে বলে সে ভূলে গেছে অনেক দিন, মা গেছে অনেক দিন—তথন ওর পনের वहत वर्त्तम। मात अपनक हेम्हा हिन-अपनक नांग हिन अपूर्व-ভাই অশাশ্বর পৃথিবীও অপূর্ণ রইলো। কলেকে পড়ভে আসার সংগে মেসঞ্জীবন ক্ষকু—মায়ের মৃত্যুর কিছুদিন পরে। ভাতে স্থব নেই, আছে দোৱাবকির ফি:র আসা সাইনে বাবে বাবে चार्राञ्ज, शक्ति चाह्य-इम तारे। ध कोरत चलास इस्ट प्रती होन ना। चार्यात्र रेविहत चानला महारित मर्गा चांच स्म महारित क्रिक काकिर्य कर्रां नित्वत्क लायी मान कराक मांगामा । এট বে অভি-সাধারণ ভামলা বং-এর মেরে এর সংগে ওব হাতিটি শ্নিবার নিয়ম করে দেখা করার নিশ্চয় কোনও মানে আছে —অন্তত: সন্ধার মা-বাবার কাছে। আইবুড়ো ছেলেটি প্রভি সপ্তাতে নিরম করে তাঁদের বাড়ীতে চায়ের আদরে হাজিরা দেয়—ছেলেটি পাত্র ভিসাবে সুপাত্রই, ভার ওপর স্বঞ্জাতি, মেরের বরস বাঙালী ব্রের হিনাবে কম নয়—ভাব মেয়ে সুরূপাও নয়, অতথ্য বোদ-দম্পতির অমুমোদন অতি স্বাভাবিক, অশাস্ত এ সুবোগ নিয়েছে—কিছ তার অপব্যবহার করেনি। সন্ধ্যাকে ও আরু আবার বুরতে চায়। কিছ এতে বোঝার ভাব কি ভাছে? সন্ধার সে অবলম্বন ছিল---সন্ধ্যার সে ভবিষ্যৎ ছিল—সন্ধ্যার সে স্বপ্ন ।

জনেককণ ওরা বসে থাকে—অশাস্ত ভংসা পার না কিছু বলার। দিনের আলো স্লান হয়ে আসে। সদ্ধার দাঁথ বাজে আদে-পাদের বাড়ীতে। শনিবারের বিকেল ক্রিয়ে বার, একটু পরে জলাস্ত বলে—আজকে আসি।

বীরে বীরে অলান্ত এগোর, রাইটার্স বিলজিং-এর হাংগামা,— বিরাট হাংগামা। প্রথম বেদিন ও পাসপোটের কর্ম নিরে আলে তা ওর মনে আছে। কি এক বিরাট উত্তেজনা, বিলাত-বারার প্রথম আয়োজন। ওর মাধা থেকে পা অববি বিহাং-শিহরণ থেলে, না ওর ব্য ভেঙেছে। আয়োজন স্কল্প হরেছে। বতদিন না পাসপোটের বামেলা শেব হরেছে ততদিন ওর বড় অস্বন্ধি গেছে, ইনকোরাবী হবে পুলিশ থেকে, লোক আসবে ওর থোঁজথবর নিতে। তথন তো মেসে জানাজানিই হবে, উপায় কি । জানাতেই হবে।

আপনার থোঁজে পুরিশ-মফিস থেকে একজন এসেছিল। জতুল নিরোগী ওকে বলে, কি যাপার—খদেশী করছেন নাকি? তারপর হেসে বলে, না তাও বা কি করে হর, দেশ তো এখন খাধীন। তাহলে কি নোট-খাল-টাল করছেন ?

আপনাদের মত ক্রমষেট বার, ভার কি তাই করা উচিত নর ?
অশাস্ত আহত-খবে বলে।

চটেন কেন মশাই ? রসিকভাও বোবেন না ? আপনাকে বোঝা সভ্যি কঠিন, মাপ চাইছি। বলুন—কবে বিলেভ বাছেন ?

একটা কথার খেন ভেলকি খেলে। মুহুর্তে অশান্ত সম্পূর্ণ বদলে বার। ওর মারের কথা মনে পড়ে—রাগ মনে রাখিস নে ছোটখোলা, কেউ বদি মাপ চার তো সব ভূলে বাস। অশান্ত নিজেকে সামলে নের। সহজ হরে আসে ওর ব্যবহার।

চেষ্টা করছি অতুস বাব্, ভবে ভানেন ভো—বাওরা বড় কঠিন, আনেক কাঠ-খড় পোড়াভে হবে, তবে বদি সম্ভব হর, ভাস কথা, আমার সন্ধানে কথন লোক এসেছিল পুলিশ-অফিস খেকে? আবার কবে আসবে—কিছু বলে গেছে?

হ্যা, লোক এসেছিল কাল সকালে। আবার আসবে আছ বাত্তে, আপনাকে জানাতে বলেছে।

শেব হোল একের পর এক জট ধোলা, সবচেরে বড় হাংগামা পাসপোর্ট পাওয়া, তা বেদিন চুকলো সেদিন জ্বশাস্তর বেন রাহ-মুক্তি হোল 1

কবে বিলেভ যাছেন ? গলির মোড়ের ষ্টেশনারী দোকানের জগদীশ বাবু জিগ্যেস করে, ছাপোষা জগদীশ সরকার—বাড়ীর সামনের খরে ষ্টেশনারী দোকান, জ্লান্ত ওর কাছে দাড়ি কামাবার ব্রেড, সাবান-টাবান কেনে, একবার সে সন্ধ্যার প্রসাধনের কি যেন স্থান্ধি এসেন্ডও কিনেছিল, কেন জ্লানে না, ভবে ভা জার সন্ধ্যাকে দেওরা হ্রনি, ওর হাতবান্তেই আছে, বিলেভ যাবার জাগে সন্ধ্যাকে ভা দিরে যাবে—মনে মনে ঠিক করে রেখেছে জ্লান্ত।

এখনি তাবিখ ঠিক হয়নি জগদীশ বাবু । এই পাসপোটের হাংগামা সবে চুকেছে—এএন প্যাসেজের ব্যবস্থা করতে হবে।

বান মশাই চলে, এদেশে থাকলে কিসস্থ হবে না, আপনাদের মন্ত ইয়ং-ম্যানরা বদি ঘূরে এসে কিছু করে।

অশান্ত বিশেব কিছু বলে না, তথু একটু হাসে। কি-ই বা বলার আছে।

কদ্দিন থাকবেন বিলেতে ? স্থাবার প্রশ্ন হয়। বছর ভিনেক—অশাস্ত বলে।

তা একা ক্ষিয়বেন তো, না েই ক্টে—ক্সাণীল সরকার দস্তপাটি বিকলিত করে তারপর আবার বলে না না, তাই বা কেমন করে হয় ? আপনার তো ঐ বকুসভলা স্কুলের দিনিমণিটি বার কর আপনি আমার দোকান থেকে স্মর্ভি পুস্পানার এসেন্স কিন্দেন! ভা বে-খা করেই বাবেন তো ?

কে বলেছে আপনাকে এসৰ কথা ?—আশান্তৰ মেকাজ থাবা^ৰ হবে বায়।

হৈ ই কে—জগদীশ সরকার জাবার কান-সক্তি হাসি হাসে আমাদেরও তো বরসকাল ছিল জ্ঞান্ত বাবু! মেসবাড়ীতে জাপনার জ্বস্থাব সময় ওনার বাতারাতের কথা কে জানে না আর জামার ছোট মেরে টিরা তো ঐ স্থলেরই, সেই তো বলে বাবা সন্থাদিদিকে দেখলুম বীরেশ বাবুর মেসবাড়ীতে। এবাবে বুরি

মেনে মেরেছেলেরা থাকবে ? তা এ আর এমন কি ব্যাপার বে এই নিবে আপনি রাগারাসি করছেন ?

না গুল চব আব কি ? তবে আপনাবা বোধ হয় গুল তব হলে খুনী হতেন — অপাস্ত দোকানে আব গাঁড়ার না। হু' বাস আগে ও নৈহাটিতে সিরেছিল এক বন্ধুব বিরেতে। সেখান থেকে কেবার পরে ওব পেপটিক ফিন্তার হব, আর তথন সন্ধ্যা আলে ওকে কেথতে। সন্ধ্যার দেশিন আসাটা ও থুব অন্থ্যোদন করেনি। মেস-বাড়ীতে অনাস্থীর পুরুষ বন্ধুকে কোনও তর্কণীর দেশতে আসাব একাধিক মানে নেই। সেই শনিবাবের বৈঠকে অপাস্ত হাজিব চরনি বলে সন্ধ্যা তার পরেব দিনই এসেছিল ওব খোঁতে।

ৰবিধাবেৰ বিকেল দেদিন, সদৰ দৰজা খোলা থাকা সন্তেও সজ্যা কড়া নাড়ে, মেসেৰ ঠাকুৰ বান্ধাণৰে আৰু চাকৰ প্ৰীংৰি বিমোজ্জিল। একটু অবাক হবে প্ৰীহৰি এগোন, বেণীনন্দন ফ্লীটেৰ বীৰেশ বাবুৰ মেসে স্বৰেশ। তক্ষণী ? নিশ্চমই ভল হবেছে অঞ্চ বাড়ীৰ।

কা'কে চাই আপনার ? জীহরি প্রশ্ন করে।

এটা কি বীবেশ বাবুৰ যেস ? এখানে অশাস্ত মিত্ৰ থাকেন ?

হা। এথানে অশাস্ত বাবু থাকেন তিনতলার ছ'নম্বর বরে। কিছ বাবু তো অবে বেহঁশ, অতুল বাবু গেছেন ডাক্ডার ডাকতে, আপনি ?

কোন রকম উত্তর না দিরে সন্ধ্যা ওপরে আসে। ছেলেটার ব্রর তাই সে হাজির হয়নি !

এই আশাশ্বর ঘর! জিন দিকে তিন চৌকী পাতা, দড়ির আলনার ধৃতি পাঞাবী এলোমেলা, করেকটা বাল্প-তোরংগ ইতন্ততঃ ছড়ান এক কোণে ভূপাকার বই আর ধবরের কাগজ। তিজে গামছা পড়ে আছে আর এক কোণে, চৌকীতে অশান্ত ওরে, বোধ শহুর বেহুঁদ।

হাত দিরে সন্ধ্যা ওর কণালের ভাপ দেখে, গা অরে পৃঞ্ যান্দ্রে। কোনদিন অপান্তর ও কপাল ছোঁরনি। এই প্রথম হোঁওরা ভার কপাল, আলগোছে সন্ধ্যা ওর মুখে গালে হাত দেব, মুখের একপাল একটু ফোলা কেন ও বোঝে না। ছ চোঝ ভবে সন্ধ্যা অপান্তকে দেখে, এমন কবে ও কথনও অপান্তকে দেখেনি। একবার ইচ্ছে হরেছিল অপান্তর ফটো চাইন্ডে, কিছ বঙালপণারও সীমা আছে, তাই আর চাওরা হর্নি, ছ চোঝ সন্ধ্যার অলে বাপসা হরে আসে। ইচ্ছে হর অপান্তর মাধা কোলে নিয়ে বঙ্গে থাকে। উপার নেই তার, হার অদৃষ্ট। বাকে সে ভাগবাসে ভাকে সেবা করবারও ওর অধিকার নেই? চোঝ মুছে সন্ধ্যা আবার দেখে। বক্লভা ছুলের অংকের টাচার সন্ধ্যা বোস, বে হোম-টাসক না আনলে কোন ছাত্রীকে ক্ষমা করে না, আফ ভার হু চোঝ ভবে অগতের কাছে মার্জনা-ভিক্ষা। বলি সে ছুলিও অপান্তর মাধা ওর কোলে রাখে—ওকে কি পৃথিবী ক্ষমা করবে না ?

থকটু পৰে অভুল নিয়োগীর সংগে ডাক্তার আসে। সেপটিক কিতার। গলার গ্লাণ্ডে আর গাঁতে সংক্রামিত রোগ, সন্ধাকে নীবব-বিময়ে দেখে! মেসবাডীতে অবিবাহিতা তর্মণী! মন্ত্রিতে ষেথের ছারা! সেট দিন অশান্ত হাসপাতালে বাবার পরে জলসা বসে ছজুগের। কে এই মেরেটি? বার সমাধান করেছিল জগদীশ সরকারের অকালপক মেরে টিরা। ছই আর তুইএ চার হোল। এই সব ছেলে মলার, বিখাস হর না এমন ভালমান্থবের
মত দেখতে, বিশ বাঁও জন। অলান্তকে অবল এ নিয়ে অসিত রায়
প্রেয় করেনি, সে সাতে পাঁচে থাকে না। অভের জল তার মাধা
বাধা নেই। অতুস নিরোগী একদিন চিল ফেলেছিলেন, আপনারা
ভাগ্যবান অলান্ত বাব্, সেপটিক ফিডারেই বাদ্ধবী ছুটে আসে, আর
আমাদের বরে নোটাশ দিলেও কেউ আসবে না। নিজের স্বভাব
অনুবামী অলান্ত চুপ করে থাকে।

আৰু জগনীশ সরকারের কথা শুনে অশান্ত সন্ধার কথা আবার ভাবে। কবে কথার কথার ও বলেছিল বেণীনক্ষন ট্রীটে বীরেশ বাবুর মেস বিখ্যাত। এর নহরের দরকার করে না। একটা শনিবার ওর সন্ধানের বাড়ীর অফুপস্থিতিকে তাকে এত উত্তলা করেছে বে সে তার পরের দিনই হাজির হয়েছে বীরেশ বাবুর মেসে! সন্ধা কি ওকে ভালবাসে? কিছ ওর তো কিছু করার নেই? ভালবাসার জন্ম সময় দরকার, অবসর দরকার, অশান্তর অবসর নেই অনেক ভাড়া, তাছাড়া অনিশ্চিতের পথে ওর বাত্রা। এ বিলাস ওর সাজে না। হয়তো একদিন ওর অবসর আসবে, এ বিলাস সেদিনের জন্মধান।

সেশ্বমানীর বাড়ী বেক্তে হবে। হোট বোন সীলা ওকে বড় ভালবাসে। অপাস্তর নিজের বোন নেই। সীলা সহোদরার মন্ত। আর ক'দিন পরে তো ও চলে বাবে। 'কারগো' জাহাজের ব্যবস্থা হয়ে গেছে ভিজ্ঞগাপটম থেকে ছাড়বে জুলাই মালের শেবে। এখন মে মালের শেব। বোনটার জন্ম একটা কিছু কিনতে হবে বাবার আগো। কবে কিরবে তার ছির নেই, হরতো ততদিনে ও খন্তরবাড়ী চলে বাবে, কি কিনবে অপাস্ত ? সন্ধার জন্ম আবার কিছু কিনতে হয়, ওকেও দেবে একটা অভিজ্ঞান—স্থাভেনীয়র, কিছু টাকা খন্ত হবে, তা হোক।

আপার সার্কুলার রোভে ধারার বাদে অশাস্ত চেপে বসে, সেজ মাসীর বাড়া বাবার পথে নেমে দীলার জন্ত এক ভাঁড় দই জার রাবড়া নিরে বাবে, বেচারা ফিট্ট থেতে বড় ভালবাসে, গত বছরের কথা অশাস্তর মনে আছে—প্রেরার বোনাস পেরে সেজমাসীর বাড়ীতে গিরেছিল শীশার জন্ত একবাক্স কড়াপাক সন্দেশ নিয়ে, রবিবারের তুপুর—দীলা তথন ঘুমিরে ছিল মেবেতে মাত্র পেতে। অশাস্ত চুপি চুপি ওর এক পাশে বাক্সটা বসিয়ে দিখে রেখেছিল—রাক্সীর জন্তে, ব্য তেওে উঠে ওর আনন্দ ভোলার নয়;

বাবে লোকে ওঠা-নামা ক'বতে বড় সময় নিচ্ছে, অলাস্ত বাবে বাবে যড়ি দেখে। পৌনে ভিনটে, গেক্যা-ছপুর।

দেখালোনার পালা পড়েছে। জার নেমন্তর থাবার পালা।
মে মাস শেষ, জুনও শেষ হ'তে চললো, ওর 'কারগো' ছাড়বে
জুলাই-এর মাঝামাঝি, সন্মাদের বাড়ীতে প্রতি শানবার হাজিরা
বেওরা বন্ধ ছরেছে জনেকদিন, সময় কখন, অফিস করার পর কভ
কাল। কেনা-কাটা আছে— দল্লীর বাড়ী যাওরা আছে, তারপর
কত টুকিটাকী হাংগামা।

আৰু আছে কোটালপুকুৰে বাওৱা বেখানে ওব বড় মামীমা আছেন। বড় মামীমা আঠাৰ বছৰ বহুদে বিধবা হছেছেন নিঃস্ভান, এখন তাঁৰ বহুদ প্ৰধৃতি ছেম্বতি। একসাপ মন্ত্ৰিকাৰ মৃত সালা

ধবধৰে ৰঙ, ভাই ভাঁৰ নাম সাদা-মামীমা, কোটালপুকুবেৰ টেশন কি এখন তেমনি আছে ? সেড পেরিয়ে একটু দূরে টিনের চালায় এনে গালা কবে ৰড় জমান। জ্বান্ত প্ৰথম বে বাৰ মামাৰ বাড়ী বাৰ এই থড়ের গালার সামনে গাঁড়িয়ে বুক ভ'বে নি:বাস নিয়েছিল-মতুন খড়ের গন্ধ। কেমন কেমন বেন ? ওর বেশ লাগছিল। মা ওয় এসিরে পেছে বড়দার সংগে, বাবা আসতেন না কখনও কোটালপুকুরে, অশাস্ত পেছিরে পড়েছে, ষ্টেশনের পানি-পাঁত অবাক হরে দেখছিল একটা ছেলে থড়ের গাদার সামনে গাড়িরে বেন কি ক'রছে, একটু পরে যা আবিভার করলেন ছোট খোকা আসেনি। মার ভাকে অশান্ত এলে নতুন ধানের গন্ধ গাবে মেখে, সাদা-মামীমা বেন বিতীয় মা। এতো ক্ষেত্ত কোন দিন ভূলবে না। তার সংলো দেখা করতে হবে বিলেত বাবার আগে, আর একবার ওরা সাহেবগঞ্জ বাচ্ছিল লুপ-লাইনে। ভোর হাতিরে ষ্টেশনে কে বেন নীল আলো উ চিয়ে বলছিল কো-টা-ল-পু-কু-র । সেই ডাকে ওর বুম ভেঙে গিবেছিল। এখানে নামবে না মা সাদা-মামীমার বাড়ীতে ? ও মাকে বলেছিল, না ছোট পোকা ভোষার বাবা যাছেন সাহেবগঞ্জে, वरादि नामा हरत ना, काननाव यूथ राष्ट्रिय चनान्छ प्रस्थ ভारत्व আলোবেন হামাওড়ি দিয়ে আসছে শালগাছের মাধার ওপরে। সেই টিনের সেড থালি পড়ে আছে—খড় নেই। সাদা-মামীমার জ্ঞ ওর মনটা হ-হ করে উঠেছিল, সে তো অনেক দিন হোল ? এবারে দেখা না করলে নর।

সন্ধারা নেমন্তর ক'রেছে—এবারে সন্ধার মা নিজে বলসছেন অনেক দিন তো দিনী থাওরা থাবে না বিলেত গেলে, সামনের শনিবার মাদীমার হাতে ছটি ঝোল-ভাত থেরে বেও। সামনের শনিবার মানে জ্ন মাসের উনত্রিশ তাবিধ, আজ বাইশে, ওরা সকাল সকালই বলেছে, জাহাল তো জুলাই-এ।

বোদ-গিন্নী ঠিক জানেন না কভচ্ব কি ব্যাপার, মেরেকে জিগ্যেস করভেও বাধ-বাধ ঠেকে, একবার ঠানে-ঠোরে মেরেকে বলেছিলেন বে কঠাকে দিরে কথা তুলবেন কি না। কিছু মেরে ভাতে এত রাপ করে বে তিনি ভাব কিছু বলার সাহস পান নি, কে জানে! আজকালকার ছেলে-মেরে। কি বে ভাল কি বে মন্দ কিছুই বোঝা বার না, তার ওপর মেরে বাবীনা—নিজের ভাতে আছে। মাস গেলে সংসারে পরিক্রিলটি টাকা ধরে দের, কর্তা প্রথমে খোরতর আপত্তি করেছিলেন, পরে তা টেকেনি, তাঁবই বা এমন কি ভার ? সংকাগর ভাকিসের কেরাণী, প্রথম ছই মেরের বিষেব দেনা এখনো লোব হয়নি। জামাই ছটিই রেলের চাকুবে, কোলকাভার বাইরে থাকে, সে মেরে ছটির রং ভার একট্ ফর্মা ছিল, কিছু সদ্ধার বং প্রোর বাপেরই মত! বলি মেরেটার একটা ছিলে হয়—কর্তা-গিন্নী ভাবেন, ভালান্ত তো পাত্র হিলাবে অপাত্রই!

সারা দিন ধরে বারার আবোজন চলে বোসবাড়ীতে, বোল-সিরী আবগু বলেছিলেন—কোল-ভাজ, কিছু আবোজন হোল মোগণাই খানদানী ব্যাপার। অশাস্ত খেতে ব'লে অবাক হরেছিল। এত কেন মাসীমা ?

এ তো সামান্ত বাহা—বোস-গিলী বলেন।

থাওয়া শেব হ'লে অশান্ত ভিনতলায় ছোট ঘরটায় ব'লে থাকে। সন্ধার ঘর, এই ঘরেই চায়ের আসর বলে, আকই হয়ভো শেষ ৰেখা তোমাৰের সংগে সন্ধা—বিলেড হাবার আগে আশান্ত বলে।
থুপছারা বং-এর শাড়ী পরে সন্ধা। একটু দূরে দীড়িয়ে থাকে। ছরের
কোপে রজনীপধার গুল্ল—তার সৌরভে বাতাস মন্ত্র, সন্ধার
কপালে কুমকুমের টিপ, চুল আলগা করে বাবা, অশান্ত কথাটুকু
বলার পর সন্ধাকে দেখে, এই কি সেই সন্ধা—বাকে সে প্রভি
শনিবারে দেখে ?

আৰু কেন অপান্ত, তোমার তো আংক ছাড়বে জুলাই-এর শেবে, এখনো তো তিন সপ্তাহ হাতে, তোমার কি অনেক কাল ?

ভাবিধ বদলে গেছে স্ক্য', ২১ তারিধের 'কারগো' ছাড়বে আরো দেরীতে, ৮ তারিধে একটা 'কারগো' আছে—সেটার বেতে পারি। ইণ্ডিরা স্তীম সীপকে লিখে দিলাম আট তারিধেই বাব। ধরা ভাতে রাজি আছে। এতে প্যাসেঞ্জার ছিল না।

সদ্যার ছ' চোথ জলে ভবে আসে। এ তো ভাব জানাই ছিল বে আগান্ত চলে বাবে—আজ না হয় কাল, ত্রু কিসের প্রত্যাপা 'ভার ? অপান্তকে কি সে বথেষ্ট জানে না ? বে কথা পোনবার জন্ত সে আকুল আগ্রহে প্রতিটি শনিবার বলে, থাকে অপান্ত ভা কোন দিনও বলবে না, অথচ আজ তার পের প্রহোগ। আজকে ছীকুভি না পেলে ও কোন দিনই পাবে না। শাড়ীর আঁচল দিয়ে সে চোথের জল যোছে।

তোমাব টোখে জল কেন সভা। १-- খদান্ত প্ৰাপ্ত কৰে।

ভূমি কি বোৰ না অপান্ত !—অপান্তর হাত হুটো সন্ধ্যা ছু' হাত দিয়ে ধরে, ভারণর টেবিলে মাধা হাবে। ওর সারাটা দেহ সুদা ওঠে বাবে বাবে, বেন বৃঝি সেও খান-খান হয়ে গেছে।

তু' হাত ভবে অশান্ত ওর মুখটা তোলে, চোখের অলে কুমকুমের বেখা মুছে গেছে, বুকের আঁচল পড়েছে খলে। অশান্ত হঠাৎ সন্ধার যনিষ্ঠ সংস্থাপি আলে।

এ তুমি কি কবলে অশান্ত ?—সন্ধ্যা আফুট থবে বলে। অশান্ত জবাব দের না—মনে হয় সে বুকি তুলই কবেছে, কিছু তুল কি ? কি এমন দোব! সন্ধার দিকে সে তাকার আবার। সে চাহনি কিসের, সন্ধ্যা বোবে না। সদৰ দরজার দিকে অশান্ত অঞ্জসর হয়।

আৰ একটু বদ্যা অশান্ত, এখনো বেশী বাত হয়নি, আৰু একটু ৰসো।

না সভ্যা, আৰু বাই। আবার আসবো বাবার আগে। সেদিন না হয় বসবো।

সাদামামীমার সংগে আর দেখা করার সমর নেই, আহাজের তারিথ এসিরে আসার কোটালপুকুর বাওরা হোল না। গেল হ'দিন থাকতেই হবে, অস্ততঃ একদিন। তার আর সমর নেই।

আৰু দেখা করতে হবে মাবের সংগে। মাকে অলান্ত বাবে।
বছর আগে বেথে এসেছে কেওড়াতসার আশানে। ছকিণ দিবের
চিতার, মার সংগে দেখা করতে হবে অলান্তর। আশান ওর ভাল
লাগে না—মনে হর কেমন বেন নোরো। লোকে বলে আশান
পবিত্র, হরতো হবে।

ভবু মারের কথা মনে হোলেই মনে হর, মা আছে সেধানে। বেথানে ও একদিন অনেক জনের সংগে মাকে নিয়ে গিডেছি^গ ছরিধানি দিয়ে। একটু আভে আভে ভোমরা হরিধানি দাও ^ন ক্ষেন যেজদা'—ওর পাশে ওর মেজদা' বাজিলো, ও তাকে ব্যক্ত। এঁদের একটু লাভে চলতে বলো মেজদা'।

বাড়ী বেকে শালান-ঘাট খ্ব দ্বে নর, আলান্ত একটুও কাঁদেনি।
কেন কাঁদৰে সে? ভাব মামার বাড়ীর অনেক প্রসা, মা মান্ত্র হরেছিলেন হল্পে, বিলাসিভার মধ্যে। বাবা বাউণুলে বৈবাসীর মন্ত, ভাই মা'র কোন আলাই পূর্ব হরনি। মামান্তো ভাইরেরা সাহেবী সুলে পেছে, মা'র ইচ্ছে ছিল ওরা বার। কিছু প্রসা কোধার ? গ্রানিমিয়ার মা মারা গেলেন—অলান্তর মনে হয়, বোব হয় তাঁর ভাল চিকিৎসা হয়নি। ভাই আলান্ত সেদিন একটুও কাঁদেনি,
বুক-ফাটা কাঁদলো ওর বড়দা, ওর চেরে বারো বছরের বড় সে।

চিতা সাজাচ্ছিল কারা, ওর মনে পড়ে না। মা'ব পারে মাধা রেখে ও বসেছিল, আলতা-রাঙা পা, এরানিমিয়ার সালা পা। চিতার তোলার আগে সেই পারে চূর্ খেরেছিল ও। ওকে সবিরে নিরে বাও কাছা—মড়ার অত বাঁগুনী ভাল নর। কে বেন বলেছিল, অলান্ত রুখ তুলে দেখে, গেরুয়া-পরা এক স্মানানারিশী। মেজলা ওকে সবিরে নিল মার কাছ থেকে। ওঠ ছোট খোকা, মা তো বাড়ী গেছে।—ঠোঁটটা মেজলার তেঙে গেল, মুখটা অক্তদিকে নিরে বিকৃতব্বে মেজলা বলেছিল, ভূই কি একটুও কাঁদবিনে ছোট খোকা?

কেন কাঁদৰে অপান্ত । মা বে তাকে কন্ত সাধ-আহ্লাদের কথা বলেছে তা ওই জানে। মার কোন আশাই পূর্ণ হয় নি। তুই বড় হরে বিলেত বাবি ছোটখোকা—দাদার ছেলেরা সাহেব-ইস্কুলে বার, আমার ছোটখোকা বিলেত বাবে, তারপর সে বধন ফিরে আসবে মন্ত লোক হয়ে তার মার কাছে তথন ? তুই কি হবি রে ছোটখোকা?

দক্ষিণ দিকের চিতার সামনে অশান্ত দাঁড়িরে। বারো বছর পর
চিতা অসহে না নেবা। আকাশ ঘনবটা করে এসেছে, দূরের হুটো
চিতা অসহে, ধু ধু করে। তোমার কাছে ছুটি নিজে এসুম মা,
অশান্ত অসুটখরে বলে, কাল ভোমার ছোট থোকা বিলেজ বাবে।
ছুমি বলেছিলে ছোট খোকা ভুই বিলেজ বাবি, দাদার ছেলেরা সাহেব
ইছুলে বার, আমার ছোট খোকা বিলেজ বাবে একদিন। বেদিন
ভোমার এবানে রেখে গেছি সেদিন আমি ইাদিনি, কিছ আজ বে মা
পারছি না! ছু চোধ বেরে দর-দর ধাবে জল নেমে এলো, মুখ বুক
ভেনে গেল। ভোমার ছোট খোকা আবার বখন কিরে আসবে তথন
কার কাছে আসবে মা ?

শ্বশানবাটে এমন করে একলা দাঁড়িরে চোথের জল কেলছিস বাছা! অকলোণ হবে। অলান্ত যাড় ফিরিয়ে দেখলো সেই শ্বশানচারিকী বাকে ও বারো বছর আগে দেখেছিল। গেল্পরাপরা গলার কজাক। আন্তর্ব! তার চেহাবার একটু পরিবর্তন হবনি। চোথের জল যোছে অলান্ত। বাইবে বেরোয়, নতুন বাত্রী আসছে, শব্বাহীর সজে। এও-এক বাত্রা।

হাওড়া ঐশনে গাড়ী ছেড়ে দেবার পরেও অশান্তর উত্তেজনা আসে না বিলাত বাজার, পুর বেশী লোক আসেনি ওকে তুলে দিতে। বড়দা আর বড় বোলি এসেছিলেন কোলগর থেকে, বড়দা সেথানেই থাকেন। সা বাবার পরে কোলকাতার সংসার থান থান হরে বার। বেজদা' অলপাইওড়ি, সে চা বাগানের চাকুরে, তার আসা হর্ম। নেজমানীর সংগে নীলা এসেছিল, এক বাস্ত্র গিরীশের কড়াপাক সম্পেশ নিরে। সন্থ্যা আদেনি। তার আসার কথাও ছিলো না, অশান্ত অবশু তার কথামত আর একদিন ওদের বাড়ী গিরেছিল। কিছ সে বাওয়ার বিশেব কোনও মানে ছিল না। সন্থ্যার সঙ্গে একা থাকার সুবোগ ওকে দিরেছিলেন কিছ অশান্ত তা গ্রহণ করেনি। ও জানে সন্থাকে ও কোন কথাই দিতে পারবে না, ওর নিজের ভবিষ্যৎ অনিশিত, কেন মিথ্যে আর একটা মেরেকে এই অনিশ্রতার সংগ্রে জড়ান? শেব দিনের ঘটনা বে কেন হ'রে গেল ও ঠিক ভানেনা, অশান্ত বে তার সংগ্রে একা দেখা করতে চার না সন্থা তা বোকে, তাই প্রথমে ও সান চোখে তাকিরে রইলো অশান্তর দিকে, এই তার অশান্ত! বাকে সে চিরদিন ভালবেসেছে এই ভার স্থয় ? ভারপর হেসেছে মর্ম-বেধা বিজ্ঞাপের হানি।

ক্ষমমেট অসিত বার অবাক করেছিল। এ মেস ছেড়ে দিছি অশাস্ত বাবু !

সে কী মশার, মেদ তো আমাদের ভালই। ছাড়বেন কেন ? বার-ভার সংগে তো থাকা চলে না অশান্ত বাবু! কে আসবে এ ববে কে জানে। ভার চেবে কোন জারগার সীংগল বেডে চলে বাব—

আর অবাক করেছে ঠোঁটকাটা অতুল নিয়োগী, এ ক'দিন চুপচাপই ছিল, হঠাৎ হাওড়া টেশনে হাজির, হাডে একগুছে রজনীগলা। বেশ করেক ডজন হবে। আপনি মশার ভাবৃক্ লোক, সারেল ভূল করে পড়েছেন। এই আপনার উপযোগী। অশাস্ত অভিভূত হ'য়েছিল।

কাই ক্লানের বাত্রী, জীবনে এই প্রথম কাই ক্লাস-এ বাছে ও।
সেকেণ্ড ক্লানের বার্থ রিজার্ড করার সময় ছিলো না, সব রিজার্ড হয়ে
গেছে, তাই বাধ্য হয়ে কাই ক্লানে জাসা, চিরকাল একল এগারোর
চড়েছে অলাজ—কলাচ দেড়া ক্লাশ মানে ইনটারে। সে তো
ছেলেবেলার কথা। এতগুলো পর্মা থবচ করতে হাত করকর
করছিল, কী আর করে ? বিলেভ বাছে। লীলা ওকে জড়িরে
ধরে কাঁদলো। আবার করে আসবে মতুনলা ? কতদিন পরে—
আসব রে তাড়াতাড়িই, ভাবিসনে।

গাড়ী ছাড়ার কিছু পরেও সহবাত্রী-বাত্রিণীদের ভাস করে দেখে।
আপার বার্থে এক ভদ্রলোক—বাতাকীই হবে। বরস প্রার পঞ্চাশ।
চূলের বং তামাটে, গোঁফের বংও তাই, সামনের বার্থে শ্যাংলো
ইতিয়ান-দম্পতি,

'কতদূর বাওরা হবে আপনার'—আপার বার্ণের ভত্তলোকটি আপ্যায়িত করার চেষ্টা করেন।

ওরালটেরর--- অশাস্ত বলে।

ওয়ালটেয়রে ভো আমিও বাছি। তা চেঞ্চে বৃথি ? বেশ তো মাল নিয়েছেন তারি ভারি। অথচ বেজিং নেই!

অনান্তৰ ৰাগ হোল। গাবে পড়ে তাব কৰা, আবাৰ অবাচিত মতামত দেওৱা। ও বভাব অনুৰামী অবাব দিলো না। প্ৰাটকেশেৰ গাৱে তথনও আহাজ কোম্পানীৰ পেবেল মাবেনি ও, তাই ওপৰতলাৰ বাব্টি ব্ৰলো না ও বিলাভৰাত্ৰী। একটু ৰাত হলে বাব্টি বোধ হয় জনবোগ ক্যনেন কিছু তাৰ প্ৰ নীচে নেমে থদে ওব সীটেব এক প্রাস্তে বলে বোতল থুলে কী বেন খোলেন, বোধ হয় মদ বেশ করেক পাত্র খেষে একটা মোটা বর্মা চুকট ধরালেন। ভার পর অশান্তকে বললেন, বলতে পাবি একটু? অশান্ত ভো অবাক। ভন্তলোক ভো ওব সীটে বদেই আছেন। আবার জিভেন্স করা কেন এত পরে?

ও বললে, হাঁ নিশ্চরই, তা ওয়ানটেররে কোধার উঠবেন, ঠিক করেছেন কিছু ? ভদ্রগোকটি প্রশ্ন করে,

হোটেল বোগাড় করে নেব'ধন-অশান্ত বলে।

ও ংগলে, হোটেল মে'ল না মলাই এখন ওয়াগটেয়বে।

আমি অনেক বাব বাভারাত করছি—ওয়ালটেয়ব আমাব
নথদর্শনে। আপনি লিমি সাহেবের হোটেলে চেষ্টা করতে
পাবেন। আমাব ব্যবস্থা করা আছে। হোটেল ভালই,
চার্জ একটু বেশী হবে। ভন্নলোকের নেশা হরেছে বলে মনে
হর না। ওবে একটু বেচাল হয়তো হবেন। ভা মলাই তখন
ভো বলঙ্গেন না কি কাজে বাজেনে? আমি? আমি ববার্ট কোম্পানীর সেলস-এর লোক। হবিনারায়ণ মিন্তির। আমাকে
ভো হরনম ভেলেগুনের দেশে বেতে হর, একলা পথ—কথা
নাবলে প্রবানই। কই আপনার নাম ভো বললেন না?

আমার নাম অশান্ত মিত্র। অশান্ত বলে।

আবে ভারা, আপনি মিত্তির । কোণাকার বলুন তো । বি, এন, আব-এ কত বাব ওয়ালটেরর গেছি। তা এই প্রথম মিত্তিরের সঙ্গে সাকাং। তা ওয়ালটেররে ।

আমি ভিল্লগাপট্টম থেকে বিলেত বাচ্ছি আট ভাবিখে, তাই গুরালটেরবে বাচ্ছি—

আ—ছা ? তাই এত ফুলের ঘটা। আমি তাবি বরবাত্রী ছাড়া একা বর—না কবি সম্বর্জনা ? বড় খুশী হলাম। তা বদি একটু আগে আনতাম একা ডিক ক্রতাম না। একে ডবল টি মার্কা কারেত— আর এক ডবল টি মার্কা কারেতের সংগে' দেখা, তার ওপর বিলেত যাত্রী, আপনাকে না হর এক চুরুক।

चारक चामाव अनव हरन ना-- ननान्ड वरन।

বড় ভাগ ভাগ এ জিনিব, না থেলে বোঝা বার না, তবে আমার বড় দোব, করেক ঢোঁক বেলী পেটে পড়লে বাজে বকি। আমি কি এখন বাজে বকছি? মোটেই না! ব্যালন ভারা—আমাদের মনের মধ্যে একটা দরজা লাছে, বেটা আমরা বন্ধ করে রাখি—এই করেক পাত্তর পেটে পড়লে সে দরজা খুলে বার—তখন রেলগাড়ী মোটর ইষ্টিমার—ছেলিকপটার অববি চলে বার গে দরজা দিরে, এই দরজা পেবিরে আর একটা দরজা আছে, সে দরজা—খাক ভারা।

ববাট কোম্পানী কি কোম্পানী অপান্তর জানা নেই, ভবে
নাম তনে মনে হয় বিশিতী কোম্পানী। ভরলোক নিশ্চর মোট।
মাইনে পান—নরতো কাই কাম্পে বাভে্ন, আবার পানদোবও
আছে। ওর মনের ভেতরের দরজার খবব অপান্ত জানে না, ভবে
ওর পরিচরের অপথ বড় হরেছে ও জানে, কোঝা খেকে কভ কি
আসছে, কত আসবে বড়ে উড়ে বাওরা পাতা, কোনটা হরতো বাদামী
হরে পেছে বেশনায়, কেউ বা কুঁকড়ে পেছে অকালে। আবার কোন
কিশ্সর প্রাণোমাধনার উদ্বেল।

ত্রে পজুন ভারা, ওপর থেকে মিভির মণাই বলেন, আনেঞ্ ধূরে বেতে হবে। আমিও বাব একদিন—আনেক দূরে। বিজেত নর—বিলেত পেরিরে—জল-জগল মাটা পেরিরে আনেক দূরে, আ-নে-ক-পূরে। ছরিনারারণ মিভিবের বোধ হর নেশা জমে আসংচ্, অশাস্ত একটু ভর পার, তার পর তারে পড়ে।

ভয়ালটেররে হোটেল থোঁজা সন্ত্যি বামেলা, এক বাতের তো
মামলা—তাও মিললো না, জিমি সাহেবের হোটেল বিলেব বড় নয়,
সেধানে মিভির মলাইএর ব্যবস্থা ছিল—অলান্তর জারগা হোল না।
জিমি সাহেব কালো কুচকুচে— হাবসীও হার মানে রং-এর জেলার,
মিভির মলাই কিছ হাল ছাড়লেন না। চলুন মলাই নব্য-বংগে
আপনাকে নিয়ে বাই, বাঙালী মেস, ছ'জনেই ওঠা বাবে সেধানে,
সাইকেল-বিক্সা করে ছজনে রওনা হয় নব্য-বংগ মেসে, অলান্তর
মাল অনেক, মিভির মলাই-এর মাল নেই বলতে গেলে, সদর রাজাণ
পোররে বিজি বাজার তার পরে সক গলি, সাইকেল-বিক্সা চলে না
সেধানে। মিভির মলাই তেলেক ভাবার কি বেন বললেন—
সাইকেল-বিক্সার চালক গাড়ী থেকে নেমে হাতে ঠেলে চললো।
একটু এগিরেই নব্য-বংগ-মেস।

কেরোসিন কাঠের ওপরে সানা বং দিয়ে লেখা, 'নব্য-বংগ-মের'। বাঙাশীদের ভক্ত, প্রো: জীগোপালকুফ সাহা, দোতলার জানদা থেকে একটি মুখ দেখা গোল, ভার পর সাদর জাপ্যায়ন, আত্মন আত্মন মিত্তির মশাই, জনেক দিন পরে এঁয়া।

ভোমার দৈরিদ্বিকৈ পাঠিরে দাও হে সাহা, ছটো বেড চাই
আলকের মত—আছে ভো ?

আপনার জন্ত সদা-সর্বনা অধীনের ব্যবস্থা। দিছি আমি সৈথিজীকে পাঠিয়ে, সৈথিজী এলো তেলেগু ঝি, কুচকুচে কালো রঙ কিমি সাহেবেরই মতন, আঁট-সাট চেহারা—অফ্লেশে মাল ভূলে নিরে এল।

বৃণসী বাড়ী, অলাস্ত তো অনেক দিনই মেসে কাটিরেছে, কোলকাতার, বীরেশ বাবুর মেস—মার্লীই। নব্য-বংগের তুলনার তাকে বাজকীর মনে হোল, অলাস্তর বেড ছিল তিনতলার দক্ষিণ খোলা জানলার সামনে, আলো-হাওরা ছিল, এখানে বেন রাজ্যেই অদ্ধানার বাসা বেঁবেছে—তার ওপরে জুলাই-এর অসন্থ সরম। মিত্তির মলাই-এর দাক্ষিণ্যে অলাস্ত মুগ্ধ হরেছিল, জিমি সাহেবের হোটেল এর চেরে লভাংলে ভাল। ওর জভ ভত্তলোক কঠ নিলেন, মিত্তির মলাই একটু পরে এসে বললেন—বান নীচে ইনারার জলে চান করে আত্মন, একটু আরাম পাবেন।

বাড়ীর পেছনে বাদ্বাঘর—ভাব লাগাও ইণারা। সাধান-ভোষালে হাতে অলাস্ত লানের জন্ত আসে, কুরোভলার আবার সৈহিন্দ্রীর সংগে দেখা। একজন বাবুর সংগে মসকরা হ'ছে ভেলেও ভাষার, বাবুটিও স্নানে এসেছেন।

আৰু এলেন বুৰি ? তাৰ পৰ—ডকেই তো। কৰে থেকে লাগবেন ? ৰাবুটি বললেন।

আতে আতই সন্ধার টোনে এসেছি, ভবে ভবে ভা বিছু হয়নি। অশাস্ত বলে।

७ हवनि, छ। छावर्तन मा । जूर्यम मदकारवद १३क्रावर्थमान

উর্বে কজো লোক কাজ পেরেছে তার ইরজা নেই। আপনারও হ'বে বাবে, তেলেগু-পটাতে ছুশো বাঙাগী আছি মশাই, বিলেশে বাঙাগীকে যদি বাঙাগী না করে ?

আক্রে আমি কালই চলে বাব—অশাস্ত ভক্তকোকের কথা শেব হবার আগেই বলে।

সে কী মশাই, এই ভো সবে এলেন এখন ছ'দিন গোণাস বাবুৰ মেসের ভাত খান, ওরালটেরবের শোভা দেখুন ভাব পর তেলেও মেরে—মাইবী ফার্ট ক্লাশ, আপনার ইদিক-সিদিক হরতো ?

জাত্তে আমার এসর miss ক্রবার একটু ইচ্ছে নেই, কাসকের জাহাজেই আমি বিসেত বাচ্ছি। 'sorry'

বিলেত ? আবে মশার তাহলে তো ফিটি দিতে হবে। থাক চান করা। দেখি মোচলমান পাড়ার মুর্গী আছে কিনা ?

পুবেশ বাবু তড়িৎ বেগে উধাও হলেন, রাত্রে ফিটি হাল—
নৈরিদ্বীর রালা মুর্নীর ঝোল তিলতেল দিরে রালা। অশান্তর
মনে হোল—করোসিন তেলের গল্ধ। মিত্তির মশাই
বেরিয়েছেন কোথার, তবে আর ছু'-চার জনের সংগে আলাপ
হোল—ভার মধ্যে হিতেন ভাতৃত্বীকে ওর মনে থাকবে, অল-বয়নী
ছেলে, ভাগা-ভাগা চোখ, ভাতে অনেক অপ্ন, অশান্তর সংগে
কিছু রজনীগলা হিল অভুল নিয়েগীর দেওবা, ভাই দেখে
ও খুব খুনী।

কতো দিন বলনীগনা দেখেনি লশান্ত বাব্ আহা—বড় ভাল ঋ ফুল !

এটা আমি বাগার আপে আপনাকে দিরে বাব—আর জাপনাদের পাঁচজনের জল্তে এক বান্ধ কড়াপাক সন্দেশ। আমি মিটির ধুব ভক্ত নই, আর এবানে তো ওটা পাওরা বার না— আপনারা বোব হয়—

না না —তা কি করে হর, আপনার মিটি—কেউ কেউ প্রতিবাদ করলেন।

দাদাকে দেশ ছাড়ার আগে আর হংখ দিও না, উনি ভালবেসে দি:ছ্ক্ন। নিয়েই নাও ছে—কেউ কেউ বসলেন।

প্রদিন ছুপুরের দিকে হিজেন হঠাৎ ওর অরে এলো। অলান্ত স্কালবেলার ওকে রজনীগন্ধার গুদ্ধ দিরে এনেছিল। ছুপুরে ভার ডকের চাক্রীতে ধাবার কথা, কিন্তু আৰু আরু সে কাল্পে ধার নি।

আপনার কাছে কি ওপু ওগুই বজনীগন্ধা নেব, তার বদলে আপনি এই ক্যালেওারটা বাধুন, এতে আমাদের দেশের ছটা বহুব ছবি আছে—ছ' মাস করে এক এক পাকার—ও বলে।

থাক আপনার ক্যান্তেগার হিতেন বাবু, আমি আপনাকে ব্যনীপদা দিলাম বলেই বে কিছু নিতে হবে ভার কোনও মানে নেই, আর ভা ছাড়া কুল ভা আমার গুকিরে এসেছে।

बीं जाननारक निष्कृष्टे हर्दन, बहे त्नधून, এएंड जामान नाम

লিখে দিবেছি, হবতো তাহ'লে আমাকে মনে থাকবে, ক্যালেণ্ডাবের একটা গ্রুত্ চলে গেছে—প্রীয়, বাকি আছে আবো পাঁচ, বসস্থ সব শেবে, বসস্তে অনেক আলা মুকুলিত হব, অনেক মবে বাওৱা গাছে পাতা গন্ধায়—আবার বসস্ত একদিন আসবেই, সেধিন আমিও বাব আপনার মত।

নিশ্চয় আপনার বাওয়া হবে, আমার বাওয়া ধ্ব সোজা পথে হয়নি হিতেন বাবু! আপনি বিখাস যাধ্ন আর চেটা কলন।

কাবগোঁ ভাহাজ। মাল বোঝাই হবে এ বন্ধর। থালাস হবে অক্ত বন্ধরে, ধে ঘাটে থামবে নে ঘাটে সওলা হবে, পণ্যের অল্লের—অভের: কতো রকম সওলা হর খ্চরো পাইকারী কভ রকম দেওর-নেওরার খেলা খেলে বন্দর, আহাজ এ সংথামলে নাবিকরা মাটি চার, মাটির বালা চার, মাটির বালার স্বাদ চার, মাম্বীর দেহে, মনে, রজে, রজের স্বান্দর সে রেখে বার—রজের বান্দর সে নিরেও বার, সওদাগর নাবিক তার কত বক্ষ সওদা!

সৰ ঝামেলা শেব হংবছে অশান্তব, কাইমস-এব বেডাঞাল হেলথ পাবমিটের হাংগামা। মাল একে একে উঠেছে জাহাজে। এবাবে তাহ'লে সে বংক্তো। নোডব তোলা হ'বে পেছে, জাহাজেব একমাত্র প্যানেঞ্জাব বলে ওব নাম মিঃ প্যানেঞ্জাব।

অনেক অনেক দিন আগে একজন বপ্ন দেখতো এক বীপের, ছারাঘন পরুর দেবলাক পাইন নারিকেলের হিন্দোল নেই সেধানে—
তারার আবছা আলোর ইসারা নেই সেধানে- তরু দে বপ্ন, হিতেন
ভাতৃতী বোধ হয় আজ তার অপ্ন দেখে, সেই বীপ ভো আর বেলী
দ্বে নয় ? তবে কেন ভীড় করে আসছে এরা চোখের সামনে ?
সভাা বোসের সান-মুখ আয় বিজ্ঞপ-মাধান হাসি, তাভে অপমান
মাধান, সালার কল-তরা চোখ, অতুল নিরোগীর হাস্তোজ্জল রুখ,
মিণ্ডির মণাই-এর নেশার ছড়ান চাহনি—আর এ্যানিমিয়ার সাদা
মার মহা মুখ।

দমকা বাতাস আসছে বঙ্গোপসাগর থেকে, হিতেন ভালুড়ীর ক্যানেশুনের পাতা উড়ে বাচ্ছে—বর্বা, শরং, হেমন্ত, শীভ; শীভ ছুর্জর শীত বেধানে—বেধানে জলান্ত বাচ্ছে, ওর পাথের একটা জনার্স ডিগ্রী আর কিছু পাউশু, এই নিয়ে ওকে সড়াই করতে হবে—শীতের সংগে, বে শীত থাকবে, বত দিন না ওর স্থরাহা হয়—একটা কাল বোগাড় হর।

আসবে বসত্ত, শীতের পরেই ভো তার পালা, এবারও বসভ আনবে—কাই-লাভ আর ড্যাফোডীল, এবার ওর সন্ধা রঙীন হবে লাভ-ইন-হি-মিটের স্থ-ভিতে কর্ণমাওরাবের পাপড়ীতে, কির স্নোমের দাক্ষিণ্য আর হারামীনথের বিলাসে।

নতুন ভাষেথীৰ পাতা আৰম্ভ কৰে অশান্ত, প্ৰথম লাইন লেখে, আৰু গোমবাৰ ৮ই জুলাই, বাত্ৰা স্কুত্ত হয়েছে।



[Osamu Danai's "The Setting Sun"-এৰ অনুবাদ]
চতুৰ্ অধ্যায়

পত্ৰাবলী

চিঠি লেখা উচিত হবে কিনা এ বিষয়ে কিছুতেই মনস্থিব করে উঠতে পারছিলাম না। শেব অবধি আজ সকালে সর্শের স্থায় বিচক্ষণ ও কপোতের স্থায় নিরীহ বীশুর এই বাণী পড়ে বুকে জোর পোলাম, চিঠি লেখাই শেব করলাম।

নাওজির বোন আমি। আমার কথা যদি ভূলে গিরে থাকেন, ভবে দয়া করে মনে করবার চেষ্টা করবেন।

নাওজি আবার বেরাড়াপণা আরম্ভ করেছে এবং আপনাকে উত্যক্ত করছে এজন্ত হঃথিত। (বাস্তবিক তার ব্যাপার সেই বৃষ্ক জামার পক্ষে আগু বেড়ে তার হয়ে মাপ চাইতে বাওয়া অর্থহীন)।

আজ নাওজির জক্ত নয়, নিজের জক্ত আপনার কাছ থেকে কিছু জিলা করব। তার মুখে শুনেছি আপনার প্রনো বাড়ী যুদ্ধের সময় নষ্ট হয়ে গেছে বলে আপনারা নতুন ঠিকানায় উঠে গেছেন। ভেবেছিলাম সেধানে গিরে আপনার সঙ্গে দেখা করব। বাড়ীটা বোধ হয় টোকিওর আশে-পাশে কোনয়সহরতলীতে; কিছু সম্প্রতি মারের শরীর ভাল বাজ্ছে না, তাঁকে একা কেলে অত দূর বাওয়া চলে না, সেইজেকই চিটি সেখা।

আপনার সঙ্গে একটা বিষয়ে পরামর্শ করতে চাই। আমার আলোচ্য বিষয়েট যুবতী নারীর সাধারণ শালীনতার পর্যায়ে তো পিঁড়েই না, বরং উন্টে গুরুতর অপরাধ বলা বেতে পারে কিছু আমি, না, আমরা আর এ অবস্থায় থাকতে পারি না। স্কুতরাং বিনি আমার ভাই নাওজির চোপে এ ছনিয়ার শ্রেষ্ঠ মায়ুব, তাঁর কাছে আমার অমুরোধ, অমুগ্রহ করে তিনি বেন আমার অত্যন্ত সহজ অনাড়ম্বর অমুভ্তির কথা অমুধাবন পূর্বক স্থপরামণ্ দিয়ে বাধিত করেন।

আমার বর্ত্তমান জীবন অসহ। পছন্দ অপছন্দের প্রশ্ন নয়, আমাদের (মা, নাওজি ও আমি) এই ভাবে আর বেঁচে থাকা অসম্বব।

গত কাল শরীরে অসন্থ এক যাতনা অমুভব করলাম। তার সঙ্গে অরও ছিল; নিঃশাসের কষ্টে কি করি ভেবে পেলাম না, তুপুরে খাওয়া-দাওয়ার পর চাধী-মেয়ে ভিজতে ভিজতে এক বোঝা চাল পিঠে নিয়ে এল। যে কাপড়গুলো তাকে দেব বলেছিলাম। দিয়ে দিলাম। খাবার ঘরে আমার সামনে বসে চা খেতে খেতে সোজামুদ্ধি সে আমার প্রশ্ন করল—এ-ভাবে নিজেদের জিনিব বেচে আর কদিন চলবে?

আমি তার জবাবে বললাম—ছ'-মাস, বড় জোর বছরখানেক। তার পর ভানহাতে মুখখানা আড়াল করে বললাম—বুম! খুমে আমার ছ'চোখ ভেঙ্গে আসছে।

তুমি অত্যন্ত ক্লান্ত। এ তোমার মনের অবসাদ।

হয়ত তোমার কথাই ঠিক। চোথে জল আনে-আনে, এই অবস্থায় উঠে দাঁড়াতে, ছটো কথা মনের মধ্যে গুমরে উঠল—'কান্তব' এবং 'কল্পনা'। বাস্তব সম্বন্ধে কোন ধারণাই আমার নেই। সম্ভবতঃ এই কারণেই বেঁচে থাকার আশক্ষায় আমার হাত-পা ঠাগু হ'বে জাসে। মা প্রায় অথর্থন—বিছানাতে কাটে তার বেশীর ভাগ সময়।

নাওজির মানসিক অস্থথের কথা আমাদের অজানা নেই।
এথানে যতক্ষণ থাকে, স্থানীয় এক তাড়িখানায় কাটায়—মার
ফু'দিন অস্তর আমাদের কাপড়বেচা টাকায় ফুর্তি করতে যায়।
কিন্তু হংথ আমার সেজগুনর। আমার ভর হয়, পচা পাতা বেমদ
ঝরে না পড়ে, অনেক সমরে গাছেই ঝুনে থাকে—তেমনি আমিও
দৈনন্দিন জাবনের এই ক্লাস্তির বোঝা টেনে টেনে অনস্তকাল বিচে
থাকব। এ চিন্তা অসম্ভ এবং এর হাত থেকে মুক্তি পাবার আশার,
আমি আজ যুবতী ভল্তকগ্রার যাবতীয় শালীনতা লন্তনে করতে প্রস্তত
হয়েছি। এখন আপনার উপদেশের অপেকা।

এবার আমি, আমার মা এবং নাওজির কাছে সব কথা খুলেই বলতে চাই। কিছুকাল যাবং এক ভদ্রলোকের সঙ্গে আমার খনিষ্ঠতা হয়েছে। এখন থেকে আমি তাঁকেই অবলম্বন করে বাঁচতে চাই। তাঁর নামের আক্রমর হ'টি এম. সি। হুঃখ পেলেই তার কাছে ছুটে চলে বেতে ইচ্ছা করে এবং তার প্রেমে নিজেকে বিস্কান দিতে বাসনা জাগে।

আপনার মতই এম, সি'র স্ত্রী ও একটি কলা আছে। তাঁকে দেখে মনে হয় আমার চেয়ে সুন্দরী, বহু রম্পীর সংস্পর্ণে তিনি এসেছেন। তবু মনে হয়, তাঁকে না পেসে আমায় পক্ষে বেঁচে থাকা সক্ষ। দুকুলোকের স্ত্রীকে আমি দেখিনি, তবে ভুনেছি তিনি

ध्या रिक् न्यवात् (कतवात्र अध्य

जिल्यान-अध्य की व्यक्त प्राप्त कितावत

कलिकाण-୬ ं ध **1म. यल, वम्रू** यााष्ट तकाः आरेएडिं চমৎকার মহিলা। তাঁর কথা চিন্তা করলেই তাঁর তুলনার নিজেকে অত্যন্ত ছোট মনে হয়। আমার বর্তুমান জীবন আরও ভয়াবছ। এম, সি'র কাছে আবেদন আমি করবই। কোন বিবেচনা আমার এ সকলে বাধা দিতে পারবে না। দর্পের ক্যায় বিচক্ষণ ও কপোতের ক্যায় নিরীহ আমার এ প্রেম চবিতার্থ হবেই হবে। কিন্তু একটি কথা আমি স্থির জানি যে মাবা নাওজি কেউই আমায় সমর্থন করবে না। আপনার মতামত সম্বন্ধে সঠিক ধারণা আমার নেই। মোট কথা, নিজের কর্তুব্য স্থির করে সেই ভাবে চলা ভিন্ন গত্যন্তর আমার নেই।

একথা ভেবে নিজের মনে কেঁদে মরি। জীবনে এই প্রথম নিজের বলতে কিছু হবে, কিন্তু পারিপার্থিক সকলের সমর্থনের অপেকা রেখে এ কাজ করা অসম্ভব। আলিজেববার কঠিন হম সমস্যার সমাধান করতে যে পরিমাণ মানসিক একাগ্যহার প্রয়োজন, আমি আমার মনের সমস্ত শক্তি সঞ্চয় কবে, সেই রকম একাগ্যহিত্তে আমার প্রশ্নের উত্তর খুঁজেছি। শেষ অবধি বৃশ্নেছি একটি মাত্র জারগায় সমস্ত ব্যাপারটার জট খুলে যায় এবং ভেবে শান্তি পেয়েছি।

জামার পরমাম্পদ এম, সি কি বলেন? এই এক মাত্র স্থান্থ বিদারক প্রশ্ন। আমাকে আপনি 'স্বযংবরা পত্নী' অথবা 'স্বয়ংবরা প্রণারিনী' নাম দিতে পারেন। এর পর এম, সি' যদি বলেন তাঁর পক্ষে আমায় বরদান্ত করা অসন্তব তাচ'লে আমার বলার কিছু নেই। আপনার কাছে একটি অমুরোধ আছে। আপনি কি তাঁকে জিজ্ঞেস করতে পারেন? ছয় বংসর আগে আমার মনে রামধন্ত্ব হালা বং লেগেছিল। তাব মধোনা ছিল প্রেম, না ছিল কাম। কিন্তু দিনে দিনে তার বঙ পত্রীরে মিশেছে, গাঁচ হয়েছে। আমার মন থেকে একবাবও সে বং মুছে বারান। বার্টী হয়ে যাবার পর আকাশে যে রামধন্ত্ব, সে স্বল্লায় কিন্তু মানুবের অন্তরের বং এত সহক্তে ধুরে যারা না। অমুগ্রহ করে তাকে জিজ্ঞেস করবেন আমার সন্থক্কে তাঁর কি ধারণা? হয়ত তিনি আমায় বৃষ্টিঝরা আকাশের রামধন্ত্ব লেবেছেন, এবং তা কি এরই মধ্যে ধুরে মুছে নিংশেষ হয়ে গেছে ?

উত্তর প্রার্থনা করি।

উরেহারা জিরোর উদ্দেশে (আমার শেথব—এদ, দি) লিখিত।
সম্প্রতি আমার ওজন বেড়েছে। নেহাৎ জংলীভাব কেটে গিয়ে
নিজেকে মামুবের মত লাগে। এই গ্রীমে আমি ডি, এইচ লরেল-এর
একথানা মাত্র উপকাদ পড়েছি।

আপনার কাছ থেকে কোন উত্তর না পেরে, আবার আমি চিঠি
লিথতে বসেছি। আমার আগের দিনের চিঠিথানা অত্যস্ত অক্যায়
চক্রান্তে পরিপূর্ণ ছিল। বোধ হয় আপনি সমস্তই ধরে ফেলেছেন।
হাা—সে কথা সত্যি। চিঠির ছত্রে ছরে আমি ধূর্তানি নিছিত
করেছিলাম। বোধ হয় ভেবেছিলাম, আমার জীবন ধারণের জন্ত আপনার কাছ থেকে অর্থ সংস্থান করাই আমার উদ্দেশ্য। যাই হোক,
মাপ করবেন, আপনাকে জানাতে চাই যে কেবল মুক্রবির সন্ধানই
যদি আমার লক্ষ্য হ'ত, তবে বিশেষ করে আপনার কথা মনে
আসত না। এটুকু বিধাস আছে যে, টাকাওয়ালা বহু বৃদ্ধ আমার
ভার নিতে আপত্তি করবেন না। সত্যি বলতে, অল্ল কিছুদিন হ'ল
আমার কাছে এ ধরণের এক প্রস্তাব আদে। আপনি ভ্রমলোককে চিন্দেও চিনতে পারেন। বয়স যাটের ওপর। সম্ভবতঃ শিল্প প্রতিষ্ঠানের সভা এই মহাপুরুষ (!) আমাদের পাহাড় বেয়ে এসে আমার পাণিপ্রার্থনা করেন। আমরা নিশিকাতা ব্রীটের বাড়ীতে থাকতে—ইনি ছিলেন আমাদের প্রতিবেশী। পাড়ার উৎসবাদিতে মাঝে মাঝে দেখা হত। মনে পড়ে এক শরৎসন্ধ্যায় গাড়ী করে এর বাড়ার সামনে দিয়ে মা আর আমি আসছিলাম, ভল্লাক অক্সমনম্ব হ'য়ে ফাটকের কাছে দাড়িয়েছিলেন। মা গাড়ার ভেতর থেকে ইয়ং মাথা হেলিয়ে নমস্কার করতেই হঠাৎ ভল্লাকের ফ্যাকাশে মুথের ওপর কে যেন আবার ছড়িয়ে ছিল!

আমি ঠাটা করে বললাম,—মা, বোধ হয় একেই বলে প্রেম। ভদ্যলোক তোমার প্রেমে পড়েছেন।

শাস্তস্বরে মা নিজের মনেই উত্তর দিলেন—না, উনি মস্ত লোক। আমার বোধ হয় শিল্পীর প্রতি শ্রন্ধা বস্তুটা আমাদের অস্থিমজ্জাগত।

ভ্যাদানামার পরিচিত রাজকুমার, এই চিত্রকর মায়ের কাছে আমার বিয়ের প্রস্তাব পাঠান। তিনি বেশ কিছুকাল বিপত্নীক রয়েছেন—এ তথ্যও জানাতে ভোলেন নি। মা বললেন—যা তাল বোঝ, সেই মত সোজা ভদ্রলোককে জানিয়ে দাও। বিশেষ কিছু চিন্তা না করেই আমি লিখে দিলাম—বর্ত্তমানে আমার আদৌ বিবাহে রুচি নেই।

মাকে জিজ্ঞেন কংলাম—আনি আপত্তি করলে তোমার থারাপ লাগবে না তো ?

এ রকম যোগাযোগ সন্তব বলে আমার মনেই হয়নি। জাপানী আল্পস এ শিল্পার কাছে এই মর্মে চিঠি গেল। আমার চিঠি পাবাব আগো—দিনকয়েকের মধ্যে হঠাং ভদ্রলোক স্বয়ং এসে উপাত্তত।

তিনি থবর দিলেন 'ইজু' (Izu)তে গরম জলের ঝরণায় যাবার পথে একবার আমাদের সঙ্গে দেখা করে যেতে চান। শিল্পীদের যত বরসই হোক না কেন, এধবণের ছেলেমানুষীতে কথনও ক্লান্তি আসে না।

মা'র শরী টা ভাল যাছিল না, আমি নিজেই চীনাছরে তাঁকে অভার্থনা করণান। চা ঢালতে ঢালতে বললান,—এতক্ষণে প্রত্যাথ্যান বহন করে আনার চিঠি আপানার বাসায় পৌছে গেছে। আপানার প্রপ্রাণ সম্বন্ধে যথেষ্ট চিস্তা করে দেখলান, এ অসম্ভব!

ভাই নাকি ? ভদ্রলোকের স্বরে অবৈর্ধ্য । ঘাম মুছে বলনেন
—আশা করি, আপনি আর একবার বিবেচনা করে দেখবেন । হয়ত
আনি—কেমন করে বলব জানি না—আপনাকে মানসিক আনন্দ দিতে
পারব না । কিন্তু অন্ত ভাবে বাস্তব জীবনে আপনাকে যথেষ্ট মুখী
করার ক্ষমতা আমার আছে । এ বিষয়ে আমি আপনাকে নিংসন্দেহ
করতে পারি । আশা করি, আমার ভাষা অমার্জিত হয়নি ।

আপনি যে স্থাথের কথা বলছেন তার স্বরূপ আমার জানা নেই।

মুঠতা মাপ করবেন, এক্ষেত্রে আমার একটিমাত্র উত্তরই জানা আছে

—না ধন্তবাদ! নীংসের (Nietzche) ভাষার বলতে গেলে

আমার সেই জাতীয়া রমণীর প্র্যায়ে ফেলা উচিত, সস্তানের জননা

হওয়াই যাদের একমাত্র কাম্য। আমি সস্তান চাই, স্থাথে আমার

অক্চি। অর্থে আমার আসক্তি নেই, শুধু সন্তানকে মানুব করার জন্ত্র

খেটুকু প্রায়েছিন। সিমিডে বিশ্বয়ের ছোঁগা লাগে। শিলী গাসন— আপনি আনায় অবাধ করলেন দেগছি। প্রত্যেকে ননে মনে মা চিছা করে, তা আপনি কেমন প্রাঞ্জল ভাষার ব্যক্ত করতে পারেন। আপনার মঙ্গে জীবনটাকে বাঁধতে পারলে নতুন করে কাজে উদ্দীপনা পার্বা যেতো।

সাজান কথাগুলি আদে বুড়োমামুবের উক্তি বলে মনে ইল না। ছিনাং এই ধারণাই ছ'ল যে, এত বড় শিল্পার মনে নাতৃন অন্ত্রেপরণা জাগারার মত আমার মধ্যে কিছু পদার্থ অবশিষ্ঠ থাকে, তাহ'লে থেচে খাকা সাথক। কিন্তু অনেক চেটা করেও নিজেকে বুছের বালপাশে আবদ্ধ অবস্থান কল্পন করলান না। মৃত্ তেসে জিল্পেস করলান—আমার দিক থেকে সম্পূর্ণ প্রেনের অভার কি আপনার সন্থাবে ?

গন্থীর ভাবে উত্তর দিলেন ভদলোক—তাওে বিশেষ কিছু এসে যাবে না। নারীর অন্তরের কথা দেবতারও অজানা।

কিন্তু আমার মত নারী প্রেমহীন বিবাহের করনাও করতে পারে না। পূর্ণ বয়স আমার, আগামী বংসর ত্রিশ-এ পা দেব।

নিজ্যে কথায় নিজেই চনকে উঠলাম। জিশ। উনত্রিশ বংসর বয়স অবধি নাবীদেহে কুমারীস্থলভ কোমলতাব কিছ অবশিঠ থাকে, কিন্ধ বিশোর্ক নারীদেহ নিঃস্ব বিক্তা। ফরাসী উপজ্ঞাসে পড়া এই কথাগুলি অবণ করে আমার মন অবদানে এমন ভারাক্রান্ত হ'ল যে কোন মতেই তাকে মন থেকে দূর কবতে পারলাম না। বাইবে চোপ ফেরালাম। বৌদ্রমাত সমুদের প্রথর উজ্জ্বল্য ভাঙ্গা কাচের টুকরোর মত বিকেমিক করছিল। মনে পড়ে গেল উপকালে এই হু' লাইন পড়তে গিয়ে; সতি। ভেবে মনে মনে সায় দিয়েছিলাম। যে সময়ে ত্রিশের কোটার মেরেদের বৌরনের সীনা টানতে পারতাম, সেই দিনগুলিব জন্ম বকের ভেতৰ ভ ভ করে উঠন। অবাক হয়ে ভারদাম এই যে আমাৰ নেকলেম, বেমলেট, দামী দামী পোনাকগুলো বেচে দিচ্ছি, তাদের সঙ্গে সঙ্গে আমার যৌবনের মাধ্রী নিঃশেষিত হয়ে যাচ্ছে না তো ? হায় বে ভয় ফানয় মন্যবয়সী রম্পী! কিন্তু তবু মধ্যবয়সেও নাবীন্দীবনে একমাত্র তারই অধিকার নয় কি ? সম্প্রতি এই ধারণাই আমার হয়েছে। উনিশ বছর বয়সে আমার এক ইংবেজ শিক্ষয়িত্রী দেশে ফেরার মুথে আমায় সাবধান করে দিয়েছিলেন, কথনও প্রেমের বাঁগনে নিজেকে জড়িও না। প্রেম তোনার সর্বনাশের মূল হবে। বাঁধা যদি পড়ভেই হয়, অনেক বয়সে, ত্রিশ পেরিয়ে প্রেম করো।

তাঁর কথা নিঃশব্দে হজম করেছিলাম, মন তা গ্রহণ করেনি। সে সময়ে আমার পক্ষে ত্রিশোর্দ্ধ জীবনের কল্পনা করাও কঠিন ছিল।

তিক্ত স্ববে শিল্পী হঠাং বলে উঠলেন শুনলাম আপনারা বাড়ীটা বেচে দেবেন ? কথাটা সন্ত্যি ?

আমি হেসে উঠলাম, মাপ করবেন, আমাদের চেরী বাগানটার কথা এইমাত্র মনে হল। আপনি ওটা কিনবেন ?

কৃষ ক্রক্টিতে ওঠপ্রাপ্ত কৃষ্ণিত হ'ল, উত্তর দিলেন না ভদ্রলোক। শিল্পী মামুষ, আমার কথার ইঙ্গিত ধরতে কণ্ঠ হয়নি।

বাড়ীথানা এক রাজকুমারকে বেচে দেবার কথা চল্ছিল— একথা সত্যি কিন্তু শেষ অবধি কিছুই করা হয়নি। এরই মধ্যে শিল্পীর কানে পৌছে গেছে থবরটা জেনে অবাক হলাম।

কিন্ত যেই বৃশক্ষেন উচকে চেনী বাগানের ঠিকেদার লোপোধিন এন সমগোত্রীয় মনে কবি, অমনি ভজুলোকের মেজাজ বিগজে গেল। এর পর কয়েক মিনিট এটা, ওটা বলে উঠে পড়লেন।

এই লোপোথিন পর্বের পুনরার্ত্তি হোক, এ অমুরোধ আপনাকৈ আনি করব না। সে বিধরে আপনি নিশ্চিন্ত হ'তে পারেন। কিন্তু দ্বা করে নগুবরুদী রমণার অন্তরের ব্যাকুলতার কথা ক্ষণেক অবধান করুন।

প্রায় ছয় বংসব পূর্বে আপনার সঙ্গে আমার সাকাৎ হয়। সে সময়ে আপনি আনার ভাই-এব গুরু, তারু তাই নয় অসামাত এক ওক, এইমাত্র আপনাব সম্বন্ধে আমার ধারণা ছিল। একত্রে আমরা গেলান গেলাস মন থেয়েছিলান, এবং আপনার দিক থেকে ত্ব:সাহসের পরিচয় পেয়েছিলান। উপ্সাদের এক আ**শ্চর্য্য অভিজ্ঞতা** ভিন্ন আমার বিশেষ কোন ক্ষতি-বুদ্ধি হয়নি। **আপনাকে আমার** ভালও লাগেনি, মন্দ্র লাগেনি—আসলে আমার তথন আবেসের বালাই মোটে ছিল না। পরে ভাইকে খুশি করতে আপনার করেকটি উপকাস চেয়ে নিয়ে পড়েছিলাম, তার মধ্যে কয়েকটি ভালই লেগেছিল, কয়েকটি লাগেনি। সভিয় বলতে আমি তেমন পভুষা নই। কিন্তু গত ছয় বৎসবের মধ্যে, ঠিক কোন সময় থেকে বলতে পারব না, আপনার স্মৃতি আমার সমস্ত অন্তর কুয়াশান্তর করে রেখেছে একং দেবাত্রে একতলা থেকে উঠে আসার দমরে সিঁড়িতে যে ঘটনা ঘটেছিল, প্রিষ্কার সব আমার মানশ্চক্ষে প্রতিফলিত হছে। কেমন যেন মনে ভয় হয়, আমাব ভাগাপটে এ বাক্ষয়ত্ত্বে দাম অতুলনীয়। অন্তরের অন্ত:পূরে আপনার অভাব ফিরে ফিরে বাজে। জানি না একে প্রেম বলে কিনা এবং তারই **সম্ভাবনার** নিজেকে এত নি'দঙ্গ বোধ হয় যে আপন মনে কেঁদে আকুল হুই। তুনিয়ার আর সব পুরুষের চেয়ে **আপনি সম্পূর্ণ ভিন্ন।** "সাগ্ৰ-বিহন্ন" (The sea gull) উপ্সাসেৰ নায়িকা নীনাৰ মত উপত্যাসিকের মোহ আমায় অভিভূত করতে পারেনা। লেখকের প্রতি আমার আকর্ষণ কম। আমাকে বিছ্বী মছিলা বা এ ধরণের কিছু মনে করলে ভুল হবে। আপনার কাছে আমার একটি মাত্র ভিকা আছে, আমি সম্ভান চাই।

হয়ত বহুকাল আগে, যথন আমরা হুজনেই অবিবাহিত ছিলাম, তথন সাক্ষাং হ'লে আমাদের বিয়ে হ'তে পারত। হয়। আমার আজকের এই আন্তরিক যাতনার হাত থেকে মুক্তি পেতে পারতাম, কিন্তু এ-ও জানি যে আগুনার সঙ্গে আমার কোন দিনই বিবাহ হওয়া সম্ভব ছিল না। আপনার স্ত্রীব স্থান দ্বল করার চিন্তা মাত্র বর্বব্রতা। আমি আপনার বক্ষিতা হ'তে **এন্তড** আছি। (শব্দটি নিজের কাছেই অসহ। প্রেমিকা লিখতে গিরে মনে হ'ল বক্ষিতা লিখলেই আমাৰ মনেৰ ভাৰ স্পষ্টই হয়; এসৰ ব্যাপার পরিষ্কার হওয়াই বাস্থনীয়) শুনেছি রক্ষিতার বরাত মন্দ। লোকে বলে কাজ ফুরোলেই ছিন্ন কম্বার মত তাকে দূর করে দেওয়া হয়। পুৰুষ মানুষ সে যেমনট হোক ৰাটের কাছাকাছি এলেই ঘরমুখী হর। আমাদেও নিশিকাতা খ্লীটের বুড়ো মালীর সঙ্গে আমার নাসের আলোচনা শুনেছিলাম এ**ক**দিন। **তাদের** শেষ কথা হ'ল এই যে মেয়েদের কোনমতেই 'রক্ষিভা' হওরা উচিত নয়। তারা অবশু বারবনিতার কথা বলছিল, **আমাদের** ব্যাপার সম্পূর্ণ ভিন্ন।

আমার বিশ্বাস, আপনার কাছে আপনার কাজই ছনিয়ার সবচেয়ে বড় জিনিষ এবং আমায় যদি আপনার পছন্দ হয়, ঘনিষ্ঠতা ই'লে সেদিক দিয়ে স্মবিধা বই অন্তবিধা হবে না। আপনার স্ত্রীর পক্ষেও আমাদের সম্পর্ক মেনে নিতে কট হবে না। অভ্তুত শোনালেও আমাদের যুক্তিতে কোন ভুল নেই।

সমত্যা আপনার জবাব নিয়ে। আমাকে আপনার পছন্দ হয়, কি হয় না ? এ বিষয়ে আপনার মনের ভাব কি ? না জানি কি উত্তর দেবেন, কিন্তু একটা উত্তর যে চাই-ই। আপোর চিঠিতে ! লিখেছিলান স্বয়্বরা প্রণায়িনী, এবার লিখলাম মধ্যবয়নী রমণীর অন্তরের ব্যাকুলভার কথা। এখন মনে হছেছ আপনার জবাব না পেলে এই ব্যাকুলভাও কারণ অভাবে বাজ্যভিত হ'য়ে শুত্তে মিলিয়ে যাবে এবং আমাব জীবনের অবশিষ্ট কাল অভিশপ্ত হয়েই বাটবে। আপনার কাছ থেকে জবাব না পেলে আমার জীবন মক্ত্মিতে পরিণত হবে।

আপনার উপত্যাসে প্রেমের অভিযানের বর্ণনা করেন লোকে আপনাকে স্থাদরান আখ্যা দেয়, কিন্তু সন্তবতঃ সাধারণ বৃদ্ধির উপর আপনার আন্থা বেশী। ব্যক্তিগত ভাবে সাধারণ বৃদ্ধি আমার কাছে আন্থান আন্থান ইচ্ছা পুরণের হারাই জীবনকে সংপথে চালনা করা যায়। আপনার সন্তানের জননী হওয়াই আমার প্রকমাত্র কামনা। কোন কারণেই অত্য কোন ব্যক্তির সন্তান আমার কাম্য নর। এক্ষণে আপনার উপদেশের অপেক্ষা এর উত্তর জানা থাকলে আমায় জানিয়ে বাধিত করবেন। অত্যাহ করে সেই সঙ্গে আপনার মনের ঠিকানা দেবেন।

বৃষ্টি খেমে হাওয়া উঠেছে। এখন বেলা তিনটে। আমি আমাদের বরাদ সবচেরে ভাল মদের সন্ধানে বেরুবো। তৃথানি শৃষ্ঠার্ড 'রাম'-এর বোতল এবং এই চিঠিখানা পকেটে ভরে দশ মিনিটের মধ্যে গ্রামের পথে পাড়ি দেব। এই মদ আমার ভাই-এর নাগালের বাইরে নিজের জন্ম সরিরে রাখব। প্রতি রাতে গেলাসে ঢেলে একটু করে মদ আমি থাই। জানেন বোধ হয় 'সাকে' গেলাসে থাওয়াই রেওয়াজ।

একবার এথানে আহন না ?

নিষ্টার এম, সিকে লিখিত।

আজ আবার বৃষ্টি হয়ে গেল। বৃষাশা এবং বৃষ্টির এক বিজ্ঞী সংমিশ্রণ দেখা দিয়েছে। প্রভাহ আমি আপনার উত্তরের প্রত্যাদার থাকি, বাড়ার বাইরে পা দিতে ভরসা হয়না। কিছ এপর্যান্ত একটারও জবাব এলনা। কি মনে হয় আপনার? জানিনা এর আগের চিঠিতে শিল্পার বিষয় লিখে তুল করলাম কি না! বোধ হয় ভাবছেন আপনার মধ্যে প্রতিযোগিতার ভাব উদ্রেক করার উদ্দেশ্তেই এই প্রস্তাবের কথা লিখেছি। কিছ তারপর থেকে ব্যাপারটা ধানা ঢাপা পড়ে গেছে। এই তো থানিক আগে মা আর আমি এই কথা নিয়ে হাসাহাসি করছিলাম। কিছুদিন হল মা জিভের ব্যথায় কট্ট পাছিলেন কিছ নাগুজির সৌখিন চিকিৎসার কল্যাণে ব্যথাটা কমেছে এবং সম্প্রতি শারীর একরকম ভালই আছে।

করেক মিনিট আগে বারান্দার গাঁড়িয়ে দেখছিলাম কেমন করে দ্বাভন্তার ঝাণটার বৃদ্ধিধারা উড়ে ঘূরে মরছে আর সেই সঙ্গে আপনার মনের ছদিশ পাবার চেষ্টা করছিলাম, এমন সময়ে থাবার ঘর থেকে মারের ডাক কানে এল,—ত্ব জাল দিয়েছি, এদিকে এস।

দিনটা এমন দারুণ ঠাতা দেখে গৃধ একটু বেশীই গরম করলাম। ধোঁয়ালো ছুধে চুমুক দিতে দিতে শিল্পীর প্রদক্ত উঠল; আমি বললাম —তার সঙ্গে আমার মিলতেই প্রথমনা, কি বল মা ?

মানের শাস্ত স্বর-সে কথা সতি।

একে তো আনি বেয়াড়া নেয়ে ! তাছাড়া শিল্পীদের ওপর আমার যথেষ্ট আকর্ষণ আছে, এদিকে ভদ্রলোকের রোজগারও ভাল, সব দিক দিয়ে বিচার করলে এ যোগাযোগ নেহাং নিশ্দের নয়। কিন্তু তবু অসম্ভব।

মা হেসে ফেললেন—কান্ধুকো, তুমি ভারী হুষ্টু নেয়ে। যদি অসম্ভবই জানতে তবে কেন সেদিন ভদ্রলোকের সঙ্গে শুত গোসগল্প জুড়ে দিলে ? তোমার মতিগতি বোঝা দায়!

বা: কথা বলতে মজা লাগছিল যে। আরও অনেক কথাই বলা যেত। ভূমি তো জান—কথা কওয়ার লোক পেলে আমার জ্ঞান থাকে না।

না কাউকে ছেড়ে কথা বলা ভোমার স্বভাব নয়। কা**ভূ**কো, তুমি বড জেলী মেয়ে।

আজ মায়ের মেজাজখানা খ্ব ভাল আছে। গত কাল আমি মাধার ওপর চুড়ো করে চুল বেঁধেছিলাম, দেদিকে চোধ পড়তে বললেন—যাদের চুল কম, তাদের জন্ম এইরকম চুল বাঁধার কায়দা। তোমার মাধায় এই চুড়ো অসম্ভব জমকালো দেখাছে। একখানা ছোট সোনার টায়রা হলেই খুলত ভাল। এমন করে না বাঁধলেই পারতে।

মা, তুমি আমায় নিরাশ করলে। একবার তুমিই তো বলেছিলে থে, আমার এত স্থশন ঘাড় ঢেকে রাথার কোন মানে ২য় ন:। বলনি?

হাা, সেই রকমই যেন মনে পড়ছে। আমায় কেউ প্রশংসা করলে তার একটা কথাও আমি ভূলি না। তোমারও মনে আছে দেখে নিশ্চিস্ত হলাম।

সেদিন সেই ভক্রলোক নিশ্চয় তোম'র প্রশংসা করেছিলেন। হাঁ তা করেছিলেন। সেইজন্মেই তো অত সহজে তাঁকে হাতছাড়া করতে চাইনি। তিনি বলেছিলেন বে, আমি তাঁর পাশে থাকলে তিনি আবার মতুন কাজে উৎসাহ পাবেন। না আর বেশী বলব না। শিল্পী যে পছন্দ করি না তা নয়। তবে হামবড়া ভাব আমার অসহ লাগে।

নাওজির মাষ্টার কেমন লোক ?

আমার শরীরের ভেতর দিয়ে তিমেল শ্রোত নেমে গেল—ঠিক জানি না, তবে নাওজির মাষ্টারের আর দৌড় কত হবে! ওনেছি ভক্তলোকের গায়ে 'অনাচারী' লেখা তকমা বুলছে।

তকমা ? মায়ের চোথে কৌতুকের ছারা থেলে গেল—ভাবী মজার কথা তো ! তকমাই যদি রইল তবে আর কিসের ? এ যেন বেড়ালের গলায় ঘণ্টা বাধার মতই মিষ্টি। তকমাহীন অনাচারীকেই ভর বেশী।

कि जानि।

আমার সর্বাস জুড়িয়ে সানন্দের জোয়ার নামল। মনে হন

দেহটা ধোঁরার মত হাজা হরে আকাশে উত্তে বাচ্ছে ব্যক্তন ব্যাপারটা ? কিলে আমার আনন—এ বদি আপনি না বোঝেন তবে আমি আপনাকে আঘাত দিয়ে বোঝাৰ !

আপনি কি কথনও এথানে আসবেন না ? আমি নাওজিকে বলব আপনাকে ধরে আনতে। অবগ্য তাকে বলা আমার পক্ষে অশোভন হবে ঠিকই। সবচেরে ভাল হত হঠাং যদি আপনি এথানে উপস্থিত হতেন, বেন আপনার একটা থেরালের ব্যাপার। নাওজির সঙ্গে এলেও ক্ষতি ছিল না কিন্তু তবু নাওজি টোকিওতে থাকতে থাকতে আপনি একা চলে এলেই সবচেরে ভাল হর। এথানে থাকলে নাওজি আপনাকে দথল করে বসবে, আপনাকে ওসান্ধির ওথানে ল্লাণ থাওরাতে নিয়ে যাবে ব্যস, তাছ'লেই সব মাটি।

বংশাম্ক্রমে আমাদের পরিবারে শিল্পিপ্রীতি বর্তমান।
কিওটোতে আমাদের আদি বাসায় কোরিন (Korin) বহু বংসর
কাটিয়ে অনেক স্থন্দর ক্লন্তর ছবি এঁকে গেছেন। স্থতরাং আপনি
এলে মা থ্ব খুশি হবেন, আমি জানি। ওপর তলায় বিদেশী
প্যাটার্শের বরটিতে আপনার থাকার ব্যবস্থা করে দেব। দয়া করে
আলো নেবাতে ভূলবেন না। মোমবাতি হাতে আমি অন্ধকারে
সিঁভি বেয়ে উঠব। পছন্দ হল না ? বাড়াবাড়ি হয়ে যাছে না ?

অনাচারী মামুষ আমি ভালবাসি, বিশেষতঃ যাদের নামের সঙ্গে কলক্ক জড়ানো আছে। আমি নিজেও অনাচারী হ'তে চাই। আমার বিশ্বাস, এ ছাড়া বাঁচবার আর কোনও রাস্তা আমার নেই। সার। জাপানের মধ্যে আপনি যথেচ্ছাচারিতার উদাহরণস্বরূপ। নাওজির মুখে ওনেছি, লোকের ধারণা আপনি অতান্ত নোরো, কদাকার, সবাই আপনাকে ঘুণা করে এবং মাঝে মাঝে আফ্রমণ করতেও ছাড়ে না। এই সব ওনে আপনার প্রতি আমার আকর্ষণ বিশুল বেড়ে গেছে। আপনার মত ব্যক্তির গুণগুছিরল পরিবেটিড হওয়া বিচিত্র নও। কিন্তু এখন থেকে আপনি শুধু আমারই। এনা ভেবে আমার উপায় নেই। আমার সঙ্গে থাকলে কাজে আপনি নতুন স্বাদ পাবেন। ছেলেবেলা থেকে অনেকের মুখে শুনেছি, আমার সঙ্গ মানুষকে তার ছঃখ ভুলিয়ে দেয়। জীবনে কাঙ্গর অনাদর পাইনি। প্রত্যেকে একমুখে বলেছে ভাল মেরে। এই কারনেই মনে ছয় আমার অপছল করার সাধ্য আপনারও নেই।

একবার আপনার দেখা পেলে কি ভালই হত। আর আমার উত্তর বা কোন কিছুরই প্রয়োজন নেই। সোজান্তজি দেখা করতে নচাই। সবচেরে ভাল হ'ত যদি টোকিওর বাসার গিরে দেখা করতে পারতাম; কিন্তু মারের আমি একমাত্র নার্স পরিচারিকা—কাজেই তাঁকে ছেড়ে যাওয়া আমার পক্ষে অসম্বর। পারে পড়ি একবার এখানে আল্পন। তথু একবার আপনার সঙ্গে সাক্ষাং হওয়া আমার একান্ত প্রয়োজন। তথনই আপনি আমার সব কথা বৃষতে পারবেন। অধ্ব প্রান্তে অস্পাই রেখাগুলি নজর করে দেখবেন। শতাব্দীর অভিশাপবাহী বলিবেখাগুলি দেখে যান, ভাষার চেয়ে মুখের ভাবে আমার মানসিক অবস্থা অনেক বেশী বৃষতে পারবেন।

প্রথম চিঠিতে আনার অন্তবে চিত্রিত এক রামধমূর আভাস

व्यप्तित लावना व्याभनावरे जना

(वा(ब्रालीत

আপনার লাবণাময় প্রকাশেই আপনার সৌন্দর্যা। কিন্তু রোদ আর শুক্ষ হাওয়া প্রতি-দিন আপনার সে মাধুরী মান করে দিচ্ছে। ওর্ষধিগুণযুক্ত সুরভিত বোরোলীন এই করুণ অবস্থার হাত থেকে আপনাকে রক্ষা করবে। এর সক্রিয় উপাদানগুলি আপনার ছকের গভীরে প্রবেশ করে শুকিয়ে যাওয়া স্নেহজাতীয় পদার্থ ফিরিয়ে এনে আপনার ছককে মখমলের মত কোমল ও মস্থা কোরে সজীব ও ভারুণোর দীপ্তিতে উজ্জ্বল ক'রে তুলবে। আবেশ-লাগা সুরভিযুক্ত বোরোলীন ক্রীম মেথে আপনার ছকের সৌন্দর্যা রক্ষা করুন আর নিজেকে রূপোজ্জ্বল করে তুলুন।





পরিবেশক: দ্ধি, দত্ত এণ্ড কোং, ১৬, বনফিল্ড লেন, কলিকাডা-১

বিবেছিলাব। জোনাকীর কীণ জালো অথবা সুব্দু দিগজের
মক্তরাজির আলোকসজ্জাতে দেই রামধন্ত গঠিত হরনি। তেমন
জন্ত অথবা ব্যবধানসাপেক হ'লে আমার এমন বরণা ভোগ
করতে হ'ত না এবং হয়ত কালে আপনাকে তুলেও বেতাম।
জামার সভরে নিহিত এই রামধন্ত অগ্রিশিখার রচিত। অনুভূতির
জীব্রভা আমার হুদয় দয় করে। জাফিং ফ্রিসে গেলে আফিংথার
রে য়াতনার হুটফটিয়ে মবে, তাও বোধ হয় এত অসভ্থ নয়।
জামি নিশ্চিত জানি, এ আমার ভূল নয়, আমি কোন অভায
কর্মি না কিল্প মাঝে য়াঝে নিজের মনের তাড়নার নিজেই
চুল্লে উঠি, এ আমি ঝি অসভ্যের গাড়িতে নির্বোধের মত এগিছে
চুলেছি। প্রার্থ অবাক হয়ে ভাবি, হয়ত আমি পারাল হয়ে
গোছি। বাই হোক, এখনও মাঝে মাঝে মাঝা ঠাগা রেখে কাজের
ভূথা ভাবতে পারি। দয়া করে একবার পুরু এথানে আস্থান, বে
কোনও সমরে এলেই হবে। এখানে আপনার প্রতীক্ষা করে বসে
ভাবিত কোথাও যাব না। দয়া করে আমার বিধাস কর্মন।

আর একবার ভধু দেখুন এবং তারপরেও যদি আমায় অপছন্দ হব তবে অপকোচে বলুন। আপন হাতে আলা আমার হাদয়ের এই বঞ্চিশিখা আপনি স্বেচ্ছায় নিবিয়ে দিতে পারেন। নিঃদঙ্গ প্রচেষ্টার এ শিখা নির্বাপিত করা অসম্ভব। আমি জানি আমাদের সাকাং হলে, ভধুমাত্র সাকাং হলেই আমি বেঁচে ৰাব। হার ! দি টেল অফ গেঞ্জি (The tale of Genji)নামক উপস্থাসের দিনগুলি যদি ফিবে পাওয়া যেত ! এর পর আমি যে কথা বলতে চাই, তার মধ্যে নৃতনত্ব কিছু নেই। কিন্তু আজ, উ:! আপনার পালে ঠাই পাবার, আপনার সম্ভানের জননী হবার শাসনা कि ছব' স্থিই না হয়ে উঠেছে! আনার এ চিঠিগুলি পড়ে যদি কেউ হাসে, ভবে বুঝতে হবে সে ব্যক্তি নারীর বেঁচে থাকবার প্রচণ্ড **প্রাসকে, নারী**র জীবনকে ব্যঙ্গ করছে। জাহাজঘাটের চাপা ছাওয়ার আমার দম বন্ধ ২০য় আসছে। আমার মন চায় উন্মুক্ত সাগরবক্ষে পাল তুলে ভেসে ষেতে—ঝড় আসে আস্থক, তাতে ক্ষতি নেই কিছু। ওটিরে-ভোলা পাল অপরিষ্কার হ'তে বাধ্য। যারা আমার উপহাস করে তাদের মন অপরিচ্ছন্ন। তাদের সাধ্য কি ভাল কিছু করার ?

নারীজীবনের কলঙ্ক। কিন্তু এক্ষেত্রে ভুক্তভোগী শুধু আমি। কি ৰাতনা বিবে, বুঝিবে সে কিসে, কভু আলীবিবে দংশেনি যারে। আগন্ত ভবে, অপরিছার পাল নামানোর মন্ত বাইবে থেকে আমার কাজের সমালোচনা করার অপচেট্রা অর্থহীন। আমার চিস্তাধারার বিশ্লেষণ করার দায়িদ, অপরের যাড়ে ভুলে দেবার আদৌ স্পৃহা আমার নেই। চিস্তার আমি ধার ধারি না। জীবনে শাস্ক্রবাক্য বা দর্শনের ভিত্তিতে কাজ আমি করিনি।

আমার বিখাস, ছনিয়া যাদের ভাল বলে শ্রন্ধা করে, তারা স্বাই
যিথাবাদী, ভণ্ড! এ ছনিয়ার ওপর আমার আদৈ আস্থা নেই।
আমার একমাত্র স্থাদ স্পরিচিত এক ব্যক্তিচারী পুরুষ। তকমাধারী
ব্যক্তিচারী! একমাত্র এই ক্রশের উপর আমি আত্মবিসর্জন দিছে
প্রস্তা। দশ হাজার মান্ত্র ক্রামায় সমাসোচনা করলেও জানি
তাদের মুখের ওপর এই প্রশ্ব ছেড়ে দিতে পারিকেপাণের হ্বরুণ
গোপন রাথা আরও জনেক বেশী মারাস্থাক নয় কি ।

व्यानंत किन् १

প্রেম অর্থহীন। আপনাকে মুক্তিসক্ষত কারণ দেখাতে গিমে বেন বাড়াবাড়ি করে ফেলেছি। মনে হচ্ছে আমার ভাই-এর বুলি পাথীপড়া আওড়ে গৈছি এতক্ষণ আমার একমাত্র বক্তব্য এই বে, আমি আপনার পথ চেয়ে রইলান। আপনাকে আর একবার দেখতে চাই। ব্যস্ত পর্যন্ত।

শুধু অপেক্ষা করে থাকা। আমাদের জীবন সুখ হু:খ, ক্রোধ
আদি বহু আবেগে পরিপূর্ণ কিন্তু জীবনের শতকরা এক ভাগ সময়
যদি এদের নিয়ে কাটে, বাকী নিরানক্র্ই ভাগ আশায় আশায়
কেটে যায়। সেই পরম ক্ষণটির অপেক্ষা করে আছি। মনে হয়
বাঞ্চিতের পদধ্বনিতে ব্কের ভেতরটা দলিত, নিম্পেষিত
হচ্ছে। সব শৃশু! হায়, জাবন কি বিশময়! বৢথা জন্ম—এই
চিনস্কন সত্য বাস্তবের ভেতর দিয়ে বার বার প্রমাণিত হয়ে
আসতে!

এই ভাবে প্রাত্তা সকাল থেকে রাত অবধি পথ চেয়ে চেয়ে নিরাশ হই। মনে মনে ভাবি এই যে আমি জন্মছি, বেঁচে আছি, মানব-জীবন আছে, ত্নিয়া আজও টিকে আছে—এ নিয়ে যদি সুখী হ'তে পারতাম।

যে ইনৈতিক দায়িম্ববোধ আপনার পথে অন্তরায়, তাকে কি ঝেডে ফেলতে পারেন না ?

এম, সি। (মাই শেখভ-এর আঞ্চকর নয়। সাহিত্যিকের প্রেমে আমি পড়িনি। মাই চাইন্ড)। [ক্রমশ:।

অনুবাদঃ কল্পনা রায় ।

পরাজিত

ত্রীসম্ভোষকুমার দাশগুপ্ত

বাস্তব ছনিয়ার হার— এই শুধু জানলেম : শুদর বিলিয়ে দিয়ে ব্যথা শুধু জানলেম। ভালোবাসা দিয়ে কত
আপন মনের মত
প্রাপের বীণার তারে আহা ত্মর বাঁধলেম।
সে তার তো ছিঁড়ে গেলো, তাই তুধু কাঁদলেম।

প্রেমের প্রদীপথানি স্বতনে আমি আনি বড়ের হাত থেকে বাঁচাতে বে চাইলেম, নিবে গেলো তবু শিখা আমি হারদেম।



মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধী ও নেতাজী স্থভাষচন্দ্র বস্ত্র মধ্যে পত্র-বিনিময়

নেভাঞীর পত্র-৭

জিয়ালগোড়া পো: জেলা মানভূম, বিহার ১৩ই এপ্রিল, ১৯৩৯।

লিয় মহাস্থাত্তী,

ভাবিয়াছিলাম ১ • ই এপ্রিলের পত্রই আমার শেষ পত্র ছইবে কিছ তাহা হইবার নর। আমি থ্ব সকালে উঠিমছি। নিজাদেবী আমাকে ত্যাগ করায়, নিস্তব্ধ উধার আলো-আঁবারির মধ্যে আমাদের উভয়ের সমস্যাগুলি সম্বন্ধে চিস্তা করিতে লাগিলাম। তারপর উভয়ের পত্রগুলি পুনরায় আগ্রন্ত পড়িয়া দেখিলাম যে, কয়েকটি বিষয়ে আরও ব্যাগ্যা আবশ্যক।

৩-শে মার্ক্সের পত্রে আপনি বলিয়াছিলেন যে, গভ ১৫ই ফেব্রুগারী সেবাগ্রামে আমাদের উভয়ের মধ্যে সাক্ষাংকারের সময় আমরা স্বীকার করিয়াছিলাম যে, মূল বিধ্যুগুলিতে আমাদের মধ্যে মতভেদ আছে। আলাপ-আলোচনার সময় আমরা ব্রিতে পারিয়াছিলাম যে, আমাদের মধ্যে কোনও কোনও বিষয়ে মতভেদ মাছে কিন্তু এ-বিষয়ে আমি জোর করিয়া বলিতে পারি না যে, সেই মতভেদগুলিকে মূলবিষয়ে মতভেদ বলিয়া স্বীকার করা উচিত কি না। ষ্মাপনাৰ পত্ৰগুলিতে যে যে বিষয়ের উল্লেখ করিয়াছেন ভাষাদের অধিকাংশই সে-সময় আপুনি উল্লেখ কবিয়াছিলেন। উদাহুরুণস্বরূপ হনীতি, হিংসাত্মক মনোভাব ইত্যাদি সম্পর্কে আপনার অভিমত প্রকাশ করিয়াছিলেন; স্বরাজলাতের জন্ম চরমপত্র দান এবং জাতীয় সংগ্রাম স্তরু সম্পর্কে আমার অভিমতের বিরুদ্ধে কঠোর মস্তব্য ক্রিয়াছিলেন। আপনার মতে, তথন অহিংস গণ-সাগ্রামের উপযুক্ত শাকোওয়া ছিল না। কিন্তু এই বিষয়ে মততেদগুলি কি মূলবিষয়ে এবং সেজন্য কি একযোগে কাজ করার সকল আশাই ছাড়িয়া দেওয়া ৰ্ক্তিণ্কু ? কৰ্মসূচী সম্পৰ্কে একথা বলা যায় যে, উহা স্থির করার ভার কংগ্রেসের। ব্যক্তিগতভাবে আমরা আমাদের অভিমত এবং পরিকল্লনা প্রকাশ করিতে পারি কিন্তু তাহা গ্রহণ বা বর্জন করার ক্ষ্যতা কংগ্রেসেরই। স্বরাজলাভের জন্ম চরমপত্র দানের এবং জাতীয় শ্রামের ভিত্তিতে আমার মূল প্রস্তাবটি ত্রিপুরী কংগ্রেস অগ্রাস্থ ^{ক্}রিয়াছিল কি**ন্ত** এজন্ম আমার কোনও অভিযোগ নাই। গণতান্ত্রিক ^{ব্যবস্থার} মধ্যে এধরণের বিলম্ব স্থাভাবিক। আমি এথনও বিশ্বাস ৰবি দে, আমি ঠিক কথাই বলিয়াছিলাম এবং কংগ্ৰেসও একদিন ^{তাচা} বৃদ্ধিতে পারিবে। জাশা করি, তথন অত্যস্ত বিলম্ব হইলা ^{বাইবে}না। এথন যদি স্বীকার করিয়া লওয়া যায় যে, উপরিউক্ত বিদ্যে মতভেদ আছে, তাহা হইলেও একবোগে কাজ করার অক্ষমতার

কারণ কি ? এই মতভেদগুলি সহসা আভিকেই গুড়াইয়া উঠে নাই।
উচারা কিছুকাল যাবত আছে এবং তাহা সন্মেও আমরা পদ্দশবেদ্ধ
শহিত সহযোগিতা করিয়াছি । এ মতভেদগুলি বা অনুরূপ মতভেদ
ভবিষ্যতেও থাকিবে কিন্তু তাহা সন্মেও আমাদের এরপই ভগন
করিতে হইবে (সম-উদ্দেশ্যের করু সহযোগিতা করিতে চইবে)।

অমুগ্রহ করিয়া অরণ কক্ষন যে, সেবাগ্রামে প্রায় এক ঘণ্টা ধরিরা আমরা আলোচনা করিয়াছিলাম একটি মাত্র বিষয় লইয়া—সর্মালনীর বনাম একদলীয় কার্য্যানির্কাহক সমিতি গঠন। কিন্তু তথন আমরা ঐ বিষয়ে আমাদের মতভেদ স্বীকার করিয়া লইরাছিলাম। তিন ঘণ্টাব্যাপী আলোচনাব শেবের দিকে আনি বলিয়াছিলাম যে, সদার প্যাটেল এবং অক্যাক্সের সংগ্রে যথন আমি সাক্ষাং করিব তথুন তাঁহাদেব সহযোগিতা আদায়ের জন্ম শেষ চেষ্টা করিয়া দেখিব। সম্ভবতঃ আনি যদি অস্তম্ব না হইতাম এবং গত ২২শে ফেব্রুয়ারী ওয়ার্কিং কমিটির সভাধ াদ আমাদের সাক্ষাংকার হইত, তাহা হইলে একবোগে কাজ করা অপেক্ষাকৃত সহজ্ব হইয়া উঠিত।

জাপনার ৩০শে মার্চের পত্রে জাব একটি মস্তব্য আছে যাহার সহিত আমি একমত নই। উহা ভাল করিয়া চোখে পড়ে নাই বলিয়া ইতিমধ্যে সে সম্পর্কে উল্লেখ করিতে পারি নাই। আপনি মন্তব্য করিয়াছিলেন যে, নিখিল ভাবত কংগ্রেস কমিটির অধিকাংশ সদস্য যদি আমার নীতি সমর্থন করে ভাচা ১ইলে, যাঁচাবা আমার নীতিতে বিশ্বাসী, একমাত তাঁহাদের লইয়াই আমার পক্ষে ওয়ার্কিং কমিটি গঠন করা কর্ত্র। আমাদের পক্ষের পরিষ্কার অভিমত এই যে, এ, আই, সি, সিতে অধিকাশ সদক্ষের সমর্থন আমরা পাইলেও সর্বনলীয় ওয়ার্কিং কমিটি বা কমপ্রবিষদের বিশেষ আবশুকতা আছে। কারণ, উক্ত পরিষদেব গঠন যথানমূব কংগ্রেসের সাংগঠনিক প্রতিধ্বনি হওয়া প্রয়োজন। কংগ্রেদের অধিকা শ সদক্ষের সমর্থন উহার পশ্চাতে থাকা চাই। ভারতের মধ্যে এবং বিদেশে আজ আমরা যে পরিস্থিতির সম্মুগীন ২ইলাছি ভাগতে আমাদের মতে, একদলীয় ক্রপরিষদ গাঠন নিত্তি ভ্রমাত্মক। আমাদের জাতীয় সংগ্রামের ক্ষেত্র-প্রসাবের সন্ম আসিয়াছে। কর্মপরিষদকে—ওয়াকিং কমিটিকে সঙ্কীর্ণ, দলীয় ভিত্তিতে গঠন করিয়া আমরা কি সে কার্যা স্থক করিতে পারি ?

হুনীতি সম্পর্কে সাধারণ ভাবে আমর। আপনার সহিত একমত বদিও আমি মনে কবি যে, ঐ বিষয়ে আপনার আশলা মাত্রা ছাড়াইয়া গিয়াছে। আমি জানি না, সমগ্র ভাবে ভারতের কথা বিচার করিলে কেছ বলিতে পারেন কি না যে, হুনীতি বৃদ্ধি পাইয়াছে। সে যাহা হুউক, আমি মনে করি যে হুনীতি বৃদ্ধি পাইলেও, আমরা এমন অকম

ছইনা পড়ি নাই বে, জাতীয় সংগ্রাম স্কুক্ত করা আমাদের ধারা সম্ভব ছইবে না। তুর্নীতির কারণ অন্ত্যদ্ধান করিতে গিয়া আমাদের বিবেচনা করিয়া দেখিতে ছইবে যে, জাতীয় সংগ্রাম মূলতুবী রাখা এবং সরকারী পদাধিকারের ধারা বিলাস-জীবনের আধাদন এই চুর্নীতির জ্ঞ প্রধানত: দায়ী কি না। আমার পূর্ববর্তী পত্রে মেমন বলিয়াছিলাম এখনও তেমনই বলিতেছি যে, আরও আত্মত্যাগা ও আত্মনিগ্রত্রে আহ্বান প্রতিষ্থেকরূপে কাজ করিবে এবং সমগ্র জাত্তিকে উচ্চতর নৈতিক ক্তরে উদ্ধাত করিবে।

৬ই এঞিল বাজেন বাবু অনুগ্ৰহ করিয়া আমার সহিত দাকাং ক্ষরিয়াছিলেন। সাধারণ ভাবে শ্রমিক-সমস্তা লইয়া আমরা আলোচনা **স্বরিবার পর কংগ্রেদের ব্যাপার নইয়া আলোচনা করিয়াছিলাম।** মধন আমি আপনার সৃষ্ঠিত পত্রালাপ ক্রম্ম করি তথন আশা **ষ্ট্রিয়াছিলাম যে, এই ভাবেই (পত্রালাপের মাধ্যমে) ওয়ার্কিং** কমিটি গঠন সমস্তার সমাধান ছইবে এবং বড বড সমস্তাগুলি আমাদের উড়য়ের পরবর্ত্তী সাক্ষাংকারের জন্ম রাথিয়া দেওয়া হইবে। কিছ পত্রালাপ চলিতে থাকাকালে আমি বৃঞ্চিতে পারিলাম বে, উহা কোনওর[†] সমাধানের দিকে আমাদিগকে লইয়া বাইতেছে না। বখন রাজেন বাব দেখা করিতে আসিরাছিলেন তখন, ডাক্তারের পরামর্শ অগ্রাহ্ম করিয়া আপনার সহিত দেখা করিবার জন্ম প্রাণপণ চেষ্টা করিরার কথা ভাবিতেছিলাম। কাবণ, আশা ছিল যে, উহার ফলে আমাদের মধ্যে একটা মীমাণ্যা হট্যা যাট্রে ৷ স্তরাং আমার অফুবোধে সাক্ষাংকারের জন্ম, রাজেন বাবু আপনাকে বিভুলা হাউসে টেলিফোন করিয়াছিলেন। রাজেন বাব আমাকে উৎসাহবাগ্রক কোনও সংবাদ না দেওয়ায় আমি ভাবিয়াছিলাম যে, আর একবার আমি চেট্টা কবিয়া দেখিব। স্বতবাং বিকালের দিকে আমার ভাক্তার আবার বিডলা হাউসে টেলিফোন করেন এবং আমিও একটি একপ্রেস টেলিগ্রাম পাঠাই। উভয়ের উত্তরে আপনি জানান যে, রাজকোটের ব্যাপারে আপুনাকে তংক্ষণাং দিল্লী ছাড়িয়া যাইতে হুইবে। তথন আমার মনে হইয়াছিল এবং এখনও মনে হইতেছে যে, ভারতীয় জাতীয় কংগ্রেসকে জলাঞ্জলি দিয়া সম্ভবতঃ উহার চরম ক্ষতিসাধন করিয়া, রাজকোট সমসা লইয়া আপনি মাতিয়া উঠিয়াছেন। আমার জায় লোকের নিকট কংগ্রেসে বিষয়সমূহ—বিশেষ কবিয়া এই সঞ্চমুহুর্ত্তে—রাজকোটের আহ্বান অপেকা সহস্রগুণ মূল্যবান। ইহা আপনার ভাষা উচিত ছিল যে, তার মরিস গায়াবের রোয়েদাদের পর, একা সর্লার পাাটেলই রাজকোট পরিস্থিতিকে সামলাইতে পারিতেন, দার্ঘদিন সেথানে আপনার উপস্থিতির কোনও প্রয়োজন ছিল না। যাহা হউক এখন আৰু উহা লইয়া খেদ কবিয়া লাভ নাই; কারণ, ঐ বিষয়ে আপনি সিদ্ধান্ত গ্রহণ করিয়াছেন এবং তদমুসারে কার্য্য করিয়াছেন।

৭ই এপ্রিলের এক ভারবার্ত্তার আপনি শরংকে বা অক্স কোনও প্রতিনিধিকে ক্রন্ত রাজকোটে ধাইয়া আপনার সহিত সাক্ষাং করিবার পরামর্শ দিয়াছিলেন। আমার বিশ্বাস, উহা কার্য্যকরী প্রস্তাব নহে। আপনার সহিত সরাসরি পত্রালাপে যদি সম্ভোবজনক ফল না পাওয়া যায় ভাচা হইলে প্রতিনিধির মাধ্যমে কথাবার্ত্তার কি ফল হইবে—বিশেষ করিয়া সমস্তা যেথানে কঠিন ধবং গুরুত্বপূর্ণ। না, আমার মনে হয়, রাজকোটে প্রতিনিধি পাঠাইলে অবস্থার উন্নতি ছইবে না। আমাদের উভয়ের মধ্যে স্বাস্থি আলোচনা ছইলে তাছা সম্ভব ছইত।

আপনার দশ তারিথের পত্র এইনাত্র হস্তগত হইরাছে এবং উহার উপর আমাকে করেকটি মস্তব্য করিতে হইবে। তঃথের সভিত বলিতেছি, অধিকাংশ বিষয় সম্পর্কে আপনার উত্তর আমার নিকট নৈরাপ্তকর মনে ছইতেছে। আপনার সমগ্র পত্রথানি নিরাশার তাবে তরপুর। আমার পক্ষে ঐরপ মনোভাব সমর্থন করা সম্ভব নয়। সক্ষোচের সহিত বলিতেছি, আপনি ব্যক্তিগত বিষয়ের উপর অত্যাধিক জোর দিয়াছেন। আমাদের দেশপ্রেমে আপনার এই বিশাস যথেষ্ট থাকা উচিত যে, জাতীর সন্ধট যথন দেখা দিয়াছে তথন এই সকল বিষর অতিক্রম করিতে আমরা সমর্থ হইবই। যদি আমরা কংগ্রেদের মধ্যে ঐক্য সম্পাদন করিতে না পারি, তাহা হইকে সারা দেশের মধ্যে বৃহত্তর ঐক্য কি করিয়া সম্পাদন করিব ?

পন্ধ-প্রস্তাব সম্পর্কে আপনি প্রকৃতপক্ষে আমাকে কোনও উপদেশই দেন নাই।

দেশীয় রাজ্যগুলি সম্পর্কেও যদি আপনি নৈরাশ্রের মনোভাষ পোষণ করেন, ভাচা হউলে ঐ রাজ্যগুলির জনগণের দায়িংশীল সরকার এবং পৌরস্বাধীনতা কি করিয়া আদায় করিবেন ? মোটের উপর আমাদের একমাত্র অস্ত্র হইতেছে অভিণ্স গণ-সংগ্রাম আর তাহা হইতে বঞ্চিত হইলে আমাণিগকে কেবলমাত্র মনাপত্তী নীতি গ্রহণ করিতে হউবে অথবা আপনার খাপছাড়া আগ্রনিপীড়নের উপর নির্ভব করিতে হইবে। আপনি লিখিয়াছেন যে, যেখানে যেখানে আপনার প্রভাব আছে, সেখানেই প্তাাগ্র আন্দোলন বন্ধ কবিয়া দিয়াছেন। আমরা জানি রাজকোট আপুনি উঠা করিয়াছিলেন এবং ভাহার পর নিজের স্কন্ধে সম্পূর্ণ দায়িত্ব লইরাছিলেন। আপনার জীবনও উহার জন্ম বিশঃ কবিয়াছিলেন। কি আপনাব দেশবাসীর পক্ষে, কি রাজকোট বাজেন অবিবাসীর পক্ষে ঐ কাজ কি কলাণিকর হটয়াছে ? আপনার জীবন আপনার ব্যক্তিগত সম্পত্তি নহে যে যথন ইচ্ছা আপনি ভাছা বিপা করিয়া তলিবেন। রাজকোট অপেকা বুহুত্তর ক্ষেত্রে আপনার নেতৃ^{ত্তেই} জন্ম দেশবাসী ন্যায়তঃ দাবী জানাইতে পারে। রাজকোটবাসিগ সম্পর্কে একথা বলা যায় যে, তাহারা যদি নিজেদের আয়তা⁵ ও চেষ্টা ব্যতিরেকে একমাত্র আপনার আত্মনিগ্রহের ফলে স্বরাছ লাং করে, তাহা হুইলে বার্জনৈতিক দিক হুইতে তাহারা অনুন্নতই থাকিয় যাইবে এবং আপুনার দ্বারা লব্ধ স্বরাজ রক্ষা করিতে পাবিবে না পরিশেষে বক্তবা এই যে, যথন আমাদিগকে বছ সংগ্রামফেরে ভাসং সংগ্রাম চালাইতে **২ইবে, তথন কত বাব আপনি আপনা**ৰ ন্^{লাকা} জীবন এই ভাবে বিপন্ন করিবেন ?

রাজনৈতিক এবং অর্থনৈতিক ক্ষেত্রে আমাদের উভরের সহনোগিত সম্পর্কে আপনি নিরাশা পোষণ করিতেছেন। আপনি অর্থনৈতির ক্ষেত্রেরও উল্লেখ করিয়াছেন, কারণ আপনি ভারতের জন্ম আমাদ শিল্পোলয়নের পরিকল্পনা সমর্থন করেন না, যদিও আমন শিল্পপ্রসারের সহিত উপযুক্ত কুটিরশিল্পের উল্লয়নের কথা বিলিয়া আসিতেছি। রাজনৈতিক মতভেদ সম্পর্কে বক্তব্য এ বে, আমি এখনও বুঝিয়া উঠিতে পারিতেছি না, কো গ্রন্থতে কাষ্ট্র কার্যান মৌলিক এবং ঐকোর ও সক্তব্যক্ত কার্যার পক্ষে ত্রন্থিক মনার বাধা বলিয়া মনে করিতেছেন। আপনি বলি এখনও মনে করেন যে, এইরপ কার্যা (একযোগে কার্যা) অসপ্তব, তাহা ক্রন্তান কংগ্রেসের ভবিন্যং—অক্তব্যংশক্ষে অদ্ব ভবিন্যং অভ্যান্ত অন্ধানার মাধ্যমে বিভেদ জোড়া লাগিবে এবং একটা ভীবণ জাতার ত্র্বির এড়ান সম্ভব চইবে।

আপনি যে অসম্ভষ্ট ব্যক্তিগুলির কথা উল্লেখ করিয়াছেন তাহারা ভাল, মন্দ বা উদাদীন যাহাই হউক না কেন, উহাদের অন্তিষ্থ পাকাপাকি ইইয়া গিয়াছে। অতএব এখন যদি একগোগে কাজ করা সম্ভব না হয়, তাহা হইলে কোনও কালেই তাহা সম্ভব হইবে না। উহাব অর্থ এই যে, ভবিষ্যতের গঠে আমাদের জন্ম নিদাকণ নৈরাপ্ত বাতাত আর কিছুই নাই। যৌননোচিত বলিষ্ঠ আশাবাদ এবং ভাবতেব উজ্জল ভবিষাং সম্পর্কে অনির্ধাণ বিশ্বাস লইয়া আমরা কি ক্রিয়া এই পরিস্থিতি স্থাকাব করিয়া লইতে পারি ?

করেকটি পত্রে আপনি আমাকে সহর নাঁতি নির্দ্ধারণ এবং কর্মসূচী দ্বিদ্ধা করিয়া তাহা নিথিল ভারত কংগ্রেস কমিটির সম্মুখে উপস্থাপিত করিতে পরানর্শ দিয়াছেন। কিন্তু কংগ্রেস আমাকে এক বিশেষ পদ্ধতিতে ওরার্কিং কমিটি গঠন করিতে নির্দেশ দিয়াছেন এবং তাহাই আমার বর্তুমানের কর্তুর্য। ত্রিপুরী কংগ্রেসে রাষ্ট্রশতির ভাষণে আমি আমার কর্মসূচী পেশ করিয়াছিলাম কিন্তু তাহা গৃহীত হয় নাই। ওয়াকিং কমিটি গঠন সংক্রান্ত বিষয়টি এখনও অমীমাংসিত থাকার, নিথিল ভারত কংগ্রেস কমিটির নিকট আমার কর্মসূচী পেশ করার কোনও প্রয়োজন দেখিতেছি না।

প্রথম পরে আপনি লিখিয়াছিলেন যে, আমারই গৃতে উল্লোগপর্ম। তদনুসারে, যে সমস্তাগুলির স্থাপীন আমরা কর্টরাছি, তং-সম্পর্কে আমার মতামত এবং আমার সমাধানগুলিও আপনার নিকট পেশ করিয়া আসিতেছি। দেখিতেছি যে, হয় সফল অথবা অধিকাশে প্রস্তাবই আপনি সমর্থন করেন নাই। অতএব এখন আপনারই উল্লোগী হইবার এবং ওয়ার্কিং কমিটির সদস্ত নির্মাচন সম্পর্কে আপনার অভিলাম বাস্ত করিবার সময় আসিয়াছে। পছ প্রস্তাবানুসারে ওয়ার্কিং কমিটিকে কেবল যে আপনার ইচ্ছানুসারেই গঠিত হইত তাহা নহে, উহাকে আপনার প্রা বিশ্বাসভাজনও ইইতে হইবে।

কতকণ্ডলি বিকল্প প্রস্তাব আপনার বিচারের জক্ত উপস্থাপিত করিয়ছিলাম। প্রথমতঃ আমি সম্বর জাতীয় সংগ্রাম স্কুক্ষ করিবার শ্রেষাব করিয়ছিলাম। উহা করিলে আমাদের বর্তুমান সঙ্কটগুলির মোচন স্বভাবতঃই হইত। এই প্রস্তাবটি আপনার নিকট গ্রুপ্রাগা নহে। আমার দ্বিতীয় প্রস্তাব ছিল, আমি বদি একদলার কর্মপরিবদ গঠন করি তাহা হইলে আপনি বেন সমর্থনআপন ভোট দেন। আপনি লিখিয়াছেন বে, তাহাও সম্ভব নহে।

আমার তৃতীর প্রস্তাবে জানাইয়াছিলান, আপনার উচিত আগাইরা আগিয়া ওয়ার্কিং কনিটির প্রতাক নিয়ন্তবভার গ্রহণ করা। এই ব্যবস্থা গ্রহণ করা হঠকে বহু নাবা দূর হঠত এবং বহু বিপজ্জির নিরদন হঠত। আমার এই প্রস্তাবের কোনও উত্তর আপনি দেন নাই। আশনি যদি ইহাও প্রত্যাপান করেন তাহা হইলে কার্যারন্তের দায়িত্ব আনার হাত হঠতে আপনার হাতে চলিয়া যাওয়া উচিত। আপনাকে তাহা হঠতে ওয়ার্কিং ক্রিটি গঠনের দারিত্ব গ্রহণ করিতে হঠবে।

একটি বিষয় পরিষার করিয়া বলিতেছি। তৃ:পের সহিত বলিতেছি যে একমাত্র আমাদের দলের সদস্তদের লইরা আপনার পরামর্শ মত একটি একদলীয় কর্মপরিবদ, (ওয়াকি: কমিটি) আমি গঠন করিতে পারি না। এই পরামর্শ কংগ্রেম প্রস্তাবের বিরোধী, কারণ ঐ প্রস্তাবে বলা হইসাতে যে, ওয়াকি: কমিটি আপনার প্রা বিশ্বাসভাজন হওরা চাই। অধিকপ্ত আমার ক্ষুদ্রতে, বর্তমান অবস্থার একদলীয় কর্মপরিষদ দেশের স্বার্থের প্রপিত্ত ইবর। উহা কংগ্রেমের গণ-প্রকৃতির সত্যকার প্রতিনিধিস্থানীয় ইইবে না এবং বলিতে কি উহা গঠন করা হইলে রীতিমত মতবিরোধের স্থি হইবে এবং সম্ভবতঃ আমাদের মধ্যে গৃহযুদ্ধ ঘটাইবে।

আশা করি, ত্রিপুরী কংগ্রেস আপনার উপর যে দায়িত্ব চাপাইরাছে তাহা আপনি যথাযথভাবে পালন করিবেন। আপনি যদি তাহাও করিতে অস্বীকার করেন, তাহা হুইলে আমি কি করিব? আমি কি এ, আই, সি-সিকে সমগ্র বিষয়টি জানাইয়া তাহাদিগকে ওয়ার্কিং কমিটি গঠন করিতে বলিব? অথবা অন্ত কোনও পরামর্শ আমাকে দিবেন?

আশা করি বা (কস্তববা) পূর্বাপেকা ভাল আছেন এবং শীত্রই সারিয়া উঠিবেন। আপনার স্বাস্থা কেমন—বিশেষ করিয়া রক্তের চাপ ? আমি ধীরে ধীরে স্বস্থ হটগ্রা উঠিতেছি। সম্প্রক প্রণানাস্তে— আপনার ক্রেতের

স্থভাষ

91.7×5--

আপনার নিকট আস্থাক্তাপক ভোটের অনুরোধের উত্তবে গত ১০ই এপ্রিলের পত্রে আপনি লিণিয়াছিলেন যে, আমি ওয়ার্কিং কমিটি গঠন করিলে, এ, আই, দি, দি দে সম্পর্কে নিজ বিচারবৃদ্ধিমত কাজ করিতে পারেন, আপনার অভিমত বা আপনার আলেশ ধারা ভারাক্রান্ত হুইবার প্রয়োজন নাই। আরও ভাল কাজ হুইবে যদি তাঁহারা ওয়াকিং কমিটি গঠনে নিজ বিচার-বিবেচনাশক্তির প্রয়োগ করেন। পদ্পপ্রভাবের বিরোধী আপনার প্রান্থ অনুসারে যদি কাজ করিতে আমি না পারি এবং আপনি যদি নিজে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন, ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির গ্রহণ না করেন ভাহা হুইলে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়ির প্রান্ধি সমাধান দিতে পারেন ?

রাখিও বল জীবনে রাখিও মনে আশা নিখিল এই ভূবনে রাখিও ভালোবাসা। — ববীজনাথ



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ]

[সি, এফ, আঙ্কু লিখিত 'What I Owe to Christ' গ্রন্থের বঙ্গামুবাদ]

দক্ষিণ-আফ্রিকা

প্রমান শতাদাব প্রথম দিকে ভারতবাসীদের অক্তহম পরম আস্থাতাজন নেতা ছিলেন গোথেল। ১১১৩ সালের নভেম্বর মাসে তাঁর কাছ থেকে তার্যোগে আমি এক জক্বি নির্দেশ পেলাম। দক্ষিণ-আফ্রিকায় ভারতবাসারা চ্ক্তিবদ্ধ প্রমদাসত প্রথার কবলে অসহনীয় অত্যাচারে নিপীড়িত হচ্ছে। এই প্রারা ভারতীয়দের নেতৃত্ব গ্রহণ করেছেন মহায়া গাদ্ধী। এদের সাহায়্য কর্বার জল্পে আনাকে অবিলধে দক্ষিণ-আফ্রিকা যাত্রা করতে হবে,— এই হোলো গোথেলের নির্দেশ।

নাটালের বিভিন্ন বাগিচার কাজ করবার জ্বন্তে ১৮৬১ সাস থেকে ভারতীয় শ্রমিক চালান করা হোতো চুক্তি প্রথার মাধ্যমে। দিনে দিনে এই প্রথা অতি বীভংস রূপ ধারণ করেছিল,—জমে উঠেছিল নানা অক্যায়ের ত্রপনের কলংক। ভারতীয় শ্রমিক সংগ্রহ করার জ্বন্তে পেশালার আড়কাটি নিযুক্ত করা হোতো,—এরা মালিকের কাছ থেকে শ্রমিকের মাথা-পিতু দান পেত। পুক্ষের চাইতে স্ত্রীলোক চালানের পারিশ্রমিক ছিল বেশি। আড়কাটিরা নির্বিচারে ছলবলের আশ্রম নিত্ত। হাজার হাজার ভারতীয় শ্রমিককে তারা চুক্তিপ্রথার সংগ্রহ করে নাটালে চালান দিয়েছিল। ফলে নাটালে ইউরোপীয়েরর চেয়ে ভারতীয় সংখ্যা অনেক বেড়ে গিয়েছিল।

ভারত গভর্ণমেটের সঙ্গে যে প্রাথমিক চুক্তি হয়েছিল তাতে সর্ভ ছিল এই যে, ভারতীয় শ্রমিকরা নাটালে পাঁচ বছরের জন্ম কাজ করবে। পাঁচ বছরের শ্রমের মেরাদ সম্পূর্ণ হবার পর ভারতীয় শ্রমিক স্বাধীন ভাবে নাটালে বসবাস করবার স্থযোগ পাবে। কিন্তু এই চুক্তিকে বানচাল করবার উপায় উদ্বাবনে দেরি হয়নি। নাটাল গভর্ণমেট আইন করল যে পাঁচ বছরের শ্রমেব মেয়াদ শেষ হবার পর প্রত্যেক ভারতীয় শ্রমিককে হয় তিন পাউও কর দিতে হবে না হয় আবার আর এক পাঁচ বছরের শ্রমচুক্তি করতে হবে। বে করও দেবে না বা নৃতন করে শ্রমদাসহ মেনেও নেবে না তাকে নাটাল থেকে বিতাড়িত করা হবে।

নাটাল সরকারের উদ্দেশ্য ছিল অতি সরল। ভারতীররা হয় চিবকাল বাগিচার শ্রমদাস হয়ে থাকবে না হয় তাদের রাজ্য থেকে

দ্ব করে দেওলা হবে। মাথা-পিচু মৃক্তিকর স্ত্রী-পুরুষ ও এমন কি পনেরো বছরের উপবেব বালকবালিকাকেও কিতে হবে। এমনি মহার্থ মাণ্ডল দিয়ে স্বাধীনতা ক্রয় করতে ভারতীয় দরিদ্র শ্রমিকের ক'জনই বা পারবে ?

এই চ্জিবদ্ধ শ্রমিক-প্রথা দাসংবর নামান্তর। বিধ্যার ঐতিহাসিক সার ডবলু ডবলু হাণ্টার বলেছিলেন যে এই প্রথা ও দাসত্ব-প্রথার মধ্যে সীমারেথা টানা হুদ্ধর। বাস্তবিক অবহা তন্ন তন্ন করে পর্যবেক্ষণ করার পর আমিও দৃঢ়নিশ্চয় হয়েছিলান যে হাণ্টারের এই সিদ্ধান্ত যথার্থ। ভারতীয় শ্রমিকরা নিজের পছদনত মালিক নির্বাচন করতে তো পাবতই না,—যদি বা অত্যাচারে জর্জবিত হয়ে বাগিচা পরিত্যাগ করত, তাহলে ফৌজদারী অপবাধে শাস্তি পেত।

সরকারী পর্যাবেকণের একটা তথাকথিত ব্যবস্থা যে অবগ ছিল না তা নয়। কিছু তাতে মালিকের নিষ্ঠ্ বতা নিশ্নাত্রও লাঘন গোড়ো না। প্রভূব বিরুদ্ধে অভিযোগ করার সাহদ দাসের মনে নোড়াছিল না। এই প্রথাব সব চাইতে বীভংস রূপ ছিল এই নে, প্রতি একশো জন পুরুষ-শ্রমিকের অলুপাতে চল্লিশ জন করে নারী-শ্রমিক সংগ্রহ করা হোতো। বিবাহিত দম্পতি অতি অল্পই ভারতবর্ধ থেকে আসত। অতএব পুরুষ ও নারী-শ্রমিকের সংখ্যার এই বিপজ্জনব তারতমার ফলে নাটালের ভারতীয় সম্প্রদায় হুনীতিতে ছেটে

১৮৩৪ সালে দাসহপ্রথা রদ হয় ! দাসহপ্রথার পরিবর্থে চুক্তিবদ্ধ শ্রমপ্রথার উত্তব হয় এবং এই প্রথা অমুসারে মবিশাস টু,নিডাড, জামাইকা, গ্রেনাডা, বৃটিশ গায়না প্রভৃতি উপনিবেশ্য ইক্ষুবাগিচায় দলে দলে ভারতীর শ্রমিক আমদানি করা হয় প্রাক্তন দাসহপ্রথার অধিকাশে অনাচার এই নৃতন প্রথাকেও ফুর্টা উঠতে থাকে, কোনো কোনো কেত্রে নৃতন প্রথাব কলংক পূর্বত প্রথার কলংককে ছাড়িয়ে যায় । মালিক যেখানে ভালো হোতে সেখানে ভারতীয় শ্রমিকরাও ভালো ব্যবহার পেত । কিন্তু নালিবেখানে নির্ভুর্ব ও অত্যাচারী, সেখানে শ্রমিক্দের অবস্থা লাগামে-বাঁগ জন্তর মতো । এমনি অত্যাচার ও নিশীড়নের ফলে কতো হততাগঃ শ্রমিক বে আত্মহত্যা করে মুক্তিলাভ করত তার ইয়ন্তা নেই বাগিচা-জীবনের ফ্রনীতি ছুর্ছাগ্যুকে আরো গভীরত্বর করে তুল্ত

फित्तव अव फिल প्रणिफिल ...



রেরানা থো, লিঃ, অট্রেলিয়ার পদে হিনুহান নিভার লিঃ, কর্ক ভারতে প্রকৃত

RP. MO-358 BG

কথনো বা পৌছতো নারীহত্যা ও পুরুষের আত্মহত্যার ভরংকর পরিপতিতে। এই সমস্ত হত্যালীলার আথ-কাটা ধারালো ছুরি সাধারণত ব্যবহৃত হোতো। সরকারী তথা থেকেই জানা যায় যে বিভিন্ন বৃটিশ উপনিবেশে চৃক্তিবন্ধ শ্রমপ্রথার বিস্তারের সঙ্গে সঙ্গে হত্যা ও আরহত্যার সংখ্যাও বেড়ে গিয়েছিল।

ভারতীয় শ্রমিককে বাগিচার দাসত্বে শৃংথলিত রাথার জ্ঞেনাটাল সরকার যে তিন পাউও মুক্তিকর প্রবর্তন করেছিল এই কর অক্যায় ও মানবতাবিরোধী বলে সর্বত্র স্বীকৃত চরেছিল। কিন্তু এই করের প্রধান সমর্থক ছিল ইউরোপীরানরা। জেনারাল বোথা বা জেনারাল স্মাটিন, ক্ষমতায় আসান থাকা সত্ত্বেও জিলুয়ের কেইই ইউরোপীয়ানদের চটিরে এই কর বদ করবার নির্দেশ দিতে পারেননি। মনে মনে তাঁদের অরগ্র ইচ্ছা ছিল, গোথেল যথন দক্ষিণ-আফিকায় যান তথন তাঁরা গোথেলকে মৌথিক প্রতিশ্রুতিও দিয়েছিলেন, কিন্তু দে প্রতিশ্রুতি তাঁরা রাথতে পারেননি।

এই অক্সায় করকে রদ করবার জন্মে সমস্ত প্রকার আবেদন নিবেদন যথন বার্থ হোলো তথন মহাত্মা গান্ধী ও তাঁর সঙ্গীরা **অহিংস অসহযোগের পম্বা** গ্রহণ করতে বাধ্য হলেন। উত্তর নাটালের কয়লা থনি অঞ্চল থেকে একদিন চুক্তিবদ্ধ শ্রমিককে সংঘবন্ধ করে গান্ধিজী তাঁর সত্যাগ্রহের বাহিনী গঠন করলেন। ভারতীয়দের তুঃখ তুদ শার প্রতি কর্তৃপক্ষের দৃষ্টি আকর্ষণের জন্ম এই বাহিনী নিয়ে তিনি ট্রান্সভাল যাত্রা করলেন। তু'হাজাবের অধিক ভারতীয় পুরুষ নারী ও শিশু গান্ধিজীর নেতৃত্ব বরণ কবে নিল, তাঁব পিছ পিছ ডাকেনস বার্গ পর্বতমালা পার হয়ে ট্রান্সভাল অভিযুগে যাত্রা করল। **আরো** 'হাজার হাজাব ভারতীয় নেতারা পরবর্তী নির্দে**শের জন্ম প্রস্তুত হয়ে রইল।** কয়লা থনি পরিত্যাগ করা এবং ট্রান্সভালে প্রবেশ করা হুই কাজই বে-আইনি, উভয় কারণেই সশ্রম কারাদণ্ডের কঠোর শাস্তি। প্রতিটি চুক্তিবন্ধ শ্রমিক ও তাদের অন্যান্ত আত্মীয়বন্ধুগণ এই শান্তিব কথা জানত কিন্তু তারা ভয় পেল না। ছুর্গম পথযাত্রায় কপ্তের সামা নেই, কিন্তু গান্ধিজীর অনুবর্তিগণের একজনও পিছন ফিরল না।

শেষ পর্যন্ত অধিকাংশ সঙ্গিসহ মহাত্মা গান্ধী কারাবরণ করলেন।
আন্দোলনের প্রতিটি নেতৃস্থানীয় ব্যক্তি কেউ বা জেলে কেউ বা হাজতে
আবদ্ধ হোলো। নাটাল থেকে আরো ভারতীয় শ্রমিক বাগিচা ছেড়ে
আন্দোলনে যোগ দিতে অগ্রসর হলে তাদের উপর শারীরিক অত্যাচার
শুক্ত হোলো, গুলী চলল নিরস্ত্র অভিযাত্রীদের উপর*। ভারতবর্ষে
যখন এই সব সংবাদ পৌছলো, তখন উত্তেজনা চরনে উঠল। প্রবাসী
ভারতীয়দের দাবী সমর্থন করে ভাইসরয় লর্ড হার্ডিঞ্জ বিখ্যাত বক্তৃতা
দিলেন।

দক্ষিণ-আফ্রিকার যথন এই সংকটজনক পরিস্থিতি, গান্ধিজী ও অক্সাক্ত নেতারা যথন প্রত্যেকে কারাক্রন্ধ, তথন গোথেল আমাকে তারবোগে অনুরোধ করলেন অবিলম্বে দক্ষিণ-আফ্রিকার বাবার জক্তে। স্বদেশে আমার মা তথন অন্তিম রোগশিষ্যায়, আমি ইতিমধ্যে তাকে চিঠি লিখে জানিয়েছি যে আমি তাঁর সঙ্গে দেখা করবার জক্ত দেশে রওনা হচ্ছি। আমার মা'ব জীবনে স্বার্থপরতার লেশ ছিল না। এবার তিনি তাঁর শেব স্বার্থত্যাগের নিদর্শন দিলেন—আমাকে বলকেন, তাঁর কাছে না গিয়ে নাটালেই মেন আমি যাই, দেখানে তাঁর ভাগ্যহত ভারতীয় ভগিনীদের পরম প্রয়োজনের ক্ষণে তাদের মেন আমি দেবা করি। মা'র সঙ্গে আর আমার দেখা হোলো না, আমি দক্ষিণ-আফ্রিকায় পৌছবার কিছুদিন পরেই তিনি চিরশান্তির ক্রোড়ে আশ্রয় নিলেন।

ম্যাঞ্চোরের প্রসিদ্ধ ধর্মধাজক ডাক্তার স্থামুয়েল পিয়ার্সনের পুত্র উইলি পিয়ার্সন নাটাল যাত্রায় আমার সাথী হোলো। উইলির মা কোয়েকার ছিলেন। দিল্লীতে উইলি আমার ঘনিষ্ঠ বন্ধু ছিল। তার আশ্চর্য ব্যবহারে সে আমাকে এবাব চমংকৃত করে দিল। তাড়াছড়ো করে জিনিষপত্র গুছিয়ে নিচ্ছি,—কেন না দেরি করবার সময় নেই, সেদিন মধ্যবাত্রেই দিল্লী থেকে যাত্রা করতে ভরে, নইলে জাহাজ পাব না। উইলি আমার কাছে এনে বললে,—তোমার যাওয়ার আগে একটি উপহার তোমাকে দিতে চাই। আমি প্রশ্ন করলাম,—উপহার ?

উইলি বললে,—এই যে, উপহার তোমার সামনেই উপস্থিত— আমি।

তারপর তার সে কী উল্লাসভবা হাসি।

তার এই কৌতুকভরা আজু-উপহার তার উচ্ছল চরিত্র-মাধুর্যেরই প্রতীক। তার মতো অকপট বন্ধু ও বিশ্বস্ত অমুচর আমি ইতিপূর্বে পাইনি। নাটালে পৌছনো মাত্র সে মুহুর্তে সেগানকার ভারতীয়দের অস্তর জর করে নিয়েছিল। তীবের আশ্রয় পরিত্যাগ করে বিভিন্ন সমুদ্রবাত্রা আমার আবস্ত হোলো,—এই সন বাত্রার উইলি ছিল আমার প্রধান সহায়। আমার জীবনের গভীরতম আঘাত আমি পাই যথন ১৯২৪ সালে ইটালিতে এক চলস্ত ট্রেণ থেকে পড়ে উইলি মাব' যায়। তার এই আকম্মিক অপমৃত্যুর জন্মেই এই শোক অস্ক্রনীয় হয়েছিল।

কলম্বে থেকে ডাববান যাত্রার পথে অধিকাংশ দিন আমাদের জাহান্ত প্রবল থাটিকার পিছনে পিছনে চলল। ফলে ডারবান পৌছতে আমাদের পাঁচ দিন দেবি হয়ে গেল। তীরে পৌছতে পরম বিশায়েব সঙ্গে লক্ষ্য করলাম, জাহাজ্বাটে মহান্মা গান্ধী আমাদের জন্মে অপেকা করছেন। জেনারেল মাটদ মীমাংদা চান, তাই তিনি বিনা সর্তে গান্ধিজ্ঞীকে মুক্তি দিয়েছেন। বুঝলাম, অসমর্থনীয় পোল-টাক্ষের বিরুদ্ধে দারা পৃথিবীর আপত্তিকে উপেকা করা আর সন্তব নয়।

দক্ষিণ-আফ্রিকায় তারতীয় নিগ্রহের মূল রহস্ত কী, তা বৃষ্ঠে আমাদের কিছুমাত্র দেরি হোলো না। মূল কারণ জাতিভেদ আর বর্ণবিষ্কের। তারতীয়রা রক্ষকায় জাতি :—একমাত্র বাগিচার মাগিকরা ছাড়া দক্ষিণ-আফ্রিকার অক্ত সমস্ত ইউরোপীয়ানরা চাইত ভারতীয়দের দক্ষিণ-আফ্রিকা থেকে দ্র করে দিতে। ভারতীয় শ্রমিকদের কেন থে আমদানী করা হরেছিল, এই ছিল তাদের মহা তুংথ। আফ্রিকার অক্তাক্ত কৃষ্ণকায় জাতিদের রাজনৈতিক অর্থ নৈতিক ও সামাজিক হীনতার মধ্যে জাবন কাটাতে হোতো,—ইউরোপীয়ানদের উদ্দেশ্ত হোলো ভারতীয়রাও যতোদিন দক্ষিণ-আফ্রিকায় থাকবে, ততোদিন তাদেরও বর্ণমালিক্তের হীনতা মেনে নিয়ে নিকৃষ্ট অবস্থায় থাকতে হবে।

দিলীতে অথবা ট্রোকসের সঙ্গে শিমলা পাহাড়ে বর্থন আমি ছিলাম

তথন পৃষ্টান-সম্প্রদায়ের মধ্যে জাত্যভিমান ও বর্ণবিবেংবের প্রশ্রয় আমাকে অত্যস্ত বাথিত করে তুলেছিল। জাতির বাধা আর বর্ণের বাধা মানুষ আর মানুষের মধ্যে প্রাচীর তুলবে,— আমি ভাবতান প্রকৃত খৃষ্টান হয়ে এই বাধাকে আমি মেনে ফলে পৃথিবীতে এমনি কেমন করে? এই বাধার প্রথাও সৃষ্টি হবে যা আমার প্রভূ যীতথ্ট চাননি। তিনি বলেছিলেন, মানুষে মানুষে ভাই ভাই আব সর্বমানবের পরমপিতা ঈশব। এই জাতিভেদের ফলে পৃষ্টীয় বিশ্বসমাজ টুকরো টুকরো হয়ে যাবে, ধর্মের ঐক্যকে খান ফান করে দেবে জাতাভিমানের অস্ত্র। সর্বমানবের ভ্রাভূত্বের মৌলিক দাবীর জন্ম ক্রুসে আত্মবিসর্জন করেছিলেন খুষ্ট। কিন্তু খুষ্টান হয়েও তুই জাতি পাশাপাশি বসে উপাসনা করতে পারে না। আমি ভারতাম এ কী আমরা করছি, কোন সর্বনাশা পথে আমরা চলেছি। খুষ্টান হয়ে খৃষ্টের মুখে কলংকলেপন করে নৃতন করে কি আবার তাঁকে ক্রুস-বিদ্ধ

ধর্মপ্রন্থ পাঠ করেও আমি স্পষ্ট উপলব্ধি করেছিলাম- ইছদীদের
ভাতীয় কৃপনঞ্কতা যখন প্রাথমিক পৃষ্ঠীয় সমাজকৈ বিখণ্ডিত করতে
উল্লত হ্রেছিল, তখন এই বিপদকে প্রতিহত করবার জল্মে পৃষ্টশিষ্য
পল এমন কি সাধু পিটারেরও মুখোমুখি দাঁঢ়াতে বাধ্য হয়েছিলেন।
ভাতিভেদের বিক্লম সাবধানবাণী পলের পত্রাবলীর ছত্রে ছত্রে লিখিত
আছে।

নিউ-টেষ্টামেণ্টের অক্সতম প্রধান ও প্রত্যক্ষ শিক্ষা জাতিভেদকে পরিচার করার শিক্ষা। জাতি মিলনের বাণী খৃষ্টের দ্বার্থবিহীন সম্পষ্ট বাণী। সাধু পল লিখেছেন,—"বীশুর দৃষ্টিতে ইছদীও নেই, প্রীকও নেই, আর্য নেই,আনার্য নেই,—প্রভু নেই, দাস নেই, খুষ্টই সর্বস্ব এবং সকলের মধ্যেই তিনি বর্তমান।"

কিন্ত যথন আমি নাটালে পৌছলাম তথন দেখলাম যে মানুষে মানুষে যে বৈষম্যকে আপ্রাণ প্রতিহত করতে সাধু পল চেষ্টা করেছিলেন, ঠিক সেই বৈষম্য নাটালের খৃষ্টায় সমাজকে কলংকিত করে রেখেছে। খৃষ্টায় সমাজের মধ্যে জাতিভেদ যে কেবলমাত্র সরকারী কাজে করে প্রশ্রম পাচ্ছে তাই নয়, এই অক্সায়কে আইনের সাহাযো পরিপৃষ্ট করা হচ্ছে। জাতিবৈষম্যের ভিত্তিতে পৃথক পৃথক গির্জা প্রতিষ্ঠিত হচ্ছে। জাতিতে জাতিতে সামাজিক গণ্ডীবন্ধতা গভীর থেকে গভীরতর হচ্ছে, জনমতও এই ভেদবুদ্ধির ভিত্তিতে গঠিত হচ্ছে।

এই ভেদবৃদ্ধির বীজ উপ্ত হয়েছিল অতীতে, যথন ব্যুর শাসনের মুগে আইন ছিল যে রাষ্ট্রে বা ধর্মে শ্রেতকায় কৃষ্ণকামদের মধ্যে পার্থক্য থাকবেই, উভয়কে কিছুতেই সমদৃষ্টিতে দেখা হবে না। সেই অতীত কলংকের দায়ভার গ্রহণ করে সেই একই নীতিহীন পদ্মানাটালের বৃটিশ অধিবাসীরাও বহন করেছে এবং একই প্রতিক্রিমার সৃষ্টি করছে।

প্রথম বেদিন আমরা ডারবানে পৌছলাম সেই দিনই এই জাতিভেদের কুসংস্কার আমাদের চোথে ম্পষ্ট ধরা পড়ল। তারপর মবিলম্বে দিনে দিনে এই সংস্কারের নানা কুৎসিত অভিব্যক্তির সঙ্গে আমাদের ব্যক্তিগত পরিচয় হতে লাগল। এই পাপ বিষাক্ত সঙ্গেমধের মতো সুস্থ সমাজদেহের অক্তে অক্তে ছড়িরে পড়ে। এই সংক্রমণ দক্ষিণ-আফিকার অনেক দিন থেকে শুরু হরেছিল এবং এই ব্যাধিকে রোগ করবার চেঠাও কলতে গেলে কিছুই হরনি। খুষ্টান সমাজের বিভিন্ন শাখান গভীরে এই বিষ বাসা বেঁধেছিল।

এ ব্যাপারে ইসলাম ধর্মের নির্দেশ অতি স্পাই,—ইসলাম-ধর্মাবলম্বীদের মধ্যে জাতিভেদের কোনো স্থান নেই। আমাদের পক্ষে
অতি লক্ষার কথা যে খৃষ্টার ধর্মসমাজ এ পর্যন্ত এই জাতিভেদের
বিরুদ্ধে নিতান্ত ফীণকঠে প্রতিবাদ জানিরেছে। মৌথিক ধর্মকথার
সঙ্গে ব্যবহারিক আচরণের কোনো সম্বন্ধ না থাকার জল্তে এই ত্র্বল
আয়ু-অবিশাসা প্রতিবাদ কার্যকরী হুসনি।

এক খৃষ্টান গির্জায় বাজনা করার নিমন্ত্রণ আমি পেরেছিলাম।
মহান্ত্রা গান্ধী আমার বাজনা শুনতে চেরেছিলেন বলে উইলি পিয়ার্সন
তাঁকে গির্জায় নিয়ে এসেছিল। পরে আমি জানলাম যে গান্ধিজী
কৃষ্ণকায় এসিয়াবাদী বলে তাঁকে গির্জার মধ্যে চুকতে দেওয়া হয়ন।
এই ঘটনার আমার লজ্জার পরিসীমা ছিল না। আমার মনে হয়েছিল
স্বয়ং বীশুরুষ্টকে যেন তাঁর আপন মন্দিরন্ধার থেকে ওরা দূর করে
দিয়েছে। কিন্তু এমনি ঘটনাই দক্ষিশ-আফ্রিকার খেতকার খুষ্টানদের
পক্ষে ছিল স্বাভাবিক।

কিছুদিন পরের আর একটি ঘটনার কথা বলি। তথন আমি কেপ টাউনে গিয়েছি। শুনেছিলাম, নাটাল অপেক্ষা কেপ টাউনে বর্ণবিষ্কেরের উন্না অনেক কম। আমার ব্যক্তিগত প্রয়োজনে



আমাকে দেখাওনা করবার জন্তে গাজিজী তাঁর পুত্র মণিলালকে আমার সঙ্গে দিয়েছিলেন।

মণিলাল যে কী ভাবে আমার সেবা-যত্ন করেছিল তা বলবার নয়।
আমিও তাকে পুত্রাধিক প্লেহ করতাম। এক দিন মণিলাল অতি
উপপ্রীবভাবে আমাকে বলল, এক দিন কোনো গির্জায় বসে আমার
উপদেশ সে শুনবে এই তার বড়ো সাব। সহরের উপকণ্ঠে একটি
গির্জা ছিল, সেগানকার ধর্মযাজক ছিলেন ভারতীয়দের স্মহান। সেই
গির্জায় আমি মণিলালকে নিয়ে গেলাম।

এই গির্জার যাজক আমাদের সাগ্রহে আমন্ত্রণ করলেন। প্রার্থনান্তর্গাল আরম্ভ হবার আগে তিনি ও তাঁর স্ত্রী আমাকে ও মণিলালকে চা থাওয়ালেন। এ পর্যস্ত ভালোর ভালোর কটিল দেখে আমি প্রস্তাব করলাম প্রার্থনাসভার মণিলালকে নিয়ে যাব। ধর্মবাজকের মুখ ভার হোলো এ কথা শুনে। তার কোনো আপত্তি নেই, কিন্তু আপত্তি করলে উপাসকনগুলা। খেতকার উপাসকদের পাশাপাশি গির্জার মধ্যে বসে কোনো ভারতার বালক যাশুর বাণা প্রবণ করবে,—অসম্ভব এ প্রস্তাব! কিন্তু বেচারা মণিলালের আকাজ্ঞা আমি মিটাই কা কবে? শেষ পর্যস্ত একটা আপোর মীমাণ্যা হোলো। মণিলাল গির্জার চুক্তবে না, গির্জাব দোরগোড়ার বসে কান প্রতে ধর্মোপদেশ শুনবে।

একের পর এক এমনিধারা নানা ঘটনার অভিজ্ঞতা আমার হতে লাগল। একটি ঘটনার কথা বলব, কারণ ঘটনাটি আমার মুনে গভার রেগাপাত করেছিল।

কেপ টাউনের সেও জন গির্জার কোনো বর্ণবিভেদ ছিল না। এক ববিবার প্রভাবে আমি সেই গির্জায় হোলি কমিউনিয়নে যোগ দিলাম। থুষ্টের পূতাবশেষ সমস্ত উপাদক গ্রহণ করেছেন, এবাব আমার ধর্মোপদেশ দানের পালা। হঠাং ঢোগে পড়ল এক বিশীর্ণা বৃদ্ধা নিথো মহিলা প্রার্থনাসভার শেষ প্রাপ্ত থেকে শ্রথ চরণে আমার **দিকে এগিয়ে আসছেন। সমস্ত ইউরোপীয়ান উপাসকরা যতোক্ষণ** না নিজের নিজের আসনে গিয়ে বসেন ততোক্ষণ ঐ কৃষ্ণকায়া বুদ্ধা **সকলে**র পিছনে অপেকা করছিলেন। আমি তাড়াতাড়ি তাঁর সামনে পুতাবশেষ নিঘে এগিয়ে গেলাম। গভীরতম ভক্তিতে মাথা নিচু করে তিনি **হাটু গেড়ে আমার সামনে বসলেন।** সহসা আমার ৰনে হোলো এই নতজাত্ব নিগো বৃদ্ধার মৃতি বে'সমস্ত আফ্রিকা মহাদেশের আত্মার প্রতীক,—যে আত্মা ইউরোপের অগণিত অক্টায়ের বেদনায় মুহুমান নতশির। বিনম্র সহিফুতার অনস্ত শক্তি দিয়ে শেত জাতির এই অশেষ অক্তায়কে আফ্রিকা আপন শিরে **এহণ** করেছে, এই নির্বাক নিরুদ্ধ শক্তির মধ্যেই নিহিত রয়েছে আফ্রিকার আসন্ন মুক্তির শ্রেষ্ঠ অঙ্গীকার।

এই গির্কায় ধর্মোপদেশ দানের জত্তে এথানকার ডীন আমাকে
জন্মরোধ করেছিলেন। কিন্তু চারিদিকে দিনে দিনে যে সব নিঠুর
দৃশু আমি দেখেছি তাতে আমার সমস্ত অন্তর তথন বলছে।
আমি বললাম, এই আফ্রিকা পরম্পিতা একেখরকে ভূলেছে, তার
বদলে এথানে তুই দেবতার পূজা। এক দেবতার নাম স্বর্ণভ্বা,
ভার এক দেবতার নাম বর্ণবিবেব। বর্ণবিবেব সম্বন্ধে বলতে গিয়ে
এই উপাসনা-সভার আমার মনের সমস্ত পূজীভূত অনুভূতি সেদিন
আমি প্রকাশ করে কেললাম।

পরে আমার সমস্ত মন এক গভীর হতাশার ভরে গেল। মনে হোলো, এই উপাসনাসভা, এ যেন এক শ্বেডপাথরের কঠিন দেরাল, এই দেরালে একটি মাত্র রেখাপাতও আমি করতে পারিনি। তবে একটি লাভ হোলো আমার। বিধান-সভার সক্ত-অবসরপ্রাপ্ত সদস্ত ভে, এক, মেরিমানি আমাকে একটি সহাদর পত্র লিখে ধছাবাদ জানালেন। তিনি লিখলেন,—আপনি জেনে রাখুন যে, এই আফিকাতে এখনো ত্ব-একজন আছেন বাঁরা ইশ্বরের নামে শ্বতানের কাছে মাথা পাতেননি। এই মৃষ্টিমেরদের মধ্যে একজন সাধু আছেন, বাঁর সঙ্গে আপনার সাক্ষাং হলে আমি খুসী হব। তাঁর একটি কাব্যগ্রন্থ আপনাকে পাঠালাম।

এই কাব্যগ্রন্থের রচিয়তা মাশোনাল্যাণ্ডের আর্থার শার্লি ক্রিপদ।
অক্সফোর্টে তাঁর শিক্ষা, তরুণ বয়স, অপূর্ব কাব্য-প্রতিভার
অধিকারী। আফ্রিকার আদিবাসীদের মধ্যে সরল অনাড়ম্বর
পৃষ্ঠীয় জীবন তিনি যাপন করেন। এই কাব্যথ্যের মাধ্য মেতাঁর
সঙ্গে আমার পরিচয় হয় ও ক্রমে এই পনিচয় নিবিড় বন্ধুত্বে পরিণত
হয়।

আফ্রিকার বাণ্ট্র অধিবাদীদের আমি এই সমর সমস্ত স্থাদ্য ভালোবাসতে শিগি। তাদের শীর্ণপ্রান্ত মূপে তাদের শতাকীপারের বেদনা আমি অনুভব করি। আফ্রিকার মর্মরহস্তার প্রথম পরিচয় আমি লাভ করি অলিভ প্রাইনারের কাছ থেকে। তারপর দক্ষিণ-আফ্রিকার আর এক মহিলার কাছে আমার এই শিক্ষা পূর্ণতর হয়। এই মহিলা মিস মন্টেনো। অলিভ প্রাইনারের মতো এই মহিলাও শ্রাতানের কাছে আত্মসর্মণ করেননি কোনো দিন। ছুর্গত ও উৎপীড়িতের হয়ে সারা জীবন ভিনি সংগ্রাম করেছেন। সেই সংগ্রামের চিহ্ন তাঁর শ্বেত-শুভ্র চুলে, তাঁর মুথের অসংখ্য বিল্যেগায়।

ভারতীয়দের এক সভার আনি তাঁকে বলতে শুনেছি "দিশিপ আফ্রিকার তোমরা থাকতে চাও আমি জানি। কিন্তু এজন্তে যদি নির্যাতন বরণে প্রস্তুত না হও তাহলে জননা আফ্রিকার উপযুক্ত সন্তান বলে দাবী করতে তোনরা পারবে না। নির্যাতন বরণ আমাদের ঈশ্বরদত্ত অধিকার—সহিষ্ণুতার পথই ঈশ্বর-নির্দিষ্ট প্রেমের পথ। আফ্রিকান্তে যদি থাকতে চাও, তাহলে এই আফ্রিকাকে মাতৃভূমি বলে মানতে হবে, নির্যাতিতা জননীর সমস্ত বেদনাকে বহন করতে হবে।

ভারতীরদের কাছে মিস মন্টেনো তাঁর জীবনের কাহিনী বলতে লাগলেন। ব্যুর মেয়ে তিনি, বাস করতেন এক নির্জন গোলাবাড়িতে। চারিদিকে নিশ্চুপ পর্বতমালা, মাঝে মাঝে বিবেগবতী বরণা, রাত্রির নিঃসীম অন্ধকারে আকাশভরা অসংখ্য নক্ত্রেব আলোক-ইঙ্গিত। মুষ্টিমের প্রতিবেশীদের মধ্যে ছিল তাঁর যাওয়াআসা। সেই বৈচিত্রাহীন দীন পরিবেশের মধ্যে জাবন কাটাতে কাটাতে এই ছারাভূমি আফ্রিকার আত্মশক্তির ত্রিধারাকে তিনি উপলব্ধি করলেন।

একটি শক্তিধারা সঙ্গীত। এই মেচুর[®]আকাশ ও শাস্ত পর্ববি^ত ছায়ার মহাদেশে বুটিশ ও ওলন্দাজের কর্কশ কণ্ঠও কোমল ^{হরে} বায়। মামুবের কণ্ঠ নিঃস্থত প্রেমসঙ্গীত কেমন ভাবে আফ্রি^{কার} মানবান্থাকে নাড়া দিতে পারে, এমন আর কিছুই পারে না। অস্তরের সমস্ত ভিক্ততাকে সঙ্গীতের প্লাবন হরণ করতে পারে।

দ্বিতীয় শক্তি বেদনাধারা। আফ্রিকা যতো নির্যাতন সন্থ করেছে পৃথিবীর কোনো দেশ কোনো মহাদেশ তা করেনি। কিন্তু এতো নির্যাতনেও আফ্রিকার হুদার কঠিন হুর্যান, কোমলই হুরেছে। বহু মুগোর সহিষ্ণুতার দ্বারা নিথিক্ত তাদের বেদনা-করুণ ভাষা এক দিন বিশ্বনানবের মর্মে গিয়ে পৌছবেই।

তৃতীয় শক্তি আফিকার নারীজাতির নৈতিক শক্তি। অদ্য ভবিষাতে এই শক্তিরও পূর্ণ প্রকাশ হবে। সারা পৃথিবীতে সর্বত্র নারীজাতিই স্পষ্টর বোঝা বহন কবে। আফিকার নারীর মতো এতো গুরুভার বোঝাও কোনো নারী বহন করে নি। হুর্বহ ভার ও ছবিষহ বেদনার অগ্নিপরীক্ষায় আফিকার নারী-চরিত্র নিক্ষিত স্বর্ণের পবিত্রতা লাভ করেছে।

নিস মন্টেনো যথন এই সব কথা বলছিলেন তথন তাঁর বেদনাবিধুব মুপের দিকে একদৃষ্টে আদম তাকিয়ে ছিলাম। আফিকার
ভূমিতলে বসে তার মুখের দিকে তাকিয়ে থাকতে আমি আবার নৃতন
করে উপলব্ধি করেছিলাম যে খুঠের বালা সর্বৃহ্গে প্রসারিত, খুঠের
আনীর্নাদ সর্বভাতির আধিকার। আবাে উপলব্ধি করেছিলাম যে
প্রেমই সর্বশক্তিমান, সমুচিত বিক্ষোভেব শক্তিও এই শক্তির কাছে
লাম। এই প্রেমের শক্তি বলেই আফিকার যুগসক্তিত বঞ্চনার অবসান
সম্পর।

নিস নন্টেনে। বলেছিলেন, আফ্রিকাবাসীর নির্ধাতন বরণ ইশ্বরদন্ত অধিকাব। করেক দিন পবে নাটালে একটি অন্তরস্পর্শী ঘটনায় মিস মন্টেনোর এই কথাব তাংপর্য আনি প্রাত্যক্ষ কবেছিলাম।

ডাববানের ভারতীয় সমাজ আমাব জন্ম একটি বিদায়-সভার আয়োজন করেছিলেন। লক্ষ্য কবলাম, এই সভায় কয়েক জন জুলু উপপ্রিত। এর পূর্বেও অন্যান্ত সভায় কিছু কিছু জুলুকে আমি দেখেছি। আমি যথন বক্তৃতা দিতাম তথন তারা স্তব্ধ হয়ে আমার মুখের দিকে তাকিয়ে থাকত। তাদের হাবভাবের গন্থীর মর্যাদার প্রকাশ ও মুখনগুলে গভীর বেদনার ছায়া আমাকে আকুপ্ত কবত।

এই বিদারসভার অবসানে আমি মিঞা থান নামক এক বৃদ্ধ
মুসলনানের দোকানে ফিরে গোলান। এইথানেই আমি থাকতাম।
মিঞা থানের সঙ্গে চা পান করতে বসেছি এমন সময় ছজন
ছুলুনেতা সেথানে এসে উপস্থিত হোলো। আমরা তাদের আমাদের
সঙ্গে চা পান করতে নিমন্ত্রণ করলাম। তথন একজন ছুলু
আনাব দিকে নির্দেশ করে মিঞা থানকে স্থানীয় ভাষায় বললে,
আমরা এক একটা প্রশ্ন করতে পারি ?

মিঞা থান আমাকে বুঝিয়ে বলতে আমি বললাম, নিশ্চরই, আপনি অকপটে বলুন কী আপনার প্রশ্ন ?

আনার দিকে ফিরে সেই জুলুনেতা তথন বললে, ভারতীয়দের শঙ্গ আপনি যথন কথা বলেন তথন আপনার চোথের দিকে তাকিয়েই আমরা বুঝতে পারি যে তাদের জন্তে প্রাণ দিতে আপনি প্রস্তুত। আমাদের জন্তেও প্রাণ দিতে কি আপনি পারেন ?

আশ্চর্য এই প্রশ্ন ! এই প্রশ্ন এতো বেদনা-উদ্গ্রীব যে সোজা ^{বুক্রে} মধ্যে গিয়ে বেঁধে। এই প্রশ্ন এতো সহজ বে সহজ উত্তর

ছাড়া এর কোনো উত্তর নেই। স্থান্তর সমস্ত আস্তরিকতা দিরে এ প্রশ্নের উত্তর কেমন ভাষার দেব, তাই ভাবতে আমার এক মুহূর্ত দেরি হোলো। তারপর হিফ্ডিক না করে সহজ প্রশ্নের সহজ উত্তর দিলাম। বললাম, গ্রা পাবি। সমর যেদিন আসতে সেদিন আপনাদের জন্মও প্রাণ দেবার জন্ম আমি প্রস্তত।

উত্তর দিতে মুহূর্তনাত্র দেরি সর্চোছল আনার। সেই মুহূর্তে চকিত বিহাং-বিকাশের মতো এই সত্য আনার অন্তরে উদযাটিত হয়েছিল যে, বীশুর সেবার জাতিভেদের স্থান নেই, তাঁর দৃষ্টিতে সব মানুষ্ই সমান। তাঁর অন্ত প্রোসমূতে সর্বজাতির স্বগ্রা প্রস্থে মিশেছে!

আর একজন মহাপ্রাণবতী মহিলার দক্ষে আনাব এখানে পরিচয় হয়েছিল। তিনি ডবলু ই গ্লাডাটানের কলা মিসেস ডু। তাঁর ছাতা লর্ড গ্লাডাটান ছিলেন তংকালান গভণির জেনারেল। ভারতীয় সমাজের এই সংগ্রামে তাঁব মান্তরিক সমর্থন ছিল এবং তিনি নারবে তার জাতাকে সাহায়া করতেন। হুর্গত মানবাত্মার পভার বঞ্চনাকে তিনি সমস্ত অন্তর দিয়ে অমুভব করেছিলেন,—তাঁর পবিত্র দৃষ্টিতে করুণাধারা ঝরে পড়ত। মহাত্মা গান্ধী ও গান্ধী-পত্নীর প্রতি তাঁর সহাত্মভূতিপূর্ণ কথাবার্গায় আমি অত্যন্ত আনন্দ লাভ করতাম।

মহান্ত্রা গান্ধীর সঙ্গে আমার প্রথম পরিচয় হয় এই দক্ষিণ-আফ্রিকায়। সেই প্রথম দর্শনেই আমাদের উভগ্ন হৃদয় এক অচ্ছেক্ত বন্ধনে বাঁধা পড়ে যায়,—সে বন্ধন এ জীবনে কথনো শিথিল হবে না। আমাদের তৃজনের হৃদয়ের মাঝখানে যে প্রেম-মন্দাকিনী প্রবাহিত,— সে প্রোতে কোনো ভাঁটা নেই।

মহাত্মা গাধাীর বেদনারিষ্ট কঠোর জাবনের মধ্যে আমি প্রত্যক্ষ করেছি নির্যাতন-সহিষ্ণৃতার সর্বজয়ী প্রমশাক্তি। গাদ্ধিজীর সংশ্পর্শে এসে আমি ভরকে জয় করতে শিখেছি। অগ্লিকুলিঙ্গের ম্পর্শে প্রদীপ যেমন জলে, আমার চরিত্রের যা কিছু নিষ্পুপ্ত শুভবোধ তাঁর চরিত্রম্পর্শে তেমনি জাগ্রত হয়েছে, উজ্জীবিত হয়েছে আমার প্রেরণা। সামান্ততম প্রাণ যেথানে নির্যাতিত,—সেথানেই তাঁর অনস্ত মমহভরা প্রাণ ছুটে গেছে। এমনি ভাবে অবিশ্রাম ছুটে ছুটে তাঁর হঃখ-সন্ধানী আত্মা বিরামহীন আবেগে সেই অনির্বচনীয়েরই সন্ধান করেছে,—বাঁর নাম সত্য, বাঁর অপর নাম ঈশ্বর।



একটি উষ্ণ দিনের কথা মনে পড়ে। ট্রান্সভালে প্রিটোরিয়া শহরের কাছে একটি নদীতারে মহাত্মান সঙ্গে আমি বসে আছি। আমি তাঁৰ সঙ্গে তর্ক করছিলাম এই বলে, স্কৃষ্টির উন্নততর প্রাণা নিম্নতর প্রাণাকে ভক্ষণ করে থেঁচে থাকে, এটা প্রকৃতির নিয়ম,— অত্তর্থব মায়ুষ যে পশুপক্ষী খান্ন, সেটা নীতিবিক্ষক্ষ নয়।

গান্ধিজী আমার চোগের উপর চোগ রেপে বললেন,—কিন্তু খুষ্টান হয়ে তুমি এই যুক্তি কী করে দাও ? তুমি তো বিশ্বাস করে। যে পরমপ্রভু মানব-জন্ম নিয়ে আবির্ভূত হয়েছিলেন জীবনকে রক্ষা করবার জন্মে, ধরংস করবার জন্মে নয়। তোমাকে আমাকে সকলকে রক্ষা করবার জন্মেই যীভগুঠ আল্পবলিদানকে সত্য বলে গ্রহণ করেছিলেন। তবে ? জাবন নেওয়া নব, জাবন দেওয়া,—এই কি জীবনের শ্রেষ্ঠ সত্য নয় ?

তাঁর এই কয়েকটি কথার মনোই পান্ধিজীর জীবনসত্যকে আমি উপলব্ধি করেছিলাম। গান্ধিজীর জাবনের ব্রত শুধু দেওয়া,— কিছু নেওয়া নয়—চরম আগ্মদানের শেষ মুহূর্ত পর্যন্ত অনিবাম অবিশাম শুধু দেওয়া,—এই দেওয়ার নধ্যেই অনিবাণ আনন। প্রথম থেকেই অন্তরের সুন্ধানুভৃতি দিয়ে আমি উপলব্ধি করেছিলাম যে গাধিজা একজন অশেষ ব্যক্তিখ্যম্পন্ন ধর্মনেতা তো নিশ্চয়ই, বাঁর আহ্বানে অসংখ্য নরনারা বিগলিত চিত্তে অসহনীয় হ:খ-বিপদকে বরণ করে নেয়,—কিস্ত এইটুকুই গান্ধিজার পরিচয় নয়। ঐ আকাশের তারাকুল যেমন সত্য, ঐ নিত্যস্থায়ী পর্বতমালা যেমন সত্য, ঐ অবিনশ্বর চিরস্তন চিরনৃতন সংস্থাব মূর্ভ প্রকাশ মহাস্মা গান্ধী। সমস্ত বাধা-বেদনাকে অভিক্রম করে কে? সমস্ত অক্সায়কে হরণ করে কে ? সমস্ত শক্তিণ অধিবাজি পরম শক্তি তা ? অনস্ত **স্হিষ্ণু প্রেম।** গান্ধিজীর এই একমার বাণী। এই বাণী প্রম সত্যের বাঞ্চয় রূপ। মিস মন্টেনোও গভার হৃদয়াবেগের সঙ্গে এই একই সভ্যের প্রতিধ্বনি করতেন যথন তিনি বলতেন, সহিষ্ণুতার পথই ঈশ্বর-নির্দিষ্ট প্রেমেন পথ।

এই সত্যের ব্যবহারিক পরীক্ষা আমি দক্ষিণ-আফ্রিকার সংগ্রামের মধ্যে নিত্য প্রত্যক্ষ করেছিলান। সেথানকার নিত্য-নির্যাতিত কুদ্রকায় ভারতীয় সমাজের অবস্থা দেগে প্রথম শতাব্দীর পৃষ্ঠভক্ত-সম্প্রদায়ের কথা আমার মনে পড়ত। সহজ সরল অন্তর মাধুর্য ভরা সামান্ত একটি গোষ্ঠী, তাদের ঘিরে বিদ্বেষ ও ভেদাভেদের বিকৃত্ব হলাহলবতা।

মহান্ত্রা গান্ধীর ফিনিক্স আশ্রমে গিরে প্রথম দিনই এই চিত্র
স্পষ্ট প্রতিভাত হোলো। গান্ধী ও তাঁর ঘনিষ্ঠ অত্নবর্তীরা এই
আশ্রমে তাঁদের ধর্মজীবনের স্টনা করেছিলেন। শিশুদের মহান্ত্রা বড়ো ক্লেছ করতেন। শ্রীযুক্তা গান্ধী ও তাঁর পুত্ররা তথনো কারাক্লন।
আমি গিরে দেখলাম, এই নিরান্ত্রীয় মানুষটিকে প্রিয় শিশুর দল ঘিরে রয়েছে। ভারতের অচ্ছৃৎ সমাজের একটি শিশুকভাকে কোলে নিয় তিনি বদে আছেন; আর একটি কয় পঙ্গু মুসলমান বালক ঠা; কোলের একটি কোণ দখল করবার চেষ্টা করছে। আমাজে; সঙ্গে আহার করবার জভো নিমন্ত্রিত হয়ে এদেছে একটি ভ্লু গৃষ্টা; রমণা।

সেদিন সন্ধ্যায় অনেক আলোচনা হোলো। বুটিশ ও বুররচে সম্বন্ধেও অনেক কথা হোলো, কিন্তু কোনো কথার হিংসা নেই উন্ন নেই, ছালা নেই। দিনান্তের সেই অবসন্ন অন্ধকারে ধর্মগ্রন্থে কয়েকটি কথা কেবলই আমার মনে পড়তে লাগল,—

"যারা বিশ্বাস করে, তাদের এক প্রাণ এক আছা; তার একসঙ্গে তাহাৰ কৰে; প্ৰভ্ৰ নামে ছংখৰৱণেৰ জ্ঞা তাৰ নির্বাচিত হয়েছে সেই একই আনন্দে তারা বিভোব হয়।" সবকার পর্যংবক্ষণ সত্ত্বেও চ্ক্তিলাস-প্রথার বীভংস রূপের সঙ্গে পর্বনি সকালেই আমার পবিচয় হোলো। মহাত্মা গান্ধীর সঙ্গে আহি বেড়াতে বা'ন হয়েছিলাম। হুঠাং একটা ইক্ষু-বাগিচার ধাত একটি মূতি আমাদের চোগে পঢ়ল। পথের পাশে গুঁড়ি মেং রয়েছে একটা লোক। মহাত্মা গান্ধীর কাছে এসে সে তাঁর পদ ধূলি নিল ও নিজের নগ্ন পিঠটা খুলে তাঁকে দেখাল। চাবুকে আঘাতে আঘাতে সমস্ত পিঠটা ক্ষত্বিক্ষত। বুঝলাম, অত্যাচায় জর্জরিত হয়ে লোকটা বাগিচা থেকে পালিয়ে এসেছে ও মহাকা গান্ধীর আশ্রয় চাইছে। আমি কিছুটা পিছনে ছিলাম, এখন লোকটির পিঠের শ্বন্তগুলি পরীক্ষা করবার জন্ম সামনে এগিছে এলাম। লোকটি যথনই দেখল আমি ইউনোপীয়ান, তথনি দে আতংকে কুঁকড়ে গেল, এই বুঝি আবার তাকে আমি মারব আমি শ্বেতকায় হলেও তার শত্রু নই, বন্ধু, এ কথা তাকে বুঝিয়ে প্রা সহজ হোলো না। আমি যথন প্রথম তার সামনে গিয়ে দাড়াই তথন তার ঢোগের *শেই* ভয়ার্ড বিহবল দু**ষ্টি** বহু দিন আমি মন থেকে মুছে ফেলতে পারিনি।

চারিদিকের এই সব ঘটনা ও দৃশ্যের মাঝখানে দেশ থেকে সেই তারবার্তাটি এসে পৌছলো, যেটি আসবে বলে সমানে আমি ভব করছিলাম। আমার মা আর ইহজগতে নেই। নিরাত্মার বিদেশে বসে এই সংবাদ আমি পেলাম। তপন শ্রীবুক্তা গান্ধার সপে সঙ্গে করেকজন ভারতায় জননী আমাকে মাছবিয়োগ-শোকে সান্ধনাদিতে এলেন। ভারতীয় জননীরৃন্দ, প্রেমনয়া সান্ধনাদাত্রা তোমবা, বিদেশী সন্তানকে কী পবিত্র প্রেহস্থাদানে ভোমবা তৃপ্ত করেছ। শোকের মর্মান্তিক আঘাতে যে করুণ সান্ধনাম্পর্শের অবপট ভালোবাসায় ভোমরা আমাকে অভিষ্কিত করেছ, সে অপরিশোধ্য ঋণ সারাজীবনে আমি ভূলব না।

অমুবাদক: নিলেচন্দ্র গলোপাধ্যায়

ভুল বকুল বস্থ

ফুলের কুঁড়ি যেমন থাকে নিলীন হোগ্নে মত্ত আপন গাছে, তেমনি তুমি নীরব হোয়ে গুঞ্জরিত তোমার হুদয়-মাঝে। ভূলের 'পরে ভূল জমেছে তাই তো তোমায় গভীর কো^{রে চাই,} স্মামায় ভূমি ক্ষমা কোরো—ভূল<mark>ঃ</mark>কোরেছি বুঝতে পারি নাই। वावात वा कर्रीउर्वक श्रष्टां कत्वा!



ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড একট স্থপরীক্ষিত স্বাস্থ্যপ্রদ টনিক। পৃথিবীর সর্বত্র স্বাস্থ্যসচেতন ব্যক্তিরা নিয়মিত এটি নিজেরা ব্যবহার করেন ও তাঁদের ছেলেমেয়েদেরও খাওয়ান। ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড এমনসব প্রয়োজনীয় পৃষ্টিকর উপাদান দিয়ে তৈরী যা আপনার ও আপনার পরিবারের সকলের বল, স্বাস্থ্য ও আনন্দোজ্জল জীবনের জম্ম বাড়তি শক্তি যোগায়।

ওয়াটারবেরীজ কম্পাউপ্ত অবিরাম কাশি, সর্দি ও বৃকে শ্লেমা থামায়। রোগমুক্তির পর হুভস্বাস্থ্য দ্রুভ পুনক্ষরারের জক্ম চিকিৎসকেরা অনুমোদন করেন।



এখন চুরি-নিরোধক কাপ এবং নৃতন লাল লেবেলবুক্ত ৰোভলে পাওরা যার।

একণে লাল মোড়ক বন্ধ করিয়া দেওয়া হইয়াছে।

চমৎকার স্থাত্ব

ওয়াটারবেরীজ কম্মাউও

মেরন করে নিজেকে স্বস্থ রাখুন



হাদিও বিকেল থেকেই আকাশের চেহারা ভাল ছিল না,
কেমন যেন মুখ ভার করে গন্ধীর হবে বসেছিল, তবু সন্ধ্যে না
হতেই যে এরকম ভড়মুড় করে বৃষ্টি এসে পড়বে তা কমলেশ মোটেই
ভাবেনি। ভাবলে অন্তত এই চ্বোগের মধ্যে একলা হোষ্টেলে
ফেরবার চেষ্টা করত না। বিশেষ করে এ অঞ্চলে ও যথন নঙুন
লোক, পথঘাটও ভাল করে চেনা নেই।

সহর থেকে চার মাইল দূরে নতুন গড়ে উঠেছে এক কলোনী।
অনেকগুলি পরিবার যারা গ্রামের সহজ স্থন্দর জীবন ভালবাসে,
সহরের মধ্যে বাস করতে বাদের প্রাণ হাঁপিয়ে ওঠে, তারাই শুরু
এখানে এসে আশ্রুর নিয়েছে। জমি অনেকথানি, তারই মধ্যে
ছোট ছোট সব বাড়ী, কম করে পঞ্চাশটি সংসার এখানে থাকে।
এখানকার ছেলে বুড়ো সবাই কাজ করে কলোনীর জন্তে, যার
যেরকম ক্ষমতা। গাঁয়ের ছেলেদের পড়বার স্থবিধের জন্তে এই
কলোনী থেকেই করা হয়েছে স্কুল, আর তার সঙ্গে লাগোয়া হোষ্টেল।
কমলেশ এই ক্রাষ্টেলেই থাকে।

কমলেশের বংগ্রেস বছর চোন্দ। মামার বাড়ীতে থেকে পড়ান্ডনো করছিল কলকাতায়। বাবা কাজ করেন মফংস্বলে, তার

উপর বদলির চাকরি, এক জায়গা থেকে আর এক জায়গায় দুরে বেড়াতে হয়। কমলেশেরই মুস্কিল হত সবচেয়ে বেশী কতবার _{সে} **স্থুল পালটাবে ? কলকাতায় থেকে তার সেই স্থবিধা হয়েছে নেশ** কয়েক বছর একই স্কুলে পড়তে পারছে। কিন্তু তা হলে হবে কি, কলকাতার স্থুলে আর যা কিছুই হোক না কেন পড়ান্তনাটা হয় না। ছেলেরা সব তৈরী হয়ে থাকে কোনরকম ছুতো পেলে হয়, ভাহলেই ওরা ষ্ট্রাইক করে স্কুল থেকে বেরিয়ে যাবে। কোরী মাষ্টার মশাইরা অার কি করবেন, ইচ্ছে থাকলেও পড়াবেন কা'কে ? প্রথম প্রথম কমলেশও অন্থাদের সঙ্গে ট্রাইক করেছে, গৈ হৈ করে ষ্মানন্দ পেয়েছে, ষ্ট্রাইক করে বাড়ী এসে গরম গরম বন্ধৃতা দিয়েছে। কিন্তু তার মতামত কুমশ বদলে গিয়েছিল সদাশঙ্করের সঞ্জ আলাপ হ্বার পর থেকে। সদাশঙ্কর বুঝি কোন কলেজে পড়তো কি**ন্ত তার বৃদ্ধি কলেজের সীমা ছাড়িয়ে ঘুরে বেড়াতো ব**হু দূরে। তথন থেকেই নিজের মতামত লিখতো, বিভিন্ন কাগজে প্রকাশ করতো। কমলেশের সদাশঙ্করকে থুব বেশী ভাল লাগত। সব জিনিষকে এত সহজ করে বুঝিয়ে দেবার ক্ষমতা সে আর জন্ম লোকের মধ্যে দেখেনি।

সদাশস্করের অনেকগুলো কথা সে আছও তুলতে পারে না, কত সময় মিষ্টি হেসে বলতেন, স্কুল খ্রাইক করে কি লাভ? গোমবা এখন ছাত্র, যদি পড়াশুনো না কর, দেশের কি কাজে লাগবে বলতে পারো?

কমলেশ ভ্য়ত কখনও তর্কের থাতিরে বলেছে, তা বলে অন্নায়ের বিক্তম্বে আমরা প্রতিবাদ করব না ?

—তা করবে না কেন? কিন্তু ইন্ধুল কি দোধ করল, ট্রাইক করে ছেলেরা তো সিনেমার গিয়ে ভীড় করে। তাতে কি লাভ? লল তুমি আমার সঙ্গে একদিন, আমরা যে কলোনীতে থাকি, সেথানে :কটা স্কুল খুলেছি, ছেলেরা কি বকম পড়াগুনো করে দেখলে তুমি থুসা হবে। এর নাম দিয়েছি বিক্তাপীঠ।

কমলেশ সেই প্রথম শুনেছিল বিজ্ঞাপীর্চেব কথা। একদিন
শক্ষরদা'র সঙ্গে গিয়ে দেখেও এসেছিল। ভাল লেগেছিল। ভাব কিন্তু
এখানে এসে যে পড়াশুনো করবে তা সে মোটেই ভাবেনি। বাবা
মাকে অবশ্য সে উচ্ছাসভরে চিঠি লিপে জানিয়েছিল, শস্করদা'র এই
আদর্শ স্কুলের কথা, কিন্তু কোন জারগায় লেখেনি সেগানে গিয়ে একলা
হোপ্তেলে থেকে ভার পড়বার ইচ্ছে আছে। বরং ভার বাবাই
লিখেছিলেন, ভোমার শন্করদা' বড় ভাল ছেলে, যদি চাও, ভূমি গদের
বিক্তাপীঠে পড়তে পার, আমি সব ব্যবস্থা করে দেব।



ধনপ্রয় বৈরাগী

বিভাগীঠে যাবার কথা তথন না উঠলেও করেক মাসের মধ্যেই কমলেশ ছির করল সে ওথানেই চলে যাবে। তার প্রধান কারণ অবস্থ প্রশাস্ত আর তার দিদি রেবুকা। কলকাতার এসে স্কুলে ঢোকার পর থেকে যার সলে তার সবচেয়ে বেশী বন্ধুই হয়েছে, সে প্রশাস্ত। ওরই বরসী ছেলে, ফর্সা রঙ, টানা-টানা চোখ, কেমন যেন নরম চেহারা। পড়াশুনোর থুব ভাল না হলেও স্বভাব বড় চমৎকার! কমলেশ কত দিন ওদের বাড়ীতে গেছে। ছোট্ট ছথানা ঘরের বাসাবাড়া, অভাবের চিচ্ছ চারিদিকে স্কুল্পষ্ট। প্রথম যেদিন কমলেশ ওদের বাড়ী যার প্রশাস্তর মুথে সে কি হাসি, বলেছিল, আমি জানতাম ডুই ঠিক আসবি। ক্লাশের সকলকেই তুই ভালবাসিস—

নিজের প্রশংসার লক্ষা পেরেছিল কমলেশ, দেরালে আঁকা একটা ছবির দিকে চেয়ে থাকে, বা: বড় স্থন্দর তো, কেনা বুঝি ?

- -- कना नम्र, पिपित्र व्याका।
- —তোর দিদি আছে ?
- —হাা, আমার চেয়ে ছ'-তিন বছবের বড়, ওর এবার ফার্ষ্ট ক্লাশ।

 চাতে থাবাবের থালা নিয়ে তাদেরই বর্মী একটি মেয়ে ঘরে
 ঢোকে।

প্রশাস্ত আলাপ করিয়ে দেয়, এই আমার দিদি।

রেণুকা হেসে জিজ্ঞেদ করে কেন, আমার কথা হচ্ছিল বুঝি ?

- কি স্থলর আপনি ছবি আঁকেন ?
- ---আমাকে আর আপনি কেন ভাই, তুমি বল।

সেই ওদের সঙ্গে প্রথম আলাপ। তারপার কন্ত দিন কমলেশ ওদের বাড়ী গেছে, প্রশাস্তর দিদি সত্যিই ভাল ছবি আঁকে। স্থামল বাংলার কন্ত অপূর্ম্ব ছবি, জীবনের কন্ত দৃষ্ঠ। রেথায় কন্ত অমর মুহূর্তকে ধরে রেথেছে। এন্ত ছবি, এন্ত স্কুন্দর, অবাক হয়ে চেয়ে থাকে কমলেশ। জিজ্ঞেস করে, এগুলো প্রকাশ করা হয় না কেন ?

দিদি উত্তর দের, কি করে করব, আমাদের জ্বানা-শুনো তো কেউ নেই ? কমলেশ ভাবে সত্যিই তো, জ্বানা-শোনা না থাকলে এদেশে কিছুই করা যায় না। প্রশাস্তদের বাড়ীতে এসেই কমলেশ সত্যিকারের জীবন দেখতে পেরেছিল, প্রশাস্ত্ররা বই পড়তে চায়, কিন্তু বই পায় না। রেণুকাদি'র ছবি আঁকার স্থলর হাত, কিন্তু তার স্থবোগ কই ? জভাব এদের সব নাই করে দিছে। এদের বাড়ী বার বার এসে কমলেশের শুধু মনে হরেছে, এখানে যেন 'নেই'-এর একটা মিছিল চলেছে। কাগজ্ঞ নেই, বই নেই, স্থবোগ নেই। কমলেশের কড় সমর্মনে হরেছে এদের ধদি সে সাহায্য করতে পারত কিন্তু তার শক্তিক, কি করতে পারে সে?

আরও ব্যথা পেত যথন সে দেখত, তারই ক্লানের ছেলে স্বধাংশুদের বাড়ী। কি বিশাল ইমারং, আসবাবের বাহুল্য, অযথা বিলাসের স্পষ্ট আভাস। সবচেরে মজার কথা, স্থধাংশুও ছবি আঁকে, কিছ ছবিব তলার লিখে না দিলে বোঝা যায় না. কি সে আঁকতে চেরেছিল। অথচ এরই জন্তে তার আঁকবার আলাদা ঘর আছে, শেখাবার মান্টার মশাই আছে, কত বং, কত তুলি। স্থধাংশুদের লাইবেরীতে প্রচুর বই, সব বই-এর দোকানে বলা আছে, নতুন ভাল বই বেকলে পাঠিরে দিতে। কাচগুলোর ওপর ধুলো পড়েছে, কেউ এসব নাড়াচাড়া করে বলেও বিশ্বাস হয় না। কমলেশ জিজ্ঞেস করেছিল, তোরা খ্ব পড়াশুনো করিস?

স্থাংক্ত হেসে উত্তর দের, জামাদের সময় কোথায় ? মাষ্টার মশাসরা মাঝে মাঝে এসে বই নিয়ে যান।

প্রচুর বই, অথচ পাঠক নেই। আর ওদিকে প্রশান্তরা চার পড়তে অথচ বই নেই, কি সন্দর বিচার !

সদাশস্করের সঙ্গে আলোচনা হয় কমলেশের, সে প্রাণ থ্লে বলে তার কিশোর মনের কথা, সে ভেবে পায় না কেন টাকার অভাবে রেণুকাদের প্রতিভার অপমান হয়, আর প্রতিভার অভাবে সংগাংকদের টাকার অপমান হয়। কেন ছ' দিকেই অভাব? কেন কেউ সম্পূর্ণ নিয়?

সদাশস্কর তাকে বুরিয়ে বলত, এই যে সমাজের নিয়ম! তুমি আমি কি করতে পারি বল ? তবে চেটা আমাদের করতে হবে, যাতে স্বাইকে স্মান স্থাগে দিতে পারি।

প্রায় মাসথানেক বাদের কথা, বলা নেই, কওয়া নেই হঠাং পাঁচ দিনের অস্ত্রথে ভূগে মারা গেলেন প্রশান্তর বাবা। ভাল করে চিকিৎসাও করান গেল না। এই হু'টি ছোট্ট কিশোর-কিশোরীর আত্মীয়-স্বজন যারা ছিল এই বিপদের সময় সবাই দ্বে সরে গেল, পাছে এদের ভার নিতে হয়। সেই সময় কমলেশ দিন-রাত এসেছে এদের বাড়ী, যতরকম ভাবে সম্ভব সাহায্য করার চেষ্টা করছে। রেণুকা ওর হাত ধরে বলত, তুই না থাকলে আমাদের কি হ'ত বলত কমল, বাবা বে এভাবে হঠাং চলে যাবেন, বেচারী প্রশান্ত, ওকে এই বয়েস থেকেই কাজ করতে হবে। তা না হলে আমাদের চলবে কি করে।

ক্মলেশ সান্ধনা নিয়ে বলেছে, তা হবে না, তোম'দের পড়াভনো ক্রতে হবে I

কি করে করবো? এ বাড়ী ছেড়ে দিতে হবে তো? তিন মাসের বাড়ীভাড়া বাকী পড়ছে। আমিও চেষ্টা করছি, যদি মেয়ে ছবি আঁকা শিখতে চায়—

কমলেশ আর কোন কথা না বলে সোজা গিয়েছিল সদাশস্করের বাড়ী। প্রশাস্তদের সব কথা খুলে বলে সজল চোখে জিজ্ঞেস করেছিল, কি হবে শঙ্করদা'? এদের জন্মে কি কিছুই করতে পারব না?

শঙ্করদা' সম্রেছে বলেন, বোকা ছেলে, ওদের এ বিপদের কথা আমাকে এত দিন বলনি কেন ?

- —কি যে করব বুঝে উঠতে পারছিলান না।
- —প্রশান্ত আর রেণুকাকে বলো এথানকার ওদের যা দেনাপত্তর আছে, হিসেব করে রাথতে, আমি কাল গিয়ে সব মিটিয়ে দিয়ে ওদের নিয়ে যাব আমাদের বিভাগীঠে, দেথানেই লেথাপড়া করবে।

শঙ্করদা' যে এত সহজে এত বড় সমস্রার সমাধান করে দেবেন, তা কমলেশ ভাবতেই পারেনি। ধরাগলায় বলে, ওরা বড় ভালো শঙ্করদা', আপনি দেখলে থ্ব খ্নী হবেন।

সদাশস্কর কোন উত্তর দেয়নি, নীরবে কমলেশের কাঁধের ওপর একটা হাত রেখেছিল, সেই গাঢ় স্পর্শ থেকে কমলেশ ব্রুতে পারে তার ওপর শ্বরুরণ'র ভালবাদা আর বিশ্বাদ কতথানি।

কমলেশ নিজে থেকেই বলে, প্রশান্তরা চলে গেলে, আমিও আর একলা ক'লকাতায় পড়ে থাকব না। বিত্তাপীঠেই পড়ান্ডনো করব। —সে তো খ্ব ভালো কথা, তোমার বাবাকে চিঠি লিখ, উনি বদি মত দেৱ,—

বাবার মত আছে, সে আমি জানি।

এর পরের ইভিহাস োট। ক'দিন বাদেই সদাশহরের বিভাপীঠে এসে হাজির হয় কমলেশ, প্রশাস্ত আর রেণুকা। কলকাতা থেকে জারগাটা প্রায় তিশ নাইল দূরে, ট্রেণ লাইনের উপর। বিশাল ধানকেন্ড, চার দিকে গুধু সবুজের ইসারা। সহরের দমবদ্ধ-করা সভ্যতা এণানে নেই। এথানে প্রকৃতির থেলা, স্বাভাবিক জীবন।

কমলেশ আর প্রশান্ত উঠেছে হোষ্টেলে। স্থন্দর থাকবার ব্যবস্থা, চপ্লিশটি ছেলে থাকে। কিছু মেয়েদের সোষ্টেল এখনও কৈনী হয়নি। তাই রেণুকা উঠল মণিকাদি'র বাড়ী। মণিকাদি' ছেলেমেয়েদেব ছবি আঁকা শেখান আবার অবসর সময় গানও। বড় মিষ্টি স্বভাব মণিকাদি'র, কন্ত সহজে এদেব আপনার করে নিয়েছেম। এডটুকু দূব্য যেন নেই।

এই ক'দিনেৰ মধ্যেই বিভাগীটেৰ মানা কাজেব ভাব নিয়েছে গ্রা। বেণুকা মণিকাদি'ব সঙ্গে সারাদিনই কাটায় শিল্পভবনে। এখানকাৰ সবকিছু ভই গুছিয়ে রাখে। মধিকাদি' খুনী হয়ে বলেন, ভাগ্যিস বেণুকা এনে পড়েছিলো, আমি তো একলা সামলে উঠতে পারছিলাম না।

প্রশান্তর থেলোচাড় ছিসেবে নাম ছিল কলকাতায়। স্থুলের
টিমে ফুটবল থেলত। এখানে এসে ও থেলা নিয়ে মেতে উঠেছে।
সারাদিন স্থুলের পর সোজা চলে যায় থেলার মাঠে, হৈ হৈ আনন্দের
মধ্যে কোথা দিয়ে দিন কেটে যাচ্ছে তা সে ব্যুতেই পাবে না।

কমলেশ ভার নিয়েছে লাইত্রেরীর। লোভলার কোণের যরে বেশ কিছু বই থাকলেও ছো বছু করে এতদিন সাজান হয়নি। সদাশন্তর সেই ভারটাই দিয়েছে কমলেশের ওপর। একদিন কমলেশ वरेश्वला जानमात्रीएक विशव जयुगात्री माजिएस त्रात्थरक, नज़न निहे তৈবী করেছে, এবার তার বই কেনার পালা। বিজ্ঞাপীঠ থেকে চার মাইল দূবে সহর। সেখানেই দোকানপত্র। কমলেশ আজ গিয়েছিল সাতথানা নতুন বই-এর অর্ডার দিয়ে আসতে। মনে করেছিল কান্ড সেরে বিকেলের মধোই ফিরে আসবে। ফিরেও আসত ঠিক যদি না হঠাং এত জোরে বৃষ্টি নামত। সহর থেকে বিক্তাপীঠে যাবার অনেকথানি পথই বাস-এ যাওয়া যায়। ইচ্ছে करतरे कमरमम वारम हार्शनि । रहेर्ड जामरव वरम । किन्न जर्हिक পথ না আসতেই, কালবৈশাখীর মডে চারদিক অন্ধকার করে ধুলো উভিয়ে ঝমঝম করে বৃষ্টি স্থক হল। কিছুক্সনের জন্তে কমলেশ ডেবে পেল না কোন দিকে যাবে। একটা কছ গাছের ভলায় ওটিমটি মেরে বসেছিল কিন্তু বৃষ্টির প্রকোপ ক্রমশঃ বাড়ছে দেখে ভার ভর হল, এ রাস্তা দিরে সে থুব বেশী থেটে যাতায়াত করেনি। ভবু মনে পড়ল এবই কাছ বরাবর কোখায় যেন নদীর ধারে একটা বিশাস বাড়ী আছে, যা সে বাসে বেতে যেতে দেখেছে। ব্দক্তারের মধ্যেও চারদিকে তাকাতে লাগল কম্লেশ, মনে হল কিছু পুরে যেন একটা আলো দেখা বাচছে। এই ছুর্যোগের রাভে **লম্ভত: এ**কটা ভাষার পাওয়া বাবে, এই আশার বুক বেঁখে কমলেশ

প্রাণপণ শক্তিতে ছুটল সেই আলো লক্ষ্য করে। দ্ব থেক্সে দেখে ৰতটা কাছে মনে হয়েছিল, তত কাছে নর। যথন কমপ্রেদ সে বাড়ীর সামনে এসে পৌছল, তথন তার জামা-কাপড় সবই ভিক্ষে ছপ-ছপ করছে। কমলেশ জোরে-জোরে দরজায় ধাাক্কা দেয়, দরজা খুলুন, দরজা খুলুন, কে আছেন ?

অনেককণ ভেতর থেকে কোন সাড়া পাওয়া যায় না। কমলেশ তথনও ধাক্কা দিয়ে যাচ্ছে, হঠাং ভেতর থেকে দরক্ষা ধূলে দিল।

কমলেশ একটু রেগেই বলে, কি মশাই, এতক্ষণ জলে দাঁড়িয়ে আছি জনতে পাছেন না ? কিন্তু এই পর্যান্ত বলে জার কথা শেষ করতে পারে না । দেখে সামনে এক অতি বৃদ্ধ জন্তলোক দাঁড়িয়ে রয়েছেন । ফর্সা রঙ, সাদা চূল, একমুখ সাদা দায়ী । সারা মুখে বয়সের গভীর রেখা পড়েছে । ভদ্রলোক সোজা হয়ে দাঁড়াতে পারেন না, কেশ কুজো । পরনে সাদা ধৃতির ওপর একটা সাদা কত্য়া । কমলেশের আপাদমন্তক একবাব ভাল কবে দেখে ঘরের কোণে রাখা একটা ভালা চেমারের ওপর গিয়ে বসেন ।

কমলেশ ভাল করে ঘরটা চারদিকে তাকিয়ে দেখে। পুরোন ঘর, চারদিকে বালি থসে পড়ছে। ঘরের এক কোণে যে লঠন ঝুলছে তাতে আলো থ্ব কম। চিমনির কাচটা কালো হয়ে গেছে। যে তক্তপোষটা বুড়োর সামনে রয়েছে তার একটা পায়া নেই। খান কয়েক ইটের ঠেকনোর ওপর দাঁড় করানো।

বুড়ো জানালা দিয়ে বাইরের দিকে তাৰ্কিয়ে ছিল। হঠাং জিজ্জেদ করলে, এখানে কোথায় থাকো ?

গলার স্বরটা কেমন যেন অস্বাভাবিক । কমলেশ মুহ্স্বরে বলে, বিজ্ঞাপীঠে থাকি।

- —তথানে কি হুর ?
- —লেখাপড়া, খেলাধুলো, আর কি।
- —তোমার নাম **?**
- —কমলেশ বসু।

—বুড়ো চুপ কৰে যায়, আর কোন কথা বলে না। কমজেশ কেমন যেন অস্বস্তি বোধ করে, তাছাড়া শীত করছিলও বেশ, সহর্ন গলায় জিগোস করে, একটা গামছা দেবেন ? গা-ছাতটা মুছে ফেলতাম।

বুড়ো কিন্ত শুনেও শুনলো না। ইচ্ছে করে বাইরের দিক্তে ভাকিয়ে থাকে। কুমলেশ আবার বলে, বড় শীত করছে, একট শুকনো কাপড় যদি দেন, কালই আমি ফেরং দিরে যাবো।

ভক্তপোক এইবাৰ ফিবে তাকান। চোথ ঘটো যেন জ্বল-জ্ব করছে। সোজা উঠে গেলেন দরজার কাছে, খুলে দিয়ে বললেন এবাৰ বাড়ী যাও, বৃষ্টি কমে গেছে।

কমলেশ আর কথা বলার স্থযোগ পার না। অন্ধনারের মধ্যে আবার রাস্তার বেরিরের পড়ে। তথনও অল্প অল্প বৃষ্টি পড়ছে। বার্নি রাস্তাটুকু জোরে জোরে হেঁটে কমলেশ যখন হোষ্টেলে এসে পৌছর তথন সাতটা বেজে গেছে। সকলেই তার জ্বন্তে ব্যস্ত হয়ে বসে ছিল মিশিকাদি' সব কথা ভনে বললেন, খুব সাবধান কমল, খবরদার অল্ডিবাটীতে যেও না।

---क्न मनिकाषि' "

—জান না বৃঝি ? ও-কাড়ীর আমরা নাম দিয়েছি বক্ষপুরী। ঐ যে বুড়োকে দেখেছো, ঐ জো যকবুড়ো।

কমলেশ অবিশ্বাদের হাসি ছাসে, আপনি ঠাটা করছেন আমার সঙ্গে, তাই কখনও সতিয় হয় ?

মণিকাদি' হেদে বলেন, বেশ তো, যাকে খুশী জিগ্যেদ করো। ও-বাড়ীতে যে কারা থাকে, আমরা কেউ দেখিনি। মাঝে মাঝে ওখান থেকে একটা গাড়ী বার হয়, তার টারদিকে পদা, পাছে কেউ দেখে ফেলে। একমাত্র ঐ বুড়োকে দেখা যায়, দে যে কে, কন্ত তাব বরদ, কৈউ বলতে পারে না, ভাই আমরা ধরে নিয়েছি ঐ নিশ্চয় যকবুড়ো। ভোমার দক্ষে তো তবু ছ'-চারটে কথা বলেছে, আন্ত কারুর দঙ্গে কোন কথাই বলে না। চুপ করে বদে থাকে।

সে রাত্রে খাওয়া-দাওরার পর সারাক্ষণই ওই যক্ষপুরীর কথা নিরে হাসিঠাটা হল। কমলেশ কিন্তু কিছুতেই বৃষ্তে পারল না মণিকাদি'রা কি বলতে চাইছে। ঘূমোবার সময় প্রশান্তকে ডেকে নিয়ে বলল, কি ব্যাপার বলতো ? ওরা স্বাই ওই বড় বাড়ীটার নাম যক্ষপুরী দিয়েছে কেন ? কেনই বা যেতে আমাদের বারণ করছে ?

প্রশান্তর ঘূম পেয়েছিল, হাই তুলে বলে, অত ভাবনা-চিন্তার দবকার কি ? বারণ করছে যথন, না গেলেই তো হয়।

- -- আমি কিন্তু আবার বাব।
- —কেন? ওথানে কি আছে ?
- —ওই বুড়োর সঙ্গে আলাপ করতে হবে। লোকটা অভুত ! কেমন বেন কথাবার্গা।

প্রশান্ত ভূক কুঁচকে বলে, তবে আর ওথানে গিয়ে কি লাভ ছবে? কমলেশ দীর্যস্থাদ চেপে বলে, ওই বুড়োর চোথ ছটো আমার বড় ভাল লেগেছে, যথন চুপচাপ বদে থাকে কেমন বেন শিঃসঙ্গ একলা চাহনি। নিশ্চয় ও কিছু বলতে চায়।

প্রশাস্ত থামিয়ে দিয়ে বলে, কি সব আবোল-তাবোল বকছিস?
কিন্তু একলা আর বাস না, আমাকে বলিস।

দিন করেক পরের কথা। কমলেশ গিরেছিল সহরে অর্জ্রার শেওয়া বইগুলো নিয়ে আসার জন্তে। বইগুলো হাতে করে ফেরবার সময় একবার বদিও ভেবেছিল বাসে করেই আসবে, কিন্তু কে যেন তার মন পানেট দিলে। কমলেশ হৈটেই চলল হোষ্ট্রেলের দিকে। বিকেলের পড়স্ত রোদ, নিস্তেজ হয়ে এসেছে। হাওয়া আছে, ভাই হাউতে কষ্ট হছে না। গুমেটি ভাবটা নেই। কমলেশ অনেক কথাই ভাবতে ভাবতে আসছিল। তার হাতে গড়া লাইত্রেরীর কথা, বিশ্বাপীঠের অক্যান্ত কার্য্যক্রমের কথা, আবার কলকাতার হ'-চারটে টুকরো কথাও বে মনে আসছিল না তা নয়। আজ সকালের ভাকেই বাবার একটা চিঠি এসেছে। উৎসাহ দিয়ে লিখেছেন, বদি ভোমার শঙ্করদা'র আদর্শের সঙ্গে নিজেকে মিলিয়ে

ভাবতে ভাবতে কথন যে কমনেশ সেই বক্ষপুরীর সামনে এসে পড়েছে তা ভার নিজেরই থেরাল হর নি। এ পর্যান্ত এসে তার পা জ্বে আপনা হ'তেই থেমে গেল। দেখন, সেদিন ছর্বোগের রাতে কুড়ার সঙ্গে বে বরে বসে পদ্ধ করেছিল, সেটা একটা দরোরানের ঘর। গেঁটের সঙ্গে লাগোয়া ছোট্ট ঘর। গেট পেরুলেই বিশাল মাঠ. তার ওপর কি বিরাট প্রাসাদ! সমস্ত জানালা-দরজা বন্ধ, লোক বাস করে বলে তো মনে হয় না। তথনও সন্ধাা নামেনি। ভাই বৃকে ভরসা করে কমলেশ গেট পেরিয়ে সেই প্রাসাদের দিকে এগিয়ে চলল। মণিকাদি'র কথাওলো তার কানে ভাসছে, সেই সঙ্গে প্রশান্তর সতর্কবাণী। একবার মনে করল এখান থেকে ফিরে গেলেই হয়, কিন্তু পারলো না। কে সেন তাকে সামনের দিকেই টেনে নিয়ে যাছে।

সেই প্রাসাদের দরজার সামনে দাঁড়িয়ে কমলেশ চার্রদিকটা ভাল করে দেখল। কি ভারী দরজা। তার ওপর বড় বড় তালা লাগান। মরচে পড়েছে। বোঝা যায় অনেক দিন ব্যবহার হয় নি । বাড়ীটা পুরোন, দেখলে মনে হয় মস্ত বড় জমিদারের, এখন আর আগের বোলবোলা নেই। অনেক জায়গায় বালি খদে পড়েছে, দরজা-জানালাতেও রঙ পড়েনি বহু দিন। কমলেশের নজরে পড়ব নদীর দিকে একটা ছোট দরজা খোলা রয়েছে, খিড়কীর দরজা। কোন রকম দ্বিধা না করে সে বাড়ীর মধ্যে ঢুকল। কি আশ্চর্য্য, অবাক হয়ে দেখল কমলেশ বাড়ীর বাইরে ভাঙ্গা-চোরা হলেও ভেতরটা ঝকঝক তকতক করছে। আয়নার মত পরিষ্কার মার্কেলের মেঝে, বড় বড় থামের ওপর কি নিথুত কারুকার্যা! বারান্দা ধরে বেশ থানিকটা এগিয়ে যায় কমলেশ। চোথে তার বিশ্বয়ের শেব নেই। তার মনে হয় মণিকাদি'র কথাই যেন সত্যি, গল্পের বই-এ যক্ষপুরীর যে বর্ণনা পড়েছে তারই সত্যিকারের চেহারা দেখছে এই বাড়ীর মধ্যে। পাশের একটা হলঘর থেকে অনেকের গলার স্বর ভেসে আসছিল। কমলেশের ইচ্ছে হ'ল তাদের সঙ্গে আলাপ করার। কিন্তু যেই দরজায় হাত দিতে যাবে, পেছন থেকে হঠাৎ কণ্ঠস্বর শুনে সে চমকে উঠল ।

—কে তোমাকে এ বাড়ীতে আসতে বলেছে **?**

কমলেশ ফিরে দেখে সেদিনকার সেই বুড়ো জ্বলন্ত দৃষ্টিতে তার দিকে তাকিয়ে আছে।

কমলেশ ভয় পেয়ে বলে, দরজা খোলা ছিল, ভাবলাম আপনাদের সঙ্গে একটু আলাপ করে যাই।

—থবন্দার আর এ বাড়ীতে ঢোকবার চেষ্টা করবে না। আরু আমি তোমাকে কিছু বলব না। কিন্তু এর পর এলে আর ফিবে বেতে পারবে না।

কমলেশ ভবে শিউবে ওঠে। না, না, আমি এথুনি চলে যাছি। কমলেশ আৰু কথা না বাড়িয়ে থিড়কীর দরজা দিয়ে মাঠে বেরিয়ে আদে। পেছন ফিরে না তাকিয়েও বুকতে পারে বুলো ভার পেছম পেছন আদছে। অন্ধকার নেমে এসেছে, কমলেশের গা ছমছম করে। বুড়ো হঠাৎ জিগোস করে, হাতে ভোমার ওগুলো কি ?

- —गाञ्चत वरे । नारे द्वतीत करन किरन निरंत्र शांकि ।
- —কিসের গল্প ?

কমলেশ সাহস করে ফিরে তাকিরে বলে, ছোট ছোট ছেলেরা কি রকম করে একটা স্কলর সহব গড়ে ভূলেছে তারই কাহিনী।

—দে তো আজহুবী গল।

ক্মলেশ জোর দিয়ে বলে, আজগুৰী নয় সত্যি, বইটা পড়ে লেখবেন? —ওসব বাজে জিনিয় আমি পড়ি না।

কমলেশ আর কথা বাড়ায় না, তাড়াতাড়ি পা চালিয়ে এগিয়ে চলে। ঠিক গেটের মূথে র্যেই এসে পৌছেছে বুড়ো আবার কথা বলে, তোমার একলা এ বাড়ীতে আগতে ভয় করে না ?

- —একটু একটু ভয় করে।
- —ভবে এগেছিলে কেন ?

কমলেশ মৃত্স্বরে বলে, আমার মনে হয়েছিল আপনি বোধ হয় আমায় কিছু বলতে চান।

বুড়ো এবার হাসে, আছো পাগল তো তুমি, আর লোক পেলাম না, তোমার সঙ্গে স্থ্য-তৃঃথের গল্প করব। থবদার আব গেট পেরুবে না। তাহলেই স্যা: ভেঙ্গে দেব।

কমলেশ আব কোন কথা না বলে চূপ কবে বেরিয়ে আসে।
সারা রাস্তায় মনে হয় ওই বাড়ীতে না চুকলেই বোধ হয় ভাল হ'ত।
মণিকাদি'রা ঠিকই বলেছে এ হোল যক্ষপুরী। আর ঐ বুড়ো
নিশ্চয়ই ধকবুড়ো।

বোতামের যাপ্ত ফুল যাত্রপাকর এ, সি, সরকার

প্রশিশনীর প্রারম্ভিক থেলা হিসাবে আলোচ্য 'বোতামের যাত্ ফুল' অতুলনীয়। আমি বহু বার এই খেলাটি বিভিন্ন রঙ্গমঞ্চে দেখিরে থ্ব ভাল ফল পেরেছি। বিশেষ করে পশ্চিমের দেশগুলোতে এ খেলাটি দর্শকদের যে আনন্দ দেয় তার তুলনা মেলা ভার।

ফিলৈট 'সাদ্যা-পোষাক' পরিছিত অবস্থায় যাত্তর প্রবেশ করেন রঙ্গমঞে। সকলকে অভিবাদন জানাবার পরে হঠাং তার নজর পড়ে তার কোটের 'বটন হোল'বা বোতামের গর্জের দিকে। তাই তো সেথানে কোনও ফুল নেই এবং তার ফলে তার পোষাক অসম্পূর্ণ। এজন্তে হুঃথ প্রকাশ করে যাত্তকর তার যাত্কোশল প্রেরোগ করলেন। খালি ডান হাতথানা একবার বোতামের গর্জের



উপর দিয়ে বুলিয়ে নিতেই
দেখা গেল, দেখানে রয়েছে
এক শ্বেত-গোলাপ। এই
অন্তুত ব্যাপার দেখে দশকেরা
যে কত থুশী হলেন তার
প্রমাণ পাওয়া গেল স্বতঃ স্কৃতি
হর্ষধ্বনির মধ্যে। কেমন করে
এই অন্তুত ব্যাপারটা
দেখানো বার তাই এবার
শোন।

এই খেলা দেখানোর জন্তে চাই কাপড়ের তৈরী একটি সাদা গোলাপ আর এক থণ্ড সক্ষ কালো 'ইলাষ্টিক'। এই ইলাষ্টিকের এক প্রান্তে লাগানো থাকবে নকল গোলাপ আর অন্ত প্রস্তুটি কুল বাধার কর নির্দিটি বোতামের গর্ভের ভেতর দিয়ে যুক্ত হবে কোটের 'ল্যাপেলের' ধারের বোতামে। ইলাষ্টিকের দৈর্ঘ্য এমন হবে যেন স্বাভাবিক অবস্থাতেই এ ফুলটিকে বোতামের ঘরে ধরে রাখতে পারে। এর পরে ফুলটিকে টেনে নিয়ে যদি বাঁ বগলের চেপে ধরে রাথ তবে ইলাষ্টিক আপন ধর্মে লম্বা হবে। বগলের চাপ কম হলে আপনা থেকেই ইলাষ্টিক ফুলটিকে টেনে এনে বোতামের ঘরে বসাবে। এই খেলা দেখানোর সময়ে গায়ে থাকবে কালো কোট, কান্ডেই কালো ইলাষ্টিক এই কালো কোটের রভের সঙ্গে সহজেই মিশে থাকবে। বেশ ছভাাদ করে তবেই কিন্তু দেখারে এ খেলা। ম্যাজিকে উৎসাহী যারা তারা ছামার সঙ্গে জবাবী কার্ডে প্রালাপ করতে পার। A. C. Sorcer. Magician. Post Box 16214, Calcutta 29 ঠিকানার।

যাত্ত্কর সরকার থীণাদেবী সেন

আমার ছোটো বনুরা,

আজ তোমাদের আমি একজনের বিষয় গল্প বলবো যা কাহিনী হলেও সতা। আমি গত বিশ বৎসর ধরে শিক্ষকতা কার্য্যের মাধ্যমে আমার ছাত্রীদের গল্প শুনিয়েছি, বেডিঙতে শিয়াল-বাঁদরের গল্প বলেছি, গল্প লিখেছি মহাপুরুষদের বিষয়ে যারা পৃথিবী ছেড়ে চলে গেছেন। আজ কিছা এমন একজনের বিষয় বলবো যিনি বাল্যে এবং কৈশোরে নানারপ অচল অবস্থা এবং দারিদ্রোর সঙ্গে যুদ্ধ করে তাঁর শক্তিসাধনা এবং প্রতিভাবলে স্বীকৃত হয়েছেন, ভাশতবর্ষকে গৌরবাধিত করেছেন দেশের মুখ উজ্জ্বল করে। গোমরাই বলতো এ কথা শুনে ভোমাদের বুক ফুলে দশ হাত হচ্ছে কি না ? তোমরা কবি সভ্যেন দত্তের 'আমরা' কবিতা পড়েছো ? সে কবিতাতে লেখা আছে বাঞ্চালীর যশ এবং প্রতিষ্ঠার বিষয়। আজকে যার বিষয় বলতে সুরু করেছি তিনি সম্প্রতি আমেরিকাতে সদলবলে রওনা হবেন। তিনি হচ্ছেন ষাত্মশ্রটি পি, সি, সরকার ওরফে প্রতৃষ চন্দ্র সরকার। এই অসামাক্ত খ্যাভিসম্পন্ন বাঙ্গালী তাঁর প্রতিভা দেখিয়ে জগতের নিকট হতে প্রচুর খ্যাতি অর্জ্ঞন করেছেন, বারংবার বিজয়মাল্য কঠে ধারণ করেছেন, তামাম ছনিয়ার জনগণমনকে যাত্বিতার ভেল্কি দেখিয়ে চমৎকৃত করেছেন। তিনি শুধু যে যাত্রবিজ্ঞায় স্থানিয়ন্ত্রিত তা নয়, তাঁর দৈনন্দিন জীবনের কর্মধারী তাঁর স্থনিয়ন্ত্রিত ব্যবস্থা, তাঁর স্থজনতা, অমায়িক আবরণ শার্ সঙ্গে পরিচিত হতে পারলে অমুপ্রেরণা পেতে পারো। অমুপ্রেরণা লাভ করবে এই উদ্দেশ নিয়ে আজ যাত্মমাট পি, সি, সরকারের বিষয় লিখছি। তাঁর আদিনিবাস মর্মনসিংহ জিলাতে, টাঙ্গাই^ল মহকুমার। তিনি বছবের মধ্যে প্রায় দশ মাস ভারতবর্বের বাইবে থাকেন, নানারপ আদব-কায়দা-ত্রস্ত দেশ বিদেশ গুরে, তাঁব বাহুবিভার ভেক্টী বাজী দেখিয়ে বখন বাংলা দেশে ফিরে আর্সেন তথন কিছ পি, সি, সরকার প্রোক্তমে বাঙ্গালী আচরণে, কখাবার্ডার ইত্যাদিতে। ভারতবর্ষের শিক্ষা দীক্ষাকে তিনি শ্রেষ্ঠ মনে করেন এবং গর্কবোধ করেন ভার **জন্ত।** সব চেরে ভার বেশী পর্ব তিনি বাজাল দেশের ছেলে।

পি, সি, সরকার কলিকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের কুতী ছাত্র, অঙ্কে জনাস নিয়ে বি. এ পড়তে পড়তে ১৯৩৩ খৃষ্টাব্দে যাহকর হয়ে চলে আসেন কলিকাতায়। ভারতে প্রথম প্রদর্শনীর পর তিনি প্রথমে যান খ্রাম, মালর, ব্রহ্মদেশ। তারপর থেকে আজ স্থলীর্ঘ পঢ়িশ বছর ধরে চলেছে তাঁর সমস্ত পৃথিবী ঘূরে বেড়ান। বিশের এক প্রাম্ভ থেকে আর এক প্রাম্ভ পর্যান্ত কোটি কোটি নরনারীর চিত্ত জন্ম, শ্রদ্ধা আকর্ষণ, পৃথিবীর বিভিন্ন দেশে কোথায় তিনি যাননি ? সর্বত্র, আমেরিকা, অষ্ট্রেলিয়া, নিউজিলণ্ড, জাভা, মালয়, জাপান, দিঙ্গাপুর, হংকং, ইংলগু, ইটালী, ফ্রান্স, জার্মেণী তন্বাতীত অন্ত বহু স্থানে। তিনি বহুবার গিয়েছেন ইংলণ্ডে, তিনি স্বীকৃত হলেন বর্তমান জগতের সর্বশ্রেষ্ঠ যাতকররূপে। বিদেশের পত্রিকাতে প্রথম পাতায় যাত্বর হিসেবে **জাঁর ছবি মুদ্রিত হলো, তিনি আমাদের জাতীয় পতাকা বিশ্বের শ্রেষ্ঠ** আসনে স্বপ্রতিষ্ঠিত করে বারংবার ভারতের জন্ম বিজয়মাল্য নিয়ে এলেন। সর্বদেশের পত্রিকাতে তাঁর প্রচুর প্রশংসা, বিদেশে পি, সি, সরকারকে ভারতের হুড়নি আখ্যা দিয়ে অভিনন্দিত করেছেন। তার কোটি, কোটি এমুরাসীনের মধ্যে স্থভাষ্চন্দ্র একজন। এক্ষের প্রধান মন্ত্রী থাকেন তু তাঁকে এশিয়ার গৌরব এই আথ্যা দিয়েছেন। কেনই বা দেবেন না?

১৯৩৬ সালে কলিকাভার, ১৯৫০ সালে প্যারীতে তারপর ১৯৫৭ সালে পৃথিবীর "সব চাইতে জনবছল রাস্তা নিউইর্ক টাইমস স্কোয়ারে চোথ বেঁধে সাইকেল চালিয়ে ইনি অসানাক্ত শক্তির পরিচয় দিয়েছেন। লগুন নিউইয়র্ক শিকাগোতে এব প্রদর্শনী টেলিভেশন যোগে দেখানো হয়েছে। শ্রীযুক্ত সরকার ইলেকট্রিক করাতে একটি নেয়েকে তুই টকরো করে যে যাত ক্রীড়া দেখিয়েছিলেন তা অতি আশ্চর্যাজনক ! এই খেলা দেখতে গিয়ে কয়েকজন সংজ্ঞা হারিয়েছিলেন, এমন কি টেলিভেশনের ছবি দেখেও অনেকে অজ্ঞান হয়ে পড়েছিলেন। অতএব যাত্রর রাজত্বে অপ্রতিশ্বন্দী সমাট পি, সি, সরকারের ভোজবাজী অন্তত ৷ পরলোকগত নেপালাধীশের মতে তাঁর যাত্রপ্রদর্শনী সম্ভারে পূর্ণ। জার্ম্মেনী তাঁদের সোনার লরেল দিয়ে তাঁকে স্বাকার করেন— বিষের সর্বশ্রেষ্ঠ যাত্মকররূপে নিউইয়র্ক পি, সি, সরকারকে তুইবার ফিনিয়া প্রস্কার দিয়েছেন, ম্যাজিকে নোবেল প্রাইজরূপে বর্ণীয় এই ফিনিক্স পুরস্কার এবং পৃথিবীর মধ্যে জীযুক্ত পি, সি, সরকারই একমাত্র যাত্রকর যিনি তুইবার এই পুরস্কার পেয়েছেন। হল্যাও থঁকে দিলে ট্রিক্স পদক (১৯৪৮ এবং ১৯৫৪), টোকিও ম্যাজিসিয়ান ক্লাবের ইনি সম্মানিত সভা, তাঁরা এঁকে উপহার দিলেন একটি পদক। একজন অজাপানীদের মধ্যে ইনিই প্রথম এই সম্মানের অধিকারী (১৯৩৭)। আমেরিকা আন্তর্জ্জাতিক যাতৃকর ভ্রাতৃত্ব শংস্থার কলিকাতা শাথার নাম-—এরই নামানুসারে পি, সি, সরকার চক্র রাখা হরেছে। এ ছাড়া, ইংলগু, জার্মেনী, প্যারিস, বেলজিয়াম প্রভৃতি দেশগুলির বড় বড় যাত্ব-সংস্থার দ্বারাও ইনি সন্মানিত। শামেরিকা জাতীয় টেলিভিশনে National Broadcasting Company গত বংসর মে মাসে এীযুক্ত সরকারের বিশ্ববিখ্যাত বৈছাতিক বুর্ণায়মান করাত বারা জীবস্ত তরুণীকে বিখণ্ডিত খেলাটি টেলিভিশনে দেখাবার অন্ত পঁচাত্তর হাজার টাকা ব্যয় করে এীযুক্ত সংকাৰকে দলবল সহ নিবে যান। সর্ক্তরের বাছকবের সন্থান মিইক

ক্রেগের স্বর্ণ ম্যাজিক ও থণ্ড ষাত্মন্ত্রাটের হার্তে পৌছাবার **জন্ত** আমেরিকা থেকে বিমানযোগে অন্ত্রেলিয়াতে আনা হয়। আমেরিকাতে যথন তিনি পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ যাত্করের আখাগার দিতীয় বার ভূষিত হলেন তথন অক্সান্ত দেশের মত বৃটিশ প্রতিনিধিরা কিছুটা অসম্ভই হলেন। বিদেশে গেলে পি, দি, সরকার দেই মহাম্ল্যবান একটি পোষাক পরেন—পোষাকটি ভারতের বিভিন্ন দেশের উপকরণ দিয়ে তৈরী। তথনকার দিনে রাজপুত্রের মত দানী পোষাকে, দামা জুতো জোড়া পরে তিনি যথন প্রেজ শাঁড়িয়ে যাত্রনাড়া দেখান সে সর্ব ছবিগুলো দেখলে বিশ্বিত হতে হয়। স্থপুক্ষ পি, সি সরকারকে স্কল্ব মহাম্ল্যবান পোষাকে আরও স্কল্ব দেখায়। বৃটিশ প্রতিনিধি সেই পোষাক লক্ষ্য করে তাঁকে জন্দ করার জন্ত বলেছিলেন, You have no Royal blood. Then why do you dress like a prince?

যাত্রসম্রাট সহাত্যে উত্তর দিলেন, No I am the prince of Magic.

অপর পক্ষ থেকে কোন প্রশ্ন উঠল না।

যাত্র-বিভার ইতিহাস প্রসঙ্গে পি, সি, সরকার বলেন, অথর্ববেদের মতে ভারতেই এই মহাবিচ্ঠার উদ্ভব। তবে আমাদের ছিলো গুরুমুখী বিল্লা, কাজে কাজেই পূর্কাচার্য্যদের মহাপ্রস্থানের পর এ বিক্তা প্রায় লুপ্ত হতে থাকে। তবে এখনও বেদে-বেদেনীদের খেলা, ভারুমতী থেলা, ভোজবাজা প্রভৃতির খেলাগুলি সেই আদিম ঐতিহের ষ্পপস্থমান চিহ্ন। হিপনোটিজিম এবং মেসমেরিজিম সম্বন্ধে তিনি বলেন, গ্রীদের ঘূমের দেবতা হিপনাদের নামানুসারেই এই বিভার পরিচিতি। প্রাগৈতিহাসিক যুগে এই বিস্থার উদ্ভব। বিদেশ তাহাকে সম্মান দিয়েছে, যথাযোগ্য সমাদর জানিয়েছে এবং আমাদের দেশ থেকে তাঁকে যে সম্বৰ্দ্ধনা জানান হয়নি তা নয়, কিন্তু বিদেশের তুলনায় অপেকাকত কম। কলিকাতা নাগরিকগণের এবং কলিকাতা পৌর প্রতিষ্ঠানের পক্ষ থেকে যে অভিনন্দনপত্র তাঁকে দেওয়া হয়েছে, তার প্রতি অক্ষরের উজ্জ্বল্য পি, সি, সরকারের প্রতি সম্মান প্রদর্শন করেছে তা থেকে সামান্ত কিছু উল্লেখ করছি: 'কিম্বদস্ভাখ্যাত ভোজরাজের স্থযোগ্য উত্তরসাধক তুমি, অথর্কবেদ ও তন্ত্রসার বর্ণিত ইন্দ্রজালকে অলোকিক অবিশ্বাসী আধুনিক বিজ্ঞানের চরম উৎকর্ষের মধ্যেও জরযুক্ত করিয়াছ, তোমার মন্ত্রপুত ইন্দ্রজাল নিখিল জগংকে স্তম্ভিত ও বিমৃত্ করিয়া জন্মপত্র ললাটে লইয়া স্বদেশের যজ্ঞভূমে ফিরিয়া আসিয়াছ —তোমার ভারতের তীর্থসলিল (ওয়াটার অফ ইণ্ডিয়া) পা**-চাডা** পৃথিবীর গতানুগতিক মুমূর্যু ম্যাজিককে সঞ্চারিত করিয়া ভারতীর ভোজবাজীর মহিমা অভ্রচম্বী করিয়াছ, প্রাচীন ঐতিহের ভিত্তিতে তুমি স্বাধীন নব ভারতের নবীন যাহ-সৌধ প্রতিষ্ঠা করিয়াছ. অবজ্ঞেয় ভেদ্ধি ভোজবাজীকে ইন্দ্রজালের ইন্দ্রধয়ু বর্ণে রঞ্জিভ করিয়াছ।' কলিকাতা মহানগরীর পৌর সম্বন্ধনা অভিনন্দনপরে গ্রীযুক্ত সরকারের অমর অবদানের কথা হইয়াছে।

তাহলে ব্ৰুতে পাবছো, আজ আমি কেন পি, সি, সরকারের বিবর এসব কথা লিখছি। তোমরা সুখী হবে তনে, পার্বিভাবোধ করবে। আমি এ কথা বলছি না বে, তোমরা স্বাই একরোপে বাছকর হও, তা নর—ভবে বিভিন্ন কেন্দ্রে সন্থান ভবে করে

বিদেশে গিয়ে তোমাদের কৃতিত্ব বিভিন্ন ধারায় দেখিয়ে ফিবে এসো মাতভমিতে, আমাদের ভারতবর্ধকে চিত্রক সমস্ত হুনিয়া। আমাদের What বাংলা দেশের বিষয় মহামাক্ত গোথলে বলেছিলেন think thinks to-day India Bengal What to-morrow আবার যেন বিদেশীরা বলতে পারে। India thinks to-day The World will think to-morrow, একদিন পৃথিবীর মধ্যে আমাদের ভারতবর্ষ बारमारक मीख ছিল-যথন জ্ঞানগরিমাতে সভা তার পাশ্চাত্য দেশকে কেউ চিনত না— আবার কি আমাদের অতীত নিশ্চয়ই ভারতবর্বকে ফিরিয়ে আনতে পারবো न ? পারবো |

যাত্রকর পি, সি সরকারের প্রতিভার বিষয় তোমাদের বলেছিঃ এখন বলবো তাঁর প্রাত্যহিক জীবনে তিনি তাঁর কর্ম পদ্ধতিকে কি ভাবে পরিচালনা করেন। আমরা একবার তাঁর 'ইন্দ্রজাল' 'তাঁর গুহের নাম সেইখানে গিয়ে পরিচালনা ব্যবস্থা দেখে মুগ্ধ ছরেছিলুম। তিনি সহকারীদের স্থন্সর শিক্ষা দিয়েছেন সর্ববিষয়ে বেমন আদবকারদা শুখলভার সহিত কার্য্য করা ইত্যাদি। তিন জলার ঘরটি যাতুসমাটের অফিসঘর। ঘরে যথারীতি চেয়ার, क्रिविन, जानमात्री – जात्र (थरक ७-इन जिनिम निर्दे (यमन क्रांकिः মেশিন পর্যান্ত, তিনি খ্যাতনামা বাতকরদের, বিশ্ববিখ্যাত লোকদের বিবরে সংবাদ রেখেছেন। তাঁর বাটীতে ফটো বিভাগ আছে— ভার্কক্স তাঁর প্রয়োজন বৈজ্ঞানিক গবেষণার জন্ত। এমন ভাবে **সক্ষিত করেছেন যে প্রয়োজনাতুরূপ পাও**য়া যায় হাতের কাছে। তিনি নানা জনের সহায়তায় নানারপ পোষাক সংগ্রহ করেছেন— পোষাক, রোপা তরবারি সবই উপহার। এমন বে ব্যস্ত মানুষ অবসর মত তিনি সংগ্রহ করেন বিভিন্ন দেশের ডাক টিকিট, পোষ্ট অফিসের থাম টেলিগ্রাম ফর্ম, ট্রামবাসের টিকিট, দেশলাইএর ছবি, মুদিদোকানের মেনো, চাল ডালের পাাকেট সব জোগাড় করে এক বেন মিউজিয়ম তৈরী করেছেন। কার্টুনের ছবি, ভিজিটিং Card । म्याङ्गित्कत्र वह, मिन मिनात्री विषय कछ व वह । জীর বাছবিল্লা নয়নে ধাঁধা স্থাষ্ট করে। তাঁর সংগ্রহ বিশ্বিত করেছে ধারা দর্শক তাঁদের কিন্তু সর্ন্বোপরি সব চেয়ে মূল্যবান পি, সি, সরকারের সর্বজনবিদিত, বিনয়পূর্ণ আচরণ। আধুনিক জগতে, ট্রনাসিক আচরণে ইহা তলভ। তার সংগ্রহ-নেশা ছাড়া অক্ত নেশা নাই, ধুমপান নর, চা পান নর। তাঁর ম্যাজিক দেখানো এবং সুজনতা উভয়ই পরচিত্তহারিণী। বাত্বকর পি, সি, সরকারের বিষয়ে প্রবন্ধ দেখার উদ্দেশ্য এই যে, এর জীবনদারা অমুপ্রাণিত ছয়ে ভোমাদের মধ্য থেকে কয়েকজনও যদি মাতৃভূমির গৌরব হয়ে পাড়াও তবেই আমার এ লেখা সার্থক হবে। বারা প্রকৃত গুণী, ভাঁৱাই মহন্তের অধিকারী এবং শ্রীমান প্রতুলচন্দ্র সরকার ওরফে পি, সি, সরকার আমাদের ভারতবর্ষকে বে দশের সমুখে দাঁড় করিরেছেন দেশের মুখ উজ্জ্বল করে জামাদের স্বার মুখ উজ্জ্বল করেছেন দে ঋণবোধ ভোমাদের অস্তরে জাগরুক থাকুক, তিনি বে বছ গুণের অধিকারী সে অমুপ্রেরণা তোমাদিগকে জীবনপথে পৰিচালিত কম্বৰ-ৰামি সমগ্ৰ মন-প্ৰাণ দিবে ভোমাদেৰ সেই वानिकानरे क्वडि !

ছুই বোন

(রপকথা)

পুষ্পদল ভট্টাচার্য্য

ক্রনেক দিন আগে এক দেশে এক রাজা ছিলেন। তাঁর ছেলে ছিল না। কিন্তু ছটি ফুলের মত ফুটফুটে নেরে ছিল। রাজকুমারী চন্দ্রা আর পন্মার মা মারা গিয়েছিলেন। তাই রাজামশার তাঁব ছোটরাণীকে ডেকে বললেন, তুমি আজ থেকে পদ্মা আর চন্দ্রাকে মানুষ কর।

ছোটরাণীর নিজের ছেন্দেমেয়ে ছিল না। কিন্তু তিনি ছিলেন ভীষণ আলগুপরারণা। তার উপর চক্রা আর পদ্মা তাঁর চেয়েও বেশী স্থানর দেখতে ছিল বলে তিনি তাদের হিংসাও করতেন। তাই রাজানশায় বাড়া না থাকলেই তিনি রাজকুমারাদের দিয়ে রাজবাড়ীর বাসন মাজান থেকে নিজের গা-হাত-পা টেপান প্রয়ম্ভ সব কাজই করিয়ে নিতেন।

রাজামশায় যথন জিজ্ঞাসা করতেন, চল্রা আর পদ্মা অত রোগা হয়ে বাচ্ছে কেন ?

ছোটরাণী তথন কুত্রিম স্লেহে বসতেন, বা গৃষ্ট, মেরেরা আমার, সারাদিন স্থীদের সঙ্গে বাগানে বাগানে প্রজাপতিদের পেছনে ছুটে বেড়ায়। সময়ে নাওয়া থাওয়া করে না। তাই তো রোগা হরে বাছে।

বাজামশার এজন্ত মেরেদের কিছু বলতে গেলেই ছোটরাণী গলার মধু ঢেলে বলতেন, তাই বলে আপনি বেন ওদের বক্বেন না। ছেলেমামুবই তো ? একটু বড় হলে আপনিই শাস্ত হবে।

ছে টেরাণীর কথায় রাজা ধেমন নিশ্চিন্ত তেমনি খুসী হতেন। যাক মেয়ের। তাহলে তাদের ছোট মায়ের স্লেহে স্লুথেই আছে।

একবার রাজামশার দূর দেশে যুদ্ধে গেলেন। সেই স্থযোগে ছোটরাণী মেয়েদের উপর এমনই অত্যাচার আরম্ভ করলেন বে ভারা আর সম্ভ করতে পারল না।

বড় বোন চক্রা বলল, এ ভাবে না খেরে পরিশ্রম করে জার ছোটমার হাতে রোজ রোজ প্রহার সন্থ করে আমরা বেশী দিন বাঁচব না। তার চেমে চল বনে চলে যাই, সেখানে বাখ-ভালুক আমাদের খেয়ে ফেলবে সেই ভাল হবে। সে পদ্মার হাত ধরে কাঁদতে কাঁদতে বনে পালিয়ে এল।

সেদিন জ্যোৎস্লা রাত। বনের মধ্যে চারন্থিক বাঘ-ভালুক হালুম হুলুম করে শিকার খুঁজে বেড়াছে। কিন্তু আশ্চর্য্য। তারা যেন চন্দ্রা আর পক্ষাকে দেখেও দেখছে না। চন্দ্রার মনে পড়ল তার ধাইমার কথা—"রাখে কেষ্ট্র মারে কে? যারা সং হয় স্বয়ং ভগবান তাদের রক্ষা করেন।"

একথা মনে পড়তেই চক্রার মনে সাহস এল। সে এবার
চারদিকে ভাল করে তাকিরে দেখতে দেখতে চলল। কিছু দুর
গিরে সে দেখে বনের মধ্যে একটা বড় রাজপ্রাসাদ রয়েছে।
দেখে হই বোনে সেই প্রাসাদে গেল। কিছু সারাটা প্রাসাদ প্রেও
তারা জনপ্রাণীরও দেখা পেল না। অথচ খরে খরে আসবাব পত্র,
বিছানা সব কিছুই রয়েছে। কেবল ভঁড়ার খবই একেবারে ধালি,
এক দানা চালও সেখানে পড়ে নেই।

গৃই বোনে রাজপ্রাসাদের এই অবস্থা দেখে খুব অবাক হলেও সেইখানেই থাকবে বলে স্থির করল। কিন্তু থাওরার কি করা যার ? চন্দ্রা ব্যবস্থা করল সকালে পদ্মা আর সন্ধ্যার সে নিম্পে বনে গিরে গাছতলা থেকে বনের ফলম্ল কুড়িয়ে আনবে আর ঝরণা থেকে জল নিয়ে আসবে।

দিন কতক ছুই বোনে সেই রাজপ্রাসাদে বেশ আনন্দেই কাটাল। তারপর একদিন বিকালে চক্রা বন থেকে ফল আর জল আনতে গিয়ে আর ফিরল না।

বিকাল গিয়ে সন্ধ্যা হল, তারপর অন্ধকার হয়ে এল। তথনও চন্দ্রা ফিরল না দেখে পদ্মা বেরুল তার খোঁজে। সে দিদি, দিদি, চন্দ্রা, চন্দ্রা ডেকে ডেকে সমস্ত বন তোলপাড় করে বেড়াল সারা রাত ধরে কিন্তু কোথাও চন্দ্রার সাড়া পেল না।

সকাল বেলা স্থা উঠলে হঠাৎ পদ্মা তার দিদির গলার মুক্তোমালার একটা মুক্তো দেখতে পেল। থানিক গিয়ে দেখল আর একটা মুক্তো পড়ে রয়েছে। এই ভাবে পর পর তিন-চারটে মুক্তো পেয়ে পদ্মা বুঝল তার দিদি এই পথেই কোথাও গিয়েছে।

আর খুব সম্ভব কেউ তাকে জাের করে নিয়ে নিয়েছে। কারণ পদ্মাকে না জানিয়ে তার দিদি কথনট কোথাও যাবে না। তাছাড়া ঝরণার ধারে দিদির হাতের জলভরা ঘড়া আার ফলের মূলিটাও ফলভরা পড়ে ছিল।

পদ্মা তথন সেই মুক্তো কুড়োতে কুড়োতে বনের শেবে এক নগরের রাজপ্রাসাদের তোরণধারের সামনে এসে পৌছল। তোরণের সামনে ঢাল তলোয়ার হাতে সেপাই-শান্ত্রী দেখে তার প্রাসাদের ভেতর যেতে সাহস হল না। সে আবার বনের পথে ফিরে চলল।

থানিক দ্ব গিয়ে সে দেখল প্রাসাদের কাছাকাছি একটা বাগানে একটা কুঁড়ে-ঘর রয়েছে। সে খরে লোকজ্বন কেউ নেই দেখে পদ্মা সেই খরেই রয়ে গেল। এখানে থাকলে তব্ দিনির কাছাকাছি থাকা হবে। সেই বাগানে একটা বড় পদ্মপুক্রও ছিল। পদ্মা পদ্মকৃল বড় ভালবাসত। কিন্তু দিনের বেলায় পদ্ম তুললে যদি কেউ বকে, এই ভয়ে সে রোজ ভোব রাত্রে গিয়ে পুক্রে স্থান করে জলের মধ্যেকার সব চেয়ে বড় পদ্মগুলি তুলে আনত।

এই বাগানের মালিক ছিল ঐ রাজ্যের ছোটরাজপুত্র কমলকুমার।
পেও পদ্মকুল থ্ব ভালবাসত। রোজ পদ্মপুক্রে স্নান করে
জলের সেরা পদ্মগুলি তুলে এনে সে নিজের ঘর সাজাত। কিছু
করেক দিন ধরে সে দেখছিল জলের বেশীর ভাগ টাটকা ফোটা বড় পদ্ম
কেন্ট রাত্রে তুলে নিয়ে বায়।

পর পর করেক দিন এই ভাবে তার প্রির ফুল চুরি যাওয়ার কমলকুমারের থ্ব রাগ হল। একদিন রাত্রে সে বাগান পাহারা দেবার জন্ম পুকুরের কাছে গাছের আড়ালে লুকিয়ে বসে বইল।

পদ্মা তো আর রাজকুমারের পাহারার কথা জানে না। তাই দে

বর্ধন অক্সদিনের মতন স্নান করে জলের দেরা পদ্মগুলি তুলে

পুর্বপাড়ে উঠেছে ঠিক তথনই কমলকুমার এসে তার হাত চেপে

ধরন। বলল কে তুমি ? রোজ রোজ আমার পুকুরের পদ্ম কেন

ইবি করে নিয়ে রাও ?

পদ্ধা মনে মনে ভর পেলেও মুখে সাহস করে বলল, তুমিই বা কে ? এ পুকুর যে তোমার, তার প্রমাণ কি ?

কমলকুমার বলল, আমি এ রাজ্যের ছোট রাজপুত্র কমলকুমার। চল তোমাকে ধরে রাজ্যভার নিবে বাচ্ছি। সেখানে গেলেই বুঝবে এ পুকুর আমার কি না।

পদ্মা বলল, তাই চল। আমিও রাজামশাইকে বলবো, আমি তো কেবল ফুল চুরি করেছি। আর আপনারা আমার দিদি চক্রাকে চুরি করেছেন। আমাকে যদি শান্তি দেন তো আমার দিদিকে যে চুরি করেছে তাকেও শান্তি দিতে হবে।

কমলকুমার অবাক হয়ে বলল, তুমিই ভাহলে আমার বউদি চক্রার ছোট বোন পদা ? বউদি রাজবাড়ীতে এসে পর্যান্ত রোজ তোমার নাম করছেন। রাজ্যের সেপাই-শাল্পীরা বনে বনে তোমাকে খুঁজে বেড়াচ্ছে।

পদ্মা রাগ করে বলল, দেপাই-শান্ত্রী আমাকে থুঁজে বেড়াচ্ছে কেন? দিদির মতন আমাকেও জোর করে ধরে আনবে বলে?

কমলকুমার উত্তর দিলেন তোমার দিদিকে আমরা জোর করে আনিনি। ঐ বনে একটা রাক্ষ্য থাকতো। তোমরা যে বাড়ীতে ছিলে তার মালিক ঐ রাজ্যের রাজা, রাণী, রাজপুত্রদের আর সব লোকজন থেয়ে শেব করে দে এসেছিল আমাদের রাজ্যে উপদ্রব করতে। তারপর আমার দাদার হাতে তীর থেয়ে সে আবার বনে পালিয়ে গিয়ে ঝরণার ধারে তোমার দিদিকে দেখে তাকে থাবে বলে ধরে নিয়ে বাচ্ছিল। আমার দাদা সে সময় রাক্ষ্যটাকে তাড়া করে বনে গিয়ে তাকে মেরে তোমার দিদিকে অজ্ঞান অবস্থার রাজবাড়ীতে নিয়ে আসেন।

সকাল বেলায় তোমার দিদির জ্ঞান হলে তার কাছ থেকে তোমার কথা ওনে বাবা তথনই তোমাকে আনবার জন্তে বনে লোক পাঠান। কিছ সারা বন খুঁজেও লোকেরা তোমাকে পারনি। তোমরা রাজকুমারী জেনে বাবা তোমার দিদির সঙ্গে আমার দাদা অমলকুমারের বিয়ে দিয়েছেন। এখন চল তোমাকে তোমার দিদির কাছে নিয়ে বাই।

তারপর ? তারপর তো ব্থতেই পারছ হই বোনে এক হরে কত স্থী হল। তাদের সেই আনন্দ আরও বেড়ে গোল যখন কমলকুমারের সঙ্গে পদ্মরাণীর বিয়ে হল টাক ড্মাড়্ম ড্ম বাজনা বাজিয়ে আর সারা রাজ্যের প্রজাদের ভোজ থাইরে।

কিশোর-সাহিত্যে রোমাঞ্চ

শ্ৰীমতী ছায়া দেবী

সাহিত্য বলতে আমরা বৃথি প্রধানত ত্বকম উপস্থাস,
নাটক, কবিতা এবং রম্য রচনা প্রভৃতি। তেমন ভাবে
লিগতে পারলে রসোর্ত্তীর্ণ ভ্রমণ কাহ্নিনীও উচ্চাক্ষের সাহিত্যের
পর্য্যায়ে পড়ে। কিন্তু বোমাঞ্চকর গম বলতে আমরা যা বৃথি
তাকে উচ্চ শ্রেণীর সাহিত্য বলতে বোধ করি সব সমালোচকদেরই
আপত্তি আছে। উচ্চশ্রেণীর গম ও উপস্থাসের তালিকা তৈরী
করার সময় সম্বন্ধে রোমাঞ্চকর গম্বাঞ্জনিকে বাদ দেওয়া আমাদের

এক বিশেষ অভ্যাসের অন্তর্গত হরে পড়েছে। এর উদাহরণও আমাদের ঢোগে প্রতি পদেই পড়ে।

রোমাঞ্চকর সাহিত্য বলতে আমরা যা বুঝি তা শুধু ডিটেকটিভ গন্ধ
কিন্তু ভালো ভাবে বিচার করলে বৈজ্ঞানিক রহস্তের গল্প এবং
এয়াডভেঞ্চারের গল্পকেও স্থান দিতে কারোর বিমন্ত হবে না। এ
হিসাবে আমরা ওরেলসের 'দি ফাষ্ট মেন ইন দি মুন,' 'দি ডোর ইন দি
ভরাল,' এম, আর জেমদের 'কাষ্টিং দি কলস', আর এল প্লিভেনসনের 'ঐজার আইল্যাণ্ড', উইলকি কলিনসের, 'উওম্যান ইন হোরাইট' এসবকেই রোমাঞ্চকর সাহিত্যের শ্রেণীতে কেলতে পারি। শেবোক্ত উপক্রাসটি একটি সফল সামাজিক উপক্রাসও বটে। কারণ যাতে মানবিকতা পূর্ণ ভাবে বিকাশ লাভ করেছে তাকে সামাজিক উপক্রাস বলতে দ্বিধা হয় না।

থবার রোমাঞ্চর সাহিত্য সম্পর্কে জনমত কি রকম দেখা যাক।
পাশ্চাত্য দেশে রহন্ত উপক্রাসের কাটতি দারুণ। কোনান ডয়েলের চেয়ে
শার্ল হোমস অনেক বেশি বিখ্যাত। শার্ল ক সোমসের নামেও দেশের
দোক পাগল। কেবল লেখা পড়েই ওদেশের জনসাধারণ এত উন্মাদ
হয়ে পড়েছিল যে তারা শার্ল হোমসকে জীবিত দেখতে চেয়েছিল।
এ সম্বন্ধে "এত কোতুককর গার আছে যে, তা বহন্ত উপক্রাসের
আদর এবং লেখকের কুভিছ সমভাবে এ চুইয়েরই প্রমাণ করে।
অজানা রহন্ত সম্বন্ধে কোতুহল মানুষের চিরদিনের চিরকালের এবং
এরই উপর ভিত্তি করে মানুষের এত কর্মা-জ্বনা। তা ছাড়া
ভৌতিক কাহিনীর একটা ছায়াময় অন্তিম্ব আছে, মানুষের জীবনে
অক্তত্য এক বারো একটা অদৃত্য অশ্বীরী অনুভূতির অন্তুক সাড়া এসেছে
এডলার এটালনে পো এবং জেরোম কে জেরোমের কোন কোন রচনা
এই কথারই স্বীকৃতি দেয়।

দুর দিগস্তে অসীম আকাশে, পর্বতের পরপারে, মহা সমুদ্রের অতল গভীরে, তুহিন 'হিমমের-শিথার রৌদ্রদগ্ধ অগ্নিতপ্ত মরু-সাহারার বালুঝড়ের,আর্জনাদে মানুষের মনে শুধু কাব্যের ঝক্কারই জাগার নি 'জাগিরেছে আরো কিছু। মাহুষের একটা মন নিরম্ভর কর্মকোলাহলে ব্যস্ত থাকতে পারেন তাই একটু কাঁক পেলেই রহন্মের সন্ধান-পিয়াসী মন জাগ্রত হয়ে ওঠে। পঞ্চ ইন্দ্রিয় ছাড়াও মানুষের আর একটা ইন্দ্রিয় আছে, যেমন সূদৃর লোক থেকে অজানা অলোকিক রহত্য রোমাঞ্চকর সন্ধান এনে দেয়, ঐ ইন্দ্রিয় তারই পথপ্রদর্শক। শিশু ও কিশোরদের কল্পনাপিপাত্ম মন, অজানাকে একান্ত করে জানার আগ্রহ এ্যাডভেঞ্চারের দিকে এগিয়ে দিয়েছে। সর্ব দেশের সর্ব কালের শিশু কিশোরদের এ্যাডভেঞ্চার-পিপাত্ম মনকে তাদের চিম্ভাধারাকে পুষ্ট করেছেন (বহু ক্ষেত্রে বড়দের সাহিত্যেও) বছ খ্যাত অখ্যাত লেখকবৃন্দ। বাঁদের লেখা নিয়ে বলবার দিন আজ এসেছে। অহমিকার বশে পরিত্যাগ না করে সয়ত্ত্ব দে সব রচনার আলোচনা হওয়া উচিত। রচনার নৈপুণ্যে, বিষয়বস্তুর অভিনৰত্বে, শব্দচয়নে শিশু কিশোরদের মনপ্রাণকে আকর্ষণ করবার জন্ম বিখের শ্রেষ্ঠ সাহিত্যিকরাও কম প্রচেষ্টা করেননি। কাজেই তাকে তুদ্ভ বলে অগ্রাহ্ম করবার অবজ্ঞা করবার কোন ক্যার্যাঙ্গত কারণ ঘটেনি। কেউ কেউ বলতে পারেন এদেশ আর ওদেশ— অনেক তফাং। হতে পারে—কিন্তু প্রত্যেক দেশের নিজম্ব পরিবেশ আছে, সে কথা ভূললে চলবে কেন ? বাংলা দেশের শিশু সাহিত্যিকদের

একটা বিশেষত্ব আছে বা জান্ত দেশের রৌমাঞ্চ সাহিত্যে কমই চোখে পড়ে, তা হল এই—জাপাতদৃষ্টিতে অভি সাধারণ তুচ্ছ পরিবেশ থেকে ক্রমশ রহস্ত-ঘন আবহাওয়া জাগিয়ে তোলা।

বহস্ত রোমাঞ্চের প্রতি আগ্রহ অন্ধাশিক্ষত জনসাধারণের কথা ছেড়ে দিলেও অসাধারণদের আগ্রহও এর প্রতি কম নয়। এ বিষয়ে আমরা বার্টাণ্ড রাসেল, স্থার অলিভার লজ এবং চার্লস ডিকেন্দের উদাহরণ দিতে পারি। রাসেল বৃদ্ধ বরসে নৃতন করে ভৌতিক কাহিনী লিখতে স্থক করেছেন। চার্লস ডিকেন্স মৃত্যুর জক্ত এমন একটি বহস্ত-উপস্থাস অসম্পূর্ণ রেখে যেতে বাধ্য হয়েছিলেন যা নাকি তাঁর শ্রেষ্ঠ রচনা বলে স্থাকুতি পোতে পারতো। এ ছাড়া আমাদের দেশের সম্বন্ধে অনুরূপা দেবীর হেমলক, শ্রীঅরবিন্দের অ্যাবলার্ডের দরক্ষার কথাও বলতে পারি। আমাদের দেশেও রস্সাহিত্যের চেয়ে রহস্থাগারই বেশি কাটে, এ কথা দন্দেহ করলে ভূল হবে না হয়ত।

অধিকাংশ পাঠক-পাঠিকাদের হাতে ঘোরে মোহন সিরিজ, যাকে
মরিস লেবলাকের বার্থ অমুকরণ বললেও দোষ নেই। থ্বই বিমর্ম হই
একথা ভেবে যে আজকাল রহস্তা সাহিত্য বলে আমাদের দেশে যা
চলছে তার অধিকাংশই রাস্তায় ফেলে দেবার মত। কোথার ওয়েল্স
আর জুলভার্ণ আর কোথার শুশধর দত্ত আর স্থপনকুমার! এ পর্যান্ত
আনরা শিশু ও কিশোরদের জন্ম রহস্তা ও রোমাঞ্চ সাহিত্য বলতে যা
পেয়েছি তার মৃল্য বড় কম নয় কিন্তু এর মান দিনে দিনে আরও
উন্নত হওয়া দরকার। এ বিষয়ে এখনও আমাদের স্থসাহিত্যিকের
প্রয়োজন আছে। বৈজ্ঞানিক পটভূমিকায় রহস্তাঘন মৌলিক গল্পেরও
আজ থ্ব প্রয়োজন আছে। কারণ তা না হলে আজকের দিনে
কিশোর-মনকে আকৃষ্ট করবে না এবং সে গল্প হবে অচল।

অবশ্র আমাদের দেশে কোনান ডয়েল বা এইচ জি, ওয়েলস না থাক লও একেবারে কিছুই নেই বলা চলে না। বৈদেশিক সাহিত্যে আমরা যেমন প্রতিভাধর দেথকের সমারোহ দেখতে পাই, এদেশেও তার কিছুটা একেবারে বিরল নয়। উদাহরণস্বরূপ আমরা এইচ ভি ওয়েলস এবং প্রেমেন্দ্র মিত্রের তুলনা করতে পারি। অবগ প্রেমেন্দ্র মিত্র ওয়েলস হতে পারেননি কিন্তু তিনি যে বাংলা কিশোর-সাহিত্যকে নৃতন কিছু দিয়ে গিয়েছেন একথা কোন মতে অস্বীকার করা যায় না। নীল আকাশ ও নীল সমুদ্রকে উপজ্জীব্য করে দব দেশের পাঠকদের যে কৌতৃহল তা যথাসাধ নিবারণ করবার চেষ্টা করেছেন ও দেশের ওয়েলস এবং জুলভার্ণ। তাঁদের মত উন্নত স্থাষ্ট কবা প্রেমেন্দ্র মিত্রের পক্ষে সম্পূর্ণ সম্ভব না হলেও 'পাতালে পাঁচ বছর' 'পৃথিবী ছাড়িয়ে' এবং 'ময়দানবের দ্বীপ' পড়লে মনে হয় তার পিছনে দি ওয়ার অব দি ওয়াক্ত স দি আইল্যাণ্ড অব ডক্টর মোরোর পরিকল্পনা দেখতে পাই। অনেকটা এই রকম ধরণের বৈজ্ঞানিক ভিত্তির পটভূমিকায় অভিনব ধরণের নৃতন উপক্যাস 'ধৃমকেতু'। শ্রীক্ষিতীন্দ্রনারায়ণ ভটাচার্যের এই উপস্থাসটির নৃতন ধরণের উন্নত মানুষের এবং বৈজ্ঞানিক প্রণালীর ভবিষ্যতে হয়ত অমুসরণ অসম্ভব হবে না। এইচ, জি ওয়েলসের দি আইল্যাণ্ড অব ডক্টর মোরো'তে যে নরপশুদের নিরে বৈজ্ঞানিক বহস্তোর সৃষ্টি করা হয়েছে, অনেকটা তারই আলাস দেখতে পাই শ্রীক্ষিতীন্দ্রনারায়ণ ভটাচার্য্যের বিশ্বলা পাহা^{ড়ের} নীল কুঠি' নামে ছোটগল্পে। তবে ডুক্টুর মোরোতে বৈ নরপতাদের

নিথে বৈজ্ঞানিক বৃহত্যের স্থায়ী করা হরেছে অনেকটা তারই আভাস দেখতে পাই গ্রীক্ষতীক্ষনারায়ণ ভটাচাধ্যের বিক্রিলা পাহাড়ের নীল কুট'' নামে ছোটগল্লে। তবে ডক্টর মোরোর দে যুগাস্তব্যাপী বৈজ্ঞানিক প্রতিভার আন্তরিক প্রচেষ্টা ছিল পশুদের মানুষ করবার, ভাব সঙ্গে ডক্টর চিরঞ্জীবের বৈজ্ঞানিক প্রতিভার নামে মানুষদের নরপ্রভ করে তোলার নুশংসভাকে মিশিয়ে ফেললে ভুল হবে।

প্রেমেন্দ্র মিত্র এবং ক্ষিতীক্রনারায়ণ ভটাচার্য্যের যুগা প্রচেষ্ঠা ওলেন্দ্র প্রতিভা থানিকটা বহন করে এনেছে। ফরাসী সাহিত্যিক ভূমভার্য যে আদশ স্থাপনা করেছেন, বাংলা ভাষাতে তার স্থানে আনবা হ'জন মাত্র লেখকের নাম করতে পারি, একজন তকুলনারঞ্জন রায় এবং অপরক্তন তর্ত্বমেশচক্র দাস। এঁদের মধ্যে তকুলনারঞ্জন মৌলিক কাহিনী বিশেষ কিছু লেখেন নি অবশু। কিছু এঁর অপূর্ব অনুসাদ পড়তে পড়তে মনে হয় এ রকম সাবলীস সক্ষর অধ্যান এবং নানা বিষয়ে প্রগাড়ে পাণ্ডিত্য অনুসন্ধানী মনের সামনে নুতন জ্ঞানভাগ্যারের দ্বার উন্মুক্ত করেছে।

সাগরিকা, অজ্ঞাতদেশ এবং আশ্চর্যা দ্বীপ পড়লে মনে হয় অহুবাদকদের প্রাণের স্ঠান্ট ও মৌলিক প্রতিভা অমুবাদ রচনার সাথে মিশে রয়েছে। ঠিক এই রকম ধরণের প্রাণবস্ত লেগা পাই হবকিল্পর ভট্টাচার্যোর রচনার, যদিও তা অনুবাদ নয়, তথাপি ওয়েলসের ক্ষাণ প্রস্তার আছে মনে হয়, যাকে অনুসরণ বলা যেতে পাবে। "নঙ্গল গতে কারা থাকে" এই বচনাটিব বিষয়বস্তুর চনকপ্রদ অভিনবতার তিনি যে ভয়াবছ বিশার স্থাষ্ট করেছেন তা ষ্টাই আশ্চর্যা! হর্ষকিক্কৰ ভট্টাচার্য্যের লেখা ^কটা পৃথিবী," বাজিমত বিশ্বাসের এবং কৌতুজনের কারণ মটেছে। বাস্তবিক মগাশুকে, আমাদের সৌরজগতের বাইরে কত অজ্ঞানা বিশ্বয় লকিয়ে আছে, তা জানার ইচ্ছে মানুষের চিরস্তন; এই রকম উপাদানে আলে লেগার দবকার। ওদেশে নুতন ধবনের বৈজ্ঞানিক পটভূমিকায় বোনাঞ্চর উপজাস লিখে এইচ, জি, ওয়েলস যে চাঞ্চল্যের স্থাই ক্রড়িলেন এদেশে ঠিক তেমনি ভাবে সাচা জাগিয়েছেন প্রেমেক্স মিত্র, হেমেন্দ্রকুমার রায় এবং হরকিঞ্কর ভট্টাচার্য্যের কোন কোন ফনা। মহাসমুদ্রের অতল গভীরে, ভূগহ্বরের অপর পিঠে, গ্রান্ত্রা পর্বত-শিখরে এমন কি পৃথিবী ছাড়িয়ে মানুবের মতই ^{কোন} বৃদ্ধিমান জীব আছে কি না তা নিয়ে বৈজ্ঞানিকদের গবেষণার শেষ নেই। বাস্তবধর্মী এ্যাডভেঞ্চাবের গল্পে কুলদারঞ্জন ^{রার} এবং বমেশ্রন্দ্র দাসেব জুলনা নেই। একদা 'রবিনসন ৰূপা[°] ও 'সুইট ফ্যামিলী ববিনসন' পাঠক 👫 'হুলেছিল, সমাদৃত হয়েছিল বোধ হয় তার চাইতেও ছিত স্থানর এনের রচনায় প্রাণস্কার করবার ক্ষমতা। র্মণ্ডন্থ দাসের নিজস্ব মৌলিক রচনাগুলিও তাঁর স্থনাম বজায় রেখ্ছে। । তাঁর লেখা 'পাতালনগরী', 'লাইট হাউস রহ**ত্ত' এবং** ^{'ছাঞ্জি}ন বনে-জঙ্গলে'। 'লাইট হাউন বহুত্যে' বোর্ণিও দীপের যে ^{ছিবুর} বিষরণ পাওয়া যায়, তা সত্যই চোথের সামনে ওথানকার দৃ**ত্রপট** ^{টুমু}ফ সংস্ন যায়, তবে শেষ দিকের ঘটনাটি সন্ধিবেশিত না হলেই শ্রীক্তব্দর কতো।

^{বিভি}ত্র ধরণের বৈজ্ঞানিক রহস্ত এবং অভিযানের কথা বাদ দিলে ^{নীকি} থাকে ডিটেকটিভ ও এাজিভেঞ্চার কাহিনী। সাধারণ লোকদের এই ধরণের বই বত প্রির ক্ল্যাসিকাপ নজেল ঠিক ভভটা নর। বাংলা শিশু-সাহিত্যে এই ধরণের বই আনেক বেরিয়েছে, কিছ উল্লভ ধরণের বই বেরিয়েছে থুব কম। বারা এই ধরণের বই লিখেছেন, তাঁলের শীর্ষস্থানীয় হচ্ছেন গ্রীছেমেক্রকুমার রায়। এ বিবয়ে তাঁর সমকক্ষ বেউ নেই।

ও-দেশে বহস্ত-সাহিত্যে অধিতীয় হছেন ষ্টিভেনসন। 'ট্রেলার আইল্যাও', 'কিড্রাল্ড' প্রভৃতি এ্যাড্ডেকারের কাহিনী লিথে এবং নিউ 'এ্যারাবিয়ান নাইট্স' প্রভৃতি বহস্ত-কাহিনা লিথে তিনি তুলনাহীন দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন। একতা তাঁকে পৃথিবার প্রেষ্ঠ রহস্ত-কাহিনীর লেথক বলা চলে। এ বিষয়ে বিধার কোনও কার্ম নেই, আমাদের দেশের সাহিত্যের মান বিধার করলে সহজেই হেমেক্রকুমার রায়কে ষ্টিভেনসনের আসন দেওয়া যায়!

অবশ্য এর কারণ এই নয় যে, হেমেক্রকুমারের দক্ষে ষ্টাভেনসনের লেখনভদীর কোন সাদৃত আছে। তা নয়—এ তুলনার অর্থ পান্চাত্তা বেমন স্থিতেন্সন অধিতার, ঠিক তেমনি এ-দেশেও চেমেন্দ্রনার রারের সমতুল্য কেউ নেই। ১৩২১ সালের মোচাকে যথন চেমেকুকুমার বিকের ধন' লিখেছিলেন, তথন সমস্ত বাংলা দেশে রীতিমত সাড়া পড়ে গিয়েছিল, কারণ, এমন রোমাঞ্চকর ঘটনাবছল উপ্রাণ আর ছিল না। অবশ্য ওব অনেক আগে দীনেন্দ্রকুমাব রায় 'লোহাব বান্ধ' লিখেছিলেন, কিন্তু যে কোন কারণেই হোক তা এনন ভাষে সমাদর পায়নি। বকের ধন এবং ভার নায়ক বিমল ও কুমার সম্পূর্ণ ভাবে বাংলা দেশের ছেলেমেয়েদের নিজৰ সম্পূদ হরে পাড়ালো। তাদের আগ্রহ চরমে উঠলো বধন মেখনুতের মর্জে আগমন' এবং 'ময়নামত'ৰ মায়াকানন' লিখে তিনি আবে৷ উল্লভ ধরণের প্রতিভার পরিচয় দিলেন। যদি বৃদ্ধদেব বস্থ বলেন ৰে এ-সব লেখার পেছনে বিদেশী হস্তক্ষেপ রয়েছে,—তবে স্বিন্ত্রে বলা চলে যে—অনুবাদ-সাহিত্য কি প্রতি দেশের সব সাহিত্যেরই একটা বৃহৎ জ্বাপ জুড়ে নেই ? আমরা কি তবে বার্ণার্ড শ'র্য কেখা ছেডে আমাদের দেশের হিরণ বস্তব লেখা পড়বো ?

তাছাড়া হেমেন বাবুৰ লেথাকে শুধু মাত্র অথবাদ বললে সাত্যৰ অপলাপ হবে স্থানিশ্চিত। হেমেন্তকুমার প্রথম তিনখানা উপছাল লিখে খ্যাতি অক্সন করলেও এর মধ্যে কাঁচা হাতের ছাপ অস্পষ্ট নর। কিছু আবার বংগর ধন থেকে তার হাতের রচনা একেবারে পাকা। আবার ধথের ধন পদতে পড়তে ভামরা উৎকঠিত ছালরে অংথিকার শ্বাপদসভুল অবন্যের পরিচয় পাই। তাঁর লেখা স্থানগ্রীর ওপ্তথম, ফকপতির রক্পরী, হিমালয়ের ভয়ত্বর এই নৈপুণ্যকে স্যাপক ক্ষম্ম ছাড়া ক্যাতে পারে নি।

তাঁব বচিত ডিটেককটিভ কাহিনীও অনবস্ত। "লেবিনার কঠচার" ও "জয়ন্তের কার্তি।" পড়তে পড়তে মনে হয় এ বেন ডিনা-নাইটালের আবেক অংশ। "ডাগনের ছঃস্বপ্ন" বইটিতে তিনি আনালের মনকে বহুত্যে ঘেরা পরিবেশের ভেতর দিয়ে চীনা, তাও ধর্ম সম্পর্কে অনেক তথ্য পরিবেশন করেছেন। তাঁর বচনাব মধ্যে বে প্রাণবস্ত ডাব—নানা জ্ঞানগর্ভ বিষয়ের সমারোহ আছে। তাঁর বচনা পাঠকদের মনকে আত্মনির্ভরশীল ও সবল করে তোলে। হেমেক্রকুমার রায়ের ডিটেকটিভবর জয়ন্ত ও মাণিক নিঃসন্দেহে পাঠকদের হালয় কর

মুর্কে। এমন সকল রোমাঞ্চকর ট্রাজিডি বাংলা দেশে থুব বেশি। নেই।

রোমাঞ্কর সাহিত্যে ট্রাজিডি আরো অনেকেই সৃষ্টি করেছেন। শ্রীরবী-রলাল রামের 'অভি**শগু' একটি** অন্তুত রোমাঞ্চকর করুণ উ<mark>পত্তাস।</mark> কেবল এই একটি উপক্তাদেই ব্ৰীম্মলাল বায়কে কিশোর-সাহিত্যে চির্থারণীয় করে রাখবে। উপস্থাসটির প্রথম দিক—ভাইবোনের ষে উংসাঙদুপ্ত অভিযান শুক্ত পথে এরোপ্লেন নিয়ে,—তা বিশেষ করে পাঠিকাদের মনে সাড়া জাগিয়ে তোলে। ইরাব সাহস, ধৈর্ঘ্য এবং অনুনা উৎসাহ এবং বনজিতের ভগিনীক্ষেত্র, এবং অন্তয়ের আন্তরিক ব্যুস্রাতি মনকে আকর্ষণ করে। প্রথম দিকের একটা দিক এখানে বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য, শোকার্ত পিতামাতা যথন সন্থাননের সংবাদের জন্ম বাবকুল হয়ে আছেন সে সময়ও তাঁরা যে অদ্ভত সাসম ও ভগতা ও স্ববিষেদনা দেখিয়েছেন, প্রকৃত পকে বাস্তব ক্ষেত্রে তা অনুকরণবোগ্য। উপত্যাসটির শেষ হুই পরিচ্ছেদে কল্পনাতীত বিশ্ববে স্থান্তিত হয়ে যেতে হয়,—মধ্রত একটা ভাতি-বিহবলতা মনকে আখুর করে। এই রকম বিষয়বস্তু নিয়ে বোধ হয় আর কোন উপ্রাণ বার হয়নি। মৃত্যুর চেয়ে ভয়ন্ধব এই নামে ধারাবাহিক ভাবে উপ্রাদট্টি রামধন্ত গ্রেকাশিত ২য়েছিল।

এই প্রদক্ষে বলা যায়, জ্রীধীবেক্সলাল ধরের আবিসিনিয়া ফ্রণ্টে, প্রস্থারে প্রথিক, জ্রাধার রাতে আর্ভনাদ, কামানের মুখে নানকিঙ প্রভৃতি অপূর্ব ট্রাজিডি। রোনাঞ্চকর বারম্ববাঙ্গক বিয়োগাস্ত উপর্জান লেগাই জ্রীযুক্ত ধরের বৈশিষ্টা। বাঙালা যে কোথাও পিছিয়ে নেই জলে, স্থানে, বনক্ষেত্রে সে বে অসাম বাবন্ধ এগিয়ে মেতে পারে বিশ্বমৈরীই তার মূল মন্ত্র। আমরা প্রেবন্ধ পাই জার লেগা থেকে। তবে ভাবতবর্ষ, চান দেশ এবং বুটেনকেই মিন্নভাব পুরোভাগে দাঁও কবিয়েছেন এবং অনেকক্ষেত্রে তিনি ব্যক্তিভেদ লালো ভুলিকাব ছাপ না দিয়ে কেবল দেশভেদেই দিয়েছেন। ইবং প্রচারবনীর গন্ধ না থাকলে তাঁর উপক্যাসগুলির কয়েকটি ভুলনাবিহীন বলা যেতো।

বাবা অভিযোগ কবেন এবাড়ভেঞ্গার উপন্তান লিগতে গেলেই নায়কদের আফ্রিকাতে নিয়ে যাওয়া লেগকদের প্রধান দোষ। ভাচলে তাঁদের বলবো, এর তৃটো কারণ প্রথমতঃ বই পড়ার বিষয়ে ভালেন অনুসন্ধানা মনের একান্ত অভাব, ভালো বই খুঁছে দেগবার অবস্ব তাবে থেকেই উংরুইভা ও অপ্রুইতার বিচার হয়ে যায়। দিতারতঃ তাব থেকেই উংরুইভা ও অপ্রুইতার বিচার হয়ে যায়। দিতারতঃ তাবা ভ্লে যান সমগ্র ভারতবর্ষে উপযুক্ত পটভূমিকার অভাব নেই, যার জন্ত সব সময় এল দেশের পটভূমিকাকে গার করতে হবে। বালো দেশের সন্দর বন, আসামের জন্তল পাহাড়, পর্বত, নাগপুর ও ছোট নাগপুরের জন্তল, হিমালরের পাদভূমি উপত্যকাও অবিভাকার ভাল, সমগ্র ভারতবর্ষে ছোট বছ অসংখ্য স্থান ছভিয়ে আছে পাহাড় পর্বত, নদ-নদা, জলাভূমি, বিস্তার্প প্রান্তর, শুক্ত মক্ত মি কোন কিছুরই অভাব নেই।

তাই এই ধরণের সমালোচকদের উচিত দেশীর পটভূমিকায় লিখিত উপত্যাস ও গল্পগুলি পড়া, হেমেন্দ্রকুমার রায় রচিত জমাবস্থার রাত। 'কে' নামে ছোট গল্লটি, প্রশাস্তের অগ্নিলীলা, নীবেক্সলাল ধরের বকের জঙ্গলে, সৌবীক্সমেইন মুখোপাধ্যারের লাগ কুঠি, ছিন্নমন্তার মন্দির, বতীন সাহার সোনার বজা,
আচিস্তাকুমার সেনগুপ্তর ডাকাতের হাতে ইত্যাদি। দেনী পটভূমিকার
লিখিত বই যে কত স্থলর হতে পারে এই সব বইগুলিই তার প্রমাণ,
অনুসদ্ধান করলে এই রকম রচনা আরও পাওরা যাবে। তাছাড়া
ভালো রচনার জন্ত পাঠকদের দাবী জানানো উচিত। তাঁদের
আগ্রত উৎসাত্ত পেলে সার্থক রচনা স্পৃষ্টিতে মনোযোগী হওয়া উচিত।

অত্যন্ত নীচদরের সন্তার মারপ্যাচে পাঠকদের ভোলাবার চেষ্টা করেন এক শ্রেণীর লেখক, কিশোর-পাঠ্যের নামে কত যে অপাঠ্য চলে যায়। এবার ডিটেকটিভ প্রসঙ্গে আসা যাক; এ সম্পর্কে বৃদ্ধদেব বস্থ লিখেছেন, মনোরঞ্জন ভট্টাচার্ষ্যের প্রশংসনীয় হুকা-কাশি সত্ত্বেও বাংলা ভাষায় এখনও সত্যিকার ডিটেকটিভ গল্প হতে পারলো না। শুধু তার বিকৃতি চরমে উঠলো শিশু-সাহিত্যের কুপথ্যশালায়। ছঃগের বিষয় এ বিক্বতি আমরা দেখতে পাই বুদ্ধদেব বস্তর নিজের বচনাতেই, কিশোর-সাহিত্যে রোমাঞ্চ আনার ব্যাপারে তিনি সফলকাম হতে পারেননি। রহস্ত ও রোমাঞ্চের নামে অসার বস্তুতে পাতা ভরেছেন, একঘেরেমীর চুড়াস্ত। এ ছাড়া আর বাঁরা লিখেছেন তাঁদের মধ্যে স্থপনকুমার, প্রভাবতী দেবী সরস্বতী এবং রাধারমণ দাস ইত্যাদির রচনা নিয়ে আলোচনা করা নির্থক। আগাছার মত বহু গ্রচনার অভাব বাংলা দেশে নেই, কিন্তু তার কোন সার্থিকতা আমরা খুঁজে পাইনা। ভারতীয় মেয়েদের রহস্ত-রোমাঞ্ বা গোয়েন্দা কাহিনীর মাঝে অসার্থক ভাবে আনার কোন মানে হয় না। কেন না আজকালকার দিনের মেয়েরা এ্যাডভেঞ্চার বা গোয়েন্দাগিরিতে সম্পূর্ণ অযোগ্য বা অসমর্থ একথা বলতে ঢাইনা কিন্তু তাদের নিয়ে লিখতে গেলে যে কলাকৌশল সহজ স্থন্তৰ বসস্ষ্টি করা দরকার, সে ক্ষমতা এদের লেখনীতে নেই। কিশোর *পা*ঁংতো রহস্থ ও রোমাঞ্জর পরিবেশে মেয়েদের এগিয়ে আনা ্রড় সহজ্পাণ্য নয়। এ বিষয়ে প্রকৃতই আগ্রহ, ও কৌতুচল জাগিয়ে রাথার মত শ্রেষ্ঠ রচনা প্রবোধচন্দ্র ঘোষের আজভ তাবা ডাকে', পড়ার পড়েও সহজে ভুলতে না পারার মতো রচনা সাধিক স্ষ্টি। স্থমিতা ও চক্রার চরিত্র যেভাবে রহস্তাঘন পরিবেশের মধ্যে আনা হয়েছে তাতে লেথকের যে রকম নিপুণতা প্রকাশ পায় তা অস্বীকার করার কোন উপায় নেই। আর একটি নারী-চবিত্র মিসেস ডিকুজ, অন্তত বহুতাময়ী মহিলা মিসেস ডিকুজ পাঠক-পাঠিকাদের শ্বরণ থাকবে, "বাইরের ঝড-জ্রলের সঙ্গে শ্বর মিলিয়ে হেনে উঠলেন মিসেস ডিক্রন্ত" পড়লে মনে থাকবে। যদিও এটা পুস্তকাকারে প্রকাশিত হয়নি "রং মশালে" ধারাবাহিক ভারে প্রকাশিত হয়েছে, কিন্তু আশা করা যায় রচনাটি বই হিসাপে বার হ'লে জনপ্রিয়ও সমাদৃত হবে।

শ্রীনীহাররম্ভন গুপ্ত একজন লব্ধপ্রতিষ্ঠ সাহিত্যিক, নহস্ত ওপজাদিক। কিন্তু সত্য বলতে কি, একমাত্র কালো জ্রমরই ওার সার্থক কয়ই আছে। এই রকম কিশোরপাঠ্য উপজ্ঞাদ আর তাঁর থুব কমই আছে। "নাগপাশ" অপর একটি ভালো রচনা, সন্তব্তঃ অনুবাদ, তবুও রসোত্তীর্থ। এই রকম আর ত্ব-একটা ছালা বাব সবই কিশোরদের অপাঠ্য। তাঁর অধিকাংশ উপজ্ঞাদের বৌক্তিকতা খুজে পাওয়া বার না, তাঁকে প্রথম শ্রেণীর কিশোরপাঠ্য (কোন কেনে বড়নেরও) রহস্ত-উপস্থাদিক বলে মানতে ধিধা হয়।

ভাঁর দেখার কিরীটি গোরেন্দাকে নাইট ক্লাবের গোরেন্দার বাসিন্দা বললে বোধ হয় অত্যুক্তি হবে না।

বাংলা দেশের ছেলেমেয়েদের হাতে প্রকৃত ভালো উপকাস তুলে দিরেছেন স্বর্গীয় মনোরঞ্জন ভট্টাচার্য্য। অভ্যাশ্চর্য্য বৃদ্ধিদীপ্ত রচনা একমাত্র তাঁরই হাত দিয়ে বার হয়েছে। **ঐ**মনোরঞ্জন যে কি রকম যদিক ছিলেন তা তাঁর অবিশ্বর্ণীয় গোরেন্দা ভক-কাশির নাম শুনলেই বোঝা যায়। কোনান ডয়েলের শাল'ক ছোমদ ও মনোরঞ্জনের মূলগত স্থরটুকু এক। দেইজন্ত কোন কোন পাঠক তাঁর "ঘোষ চৌধুরীর ছবি উপভাসটির সঙ্গে কোনান ডয়েলের "সিক্স নেপোলিয়নের" টেকনিক সাদৃশ্য আছে মনে করেছিলেন। কিন্তু এ রচনা হুটি পাঠক মাত্রই জানেন, এ সন্দেহ আসলে সম্পূর্ণ ভিত্তিহীন। অতি স্কলব মাধ্যাপূর্ণ সহজ ভাষায় লেখা তাঁর প্রত্যেকটি রচনা। আজগুরি, গাঁজাখুরী খুন-জগম, গোয়েন্দার অত্যাশ্চর্য্য অলোকিক ক্ষমতাসম্পন্ন অবিশাস্ত ঘটনা অথবা গভীর সমুদ্রের মাঝে পড়ে গিষেও নায়ক বেঁচে যায়, উভস্ত প্লেন থেকেও নায়ক অক্ষত দেহেই নেমে আসে, গায়ে পর পর সাতটা গুলী লাগলেও নায়ক গোয়েন্দার কানের পাশ দিয়ে বেরিয়ে যায়, এ রকম লোমহর্ষক ঘটনা-অর্থাৎ সস্তার মারপাঁটা নেই কোথাও, কিন্তু তবুও কি রকম পরিচ্ছন্ন কৌতুহলোদ্দীপক ভাঁর প্রত্যেকটি রচনা।

মনোরঞ্জন ভটাচার্য্যের লেখার প্রধান বৈশিষ্টাই হল অন্তুত বৃদ্ধিচাত্ত্য এবং কথন-কৌশল। তাঁর প্রথম উপল্লাস "পদ্মরাগ" এই উপল্লাসটিতে কে যে প্রকৃত অপরাধী তা কল্পনা করা প্রায় ছংসাধা ! অথক শেষ পর্যান্ত পাঠকমনকে সমান আগ্রতে এগিরে নিয়ে চলেন। তাঁর রচনার নৃতনত্ব জানার আগ্রহকে বাড়িয়ে তোলে—এটা যে কত বড় সফলতা তা এক কথার বলা যায় না। তাঁর প্রেষ্ঠ উপল্লাস "সোনার হরিলে"র অপরাধী যে মিং বাস্ক তা বলে না দিলে ধরা প্রায় অসাধা। পাঠকমনকে বথেষ্ঠ পরিশ্রম সহকারে মস্তিক্ষ চালনার স্করোগ দিয়েছেন লেখক। কিন্তু মনোরঞ্জন যে ওতটা জনপ্রিয় হতে পারেননি তার কারণ তাঁর লেখা নিয়ে আন্দোলন করার মত প্রকৃত সমালোচকের অভাব। অতি অল্পবর্মে তিনি যা দিয়ে গেছেন তাঁর স্থান পূর্ব করবার মত খ্বুকম শিশুসাহিত্যিক আজ আছেন। বাঁরা তাঁর রচনা পড়েছেন তাঁরাই তাঁর শ্রেণ্ঠ সম্পর্কে অবগত।

এব পরে আবো করেকজন কুশলা লেথকের শ্রেষ্ঠ বচনার নাম উল্লেখ করতে চাই, দেগুলি উংকুষ্ট গোয়েলা কাহিনী, কিশোরদের হাতে তুলে দেবার মতই। বিশেষ করে নপেলুকুষ্ণ চট্টাপাধ্যারের জন-পরাজয়, বিজয় অভিযান, রীতিমত প্রাভতেঞ্বার; ওমেলুকুমারের বিভীষণের জাগরণ, রাত্রির যাত্রী, অন্ধকারের বন্ধু, সুকুমার দে-সরকারের হানাবাড়ী এবং মনটা হু হু করে, একটা প্রশানার যোগ্য আকর্ষণীয় লেখা, তাঁর রচনা পড়লে অনুমাত্র দল্লহ থাকেনা কিশোর-সাহিত্যে লেখক একজন শক্তিমান রহস্যোপভাষ লেখক। এখানে বলতে ভুলে গিয়েছি, ছোটদের জন্ম কাঞ্চনজ্জ্বা দিরিজ, অসকনন্দা দিরিজ এবং রোমাঞ্চ কাহিনী বেরিয়েছিল; বলা বাছলা ও প্রচেটা প্রশাসনীয়। কারণ প্রথমাক্ত দিরিজ ছুটি থেকে

অনেকগুলি এবং শেষোক্ত সিবিক্ত থেকে হ'-তিনটে ভাল বই পাওৱা যায় যা প্রশাসার যোগ্য।

অতি উত্তম না হলেও কিশোরপাঠ্য রহন্ত ও রোমাঞ্চকর বে করেকথানি ভালো বই আমরা পাই এই সিরিজে তিনটির থেকে তার মধ্যে করেকথানি হয়ত অমুবাদ, কিন্তু কর্ তু তা প্রশাসার যোগ্য । এর মধ্যে আমরা হেমেন্দ্রকুমারের স্থানরর রজ্ঞপাগল, কুমারের বাঘা গোরেন্দা, রছপুরের যাত্রী, দেব প্রসাদ সেনগুপ্তের সকলের হিমালক, সুবোধকুমার দাশগুপ্ত জীবনের মেয়াদ, শেন নিঃখাস ইত্যাদি । এই সিরিজ ছাড়াও আরো কয়েকথানি তুওপাঠ্য বই-এর নাম করা বিতে পারে । স্কুকুমার দে-সরকাবের হলুদক্তি, নিশাচর, থগোন্দ্রনাথ মিত্রের আফ্রিকার জন্তন, হেমেন্দ্রলাল রায়ের হুর্গম পথের যাত্রী, স্ববোধচন্দ্র মত্ত্র লেখা এগুলি । ছোটদের জন্য লিখতে গেলে কর্মনার মাত্রা সহজ সন্দর খাভাবিক হওয়া চাই।

আমরা ছোটদের বহস্তময় ও রোমাঞ্চকর কাহিনীকে তিন ভাগে বিভক্ত করতে পারি ব্যা—বৈজ্ঞানিক পটভূমিকায় কোন বৈচিত্রময় অভিযান বা বৃহস্তজনক আবিষ্কার। নানাবকমের অভিনৰ পদ্ধতির গোয়েন্দা কাহিনী, ততীয়ত: প্রেততত্ত্বের উপর ভিত্তি করে নানা রকম ভৌতিক কাহিনী। কিন্তু যে বিষয় নিয়ে ধাই লেগা চোক, আন্তরিকতার স্পর্ণ না থাকলে সর্বই অচল। উপযুক্ত ছোটদের কাতিনী বৃতদের মনকেও আকর্ষণ করে। মথার্থ বুসোত্তীর্ণ ভৌতিক কাহিনীগুলির আদর বড়দের কাছেও কম নয়। নানা বৰুন বৈজ্ঞানিক প্ৰউভূমিকায় লেখা গল্প এবং গোডেনা কাহিনী ছাড়াও কিশোর-সাহিত্যে আর একটা বিশেষ স্থান অধিকার আছে বহুস্তময় ও বোমাঞ্চবর ভৌতিক কাহিনী। অক্যান ভৌতিক কাহিনী লিগে ওদেশে বায়াম টোকার যদিও ততটা থাতি পাননি তবুও তাঁৰ ছাকুলা যে সাৱা বিশ্বে অসাধারণ গাতি লাভ কৰেছে সে বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। এই উপজাসটির চিত্রেপ এলনিত হয়েছে, নামভুমিকায় অভিনয় করেছেন লন চানী। এবঞ ভাকুলা উপজাস ও তার চিত্ররূপের মধ্যে পার্থকা আছে যথেষ্ট। আন্ধ্র পর্যান্ত বিশ্বসাহিত্যে যতগুলি ভৌতিক কাহিনী বচিত হয়েছে, তার মধ্যে ভীষণতম উপকাস এই ছাবুলা। একে শ্রেষ্ঠতম বললেও বোধ হয় অহ্যক্তি হবে না।

বাংলা ভাষার মূল ভৌতিক কাছিনী বলতে আমবা ভ্রুত পেখ্নী,
শাক্ট্নী দেড়ে মামদো এবং ব্রহ্মদৈতা বা ব্রেক্ষদিরে কথাই, এছাড়া
আব কিছুই পাই না। বিশুদ্ধ ভৌতিক কাছিনী ক্ষতি মেকপ্রদ ভাষায়
বর্ণিত হলে মনকে তা কিছুক্ষণ আচ্চন্ন কবে রাগবেই। বাংলা দেশের
শিশু সাহিত্যিকদের মধ্যে অনেকেই ভৌতিক বসের নামে হাত্যরসের
সৃষ্টি করেছেন। ভৌতিক কাছিনীর মধ্যেও এমন একটা বাস্তব অথচ
ভরানক আবহাওয়া সৃষ্টি করা দরকার যাতে পরিবেশটা বিশ্বাসমোগ্য
হয়ে দাঁড়ায়। প্রেত্তিজ্বের উপর ভিত্তি করে এদেশে ও ওদেশে
ক্ষেক্র কাছিনী রচিত হয়েছে, বেগুলি বহত্যময় পটভূমিকায় বাস্তব
অনুভূতির ওপর ভিত্তি করে বলা হয়েছে, সেইগুলি বথার্থ সার্থক
ছয়েছে, সত্য হোক মিথাা হোক ভৌতিক কাহিনীর মে একটা
বিশেষ মূল্য আছে তা অস্বীকার করা যায় না। মানুবের মৃত্যুর
পরেও যে কিছু আছে এ নিয়ে গ্রেক্ষ্রণৰ অস্ত্ব নেই, এক দিবে

দেমন প্নৰ্ধশ্যবাদ—আধ্যাত্মিক জন্তেৰ সৃষ্টি হয়েছে, অপব বিকে ঠিক তেমনি প্ৰেক্তভ্বাদ—অপদীৰী প্ৰেতাত্মা এমন কি শ্ৰীৰী প্ৰেত্ত্বৰ সৃষ্টি হয়েছে।

যে দিনা জনুভূতি মানুষকে ভগবানের অভিও জানিয়ে দের, সেই অমুক্তিই মানুসকে জাগিরে দের আমাদের চার পাশে অদৃত্য অলোকিক ব্ৰহ্মসমূম কিছু খাছে। মানুষ মৰে গেলেও তার ইচ্ছাশক্তিৰ কাজ করে, কোন কোন মান্তবের ভবিষ্যৎ দৃষ্টি থাকে, দুরাগত বিপদের আতাদ তারা বৃষকে পারে, মানুষ না থাকদেও তার ছায়ামর অভিত ধাকা নত্ত্ব, অভগু বাসনা কামনা হবুত তা অভি ভয়ানক, কেউ কেউ ভা চণিতার্থ কণতে চার অপত্তের ওপর নিজেকে আরোপ করে। নানা রক্ষা বিষয়বঞ্জে অবস্থন কৰে যে সমস্ত ভৌতিক কাছিনী ৰচিত চলে ব তাৰ মধ্যে নিংসক্ষেত্ ছেমেক্ৰকুমাৰ বাবেৰ বচিত লেখাগুলিট দ্রেষ্ঠিন। যদিও কাঁর করেকটি বই ডাকুলার খ্যাংশের অত্যাদ তবুও ভার মধ্যে মৌলিকভার অভাব নেই, নিতান্তই প্রাণহীন আড়েষ্ট জন্মবাণ নয়। জাঁর কিনোরপাঠা রচনাগুলির মধ্যে যে লিপি-কুশনতা আছে তা অতি অভুত ! তাঁর লেখা বিশালগড়ের হংশাসন, মোচনপুদের শাশান, প্রেভান্মার প্রতিশোধ এবং এক্রভালিক প্রভলে 'চমংকুত হই। অহুবাদ ছলেও ডাকুলার সঙ্গে বিশালগড়ের ছঃশাসনের পার্থক্য আছে মথেষ্ট, মিলিয়ে পড়লেই সে কথা ব্রুডে অস্থবিধে হয় না।

বিশালগাড়ের হুংশাসনে'র ভাষা এবং ঘটনা-বিশ্বাস পাঠককে বিশ্বিত কববার মন্ত । বিনর বখন বিশালগাড় অভিমুখে রওনা হছিল, সেইখানটা অথবা বাজা প্রতাপক্ষরের ঘরে গিরে বিনর বা দেখলো অথবা অবিনাশ বাবু যখন বিনরকে প্রায় মোহাছের অবস্থাত গণ্ডির জ্বের টেনে আনলেন তথন, তখন পাঠককেও ভীত, বিশ্বিত এবং চমকিত করে । হেমেন্দ্রুমার রায় কুত প্রেষ্ঠতম উপশ্বাস বলা চলে শাম্ব-পিশাচ'কে । কারণ মাম্ব-পিশাচ'র কাহিনীর বিশ্বাস, অভ্যাশ্চর্যা ভাষার খেলা এবং ভৌতিক আল সমস্তই অতুলনীয় । প্ররক্ষম অত্তুত গিপিচাতুর্য্য সাধারণতঃ কোন ভৌতিক কাহিনী রচনায় দেখা যায় না । ভ্যাবছ অপরাধী নবাব ও তার ছরজন প্রেত্ত অম্বত্বের কথা বে একবার পড়েছে, সে কথনোই ভূলে যাবে না । শাম্ব-পিশাচে'র কাহিনীয় মধ্যে ভাকুলা'র একটা অম্বত্ব করি । বলিও কাহিনীর জোর বিশালগড়ের হুল্পোসনের'ই সেশি । তবুও রচনা-দক্ষতার জন্ম প্রথম স্থান মাম্ব-শিশাচে'র ।

এ ছাড়া তেনেদ বাব্ৰ আনও তিনথানি বই 'সদ্ধার পরে সাবধান', 'বাব্রে বারা ভব দেখায়' ও 'বাদের নামে সবাই ভর পায়' ছাট ছোট ভৌতিক কাহিনীতে পূর্ণ। এগুলির মধ্যে 'বাজলে বাঁদী কাছে আসি' ও 'মিসেস কুমুদিনী চৌধুবী' বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য। ধার মধ্যে শেবোক্ডটি 'ভাকুলা'র থগুংশের জানুবাদ। হেমেন বাব্র ভৌতিক কাহিনীর প্রত্যেকটাই উল্লেখযোগ্য। 'প্রেতাদ্বার প্রতিশোধ' অভুত রচনা! এরকম ভৌতিক করুপ রচনা প্রায় হুর্ন্ন ভ! বে কোন কারবেই হেন্দি নামুব খুন করে বারা প্রেত-পাহাড়ের উপভাকার বাস করে তার এবং বংশধরদের আর কোনইকারণেই রহাই নেই। শাভার পরেও চেতনাকে আছের করে রাথবে এই রচনাটি। জামরা একটা বিবয় লক্ষ্য করেছি বে, দৃশ্বতঃ অথবা অদৃত্বতঃ 'ভাকুলার'

প্রভাব নিয়ে বত বেলি ভয়াবছ বসোভীর্ণ গল্প লেখা সম্ভব হয়েছে আর কোনটিই তত নর। এই জন্তই আমরা রারামটোফারকে অভিনক্ষন না জানিরে পারি না।

ভাকুলার প্রায় ছবছ অমুবাদ শ্রীন্থনীলকুমার গলোপাধ্যায়ের 'বিদেহী আত্মা'। 'বিশালগড়ের হুঃশাদন' এবং 'বিদেহী আত্মা' মিলিরে পড়লেই 'বিদেহী আত্মা'কে অনেক উচুতে স্থান দিতে হর। অনেক বেশি ভয়াবহ চিন্তাকর্বক ঘটনা 'বিদেহী আত্মা'তে পাই। 'বিদেহী আত্মা'র মৃত্যু-ভূছিনতা, রাজা কুতান্ত বর্মার অন্তুত ভৌতিক-বিজ্ঞান প্রে'র ভান্তিত করে দেব। এই লেখকের লিপিচাতুর্যা ততটা প্রথম না কলেও নিংসন্দেহে তাঁব 'বিদেহী আত্মা' যে কোন ভৌতিক উপভালের চেয়ে প্রেন্ত করা চলে কাছিনীর জারা থেকে। 'বিদেহী আত্মা' পড়লে মনে হর, কাছিনীর জার অভ্যন্ত বেশি বলেই যটার বর্ষার প্রশাংসার যোগ্য হয়েছে। ছংখের বিষয়, এই অন্তুত লোমন্তর্মক উপভালিট এখনও প্রকাশেরে প্রকাশিত হয়েনি 'রামধন্তু'তে ধারাবাছিক ভাবে প্রকাশিত হয়েছে। কিন্তু এই লেখাই প্রমাণ করে দেয়, লেখক ইছ্ছা করলে বিদেশী সাহিত্য থেকে অতি উৎকৃষ্ট ভৌতিক কাছিনী কিশোরদের কর্যা উপভার দিতে পারেন এবং এতেই কৃতকার্যা হরেনে।

এ ছাড়া ছোটদের জন্ম আবো কল্পেকগানি উৎকৃষ্ট বই-এর নাম করা চলে, যথা—শৈলজানন্দ মুখোপাধ্যায়ের 'অসম্ভব', এই বইয়ের গন্ধগুলিতে যথাৰ্থ ই লিপিচাতুৰ্য্যের পরিচয় আছে। ছোটদেৰ জন্ম ইনি যা লিখেছেন, তা প্রকৃতই স্থন্দর রচনা। প্রভাব সম্পূর্ণ ভাবে এড়িয়ে উন্নত ধরণের অতি স্থন্দর সাবদীল ভাষায় রচিত শ্রীবিভৃতিভূষণ বন্দ্যোপাধ্যায়ের ভৌতিক কাহিনীগুলি। ভাঁব বচিত কাশী কবিরাজের বিপদ, "মুটি মস্তর" প্রভৃতি গলগুলি বাংম: সাহিত্যে নিশ্চয়ই ক্লাসিক। বিভৃতিভূষণের প্রতোকটি পাতায় যে অশ্বীরী প্রশ রয়েছে তা সতাই অতুলনীয়। ["]আরক" গল্পের বাস্তবিক তুলনা নেই। গভীর রাতে চাঁদের আলোয় আকাশপরীয়া যখন জল থেতে নেমে আদে, তখন সে দৃশ্য বে দেখে সে আর আপনাকে ধরে রাগতে পারে না! এমন উন্নত ধরণের ছোট গল্প খুব বেশি পড়া যায় না। বিভূতিভূমণের ভৌতিক গল্পে কেমন একটা সক্ত্রণ ভাব দেখা যায়, মৃত আঞ্চা শে-ও গিয়েও এপারকে ভুলতে পারে না তাই সে নিয়ত মানু^{নকে} ওপারের ডাক দেয়। শ্রীকামাক্ষীপ্রসাদ চট্টোপাধ্যায়ের "মন্ত্র" এমনই একটি 'সকরুণ বহস্তময় গল্প, "আবক" ও মশ্ববের পেছনে ["]কুধিত পাষাণের" প্রভাব আছে মনে হয়।

বড়দের সাছিত্যে রহত্ময় ও রোমাঞ্চকর রচনা লিথে যারা বাংলা সাহিত্যকে প্রকৃতই উন্নত করেছেন, তাদের মধ্যে প্রীদীনে দুকুমার রায়, শরদিন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়, পাঁচকড়ি দে, ইত্যাদি উল্লেখযোগ। কিছ কিশোর-সাহিত্য নিয়ে আলোচনা করতে বসে বড়দের সাহিত্যে রোমাঞ্চ ও রহত্য নিয়ে আলোচনা ভালো দেখায় না। পরে স্বত্তর ভাবে করবার ইছে। রইল। যদিও দীনে দ্রুকুমারের আনেক বচনা এবং শরদিন্দু বন্দ্যোপাধ্যায়ের কোন কোন রচনা কিশোরপার্মি হিসাবেও অতি উৎকৃষ্ট। কিছ এরা কেবল মাত্র বড়নের জ্বন্ধ লিখেছেন বলেই সে সব রচনার নাম এখানে উল্লেখ করলাম না।



PETP. 3-X52 BG

এ আৰু এক পিয়াৰ কি লকৰের পক্ষে হিন্দুখান নিভাব কি কৰুক ভারতে এছত।



মহাধেতা ভটাচার্য

जिश्रात्र नः विकासणे देखिनीयात देखान । मीर्च एव । धकदाता গড়ন। পচিশ বছর বয়সের তুলনায় যেন একটু বালক ভাব আছে চেহারায়। বিশেষতঃ হুই চোথের দৃষ্টিতে আছে একটা বিশয়ের ভাৰ। যেন বুৰতে চেয়েও বুৰুতে পারছে না কিছু মান্ত্ৰটি। ঈৰৎ বিব্ৰত ভাব, কুঠিত একটা মিনতির ব্যঞ্জনা এখনও ইভান্সের মধ্যে দেখা **ৰায়, যা দেখে অক্যান্ত** সাহেবরা বিজপে করেন। তাঁদের মনে **হয় মাত্র্যটা ত্**র্বল চরিত্রের। ত্র্বল লোক না কোক, সেয়ে কিছুটা **স্মল**ভাষী ও স্বপ্নদুশী ভাতে সন্দেহ নেই। আর এখনও ভার এ দেশ **সম্পর্কে অনেক কৌতুহল অনেক জিন্তাসা আছে মনে। সেটাও ভাঁদের কাছে কম আ**শ্চর্য বোধ হ্যুনা। আক্গান ও পাঞ্চাব **ক্ষেৎ পাকা জন্পী** বুড়োৱা ইভান্সকে বোঝাতে ছাঙেন না—ওচে **স্বপ্নদর্শী, এ দেশ**টার মাটিতে সোনা-রূপো ছড়িয়ে নেই, আল কলকাতার **পথে যাটে বাঘ সাপ যোগী সাধু কিলবিল করছে না। এ নেহাৎই একটা জায়গা।** বুদ্ধি থাকলে পেট আর ট'্যাক ছই-ই তোমার ভরবে। **আর নেটিভগুলোকে ছইশো হাত তফাং রেগে চলবে। ওদের অসভা** পোষাক, বাঁচুৱে ভাষা আৰু আমাদের সম্পর্কে উন্থট আজগুৰী দৰ ধারণা—সবগুলোই দনে বেখে চলা উচিত। কি ছিলো এ দেশে বল ? **সবই তো আমরা** এসে শেখালাম। ডিখারী, নেহাং ডিখারী এরা। **এদের সঙ্গে মিশেছ** কি মরেছ।

কিন্তু ব্যেও বোঝে না ইভান্স। হাজাবটা শোগানো কথাও তার মনে থাকে না। আর একটা কথা সে কাককে বোঝাতে পারে না। নিজেব সম্পর্কে তার নিজেবই থানিকটা বিভ্রান্তি রয়েছে। জ্ঞান থেকে তার ষভটুকু মনে পড়ে, সে যেন সর্বরই বেগাপ্প। নিজে বেন সেই প্রবাদবাক্যের চোকো পেরেক, যে কোনও গোল গর্ভেই খাপ থার না। আরো কি, সমস্ত দোসগুল আর অসম্পতি ক্ষমা করে তাকে গ্রহণ করবে এ রকম কোনও মনের মান্ত্র দ্বে থাক, কোন বন্ধুও সে পার্মন। এ রকমই দাঁড়িয়ে গিরেছে তার চরিত্রের আদল।

তবে বিঠুনের প্রাদাদে এক পৌষালী সন্ধ্যায় চম্পাকে দেখে ভালো লেগেছিল তার। শুনলো সে মেয়ে কানপুরে থাকে। মেয়েটিকে দেখে ভাল লাগলো তার। জার মনটা যেন ঈষং উত্তপ্ত হলো। টমশন ও ফ্রেডরিক প্রামুখ বন্ধ্রা অবশ্য উপদেশ যা দিলো তা বন্ধুজনেরই মতো। বললো—এ সব কাক্ত করে এমন বুড়ো মেয়েছেলে পাবে জনেক। পাঠিয়ে দাও একটাকে ক'টা টাকা বা গয়না দিয়ে।

ভব্দে যেতেও পারে। তবে আমি বলি বন্ধু, ঐ আলগা আলগা করে যাওয়া-আলাই ভালো। বেশী জড়াতে গেলে ব্রাইটের মতো কেঁলে যেতে হবে।

আর একজন বললো—ত্রাইট হলো হাফনেটিভ। আর যা-ই বলো ত্রাইট পুরুষ বাচচা। মেয়েটাকে শারেস্তা করে রেথেছে। ফৈজাবাদের কালেক্টর কি ক্যাপ্টেন নঙ্গের মতো একেবারে সন্ট্রু বিকিয়ে দেয়নি।

মাতৃভূমি আর এই দেশের মধ্যে বেমন সাত সাগরের তলং, নোণাছলের টেউ থেয়ে থেয়ে আইন-কান্তুনও পালটে গিয়েছে এনে কাছে। স্বদেশে এবং এথানে শ্বেতাঙ্গিনীদের সম্মান রাথবাব ও আছও জানকবুল আব মানকবুল রাথতে প্রস্তুত আছে উমদ্দিজতিরক, ইভালবা। কিন্তু এ দেশের মেয়েদের দরকার হলে দোবক্ষ করে বাংলো ঘরে চাবৃক্ ভূই-এক ঘা মারতে দোষ নেই। প্রশ্ব দিলেই এবা মাথায় চতে ব্যবে।

দে বিষয়ে মতবিরোধ হয় না। তবু টাটকা আমদানী ইভাগ চট করে অতথানি অধিকার জাহির করবার কথা ভাবতে পারে না এই ছনিয়াতে তার অবাধ অধিকার থাকতে পারে কোন কিন্তু এ কথা ইভান্স ভাবতে পারে না।

থিওড়োর এফ ইভান্স পাঁচশ বছর আগে কোথায়, কোন প্রিবাং কোন মায়ের কোলে জন্মছিলো, তার মনে নেই। তাব *তান* যতদূব যায়, মনে পড়ে একটা উঁচু পাঁচিল। সেই পাঁচিলটা ^{হো} তার শিশুসনকে শৈশবে কয়েদ করে রেখেছিলো। আব জা^{ড়} সে কথা মনে করতে গেলেই মনটা গুটিয়ে যায়। থেমে যায়। মত হয় থাক। ঐ পাঁচিলটার ওপারে সাঁাংসোঁতে একতলা ঘরে লোগ খাটে বসা একটা রোগা ছোট ছেলের কথা মনে করে কাছ ^{নেট} তবু মনে হয়। মনে হয় সে ছোট ছেলেটার বয়স হবে নয় কি ^{দশ} স্থপারের চড়ের দাগ গালে লাল হয়ে ফুটে রয়েছে। আন চার্থে জল চিকচিক করছে। মনে পড়ে ছেলেটাকে শাস্থি ^(৮) অনাথাশ্রমের স্থপার সে দিনকার মতো উপোসী রেখেছেন। 🕏 ওপাবে দাঁড়িয়ে স্তপাবের প্রিয়পাত্র একটা নিষ্ঠুর ছেলে, বলে জ তের কি চোদ, চেহারা বেশ বলিষ্ঠ—পা ফাঁক করে দাঁড়িয়ে ^{হাবিং} তারিয়ে একটা আপেল কামড়াচ্ছে। রোগা শাস্তি পাওয়া ^{হেলে} মুখ তুলেও দেখছে না। ছনিয়ার অবিচার আর অত্যাচারে নি তার ভৌতা হয়ে গেছে। মনটা দিয়ে সহস্র স্^{চীমুথে স} পড়ছে |

শৈশবে বাব বাপ মা মরে গিয়েছে, আব জন্ম থেকেই যে জনাথাশ্রমে মানুষ, সেই বাজা খিপ্তভোর তথন তথু একটা কথাই ভাবতো। ভাবতো, যে এমন কি কেউ নেই যে তাকে এই নবক থেকে উদ্ধার করে নিয়ে যেতে পারে? এই পাচিলাঘেরা বাড়ী, সুপাবেব থেকে স্কুক্ত করে প্রত্যুক্তর হাতে মার খাওয়া, জলের মতো স্প আর শক্ত কালো কটি খেরেই কি তার দিন কেটে যাবে? মনে হতো কিছু ছেলেকে তার আন্থায় স্বন্ধন এসে নিয়ে গিয়েছেন। কেট বাইরে পালিয়ে গিয়ে কভি-রোজগার করছে। মনে হতো এর চেয়ে কয়লার খনিতে কাজ করা বা চিমনা সাফ করাও ঝি ভাল।

এই ছিলো জীবন। আর প্রত্যেক দিন ঘ্মোবার আগে এই জীবনের জন্মেও ঈশ্বরকে ধন্মবাদ দিতে হতো। বলতে হতো Hallowed be thy name.

হে ঈশ্বন, তোমার নাম জন্মণীপ্ত হোক। জন্মণীপ্ত হোক হে ক্রনামন্ত্র স্থাবন এই দ্যাৎ-দ্যোতে ঘরে শীতে ঠাণ্ডা বিছানা আর পাওলা সন্তা প্রম শাটের জন্ম, এর ও কাশিতে মরে যাওয়া ছোট ছোট ক্রিনে শান্তিত বালকদের জন্ম, কদ্য চারত্রের বর্কার চাকরদের হাতে বিবিধ নিত্য-নুতন অত্যাচারের জন্ম। জন্মণীপ্ত হও ভূমি।

গঠাং সম্ভব থলো স্বপ্ন। মৃক্তি এলো থিওডোরের জীবনে। থিওডোরের মা সঙ্গতিপন্ন এক কাপড়ের ব্যবসায়ীর মেয়ে গয়েও পালিরে এসে বিয়ে করেছিলেন তার বাবাকে। বাবা নেহাংই সপ্রতিহান। এক জমি কেনাবেটা দালালের সহকারী ছিলেন তিনি। শেরার। থিওডোরের এগারো বছর ব্রমণে একদিন সেই মহিলার তরক থেকে থোজ এলো। তাঁর নোটারী পাবলিকের তরক থেকে। ভারোলেটের ছেলের জন্ম কিছু করতে চান তিনি। শিক্ষাদীকার থরচ বছন করতে চান।

অনাথাশ্রম থেকে লণ্ডনের উপকণ্ঠে এক স্থল। ভদ্রমহিলার ধারণা ছিলো ইঞ্জিনীয়ার করবেন থিওড়োরকে। তাঁর **আশামুরুপ** হুরে উঠতে থিওড়োর ক্লান্ত হুয়ে পুড়ুলো। তিনি ছিলেন **বাতিকপ্রস্ত** এবং খুঁংখুঁতে। আছার পরিচ্ছদ বা শিক্ষাদীক্ষায় তিনি **কার্পণ্য** করতেন না। যদিচ বিলাসিতার বিবোধী ছিলেন। তবে অভুত অন্তও বিষয়ে তাঁর জেদ দেখা যেতো। চেয়ারের সোফা**য় তিনি** শাৰা ঢাকনী দিয়ে রাথতেন। হেলান দিয়ে বদলে তিনি **চটে** যেতেন। পিঠসোজা করে বসে থাকতে পারেননি, বা হেলান দিরে বসেছেন, এই সব কারণে ঝি ও র'াধুনীর সঙ্গে তাঁর ঝগড়া হতো। তা ছাড়া অনাথাখ্ৰমের জন্মে উলের মোজা বোনা তাঁর অক্সতম বাতিক ছিল। বছরে ছুবার করে তিনি একশো জোড়া **মোজা দান** করতেন অনাথাখ্রমে। আর সেই উলের কাটায় মরচে পড়লে বা হারিয়ে গেলে তাঁর মেজাজ থারাপ হয়ে বেতো। তিনি কুকুর পুষতেন না। বেড়ালের ওপর ছিল তাঁর টান। এবং বেড়ালকে তিনি কুকুরের মতো চেনে বেঁধে বেড়াতে বেক্নতেন। ভাঁর বিবিধ বাতিক সম্পর্কে হাসি-সাট্টা করলে তিনি রেগে যেতেন।

ংহান। এক জমি কেনাধেটা দালালের সংকারী ছিলেন ভিনি। পুক্ষজাতি সম্পর্কে তাঁর অবিশ্বাস এত প্রবল ছিল, যে বাড়ীজে ভার মায়ের পিসামার ছিলো ইট্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীতে কিছু বেড়াল বা পাণীত পুষ্বার সময়ে তিনি সময় দেখে কিনতেন।

वूकि मिंद्र वामाइ ?

বৃকে পিঠে সদি বসলে ভয়ের কারণ বৈকি! এ অবস্থায় ভেপোলীন মালিশ করলে সঙ্গে সঙ্গে উপকার পাওয়া যায়। কারণ ভেপোলীন ছকের মধ্য দিয়ে এবং নিঃশাসের সঙ্গে শরীরের ভেতরে যেয়ে একযোগে অতি ক্রত কাজ করে। ঠাণ্ডা লেগে মাথাধরা ও গলাধরায়, বাধা ও বেদনায় ভেপোলীন আশ্চর্যা মালিশ। আজই এক শিশি কিনে বাড়ীতে রেখে দিন।



বিওভারকে কেমন করে ধেন একটু রেঁই করে ফেলেছিলেন। শীর্ডস-এ পাঠাবেন ইন্ধিনীয়ারদের স্কুলে পড়তে সব ঠিক করেছেন। সহসা আবিষ্কার করলেন থিওড়োর কবিতা পড়েও লেখে।

সঙ্গে সঙ্গে থিওভোরের সম্পর্কে ভাত হয়ে পড়লেন 'তিনি। ভাড়াতাড়ি পাঠালেন তাকে লীড়স-এ।

ছুই বছর বাদে যখন ফিরলো সে, তথন সে লক্ষা হয়েছে অনেক।
বেশ ঝাডাঝাপটা চেহারা।

মহিলাব মনে গলো, বাড়ীতে এই একজন পুক্ষের নিরস্তর উপস্থিতি তাঁব পক্ষে নেহাং অসহ। থোঁজ কংগ তাকে পাঠালেন ক্যুলাখনিতে চাক্রা দিয়ে।

কিন্ত নিজেকে মানাতে পারল না ইভান্স। ইঞ্জিনীয়ার সে নামে-ই। আসলে মালিক চায় যে সে জবরদন্ত হোক। কাজ জালার করক। যে অবস্থায়, যে বিপক্ষনক পরিস্থিতিতে কাজ করে শ্রমিকনা, দেখে তাব মন প্রথমে ফুর হলো, তারপর ভেঙে গোল। শ্রমিকদের নির্বাপত্তার জন্ম কিছু করতে-ই নারাজ কর্তৃপক। ইতিনধ্যেই খনিতে তুর্ঘটনা হলো। ইভান্সকে দোমী খাড়া করলেন কর্তৃপক। মিটিংনয় ইভান্স বার বার ব্ললো, যে সে শ্রমিকদের নিরাপত্তাব জন্ম যা-ই বলেছে, সেটাই উপেকা করা হয়েছে। এমন প্রিস্থিতিতে কাজ করেছে শ্রমিকরা, যে মৃত্যু জ্নিবার্য, ঠেকানো সম্ভব নর।

ইভান্সের ধৃষ্ঠতায় চটে গেলেন কর্তৃপক্ষ। দেখান থেকে চলে এলো ইভান্স। বললো—সম্ভব হলোনা।

সম্ভব হলো না কি? চটলেন সে মহিলাও। ধণলেন— অনিদিষ্টকাল ধবে আমি ভোমায় পুষতে পারব না।

পে কাজ থেকে তাকে সহকারা নিযুক্ত করেছিলেন এক কাচের কারথানায়। সেথানে বিশেষ স্থবিধে তরতে পারল না ইভান্স। ভার অসাবধানতায় ফতি হয়ে গেল মালিকের। আবার হাতফিরতি হয়ে ফিবে এল সে।

সম্পর্কিতা ঠাকুমা আর কি কবতে পারেন? অগত্যা লেখালেথি
করে ইভান্সকে ভাবতবর্ষে পার্ঠানোই দ্বির হলো। বিদায় ধাত্রার
দিনে ভন্তমহিলার চোগ দিয়ে জল পড়তে লাগলো। বললেন—
আমি তো তোনাকে সেই বর্ষর অন্তর্মন্ত দেশটায় পাঠাতে চাইনি!
কে না জানে যত রাজ্যের নোংবামি কুসংস্কার আর অন্তর্যবিন্ধর্য
সেধানে? হয়তো সাপ-ই কামড়াবে তোমাকে, বা অন্ত কিছু
বিশদে পড়বে, যা আমার ধারণাব অতীত।

তার পর নতি টেনে খেলিংস-ট ত'কে তিনি নিজেকে সামলে নিলেন। সোনার চেনে গাঁথা একথানি মুক্তাথচিত ছোট কেশ তিনি দিলেন ইভান্সকে। বললেন—আব কিছু দিতে পারলাম না। সর্বলা সজে রেখো। এটা তোমার মাকে দেবে। বলে মনে ইছে ছিলো। তা তো আর হলো না।

ভা ছাড়াও দিলেন বিশ পাউও। পরম কুঠিত ও বিব্রত হরে ইভান্স বার বার বলতে লাগলো—না, না! কি দরকার! কি দরকার।

ভারতবর্ষে আসবার পরে অবশ্য ইভান্স তাঁর চিঠি পেরেছিলো। সেশ্ব লিখেছিলো। ব্যস, তার পরে আর চিঠিপত্র নেই। এখানে ইভাল এলো ছইলারের রেজিমেন্টে ইঞ্জিনীয়র হয়ে।
আর এই স্বৰ্হহ উপনিবেশে খেডালদের সমাজজীবন দেখে
দিশাহারা হরে গোল। এত অবসর, এত স্বন্ধ্লতা, এত স্থাচুর
বাত্ত-পানীয় দাস-দাসী।

এই জীবনের নেশা সবে আমেজ ধরাচ্ছে তার চোখে, তারই মুখে চম্পার সঙ্গে দেখা। আর তারপর রেজিমেট-এর এক স্থর্ফং জলসার তাডাহুডো লাগলো।

চামড়ার জিনপোধ ও জুতোর কারবারী, ধনী ব্যবসায়ী পূর্ণমল-এর ৰাগানবাড়ীতে মাছ ধরতে গিয়েছিলো ক'জন। ভোর রাত থেকে বেলা অবধি বসে চাকরদের কাঁধে মাছের বেতের ঝোলা আর হুইল ইত্যাদি দিয়ে ফিরতে ফিরতে বাইট ইভান্সকে চোথ টিশে ৰললো— কালো আগুন দেখেছ ? আসবে এই জলসার!

一(事 ?

—চম্পা। চম্পা তার নাম।

ভনে ইভান্সের মেজাজ খুদা হয়ে গেল। ত্রাইটও কেন জানি খুদী-খুদা ভাব। চারি পাশে তাকিয়ে ওঁকে বললো,—মনে হছে এবার জবরনস্ত গরম পড়বে। ভকিয়ে যাবে খালবিল। আর জলের জন্মে হন্দ্রে থাকে থাকে পাখী এসে পড়বে। আঃ, কি মজাই না হবে! গরমকালে বসে শীতকালের মতো পাখী শিকার করতে পারবে।

—ব্রাইট, তুমি নাকি শিকার বিষয়ে অনেক জান ?

শ্বন করতে আত্মপ্রসাদে আইটের মুথ হাসিতে ভরে গেল।
বললো।—শিথিয়েছিল একটা বদমাইস। জব্দও করেছিলাম তাকে।
তবে বুড়ো ম্যাকমোহনের জব্দ্ত লোকটা বেঁচে গেল। বেরিলী আর
নৈনীয় পথে ট্রানজিট একটা সাফাখানার কীপার আছে লোকটা।
পাঞ্চা শিকারী। বলতেই হবে। দেখলে মনে করবে বুড়িরে
গিরেছে। কিন্তু হাড়ে হাড়ে শক্তি। আর নজর কি! বাছের
মতো তীক্ষ।

বেজিমেণ্টের জলসা। সিভিলিয়ান হতো সাহেব, ব্যবসার
থাতিরে বারা আছে সে সব সাহেব, তা ছাড়া রেজিমেণ্টের বর্ত
অফিসাররা সমবেত হয়েছেন। মার্চ মাস শেষ হয়েছে। এখনো
লেগে আছে শীতের আমেজ। আর এমন এক জলসার আয়েজিন
হয়েছে, যা নাকি কানপুরের মান্ত্র অনেক দিন মনে রাখবে।
গালিচা নাকি এমন স্থকোমল এমন স্থলর যে ইটিতে গেলে পারে
এক অপুর্ব স্থামুভূতি হবে। থাস পারত্ত থেকে আমদানী
কারিগাররা যারা দিল্লীতে বসত করেছে ছইশো বছর ধরে তাদের
কোমল ও পাতলা আছেল এই গালিচা বুনেছে কত দিন ধরে।
এর বেশম ও পশম রং করেছে লক্ষ্ণো ও কৈজাবাদের স্থবিখার্জ
রংরেজীরা। তাদেরও আঙ্লুলের স্পর্ণ মিলবে এতে।

এই গালিচার কত ময়ুর, কত বাগিচা কত নদ্ধা ফুটে উঠেছে। এর বুকে হাটতে গেলে এমন মনে হওয়াও অস্বাভাবিক নম, বে মনেক ভারতীয় কারিগরদের অনেক পুঞ্জীভূত স্বপ্ন ও শ্লমই পারের তলে এমন কোমল হয়ে বুক পেতে দিরেছে।

মাথার ওপরে অলছে সুরুহং ঝাড়। অপরূপ তার কারুকার্জ, অদুত এক স্বপ্নলোকের আলোকিত সমারোহ যেন দীপামান। দেরালে আঁটা পিতলের ও দ্ধপার ফুসদানীতে জরপুরের কারিগরদের হাতের কাজ। বৃকে তার গুল্ছ গুল্ছ কাশ্মীরী ও শাহারাণপুরের গোলাপ।

পাতলা কাচের গোলাসে টলমল টলমল সোনালী শেতাভ ও ৰচ্ছ পানীয়। হুম্'ল্য সেই ফরাসী ও বিলেতী পানীয়। অনেক ম্ল্য তার। উর্দি পরে ঘ্রছে যে সব বেরারা তারা সম্ভর্ণণে বয়ে আনছে ট্রেগুলি।

মেসাহেবরা বসেছেন স্বামীদের পাশে। তাঁদের বেশভ্বায়ও আন্ত্র জাঁকজমক। এদেশে এসে কোন খেতাক ললনার সাধ যায়নি হারা, সোনা, মুক্তা পরতে? তাঁরাও কিছু কিছু গহনা পরেছেন। ফরাসী সিক্তের পোষাকে আলো ঝলমল করছে।

অপর দিকে বসেছেন কভিপয় ভারতীয় রিসালা ও ইনফাণিটুর অফিসাররা। আর সাহেবদের সঙ্গে সহজে কথাবার্গ চালাতে অভ্যন্ত বাঙালী বাবুদেরও দেখা যাচ্ছে।

রাব্যরে সাহেবদের নাচ ও ব্যাণ্ডের আয়োজন আলাদা। এখানে তাঁরা বসে কিছুক্সণের জন্ম এই 'নেটিভ নাচগাল'দের নাচ দেখছেন। তারপরে তাঁরা উঠে যাবেন, আর এই রক্কভূমি ছেড়ে যাবেন ভারতীয়দের হাতে।

লক্ষে থেকে এসেছে এক নর্ভকী। আজমীরে দরগা শরীফ দর্শন করতে গিয়েছিল সেই পুণ্যার্থিনী। প্রত্যাবর্তনের পথে বিপ্রাম করতে করতে এবং আনন্দ বিতরণ করতে করতে চলেছে সে। আসরের একপ্রান্তে বসে সেই বিগতবোবনা ঠুংরীওয়ালী বিভূক দৃষ্টিপাত করে এদিকে ওদিকে। এই সব আসরে বসে কি গাইবে সে! কে গান ব্রবে এখানে? কদর করবে কে? পিছনে বসে বাঙালীবাব্বা কথাবার্তা কইছেন তার কানে আসে। একজন আর একজনকে বলছেন।

—এসে পড়েছিলে ভাই, তাই কান আর চোথ সার্থক করে বালে। লক্ষো-এর নবাব ঘরের সব তওয়ায়েফ ! পড়ে থাকতে সেই বাশবেড়ে আর ভক্রেশ্বে, জন্মে স্থােগ হতো না !

জ্বপার পিকদানীতে। তাকিয়া ঠোট ক্রিকে গারিকা পিক্ ফেলে রূপোর পিকদানীতে। তাকিয়া ঠেস দিরে আঙ্লের সাত আটটা আটির দিকে চেরে থাকে। তারপর সারেকীওয়ালাকে বলে।

—লক্ষো-এর তওয়ায়েক ! অমনি সন্তা তারা,! এই পরসাতে
ভার এমনি আসরে তারা আসবে কি না ! এদের কপালে আমাদের

মতো দো-মেশাল, ভাঙাদ্বরাণার মামুবই জুটবে ।

সারেঙ্গীওয়ালা থিসথিসে গলার বলে—রেসমবাঈ । বে মুর্থ চন্দ্রনগাছ দেখেনি সে পিপ্লল গাছের ছায়াতে বসেই নিজেকে ভাগ্যবান ভাবে।

ঈবং নিমীলিত চোধে মনোতৃ:থে রেশ্মবাঈ দীর্ঘনি:শাস ফেল। মনে হয় লক্ষো-এর মানুবের গানের ঘরাণা চিরকালের মতা ভেঙে গোল, আর সে সূর্হৎ তৃ:থের কথা বসিকস্থানর ছাড়া কে আর ব্যবে? নির্বাসনে গিয়েছেন সঙ্গাতরসিক স্থরের দরদী নবাব জ্যাজিদ আলি শাহ,, আর গানও গিয়েছে বেইজুত হয়ে। কে ব্যবে এই তৃ:থ? সনি:শাসে ঘন ঘন আন্দোলিত হয় এক মানুলী দিরীওগালীর বৃক সাঁচতা শিল্পাস্ভৃতিতে। মনে হয় এ বে আর একজন এসেছে, এ রমজামী চল্পা—বার ঘোবন ছাড়া অক্ত কোনও পুঁলি নেই—এ রকম মামুবই ভালো এই সব আসমের।

তারপর বড় সাহেব আসেন। পাকা সাহেব। নিকারী বেড়ালের মত্যো ঝোলা পাকা গোঁদ। কাঁর অনুমতিতে সুরু হর আসর। নানাভাবে আঙুলের মুদার ভঙ্গিমা জাহির করে রেশমবাস্ট এক মামুলী গজল গার। তনতে তনতে মেমসাহেবরা গহনার ঝিলিক দেখেন ও তার দাম সম্পর্কে নানাবিধ মস্তব্য করেন। সাহেবরা একটু তনেই নিজেদের মধ্যে গল্পগুজব করেন। বে হিন্দুস্থানী মুস্পী একে এনেছিলেন তিনি নিচু গলার সঙ্গীকে জানান পাকা বনমারেস মেরেটা। মোটেই দিল লাগিরে গাইছে না আজ। আমার মুখটাই হাসলো সাহেবদের কাছে।

দর্শকজন একেবারে খুসী হয় না। সে বিরক্তি যে স্পর্শ করে না রেশমকে তা নয়! তবে শ্রোতারা বৃষতে পারে না, যে নানাকথা মনে হরে এ গায়িকার মনটি আজ ভেডে গিয়েছে। তারা বোঝোনা, এ যৌবনের ফুলকির মতো চম্পাকে দেখে রেশম অনুভব করেছে যে সে চিরতরে যৌবন তারিয়েছে। সেই ছংখেও যে আজ রেশম বার বার স্থারে ঠিকানা তারিয়ে ফেলেছে, সে কথা কেউ বোঝোনা।

দরণী মনপ্রাণ সব কোথার গেল ? বোঝে শুধু চম্পা। বোঝে আজ ঐ রেশমের মনে কোন হুঃথ আছে। বুঝে সে সম্বেদনার দৃষ্টিতে চেরে থাকে।

তারপর সে যথন দাঁড়ায় আসরে, তথন মাপ চেরে বেরিরে যার রেশম। চম্পাকে দেথেই খুশী হয়ে উঠে ভারতবাসীর। এদিকে ওদিকে চেরে কা'কে বেন থোঁজে, চম্পা। নজ্জরটা তব্ও তার আটকে যায় সামনে।

দেই সাংহ্ব! যে ভাকে ৰিঠুক-প্রাসাদে তারিফ করেছিলো,



আর এই কানপুর, ফতেগড় ও ভগবানপুরে বার বার বার বার সঙ্গে তার দেখা হয়েছে, সেই সাহেব চেয়ে আছে। ব্রিজ্ঞত্বারী তবে এরই হয়ে দৌত্য করতে এসেছিলো? হাসি পার চম্পার। দেখে সাহেবের চোগে অকুণ্ঠ অনুরাগ।

দেশে যে গুটিরে যাবে, সে মেয়ে-ই নয় চম্পা। ইচ্ছা করে ওড়না আঙ্গিয়া থেকে আর একটু নামিয়ে নিলাজ হয় সে। ঈষং ভাঙা মিট্ট গলায় সে তীক্ষ পর্লায় ধরে, না মারো না মারো দৈঁয়া'—

প্রথম লাইনটি বেশ খেলিয়ে গেয়ে নেয় । তারপর ঠমক দিয়ে নেচে উঠে বলে—'প্রীত কে পিচক।রী'

চম্পার গান যেন গান নয়, কোলাহল। তার দেহ, চরণ, স্কুর, চৌথ, চুল ও ওড়নী—গব মিলে যেন কোলাছল স্কুফ হয় একটা।

এই কৈ-চৈ করে আসৰ মাতাতে পাৰে বলে-ই চম্পা সকলেব প্রিয়। এশা আসৰ নেতে উঠে। চম্পা বে-প্রোয়া হয়েই মুঠো মুঠো নজৰেব পিচকাৰী ভুড়ে মারে আসবের সর্পত্র।

বাত বাণোটার আসন শেষ কবে ঘন্তিবতি চম্পার আগে-পেছনে চার জন সিপাছা চলে। তাদের কাক্ষর ছাতে ঘড়ুর-জোড়া দিয়ে, আর কাক্ষর ছাতে নাচের পোষাক দিয়ে তাদের ধন্ত করেছে চম্পা। গন্ধ করছে চম্পা, যেন একটা ঝর্ণা-ই চলেছে কলকল করে। তারা বলছে ট্রী—চম্পা যাই, তুমি পালকী ফিরিয়ে দিলে কেন ?

—'আনার ইচ্ছে।

বলে হাসছে চম্পা। আমাদলে তাকে কানে কানে একটা খবর দিয়ে গিয়েছে ত্রিজত্বলারী। খুব কোতুক বোধ হচ্ছে চম্পার।

চম্পার কৃঠি কিছু কম রাজ্ঞা নয়। পথে জৈংরাম চৈৎরাম ছইভারের কৃঠিবাড়ী। কুঠিবাড়ী ঘিরে বাগান। তার পিছন দিয়ে সহজে যাওলা চলে। যেতে যেতে একজন দিপাছী বলে—-

—তাছলে চম্পা বাঈ, কারুকে দিয়ে লিথিরে দিয়ে আসব আর্জি। তুমি ব্রাইটের বিবিকে দিয়ে আর্জি পাশ করিয়ে দিও। তিন সাল খরে বাইনি। ভূলেই গিয়েছি দেশখরের চেহারা।

—এ বার এত তাড়া কেন ?

সিপাহাটি, বলে—বলেছি তো ? বড় মানলা লাগিয়েছে আনার চাচেরা ভাই। একটা লেবুগাছের মালিকানা নিয়ে। আমি না গেলে আমার বুড়ো বাপ কিছু কবতে পারবে না। তার কোন জানই নেই !

—একটা লেবুগাছ ?

অজানতি সিপাহাটির গলার উন্মন। সর লাগে। সে বলে—
হাঁ। তুমি বৃষ্ণবে না। সে গাছের লেবু কি বড়, আর তেমনি
মিষ্টি। বাবা চারা এনেছিল চৌথুরাদের বাগান থেকে। গরমকালে
লেবুর সরবৎ পেয়ে শরীর জুড়িয়ে যায়—আর যথন ফুল ফোটে, তথন
তার কি গন্ধ। চাই কি সমন্যকালে ক'টা লেবু বিক্রীও করাতে
পারে আমার মা, শেঠদের বাড়ীতে দিয়ে কয় সের ছাতুও আনতে
পারে। তুমি বলছ কি চম্পা বাই ? একটা লেবুগাছ অমনি ছেড়ে
দেওয়া যায় ?

এবার চোথে পড়ে চম্পার। জ্যোৎস্নাতে চিনতে ভুল হয় না।
নিচু গলায় সিপাহীদের বলে—তোমরা চলে যাও। আমার সঙ্গে
কথা আছে ঐ সাহেবের। বুঢ়াকে বলো যে আমি আসছি। যেন
চিন্তা না করে।

এগিয়ে যায় চম্পা। আশ্চর্য হরে ইভান্স ভাঙা হিন্দুছানীতে বলে—তোমার সঙ্গীরা ?

- —এগিয়ে গেছে।
- —তুমি **?**
- —একা যাব।
- —ভয় করবে না ?

চম্পা জ্যোংস্নায় ঝিলিক দিয়ে হাসে। বলে—সাহেব, তুমি ড' বয়েছ।

ইতান্স এই তু:সাহসী কথা শুনে অধর দংশন করে। তারপর বলে—আমাকে ভর কর না তুমি ?

- —না সাহেব! তুমি ভাল।
- . —কে বললো ?
- —আমি শুনেছি।

হিন্দৃস্থানী শিক্ষাব কথা ইভান্সের ততথানিই, যাতে 'ফোজা অথবর 'পড়া চলে। আর যে হিন্দুস্তানী তাকে পড়ে পাশ করতে হয়। তাতে আর যাই হোক, এই সব কথা ঠিক ঠিক জোগায় না। কিছুক্ষণ চুপ করে থেকে ইভান্স যলে পুঁথির ভাষায়, থেমে থেমে—

— তুমি কি বিশ্রাম করবে। তুমি কি ব্লান্ত খ্য়েছে? তুমি কি ঐ কুঠিব প্রাচীরে সামান্ত বসতি চাও?

চম্পা আবার হাসে। বলে সাহেব, আমার সঙ্গে অমন করে বস, গল্প করলে তোমার অপুমান হবে।

- **—কেন** ?
- —কে-ও করে না।
- —কে-ও করুক বা না-ই করুক। চম্পা, তুমি দে কথা আমানে পলো না।
 - —যা ছকুম।

দীড়িয়ে থাকে ইভান্স। আর চম্পাও দীড়িয়ে থাকে। এবা দীবং নিচ্ হয়ে ইভান্স আঙুলের আগা দিয়ে চম্পার কপাল দ চুল আলতো করে ছোঁয়। অন্মুটে বলে, স্থন্দর। স্থন্দর তুমি চম্পা

কৌতুকের স্পৃহা চলে গিয়ে চম্পা এবার শক্তিত হয়। মনে ই ভূল করেছে দে। সেধে ডেকে এনেছে বিপদ।

ইভান্স তার চোখে, চুলে, কপালে আঙুল বুলিয়ে এবাব আনে সহজ ও অকৃত্রিম আন্তরিকতায় যেন চঞ্চল হয়ে ওঠে। মুগ্ধ বালকে মতো পুনর্বার বলে—বড় স্থন্দর তুমি। আমার বড় স্থন্দর লেগেনে তোমাকে।

চস্পা বলে-সাহেব! আমি যাই।

- —নিশ্চয় যাবে। আমি তোমাকে এগিয়ে দেব।
- ভূমি ? নাসাহেব, তাহয় না।
- —কেন চম্পা.?

চম্পা এবার আন্ধনির্ভর খুঁজে পায়। সে অসঙ্কোচে ইভাগে দিকে চায়, বলে—সাহেন, এখানে আমাকে সবাই জানে। কেই আমার অনিষ্ট করবে না। তুমি ফিরে যাও।

তবু ইভান্স শোনে না। বলে—অন্তত ভোমার বাড়ী দেখা ^{বাই} তত দূর চল।

- —না। শোন, আমি ছুটে চলে বাব।
- —কিন্ত চন্দা, জামি বে বলতে চাই।

চম্পা কাছে আসে। বলে—তুমি ছলারীবিবিকে খবর দিও। দে আমাকে জানাবে।

এবার আলো-আঁধারির পথ ধরে ছুটে চলে বার চন্পা।

ছরে আসতে সম্পূরণ প্রশ্ন করেবার আগেই চন্পা জিজ্ঞাসা করে—
বুঢ়া, কেও আমার থোঁজ করে নি ?

- —কে, **চ**∾পা ?
- —কোনো চন্দন ?
- —না ! কোন চন্দন, চ**ল্পা** ?
- তুমি ভাকে চেন ? সে ঐ ডাক্তার বাবুর সহকারী।
- —ना **ह**न्ना !
- **-**७!

ঘর থেকে পোষাক বদলে ফিরে আসে চম্পা। সম্পূরণকে বলে— বুঢ়া, কথা আছে।

- —কি কথা ?
- —নতুন ইঞ্জিনীমার সাহেব ভাব করতে চায় আমার সঙ্গে। অনেক দিন ধরে আমার পিছু নিয়েছে বুঢ়া!
 - –সত্যি ?
 - —সত্যি।
 - —তুমি কি করবে ?
 - —বল, কি করব।
 - ---বলব চম্পা ?
 - <u>—বল ।</u>

সম্পূরণ বলৈ—ভবে শোন চম্পা ! বলি তোকে। —বল, বুঢ়া।

শম্পূরণ বলে চলে। বলে—তুই যগন ওথানে ছিলি, আজ এথানে এসেছিল বিসালার শোলালাল, প্রেলা বিসালদার কুন্দন সাহেব, আরো অনেককে তুই চিনবি, চিনবিও না। এ কথা নিশ্চম জানবি চম্পা, যেথানে সাহেব আছে, তাবা বসে আছে বারুদের গোলার ওপর। একটু এদিক-ওদিক হবে, কি ফাটনে গোলা। ধর্ম নেই, জাত নেই, ইজ্জত নেই, কটি নেই—আব মানবে না সিপাহারা। লক্ষ্মো, বেরিলা, দিল্লা, ফৈডাবাদ, এলাহারাদ সব জারগায় এক কথা চলেছে। তোকে নিশ্চম বলি চম্পা, তুই এই কানপুর সহরের আশো-পাশে সব জারগায় একেবারে একা চলতে ফিরতে পারিস। তোকে সম্পূরণের লোক জানে স্বাই। জানে, ভোকে কেউ কিছু বলবে না।

- —সবাই কি তোদের লোক বুঢ়া ?
- —না বেটি ! তবে সহরের হিন্দু মুসলমান সবাই তো ক্ষেপে আছে কি না ! কম লোক না ।
 - —এ কথা তো আগেও বলেছিস বুঢ়া !
- —তো আবার বলছি। কথা যদি কথার মতো হয়, তাহ'লে দশ বার বলতেই বা কি ! আর দশ বার শুনতেই বা কি, বেটি ! বলে, আর অল্প হাসে সম্পূরণ। বলে—আমি অযোধ্যার কিষাণ চম্পা ! তুই জানিস না—তোর বুঢ়া অনেক দেখেছে এই তিন কুড়ি বছর ধরে। দেখেছে তার দেশখরের জোয়ান ছেলে রংক্ট হয়ে চলে যায়।



আর তার পর কি জীবন হয় তাদের। আমি অনেক দেখেছি চম্পা!
আমার বাপ মরেছিল সেই পানজ্যাবের লঢ়াইয়ে। দাদাকে আমার
গুলী করে মেরেছিল সেই সময়। সেই যাটজনের একজন আমার
দাদা, যারা সিন্ধু পেকবে না বলে বলওয়া লাগিয়ে ছিলো। তুই
জানিস না, আমার মা আমাকে ঘর থেকে তাড়িয়ে দিয়েছিলো।
বলেছিলো—ভিশ্ব মেরে গানি, ডাকাভি করে গাবি—ভবু টাকার
লোভে ফৌজে নাম লেগানি না।

সম্পূরণকে মনে হর অন্ন মানুষ। সিংতের মতো মন্তমাথাটা সে আল্ল-জল্ল নাড়ে। বলে—চম্পা, বেইমানী করবি তো মাথাটা কেটে রেগে যাব তোর। পুন করতে ভয় পার না সম্পূরণ।

- —বুঢ়া, মৌতির ভয় দেখাস না।
- —তো, শোন চম্পা। সাজেবের সঞ্জে ভার কর। ওদের খবরাখবর জান। ভূট পাবিব। পার্যার না চম্পা?

এ থেন চম্পার গলা নয়। অস্তা কাজ গলা। চম্পা না চন্দ্রের সঙ্গে কত ব্রুগল জাবনের স্বপ্ন দেখেছে। সে কথা ভূলে বিপদের কথাতেই কেন সাড়া দেয় তার মন। চম্পা বঙ্গে—পারব।

- —আমি জানতাম।
- **一**春?
- —যে তুই পারবি।
- —বুঢ়া, চুপ কর। কেন আমি বললাম, তা তুই ব্ঝবি না।
- वृक्षव मा ?
- —না বুঢ়া, তোর জওয়ানী নেই।
- জরুর।

এবার আর্থ অস্থিতিব করে না সম্পূরণ। তার পর কি কথা মনে করে সে বলে—চম্পা, চন্দন কৈ তোর ?

- —চন্দন আমার গ্রামের মানুষ। আমার শৈশবের সহেল।
- ---বুঝলাম।
- কিছু বুঞ্জি না বুঢ়া! আমি তার থেকে দ্বে যাব বলে এখানে এসেছি। তবু সে তো বোঝে না। চন্দন বড় নির্বোধ, বুঢ়া!
 - —তো সে নির্ণোধের জন্ম তুই কেন হ:থ পাস চম্পা **?**
 - —বুঢ়া, তুই বুঝবি না। আর চন্দনের মা—
- চন্দনের মা বড় পুণাবতী। সে বলেছিল চম্পা, তুই রমজানী হবি। দেশ, আমি কোন গাঁরের মেয়ে— চলে এলাম শহরে। ইলাম বমজানী।
 - ---বুঝলাম।
- —চন্দনের মা-ও বড় নির্বোধ, বুঢ়া! দেখে এসেছি সে ছথিয়ারী, তঃখে মরে যাচছে।
 - —চম্পা, এসব কথ। তুই বলিস না কেন ?

যৌবনমুক্লিত দেছ ঈবৎ ঝুঁকিয়ে কাছে আসে চন্দা। হেসে বলে—বুঢ়া, তুমি এত জান, আর একথা জান না, বে হঃথের ভাগ কাককে দেওয়া যার না ? স্থথের ভাগ আছে, হঃথের ভাগ নেই। বুঢ়া, তুমি সে কথা জান না ?

—না। সে কথা জানে না সম্পূরণ। যৌবনের কাছে বার্ধ কা এমনি করেই পরাজিত হয়—কি স্থধ, কি হুঃখ। একটা বাজিও জিততে পারে না সম্পূরণ।

বোটানিকাল গার্ডেন-এ

উর্দ্ধে আকোর বঞার ভেসে বার মেঘে-মেঘে ঐ পূ^{ৰ্}পাক নভলোক, নিয়ে কোমল সবুক্ষ ঘাসের ^{*}পবে বসেছি আমরা দৌহার নিকটে দৌহা।

পাশে ববে চলে বৈৰাগী নদী ভাৱ বুসৰ অংক কত মাছবেৰ আশা; নিংশেৰে সীন,— শ্বশান-কুড়ানো ছাই কত না চলেছে সাগবেৰ সম্বানে।

অদৃবে হঠাং শাস ই ধিকার ওনি যুবক-যুবতী কলকোলাহলে মাতে, তবু হার কই, তোমার আমার প্রাণে আগে না তো সেই হুল ও ভালোবাসা!

শাষব। ছ'জনে বেন এ কালের তৃই নট আর নটা ব'লে আছি পাশাপালি, মঞ্চের 'পরে নেমে পাঠ ভূল ক'রে সার মেনেছি এ গালে-চোৰে বঙ যাথা।



অঙ্গন ও প্রাক্তন



মাহ চুচাক বেগম শিবানী ঘোষ

পঞ্চলার কারাগারে বন্দিনী অবস্থার ফুঁপিরে চলেছে একটি
পঞ্চলশবর্বীয়া কিশোরী। তার গাল বেয়ে গড়িয়ে পড়ছে

ক্রেলা । এভাবে আর ক'দিন তাকে রাখা হবে ! তার্মিনে পড়ছে দিন
করেক আগেও সে চঞ্চলা হরিণীর মত ছুটোছুটি করে বেড়িয়েছে
কালাহারের পাহাড়ে পর্বতে । এই ঘুরে বেড়ানোর ব্যাপারে তার
মারের কিছুটা আপত্তি থাকলেও তার পিতার দেওয়া ছিল অষাধ
কাধীনতা; এ রকম পিতা খ্য কম জনের ভাগোই জোটে । কিছ
হার ! নিঠুর রাজনীতির দাবাথেলার তাঁকে চিরকালের মত বিদার
নিতে হল এই পৃথিবী থেকে ।

গুড়নাঞ্চলে চোথ মোছে মাহ চুচাক। তার মনে পড়ছে সেই
দিনটা। বেদিন বাবর বাদশাহ কাশাহার আক্রমণ করে ছিল্লভিল্ল
করে দিলেন দেশটা। প্রতি ঘরে ঘরে দেদিন উঠল করুণ আর্তনাদ।
মাহ চুচাক তথনও বুঝতে পারেনি কি বিপদ ঘনিয়ে এসেছে তাদের
ওপর। সেদিনও সে স্থির করেছিল ছুটোছুটি করে বেড়াবে
কাশাহারের পাহাড়ে পর্বতে। কিন্তু হঠাৎ কতকগুলো লোক বেগে
প্রাসাদে প্রবেশ করে বেঁধে ফেলল তাদের সকলকে। তারপর
তাদের উটের পিঠে উঠিরে নিয়ে চলে এল কাবুলের এই কারাগারে।
তথনই মাহ চুচাক প্রথম জানলো আর্বান জাতি পরাজিত হয়েছে
মোগদের হাতে। তথু পরাজিতই নয়, তার পিতা মির্জা মোহমদ
মোক্ষি নিহত হয়েছেন আত্তারীর হস্তে।

এই কথাটা শেলের মত এসে বি'বেছিল মাহ চুচাকের জনরে। মে পিভার প্রশন্ত বন্দে মুখ সুকিরে সে কত হেসেছে কেঁলেছে, সেই পিতা আর নেই! এখনও সৈ বিশাস করতে পারে না তিনি নেই। মনে হয় কান্দাহারে ফিরে গেলেই সে তাঁকে দেখতে পাবে। কিছ এখান থেকে সে বাবে কেমন করে? তার মা এবং অক্সান্ত আত্মীয়ারা নাকি সব মুক্তি পেরে গেছেন। তাঁরা নিশ্চয়ই এত দিনে দেশে পৌছে গেছেন। কিন্তু একমাত্র তাকে এখনও এভাবে আটক রাধা হল কেন?

—এই পোষাকগুলো পরে নিন কুমারী!

মাহ চুচাক চেরে দেখে তার সমূথে এসে গাঁড়িয়েছে মোগল রাজপ্রাসাদের এক দাসী। তার হাতে কতকগুলি বিবাহের বস্ত্র। বিশ্বিতা হয়ে সে প্রশ্ন করে, এ পোথাক কি হবে?

দাসাটি মৃত্ব হেসে বলে—আজ যে আপনার বিষে।

—বিষে! এ কি আমাকে ঠাটা করা হচ্ছে?

—না কুমারী, ঠাটা আপনাকে কেউ করেনি। স্বস্ন মোগল সম্রাট বাবর আপনার বিবাহ স্থির করেছেন কাসিম গোকুলতাস নামক তাঁর এক প্রতিভাসম্পন্ন কর্মচারীর সাথে। কাজেই এগুলো পরে নিয়ে উপস্থিত আপনি কারাগারের বাইরে চলুন।

দাসীটির কথা শুনে কিছুটা উত্তেজিত হয়ে মাহ চচাক বলে,
কি ! কি বললে ? কাসিম গোকুলতাসের সাথে হবে আমার
বিরে ? এতে আমাদের বংশের মর্যাদাহানি হবে না ?

দাসাটি পুনরায় মৃত্ হেসে বলে, মিথ্যে বংশাভিমান আঁকিড়ে ধরে থেকে আর লাভ নেই কুমারী! হরিণী বথন বাঘের কবলে পড়ে তথন তার সব দৌরাত্ম্য তাকে মেনে নিতে হয়। এখন যদি আপনি আমার কথা অবহেলা করেন তবে সম্রাটের কোন পুরুষ কর্মচারী এসে আপনাকে বলপূর্বক এই পোষাক পরিধান করিয়ে নিরে বাবে বাইরে। নারীর পক্ষে সেটা কি চরম অপমান হবে না কুমারী?

মাহ চূচাক ফুপিয়ে উঠে বলে—ওগো তোমরা কি নিষ্ঠ্র!

দাসটি বলে—আমাকে ঐ দলের মধ্যে টানবেন না কুমারী! আমি যথাৰ্থই আপনার মঙ্গল চাই।

ক্রন্দিতকঠে মাহ চুচাক বলে—ওগো, তাই বদি চাও তবে তুমি শামাকে উদ্ধার করে দাও এই পাষাণপুরী থেকে।

দাসাটি বলে—দে ক্ষমতা আমার নেই কুমারী, থাকলে নিশ্চয়ই করতাম। উপস্থিত আমি যা পারি তা নারীর মর্যাদা রক্ষা করা। এর বিনিমরে উপস্থিত আপনাকে ছাড়তে হবে জাত্যভিমান। আর বাস্তবিকই কাসিম গোকুলতাসের বংশমর্যাদা থ্ব বেশী না থাকতে পারে কিন্তু তাঁর মত নিভীক বিচক্ষণ এবং উদার পুরুষ এই পৃথিবীতে কমই আছেন। তাঁকে স্বামিরূপে পাওয়া বে কোন নারীর পক্ষেই ভাগ্যের কথা।

মাহ চুচাক সজোরে ফুঁপিয়ে উঠে বলে—ওগো শুনিও না, আর শুনিও না ওসব কথা। আমাকে নিয়ে তুমি যা করতে এসেছো করো। আমি আর একটা কথাও সম্ভ করতে পারছি না।

দাসীটি আর কোন কথা মা বলে এগিয়ে আসে কুমারীর কাছে। তারপর তাকে একটি একটি করে পরিয়ে দিতে থাকে বিবাহের বস্ত্র এবং অলঙ্কার।

মাহ চুচাকের বিধবা মাতা বিবি জারিফা থাতুন প্রাসাদে আপন নিভ্ত কক্ষে বসে তথু চিন্তা করেন মেয়ের কথা। তাঁরা র্মুক্ত পেলেন সকলেই। কিন্তু বাবর বাদশাহ ঐ কচি মেয়েটাকে কেন বে ধরে রাখলেন তা বুঝতে পারা যার না! এক এক সময় ভর হয় ওর পরিত্র দেহটাকে নিয়ে তিনি আপন বিলাস চরিতার্থ করবেন না তো? কথাটা মনে উদয় হতেই শিউরে ওঠে বিবি জারিফার সর্বান্ধ। তিনি নানা উপায়ে জানবার চেষ্টা করেন মেরের কথা। কিন্তু কার্যকরী হয় না কোনটাই। অবশেবে দীর্থকাল পরে যথন তিনি মেরের সংবাদ পেলেন তথন জানদেন, তার বিবাহ হয়ে গেছে এক বংশন্যাদাহীন পুরুষের সাথে। শুধু তাই নয়, তার উরসে মাহ চুচাকের কোলে এসেছে একটি কল্যাসস্তান।

শুনে সর্বাঙ্গ জ্বলে যায় জারিফা থাতুনের। তাঁর এক মাত্র কল্পার এমন ত্র্দ'শা হয়েছে ? দেশে কি এমন লোক নেই যে এর প্রতিকার করে ? তাকে কি করে কান্দাহারে ফিরিয়ে আনা যায় তাই তিনি ভাবেন সারাদিন। তাঁর স্নেহের ত্লালী কি কটেই না দিন কাটাচ্ছে ! একে শত্রুপ্রী, তার ওপর এক বংশমর্যাদাহীন পুক্ষ তার স্বামী! এ তো সমগ্র আর্যান জাতির পক্ষেই অপমানজনক। জারিফা বিবি সমরে অসমরে কাঁদেন আর ভাবেন, করে শিউরি থেকে ফিরে আসবেন তাঁর ভাস্তর শাহ বেগ। আজ আর জাবিত নেই তাঁর স্বামী। কাজেই ভাস্তরের সহায়তায় উদ্ধার করতে হবে নেয়েটিকে।

শিউরি রাজ্যের বিভিন্ন গোলযোগ মিটিয়ে কান্দাহারে ফিরতে বেশ কিছু বিলম্ব হয়ে গোল শাহ বেগের। দীর্ঘ অনুপস্থিতির পর দেশে ফেরায় তথন চতুর্দিকে চলল আমোদ-প্রমোদ। কিন্তু সেই আনন্দ তথন বিষ ঢেলে দেয় জারিফা বিবির অন্তরে। এই কি প্রমোদ করবার সময় ? তাঁর কঞার উদ্ধারের ব্যবস্থা না হওয়া পর্যস্ত তিনি দেশবাদীকে এই ক্ষুত্তি করতে কিছুতেই দেবেন না। তিনি এই কথা ভাত্তরকে জানাবার উদ্দেশ্যে অন্ত:পুরের দরজার পাশে দাঁড়িয়ে থাকেন নিশ্চল হয়ে। সেই পথ দিয়ে শাহ বেগ অন্দর মহলে যাবার সময়ই জারিফা থাতুন ফুঁপিয়ে উঠে লুটিয়ে পড়লেন তাঁর পদতলে। প্রথমটা হতচকিত হয়ে পড়েন শাহ ৰেগ। তথন তাঁকে মেয়ের সৰ কথা ছানালেন জারিফা বিবি। তাঁব কথা গুনে অন্তরে আঘাত পেলেন শাহ বেগ। বিশেষ করে কোন মোগলের সাথে আর্ঘান জাতির মেয়ের বিবাহ হওয়া অত্যস্ত অপমানজনক। কিন্তু কি ভাবে মাহ চুচাককে বাবরের নাগপাশ ছিন্ন করে কাবুল থেকে কান্দাহারে নিয়ে আনা যায় তা তাঁর মাথার আসে না। যা হোক, এর ব্যবস্থা শীঘ্রই করবেন, বেগমকে এই আখাস দিয়ে আপন কক্ষে চলে গেলেন শাহ বেগ।

অবশেষে স্থির হল একটা মতলব। বিভিন্ন বেগমরা এই মত পোষণ করলেন যে তাঁদের এক দাসা ছন্মবেশে কাব্লে গিয়ে সাক্ষাং করুক মাহ চুচাকের সাথে। তারপর তাকে সংগে নিয়ে সে চলে আসবে হাজারা দেশে। দেখান থেকে উটের পিঠে চড়ে কান্দাহারে ফিরে আসতে কিছুমাত্র অস্ত্রবিধে হবে না। কিন্তু কথা হল, সেখানে বাবে কে? তথন দৌলত কিতা নাম্নী মির্জা মোকিমের এক দাসা রাজী হল তাঁর প্রাকৃত্যাকে উদ্ধার করতে। সে সেই দিন ছন্মবেশে রওনা হয়ে গেল কাব্লের পথে।

কাবুল রাজপ্রাসাদের একটি কক্ষে মাহ চূচাক বেগম মুখ ভার করে বসে রয়েছে এক পালে। অদুরে বিছানায় শুরে কেঁলে চলেছে তার শিশুক্রা নাহিলা, কাঁতুক যত পারে কাঁতুক। ঐ মেয়েটাকে কোলে নিয়ে ভার আদর করতে এতটুকু ইচ্ছে হর না। ভার মনে পড়েছে গত তু

বছরের কথা। সেই যে বাবরের সেনানীর চাতে বন্দিনী হরে এল এই কাবুলে তারপর আর একটি বাবের জন্মেও সে বেতে পারনি কান্দাহারে। একবারও তার সাকাং চয়নি মা কিংবা অক্সাক্ত আত্মীর-স্বজনদের সাথে। উ:, এবা কি নির্চুর শ্রতান! তাকে জ্বোর করে বিয়ে দিল এক হীনবংশীরের সাথে। তারপর তার তরুসে এল এ মেরেটা।

—এ কি নাতিদ কাঁদছে যে ? খবে এসে থকীকে কাঁদতে দেখে বললেন কাসিম গোকুলতাস।

—কাঁদছে তা আমি কি করতে পারি ? ধিক্কার দিয়ে কথাটা বলে মাহ চুচাক।

তাড়াতাড়ি মেয়েকে কোলে তুলে নিয়ে কাসিম দাসীকে **ডাক দেন,** খাদিজা !

ছুধের বাটি হাতে ছুটে আসে খাদিজা। সে তাড়াতাড়ি **তাঁর** কোল থেকে নাহিদকে নিয়ে আদর করে বলে—ছুষ্ট_্, শোনা, এর**ই মধ্যে** ঘ্ম হয়ে গোল? চল ছুধ খাবে চল। বলেই খাদিজা তাকে নিরে চলে যায় পাশের ঘরে।

কাসিম তথন এসে বসেন তাঁর সহধর্মিণীর সামনে। মাছ চুচাক বিরক্তির সাথে মুখটা ফিরিয়ে রাথে অন্ত দিকে। তিনি তার একটা হাত নিজের হাতের মধ্যে নিয়ে বলেন—চুচাক, মেরেকে কোন দিনই কি আপন বলে গ্রহণ করবে না ?

এর কোন জবাব দেয় না মাহ চুচাক। কাসিম একটা দীর্ঘনাস ফেলে বলেন—আজ তোমাকে একটা কথা বলতে এসেছিলাম। আজ আমাকে সমাটের সাথে যতে হচ্ছে উজবেকদের বিক্লকে লড়াই করতে। এই যুদ্ধে আজ কি হবে কিছুই বলা যায় না। এমনও হতে পাবে যে এই আমাদের শেব দেখা। এতে অবস্তু ভূমি থূসীই হবে। কারণ আমি তোমার জীবনে থানিকটা তুংথ এবং বোঝা ছাড়া আর কিছুই নই,। কাজেই এ থেকে ভূমি পরিত্রাণ পাবে। কিছু চুচাক, আমার একটা অমুরোধ—এ নাবালিকা শিশুটিকে অস্তুতঃ ভূমি একট দেখো।

তবু নিরুত্তর হরে বলে থাকে মাহ চুচাক। কাসিম বলেন— বলো প্রিয়া, এর পরও কি তুমি নাহিদকে টেনে নেবে না বুকের কাছে ?

—না। গদ্ধীর হয়ে জবাব দের বেগমসাহেবা।

একটা লীর্থনাস ফেলে উঠে পড়জেন কাসিম গোকুলতাস।
তারপর যুদ্ধের সাজপোধাকে সজ্জিত হরে তথুনি তিনি বেরিবে
পড়জেন খর থেকে।

স্থামী চলে যেতে বেশ থানিকটা স্বস্থি পার মাহ চুচাক।
আজ তাকে বেশ থানিকটা আখাত দেওয়া গেছে। যুদ্ধে বাবে,
মরবে, তাতে তার কি ? সে তো তাই চার। আর তার সাথে
ঐ মেয়েটাও যদি শেব হয়ে বার তবেই তার মনোবাঞ্চা পূর্ণ হয়।

—भाञ्जानी ?

—কে ? কে তুমি ? চমকে ওঠে মাহ চ্চাক। **এ কে এসে** দীভাল তার সামনে ?

আগপ্তক মূথে আঙ্ল দিয়ে ইদারা করে—চুপ! তারপদ্ধ চারদিক দেথে সে দরিরে দিল মুখের আবরণটা। মাহ চুচাক তথন বিশ্বিতা হথে বলে—এ কি দোলত কিতা, তুই কেমন করে এথানে এলি ?

দৌলত কিতা চাপাগলায় জানিয়ে দিল যে কেমন করে প্রবেশ করেছে এই রাজপ্রাদাদে এবং তার আদার উদ্দেশ্যটাই বা কি।

তার কথা শুনে আনন্দে নেচে ওঠে মাছ চ্চাকের অন্তর। এইবার সে নিষ্কৃতি পাবে এই নাগপাশ থেকে। এইবার সে আবার দেখতে পাবে কান্দাহাবের পাছাড়-পৃথিত। এইবার সে চরম প্রতিশোধ নিতে পাববে তার স্থানী কাদিম গোকুলতাদের ওপর। কিন্তু এই জনপূর্ব রাজপুরী হতে সে বাইরে যাবে কেনন করে?

সে-মতলবও দিল দৌলত কিতা। বললে—বিকেলে প্রার্থনার পূর্বে পথে-ঘাটে যথন জনে উঠবে স্লানাথীদের ভিড তথন আপনিও আপনার জাকনাণী রন্তের বোরখাটা পরে সেতিয়ে প্রতানন স্লানের উদ্দেশ্যে। সে-সময়টা আর কেউই লক্ষ্য রাধ্বে না আপনাকে। তথন আমি আপনার সাথে সাকাহ দতে নিবে যাব নির্মণ্য ভারতায়।

মাহ চুচাক বলে—তা না সম সল, কিন্তু এখন পুট থাকবি কোথায় ?

দৌলত কিতা বলে—আনাব জব্যে ভাববেন না শাহজানী! এখন আনি চলি। সময় ছলে দেগা কববো। বলে মুগের আবরণটা টেনে দিয়ে সে বেরিয়ে গেল বাইবে।

বিকেলের দিকে মাছ চুটাক এক।কিনী পানচারা করছে আপন ককে। থাদিজা মেয়েটাকে ব্ন পাছিরে রেখে গ্রেছ বিছানার। অকাকরে সে ঘূমোছে কচি ছাত ছটো মুঠো করে। এইবারেই বেরিরে পড়তে হবে স্থান করতে যাওয়ার ছলনা করে। মাছ চুটাক জাকরাণী রঙের বোরগাটা চড়িরে দিল দেতে। এইবার আন হাকে রাখেকে! কিন্তু এ কি! যাবার সমর ঘুম্ন্ত মেয়েটা তাকে নমন আকর্ষণ করছে কেন? সে একবার চেয়ে দেগল নাহিদের মুখের পানে। কি চমহলার মুখ! এত ভাল করে মাছ চুটাক কোনদিন দেখেনি মেয়েকে। মুখেব আদল কতকটা তাব পিতারই মত। কিন্তু না না, আর সমর নষ্ট্র করলে চলবে না। এখুনি বেরিরে পড়তে হবে। নচেহ ধরা পড়ে যাবার সম্বাবনা আছে। ঘুম্নত্ব মেয়েটিকে কেলে রেখে মাছ চুটাক একাকিনী ক্রত বেরিয়ে পড়ে যার থেকে।

পথে বেরিয়ে সহজেই দেখা হল দৌলত কিতার সাথে এবং তার সহায়তায় হাজারা দেশে আদতে তালের অপ্রবিধে হল না কিছুনাত্র। তারপর সেথান থেকে উটের পিঠে চড়ে কালাহারে ফিরে আদে মাহ চুচাক। মেয়েকে ফিরে আদতে দেখে বিবি জারিফা খাতুন ছুটে আদেন তার কাছে। চহুদিকে তথন বেজে ওঠে আনন্দসূচক বাজনা।

কিছে এ কি! এখন ঐ বাজনা শুনতে মাহ চুচাকের তো
আব ভাল লাগছে না! কাবুল থেকে কালাহারে এসে সে যা
আনন্দ পাবে মনে করেছিল তা তো পাঞ্ছে না! বরং মনে হচ্ছে
কে যেন তাকে গভীর ভাবে আকর্ষণ করছে কাবুলের দিকেই।

মেরের বিষয় মুগের পানে তাকিয়ে কারিদা থাতুন বলেন—
আহা, মেরে আমার ত্শিচন্তার কত রোগা হরে গেছে। তুই
কিছু ভাবিস না চুচাক, তোকে ভরা জোর করে যে বিরে দিরেছে সে
আমি কিছুতেই মানবো না। আমি আবার নতুন করে তোর
বিরে দিয়ে ঘরসংসার পেতে দেবো। আর সেই সংগে অভিশাপ
দিই যেন এ কাসিম আর তার মেরেটার মৃত্যু হয়।

- —মা। হঠাৎ শিউরে ওঠে মাহ চুচাক।
- কি ? কি হল চুচাক ?
- —না মা কিছু নয়। এতক্ষণে মাহ চ্চাক ব্যতে পারে কাব্দ থেকে কে তাকে হাতছানি দিছে। সেই যে ছোট মেয়েটিকে একলা ঘরে ফেলে রেগে সে চলে এল এ তারই আকর্ষণ! তার রেশমের মত কোঁক ছা চূল, কচি হাত ছখানি, কোঁপানি কারা এগুলি যেন অত্যস্ত বেশী করে মনে পড়ে মাছ চ্চাকের। তাকে ব্কে জড়িয়ে ধরবার জন্তে আকুলি-বিচুলি করে ওঠে প্রাণ। সে ভ্করে কেঁদে ওঠে—না!

জারিফা থাতুন মেয়েকে বুকে জড়িয়ে ধরে বলেন—কি ছল মা ?
চল ঘবে যাই। আনি বুকতে পারছি পথশ্রমে ক্লান্ত হয়ে পড়েছে
তোর শরীব।

নেয়েকে নিয়ে খবে গেলেন জাবিফা বিবি। মাস চুচাক কিছু
কিছুতেই শাস্তি পায় না মনে। এইবার তার মনে পড়ছে স্বামীকে।
তাঁর শেলের কথাগুলো বড্ড বেশী করে বাজছে বুকের মধ্যে।
উজবেকদের বিকল্পে যুদ্ধ করতে উনি চলে গেলেন। সত্যি যদি
সেগানে তার মৃত্যু হয় ? উ:, না না না, এ যেন আর সে ভারতে
পাবছে না। অভ্যু সময় সে কত বার তার স্বামীর মৃত্যু কামনা
করেছে। কিন্তু এখন সে-কথা ভাবলেই চোগে জল এসে পড়ছে।

ক্রমশ: নেনে আসে বাজি। সকলেই অভিভূত হরে পড়ে গভীর
নিজার। শুধু ঘ্ম আসে না মাহ চুচাকের চোথে। কালাহারের
এই প্রাসাদ বেন আজ হল ফোটাছে তার সর্বাঞ্জে। কাবুলে ফিরে
বেতে আনচান করছে প্রাণ। মনে হছে নাহিদ বেন আচমকা ঘ্ম
থেকে উঠে কাঁদছে। তাকে দেখবার জন্তে খাদিজা পর্যন্ত সেখানে
নেই। 'ার ওপর তার স্বামী যুদ্ধ থেকে ফিরেছেন কি না কে
জানে। এখুনি যে তাঁর খবর নেওয়া দরকার। ধড়মড়িয়ে বিছানায়
উঠে বসে মাহ চুচাক। আর একবার সে চেরে দেখে কক্ষের সকলেই
নিজাভিভ্ত। তথন সে ধারে ধারে দরকাটা থুলে বেরিয়ে বায়
বাইরে।

নাছিদকে কোপে নিয়ে একাজিনা পদচারণা করছে থাদিলা।
মনে মনে সে বলছে হার, কি কুমাতার গর্ভেই জন্ম নিরেছিল খুকী!
বুকের হুধ দিয়ে মানুষ করা তো দুরের কথা, আপন মেয়ে বলে
কোনদিন কোলে পর্যন্ত নিল না। তারপর তোকে একলা ফেলে
রেথে সে চলে গেল আপন আন্তানায়। তথু তাই নর, পিতার
যেটুকু বা স্নেহ ছিল তাও আজ শেষ হুয়ে গেল জন্মের মত। হায়
পোড়া কপালা, পিতৃমাতৃহীন হুয়ে এবার মানুষ হুবি কার কাছে?
বাদী থাদিজার কাছে? হায় রে রাজনন্দিনী!

- —খাদিজা !
- —কে? বেগমসাহেবা?
- —্থা থাদিজা, আমার নাহিদ কই ?
- —নাহিদ তো এই আমার কোলে।
- —কই দে দে আনার কোলে দে। মেরেকে তাড়াতাড়ি কোলে নিয়ে চোথে-মুথে চুম্বন করে মাহ চুচাক। এই মেরের আকর্ষণে সে পাহাড়-পর্বত ডিভিয়ে ছুটে এসেছে এথানে। এর কাছে সে বে বছদিনের শ্বণী। শুধু এর কাছেই নয় আর একজনের শ্বণও আব

তাকে শোধ করতে হবে। মাহ চুচাক খাদিজ্ঞার পানে তাকিয়ে জ্ঞিজ্ঞেস করে—উনি কোথায় ?

বিশ্বিতা হয়ে থাদিজা বলে—কার কথা জিজ্ঞেস করছেন বেগমদাহেবা ?

—তোর প্রভূ, মানে আমার স্বানীর কথা জিজ্ঞেদ করছি।

একটা দীর্ঘশাস ফেলে থাদিজা বলে—তাঁর কথা আর না-ই বা শুনতে চাইলেন বেগমসাহেনা।

ব্যস্ত হয়ে মাছ চুচাক বলে—ওবে না না, আমাকে শীগগির বল তিনি কোথায় ?

খাদিজা বলে—তিনি উজবেগদের সাথে যুদ্ধ করতে গিয়ে আর ফবেন নি। সেথানে সম্রাট বাবরকে রক্ষা করতে গিয়ে তাঁর মৃত্যু ঘটেছে।

—এঁা! সর্বাঙ্গ শিউরে ওঠে মান্ত চুচাকের। মৃত্যু ঘটেছে থার স্বামীর! উ:, জেনে শুনেও কেন সে তাঁকে মানা করেনি যুদ্ধে থেতে! কেন সে তাঁকে জোর করে ঠেলে দিল মৃত্যুর পথে? যানার সময় উনি যে অমুরোধ করেছিলেন তা সে অবজ্ঞা করে কেন কঠি দিল! হার নাহিদ, কেন আমি তোদের আগে বুঝতে পারিনি! কলে অঝোরে কাঁদতে থাকে মাহ চুচাক।

দেখে অবাক হয়ে যায় খাদিজা। মনিব-ঠাকরুণের এই

পরিবর্তন দেখে তার চোখও বাম্পাচ্ছন্ন হয়ে ওঠে। সে তাঁর পাশটাতে এসে রঙ্গে—আপনি শান্ত হোন বেগ্নসাহেবা।

শ্বৎচন্দ্রের সমাজ-চেতনা ও নারীত্বের যুল্যায়ন অরুণিমা মুখোপাধ্যায়

লা সাহিত্যে শরংচন্দ্রের মতো জনপ্রিয় লেখক তাঁর
সমসাময়িক কালে তো নয়ই, তাঁর পরেও বাধ হয় জন্মাননি।
তাঁর এ বিপুল জনপ্রিয়তা কালের বিবর্তনবাদকে অস্বীকার করে
আট্ট থাকতে পারবে কি না, সে বিষয়ে জোর করে কিছু বলা শক্ত।
তবে একথা অনস্বীকার্যা, শরং-সাহিত্যের ভক্ত পাঠকের সংগা-বৈপুল্য
বোধ হয় আজ পর্যন্ত অক্ষ্র রয়েছে। এই মনোহারিতা গুলের পিছনে
য়ে যুক্তিটি প্রধান বলে মনে হয় সেটি হছেে সময়োপয়োগিতা।
শরংচন্দ্র আমাদের কুসংস্কারাছের সমাজ-জীবনের নির্লাজ্য অবিচার
ভণ্ডামির দৌরাজ্যে হঃসহ মানুবের মননশীলতার কাছে প্রকট করে
তুলে ধরেছেন সে সমাজের সাহিত্য-বস-মণ্ডিত স্বরপটি। করেছেন
সমাজের তথাক্থিত অসার নীতি-আদর্শের উপর স-বিজ্ঞপ

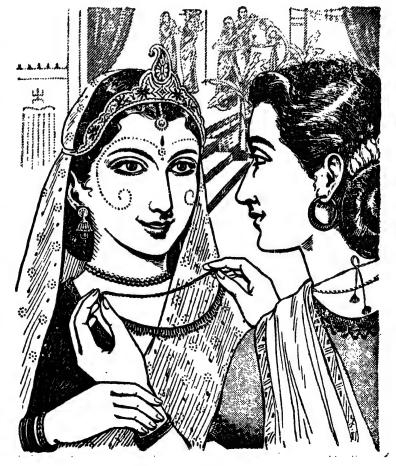


"এমন ফুলর গহলা কোপার গড়ালে?" "আমার সব গহনা মুখার্জী জুরেলাস দিয়াছেন। প্রত্যেক জিনিবটিই, ভাই, মনের মত হরেছে,—এসেও পৌছেছে ঠিক সময়। এঁদের ক্ষতিজ্ঞান, সততা ও দামিধবোধে আমরা সবাই খুসী হয়েছি।"



^{দেনি} মোনার গছনা নিশাতা ও **রস্ত - ভব্যাট্ট** বহুবাজার মার্কেট, কলিকাডা-১২

টেলিফোন: ৩৪-৪৮১০



কটাক্ষপাত। অথচ আশ্চর্য্যের বিষয়, এই যথার্থ নীতি-আদর্শ শেখাবার পরিকল্পিত স্বতন্ত্র প্রেয়াস নেই সেখানে আর তার সংগে পাঠকমনের ক্ষচির বিরোধ ছিল না,—ছিল আনুক্স্য। জন-মানস ঝোঁক ছিল বিপ্লবধর্মিতার দিকে। শরৎচক্র হাওয়া বুঝে পাল খাটালেন। বুগের দৃষ্টিভংগীর বিবর্তনকে ফুটিয়ে তুললেন তাঁর সাহিতো।

এই অর্থে শবংচন্দ্র বাংলা সাহিত্যে 'বিভলিউশনাব আটিই'—
বিপ্লবী সাহিত্যকার। সাহিত্যে প্রধানত নীতি-আদর্শের নান-সংকীর্তনের
মধ্যে তিনি আনলেন নতুন স্থর, নতুন বাণী। অভিনব দৃষ্টির
আলোকে তিনি রাভিয়ে তুললেন অন্তরপ্রকৃতিকে। মানবতা পেলো
তাঁর হাতে নতুন মান। ছদয়হীন সমাজেব অন্ধ-কাবায় নিপীড়িত
মানব-সভাকে তিনি দেখালেন তাঁব অপ্তরতন সদ্প্রেব সভাক্তৃতিব শাস্ত্রস্থিত প্রদিপ-শিখা। এবং এ অভিনবহটুকু প্রকাশ পেয়েছে চিরম্ভন
নারীসভাকে তাঁর নৃতন দৃষ্টিকোণ থেকে বিপ্লেম্বণে। অবভা রক্ষণশীল
প্রাচীনপত্নীদের অনেকেই এ অভিনবহ সম্বন্ধে নীতি ও প্লীলতার
প্রশ্ন তোলেন। কিন্তু শ্রংচন্দ্রের স্বাহন্ত্যা ও বৈশিষ্ট্য তেমন বক্ষণশীল
বিচার-বৃদ্ধির উর্দ্ধে।

প্রাক-শর্থ-সাহিত্যের বঙ্কিমী নীতি-আদর্শের প্রাধাক্তের যুগে শরৎ-সাহিত্য এক প্রশংসাই তঃসাহসিক প্রয়াস সন্দেহ নেই এবং শরংচন্দ্র বাংলার যে সমাজ-জাবন থেকে তাঁর সাহিত্যের উপাদান নিয়েছেন তাঁর সাহিত্য সেই আচার-সর্বস্থ নির্মম সামাজিকতার এক **অনিবার্য্য, বিপ্লবাত্মক প্রতিক্রিয়া। প্রধানত: শরংচল এ 'রিভল্ট'** আনলেন তাঁর সাহিত্যে নারীত্বের বিশ্লেষণে। অবশ্র প্রথম বিভল্ট **হলেও তথাকথিত স**মাজের অন্ধ কুসংস্থার, কু-প্রথা অক্যায় অবিচার সম্পর্কে একটা বিরোধমূলক ভাব-বক্সা বয়ে চলেছিল বাংলার বুকে, বিশেব এক শ্রেণীর মধো। শরংচন্দ্র তাঁর সাহিত্যে অস্পষ্টতার চোরাবালি সরিয়ে কুলগ্রাদী, বিরোধী বিপ্লবী এই ফলস্থ ধারাটিকে **আবিষ্ঠার করে**ছেন। প্রকাশ করেছেন মানবতার কাছে মানুষেরই অবমাননা--- পুণা তাচ্ছিল্য অ-সহাযুভূতি। রদান্ত্রক ভাবে। শ্বংচন্ত্রের নিজের কথাতেই বলি:—'রিভন্ট আমি আনিনি, তবে 💌 এদেছে যুগের প্রবাহে এমং আমি তারু তা প্রকাশ করেছি। আর এ-প্রকাশ সামাজিক কুসংস্কার, অনাচাবের নিশ্চল শিলাস্তপের ওপর আঘাত হেনেছে। সমাজের গণ-মানসে আলোড়ন তুলেছে।

কুসংস্থারাছের হিন্দুসমাজ চিরকাল নারাথকে নৈতিকতা দিয়ে পতীবদ্ধ করে রেথছিল। সেখানে শুরু নীতি-শ্বীকৃত ছিল না, তা সমগ্র নারীদ্বের নৈতিকতা। সেখানে সতীর ও নারীদ্বে কোন প্রভেদ নেই। সতীদ্ধকে বাদ দিয়ে নারীদ্বের বিকাশ অসম্ভব। শর্মচন্দ্র এই প্রচলিত সামাজিক ধারণার বিরুদ্ধে আপত্তি তুলেছেন। নারীদ্বে এমন একচেথো বিশ্লেমণের অয়োজিকতা দেখিয়ে দিয়েছেন। বলেছেন, অনেকদিন ধরে কোন ধারণা বা বস্তু চলে আসছে বলেই বে তা ঠিক তা নর। কোন কিছুই চিরকালের জন্ম সমান ভাবে ঠিক নর। শর্মচন্দ্রের অভিনবদ্ধ হল: তিনি নারীদ্ব থেকে সতীম্বকে পৃথক করে দেখেছেন। সতীম্ব ও নারীদ্ব নারীচরিত্রের হুইটি সন্তা—এক বৃহত্তের হুটি অংগ—তাহল পরিপূর্ণ মন্থ্যুদ্বের সতীধ্ব একটা জ্বান বই তো নর। কাজেই মন্থ্যুদ্ধকে সে ভাপিয়ে উঠতে বাবে

তা তো হতে পারে না! শরৎচক্রের মতে নারীচরিত্রের বিকাশ শুধু মাত্র সতীতে নয়, বা একমাত্র সতীত্বই সমগ্র নারীসত্তা বিচারের মানদশু নয়।

সতীত্ব বাদ দিয়েও নারীতের মহিমা গ্রাহ্ম হতে পারে। যে নারীর জীবনে তথাক্থিত সতীয় নেই, বা তেমন সতীত্ব বিকাশের স্থযোগ নেই,সে কি নাবীচরিত্রের অন্ত গুণে মহিমময়ী হবে উঠতে পারে না ? তাই বলে সংসারে সতীত্বের প্রয়োজন নেই একথা ঠিক নয়। আবার একমাত্র সতীত্বের গুণ নিয়েও নারীছ পূর্ণতা পেতে পারে না। এমন কি, সতীত্বকে বাদ দিয়ে নাবীত্বের বিকাশ (যদিও পরিপূর্ণ নয়) সম্ভব, কিন্তু আমাদের বিচারের নারীয়---স্তেহ-মমতা দেবা ধর্ম-দরদ-আত্মত্যাগ প্রভৃতি নারীর কোমল ছদয়বৃত্তিগুলোকে বাদ দিয়ে, শুধু সতীত্ব নিয়ে নারীসভাব বিকাশ সম্ভব নয়। কারণ—নারীগ সে মমুষ্যাহের সংগে অচ্ছেত্ত ভাবে, প্রত্যক্ষ ভাবে জড়িত, আর সতীয় নিহিত থাকে জীবনের একটা বিশেষ পর্যায়ে গড়ে ওঠা আত্গত্য ও পরিতৃপ্ত মনোধর্মিতার মধ্যে। মনুষ্যাত্বের সাথে তার যোগপুত্র কিছু দূরের—পরোক্ষ। অবগ্র मःश्रोताक हिन्दू नातीत लाकरमथाना পোষाकी मठोएवत মধ্যে মনুষ্যত্বের কোন মহং বৃত্তি দেই। সে এক ধরণের অন্ধতা, আত্ম-প্রতারণা-ব্যক্তে তথাক্থিত হিন্দু সমাজ দিয়েছে প্রচুর মূল্য।

জীবনে চলার পিচ্ছিল পথে কোন নারীর দৈবাৎ পদশ্বদন হল—
ভূল করে ফেললো—সতীত্ব হারালো, কিন্তু তাই বলে কি সে সমগ্র
নারীত্বকে হারিয়ে ফেললো? হরতো তার মধ্যে এক মহাপ্রাণ
লুকিয়ে আছে—যে পরের ব্যথায় কাঁদে, পরেন এতটুকু ভাল করার
জন্মে বাাকুল হয়ে ওঠে। পরের জন্ম এই য়ে কাঁদা, এই য়ে ব্যাকুলতা
তাই তা নারীমনের কোমল বৃত্তি, নারীত্ব, যা ছাড়া নারীচরিত্রের
পূর্ব বিকাশ অসম্ভব!

সতীত্ব নারীর গুণ সন্দেহ নেই, তাই বলে ক্ষণিকের ভূলের জ্ঞা সে যদি সতীম্ব না রাথতে পারলো তার জন্মে কি সে সমাজ থেকে চিবতরে বহিষ্কৃত হবে? নারীম্বে ঐশ্বর্যাবতী হওয়া সম্বেও? শরংচন্দ্র কত হঃথ করে বলেছেন: 'একটি যুবতী নেয়ে যদি যৌবনে একবার একটা ভূল কবে ফেলে তাহলে তাব আব রেহাই নেই। তার চরম হুর্গতি করিয়ে তবে লোকে ছাড়বে। কেন? তার ভাল হবার পথ, সমাজের একজন হয়ে ফিবে আসবার পথ কেন খোলা থাববে না ? তার কি প্রাণ নেই ? আমি তো জানি তাদের মধ্যে এত বড় প্রাণ আছে যা অনেক গৃহস্থবের সতী ^{মেয়েব} মধ্যে নেই। সতীত্ব না রাথতে পারাটা অপরাধ ঠিকই, তা^{ই বলে} পতিতের উপরে উঠবার স্থযোগ করে দেওয়াটা **অ**ক্যায়ের প্রশ্^র নয়।' শরংচন্দ্র মানুষের এই দৈহিক পতনের ত্রভাগ্যে সংবেদনশী^ল হয়ে উঠেছেন। স্বভাষত্র্বল নীতিচ্যুত মামুষকেই তিনি কোনদিন^ই भाशी वरल शेन हत्क घुनाव पृष्टि निरम् स्थिननि । आपर्श्वापी বঙ্কিমচন্দ্র আদর্শ-জাতিজ্বশকে প্রশ্রম দেননি। তিনি সতী^{ত্ব ও} নারীত্বকে এক করে দেখেছেন সভীত্বহীনার নারীত্ব নেই। সে পাপীয়সীর সামাজিক কর্ত্তব্য। তাই কুন্দনন্দিনী রোহিণীর শাস্তি ^{হল} ঐ একই কারণে। কিন্তু মানুবের প্রতি মানুবের স্থুণা তাছিল। শবংচন্দ্র ভারতেও পারেন নি।

তাঁর চন্দ্রম্থী পতিতা অসতী পাপীয়সী হয়েও পাঠকের সহামুভ্তি আকর্ষণ করলো কোন্ গুণে? তার সতীত্বাধ জাগবার জন্তে? না তার নারীত্বের মনোরন বিকাশের জন্তে? শুধু মাত্র সতীত্বলে তা সম্ভব হত না। কেননা নারীত্বকে বাদ দিয়ে সতীত্ব কি করে স্থানর হবে? সতীত্ব একক তাবে স্থানর হয়ে উঠতে পারে না। নারীর কোনল চিত্তবৃত্তি সতীত্বকে মহিমা দিয়ে স্থানর করে তোলে। তা না হলে অমন সতীত্বের অর্থ কি? তাই শরংচল্লের দবদী মনের প্রাশ্ন: 'দৈহিক শুচিতাই কি এতবড় গুণ, যে নেসেমায়্ব স্থামী জেলে যায় দেখেও তাকে বাঁচাবার জন্তে গহনা টাকা বের করে দের না—দেও সতী! সেরপ সতীত্বের যে কি মূল্য ফানিনে।'

হিন্দুসমাজ তবুও হৃদয়ের ঐশ্বর্যো সমুদ্ধ নারীম্বকে বাদ দিয়ে পোষাকী ফরমাদী সভীত্বকে সমগ্র নারীসভা বিচারের মাপ-কাঠি করেছে। কোন নারী চিরাচরিত সমাজ-শাসনের বিরুদ্ধে বিদ্রোহিনী হয়ে শ্রংচন্দ্রের মতে। মানবদরদীর সমর্থন পেতে পারে যদি সে সমাজ ভৈরব ভটচায়ি বেণী ঘোষালের সমাজ হয়—ৰে সমাজ প্রকৃত তথ্যকে উপেক্ষা করে কেবল এক নির্থক কংকালকে আঁকড়ে ধরে রয়েছে। মানবতাকে অবমাননা করেছে। রমা-রমেশের মত সমাজের প্রকৃত মংগলাকাখীর সমস্ত সদিছোকে চুর্ণ করে দিয়েছে। তাই শ্রংচন্দ্রের কত সহামুভতি মনুষ্যাত্বের উদ্দেশ্তে: আসার কথা হচ্ছে, আমি যেন কোন দিন মানুষের আত্মাকে আমার লেখার মধ্যে অপুমান না করি। মেয়ে মানুষ্ট হোক আর পুরুষ মানুষ্ট হোক ভার ওঠার জন্ম পথ যেন একটা খোলা থাকে। হিন্দু সমাজ অত্যন্ত নিষ্ঠুর। তার তুলনায় মুসলমান সমাজ অনেক ভাল। বাইরের জিনিষ দেখে আমরা অনেক ভুল করছি। কিন্তু বাছিরটাই তো সব নয়। অন্তরই যে বড়। তাকে তো শত্যি অস্বীকার করা যায় না।' কোমল-শুভ নারী-হাদয়ের ভালবাসা কোমল বৃত্তির প্রম উংস-প্রম ধন। সে পাঁপড়িটকে ছিল-ভিন্ন করে দলিত করে দিতে চায় নিষ্ঠুর সমাজ-শাসন। সমাজ-নিয়ম তার মূল্যায়ন কোন দিন করতে শেখেনি। তার মাধ্যা উপলব্ধি করতে শেখেনি। বোঝেনি—ভালবাসা কন্ত বড় শক্তির উৎস—নারীকে কত বড় ত্যাগের কঠোর মন্ত্রে দীক্ষিত করে। শ্বংচন্দ্র বলেছেন আরও বড় কথা: ভালবাসা যে কত বড় জিনিয ভা বলে বোঝান যায় না। সব দোষ-ক্রটি এতে ঢেকে যায়। ভালবাসার মত আত্মত্যাগের শিক্ষা দিতে আর তো কিছু পারেনা। প্রণয়-পাত্রীকে জয় করবার জন্মে যুবকের বে বিপুল চেষ্টা, বে মান্তরিক সাধনা, এত মাধুর্য্য তা আমি অক্সত্র দেখে দেখে ভুলতে পারিনি। এই যে পাবার মধ্যে কত সেকরিফাইস, কত চেষ্টা, কত শাধনা, এতে মানুষকে অনেকখানি নোবল, অনেকখানি গ্রেট করে (नग्र।

আমাদের সমাজ-ব্যবস্থা অক্স রকম। বকমটা অবশু একান্তভাবে

অসমর্থনীয়—অন্ধতায় পটু। অপব্যবস্থায় কটকময়। এ সমাজে

ব্বক-যুবতীর বিয়ে ব্যাপারটা সম্পূর্ণভাবে রাবা-মায়ের ইচ্ছাধীন ছিল।

কয় যুগ আগেও হিন্দু ঘরের কোন মেয়ে ভাবতেও ভয় পেত—সে

কথনো কোন যুবককে ভালবেসে বিয়ে করবে। এমন কি ভাবী

স্বামীর কয়নাও বৃঝি তার কাছে ভয়ের। এই ভয় কয়তে শিথিয়েছে

তার পরিবেশ-বাবা-মায়ের শাসন ও সমাজের দুঢ় অফুশাসন। সে জানে বাবা-মা তাকে যার হাতে তলে দিয়েছে, সেখানে তাকে বাঁথা পড়ে থাকতে। দাস্পত্য-জীবনে অভৃত্তি থাকলেও সামাজিক ম**ন্ত্রোচ্চারণ** আর যজ্ঞের ধোঁয়ায় যে জাবন একবার বাঁধা পড়েছে, তাকে বিচ্ছিন্ন করে নেবে কি করে? সমাজের বিফল্পে বিজ্ঞোহিনী হবে কি করে? বিদ্রোহের ধাতটি তার রক্তে নেই—দে সংস্কারান্ধ। সমাজ-শাসনের দাস। শৃংথলিত। শরংচন্দ্রের অভিযোগ এ ধরণের **অন্ধতার বিরুদ্ধে।** সমাজের কু-শাসনের বিরুদ্ধে। যে সমাজ নারীর কোমল হৃদয়ের কোন গোপন কোণ ঘেঁষে ফুটতে যাওয়া একটি মুছ-সুন্দর প্রণয়-ফুলকে কঠোর শাসনের রুদ্রতেজে অকালে ঝলুসে দেয়, শর্ৎচন্দ্রের মতীর্থ সে হৃদয়হীন সমাজের সংগে। যে সমাজ অন্তরের চিরন্তন সত্যকে অস্বীকার করে চরম অন্ধতার একান্ত অসত্যকে আঁকড়ে ধরে আছে, মানবতায় দুঢ়বিশ্বাসী মানুষ সে সমাজের নিয়ন-শাসনকে কোন দিনই সমর্থনের দৃষ্টি ফেলে দেখবে না। নারী-ছদয়ের সেই সত্যাত্মভতির প্রতি তথাকথিত সমাজের মনোভাব সম্পর্কে শরংচক্র বলেছেন: আমাদের এখানে বিবাহিত দম্পতির মধ্যে তা কিছুতেই সম্ভব নর। জয়ের যে একটা আনন্দ, জীবনের ওপর তার বে একটা মহৎ প্রভাব, তা থেকে তারা একেবারে বৃধিত থাকে। হয়ের হন্ত কত ব্যথ্যতা, কত ব্যাকুলতাই না দেখেছি। তারা শক্তি সঞ্চয় করে, নিজেকে তারা যোগ্য করে তোলে, দরকার হলে [']ভূয়েল' লড়ে। **ভারা** ভালবাসার মধ্যাদা বোঝে, ভালবাসার সম্মান তারা রাখতে জানে। এখানকার সমাজ ধরে-বেঁধে কতকগুলো মন্ত্র পড়ে ত্ব'জনকে এক করে দিল, কিন্তু তারা ভালবাসার একটা জীবস্ত আনন্দ কথনো পার না।'

শারংচন্দ্রের এই মতবাদ রক্ষণশীল সমাজের চোখে বিপ্লবাদ্ধক সন্দেহ নেই। শারংচন্দ্রের সমর্থিত সে 'ভালবাসা' সম্বন্ধে তাদের বিক্লব্ধ মতবাদ হচ্ছে: "প্রণয় পাত্র-পাত্রীকে জয়ের জ্ঞে যে ব্যাকুলতা তা ক্ষণিকের—তার স্থায়িত্ব চিরদিনের নর।" শারংচন্দ্রের উত্তর হল: 'যে আনন্দ তাতে আছে, তা হুর্লভ। হতে পারে ক্ষণিকের, কিছ্ক হ'-দশ দিনের যে আনন্দ, তার তুলনা নেই। সে আনন্দ জীবনের আনেক হুঃথ-কষ্টকে ছাপিয়ে বড় হয়ে থাকে। তার ইনক্ষ্রেল থ্বই কার্যাকরী। কল্পোয়েটর আনন্দ—সে কি কম? 'সেলফ-মেড' মামুব বেমন বড, যারা হাদ্য কল্পার করে তারাও তেমন বড়।'

নারীত্বে মূলাগান সম্বন্ধে শরংচক্রের এ ধরণের সম্বন্ধ-চেতনা তথাকথিত সামাজিক রক্ষণশীলদের মধ্যে প্রশ্নের উদ্রেক করবে। তারা তুলবে শরং-সাহিত্যে নীতির প্রশ্ন। কিন্তু সে অন্ধরা তুল ব্বেছে। সাহিত্যে শরংচক্র হুনীতি প্রচার করেননি! নীতি-বিজ্জিত তিনি মোটেই ছিলেন না, ছিলেন উদারনীতিবাদী। মানবদরদী। তিনিই স্বীকার করেছেন: 'নীতি আমি মানিনে, এমন কথা আমি বিলনে। তথু সৌন্দর্যাচর্চা করব, কোনও নীতি-ক্রচি মানবো না—এতো আর সাত্যে সাত্যি চলতে পারে না। কেউ কেউ অবশ্র বলেন, সাহিত্যের ভেতর নীতি-টিতি নেই, ক্রচি আছে। আমি কিন্তু তা বলিনি, আমি বলি, নীতিও আছে।'

শরৎ-সাহিত্যে নীতিকথা যথেষ্ট রয়েছে, কিছ সেধানে কাউকে পরিকল্পিত ভাবে নীতি শিক্ষাদানের প্রয়াস নেই—বে প্রয়াসটুকু খুঁজে পাওয়া যায় বংকিম-সাহিত্যের অনেক জারগার। সেখানে নারক-নায়িকার কথাবান্তার বে নীতিজ্ঞান প্রয়াশ পেরেছে তা সামাজিক মামুবের সংস্থারের সাথে মিশে যাওয়া স্বভাবসিদ্ধ নীতিবোধের প্রকাশ। একান্ত সাহিত্যোচিত রসাশ্রয়ী পদ্বায়।

নারীন্দের মৃশ্যায়ন পর্যাবে শরৎচক্রের অভিনব সমাজ-দর্শনের ছায়া পরবর্ত্তী বাংলা-সাহিত্যে প্রচুর রয়েছে। তা শুধু অমুকরণ নয়। 'রিভন্টে'র উত্তরাধিকার। বৈধ বিপ্লবের দিতীর ধাপ। আরও এগিয়ে ভূতীয় ধাপে—অর্থাং সর্বাধুনিক যুগে সেই অভিনব সমাজ-দর্শনের দৃষ্টি সাহিত্যে আরও উদার হয়েছে। তাই শরৎচক্র বাংলায় যে বিপ্লবাত্মক নৃত্তন পথের পথিকং শরতোত্তর বাংলা-সাহিত্যে প্রধানতই সে দৃষ্টিভাগীনিয়ে সে পথেই এগিয়ে চলেছে, আরও বুঝি চলবে বিশ্ব-সাহিত্যের সাথে পা ক্লেল।

রক্তগোলাপ গীতা চক্রবর্ত্তী

মিতা,

লক্ষো থেকে তোমায় যে চিঠি দিয়েছি আশা করি তা পেয়েছ। এখন যে চিঠি তুমি পাবে তা যাচ্ছে আগ্রা থেকে। মিতা, ৪ঠা তারিখে স্মামরা এসে আগ্রায় পৌছেছি। সেদিন বিকেলেই স্মামরা বেরিয়ে পুড়লাম। প্রেমিক সাজাহানের 'মশ্মর স্বপ্ন' তাজমহল দেখতে। ব্দামরা যথন মতি মসজিদের সামনে দাঁড়ালাম, তথন অন্তগামী স্ব্য্যের রক্তিম আভা এদে পড়েছে মস্ফিদের উপর। দেথলাম ঘূরে ঘূরে সব। দীর্ঘনিঃখাস বেরিয়ে এলো, মনে হোলো এই মহাকাল, যে কালের কবলিত হয় সব প্রতিপত্তি, মান, সম্মান। আন্তে আন্তে পুষ্য মতি মসজিদের পিছনে বিলীন হয়ে গেলো। আনাব মনে হোলো ঠিক এমনি করেই অস্ত গেছে মোঘল সাম্রাজ্যের সৌভাগ্যংর্গ্য। সাইপ্রাস বনভূমির মধ্যে দিয়ে বৈকালিন বাতাস বয়ে যাচ্ছে। পাতার মধ্যে আসতে আসতে যে শব্দ শোনা যাচ্ছে তা যেন বনভূমির দীর্ঘবাস। আমরা দেইখানে ঘাসের উপর বসে আমাদের জলযোগ সারলাম। ক্রমে সন্ধ্যা ঘনিয়ে এলো, ভাগ্যক্রমে সেদিনটা ছিল পূর্ণিমা। আকাশে **পূর্ণ চান।** একটু একটু করে জ্যোৎস্না তার রূপালী <mark>ফাগ ছড়াচ্ছে</mark> ভাজমহলের উপর। চমৎক্বত হলাম। যে বেদনার গুরুভার এতক্ষণ বুকটা চেপে ছিল এতক্ষণ তা যেন নেমে গেল। অবাক হয়ে গেলাম বে তাজনহল এতদিন শুধু গল্পে পড়া রূপকথার রাজ্বত্ব ছিল, আজ তা প্রত্যক্ষ করছি। তা এত সুন্দর!

অপূর্ব ! অপূর্ব সাজাহানের শিল্পন্থ ! তাঁর প্রেম ! তাজনহলের প্রতিটি পাথর থেন মমতাজ আর সাজাহানের প্রেমস্থা-সিঞ্চিত। আর সেই পাথর দিয়েই তৈরী তাদের প্রণয়ের মশ্বর মৃতি। আমার মনে হোলো মনের গহনে কোন কবি বলে উঠলেন—

> তাজমহঙ্গের পাথর দেখেছ দেখেছ কি তার প্রাণ ? অস্তুরে তার মমতাজ নারী বাহিরে সাজাহান।

মিতা। আজ বড়ো তোমার কথা মনে হচ্ছে। মুর্নিদাবাদে বেমন হজনে সিরাজদৌলার কববে শ্রন্ধার্পনি অর্পণ কবেছিলাম, তেমনি এই তুই প্রণয়া যারা আজও ছটি কববে পাশপাশি ভয়ে করছে তাদের প্রেমালাপন যুগ যুগ ধবে, তাদের করতাম আমাদের শ্রন্ধা-নিবেদন।

মিতা, অনেকে বলে এই তাজমহল নাকি মমতাজ্বের মৃত্যুর পর হরনি। হরেছিলো তাঁর জীবিতাবস্থার। তবে তাঁর মৃত্যুর পূর্বে শেব হয়নি। সাজাহানের ছিল 'রঙমহল' মমতাজের 'তাজমহল'। কোন একটি বিশেষ দিনে যথন বিশেষ বাতি জ্বলবে রঙমহলে তথন মমতাজ আদবে নৌকা করে যমুনা অভিক্রম করে রঙমহলে। আর যথন বিশেষ বাতি জ্বলবে তাজমহলে তথন সাজাহান আদবে যমুনা বেয়ে তাজমহলে। কিছু বিধাতার অভিশাপ, কয়না তাঁদের কয়নাই রইলো। নিষ্ঠুর নিয়তি ছিনিয়ে নিলো মমতাজকে। তাই প্রেমিকার অভিসার রজনী শেষ হলো। রচিত হলো বাসরশ্যা কবরের কঠিন মাটিতে তাজমহলের বুকে। মিতা! তবু তারা সুখী—

একজন আগে গিয়ে অপেক্ষা করছে আর একজনের জন্মে তারপর মৃত্যুর মধ্যে দিয়ে পেয়েছে তার দয়িতকে।

দীর্যদিন অদেখার যে বিরহ-যয়নার স্পষ্ট হরেছে কবে তা পার হোরে তোমার দেখা পাব ? মন বড় অস্থির হরে উঠেছে, আর বেশি দেরী করব না। এবার কিছু গ্রাম ঘূরে মাসখানেকের মধ্যেই বাড়ী ফিরব। এর মধ্যে চিঠি না-ও পেতে পার, লক্ষ্মীটি রাগ করো না। আমার যাওয়ার দিন আমাদের বাড়ী তোমার থাকা চাই। ইতি তোমারই অসীম।

চিঠিটা পেয়ে খুশিতে ভরে যায় স্থানিতার মন। অসীম আঞা গেছে, দেখেছে তাজমহল। তারও'বড় তাজমহল দেখার সথ। ঠিক আছে বিষের পর তারা বাবে। সে ভনেছে তাজমহল দেখতে বায় 'ক্রোঞ্চ-মিপুন।' ভাবতেই লজ্জার তার মুখ লাল হয়ে বায়। চিঠিটাকে বার বার পড়ে। হঠাৎ অসীমের বোন স্থনন্দার গলা পাওয়া যায়—

বৌদি ভাই! ও বৌদি ভাই—
ছুটে যায় স্থমিতা—এই নদা কি কর্মছিম?

- --কেন কি করেছি ?
- ভূই বৌদি ভাই বৌদি ভাই বলে চেঁচামিচি করছিল কেন ? মা শুনলে কি ভাববেন বল তো ?
- —ও মা, এতে আবার ভাববার কি আছে ! কাল যা হবে আজ তা বলছি, আর তা ছাড়া ত মাসিমা জানেনই।
 - —জানলেই বা।

আচ্ছা বাবা, অক্সায় হয়েছে। এবার থেকে মিতাদি' বলবো । যাক দাদার চিঠি পেয়েছো ? অবশু এ'জিক্তাসা করা অক্সায়, তথু করছি। মিতা চিঠিটা দেখায়।

—ও বাবা ! তোমার চিঠিটা কত বড় আনারটা মাত্র এক পৃষ্ঠা, দাঁড়াও না কেমন ঝগড়া করি ওর সঙ্গে।

স্থমিতা বলে থাক, আদলে ত ঝগড়া করবি আপাততঃ একটু চুপ কর। আন্ধ্য চা ধাবি আয়।

কানপুর এসেছে অসীম আর তার বন্ধুরা। আশ্রুর নিরেছে এক বাঙ্গালী পরিবারে। অত্যস্ত বড়ে তারা এদেরকে আপন করে নিরেছে। অসীমের অপর হুই বন্ধু করেক দিন পর তাদের আন্থারের বাড়া চলে গেছে। অসামকে বাধ্য হরে এথানেই থাকতে হলো।

প্রতিদিন অসীম ভোরে উঠে ক্যামের। হাতে ন্যির বেরিরে পড়ে, হুপুর রোদে পুড়ে তবে ফিরে আসে। কানপুরে বড় বড় ধান-কেতের

মধ্য দিয়ে যখন সে আসে মনে ভাবে, বিদ্যের পর 'সে' আর 'মিতা' আসবে। থেলবে লুকোচ্বি ধানক্ষেতের মধ্যে।

অসীম অবাক হরে যার, প্রতিদিন তার ঘর কে মেন গুছিরে রেথে যার। মরলা জামা-কাপড় পরদিন ধোরা অবস্থার ভাঁজকরা থাকে টেবিলে। যাক, সে নিয়ে মাথা ঘামাবার থ্ব বেশী অবসর থাকে না অসীমের। বাড়ীর কন্তা, গিল্লী, অত্যস্ত ভাল। আপন লোকের মতো যত্ন করে তাকে।

অসামের কানপুর দেখা হয়ে গেছে, এবার বাড়ী বাবার জন্ম অস্থির হয়ে ওঠে। আয়োজন করে যাত্রার। বাড়ীর কর্ত্তা বলেন— বাবা, আমার একটি মেয়ে আছে বোধ হয় জান। সামনের ৫ই তারিখে তার বিয়ে। এই দিনটি তোমায় থেকে যেতে হবে। ওকে বোধ হয় তুমি দেখনি বড় লাজুক, তবে ও তোমায় বড় ভাইয়ের মতো শ্রদ্ধা করে।

অসীম বলে, তাই বুঝি ? আমি ত আপনার মেয়ে আছে জানতাম ন।

জানবেই বা কি করে, বাইরে বাইরেই ত থাক চবিবশ ঘণ্টা—যাক লীলা এনিকে আয় তো মা!

অসাম ভাবে এই তবে তার ঘর গুছায়, পরে বলে—আপনার বিধের নিমন্ত্রণ না থেয়ে কিন্তু যাচ্ছি না, লম্জায় লীলা পালিয়ে যার বাবার সামনে থেকে।

বিয়ের দিন, রাত্রিবেলা বর বিয়ে করতে বসেছে, হঠাং একটা গণ্ডগোল শোনা গোলো। বরপক্ষ বর তুলে নিমে যাবে, এই মেয়ের সঙ্গে বিয়ে হবে না। কাবণ অনুসন্ধানের পুর্বেই বর পক্ষ বর নিয়ে চলে গোলো। শোনা গোল ছেলে পক্ষ মেয়ের চরিত্র সম্বন্ধে সন্দিহান আর তার জন্ম অসীমই দায়া। অবাক হয়ে যান মেয়ের বাবা ছপেন বাব্। ছি: ছি: অমন দেবতুল্য চরিত্রের ছেলের নামে এ অপবাদ! কি বলবেন তিনি অসীমকে, অসাম তো চলেই মেত তুর্ তাঁর অনুরোধ রক্ষা করে এই কলঙ্কের সম্মুখীন হতে হলো। মাথায় হাত দিয়ে বসলেন ভূপেন বাব্। স্ত্রী এসে মিনতি করে বলেন ওগো তুমি একবার অসীমের হাতে-পায়ে ধরে মিনতি করে। ও ছাড়া কে রক্ষা করবে আমাদের। মান-সম্মান সবই যায়, ওগো কুল্বর্ধ সবই যায়। যাও তুমি একবার।

এরই মধ্যে সব ঘটনা গিয়ে পৌছেটে অসামের কানে। স্তব্ধ হরে বসে থাকে সে। ছি: ছি: একি কথা, এমন এদের অবস্থা !
মার এ কথা মনে করতেই যার কথা মনে হর সে একটি শাস্ত স্কল্পর
লান্ত্ব মেয়ে। হার রে! এই মেরেরও ভাগ্যবিভ্স্বনা। ভারতে
থাকে অসীম, ঘরময় ঘ্রে আর অস্থির ভাবে পারচারি করে।

হঠাং ভূপেন বাবু হস্তদন্ত হয়ে অসীনের ঘরে চুকে কেঁদে ফেলে।
বাবা অসীন, তুমি বাঁচাও আমায়, নইলে আমার মান সম্মান সব যায়।
শিক্ষ হাসছে, তুমি আমাদের স্বজাতি আর লীলা আমার দেখতে
শারাপ নয় বাবা, ধর্ম রাখো। আমি এখুনি তোমার বাবাকে
টেলিগ্রাম করে দিছিছ। আমারই সব অপরাধ আমি স্বীকার
করব।

—না না, একি কি বলছেন আপনি, এ কি করে সম্ভব হবে ? বাবা তোমার পারে ধরছি, তোমরা যুবক ছেলে, তোমরা না বাঁচালে আমাদের উপায় কি বাবা ? তুমি যদি রাজী না হও আমি এক্স্পি মেরেকে খুন করে নিজে আত্মবাতী হবো। তবুও আমি শক্রুর মুখ হাসাব না, কুল রাখব।

নিরুপার অসীম, সবার উপরে একথানি মুখ বার বার মনে হয়, যে এখনও তার অপেক্ষায় দিন গুণছে, সৈ হোলো স্থমিতা। তাই হঠাৎ নিরুপারের মতো বলে উঠে, না না, ব্যাপার হরেছে কি আমি বিবাহিত।

বিবাহিত! মুহুর্তের জন্ত থমকে যান ভূপেন বাবু। পরে অসহায়ের মতো বলে ওঠে বাবা, তাতে কি হয়েছে তোমার প্রীর ত দাসীর প্রয়োজন লীলাকে তার দাসী করে নাও বাবা! তুমি যদি না নিতে চাও তবে ভধু একটু শাস্ত্রমতে সিঁদ্র দিয়ে দাও। তারপর আমরাই রাখবো। এটুকু দরা আমার করো বাবা, ১১টাই শেব লগ্ন, এর পর আর ওর বিরে হবে না। আর বেশী সময় নেই।

অসীম ভাবে—মিতা, আমার তুমি ক্ষমা করো, আমি নিরুপার। তার পরে বলে, ঠিক আছে, আপনারা বিস্তের আয়োজন করুন।

বিয়ে হয়ে গেলো। কিন্তু হলো না কোনো আনন্দোৎসৰ। মেন বিয়াট একটা অমঙ্গল কোন রকমে নির্বিম্নে কাটান হোলো।

খবর পৌছাল বাড়ীতে। আশ্চর্য্য হয়ে গেলো সবাই, এ কি ! মা বড় আশা করেছিলেন যে স্থমিতা হবে এ-বাড়ীর বধুমাতা। সব আয়োজনই সম্পূর্ণ, শুধু মাত্র অসীমের কথার অপেক্ষা, কি বসবেন তিনি স্থমিতার মাকে ?

ব্যর পেরে অসীমের বাবা চলে যান কানপুর, বউ দেখে তার বেশ পছদ্দই হয়। তাছাড়া ভূপেন বাবু দিয়েছেন অনেক। তাতেই তাঁর ভৃত্তি। ছেলেমেরের মনের থবর তিনি রাথেন না বা তার মূল্যও তিনি দিতে চান না। তাই বাড়ীতে থবর দেন বোভাতের সব বন্দোবস্ত করতে। তিনি ছ'এক দিনের মধ্যেই ছেলে-বোঁ নিরে বাড়া ফিরছেন। স্থনন্দা স্থমিতাদের বাড়া যায় অপরাধীর মতো, কি বলবে সে মিতাদি'কে। দেখে থাটের বাচ্চু ধরে চুপচাপ দাঁড়িয়ে আছে মিতা। স্থনন্দাকে দেখে মিতা বিছানার উপর পড়ে ফুলে ফুলে কাঁদতে থাকে। কি দেবে সান্ধনা তাকে, স্থনন্দা নিজেই কাঁদতে থাকে। আসেন স্থমিতার মা, শাস্ত সৌম্য একটি দেবী-মূর্ভি। যেন আরো বেশী মাত্রায় শাস্ত হয়েছেন। স্থনন্দা কিছু বলতে পারে না। তিনিও কিছু বলেন না, এসে কিছুক্ষণ শাড়িয়ে নীরবে আবার চলে যান।

এসে গেছে অসীম আর লীলা। বাড়ীতে ফুলসজ্জার আয়োজনের কোন ক্রটি নেই। অসীম বার বার বারণ করেছে এসব আয়োজন করতে কিন্তু তার বাবা ললিত বাবু তার কথা রাথেন নি। স্ত্রী যথন বলতে এসেছে তিনি বলেছেন, কেন? এটা কি আমার শ্রাদ্ধ না কি বে চুপ করে কাজ সারতে হবে? আমার একটি ছেলের বৌভাত, আর তাছাড়া আমার মান জাত কুল সবই বজার আছে। প্রকাশ করার মতো সম্বন্ধ হয়েছে আনন্দ করব না কেন? হ'দিন আগে থেকে সানাই আসবে। তোমার অসুবিধা হলে অন্ত বাড়ী গিয়ে বসে থেকো।

কি বলবেন অসীমের মা, চুপ করেই থাকেন। বথানিরবে ফুলসজ্জার দিন এসে পড়ে। সকাল থেকে লোকজনের আসার বিরাম নেই। কিন্তু স্থনন্দার মন অন্থির হরে উঠেছে। মাকে গিরে বলে—মা মিতাদি' আসবে না মা? মা বলেন কি করে আসবে মা সে? আর আমিই বা কোন মুখে তাকে আসতে কলবো? হঠাৎ কার গলার স্বর শুনে চনকে যার মা, মেয়ে—নলা এই নলা কোথার গোলি বলতো, তোর কি কাজের দিনেও গৃন কমালে চলে না—কার এই ত আমি ভাবছি কোথার বসে বসে গ্মাচ্ছিস—

আয় আয়, এখনও বৌদিকে সাজাস নি, সদ্ধা হরে গেলো, লোকজন আসতে স্থক হরেছে। তোর বৃদ্ধি কোন জন্ম হবে না। আর মাসিমাও বেশ ওব সজে এখনও দাঁড়িয়ে কথা বলছেন। কি বলবেন মা অবাক হয়ে তাকিয়ে থাকেন ওব দিকে। কি অপুর্বাই না লাগছে আজ মিতাকে। বড় স্থলের লাগছে মিতাকে—বেন শেতবসনা সরস্বতী পরেছে একথানা শাদা বেনাবসী। গায়ে শাদা ব্লিউজ, গলায় সাদা মুজ্জোর মালা হাতে সাদা সকনীগদ্ধার চূড়ি, পোঁপায় রজনীগদ্ধার মালা, কপালে থেড চলনেব টিপ। শুধু মাত্র একটি রক্তগোলাপ বৃকে। স্থনন্দা বৃধতে পারে না তার সাজের অর্থ। স্থনন্দা জানে মিভাদি'র কোন কাজই অর্থহীন নয়। অবাক হয়ে বলে মিতাদি' এর অর্থ ?

—কিসের ?

-তামার সাজের ?

কিছু না, শোন, বাইরে আমাদের চাকরের হাতে যা আছে নিয়ে আয় বৌদিকে সাজাব। সাজায় মিতা বৌদিকে লাল বেনারদা লাল ব্লাউজ, থোঁপায় বক্তগোলাপের মালা, কপালে সিঁদ্র, পায়ে আলতা। পরায় চন্দন অপূর্ব ভঙ্গিতে। যেন আপন মনের স্মস্তটু≱ু বস নিংড়ে রঞ্জিত করেছে সে লালাকে।

নন্দা যা না ভাই, অসামকে সাজিরে দে। বাড়াতে লোকজন আসবে, বর সে, তাকেও একটু সাজাতে হবে। যদি না সাংগতে চার বলিস মিতা বলেছে। আমি যাই ওদের খাটটা সাজিয়ে দিরে আসি। তুই বৌদিকে একটু পরে নিয়ে আসিস।

মিতা কর-কনের খাট ফুলে ফুলে স্থলর করে সাজিয়েছে। খাটের হু' পালে শিয়রের হু' পাশে দিয়েছে তার নিজের হাতে গড়া হু'টি মাটির প্রদীপ, নিজের হাতে আঁকা একখানা হর-পার্স্কতীর মিলন মূর্ত্তি তার জ্লায় লেখা রয়েছে তোমাদের শুভামলনের দিনে মহামিলনের প্রতীক। আর বড় একটা ফুলদানিতে এক ঝাড় রক্তগোলাপ। যে এসেছে বৌ এবং ফুল-সজ্জার ঘর দেখে সকলেই প্রশংসা করে গেছে। সভিা যে সাজিয়েছে সাজাবার ক্ষমতা আছে। শিল্পিজনোচিত দৃষ্টিভঙ্গি আছে।

রাত্রে একে একে সব অতিথি চলে গেছে, আয়ায়-য়জন বারা আছে তারা বৌকে নিয়ে থেতে গেছে—কেউ নেই ঘরে। আস্তে আস্তে ঘরে চোকে মিতা। দেখে অসাম চোথ বৃজে শুরে আছে, মুখে একটা ক্লান্ত অবসাদের ভাব। স্থমিতা ভাবে ঘ্মিয়েছে অসাম। ভাই শেষবাবের মতো চুপি চুপি তাকিয়ে থাকে ঐ ঘ্মন্ত মুখের দিকে, তারপর অত্যেশ আস্তে আগতে আগতে কারের মত বেরিয়ে আসার সময় জেগে বায় অসাম, ডাকে—মিতা—! দাঁড়িয়ে পড়ে স্থমিতা, এই ভাককে উপেকা করার ক্ষমতা নেই স্থমিতার।

এগিয়ে আসে অসীম, মিতা ছুমি তো জানো বে আমি নিরুপায়।
আমার পার তো ক্ষমা করো কিন্তু মিতা, সবইতো তুমি একজনকে
দিরে গেলে, আমায়—আমায় কি দিলে মিতা! আমি কি নিয়ে
শাকবো? স্থমিতা কিছু না বলে আন্তে আন্তে বুক থেকে
বক্তগোলাপটা খুলে দেয় অসীমকে।

--- व्याभाव राष्ट्रेक् हिल नवर्ष्ट्रेक् निरंध यांत्क वानित्य निरंध श्रिकाम

দেখো তার যেন কোন অনাদর না হয়। বলে ঝড়ের বেগে বেরিরে মায় ঘর থেকে। না গেয়ে কাউকে কিছু না বলে চলে যায় বাড়ী।

পরের বছর। আজ-কাল কেমন যেন হয়ে গেছে স্থমিতা, সব সময় একটা অক্সমস্ক ভাব। দশ বার ডাকলে একবার উত্তর দেয়। একটুতে নেগে যায়। আজ কাল তারা মামার বাড়ীর কাছে এসে বাড়ী ভাড়া নিয়ে থাকে। নিজেদের বাড়ী ভাড়া দিয়ে দিয়েছে। কারণ তাদের নিজেদের বাড়ী অসীমদের বাড়ীর পাশে। সেদিনটা ছিল অসীমের ফুলসজ্জার দিন। গত বছর এমন দিনে অসীমের ফুলসজ্জা হৈয়েছে। স্থমিতা মাকে বলে জক্তম ফুল আনিয়েছে। আনিয়েছে রক্তগোলাপ, আনিয়েছে ছটো বড়ো বড় যুঁইয়ের মালা। স্থলর করে সাজিয়োছ তার শোলার থাট। যেমন করে গাজিয়েছিল অসীমের ফুলসজ্জার দিন, তারপর সেজেছে নিজে তেমনি করে। আজ কিন্তু সাদা নয় আজ সব লাল। যেমন সাজিয়েছিল সেদিন লালাকে।

বেখেছে অসামের দেওয়া অসামের ফটোটা বিছানার উপর, পরিয়েছে তাকে মালা। সাজিয়েছে তাকে চন্দন দিয়ে। মা ঘরে চুকে এই ব্যাপার দেখে অসাক হয়ে যায়। দেখেন স্থমিতা অসীমের ফটোটাকে মালা পরিয়েছে, পরেছে নিজে মালা। তারপর বুকের অত্যন্ত কাছে নিয়ে বলছে—

তুমি ভেবেছিলে আমি তোমার বৌকে হিংসে করবো। দেখলে ত এতটুকুও হিংসে করিনি। নিজেকে বিক্ত করে সমস্তটুকু বক্ত নিংছে রান্ধিরেছি আমার প্রতিহলীকে। কি বিশ্বাস হচ্ছে না ? কিছ আজ আমি বিক্ত নর আজ আমি পূর্ণ। দেগছো তাই আজ আমি লাস। আমি বাছিছ আমার মহলে মমতাজের মতো। আমিও অপেক্ষা করনো। তোমার কাজ সেরে যেদিন আসবে সেদিনের জন্ম। তথন আর কেউ থাকবে না থাকবে না কোন প্রতিহল্পী। তর্ম তুমি আর আমি। বলতে বলতে চোগের জল গড়িয়ে পড়ে। তার ফটোটাকে বুকের অত্যম্ভ কাছে নিয়ে কুলে কুলে কানতে থাকে। মা এই অবস্থা দেখে চোথে হাত চাপা দিয়ে পালিয়ে যার সেখান থেকে। কিছুক্ষণ পর মিতার কোন সাড়া না পেরে মা মেরে সরে এসে দেখেন থাটের উপর ফুলের উপর চলে পড়েছে যেন কুক্মন-কক্সা আর বিড় বিড় করে বলছে—

আনার সকল কাঁটা ধন্ম করে ফুটবে গো ফুল ফুটবে। আনার সকল ব্যথা রঙ্গীন হয়ে গোলাপ হয়ে উঠবে।

কিন্তু মুখের অবস্থাটা যেন কেমন! পায়ের কাছে খাটের উপর নিজে পড়ে আছে অসামের ফটোটা টুকরো টুকরো অবস্থায়। এগিয়ে আসেন মা—হঠাং দেখেন মিতার হাতে তার আফিমের কোটো। তিনি তাঁর বাতের জন্ম প্রতি সন্ধ্যায় একটু একটু আফিম খান, সেই আকিমের কোটো খালি।

চাংকার করে উঠেন মিতার মা—মিতু—মা, আমার কি সর্বনাশ করলি তুই, ওরে, এই জগু তোর এত সাজ। আমি একটু ব্^{ঝিনি।} কি করলি মা—

মহলে যাত্রী অভিসারিণী মিতা অভিত ক্ষীণ কঠে বলে, আ:—ম। অ-ত চেচামেটি করছ কেন, কাল সারা রাত বাসর জেগেছি, আজ একটু মুমুতে দাও।

ছুটি রীনা মিত্র

এখন সময় আর আমার মাঝখান তৃত্তর মক্ষর ব্যবধান। ঘড়ির কাঁটোর সাথে সাথে, ঘণ্টার সরব ঝঞ্চারে, হর্বিল-পায়ে ছোটাবে না আমায়।

মিলের আকাশ-ছোঁয়া নলের পাশে,
রক্তরাঙা কুর্য্যের প্রকাশে,
সময় বললে— পাঁচটা দশ'।
ভাকে জগতের সবার ধারে
পাঠিয়ে দিয়ে,
প্রম নিশ্চিন্তার কুহেলী-ঘেরা স্বপ্নটাকে
ভাবার জড়িয়ে ধরলুম।

এখন আকাশ-জোড়া ছুটির রবে
নীল রঙে ভরা দিনগুলি।
বাতাসও বেশ মধুর,
মা'ব কোলের কাছে ঘন হয়ে বসা
নিশ্চিস্ততার মতো।

এখন সময় নেই, 'প্রামার' নেই,
ছুলের টেবিলের সবুজ পাতাটা নেই,
এখন সময় আরু আমার মারখানে
ত্তর মক্রর ব্যবধান।
ঘড়ির কাঁটার সাথে সাথে,
ঘণ্টার সরব কন্ধারে,
হরিশ-পায়ে ভোটাবে না আমায়।

মৃত্যুর পরে বিশাখা ঘোষ-রায়

আমাকে ক'ব না দাহ, বন্ধ বেখো না কফিনের আধারে।
উদার আকাশ-ছায়ায়, মৃত্তিকার কণার কণায়,
আমার দেহের প্রতি অণুতে অণুতে—মিশিরে দাও।
সেনোটাফের প্রয়েজন মিটে গেছে;
(কারণ ওটা লোকদেখানো আর জনিব অপচর নাত্র)।
তথু একটি ফুলের গাছ, পুরোনো বিখাদী ভূত্যের মত,
উবার সাথে সাথে অভ্যপ্র ফুল ঝরিরে দেবে
আমার সমাধির ওপর।
আর কবরের মাটিতে, চির-নিজায় শায়িত থেকেও
আমি দেখব, ক্রোঞ্চমিখ্নের প্রণরলীলা।
এবং শত্তবর্ধ পরে
তথ্যকার দেই কুষ্কের মুখে কলহাতা ফুটে উঠবে।
জমিতে প্রচুর শত্য;
মৃতদেহের সার।

একফালি রোদ্ধুর স্থা গুপ্তা

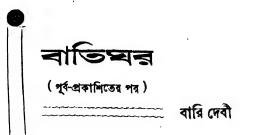
্কনগালি বাঁতা রোদ্ব ভাবিব মালিয়ে দিলে কত স্কল মনে। ছোট একফালি রোদ্ব, ও-বাড়ার কালিশ ঘেঁদে যে এনেছিল এ-বাড়ার ছোট উঠানে। সে এনেছিল দিনের খবর, আর— জীবনের একটুকু হানি। সে এনেছিল এ-বাড়ীর ঘোঁলা অন্ধকারের রাজ্যে আনন্দে-ভরা ফুল এক রাশি। ভাই—-এ-বাড়ার ছেলেদের মানে, কাডাকাড়ি পড়ে গেল মহা ধ্ননামে। ভার পর ছোট রোদ্ব হলে গেল হঠাংই, বেঁকে গেল গ্নাড়ীর থানে।

অব্যক্ত প্রতিমা চট্টোপাধ্যায়

এ মনের প্রাস্তদেশ জুড়ে
তথ্ এক নিঃসীম বিক্ততা জাগে।
আকাশ ডিছাড় করে যথন অবিশ্রান্ত বৃষ্টি ঝরে,
ছদরের শব্দহীন কাশ্লার মতো।
অন্তরের পুর্জাত ত ব্যথার সকরণ রাগিণী বাজে,
যথন প্রভাতের আবছা কুয়াশা-ঘেরা মাঠে
ঘাসে ঘাসে বিন্দু বিন্দু শিশিরের 'পরে;
ভোরের প্রথম আলো চিক্-চিক্ করে
গোপন অশ্রুব বেদনাবিষয় প্রকাশের মতো।
ছদরের অতলান্ত দেশে সব
থেলা শেষের চির-বিদারের ধ্বনি ওঠে,
যথন ছায়ামান গোধ্লি নামে পৃথিবার 'পরে,
অন্ধন্দার রাত্রি আসে আকাশের পটে ক্রন্ত পদস্কারে;
বর্ণহীন, রক্ষহীন, হিমনীল মৃত্যুর মতো।

দিন-রাত্রির কাব্য সঙ্ঘমিতা রায়

কবির কথা আর বেদনায়, ওমবে মরে ছাথের কাবাগানি হাসি-কারার মাঝে বিজপের কুটিল ক্রকুটি। জাবনের বাকা ক'টা দিন বিদারের শেবও জানায়, এ জাবন স্বক্তেই জানি। তবু হাসি মান হয়ে আমান কিছু কাটি ছাঁটি সাম্বনা লেথায় আমায় মায়্বের য়ত কথা জান, স্থা ও শাস্তির বত বাণী এ সবের আনো রাগিণী আজানাব বেড়াজালে ছাথের সেই কাব্যখানি, বাস্তবতা রচ্ অতি যম্থাদায়ক। জীবন-সংগ্রাম করি পেটে কিদে কটোর যম্বা জ্বার ক্রেম্ব কাব্য মানি আরক্তিম মুখটি লুকায়, কবি লিখেছে তথু সে কাব্যের সেই কি নায়ক?



কলকাতার আরো হুখানি বাঙ়া এই লোলকুঠি ছাড়া কলকাতার আরো হুখানি বাঙ়া এই হোল তোনার পৈত্রিক সম্পত্তি। শাস্ত মৃত্কঠে বলছিলেন সোমনাথ স্থামতাকে—আজ তার একটা স্থাবস্থা করবার জন্ম আমি এসেছি। হলে অপেকা করছেন করেকজন সাক্ষা এটার্টা আব রেজিট্রাব—একটু হেসে আবার বললেন তিনি—ভূমিই এ সম্পত্তির একমাত্র উত্তরাধিকারিনা। এর জন্ম কোনো উইল বাইনানপত্তার প্রয়োজন নেই। তবে আমি বেচে থাকাকালীন সেটার পূর্ণ অধিকার তোমরা পেতে পারো না, সে জন্ম আনাকে আইনতঃ তার ব্যবস্থা করে দিতে হবে। তবে— নীরব হলেন তিনি।

—তবে কি বাবা ? মৃত্বকঠে ভগোলো স্থমিতা।

কম্বলের ওপর পদ্মাসনে বসে চোথ বুঁজে কি যেন চিস্তা করছিলেন সোমনাথ। কপালে ফুটেছে কয়েকটি রেখা, চাপা বেদনার মান ছারা যেন আজ উঁকি মারছে তাঁর প্রশাস্ত সৌম্য বদনে। কন্তার প্রশ্নের জবাব দিলেন না তিনি, কোন্ গভীর সমস্যার নিবিড় অরণ্যে যেন পথ অব্যব্দ করছেন।

লাইত্রেরীকক্ষে তথন আর কারুর প্রবেশ নিবিদ্ধ ছিলো।

করেক মিনিট পরে চোথ থুললেন সোমনাথ। চাইলেন কলার দিকে। কোন অলোকিক দিব্য বিভা ঝলমল করছে ওঁর ছটি চোথে, তার তীব্রহাতি সইতে পাঝা যায় না।

—মিতৃ !

চম্কে উঠলো স্থমিতা পিতার ডাক ভনে !

ও কণ্ঠস্বর যেন এ পৃথিবীর নয়, কোন্ দ্ব-দ্বাস্তরের দিব্যলোক থেকে ভেসে আসছে ও ডাক।

অত্যন্ত কুঠার সঙ্গে ক্ষীণ কঠে বললো সে আমার,—আমার কিছু বলবেন বাবা ?

না। পূর্বের মত স্থান্তীর কঠে বললেন সোমনাথ। তোমার যদি কিছু বলবার থাকে নি:সঙ্কোচে বলতে পারো। কথার শেষে কন্তার মাথায় হাত রেথে নীরবে আশীর্বাদ করলেন বেন।

—বাবা! কেঁপে উঠছে স্থমিতার গলার স্বর।

—বলো মা! সঙ্কোচ কোবো না!

বাবা ! এ সম্পত্তির তুর্বহ বোঝাটা আমার ওপর চাপিয়ে দেবেন না । আমি এ বোঝা বইতে পারবো না বাবা ! আপনি কোনো সংকাজে এ-সব দান করে দিয়ে এর সদ্ব্যর করুন বাবা ! আর—কথা থামিয়ে মাটির দিকে চোথ নামালো স্থমিতা ।

বলে যাও, থেমো না !

দামীদা'কে সর্বস্থ কাঁকি দিয়েছেন ওঁর কাকা। ব্যবসা, বাড়ী কিছু নাকি ভার নেই বাবা! কালার ভাবে কেঁপে উঠলো স্থমিতার কণ্ঠস্বর । হু'চোখে আঁচিল চেপে ধরে বাঁধভাঙা অশুবক্তাকে রোধ করবার ব্যর্থ চেষ্টা করতে লাগলো স্থমিতা ।

সব জানি মিতু! পরম স্নেহভরে ওর পিঠে হাত বুলিয়ে বলতে লাগলেন সোমনাথ। আমার মা-ঠাকুমার পবিত্র রক্তধারার সন্মান তুমি আজ রক্ষা করেছো। মহা পরীকায় উত্তীর্ণা হলে আজ তুমি। সামনের অন্ধকার দেখে ভয় পেয়ো না মা! এর পরে আছে অনম্ভ জীবন, অনির্বাণ আলো। সে আলোর পথে চলবার অধিকার পাভ আজ করেছো তুমি।

উঠে দাঁড়ালেন তিনি।

গভীর শ্রদ্ধাভরে তাঁর ছটি পারের ওপর মাথা রেখে প্রধাম করলো স্থমিতা।

ওকে ত্ব'হাতে তুলে ধরে প্রগাঢ় স্নেহে নিজের বুকে টেনে নিয়ে ওর মাথার ওপর হাত রেথে অর্দ্ধনিমীলিত নেত্রে অক্ট্রুবের কি আশীর্কাদবাণী উচ্চারণ করলেন সোমনাথ। কোন এক ঐশ্বরিক মন:শক্তি দিব্যচৈতন্ত যেন ধীরে ধীরে নেমে আসছে স্থমিতার সঙ্কৃচিত অস্তুরে। জাগতিক সত্তা ভূবে যাচ্ছে মহাভাবসাগরের অতল গভীরে।

স্থমিতার সর্বাঙ্গে জেগেছে এক পুলক-কম্পন, সে কম্পনে আছে কি এক অনাস্থাদিত রোমাঞ্চ! ছুনয়নে ঝরছে দর-দর ধারায় আনন্দাশ্রু।

কেটে গেলো কয়েকটি হর্ল ভ মুহূর্ত।

কক্সাকে সঙ্গে করে হলঘরে এলেন সোমনাথ। একটু পৃথকভাবে বসলেন কম্বলাসনে !

আর সকাল বসেছিলেন সোফায়, চেয়ারে !

—সোমনাথকে নীচে বদতে দেখে সকলে উঠে গাঁড়ালেন সদস্তমে। আপনারা এথানেই বস্থন,—এবং কাজের স্থক্ন ককুন, বললেন সোমনাথ।

'প্রদীমও উপস্থিত ছিলো সেখানে, তির্থক দৃষ্টিতে চাইলো স্থমিতার দিকে। ক্রোধ আর বিরক্তিতে থমথম করছে ওর মুখখানা।

অপমানের আলায় সর্বাঙ্গ জ্বলছে ওর। ওকে বাদ দিয়ে মেরেকে নিয়ে গোপনে পরামণ করার মানে হচ্ছে সকলকার সামনে ওকে অপদস্থ করা। আছো, এর প্রতিশোধ কি ভাবে দিতে হয়, সেটাও দেপবে আজকের দর্শকরা। আগে সম্পতিটা হাতে আফুক।

করবী আর অনিলও বসেছিলো সেখানে সোমনাথের আদেশে.। মায়া দেবী আনাগোণা করছিলেন, আগন্ধকদের চা-জলখাবার ঠিকমত দেওয়া হল কি না তার তদারকে ব্যস্ত হয়ে ঘোরাঘূরি করছেন।

—এবার লিখন আপনারা—বক্সগস্ভার স্বরে আদেশ করলেন সোমনাথ!

—আমি প্রস্তত ! জবাব দিলিন আটিনি।

— আমার এত নম্বরের ওক্ত বালিগঞ্জের পৈত্রিক বসতবাড়ী লালকুঠি ও এক লক্ষ নগদ টাকা আমি দান করলাম আমার কল্পা স্থমিতা হালদারকে।

অ্যাটর্নি বিব্রতভাবে একবার চাইলেন সোমনাথের দিকে আর আড়চোথে দেখলেন অসীমের মুখখানা, তারপর লিখতে স্কুক্ন করলেন।

—হরেছে ? এবাবে লিখুন—আমার অমুক নম্বর এলগিন রোডের বাড়ী ও নগদ এক লক্ষ টাকা আমি দান করলাম—আমার স্বর্গীর বন্ধু মহিম হালদারের একমাত্র পুত্র শ্রীমান স্থদাম হালদারকে। গুরু-গুরু মেঘ গর্জানের সাথে সাথে, রাশি রাশি আগুনের সাপ বিলমিলিয়ে উঠলো আকাশে, ঘরগুদ্ধ সকলে একবার নড়ে চড়ে বসলো। পরস্পাবে মুথ চাওয়া-চাউরি কবলো। অসীমেব দৃষ্টি তথন ঘন মেঘাছের আকাশেব লিকে নিবদ্ধ। ত ত্ করে বইছে এলোমেলো বোড়ো হাওয়া, অত্মাণ মান। শীতের স্তক্তেই হুঠাং এমন বড়-বৃষ্টি ছালিয়ে মাবলে, তাই বোন হ্র তিতে। থাওবার বিকৃতি ওর চোথে-মুথে স্তস্পষ্ট।

—থ লিখুন, বললেন সোমনাথ—আমার এত নম্বরের থিয়েটার রোডেব বাড়া আব সাত লক্ষ টাকা আমি দান করলাম একটি চাসপাতালের জন্ম। এই হাসপাতালে আমার দেশের ত্বস্তু জনগণের চিকিংসাও সেরা হবে বিনা প্রসার। আর এই হাসপাতাল পঠন ও তরাবধানের ভাব দিলাম শ্রীমান স্থলাম হালদাবের ওপব। বাকি এক লক্ষ টাকাব ভৈতব থেকে আমি কৃছি হাজার টাকা দান করলাম আমাব কনিষ্ঠা শালিকা শ্রীমতী করবী চ্যাটাজ্জিকে। দশ হাজাব টাকা দিলাম আমাদের বুদ্ধ মালী রামভন্তন সিংকে, আর কৃষ্টি হাজাব টাকা দিলাম বুদ্ধাবনে শীগুক গোপী মহারাজের গোগাশ্রম।

বাকী পঞ্চাশ হাজাব বাাল্কে থাকবে আমার নামে, আমার মৃত্যুর পর ঐ টাকা যোগাশ্রমকে দেওয়া হবে।

নারৰ হলেন যোননাথ। বাইরে তথন প্রবল বেগে বর্ষণ স্কুরু

হয়েছে। ছবস্ত বাতাদের ঝাপটা লেগে ছুলে উঠছে দেওয়ালে বিলম্বিত দীর্ঘাকার অয়েল পেণ্টি ছবিজ্বলো। মনে হছে যেন পূর্ব-পুরুষদের ছবিগুলোর মানে অশবীনী আত্মার আবিষ্ঠার ঘটেছে, তাঁরা দল বেঁবে দেখতে এসেছেন সুযোগ্য বংশধরের কীর্ত্তিকলাপ। অভিশপ্ত সম্পতির সর্থেকতার বিপুল আনন্দোচ্ছাস ভারে ছলে উঠছেন ওঁরা। ওঁনের প্রতিভাদীপ্ত নরন থেকে ঝরে পুড়ছে নীরব আশীর্কাদ। শাস্ত দৃষ্টি মেলে, ছবিগুলোর দিকে চেয়েছিলো সুমিতা। দিন্য প্রশান্তির শাস্ত আলোর ঝলমল করছিলো ওর করুণ মুথথানি।

অনতিদ্বে কোথার কড়কড় শব্দে বাজ পড়লো, থর-থর করে কেঁপে উঠলো লালকুঠি! চারিদিক থেকে শাঁথ বাজতে লাগলো, সংহার লালা সংবরণ করার মিনতি জানিয়ে।

—আমার কিছু বলবার আছে !

চমকে উঠলো স্তমিতা। অসীমের ক**গ্রন্থরে যেন বন্ধপ্তনের** আব্রাজা

— ওর দিকে চোথ ফেবালেন সোমনাথ, ধীর কণ্ঠে বললেন, বলো!

—আপনার কলা মানে আনার স্ত্রী স্থমিতাকে ষেটুকু দান করতে চাইছেন, সেটা ওর প্রগোজন হবে না, বরং ওটা আপনি আশ্রম-টাশ্রমে দান করলে বাইরে আপনার স্থনাম হবে।



করেক মুহুর্ত নীরব থেকে একটু হাসলেন সোমনাথ, তারপর প্রশান্ত বদনে জবাব দিলেন—আমার যা করবার তা আমি শেব করেছি। ভবিষ্যতে স্থমিতা যদি ইচ্ছা করে, তবে দেই ওটা জনকল্যানে উৎসূর্গ করতে পারবে।

—ঠিক আছে, অধৈৰ্য্য ভাবে উঠে গাড়িয়ে বললো অসীম— এসো মিতা, আমার আর বদবার সময় নেই, কাজ আছে।

—সে কি ? এই বড়-বৃষ্টি মাণায় করে যাবে কোথায় ? বোসো, বোসো, একটু পরেই বৃষ্টি থেমে যাবে মনে হয়, বন্সলো অনিল।

—ধ্যাবাদ! তিক্ত কঠে জবাব দিলো অসীম। কুলি-মজুর থাটিয়ে থাই আমরা, ঝড়-বৃষ্টি থেকে গা বাঁচানোৰ ক্যাসান করা শোভা পায় না আমাদের মত ইত্য জনের!

— নিতাকে কাল আমি যাবাব পথে পৌছে দিয়ে যাবো, স্বশস্তীর স্ববে বললেন সোমনাথ।

—চাপা কোণে বক্তবর্ণ হয়ে উঠলো অসীমের মুখখানা। ছটোখে চক-চক করে উঠলো যেন তুই বিভাংশিখা আর তার তীব্র আসাভরা উত্তাপ ছিটকে গিরে লাগলো স্থমিতার সর্বাক্তে।

কি, তোমারও তাই ইচ্ছে নাকি? বাবে? না থাকবে? দীতে দীত ঘদে বললো অসীম।

কালট যাবো, ক্রীণ কণ্ঠে জ্বাব দিলো স্থমিতা। পিতার জ্বারেকট্ কাছে সরে বসে।

ঠিক আছে। মদ-মদ করে জুভোর শব্দ ভূলে ক্রতপদে ঘর থেকে বেরিরে গেলো অসীম।

অথও নীরবতার মাঝে কেটে গেলো করেক মিনিট। কোন্
হাই বাহুকর হঠাৎ বেন মন্ত্রবলে সকলকে বোবা করে দিরে গেছে !
ভগু টেবিলের ওপর বসে সোনার থাপের ভেতর থেকে মুখ বাড়িবে
ঠিক ঠিক ঠিক বিক' বলে যাচ্ছে সুইজারল্যাভের ঘড়িটা।

সাখনের বারান্ধার এক কোণে রূপোর গাঁড়ে বসেছিলো এ বার্ড়ীর বুড়ো কাকাতুরাটা। স্থমিতার আবাল্য সাধী সে। অনেকদিন পরে মিতাকে দেখে বিমুনি ছেড়ে আন্ধ হঠাং থুসিতে চঞ্চল হয়ে উঠেছে। জানলায় উড়ে বসে বার বার মুখ বাড়িয়ে দেখছে মিতাকে। আপন মনে বক বক করে বলে বাছিলো এতদিনের না বলা কথাওলো।

সকলকে জমন চুপচাপ দেখে সে-ও হঠাং থেমে গেলো। লাল লাল ক্ষুদে চোখণ্ডলো পিট-পিট করে গলা ক্ষুলিরে কি বেন বোঝবার চেষ্টা করলো—কারপর আচমকা হো-হো করে হেসে উঠলো।

সারাদিন ধরে চললো একটানা ঝড়-বুটি। সন্ধার পর মেঘমুক্ত নির্মাস আকাশে চাদের হাসি ছড়িয়ে পড়লো। প্রাশস্ত সাদা মার্কেল পাধরের বারান্দার বসেছিলেন সোমনাথ, নিকটে তাঁর উপবিষ্ট স্থমিতা আর করবী।

— লাচ্ছা আমাকে অভগুলো টাকা তথু তথু দিলেন কেন লামাইবাবু? আর দিলেন যদি, কি ভাবে তার সদ্ব্যর করবো সে উপদেশ আপনার কাছেই চাইছি—বিনীতভাবে বললো করবী।

-- ६व मिर्क कृत्य अक्टू शिनव मृत्य स्वाद मिरनान त्राभनाथ--

বিবাহ যদি না করে। তবে নিজের জীবন নির্বাহের জন্ত অর্থের প্রয়োজন আছে। তবে ক্রথনও যদি অর্থের প্রয়োজন নেই বোধ করো, তাহঙ্গে চিন্তা করে নিজেই এর সদগতি কোরো।

তেরচা ভাবে চাঁদের আলো ছড়িরে পড়েছে লালকুঠির মোটা মোটা থামগুলোর গারে। সেথান থেকে ধীরে ধীরে গড়িয়ে আলোর বক্সা নেমে 'এসেছে শুভ মর্বর-চন্বরের ওপর। কনকনে উত্ত্রে হাওয়ায় ভেসে আসছে স্বর্ণচাপা, লিউলি, বকুলের গন্ধ। আলো-আধারে মেশামিলি স্তর নিঝুম সাঁঝের মায়া বড় আনমনা করে তুলেছে স্থমিতাকে। অকারণে কেন ছুচোথ ভবে আসে কল।

ঠিক ছ বছর আগে এমনি দিনে চলে গেছে স্থদাম কোন স্থদ্র সাগরপাবে। এমনি চাপা বকুলের গল্প তথনও ছড়ানো ছিলো বাতাসে। তথন মনটা ছিলো ওর মধুর বিরহ বেদনায় ভরপুর, কিছ ছতাশার অধ্যকার ছিলো না তো ? অনাগত দিনের কত রঙিন স্থপ্প ভরা ছিলো সে দিনগুলো।

ভারপর ? কি বে হল ! সব মিলিয়ে গোলো ছারাছবির মতো, উ:।

দাঁত দিয়ে নিচের ঠোঁট সজোবে চেপে ধরে, উঠে গিয়ে বাগানের দিকে ঝুঁকে দাঁড়ালো স্থমিতা। তাড়াতাড়ি আঁচল দিয়ে মুছে ফেললো জলে ভরা চোথ হটো। ঝটপট আওয়াজে মুথ তুলে চাইলো দে— মহাশ্রে আলোর সার্বে সাঁতার দিয়ে ভেসে চলেছে একজোড়া হধ-শাদা বলাকা।

বৃকভাঙা একটা দীর্ঘদাস ওন্ন কেঁপে কেঁপে মিশে গেলো পুষ্পগদ্ধী বাতাদের সাথে। চমক ভাঙলো ওর দিদিমার ডাকে।

—ছখটা থেয়ে নাও তো মিতু! ছ'-সাত মাস খশুৰবাড়ীর ভাত থেয়ে কি ছিনি হয়েছে গো! মনে ৰাই। গলাৰ বন কেঁপে উন্দোধন।

স্থমিতা দিদিমার আদেশ পালন করলো। এঁটো ব্লাশটি ধর হাত থেকে জোর করে দিদিমা কেড়ে নিরে বললেন, এত সঙ্কোচ কিসের দিদি ? সেই একবন্তি থেকে তো এই দিদিমারই বুকে ছিলে, পরের ঘরে পাঠিরে কেমন করে যে বেঁচে আছি—বাকিটা আর বলতে পারলেন না, কালার ভাবে কঠ কর হয়ে গেলো তাঁর।

কুমালে চৌথ মুছতে মুছতে সোমনাথের কাছে গিরে বসলেন তিনি।—বাবা সোমনাথ! কাঁপা-কাঁপা গলার বললেন মারা দেবা— তুমি বে এত মহৎ একথা আগে বুঝিনি বাবা! আমার কণার অদৃতি এত সুথ সইলো না—এমন রামচন্দ্র স্বামী এমন রামরাজিধি ফেলে তাকে চলে বেতে হল বড় অসমরে। কুমালে চোক-নাক মুছে, আবার বলতে লাগলেন তিনি, সবই আমার এই পোড়া অদৃত্তের ফল বাবা, তা না হলে কি এত বড় মেরে আইবুড়ো থুবড়ি হরে চোথের ওপর ঘূরে বেড়ার? না অমন বিহান ছেলে বিয়ে করে একটা সিনেমার নটাকে?

কত আশা ছিলো বাবা, এই সূটো ছেলে-মেয়ের ওপর কি**ৰ** ^{স্ব} মিথ্যে হরে গেলো।

করবী একটু হাসলো সোমনাথের মুখের ওপর দৃষ্টি রেখে।

— শত শত আর নাই বা ভাবলেন, বললেন সোমনাথ, ওরা বর্চ হরেছে, বে বার পথে চলুক, বার বা করণীর কাজ তারা নিজেরট সম্পাদন করুক, এখন, ওলের দিকে নজর না দিরে আপনার নিজের চিস্থা করুন, বৌধ হয় এতেই শান্তি পাবেন। স্থলকে উৎপাদন কর a: ভৈরী করে দেওয়াই গাছের কাজ, কিন্তু সে ফল গাছ কোনোদিল াগ করে না, সময় হলেই ফল ফুল চলে যায় যেমন তার জননীর কাছ েক, মানুবের জাবনের তাই হয়, স্প্রীর রহন্তই এই। মাতা, পিতা, ্, পুত্র, কক্সা, সবাবই প্রয়োজন একটা নির্দিষ্ট সময়ের জন্ম, তারপর লের স্রোতে কৈ কোথায় হারিয়ে যায়, তার জন্ম শোক করা বৃথা। নম্ভ মহাকালের মহাসমুদ্রে প্রতি মুহুর্ত্তে ভেসে উঠছে অনস্ত জীব-াবুদ, ত্-চার দণ্ড লীলাখেলার তরঙ্গে ভেদে আবার মিশে বাচ্ছে গুসাগরের বুকে। কিন্তু কেন এই আগা-যাওয়া ? এই মহা ৰঞ্জাদার জক্সই ধোগী-ঋষিরা কঠোর তপতা করেছেন। তারপর সব রুনেছেন, পথের সন্ধান দিয়ে গেছেন পথভান্ত মাতৃষকে। একটু থেমে াবাব বললেন সোমনাথ—শোক, তু:খ, হতাশার জর্জরিত মানব-স্তানদের এঁরাই শুনিয়েছেন আশার বাণী, অভয় বাণী অমৃতের ৱান তুমি, মৃত্যু তোঁমার নেই। ধনী, দরিদ্র, স্করপ, কুরূপ, পশুত, র্বা, স্থানী, গ্রংখী, এসব ভোমার কণভঙ্গুর খোলস মাত্র। এক মুঠো লা এর স্বরূপ। আদল তুমি কি ? আর কে ? তারই অনুসন্ধান রো, নিজেকে জানো, সব জানার শেষ হবে। অনস্ত কামনার ষে নম্ব শিখা নিত্য দহন করছে তোমাকে, সাধনার অমৃতধারায় ঘটবে ার চিরনির্ব্বাণ ।

নীরব হলেন সোমলাথ। অলোকিক জ্যোতিপূর্ণ স্থির দৃষ্টি তাঁর গ্রশ্যু নিবন্ধ। নিবিষ্ট চিত্তে মায়া দেবী শুনছিলেন সোমনাথের থাগুলো। একটা লম্বা নিংখাস ফেলে বললেন—

— শাসা, তোমার কথা শুনে বুকটা যেন জুড়িয়ে গেলো বাবা !
মন জ্ঞানের কথা আরে কেউ শোনারনি কথনও। এখন মনে হচ্ছে
বিনটাকে বাজে খরচ করেছি বাবা ! তুমি ঠিকই বলেছো, সব খাঁটি
খা, কেউ কাঙ্গর নয়। তাই এখন ইচ্ছে করে এসব ছাই-ভন্ম কেলে
ন কতক তীর্ষবাস করি ধন্ম-কন্মো করি; জানি না বাবা,
। কণালে ওসব হবে কি না। সংখদে কপালে হাত দিলেন তিনি।
— প্রবল ইচ্ছা খাঁকলে অবশুই হবে। ধীর কঠে জবাব দিলেন

সব কিছু যেন আজ নতুন ঠেকছে স্থমিতার কাছে। রেলিংএ

লান দিরে ক্ষাভ়িরে সে শুনছিলো ওদের শাগুলা। বিহ্বল দৃষ্টি মেলে দেখছিলো, ক্ষ পারাণ গিরিকল্বর থেকে কেমন করে দুন্ন লাক ধারে ঝরে পড়ছে মল্লাকিনীর ইম্পারা! মিতভাষী, উনাসীন, অটল গাঁটীব্যের বর্ষে ঢাকা পিতার যে কঠোর গাঁটী এতদিন সকলকে দূরে সরিয়ে মুর্ছলো, আজ সে রূপের এ কি নিচ্যা বিবর্জন! কোখার লুক্তিরেছিলো ই রেছপ্রত্রন! আর সেই রুড়ভাবিশী, বলা ব্যক্তিক্সম্পারা অভিদান্তিকা দিদিমা! শীল বন সেহকক্ষপামরী মৃত্ভাবিশী মুহা বিগলিতা!

गेमनाथ ।

হার ! আগে কোথার ছিলো এ ক্ষতি বস্তু ? হার অভাবে ওর স্থাদর-শাকট পরিমূর্শ আনন্দের আলোয় দল মেলে ফুটে উঠতে পারেনি? সঙ্কোচ-কুহে**লিকায় সে গেলো** বিশীৰ্ণ হয়ে।

না, না, বাবার কথাই ঠিক। যখন যা হবার, তথনই তাই হয়, আগেও নয়, পরেও নয়। যা তার পাওনা ছিলো তাই পেয়েছে সে।

থপ থপ করে চেককটো কালে। কম্বলটা গায়ে জড়িরে বারান্দার এনে দাঁড়ালো রামভজন সিং। চাঁদের আলোয় মিতাকে দাঁড়িরে থাকতে দেথে হঠাং বিবম চমকে উঠে স্থিব হয়ে দাঁড়ালো। তারপর হাতজ্ঞাড় করে বললো, উধারে কেন মায়ী ? রাজলছমী। এ বুঢ়ার শিবমে দাঁড়াও মা! হা-হা করে কেনে, উপুড় হরে দূর থেকে সাম্লাজে প্রণাম করলো রামভজন সিং।

— অবাক স্থমিতা— হুটে এসে ত্-হাতে বুড়োকে তুলে ধরে বললো—একি একি ! ভজনদা', কি হল তোমার ?

সোমনাথও বিশ্বিত ভাবে চেয়ে রইলেন ওর দিকে।

তু-হাতে চোথ মুছে কাঁপা-কাঁপা স্বরে বললো বুড়ো,—ভীমরথী ধরেছে দিদি ও কিছু না।

জরাভারে মুয়েপড়া দেহটাকে টেনে টেনে এগিরে নিরে সোমনাথের কাছে গিয়ে বসে, হাপাতে লাগলো রামভজন। স্থমিতাঞ্জ বসলো ওর পাশে, ওর পিঠে হাত বুলিয়ে স্লেহকোমল কঠে বললেন সোমনাখ—এতটা সিঁড়ি ভেত্তে ওপরে উঠলে কেন ভজন সিং? মিতুকে দেখে হঠাং অমন চমকেই বা উঠলে কেন, বলে ফেলোতো ব্যাপারটা কি?

—বলবো ? আছো কগছি বাবা ! ফুটফুটে আলোর মনে হল, না, না মনে হল না, একেবারে প্রতই বেন দেখলাম গাঁড়িরে আছেন বহুরাণী কমলা দেবা ।

সেই কত কাল আগে—নাবা তুমি অথন এতটুকু এই বছর থানেকের ছিলে, তথন পেরায় রাত এথানেই দাঁড়িয়ে থাকতে দেখেছি বছরাণাকে। একদিন হাতছানি দিয়ে তিনি ডাকলেন আমার, আমি এমনি করে এসেছিলাম এইথানে। দেখি ফুটফুটে চাদের আলা মেথে দাঁড়িয়ে আছেন তিনি, আহা



রাপকথার রাজকুমা

মুন্নি যখন আমার নতুন তৈরী করা ফ্রুকটা পরলো তথন আনন্দে উচ্ছসিত হয়ে উঠলো। ফ্রক্টাও আমি অনেক যত্ন করে তৈরী করেছিলাম—সাদা ধব্ধবে জামার ওপর ছোট্ট নীল ফুলের পাড় দিয়ে। আনন্দে ভাষাতে লাফাতে মুরি আয়নার সামনে গেলো। ঘুরে ফিরে চারিদিক থেকে মুলি তার ফ্রক্টা দেখলো তার-

পর ছটলো তার বন্ধদের দেখাতে তার নতুন জামা, তক্ষনি বিকাল পর্যান্ত অপেকা না করতে পেরে। षामि टैिं हि ए जिन्हाम अल, "मूबि, मूबि नजून क्षकृति शुल या - छते। मञ्जा श्रय याद त्य छते। श्रव বিষের নেমন্তক্ষে যাবিনা ?" মুন্নি ততক্ষণে বাড়ীর থেকে বহুত্রে। নতুন ফ্রক্টা পরে মুন্নিকে দেখে মনে হলো আমার যেন কোন এক পরীর দেশের রাজক্তা, ওকে পতিটে মানিয়েছিলো, আর সতিটে এত স্থলর লাগছিল। একবার ভাবলাম ডাকি ওকে কারণ ফ্রকটা ওকে পরতে দিয়েছিলাম শুধু ঠিক হয় কিনা দেখার জন্ম। ইতিমধ্যে বালা ঘরের থেকে কি যেন একটা পোড়ার গন্ধ পেয়ে আমি উঠে গেলাম, তারপর আর আমার থেয়ালই ছিলনা। আমার তুস হল যথন রাধার গলা শুনলাম দরভার সামনে।

রাধাকে দেখে খুব খুণী হলাম এবং ওকে নিয়ে যখন বসার খরে এলাম, দেখি মুলি দরজায় দাঁড়িয়ে।

ওকে দেখেই আমি মেগে আগুণ-ক্রক্টা একদম নোংরা করে ফেলেছে—বিয়েতে যাওয়ার সময় পরবেই বা কি? "ফ্রক্টার কি ছিরিই করেছো এখন পরবে কি বিকালে" বলে আমি ওচক মারতে যাচ্ছিলাম এখন সময় রাধা মুলিকে সরিয়ে নিয়ে আমায় ধ্নকালো—" তোর মাথা থারাপ





হল নাকি' এতিটুকু বাচ্চাকে মারছিদ। "মুন্নি বাঁচলো আর ফ্রক্টা থুলে রাথলো তাড়াতাড়ি।"

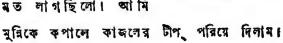
ফক্টা নিয়ে আমি কল্ডলায় পরিকার করতে এলাম এবং যথন ফকটাকে আছড়াতে যাচ্ছি, রাধা বললো" মেয়ের প্রসার রাগটা কি ফ্রক্রে ওপর ফলাবি!"

"এটা না কাচলে ও পরবেটা কি ? অগু ভাল জামা যে আর নেই" আমি বললাম। রাধা বললো, "কিন্তু ওটা আছড়ালে ছিঁড়ে যাবে যে।"

আমি বলসাম "না আছড়ালেই বা কাচবো কি করে ?"
"আছড়াবার কি দরকার—ভাল সাবান ব্যবহার করলেই
হয়। আমি তো সানলাইট ব্যবহার করি।" "কিন্তু সানলাইট কি সভ্যিই এক ভাল সাবান ?" "সভ্যিই সানলাইটে জামা-১৮. 3 B-3562 BG কাশড় সাদা ও উদ্দেশ হয়। এবং এটা এ**ত বিশুদ্ধ বে** এতে কাশড়ের বিভূ ক্ষতি হয় না।"

"কিন্তু সানশাইটে থরচা বেণী পড়েনা ?" রাধা তো হেসেই আক্ল—" সে কিরে, ভেবে গুথ একটু ব্যলেই সানলাইটে এত ফেনা হয় যে এক গাদা জামাকাপড় কাচা চলে অল্প সমরেই সাদা ধব্ধবে করে। এছাড়া পিটে আছড়ে কাপড়েরী

সর্বনাশও হয়না, নিজেরও
কামেলা বাঁচে কতো — এর
পরেও তুই বলবি থরচা বেনী।"
তক্ষ্নি আমি একটা সানলাইট
সাবান আনালাম এবং কাচা
তক্ষ করতেই ক্রকটা
ফেনার স্তুপে ভরে গেলো
আর দেখতে দেখতে
সাদা ধব্ধবে হলো।
সংস্কোবেলা নতুন কাচা
ক্রকটা পরে ম্মিকে
স্তিট্র পরীদের
গল্পের রাজকুমারীর
মত লাগছিলো। আমি





रिन्द्शन लिखात निः, **लाबारे**

মুখখানা কি ত্থভরা, আমি ওধোলাম, আমার কেন ডাক্লেন বছরাণী!

—একবার নাচ-ঘরে গিয়ে খবর নাও না জন্মন সিং, কুমার সায়েব কেমন আছেন? কাল থেকে অর হয়েছে, কত বারণ করলুম তানলেন না, নিচে চলে গোলেন, আঁচলে চোথ মুছতে লাগলেন বছরাণী। তারপরে বললেন, অত হৈ-চৈ করছে বন্ধ্বান্ধবরা কন্ধক, একটু আড়ালে ডেকে ওদের আমার নাম করে বোলো, কুমার সায়েবের বেমার আছে, মদ বেন ওঁকেই কেউ না খাওরায় ডাংদারের নিষেধ আছে।

মা লক্ষ্মকৈ প্রায়ই দেখতাম এখানে ভর দিয়ে মুখ নিচ্ করে দাঁড়িয়ে থাকতে, ঐ কোণ থেকে নিচের হল কামরাটা নজরে পড়ে কি না তাই। একট থেমে, দম নিয়ে আবার বললো রামভজন।

— আজ হঠাং মিতা দিদিকে মনে হয়েছিলো একেবারে অবিকল বহুরাণী! আহা যেন আমার জনম-ত্থিনী সীতামাঈ।

ময়লা কাপড়ের খুঁট ছ-হাতে তুলে চোথ মুছলো রামভন্তন সি:।

—ভূল দেখোনি জজন সিং, ধরাগলার বললেন সোমনাথ, জামার মা-ই দেছ পাল্টে এসেছেন মেরে হয়ে। তাঁর স্বামীর পাপ, এ বংশের পাপের কালি ধূরে মুছে এ বংশকে শাপমুক্ত করবার জন্তে বে আসতেই হবে তাঁকে! বার বার জীবনদান করে সমস্ত জপরাধের ঋণ 'শোধ না করা পর্যান্ত নিষ্কৃতি যে তাঁর নেই ভজনসিং! তাঁর সন্তানেরও নেই!

মহাশ্রের দিকে উদাস আঁথি মেলে নীবৰ হলেন দোমনাথ। পরম বিশ্বয়ে দেখলো স্থমিন্তা, চাদের আলোয় তাঁর জলেভরা চোখ স্থটো যেন চক-চক করছে!

— অমন অনুকুণে কথা বোলা লা বাবা! কবে কি ছয়ে গেছে, সে সব কথা যাক, এখন আৰীৰ্বাদ করো মেয়েটা ভোমার যেন সুখী ছয়! বললেন মায়া দেবী।

জবাব দিলেন না সোমনাথ, কি এক গভীর চিস্তার যেন মগ্ন রইলেন।

- —একটা কথা ভূধাতে যে এসেছিলাম বাবা ! বললো রামভক্ষন ছুহাত কচলে !
- —বলো! বেন অনূব থেকে ভেসে আসা সোমনাথের কণ্ঠস্বর!
 - —এই এতগুলো টাকা দিলে কেন বাবা ঘাটের মড়াটাকে ?
- —কভদিন বাঁচৰে বলা তো বায় না বামতজন ! না চয় দেশে ফিরে যাও, আরাম করে হু'-চারদিন থাকো গে, তারপর ভালো কাজে টাকাটা দান করে দিও!
- অনেক, অনেক আরাম করেছি বাবা, অনেক ভালো-মশ খেরেছি ভোমাদের কাছে! তেমন আরাম আজকালকার হাল স্কাদনের বড় প্লাকেরা কেউ কখনো চোধেও দেখেনি!
- দিদিমার দিকে একবার আড়চোাথ তাকিয়ে—আবার বললো বৃড়ো—এই আজকালই না হয় বৃড়ো মালী হয়েছি বাবা—কিন্তু ভোমার বাবার আমলে তাঁর ইয়ারবিদ্ধানের সঙ্গে একসঙ্গে থানাপিনা কবিরেছেন আমাকে তোমার বাবা! আর যাই হোক অমন দরাজ্ব দিল কোথাও কেউ থুঁজে পাবে না বাবা, এ আমি বলে দিলাম! আধু দেশ মুলুক সুবই আমাব এই লাসকুঠি। সেই কডটুকুন এসেছি

এথানে, সারা জীবনটা ভো কাটালুম, আর ক'টা দিন। মিতু দিদিকে হোড়কে বে আমার বেহাজেও বেতে দিল চার না বাবা !

- —ভাই নাকি ? হেসে ব্ললো করবী, আমাদের ভাছদে ভূমি একটুও ভালোবাসো না ?
- —আবে না, না কবি দিদি! তা নয়, তা নয়, এই বক্ষিপুরীর ঐ একটা মানিক কি না তাই বলছিলুম ঐ কথা, ভালো আমি সবাইকেই বাসি।

রাগে মুখ হাঁড়ি করে বসেছিলেন দিদিমা। উঠে দাঁড়িরে বললেন—যাই বাবা, নটা-বো হরতো বেড়িয়ে ফিরবেন এখুনি, রান্নাবান্নার কি করছে বামুনটা দেখে আসি। একটা অলম্ভ দৃষ্টি রামভন্তনের দিকে ছুঁড়ে দিয়ে অমুচ্চকঠে বিড়-বিড় করে বললেন, বুড়ো ভাল্পকটা আবার এখানেও আলাতে এসেছে, আ-মোলো বা। ঘাটের মড়া। ত্ম ত্ম করে পা ফেলে চলে গেলেন তিনি।

করবী মায়ের দিকে চেয়ে জ্ব কোঁচকালো। মৃত্ হেসে বললেন সোমনাথ।—যা ভালো বোঝো কোরো ভজনসিং। জামি তো কালই রওনা হবো। বৃন্দাবনে থাকবো মাস ত্রেক, তারপর মানস স্বোবর যাত্রা করবো।

- —কতদিন পরে আপনি আবার ফিরবেন বাবা ? কাতরম্বরে শুরোলো স্থমিতা।
- —এখানে তো আর ফিরবো না মা! এ বাড়ীতো এখন আর আমার নয়। গাঢ় স্বরে কললেন সোমনাথ, তবে সময় হলেই আবার দেখা হবে তোমার সঙ্গে।

নির্মেষ আকাশের গায়ে ভেসে এলো একথানি ঘন কালো চলস্ত মেঘ, ঢেকে 'দিলো আলোঝরা চাদকে। চাপা, বকুলের গদে মাতাল তবস্ত উত্তরে বাতাস সকলকার অঙ্গে দিয়ে গোলো হিমনীতল পরশ। টি টি শব্দে করুণ আর্তুনাদ করে গাছের ভেতর থেকে উড়ে গেলো একটা রাতভাগা পাখী।

- —বাবা! কাল্লাব ভাবে কেঁপে উঠলো স্থমিভাব কণ্ঠস্বর।
- —বলো, মা! ওর পিঠে হাত রাখলেন সোমনাথ।
- আবার আপনার সঙ্গে দেখা হবে তো ?
- —কিছু বিলম্বে হবে মা! একটা চাপা দীর্ঘবাসের সঙ্গে জবাব দিলেন তিনি।
- —কি যেন একটা ভর আমার মনটাকে পেরে বসেছে বাবা! কিছুই ব্যুতে পারি না। দামীদা চলে গেলো, আপনি চলে গেলেন, ঠিক তারপর থেকে কেমন ভরের ছারা বেন আমার সঙ্গে সঙ্গে ঘুরে বেড়ার আর রাত হলে আমি ঘুমের ঘোরে প্রারই দেখি কি ভরানক কালো সমুদ্দ্র, শো-শো করে গর্জন করছে আর আমি ভূবে বাছি তার ভেতর! ঠিক ঐ বাতিঘর ছবিটার মতই একটা আলো অলছে দ্বে, আমি প্রাণপণ চেষ্টার এগিরে বেতে চাই তার কাছে, কিছু বাবা, দে সরে বার। উঃ, তথন কি যে কষ্টের ভেতর ফুমটা ভেত্রে বার আর শরীর মন সব কেমন অভ্নির হরে ওঠে। ভাই মনে হর বারা, আপনি কাছে থাকলে বোধ হর ঐ ভরানক স্বপ্লটা আর দেগতে হবে না, সব ভবের ছারাগুলো আর আমার সঙ্গে ব্রবে না, তথন আবার আমি সুস্ক হরে উঠবো বোধ হর।

কয়েক মিনিট চোথ বুজে নীরব রইলেন দোমনাথ। হাতের উন্টো পিঠ দিরে বার বার চোথ মুছছিলো বুড়ো ভজন সিং। করবীও মুখ ফিরিরেছে অন্ত দিকে, চোথের জলে ভেসে যাচ্ছে তার গাল হুটো।
চোথ চাইলেন সোমনাথ। স্থমিতার মাথার হাত বুলিরে গাঢ়খরে
বললেন—আমি লৌকিক পিতা মাত্র। তোমাকে - এ কর্মফল
মহাদাগরের করাল প্রাদ থেকে রক্ষা করে সকল শস্তামুক্ত করতে পারেন
একমাত্র জগংপিতা। তুমি মনে-প্রাণে তাঁর সহারতা প্রার্থনা করে।
মা! এই মহা অন্ধকার হুন্তর সাগর পেরিরে সেই অনির্বাণ জ্যোতিকে
অবক্তই লাভ করবে। অনস্তকালের মহাসাগরে জন্ম-জন্মান্তররূপ
টেউরে টেউরে ভেসে চলেছি জামরা তাঁরই দিকে। বাসনা কামনার
বড়-বল্পা, সদসং কর্মের বিভীবিকা চারিদিকে। ভর পেরো না, লক্ষান্তরি
হোয়ো না, আলোর সন্ধানে এগিরে যাও তাঁকে স্মরণ করে। ভর

নেই, কোনো ভর নেই তোমার, আলোর তীর্থে ধাবার শক্তি আর অধিকার লাভ করেছো তুমি। নীরব হলেন সোমনাথ। **তথু তাঁর** হাতথানি ধীরে ধীরে সঞ্চালিত হতে লাগলো কল্পার মাথার, পিঠের ওপর। অলোকিক শক্তি যেন সঞ্চারিত করছেন কল্পার। দেহে-মনে।

আবার সেই আনাখাদিত রোমাঞ্চ জাগলো স্থমিতার সর্বাজে। কোন দিব্যভাবের মৃত্ কম্পনে কেঁপে উঠলো দেহ-মন। দর-দর করে ত্' চোথে নেমেছে পুলক-বেদনার অশ্রুধারা। অবনত হয়ে পিতার চরণে মাথা রাখলো স্থমিতা। উষ্ণারায় সিক্ত হতে লাগলো তাঁর চরণ-মুগল।

শ্রেষ্ঠ উপদেশ শ্রীঅর্থিক দাশগুর

শ্রেকিয়া বিজয়লক্ষ্মী পশুনের নাম আজ দেশ-বিদেশে স্থপরিচিত।
স্বর্গত মতিলাল নেহেক্বর কল্পা অথবা শ্রক্ষেয় প্রধানমন্ত্রীর ভগিনী
হিদাবেই তিনি খ্যাতি লাভ করেননি, নিজের কীর্তিতেও তিনি
ইতিহাসে স্বরণীর হবার যোগ্যতা অর্জন করেছেন। ভারতের স্বাধানতাসংগ্রামে সক্রিয় অংশ গ্রহণ করে তিনি একাধিক বার কারাবরণ
করেছেন ও স্বাধানতার পর অনেক গুরুহপূর্ণ পদ যোগ্যতার সঙ্গে পূর্ণ
করে মাভূভ্মির গৌরব বৃদ্ধি করেছেন। ১৯৫৩-৫৪ সালে তিনি
ইউনাইটেড নেশনস-এর সভাপতি নির্বাচিত হন, তার পর মথাক্রমে
আমেরিকা ও রাশিরাতে চারি বংসর ভারতের রাষ্ট্রপৃত ছিলেন।
বর্তমানে তিনি বিলাতে ভারতের হাই-কমিশনার পদে অধিষ্টিত
আছেন।

ক্ষেক ইনংসর আগে তিনি একটা বিলাতী পত্রিকাতে প্রবন্ধ লিখেছিলেন "আমার শ্রেষ্ঠ উপদেশ।" সে প্রবন্ধটার কিষদংশের তাংপধ্য নীচে দেওরা হোল।

"দেশ স্বাধীন হ্বার করেক বংসর পূর্বে তাঁর স্বামীর মৃত্যু হয়।
সে সমরে তাঁর জ্যেষ্ঠ দ্রাতা শ্রীমৃক্ত জওহরলাল নেহেরু কারাগারে ও
তাঁর কক্সারা আমেরিকার শিকারত। শোকে মৃত্যুমানা হরে তিনি
শান্তির অবেবণে স্থির করলেন দেশের বাইরে চলে বেতে। যাত্রার
দিন-ক্ষণ ঠিক করে তিনি এলেন গান্ধীজির কাছে বিদার নিতে।
কথান্তরে গান্ধীজি জিক্তাসা করলেন, 'ভোমার স্বামীর আস্থারদের
সঙ্গে সভাব স্থাপন করেছ ত ?"

বৈধব্য-শোক ছাড়াও নানান পারিবারিক ব্যাপারে তাঁর মন তথন বিক্ষিপ্ত হয়েছিল। বৈবয়িক কারণে স্থামীর আত্মীয়দের উপর তিনি অত্যস্ত অপ্রসন্ধ ছিলেন। তাঁদের সঙ্গে তথনও দেখা করেন নিও আদো •দেখা করার ইচ্ছা তাঁর ছিল না। বেশ রুড় ভাবে গান্ধীজিকে জ্বাব দিলেন, "বারা আমার ক্ষতি করতে চেষ্টা করছে তাদের সঙ্গে আমি কিছুতেই দেখা করব না। বাপু, তুমি বললেও না।"

াদীন্ধি বোধ হয় এত রঢ় উত্তর আশা করেন নি। থানিককণ জানালা দিয়ে বাইরের দিকে তাকিয়ে রইলেন। তারপর নিস্তুৰতা ভঙ্গ করে আবার বোঝাতে সুকু করলেন "তোমার উচিত যাবার আগে তাদের সক্ষে দেখা করে বাওয়। এদেশে আমরা এখনও এ সব সোজিল্পে বিধাস করি। তুমি অন্ধরী, তাই তুমি দেশের বাইরে যাছে শান্তির অন্ধেরণে। কিন্তু অন্তর বদি তোমার স্বছে না থাকে তবে তুমি কি দেশের বাইরে গিরে শান্তি পাবে? তুমি অতি প্রিয়জনকে হারিয়েছ। এ গভীর ক্ষত তুলতে হলে নিজেকে কুদ্র কর। সব অভিমান বিসর্জ্বন দাও। নিজের অন্তর্গ পরিকার কর। তা না হলে তোমার আহত মন শুধু আরও আঘাত পাবে। কেউ তোমার ক্ষতি করতে পাবে না, যদি না তুরি নিজে তোমার ক্ষতি কর। (Nobody can harm you except yourself)."

ভার মন ষতই বিদ্রোহ করুক না কেন, গান্ধীজির কথাঙালি তিনি কিছুতেই মন থেকে ঝেড়ে ফেলতে পারলেন না। মনের সঙ্গে আনেক সংখ্যাম করে শেবে তাঁকে পরাজয় স্থীকার করতে হোল। সব পাতিমান বিসম্পান দিয়ে তিনি গোলেন তাঁর পরলোকগত স্বামীর আস্থীয়দের সঙ্গে দেখা করতে। অল্লক্ষণ কথাবার্ত্তা বলেই কুরতে পারলেন বে তিনি তাঁদের ভূল বুঝেছিলেন। তিনি উপযাচক হয়ে দেখা করতে যাওয়ার সমস্ত আবহাওয়াটাই বদলে গোল। সকলেরই মন হালকা হয়ে গেল। তিনি বুঝতে পারলেন গান্ধীজির উপদেশটা কত ম্লাবান! মস্ত একটা বোঝা মন থেকে দ্ব করে তিনি রওয়ানা হলেন গান্ধবা স্থান আনেরিকায়।

সংসারের ঘাত-প্রতিঘাতে বা অবস্থা বিপর্যয়ে জীবনে এক-একটা
সমর আসে ধখন আমরা নিজেদের উপর আস্থা হারিয়ে ফেলি ও শতথা
কঞ্চারিত অন্তরে মনে করি সকলেই আমাদের শত্রু, আমাদের অনিষ্ট
করতে ঠেষ্টা করছে। বিশ্বেষপূর্ণ অন্তরে আমরা মনে করি বৃথি বিশ্বেষ
দিয়ে বিশ্বেষকে জয় করা যায়—ফলে বিশ্বেষর বহি বেড়েই চলে আর
সে বহিতে নিজেরাই সব চেয়ে বেশী মরি ফলে-পুড়ে। আমরা ভূলে
বাই 'অন্তর থেকে বিশ্বেষ দূর না করতে পারলে শান্তি মিলে না।

বিজয়লক্ষী পণ্ডিতকে দেওয়া গাছিজীর উপদেশ—"Nobody can harm you except yourself" সর্ব্ব দেশের সর্ব্ব লোকের জন্তেই শ্রেষ্ঠ উপদেশ। আকাশের শ্রেক্তবার মতন সকলের অস্তব্ধে সর্ব্ব সময়ে জাকল্যমান রাখা উচিত।

কবি কর্ণপূর-বিরচিত

আনন্দ-রন্দাবন

[পূর্ব-প্রকাশিকের পর] অমুবাদক— শ্রীপ্রবোধেন্দুনাথ ঠাকুর

২১। স্থা ও চংশের সমতা উপাসরি করতে করতে প্রস্থাসীরা বসকলে এই আক্মিক ঘটনার মীমাংসায় ব্যাপৃত, ততক্ষণে সেধানে উপাছত হয়ে গেকেন প্রস্থাক শ্রীনন্দ। তিনিও দেশলেন। দেশতে দেশতে তাঁরও মুখে বিন্দু বিন্দু ফুটে উঠস উপার হাসির অমৃত। পিতৃমুখের সেই উল্লেসিত সৌন্দর্যা দেখে, আহ্লোদে নেচে উঠল বাসক্ষ্যেরও মন।

এগিবে এলেন ব্ৰহ্মান, নিজেব হাতে বাঁধন খুলে দিলেন নীলালিণ্ডর। কোলে তুলে নিলেন। তারপর ফিবে চাইলেন ব্রহ্মাণীর দিকে, ঐ বিনি তাঁর সভা উজ্জ্বল করে থাকেন, এবং ঐ বিনি তাঁর অতিকর্মকুশলা, তাঁর দিকে। নিলাচ্ছলে বললেন, বড় জনার্য্য করেছেন জাপনি। বলেই ব্রহ্মাণের জকমাং মনে পড়ে গেল মহর্বি গর্গের বাণী নারায়ণসমো ভূপৈং"; বুরভে পারলেন, এ তাঁর মহিমা জানা ছেলেটিরই কার্তি।

২২। সহচর বালকেরা বলে উঠলেন—আমানের কুক্রের কোনো দোব নেই। কোনো পাপ করেনি ও। ও কেবল বাধন-শুছু উপুধলটাকে একটু বাকিষেছিল। ভারপর বেই একটু চাপ দিরে না টেনেছে, অমনি মড়মড়িরে উপতে এল গাছ ছটো। উপত্তি একজনও কিছু বিখাস করলেন না ভাঁদের কথা।

বিনি বিখ-সন্তির ব্যহপথ, তাঁরি কল্যাণার্থ তথন স্বস্ত্যুরন করালেন ব্রহ্মান । আদি ও অক্ষন্ত ব্রীনাবারণের অপেকাও বিনি গুণাধিক গুণসম্পান্ন সেই প্রীকুফের আরম্ভি করলেন ব্রহ্মান্ত দ্বি দুর্বা ও অক্ষন্ত দিয়ে। গন্ধীর নির্যোধে বেক্ষে উঠল মঙ্গলভূর্ব। ভারণেরে লীলাবালককে কোলে নিয়ে স্বান্তবনে প্রেবেশ করলেন খোষাধীশ।

২৩। আর একদিনের কথা। বহজবালকদের সঙ্গে নিরে ধুলোখেলার মেতে উঠেছেন বালকুষ্ণ। এ খেলার বেন এক নতুন রসের আবাদ। নিজের বেণুতে বেমন ধুসর হয় নীল পল্ল, ধুলাট দীলাতেও তেমনি হুর্দশা ঘটে বালকুষ্ণের আমল তহুর। তবু কত , লে ব্ৌতুক এ খেলার!

টাকাটা দান করে দিও ! ধলোটথেলা। বেন কত আবেশের থেলা।

—অনেক, অনেক আরাম[া] য্বে খেলা। একরন্তি মেযের মত খেরেছি তোমাদের কাছে ৷ তেম্থেলা ৷ সময়ের জ্ঞান থাকে না কাসনের বড় লোকেরা কেউ কথনো চোধে

—দিদিমার দিকে একবার আড়চোাকে সঙ্গে নিয়ে বৃক্ত এখনও বৃদ্দো—এই আজকালই না হয় বৃদ্দো মালী গ্রায়ের প্রাণ। বাধার আমলে তাঁর ইয়ারবিশ্বদের সক্ষেষ্ট হবারই কথা, ভুট হবার

বাৰার আমলে তাঁর ইয়ারবিদ্ধানের সক্ষেষ্ট হবারই কথা, তুই হবার কবিয়েছেন আমাকে তোমার বাবা ! আরখানি দরার বেছেতু পূর্ব, দিল কোথাও কেউ খুঁজে পাবে না বাবা, গণাঠিবে দিলেন কি হয়েছে, আধ দেশ রুলুক সবই আমাব এই লালকুঠি।কাল হয় না বে বশোষভীর। বোহিনী দেবী আড়াতাড়ি হাঁটতে ইটেতে চললেন। অবসর হরে পড়ল অনভাজ চরণ, পা বেন আর গারে নেই। ভাই দূব বেকেই টেচিয়ে বললেন—

বলি ও ছ্লাল, সকাল খেকে এ সব কি আরম্ভ করেছির বলতো? তোর খেলার বিভি বে দিন দিন বেড়েই চলেছে। খুবে ফেবার নামটি নেই। এ কি ঘরভোলা ছেলে রে বাবা! আকাশের ঠিক মন্ত্রিখানে পূর্বিদেব, কপাল খেকে টস্টস করে খাম বরছে, আর ছুই মোদের ননীর ছেলে, পাড়িরে গাড়িরে ঠার রোদ্ধুরে মার খাছিল। খেলা থামা। খেলাটি রেখে এবার ছ্লাল খরেছে এস। দালা বলরামের সংজ একসজে নেরে খেরে মারের মন ছুড়োবে এগ।

২৪। জ্রীবোহিণীর এক বলাও বিফলে গেল। কে কার কথা শোনে! খেলেই চলেছেন কৃষ্ণ ছেলে। বলরামের মা তথন হনহনিয়ে খরের পানে ফিরে চললেন। ভাই না দেখে কেমন খেন দমে গেলেন ব্রক্তেখ্রী।

কী বছণা—একবার বল তো। ভাড়াতাড়ি ছুটে এলেন ব্রক্ষেরী। বলরামকে ডাক দিয়ে বললেন—বাছা রাম, শীগাসির দৌড়ে এল। হিতক্থা কানে নাও। ভোমার মুখ চেয়ে বজরাজও না খেয়ে বঙ্গে আছেন।

ভারপবে বিশেষ করে বললেন—বাছা কৃষ্ণ, আঞ্চ ভোমার জন্ম-নক্ষম বোগ। ভোমার এখন মজলন্মান করতে হবে, আহ্মণের আশীর্কাদ নিতে হবে, শিভার হাত থেকে সোনা কাণড় কত কি নিয়ে ৰখারীতি তাঁদের দিতে হবে, বাবার সাথে বসে থেতে হবে—

২৫। বলতে বলতে গজেজগমনে নিকটে এসেই আর বে তুলাল—বলে বলোমতী ধবে কেললেন কুফের পাল্লব মন্ত ত্থানি হাত।

বলরামকে সামনে নিরে কুককে টানতে টানতে, সাধীরা চলেছেন পিচনে, মা বুশোদা তথন চলকেন ব্বের দিকে। মারের বিধান বড় কড়া।

ব্ৰজ্বাণীৰ আদেশে দাসীৰা হস্তদন্ত হবে ছ'ভাইবেৰ অন্থ নিবে এল তেল মাধার, গা-মাজার, গা-ব্যার, স্থানের সমস্ত উপক্রণ; নিবে এল, প্রনের কাপড়, চন্দন, ভ্রণ, মাল্য। কৃতিত নীলপাল্লব মক কৃক্ষের অল থেকে তথন ব্রজ্বাণী নিজের আঁচল দিয়ে কে:ড দিলেন ধুলো। তিমভিমে ভিজে কাপড় দিরে মুদ্ধিরে দিলেন গা। শেবে মাল্য-চন্দন পরিয়ে বাম-কৃক্তে নিয়ে উপস্থিত হলেন ব্রজ্বাজের স্মীপে। প্রস্বরের প্রতীকার ছিলেন ব্রজ্বাল।

২৬। ছটিতে ব্ৰহ্মান্তের কাছে এসে পাঁড়ালেন। পুশীতে মন ভবে গোল ব্ৰহ্মান্তের। ফিক করে একটু হাগলেন। ছটিয় মুধ দেশলেন। ভারণরে ছটিকেই ভূলে নিলেন নিজের কোলে।

২৭। তনর ছটিকে নিয়ে আরম্ভ করে দিলেন ভোজন।
ভগবজ্জননীও তথন বলবাম ও কুকের স্থাদের ডেকে পাঠিরে গারে
তেল মাধিরে স্থান করিরে কাণড় পরিরে দিলেন। তাঁরা স্বাই
বেন তাঁর নিজের পেটের ছেলে। কুফের সঙ্গে তাঁদেরও থেতে বসিরে
দিলেন। ভোজন-পর্ব শেব হলে তাঁদের বাড়ী ফেরার সময় ব্রজ্ঞানী
বললেন—দেশ, অভ্যক্ষণ ধরে অভ থেলাটা ভাল নয়। আমার
ছেলেটি অভ্যক্ত চক্ষল, থেলা পেলে স্ব ভূলে বার, কিভ ভোমর

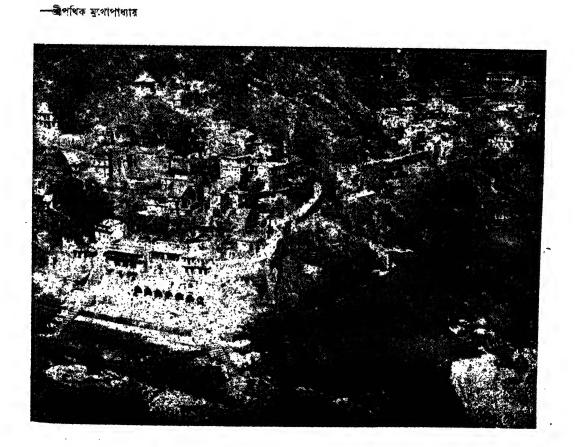




জেনারেল পোষ্টাফিস

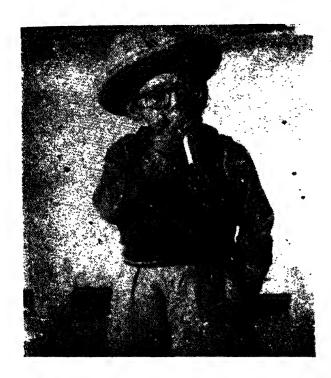
--আনন বনোপাধায়

দেব-প্রয়াপ





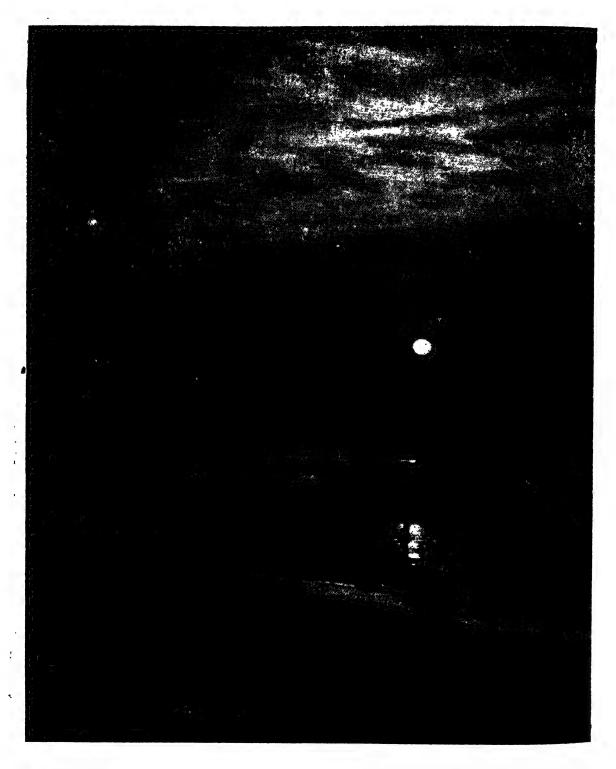
পেছোমেয়ে



ত্**ষ্ট্ ছেলে** —সাধন বার

প্রতিচ্ছবি





মিটি সুরের নাচের তালে মিটি মুখের খেলা আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



मुधानिक (को दिन



বিস্কু ন্এর

প্রস্তুত্ত কর্মন কর্তৃক আধুনিকতম যন্ত্রপাতির সাহাব্যে প্রস্তুত কোলে বিস্কৃট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০ অমনটি হোগো না। থানিকক্ষণ থেলবে, তারপরে হয় আমাদের কাড়ী নয় নিজেদের বাড়ী চলে যাবে। দেখি তথন ও ছেলে কেমন করে একলা থেলে। এই বলে ব্রজ্বাণী যে যার ঘরে পাঠিয়ে দিলেন ছেলেদের।

२৮। এর পর আর একদিনের কথা।

মাথায় ঝুড়ি নিয়ে ফল বিকা করতে বেরিয়েছে এক চৌথস ফলওয়ালী। 'কে কিনবে গো ফল, কে কিনবে'—হাঁকতে হাঁকতে ছনছনিয়ে হাজিব হয়ে গেল বজরাজেব প্রাসাদ-বাবে।

আওয়াজট কানে পৌছল নন্দওলালের।

বুকে হুলছে মোতিব নালা, থল-কমলের মত পা হু'থানি থুপথুপ করে ফেলতে ফেলতে, মুণাল-ফুলের মত হু'-ছাতের আঁজিলার এক মুঠো ধান ভবে নিয়ে, বাড়ীব ভিতৰ থেকে বেবিয়ে এলেন নকহলাল লৈ সোনার কাঞা কুমুব-কুমুব নাচাতে নাচাতে যতক্ষণে তিনি ফলবিত্রবিবীব কাছে এসে পৌছলেন ততক্ষণে তাঁর হাতেব ধান সব ঝরে পড়ে গেছে মাটিতে, হু'-তিনটি দানা মাত্র বাকি।

নন্দহলালকে দেখে, এক বতি নীল মেঘের মত সেই মূর্তানন্দকন্দকে দেখে, কেমন বেন বিহ্বল জন্ম গেল কলওয়ালী, ঘোব লাগল তার ছাদরে। যা ছিল মনের মধ্যে, মনে তা আব বইল না। কী কবি কী কবি, ভাবতে ভাবতে নন্দহলালের অঞ্জলি ভবে সে বিলিয়ে দিল তার সব ফল। তারপবে ক্ডিউঠিয়ে যথন ফলওয়ালী চলে তালে তথন পথের লোকেরা দেখতে পেল, ঝ্ডিতে ফল নেই, রয়েছে রন্ধ।

২১। তারপরে একদিন অস্ত:করণের মধ্যে যেন সেই
অক্তর্থামীটিরই প্রেরণা অমুভব করেই, দ্রুতচরণে প্রক্রাজসমীপে
উপস্থিত হরে গেলেন উপনন্দ সন্নদ্দ প্রভৃতি প্রবীণ আভীরমুখ্যেরা।
অজ্ঞরাক্ত তথন সমাসীন ছিলেন আস্থান-মগুপে। দৃগু-বিশ্বাসে
সম্ভ্রমনত হয়ে তাঁরা তাঁকে বসলেন,—

ব্রজেশ্বর, আপনার সম্পদেই আমাদের সম্পদ। আপনার সমত্ন বিপুল্ভম সৌভাগ্যশালী মানব অদৃষ্টপূর্বে। আপনিই সত্যই মহাশর ব্যক্তি। কেন না, আপনার পুরটি নিতাস্কই বিশ্ববাসীর হুংথহস্তা। স্থতিকাগৃহ হতে আরম্ভ করে এত প্রকারের ভাভাভভ ঘটনা ঘটতে সংসারে আক্র পর্যান্ত কোথাও আমরা দেখিনি।

৩০। প্রথমে এক নিশাচরী নিয়ে এল দেবার প্রলারের মত অবস্থা। তারপরে ঘটল এক দৈত্য নিপাত—সর্বজনের যেন মনোনিপাত। তারপরে উঠল তুলাবর্তের ঝড়। কী অনিষ্টই না ঘটাল সেই দানব ঝড়ের ঘূর্নী! সম্প্রতি ঘটেছে এ ছটি অর্জ্জুন গাছের ভীমপতন। মহান অক্রায় সব ঘটেছে।

৩১। এক্ষেত্রে নিদান কি ? কুমারের জন্মলপ্তে তভটুকুও ভো কোথাও দোষ নেই ? সব গ্রহগুলিই তাঁর শুভগ্রহ। আপনার অদৃষ্ঠ বে লোকোত্তর তা প্রত্যক্ষ। তা না হলে কেমন করেই বা আপনি অকমাং লাভ করবেন এ-তেন দেবত্পভি অপতারত্ত্ব, বিনি জগংপতি নারায়ণের অংশকলিত এবং বাঁর অসীম কুপায় অকমাং চুর্গবিচুর্গ হয়ে,বায় ভাষণ সব অনর্থ ?

৩২। অতএব আমরা অন্ত্রমান করছি, এই স্থলটিতেই কিছু দোষ লেগেছে, এবং সেইছেডু মহারাজ, এই স্থলটি পরিভ্যাগ করে বংসরকালের মধোই আমরা বন্দাবনে বেতে চাই। সে বন সর্ব্বদাই স্থাদ, সভ্তপত্র সমস্ত সদগুণই সেথানে বর্ত্তমান, স্থামল ত্ণের অংনেই সেথানে। বৃন্দাবনে বাঁরা বাস করেন তাঁরাও বলেন, বৃন্দাব তুলনার ত্রিলোক-সৌন্দর্য তৃণবং। সেথায় চির-নিবাস লক্ষ্মীদের সকলেই সেবা করেন তাঁর; এবং সেথানে বয়েছেন গিরি গোবর্দ্ধ আমাদের গোধনের জ্রীবৃদ্ধির পক্ষে সে স্থল অমুকৃশ : জ্ঞানি মহারাজের যদি অভিনত হয়, তাহলে বৃন্দাবন-যাত্রা আমাদের সম্ভোকারণ হয়ে উঠবে।

৩৩। আভীরমুণাদের ভাষণ শ্রবণ করে সর্বদিক বিবেচনা ব দেশলেন গোষাধীশ। বিচারগান্তীব প্রজ্ঞার আফুক্লো নিজের চি ধারাকে শোধিত করে নিয়ে শেষে বললেন—

এই বৃহদ্ধনের উপর আমার যে মমস্ব-বোধ রয়েছে, আপনাব তার নিমিত্ত। এখন আপনারাই যদি এই স্থলটিকে দোষসম্মূল দ মনে করেন ভাহ'লে মানুদে কেমন করেই বা এখানে থাকে অভএব, আনাব মনে হয়, স্কুছা ও সামগ্রন্থ বঙ্গার রেথে বৃন্দাবত পথেই যাত্রা করা অধুনা বিধেয়।

ব্রজেশবের অনুমতি লাভ করে উপনন্দাদি আভীরমুখ্যেরা সপরি স্তষ্ট হয়ে উঠলেন।

প্রথমেই তাঁদের আশস্তা হল, শকটগুলি স্কৃদ্ রয়েছে কি ন কিন্তু তাঁরা যথন দেখলেন শক্টগুলি নির্ভরযোগ্য তথন দৃঢ় হয়ে উ তাঁদের চিত্রবল।

৩৪। ছনস্তর যা ঘটল দে এক বৃহৎ ব্যাপার ! শকটে বলী:
সংযোজিত হয়েছে সকলেই দেখে থাকবেন, কিন্তু কেউ কি কথি
দেখেছেন শুল্লবর্গ নব লক্ষ্ণ বলীবর্দের সংযোজন ? চার-দাঁতি বলীবর্দ প্রত্যেকটিই কি ইন্দ্রদেবের শালা হাতার উপমাস্থল ? মোনর খোগীদের মন্ত স্থির দাঁড়িয়ে রয়েছে সহস্র সহস্র নবদন্তী বলীবর্দের দল লক্ষ্ণ লক্ষ্য সোনার্বাধানো শিঙ্ধ। যেন স্থমেক্ষর শিথরগুলো চমকাছে লক্ষ্ণ লক্ষ্য থ্রের দে কী প্রথব লীলা ! যেন খরখনে নৃত্য শেথাছে সংগীতাচার্যোরা। চার পায়ে বলীবর্দেরা নাচত্তে বটে কিন্তু আশ্ দেই চারিটি পায়েই কি নেচে উঠছেন চতুস্পনী আদিছেন্দ !

যথা, শ্রীনারী মুগী সমালিকা ইশ্রবক্সা ? লক্ষ লক্ষ লভার ম ফুলে উঠেছে চামরপুছে। লক্ষ লক্ষ গলায় বাজছে অযুত-নিয়ু কিছিলী। কিছা শকটে সকলকেই যথন জোভা হল, তথন নাবে মস্ত মস্ত ফুটোয় সকলেরই কি দড়ি!

শকটগুলিও দ্রষ্টবা। প্রতি শকটের মাথায় সটান চীরমণ্ডণ ঘেরা টোপের কাপড়ের রঙ শাদা, সবৃন্ধ, লাল, হলদে, কমলা, ধৃসর চারদিকে বহু মৃল্য পটবল্লের বৃতি। চীরমণ্ডপের চুড়ার চূড়ার কন্দ কলসের শোভা। পত-পত করে বাতাসে কাঁপছে অজ্ঞ পতাকা যেন তারা কলা-পাণ্ডিতা দেখিয়ে রসনা বিস্তার করে, অমর-বিমানসে পরিহাস করে, বারবোর লেহন করে নিতে চাইছে দিনকরের কিরণসার এদের প্রসক্তলি নির্দ্দের, সাধুদের প্রতি আসন্তির মত; এদের প্রসক্তলি শোক্ত কর্মাক লাঞ্চিত তড়াগের মত; এবং এদের উজ্জ্বল মৃগদ্ধরগুলি শার্কা তজ্বাক-লাঞ্চিত তড়াগের মত; এবং এদের উজ্জ্বল মৃগদ্ধরগুলি শার্কা আনে অলকাপুরীর নলকুবরের সাঞ্জিধ।

এই মনোহর শক্টগুলিতে ব্রজবাসীরা প্রথমে ধীরে ধীরে আর্গের কবিরে দিলেন আপন আপন পরিবারবর্গকে। তারপরে তারা বর্ধন জ্বনাত্ত শক্তিশ্বলিতে বোঝাই কবকে লাগলেন স্থানিবাসিণা-পিত্ত শিত্তীয়

৪ কাংশুনির্মিত তৈজসপত্র, তথন বিশ্বরে বিক্ষারিত নেত্র হয়ে গেলেন সন্থা-জন।

তারপরে উঠল চলার প্রশ্ন। গাভাগজ্বকে পুরোবর্তী করে চালিয়ে নিয়ে যাওরা কি সম্ভব হবে ? স্থির হল ধেনুবাই আগে যাবে, তারপরে ধারা করবে শকট-শোভা। কিন্তু গাভীসজ্বের প্রাচুর্য্য বিধায় ক্রম রক্ষা করা অসম্ভব হয়ে দাঁড়াল। শেবে পংক্তিম্বরের বিক্রাস দিয়ে যুগপং ধারা করল ধেনু ও শকটের সমারোহ। কী বিপুল সেই শোভাষাত্রা, গন্যস্থানে পৌছলেও তার পা পড়ে বইল ত্যজনীয় স্থানে।

৩৫। বৃহত্বনের মধ্যস্থল থেকে আরম্ভ করে বৃন্দাবনের সীমা প্রস্থ অবিচ্ছিন্ন ভাবে চলেছে ধেরু-পংক্তি। যমুনার তীর ধরে যথন চলেছে তথন জনতার মনে হল, না, এরা বৃঝি চলছে না। বিতঞ্চান্তবের আম্পদ হয়ে দীড়াল ধেরুপংক্তি।

৩৬। যমুনার সঙ্গে বহস্তালাপের অভিপ্রায়ে তবে কি এখানে এসে মিলিতা হয়েছেন স্করধুনীর ধারা ?

বৃন্দাবনের রেণ্ সংগ্রহের লোভে তবে কি একের পর এক ধেয়ে খাসছে ক্ষীরসাগরের অক্ষয় ঢেউ ?

ক্ষীরোদশায়ী নারায়ণের শয়নভার পরিত্যাগ করে তবে কি লোভ পড়েই বৃন্দাবন দেখতে গ্রীগতিয়ে বেড়েছে অনস্ত্রনাগের দ্রাঘীয়সী ফাণ

না, না, এটি ধবিত্রীর মুক্তাবলী মালা ছাড়া আর কিছুই নয়।

এই ধেমুপংক্তির মত ঐ শকট-পংক্তিটিও সাধারণ মামুবের চোথে বিষয়ের বস্তু হয়ে দাঁড়াল। সকলেরই ধারণা হল, নিশ্চর তাদের চোথ বিরাট একটা কিছু ভূল দেখছে। সভ্যিই এটি কি একটি শক্টপংক্তিন না, কনককলস-বিলমিত পতাকা-নিকর করম্বিত ল্লিডাট-গোপুর-ঘটাঘটিত একটি অপূর্ব স্থান্যর হুর্গপ্রাচীরের কল্পনা ?

এ-ও তো হতে পারে ...এটি পর্বতরাজ স্থমেরু হিমালয় বা কৈলাস প্রভৃতির শিশু কুমারদের প:ক্তি, যমুনার তারে খেলতে নেমেছেন, করুণা করে ইন্দ্র তাঁদের ডানাগুলিকে আর কাটেন নি ?

ধীরে ধীরে চলছে শকটের সমারোহ ও ধেরুর সমারোহ, আর শ্রেণীর পর শ্রেণী রচনা করে আকাশে উঠছে ব্রজ্পুলির সমারোহ। শ্রে যেন ফলিত হয়ে যাচ্ছে নিরালম্ব এক মাতিক হুর্গের কল্লচিত্র।

এ-ও তো হতে পাবে এই ধুলির সমারোচই ধরিত্রীদেবীর নব-প্রতিমা? পুরাকালে একদিন দৈত্য-কদন নিবেদন-ব্যপদেশে ধরণীদেবীকে ব্রক্জাকে যেতে হয়েছিল দীনহীন গো-রূপ ধারণ কবে। তিনিই কি আজ তবে কৃষ্ণপাদপক্ষজ্ঞ-সঙ্গনস্থ নিবেদনের অধীর লালসায় উদ্ধপবনবিকম্পিত ধুলিশ্রেণী প্রস্প্রায় ব্রশ্ধলোকে পুনর্বার ছুটেছেন স্বরূপে?

ত্ব। ক্রমে যাত্রাপথে মাংসল হরে উঠল কোলাহল।
সহস্র মুথে সহস্র কথা। এদ এদ, যাও যাও,আনো, নাও চলো,
রোথো চালাও। একীভবনম্ব থাকা সন্ত্বেও ক্রমশ: বছকঠের
মিলিত ব্যাহ্যতিতে সর্বাগ্রে বছতরম্ব ঘটল প্রত্যেকটি শব্দের।
তারপরে অকমাং প্রবণেক্রিয়ের ত্রিভাব্য হরে উঠল কে বক্তা, কি
বক্তব্য। বাক্যের সমস্ত ব্যবহার কেবল সম্পন্ন হতে লাগল
হস্ত-সংজ্ঞার।



জীবাণুনাশক নিমতেল থেকে তৈরী, স্থগন্ধি মার্গো দোপ কোমলতম ছকের পক্ষেও আদর্শ সাবান। মার্গো সোপের প্রচুর নরম কেনা রোমকুপের গভীরে প্রবেশ ক'রে ছকের সবরকম মালিক্স দুর্ন করে। প্রস্তুতির প্রত্যেক ধাপেই উৎকর্ষের জন্ত বিশেষভাবে পরীক্ষিত এই সাবান ব্যবহারে আপনি সারাদিন অনেক বেশী পরিকার ও প্রফুল্ল থাকবেন।

পরিবারের সকলের পক্ষেই ভালো



भार्णा प्याभ

দি ক্যালকাটা কেমিক্যাল কোম্পানি লিমিটেড, কলিকাতা-২১

কিন যা ঘটেছিল · · · · · ওদের মায়ে ছেলের ছোট্ট
সংসার। মাধুরী এসেছে নতুন বে হিরে। খাস্
কোলকাতার মেয়ে মাধুরী। মাধ্বপুরের মতো গ্রামে ঠিক
সে পুরোপুরি গাপ খাইয়ে নিতে পারেনা। রাত্রি হলে
এখনও তার ভ্তের ভয় করে। শেয়ালের ডাকে মরে দোর
দেয়। হতুম পাঁচার ডাকে তার নিশিথ রাতেও ঘুন ভাঙে।
ঝিঁ ঝিঁ পোঁকার শন্ধেও নাকি মাধুরীর ভীষন ভয়। গাঁয়ের

ভারাপদ মাষ্টার

বৌ-রা সহুরে মাধুরীকে নিষে হাসাং।সি করে। মাধবপুরের
মতো অ-জ গ্রামদেশে এসে সোনকা চার লোকও সভিটি
তবে বোকা বনে যায়। তেবু মাধুরীর গ্রামকে কিন্তু
ভাগলাগে। ভালবেসে ফেলে মাধুরী ও গাঁরের মাটি আ্বুর
মানুষগুলোকে—আপ্রান চেষ্টা করে ওদের আপন করে
নিতে। তে

বৃদ্ধা খাশুড়ী সরন্ধাবালার যন্ত্র নিতে মাধুরী কখনও ভুল করে না। তাইতো তিনি মাধুরীকে এত ভালবাসেন। ফারফরমাস মতো তাঁকে মাধুরী ভালটা মন্দটা রেঁধে থাওয়ায়। আর কত দিনইবা বাঁচবেন—এই ভেবে মাধুরী বৃদ্ধার সব অন্থরোধই মেনে চলতে চেটা করে। ওদের ছোট্ট সংসারে মাধুরীকে পেয়ে বোধহয় সব চাইতে বেণী খুণী হয়েছেন তার খাশুড়ী। · · · · কত অন্থনয়ের পর তারাপদ বিয়ে করতে রাজী হয়েছে। বেচারী ভারাপদ এই বিয়ের কথা নিয়ে মার্পর কাছে কতই না কথা শুনেছে। মাধুরী এসে অবধি তাকে আর সকাল সাঝেঁ মার্পর মোকাবেলায় যেতে হয়না।

এম. এ. পাশ করে গাঁয়ের সূলের মান্টারীর কাজ নিয়েছে তারাপদ। তাল চাকুরীর আশায় সে গ্রাম ছেড়ে সহরে চলে যায় নি। গ্রামকে সে ভালবাসে। এ গাঁয়ের ছেলে বুড়ো সবার সে আপনারজন — তারাপদ মান্টার। এদের নিয়েই তারাপদর দিন কেটেছে।
নিয়েই তারাপদর দিন কেটেছে।
নার্বী আজ তার স্বামীর পাশে এসে দাঁজিয়েছে তার স্বপ্লকে বাস্তবে রূপ দিতে—মাধ্বপুরকে আদর্শ গ্রাম করে গড়ে তুলতে।
ইতিমধ্যে মাধুরী সবার প্রিয় হয়ে উঠেছে। সেলাইয়ে রারায় মাধুরী পাড়া জোড়া নাম। আনাড়ী ভাবলেও আজ্কাল কাজের কাঁকে গাঁয়ের বৌ-রাই এসে মাধুরীর কাছে ভীড় জমায়। বুড়ীদের আদরে সরলাদেবী বৌ-মার যা প্রশংসা করে কেড়ান, তাতে সব খাণ্ডড়ীই চাম বৌ-রা তাদের মাধুরী। বৌ-র মতো কাজকার শিথুক।
কা





গাঁয়ের বে নিরে বত্ব নিয়ে রালা শেখায়— মাধুরী। অবাক হয়ে ভারা দেখে নাপুরীর রালার নতুন চং। মাধুরী তার সব রালাতেই 'ডাল্ডা' ব্যবহার করে। ওদের কাছে, আজ্ব লাগে। কালু মৃদীর দোকান সাজানো খেজুর গাছ মার্কা 'ডাল্ডার' টিন তারা অনেকেই দেখেছে। বে না জানে 'ডাল্ডা' দিয়ে মেঠাই-মণ্ডা ভাজাভুজি হয়— সব রকম রালার কাজও যে 'ডাল্ডা'য় হয় এ কথা তারা ভারতেও পারে না। তাই মাধুরীকে 'ডাল্ডা' দিয়ে সব রালা রাঁথতে দেখে ওদের অভ আশ্রুষ্টা লাগে। কেভুহল বাড়ে— ভবু মাধুরীকে জিজেস করতে তারা লজ্জা পায় লজ্জার মাথা খেয়ে 'বেল্ব-বোঁ' জিজেস করে বসে। মাধুরী কিন্ত ওর কথায় হাসে না, বুঝিয়ে বলে ওকে 'ডাল্ডার' কাহিনী। 'বেল্ব-বোঁ, পায় তার প্রশ্নের জবাব, কেন মাধুরী সব রালাভেই 'ডাল্ডা' ব্যবহার করে। ……

"থাটি ভেষম্ব তেল থেকে 'ডাল্ডা' তৈরী। আর প্রতি
"আউন্ন'' 'ডাল্ডা'তেই আছে ভিটামিন 'এ'র १০০ 'ইন্টার
ন্তাশানালইউনিট' এবং 'ডি'র ৫৯ 'ইন্টার ন্তাশনাল ইউনিট'—আমাদের শরীর রক্ষার প্রয়োজনীয় গুটি উপাদান।
কেবলমাত্র বিশেষ বিশেষ রান্নার কাকেই 'ডাল্ডা' ব্যবহার
হয় না, 'ডাল্ডা' দিয়ে আমরা সব রক্ষ রান্নাই রাঁধতে
পারি। আর 'ডাল্ডা' সবসময় সীল করা টিনে পাওয়া
বায় বলে ধ্লাময়লা পড়বার বা ভেজালের কোন ভয়
থাকে না। 'ডাল্ডা' চেনবার সহজ্ব উপায় হোল—সীল
করা টিনের গায়ের 'থেজুরগাছ' মার্কা ছাপ''— মাধুরী
তার 'ডাল্ডা'র বিশ্লেষন পর্বে শেষ করে। গাঁয়ের বো-রা
ঘরে ফেরে। •••••

দিন কতক পরের কথা। বাইরে গনেশ ব্যাপারীর গলা তানে মাধুরী দাওয়ায় এনে দাড়ায়। দেখে গনেশ ব্যাপারীর হাতে 'ডাল্ডা'র একটা ছোট্ট টিন। আছই হয়ত গনেশ কিনেছে। সত্যতা জেনে নিতে মাষ্টারের কাছে ছুটে আসা। কিন্তু কেন? নিশ্চয়ই এ সব বেল্ফ-বো-র পরামর্শে। নইলে গনেশ আবার 'ডাল্ডা' কিনতে যাবে কেন। তানেশ আবার 'ডাল্ডা' কিনতে যাবে কেন। তানেশ আবার 'ডাল্ডা' কিনতে যাবে কেন। তানেশ আবার কালে গালার মাধুরী ভেতরে চলে আসে। ভেতর খেকে কান পেডে লোনে খানীর কথা 'ঠা গনেশ, একেবারে খাটি জিনিব 'ডাল্ডা' গতে আর বলার কি আছে। ব্যবহার করণেই বুঝতে পরবে তানে হুলৈ মাধুরী কালে হলে বার।

হিন্দুবাদ লিভার লিদিটেড বোদাই।

হুর্যোর আবাবে, আভীরদের প্রণাদে, শকটের নির্ঘোধে, বেপ্রদের উল্লাদে যদিও নষ্ট হয়ে গেল অল্প সমস্ত শব্দ, তবুও কিমাশ্চর্যামতাপরং সেই শব্দভৈরবকেই যেন আজিঙ্গন করে বসল মহাবেধামের সমস্ত গুণ।

৩৮। এদিকে প্রীবশোদা ও প্রীবোহিণী একরে আরোহণ করলেন শকট-বত্নে। শকট তো নর, সেটি যেন একটি ক্রীড়াশৈলের মণিকুছর। নিজের নিজের কুমারটিকে কোলে নিয়ে তাঁরা বসলেন। এর আলো পড়ল গিয়ে ওঁব গায়ে। তাঁরা হটিতে যেন একজোড়া স্কৃতিস্বরূপা সিদ্ধৌধনি লতিকার ছবি, আর ভাঁদের উৎসঙ্গ ভূটিকে যেন সফল করে বেণেছে জগল্মসলেরও মঙ্গল ফল। কুফ্ছণগীতির কলম্বরে ভালর হয়ে উঠল শক্টবর।

- ৩৯। শোভাষারার সম্প্র পার্থে পার্থে ইন্তন্ত চলতে লাগলেন শত শত শন্ত্রধারী শকটে জালোচণ করে, চললেন অনোকে, পদজ্জে চললেন অনেকে। বিপুল পদক্ষেপে যথন অগসর হল জজাহিনী তথন মনে হল মহাবন—বাজধানীর লক্ষ্ণীদেবীই যেন মৃত্তিমতী হয়ে গতিবেগে যেন গগন লেহন করতে করতেই, নিজেই প্রথমে ছুটে চলেছেন গ্রুবাস্থলটিকে অলক্ষত করতে; সেখানে কেবল কেলে রেথে যাছেন জ্মি।
- ৪০। সর্বাত্রে বারা বারা করেছিলেন গস্তুব্যস্থলের সীমানার পৌছে তাঁরা ফিরে দাঁড়াসেন। লক্ষ্য করলেন অমুযাত্রীদলের গতিবিধি। আসছেই তো তারা আসছে, বাড়ছেই তো তারা বাড়ছে। মূলের কেমন বেন সন্ধান রাথা হল দার! অতথব তাঁরা দ্বির করলেন, যমুনা পার হওয়া অসম্ভব, এ পারেই নিশিবাস বিধেশ।

সকলেই দেশকালজ্ঞ। এজরাজের আজ্ঞার আপেক্ষা না করেই ভারা বিক্তস্ত করলেন পটমগুপ। ব্যবস্থার সে কা পারিপাট্য। দেখে মনে হল পুরপ্রস্থিতি। রাজধানা লক্ষ্মাদেবীই বেন স্বরং রচনা করে ফেলেছেন স্বসন্নিবেশ।

সন্ধিবেশের মধ্যস্থলে গড়ে উঠল হাজার হাজার দীর্যপ্রসার পট-গৃহ। চতুর্দিকে বিভানের শর বিভানের শ্রেণী। আকাশ অদৃশু করে চৌদিকে উঠল বিরাট বিরাট পট-প্রাচীর। চতুম্পথের মোহানায় মোহানায় ক্রমান্ত্র্যারে সৃষ্টি হয়ে গেল বণিকমণ্ডলীর সমস্ত্র ও স্থশ্রেণী বিপণি।

প্রথমেই সে স্থানটিতে সমবেত হয়েছিল কয়েকটি দল, দেখতে দেখতে সেই স্থানটিতেই ভিড় জমে উঠল বহু গো-সংহতির। যে স্থলটিকে প্রথম দেখতে হয়েছিল এক টুকরে। জ্যোৎপ্রার মত একটু পরেই সেটি হয়ে দাঁড়াল ত্র্ধসায়ের, তারপ্রেই একেবারে ক্রীর-সমুদ্দ্র !

- ৪১। দেখতে দেখতে পটগৃহগুলি বাসোপবোগী হয়ে উঠল।
 প্রথমাগত পবিজনদের সঙ্গে নিষে শ্রীনন্দ, সরন্দ ও উপনন্দপ্রযুধ
 ধুবদ্ধরেরা স্থথপ্রবেশ করলেন তাঁদের যথানির্দিষ্ট পটগৃহে। বিশ্রাম
 করলেন। তারপরে এলেন অক্সাক্ত থাতীরমুখ্যগণ। তাঁদের
 শ্রমাপনোদনেরও বছ পরে মূল-বিজ্জির হয়ে এল ধেমুগংক্তি ও শকটপাক্তি।
- ৪২। দেখতে দেখতে সহস্র সহস্র শকট থেকে নেমে পড়লেন সোপ এবং গোপীরা। শকট থেকে তাঁরা শনৈ: শনৈ: নামিরে বেসলেন তংকাল-ব্যবহার্য প্রারোজনীয় দ্রব্য-সামগ্রী। বলীবর্দগুলিকে

শকটমুক্ত করিরে অধিকারীরা তৎপর হরে উঠলেন আহার-দানের ব্যবস্থার। ক্রয়-বিক্রয়ে লিগু হয়ে পড়ল পরিচারকবর্গ। তারপরে এলেন স্থল-পরিষ্কারকেরা, দাঁড়িয়ে থেকে তাঁরা স্থব্যবস্থা করে দিলেন রক্ষনাদির। ভগবান ময়ুখমালীকেও দেখা গেল, যাম-চত্ষ্ট্যু-গম্য গমনপথ অতিক্রম করে যেন শ্রান্ত হয়ে পড়েছেন, এবং অধুনা অভিলাবী হয়ে উঠেছেন পশ্চিম-দিছ,নাগরীর আতিথ্যের।

৪৩। দেখতে দেখতে কলধ্বনি তুলে **আকাশ** ছেয়ে উড়ে চলে গেল কুলায়মুখী পাখীর দল। উঁচু-উঁচু ডাল দেখে গাছে চড়ে বসল ময়ুর-ময়ুরী, সর্বদিকে মুখ রেখে মণ্ডলরচনা করে শুয়ে পড়ে রোমস্থ-মন্থর মৃগকদশ্ব। পদ্মের ঘরে ঘরে ধারা ঘুরে বেড়ান, হঠাৎ বন্দী হয়ে গেলেন দেই দব মধুকরের দল। আর ঐ দিশ্বধুরা তিমিরনীল অবগুঠনের মহিমায় তাঁরা ধারণ করলেন অভিসারিকাদের ভাবালুতা। একদিকে যেমন হাত্মমুখী হয়ে উঠল কুমুদিনীর দল, ওরে এসেছে, এবার যেন ওলের মনের মত স্থথের সময়টুকু এসেছে। অক্সদিকে তেমনি এপার থেকে ওপারে ডাকাডাকি করতে লাগল বিরহ-বিধুর চক্রবাক-মিথন। হায় রে ওদের বুঝি এবারে ছঃথের বাতাস্থানি বয়েছে। আহা। কী করুণ ওদের আহ্বান, চোথে দেখা যায় না। ঐ দেখ চক্রবাক-মিথুনের কাণ্ড! মৃণালের টুকরো দিয়ে এখনও ছটিতে বাঁধছে এ ওর ঠোঁট। রোদ্রাবসানের মালিক্তে আকাশে অস্পষ্ট ফুটে উঠল হু-চারটি নক্ষত্র। বিজাতীয় হলেও অতি প্রকট হয়ে মিশে যেতে লাগল মাত্রুষ ও পশুর দীর্ঘ দীর্ঘতর ছায়া। তারপরে যথন প্রত্যেক পটগুহের অভ্যস্তরে একটি একটি করে জালিয়ে দেওয়া হল দীপ, এবং বাইরের দীপগুলিকেও দেখতে হল সন্তুদর ব্যক্তির স্থাদর প্রকাশের মত; এবং প্রত্যেক সর্বনিতে সর্বনিতে পাহারায় বসে গেল প্রহরিয়ার দল, তথন মনে হল, শ্রীভগবানকে তাঁর উপাসিত-সেবা নিবেদন করবার অভিপ্রায়ে প্রদোষলক্ষীর বুঝি শুভাগমন হল !

৪৪। দেখতে দেখতে জমজমাট হল স-বংসা ধেমুসংহতি।
তাদের আহার তৈরী, কোনো আকুলতা নেই, তৃপ্ত হয়ে
তারা বিশ্রাম করতে লাগল আনন্দে। ক্রমে ধেমুমপুলীর
মাঝখান থেকে ভেসে উঠতে লাগল সমুক্রমন্থনধনির মত বিপুল
ত্থালোহন বব, এবং দোহনপাত্রের গর্ভ থেকে উদ্ভান্ত হতে
লাগল মুগ্ধ-মধুর আরও একটি গল্পীর ধ্বনি। সে ধ্বনি অতি
ভালো লাগল শ্রীকৃষ্ণের। শন্দরস রশ্র হল তাঁর। রসপ্রিয়তা
আরো বেড়ে উঠল যখন তিনি দেখলেন ও শুনলেন, নাম
ধরে ধরে গাভীদের ডাক দিয়েছ ব্রজের গোয়ালারা। মুখ থেকে
টুপ টুপ করে টপকিয়ে বেরোছে নাম, আর মপুল থেকে
বিছিন্ন হয়ে হাম্বাধনি তুলে, ফেরা-জবাব দিয়ে ছুটে আসছে গাই।
উত্তমা গাভীটির গায়ে হাত বুলিয়ে দিতে দিতে গোয়ালার সে কী
আদর করার ঘটা। কী নধ্বকান্তি স্ব গাই।

দেখতে দেখতে ব্রজনগরের নরনারীদের স্থসম্পন্ন হরে গেল পানাহার-বিহার। নিজেদের জাগরণ কোঁশল প্রকাশ করে প্রহরে প্রহরে প্রহরিয়ারা টাংকার করতে লাগল 'জাগতে রহো', নিশেকার নিজামন্ন হয়ে গেল বিপুল ঠাট।

রাত্রিশেবের আর বধন এক প্রেহর বাকি, তথন শরন ছেড়ে গাত্রোখান করলেন গোপললনারা। অপবিত্র বেশভূষার অলম্বতা হয়ে পটসূহের দীপিত দীপ প্রতি-অলিকে স্যাধা করলেন বাতসুলা তারপরে মন্থন করলেন দিখি। দখিমন্থনের সঙ্গে সঙ্গে তাঁদের কঠ থেকে নিঃস্ত হতে লাগল ভগবান বালকুক্ষের কর্ণরম্য গুণগান। কীর্ন্তনের সহচর হল মনিময় কন্ধণ বলরের ও মঞ্জুমঞ্জীরের শিক্ষা। গর্গরীকুহরে সঞ্চরমান সেই মস্থা ধ্বনির গভীরতা, সরসমধুর গীতধ্বনির সেই অনাবিল স্মরলালিত্য, দিগক্ষনাদের দশমুথে সেই স্করলালিত্যের পেশল অন্তর্গন, যেন সম্লে নির্ম্ল করে দিল ভাগতিক সমস্ত অমক্ল। আর সেইক্ষণে অমর-পতিদের পালক্ষে সম্বর জেগে উঠে বসলেন অমরসীমস্তিনীরা। সত্যিই তো, আর কি এখন ঘ্মিয়ে থাকা চলে! একাস্ত ভাবে তাঁরা সানন্দে কান পেতে শুনতে লাগলেন ঘোষ-রমণীদের সেই দধিমন্থন-নির্যোষ।

৭৬। দেখতে দেখতে ধণন উদয়াচলের শিপরে সমুপিত হলেন ভগবান শ্রীকিরণমালী, তথন কিরণমালি-তৃহিতা শ্রীমতী যমুনাদেবীর অপর পারে অধুনা কেমন করে পৌছনো যাবে তারই বিপুল সমুজোগে ব্যক্ত হয়ে উঠল ব্রজবাসীদের বিশাল ঠাট। ব্রজবাক প্রথমেই আদেশ দিলেন—

"অধিকারীরা এবার যে বাঁর ধেরুবৃন্দ পারে নিন।" আরম্ভ গ্য়ে গোল ধেরুবুন্দের পারাপার। সে এক অভূতপুর্ব দৃশ্য !

লক্ষ লক্ষ ধেরু সাঁতবে পার হরে যাচ্ছে ষর্না। ছ'-পাশ দিয়ে তাদের ঠলে নিয়ে চলেছে স্রোত। নিঃখাদের বাতাদে ফুলে ফুলে উঠছে তাদের নাসা; দেহের পুরোভাগ ভেনে চলেছে জলের উপরে। তাদের চালাচ্ছে ভীমের মত বলিষ্ঠবপু গোপ, ঘন ঘন রব তুলছে •হী: হী:; আর হাখাধনি তুলছে লক্ষ লক্ষ্ ধের্, •বন প্রতুল্ভের জানাচ্ছে "আমরাও যাচ্ছি হাঁ৷"

লক্ষ লক্ষ বাছুর তারাও সাঁতিরে পার হচ্ছে যমুনা। শিঙ গঙ্গামনি, তাই বোধ হয় জলের উপরে আনন্দে নাচিয়ে চলেছে গ্রান-হাছা য়ুপু। ছোট্ট ছোট্ট দেহ হলে হবে কি, রেগে তারা লাফিরে ঝাঁপিয়ে জল ভাঙতে ভাঙতে চলেছে। জলে ভিজে ভারী হয়ে গেছে ল্যাজ, উঁচিয়ে আর কেমন করে দোলায়? নিজের নিজের মারের সামনে গা ভাসিয়ে সাঁতরাতে সাঁতরাতে তারা চলে গেল ওপারে—কুশলে।

চোখের সামনে দিরে ছবির মত সাঁতরে চলে গেল হাজার হাজার দক্ষ সাঁতার । এক হাত থেলিয়ে তারা সাঁতরাল । অজ্ঞ হাতে তারা বুকের কাছে চেপে ধরে রইল কচি কচি চারটে ঠাঁও । আছের উপর লাতিয়ে রমেছে সজ্ঞাস্ত বাছুর । আর তাদের পিছনে স্থনে হাস্বা দিয়ে সাঁতরে আসছে মায়ের দল । সেই বাছুর নিয়ে যম্না পার হয়ে গেল তারা ।

তারপরে সাঁতরে চললেন বুষপর্যতর।। তাঁদের পরিপুষ্ট বিরাট করুদের আঘাতে জর্জারিত হতে লাগল যমুনার জলতল। মনের ভিতর কী তাঁদের উরা। ঘাড় বাঁকিয়ে তাঁরা শৃঙ্গাঘাত করতে গাগলেন তরঙ্গের দেহে, আর আশ্চর্যা, প্রোতের বেগ অতো তুলা হলেই বা হবে কি, নিঃখাদের কুদ্রবেগে তাঁবা জল কাঁপাতে কাঁপাতে, মাথা উঁচু করে একটানা সোজা পার হয়ে গেলেন যমুনা।

৪৭ । নদী পাব হয়ে ওপারের কর্পুর-ধূলিস্বচ্ছ বালুবেলায় যথন নৈচিকী গাভীদেব বিরাট শ্রান্ত সংহতি শ্রেণীবদ্ধ হয়ে দাঁড়াল তথন মনে হল বিচ্চতি ভূলে গিয়ে একত্রস্থিতির বাসনায় জাহ্নবী বুঝি মিলিতা হয়েছেন কালিন্দীর সঙ্গে।

৪৮। চঞ্চল সম্ভরণে এই ভাবে যমুনা পার হয়ে গেল গৌধন।
তারপবে নদীতে হঠাং আবির্ভাব হল বছবহিত্র অসংখ্য তরিল।
এত আকমিক তাদের আবির্ভাব দে মনে হল, নাগনাগরীদের
মণিশৈলের লীলাদ্রোণিগুলি হঠাং বৃঝি পাতাল ভেদ করে উপরে
উঠে এল ; বৃঝি বা ব্রজ্ঞরাজ সমাজের আনন্দবিধানের উদ্দেশ্যে সুবশিলী
বিশ্বকর্মা নিজেই গগন-গলার প্রবাহ থেকে তৃলে নিয়ে নাতলনী যমুনার
কাছে হঠাং পাঠিয়ে দিলেন তাঁর এই বিজ্ঞান মৃত্তিগুলিকে। বুঝিবা
এই তরণিগুলিই কোনো বহুপদান্ধিত বিচিত্র জলজন্ধবিশেষের কুলবধুর
দল।

৪৯। এই তরণিগুলির মধাস্থালে ছিল একথানি অতিসমীচীন তরণি। এবং তারও ঠিক মধ্যস্থলটিতে ছিল একটি চিত্র-ভবনের পরিকল্পনা। তরণির ললিত পতাকার মৃত প্রনের কম্পন। নিজের নিজের তনয়টিকে কোলে নিয়ে সেই ভবনে একত্রে প্রবেশ করলেন স-পরিচারিকা শ্রীত্রজরাজ-রাজমহিবী ও শ্রীবম্বদেব-রমণী। ষয়নার মাঝখান দিয়ে যখন তরণিথানি চলেছে তখন বালকুষ্ণ ঈষৎ কাঁধ বঁ কিয়ে দেখতে পেলেন, আহা কী সুন্দর জল, ছোট ছোট ঢেউ দিয়েছে জলে, আর জলের রঙও কি ঠিক নিজের পায়ের রঙেরই মত ৷ আর যায় কোথা ? মায়ের আঁচল ছেড়ে বালকুফ তথনি গুটি-গুটি দৌড়লেন তশানর প্রান্তে। কী বেন এক নিধি দেখেছেন তিনি। তরণি তথন হলছে। কুফেরও টলটল করছে পা। কিন্ত ভান হাতথানি প্রসাবিত করে যেই জীকৃষ্ণ নিজের করকমল দিয়ে আলোড়ন করতে যাবেন জল, অমনি তাঁকে ধরে ফেললেন তাঁর মা যশোদা; মা রোহিণীও তাঁকে ধরে ফেললেন। অসপুত আতছে তাঁরা যেন অস্থির! কিন্তু কুথলে কি হবে বারণ মানে কি ছেলে ? অনিষ্টের আশকায় ব্রজ্বাজ্ঞ তথন দ্রুত উঠলেন সেই তর্রণিতে। হাসতে হাসতে এক ঝটকায় কুষ্ণকে উঠিয়ে নিলেন কোলে। তার পর সাবধান হয়ে বসে রইলেন তর্ণিতে। তর্ণি-বাহীরা বেয়ে চলল তর্গি।

অক্সান্থ বজবাসীরা সপরিজন নিজেদের স্থেস্থবিধামত আরোহণ করলেন অতি স্লভ অথচ সমান দ্রানিয়গুণবিশিষ্ট অক্সান্ত তর্নিতে। আরামে তাঁরা সম্কালেই পার হয়ে গেলেন যমুনা।

e । তাঁদের পারে পৌছিয়ে দিয়ে সেই তরণিগুলি নিরেই আবার ফিরে এলেন নাবিকেরা। নিটোল কাঠের সিঁড়ি তাঁরা পাতলেন। তার উপর দিয়ে তাঁরা তরণিগুলিতে তুলে নিলেন ব্রজশকটের সেই বিরাট ঠাট। পার করে দিলেন বয়না। ব্রজবাঞ্চ পারিত।িকিক দিলেন নাবিকদের। সন্তুষ্ট হরে বিদায় নিলেন সকলে।

ইতি যমলাৰ্জ্জনলঙ্গে নাম বৰ্ষ্টস্তবক:। ক্রমশ:।

এই বাঙালী পাহাড় ঠেলি উৎসাহ শিখায় ঘ্চিয়েছিল নিরিড় তম: নিজের প্রতিভায়— —সত্যেক্সনাথ দত্ত।



[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] স্থানেখা দাশগুপ্তা

দিন দশেক পরের কথা :

অফ পিরিয়তে কফি-হাউদে কাপ কাপ কফি সামনে করে বদে মঞ্জুরা সব বর্তমান বছবের নোবেল পুরস্কাব পাওয়া বইখানা নিয়ে তর্কের তুকান বইয়ে দিচ্ছিল। উত্তপ্ত হয়ে উঠেছিল আবহাওয়া। নিছক সাহিত্য আলোচনায় সাধাবণত হাওয়াটা এতোটা উত্তপ্ত হয়ে হয়তো ওঠে না. কিন্তু বর্তমানে সাহিত্য পুরস্কারের পেছনে সাহিত্যের মান বিচারের চাইতেও বেশী থাকে রাজনীতি। আর বেখানে রাজনীতি সেখানেই আব না বইল বাজি, না বইল ষাজ্জির বিদগ্ধ মনের নিজ্ঞস্ব মত। বুইল কেবল দল আবে দলীয় মতে। হোক সাহিত্য হোক শিল্প, বে কোন আলোচনাব চেহাবাটাই গিয়ে শীড়ার তথন ভার দলীয় লড়াই-এব মতো। কফি ছাউসের টেবিলের চারপাশ খিরে বলে মঞ্দের মধ্যেও যা চলছিল াকে সাহিত্য আলোচনা বলে না-বড়দের এই গোষ্ঠীমতের লড়াইএরই একটা ছোট সংস্করণের জোর মহলা চালাচ্ছিল ওরা। ষ্ঠাং একটা নিতাম্ভ অপরিচিত ছেলেকে হস্তদন্ত ভাবে উপস্থিত হয়ে এসে একেবারে ওদের টেবিলের পাশে দাঁড়াতে দেখে তর্কের তোড় বন্ধ ছবে গেল ওদের। একদকে সবাব দৃষ্টি গিয়ে পড়লো ছেলেটির ব্যস্ত-সমস্ত মুখের উপর।

—মস্ত্ৰি'—

অপরিচিত্তকে ওর দিকে তাকিয়ে ওকেই সম্বোধন করে মঞ্ছদি' বলে উঠতে শুনে বিশ্বিত ভাবে বৃকে হাত দিয়ে নিজেকে দেখালো মঞ্জু—আমাকে বলছেন ?

মাথা নাঢ়লো দে—হা আপনাকে বলছি। শীগ্গির উঠে আহ্ন। ভীষণ জরুরি থবর আছে।

—ভীষণ জক্ষরি থবর আছে আমার কাছে? বলতে বলতে ছেলেটির মুখের উপর ফেলে-রাথা ওর না-চেনা না-বোঝা দৃষ্টিটা সরিরে এনে ত্বিংসাতে বই থাতা ব্যাগ গুছিরে চেয়ার ঠেলে উঠে দাঁড়ালো মঞ্ছ। বেরিয়ে আসতে আসতে ভাবতে লাগল, কে ছেলেটি? কে পাঠিয়েছে তাকে ওর কাছে? প্রথমে মুখটা যতটা অদেখা মনে হয়েছিল, এখন যেন ততটা অদেখা মনে হছে না। ওদের পাড়ার ছেলে? আসতে-ফেতে দেখে কিন্তু চেনে না? কথাটা মনে হতেই হাত-পায়ের জোড়াগুলো যেন সব আল্গা হয়ে আসতে চাইল মঞ্ব—কান ত্বিনা ঘটেছে বাঙীতে। বাবা-দাদা বাড়ী নেই। আক্ষিক হুলেবাদের খবর নিয়ে পাড়ার ছেলে ছুটে এমেছে ওকে নিয়ে বেতে?

কি হরেছে না ওনে আর চলতে পারছে না মপু। ককি-হাউদেব দরজা আর সিঁড়ির স্বল্পরিসর ভারগাটার পা দিয়ে থেমে পড়লো সে। ভেতর থেকে গলার স্বর্টা টেনে বের করে এনে জিজাসা কবলো—কি ভকরি থবর ? কে পাঠিরেছে আপনাকে আমার কাছে ?

সিঁড়িব দিকেই মোড় ঘ্রতে যাচ্ছিল ছেলেটি। মঞ্ দাঁড়িরে পড়ে ব্যাপারটা কি জানতে চাইলে দাঁড়িরে পড়লো সে-ও। মঞ্জ দিকে কিবে বললো—জন্মদি'র মা পাঠিয়েছেন আমাকে আপনার কাছে। আর পাঠানোর কারণটা বলতে গিয়ে ছেলেটি থেমে পড়ে যে মুহুর্চ সময়টুক্ নিল, তারই মধ্যে মঞ্জুর মনের ভেতর থেলে গেল—হা, ঠিক। জন্মদেব বাড়ীর উন্টোদিকের পানের দোকানটার সে ছেলেগুলো সকাল সন্ধ্যা ছপুর কেবল দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে বিভি টানে, পান খায়। মাদের এতো বাজে লাগে ওর মে পাছে ওদের উপর দিয়ে চোখ পড়ে এই জন্ম পানের দোকানটা পায় হয় মঞ্ ঘাড়টা একেবারে উন্টো দিকে ফিরিয়ে, তাদেরই ভেতর একে ও দেখেছে—না তাকানোর ভেতরও ষে তাকানাটুক্ হয়ে যায় তারই মনো দেখেছে।

সন্তবত এই থমকানো মুঞ্জীন নিল ছেলেটি কথাটা এখানে দ্বাভিয়েই মঞ্জুকে বলবে না গাড়ীতে গিয়ে বলবে, এটাই ঠিক করে নিতে, তাবপর বলকো, জ্যাদি আত্মহত্যা করতে গিয়েছিলেন। সিবিয়াস অবস্থা—

আয়ুহত্যা কবতে গিয়েছিল ছয়। সিরিয়াস অবস্থা তাব!
বিন্ততাব প্রথম ধার্কান কাটিয়ে সিঁছিব দিকে ছুটল মঞ্জু—শীগগির
শীগগিব গিয়ে আগে একটা টাাল্লি ধকন আপনি। ও, সঙ্গে আছে
টাাল্লি। এবার একেবাবে ছেলেটিকে পেছনে ফেলে দৌছে নেমে
চললা সে। এই গাড়ীটা তো। দাঁছিয়ে থাকা গাড়ীটা দেখিয়ে
জিড়াণ করে—জেনে নিয়েই উঠে বসল গাড়ীতে। না, না ওথানে
নর আপনি ভেতরে আম্বন। ছেলেটি সামনের আসনে বসতে
গেলে ডেকে এনে তাকে বসালো পেছনের আসনে। গাড়ী
ছুটে চললে অত্বির কঠে জিন্তাসা করলো—

—এঁা। কি ভাবে আয়ুছ লা করতে গিয়েছিল জয়া? বিষ থায়ে? কোথায় পেলো সে বিষ ? কে দিলে ভাকে বিষ যোগাড় করে এনে? কথন কবলে সে এ কাণ্ড? এঁা। বিষ থায়নি? তবে? সাত্রে কব্জিব শিরা সাংঘাতিক ভাবে কেটে দিয়েছে রেড দিয়ে? ছেলেটি তার সাত্রে কব্জির উপর আঙ্গুল টেনে জয়াকে কি গভীর ভাবে হাতের শিরা উপশিরা রেডে টেনে কেটে দিয়েছে দেখালে, মা গো'বলে ত্' সাতে চোথ ঢাকল মঞ্জু মেন হোস পাইপেব জলের তোডের মতো জয়ার ছিন্ন শিরার মুখ দিয়ে রক্তের তোড় ছুটে এসে ছিটকে পড়েছে ওর গায়ের উপর। থানিক বাদে ঘামে ভেজা সাত তৃটে। নয়তো যেন বক্তভেজা হাত তৃটো নামলো মঞ্কুব মুখ থেকে—কথন একাণ্ড কবলে জয়া?

তাবপর ছেলেটির মুখ থেকে মন্তু যে বিবরণ শুনে চললো তা হলো এই, তুপুরেব নির্জন অবসরে কথন যে জয়া এ কাশু করেছে টের পাননি জয়ার না। যুমিরে ছিলেন তিনি। ছেলের ভীতি-বিহরল কঠের ডাকে জেগে উঠে দেখেন অজ্ঞান জয়া পড়ে আছে বিছানার উপর। তার কাটা হাতটা বেখানটার পড়ে আছে সেধানকার চাদর ভিজে উঠে রক্তের ফোঁটা নীচে গড়িয়ে পড়ে পড়ে একটা রক্তের ধারা সৃষ্টি করে বয়ে চলেছে ঘর থেকে বাইরের



মাধ্যের মঘতা





অফার্মি কে প্রতিপালি

মীয়ের কোলে শিশুটী কত সুধী, কত সম্বই। কারণ ওর সেংম্মী না ওংকে নির্নিত অধীর্মিত থাওয়ান। অধীর্মিত বিশুক তর্মজাত বাহ্য এতে নায়ের হুলের মত ওচনারা স্বর্ধন উপকরণই আছে। আপনার শিশুর প্রতি জাপনার ভাগবাসার ক্যা মনে রেখেই, অধীর্মিক তৈরী করা হয়েছে।

বিনামূল্য-অঠারমিক পুন্তিকা (ইংরাজীতে) আধুনিক শিশু পরিচর্লার সাতাম ওপাসংগ্রিক। ভাকপারতর কল্প ৫ • নুমুপায়দার ডাক টিকিট পাঠান — এই ঠিকানায়-"অঠারমিক" P. O. Eox No. 202 লোধাই স

ৈ.মারের দুবেরই মতন

ফ্যারেক্স শিশুদের প্রথম থান্ত হিসাবে ব্যবহার করন। সুত্থ দেহগঠনের কন্স চার থেকে পাঁচ মাস বয়স পেকে হুধের সঙ্গে ফারেক্স থাওয়ানও প্রয়োজন। ফারেল্ল পুটকর শালিলাও আন্ধার্মা -করতে হয়না—গুধু হুধু আরু চিনির সঙ্গে মিশিয়ে, শিশুকে চামচে করে বাওয়ান।

.OS. 1-X52 BG



দিকে। দেখে তিনি আঠকারার বে টিংকার করে ওঠন সে কারা
সর্বপ্রথম শুনতে পার সে। সেই গিরে ডাক্তার ডেকে আনে।
ডারপর জরার মা'ব দেওরা ঠিকানা নের মন্ত্র থোঁজে। প্রথমে
বার বাড়ীতে। সেথানে শোনে সে কলেজে। আসে কলেজে।
কিন্ত কলেজেও না পেরে কি বে সে করবে এই ভেবে না পাওয়া মূহূর্তে
একটি ছেলে হদিস দেয় তাকে এই কফি-চাউসের। বলে, একবার
মূঁজে দেখুন। আফ-পিরিয়ড চলছে, হয়তো দেখানেই পাবেন।
ভারপর আসে সে এথানে।

—ডাক্তারকে কি বলতে শুনে এসেছে সে ?

সে তনে এসেছে ডাক্ডার বলছেন, একটুও সময় নষ্ট না করে— এক্ষ্ণি হাসপাতালে বিম্ভ করে রক্ত দেওয়ার ব্যবস্থা করতে। নইলে বাঁচানো ছন্ধর হবে। ক্রমেই সব রক্ত নিঃশেবে বেবিয়ে যাচ্ছে শরীর থেকে জ্যাদি'র।

—ডাইভায় জলদি—খুব জলদি—মঞ্ ডাইভারের আসনের ওপর ছুই হাত রেখে সামনে এগিয়ে এদে রুদ্ধনি:খাদে তার অপুর্ব হিন্দীতে বোঝাতে চাইলে; তার এই তাড়াভাড়ি পৌছে দেওয়ার ওপর যে একটা জীবনের মরা-বাঁচা নির্ভব করছে সেই কথা।

কিছুই দরকার ছিল না। ডাইভার বাংলা যথেষ্ট বোঝে। সে সব শুনেছে এবং বুঝেছে। হর্ণের উপর হর্ণ বাজিয়ে যেন নিজের শুক্তর প্রার কথা সঙ্কেতে বলতে বলতে এবং একটু পথ ছেড়ে দেবার শুকুরোধ করতে করতে গাড়ী ছুটিয়ে নিয়ে চললো সে।

কিন্ত মামুষের ভেডরটা যথন থবা করার উদ্বেশে ছুটতে থাকে, তথন তার সেই মনের ছোটার সঙ্গে যন্ত্রের ছোটা তাল বেথে চলতে পারে না। তথন মনে গছে থাকে, রাস্তায় নেমে পড়ে নিজে ছুটে চলতে পারলেই বৃশ্বি বেশী তাড়াভাড়ি হয়। মোড়ের মাথার লাল বাতি, চৌমাথার ট্রেফিক পুলিশের হাত, মোটবের ভিড় যথন তাবও উপর কেবলই সে চলাকেও বার বার দিতে থাকে থামিয়ে, তথন যে মামুর গাড়ী থেকে নেমে পড়ে সভ্যি নিজে ছোটে না, সেটুকুই বৃশ্বি পাগলের সঙ্গে স্বস্থ ব্যক্তির তথাং। আব শুধু এই বিশেষ অবস্থার বিশেষ কেত্রেই নয়—ইছে করলেই সব করা যায় না, ইছে করছে বঙ্গেই করতে গেলে যে পাগলামী হয়, এই বোঝার সম্বস্টুকু নিয়েই ভো সর্বক্তেরে মানুর পাগলের সঙ্গে নিজের তথাংটুকু বাঁচিয়ে চলে।

বদে থাকতেই হলো মঞ্কে, দ্বির হয়েই বদে থাকতে হলো
ভাকে। শরীরটা গদির উপর নামমাত্র রেথে সমূপের আদনের পিঠটা
ববে তক হংকেই বদে বইলো মঞ্, যতকা না গাড়ী জয়াদের বাড়ীর
গলিতে প্রবেশ করলে। আশেপাশের কোন বাড়ীতে যে ত্রস্ত রকমের
কোন স্পটনা ঘটে গেছে, তার পরিচর গাড়ীটা গলিতে ঢোকার পর
বেকেই মিলতে লাগলো তার মোড়ের মাথাব গভীর জটলায়, জয়াদের
বাড়ীর সমূপের রাভার এথানে-ওখানে দাঁড়িয়ে থাকা ছোট ছোট ভিডে,
নাম্যগুলো দাঁড়ানোর লখ ভঙ্গিতে আর মুথের কাজন্য। মুহূর্তপূর্বের
নির্মন-উদাসীন প্রতিবেশী মুখ্তলো বেন মুহূর্তের মধ্যে মায়ায়-মমতায়
উর্ব্বেণ-উৎকর্তায় পর্যবসিত হয়ে উঠেছে পরমান্ধীরের মুথে।

না থাক চেনা, না থাক জানা, না থাক পরিচর, তবু তারা তো কেন্ট কার অপরিচিত নয়। সব কথা না জাত্মক অনেক কথাই ভারা জানে পরস্পার পরস্পারের সম্বন্ধে। পানের দোকানের সামনে বাজার মেরেটিকে পৌছে বে ছেলেটি নিতাদিন বিদার নিরে বার, তার

খবর বাতীর লোক না জার্মুক, জানে প্রতিবেশী। দোকান ধার, বাড়ী ভাঙা বাকী, পত্রিকার বিল, গোয়ালার ঋণের থবর মা জানতে পারে আত্মীয়গোষ্ঠা, কিছ জানে প্রতিবেশী। পর পর ছদিন কুণ্ডলী পাকামো ধোঁয়া এসে দম বন্ধ করে না তুললো প্রতিবেশী দৃষ্টি ভাদের निष्कालय क्षळारूटे शिख थाकी लग्न ऐभवामी कार्नालांव ऐभव। তারা কেউ কাউকে চেনে না কিছ জানে সবাইর কথা স্বাই। জানে জয়ার সম্বন্ধেও। তারা দেখেছে, এক দিন এক বিষণ্ণ সন্ধ্যায় এক বিষয়মুখী মেয়েকে এসে এই বিশ টাকা ভাড়ার ঘরের দরজায় বিক্সা থেকে নেমে দাঁড়াতে, মা-ভাই-এর হাত ধরে স্বত্বে নামাতে, ঠেলাওলার মজুরি মিটিয়ে দিয়ে মলিন ভাঙ্গাচোরা মালপত্রগুলোকে মা আর ছোট্ট ভাইটির সাহাব্যে টেনে টেনে ঘবে তুলতে। তারপর দেখেছে মোটা ছিট কাপড়ের ভবা থলিতে কি সব নিয়ে তাকে যাওয়া-আসা বরতে, তাব চোথের তলার কালীকে গড়িয়ে গড়িয়ে গালের উঁচু হাড় বেয়ে নেমে আসতে, তার ফর্সা রংকে দিনে দিনে রোদে পুড়ে কালো হয়ে চোথের তলার কালীর সঙ্গে মিশে এক হয়ে বেতে। তারা দেখেছে হ'পা ভেতরে চুকলে ষেখানে আর কিছু না হোক অস্ততঃ ঘরের আড়ালের বিশ্রামটুকু মেলে, সেথানে নিজের বাড়ীর খোলা রাস্তারই রকের চিলতেটুকুর উপরই বসে পড়ে তাকে বিশ্রাম করতে, আঁচস দিয়ে মুখ মুছতে। তারপরের দ্রুত পটপরিবর্তনও আদেখা নেই কারু। হঠাং হঠাং করে দেখতে দেখতে প্রায় সবাবই দেখা হয়ে গেছে তার রাতের বেঞ্চনো আর প্রাতের ফেরা। আর ইদানীং রাস্তার উপর সে যে কাগুকারখানা আরম্ভ করতো, তাকে নিয়ে যে টানা-হেঁচডা বাস্তার উপরই চলতো তা আর দেখতে বাকি ছিল কার? কুৎসা চলেছে ওকে নিয়ে। শিস্ দিয়েছে পানে লাকানের বিডিটানা ছেলেগুলো। কিন্তু সেই সব নির্চুর নিংকণ মুপগুলোই আজ নমতায় কি আশ্চর্যা নরম—কি আশ্চর্যা কৃত্ব ।

হায়! মামুবের বুকে এই মমন্ববোণটুকু জাগতে যদি এতো কিছুর দরকার না হতো। যদি 'আহা' শব্দটা যতটুকু হাওয়া নিয়ে তাদের বুক থেকে বেরিয়ে আদে তাতেই ফুরিয়ে না যেতো!

এতাদিন জয়াকে তারা বিচ্ছিন্ন ঘটনার তেতর দিরে বিছিন্ন ভাবে দেখেছে, বিচ্ছিন্ন ভাবে বিচার করেছে। রায় দিয়েছে। দাওয়ায় বলে পড়তে দেখে সহায়ৢভৃতির সঙ্গে বলেছে, বেচারা মেরেটা! এই ছর্দিনের সংসার কি এভাবে টেনে চালাতে পারবে? মরবে। আবার গাল দিয়েছে, উঠেছে রাত বিচরণ করা জয়াকে নির্দন্ধ ভাবে। গেছে একেবারেই জাহায়মে গেছে মেয়েটা! বেমন প্রাকৃতি তেমনিপথ বছে নিয়েছে। কাজের সঙ্গে কারণ যোগ করবার সমর কোথায় তাদের। কিছ্ক আজ প্রথম তারা প্রথম দিনের সেই বিষয়েয়্থী মেয়েটির মা-ভাইএর হাত ধরে এসে দরজায় শাড়ানোর দিনটি থেকে আরম্ভ করে তার থলি কাঁথে এ-পাড়ায় ও-পাড়ায়, এর দরজায় তার দরজায় ঘোরা থেকে, তার প্রতিদিনে এক প্রাস্থমেনের জন্ত সংগ্রাম তার পাগলামো, তার উচ্ছেমল হাসি, তার আজকের মৃত্যুর জন্ত প্রস্তৃত হয়ে এসে শব্যায় শোয়া পর্যন্ত প্রতিদি ছিল ঘটনাকৈ এক সঙ্গে সাঁথলো। প্রস্তুরে পথে চলে নম্ন চর্ম

শুপ্রবৃত্তির চলা চলতে গিরে আৰু সে সেই চলা থামিরে দেবার
প্রস্তু প্রায়ৃত্ত্রী কেটে ফেলেছে আপন হাতে। কাদ্দিনী মরে
প্রমাণ করেছিল মরে নাই। এ মরে প্রমাণ করতে চাইছে
সে মরেছিল। কালের সঙ্গে কারণ বোগ করে আরু তাদের
বৃক্ থেকে বে দীর্ঘনিঃশাসগুলো বের হরে আসতে লাগল তা কি
পুর্ই জ্যার জ্লা? না। তাদেরই বা কি এমন রমণীর সমূদ্ধ
ভাবন। সেই দীর্ঘনিঃশাসের সজে নিজেদের ক্র্থিত ব্ধিত
ভাবনগুলোও এসে মিশে গিরে নিংশাসকে টেনে দীর্ঘ করলো।

চোথের কোণে কোণে তাদের যে আলোর ফণিকা বলে উঠতে লাগল বদিও তা জোনাকির আলো ব্যতীত কিছুই নর। তাপ নেই, বিহাৎ নেই, আগুন নেই। বলে উঠতে পারে না আলিরে দিছে পারে না—মৃত। তবু দেই মৃত আলোগুলো বখন মোডের মাথার জটলার রাজার সমুখের ছোট ছোট ভিডে, একডলা দোতলার বারালার দরজার জানালার দাঁড়িরে থাকা চোথে চোথে বলে উঠতে লাগল তখন সেই বিন্দু বিন্দু মৃত আলোর কণাগুলোর ভেতর এক বিদ্ধ করে প্রাণ ভরে দেওবার জন্ম ভগবানের দরজার মাথা কুটতে ইছে করতে লাগলো মঞুর।

এতক্রণ মঞ্জু গাড়ীতে বসে বসে কেবল এখানে এসে পৌছোনোর তাগিদে ছটফট করেছে। এখন এসে গিয়ে নিজেকে তারি নিরবলম্ব মনে হতে লাগলো ওর। কি করে কি করতে হবে, কি করে হাসপাতালে যেতে হবে—কোন হাসপাতালেই বা নিয়ে বাবে। যে জনবধানতার কথা কাগজে পড়ে, তাদের গাফলতি আর উদাসীনতার দক্রণ প্রাণহানির যে কলম্বজনক সব ঘটনার কথা তনতে পায়—যদি সেখানে গিয়েও সম্কটকালের ত্বিৎ ব্যবস্থা না মেলে। তবু চোধে অন্ধকার যে মঞ্জু দেখছিল না তা সে কোন ব্যাপারেই চোধে অন্ধকার দেখে না বলেই। কিন্তু ছেলেটিকে সঙ্গের রাখতে হবে। তার নাম জানতে চাইলো মন—আছো, আপনার নামটা কি ?

—অমল।

— আপনি কিন্তু চলে যাবেন না। আমি বে কি ভাবে কি করবো, কিছুই বুঝে উঠতে পারছি নে। আপনি থাকলে তবু আমি জোর পারো।

যেন কুতার্থ করল মঞ্ছু তাকে, এমনি ভাবে ঘাড় কাত করে শমতি জানালো ছেলোট।

কিন্তু এখানে নামা হলো না ওদের। গাড়ী থেকে নামবার মুগেই একটি ছেলে ছুটে এসে বাধা দিলো। বললো, একেবারে একে নিরে মেডিকেল কলেকে চলে যা অমল। মি: চৌধুরী—মাথা চলকে বোধ হয় ক্ষয়ার নামটা মনে করে নিল সে—ক্ষয়াদি'কে নিয়ে সেখানে রওনা হয়ে গেছেন। তোদের আসামাত্র দেখানে চলে ঝেতে বলে গেছেন ওঁরা।

ক্ষের বন্ধ গলি থেকে গাড়ী পেছু চলতে লাগল। মঞ্ দেখল, বলিও মন্ত একটা তালা বৃল্লছে জয়াদি'র দরজার কিছ খোলা। হয় দিশেহারা জয়ার মা তালার মুখটা টিপতে ভূলে গেছেন নরতো হাতে ভার এমন জোর এখন নেই যে তার হাতের টিপে তালার মুখ বন্ধ হয়। নেমে বন্ধ করে আসবে ? না। মূল্যবান জিনিব খোরা গেলেও এখন সমর দেওরা বার না—আর এতো নেই-ই কিছু। বার বাবে। বছতের দেওরা টাকার বা হাতে আছে জরার মা'ব এবং বে

টাকা ক'টা এখন বর্তমান মৃত্তে ওর একমাত্র ভরসা সে টাকা তো জ্যার মা সঙ্গেই নিরে গেছেন।

কতই বা দ্ব, গাড়ী ছুটিরে নিসে সারপেণ্টাইন লেন থেকে মেডিকেল কলেজ। হু' মিনিটে পৌছে দিলো ওদের ছাইভার মেডিকেল কলেজের প্রশস্ত সিঁড়ির চন্বর। মঞ্ ট্যান্তি-মিটারটার দিকে একবার তাকালোও না। সে বিলক্ষণ জানে বে অন্তই মিটারে উঠে থাক ওর ব্যাগের সাধ্য নেই তা মিটিয়ে দেবার। এ ছাড়াও দরকারও হতে পারে ট্যান্তির। এমন অবস্থার একটা ট্যান্তি হাতের কাছে থাকা ভালো। ছাইভারকে ওরেটিং চার্কের সঙ্গে বক্দিল কবুল করে নেমে পড়ল মঞ্ছ। কিছু তার পর ? কোথার এখন ওরা খুঁজবে ওদের, কা'কে জিক্তালা করবে জারাদের কথা ?

কি করা বার জিজ্ঞাসা মিরে চ্জনে চ্জনের সিকে তাকালো।

—চলুন ইমারজেনি কেস কোথার নিবে বার খোঁক করি।
অমল বলতেই মঞ্ 'চলুন' বলে হাঁটা দিল তার সঙ্গে। কিছ খোঁক
করার জক্মও কোন দিকে বেতে হবে সেটা জেনে নেওরা দরকার!
ও মশাই শুরুন, বলেই অমল চেচিয়ে উঠল ঐ তো ওরা মিঃ চৌধুরীরা
দাঁড়িয়ে। মিঃ চৌধুরীদেরও অমলের দিকে চোখ পড়ে গোল। ডেকে
উঠলেন তাঁরা। একেবারে লাফিয়ে লাফিয়ে তৃক্তনে উঠে এলো
চন্ধ্রের সিঁড়ি পার হয়ে উপরে।

না, কিছুই করে উঠতে পারছে না তারা। ওধু ছটো কুলী এসে জয়াকে ট্রেচারে করে নামিয়ে নিয়ে ইমারজেন্সি রুমের টেবিলে ভইয়ে রেথে পেছে। ব্যস! কোথায় ডাক্তার! কোথায় নার্স! ডাক্তার নাকি আর একটি ইমারজেন্সি রোগীকে অপারেশন করছেন।

—हनून।

মঞ্জে নিয়ে এলো তারা ইমারজেন্সি কমে। জয়ার মা কখনো কাঁদছিলেন, কখনো ঘর-বার করছিলেন। কখনো মেসের কাছে গিয়ে তার হিমনীতল হাত-পা হাতে নিয়ে ঘরছিলেন গরম করে তুলবার জয়া। কখনো নাকের কাছে হাত ধরে দেখছিলেন খাস বইছে কি না। মঞ্জেক দেখে ভুকরে কেঁদে উঠলেন তিনি। মুখে আঙ্গুল চেপে থামতে ইসারা করে মঞ্জু এক মুহূর্তের জয়্ম জয়ার রক্তশুষ্ঠ সাদা কাগজের মতো মুখটার দিকে তাকালো। তাকালো জয়ার ব্যাতেজবাঁধা রক্তভেজা হাতটার দিকে। রক্ত বে কেবল বেরিরেই গেছে সব তাই নয়। যেটুকু অবশিষ্ঠ আছে অর্থাং বে রক্ত ক'বিল্পুর জয়া এখনও নিঃখাস-প্রখাস বইছে জয়ার, তাও নিঃশেবে বেরিরে চলেছে। ব্যাগটা কাঁধে বুলিয়ে কোমরে আঁচল ওঁজল মঞ্জু।

বারান্দার বেরিয়েই যে অফিস-পিয়নটার সঙ্গে দেখা হলো তার কাছেই দাঁড়িয়ে পড়লো মঞ্। তোমাদের ডাব্ডার বাবুকে কোধার পাওয়া যাবে বলতে পারো ?

—কোন ডাকোর বাবুর কথা বলছে সে? ডাকোর বাবু ভো একজন নম ?

এক-বোঝা ওব্ধ ব্যাণ্ডেজ হাতে হনহন কৰে ছুটে চলে পেল একজন নাৰ্স তাদেৰ পাশ দিৰে। জার দ্বুটে চলা নার্সের শেহদেৰ ৰাভাসটা ধেন মঞ্ব কানে কালে খাৰণ কৰিবে দিয়ে গেল ভূমি মমভাব খোঁজ কবছ না কেন ? সে বে মেডিকেল কলেকেৰ ঠাক লাস একজন—মনে নেই ভোষাব ? মিদ সেন, মিদ লেকেক চেন ভূমি ? নাস মিদ সেন—মমভা সেন ? যেন লোকটা মিদ মনজা নেনকে চেনে বলে তাবেই সৰ মুশ্কিল আসান্ত্ৰিয়ে বাবে ভাব।

চেনো ? আমাকে তবে তার কাছে একটু নিয়ে চলো না। কল্প মিনতি করল মঞ্।

আৰ্থি আবেৰন শোক্তৰাত বড়া কোন অনুকল্পাট আৰু এনদৰ মন্দ্ৰ সাম আনাম না। চলতে চলতে জহাব দিল গোলাসে অকবি আগাম নিখে চলেছে। তাৰ লক্ষে নিয়ে মানুৱা সভাৰ হবে মা। তাৰণ নাস-কোমাটাৰ এখান ব্যক্তে দল প্নাৰো নিনিটেম পথা ঘটা খানেক হবে ভিটিটি দেশ কৰে যে দিনিয়াল তাৰ ভোৱাটাৰে চলে গেছেন।

ক্ষণ-প্ৰয়ো হিনিটেৰ পথ। আগতে খেতে আৰু খণ্ড। কোন-কোন কৰা যায় না এফটা ? সংজ গতে চলতে চলতে বিকামা ক্ষলো মঞ্ছ।

কৰাৰ কিন্ত সেখানে ফোন কৰতে হলে স্পারিটেওেটের কান্তে গিরে আগে অনুমতি নিতে হবে।

—কোথায় সুপারিন্টে গ্রেটর খর ?

আকৃত দিরে একটা দিক দেখিরে দিরে চতে বাদ্ধিল সে।
মিনতি করলো মঞ্—তুমি আমাকে দরা করে অন্ততঃ অফিস্বরটার
পৌতে দেও। আমি ভোমাকে বর্থাদিশ দেবো।

এবার কাজ হলো।

অতি বিনরের সহিত, সঙ্গে করে নিরে এসে সে পৌছে দিল মঞ্কে স্থপারিন্টেণ্ডেন্টের খরের দরজায়। মঞ্বাগ থেকে ওর কলেজের বাতায়াত পরচাব টাকাটা বের করে পিয়নের তাতে তুলে দিয়ে গিরে অফিসক্ষে চ্কাল। সামনের চেয়াবটার বিনি বসেছিলেন মঞ্ জানে না তিনিই স্থপারিন্টেণ্ডেন্ট কিনা, তবু সে তাঁবই কাছে আবেদন জানালো—ভাকে নাস-কোয়াটারে একটা কোন করবার অসুমতি পেবার জন্ম। মঞ্ জানে না নাস্দির কোন করার এই জন্মতির নিয়মের কতটা কড়াকড়ি তার মুখের অভিবতার, তার গলার স্বরের ব্যাকুলতা লক্ষ্য করেই এতা অনায়াসে অনুমতি মিলে পোল কি না। ছেন্ডলাকটি নিজে উঠে ডায়েল ঘ্রাতে যুরাতে জিল্লান ক্যলেন, কাঁকে চান আপনি ?

—মমতা সেনকে।

একেবারে মমতা সেনকে তেকে ওব হাতে কোন তুলে দিরে জুলোক সিরে চেয়ারে বসলেন।

—ছাজা কে ? কে আপনি ? একটা নিট গলা ভেদে এলো মঞ্জ কানে।

—আপনি—আপনি কি মনতা সেন ?

-री। राजुन।

— আমাকে আপনি চিনজে পাবৰেন কি না ব্যে উঠতে পারছিনে। আমার নাম মঞ্ছ আপনাবের বাড়ীতে আনি পিরেছি। একদিন আপনার সঙ্গে আমার দেখাও হরেছিল কিছ পরিচয় হবার সৌভাগ্য হরনি।

এক ঝলক নিচু মিটি হালির সলে জবাব এলো—আমি

থ্ব টিনতে পাছছি আপলাকে। আপনার কথা আমি দাদার যুখে শুনেছি। কিন্তু কি ব্যাপার বনুন তো ?

—আমার এক বনুকে অত্যন্ত সংকটাপর অবস্থার আপনাদের মেডিকেল কলেজ-ভাসপাতালে নিবে এসেছি। তার হাত কেটে গিয়ে অতিবিক্ত বক্ত পড়ে গেছে। কিন্তু এক ঘটার উপর হয়ে চলল আপনাদের ইয়ারজেজি কমের টেবিলের উপর দে পড়ে আছে সক্ষান অবস্থায়—কি যে করবো—

⇒ाठाँहै! चामि श्रकृति व्यामित्ति। चामानि हैमांत्राजनि कृत्य काम पान । त्यांन दांशांव भव्य करणा क्रंक करत ।

পড়িব মিনিটের কাটিটো মন্ত্রৰ প্রাচীক্ষমান চোখের উপার দিরে বার পাঁচ সাজের বেনী দরে আসতে পেলো না। পোনোরো মিনিটের পথ পাঁচ মিনিটে চলে গদে ঘৰে চুকল মঘভা। ভৌৰ ছ'টা থোক विमा शार् किन्ने। **एर्यस** अवस्थाना क्रिकेरि निरम्--क्रीनार्डीख फिट्स পিয়ে সে মনে প্রান-মাওয়া মেরে একটু বিছালায় শবীর এলিবেছিল। মধুর যোন পেয়ে মেডাবে ছিল সে ভাবেই চলে এসেছে, শুণু ভিজে চলের রাশি হাতে জড়িয়ে কয়েকটা গাঁটা গুঁজে। এক ঘটা পরে না फिरम च्यार्था कम थवत्रो मञ्जू अरक मिल मा-मञ्जूरक o कथाहाँ है ৰলতে বলতে চলে গেল দে একেবারে জন্মার টেবিলের কাছে। প্রথমেই সে অসমার তান হাতটা হাতে নিয়ে নাড়ী দেখলো। তারপর দেখলো। কালো হয়ে আসা তার আসুলের ডগাওলো। এক নজৰ ভাকালো ভার নীল হয়ে আসা ঠোঁট হুটোর দিকে। তারপর এমন অবস্থার করণীয়টা আগে করে নিলো সে; জয়ার হাতের রক্তডেঞ্চা ব্যাপ্তেজ্বটা খুলে কেলে আটারি করসেপ নিয়ে এসে মুখটা আটকে দিরে নিল বক্ত পঢ়ার পথ বন্ধ করে। নিতাস্তই হাতের সুক্ষাশিরা উপ্নির। কিছুক্ষণ বক্ত বেরুনোর পর রক্ত জনে গিয়ে নিজ থেকেই থাকে, কিছু সময়ের জন্ম বন্ধ হয়ে ফের রক্ত জনে জনে চাপ স্টি হয়ে ব্যক্ত ক্ষরণ শুক্র না হওয়া পয়স্ত। আর এই ভাবে কিছুক্ষণ পড়া আর কিছুকণ বন্ধ থাকার ভেতৰ চলচ্চিল বলেই জয়ার এই নি:খাসটুকু এখনও বইছিল। নইলে কখন সব চলা থেমে যেত তার। কিন্তু আন সময় নেই। একটা গ্লুকোজ সেলাইন এখন--- এই মুহুর্তে দেওয়া দরকার--- বাদ মেরেটিকে বাঁচাতে হয়। কিন্তু মুকোজ দেলাইন দেওয়া নামদের—বিশেষ জুনিয়ার টেইণ্ড নাৰ্শের পক্ষে একেবারেই আইন-বিৰুদ্ধ! ভবে ভারা যে এ কাক্ত না করে বা কোন রকন আইনবিঞ্জ কাক্ত না করে তা মারও নয়। নিজের হাতেই গুকোজ দেলাইনও সে দিয়েছে। ভাক্তার উপস্থিত থাকতেন এই মাত্র। কিন্তু এখন লোকচকুৰ উপর সে কিতুতেই একাজ করতে পারে না। কিন্তু যার অবসর আছে, যে সময় দিতে পাবে নিজের কাজ ছেড়ে আগবার এমন একজন ভাক্তার খুঁব্রে পেতে আনতে আণ ঘণ্টা সময় পার হয়ে যাবেই— বে আধ ঘণ্টা সময় রোগীর বিপদের কথা ভাবলে কিতুতেই দেওয়া ৰায় না। কের জয়ার নাড়ী দেখল মমতা তার ডান হাতটা তু^{লে} নিয়ে। তার পর দাঁত দিবে পাতলা ঠোটটা কামড়ে ধরে দুর্ভ হাতে তংশরতার সঙ্গে ব্যবস্থা করে চলল রোগীকে গ্রন্থাক সেলাইন পেওয়ার। হা সে-ই জয়াকে সেলাইন দেবে। তারপর যথন ^{এই} আইনবিক্ন কাজের জবাব তার কাছে চাওয়া হবে, তথন তার ক্রমণ্ট । जवादवत्र कथा जावा बादव ।

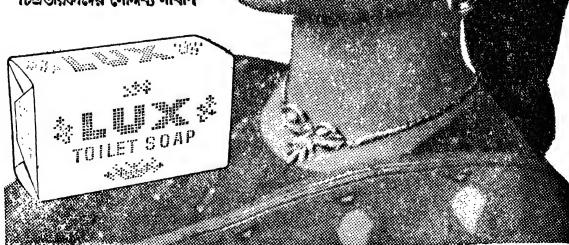
আপনারও

-চিএতারকাদের মত উদ্ভেল লাবন্য হতে পারে

दिवादक्षीमांना यत्मम "माज वेबत्मि माराम हारहार करत जामांव जानचे गर्नमार स्वत र मरमब श्रांटन । शार्यार गरहर यक रमश्र जायोव स्टन्स भरम ভাল -- এর শুলার দৌরত আয়াকে সারাদির बार मार्थस बार दौर्द ।" चाननित रेनकाकीशानार यक मानगायी शरह পারেন। লাক উল্লেট সাধান আপনার দৈনন্দিন त्यी-वर्षा ठर्कात मनी दशक । मत्न दावदन লাক্স স্নানের সময় সত্যিই আনন্দদায়ক। বিজ্ঞদ্ধ, শুজ

CM न्तु ३

উয়নেউ সাবান **हिङ्कातकारम्ब स्नोक्स्य जावान**



হিন্দুল লিভার লিঃ, কর্তৃক **প্রস্তত।**

LTS. 9-X52 BG



ভবানী মুখোপাধ্যায় উনত্তিশ

বিভিন্ন কে প্রশ্ন করা হল, Saint Joan নাটক লেখার পরিকল্পনা কি ভাবে আপনার মনে এল ?

বার্ণার্ড ম' উত্তরে বললেন—আমি অবস্থার দাস, গদি আমাকে নাটক লিখতে বলা হয় আৰু মাথাৰ যদি আইডিয়া থাকে, ভাইলে সেই **অহুরোধ আমি** রাথবো কিন্তু দেখা যায় ঠিক সেই জাতীয় নটিক কেউ চার্মি। Saint Joan সুক্ত করার আগেও এই অবস্থা, যাহা কিছ শিখতে চাই কিন্তু মাথায় কোনো আইডিয়া নেই। আমার ত্রী বললেন—Joan of Arc চবিত্র নিয়ে একটা নাটক লেগ না কেন ? আমি তাঁর কথা রেগেছি। আমি জোনের বিচার এবং পুনর্বাসন সংক্রান্ত বিবরণ পড়েছিলাম, তথনই মনে হয়েছিল এর মধ্যে নাটক আছে, ভগ বিশাসের প্রয়োজন ঠেজের উপযুক্ত করে। আমাৰ কাছে এ ছেলেপেলা। প্রাচীন জোন সম্পর্কিত নাটক এবং ইতিহাস বোমান্সের ফারুস আমি সমসাময়িক বিবৰণ পড়েছিলাম, কিন্তু भगारमाध्ना वा खोरनो भएएछ नाईक तहना त्यर करत । व्यथम প্রোটেষ্টাট হিসাবে জানের ভূমিকা স্থামাকে আক্ষণ করেছে, পথিকতের লাওনা আমি বঝি। আমি পরিশেষে ছোনের মৃত্যুর পর কি হল তা বলার টেট্রা করেছি, বাকা অংশ সমগ্র ঘটনার ধারাবাহিক বিবরণী। প্রথমে নাটকটা অনেক দীর্ঘ হয়েছিল। পরে কেটেকুটে কম্বালটুকু রেখেছি মান্ত। তবু অনেকে মনে করেন সাড়ে তিন ঘণ্টার অর্থ---কল্পালের অনেকটা ওলে।

বাণির শ'র Back to Methuselah নাটকের পর সকলে মনে করেছিল তিনি নিঃশেষিত, বিশেষ কিছুই আর দেওয়ার নেই। তাঁর নিজেরও ধারণা এই তাঁর সর্বোভম রচনা। তাঁর অনুরাগী পাঠকের জনেকেই বলেন, না Man and Supermanই শ্রেষ্ঠ, এবং Saint Joan যে শ্রেষ্ঠ নাটক এই অভিমত পোষণ করেন বারা তাঁরা সংখ্যায় কম নন। এই নাটক অতি জনপ্রিয়। বাণির্চি শ' এই নাটক রচনায় অভিভৃত হয়ে পড়েছিলেন, তাই যেথানে ঘাতক ষষ্ঠ মুন্তের শেষে বলেন—You have heard last of her তথ্ন

ভ্যারউইক সহাত্তে বললেন—The last of her? Hm! twonder

এইখানেই নাটকের শেব হলে তা সন্ধত হত। সমালোচকদের এই মত, কিন্তু সেথকের মত বিভিন্ন, তাই তিনি Epilogue বা প্রিশিষ্ট জুড়ে দিয়েছেন, তার কারণও বললেন।

পুরোভিত আর রাজনৈতিকদের কাছে যদি জোন নতি স্বীকার করে, তাহলে তার প্রাণ বাঁচে, কিন্তু জোন আপোধ-বিরোধী। যা অস্তার মনে করে তার কাছে নতি স্বীকার তার চরিত্র-বিরুদ্ধ। সে তার বিশ্বাসে আচঞ্চল। দে বলে—কোথায় থাকতে আৰু তোমরা, যদি আগ্রি ভোমাদের কথাই মেনে নিতাম ? তোমাদের কাছে কোনো সাহায্য, কোনো উপদেশ আমি পাইনি। গ্রা, আমি এই পৃথিবীতে নিঃসভ। চিৰদিনই এমন একা। আমাৰ বাবা আমাৰ ভাবেদেৰ ছকুম দিবেছিলেন আমাকে কলে ডুধিয়ে দিতে, যদি আমি তাঁর ভেড়াওলো না দেখি, ওদিকে তথন ফ্রান্সে মৃত্যুর তাথ্যব চলেছে। আমাদের ছেড়াগুলো হয়ত নিরাপদ হত, কিন্তু ফ্রান্স ধ্বংস হয়ে যেত। আমি ভেবেছিলাম ফরাসী সমাটের রাজসভায় ফ্রান্সের মিত্র আছে, কিছ দেখলাম, ফ্রান্সের ছিন্ন মৃতদেহটা নিয়ে নেকড়ের লুক হানাহানি। ভেবেছিলাম ঈশবের সর্বত্রই মিত্র আছে, কারণ তিনি সকলের বন্ধ, আর সরল মনে ভেবেছিলাম আজ আপনারা ধারা আমাকে এখন এই ভাবে অপসারণ করছেন, জাঁরা আমাকে সকল অনিষ্ঠ থেকে রক্ষা করবেন, আপনারাই আমার শক্তিমান হুর্গতোরণ। কিন্তু এখন আমার জ্ঞানচক্ষ উন্মীলিত।

বাণার শ এই নাটকে স্থলার উক্তি দিয়েছেন, ছাপার অকরে তা অনেকাংশে আড়াই পাতার বেশী এব: উচ্চোবণ করতে সাত-আট মিনিট লাগে, তব এই স্থাণীয় বজুতা শোতারা মন দিয়ে শুনেছে। বিশেষ : ভোনের উক্তিগুলি এত স্থান্ত কাব্যাত্মক ভঙ্গীতে রচিত মে, অভিনয় না দেখে এই নাটক পাঠ করলেও আনন্দ পাওয়া যায়।

সোন যেগানে বল্লে—You promised me my life; but you lied. You think that life is nothing but not being stone dead. It is not the bread and water I fear—I can live on bread: when have I asked for more?...Bread has no sorrow for me and water affliction......

তার পর উত্তেজিত পুরোহিতগোষ্ঠী উমা ও ক্রোধে জোনকে ডাইনী ঘোষণা ক'রে প্রকাগ্র বাজারে জীবস্ত অবস্থায় আগুনে পুড়িয়ে মারে। এমন নাটকীয় বিষয়বস্তু আর বার্ণার্ড শ'র বিচিত্র রচনা-কৌশল দর্শককে আকুল করে তোলে।

কঠিন-ছানয় সমালোচকও তাই স্বীকার করতে বাধ্য হয়েছেন Saint Joan বার্ণার্ড শ'র শ্রেষ্ঠতম রচনা।

১৯২৩ খৃষ্টাব্দে এই নাটক বচনাকালে বাব বাব নানা ছোটোখাটো অনুবোৰ বাৰ্ণাৰ্ড শ'কে প্ৰত্যাখ্যান করতে হয়েছে। তিনি বলেছেন, এখন আর কোনো কিছু নমু I must get my Joan of Arc play through the press and on to the stage—for the moment, spare me. I will make good later.

ফান্ধ স্থারিসের সঙ্গে বার্ণার্ড শ'র দার্গ দিনের বন্ধুখ, তিনি বার্ণার্ড শ'র একটি জীবনী লিখেছেন। নিছক ভালোবাসার থাতিরে নয়, অর্থের প্রান্তোজনে। এই জীবনীর প্রিশেবে The Saint Joan Row

নামে একটি পরিপ্রেলে, Saint Joan নাটক সম্পর্কে বার্ণাও শ'ব সঙ্গে তাঁর কি প্রালাপ হয়েছে এবং কোথায় বিরোধ তা বণিত হয়েছে। বার্ণাও শ'ব অপর একজন জীবনীকার আর্কিবালড হেনভাবসন বলেছেন—Saint Joan is the greatest play in english since Shakespeare—ফ্রান্ধ হারিস বলেছেন, এই কথাতেই বার্ণাও শ'র মাথা ঘ্রে গেছে। এই নাটক ফ্রান্ধ হারিসের মতে ঐতিহাসিক ক্রটা, সাধারণ ভুল ভ্রান্তি এবং নাটকীয় হুর্বলভায় পরিপূর্ণ। বার্ণাও শ' বলেছেন, most other writers made Joan an operatice heroine—a grand opera stunt. What she really was did not interest them—

এর পটভূমিকায় আব একটি কথা বলা প্রয়োজন, ফ্রাঙ্ক ছারিসও জোনের জীবন নিয়ে লিগেছিলেন Joan La Romee—বার্ণার্ড শ' এই গ্রন্থ নির্বোধন বচনা বগেছিলেন। পশ্চিমের মায়ুবরা কিঞ্ছিং ম্পার্টনাদী, তাই ফ্রাঙ্ক এ কথাও স্থীকার কমেছেন—Shaw did not like my play and that, you may be sure, quite obviously influences my judgment of his Saint Joan.

বাণার্ড শ কাঁর Man and Superman নাটক তাঁর বন্ধু এ, বি, ওয়াক্লির নামে উংসর্গ করেছেন। Saint Joan প্রকাশিত হওয়ার পর Times পত্রিকায় ওয়াকলি এক স্থানীর প্রবন্ধ লিখলেন, তিনি এই প্রবন্ধে শীকার করলেন, তিনি নাটকটি পাঠ করেননি এবং চোগেও দেখেননি, তবু তাঁর মতে বাণার্ড শ'র মত মায়ুবের এমন একটি গভীর এবং মহং বিষয়্বস্থকে রূপদানের চেষ্টা হাস্তকর। সমালোচনা-সাহিত্যে এমন অভ্তপুর্ব ইক্তির আর নজীর নেই। যাই হোক, পরে কিন্তু ওয়াকলি নিজের কাটী বুয়তে পেরে লজ্জিত হয়েছিলেন।

পৃথিনীর সব দেশেই বন্ধুবাই বন্ধুকে আক্রমণ করে অশোভন ভঙ্গীতে।

ঐতিহাসিকরাও বার্ণার্ড শার রচনার তথ্যসত ক্রটী সম্পর্কে বলেছেন। মধ্যযুগীয় ইতিহাসের অগ্রনী পণ্ডিত ডাঃ জি, জি, কুলটন নাটকটিকে উচ্চ প্রশংসা করেছেন কিন্তু ভূমিকাটির তাঁর নিন্দা করেছেন। তিনি বলেছেন—

মি: শ'ব Saint Joan নাটক হিসাবে বিশেষ সাফস্য লাভ কবেছে, তাঁর পরিকল্পিত জোন চবিত্র ইতিহাসের ভিত্তিতেই সম্পূর্ণভাবে গঠিত; তবে তাঁর স্থানীর্থ ভূমিকাটুকু বালকোচিত বিবেচনা করা বেতে পারে। তবু স্থীকার করতে হবে এই নাটক বার্ণার্ড শ'ব সার্থক রচনা।

ঘ্টেইমর্কের গাারিক থিয়েটারে ১৯২৩-এর ২৮শে ডিসেম্বর তারিপে Saint Joan প্রথম অভিনীত হয়। অভিনেত্রী উইনিফ্রেড লেনিহান জোন চরিত্রটিতে অসামান্ত কৃতিত্ব প্রদর্শন করলেন। এই নাটকটি অভি দ্রুত মাকিণ দর্শকদের মনে লাগল, তাঁরা ব্রুলেন বে একটি মছং নাটকের প্রথম প্রদর্শন দেখার স্ক্রেমাণ তাঁদের মিসেছে। কিছু সংবাদপত্র ও সমালোচকরা বিশেষ উৎসাহ প্রদর্শন ক্রুলেন না, বরং কিঞ্জিৎ বিক্লক্ক মনোভাবই প্রদর্শন কর্লেন। প্রথম রক্তনীতে এনন দশকের জীও হল যে প্রদিন অন্থ রঙ্গমেশ অভিনয়ের ব্যবস্থা করতে হয়। The Shaw Bulletin নামক শ' দোগাইটিব মুখপার ডাঃ এলিস গ্রিফিন এই প্রথম রক্তনীর বিবরণ দিহেছেন। ছিনি বজেছেন, মুইয়র্কের নাট্য-সমালোচকবা যদি এমুগের মতো শক্তিমান হতেন তাহলে হয়ত জ্যুইয়রের Saint Joan এব এত সাফল্য সম্ভব হত না। আলেকজাণ্ডার উলকট অবশু বলেছিলেন—beautiful engrossing and at times, exalting. আর এইয়রের্কর তদানীন্তন বিশ্বাত স্মালোচক মিঃ ওয়ালটার প্রিটার্ট ইটন কিন্তু অপূর্ব উল্পিক করেছিলেন—Shaw is not only one of the keenest minds in the world to-day, he is one of the most religious men—Saint Joan is the work of a religious soul!

সমসাম্য্রিক কালের বিথাতি ইতালীখন লেগক ও নাট্যকার লুইজী পিরান্দেলো এই সময় ফুটেয়র্কে ছিলেন। **তিনিও** উচ্চ্যুসিত প্রশাসা করেন।

নটিক লেগাৰ অনেক আগেই নায়িকার ভূমিকায় অভিনয়ের জন্ত অভিনেত্রী ঠিক কৰে বেথেছিলেন বার্ণার্ড শ'। অনেক আগেই সিবিল অর্ণডাইক কানভিডা ভূমিকা ওয়েছিলেন, শ'তথন বলেছিলেন, বাড়ি ফিবে গিয়ে গ্রকল্পার কাজ করো, চারটে ছটা ছেলে হোক, ভারপর গুলে ক্যানভিডার অভিনয় করো। এই উপদেশ পালন





করে কিবে এসে ক্যানভিডা অভিনয় করেন। যুদ্ধের পর তীর স্বামী লুইদ কাদন ও তিনি কয়েকটি জনপ্রির নাটক মঞ্চত্ব করেন।

দেই নাউকগুলি কিন্তু ব্যবসার দিক থেকে তেমন সাক্ষ্যা লাভ করেনি। থর্ণডাইক দল্পতি স্থির কর্তনেন The Cenci নাউকের ম্যাটিনী প্রদর্শনীর বন্দোবস্ত করেচেন। সরাই বলেছিল এই নাউক ধোনো না, একেবারে জনবে না, বঙ্গুবা বললেন তোমবা সর্বনাশ ডেকে আনছো। কিন্তু ওঁলের তথন থাবস্তা মিনি আব বাঁচি এই নাউকই ধনা যাক। The Cencias জনে গোল, এমন কি আগোকার জনপ্রিয় নাউকগুলির ফ্রিপুরণ হল এই নাউকের সাক্ষ্যো। আর এই নাউকের ভালই থর্ণডাইক পেলেন তাঁব জীবনের সর্বপ্রেষ্ঠ ভূমিকা, বিচারস্থান্ত সিবিল থর্ণডাইকের ফ্রিনের লেগে শ' মুগ্ধ হলেন। ভাকেই 'লোনে'র ভূমিকা পেগেন ভিন্ন কর্বস্থা।

দিকিল প্রতিটিক আরু তীবে স্থামী লুইস ক্যাসনকে বার্ণীর্ড প্র আহ্বান কর্মান ক্যায়ট সেট ল্বেন্সের বাসভ্বনে। সেদিন বার্ণার্ড শ তাঁদের কাডে Saint Joan পাঠ করে শোনালেন। এই দিনটি সিবিত্বে স্বাধ্য স্থায়বীয় হয়ে রইল।

সিধিল বলেছেন—কি অপূর্ব তাঁব আবৃত্তি, যেন এক আশ্চর্য জ্বকাবের কঠে এক মধুব সঙ্গীত গুনছি, তিনি জানেন কোথার কি জ্ব, প্রতিটি লাইন দেন এক অপূর্ব সঙ্গীত। প্রতিটি চবিত্র আক্রীয় বিভিন্ন যন্ত্রের মত স্তব সৃষ্টি কবছে। আব যাত্কর বার্ণার্ড শ' জানেন কথন কি স্তব বাজাতে হবে। সেই স্ববত্বক আমার জীবনের সর্বন্ধেই অভিনতা।

এই নাটক বার্গার্ড শ'ব কঠে বার বাব তিন বার শুনেছেন সিবিল পর্পতাইক, আর নাট্যকারেব কাছ থেকে নিজস্ব ভূমিকাটি আয়ত্ত করে নিয়েছেন। আর কোনও অভিনেত্রীর জীবনে এই স্থযোগ আসেনি এবং বার্গার্ড শ'র মতে এমন সাথকভাবে কোনো চরিত্র কেট এযাবং অভিনয় করে নি।

লগুনের নিউ থিগেটারে ২৬শে মার্চ ১৯২৪ এই নাটক সর্বপ্রথম অভিনীত হয়। রোমান ক্যাথলিক এবং প্রেটেষ্টান্ট উভর দলই এই নাটককে সমান মর্বাদা দান করেছেন, নাটকাভিনয় দেখে থুসী হয়েছেন। কেউ কেউ প্রশ্ন করেছেন, আপনি বোমান ক্যাথলিক সম্প্রদায়ভূক্ত হবেন নাকি? জবাবে বার্ণার্ড শ' বলেছেন— রোমান ক্যাথলিক চার্চে ত 'আর ছঙ্কন পোপের স্থান হবে না, তাহলে হয়ত তাই হতাম। স্থাইয়কে উইনিয়েড লেনিহান আর লগুনে সিবিল থর্ণডাইক (পরে ডেম সিবিল থর্ণডাইক), ছঙ্কনেই সমান থ্যাতি অর্জনকরেছেন জোনের ভূমিকায় অভিনয় করে। এই অভিনয়ের ফলেপুক্রের পক্ষে যেমন হামলেট নাটকে হ্যামলেটের ভূমিকা তেমনই

মেয়েদের পক্ষে Saint Joan নাটকের জোন চরিত্র।
১৯৩১-এ লগুনে এই নাটক যথন নতুন করে মঞ্চস্থ হল তথন
আবার অনেক সপ্তাহ চলেছিল।

বিহার্সেলের সময় বার্ণার্ড শ' সিবিল পর্ণডাইককে প্রান্ত করলেন— জ্বোন সম্পর্কে কোনো বই পড়েছ নাকি ?

সিবিল বললেন—হ্যা, যা সংগ্রহ করতে পেরেছি সবই পড়ে স্বেশেছি। উত্তরে শ' বললেন—ভাছলে, সৰ ভূলে বাও, আমি মৃগ দলিদকে নাটকায়িত করেছি।

স্বাই জোনকে নিরে এডদিন রোমান্স সৃষ্টি করেছে, আমি ঠিক বেমনটি ঘটেছে তাই বলেছি। আমার মনে হয় যা নাটক এতাবং লিখেছি এই নাটক স্বচেরে সহজ। আমি তথ্য সমাবেশ করেছি, জোনকে টেজের উপযুক্ত করে পরিবেশন করেছি। বিচার দৃশ্য আসল বিচার দৃশ্যেরই রিপোর্ট। আমি জোনের প্রতিটি কথাই ব্যবহার করেছি, যেমনটি বলেছে, যেমন করেছে।

বার্ণার্ড শ'কে আমেরিকার থিয়েটার গিলড, অমুনোধ করেছিলেন Saint Joanকে কিঞ্ছিং কাটছুণট করে ছোটো করতে, কারণ অভিনয় শেব হতে মধ্যরাত্রি হয়ে বার। বার্ণার্ড শ' জবারে বলেছিলেন, হয় একটু আগে অভিনয় স্থক্ষ করো, নগু রাতের শেব টেণের সময় কিঞ্ছিং পিছিলে দাও।

বলা বাছলা, দশকের অভাব ঘটেনি। কি ফুটেরের্ক কি লগুনে সাবারণ দশক Saint Joan অভিনর দেখে অভিন্ত হয়েছে। খুইজী পিরান্দেলা এই নাটকের অভিনর দেখে তাই বলেছিলেন—ইতালীর বঙ্গনাঞ্চ যদি Saint Joan এব চতুর্থ আন্ধর নতে। বলিষ্ঠ অংশ অভিনীত হত তাহলে উপস্থিত দশকমগুলী উঠে দীচাত এবং যবনিকা পতনের পূর্বেই আনন্দে আত্মহারা হয়ে উন্ধান্তের মতো করতালি দিয়ে উঠত।

তিন বার এই নাটক পুনক্ষজ্জীবিত হয়েছে, তিন বারই তার সাফগ্য ঘটেছে অসামান্ত । Pygmallion নাটকের সাফগ্য এই নাটকের কাছে মান হয়ে গেছে।

এখন থেকে বার্ণার্ড শ' Saint Joan নাটকের নাট্যকার হিসাবেই প্রতিষ্ঠিত হলেন। যথন কেউ প্রশ্ন করতো আপনি জোনেব জ্বন্ত এত দূর গোলেন কেন? শ' জবাবে বলেছেন—কারো জন্তে বা কেনে। কারণে আমি কথনো কিছু করিনি। আমি কবি, চুলকামের বেপারি নই (I am a poet and not a soot and white wash merchant), যা জোনের প্রাপ্য তাকে দিয়েছি জার যা অপরের তা দিয়েছি তালের। নাট্যমঞ্চকে এতদিনে তাঁর আপন আদনে প্রতিষ্ঠিত করেছি।

নাট্যকার হিসাবে তাঁব খ্যাতি ও প্রতিপত্তি এইবার সপ্রতিষ্ঠ হল। জর্জ বার্ণার্ড শ' এখন মনীবী, মহাপুরুষ, মহাজন। তাঁব পাকাদাড়ি, অলস্ত উজ্জ্বল-নীল চোথ এবং ঋছু স্থানীবদেহ ফেন বুদ্ধের আরুতি চির্যোবদের প্রতিমৃতি। ভলতের্যর বলেড্নে—'Sages, once acclaimed, retired into solitude to become sapless with ennui—'বার্ণার্ড শ' এই উল্জির বাতিক্রম। তাঁর সমগ্র কর্মন্ত সাহিত্য-জীবনের চরম পরিণতিব কাল ১৯২৪। তাঁর মর্যাদার সীনা নেই। যা তিনি বলেন তালোকে সঞ্জ্রছ চিত্তে শোনে, সম্রমভার তাঁর প্রতিটি পদক্ষেপ ক্ষ্মাকরে। যা কিছু তাঁর উল্জি সবই সারা পৃথিবীতে তার্যোগে প্রচারিত হয়, বিশ্ববাসী তা উপভোগ করে, গ্রহণ করে। তাঁর বিস্কৃতা, তাঁর অছুত বজোজি, বিশ্বমানবের মনে জ্ঞানসাধ্বের বছ চিন্তা ও সাধনা লব্ধ বাণী হিসাবে গ্রহণ করে।

দিতীর মহাযুদ্ধের কালে সমর-দপ্তর (ওরার অফিস) ^{- ট্রাকে} অনুরোধ জানার আপনার ভিন্থানি শ্রেষ্ঠ নাটক নির্বাচন করে দিন,

গ্রন্থার মধ্যে বিভরণ করা হবে। বার্ণীর্ড শু সমালোচকের ষ্টতে তাঁর নাটকাবলীর বিচার স্থান্ন করলেন। কি**ন্ধ** মন স্থির া কঠিন। তিনি বললেন, এর কারণ, আমি ত' আর স্থলমান্তার ্ট যে প্রীক্ষার থাতার নম্বর দেব। বিভিন্ন নাটকের বিভিন্ন ্রশ ভালো লাগে। তাদের পিছনে আছে ভাবাবেগমিঞিত हिन्द्रांत | Mrs. Warren's profession ও The snewing up of Blanco posnet -- নাটক ছটি নিবিদ্ধ হয়েছিল। Candida এবং Man and Superman নাটকে গ্রাণডিল বাঠারের অভিনয়ের স্থৃতি বিজ্ঞতিত। Arms and the Man মাটকে প্রিয় বন্ধানের নিয়ে রসিকতা করেছেন, আর Back to Methuselah नाउँक वार्गाई मां दौत मनश ख्वानजाकात एकाड কৰে পিলেছিলেন, কিলৈ দেবায় ছবিধা বিগেম?' কারে রাখি, কালে দেখি কে দেখী স্তম্পর ?' বার্ণার্ড ম'ব মনে হল এব চেয়ে গ্রবক্ষুৰ খনি অন্থবোধ করতো নতন নাটক লেখাৰ, কাজটা আনবাহংক হত। তাঁৰ মতো স্বয়োগ্য ভাবে কে আৰু সে কার্ ब्यु इंडर र

শ্বশোষ নির্বাচিত জল, Androcles and the Lion।
Pygmallion আর Saint Joan। এর কারণ এই তিনটি
নাটকেই আছে করণ আবেদন। এই নিদারণ ছংসময়ে এই
নাটকেব আবেদনাই স্বাধিক। তিনি তথু একটি মার
অধ্যোধ জানাখেন এই স্বানাটকের ভ্রমিকার অংশটুকুই বাদ
প্রথা চলবে না। ভূমিকাগুলিই বিচিত্র। Androcles and
the Lion নাটকের প্রথম প্রঠায় আছে—

am ready to admit that after contemplating the world and human nature for nearly sixty years, I see no way out of the world's misery but the way which would have been found by Christ's will if he had undertaken the work of a modern practical statesman.

খাব শেষ গ্রন্থ Saint Joan নাটকের শেষ কথা দেউ জোনের কট খাবুল প্রার্থনা না আর্ডনাল— ?

O god that madest this beautiful earth, when it will be ready to receive thy Saints? How long O Lord, how long?

সেই চিরম্ভন প্রশ্ন হে ঈশ্বর ! কত দিন ? আর কত কাল ?

Saint Joan এর ফলে খ্যাতির সর্বোচ্চ শিখরে উঠলেন

ভর্ক বার্নার্ড শ'। এই ১৯২৪-এ তিনি বন্ধুবিয়োগ জনিত নিদারুণ

শৈষাত পেলেন। আজীবন সহযোগী বন্ধু উইলিয়াম আর্চার, বিপদে,

শৈশনে বিনি বার্ণান্ড শ'কে সর্বতোভাবে সাহায্য করেছেন তিনি

হাং ১৯২৪-এর ১৭ই ডিসেম্বর নার্সিং হোম যাত্রার প্রাকালে

বার্ণান্ড শ'কে লিখলেন—

ত্রামাকে চিঠি লেখার পর জানা গেল, ক'দিনের ভেতর একটা ক্রানেন করানো প্রয়োজন। কাল নার্সিং-হোমে যাচ্ছি। অপারেশন তেনন গুরুত্তর নয়, আমার শরীরও বেশ ভালো। স্কতরাং শের ট্রামা আশা রাগি। তব্ বিপদের কথা বলা যায় না, তাই ফুরুত্র হ-একটা কথা বলাব স্থবোগ নিচ্ছি, তুমি ত স্থানো যে

মাঝে মাঝে তোমাব হিতিমী সংশোধক হিসাবে কিছু বলকেও তোমার প্রতি জামার প্রদা বা ভালোখাসা কখনও কুল হয়নি। কখনো এ কথা ছাড়া আর কিছু ভাবিনি যে অদৃষ্টক্রমে তোমার মত একজন সমসাময়িক বন্ধু লাভ করেছি। স্থলীর্ষ চল্লিশ বছরের বন্ধুবের জন্ম আন্তরিক ধন্ধবাদ জানাই। ইতি তোমার

ডব্লু, এ---

কিন্তু আচারি যাই ভাবুন, সে যাত্রা তিনি রক্ষা পেলেন না, ২৭শে ডিসেম্বর নার্সিং-হোমেই তিনি শেষ নিংখাস ত্যাগ করলেন। বার্ণার্ড শ' সে সময় বিদেশে বেড়াতে গেছেন। এমন এক বন্ধ্র মৃত্যু সংবাদে ক্ষিপ্ত হলেন বার্ণার্ড শ', তিনি বললেন, আচারিকে হত্যা করা হয়েছে।

উভরের মধ্যে মৌলিক পার্থক্য অনেক, মতের অমিল অনেকথানি, তব্ উভরে বন্ধু। গভীর ভালোবাসায় ছুজনের জীবনস্থা বাধা, তাই লগুনে ফিরে এসে বার্ণার্ড দা বলেছিলেন—আচারিহীন লগুনে ফিরে এসে মনে হচ্ছে এ যেন এক নতুন যুগে এসেছি, এই পরিবেশে আনি প্রচালাভিবিক্ত উন্বত্ত মাত্র। এখনও মনে হয়, আচারি আমার জাবনের একটা বড় আলে সক্ষে নিরে গেছে।

উইলিয়ান আচাবেৰ বিয়োগজেনা বাণী**ট শ'ব মনে ধে** আলাত ক্ষেছিল, ঘনিঠ্ডন আয়াীর বিয়োগেও তিনি তেমন বিচলিত হ্ননি। চলিশ বছুরের ব্যুক্তিৰ মধ্যে ক্ত মান-অভিমান, ক্ত

বাগবী বস্তর

বন্ধনহীন গ্ৰন্থি

দাম ছু' টাকা মাত্র।

বন্ধনহীন গ্রন্থি একথানি বন্ধ পুঠার উপভাস। কিন্তু এই উপভাস-ধানির মধ্যে লেখিকা অমন একটি ঘটনার অবভারণা করেছেন বার মধ্যে এতট্ট দিধিলভা ও শাদীনভার অভাব প্রকাশ পেলে বক্তব্যটি সম্পূৰ্ণ ব্যৰ্থতায় পৰ্যসিত হ'ব। সাহিত্যক্ষেত্ৰ একজন ন্যাগতা লেখিকার পাক্ষ আশুর্ব্য সুন্দর লিখন শক্তির পরিচর পাঠকমাত্রকেই মুখ করবে। বে কাহিনীর তিনি অবভারণা করেছেন, সংসারে এমন কাহিনী বিরল সন্দেহ নেই, কিছ তা অবাস্তবও বে নয়, লেখার মাৰ্থী দিয়ে, মমতা দিয়ে আৰু বক্তব্যেৰ দুচ্তা দিয়ে তা প্ৰমাণ কৰে দিয়েছেন তিনি। এই প্রমাণের সাক্ষ্য নায়ক নাহিকা অক্ষয় ও ক্ণিকার চবিত্র ড'টি অভান্ত জীবন্ত হয়ে নিজেবের প্রতিষ্ঠা করেছে। এই অব্ব ও কৰিকা স্বামী-স্ত্রী। দীর্ঘদিনে শান্তিপূর্ণ বিবাহিত জীবন বাপনের পর হু'টি সম্ভানের মা ক্রিকা একদিন স্বামী অঞ্জের কাঙে প্রকাল না করে পারে না, বিবাহ-পূর্ব-কালে ভার অনিচ্ছাকুত প্দর্শনের কথা; ওয়ু প্দর্শন নয়, ভার এক মেলোমহাশ্রেং ব্ৰস্কাত জীবিত এক কলাৰ কথা। অক্সাৎ মৰ্মা ছক এই কথা ্য ডাক্টোর স্বামী অন্তর্মকে কি ভাবে বে আঘাত করে তা সহজ্ঞেই অন্তুমের। हो क्निकां व व्यवसाय मध्या ए'कि मस्रात्व गर्स्थाविनी इत्यन প্রাণশ্রির স্বামীর কাছে এই স্বীকারোক্তি কয়তে বাধা হয় ভা বেমন গুৰুষণূৰ্ণ ও উত্তেম্বনামূলক, তেমনি হাদহস্পৰী .—বস্তুমতী ১৮.১.৫১ প্রকাশক : वला का शका भनी, २१ति. আমহার ही है. कनि:-ह

ছোটোখাটো স্থ-তঃখ, কত ঘনিষ্ঠ ইতিহাস বিজ্ঞতিত তা বাৰ্ণাৰ্ড দ' ৰুখেছিলেন বলেই এত কাতৰ হুয়ে পড়েছিলেন।

উইলিয়াম মরিদের মৃত্যুর শর শ'লিখেছিলেন—You can loose a man like that by your own death, but not by his উইলিয়াম আচণিরের মৃত্যুতে এই শোক আবো গভীরভাবে বেজেছে, ভার আব একটি কারণ তত দিনে বাণার্ড শ'র বয়স জনেক বেড়ে গেছে, অনেক আগ্লীয় ও বয়ুজনের বিচ্ছেদ-বেদনা তাঁকে বার বার আঘাত করেছে, আব সব চেরে বেণী কারণ হয়ড আচণিরের সর্বশেষ চিঠিখানি। মৃত্যুর পূর্ব মৃত্তে হয়ভ মানুষ তাঁর জান্তম মৃত্ত আসল বয়্যতে পারে।

ত্রিশ

স্থাই ডিস আকাদেনির নোবেল কমিটির চেয়ারম্যান ডঃ
পার ইপপ্তারম্ ১৯২৫ গৃহান্দে সাহিত্যের জন্ম বার্ণার্ড শ'কে নোবেল
পুরস্কার দানের কথা উল্লেখ করে লিখলেন—

জ্ঞান বার্ণার্ড শ' তাঁর তরুণ বর্মে থাগিত উপক্রামে পৃথিবী ও তার সামাজিক সমস্যা সম্পর্কে যে মনোভ্রেণী প্রাকাশ করেছিলেন তার সেই ধারণার তিনি আজও অন্যাহত আছেন। তিনি গণভজ্ঞের রাজদরবাবে পেশাদানী দরবার, এই স্থায়ী অভিযোগের বিক্লকে এই তাঁর সর্বশ্রেষ্ঠ প্রতিনোধ ব্যবস্থা। তাঁর উজ্জ্বল শানিত সর্বতা মামুখকে বিজ্ঞান্ত করে। তিনি যা বলেন তা স্বক্ট বসিকতা মনে কবে সিবাই হেসে উভিয়ে দেয়। বার্ণার্ড শ'ব এই নিম্পান্ত ভলীই তাঁব বিচিত্র রণকৌশল, মামুখনে হাসিয়ে তিনি বিজ্ঞান্ত করেন যা তাঁর আসল বক্তব্য তা সহক্রে ধরতে দেন না।

এই সন্তর পৃতির কালে বার্ণার্ড শ'র জীবনে অনেক সমান একসন্থেই প্রায় ববিত হওয়ার উপাত্তন হল। সরকারী জগতের কাছে সন্তর বছরই নোধকরি বিচারের পকে যথাযোগা। সাহিত্যের বীকৃতিতে প্রদন্ত নোবেল প্রাইজ তিনি প্রতাথানি করলেন। বে লেবর পার্টি কাচনে একদা তিনি অক্লান্ত পরিপ্রাম করেছেন, সেই লেবর পার্টি ক্ষমতার আসীন হয়ে কাঁকে পীয়েরহ দান করতে চাইলেন, সর্ভ বার্ণার্ড শ' কাঁব পছন্দ নয়, তিনি জ্বাবে বললেন ভোমরা আমাকে ন্যুনপকে হরত ডিউক্স দিতে পারো, কিছু আমার পোরাবে না, সইবে না। তপন হাঁবা বললেন, তাহলে Order of merit নাও। বার্ণার্ড শ' উত্তবে জানালেন, I have already conferred it on myself। কার বন্ধুবা কিছু ভাষণ আহত ছলেন এই উক্তিতে।

মূনিভারসিটিব অনারারি ডিগ্রীও বার্ণার্ড ম' নিতে চাইলেন না, বললেন বে সব মানুষ উপাধি ও ডিগ্রীব জন্ম আঞাণ থেটেছেন ভালের অপমান করা হবে, কারণ বিনা পরিশ্রমেই নিছক সম্মানের খাতিরে অপরে বিনামূল্যে ও বিনা মান্তলে উপাবি পাবে, এ কেম্ন কথা।

বার্ণার্ড শ' অনেক বয়সে, নবব ই বছরের প্রান্তে এসে গ্রহণ করলেন Freedom of Dublin, এই তাঁর জন্মস্থানেব সম্মান। অথচ আশ্চর্য তিনি এই জায়গাটা অপাছন্দ করতেন। বে অঞ্চলে বাস করতেন সেই বরো সেউ প্যানকাস তাঁকে সম্মানিত করল Freedom of the borough of St. Pancras উপাধিতে, এই বরোতেই তিনি একবার কাউনসিলর হয়েছিলেন। আরো ১৯৩৫ খুষ্টান্দের ২০শে জুন গ্রহণ করলেন Freeman of the city of London। লক্ষ্য করার বিষয় এর সবগুলিই নাগরিক সম্মান, তার জন্মভূমি, বাসস্থান এবং বিচরণ ক্ষেত্রের প্রদন্ত সম্মান।

নোবেল প্রাইজ গ্রহণে আপত্তির কারণ যে কোনো উপাধি বা পুরস্কার নিতেই বিভূকা। এখন তাঁর যথেষ্ট সম্পত্তি, লেখক হিসাবে যথেষ্ট প্রতিষ্ঠা। ৬,৫০০ পাউত্তের চেক ফেরং দেওয়ার সময় বলকেন. আমার পাঠক এবং নাটকের সমর্থকরাই আমার ভরণ পোষণের ভার নিয়েছে, এই চেক যেন তীরে উত্তীর্ণ সাঁতাক্লকে লাইফবেন্ট ছুঁড় দেওয়া (a life-belt thrown to a swimmer who has already reached the shore in safety.)

৬,৫০০ পাউণ্ড, সুইডিস কোনাবে ১১৮,১৩৫। বার্ণার্ড শ'থে বছ প্রাথী এই টাকার জন্ম পত্র লিথতে লাগল, সবাই বলে, তুমি না নাও, নিয়ে আমাদের দাও, আমাদের এত অভাব, এত সংকর্ম করার আছে ইত্যাদি। ব্যক্তিও প্রতিষ্ঠানের চিঠিতে ঘর বোঝাই হয়ে গেল। বার্ণার্ড প' বলেছেন—ডিনামাইট আবিদ্ধারকের অছিরা আমাকে গেবেল প্রাইজ দেওয়ার পর প্রায় পঞ্চাশ হাজার লোক আমাকে চিঠিলেথে বলেছে—টাকাটা নিয়ে আমি যেন তাদের দিয়ে দিই। অফ আমি দাতাদের টাকাটা ফেরং দিলাম। তথন সবাই লিথল থেবংই যদি দিলাম, ওদের ১৫০০ পাউণ্ড হিসাবে তিন বছর ধরে কর্জ দিগান না কেন ?

ষাই হোক বার্ণার্ড শ সুইডিস-সাহিত্যের প্রচাবের জন্ত Anglo-Swedish Literary Foundation স্থাপন করলেন, সুইডিস কাউন প্রিন্স তার পৃষ্ঠপোষক। ১৯২৯ এ আগস্ট দ্বী প্রবার্ণের চারখানি নাটকের তর্জমা প্রকাশ করলেন এই ফাউনডেশন, ১৯৬৯-এ আবো সাত্রখানি গ্রন্থ অনুদিত হল, তার মধ্যে তিনটি দ্বীগুরার্ণের নাটক। যুদ্ধান্তে ১৯৫২ খৃষ্টান্দে আবো করেকটি গ্রন্থ অনুদিত ও প্রকাশিত হয়েছে। নোবেল প্রাইজ সম্বন্ধে বার্ণার্ড শ'র বিখ্যাত উলি প্রসাদ্ধান্ত উল্লেখযোগ্য:—I can forgive Alfred Nobel for having invented dynamite. But only friend in human form could have invented the Nobel prize!

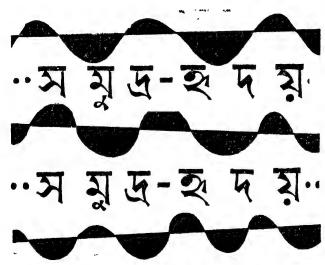
••• न महमत् श्रह्मभो . . .

এই সংখ্যার প্রাছদে পাঠরতা পাঠিকার আলোকচিত্র মুদ্রিত হইরাছে। আলোকচিত্রশিলী বিচ চক্রবর্তী।

প্রতিভা বসুর নতুন উপন্যাস

প্রতি ভা ব সু বাংলা কথানাছিত্যে একটি বিশিষ্ট স্থান অধিবার ক'রে আছেন। কোনো গুরুভার তত্ত্ব-জিক্সানা নয়, নরনারীর চিরস্তন প্রেমসতাই তাঁর প্রিয় বিষয়বস্ত ; জীবনের উজ্জ্বল শুডুক্লণের আনন্দকণিকা আহরণেই তাঁর অজুরপ্ত আগ্রহ। আধুনিক প্রেমের পরিভাষার প্রতিভা বস্তর 'মনের ময়্র' 'মাধবীর জন্ম' 'বিবাহিতা স্ত্রী' 'তিন তরক' 'মেঘের পরে মেঘ' ইত্যাদি গ্রন্থের সরস ও স্বচ্ছন্দ কাহিনী গুলিতে নারী-শুদয়ের, বিশেষ ক'রে বাঙালী নারী-শুদয়ের যে কোমল নিঝার রূপান্ধিত হয়েছে সমকালীন সাহিত্যে তার তুলনা বিরল।

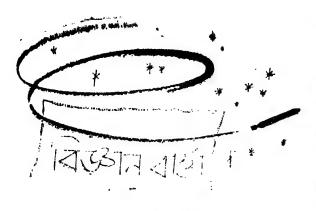




'স মৃদ্র - হা দার' প্রতিতা বস্তর স্বাধুনিক উপন্থাস। হুটি বিরুদ্ধ হাদয়ের আরেয়গিরি থেকে এই অপ্রত্যাশিত কাহিনীর জন্ম। নবাব স্থাতান আমেদের ভালো লাগার আলো কি ক'রে ভালোবাসার আগুনে আহুতি হ'লো আর নবাবের সর্ভ্মহলে বন্দিনী তেজ্বিনী স্থালেখা তালুকদারের চিবসঞ্চিত অন্ধ আক্রেশ অবশেবে কোন অতলান্ত ম্যতার আকুল উবেল, 'সম্দ্র-হাদয়'-এর নিয়তি-নির্দিষ্ট পরিস্মান্তিতে তা সঞ্জল বিধুর রেখায় আঁকা পড়েছে।৷ দাম: চার টাকা।৷

নাভানা

॥ নাভানা প্রিক্তিং ওআর্থন প্রাইভেট নিমিটেডের প্রকাশনী বিভাগ ৪**৭ সংশোদনন্দ্র অ্যাভিনিউ, কলকাতা** ১৩



বৈজানিক পান্তর

ক ভোমাদের কাছে নিয়নিক্ষত বৈজ্ঞানিক পাছারেব সম্বন্ধ ছ'-একটি কথা বলাছ। পাস্থাবের নাম তোমনা আনেকেই ভানেছো। বড় ত'রে ভান সহক্ষে জনেক কথা জামতে পার্যে। বিজ্ঞানের পৃষ্ঠার পাশ্ববের নাম অধীক্ষরে পেনা রয়েছে।

পাল্লবের পুরো নাম ছলো লুই পান্তব। ফ্রান্সের ডোলে নামক ছানে ১৮২২ খুটাকে বৈজ্ঞানিক লুই পান্তর জন্মগ্রহণ করেন। তথন কে জানতো এই কুদু শিশুটিই একদিন ফ্রান্সের শ্রেষ্ঠ বৈজ্ঞানিক ছিসাবে পরিগণিত ছবেন ? লুই পাস্করের বাবা ছিলেন একজন সামাশ্র লোক। তিনি ছিলেন চর্ম-ব্যবসায়ী। এই ব্যবসা করে তিনি সংসার নির্বাহ করতেন। ছেলেবেলা থেকেই লুই পাস্তবের লেখাপড়ার দিকে ছিল অসীম আগ্রহ। তাঁর পিতা দেখলেন ছেলের তো পড়াওনায় ভারী মন! তিনি মনে মনে উপলব্ধি বরলেন যে, ভেলে নিশ্চয়ই একদিন বড় হ'য়ে উঠবে—তাঁব মুগ উজ্জ্ব করবে। ইংরাজিতে একটা কথা আছে—"Childhood shows the man." কথাটির আসল অর্থ হচ্ছে যে, কোন লোক ভবিষ্যতে কি ধরণের হবে, এটা তার বাল্যকালের স্বরূপ দেখলেই বৃষতে পারা যায়। উপরের কথাটি লুই পাস্তবের সহক্ষে প্রয়োগ করা যেতে পারে। শৈশবেই কাঁব প্রতিভাব প্রিচয় সকলেই প্রেছিল। শুই পাস্তব যে একদিন বিখ্যাত লোক সবেন, এটা তাঁর বাবার মনে একেবারে বন্ধমূল হয়েছিল। তিনি এই পান্তব্যক ফ্রান্সেব স্বচেয়ে ভাল বিজ্ঞালয়ে ভর্ত্তি করে দিলেন। বিতালংটির নাম হচ্ছে— "ইকোলে ন্মাল"। লুই পাস্তব এখানে খুব ভালভাবে পড়াগুনা শেষ করে ১৮৪১ গুষ্টান্দে ট্রাট্সবার্গে রদায়নবিতার অধ্যাপক নিযুক্ত হলেন। রসায়নশাস্ত্রের প্রতি ভার মে াক ছিল ছেলেবেলা থেকেই। পরে তিনি রসায়নবিঞার গলেষণা করে "ডক্টবেট" উপাধি পেলেন। পিতার আশা পূর্ণ হ'লো। বৈজ্ঞানিক লুই পান্তবের নাম ফ্রান্সে ছুড়িয়ে পড়লো। ফ্রান্সের অকৃত্য কৈন্দানিক হিসাবে গণ্য হলেন তিনি। পিতা আনন্দে আবুহার। হয়ে উঠলেন। হবারই তো কথা। পুত্রের এ-হেন উন্নতিতে কোন্পিতা আনন্দিত না হয়ে থাকতে পারেন ?

লুই পান্তর তাঁর জাবনে অনেক কিছু আবিধার করেছিলেন। তাঁর সমস্ত আবিধারের কথা এখানে বলা সম্ভব নয়। যে আবিধারের জন্ম লুই পান্তর সাবা পৃথিবাতে স্থনাম অর্জন করেছেন, সেই আবিধারের কথা এখানে বলছি। ুই পান্তর জলাতকে রোগনিবারক সিরাম আবিধার করেছিলেন। তোমরা অনেকেই জলাতকে রোগের मांच करम थोकर । देश्याकित्क क्षेट्र श्याणित्क येना श्र-

পাগলা কুকুরের বা দিরালের বিবে জলাতকে রোগ হয়। তথু কি তাই ? এই রোগে মৃত্যু অনিবার্য। তাথো, কী তীবণ এই রোগ। বুই পাস্তরের আগে এই রোগের কোন উবধ বের হয়ন। কাডেই তথন বহু লোক এই রোগে মারা গেছে। লুই পাস্তর এ-ছেন রোগের প্রতিষেধক ইন্জেকলন বের করলেন। পাগলা কুকুরের হারা আকাস্ত একটি ছেলের উপর তিনি এই ইন্জেকলন প্রয়োগ করনেন। এব তাল কল পেলেন তিনি। ছেলেটি গ্রন্থ হুরে উঠলো, ছেন্টের জলাভংক রোগ হ'লো না। ছেলেটি বাঁচেস, লুই পাস্তরের নাম চার্যাকি ছড়িয়ে পাড়লো। দেশ-বিনেল থেকে বছু লোক আগছে লাগল তাঁর কাছে। সারা পৃথিবীয়ে লুই পাস্তর এক মুগান্তরে ভাইর কালে। লুই পাস্তর মারা পৃথিবীয়ে লুই পাস্তর বাঁচালেন। কুই পাস্তর মারা পৃথিবীয় সোক্ষের বাঁচালেন। কুই পাস্তর মারা পৃথিবীয় সোক্ষের বাঁচালেন। কুই পাস্তর মারা পৃথিবীয়ে হাই পাস্তরের বাঁচালেন। কুই পাস্তর মারা পৃথিবীয়ার সোক্ষের বাঁচালেন। কুই

ক্লতিম উপগ্ৰহ

গত এই এক্টোবর ভারিথে পৃথিবীর সকল দেশের সংবাদপরের শিবোনামার বোধ কবি একই সংবাদ পরিবেশিত হইয়ছিল, আব দেবাদিট হইছছে—সোভিয়েট ইউনিয়ন কর্তৃক সম্প্রথম কান্দ্র উপাহ স্টে। বাশিয়ার এই সাফল্যে বিশ্বের কোন সংবাদপর মণ্ড্র মণ্ড্র করিল—"Russia wins space race." কেই বা লিখিই—"East has beaten West in putting first m n made moon." আমেরিকার New York Herald Tribune দেশাদকীয় প্রথমে লিখিল—"A grave defeat for America... The Soviet satillite meant that the U. S. had lost its supremacy in scientific research and development."

মস্বো বেতার থেকে সর্বপ্রথম এই কুত্রিম উপগ্রহ স্পষ্টির কথা ঘোষণা করা হয়। সোভিয়েট সংবাদ সরবরাহ প্রতিষ্ঠান বিজ্ঞান বৰ্ব বিশ্ব বলা হয় যে, গত ৪ঠা অক্টোবর তারিথে সোভিয়েট ইউনিটন সর্বজ্ঞাথম কৃত্রিম উপগ্রহ স্কলনে সাফল্যলাভ করিয়াছে। উপগ্রহী এখন পৃথিবীর ৫৬০ মাইল উপর দিয়া ঘটার ১৭০০০ মাইল শেগ মাত্র ১৫ মিনিটে পৃথিবীকে 'ডিম্বাকার কক্ষপথ' (Elliptical orbit) একবার করিয়া প্রদক্ষিণ করিতেছে। সংবাদে আরও প্রকাশিত হয় যে, কৃত্রিম উপগ্রহটি গোলাকার, ব্যাস ২৩ ইঞ্চি, ওজন ১৮০ পণ্টিও এবং উহা বিষুব্রেথার সহিত ৬৫ কোণ করিয়া ঘ্রিতেছে। বিরহ্জ র এই সংবাদ যে সত্য তাহা অচিরেই প্রমাণিত হইয়াছে, কেন না, কৃত্রিম উপগ্রহ ইউতে প্রেরিত বেতার সংকেত মার্কিণ যুক্তরাই সামের্ক বছ রাজ্যই পাইরাছে এবং এখনও পাইতেছে। মার্কিণ যুক্তরাই বিষ্ সোভিয়েট ইউনিয়ন অপেকা মহাশৃষ্ক পরিক্রমা (Space Travell বিষয়ে পিছাইয়া আছে, এ কথা তাহারা নিজেরাই স্থীকার করিয়াছে।

সোভিয়েট ইউনিয়নের এই সাফল্যে সমগ্র বিশ্ব আজ তাহিছে।
মান্তবের প্রচেষ্টা, সাধনা ও তিতিকা কতদূর ফলপ্রস্থ হইতে পূরে,
বোধ করি ইহাই তাহার প্রকৃষ্ট দৃষ্টাস্ত। বিধাতার স্বষ্ট ভেট জীব
কুম্রু মানুষ তাহার বৃহৎ বৃদ্ধির ফলে দিনের পর দিন বে জপ্রতিহেও

পতিতে সভাতার পথে অগ্রসর হইতেছে, অসম্ভবকে সম্ভব কৰিয়া ভুলিতেছে, অবাস্তবকে বাস্তবে রূপাস্তবিত করিভেছে—তাহাতে সত্যই বিশ্বয়ে হতবাক হইতে হয়। ক্ষুদ্র মামুষ্ট সেদিন লব্দন করিয়াছে ত্বল জ্বা গিবিরাজ হিমালয়কে। মাতুষের হাতেরই তৈয়ারী Radio, Television, Acroplane আৰু প্রচণ্ড শক্তিশালী Hydrogen তথা প্রমাণ বোমা। আজকে আবার সেই মানুষ্ট সৃষ্টি করিল দ্রুক্ত চলমান এই ছোট্ট টাল্টিকে, বাহাকে দিগন্তের গায়ে অতি সাধারণ কোন দুববীক্ষণ যন্ত্ৰের সাহাব্যেই উষা অথবা সন্ধ্যাকালে (অর্থাৎ যথন আমরা পথিবীর ভারার থাকিতেছি, অখচ উপগ্রহটি তথনও সুধালোকে উদ্ধানিত থাকিতেতে) উজ্জাল একটি বিন্দুর মতন দেখা যাইতেতে। গোডিয়েট ইউনিয়নের এই কুত্রিম উপগ্রহ ক্ষুত্র আন্তর্ভাতিক ঞ্জাকৃতিক ব্যারের (International Geographical year from 1st. July '57 to 31st. Dec. '58) कईन्फोड অক্তর্গন্ত। এই সময়ে পুথিবী। প্রায় ৪০টি দেশের বৈজ্ঞানিকেরা সমবেত প্রতিষ্ঠার পৃথিবী সকলে অধিকতর তথ্য সংগ্রহ ও মহাশক্ত পরিক্রমা প্রভৃতির বিধ্য়ে গ্রেধণা করিতে মনস্ব করিয়াছেন। আন্তর্জাতিক ভূ-প্রাকৃতিক বংসরে মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র আন্তর্মানিক এক কোটি ভলাব ব্যয়ে ১০টি কুত্রিম উপগ্রহ স্কৃষ্টি করিবে বলিয়া শুনা যাইতেছে। গোভিয়েট ইউনিয়ন অপুরপক্ষে Artic (Franz Joseph Land) ছইতে ২৫টি দেশের মধ্যভাগ ছইতে ৭০টি এবং Antartic (Miruya নিকটে) হইতে ৩০টি কুত্রিম উপগ্রহ ছাড়িবে বলিয়া স্থির করিয়াছে। স্থান্স আন্তর্জাতিক ভূ-প্রাকৃতিক বংসরে ১৫০০ মিলিরন ফ্রা (ভারতীয় মুদায় প্রায় ২ কোটি টাকা) থরচ করিবে বলিয়া জানা গিয়াছে।

সোভিয়েট ইউনিয়নের এই কুত্রিম উপগ্রহ সৃষ্টি কিন্তু একদিনেই সম্ভবপর হয় নাই। বস্তুত: ইহার পিছনে বহিয়াছে দীর্ঘকালের নিবলস প্রচেষ্টা। বহুদিনের গবেষণা ও অনুশীলন আজ মানুষকে শাকল্যদান করিয়াছে। মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র ও সোভিয়েট ইউনিয়ন অনেক দিন হইতেই বকেট পরিচালনা দারা শুরূপথে গমনাগমনের বিশয়ে অনুসন্ধান চালাইভেছিল। অতি আধুনিক কালে সোভিয়েট 🗦 উনিয়ন এক বিশেষ ধরণের রকেটকে কাজে লাগাইয়াছে। এই সকল ব্ৰুকটগুলিতে বিশেষ এক ব্যবস্থায় ছটি ধাতৃপাত্ৰকে (Metallic cylinder,--ेम्ब्रा ১ मि: এवः वाग ४ • मा:) উर्ध्व निष्क्रभ करत । Cylind : r গুলির মধ্যে নানা যত্ত্রপাতি থাকে তথ্য সংগ্রহের জন্ম আর থাকে কাচের পাত্র, যাহা উর্দ্ধে অবস্থানকালে তত্রতা বায়ু সংগ্রহ ক্রিয়া আনে। রকেটটি ১০—১২ কিলোমিটার উপরে উঠিলেই Cylinder স্বাল্য পারাম্মাট আপনা আপনি খুলিয়া গিয়া রকেটের মধ্যস্থিত সাজসরস্তামগুলিকে ধীরে ধীরে মাটিতে নামাইয়া আনে। মাটিতে নানিবার সময়ে ধাকা লাগিয়া যন্ত্রপাতি যাহাতে নষ্ট না হয় তাহারও বন্দোরস্ত থাকে। কাচপাত্রে সংগৃহীত বায় হইতে তত্ত্ত ঘনর (Density) এবং উপাদান সম্বন্ধে সঠিক জ্ঞানলাভ সম্ভবপর। বকেটের মাথায় আবার কতকগুলি যম্মপাতি থাকে বেগুলি প্যারাম্মটে কবিয়া নীচে নামে না, সেগুলি কেতার মারফং পুথিবীতে সংবাদ শরবরাহ করে, এই সকল রুকেট তৈরারী যে বিশেষ কুতিত্বের পরিচারক তাচা বলাই বাহুলা মাত্র। এই পরীক্ষায় জানা গিয়াছে বে উচ্চতার শঙ্গে সঙ্গে উষ্ণতার পরিবর্তন ঘটে। ২০ থেকে ৩০ কিলোমিটার উর্দ্ধে

ভাপমাত্রা কমিতে থাকে, পরিমাণ হর সাধারণভঃ—৫০০ থেকে— ৬ • । কেণ্টিগ্রেডের মধা। কিন্তু আশ্চর্বোর বিবর বে, আরও অধিক উচ্চতায় তাপমাত্রা না কমিয়া বরং বাড়িতে জারম্ভ করে। ৪৫ থেকে ৫৫ কিলোমিটার উচ্চতায় পারদসীমা 🖟 সে অভিক্রম করে। কথন কথন তাপমাত্রা বাড়িয়ে ৩ - ৩৫ সে প্রার হর। কিন্ত ৭৫—৮ কলোমিটাৰ উদ্ধে তাপমাত্ৰা আবাৰ কমিয়া পিৰা দাভায়--- ১ · সে।

ধত ডিনেশ্ব মাসে Paris এ তত্ত্তিত প্রথম আন্তর্জাতিক বকেট ও ক্ষেপণান্ত কংগ্রেদের যে অধিবেশন বলে, ভালাতে নোজিয়েট প্রতিনিধি Mr. A. Pokrovsky এক চমকপ্রার পরীকাকার্যার কথা বিৰুত করেন। বিভিন্ন উচ্চতায় ভাত চলমান যানের মধাছিত জীবের দেন্তের উপর পারিপাথিক অবভাব অভাব লক্ষ্য করিবার **क्य करम्कृति कुक्**रतक बरकरेंद्रेय माथाय त्राधिया हाडिया (महत्रा स्व । ভিত্র ভিত্র উচ্চতার তাপ ও চাপের সঙ্গে সঙ্গে কুকুর চলির শারীরিক উত্তাপ, খাসপ্রধানের প্রক্রিয়া ও নাছার গতি নির্মারণ ক্ষিবার বান্ত্রিক ব্যবস্থা করা হয়। একটি চলচ্চিত্রের 'ক্যামেরাকে' রকেটের মধ্যে এমন ভাবে সংস্থাপিত করা হয় যাহাতে ভিন্ন ভিন্ন অবস্থার ও উচ্চতার কুকুবগুলির আচরণ ফটোর সাহাব্যে পরে প্রতাক করিবার স্থযোগ পাওয়া যায়। ১১০০ কিলোমিটার পর্যান্ত রকেটটি উদ্ধে উঠিয়াছিল। গতিবেগ হইয়াছিল ঘণ্টার ৪৩০০ কিলোমিটার। এর পর কুকুরগুলি যে কক্ষে ছিল, সেটিকে রকেট হইতে উৎক্ষিপ্ত করা হয়, যাহা পরে পারোস্থাটের সাহায্যে মাটিতে নামিয়া আসে।



মার্কা গেঞ্জী

রেজিটার্ড টেডমার্ক

ব্যবহার করুন

ডি, এন, বস্থর

হোসিয়ারি ফ্যাক্টরী ৰুলিকাতা--9

-বিটেল ডিপো-

হোসিয়ারি হাউস

৫৫1). कलब डींंगे. कनिकांं --) २

(क्नि: ७८-२३३६

এই ভাবে মান্ত্র দিনের পর দিন মহাপুল্তে পরিক্রমা বিবরে জানলাভের নিমিত্ত চেটা করিয়া আসিয়াছে। কাজেই আজকের লোভিয়েট রাশিরার এই কৃতিখের পিছনে রছিয়াছে দীর্ঘদনের সাধনা আর প্রচেষ্টা।

এইবার উপগ্রহের বিষয় আলোচনা করিব। উপগ্রহ কি ? এ আৰোৰ উত্তর দিতে হইলে সৌরজগৎ সম্বন্ধে আলোচন। করা দরকার। পূর্ব্য ও তাহার নয়টি গ্রহকে লইয়া আমাদের দৌরজগৃং গঠিত। এই এছগুলি সুধা হটতে ভিন্ন ভিন্ন দ্বতে থাকিয়া বিভিন্ন সমৰ ধৰিয়া প্র্যাকে প্রদক্ষিণ করিভেছে। ইছাদের পরিক্রমণকাশ বিভিন্ন (different) इंडेला कि कि निर्मिष्ठ (fixed)। शतिकागनकारन ক্ষ্যেৰ সৃষ্টিত এই নিৰ্দিষ্ট ব্যৱধানকে হজ্ঞান কৰিবাৰ ক্ষমতা **এইওলির নাই। ইহার কা**বণ, সুর্য্য বিপুল আকর্ষনবলে গ্রহণুলিকে নিজের দিকে টানিতেছে। কলে গ্রহণুলি কক্ষ্যুত হইতে পারিতেছে मा। সৌরজগতের গ্রহণুলির অধিকাংশেরই আবার এক বা একাদিক **উপগ্রহ আছে। উপগ্রহ**গুলি আবার গ্রাহের আকর্ষণে গ্রাহেরই চারি দিকে ঘ্রিয়া বেড়াইতেছে। পৃথিবার উপগ্রহ একটি চন্দ্র। মঙ্গলের কিছ উপগ্রহের সংখ্যা তুইটি—ডিমস ও ফোবস। বস্তুত্রপক্ষে সুর্যোর সহিত গ্রহের বে স্থন্ধ, গ্রহের সহিত উপগ্রহের সম্পর্কে অনেকটা অন্তর্জা । তবে সূর্যোরই একমাত্র আলোকদানের ক্ষমতা আছে, অপ্রপকে গ্রহণ্ডলি কুর্য্যালোকেই আলোকিত, ইহাদের **নিজন্ম কোন আলোক নাই। মানুদের তৈলাবী কুবিন উপগ্রহের** শম্বন্ধে এইবার কিছু বলিবার চেঠা করিতেছি।

ক্লব্রিম উপগ্রহের আকার ও আয়তন

সাধারণতঃ ইতার ব্যাস ইউতে ৯৪ বিং তি উপির মধ্যে (সোজিটের নির্মিত উপগ্রহটির নাসে ২৩ উপিছ) ইতা অপেকা কুজতর ইউলে প্রয়েজনীয় যন্ত্রপাতি লইয়া যাওয়া সম্ভবপর ইউবে না। অধিকন্ধ কুজতর আয়তনের জন্ম ইচাকে দেখিতে পাওয়াও ত্থানা ইইয়া উঠিবে। আবার ইহার আয়তন খুব বঢ় ইউলেও চলিবে না, কেন না, সেক্ষেত্রে রকেটে বহন কঠকর ইউবে এবং আলানীর থরচ খুব বেশী ইইবে। একেত্রে জানিয়া বাখা দরকার যে, প্রতি কিলোগ্রাম ওজনের জন্ম আবল্লক হয় ২০০ কিলোগ্রাম আলানীর। নির্দিষ্ট উচ্চতায় নির্দিষ্ট গতিবেগে ঘ্র্বিয়নান রকেটের একটি উপ্রতন ভারবহন ক্ষমতা আছে। এই ভারবহন ক্ষমতা ইউতে আলানীসমেত রকেটিটব ওজন বাদ দিলেই সর্ক্রোক্ত ওজনের ক্রিম উপগ্রহর পরিমাণ পাওয়া যায়। মার্কিণ যুক্তরাই ২১ই পাইও ওজনের ক্রিম উপগ্রহটি স্কটি করিয়াছে ভারার ওজন ১৮০ পাইও।

কৃত্রিম উপ্থাহের আকার পোলাকার হওচাই বাহনীয়। কেন না, ভাহা হইলে ইহা গমনকালে যে অবস্থায়ই থাকুক না কেন, ইহার আকারের কোন পরিবর্ত্তন ইইলে ন'.—সমানস্থায়েই একাকার থাকিবে। অন্ধায়ে কোন আকারের হইলে কিন্তু ভাহা সম্প্রপ্রবৃত্তি না। বস্তুতঃ কৃত্রিম উপগ্রহের আকারের বিষয়টি বিজ্ঞানীদের নিকট কম দরকারী নয়। কেন না, কৃত্রিম উপগ্রহের উপর বায়ুর আকর্ষণের পরিমাণ অনুসারে তাঁহারা অতি উপ্প্রেশেশ বায়ুর অনক্ষিণের পরিমাণ অনুসারে তাঁহারা অতি উপ্প্রেশ্বে আকার

সকল অবস্থার সমান না ছইলে গোলমাল হইবার সম্ভাবনা আছে। কুত্রিম উপগ্রহের আকার আবার মন্তক রকেটে" প্রাপ্তিযোগ্য স্থানের উপরও নির্ভর করে।

বহিরাবরণের উপাদান

বহিবাবরণ পাজনা অথচ দৃঢ় ছইবে। এালুমিনিয়মের ধ্যবহাদ এ বিষয়ে প্রশস্ত । তবে ম্যাগনেশিয়ামের উপর ক্রমান্বরে তামা, দস্তা, নিকেল, রূপা ও পরিশেষে সোনার পাজনা আবরণ দিয়া বহিরাবরণ নির্দাণ করিলে, ইহা একদিকে সুর্য্যের উপ্তাপ ও অপরদিকে আত্যধিক শৈত্যের প্রভাব হইতে (যথন উপগ্রহটি ও সুর্য্যের মধ্যে পৃথিবা থাকিবে) রক্ষা করিবে । তবে এ্যালুমিনিয়ম অথবা কোন ধাতু বহিরাবরণ হিসাবে ব্যবহার করিলে একটি অস্থবিবা ছইবে ।

কুত্রিম উপগ্রহ ফুজনের অন্তরন একটি উদ্দেশ হইতেছে পৃথিবীর বায়ুস্তরের উপরিভাগে Ionosphere-এর মধ্যে এবং উহার উদ্ধি প্রবহনান ভড়িংপ্রবাহের অনুসন্ধান করা ইহার সম্বন্ধে পরে বলা হইয়াছে)। ইহা সাধারণত: Magnetometer দ্বারা নির্দারণ করা হইবে। কিন্তু সেক্ষেত্রে উপগ্রহের বহিরাবরণ হইতে হইবে চুম্বকশক্তিবিহীন এবং তড়িংপ্রবাহে অক্ষম। এইজন্স স্থির হইয়াছে যে, অস্তত: একটি ক্ষেত্রেও প্লাষ্ট্রকের বহিরাবরণ ব্যবসূত হইবে।

বহিরাবরণের বং হইবে হ্পের মতন সাদা, কারণ তাহা হইসে ইভা ক্ষালোঞ্চক প্রতিফলিত করিয়া এবং ছাড়াইয়া দিয়া (scattering) অধিক্তর সুস্পাইভাবে দুগুমান হইবে।

কুলি উপগ্ৰহ স্থাষ্ট করার উদ্দেশ কি? ইহা কি মানুষের নিছক থেয়াল আর প্রকৃতির উপর নিজের আধিপত্য দেগান না অন্য কিছু? ইছার উত্তরে বলা যায় যে, পৃথিবার বহু রহস্মের কাৰ্য্যকাৰণ আজও আনবা জানি না। শুনিতে হয়ত আশ্চৰ্য্য লাগিবে যে আমবা ২লফ ৩৮ হাজার মাইল দুরে অবস্থিত চন্দ্র সংক্ষ যত খবরাখবর জানি, পৃথিবী সম্বন্ধে আমাদের জ্ঞান কিন্তু তাহাপেক্ষা অনেক কম। কিন্তু কুত্রিম উপগ্রহ কি ভাবে এ বিষয়ে সাহায্য করিতে পারে? আয়তনে ইহারা অতিশয় ফুদ্র এবং ইহার মধ্যে মান্তব বাওয়ার প্রশ্নই উঠে না। তবে কি ইহারা বহির্বিথে কিছুদিন ঘুরিয়া সংগৃহীত তথ্য সরবরাহ করিতে পুনরায় পৃথিবীতে ফিরিয়া আসিবে? না তাহাও নয়। কেন নাইহার গতিবেগ যথন ধীরে ধীরে হ্রাস পাইয়া পুনরায় মাধ্যাকর্ষনের জ্ঞা মর্ত্তের মাটিতে নামিতে থাকিবে তথন চারিদিকের ঘন বায়ুস্তরের সহিত সংঘর্ষ লাগিয়া উদ্ধাপিণ্ডের মতন জ্বলিয়া নিশ্চিষ্ক হইয়া যাইবে। তবে উর্নলোকের সংবাদ সংগ্রহ কি ভাবে সম্ভবপর? হুইবে বেতার-তরক্ষের সহায়তায়। ১৯৪৬ সালে যুক্তরাষ্ট্রেব স্কেত-স্ভা (signal corps) স্ক্পপ্ৰথম চলু হইতে বেতাৰ প্রতিধানির সন্ধান পান (Radio echo) ভাঁচারা আবিষ্কার করেন যে বেতার-তরঙ্গ মহাশূজেও যথারীতি স্বাভাবিক ভাবেই চলাফেরা করিতে পারে। কুত্রিম উপগ্রহের মধ্যে যে সকল বৈজ্ঞানিক যন্ত্রপাতি বা সাজসরঞ্জাম থাকিবে তাহাদিগকে একটি বেতার-প্রেরক ষল্পের সহিত সংযুক্ত করিবার ব্যবস্থা করা হইয়াছে।



*७३ ति हात्र (भारक शक्त इरें*डि *(भारिक मच व्यवत) व्यव का*न भारकि कि किहान वर्धायांगा वर्ष भृथितीता त्रजान-ग्राहक वरसन माहारग (गहांता भूरक्तांक मार्टकिक व्यक्तियांत्र ऋहे, पर्व করিতে অক্ষম), আমরা বহিবিশ্বের থবরাথবর পাইতে পারিব। এই উদ্দেশ্যে আন্তর্জাতিক ভূ-প্রাকৃতিক বৎসবে (I. G. Y.) পৃথিবীর বিভিন্ন স্থানে ২৫টি বেতার-গ্রাহক কেন্দ্র স্থাপন করিবার সংকল্প করা হইরাছে। আমাদের ভারতবর্ষে নৈনিতালে মার্কিণ সহায়তার অনুরূপ একটি গ্রাহ্ক-কেন্দ্র স্থাপন করা হইয়াছে, সংগৃহীত তথ্য সমূহ পৃথিবীর সকল জাভিট্ট জানিতে পারিবে বুলিয়া আশা **করা যাইতেছে। স্বরংক্রিক্সভাবে কেতা**রে এইরূপ ভাবে সংবাদ প্রেরণের নাম Telemetering. এখন কথা হইতেছে যে, স্বয় ক্রিয় বেভার-প্রেরক বন্ধ এবং অক্যান্য বন্ধপাতি চালনের জন্ম প্রয়োজন শক্তিসংগ্রহ-भावतम्ब :Hg) व्याष्ट्रावीव नावटात्र अ विषय উল্লেখযোগা, क्रमना, ভাছারা ওজনের তুলনায় সর্কাধিক শক্তি (energy) সরববাহ করিতে পারে। কিন্তু উপগ্রহের মধ্যে থুব বড় ব্যাটারী লইয়া সম্ভবপর নর। সর্বাপেকা বুহুদায়তনের যে ব্যাটারী শইয়া যাওয়া সম্ভব, তাহাতে একদিন সর্ধকণ ধরিয়া বিভিন্ন ব্দ্রপাতিকে চালু রাখিবাব মতন শক্তি স্ববরাহ সম্ভব। কিছ এক দিনেই সকল তথ্য সংগ্রহ করা অসম্থব। এই জন্ম স্থির করা হইয়াছে, যখন উপগ্রহটি ইহার কক্ষপথে সর্কাপেক্ষা স্থবিধাজনক স্থানে থাকিয়া তথা সংগ্রহ ও সরবরাহ করিতে সক্ষম থাকিবে, কেবল তথনই ইহার যন্ত্রপাতিগুলিকে পুথিনী হুইতে বেভার সংকেত মারফং কিছুকণের জন্ম চালু বাগা হইবে। উপগ্রহটির মধ্যে তাই বেতার পরিচালিত সংগ্রাহকের (Radio command Receiver) সংস্থাপন করিবারও ব্যবস্থা ক্যাত্ট্যাতে ৷ মার্ ওয়াট শক্তি ব্যয়ে ইহাবা মর্তভূমি হইতে প্রেরিত স্কেত অনুসারে

যারণাতিগুলিকে চালু অথবা বন্ধ করিয়া দিতে পারিবে। হিসাব করিয়া
দেখা গিয়াছে; ১০ মিনিটের কক্ষপথে দিনে ১৬ বার পূর্ণায়মান ৫০
পাউও ওন্ধনের উপগ্রহাটির বন্ধপাতিকৈ যদি ১৬ বারের প্রতিবার
ক্ষবিধায়্ধায়ী মাত্র ৫ মিনিট করিয়া চালু রাখা যায়, ভাহা হইলে
তড়িংকোষাবলীর (Battery) শক্তি সরবরাহ ক্ষমতা ১৫ দিন
পর্যান্ত বর্ত্তমান থাকে। ৩০০ মাইল উর্দ্ধে অবস্থিত দেকেওে ৪ই মাইল
গতিতে চলমান কুত্রিম উপগ্রহের সংবাদ সংগ্রহ ও সরবরাহ করিবার
ইহাই উদ্ধিতম সময়। তবে একথা ঠিক যে, ইহার পর যদিও উপগ্রহটি
তথ্য সংগ্রহ করিয়া বেতার মারফং তাহা সরবরাহ করিতে অক্ষম
থাকিবে, তথাপি ইহারা নিজ কক্ষপথে এক বংসর পর্যান্ত পৃথিবীর
চারি দিকে ঘ্রিয়ে থাকিতে পারে।

বর্ত্তমানে স্থা ছইতে শক্তি সংগ্রহের কথা চিম্বা করা ইইতেছে।
নিউইয়র্কের বৈল টেলিফোনে ল্যাবরেটরী সৌর তড়িং-কোগারলীর
(Solar Battery) আবিষ্কার করিয়া শ্রোগানন গবেষণা বিষয়ে
বিশেষ ভাবে সহায়তা করিয়াছে। Solar Batteryর গঠন প্রণালী
হইতেছে কতকগুলি পাতলা অগ্নিপ্রস্তরের (Silicon) ডিসকে স্বর্ধ পরিমাণ Boron এর আবরণ ধারা আছোদন করা হয়। যথন ঐ
ডিমগুলির উপায় স্থ্যালোক পড়ে, তথনই বৈছাতিক শক্তি উৎপাদিত
হয়। যেহেতু স্থ্যালোক চাবিদিকেই বর্ত্তমান, গেই জন্ম তড়িং-কোবাবলীর জীবনীশক্তিও অবিনশ্ব। এই ব্যবস্থা চালু হইলে ক্রিম
উপগ্রহ ইটতে প্রেরিত তথ্য বহুদিন যাবং পাওয়া যাইবে। তবে এ
ক্ষেত্রে কুরিম উপগ্রহটির এক জংশকে ব্রাবরই স্থ্যের দিকে ম্থা

ি আগামী সংখ্যায় সমান।।

— জ্রিশ্রান্তবুলার বার

অথচ

সম্ভোযকুমার অধিকারী

ভেঙ্গেছিলো ঘ্ম সকালের মেঘ-ছড়ানো আবীরে,
প্রভাৱ চোৰে দেখেছি আকাল পাধীদের ভীড়ে,
দিগজনীল শ্না প্রদর উবাও কথন।
অধ্য জীবন কাঠ-কেরোসিনে প্রাভ্যাহিকের
চিন্তার জালে ছনিবীক্ষ্য; চতুনিকের
রক্জ্পীড়নে কাঁক নেই, বাঁবা আশান্ত মন
মাধা ঠোকে শুরু টেবিলে; ঘটা টেলিকোন কানে
মামুব মান্তব—সামনে-পেছনে মাধা ধ'রে টানে।

কি বন্ত্ৰণা বে কাঁপে জনবের বজ্ঞে বজ্ঞে।

নিগস্ত কৰে হারালো শৃত্যেণ; মাটির নিবিবে
কেনেছি জীবন সোগানের জোরে নতুন তাড়।

নৈশ্ব নেই—হাত-পা ছুঁড়ছি জনতার ভীড়ে
ছারার ক্ম নাচে জানসার শার্শাকে বিবে
আমার ব্রধেছে ব্র-বেতাল ক্রীতনাসংদ।





মোহনবাগানের লীগবিজয়

আই, এফ, এ, শীল্ডে ৪৩টি দল

বছ এতিছেব অদিকাবী বাঙ্গালা তথা ভাবতেব অন্যতম জনপ্রিয় দল মোহনবাগান নিতাস প্রতাশিত ভারেই এ বংসরেব প্রথম ভিভিদন কুটবল লীগবিদ্বরী হরেছে। এবাব নিগে তারা মোট আটবার লীগ জয়েং কুণ্ডির গর্জন করেছে। কিন্তু ১৯০১, ১৯৪৩, ১৯৪৪, ১৯৫১, ১৯৫৫, ১৯৫५ ও ১৯৫৯ मेर्ड कत्त्वात्त्व জ্ঞয়ের ইতিহাসে তাবা কোনবারই অপুণাজিত আখন নিয়ে এই সন্মান লাভ কৰতে পাৰেনি। বহু-আকালিত এই আঝালাভেৰ সুযোগ মোহনবাগানের প্রায় সামনে এসেও হাজির হয়েছিল। কি স্ত 'বিধি বান'। লাগ গেলাব প্রায় সমাপ্তি পর্যনায়ে তারা চিরপ্রতিদ্বন্তী ইষ্ট্রেক্সলের কাছে হেবে গিয়ে ভাগেবে নিদাকণ পরিচাদকে মেনে নিতে বাধ্য হয়। এবাবেৰ লাগ মৰ্ভমে মোহন্ৰাগানেৰ এইটি হোল একমার প্রার্থের ছাপ'। অবিণি %টি অমীমাংদিত পেলার ভারা 🎍 প্রেণ্ট হাবিয়েছে। এতে প্রেণ্ট নঠ হয়েছে কিন্তু সন্মান নঠ হয়নি। প্রথম প্রাজ্যের আহাবাত্তীবুনা হলেও সাম্প উঠতে মোহনবাগানের বেশ সমর লাগলো। চরম লক্ষা সম্বন্ধে তাবা ছতোক্তম ছয়নি সভা কিন্তু লীগেৰ স্থচনার ভারা যে বিক্রমে ষাত্রা স্থক করেছিল শেষ পর্যাবে তালের প্রক্রেপ সৃষ্টতিত হয়ে আন্দে। এতে দৰ্শীকুলের কোন মহলে হয়ত কিছুটা সংশ্রেরও সঞ্চার কবেছিল। কিন্তু মোহনবাগানের লীগজয়ের পথ অবক্লন্ধ ছিল না ৷ বাকী পথটুকু পাড়ি দিয়ে তারা লীগ পরিক্রমা সার্থক করলোও স্কল করলো। অগণিত দর্শক ও সমর্থককুল জনপ্রিয় মোহনবাগনের সাকলো উল্লিষ্ট হয়ে উঠলো। মোহনবাগান যে জুনচিত্তে কতথানি জারগা জুড়ে বসে আছে তার জাজন্য প্রমাণ পাওয়া গেল থিদিরপুর দলের সঙ্গে তাদের লীগের শেষ থেলায়। থেলা হিসেবে এ থেলাটি নিশ্চয়ই আকর্ষণীয় ছিল না। তীব্র প্রতিদ্বন্দিতা হবে এ আশাও কবা যাগনি। তবে থেলাটার ফলাফলের উপৰ কিছুটা গুৰুৰ ছিল। এ থেলায় মোহনবাগান এক পয়েণ্ট পেলেও লাগবিজরী হতে।। কিন্তু লাগবিজ্ঞার চরম ক্ষণটি চাকুৰ করে নিজেদের মন ভরাতে বিপুল দর্শকশ্বেণী এই দিন মাঠে উপস্থিত থাকে। থিদিবপুণের বিরুদ্ধে মোহনবাগানেব ছবলাভেব ফলে লাগ-বিজ্ঞের মীমাংসা হয়ে যাওয়ায় এই জনসমটি বাবভান্ধা বলার স্রোতের মত আনন্দে ও উন্নাদে মেতে ওঠে। প্রাণচাঞ্চার যে নজার সেদিন সাম্প্রতিককালের থেলাধুলোর ইতিহাসে পাওয়া গেছে, তা বিবল। এই সঙ্গেই কলকাতা ময়দানে লীগ নবভম সাঙ্গ হলো। সাননে পাতা ত্যেছে আই, এফ, এ, শীভেব আগব। নতুন উংসাংখ্য মতুন উদ্দাপনাধ্য খেলবার আগ্রহে দিকে দিকে সাজ সাজ রব।

এবারে আই, এফ, এ, শীভ ফুটবল প্রতিযোগিতায় মোট ৪৩টি দল প্রতির্বন্ধিতার অংশগ্রহণ করছে। এর মধ্যে ১**৫টি** দল হোল বাংলাদেশের বাইবের। বাইবের খ্যাতনানা দলগুলোব মুগ্য হারদাবাদ স্পোটি ই, ই, এম, ই, (লেকেক্সাবাদ), বিশ্বর ক্যাণ্টনমেট (দেরাতন), ওয়েষ্টার্ন বেলওয়ে (বোম্বাই), হিন্দুস্তান এয়াবকাফট (বাঙ্গালোর) দলের নাম বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য। এদের বিরুদ্ধে কলকাতার প্রথাতিনামা দলের থেলা নিশ্চয়ই আকর্ষণ ও উংসাহের কারণ। লীগ ও শীভ প্রতিযোগিতার চেহারা ছটো আলাদা ধরণের। লাগ থেন লম্বা সড়ক বেয়ে দূর **লক্ষ্যস্থলে পৌ**ছবাব একটা প্রবাসনাত্র। এ পথে চলতে গিরে সাম্য্রিক ভাবে পিছিয়ে পঢ়লেও একেবাবে নিলিয়ে যাবার বা নিশ্চিষ্ক হবার ভর নেই। বাধা-বিপত্তিকে ঠেলে যে আগে গিয়ে চরম লক্ষ্যে পৌছবে, জয়ের মালা ভারই গলে হলবে। কোন উত্তব্দ পর্বাহনীর্বে আবোহণ করাই যেন শীভে সাক্রলাভের সামিল। চড়াই-উৎরাই বেয়ে উঁচতে চলভেই হবে—পেছনে ফেরবার অবকাশ নেই। পেছনে ফিরলেই বিপন। ্মন হর ত্রক্সায় মনোভাব নিয়ে যোগদানকারী দলগুলো এবাবের শীভ প্রতিযোগিতার অংশ গ্রহণ করে এবং তার নমুনা দেখিরে দর্শকমনে তুঃসাহসিক অভিযানের প্রেরণা জোগালে তাতে ভাল ছাড়া মন্দ হবে না, আশা করা যায়।

[ভারত আবার জগংসভার শ্রেষ্ঠ আদন লবে]

রোমে আগামী বিশ্ব অলিম্পিকে ভারত হকি প্রতিযোগিতায় বিশ্ববিজয়ী আখ্যা অকুন্ন রাখতে পারবে বলেই মনে হয়। আন্তৰ্জ্বাতিক প্ৰতিযোগিতাৰ ভাৰতেৰ গৰ্ম কৰাৰ একটি জিনিই আছে, সেটা হোল হকি।

১৯২৮ সালের বিশ্ব অলিম্পিক থেকে জ্বন্ধ করে আজ পর্যান্ত ভারত হকি প্রতিযোগিতায় তাদের বিশ্ব-স্করের পতাকা উ^{*}চুতে ^{দরে} রেখেছে। বিজয়-বৈজয়ন্তা **অকু**শ্ল থাক—এটা ভারতবাদী মা^{ত্রেবই} কামা।

টোকিওতে অনুষ্ঠিত গত এশীয় ক্রীড়ায় ভারত হকিতে দিতীয় স্থান লাভ করায় অনেকেই আগানী-বিশ্ব অলিন্সিকে ভারতের সাফ্রা সম্বন্ধে কিছুটা নিজেদের ভাব হয়ত বা পোষণ করে থাকবেন। এ**নী**য় ক্রীডায় ভারত প্রাজিত হয়নি। গোলসংখ্যার হি^{সেবে} তালিকার ক্রমিক অবস্থান নিদ্ধারিত হয়েছিল। দেই হি^{সেনেই} পাকিস্তান তালিকার শীর্ধস্থান লাভ করেছিল। এর ফলে ভাব^{ত্রের} হকি থেলার মান নিমুগামী হয়েছে বা ভারতীয় দলেব ^{শক্তি} আগের থেকে ক্ষুর হয়েছে, একথা মনে কবলে চরম ভুল করা হবে।

থুবই আশার কথা যে, আসন্ন অলিম্পিকের জন্ত ভারতীয় দলকে

বিশেষ শক্তিশালী করে তোলার জন্ম ইতিমধ্যেই প্রস্তুতি স্কুক হয়ে গিয়েছে।

ভারতে ছকি খেলার নিয়ামক-সংস্থা নিখিল ভাবত ছকি কেড়ারেশন এ বিষয়ে যোগ্য দৃষ্টি দিয়েছে এবং প্রয়োজনীয় ব্যবস্থাপ্ত ফক করে দিয়েছে। ই.জিমধ্যে ভারতীয় ছকি দল পূর্ব-আক্রিকা সফর করে গত মাদে দেশে ফিরেছে। বিশ্ববিজয়ী ভাবতীয় ছকি দলের প্রাক্তন অধিনায়ক 'বাবু' (কে, ডি, সিং) ছিলেন পূর্ব-আফ্রিকা সফরে ভারতীয় দলের 'কোচ' এবং ম্যানেজার। তিনি রিশেস করে ৬ জন খেলোয়াড় সম্বন্ধে দৃঢ় আশা প্রকাশ করেছেন এক ভাবতীয় অলিম্পিক ছকি দলে অস্তর্ভুক্তির জন্ম এই ছয় জনের নাম স্থপারিশ করেছেন। "বাবু" নির্বাচনী কমিটিরও অলভম সদন্ত। সভরা ভাঁর স্থপারিশ গৌজিকতা এবং যোগ্যভার খনিপ্রেকিতে গাস্থ ভবে বলেই মনে হয়। অবিশ্যি ভারতীয় অলিম্পিক ছকি দল গঠনে এখনও দেরী আছে। জার্মানীর মিইনিকে ছকি প্রতিযোগিতার এবং বিদেশের আরও কয়েকটি জারগায় খেলার পর দল গঠন করা ছবে। এ সমস্ত খেলাগুলো হবে বিশ্ব অলিম্পিকের জন্ম ভারতের প্রস্তুতি-পর্ব্ব।

এ ছাড়াও থেলোরাড়দের বিশেষ শিক্ষা দানেবও বাবস্থা করা হয়েছে। হকির যাত্কর ধ্যানচাদ, বাবু এবং হাবুল মুথাজ্জী শিক্ষাদান কববেন।

এবারের অলিন্সিকে ভারতীয় দলকে আগের তুলনায় ফনেকগানি প্রতিধন্তিতার সন্মুখীন হতে হবে বলে মনে হয়। কেন ন', পাকিস্তান, যুক্তরাজ্য, হল্যাণ্ড ও জার্মাণী ইতিমধ্যেই হকি খেলায় যথেই উন্নতি প্রদর্শন করেছে। ভারতীয় দলের খেলোয়াড়দের অনমনীয় দৃত্তা, প্রশাসনীয় ক্রীড়াধারা এবং সর্ব্বোপরি জাতীয়তা ভার প্রকাশে ভারতের ভাতীয় সনাম এবং ঐতিহ্য অক্ষুণ্ণ থাকবে এবং সারা বিশ্বে তাঁদের বিজ্ঞান্ত প্রতাক। চির-উড্ডীন থাকবে। ভগংসভায় তাব শেষ্ঠ আসন নেবেন।

কলক।ভায় স্টেডিয়াম

আবার কলকাতার "ফুলবল প্রেডিয়াম" প্রসঙ্গ । প্রেডিয়াম দিশকে কোন মুখরোচক খবর হলেই কলকাতার ক্রীড়ামোদীদের কৌছুগলের শেষ থাকে না । প্রেডিয়াম নিয়ে সবকারী ও বে-সরকারী প্রতিষ্ঠানের উদ্ভোগ-আয়োজনের শেষ নেই ! কিন্তু সেই একই প্রশ—কবে প্রেডিয়াম নির্মাণ আরম্ভ হবে ? সম্প্রতি সরকারী দপ্তর থেকে প্রেডিয়াম সম্পর্কে কিছুটা আশার আলো নিক্ষেপ করা হয়েছে । এখন নাকি "এলেনবরা কোদে" (কেলা সংলগ্ন প্রান্তরে) প্রেডিয়াম গঠনের জক্ত জমি সংগ্রহের ব্যবস্থা হবে গেছে ।

"এলেনবরা কোসে" ভারত সরকার তেরো একর জমি টেডিয়ামের জন্ম দেবে বলে ঠিক করেছে। একে নাকি হ'ভাগে বিভক্ত করা জরে। সাড়ে ছয় একর অর্থাং কুড়ি বিঘা জমির ওপর ষ্টেডিয়াম নিশ্বিত হবে এবং বাকি সাড়ে ছয় একর জমির ওপর স্ইমিং পুল, ভারিবল, করাডি, জিমলাষ্টিক প্রভৃতি খেলাধূলার মাঠ প্রস্তুত হবে বলে ঠিক হচ্ছে।

বর্দমানের মহারাজা, মরুরভঞ্জের মহারাজা, স্থার বি, এন,

মুখার্জ্জী ও শ্রীশিকত ব্যানার্জ্জীকে নিয়ে ষ্টেডিয়াম গঠনের জক্ত একটা "অছিমগুলী"ও গঠন করা হয়েছে। শ্রীশিকত ব্যানার্জ্জী হিন্দুছান কন্দাইকিদন কোম্পানীর কর্পার। তাঁরই ওপর ষ্টেডিয়াম গঠনের ভার দেওয়া হয়েছে। তিনি সম্প্রতি রোমে গেছেন। রোমে এবং লগুনের নানাস্থানে ষ্টেডিয়াম গঠনের তথা সংগ্রহ করে তিনি সেন্টেম্বর মাঝানাকি কলকাভার দিরনেন। "কলকাভার ষ্টেডিয়াম" এবারকার প্রসঙ্গ যে বেশ কিছুটা মুখরোচক, তা বলাই বাছল্য। দেখা যাক ষ্টেডিয়ান নিয়ে আর ক্তকাল টাল্বাহনা চলে।

কলকাভায় আমেরিকান সম্ভরণ-শিক্ষক

আমেরিকার খ্যাতনামা দ্বীতার-শিক্ষণ নে মিলাবের শিক্ষাবীনে কলকাতার তরুণ ও উদীয়মান দ্বীতারদের শিক্ষাবানের ব্যবস্থা হয়েছে। মিলার একজন প্রথম শেণার শিক্ষণ। ১৯৫৬ সালে বোষাই রাজ্য স্টাইমিং প্রসোসিয়েশনের আমন্ত্রণ তিনি ভারতে প্রসেছিলেন। এবার তাঁর আসার ব্যবস্থা করেছেন ইউনাইটেড ষ্টেট ডিপাইমেন্ট। তবে এখানকার শিক্ষাবানের সকল উদ্ধোগ আয়োজন করবে বেঙ্গল এমেচার স্টমিং প্রসোসিয়েশন। মিলার কলকাতার অবস্থান কালে আশনাল স্টাইমিং ক্লাবের "রক্ত-জরস্থা" উৎসবে যোগদান করবেন। কলকাতার লেকে ইন্থিয়ান হাইফ সেজিং সোসাইটির স্টাইমিং পুলে তিনি শিক্ষাদান করবেন। কলকাতার পর তিনি দিল্লী ও বোষাই যাবেন। সেখানেও শিক্ষাদানের ব্যবস্থা হয়েছে।

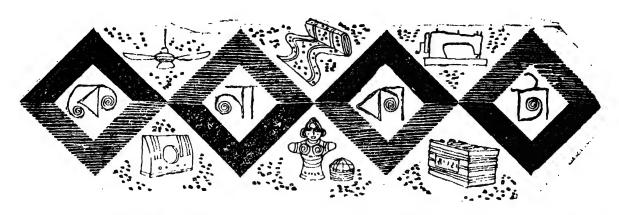
ফাষ্ট বোলিং ভীতিরোধের চেষ্টা

ভারতের ক্রিকেট-অনুরাগী মাত্রেই জেনে খুদী হয়েছেন যে, ওয়েষ্ট ইণ্ডিজ দলের খ্যাতনানা "ফাষ্ট বোলার" রয় গিলক্রিষ্টকে ভারতে এই বংদরের শেষাশেষি "কোচ" হিদাবে জানার প্রচেষ্টা চলছে। ভারতীয় ক্রিকেট খেলোয়াড়দেব "ফাষ্ট বোলিং" ভাঁতির কথা স্থবিদিত। ভারতীয় খেলোয়াড়দের গিলক্রিষ্ট কিছুটা সহায়ক ভোল, এটাই সকলে কামনা করেন।

— স্ত্রীরোগ, ধবল ও-বৈজ্ঞানিক কেশ-চর্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্মবোগ ও চুলের যাবতীর রোগ ও জ্রীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসায় পত্রালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ড়াই চ্যাটাজীর ব্যাশন্যাল কিওর সেণ্টার ৩৩, একডালিয়া রোড, কলিকাতা-১> গন্যা গাল—চাটা। কোন নং ৪৬-১৩৪৮



গবেষণা ও শিল্প-সমূদ্ধি

মাধ্য মে-দিন থেকে একেছে এই মাটিব পৃথিবীকে সাথে সাথে হাজিব হলছে তাব বলনাও। প্রথমটার করনাব পবিধি ছিল নিজান্ত সীমিত, কিন্তু যুগো সুগো তা বিস্তাব লাভ করে চলে। এই ত্রন্ত করনা ও স্বপ্পকে আশ্রয় কবেই একদিন বিজ্ঞানী মানুষের হয় জন্ম—সেই থেকে গবেষণা ও প্রীকা-নিরীকার অবধি নেই।

একথা আজ আর বলবার অপেক্ষা রাথে না, সভ্যতার ক্রমিক অরগতির ক্ষেত্রে বিজ্ঞানের অনদান অপ্রিমের। বিজ্ঞান-লক্ষীর আশীর্বাদেই মানুষ পেয়েছে বিচিত্র ধরণের স্থা-স্বাচ্ছন্দ্য—বাবহার উপযোগী রকমারী শিল্প-সন্থাব বা শিল্প-ত্রীযা। এমনি দাঁড়িয়েছে—আজকের দিনে কোন লোকের পক্ষেই বিজ্ঞানকে এডিয়ে চলা সন্থার মর, বৈজ্ঞানিক গবেষণার স্থান্দ্র কিছু না কিছু ভোগ করছে প্রত্যেকেই।

বেখানকার অধিবাসী এই মান্ত্য, সেই পৃথিবী সম্পর্কেও জন্পনাকারনা ও গবেষণার অন্য ছিল কি ? কত বক্ষম বিচিত্র ধারণাই নাকার হয়েছে পৃথিবীর আকার ও অবস্থান সম্বন্ধে। প্রাচীন গ্রীদের অক্তরম শ্রেষ্ঠ দার্শনিক থেলসের বিখাদ ছিল—পৃথিবীটা দেখতে বেকারীর মতো—আব সমুদের জলে এটি স্থিব ভাসমান। তুই হাজার বছরেরও ওপর এই নিয়ে চিন্তা-আলোচনা করলেন ভাবুক-মহল। গবেষণা শেষে আজকের মান্ত্য পৃথিবার আকার ও রহস্তা সম্পর্কে একটি সঠিক ধারণায় আগতে পেবেছে—বুঝে নিয়েছে সভিত্য কভো সর মৌলিক উপাদান ও বাসায়নিক পদার্থ মিলেমিশে এইটি গড়া।

পব পর আবিক্ষত এই বতম্বা পদার্থগুলো নিয়ে গবেষকরা শিল্প গবেষণাগারসমূহে গবেষণা চালিয়েছেন সে-ও বছদিন। এব ভেতর হাজার হাজার নতুন জিনিস তৈবা হয়েছে—দৈনন্দিন জীবনে যেগুলো জনেক প্রয়োজনে আসছে আমাদের। একদিকে গবেষণা, অপর দিকে শিল্পসমৃদ্ধি—এই নিয়ম একণে প্রায় বাঁগাধরা, নিয়মামুখায়ী কাজেরও বিরতি নেই বলা যায়।

শিল্পান্ধত হবার জন্তে আজ ছোট-বড় সকল দেশেই উত্তম চলেছে মানাভাবে। অগ্রসর রাষ্ট্রগুলিও চার আবও শিল্প-সমৃদ্ধি, আবও শিল্প-সম্পানি আবিরাম গাভিতে চলেছে সেই দলে সর্বত্ত। বলতে কি, ত্রিশ কি চল্লিশ বছর আগোও শিল্প-স্বেবণার গভিবেগ এতথানি তীত্র ছিল না। রাসায়নিক ও পদার্থ বিষয়ক বিজ্ঞানের অগ্রগতি সে পরিমাণে হয় নি তথন আবি। আজকেন মাছুর সেই ছুলনায় এগিয়ে গেছে বছ বোজন

পথ—শিল্পকেত্রে বিজ্ঞানের সহায়তার চমক স্থান্ধ করছে প্রতি মুক্তি।

প্রাপত একটি কথা বনতে হয়—বৈজ্ঞানিক গবেষণায় শিল্পের বেনন প্রদাব হচ্ছে অবিরান, শিল্প-সংস্থা বা কোশ্পানীর সংখ্যাও বেড়ে চলেছে প্রার তেননি। প্রধানতঃ হুইটি দিকে নজর রেথে শিল্প-গবেষক বা বিজ্ঞানীরা গবেষণা চালিয়ে থাকেন। এক—বে অভিনব পণ্য বা শিল্প-সামগ্রী হৃষ্টি হলো, কি ভাবে তার চরম উৎকর্ষ সাধিত হতে পারে; হুই—গবেষণা করে সম্পূর্ণ নতুন ধরণের আর কি জিনিস বের করা যায়। করেকটি শিল্প-সংস্থা বা কোম্পানী প্রথমটির ওপর জোর দিয়ে থাকেন, আবার অপর কতকগুলোর বেলায় জ্বোর থাকে স্বিতীয় দক্ষা ব্যবস্থার ওপর।

আবও একটি কথা বলতে হবে—শিল্প-সমৃদ্ধি ও শিল্প-সাবেষণাব জন্ম সর্বোপরি থাকা চাই সরকারী তত্তাবধান ও পৃষ্ঠপোবকতা। বেসরকারী উজ্পনের সাথে সরকারী উজ্পনের ঐক্য ঘটলে থুব ভাড়াভাড়ি স্থফল পানার স্বতঃই সন্থাবনা থাকে। অপর দিকে শিল্প-সমৃদ্ধি চাইলে শিল্প-গবেষণা চালাতেই হবে, আর ষথারীতি গবেষণা চালালে নতুন শিল্পও আবিষ্কৃত না হয়ে পারে না। অনেক সময় এমনও হয় কিবো হওয়া বিচিত্র নয় যে, একটি বিশেষ শিল্প-স্থিকরতে গিয়ে, অপর কোন শিল্প (উপজাত) স্থাই হয়ে গেলো, আর গেটিও মূল্যবান। পরমার্থ বা আগবিক পদার্থ আবিষ্কৃত হওয়ায় গবেষণা মারকত শিল্প-সমৃদ্ধি ও শিল্প-সম্প্রমারণের পথ আজ্ঞ ষথেষ্ঠ প্রশস্ত হয়েছে। শিল্প-বিজ্ঞানের ক্ষেত্রে মানুবের নিরলস সাধনা ও হর্জয় অভিযান আরও কতো অভাবনীয় সাফল্য বহন করে আনবে, সে প্রতীক্ষা আদে অবাস্তর বা বাড়াবাড়ি নয়।

ध्यम-क्रीवन---करम्बा कथा

বাঁচবার জন্ম নিয়মিত শ্রম করতে ছবে, খেম্লেপরে দিন কাটাতে কাজ করতেই হবে কোন না কোন—সাধারণ লোকের কাছে এ নতুন কিছু নয়। শুধু প্রশ্ন কে কি ধরণের শ্রম করবে, কার পক্ষে কতক্ষণ স্বস্থ ভাবে থেটে যাওয়া সম্ভবপর। শ্রম-জীবন যদি সবদিক থেকে বিরক্তিকর হলো, কাজ করে সামান্ত আরাম বা আনন্দের থোরাকও যদি না পাওয়া গেলো, তা হলেই গোলমান।

শিল্লায়নের সঙ্গে সঙ্গে এক একটি দেশে কর্ম-সংস্থান বেড়ে যায়।
আর কর্ম-সংস্থান বাড়তি হওয়ার অর্থ প্রমঞ্জীবীর সংখ্যা বৃদ্ধি।
শিল্প-শ্রমিকদের অবস্থা-ব্যবস্থা স্বভাবতঃই তথন আলোচনা-সবেষণার
বিবন্ন হয়ে ওঠে। এই থেকেই ক্রমে অবস্থা নানা শিল্প-স্লাইন বা
শ্রমিক কাছুন তৈরী হয়।



्यश्च (स्रोत्स्टर्छाः इटनडः...

> হিমা**ল**য় বোকে শ্রেষ্ঠ প্রসাধন



স্থিদ্ধ এবং হুগদ্ধ হিমালয় বোকে স্বো অণিনার ত্বককে মহণ এবং মোলায়েম রাখে। মধমলের মত হিমালয় বৈটিক টাইলেট

পাউডার আপনার লাবণ্যর স্বাভাবিক সৌন্দর্ব্যকে

ৰাড়িয়ে তোলে।

िशालग्र खांक स्ना अवः টेग्रटलंट शांडेडात



একটু পেছনের দিকে তাকালেই দেখা যাবে—শিরগত মনস্তব্ব বলতে যা বুঝার, তার স্ট্রনা হর চলিত শতকের গোড়ার দিকে। স্ট্রনার তৃইটি ভান্ত গাবনা মূল বিষয়কে আছের করে বেথেছিল, প্রথম ধারণাটি ছিল—নার্যের দেহ হত্তে নিছক একটি যন্ত্র, একে খ্শিমতো কাছে লাগালেই কাছ হাসিল হরে যাবে। দ্বিতীর ধারণা—শ্রমিককে যেথানে কাছ করতে হবে, সেই যারগাটি যদি উপযুক্ত আলো ও তাপ সম্বিত হয় এবং কাছাকাছি কোন হৈ চৈ না থাকে, তা হলেই সব ঠিক-ঠাক।

শ্রমজাবীদের ক্ষেত্র যেটি বছ কথা, প্রগ্যালোচকদের কাছে সেইটি ধরা পছে নি প্রথমটার। কাজ করে শ্রমিক আসলে কি চার অর্থাং তার মনের মূল চাহিলটি কি, এই দিকে সংশ্রিষ্ট মহলের দৃষ্টি পছে বছদিন বাবে। শ্রমিক শ্রমের উপযুক্ত মৃন্য চার, বাঁচবার অধিকার চার সে-ও মাতৃদের মতো, গটি সর্বোপবি সতা। এ সত্য আজও বেগানে শ্রীকৃতি পার নি, শ্রমিককে বেগানে মার যন্ত্র হিসাবে ব্যবহার ক্রিবতে চাওয়া হচ্ছে, দেখানেই দেখা যাবে অসক্তোব ও অশান্তি।

শিক্স-শ্রমিক সম্পর্কে গোড়াকার দিনগুলোতে যে যে ধাবণা পোবণ করা হতো, সে গে ভুল, তা প্রমাণিত হ্নেছে বাস্তব পরীকাতেই। একটি দৃষ্টাস্ত—বছর ত্রিশেক আগে চিকাগোর একটি বিহাহে কারখানার ক্ষতকগুলো সমস্তার উদ্ভব হয়। সেগানে শ্রমিকদের ভেতর অসমস্তার বৈড়ে চলে এবং কারখানার উৎপাদন ক্ষমতা হ্রাস পার। অথচ কারখানার আলো-বাতাসেব অভাব ছিল না, বাইবে থেকে দেখতে কার্র্যের উপ্যোগী পরিবেশ সেখানে ছিল।

গ্রন্থ কোথায় বোঝবার জন্মে ডেকে আনা হলো অষ্ট্রেলীয় অধ্যাপক এসটন মেয়াকে। তিনি সে সময় অন্তর শিল্প-গ্রেষণার কাজেই ব্যাপৃত ছিলেন। তিকাগোর কারখানাটিতে এসে পরীক্ষা ঢালালেন তিনি নানা ভাবে। প্রথমেই চিবাচরিত ব্যবস্থা মতে আলোর বহব বাড়িয়ে দেওয়া হলো, যে কোন কারণেই হোক—উংপাদনও বাড়লো তথন কিছুটা। স্বভঃই ধরে নেওয়া হলো এর পর আলোকসজ্জাই উংপাদন বৃদ্ধির প্রধান সহায়ক। অব্যাপক মেয়ো আবার উল্টো দিক থেকে অবস্থাটি পরীক্ষা করে দেখতে চাইলেন। এবারে কমিয়ে দেওয়া হলো কারখানার সব ক্রমটি আলো। চাদের আলোর প্রমিত আলোতে এসে যথন শাড়ালো, বিশ্বয় যে, তথনও বজার থাকলো উংপাদনের। উদ্ধিগতি। বর্ম উংপাদনের মাত্রা এমনটি কথনও সে কারখানার দেখাই যারনি।

তা হলে ব্যাপারটি আদলে কি ? অধ্যাপক এলটন ষথন পরীক্ষাটি চালাতে থাকেন, তথন কিন্তু শ্রমজাবাদের কাজের অবস্থার উল্লয়নের ক্ষম কর্তৃসক্ষের কিছুটা চেষ্টা চলে। শ্রমিকরা এইটে বৃষতে পাবা মার সোৎসাহে কাজে যোগ দেয় এব এবই পরিগতিতে উৎপাদন ক্ষমতা এগিয়ে যায় অনেক দ্র। গবেষণা করে অগ্রগতির এই মৃল স্থাটি ধরতে পারেন অধ্যাপক এলটনও। তাঁর চোথে স্পাঠ ধরা পড়লো— কাজ করতে যেরে ক্ষমির মনে কিনে স্থাতি আদে, সেইটি বড় কথা।

শ্রমজীবী ও শ্রম-জীবন সম্পর্কে প্রালেগচনা করতে বেরে আরও
একটি কথা বলা চলে—সাধারণ মানুর মোটেই শ্রমকাতর নর। কাজে
কাকি দিরে প্রসা লুঠবার মংলব গড়পড়তা শ্রমিকদের মারে নেই।
পরত্ব বলা চলে শ্রমজীবী মাত্রই সাধারণতঃ সন্তোবজনক অবস্থার থেকে
কাল করতে চার। বস্তুতঃ বে-কালটি বে করতে, বোল জানা মন
ভ তুরি নিরে সেটি করার ব্যবস্থা বদি থাকে, সর দিক থেকে মলল।

আয়--ব্যয়-সঞ্চয়

দৈনন্দিন জীবনে প্রত্যেক মামুদেরই কতকগুলো নিয়ন কান্তন মেনে চলবার প্রয়োজন বরেছে। আর বুঝে ব্যয় করা আর তানই কাঁকে কিছু কিছু সঞ্চল্প এই বিধিটি সকলের ক্ষেত্রেই প্রযোজা— সীমাবদ্ধ আয়বিশিষ্ট সংসারী লোকের বেলার তো বটেই।

বুঝে-শুনে ব্যয় করার বিধি বাবস্থার কথা উঠলেই একটি উপনিধি
দাঁড়ার—শরচের বাজেট ঠিক রাখতে হবে আগে থেকেই। সরকাবী ক্ষেত্রে যেমন বাজেট করবার রীতি আছে সর্বাত্ত, তেমনি কোন না কোন ধরণের বাজেট (যতই ক্ষুদ্র হোক) চাই পারিবারিক ক্ষেত্রেও। খরচের একটা মোটামুটি ধারণা চোপের সামনে না থাকলে অনেক সমরই আরের অতিবিক্ত ব্যয় হ্বাব আশস্কা থাকে। আর সে অবস্থায় অতি প্রশেজনীয় সঞ্চারের স্থাগোটি সহুসা মিলতে পারে না।

এমন অনেক দেখা যায়—শাঁরা আবের দিকে না তাকিয়ে বেপরোয়!
খবচ করে চলেন, ভবিষাতে যা-ই ঘটুক না কেন, তার জন্তে এতটুক্
তোরায়। রাথেন না। 'ঋণ কবেও ঘি খাওয়ার কথা' এই শ্রেণীর
লোকরাই ভাবতে পারেন। নিম্ন আর বিশিষ্ট সংসারী মামুষের
পক্ষে এই পথ অনুসরণ করতে যাওয়া বিপক্ষনক। বলতে কি,
বাস্তব ত্নিরার এই ধরণের পদক্ষেণ অভ্যন্ত জটন পদক্ষেপ—এ
গার্হস্থ অন্নীতির বিরোধী।

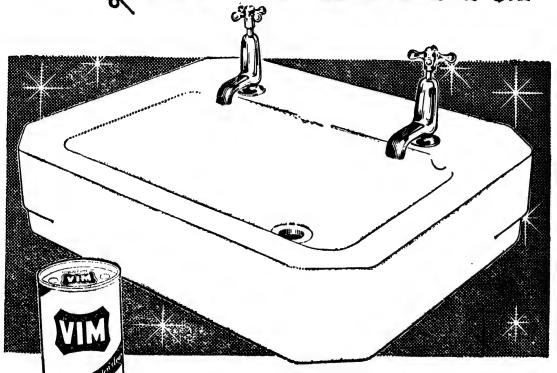
আয়ের অমুপাতে ব্যর করার যে বিধান, সেইটি অর্থাৎ মিতব্যরী হওয়া সকল অবস্থাতেই শ্রেয়:। বিলাদ-ব্যসনে অরথা অর্থব্যয় করে পথে দাঁড়ানো কিবো থেরে-পরেই সব টাকা পয়সা অসক্ষোচে উড়িয়ে দেওয়া—এই যদি হলো, বৃশতে হবে পদে পদে বিপত্তি। আয়ের দাম'রঝা ছাড়িয়ে অপবিহার্য্য কারণ ভিন্ন ব্যয় কোন মতেই চলতে পরে না। বর্ত্তমান সমাজ কাঠামোতে প্রতিটি ব্যক্তি-জীবনের সামনে অনিশ্চয়তা রয়েছে বলেই সঞ্চয়ের কথা বড় হয়ে দেখা দেয়।

খবচের মাত্রা যতদ্ব সম্ভব কমাতে হবে আব সব খবচই ইওয়া চাই আয়ের ভেতর, এই নিয়ে প্রশ্ন তোলা নির্ম্বক। কিছ তাই বলে পর্য্যাপ্ত টাকা-পর্য্যা থেকেও প্রয়োজনীয় ব্যয়ের ক্ষেত্র কার্পণ্য দেখানো কিংবা থাওয়া-পরার অত্তেত্বক কইভোগ সমর্থনবোগা হতে পাবে না। সোজাপ্রজি বলতে গেলে—মমিতব্যয়ী হওয়া যেমন ভালো নয় কিছুতেই, অতিসঞ্চয়ী হবার নীতিটিও তেমনি ক্রটিপূর্ব ও অযৌক্তিক।

প্রসঙ্গত, আর একটি কথা বলতে হয়—একান্ত প্রয়োজনীয় বায় বেখানে আরের সীমা নিয়মিতভাবে ছেড়ে যাবে, সেক্ষেত্রে আর বাড়ানোর সক্রিয় চেষ্টা ছাড়া উপায় নেই। মোটের উপর, আর-ব্যয় ও সঞ্চয়র প্রশ্নটি থুব যর সহকারে ভারতে হবে সাধারণ বৈব্যিক মানুবকে—তারণর মাঝামাঝি একটা স্ত্র স্থির করে তবেই কার্যক্ষেত্রে পা বাড়াতে হবে। আরের সীমাবদ্ধতা অথচ থবচের নিতান্ত মাত্রাধিক্য, এমনটি বাডে না হয়ে পড়ে, তার কল্প বতদ্ব সম্ভব সত্তর্ক না থাকলেই নয়। সঞ্চরের প্রশ্ন ছেড়ে দিলেও (কারণ, গড়পড়তা পরিবারে সেটি হওয়া স্বতঃই কঠিন), আর ও ব্যয়—এ ছ'-এর ভেতর একটি ভারসাম্য রক্ষা করে চঙ্গাই একান্ত স্বনীচীন, নিশ্নমুই বলতে পারা বার।

ভিম ব্যবহার করলে পরে

দেখুন কেমন ঝলমল করে



ভিম অল্প একটু ব্যবহার করলে পরেই সবজিনিষেরই চেহারা বদলে যার। কার্টের ও চায়ের বাসন, রায়ার জিনিব, থালা বাটী ও ডেক্টী হাঁড়ী থেকে ঘরের মেঝে—সবই এক নতুন দ্ধপ নেবে। আর ভিম দিয়ে পরিকার ক'রলে জিনিমপত্রে কোন রকম আঁচড় লাগে না আর কত সোজা ও কম খাটুনীতে হয় ভেবে দেখুন। ভেজা ন্যকড়ায় একটু ভিম ফেলে, আত্তে আতে ঘসুন আর আপনার চোথের সামনে জিনিষ গুলোর দ্ধপ বদলে যাবে। ভিম ব্যবহার করলে আপনার বাড়ী আপনার গর্বের কারণ হবে।

ভিম সবজিনিখেরই উদ্ধানতা বাড়ায়

হিন্দুস্থান লিভার লিমিটেড, কুর্তুক প্রস্তুত।



যাত্রাগানের ইতিক্ধা

শ্বান ভনতে যাব"—গাঁমের লোকে বলে, যাত্রা দেগতে যাবার ইচ্ছা তত্ত্বেব কাছে প্রকাশ করে। যাত্রাপালা, যাত্রা-গান বা তথু যাত্রা—যে নামেই ডাকা হোক না কেন, যাত্রা যে নাটকের দেশীয় লৌকিক রূপ, সে বিগত্তে কোনো সন্দেহ নেই। এই বাত্রার উদ্ভব কি ভাবে হোল, বিকাশ কি ভাবে হোল, এব যথার্থ ইতিকথা কী—বিভিন্ন আলোচকের বিভিন্ন মন্তব্যে এক ছুর্ভেন্ত বাতাবরণের মাঝে এসব প্রপ্র আত্মগোপন করেছে। এসব প্রপ্রের একটা সুলাই সমাধান লাভের আশার এই আলোচনার অবতাবণা ক্রমিট।

জনেকে ৰলেন, নৃং ধাতু হতে নাটক কথাটির উৎপত্তি। **ডো: শশিভ্**ষণ দাশগুপ্ত জানিয়েছেন, নৃথ ধাতু হতে নিম্পন হয়েছে মৃত্ত ও নৃত্য কথা ছ'টি। নৃত্ত শব্দটির অর্থ তাললয়াদি সহযোগে অঙ্গবিক্ষেপ আর নৃত্য শব্দের অর্থ হাবভাবযুক্ত বিবিধ অঙ্গবিস্থাসের সাহাব্যে মৃক অভিনয়।(১) নৃত্য হতে ভারতীয় নাটকের জন্ম। কীথ বলেছেন—"the origin of the drama in the sacred dance, of course, accompanied by gesture of pantomime character, combined with song and later enriched by dialogue, this would give rise to the drama."(Sanskrit Drama) । এ মত স্বীকার করলেও, সংস্কৃত নাটক কালক্রমে স্মপরিণত রূপ লাভ করেছিল মুচ্ছকটিক বা মুদ্রারাক্ষস ইত্যাদির মত নাটকে। সংস্কৃত নাটকের বিকাশ ও **জ্মাবেদন অতি সঙ্কীর্ণ সীমার মধ্যে আবন্ধ ছিল। দেশের ও দশের স্কীদরের সঙ্গে এর কোনো সচল যোগাযোগ ছিল না। ম্যাকডোনেল** বা মন্টজিয়াদ প্রমুখ ইউরোপীয় পণ্ডিভগণ বলেন, ঐ বৈদিক আদিম গীতিনাট্যের অন্কবিত রূপ জনসমাজে ধারাবাহিক ভাবে এসে যাত্রায় পরিণতি লাভ করেছে, জয়দেবের গীতগোবিন্দে তারই প্রকাশ। কিন্ত ডা: স্থনীল দে বা কীথ জন্মদেবের নাট্যরূপের মাঝে বৈদিক ঐতিত্ত্ব কোনো লক্ষণ দেখতে পাননি।

অধ্যাপক আশুতোৰ ভটাতার্য বলেছেন, ওরাওঁদের 'ফেঠবাত্রা' না দাকিনাত্যের মারীযাত্রা' বা সাঁওতাল-ভূইঞাদের 'যাত্রাপরব' প্রভৃতির মাঝে যাত্রা কথাটি একটি উৎসবামুঠানক্ষপে প্রচলিত দেখা যাছে। তা ছাড়া, যাত্রার মূলে আদিম সমাজে গ্রহ-নক্ষত্রাদির কক্ষান্ত্রও গমনোপলকে যে sympathetic magic জাতীর অমুঠান হোড তার অমুমানও করেছেন।(২) যে নদী তার দীর্ঘ গাতিপথ অতিক্রম করে সমুদ্দে মিশে, তার উৎপত্তি বিশেষ একটি ধারা থেকে নয়, ভোট ছোট বিভিন্ন ধারা মিলে মিশে একটি নদীকে গড়ে ভূলে; তেমনি যাত্রার উদ্ভবমূলে একটি বিশেষ ধারাই ক্রিয়াশীল, বিভিন্ন ধারা মিলেমিশে তাকে সম্ভব করে ভূলেছে। ভটাচার্য্য মহাশর কথিত ধারাটি তাই যাত্রার উদ্ভবন্লে ক্রিয়াশীল হতে পারে, কিন্তু এই ধারাটিই যাত্রার একান্ত উদ্ভবন্ল করে।

অতীতে কোন দেবতার লীলা উপলক্ষে লোকেরা এক ছায়গা থেকে অন্য জারগার গমন করে নাচ-গানের সঙ্গে সেই দেবতার মাহাস্থা প্রকাশ করত। একে যাত্রা বলত। কেউ কেউ বলেন, সৌবোংসব সবচেয়ে আদি-উৎসব। আশুতোৰ ভটাচাৰ্যাও এ কথা বঙ্গেছেন। মন্মথমোহন বস্থ বলেছেন, 'সূর্যোর যাত্রা উপলক্ষ্য করিয়া এই সকল উংসব হুইত এবং উহাদের প্রেণান অঙ্গ নাট্যাভিনয় ছিন্স বলিয়া নাট্যাভিনথেব নাম যাত্রা হইয়াছে।' (বাংলা নাটকের উৎপত্তি ও ক্রমবিদাশ) সূর্য্যদেবতা পুরে শিবসাকুরের সঙ্গে মিলে **বা**ন। শিবপুরাণ, ধর্মদংছিতা প্রভৃতি নানা পুরাণে নৃত্য-গীতাদিসহ শিবশক্তিৰ উংসবের কথা বর্ণিত হয়েছে। অধ্যাপক অমিতকুমার ঘোষ গ্রীক-দেবতা ডায়োনিসাসের সঙ্গে এর অনেক সাদৃত্য দেখিয়েছেন, যে ভাষোনিদাদের উৎসব থেকে গ্রীক ট্রাজেডি ও কমেভির উৎপত্নি। এনং অনেকের সঙ্গে তিনিও দেখিয়েছেন, শিবোংসবমূলক নৃত্যু-গীত ও ভাতকৌতৃকপূর্ণ বর্ত্তমান গল্পীরা বা গাজন উৎসবের মধ্যে বারার আদি উপাদান দেখা যায়। কিছু তিনি পরিশেবে বলেছেন, পাঁচালী থেকে যাত্রার উত্তব। তিনি বলছেন, প্রথমে পাঁচাসীর একজন মাত্র মূল গারক গান করত। কালক্রমে পাঁচালীব পয়ার ও পালাগানের দীর্ঘতার ফলে একজনের স্থলে ছুই বা ততোধিক গায়ক ও অভিনেতার আমদানী ছতে লাগল। এই ভাবে পাঁচালীর বৈচিত্র্য ও বিস্তৃতি ঘটেছিল এবং কালক্রমে পাঁচালী থেকে যাত্রার উদ্ভব হয়েছিল। এই মতটি মনোহারী, কিন্তু সভাধারী নর। সচল শিবোংসবের নাচগান আমোদ কৌতুকের ধারা আর একটি আসবে স্থির পাঁচাঙ্গা গানের ধারাকে তিনি মিঙ্গাতে পারেন নি।(৩)

ডা: সুকুমার দেন বলেছেন,(৪) যাত্রা কথাটি চলে এসেছে স্প্রশানীন কাল থেকে, এর অর্থ ছিল—'পিছন পিছন যাওয়া, দল বেঁধে বা মিছিল করে যাওয়া।' যাত্রা ছিল হ'রকম—আমোদ-প্রমোদের জন্ম 'বিহার যাত্রা' যার থেকে বর্তমান জেলা অর্থে 'জাত' কথাটি এসেছে; আর ধর্মকর্মের জন্ম ধর্মযাত্রা, নাটগীতবোধক তৎসম শব্দটিতে এই ধর্মযাত্রার ইন্দিত। নাচগান করে ধর্মযাত্রা বা বিহারযাত্রার উল্লেখ প্রাচীন সাহিত্যে অনেক জারগাতেই পাওয়া যায়। হরিবংশে

২। বাংলা নাট্যসাহিত্যের ইতিহাস।

৩। বাংলা নাটকের ইতিহাস।

৪। বিচিত্র সাহিত্য ১ম খণ্ড।

এমনি এক উল্লেখ পাই। সেখানে সমুদ্রমাত্রা করে কুঞ্চলীলা বিষয়ক মঞ্চলগানের উল্লেখ আছে, তাতে নাট্যনীতের পরিচয়ও পাওয়া যাছে। তাই তিনি মনে করেন, একটি অবিচ্ছিন্ন সূত্র থেকে মঙ্গুণান বা পাঁচাঙ্গীর ধারাও নাটগীতের ধারা চলে এসেছে। তিনি দেখিয়েছেন, নেপাঙ্গের কোন কোন ভাষা নাটকে নাটপালা পাচারার বোগপুত্র অবিচ্ছিন্ন বরে গেছে। অক্তর তিনি বলেছেন, ৰাত্ৰাৰ দক্তে পাঁচালীৰ এইমাত্ৰ পাৰ্থকা ছিল যে, পাঁচালীতে মল গারন বা পাত্র একটি মাত্র, যাত্রায় একাধিক-সাধারণত তিনটি। (বাকালা সাহিত্যের ইতিহাস। ১ম খণ্ড--২য় সং; ১৫১ প:) ডা: সেনেব মতটি নিশ্ছিত বলে মনে হয়। প্রয়াণ ছিদেবে (প্রীযুক্ত ননীগোপাল বন্দ্যোপাধ্যায় সরুলিত) নেপালে ভাষানাটকগুলি অবলম্বিত হয়েছে। মনে প্রশ্ন না জেগে পারে না, কেন এ ভাষা-নাটকগুনি বাংলার ভূমিতে স্থান পেশ না নেপালে গিয়ে আশ্রয় নিল? নাটক এমন একটা সাহিত্যিক রূপ যেখানে সমগ্র জাতিজনয় মন্ত্রিত ভাব আন্দোলন রূপ পায়, তা ভাতির দ্বনয়ের সামগ্রী, জাতির প্রাণের কাছেই তার ঠাই। তাচলে ওগুলি জনস্মাজ থেকে বিচ্ছিন্ন ভাবে বচিত নয় কি? মনে হয় ওগুলি নিতান্ত শৈল্পিক প্রচেষ্টা। আর আঠারো শতকের শেব ভাগ থেকে লোকসমাজে যাত্রার যে ধারা পাচ্ছি তার পূর্বসূত্র হিসেবে এই জনাম্ভিকে থাকা নাটগীতগুলি ইতিহাসেব অবিচ্ছিন্ন গারায় আলোকপাত করতে ততটা পারছে কই ?

যাত্রার পূর্বেভিছাস অনুসরণে এন্ত গোলবোগ দেখে ডা: সুনীল দে বলেছেন, the old yatra seem to be of indigenous growth, peculiar to itself. তাই বাংলাদেশে যাত্রা বা যাত্রার অনুরূপ কি কি প্রকরণ পাওয়া যাচ্ছে, দেখা যাক।

চর্যাপদেই বাংলার নাট্যরচনার রূপ ও স্বরূপের আভাস পাচ্ছি—
নাচস্তি বাজিল গাঅস্তি দেঈ।
বুদ্ধনাটক বিসমা হোই।।

বৃদ্ধনটিক অভিনীত হচ্ছে। কেমন ভাবে? বন্ধগুরু নাচছেন ও দেবী গাইছেন—এর উপ্টোভাবে, অর্থাৎ বন্ধগুরু গা'ন ও দেবী নাচেন—এভাবে সেই প্রাচীন নাটকের অভিনর চলে। এর পর বিজ্ঞানিক পাছিছে। জরদেব গাইতেন, পদ্মাবতী নাচতেন, গরাণবাদি প্রিয় বদ্ধু দোহারের মত তাঁকে সাহায্য করতেন। বীতগোবিন্দে নাটের চেয়ে বীতের প্রাথান্ত। এর পর পাওয়া যাছে বীক্কানীর্তন। বীক্কানীর্তনে বাত্রাপালার রূপটি বেন স্কুলাই আকার ধারণা করে দেখা দিয়েছে।

চৈত্রস্থ আমলে নাট গীতাভিনবের উদ্ধেশ পাচ্ছি—বরং প্রীচৈতরও টার পরিবদবর্গ কর্ত্ত্ব । চৈতক্ত বলেছেন, "আজি নৃত্য করিবাঙ্ শব্দের বন্ধানে।" তিনি অভিনরের বে চূড়াস্ত সার্থকতা—অভিনরের বিবর্গাড়ত পাত্রপাত্রীর মধ্যে সম্পূর্ণ আন্মরিলোপ—তার দৃষ্টাস্ত স্থাপন করেছেন। (৫) এমন কি তাঁর অভিনরে সাজপোবাকের উল্লেখও আছে। "চৈতক্তভাগরতে" "কুমনাত্রা" কথাটির উল্লেখ পাওরা বার। (৬)

^{৫।} বালো সাহিত্যে নাটকের ধারা, ভূমিকা— একুমার বন্দ্যো:।

^{%।} "কুফৰাত্ৰা অহোৱাত্ৰ কুঞ্চ-সন্তীৰ্তন। ইহাৰ উদ্দেশো নাহি জালে কোন জন॥" কিছ বাংলার অভিনয় প্রন্থের কোনো নিদর্শন পাওয়া বার না
একালে। কেবল করেকটি সংস্কৃত অভিনয় প্রস্থ পাছি—জীরূপ
গোরামীর 'ললিতমাধব' ও 'বিদগ্ধমাধব', রামানন্দ বারের
'জগরাধবরত', কবি কর্ণপুরের 'চৈতল্লচন্দ্রম' ইত্যাদি। চৈতল্পের
আবির্ভাবে বাঙালী জাতির মধ্যে যে একটা ভাব-আলোড়ন জেগেছিল
তারই ফল এগুলি। এর পর প্রায় হ'ল বছর বাংলা সাহিত্যে
যাত্রার কোন নিদর্শন পাছি না। এই মধ্যবন্ত্রীকালের গুপ্ত ও স্বপ্ত
প্রচেষ্ট্রা হিসেবে ভাবা-নাটকগুলিকে ধরা যেতে পারে।

এব পর জাঠার শতকের মাঝামাঝি থেকে বাত্রাগানের উল্লেখ্ব পাছি। কৃষ্ণসীলা বিষয়ক 'কালীয়দমন' পালার তথন বিশেষ প্রচলন। তার সবচেরে পুবনো কবির নাম শিন্তরাম অবিকারী। শিন্তরামের নিবাস ছিল কেঁছলিগ্রামে। তাঁর শিন্তা প্রমানক্ষ অধিকারীও নাম করেছিলেন। পরমানক্ষের পর শ্রীদাম স্থদামের বাত্রা বিশেষ খ্যাতি অর্জ্ঞান করেছিল। লোচন অধিকারীর 'অকুর-সংবাদ' ও 'নিমাইসন্ন্যাস'ও বিশেষ খ্যাতি অর্জন করেছিল। এরপর কৃষ্ণকমল গোস্বামী, গোবিন্দ অধিকারী ও তাঁর শিন্তা নীলকণ্ঠ মুখোপাধ্যায়; তারপর ব্রজমোহন রায়, মতিলাল রায় ইত্যাদি বাত্রাওয়ালার নাম উল্লেখবাগ্য। এঁদের বাত্রাগুলি বিশ্লেষণ করলে তিনটি স্তর স্থাপান্ত হিরে ওঠে। প্রথম স্তবে পড়ে কৃষ্ণক্ষল গোস্বামীর বাত্রাপালান্তলি। এর ভিতর গল্প আছে কয়েক ছত্র মাত্র, এটি মুখ্যত কীর্তন পালারই নাট্যরূপ। দ্বিতীয় স্তবে পড়ে গোবিন্দ অধিকারী ও নীলকণ্ঠ মুখোপাধ্যায়ের পালাগুলি; এদের মধ্যে গান ও কথা প্রায় সমান সমান

সঙ্গীত-যন্ত্ৰ কেনার ব্যাপারে আগে বনে আসে ডোয়াকিনের



কথা, এটা
থুবই খাতাবিক, কেননা
সবাই জানেন
ডোয়াকিনের
১৮৭৫ সাল
থেকে দার্থদিনের অভিভতার কলে

তাদের প্রতিষ্টি যন্ত্র নিশুত রূপ পেরেছে। কোন্ ব্যার প্রয়োজন উল্লেখ ক'রে মৃদ্যা-তালিকার জন্ম লিখুন।

ভোয়াকিন এণ্ড সন্ প্রাইভেট লিঃ শেক্ষা:—৮/২ এব্রুয়ানেড ইক্ট, কলিকাডা - ১ অংশ গ্রহণ করেছে। তৃতীয় স্তবে ব্রহমোহন, মতিলাল রায় হতে আরম্ভ করে আধনিক সংগ্র যাত্রাওয়ালাদের রচনার (প্রায় গাট বংসর চইতে চলিল, এই সংখ্য যাত্রা প্রথম আরম্ভ হয়। বঙ্গদর্শন ফারন, ১২৮১) উচ্চাসপূর্ণ দীর্থ গান্ত সংলাপের প্রাধান্ত আর প্রত্যেক সংলাপের সঙ্গে একটি করে গান আছে। আবার এই স্তবের বচনার আহেতক ভাঁড়ামি বা তরল হাস্তরস সৃষ্টির প্রচেষ্টা দেখা যায়। ক্ষকমল বা গোবিন্দ অধিকারীর ভক্তিরসও নেই এগানে। এর থেকে বৈজ্ঞনাথ শীল মনে কবেন, (৭) গীতগোবিন্দ-শীকৃষ্ণকীর্তনের ধারায় সঙ্গীভাষ্যক নাটগীতের এক ধারা এনে আঠার শতকের শেষ থেকে পরিণতিলাভ করেছে। আশুতোধ ভটাচার্যাও বলেছেন, "বাংলাব লোকনাটোর এই ছুই প্রান্তবর্তী ছুইটি নিদর্শনের উপর লক্ষা রাখিয়াই ইছার মধাবতী সময়ের ইভিহাস ব্রনা ক্রিতে হইবে।" আরু সেসব নাটপালার বিষয়বন্ধ ছিল 'বৈক্ষবৰণ্ধ সম্পর্কিত এবং কুক্ষলীলা বিষয়ক'। বৈজ্ঞনাথ শীল দেখিয়েছেন, কাহিনীর ক্রমবিকাশ ও ভাবের পারম্পর্যা বক্ষা করে পদের পর পদ সাজিয়ে নিবদ্ধ কীঠনেব যে সব পালা যোল শতকের শেষ দিকে বচিত হতে লাগল, পরে কবিগণ এই সংগ্রহগন্তের कांगरन निष्कृत। स्रष्टक भागा वहना करण्ड लागरलन । मीन চণ্ডীদাদের যে পালাগন্ত মণীক্মোহন বস্তু আবিষ্কার করেছিলেন, তা হোল এই ধ্বণের নিদ্ধান। পরে পালাকীর্তনে নানা ত্রুত দার্শনিক তত্ত্ব সাধারণে ব্যাগ্যা কবতে গিয়ে কথকতা অনুপ্রবেশ করতে লাগল। কীর্তন ও যাত্রার মধ্যবর্তী স্তবে চপকীর্তন। চপের মধ্যে যাত্রার প্রায় সমস্ত লক্ষণই দেখা যার। একক অভিনয় না রেখে তাকে ভেঙে বহু পাত্রপাত্রীর দারা অভিনয় করালেই যাত্রা হয়। চপে সংলাপের আধিক্য দেখা যায়। মোট কথা, সংলাপ ও সঙ্গীতের সমবায়ে বে যাত্রার উৎপত্তি, চপকার্তন ভারই অক্তম রূপ (পূর্ববর্তী রূপ)। আর এই ঢপকীর্তন যে নতন পাঁচালীর উদ্ভব-সে কথা ডাঃ স্কুমার দেন মহাশর বলেছেন। (৮) তাই পাঁচালীর সজে যাত্রার সাদৃশুও লক্ষিত হয়। আমার মনে হয়, সভের শতকে রামারণ মহাভারতের বিভিন্ন থণ্ড পশু পালা বচনার আধিকা বা বায়বার পালা বচনা বে মনোভনীপ্রস্থত সেই একট মনোভনী থেকে ষাত্রাপালা বচনাব স্থ্রপাত। কীর্তনগানকে নতুন ভোলে উপভোগ করবার প্রয়াস থেকেই যাত্রাপালার প্রবর্তন। আঠার শতকের শেষদিক থেকেই বিত্তাস্থলর পালা রচনার উৎসাচ দেখা দিয়েতিল। এ বিষয়ে বরাছনগরের সাকুরদাস মুখোপাখ্যার, বেলতলার প্যারীমোহন, ভামবাজারের নবীনচন্দ্র বস্ত্র, গোপাল উত্তে প্রমুখের নাম উল্লেখবোগ্য।

বাঙালী সংস্কৃতিতে ও বাংলাসাহিত্যে হাত্রার উদ্ভব ও বিকাশ আলোচনা করা গেগ। এবং তাতে দেখা গেল, নাটগীতের এক বিশেব হারা গীতগোবিন্দ ও প্রীকৃষ্ণকীর্তনের মাঝ দিয়ে বৈক্ষব আবেগাল্পক ভাবাকুলতা ও সঙ্গীতকে পালাসংকীর্তনের মপে প্রতিষ্ঠিত করা থেকে বাংলা যাত্রার উদ্ভব হয়েছিল। তার মৃলে বৈদিক নাটগীতের হারা প্রবাহিত হয়নি। আর ডাং দেন কথিত প্রাচীন নাটগীতের হারা থাকতে পারে। কিন্তু তা-ই হাত্রাপালার সরল

প্রবাহকে প্রবর্তিত করে নি। প্রাচীন সৌর্যাত্রার উত্তরসূরী শিবোংসরের সঙ্গাজা ও নাচগানের ধারাও কিছ পরিমাণে থাকতে পারে, এসর প্রাক্তন সংস্থাররূপে মিলেমিশে যাত্রারূপকে কিছ পরিমাল প্রভাবিত করতে পারে; কিন্তু যাত্রা বাংলাদাহিত্যে indigenous growth, peculiar to itself- अत्र मालू मालूरवत चालिय নাট্যাকৃতি সক্রিয়, শিল্পাচার্য্য অবনীন্দ্রনাথ ঠাকুর বাংলার প্রাক আধ্যযুগের লক্ষণ-সম্বিত ব্রতকথার মাঝে তার স্কুরণ দেখিরেছেন। অনেকে মঙ্গলকাব্যের মাঝে বা অন্ত কোথাও নাট্যরসের ক্ষণিক ক্রুগ দেখিয়ে বলেন, যাত্রার ধারা এদের মাঝ দিয়েও এসেছে। আসলে কিছ তা' এই নাট্যাকৃতির স্বাভাবিক স্কুরণ। এদের মাঝ দিয়ে আত্মপ্রকাশ করতে চেয়েছে, যাত্রার পূর্বসূরী বা পটভূমি হিসেবে তা वित्वहा नम्, (कनना dramatic element क्वल play. drama-operaর্ট একান্ত উপকরণ নয়। বাংলার অধিবাসীরা ছিল বাজনৈতিক অধিকারে বঞ্চিত, অর্থনৈতিক প্রতিষ্ঠা থেকে দ্বীভত, তাই মৃত্তিকাচারী স্বল্প সর্ব্বামে সংগঠিত, বাহুল্য ব্যতীত, নত্যের ক্ষততাৰ, সঙ্গীতের বার্বীয় ধর্মে তার গ্রাম্য নাট্যপ্রয়াস বিলসিত হয়েছে, আর ধর্মনাতে তাব দৃষ্টি আচ্ছন্ন থাকায় বাস্তব সংঘাতে দ্বন্দুখন হলে উঠেনি। এজন্মেই যাত্রার আছুই ও বিলম্বিত বিকাশ ও প্রকাশ। -- फिलीअ हति। भाषा ।

আমার কথা (৫৫) শ্রীমতী রাধারাণী দেবী

শিল্পিজীবনের চরম উৎকর্মতায় উঠিয়া আজও বিনি নিজেকে শিক্ষাধীনা মনে করেন—মন্তুতমা শ্রেষ্ঠ-গাল্পিকা হওরা সংবেধ আহংকারকে বিনি দ্রে রাখেন—বাংলার নিজস্ব সম্পদ কীর্ত্তন গানকে নিজ অস্থিমজ্জার সাথে বিনি মিশাইরাছেন—সেই শ্রীমতী রাধারাণী দেবী বাক্ত করলেন:

আমি বথন পাঁচ বংসরের শিলু, তথন থেকে পাড়ার যাত্রা ও কীর্তনের আগরে বসে বে গানগুলি খনতাম—তা বতটকু মনে পড়ত ভত্টকু বাড়ীতে গাইতাম। আমাদের জিয়াগঞ্জের লোক ছিলেন জেলা-খ্যাত কীর্ত্তনীয়া ছরিমাখন দাস। তাঁর গান প্রার্ই ভনতা চুপটি করে বসে। তাঁরই জিফাসায় একদিন তাঁরই ^{গাওৱা} হ'-চার লাইন কীর্ত্তন গাই। তারপরে তিনিই হলেন আমার প্র^{থই} সঙ্গীতগুরু। সাত বংগর বর্দ থেকেই তিনি আমার নানা আসংহ নিয়ে বেতেন এবং তাঁবই কোলে বলে গান গাইতাম। এই বকম ^{এই} আসবে ছিলেন মুর্লিদাবাদের জেলা-শাসক বাঙ্গালাভাষী ও আঁঃ বৈষ্ণব ইংবাজ এডি (Eddie) সাহেব। ভিনিও হরিনাম কর্তি ৰোগ দিতেন। আমার গান শুনে নিজে থেকে একটা প্রশা^{সাপ} मिलन-बाज जा त्राथि यह करत । शङ्को खकरल खत्नक रित्र^{हर} কীর্ত্তনীরা, অনেক সত্যকারের বাউল আসতেন। গুহস্থ হতেন তৃ^হ তাঁদের গান ভনে—মার তাঁরাও মন-প্রাণ উজাড় করে কীর্ত্ত গাইতেন। সামান্ত 'সিদে' নিয়ে অনেক জিনিব শিংগছি ^{এই স} নামহীন ভ্রামামান কীর্ত্তনীয়া আর বাউলদের কাছ থেকে। ^{ঠারা} আমার ওক্ত আমার প্রণম্য। তাঁদের পাওয়া দেহতবের ^{গা} কোনদিন ভুলতে পারব না। আমার মনে, হয় গান শেখার ^সে

বাংলা সাহিত্যে নাটকের ধারা।

৮। বালালা সাহিত্যের ইতিহাদ, ১ম থণ্ড—২র সং—১৫৮ পাতাী।

কান তৈরাবী করতে হবে। অর্থাৎ কানের ভিতর যে কান আছে তাকে সজাগ রাথতে হবে। নচেৎ জীবনে স্থর আদে না—গলার স্থর আদে না—গলার স্থর হিক বাজে না। সাধারণ লেখাপড়ার গর্ম্ম করতে পারি না—ছেলেবেলা থেকে দারিদ্রোর সঙ্গে লড়াই করে মন:সংবোগ বার বার ভেঙ্গে চলছে—কিন্তু যেটুকু শিখেছি তার অনেকখানি আছে এই কান পেতে রাখার অভ্যাস।

কলিকাতার এদে পেশাদারী কীর্ত্তন গারকদের সঙ্গে পরিচয়
সয়। জাত-বৈষ্ণব হওয়া সত্ত্বেও তাঁদের গান গাওয়ায় ভূল থাকত।
তক্ষ্পা উহা রসিকমহল থেকে নির্ব্বাসিত হয়ে প্রাদ্ধবাড়ীতে "পেলা"
খ্ঁলে বেড়াত। তব্ও তাঁরা ছঃথের দিনে, অনাদরের দিনে
কীন্তনগানের ধারাকে শুকিয়ে বেতে দেন নি। তাঁদের অনেকের
প্রীতি পেয়ে গল্প হয়েছি। বড় হয়ে ব্য়লাম যে কীর্ত্তন গানের অনেক
কিছুই শেখা হয়নি। তাই আকুল আগ্রহে খ্ঁজেছি সেই শিক্ষককে—
যিনি নতুন করে আমায় পাঠ পড়াবেন। সোভাগ্যবশতঃ কীর্ত্তনশান্ত্রবিশারদ প্রীহরিদাস করের সঙ্গে পরিচয় হল—কিছ শারীরিক কারণে
প্রাথমিক শিক্ষায় ব্যাঘাত ঘটে। তার পর প্রীপঞ্চানন ভট্টাচার্য্যের
শিব্যাছ গ্রহণ করে ধলা হই।

কলিকাতার জীবিকার্জ্জনের জন্ত আসবার আগে মঞ্জু সাহেবের শিষ্য গ্রহণের সৌভাগ্য হয়। এত বড় সঙ্গীতশিল্পীর মধুর কণ্ঠ ঠারীর সক্ষ কাজ ও স্বাচ্ছন্দ্য আলংকারিতা প্রতিটি শ্রোতাকে সম্মোহিত করত। কাজী নজকুল ইসলাম ও আরও অনেকে তাঁর সাক্ষাৎ শিষ্য ছিলেন। এত বড় সঙ্গীতশিল্পীর শেষ পরিণতি হরেছিল—তু মুঠো অন্তের অভাবে কণ্ঠ হরে বার স্ফীণ আর মাণিকভলার এক জ্বন্য বস্ত্রীর এক ভাঙ্গা ঘরে পথাহীন, ঔষধহীন সম্বলহীন হয়ে শেষ নি:শাস ত্যাগ করেন। মৃত্যুর কিছুদিন আগে প্রচণ্ড অব গারে এক বিক্সায় চেপে আমার বাড়ী এলেন। সর্বাঙ্গ তাঁর কাঁপছে—চোখ দিয়ে জল ঝরছে—জড়ানো গলায় আমায় বললেন। এই অবস্থায় ওস্তাদকী গান ধরলেন। মুগ্র হলুম অপূর্বে প্রতিভায়। তাঁর ধারণা হয়েছিল জিনি ঠিকমত শেখাতে পারেন না। তাই লোকে তাঁকে ত্যাগ করেছে। হিন্দী ও উৰ্দু গান শেখাবার আগে আমায় তিনি প্ৰথম শেখান ^{্রিকমত উচ্চারণভঙ্গী ও ভাষা। অনেক বাঙ্গালী শিল্পী ভুল} উচ্চারণের জন্ম অনেক আসরে হাস্তাম্পদ হন। মঞ্ সাহেবের শিক্ষার ^{ছণে} স্বামি দিল্লী, লগনৌ, নাগপুর, পাটনা প্রভৃতি বেতার কেপ্র খেকে বাংসরিক আমন্ত্রণ পেয়েছি। শ্রীস্করেশ চৌধুরীও আমাকে হিন্দী শিক্ষার ব্যাপারে বহু সাহায্য করেন। এই ভাষা হুটি ^{ঠিকমত} স্বায়ত্ত না করলে, নতুন আন্তঃপ্রাদেশিক সংস্কৃতি-গাঁচীতে বাঙ্গালী শিল্পী অনাদত-হতে পারে।

কসিকাতার এসে তদানীস্তন বেতার কেন্দ্রে দিরী হিসাবে বোগ
দিই এবং আজও আমি উহার দিরী। এখনকার প্রধান প্রোগ্রাম
পরিচালক জ্রীনৃপেজনাথ মজুমদারের অপূর্ব্ব স্লেহমর ব্যক্তিত্ব আমার
দিরিজীবনকে গড়ে তুলতে প্রচুর সাহায্য করেছিল। রাইচাল
বিচাল, বীরেক্রকুফ ভক্ত, বাণীকুমার, পদ্ধজ্বীর্দ্ধিক, ইরাজেক্র সেনের
সহিত দিরু সহযোগিতার কথা বার বার মনে পড়ে। এই সমর
বেহারের সঙ্গীত বিভাগের পরিচালক ছিলেন জ্রীস্করেক্স ক্রক্তরী।

তিনি আমার উচ্চ সঙ্গীতের তালিম দেন। এছাড়া বাণীকুমারের বেতার বিচিত্রার আমার অংশগ্রহণ উল্লেখযোগ্য। তাঁর প্রবর্ত্তিত মহালয়ার উবা অফুঠানে আমি প্রায় বারো বংসর যোগদান করি। আদর্শ ব্রাহ্মণের মতন তাঁহার তাচিতা আমাদের উদ্দীপিত করত। ইহাকে সার্থক করে তুলেছিলেন শ্রীপঞ্চকুমার মল্লিক।

সেই সময় কলস্বিয়া গ্রামোফোন কোল্পানীতে যোগদান করিয়া প্রথম গান করি উর্দৃগজল 'না কিসিকি আঁগ কা নূব হু'। এর পর বছরকম গানের রেকর্ড করিয়েছি সেখান থেকে। গৃহ প্রবেশের বিখ্যাত গান ছটি 'অগ্নিশিখা এসো এসো', ও 'ঐ মরনের সাগর পারে' ঐঅনাদি দন্তিদারের স্থরে আমি গাই। তাছাড়া, নেপালী মাড়োরারী ও নাগপুরী ভাষায় রেকর্ড করাই এখান থেকে। মধু বোসের হিন্দী আলিবাবার রেকর্ড করাই এখান থেকে। মধু বোসের হিন্দী আলিবাবার রেকর্ডাভিনয়ে আমি মাজিনার' ও বড়ুয়া সাহেবের 'জবাব' (হিন্দী) রেক্ডাভিনয়ে নাগ্নিকার অংশে অভিনয় করি। ছুংখের বিষয়, গত কয়েক বংসর আমার কোন রেকর্ড সেখান থেকে হয়নি।

সিনেমার যোগদানের পর কৃষ্ণ-স্থলামা, কণ্ঠহার, সানমন্ত্রী গার্গাস্থল, রাঙাবৌ, রামান্ত্রজ ও চাণক্যতে বিশিষ্ট ভূমিকার অভিনর করেছি। চাণক্যর প্ররোগকর্তা ছিলেন নাট্যাচার্য্য সন্ত-লোকাস্তরিক্ত শিশিরকুমার। ইহার আউটডোর স্থটিং-এর সমর প্রীমতী কল্পাবতী ক্রচণ্ড অবে সংজ্ঞাহীনা হয়ে পড়েন। সে সমর একমাত্র আমিই তাঁর কাছে ছিলাম। শত চেষ্ঠাতেও তাঁর জ্ঞান ফিরে আসে নাই। প্রযোজক হিসাবে বড়্যা সাহেব, নীতিন বস্তু, দেবকী বস্তু ও মধু বস্থকে আমি থব প্রক্ষ করি। এন, টির ছবির কিছু কিছু গান আমি রেকর্ড করি। পর্বজ্ঞুমার ও আমার বৈত-সঙ্গীত কোন লগনে জনম আমার' খুবই জনপ্রিয় হয়। এথনকার মতম সেদিনের



ক্রীমতী বাধাবাণী দেবী

নেপথ্য-গায়কদের টাইটেলে নাম থাকত না বা এত সম্মান ছিল না। সিনেমার নাম করতে হলে প্রযোজকের গুভদৃষ্টি পাওয়া চাই শিরীর— ইহাই আমার ধারণা।

পেশানারা রঙ্গমঞ্চে যথন যোগ দিই, তথন বালো রঙ্গমঞ্জর ভয়প্রার অবস্থা। অভিনয় শেণার জ্য় স্বর্গত শিশিরকুমারের মতন আচার্য্য পাওয়া সৌভাগ্যের ইথো। ছ'-একদিন মহলা দিয়ে উার সঙ্গে পিয়ারা, ছায়া, সিতারা, দেবকা প্রস্তৃতি ভূমিকায় আমার অবতরণ করতে হয়েছে। কালিকায় মীরাবাঈ নাটকে নামভূমিকায় ও নাটানিকেতনে কালিকা নাটকে সারিব ভূমিকায় আমি তৃপ্ত হয়েছি। শেৰোক্ত স্থানে শ্রীপ্রবোধ ওছ ও শ্রীমতী নীহারবালার সঙ্গে আমার খুব প্রিচয় হয়। নিহারবালা ফিলম্ থেকে বিদায় নিয়ে পশ্তিচারীর শ্রীজরবিক আশ্রমে ছান পান ও সেথানেই শেষ নিম্নোক্ত তাগে করেন। ইহার মধ্যে ছিল একটি শিল্পপ্রাণ। সারা বার্ণার্ডের বা ইসাভোৱা ভানকানের জীবনী হয় কিছে

খ্যাতনামা লেখক ও সাংবাদিকদের সহিত জীমতী নীহারবালার এত পরিচর থাকা সত্ত্বেও তাঁহার শিক্সিজীবনী কেহই এ প্র্যুম্ব লেখেন নি!

বাল্যকাল থেকে ববীক্ত সঙ্গীতের প্রতি গভীর আগ্রহ ছিল আমার—কিন্ত শেখার স্থযোগ পাই নি। করেক বংসর পূর্বে প্রীসোমেন্দ্রনাথ ঠাকুর তাঁর 'বৈতালিক' দলে আমার নেন ও বরান্দ্র সঙ্গীতের অনুশীলন আরম্ভ করান। তর ভেঙ্গে গেলে মহানন্দে অস্তরে অনুভব করতে লাগলাম শিল্পিখনের চরম সার্থকতা—ববীক্র সঙ্গীত গেরে। এর জক্তে সৌমেন্দ্রনাথ ঠাকুরের নিকট আমি বিশেষ ঋণী।

কিছুকাল আগে কীর্ত্তন গানের একটি ছোট বিদ্যালয় খ্লি— আব তার পৃষ্ঠপোধক হয়েছিলেন সত্যিকারের সঙ্গীতরসিক ভূপতিনা' অখাং রাজ্য সরকারের অক্তম মন্ত্রী জীভূপতি মন্ত্রুমদার। আমার পরিচালনা শক্তির অভাবে সে বিক্তালয় চলেনি—কিন্তু ভূপতিলা'র সঙ্গীতপ্রীতিতে মুগ্ধ হয়েছি।

অজয় নদীর চর

জী,আইভি রাহা

ছোট একটি গ্রাম এ দেখা যায় অজয় নদীর চর, যেথায় মোরা বেঁধেছিত্র মোদের সাধের কুঁড়েখর। নদীর বুকেতে বয়ে যেত তরী উড়ায়ে তাদের পাল, কালের হাওয়ায় হায় সেথায় নেমে এল মহাকাল। কত কুঁড়েঘর সমাধি হয়েছে চাল উৎ গেছে ঝং ১, ভাদের দেখিয়া নয়নের জলে কত কথা মনে পড়ে। কিছু দূর গেলে চোপে এসে পড়ে রায়েদের ভাঙ্গা বাড়ী, ষেতে হয় সেখা মোদের বাড়ীও বট গাছ পথে ছাড়ি। পুরুবের পাড়ে চোথে পড়ে কভ অতীতের ভাঙ্গা ঘাট, সকালে বিকালে বসে যেত ষেথা "বউঠাকুরাণীর হাট"। হোসেনেরে বেখা সমাধি দিয়েছে

অজয় বাকের তীরে,

আজিও সেথায় পথিক চলিতে চেয়ে দেখে ফিরে ফিরে। শরতের দিনে আগমনী গানে উঠিভ গো আবাহন, সজীব সবুজ হাসিতে ভরিত পথ-প্রান্তর-বন। সোনার বরণ ধানের ক্ষেত্তেতে যাইত মলয় বহিয়া, শীৰগুলি সৰ ঢলিয়া পড়িত কতই না কথা কহিয়া। গ্রামবাদী মোরা সরল প্রকৃতি মুখেতে মধুর হাসি, স্থাে তথে মােরা দীড়াতাম সদা সবার পাশেতে আসি। ভেদাভেদ নাহি জানিতাম মোরা হিন্দু-মুসলমান, আকাশে বাভাগে ভরিয়া উঠিত রাম-রহিমের গান। অভাব কাহারো ছিল নাক' হেখা কেহ পাতেনিক' করঃ নদীৰ মাঝেতে জেগে আছে আজো व्यक्तव नहीन हन ।

সেকেলে

ধারণা নিয়ে

নষ্ট করবেন না হ

ভালভাবে জীবনঘাপনের সুযোগ

সেনেলে ধানণা ও অন্ধনংকার **মামুবের পক্ষে**ভালভাবে জীবন উপভোগ করবার এবং **আধুনিক**জগতের সুযোগ স্থবিধে সদ্যবহারের পথে সত্যিই
বাধা হরে দীড়াতে পাবে।

দৃষ্টান্তমন্ত্রপ, কোনো কোনো লোককে বলতে গুনা যায়, "আমি কগনো বনস্পতি বাবহার করি না। গুনেছি, স্বাস্থ্যের পক্ষে জিনিসটা ভাল নয়।" এ হল একেবারেই সেকেলে সংস্কার · কারণ স্নেহজাতীর পদার্থ যে স্বাস্থ্যের পক্ষে একান্ত প্রয়োজনীয়, বিজ্ঞান তা প্রমাণ করেছে। উপরস্ত, বনস্পতি যে সবচেয়ে পুষ্টকর ও উপকারী স্নেহপদার্থের মধ্যে অক্সতম বিক্রান তাও প্রমাণ করেছে।

অভ্যাবশ্যক ভিটামিনে সমৃদ্ধ

বিজ্ঞানীরা প্রমাণ করেছেন যে যায়া ও শক্তি বজার রাখবার জক্তে প্রত্যেক মান্তবের দৈনন্দিন অন্ততঃ পক্ষেত্র' আউল ক'রে স্নেহপদার্থ থাওয়া দরকার। স্নেহপদার্থ আমাদের অক্ত থাত হলম করতে ও ভার উপকারিতা পেতে সাহাযা করে। তাছাড়া, রোগ ও অবসাদের বিক্ষে যুক্তে এবং আমাদের ফুল্ল ও সবল থাকতেও সাহাযা করে!

বনশাতি বিশুশ্ব উদ্ভিক্ষ স্নেহ—চিনাবাদামের ও তিলের তেশ পরিশোধন ক'রে বিশেষ প্রশালীতে তৈরী। এর ভেতরে স্নেহপদার্থের সব গুণ ঘনীভূত হয়ে আছে ব'লে বনশাতি গুধু যে দামে ফুলন্ড ও অল্লেতেই আনেক কাজ দেয় তা নয় ··· আরো স্বাস্থাপ্রন করবার জন্মে একটি অত্যন্ত আবগুলীর ভিটামিনও এতে মেশানো হয়। বনশাতির প্রতিটি আইল এ-ভিটামিনের ৭০০ আন্তর্জাতিক ইউনিটে সমূর—যা চোথের ও ত্কের স্বাস্থারকায়, শরীরের ক্ষমপুরণে এবং সংক্রমণ প্রতিরোধে অত্যাবগুক!

ভাল খাল আপনাকে ভাল খাদ্বা উপভোগ মানত ও ভানভাবে জীবন যাপন করতে সালাগ মান এবং বিশুদ্ধ, পৃষ্টিকর ও দামের দিক গেকে ১ন্ড বনস্পতির কল্যাণে ভাল খাল খাওয়া সহল হাহছে। আপনার কি বনস্পতি যাগহার করতে হার করা উচিত নয় ?

> বনশ∤তি – বাড়ীর গিন্নীর **বন্ধ**

वि वन गाउ मामुक्ताकहाबान अस्मानित्वनन अर देखिया कडू के अहाबिक

VMA 9202



বাঙলা সাহিত্যের বিকাশের ধারা

বাঙলা সাহিত্যের দীর্ঘকালব্যাপী গৌরবোজ্জল ইতিহাসের আলোচনা এ পথস্ত বহু স্থণীই কংগছেন, ঐ আলোচনা-গ্রন্থপ্তলি বলা বাচ্ল্য, দেশের ও দশের প্রভৃত মঙ্গল সাধন করেছে। লৰপ্ৰতিষ্ঠ শিকাৱতী ও প্ৰধাণ দাহিত্যদেবী ডক্টৰ ঞীশাকুমাৰ বন্দ্যোপাধায় তাঁর উপরোক্ত গ্রন্থে সাহিত্যের ইতিহাস সম্পর্কেই আলোচনা করেছেন—ভবে এক ভিন্নতর আঙ্গিক অবশ্বন করে, গাছিত্যের ইতিহাসই গ্রন্থের প্রধান উপজীব্য ; তবে আলোচনার ভঙ্গী अकट्टे शृथक धर्ताव । स्थात अत करन श्रष्टि राथडे शतिमाण देवनिएडें। ঠিক কভকগুলি তথ্যপঞ্জীব विक्विक श्राह्म। সাহিত্যবিশেষের সংক্ষিপ্ত বিবরণীর পর্যায়ে এই গ্রন্থটিকে ফেলা বায় না, এর আলোচনার ভিত্তি আরও গভীর। বিভিন্ন যুগে, বিভিন্ন পরিবেশে সাহিত্যের যে নিত্য নবরূপায়ণ ঘটেছে তার মূল প্টভূমিকার প্রতি লেখক আলোকপাত করেছেন, বে মূল ধারাকে কেন্দ্র করে কয়েকটি শতাব্দী যাবং বাঙলা সাহিত্যের উপর দিয়ে বে বৈচিত্র্যের বক্যাধারা বয়ে চলেছে তার উৎস-সন্ধানে লেথক ব্যাপুত। নব নব চেতনা ও নব নব চিন্তাধারার সংমিশ্রণে সময়ের অগ্রগমনের সঙ্গে তালে তাল রেখে ভিন্ন ভিন্ন আঙ্গিকে যে সাহিত্যের উদ্ভব হয়েছে, পুষ্টি হয়েছে, বিকাশ ঘটেছে, সে সম্বন্ধে লেথকের মুল্যবান আলোচনা গ্রন্থটিকে ষ্থোচিত গুরুত্বপূর্ণ তাংপর্যবান ও অভিনব করে তুলেছে। গ্রন্থটির গঠনকাযে লেথকের প্রচুর পরিশ্রম নিষ্ঠা ও অধ্যবসায় ব্যয়িত হয়েছে। আমরা আলা রাগি বে দেশবাসী এর ষথায়থ মুলাদানে কার্পণ্য প্রকাশ করবেন না। এই গ্রন্থ পাঠক-সমাজে ও ছাত্রসমাজে সমান সম্মানলাভ করবে বলে আশা করা যেতে পারে, এই জাতীয় গ্রন্থের প্রচার ও প্রদার যত অবিক হয় ততই মঙ্গল। গ্রন্থের শেবাংশে বাঙলা সাহিত্যের একটি কালাফুক্রমিক এবং সাছিত্যের ইতিহাসে কয়েকটি শ্বনীয় তারিথের একটি সংক্ষিপ্ত ভালিকা যুক্ত করে গ্রন্থটিকে আরও আক্ষণীয় করে তোলা হয়েছে। প্রচ্ছদচিত্রান্তন অপূর্ব হয়েছে, শিল্পীকে অভিনন্দন জানাই। (যদিও সন্মুখ প্রান্থলে গ্রান্থের লেখকের নাম লিখিত নেই এবং প্রান্থলাদীর নামও গ্রন্থের মধ্যে থুঁজে পাওয়া গেল না) প্রকাশক—ওরিরেণ্ট বুক কোম্পানী। ১ ভাষাচরণ দে খ্রীট। দাম—সাত টাকা মাত্র।

সভ্যতা ও আণবিক যুদ্ধ

আক্রকের দিনে ধ্বংদের অভিমুগে সারা জগতের ক্রমাগ্রসরণ শান্তিকামী মামুষকে রীতিমত আতত্তিত করে তুসছে। ধরণীর দিছিদিকে আজ বে ব্যাপক ভাবে বিনষ্টির মহোৎসব চলছে তার

মধ্যে স্টের পূজারী ম। মুখদের পক্ষে নিজেদের বাঁচিয়ে রাথা এক বিরাট প্রশ্নের তথা সমস্তার রূপ নিয়েছে। বর্তমান কালে আন্তর্জাতিক সুধী সমাজে বাট্র বি বাদেল একটি বিরাট শ্রন্ধার আসনের অধিকারী, মনীযার দরবারে এঁর পাণ্ডিত্যপূর্ণ অবদান জনহুসাধারণ বিশ্ববিদ্ত। এই বর্থীয়ান চিন্তানায়ক ও দার্শনিকের অভিমতের মূল্যও অপরিসীম। জগতের এই ধ্বংসমুখীনতা স্থণীবরের মানবপ্রেমিক মনকে ব্যথিত করে তুলেছে, ব্যাকুল করে তুলেছে, বিহবল করে তুলেছে। চতুর্দিকে হিংসা হানাহানির ষড়যন্ত্র, কুটিলতা, পর্বশ্রীকাতরতা ও ক্ষমতা-লোলুপতার ভয়াবহ মিছিল তাঁর মনকে পীড়িত করে, তাঁর মতে এ পথ বাঁচার পথ নয়, প্রকৃত পথ নয়, কল্যানের পথ নয়, এ পথ পরিহার করে শান্তির, মৈত্রীর, প্রীতির পথে পদার্পণ করলে কল্যাণের স্লিগ্ধ আলোয় সারা জগত ভবে উঠবে, নিদারুণ বিপর্যয় থেকে পাওয়া যাবে রক্ষা—মিলবে জাবনদেবতার মুঠো মুঠো আশীর্বাদ। উপরোক্ত মতবাদের উপর ভিত্তি করে আলোচ্য গ্রন্থটি রচিত এবং স্থাসমাজে পরম সমাদরে গৃহীত। আণবিক যুদ্ধের মারাত্মক পরিণতির দিকে মাতৃষের দৃষ্টি আকর্ষণ করেই রাসেল ক্ষান্ত হন নি, শান্তির পথে পদন্দেপণের এক পূর্ণাঙ্গ কর্মসূচীও সেই সঙ্গে সকলের সামনে তুগে ধরেছেন। জীবনসাধকের এই স্থমহান প্রচেষ্ঠা সফল হোক, এই কামনাই করি। পথভ্রাম্ভ মানুষকে পথ খুঁজে নিতে আর্ল রাসেলের স্চিস্তিত নির্দেশ প্রভৃত সহায়তা করবে, এ বিশ্বাস আমরা রাখি। গ্রন্থটির বঙ্গান্নবাদ করেছেন শ্রীমতী কল্পনা রায়। ইতিপূর্বে একাধিক বিদেশী সাহিত্য বাঙলায় অমুবাদ করে প্রভৃত যশ ও খ্যাতির অবিকারিণী হয়েছেন শ্রীমতী বায়, মাসিক বস্তমতীতে বর্তমানে তাঁব অমুবাদ-উপকাস ধারাবাহিকভাবে প্রকাশিত হয়ে চলেছে। রাসেলের গ্রন্থারুবাদেও অন্থবাদিকা যথেষ্ঠ শক্তির পরিচয় দিয়েছেন এবং আপন সুনাম অক্ষুণ্ণ রেখেছেন, তাঁর অমুবাদকর্ম নি:সন্দেহে আন্তরিক প্রশংসার যোগ্য। প্রকাশক—আর্ট য্যাও পাবলিশার্ম। জ্বাকুস্ম হাউস, ৩৪ চিত্তরঞ্জন য্যাভিনিউ। ত্র' টাকা পঞ্চাশ নয়া পয়সা মাত্র।

মধুমালা

বাঙলা সাহিত্যের যুগত্রষ্টাদের মধ্যে কাজী নজকল ইসলামের
নাম !বিশেষভাবে উল্লেখযোগ্য। বঙ্গভারতীর প্রধানতম সেবকদের
মধ্যে এই সৈনিকটির আসনও পুরোভাগে। বাঙলা কবিতার ইতিহাসে
নজকলের নাম চিরকালের মত লেখা থাকবে অমলিন অর্ণাকরে।
অনেকেই জানেন যে, স্বরলন্ত্রীর কুপাও নজকলের উপর কম পরিমাণে
বার্ষিত হয় না। স্বরকার ও গীতিকার ছিলেবেও নজকল জনপ্রিশ্বতার

জাল জাসনে সমাসীন, স্বৰুষার ও গীতিকার হিসেবে তাঁর অবদান বেমনই ব্যাপক তেমনই বিরাট। গীতিনাট্য রচনাতেও তাঁর ক্ষমতা সীমাবদ্ধ নর, সম্প্রতি উপরোক্ত শিরোনামার তাঁর একটি গীতিনাট্য দীর্ঘকাল পরে আত্মপ্রকাশ করেছে। এই গীতিনাট্যটি এককালে সংগারবে নাট্যভারতীতে অভিনীত হয়েছে এবং এই নাটকটির ছারাই নাট্যভারতীর যাত্রা শুক্ত। গীতিনাট্য রচনায় নজকলের কুশলতার ছাপ পাতার পাতায় ফুটে ওঠে, গানগুলি অত্যন্ত স্কর্বন্ধত এবং রূপক্ষমী। এই নাটকের কাহিনীর মূল বক্তব্যটিও যথেষ্ট হাদয়স্পাশী। প্রচ্ছদ্চিত্র এঁকেছেন জ্বীগণেশ বস্থ। প্রকাশক—ভারতী লাইত্রেরী, ভ বহিম চ্যাটাজী খ্রীট। দাম—ছ'টাকা মাত্র।

রক্তের বদলে রক্ত-ও মানুষ নামক জন্তু

রূপ-রুদ-বর্ণ-বৈচিত্র্য সমন্বিত জীবনের মহিমামণ্ডিত রূপ ধরা भए गैएनव कार्य, जीवनक नाना महिकान थएक वैदा প্रकाक ক্রতে পারেন, জীবন-বহুলোর উৎস-সন্ধানে তংপর যে সব সন্ধানীর দল, সেই সার্থকনামা জীবনশিল্পীদের মধ্যে মনোজ বস্তুও একজন। উপরোক্ত উপরাস হ'টিকে তাঁর সাহিত্য স্টের অব্যতম শ্রেষ্ঠ নিদর্শন বলে অভিহিত করলে অত্যক্তি হয় না। উপতাস হ'টির নামকরণের মধ্যে এদের আপন আপন বৈশিপ্তোর প্রকাশ ঘটেছে। সাম্প্রদায়িক মতান্তর থেকে জাত দাঙ্গা-হাঙ্গামার আগুনের লেলিহান শিখা মানব-জীবনে যে কতথানি বিপর্যয় আহবান করে আনল, হিংসা-হানাহানির মারপাাচ কত শান্তির নীড়কে ধলিসাং করে দিল, জগতের মাতুবের মিছিল থেকে কতজন যে কোথার ছিটকে পড়ে চিরকালের জন্মে হারিয়ে গেল, মান্তবের জীবন যে কতথানি ওলট-পালট হয়ে যেতে পারে, মানুষের হাসি-আনন্দ-গান কোথায় অবলুপ্ত হয়ে গেন। প্রাণ নিয়ে কি ভীষণ ছিনিমিনি খেলা চলতে পারে, প্রথম উপক্রাসটিতে সেই বীভংস নৃশংসতার করুণ প্রতিচ্ছবিই লেথক ফ্টিয়ে তুলেছেন। মানুবের মুখোসের অভ্যস্তবে জন্তও লুকিয়ে থাকতে পারে, যথাসমূরে তার পাশব প্রবৃত্তির বিকাশের ফঙ্গে क्ष्यक्रि निष्पांभ मत्रम खोत्रान्त छेभद मिर्य मर्रनात्मत विध्वःमो বক্যাধারা বয়ে যায়। পাশব প্রবৃত্তির বিকাশে স্মস্ত সমাজ কেমন করে বিবিয়ে ওঠে দ্বিতীর উপক্রাসটিতে মানব-জীবনের ব্যথার, বেদনার, বঞ্চনার দিকটির এক সমাক চিত্র লেখকের লেখনীর কল্যাণে প্রস্থাটিত হয়েছে। আত্তকের ছনিয়া যে কতথানি মেকিতে ছেরে গেছে পেথক সেদিকে সাধারণের দৃষ্টি আকর্ষণ করছেন। জীবনের শৃক্ততার বেদনাবিধ্র ছবিই কেবল তাঁর লেখনী আঁকেনি, আশার মা ভৈ: বাণীও তাঁর লেখনী শুনিয়েছে। অন্ধকার রাত্রির ভীবণ ভয়াল কংপর প্রতিচ্ছবিটি তুলে ধরেই লেখক ক্ষান্ত হন নি, উচ্ছল প্রভাতের স্যোতির্বয় আলোকের কল্পনাও তাঁর লেখনীর মাধ্যমে প্রকাশ পার। পাঠক-পাঠিকা তথা মান্তবের দরবারে লেখক কেবলমাত্র হঃখবাদের প্রচার করেই থেমে বান নি—শেষে আনন্দলোকের সিংহ্ছারের দিক নির্নেশও তিনি দিয়েছেন, ঘটনা সংস্থাপনে, চবিত্রচিত্রণে, সংলাপ প্রীতে অনক্সদাধারণ দক্ষতা প্রকাশ করেছেন শক্তিমান কথাশিল্পী ^{এনিনোজ} বস্থ। ব্যঞ্জনায়, বর্ণনায়, বিভাসে অতুলনীয় শক্তির ^{পবিচয়} দিয়েছে লেথকের লেখনী। মনোজ বস্তুর স্কল্প অন্তর্দৃ ^{পতীৰ উপলব্ধি ও ভীব্ৰ অনুভূতির স্পৰ্বভাবে গ্ৰন্থ ছ'টি সাৰ্থক} হয়ে উঠেছে। উভয় গ্রন্থের প্রচ্ছদচিত্রান্ধনে আশামুরূপ কৃতিছ দেখিয়েছেন শিল্পী আশু বন্দোপাধ্যায়। উভয় গ্রন্থেরই প্রকাশক— বেঙ্গল পাবলিশার্স প্রাইভেট লিমিটেড, ১৪ বঙ্কিম চ্যাটার্জী ষ্ট্রীট। দাম—প্রথমটির হু'টাকা পঞ্চাশ নয়া প্রসা মাত্র এবং দিতীয়টির তিন টাকা মাত্র।

নতুন বাঁকে

বাঙলা সাহিত্যে ছোট গল্প ও উপস্থাদের ইতিহাসে বিশেষ ভাবে শ্বণীয় নামগুলির মধ্যে 'বনফুল' নামটি অক্তম। বহু সার্থ**কনামা** ছোট গল্প ও উপক্রাদের তিনি স্রষ্টা, আশা করি, এ কথাও কারো অজানা নয় যে, কবি হিসাবে বনফুল কম যশসী নন, বাঙলা কবিতার পৃষ্টি সাধনে বনফুলের অবদানও অল্প নয়, বাঙলা কাব্য দীর্ঘকাল ধরে 'ঠার দারা সেবিত হয়ে আসছে। বর্তমানে তাঁর কভকগু**লি কবিতার** একটি সংকলন গ্রন্থ প্রকাশিত হয়েছে। গ্রন্থে তিরিশটি কবিতা স্থানলাভ করেছে। কবিতাগুলি বুগোতীর্ণ, স্নদ্যম্পর্ণী ও স্বতঃকুর্তু। কবিতাগুলির ভাব অপুর্ব, ছন্দ মনোরম, ভাগা সাবলীর। কবিতাগু**লির** আবেরন পাঠকচিতে বিশেষভাবে প্রভাব বিস্তার করে। সমগ্র কবিতাগুলির মধ্যে প্রশস্তিবাচক কবিতাগুলি যথা শাক্যসিংহ, পঁচিশে বৈশাথ, প্রীশ্রীমা সারদা দেবী, দাদামশাই, (রসসমাট क्लावनाथ व्यन्ताभाषात्र), ववीन्त्रनाथ (मुड़ानिव्यत्र), ब्राह्मनाथ বন্দ্যোপাধ্যায়, মোহিতলাল মন্ত্র্মদার, বিভৃতি বন্দ্যোপাধ্যায় কৰি ষতীলুনাথ সেনগুপ্ত প্রভৃতি কবিতাগুলি এক অনবত আম্ভরিকতার স্পর্শে ভরপুর। এ,চ্ছদচিত্রাঙ্কনের প্রশংসা দেখিয়েছেন **শ্রীঅজিত** গুর। প্রকাশক-ইতিয়ান য়াসোসিয়েটেড পাবলিশিং কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড। ১৩ গান্ধী রোড। দাম—ত' টাকা পঞ্চাশ নয়া পয়সা মাত্র।

অশেষ পর

ডটুর হরপ্রসাদ মিত্রের কবিখ্যাতি স্মবিদিত, যশসী শিক্ষাবিদ ও শিক্ষাপ্রচারক হিসেবেও তাঁর দক্ষতার পরিচয় পাওয়া গেছে। কিছ ছোট গল্প রচনাতেও তাঁর লেখনী যে সমান পট, এই বিবরটি অনেকের কাছেই এথনও অজ্ঞানা রয়ে গেছে। তাঁর কয়েকটি ছোট-গল্পের সংকলন এই গ্রন্থটি পাঠ করে আমরা এটক ধারণা অনায়ালে করতে পারি যে ছোট গল্পেথকদের মধ্যে হরপ্রসাদের আসনও নি:সন্দেহে প্রথম সারিতে। গ্রন্তে সাতটি গর স্থান পেরেছে। হরপ্রসাদের গতারচনাকেও তাঁর কবিমন যথেষ্ট প্রভাবাবিত করেছে। গল্পগুলির সৌন্দর্যের প্রতি অসীম অনুরাগের ও এক গভীর অন্তর্গ 🗟র মধ্যে লেথকের এক প্রথব হাদয়ামুভ্তির পরিচয় মেলে। গারগুলির প্রত্যেকটিই এক বিশেষ আবেদন বছন করে। ঘটনার সংস্থাপনে. চরিত্রস্থজনে, বর্ণনাভঙ্গীতে লেথক অসাধারণ কৃতিত্বের পরিচর দিয়েছেন। সর্বোপরি সমগ গ্রন্থটিতে লেথকের এক উদার দরদী ও স্লিগ্ধ মনের আলেখা প্রস্টুটিত হয়ে উঠেছে। প্রকাশক—ই এণ্ড কোম্পানী, ৩১ নেতাজা সভাধ গ্যাভিনিউ শ্রীরামপুর, প্রান্তিস্থান— ইট্ট এণ্ড কোম্পানী, ৫২, কেশবচন্দ্র সেন **ট্রীট। দাম—ছ**' টাকা মাত্ৰ।

عجدين ج

অপাঠ্য

পাঠক-পাঠিকাকে অন্তরোধ ধে, উপরের শিরোনামাটি বেন তাঁরা चांमांत्रव मञ्जरा वत्न मत्न ना करवन-चांमांत्रव मञ्जरा वदा धव বিপরীতই। বমারচনার মাধামে বাঙ্গা সাহিত্যের ক্রমোরতি থাঁদের ষারা হয়ে চলেছে, নীঙ্গক্ঠ তাঁদেরই একজন। প্রকৃতপক্ষে সাহিত্যের অক্যান্ত বিভাগগুলির তুলনার রমারচনার দেথকসংখ্যাও नगना, मिरे विवन मःश्राकरमव मर्त्या नीमकर्थ निःमरम्बद अकि विभिष्ठे আসনের অধিকারী। স্পষ্ট উল্জি, তীক্ষ মন্তব্য এবং সভাভাষণ এই ত্রিধারা মিলিত হয়েছে নীলকঠের সাহিত্যে এবং তার ফলে তাঁর রচনা প্রথম শ্রেণীর সাহিত্যে পরিণত হতে পেরেছে। বলা বাছলা, এই গুণগুলির ষধার্য প্রকাশ আলোচা গ্রন্থটি থেকেও মতুপস্থিত নয়। ৰে ছুনীতির বিধবাপ্য আক্রকের সমাক্রকে বিধাক্ত করে তুলেছে তার বিক্তমে লেখক এক সন্দেশের চাবুক' ব্যবহার করে প্রবল প্রতিবাদ জানিবেছেন। বচনাগুলির মধ্যে লেখকের জীবন, মানব ও সমাজ-সচেতন মনের বে পরিচয় ফুটে উঠেছে তা পাঠক সাধারণের অস্তর স্পূৰ্ণ করবে বঙ্গে আশা করা যায়। হু'টি থোলা চিঠি (একটি সিদ্ধার্থ রায়কে অপরটি বাটা প্রতিষ্ঠানকে) এবং হ'টি ছবির (পথের পাঁচালা ও কাবলিওয়াপা) সময়োপযোগী বন্দিষ্ঠ ও ততোধিক নিৰ্ভীক সমালোচনা গ্রন্থের মধ্যে অন্তর্ভুক্ত হয়েছে। পার্শ্বপ্রছদ এবং পশ্চাংপ্রজ্ঞদে দেখা গ্রন্থটির সংক্ষিপ্ত পরিচিতি বচনা-কৌশলে উপভোগ্য হয়ে উঠেছে। প্রকাশক—ফাশানাল পাবলিশার্গ, ২০৬ কর্ণ ওয়ালিশ খ্রীট। দাম-তিন টাকা মাত্র।

নাট্য গুচ্ছ

সাম্প্রতিক কালে বাঙ্কাদেশের নাট্যসাহিত্যের সেবা করে বে অক্সণ বাণী-উপাসকের দল সুনাম অর্জন করেছেন গ্রীতরূণ বার ওরফে ধনপ্রর বৈরাগীর ভান তাঁদেরই মধ্যে। সার্থক নাটকের স্মার্টকর্মে তাঁর প্রচেটা সাফস্যলাভ করেছে, এ কথা বললে ভূল হয় না। নাট্যশাল্লের কল্যাণকর্মে তাঁর আত্মনিয়োগের বিষয়ও স্থবিদিত। ৰাঙ্গাদেশের নাটাসাহিত্যের ইতিহাসও অসামান্ত গৌরবের আলোর উচ্চল. তার অভিবান বেদিন থেকে শুরু হয়েছে তার পর আঞ একটি শভাব্দী পেৰিয়ে গেছে। এই কিঞ্চিদধিক একটি শভাব্দীর সাধনার বাঙ্গার নাট্যসম্ভার বথেষ্ঠ পরিমাণেই সমুদ্ধ হয়েছে। সাধারণতঃ নাটকের মাধ্যমে যুগের সমকালীন ছবি, তার প্রশ্ন, ভার সমস্তার প্রতিচ্ছবি তুলে ধরা নাট্যকারের প্রধান দারিছ। নাটকের প্রধান ধর্ম বলতে বা বোঝা বায় তা হচ্ছে মামুবকে আযুসচেতন করে তোলা। এই প্রধান দিকগুলিকে কেন্দ্র করে বিচার করলে দেখা যায় যে, তরুণ রায়ের নাটকগুলি আশামুরূপ রসোতীর্ণ। পাঠক ৰা দৰ্শকেৰ দাবী মেটাতে সক্ষম, আজকেৰ সমাজেৰ বিভিন্ন রূপেৰ পুণীক প্রতিচ্ছবি যথোচিত নিপুণতার সকে তলে ধরেছে পাঠক তথা দর্শক-সাধারণের সামনে। লেগকের সন্ধানী মনের পরিচয়ও প্রস্তের নানাম্বানে পাওয়া যায়। নাটকগুলি বাস্তবধর্মী হলেও তাদের মধো রূপ-রূদ-বর্ণময় বিচিত্র কল্পনার এক আশ্চয় অনুভৃতি অদৃশু নয়। গ্রন্থে সবসমেত ন'টি নাটিকা স্থানলাভ করেছে, এদের মধ্যে অধিকাংশই আকাশনাণী এবং অক্তান্ত স্থানে সমারোহে অভিনীত। मिला मिला प्रवास अहे माहिका मःक्लमहि वस्त मानस्त महन

গৃহীত হবে বলে আলা রাখি। শ্রীভাররানন্দ রারের প্রাক্তদ অরন প্রেলগোর্হ। প্রকাশক—আর্ট স্যাও কোটার্স পাবলিশার্স, করাকুত্মম হাউদ, ৩৪ চিত্তরঞ্জন স্যাভিনিউ। দাম—ছ'টাকা পঞ্চাশ নরা প্রসা মাত্র।

যুক্তরাষ্ট্রের ইভিহাস

আজকের দিনে বিশ্বপ্রসঙ্গে স্বাধীন ভারতবর্ষের সঙ্গে ভূলনীর ষে ক'টি দেশের নাম উল্লেখ করা চলে, মাকিণ যুক্তরাষ্ট্র তাদের মধ্যে অক্তম। জগতের মহাদেশগুলির মধ্যে জ্যামেরিকাই বর্ধে স্বচেরে ভরুণ। পোনে পাঁচ শ'বছর আগেও সারা পৃথিবীতে এই মহাদেশের অন্তিত্ব পর্যন্ত ছিল না। আর একটি কারণে বাঙালীর কাছে মার্কিণ মুদ্রুকের গুরুত্ব যথেষ্ট, বহির্ভারতে যুগাবতার হামকুঞ্চের প্রচারের পুণাফল লাভ করে সর্বপ্রথম ধন্ত হয়েছে এই য়ামেরিকা। আজকের এই মানবসভ্যতার ব্যাপক জয়বাগ্রার সঙ্গে সঙ্গে সভাবতঃই মামুষের মনের গতিলেগও বৃদ্ধি পোয়ে চলেছে, তার মন ক্রমশুই স্থীত থেকে মীতত্ব হয়ে চলেছে। মানবমনের প্রশ্নও আজ হতে চলেছে অনস্ত থেকে অনস্তত্তর। সন্ধার্ণতার সীমারেখা অতিক্রম করে প্রসারভার আহবান মানুষকে আকর্ষণ করছে। ক্ষুদ্রতার প্রাচীর ভেদ করে বিশালতার প্রাঙ্গণে পা ফেলতে মানবচিত্ত উন্মুখ। জানার ইচ্ছা নয় আছ জানার কুধা মামুদের মন অধিকার করে আছে। আজ মানুষ পরিণত হতে চলেছে এক বুহত্তর মানবগোষ্ঠীতে, মানুষ অপরের সম্বন্ধে আজ বিশদভাবে জানতে চায়, পারস্পরিক ভাবের আদান-প্রদানের মধ্যে দিয়েই এই জানা সম্ভবপর হবে, দেশের ইতিহাসই নিবদন করবে এই জানার কোতৃহল ৷— ত্রী আর, বি, নাই ও এী জে, ই, মোবণাৰ গাৰ লেখা যুক্তরাষ্ট্রের ইতিহাসে যুক্তরাষ্ট্র সম্বন্ধে অসংখ্য তথ্যে ভব'ৰে এবং এ দেশেৰ ইতিহাস সম্বন্ধে নানা বিবৰণ-সমূদ্ধ। ব্যামেরিকার বিশদ ইতিহাস যথেষ্ট কুতিখের সঙ্গে লিপিবছ করেছেন লেখকৰয়। বাহলায় গ্ৰন্থটির প্রশাসনীর অমুবাদ করেছেন জীরবীন্দ্রনাথ সরকার, জীনীলরতন দেব ও জীমতী দীপালি মুখোপাধাায়। অমুবাদ-क्रम यर्था छेकात्त्रव शहरह धवर निश्नाकात्र वाकत वहन करतह । শেবোক্তদের প্রম সফল হয়েছে এ কথা অনায়াসে বলা বায়। প্রকাশক-এশিয়া পাবলিশিং কোম্পানী, এ: ১৩২-১৩৩ কলের ট্রাট मार्क्ट । नाम-यून ठाका माज।

আবিফারের গল

আজকের দিনে বেশীর ভাগ ক্ষেত্রেই বিজ্ঞানকে পরিচালিত করা হছে ধ্বংস করে, বৈজ্ঞানিক শক্তিকে ব্যবহার করা হছে, বিনটি প্রচেষ্টার, বিজ্ঞানের ধ্বংস করার শক্তিকে কাজে লাগানো হছে পূর্ণমাত্রার, কভকগুলি আত্মদর্বর, ক্ষমতালোভী, নরদানবের হাতে পড়ে বিজ্ঞান আক্র প্রতিভাত হরে উঠেছে বিধাতার অভিশাপরণে অধচ এ কথাও কোনমতেই অস্বীকার করা চলে না বে, বিজ্ঞান বিধাতার আশীর্বাদের এক অলক্স স্বাক্ষর। সাহিত্যের মত বিজ্ঞানও সভাতার একটি প্রধান অঙ্গ। বিজ্ঞান হাত্তিরেকে সভাতার প্রকটি প্রধান অঙ্গ। বিজ্ঞান হাত্তিরেকে সভাতার সম্পূর্ণরূপে অসম্পূর্ণ। সভাতার উৎকর্ষহীন বিজ্ঞানের অবদান বেমনই স্তক্ষপূর্ণ, তেমনই সামাহীন। সেই অসভা, বক্স, বর্বর জীবন বাপন করেছে বে মাহ্যব—ভার পর বছ শতাদী ধরে বে অনলাস সাধনার সেআৰ পরিবন্ধ হয়েছে আলোকপ্রাপ্ত স্বস্নভা নাগরিকে, ভার মূলে

বিজ্ঞানের অবদানও কিছু কম নয়। মামুষের ক্রমজাগরণের ইতিহাসে সাহিত্যের মতই বিজ্ঞানের অবদানও সমান মূল্য বহন করে। বিজ্ঞানী ছন্মনামের অস্তবালে লেখক বৈজ্ঞানিক অসামান্ত আবিষারগুলি আলোকোজ্জল কাহিনীর ইতিবৃত্ত ধারাবাহিকভাবে এই গ্রন্থের মাধ্যমে পরিবেশন করে যথেষ্ট দক্ষতার পরিচয় দিয়েছেন। বিজ্ঞানের এক-একটি আবিহ্বাবের কাহিনী বেমনই আশ্চর্য, তেমনই চমকপ্রদ, বে সকল আবিষ্কারের সফল আজ আমরা প্রত্যেকে ভোগ করছি তাদের ভুন্ম-ইতিহাস সম্বন্ধে সরস, স্থব্দর ও সাবলীল আলোচনা নিশ্চয়ই পাঠক-পাঠিকাকে আনন্দ দেবে বলে আশা করা যায়। বৈজ্ঞানিক ভাবিষারগুলির কাহিনী ও ইতিহাসগুলি এই গ্রন্থের উপজীবা। কালাতুক্মিক আলোচনার ফলে প্রসঙ্গক্রমে বিভিন্ন যুগের বিভিন্ন কাহিনার প্রতি আলোকপাত করার ফলে গ্রন্থের মর্যাদা বুদ্ধিপ্রাপ্ত চয়েছে। সাহিত্যসৃষ্টিতেও লেথকের লেখনী অপটু নয়, লেথকের বর্ণনভদ্নী, বৈচনাকৌশল লিপিচাতুর্য প্রশংসার দাবী রাখে। এই গ্রন্থ ছোট বড় উভয় সম্প্রদায়কেই যুগপংভাবে আনন্দ দান করবে। বিজ্ঞানানুরক্তের দল এই গ্রন্থ পাঠে বহুলাংশে উপকৃত হবেন। এই গ্রন্থর যথাপ্রাপ্য সমাদর আমরা কামনা করি। প্রকাশক-ওরিরেন্ট বুক কোম্পানী, ১ ভামাচরণ দে খ্রীট, দাম—এক টাকা পঞ্চাশ নয়া প্রসা মাত্র।

চিকিৎসাবিজ্ঞানের নব অবদান

পৃথিবীতে মানুদেব বোধ হয় সব চেয়ে বড় শক রোগ, ব্যাধি, জনা। এবা শুধু দেহের দিক দিয়েই নয়, মনের দিক দিয়েও মানুধকে ক্ষতবিক্ষত করে তোলে। ক্ষদ্যন্তের ক্রিয়া বন্ধ হওয়ার ফলে মৃত্যুর চেয়েও মনের মৃত্যু সকল দিক দিয়েই ভ্রমানক সাংগাতিক, ভুবিষ্ঠ ! প্রাচীনকালে ঋষিদের সাধনার প্রভাবে রোগ দ্ব হোত। আজ সে পৃণ্যকল্প ঋষিদের সাধনার প্রভাবে রোগ দ্ব হোত। আজ সে পৃণ্যকল্প ঋষিদের সাধনার প্রভাবিত হল অসংখ্য ঔষধ, রোগের নাশকারী। আজকের দিনের চিকিৎসা-বিজ্ঞানের বেগবান অগ্রগতি লক্ষ্য করবার মত। লক্ষ্যই হচ্ছে, কত জটিল রোগকে কত সহজে মানুষ্বের দেহ থেকে সার্য়ে দেওয়া যায়, আশার কথা, বিজ্ঞানসাধকের দল এই সাধনায় ক্রমেই সিদ্ধিলাভ ক্রছেন। এই নব নব ঔষধাবলীৰ

ইতিহাস তাদের আবিষারকদের সম্বন্ধে বহু তথ্য, তাদের উত্তব প্রসার ও জয়য়াত্রার পূথায়পূথ বিবরণ উপরোক্ত গ্রন্থে অতি স্থলর তাবে লিপিবদ্ধ করা হয়েছে। গ্রন্থটি 'আর্মেনগার্ড ইবার্লের মতার্পিমেডিক্যাল ডিসকভারিস' নামক গ্রন্থের বঙ্গায়বাদ। অফুবাদকর্মে অয়ৢবাদকও ব্যথেষ্ট কৃতিত্ব দেখিয়েছেন। অয়ুবাদ অত্যন্ত হদয়গ্রাহী, সাবলীল ও মনোরম হয়েছে। প্রাক্তল বর্ণনভঙ্গীও চিত্তাকর্ষক। প্রচ্ছদচিত্রটিও বেশ আকর্ষণীয়। কিছু সমগ্র গ্রন্থটিতে অয়ুবাদকের বা অয়ুবাদকদের এবং প্রচ্ছদচিত্রীর নাম অয়ুয়েখিত রয়ে গেছে। ভিটামিন, পেনিসিলিন, ডি, ডি, গ্রাজমা, সালফা ছাগস, ট্রেপটোমাইসিন, গামাগ্রোব্লিন, গ্রামিসিডিন, ভেকসিন প্রভৃতি সম্বন্ধে বাার কৌত্রভ্ল পোষণ করেন এই গ্রন্থটিতে তাঁদের কোতৃহল নিরসনকরে। বৈজ্ঞানিক আলোচনার অংশগুলি বাতে সকলের পক্ষেসহজবোগ্য হয়ে ওঠে, সেদিকেও যথেষ্ট বত্ব নেওয়া হয়েছে, এ কথাও বিশেষভাবে উল্লেখবোগ্য। প্রকাশক—শ্রীভূমি পাবলিশি কোল্পানী, ৭১ গান্ধী রোড। দাম এক টাকা পঞ্চাশ নয়া পয়্সা মাত্র।

কুম্বকর্ণের নিদ্রাভঙ্গ

সপ্তকাণ্ড রামায়ণের মধ্যে রাবণাত্তক কুম্বকর্ণের উপস্থিতি বলতে গেলে ফংসামার, খুব অল অংশ जुरक কুম্বকর্ণ ধে একটি বিশেষ মংগ্ৰ টাইপ চরিত্র, এ বিষয়ে সন্দেহের কোন অবকাশই থাকতে পারে না। কুস্তকর্ণের নিদ্রাভঙ্গের অংশটুকু অবধ্যমন করে ছোটদের উপধোগী একটি ভিনটি গুখ-সম্বিত নাটক বচনা করেছেন খ্যাতিমান লেথক প্রশান্ত চৌধুরী। সারা নাটকের মধ্যে কৌতুকরস যুক্ত করার নাটকটি বেশ উপভোগ্য হয়ে উঠেছে। নাটকটি অভিনীতও হয়েছে সগৌরবে। নাটকটির মধ্যে কয়েকটি কাঞ্চনিক চরিত্র যুক্ত করে নাটকটিকে আরও আকর্ষণীয় করে তোলা হয়েছে। নাটকটি ছোটদের দরবারে সাদবে গৃহীত হবে বলে আমরা আশা রাখি। নাটকটি সুক্লিত ও সুলিখিত, এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই, সংলাপাংশ ৰথেষ্ট হৃদয়গ্রাহী, চরিত্রগুলিও অস্বাভাবিক নয়। প্রচ্ছদ এবং গ্রন্থের অস্থান্ত চিত্ৰগুলি অস্কন করেছেন লেগক স্বয়ং। প্রকাশক—বলাকা প্রকাশনী ২৭ সি আমহার্ম্ন ব্রীট। দাম এক টাকা পঁচিশ নধা পয়সা মাত্র।

ভালোবাসা

অঞ্চলি দাশগুপ্তা

আমার চিতা ভোমার বৃকে অসুক অসুক,
আমার সৃতি ভোমার চোথে বাসুক বাসুক,
রাত্রিশেবের নিবিড ক্ষণে
প্রলোকের হাওরার সনে
আমার ক্ষে বাধার বীণা
বাসুক মনে বাসুক মনে।

© (एएन-तिएएम ©

শ্রাবণ, ১৩৬৬ (জুলাই-আগষ্ট '৫১)

অন্তর্দেশীয়---

১লা প্রাবণ (১৮ই জুলাই): কেরলে ক্য়ানিষ্ট মন্ত্রিসভাব উচ্ছেদের দাবীতে রাষ্ট্রপতির (ডা: রাজেন্প্রসাদ) নিকট কেরল বিমোচন সমর সমিতির নেতা শ্রীপদ্মনাতন ও কেরল প্রক্রা-সমাজতন্ত্রী নেতা শ্রীথান্ত পিল্লাই-এর দরবার।

হরা প্রারণ (১৯শে জুলাই): শিক্ষা-প্রতিষ্ঠান, হাসপাতাল শ্রন্থতি জনকল্যাণ সংস্থায় ধর্মঘট বন্ধ করার উদ্দেশ্যে পশ্চিমবঙ্গ সরকার প্রস্তাবিত আইন-ব্যবস্থাব প্রতিরোধকল্পে নিথিল বঙ্গ শিক্ষক সমিতি কর্ম্বেক পাঁচ দফা আন্দোলনস্টা গছণ।

তরা শ্রাবণ (১০শে জুলাই) : দাক্ষিলিং-এর সরকারী গুদাম ছইতে দশ হাজার টাকার চাউল পাচারের সংবাদ।

কেরলে অবিশ্রম্থে সাধারণ নির্ন্ধাচনের ব্যবস্থাকল্পে রাষ্ট্রপতির নিকট কেরল কংগ্রেম কমিটির খারকলিপি পেশ।

8ঠা শ্রাবণ (২১শে জুলাই): জমু ও কাশ্মীরের ভয়াবহ বন্ধায় ১৩১ জনের প্রাণহানি—১০ কোটি টাকার সম্পত্তি বিনষ্ট।

কেরলের সর্মশেষ পরিস্থিতি সম্পর্কে ত্রিবান্দ্রামে রাজ্যপাল ভা: বি. রামকৃষ্ণ রাও-এর সহিত কেবল মুখামন্ত্রী নীই, এম. এস, নামুদ্রিপাদের গুরুত্বপূর্ণ আলোচনা।

৫ই শ্রাবণ (২২শে জুলাই): ভারত-পাকিস্তান বাণিজ্যচুক্তি প্রদক্ষে নয়াদিলাতে দেকেটাবী পর্যায়ে উভয় রাষ্ট্রের দক্ষেলন :

ভই শ্রাবণ (২৩শে জুলাই): পাক সৈক্রণল কর্ত্ব আসামের অবস্থিয়া পাহাড়-সামান্তে আরও ছইটি ভারতীয় গ্রাম (বাকুরটিলা ও বাশা) অধিকার।

১৯৬১ সালের এপ্রিল মাসের মধ্যে পূর্বে বেলওয়ের শিয়ালদহ-রাণাঘাট এবং দমদম-বনগাঁ সেকশন ত্ইটির বৈত্যতিককরণ—সংশ্লিষ্ট রেলওয়ের জেনারেল ম্যানেজার শ্রীরুপাল সিং-এর ঘোষণা।

•ই শ্রাবণ (২৪শে জুলাই): কলিকাতা পৌরসভার অধিবেশনে পৌরকর্মীদের বেতনের হার পরিবর্তনের প্রশ্ন আলোচনাকালে সভাকক্ষের ভিতরে ও বাহিবে তুমূল হটগোল।

৮ই শ্রাবণ (২৫শে ছুলাই): কেবল পরিস্থিতি প্রসঙ্গে রাষ্ট্রপতির সহিত প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহরু ও কংগ্রেস-সভানেত্রী শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধীর শুরুত্বপূর্ণ বৈঠক।

১ই আবণ (২৬শে জুলাই): ন্যাদিলীতে কেবলের প্রসঙ্গে প্রধান মন্ত্রী জীনেহরু ও কেন্দ্রীয় স্ববাইুসচিব পণ্ডিত গোবিন্দবল্লভ পদ্বের জরুবী আলোচনা।

১০ই শ্রাবণ (২৭শে জুলাই): পশ্চিমবন্ধ থান্ত উপদেষ্টা বোর্ডের সভায় মুখ্য মন্ত্রী ডা: বিধানচন্দ্র বায় ও থান্তসচিব শ্রীপ্রফুল্লচন্দ্র সেনের সহিত বিরোধী দলভূক্ত সদস্তদের তীত্র বাদামুবাদ এবং সরকারী কার্যা-ব্যবস্থার প্রতিবাদে বিরোধী সদস্তদেব সভা-কক্ষ ত্যাগ।

১১ই প্রাবণ (২৮শে জুলাই): কেবল সরকারের বিরুদ্ধে রাষ্ট্রপতির নিকটি উপস্থাপিত প্রদেশ কংগ্রেস কমিটির সকল অভিযোগ সম্পূর্ণ

ভিত্তিহীন—দিল্লী ও ত্রিবাক্রামে প্রকাশিত কেরল সরকারের (ক্যুনিষ্ট) জবাবে স্পষ্ট ঘোষণা।

১২ই প্রাবণ (২১শে জুলাই): ক্য়ানিষ্ট পার্টির পশ্চিমবন্ধ শাগার পক্ষ হইতে কলিকাতার রাজ্যপাল শ্রীমতী পদ্মজা নাইতুর নিকট এক দিল্লীতে রাষ্ট্রপতি ডা: রাজেন্দ্রপ্রসাদের নিকট রাজ্যের কাঞ্যেদী মন্ত্রিসনার বিক্লার ১৪ দকা অভিযোগ সম্বালিত স্মারক-লিপি পেশ।

১৩ই শ্রাবণ (৩০শে জুলাই): পশ্চিমবঙ্গ সরকারের জ্নস্বার্ধ-বিরোধী থাজনীতির প্রতিবাদে মুখ্য মন্ত্রী ডাঃ বিধানচন্দ্র রান্ত্রের বাসভবনের সন্মুখে তিন সহস্রাধিক নর-নারীর বিশ্লোভ।

১৪ই শ্রাবণ (৩১শে জুলাই): কেবলে ২৮ মাসব্যাপী ক্যানিষ্ঠ শাসনের অবসান—ভারতীয় সংবিধানের ৩৫৬ ধারা অনুযায়ী রাষ্ট্রপতি কর্ত্বক শাসনভার গ্রহণ।

প্রথম ডিভিশান ফুটবল লীগ প্রতিযোগিতার মোতনবাগান দঙ্গের (কলিকাতা) চ্যাম্পিয়ান শিপ (এ যাবং ৮ বার) লাভ।

১৫ই তাবণ (১লা আগষ্ট): অস্ত্রমন্ত্রণ চুক্তি ভঙ্গ কবিত্রা ক্সমন্ত্রিয়া পাহাড়ের ডাওকি অঞ্জে পাক-সৈল্পেও পুনরার গুলীবর্ষণ।

১৬ই প্রাবণ (২রা আগষ্ট): কেরলে কেন্দ্রীর ই**ন্ত**ক্ষেপ ব্যতিরেকে গভ্যস্তর ছিল না—নর্যাদিল্লী:ত কংগ্রেস পার্লামেন্টারী দলের সভার প্রধান মন্ত্রী প্রীনেহরুব উক্তি।

১৭ই প্রাবণ (তরা আগষ্ট): লোকসভার বর্গাকালান অধিবেশনের প্রথম দিনে কম্নানিষ্ট সদস্যগণ কর্ত্তৃক কেবলে কেন্দ্রীয় হস্তক্ষেপের প্রতিবাদে একযোগে সভাকক ত্যাগ।

১৮ই শ্রাবণ (৪)। আগষ্ট): বিনিম্মেণের পর পশ্চিমবঙ্গের সর্বত্র চাউলের মূল্য বৃদ্ধি—লোকসভার প্রশ্লবাণে জর্জবিত কেন্দ্রীয় থাজমন্ত্রী শ্রীক্ষজিতপ্রসাদ জৈনের স্বীকৃতি।

১৯শে শ্রাবণ (৫ই আগষ্ট): লোকসভার স্পীকার শ্রীজনস্থ-শ্যনম্ আয়েন্সার কর্ত্ত্বক কেরল (কেন্দ্রীয় হস্তক্ষেপ) সম্পর্কে ক্যানিষ্ট মুণ্ডুবী প্রস্তাব অগাছ—পরিণভিতে লোকসভায় তুমুল হটুগোল।

২০শে শ্রাবণ (৬ই আগষ্ট): লোকসভায় প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেন্ত্র বিবৃতি—তিব্যতস্থ চীনা কর্তৃণক্ষের এক আদেশবলে তিবতে ভারতীয় ও তিকাতী মুদ্বা বে-আইনী ঘোষিত হুইসাছে।

২১শে আবণ (৭ই আগষ্ট) : ভারতে অনির্দিষ্ট কালের জন্ম ইণরেই ভাষা চালু থাকিবে—লোকসভায় প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহকর ঘোষণা।

২২শে প্রাবণ (৮ই আগষ্ট): পশ্চিমবঙ্গ সরকারের জনস্বার্থ-বিরোধী থান্তনীতির বিরুদ্ধে ২০শৈ আগষ্ট হইতে পশ্চিমবঙ্গের সর্ক্তর আইন অমাক্ত আন্দোগন—মুলাবৃদ্ধি ও গুভিন্ধ প্রতিরোধ কমিটির সিশ্বাস্ত।

২৩শে প্রাবণ (১ই আগঠ): ন্যাদিল্লীতে রাজ্য শিক্ষামন্ত্রী সম্মেলনের সিদ্ধান্ত—১৯৬৫-৬৬ সালের মধ্যে ৬ চ্ছতে ১১ বংসব পর্যন্ত সকল বালক-বালিকার অবৈতনিক ও বাধ্যতামূলক শিক্ষাদানের ব্যবস্থা করা হইবে।

২৪শে শ্রাবণ (১০ই আগষ্ট): রাজ্যসভায় কেরলের রাজ্যপালের কেরল সংক্রান্ত রিপোর্ট দাখিলের দাবী প্রাক্রাখ্যান হও^{রার} প্রতিবাদস্বরূপ ক্যুনিষ্ট সদস্যদের সভাকক ত্যাগ।

২৫শে শ্রাবণ (১১ই আগষ্ট): তিবেতস্থ ভারতীয়দের স্বদেশে আনমন ব্যাপারে ভারত সরকারের অনুরোধ গণচীন কর্তৃক অগ্রাস্থ লোকসভার শ্রীমত্তী সন্দ্রী মেননের (কেন্দ্রীয় পররাষ্ট্র দন্তরেব সঙ্কারী মন্ত্রী) উক্তি।

নরাদিলীতে দীর্ঘ আঞাচনার পর ভারত ও আফগানিস্থানের মধ্যে নুতন বাণিজ্ঞাচুক্তি সম্পাদিত।

২৬শে শ্রাবণ (১২ই আগষ্ট): সীমানা (পাক্-ভারত) নির্দারণ ব্যাপারে থাসিয়া অয়স্তিয়া পাহাড় (আসাম) ও শ্রীহটের ডেপুটি কমিশনারদের বৈঠক ব্যর্থতায় পর্যাবসিত।

২৭শে শ্রাবণ (১৩ই আগষ্ট): চীনের সরকারী পত্রিকার ভারত ও ভারতীয়দের বিরুদ্ধে অপপ্রচার—লোকসভার প্রধান মন্ত্রী জ্রী নেহরুর ঘোষণা।

২৮শে প্রাবণ (১৪ই আগষ্ট): পশ্চিমবঙ্গের বর্তমান সম্ভাসঙ্গে বাজপরিস্থিতির সঙ্কট নিরসনের নৃতন প্রচেষ্টায় অপ্রভ্যাশিতভাবে রাজ্যের মুখ্যমন্ত্রী ভা: বিধানচন্দ্র রাষ্ট্রীও রাজ্য প্রজা-সমাজভন্ত্রী দলের নেতা ভা: প্রকুল্লচন্দ্র ঘোষের বৌধ বিবৃতি প্রচার।

২১শে প্রাবণ (১৫ই আগষ্ট): দেশের সর্বত্র মামুলি পদ্ধতিতে স্বাধীনতার দ্বাদশ বার্ষিকী উপ্বাপন। বহু স্থানে সভা-সমিতিতে অগণতান্ত্রিক কংগ্রেদী সরকারের তীত্র সমালোচনা।

ন্দ্য বৃদ্ধি ও ছভিক্ষ প্রতিবোধ কমিটি ২ • শে আগষ্ট হইতে বাজ্যব্যাপী (পশ্চিমবঞ্চ) আইন অমান্ত আন্দোলনের সিদ্ধান্ত গ্রহণ করার মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচক্র বায় কর্তৃক বিবৃত্তি মারকত আলোচ্য কমিটিকে সত্কীকরণ।

৩ শে স্লাবণ (১৬ই আগষ্ট): স্থপ্তীম কোর্ট ও ভারতীয় কমিশনের এক্তিয়ার সম্প্রদারণের জন্ম প্রয়োজনীয় ব্যবস্থা অবলস্থন করা ২ইটে—কাশ্মীরের মুখ্যমন্ত্রী বন্ধী গোলাম মহম্মদের ঘোষণা।

ংশে প্রারণ (১৭ আগষ্ট): পশ্চিমবঙ্গ মূল্যবৃদ্ধি ও ছার্ভিক্ষ প্রতিরোধ কমিটির প্রস্তাবিত আইন অমান্ত আন্দোলন (রাজ্যব্যাপী) পননে ১৬ জন এম, এল, এ সহ প্রোয় ছুই শত বামপন্থী নেতা ও ক্মী গেপ্তার।

বহিৰ্দেশীয়—

১লা শাবণ (১৮ই জুলাই): পূর্ব-পাকিস্তানের সামরিক কর্ন্পদের আদেশ অনুধারী ১৯৫৯ সালের ৭ই মে তারিবের শীতাহিক বসমতীর সমস্ত কপি বাজেয়াপ্ত।

পেশোয়ারে মার্কিণ ঘাঁটি স্থাপনে পাক্-মাকিণ সামরিক চুক্তি স্বাক্ষরিত হওয়ার সংবাদ।

ত্বা শ্রাবণ (২০শে জুলাই): সমগ্র জার্মাণ সমস্থার মীমাসো-করে বৃহং চতুঃশক্তি (রুশিয়া, মাকিণ যুক্তরাষ্ট্র, বৃটেন ও ফান্স) প্রবাধ্ব সচিব সম্মেলনকে আবা স্থায়ী সংস্থায় পরিণত করার পশ্চিমী প্রতাব সোভিয়েট ইউনিয়ন কর্ত্তক সরাসরি প্রত্যাখ্যান।

^{8ঠা} স্থানণ (২১শে জুলাই): ইরাকের তৈল সহরে কিরকু-এ বিদ্রোহাদের সহিত ইরাকী বাহিনীর সংগ্রাম অব্যাহত।

শ্ শানণ (২২শে জুলাই): জার্মানী প্রান্তর জেনেভার

চমু:শক্তি পররাষ্ট্র সচিবদের আলোচনার অচলাবস্থা দ্রীকরণের চেষ্টা

বর্গনার পর্যবসিত।

^{৭ই} স্রাবণ (২৪শে জুলাই): আলজিরিরার বিজ্ঞোহ দমনে ^{হুরাসী} সরকারের বৃহত্তম সামরিক অভিযান **আরম্ভ**।

^{ম্বো}য় ফেমলিনে সোভিয়েট প্রধানমন্ত্রী মঃ নিকিজা জুশ্ভেজের ^{স্কিত} মার্কিণ ভাইস-প্রেসিডেট মিঃ রিচার্ড নিকসনের সাক্ষাৎকার। ১ই শ্রাবণ (২৬শে জুলাই): আন্তর্জাতিক আইন-বিশেষজ্ঞ কমিশন কর্ত্বক তিরবতের ঘটনাবলী তদন্তের জন্ম কমিটি গঠন— চেয়ারম্যান: শ্রীপুরুগোত্তম ত্রিকমনাস (ভারত)।

১১ই শ্রাবণ (২৮শে জুলাই): রুশ কুত্রিম উপগ্রহ নির্মাণ পরিকল্পনার প্রধান অধ্যাপক এটোনি ব্লাগনরাভভের ঘোষণা— কুশিরা শীত্রই সৌরজগতের অক্যান্ত গ্রহে গবেষণার ষল্পণাতি সঞ্জিত রকেট প্রেরণ করিবে।

১২ই শ্রাবণ (২৯শে জুলাই): ছনীতিব দায়ে পূর্ব-পাকিস্তানের তিন জন প্রাক্তন মন্ত্রী (জ্ঞাওরামা লাগ---কংগ্রেস কোরালিশান সরকারভুক্ত) গ্রেপ্তার।

১৩ই শ্রাবণ (৩০শে জুলাই): বিশ্ব সমস্যাবলা সমাধানের উপায় বিবেচনার্থ সোভিয়েট প্রধানমন্ত্রী ম: নিকিছা জুন্চেভ কর্তৃক শীর্ষ সম্মেলন অনুষ্ঠানের প্রস্তাব।

১৪ই শ্রাবণ (৩১শে জুলাই): লাওদ-এ সরকারা বাহিনী ও প্যাথেট পাও বাহিনীর (বিদ্রোহা) মধ্যে পুনরায় লড়াই হওয়ার সংবাদ।

১৭ই প্রাবণ (তরা আগষ্ট): পারস্পরিক আনম্রণ অনুযায়ী ক্লশ প্রধানমন্ত্রী ম: ক্রুণ্চেভ কর্ত্বক সেপ্টেম্বরের (১৯৫৯) মাঝামাঝি মার্কিণ যুক্তরাষ্ট্র এবং প্রেসিডেণ্ট আইসেনহাওয়ার (মার্কিণ)কর্ত্বক শরংকালে সোভিয়েট ইউনিয়ন সফরের সিদ্ধান্ত ঘোষণা।

১৮ই আবি (৪ঠা আগষ্ট): বিদ্রোগী গেরিলা বাহিনীর সহিত রাজকীয় লাও বাহিনীর সংঘর্ষের পর লাওসের পাঁচটি প্রদেশে জরুরী অবস্থা ঘোষণা।

১৯শে প্রাবণ (< জ্ঞান্ত): প্রায় জাড়াই মাস জ্ঞাবিবেশন চলার পর বিনা সিদ্ধান্তে জেনেভায় জার্মাণী সম্পর্কে বৃহৎ চতুশেক্তি পররাষ্ট্রসচিবগণের সম্মেলনের পরিসমান্তি।

২২শে প্রারণ (৮ই আগষ্ট): কাশ্মীরের পাক্-অধিকৃত এলাকায় মঙ্গলাবাধ নিখাণ ব্যাপারে ভারত কর্তৃক রাষ্ট্রসংঘ নিরাপত্তা পরিষদে ভূতীয় দফা প্রতিবাদ পেশ।

২৪শে শ্রাবণ (১০ই আগষ্ট): সিদ্ধনদের জল বিভাগ সম্পর্কে ১৯৬০ সালের প্রথমার্দ্ধে ভারত-পাকিস্তান চুক্তি সম্পাদিত হইবে— লগুনে সাংবাদিক বৈঠকে বিশ্বনাংকের সহ-সভাপতি মি: উইলিয়ম ইলিকের ঘোষণা।

২৬শে শ্রাবণ (১২ই আগষ্ট): চীন কর্ত্ত্ব লাওস হইতে মার্কিণ সামরিক কর্মচারীদের প্রত্যাহার দাবী। লাওসে ফা**ন্স ও** আমেরিকার জেনেভা চুক্তি-বিরোধী ক্রিয়াকলাপ সম্পর্কে উত্তর ভিয়েৎনাম সরকারের অভিযোগ।

উদ্ধিতন চীনা ক্য়্যুনিষ্ট নেতৃর্ন্দের পিকিং-এর বাহিবে কোন স্থানে এক গুরুত্বপূর্ণ গোপন বৈঠকে নিলিত গুওয়ার সংবাদ।

২৮শে শ্রাবণ (১৪ই আগষ্ট): জাপানে প্রচণ্ড ঘূর্ণীবাত্যায় প্রায় ৫ শত লোক হতাহত—১ লক্ষাধিক গৃহ বিধ্বস্ত ও ৪২ থানি মাছধরা জাহাজ জলে নিমজ্জিত।

তেন প্রাবণ (১৬ই আগষ্ট): সন্মিলিত আরব প্রক্রাতর ও

কর্মনের মধ্যে পুনরার কূটনৈতিক সম্পর্ক স্থাপন এবং জর্মন-সিরিয়া
সীমান্ত উন্মুক্ত করার ব্যবস্থা।

৩১শে প্রাবণ (১৭ই আগষ্ট): তিববতে নৃতন বিদ্রোহের সম্ভাবনা— পাঞ্চেন লামার উপর চীন সরকারের আস্থা লোপ পাওরার স্ববাদ।



[প্4-প্ৰকাশিতের পর] মনোজ বস্থ

উনিশ

্টি ধুরির ঘেরি ঠিক করালীর উপরে নয়। করালী থেকে থাল বেরিয়েছে, যেরির বাঁধ প্রায় তার সমস্থতে চলেছে। একটা জায়গায় এদে খাল থেকে এক ডাল বেরিয়ে দেই ডাল দোলা চুকে ঘেরির ভিতর। বাঁধ দিয়ে মুখ আটকানো। বাইন গেঁরো ও বনঝাউরে আচ্ছন্ন ঐ দিকটা। চোত-বোশেখে নদীতে বান ৰুখনো ৰাঁধের ওখানটা কেটে দেয়। গাঁগ কেটে ইচ্ছা মতো যেরির থোলে নোনা জল তোলে। জলের সংক্র মাছের ডিম ও ওঁড়ো-মাছ উঠে আসে। তারাই বড় হয় যেরির ভিতর। মাছের পোনা কেনার জন্ম এক আংকো খরচা নেই এ তল্লাটে। বর্ধাকালে ভেডি জলে ভরভরতি হয়ে বায়। জল ছাপিয়ে উঠে বাইবের উপক্ৰম, মাছ र्क्षका भाव। সঙ্গে একাকার হওয়ার তথন আবার মরা-কোটালে বাঁধ কেটে দিয়ে বালের পথে জল বের করে দেয়। খুব সতর্ক হয়ে এই কাজ করতে হয়, জলের সঙ্গে মাছ বেরিয়ে না যেতে পারে। বাঁশের শলার পাটা বোনা পাকে, বাঁধের কাটা জায়গায় সেইগুলো শক্ত করে বসিয়ে দেয়। জোয়ার আসবার আগেই তাড়াতাড়ি মাটি ফেলে বাঁধ মেরামত করে বেতে হবে। নয়তো খালের জল ভিতরে চুকে জল কেঁপে ষাবে আবার। অনেক হাঙ্গামা। এবং একদিন একবার করেই হল না। সারা বর্বাকাল ধরে নজর রাখতে হয়, অনেক বার এমনি কাটাকাটির প্রয়োজন পড়ে।

বাঁধের ঠিক নিচে সেই জক্ত একটা চালা বানিরে রেখেছে। বাঁধ-কাটা লোকেরা রুটিবাদলার মধ্যে সেখানে আশ্রর নের, কোদাল রেখে তামাক-টামাক খায়। রাত্রিবেলা পড়েও থাকল বা এক একদিন। বর্ধার সময়টা ভিড় খ্ব, মাহুবের গতায়াতে সর্বদা সরগরম, পায়ে পায়ে জঙ্গলের ভিতর পথ পড়ে বায়। অক্ত সময় উকি মেরেও তাকায় না কেউ ওদিকে। জঙ্গল এটি গিয়ে পাতালতায় মধ্যে চালাখর একেবারে অদৃত্ত হয়ে বায়।

গগন দাসের আলায় ভরবাজকে সেদিন বড় খাতির করল। প্জো-আচা মিটে গেছে, ভরপেট প্রসাদ পেয়েছেন, তবু ছেড়ে দের না। নাছোড়বান্দা চাক্ল বলছে, সে হবে না ঠাকুর মশার। বউদি বলছে, ছটো চাল ফুটিয়ে সেবা করে বেতে হবে এখান থেকে। ভিটেবাড়ি পবিত্র হবে, দোবদিষ্টি কেটে যাবে। বঁড়াি ছাড়বে না, আমি কি করব? ঐ দেখেন, উন্নুন ধরাতে লেগে গেছে এর মধ্যে।

চাক্ষবালা মেয়েটা হাসে বড় থাসা, আর আব্দার করে।
আবাদের পেত্বিগুলোর মতন নয়। ছাড়বে না বথন, কী উপার দ আসবার সময় অন্ধদাসীকে বিদায় দিয়ে এসেছেন। রাত্রে আজ ভাতের গরজ নেই, ওদের ওথানে জলটল থাওরাবে, তাতেই ঢের হয়ে যাবে। কিছ গুরুতর বকমের জলবোগের উপরে আবার এই ভাত জুট বাছে। হোক তবে তাই, মা-লক্ষাকৈ না বলতে নেই।

ভরপেট খাওয়াদাওয়ার পর গড়াতে ইচ্ছে যায়। কিছ না খনেক রাত হয়েছে, দেরি করা চলবে না আর একটুও। গোপাল ভরম্বাজ ব্যস্ত হয়ে উঠে পড়জেন। সঙ্গে লোক দিতে চাচ্ছে গগন। ভরম্বাজ ঘাড় নাড়েন: নাঃ, কী দরকার। এই তো, পৌছে গেলাম বলে।

চাক্সবালা বলে, শালতিও নিয়ে এলেন না। পান্ধে হেঁটে একর্সা যাবেন এন্দ্র ?

ভ্রম্বাজ বলেন, শালতি আর চাপিনে এখন। কতটুকু বা রাস্তা প্রক্রম্বালন থাকে নতুন এসেছি তখন, জুতো পরে পরে তুলতুলে পা মাটির উপর বড়ড লাগত। এখন কড়া পড়ে গেছে। মু^{৪5} মারলেও পারে গাড় হবে না। আরও ঐ অন্নদাসীকে দেখেই হরেছে। দেখ না, সাইতলা থেকে সে কেমন রোজ ছ-বেলা ফুড়ুং-ফুড়ুং ^{করে} বাওয়া-আসা করে। সে আমার লক্জা দিয়েছে। মেরেমানবে পারে তো আমি দশাশই মরদ পারব না কি জন্তে?

গদগদ হয়ে বলেন, খুব থেয়েদেয়ে গেলাম। প্জোআচাৰ ব্যাপাৰে কি অন্ধ বকম দায়ে-বেদায়ে ষখনই দরকার হবে, আনাই ডেকো। আসব। সত্যিই তো, প্রাক্ষণ বলতে একলা আহি জ্লোটের মধ্যে—মান টানিয়ে বসে থাকলে হবে কেন, আমারও একটা কঠব্য আছে বইকি! ডেকো তোমরা, কোন বকম সজোঁ কোরো না।

. হনহন করে চললেন। কয়েক পা গিরে ভয়-ভয় ক^{বছে।} একেবারে নিশুতি হয়ে গেছে যে! বাদাবনের দিক থেকে ভ^{য়ানক} একটা **আঠনা**দ উঠল, এক রকম রাত্রিচর পাধীর ডাক ঐ ^{বৃক্ষ}। সর্বদেহ কেঁপে ওঠে। ফিরে এসে ভরখাজ বললেন, খাতির করতে চাচছ। তা বেশ, আলো ধরে একজন কেউ চৌধুরিগল্পের বাঁধে তুলে 'দিয়ে আহক। এলাকার বাঁধে উঠলেই হল, আমাদের আলা অবধি যেতে হবে না। কে যাচছ, চলে এসো। বড্ড রাত হয়ে গেছে।

পচা থাকতে অক্স কে যাবে ? পচা যেন কেনা-গোলাম। তাই বা কেন, কাজের নামে গা ঝাড়া দিয়ে আপনি উঠে পড়ে, কিছু বলতে হয় না—কেনা-গোলামে এত দূর করে না। ভরঘাজের আগে আগো আলো ধরে পচা চঙ্গল। চৌধুরিগঞ্জের বাঁধের উপর উঠে গেছে, অদূরে আলা। ভরদ্ধাজ বললেল, চলে যা এবারে তুই। আর কঠ করতে হবে না। সোজা পথ—জলকানা নেই, দিব্যি চলে যাব এইটুকু পথ।

তবু পঢ়া থাতির কবে বলে, কী দবকার! আমারই কোন প্রযুক্ত এগিয়ে দিলে পায়ে ব্যথা ধববে!

ভবদাজ চটে উঠলেন: আচ্ছা নেই-চুঙে তুই তো বেটা! বলছি যেতে হবে না, জোৱ কবে বাবি নাকি? চৌধুবি-আলায় গিয়ে বাঁতবোঁং বুঝে আসবার মতলব? চরবুতি করবার?

এত বড় অভিযোগের পর পঢ়া আবে এগোর না। রাগে গছবগ্জর করতে করতে ফিবে চল্ল।

ভবদান্তও এগুলেন না আর আলার দিকে। চুপচাপ দাঁড়ালেন। পচা নজরের বাইরে যেতে ফিরে চললেন আবার ! ডাইনে ঘ্রে বাঁধ ধবে ২নহন করে চালছেন। বান্ধের মুখে, জঙ্গলের দিকে।

কাছাকাছি এসে বাধ থেকে নেমে পড়লেন। রাত অন্ধকার, বংপাসি-বংপাসি পাছপালা। বাধের উঁচু সোজা সড়ক ছেড়ে জঞ্চলের আঁকারাকা পথে বেতে গা-ছমছম করে। উ:, সাহস বলিহারি অন্নদাসীর! অনেক দিন টালবাহানার পর শেষটা এই জারগার কথা বলে দিয়েছে। পরিত্যক্ত ঐ চালাঘরে। ঘরের মধ্যে অপেক্ষা করছে সে। জারগাটা বেছেছে অবগ ভালই—ধর্ম: যনরাজেরও খুঁজে পাবার কথা নয়।

ভবধান্তকে দেখতে পেয়ে চালাঘরের ভিতরে নয়—বাইরে বেশ থানিকটা এগিয়ে এসেছে অন্ধদাসী। হাঁ, অন্ধদাসী বই কি—মানুষ ঠিক চেনা যায় না, কাপড়-চোপড় জড়িয়ে আছে দেখা যাচছে। নি:সংশত্র হবার জন্ম ভরধাক্ষ ডাক দিলেন, কে ?

অন্ধদাসী হেসে গলে গলে পড়ছে: আমি গো—আমি এক পেনী। এত কথাবার্তা—মনের মানুষ পোড়ারমুথো সমস্ত বিশ্বরপ ইয়ে গেলি ?

নাণিকপীরের গান হয়ে গেছে সম্প্রতি গাঙ্গারে বরাপোতার। গিন্ধর বড় রকমের রোগপীড়া হলে কিম্বা গদ্ধ নিথোঁজ হলে মাণিক-পীরের নামে সির্নি মানে, পীরের মহিমা প্রচারে গানও দের স্মরিধা হলে। এর ফলে গদ্ধ নিয়ে আর কোন ঝামেলা হয় না, মাণিক-পীরের সতর্ক দৃষ্টি থাকে গদ্ধর উপর। পীরের থান থেকে বাদশানামদারের প্রতি প্রেয়সী উক্তি অনেকগুলো অম্বদাসী মনে গেঁথে বেথে দিয়েছে। বলে, পীরিতের মামুষ একেবারে বিশ্বরণ হয়ে গেছে গো। ভাবছে পেল্পী আছে দাঁডিয়ে।

বলেন, পেত্নী ছাড়া কী আর তুই। মান্ত্র হলে এবানে আসতে ডর লাগত। কান পেতে দেখ রে—পুরুষমান্ত্র হরে বুকের মধ্যে আমার ধড়াস-ধড়াস করছে। একলা মেরেমাছৰ এলি তুই কেমন করে বল দিকিনি।

একা কেনে আগব---

ভরদ্বাজ বলেন, কাকে নিয়ে আবার দল জোটাতে গেলি?
এত রঙ্গ জানিস, এমন ঘাবড়ে দিস সময় সময়—

অন্নদাসী বলছে, আসছিলাম একা একা তো—তা মরদ কেমনে টের পেয়েছে। সন্দ-বাতিক কি না—পিছু নিয়েছে কথন থেকে। থোঁড়া হয়ে তো ঘরের মধ্যে পড়ে পড়ে কোঁকার, চৌধুরিগল্প থেকে আপনার হাঁড়ির ভাত এনে থাওয়াতে হয়। হঠাং একবার পিছন ফিরে দেখি, থোঁড়া পা দিবি ভাল হয়ে গেছে; বাতাসের আগেছুটছে। বলি, আত হিংসে কিসের শুনি ? আপনার দরায় ধকন শুক্তিমুদ্ধ পেটে থেয়ে বাঁচছি—কোন দরকারে একটু জক্সলে ডেকেছেন, ভা নিয়েছুটোছুটি আত কিসের শুনি ?

রাধেন্সাম ইঠাং কথা বলে ওঠে। ঝোপের আড়ালে ছিল, উদর হল যেন মারা বলে। বলে, এসেছি তাতে কি দোব হল? দারে পড়ে আসতে হয়। একা তুই আসিস কি করে? জঙ্গলের মধ্যে ধর কোন জন্তু জানোয়ার বেরিয়ে পড়ল।

বাধেখামের পাশে আবার জগা। ফিকফিক করে হাসছে। জগা বলে, আমি মানা করেছিলাম: দল বেঁধে গিয়ে কাজ নেই তুঠুর মা। মেয়েমানুষ তুমিই বা কি জন্ম থাবে—জামরা কেউ গিরে দরকারটা শুনে আগিগে। তা নায়েব মশায়, আপনার উপর দেখলাম টান থুব। ছেলে অন্স বাড়ি রেখে রাভিরবেলা হোঁচট খেতে খেতে চলে শাসছে।



বাংশ্যাম বলে, টান বলে টান! চৌধুৰি-জালা থেকে ফিরতে এদিকে বিকেল, ওদিকে যাত তুপুর।

আরদাসী কিন্তু হাসে। রাধেখ্যামের মুখের নিন্দেমন্দ গারে মাথে না। হাসতে হাসতে বলে, তা কথাবার্তা কি আছে, বলে দেন নায়েব মশার। এতথানি পথ আবার তো ফিরে যেতে হবে।

জগা হঠাৎ ভদ্ধার দিয়ে উঠল: এই রাধে, মারধোর দিবি নে

—থবরদার! মানী লোক—ফুলতলা সদরের নায়েৰ মশায়।
গায়ে হাত না পড়ে। সঙ্গে চাকু এনেছি—জাপটে ধর, ক্যাচ-ক্যাচ
করে কান ছটো কেটে নিয়ে ছেড়ে দিই।

ভরম্বান্ধ আকুল হয়ে কেঁদে বলেন, ওরে বাবা! ধনবাপ তোরা আমার। অন্ধ আমার মা। নাক মল্চি, কান মল্চি—বার্দিগর আর এমন কান্ধ হবে না।

জগা নবম হয়ে বলে, আচ্ছা, আহ্মণ মাহুব এমন করে বলছেন— মাঝামাঝি একটা রকা করে নেওয়া যাক। হটো কানের দরকার নেই। একটা কেটে নিয়ে যাই, একটা ঠাকুর মশায়ের থাকুকগে।

কান কাটা শেষ অবধি রদ হয়ে গেল অবশ্য। চ্যাংদোলা করে ভরছাজকে আলার সামনে পুকুর ধারে দড়াম করে এনে কেলল। কেলে দিয়ে জগা আর রাধেশ্রাম সরে পড়ল। ভরছাজ সেখানে থেকে কাতরাছেন : ওরে, কারা আছিস—তুলে নিয়ে বা আমায় এখান থেকে। হাটবার জো নেই।

লোকজন এসে ঘিরে দাঁড়াল। কেউ কিছু বুঝতে পারে না। হয়েছে কি নায়ের মশায় ?

বলো কেন। পূজো করতে গিরে এই দশা। ঠাহর করতে পারিনি, বাঁধ থেকে গড়িয়ে একেবারে পগারের মধ্যে। গা গভর আর আন্ত নেই।

ছই জোনান মনদ বগলের নিচে হাত দিয়ে একরকম ঝুলিরে ভরমাজকে আলায় নিয়ে চলল। আলায় সিয়ে একটা চৌপায়ার পড়িরে পড়লেন। ক্ষীণকঠে জিজ্ঞাসা করেন, মাছের ঝোড়া সব উঠে গেছে? নোকো ছাড়বার দেবি কত রে?

এই তো, ভাঁটা ধরে গিয়ে জন থমথমা থেয়ে গেছে। উন্টো টান ধরনেই ছেড়ে দেবে।

ধরে নিয়ে আমার নোকোর চালির উপর তুলে দে বাপসকল। ফুলতলায় গিয়ে চিকিচ্ছেপতোর হইগে।

নৌকোয় তুলে দিয়ে ব্রাহ্মণের পারের ধূলো নিয়ে কালোসোনা জিজ্ঞাসা করে, আবার কবে আসা হবে ঠাকুর মশায় ?

আমি আসি কিখা অক্ত যে-কেউ আন্তক। পাশের এই ছুঁচোর পত্তন নিকেশ না করে কাজ নেই। পৈতে ছুঁরে এই দিখি করে বাছিট।

কুড়ি

কুমিরমারি থেকে সেদিন সকাল সকাল ক্ষিরেছে। কিছ তা বলে মুনাফা কিছু নেই—বলাইকে পাওয়া বাবে না। সকাল হোক আর দেরি হোক, ডিভি থেকে মাটিতে পা দিরেই চলে বাবে সে গগন দাসের আলায়। আলা আর কি জভে বলা, আলয় এখন পুরোপুরি। আলার কাজকর্ম পিরে আভ্নামছেব সেখানে। গুলের আমোদস্ভি হৈ-হল্লা—আর জগা দেখ কথার দোসর পায় না একলা খবের মধ্যে। পারে পারে সে রাধেঞ্চামের ৰাড়ি গেল। আছ কেমন রাধে ?

আলার দিক থেকে একটু বৃঝি খোলের আওয়াজ আসছিল, রাধেগ্রাম উৎকর্ণ হয়ে ছিল সোদকে। জগন্নাথের গলা শুনে চকিতে ফিরে তাকিয়ে আঃ-ওঃ করতে লাগল। তারই মধ্যে টেনে টেনে বলে, ভাল নয় গে। বিশ্বাস ভাই। সেই একদিন ছুটোছুটি করে রাগের বশে ব্রাহ্মণ নির্মাতন করে পায়ের দরদ বছ্ডে বেড়ে গেল। তার উপরে বউ জবরদন্তি করে ছটো দিন আবার জাল ঘাড়ে দিয়ে পাঠাল।

ব্রহ্মণ না কাঁচকলা! পৈতের বামুন হয় না। একটা শত্রু নিপাত হল, আর একটা ঘাড়ের উপর চেপে রয়েছে। এরা কবে বিদায় হবে, কালীতলায় ঢাক-ঢোলে পুজো দিয়ে মানত শোধ করে আসব।

রাধেশ্যাম ঘাড় নাড়েঃ না বিশ্বাস ভাই, মিছামিছি রাগ তোমার চারুবালার উপর। সকলে যায়, তুমি তো একদিন গেলে না। গিয়ে আগে নিজের চোথে দেখ—

জগা বলে, যা শুনছি তাতেই আক্রেল-গুড়ুম হয়ে যায়।
দেখবার আর সাথ থাকে না। থুড়ু ফেলবার উপায় নেই, থুড়ু নাকি
গিলে ফেলতে হবে। বিড়ি থেয়ে গোড়াটুকু হাতের মুঠোর ধরে
বসে থাক, নয় তো উঠে ফেলে দিয়ে এস সেই বাঁধের থারে।
জোরে হাসবে না, কথাবার্তা হিসেব করে বলতে হবে। পাড়ার
মত মরদ সব ভেড়া হয়ে গেছে। ছুঁড়ি কামসায় বসে চোগ ঘুরিয়ে
ঘুরিয়ে শাসন করে যেমনটা বলবে ঠিক তেননি করতে হবে।

বাধেখ্যাম হেসে উঠে বলে, প্রের ম্থে ঝাল থেয়েছ তুমি। চোণে দথে তারপরে যা বলবার বোলো। পচা-মাছের গন্ধে ভরা সে পুরানো জারগা আর নেই, একবারে ভোল পালটেছে। তধু জারগা কেন, মানুষগুলোও। বড়দা অবধি যেন আলাদা এক মানুষ। ধবধবে গোঞ্জি গারে, পান খেয়ে মুগ রাঙা, মিষ্টি মিষ্টি কথা বলে বড়দা। অভ্যেস সকলের ভাল হয়ে যাছে। আমি বলছি, গিয়ে দেখ একদিন। হাতে ধরে বলছি বিখাস ভাই।

জ্পা বলে, যাব বই কি ! গিয়ে পড়ে বাবৃইয়ের বাসা ভেডে দিয়ে আসব ।

বলতে বলতে বিষম উত্তেজিত হয়ে ওঠে: আমার ভান-হাত বা-হাত হল বলাই আর পঢ়া—হাত হখানা মূচড়ে ভেত্তে বোলআনা নিজের করে নিয়েছে। ঘরের মধ্যে একটা কথা বলার দোসর পাইনে। ও ছুঁড়িকে সহজে ছাড়ব ? কুলো বাজিয়ে বিদেয় করে দেব'আমাদের বাদা অঞ্চল থেকে।

গঙ্গবাচ্ছে কেউটেশাপের মতো। রাগের ক্ষান্তি হয় না।
বলে, তুমি এক দৈত্য মান্ন্য—নিজেব বউ পিটিয়ে তুলো-ধোনা কর—
৪ মেয়ের কাছে গিয়ে কেঁচো। হাত ধরে তুমি ওর ওকালতি
করছ। ধবর কোনটা রাখিনে ? পা ভেতে পড়েছিলে সেই খোঁড়া
পায়ে গড়াতে গড়াতে ওদের ওখানে গিয়ে উঠতে। তোমার বউ তাই
নিরে ক্যারক্যার করে, খেউড় গায়—ঘরের চালে কাক বসতে
দেম না।

রাবেখ্যামও চটোছে: ক্যারক্যার করে বৃঝি সেইজন্তে? নী জেনেভনে তুমি এক একখানা ৰচন ঝেড়ে বোসো। তুই দিন জালে গিয়ে হু-গণ্ডা কুচো-চিংড়িও আনতে পারিনি, সেইজন্যে টেচায়।
লোভী মেরেমামুদ। কুকুরের মুগে মাংস ছুঁড়ে দিলে ঘেউ-ঘেউ বন্ধ,
গুদের সামনেও তেমনি প্রসা ছুঁড়ে দিলে টেচানি থামে। সেটা
পেরে উঠিনে—অনেকদিন ভুরে বসে থেকে অভ্যাস ছেড়ে গেছে।
গভরও নেই। চৌরস বাঁগের উপরেই এক পা হাঁটতে চিড়িক মেরে
গুঠে, ঘাঁভবোঁত বুঝে ভেড়ীতে জুত করে জাল ফেলি কেমন করে?
মাগি তা বুঝনে না, আজে বাজে নানান কথা তুলে ঝগড়া করে মরে।
জগা এদিক-ওদিক তাকিয়ে বলে, বাড়ি যে একেবারে চুপচাপ!
বউ কোথায় গেল তোমার?

গেছে ঐ নতুন আলায়। ছেলে ঘুম পাড়িয়ে আমায় পাহারায় রেখে যে গিয়ে মচ্ছবে বদেছে।

की प्रर्तनान ! व्याँ।, व्यवनानी व्यवधि एक इस्त शिल ?

বাপেছান বেজাৰ মুখে বলে, ভক্ত না আবো-কিছু ! সিংসে—
বুমতে পাবলে না ? আনি কখনো কখনো গিয়ে বসতান, সেইটে আর
হতে দেবে না । আগে থেকে ঘাঁটি করে বসে আছে । কেষ্ট্রকথায়
নন বসাবে সাওবছলাত ঐ মেয়েমানুষ ? তবে একটা ভাল—
সমস্তটা দিনের পর বাড়ি এইবাবে ঠাণ্ডা । দিব্যি শাস্তিতে আছি
একলা মানুষ ।

জগাবলে, ভূমি তো জালে যাচছ না রাধে। জালগাছটা **দাও** দিকি।

রাধেখান অবাক হয়ে বলে, জালে তোমার গরজ কি জগা ?

বাইব, কা আবাব! পারিনে ভাবছ? ছনিয়ায় হেন কর্ম নেই, হোমানের জগা বিশাস যা পারে না। মাছ-মারার কাজ কত কর্মেছি! যতই কোক, কাজটা চুরি-ছাঁচড়ামি তো! এখন ভাই আর ইচ্ছে করে না।

কোঁন করে নিখাস ফেলে বাগেন্সান বলে, জগা তুমি ভটচাজ্জি সম্মন্ত । পেটে জুত থাকলে স্বাই সম্বাহরকম। মাগি এদিন চাটি চাটি ভাত এনে দিত আলা থেকে—আমিও থ্ব সাচা হয়ে ছিলান। এখন ভাত নেই—সেই জন্মে ভেলে পালটাবার দরকার। কিন্তু পেরে উঠছি নে। পা-খানা থারাপ। পা মদিই বা ভাল হয়ে যায়, অভ্যাস খারাপ হয়ে গেছে। জাল ফেলতে গা ছ্মছ্ম করে। সামলে উঠতে বেশ থানিকটা সম্মু লাগ্বে।

জগা দেমাক কবে বলে, আমার তো অভ্যাসই মোটে নেই। তবু কিছু না কিছু হবে। জাল তো নিয়ে যাছিছ, দেগো।

ারার্ছুমি বেগানে গেপানে জাল কোলেই হল না। সমস্ত পরের জায়গা—এ-লোকের ভেড়ি নয় তো ও-লোকের ভেড়ি। কোথায় ফেলরে, পাহারা কোন দিকে কনজোরি—আগের থাকতে সমস্ত জেনে বুনে নিতে হবে। দিনমানে ভালমামুব ইয়ে ঘোরাব্রি করতে হয়। গতিক বুনে নিতে ছটো-তিনটে দিন লেগে যায় অস্তত। জার ভূমি তো কোন দিন ওমুখো হও নি, প্যলা দিনেই জালগাছটা আক্রেলসেলামি দিয়ে শুধু-হাতে জাসবে। জ্গা রাগ করে বলে, জাস কেড়ে নেয় তো জরিমানার পরসা
দিয়ে খালাস করে এনে দেব। ছিঁড়ে যায় তো নিজ থরচায় মেরামত
করে দেব। মাছ সমস্ত বড়দার খাতার উঠবে, তার অর্ধে ক বখরা
হিসেব করে পয়সাকড়ি নিজের হাতে গণে গেঁথে নিয়ে আদবে। এই
চুক্তি। এর উপত্রেও মনে সন্দ থাকলে কাজ নেই। ধানাই-পানাই
না করে সোজাসজি বল। জ্লা কোথাও চেষ্টা দেখি গো।

এত স্থবিধা আর কোথার ? রাধেখাম জাল দিরে দিল। জন্মদাসীর গতর যতদিন আছে, ছুরেলা ছু-পাথর যেমন করে হোক জোটাবেই। তার উপরে হাতে-গাঁটে কিছু যদি নগদ মেলে, সেটা রাধেখাম জন্মভাবে ধরচ করবে।

বলে, জাল নিয়ে যাও জগা। একটা কথা, বখরা আমি নিজ্জে আনতে যাব না। তোমাব উপর ধর্মভাব, চোরাগোপ্তা তুমি এসে দিয়ে যাবে। মাগি হল চিলের বেহদ। টের পায় তো ছোঁ মেরে সমস্ত নিয়ে নেবে। আমার ভোগে হবে না।

জাল নিয়ে বেরিয়ে এসে তথন গুর বছ ভাবনা ঐ বে ভর্ম ধরিয়ে দিয়েছে রাধেছান—বেকুর হনার ভয়, ধয় পছে আহাম্মক বনে যাওয়ার ভয়। জাল ফেলতে জানে সে ঠিকই। অনেক বছর জাল ফেলে নি, তা ছলেও ভরদা আছে, স্তোয় আর কাঠিতে জড়িয়ে গিয়ে আনাড়ির হাতে সেনন লাঠিব মতন সোজা হয়ে জাল পছে সে অবস্থা হবে না। জায়গা ঘিরে গোল হয়েই পড়রে। কিছু ফেলে কোন জ্বায়গায়? বেখানে সেখানে ফেললেই মাছ পড়ে না। কোন ঘেরিতে কি রকম পাহারা, তারও কিছু আন্দান্ধ নেই। রাধেছাম বে তার করেছে—হয়তো বা ধয়াই পড়ে গেল। জগরাথ বিশ্বাসকে ধয়ে ফেলেছে, বাদা অঞ্চলে এর চয়ের বছ থবর কি? জঙ্গলের মধ্যে এত কাল চয়ে বেড়াছে—সরকার বাহাত্ব এত নোকো নোটরলঞ্চ মান্ত্যন্ধন পিটেল-প্লিশ নিয়েও তার গায়ে হাত ঠেকাতে পায়ে নি। আর এখানে কাল ঘেরির এলাকায় পাঁচ-দশটা মান্ত্যর পায়চারি করে বেড়াছে—তারা ধয়লে তো মুথ দেখাবার উপায় থাকবে না।

জাল কাঁধে নিয়ে জগা হন হন করে চলেছে রাস্তা ধরে। কুনিরমারি থেকে নতুন যে রাস্তা আসছে। নতুন মাটি ফেলেছে—আর ঐ চারু মেয়েটার অত্যাচারে কিছু অন্তমনস্কও বটে জগা—থোচট লাগে বারসার।

পেটের যন্ত্রণা কি মারাত্মক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন ! যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দূর করতে পারে একমার

বহু গাছু গাছ্ড়া দ্বারা বিশুদ্ধ মতে প্রস্তুত

ভারত গভঃ রেজি: নং ১৬৮৩৪৪

ব্যবহারে লক্ষণক রোগী আরোগ্য লাভ করেছেন

অল্লপুল, পিত্রপুল, অল্লপিত, লিভারের ব্যথা, মুথে টকভার, ঢেকুর ওঠা, রমিভার, রমি হওয়া, পেট ফাঁপা, মন্দায়ি, রুকজ্বালা, আহারে অরুটি, স্বন্ধানিদ্রা ইত্যাদি রোগ যত পুরাতনই ফোক তিন দিনে উপশম। দুই সন্তাহে সম্পূর্ব নিরাময়। বহু টিকিৎসা করে মাঁরা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও আক্রপ্রা সেবন করলে নবজীবন লাভ করবেন। বিফলে মূল্য ফেল্লও। ৩২ ডোলার প্রতি কৌটা ৬১টাকা, একত্রে ৬ কৌটা—৮॥ আনা। ডাঃ, মাঃ, পাইকারী দর পৃথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। ছেডঅফিস-ব্ৰব্লিশাক (পূৰ্ব্ব পাকিন্তান)

ভা তোক, বাস্তা তবু সরকাবি জারগা। হাতে তুলে জাল নাচিয়ে শব্দসাড়া করে রাস্তা ধবে যতদূর খুশি যাও, কারও কিছু বলবার এক্তিয়ার নেই। বড় বড় মেছোঘেরি ডাইনে বাঁয়ে, রাত্রে আজ জোর হাওয়া দিয়েছে, ছলছল করে জল এসে লাগে রাস্তার নতুন মাটির গারে। আঘাতে আঘাতে ফেনা উঠছে জলে। জলের উপর টেউ-লাগা সালা ফেনা আবছা আঁগারে বেশ নজরে আসে। জল আগভীর—জলের মধ্যে মাছ়। আনেকবার ঝোঁক হয়েছে, কোন এক দিকে রাস্তা থেকে নেমে গিয়ে দেয় এক থেওন। কিছু পেওনের জাল জল থেকে টেনে টেনে তুলছে—যদি সেই সময় পাহারার মামুষ গোঁরাবনের আড়াল থেকে বেরিয়ে থপ করে জালের মুঠো চেপে গরে। বড়ু অপমান।

এগিয়েই যাছে। যতন্ব সম্ভব চেনা-জানাব চৌহন্দি যাবে ছাড়িয়ে। মাঝে মাঝে জলল—ভাসিল হয় নি এখনো। হয়তো করবেই না হাসিল, ইচ্ছে করে রেখে দিয়েছে। ধানকরের চেয়ে জলকরে বোজগাব বেশি—যদি অবশু ঠিক মতো মাছ চালানের ব্যবস্তা করা যায়। বনকর আরও ভাল। রোজগারে জলকরের মতন না হোক—একটা স্থবিগ, পয়সা খরচ করে বাঁগ বাঁগতে হয় না। বাঁথ বেঁধে কথন ভাতে কথন ভাতে করে শক্ষিত থাকতে হয় না অহরহ। ক্ষেতে ধানের চারা লাগানো কিখা যেরিতে চারামাছ হোলার বাবদে পয়সা খরচ করতে হয় না। কখনো জলকর কথনো বা বনকর হ'-পাশে ফেলে জগা নিশিরাতে নতুন রাস্তা ধরে চালছে।

ধ্বধবির থাল—পূল এথনো বানানো হয় নি। ইট এনে ফেলেছে, পূল গাঁথা শুরু হয়ে যাবে থ্ব শিগগির। এমনি আরও তিন-চারটে পূল বাকি, বাঁশের সাঁকো বানিয়ে পারাপারের কাজ চলছে। ধ্বধবিতে এসে জগার থেয়াল হল অনেকটা দূর এসে পড়েছে। থাল পার হয়ে গিয়েই, মনে পড়ছে, মেছোঘেরি একটা। যা হ্বার হোক, ঐ ঘেরিতে কপাল চুকে দেখা যাবে। সভ্যিই তো, সারা রাত্তির ধবে ইটিবে নাকি? ইটিতে ইটিতে চলে যাবে সেই কুমিরমারি অবধি?

দাঁকোর উঠবে, থালের পাড়ে গোলবনের ভিতর কি নড়ে উঠল। কুমির—কুমির নাকি? বাঁশের উপর মাঝামাঝি জারগায় দ্রুত চলে এসেছে। কাঁড়িয়ে পড়ল চুপচাপ দেখানে। বাঁশ মচমচ না করে। অপেকা করছে কোন জন্ত বেরিয়ে আসে কাঁকায়। তারপরে দাঁকো পার হয়ে ছুটে পালাবে, অথবা এপাবে ফিরে মাটির চিল ও বন-কাটা গরানের ছিটে নিয়ে রণে প্রবৃত্ত হবে—সে বিবেচনা তথ্যনকার।

বেরুল জপ্তটা গোলবনের ভিতর থেকে। কুমিব নয়, বাঘ নর, তারোর নয়, এমন কি মেছো-ঘড়েল নয়—মানুষ একজন। সঙ্গে তার বেশ বড় সাইজের মাছের খালুই। খালুই হাতে করে নেয় নি। কাঁধের উপর লাঠি দিয়ে তারই ওদিকে পিঠের গায়ে ঝোলানো। বোঝা যাডেছ তবে তো চাদ, মাছে ভরতি তোমার খালুই। ভরতি এতদুর যে হাতে ঝুলিয়ে নিতে পার নি, কাঁধের উপত্রে ঠেকনো দিয়ে নিতে হচ্ছে।

রাস্তার উঠবে মামুষ্টা, জগজঙ্গল ভেঙে সোজা আসছে। জগারও অকএব খাল পার হওয়া ঘটল না, ফিরে এসে আড়ালে-আবডালে টিপি টিপি এগোচ্ছে মাহুসটার দিকে। একটা ঝোপও পাওয়া গেল, ঘাপটি মেরে আছে সেথানে। যেই মাত্র মামুষটা রাস্তায় পা দিয়েছে, জগা নাকি স্তবে বলে, চাটি মাছ দে—

মাছের উপর সকলের লোভ। বনকরের বাবু, ঘেরিওয়ালা, নোকোর মাঝি, ডাকপিওন, ডাক্তারবাবু, গুরুমশায়—মাছের নামে সবাই হাত পাতে। মানুষ ছাড়া এমন কি বাদাবনের ভূত-দানো ওঁরাও। সেইজন্ম রাত্রিবেলা মাছ হাতে নিরে মানুষ পারত পক্ষে একলা যাতারাত করে না।

माँ हि (मैं व्यागात्र-शांव।

চমক পেয়ে মানুষটা ঝোপের দিকে তাকান্স। তো-তো করে আকাশ ফাটিরে তেসে জগন্ধাথ তার হাত চেপে ধরে।

আম্বা মাছ-মাবারা সেই কোন সন্ধা থেকে জাল নিয়ে চক্ষোর দিচ্ছি—কোন ঘেরিতে কথন থেওন দেওয়া যায়। তুমি বাবা ওস্তাদ সিঁদেল—টুক করে কার তৈবি কটি ফয়তা দিয়ে এলে বল তো ?

মান্থ্যটা চটে ওঠে: ওসব বল কেন? তোমরাই বা কোন সাধুমোহাস্ত শুনি ? তুনি যা, আমিও সেই। ত্-জনেই মাছের ধান্দায় গুবছি।

জগা বলে, না সাঙাত, বিনয় কোবো না। এক খেওন জাল ফেলনি, জালই নেই তোনার হাতে, গায়ে ফ্র্লুডেয়া কাজকর্ম। মাছের ভারে পিঠ ক্রুজো হয়ে চলেছ। আর আমাদেন দেখ, কালঘাম ছুটিয়ে জাল ফেলে ফেলে মুনাফার বেলা অষ্টরস্থা। বলছ কিনা, ভুমি বা আমরাও তাই। অনেক উপর দিয়ে যাও ভূমি আমাদের।

মাতৃষ্টা দেমাক করে: গায়ে ক্র্'দেওয়া কাল্প হলে সবাই ঝুঁকত এই দিকে। কষ্ট করে জাল ফেলতে মেত না কেউ। বুকেব বল চাই বে দাদা, যেমন তেমন লোকের কর্ম নয়। টেব পেলে গাঙের মধ্যে ধরে চুবানি দেবে। গলা টিপে মেরে ফেলে ভাসিয়েও দিতে পারে জোয়ারের জলে; টানের সঙ্গে ভেসে ভেসে লাস চলে যাবে কাঁহা কাঁহা মুলুক। তরে তরে থাকতে হয় সেই জন্মে। পাড়ের জঙ্গলের মধ্যে বৃদে মশার কাম্ড থাও, আর নজর পেতে রাথ। নৌকো কাছি করল এইবারে। বেউটি-জান নামাল জলে। গাঁজা থাচ্ছে হাত-ফিরতি করে—এ-হাত থেকে ও-হাত, ও-হাত থেকে সে-হাত। পাঁচবার সাতবার চলল এইর**ক**ম। তারপর শুয়ে পড়ল। শুয়ে শুয়ে গল্প চলল, শেষটা ঝিম হয়ে আদে। তৈরি হও এবারে,—জলে নেমে আন্তে আন্তে সাঁতার কেটে এগোও। জ্ঞলে এভটুকু ভোলপাড় নেই—ভাঁটার টানে ষেমন একটানা নেমে যাচ্ছে তেমনি। জালের মাথা উঁচু করে সাবধানে তুলে ধর, খালুই পাতো ঠিক তার নিচে, ধারাল ছুরি দিয়ে পৌচ লাগাও জালে এইবাব। খলবল করে মাছ এসে পড়বে খালুইতে, কপালে থাকে তো ভরে গিয়ে ছাপিয়ে পড়বে। তিলেক আর দেরি নয়—ফেরো, ঠিক যেমন কায়দায় এসেছিলে। ষাকায় যাবে না-জঙ্গলে গা ঢাকা দিয়ে এগুবে। হাতের নাগালে পেলে বন-কাটা হেঁসো-দা দিয়ে কাঁধের উপরের মুগুখানা নামিয়ে নেবে। সড়কির নাগালে পেলে এ-ফোড় ও-ফোড় করবে। এত কণ্টের কাজ—আর তুমি বল গায়ে-🐐 দিয়ে বেড়ানো !

জগা বলে, মাছ কি করবে—বেচবে তো নিশ্চন্ন এত মাছ?
মহাজন কে তোমার, কোন খাতার নিরে তোল?

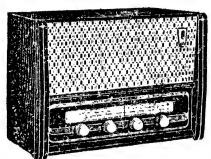
কিমশা।

স্বচ্ছন্দ জীবনযাত্রার জন্যে সুন্দর জিনিস

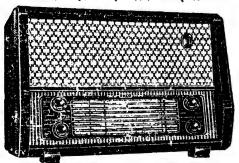
কাঙ্গে ভালো অথচ দাম বেশী নয় ব'লে ভাশনাল-একো বেভিও এবং ক্লীয়ারটোন সরঞ্জাম বিখ্যাত। আর তা-ও এত হরেক রকমের পাওয়া ধায় যে আপনি মনের মতো জ্লিনিসটি বেছে নিতে পারবেন!

गा म ना ल - अस्ति।

রে ডি ও



ক্যাশনাল-একো-মডেল এ-৭২২: এসি। ৬ ভালভ, ৩ বাণ্ড, কাজে চনৎকার, এই শ্রেণীর রেডিওর মধ্যে দেরা, 'মন্ত্নাইজড্'। দ্বাম ৩৩৫ নীট



ন্থাশনাল-একে। মডেল এ-৭৩১ : এর।

'নিউ প্রম্ব' ৭ ভালভ; ৮ ব্যাপ্ত। এর শব্দএইণশক্তি
অসামান্ত। স্বরনিয়ন্তিক আর এফ-স্টেজ সংযুক্ত,
এছাড়া এক্সটেনশন স্পীকার ও প্রামোকোন
পিক্-আপের বন্দোবন্ত আছে। 'মন্থ্নাইজড্'
দাম ৬২৫ নীট

শিল্পিটিল ক্লীন্থান্রটোন বাতি ও সরঞ্জাম

ক্রীয়ারটোন ওয়াটার বয়লার — সঙ্গে সংক গরম বা কুটন্ত জল পাওরা যায়। সাইজ: ৩.৫ ও ৮ গ্যালন। এসিতে চলে।

(BE) 8



ক্লীয়ারটোন ঘরোয়া ইপ্তি ওলন ৭ পাউও; ২৩০ ভোট, ৪০০ ওয়াট; এমি/ডিসি। ব্যাকালাইটের হাতল।

ক্লীয়ারটোন কুকিং বেঞ্চ ছটো হট্পেট ও উমুন আছে—প্রত্যেকের আনাদা কন্ট্রোন। সর্বোচ্চ লোড ৫.৫০০ ওয়াট।



ক্লীয়ারটোন বৈহ্যাতিক কেট্লি ৩ পাইট জল ধরে; জোমিয়ম কলাই করা। ২৩০ ভোটে, ৭০০ গুয়াট। এগি/ডিসি।

ক্লীয়ারটোন টুইন্ হট প্লেট রান্নার জন্মে। প্রতি মেটের মালাদা কন্টোল। ২৩০ ভোট—এদি/ডিদি। সর্বোচ্চ লোড ৩.৫০০ ওরাট।



ক্লীয়ারটোন ফোল্ডিং
ক্টিল চেয়ার ও টেবিল
নানা রঙের পাওরা যায়।
আরামের দিকে লক্ষা রেথে তৈরী।
গদি যোড়া কিংবা গদি
ছাড়া পাওরা যার।



জেনাবেল বেডিও আাও আগগায়েনেক প্রাইন্ডেট লিমিটেড ৬, ম্যাডান খ্রীট, কলিকাতা-১৬ • অপেরা হাউস, বোধাই-৪ • ১৷১৮, মাউন্ট রোড, মাজাজ-২ • ফ্রেজার রোড, পাটনা • ৬৬।৭৯, সিনভার ক্রিনী পার্ক রোড, বাঙ্গানোর • যোগধিয়ান কনোনি, চাগনি চক, দিনী • রাষ্ট্রপতি রোড, সেকেন্দরাবাদ





স্মৃতির টুকরো [প্র-প্রকাশিতের পর] সাধনা বস্থ

কুড়িট বছরের সীমানা পেরিয়ে আসার পরে আজও, রাজনর্ভকীর কথা মনে পড়লে মনের মধ্যে জেগে ওঠে বিরাট বিশ্বয়। পূর্ণ দৈশ্য ছবি রাজনর্ভকী। তিনটি ভাষায় তোলা হুরেছিল, বাঙলায়, হিন্দীতে ও ইংরিজীতে, ইংরিজী ভাষায় তোলা ছবিটির নাম দেওয়া হুরেছিল The Court Dancer. হিন্দীতে তোলা ছবিটির অবশুল কোন নাম দেওয়া হুয় নি, অবাক হওয়ার কারণ—এই



সাধনা বস্থ

পূৰ্ণ দৈখ্য ত্ৰিভাষী ছবিটির নিৰ্মাণকাৰ্য শেষ হতে এত অন্ন সমন্ত লোগতিব বা কলনা কৰা বায় না। ৰথেষ্ট নিশ্চয়তার সঙ্গে এ কথা আন্নি বলতে পারি যে আপনারাও সময়ের পরিমাণ শুনলে তার আশাতীত **অৱতা সংক্ষে কম বিশ্বিত হবেন না। বিখাস ককন—মাত্র ছ'টি মাস** লেগেছিল এই পূর্ণ দৈর্ঘ্য ত্রিভাষী ছবিটির নির্মাণকার্য সমাপ্ত হতে। এক বছর নয়, দশ মাণ নয়, জ্বাট মাণ নয় মাত্র ছ'মাণ, একটি পরে বছরের অর্থাংশ। বলুন, ভাবা যায় কি কিন্তু তবু এই অসম্ভব সস্তবপর হরেছে। অবগু আরও গভীরভাবে চিস্তার সমুদ্রে অবগাহন করলে দেখা যায় যে হবে নাই বা কেন, প্রতিটি কর্মীর অরাম্ব পরিশ্রম, অকৃত্রিম সহান্তভৃতি, আস্তরিক সহবোগিতা কি কোন মলাই वहन करत ना ? निक्तं है करत— छ। रह भृमाहीन नद्र छोत्र जोहला व्यमान बाक्न इंको। এ दिवस निष्य चामवा এখনো घरभष्ट गर्व कवार পারি যে যাদের সঙ্গে আমাদের কাজ করতে হয়েছিল, বিভিন্ন বিভাগের কর্মপরিচালনার ভার বাঁদের উপর ক্রস্ত ছিল, ছবির নির্মাণ-কার্যে বাদের পরিভামের চিহ্ন জড়িরে আছে তাঁদের কাছ থেকে জামবা সকল বিষয়ে সর্বতোভাবে সহামুভূতি ও সহযোগিতা পেয়ে এসেছি। এত অল্প সময়ের মধ্যে ছবির নির্মাণকার্য সমাপনের এই-ই হচ্ছে মুখ্য কারণ, প্রকৃত রহন্ত আসল চাবিকাঠি।

ছবির নামকরণ থেকেই অনুমান করা যায় যে, এটি এক নতাপ্রধান চিত্র, স্বভাবত:ই আমার করণীয় অংশ ছিল অনেক বেশী এক ছবিতে সর্বাঙ্গে আমার করণীর কর্নের পরিমাণও রপ্তেই। ক্রেম কলামভল্ম (Poet Vallathole's School of Dancing in South India) থেকে জয়শক্ষরকে এ জন্তে গুকরণে আহ্বান জানানো হল, দেনারিক রাজকুমারও গুরুরপেই এলেন মণিপুর থেকে। মণিপুরেরই এক রাজনর্ভকীকে কেন্দ্র করে গল্লাংশ রচিত অর্থাং গাহিনীর পটভমিকা মণিপুর, দেই কারণেই সাজসভ্যা সমস্ত সরাসরি মণিপুর (ইক্ল) থেকে আনানো হ'ল। রাজনর্তকী ধ্ধন নির্মীয়মান, সে সময় আমার নিখাস ফেলার অবকাশ ছিল না সাজসক্ষার পরিকল্পনায়, ব্যালের শিক্ষাদানে, নিজের অভিনীতব্য ভমিকার মহড়া দেওরার মধ্যে দিয়েই সময় এগিয়ে বেত জলল্রোতের মত, কোথা দিয়ে কখন যে একটি একটি করে দিন এগিয়ে যেত তা ভাৰতে পারা তো দূরের কথা, সে কথা চিন্তা করার মতও সময় মিলত না। তবে এ কথা সত্য যে, এই ব্যস্ততার মধ্যে ছিল এক বিরাট আনন্দ। এই পরিশ্রমের মধ্যে আনন্দের অংশও তো কর্ম ছিল না, প্রাণপাত পরিশ্রম করে চলেছি ঠিকই, নাওয়া-খাওয়ারও সময় পাইনি, নিয়মের জীবন তো প্রায় অতীতের ব্যাপার হংই পাড়িয়েছিল, "অবসর" বা "বিরতি"—এই জাতীয় শব্দগুলি বল**ে** গেলে আমাদের মন থেকে তথন একেবারে মুছে গিয়েছিল। কি **उत् · मिंहे अमार्य अर्थ किंहू** ज़ुला आमारिश किन, রাত, আমাদের সমস্ত প্রচেষ্টা, উল্লম. প্রোপুরি মিশিরে দিয়েছি ছবির কাজে—তার প্রধান কারণ তথ আমাদের চোথের সামনে ছিল বুক্তরা আশা, অনস্ত অপরিমিত কল্পনা—এই আশার, এই স্বপ্নের, এই কল্পনার প্রাচুর্ব আমাদের জুগিয়েছে মুঠো মুঠো প্রেরণা, অদম্য কর্মশক্তি, এগি যাওয়ার মা জৈ: বাণী।

আমার অভিনয়ের দিকেও কম দৃষ্টি ছিল না, অহীক্র চৌর্ছ এবং পৃথীরাজ কাপুরের মত স্কাদক অভিনয়শিল্পীদের সঙ্গে আর্ফ অবতীর্ণ হতে হয়েছিল। তাঁদের সন্মান, তাঁদের মধাদা, তাঁদের প্রতিভাব গগনম্পূৰ্ণী। অভিনয়কালে এ বিষয়ে আমার নিজেকে সম্পূর্ণ সচেতন রাখতে হয়েছিল। বাঙলা এবং হিন্দী রাজনর্জনীতে অহীন্দ্র চৌধুরী প্রধান পুরোহিতের ভূমিকার অবতীর্ণ হ্রেছিলেন, দি কোট ডাব্দারে ঠ্র ভূমিকায় দেখা গিয়েছিল মি: ভাল থারাটাকে। হিন্দী রাজনর্তকী এক কোট ভান্সারের নায়কের চরিত্রে দেগা দিয়েছিলেন পৃথীরাক্ষ কালুৰ, বাঙুলা **রাজনর্ভকী**তে ঐ চবিত্রে অভিনয় করে**ছিলেন স্বর্গীয়** ক্ষাতিপ্রকাশ, সেনাগতির ভূমিকার নবাগত ক্যাপ্টেন কে, এল, থাপানও স্থেষ্ট ধনাম অর্জন করেছিলেন। থাপান ছ' ফুটেবও পেনী লগু ছিলেন, তিন্দী ছবিতে দেই তাঁর প্রথম অবতরণ। থাপানের ফিট্র আরুতির এই অসাধারণ উচ্চতায় আমাকে কি রকম মুক্তিলে পুৰতে সংয়ছিল সে সম্বন্ধে বেশ একটি মজাৰ গল্প মনে পড়ছে। গালুবসের দিক দিয়ে এই গল্পের আবেদন অল্প বলে মনে হয় না। ছবিছে আমি থাপানকে চড় মার্ছি এই রক্ম একটি দুখ আছে, কিছ মুদ্ধির হল অত উ চতে আমার হাত পৌছোর না। শেবে আমাকে একটি টুলের উপর দাঁড় করিয়ে ঐ দৃগুটী গ্রহণ করা হল। ছবির মাধা সেই আশটি অত্যন্ত গুরুত্বপূর্ণ ছিল—কিন্ত আশ্চর্য এই যে, ও রকম একটি ওক্তবপূর্ণ অধাায়ের চিত্রায়ণ ষ্ট্রভিওর মধ্যে রীতিমত এক হালকৌতুকময় পরিবেশ গড়ে তুলল। থাপানের দৈহিক উচ্চতার মাত্রাতিরিক্ষেতাই এর জন্মে দায়ী নয় কি ?

অ্যান্ত শিল্পীদের মধ্যেও কয়েকজনের নাম এ প্রসঙ্গে বিশেষ উদ্ভোগের দারী নিশ্চয়ই মাথে। হিন্দী গাজনন্ত্রকী এবং কোট ভাষারে রাজার চরিত্র রূপায়ণের ভার গ্রহণ করেছিলেন মি: নিয়ামপালী (Nyampally), লেথক শ্রীমন্মথ রায় স্বয়ং রাজার ভূমিকা গ্রহণ করেছিলেন বাঙ্গা রাজনর্ত্তকীতে। শ্রীমতী প্রতিমা দাশগুপ্তও উক্তাঙ্গের অভিনয়-নৈপুণা প্রদর্শন করেছিলেন। কোর্ট ভাঙ্গারের থকা হিন্দী রাজনর্ভকীর সংলাপ রচনার ভার গ্রহণ করেছিলেন ব্যাক্রমে বিখ্যাত লেখক শ্রীডি, এফ, কারাকা এক বর্তমানকালের নিশিষ্ট প্রয়োক্তক মি: ডব্রিউ, ক্ষেড, আমেদ আন্তর্জাতিক পরিবেশন স্বত্ব নিয়েছিলেন কোলাম্বিয়া পিকচার্স, এবং রাজনর্ত্তকী (বাংলা ও হিন্দীর) পরিবেশন স্বত্ব নিরেছিলেন সম্প্রতি পরলোকগত এম, বি, বিলিমোরিয়া।

ক্রমশ: ।

অমুবাদক-কল্যাণাক বন্দ্যোপাধ্যায়।

নতুম আঙ্গিকে মিনার্ভার পুনরুছোধন

মিনার্ভা থিয়েটারের পুনরুখানের বারভায় নাট্যামোদীদের সঙ্গে শামনাও ষথেষ্ট মানন্দবোধ করছি। দীর্ঘকাল পরে লিটল্ থিয়েটার দলের স্থপরিচালনার মিনার্ভা থিরেটার দর্শক-সাধারণকে অভিবাদন জানালেন ওথেলোও ছারানটকে কেল্র করে। অভিনয়-নিপুণ এই সম্প্রদারভৃক্ত শিক্সিগদের পুরোভাগে আছেন উৎপদ দত্ত ^{এবং জ্রী}মতী শোভা সেন। মিনার্জা থিয়েটার বাঙলার গৌরব! ^{প্}ত শতাক্ষী থেকে বৰ্তমানকাল পৰ্যস্ত অসংখ্য নাটক উপহার দিরে 4:সছে এই রঙ্গমঞ্চ। এই বঙ্গমঞ্চে দেখা দিয়েছেন বছ দিকপাল শিনী, বাদেৰ কল্যাণে বাঙলাৰ অভিনযু জগতেও প্রীবৃদ্ধি হয়েছে ^{ব্র} ওণ। বাঙসাদেশের নাট্যাভিনরের উ**র**তিক**রে** সাংবাদিক ও



অক্তান্ত চরিত্রে ঃ গুবি বিধাস, কালী ব্যানার্জী, নির্থনকুষার, नुश्रति क्रोडिंकि, बनानी क्रीपूर्वी, मणि अयानी ७ कथना मुशासि।

দর্শনা ও তিয়ায় আগতপ্রায়!

শাসনভন্ত বিশেষজ্ঞদের পূর্বস্থরী প্রসন্তর্কুমার ঠাকুরের অবদান একং নাটকাভিনবের প্রতি তাঁর পৃষ্ঠপোষণার সাক্ষ্য দিচ্ছে ইভিহাস। মাতামহের নাট্যামুরাগ দৌহিত্রের অন্তবে প্রভাব বিস্তার করল। প্রসন্মারের দৌহিত্র নাগেন্দ্রভূষণ মুখোপাধ্যার নাট্যকলার প্রতি **অনুবক্ত হরে প্র**তিষ্ঠা করলেন মিনার্ভা থিয়েটার। তার পর বহু জনের অধিকারে এসেছে মিনার্ভার মালিকানা। কিন্তু মিনার্ভার **স্মষ্টির এই হ'ল আ**দি ইতিহাস। বর্তমান পরিচালকগোষ্ঠীর এই নতুন প্রচেষ্টা সর্বভোভাবে সাফস্যমণ্ডিত হোক—এই কামনাই আমরা **সর্বতোভাবে** করি। নাটকের প্রতি এঁদের **অন্তু**রাগের কথাও অবিদিত নয়, আজকের দিনে যুগের অগ্রগমনের সঙ্গে তাল তাল **রেখে মিনার্ভাও এগিয়ে যেতে থাকুক, তার ক্য়যাত্রা হোক অপ্রতিহত,** তার নাট্যসম্ভারের থাবেদন মাত্রুষের মনে রেখাপাত করুক, তার **অতীতের গরিমাকে চোখের সামনে আদর্শস্বরূপ** রেখে ভবিষাতের **জন্মে নব নব স্থারি উন্নাদনার মেতে উঠুক। আ**জকের জাতীয় জীবনে নাটকের আবেদন অপরিসীম, নাটক সংস্কৃতির এক প্রধান **অঙ্গ, জাতীর** চরিত্র গঠনে নাটকের সহায়তাও অপরিহার্ষ। বর্তমানকালের পরিপ্রেক্ষিতে, যুগোপধোগী নাট্যোপহার জাতি নিশ্চয়ই সাদরে গ্রহণ করবে-এ বিশ্বাস রাখি।

বর্তমান পরিচালকবর্গ মিনার্ভার নব নামকরণ করতে চেয়েছেন,
নটগুরু শিশিরকুমারের নামামুদারে। তাঁদের এই মহং দরুরের জন্মে
আমরা অভিনন্ধন জানাই। পরিশেবে উৎপল দত্ত এবং লিটল্ থিয়েটারের
সক্ষে সংলিষ্ট অক্সান্তদের—তাঁদের এই মহৎ প্রচেষ্টার আত্মনিয়োগের
জন্মে আন্তরিক শুভেন্ডা জানাই, আমরা দর্গতোলাবে হামনা কবি
তাঁদের প্রচেষ্টার দরীক্ষীন দাফল।

চলতি ছবির বিবরণী

কলকাতার প্রধান প্রধান চিত্রগৃহগুলিতে যে ছবিগুলি সমারোতে প্রদর্শিত হচ্ছে তাদের মধ্যে ছবি, কিছুক্ষণ, আত্রপালীর নাম বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

ছবির কাহিনী সহকে পাঠকসমাজকে নতুন করে বলার কিছু নেই। এর কাহিনীর শ্রষ্টা বাঙলার অপরাজেয় কথাশিল্পী শরংচন্দ্র। ছবির গল্পাংশ মানবীয়তার আবেদনে ভরপুর, এর পটভূমি বর্মা, বমার মাছব, বর্মার সমাজ, বর্মার জীবনযাত্রার একটি পূর্ণাঙ্গ চিত্র এই গাল্লে মূর্ভ হয়ে উঠেছে। এই মর্মস্পর্শী গল্পটি ছারাচিত্রায়িত হল নীবেন লাহিড়ীর পরিচালনায়। প্রধান ভূমিকায় অবতীর্প হয়েছেন আশীবকুমার ও মালা সিনহা, অক্তান্ত বিশেব ভূমিকায় দেখা দিয়েছেন ছবি বিশাস, বিকাশ রায় এবং অক্তান্ত বাতিমান শিল্পবৃন্ধ।

কিছুক্রণেরও গ্রাশেও জন্ম নিয়েছে বাওলার একজন স্থনামধল সাহিত্যিকের লেখনী থেকে, ছোটগল্ল হিসেবে বনফুলের দক্ষতা সর্বজনবিদিত। কিছুক্রণ ছোট গরাট স্বয়ং কবিগুক্র ববীক্রনাথকেও রথেপ্ত আনক্ষ দিয়েছে। জীবনের হাসি-কাল্লা, গান. আনন্দ, বেদনভ্বা বচিত্রাময় রূপ বনফুলের দক্ষ লেখনীর মাধ্যমে স্থানিপূণ্তার সঙ্গে ফুটে উঠেছে। পরিচালনা করেছেন লেখকের অমুক্ত অরবিক্ষ মুখোপাধ্যায়। পরিচালক তাঁর পরিচালন-প্রতিভার বর্ধাবধ পরিচর
দিয়েছেন। পরিচালক ছবিটিকে সব দিক দিয়েই পরিচ্ছন্ন, শোভন
ও চিন্তাকর্ষক করে তুলেছেন। বলিষ্ঠ আবেদন সমৃদ্ধ এই কাহিনীর
নায়ক-নায়িকার ভূমিকায় দেখা দিয়েছেন অসীমকুমার ও অক্লব্ধতী
মুখোপাধ্যায়, জীবেন বস্তু, গঙ্গাপদ বস্তু, শিশির বটব্যাল, শোভা
প্রভৃতি বিভিন্ন চিত্রে রূপ দিয়েছেন।

বৌদ্ধ্যের এক নারীকে কেন্দ্র করে গড়ে উঠেছে আম্রণালীর কাহিনী। আম্রণালী তৎকালীন সমাজের বিশ্বর, এই স্বন্ধরী নারী রূপেও যেমন অসামালা, নৃত্য প্রভৃতি গুণেও তার বথেষ্ট অধিকার। তাকে পাত্রার জন্মে বৈশালীর দনী শ্রেষ্ঠাদের মধ্যে তৃষ্ক প্রতিদ্বিতা পরিশেষে তথাগত বৃদ্ধের করুণাবারার মধ্যে জীবনের জন্তিলতা খেকে মুক্তির চাবিকাটি গুঁজে পায় আম্রণালী। এই ছবিটি পরিচালনা করেছেন শ্রিভাবাদস্বন। নামভ্মিকার অবতীর্ণ করেছেন শ্রীমতী স্থপ্রিয়া চৌধুরী, অক্সান্ত ভূমিকাগুলির রূপ দিয়েছেন ছবি বিশ্বাস, কমল মিত্র, নীতীশ মুঝোপাধাার, অসিতবরণ, দীপক মুঝোপাধ্যার, মণি শ্রীমাণী, বনানী চৌধুরী প্রভৃতি। অনিল বাগচীর সঙ্গীত পরিচালনা দর্শকচিত্রে যথেষ্ট পরিমাণ আনন্দ দেয়, গানগুলি উপভোগ্য এবং স্থগীত।

নকল 'আকাশ পাতাল', জাল 'খেলাঘর'

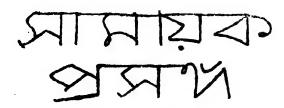
বাঙলা সাহিত্যের মহামূলা কোষাগারে **আকাশ-পাতা**ল এক উজ্জ্লতম রত্ন। আকাশ-পাতাল বাঙলাদেশে অতি প্রিয় বছ াঠিত এবং স্বনামধন্য একথানি অনবত্ত সাহিতাস্টি। প্রভা মুখোপানায় নামধারী চলচ্চিত্র-জগতের সঙ্গে সংশ্লিষ্ট এক বাহি বর্তমানে একটি ছবি পরিচালনা করছেন, যার নাম দিয়েছে আকাশ পাতাল, এ কথা বলাই বাহুগা যে আকাশ পাতাল উপস্থাস খাাতি এব: জনপ্রিয়তা এত বিরাট যে ঐ নাম শুনলে যে কো ব্যক্তিই প্রাণতোর ঘটকের আকাশ পাতাল বলেই মনে করনে এই ধারণা যে আমাদের মিথ্যা নয় তার প্রমাণ বছ ব্যক্তি : মহিলা পত্তে বা বচনে লেখককৈ আকাশ পাতাল চিত্ৰায়িত হ জেনে আনন্দ প্রকাশ করেছেন। এ ধারণাও **আম**রা করতে পারি ঐ ছবি মুক্তিলাভ করলে বহু জনে তা দেখতে ধাবেন পূর্বোক্ত ধারণ বনীভূত হরেই। বলতে গেলে, প্রাণভোব বাবুর বিখ্যাত উপস্থা নাম ভাঙ্গিরে তার জাকাশচুখী খ্যাতির স্থবোগ সম্পূর্ণ বইয়ের নাম-চু গ্রহণ করতে চেয়েছেন প্রভাত মুখোপাধ্যার। প্রাণতোর ঘটককে বিন্দুমাত্রও ক্ষতিগ্রস্ত করবে না, কিছ 🖟 মুক্তিলাডের পর দর্শক জানবেন যে ছবির আকাশ পাতা সঙ্গে এক নামটুকু ছাড়া য্ল আকাশ পাতালের কোন ি নেই অৰ্থাং ব্যবধানটাও আকাশ পাতাল। এই লেখকে^{র চ} একটি উপস্থাস "থেলাঘব" ও অক্সতম। প্রযোজক সরোজ *সেন*ং পদায় অফুদবণ কবেছেন প্রভাত মুগোপাধনারের। এমন ^{প্র} স্ভাই নিন্দ্নীয়।



শুভমুজি শুক্রবার ২৮শে আগষ্ট !

ক্রী • প্রাচী • ইন্দিরা

এবং শহরতলীর অন্তান্ম চিত্রগৃহে।



ভাকরার ভবিষ্যৎ

বিষয়ের না ফিরিভেই ভাকরা বাঁধে ফাট ধরিরছে। আপাততঃ (অরশ্ব সরকারী হিসাবে) প্রাণহানি দশ জনের (কেন্ত্রই মন্ত্রী নহেন) আর আর্থিক ক্ষতি ৫০ লক্ষ টাকাব (এক কোটিও নতে)। এখন ভদন্তের পালা। সেচ-মন্ত্রী মিষ্টাব হাক্ষিত্র মহলদ ইবাহিন ভদস্ত কমিটার জন্তু—Bade his messengers ride forth, East west and south and north, To summon his array. নল, নীল, গার, গাবাক্ষ সকলেরই তলব হইয়াছে। এই ১৭০ কোটি টাকার পরিকরনার কর্ত্তা আমেরিকান। তিনি এখন আমেরিকার ভাঁহাকে আসিতে ভার করা হইয়াছে। আর আসিবেন ক্ষেত্রন কালা বিশেষজ্ঞ। ই হাদিগের মধ্যে একজন বাঙ্গালীও আছেন—মিষ্টার এ, সি, মিত্র। এই অমুসন্ধান কার্য্যে কয় লক্ষ্যান ব্যার হইবে এবং ভাহার বিপোর্টে কি বলা হইবে—সিমেন্টের পরিবর্ত্তে গঙ্গামৃত্তিকা (অবশ্ব নেপালচন্দ্র রায়ের নহে) ব্যবহার করিলে অমন হইয়াই থাকে ?"

সধের বিচার

দ্বকারী কর্মচারীদের মধ্যে ঘ্র ও গুনীতি দমনে কেন্দ্রীয় সরকার ব নিচ্ছির বা উদাসীন নহেন, তাহা অরণ করাইয়া দিবার জন্ম মাঝে মাঝেই গুনীতি দমন চেষ্টার বিবরণ প্রকাশিত হইয়া থাকে। এক খবরে জানা গিয়াছে যে, দিল্লী প্রশাসনের বিভিন্ন বিভাগে গত মাসে ১৩ জন সরকারী কর্মচারী দণ্ডিত হইয়াছে। একজন আদালতের বিচারে শান্তি পাইরাছে, বারো জনকে বিভাগীয় দণ্ডে দণ্ডিত করা হইয়াছে। উচ্চ-নিম্ন সরকারী প্রায় সকল মহলেই যে গুনীতির প্রভাব পরিব্যাপ্ত, তাহা দূর করা খুচরা চেষ্টার কর্ম নহে। এথানেও অসতর্ক ব্যক্তিরাই বেলী ধরা পড়ে, কৌশলীদের বছ কৌশল করায়ত্ত। ভাহাদের ধরাও যেমন কঠিন, শান্তি দেওয়া আরও শক্ত। তব্ এইটুকুই সান্ধনা যে, কেন্দ্রীয় কর্তারা এই ব্যাপারে 'তেজক্রিয়' না হইলেও একেবারে উদাসীন নহেন।"

খাগ্য ও সরকার

"কথা হইল যে, জীজৈন কেবল থাজমন্ত্রীর পদ তাগে করেন নাই, তিনি প্রকারান্তরে কেন্দ্রীয় সরকার-অনুস্তত থাজনীতির প্রতি অনাহ। প্রকাশ করিয়াছেন। এথন এ অবস্থায় কেন্দ্রীয় সরকার এবং নব-নিযুক্ত থাজমন্ত্রী থাজনীতির পুনবিচার করিতে উল্লোগী হইবেন কিনা, তাহাই জানিবার বিষয়। থাজশত সংগ্রহ এবং বটনের সর্বস্তবে পূর্ণ দায়িত্ব গ্রহণ করিবার ছঃসাধ্য চেষ্টায় অগ্রসর হইলে সরকার সম্পূর্ণভাবে ব্যর্থ হইবেন, বর্তমান সম্কট তাহার স্থানিশ্চিত আভাস দিয়াছে। ক্রিলেও প্রকারান্তরে স্বীকার করিয়াছেন যে, থাজশত সংগ্রহ ও ব্রুটনের সর্বস্তবে কঠোর নিয়ন্ত্রণ-ব্যবস্থা চালু করিবার সরকারী নীতি

অবান্তব এবং অদ্বদশী প্রমাণিত হইরাছে। অভএব কেন্দ্রীর খাদ্ধন্তবের ভার নৃতন মন্ত্রীর উপরে অপিত হইলেই মুশকিল আসান হইতে পারে না। নীভিগত ব্যর্থতার ফলে যে ভূলের ফলল পর্বভপ্রমাণ হইয়া থাক্ত-পরিস্থিতিতে স্থায়ী সকট স্থান্তী করিরাছে, ভাচা ঝাড়িরা ফেলিতে না পারিলে নেহক সরকার জনসাধারণকে শক্ষামুক্ত করিছে পারিবেন না। দেশজোড়া তুর্গতির প্রতিকারের উপায় কেবল মন্ত্রীন কদল নয়, বাস্তবনিষ্ঠ নীতি নির্ণয়।"
——আনন্দ্রাক্তার প্রতিকা।

ভারত-চীন সম্পর্ক

"আমাদের দেশে এই চীনাবিরোধী কুংসা বে-পরিমাণে রটিডে পাইতেছে, ঠিক সেই পরিমাণেই আমাদেব রাজনৈতিক জীবনে মাকিণ-বটিশ সাম্রাজ্যবাদী চক্রান্তের বীক্র অপ্পরিত হইবার পুষ্টি লাভ করিতেছে। চীনকে ভারতের শত্রু প্রতিপন্ন করিতে পারিলে, দক্ষিণ পূর্বে এশীয় যুদ্ধ-জ্ঞোটটিকে এবা উহাতে সমবেত সরকারগুলিকে ভারতের মিত্ররূপে জাহিব করিবার কাজ বেশ সহজ হইয়া আসে। চীনকে ভীষণরূপে চিত্রিভ করা গেলে, প্রধানমন্ত্রী নেহরুও বার বার যে মার্কিণ-বুটিশ যুদ্ধ ক্ষেটি গুইটিকে ভারতের সার্ধকভীমদের বিক্লে উক্তত বিপদ হিসাবে চিহ্নিত করিয়াছেন সেই জোটকে এবং উঠার সরকারগুলিকে পরম স্থন্দররূপে প্রদর্শন করিবার চেষ্টা একট সহজ হয়। চীনকে হেয় প্রতিপন্ন করিতে পাবিলে, সমা**জতন্ত্রে**র প্রতি, চীনের বিপুল সমাজতান্ত্রিক সাফগ্যগুলির প্রতি ভারতের মাফুষের স্বাভাবিক আকর্ষণ এক সেই পথে চলিবার তুর্কার অন্তুপ্রেরণ অন্ততঃ ক্ষুত্র করিবার স্থযোগ পাওয়া যায়। সাম্রাজ্যবাদীরা এক: ভাহাদের ক্রীড়নকেরা সেই উদ্দেশ্সেই চীনাবিরোধী কুৎসা ও প্ররোচনার ভাল বিস্তার করিয়া চলিয়াছে। জানিয়া হউক, অগোচরে ইউক ী দ্বাঁদে যিনিই পা দিবেন ভিনিই ভারত-চীন মৈত্রী কুল্ল করিয়া যেমন এশিয়ার এবং সারা-পৃথিবীর শান্তি, গণভদ্র ও সমাজভদ্রের সংগ্রামের বিক্রাচারী হুইয়া পড়িবেন, তেমনি ভারতের স্বাধীনতা ও সার্বতেনিহতের বিরুদ্ধে সাম্রাজ্যবাদীদের চক্রাজ্মরও হাতিয়ার হইবেন।" —স্বাধীনতা।

ভাকরা বাঁধ

"ভাকরা বাঁধে বিপর্যায় ঘটিয়াছে। উহার জন্ম তদস্ত কমিটি
নিযুক্ত হইয়াছে। এই বাঁধটি বাহাদের প্রভাক্ষ তত্ত্বাবধানে গঠিত
হইয়াছিল, তাহাদেরই তুই কর্তাকে তদস্ত কমিটির প্রধান পদে
নিযুক্ত করা হইয়াছে। শুধু ভাকরা বাঁধ নয়, তুর্গাপুরেও দেদিন
ভিত্তিতে ফাটল ধরা পড়িয়াছে। উহার জেনারেল ম্যানেজারকে
ইহার পর বর্থারীতি থাতির দেখানো হইয়াছে। এই বে দেশে
নিয়ম, যে সব অপদার্থের দোবে কোটি কোটি টাকার প্রক্রেক্ত ফাটল
বাহির হইলেও তাদের বেখানে শান্তির বদলে পুরস্কার হয়, সে দেশে
সব ক্যটা প্রক্রেক্ত ভাবে বেখানে শান্তির বদলে পুরস্কার হয়, সে দেশে
সব ক্যটা প্রক্রেক্ত ভাবে নিয়াছে রাশিয়ান দল। তাহারা প্রতিটি
ছটাক সিমেন্ট, বালি প্রভৃতি নিজেদের ল্যাববেটবীতে নিজেরা পরীক্ষা
না করিয়া কাজে লাগাইতে দেয় না। ডাং মেঘনাদ সাহা এক গার
ব রাশিয়ান দলের নেতাকে এত সতর্কতার কারণ জিজ্ঞাস
করিয়াছিলেন। ভদলোক জ্বাব দিয়াছেন—সামাদের কাজে গলন
বাহির হইলে আমাদের গ্রেণ্ডেট কি করিবে জানেন ? দেয়ালের



অভ্যাশ্রহণ্য কাপড় কাচা পাউডার সাফ্রে কাচা জামা-কাপড়ের অপুর্ব শুলুতা দেখলে আপনি অবাক হয়ে যাবেন। এক প্যাকেট ব্যবহার করলে আপনাকে মানতেই इ.द (व ...

আপনি কখনও কাচেননি স্বামানাপড় এত ব্ৰব্যকে সাদা, এठ खुलाव छेष्ट्रल करत ! शाँठ, ठावत, नाज़ी, टावारल — मर्वाक्ड्र কাচার জাক্তই এটি আদর্শ !

আপনি কখনও দেখেননি এচ ফেল — ঠাতা বা গরম

sicল, কেণার পক্ষে প্রতিকূল ফলে, সঙ্গে সঙ্গে আপনি পাবেন

আপনি কখনও জানতেন না বে এত সহজে ৰাণ্ড त्मनाव कक मम्ब ! কাচা যাত্র। বেশী পরিশ্রম নেই এতে। সাফে ভামাকাপড় কাচা মানে ৩টি সহত অক্রিয়াঃ ভেডানো, চেপা এবং ধোওয়া মানেই তাপনার জামাকাপড় কাচা ছয়ে গেল।

আপনি কখনও পাননি আপনার প্রানার মূলা এত চমং-কারতাবে ফিরে। একবাব সার্ফ বাবহার কর্মোই আপনি এ কথা पान पान । पान मन हामान १९६ कांत्र अप्तार कांत्र कांत्र ।

ग्रायति विद्यारे भवध कति प्रथ्न हिंदि जाब्राकाशङ् **जश्**र्व सामा करत काठा याय

হিনুহান লিভার লিমিটেড কর্মুক প্রবুত

8U. 25-X52 BQ

সামনে গাঁড় করাইরা সোভা গুলী করিবে। থোদলা, কুনওরার দাঁই, করুণাকেতন দেন প্রভৃতির কাজের উপযুক্ত তদন্ত এবং প্রমাণিত অপরাবের কঠোর শান্তি হইলে অন্তত: ভবিব্যতের প্রক্রেক্টলা রক্ষা পাইত।" — যুগবাণী (কলিকাতা)।

উদ্বাস্থ্য পুনর্বাসন প্রাস্থ

ভাৰত সৰকাৰ পুনৰ্কাসনেৰ নামে কোটি কোটি টাকা খৰচ ক্রিতেছেন ইহা সভা; কিন্তু ৭া৮ বংসব পূর্বে উদান্তদের যে তুববস্থা ছিল, আজও তাহার বিশেষ পরিবর্তন হয় নাই। বরঞ কোন কোন ক্ষেত্রে অবস্থা শোচনীয়ত্তর হইরাছে। এদিকে সরকাব চাহিতেছেন যে, ১৯৬১ সালের মধ্যে পুনর্কাসন দপ্তর বন্ধ করিয়া দেওরা হইবে, কারণ সরকাবের মতে পুনর্বাসনের কাজ প্রায় শেষ হইয়া গিয়াছে। পুনর্কাসন অফিসঞ্জলির কান্ধ বিগত এক বৎসর ধাবং প্রায় বন্ধ আছে বলা চলে, কারণ মাঝে মাঝে বে ঋণ দেওরা ছুইত, তাহাও এখন আর তেমন দেওয়া হুইতেছে না। তনা যায় যে, কেব্রীয় সরকার যে সামাক্ত টাকা ঋণ হিসাবে দিবার জক্ত এতদঞ্চলের পুনর্কাসন অফিসগুলিতে দিয়াছিলেন তাহাও সব বণ্টন না করিয়া ৩১শে মার্চে ফের্থ দেওরা হইরাছে। অথচ শত শত উদ্বাস্থ দিনের পুর দিন ঋণের জন্ম ধন্না দিয়াছেন ও দিকেছেন। এই কাছাড় জেলাতেই সরকার অবাস্তব ও অবৈক্রানিক স্কীম করিয়া লক্ষ লক্ষ টাকা অপ্তের করিয়াছেন। আই-টি-এ স্কীম এবং সি, টি, ও ইত্যাদির क्लाकाती मकलातहे स्नाना चाहि । सनमाधातलत वर्ष याशाता अहे ভাবে নষ্ট করিয়াছে তাহাদের উপযুক্ত শান্তির ব্যবস্থা হইবে কি ? দেশ বিভাগের সময় ভারতীর নেতৃত্বন্দ পাকিস্তানের সংখ্যাসঘূদের ষে প্রতিশ্রুতি দিয়াছিলেন, তাহা শ্বরণ রাখিয়া লক্ষ লক্ষ ছিন্নমূল উদ্বান্ত नव-नातीत पर्व, शूनव्यागतनत वावशा गतकात व्यक्तित्व कक्रन-रेशहे **আন্ত** ভারত রাষ্ট্রের কর্ণধারগণের নিকট আমাদের ঐকান্তিক অনুরোধ। —যুগশক্তি (করিমগঞ্জ)।

ঝাড়গ্রামের জনস্বাস্থ্য

^{*}চিকিৎসার জক্ত সরকারী ব্যবস্থা রহিয়াছে ২∙টি বেডসমন্বিত একটি সদৰ হাসপাতাল ও একটি ডাক্তার। আউটডোরের রোগী ও হাসপাতালের রোগী দেখা ছাড়া তাঁহার উপর রহিয়াছে জেলখানার ভার ও পোটমটমের দায়িব। তাহা ছাড়া পুলিশের সাক্ষীর কথা ছাড়িরাই দিলাম। স্বাস্থ্যকেন্দ্র রহিরাছে ১৩টি, মোবাইল ইউনিট রহিরাছে ৬টি, কুর্চ ক্লিনিক বহিরাছে ২টি, মহকুমার এক্সবের ব্যবস্থা নাই, অক্সিকেনের ব্যবস্থা প্রায় থাকে না, রক্ত, মল, থৃতু পরীক্ষার সরকারী কোন ব্যবস্থা নাই। কোনরূপ মস্তব্য না করিয়া আমরা সংক্ষেপে কেবল তথাগুলি প্রকাশ করিলাম। খাতনামা প্রবীণ চিকিৎসক ডাঃ বিধানচন্দ্র বাব আমাদের মুখ্যমন্ত্রী। বিতীয় शक्ष्यार्विकी शतिकज्ञना आभारमत त्यव हरेएछए । मभाज छित्रयन, জাতীয় সম্প্রদারণ ইত্যাদি উন্নরন চলিতেছে। কাজেই ডা: বিধানচন্দ্র রার মহাশয়কে আমাদের বলিবার আর কিছু নাই, কেবল এই কথাই বলা চলে, 'মুক্তুরে মরি নাকো মোরা মারী নিয়ে ঘর করি।' কাজেই कामारमय चास्रा महेश मदकारत्व भाषा चामाहेवाव প্রয়োজন নাই। তবু অন্ধ জনগণ নাচার। তাই কুপাদৃষ্টি আকর্বণের চেটা করে।"

—নিভাঁক (ঝাড়গ্রাম)।

বথাটে ছেলের উৎপাত

দশশতি বার্ণপ্রে এক শ্রেণীর বথাটে ছেলের উৎপাতে স্থানীর ভদ্রবাজিগণ উবিয় ও শক্ষিত হইরা পড়িরাছেন। প্রকাশ বে কডিপর যুবক, অধিকাংশই অবাঙ্গালী, স্থল-কলেজগামী থেরেদের বাতারাতের পথে, গাছের উপর ইত্যাদি স্থানে ওৎ পাতিরা থাকে এবং মেরের রাস্তা পার হইবার সময় ছোট ছোট ঢিল, কাগজের টুকরো ছুঁড়িরা, শিস দিয়া অল্লীল মস্তব্য নিক্ষেপ করিয়া তাহাদের বিব্রত করিয়া তুলে। ইহারা অজ্ঞল গৃহস্থের সম্ভান, বাপের হোটেলে অল্ল ধ্বংস করিয়া বেপরোয়া উল্ভূমণতা করিয়া বেড়ায়। যুবকদের চরিক্রশতার যে কৃৎসিত চিত্র ইহাতে উল্লাটিত হয়, তাহা উপেকা করিয়ার নয়। এখনি ইহার প্রতিবিধান না করিলে সমাজজীবনকে ইহা কলুবিত করিয়া তুলিবে। কলিকাতায় ব্যাড কণ্ডাক্টের জন্ধ বে শান্তিমূলক আইন প্রচলিত আছে তাহা এথানেও অবিলম্বে প্রযুক্ত হওয়া দরকাব। আশা করি সংশ্লিপ্ত করিলাক এ বিষয়ে অবিলমে তংপর হইবেন।"

চালের চাল

"সদৰ মহকুমার আংশিক বরান্দ ব্যবস্থায় যে চাউল বরান্দ আছে তাহার দশ আনা অংশ সহরের এক লক্ষ লোকের জন্ম বরাদ করা হইয়াছে। বাকা ছয় আনা অংশ পক্লী অবঞ্চলর অর্থাং ছয় লক লোকের জন্ম ববাদ করা হইষাছে। সকলেই জানেন, সহবের লোকের ক্রয়ক্ষমতা অধিক। ততুপরি বছলোক আছেন বাঁহার খোলাবাজার হইতে অধিক মূল্য দিয়া চাল খরিদ করিলে কোন স্ম্মবিধা ভোগ করিবেন না। কিন্ত •পল্লী অঞ্চলের কথা নিশ্চরই খতস্ত্র। তাহাদের পক্ষে খোলাবাজার হইতে চাউল সংগ্রহ করা একান্ত কষ্টকর। এই অসম ব্যবস্থার প্রতিকারকল্পে অবিলয়ে পল্লী অঞ্চলের বরান্দ বৃদ্ধি করা প্রয়োজন। মহকুমা শাসক এদিকে দৃষ্টি দিলে এবং পদ্লী অঞ্চলের বরান্দ বুদ্ধি করিলে প্রভৃত উপকার সাধিত হইবে। ইহার উপর আরু একটি কথা বলিবার আছে। পল্লী-অঞ্চলে কেবলমাত্র 'ক' শ্রেণীর লোকেরা এই বরাদ ব্যবস্থার স্বযোগ পাইতেছে অথচ সহরাঞ্চল কোন ব্যক্তিক্রম নাই। পল্লী-অঞ্চলের সকলেই বাহাতে চাল পায় তাহার ব্যবস্থা করা আত প্রয়োজন। -वर्श्वमानवागी।

ৰাভক্ৰা অমৃত সমান

"ভবিষ্যৎ বংশধর যথন ইভিহাসের পাতার দেখিবে বে সামান্ত
কিছু সংখ্যক ব্যবসায়ীদের হাতে সরকারী অভিনাজ্যের চরম পতন
হইয়াছে—এই সরকার সমাজের নাম কি ভাষার উল্লেখ করিবে তাহা
কে বৃঝিতেছেন ? গাত সপ্তাহ হইতে ৩৫ মণ দরের চাউল করেব
টাকা ফ্রাস পাইতেছে। সরকারী মহলের ধারণা, আউস ধারে
আমদানীর ফলে চাউলের দাম ফ্রাস পাইয়াছে। এই ধারণার সবটুর
সত্য নহে। চলতি মরকুমে বৃত্তিপাত ও আমন ধাল্তের চাব আবাদ
প্রকাপর বৎসর হইতে ভাল হইয়াছে এবং প্রকৃতির অস্বাভাবিব
বিপর্যার না ঘটিলে আগামী অগ্রহায়ণ-পৌর মাসে ধানে দেশ ভবিষ
যাইবে। নতুন ধান উঠিলে বাজারের দাম ফ্রাস পাইবে। মহাজন
ব্যবসায়ীদের গুপ্ত ভাগেরে বে চাউল সঞ্জিত আছে বিদ ইত্যবসা

সম্পূর্ণ বিক্রেয় করিতে পারে তবে তাহাদের বড় বিপদ ঘটিবে। এই বিপদের আশঙ্কার ধান্ত চাউলের ব্যবসায়ীরা এখন বাধ্য হইরা বাজারের দাম কমাইয়া গুপ্ত সঞ্চিত চাউল থালাস করিতেছে। কিছু যদি এই গান্ত চাউলের হাঙর মহাজন ব্যবসায়ীদের ছোবল থাবলা হইতে আগামী মবন্তমের ধান্ত চাউল বক্ষা করা না যায় তবে প্রকৃতির অশেষ করুণা নিশ্চয়ই ব্যর্থতায় পর্যবেসিত হইবে। আমরা কয়েক বৎসর পূর্বে হইতে পশ্চিমবঙ্কের ধান্ত চাউল ব্যবসায় সম্পূর্ণ রাষ্ট্রায়স্ত করিবার কথ। বিল্যা আসিতেছি এবং জাতির স্বার্থে নিরুপায় অসহায় ছংগী নিশ্বনাসীর ছই বেলার ছই মৃষ্টি অল্পের স্বার্থে ধান্ত ও চাউল ব্যবসায়ীদের অতি মৃনাফার চক্রাস্ত দমন করিতে সরকারকে আবেদন ছানাইতেছি।"

নেহরু অবতার

"কর্তাভুছার দেশে সবই সম্ভব। বোপাই বিধান সভার মুগামন্ত্রী কে প্রধাকরে প্রকাশ করিয়াছেন, গুজুবাটের দাংধাদা নাম গামে একলে লোক "প্রীজওতর শক্তি মণ্ডল" নামক এক সংস্থা গঠন করিয়া ভাবংকুৰ প্রধান মন্ত্রী শ্রীজওহরলাল নেহরুকে দশম অবতার বলিয়া ্রতেলা ও জওহবলালের পূজা স্কুরু করিয়া দিয়াছে। এক দিন এই গজনাটি গাল্ধা-পুজা স্কুক হুইয়াছিল, তথন শাসন-ক্ষমতা হাতে আলে নাই। লোবতের প্রধান মন্ত্রীর গদীতে আসীন ব্যক্তিকে দশম অবতাৰ বানাইবাৰ প্ৰচেষ্টা গুজুৱাটের মাটিতে গুজুইয়াছে। কর্ত্তাভুজা দেশের প্রাত্তন শ্রোগান ছিল দিল্লীয়রো বা জগদীয়রো বা । এই স্থতি-গানে বাল্পাব দিলগোস হইত। শাসিত বিভ্রাপ্ত ইইত। কুসংস্থাব ও ৬ম-বিখাস এখনও এদেশের মজ্জাগত, তাই ব্যক্তি পুজার সাড়ম্বর মং । প্রতিনয়ত চলিতেছে। শ্রীজ্ওত্র শক্তিমণ্ডল সাধনা ও প্রচারণা রেন একট বেশী আগে স্কুক্ন করিয়া বসিয়াছেন। আগামা নির্বাচনের াল পূর্বে এটা সুকু হইলে বেশী কাজে লাগিত। সাধু সমাজ গঠন কৰিয়া ৰাষ্ট্ৰ-নেতাদের স্তবস্তুতি করার জন্ম জটাজুটধারী সন্ন্যাসীর অভাব গে-দেশে হয় না, দে-দেশে জীজভহুর শক্তি মণ্ডলের ক্রায় সংঘ গটনের লোকের অভাব হুইবে কেন ? কোথাও মা মনসার দেওয়াশীর ^{"ভং"} কাহারো বা স্বপ্রাদেশ, এমনি করিয়া গান্তন জমিয়া উঠে।"

—বীরভূমবাণী।

বাংলার হাসপাতালের অমুষ্ঠু পরিবেশ

ইণ্ডিয়ান মেডিকেল এসোসিয়েশনের বাংলা শাখার উদ্ভোগে

জন বিশিষ্ট প্রবীণ চিকিৎসক লইয়া স্পোশাল কমিটি কলিকাতার
দির হাসপাতালের প্রশাসনিক নানা গলদ ও শুখলাহীনতার
বিভিন্ন জভিযোগের বাপেক তদস্ত কবিয়া এবং রাক্ষ্য সরকারের স্বাস্থ্য
দিয়াবে অধিকর্তার কর্যকেলাপের অব্যবস্থাই সকল অভিযোগের জন্ম
মুখাত নালী—এই বিপোর্ট দাখিল কবিয়াছিলেন। হাসপাতালগুলির
ফিনেকার কতকগুলি স্পারিশ কবিয়াছিলেন এবং একটি কমিশন
গোলে নালী জানাইয়াছিলেন। সরকার সকল স্থপারিশ ও দাবী
প্রভাগনন কবিয়াছেন, সরকারের এইরূপ প্রত্যাধ্যান গণতন্ত্রবিবোরা কি না স্পোরাণী ইহার উত্তর দিবেন।

—বাঙালীসভ্য (কলিকাতা)।

সাক্রম পর্যাস্ত

ঁলজ্জার কথা রাজ্যের মহকুমাগুলির সৃ্হিত সংযোগকারী **বার মাস** চলাচলোপযোগী সভ়ক আৰু বাব বংসবেও নিশ্বাণ করা যায় নাই। আরও লজ্জার কথা, যে আসাম-মাগরতলা সভক নিশ্বাণে সরকার অব্যেধ যত্ত্ব পূর্ব সম্পন্ন করিয়াছেন : সেই সদকটি দিয়াও বীতিমত মোটর যানবাহন চলিতে পারে না। ছয় দিবসে সাত ইঞ্চি বুটি হইয়াছে ইহাই ত্রিপুবার পক্ষে যথেষ্ট্র, ধন্মনগ্র হইতে সাক্ষম প্রাস্ত যানবাহন চলা বন্ধ ছইয়া গিয়াছে। দশটি মছকুমাৰ মধ্যে সাভটি মহকুমার যোগাযোগ বিচ্ছিন্ন হট্যা আছে। যানবাছনের অভাবে শত শত যাত্রী আটক পড়িয়াই থাকে নাই, এ সমস্ত সাতটি মহকুমার জনসাধারণ ডাকের চিঠি, স'বাদপত্র পাইতেছে না, ছনিয়ায় কি ঘটিয়াছে, কি ঘটিবে তাহার কিছুই জানিবাব কোন বাবস্থাই নাই। আগরতলা-আসাম সভক যাহাকে ব্রিপুধার লাইফ লাইন বলা হয় তাহা ইতিমধ্যেই যানবাহন চলাব প্রেফ সম্পর্ণ অনুপ্রকু চইয়া গিয়াছে। সভকের অনেক স্থানেই পিচ উঠিয়া গভাব গর্ত্তের আবিভাব হইয়াছে। কালভাট নিশ্মাণে বিলপ্তেব ফলে ডাইভাশন বোডগুলি বিপক্ষনক হটয়াছে। তিন উনের বেণী মাল নিয়া ঐ সভূকে ট্রাক চলিতে দেওয়া হয় না। নোটেৰ উপৰ সভকটিৰ অবস্থা এক সঙ্কট জনক অবস্থায় আসিয়া পৌছিয়াছে। সভকটি নিম্মাণ কাদ্য সম্পন্ন হইয়াছে মাত্র কয়েক সপ্তাচ পুর্নের এব মধ্যেই ইচাব ভয়াবহ অবস্থা সম্পর্কে যে সমস্ত বিধনণ জামরা পাইতেছি তাহা উদ্বেগজনক ভ বটেই, নানা প্রকাব সন্দেহেবর উদ্রেক করিতেছে।"

—সবক (আগবতলা)।

ভয়াবহ

"পশ্চিম বাংলার বেকারের সংখ্যা ভ্রাবহরণে বৃদ্ধি পাইতেছে। বন্ধ ব্যবচ্ছেদের পর হইতে বাংলা দেশের জাবনে যে অর্থনৈতিক সমস্তার কৃষ্টি ইইরাছে তাহা বর্ণনাতাত। দিনের পব দিন এই অর্থনৈতিক সংকট জটিল ইইতে জটিলতর ইইরা উঠিতেছে। বাংলা দেশের এই সমস্তা সন্তাশয়হার সহিত কেই চিন্তা করিয়া দেখেন কিনা ভাষা আমরা জানি না। দেশে পরিকল্পনাব পব পরিকল্পনা আসিতেছে এবং ভাহার ফলে দেশের কিছু সংখ্যক য্বকগণ যে চাকুরী পাইতেছে না ভাহা নহে কিপ্ত হাহাতে সমস্তার কিছুমাত্র সমাবান ইইতেছে না। পশ্চিম বাংলার অবস্থাও সমস্তার বিচিত্র!



कालकोर अभिकाल (अभिकार) लिंड एमन-७४-२१२१ अण्डिका जः मार्डिक स्त्रं क्यू अम् मि अम-कम्प्रामिका ४४ मर अध्यक्त असे मिनका है। আমরা বছবার বছভাবে তাহা আলোচনা করিয়াছি। স্বাধীন দেশে কর্মকম প্রতিটি ব্যক্তি দেশ গঠনের জন্ত কার্জ করিয়া চলিয়াছেন এই স্বপ্ন যাহারা একদিন দেখিয়াছিলেন তাহারা আজ রু বাস্তবের ভরাবহ অবস্থা দেখিয়া বিশ্বিত না হইরা পারেন না। সমবেদনা ও সহাত্মভূতি লইরা সমগ্র সমস্তাটি দেখিলে মানুষের হুঃখ কঠ ও হুর্গতি লাঘব করা সন্তব হুইত বলিয়া আমরা মনে করি। আজ সমবেদনা ও সহাত্মভূতির অভাব সর্বত্র প্রকট ইইয়া উঠিয়াছে। সাধারণ মানুষ যে আয় করে তাহার ধারা কোন মতেই ব্যরের সহিত সামজত্ম রাখিতে পারিতেছে না। ইহারই ফলে সামাজিক নানা পাপ মানুষেরে সনাজ-জীবনে দেখা দিয়াছে। দেশের যুবকগণই স্বাধীন স্বশের একমাত্র আশা-ভরসান্তল। আখিক অন্টন ও বেকার অবস্থার ফলে দেশের যুবকগণ কোন পথে চালিত হইতেছে, তাহা বর্তমান অবস্থা দেখিলে অনায়াসে ব্রিতে পারা ধার।"

—ত্রিস্রোতা (ক্রলপাইগুড়ি)।

শোক-সংবাদ বামাচরণ ভাষাচার্য্য

গত ৩০শে জৈয়ের (১৩৬৬) ইং-১৪।৬।৫১ তারিখে ব্ধবার ইহার কানীপ্রাপ্তি হইয়াছে। পূর্ববঙ্গের অন্তর্গত ফরিদপুর জেলার আমতলা গ্রামে ১২১৬ বঙ্গাকে ১০ই আখিন ব্ধবার উক্ত বামাচরণ জায়াচাগোর জন্ম হয়। পিতা প্রবীণ খার্ত ৮শশিভ্যণ স্মৃতিতীর্থ ও মাতা ৮বামাগুন্দারী দেবীর ইনি একমাত্র পুত্র জিলেন। দেশেই তিনি বাাকরনের পাঠ শেষ করিয়া ইদিলপুরের ম্লগ্রামবানী পণ্ডিত ৮নবীনচন্দ্র তক্রত্ব মহাশ্রের নিকট জায়শান্ত্রের কতক অংশ অধায়ন



করেন, পরে ২১ বংসর বরুসে ৮কানীধামে বাইয়া সেখানকার রাজকীয় সংস্কৃত কলেজের ভারত-বিখ্যাত মহামহোপাধ্যার পশ্তিত 🗸 বামাচরণ क्रायाहाया महानारवर निकृष्ट भीर्यकाम क्रायमाख व्यथायन करतन এतः বাংলা দেশের "তর্কতীর্থ" এবং কালীধামের "কায়াচার্য্য" পরীক্ষায় প্রথম স্থানাধিকারী হইয়া উত্তীর্ণ হন। ছাত্র অবস্থাতেই তাঁহার পাণ্ডিতা ও বিচারদক্ষতা গুণে কাশীয় পণ্ডিতসমাজে তিনি থ্যাতি অজ্ঞান করিয়াছিলেন, তারপর ক্রমে কাশীস্থ বিশুদ্ধানন্দ মহাবিভালয়ে টিকমানি সংশ্বত কলেজে, রাজস্থান সংশ্বত কলেজে ও গোয়েলা সংস্কৃত কলেকে কার্যশালের অধাপনার দারা তাঁহার পাণ্ডিতাথাতি এমন বিস্তৃতিলাভ করে—যাহার ফলে কাশী হিন্দু বিশ্ববিস্তালয়ে তিনি ক্যায়শান্তের অধ্যাপকরূপে নিযুক্ত হইয়াছিলেন এবং স্বীয় কর্মদক্ষতায় মৃত্যুর কিছুদিন পূর্বের সেখানে তিনি "রীডার" পদে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছিলেন। তাঁহার অমায়িক ব্যবহার ও অধ্যাপনা-খ্যাভিতে আকুষ্ট হুইয়া ভারতের নানাদেশীয় বহু ছাত্র তাঁহার নিকট আসিয়া অধায়ন করিয়াছেন এবং ভাঁছাদের মধ্যে অনেকে উত্তম অধ্যাপক হইয়া কর্মক্ষেত্রে প্রতিষ্ঠিত হইয়াছেন। কাশী বিশ্বৎ পরিবদের পশ্তিতমণ্ডলী তাঁহাকে "ছায়ারণাকেশরী" উপাধি দিয়াছিলেন। এই পণ্ডিত মহাশয় ক্রায়শাল্পের অনেক গ্রন্থের প্রাঞ্জল ব্যাখ্যা করিয়া বিভার্থীদিগের বিশেষ উপকার সাধন করিয়াছেন। ইহার স্বাস্থ্য অভি উত্তম ছিল এবং শেষ পর্যাস্তও যুবকের ক্সায় কর্মশক্তি বর্তমান ছিল। স্থানীর্ঘকাল যাবং কাশীধামে বাঙ্গালী নৈয়ায়িক পণ্ডিভগণেব ষে প্রাপত্ত গৌরবধারা প্রবাহিত ছিল, সম্প্রতি এই বামাচরণ পণ্ডিত মহাশয়ের ভিবোধানে দেই ধারা লুগু হইল। ইহা পণ্ডিত-সমান্তের অপুরণীয় ক্ষতি। হার ভাগাবতী পত্নী মাত্র হই বৎসর পুরুষ কানীখামই দেহত্যাগ করিয়াছেন। ইহার পাঁচ পুত্র, চার করা ও কতিপয় পৌত্ৰ-পৌত্ৰী দৌহিত্ৰ-দৌহিত্ৰী বিজ্ঞমান। করুণাম্য বিখনাথ এই শোকসম্ভগু স্বজনবর্গের শান্তিবিধান কক্ষন।

উপেক্সনাথ সাঝাতুষণ

বাঙ্গোদেশের স্থপ্রব শিক্ষাত্রতী সিটি কলেজের ভৃতপূর্ব সহাধ্যক্ষ বিশিষ্ট সূথী উপেক্ষনাথ সাখ্যাভৃষণ গত ৪ঠা প্রাবণ ১২ বছর বহারে দেহরক্ষা করেছেন। জীবনের একটি বিরাট অংশ ইনি সিটি কলেজের সহাধ্যক্ষরণে অতিবাহিত করেছেন। একাধিক পাণ্ডিভাপূর্ণ গণ্ডের ইনি প্রকে বিশেষ আসনের অধিকাবী। শিক্ষাজ্ঞগতে শ্রুর অক্লাস্ত সেব। একে শ্রুরণীয় করে বাগ্রে। ইনি বাজা শশিভ্ষণ রাষের পুত্র।

যোগেজকুমার চট্টোপাধাার

সাধকনাম। বঙ্গজননাব আবেও একজন স্থাবীণ সন্তানের জাবনাবসান ঘটল। চন্দননগরের যোগেন্দ্রকুমার চটোপাধারে ১০ বছর বয়সে গত হলা প্রাবণ শেষ নিংখাস ত্যাগ করেছেন। সা বাদিকভার ক্ষেত্রে এঁর স্থানাম সর্বজনবিদিত। স্থানেথক এবং সুপ্তিত হিসেবেও ইনি প্রভৃত স্থানের অধিকারী ছিলেন।

পাঠক-পাঠিকার চিঠি

"ৰৌদ্ধ পঞ্চশীল"

বিগত সংখ্যার পত্রদাতা ও লেখকের মতে, 'ঐতিহাসিকগণ বৈদিক হুগুৰ বয়ক্তম নিৰ্ণয় করেছেন খুঃ পুঃ ১৫০০ হ'তে খুঃ পুঃ ৫০০ পাশ্চাতা পণ্ডিত মহাশয়দের স্কুলপাঠ্য भारका अधि के পুস্তকের উচ্ছিষ্ট। ডা: স্থরেন্দ্রনাথ সেন এবং দু: সুনীতিকুমা চট্টোপাধ্যাসের মতে বৈদিক যুগ খৃঃ 👯 ২৫০০ চইতে থুঃ পুঃ ১২০০ বংসর। ডাঃ হালিদাস নাগ ঝবেদ-সংহিতার কাল থৃ: পু: ২৫০০ বৎসর ্ব অন্যান্ত স'হিতাব কাল পু: পু: ৮০০ বংসর ধরা হ'রেছে। প্রথাত মনীষী স্বর্গত রায় যোগেশচন্দ্র বিজ্ঞানিধি মহাশয় দেবতা ও কৃষ্টিকাল নামক গ্রন্থে লিপিবন্ধ কলছেন যে, থা: পা: ৮০০০ (আট) হাজার অব্দে বৈদিক ঋষিদের অংশ্বানের পরিচয় পাওয়া যায় ! শ্রীশীলানন্দের বর্ণিত শতকে বৈদিক কাল ও আর্যগণের ভারত আগমন স্থুলপাসি পুস্তকের অসার উপকথা মত্র, তা প্রম প্রক্ষেয় স্বামী অভেদানন্দ তাঁর বহু মূল্যবান পুস্তক 'ভবতীয় সংস্কৃতি'তে প্রমাণ করেছেন। তথাকথিত 'Aryans' রে বৈদিক আর্য এক নয়। Aryans-রা মহা ভসভা ও বর্বর অবস্থায় ভারতে প্রবেশ করে। এদের শ্বারা বেদও বৃচিত হয়নি। পাৰ এই Aryans-বাহিভাৰতীয় আৰ্ধ জাতিৰ অঙ্গীভূত হয়ে যায়। কে'ন কোন পাশ্চাতা পণ্ডিত যেমন Sir John Marshale অরুক্প মত অনুমোদন করেছেন। বৈদিক কাল গণনার প্রাচানতা দম্বকে মতেজ্যোদড়ো ও হারাপ্পা এক উজ্জ্বল দৃষ্টাস্ত । স্বর্গত রায় বাহাত্বর ব্যাপ্রসাদ চন্দ বলেন, মতেস্বোদড়ো 'প্রণিদের নগরী। Rev. Father Heras বলেন, এই নগরী দ্রাবিষ্টদের। অবশু তিনি স্কুমেরিয়ানদের নগৰী বলেও অনুমান করেছেন। 'পণি' ও 'দ্রাবিড়' যাই চোক 'পণিরা' ^{বৈশিক} বৈশ্য **সমাজে**র লোক। 'ঐতবেয় ত্রাহ্মণে' ক্রাবিড়দের পরিচয় "'৭য়া যায়। 'দ্রাব দিড়ম-সাম' গাঁরা গান করতেন তাঁরাই কালক্রমে ^{'দ'্রভ'} হয়েছেন। এ ছাড়া যে সকল গৌরীপট্ট সংযুক্ত শিবলিঙ্গ, ^{ক্তম্ম} শনসমাধির বিবরণ উদ্ধার করা হয়েছে এগুলি যে বৈদিক ^{ক্রাদ্র} অনুকৃতি এবং দ্রাবিড়ের বৈদিক আর্যাদের**ই যে একটি শা**খা ^ত স্বামিন্সী 'ভারতীয় সংস্কৃতি'তে বিশদ আলোচনা করেছেন। অতএব শিদ্ধ সভাতার বর:ক্রম কাল যদি আরুমানিক থৃ: পৃ: ৫০০০ হতে 😘 🔈 বংসরও ধনা যায়, তা হলে বৈদিক আর্যদের প্রাচীনছের পরিধি ৰাবও বিশ্বতি লাভ ক'বল I

ব্রহ্মপদবাচক বা ব্রহ্মের উপাধিবাচক শব্দ যা ক্রড়বাদীদেব প্রব্রানশৃষ্ট মন্তিকে প্রবেশ লাভ ক'রতে পারেনি। ধরা 'যাক ইক্সপদের দুষ্টান্তটি। "শান্তদৃষ্টা উপদেশো বামদেববং।।" ১১১৩০ ॥ ব্রহ্মস্থেতা। এই শ্লোকের তাংপর্য—ইন্দ্র ব'লেছেন—'আমিই প্রাণ, আমিই প্রজ্ঞানা, আমাকেই জান।' একথা তিনি নামদেব ঋষির জ্ঞার 'শান্তদৃষ্টা তু উপদেশঃ' জনুসারে ব'লেছেন। জর্খাং ব্রহ্মসাকাংকারের পর 'ইন্দু' ব'লতে স্বতন্ত্র পদার্থ আর থাকে না। ইন্দ্র তথন পর্বজ্ঞানা। লেথক আরও ক্রেনে রাখুন—বেদের ভাষাই নেদান্ত ও উপনিষদে। আবার বেদ বেদান্ত ও উপনিষদের ভাষাই বেদান্ত ও উপনিষদে। আবার বেদ বেদান্ত ও উপনিষদের ভাষাই বলা যেতে পারে শ্রীমন্তাগবতকে। পাশ্চাতা পণ্ডিতগণের ব্যাখ্যান্ডন্ন মনে বেদার্থের সতা-জ্ঞান বা উপলব্ধির স্থান নেই। প্রজ্ঞানের আলো বাতিরেকে এ সকল শ্রুভি-শ্বৃতি গ্রন্থের অর্থ অন্থ্যানন ক'রতে যাওয়া বিড্ছনা মান।

শুদ্র অভীতে কালেই পঞ্চনীল মন্ত্র।" (বস্তমভী, আষাত্র, পূর্চা ৫৫১ প্রষ্টব্য।) লেগকের এই নাটকোচিত বাচনভঙ্গী বেশ বর্ণাল এবং প্রশাসনীয় সন্দেত নাই। লেগক ইতিহাসায়গ ব্যক্তি। আতি বৃদ্ধিমান দেগকের হাতে এ বিষয়ে তথাকথিত ইতিহাসের নজির আছে। তবে তৃঃথের বিষয়, তথাকথিত ইতিহাস যে নিরপেক্ষ অন্তান্ত সভাস্তান্ত কলি এই অপবাদ ইতিহাসের কোন ছাত্রই তাকে দিতে পারবে না।।নর্ভেলাল চিত্তে লেগক একটি কথা জেনে রাখুন—তদানীস্তান কালে উত্তর-ভারতের স্থানে স্থানে যদি হিন্দুধর্মের কিছুটা বিকৃতি সাধন ঘটে থাকে তদ্ধারা ব্রহ্মবাদী সমগ্র ভারতের অবলুন্তি ঘটান যে বিশেষ অভিসন্ধিম্লক এ বিষয়ে কোন সন্দেহ নেই। অত্যাব ভারত যে তথান কতটা 'তৃষিত' চাতক হ'য়ে উঠেছিল একথা বলা স্থকটিন।

এখন দেখা যাক ধোগবাশিষ্ঠ রামায়ণে ও শ্রীমন্তাগবতে বৃদ্ধ প্রসঙ্গ । অমরকোমে বৃদ্ধ শব্দের অর্থ বৃদ্ধ:—সর্বেজ্ঞ:। অদ্যুর্বাদ)। কিন্ত ঐতিহাসিক বৃদ্ধ অন্তয়বাদী নন শূক্সবাদী। যোগবাশিষ্ঠেব ও শ্রীমধাগবতের বৃদ্ধ হ'লেন স্থবাচার্য বৃহস্পতি। তিনি 'একদা শ্রুতি-বহিভুতি হেতুবাৰ-সম্বিত গুঁশান্ত রচনা করেন। বৌদ্ধশান্ত নামে তথন তা খ্যাত হয়। "জ্ঞিন ধর্ম্ম সমাস্থায় • -বেদবাখান পবিজ্ঞায় ঠেতুবালসম্বিতান ।।"—মাহত্যে, ২৪ অধ্যায় দ্রষ্টবা। যোগবাশিঞ্চ বৈরাগ্য প্রকরণে, ১৫।৬—১• শ্লোকের তাংপয্য— আমি বৃদ্ধদেবের ন্সায় শাস্তভাবে সর্বভ্তেই আত্মবং ব্যবহাব (বা সর্পভ্তে আত্মজানের সাধনা) করিতে ইচ্ছা কবি। ঐতিহাসিক নৌদ্ধগর্মে 'আত্মজানের' আছে निर्तानयुक्तित गामना। - "We have সাধনা নেই। seen that Buddha said that there was no atman (soul) -A History of Indian Philosophy-Dr. S. N. Dasgupta.—দুষ্টনা। প্রীমন্ত্রাগ্রত বলেন— 'বৃদ্ধকৃত নিবাশবশাস্ত্রম। তং দলি: শাস্ত্রকাবৈ: পণ্ডিত অগ্রাহ্মন 🖰 ফলতঃ বৃহস্পতি নামধের, বৃদ্ধের শাস্ত ছাড়া ঐতিহাসিক বঞ্জের নিবীশ্ববাদ 'মর্ক্রি: শান্তক্রি: পণ্ডিতম্ ভ'তে যার্নি। যদিও ভারতভূমি থেকে বৌদ্ধর্য উচ্ছেদের জন্ম প্রধানতঃ শঙ্করাচার্যকেই

দারী করা হর—ইহাও সম্পূর্ণ সন্ত্য নর।...It will be wrong to say that he (Sankara) routed the Buddhists by his philosophical arguments.—The cultural heritage of India.—Prof. H. Bhattacharjee, M. A. B. L. বৌদ্ধপর্শের উচ্চেদের জন্ম আবে আছে কুমারিল ভটের উল্লেখ। অতথ্য পর ধারা সৈর্শৈং শান্ত্রকারৈ: 'ঐতিহাসিক' মত হ'তে পারে না।

আমাদের প্রাচান মহর্ষিদের 'জন্মকাল' সম্বন্ধে শ্রীশীলানন্দের কাছে পাঠ গ্রহণের প্রয়োজনীয়তা মনে কবি না। তবে বৃদ্ধ নহর্ষি পতঞ্জলিব काष्ट्र स अने। वकथात जिल्लाभ जातात अनुस्य ताहे। जेहा लागरकत्र **স্বকপোলকল্পিত দিবার্ধ হা। 'বৌদ্ধই' ও বিরাট্য স্থাতি বলতে লেথক** কি বুঝেন ? শুধু নাটকোচিত আবেগ স্বাস্ট্রব লেগকের 'বিক্লোরণ' বাস্তব ইতিহাস নয়। বাস্তব ইতিহাসের চন্মা এটে লেখক এবার দৃষ্টিপাত করুন-স্ব 'Ism' তা ধনীয় আর political ভোক মতপাথকা থাকলেও তাব ভিত্রের সত্যের ই স্থ Ism এব follower দেব ভাতে প্রতি প্রবন্তী কালে অপমত। ঘটে। শ্রুরাচাধ বা কুমাবিল ভট নয়। নির্বাণমুক্তির নামে পববতী কালের যখন ভিক্স-ভিক্ষ্ণীগণ ব্যভিচারের স্রোতে গ' ভাসিয়ে দিল এবং সমাত অশোক ও স্থবর্ণ নেব পরে ভারতের জাগ্রত ক্ষাত্রশক্তি (গুপু সাল প্রভৃতি) নির্বাণমুক্তি জাতীয় জাবনের অমুপযুক্ত বলে গ্রহণ ক'রল ও বাস্তববাদা মুসলমানদের বর্থন ভাবতে আগ্রমন ঘটন, তথ্ন ভারত থেকে অবলুপ্তি ঘটল বৌদ্ধর্মেন। বড়ই ছঃখের সাথে বলতে বাবা হচ্ছি যে, বর্ডমান জগতের আনচিব থেকেও বৌদ্ধল্পত নবজাগ্রত কাল-ধর্মের হাতে অবলুপ্ত হ'তে চালাছ। চ'ন ও তিক্তে তার দৃষ্টান্তস্থল। বৌদ্ধ বার্মা, সি হল, থাইলাও ' গ্রাম), কামোডিয়া ইত্যাদি রাজে। অভিন্স পঞ্চীল সভিন্স ভায়ে ডঠেছে। শীলানন্দের সংশ্বৃতিব বিরাট আগবিক বিক্লোরণ এখন শুক্তে বিলান হ'তে চ'লেছে। এই ভিসাই আজ জগতকে ধ্পের পথে এগিয়ে নিয়ে চলেছে অবিধান গতিতে। আৰু ভগত চায় না ধর্ম। চায় মহাবুভুক্ষাৰ থাঞ্চপানায়। এই হুদিনে অতাতেৰ বস্তু নিয়ে শীলানন্দ বা বজানৰূদের মধা-যুগ-স্থলভ বাক-যুদ্ধে কোন সভা নিণীত হবে না। অতএব আমাদের 'পঞ্চনীল' সাধনাব এথানেই সমান্তি ঘটক।— হেম সমাজধার।

व्यानमञ्जावन हर्ल्

"মাসিক বস্ন্মতাতে" মাসে মাসে প্রকাশিত কবিকর্ণপুরের "আনন্দব্দাবন চম্পু" গ্রন্থের স্বললিত অনুবাদ পাঠ কবিয়া অতিশয় আনন্দলাভ কবিতেছি। আপনার বঙ্গানুবাদ ত আদৌ অনুবাদ বলিয়া মনে হয় না। নৃতন মৌলিক কাবা বলিয়াই মনে হয়। বেমন মধুর কুফলীলা কাহিনী চিনকালই স্নমধুব, তেমনি আপনার অনুবাদেব ভাগা মধুব হইতেও মধুব; এ ভাষার মন্দাকিনী-ধারা তরতর বেগে প্রবাহিত হইয়া পাঠককে অমুত্রসে অভিসিঞ্জিত করে। কবি কর্ণপুরের নাতিপ্রাঞ্জল সংস্কৃত্তের প্রতিটি ভাব ও ব্যন্তনা আপনার অনুবাদ-ব্যাখায়ে স্মুম্পন্ঠ হইয়া উঠিয়াছে। অনুবাদের এই ভাষা সাকুবনাড়াব বৈশিষ্টাই বজায় রাখিয়াছে।

কিছ এই সম্পর্কে আমার একটি নিবেদন আছে। কবি কর্ণপুর গোস্বামী প্রণীত "আনন্দবৃন্দাবন চম্পু" মূল সংস্কৃত গ্রন্থ বাজারে আর পাওয়া বার না। আপনি এই গ্রন্থ পুস্তকাকারে প্রকাশের সময় বদি এই অফুবাদেব সঙ্গে মৃল সংস্কৃত চম্পুকাব্যটি প্রকাশ করেন, তাহা হইলে সোনায় সোহাগা হয়, কবির কাব্যরস আস্বাদনের তথা আপনার কৃত অফুবাদের বৈশিষ্ট্য বৃষ্মিবার বিশেষ স্মবিধা হয়। সঙ্গে এই লুগুপ্রায় বৈক্ষবগ্রন্থকে বৈশ্ব-সমাজে পুনরায় উপগাপিত করা হয়। আনাব এই নিবেদন, আপনার প্রণীত সকল অনুবাদ সম্বন্ধেই প্রযোজা জানিবেন। আশা করি আমার নিবেদন কার্যাকর্বা করিবেন। শ্রীবিপিনবিহারী দাস, গড়বেতা, মেদিনীপুর।

পত্ৰিকা স্মালোচনা

আমি মাসিক বস্থমতীর এক জন নিয়মিত পাঠিকা, এই মাসিক বস্তমতা প্রস্তৃটি আমার খুবই ভাল লাগে, অতাতে প্রকাশিত শিল্লি লেথক-লেখিকাদের উপক্যাস পড়ে থব খুসী হয়েছি। বিশেষ করে। আশুতোষ মুখোপাধ্যায়ের পঞ্চপাব কথা উল্লেখযোগ্য। সাহিত্যে ক্ষেত্রে এটি একটি উল্লেখযোগ্য সংযোজন। আন্ততোধ মুগোপাধানের নতন উপকাস আবার মাসিক বন্ধমতার পাতার দেখতে চাই। সম্প্রতি মাসিক বস্তুমভীতে প্রকাশিত স্কলেথা দাশগুপ্তার 'বর্ণালী' ও সাত্যকিং 'অনিকেত' থুবই ভাল লাগছে। হিমানাশ গোস্বামীর ভ্রমণ কাহিন'ট পড়েও দেশ সথক্ষে নোতুন করে অনেক কিছু জানতে পারলায বার্ণার্ড শ'র জাবনী পড়ে খুবই খুদা হচ্ছি। ভবিষ্যতে এই রক্ষ পৃথিৱা-বিখ্যাত লেথকদের জাবনা মাসিক বস্তমতীর পাতায় দেগতে পেলে আনন্দিত হবো। বাতিঘরের চতুর্থ পর্ব আবার করে বে হবে ? তবে একটি বিষয়ে আমার অভিযোগ আছে। সেটা গছে আন্তজাতিক পরিস্থিতির বিষয়ে। এই বিভাগটি উঠিয়ে দিলেন কেন ? এর পুন:প্রবর্তনের ব্যবস্থা করুন।—অর্জাল সেনভপ্ত, ১৪৫, ১৪ বোদ: কলিকাতা।

গ্রাহক-গ্রাহিকা হইতে চাই

Please receive the annual subscription for another year. Kindly send the magazine regularly.—Head Master, Govt. High School, Haflong.

Herewith Rs 15/- being the subscription for Masik Basumati for one year. Please send it from the Jaistha number.—Manager, New Chunta T. Estate, Darjeeling.

আগামী ৬ মাসের জন্ম চালা পাঠাইলাম। দয়া করিয়া নির্মিত মাসিক বস্তমতী পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।—Mrs. Bani Chakravorty, Ahmedabad.

Remitting herewith Rs. 15/- as my annual subscription for the ensuing season,—Ambujaksha Mahanty, Purulia.

মাসিক বস্ত্রমতীর আবাঢ় '৬৬ সংখ্যা থেকে মাথ '৬৬ পর্ব: ও

চালা বাবল ১০০ টাকা পাঠালাম। নির্মিত পত্রিকা পাঠারেবি
ব্যবস্থা করবেন।—শ্রীমতী চাপারাবী মণ্ডল—মেদিনীপুর।

Payment of annual subscription for Masik Basumati—Vani Sen Gupta.—Bombay.



र फिला त्रस्या ही। जान

- ---

র**ঙ-বাহার** অন্যাপক (ব্যৱসাধ চৌধুন) অন্ধিত

সভীশচন্দ্র যুখোপাখ্যায় প্রতিষ্ঠিত



৩৮শ বর্ধ—ভাদ্র, ১৩৬৬ |

॥ স্থাপিত ১৩২৯॥

[প্রথম খণ্ড, গে সংখ্যা

কথামূত

ভোমাদের পূর্বপুক্ষবেরা আত্মার স্বাধীনতা দিয়াছিলেন, তাই ধর্মের উত্তরোম্ভর বৃদ্ধি ও বিকাশ হইরাছে। কিন্তু তাঁচারা দেহকে যত প্রকার বন্ধনের মধ্যে ফেলিলেন, কাজে কাজেই সমাজের বিকাশ হইল না। পাশ্চান্ত্য দেশে ঠিক ইহার বিপরীত—সমাজে যথেষ্ঠ স্বাধীনতা —ধর্মে কিছুমাত্র নাই। ইহার ফলে ধর্ম নিতান্ত অপরিণত ও সমাজ স্ক্রম উন্ধত হইয়া দাঁওাইয়াছে।

প্রাচ্য ও পাশ্চান্ত্যের আদর্শ ভিন্ন ভিন্ন। ভারত ধর্মসুপী বা শক্তমুপী, পাশ্চান্ত্য বহিমুপী। পাশ্চান্ত্য দেশ ধর্মের এডটুকু উন্নতি করিতে হইলে সমাজের উন্নতির ভিতর দিয়া করিতে চায়, আর প্রাচ্য এট্টুকু সামাজিক শক্তিলাভ করিতে হইলে তাহা ধর্মের মধ্য দিয়া লাভ করিতে চার।

এই কারণে আধুনিক সংস্কারকগণ প্রথমেই ভারতের ধর্মকে নষ্ট না করিয়া সংস্কারের আর কোন উপার দেখিতে পান না। তাঁহারা উহাব চেটা করিয়াছেন. কিন্তু ভাহাতে বিফলমনোরথও হইয়াছেন। ইচাব কারণ কি ? কারণ, তাঁহাদের মধ্যে অভি অর্মংখ্যক ব্যক্তিই বাঁহাদের নিজের ধর্ম উত্তমরূপে অধ্যয়ন ও আলোচনা করিয়াছেন—আর তাঁহাদের একজনও 'সকল ধর্মের প্রস্কৃতিকে' বুঝিবার জন্ম যে সাধনা প্রয়োজন, সেই সাধনার মধ্য দিয়া বান নাই। ইন্দরেজছার আমি এই সমস্তার মীমাংসা করিয়াছি বলিয়া দাবী করি। আমি বিদি, হিন্দুসমাজের উন্ধৃতির জন্ম ধর্মকে নষ্ট করিবার কোন প্রয়োজন নাই জ্বং তিন্দুর ধর্ম গ্রাচীন রীতিনীতি ও আচারণভতি প্রস্কৃতি সমর্থন

করিয়া রভিয়াছে বলিয়া যে সমাজের এই অবস্থা তাহা নহে, কিছ ধর্মকে সামাজিক সকল ব্যাপারে বেভাবে লাগানো উচিত, তাহা হয় নাই বলিয়াই সমাজের এই অবস্থা।

একটি কাঠথগুকে উহার আঁশের অনুকৃষ্ণে বেমন সহজে চিক্সি।
ফেলা যায়, হিন্দুধর্মকেও তেমনি হিন্দুধর্মের মধ্য দিয়াই সংস্থার করিতে
হউবে; নব্যভান্ত্রিক মতবাদের মধ্য দিয়া নহে। আর সেই সঙ্গে সংস্কারগণকে প্রাচ্য ও পাশ্চাত্য উভয় দেশের সংশ্বভিধারাকে নিজ্ জীবনে গ্রহণ করিতে হউবে।

থাটি চরিত্র, সভ্যকার জীবন, যাগা শক্তির কেন্দ্র এবং দেব-মানবথের মিলনভূমি—তাহাই পথ দেখাইবে। ইহাদিগকে কেন্দ্র করিয়াই বিভিন্ন উপাদানসমূহ সভ্যবদ্ধ হইবে এবং পরে প্রচণ্ড ভরন্তের মত সমাজের উপর পভিত হইয়া সব কিছু ভাসাইয়া লইয়া ষাইবে, সমস্ত অপবিত্রতা ধুইয়া দিবে।

এই অবস্থা ধীরে থীরে আনিতে হইবে—লোককে অধিক ধর্মনিষ্ঠ ছইতে শিক্ষা দিরা ও সমাজকে স্বাধীনতা দিয়া। প্রাচীন ধর্ম হইতে এই পুরোহিতের অভ্যাচার ও অনাচার ছাঁটিয়া ফেল—দেখিবে, এই ধর্মই জগতের সর্বশ্রেষ্ঠ ধর্ম। আমার কথা কি বৃফিতেছ? ভারতের ধর্ম লইরা সমাজকে ইউরোপের সমাজের মত করিতে পার? আমার বিশাস ইছা কার্যে পরিণত কর। খুব সম্ভব, আর ইছা হইবেই ছইবে।

—चामी किरकामध्यम सामी

तात्रानी क्ताभीत युद्ध भतिछानवा

ঞ্জীনগেন্দ্রনাথ ভট্টাচার্য্য

বিলো ভীত, যুদ্ধবিমুখ, ভেতো বালালী, বালালী ওধু
কাদতেই জানে, বালালী সামরিক জাতি নয় ইত্যাদি জজজ্ঞ
মিধ্যে অপবাদ এই বালালা দেশের অধিবাসীদের নামে পুঞ্জীভূত
হয়ে আছে। কিন্তু বালালী যে ভীক নয়, সমরবিমুখ নয়, স্পুর
জতীতের মহাভাবতের মৃগ থেকে বৃটিশ শাসনের অথম মৃগ পর্যান্ত
বালার ইতিহাসই তার সাক্ষা। বালালার মৃত্যুভয়-সেশহীন বিপ্লবী
যুবকদলই তার প্রত্যক্ষ প্রমাণ।

বৃটিশ আমলের বাংলার ইতিহাস আলোচনা কবলে আমরা দেখতে পাই, বাঁলালীর এই মিথো অপনাদের মূলে রয়েছে ইংরেজ। ইতিহাসে বাদের কিছুমান দেখল আছে তাঁরাই জানেন একদা ভারতে ইংরেজ রাজত্ব প্রদারের প্রধান সহায়ক হতেছিল এই অসামরিক বলে উপেক্ষিত বালালী ও মাল্লাজী সিপাহীবাই। বৃটিশ আমলের গোড়ার দিকে একদিন এই ইংরেজরাই বাঙালীর সমরকুশলভাব প্রশাসা করেছেন। কে এবং ম্যালিসন প্রভৃতি ইংরেজ প্রতিহাসিক তংকালীন অনেক মুছে ইংরেজগণ যে ভদু বালালী ও মাল্লাজা সিপাহার বীরণেই জয়লাভ করেছেন একথা মুক্ত কঠে ত্বীকার করে গেছেন। সে মুগে ইট্ট ইজিয়া কোম্পানী কর্তৃক অনেক বালালী ধোদাকৈ বীরণের জন্ম যে ইংলিশ নামক জারগীর প্রদান্ত হয়েছে ভারও প্রতিহাসিক নজির আছে। কিছ পরবর্তী মুগো রাজনৈতিক উদ্দেশসিদ্ধির জন্ম এই ইংরেজই আবার বালালীকে সমর বিভাগ থেকে স্বিয়ে প্রকেবারে কেরাণীতে পরিণত করেছে।

ৰুটিশ আমলে অক্ত সৰ প্ৰদেশ থেকে শিক্ষাদীকা এবং শিক্ষ-কুশলতায় বাঙ্গালীই ছিল অগ্রণী। বাঙ্গালীর দেশপ্রেম, স্বাধীনতা লাভের স্পাঠা এবং বিপ্লবী মনোভাবই হল ইংরেজের ভয় ও আশস্কার কারণ। নিরক্ষর, ও অনগদর রাজনৈতিক চেতনাহীন ভিন্ন প্রদেশবাসীকে বান্ধানী প্রভাব থেকে মুক্ত রাখবার জন্মই ইংরেজ তাই স্থকৌশলে তাদেব সরিরে দিলে সমর বিভাগ থেকে। তথ সরিরে দিয়েই ক্ষান্ত হল না, বাঙ্গালী প্রভাব থর্বে করবার সর্বাপ্রকার কুট কৌশনও অবলম্বিত চল। কাৰ্জ্মন কৰলেন বাংলার অঙ্গচ্ছেদ, হাডিঞ্জ वाःना थ्यत्क मितः व निजन वाक्षानी, मर्वतन्य माक्षानाक कार्यम করলেন কমিউক্তাল ৭ওয়ার্ড। সিপাঠী বিদ্রোক্তের পূব সৈক্তদলে লোক নির্বাচনের কড়াকড়িটা আরো বেড়ে গেল। ফলে সিপালী যুদ্ধে বারা ষোগ দেয়নি এমন অঞ্লেব লোক ছাড়া সমর বিভাগে অন্য সকলেই হয়ে পড়ল অবাঞ্চনীয়। অর্থাৎ কেবল মাত্র সীমান্ত প্রদেশ, পাঞ্চাব, নেপাল প্রভৃতি রাজনৈতিক চেতনাশুর কয়েকটি প্রদেশের অধিবাসী ছাড়া অন্ত সব প্রদেশবাসীকেই বাঙ্গালীর মত সরিয়ে দেওয়া হল অসামবিক পর্যায়ে। স্বতরাং সেনা বিভাগে সামবিক বা অসামবিক ব্রাতি এই কুত্রিম বিভেদ স্পষ্টিব উদ্ভাবক যে ইংরেজ এবং তার রাজনৈতিক মস্তিষ্ক একথা আজু আরু কাউকে বুঝিয়ে বলা নিশুরোজন।

বাঙ্গালী যে অসামরিক জাতি নয় এবং কোন কালেই সমর্বিরুখ ছিল না, হিন্দু যুগের অতীত ইতিহাস ছেডে দিয়ে শুধু নবাবী আমলের শেষ ও বৃটিশ শাসনের প্রথম যুগের ইতিহাস আলোচনা করলেও তার ষধন্ট নজিব পাওরা বায়। তথনো বাংলার ঘরে ছিল শক্তিচ্চা বাংলার লাঠিয়ালের প্রতাপ দে যুগে লোকের মনে ত্রাসের সঞ্চার করত। বাঙ্গালী আছাবিমৃত জ্ঞাতি, বাংলার কোন ইতিহাস নেই। তাই আজ নিছক আছালা ও আছাবিবরণ-সর্বস্থ মুসলমান বা ইউরোপীর প্রতিহাসিকদের বর্ণনাই বাঙ্গালার ইতিহাস সংকলনের একমাত্র অবলম্বন। এ সব বর্ণনার মধ্যে কদাচ কথনো প্রাসৃত্র ক্রমে বাঙ্গালী হিন্দুর যে ভিটে-কোঁটা আলোচনাটুকু পাওয়া যায় ভাই হয়েছে এখন আমাদের ইতিহাস রচনার অকিঞ্ছিকর পাথেয়।

মুসলমান ঐতিহাসিকদের বর্ণনায় পলাশীর যুদ্ধের সময়ে সিরাজ-দেনাপতি মোহনলালের কায় আরো তিন জন বাঙ্গালী যোগার নাম পাওয়া বাস কিন্তু তুর্ভাগ্য বশতঃ তাঁদের বংশপ্রিচয় বা কীর্ত্তিকলাপের বিস্তম্ভ বিবরণ কিছুই জানা যায় না। এ তিন জনই ছিলেন আলীবর্দির জামাতা পুর্ণিয়ার নবাব সইদ আহম্মদের সামবিক বিভাগের উচ্চপদ্ কর্মচারী। গোলন্দাজ বিভাগের অধিনায়ক ছিলেন লালু হাজারী এবং বেছন বিভাগের অধাক্ষ ছিলেন খামস্তব্দর নামে জনৈক বাঙ্গালী কায়স্থ। এ ছাড়া নবাবের দেহরক্ষী বাহিনীর অধিনায়কও ছিলেন একজন বাঙ্গালী যোগা, তাঁব নাম মিতনলাল। সইদ আহমদের অপদার্থ ও আহম্মক পুত্র সওকং জঙ্গ অতি তৃচ্ছ কারণে প্রধীণ সেনাধ্যক্ষ লালু ছাজায়ীকে বর্থাস্ত করলে লালু হাজায়ী মূর্শিদাবাদ দুৰবাৰে গিয়ে নৰাৰ সওকং জঙ্গেৰ হুনীতি ও খামখেয়ালীৰ কথা জ্ঞাপন করেন। মূর্লিদাবাদ ও পূর্ণিয়া দরবাবের বিশিষ্ট ব্যক্তি মাত্রেই এই প্রবীণ তোপাধ্যক্ষের পদচ্যতিতে মশ্মানত হন এবং সওকতের আহম্মকী এবং অদূরদর্শিতার নিন্দা করেন। লালু হাজারী বা মিতনাল সম্বন্ধে মুসলমান ইতিহাসে এর বেশি আর কিছুই জানা ৰায় না। তৰে কভখানি বিশ্বস্তৃতা ও সামবিক যোগ্যতা থাকলে সেই মুসলীম প্রভূত্বের যুগে কোন বাঙ্গালী হিন্দুর পক্ষে নৰাবের দেহবক্ষী বাতিনী বা গোলন্দাজ বাতিনীর অধিনায়কত্বের মত সামরিক উচ্চপদ লাভ দম্ভব ছিল তা সহজেই অনুমেয়।

সে মুগো দেশবাসীর মধ্যে শরীরচর্চ্চা, অন্নচালনা বা বাহিনী পরিচালনা শিক্ষার একটা স্বাভাবিক বেওয়াজ ছিল। কেন না, মোটায়্টি এসব গুণ আয়ন্ত না থাকলে নবাব সরকারের অসামরিক বিভাগেও রাভারাতি উয়তি লাভের ক্রয়োগ ঘটত না। এ জন্ম নবাবী আমলে দেওয়ান তহনীলদার প্রভৃতি অসামরিক সরকারী কর্মচারীদিগকেও সময়্র সময় দক্ষ সেনাপতির মত বাহিনী পরিচালনা করতে দেখা যায়। দৃষ্টাক্তম্বরূপ দেওয়ান দয়ারাম, জানকীরাম, রাজা রাজ্বল্লভ, রাজা হুর্লভরাম, মহারাজ নক্ষ্কুমার প্রভৃতির নাম করা যেতে পারে। এরা সব অসামরিক কর্মচারী হয়েও অনেক সময় দক্ষ সেনাপতির মত সৈম্ম পরিচালনাও করেছেন। এই প্রসক্তে আমরা পূর্ণিয়া সরকারের গোললাক্ষ বিভাগের কেরাণী ভাষস্কর্মরের যুদ্ধ পরিচালনার কাহিনী উল্লেখ করব।

নবাব আলিবর্দীর ভিন কন্তার মধ্যে বড় ঘসেটি বেগম ছিলেন নিসেন্তান। মেজ আমিনার ছই পুত্র সিরাজ ও এক্রামদ্দোলা এবং ছোট মেরের পুত্র হলেন সওকং জন্ম। পিতা সইদ আহাত্মদের মৃত্যুর পর সঙ্কং পুর্বিরার নবাবী তক্তে বসলেন। সওকং এর মত ভীক্ষ আহামক, আকাট মুর্খ আর নেশাথোর নবাব মুসলমান ইতিহাসে ধুব কমই দেখা বার। সওকং নিজের নাম স্বাক্ষর করতে গলদবর্ম হরে পড়তেন। এক এক সময় দলীল দন্তাবেক বা কারমানে স্বাক্ষর করতে গিরে বিরক্ত হরে কলম ছুঁড়ে কেলে সিংহাসন থেকে সরে বসতেন। সকল রকম কুক্রিয়া আর পাপাচারে সিরাজের সমগোত্রীর হলেও সিরাজের বে বৃদ্ধি বা বিবেচনাশক্তি ছিল, সওকতের মধ্যে তার চিক্রমাত্রও ছিল না।

আলিবদীর মৃত্যুর পর মীরজান্দর, রায় ত্র্রাভ, জগংশেঠ প্রভৃতি বিরোধীদল সিরাজকে সরিয়ে এই সওকতকে মূর্শিদাবাদের সিংহাসনে বসাবার জন্ম একটা বড়বন্ধ পাকিয়ে তুললেন এবং এই মর্শ্বে সওকতের নিকট একটা গোপন পত্রও প্রেরিত হল। মনে হয়, সিরাজের বিরোধীদল তথনো সঙকতের স্বন্ধপটা ঠিক জানতেন না, জানলে তাঁরা এমন নির্বাধিতা করেজন বলে মনে হয় না।

এদিকে মুর্শিদাবাদের আমীর ওমরাহগণ তাঁকে বাংলার মদনদে বদাতে চায়, একথা জেনে দগুকতের মাথা ঘুরে গেল। চারদিক থেকে ইয়ার চাটুকারের দল উন্ধানি দিয়ে আহাত্মক নবাবকে আরো কাঁপিয়ে তুললে। সওকং গোঁকে চাড়া দিয়ে ইয়ার বঙ্গুদের মধ্যে তাঁর খোয়াবী উচ্চাকাজ্ফা ঘোষণা করতে লাগলেন—বাংলা জয় করেই তিনি অযোধ্যার নবাব ও বাদশাহের উজীর গাজীউদ্দিনকে পরাজিত করে দিল্লী দথল করবেন। তারপর দিল্লীর তক্তে একজন পছলসই লোককে বদিয়ে লাহোর এবং কাব্ল পার হয়ে একেবারে মুদ্র গোরাদানে গিয়ে রাজধানী স্থাপন করে বদবাস করতে লাগলেন। কেননা, বাংলার জলবায়ু নিতাস্তই অস্বাস্থ্যকর। এরক্ম অস্বাস্থ্যকর আবহাওয়ায় তাঁর মত উচ্চমর্য্যাকাসন্মে লোকের বসবাস অসম্ভব! দেশগুদ্ধ লোক আহত্মক নবাবের এবব প্রসাপোক্তিক্তনে হেসে অস্তির হল।

সন্তজ্ব বাংলার নবাবী তক্ত লাভের জক্ত সওকং ইতিমধ্যে বছ লক্ষ টাকা উপদৌকন দিয়ে দিল্লীর বাদশাহের নিকট খেকে স্ববে বাংলা-বিহাদ-উড়িয়ার নবাবী পদের একটা ফারমান জোগাড়ও করেছিলেদ, বদিও এ কারমানের বিশেষ কোন গুরুষ ছিল না, কেন না ফারমানের নিচে স্বাক্ষর ছিল উজীরের। বাদশাহের কোন স্বাক্ষর ছিল না। ফারমানে সিরাজজোলার সমস্ত সম্পত্তি এবং বার্ষিক এক কোটি টাকা রাজস্ব দিবার সার্ভ্র সত্তকং সমগ্র বন্ধ, বিহার, উড়িয়া দখল করে নিবেন এগপ আদেশ ছিল।

একদিকে মুর্শিদাণাদ দ্ববাবের বড়যন্ত্রকারী আমীর ওমরাহদলের গোপনপত্র আর একদিকে বাদশাহী ফারমান, এর ওপর আবার চাট্ট্রার ইয়ার বঙ্গুদলের উন্ধানি। মূর্থ সওকৎ একেবারে আজ্ঞাদে আটখানা। পূর্ণিয়ার দ্ববারে বসেই তিনি নিজেকে বাংলার নবাব বলে ঘোষণা করলেন। তারপর মুর্শিদাবাদে সিরাজকে লিখে গাঠালেন—বাদশাহী ফারমান বলে এখন আমিই বাংলার আগলনবাব। তুমি ভাল চাও তো সিংহালন ত্যাগ করে মুর্শিদাবাদ ছেড়ে এখনি চলে বাও। কিছ ছ সিয়ার, যাওয়ার পূর্বে আমার কর্মচারীদের বাজকোবের অর্থ ও মূল্যবান হীরা জহরৎ বৃথিয়ে দিরে বাবে। আমি ইচ্ছে করলে তোমার মাধাটা এখনি ক্যাচাৎ করে কেটে ফেলতে পারি কিছ ভূমি আমার মাল্ডুডো ভাই, নেহাৎ

আশ্বীর; তাই ঐ নৃশ্যে কান্ধটা আর করলুম না। ভাল মান্ধবের নিত্ত মসনদ ছেড়ে বলি ঢাকা চলে যাও, ভোমার জল্প ভাল মাসোয়ারা মঞ্ব করন। অবিলয়ে এ পত্রের জবান চাই, আমি ঘোড়ার রেকাবে পা তুলেই আছি, জবানে বিলম্ব হলেই মুর্শিদাবাদ আক্রমণ করব।

মুর্শিদাবাদ দরবারে এ পর পৌছলে সেখানে প্রথমে একটা হাসির ধুম পড়ে গেল। দরবারের প্রধানগণ ইতিপূর্বেই পদচ্যত প্রবীণ গোলন্দাজ সেনানায়ক লালু হাজারী মারফং সওকং জঙ্গের আসল পরিচয় পেয়েছিলেন, এক্ষণে সিরাজের কাছে লিখিত পরের বয়ান দেখে সওকতের চরিত্র ও আহাম্মকী সম্বন্ধ তাঁদের আর কোন সন্দেহ বইল না। সকলেই সওকতের ধৃষ্টতার উপযুক্ত জবাব দেওৱার ব্দুরু দুচ়সন্তর জানালেন। বিরাট ছুই দল ফৌব্দু মুর্লিদাবাদ থেকে পুর্নিয়ার পথে বওনা হল। একদলের পরিচালক স্বয়ং নবাব, মীরজাফর থাঁ, দোস্ত মহম্মদ থাঁ, মীরকাজেম থাঁ, দিলার থাঁ, আসালৎ থাঁ প্রভৃতি বাংলার শ্রেষ্ঠ সেনানায়কগণ অপর দল পরিচালনা কর**লেন** বা**জা মোহনলাল এবং ভার বীর অমুগামিগণ। নবা**বের **আদেশে** পাটনা থেকে সদলবলে অগ্রসর হলেন। পাটনার নায়েব নাজিম রাজা রামনারায়ণ। পুর্ণিয়ার প্রবীণ সেনানায়কগণের পরাম<u>ণাত্মপারে</u> সওকং জঙ্গও নবাবগঞ্জ ও মণিহারীর মধ্যবর্তী অঞ্চলে প্রাকৃতিক পরিথার শ্রায় চারদিক কর্দ্দাক্ত বিলে পরিবেষ্টিভ উঁচু জায়গায় সেনাসন্নিবেশ করেছিলেন। এই সেনাব্যহের মাঝখানে স্থাপিত হল সওকৎ জঙ্গের শিবির। একটিয়াত্র সঙ্কীর্ণ পথ ছাড়া এই স্ববৃক্ষিত স্থানে গমনাগমনের অন্ত কোন উপায় ছিল না। এই সঙ্কার্ণ পথমূথে মুষ্টিমেয় সৈৱসমাবেশ দারাই অনারাসে সিরাজের বিপুল বাহিনীর গতিরোধ করা যাবে ভেবে পূর্ণিয়ার প্রবাণ সেনানায়কগণ স্থানটি নির্বাচন করেছিলেন। কিন্ত এমন অনুকৃল পরিবেশে ব্যহ রচিত হওয়া সল্পেও মুর্খ নবাবের ভীকতা ও বৃদ্ধির দোবে সমস্তই বানচাল হয়ে গেল।

রাজা মোহনলাল ভাগীবথী পার হবে পুর্নিয়ার পথে সিরাজের অগ্রগামী বাহিনীসহ আবরি ও মণিহারী মধ্যস্থ হলদিবাড়ী নামক স্থানে এসে উপস্থিত হলেন। সেটা ১৭৫৬ সালের নভেম্বর মাস। গঙ্গার পাহাড়ের ওপর সেনা-সন্ধিবেশ করে মোহনলাল দেখলেন, সেখান থেকে সওকজ্ঞের শিবিরের ব্যবধান মাত্র ছই কোশ। সওকত্বের শিবিরের স্বরক্ষিত অবস্থান এবং পুর্ণিয়ার গোলন্দাজ বাহিনীর সতর্ক দৃষ্টির মূথে জলাভূমি মধ্যস্থ সঙ্কার্ণ পথ দিয়ে অখারোহী বাহিনী চালনা বিপজ্জনক বুরে মোহনলাল শক্রবাহিনীকে বিপর্যান্ত করার জন্ম সেখান থেকেই শক্রব্যুহের উপর প্রচণ্ড গোলাবর্ধনের আদেশ দিলেন।

সওকং জ্বের শিবিরে তথন নাচ-গানের মহড়া চলছিল।
জকমাৎ গোলাবর্ধনের ফলে সেখানে হলুমূল পড়ে গেল। বে বেদিকে
পারে ছুটে পালাবার উল্লোগ করল। শক্রকে বাধা দেওছার পরিবর্জে
বে বার মাধা বাঁচাতেই ব্যস্ত। একটি গোলা এসে একেবারে
সওকতের শিবির-প্রান্তে পড়ল। আর যায় কোথায়? ভয়ে
বিহবল সওকং তাঁর মাহী পতাকা নামিয়ে ফেলবার আদেশ দিলেন,
জমুচদ্বদের তাঁর শিবিবের আশে-পাশে ভিড় না করে দ্বে সরে
বাওয়ার জক্ত বার বার ধমক দিতে লাগলেন। কারণ তাঁর ধারণা
হল বে হাইী পভাকা এবং লোকজনের ভিড়ের জক্তই শক্তপক্ষের

🅦 তাঁর শিবিরের প্রতি আরুষ্ঠ হয়েছে। সভকতের সেনানায়করাও পুরে দুরে সব নিশেষ্ট, কেউ কোন ছকুম দিছে না। কোন আদেশ না পেরে পুণিয়ার গোলকাজ বাহিনীও হাবুব মত নিশ্চল। **সওকৎ শি**বিরের বিশু**ম্ব**লা ও ভী**ভি**বিহ্ব**ল**তার স্বৰোগ বুঝে বিচক্ষণ ৰোহনলাল এই সময়ে ধীরে ধীরে অতি সম্ভর্গণে তাঁর অখারোহী বাহিনীকে সেই জলাপথ মধ্যবন্তী সন্ধার্ণ পথ দিয়ে পরিচালিত করলেন। মোহনলালের অঞ্চারোচী বাহিনী জলাপথ পাব হয়ে একবার এ পারে এসে পড়কে যে সভকতের সমগ্র বাহিনী বিপন্ন হয়ে পড়বে, কারো পালাবারও উপায় থাকরে না, একথা তথন কেউ ভাবছে না, শত্ৰুকে বাধা দেওয়াৰ পৰিবৰ্ত্তে সবাই তথ্য শত্ৰুগোলাৰ **হাত থেকে আত্ম**রক্ষার জন্মই ব্যস্ত। রণক্ষেত্রের এই ঘোরালো 🐿 সঙ্কটজনক পরিস্থিতি উপলব্ধি করে পুণিয়ার গোলন্দাব্ধ বাহিনীর বেতনাধ্যক্ষ বাঙ্গালী শ্রামস্থলর আর স্থির থাকতে পারলেন না। অবিলয়ে মোহনলালের অগ্রগামী অভারোহী ৰাহিনীর গভিরোধ না করলে সমূহ বিপদ বুনে তিনি কাহারও আদেশের অপেকা না করেই কয়েকটি কামান ও গোলনাঞ **দৈক্ত সহ বাঁটি ছেড়ে এক মাইল এগিয়ে গিয়ে শত্রুপক্ষে**র উপর **গোলাবর্ণ আরম্ভ করলেন। এই আক্রমণের ফলে মোহনলালের অখারোহী বাহিনার অগ্রগতি রুদ্ধ হল এবং সন্তুক্ত পুণিয়া বাহিনীর** মধ্যেও কিছুটা মনোবল ফিবে এল। এর পর উভয়পক্ষের মধ্যেই কিছুক্ষণ চললো প্রচণ্ড গোলাবর্ষণ, উভয়পক্ষেই বছ লোক হতাহত হতে লাগল। ভীক আহামক এবং যুদ্ধ-খনভিজ্ঞ সভকং এ সময়ে আর এক দারণ ভুল করে বসলেন। তিনি প্রধান সেনাপতি কারওজার থাকে এ সময়ে সেই সন্ধীর্ণ পথে অস্বারোহী বাহিন্ট সহ শক্রপক্ষের ওপর আক্রমণ চালাবার আদেশ পাঠালেন। কারগুভার এবং অভিজ্ঞ সেনানাগ্যকগণ বলে পাঠালেন যে, উভয় পক্ষের গোলাবৃষ্টির মধ্যে এ সঙ্কীৰ্ণ পথে অখাবোহা বাহিনী চালনা করলে সমগ্র बाहिनीहे ध्वःम इत्वः पूर्वियाव (अर्छ रेमनिकशन व्यापाद धान हावाव्य । কিন্ত মূর্থ সত্তকৎ সেনাপতি এবং সেনানায়কগণের সতর্কবাণীতে জ্রকেপ না করে রেপে আন্তন হয়ে বলে সামাক্ত একজন হিন্দু কেবাণা ভামস্থলর অসম সাহসে কামান চালিয়ে আমাব ইচ্জৰ বক্ষা করছে আব তোমরা বণদক মুসলমান বীর হয়ে अभ्रत्य निष्किष्ठ इत्य वरम बत्युर्छ ? थिक ट्रांशास्त्र वीवरण । কারগুজার থা এবং ভাঁব সহকারী সেনানায়কগণের কাছে নবাবের এ রকম অপমান-স্টুচক বাকা অসহ বোৰ হল, তাঁৱা আৰু বিক্লক্রি না কবে নিশ্চিত ধ্বংস জেনেও নেই সন্থীৰ্ণ পথের মধ্য দিয়ে প্রচণ্ড বেগে অখারোহী বাহিনী পরিচালনা করলেন। মূর্থ সওকং তাঁর আদেশ পালিত হয়েছে দেখে মনের আনন্দে নিজের শিবিরে এসে নাচ-গানে মসগুল হলেন এবং উত্তপ্ত মস্তিগুকে শীতল করবার জন্ত প্রচুর भाषक. ७ जीक रायन करत कि कुकरण परशाले तक म करत भड़तान ।

এদিকে জলাভূদি-মধ্যস্থ সন্ধীৰ্ণ পথে ধাৰমান কারগুজারের অস্বারোহী বাহিনী বিপক্ষের গোলার আঘাতে কাডারে কাডারে ধরাশায়ী হতে লাগল। অনেক সৈনিক অখসহ ঘু'দিকের বিলের মহাপক্ষে পড়ে প্রাণ হারালো। হতাবশিষ্ট সেনাদল মীরজাফর ও মীরকাজেমের প্রচণ্ড আক্রমণে একেবারে বিধবস্ত হয়ে গেল। সইদ আহাম্মদের বন্ধু মুক্তকরীণ প্রণেতা ঐতিহাসিক গোলাম হোসেন স্বরং এই যুদ্ধক্ষেত্রে উপস্থিত ছিলেন। তিনি এবং **অপর করেকজন** সেনানায়ক ইতন্তত: পলায়মান ছত্রভঙ্গ পুর্ণিয়া বাহিনীয় মনোবল ফিরিয়ে আনবার শেষ চেষ্টা হিসেবে সওকৎ অঙ্গের সংজ্ঞাশূর্য দেহটাকে হস্তিপুঠে বসিয়ে এ সময়ে রণক্ষেত্রে নিয়ে এলেন কিছ সমস্ত চেষ্টাই বার্থ হল। সহসা শত্রুপক্ষের নিক্ষিপ্ত একটি গোলার আঘাতে সওকতের প্রাণহীন দেহ হস্তিপৃষ্ঠের হাওদার মধ্যে প্রতিয়ে পড়ল। সম্মুখভাগে অসাম বীরত্বের সঙ্গে কামান চালাতে চালাতে বিপক্ষ-নিষ্ঠিপ্ত গোলাঘাতে ভামস্থলরও এ সময়ে প্রাণ হারালেন। ও সভকতের এই সংগ্রাম ইতিহাসে মণিহারীর যুদ্ধ নামে খ্যাত। নিজের বৃদ্ধির দোবে আহাম্মক এবং অদূরদর্শী সওকৎ এই যুদ্ধে কারগুজার ও খ্যামস্থন্দরের ফ্রায় বিশ্বস্ত সেনানায়ক সহ পুণিয়ার বীর-বাহিনীর ধ্বংস সাধন তো করলেনই, নিজের রাজ্য ও প্রাণও

মুসলমান ঐতিহাসিক গোপাম হোসেন স্থ্যক্ষিত গোলকাৰ ঘাঁটি ছেডে এগিয়ে গিয়ে ভামস্থলরের এই কামান চালনাকে হঠকারিতা বঙ্গে কটাক্ষ করেছেন বটে, কিন্তু নবাব সওকতের মুখের প্রশাসা-বাক্য থেকেই বুঝা যায় যে, সেই সঙ্কটজনক পরিস্থিতিতে কায়স্ত শ্রামস্থন্দর বে অসম সাহসিক্তার পরিচয় দিয়েছিলেন, তার দারা তথ শত্রুর পংগ্রগতিই প্রতিক্রম হয়নি, নবাব এবং তাঁর শিবিরপার্শক विभुभन् रमनामरलय भरनावल किविरय ज्यानां मञ्जवभव इरब्रहिल। রণক্ষেত্রের সেই সঙ্কট মুহূর্তে ভবিষ্যৎ বিচার করে নিশ্চল হয়ে বসে থাকার পরিণাম শুভ কি অশুভ হত, তা নির্ণয় করা নিশ্চয়ই সহজ্বসাধ্য ব্যাপার নয়। তা ছাড়া খ্যামস্থলবের মত একজন নগণ্য গোললাক বিভাগীয় কেরাণীর কাছ থেকে একজন সমরদক্ষ সেনানায়কের স্থৈষ্ট্য, প্রতিভা বা বণনৈতিক দুরদশিতা আশা করা সমীচীনও নয়। বিপক্ষদলের ভয়াবহ গোলাবর্ধণের মধ্যেও বিশ্বস্ত ও নিভীক সৈনিকের কায় আমৃত্য সংগ্রাম চালিয়ে স্থামস্থলর যে শত্রুবাহিনীর গতিরোধ করেছিলেন, শুধু তারই জন্ম ইতিহাসের পৃষ্ঠায় তাঁর নাম চিরম্মরণীয় সয়ে থাকবার যোগ্য।

বাঙ্গালী হিন্দুর ইতিহাস নেই, তাই বাঙ্গালী কেরাণী খ্যামস্থলবের এই অপূর্বে বীরত্ব ও আন্ধোৎসর্গের কথা আজ কেউ জানে না! কেউ রাখে না তাঁর বংশপরিচয় বা জীবনেতিহাসের সন্ধান! আন্ধবিশ্বত বাংলা এবং বাঙ্গালী জাতির এই হল পরম ভ্রভাগ্য আর চরম অভিশাপ!

"গৃষ্টধৰ্ম খুষ্ট ব্যতীত, মুসলমানধৰ্ম মছম্মদ এবং বৌদ্ধধৰ্ম বৃদ্ধ ব্যতীত তিষ্টিতে পাবে না। কিন্তু চিন্দুধৰ্ম কোন বাক্তিবিশেবের উপর একেবারে নির্ভন্ন করে না।"
—স্বামী বিবেকানন্দ

त अर त स भी त सौ न विक स

শ্রীনির্মাশচন্ত্র চৌধুরী

তার করেক দিন পূর্বে পশ্চিমবন্ধ বিধানসভার সংশা উদ্ধান হইতে ভারতের প্রথম বৃটিশ গভর্ণর জেনারেল (১৮৩৯-৩৫) দেও উইলিয়াম ক্যাংভণ্ডিশ বেণ্টিকের প্রতিমৃতি অপসারিত হইয়াগিয়াছে এবং বেণ্টিকের মৃত্তি অপসারবের বেশ কিছু আলোড়নও হইয়াগিয়াছে এবং বেণ্টিকের মৃত্তি অপসারবের স্বপক্ষে ও বিপক্ষে মতামত প্রকাশিত হইয়াছে। কারণ, বেণ্টিক ছিলেন উদার মনোবৃত্তিসম্পন্ধ, সংস্কাবকামী, জনদরণী শাসক। ভারতীয়দিগের সহিত তাঁহার স্বাতাম্পক মনোভাবের জন্ত তিনি তৎকালীন ইংরেজদের কাছে "ক্লিপি: ডাচম্যান" (তিনি ছিলেন ওপন্ধান্ধ বংশোভ্ত) আখ্যা লাভ ক্রিমাছিলেন।

লর্ড উইলিয়াম বেণ্টিস্ক সংস্কারমূলক বহু জনহিতকর কাজ ক্রিয়াছিলেন। কিন্তু তাঁহার সমস্ত কাজের মধ্যে সতীদাই নিবারণ-মুগত আইন তাঁহার সর্মশ্রেষ্ঠ কার্ত্তি বলিয়া স্বাকুতি লাভ করিয়াছে। নবভারতের পথপ্রদর্শক বান্ধা রামমোহন রায় প্রভৃতির আবেদন ও আন্দোলনের ফলেই যে এই সংস্কারমূলক আইন প্রবর্ত্তিত হইয়াছিল তাহা সর্মজনবিদিত এবং যুগধর্মের পরিবর্তনের সঙ্গে এরূপ আইন প্রণয়নের প্রয়োজনীয়তাও অনস্বীকার্য্য। তবুও সহমর্বের মাধুর্যট্রকুও এই সংক্র অরণীয়। একথা সভ্য যে, হিন্দুরমণীগণ সকল সময়ে বেছার অগ্নিপ্রবেশ করিজেন না; কারণ জীবনের প্রতি মমতা মানব-প্রকৃতির স্বাভাবিক ধর্ম। একথাও সভ্য বে, কালক্রমে সহমরণ প্রধার ভিতর স্বার্থ, থেষ, অনাচার প্রভৃতি প্রবেশ করিয়া প্রথাটিকে কুংসিত এবং বাভংস কবিয়া **তৃলি**য়াছিল। কি**ত ইহা সত্ত্বেও বন্ধ**-নাৰীগণ যে অধিকাংশ ক্ষেত্ৰেই স্বেচ্ছায় সহস্বতা হইছেন ইহাতে কোন সন্দেত নাই। ১৭৮১ খৃষ্টাব্দে জনৈক যুরোপীয় মহিলা লিখিয়া গিয়াছেন ধে. "এমন অনেক নারী আছেন, বাঁহারা মৃত স্বামীর শবেৰ সহিত সহ্মুভা হইয়া অভুত সাহসের প্রিচয় দেন। সেই শাচ্স অক্তভাবে পরিচালিত হইলে নারীক্রান্তিকে গৌরবান্তি করিতে পারি:তন। অবশু ইহা সভ্য যে, তাঁহাদের (সহমৃতা হইতে) ক্^{ঠিতা} হওরার কথা শুনা যায়। কি**ন্ত দেৰপ দৃষ্টান্ত অ**ত্যন্ত বিবল"(১)। বঙ্গরমনীর সাহস ও একনিষ্ঠ প্রেমের কথা লিখিতে ষাইরা শত বংগর পূর্নের হটন সাহেব লিথিয়াছিলেন, "ভাঁহাদের নিষ্ঠা, ব্যাঘ্যত্যাগ ও প্রাণ সমর্পণ ব্যঙ্গন্ত চিতার শিখাকেও অতিক্রম করিয়া মাৰ্থি নিকটতৰ হইৱাছে" (২)।

সভীনাই বা সহমরণ-প্রথা কোন বিশ্বত অভীত ইইতে বঙ্গদেশে বিস্তারলাভ করিয়াছিল, তাহা আর এখন সঠিক জানা যায় না। তবে, অনেকের মতে সভীনাই প্রথা পাল আমলের শেবের দিকে এবং সেন আমলে প্রসার লাভ করিয়াছিল। বৃহদ্বর্থপুরাণে (২।৮।৬-১০) মৃত স্থামীর সহিত পুড়িয়া মরিবার জন্ত সমাজনারকেরা বিজনারীদের পুণ্যলোভে প্রলুক্ক করিয়াছেন। ইহার চেরে

ৰীরত্ব নাকি তাঁহাদের ভার কিছু নাই (৩)। পাটনা মিউজিয়ামে বক্ষিত মানভূম, পুক্লিয়া অঞ্ল হইতে সংগৃহীত 'সতাত্মারক' স্বস্তুগুলি এই প্রাচীন অনুষ্ঠানের পুণ্যস্থতি বহন ক্রিতেছে।

ইতিহাসে জানা যায়, ১৮০৩ খুষ্টাব্দে কলিকাতার ৩০ মাইলের মধ্যে ৪০৩টি সহমরণ অনুষ্ঠিত হইয়াছিল। ১৮১৫ হইতে ১৮২৬ খুষ্টাব্দ পর্যন্ত এই বার বংসরে ৭১৫টি রম্ণীর সভমূতা ভইবার সংবাদ ম্যা**ন্ধিষ্ট্রেটদিগের নিকট পৌছে। ১৮১৮ সালের সরকারী বিবরণী** হইতে জানা যায় যে, ১৮১৫ সাল থেকে ১৮১৮ সাল, এই ভিন বৎসবে ২,৩৬৫ জন বিধবা সহমরণে বায়। এর মধ্যে ১,৫২৮ জন কলিকাতা ও সহরতলী অঞ্চলের। ১৮১৯ সালের কলিকাতা সহরের উপকঠের সতীদাহের একটা ফর্ম পাওয়া গিয়াছে। এক বংসরে ৪টি থানায় ৫২টি সহমরণের বিশদ বিবরণ পাওয়া যায়। প্রত্যেক সভীর নাম, জাতি, স্বামীর নাম, সংকারের ভারিখ, থানার নাম ও কয়টি ছেলেমেরে ছিল তার একটা দীর্ঘ কর্দ আছে। এই ৫২টি সতীর মধ্যে ২০ জন আহ্মণ, ১০ জন কায়স্থ, ২ জন বৈত্য, ২ জন সদুগোপ, ৫ জন क्रिवर्ड. ७ वन यूगी, २ वन छ छी, २ वन मयूत्रा, ५ वन कामारी, ১ জন ছতোর, ১ জন গোয়ালা, ১ জন তেওয়ার, ২ জন অক্ত জাত। বয়সের গড় ৫২ বংগর ১০ মাস, ৭০ বা তার চেয়ে বেশী ১৩ জনের ৰয়স ছিল। ২০ বংসর বা ভার চেয়ে কম বয়সের চারটি নাম পাওয়া যায়। এব দঙ্গে ছই স্ত্রী সতী হওয়ার একটিমাত্র উদাহরণ আছে। দেখা বার, উচ্চ-নীচ ভেদে সব জাতির মধ্যেই সতীদাহ প্রচলিত ছিল; হয়তো উচ্চবর্ণের মধ্যে প্রচলন কিছু বেশী ছিল। তবে লক্ষ্য করার বিষয় এই যে, ৫২টি সতীর মধ্যে ৪০ বংসরের কম মাত্র দশটি নাম পাওয়া যায়। ১৮১৮ সালে বাংলা দেশে ৮০ টি সতীদাহ হইয়াছিল (৪)। ১৮২৮ খুষ্টাব্দে কলিকাতা এলাকার ৩০১ জন বিধবা সহমরণে বায় (e)। সমসাময়িক সংবাদপত্র হইতে অবগত হওয়া বায় যে বাঙ্গালাদেশে যত অধিক সহমরণ হয়, পশ্চিম দেশে তাহার চতুর্বাংশও হয় না, এবং বাঙ্গালার মধ্যেও কলিকাতার ফোর্ট আপীলের অধীন জিলাতে অধিক হয়। আবো হিন্দুস্থানে বভ সহমবুণ হর তাহার সাত অংশের একাংশ কেবল হুগলী জেলাডে হুর (৯)। এবিষরে বিলাতের ওয়েষ্ট মিনিষ্টার গেজেটে ১৯০৮ পুষ্টাব্দে বাঙ্গালার ভূতপূর্ম ছোটলাট স্তর চার্স ইলিয়ট (১৮১০-১৫) লিখিয়াছিলেন—সম্প্রতি বে সকল ঘটনার সংবাদ পাওয়া গিয়াছে ভাহার সকলগুলিতেই স্পষ্ট দেখা যায় বে, আইনের নিবেধ ও সতীদাহের ৰুপক্ষে জনমতের পরিপোরকতার অভাব व्यञ्ज्य अहे जाद जान्यविमान जाश्र अकाम कवियात्कन।

³¹ Hartley House—Miss Sophia Goldbourne 1789.

২। বৃহৎবন্ধ-শীনেশচন্দ্র সেন ১ম খণ্ড, ভূমিকা-১॥/•

 [।] बाङ्गामीत हेिङ्गाम—नौश्वतक्षम त्रांत्र, जामिशर्वर—8>>%:

৪। ইতিহাস—১৩৫৭—ভার, ১১ পৃ:

वाङ्काद नात्री चाक्नावन—इवि वाद—>२ शृः

সংবাদপত্তে দেকালের কথা—ব্রক্তেরনাথ কল্যোপাধার
 ১য় বশু—২৮১ পৃঃ

পুক্ষপণ সকল কে: এই ইহা অনুমোদন কবিয়াছেন—বাধ্য করেন নাই" (৭)।

কলিকাতায় এঙ্গীয় বিধান সভার উত্তরে টাউনছলের দিকে মুখ কবিয়া দণ্ডাবনান লর্ড বেণ্টিক্ষের প্রতিমৃতিটি অপসারণের যে কথা উপবে লিখিত হইয়াছে, উহাব পাৰণীঠে সতালাত্র বিষয় অবলম্বন কবিরা ব্যাক্তে ডালা চনংকার একটি চিত্র আছে। এই চিত্রটি বাস্তবিক্ট অতি শুন্দর। পাদগীঠের আকাৰ অনুসাবে গোলাকারে গঠিত তিন দিক চইতে তিনখানি ছবি লইয়া উচা প্রদর্শিত হইল। মধাচিত্রটিং প্রধান পারী—সুসুগমনের জন্ম প্রস্তুত জ্বনৈক তরুণী विभवा म शावनाना ; विभवाव म खाक्त छ छ प्र- छ छ छ छ । শায়িত তালার মতপতির বল্লাজানিত দেত দেখা যাইতেছে। বিধবার সমস্ত ভক্তীতে একটা অধার্থির আত্মভালা ভাব স্থলবরূপে প্রবর্ণিত ভইবাতে। বিধবার বামপার্থে গভার বিধান ও সহামুভ্তির ভাবে বাজপতের বেশে একজন বর্ণারান অন্তবারী পুরুষ দাঁড়াইয়া---সম্ভবত: বিধবাৰ পিতা বা জ্যেষ্ঠ ভাতা, তিনি যেন মেয়েটিকে সহগমন ছইতে নিবৃত্ত করিবার জন্ম মুহভাষায় অনুযোগ করিয়া বলিতেছেন। সন্মাৰ একজন আত্মীয়া বিধবাৰ ছুইটি পুত্ৰকে লইয়া—.কালের শিশুটি মায়ের কাছে ঝাঁপাইয়া ঘাইতে যায়, কিছ মাতার সেদিকে লক্ষাই নাই। আর একটি শিশু সমস্ত ব্যাপার দেখিয়া ও মায়ের স্তব্ধ উন্নাদিনীবং ভাব দেখিয়া সভয়ে পিসী বা মাসীর কাছে আত্রর লইতেছে—সম্থানের প্রতি মায়ের আর ক্লেছ মমতা বা কোনও আকর্ষণ নাই। চির্টির দক্ষিণ ভাগে একজন অস্ত্রধারী পুরু। পুঁথি হাতে আদলের কাঁগে হাত বাধিয়া ভাচাকে বেন উংক্ঠিত ও কাতৰ ভাবে কি প্রার্থনা জানাইতেছেন।—শিল্পী ওরেইমেটক বিশেষ দবদ দিয়া, এমন কি যে জাতির মধ্যে বিজমান এই নিষ্ঠুর ব্যাপারটিঃ চিত্র তিনি আঁকিজেছেন তাহার সম্বন্ধে একটা শ্রন্ধাভাবও লইয়া এবং পুরা গ্রাক ও বোমান দৃষ্টির দারা অফুপ্রাণিত হইয়া ভান্ধর্যাট গঠিত কবিয়াছেন (৮)।

বিক্রমপুরের কোন কোন গ্রামে জন্তাপি সহমরণের মৃতিজ্ঞাপক
মঠ ইত্যাদি বিজ্ঞান আছে। তাহাদের মধ্যে বেজ্পাঁ গ্রামের
"সতাঠাকুরানার মঠিটি বিশেষ উল্লেখবোগা এবং বিধ্যাত। সে
প্রার দেড় শত বংসর পূর্মের কথা, বিক্রমপুরস্থ বেজ্পাঁ। গ্রামে এই
সত্তাদাহ অনুষ্ঠিত হটয়াছিল। যে পরিবারের পূত্রব্ধু তাঁহার
মৃতপতির সহগামিনা ইটয়ছিলেন, তাঁহারা বিক্রমপুরের একটি
প্রেসিক বংশ, মুজী-পবিবার বলিয়া পরিচিত। ইহারা নাসকঠ
মুখোপাধ্যায়ের বংশধর, ভরধাজগোত্র, ফুলিয়া মেল। এই বংশের
কাশীনাথ মুখোপাধ্যায় ক্রয়ারস্থায় বিদেশ হইতে বাড়ি আসিলে
সকলে কয় কাশীনাথকে ধরাধরি করিয়া তদীয় পত্রীর শয়নগৃহে
লইয়া গেলেন।

পত্নী মহামায়া প্রাণপণে পতির সেবা ভশ্রবার প্রবৃত্ত হইসেন। ক্ষয় পতির শারীরিক ও মানসিক শাস্তি ও স্থপের কর দিন নাই, দাত্রি নাই, জাহার-নিম্নার প্রতি তেমন লক্ষ্য নাই। সর্ধকা

স্বামীর নিকট বসিয়া থাকিয়া সেবা শুশ্রুষা করিতে লাগিলেন। শিক্তপুত্র ও কলার প্রতিও কোন আকর্ষণ নাই। কিছ এত সেরা ভশাষা সত্ত্বেও কাৰীনাথের জীবন রক্ষা হটল না, কাৰীনাথের মুতা হটল। সকলে শোকমগ্ন, কিন্তু কাশীনাথ পত্নী মহামায়া দেৱী হাক্সময়ী। নয়নে অঞ্চ নাই, বদনমগুলে বিধাদের কোন চিহ্নও দেখা বায় না। অভি প্রভাবে স্নান করিয়া দেই বিবাহের লোহিত পট্রস্ত্র পরিধান করিয়াছেন, ওঠ হুইথানি বক্তকমলের ফ্রায় শোভা পাইতেছে। লক্ষ্য নাই, সংকাচ নাই, অনবগুঠিতা সাধ্বী আঞ্চ মৃত স্বামীর পার্মদেশে বিদিয়া নিঃসংক্ষাতে শ্বত্তর, ভাস্থর সকলের সক্ষে আলাপ করিতে লাগিলেন। শব আশানে নীত হইল। সানী মহামায়। দেবীও চিতারোছণের জন্ম প্রস্তুত ছইলেন। সকলে নিবেধ করিলেন। আত্মীয়-স্বজনেরা শিশুসুত্র ও কলা ছটিকে দেখাইয়া কত প্রকারে বুঝাইতে লাগিলেন। কিন্তু কোন মতেই মহামায়া দেবী ভদীয় সকল হইতে বিচাত। হইলেন না। আগ্রায়-মন্তনেরা বিফল, মনোবর্থ হইয়া থানায় সংবাদ দিলেন। দাবোগা আসিলেন এবং মহামারা দেবীকে জিজাসা করি:লন—'আপনি ভেচ্চার মত স্বামীর সহগামিনী হইতেছেন কি না ?' মহামায়া দেবী বলিলেন—'হা ! তবে পরীকা হউক। মহামায়া দেখী তংক্ষণাং অগ্নিমধ্যে হস্ত প্রদান পূর্মক হাসিমুখে বাক্যালাপ করিতে লাগিলেন, দারোগা বিশ্বিতচিত্তে চিতারোহণের অনুমতি দিলেন। চতুর্দিকে এই সংবাদ ঝড়ের মত ছডাইয়া পড়িল। ভিন্ন ভিন্ন গ্রাম হইতে শত শত ব্রনারী সহম্রণের দৃভ দর্শন করিবার জ্ঞা আসিতে লাগিলেন। হাত্রমুখী মহামায়া ধীর মন্থ্র গতিতে উপস্থিত জনসাধারণকে আশীর্বাদ করিয়া চিতা প্রাকৃষ্ণি করিতে লাগিলেন। সধবা মভিলারা তাঁহার চরণধূলি গ্রহণ করিল। তৎপরে মহামায়। দেবী চিতারোহণ করিয়া মতপতির **শ্ব**েক্ত্রে বামপার্শে শ্রন ক্রিলেন। চিতা অধিল। সমবেত ব্রদমণ্ডলী চারিদিকে আনন্দর্বনি করিতে লাগিল। আর্ত্তনাদ করা দুরে থাকুক। বিন্দুমাত্রও তাঁহার দেহ কম্পিত ছইতে কেহ দেখিল না। দেখিতে দেখিতে দম্পতির পঞ্জোতিক দেহচিতা ভংম পরিণত হইল (১)।

গ্রাধানে জনৈক বালালার মৃত্যু হইলে পর তাঁহার পরী সহনবণে উক্ততা হইলে গ্রার জজ মি: রুষ্টোফার শ্রিথ গ্রায় তাঙাকে জনেক নিবেধ করিলেন। তাহাতে সে এক্লিনা আপন অঙ্গুলি অগ্নিতে দগ্ধ কর্মিরা দেখাইলে জজ সাহেব আছা দিলেন। পরে সে স্ত্রী সহগ্যন করিল (১০)। আর একস্থানে সহ্মরণের বিষয় তংকালীন সংবাদপত্রে এইরুপ উল্লিখিত আছে:—

সাহেবরা আসিয়া দেখিলেন যে, ঐ স্ত্রী হরিক্রা মাখিরা আত্রশাথা হস্তে করিয়া ঘরের পিড়ায় বসিয়া আছে। সাহেব গিয়া বিন্মপূর্কক তাহাকে বলিলেন যে, তুমি দয়া ইইয়া মরিলে আত্মঘাতিনী ইইনা। অতথ্য দয়া ইইয়া মরণে আত্ত হও। তোমার বাপেয়া তোমাকে অনাদর করিবে ইহা চিন্তা করিও না। আমি তোমার বত্ত ঘর করিয়া দিব ও বাবজ্জীবন তোমার ভক্ষ্য পরিচ্ছদ দিব। ইহা শুনিয়া ঐ স্ত্রী শ্বিররপে সবিনয়ে কহিল যে, হে কোল্পানী, আমি বাহাতে

१। विश्ववानी-->७७१---- ४१२ %

৮। প্রদর্শনী—স্থনীতিকুমার চটোপাধ্যার—বঙ্গঞ্জী—১৩৪•, ভাল—১৩১ প্রঃ

১। প্রবাসী—১৩৪৭, ভাক্র—৩২০-২২ পৃঃ

১ । সংৰাদপত্ৰে সেকালের কথা-->ম খণ্ড--২৮৫ পৃঃ

অন্তে সুধ পাই সেরপ অনুমতি কর। আমি তিন জন্ম এই স্বামীব স্থিত সহগমন ক্রিয়াছি। এরপ ক্থোপক্থন হইতে সূর্য্যান্ত হুটলে তথন জজু সাহেব কহিলেন—এখন কি কবিবা। তাহাতে সে স্ত্রী কহিলেন যে, অন্ত রাত্রি হইল অন্ত হইবে না, কল্য সুর্যোদ্য চইলে সুহগ্মন করিব। অনস্তব রাত্রি প্রভাত হইলে ভাহার বন্ধলোকেরা সহমরণোলোগ করিতে লাগিল ও এক খটা আনিয়া তাহাতে এ শব রাখিল এবং এ স্ত্রী সে থাটে শব সন্ধিকটে বসিল। পরে আত্মীয়-স্বজ্ঞনেরা ঐ থটা স্কন্ধে করিয়া শ্মশানে লইয়া গেল। দেখানে আর কোন ব্রাহ্মণ ছিল না। কেবল চতুর্দ্দশ বয়স্ক এক প্রাহ্মণ বালক ছিল, সেই মন্ত্রাদি পাঠ করাইল। পরে 🗟 স্ত্রী গুরিপানি কবিয়া স্থিব ভাবে চিতারোহণ কবিল। **তথনও দিতীয়** সাতের তাহাকে টাকা, ঘর ও পান্ধী দিতে চাহিলেন। তাহাতে দে স্বী উত্তর কবিল, এই আমি পালীতে আবোহণ কবিলাম। ইহা ক্রিয়া ঐ মত স্বামীকে কোলে কবিয়া চিতাতে শ্যুন কবিল। কেছ ধবিল না, বান্ধিল না। চতন্দিকে অগ্নি প্রথলিত হইল, তাহাতে তাহাব অক্ল স্পন্দন ছইল না অবলীলাক্রমে সহগমন করিল (১১)।

রংপুর জেলার ভুষভাগুরের জমিদার-বংশের কয়েকজন কুলবধু সহমবণে গিয়াছিলেন বলিয়া প্রসিদ্ধি আছে। ঐ বংশের জরতুর্গা দেবীও যথাবীতি সংগারধর্ম প্রতিপালন করিয়া স্বীয় স্বামীব সহিত সমুতা হন। তংকালে ত্যভাণ্ডার নিবাসী হিসারিয়ারা ত্য-ভাণাবের প্রধান ক**র্ম্ম**চারী ছিলেন। **ত**'হারা জয়ত্র্গা দেবীকে সম্মূতা মইতে নিষেধ কবিতে লাগিলেন; কিন্তু ভিনি তাহা শুনিলেন না। জাঁহারা গোপনে মাজিপ্টেট সাহেবকে সংবাদ নিলেন। ম্যাজিপ্টেট সাহেব ত্যভাগুরে আসিয়া জয়ত্র্গা দেবীকে অনেক ব্যাইলেন, কিন্তু তিনিও তাঁহাকে সম্বল্পচাত করিতে পারিলেন না। জয়তুর্গা দেবী মাজিষ্টেটকে বলিলেন, 'আমি দত্রী, স্বামীর পদপ্রকাই আমার জীবনের 'ব্রত, সুতরাং তাঁছার মৃত্যুর পৰ আমাৰ বাঁচিয়া থাকিয়া লাভ কি ? আমি স্বামীৰ সহিত নিশ্চয়ট সহমুতা হইয়া তাহাতে আমার একটও কঠ হইবে না।' ভাগাৰ প্ৰমানম্বৰণ তিনি প্ৰম্বলিত অনলে হস্ত প্ৰবেশ করাইয়া নিলেন। হস্ত দগ্ধ হুই তে লাগিল, কিন্ধু তিনি কণ্টায়ুভব করিলেন না। মাজিট্রেট সাহেব এই অলোকিক দুগু দেখিয়া বিশ্বিত ১৮লেন এবং ঠাঁচাকে সহৰত। হইতে আদেশ দিয়া চলিয়া গেলেন। জ্মতর্গা দেবী হাসিতে হাসিতে চিতার আরোহণ করিলেন (১২)।

১৮১২ খুটাবেদ নলডাঙ্গার রাজা রামশক্ষর দেব-রার দেহত্যাগ করিলে তাঁচার সাধরী পত্নী রারামণি দেবী পতির অনুগামিনী হউরা দিতা' হইরাছিলেন। যে সময়ে রাজা রামশক্ষরের প্রাণপক্ষী দেহণিজ্ঞর ছাজিয়া গিয়াছিল, সেই সময় রাণী রাধামণি শোকস্চক কোনপ্রকার ধ্বনি করেন নাই। তিনি চিত্রার্পিতম্তির ভার নিম্পান্দ ভাবে বিসরাছিলেন এবং কেবলমাত্র বলিয়াছিলেন মামার স্বামী ইহলোক হইতে চলিয়া গিয়াছেন,—আমি তাঁছারই সজে প্রলাক বাইব।—অনেকে রাণীকে ব্যাইলেন। 'সতী' হইয়া প্রতির চিতায় দেহ বিসঞ্জানের সক্ষর হইতে নিবৃত্ত হইবার ক্ষম্ভ আনেকে

বাণীকে কত কথাই কভিলেন কিছু বাণীর সহল্ল অটল। অনেকৈ রাণীকে অগ্নিশিখার দগ্ধ হইয়া মনিবার বিভীবিকাও দেখাইলেন, তথন রাণী একটি প্রদীপ আলিয়া তাহার শিখায় ভাঁহার তজ্জনী ধরিলেন. অগ্নিশিথায় অঙ্গুলি চট-পট শব্দে পুড়িতে সাগিল। কিন্তু বাণীব মুখে কোন প্রকার বিকৃতির লক্ষণ প্রকাশ পাইল না। বরং আনন্দের চিহ্নট প্রকটিত হইতে লাগিল। অঙ্গুলিটি ভম্মীভূত হইয়া গেল; তথাপি সতীর কোন দিকে জক্ষেপ নাই। সকলে বাণীকে লইব। কালিকাতলার দহের নিকটবতী শালানে গেলেন, রাণী রাধামণি তাঁছার যাবতীয় স্থন্দর স্থন্দর অল্ডার, স্থন্দর বস্তু পরিধান করিলেন, মস্তকে সিন্দুর লেপন করিলেন, তথায় সমস্ত লোকদিগকে টাকা, পয়সা, ও চাউল মুক্ত হল্ডে বিভরণ করিলেন এবং শেবে দচ পদক্ষেপে প্রফল্ল বদনে সাত বার চিতা প্রদক্ষিণ করিলেন।--রাণী একবার রাজার মুখের দিকে চাহিলেন, আর হাস্ত মুখে ধাজার থারে ই সেই চিতাশ্যায় শয়ন করিলেন। শয়ন মাত্রই তাহার সংজ্ঞা লোপ হইল। সকলে আসিয়া দেখিল, দেহে প্রাণ নাই; রাজার প্রাণের সঙ্গিত রাণীর মঙ্গপ্রাণ অনন্তে উডিয়া গিয়াছেন (১৩)।

বিশ্বত বঙ্গের নানা স্থানে এইরূপ সহমরণের অনেক দৃষ্টাস্ত পাওয়া যার; অতি আধুনিক কালেও সংবাদপত্রে আক্ষিক ভাবে দেখিতে পাওয়া याग्र (১৪)। मःवाम স্বেচ্ছার আত্মদান করিবাব মধ্যে যে শক্তি, দুঢ়তা ও শক্ষাহীনতার পরিচয় পাওয়৷ যায় ভাহাব মাধুর্ব্য অস্বীকার করিবার উপায় নাই। ৰখন পুত্র কলা ভাতা সকলেই চারিদিক বেষ্টন করিয়া বৃহিয়াছে, যথন সংসাবে গুঙিণীর যাহ। কাম্য দে সকলই বৃহিয়াছে, নাই কেৰল তাঁহার প্রম প্রিয়তম স্বামী : তথন তাহারই সম্রেহ প্রেম স্থলরে ধারণ করিয়া, তাঁহারই চরণ ধ্যান করিতে আনন্দে অগ্নি প্রবেশ করিতে যে বিক্রম প্রয়োজন তাহা ভারতবর্ষ ব্যক্তীত আর কোন দেশেই দেখা ৰায় না। বন্ধনাথী সেই অমুপম মৌন বিক্রমে গর্বিতা বান্ধালী মাত্রই তাঁহার স্তক্তে লালিত, তাঁহারই মেহচ্ছায়ায় বন্ধিত, তাঁহারই আত্মতাগের মন্ত্রে দীক্ষিত-তাঁহারই পদরে স্পর্ণে বলনর্পিত। নোয়াখালীর বীভংস অত্যাচার ও হত।কৈতের সময় বঙ্গরমণীর অগ্নিপ্রবেশ পর্যক সভীত বক্ষার কাহিনী ভদানীখন সংবাদপত্রে প্রকাশিত হইয়াছিল (১৫)। রাজপুত মহিলার "জহর এত" সাহিত্যের স্থায়ী সম্পদ; কিছ নোয়াখালীর বীর বঙ্গবালার আত্মত্যাগ সাহিত্যে স্থান পায় নাই।

বাদালার প্রথম ছোটলাট তার ফ্রেডারিক ছালিতে একদিন স্বচক্ষে বঙ্গরমণীয় এই মৌন বিক্রম দেখিয়া লিখিয়াছিলেন—১৮২৯ গৃষ্টাব্দে রাজবিধি সতীদাহ বন্ধ করিয়াছে। সেই সময় অমি হুগলীর ম্যাজিট্রেট ছিলাম। একদিন সংবাদ পাইলাম আনাব কুঠি হুইতে কয়েক মাইল দ্বেই সতীদাহ হুইবে। গঙ্গাভীরে সর্বদাই এনপ ঘটনা ঘটিত। —আমার সহচর্গ্র রুমণীকে নানার্গ বুঝাইয়া নিরস্ত করিছে চেষ্টা করিলেন। তাঁহারা বাঙ্গালা জানিতেন না বলিয়া আমি

১১। সংবাদপত্রে সেকানের কথা—১ম খণ্ড—২৮৩ পু:

১২ ৷ বংশপরিচয়—জ্ঞানেক্সনাথ কুমার—২য়বণ্ড—৩৫১-৫২পৃ:

১৩। বংশপরিচর-জ্ঞানেরনাথ কুমার---১ম গশু---২২৯-৩ প:

১৪। আনশ্বাক্তার পত্রিকা--১৩ই ভাদ্র, ১৩২১।

hang to save honour —Hindusthan Standard—23rd october, 1946.

ভাঁহাকে সকল কথা বুঝাইরা বলিলাম। তিনি গন্ধীরভাবে একমনে সমস্ত কথা শুনিলেন, কিন্তু কিছুমাত্র বিচলিত হইলেন না। আমি মধন দেখিলাম কিছুতেই ভাঁহাকে নিবৃত্ত করা বার না, তখন ভাঁহাকে চিভার পার্মে বাইতে অমুম্তি দিলাম।

পুরোঠিত আমাকে বলিলেন—একবার জিজ্ঞাসা করুন অগ্নিতে কাঁচার বে যন্ত্রণা চইবে তাহা কি তিনি ভাবিতেছেন ?

রমণী আনার নিকটেই বসিরাছিলেন। প্রত্যুক্তরে তাঁহার তাঁহ্বনৃদ্ধিগঞ্জক মুখখানি তুলিয়া ঘুণান্তরে কহিলেন— একটা প্রদীপ আমুন। প্রশাপ প্রছালিত করিয়া তাঁহার সম্মুখে রাখা হইল। তাঁরদৃষ্টিতে আনার দিকে তাকাইয়া তিনি তাঁহার দক্ষিণহস্ত ভূমিতে সংস্থাপনপূর্বক অয়িমধ্যে অন্তুলি প্রবেশ করাইলেন। অন্ত্রীটি রাজসাইয়া গোল—উহাতে ফোসকা উঠিল, উহা শেষে কালো হইয়া গোল। একটি হংসপক্ষে আগুন ধনিলে উহা যেরপে বক্র হইয়া বার, অন্ত্রীটিও সেইরূপ বক্র হইয়া গোল।

এইরপে কিছুক্রণ কাটিল। বনণী একটি বাবও হাত স্বাইলেন না—একট্ও কাত্র শব্দ করিলেন না, তাঁহার মুখে বিশুমাত্রও পরিবর্তন লক্ষিত হইল না। তিনি কহিলেন, এখন আপনার সন্দেহ দূর হইমাছে কি? আমি ব্যক্তভাবে কহিলাম হা, হইয়াছে। তথন বীরে ধীরে অগ্নি হইতে অঙ্গুলি অপস্ত কবিয়া জিজ্ঞাসা করিলেন, এখন কি আমি বাইতে পারি? আমি অভুমতি দিলাম। তিনি অব্দর্শিত নদাতীব বাহিয়া ধীরে ধীরে চিতার নিকটে গিয়া চিতার আরোহণ কবিলেন।

আমি অনেককণ প্রাস্থ সেই চিতার নিকটেই ছিলাম, শেষে অগ্নির উত্তাপে সরিয়া আসিলাম—তথনো তাঁহার কণ্ঠ হইতে শন্দমান শুনিতে পাই নাই, চিতার মধ্যে কিছু যে নড়িতেছে এমন প্র্যাস্থ দেখি নাই! কেবল দেখিলাম তাঁহার দেহের উপরিস্থিত কাঠগুলি একবার অতি ধীরে একটু নড়িয়া উঠিল তার পর সব স্থিব। (১৬)

301 "I stood near enough to touch the

ইহাই বঙ্গরমণীর অসাধারণ মৌন-বিক্রমের শ্রেষ্ঠ ও পবিত্র ইহারই কথা শ্বরণ করিয়া বিশ্বকবি ববীন্দ্রনাথ निविद्याद्य- वार्नात महे लान-विमर्कन-भवाग्रना আমরা আজ প্রণাম কবি। তিনি যে জাতিকে স্তন দিয়াছেন, স্বর্গে গিরা তাঁহাকে বিশ্বত হইবেন না। হে আর্ব্যে, তুমি ভোমার সম্ভানদিগকে সংসাবের চথম ভয় হইতে উত্তীর্ণ করিয়া দাও। তৃমি কখনও স্বপ্নেও জান নাই ষে তোমার আত্মবিশ্বত বীরত্ব দারা তুমি পৃথিবীর বীর পুরুষদিগকেও লজ্জিত করিতেছ। দিবাবদানে সংসাবের সকল কাজ শেষ করিয়া নি:শব্দে পতির পালক্ষে আরোহণ করিতে, দাম্পত্যজীবনের অবসান দিনে সংসারের কাৰ্যক্ষেত্ৰ হুইতে বিদাৱ লইয়া ভূমি তেমনি সহজে বৰ্ণবেশে সীমস্তে মঙ্গল সিন্দুৰ পৰিয়া পতির চিতায় আবোহণ করিয়াছ। মুডাকে তুমি স্থন্দর করিয়াছ, শুভ করিয়াছ, পবিত্র করিয়াছ—চিতাকে তুমি শব্যার ক্রায় আনক্ষময় কল্যাণময় করিয়াছ। বাংলাদেশে পাবক তোমারই জীবনাছতির খারা পুত হইয়াছে—আজ হইতে এই কথা আমরা শ্বরণ করিব। আমাদের ইতিহাস নারব; কিছে অগ্নি আমাদের বরে ঘরে তোমার বাণী বহন করিতেছে। তোমার অক্ষয় অমর অরণ নিলয় বলিয়া সেই অগ্নিকে তোমার সেই অস্তিম বিবাহেব জ্যোতি:সূত্রমর অনম্ভ পট্ট-বসন্থানিকে আমরা প্রত্যুহ প্রণাম করিব। সেই অগ্নিশিখা তোমার উন্তত বাছ্রুপে আমাদের প্রত্যেককে আশীর্কাদ করুক। মৃত্যু যে কত সহজ, কত উদ্ধান, কত উন্নত, হে চিব নীবৰ স্বৰ্গবাসিনী, অগ্নি আনাদেৰ গৃহ-প্ৰাৰণ ভোমার নিকট হইতে সেই বার্ছা বহন করিয়া অভয় ঘোষণা করুক !

pile, but I heard no sound and saw no motion, except one gentle upheaving of the brushwood over the body, afterwhich all was still;—Bengal under the Hr. Governors—Buckland—vol —1—p 160—62.

কোন একজনকে

ঞ্জিলগৎকুমার বিশ্বাস

ভূমি বলো—কি সন্দর দেজেছে আকাশ
একবার চেরে দেখ ভাই!
আবো বলো কি বে গন্ধ মেখেছে বাতাদ!
আমি শুনে চোখ হুটো বেদনাব আগুনে জ্বালাই।
ভেতলার ছাদে শুরে অলদ সদ্ধার
ভিজ্জল আকাশে ভূমি মেলে দাও মনের ঠিকানা।
কন্ধ সাদা মেঘ উড়ে বার,
ভাবি সাথে মেঘ হরে পাড়ি দাও কভ পথ বন্ধর অকানা।

আমি শুধু চেবে দেখি, ভাবি বহুদূৰ চঙ্গে গিয়ে আবাৰ কেমন কৰে ফিবে আগে। পৃথিবীৰ এই বুকে।—ভূমি সিদ্ধু নও বিষপ্লাবী, ভূবুও চেউ-এৰ ভাবে দেভাৰ বাজিৱে ভূমি হাসো; কত দূরে চলে যাও—মামি শুধু এ কুলে দাঁড়িয়ে পাই কিছু অনুভব, কল্পনায় ভবে নিই তাবে। তোমারি বুকের নীল, আমি যাতে বহুবার গিয়েছি গাঁ^{বিয়ে}। রূপকথা লেখে কত আকালের আলোব সম্ভাবে।

আমিও আবাক হই নদনদী নগরীর রূপে, তোমার মনের মাঝে তারা তোলে চেউ;
আমার মনের মাঝে সাড়া তার জাগে চূপে চূপে,
তোমার তরঙ্গে স্থির থাকে নাক' কেউ।
তাদের আনশ কি তোমার মনের মাঝে জন্ম নিয়েছিল
বেমন নদীর জন্ম নিঝারের অশাস্ত নর্তনে ?
শিল্প আর জীবনেরা তোমার মনের মাঝে বাসা বেধেছিল
প্রেরণার অনুত বা—একটি তীত্র স্করের শাক্ষমে ?

की शराह निमारेराव ? की जानि की शन ?

কথনো হাসছে কথনো কাঁদছে কথনো ধুলোয় গড়াগড়ি যাছে। কথনো মালসাট মেরে হুন্ধার-গর্জন করছে। কথনো বা সর্ব-অঙ্গ স্তম্ভাকার হয়ে যাছে। দটা ভয় পেয়ে লোক ডাকাডাকি শুরু করে দিয়েছেন। ওপো দেখে যাও, আমার নিম'ইয়ের এ কী হল ? এই দেখ, যাকে কাছে পাক্তে মারছে, নিজের ঘরদোর ডছনছ করছে। এ কী, মাটিতে যে পড়ল মূর্ভিত হয়ে। শিগপির যাও, বজি ডাকো।

ছুটে এল লোকজন। সবাই বললে, বায়্রোগ হয়েছে। মাথায় বিষ্ণুতেল দাও।

আমি সব ব্যবস্থা করছি। বললে বৃদ্ধিমস্ত খান। নবদ্বীপের টাকাওয়ালা লোক, নিমাইয়ের প্রতি পক্ষপাতী। ধরে আনল কবরেজ। কবরেজ তেল চাপাল।

তেলে ঠাণ্ডা হলনা নিমাই। আচস্থিতে অলোকিক শব্দ করে উঠছে: 'আমিই সেই, আমাকে কেউ চিনতে পারলনা।' বলে ছুটল রাস্তা দিয়ে। 'বিশ্ব ধরে আছি বলেই তো আমি বিশ্বস্তর।'

ধরো, ধরো, নিশ্চয়ই ওর ওপরে দানবের অধিষ্ঠান হয়েছে। কেউ বা বললে, ভর করেছে ডাকিনী। নারায়ণতৈল লাপবে। আর এ তেল শুধু মাধায় নয়, মাথাতে হবে সর্বাঙ্গে।

তৈলাক্ত গলেবরে খলখল করে হাসছে নিমাই।

হাহাকার করছেন শচী, আর সকলেও মিয়মাণ, মহাবল বায়ু কী ভাষণ কাগু করে ফেলল, আমাদের সে সোনার নিমাই আর নেই—চারদিকে এমনি যখন বিষান আর নৈরাশ্য—হঠাৎ স্বভাবের আলো ঝলমল করে উঠল। এ কাঁ, কই সেই মেঘবিকার, এ যে দেখি নীলের নির্মল থালায় রুপালি মোদের ক্ষার। নিমাই আবার আপের মতন হায়েছে। বায়ু নেই, আগুন নেই, নেই আর আকালন। ফিরে এসেছে স্বরূপানন্দে। হাসছে মৃত্-মৃত্।

मवारे रुतिस्विन करत्र छेठेन।

কেউ এল উপদেশ দিতে। বললে, 'ভূমি এত বৃদ্ধি ধরো, তবু ভূমি কৃষ্ণভলন করো না কেন ?'

'যার কৃষ্ণকথাক্রচি সেই ভাগ্যবান।' প্রহায় মিত্রকে বললেন মহাপ্রভূ।

मीनाजनवानी बान्नव, टाश्रुव टाङ्क कार्ष्ट अरम

Anjers areis

Modland my 33

বললে, 'প্রভু, আমি দীনাধম গৃগস্থ। আমার কৃষ্ণকথা শোনবার খুব ইচ্ছে। ভূমি দয়া করে শোনাবে আমাকে কৃষ্ণকথা ?'

প্রভূ হাসলেন। বললেন, 'আমি কৃষ্ণকথার কী জানি? জানে শুধু রামানন্দ। ভার কাছ থেকেই শুনি আমি কৃষ্ণকথা। তুমিও তার ক:ছেই যাও। সেই তোমাকে শোনাবে।'

প্রত্যায় মহাপ্রভুর দিকে তাকিয়ে রইল নির্নিমেবে। কী অনবল দৈজ, পাণ্ডিত্যের এক তন্তু অভিমান নেই, না বা কৌল'জের। আর ভক্তের গুণগরিমা প্রকাশ করতে কী উচ্ছ দিত আগ্রহ।

'মিশ্রা, তোমার যে কৃষ্ণকথা শুনতে মন হয়েছে, ভোমার এ মহাভাগ্য।' বললেন আবার মহাপ্রভূ।

যদি হরিকথাতে রতি না হয় তা হলে ধর্মকর্ম পরিশ্রমের সামিল। যার ভপবানের প্রতি টান আছে তার আর টানাপোড়েন নেই, নেই কোনো টানাটানি। তোমার যখন কৃষ্ণক্থায় লালসা তখন তোমার ধর্মামুষ্ঠানও অর্থায়িত।

প্রহায় পেল রামানন্দের বাড়ি। রামানন্দ বাড়ি নেই। চাকর বললে, আপনি বসুন। শিগসিরই ফিরবেন।

'কোথায় ভিনি ?'
'তাঁর বাগানে আছেন।'
'বাগানে ? সেথানে কী ?'
'অভিনয় শেথাচ্ছেন।'
'কাকে ?'
'হুটি পরমাস্থন্দরী কিশোরী দেবদাসীকে।'
'বার কেউ আছে সেখানে উপস্থিত ?'

'না, আর কেউ নেই।'

ভূত্য আরো বিশদ হল। রামানন্দ রায় নাটক লিখেছেন, নাম শ্রীক্ষপরাথবক্সত। আকাজকা, স্বয়ং ক্ষপরাথের সামনে দেই নাটকের অভিনয় হবে। ভারই ক্ষপ্তে এত চেষ্টা-যত্ম-আয়াস-ক্রেণ চলেছে।

জগন্নাথবল্লভ নাটকে পাত্ৰ-পাত্ৰী তো অনেক। নায়ক কৃষ্ণ ও ভার সথা মধুমঙ্গল এই তৃই পাত্ৰ আর পাত্ৰী সাত জন। নায়িক। রাধিকা, ভার সথা মাধবিকা, মদনিকা, শশীমুখী, অশোকমঞ্জরী আর মদনমঞ্জরী আর বনদেবী বৃন্দা। এত জনের মধে। শুধু তৃটিকে বেছে অভিনয় শেখাচ্ছেন কেন ? তাও নির্দ্দন বাগানে?

শুধু অভিনয় শেখাচ্ছেন । নিজের হাতে তাদের গায়ে তেন-হলুদ মাধাচ্ছেন, তারপর স্নান করিয়ে গা মেজে দিচ্ছেন। স্নানাস্তে সর্বাঙ্গ মণ্ডন বসন পরাচ্ছেন। কোন্ অঙ্গে কোন্ অলন্ধার শোভা পাবে তাই দিয়ে সাজাচ্ছেন বেছে-বেছে। সাজাচ্ছেন মাল্যাফুলেপনে। বলো কি ।

উপায় কী ভাছাড়া। অভিনয় নিখুঁত করা চাই।
যে তৃষ্ণনকে শেখাচেছন তাদের একজন হয়তো কৃষ্ণ
আরেকজন রাধিকা। কৃষ্ণ-রাধিকার নিগৃত্-পূর্গম ভাব
রামানন্দ ছাড়া আর কে শেখাবে? অভিনেত্রীদের
অঙ্গসোষ্ঠব কমনীয় না হলে অভিনয় মধুর হবে কি
করে? আর এই মাধুর্য সম্পাদনের জক্তে যত
লৌকিক উপায় ও উপাদান আছে সব কিছুই সম্বল
করেছে রামানন্দ। অঞ্গলীলায় যারা অভিনয় করবে
ভাদের দেহ স্মিঞ্জাবণ্যে কাস্তোজ্জল হতে হবে তাই
রামানন্দের নিজ হাতে কালন-মার্জন, নিজ হাতে
মর্দন-মশুন। আমি নিজ হাতে ধ্য়ে মুছে সাজিয়েশুছিয়ে না দিলে আমার তৃপ্তি নেই। আমার পূজা
রাগান্ধুগা। আমি রাধারাণীর দাসী। দেবদাসীন্বরের
সেবার সময়েও আমার সেই আরোপ, সেই ভাব।

অভ কথা কে বোঝে! গুম হয়ে বসেরইল প্রান্থায়।

মহড়া শেষ হবার পর দেবদাসীদের প্রসাদ খাইয়ে ভালের নিজ-নিজ ঘরে পাঠিয়ে দিয়ে রামান্স ঘরে ফিরুল। ভৃত্য খবর দিল প্রস্থায় মিশ্র বসে আছে।

সন্ধন্ধার রামানন্দ মিশ্রের কাছে এসে দাঁড়ালো। বললে, 'আপনাকে অনেকক্ষণ বসিয়ে রেখেছি, ক্ষমা করবেন। আপনার পারের ধুলোর আমার হুর পবিত্র হল। বলুন, কা করতে পারি আপনার ক্রক্তে।' বেলা অনেক হয়ে গিয়েছে, মিঞা উঠে পড়ল। বললে, 'আমার অক্ত কোনো প্রয়োজন নেই। শুধু আপনাকে দর্শন করতে এসেছিলাম। দর্শন পেলাম, ভাতেই আমি কৃতকুতার্থ।'

ফিরে গেল প্রহায়।

পরদিন সকালে মহাপ্রভুর কাছে যেভেই মহাপ্রভু জিগগেস করলেন, 'কি, রামানন্দের কাছে শুনলে কৃষ্ণকথা ?'

প্রাহাম।মন্দের কীর্তিকথা ব্যক্ত কর**ল** বিরক্ত হয়ে।

এ হুর্গম মহিমা। উত্তানের বিরক্তে বঙ্গে পূর্ণ-যৌবনা দেবদাসীদের অভিনয় শিক্ষা দিছেন। ভাব-বিদ্রমের আধার নৃত্যুগীতের উচ্ছাস যে সব রমণী, ভালের। শুধু দেখছেনা, স্পর্ণ করছে। অকভিন্তি শেখাতে যেটু হু দরকার শুধু তভটুকু নয়, তার চেয়ে অনেক বেশি অস্তরক্ত। নিজহাতে ভেল মাখাচেছ, স্নান করাছে, গাত্রমার্জনা করে দিছে, রচনা করছে বেশভূমা। কী পরিমাণ চিন্তচাঞ্চল্য হবার কথা সহজেই অমুমেয়। ভার কাছে কৃষ্ণকথা শুনব কি। বরং কলককথা শুনি ?

মহাপ্রভূ বললেন, 'তুমি রামানন্দের কাছেই যাও। সেই সত্যিকার কৃষ্ণকথার অধিকারী '

এ যে আশ্চর্য কথা, প্রাহায় বিমৃচ্ চোখে ভাকিয়ে রুইল।

'হাঁ।, রামানদের কথা আশ্চর্য কথা।' বললেন মহাপ্রাভ্, 'সুন্দরী যুবতী মেয়ে যদি একটুকরো কাঠ বা পাধরকে স্পর্ণ করে তা হলে কাঠ বা পাথরের বী হয় ? কিছু হয়না। কোনো বিকারই তাতে হয়না। রামানন্দও তেমনি কাষ্ঠ-প্রস্তারের মতই নির্বিকার।'

'আপনি বলছেন ?'

ই্যা, আমিই বলছি। গুহু অঙ্গের দর্শনে স্পর্শনেও ভার ভাবান্তর নেই। ভার যে দাসীভাবে আরাখনা। ভার ইক্রিয়ের প্রাকৃত্ত নেই। তুমি ফিরে যাও ভার কাছে। বোলো আমি পাঠিয়েছি। প্রাণ ভরে কৃষ্ণকথা গুনে এস।'

প্রহায় ছুটতে ছুটতে চলে এল রামানন্দের কাছে। লাষ্টাঙ্গ প্রণাম করে বললে, 'প্রভূ আমাকে পাঠিয়ে দিয়েছেন আপনার কাছে।'

'কেন বলুন তো !' এভুর নাম **ও**নে এেমা^{বিট} হল রামানক। 'कुकक्षां भागवात्र पर्ण।'

প্রভূর কুপায় কৃষ্ণকথা অন্তরে ফুরিত হোক। প্রাণের উন্নাসে রামানন্দ বলভে লাগল। আর প্রতায় ? প্রতায় নাচতে লাগল কৃষ্ণপ্রেমে।

দিন শেষ হয়ে যাচেছ তবে না বক্তা, না শ্রোতা কারুই আত্মশ্বতি নেই।

নিমাই চলল ভার শিষ্যদের সঙ্গে লীলা করতে। বললে, 'চলো বাজারে যাই। কভ দিন কিছু আসেনি সংসারে।'

'চলুন।' বললে পড়ুয়ারা। 'কিন্তু কেনবার কড়ি কোথায় ? নিয়েছেন সঙ্গে করে ?'

'কোথায় পাব ? দেখি মিষ্টি কথার পাই কিনা।' নিমাই হাসল: 'দেখি মধুরের বাজারদর কভ ?' বাজারে ঢুকভেই প্রথমে ডাকল তম্ভবায়।

'ও ঠাকুর, আমার দোকানে আসুন, দেখুন না কেমন স্থল্য আর মঞ্জবৃত ধৃতি—'

'क्ट्रे प्रिथि।'

একথানা ধৃতি বাছল নিমাই।

'খুব ভালো, কেমন মিছি অথচ টেঁকসই।' ক্রেডার পছন্দকে তারিফ করল দোকানি।

দাম কত ? আর দাম জিগগেদ করেই বা লাভ কী।'দেব কোথেকে ? একটা কাণাকড়িও হাতে নেই।' দোকানি কাঁপরে পড়ল। বললে, 'ভা দামের জন্মে ভাবনা কি। দাম না হয় কদিন পরে দেবেন।'

'না বাবা, ঋণ করতে পারব না।' নিমাই ফিরে চলল। 'কোনোদিন ঋণ করিনি। যদি নির্দিষ্ট দিনের মধ্যে শোধ করতে না পারি।'

'না পারেন ভো মেয়াদ বাড়িয়ে নেবেন।' গোফানি দোনামনা করতে লাগল।

না বাবা, সেই মেয়াদও বজায় থাকে কিনা ভার ঠিক কি।' নিমাই পা বাড়াল রাজ্ঞায়। 'একে ঋণ ডায় আবার কথার খেলাপ—অত পোবাবেনা। অদৃষ্টে যখন নেই ডখন আর কী করব।'

র স্তায় নেমে পড়েছে নিমাই, পিছন থেকে ভাকল দোকানি। 'ও ঠাকুর, ধৃতিখানা তুমি অমনি নিয়ে যাও। তোমার ইচ্ছে হয়েছে তাই আমি কুপা হয়েছে বলে মনে করছি। তুমি যদি নাও মনে হক্ষে ভাইডেই আমার সঙ্গল।'

নিমাই নিল হাত বাড়িয়ে। 'ও ঠাকুর, পান খেয়ে যাও।' তাযুলি ডাকল। হনহন করে চলে যাছে নিমাই, বললে, পান খাবার কড়ি নেই।

'আহাহা, নাই বা থাকল, এক খি**লি পান** ডোমাকে খাওয়াতে পারি না ?' পানওয়ালা বললে ব্যগ্রহয়ে।

নিমাই থামল। বললে, 'তুমি খাওয়াতে চাইলে আমিই বা বিনা কড়িতে খাব কেন ?'

'না থাও তো, তুমি হাতে নিয়ে ফে**লে দাও** রাস্তায় —'

'তা ভোমার জিনিস আমি অমনি-অমনি নেবই বা কেন, ফেলবই বা কেন ?' নিমাই মুখ ফেরাল ; 'যথন স্বঞ্চল হব তথন কিনে খাব।'

না, তুমি যদি আমার হাতের পান না খাও আমি প্রাণ দেব। ভোমাকে বিনা দামে পান খাওয়াব এই আমার প্রাণের অভিলাষ । পানওয়াল। নিমাইয়ের হাত ধরল।

নিমাই হাসতে হাসতে বললে, 'ভোমার প্রাণ ষাওয়ার চাইতে আমার পান খাওয়ায় বঞ্চাট কম। দাও তাহলে এক খিলি।'

পর্ণে-চূর্ণে-খদিরে-কপূ^{*}রে পান সা**জতে লাগল** তামুলি।

বাজার থেকে নিমাই চলল এবার গোয়ালার ঘরে। বললে, 'দই-ক্ষার কী আছে আনো দেখি।'

পোয়ালারা আনতে লাগল ভাঁড়ে ভাঁড়ে। বা পারো খাও নয়তো পাঠিয়ে দিই বাড়িতে। দাম ? দাম কিসের ? তুমি খাবে এই তার দাম।

'ভালো দেখে গন্ধ আনো।' গন্ধবণিকের ঘরে গিয়ে হাঁক দিল।

নিয়ে এল দিবা পদ্ধ। দাম কন্ত নেবে ? আমার পদ্ধ যদি ভোমার পায়ে লাপে, ভোমার পায়ে থাকে ভাই আমার দাম।

মালাকরের ঘরে গিয়ে নিমাই বললে, 'মালা দাও। দাম দিতে পারব না কিন্তু।'

তোমার পলায় যদি আমার মালা দোলে, সেই আমার দাম।

ভারপর শব্ধবণিকের ঘরে গিয়ে শব্ধ চাইল নিমাই। শব্ধবণিক নিমাইয়ের দক্ষিণ হাতে তুলে দিল শব্ধ। দাম ?

তুমি যদি এই শব্ধে একটি ধ্বনি তোলো, বললে শাঁখারি, ভবে সেই আমার জয়ধ্বনি। [ক্রমশঃ।



মোহনদাস করমচাঁদ গান্ধী ও নেতাজী স্বভাষচন্দ্র বস্থুর পত্র-বিনিময়

নেতাজীর পত্র—৮

জিয়ালগোড়া পো:

প্রির মহাস্থানী,

জেলা মানভূম, বিহার, ১৫ই এপ্রিল, ১১৩১

এক তারবার্তায় আব্দু আমি আপনাকে জানাইয়াছি যে, এ, আই, সি, সির অধিবেশনের সময়ে কলিকাতায় আপনার উপস্থিতি অত্যাবশ্রক। ইহা এতই আবশ্রক যে, আপনার স্থবিধার ব্রু, প্রয়েক্তন হইলে এ, আই, সি, সির অধিবেশন স্থগিত রাথা উচিত। অনুগ্রহ করিয়া জানান কোন ভারিখে আপনার পক্ষে ক্লিকাতার আসা সম্ভব হইবে। বিভিন্ন রাজনৈতিক মতাবলম্বী করেকজন বন্ধু আমাকে জানাইয়াছেন যে, এ, আই, সি, সির অধিবেশনের পূর্বেই ওয়ার্কিং কমিটি গঠন করা উচিত। এ-বিষয়ে ভীহাদের অভিমত এতই দৃঢ় যে, তাঁহারা মনে করেন া ওয়ার্কিং কমিটি পূর্বাহে গঠিত না হউলে, এ, আই, সি, সির '৸ধিবেশন ভাকিয়া কোনও লাভ হইবে না। তাঁহারা আরও মনে করেন. আমাদের উভয়ের পত্রালাপের মাধ্যমে কোনও মীমাংসা না হইচল, ব্যক্তিগত (উভয়ের) আলোচনার মাধ্যমে শেষ চেষ্টা করিয়া দেখা উচিত। তাঁছাদের মতে, আমাদের উভয়ের মধ্যে সাক্ষাৎকারের স্থবিধার জন্ম প্রয়োজন হইলে এ, আই, সি, সিব অধিবেশন স্থগিত রাথা উচিত।

ব্যক্তিগত ভাবে আমি অধিবেশন স্থগিত রাখিতে সাহস করি না, (কারণ আমার বিরুদ্ধে দীর্ঘস্তরতার অভিযোগ আসিতে পারে), ৰদি না আপনি পুৰ্কোক্ত প্ৰস্তাব সম্বন কবেন। কিন্তু আমারও দ্বাচ অভিমন্ত এই যে, পত্রবিনিময়ে যদি স্বকল না কলে, তাহা হইলে আমাদের উভয়ের মধ্যে দাক্ষাৎকার প্রয়োজন এবং তাহা এ, আই, সি. সির অধিবেশনের পুর্নেই হওয়া উচিত। ব্যক্তিগত আলাপ-আলোচনাতেও যদি কোনও মীমাংদা না হয়, তাহা হইলে এইটুকু আছত: আত্মপ্রাদ লাভ হইবে যে, যথাসাধ্য চেষ্টা করা হইয়াছে।

বর্তুমান পরিস্থিতি সংক্ষেপে বলিতেছি। একদলীয় কমিটি গঠন সম্পর্কে আপনার উপদেশ আমি গ্রহণ করিতে পারিলাম না; সেক্তর আমি হৃঃখিত। (কি জ্বর তাহা পারিলাম না তাহা প্রবস্তী পত্রগুলিতে জানাইয়াছি। এখানে তাহাব আর পুনরাবৃত্তি করিব না।) অভএব, পছ-প্রস্তাব পাশ হওয়ার ফলে আপনার উপর বে দায়িত অপিত হইয়াছে, তাহা আপনাকে গ্রহণ করিতে इইবে। সোজা কথায়, ওয়ার্কিং কমিটির সভ্যগণের নামের তালিকা আপনাকে ঘোষণা করিতে হইবে। আপনি যদি তাছা করেন, ভাষা হইলে অচলাবস্থার অবদান হইবে, ওয়াকিং কমিটির অধিবেশন বসিবে এবং তাহাব পর বসিবে এ, আই, সি, সির অধিকেশন। এই আশা করা যাইতে পারে যে, তাহার পর সব ঠিক হইয়া যাইবে. আর কোনওরূপ সন্ধট দেখা দিবে না।

যদি কোনও কারণে ওয়ার্কিং কমিটি গঠন করিতে আপনি অস্বীকার করেন, তাহা হইলে আমাদিগকে গোলক্ষাধায় ঘরিতে হুইবে। তথন বিশয়টি (ওয়ার্কিং কমিটি গঠন) এ, আই, সি, সিব সম্মথে অনিশ্চিত অবস্থায় উপস্থাপিত ইউবে। আমার মনে হর, সকলেই ইহা স্বীকার করিবেন যে, এ, আই সি, সির অধিবেশনের পুনেই ওয়ার্কিং কমিটি গঠন সমস্তার সমাধান হওয়া উচিত। কাবণ, তাহা হইলে ত্রিপুরীর ক্রায় এ, আই, সি, সির অধিবেশন একটা যুদ্ধক্ষেত্রে পরিণত হটবে না।

জানি না, এখন আপনি কিরূপ চিস্তাইকরিতেছেন কিছু আমি এই অাশা করি যে, আপনি ওয়ার্কিং কমিটির সভাগণের নাম रचावना क्रियन अवर काठमावश्चात क्षरमान घट्टाइरदन । कामनात অভিমত যদি অন্তরূপে হয় তাহা হইলে আমার অমুরোণ এই যে, আপনি চিন্তা করিয়া দেখুন, ওয়ার্কিং কমিটি গঠন পুর্বাহে না করিয়া কলিকাতায় এ, আই, সি, সির অধিবেশন বসিলে কি ছুর্বিপাকে তাহা পর্য্যবসিত হইবে। বুদি এরপ অবস্থার উদ্ভব হয় (আপনি অভ্যরূপ অভিনত পোষণ করেন) তাহা হইলে আমাদের উভয়ের মধ্যে সাক্ষাৎকার প্রয়োজন এক ভাহার জন্ম প্রয়োজনবোধে এ, আই, সি, সির অধিবেশন স্থগিত রাথাও উচিত !

একটি বিষয়ে সম্প্রতি আমি গভীর ভাবে চি**স্তা** করিতেছি। একদলীয় ক্যাবিনেট সম্পর্কে আমরা বহু আলোচনা করিতেছি কিছ একদলীয় ক্যাবিনেট বৈলিতে আমরা কি বুঝি তাহা নিশ্চয় কবিয়া বলিতে পাবি কি? উদাহরণস্বরূপ বলা ঘাইতে পারে— লক্ষে, ফৈব্রুপুর, হরিপুরা কংগ্রেসের পর বে সকল ওয়ার্কিং কমিটি গঠিত হইম্বাছিল, ভাহাদিগকে আপুনি একদলীয় ক্যাবিনেট বলিবেন না অক্ত নামে অভিহিত করিবেন ? যদি এগুলিকে আপনি अक्रमनीय राजन छारा इंटेल अक्रमनीय वर्नाम मर्ख्यमनीय कार्नियनि गर्रेन महेश विवाप-विभावात्मव धाराधन नाहे। धार्मन यपि ঐগুলিকে সর্বাদলীয় বলেন, তাহা হইলে, তিন বৎসর সাফলোর সহিত কাজ চালাইবার পর, এই বৎসরই বা সর্বদলীয় ক্যাবিনেট কাষ্যকরী হইবে না কেন ? আমার দুঢ় বিশাস, একদলীয় বনমি সর্বদলীয় ক্যাবিনেট গঠন সম্পর্কে পুঁথিগত আলোচনা বদি আমরা ছাড়িরা দিই, তাহা হইলে ওয়ার্কিং কমিটির সভাগণের মোট নামেং একটা তালিকা খাড়া করিতে পারিব বাহা, সামশ্রিক ভাবে এ, আই

দি, সির এবং কংগ্রেসের সাধারণ সভাগণের **আস্থাভাজন হ**ইবে। সমসার এই দিকটি দরা করিয়া ভাবিয়া দেখিবেন।

গুৰ্নীতি, হিংসা ইত্যাদি সমতা দইরাও শাপনি বিশেষ চিন্তাগ্রস্ত। সম্ভবতঃ এই প্রস্তুত্তিকে আপনি মূলগত বলিয়া মনে ক্রেন। বর্তমানে কভখানি ছুর্নীতি আছে, কভখানি হিংসার ভাব বিজমান-এ সম্বন্ধে আমাদের মধ্যে মতভেদ থাকিতে পারে। কিছ এ-বিষয়ে কি আমবা একমত নই বে ঘুনীভিব এক হিংসাব অবসান হওয়া উচিত এবং সেজক যথাযোগ্য পদ্ধা অবসম্বন করা উচিত ? যদি তাহাই হয়, তাহা হইলে আপনি কেন আশহা ক্রিভেচেন বে, কাজের সময় আমরা একযোগে কাজ করিব না বা জুকুরী বিষয়ে আমরা একমত হইব না ?

পত্রটিকে আর দীর্ঘ করিব না। মনের কথা খুলিয়া আপনাকে জানাইয়াছি। আমি পুনরাবৃত্তি করিয়া বলিতেছি যে, ক্যাবিনেটের নপ সম্পর্কে আমাদের মধ্যে আদর্শগত মতভেদ থাকিলেও, ব্যক্তিগত আলাণ-আলোচনার পর আমরা দেখিতে পাইব বে, আসল নামগুলি সম্পর্কে আমরা একমত হইতে পারিয়াছি এবং জরুরী বিষয় সম্পর্কে আদর্শগত যতই বিরোধ থাকুক না কেন, কাজের সময় উপস্থিত হুইলে, একবোগে কাজ করিতে আমরা পারিবই।

আশা করি, কস্তুরবা ক্রত উন্নতি লাভ করিতেছেন এবং অত্যধিক কাঙ্গের চাপ সত্ত্বেও আপনার স্বাস্থ্যের অবস্থা সম্বোষজনক। আমি ধীরে ধীরে সারিয়া উঠিতেছি।

স্থাত্ব প্রধামান্তে-

আপনার স্নেহের

সভাব

িইহার পর মোহনদাস করমটাদ গন্ধীর সহিত নেভাজীর তারবার্ত্রা-বিনিময় হয়। নেতাজী তিনটি এবং গান্ধীজ তিনটি তার-বিনিময় করেন। গান্ধীজি নেতাজীর সাত নম্বর পত্তের উত্তরে কোনও পত্র দেন নাই। গান্ধীজির ১১।৪।৩১ তারিখের তারবার্ডার পর নেতাজী গুইটি ভার পাঠান এবং তাঁহার ৮নং পত্র লেখেন। উগাই তাঁহার শেষ পত্র। পত্রালাপ-পর্বের এইখানেই শেষ। এই শেষ পত্রের পর নেতাক্তা ২খানি তার পাঠান এবং শেষ তারে গান্ধীক্তি জানান যে, পত্রগুলি প্রকাশ করা ষাইতে পারে।

নেভাজীর পত্র---৮নং

জিরালগোড়া পো:. ব্লে: মানভূম, বিহার,

२ • एम अखिन, ১৯७৯।

প্রিয় মহাজাজী.

অন্ত আপনাকে নিয়োক্ত তারবার্ডাটি পাঠাইরাছি:- মহাম্বা পানী, রাজকোট। আপনার করের জন্ত চিস্তিত। সম্বর আরোগ্য কামনা করি। ব্রভহরলালজীর এবং আমার আন্তরিক আশা এই বে, আমাদের উভয়ের (আপনার এবং আমার) সাক্ষাৎকারের ^{কলে} সুফল ফলিবে এবং একট উদ্দেশ্ত সাধনের কর সকল ^{কংগ্রেস্}সেবীর মধ্যে সহবোপিতা সম্ভব করিবে। কলিকাতার আমাদের উভয়ের সাক্ষাংকারের সম্ভাবনার, এ সাক্ষাৎকারের পূর্বে, পত্রগুলি সংবাদপত্তে প্রকাশ করা অনাবশ্রক এবং অবৌক্তিক। প্ৰণাম। স্মভাব।"

গত তিন সপ্তাহ ধরিয়া আমাদের উভয়ের মধ্যে দীর্ঘ পত্রালাপ হইরাছে। ওয়ার্কি: কমিটি গঠন সম্পর্কে এই পত্রালাপ কোনও স্থাকৰ প্ৰায়ৰ কৰে নাই। যাহা হউক উহা একবিষয়ে সহায়ক হইয়াছে—আমাদের পারস্পরিক ব্রুপাপভার মনের ভাব পরিছার করিয়া প্রকাশ করিয়া উহা সহায়তা করিয়াছে। কিছ জরুরী সমস্তার সমাধান এখনই করিতে হইবে, কারণ, আমরা আর অধিক দিন ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের কাজটি ফেলিয়া রাখিতে পারি না। দেশের আভ্রম্ভবীণ এবং আম্বর্জাতিক পরিম্বিতি আজ এমনই বে, এখনই কংগ্রেসসেবীদের পক্ষে বিরোধ ভূলিয়া এক্যবন্ধ হইয়া গাঁড়ান প্রয়োজন। আপনি ভালভাবেই জানেন যে, আন্তর্জাতিক পরিস্থিতি প্রতিদিন অবনতির দিকে যাইতেছে। বুটিশ লোকসভায় বে সংশোধনী বিদ্ন পেশ করা হইয়াছে, তাহাতে দেখা যায় যে, যুদ্ধজনিত করুরী অবস্থার উদ্ভব হুইলে বৃটিশ সরকার, ভারতীয় প্রদেশগুলিছে ষেটুকু স্বায়ন্তশাসনের ক্ষমতা আছে, তাহাও কাড়িয়া লইবার জভ প্রস্তুত হইতেছে। সকল দিক বিচার করিয়া উহা নি:সন্দেহে উপলব্ধ হওয়া প্রয়োজন যে, আমরা একটা দাকণ বিপর্যায়ের সম্মুখীন হইতে চলিয়াছি যদি এখনই আমবা বিভেদ দ্ব কবিয়া নিজেদের মধ্যে একা এবং শংখলা প্রতিষ্ঠিত করিতে পারি, তবেই আমরা সেই বিপর্যারের সহিত যুঝিতে পারিব।

আপনি যদি আগাইয়া আসিয়া নেতৃত্বের ভার গ্রহণ করেন, ভবেই এই কাজ সম্পন্ন ুইতে পারে। তাহা করিলে আপনি দেখিতে পাইবেন বে, আমরা সবাই আপনার অনুগমন করিতে এবং আপনার সহিত সহযোগিতা করিতে প্রস্তুত বহিয়াছি। আপনি আরও দেখিতে পাইবেন যে, জুনীতি দুরীকরণ এবং হিংসাত্মক প্রবণতা নিয়ন্ত্রণ করার ব্যাপারে আমাদের ছই দলের মধ্যে একটা একামত আছে, বদিও হুর্নীভির পরিমাণ এবং বর্তমানে দেশে হিংসাক্তক মনোভাব ঠিক কতথানি আছে দে সম্পর্কে আমাদের মধ্যে মতভেদ থাকিতে পারে। কার্য্যক্রম সম্পর্কে একথা বলা বার যে, কংগ্রেস অথবা এ, আই, সি, সিকেই উহা স্থির করিতে হইবে যদিও প্রত্যেক সভাই ব্যক্তিগতভাবে নিজ নিজ অভিমত উক্ত সংস্থাগুলির সন্মুখে উপস্থাপিত করিতে পারে। কার্যক্রম সম্পর্কে আমার এই কথা মনে হইতেছে বে. বে সঙ্কট আমাদের সম্মুখে আসিতেছে তাহাই উল্ল স্থিব করিতে সাহায্য করিবে এবং তথন ঐ বিষয়ে আর মতভেদের অবকাশ থাকিবে না।

এ, আই, সি, সির অধিবেশনের পূর্কে কলিকাভার অথবা কলিকাতার নিকটে আপনার সহিত সাক্ষাতের জন্ম বিশেষ উদগ্রীব হইরা রহিয়াছি। পশ্চিমবঙ্গে এবং অক্সান্ত প্রদেশে এই মতই ক্রমশ দৃঢ় হইভেছে যে, আদর্শগত বিরোধ এবং অভীত মতভেদ বা মনক্ষাক্ষি সংৰও পাৰুপাৰিক স্বীকৃতিৰ মাধ্যমে ওয়ার্কিং কমিটি গঠন সমস্তার সমাধান করা উচিত। পদ্ধ প্রস্তাব অনুসারে ওয়ার্কিং কমিটি গঠনের দায়িত আপনার। ঐ দায়িত গ্রহণ করিলে আপনি দেখিতে পাইকেন বে, আমরা আপনার সৃষ্টিত বথাসাধ্য সহবোগিতা করিতেছি।

ভোরাই

बिजबनीकास माज

শামি কি তোমার গান গা'ই ?

ভূমি আল কোথা আছে, মরেছ অথবা বাঁচো
আমার তো কিছু জানা নাই।

ভূলে গেছি বেন কবে প্রত্যুবের সে উৎসবে
ভূমি দিয়েছিলে আল্পনা;

খুরে মুছে গেছে সব, আছে কি না অমুভব
নাই—কিছু করি না কর্মনা।
আমি কি তোমার গান গা'ই ?

পুড়ে গেছে ভোবের সানাই।

জীবনের বিপ্রহরে

প্ৰচণ্ড সে সূৰ্যকৰে

স্থালৈ আকাশে চেয়ে চেয়ে
কন্ত বং কত ছবি দেখে যে সন্ধাৰ কৰি ;
ভোমার সে কচি মুখ, মেয়ে,
ভার মানে পায় ঠাই ? আমার তো মনে নাই,
জীবনের প্রথম বাগিণী
কবে কোথা কে বাজাল, আঁগারে অরুণ আলো
কে বুলাল—বাখিনি তো চিনি।
স্থাল আকাশে চেয়ে চেয়ে,
হাজাবো স্থবের ভিড়ে ভোবের সে সুবটিরে

ভুলে গেছি, আনু গান গেয়ে।

নিরো না, নিরো লা অপরাধ।

অনেক ঝড়ের ঘার, মগুপের পায়-পার

মুছে বার মুকুলের সাধ।

চলার নেশায় যদি পার হয়ে গিরিনদী

ভূলে বাই প্রিয় গ্রামখানি,
বার বার আঁথি এসে পথিকে ভূলার শেবে

ভাবে কি দ্বিবে, দোবী মানি ?

নিয়ো না, নিয়ো না অপরাধ—

আমি থাঁটি সোনা নই ভব সোহাগার কই

কাটে না ভো জীবনের থাদ ?

পাখী তো নিজের গান গার।
নিশাতে তরুণ আলো চোখে তার লাগে ভালো
সে তো দ্রে উড়ে বেতে চার।
থাইরে থাইরে তার গান ওঠে অনিবার—
কভু রোদ, কভু সমীরণ,
কভু মুল কভু কল, কভু আকাশের জল,
গান তার কিসের কারণ ?
পাখী তো নিজের গান গা'য়—
সে গান তাহারি বুকে ঘুনাইরা থাকে স্থাধে
আপনা আপনি উছলার।।

ভেবে থাকো বদি, আনমনে
গেরেছি তোমার গান— তটিনীর কলতান
নয় সে তো উৎসের স্মরণে!
বে তট নিকটে তাকে ভালবাসে, ঘিরে থাকে,
তাহারি আঘাতে ওঠে সুর;
ভারে ভাঙে তারে গড়ে তবেই না গান করে—
গিরি-পথ সে তো বছ দূর।
ভেবে থাকো বদি, আনমনে
গেরেছি ভোমারে স্থার, ক্ষমা তুমি করো বোদে,
ভূলে বেয়ো ভোরাই স্থপনে।

কওহর এখানে গতকাল আসিয়াছিল। বর্ত্তমান পরিস্থিতি সম্পর্কে ভাহার সহিত আমার দীর্থ আলোচনা হয়। আমাদের উভয়ের একমত দেখিয়া আমি আনন্দিত হইয়াছি।

আমাদের মনে হর, আপনার আসিবার সমর কলিকাতার নিকটে কোনও ঠেশনে নামিরা পড়িলে ভাল হর, তাহা হইলে শাস্তপরিবে। আপনি বদি নাগপুর হইরা আসেন ভাহা হইলে মেদিনীপুরই (খড় পপুরের নিকট) সর্বের্যান্তম হইবে। আপনি বদি চুকি হইরা আসেন, ভাহা হইলে, বর্দ্ধমানের নিকট কোনও এক স্থানের কথা ভাবিতে হইবে। এ বিবরে আপনাকে একটি ভার পাঠাইরা উদ্ভরের অপেকার আছি। ভাহা সম্ভব না

হইলে, কলিকাতাতেই আমাদের সাক্ষাৎকার হইবে। আমি ব্যবহরকে আলোচনার যোগ দিতে অমুরোধ করিয়াছি এবং সে সানকে সম্বতি দিয়াছে।

আপনার অবের জন্ত চিন্তাবিত আছি। প্রার্থনা করিতেছি। উহাবেন শীম দূর হয়।

> সঞ্জ প্রণামাজে— জ্ঞাপনার স্লেহের স্কুড়ার

িইহার পর নেতাজী ছইটি এবং গান্ধীজি একটি ভারবার্জা বিনিমর করেন এবং পদ্মালাপ-পর্যের অবদান হয়।

मि भि त= जा शि तथर

রবি মিত্র ও দেবকুমার বস্থ

Prompting সম্বন্ধে কথা ছচ্ছিল, বললেন—মণিমোছন বড় ভালো prompter ছিলো, অভিনেতা তৈরী করতে পারতো। অথচ কি পোলো? কী কঠে মরলো, কি রকম বাড়ির কী মকম বরে! তার আত্মীয় তাকে দেখলে না, অখচ খিয়েটারে প্রথম নাববার সময় মণিমোহনের পেছনে পেছনে ঘুরেছে। কথাগুলো বলেই কি রকম বেন অক্সমনক হয়ে পড়লেন।

উনি যথক চুপ করে বদে আছেন আমরা ক'জন একপাশে বসে তথন ফিসফাস করে কথা কইছিলাম, তারই একটি কথা কালে হতে চমক ভাঙলো ওঁব, প্রশ্ন করলেন—মিতা জীকান্তে কমল করছে? তারপর নিজেই বলে চললেন—মেরেটা জাজনয় তো তালোই করে, তবে বাপ স্বীকার করেব কি না জানিনে। ওর একটি মাত্র দোষ, অভিনয় স্থান্য থেকে করে না, মুখন্থ বলে। approachটা বড় মেকানিক্যাল, দেখো, জীবন রঙ্গে নিভার ভূমিকা করেছিলো বন্দনা, বড় তালো করেছিলো। জীবন সম্বন্ধে বিশেষ করে ছালে তালো। কর্ণেল ক্রুফার্ড বলতেন, লেখাপড়া না জেলে জানে ভালো। কর্ণেল ক্রুফার্ড বলতেন, লেখাপড়া না জেলে জভিনয় করে কি করে। তাজে বলেছিলুম, They have drank from the fountain of life and not through conduit pipe.

ওঁর পুরোনো দলের কথার বলেছিলেন—আমাদের টুর বড় ভালো হতা। দলটা ভালোই গড়ে উঠেছিলো, মৃত্যু আর **অভান্ত কারণে** ভেঙে গোলো।

এর পর হলো কিদেশী নাট্যকারদের সন্বন্ধে আলোচনা। উনি
বললেন—বার্থন্ড ব্রেক্ট জনেক কিছু করেছেন, মার বিনা ষ্টেক্তে অভিনয়
করানো পর্যস্ত। আমাদের কিছু ওটা ট্রাডিশন—বিনা ষ্টেক্তে, বিনা
দিনে অভিনয় আমরা চিরকালই করেছি। তারপরই হুঃখ করে
বললেন—বাড়ি পেলুম না, experimentation করতে পেলুম
কই। যাত্রাকে জাতে তুলে থিয়েটারকে সরিয়ে দিতে হবে। কিছ
exit-entrance হবে কি করে? যাত্রায় আসরে বলে পড়তো,
কিছু সকলের মাঝখানে বদে বাধা ছঁকো থাছে চোথে লাগতো।

হঠাং বিনয়দাকেই জিজ্ঞাসা করার ভঙ্গিতে বললেন—গ্রীক নাটকের রপ কেমন ছিলো? কিন্তু উত্তরের অপেকা না করে নিজেই বলে চললেন—বাত্রার স্পীচগুলো এক ধরণের আর লখা লখা হতো। এই ছুর্বলভার জন্মই অ্যাপিল করলো না। সীভাতে শিরিশনাবু ভো সীভা বিসর্জনের পর গান ধরলেন। বাত্রা ধরণের বউরের মধ্যে সবচেরে ভালো বই হলো পাশুবগৌরব harmonius বই।

গিরিশ প্রসজেই বলে চললেন—গিরিশবারু নাটক লিথবেদ কথনো ভাবেননি, কিন্তু বন্ধিম আরু দীনবন্ধু দিরে চললো না, ভাই শিধসেন। তবে গান ভালোই বাধকেন। আনবার পূর্বপ্রসঙ্গে ফিরলেন—চারদিক থোলা হয়তো চলাকে না। তবে তিন দিক থোলা রেখে ক্ষমন হয় পরীক্ষা ক'রে দেখতে দোব কী। উঁচুটাকে নিশ্চয়ই নাবাজনা ধায়, অতো উঁচু রাধার করবার কি?

টেজ্বের কথার বললেন—একটি নতুন বই হ'ছে না। বা' ঠেজ আছে তারও তো উন্নতি করা বায়। এই তো অভিটোরিয়ামকে দীতাতপ নিয়ন্ত্রিত করলো, অথচ ভেতরে আর্চ দিয়ে ঠেজকে ছোটো ক'রে দিলে।

আৰি বা কিছু innovation করেছি লোকে নিল না, আৰ অক্সদের চেঞ্চ সবাই নের। একবার রেল লাইনের ধারে একজনকে বুড়ি সাক্ষাতে দেখেছিলুম, বলেছিলো, শোভা ক'রছি। এরাও শোভা করছে।

প্রীর ওপেনিং জার ডেপথ সবচেচর বেশি। দিখিলারীর মজো বই কী জার হবে ?

কোনো বিখ্যাত চিত্ৰ-পৰিচালকের কথা উঠতে বললাৰ—They are hardly educated.

তার পর নির্মলমন্ত্রের কথা বললেন—নির্মলের frustration বাদের জন্তে এতো ক'রলো, কংগ্রেসের জন্তে এতো ক'রলো জথচ তারা সবাই তাকে থেছে ফেলতো। দেনার দারে মাথাপাগল। বাদের মাধ্র করলে ভারা ডাকলে আসবে কি না এ সন্দেহ ছিলো তার। ওর মতো অমন হৃদয়ের বিস্তার অল্পই দেখেছি। আগে ধ্ব মার্ট ছিলো, কিছ বড় ছেলে নারা বেতেই গোঁতোমি আর আলবোলা নিয়ে প'ড়লো। অতো দিন কাউলিলে ছিলো, ইক্নমিল্প আর পালিটিক্যাল ইকনিমিত্ত অতো বড় পশুত কিছ কথনো বছুতা দেয়নি। বিজয় ওকে বাঁচিয়ে রেখেছিলো, এসে আবার থিরেটার দেখতে পারতো লা, ভাবতো আমিই নির্মলকে ভ্রিমেছি।

আমাদের দেশে কেনো কিছু মন-প্রাণ দিয়ে করতে গেলে পেছনে লোক পাওয়া বায় না। গিরিশবার তাই ছেলেকে বলেছিলেন— প্রোপ্রাইটর হ'সনে। ছেলের কথা ভেবে সিরাজে বড় বড় বজ্বজা ঢোকালেন। দানীবার্ব অনেক দোব ছিলো, কিন্তু কমেডি ভালো ক'রতেন, বোধগম্য হ'লেই ভালো ক'রতেন, তবে ভক্তদের ভোবামোদে ভবলেন।

—রবীপ্রনাথকে একবার প্রশ্ন করেছিলুম—বাংলা দেশের নাটক বাঙালীর মডো ক'রডে গেলে কেমন কর্ম হবে ? তাতে বলেছিলেন, তোমরা দেবে, নয়তো এসেছো কেনো ? নিজে কিন্তু এলিজাবেখান ষ্টেক্তকে কলো করলেন, তাঁব সাংকেতিক নাটক মেতারলিংক প্রভৃতির অনুসরণ করে।

—ৰাৰ্শন্ত ব্ৰেক্টৰ নাটক অপূৰ্ব—Exception and the rule
কি সুন্দর ! আক্ষাল তো আর মেরেছেলে নিবে আছ্ডা নেই, তাই
এখন একটা বাড়ি আর কিছু এনডাজমেটস—ৰাতে সবাই কিছু পার।

সিনেমা ভালো কি থিয়েটায় ভালো, জানতে চাওয়ায় বললেন— গত পঞ্চাল বছরে সিনেমায় ক'টা ভালো বই হয়েছে। বছরে লাখ-লাখ নায়ক-নায়িকা হচ্ছে অথচ তিনকড়ি আর তারাকে সকলে মনে রাথবে। প্রভার মতো অভিনেত্রী আর ধ্য়নি।

—দানীবাবুর সঙ্গে প্রাকৃত্র যত বার করেছি Understanding ছিলো যে উনি বথন অভিনয় করবেন আমি কিছু করবো না, কারণ নরেশ একবার ভূঁড়িতে হাত বুলিয়েছিলো। (নরেশ কাত্যায়ন হলেই চাণক্যকে মারবার তাল করে।) দানীবাবুর গলা ছিলো অপুর্ব। উদারা-মুদারা-তারা—তিন প্রামেই গলা চলতে।: তাঁর ব্যক্তিমন্ত ছিলো প্রথম আর তার ক্রোরেই চ'লতো। বিলেতে হ'লে বিপাদে পড়তেন, তবে গলার জন্তে হয়তো ও-দেশেও দাম পেতেন।

কথার ক্সে নৈনে চলগেন—গিরিখবারু আর অমৃত বোসের ছ'দল না হ'লে হয়তো ভালো হতো। ভূবন নিরোকী, অর্ধেন্দু বাবু, অমৃত্তলাল তো ভিলেনই, কিন্তু সবার ওপরে ছিলেন গিরিশবারু। গিরিশবারু ছাড়া থিয়েটার তো কেউ বাখতে পারণেন না। বোল হাজার টাকা দিলেন (আজকালকার এক লাগ বাট হাজার টাকার মতে।) অথচ পার্টনার না করে ভাড়িয়ে দিলে। থিয়েটার থেকে পেতেন কি? মানে একশ'টাক। মাইনে আর দৈনিক চার প্রসার ভাষাক—ভিশেন Dramatic director। রোজ রোজ সেই বোল হাজার টাকা দেবার কথা বলতেন, ভাই ভাড়িয়ে দিলে।

—খিরেটারে দলাদলি চিরকাল। ক্ষেত্রমণিকে ভালো পার্ট না
দিবে Starve করিয়ে করিয়ে নষ্ট করে দিলে। দলাদলিতে
খাকতেন না অর্থে-লুবার। খুব ভালো লোক ছিলেন তিনি। সব
দলেট মিশ তন। খুব দরাজ দিলও ছিলো ধ্রীর। অমন লোক
ভার হবে না।

তার থিরেটারের প্রোনো থাতাপত্র কিছু আছে কিনা জানতে চাওরার একটু বেন বিরক্ত হলেন, বললেন—থাতাও কী আমি রাথবা? বিবেশর যতদিন ছিলো ততোদিন ক.রছে। অশিক্ষিত লোক, বতুকু পেরেছে ততোটুকু করেছে। দে মারা বেতে হারালালবাবুকে বললুম, আপনি থাতা বাথুন। তা'তে বললেন—ওট নিরে অমর দত্তর সজে ঘ্যাঘৃষি হয়েছিলো। বললুম, আমার সঙ্গে হবে না। তবু বললেন—ও ভার আর আমার ওপর চাপাবেন না।

পরের দিন চরিবশে ফেব্রুয়ারী আবার এলেন। তথনও ডিকেন্সের কথাই ঘ্রছে থাথায়। চ্কাত চ্কতে বললেন—ডিকেন্স বড় তালো লোক ছিলেন হে! তবে পরিচিত আন্ধায়দের স্বাইকেই লেখার চ্কিয়েছেন। আব কি অপূর্ব গলা! খ্ব ভ লো অভিনয় করতে পারতেন, নিশ্বে লেখা পড়ে প্রচুর প্রসা পেরছেন, বিশেব ক'বে আমেরিকার। আমাদের দেশে ববীক্রনাথের গলাও ওই রক্ম ছিলো, উনিও ইচ্ছে করলে ওই ভাবে প্রচুব অর্থ উপার্জন করতে পারতেন।

— ডিকেন্সের স্বভাবচবিত্র থুব ভালো ছিলো না। লিটল জ্যানের সঙ্গে থুব ভাব ছিলো, বইও পড়তেন থুব। লিটল জ্যানের সূত্রর পর বই-ই হরেছিলে। একলাত্র সঙ্গী, পড়তে পড়তেই চোধ গোলো।

—হেৰেখ পিৰাৰ্সনেব লেখা জীবনীটা বেশ ভালোই লাগছে। ও'ভে বস্থু literary allusion জাছে। ফিসাবের ইতিহাসেও আছে। আর-কলেজের প্রিজিপ্যালের কাছে সেক্সপীয়ার কোট ক'নে বেকুব বনে গেলুম । স্থামলেট পড়েনি তা স্বীকার করতে রাজী নয় অথচ বা বোঝালুম তা কিছু বুঝলো ব'লে তো মনে হয় না।

কোনো এক অভিনেতা সম্বন্ধে বললেন—ওর যা দাম তা কী পোলো? বন্ধত লাকার বে! শৈলেনেরও ওই দোষ ছিলো, ছ'প্রমা পোলেই ছুটতো। অথচ একটু ভেবেচিস্তে অভিনর করনে ওই তোমাদের কি কুমার—তার চেয়ে অনেক বেশি রোজগার করতে পারতো। অথচ মরবার সময় কী আর রেখে বেতে পেরেছে? ওর একটা কিছ মন্ত বড় ক্মতা ছিলো—সমস্ত চরিত্রের সংলাপ মুখন্ত থাকতো! ও ক্মতা রবিরও ছিলো, আর একটা মজার ব্যাপার ছিল, সকলের আগে এসে মেক-আপ নিতে ব'সতো অথচ কথনো মেক-আপ নিয়ে খুশি হ'তো না।

এর পর রিহার্স্যাল স্থক হ'লো। বললেন—আগের দিন মোডেই রিহার্স্যাল হয়নি, আজ আর কোনো কথা বলবো না।

পঁচিশে ফেব্রুয়ারী বোধ হয় রবিবার ছিলো, সেদিনটা বাদ দিয়ে ছাব্বিশে এলেন। ডিকেন্সের জীবনী পড়ার রেশ তথনও কাটেনি, তাই সেদিনও চুক্কেই প্রথম বললেন—ডিকেন্স মস্ত বড় অভিনেতা ছিলেন, ছিয়ান্তর রাত্রিতে বিশ হাজার টাকা রোজগার করেছেন।

এই সময় সম্ভবতঃ বিনয়দার সঙ্গেই কথা উঠলো, নাটকে কথার দাম কি ? উনি বললেন—নাটকে কথা দরকার বই কি । আলোনিবে পর্দা । উঠলো, সবাইয়ের মনেই যথন ওৎস্কা তথন প্রথম কথাটার দাম কতথানি বলোতো ? প্রথমে চুকে বাজে কথা বললে কী ভালো হ'তো ? তবে আমাদের দেশে নাটকে কথা একট্ বেশি । বার্ণার্ড শ'র লেখাতেও এই দোর আছে । আসলে তিনি লালা নাট্যকার নন, his characters are so many pegs to hang his ideas on ! তবে গল্লটা সব সময়ই বলেছেন। যে বে বইতে গল্প সব চেয়ে ভালোভাবে বলেছেন সেই সেই বইট মাছ্য ভালোভাবে নিয়েছে।

নিৰ্বাক ছবিতে কথা না বললেও তো গল্প বলতে পাবা যায় । বেখানে দেইভাবে বলেছে দেখানে sub title ছাঙাও ব্ৰাতে অম্বিং। হয় না।

এই সময় পার্দিভাল সায়েবের কথা উঠলো, ব্যক্তদের মধে কারা তাঁর কাছে পড়েছেন, তিনি কেমন পড়াতেন ইতার্চি প্রের জবাবে বললেন—পার্দিভাল সায়েবের কাছে তো আমবা পড়েছি, তাঁর কাছে পড়েছে এমন বছ লোক আজও আছে তাঁর লেখা বইপত্তর সমস্ত প্রফুলবাবু নিয়েছিলেন, ওঁর আলা পার্দিভাল সায়েবের ওপর রাগ ধ'রে বেতো আমাদের।

—প্রফুল্লবাব্ থেটেখ্টে পড়া তৈরী ক'রে নিয়ে আসতেন, ত প্রথম দিকে খ্ব ভালো বিসেপসন পাননি ব'লে ছেড়ে দিয়েছিলে পরে পার্সিভাল সায়েব আবার ওঁকে ধ'রে নিয়ে এসেছিলেন, থে পড়াতেন তিনি, কিছ তা' তো আর ভালো পড়ানো নং পড়াতেন ভালো এম, ঘোব। তাঁর পড়ানো তনলে জ্ঞানরাতে যার খুলে যেতো, পড়াশোনা বে ভালো জিনিব তা' বোঝা বতো।

এবার বিহাস্ত'ল স্মক করলেন। উদিপ্রীর তাঁবু থে ক্লপকুমানীকে মেবার শিবিরে পৌছে দেবার জন্তে কামবন্ধ বধন ই ক্লিব্রের সঙ্গে কথা বলছে তখন রাম ক্লিয়ের বে কথা আছে মেবারীর অন্তে নয়, ভয় দৃষ্টিতে, আগের দিন সেটা রাম সিংঘের ভূমিকাভিনেতাকে বোঝাতে চেয়েছিলেন, সে বৃশ্বতে পারেনি। প্রথমেই সেই কথা বললেন—কথাটা ও না বৃথেই ব'লছে। কথাটার ভেতরের অর্থ হ'লো Traitor has now turned upon himself, একটা মেয়ের জল্ঞে সমস্ত দেশ আত্মবিসর্জনে প্রস্তুত, অথচ এত বড় গৌরবের ব্যাপারে অংশ গ্রহণ করবার কোনো অধিকারই নেই তার। সেই তৃংথের আভাসই তো ফুটবে কথায়। লোকটার মাথায় কিন্তু তা চোকে না।

গান নাটকে থাকা ঠিক কিনা জানতে চাওয়ায় বললেন—বাংলা নাটকে গান থাকা দরকার, এ বিষয়ে আমি রবিবাবুর সঙ্গে একমত। গান যদি নাটকের moodকে অফুসরণ করে, তবে আপত্তি কিসের ? তা ছাড়া আলমগীনে বাণীবাবু অপূর্ব হব দিয়েছেন। 'অভিথি এসেছে ছাবে'তে প্রথমে দরবাবী কানাড়া লাগিয়েছিলেন, বললুম, ভালো লাগলো না। ভান তো চটেই আগন্তন! শেধ পর্যস্ত বোঝাতে বললেন—কি রস ? বললুম, বিবস!

আবার রিহার্ত্রাল শুরু করলেন, তবে হঠাংই খেমে গিয়ে বললেন—একটা নতুন বই করে। এই বই বিহার্ত্রাল দিতে কুটনাইন গেলার মতে। লাগছে।

বিহান্তাল বন্ধ করে ডিকেন্সের প্রদক্ষ নিয়ে আলোচনা সক্ষ করলন আবার, বললেন—হেন্দেথ পিয়ার্সনা ডিকেন্সের জীবনের স্থাপ্তাল বাদ দিয়ে indomitable spirithte দেখিয়েছেন। ডিকেন্স কাগজ চালিয়েছেন, সিরিয়াল লি থছেন, আবার নাটকও প্রোডিউস করেছেন। ম্যাকারডি থ্ব বন্ধু ছিলেন, ডিকেন্সের গলা ভন পিলে চমকে গিয়েছিল তাঁর, বালছিলেন—আনার কাজ যাবে।

কাব্যনাট্য সম্বন্ধে কথা ছ'লো, বললেন—নাটক কবিভায় না নিয়ে গেলে কিছু হবে না অথত মজা দেখো, কবিভা কেউ পড়তেই গারে না। ছুলে যারা পড়ে, ভারা মাইনে বেশি দেয় অথত নোট ছাড়' চলে না। বাড়িতে অভিধান কিনিয়ে বিপদে পড়েছি। ছেগেরা দেখে না, আমার কাছেই পড়ে থাকে।

—নোট আমিও লিখেছি ফোর্থ ইয়ারে পড়তে পড়তে। জিতেনের দোকানের ধার শোধ দিতে চার-পাঁচজন মিলে ফর্মা-পেছু দশ-পনেরো টাকা নিয়ে লিখে দিয়েছি।

— আমাদের দেশে পরীক্ষা উঠিয়ে দিয়ে প্রিন্সিপ্যালের মাটিফিকেটের ওপর ডিগ্রী দেওয়া উচিত।

—মাপেকার দিনে মাধার মশাররা ভালো ছেলেদেরকে নিজেদের বাড়িতে নিয়ে পিয়ে পড়াতেন। আজকাল তাঁদের প্রাইতেট টিউটরি করেই দিন কাটছে; ভালো ছেলেদের পড়াবেন কথন?

২৭ তারিথেও এলেন। সেদিন গোড়াতেই বিহার্সাল স্কর্ ই'লো। দরাল শা'ব সম্বন্ধে কি ভাবে কথা বলবে, বোঝাতে গিয়ে বিশ্নেন—দরাল শা'কে একটু থাতির দেখানো দরকার। আজ-দালকার মন্ত্রীদের কেমন থাতির করা হয়, পাতিরালা ইত্যাদি বাজানের কিন্তু তার চেয়ে অনেক বেশি মন্ত্রীদের থাতির করতে হতো। বাজানের অবস্থা মুখল দরবারের মতোই ছিলো, সবাই খুব মাখা নোরাতা। দেওরানের ক্ষমতা কতো ছিলো, ইচ্ছে করলেই বাজাকে বাজাচাত করতে পারতো। অধ্যুচ সামনে কি বিনত, কথার কথার গরীব পরোধার, অল্পনাতা বলেই চলেছে। দোল এসে পড়েছে, সেদিন আবার হুপুর পর্বস্থ ট্রাম-বাস বন্ধ.
তাই নিয়ে কথা ওঠায় বললেন—দোলের একটি barbarous ভাব
আছে, বড়বাজারে দোল থেলা বন্ধ করা উচিত। গান বা গায়, সে
ছোটদের শোনবার অযোগা: মনে একটা খায়াপ ইম্প্রেশন হয়।
কনষ্টেবলরা কিন্ত খ্ব ভদ্রভাবে দোল পালন করে। দোলে আবীর
আব লাল বঙ্ড দেওয়াতেও থাবাপ কিছু নেই। তবে আ্লকাতরা,
বাঁছরে রঙ, ছাপ এগুলো বিকুত ক্রচির পরিচায়ক।

থিয়েটারের সাজ-পোষাক প্রসঙ্গে বললেন—পোষাক ঠিক ক্লিচি মাফিক হয় না ! লোকে পোষাকের দোকান করে না কেন ? তাজে তা লাভ হয় । থিয়েটারে এমনিতে সবাইকেই এক রকম সাজিরে দেয় । আমরা প্রারে খুব চেপ্তা করে উন্নতি করেছিলুম, বাধাল বাবু (রাথালদাস বক্ষ্যোপাধ্যায়) নিজে এসে সবাইকাব আলালা আলালা রকম পাগড়ী বেঁধে দিতেন, অবন বাবুও হয়দম ' আগতেন । তথনকার দিনে পণ্ডিতয় সংস্কৃতিবানয়৷ প্রায়ই থিয়েটারে আগতেন ।

ইংরেজের সার্টিফিকেট ছাড়া আমানের এথনও চলে না, আমি
দশন টশন বৃঝি না, থিয়েটাব বৃঝি। আমানের দেশে যাত্রা ছিলো
এথনও আছে। আর আমানের ভরত মুনির সময়কার নাটক আর
ইংরেজনের নাটকে অনেক মিল ছিলো।

— নাটককে যাত্রাইজড় কথতে হবে, তার জঞ্জে দরকার লেখক। যোগেশ বাবু থাকলে পাবা যেতো। তবে এখনও লেখক পাওয়া যেতে পাবে। আসলে চাই কিছু আগ্রহণীল ব্বক-যুবতী, বসবার জায়গা, সতর্কি, তামাক থাবার জায়গা আর কিছু অর্থ। বাজে কথা বলতে বলতেও ্ই বিহার্গাল হয়।

আমেরিকান ভাইস দেশে খুবই আসছে, আমেরিকান ছবি বোধ হয় আমাদের দেশে সবচেয়ে বেশি আসে।

Sacrilege করতে আমরা ভয় পাই না। **আমাদের দেশে** যাত্রায় দর্শন, Aesthetics ইন্ত্যাদি সম্বন্ধে এমনভাবে **আলোচনা করা** হতে। যে সাধারণ লোকে বৃষতে পারতো এবং কিছু **খারাপ** convention ছাড়া এর ফল ভালোই হয়েছিলো।

আমাৰ মনে হয়, একজন মহাপুৰুষ আসা দরকার, যিনি আমাদের মনের অক্ষকার ভাড়িয়ে দিজে পারবেন।

এর আগে নাটক নিয়ে experimentation করেননি কেন জানতে চাওদায় বললেন—experimentation করার জড়ে martyr to the cause হবার রাস্তা পেলুম কোথার, বাশের অর্থ না থাকলে কিছু করার উপায় নেই। I am not man enough to do it (i. e. to change the trend), স্তব্ধে খিরেটারকে বাঁচিয়ে রাখা দরকার।

নাটক আজকাল প্রগতিশীল হছে মন্তব্য করার বলকো—
আজকালকার দিনের নাটকে পথ দেগাবার মন্তো কিছু আছে কি ?
প্রগতিশীল তো বলছো, কিছ কোন্ দিকে প্রগতিশীল ? স্বর্থ না
ব্রেই কথা বলো কেনো ? রেডিও অভিনয়ধারা এমন কি পাঠ
করা পর্যন্ত খৃব ক্ষতি করছে, পনেরো মিনিটের মধ্যে শেব করতে হবে,
ভাই গড়গড় করে বলাটা অভ্যাস হয়ে যাছে।

গান ব্ৰতে হলে স্বত্ঞান থাকার কি দবকার জানতে চাওরার ব বল্লেন—সামার নিজের মনে হর স্বক্ঞান না থাক্তেও বেস্থরো গান ন্তনতে কানে লাগে। আমারও এ জ্ঞান নেই, অখচ বেসুরো গান তনে চঞ্চল হই একথা অন্ত লোকে বলেছে।

ছবি কে কেমন আঁকে কার ছবি ভালো দেখার, কেন এই নিরে কথা স্থক হলো, তথন বললেন—ছবি সম্বন্ধে কেউ কোনো উৎসাহ দেৱনি আমাদেব। অথচ ইউবোপে বা আনেবিকার ছোটো ছোটো সহরেও আটে গ্যালারী থাকে। ছোটোরা ভা দেখতে যায়, ছবি আঁকতে শেখে, পারিপার্দ্ধিকের গুণে ছবি সম্বন্ধ জ্ঞান জন্মার। আর আমরা এমন বিবরে বিশেষরূপে অজ্ঞ।

আমার মনে হয়, জাত হিসেবে আমরা ছোটো, তবে আশা করি জগবান আমাদের ত্রবস্তা ঘোচাবেন।

আঠালে কেব্রুয়াবী আর প্রলা মার্ক্ত; তু'নিনই এলেন। প্রথম দিন প্রেক্তে কী পরিবর্ত্ত। করা দবকার এই নিয়ে কথা উঠলো, বললেন—আমার মনে হর বইরের সঙ্গে সঙ্গে প্রোসেনিয়াম পান্টানো উচিত। এনব কথা ভোমাদেবই ভো ভেবে দেগা দরকার, তবে আর কিছু করার আগে কাব্রু করা দবকার। তিন-চার হালার টাকা হ'লেই ভো শুকু করা যায়। তারপর বললেন—ক্ষের লোকের ক্ষৃতি কি রকম খারাপ হ'রে যাছে তা' বলবার নয়। আর্টের আ্যাপ্রিসিয়েশন হয় না আত্মকাল, হয় ফ্যাশন, পনেরো নম্মর পার্ক ব্লিটে দল বেধে স্বাই ভিড় করে যাছে কিছু বোঝে ক'বন? তাছাড়া বোঝাবার লোকও ভো নেই, লোকে ব্রুবে কীক'রে?

— জামার ছাথ হর বেঁচে আছি জথচ শক্তি নেই, গুণুফিলিং জর্মাৎ সবাই মিলে গড়ে তুলবো, এই ইচ্ছেটা তো দরকার। দেশে কোন্ Organisation-টা কাজের ? কাজের Organisation জ্যেন্ত rare। জাসলে willing young man দরকার।

একজন প্রশ্ন করলো গান শেখেননি কেন উনি, উন্তরে বল্লেন—গান শিখলে বোধ হয় ভালোই হ'তো। স্থথের হতো জবিষ্টো। তবে গাইয়েদের জীবনও খুব একটা স্থেগর কিছু নর। জনেক বড় গাইয়ের কথা জানি যাদের জীবন বড় হুথের। এ বিষয়ে যাতিক্রম হ'-চাবজন বাঈস্পী। তালের ভাবটা don't care, লোকের সঙ্গে যা'তা ব্যবহার করে অথচ স্বাই হাত জ্যেড় করে ব'সে থাকে।

আমাদের মধ্য কথা হছিল কোলকাতার সংস্কৃতি-সংখলনের বিবরে, একজন বললো বে হারে কোলকাতার বেড়ে চলেছে সংখলন, একমাত্র তথু বেলেঘাটাতেই দেখুন না, কতগুলোর আবির্ভাব ঘটেছে ! এতে বে সংস্কৃতি বাবে ! এতে হ চাসলেন, বগলেন—সংস্কৃতি বাবে ! বাবে কেনো ! বেলেঘাটা ছো ভালো আবগা, আমি প্রথম ওদিকে বাই উনিশ ভোজাল সালে। সেই সময়েই নম্ববাবৃদের সঙ্গে পরিচর হয়। হেম বাবু মাহুব বেশ ভালো neutral লোক। ওকে পলিটিজে আনেন লাশ মশার তিনি বে সি, আর, দাশ আর অন্ত শব্দ বা ভা একথা কথনও ভাবেননি। তার বুকটা বেমন দরাজ ছিলো, মনটাও ছিলো তেমনি, ওবে মাহুবটামুব বিশেব চিনতেন না। স্থভার বাবু কিন্তু মাহুব চিনতেন ভালো, বার বা দাম তাকে তাই দিভেন। তবে একটা ভূল উনি করেছিলেন, (অবশ্র বিশেব কেউ কেউ বলতে পারেন, তুমি শিলির ভার্ভি দেশের বাজ দিকরে বে, স্বাধীনভার কন্তে বারা জীবনি-পশ করেছেল

জাঁদের কাজের ভূদ ধরো।) কর্পোরেশনে চুকে তাঁরা বেভাংৰ কন্টান্তদের কাছ থেকে চাদা ভূদেদছন ভা'তে ভবিষ্যতে তাঁদের শিশবা বে অপব্যবহার করবে এই কথাটাই ভেবে দেখেননি।

—বিপ্লবীদের টাকা উঠেছিলো ডাকাভি ক'রে। ঢাকার লোক খুলনার, খুলনার লোক ঢাকার ডাকাভি ক'রছো। তার পর সেই টাকা দিরে দল ক'রতো: তার ফলে কতো নির্মাই লোক বে বন্ধ পোরছে তার ইয়তা নেই। বিপ্লবীদের মত ছিলো endjustifies means, সেই নীতি অনুসরণ করতে গিয়ে কতো ভালো ছেলেও immoral কাক্ত করেছে।

একাদমী প্রদক্ষে বললেন—সরকার একটি স্কুল খুললেন, কিন্তু কী হয় সেধানে? বিলেতে একাডেমি আছে, বার্ণার্ড দ'র সব টাকা পাছে। ধ্ব কান্ত ক'রছে। একজন টিরেক্ট্র আছে বছরে আড়াই সাজার পাউণ্ড মাইনে পায়। কেনেথ প্লার্ক বুড়ো হয়েছেন বলে রিটায়ার করেছেন। অন্ত একজন আছেন, লিভাবপুল ম্যাকেষ্ট্রান্থ অনেক কাল অভিনয় করিয়েছেন।

—আমাদের দেশে নাটক পড়তেই বা পারে কে ? পিরিশবার্র
শতবার্বিকী হ'লো অথচ ক'জন জাঁর ক'টা বই পড়েছে আর প'ড়ে
মানে বুরুছে। তাঁর নাটক তো খুব থারাপ কিছু নয়। রবীক্রনাথের
নোটে হ'বানি সঞ্চল নাটক আছে। তপতী আমাদের আগে কেট
বোধবারই চেষ্টা করেনি, কারণ হবীক্রনাথ বইটা পড়ভেও
পারেননি। রাজা-রাণীতে বে সংঘাতের ইংগিত ছিলো তপতীতে
ভাই পূর্ণতা পেয়েছে।

— স্কুলে ছ' বছরে বোল লক টাকা খবচ হলো অথচ হ'লোন।
কিছু। জনসংযোগ বিভাগেও তো কভো খবচ হচ্ছে, স্বায়েরই কিছু
ন' কিছু হচ্ছে জার আমি মোটে ছ'লাখ টাকা পেলে একটা কিছু
করতে পারত্ম।

প্রের দিন যথন এলেন দেখলাম বেশ কুৰ, কিছুদিন আগে কোথার পুরোনো কি একটা বই অভিনয় করেছিলেন, লোকে ভার ছনাম করেছে। তচ্চপোষে বনে বললেন—বুড়ো বস্তেনে জাত খোয়ালুম। ও সব পুরোনো বই কোনো মতেই করা উচিত চরনি। প্রিচিত একজন তো বললে, ও সমস্ত পুরোনো বই ভাডুন, দেখড়েন তো পুতুলখেলা করে বছরুলী কতো নাম করেছে। আপনি তো আবার কাগজ দেখন না, তা দেখা, নাম তো কতলোকেই ক'গ্রম্ম আবার কতো লোকই গেলো, ছত্রিশ বছরে জনেক তো দেখানুম! পাখর ওপরে উঠলেও শেষ পর্যন্ত মাটিতে নেবে জানে।

অভিনেতাদের মধ্যে কার গলা ভালো, এই প্রসঙ্গে বললেনগলা আমার থ্ব থারাপ নয়; আজুকালকার দিনে আমার মতো
গলাও তো দেখি না কারোরই। কিছ দানীবাবু, অমৃত মিত্র ছি
গিরিশচন্দ্রের মতো গলা আমারও নয়।

আবার বললেন—আনেকে বলেন চিরকুমার সভা একটি ভয়নক নাটক, কেন বে অভিনয় হচ্ছে না! চিরকুমার সভা বলি দাটক হয়, জবে আমবা এভদিন বুখাই নাটক করেছি।

Prostitution প্রসঙ্গে বললেন—আমানের দেশে prostitution আছে ব'লে আহবা ছোটো জাত। লগুনে দেশিনি, তবে তনেছি, সন্মোৰ পর Picadillyতে বাপ-ছেলে একসকে পথ চলতে পাবে বা। নিউইক্রৰ্ক বেরেবা কেমন ক'বে পুক্ষকেব pester

করতে পারে ভার প্রমাণ পেরেছি। ওদের দেচণর মেরেরা কিছু নিৰ্লজ । ত্ৰ'-চাৰ হপ্তায় পোঠ আপিসে কাজ ক'ৰে, কি নতুন क्रमानियान या धी धवर्णन व्यव्यात मरक शहरव माहेरव कार করা বার।

—সামাদের দেশের বেখাদের মধ্যেও একটি হ্রী আছে। দারা রাভ ছল্লোড় ক'রে সকালবেলা গলালান দেবে ঠাকুৰপ্রানাম করবার সময় চোথ দিয়ে জল প'ড়ছে দেখা বায়। সোমান ক্যাথলিকদের মধ্যেও ঠিক ওই ভাৰটি দেখা বাৰ ।

—আমাৰের দেশে moral ৰে ভাগ্ৰন্ত ভার poverty is the cause for only cause নয়, কেয়েৰা যদি নিজেৰা ৰোজগাৰ করে তো এ অবস্থার বদল হয়।

বিদেশী, নাট্যকার ও নাটুকে দলের প্রাসক্ত কললেন—বিয়ে ! শেথে ভালো, কিন্তু বড় বস্তুতান্ত্রিক। বিদেশী দলেদের ভালো গুড়ে drilling। নিউইয়র্কে ভালো লেগেছে নিগ্রো বই Green Pastures । नाहेक क्षां क्रांट इ'ल मतकात व्यांग । निर्धारमत्र≹

প্রাণ আছে। আর কি গান! অমন গানের গলা এফেশে

— e'নীলের Desire under the Elms-এ আছে—বীত এসো, নয়তো দেশটা গেল। ওদের মেধ্রেদের আঠারো বছর বরুস পাব হ'লেই কাউকে যদি খুব ভালোবাদে তো বলে, come on, my honey, I will manage.

—বিষে আর সার্বপ্রনীন উংস্বে আমাদের যে বুরুম Waste হয়, তা দেখে মনে হয় এ জাতের কিছু হবে না।

আবার (পুতুল পেলার কথায়) বললেন—নোরা আহাকেও করতে বলেছিলো, তার উত্তরে আমি বলি, ইবসেন আঠারো শ অটেষটি সালের, এখন নোরা পুরোনো হয়ে গেছে, <mark>তার চেয়ে</mark> অনেক শক্তিমতী নারী এখন রণক্ষেত্রে এসেছে।

—ইবসেনের নাটক Dated হ'বে গেছে। সেম্বাপীররের সম্বে তার তফাংও সেইখানেই। সমাজ একটু বনলালেই probleme বদলে যায়। ক্রমণ: ।

রাজধানীর পথে পথে

উমা দেবী

রেড রোডের শুকনো পাতা

উড়তে লাগল কয়েকটি শুকনো ঝরা পাতা ছুটে-চঙ্গা মোটবের সামনে হাওয়ায় হাওয়ায়---বাদামি, হলদে, সালচে আর না-রভ ওকনো পাতা नाना व्यक्तित्र-- इष्ट्राञ्च वा नानान वष्ट्राव । ওরা যেন কয়েকটি ক্ষণ—ছিল স্থপ্ত হ'রে বিশ্বতির মোলায়েম পুরু ধূলোর শ্ব্যায়— ব্দার এই মুহূর্তে জেগে উঠল তড়িং-তাড়িত হ'রে ছুটস্ত গাড়ীর উন্মন্ত আবেগের অগ্নি-গর্ভ স্পর্শে। ওরা যেন কয়েকটি প্রকাপতি— ঘ্মিরেছিল ফুটে-ওঠা নানা বডের মুহুর্তের ফুলমধু পান ক'রে সন্ধ্যার রাভা রোদের ছায়া ছায়া আসবে, বেড রোডের হু'ধাবের গাছের আড়াল-দেওয়া বাসরে। কত উদ্মথিত হৃদয়ের মধু ঝরে-বাঞ্মা মুহুর্তের দল ৰত অঞ্চ করে-যাওয়া কেপামির উনপঞ্চাশে হাওয়া কত স্বপ্নের দিশাহারা চপলতা ওই যুহুঠগুলি—ওই পাতাগুলি— ওই প্রজাপতিদের শুকনো ম'রে-বাওয়া

রঙিন ডানাওলি,

পাতা হ'য়ে যারা আবার উড়তে লাগল ছুটস্ত গাড়ীর প্রমন্ত আবেগের সম্মুখে ব্দগাধে ভূবে ষাওয়ার স্তথে— ঘূম ভেডে বাওয়া শ্বতি-সচকিত পৰীদেৰ মত

কাপতে কাপতে

রক্তিম আলোয় বিহ্বল বাভাগে আগর

অন্ধকারের বহস্তে।

জানলাম---একদিন এই মুহূর্ভও মিশবে ঐ পাতার দলে ঘুমিরে পড়বে হাজার হাজার মুহুর্ত চিরস্তন স্বপ্নে বি:ভার হ'য়ে

ভধু স্বাবার জেগে উঠতে—কেঁপে উঠতে কোনো এক ছুটভ গাড়ীর প্রমন্ত হাওয়ার সন্মূর্বে অবাধে উড়ে বাবার সুখে।

কালীদেবী ও কালীপুজার ইতিহাস শ্রশশিভ্রণ দাশকথ

ত্রাদিতে বে এক মহাদেবীর নিবর্তন দেখিতে পাই, তাহার
সহিত্যাদিয়ে মিলিত হইরাছে আর একটি ধাবা, তাহা ইইল কালিকা
বা কালীর ধারা। এই কালী বা কালিকাই বাঙলা দেশের শক্তিসাধনার ক্ষেত্রে শেষ প্রস্তুত্র সর্বেথির ইইলা উঠিলা দেশের শক্তিসাধনার ক্ষেত্রে শেষ প্রস্তুত্র সর্বেথির ইইলা উঠিলা দেশের শক্তিসাধনার ক্ষেত্রে শেষ প্রস্তুত্র সর্বেথির ইইলা উঠিলা দেশের শক্তিসাধনা
অবং শক্তি সাহিত্যকে ভাল করিয়া বুকিলা লইতে ইইলে সেই জন্ম এই
কালী বা কালিকার ধারাটির প্রাচান ইতিহাস একট্ অনুস্বান
করা প্রেলাজন। কি করিয়া এই দেবা মহাদেবীর সঙ্গে মিলিলা
ক্ষেত্র ভাহার ইতিহাস বহু পুরাবের মধ্যেই ক্ষেত্র পাওলা
বার।

সব দেবীর ইতিহাসই বেদের মধ্যে আবিশ্বাব করিবাব আমাদের **প্রেক্তা। বেদের বাজিস্থক্তকে** অবলম্বন কবিয়া পরবর্তী কালে ৰে এক বাজিদেবীৰ ধাৰণা গভিয়া উঠিয়াছে কাঁচানও কাঁচানও বিশাস সেই রাত্রিদেবটি প্রতী কালে কালিকা কপ ধারণ **করিয়াছেন । আ**নাদের এই কুফা-ভয়ন্ধবা দেবীর প্রসঙ্গে বৈদিক কুকা-ভবন্ধরী নিশ্বতি শেবার কথাও কেচ কেহ অবণ করাইয়া **দিরাছেন। (১) 'শতপথ ব্রাহ্মণ' এবং 'ঐতবেয় ব্রাফাণে' নিক্তি** দেবীর উল্লেখ পাওয়া যায়। 'শতপথ আহ্নণে' দেবীকে কুকা (কুকার ছি ভারেম আসীদথ কুকা বৈ নির্পাতঃ, ৭।২৭) এবং বোরা (বোরা বৈ নিশ্ব ডি: । ৭।২।১১) বলা ইই ছাছে। 'এতরেয় মাজিলে' (BIS) নিশ্বতি দেবীকে পাশহস্তা বলা হইয়াছে একং নিশ্বতি দেবীর হস্তস্থিত এই পাশ ২ইতে ত্রাণ পাইবার জন্ম প্রার্থনা জানান হইয়াছে। এই নিশ্বতি দেবার প্রবর্তী কালে আর কোনও ইতিহাস দেখি না। স্মতরাং বর্ণনার সানাক্ত একটু কোথাও মিল শেখিয়াই কোনও সিদ্ধান্ত গ্ৰহণ কৰা উচিত মনে হয় না। পূৰ্বে ৰলিবাছি, অন্ধলারন্দিণী রাত্রিদেবাকেও কালার সহিত যুক্ত করা হুইরা থাকে। ত্রয়োদশ শতকের প্রথম ভাগে সঞ্চলিত 'সহ্জিকর্ণামৃত' নামক সংস্কৃত সংগ্রহগ্রন্থে কবি ভাসোকের নামে ধৃত একটি প্লোকে দেখি কালীর বর্ণনার বলা হইয়াছে, 'কুংক্ষাম' হকাগুচগুী চিরমবতুতরাং ভৈরবী কালবাজি:।'

বৈদিক সাহিত্যে কালী এই নামটি আমরা প্রথম দেখিতে পাই 'বুশুক উপনিবদে'; সেধানে কালী বজ্ঞাগ্রির সপ্ত জিহ্বার একটি জিল্লা। কালী করাপ্রী চ মনোজবা চ স্পুলোহিতা যা চ স্বধ্যবর্ণী। ফুলিঙ্গী বিশক্ষী চ দেবী লেলায়মানা ইতি সগুজিহ্বা:॥

এথানে কালা আছতি-গ্রহণকাবিণা অগ্নিজিহ্বা মাত্রই; মাতৃদেবীখের এথানে কোনও আভাসই নাই। শুরু বিশ্বকূচীর ক্ষেত্রে
দীপ্যমানা অর্থে দেবী কথাটির ব্যবহার দেখিতে পাই। মহাভারতেও
যক্তাগ্লির এই সপ্তজিহ্বার উল্লেখ দেখিতে পাই (আদি, ২৬২।৭)।
দার্শনিক মতে পঞ্চ ইন্দ্রিয়, বৃদ্ধি ও মন এই সাত্তিকে অগ্নির সপ্তজিহ্বা
বলিয়া প্রহণ করা হইয়াছে।

শ্রুচলিত মহাভারতে একাধিক স্থলে 'কালা'র উল্লেখ পাওয় যায়
এবং পৌরাণিক কালাদৈবীর সহিত মহাভারতের এই সকল স্থলে বর্ণিত
কালাদেবীর বেশ মিল লক্ষ্য করা যায়। সৌপ্তিক পর্নে দেখিতে পাই,
জ্বোণের মৃত্যুর পরে লোগপুত্র অধ্যামা যথন রাত্রিতে পাশুর-শিবিবে
প্রবেশ করিয়া নিজিত বারগণকে হত্যা করিতেছিলেন তথন সেই
হ্নামান বারগণ ভয়করী কালাদেবীকে দেখিতে পাইয়াছিলেন। এই
কালাদেবী রক্তাভানয়না, রক্তমাল্যামুলেপনা, পাশহস্তা এবং ভয়জরী।
কালার ভাষণ স্বরূপ সংহারের প্রতাক; কালরাত্রির্মপনী এই দেবী
বিগ্রহবতী সংহার।

মহাভারতে কালীদেবীর এই উল্লেখ প্রবর্তী কালের বোজনা হইতে পারে! প্রবর্তী কালের ধোজনা না হইলেও এই সব বর্ণনায় কালীব কোনও দেবীদের আভাস নাই; কালী এখানে অত্যম্ভ ভীত মনের একটা ভয়স্করী ছায়াম্তি দর্শনের ক্লায়। কবি কালিদাসের সময়েও কালী কোনও প্রধানা দেবী বলিয়া গৃহীতা হন নাই। 'কুমারসম্ভবে' উমার সহিত মহাদেবের বিবাহ-প্রসঙ্গে বর-বাত্রার বর্ণনার দেখিতে পাই, ইকলাস প্রতের মাতৃকাপণ বিবাহবাত্রার মহাদেবের অনুগমন করিয়াছিলেন; আর—

ভাসাঞ্চ পশ্চাং কনকপ্রভাগাং কালী কপালাভরণা চকাশে। বলাকিনী নীলপয়োদরাজী দূরং পুরংক্ষিপ্তশতহুদেব।। (১।৩১)

কনকপ্রভা তাঁহাদের (সেই মাতৃকাগণের) পশ্চান্তে কপালাভরণা কালী অগ্নে বিহাৎপ্রসারকারিণী বলাকা সমন্বিতা নালমেঘরান্তির ক্যায় শোভা পাইতেছিলেন। মাতৃকাগণের পশ্চান্গামিনী এই কালীদেরী কালিদাসের যুগেও একজন অপ্রধানা দেবী বলিয়া মনে হয়। 'রমুরণেশের' মধ্যে একটি উপমাতেও এই কালী বা কালিকা দেবীর উল্লেখ দেখিতে পাই। রাম-লক্ষণের ক্যানিঃখন ত্রিরা

১। স্থার জন উত্তক্ষ-কৃত Shakti And Shakta প্রন্তের । মুখোপাধ্যার লিখিত বিতীয় পরিশিষ্টে প্রষ্টব্য ।

জ্মক্করী তাড়কা রাক্ষসী বধন আত্মপ্রকাশ কবিল তথন সেই ঘনকৃষ্ণ রাত্রির ক্লার কৃষ্ণবর্ণী তাড়কাকে মনে হইতেছিল চঞ্চলকপালকুগুলা বলাকাযুক্তা কালিকার মত।

ব্যানিনাদমথ গৃহুতী তবোঃ প্রান্থরাস বহুলক্ষপাদ্ধবিঃ। তাড়কা চলকপালকুগুলা কালিকেব নিবিড়া বলাকিনী॥ (১১।১৫)

মল্লিনাথ 'কালিকা' শব্দের অর্থ কালিকাদেরী করেন নাই, 'কালিকা' শব্দের এক অর্থ 'ঘনাবলী', সেই অর্থ ধরিয়া এবং 'বলাকিনী' কথার সহিত যুক্ত করিয়া 'ঘনাবলী' অর্থই গ্রহণ করিয়াছেন; কিন্তু 'চলকপালকুগুলা' কথাটি তাড়কা সম্বন্ধে প্রযুক্ত হইলেও ইহা কালিকা দেবীর কথাই শ্বরণ করাইয়া দেয়।

এই প্রদক্ষে আর একটি তথ্য বিশেষ ভাবে লক্ষ্যণীয়। কবি কালিদাসের কালিদাস নামটির ব্যুৎপত্তি কি ? 'কালীর দাস' এই অর্থে কি কালিদাস ? 'ঈ' এখানে বিকল্পে হ্রম্ব হুইয়াছে, 'কালীদাস' পদও বিকল্পে সিদ্ধ। কালিদাসের লেখার মধ্যে কালী ভেমন কোনও প্রসিদ্ধ দেবীত লাভ করেন নাই বটে, কিছু কালিদাস নামের বৃংপত্তিতে মধন হয়, কালীর দেবীত তথন যত সঙ্কীর্ণ কেত্রেই হোক, প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিল।

কালিদাসের পরে সংস্কৃত সাহিত্যে স্থানে স্থানে এক রক্তলোলুপা ভয়ন্তরা দেবীর উল্লেখ পাই। যে নামেই দেবীকে পাই না কেন, মনে হয় এই সকল দেবী তথন পর্যস্ত ব্রাহ্মণ্যধর্মে স্থান করিয়া লইতে পালেন নাই। আমরা 'থিল হরিবংশে' মন্তমাংসঞ্জিয়া দেবীকে শবর, বর্ণর, পুলিন্দগণ কর্তৃক পূজিত হইবার কথা পাইয়াছি। সুবধার (ষষ্ঠ শতক বা সপ্তম শতকের প্রথম) 'বাসবদত্তা'র আমরা কু সমপুরের গঙ্গাতীরে ভগবতী বা কাত্যায়নীর বাসের কথা জানিছে পারে। এই দেৱা ভক্ত-নিতম্ভ-মহাবন-দাবজালা, মহিৰমহাম্ব-এবং 'প্রণয়প্রণতগঙ্গাধ্যজ্ঞটাজুট-খলিত-জাহ্নবী-স্থলধারাম্বেতপাদপদ্মা' বটেন, কিন্তু 'বেতালাভিধানা'। এই 'বেতালা' অভিধানটিই এখানে তালভদ্ধ করে। বাণভট্ট রচিত (সপ্তম শতক १) 'কাদম্বরী'তে আমরা শবরগণ কর্তু ক বনমধ্যে যে ভাবে রুধিরের প্লাবন দিয়া চণ্ডার' পূজার বর্ণনা পাই, বিশেষতঃ চণ্ডা-পূজক বৃদ্ধ শবরের যে জুগুপ্সিত বৰ্ণনা দেখিতে পাই, তাহা কবির শবরপুঞ্জিতা বক্তলোলুপা ভাগন্ধরী চণ্ডাদেবীর প্রতি অপ্রদারই ভোতনা করে। বাক্পতিরাক্ত (অষ্ট্রম শতক) তাঁহার 'গউড়বহো' প্রাকৃত কাব্যে শব্ৰপুজিতা পৰী বা প্ৰপবিহিতা প্ৰশিববী ব উল্লেখ কৰিয়াছেন। ভবভৃতির রচিত (সম্ভবত: সপ্তম শতক) 'মালভীমাধব' নাটকের ^{পঞ্}নাঙ্কে আমরা নরমাংস-বলিলানে পুঞ্জিতা ভয়ক্করা 'করালা' দে **লির** বৰ্ণনা পাই। এই দেবাই ভয়ত্বরী চামুণা; বনপ্রদেশ সন্ধিহিত ^{चाना}मचार्टेत्र निकट्टे हेशत यमित्र । हेनि कूकवर्ग **डेबा** (मर्वी ।

কৃষ্ণবর্ণ। শোণিতলোলুপা ভয়ন্ধরী চামুগু। দেবীকে আমরা কালী বা কালিকাদেবীর সহিত পরবর্তী কালে অভিন্না দেখিতে পাই। কিছ মনে হয়, ইহার মূলে হুই দেবী ছিলেন; আকার সাদৃত্তে এবং সাধর্মে ইহারা পরবর্তী কালে এক হইয়া গিয়াছেন।

এই কৃষ্ণবর্ণা ভরত্বরী কালিকাও চামুণ্ডা দেবী এক প্রমেশ্বরী নহাদেবীর সঙ্গে যুক্ত হইরা এক হইরা গিরাছেন। মার্কণ্ডের চণ্ডী'ডে

এই মিলনের পৌরাণিক ব্যাখ্যা দেখিতে পাই। উপাধ্যানাদির সাহাব্যেই পুরাণকারেরা এই-জাতীর মিলন মিশ্রণ বা সমন্বরের ব্যাখ্যা দিয়াছেন। চণ্ডাতে দেখিতে পাই, ইন্দ্রাদি দেবগণ শুস্ত নিশুত বধের ব্রক্ত হিমালয়ে ছিতা দেবীর নিকটে উপস্থিত হইলে দেবীর भवीब्रकांव रहेरा यात्र यक प्रती ममुद्धा हहेरानन, यतः यह स्वी যেহেতু পার্বতীর শরীরকোষ হইতে নি:স্তা হইয়াছিলেন সেই 🕶 সেই দেবী 'কৌশিকা' নামে লোকে পরিগীতা হইলেন। (২) কৌশিকী দেবী এইরূপে দেহ হইতে বহির্গতা হইয়া গেলে পার্বতী নিজেই কুফার্বণী হইয়া গেলেন, এই জন্ম তিনি হিমাচলবাসিনী 'কালিকা' নামে সমাখ্যাতা হইলেন। (৩) মনে হর এই যুগে কালিকা দেবী কিঞ্চিৎ প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছেন এবং ব্রাহ্মণ্যধর্মেও থানিকটা গৃহীতা হইয়াছিলেন, সেই জন্ম হিমাচলবাসিনী দেবীর সহিত এইভাবে তাঁহাকে মিলাইয়া লওয়া হইল। এথানে 'কালিকা'র আবিভাব-রহক্ত এইরূপ দেখিলাম বটে, কিন্তু একটু পরেই গিয়া আবার অন্তরূপ দেখিতে পাই। শুম্ব-নিভাম্বের অমুচর চণ্ড-মুণ্ড এবং তাহাদের **সঙ্গে** অন্তান্ত অস্তবগণ দেবীর নিকটবর্তী হইলে---

> তত: কোপাং চকারোচৈরম্বিকা তানরীন্ প্রতি। কোপেন চাক্তা বদনং মগীবর্ণমভূৎ তদা। ক্রকুটীকুটিলাৎ ততা ললাটফসকাদ্ক্রতম্। কালা করালবদনা বিনিক্রাস্তাগিপাশিনী। (१।৫-৬)

'তথন অধিকা সেই শক্রগণের প্রতি অত্যন্ত কোপ করিলেন; তথন কোপের ধারা তাঁহার বদন মসীবর্ণ হইল। তাঁহার ক্রকৃটীকৃটিল ললাটফলক হইতে ক্রত অসিপাশধারিণী করালবদনা কালী বিনিক্রাম্বা হইলেন।' এই কালী দেবী—

২। এই কৌ শিকী দেবী অভিশয় ক্লন্দরী ছিলেন; তাঁহার কপেই শুম্ব-নিশুম্ব মুগ্ধ হইয়াছিল। এই 'কোশিকী' দেবী মূলে (ডক্টর ভাণ্ডারকরের মতে) কুশিক জাতির (tribe) দেবী ছিলেন। प्तिशिष्ट हि, এই को निकी करने ए पति अष्ट-निक्ष व्य कतिया हिलन । কুশিক-জাতির এই কৌশিকী দেবাই কি শুম্ব-নিশুম্ব অন্তর নিধনের উপাথানাদি লইয়া হিমালয়-বাসিনী পার্বভার মধ্যে আত্মবিলীন ক্রিয়া হিমালয়-বাসিনী (मवीरक्टे ७७-नि७प्रचा जिनी कवित्रा তুলিয়াছিলেন ? শিব-পুরাণ-সংহিতায় কৌশিকার ওভ-নিভম্ন হননের বিশেষ কারণ দেওয়া হইয়াছে। মার্কণ্ডেয় চণ্ডাতে দেখিতে পাইতেছি, प्रवीत प्रच इक्टेंड शीववर्ग अनिमायमवी य प्रवी वाहित इहें**लम** তিনিই কীশিকী; কিন্তু পদ্মপুরাণে অন্তকথা দেখিতে পাই, দেবীয় দেহ হইতে কুষ্ণবর্ণা যে রাত্রি দেবা বাহির হইয়া আসিলেন ভিনিই কৌশিকী—এই কৌশিকী দেবীকে বন্ধা বিদ্যাচলে প্রতিষ্ঠিতা ছইতে বলিলেন। কালিকা-পুরাণেও দেখি, কৌশিকা ৰূপে পার্বতীর দেছ হইতে নিঃস্তা দেবীই কুফবর্ণ ধাবণ করিয়া বালিকা রূপ **এছণ** সেই দেবীই কালবাত্তি (থা২৩া২-৩)। বিরোধী উপাখ্যানগুলি দেখিয়া বেশ বোঝা বায়, কৌশিকী নামে বে পৃথকু দেবী ছিলেন তাঁহাকে মহাদেবীর সহিত মিশাইরা **লইবার এই স**ব পৌরাণিক চেষ্টা !

৩। ততাং বিনির্গতারাত কুকাভূৎ সাণি পার্বভী। কালিকেতি সমাধ্যাতা হিমাচলকুতাশ্ররা॥ (৫৮৮) বিচিত্রখট্ । লখবা নরমালাবিভ্বণা ।
দ্বীপিচরপরীধানা শুদ্ধমাংসাভিত্তিরবা ।
আভিবিস্তারবদনা জিহ্বাসলনভীবণা ।
নিময়াবস্তানম্বানা নাদাপুরিভদিও মুখা ।। (৭।৭-৮)

'বিচিত্রনরককাল-ধারিনী, নরমালা-বিভ্বণা, ব্যাহ্মচর্পবিহিতা, ওকমাংলা (মাংসহীন অভিচর্মার দেহ), অতিভৈরবা, অতিবিস্তার-বদনা, লোলজিহ্বা হেতু ভীবণা, কোটবগতে বক্তবর্ণ চক্ক্বিশিষ্ট্য,— ভাঁহার নালে দিও্যুখ আপুরিত।'

দেবী হইতে বিনিজ্ঞান হইয়াই সেই কালীদেবী বেগে দেবশক্ত অনুবেগণের সৈক্রমধ্যে অভিপত্তিতা হইয়া সেখানে মহা-অনুবেগণকে বিনাপ করিতে করিতে ভাহাদের সৈত্তবলকে ভক্ষণ করিতে লাগিলেন। तारे (मची शृंब-तकक, चक्र मशाठक, त्याचा ६ गलपकामिमर रखीखनिक হত্তে লইরা বুং গ্রাস করিতে লাগিলেন। তবু হস্ত'গুলিকে নর, ঘোডার সভিত যোদ্ধাকে, সার্থির সভিত রথকে মুখে কেলিয়া দিরা দম্ভবারা অতিভীবণ ভাবে চর্বণ করিতে লাগিলেন। কাহাকেও চলে ধরিলেন, আবার কাহাকেও গ্রীবার ধরিলেন; কাহাকেও পারের ছারা আক্রমণ করিয়া অক্তকে বক্ষের ছারা মর্দিত করিলেন। সেই অস্বৰগণ কৰ্ড ক নিক্ষিপ্ত শস্ত্ৰভুলিকে এক মহান্তপ্ৰলকে তিনি মুখে গ্রহণ করিলেন এবং রোবে দম্ভদাবাই মথিত (চুর্ণ) করিলেন। অসুৰ দলের কতগুলিকে তিনি মদ'ন করিলেন, কতগুলিকে ভক্ষণ কবিলেন, কতগুলিকে বিভাতিত কবিলেন। অসুরগণ কেচ কেছ অসিধারা নিহত হইল, কের কেহ করালের ধারা তাড়িত হইল, কেই কেই দ্বাঘাতে বিনাশ প্রাপ্ত ইইল। ক্ষণকাল মধ্যে সমস্ত অস্তরনৈত্ত নিপতিত দেখিয়া চণ্ড সেই অতিভীবলা কালীর দিকে ধাবিত হইল। সেই মহান্তব চণ্ড মহাভীম শ্ববৰ্ষণের ধাৰা একং মুখ্য চক্রসমূহের বাধা সেই ভীবননয়নাকে ছাইরা ফেলিল। কিছ কালমেখের উদরে বেমন অসংখ্য সূর্যবিদ্ব শোভা পার সেইরূপ চক্রনমূহ তাঁহার মুখগহবরে প্রবিষ্ঠ হইয়া শোভা পাইল। অভংপর ভৈববনাদিনী কালা অতিরোবে ভীষণ ভাবে অট্টহাস করিলেন— তাঁহার করাল বজেুর অন্ত:পাড়া ভীব্রদর্শন দশনগুলি উজ্জল হইরা উঠিল। ভাষার পরে মহাথড়গ উত্তোলন পূর্বক দেবী হয়ারনাদে (হং শব্দে) চণ্ডের প্রতি ধাবিত হইলেন, এবং তাহার চলে ধরিরা সেই খড় গের দারাই তাহার শিরশ্ছেদ করিলেন। চশুকে নিপতিত দেখিয়া মুণ্ড দেবীর প্রতি ধাবিত হুইল; দেবী ক্রোণে তাহাকেও পড় গের ধারা আহত করিয়া ভূমিতে পাতিত করিলেন। ছতপেষ অস্বরদৈরগণ চণ্ডমুণ্ডকে নিহত দেখিয়া ভয়ে চতুর্দিকে পলায়ন করিতে লাগিল। চণ্ডমুণ্ডের ছিন্ন মুণ্ড হাতে গ্রহণ করিবা কালী हिंखकोत्र निकरते शिवा श्रहण बहेशारमत माम विमालन,—'এই ৰুদ্ধক্তে আমি এই চণ্ড-মুণ্ড ফুই মহাপণ্ড ভোমাকে উপহার দিলাম, তুমি স্বয়া ওম্ব-নিওম্বকে হ্নান করিবে। দেবী চণ্ডিকা ব্রন কালীকে ৰলিলেন,---

> ৰসাং চণ্ডক মুণ্ডক গৃহীৰা সমুপাগতা। চামুণ্ডেকি ততো লোকে খ্যাতা দেবি ভবিব্যতি । (৭।২৭)

'বেহেতু তুমি চণ্ড ও মুণ্ডকে (তাহাদের ছিন্ন শির) লইরা শাসিবাহ, সেই কারণে তুমি লোকে চামুণ্ডা নামে খ্যাতা হইবে।' চণ্ড শব্দ ছইতে বা মুণ্ড শব্দ হইতে চামুণ্ডা শব্দ হয় না;
চণ্ডের ও মুণ্ডের মুণ্ড লইরা তাহার পরে অকারণে চণ্ডে দীর্ঘ করিরা
এবং ল্লীলিঙ্গে 'আ'-প্রতার করিরা চামুণ্ডা শব্দ বানাইতে হয়।
এ-জাতীর ব্যংপত্তিগুলি প্রারই সোঁজামিলের জন্ত পুরাণকারগণ
আবিদার করিরা থাকেন। আসলে পুরাণকার তংকালের প্রচলিত
কালীদেবীকে এবং তৎসদৃশা চামুণ্ডা দেবীকে মহাদেবীর সন্ধিত যুক্ত
করিরা লইবার প্রয়োজনবোধ করিরাছিলেন; স্বতরাং দেবীকে
কালী' করিরা এবং চণ্ড-মুণ্ড ছন্ত্রী চামুণ্ডা করিরা সেই কার্য সাধন
করিলেন।

রজ্ঞবীজ্ঞ-বধের সময়ও কালীদেবী চণ্ডিকাকে বিশেষভাবে সাহায় করিরাছিলেল। অল্পস্তাহত রক্তবীজের দেহ হইতে রক্তধারা ভূমিতে পড়িবামাত্রই সেই রক্ত হইতে রক্তবীজের স্থার অসংখ্য অস্ত্র বেংলা উবিত হইতেছিল; তথন দেবী চণ্ডিকা—

खेवांठ काली: हामूर्त्थ विखवः वहनः कुक्र ॥

দেবী কালীকে বদন বিস্তার করিয়া রক্তবীজের দেহ হইতে নির্গত রক্তবিশু সকল মুখব্যাদনের ছারা গ্রহণ করিতে বলিলেন—এবং সেই রক্তনির্গত জন্মগণকেও ভক্ষণ করিতে বলিলেন। দেবী এই বলিয়া শূলের ছারা রক্তবীজকে আহত করিলেন, কালীও মুখের ছারা বিভাগ বরক্ত লেহন করিলেন। সেই কালী-চামুগুর মুখে পতিত শোণিত হইতে যত সকল অন্তর সমৃদ্গত হইগাছিল তাহাদিগকেও চাম্গু ক্তকণ করিলেন। চামুগুর এইরপ শোণিত পানের ফলে রক্তবীজ নিরক্ত হইয়া গোল এবং দেবী তথন অতি সহজেই তাহাকে হনন করিলেন। কালী-চামুগুর রক্তলোল্পা এই ভাবে চণ্ডীতে নূহন রূপে প্রকাশ পাইল।

বক্তলোল্পা কালীর এখানে যে ভয়ন্থরী রণোন্মাদিনী রুপ শেষিতে পাইলাম অক্তাক পুরাণে এই জাতীয় বতু বর্ণনা দেখিতে পাই। উপপুরাবগুলিতে ইহার আর কিছু কিছু বিস্তারও দেখিতে পাই। পরবর্তী কালের পুরাণতশাদিতে আমরা কালী ও চামুগুাকে এক করিয়াও পাই, পথক করিয়াও পাই। উভয় দেবীর ধ্যানেও পাৰ্থক্য আছে। চামুণ্ডা চতুভূজা নন, ধিভূজা; আলুলিত-কৃন্তলা নন, 'পিঙ্গলমুধ্ৰ' জা (জাটাধাবিণী ?); উলঙ্গিনী নন, শাৰ্গচমাবুতা (কোন কোন পুরাণে গজচমাম্বরা) সর্বস্থলের বর্ণনাতেই দেখি, চামুণ্ডাদেবী নির্মা সা এক কুলোদরী, তাঁছার চকু কোটরাগত। কোন স্থলেই কালিকার এইরূপ বর্ণনা দেখিতে পাই না। সংস্কৃত-সঙ্কলন গ্রন্থভালতে কালিকার বর্ণনায় মাঝে মাঝে দেখিতে পাই যে কালিকা অজিনাবুতা। ৪ 'সত্তিকৰ্ণামূতে' ধুত উমাণতি ধরের একটি শ্লোকেও কালীকে অজিনাবুতাই দেখিতে পাই। ইহা পরবর্তী কালের মি^{দ্রাণের} **কলে ঘটিরাছে** বলিয়া মনে করি। চামুণ্ডার বর্ণনায় একটা জিনিস প্রার সর্বত্রই লক্ষ্য করি, চামুণ্ডা অতি কুধায় কুলোদরী। কবিগণ কতৃ ক কালীর বর্ণনায়ও স্থানে স্থানে কালীকে কুধার্ভারণে দেখি। ভাসোক কৰি কালীকে 'কুংকামা' বলিয়া বৰ্ণনা করিয়াছেন! স্থভাবিতবত্বভাগাগে কালীর বর্ণনার দেখি—

> দীপ্তক্ষেগবোগান্বদনহলহলক্সন্ধিত্বাগ্রলীদ্ধ ক্রমাপ্তকৌজবিল্প্রবল্ডরভবজ্জাঠরাগ্লিক্সিম্।

^{ঃ। &#}x27;সহজ্জিকণীমৃতে' ধৃত।

কালী: কল্পালশেবামতুলগলচলন্মুগুমালাকরালী-গুঞ্জাসংবাদিনেত্রামজিননিবদনাং নৌমি পাশাহিহস্তাম্ । ৫

পুরাণ, উপপুরাণ ও ভন্তাদির মধ্যে আমরা কাশী বা কালিকার দে বিস্তার ও বিবর্তন দেখিতে পাই, সে বিষয়ে আমরা দীর্ঘ আলোচনা করিতে চাহি না। এই বিবর্তনের ভিতরে সর্বাপেকা লক্ষা বন্ধ হইল কালীর শিবের সঙ্গে বোগ। শিব কালীর পদে স্থিতা, কালীর এক পদ শিবের বুকে ক্ষস্ত । সাধকের দিক ইইতে এই তত্ত্বকে নানাভাবে গভীরার্থক বলিয়া প্রহণ করা ইইয়াছে।৬ কিছ ক্ষেকেটি উপাদান মুখ্যভাবে এই শিবারুঢ়া দেবীর বিবর্তনে সাহায্য করিয়াছে বলিয়া মনে হয়। প্রথমত: সাংখ্যের নির্ন্তণ পুরুষ ও বিস্থাত্মিকা প্রকৃতির তত্ত্ব। দ্বিতীয়ত: ভারের 'বিপরীতরতাত্বা' হত্তবা প্রতীয়ত: নির্দ্তিশ পুরুষ ও বিস্থাত্মিকার প্রোধান্ত এবং প্রতিষ্ঠা। কিছে এ বিষয়ে সর্বাপেকা প্রধান কারণ-বাচা মনে হয় ভাচা ইইল এই, প্রাচীন বর্ণনাম কালিকা শিবারুটা নন, শ্বারুটা; অস্তরনিধন করিয়া অস্তরগণের শব তিনি প্রদল্লত করিয়াছেন, সেই কারণেই তিনি শ্বারুটা বিশ্য়া বর্ণিতা। দক্ষিণাকালীর প্রচলিত ধ্যানের মধ্যেও দেখিতে পাই—

শবরূপ-মহাদেব-হৃদয়োপরি-সংস্থিতাম্।

...

মহাকালেন চ সমং বিপরীতরতাতুরাম্।।

প্রবহী কালের দার্শনিক চিন্তায় শক্তি বিহনে শিবেরই শ্বতাপ্রাপ্তির তত্ত্ব থ্ব প্রসিদ্ধ হুইয়া ওঠে, এবং মনে হয় তথন শিবই
প্রবহী কালে বর্ণিত শবের স্থান গ্রহণ করেন—শবারুটা দেবীও
তাই শিবারুটা হুইয়া ওঠেন। অন্তরের শবারুটা বলিয়াই বে দেবী
শিবারুটা বলিয়া কীভিতা বাঙলা দেশের শাক্ত-পদাবলীর মধ্যে এই
সভাটির প্রভাক্ষ প্রভাব দেখিতে পাই। সাৎক রামপ্রসাদের
নানে প্রচলিত একটি গানে দেখিতে পাই—

শিব নয় মায়ের পদভলে।
ওটা মিখ্যা লোকে বলে।।
দৈত্য বেটা ভূমে পড়ে,
মা দাঁড়ায়ে তার উপরে,
মায়ের পাদল্পর্শে দানবদেহ
শিবরূপ হয় রণস্থলে। ৭

মারের পাদস্পর্শে দানবদেছের শিবরূপতা প্রাপ্তির আসল অর্থ ইটল, শক্তিতত্ত্বের প্রাধান্তে শক্তির চরণলগ্ন অস্থরের শবই তত্ত্ব-চৃষ্টিতে শিবে রূপান্তাভিত হইয়াছে। আধুনিক কালে রচিত মৈথিল কুফসিত্ত ঠাকুরের দেবী-বর্ণনাতেও দেখি—'শিবশবরূপ-উবসি তুজ পদযুগ, সদা বাস সমসানে। ৮ ভদ্ধাদিতে শিবের বুকে কালীর প্রতিষ্ঠা বিবরে বছবিধ দার্শনিক ব্যাখ্যা দেখিতে পাই। বেমন মহানির্বাশি তদ্ধে বলা ইইরাছে, তিনি মহাকাল তিনি সর্বপ্রীকে কলন অর্থাৎ প্রাস করেন ব'লয়াই মহাকাল; দেবা আবার এই মহাকালকে কলন অর্থাৎ প্রাস করেন, এই নিমিত্ত তিনি আতা পরম 'কালিকা'। কালে প্রাস করেন বলিয়াই দেবা কালা। তিনি সকলের আছি, সকলের কালস্ক্রপা এবং আদিভূতা, এই নিমিত্তই লোকে দেবীকে আতাকালী বলিয়া কীর্তন করে।—

কলনাৎ সর্বভূতানাং মহাকাল: প্রকীতিতঃ। মহাকালত কলনাৎ স্বমান্তা কালিকা পরা।। কালসংগ্রহণাৎ কালী সর্বেধামাদিরূপিনী। কালসাদাদিভূত্ব্বাদান্তা কালাতি গীসুসে।।

বিভিন্ন পুৰাণ-তন্ত্ৰাদিৰ ভিতৰে 'কালীতন্ত্ৰ'ধৃত কালীৰ বৰ্ণনাই কালীর ধ্যানকপে কুফানন্দের তন্ত্রসারে গুহীত হইয়াছে এবং কালীর এইরপুই এখন সাধারণ ভাবে বাঙলা দেশের মাতৃপুজার গুর্হাত। দেবী করালবদনা, ঘোরা, মুক্তকেশী, চতুতু জা, দক্ষিণা, দিব্যা, মুওমালাবিভূবিতা। বামহন্ত যুগলের অধোহন্তে সন্তশ্হির শিব, আর উধর্ব হল্পে খড়প ; দক্ষিণের অধোহন্তে অভয়, উধর্ব হল্তে বর । দেবী মহামেঘের বর্ণের স্থায় স্থাম বর্ণা (এই জন্মই কালা দেবী স্থামা নামে খ্যাতা) এবং দিগম্বরী : তাঁহার কণ্ঠনায় মুগুমালা হইতে ক্ষরিত ক্ষধিবের দারা দেবীর দেহ চর্চিত ; আর হুইটি শর্বাশশু তাঁহার কর্ণভূষণ। তিনি ঘোরদ্রংষ্ট্রা, করালাস্তা, পীনোক্কতপ্রোধর'; শবসমূহের করন্ধারা নির্মিত কাঞা পরিছিতা হইয়া দেবী হসমুখী। ওঠের প্রাস্তব্য হইতে গশিত রক্তধারা বারা দেবী বিক্রবিভাননা ; তিনি বোরনাদনী, মহারৌদ্রী—শ্বশানগৃহবাসিনী। বালস্থামগুলের ছায় দেবীর জিনেত : তিনি উন্নতদন্তা, তাঁহার কেশদাম দক্ষিণব্যাপী ও আলুলাঞ্ডি। তিনি শ্বরূপ মহাদেবের জ্ঞদয়োপরি সংস্থিতা; তিনি চতুর্দিকে ষোরবকারী শিবাকুলের মারা সমন্বিতা। তিনি মহাকালের সহিভ 'বিপরীভরতাতুরা'-সুখপ্রসন্নবদনা এবং 'শ্বেরাননস্বোক্সা'। (১)

সংস্কৃত সাছিত্যের মধ্যে কালীর বর্ণনা খুব কম পাওয়া বায়।

'সন্থাকিকপাস্তে' অজ্ঞাতনামা কবির একটি চমৎকার কালীবর্ণনা
পাওয়া বায়।—

শিখণে খণ্ডেশ্: শশিদিনকরে কর্ণিয়্গলে গলে ভারাহারস্করলমুজ্চচক্র: চ কুচরো: । ভড়িৎকাঞ্চী সন্ধ্যাসিচয়র্বচিতা কালি ভদয়: ভবাকর: কর্নুপ্রমধেয়ে বিজয়তে।।

শিপণ্ডিনী দেবীর ময়ুরপুছ-চূড়াতেই থণ্ড ইন্ ; কর্ণমৃগলে ছুই
কুণ্ডল হইল চন্দ্র পূর্ব: গলার ভারার হাব, কুচ্মৃগলে উড্ডেচক্র
(চন্দ্রপ্থচক্র); ভড়িৎই কাঞা; স্কাই ছিন্ন মলিন বসন।

'মহানির্বাণ-তত্ত্বে'র মধ্যে কালীর প্রচলিত রূপের চমৎকার একটি আধ্যান্থ্রিক ব্যাখ্যা রহিরাছে। সেথানে দেখি পার্বতী দেখী মহেশরকে প্রাপ্ত করিতেছেন বে, মহদ্যোনি-স্বরূপা আদিশক্তিস্বরূপিনী মহান্থ্যতি-সম্পন্না স্ক্রাতিস্ক্রভ্তা যিনি মহাকালা তাঁহার আবার

ধ। কবি ৰতীন্দ্ৰনাথ দেনগুপ্ত এই কৃধার্তা কালীবৃতিকে

অনলখন কবিয়া একটি অপূর্ব আধুনিক কবিতা রচনা কবিয়াছেন

তাঁহাব 'তিলামা' কাব্যগ্রন্থের 'পশারিণী' কবিতার।

ভাইব্য—'শিবের বুকে ভামা কেন?'—বিজয়ক্তক দেবশ্রা।

^{ী। ভারতচন্দ্র ও রামপ্রসাদ, ডক্টর শিবপ্রসাদ ভট্টাচার্ব,} ৩১৮ পু:।

৮। গীতিমালা, প্ৰীউমানন্দ ঝা সন্থলিত। ১৪।৩১-৩২।

क्षानननना पात्राः ब्रुक्तिनीः ठङ्क् बाय्—हेङानि ।

শক্তিনিরপণ কিরপে সম্ভব ? উত্তরে সদাশিব বলিতেছেন—'হে প্রিরে, পূর্ণেই কথিত হুইয়াছে, উপাসকগণের কার্ষের নিমিত্ত গুণক্রিয়া অফুসারে দেবীর রূপ প্রকল্পিত হুটয়া থাকে। শ্বেতপীতাদি বর্ণ বেমন কুষ্ণে বিলীন হয়, হে শৈলজে, সর্বভূতসমূহ তেমনই কালীতে প্রবেশ করে। এইজন্মই যোগিগণের হিতের জন্ম সেই নিগুণা নিশাকার। কালশক্তির বর্ণ বুক্ত বলিয়া নিরূপিত হটয়াছে। অমৃততত্ত্বের [†]হেতুই এই নিত্যা কালরপা অব্যয়া কল্যাণরপিণীর ললাটে চম্রচিফ নিম্পিত হইয়াছে। নিত্যকালীন শশি সূৰ্য অগ্নি খাবা তিনি এই কালকুত অগৎ সমাক দশন করেন বলিয়া তাঁহার তিনটি নয়ন কল্পিত হইশছে। সর্বপ্রাণীকে গ্রাস করেন বলিয়া এবং কাঙ্গদণ্ডের ছারা চর্বণ করেন ৰিলিয়া তাহাদের রক্তসমূহ এই দেবেশরীর বসনরপে বলা হইয়াছে। ममस्य मनस्य विभाग इंटेएड कीनस्य त्रका शवः य य कार्स स्थातनहें দেবীর বর ও অভয় বলিয়া ভাষিত। বজোগুণজনিত বিশ্বসমূহকে তিনি ব্যাপ্ত করিয়া অবস্থান করেন এই জন্মই, তে ভদ্রে, তিনি বুক্তপ্রাসনভিতা বলিয়া কথিত হন। মোহময়ী সুরা পান করিয়া সেই সর্বসাক্ষিত্বরূপিণা দেবী কালসভূত ক্রীড়ামগ্ন স্পষ্টকে দর্শন করেন। এইভাবে অন্নবৃদ্ধি ভক্তগণের হিতের জন্ম গুণামুসারে দেবীর বিবিধ রূপ কল্পিত হইয়া থাকে। (১০)

'ব্ৰহ্মধানলে' আতান্তোৱে যেগানে আতা দেবী কোন্ দেশে কি
মৃতিতে পৃঞ্জিতা হন তাহাৰ একটি তালিকা দেওয়া হইয়াছে সেথানে
দেখিতে পাই, 'কালিকা বঙ্গদেশে চ', বঞ্গদেশে দেনী কালিকারণে
পুঞ্জিত । উক্তিটিকে আমি ইতিহাসের দিক হইতে গভীরার্থব্যঞ্জক বলিয়া
মনে করি । দেশ হিসাবে বাঙলাদেশই শক্তিসাধনার প্রধান কেন্দ্র ।
পূজার দিক হইতে বিচার করিলে বাঙলাদেশে কালীপৃঞ্জা হইতে
ছুর্গাপৃঞ্জা প্রাচীনতর এবং ধর্মোংসবের রূপে এখন পর্যস্তও ছুর্গাপৃজারই
আধিক ব্যাপকতা, জন্মজিয়তা এবং জাক-জমক । কিছু বাজালী
বে বিশেব করিয়া শাক্ত তাহাত শুধু তাহার ধর্মোংসব রূপে শক্তি-পূজার
জন্ম নয়, তাহা তাহার সাধনার অন্তঃ সেই সাধনার দিক হইতে
বিচার করিলে দেখিব, গুঙীর সপ্তদশ শতক হইতে আরম্ভ করিয়া
বর্তমান কাল পর্যন্ত শক্তি-সাধনার কেন্দ্রে কালী; তারাকেও আমরা
কালীছানীয়া করিয়াই সইয়াছি; দশমহাবিভার ভিতরকার অক্সান্ত
মহাবিভাগণও এক্ষেত্রে উল্লেখবোগ্য।

ছুৰ্গা-পূজা ঠিক কথন স্টতে বাঙলাদেশে প্ৰচলিত দে-কথা একেবারে নিশ্চিত কবিয়া বলা বাম না; তবে খ্রীষ্টাম চতুদ'ল, পঞ্চদশ ও বোড়শ শতকে বচিত কতক্ষি ছুৰ্গা-পূজাবিধান পাইতেছি। এই বিধানগুলি মুখ্যতঃ দেবীপুরাণ, দেবীভাগথত, কালিকা-পূরাণ, ভবিষ্যপুরাণ, বৃহন্ধন্দিকেশ্ব-পূরাণ জাতীয় কয়েকখানি উপপূরাণ হুইতে সন্ধালত।

বিভাপতির 'ছর্মাডক্তিতরঙ্গিনী'তে দেখিতে পাই, 'কালী-বিলাস তত্ত্বে' কার্ডিকগণেশ, জয়া-বিজয়া (সন্দ্রী-সরস্বতী) এবং দেবীর বাহন সিংহ সমেত প্রতিমার শারদীয়া ছর্মাপুকার উল্লেখ আছে। প্রাচীন পুরাণ আদির মধ্যে অল্লিপুরাণের ১৮ অধ্যারে সংক্ষেপে গৌরীপ্রতিষ্ঠা ও গৌরীপুজার বিধান আছে। ঐ পুরাণের ৩২৬ অধ্যারে অভি সংক্ষিপ্ত উমা-পুজার বিধিও দৃষ্ট হয়। গক্ষড়-পুরাণের ১৩৫-৩৬ অধ্যারে নবমী তিথিতে দেবী হুর্গার পুজা-বিধি বর্ণিত ইইয়াছে।

এই দেবীপুজা-বিধানকারগণের পরিচয় অনেইে দিয়াছেন, স্থানী জগদীধবানন্দ তাঁহার 'শুশ্রীচণ্ডী'র ভূমিকার ইহাদের বে সাক্ষিপ্ত বিবরণ দিরাছেন তাহাই এখানে উদ্ধৃত করিতেছি। ["]শ্রীচৈতক্সদে_{বের} সমসাময়িক বিখ্যাত বাঙ্গালী শ্বতিনিবন্ধকার রঘুনন্দন পঞ্চদ (বোড়শ ?") শতকে জ্বাকির্ভুত হন। রঘুনন্দনের (১৫০০-১৫৭৫) 'তিথিতম্ব' গ্ৰন্থে 'হুৰ্গোংসবতত্ত্ব' নামক একটি প্ৰকরণ আছে এবং তাঁহাৰ 'হুৰ্গাপ্জাতৰ' নামক মৌলিক গ্ৰন্থে হুৰ্গাপ্জার সম্পূৰ্ণ বিধি প্রদন্ত। রঘূনন্দন নিজেই স্বীকার করিয়াছেন যে তিনি পূর্বতন পণ্ডিত ও প্রবাদসমূহ হইতে তাঁহার গ্রন্থয়ের অনেক উপাদান সংগ্রহ করিয়াছেন। তিনি কালিকাপুরাণ, বৃহন্নন্দিকেশ্বপুরাণ ও ভবিষ্য-পুরাণ হইতেও বহু বাক্য উদ্ধার করিয়াছেন। তৎপরবর্তী নিবন্ধকার রামকুফের রচিত নিবন্ধের নাম 'ছুর্গার্চ নকৌমুদী'। প্রসিদ্ধ স্মার্ভপণ্ডিত বাচম্পতি মিশ্র (১৭২৫—১৪৮০) তাঁচার **জি**য়াচিস্তামণি এবং বাসস্তীপূজাপ্রকরণ গ্রন্থদ্বয়ে তুর্গাদেবীর মুম্ময়ী প্রতিমার পুজাপদ্বতি বিবৃত করিয়াছেন। রঘুনন্দনের বয়োজ্যেষ্ঠ ডিলেন। বিখ্যাত বৈফবকবি বিদ্যাপতি (১৩৭৫— ১৪৫০) তাঁহার 'হুর্গাভক্তিতরঙ্গিণী' প্রস্তে খ্রী: মুম্ময়ী দেবীর পূজাপদ্ধতি বর্ণনা করিয়াছেন। রঘনন্দনের গুরু শ্রীনাথের 'হর্জোংসববিবেক' গ্রন্থে উক্ত পদ্ধতির আলোচনা পাওয়া यात्र । मुन्नभानिष (১৩११-১৪৬०) 'इर्लीश्मवन्दिवक' ও 'वामुन्नी-বিবেক' এবং 'হুর্গোৎসব-প্রয়োগ' নামক ভিনপানি নিবন্ধ পাওয়া যায়। জীমতবাহন তাঁহার 'ছর্গোংসৰ নির্ণয়' গ্রন্থে মুমুয়ী দেবীপুজার কথা উল্লেখ করিয়াছেন। বাংলার এই ত্রাহ্মণ পণ্ডিত্তম্ব প্রস্পারের সমসাময়িক ছিলেন এবং বাদশ শতকের প্রথমার্থে আবিভূতি হন। শুলপাণি তাঁহার পূর্ববর্তী শ্বতিনিবদ্ধকারন্বয় জীকন ও ৰালকের বাক্যানশা উদ্ধাৰ কৰিয়াছেন। বাংলাৰ প্ৰাচীনতম স্মৃতিনিবন্ধকাৰ ভবদেব ভট্ট তাঁহার প্রন্থে জাকন বালক ও প্রীকরের বছ বাক্য উদ্ধার কবিয়াছেন। জীকন ও বালক বাংলার সেন যাজাদেরও পূর্ববর্তী ছিলেন এবং ভবদেব ভট্ট ছিলেন একাদশ শতকের বাঞ্চা হরিবর্মদেবের প্রধান মন্ত্রী।"

উপরিউক্ত তথাগুলির প্রতি দৃষ্টিপাত করিলে মনে হয়, সক্ষবতঃ
দাদশ ত্রেদেশ শব্দক হইতে হুর্গাপুলা বাংলা দেশে প্রচলিত আছে।
পূজাবিধি রচিত হইবার পূর্ব হইতেই পূজা প্রচলিত থাকে। কিছুদিন
পূজা প্রচলিত থাকিলেই পরে বিধির প্রয়োজনীয়তা দেখা বায়—ধর্মের
ইতিহাসে এইরূপই সাধারণতঃ দেখিতে পাই। বিজ্ঞাপতি বে
'কুর্গাভক্তিতরঙ্গিনী' গ্রন্থ রচনা করিয়াছিলেন তাহা সম্ভবতঃ মিথিলায়
সিহেরাজাগণের মধ্যে সমরবিজয়ী ধীরসিংহের আদেশে (মতান্তরে
ধীরসিংহের পিতা নরসিংহদেবের আদেশে)১১; আদেশ পাইয়াই
বিজ্ঞাপতি পূজাবিধি লিখিতে আরম্ভ করিলেন কিরূপে? 'দৃষ্টা!
নিবছছিতিং'—এ বিবয়ে পূর্ববর্তী যে নিবন্ধ সকল ছিল হাহা দেখিয়া।
প্রথমে হয়ত পূজাবিধি সংক্ষিপ্ত ছিল; রাজা ও তৎস্থানীয় স্বাক্তিগণের
পূজাবিধানও সম্ভবতঃ ভতই বর্ধিত-কলেবর হইতে লাগিল।

১১। উশানচন্দ্ৰ শৃধা কর্তৃ ক জনুদিত ও মুদ্রিত প্রছের সমান্তিতে আছে,—বীরসিংহদেবপাদানাং সমরবিজ্ঞানিং ফুতে তুর্গাভভিতর্গিনী প্রিপূর্ণী।

বর্তমানে আমরা বাঙ্গা দেশে বেভাবে হুর্গাণ্ডা করি, তাহা সম্ভবত: বোড়শ শতকে প্রচলিত হইরাছে। এ সম্বন্ধ প্রচলিত বিশ্বাস এই, আকবরের রাজম্বকালে মনুসংহিতার বঙ্গদেশী প্রান্ধি টীকাকার কুলুক ভটের পূত্র রাজা কংসনারারণ নর লক্ষ টাকা ব্যরে প্রতিমার হুর্গাণ্ডা করেন। কথিত হয়, কুল্ল ক ভটের পিডা উদরনারারণ যজ্ঞ করিতে ইচ্ছুক হইয়া রাজসাহী জেলার অন্তর্গত তাহিবপুরের রাজপুরোহিত পণ্ডিত রমেশ শাল্পী মহাশয়ের উপদেশ প্রার্থনা করেন; রমেশ শাল্পী তাঁহাকে হুর্গাণ্ডা করিবার উপদেশ দেন এবং নিজেই একথানি হুর্গাপ্তাপদ্ধতি রচনা করেন। অত্যন্ত জাকিক্ষক সহকারে সেই পূজা সম্পন্ন করিয়াছিলেন সম্ভবত: উদয়নারায়ণের প্রের বাজা কংসনারায়ণ।

বাওলা দেশে কালীপূজার ইতিহাস আলোচনা করিলে দেখিতে পাই, ক্ষানন্দ আগস্বাগীশ সঙ্কলিত স্থাসিদ্ধ 'তন্ত্ৰসার' গ্রন্থে কালীপুজার বিধান সংগৃহীত হইয়াছে। বাঙলা দেশে 'কালী' নানা প্রকারের আছেন : 'ভল্লদারে' আমরা বিবিধ প্রকারের কালীর সাধনার পদ্ধতি দেখিতে পাই। প্রচলিত মতে কুফানন্দ আগমবাসীশকে চৈত্তক্রদেবের সমসাময়িক মনে করিয়া বোড়শ শভকের লোক বলিয়া ধরা হয়। কিছু পশুভগণ এই কালকে স্বীকার করেন না ; তাঁহারা কুফানন্দের 'তন্ত্রসার' নামক তন্ত্রশান্তের সার সঙ্কলন গ্রন্থকে পববর্তী কালের গ্রন্থ বলিয়া মনে করেন। 'তল্পসারে'র মধ্যে কালী বা খাদাপুজার বিধি ব্যতীত তারা, বোড়নী, ভবনেশ্বরী, ভৈরবী, ছিন্নমন্তা, বগলা প্রভৃতি মহাবিদ্যাগণের সাধন-বিধিও সঙ্কলিত ইইয়াছে। কুফানন্দ ব্যতীত তান্ত্ৰিক সাধনা ক্ৰিয়াকলাপবিধি সম্বন্ধে গ্রুরচয়িতারূপে ব্রহ্মানন্দ ও সর্বানন্দের প্রসিদ্ধি সমধিক।(১২) ব্রহ্মানন্দ পূর্ণানন্দের গুরু ছিলেন এবং আফুমানিক ধীষ্টীয় বোড়শ শতাব্দীর প্রথম বা মধ্যভাগে জন্মগ্রহণ করিয়াছিলেন। ইহার ৰচিত 'শাক্ষানন্দ-ত্যঙ্গিনী'তে শাক্তাদগের আচার অমুষ্ঠান বিশেষ ভাবে ব্যাখ্যাত ^{হইয়াছে} ; দিতীয় গ্রন্থ 'ভারারহত্তে' তারার উপাসনা বিবৃত হইয়াছে। বন্ধানন্দের শিব্য পূর্ণানন্দ পরমহংস বোড়শ শতকের দ্বিতীয়ার্মের লোক। তাঁহার রচিত 'ছাঙ্গারহন্তে' কালীর উপাসকের আচার ষ্ট্রান বনিত হইরাছে। অপর একজন গ্রন্থকার (সম্ভবত: প্রকৃত নাম শঙ্কৰ আগমাচাৰ) 'গোড়ীয় শঙ্কৰ' নাবে অভিহিত হন। ১৬৩০ পুঁচাদে দিখিত তাঁহার 'তারারহন্তবুত্তিকা' শ্রন্থে তারার উপাসকের আচারাদি বিবৃত হইয়াছে।

বর্জ্মানকালে বেসব ছানে নিজ্য কালী পুলার প্রথা বহিরাছে বা বিশেব কোনও উপলক্ষে মানসিক'-করা কালীপুলার ব্যবহা হর, ইছা বাজীত সাংবংসরিক কালীপুলার বিধি হইল দীপালি-উৎসবের দিনে। দীপালি-উৎসবের দিনে এই কালীপুলা বা শ্লামাপুলার বিধি সর্বপ্রথমে সম্ভবতঃ পাওয়া যায় ১৭৬৮ খুঁটাকে বচিত কালীনাথের কালী-সপ্রাবিধি প্রছে। (১৩) কালীনাথ এই প্রছে কালীপুলার পক্ষে বে-ভাবে যুক্তি-ভর্কের অবভারণা করিয়াছেন, ভাহা দেখিলেই মনে হয়, কালীপুলা তথন পর্যন্ত বাঙলাদেশে স্বগৃহীত ছিল না। কালীপুলা বিষয়ে একটি স্থপ্রচলিত প্রবাদ এই বে, নবৰীপের মহারাজা ক্ষচন্ত্রই এই পুলাল প্রবর্তন করেন এবং তিনি আদেশ দিয়াছিলেন বে, তাঁহার প্রজালের মধ্যে যাহারা কালীপুলা করিতে অবীকৃত হউবে, তাহাদিগুলে কঠোর দণ্ড ভোগ করিতে গইবে। এই আদেশের ফলে বে তি বংসর দশ সহস্র করিয়া কালীমুর্তি পুলিত হইতে লাগিল। কাইছে প্রাচ্ছেন রক্ষচন্দ্রের প্রোচ্জ ইলানচন্দ্র সহস্র মণ্ড নিবেজ এবং সহস্র মহন্ত এবং সহস্র মণ্ড বন্ধ্র এবং সমপরিমাণ অক্রান্ত উপচারে কালীদেবীর পুলা করিয়াছিলেন। রটস্তী চতুর্দ শীতে সাংগ্রহ মধ্যে পাওয়া যায়। গোবিন্দানন্দ, জীনাথ আচার্য চূড়ামণি, বৃহস্পতি রায়মুক্ট এবং কাশীনাথ ভর্কালহার ইহার উল্লেখ করিয়াছেন।১৪

এই দেবী-পূজার ইতিহাস্টাই বাঙলাদেশের শাক্তধর্মের ক্ষেত্রে প্রধান কথা নতে; প্রধান জিনিস হইল দেবীকে অবলম্বন করিয়া তম্ব-সাধনা, এই তম্ব-সাধনা মুখ্যভাবে যুক্ত চইরা কালী-সাধনা এবং দশ-মহাবিতার সাধনার সঙ্গে, এবং খীষ্টায় বোডশ শতক হইতে আমরা কালী এবং অক্সাক্ত সাধনা দশমহাবিজ্ঞার অবলম্বনে বিখ্যাত শক্তি-সাধকগণের কথা জানিতে পারি। আমরা পূর্বে কালীপূজার বিধান বচয়িত্তরূপে কুফানন্দ, ব্রন্ধানন্দ, পূর্ণানন্দ প্রভৃতির উল্লেখ করিয়াছি; ইলারা সাধকও ছিলেন। অক্যান্স সাধকগণের মধ্যে বোড়শ শতকের সর্বানন্দ ঠাকুৰ অতিশয় প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন। ত্রিপুরা জেলার মেহার গ্রামে তাঁহার আবির্ভাব হয়। তিনি শবরূপী ভূত্য পূর্ণানন্দের দেহের উপরে বসিয়া সাধনায় সিদ্ধিলাভ করিয়াছিলেন এবং দশমহাবিজ্ঞার সাক্ষাৎ লাভ করিতে পারিয়াছিলেন বলিয়া প্রাসিদ্ধি আছে। ভান্ত্ৰিক সাধনাৰ ক্ষেত্ৰে তাঁহার ৰংশধৰ ভান্ত্ৰিক সাধকগণ 'সর্ববিত্তা'র বংশ বলিয়া খ্যাত। তন্ত্রসাধনার ক্ষেত্রে 'অর্ধ কালী'রও প্রসিদ্ধি আছে। প্রায় তিন শত বংসব পূর্বে ময়মনসিংহ জেলার অন্তর্গত মুক্তাগাছার সমীপবর্তী পশুতবাড়ি গ্রামে বিজ্ঞাদের নামক সাধকের গুহে ইনি কন্তারপে আবিভূতা হন। ভাঁছার নাম ছিল জয়তুগাঁ, তিনি স্বয়ং মহেশ্বী বলিয়া প্রবাদ। ভাঁহার দেহের অর্ধেক কৃষ্ণবর্ণ ও অর্ধেক গৌরবর্ণ ছিল বলিয়া জাতার অর্থকালী নাম ছইয়াছিল। (১৫) গোলাই ভট্টাচার্য নামে খ্যাত রতুগর্ভ নামক সাধক ঢাকা জেলার মাধ্যৈসারের দিগস্বরী-তলার বীরাচারে সিদ্ধি লাভ করিয়াছিলেন বলিয়া প্রসিদ্ধি আছে। কথিত হয়, ইনি প্রসিদ্ধ 'বার ভূঞা'র মধ্যে চাদ বায়, কেদার বায়ের গুরু ছিলেন। প্রায় শত বর্ষ পূর্বে বীরভূম জেলার ভারাপীঠের নিকট অটিলাথামে সাধক বামাকেপার জন্ম হব; তারাপীঠ তাঁহার সাধনা ও সিদ্ধির স্থান।

of Bengal and their Antiquity (Indian Historical Quarterly, September, 1915) প্ৰবন্ধটি দুইবা।

১২। এ-বিবাৰে অধাপিক জীচিন্তাহৰণ চক্ৰবৰ্তী লিখিত The Cultural Heritage of India, চতুৰ্ব খণ্ডে Sakta Worship and The Sakta Saints প্ৰবন্ধ ও তদ্বচিত 'আক্ৰমা' (বিশ্বিভা-সংগ্ৰহ) গ্ৰন্থখনি ভটবা।

^{১৩। অধাপক প্রীকৃত চিভাহন চক্রবর্তীর Sakta Festivals}

⁷⁸¹ व्रा

১৫। ভদ্ৰকথা--- জীচিত্বাহরণ চক্রবর্তী।

সাহিত্যের ভিতর দিয়া শক্তিসাধ্বকরপে সর্বাপেকা প্রসিদ্ধি লাভ করিয়াছেন অষ্টাদশ শতকের মধ্যভাগে সাধক রামপ্রসাদ সেন। বাঙলা শাক্ত-পদাবলীর তিনিই প্রবর্তক। তাঁছার পরে সাধক কমলাকান্ত, গোবিন্দ চৌধুরী প্রভৃতি বহু সাধক শাক্ত গান রচনা করিয়াছেন।১৬ দক্ষিণেশ্বরের মা ভবতারিণী'র মন্দিবের পূজারী প্রীরামকৃষ্ণদেব বাঙলার এই শক্তি-সাধনাকে বিশ্ব-বিখ্যাত করিয়া গিণাছেন। যোগিপ্রধর শ্রীঅরবিন্দ বাঙলার শক্তি-সাধনার অন্তর্গু ইন্ছত্যকে তাঁছার অথও মহাযোগের সহিত যুক্ত করিয়া স্থা এবং গ্যাপক দার্শনিক রপ দান করিয়াছেন।

আমর। উপরে অতি সংক্ষপে বাঙ্গা দেশে মাতৃপুঞ্জীর বে ইতিহাস আলোচনা করিলান, তাহাতে দেখিতে পাইলাম বে, স্বাভাবিক ভাবেই ত্র্গাপুজা কালীপুজা অপেক্ষা প্রাচীনতর কালে এদেশে প্রবর্তিত হইয়াছে। শুগু তাহাই নয়, আহ্বা এ-কথা পূর্বেই বলিয়াছি যে, পূজাকে অবলম্বন কবিয়া ধর্মোংসবেব ব্যাপকতায় ত্র্গাপুজা অক্তাবধি বাঙাল ীহস্বপ্রধান পূজা। এখনও আহ্বা সাধারণ ভাবে

১%। অধ্যাপক ঐজাহ্নবীকুমার চক্রবর্তী, এম, এ রচিত 'শাক্ত পদাবলী ও শক্তি সাধনা' গ্রন্থখানির কবি-প্রাস্থ শীর্ষক আলোচন। ফ্রান্তব্য ।

রঙহরিণ

वशसी त्यन

আমি জানি সেই রঙের ঝলক—রঙহবিণ, ছুটেছে আকাশে লুটেছে বাতাসে কুসের গন্ধ চলার ছব্দে টুটেছে বন্ধ রান্তি-দিন। উদ্বত তার হুবন্ত বেগে উড়ম্ভ ধুলো ঝড়ের আবেগে ঝরালো স্বপ্ন জাগরি জীবনে ক্লান্তিহীন সোনালী-স্বপ্ন-স্থা-নিঝ'র বঙ্হবিণ। দিগম্ব পথ চোগেব পলকে হরেছে পাব. নদী নিৰ্জন ভটবালিবেথা খন কিনাৰ চলেছে—চলেছে কাছের দূরের; সীমানার তীরে অক্স পারের ইসাবায় টানে হুৰ্গম পানে লুপ্ত ভারার আভাস কীণ : নিশীথ গহনে আখাস-মানা বঙহবিণ। আমি জানি সেই বঙিন স্বপ্ন-বঙ্হবিণ प्रधात दका कीवन-नमीएठ-नीलिया नीन। আশার পিপাসা আকঠে নিয়ে পিছনে ধাই তথু পলকের অসহ পুসক—ক্ষণিকে নাই: সে যে কল্পনা-মনে আল্পনা মগ্ন-দিন-হারানো বঙের নির্বর্থারা রঙহরিণ।

'পুজা' বলিতে শারদীয়া হুর্গাপুজাকেই মনে করি; 'পুজা আসিতেছে, এবারে পূজা কোৰু মাসে' প্রভৃতি কেত্রে 'পূজা' কথাৰ লক্ষ্য কি, তাহা কাছাকেও বলিয়া দিতে হয় না। কি**ভ** 'ছুৰ্গাপূচ্চা' আমাদের সাংৰৎসরিক উৎসৰ-বিশেব মাত্র। সাংৰৎসরিক পূজ ৰ্যতীত ছুৰ্গাৰ কোনও নিত্যপূজাৰ প্ৰচলন তেমন কোনও অঞ্চলে দেৰিতে পাই না।১৭ রোগে, শোকে, দৈব-ছুর্বিপাকে সঙ্কলপুর্বক চিণ্ডীপাঠ' বা হুৰ্গানাম জপের ব্যবস্থা শাভি:স্বস্ত্যয়নের অস্কর্প দেখা বার। কিছ এই সব ব্যতীত সাধনার ক্ষেত্রে হুর্গার তেমন কোনও প্রাধান্ত দেখিতে পাই না। শারদীয়া তুর্গাপূজার পর হইতে আরম্ভ করিয়া বসস্তকাল পর্যন্ত দেবীকে আমরা নানারপে পূজা করিয়া ধাকি। দক্ষীপুজা, কালীপুজা, অন্নপূর্ণাপুজা, জগদ্ধাত্তীপুজা, সরস্বতী-পূজা—সর্বশেষে বসম্ভকালে দেবীর বাসম্ভী মৃতির পূজা—ইহার মধ্যে এক কালীপূজা ব্যতীত আৰু সৰ্বই সাংকংসৱিক পূজা। শক্তি সাধনার ক্ষেত্রে আমাদের দেশে প্রাধান্ত লাভ করিলেন কালী—বিশেব বিশেব ক্ষেত্রে দশমহাবিভার অঞ্ সাধারণভাবে কোনও রূপ।

১৭। কোনও কোনও মন্দিরে অবশ্ব হর-গোরী বা হর-পার্বতীর নিজ্ঞপুকা আচলিত আছে।

তৃতীয় নয়ন

দেৰবভ চক্ৰবৰ্তী

ভারপর উঠে এলো নারী।

কাঁকা বর:
সদ্যার আলো-আঁধারিতে বেরা ছোটো কোণে
একটি মাটির প্রদীপ কেলে দিরে
সন্মীর পটের কাছে মাখা রেখে
কী বেন বলেছে
অনেকক্ষণ।
ভারণর কারা বেমন উঠে আসে মনের গভীর থেকে
ভেমনি সে উঠে এলো।

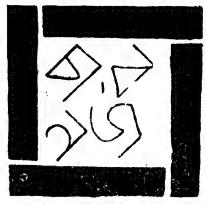
হে নারী,
তোমার স্থাদরকে প্রাদীপের মতো স্কুলে ধ'রে
কোনু স্বপ্ন দেখো ?
একলা ঘরের আলো-আঁধারিতে
কার কাছে বলো তুমি মনের সব কথা ?
ভানি, আর একটু প্রেই হয়তো নিবে বাবে
এই কীণ শিখাটুকু,
মুছে বাবে পাঁচালীর স্থরে ভরা এই ঘর,
আর তুমিও বাবে হারিরে।

ভবু জেগে পাকবে একটি সিঁদ্র-টিপ ভোরের সূর্ব হবার জপেকার।

সরোজ আচার্ব

সাংবাদিক ও সাহিত্য-সমালোচক]

ব্যক্তিষ্ঠ সাংবাদিক এবং সাহিত্য-স্মালোচক শ্রীসরোজ আচার্ম জীবন স্থক্ক করেছিলেন রাজনৈতিক সাংবাদিক এবং সাহিত্য-স্মান্সোচক খানোলনকারী হিসাবে, কিন্তু জীবনের স্রোড আজ তাঁকে রাজ্যের বৃদ্ধিজীবীদের পুরোভাগে এনে দাঁড় করিয়েছে। জাতীয় আন্দোলনের সঙ্গে ঘনিষ্ঠভাবে সংশ্লিষ্ট নদীয়ার এক ক্ষয়িষ্ণ জমিদার-পরিবারের সন্তান 🗐 আচার্য্যের জন্ম কৃষ্টিয়া সহরে (বর্ত্তমানে পাকিন্তান) ১৯০৬ সালে। স্থলের পড়া শেষ করে তিনি কলকাতায় আসেন আই-এ পড়তে। পাশ कृत्य आवात कित्त यान निषेश्वात्र এवर ১৯२० गाटन हैरतानि অনাস নিয়ে ক্লফ্লনগর কলেজ থেকে বি-এ পাশ করেন। কলেজের সর্বশ্রেষ্ঠ ছাত্র হিসাবে পান 'মোহিনীমোহন রায়-ছাত্র-জীবনে অধ্যয়নের চেয়ে রাজনৈতিক আনোলনের প্রতি তাঁর আসন্তি ছিল বেশী। ১৯২১ मार्ट इर्ल পড़रांत मगग्न व्यमहर्याग-व्यात्माजरन यांग দিয়ে তিনি এক বছরের জন্ম পড়াশোনা ছেড়ে দেন। ১৯২৭-২৮ সালে তিনি কৃষ্টিয়া মহকুমা কংগ্রেসের সম্পাদক এবং নদীয়া জেলা কংগ্রেসের কার্য্যকরী সমিতির সদস্য ছিলেন। ১৯২৯ সালে মেছুয়াবাজার বোমার মামলায় তিনি গ্রেপ্তার হন, কিন্তু কয়েক দিন বাদে তাঁকে ছেডে দেওয়া হয়। ঐ সময় সরোজ বাবুদের পরিবার অত্যন্ত অর্থ-সম্ভটে পড়েন এবং তিনি তথন মালদায় গিয়ে স্থল-गोहीरत्रत ठाकत्री तन। राशान व-चाहेनी जनम विकन्न এবং বিলাতী বস্ত্রের বহুগুৎসবে নেতৃত্ব করায় তাঁর উপর পুলিশের নব্ধর পড়ে এবং ১৯৩০ সালে চট্টগ্রাম অস্ত্রাগার লঠনের কয়েক দিন বাদে বেঞ্চল অডিক্রান্স অমুধায়ী তাঁকে ডেটিফু করা হয়। ১৯৩০ থেকে ১৯৩৭ পর্যান্ত ভারতের বিভিন্ন ধন্দী-শিবিরেই কেটেছে তাঁর জীবন। সেখান থেকে ১৯৩৫ সালে ইংরাজীতে এম-এ পরীক্ষা দিয়ে প্রথম শ্রেণীতে দিতীয় স্থান অধিকার করেন (প্রথম স্থান পেয়ে-ছিলেন শ্রীমতী স্মন্ধাতা রাম) এবং প্রবন্ধের পেপারে সব চেমে तिनी नचत्र (পয়ে রেজিনা গুছ স্বর্ণপদকে ভূবিত হন। মৃতিক লাভের পর ডা: খ্রামাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায়ের অমুগ্রহে ভিনি বদকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ে একটি কেরাণীর পদ লাভ করেন। চার বছর সেই চাকরী করবার পর উইমেন্স কলেজে অধ্যাপনার স্বযোগ পান। ঐ সময় মাকাবাদী দর্শন নিয়ে বিখ্যাত দার্শনিক স্বর্গীয় ডাঃ সুরেন দাস্তপ্ত এবং ডা: বটকুষ্ণ ঘোবের সব্দে বিভর্কে প্রবৃত্ত হয়ে ৰী বাচাৰ সুধী সমাজে বিশেব প্ৰতিষ্ঠা অৰ্জন করেন। ১৯৪৪ সালে 'হিন্দুস্থান ষ্ট্যাণ্ডার্ড' পত্রিকার সহকারী সম্পাদকের পদ গ্রহণের আমন্ত্রণ আসে। এ বাবৎ সেই পদেই ৰহাল ছিলেন। সম্প্রতি 'আনন্দ্রাজার পত্রিকা'র সিনিয়র সহকারী সম্পাদক নিযুক্ত হয়েছেন। ইংরাজি এবং ^{বাঙলা—}ছুই ভাষাতেই তিনি স্থান দক্ষতার সজে কল্ম



চাঙ্গাতে পারেন। বর্ত্তমানে ডোভার লেনের বাসিন্দা. শ্রী আচার্য লিখতে স্থক করেন চৌন্দ বছর বয়স থেকে। 'জাগরণ' নামে বাবার একখানা সাপ্তাহিক পত্রিকা ছিল। তাতে তিনি রাজনৈতিক প্রবন্ধ লিখতেন। কলেজে পড়বার সময় সহপাঠী ডাঃ প্রমোদ গোষাল তাঁকে মাক্সবাদের প্রতি আরুষ্ট করেন। বন্দী অবস্থায় ব্যাপক ভাবে তিনি মাক্সবাদ চর্চার স্থযোগ পান এবং মাক্সবাদকেই আত্মদর্শন হিসাবে গ্রহণ করেন। সাহিত্যের ছাত্র হলেও. দর্শনই তাঁর প্রিয় বিষয় এবং প্রক্বত পক্ষে 'মার্ক্সীয় দর্শন' জিখেই তিনি সর্বপ্রথম সুধী সমাজের সপ্রশংস দৃষ্টি আকর্ষণ করেন। পভাশোনায় শ্রী আচার্য্যের কোন বাদবিচার নেই। সাহিত্য, বিজ্ঞান, ডাস্ডারী, সমাজতত্ত্ব, অর্থনীতি, চিত্রকলা, শিকার, খেলাধূলো- -সৰ বিষয়ই তিনি অধ্যয়ন করে থাকেন। ১৯২৭ সালে তিনি "কশিয়ার রক্ত-বিপ্লব" এবং "বিপ্লবী অনস্তহরি" নামে তুখানা বই লেখেন! অস্তাম্ব্য বইয়ের মধ্যে "মার্ক্সীয় যুক্তি বিজ্ঞান", 'বই পড়া' এবং "সাহিত্য ক্রচি" বিশেষ উল্লেখযোগ্য।

তৃই পূত্রের জনক, এ আচার্যের স্ত্রী প্রীমতী মঞ্জী সাহিত্যিক প্রীপরিমল গোস্বামীর কনিষ্ঠা ভগিনী। বিষের ব্যাপার একটা মজার গল্প। পরিমল বাবুর সঙ্গে তাঁর আগে

পরিচয় ছিল। তিনি জানতেন যে পরিমল বিবাছ-যোগ্যা একটি বোন আছেন কিছ ভদ্রমছিলার সঙ্গে তাঁর পরিচয় ছিল না। ১৯৩৯ সালে যখন বাড়ী থেকে বিয়ের চাপ আসতে তিনি লাগল. তখন একদিন পরিমল বারুর গিয়ে বল্লালেন, বাসায় "আমি আপনার বোনকে विदन्न করতে हाई।" **এ**মতী य 🕊 🗐 তথন কলেব্দের ছাত্রী। পরিমল



সরোজ আচার্য্য

ৰাবু তৎক্ষণাৎ বোনকে সেখানে ভেকে ৰললেন, "ওছে —এই ভদ্রলোক ভোমার বিরে করতে চান। এক্সনি **বসে** যা হয় ঠিক করে ফেল।" পরিমল বাবুর সামনে টেবিলে মুখোমুখি বলে দশ মিনিটের মধ্যে তাঁরা নিজেদের বিয়ে স্থির করে ফেলেন। কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয়ের এম-এ, বি-টি শ্রীমতী আচার্য সদাহাস্ত্ৰময়ী হন্ত্ৰীগপ্ৰিয় মহিলা। আট বছরের ছেলে **জ**য়স্তকে নিয়ে তিনি[®] একা একা বিলেত গিয়ে লণ্ডন বিশ্ববিত্যালয়ের পোষ্ট-গ্রাট্রয়েট সাটিফিকেট-অফ-এডুকেশান নিয়ে এশেছেন। রাজ্য সরকারের শিক্ষণে শিক্ষা-বিভাগে চাকরী করতেন। এখন চাকরী ছেড়ে গুহস্থালী নিয়ে আছেন। চেইন স্মোকার সরোজ বাবু এখনও ধুমপানের ব্যাপারে গৃহিণীর রক্ত চকুকে নরম করতে পারেন নি। সরোজ বাবুরা তিন ভাই, এক বোন। মা এখনও জীবিত।

ডাক্তার ঐত্যক্ষণ গঙ্গোপাধ্যায়

[বিশিষ্ট দম্ভ-চিকিৎসক

পদিত থাকতে দাঁতের মর্যাদা বোঝে না—"—একটি
চলতি কথা প্রায়ই শোনা যায়। কিন্তু রোগী
নিজে মর্যাদা না দিলেও, দস্ত-চিকিৎসক উচার পূর্ব গৌরব ফিরাইয়া আনার জন্ত বিশেষ প্রচেষ্টা করে থাকেন।
বিশিষ্ট দস্ত-চিকিৎসক ও আর-জি কর, মেডিক্যাল কলেজের ডেন্টাল-সাজ্জারীর ডিরেক্টর প্রফেন্সাব ডাঃ
অক্লণ গাঁকুলী তর্মধ্যে অক্সতম।

বিক্রমপুর (ঢাকা) বেগের মুপরিচিত ব্রাহ্মণ বংশের অন্তর্ভুক্ত গঙ্গোপাধাায় পরিবারের বিশিষ্ট সন্তান বেকল সিভিল সাভিসের শ্রীনাতলা কান্ত গাঙ্গুলীর ও শ্রীনতী প্রক্রম দেশীর পুত্র অরুণ ১৯১৩ সালের জুলাই মাসে জন্মগ্রহণ করেন। সরকারা চাকুরিয়া হওয়ায় পিতার সঙ্গে পুদ্রকে বাংলার বিভিন্ন স্থানে লেখা পড়া করিতে হয় এবং



हाः वैजन् शक्ताभाशाय

সালে প্রবেশিকা 7954 ও ১৯৩০ সালে রাজসাচী শিক্ষায়তন হইতে আই. এন, সি পাশ করেন। দাত স্থন্ধে বাল্যকাল হইতে আগ্ৰহ থাকায় উক্ত বিষয়ে শিকা গ্রহণের द्रना তিনি こうつき সালে ভিয়েনা বিশ্ববিত্যালয়ে যোগদান করেন-যদিও সেই সময় ভাল চাকুরী পাওয়া ও পঞ্চ-পোবকতার জন্ত ভারতীয় ছাত্ররা ত্রিটিশ বিশ্ববিদ্যালয়ে সাধারণতঃ ভর্ত্তি হইতেন। ১৯৩০ সালে তথা হইতে Z.D.S., D.S. ডিগ্রী লইয়া স্থানীয় জেনারেল ইাসপাতালে oral-surgeon নিযুক্ত হন। পরে প্লেলে কিছুদিন থাকিয়া বার্তিন মিউনিসিপ্যাল ও বিশ্ব-বিদ্যালয় ইাসপাতালছয়ে একই পদে অধিষ্ঠিত থাকেন। সেই সময় তিনি মুরোপের বিভিন্ন দম্ব-চিকিৎসালয়গুলি পরিদর্শন করিয়া প্রভৃত জ্ঞানলাভ করেন এবং দ্বিতীয় মহাসমরের পূর্বের ভারতে ফিরিয়া আর, জি, কর ইাসপাতালে ভিজিটিং সার্ভ্জেন হেসাবে যোগদান করেন ও ব্যক্তিগত চিকিৎসা আরম্ভ করেন।

১৯৪৫ সালে গোয়ালিয়বের মহারাজা সিম্নিয়ার আমন্ত্রণে এক বৎসবের মধ্যে রাজ্যের দস্ত-চিকিৎসা বিভাগকে স্থানগঠিত করেন। ১৯৪৭ সালে প্রথম দস্ত-চিকিৎসক হিসাবে তিনি ভারতীয় বিজ্ঞান কংগ্রেসের (চিকিৎসা বিজ্ঞান) সংবাদদাতা নিযুক্ত হন। সেই সময় তিনি ভারতের বিভিন্ন পত্রিকায় তথ্যমূলক প্রবন্ধ দিখিতেন। ভাঁহার লেখা "An aspect of Industrial Absenteeism and its method of control" সুরকারী ও বেসরকারী মহলে উচ্চ-প্রশংসিত হয়। তৎকালীন কেন্দ্রীয় শিল্প-মন্ত্রী সি, এইচ, ভাব: ও বঙ্গের অর্থমন্ত্রী ৺নলিনীরঞ্জন সরকার ইছার ভূমিকা লেখেন ও ডা: রাম্যনোহর লোহিয়া মন্তব্য করেন "Dr. Arun Ganguli has done his part in producing such a book-let and it will be for the trade-unionists to carry its contents to the workers on a mass scale."

ভা: গাঙ্গুলী জাতীর সমাজকলাণে পরিবদের সভাপতি হিসাবে বস্তা-উন্নয়ন আর্দ্ধ-আত্রদের ত্রাণকার্য্যে সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করেন। এই প্রতিষ্ঠানটিকে তিনি রাজনৈতিক আবর্ত্ত হইতে দূরে রাখিতে সমর্থ হইয়াছেন। কলিকাতা অন্ধ স্থলের গভর্ণর হিসাবে তিনি বুক্ত আছেন।

কিছুকাল পূর্ব্বে প্রথম ভারতীয় দস্ত-চিকিৎসক হিসাবে সোভিয়েট রাশিয়ায় ডা: গাঙ্গুলাকে আমন্ত্রণ করা হয়। তথাকার চারিশত বিশিষ্ট চিকিৎসকদের উপস্থিতিতে তিনি বিখ্যাত মস্কো Stomatological Institute এ জাঁহার সর্ব-শেষ গ্রেষণামূলক প্রবন্ধ পাঠ করিয়া সন্মানলাভ করেন। ফেরার পথে মুরোপের প্রখ্যাত দস্ত চিকিৎসালয়গুলি পরিদর্শন করিয়া দস্ত-বিজ্ঞান সম্বন্ধে সম্প্রতিকার উন্নতিমূলক কার্যধার। অম্বধানকরেন।

সাহিত্যক্ষেত্রে ডাঃ গাঙ্গুলার বেশ কিছু অবদান আছে।
সাংবাদিকতা ক্ষেত্রে তিনি বুক্ত আছেন। চারি বৎসর স্বাবৎ
তিনি "নিরাক্ষা" নামে একটি পাক্ষিক পত্রে সম্পাদনা
করিতেছেন। শিক্ষিত বাঙ্গালীর ম:খ্য উহার মতাদর্শ কিছুটা
ছাপ রাখিতে সমর্থ হইয়াছে। বিশ্বমৈত্রীর পথে মানব-সংস্কৃতিকে
সার্থক করে তুলবে বলিয়া তিনি মনে করেন।

বই পড়া তাঁহার অবসর বিনোদনের উপায় এবং কয়েকটি
মুরোপীয় ভাষা আয়ন্ত করিয়াছেন। নদী সমস্তার অক্ততম
বিশেষজ্ঞ ও ই, বি, রেলওয়ের ডেপুটী চীক ইঞ্জিনীয়ার
৮কুমুদভূষণ রাধ্যের কনিষ্ঠা কন্তা অণিমা দেবীকে তিনি বিবাহ
করিয়াছেন।

জীনিরাপদ মুখোপাধ্যায়

[আঞ্চীবন রাজনৈতিক কর্মী ও বিহার আইন-সভার সদস্ত]

ব্যুগ ও আত্মন্তব্যের দিকে না তাকিয়ে আজীবন দেশের নিরলস ভাবে সেবা করার মহান্ ব্রুত পালন করে আস্চেন, এমন অল্প সংখ্যকদের মধ্যে অস্ততম হলেন বিহার আইন-সভার সদস্য শ্রীনিরাপদ মুখোপাধ্যায়।

১২৯১ সালের (১৮৮৪ খৃষ্টান্দ) ২৯৫শ আখিন বর্দ্ধমান জেলার বৈরুপ্তপুর গ্রামে তিনি জন্ম গ্রহণ করেন। পিতা দীননাথ মুখোপাধ্যায় কলকাতার ব্যবসায়ী ছিলেন। পুত্রের পড়ান্ডনার অবিধার্থে তিনি তাঁকে কলকাতায় নিয়ে আসেন এবং বলবাসী-ছুলে ভর্ত্তি করে দেন। লেখাপড়ায় খুবই মেধাবী ছিলেন শ্রী মুখোপাধ্যায়, অল্প দিনের মধ্যেই তিনি ছুলের সেরা ছাত্র বলে পরিগণিত হন। এই সময়েই বিনা মেঘে বজ্ঞাখাতের মত পর পর তাঁর মাতা ও পিতার মৃত্যু হইল। চারিধারে অন্ধকার দেখলেও অকুলে ভাসলেন না তিনি, তাঁর জ্যেষ্ঠ সহোদর শ্রীতারাপদ মুখোপাধ্যায় দৃঢ় হন্তে তাঁর সমস্ত দায়িত্ব গ্রহণ করলেন। তিনিও ক্বতিপুক্ষ ছিলেন। ভারত ও বর্ষার পোষ্ঠাল ইউনিয়নের স্থাপনা করেছিলেন তিনিই।

বাংলার তথন বৈপ্লবিক যুগ। তরুণ শ্রী মুখোপাধ্যারও দেশের ডাকে সাড়া দিলেন। স্থবিখ্যাত অমুশীলন-সমিতিতে যোগ দিলেন তিনি। বৈপ্লবিক কার্য্য-কলাপের এটি ছিল একটি মূল কেন্দ্র। অবস্থ ভবানীপুরের সমাজবাদী দলেই তাঁর রাজনৈতিক হাতে-খড়ি হয়। পরে তিনি ক্রেণ্ডস ইউনিয়ান নামে একটি দল গঠন করেন। বাঘা যতান এট দলের সদস্য ছিলেন। তিনি তখন সরকারী, অফিসের প্রেনা। গোয়েন্দ্রা-বিভাগের ইঙ্গপেক্টার শশ্বর গোসামী এট সম্বে পরিচয় গোপন করে তাঁদের দলে যোগ দিয়ে-ছিলেন। তিনি বাঘা যতীনের কার্য্যকলাপের উপর দৃষ্টি রেপ্র ছিলেন। কিন্তু দৈবাৎ একদিন সব জানাজানি হয়ে গেল।

বাংলার রাজনৈতিক আকাশে তখন ঘোর ঘনঘটা।
এল বন্ধ-ভন্ধ আন্দোলন। শ্রী মুখোপাধ্যায় এতে স্ক্রিয়
অংশ গ্রহণ করে ছিলেন। কিন্তু এর মধ্যেও তাঁর পড়াউনার বিরাম ছিল না। তিনি নক্ষাসী-কলেজ খেকে ল'
পাশ করেন (তখন বন্ধবাসী-কলেজে ল' পড়ান হত)
এবং ১৯১০ সালে ভাগলপুর বাবে যোগ দেন। এর বছর
গাঁচেক আগেই ভিনি শ্ববি বন্ধিমচক্র চট্টোপাধ্যারের

সম্পর্কিত প্রাতা রায় বাছাত্বর সারদা প্রসাদ চটোপাধ্যারের কন্তা প্রীমতী রাণী দেবীকে বিবাচ করেছিলেন। তিনি ভাগলপুর থেকে অল্পদিনের মধ্যেই মৃদ্দের কোর্টে চলে আসেন, এবং অচিরেই সেখানে শ্রেষ্ঠ উকিল ছিসেবে পরিচিত হন। পরের তাঁকে পাল্লিক-প্রসিকিউটারের পদ গ্রহণ করেছে হয়। এই সময়েই তিনি এখানে নানা রাজনৈতিক কর্মেরাজেক্ত প্রসাদ, শ্রীকৃষ্ণ সিংহ প্রম্থ নেতৃর্ক্তের সঙ্গে ঘনিষ্ঠ ভারে উঠেন।

্ৰীক বৰ্ষা-শ্ৰান্ত সকালে শ্ৰী মুখোপাধ্যায় মহাশ্ৰের বাসগৃহে বসে তাঁর সঙ্গে কথা বলছিলাম। বয়স ৭৫ হলে গেছে কিন্তু এখনও চেহারায় কত দৃপ্ত ভাব।

দেশের পরিস্থিতি ক্রমেই ঘোরাল হয়ে উঠছিল। ১৯৩০ সালে গান্ধীজীর আহ্বানে তিনি আইন-ব্যবসা পরিত্যাগ অসহযোগ-আন্দলোনে যোগ দিলেন। অমান্তের দরুণ ধৃত হলেন এবং হাজারীবাগ সেন্ট্রাল জেলে তাঁকে অন্তরীণ রাখা হল। এর কিছুদিন পরে তিনি গান্ধী-আরুইন প্যান্ট অমুসারে জেল থেকে ছাড়া পেলেন। সালে ডিষ্ট্রীক্ট লোকাল বোর্ডের চেয়ারম্যান মনোনীত হলেন। ১৯:২ সালে আবার জেলে যেতে হল তাঁকে। ১৯৩৩ সালের ডিসেম্বরে ছাড়া পাওয়ার কিছু দিনের মধ্যেই বিহারের সেই ভয়াবহ ভূমিকম্প হল (১৯৩৪ জাফুয়ারী)। বিহার সেণ্ট্রাল রিলিফ কমিটির উন্মোক্তা হিসেবে ভূমিকশ্প-বিধ্বস্তদের সেবায় আত্মনিয়োগ করেন। সেই সময়ে এই কাজে আর কজন বিশেষ ভাবে আত্মনিয়োগ করেছিলেন. তিনি হলেন বিহারের অন্তত্ম শ্রেষ্ঠ আইনবিদ 🗸 🕮 তারাভ্রণ বন্দোপাধাায় মহাশয়। ১৯৩৬ সালে বিহার আইন-সভার সদস্য মনোনীত হন। ১৯৪১ সালে বিহার কংগ্রেসের সভাপতি হন। ১৯৪২ সালের বিপ্লবে স্ক্রির অংশ গ্রহণ করার জন্মে তাঁহাকে আবার জেলে যেতে হয়। ১৯৪৬ সালে আবার আইন-সভার সদক্ত হন। স্বাধীনতার পর ১৯৪৭ সালে তিনি পার্লামেন্টারী সেক্রেটারী মনোনীত হন। তাঁর অধীনে আইন, ফ্রায়, কারা ও ত্রাণ দপ্তরগুলি ছিল। ১৯৫২ সালে স্বায়ত শাসন ও পুনর্বাসন দপ্তরের উপ-বন্ত্রীর পদ তাঁকে দেওয়া হয়। ১৯৫৬ সালে আবার তিনি আইম-সভায় আমেন। উপস্থিত বিহার পুলিশ-ক্ষিশনের তিনি गमन्त्र ।

আমাদের তৃজনের প্রশ্ন ও উত্তরের বিনিময়ের মাঝে তিনি জানান, ছাত্র-জীবনে বহু কীর্ত্তিমান্ অধ্যাপকের ছনিপ্ত সাহচার্য্যে তিনি এসেছেন। যেমন, রেভারেও ডি-এন হুইজার, ললিত মোহন বন্দ্যোপাধ্যায়, ডাঃ শ্রামাদাস বন্দ্যোপাধ্যায়, বন্ধবাসী-কলেজের প্রতিষ্ঠাতা জি-সি বন্ধ ইত্যাদি। তিনি কলকাতার প্রবিধ্যাত ওল্ড ক্লাবের প্রতিষ্ঠাতা। তিনি একজন সুবক্তা। কলকাতার হুর্গাদাস মুখোপাধ্যায় রোডটি ভারই জাঠামশাই-এর নামাছিত।

শ্রমতী কল্পনা যোশী [বিপ্লবী বালালী মহিলা]

প্রধান শতানীর তৃতীর দশকের কথা। বিদেশী শাসন
ও শোষণের বিরুদ্ধে সারা ভারতব্যাপী তীব্র
আন্দোলন। পছাবলখনে মতভেদ দেখা দিয়াছে।
কদল
অহিংসার পথে চলেছেন—আর অন্তদল সমস্ত্র বিবর
পরীক্ষা-নিরীকা করছেন। শেষেরটির প্রাণকেক্স ছিল
অবিভক্ত বালালা। ক্ষীণদেহ বালালী সে সময় বিটিশ
সাম্রাজ্যবাদীদের মনে প্রবল নাড়া দিয়াছে—সংগ্রামী
মনোভাবে ও রণমূর্ত্তিতে। আবিদ্ধত হল যে শুধু ভরুণ ও
ব্রবক বিপ্লবীরা নহে—বালালী কিশোরী এবং ব্বতীও সশস্ত্র
সংগ্রামে মৃখ্য অংশ গ্রহণ করেছে। এর মধ্যে চট্টল-কন্তা
শ্রমতী কল্পনা যোশী (দন্ত) অন্তত্মা।

১৯১৩ সালের ২৭শে জুলাই চট্টগ্রাম জিলার শ্রীপুর গ্রামে পবিনাদবিহারী দত্ত ও বর্ত্তমানে পাকিস্থান-নিবাসিনী শ্রীমতী শোভনাবালা দেবীর কলা শ্রীমতী কল্পনা দত্ত জন্ম-গ্রহণ করেন। দেশপ্রিয় যতীক্রমোহন ছিলেন মামা। স্থানীয় ডাঃ থান্তগীর বালিকা বিত্তালয় হইতে ১৯২৯ সালে তিনি ভালভাবে প্রবেশিকা পরীক্ষায় উত্তীর্ণ হইয়া চুই বৎসর পরে কলিকাতা বেথুন কলেজ হইতে নন্-কলিজিয়েট ছাত্রী হিসাবে এই, এস, সি পাশ করেন। পরে চট্টগ্রাম সরকারী কলেজে বি, এস, সি পড়েন কিন্তু রাজনৈতিক কার্য্যকলাপে জড়িত ছওয়ায় পড়াশুনা বন্ধ থাকে।

১৯২১ সালে অসহযোগ আন্দোলন উপলকে গান্ধীকি চট্টগ্রামে আসিপে সাত বৎসরের কল্পনা তাঁহার বক্ততা শোনার পর হাতের সোনার চুড়া গাঞ্চীজ্ঞকে দিলে তিনি উহা ফেরৎ দেন। তথন থেকে দেশের স্বাধীনতা, ধর্ম ও অনাথ-আত্রদের হু:থক্ট দুর করার চিস্তা এলোমেলো-ভাবে বালিকার মনে উঠত। কিন্তু দিশাহারা হয়ে পড়ত কুদ্র হ্রদয়। বাড়ীতে চুই কাকা চুপি চুপি "দেশের কা**ড়া**" করতেন আর ভাতুপুরী তাঁদের আহত 'দেশের ডাক' 'প্ৰের দাবী' প্রভৃতি পুস্তকশ্বলি পড়ত। সেই সময় মেজ কাকা স্টি হয়। ঠাকুরদাদা কুন হলেন, কারণ সরকারী মহতুল জাঁছার সম্মান ছিল যথেষ্ট। বালিকা যেন ক্রমশঃ ঝুঁকে প্রভল স্বদেশীয়ানার দিকে, থদর পরা আরম্ভ হল। আচার্য্য প্রাক্তরে রাম্বের বৈজ্ঞানিক প্রতিভা কিশোরীকে আরুষ্ট क त्रभ— विद्यान ठाउँ । ये पुष्क रूप भन । ১৯२৮ मार्जित কলিকাতায় নিখিলভারত কংগ্রেস সম্মেলনে যোগদান করা সম্ভব হল না। কিন্তু পরের বংসর বিপ্লবী নেতা পূর্ণেশ দভিদারের উৎসাহে চট্টগ্রামে অমুষ্ঠিত ছাত্র-সম্মেলনের অক্সভয উভোক্তা হলেন কল্পনা দত। এই সম্পেলন ছিল সুভাষ্চক্তের অকুগামীদের। 'রাউলাট এ্যাক্ট' পড়ে তাঁর মন বিষমর হল। কলিকাভান্ন পড়ার সমন্ন সিমলা ব্যাহান সমিভির 'পদাইদার'

কাছে ছোরা, সাঠিখেলা, আর নৌকাচালনা শিখলেন। কলিকাতায় ছুই কাকার মাধ্যমে তিনি করেকজ্ঞন ধিপ্লব পদ্বীর সংস্পর্শে আসেন। কিন্তু তাঁদের কর্মধারা প্রথমে ঠিক অমুধাবন করতে সক্ষম হন নি। সহসা ১৯৩০ সালের ১৮ই এপ্রিল ৈকালে তিনি সংবাদপত্তে পড়লেন স্থানেন (মাষ্টারদা) ও তাঁহার সহকর্মাদের আক্রমণে চট্টগ্রান অস্তাগার দখলের বীরকাহিনী। ব্রিটিশ সিংহকে অপমান ও ব্রিটিশ সামাজ্যকে ধ্বংসের চেষ্টায়ত গ্রামের বালকদের তঃসাহসিকতা চট্টল ক্মারীর মনে এনে দিল এক গভীর প্রেরণা—যদিও তিনি তখনও বিপ্লবীদলভূক্তা ছিলেন না। গ্রীষ্মাবকাশে তিনি নিজ জেলায় ফিরলেন। মাষ্টারদা ও অগুদের সহিত সাক্ষাত পরিচয় হল। ফরমূলা দিয়ে কল্পনা দত্তকে explosives তৈয়ারী ও সংগ্রহীত আগ্নেয়ান্ত তাঁরই বাড়ীতে রাখার ভার দেওয়া হল। চট্টগ্রাম কলেজে বদলীর চেষ্টা চলল। স্থবিধা না ছওয়ায় সেখানে থেকে দলের কাজ করিতে লাগিলেন। নভেম্বরে কলিকাতায় টেষ্ট পরীক্ষা দিয়ে ফিরলেন স্বস্থানে। সেই সময় বন্দুক ও গ্রাইফেল চালনায় মনোনিবেশ করেন। মাষ্টারদার সঙ্গে নিয়মিত সাক্ষাৎ হত আর অস্ত্রাগার লুঠনের আসামীনের সহিত লুকিয়ে জেলে প্রভাহ দেখা করতেন। কলিকাতা হইতে প্রয়োজনীয় **জি**নিষপত্তর কেনার ভার **ভাঁ**হার উপর ক্রন্ত হল। ইহার পর চট্টগ্রাম সহরে ডিনামাইট পুঁতিয়া সমস্ত সরকারী ভবন উড়াইয়া দেওয়ার পরিকল্পনা শ্রীমতী যোশীর দক্ষতায় চালিত হয়—কিন্তু দলের একটি ছেলে ধরা পড়ায় কল্পনা দেবীর কথা পুলিশ জানিতে পারে। তাঁহার পরিবারের ও গৃহের উপর পুলিশী হামলা আরম্ভ হল—আর তাঁহাকে পক্ষকাল অন্তর থানায় হাজিরা দিতে হত। সতর্ক পুলিশ পাহারা ভেদ করে তিনি ৰিল্লবী কার্য্যধারা চালিয়ে যান। ডিনামাইট বড়যন্ত্র মামলা প্রমাণাভাবে বন্ধ হয়ে গেল। পর্ব্বপরিচিতা প্রীতি ওয়াদেদারকে তিনি মাষ্টারদার সহিত সাক্ষাৎ করান। তুইজনে পুলিশের সাজে বিপ্লৰী কাজ চালিয়ে বেতে থাকেন। পুলিশ কল্পনা দেখীর উপর খুব লক্ষ্য রাখতে আরম্ভ করল। ১৭ই সেপ্টেমর ৩২ তাঁহাকে গ্রেপ্তার করা হয় আর ২৪শে সেপ্টেম্বর চট্টগ্রামের পাছাডভগীতে চলে শাসক বনাম তরণ বিপ্লবীদের এক অভূতপূর্ব সংগ্রাম। বদিও তিনি এ^{থন} কারাত্তরালে, তবুও তিনি যে ইহার অগ্রতম প্রধান উভোজা ছিলেন—তাহা বলার প্রয়োজন নাই। ইহার পর ব্যাপক পুলিশী অভ্যাচার চলে। সর্বসমেত ১০৮ জনকে বিচারার্থ চালান দেওয়া হয়। ২৩শে নভেম্ব তাঁহাকে জামিনে খালাস করা হল। দলের নির্দেশে ২৬শে ডিসেম্বর তিনি গৃহত্যাগ করেন। ফলে বাবার সরকারী চাকুরী গেল—ৰাড়ীর জিনিব নীলাম হল-ভাঁহাকে গ্রেপ্তারের জন্ম করেক হাজার টাকা পুরস্কার গোবিত হল। সেই সময় তিনি ও মাষ্টারদা গৈরালা গ্ৰামে আন্মগোপন করেন। বানের গোলার নুকিরে পাকতেন

কিন্ত বাড়ীর কর্ত্তা একদিন তাঁদের বার করে দিলেন। পুলিশ পিছতাড়া করল-মাষ্টারদা ধরা পড়েন কিন্তু কর্মনাদেবী আশ্রম পেলেন গৈছিয়া গ্রামে পূর্ণ তালুকদারের বাড়ীতে। প্রলিশ সন্ধান পেল-সমস্ত বাড়ী ঘিরে গুলী চালাতে লাগল, পূর্ণ তালুকদার গুলীতে মারা গেলেন—আর ১৯৩৩এর ১৯শে মে গ্রীমতী যোশী ধৃত হলেন। পঁচিশ মাইল পায়ে হাঁটিয়ে নিয়ে এল পুলিশ তাঁকে চটুগ্রাম সহরে। আত্মগোপনের সময় মাষ্ট্রারদাকে জেল থেকে স্ক্রিয়ে নিয়ে আসার ব্যবস্থা চলেছিল আর স্থানীয় মুসলমান বাসিন্দারা বিপ্রবীদের সর্ব্ব-প্রকারে সাহায্য করতেন—সে কথার উল্লেখ করেন কল্পনাদেবী। কিন্তু নেত্র সেন ধরিয়ে দিলেন। তাঁহাদের শ্রন্ধেয় মাষ্টারদার বিরুদ্ধে ষড়যন্ত্র-মামলা চলল—বিচারে মাষ্টারদার ও তারকেশ্বর সেনগুপ্তের ফাঁসীর ও শ্রীমতী যোশীর যাৰজ্জীবন দীপান্তর বাসের আদেশ হয়। কবিশুরু রবীক্রনাথের প্রতিবাদে মেয়ে রাজনৈতিক বন্দিনীদের (শাস্তি, স্থনীতি, উজ্জ্ঞা, পারুল, বীণা দাস ও কল্পনা দত্ত) আন্দায়ানে প্রেরণ করা হয় নাই—তবে বিভিন্ন জেলে পাকিতে হয়। ছ:খের সঙ্গে জানালেন শ্রীমতী বোশী বে—'Terrorist

History'ও 'Details of explosives manufacture' নামে তথ্যবহল হণ্ডলিখিত পুশুক ছটি পুলিশ নষ্ট করিয়া দেয়।

১৯৩৯ সালের মে মাসে মৃক্তি পাওয়ার পর কল্পনা দেবী
চট্টগ্রান্তে সমাজসেবার কাজে আত্মনিয়োগ করেন। ১৯৪০
সালে প্রাইভেট ছাত্রী হিসাবে তিনি বি, এ, পরীক্ষার পাশ
করিশা কালিদাস বিজ্ঞান কলেজে এম, এস, সি পজিতে
থাবেন। সেই সময় কিষাণ সভা, ট্রেড ইউনিয়ন প্রভৃতিতে
জড়ি থাকায় পুনরায় তাঁছাকে গৃহে অস্তরীণ করা হয়।
ফলে পরীক্ষা দেওয়া হয় নাই। ১৯৪২ সালে মৃক্ত হওয়ার
পর তিনি চট্টগ্রামে ছড়িক্ষ ও বোমাবিধ্যন্ত এলাকায়
সমাজসেবার কাজ করেন। উক্ত বৎসর তিনি ভারতীয়
কম্যানিষ্ট পাটির সক্রিয় সদস্যা হন। ১৯৪০ সালের মে মাসে
তিনি ভারতীয় কম্যানিষ্টপাটির ভূতপূর্ব সাধারণ সম্পাদক
শ্রীপ্রণাটাদ যোশীর সহিত বিবাহবদ্ধনে আবদ্ধা হন। ১৯৪৮
সালের অক্টোবর মাসে তিনি চট্টগ্রাম হইতে কলিকাভার
চলিয়া আসেন। বর্ত্তমানে তিনি ইণ্ডিয়ান ইাটিস্টিক্যাল
ইনটিউটে চাকুরীস্ত্রে বৃক্ত রহিয়াছেন।

পুরীর ঝাউবনে

जयरमम् गर्छ

এই ঝাউবন
এসেছি এথানে এসেছি কথন
এথানের এই আদরে গলানে।
সোহাগে জড়ানো শীতল ছারার,
বাদামি বালুর সোনালি রোদের
মোহিনী মারার•••

এসেছি এখানে এসেছি কখন এখানে আসতে চেয়েছে কি মন ? দিক-জানহীন অবোধ সাগর ঢেউরে-ঢেউরে ভাঙে মনের আগড় কতু খন নীল কতু ফিকে খেন একটু সবুজ মেশানো—এ কেন ? সারাদিন কাল কত বঙ ফেরা দেখেছি, দেখেছি অবোধ ঢেউয়েরা সারারাত আর সারাদিন ধরে' ভেঙে লুটে পড়ে, লুটে ভেঙে পড়ে আমার পারের কাছে কী বে থোঁজে বুঝি ছোঁয়-ছোঁয় • এই বাঃ ছুঁলো ৰে ভিজে বালু পায়ে মাড়িয়ে মাড়িয়ে বিত্ৰক কুড়িয়ে বিত্ৰক হারিয়ে এসে গেছি বেন এখানে কখন এখানে আবেক নীলের সাগরে

নীশ চুঁরে পড়ে পাতার ঝালরে
শীতের রাভের শিশিরের মন্ত
কিংবা ভোরের কুরাশা বেমন ।।
কোন্ গুণী বেন হাওরার আঙুলে
ঝাউরের সেতারে স্থর তুলে তুলে
দিগন্তলীন বধির সাপরে
শোনাবেই সে যে শোনাবেই অকারণ !
এসেছি কে জানে কথন থেরালে
ঝালিরাড়ি ভেডে, সকাল বেলার
সোণালি রোদের ভাকে সাড়া দিরে
সাগরের নীল ইসারা ভিডিরে ।
এখানে এসেই বুঝেছি: এ-মন
এখানে আসার ক্সন্তে উতল
হরেছিল বুঝি কতকাল বেন
কন্ত মুগ ধরে-••

আশা আর সাধে বাঞ্চিত সেই চুঁরে চুঁরে পড়া নীলের পেয়ালা ধরে দেবে বলে';

আমি তথু বসে
থাকবো এথানে—এথানে তোমার
ঝাউবন বীথি ছারার ছারার
বসবো আঁচিলে, বসবো তোমার
স্থনীল আঁচিলেন্দ।

বাঙলা অভিখান সঞ্চলন

ঐশোরীপ্রকুমার ঘোষ

()

ষ্ঠ কুর সন্ধান পাওয়া গেছে তাতে জানতে পার। বার মুঞ্জিত বাঙলা শক্ষের অভিধানের গোড়াপত্তন কবে বান এক প্রকৃতীক বিশ্বারী।

১৬শ শতাবী পর্যন্ত বাঙালী আভিধানিকদের কিছু কিছু
সন্ধান পাওৱা যায় বটে কিছ তারপর থেকে ১৮শ শতিবীর
প্রথম পাদ পর্যন্তকে অভিধান-ক্ষেত্রের অন্ধনার যুগ বলা বেতে
পারে। বিতীর পাদে পাছে ফ্রে মানোএল দ! আকুম্পানাও
(Padre Frey Manoel da Assumpco) নামে এক
পর্স্থাক আভিধানিকের আবির্ভাব।

পর্জু গীজদের বাঙদা দেশে আদার একটা ইতিহাস আছে।

১৪১৮ খঃ ২০এ মে পত্নীক নাবিক ভাষে। দা গামা মলববের রাজধানী কালিকটে পদার্পণ করেন। তাঁর সঙ্গে আসেন পেছো দে কোবিলভাম (Pedro de Covilham) ৷ ১৫٠٠ সালে এই ভদ্ৰলোক ভারতে খীষ্টান মিশনের স্বর্গাত করেন। এই ৰছবেই পেড়ে৷ আলড়াবেজ কাত্ৰালের সঙ্গে আট জন যাজক আৰু আট জন ফ্রান্সিসকান আসেন। মুসলমানেরা কিছু এদের ডিনজনকে হত্যা করে। তাতে দখে না গিয়ে তাঁরা ৰীষ্টান বিশনের কাজে হাত দেন। ১৫·৩ সালে **ডমিলিক্যানবা** ভারতে **अरम फैंक्स्त्र मह्म (शंगमान करवन। क्ल ১৫७० शेह्रो स्वत्र आद** পোষার ১০১০ খু: মিশনের কাজ আরম্ভ হয়। পতু গীঞ্চর। ১৫১০ সালেই গোয়া নগরী অধিকার করে। তারপর সেখানে রোমান ক্যাথলিক ধর্ম প্রচারের জন্ম তারা চেষ্টা করে। ধর্ম প্রচারের জন্ম ভারা কতক্তলি বই ছেপেছিল, ছাপাথানারও ব্যবস্থা করেছিল আৰ সেই সঙ্গে ব্যবসাবাশিকাও চালাত। বখন প্তুসীক্ষদের বাশিকা त्यम हमरह ज्थन सत्ता मा कनहा (Nuno da Cunha, ১৫২১— ७৮) डाप्टन मर्पा नर्वश्रथम वाउना प्रतन्त्र मरल बावनात्र हानारङ স্থক করেন। ভারত চেষ্টার ফলে পর্ত গীজরা বাঙ্কার এসে বালেখর থেকে আরম্ভ করে চট্টপ্রাম পর্যন্ত আর হুগলী থেকে ঢাকা পর্যন্ত बाबना बाविका ठानाबाब करत वान कतरक नागन । बाबना-बाविरकाब সঙ্গে ভাদের আৰু একটা কাজ ছিল জলদম্ভতা আৰু লঠভবাজ। এতে আৰা পুৰ নৃশংসভাৰ পৰিচৰ দিত। বেশ কিছদিন কাটবাৰ পৰ পড় श्रिक মিশনাবীরা লিসবন হয়ে গোয়ার পথে বাঙলার আনে। ধৰ্মপ্ৰচাৰ আৰু ব্যবসাৰ অন্তে ভাগেৰ বাঞ্চল ভাৰা শিখতে হয়। ভারা বেধানে থাকত সেধানকার কথ্য ভাষা আরম্ভ কর্ষার চেষ্টা কৰত। বাঙ্গা ভাষা শেখবাৰ উপবোগী ভাষা এক বাঙ্গা ব্যাক্তৰণ আৰ প্ৰচলিত শব্দ নিৰে অভিধান তৈৱী কৱাৰ, আৰু সেই সংস बुष्टे-बर्ट्य व्यार्थना-वहे वाःना ভাষার ভাগানোর প্ররোজন नत्न करत्।

পাজে কে মানোঞৰ দা আত্মশাসণিও (Padre Frey Manoel da Assumpção) একজন পতুৰীক অগ্নীয়ান সম্পাদ কৰিব। তিনি পতুৰ্বীকে এতোৱা-নিবাসী

ছিলেন ৷ ভিনি ১৭৩৪ সাল থেকে ১৭৫৪ সাল পর্যস্ত ঢাকা জেলার ভাওৱালের অন্তর্গত সেট নিকোলাস টলেন্টিনো মিশনের (Missio dos Nicholas Tolentino) অধ্যক্ষ (rector) ছিলেন। তিনিই একাজের ভার নিলেন। কঠোর পরিশ্রম বাঙ্গা ভাষা শিখলেন—তাতে দেখলেন অপ্রকে শেখাতে গেলে বাংলা শব্দের প্রতিশব্দ পর্তুগীজ আর পত গীজ প্রতিশব্দ বাঙলার অভিধান থাকা প্রয়োজন।—ভাই সহকর্মীদের কাজের সুবিধার জন্ম ভিনি একটা ব্যাকরণ ও একটা শন্ধকোষ তৈবী করেন ৷ শব্দকোষ্টির নাম—"Vocabulario em idioma Bengalla Portuguesa"। বইখানি ১৭৪৩ প্র: প্ত গালের বাক্রধানী লিসবনে ছাপা হয়। বইথানির আখাপত্র এইরপ— "Vocabulario em Idioma Bengalla e Portuguez dividido em duos Partes dedicado as Excellent e Rever. Senhor. D. F. Miguel de Tavora Arcebispo de Evora do Concelho de Sua Magestade Foy Delegencia do Padre Fr. Manoel da Assumpcam Religioso Eremita da Santo Agostinho da Congregação da India Oriental. Lisboa 1743. তথন বাংলা অক্ষরের হর্ফ ছিলনা। বইখানি সমস্তটা রোমান অক্ষরে ছাপা। বইখানি উৎদর্গ করা হয়েছে এভোরার আর্চাবশাপ Senhor D. F. Miguel de Tavora-**কে। ঐতিহা**সিকগণ ভারতবর্ষের কোথাও বইখানির সন্ধান কবে পাননি। গ্রীয়ারসন সাহেব জার Linguistic Survey-তে ১ম খ ১ম ভা ১৩ পু:) এই বইখানির একটা সংক্ষিপ্ত পরিচয় দিয়েছেন। বইখানির ভিনটি ভাগ আছে—১ম ভাগে ১ থেকে ৪° পাতা পর্যস্ত ব্যাকরণ। ২র ভাগে ৪১ থেকে ৩০৬ পাতা পর্যস্ত বাংলা-প্রতাসীক্ত অভিধান, আবু তার ভাগে ৩০৭—৫৭৭ পাতা পর্যন্ত পতু গীল-বাঙলা অভিধান। ডক্টর স্থনীতিকুমার চটোপাধায় ১১১১ সালে ব্রিটিস মিউজিয়াম থেকে বাঙ্কলা হরফে ১টি শব্দকোষ পেয়েছেন। এই বই সম্বন্ধে বিষ্কৃত বিবরণ পাওয়া বাবে—Hist. of the Beng: Language and Litt., () Bengal Past and Present, 3538; J. A. S. B. (3536); কেদারনাথ মজুমদারের বাঙলা সামরিক সাহিত্য, ১১১৭,ডক্টর স্থশীল কুমাৰ দেব Bengali Litt. in the 19th Century, সাহিত্য পরিষদ পত্রিকা, ১৩২৩; অমুল্যচরণ বিজ্ঞাভ্যণ (ভারতী, ১৩২১; প্রবাসী, ১৩৩৭), ডক্টর সুনীতিকুমার চট্টোপাধ্যারের পারি মানোএল দা-আস্**ডম্**ণামাও-রচিত বালালা ব্যাকরণ (ফলি-বিশ্ববিজ্ঞালয়), ডক্টর স্থরেজ্ঞনাথ সেন সম্পাদিত বান্ধ-রোমান ক্যাপলিক সংবাদ', প্রস্থাবনা (কলি বিশ্ববিভালর, ১৯৩৭), শ্ৰীসঞ্জনীকান্ত দাস (সা-প্ৰাক্তকা, ১৩৪৩, ৪র্থ সং প্রভৃতি स्रोता)।

এর পর অগষ্টন আসঁ! (Augustin Aussant) প্রণীত 'ফরাসী-বাঙলা' অভিধানধানির (১৭৮১৮৬) উল্লেখ করেছেন ডক্টর স্থনীতিকুমার চটোপাধার জাঁর Origin and Development of Bengali Literature, ১ম খণ্ড, ২৪৪ পৃষ্ঠার। এটি মুক্তিত হর্মন, পাঙ্গিপি অবস্থার আছে, ইহা ডিনি উল্লেখ করেছেন।

ক্লিকাতা গেজেটের (১৭৮৯ থু: ২৩এ এপ্রিল) এক বিজ্ঞাপনে দেখা বায় বাঙালী পশুতমশুলীকে অমুবোধ করা হচ্ছে একথানি ভাল বাঙলা ব্যাক্ষণ এবং অভিধান রচনা করার জল্ঞে। (সা-পাপত্রিকা, ৪৩ থশু, ১৬৪ পু:)।

তারপরে পাওয়া গেল একথানি ডিক্সনাথী 'ইঙ্গরাজি ও বাজালি বোকেবিলারি' নামে। এর প্রকাশকাল अशेष्क । 393€ শীসজনীকাস্ত দাস মহাশ্য এই বইখানির আবিষ্ঠা (সা-প-পত্রিকা, ১৩৪৩, ৪র্থ সংখ্যা)। এই বই-এর লেগকের নাম জানা ধায়নি। নেই—কেবল আছে 'ক্ৰৰিকাাল ম্ভাকরেরও নাম থেকে ছাপা। সম্ভনীবাবর মতে আপজন (A. Apjohn) সাহের ক্রনিক্যাল প্রেসের আংশিক মালিক। গ্রন্থকারের নাম না থাকায় ভিনি অভিধানখানিকে আপজন সাতেবের অভিধান বলে অভিহিত করেছেন। বইথানির আখ্যা-পত্ৰ এইবপ---(সাহিত্য-পরিষদ পত্রিকায় স্ক্রনীবাব্য প্রবন্ধ হইতে উন্ত)—"ইঙ্গরাজি ও বাঙ্গালি বোকেবিঙ্গারি"

An Extensive | Vocabulary, | Bengalee and English, | very useful | To Teach the Natives English, | and | To Assist Beginners in Learning | The Bengali Language | Calcutta, | Printed at the Chronicle Press | MDCCXCIII |

'ক্যালকাটা ক্রনিকল' সাপ্তাহিক পত্রিকায় (মঙ্গলবার, মার্চ২০, ১৭১২) A. Upjohn সাঙের এক বিজ্ঞাপন দেন ইংবেছি ও বাঙলাতে। বাঙলা বিজ্ঞাপন এরপ—

"ইংবাজ ও বাঙ্গালি লোকের। সিথিবার কারন এক বহি **অভি।**সিম্ন চাপাখানায় তৈলার হটবে। ক সাহেব লোকে বাংলা কথা।
সিথিবেক এবং বাঙ্গালি লোকে। ইংবাজ কথা সিথিবেক অতএ। ব সকল লোকের কেফাএত। বাবণ এই বহি ভৈয়ার করা জা। ইতেছে ছে২ লোকে চাহে তা। হারা মেং আবজান সাহেবের। ছাপাখানার আসিয়া লইবেক। ইতি সং ১৭১২ ইংবাজী। তারিথ ১১ মার্চ সন ১১৯৮। বাঙ্গালা তারিগ ৯ চৈত্ত।"

সঙ্গীবাবু আপজনের অভিধানের একটা পাতারও প্রতিলিপি উজ প্রবন্ধে প্রকাশ করেছেন। তার শব্দ-বিক্রান কিরপ ছিল— তার করেকটা কথা এখানে উলিখিত হল—

a plantain of an angular kind *।ें। निक्ना কাটাইতে to cause to cut কাটার a poignard, dagger a crooked broad knife কাটাবি কাটিতে to cut, to hew কাটিতে আঁথর to blot a letter কাট্যা a fence of boards কাটুরা a wood-cleaver डेट्यामि ।

ভারপর যে অভিধানখানির কথা উল্লেখ করছি সেথানিই বাপজনের অভিধান আবিষ্কারের আগে পর্যস্ত আদি অভিধান বিসেই কীৰ্ত্তিত ছিল। এই অভিধানখানির রচহিতা ফেনরি পিটস দুবল্লার (Henry Pitts Forster)। স্বত্তীবের জন্ম

১৭৬৬ বু আৰু মুৱা হয় ১৮১৫ পু:। তিনি ই**ট ইভিয়া** কোম্পানীর তরফে চিহ্নিত কর্মচারী হয়ে ভারতে আসেন। ১১৭১৩ সালে काल्किहोत्वव পर्य चार ১१४८ সালে २६-প्रवर्गनाव लिखानी আদালতের বেজিষ্টারের প্রে নিযুক্ত হন। আদালতে বাঙলা ভাষা প্রচারের জন্ম তিনি বাঙলা ও ইংরেজি উভর ভাষার একবংশি অভিগ্রান সঙ্কপন কংরন। অভিগানখানির নাম-"A Vocabulary, in wo parts, English and Bengalee and Vice Versa", Calcutta 1799. কলকাতা ফেবিস এও কোম্পানীৰ প্রেস থেকে পি ফেরিস কর্ত্র প্রকাশিত! বইখানির ১ম ৭৩ প্রকাশ হয় ১৭৯৯ সালে (মূল পুরা ৪২১), ২য় ৭৩ ১৮০২ সাল (মূল পুঠা ৪৪৩)। ইহাতে প্রায় ১৮٠٠٠ বাঙলা শব্দ আছে। সে সময় যে সূব ইংক্তেজ বাঙলায় আসতো-ভারা বাঙলা ব্রস্ত না---কান্তের অসুবিধা হত। এবং আদালতের কান্তেও বাঙলা না আনার অসুবিধা ফরষ্টার সাহেব অনুভব করতেন। সেই অসুবিধা দৰ করার জন্ম তিনি কঠোরভাবে বাঙ্গা ভাষা শেখেন এবং **অভিযান সম্ভানে** হাত দেন: আরও একটা কারণ জানা যায় তাঁর বাঙ্গা ভাষার প্রতি প্রীতির। এই দেশে অবস্থান কালে তিনি এক জাঠ ব্যবীকে বিয়ে করেছিলেন। সেই জাঠ বমণী বাঙলা ভাষা জানতেন, আৰ এ ভাষার প্রতি তাঁর বিশেষ আকর্ষণ ছিল। ফ্রান্টার সাহেবেরও বাঙলা ভাষার প্রতি এত

অভিধানের শব্দ সঙ্গনের সময় তিনি সাধু ও প্রচলিত উ**ভয়** শব্দ ই যথা সন্তব উল্লেখ করেছেন। তাঁর অভিধানখানির শব্দবিস্থাস এইরপ—

অথে Ogre—above all, before, already হত্যাদ।
আগে Age—above all, before, already
প্রথমতঃ Prothomotho—above all, before
আচমকা } Sudden
আচম্বিতে Suddenly
ভঠাৎ Sudden, perchance
প্রভিত—Waste

"ই" তালিকায়—ইড্ছড: পৃতিত Scattered (সাধু) हुक्तुक् Hurly burly (आया) "(T)" সায়ং Evening, twilight (সাধু) "**न**° দাঁজবেলা " আকর্ষণ To drag (দাধ) ঠেচকান " (গ্রামা) পরিশ্রম Labour (সাধু) (গ্ৰামা) খাটনী (প্রাম্য) मखुदी हम्बाङ्घ Tent (माधू) (ब्रामा) हैजानि ...

্বিক্সভাষার জানি অভিধান ও কর্টার সাহেব অনুস্যাচরণ বিজ্ঞাভ্যণ, বক্সভাষা, ১৬১৪, ১৫ পৃষ্ঠা)।

১৮-৭ সালে কোলজক সাহেব অমরকোবের সম্পাদন করে এক নজুন সংস্করণ প্রকাশ করেন। কোলজক সাহেবের কথা পত বাবেই উল্লেখ কয়। হয়েছে। ভিনি ক্ষরকোবকে এক নতুন ধারার ইংবেজি অর্থ সমেত সম্পাদন করেন। বইখানির মুখবকে ভিনি ৰলেছেন বে, তিনি অমরকোষের মূল গ্রন্থের সঙ্গে বছ প্রাচীন-কালের বিভিন্ন দেশের পুথিগুলি পরীকা কবেন। ত্রিস্তীয় অকবে এক প্রাচীন পূথির নকল করান। দেবনাগরী কক্ষবেও নিকল করান। দেওলি তার উইলিয়ম জোনস বেল ভাল করে পরীক। গরেন - स्थानम मार्ट्स नक्षातित वहना'रन देश्याकि छाटिनक निर्ध দেন, ভাতে তাঁর কালের খুব সবিধা হয়। কর্মনীয় অক্রের বিথিব ন্দল, টাকা ও ব্যাখ্যা সমেত দেবনাগরী ভাষার রূপঞ্জিরিত क्वान-ए। श्रीवद मध्य व्यवकारम व्यवन श्रीविष्ठ श्रीष्ट्र ना थाकार সে**ওলি পরিভাক্ত হয়েছে।** বাঙলা ভাষারও টাকা সমেত একথানি এর পান, তার অধিকাংশট তিনি গ্রহণ করেন। এই সব গ্রন্থ ভিমি এবং অপর বিশেষত পণ্ডিভগণ ধারা বিচক্ষণভাব সভিভ विकास करत एरव जिलि अमर्थाकार मन्नामना करवन। अहे अन-থানি সম্পাদন করতে তাঁর পাঁচ বছরেরও অধিক সময় লাগে। এই বটখানি জীৱামপুরে কেরী সাহের কঠক মুদ্রিত হয় ১৮০৭ प्रदेशाया अञ्चलानिएक किनि मृत्युक स्मारकत मृत्या देशविक्रक দিয়েত্রে – তারপর ধারাম্বিত মন্তব্য, শ্লোকের সাবাংশ এবং পাঞ্চীকায় শব্দভাগির ইংরেজি অর্থ এবং পরিশিষ্টে অকারাদিকাম **শব্দক্তী দেন। পৰিশিঙে** বৰ্ণামুক্তম-পদ্ধতি প্ৰবস্তী কালেব আভিধানিকগণ গ্রহণ করেন। কোল্ফেক স্বেধ্যে ক্রবড **সংস্কৃতক্ষ পণ্ডিত ছিলেন—তা তাঁ**ব (১৮১৪ পু:) ভারত তাাগের পর ২৩ বছর পরে বখন জার মৃত্যু হয় (১৮৩৭ খু: ১০ই মার্চ), তথন সেই মৃত্যু সংৰাদ ভাৰতে এগে পৌছলে তদানীস্তন সংবাদপত্ৰ 'সমাচার দর্পণে' নিয়োক সংবাদটা প্রকাশিত চয়, ভা থেকে জানতে পারা বার---

শামরা অতি ধেদ পূর্ব জ্ঞাপণ কণিতেছি যে ইংলও ইইতে বে শেব সম্বাদ প্রকৃষ্ণিয়াছে তদ্বাবা অবগম হইল বে কোলক্রক সাহেব লোকান্তব গত ইইয়াছেল। এ সাহেব কতক বংসরাবধি সমর দেওয়ানী আদালতে প্রধান জ্বল ছিলেন পরে কৌন্সেস ভুক্ত ইইয়ছিলেন। কিছ ভারতবর্ষে তাঁহার মহাঝাতি সংস্কৃত বিভাও পণ্ডিত লোকদের প্রতিপোষকতা করণের উপরই প্রকাশ আছে। ভারতবর্ষে তাঁহার তুলা সংস্কৃত বিছান কোন ইউরে!পীর ব্যক্তি ছিলেন না জ্বোন্স সাহেবও নহেন এবং সর্বসাধারণ লোকই যাকার করেন বে তিনি সর্ব্ব বিষয়েই সম্বোধার স্ব্বাপেকা জ্বান ছিলেন। ইলেও দেশে প্রত্যাগত হইলে পরও তিনি আপনার অভিপ্রিয় সংস্কৃত বিভার চর্চাতে বিরত হন নাই। প্রাদপত্রে সেকালের কথা, ২য় থও, প্রঃ ৮০)

কোলক্রক সম্পাদিত অমবকোবেব ২য় সংখ্যা প্রকাশিও ছয় ১৮২৫ খঃ শ্রীরামণুবের ছাপ:খানার। দাম ১২ টাকা।

১৮০১ সালে জন লীডন (John Leydon) সাহেব বালোর এক অভিধান বচনা কবেন। লীডন সাহেব (১৭৭৫-১৮১১) চিকিৎসক হিসাবে ভারতে এসে মাল্রাল, মহীশুর, পেনাও প্রেছতি দেশে অমণ কবেন। ভারণর কলকাতার আসেন ১৮০৬ সালে। জিনি কিছুকাল ফোর্ট উইলিরাম কলেজের হিন্দুলানী জলার সাধ্যাপক হন। ফোর্ট উইলিরাম কলেজের থাকাকানীন

পণ্ডিতদের কাছে বাঙলা শেখেন। সে বাঙলা কিন্ত পুরো পণ্ডিতী ৰাঙলা অর্থাৎ পণ্ডিতদের কাছে শেখার দক্ষণ সংস্কৃত বছল বাঙলা। তাই তাঁব অভিধানটাও সংস্কৃত শব্দের অভিধান হয়ে গাঙার।

পাদবী উইলিয়ন কেবী সাহেবের (১৭৭২-১৮৩৪) নান বাঙলা দেশে শিক্ষিত সমাজে স্থাবিচিত। তাঁর জীবনের ইতিহাস তাঁদের কাছে অজানাও নয়। তিনি ১৫ বছর পরিশ্রম করে এক বাঙলা-ইংবেজি অভিধান সকলেন করেন। আর ৫ বছর কঠোর পরিশ্রমের পর প্রস্তুটীর মুজণ কার্যা আরম্ভ করেন ১৮১৫ সালে। ১ন খণ্ডের ১ম সংস্করণ মুজণের পর দেখা গেল বছ অক্ষরে ছেপে বইখানির আরুতি অভান্ত বৃহৎ হয়েছে এবং সম্পূর্ণ হতে যে আকার ধারণ করবে তা সাধারণের বাবস্থাকরে উপদোগী হবে না। তাই তিনি বইখানি পুনমুজিণের বাবস্থা করে ছোট অক্ষর তৈবী করিয়ে সক্ষর ভাবে বিজ্ঞীয় সংস্করণ ছাপেন। এই ভাবে ১ম থত্তের ২য় সংস্করণ বের হয় ১৮১৮ সালের ১৭ই এপ্রিল। ভার আব্যাণত্র এইরূপ—

A | Dictionary | Of the | Bengali Language | in Which | The Words | Are Traced to their Origin | And | Their Various Meanings Given. | Vol. I | By W. Carey, D. D. | Professor of the Sanskrita, And Bengalee Languages, In the | College of Fort Wlliam | Second Edition, with corrections and Additions, | Serampore, | Printed at the Mission Press, | 1818. |

बम्र थर खद रस् जांग व्यक्तांन इस् ১৮२० थ्रः १३ छून।

১ম থণ্ডের পৃষ্ঠা সংখ্যা ৫১৬ আর ২য় খণ্ডের ছ'ভাগের পৃষ্ঠাসংখ্যা ১৫৪৪ ৷ এই অভিধানটাতে ৮•,০০০ শব্দ আছে (জি, খিথের কেরীর জীবনী, ১৮৮৭; বিস্তৃত বিবরণ, গল্পসাহিত্যের ভূমিকা, সা-প-পত্রিকা, ৪৬শ, ৩য় থণ্ড, জ্বইব্য)

বইখানি ১৮২৫ সালে প্রকাশিত হবার পর সমাচাব-দর্পণে (১১ ছুন ১৮২৫) নিয়োক্ত সংবাদটা প্রকাশিত হয়েছিল—
বাকালা ডেক্সিয়ানরি।—আমরা অভিশর আফ্রাদপুর্বক প্রকাশ করিতেছি যে শহর প্রীরামপুর নিবাসি প্রীয়ৃত ডাক্তার কেরি সংহেব পোনর বংসর পর্যান্ত পরিপ্রম করিয়া যে বাঙ্গালা ও ইংকেটা ডেক্সিয়ানরি প্রস্তুত করিয়াছেন ভাহা শহর প্রীরামপুরে ছাপাধানায় ছাপা হইয়া গত সপ্রাহে সম্পূর্ণ হইয়াছে এবং গ্রাহকদের নিকট প্রেরিত্ত হইতেছে। এই পুক্তক ভিন বালামে সম্পূর্ণ হইয়াছে ইচাব পত্র সংখ্যা কাটো পেলের অর্থাং বড় পৃষ্ঠার ২০৬০ তুই সহস্র যিট-পৃষ্ঠা হইয়াছে এবং অতি ক্ষুদ্ধ অক্ষরে ও উত্তম কাগজে ছাপা হইয়াছে। ইচার মৃল্য চামড়া বাইশু সমেত ১২০ একশ্ত দশ টাকা নিকপিত হইয়াছে। বঙ্গদেশে বত শব্দ চলিত আছে সে ভাবং শব্দ প্রায় এ অভিবানের মধ্যে পাওয়া হার। প্রবম ইংরাজী অর্থের সহিত্ব বোপদেবকৃত গণ আছে তংশবে অকারানি ক্রমে তাবং শব্দ সংগৃহীত হইয়াছে। ে (সংবাদপ্রে সেকালে কথা, ১ম খণ্ড, ৭৭পুঃ)।



[প্ৰকাশিকের পর] মনোক বস্থ

লোকটা হেসে বলে, বিনি পুঁজির ব্যবসা—মহাজন লাগে না আমার। জাল কাটার জন্মে বারো আনাব এক ছুরি মান্ডোর মূলধন। বেথানে খুশি মাল ছাড়তে পারি। কুমিরমারি চলে মান্যাই ভাল। দেড় প্রবের ভিতর পৌছে ধাব। বাজার পুরোপুরি ধ্বা যাবে।

কেন ভাই, কাছেপিঠে গগন দাসের খাতা—তোমাদের জন্মই খাতা বসানো। কুমিরমারি অবধি কেন কট কববে ?

থাতায় কি আব ক্মিরমানিব দব দেবে। পাতার বাপারিব। ক্মিন্যানি নিয়ে নেচনে—মার্থানে লাভ চাই তো থানিকটা! আব ্যানাদের পাতা বসবে সেই ভোব-বাত্রে। হাত-পা কোলে করে ভত্তক বলে না থেকে কত দূব চলে যাব পায়ে পায়ে!

জ্গা বলে, মাল নামাও, কোনখানে গেতে হবে না। বাবে তো সঙ্গদ্ধ বন কেটে এত কাও কৰেছি কেন? কি মাছ এওলো— শাবদে? আছো বাক্ষদে পাবদে জুটিয়েছ ভাই।

মাছের আয়ন্তন দেখে উল্লাসের অবধি নেই। ৭ক একটা বের বংব কলা, পরম আদরে হাত বুলার, আর বাংসলোর চোঝে চেয়ে থাক: আহা-হা, রান্ধপুত্র! পাঁচটা ছ'টায় সেবের ধাকা। এ ছিনিব পেটে থাবার নয়—সদরে নিয়ে দেখালে সরকাবি পুরস্কাব বেরে। আমি ছাড়ছি না, ক্মিরমাবির দর দিয়েই কিনে নেব। আরও বেশি চাও, ভা-ই দেব। কষ্ট করে ইভোমায় একবার সাঁইতলা অবধি সেতে তবে। প্রসাক্তি সদাস্বলা লোকে গাঁটে করে ছোরে না।

কুমিরমারি চলে বাচ্ছিল, সেই লোক সাঁহিতলার এইটুকু পথ বাবে, এ আর কত বড় কথা। কালীতলার গোঁরো-বনে ভাণ্ডার আছে। ভাণ্ডার থুঁড়ে টাকা বের করে দান দিতে হবে লোকটাকে।

সাইন্তলায় নিয়ে গিয়ে তাকে চালাঘরের ভিতর বসাল। প্রসন্ত মূপ জগা বলে, ঢেলে ফেল্ট্রনমন্ত মাছ এইবারে। নেড়েচেড়ে দেখে মান্দাক করে দাম বল।

লোকটা দাম বলে, পাঁচসিকে।

উঁহ, দেড় টাকা। দেড় টাকায় থুলি হলে কিনা বল। ইমিবমারিতেও ভূমি এই দর পেতেনা ভাই। বনে বনে তামাক থিতে লাগ, টাকা নিয়ে আদি।

ভামাক সাজছে জগা। লোকটা প্রশ্ন করে, তুমিই বা এত প্র দিছু কেন ? পোষাতে পারবে ?

তাই বোঝ। না পোষালে দিচ্ছি কেমন করে ? লোকটা হি-ছি করে হালে: ব্যতে পেরেছি। কি ব্যকে ?

মানুবের মনে কত কি মতলব থাকে। কত রকম তেবে কাল করতে হয়। থাতা জনাচ্ছ বুঝি এই কারদার ? বাবুরা বেমন করে হাট জনার। হাটে বে মাল অবিক্রি থাকে, বানুদের তরক থেকে সমস্ত কিনে নেবে। এমনি করে করে ব্যাপারি জনে। ব্যাপারির মাল আমদানি হতে হাগলে থক্ষেবও এসে জুট্বে। হাট জনে পেল। তাবপরে কবে তোলা আদায় করে বাও। ভাল দর দিরে তোমবাও তেমনি থাতা জমাচ্ছ যত মাছ-মারা তোমাদের ওথানে বাতে জোটে। কেউ কুমিরমারি বাবে না, এদিক ওদিকক হাতে কেটে বেচতে বাবে না। থাতায় এসে নির্ম্বলটে পাইকারি ছেড়ে দিরে বাবে।

জগা বিষয়মুখে বলে, বন কেটে খেরি বানালাম ছাই পাতার বৃদ্ধিটাও আমার। কিন্তু আমি আর কেউ নই এখন। আমি ছো আমি—থোদ মালিক গগন দাসের দশা গিয়ে দেখ একবার। আমি বাইনে—কিন্তু যা শুনতে পাই পারাণ ফেটে জল বেরিয়ে যার। ডাঙা অঞ্চলের ভক্ষোরর। এদে চেপে পড়েছে। সে আছে জেলধানার ক্য়েদির মতো হয়ে।

লোকটা ছিলিমে গোটা ছই টান দিয়ে হি-হি করে হেলে উঠল: সভলন এবারে ধরতে পেরেছি। বলব ? জাল নিয়ে বেরিয়েছ— জালে ভো একেবারে ফক্কা। আমার মাছ দেখিয়ে বউয়ের কাছে প্লার বাঁচাবে তুমি।

জগাও হাসে: বউই নেই। এই হল বসত-ঘর। বউ **থাকলে** মঞা কবে এমনি হাত-পামেশে থাকতে দিত ? ঘরের চে**হারা দেখে** ৰল তুমি।

একুখ

ভোরবাত্রে আব দশটা মাছ-মাবাব দলে লগা গিরে নতুন, আলার উঠল। বদেছে মাছ-মাবাদের মধ্যে। আলে অভিরে বাছ এনেছে, জাল খুলে মাছ পাতিরে দিল। লগার এই নবম্ঠিতে অবাক ইরেছে সকলে। বিশ্ব রুখে কেউ কিছু বলে না। কাজের ভিতর গৌরার সামুবকে ঘাঁটাতে গিরে কোন বিপত্তি ঘটে না ভানি!

আলার এলেছ জগা অনেকদিন পরে। তাকিয়ে তাকিয়ে দেখে চতুর্দিক। হার হার, কী চেহারা করে কেলেছে তাবের সাথের আলার! রাবেতাম বাড়িরে বলেনি। আলা কে বলবে, বোলআনা গৃহস্থবাড়ি। দ**রাক উঠান পড়ে ছিল—আগাছার জঙ্গল, আর হুন** ফুটে-ওঠা সাদামাটি **জারগার জারগার। কোদাল দিয়ে খুঁড়ে সা**রা উঠান ভবে লাউ-**কু**মড়ার होंबा भूराउरह, नरहे-भोनःभाक-भ्रामाद वीक एिएएएए। नभर नश्नात्क **শাকে মাটি দেখা যায় না। সামনের দিকে গোয়াল্য**ৰ বীধা স্থাছে। **উভোগী মরদ মাছবের ভো অভাব নেই।** বুঁটি পোৰা হয়ে চা⁄ু। উঠে **গেছে এর মধ্যে। গোয়ালঘর শে**ষ হতে মান ভয়েকেব বেশি দেবি হবে **না। শেব হয়ে গেলে গড় আস**েব, ছাগল আস:ব। আর এখনই **এই ভোর হবার মুগে** হাঁদ ঝটপট কবছে বাল্লাখবের দাওয়ায় একটুকু **খোপের ভিতরে। াাস ভবে তো** এসেই গেছে এর ভিতবে। মাস তু**ই** পরে বে কী কাণ্ড হবে, ভাবতে শিহরণ লাগছে। গোয়াল, **ভরিভরকারির ক্ষেত্র, উঠান জু**ড়ে লাউ-মাচা। নাচাব তল দিয়ে মাথা **নিচু করে দাওয়ার এসে উঠতে হ**বে। সাগরের কূলে চর পড়ে ডাঙা বেরুল, ডাঙার অঙ্গল অথল আপনা আপনি। ভঙ্গলে জন্ধ-জানোয়ার চৰে বেড়ায়। সকলের শেবে এলো মামুষ। তথু মাত্র চরে খেয়ে ও-**জীবের সুখ হয় না। জমিজিবেড নিজস্ব করে খিবে নেবে,** চিবস্থায়ী . **ঘর্ষাড়ি বানাবে— সকল জী**বের মধ্যে এই মাতু্বই কেবল যেন অনড় হয়ে এসেছে ছুনিয়ার উপর।

সৰ চেমে কট হয় বড়দার জন্যে। কথা বলা চূলোয় থাক, নিদাৰুণ **লক্ষার মুখ ভূলে দে জগার দিকে চাইল** না এতক্ষণের মাধা। গেন **কে না কে এসেছে। পুরো-হাতা কা**মিজ এবং পুরো দশহাতি কাপড় প্রিবে থাতা-কলম আর হাতবাল্প সামনে দিয়ে মাচাব উপর এগনকে **জন্মলোক করে বসিত্রে দিয়েছে। বঙ্গে বংস হিসাব কব, আর লিখে** যাও। **দেখাপড়া শেখার এই বড় মালা। ফাটনিট** সাটা-তামালা তাদিংলা করবে—ভা দেখ, ভালক নগেনশনী গৌড়াতে গৌড়াতে চকোর দিয়ে **বেডাছে সামনের উপর।** এবং কামরার দবজার আড়াল থেকেও **দোদ গুপ্রভাপ বোন আ**র বউ নিশ্চয় একগণ্ডা চোথ তাকিয়ে পাচাবায় बरद्ध। मास्रकोरक नएए रमण्ड स्मार्य ना। তোমার এই কেনারেচার সমত্ত, কাজের সময় বলেই নয়—দিনবাত অইপ্রহর নজৰ বয়েছে। ভার উপর সন্ধার পর গান-বাজনা আব ফচ্ডের আড্ডা ছিল, আছে। এখনো আছে। কিন্তু বসের গান গাও দিকি একখানা---**'প্রলা দিদি লো, বড় ম**রসা ভোর প্রাণ'—গাও দিকি কত বড় সাহস! এথোলের সঙ্গে নামগান কবে এখন বড়দা বোন-বউ-**ভালকের সামনে বাবাজি হয়ে ব**সে। হবিধ্বনি কবে হবির লুঠ ছড়ায়, **ঞাৰ-শৃত্য বাজার হয়তো বা পল্মীপ্**জোর সময়। তেলের করেদি হয়ে বাছে, সেটা কিছু মিথো বলেনি জগা।

গপন গদিরান হরে বদে। আর নগোনশনী মাতকরির চালে চরকির মতো থ্রছে। অকাজের ঘোরাফোর! নর—থাবার মাছ বলে এক এক আঁজেলা মাছ তুলে নিছে মাছ্মারাদের ঝুড়ি থালুই ও জাল থেকে। জগা বলেও বাদ দিল না, নিয়ে নিল ভার কাছ খেকে গোটাকতক। জগা কিছু বলবে না, সে ভো পুরোপুরি মাছ-মারা হয়েই এসেছে। এমনি ভাবে থাতার নিজম্ব ঝুড়িও প্রায় ভরতি। তার জন্ধ-কিছু থাবার জন্ত

বারাঘরে পাঠিয়ে বাকিটা বিক্রি করে দেবে। সেটা সকলের শেবে। নগেনশনী এসে এই একখানা বৃদ্ধি বের করেছে—রোজগালের নতুন পদ্বা। ফদ্দিফিকিরের অন্ত নেই লোকটার মাখার। মাছ্নারারা মাছ্ নিয়ে বসে আছে—নগেনশনী বৃরে বৃরে এক এক জানর কাছে যার, হাত দিয়ে মাছ্ উন্টেপান্টে ব্যাপারিদের দেখায়, ছ্-ছাতে ভুলে ধরল বা একটু উচুতে। বলে, উঃ, পাহাড়ের সমান ওজন একটা জালে ভেড়ির যাবতীয় মাছ্ তুলে এনেছ্গো! কত কেছ গছুই মশায় ? হর ঘড়ুই কিছু বলবার আগে নিজেই মন-গড়া দর কলে, বার আনা ? কছু ব্যাপারি এ দেখ এক আঙুল দেখিয়ে পুরোপুরি টাক্র বলে বসে আছে। এব উপরে কে কতে উঠতে পার ? এক-ছই—উত্ত আঠার আনা নয়, পাচ্ সিকে—তিন। পাচ লিকোর গোলার।

্থমনি কার্দার মাছেব দর তোলে নগেনশ্লী। দর উঠলে বৃত্তি বেশি আদার হয়, থাতার মুনাফা বেশি। যা গতিক, পাতা তো গাঁ-গাঁ করে এবারে জনে উঠিবে নগেনশ্লীর ব্যবস্থা ক্রমে।

সকাল হয়েছে ! কিন্তু আজ বড় কুয়াশা—মনে হচ্ছে, রাব্রি আছে এপনো। বেচাকেনা শেষ। মাছেব ডিভি ছেড়ে দিয়েছে অনেকক্ষণ, পচা আবে বলাই বেনে নিয়ে চলে গেল। জগা ভাবছে, ত-জনেই ওরা সমান ওস্তাদ—এই কুয়াশায় পথ ভুল করে কাপ্ত ঘটিয়ে বিসে। আবার ভাবছে, তাই কর মা-কালী, জগা কী দরের নেয়ে না হাড়ে-হাড়ে বুঝনে তবে সকলে। মাছ-মারাদের হিসাব খাহায় উঠে গেছে, এইবার প্রসা মিটিয়ে দেওয়া হচ্ছে। প্রসা গণেগেঁথে নিয়ে চলে যাচ্ছে একে একে।

বিনোদিনা গিয়ে গদের গোপের মাঁপ সরিয়ে দিল। পারি-পাক আওয়াজ কুলে ছুটোছুটি করে গদের পাল বাঁধের ধারে ডোল্ড গিগে পড়ে। বাদাবনে শিয়াল নেই, এই কছ় স্থবিধা। কোন্ত গোঁচল কেবতা দিয়ে নিয়ে চাক্ষবালা ঘর নাট দিছে। বলে, প্রেটিগ পড়ছে। সরে যাও গো লাপানি মশায়ের। সরো ও মাছ্-মার্থ মশাত—

সব মাছ-মাবার হয়ে গেছে, সর্বশেষ জ্ঞার প্রসা গণ। হছে । সেই বাকি আছে ভ্রুমার। ইছে করেই যেন চারুবালা তার দিকে চেয়ে মাছ-মারা বলে ভেকে মুখের সুখ করে নিল। হর ঘড়ুই জার জ্ঞার কথাবার। চলছে ভ্রম। ঘড়ুই তারিফ করে: ভ্রম বড়ে ভূমি জ্ঞা। সর্বিনে ৮ছ়। একদিন জাল নিয়ে পড়লে, তাও গকেবাবে সকলের সেরা মাই ভূলে নিয়ে এসেছ।

কাঁট দিতে দিতে চান্ধবালা স্বগতোজির মতো বলে, ওস্তাদ বলে ওস্তাদ! মাছ মেবে আনা হয়, তা জালে জলেব ছিটে লাগে না। একেবারে শুকনো জাল।

হব খড়ুই তাকিয়ে দেনে, বাাপাব তাই বটে ! আছে। কালে। মেয়ে তো, অতদুৰ থেকে ঠিক নহৰ কৰে দেখেই।

জগা শ্বিপ্ত হয়ে বলে, বড়দা বারণ কর। মরদ মনিবের কথার মেরেলোকে কেন কোড়ন কাটবে ?

জগা যত গাগে ততই চারুবালা বিল-খিল করে হা.স: কাওগানা ব্ৰেছ ঘড়ুই মশায় ? এব-তার কাছ থেকে মাছ ভোগাও কবে নিয়ে মানুষ্টা আলায় এসেছে।

ঘড়ুই বলে, ভার গরজটা কি ছিল ? যার ংখন ইচ্ছে, ^{চলে} আসে চলে যায়। বাধা কিছুনেই। চারু বলে, মনে পাপ থাকলে ছুতো খুঁজতে হয়। সকলকে মানা করে, আলায় যাতে না আগে। মাছ-মারা সেজে নিজে তারপর চরবৃত্তি আগে।

র্বাটার তলে হঠাৎ পোকামাকড় পড়েছে বৃঝি! মরীয়া হয়ে নেঝের উপর বাড়ির পর বাড়ি দিছে। জ্বগা কোন দিকে না ভাকিয়ে প্রসা গাঁটে নিয়ে ছ্মছ্ম করে পা ফেলে মাটি কাঁপিয়ে চলে গেল।

চালাঘরে জগা একা। সোধান্তি নেই। সাপের মতন ফোঁসকরছে। ঘবে থাকতে পারে না বেশিক্ষণ, বেরিয়ে পড়ে। লোকের সামনে এমন হেনস্তা আজ অবধি কেউ করেনি তাকে। চারুবালা থাকতে ভুলেও কোনদিন আব নতুন জালায় যাবে না। বাদাবন থেকে তাকে তাড়িয়েছে—তারও চেয়ে বড় শারু মেয়েটা। ভবদান্ত ছিল ভিন্ন এলাকায় চৌধুনিদের মাইনে-পাওয়া গোলাম—নিজের ইচ্ছেয় কিছু করত না। চারুবালা বুকের উপর পড়ে থেকে শারুতা সাধবে। বলাই আর পচা, তার ডান-হাত বা-হাত কেটে নিয়েছে সকলের আগে।

আপাতত একটা বৃদ্ধি মাথায় এলো। চৌধুবি-আলায় চলে যাবে। সেথানে পুরানো সাঙাংবা আছে—অনিক্লম্বন কালোসোনা এবা মাবও সব। গগন দাসকে নিয়ে প্রথম বেথানে এসে উঠল, বাদাবনের স্বাদ পাইয়ে দিল গগনকে। অতিথ এসে সেই গৃহস্ত ভাড়ানোর ফিকিব। গোপাল ভরম্বাজ বিদায় হয়েছে, এখন আবাব সেথানে ভাব জমিয়ে নেওয়া কঠিন হবে না। চৌধুবিগজেব মানুষ আমদানি কবে চালাঘরের ভিতরেই আড্ডা হমাবে। নতুন আলার পাশাপাশি ওদের চেয়ে শ্বের তেব

্রমনি সব আনাগোনা করতে করতে বাঁধের উপর দিয়ে যাছে।
কুয়াশা—স্টেসংসার মুছে গিয়েছে বেন একেবারে। ত্-চাত দ্বের
গাছটাও নজ্পরে আসে না। ছ্যিঠাকুর বনের এই নতুন বসতির
পথ ভূলে গেছেন বুকি আজ।

থমকে দাঁঢ়াল। শিস দিছে কে কোথায়। শিস দিয়ে ভাকছে সন কা'কে। মন্দ মামুখের কাগুবাগু নাকি ? ঐ ভরম্বাজ্বের যে বাপার—আরূল-সন্তান পিটুনি থেয়ে পেল অসংকর্মে গিয়ে। আর মন্থা এমনি, কাউকে কিছুই বলবার জো নেই—কিল থেয়ে কিল চরি করা। কান কেটে নেওয়ার কথা হয়েছিল সেদিন—সেটা হলে কি করত ? খোঁঢ়া পায়েব অজুহাত আছে—পগারের মধ্যে পড়ে গিয়েছিলাম। ফোলা মুখের কৈফিয়ৎ—মৌমাছি কামড়ে দিয়েছে। পিঠে লাঠির বাড়ির দাগ—তা হয়তো গায়ের ফতুমাই ঝুলল না দাগ বসে না যাওয়া অবধি, তেল মাথবার সময়েও না। কিন্তু কাটা কানের কি কৈফিয়ৎ ? হেন ক্ষেত্রে কান চেকে পাগড়ি পরে থাকত হয়তো বার মাস তিরিশ দিন। রাত্রিবেলা মশারির মধ্যে চুকৈ তবে পাগড়ি ঝুলত। শ্রতান মামুব বাগে পেলে এবারে কার ছড়ে কথা কইবে না—কানই নেবে কেটে।

শিসটা বড় ঘন ঘন আসছে গো! ক্লোব এখন। মামুষ্টা বিশ্বামা—পিরীতের মামুষ সাড়া (দচ্ছে না, বেশি বকম উচ্চলা

হয়েছে তাই। নদী-খাল ব্যক্তক্সল ক্যাশায় অক্সার। বাজি-জাগরণ ক্লান্ত মাছমারারা বেভ শ হয়ে ঘ্যছে; বউরা প্রসা নিক্লে কেনাকাটায় বেরিয়ে গেছে। দিন-বাজির মধ্যে সব চেয়ে নিরালা এই সকালবেলাটা। সময় বুঝে রাসলীলার জোগাড়ে বেরিয়ে পড়েছে কেউ।

জগন্ধাথ বাঁধ থেকে নেমে পড়ল। আওয়াজেব আন্দাজ করে যাছে। কোনগানে কাব কাছে গিয়ে পড়বে, কিছুই জানে না। মায়নটা যেই হোক—মেই ৭কদিন গোপাল ভবগাজকে নিয়ে যেমন হংগ্রেল, আজকেও ছাতেব স্তপ হবে তেননি ধারা। যেতে যেতে অনেক নাবালে একেবাবে থালেব উপব গলে পড়ল যে। ঠিক ওপারে বাদাবন। আওয়াজের অনেক কাতে গুলেছে। অভান্ত টিপিটিপি এগুতে হছে—কাদাব মধ্যে পালেব ভীননামায় শক্ত না হয়। সভক হয়ে যাবে ভা হলে মায়ুষ্টা।

থাকেবাবে পিছনটিতে এমেছে, তথন চিনল। চাক্লবালা। চাক্ল, ভোমাব এবই কাশু? দিগস্তভোড়া কুয়াগা পেয়ে আলা থেকে এত দ্ব এসে প্রেমকপুক্য ডাকাডাকি কবছ? জগা চাতের মুঠি পাকাল। উঁহু, এখন কিছু নয়—এমে পড়ুক সেই রসিক নাগর, দৌড় কত দ্ব দেখা যাক। কাদার মধ্যে গকেবারে জলের কিনারে হেঁতালের ডাল ধবে আছে চাক। শিস দিছে, প্রতিধানি হয়ে আসছে তাই ফিরে। আবার করছে আমনি। হাত কয়েক পিছনে নিংসাড়ে দাঁড়িয়ে দেখছে জগা। এসে পড়াল যে হয়! বাঘের মতন কাঁপিয়ে পড়ে তার টুটি চেপে ধববে। বাঘের গালে জার কতটুকু—তার ডুনো জাবে তথন জগাব হাতে মুষ্টিতে।

শিদ দেওয়া ছে' ও এবারে আর এক রকম—কু দিছে চাকবালা। কু-কু-কু উ-উ-উ—কোকিলের ববের মতে। কণ্ঠ টেউ থেলে যায়। নোনাজল-ওঠা কুয়াশামগ্র বাদাবনের ভিতর থেকেপ্ত পান্টা দেখি কোকিল ডেকে উঠল। ভারি মছা চলেছে নির্জন থালের এপারে আর ওপারে। মেয়ে এবার স্পান্টাই কথাবার্গ শুক করল বনের সঙ্গে ও বন, শোন—মামার কথা শোন। ওপার থেকে শুভিদরনি আসছে: শোন—। অতি স্পাই—চাক্রবালার চেয়েও স্পাইভব গলা। ঘাড় ছলিয়ে চাক্রবালা আবও চেচিয়ে বলে, না, শুনব না। ভূমি আমার কথা শোন আগে, যা বলি শোন। শোন, শোন—দ্ব-দ্রাম্ভরে ধ্বনিত হয়। চাক্র বলে, শোন; বনও বলে, শোন। ছ-জনে পাল্লাপাল্লি। মাঝথানে গাল না থাকলে বোধকরি চুলোচ্লি বেধে যেত ছই পক্ষে।

এতক্ষণে জ্বগা বৃন্দতে পেরেছে। মাথা থাবাপ নেয়েটার। রকমদকম দেখে অনেক আগেই দেটা বোনা উচিত ছিল। সংকল্প হছে জগন্নাথের। বনরাজ্যে একটা থাল এমন-কিছু ছস্তর বাধা নর—ভাটা দরে গিয়ে দেই থাল এখন আরও দক হয়ে গেছে। চুলাচুলিব ভাবনা ভাবছে না, বাঘ আদতে পাবে থাল পার হরে। মাথুবের গলা পেয়ে দ্রের কোন-ছিটে-জন্দলের মধ্যে হরতো পার হরে এদে উঠেছে—দেখান থেকে টিপিটিপি পা ফেলে ঘাড়ের উপর হঠাছ বাপিয়ে পাছরে। এমন কত হয়ে থাকে! পাগলের জারগা মানস্বলায়। বাদাবনে যারা আলবে, মাথা ঠাণ্ডা রেখে বিচার-বিবেচনা করে প্রতি পারে সত্তক হয়ে চলতে হবে ভাদের। মানবেলার মেরে বাদার এদে দঙ্কিনী পাছে না, বনের দঙ্গে তাই ডেকে ভেকে কথা বলতে এদেছে।

গালিগালাভ করা উচিত। কিন্তু থানিক আগে যা কথাব গোঁচা থেয়ে এদেছে, চাককে নাড়তে জগন্ধাথের আরু সাহসে কুলায় না। শুধু কথাই বা কেন, মাটেতে ঐ যে অতবড় কাঁটা ঠুকল ভাই বা তাকে উদ্দেশ করে কি না কে বলবে? বাবে যদি মুখে করে নিয়ে যায়, ভালই তো—ভন্তথাজ গেছে, শেষ শত্ত আপোদে থতন 'হয়ে যাক ভাদের সাঁইতলা থেকে।

কুমানা কেটে হঠাং আলো ফুটে উঠল। তথ্য দেখা দিয়েছে।
বনের মাথায় রোদের ঝিলিমিলি, কী সগনাশ, চারুবালার একেবারে
শিছনটিতে জগা—দেখলে যে কেপে উঠনে দক্ষাল নেয়ে। পা টিপে
টিপে পিছিয়ে সে বাঁপে গিয়ে উঠল। থানিকটা বাটোৱা এলাব। বাঁপের
উপর দিয়ে হন হন করে চলেছে করালীর দিকে। চারুবালার
দৃষ্টিতে না পড়ে যায়। কিছ হলে গেল ভাই। ভাটভাভি
করতে পা পিছলাল। পড়ে যাডিছল, একটা ডাল ধরে সামলে
নিলা। মুখ গোবাল চারুবালা। এক পলক। ঘ্রিয়ে নিল মুখ
সঙ্গে সঙ্গে। চুবি করতে গিয়ে গুইও যেন দেখে ফেলেডে—এমিন
অবস্থা এখন ঘ্যাব। সন্ধানী চোব নয়, সোঁচকার ঘটায়।
কিছ কে বুমুরে, যাবেই বা কে বোঝাতে? বলি, বাসের পথ
ভো কারো কেনা জারগা নয়—গবন্ধ পড়েছে, ভাই গমেছি এখানে।
যাইছেছ ভাব গে, বয়ে গেল।

নতুন আলাব একেবারে গা খেঁসে বাব চনে গেছে, সেইখানটা এসে

পড়েছে। বাঁধের মাটি তুলে ভিতর দিকে ডোবা মতন হয়েছে। মতলব করে একটা জারগা থেকেই মাটি তোলে। ক'বছর পরে এই ডোবা পুকুর হরে দাঁড়াবে। কলমির দামে এরই মধ্যে জলের আধামাধি চেকে গেছে, কলমিফুল ফুটে আছে। হাঁদ ভেদে বেঢ়াছে তার ভিতরে। কতগুলো হাঁদ রে বাবা! ডোবাটা আলার এলাকার ভিতরেই, কিনারা দিলে পথ। পিটুলি-গোলায়—কল্পার পা এ কৈছিল, থানিকটা তার চিহ্ন রয়েছে। সাদা পায়ের দাগ ফেলে এ পথ ধরে লক্ষ্মীরাকরন আলাবরে উঠে বদেছেন— আপদবালাই তাদের দ্র করে দিয়ে লক্ষ্মীর বসত। এবং সন্ধ্যাব পর লক্ষ্মীর স্বসত। এবং সন্ধ্যাব

খান তৃষ্ট-ভিন গুঁড়ি থেলে ডোবার একদিকে ঘাট বানিয়েছে ! বিনি-বউ ধুচনি করে চাল ধুতে এল। বেড়ে আছে বড়লা, বাঁধা ভাত থাছে। রকমারি থাবার মাছ রেথে দেয় বোজ, গানে জিম পাড়ে, তার উপরে এটা-ওটা ফাইফরমাস করে পচা-বলাইকে—কুমিরমারি থেকে তারা কেনাকাটা করে খানে। ভাত বেড়ে ছাইনাজন চ চুর্দিকে সাঞ্জিয়ে পিছি পেতে গগনকে ডাক দেয়, ভাত গেতে গ্রন গো। সামনে বনে গ্রটা খাও ওটা খাও—বলে, গাত গোটাবার জন্ম গড়েকে-কাঠি গ্রনে দেয় আঁচাবার সময়। বউবোন-শালার সংসার পাতিয়ে দিব্যি মজায় আছ নতুন ঘেরিও খাতার মালিক শার্ক বার্ গগনচন্দ্র দাস।

যন

বারেশ্বর বস্

"How fleet is the glance of the mind Compared with that of wind."

বাসে যেতে গেতে মনে ১য়—
আমি বদি পালি ভোতাম.
উড়ে ফেডাম বছলুবে বিদিশাব দেশে
অথবা নীল শান্ত কোনো সমুদ্রের পাবে
কিলা উর্দ্ধে সভি উদ্ধে মহাশৃক্ত পিবে
যেথানে পালিবা ওড়ে,
মহানশ্বে গায়, মেখে মেঘে বাভাবে হাবার !

এব মাঝে কখন যে বাস—
এনে গেছে বহুদ্ব,
পেরিরে গছের মাঠ, আলিপুর, ঘাস, মাটি, চুপপাথিব। পিছনে মব:
ভামি গেছি আরো দূরে অনম্ভ নিথিলে
সেধানের থোঁজ কিন্তু পাধিবা জানে না,
জানি আমি, অধাং এ-মন!

श्रावा रुगात सामवा

[পূর্ব-প্রকাশিতের পর] ড: পঞ্চানন ঘোষাল

্র্র পর আমরা সকলে মিলে গোকাবাবুর রক্ষিতা মিলিনাসুন্দরীর কক্ষে এসে দেখলাম, মিলিনাসুন্দরী আপন কক্ষে বসে ভরে ঠক্-ঠক্ করে কাঁপছে। তার পাশে পড়ে রয়েছে একটা শক্ত মোটা দড়ী ও একটি ক্লোরোফর্ম-ভর্ত্তি শিশি। এই ঘটনা সম্পর্কে তাকে জ্বিজ্ঞাসাবাদ করলে সে একটি উল্লেখবোগ্য বিবৃত্তি দিয়েছিল। তাব সেই বিবৃত্তির একটি সারম্ম নিয়ে উদ্ধ ত করা ভলো।

"এই রাত্রে আমি নিশ্চিন্ত হয়েই আপন কক্ষে নিদিত ছিলাম। কারণ, আমি জানভাম যে নাচের ঘরে ছুইছন সিপাই আমাকে রক্ষাব ক্∎ উপস্থিত আছে। সহসা জানালা ভাঙাৰ শব্দের সঙ্গে সঙ্গে ঘবের মণ্যে একটা ঝুপ কবে আওয়াজ হলো। এইরূপ একটা আওয়াজ গুনা মাত্র আমার ঘুম ভেত্তে গিয়েছিল। কিন্তু আমি উঠে বসবার পুর্বেই দেখি, আমার ঘরের বিজ্ঞা বাভিটি জেলে দিয়ে খোকাবাব খামার দিকে এগিয়ে আসছেন। আমি লাফিয়ে দাঁড়িয়ে উঠা মাত্র থোকাবাবু আমাকে চুপ করে থাকবার জন্ম নির্দেশ দিলেন। তাঁর আদেশ অক্ষরে অক্ষরে পালন করা ছিন্ন আমার উপায়ও ছিল না। থোকাৰাবু এৰ পুসৰ প্ৰস্তাৰ করলেন যে তিনি আজ্ট আমাকে বাঙলাদেশের বাইবে এক স্থানে নিয়ে যাবেন। আমি সভয়ে তাঁকে জানালাম বে এতে ভাঁর বিশেষ বিপদ ঘটতে পারে। কারণ নীচে হ্বাবের কাছে তুই জন পুলিশের লোক আখাকে রক্ষা করার জন্ত মোতায়েন করা আছে। ইতিমধ্যে খোকার বন্ধ্ কেটবাবুও ঐ একই পথে সেধানে এসে উপস্থিত হজেন। আমাৰ কথা ওনে তিনি বলনেন বে, ঐ সিপাহিদ্বয়ের ঘর বাহির হতে অতর্কিন্তে তিনি শিকল ভূলে বন্ধ কৰে দিয়েছেন। ঠিক এই সমন্ন নীচেকার সিপাছিণরও বাহিরের ব্যাপার উপলব্ধি করে চীংকার সুরু করে দিলে। তাদের টেচানিতে বিরক্ত হয়ে খোকাবাবু তার সাকরেদ কেটবাবুকে জানান, 'এই ভূই শীগ্রি নেমে রাক্তার গিয়ে কাঁড়া। মলিনা সহকে আমাদের সংগ বেতে বাজী হবে বলে মনে হচ্ছে না। আমি একে ক্লোবোফর্ম প্ররোগে অভ্যান করে ওর দেহটা দড়ি দিরে বেঁধে নীচে গলিটায় নামিরে দেবে, আরু নীচে থেকে ভুই ওকে ধরে ফেলে বাঁখনটা তাড়াঙাড়ি थुल नित्र अस्क कॅार्स करब नित्र हरन गांवि। धे गंनिय व्यनव मूर्य থতক্ষণে সুৰুদ্ধ নিশ্চৰই ন্টু দেৱ ট্যাক্সিথানা নিয়ে উপস্থিত হয়েছে। থোকার আদেশ পাওয়া মাত্র কেইবাবু জানালা গ'লে দেওয়ালের খ'ড়া ব'বে নীচে নেমে গেলো। কিছ আমি এই সৰ ডাকাভদের ক্থামত কাল্প করতে আছপেই ভ্রুসা পেলাম না। আমি থোকাকে ম্পাষ্ট জানিয়ে দিলাম যে তাদের সঙ্গে আমি কোথায়ও বাব না এবং দক্ষে সঙ্গে ৰাছিৰেৰ লোকেৰ সাহাব্যেৰ জন্ম চীৎকাৰ কৰতে শুক্ক কৰে ^{দিলাম—}ওলো কে কোথায় আছ আমাকে বকা কৰো। খোকাবাবু ^{এসে} **ভাষাকে খুন করে ফেললো পো। শী**ন্ত ভোমরা থানার থবৰ ^{দাও} গো, ই**জ্যা**দি' কথা বলে। স্বামাকে এই ভাবে চেচিয়ে উঠতে

দেখে খোকাবাবুও 'ধোহ' ব'লে কেটৰ মত গ'ড়া ৰ'লে নীচে নেমে গোলেন। তার কিছুক্রণ প্রেই আমি তনতে পেলাম, বাইরে বন্দুক ছোঁড়ার দড়াদর্ আওরাজ হচ্ছে। এই জন্ম তথন থেকে ভয়ে যরের মধ্যেই আমি ব্যেছিলাম।"

আমরা অকুস্থল হতে দড়ী, কাপ্ড, কোবোফরের শিশি প্রভৃতি প্রদর্শনী দ্রব্য কয়টি সাবধানে স'গ্রহ্ করে নিজেদের হেপাজতীতে গ্রহণ করলাম। ঐ ঔষধের শিশিটা প্রহণের সময় আমরা বিশেষ সাবধানতা অবলম্বন করেছিলাম। কাবণ তাতে থোকাবাব্ব অসুনির টিপ-চিফ্ সল্লিবেশিত হওয়ার সম্ভাবনা ছিল। এ'ছাড়া নেমে এসে আমরা পাশেব গলিতে এবং বাটার দেওয়ালেব গাতে অপরাবীদের পদ্চিন্থের সম্ধানত্ত করেছিলাম। কিন্তু এই বিষয়ে আমরা বিশেষ সম্প্রতালাভ করতে পারিনি।

সাক্ষিনী মলিনাস্ত্রনারীর উপরোক্ত বিবৃতিতে আমরা কেষ্ট এবং স্থবল নামে আরও ছট ব্যক্তির নাম জানতে পারি। খোকাবাবুর দলে যে বহু ব্যক্তি সংযুক্ত আছে তা ইতিপূর্বেই আমরা অনুমান করতে পেরেছিলাম। এই জন্ম মলিনাস্ত্রন্ধীকে এই সম্পর্কে জেরা করে এনের প্রকৃত পরিচয় প্রাহণ করার প্রয়োজন ছিল। এ'ছাড়া আরও একটি বিশেষ তথ্য তার কাছ হতে অবগত হওয়া আমাদের দরকার হয়েছিল। এই তথ্যটি হচ্ছে এই যে, মলিনামুন্দরী খোকার সহিত বহুদিন রক্ষিতারূপে বাস করা সত্ত্বেও স্বাভাবিকভাবে তার সঙ্গে অঞ্চত্র যেতে চাইছিল না কেন? এই সকল হুগ্নহ্ মামলার তদম্ভে পুলিশের কর্ত্তব্য শুধু সাক্ষ্য সংগ্রহ করা নয়। মামলার শেষ বিচারের দিন পর্য্যস্ক এই সাক্ষীকে নিজেদের তাঁবে বাখাও তাদের অপর আর এক বিশেষ কর্ত্তব্যরূপে বর্তিয়ে থাকে। এই জন্ম সাক্ষীদের মধ্যে কোনও বিসদৃশ ব্যবহার পরিলক্ষ্য করা মাত্র আমাদের কর্ত্তব্য হচ্ছে উহাদের এইরূপ ব্যবহারের মনস্তাত্ত্বিক কারণ সম্পর্কে অবহিত্ত হওয়া। এই জন্ম এই সম্পর্কে বহু প্রয়োজনীয় তথ্য জিজ্ঞাদাবাদ দার৷ মলিনাসন্দরীর নিকট হতে আমরা অবগত হতে থাকি। নিম্নোল্লিগিত প্রশ্যেতর হতে वक्कवा विषयि विस्मिमकाल उलनाकि कवा यावा।

প্র:—আছা ! তুমি ভো কিছুকাল থোকাবাব্ব বৃক্তিভারপে বাস করেছ। কিছুভা সত্ত্বেও তুমি থোকাব সঙ্গে অক্সত্র ষেতে বাজী হলে না কেন ? খুব বেঁচে গেছ কিছু ভূমি। ছয়ভো ভোমাকেই এইদিন সে খুন করে বসভো।

উ: — আজে, ষেভাবে আমরা জাবনবাপন করি তাতে যে কোনও দিন আমরা খুন হয়ে যেতে পারি। বাড়ীতে থাকলে বিপদের সন্তাবনা থাকে অনেক কম। এইজন্ম সাগাবণতঃ এমনি চেনা লোকের সঙ্গেও তাদের কথামত অন্তত্ত কোথাও আমরা যাই না। একণে এই হত্যা-কাণ্ডের পর ও ভিসম্বর লোকটার সঙ্গে অন্তত্ত কোথাও যাওয়া আমি নিরাপদ মনে করিনি। এ'ছাড়া নিজের স্থাধীনতা বিস্কান দিয়ে অন্ত একজনের তেপান্ধতে আমি বাবেই বা কেন ? আনাদের এই অঘন্ত জীবনের একমাত্র স্থবিধা হচ্ছে এই স্বাধীনতা। স্বেচ্ছার এই স্বাধীনতা হারাতে আমরা সাধারণতঃ রাজী হইনা। অন্তান্ত কারণের মধ্যে তাঁকে প্রভ্যোথানে করার এইটিই ছিল অন্ততম কারণ। থোকাবার এই বিশেষ সভাটি উপলব্ধি করেছিলেন, তাই তিনি আনার সম্মতির জন্ত অপেক্ষা না করে আমাকে জোব করে স্থানান্থরিত করতে চেবেছিলেন।

প্র:—ই। আমবাও এই বিষয়ে আপনার দক্ষে গ্রুমাত। কিন্তু একটি কথা আছু আনাদের কাছে আপনাকে স্থাকার করতেই হুবে। আপনি উপরোক্ত কারণ ছাড়া থোকারানুকে প্রত্যাগ্যানের অন্তান্ত কারণের কথাও বলেছেন। আমবা কি ধরে নিতে পাবি যে এই অন্তান্ত কারণের মধ্যে একটি কারণ ছিল গোকারাবুর প্রতি আপনার সাম্প্রতিক কোধ ? খোকারাবু পাগলাকে অকারণে হত্যা করার জন্ত তার উপর আপনার এক দাকণ বিস্থা এসেছিল। আসলে আপনি পাগলাবানুকেও থোকারাবুর মতই প্রতিব চক্ষে দেখতেন।

উ:-কেন আপনারা এই সব অবাস্তব কথা জ্বিজ্ঞাসা করে আমাকে মিছামিছি কষ্ট দিচ্ছেন। গোকাবাৰ আমাকে প্ৰাচৰ অৰ্থ প্ৰতি মাসে দিয়ে এসেছেন। তাঁর মত ছদাস্ত ব্যক্তির সঙ্গে অন্যত্র গেলে আমাকে তীর একাস্তরণে তাঁনে থাকতে হতো। আমার প্রাণ্য অর্থের কথা ভললে হয়তো তিনি আনাকে একাকা পেয়ে অকথা নিধ্যাতন করতেন। খনে ডাকাত প্রভতিদের ভালবাসাব কোন স্থিরতা আছে ব'লে আমরা কেউই বিশাস করি না। কিন্দ্র পাগলানারর কাড়ে আমি কোনও দিনই একটি কপদকও নিই নি। বর দে আমাকে গানবাজনা শেণাতো ব'লে তাথম প্রথম আমিট তাকে বড় অর্থ পারিশ্রমিকরপে দিয়ে এসেছি। তবে ইদানী রাত্রে সে অভিরিক্ত মজপান মুক্ত করেছিল। এই চুনিপাক হতে ভাকে বন্ধা করাব জ্ঞাই আমি কিছুদিন তাকে অধিক অর্থপ্রদানে বিবৃত ছিলাম। তবে ভালবাসা শদটি আমাদের কাছে আপনাবা আর দয়া করে তলবেন না। আমরা মানুষকে খুলি করতে লিখেছি, কিছ তাদের আমরা ভালবাদতে বিধিনি। তবে-থাক সে সব কথা।--আজে है।।। একথা সভ্য পাগলাবাবু নিচ্ছ হওয়ায় আমবা সকলেই খুব ব্যথা পেয়েছি, বাবু। প্রকৃতপক্ষে এখনও আমরা বিশ্বাস করতে পারি না বে তার মত নিবীত মানুষকে নিত্ত করতে পাবে এমন নিষ্ঠুর মাত্রুৰও পৃথিবীতে বিচরণ করছিল।

প্র:—আছা, এইবার বলো এই কেইবার এবং স্থবলবার লোক
ছুইটি কারা ? থোকাবার বে একটা খুনেব দলের সন্ধাব এখন ভূমি তা তো
ভাল করেই বুঝেছ। এইবার তা'হলে ভূমি মনে কবে করে বল,
ভার দলে আর কোন কোন বাক্তি ভোমার ধাবলা মত সংযুক্ত ছিল ?

উ: শাজে, আমি এই কেইবান্ স্বলবান্ কালাবাব্ এবং গোপীবাব্ নামে কয়টি লোককে খোকাবান্ব বন্ধ্বপে চিনি। এবা সকলে করে মধ্যে থোকাবাব্ব সংল আমার ঘরে এসে আমার গান ভনে গিরেছে। কিন্তু এরা আমার সঙ্গে, কোনও প্রকাব বেল্লিকী ব্যবহার করতে কোনও দিনই সাহসী হয় নি। তবে আমি এ-ও লক্ষ্য করেছি বে, এয়া খোকাবাব্কে সব সময়েই ভয় ও সেই সঙ্গে ভিক্তি করে চলত এবং বিদেশই প্রা থোকাবাব্কে পব সময়েই ভয় ও সেই সঙ্গে বিদাসও ছিল অসীম।

উপরোক্ত প্রয়োত্তর হতে আমরা বুরতে পারলাম বে আমাদের এই প্রথান সাক্ষিনী মলিনায়ন্দরীর সহিত খোলাবার্র আর সাক্ষাৎকার না ঘটলে তাকে বিচারের শেব দিন পর্যন্ত আমাদের তাঁবে রাখা থ্বই সহজ্ঞসাণ্য ব্যাপার। তবে মলিনাক্ষমরীর হাব্ভাব হতে আমরা এ কথাও ব্বেছিলাম বে তাকে রক্ষা করার অজুহাতে তাকে নজরবদ্দিনী করে রাখারও প্রয়োজন আছে। মধ্যে মধ্যে তাকে পাগলাবাব্ব নিংত হওয়ার করুণ কাহিনী শুনিয়ে তাকে ধোকাবাব্ব প্রতি বিরূপ করে রাখা আমাদের উচিত হবে।

পরের দিন ৮ই সেপ্টেম্বর ১৯৩৫ প্রে হানে ছানের সময় আমরা সকলেই যথারীতি অফিস্বরে নেমে এলাম। গত দিবস অধিকরানি পর্যান্ত কার্যের বত থাকার আমাদের কাহারও ভালো করে হ্ম হয় নি। এতদিনে আমরা ভালরপেই ব্যুতে পেরেছি যে এই থুনের কিনারা করতে হলে আমাদের মৃত্যুপণ করে এপিয়ে যেতে হবে। এমন কি, আমাদের মণ্যে বে কেই যে কোনও মুহূর্তে নিহতও হয়ে বেতে পারে। কিন্ত জার্মাণ আর্মি এবং বৃটিণ নেভীর ভায় কলিকাতা গুলিশেরও একটা ঐতিহ্ম ছিল। এই বিশেষ ঐতিহ্ম গুরুপরম্পরার আমরা অর্জন করেছিলাম। এতদিনের এত বড় ঐতিহ্ম আমাদের পক্ষে হেলার হারিয়ে ফেলাও সম্ভব নয়। আমরা যে কোনও ছর্বিপাক মাথা পেতে নেবার জন্ত প্রস্তুত হলাম। এখন আমাদের একমার বিবেচ্য বিশ্ব হলো পরবর্ত্তী তদন্ত এখন কোন দিকে পরিচালিত করা উচিত হবে, ভাচা সঠিকভাবে নির্দ্ধারণ করা।

আমরা ইতিমধ্যেই ক্সেনে নিরেছি যে, এই হত্যাকাণ্ডটি থোকাবার এবং তার দলের লোকদের থারা সমাধা হয়েছে। কিছু এই থোকা-বাবৃটিব প্রকৃত পরিচয় কি? তিনি কে এবং থাকেনই বা তিনি কোথায়? অভিজ্ঞ ইনস্পেন্টার স্পনীলবার্ মত প্রকাশ করলেন যে এখনো পর্যান্ত এইরূপ এক হুর্দান্ত ব্যক্তি কোনও না কোনও স্থ্রে কলিকাতা প্লিশের নজরে আমেনি তা কখনও হতে পারে না। আমাদের পরামশসভায় তিনি দৃঢ় চিত্তে ঘোষণা করলেন যে নিশ্চম লোকটা কলিকাতা পুলিশের নিকট অন্ত কোনও নামে পরিচিত্র আছে।

এই সময় সহসা আমার স্মতিপথে উদয় হলো প্রায় বৎসরাধিক পূর্বেকার একটি ঘটনা। এই ঘটনাটি "শিউচরণ হত্যাকাণ্ড" নামে ইতিমধ্যেই প্রসিদ্ধিলাভ করেছিল। এই শিউচরণ ওরফে শিউচরণিয়া ছিল এ**ৰুজন পু**ৱাতন পাপী। তবে শেষের দিকে আৰু চৌৰ্য্যৰুত্তিতে লিপ্ত না থেকে সে চোরদের ধরাতে এবং চোরাই মাল উদ্ধাস করতে আমাকে প্রায়ই সাহাধ্য করত। একর স্বামি তাকে প্রতিটি মামলা বাবদ প্রচর অর্থন্ত প্রদান করেছি। একদিন দে আমাকে জানাল বে, থাদা নামক একজন জিলাখাবিজ গুণু গুণু-আইন জমান্ত কবে কলিকাতায় ফিরে এসেছে। এই থাদাগুণ্ডার নাম পূর্ম থেকেই আমাদের আনা ছিল। ছট বংসর পুর্নের দেওয়াদত তেরাবী নামক জনৈক জমাদার ভাকে ধরতে গেলে সে তাকে ছবী মেবে পলাগার চেটা করে। এই মামলাটি আমিই তদস্ত করেছিলাম। আমার রিপোর্ট অম্বারী পুলিশের ঐ জমাদারটি বীরত্বের জন্ম ভারতীয় পুলিশ পদকও প্রাপ্ত হয়েছিল। আমার অনুবোধে আমার এ ইন্ফরমার শিউচরণ কুপানার্থ লেনের একটি বাড়ী দূর হতে আমাকে দেখিয়ে দিয়ে সরে পড়ছিল, কিছ ঠিক সেই সময় থাঁদাওওা তার বাড়ী থেকে বার হয়ে আমাদের উভয়কে সেখানে একত্রে দেখে ফেললে। আমি তৎক্ষণাৎ পথের উপর দিনে দৌঞ্ তাকে ধরতেও গিরেছিলাম। কিছ বাঁদাগুলার সঙ্গে একটি সাইকেগ থাকার সে ভাতে চড়ে স্ক্রেই অনুত কুরে বেতে পেবেছিল। ক্রিম্না।

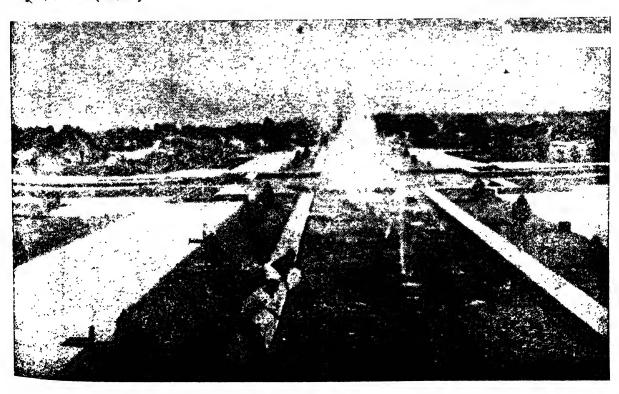


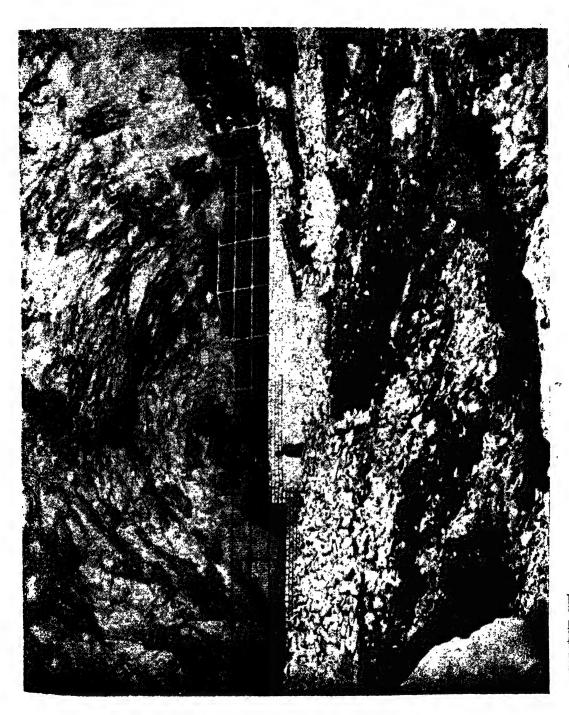
সাঁঝের বেলা

। আলোকচিত্র॥

জ্বিলি পার্ক (টাটা)

--অসিতৰঞ্জন খোহ-দন্তিদাৰ







—-চিত্তরপ্রন মধল

এবার কেনবার সময়

जिल्यात-अध्य काषि युक त्मांस कितावत

त्रु जु त्रम्, त्रम्, वस्नू **घ्राष्ट कार्** स्रिल्डिंग निः किनाणा-



[পূৰ্ব-একাশ্যিতৰ পৰ]

নীরদরঞ্জন দাশবর

ত্রে এই বারো বছরের মধোই একটা আখাত পেরেছিলাম, মনে আছে—এবং সে কথাটাও তোমাকে এইথানেই বলে রাঝি। আখাতটা এল—অথার মৃত্যু-থবরে।

বাবার মত্যু-খবরে মনের যে অবস্থা হয়েছিল তা ত জানই।
তার মধ্যে বেদনা ছিল খনীভূত—সমস্ত রাত বিছানার ওয়ে
কেঁদেছিলাম মনে আছে ত? কিন্তু এবার স্থার মৃত্যু-খবর
বেদনাখন হরে আমাকে ঠিক অভিভূত করেনি। স্থাকে হারালাম,
আর তাকে কোনও দিনই দেখতে পাব না—এদিক দিয়ে মনটা
আমার মোটেই কাতর হয়নি। কিন্তু স্থার মুখখানা মনে করে
মনের গহন তল থেকে একটা বেন আলা থেকে থেকে সমস্ত মনটাকে
বিধিয়ে দিছিল—বেচারী! বিনা অপরাধে, আমারই জন্ত প্রাণটা
দিল। অন্থশোচনা? কি জানি, জার করে ঠিক তাও বলভে
পারি না, নিজের কাছে ত নিজেকে কোনও দিনই অপরাধী মনে
করিনি।

কিছ ক্রমে দেখলাম— খনীভ্ত বেদনা চোখের জলে মেঘের মতন সময়ে নিংশেব হয়ে যায় কিছ এই আলাটা ঠিক একেবারে মৃছে বায় না। তীব্রতা অবহা কমে গিয়েছিল—সময়ে কমে বায়। কিছ তব্ও অকারণে হঠাং কখনও সমস্ত মনটা টনটন করে উঠত। ব্রিরে দিত— মস্তব্যতম অস্তবে বিধেব ক্রিয়া একে বাবে বন্ধ হয়নি, কোনও দিনই বোধ হয় হবে না।

মার্দিনকে বর্ধন প্রবৃটি দিলাম—তথন আমরা ম্যানচেষ্টারে।
মার্দিন কথাটা শুনে একেবারে চুপ হরে গেল—এদিক দিরে তার
মনের কথা আমি আজও জানি না। ফলে, শুধু এইটুকু বলে রাখি,
প্রার ১০।২ দিন আমাদের মধ্যে কথাবার্তা বেন থুব কমে গেল,
প্রেরোজনীয় কথা ছাড়া ছু-জনে পরস্পারের সঙ্গে বিশেব কোনও
কথাবার্তা বলিনি। বুলা! ভুল বুঝো না, এ সমর কোনও
বিরোধের স্কেটি ইর্নি আমাদের মধ্যে।

আমি বোধ হর সে সময়টা চুপচাপ থাকতেই চেরেছিলাম এবং মার্লিনও বেন তা সহজেই মেনে নিরেছিল। এগিরে এসে কথার বার্ত্তার বা ব্যবহারে কোনও সহামুভ্তিও আমাকে দেখারনি কিংবা কোনও দিক দিরে কোনও বিক্রোভেবও স্থাই করেনি কোনও দিন। কলে, ক্রমে বখন সমরের সঙ্গে মাজিন এবং আমার পরস্পাবের প্রতি ব্যবহার আবার সহজ হরে গেঙ্গা, সুধার বিষয় কিন্তু কোনও কথা আভাসে-ইঙ্গিতে পর্যন্ত কোনও দিন হগুনি আমাদের মধ্যে— ছ-ক্রমেই যেন এড়িয়ে চঙ্গেছি।

তবে, এই সময় প্রায় বছর খানেকের জন্ম আমার মনে ক্রমে একটা প্রবৃত্তি জেগে উঠল—সেটা একান্ত আমারই মনের নিভ্ত গোপন কথা আৰু কেউ জানে না। মাঝে মাঝে মনে মনে আমি স্থার সঙ্গে মার্লিনের তুলনা করতাম। মার্লিনের সংসারকর্মের স্থনিপুণভার দিক দিয়ে স্থধাকে যাচাই করে দেখভাম—স্থধাৰ কি এতটা দক্ষতা ছিল? বলতে লজ্জা করব না—মার্লিনের **শেম নিবেদনের নব নব রূপের মধ্যে মাঝে মাঝে স্থাকে ৰাচাই** ৰুবে দেখেছি, এত মধু কি ছিল তার প্রাণে ? আমার সেবারজের দিক দিরেও স্থধার কথা ভেবে দেখেছি—মার্লিনের মতন এমন করে কি সে প্রাণধানা বিছিয়ে দিতে পেরেছিল আমার চলার পর্থে? **ৰুলা! ভর পেও না**। এই তুলনায় সংধাকে আমা কখনও পরাজিত হতে দিই নাই আমার মনে—নানা যুক্তি দিয়ে ভার গৌরই मान मान वकांत्र व्यापेट हालाहि। ऋत्भव फिक फिर्य व्यवच कान है। দিনই মার্গিনের সঙ্গে স্থার ভূলনা করিনি, কেননা সেদিক দিয়ে স্থার নিশ্চিত পরাজ্ঞরের কথা ত আমার অজানা ছিল না এবং সেদিক দিয়ে সুণাকে অপমান করতে আমার মন একেবারে^ই চায়নি।

আমার মনের আর একটা দিকের কথাও তোমাকে এইবানেই বলে রাখি মনে রেথ। দেশ ছেড়ে এসেছি, দেশের সঙ্গে প্রাঃ সমস্ত সম্পর্কই ক্রমে দিয়েছি চুকিয়ে, তবুও সেই দেশের দিক দিনে মাঝে মাঝে এক একটা প্রবৃত্তি কেন যে আমার মনে কিছুদিনে জন্ম প্রবৃত্ত কেন যে আমার মনে কিছুদিনে তাল প্রবৃত্ত কেন যে আমার মনে কিছুদিনে তাল প্রবৃত্ত কিছুদিন। ইরাজীতে বাকে বদে Complex, সেই রক্ম এক একটা Complex বেন আমারে পেরে বসত কিছুদিন।

ৰুলা! মনে আছে ত. বাবাৰ সূত্যুৰ পৰে, দেশে আমাদেৰ কং কড় কংশগৌৰৰ, আমাদের ৰংশগৌৰৰ এ দেশেৰ কটকণে সমত্ন—এ ধরণের কথা প্রারই কিছুদিন জাহির করেছি মার্লিনদের কাছে, এতটুকুও দিখা করিনি। তথু তাই নর,—পিতামহ স্থশান্ত সা'ব, তাইকে খুন করার অপরাধে জেল হয়েছিল, একথা ত তথন আমার অজানা ছিল না। সে কথাটি সকলের কাছ থেকে চেপেরেথে, আমাদের বংশগোরবে কোনও দিন কোনও কলক পর্যান্ত ম্পর্শ করেনি—মার্লিনদের কাছে একথা জাহির করতেও এতটুকু লজ্জা বোধ করিনি। এ সব থবর আমার ছাত্রজীবনের কাহিনীতে কতক কতক তোমাকে জানিয়েছি। এ প্রবৃত্তি অবশ্র ক্রমে গোল কেটে, তবে স্থশান্ত সা'র জেল হওয়াব ধবরটি গোপনই রেথেছি—মার্লিনকেও কিছু বলিনি।

আজ ভাবি—কেন বলিনি ? মালিন ত এখন আমার বিবাহিতা ন্ত্রী। তার সঙ্গে মনের সমস্ত অমুভূতির নিবিড় আদান-প্রদানে এই বারোটা বছবের মধ্যে কোনও দিন কোন বিরোধের ভ স্টে হয়ইনি ৰু একটা অপূর্ন তৃপ্তি পেয়েছি। নিজের সমস্ত প্রাণখানা বিছিরে মামার প্রাণ-মন তার উপর তুলে নিয়ে তাকে লালন করার একটা ব্দুত যাহ যেন সে জানত-সহদেই আমার মন একটা নিশ্চিত বিশ্লামে ঘমিয়ে পড়ত সেখানে, অনায়াসেই কেটে ধেত বাইরের ভগতের ঘাত-প্রতিঘাতের ক্লান্তি। তবুও বলিনি। কেন? সক্র পেতাম কি? অত বড় বংশের ছেলে রোলাঞ্জে আমারই জর বিবাহ না করে সে শেষ পর্যান্ত আমাকে বিবাহ করেছিল—তাই কি শানাব বংশের কলম্বের কথাটা তার কাছ থেকে লুকিয়ে রেখেছিলাম ? ভানি না। হায় রে! তথনও আমি মার্লিনকে কি ঠিক চিনিনি? নােখ হয় তাই। আজ এই কথাটা নিয়ে প্রায়ই ভাবি, কিছ নোনও সংস্থাযজনক জবাব খুঁজে পাই না। বহু পূর্বে ছাত্রজীবন চন্দ্রনাথের কথাটা মনে পড়ে। সন্তিটে কি তেলে-জলে মিশ थीय ना ?

অনেক পরে তোমার পাঠান পুজনীর স্থশান্ত সা'র আত্মজীবনী গতে এল। কিছু তথন—

বাই হোক, দেখতে দেখতে বারোটা বছর জীবনের কেটে গেল। ^{এইবার} আমি যেন একটু ক্লাস্ত বোধ করতে লাগলাম—মনের দিক ^{দিরে} একেবারেই নয়, শরীরের দিক দিরে। সকালবেলা বিছানা ছেড়ে উঠতে বেন আর ইচ্ছে করে না, বিকালে সার্জ্ঞারীতে ক্ষেত্র খন আর ভাল লাগে না, আগুনের কাছে কোচে ভরে পড়েই শমটো কাটিয়ে দিতে ইচ্ছে করে—এই ধরণের একটা ভাব! ^{থত বে} আমি গলফ খেলতে ভালবাসি, প্রত্যেক ববিবার দিনটা ^{থক}ু পরিষ্কার থাকলেই সকালনেলা ত্রেকফাষ্ট খেয়ে মার্লিনকে ^{নিরে চলে} ষাই ক্লাবে এবং সমস্ত দিন সেইখানেই কাটিয়ে, সেইখানেই ^{লাঞ্} ^{সেরে,} থেলে সন্ধ্যাবেলা বাড়ী ফিবে আসি, এবং শুধু তাই নর, ^{ৰীতকাল} কেটে গেলে বুধবারেও বিকালের দিকে মাঝে মাঝে বাই ^{শেখানে,} ক্লাবে বাওয়ার এত গোঁক আমার—ইদানীং তাও বেন আর ^{টুছে করে} না। গল্ফে পুরো আঠারো হোল অনারাদে খেলি শামি কিন্তু ইদানীং নর হোল খেলতে না খেলতেই একটু বেন ^{হান্ত} বোধ করি। ডাক্তারীর দিক দিরে শরীরটাকে আমি প্রীকা ^{ই,কু}ও ^{দে}ৰেছি---কি**ছ** কোনও দোব কোথাও পাইনি।

धार्मात्र मनीत्वत्र अहे निक्छा मार्जिमरक व्यवत्र क्लिक्ट जामाहिन।

কেননা—ভেবেছিলাম—বদি বলি মার্লিন অবণা ভেবে মরবে। বধন এই রকমটা হল তথন শীতকাল। এদেশের শীতকাল বে কি তাও তুমি জান—আগেই বলেছি। গাছে গাছে পাতা থাকে না, পূর্ব্যের মুখ দেখা যায় না, একটা শন্শনে হাওয়া ও প্রায়ই বিরব্ধিরে বুটিছে সমস্ত দেশটা বেন থালি শিউরে শিউরে উঠছে। নেহাৎ প্রয়োজন ছাড়া লোকজন বাইরের সঙ্গে যোগাযোগ রাখেই না—কোনওরকমে ছুটে পালিয়ে ঘরের মধ্যে গিয়ে সার্দি এঁটে বাইরেটাকে একেবামে বিলুপ্ত করে দেওয়ার চেপ্তা কনে এবং আগুনের কাছে এগিয়ে গিয়ে বেন বাঁচে। তাই ভেবেছিলাম—শীতকালটা কেটে গেলে, আমার এ ভাবটাও বাবে কেটে।

কিন্তু কিছুদিনের মধ্যেই বৃথতে পারলাম, মার্লিনের চোধ এড়ায়নি। তথন ফেব্রুয়ারী মাস—বাইরের বরফ পড়াটা কিছুদিন বন্ধ হয়েছে কিন্তু শীতের প্রকোপটা চলেছে থুব। একদিন রাত্রে থাওয়া-দাওয়ার পর্ব শেষ করে বসবার ব্যরে আগুনের কাছে বসেছি—আমি বসেছি কোচে এবং মালিন মেব্রের কার্পেটের উপর প। ছড়িয়ে বসেছে, আমারই পাল বেঁবে, আমারই কোচে হেলান দিয়ে, মাঝে মাঝে একটা লোহা দিবে খুঁচিয়ে আগুনটাকে দিছে একটু জোর করে।

সহসা মার্লিন বলল, বিকো, অনেক দিন ও ছুটি নাওনি—কাজই করছ। এইবার কিছুদিনের ছুটি নাও না। চল কোখাও বেড়িবে আদি।

বলসাম, সে ত এখন স্থাৰণ হবেলা—শীতকালে জাৰ কোথায় বাব ?

বলল, শীতকালটা ত আর মাস ছই পরেই কেটে বাবে— তারপবে। তথন ছুটি নিতে হলে ত তোমাকে এখন খেকেই ব্যবস্থা করতে হবে।

কথাটা মনে লাগল। সভ্যি—শীভকালটা কেটে গেলে কিছুদিন বাইরে খ্রে এলে হয়। কিছু টাকার লোকসান হবে—ভা হলই বা, বথেষ্ট ত রোজগার করছি।

বললাম, তা মন্দ বলনি।

বলন, হাঁ। তাই কর, এখন থেকেই স্ব ব্যবস্থা কর—এপ্রিলের শেষাশেষিই আমরা বেরিয়ে পড়ব।

ভধালাম, কোথায় বেতে চাও ?

বলল, কোনও একটা ভাল জায়গায় গিরে চুপচাপ নিরিবিলি থাকব তুজনে। যদি তোমার ইচ্ছে হয়, চল, না হয় ইংল্যাও ছেড়ে, দক্ষিণ ফ্রান্সে রিভিয়ারায় কোথাও থেকে আসি—নীস কি মি টিকার্ফো। ভনেছি থুব স্বাস্থ্যকর সে সব জায়গা।

বল্লাম, ও বাবা ! সে ত অনেক টাকার ব্যাপার।

বলল, তা হলই বা। টাকা ত অনেক রোজগার করছ — আমাদের কি দরকার এত টাকার। শরীরটাকে ঠিক রাখতে হবেত।

একটা তাই তুলে বললাম, তা যা বলেছ—শরীরটা ইদানী একটু ক্লান্ত বোধ করি।

ৰলল, তা আমি জানি বিকো!

ভখালাম, কি জান ?

বল্ল, ভোমার ক্লাভির ব্যন্ত।

ওধালাম, কি করে জানলে ? আমি ভ ভোমাকে কিছু বলিনি।

মৃত্ ছেসে'বলল, জামার কি চোধ নেই—ভোমার মুখে বে ক্লান্তির ছাপ পড়েছে।

শেব পর্যান্ত যাওয়া ঠিক হল—দক্ষিণ ফ্রান্ডে নর, ইংল্যান্ডেরই কর্ণভিয়ালে সমুক্তভীরে—'লু' তে। বৃশা! 'লু'র কথা আমার ছাত্রজীবনের কাহিনীতে বিস্তাবিত করে লিখেছিলান, মনে আছে ত ? অস্থথের পরে মার্লিন স্থস্থ হলে চাওয়া বদলাতে 'লু'তে গিয়েছিল—ছিল তার মান্নার হোটেলে, রোজ এণ্ড ক্রাউনে। আমিও গিয়েছিলান, তবে ছিলাম ভিন্ন হোটেলে—তথন ত আমানের বিবাহ চুয়নি। এবার ঠিক হল—আমারই মোটর গাড়ীতে তৃক্ষনে বেরিয়ে পড়ব এবার ঠিক হল—আমারই মোটর গাড়ীতে তৃক্ষনে বেরিয়ে পড়ব এবা ইংল্যাণ্ডের প্রাকৃতিক সৌল্পয়ের লীলাভূমি মুষ্টার, ডেভন্ কর্ণভিয়ালের মন্য দিয়ে ঘ্রে লু'তে গিয়ে বিশ্রাম করব তৃজনে। সেই হেড্ল্যাণ্ড চোটেল, যেখানে সেবার আমি ছিলাম—সেথানে চিঠিও লিখে দিলাম—দোভলার সমুদ্রের দিকে আমানের জন্ম এবটি বর রাখতে।

আনন্দে উৎফুল হয়ে মার্লিন বলেছিল দে বেশ হবে—যে ঘরটার ছুমি ছিলে, সেই ঘরটা যদি পাওরা যায়। ছবে বসেই দিনরাত সমুদ্র দেখতে পাব জানালা দিয়ে।

বললাম, দে ঘরটা হয়ত ঠিক পাওয়া যাবে না। তবে দেইরকম ঘরই পাশাপাশি আরও আছে।

একটু আবদারের স্থরে বলস না—সেই ঘরটা। তেসে শুধালাম, বিশেষ করে সেই ঘরটা কেন বলক ?

মৃত্ তেলে বলল, দেবার ত সে ঘরে তুমি আমাকে ঠাই দাওনি—

বললাম বা বে—সে বৃদ্ধি আমার অপরাধ ? আমি ত প্রাণ-মন দিয়ে চেয়েছিলাম—

আমার গলা অভিনে ছটি আকুল দিয়ে আমার ঠাট ছটি চেপে বলল, চুপ! চুপ! ওকখা বলে না।

ডিন

এপ্রিল মাস শেব হরে গেছে—মে মাদের স্করন। সেল ছেড়ে আমাদের বেরিরে পড়বার সবই ঠিকঠাক্—আর মাত্র সাত-আট দিন বাকী। মার্লিন ক'দিন ধরে খুব গুছিরেছে—তার গোছান বেন শেব হর না, রোজই কিছু না কিছু করে। আমার গাড়ীখানি ভালই—ছেল্ল্ বছবখানেক আগেই কেনা, আমি নিজেই চালাই। এদেশে গাড়ীর ডাইভার খুব কম লোকেই রাখতে পারে—অসম্ভব খবচের ব্যাপার—আমাদের মতন ভাল প্র্যাকটিনগুরালা ডাক্তারদেরও সাধ্যের বাইরে। তাই আমিই গাড়ী চালিরে নিয়ে বাব—এই রকমই ঠিক হয়েছিল। কিছু এদিক দিয়ে মার্গিনের মনে একটু খিধা ছিল।

একদিন বলল, দেখ তুমি গাড়ী চালিয়ে এতটা ঘূরবে—স্মামার মন এতে ঠিক সায় দিচ্ছে না।

শুধালাম, কেন ?

ভূমি ক্লান্ত হয়ে পড়বে—ভোমার শরীরের দিক দিরে দেটা ঠিক ভাল হবে না।

বললাম, গাড়ী চালাতে আমার কোনও ক্লান্তি হয় না— আনই ত। আর ভাছাড়া, বেশীদূর এক সঙ্গে চালাডেও ত হবে না। ৰাবে মাৰে প্ৰায়ই ভ নানা হোটেলে বিপ্ৰাম ক্রব—এদেশের ম্যাপ দেখে সেই ভাবেই ত সব ঠিক করা হয়েছে।

মার্লিন বলল, তা ত জানি—কিন্তু তবুও—

বললাম, আর তাছাড়া শেব পর্যান্ত 'লু'ডে গিয়ে লবা বিশ্রাম ড নেবই—এক মাস চুপচাপ থাকব সেই হোটেলে।

মার্লিন ভগাল, টেণে লুভৈ যাওয়া যায় না ?

বললাম, তাহলে ত ডেভন কর্ণপ্রয়ালের কিছুই দেখা হবে না।
আর ট্রেণে এতদ্র যাওয়াও ত কম ক্লান্তিকর ব্যাপার নয়! বোধ হয়
অনেক তদল-বদল আছে।

মার্নিন চুপ করে গেল। একটু পরে বলল, বেলবার আগে গাড়ীটা কিন্তু ভাল করে দেখিয়ে ঠিকঠাক করে নিও।"

বললাম-তাত বটেই। সে সব ব্যবস্থা আমি করেছি।

যাই হোক, সামনের শনিবার লাঞ্চ খেরে বওয়ানা হব—আজ ববিবার। সকালবেলা ত্রেকফাষ্ট খেরে আমি আমার বসবার ঘরে আগুনের ধারে কোঁচটির উপর পা ছড়িয়ে বসে খবরের কাগন্ত পড়ছিলাম। মার্লিন একবার ঘরে চুকে জিজ্ঞাসা করেছিল, জাগুন জালিয়ে দেবে কি না। বলেছিলাম—আপাততঃ দবকার হচ্ছে না।

নিজের মনে থব্বের কাগজ পড়ছি—মার্লিন খরে ছিল না, বোধ হয় বান্ন।-ভাড়ার নিয়ে ছিল ব্যস্ত। কিছুক্ষণ পরে মার্লিন হঠাৎ ঘরে ঢুকল—কোলে ভার বছর তিনেকের একটি পুতুসের মতন মেয়ে—নাম পিপা। মার্লিনের কোলে পিপাকে দেখে একটু অবাক হলাম—কারণটুকু বলি। পিপাটি আমাদের পালের বাড়ীর মেরে। আমাদের বাড়ার পুবের দিকে আমাদের সীমানা সংলগ্ন বাগানওয়ালা আর একটি বাড়ীতে পিপা থাকে, তার বাপ-মার সঙ্গে। পিপার বাপ মি: হোমস্ কি করেন আমি জানি না এবং আমার সঙ্গে রান্তায় দেখা হলে টুপী তোলা ব্যতীত আর কোনও পরিচর নাই। তবে ভনেছি, পিপার মা'র সঙ্গে মালিনের পরিচয় হয় পরস্পরের বাগানে বেড়ার ছপাশে দাঁড়িয়ে এবং এই ভাবে মাঝে মাঝে আলাগ হত হজনার। ক্রমে মার্লিন পিপার প্রতি **আরুষ্ট হয় এ**বং মিসে^ন হোমদের আমন্ত্রণে মাঝে মাঝে বেতে স্থক করল পিপাদের বাড়ীতে। মিসেস হোমসূত মাঝে মাঝে পিপাকে নিয়ে আসতেন আমাদের বাড়ীতে কিন্তু আমার সঙ্গে কথনও তাঁর দেখা হয়নি। ত[ে] মার্লিনের কাছে শুনেছি, মহিলাটি নাকি থুব ভাল। পিপাকে আ^{চি} অবশু এর আগে তু-চার বার দেখেছি—মার্লিনই কোলে করে নির্চি এসেছে আমার কাছে। পিপাকে আদর করে চুমো খেরে বলছে এক টুকরো মিটি—না বিকো ?

প্রার বারে। বছর হল আমাদের বিবাহ হরেছে—কিছ আমাদের কোন ছেলেমেরে হয়নি। সেদিক দিয়ে আমার মনে বে কোনং ছংখ ছিল এমন কথা বলতে পারি না। কেন না, সেদিক দিয়ে কানিং জভাব বোধ আমি কোনও দিনই করিনি এবং সেদিক দিয়ে মার্লিনে মনে বে কোনও ছংখ থাকতে পারে—ভাও কখনও ভেবে দেখিবি বা খেরালও হয়দি। ছজনে বেন ছজনকে নিয়ে পরিপ্র্র্ণ হয়েছিলাম।

কিছ ক্ৰৰে মাৰ্গিনের শিপার প্রতি এই আকর্ষণে হঠাৎ এক্সি কথাটার ধেরাল হল—আমার মনের অবস্থা বাই হোক, মার্গিনের ^{ক্ষ}ে নিশ্চরই ঐদিক দিয়ে একটা হুংখ আছে। কথাটা নিয়ে সমস্ত দিন ভাষলাম—হুংখ ত হওয়ারই কথা, সব মেয়েই ত মা হতে চায়, এ বে ভাদের অন্তর্গতম অন্তরের একান্ত নিভূত কামনা। অনেকদিন ত হয়ে গেল—হলই বা না কেন ?

সেই দিন বাত্রে থাওয়া দাওয়ার পর বিছানায় শুরে মার্লিনের কানের কাছে মুথ নিয়ে বললাম—সীনা! পিপার মতন তোমার একটি মেয়ে হলে কি সম্পর হত বলত?

মার্লিন যে একটি দীর্ঘনিশাস চেপে নিল সেটুকু ব্রুতে আমার দেরী হয়নি। একটু চাপা হাসি হেসে বলল, নাই বা হল। আমাদের কিসের অভাব।

কিছ ফলে একটা জিনিব লক্ষ্য করলাম; যেদিন রাত্রে মার্লিনের সঙ্গে এই কথা হল, তারপর থেকে মার্লিন আর পিপাকে কোলে করে আমার সামনে আসত না। আড়ালে পিপাকে আদর করে, আমার জন্ধানি ছিল না। কিছু আমার সামনে—সেদিন রাত্রের কথার পরে একটা লক্ষ্যা এসেছিল কি তার মনে? হয়ত তাই।

তাই বোধ হয় আজ অনেক দিন পরে হঠাৎ পিপাকে কোলে করে আমার সামনে এসে দাঁড়াতে একটু অবাক হয়েছিলাম।

মার্লিন হেসে বলল, ছষ্ট টা কি বলে জান ? তথালাম, কি ?

ৰলল, বলে—uncle মাবে যাক কিন্তু তুমি ষেও না।

হেলে পিপার দিকে চেম্বে বললাম, হাা পিপা—তুমি আমাকে ভালবাস না ?

অক্স দিকে মুখ ফিরিয়ে মার্লিনের গলা জড়িরে আদরমাখান স্থবে বলল, না আণিট যাবে না।

হঠাৎ টেলিফোন বেজে উঠল। টেলিফোনটি ছিল খনের বাইবে সিঁ ডি্র পালে। উঠে গিয়ে টেলিফোন ধরলাম, শুধালাম কে?

উত্তর এল, আমি লালকাকা।

বলসাম, আরে, মি: লালকাকা ৷ কি থবর আপনার ? অনেক দিন দেখা হয় নি—ক্লাবে আর আসেন না কেন ?

'সে কথার উত্তর ন। দিয়ে বলল, গুনলাম আপনারা ডেভন, কর্ণভয়াল বেড়াতে যাচ্ছেন শীগ্,গিরই। তার পূর্বে আপনাদের সঙ্গে একটু কথা ছিল। কথন গেলে আপনার স্মবিধা হয় ?

বললাম, আজই আস্মন না। আজ সকালটা ত বাড়ীতেই আছি। একটু ইতন্তত করে বলল, আজ—আজ একটু অস্মবিধা হচ্ছে। কাল ডিনাবের পরে বাত্রে যদি যাই ?

একটু ভেবে নিলাম। কাল ডিনাবের পরেও কোথাও যাওয়ার কথা নাই।

বললাম, বেশ তাই আসবেন—আমি বাড়ীতেই থাকৰ আপনাৰ জন্ম।

'भारतक धन्नायां परे राज्य हिलास्थान किए प्रिना । किमानः ।

জলছবি

মলয়শংকর লাশগুপ্ত

হাওয়ার হরিণ বুরছে ফরছে বৃরছে, জ্যোৎস্নার জরি নক্সা আঁকছে আকাশে সময়ের স্থর থেকে থেকে পাতা মুড়ছে।

খুশির হাওয়ারা কী কথা বলছে কানে
মনের ময়ূর বল না কী জানে কী জানে—
আরনার মতো সাগরের মনে মনে
স্রোতের সোহাগে কি পারদ এনে পুরছে!

(প্রেমিক হৃদয় তার, মৌমাছি উড়ছে ও উড়ছে; হু'চোথে নীরব ভাষা, কালো চুলে হাওয়ার চিক্রণী ধ্যানত্রত ভবিষ্যৎ মৌননীল রাঠা সঙ্গোপনে—
অর্ণ্যে রেখেছে ঢেকে, সবুজের মন্ত্রে পদধ্বনি !)

তবুও হাওয়ার হরিণ ঘ্রছে ফিরছে;
নীলমাতানো স্বরে আমাকেই ফিরছে,
কথার পাপড়ি জলতরঙ্গ ছি ডছে!
জ্যোৎস্নার জরি নক্ষা শীংথছে আকান্দে,
হৃদরে জোনাকি মুঁই হরে ফোটে—
ঝি বা সেবু আসে, সে আসে।



ৰহাশেতা ভট্টাচাৰ্য

30

ব্ৰ ইটকে বারা চেনে তারা তার বুবে হাসি দেখলে শক্ষিত হয়। অসসায় রাতে আইটের মেছাজ বড় শরীক বোধ হরেছিলো। দেখে গ্যেটছেল ও টড বলাবলি করেছিলো—নিশ্চর কোন মংলব এটেছে। কি আইট, হাসছ কেন ?

—আবার কি ভাবছ ?

সৰ সময় বাগে না আইট। সে ভার অধিকারের পালা জানে।
ভার বিবিধ কাঁন্তির কথা কানপুরে সবাই জানে। সবাই জানে
টাকাপয়সার ব্যাপারে আইট একেবারে উদার। আড়ালে সাহেবরা
বলে—ভাগ্যে মরে গিয়েছে ম্যাকমোহনের বোন। বেঁচে পাকলে
দরকার পড়লে আইট-ই তাকে থুন করতো।

আর থুন আইট অনেক করেছে। বেখানে বেখানেই সে গুরেছে, সেখানে অছুত সব গুর্গটনা ঘটেছে। তবে বোকা নর সে। ভূসেও কখনো খেতাঙ্গ মারেনি। নেটিভ! এ দেশে এড কালোকালো মামুব কিলবিল করে, আর আইনের নামে তাদের গারে এমন অর আসে, বে গুটো-একটা কমে বাওরাতে কেউ অভিবোপ করোন। কেউ নালিশও করেনি সাহেবের নামে।

সাহেবরা ত্রাইটের বাপের দিক থেকে ভেঙ্গাল রক্তের ব্যাপারটা জানেন। তাঁরা ত্রাইটের আচার-ব্যবহার দেখে তাকে পরিহার করে চলেন। রক্তের যে কোলীল দাবী করে ত্রাইট ভারতীয়দেব উপর চাবুক চালার, সেই কোলীলোর দাবীতেই সাহেবরা ব্রাইটকে পরিহার করে চলেন।

ৰাইট এখন হাসলো। নিমীলিত চোখে বললো—কাল অবহনত সভা হবে। দেখতে এসো। মজা পাৰে।

সে রাতে বাইটের স্বভাব-বহির্ভূতি হাসির্ব দেখে জিজত্লারীর চোধ থেকে ঘূম চলে গেল চট করে। উঠে বসল সে। বাইট ছোটবেলা থেকে স্বভাব অমুবারী লাইনজুরি-সার্ভ আর সহিসদেব সঙ্গে মিশেছে বেকী। তাদের পিঠে ছপটি চালিরে মজা দেখেছে কাজেব সমর। অবগুই সে সব ক্রীড়াকোতুক ম্যাকমোহনের চোবের আড়ালে হতো। তবে বাইট হিন্দী বলতে শিথেছে মাতৃভাবার মজাই। সহিসের বাচার হাত বুচড়ে দিয়ে বলেছে—বাও আপনা পাপাকো পাশ বাও!

রেজিমেন্ট সাহেবদের হিন্দী পরীকা দিছে হয়। ত্রাইটও বাইরে বলে সে পরীকা দিয়েই শিথেছে হিন্দী। বলে, আর অঙরা চোথ চিপে বলে—আইট, হিন্দী স্বাই শেখে কিন্তু একন চম্বকার কেউ বলে না। ৰাইট সে কথা ভনে মনে বাঝে, এটা হলো ভার বাপের প্রতি ফটাক্ষপাত। কে না জানে বে, বুঢ়া ম্যাকমোহনের বোন বিদ্নে করেছিলো একটা থিবিঙ্গীকে ?

ৰুঝে আইট সমবে গিয়েছে। পারতপক্ষে অভ সাহেবদের গামনে প্রয়োজনেও হিন্দী বলতে চায় না।

বিজ্ঞানীর কাছে এসে তার মূখ খোলে। ব্রিজ্ঞানীর সঙ্গে সে কথা বলে সেই হিন্দীতে, যা সহর বা গ্রামের মানুষ খুণার চোখে দেখে। বা খনে পঞ্চিত ও মূলীরা হুঃখ করে বলেন—ভাষাতে জারজ দোব ছুক্লো। কলক্ষিত হলো ভাষা।

অর্থাৎ নিরম্ভর রেজিনেন্টের সঙ্গে যোরে বারা, সামান্ত দেড় টাকা, ছই টাকা, তিন টাকা বাদের মাসিক রোজগার, কক্ষ ও স্থকঠোর বাদের জাবন, সেই সব সহিস, লাইনগার্ড, ভিস্তি, মেথর—তাদের ভাবা থেকে গ্রামের মানুবের স্থমিষ্ট সরলতা করে পড়ে সহজেই। গালাগালি ও কক্ষ স্থকুম শোনে তারা, আব ভাবাও হরে ওঠে স্থলানীন, কক্ষ।

এমনি করেই ভাষার সৌন্দর্য নষ্ট হয়ে যায়।

স্রাইট তাকে সেই ইতর ভাষাতেই কথা বলে। ব্রিক্তুলারীকে রাতে গালাগালি করে বলে—এক একটা দেশী মেরে বেন স্থান্তন। তোমার মতো নিক্লতাপ, ঠাণ্ডা কেউ নয়। বেন স্বর্মান্তব।

এরকম প্রত্যেকটা নিশীথে অবমানিত হয় তার নারীয়।
মৃত্যু-কামনা করে ব্রিজহুলারী। এই বর্বর মানুষ্টা কেন বে তাকে
ভাড়ে না, তাড়িরে দেয় না, তাতেও সে বিশ্বিত।

আজ রাতে, এই জলসার রাতে কিন্তু ব্রিজন্থলারীকে সে রক্ষ কোন অভিযোগ করলো না বাইট। বর্ঞ বললো—পুব ভারী একটা সোনার গহনা দেব তোমার কোমরে। প্রবর দেব লক্ষীচালকে।

- -कि मत्रकात ?
- —কেন, তুমি পরবে ?
- আমি আর গহনা চাই না।
- —দেটা ভূমি পৰৰে।
- —দেন, দেখিয়ে দিভে চাই আমি স্বাইকে। এত গছনা কাৰ কৰে আছে ?

কাইট তবে শীৰ দেৱ, ভাবে, এ ছাড়া তিনশে। টাকা আটকে কেলবার কোন রাস্থা নেই। সার জিনশো টাকা মনে করতেই তার কলে হব একটা পঁচিশ ছামিল বছবের আছেবিরা ছেলের ভীত বুব। পিট-শিট করে পড়ছে সোধের পাতা ভবে। মনে করতেই এমন আনন্দ হয় তার, বে ছনিয়াটা ভাল করে বার ভার কাছে। ব্রিজহলারী বলে—কি হয়েছে ? ভূমি শীব দিছে কেল ?

—মন ভাল আছে।

—কেন ?

পাশ ফিবে গড়িয়ে ব্রিজন্মারীর নরম শরীরটা একটা শক্ত হাতে চটকে ধ'রে ব্রাইট বলে—এমনি।

অন্ধকার। আর এ-ই হলো আইটের মজা। **বতক্ষণ না** যন্ত্রণায় আর্ত্তনাদ করে মুক্তি চাইবে বিজ্ঞুলারী, ভতক্ষণ সে ছাড়বেনা।

ব্রিজত্বারীর নিম্পেষিত, নিঃশেষ নারীসন্তা দাঁতে ঠোঁট চেপে থাকে। চোথ দিয়ে জল পড়ে। ভবু মুখে বছ্কবার শব্দ করে সে রাইটকে বিজেতার আনন্দ উপভোগ করভে দের না।

সে রাতে গারদে জেগে থাকে একটা পঁচিশ বছবের তীক সিপাহী।
আর গারদের বাইবে দাঁড়িয়ে যে পাহারা দের, সেই সিপাহীও জেগে
থাকে। গারদের ভেতরে বসে সিপাহীটা থেকে থেকে ওধু জিজ্ঞাসা
করে—সকাল হলো ?

—नाम्न, जाठे—या इत्त. 'ठा इत्य-- ट्रिम (**ज्य ना** ।

—না, ভাবছি না আমি।

আকাশে আঁধার যেন পাতলা হয়ে আসে। পাহারাদার সিপাহী বলে—একটু চুণ, পাত্তি ডলে দেব ? থাবে ?

---**=**1

ভারণর হঠাং অপ্রাসঙ্গিক ভাবে বলে—হাঁ ভাই থাড়েজুটাই সাহেব এখানে নেই ?

না। নারু, তুমি ভেব নাভাই !

লনা, আমি ভাবছি না।

এই করেদী সিপাহীর মাথার কোন দিন-ও চট করে চোকেনা কথা। সহজে ব্যুত্তে পারেনা সে। বড় জ্ঞান্তিস তার কাছে প্রক্রিয়াটা। বুঝতে বড় সময় নের সে। যথন আকাশ দেখে সে বোঝে যে সকাল হতে আর খুব দেবী নেই, তথন সে উবু হয়ে বসে মাধার ছ'দিকে হাত বেথে বুঝতে চেষ্টা করে কি করে কি হলো।

হাা। সে নারু মুথিয়া, 53rd-এ বে একজন সিপাচী। বাকে কি থানে কি খন্তব্যাড়ীতে, কি এখানে সকলে জানে মুর্থ বলে, সে শেষ করেছে। সে চুবি করেছে।

তার কারণ হলো সকলে তাকে চিরদিন বলেছে বেকা। অঞ্চ ছেলেদের সঙ্গে সে লালার গঞ্ধ-ছাগল চরাতে গিয়েছে। অঞ্চ ছেলেরা লালার বাগান ভেঙে আম পেয়াবা নিয়ে বেচে এসেছে জরীপ সাজেবের তাঁবুতে। নিয়ে এসেছে ঢেবুয়া প্রদা। সে ভয় পেরেছে। মা বোন বলেছে—মুর্থ তুই নারু। তুই বোকা।

খণ্ডৰ এক বিঘে স্কমি দিয়েছে, আৰ বৌ বলেছে—বোকা তুমি। তোমাকে পাথ বৈ স্কমি দিয়ে ঠকালো আমাৰ বাপ। আৰে, নালাৰ ধাবে বৈ ক্ষা, দেটা দেখে বেছে নিলো আমাৰ বোনেৰ বৰ। সে জমি খেকে সে তিন বাৰ ফদল তুলবে। তোমাৰ এ জমি খেকে কি পাবে? বছ বোকা তুমি। বড় মুখি।

হঠাং কেন সাহেবদের মনে হলো বে নতুন নতুন সিপাইী সধয়াৰ শ্বকাৰ হবে রেভিনেকে। কথাবার্ডা চলছিলো। আর বোডাও

কিনছিলো বেছিমেট। সে বাইটের কৃঠি পাহারা দিছিল, তাতেই না ভানতে পারলো? ভালতে পারলো, বে বরাবর রেজিরেটে যোড়া সরবরাহ নিবে বেরারেবি ছিলো ভোলারাম আর শিরাজি বাইজু-র মধ্যে। ভোলারামরা চার পূক্র ধরে দিল্লী আগ্রায়, এখন কানপুর লক্ষো-এ ঘোড়া সরবরাহ করছে। ভার মন্ত ব্যবদা। শিরাজি বাইজু কোনদিন স্মযোগই পারনি। জানলো বে এবার কোন অজ্ঞাত ভারপে সাহেবদের ঘোড়া দিতে সম্পূর্ণ অস্বীকার করেছে ভোলারার। ভার শিরাজি বাইজু দর দিয়ে পাঠালো।

ৰাইট আৰু যা-ই হোক ঘোড়া চেনে। ভাই এসব লেনদেনেৰ সময়ে কেমন কৰে যে সে জড়িয়ে পড়ে কেউ ব্যুক্তেও পারে না। তিনশো টাকায় এক একটা ঘোড়া, এই হিসেবে ত্রিশটা ঘোড়া কেনা হলো। নয় হাজার টাকা পেলো শিরাজির ছেলে। কোম্পানীডে কাঁচা কাক্স হয় না—সব হাতে-কলমে।

কিন্ত দেখানেই ত্রাইট টেক্কা দেয় অপরকে, আর দেখানেই তার কৃতিয় ।

তথু মুখের কথার এক একটা খোড়া-পিছু বিশ টাকা করে কমিশন চাইলো ত্রাইট। সব কথা ঠিকঠাক। টাকা আনবে নালু। তার মতো মুর্খ কে আছে? শিরান্তির ছেলে সামাদ নালুকে বললো, এই ঘোড়া পৌছিয়ে দিবি সাহেবকে।

ব্রাইটের হিন্দুস্থানী বিনি আছে। অনেক দেখীলোক সদাসর্বদা মাওয়া-আসা করে সেথানে। স্থাজের হাত দিয়ে একটা হোট তেজারতি কারবারও থূলে দিয়েছিলো ত্রাইট। সেজক্তেও আসে কেউ-কেউ। টাকাণ্যসার দরকারে।

তেমনি করেই এল নার্। আর ভোড়া নিরে গুণতি ভিনশো টাকা দেখে চটে গেল আইট।

আসলে সামাদ তাকে টেকা দিয়েছে। নারুকে দিয়েছে পাঁচটা টাকা। আর বাইটকে ডাহা ঠকিয়েছে। সামাদ দিরাজি নর। দিরাজি পুরনো বিখাসের লোক। সে কথা দিয়ে কথা কথা রাখে। রুখের কথার আর বিখাসেই টাকাকড়ির লেনদেন চলে। থুব একটা প্রবিশ্বনা হয় না।

কি বৃঝলো আইট কি জানে ! নান্ন ডিউটি বদল হয়েছিলো।
নান্ন মনে হয়েছিলো দে হাতে স্বৰ্গ পেয়েছে। বৃক ফুলিয়ে দে
একে-তাকে বলেছিলো—স্থামি যদি ডাহা মূর্থ ই হবো, তবে পাঁচটা
টাকা কেমন করে কামালাম ?

আবার দিব্যি দিয়ে বলেছিলো—কারুকে বলো না এ কখা।

আসলে খুব কৃতি হরেছিলো তার। আব এখন ভারতীর অফিসাররাও গরম হয়ে আছেন। এমনিতেই জাকজমকে সাহেবদের সঙ্গে টেক্সা দিরে চলেন তাঁরা। এখন বেন বেশ বেপবোয়া। নারুকে ডেকে জিজ্ঞাসা করেছিলেন। বলেছিলেন—তুই কি মিখ্যে কথা বলছিল? তোর জিভ টেনে ছিঁড়ে কেলতে পারি, তা জানিস? এ রকম আলগা কথা বলিস কেন? আবার ভনছি তুইও পেরেছিস পঁচিশ টাকা?

ছাবিলদার সাহেবের কথা ওনে ভরে নান্ন কুঁকড়ে গিরেছিলো। পূরনো ভরটা পেরে বসেছিলো ভাকে। বলেছিল হজুর পাঁচ টাকা। পাঁচিশ বর। তথন সুবেদার চোথে চোখে ছেসেছিলেন হাবিলদারের সঙ্গে। সন্তীর স্বরে বলেছিলেন—সিপাহী, তুই সন্তিয় কথা বল।

সব বলেছিলো নারু। বলেছিলো—বাইজু সাহেব আমাকে টাকাদেন। আমি সাহেবকে দিই। আমি কিচ্ছু জানিনা।

তারপর এ নিমে আরো কথা হরেছিলো। ভারতীয় অফিসার থেকে সিপাহী পর্যন্ত ইনফ্যা শ্টিও রিসালার সোকেরা সকলে একটি কথাই ভেবেছিলো, কত দিন, আর কত দিন সন্থ করতে হবে এই অত্যাচার ? আর যেন পারা ধার না। মুখ বন্ধ করে কিল খেরে কিল চুরি করে আর কত দিন চলবে ? এর কি শেষ নেই ?

ভারপর স্বতঃই এ-কথা ছড়িরেছিলো। ও-দিকে সামাদ শহরে বসে চৈংরাম জৈংরাম ব্যাকারদের মুক্তরীকে শুনিরে বলেছিলো— মনিবদের বল ব্যবসা গোটাতে। হিন্দুস্থান ছেড়ে বাছে সাহেবরা আর সোনা-ক্রপো সব নিরে কাঁক করে দিরেছে বিয়াসত। আর বেচারীদের হাল কি! দশ-বিশ টাকা মেকে নিছে ? আহা হা!

সম্ভবত: প্রশ্নের ছিলো আকাশে-বাতাসে বাজাব গরম গুজবে। ভাই রেখে-ঢেকে বলেনি সামাদ। বলেছিলো বাজাবে আগুন লেগেছে দেখছ না?

সত্যি কথা। রেজিনেন্টের চাহিদা নেটাতে নেটাতে বাজার ফতুর। যি টাকার আড়াই সের আর আটার দান টাকার ত্রিশ সের। বেঁচে কোন্ সুখটা বইলো। এর চেয়ে কাঁচাপরসা খেলেই তো হয়।

ভারপর কথাটা মুখে মুখে ডালপালা মেলে ছড়ালো। ত্রাইটকে খোলাথুলি ভলব করে কিছু বললেন না সাহেব। কিন্ধ কথাভুলে পরোক্ষে বললেন। বললেন—সময় ভাল নয়। এমন কোন আচরণ করো না, বাতে নেটিভরা দশটা কথা বলবার স্থবোগ পার। কি টাকা-প্রসা, এটাসেটা!

বুঝলো বাইট। বুঝে হাতের মধ্যে যাকে পেলো সেই বোকাসিপাহী নায় কে জব্দ করবার মতলব করলো।

হঠাৎ মাঝডিউটিতে কাঁকি দিয়ে জুয়া খেলতে গিয়েছিল নায়_ু, এই অপরাধে সে অপরাধী হলো।

গারদে বসে ভাবে নান্ন। ভাবে হঠাং সাহেবের মুখোমুখী হয়ে ভরে তার পা কেমন কেঁপে গিয়েছিল। আবার এ কথার মাঝখানে দেই পাঁচটা টাকার কথাও উঠেছিল। সে কেমন ভয়ে ভয়ে কবুল গিয়েছিল। আগেই তাকে সতর্ক করতে চেয়েছিলেন হাবিলদার। পারেননি। স্থয়োগ মেলেনি। তবে এটুকু বলেছিলেন—সিপাহী তোকে জেরা করলে তুই যা সত্য, সবই বলিস।

কি বলবে স ? জেরা তো সেদিক দিরে গেল না। জেরাটা গেল শুরু তাকে জার তার পাঁচটা টাকার কাছ ঘেঁবে। সেই বিষয়েই কবুল খেল সে। কবুল না খেরে নিস্তার কি ? ততক্ষণে জাট টাক। মাইনের সিপাহী নায়ুর সেই পাঁচটা রূপোর টাকার গুপর শেষা এসেছে। কে জানতো এত ঝামেলা হবে ?

ভারপর বিচার। ভারপর বিশ ঘাবেত। এক মাসের মাইনে জ্বিমানা।

রাভ পোহালে বিশ বা বেড থাবে সে। সেই ভাবনারই মরে ব্রেছে নার্। দেখেছে বে চামড়া ছি'ড়ে রক্ত পড়ে। দেখেছে বে একলোড়া বেড থাকে চামড়ার মোড়ানো। ওনেছে তার

বেজিমেণ্টে কেউ কবুল বাচ্ছে না বেত মারতে। শুনেছে মারবে হরতো কোন গোরা, চাই কি অন্ত কেউ। শুনেছে এাডিজুটেন্ট সাহেব আপত্তি করেননি। দিনকাল থারাপ। বেশ কড়া হাতে এই সব ছোট ছোট ঘটনাকে নিয়ন্ত্রণ করা উচিত। তাহ'লে এই নেটিভ সিপাহীগুলো শিক্ষা পাবে।

অবৰ এমন কথাও বলা হয়েছে যে, এই বেত্রাঘাত দেখনে অসন্তুঠ হতে পারে সিপাহীরা।

—তা কথনো হয় ? আর কে কবে ওনেছে বে এরা সন্ধট রইলো ?

- —ভাদের মনে পরোক্ষে বিক্ষোভের ভাব জাগতে পারে।
- এই একটা সামান্ত সিপাহীর ব্যাপারে ? এ সিপাহী মাত্র। এখনি থকটার জারগার দশটা বংকট মিলবে। এ সিপাহী মাত্র। এভ নগণ্য এই মামুষ, বে এ সব ঘটনা কোন দিনও খাভার পাভার উঠবেনা।

কয়েদী সিপাহী নালুকে পাহারা আর বদল পাহারার সিপাহীরা বলে গিয়েছে—নালু! তুই ভাবিস না, স্থবেদার সাহেব বন্দোবন্ত করেছেন কি বেত মারবে তোকে শোভারাম।

- —শোভারাম ?
- --- है। जांद नदभ नदभ भांदर्य।
- —তবু তো লাগবে।
- লাগবে। তবে কম। এ কোন ফিরিক্সী বা অক্ত রেজিমেন্টের মানুষ তো দরা মায়া করে মারবে না।
 - ---আমি ভর পাই।

রাইট এই কয়েদী সিপাহীর কথা ভেবেই উৎফুল্ল। সকাল হয়। সান্দিয়ে ওঠে সে।

করেদে যাত্র বা মনে হচ্ছিল, বাইরে আনতে দেখা যায় নার্ব চেহারা থ্বই ছেলেমানুষের মতো। নির্বোধ মানুষের ষেমন চেহারার বয়দের ছাপ সহজে পড়ে না, এর চেহারাতেও তেমনই নির্বোধ সরলতা। বর্তমানে ভীক ভাবটা প্রবল। ছর্বল চিবুক্টা থবথর করে কাঁপে তার। ছোট জাঙ্গিয়া পরে আরো অসহায় দেখায়। ছংখ ও কোশে অক্সান্ত সিপাহী জমাদাররা থুখু ফেলে মাটিতে।

ব্রাইটকে খ্ব উৎফুল দেখায়। যে সিপাহী অক্ত সময় কুন্তি করে, মাটি মেথে কুন্তি দেখায়, দে-ই নিয়েছে চাবুক। সে নালুকে যতই ইসারা করে চোথে চোথে চেয়ে—নালু দেখে না। সে তুথু বজে— হা রাম! কো রাম! হা রাম!

ভবানীশঙ্কর ও চন্দনকে দাঁড়িয়ে থাকতে দেখা বার। ভবানীশন্তর রয়েছেন ডাক্তার হিসেবে। আর চন্দন তাঁরই সহকারী। ভবানীশন্তরের মুথ বেন একটু শাদা। চোথ ছোট। বে সব মামুব নরম স্বভাবের, আর নিষ্ঠুবভা বারা দেখতে পারে না, ভবানী তাদেবই একজন। উত্তেজনা ও বিত্রধার ত্বল বোধ হয় তাঁর।

চন্দনের হাত গুইথানা যামতে থাকে। আজব ফোজী-জীবন, আর আজব তার আইন-কান্ত্ন! এই জীবনের জরগানেই মুগর তার দাদা চম্মন। এ কোন বিবেচনার কথা! বে একটা মান্ত্^{বকে} এমন করে বেঁথে মারবে? বেঁথে রাখেনি লোকটাকে, তবু বি^{রে} রেখেছে তো? সেটাই বা কম কি? আর কি, চন্দন ভাল করেই বোৰে, বাতাসটা ইতিমধ্যেই গরম আর ভারী হবে উঠেছে। ভারী হরেছে সমবেত ভারভীরদের মানসিক বিক্ষোভের চাপে।

এত কোভ কেন ? চন্দন ভাল করে মনে জানে। যে অক্সায় করে বা বিনা অপরাধে একজন সিপাহী বেত থাবে কয়েক বা, ভা নিরে দিপাহীরা মোটেই মাধা ঘামাতো না ক-মাদ আগেও। কিন্ত এখন তারা বড় বেশী সচেতন হয়েছে। বড় বেশী খুঁটিয়ে খ'টিয়ে দেখছে, কোথায় কোথায় তাদের অধিকার খর্ন হলো। কোথায় কোথায় তাদের ছোট করা হলো। দেখছে আর মনে মনে জমা করে রাখছে দেই সব অভিযোগ। এ বে দাঁড়িয়ে রয়েছে ত্রাইট দূরে। গুট পা কাঁক করে। তুই-পা মাটিতে পুঁতে রয়েছে। পা নয়, যেন শকু হুই খুঁটি। এ খুঁটি যেন অন্ত, অচল। চন্দন আশ্চর্য্য হয়, এ সাঙেব টের পাচ্ছে না, চারিপাশেব বাভাসে পুঞ্চ পুঞ্চ বিক্ষোভ আর প্রতিবাদ ?

এগানে ওগানে কতরকম গুজবের ফুলকি। জমায়েতে জমায়েতে চাটে বাজারে শোনা কতরকম কথা। সাহেবদের কত অত্যাচারের কথা। কতদিন ধরে কত অত্যাচারের কথা। এখন চন্দন বুরতে পারে দেন কিছু কিছু। বুঝতে পারে সাহেবমেমদের দেখলে তাব গ্রামের মানুষ ভাবতো। তার দাদা-পরদাদা ভাবতো সাহেবরা-ই এই পৃথিবীর রাজা। তাদের উপরে আর কেউ নেই। সাহেবরা ষা বলতো তা-ই করতো তারা। করতো কি ? এথনো করে। এই নিম্নে গেল বাংলামুলুকে। রাজমহলে গুলী চালিয়ে খুন করে এল কালোকালো সাঁওতালদের। আবার যারা বর্মায়, আফঘানিস্তানে নেপালে গিয়েছিল, তারাও তো কতজন সে সব দেশেই মরে জুড হয়ে গিয়েছে। এখন চন্দন বুঝতে পারে, যে তথনো অনেক অত্যাচার অবিচার ছিল, যা তারা স্বাভাবিক মনে করতো। বু**রুতে** পারে। যে সে সব আচরণের মধ্যে তাদের উপর একটা দ্বণার ভাব চিরদিন-ই ছিল।

এবার চারি দিক স্তব্ধ। বাভাসে সাপের মতো পীষ দিরে লকলকিয়ে ওঠে কালো চাবুক। পাকা বেতের সঙ্গে চামড়ার দড়ি জড়িয়ে জড়িয়ে এখন তাকে এক নাগিনীর মতোই দেখাছে।

আন্দোলিত সেই চাবুক শীষ দিয়ে নেমে আসে নার সিপাছীর নগ্ন পিঠে। খুব হিসাব করেই মেরেছে সিপারী, তবু নায়,ব গলা চিরে যায় আর্তনাদে।

এক-তুই-তিন-চার--মামুগ কেমন জ্বত্ত হয়ে যেতে পারে তাই দেখে গাঁড়িয়ে গাঁড়িয়ে চন্দন। তার জোয়ান শরীরে পেশী ফুলে উঠিছে। তার মুখ টকটকে লাগ হয়ে উঠেছে। সে আৰ তার মতো অক্সাক্ত সকলে মাটির দিকে চেয়ে রয়েছে। খন ঘন নিঃখাস ফেলছে তারা। তারাও জানোয়ার। জানোয়ারের মতোই ভরে চপ করে রয়েছে।

যে মার থাচ্ছে সেও জন্ত। গলাফাটা ঐ আর্তনাদ কি মাছুব করতে পারে! আর ঐ যে সাহেব গাঁড়িয়ে রয়েছে? সে-ও এক জত্ব। জানোয়ার নইলে এমন উল্লাসে কে অপরের যারণা দেখে।

চন্দনের হাত হু'খানা ভবানীর চেয়ারের পিঠটা মোচড়ায় মনে পড়ে বিহাৎ ক্ষরণের মতে। ছবির পর ছবি। মনে পড়ে

বুকে সর্দ্ধি বসেছে?

বুকে পিঠে দর্দ্দি বসলে ভয়ের কারণ বৈকি! এ অবস্থায় ভেপোলীন মালিশ করলে সঙ্গে সঙ্গে উপকার পাওয়া যায়। কারণ ভেপোলীন ছকের মধ্য দিয়ে এবং নি:শ্বাসের সঙ্গে শরীরের ভেতরে যেয়ে একযোগে অতি দ্রুত কাজ করে। ঠাণ্ডা লেগে মাথাধরা ও গলাধরায়, ব্যথা ও বেদনায় ভেপোলীন আশ্চর্য্য আজই এক শিশি কিনে বাড়ীতে রেখে দিন।



পরিবেশক: জি, দত্ত এণ্ড কোং >৬, বন্ধিষ্ট লেন - কলিকাতা-> (वाद्यानीन क्षण्ड कान्नदक्त मामकी

এলাহাবাদের উপকঠে পালামো-এ এক শিকারের দৃষ্ঠ। সাহেব মেমকে নিশানা শেথাছে। তারপর সাহেবের গুলীতে ঐ দ্বে জনেক দ্বে পড়লো পাথী ঘ্রতে ঘ্রতে। সংল্য হরে এসেছে। সাহেব এক প্রস্থারলোভী বালককে বলে—যা। এনে দে ঐ হাস। নগদ এক আনা পাবি।

ছুটতে ছুটতে ষায় সেই বাগাল বালক। সেই আঁধারে, ঘাস, জন্ম ভেঙে নিয়ে আসে গাস। এসে গাঁড়ায় বখন, কচি বুকটা ছাপরের মতো উঠছে নামছে। প্যসাব আলোয় মুগটা গুল-অল করছে।

মেমসাহেব হাতে নেয় একটা আনি। সমস্ত দিনের শিকার্থ এবং মদমস্ততা তার মাথার নেশার মতো চুকেছে। মুগ লাল। বেশী হাসি। বেশী কথা। মেমসাহেব হঠাং সেই আনিটা দূবে ছুঁছে দেয়া বলে—খুঁজে নিতে বলো।

ছেলেটা তথনও চেয়ে থাকে। তাবপর চলে যার। চন্দনের মনে পড়ে তারা চলে আসছে। আব আঁধাবিতে কোপঝাড় দিয়ে একটা গরীব আধা-নেটো ছেলে খুঁজে বেড়াচ্ছে একটা শানি।

মনে পড়ে তার দাদার কথা। মনে পড়ে এই প্রাইট-ই তার দাদার জীবনটা পঙ্গু করে দিয়েছে। জাবার মনে পড়ে সেই সাকাবানার বাংলোতে এসেছে তুই সাকেব। সে আর তার দাদা চলেছে তাদের পথ দেখিয়ে নিয়ে। সাহেবদের পৌছে দিতে হবে রামপুরের রাজাসাহেবের শিকার পার্টিতে। মনে পড়ে সাহেবরা জার দাদাকে উদ্দেশ্য করে বলছে—শ্রোরটা শিকারের মাংস থেয়ে থেয়ে চেহারা বাগিয়েছে বেশ।

- —দেখছ নাপেছন দিকটা? টিপ কবে ছররা মেরে দেখলে ছর।
 - --नाक्ति छेऽदर ।
 - —বাব ছোকরাটা বেন ক্রোয়ান গাধা একটা।

ভনছে আর চন্দনের ঘাড়টা লাল হরে যাছে। অপমান ও বিজ্ঞান্তিতে তার দাদার মুখটা থর-থর করে কাঁপছে। ছুজনে ছুজনের দিকে চাইছে না।

মনে পড়ে গোৱা কট্টাইরকে দেগে এসেছে এলাহাবাদ আর কালীর মাঝে রেলপথ মেরামতের সমরে চাবৃক নিরে মেরে পুরুষ কুলীকে একই সঙ্গে তাড়না করতে। মনে পড়ে বাচা পিঠে বেঁধে মা-ও ভরে ত্রস্ত হরে চমকে চমকে কাজ করছে। ছু'হাতে চটপট ভুলতে পাথর। ভরছে মুড়ি।

তথু কি তার ? সমবেত সকলেবই বুঝি মনের নন্ধরে এমনি সব ছবি খেলে যায়। মনে পড়ে। তবু মুখের ভাবে কিছু বোঝা বার না। তারা প্রতিশ্রত এক সত্যরক্ষাব জন্ত। অন্ততঃ মনোভাব বিবরেই কবুল বেল কোন নির্বোধ।

আট টাক। মাইনের সিপী দি ঘা পড়তে না পড়তে অজ্ঞান হরে ওপর শেরা এসেছে। কে জানতে। তাই সিপাহী নামিরে নিরেছে।

তারপর বিচার। তারপর বিং! জরিমানা। ইাশ হো গিয়া—সুখে মুখে গুজন রাজ পোহালে:বিশ ঘা বেড় ^{কেন,} খেমে গেল কেন? বলে—

রুয়েছে নাছু। দেখেছে বে চাফ নে একজোড়া বেড থাকে —- কি বল**লে** ?

বিশ্বিত আইট ঘ্ৰে দাঁড়ার ভবানীর দিকে। ভবানীর চোধ-মুখও লাল। তিনি বলেন, আমি উপস্থিত থাকতে অজ্ঞান এই মামুষটার ওপর বেত চলতে পারে না।

- —তুমি কাজে বাধা দিচ্ছ ?
- —বেছ^{*}শ কয়েদীর উপর বেত তুমি চালাতে পারো না সাহেব ! ভবানীর দিকে চেয়ে আর নালুর দিকে চেয়ে সম্ভবতঃ বৃষতে পারে বাইট। বলে, বহুৎ আছো। তোমাকে আমি দেখব।

হজন সিপাহী নিয়ে যায় নালুকে। উপুড় করে শোয়ায় তাকে খাটিয়ায়। উষ্ণ জলে আয়োডিন দিয়ে ক্ষতস্থান ধূরে ক্ষেপতে ক্ষেপতে ভবানী বৃষ্ঠতে পারেন জ্ঞান ফিরে আসছে নালুর। ভাগ উক্ত আর ছুই হাত খাটিয়ার সঙ্গে ধরে ছুজন সিপাহী।

সে বেত্রাঘাত সামার। কিন্তু এ অবস্থায় সামার নর।
গ্রীবের প্রথম তাপে মগন শুকিয়ে ইন্ধন হয়ে গিয়েছে অরণ্য, ভগন
একটা চক্মকি কি সামার। তাতেই কি আগুন অলভে
পারে না ?

কথা হয় সে দ্বিপ্রহরে ব্যারাকে। কথা হয় সাহেবদের আড়ালে, কান বাঁচিয়ে। প্যাবেড বা ডিউটি যাদের নেই, সেই সব সিপাহীর। আজ আর রামায়ণ পাঠ করে না বা কৃন্তি থেলে না। এমন কি লুকিয়ে জুয়া থেলাতেও আগ্রহ দেখা যায় না আজ। কথা হয় যেখানে তিনজন চারজন একত্র। 2nd Cavalry বা.53rd Infantry-র বিশ্বস্ত সিপাহী সভ্যাবরা কথা কয়। তাদের হনর বিভ্রাস্ত। তারা কিছু ব্যুক্তে পারছে না। চাপাটি ও পথের নিশানা দেখিয়ে যে সব ফকির সম্ল্যাসী কথা কয়ে গেছে জমায়েড জয়া কি মিথাা বললো? কোথায়? কোথা থেকে আসবে গড়াইয়ের নিশানা? দিল্লী? লক্ষে) মারাট?

তারা কথা কয়। কথাগুলি যন্ত্রণার আগুনে ফুলকির মতো ওড়ে।

- —বিনা অপারাধে এই অভ্যাচার আর হত দিন ? কত দিন চলবে ?
 - —-আজ নারু? কাল কার সময় আসবে ?
 - আমাদের বেলা বিচার নেই, আর ওদের বেলা সাতথ্ন মাপ!
- —কে বলেছে ওরা নির্দোষ ? আর যত দোব আমাদের ? কথা হয় হাটে বাজারে দোকানে।
 - —এই পঢ়া আটা, হুর্গন্ধ গম! এতে কিসের ভেকাল আছে?
 - —কেমন করে জানব জাত মারছে না ইংরেজ ?
- —মিশনারী সাহেববা বলছে বিধবাদের বিবে দোব, ঠাকুব দেবতা ফেলে দোব। সাহারাণপুরে হাসপাতালে নিরে গিরে মেথব দিরে ফল খাওয়াছে ওরা!
- —কন্ত দিন সন্থ করব ? রেললাইন কেন আনছে ? কেন এমন করে জিনিবের দাম চড়িয়ে দিল ? কেন এমন করে সব জারগার আমাদের পারের তলা থেকে জমি সরে সরে বাচ্ছে ?

কথা হর রেজিমেন্টের বিশাসী ব্যান্ধার জৈৎরাম চৈংরামের কুঠিতে। দেখানে সমবেত হয় শহরের নামীলোকদের মাথা।

—কে বলেছে ওরা সর্বশক্তিমান ? তবে সিবান্তোপোলে হারছে কেন ? —বিঠুর, অবোধ্যা, সাভারা, নাগপুর একটার পর একটা রাজ্য এমন করে নিচ্ছে কেন ওরা ?

—আগেকার বুড়ো সাহেবদের তাড়িয়ে ছোকরা ছোকরা সাহেবদের এনে বসাচ্ছে কেন ? তারা সন্থান করে চলতে পারে না ?

— ওরা এক মুঠো মাসুব। নিজেদের সাদা চামড়া নিয়ে চলে বাক না কেন ? আমরা ওদের চাই না।

—ওরা চলে বাক! হিন্দুস্থান বে কলকে ভবে পেল। আমাদের ছায়াটুকু পর্যন্ত ওরা এড়িসে চলে। এমন করলে এক জমিতে এক আকাশের নিচে বাস করবে কি করে?

সকলেই এক কথা বলে। আবার সহাহয় না। আবার কত দিন ? আর কত দিন এ কলাঃ ? এ অপমান ?

আসন্ন এক ছোট সকরের প্রাক্তালে এক আশ্রুর্থ পরিবেশে কথা বলেন ভবানী। বলেন ব্রিজহুলারীর সঙ্গে। ব্রাইটের আচরণে মনে মনে ফলে ব্রিজহুলারীর ওপরে বিষ ঢেলে দিয়েছে চম্পা। আর চম্পাকে বিমিত করে ব্রিজহুলারী ভবানীর সঙ্গে একটি সাক্ষাৎকার ভিক্ষা চেয়েছে।

চম্পার কুঠিতে নিচের ঘবে এক প্রদীপ অলছে। গাঁড়িয়ে আছেন বিজ্মপারী আর ভবানী। প্রদীপের রাঙা আলো ছ-জনের পারের কাছটুকু গুধু আলো করেছে। মুখ আলোর আভার বেটুকু দেখা যার, হাতে বিজ্ঞপুলারীর মুখে অনেক রঙ দেখা যায়। গালে জলের আভাদ দেখা যায়। মাথার কাপড় খদে পড়ে গিরেছে। গহনার দে গুলভার দেখা যায় না। বুক ঘন ঘন ছলছে। নিশ্বাদ এখনো দহক হয়নি। দে বলে, জানি, তোমাকে আর দেখৰ না, ভুমি বলে যাও আমি কি করব প

—মামি কি বলব ব্রিজহলারী ?

—বল। একবার ডেকেছিলে, আমি ভীরু আমি পারিনি। তুমি
বােশ না, বে আমি মনে মনে মরে গিরেছি ?

- এখন আর হয় না।

—জানি। এ কথা ভূলি না বে তোমার কত দয়।। ভূলি না বে সেই রেস্তর্গায় মৈনপুরীতে, বান্দায় ভূমি না থাকলে জামি মরে বেতাম। ভূমি বাঁচিয়েছিলে, বলেছিলে আত্মহত্যা পাপ। বলেছিলে নিজেকে যত ছোট ভাবছ ততই হঃপ পাব। বলেছিলে ভূমি জামার কলক দেপ না।

—সে কথা আত্ত কেন ?

তিরস্থার করেন না ভবানী। হু:থ করেন না। শাস্ত এক বিসম্বতা শুধু ফোটে তার গলায়। তিনি বলেন—তুমি জান বিসহসারী, সেদিন যদি তুমি একবার রাজী হতে তবে আজ তুমি কোথায় আমি কোথায় থাকতাম। বলিনি বে আমার সাহস আছে ? কই তুমি ত পারোনি!

ক্লেছিলে! আমি ত বলেছি সে কথা! আৰু আর সে কথা বলে কট দাও কেন ডাক্তার সাহেব!

হন্দনে হন্দনের দিকে চেরে থাকে। একদা এই হটি নরনারী পরম্পরকে জানভো। ভাগ্য প্রতিকৃপ না হলে তাদের সে পরিচর মন্তর্গতা হরে উঠতো এতদিনে। কিন্ত হলনের ভাগ্য হলনকে ছদিকে নিরে পিরেছিলো তিম বছর আগেই। আজ ভাই সালনাসামনি এত কাছে দাঁড়িরেও মাঝখানের সে বিচ্ছেদের সমুজ ভারা পেরিয়ে জাসতে পারে না। সকরণ চোঝে চেরে **থাকে** বিজ্ঞল্লারী। বে পরিচর কোন পরিণতি পার্মন, বে প্রেম **অভ্রে** বিনষ্ট হয়েছিল, ভারই তৃঃথম্মতি যেন কুয়ালার ওপারে প্রামের বাতিগুলির মতোই স্কৃত্ব হয়ে মনকে আকর্ষণ করে।

সে ছিলো একদিন, যেদিন পিতৃহীন, বিমাতা-পরিত্যক্ত ভবানীশঙ্কর জেন্ডইট ফাদারদের সঙ্গে নিম্নে ফৌশ্চান হতে উৎসাহী হয়েছিলেন। মনে হয়েছিলো বৃদ্ধি বা তাতে যুক্তির আস্বাদ পাবেন। মেডিকেল কলেজ থেকে পাশ করে ডাক্তার হবার পরামুশ দিলেন তাঁকে ব্যারাকপুর চার্চের ফাদার। আর ডাক্তারী তিন বছর পড়ে পাশ না করেই চলে এলেন ভবানী চাক্রী নিয়ে।

১৮৫৪-৫৫ সালে মিলিটারী জীবনে তাঁর স্থাদেশ ও সমাজের বাঙালীর অভাব ছিল না। কিছ ভবানী কেমন যেন তাঁদের সজেও মিলতে পারলেন না। কচি এবং মানসিক সংগঠনে বাধলো। একদিনের Humanity জার Ethics-এর ছাত্র ভবানীশঙ্কর ঠিক এ জীবনেও মিশে গেলেন না। আর বা যা ভেবেছিলেন—মান্তবের সঙ্গে মেলামেশা, অল্ল দেশের মান্তবক জানা, আহত ও আর্তের সেবাব্রত—এর কোনটাই পোলেন না। এক আন্চর্ব জীবন, মান্তবের সমাজ ও সংশ্পর্ণ থেকে বিচ্যুত, মিলিটারীর জীবনে—ফৌজী ডাঙার ছরে তিনি মন্থ্যাত্মক অবমানিতই হতে দেখলেন। তিনি নেটিভ ডাঙার। নেটিভ সিপাহা সহরারদের। তাঁর জল্প অপরিসর তাঁর, অপ্রচুর ওরধ এবং কর্ত্বপক্ষের অপরিসীম অবহেলা।

তার দোসর প্রাণ আছে বলে তিনি বিশ্বাস করছেন না। সঙ্গ ও সমাজবিমুখ মন তাঁর। ফোজীজীবনে এই স্থবিপুল বর্ণবিষম্য এবং মানুবের অবমাননা দেখে তিনি হৃঃখিত হলেন, বেমন সাধুসন্ন্যাসী হৃঃখিত হয়। এই অভিশাপের কারণ খুঁজে তলিয়ে দেখে বা বিচার না করেই তিনি অক্সদিকে মানসিক ভাগ্গাম্য খুঁজতে গোলেন। প্রকৃতি-প্রেমিক হলেন ভবানী। মানুবের চেয়ে প্রকৃতির রাজ্যকে অনেক শাস্তা, উদার ও ক্ষমাময় বোধ হলো। গাছ, নদী, আকাশ, পাহাড়, ফুল ও জীবরাজ্যে তিনি ঈশ্বরের অপার করুণা অনুভব করলেন।

কিছ মানুষের দিকেই কি বিমুখ হতে পারদেন? তথন তিনি রেওয়াতে। আইটের ইন্ফ্যাণ্ট্র Wing-এর ডাক্তার ঘ্রছেন সফরে; আইট সেই সময়ই সংগ্রহ করেছেন বিজ্ঞ্লারীকে। ভবানী ভনেছিকেন সে নেয়ের অপূর্ব রূপের কথা।

ব্রাইটও ভেবেছিলো ব্রিঞ্চলারীকে তার উপযুক্ত করে নেবে।
অক্ততঃ সামাক্ত উর্তু ফার্সী জানা দরকার তার। সেই প্রসক্তেই সে
ভবানীকে ডাকে। বলেছিলো—সামাক্ত শিথিরে দাও। টাকা দেব
আমি।

সেই হলো আলাপ। বিশ্বিত ভবানীশকর দেখলেন, বে মেরেটি সম্পর্কে তাঁর কোন ধারণাই ছিলো না তাঁর সম্পর্কেই তাঁর মনে জেগেছে করুণা।

আইটের নির্চুৰ ব্যবহারের কথা প্রচলিত ছিল মুখে মুখে। তার অনেক আচরণ সম্পর্কে সাহেবরাই লজ্জা পেডো। ভবানী মেরেটিকে করুলা করলেন। তার মনে আছবিখাসে আগাতে চাইলেন এবং সহসা একদিন আবিভার করলেন, তার অনেকখানি মনই একথানি সুন্দর, বিষয় মুখের পাণ্ডব ছবিতে ভবে উঠেছে।

ব্রিজ্পুলারীর অবহেলিত জীবনে তবানী হলেন প্রথম পুরুষ, যিনি তাকে প্রদা করেছিলেন। তার আশ্রুষ জীবন তাকে তার দেশসমাজের সঙ্কার্ণ গণ্ডী ছিড়ে বাইরে এনেছিলো, আর কোন পথের দিশা না দিয়ে অক্ষকারে বিভাস্থ করে রেখেছিলো। ভবানী তাকে শেখালেন—ভর পেয়ো না। ভস্ত-ই তোমাকে ত্র্বল করেছে। তুমি সাহসী হও।

কোন দিন বললেন—নিজেকে ম্ল্যুখীন মনে ক'রো না। নিজেকে বিশাস করো।

সেই সময়-ই বিজ্ঞত্বারীর জীবনে শ্রেষ্ঠ সময়। সে বেন প্রথম এক জালোর নিশানা দেখতে পেয়েছিলো, আর মনে ভেবেছিলো বিদি ভবানীশঙ্কর তার হাতথানা ধরে রাথেন, তবে হরতো বা সে এই জীবনের নিগড় বন্ধন ভেঙে চলে বেতে সাহস পাবে।

সেদিন ভবানী সাচস হারাননি। তিনি রাজী হয়েছিলেন। ভেবেছিলেন নিয়ে চলে যেতে পারবেন তাকে। কাজের জভাব কি ? কাজ পাবেন কোথাও না কোথাও। বিয়ে করবেন ব্রিজত্সারীকে। তাকে মান্তব্য করবেন। উন্ধৃত করবেন।

কিছা শেধ মুহূর্তে ব্রিজ্জ্লাবা-ই সাহস হারালো। মেরেদের বৃষ্কি বা এমনি হয়।

সে কথা বাইবে কেউ জানলো কি না বড় কথা নয়। ভবানী মনে বড় খা খেলেন। আবে এমনই পরিস্থিতি, যে মুখ বুঁজে স্ইতে হলো আঘাত। এ-ও তিনি বুঝলেন, যে এর পরে আর ব্রিজ্বতুলারীর সঙ্গে যোগাযোগ থাকা সম্ভব নয়। সে মন তাঁর নেই। মন ভেঙেচবে অক বকম হয়ে গিয়েছে। অস্ফুতার ছুটি নিয়ে वमनी इलान ज्वानी। किंदुमिन अहेलान कुमायुन अल्ला अक সাফাখানার। অপরপ আরণ্য পবিবেশ। অপরিসীম সাবল্য সেখানকার মানুষদের মধ্যে। সেথানে গিয়ে যেন আবার উপলব্ধি করলেন ভবানী, ঈশব, বা আশীর্বাদ, বা সৌভাগ্য, সে যা-ই হোক —ব্রিজগুলারী-ই সব কিছু বয়ে নিয়ে এসেছিলো। তাঁর জীবন সেই একজনকে ধরেই মধুময় হতে পারতো। আর সে বিহনে স্ত্যিই তাঁর জীবনটা শুক্ত হয়ে গেল। মানে হারিয়ে গেল। জীবনটা অনেক বেশী অর্থপূর্ণ হতে পারতো। করুণা ও স্লেহের পথ ধরে প্রেম আসতো। একটা মানুসকে নিজের মধ্যে পুনর্বাসিত করবার সার্থক কাজ নিয়ে তিনিও সার্থক হয়ে উঠতে পারতেন।

ভবানীশ্বর বৃঝতে পারসেন চলতে চলতে একটা জারগায় হিসেবে ভূল হরে গিয়েছে, আর সে হিসেব কোনদিনও মিলবে না। যত দিন যাবে তাঁর জমার ঘরে তথু লালকালিতে ঢ্যারাই পড়বে। কিছুই পাবেন না তিনি।

আজ সেই সব বিফলতা আর নিরাশার কথা মনে পড়ে ছুজনেই ছুঃখ পান।

ত্রিজত্বলারী আবার বলে, ফিস-ফিস করে—বল, আমি কি করি
—এরকম ক'রে আর কডদিন বাঁচব ? সবাই আমাকে ছোল করে। আমার সঙ্গে কেউ মেশে না। ঈশ্বর জানেন আমার কি হুঃখ।

সে নিচুগলা আবো নামিরে রঙ্গে—মনে হর মরে বাই, কিছ সে সাহস্ত হর লা। আমি একেবারে হেরে গেলাম।

ভবানীর চোখে ভংসঁনা নেই। ধিক্কার নেই। সে দিকে চেয়ে ব্রিজগুলারী কোনো অসম্ভব গুরাশার বলে।

—আর একবার নিয়ে বেতে পার না ?

ফর্সাগলার নীলশিরাটা দপদপ করে তার। ভবানী মাধা নাডেন।

তারপর আর কোন কথার প্রয়োজন থাকে না। নিরর্থক এই ' সময়টার ভার বেন অসহ হয়ে রঠে। ব্রিজগুলারী বলে,—আমি বাই।

আর যাবার কালে ভবানীর চোথে পড়ে অপস্থমান এক নীল শাড়ীর আঁচল। যেন চেনা মনে হয়। তারপর মনে পড়ে একদিন বেন তিনি বলেছিলেন,—স্থান্দর এই নীল রং। বড় স্থিয়। আমার দেশে এই রঙের আকাশ দেখা যায়।

ভারপব-ই প্রকুট ভারার মতো ছোট ছোট শাদা লাল সেশমের বৃটি ভোলা এই নীল শাড়ীখানি বার বার পরতো বিজ্ঞগুলারী।

তিনি বলেছিলেন,—এই অলংকার, এ বেন বোঝা! কেন পরো তুমি?

আজ সেই পরিচিত নীল সাড়ী পরে নিরাভরণে, বে এসেছিলো ব্রিজ্বত্বলারী, সে তাঁরই ফুচিকে সম্মান করে। মনে হলো তনেছেন রেজিমেণ্টের বাঙালীদের কাছে, আর অক্সত্র-ও।

—ৰাইট কম চালাক নৰ। কাঁচা টাকা হাতে রাখেনা সে। সৰই ঐ মেয়েটাকে গহনা গড়িয়ে দেয়। ওৰ অনেক টাকাৰ গহনা আছে।

পোষ্টঅফিসের বাবু তাঁর কাকা চক্রমোহন বন্ধ লিখেছিলেন—
বড়সাহেবের বিবিকে ফাসী ও ইংরাজী সামান্ত শিথাইয়া আমি সোনার
ঘড়ি জেবচেন ও উত্তম চাঁদির ডিব। পারিতোহিক লইয়াছিলাম।
বুনি জান, তোমার খুড়ীমাতা কিরপ অলক্ষার্প্রেয়। তোমার জন্ত
ন. হোক, তাঁহার কথা অবণ করিয়া একজোড়া উত্তম বালা, বা
সোনার নাসদান, অবশু লইও। তোমার সৌভাগা বে—

দেশীয় অফিসাররা বলেছেন—ডাক্তার সায়েব, ওই মেয়েটা আমাদের কলঙ্ক। তাতে ও যেরকম গহনার বাহার দিয়ে বেড়ার। এইজন্ত টাকার এত দরকার হয় আইটের, জানলেন; আর এতরকম গোলমাল হয়।

ভবানীর মনে হলো সত্যিই ব্রিজ্জ্লারী ছ্রভাগিনী। আর এখন চম্পার ঘর থেকে বিদায় নিয়ে চন্দনের সঙ্গে চলতে চলতে মনে হলো, যে রকম শোনা যাছে, যদি কোন বিপদ হয়, তবে রেজিমেন্টের লোক ব্রাইটকে তো নয়ই, ব্রিজ্জ্লারীকেও ছেড়ে দেবে না। সহসাচন্দন প্রশ্ন করলো।

- —ডাক্টার সাহেব, আপনি আইটের বিবিকে জানলেন কি কবে? কি দরকার ছিলে৷ তার? এমন করে কথা বলবার মডো?
 - —আমি ভাকে অনেক দিন জানি চন্দন!
 - -01

এবার ভবানী কোতৃহল ও ঈবৎ কোতৃকে প্রশ্ন করেন।

—চন্দন চন্দাকে তুমি কত দিন **জা**ন ?

—কেন **?**

চন্দন ৰে হাসছে তা ৰেন ভবানী বুঝতে পাৰেন। তবানী সকলতাবেই বলেন।

—চম্পাকে সকলেই চেনে। তার সঙ্গে সকলেই মিশতে চার

फिरतत अत फिल প्रणिफिल ...



ক্ষেত্ৰাৰ থো, লিঃ, কটুলিয়াৰ পৰে বিশুখাৰ লিভার লিঃ, কৰুত ভারতে প্রস্তুত

P. 112-369 BG

সকলেরই তার সম্পর্কে কৌ হুহল। তবে চম্পা তো কাককে আমল দেয় না। দূরে রেখে চলে। তবে ?

- —তবে কি ডাক্তার সাহেব ?
- শুনছি ই**ল্লিনী**য়ার ইভাঙ্গ সাহেবের সঙ্গে বড় তাব হয়েছে তার।

চন্দন বলে—ও কথা বলোনা ডাক্তার সাহেব !

- —কেন, চন্দন ?
- -- हन्ना कान विन्यानव कदाव मा ।

কৌ হুক ছাড়া চন্দন কথা কয় না। সব কথাতেই সে ছাসে। চন্দনের গলায় এখন কোন পরিছাস নেই। ভবানী বলেন।

- স্বামি কিছু স্বানিনা চন্দন, এমনই বলেছি।
- এমনই চল্পার সম্পর্কে কোন কথা বলো না ডাক্তার সাহেব।
 ক্ষবান বড় থারাপ কিনিস। একটা ছুট কথা বে-আন্দাক তীরের
 মডো ছুটে গেলে আর ফিরিয়ে আনতে পারো না আর কে না জানে
 একটা কথা থেকে লড়াইও লেগে বার
 এমন কথা বলো না,
 বাতে আফলোব জাগে মনে।

তারপর আবার হাসতে থাকে। লবু হর কঠ। বলে—ডাজ্ঞার সাক্র, আজ কি বলছিলেন তোমাকে ঐ সাহেৰ ডাজ্ঞার ? ক্লাবে বেতে বেতে ?

- —বলছিলেন কি, বে পাগলা কোন ফকির না কি ভগবানপুর, উনাও আর ফভেগড়ে দল বেঁধে গুরে ঘুরে চাপাটি দিরে বেড়াছে। আর কি বলছে।
 - —চাপাটি ?
- —মামুলী জোয়ার বাজারা-র ছাঙুর চাপাটি। সেই তো হাসির কথা।
 - **—হাসির কথা ভো ভাবছে কেন সাহেবরা** ?
- —কোখার ভাবছে। পাগলা সেই ফকিরকে তো জেরা করে ছেড়ে দিয়েছে।

আর কোন কথা হর না। চুপচাপ চলেন ছ'জনে পাশাপাশি। সহসা চন্দন গান গাইতে স্করু করে। বলে—কিছু জ্বণাব নিও না, বড় কুঠি হছে।

সে রাভে চৈংবাম জৈংবামদের পরিতাক্ত সে বাগান বাড়ীর চহবে বসে কথা কয় ইভান্স ও চম্পা। এ নির্ম্কন জারগায় নির্বাচনে শুধ্ চম্পার জেদে। প্রেমের প্রাথমিক পর্ব শেষ। অভৃপ্ত ইভান্স। বসে আমার ভাননাগে না।

ছোট একটা ফুল গাছের নিচু তাল ধবে দাঁড়িবে চল্পা সব কথাই বলে কোতৃকের স্থবে। বলে—সাহেব, তুমি ব্যারাক ছেড়ে নিজে কুঠি নাও, নয় তো আমার ইচ্জত থাকবে না বেখানে সেখানে আমি বেজে পারব না। আছা, তুমি না কি চলে বাবে ?

- -No, my princess. No, my pretty.
- —সাহেব, ইংরাজী বলো না।
- —ভোমার কিচির-মিচির ভাষা আমি বেশী বলতে পারি না।
- —জবে, তুমি বাবে না ?
- —না। বড় সাহেব নিবেধ করেছে।
- **-(₹** ₹

এবার চম্পা যুক্ত এসে তার সামনে বসে। ইভান্সের মনে হর এই স্থন্দর সেজেন হরিপের মতো গতি ভলী, এ বৃষি প্রাচ্যের মেরের-ই নিজস্ব। বলে—চম্পা, বড় স্থন্দর তুমি। তুমি মনোহর!

- **—বল, কেন মানা করেছে সাহেব** ?
- —কি চিন্তা চুকেছে মাথার, হঠাৎ না কি সকল সাহেব মেমদের নিরাপদে থাকবার দরকার হবে। আমার উপর হুকুম এসেছে, বল্প সময়ে নিরাপদে থাকবার বন্দোবস্ত কি ভাবে করবো আমি বেন ভাবি।
 - --কি করবে তুমি, কেল্লা বানাবে ?

চম্পা হেসে গড়িরে বার। ইভান্স বলে—না। আমি এক টাওরার বানাব, ভার উপরে তোমাকে কয়েদ করে রাখব। শুধু আমি ছাড়া কেউ ভোমার কাছ আদবে না।

- —ভূমি আসবে কি করে ?
- চল্পা, তুমি রূপকথা কান না। তুমি চুল নামিরে দেনে, আমি উঠে আসবো সেই টাওয়ারে।
 - —সাহেব, তুমি বড় ভাল। এ দেশে নতুন এসেছ কি না!
- —কেন, চম্পা ? আমি শীন্তই স্থলৰ কুঠি নেৰ। সেধানে ভোমাকে কালো কালো দাস দাসী, তামাক আৰু পানেৰ সৰঞ্জাম বা বা ভোমৰা ভালবাদ, সৰ ভোমাকে দেব।
 - —সব **१**
 - -- नव ।
 - —এখানেই থাকৰে তুমি ? আর দেশে যাবে না ?
 - —না। এ দেশও তো আমাদের-ই।
 - —নিশ্চর। তোমার ভাষা আমাকে শেখাবে না ?
- —না চম্পা। তুমি চিরদিন এ বকম অন্তৃত পাখীর মতো কল কল কথা বলো। আমার শুনতে ভালো লাগবে। তুমি এই বাগানের বুলবুল। কেন ভোমাকে বিলাতের পাখীর গান শিখাব ?
 - **—্সাহেব, তবে তুমি বাবে না** ?
 - —না চল্পা, আমি এখানেই থাকব। খুনী হলে?
 - —थुनी इलाव।

चরে কিবে সম্পূর্ণকে চন্পা বলে—বুঢ়া, ভোমরা ভাব সাছেবরা থকা রাথে না ? বুঢ়া, ভূমি জেনো, বে সাহেবরা বিপদ আশস্তা করে। ভারা দিল্লীর ইস্তাহার, কি মীরাটের বাজারের হল্লার থবর রাথে কি না, জানি না। ভবে ভারা সাবধান হবার কথা ভাবছে। ইঞ্জিনীয়ার সাহেব ভাই বললো। বড় সাহেব বলেছে ভাকে গড় বাঁধতে! কি আন্ত কোন কিছু বানাতে!

—চম্পা, একথা আমরাও জানি: তবে তোর মুখে বাচা^{ট হরে} গোল সত্যি মিখা।

- —ভারণর ?
- --- আৰ দেৱী বোধ হয় নেই চম্পা। মনে হয় তাই। ৰুঝি না।

চন্দনের আসর সকরের প্রাঞ্জালে বিদার জানাতে আসে চন্দা। গরিত্যক্ত মন্তির পিছনে ক্ষিরদর্গার বাগানে গাঁড়িরে কথা হর। চন্দন বার বার বলে চন্দা, ভূই সাবধানে থাকবি। ভোর বন্ধ বড় চিন্ধা নিরে সেলাম।

- —চন্দন, তুমি ভেব না। আমি একা নই।
- —চন্পা, বিপদের সময় আমি সকলের কথা ভারতে পারি না। মনে ভানি এ আমার একার দায়িছ।
 - —ভয় কৰো কেন ?
 - -ভয় করি কেন ?

চম্পার খাড় ধরে রেগেই ঝাঁকি দের চন্দন। বলে—ক্ষতি হলে কার হবে ? আমার ? না সকলের ?

চম্পা ভাসতে চায়। তাৰপৰ হাসি থেমে বায়। বঙ্গে—আমি ভাল থাকব। কিন্তু তুমি ? তুমি কবে আসবে চম্পন ?

-- দেরী করবো না।

চন্দন টেট হরে চামড়ার দড়ি বিনিয়ে বিনিয়ে বাঁধা ভারী চয়লটা
নিগে নিতে চায়। চল্পা নিচ্ হয়ে বেঁধে দেয়। ভারপর
নলে—কি সকম সময়ে যাছে। মনটা ভামার ব্যস্ত হয়ে
২ইলো।

চদ্দন ঈনং ভূক কুঁচকে চম্পার মুগ দেপে। বলে—বড় ভোমার ফুনান চম্পা, বড় ভাল বলে ভোমাকে স্বাই। কিন্তু ভাতে আমার গ্র্ব নেই।

- —কেন ?
- সনে হয় তোমার নিষেধ শুনে ভূল করলাম। কিছু কথা না মেনে যদি ধরে নিয়ে বেজাম ঐ থোঁড়া পশুভজ্জীর কাছে, আর তাকে পুরুত রেখে বিয়ে করে নিতাম, সব হালামা মিটে বেতো। তোমার জন্ম হলো না!
 - আবার সেই কথা ?
- —একশোবার। আর কোন্ কথা থাকে? শোনো চম্পা, ফামার ডাকগাড়ী ছেড়ে বাবে, চলে বাব এথনি। বলে বাই—

ভূমি ছ শিরারে থেকো। সাভ্রকে বেশী খেলিও না। ওরা ম নর। ধরে কেলতে পারে ? আর,—

- जात्र कि ठमन ?
- —তোমার মালিক ভূমি নর চম্পা, তোমার মালিক আমি ? এই থেরাল রেথে খুব ভাল থাকবে ? বথন ফিরে আসব, যেন না দেখি আমার চম্পা রোদে ফলে গিয়েছে কি মলিন হয়ে গিয়েছে ? জানলে ?
 - --জানলাম।
 - —আছা। তবে চলি।
- —এলো চন্দন। মঙ্গলমরের কুপার ভাল করে ঘ্রে এসো। আমিংকিন্ত পথ চেয়ে থাকব।
 - --- এ কি ডেরাপুবের পথ, পাগলী।
- —হাঁ চন্দন, আমার কাছে দেই একই পথ। এ পথটা ভোমাকে বার বার নিয়ে যায়।
 - —জাবার ন্দিরিয়েও দেয়।
 - —ভাদের।

কিছুক্প কাটে এমনই। এ ওর দিকে চার। চম্পা বেন এখন আত্মবিশ্বাস স্বরংসম্পূর্ণ এক নারী। আর সে অপবিশৃত তক্ষণী নর। আর চন্দন তেমনই বেপরোয়া এক নির্ভীক যুবক। আত্মবিশ্বাসে সে-ও প্রোক্ষল।

পেছনে সাক্ষাগে রাঙা আকাশ। প্রদয়ে প্রেম। তবুমেন প্রেছর আশভা।

জোর করেই চম্পার মুখ খেকে চোথ ছিনিয়ে নিয়ে এগিয়ে চলতে থাকে চন্দন।

চন্দনের হাতে হাত রেখে চলে চল্পা। স্বন্যে আনেক কথা। তাই মুখে কোন কথা হয় না। [কুমশুঃ।

স্বাধীনতা

(Pr. (4, (4))

বছিমান পর্বতেরা দেয় একে অক্তের উত্তর;
বজ্জনাদে ভাছাদের প্রতিধ্বনি জাগে দিকে দিকে;
বঞ্জাকুত্ত সিদ্ধুদল জাগাইয়া রাথে পরস্পার,
এবং হিমলৈলচয় চুর্ণ হয় শীভেরই সম্মুখে,
ঝড়ের বিবাণ যবে বাজিয়া ওঠে এ বিশ্বলোকে।

এক থণ্ড মেঘ হ'তে থ'সে যাওরা বিহাৎ-ঝলক ব্যাপ্ত হ'রে চারিভিতে সহস্র দ্বীপের আলো হর, ভূমিকম্প করে যায় লীলা তার অভি-ধ্বংসাত্মক— নগরী পোড়ায়, শত লক্ষ দ্বীপে ত্রাস সঞ্চরয়; ভূমির গর্ডেও তার শীতার ঘর্ষর শ্রুন্ত হয়। তথাপি তোমার দৃষ্টি তীক্ষতর বিহাং হ'তেও, ভূ-ৰুম্প থেকেও ফ্রন্ত পদক্ষেপ কর বাধীনতা; ভূবাইয়া দাও তুমি বারিধির ভীমগর্জনেও; আনে তব দৃষ্টিপাত অগ্নি-বর্ধী পর্বতে সানতা; আলেয়ার আলো নহ, হুম এক সৌর ভাষরতা!

উমি হ'তে, পিরি হ'তে, বাষ্প-আবরণ হ'তে আব রবি-রশ্মি ছুটে বার কুজাঁট ও পবন ভেদির। ; আত্মা হ'তে আত্মান্তরে, লাভি হ'তে অপর কাভিতে, সর্বপ্রাম জনপদে বার তব আলো বিস্তাবিরা— ভূস্মমী ও ভূমিদাস ত্রিবামার ভিমির সমান প্রভাত আলোকে তব কেঁপে কেঁপে বার মিলাইয়া।

अभूवान : जीवनकृष्ध नाम ।



[Osamu Dazai's THE SETTING SUN"-এর অনুবাদ] পঞ্চম অধ্যায়

ভদুমহিলা

্রেই ত্রীঘে আমি তাঁকে তিনখানা চিঠি লিখেছি, কিছ কোন
উত্তর পাইনি। সে সময়ে মনে হয়েছিল, এছাড়া আমার আর
উপার নেই এবং আমার হৃদ্য উদ্ধায় করে চিঠিগুলিতে ঢেলে
দিয়েছিলাম। নিস্তরঙ্গ অন্তর্নাপ ছেড়ে উত্তাল সমুদ্রে ঝাঁপিয়ে পড়ার
মত দোহলামান অবস্থায় চিঠিগুলি ডাকে দিই, কিছু বহুকাল
অপেকা করেও কোন জবাব পেলাম না।

একবার এমনি নাওজিকে জিজেস করলাম—ভদ্রলোক কেমন আছেন। নাওজা জবাব দিল বেমন থাকেন তেমনি আছেন। প্রতি রাত্রে মদ ও আমুবঙ্গিক হৈ-হল্পার মধ্যে কাটে; তাঁর সাহিত্য ক্রতগতিতে নীতি-বিগার্হিত থাতে বয়ে চলেছে। সভ্য সমাজ তাকে দুলা করে, অবজ্ঞা করে। উপরক্ত তিনি নাওজিকে এক পুলুক প্রকালনী স্থাপন করতে বলেছেন এবং সেও সেই প্রস্তাব বর্ষেষ্ট উৎসাহ সহকারে গ্রহণ করেছে। গোড়াপারন হিসাবে নাওজি, এই ভক্রলোক ছাড়া আরও ছ'জন উপক্রাসিককে ব'লে করে তাদের কর্ম্মচারীর কাজ বোগাড় করেছে। এখন মূলধন জোগাবার মত কাউকে ধরা বার কিনা, এই হ'ল সমতা। নাওজির কথা ওন্তে ভন্তে পরিহার বুকলাম বে আমার মনের এক কণা স্বরভিও

পারিপার্দ্ধিক পরিবেশ ভেদ করে আমার প্রেমান্পদের কাছে পৌছয়নি।
এর জন্ম বত না লজ্জা পেলাম, তার চেয়েও বেশী করে ব্রুলাম বে,
বাস্তব জগং আমার কর্মনার ছনিরা থেকে সম্পূর্ণ ভিন্ন পদার্থে গঠিত।
আমার সব অভিজ্ঞতা ছাপিরে ভয়াবহ এক নিঃসঙ্গ বোধ আমায়
ছিরে ফেসল, মনে হ'ল সদ্ধ্যার প্রাক্তালে বিজন এক শারদীর প্রাস্তবে
আমি নির্বাসিতা। এখান থেকে আমার ব্যাকুল আহ্বানে সাড়া
দেবে না কেউ। অবাক হয়ে ভাবি, একেই চলতি ভাষায় হতাশপ্রেমিক বলে? স্ব্যুদেব সম্পূর্ণ দৃষ্টির অস্তবালে সরে যাবার পর,
একাকী বিজন প্রাস্তবে নিঠুর শিশিরাঘাতে মৃত্যুই কি আমার
কপালের লিখন? ক্ষকায়ার আবেগে আমার স্বন্ধদেশ, বক্ষত্বল
আলোডিত হল।

অতঃপর টোকিওতে গিয়ে মিষ্টার উদ্যেহারার সঙ্গে দেখা করা ভিন্ন গভাস্তর রইল না—থরচ যা হয় হবে। পাল উড়িয়ে জাহাজ ঘাট ছেড়ে আমার তরী অকুল সাগরে ভাসল। আর অপেক্ষা করা যায় না। যেখানে যাবার সেখানে আমায় য়েতেই হবে। টোকিও যাত্রার গোপন আয়োজন করার সময়ে এই কথাগুলি আমার মনের মধ্যে ঘোরাফেরা করতে লাগল। ইতিমধ্যে হুঠাং-ই মায়ের অবস্থা মোচ নিল।

এক রাতে মা দারুণ কাশতে স্থক্ত করলেন। শরীরের তাপ নিয়ে
দেখলাম ১০২ ডিগ্রি জর। কাশির ধমকের কাঁকে মা বললেন—
খুব সম্ভব আজকের এই প্রচণ্ড শীতটা সহা হ'ল না। কাল জামি
কেন্ডে উঠব। যাই হোক, গুরু কাশি বলে জামার মনে হল না এবং
নিশ্চিম্ভ হবার জন্ত প্রদিন সকালে ভাক্তার ডাকব স্থির করলাম।

পরদিন শরীরের তাপ স্বাভাবিক অবস্থায় নেমে এল, সঙ্গে সঙ্গে কাশিও কমল। যাই হোক, আমি ডাক্তাবের কাছে গিয়ে মা'কে একশার দেখে যেতে অফুরোধ করলাম এবং দেই সঙ্গে সম্প্রতি মায়ের ছারলতার কথা, গত রাতের জরের কথা এবং কাশির পেছনে ঠাণ্ডা ছাড়াও আরও কোন কারণ আছে, আমার এই অমুমানের কথা সব তাঁকে জানালাম।

আমি কিছুক্ষণের মধ্যেই পৌছব,—বলে ডাক্রার আমার ভরসা
দিলেন, তারপর বললেন, তোমার জন্মে একটা জিনির আছে।
বাইরের ঘরের তাকের ওপর থেকে তিনখানা শ্লাসপাতি এনে আমার
দিলেন। পরিপাটা পোষাক পরে বেলা তিনটের থানিক পরে তিনি
এসে উপস্থিত হ'লেন। প্রতিবারের মত এবারেও দীর্থ সমর নিয়ে
মা'কে পরীক্ষা করলেন। বুক, পিঠ ঠুকে ঠুকে কান পেতে শব্দ
ভনে শেবে আমার দিকে ফিরে বললেন—ভর পাবার কিছু নেই।
আমার ওযুধ থেলে ভাল হয়ে উঠবেন বলেই মনে হয়।

ভদ্রপাকের ভাবভঙ্গী দেখে হাসি চেপে রাখা দার। কোন মতে জিজ্জেস করলাম—ইন্জেকশন্ দেবেন না? ডাক্তার বাবু গন্তীর ভাবে উত্তর দিলেন—ভার কোন দরকার নেই। ঠাণ্ডা লেগেছে, ভোমার মা যদি চুপচাপ শুরে থাকেন ভবে শীগ্গির দেরে উঠবেন।

কিছ এক সপ্তাহ কেটে গেল, মারের জর গেল না। কাশি কমল বটে, কিছ জর সকালে ১১ এবং রাত্রে ১০২ ডিগ্রির মধ্যে ওঠানামা করে। ঠিক এই সমরে পেটের গোলমাল হরে ডাক্তার শ্বানিলেন। আমি তাঁর বাড়ীতে ওব্ধ আনতে পিরে নাসের কাছে মারের অবস্থার কথা বললাম, সে পিরে ডাক্তারকে ধবর দিল। তাঁর

কাছ থেকে জ্ববাব এল—সামান্ত সর্দ্দি কাশির' ব্যাপারে ঘাবড়াবার কি আছে ? এক শিশি মিল্লচার আব একটা পাউডার নিয়ে বাড়ী ফিরে-এলাম।

নাওকি টোকিওতেই আছে। প্রার দশ দিন হ'ল সে গেছে। একাকী ভগ্নস্বদয়ে আমি ওয়াদা মানাকে মায়ের কথা জানিয়ে চিঠি লিগলাম।

দিন কয়েক পরে আনাদের গ্রামের ডাক্তার এসে জানালেন, শেষ অবধি তাঁর পেট সেবে গেছে।

খ্ব মন দিয়ে মাথের বৃক পরীক্ষা কবে হঠাং চেচিয়ে উঠলেন—
আ:. এতক্ষণে বোঝা গোল। এইবাৰ ধৰেতি। তাৰপৰ আমাৰ
দিকে ফিবে বলজেন—জবেৰ কাৰণ ধৰা পড়ে গেছে। বা দিকেব
ফুদফুদটা জ্বম হয়েছে। ষাই হোক, উদ্বেগেৰ কোন কাৰণ নেই।
বৰ এখন কিছুকাল চলণে, কিন্তু তোমাৰ মা যদি চুপ কৰে পড়ে
থাকেন, তবে ভয়ের সহিয় কোন কাৰণ নেই।

কে জানে—মনে মনে ভাবলাগ, কিন্তু তবু ভূবক্ত মানুষ যেমন খড-কুটো নিয়ে ভাসতে চায়, তেননি ভাক্তাবেব প্ৰবীকাৰ ফল থেকে এটক মাধাস পাওয়া যাব—এই আব কি !

ডাক্তাবকে বিনাস দিয়ে এসে গুলিব ভাগ কবলান—না, এতদিনে নিশ্চিক্ত হওয়া গেল, কি বল ? ফেবল ছোট্ট একটা ছ্ট্যাদা, এ তো বেশীর ভাগ লোকেবই থাকে। মনটাকে সদি তুমি শক্ত করতে পাব মা, তবে জাগ জাগ করে সেরে উঠবে। গ্রীম্মকালটা আমার ছ'চোবের বিব, গ্রমের ফুলগুলোও তাই।

চোথ বন্ধ করেই মা হাসলেন—লোকে বলে যায়। গ্রীয়ের কুল ভালবাদে, ভারা গরমেই মাবা যায়। আমি এই গ্রীয়েই শেষ নিংশাস ফেলব আশা করেছিলাম, কিন্তু এখন নাওজি ফিরে এসেছে বলে শ্বংকাল পর্যান্ত কাটিয়ে দিতে পারব।

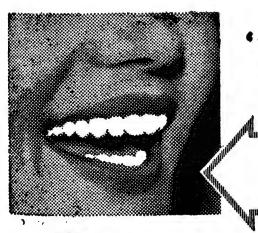
নাওজিব মত এমন অপদার্থট আছে নারেব চোথ বড় হয়ে **দীড়াল** ভেবে মনে ব্যথা পেলাম।

বেশ, সেই প্রীমই যথন পেবিয়ে এলে, তবে তোমার **ফাঁড়াও বোধ** হয় কেটে গেল—না মা ! বাগানে লবগ ফুল ফুটেছে মা ! ভাছাতা ভালেবিয়ান, বানে টি, বেল লাওয়াব টিমোথি স্বাই মিলে বাগানে শ্বতেবংবান ডেকে এনেছে। আমাৰ মন বলছে অক্টোবৰ পড়তেই ভোমাৰ হব ছেডে যাবে।

প্রাণপণে ভগবানকে ভাকি হৈ ভগবান । ভাই মেন হয়।
দেপ্টেম্বরের চটচটে একণেরে দিনগুলো গোলে গাঁচি। তার পর যথন
ক্রিলান্থিমাম্ ফুটবেন ভারতীয় গ্রীমের মত একটার পর একটা ঝল্মলে
দিন আসবে তথন মা ভাল হবে উঠবেন। একটু জোর পেলেই
কামি যাব অভিসাবে। হরত মস্ত এক ক্লিন্থিনামের মত আমার
আশা পবিপূর্ণ বিকাশেব স্ক্রোগ পাবে। হার! অক্টোবর মাসটা
যদি গগিয়ে আসত আব সেই সঙ্গে মা'ও সেবে উঠতেন।

এক সপ্তাহ পৰে আনি মামাকে চিঠি লিখতে এককালীন যাজকৈত্ব প্ৰবাণ ডাক্তাৰ মিয়াকে (Miyake)কে টোকিও থেকে এনে মাকে দেখবাৰ ব্যবস্থা কথলেন।

ডাক্তার নিয়াকে বাবাব বন্ধ ছিলেন, তাঁকে দেখে মা খুশি চ'লেন



নিম্র<u>এর</u> তুলনা নেই

২০০০ বছর ধরিয়া ইহার উপকারী গুণগুলি স্প্রতিষ্টিত

MTTTLLUBBIT PATERI TURKI KUMATAN MTTAN KALINDILI KALINDILI KALINDILI KALINDILI KALINDILI KALINDILI KALINDILI K

দাঁত সুদৃঢ় করে মাঢ়ীও স্থু রাখে

तिंश

मि

টুথ পেষ্ট

ইহা নিমের সক্রিয় ও উপকারী গুণ এবং আধুনিক টুথ পেইগুলিতে ব্যবস্থত তিবধাদি সমন্বিত একমাত্র টুথ পেই



का नका है। कि मिकान का न्था मी निमित्हें ए क निका छ। - २३ । अर-186. HP-18

বোঝা গেল। তাঁর অমার্কিত ভাষা আর কক্ষ ভাষা মারের মন গলিবে দিল। পোবাকী পরীক্ষার আবোক্ষন না করে ভদ্মপোক মারের সক্ষে অবাধ পরচর্চার মেতে গেলেন। পুডিং রাল্লা শেব করে এসে দেখি মাকে পরীক্ষা করা হরে গেছে। ভদ্মপোক বেতের চেয়ারে বসে আছেন, তার কঠ থেকে কঠনারের মত ঠেথিসকোপটা ঝলছে।

আমার মত লোক রাস্তার ধারে এঁনো হোটেলে গাঁড়িয়ে-গাঁড়িয়ে মুড্ল্ খেরে লাঞ্পর্ক সারে। তোমরা কখনও সে রকম অপূর্ক সৰ খাত, অধাৎ বাজে জিনিষ একেবারে থাও না।

ববে চ্কতে চ্কতে এই কথা কানে এল। আৰু এই ছিল ভালেৰ আলোচনাৰ ধৰণ, মা একমনে ঠাব কথা কুনছিলেন।

মনে মনে ইফি ছেড়ে বাঁচলাম, তাহ'লে মাতেব অক্সথটা বোধ তর্ব বিশেব কিছু নর। হঠাৎ মনের মধ্যে জোব পেয়ে প্রপ্র কবলাম— মা কেমন আছেন—প্রামের ডাক্তার ব'লে গেল বা দিকের ফুসফুসে ছীয়াল হয়েছে। আপনি কি বলেন ?

নির্বিকার মুখে ডাক্তার বারু জবাব দিলেন—দে আবার কি ? তোমার মা'র কিছু হর্মন।

আ:! বাঁচা গেল বুকের ওপর থেকে পর্বাচন্দ্রমাণ বোঝা নেমে গেল। আমি খুলি হয়ে বলে উঠলাম—ওনেছ মা, উনি বললেন —তোমার কিছু হয়নি।

এর পর ডাক্তার মিয়াকে চেয়ার ছেড়ে চীনাগরের দৈকে এগিয়ে গেলেন। নিশ্চর আমায় কিছু বলতে চান। তাঁর পেছন পেছন পা টিপে টিপে বেরিয়ে গেলাম।

দেৱাল-ঢাকা পৰ্মা অবধি গিয়ে উনি থানলেন—অভূত শব্দ পাছিছ বুকে।

ফুসফুসের ছ্যালা নয় ?

ना ।

এ**ছাইটিস ? জিজ্ঞেস** করতে গিয়ে চোখে জল এল।

ना ।

টি, বি'ৰ কথা আমি জোর করে মন থেকে সরিরে রেখেছিলান।
নিউনোনিয়া বা ব্রহাইটিস বা ঐ জাতীয় রোগ হ'লে মা'কে আমি
এ বাজা টেনে তুল্তে পাবব এ বিশাস আমার ছিল। কিছু এ বে
নাজবোগ, তাছাড়া হয়ত অনেকটা দেবি হয়ে গেছে। মনে হ'ল
পা'লুটোর দীড়াবার মত জোর নেই—

আপনি বে আওরাজের কথা বললেন, সেটা কি থ্ব থাবাপ ? তথন আমি অসহায় ভাবে কাঁদছি।

ডান, বাঁ ছ-দিকের সবটুকু ছেন্মে গেছে।

কিছ মাকে তো এখনও দিব্যি মুস্থ দেখার ? কেমন তৃত্তি করে খান ?

কোন উপার নেই মা!

এ সন্তিয় নয়, এ হতেই পারে না। মা'কে যদি প্রচুর পরিমাণে মাথন, ডিম, ছধ থাওয়াই তবে নিশ্চয়ই সেরে উঠবেন—ভাই না? বে পর্যান্ত রোগের সঙ্গে যুদ্ধ করার শক্তি আছে, তত দিনে তার জর ছেড়ে বেতে বাধ্য;—কি বলেন?

তাঁৰ বা প্ৰাণ চায় তাই প্ৰচুব পৰিমাণে খেতে দেবে ৷

আমি তো তাই বলছি এতক্ষণ। দিনে মা পাঁচধানা করে টমাটো গান। টমাটো ভাল ভিনিব।

তবে ভাবনার কি আছে ? মা তো সেরেই উঠবেন।

এ রোগ মারাক্সক দীড়াতে পারে। তোমার আগে থেকে আনাই ভাল।

জীবনে আজ প্রথম জানলাম যে, গুনিয়াতে কতগুলি ভিনিষ আছে। সাদের সংগবদ্ধ প্রচেষ্টার এমন এক তৃত্তিব নিরাশার প্রাচীর তৈবী হয়, যার সামনে মানুষের সকল শক্তি বর্ম।

হ'বছর ? তিন বছব ? কাঁপাগলার ফিস ফিস করে জিজেস করলাম।

नला योग ना। फाउँ कथा अब क्लान बास्ता महै।

নাগাওকা গ্রম জলের ঝরধার জারগায় সেদিন কি বেন কাজের কথা আছে, সেই দ্ব বিড়বিড কবতে কবতে ডাক্রার মিয়াকে চলে গেলেন। আমি ফটক অবধি তাঁকে এগিয়ে দিয়ে এলাম। তারপর আছুন্নের মত মায়ের বিছানার পাশে এসে দাঁড়ালাম। থেন কিছুই হয়নি, মুখে এমনি এক হাসি টেনে আনলাম, কিছু মা জিজেস করলেন—ডাক্তাব কি বলে গেলেন ?

তাঁর মত তোমার হুরটা ছেড়ে গেলেই সব ঠিক হয়ে যাবে। বুব্দের কথা কি বললেন ?

বোধ হয় বিশেষ কিছু নয়। তুমি এর আগে একবার যেমন ভূগেছিলে, তেমনি কিছু একটা হবে। আমি জানি ঠাণ্ডাটা একবার পড়ে গেলে তুমি ঝেড়ে উঠবে।

নিজের মিথ্যা কথাগুলি যেন নিজের কাছে সত্যি হরে দ্বীভাল। ঐ ভয়ানক মারাত্মক শব্দটা ভূলে থাকতে চাইলাম। মনে হ'ল মা মারা গেলে আমাব শরীর থেকে সব মাংস গলে পচে বেরিয়ে যাবে। দৃঢ় সঞ্জল্প করলাম, এখন থেকে মারের ক্ষ্য সব বৃক্ম স্কস্বাহ খাবার তৈরী করাই হবে আমার সাধনা।

চীনাঘর থেকে আরামচেয়ার বারান্দায় টেনে এমন জারগার পাতলাম, বেথান থেকে মাকে স্পষ্ট দেথা যায়। তাঁর মুখে চোথে অস্বস্থতার লেশমাত্র নেই। চোথ ছটি উজ্জ্ল, গায়ের ত্বক সতেজ মস্থ। জরটা আসে ঠিক বিকেলের মুখে।

মনে মনে ভাবলান, মাকে কি স্থলর লেখার ! আমি ঠিক জানি মা আবার ভাল হ'রে উঠবেন। মন থেকে ডাক্তার নিগ্নাকে'র বোগ বিশ্লেষণের কথা সম্পূর্ণ মুছে ফেললাম।

কল্পলোকে অক্টোবরের ছবি, পূর্ণ প্রস্থাটিত ক্রিসান্থিমানের ছবি এঁকে গোলাম। অল্প সমরের মধ্যে ঘ্নের ঘোরে কথন যে এক পটভূমিতে নেমে এসেছি—টেব পাইনি। স্বপ্নে আমার এ জায়গার সঙ্গে পরিচর আছে, কিন্তু বাস্তবিক কথনও এমন জায়গার যাইনি। যেন আমি বনেন মধ্যে এক হুদের ধারে পৌছে পরিচিত স্থান দেখে, আনন্দে বিহরল হয়ে পড়েছি। এক জাপানী ছেলের পালে পালে নিঃশব্দে চলেছি। সারা মৃত্যণটি সবৃক্ত কুয়াশায় ঢাকা, পলকা এক সাদা পুল জলের তলায় ডুবে আছে।

ছেলেটি বলছে—পুলটা ডুবে গেছে। আজ আর আমাদের কোথাও যাওয়। চলে না। এস এখানে হোটেলে গিরে উঠি। নিশ্চয়ই একখানা খালিছর পাওয়া যাবে।

কুদের প্রাক্তি এক হোটেল। ভার পাথরের দেওয়ালগুলো সর্জ কুমাশাচ্ছর। পাথরের ফটকের গারে সোনার জল দুরে ^{লেখা} রয়েছে—হোটেল স্মইজারল্যাণ্ড। এস, ডব্লিউ, আই অবধি পড়ে হঠাৎ মারের কথা মনে হল। না জানি কেমন আছেন এখন, মনের মধ্যে অস্বস্তি, এই হোটেলেই আছেন কি না কে জানে! সেই যুবকের সঙ্গে ফটক পেরিয়ে সামনের বাগানে চুকে পড়লাম। হাইডেনজিয়ার মত মস্ত মস্ত লাল কনে ধোঁয়াটে বাগান আলো করে আছে।

ছেলেবেলার আমান বিছনায় চাদরের ওপর টুক্টুকে লাল রং-এর স্তো দিয়ে হাইডেনেজিয়ার প্যাটার্শ তোলা ছিল। সেগুলো দেখলেই আনাব মন থারাপ হয়ে যেত। কিন্তু এখন মনে হল বোধ হয় হাইডেনজিয়া ফল লালও হয়।

তোমাৰ শীত করছে না তো ?

সানাত্ত, আনার কান ছুটো কুমাণাম ভিজে উঠেছে আর শরীরের ভেতরটা জমে যাছে।

হেনে উঠে ওকে প্রশ্ন করলান, মা কেমন আছেন কে জানে !

ছেলেটির স্লান হাসির মধ্যে বিধাদ ও সহাস্কৃত্তির ছাগ্রা। তিনি তাঁব কবরে স্থান লাভ করেছেন।

আমি আর্ত্তনাদ করে উঠলাম। তবে ঠিকট হয়েছে। মা আর আমানের মধ্যে নেই। আছি-শান্তি চুকে গেছে। মারের মৃত্যুর এই ছংস্বপ্রে অবর্ণনীয় নিঃসঙ্গতায়, আমার সাবা দেহে ঝাকুনি লেগে চোধ থুলে গেল।

এতক্ষণে গোধুলির আবালো বারালার নেমে এসেছে। বৃষ্টি পড়ছে। প্রতিটি জিনিয়ে স্বলে দেখা সবজের ছোঁয়া।

মা—ডাক দিলান আমি।

স্বভাব-শাস্ত কঠে মা জ্বাব দিলেন—কি করছ ওথানে ? লাকিনে উঠে দৌড়ে মা'ব পাংশ গিয়ে হাজির হলাম। যুমিয়ে পড়েছিলান মা.!

আমি এতক্ষণ ভেবে মরছি না জানি 'ভূমি কি কাজে ব্যস্ত। টানা ঘ্ম দিয়ে নিকে—কি বল ? আমার অবস্থা দেখে মা কৌতৃক বোধ

মাষের রূপ দেখে আমি মুগ্ধ হলাম তিনি যে বেঁচে আছেন আজ্ঞ, এর জন্ম কুতজ্ঞতায় আমার চোখে জল এল।

হুষ্ট্ৰমি করে জিজ্জেদ করলাম সাদ্ধ্যভোজের জন্ত কি আদেশ বাণীনা ?

কিছু দরকার নেই। আজ জ্বার কিছু থাব না, জ্বর ১০০ ভিগ্রি উঠেছিল।

আনন্দের ভেতর থেকে কে যেন আনায় অন্ধকারের মধ্যে ছুঁড়ে কেলে দিল। কি করব কোন দিশা না পেয়ে ঘরের আধাে আন্ধকারে চুড়দিকে চোথ বুলিয়ে নিলাম। আর আমি বাঁচতে চাই না।

া কেন হবে ? ১০০' ডিগ্রি ?

ও কিছু নয়। স্থার আসার মুখে একটা কন্ত হয়। মাথা বাথা ^{করে,} শীত-শীত ভাব হয়—ভার পরেই স্থরটা নামে।

বাইরে **এতক্ষণে আঁধার নেমেছে। বৃষ্টি ধরে গেছে, কিন্ত** গঙ্যা র**রেছে।**

আলো ত্বেলে থাবার ঘরে ধাবার মুথে মায়ের ডাক কানে এল— আলোটা বড্ড চোথে লাগছে। নিবিয়ে দাও তো ম।!

কিন্ত এই অন্ধকারে কি করে শুয়ে থাকবে ? স্মইচের কাছে গাড়িয়ে ইতন্ততঃ করতে সাগদাম। তাতে কিছু এসে-যায় না। ঘৃনোলে চোথ তো বছই থাকে, অন্ধকারে একটুও থারাপ লাগে না। এর পর থেকে এখনে আর আলো ছেলোনা—কেমন ?

মারের কথায় মনের ভেতরটা ছাঁং করে উঠল। বিতীয় কথা না বলে বাতি নিবিয়ে দিলাম। পাশের ঘরে একটা বাতি থেলে। নিসেপতার অসহ ভারে জর্জবিত হয়ে রাল্লাঘরের দিকে চলে সেলাম। সেধানে ঠাণ্ডা ভাতের সঙ্গে টিনের সামন মাছ থেতে বলে চোঝ দিরে বড় বড় কোটায় জল গড়িয়ে পড়ল।

রাতু বাড়ার সাথে সাথে বাতাসের জোর বেড়ে গেল এবং রাভ নয়টা আন্দাজ প্রচণ্ড বড়ের সঙ্গে আঝোরে বৃষ্টি নামল। বারানার জানালার পাথিগুলো দিন তুই আগে আমি গুটিয়ে তলেছিলাম, এখন সেগুলো বাভাসে ঝন্ঝন্ করে উঠল। মায়ের পাশের ঘরের অন্তত এক উত্তেজনা নিয়ে রোজা লাক্সেমবার্গের অর্থশান্ত্রের ভূমিকা Introduction to Economics পড়তে বসলাম। নাওজির ঘর থেকে এ বইখানা ধাব করে এনেছি। (সে অবগ্ন একথা জানে ন।) তাছাড়া लिनितन (अर्ड तहना (Selected works of Lenin) अवः काहिन्दीव সামাজিক বিপ্লবৰ (Social Revolution) সঙ্গে ছিল। আমার ডেকের ওপর সব জড়ো করা ছিল। একদিন সকালে এই ডেক্ষের পাশ দিয়ে কলবরে যাবার সময়ে মা একথানা বই তুলে নিয়ে •ভেতরে চোথ বুলিষে বিষয়টা দেখে নিলেন। ভারপর করুণ ভাবে আমার দিকে চেরে ছোট করে নি:খাস ফেলে বইটা আবার বথাস্থানে রেখে দিলেন। তাঁর চোথে বিদাদের ছারা টলমল করছে। কি**ন্তু** সে দু**টি**র ভেতর নিশেধ ছিল না বা দরদের লেশমাত্র অভাব ছিল না। মায়ের প্রের বইগুলি ছিল হিউগোর রচনা, 'ভুমার' 'পেয়ের এল ফিল' (Pe're el fils) মুসেং এবং দোদে, কিছ আমি জানতাম এই সব মধুর প্রেমের উপক্তাদগুলিতেও বিদ্যোহের গন্ধ ছিল।

মায়ের মত যারা ভগবান দত্ত শিক্ষা' নিয়ে জন্মছেন জানি আমার কথা তাঁদের কাছে অন্তুত ঠেকবে। তাঁরা ৰিপ্লবকে অতাস্ত সহজ মনে, সাধারণ ব্যাপার হিসাবে গ্রহণ করতে পারেন। এমন কি বোজা লাক্ষেমবার্গ-এর বই এর মধ্যেও আমি আপত্তিকর উক্তি পেয়েছি। কিন্তু তা সত্ত্বেও আমার মত লোকের মনে বইখানি যথেষ্ট কৌতৃহল উদ্ৰেক করেছে। তাঁর বই-এর বিষয়বস্ত অর্থনীতি এবং সেই দিক থেকে বইখানি বাস্তবিক নীবস। এর ভেতর **লেখক** অত্যস্ত স্পষ্ট ভাষার সাধারণ বিষয়ের অবতারণা করেছেন। হতে পারে অর্থনীতি আমি বুঝি না। এ সম্বন্ধে আমার আগ্রহও কিছু নেই। 'মানৰ মাতেই গোভী এবং কোন দিনই লো*ভমুক্ত* হ'তে পারে না'--এই অনুমানের উপর যে বিজ্ঞান তর করে আছে, নির্দোড মারুবের কাছে দে বিজ্ঞান অর্থহীন। কিন্তু তবু এবই পড়তে পড়তে সম্পূর্ণ ভিন্ন কাবণে আমার উত্তেজনার সীমা থাকে না। কারণটা হ'ল এই—বে, চিবাচরিত বিশ্বাদের মূলে বিনা দ্বিধায় কুঠাবাদাত করার মত সংসাহস লেখিকার আছে। নীতির বিরুদ্ধে মনে বতই বিদ্রোহ থাক না কেন, নিশ্চিম্ভ নীড়ে ফেরা পাথীর মত আমার প্রেমাস্পদের সেই মমভাময়ী জীবনসঙ্গিনীর ছবিও ভো চোখের ওপর থেকে মুথে কেলতে পারি না। অতঃপর আমার মনে ধ্বংসের নেশা লাগে। ধ্বংসলীলা বেমন করুণ, বিধাদময়, তেমনি উপভোগ্য। ধ্বংদ্ৰ, নৃত্যনৰ স্ঠি পৰিপূৰ্ণতাৰ স্বৰ্ম! হয়ত বিনালাৰ পৰ নতুন

রাজকুমারী

মুন্নি যথন আমার নতুন হৈত্রী করা
ফক্টা পরলো তথন আনন্দে উচ্ছসিত
হয়ে উঠলো। ক্রক্টাও আমি অনেক
যত্ত্ব করে তৈরী করেছিলাম—সাদা ধর্ধবে
আমার ওপর ছোট্ট নীল ফুলের পাড়
দিয়ে। আনন্দে লাফাতে লাফাতে
মুন্নি আয়নার সামনে গেলো।
ঘুরে ফিরে চারিদিক থেকে
মুন্নি তার ফ্রক্টা দেখলো তার-

পর ছুটলো তার বন্ধদের দেখাতে তার নতুন জামা,

ভক্নি বিকাল পর্যান্ত অপেকা না করতে পেরে।
আমি টেচিয়ে ডাকলাম ওকে, "মুরি, মুরি নতুন
ফ্রক্টা প্রে মাক্র ভারিনা ?" মুরি ততক্ষণে বাড়ীর থেকে
বিয়ের নেমন্তরে যাবিনা ?" মুরি ততক্ষণে বাড়ীর থেকে
বহুরে। নতুন ফ্রক্টা পরে মুরিকে দেখে মনে হলা
আমার যেন কোন এক পরীর দেশের রাজকতা, ওকে
সভিতই মানিয়েছিলো, আর সভিতই এত স্থানর লাগছিল।
একবার ভারলাম ডাকি ওকে কারণ ফ্রক্টা ওকে পরতে
দিয়েছিলাম তর্মু ঠিক হয় ফিনা দেখার জন্ত। ইতিমধ্যে
রারা ঘরের থেকে কি যেন একটা পোড়ার গন্ধ পেয়ে
আমি উঠে গেলাম, তারপর আর আমার থেয়ালই ছিলনা।
আমার ছঁল হল যথন রাধার গণা তনলাম দরজার সামনে।
বিটেক ক্রমন্তর্গত

রাধাকে দেখে খুব খুনী হলাম এবং ওকে নিয়ে যথন বগাঁই

যরে এলাম, দেখি মুলি দরজায় দাঁড়িয়ে।
ওকে দেখেই আমি রেগে আগুণ—ফ্রক্টা একদম নোংরা
করে কেলেছে—বিয়েতে যাওয়ার সময় পরবেই বা কি?
"ফ্রক্টার কি ছিরিই করেছো এখন পরবে কি বিকালে"
বলে আমি ওকে মারতে যাড়িলাম এখন সময় রাধা মুরিকে
সরিয়ে নিয়ে আমায় ধ্যকালো—" ভোর মাধা ধারাণ



হল নাকি' এতিটুকু বাঁচাকে মারছিস। "মুরি বাঁচলো আর ফ্রক্টা পুলে রাখলো ভাড়াভাড়ি।"

কেবটা নিয়ে আমি কলতলায় পরিকার করতে এলাম এবং

ববন ফ্রকটাকে আছড়াতে যাচ্ছি, রাধা বললো" মেয়ের

ওপর রাগটা কি ফ্রকের ওপর ফলাবি!"

"এটা না কাচলে ও পরবেটা কি ? অগু ভাল আমা থে আর নেই" আমি বললাম। রাধা বললো, "কিন্তু ওটা আছড়ালে ছিঁড়ে যাবে যে।"

আমি বলসাম "না আছড়ালেই বা কাচবো কি করে?"
"আছড়াবার কি দরকার—ভাল সাবান ব্যবহার করনেই
হয়। আমি তো সানলাইট ব্যবহার করি।" "কিব সানলাইট কি সভ্যিই এভ ভাল সাবান ?" "সভ্যিই সানলাইটে আমা-VP. 8 3-352 300 কাণড় সাদা ও উজ্জন হয়। এবং এটা এক বি**ণদ্ধ বে** এতে কাণড়েয় কিছু কভি হয় না।"

"কিন্তু সানশাইটে ধরচা বেশী পড়েনা ?" রাধা তো হেসেই
আক্ল—" সে কিরে, ভেবে গুণ, একটু ঘবলেই সানশাইটে
এত ফেনা হয় যে এক গাদা জামাকাপড় কাচা চলে জন্ন
সমঁয়েই সাদা ধব্ধবে করে। এছাড়া পিটে আছড়ে কাপড়েই

সর্বনাশও হয়না, নিজেরও

ঝামেলা বাঁচে কতো — এর

পরেও তুই বলবি পরচা বেনী।"

তক্ষনি আমি একটা সানদাইট

সাবান আনালাম এবং কাচা

তক্ষ করতেই ফ্রকটা

ফেনার স্তুপে তরে গেলো

আর দেখতে দেখতে

সাদা ধব্ধব্ হলো।

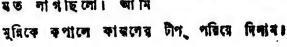
সর্বোকো নতুন কাচা

ফ্রকটা পরে মুরিকে

স্তিটেই পরীদের

গ্রের রা জন্মারীর

মত লা গছিলো। আমি





दिन्यान निकार निक्ष (संपूर्व

করে স্ট্র করার দিন না-ও ফিবে জাসতে পারে। তবু প্রেমের উন্নাদনার ধ্বংস জামার করতেই হবে। বিল্রোহের স্চনা করতে হবে। ত্রখের বিধন্ন রোজা (Rosa) তার জভিন্ন হৃদরের প্রেম মার্দ্ধবিদে সমর্পণ করে বদে আছে।

বাবো বংসর আগের এক শীতকাল। সারাশিনা ভাষরীর (Sarashian Diary) মেক্লণগুহান মেরেটির মত তুমি কখনও মুখ খোল না। তোমার সঙ্গে কথা কওয়া ভার।

এই বলে আমার বন্ধটি এগিয়ে গেল। এইমাত্র আমি তাকে লেনিনের একধানা বই না পড়েই ফেবং দিলাম।

ৰইটা পড়লে ?

অত্যন্ত হংখিত, পড়িনি।

একটা পুলের কাছ থেকে টোকিও গ্লালিয়ান অর্থোডক্স কেথিড়াল (Tokyo Russian Orthodox Cathedral) দেখা যার, ভারই ধারে গাঁড়িয়ে কথা হচ্ছিল। কেন কি হল ?

বন্ধ জীমার মাধার ওপর এক ইঞ্চি লক্ষা ছিল আর জনেক দেশের ভাবা জানত। লাল টুপীটা তাকে চমৎকার মানিয়েছিল। মেয়েটি ছিল অপূর্ব স্থন্দরী! মোনালিদার মত অপূর্ব চেহারা বলে ভার নাম-ভাক ছিল।

মলাটের রটো আমার বিশ্রী লাগল।

শ্বাক করলে বে । আদলে ওটা কোন কারণ নয় । তুমি **আমার সন্দেহ** করতে গুরু করেছ, তাই না ?

না সন্দেহ আমার নেই, মলাটের রংটা আমার সহ হল না ভাষা।

ভাই নাকি? সংখদে বংল উঠল মেয়েটি এবং এর পরই আমার সারাশিনা ভাররীর মেয়ের সঙ্গে তুলনা করে। আমার সঙ্গে কথা বংল কোন লাভ নেই, এ বিবরে সে নি:সংশেহ। ছজনে থানিক চুপ করে শীভের নদীর দিকে চেয়ে রইলাম।

বিদায়, যদি এই হয় আমাদের শেব দেবা ! বিদায়, বন্ধ্ বিদায়। বার্বণ ; নিজেব মনে গুনগুনিয়ে বার্বণের কবিতার পদগুলি আবৃত্তি করে গেল। তারপর আমায় আলগোছে আলিঙ্গন করল।

নিজের প্রতি ধিকারে মন ভবে গেল: ফিসফিস ক্রে এক্টা কি
আকুহাত দিয়ে ষ্টেশনের দিকে বওনা হলাম। একবার পেছন ফিরে
দেখি বন্ধটি তথনও দেখানে সেই ভাবে আমার দিকে চেয়ে গাঁড়িয়ে
আছে।

তার সঙ্গে আমার সেই শেষ দেখা। আমরা ছ'জনে ছই স্কুলে পড়লেও একই বিদেশী টিচারের কাছে ভাষা শিখতে বেভাম।

তারপর বারো বছর কেটে গেছে। সারাশিনা ভাররীর অবস্থা পেরিয়ে আমার আরও এক পা অগ্রসর হতে হয়েছে। এতকাল ধরে আমি কি করলাম তবে ? বিদ্রোহের প্রতি আমার আসক্তি নেই, নেই ভালবাসার দিকে বোক। ছনিয়ার বিচক্ষণ পণ্ডিতেরা চিরদিন বিজ্ঞাহ ও প্রেমার এই হটি অমুভূতিকে মানব-মনের হীনতম প্রক্রিয়া বলে বর্ণনা করেছেন। মুদ্ধের আগে, এমন কি মুদ্ধের সময়ই আমরা সেক্থা বুক্তেছি।

পরাজ্যের পর থেকে প্রবীণ বিজ্ঞাদের ওপর আস্থা আমরা ক্রান্টিকেটি। এবং জাঁধা যা বজেন কার বিপরীতটাকেই মুদ্য দিতে শিখেছি। বাস্তবিক বিদ্রোহ ও প্রেমের মধ্যেই ছনিয়ার দের।
আনন্দের বাসা। সেই সঙ্গে একথাও বুবেছি যে ঠিক এই কারনেই
জানী বৃদ্ধেরা হিংসা-পরবশ হয়ে ভিক্ত ফ্রাকাফলের মত মিখ্যা দিরে
আমাদের প্রতারণা করতে চেরেছেন। আমি চোধ বৃঁকে এই কথাই
বিশাস করতে চাই যে, প্রেম ও বিজ্ঞাহের জক্তই মানুষের জন্ম।

হঠাৎ দরজার ফাঁকে মায়ের হাসিমুখ দেখা গেল। ঘুমণ্ডনি এখনও ? ঘুন আসছে না—না ? ডেম্বের ওপর ঘড়ির দিকে চেরে দেখি বারোটা বেজে গেছে। না আমার একটুও ঘুম আসছে না ; সমাজতদ্রের ওপর একথানা বই পড়ে মাথা গ্রম হয়ে আছে।

ও ! আচ্ছা বাড়ীতে কোনবক্ষ জিকে নেই—না ? এবক্ষ অবস্থায় শোবার আগে এক গেলাস কিছু থেয়ে নিলে ভাল হয়।

স্থার প্ন আসে। মারের গলার স্বরে, কথার চং-এ কেমন ধ্নে মন-গলানো ভাব।

শেষ পর্যান্ত অক্টোবর এল কিন্ত আকাশে-বাতাদে তেমন করে হঠাৎ দোনার বং লাগলো না। ববং বর্বাকালের মন্ত এক এক করে অনেকগুলি স্যাংস্টাতে দিন পেরিয়ে গেল। প্রতি সন্ধ্যায় মারের অব একশ'ব কিছু ওপরে লেগে বইল।

এক সকালে হঠাৎ একটা জিনিব লক্ষ্য করে ঘাবড়ে গোলাম।
মারের হাতপানা ফুলে উঠেছে। তাছাড়া সকালের থাবারটুকু মা
চিবদিনই বত্ন করে খান, কিন্তু ইদানীং সকালের দিকে নামে মাজ্র
ভাতের কাথ মুখে দেন। কড়া গদ্ধযুক্ত কোন থাবার থেতে পাবেন
না। সেদিন স্পের ভেতর ব্যাতের ছাতার গদ্ধ পর্যান্ত সাইতে
পারলেন না।

স্পটা মূথে তুলে, না চেথেই ট্রের ওপর মাবিয়ে রাখলেন। সেই সময়ে আমাব নন্ধর পড়ল মার ডান হাভখানা কোলা।

মা, ভোমার হাতে কি হল ?

মুখখানাও কেমন বেন সালাটে ফোলা-ফোলা লাগল—ও কিছু নয়, এটুকু কোলায় কিছু এলে বাবে না।

ক'দিন হল এমন হয়েছে ?

মা কোন উত্তর দিলেন না, মুখে চোখে কেমন আছের ভাব। আমার বুক ঠেলে কারা বেরিয়ে আদতে চাইল—ও হাতথানা কিছুতেই আমার মায়ের নয়। মার হাতটি কত স্থলর, ছোট়। টিরপরিচিত, স্থকোমল দে হাত যে আমার পরম আদরের ধন। আমি অবাক হিরে ভাবি মারের দে হাতথানা কি চিরদিনের মত অন্তর্ভিত হল ? বাঁ হাতথানা এগনও অবিকৃতই আছে। কিছু আর যে আমি মারের দিকে চেয়ে থাকতে পারি না! চোখ ফিরিয়ে ঘরের কোণে রাগা ফুলের ঝুড়িটার দিকে তাকাই।

টেব পাছিছ চোথেব জুল কথতে পাবৰ না। জ্বসন্থ হওয়ার হঠাং ই রাপ্নাখনের দিকে ছুটলাম। সেগানে পিয়ে দেখি, নাওজি একখানা নরম সেন্ধ ডিম খাছে। কচিং কথনও বাড়ীতে এলে, রাতটা ও মাসীর ওবানে মদ খেয়ে কাটিয়ে দেয়। সকালে বাড়ী এসে রাপ্নাখনে চুকে গোমড়া মুখ করে বসে নরম সেন্ধ ডিম খায়। এই একমাত্র খাবার যা সে খুশিমনে খায়। ভারপর দোভলার নিজ্জের খবে গিয়ে সারাটা দিন বিছানায় ভয়ে, বসে কাটিয়ে দেয়।

মাটির দিকে চোখ নাবিয়ে বল্লাম,—মায়ের হাতথানা ফুলে

উঠছে। আর বলতে পারদাম না, কারার দারাদেহ কেঁপে উঠছে। নাওন্ধি কোন উত্তর দিল না।

এবার আমি মুপ তুলে চাইলাম,—সব শেব হরে এল। তুমি লক্ষ্য করনি? ওরকম ফুলতে স্কুক্ত হলে, আর কোন আশা থাকে না। টেবিলের প্রাপ্ত শক্ত মুঠোর ধরে গাঁড়িয়েছিলাম কোন মতে। নাওজির মুখে মেয ঢেকে এল—আর দেরী নেই। এ কি হ'ল। কি মুস্কিল!

মাকে আমি বাঁচাতে চাই। বেমন করে হোক মাকৈ ফিরে পেতেই হবে। নিজেই নিজের হাত ছটি নিম্পেষিত করে বললাম। হচাৎ নাওজি কাল্লায় ভেঙ্গে পড়ল—দেখছ না মা, এখন আনাদের হাতের বাইবে। কিছু কবাব সাধ্য কি ? জোরে জোরে হাতের মুঠি দিয়ে চোখ কচলাতে লাগল। সেদিন নাওজি টোকিওতে ওয়াদা মামাকে খবর দিতে এবং ভবিষ্যুতের ব্যবস্থার নির্দেশ নিতে চলে গেল। মায়ের পাশে থেকে বে সময়টুকু উঠে আসতে হ'ছিল, তার প্রতিটি মুহূর্ভ আমার কেঁদে কেটেছে। সকালের কুয়ালা ভেদ করে হুধ আন্তে যাবার সময়ে, আয়নার সামনে দাঁড়িয়ে চুল বাধার সময়ে, প্রসাধন করার সময়ে সারাক্ষণ শুধুই কেঁদেছি। মায়ের সক্ষে আমার আনন্দের দিনগুলি, বিভিন্ন ছোটগাট ঘটনা চোথের ওপর দিয়ে ছবির মত ভেসে গেল। কাল্লার কোন সীমা, কোন সার্থকিতা ছিল না তখন। সেদিন সজ্যোবলা বারাক্ষায় চীনাঘরের সামনে বসে সমানে কেঁদেছি। শাবৎ-আকাশে তারার শোভা, পায়ের কাছে না জানি কার এক বেড়াল চুপ করে গুটিয়ে পড়ে আছে।

প্রদিন মায়ের হাতের ফোলা আরও বেড়ে গেল। খাবাং সময়ে মোটে কিছুই থেলেন না। কমলার বস পর্যন্ত গলার ব্যথায় গিলতে পারলেন না।

মা, নাওজির ব্যবস্থা মত সেই মুখ ঢাকা আবাব কিছুদিন পরে দেখবে ? হাসি দিয়ে কথাগুলো ভেজাবার চেষ্টা করলাম, কিস্ক মনের উদ্বেগ ঢাপা বইল না।

শাস্তব্বে মা বললেন—দৈনিক কাজের ভাবে তোমার শ্রীরপাত হচ্ছে। আমাব জন্তে নার্সের ব্যবস্থা কর। ব্যুলাম তাঁর নিজের চেরেও আমার চিন্তা বেশী এবং এতে আরও বেশী করে মন থারাপ হয়ে গেল।

ছপুরের খানিক পরে নাঙজি ডাজ্ঞার মিয়াকে এবং এক নাস সঙ্গে নিয়ে এল। বৃদ্ধ ডাক্থার সাধারণতঃ হাসিঠাটা করতে ভালবাসেন, কিন্তু এখন দিতীয় বাক্যব্যয় না করে সোজা রোগীর ঘকে চুকে পরীক্ষা স্তক্ষ্ণ করলনে। কাজ শেষ করে নিজের মনেই বললেন, বেশ কাহিল হয়েছেন। বলে একটা কপুরের ইন্জেক্শন দিলেন।

প্রলাপের ঘোরে মা প্রশ্ন করলেন— ডাক্তারবাব্ আপনাব থাকবার জায়গা আছে ?

নাগাওকাতে বেতে হবে আমার জ্বন্তে চিন্তা করবেন না। আপাততঃ পরের কথা ছেড়ে নিজের বিষয় একটু ভাব্ন, যা ভাল লাগে বেশী বেশী করে থান। পুষ্টিকর থাবার থেলে সেরে ওঠা শক্ত হবে না। আমার নার্স রেখে গেলাম, প্রয়োজন মন্ত এর সেরা নিজে। দিধা করবেন না।

মান্ত্রের বিছানার উদ্দেশ্তে জোরে জোরে কথাগুলি বলে ইশারার নাগুলিকে কাছে ডাকদেন। নাগুলি নিজেই কটক পর্যান্ত তাঁর সঙ্গে গেল। যখন সে কিবে এল, ভার মুখু দেখে ব্যালাম, সে কারা চাপবার প্রাণপণ চেষ্টা করছে। আমরা নিশোলে থাবার বর হেছে রোগীর বরে এলাম।

আৰ কি কোন আশাই 'নেই উনি কি বললেন ? আমাৰ প্ৰেরের উত্তরে বিকৃত সাসিতে নাওজির ঠোঁট কেঁপে উঠল—এ আৰ সন্থ হয় না; আগের চেয়ে অনেক বেনী ত্র্রেল হয়ে পড়েছেন। ডাক্তারবাব্র মত আৰ ত্-একদিনের বেনী নর। বলতে বলতে ওর চোগ হ'টি জলে ভরে এল।

জামি বললাম,—সবাইকে টেলিগ্রাম করা দরকার বোধ হয়। জাশ্চর্যা। কেমন করে যেন নিঙ্গের ওপার দথল ফিরে এসেছে।

ওয়াদামানার সঙ্গে কথা হল, উনি বললেন—মামাদের বর্ত্তমান স্ববস্থার এতবড় আয়োজন করা সম্ভব নয়। ধর ধদি মামুবজন এসে উপস্থিত হয়—আমাদের এটুকু বাড়ীতে তাঁদের ঠাই দেবে কোথার? এছাড়া ভাল হোটেলপত্তর কিছুই নেই এখানে। তাঁর কথার ভাবে ব্রুলাম আমাদের পরিবারের মহামহারখীদের নিমন্ত্রণ করার কথা আমাদের ভাবা উচিত নয়। ওয়াদামামা শীস্ গিরই আসছেন। কিছু উনি চিরকালই এত কুপণ বে ওঁর কাছে কোন সাহায্য আশা করা যায় না। গত রাতের মত অমন হুংসময়েও উনি মায়ের অমুখের কথা ভূলে গিয়ে আমায় মর্যান্তিক এক বন্ধুতা শোনালেন। ছনিয়ার ইতিহাসে এমন দৃষ্টান্ত কোখাও নেই, যেথানে কুপণের বন্ধুতার অজ্ঞান আলোর সন্ধান পেরছে। এইখানেই আমাদের সঙ্গে তাঁর ভফাৎ, মার কথা ভা ছেড়েই দিলাম। ওঁকে দেখলে আমার মেজাজ ধারাণ হয়ে যায়।

কিন্তু এখন থেকে আমার বদি না-ও হর, তোমায় তো **তাঁর** ওপরই ভরসা করতে হবে।



কক্ষণো না, বরং ভিক্তে কবে থাব। বোনটি আমার, ভোমাকেই ভঁর মুখের দিকে চেরে থাকতে চবে।

আমি—চোথে জল ভবে এল,—মামার বাবার জারগা আছে। বিরে করবে ? ঠিক হয়ে গেছে ?

না ৷

স্থাবীন জেনানা ? চাক্রী ক্রবে ? হাসিও না বাপু ! না, চাক্রী নয়, বিজোহ ক্রব।

কী ? অন্তুত চোধে নাওজি আমার দিকে তাকাল। ঠিক এই সময়ে নাসে ব গলা পেলাম—আপনাকে মা ডাকছেন।

ছুটে গিয়ে নায়ের পাশে বসলাম। মাথ। বুঁকিয়ে জিঁজেন করলাম—কি হয়েছে মা ? মা চুপ কবেই রইলেন—কিছ আমি বুঝলাম কি যেন বলাব চেষ্টা করছেন।

कन ?

ঈধং মাথা নেড়ে মা বলকোন। কিছুক্ষণ পরে নিজেই খ্ব আন্তে বললেন—স্থা দেখছিলাম।

(क्यन च्रश्न ?

সাপের বিষয়।

শিউবে উঠলাম আমি।

আমাব নিখাপ, সামনে গাড়ীবারান্দার সিঁড়িতে লাল ডোরাকাটা সাপিনী এসেছে। দেখতো গিরে। উঠে দাঁড়াতে গিরে টের পেলাম আমার সারা দেহ হিম হয়ে গেছে। বারান্দা অবধি গিয়ে কাচেব দরজার ভেতর দিয়ে বাইরে তাকালাম। সিঁড়ির ওপর নিশ্চিম্ভ দেহ এলিরে শরতের স্বর্গকে উপভোগ করছে এক সাপিনী। আনার মাধা বিম্যালিম করে উঠল।

ভোমার আমি চিনি। শেব তোমার বা দেখেছি, তার চেয়ে ছুমি বড় ছয়েছ, বুড়ো হয়েছ, কিছ তুমি দেই ডিমেদের মা, বাদের আমি একদিন পুড়িয়ে মারতে গিয়েছিলাম। তোমার প্রতিশোধ তো আমার উপর দিরে নিলে, এবার তুমি দূর হও।

সাপিনীর ওপর দৃষ্টিবন্ধ করে আমি মনে মনে এই প্রার্থনা করলাম, কিন্তু তার এইটুকু চাঞ্চল্য দেখা গেল না। কেন জানি না, নার্সের চোথে পড়ে এটা আমার ইচ্ছে ছিল না। সেইজন্ম অনাবশ্রক জোরে মাটিতে পা ঠুকে প্রয়োজনের অতিরিক্ত চেচিয়ে বললাম—না, মা এখানে তো কোন সাপ দেখছি না। ও তোমার ভুল স্বপ্ন। আবার সিঁড়ির দিকে তাকিয়ে দেখি, এতক্ষণে নড়েচড়ে সাপটা চলে বাছে।

আর কোন আশা নেই, কোন আশাই না। সাপটা নজরে পড়ার পর থেকে আমি একেবারে হাল ছেড়ে দিলাম। আমি জানতাম বাবার মৃত্যুর সময় একটা কালসাপ বিছানার পালে দেখা গিয়েছিল, আমি নিজেই বাগানের সমস্ত গাছে সাপ জড়িয়ে থাকতে দেখেছি।

মনে হল মা বিছানার উঠে বদার শক্তিটুক্ও হারিরে ফেলেছেন এবং সারাক্ষণ আছের হরে পড়ে থাকেন। আমি নার্সকৈ মারের সমস্ত দারিছ বৃকিরে দিরেছি। থাবার তাঁর গলা দিরে প্রায় নাবে না। সাপটা চোখে দেখার পর সমস্ত উদ্বেগ কেমন বেন গলে গিরে স্বস্তি বোধ হ'ল। হঃখের অন্ধকার গছবরে তলিরে গিরে শান্তি পোলাম। আমার একমাত্র কান্ত, এখন মারের পাশে বৃত্তী সন্তব সময় কাটানো। পর্দিন সারাকণ মারের পাশে বোনা নিয়ে ব'সে য়ইলাম।
দেলাই বা বোনার আমার বেশীর ভাগ লোকের চেরে ভাড়াভাড়ি
হাত চলে, কিন্তু থ্ব ভাল কিছু একটা করতে পারি না।
মা আমার সর্মনাই বোনার মধ্যে কাঁচা-কালের জারগাণ্ডলি দেখিরে
দিতেন। দেনিন বোনাটা আমার আসল উদ্দেশ্ত ছিল না, কিছু
সারাদিন ঐভাবে মারের পাশে বসে কাটানোয় তাঁর মনে কোন সন্দেহ
না হয়; সেই জন্ত উলের বান্ধ নিয়ে আড় হরে বসে বুনতে লাগলাম।
বেন ত্নিয়ায় এ ছাড়া আমার কোন চিন্তাই নেই।

মা আমার হাতের দিকে চেয়ে রইলেন—তোমার নিজের মোজা
—না ? মনে রেখো লখার দিকে আটটা করে না বাড়ালে পরার
সময়ে আঁটি লাগবে।

ছেলেবেলার মা হাজার সাহায় করলেও কিছুতেই আমি ঠিক বুনতে পারতাম না। আজও সেই রকম বোনা নিয়ে হিমসিম থাছি, কিন্তু এব পর আর কোন দিনও মা আমার ভূল ধরিয়ে দেবেন না মনে হ'ছেই বুকেব ভেতবটা হাহাকার করে উঠল। চোথের জলে বোনা দার হ'ল। মা'কে এভাবে শুয়ে থাকতে দেখে মনেই হছিল না য়ে, তাঁর শরীরে কোন কষ্ঠ আছে। সকলে থেকে কিছুই থাননি আজ, সারা দিন থেকে থেকে শুমু গজ (Gauze) কাপড় চায়ে ভূবিয়ে তাঁর ঠোঁট হাটি ভিজিয়ে দিছিলাম। বাই হোক, তাঁর পূর্ণ জ্ঞান ছিল এবং মাঝে মাঝে শাস্ত গলার কথা বলছিলেন, থবর কাপজে সম্রাটের একটা ছবি দেখেছিলাম, আর একবার দেখি ছবিখানা।

কাগজের এ অংশটা মারের মুখের ওপর তুলে ধরলাম। বুড়ো হয়ে গেছেন।

না, ছবিটা ভাল ওঠেনি। সেদিন অন্ত একথানা ছবিতে দেখলাম, দিব্যি হাসিঃশি তকণ চেহারা। বোধ হয় আজকাল আগের তুলনার ভালই আংছন।

কেন ?

তিনি তো এখন মুক্ত, স্বাধীন।

কৰুণ হেসে মা বললেন—কাঁদতে চাইলেও আজকাল আমাৰ কাল্প। আসে না।

হঠাৎ মনে হ'ল এখন মারের খুলি হবার পালা এসেছে। লোকের প্রবাহে নিমজ্জিত স্থাথের অল্পষ্ট সোনালী ঝিলমিলির মত এই স্থাথের অনুভূতি। সকল হুখের বন্ধন অভিক্রম করে এই যে ক্ষীণ আলোর আভাস, এই তো স্থথ! আমাদের সম্রাট, আমাদের মা জননী, এমন কি আমি নিজে পর্যান্ত এই স্থাথের পরশ পেরে ধন্ত।

শবতের প্রতাত শান্ত, দ্বির। স্থালোকের দ্বিশ্ব শোশে মনোরম উন্তান শোভা! বোনা নাবিরে রেথে দূরে উজ্জ্বল সমুদ্রের দিকে চোথ রেথে বললাম—মা, এতদিন আমি সংসারের বিষয় কিছুই জানতাম না। আরও অনেক কথাই বলতে ইচ্ছে ছিল, কিছু ঘরের কোণে নার্স এই ভেবে লজ্জার কথার মাঝে চুপ করে গোলাম। আমার কথার থেই ধরে শ্বিতহাল্ডে মা বললেন—তুমি বে বললে 'এতদিন'। তার মানে এথন তুমি সংসারকে চিনেছ?

আমার মুখধানা অসম্ভব লাল হরে উঠল। আমি কিছ আৰও চিনি না—বলে মা অন্তদিকে মুখ ফেরালেন। আমিও বুঝি না, জানি না কে বোঝে ? সমরের মনে সমর বরে বার, আমরা ছেলেমামুধ থেকে যাই। কিছুই বুঝি না আমরা।

বাঁচতে আমায় হবেই, বলতে পারেন ছেলেমায়ুষী, তবু সহজ প্রাণে একে মেনে নেওবাও শক্ত। এখন থেকে ছনিয়ার সঙ্গে লড়াই করে বাঁচতে হবে। মনে হ'ল বাঁরা সৌন্দর্য্যের ভেতর দিয়ে, শোকের ভিতর দিয়ে কারুর সঙ্গে বিবাদ না করে, কাউকে খুণা না করে, প্রভারণা না করে জীবন যাপন করে গেছেন—মা তাদেরই শেষ নিদর্শন। ভবিষ্যৎ পৃথিবীতে এমন লোকের ঠাঁই হবে না। মৃত্যুপথষাত্রীরা স্থন্দরের প্রতীক, কিন্তু বেঁচে থাকা, টিকৈ থাকা এ ব্যাপারগুলো ক্রমশ: ত্রুহ হ'বে উঠেছে। মনে পড়ে গেল গর্ভবতী দর্শিণীকে একবার মাটিতে গর্ভ খুঁড়তে দেখেছিলাম। আমি মাটিতে শুয়ে সেইভাবে শরীরটাকে গুটিয়ে নিলাম। কিছ এমন কিছু আছে যার কাছে আত্মসমর্পণ করা অসম্ভব। বলতে পার আমি নীচাশয় তবুও আমায় বাঁচতেই হবে, আমার ইচ্ছা পূর্ণ করার জন্ম তুনিয়াতে টিকে থাকতেই হবে। স্পষ্ট বুঝলাম, মায়ের আয়ু ফুরিয়েছে, আমার মন থেকে প্রেম, ভাবপ্রবণতা বাষ্পের মত উবে গেল, মনে হল দিন দিন আমি স্বার্থপর, অনাচারী হয়ে উঠছি।

তৃপুরের পরে আমি মারের ঠোঁট ভিজ্জিরে দিচ্ছি, এমন সময় ফটকের কাছে একটা গাড়ীর শব্দ পেলাম। ওয়াদামামা ও মামীমা এসেছেন টোকিও থেকে। মামা সোজা রোগীর ঘরে চুকে রোগীর পাশে বসলেন। মা কুমাল দিয়ে মুখের নীচের দিকটা ঢেকে মামার মুখের ওপর চোখ রেখে কাঁদতে লাগলেন কিন্তু চোখে এক কোঁটা জলও এল না। মাকে দেখে আমার পুতুল বলে মনে হল।

নাওজি কোথায় ? কিছুক্ষণ পরে আমায় জিজ্ঞেদ করলেন। আমি দোতলায় গিয়ে দেখি নাওজি দোফায় শুয়ে বই পড়ছে।

মা তোমায় ডাকছেন,-বললাম আমি।

কিন্ত ? আবার সেই ভয়াবহ শোকের দৃষ্ঠ ! হে বীরস্তদয়া,
ক্ষীণ অমুভ্তিসম্পন্না নারী, ধৈর্য ধরে তোমার কর্ত্তব্য পালন করো,
আমাদের মন্ত তাপিত ব্যক্তি ধাদের প্রাণ চায়, চক্ষুনা চায় তাদের
পক্ষে মাধের পাশে বলে থাকা অসম্ভব । জামা গারে দিয়ে আমার
সঙ্গে নীচে নেমে এল ।

তৃই ভাই বোনে গিয়ে মারের তৃপাশে বসলাম। চঠাং চাদরের নীচ থেকে হাত বের করে প্রথমে নাওজি, পরে আমার দিকে নির্দেশ করে অমুরোবের ভঙ্গীতে জ্বোড়হাতে মামার দিকে তাকালেন।

উদার ভাবে ঘাড় নেড়ে মামা সান্তনা দিলেন—হাা, বুঝেছি, আমি বুঝেছি।

এই শেষ কথাটি বলে পরম নিশ্চিক্তভাবে হাত ছটি চাদরের ভেতর টেনে নিয়ে চোথ বুঁজলেন। জামি কাঁদছিলাম, নাওজিও চোধ নিচু করে কোঁপাছিল। ভাক্তার মিয়াকে এসেই একটা ইনজেকশন দিলেন। মামাকে দেখে মা ধরেই নিলেন, তাঁর আর দেরী করে লাভ নেই। মুখে বললেন ডাক্তার বাবু, দরা করে আমার ভববদ্ধণা শীগ্গির শেষ করুন। ডাক্তারের সল্পোমার একবার চোখাচোথি হ'ল—হু'জনের মধ্যে কারুর চোখই শুকনো ছিল না।

থাবার ঘরে গিয়ে যা হোক একটু থাবার ব্যবস্থা করলাম। টোকিও থেকে মামা কিছু স্থাপ্ডউইচ এনেছিলেন—মা'কে দেখিরে বালিশের পাশে রেথে দিলাম—বিভ্বিড় করে মা বললেন—তোমার ওপক দিয়ে যা ঝক্কি চলেছে।

চীনাঘরে বসে কিছুক্ষণ কথাবার্তা 'হ'ল। মামা-মামীর টোকিওতে কি যেন কাজ ছিল, তাঁদের ফিরে থেতেই হল।
মামা আমার হাতে থামে করে কিছু টাকা দিরে গেলেন। ছির
হ'ল তাঁরা ডাজ্ডারের সঙ্গেই ফিরবেন। ডাজ্ডার মিয়াকে ইভিমধ্যে
নার্সকৈ পরবর্তী চিকিৎসার কথা ব্রিয়ে দিচ্ছিলেন। ধরে নেওরা
গেল ইনজেকশনের গুণে মা আরও চার পাঁচদিন বেঁচে ধাকবেন।
এখন পর্যান্ত তাঁর পুরো জ্ঞান ছিল, হাটটাও বিশেষ জ্ঞাম
হয়নি।

সবাইকে ফটক পর্যস্ত এগিরে দিয়ে মায়ের পাশে ফিরে এলাম।
ভামার সঙ্গে কথা বলার সময়ে মায়ের মুখে সর্বলাই কেমন ধেন
দরদ ফুটে উঠত—তোমার ওপর দিয়ে থ্ব ঝড় ঝাপটা চলেছে।
ফিসফিস করে আমাল বললেন। মুখখানা উত্তেজনায় ঝলমল
করছে। মনে করলাম মামাকে দেখে খুশি হয়েছেন বৃঞি!

এর পর মা আর কথা কননি। প্রায় তিন ঘটা পরে তিনি আমাদের ছেড়ে চলে গেলেন। শাস্ত শরতের গোধ্লি লগ্নে নার্স তাঁর নাড়ী দেখল; নাওজি, আমি, মারের ছই সস্তান আমরাও দেখলাম। জাপানের শেষ সম্ভাস্ত মহিলা আমাদের স্থন্দরী মা শেষ নিংখাস ত্যাগ করলেন।

তাঁব অপরণ মুখখানা মৃত্যুর করাল স্পর্ল বিকৃত করতে সাহদ করেনি। বাবার মৃত্যুর পর দেখেছিলাম মৃত্যুর পর হঠাৎই তাঁর মুখখানা অক্সরকম হয়ে গিয়েছিল। কিন্তু মারের মুখখানা জীবিত কালের মতই স্থলর বয়ে গেল। কেবল তাঁর নিঃখাদ বদ্ধ হ'ল, কিন্তু তাও এত শাস্ত ভাবে গেল বে, আমরা টেরই পেলাম না। আবগের দিনই মুখের ফোলাটা নেমে গিয়েছিল, এখন তাঁর গাল ছটি মোমের মৃত মৃত্যুণ দেখাছে।

ঠোঁট ছটি বেন ঈবৎ হাসিতে ক্র্রিত হয়ে আছে। জীবিত কালের চেয়েও এখন আনেক বেশী সাবণ্যময়ী দেখাছে। হঠাৎ মনে হ'ল জননী মেরীর সঙ্গে কোখায় বেন সাদৃষ্ঠ আছে।

ক্রমশঃ।

অনুবাদ : কল্পনা রায়।

শান্ত্রশাসন রইল মাথার তর্কে মিছে নাইকো ফস বন্দরে ঐ গাঁড়িরে জাহাজ বেরিয়ে পড় বন্ধুদল।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ]

[সি, এফ, আণ্ডুজ লিখিত 'What I Owe to Christ' গ্রন্থের বঙ্গানুবাদ]

गौखबरे ५ काजिएक

মাতৃনিয়োগের ব্যক্তিগত বেদনা যথন আমি পেলাম, তথন আমার চারিদিক দিবে হু:থ বেদনার অন্ত নেই। সমস্ত দক্ষিণ আফ্রিকা জুড়ে নিগৃহীত ভারতীয়ের বেদনা। অহিংস অসহযোগ আন্দোলন আবার আবস্ত হবে বলে মনে হছে। সেই শোক হু:থ কণে গৃষ্টরাজ্য সম্বন্ধে এক নূতন ভারনায় আমার চিত্ত আছেয় হোলো, মনে হোলো গুষ্টের মৃতি স্পষ্টতর ভাবে আমার চেথের সামনে যেন ফুটে উঠেছে। আমি পিতৃদেবকে লিখলাম যে এখানকার সংগ্রাম শেষ ছলেই আমি ইংলগু হয়ে ফিরব। আমার এই কাজকে তিনি সমগ্র অস্তর দিয়ে সমর্থন করেছিলেন, তাঁব ও আমার মধ্যে মনের এমন নিবিচ সংযোগ বহু বংসরের মধ্যে হরনি।

দক্ষিণ আফ্রিকার ঘটনাবলীব পবিপ্রেক্ষিতে হ'টি জিনির আমার কাছে স্পষ্ট হোলো। মহায়া গান্ধী ও তাঁব অনুচরবৃদ্দের প্রচেষ্টার মধ্যে আমি গৃঠের আদর্শকে প্রত্যক্ষ করলাম, অক্সায়কে তাঁরা পরম সহিষ্কৃতার সঙ্গে বরণ করছেন, অভভকে তাঁরা জয় করছেন শুভ দিয়ে। যীশুপৃষ্ট প্রচার করেছিলেন বিশ্বপ্রেম আর প্রাচীন ভারতে বৃদ্ধ শুনিয়েছিলেন অনস্ত করণার বাণী। আমি এই প্রথম উপলব্ধি করলাম যে এই হুই মহামানবের শিক্ষার মধ্যে কোনো পার্থকা নেই। একই চেতনায় একই আদর্শে একই ধারায় এই হুই শিক্ষা মানবসাধনা ও মানবভাগ্যের ইতিহাসকে গভীরভাবে প্রভাবিত করেছে। সাধু জেমসের পত্রের সেই মহান বাক্যটি বারে বারে আমার মনে বাজতে গাগল,—

প্রতিটি শুভপ্রসাদ প্রতিটি মঙ্গলদান তাঁব কাছ থেকে প্রেরিছ যিনি আলোকের পিতা। সকলকে যিনি সমভাবে আলো দেন, কোথাও আলো আর কোথাও ছাসা, — এ নয়।

দ্বিতীয়ত, মহাত্মা গান্ধী ও তাঁব অন্নত্বদেব এই খুষ্টাদর্শ প্রণোদিত আন্দানের পাশাপাশি খুষ্টীয় সমাজের এ কি আদশবিরোধী অক্সায় কার্য্যাবলী আমি প্রতাক্ষ করলাম! প্রাস্থ খুষ্ট বলেছেন স্থনীতির পরিচয় কথায় নয়, কাজে। বুথা বাকো নয়, প্রকৃত কর্মের মধ্য দিয়েই চরিত্রের প্রকাশ। আমি ভাবলাম,—এই যারা অত্যাচারিত অখুষ্টান আর যারা অত্যাচারী খুষ্টান,—আমার প্রভূ খুষ্ট কোন্ দলে? ধর্মের পরীক্ষা কর্মের মধ্যে। বে ধর্ম গুর্ বাক্যের উপর প্রতিষ্ঠিত, সে বাক্য যতে। প্রাচীনই হোক,—সেই ধর্ম বুখা,—সেই বুখা ধর্মকে খুষ্ট

কঢ়ভাষায় অবহল কবে গেছেন। এই অন্তঃমারশূল ধর্মকথা-সর্বন্ধ ধর্ম ছলচাতুরী ছাড়া আর কিছু নয়,—এই খুষ্টের বিচার !

জেনারাল মাট্রের সঙ্গে আলোচনার জন্ম মহাত্মা গান্ধী বথন প্রিটোরিয়াতে অবস্থান করছিলেন, তথন আমিও তাঁর সঙ্গে ছিলাম। তথন গ্রীমকাল-—উনুক্ত আকাশের নিচে আমরা রাত্রে বিশ্রাম করতান। অনেক বাত্রে আমার প্রথম দিকে বুন আসত না,—অসংখ্য তারকাথটিত বিপুল বুহস্তমণ্ডিত সানাহীন কুষ্ণ আকাশেব দিকে স্তব্ধ-বিশ্বয়ে আমি ভাকিনে থাকতাম। অনেক দিন আবার স্র্যোদয়ের বহু পূর্বে ঘুম ভেজে যেত। সমস্ত জগং তথন নিদ্রাময়। প্রভাষ-পূর্বের সেই অচঞ্চল অন্ধকারে ঘণ্টার পর ঘণ্টা আমি একলা চুপ করে বঙ্গে থাকতাম। মনে মনে ভাবতাম,কি বিগট এই সৌরজগৎ, তার অক্সতম গ্রহ এই পৃথিবীও কতো বিরাট! এই বিশট বিশ্ব-মাঝে এই অনস্ত কালসমূদ্রে মানুষের জীবন কতো দামাক্ত, কতো ক্ষণিক। যেন অস্তহীন অন্ধকারে মুহূর্তস্থায়ী একটি শিখা। নি:সীন জড়সমুদ্রে চৈতন্ত-তরঙ্গের পলকস্থায়ী **স্পানন** ৷ মামুষের জীবন সামান্ত বলেই এতো মহার্ঘ, হুম্ব বলেই এতো মূল্যবান ৷ সেই জন্মেট এই ক্ষণস্থায়ী জীবনের প্রতিটি মুহূর্ত আমাকে ঈশ্বরের কাজে ব্যব্তিত করতে গবে এবং সেই কাজের নির্দেশ ও প্রেরণা দেবেন প্রমপ্রভু গুষ্ট।

চ্জিদাসের মৃত্তি আন্দোলনের উত্তেখনা চরম থেকে চরমতর হয়ে উঠছে। মহাঝা গান্ধীর সহারতার আমি প্রত্যক্ষভাবে নিজেকে নিয়েজিত করেছি! কিন্তু সেই সঙ্গে আমার মনের নিভ্ততর স্তব্ধ থেকে আমি মহাঝা গান্ধীর অতীন্ত্রির ব্যক্তিখের রহস্ত অমুধাবন করবার চেষ্টা করাছ। গান্ধীজি সম্পূর্ণ ভাবে হিন্দু অথচ তিনি পরম পৃষ্টান। পৃষ্টধর্মের শ্রেষ্ঠ বাণা তাঁর চরিত্রে প্রকট, পৃষ্টের আদর্শে সমণিত তাঁর জাবন। এই বিষয়ে আমি অনেকগুলি চিঠি লিখেছিলাম। আমার বন্ধু প্রীযুত রামানন্দ চট্টোপাধ্যায় সেই পত্রাবলী মডার্ণ বিভিট্ট পত্রিকায় প্রকাশ করেছিলেন। মামুষ বিভিন্ন ধর্মেতে বিশ্বাসী হতে পারে, কিন্তু মানবাঝা এক। বিভিন্ন ধর্মমতে বাহিক পার্থক্য থাকতে পারে, কিন্তু মানবাঝা এক। বিভিন্ন ধর্মমতে বাহিক পার্থক্য থাকতে পারে, কিন্তু সমন্ত আপাত পার্থক্যের প্রান্তে এক গৃঢ় গভীর এক্য। মানুহে মানুহে জাতিতে জাতিতে ইতিহাসের আদিম ঐক্য শুরু এ নর, এই ঐক্যবোর অন্তর্মু থী উপলব্ধির। সকল মানুবেরই এক পরম পিতা, তিনি তাঁর সমস্ত সন্তানকেই সমানভাবে শ্লেহ করেন, প্রতি সন্তানকে প্রেমের আকর্ষণে পরম্পারের

প্রতি ও তাঁর নিজের প্রতি টানেন। এই উপলব্ধি যদি সত্য হয়, মামুষে মামুষে ভাইএ ভাইএ ভেদাভেদের স্থান কোথায় ?

ঈশবের ও ঈশব-প্রতিভ্ যীশুর এই সর্বপ্লাবী করুণার সঙ্গে আমি কোনো প্রকারের সংকীর্ণ ধর্মোন্মাদনাকে একস্থত্রে গাঁথতে পারিনি। আথানাসিয়াসের ঘোষণা সর্বদা আমার মুখে এসে বেধে গেছে। যারা পৃষ্টান নয়, তাদের মুক্তি নেই, অনস্ত নরকে তাদের স্থান, এই ঘোষণাকে আমি কথনো মেনে নিতে পারিনি, মেনে নিতে পারিনি বে ভারত ও চীনের লক্ষ লক্ষ অধিবাসী বিধর্মী বলে বর্বর, বিধর্মী বলে অন্ধকার তাদের জীবন, জীবনেব অবসানে অন্ধ নরকে তাদের গতি।

খুষ্টানদের এই ধরণের সংকীর্ণ বিশ্বাসকে খুষ্টনামের অমুপাযুক্ত বলে বছদিন আমি পবিত্যাগ করেছিলাম। এখন গান্ধীজিকে আমার আত্মায় ঘনিষ্ঠতম বন্ধু বলে গ্রহণ করলাম, তাঁকে অকপটে খুলে বললাম আমার সমস্তার কথা। যে ঘোষণা অখুষ্টানকে নরক্ষাত্রী করে, সেই ঘোষণা আমি মনে-প্রাণে বিশ্বাস করিনে, অথচ খুষ্টানথাজক হিসেবে উপাসনাক্ষেত্রে সেই ঘোষণাকে আমাকে উচ্চারণ করতে হয়, এই দুল্ম থেকে মুক্তি পাব কেমন করে গুমহাত্মা গান্ধী আমার এই সমস্তার কথা অতি নিরিষ্টভাবে ফনলেন, আমার ঘুর্বল অন্তর্ম কর্মা তিনি আমাকে তিরস্কার করলেন না, বয়ং তিনি ধৈর্ম ধরবার উপদেশই দিলেন। বললেন,—এমন দিন আসবে যেদিন খুষ্টসেবার উদারতর ক্ষেত্রে আপনিই আমার আহ্বান আসবে, সেদিন ধর্মীয় অনুশাসনের শীর্ণ গণ্ডী আপনিই আমি অতিক্রম করতে পারব। লণ্ডনে প্রত্যাবর্তনের পর দেখানে শ্রীযুক্ত গোখেলের সঙ্গে এই এক বিবরে আমি আলোচনা করেছিলাম, তিনিও আমাকে ঐ এক উপদেশ দিয়েছিলেন। শেষ পর্যন্ত শান্তিনিকেতনে রবীক্সনাং ঠাকুরের অনুগ্রহে আমি মুক্তিলাভ করতে পেরেছিলাম। স্কেকাছিনী আমি পরে বিবৃত করব।

বাহিবে ঘটনার আবর্ত,—সেই সঙ্গে মনের মধ্যেও চিন্তার আবর্ত ।
গভীরতর অভিনিবেশের সঙ্গে আমি আমার ধর্মগ্রন্থ পাঠ করতে
লাগুলাম,—খারে ধীরে পরিচ্ছন্ন হতে লাগল আমার অন্তর্দৃতি,
বীশুধৃত্তের স্বচ্ছ সরল স্পাই বাণা আমার প্রাণে এসে বান্ধতে লাগল।
দক্ষিণ আফ্রিকার সমস্থাবলীর সম্মুখীন হরে আমার আন্চর্ম দৃতি মেলে
আমি যেন নৃতন আলোক দেগতে পেলাম। সে লাতিবিভেদ সংকীর্ণ
কুসংস্কারের বিরুদ্ধে স্বয়ং যীশু তাঁর ক্লিষ্ট অন্তরের কঠিন ধিক্লার
উচ্চারণ করেছেন, সেই ভাতিভেদ ও সেই কুসংস্কার তাদের কুৎসিত
কুটিল প্রশ্ন নিয়ে পদে গদে আমার সম্মুখবর্তী হতে লাগল। আমি
স্পাই দেখতে পেলাম ধর্মভীক্ত ফ্রীশীর উদাহরণস্বরূপ মুদ্ধ
সামারিটানকে কেন যীশু গ্রহণ করেছিলেন, কেন তিনি ফরীশীদের
মনে প্রবলতর আঘাত দিয়ে ঘোষণা করেছিলেন বে মন্তব্যবসারী
ও পানীরাও তাদের পূর্বে স্বর্গরাজ্যে প্রবেশাধিকার পাবে।

এই সমস্ত চিন্তা জাতাভিমান ও জাতিবৈরিতার বিরুদ্ধে আমার মনকে দৃঢ়তর করে তুলল। আমি বুঝলাম, এই অঞ্চারের বিরুদ্ধে সমস্ত শক্তি নিয়ে আমাকে দাঁড়াতে হবে। এ জন্মে হয়তো আমাকে



আমার স্বস্থাতির বিক্লাচরণ করতে হবে, খুটানদের বিপক্ষে যেতে হবে, তবু পিছপাও হলে চলবে না। খুটের নামে বিশ্বের দরবারে আমি সত্য সাক্ষ্য দেব, আপন জনের বিমুখতায় ভর পেরে পিছিরে আসার আমার উপার নেই। খুটান কা'কে বলে? আমি খুটান-সমাজে জন্মগ্রহণ করেছি, খুটান-সমাজের স্বযোগ স্ববিধা লাভ করে বড়ো হয়েছি, খুটান-গির্জার প্রবেশের অধিকার পেয়েছি, অতএব আমি খুটান ? খুটপ্রেমের একটি মাত্র পরীক্ষা। সমাজ সংসারের সমস্ত স্বার্থ নির্দেশ নির্বিশেষে অকুতোভরে বিবেকের নির্দেশকে যে অমুসরণ করে সেই খুটান। মামুবের নির্দেশকে অতিক্রম করে ঈশ্বর নির্দেশকে মাক্ত করাই খুটানের এক মাত্র পরীক্ষা। এই নির্দিষ্ট পথে যে যাত্রা করে সে সমাজ বন্ধন মানে না, সে জাতিস্বার্থ মানে না। আত্মীরের আহ্বানেও সে কান পাতে না। সে চলে পরম পিতার নির্দেশে, সে তথু তার পরমাজ্মীর পরম পিতাকেই জানে। খুটের আপন জননী ও ভাতারা যথন তার সঙ্গের কথা বলতে চেয়েছিল, তথন তিনি বলেছিলেন,—

'কে আমার মাতা ? কেই বা আমার ভ্রাতা ? ঈখরের আজা যে পালন করে সেই আমার ভ্রাতা, সেই আমার ভ্রগিনী, সেই আমার জননী।'

আজ আমার চারি দিকে যেমন জাতিগত কুসংস্কার সেই কুসংস্কার বীশুর প্রথম শিষ্যদের মনেও ছিল। তাঁরো তাঁদের স্ক্রায়ভূতি দিয়ে উপলব্ধি করেছিলেন যে, যীন্তর ঐশী প্রেরণা একের পর একে এই সমস্ত কুসংস্থারের বাধাকে বিদীর্ণ করে এগিয়ে চলেছে। তাঁরাও তাঁদেব মন থেকে এই সমস্ত কুসংস্কারের মূলোৎপাটন করে থুষ্টের অহুবর্তী इरम्रहिल्लन । वृष्टेरे छाँप्पत्र प्रिथरम्हिल्लन एडम-वाधाविशीन देवत-নির্দিষ্ট পথ। যারা সমাজ্বচ্যুত, যারা অবজ্ঞাত, মন্দিরে যাদের স্থান নেই, যীত তাদের কাছে ডেকেছিলেন, কোলে স্থান দিয়েছিলেন। এই মহান্ দৃশ্য চর্মচকু মেলে দেখেছিলেন প্রভুর প্রথম অমুগামীর দল। সর্ব সুযোগ থেকে বঞ্চিত করে সমাজ যাদের দূরে পরিহার করেছে প্রভু তাদেরই ভালোবাসতেন অধিক,—এই দুখ তাঁর শিষ্যরা গুষ্টের প্রত্যক্ষ জীবনধানা থেকে লক্ষ্য করেছিলেন। প্রত্যক্ষ অভিজ্ঞতার মধ্য দিয়ে মৃঢ় জাত্যভিমানকে জীৰ্ণ বল্লের মতো পরিহার করার শিক্ষা তাঁরা লাভ করেছিলেন। তাঁরা দেখেছিলেন, সমাজ বাদের ঘুণা করেন, পুষ্ট তাদেরই প্রেম করেন, সমাজ বাদের পরিত্যাগ করে, পুষ্ঠ দেন তাদেরই আশ্রয়।

খৃষ্টের জীবনের মধ্য থেকে ভক্তগণ ঈশবের জঙ্গুলি নির্দেশ প্রোত্যক্ষ করেন। দূরকে করে। জাপন, পরকে করো ভাই,— ঈশবের এই মহামন্ত্রে দীক্ষিত হলেন শিষ্যগণ। এই শক্তিমন্ত্রে উদ্ধ হরে তাঁরা গৃহবন্ধন পরিহার করলেন, স্থক করলেন ঈশব-প্রেরিতের অভিযান। সমাজ তাঁদের পরিত্যাগ করল, সমাজের গণী তাঁরা অভিক্রম করলেন নির্ভর আনন্দে।

পদে পদে তাঁদের কতো আতংক, কতো বিপতি ! প্রাচীন ইছদী গির্জা মনুষ্য সমাজকে ইছদী ও বে ইছদী নয়, অর্থাং 'ক্রেণ্টিল' এই হুই ভাগে ভাগ করে রেখেছিল। সেই গণ্ডী পার হরে দূর দুরান্তরে তাঁরা এগিয়ে চললেন। প্রাচীন জাতিগত ও ধর্বগত কুসংস্কারকে পদে পদে তাঁরা ভাততে ভাততে চললেন। বতো_তাঁরা অগ্রসর হতে লাগলেন ততো তাঁদের আছর দৃষ্টি সমুক্ষল হতে লাগল, স্থাবাকে যে রূপে পূর্বে কথানো করানা করেন নি, সেই অনিক্যাস্থক্ষর রূপ তাঁদের চোখে স্পাঠ হরে উঠল,—পৃষ্ঠবাণীর যে উদার মহৎ অর্থ পূর্বে তাঁরা বৃথতে পারেনি, সেই অর্থ প্রেতিভাত হোলো তাঁদের মনে। গৃষ্ট বলেছিলেন, "ঈশ্বরই করুণা"। এই বাক্য শুধু আমার নিরুদ্ধ উপাসনাগৃহের কঠিন দেয়ালে লিখে রাথার নয়—এই বাক্যের অমোখ মান্ত্রে বিশ্বচরাচর মন্ত্রিত হচ্ছে, সেই মহাধ্বনির প্রতিধ্বনি তাঁদের হাদয়ে এসে বাজতে লাগল। এই মন্ত্র প্রাক্তন বিশ্বাসের বন্ধ ধার উন্মোচন করে দেয়, অভ্তপূর্ব অকল্পনায় সাধনার পথে মানবমনকে আহ্বান করে নিয়ে বায়।

প্রেমসাধনার এই বাত্রাপথে ত্ব-একবার থমকে দাঁড়ালেন শিষ্যগদ, প্রতিনিবৃত্ত হলেন ত্ব-একবার। উত্তেজনা ও চিত্ত-দোর্বল্যের বলে পিটার একবার খুষ্টভক্ত 'জেণ্টিল'দের সঙ্গে আহার করতে আপত্তি করলেন। সেই পরাজয়ের পঙ্ক থেকে তাঁকে উদ্ধার করলেন পল। কিছু পিছু তাঁরা শেষ পর্যন্ত হটলেন না, আশ্চর্য তাঁদের সাহস, আশ্চর্য তাঁদের নিষ্ঠা। তাঁদের সামনে নিত্য-সমুজ্জল খুষ্টমূর্তি,—নিত্য-নৃতন ধার খুলে নিত্য-নৃতন পথ সন্ধান দিছেন প্রত্ন, বলিষ্ঠ হাতে ভেঙে দিছেন যুগস্ট কঠিন শৃংখল, মোচন করছেন যুগ-সঞ্চিত আবর্জনা। খুষ্টের প্রেম পরমপিতার আশীর্বাদ, গোষ্ঠীর গণ্ডাকে অভিক্রম করে মানবসমাজের বিভিন্ন বর্ণ ও বিভিন্ন জাতির মধ্যে পরিব্যাপ্ত হছে।

খৃষ্ট সভ্যতার প্রাথমিক অভিবানের সংক্ষিপ্ত পরিচয় হোলো এই।
এই অভিবান মানব-ইতিহাসের এক মহৎ প্রগতি। এই
অভিবান ও সংস্থারের বিরুদ্ধে এই সংগ্রাম মানবাস্থাকে এক উদার
মুক্তির এম্বর্য দান করেছে।

দক্ষিণ আফ্রিকান্ডে দেখলাম, উদার সর্বমানবিক খুষ্টীয় সভ্যতা জ্বাতিভেদের আঘাতে খান্ খান্ হতে চলেছে। খুষ্টের আদি শিব্যদের সমস্তা ও অভিক্রতা আমার নিজের জীবন দিরে আমি বেন উপলব্ধি করলাম। আমি বুঝলাম, আমাকেও পিছিরে পড়লে চলবে না, শংকা নিয়ে কুঠা নিয়ে দুরে সরে থাকলে চলবে না। খুষ্টের সেই আদি শিব্যদের মতো নির্ভর বলিষ্ঠ হতে হবে আমাকে। যুষ্ট করতে হবে আমাকে। খুষ্টের উদার আহ্বানকে যারা জাতিভেদের সংকীর্ণ কোলাহলে লুগু করতে চায়, সাধু পলের মতো তাদের মুখোমুখি দাঁড়াতে হবে আমাকে।

এও আমাকে স্বীকার করতে হবে বে, বারা নিজেদের খুষ্টান বলে না. তাদেরও অস্তরে খুষ্ট আছেন। তাদেরই দলে আমাকে বোগ দিতে হবে,—জাতির নামে ধর্মের নামে বারা মামুহকে মামুহের কাছ থেকে পৃথক করে রাথে তাদের দলে আমার থাকলে চলবে না। আমি জানি আমার পক্ষেই ঈশ্বর আছেন,—বে ঈশ্বর ব্যক্তির গর্বকে প্রশ্রম দেননা, বে ঈশ্বর সমভাবে কক্ষণা করেন সর্বমানবকে।

এমনি পণ যে কেবল আমি একাই করেছিলাম তা নর। দক্ষিণ আফিকার আবো অনেক সহাদয় ও ধর্মপ্রাণ শেতকার খুষ্টান আমার মতে একমত ছিলেন। মহাত্মা গান্ধী ও তাঁর পদ্দীর নিঃবার্থ আত্মত্যাগত্রত লক্ষ্য করে তাঁরা বলেছিলেন,—'এই সাধ্দশ্শতি প্রকৃত খুষ্টান, আমাদেব চেয়ে অনেক মহৎ খুষ্টান এবা।' একখা ওরু কথার কথা নর, এই কথার মধ্য দিয়ে প্রকৃত সভ্যকে তাঁরা

স্বীকৃতি দিয়েছিলেন। গান্ধীর অমুগামী ভারতীয় অহিংস সভ্যাগ্রহীদের হিন্দু বা মুসলমান ঘরে জন্ম হলেও তাঁদের খুষ্টীয় জাবনাদর্শ বে কোনো খুষ্টানের চেয়ে অনেক বড়ো। নৃতন করে ধর্মগ্রন্থ পাঠ করতে করতে ও খুষ্টীয় ধর্মবিশ্বাস সম্বন্ধে চিম্তা করতে করতে এই কথা কেবলই আমার মনে বাজতে লাগল।

আমার মনের মধ্যে এক বিপ্লব আবর্তিত হতে লাগল অবিরাম। স্থাদেশে 'রবিন হুড বে'-র কাছে একদিন বিশপ ওরেষ্ট্রকটের সঙ্গে ভ্রমণকালান তাঁর করেকটি কথা বারে বারে আমার মনে পড়তে লাগল। ছজনে পাশাপাশি আমরা বেড়াছিলাম। হঠাং তিনি স্তব্ধ হরে দাঁড়ালেন লাঠির মাথায় ছ-হাতের ভর দিয়ে। তারপর বলে উঠলেন, মানবজাবনের সমস্ত ক্ষেত্রে যদি থৃষ্টকে অবলোকন ক্রতে পারো, তবেই প্রেক্ত তাঁকে অস্তবের মধ্যে দেখতে পাবে। তা যদি না পারো ভাহলে তাঁর সর্ব-অক্তিম্বরাপী অথশু অক্তিম্বক স্বীকার করতে পারলে না, বুঝতে পারলে না মানবপুত্র কেন তাঁর নাম।

এই কথা ক'টি বলার পার বিশপ ওরেষ্টকট করেক মুহূর্ত আনার দিকে স্তব্ধ দৃষ্টিতে তাকিয়ে রুইলেন, অনুভৃতির উদ্বেলনে তাঁর স্থন্দর ফুটি চোথ অঞ্চতে ভরে গোল। অনুভৃতির বহিঃপ্রকাশ তাঁর পক্ষে বিরল ছিল। তাঁর দেদিনকার অঞ্চ তাঁর গভার অস্তবের অমুভধারা।

সমস্ত ধর্মমত ও সমস্ত বিশ্বাস ও সংস্কাবের উধ্বের্ব স্থান। অভিজ্ঞতার অসংখ্য উন্মৃক্ত দ্বারপথে সত্যের আলো এসে আমার দৃষ্টিকে অভিধিক্ত করতে লাগল। আমার হাইচার্চ ধ্যানধারণায় যেটুকু পরিবর্তন এ পর্যস্ত হয়েছিল, তা এই সত্যদৃষ্টির কাছে নিতান্ত সামাক্তমাত্র। কিন্ত এখন থেকে সত্যের আলোকে আমার বাত্রা। এই বাত্রাপথে কুসংস্কাবের অন্ধকাবের কোনো স্থান নেই। প্রত্যক্ষ বাস্তবের আঘাতে যে বিশ্বাস অসত্যের উপর প্রতিষ্ঠিত তাকে আঁকড়েরাথা সম্ভব নয়, সেই বিশ্বাস বহু-অভান্ত ধর্মবিশ্বাস হলেও।

ধর্মসংশ্বারের নিগড়ে যারা আবদ্ধ হয়ে থাকতে চান, তাদের মনের ভাব আমি ব্যতে পারি। সংশ্বারের একটা নির্দিষ্ট ও নিরাপদ গণ্ডী আছে। এই গণ্ডীর মধ্যে মনকে আবদ্ধ রাখায় কোনো রক্ষাট নেই,— নিতাস্ত নিরুপদ্রব এই ব্যবস্থা। আমারও মন সহজে এই গণ্ডী পার হতে পারেনি,—এই গণ্ডীর আকর্ষণই আমাকে হাই চার্চের অবলম্বন থেকে যুক্ত হতে বাবা দিচ্ছিল। কিছ যে মন মুক্তি চায়, কোন্ অনুশাসন তাকে বাবা দেবে? সমাজচ্যাতির কোন্ ধমক তাকে ভরাবে?

বাইবেলে এক কথা বনণীর কাহিনী আছে, সে বিখাস করেছিল যে যীশুর বন্ধাঞ্জল স্পর্শ করলেই রোগমুক্ত হবে। যীশু তাকে ভর্পনা করেননি, করুণা করেছিলেন। যীশুর বন্ধাঞ্জল স্পর্শ সেবছিলেন। যীশুর বন্ধাঞ্জল স্পর্শ সেবছিল, আপন বিখাসে রোগমুক্ত হয়েছিল। তার এই দৃঢ়বিখাসের মধ্যেও ভিক্ষার দীনতা ছিল। এই দীনতা তার বিখাসকে পার্থিব সংসারের সঙ্গে আবদ্ধ রেখেছিল। রোমক সেট রিয়নের অস্তুরে বে বিখাস ছিল তার সমকক্ষ হতে পারেনি। সে বলেছিল,— প্রভু, ভূমি শুরু বলো, তোমার বাণীতেই আমার ভূত্য ক্ষম্ভ হবে। যীশুর শ্রেষ্ঠ আশীর্বাদ এই মহাবিখাসী ভক্ত লাভ করেছিল। তিনি বলেছিলেন,— শতাই, এমন বিখাস আমি ইপ্রাইলে কোখাও দেখিনি।

উন্নত করো তোমার হাদয়—এই মহাবাণীর অর্থ কী ? আমার

আত্মিক দৃষ্টিকে শুধু যে স্বর্গরাজ্যের দিকে তুলতে হবে তাই নয়,—
পরমাত্মার প্রসাদ নীরবে কেমন করে সর্বমানবের অন্তরকে নিবিক্ত করে, জাতিধর্ম নির্বিশেষে প্রতি মানবান্ধাকে কল্যাণ ও শুভকর্মের পথে পরিচালিত করে, তা লক্ষ্য করতে হবে, তবে হবে অস্তরের উন্মালন।

মহাত্মা গান্ধী ও জেনারাল স্মাটন সংক্রান্ত এই সমাচার একটি কাহিনী অতি অপূর্ব ! অন্ত বিষয় অবতারণা করার পূর্বে সেই কাহিনীটি এখন বলতে চাই।

দক্ষিণ আফ্রিকার কারাবাদে ভারতীয় নারীদের মধ্যে সবচেয়ে কছঁভোগ করেছিলেন শ্রীযুক্তা গান্ধী। নাটালে পৌছানো মাত্র আমি ক্লেলে গিয়ে তাঁর সঙ্গে দেখা করার চেষ্টা করি, কিছু তিনি তথন এত অন্তস্তু বে তাঁর সঙ্গে সাক্ষাং করা সন্তব হয় না। যতোদিন আমরা প্রিটোরিয়ায় ছিলাম, কারাপ্রাচীরের অন্তর্বালে তাঁর অস্তস্থতার ছন্দিন্তা সর্বক্ষণ আমাদের মনে স্নোগছিল। সরকারের সঙ্গে আলাপ আলোচনা যখন শুভপথে এগিয়ে চলল, তথন অন্ত বন্দীদের সঙ্গে সঙ্গে শ্রীযুক্তা গান্ধীও মুক্তি পেলেন। কিন্তু তাঁর স্বাস্থ্য ইতিমধ্যে অত্যক্ত ক্ষতিগ্রন্ত হুর্যেছিল, দিনে দিনে তাঁর দেহ ত্র্বল থেকে ত্র্বলতর হতে লাগল।

এদিকে অবিদ্যারে প্রিটোরিয়া পরিত্যাগ করা তথন আমাদের



পক্ষে সম্ভব নয়। বিরোধের সম্পূর্ণ মীনাংসা তথনো হয়নি,—করেকটি প্রশ্ন তথনো রয়ে গেছে,—বে কোনো মুহুর্ত্তের সংকটে সব ব্যবস্থা তেতে পড়া বিচিত্র নয়। ধীরে ধীরে সব প্রশ্নের মীনাংসা হোলো, বাকি রইল শুধু চুক্তিপত্রে জেনারাল? মাটসের একটি মাক্ষর। এদিকে জেনারেল মাটস তথন দেশের এক আসর সাধারণ ধর্মবা নিয়ে ভ্যানক ব্যস্ত। তাঁর এই মাক্ষরটি আদায় করতে কতোদিন দেরি হবে তাব ঠিক নেই। ঠিক সেই সময়ে মহাত্মা গান্ধীর কাছে ভারবার্তা এল,—কার ত্রী মৃত্যুশযায়। আমি গান্ধীজিকে অনুরোধ করলাম,—কালবিলম্ব না করে তিনি জীর কাছে চলে ধান, চুক্তিপত্রে সই আমি যথাসময়ে করিয়ে নেই। কিন্তু আমার কথায় তিনি কর্ণপাত করলেন না। ব্যক্তিগত প্রেক্তিনে জাতীয় কর্তব্য থেকে বিচ্বাত হবার মানুষ তিনি নন। কর্তব্যনিষ্ঠায় তিনি প্রস্তাবের মহে! অটল, তাঁকে টলানো অসাধ্য আমার পক্ষে, তাঁর তথনকার বিপুল মার্মন্ত্রণ আমি আমার নিজের মনে অনুভব করতে পেরেছিলান, এইটুকু মাত্র।

সেদিন রাত্রে কিছুতেই আমার চোথে ঘুম আসছিল না।
মধ্যরাত্র যথন পার হয়ে গোল তথন হঠাং আমার মাথার একটা চিস্তা
এল। আগামী কাল প্রান্থায়ে উঠেই জেনারাল স্মাটসের সঙ্গে
সাক্ষাং করে তাঁর সইটা আদার করার চেষ্টা করি না কেন? আগামী
দিনের প্রথম কর্ত্তব্য মনে মনে স্থির করে নিয়ে আমি শান্তিতে চোথ
ব্রজ্ঞলাম।

প্রদিন প্রভাতে ঠিক ছ'টা নাগাদ আমি ইউনিয়ন বিজিংসে পৌছলাম। আমি জানতাম যে এই ধর্মঘট আন্দোলন দমনের জন্ম জেনারাল খাটস প্রভিদিন অতি ভোরে পরিভ্রমণে বার হয়ে ান। ঠিক সাতটার সময় তিনি উপস্থিত হলেন এবং আমার মুখে সমস্ত কথা শুনে মর্নাহত হলেন। মুহূর্তে তাঁর গভীর মানবতাবোধ জাগত হোলো। আমাব কাছ থেকে চুক্তিপত্রটা তিনি দেখতে চাইলেন। চুক্তিপত্রের উপর একবার চোথ বুলিয়ে নিয়ে তিনি জিজ্ঞাসা করলেন, সমস্ত প্রেইউংলা ঠিক ঠিক আছে তো এর মধ্যে?

আমি বললাম-থা, আছে।

তংক্ষণাং চৃক্তিপত্রটি তিনি সই করে দিলেন। পরম আনন্দিত মনে আমি মহাক্ষা গান্ধীর কাছে ফিরে চললাম। সেই দিনই আমরা ভারবান থাত্রা করলাম। ট্রেণে যেতে দেতে পথিমধ্যেই স্কুসংবাদ পেলাম দে শ্রীযুক্তা গান্ধীর অবস্থা একটু ভালোর দিকে।

দক্ষিণ আফিকা সম্বন্ধে আমার এই বচনার পাঠকগণ মনে রাথবেন বে, এসব ঘটনা প্রায় কুড়ি বংসর পূর্বেকার কথা। তার পর থেকে দক্ষিণ আফিকার খৃষ্টায় সংগজের বিভিন্ন শাখায় উল্লেখযোগ্য নব জাগরণ ঘটেছে। ইংরেজ ও ওলন্দাজ, উভয় জাতির উৎসাহী নরনারীর দল ঘনিষ্ঠতর ভাবে খৃষ্টাম্পরণে বতা হয়েছেন। খৃষ্টাশিয়ত্বের প্রকৃত কর্তব্যবোধের আনন্দো বিভিন্ন খৃষ্টানগোষ্ঠী উব্দ্ধ হংছেন। অক্সফের্ড গ্রুপ আন্দোলন তরুণ হুদ্বে নব উদ্মাদনার সঞ্চার করছে। এই সমস্ত দেখে মনে হর যে, জাতিভেদ ও বর্ণবৈষ্ম্যের পাপগণ্ডী বোধ হয় দক্ষিণ আফিকা খেকে ধীরে ধীরে বিদ্বিত হবে। খৃষ্টজীবনের আনন্দিত আলোকে জাবার ধর্মবিশাসীর মনের কালো জপস্ত হবে, সেখানে বিরাজ করবে খৃষ্ট-ছাদরের প্রেম-প্রভা।

ভারতীয় সমস্তার মীমাংসার পর আমি ইংলণ্ডে যাত্রা করলাম। গোপেল তথন কর অবস্থার লণ্ডনে অবস্থান করছিলেন,—
তাঁর সঙ্গে দেখা করার উদ্দেশ্ত ছিল আনার্ম। তাছাড়া উদ্দেশ্ত
ছিল পিতৃদর্শন। আমার মাতৃবিয়োগের পর আমার বাবা অত্যস্ত
ছর্বল ও অসহায় হয়ে পড়েছিলেন,—এই শেষ বয়দে আমার সঙ্গে
সাক্ষাতের দিন গুণছিলেন। দক্ষিণ আফ্রিকার ঘটনাবলী তিনি গভীর
মনোবোগের সঙ্গে অমুসরণ করেছিলেন। তাঁর কাছে শুনলাম বে,
আমার মা-ও তাঁর শেষ দিন পর্যস্ত দক্ষিণ আফ্রিকার আমার
কার্যকলাপের থবর রেথেছেন ও আমাকে আনীর্বাদ করে গেছেন।
আমাদের মধ্যে স্নেহমরী জননী আর নেই,—এতা দিন পরে বাড়ি
কিরে এই শোকের মধ্যেও আত্মীয়-মিলনের আমনদ্দ উজ্জ্বল হয়ে উঠল।

এর পর আমি ভারতবর্ষে ফিরে এলান,—মনে মনে এই স্থির প্রতিজ্ঞা নিয়ে যে কেম্বিজ মিশনের স্থানীয় গণ্ডী আমাকে অতিক্রম করতেই হবে এবাব,—নইলে উদায়ত্তর পৃথিবীর পথে কেমন করে পা বাড়াব ?

বছ বৎসর ধরে আমি এই পদক্ষেপের বিষয় গভীর ভাবে চিন্তা করছিলাম এবং ঈশ্বরের পথ-নির্দেশের প্রত্যক্ষা করছিলাম। এই সঙ্গে এই কথা সর্বদা আমার মনে জাগত যে, ভারতবর্ধের জনগণের সঙ্গে আমার ভাগ্যকে সংযুক্ত করতে হবে, পরিত্যাগ করতে হবে বিদেশী সংস্থাপনের উপর নির্ভরশীলতা। জনগণের প্রয়োজনে নবতর কর্তব্যের আহ্বানের জক্তে নিজেকে স্বাধীন করতে হবে। পৃথিবীর অক্যাক্ত স্থানে যেখানে ভারতীয় চুক্তিবদ্ধ শ্রমিকরা রয়েছে, সে সমস্ত স্থানে আমাকে যেতে হবে ও ভারতীয় শ্রমিকদের কল্যাণে আল্পানিয়োগ করতে হবে,—এ সম্বন্ধে আমি নিঃসংশয় হয়েছিলাম। অতএব মিশনের বন্ধন আর আমার ভবিষাৎকে বেঁধে রাখতে পারবে না। যদি যীশুর পথে একান্ত ভাবে নিজেকে পরিচালিত করতে পাবি তাহলে নোঙরের বন্ধন ত্যাগ করে হস্ত র সমুদ্রে ভাষাতে হবে জাবনতারী।

কেন্ব্ৰিজ ভ্ৰাতৃসংখ ও তাঁদের পরিচালক অ্যাল্নটি স্পষ্টই
বৃষছিলেন বে ঈশ্বর নবকর্মপথে আমাকে আহ্বান করেছেন। অত এব
এই ভাতৃসংঘ থেকে আমি বখন বার হয়ে এলাম তখন তাঁদের সঙ্গে
সম্প্রীতিচ্যুতির কোনো কারণ ঘটল না। এর পূ:র্ব আমি অধৈর্য
উংসাহের সঙ্গে এমন অনেক কাজ করেছি যাতে বিশপ ও অ্যাল্নাট
নিতান্ত বিত্রত হয়েছেন। আমার অনেক ব্যবহার তাঁদের পক্ষে সন্থ
করা শক্ত হয়েছে, তবু আমার প্রতি অন্তরের অকুপণ দাক্ষিণ্যের
কখনো হ্রাস হয়নি, গভার প্রেমান্ন্ভ্তি দিয়ে তাঁরা আমাকে বৃষতে
চেষ্টা করেছেন।

ভারতবর্ধের নাড়ীতে তথন নবীন জীবন-স্পদ্দন, প্রাচীন সমাঞ্চে জেগেছে বন্ধন-মোচনের সাড়া। পৃষ্টীয় বিশাসেরও নৃতন প্রীক্ষার প্রয়োজন তথন স্থাগত, থৃষ্টীয় স্মাজের নৃতন পথে যাত্রা করার দিন। আমার পক্ষে আর বিলম্ব করার উপায় ছিল না, বিলম্বের ফল মর্নাঙ্কিক হোতো আমার পক্ষে।

স্থীল কদের কাছ থেকে বিদায় নেওয়াই হোলো আমার পক্ষে সব চেয়ে শক্ত। তিনি ছিলেন আমার সহোদর ভাতার অধিক। ভার দেহে তথন এক মর্যান্তিক বাাধি বাস। বেঁধেছে, যে ব্যাধি দিনে দিনে তাঁর জীবনীশক্তিকে গ্রাস করছে। তাঁর এই ব্যাধির কথা व्यावात आक्षेत्रशुँउद्भक् श्रष्ट्रताक्ष कक्षतः!



ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড একটি মুপরীক্ষিত স্বাস্থ্যপ্রদ টনিক। পৃথিবীর সর্বত্র স্বাস্থ্যসচেতন ব্যক্তিরা নিয়মিত এটি নিজেরা ব্যবহার করেন ও তাঁদের ছেলেমেয়েদেরও খাওয়ান। ওয়াটারবেরীজ কম্পাউণ্ড এমনসব প্রয়োজনীয় পৃষ্টিকর

উপাদান দিয়ে তৈরী যা আপনার ও আপনার পরিবারের সকলের বল, স্বাস্থ্য ও আনন্দোজ্জ্বল জীবনের জক্ম বাড়তি শক্তি যোগায়।

ওয়াটারবেরীজ কম্পাউগু অবিরাম কাশি, সদি ও বৃকে শ্রেমা থামায়। রোগমুক্তির পর হৃতস্বাস্থ্য ক্রত পুনক্ষরারের জন্ম চিকিৎসকেরা অমুমোদন করেন।



এখন চুরি-নিরোধক ক্যাপ এবং নৃতন লাল লেবেলবুক্ত বোতলে পাওরা যায়।

একণে লাল মোড়ক বন্ধ করিরা দেওরা হইরাছে।

চমৎকার স্থাত্ব

ওয়াটারবেরীজ কম্মাউও

মেরন করে নিজেকে সুস্থ রাধুন

অবন্ত তথন আমি জানতাম না। তিনি নিজে জানতেন এই কালরোগের কথা, কিন্তু কারো কাছে প্রকাশ করেননি। অপরিসীম ছিল তাঁব নিংমার্থতা। তাঁর নিজের প্রয়োজনে একদিনের জক্তেও তাঁর কাছে আনাকে ধরে বাগতে তিনি চাননি।

স্থামার জীবনের এই প্রম পরিবর্তন কী ভাবে এল তা বোঝাতে গোলে পিছনের একটি ঘটনা বিবৃত করা দরকার।

ভারতবর্ষে আগমনের পর থেকে আমার দৃষ্টির সম্পৃথে দীপ্ত শিখার মতো নিত্য-উজ্জ্ল হয়ে আছে রবীন্দ্রনাথ ঠাকুরের নাম। ভারতীর সাহিত্য ও দার্শনিক চিন্তার শেষ্ঠতম ও মহত্তম ঘিদর্শন রবীন্দ্রনাথ। মহং তাঁর রচনাবলী ভেমনি মহান তাঁর জীবন। দিপ্তাতে অবস্থান কালে তাঁর সঙ্গে চাজুব পরিচধের স্থানাগ আমি পাইনি, কেন না, দিল্লী থেকে কলিকাতা অনেক দৃর। দৃর থেকে তাঁর কথা আমি উইলি পিয়াস্নির মুগে অনেক ভুনেছিলাম। উইলি আগে বন্ধ প্রদেশে ছিল ও ববীন্দ্রনাথের সংস্পর্শে এসেছিল। গভীর প্রশ্না ও প্রেম সহকাবে উইলি আমার কাছে রবীন্দ্রনাথের কথা বলত। ববীন্দ্রনাথের সঙ্গে পরিচিত হবার উদল্লীব বাসনা আমার ছিল। সেই বাসনা চরিতার্থ হোলে। ভারতবর্ষে নহ,—লগুনে।

১৯১২ সালের একটি চমংকার গ্রীমসন্ধ্যা। স্থাম্টেড হীথের কাছে ভাঁর গৃতে রলেনপ্রাইন আমাকে নিমন্ত্রণ করেছেন। বরীন্দ্রনাথ তথন লগুনে। তিনি রলেনপ্রাইনের গৃতে আসছেন। ডবলু বি যেটস-ও আদবেন। 'গীতাঞ্জলি' নামক ববীন্দ্রনাথের এক নৃত্রন পাঞ্সিপির কবিভাবলী পাঠ করা হবে।

সেদিন কবিকে আমি প্রথম দেখলান, কাঁব কাব্যস্থা পান করলাম ভারতের অন্তর-গভারে যে মহান্ বিশ্বসংস্কৃতি নিহিত, সেই সংস্কৃতির স্কানিবিড় মাধুর্যের পরিচর আমি আমাব স্তর অস্তরের মধ্যে অমুভব করলাম। কবি তথনো লণ্ডনে অপরিচিত, তাছাড়া তিনি তথন অস্ত্র। মেটস যথন গীতাঞ্জলি আর্ত্তি করছিলেন কবি তথন উার ক্লোবস্থলভ বিনয় ও অপরিচিতের ব্রীড়া নিমে প্রায় সকলেব দৃষ্টির অস্তরালে এক কোণে সরে বসেছিলেন। আমি যথন শেস পর্যন্ত তাঁর সঙ্গে কথা বলার স্থযোগ পেলাম, তথন আমাব স্কান্য কানায় ভবে উঠেছে, আমাব সে মনোভাব কথা দিয়ে প্রকাশ করা অসম্ভব। তাঁর কাব্য-সোলবের জন্ম মৌথিক,ধন্যবাদ জ্ঞাপন আমার পক্ষে সম্ভব হোলো না। কবিও বৃঝি আপন অমুভ্তি দিয়ে আমার অস্তরের অমুভ্তি উপলব্ধি করলেন।

সেদিন বাত্রে স্থামষ্টেড হীথে আমি ঘন্টার পর ঘন্টা গ্রে বেড়ালাম, তথু ভারতে লাগলাম, আজ সন্ধাার এক। আমি দেখলাম, একা এ কী আমি ভনলাম,—এই অভিজ্ঞতার সঙ্গে আমার জীবনের সম্পর্ক কী ? বাহিরে রাত্রির অন্ধকার,—কিন্তু আমার অন্তর আকাশ যেন এক আশ্রুর আলোকছটোর উদ্ভাসিত হয়ে গেল।

সেই দিনই বাত্রে শ্যা গ্রহণের আগে একটি বিষয়ে আমি স্থির নিশ্চয় হলাম। কবি যদি অসুমতি দেন তাহলে আমি তাঁর শান্তিনিকেতন আশ্রমে স্থান নেব। দিল্লীব বিদেশী মিশনে বসে এই ভারতবর্ষকে কিছুতেই আমি চিনতে পারব না। শান্তিনিকেতনের পটভূমিকার এই বিচিত্র মহাদেশ নিবিড় ভাবে আমার কাছে ধরা দেবে, একটা কথা শুনে আমার আনন্দের শেষ বইল না যে উইলি পিয়ার্স নও এই একই বাসনা কবির কাছে নিবেদন করেছেন এবং কবি তাতে সানন্দে সন্মতি দিয়েছেন। কিন্তু আমার পক্ষে অবিলয়ে এমনি পরিকল্পনা নিয়ে অগ্রসর হওয়ার উপায় ছিল না; কেন না তথনো আমি মিশনের কর্ত্তব্য থেকে মুক্ত হইনি। কিন্তু মনে আশা রইল। দক্ষিণ আফ্রিকার সন্ধটমর দিনগুলির বেদনা এই আশার আনন্দে লাঘব হোলো।

ভারত-আয়ার অন্তর্নিহিত সৌন্দর্যরূপের সঙ্গে প্রত্যক্ষভাবে পরিচিত হতে কেবলই আমি চাইছিলাম। এই অধরা রূপকে কগনো বা বুঝি দৃষ্টির বন্ধনে আমি বেঁধেছি, আবার চকিতে তা আমাকে এড়িয়ে গেছে। কথনো বা আমি আমার আকাজিকত ভারতবর্ষকে প্রত্যক্ষ করেছি পথের মানুষের মুখে,—সেই মুখ আবার হারিয়েছি মুহূর্ত পরে। দিল্লীতে বসে ভারতবর্ষকে প্রোপুরি চিনতে আমি পারিনি। এগানে থাকতে শুর্ বিলোহ করে করেই আমার দিন কেটেছে,—সরকারী শিক্ষা ব্যবস্থার সংকার্ণতার বিরুদ্ধে বিলোহ, বিদেশী মিশনারীর কর্মধারার বিরুদ্ধে বিলোহ। বিদেশী মিশনারী আমি হতে চাইনি, আমি চেয়েছি ভারতের নিজম্ব জীবনধারার সঙ্গে আমার জীবনকে ওতঃপ্রোত ভাবে জড়িয়ে ফেলতে। এই ভারতভ্মিতে বসে যদি আমার পরমপ্রভু যীশুকে প্রকৃত্ত মানবপুত্র রূপে অন্তর্যে পেতে চাই, তাহলে ভারতবাদীদের সঙ্গে এক শ্রোণ এক আয়া আমাকে হতে হবে,—বিদেশী বলে দ্বে থাকলে চলবে না।

দিন যতোই যেতে লাগল ততোই পুরাতন ধারার প্রতি বিদােছভাব আমার মনে গভার হতে লাগল। কেন না, আমি দিনে দিনে লক্ষ্য করতে লাগলাম যে পুরাতন ধারার দিন ফুরিয়ে আদছে। অহংকার আর আভিজাতোর প্রাচীরে আষ্টেপুঠে ফাটল ধরেছে। কছার বাজছে নবমুগের বলিঠ আঘাত। বাতাসে নব-শাবনের সাড়া। বন্দী বিহঙ্গ মাটিতে ভানা ঝাপটাতে আর চার না,—উমুক্ত উদার নীলাকাশে সে মুক্তপক্ষ বিস্তার করতে চায়। ভারতের নবমুগের এই আন্দোলনে আমারও স্থংপিশু ম্পন্তিত হছে, আমারও দেহমন ছুটে বার হতে চাইছে। দিল্লীতে বসে বসে অনেক শিক্ষানবিশী করেছি,—এবার আমি মুক্তি চাই। আর কোনো বন্ধনে আমি বাঁধা পুডব না।

দক্ষিণ আফিকা যাওয়ার জন্ম গোথেলের সহসা অপ্রত্যাশিত নির্দেশ যদিন। আসত তাগলে আমি আরো আগেই শান্তিনিকেতনে যোগ দিন্তাম। কিন্তু এখন দক্ষিণ আফ্রিকা থেকে প্রত্যাবর্তনের পর বিনা আয়াসে কেম্ব্রিজ্ঞ মিশন পরিত্যাগ করা আমার পক্ষে সম্ভব হোলো। ১৯১৪ সালে স্ট্রীরের সময় আমি দিল্লী পরিত্যাগ করলাম।

কবি তাঁর উদার হৃণয়ের মহত্ত্ব দিরে আমাকে তাঁর আশ্রমে গ্রহণ করলেন। আমার গৃষ্টান ধর্মবাজকরুতির কোনো প্রতিবন্ধক আশ্রম থেকে আমি পোলাম না। আমি আমার বিশপকে জানালাম নে, শাস্তিনিকেতনে অবস্থান কালে আমি প্রতি রবিবার বর্ধমানের এক গির্জায় গিয়ে যাজনা করব। স্থশীল যথন বালক ছিলেন, তর্থন স্থশীলের পিতা পিরারীমোহন ক্ষম্র বর্ধমানের এই গির্জার ধর্মবাজক ছিলেন।

ট্রিনিটির রবিবার এল। প্রভাতী প্রার্থনা সভার অ্যাধানেসিরান

ক্রীড আমাকেই পড়তে হবে। কেন না, এ গির্জার আমিই একমাত্র ধর্মবাক্সক। বারা খুষ্টান নয়, তাদের জ্বনস্ত নরকের অভিসম্পাত বারী নিজ্মুখে উচ্চারণ করতে হবে জানাকে। আমি তথন সবেমাত্র শান্তিনিকেতনে এসেছি, এথানকার শান্তিপূর্ণ পরিবেশে ও অথুষ্টান বন্ধুজনের অকুপণ প্রেমে আমার মন বিভোর হয়ে রয়েছে। আজকের আফুর্চানিক ধর্মাজনার পরীক্ষার কেমন করে উত্তার্গ হব ? কোন্ মুখে অভিসম্পাত দেব অথুষ্টান মানবপুরদের ? আমি শেব পর্যন্ত যাজনার এ অংশট সম্পূর্ণ বান দিলাম। কিন্তু এতেও আমার বিবেক প্রবোধ মানল না। মনে হোলো, আমি চুরি করেছি, নিতান্ত কাপুক্রবের মতো স্থপত আজ্ব-ছলনা করেছি মাত্র।

শান্তিনিতেনে ফিবে এদে ষধনই কবির নিম্পাপ মুখমগুলের দিকে দৃষ্টিপাত করলাম, তথনই উপলব্ধি করলাম বে আমার জীবন অসহ্ছের বন্ধনে জড়িত হরে রয়েছে, এ বন্ধন থেকে আন্ত মুক্তি চাই, কবি আমার চোথের দিকে উজ্জ্বল স্বন্ধৃন্টিতে তাকিয়েছিলেন। দে দৃষ্টি বেন মহাবিচারের দিনে বীভগুঠের দৃষ্টি। তাঁর সেই পবিত্র দৃষ্টির প্রতি আমি দৃষ্টি নিবন্ধ রাথতে পারলাম না, চোথ নিচু করে অকপটে তাঁর কাছে সমস্ত ঘটনা বললাম। প্রতিজ্ঞা করলাম, সত্যের সঙ্গে আরু প্রবঞ্চনা করব না, এই মুহূর্ত থেকে সভ্যের পথ থেকে মুহূর্তের জ্বজ্মেও ভাই হব না।

কবি প্রথমটা খ্বই চিস্তিত হলেন। হঠাং উত্তেজনার কোনো
কিছু যেন না কবে বাসি, সেই উপাদশই তিনি আমাকে দিলেন।
কিছু মিধাার শেষ সামাজ্যে এসে আমি পৌছেছি। এই সামাস্ত বেগার উপার দাঁড়িয়ে বহু বংসর আমি যুদ্ধ করেছি, যুদ্ধ করেছি নিজের সঙ্গে, আপান মনের দিধা-সংশ্রের সঙ্গে। এইবার আর যুদ্ধ নয়। তবু শেষ পদক্ষেপ্ট ফেলতে হবে, পার হতে হবে গণ্ডা। আমার কর্তব্য আমি স্থির করে ফেলেছি এইবার।

ছ'থানি চিঠি লেখা দরকার, দেদিনই লিখে পাটিরে দিলাম। একটি চিঠি লিখলাম বিশপকে, তাঁকে জানাগাম কেন আমার পক্ষে আর বর্ত্তমান গির্জার ধর্বধাঞ্জকবৃত্তি করা সম্ভব নর। অপর চিঠিটি আমার পিতাকে।

ভর ছিল, আমার চিঠি পড়ে পিভূদেব বে আঘাত পাবেন ভা তাঁর ত্র্বন স্থানর করতে পারবে কি না। চিন্ধিত মনে তাঁর উত্তরের প্রতীকা করলাম। কিন্তু স্থানর বিষয়, আমার সম্বন্ধে কোনো প্রকাব ত্শিচন্তা তিনি প্রকাশ করলেন না। দক্ষিণ আফ্রিকা থেকে ফিরে তাঁর সঙ্গে সাক্ষাতের পব থেকে তিনি নিশ্চিন্ত হয়েছিলেন যে যা কিছু আমি করি, ঈশ্ব আমাকে বক্ষা করবেন।

এঁব পর থেকে কোনো বিশপের অণীনে প্রত্যক্ষভাবে ধর্মবাজকবৃত্তি আর আমি কথনো গ্রহণ করিনি। তবে দেশে বিদেশে বেখানেই
আমি গিয়েছি, সর্বনা আয়ংলিক্যান ধূষ্টান সম্প্রনায়ের সঙ্গে আমি
সংযোগ রেখেছি। ধৃষ্টান সম্প্রদারের আমন্ত্রণে আমি কোনো কোনো
গির্জায় ধর্মালোচনা করেছি ও ধর্ম-আচরণে যোগ দিয়েছি। গ্রই
কাজে আমি ধৃষ্টীয় সমাজের কোনো নির্দিষ্ট গোষ্টীর গণ্ডীকে স্বীকার
করিনি। গেই দিন থেকে আজ পর্যস্ত এই বিশাস আমার মনে আছে
যে ঈশ্বর যে কাজের জন্ম আমাকে প্রস্তুত করেছেন ও যে কাজ আমার
প্রতি নির্দিষ্ট করেছেন, সে কাজ পুরোহিতের নয়, পরিবাজক ও
প্রচারকের। অনেক বুথা ভ্রমণের পর তিনি আমাকে সত্য পথে
টেনে এনেছেন, এই শেবহীন পথের নিক্রন্দেশ বাত্রার আমার পথিক
আস্থাকে পথ দেখিয়ে নিয়ে চলেছেন।

প্রচলিত ধর্মের অক্টান্ত নির্মকান্তন সম্বন্ধেও আমার সংশর ছিল,
সে সব আলোচনা বন্ধন-মোচনের পর অবাস্তর। এর পর কতো
দিন কেটেছে, আমার স্বস্তিবোধও জতো বেড়েছে। মৃহুর্তের জক্তেও
পুরানো অবস্থা ও গণ্ডির মধ্যে ফিরে বাবার বাসনা আমার মনে
জাগেনি। যে জীবন আমি বাপন করেছি তা অসম্ভব হোতো, বে
কর্তব্যপথে আমি চলেছি সেই পথ কথনো আমি থুঁজে পেতাম না,
বিদি না গোন্তীর গণ্ডা থেকে আমি মুক্তি পেতাম।

অমুবাদক—নির্মলচন্দ্র সকোপাধ্যার

एलन

(চীনাক্ষি Ho Chi Fang এর কবিভার অমুবাদ)

ছলনা !
বলনা, "আবার আসিবে তো ?
সোনালি বং-এর আবছারা কুরাশার জাল ছিঁডে ?"
সেই তো বিকেল বেলার
বখন মুখোমুখি বসেছিলাম
আমার চোখে ছিল নীল মন্ততা
আর ওর চোখে ছিল বনবিড়ালের মারাভরা জিজ্ঞাসা ;
আশামানের ধুসর জগতে
আমরা পাখা মেলে ভাসছিলাম
তখনই ত তুমি প্রেতিনী মারাবিনীর মত
খলখলিরে হেসে উঠেছিলে ।
বলনা ছলনা !
"আবার আসিবে তো ?"

অধ্বাদক: জীঅকর বসু।



[পুর্ব-প্রকাশিতের পর]

আমিরা কুত্রিম উপগ্রহ হইতে সংগৃহীত তথ্য কি ভাবে পৃথিবীতে সরবরাহ করা হইবে ভাহার আলোচনা করিলাম। এখন সাধারণ ভাবে কি কি তথ্য কুত্রিম উপগ্রহ মাবফং সংগ্রহ করা ছইবে তাহা দেখিতে হইবে।

(১) Cosmic Rays (মহাজাগতিক বৃশ্মি)—পৃথিবীর চারিদিকে বহিরাছে বারুসমূদ। মাধ্যাকর্ষণ বঙ্গে পৃথিবী এই ৰায়ুসমুন্তকে আঁকড়াইয়া ধরিয়া বছিয়াছে এবং এ অবস্থাতেই সুর্য্যের চারিদিকে ঘূরিয়া বেড়াইতেছে। স্থা আর বায়ুবেষ্টিত পুথিবীর মধ্যে বস্তুতপকে বিরাজ করিতেছে এক মহাশৃর। কিছ 'শৃরু' কথাটি ব্যবহার করা বোধ করি ঠিক হইল না। কারণ সূর্য্য ছিডিশীল বন্তুর ক্যায় কেবল আলো আর উত্তাপ দিয়াই ক্ষান্ত থাকে না। প্রকৃতপকে স্থ্যের মধ্যে ঘটিতেছে নানা অন্তত ঘটনা। একটি প্রমাণ্ চুর্ণবিচূর্ণ হুইয়া আর একটি প্রমাণুতে রূপান্তরিত ছইতেছে, আর সেই রূপাস্তবের সময় যে বিপুদ শক্তি উৎসারিত ছইতেছে, তাহাই সুর্ঘ্যকে তাহার সৌরজগতের অধিবাসীদের তাপ ও আলোক দিবার ক্ষমতা যোগাইতেছে। (প্রসঙ্গক্রমে উল্লেখ করা ষাইতে পারে যে, পরমা1ুর রূপাস্তরকালীন যে বিপুল শক্তি উৎসারিত হয়, তাহাকে কাজে লাগাইয়াই বর্ত্তমানকালে নিশ্মিত হইয়াছে, প্রমাণু তথা হাইডোজেন বোমা) প্রমাণু রূপাস্তরের সময়ে নানা রশ্মিকণা সুষ্ঠ্য হইতে নির্গত হয়। এই সকল রশ্মির কোন কোনটি পৃথিবীর আবহাওয়ার উপরও প্রতিক্রিয়া সৃষ্টি করে। বস্তুতপক্ষে সূর্য্য ও সৌরজগতের অন্তর্গত গ্রহগুলির মধ্য দিয়া অতি ক্রত গতিবেগ-সম্পন্ন ক্ষুদ্র ক্ষুদ্র বন্মিকণা ছুটিয়া বেড়াইত্যেছে। কতকগুলি আবার পৃথিবীর বায়ুম্ভর ভেদ কবিয়া পৃথিবীর বুকে আসিয়া পৌছিতেছে। ইহাদেরই নাম 'মহাজাগতিক রিখা' বা Cosmic Rays. মহাজাগতিক বৃশ্মি হইতেছে বস্তুতপক্ষে 'প্রোটন' Proton (প্রুমাণু-কেন্দ্রকের Nucleus, প্রধানতম অংশ। ইহারা + (vc) শক্তি-বিশিষ্ট) হইতে নি:স্ত অতি উচ্চ শক্তিসম্পন্ন রশ্বিকণা। কণাগুলির মধ্যে বেগুলি অধিকতৰ শক্তিশালী, কেবল তাহারাই পৃথিবীর বায়ুক্তর ভেদ করিতে সক্ষম হয়। এই রশ্মিকণাগুলির গুণাগুণ এবং শক্তির পরিমাণ সঠিক নির্দ্ধারণ করা পৃথিবীর বক্ষ অপ্রেক্ষা ভূপৃঠের উর্দ্ধদেশ্রে অধিকতর সহ**ত্ত** ও সম্ভবপর। কাব্রেই কৃত্রিম[্]টেপগ্রহের স্**ট**্রারা মহাজাগতিক বন্ধি সম্বন্ধে অধিকত্তর তথ্যাগ্রসন্ধান, ইহাদের স্থাটির আদিকথা এবং মানবদেহের উপর প্রতিক্রিয়া সম্বন্ধে অধিক পরিমাণে জ্ঞানলাভ সম্ভবপর হইবে।

(2) Ultraviolet Rays & Ionosphere 7 কেবল আলো আর উত্তাপ দিয়াই ক্ষান্ত থাকে না, সে কথা পূর্বেই বলা হইবাছে। সূৰ্যা হইতে কম্পন্বিশিষ্ট (High frequency) অদৃশ্র x-ray এবং Ultraviolet rays প্রভৃতি বিকিরিত হয়। এই সকল High frequency waven লি পৃথিবীতে পৌছাইবার পূর্বেই পৃথিবীর বায়ুমণ্ডল কর্ত্তক শোধিত (absorbed) হয়। Ultraviolet Rays এর বায়ুমণ্ডলে এই শোষণ নানা অন্তত অন্তত यहेंना चहेरा, यांश विष्णयं कादव खेळा थरांगा।

Ultraviolet রশ্মি বায়ুকণাগুলিকে ইলেকট্রন ও আয়নে বিভক্ত করে। ভূপুঠের ৩০ মাইল উদ্ধ হইতে আরম্ভ হয় বায়ুমগুলের এই Ionosphere ষেখানে থাকে কেবল ইলেকট্রন (Electron) আর আয়ন (Ion), বারুমগুলের এই Ionosphere পৃথিবীর উপর দিয়া বেজার-ভরক চলাচলের বিশেষ সহায়তা করে।

কুত্রিম উপগ্রহের কাজ হইবে সুধ্যালোকের মধ্যস্থ Ultraviolet বা অভিবেগুনী রশ্মি সম্বন্ধে অধিকতর জ্ঞান লাভ করা—ইহাদের আক্রমণ হইতে কি ভাবে নিজেদেরকে বাঁচান যায়, তাহার উপায় উদ্ভাবন করা। U. V. বৃশ্মির সঙ্গে সঙ্গে আবহাওয়ার সম্বন্ধেও অধিক জ্ঞান লাভ সম্ভবপর হইবে। Ultraviolet বৃশ্মির গবেষণা জান্ত যে যন্ত্রটি কুত্রিম উপগ্রহে ব্যবহার করা হইবে, ভাহার নাম photon counters, Ionosphere এ তড়িং-প্রবাহের অনুসন্ধান করাও কৃত্রিম উপগ্রহের অন্ততম একটি কাজ। ইহার জন্ম Proton precession Magnetometer অথবা Nuclear Resonance Magnetometer এর ব্যবহার করা হইবে।

Proton precession Magnetometer এর গঠন প্রবাদী সংক্ষেপে এইরপ—"একটি জলপূর্ণ ছোট প্লাষ্টকের পাত্রের মধ্যে তামার তার ভূবান থাকে। ইহার সহিত সংযুক্ত থাকে একটি programmer ৰাহাকে পৃথিবী হইতে প্ৰেৱিত সংকেত অনুসাৱে প্ৰিচালিত ক্রিলে তামার তারটিকে প্রতি সেকেণ্ডে পর্য্যায়ক্রমে একবার শক্তিসম্পন্ন ও পর মুহুর্তে শক্তিবিহীন করিয়া দেয়। যথন তারটি শক্তিসম্পন্ন অবস্থায় থাকে, তথন জল মধ্যস্থ হাইড্রোজেন প্রমাণুর কেন্দ্রকণ্ডলি (Hydrozen nucleus অধৃতি Protons) ক্ষুদ্র কুল চুবকের মতন সারিবদ্ধ ভাবে দাঁড়ায়। শক্তিবিহীন হইলে সারিবদ্ধ কেন্দ্রকণ্ডলি স্থান পরিবর্ত্তন করিয়া পৃথিবী চুম্বকক্ষেত্রের দিকে (Earth's magnetic field) তুলিতে থাকে। কেন্দ্রকের এই দোলন তামার তারের মধ্যে স্বল্পবিমাণ বিত্যুৎপ্রবাহ সঞ্চারিত করে। এই বিচ্যুৎপ্রবাহকে আরও বৃহৎ আকারে দেখাইয়া (Amplify) সাংকেতিক পরিভাষায় পৃথিবীতে বেতার যোগে প্রেরণ করা সম্ভবপর। এই সকল সংকেতবলীর দারা স্চিত তথ্যরাজির সহিত ভূপুর্চের উপবিভাগে Magnetometer দ্বারা সংগৃহীত খবরাখবরের তুলনা করিয়া বিজ্ঞানীরা মহাশুল্ঞে কোন নির্দিষ্ট স্থানে অবস্থিত কুত্রিম উপগ্রহের উপর পৃথিবীর চুম্বকশক্তির মাত্রা নির্দ্ধারণ করিতেও সক্ষম इरेपन ।

কুত্রিম উপগ্রহ স্থাই হইলে এই ভাবে পৃথিবী হইতে বিভিন্ন দূরত্বে অবস্থিত বন্ধব উপর পৃথিবীর চুম্বকশক্তি মাত্রা সম্বন্ধে জ্ঞানসাভ कवा वाहेर्य ।

কৃত্রিম উপগ্রহ স্টে করিবার একটি মুখ্য উদ্দেশ্য হইতেছে সঠিক তথ্য সংগ্রহ। এমন অনেক বিবর আছে বাহা আমরা সাধারণভাবে জানিলেও সঙ্গতভাবে জানি না। বেমন আমরা Magnetic Poles, North Pole ও South Pole এর সঠিক অবস্থান জানি না। বিভিন্ন দেশের দ্রম্থ সম্বন্ধে মোটামুটি ধারণা থাকিলেও উহাদের সঠিক দ্রম্থ (exact distance) আমরা জানি না। কারণ পৃথিবীর বক্র উপরিভাগের Curveol Surface উপর দিয়া সঠিকভাবে দ্রম্থ নির্ণিয় সন্তবপর নর। কিছু নির্দিষ্ট দ্রম্থে নির্দিষ্ট গতিতে ঘৃণীয়মান বস্তুর গতিবিধি ভিন্ন ভিন্ন স্থান ইইতে দেখিরা ঐ ভিন্ন ভিন্ন স্থানের দ্রম্থ জ্যামিতির সাহাধ্যে (Triangular measure) সঠিকভাবে নির্দ্ধারণ করা সম্ভবপর হইবে।

কৃত্রিম উপগ্রহ স্থান্ট হইলে আরও বছ বিষয়ে জ্ঞানলাভ হইবে। বেমন পৃথিবীর আকার সম্বন্ধে আমরা স্থানিশিত হইব। পৃথিবী ও গ্রহ ও উপগ্রহের 'ফটো' বেতার মারফং (Radio Photo) আমরা সংগ্রহ করিতে পারিব। শুনা যাইতেছে যে, সোভিয়েট নির্ম্বিভ উপগ্রহটি নাকি Radio Photo সম্প্রতি উদ্ধানেশ হইতে পৃথিবীতে পাঠাইতেছে। মেরুজ্যোতি বা Aurora Borcalins কার্যাকারণ আজও আমাদের নিকট অজ্ঞাত। আশা করা বায় যে, কৃত্রিম উপগ্রহ এই বিষয়ে আলাকপাত করিয়া রহস্ত উদ্ঘাটন করিবে। স্ব্যালোক সম্বন্ধে আরও অধিক তথ্য ও মাধ্যাকর্ষণের তারতম্যের কারশ জানা হইবে। বায়ুল্ডরের মধ্য দিয়া না আসিলেও স্ব্যালোক মানবদেহের উপর কিরপে প্রতিক্রিয়া করিত তাহাও জানা বাইবে।

রাসায়নিকের। কাচের গবেষণা করিতে গিয়া পাইয়াছিলেন Pyrex এর সন্ধান, প্লাষ্টকের গঠন প্রণালীর সম্বন্ধে অমুসদ্ধান করিতে আবিষ্কার করিলেন Nylonকে, সেই রকম হয়ত বা কৃত্রিম উপগ্রহ স্বষ্টি করতে গিয়া আমরা এমন কিছু আবিদ্ধার করিয়া বসিব বাহা আশাতীত ভাবে সোভাগ্যদায়ী হইবে। আর সব চাইতে বড় কথা বে কৃত্রিম উপগ্রহের স্বষ্টির দ্বারা মহাশ্রের পথ আমাদের নিকট উদ্ঘাটিত হইতেছে।

এখন প্রশ্ন হইতে পারে, কি ভাবে কৃত্রিম উপগ্রহ স্থাই সম্ভব? পৃথিবী হইতে বাহিরে ষাইবার প্রধান বাধা হইল মাধ্যাকর্ণ। খামরা জানি, পৃথিবী নিজের কেন্দ্রের দিকে ভূপুঠের উপরের এবং নিকটের যাবতীয় বস্তুকে বিপুলবেগে আকর্ষণ করিতেছে। পৃথিবীর এই মহাকর্ষণের নামই মাধ্যাকর্ষণ। এইজক্সই কোন বস্তুকে উপরে ছুঁড়িয়া দিলেও মাধ্যাকর্ষণের জন্ম পুনরার উহা মাটির বুকে নামিরা আসে। দেখা গিয়াছে, কোন বস্তু যদি ১০০ মাইল উপর থেকে মাটিতে পড়ে, তবে উহার পতনকালীন গভিবেগ হয় দেকেওে এক মাইল (বায়ুর প্রতিবন্ধকতার দক্ষণ অবশ্য কিছু পরিমাণ গতি ছাস ইইতে পারে)। বিপরীতক্রমে বদি কোন বস্তুকে দেকেণ্ডে এক মাইল প্রাথমিক গতিতে উদ্ধে উৎক্ষিপ্ত করা বার, তবে উহা ঠিক ১০০ মাইলই উপরে উঠিতে সক্ষম হইবে। V-2 বকেট দিয়া এ ব্যাপারটা পরীকা করা গিরাছে। এই হিসাবে কোন রকেট বদি সেকেণ্ডে ৫ মাইল প্রাথমিক পজিতে উপরে উঠে তবে উহা ৪০০০ মাইল পর্যান্ত উপরে উঠিতে পারিবে। কিছ প্রাথমিক গতির পরিমাণ বদি সেকেণ্ডে ৭ মাইল করা বার, তবে উহা মাধ্যাকর্ষণের ^{জন্ত} আর পৃথিবীতে ফিরিয়া আসিবে না। কেন না, পৃথিবীর

মাধাকর্ষণ কোন অবস্থাতেই সেকেণ্ডে । মাইল অথবা তাহার আছি কোন গতি উৎপাদনে অকম। অর্থাৎ লক্ষ মাইল অথবা তাহাকি উচ্চতর কোন স্থান হইতে কোন বন্ধকে পৃথিবীর উপর ফেলিজেন্ড উক্ত বন্ধর পতনকালীন গতিবেগ কোন অবস্থাতেই সেকেণ্ডে মাইলের অধিক হয় না।

এতক্ষণে আমরা জানিতে পারিলাম যে, প্রাথমিক গতি বহি मिक्ट १ मारेन (वर्षाः एकीय ७० ×७० × १ = २०२०० मारेन) হয়, তবে উহা মাধ্যাকর্ষণের জন্ম আর ফিরিয়া আসিবে না, পৃথিবীং মারা কাটাইয়া চিরকালের জন্ম মহাশন্মে চলিয়া বাইবে। কুক্রিং উপগ্রহ স্মষ্ট করিবার সময়ে রকেটের গতিবেগ (প্রাথমিক) সেকেছে ৭ মাইল হওয়ার প্রয়োজন নাই, কেননা, এরপ গভিবেগ সাতাম হইচে উহা আর পৃথিবীর চারিদিকে না ঘ্রিয়া বহিবিখে চলিয়া বাইত। এভদ্যতীত এরপ প্রচণ্ড প্রাথমিক গতি উৎপাদনও একপ্রকার অসম্ভব। কেননা, প্রাথমিক গতির পরিমাণ বৃদ্ধি করিতে হইলে. সমস্ত আলানীকে মুহূর্তমধ্যে পুডাইয়া এক প্রচণ্ড ধাঞা স্ক্রীর প্রয়োজন, যাহা রকেটকে একেবারে নির্দিষ্ট উচ্চতায় লইয়া যাইছে পারিবে। কিন্তু এরপ বিক্ষোরণ তথা ধাক্রা ঘটানো এক কথার অসম্ভব এবং সম্ভবপর হইলেও রকেটের পক্ষে ভাষা সম্ভ করা সাধ্যাতীত। এরই জন্ম বৈজ্ঞানিকের। সৃষ্টি করিলেন Three stage Rocket, बाहाएक धाकांग अवकवादत ना निया वादत बादत, भंबायकरम দেওবা যায়।

মাধ্যাকর্ষণ ও কৃত্রিম উপগ্রহ স্কল সম্বন্ধে সাধারণ একটি উদাহরণ দিতেছি। আশা করি, বিষয়টা এবার বোধগম্য হইবে। একটি টিলকে স্তা বাধিয়া উপরে ছুঁড়িয়া দিলে মাধ্যাকর্ষণ হেডু উহা পুনরার মাটিতে পড়ে,—ইহাই স্বাভাবিক নিয়ম; কিছ 🕹 ঢিলটিকেই যথন স্তার এক প্রাস্ত ধরিয়া ঘুরাইয়া **থাকি, তথন** উহা চক্রাকারে ঘুরিতে থাকে, নীচে আর পড়ে না। কারণ জানিতে গেলে উভরের অবস্থার তারতম্য বৃক্তিতে হইবে। পুর্বের সহিত পরের অবস্থার প্রধান পার্থক্য হইল যে, দিভীয়াবস্থায় চিলটি গভিবেপ সম্পদ্ধ হইয়াছে এবং উক্ত গতিই ঢিলটিকে পতন হইতে ৰক্ষা করিতেছে। সুভা ঘরাইবার সময় চুইটি শক্তি কার্যাকরী ছইতেছে-একটি কেন্দ্রাভিমুখী Centripetal অপরটি কেন্দ্রবিমুখী Centrifugal। প্রথমটির কাব্দ হউতেছে ঢিলটিকে কেব্রের দিকে টানিয়া রাখা, বিভীয়টি বস্তটিকে কেন্দ্র হইতে দূরে সরাইয়া লইয়া বাওরার চেষ্টা করিতেছে। এখন এই শক্তি তুইটি উভয়ে যদি পরস্পার সমান হয়, তবে বস্তুটি কেন্দ্রের দিকে অথবা কেন্দ্রের বিপরীত কোন দিকেই না গিয়া, কেন্দ্ৰ হইতে নিৰ্দিষ্ট দূরত্বে অবস্থান কৰিয়া কেন্দ্ৰেৰই চারিদিকে ঘরিতে থাকিবে।

বিজ্ঞানের সাধারণ নিয়মানুসারেই স্থা পৃথিবীকে ও পৃথিবী চজকে আকর্ষণ করিতেছে (All bodies attract cach other) আর এই আকর্ষণকেই বলা বাইতে পারে Centripetal Force. একভাকে প্তার্বাধা ঢিল যে কারণে কেন্দ্রের চারিদিকে ঘূরে ঠিক সেই কারণেই পৃথিবীও ও চল্র যথাক্রমে স্থা এবং পৃথিবীকে আকর্ষণে করিয়া থাকে। তবে একটা কথা, গতিবেস ও আকর্ষণের মধ্যে থাকা চাই সামঞ্জ্ঞত। স্বের্যের চারিদিকে পৃথিবী সূরে, কেননা স্থেয়ে আকর্ষণ এবং পৃথিবীর গতিবেশের মধ্যে

সামঞ্জত রহিরাছে। কৃত্রিম উপএই স্বৃষ্টি করিতে ইইলেও চাই মাধ্যাকর্ষণ ও কৃত্রিম উপএহের গভিবেগের মধ্যে একটা বোঝাপড়া।

কুত্রিম উপগ্রহ তৈরাবী করিবার সময় সাধারণত: তিনটি নির্ম পালন করিতে হইবে। প্রথমত: ইহার গভিবেগ হওয়া চাই সেকেন্ডে ৪ই মাইল (সোভিয়েট উপগ্রহের গতিবেগ সেকেণ্ডে প্রায় ৬ মাইল।) षिতীয়ত: ইহাকে পৃথিবীর খন বায়ুস্তরের উপরে থাকিতে হইবে। কারণ গতিবেগ বায়ন্তর দারা ব্যাহত হইলে ইছা ক্রমশ: গতিহীন হইয়া নীচে পৃথিবীর দিকে পড়িবে এবং প্তনকালে পৃথিবীর খন বায়ুস্তবের সহিত সংঘর্ষে উদ্বাপিণ্ডের মতন অলিয়া উঠিবে। তৃতীয় এবং শেষ সর্ভ হইতেছে যে, কুত্রিম উপগ্রহটিকে তথাকথিত যে কোন একটি Great Circle বা 'বুহুৎ বুত্তে' ঘরিতে হইবে। Great Circle কথাটির অর্থ হয়ত অনেকের কাছে বোণগমা না হইতেও পারে। भारत करा याक, अविधि भग्नमात्र शालाकात वल । अथन यपि हेशांक ছবি দিয়া লখা অথবা আড়াআড়ি, বেভাবেট হউক না কেন খণ্ড করা বায়, তবে ঐ খণ্ডগুলির প্রত্যেকটির আকারই বৃত্তাকার ছইবে। এখন এ বুতাকার খণ্ডগুলির মধ্যে যে খণ্ডটি পূর্বেশিক্ত বলের মধ্য অর্থাৎ কেন্দ্রের মধ্য দিয়া কাটা হইবে, তাহাই সর্বাপেকা এই বৃহত্তৰ থণ্ডটির যে কোন অংশকেই बुइमाकात्र इटेप्त । Great Circle বলা বার। কুত্রিম উপগ্রহ স্ঞান করিবাব সময়ে भाषात्मत्र नका त्राभिएक इटेरव (व, छेट्। (वन Great Circle कार्या) পৃথিবীর কেন্দ্রের উপর দিয়া পরিকল্পিত বৃহৎ বৃত্তে ঘূরে। এই ঘূর্ণন পূৰ্ব্ব-পশ্চিম অথবা উত্তর-দক্ষিণ যে কোন দিকেই সম্ভব। তবে পুর্ব-পশ্চিমেই কুত্রিম উপগ্রহ স্কল অধিকতর স্থবিধাজনক, কেননা পৃথিৱীর আহ্নিকগতি পশ্চিম হইতে পূর্বে। কাজেই পৃথিবীর প্রতির তালে তাল রাখিয়া গুরিলে আলানী খরচের পরিমাণ্টা किছ कम इरव।

কৃত্রিম উপগ্রহ স্কলের সর্ব্ত অর্থাং Conditionsগুলির কথা এতক্ষণ আলোচনা করিলাম। এখন দেখিতে হইবে, কি ভাবে উপবোক্ত সর্বন্ধলি পালন করা সক্ষব। সাধারণতঃ এ ব্যাপারটি সন্থবপর হয় রকেটের সহায়তার। রকেটের মূল কথা ব্যাক্তি হইলে হাউই বাজীর দৃষ্টান্ত দিতে হয়। হাউই বাজীতে যখন আগুল দেওয়া হয়, তখন উহার নিয়দিক হইতে নির্গত গ্যাস যে বিপুল উদ্ধিচাপের স্থাই করে ভাহাই হাউই বাজীকে উদ্ধি উঠিতে সহায়তা করে। রকেটের পঠনপ্রণানী মূলগতভাবে অমুরূপ। তবে পার্থক্য এই যে, রকেট বড় আর হাউই বাজী ছোট। সাধারণ রকেটের সঙ্গে, কৃত্রিম উপগ্রহ স্কলন করিবার জন্ম যে রকেট ব্যবহার করা হয় তাহার মধ্যে কিছুটা পার্থক্য রহিয়াছে। বস্তুত, ইহাকে একটি রকেট না বলিয়া "রকেট সমাই" বলাই অধিকতর যুক্তিসঙ্গত। ইংরাজীতে ইহাদের নাম Three Stage Rocket.

এই বিশেষ ধরণের রকেটের মধ্যে থাকিবে তিনটি স্বতম্ভ জংশ, মন্তব্দ, দেহকাণ্ড ও লেজ। বাহারা প্রত্যেকটিই এক একটি স্বস্থাসপূর্ণ রকেট। কৃত্রিম উপগ্রহটি থাকিবে মন্তব্দ-রকেটে। সমুজ্ঞার হুইতে বাত্রা করাই স্থবিধাজনক, কেন না পরে যখন রকেটের লেজ ও দেহকাণ্ড একে একে খসিরা পড়িবে, তখন জলের উপর পড়িলেই ভাল হর। রকেট যখন ছাড়া হয়, তখন দর্শকেরা বিদ্যুৎ চমকের মন্তব্দ আলোর ফল্কানি ছাড়া আর কিছু দেখিতে পার না।

কারণ কিছু বৃধিবার পূর্বেই সেকেণ্ডে ৭০০০ ফুট গভিতে উছা উৰ্দ্ধে উঠিয়া পিয়াছে। প্ৰথম প্ৰথম ইহাদের গতিবেপ খুব একটা বেশী না হইলেও গতিবেগ ক্রমশ: সেকেণ্ডে ৫০ ফুট করিয়া বাড়িতে থাকে। ২০ সেকেও পরে রকেটকে দেখা যায় একটি ক্ষুদ্র বিস্কৃর মতন। এক মিনিট পরে ইহা ১২০০০ ফুট উঠিতে সক্ষম হয়। এই সময় কিন্তু বকেট আর খাডাভাবে (straight) উঠিতে সক্ষম হইবে না, একট স্বাড়ভাবে উঠিবে। ১মিঃ ১*৫ সেঃ* পরে রকেটের লেজের অংশ থসিয়া পড়িবে। থসিয়া পড়া অংশ ইহার সহিত পূর্বৰ হটতে সংলগ্ন লোহার প্যাবাস্থাটে করিয়া রকেট ছুঁড়িবার স্থান হইতে প্রায় ২০০ মাইল দূরে পৃথিবীর বুকে ধীরে ধীরে নামিরা আসিবে। তবে 'বেগবল' বা Momentum এর জন্ত খসিয়া পড়া অংশ প্রথম প্রথম কিছটা উপরে উঠিবে চলম্ভ বাস হইতে নামিবার সময় আমরা বেমন বাসের গতিবেগের সঙ্গে সমতা রাখবার জন্য থানিকটা এগিয়ে যাই) লেজ থসিয়া পড়িবার পর রকেটের দেহভার শতকরা ৭৫ভাগ কমিয়া যায়। দ্বিতীয় রকেটের **কাল স**ঙ্গে সঙ্গে স্থক্ষ হয়। গতিবেগ বৃদ্ধি পাইয়া হয় সেকেণ্ডে ৩ মাইল। আরও এক মিনিট পনেরো সেকেও পরে প্রায় ৪৫ মাইল উর্দ্ধে থাকাকালীন দেহকাণ্ডও থুলিয়া পড়িয়া যায় এবং রকেট ছুঁড়িবার স্থান হইতে আমুমানিক ১০০ মাইল দুরে আসিয়া পড়ে। লেজ ও দেহকাণ্ডের গুরুভার হইডে মুক্ত হইয়া মস্তক-রকেট, ৰাহার ৰালানী তথনও পৰ্যান্ত একবিন্দুও থবচ হয় নাই, অসম্ভব দ্রুতগতিতে উপরে উঠিতে থাকে, মাটি হইতে যাত্রা করিবার প্রায় ৪ মিনিট পরে ততীয় রকেটের আলানীর দহনক্রিরা (Fuel consumption) বন্ধ হইরা যায়। এই অবস্থায় উহা প্রক্লেপকের (Projectile) মতন ছুটিয়া যাইবে। গতিবেগ ইতিমধ্যেই সেকেণ্ডে ৪ই মাইল হইয়াছে এইবার কুত্রিম উপগ্রহ সমেত মন্তক-রকেটটি ক্রমে ক্রমে পৃথিবীর সমকেন্দ্রিক কক্ষপথে অর্থাৎ Great circle এ আসিরা পৌছার। স্বানুমানিক ৪৫ মিনিট পরে যথন উহা পৃথিবীকে প্রায় অর্দ্ধ প্রদক্ষিণ করিয়াছে তথন উহার গতিপথ পুরাপুরি 'বুহৎ বুত্তের' বা Great circle অন্তর্গত হয়। থেকেই ইহা ঘূরিতে থাকে পৃথিবীর চারিদিকে ঠিক একটি ছোট চাদের মতন।

থকেত্রে একটি বিষয়ে আলোচনা করা দরকার। কুত্রিম উপগ্রহটি যে বৃত্তাকার কক্ষপথেই ঘৃরিবে এমন কোন কথা নাই। বন্ধতপক্ষে ইহার ডিম্বাকার কক্ষপথে (Elliptical Orbit) গমন করাই অধিকতর স্বাভাবিক। তবে এক্ষেত্রেও কক্ষপথটি পৃথিবীর কেন্দ্রের মধ্য দিয়া পরিকল্পিত সমতলের (Plane passing through the centre) উপর দিয়া ঘাইবে। কক্ষপথের আকার মুধ্যতঃ নির্দ্রের করে মস্তকের রকেট কর্ত্ত্বক উপগ্রহটিকে নিক্ষেপণের প্রাকৃতি ও পরিমাণের উপর।

রাশিরা বে উপগ্রহটিকে সৃষ্ট্রী করিরাছে, তাহা ডিম্বাকার কন্দর্শনে বিমূবরেধার সহিত ৬৬ কোণ করিরা ঘূরিতেছে। ৬৬ কোণ করার স্থবিধা হইতেছে বে একমাত্র মেক অঞ্চল ছাড়া পৃথিবীর সকল আল হইতেই কোন না কোন সমরে উপগ্রহটিকে দেখা সম্ভবপর হইবে। কারণ কন্দপর্থটি বরাবর একই সমতলে থাকিবে (in the same plane), না। পৃথিবীর অক্তান্ত অঞ্চলের সহিত বিমূবরৈধিক

অঞ্চলের মাধ্যাকর্বণের তারতম্যের ক্ষন্ত কক্ষপথটি পশ্চিম হইতে পুর্বের সরিয়া আসিতেছে (Precessional Motion)। কক্ষপথটির এই তাবে সরিয়া আসার দক্ষপই পৃথিবীর বিভিন্ন স্থান হইতে উপগ্রহটিকে দেখা সম্ভবপর হইবে।

কৃত্রিম উপগ্রহটির কক্ষপথ ভিষাকৃতি হইলেও ক্রমে ক্রমে ইহা
বৃত্তাকারে রূপান্তরিত হইতেছে। ইহার কারণ এই—কৃত্রিম উপগ্রহটি
ভিষাকার কক্ষপথে ঘ্রিবার সময়ে একবার পৃথিবীর সর্বাপেকা নিকটে
(Perigee) ও একবার সর্বাপেকা দূরে (Apogee) চিন্না
বাইতেছে। যথন সবচেরে কাছে থাকে তথন পৃথিবীর আকর্ষণের
পরিমাণ সর্বাধিক এবং দূরে চলিরা গেলে আকর্ষণের মাত্রা হাস পার।
অর্বাৎ কৃত্রিম উপগ্রহের উপর পৃথিবীর আকর্ষণের Uniformity বা
সমতা থাকে না। পৃথিবীর নিকটে থাকিবার সমরে উপগ্রহটির শক্তি
কিছু পরিমাণ কর হইতেছে। এই তাবে কক্ষপথটি ক্রমে বৃত্তাকার
হুইরা ছোট হুইরা (shrink) বাইবে।

একটা মন্তার কথা এই বে, একটি উপগ্রহ স্থাষ্ট করিতে গিরা আমরা তুইটি স্থাষ্ট করিয়া বসিব। বন্ধতপকে রাশিরা বে কুত্রিম উপগ্রহটি ছাড়িরাছে, তাহাতে এই ব্যাপারটাই ঘটিরাছে। কেন? আগেই বলিয়াছি যে, কেবল মন্তক-রকেটের মধ্যেই থাকিবে কুত্রিম উপগ্রহটি। মন্তক-রকেটিট যথন যথানির্দিষ্ট গাতিবেগ ও গতিপথে আসিয়া পড়িবে, তথন যান্ত্রিক কর্মকুশলতার কুত্রিম উপগ্রহটি মন্তকর্বকেট ইইতে নিক্ষিপ্ত হইবে। কিন্তু মন্তক-রকেটটির অবস্থা কি হইবে? উহা নিশ্চ্যই আর নীচে পড়িবে না। কেননা কুত্রিম উপগ্রহ এবং মন্তক-রকেটের অবস্থাগত কোন পার্থক্য নাই। কাজেই তুইটিই অর্থা কুত্রিম উপগ্রহটি একটু আগে ও মন্তক-রকেটটি তাহার পিছু পিছু পৃথিবীর চারিদিকে ঘ্রিতে থাকিবে।

রাশিয়া বে কৃত্রিম উপগ্রহটি স্থাষ্ট করিয়াছে, ভাহার স্বক্ষে
সাধারণের কোতৃহল হওয়া অতাস্ত স্বাভাবিক। অনেকের মনে প্রশ্ন জাগিরাছে, ইহা কি পুনরায় পৃথিবীতে ফিরিয়া আসিবে, না অনস্তকাল ধরিয়া চালের মতন পৃথিবীর চারিদিকে ঘ্রিতে থাকিবে? কৃত্রিম উপগ্রহটির বে পৃথিবীতে ফিরিবার সন্তাবনা নাই—এ কথা পূর্বেই বলা ইইয়াছে। ইহার কারণ হইভেছে বে, উপগ্রহটির দূবন্ধ পৃথিবী হইতে সব সময়ে সমান নয়। যখন পৃথিবী হইতে সর্বাপেকা দূবে থাকিতেছে, তথনকার দূরত্ব ৫৬০ মাইল, আর সর্বাপেকা নিকটে থাকাকালীন দূর্বের পরিমাণ মাত্র ১৫০ মাইল। দূরে থাকিবার সময়ে পৃথিবীর উদ্ধৃত্বিত বায়ক্তর তথা মাধ্যাকর্বণ, কৃত্রিম উপগ্রহটির গভিবেগ ও গতিপথের উপনি বিশেষ কোন প্রভাব বিস্তার করিতে না পারিকের্ছ নিকটে থাকিবার সময়ে উহাদের প্রভাব উপেক্ষণীয় নয়। বার্ত্তরে সহিত অল্লবিস্তর সংঘর্ষ friction এবং মাধ্যাকর্ষণের অসম আচর্ছ কুত্রিম উপগ্রহটির গতিবেগ ধীরে ধীরে হ্রাস করিতে থাকিবে। উহা ডিম্বাকার কক্ষণথটি ক্রমশ: ক্ষ্তুতর হইরা বৃত্তাকারে পরিবন্তিত ইইবে কক্ষণথটি ক্ষ্তুতর হওয়ার সঙ্গে সঙ্গে উপগ্রহটিকে অধিকতর ঘন বাই স্তরের সংঘর্ষের সম্মুখীন হইতে হইবে। আর সেই সংঘর্ষের দারা স্টাইবে উত্তাপের, যে উত্তাপ কৃত্রিম উপগ্রহটি উত্বাপিত্তের মতন অকিছি নিশিক্ষ করিয়া দিবে।

 এ ব্যাপারটা কবে ঘটিবে, ভাহা সঠিকভাবে বর্ত্তমানে ব সম্ভব নর। কেহ বলিতেছেন, ইহার আয়ুকাল এক মাস. আবা কাহারও মতে ইহা ২০ বংসর ধরিয়া পৃথিবীকে প্রদক্ষিণ করিবে বস্তুতপক্ষে কৃত্রিম উপগ্রহটির আয়ুদাল নির্ভর করিভেছে অত্ত্ বায়ুমণ্ডলের ঘনত এবং কুত্রিম উপগ্রহটির উপর মাধ্যাকর্মণে পরিমাণের উপর। কাজেই উহা কত দিন বাবং ঘ্রিতে থাকিবে-তাহা একমাত্র ভবিষ্যৎই বলতে পারে। আর একটি প্রশ্ন হইতেনে যে, কুত্রিম উপগ্রহটির বেতার-সংকেত-প্রেরণ-ক্ষমতা কতকাল থাকিবে এ বিষয়েও আগে কিছু বলিয়াছি। ৰদি কুত্রিম উপগ্রহের বেতা চালনের শক্তি ব্যাটারী হইতে সংগৃহীত হইয়া থাকে, তবে ইহা ১ দিন, কি খুব বেশী এক মাস অবধি বেতার সংকেত পাঠাইতে সক হইবে, আর যদি সূর্য্য হইতে শক্তি আহরণের ব্যবস্থা করা হইরা থাকে তবে আলাদা কথা, সেক্ষেত্রে উহার বেতার-সংকেত-প্রেরণ-ক্ষম্ভ ৰছকাল বৰ্ত্তমান থাকিবে। তবে একথাও ঠিক বে, সংকেত প্ৰেৰ[্] ক্ষমতা না থাকিলেও, কৃত্রিম উপগ্রহটি অনেক দিন ধরিয়া পৃথিবী চারিদিকে ঘরিয়া থাকিতে পারে। কুত্রিম উপগ্রহের **সৃষ্টি** বি**জ্ঞা**ন জগতে এক আলোডন আনিয়াছে। মামুষ এখন দেখিতেছে, গং দিনেও যাহা ছিল স্বপ্ন, আজ তাহা সত্যে পরিণত হইয়াছে। যাহা ছি অবাস্তব, তাহা আজ বাস্তবে রূপাস্তবিত হইয়াছে। আজকের মান্ত তাই চন্দ্রলোকে তথা মঙ্গলগ্রহে বাইবার কথা ভাবিতেছে। । বাওরাকে আজ আর অবিশান্ত বলিয়া মনে হইতেছে না। সোভিরে বৈজ্ঞানিক M. Khlebtzevitch এর মতে মানুষ আগামী ৫ থেকে বংসরের মধ্যেই চাঁদে পৌছাইতে পারিবে। তথনকার দিনেং মাইকেল অসম্ভব বল্পলাভের Simile খু জিভে নিশ্চয়ই "বামন হই: क ठाट्ड धरिएड ठाटन ?"--- अरे पृष्टीटक्टन चाश्चर मरेटन ना ।

-- প্রভামলকুমার রার

তুমি এসো কুমারী স্থদিতা বিজ

আমার মনের নিজ্জে তোমার, হে পাছ, বাজে রিনি-থিনি চরণ-নূপুর শুনি কানে— জীবন আমার হল বে মুবর, অপান্ত চাওরা-পাওরা নিরে চলেছে যক্ত মোর প্রাণে। জীবনে আমাৰ ভূষি এনে হেনে বাও ছলে, আমি কাঁদি আৰ ৰবা-কুল ল'বে মালা গাঁথি ওলো জিন্ন, এনো, অমৃতের বাণী বাও বলে, সার্থক হোক না-কোটা কুলনী-গছাটি।

ভাবি এক, হয় बांब

जीपिनी शक्यांत्र दांत्र

নয়

সুস্থক মোটবে চড়েই পল্লবকে জড়িয়ে ধরল। বলল: না পল! আজ কী থূশি যে হয়েছি—জানো না।

কেন ?

আর কেন। ঐ গিলো—গার ভালো—কিন্ত কা বে দান্তিক। ধরাকে সরা জ্ঞান করে। ওকে বে থ করে দিয়েছ—সাবাস! জাভো! Ausgezeichet! Vive le grand chanteur! Grazie a Dio!

পদ্ধৰ হেনে বলে: ৰাকি চাৰটে ভাৰার জ্বধননিগুলি আৰু বাকি থাকে কেন ?

যুক্ষ হেদে বলল: সত্যি এত আনন্দ আমি অনেক দিন পাইনি। আর কী গানই গাইলে দাদা! ফাটিরে দিলে তানে গমকে গর্জনে হুলারে! ধক্ত হে চারণ-আবাসাডর! আমাদের দেশ যদি দৈবাং স্বাধীন হয়—মানে আমাদের জীবদশার, তবে ভোমাকে পাঠাতেই হবে আমাসাডর করে দেশের পর দেশে।

পরব প্রসঙ্গান্তর আনতে বলে: কিন্তু সালভিনির কাছে এলিওনোরা আনাকে নিয়ে যাবার জন্মে এখন উঠে পড়ে লেগেছে কেন বলতে পারো ?

পারি না ? আমি কী না পারি শুনি ? সালভিনি এলিওনোয়ার প্রেমে অথৈ জলে।

পল্লব চনকে ওঠে: বলো কি হে ? বাট বছরের বুড়ো !

যুক্ত বলল: এলিওনোরাও এমন কিছু কচি খুকি নয়। চল্লিংশর কিনারায়।

ভবু—

তবুর কী আছে এতে ? রোমান্সের আয়ু এদেশে আমাদের চেয়ে চের বেশি। পাঁচান্তর বংসরের পিতা এদেশে এবনো পঞ্চান্ত বংসরের নববধ্ব পাণিগ্রহণ করতে উঠে পড়ে লেগে থাকেন এবং প্রায়ই করে থাকেন।

পল্লব লচ্ছিত হয়ে ধমকায়: কীষে কথার ছাঁদ!

রুমফ বলল; কিছ—থাক এ সব অলীল মধুবাক্য। ভোমাকে আমার একটা অনুবোধ আছে ভাই! তুমি সালভিনির সঙ্গে দেখা না করে বার্লিনে ফিরো না।

বার্লিনে ফিরব আমি—কে বললে ?

भारत-यि एक्टवा।

পদ্ধবের মনে বিধান ছেয়ে আসে। একটু উদ্ধাসের বিহ্যুতের পরেই ছেয়ে আসে বেদনার অন্ধকার।

मन

গিদোর কাছে পল্লব ইতালিয়ান গান শেখা স্থক্ত ক'রে দিল। শেখাতে শেখাতে উল্লাস বেড়েই চলল। শেষে একদিন বলল: এলিওনোরার কথা তুমি ঠেলো'না। সালভিনি মাসখানেকের মধ্যে রোমে কিরবেন—ভাঁকে এ গানগুলি ভোমাকে শোনাভেই হবে।

পরব সাক্ষাৎ গিদোর কাছে উৎসাহ পেরে ভেবেচিন্তে স্থির করল—যাবে সাগভিনির কাছে। এর পরে মাঝে মাঝেই এলিওনোরা ওকে নিমন্ত্রণ করন্ত। পল্লবের সত্যিই ভালো লেগে গেল এলিওনোরার ব্যবহার। শেষে একদিন ঝোঁকের মাথায় আইরিনকে লিখবে না मिश्रद ना कदि अनित्य नित्र पर कथा : की जांद खत्र कीरन कार्टिक রোমের আবহাওয়ায়। কোনো উত্তর এল না। ওর 'সদটেলমান' মন আবার খারাপ হয়ে যায়—ফের ইচ্ছা হয় দেশে ফিরতে। কী হবে মিথ্যে ইতালিয়ান গান শিখে ? কী হবে সাল্ভিনির সঙ্গে দেখা করে ? ওর মনের মধ্যে কেবলই খচখচ করতে থাকে: কুরুম জেলে আর সে কি না এখন অবাস্তর বিয়াংকি সাল্ভিনি এলিওনোরার কথা ভাবছে ? গান তো ইন্দ্রিয়-বিলাস স্কল বিলাস হ'তে পারে, কিন্তু বিলাপ ছাড়া আর কী? অথচ মজা এই বে, এ-বিলাসে এখন কই আর উল্লাদের ছিটে-কোঁটাও তো নেই! একদিকে আইরিনের কোনো খবরই নেই, অন্তদিকে কুশ্বুম ওকে ডাকছে দেশে ফিরতে, **অ**থচ ঠিক এই সময়েই কি না ও আটক পড়ল কো<mark>থাকার-কে</mark> **শাল্ভিনির জন্মে?** বিড়ম্বনা বলে আর কা'কে?

এমন সময়ে লসান থেকে এল আইরিনের আর এক ছবিকার্ড। তথু লেখা: আমরা থুব ঘবে বেড়াচ্ছি—কবে যে কোথায় থাকি নিজেরাই জানি না। পরে লিখব। আইরিন।

কিন্তু আইরিনের হ'-হ'টি কার্টেই এই একই আশাস—পরে
লিখবে। এর মানে কী? আইরিন কি ওকে দূরে রাখতেই চেষ্টা
করছে? কিন্তা ভূলে যেতে? কে জানে? দ্বিরাশ্চরিত্রম্—
আওড়ায় মনাক্ষোভে। তারপরেই আসে অনুশোচনা। ছি ছি?
আইরিন তো যেমন তেমন মেয়ে নয়!

একদিন স্বার থাকতে না পেরে যুস্ফকে বলঙ্গ। স্বুস্ক শুনে ভাবিত হ'লে তাই তো ব'লেই চুপ।

এর পাত আট দিন বাদে আইরিনের আর এক ছবিকার্ড এল জারমাট থেকে। এথানে চমংকার তুমারের দৃশু—ব্যন্।

পল্লবের মন ত্ঃথে অভিনানে কালো হ'রে আসে। রুখে উঠে ও আবো মন দিল ইতালিয়ান গান শিথতে—যাকে বলে প্রতিহিংসার সহিত।

এমন সময়ে একদিন বিকেলে হঠাৎ য়ুসুফ মুথ অন্ধকার ক'বে বলল: ভাই, মেগ্রাদ ফুরুল, আজই বার্লিন ফিরতে হবে।

পল্লব ওব মুখ দেখেই চমকে গেল: কী হয়েছে ?

মুম্মক মান হেসে বলকা: সে আমি বলতে পারব না। চললাম—ঘণ্টাথানেক বাদেই ট্রেন।

সে কি? এত তাড়া কিসে?

যুক্ষ হেদে বলে: আর কিসের? আকাশের তারারা জোট পাকিয়ে তাড়ালো। আমি জ্যোতির্ময় পুরুষকে না মেনেও মাঝে মাঝে জ্যোতির না মেনে পারি না।

পল্লব হঠাং বলল: চলো, আমিও ধাই। আমার এখানে একটুও ভালো লাগবে না তুমি চ'লে গেলে।

যুক্ষ বলগ: না, সেটা ভালো হবে না। এলিওনোরা ভোমাকে সভ্যিই নিজের ছোটভাইরের মতন মনে করে। ভোমার সম্বন্ধে ও বে-ভাবে উচ্ছুসিত হয়ে ওঠে তনলে ভোমার গৌর কর্ণমূল লোহিত—কিন্তু সে বাক্। ও ভোমার সম্বন্ধে অনেক কিছুই সালভিনিকে লিখেছে, তিনি আর দিন পনেরর মধ্যেই আসকেন—

মিন্টি স্থরের নাচের তালে মিন্টি মুখের খেলা আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



म्थानक कि दिन



বিস্কৃটএর

প্রস্তকারক কছ্ক

আর্নিকতম মরগাতির সাহাব্যে প্রস্তুত কোলে বিষ্ণুট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০ ভোমার সম্বন্ধে ঔৎস্থকাও প্রকাশ করেছেন। এ-সমূরে you must not let her down বলেই একট খেমে: ভাছাড়া শ্ৰীমতীই ৰখন **অভ**র্ছিতা তথন বার্দিনে ফিরে **এ**মান কী করবেন গুনি ? তৃণ-কর্তন ? ফিরতেও ভো পারে।

উ হ:। ও যদি সত্যিই ভোমাকে এড়িয়ে চসতে চেয়ে থাকে छर्द এ সময়ে किছুতেই বার্লিন ফিরবে না। বঙ্গেই হেসে: ভাই, ওঁরা যথন ধরা দেন তথন কাছে আসেন যেন পোষা পায়রা। কিছ পরে আবার যথন উধাও হন তথন ঈগল পাখীর মতন কোন ছায়াপথে যে বিচরণ করেন—দূরবীণ দিয়েও পাত্তা পাওয়া বায় না। বলে ওর পিঠে হাত রেখে: কিছু তুমি ভেবো না—আমি ইতিমধ্যে

সে ৰাই হোক, বার্লিনে ফিরে যে করেই হোক এ-রহস্ত ভেদ করব। আর তংকণাং আমাকে জানাবে—কথা দাও ?

যুম্মক হেসে বলল: জানাব বৈ কি। কেবল তার করলেই ভূমি উড়ে এসো—কেমন ? মানে, যদি শ্রীমতীকে গ্রেপ্তার করতে চাও।

अपेष कामात्रक निलिहिनाम। जिनि উखरत धरा-हाँ हा एन नि!

হাসির উপরে একটা বিষাদের ছায়া মতন !

পদ্ধব ভাবে আর ভাবে: কী হ'ল ওর হঠাং !

এমনি সময়ে এলিওনোরার মোটর এসে হাজির। সেই উর্দিপরা সার্থি ওর হাতে দিল কার্ড: পল! একবার এক্ষণি আসতে পারো কি ? এখানেই ডিনার খেও ও খাওয়ার পর রাত্রে খেকে যেও। नमोषि ।

এগারো

এলিওনোরার মোটরে ছ-ছ ক'রে চলতে চলতে পল্লবের মনে রাজ্যের ত্রভাবনা ভিড় ক'রে আসে। এলিওনোরার সঙ্গে সম্প্রতি গানের স্বত্রে একটু খনিষ্ঠতা হলেও এ-ভাবে সে ওকে ডেকে পাঠাবে এ ও ভাবতেই পারে নি। মুশ্রফ ওকে ভরসা দিয়েছে বটে বে পল্লবকে নিজের ছোট ভাইয়ের মতন ভালোবাসে—তবু—মনে হয় ফের কুছুমেৰ কথা। কিন্তু সব ছাপিয়ে ওর মনে পড়ে যুস্থফের প্লান হাসি ও পল্লবের প্রশ্নের উত্তরে মাথা-নাড়া : সে আমি বলতে পারব না।

এলিওনোরা ওকে সত্যি আপন মনে করে বলেই ডেকেছে ভারতে ভালোও লাগে • অথচ একটা কেমন বেন সন্ধোচও আসে। কুকুমের একটি প্রায়েক্তি ওর ফিরে ফিরে মনে হর: আমাদের এখানে আসা स्मार्यक मनखब कानवात करन नद-निकालत रेखित कत्रक-मानूब হ'তে। বিধান অপ্রতিবাঞ্চ-অবচ-তবু এলিওনোরার মত মনোরমার স্নেহ এত সহজে পেয়ে ওর মন বৃশি হ'য়ে ওঠে—কুকুম এদের জাবনের কভটুকুই বা জানল? অমনি সঙ্গে সঙ্গে প্রশ্ন আসে: किंच जानाव अमनरे वा की पवकाव?

উত্তর খুঁজে পার না। হয়ত পেত-বদি মনের মধ্যে ওর বিবাদের ছারা ঘনিয়ে না আসত।

এলিওনোরার স্থব্দর ভিলার মোটর এসে শাড়াভেই ওর কামেরিরেরা ১ অভিবাদন ক'রে ওকে নিরে গেল সোজা এলিওনোরার শব্নকক্ষে।

১। পৰিচাৰিকা।

পরব মেডকে মৃত্রবে জিজ্ঞাসা করলে: কী ব্যাপার ? মেড ফিশ-ফিশ ক'রে বলে: Signora e' ammalata, ১

পল্লব এলিওনোরার খবে চুকেই চম্কে গেল। কমনীয় মুখের উপর কালো ছায়া, চোথের কোলে কালি—তাছাড়া প্রসাধন নেই ব'লে আবো ধেন বিবর্ণ দেখাছে। শরন অবস্থাতেই হাত বাজিমে পল্লবের হাত চেপে খ'বে বলে: বোসো ভাই।

বিছানার পাশেই একটি কুশনওয়ালা চেয়ার ছিল, পল্লব বসল। এলিওনোরা এবার ওর হু'টি হাত নিজের হু'হাতের মধ্যে বন্দী ক'রে রেখে চোথ বোজে।

মিনিট ছই পরে এলিওনোরা চোথ খুলে পল্লবের দিকে তাকিয়ে হাসে—নামমাত্র হাসি—

ব্যাপার কি এলিওনোরা ? তোমার কামেরিয়ের। বলল-অনুখ। হাা, এ আমার কালব্যাধি—মাথা-ঘোরা। একটু বোসো ব'লে ওব স্বভাবদিদ্ধ মধুৰ হেদে বিদায় নিল। কেবল আবাজ লে ভাই! বগছি। বগতেই ডেকেছি। উ:! ব'লে ফের চোখ বোঁজে। এলিওনোরা ঘ্মিয়ে পড়েছে। পল্লব পা টিপে টিপে বাইরে ষায়—বাগানে। আকাশ মেঘলা, ঠাণ্ডা হাওয়ায় ওর দেহ জুড়িয়ে ষার। কেবল চিম্ভার তাপ বেড়েই চলে: কী ব্যাপার ?

কামেরিয়ারার পুনরাবিভাব: Favorisca Signora.... ৩

বারো

এলিওনোরা বিছানায় অর্থশায়িতা অবস্থায় ওর হাত ধ'রে টেনে জ্বোর ক'রে ওকে বিছানার উপরেই বসিয়ে বলে: ভূমি কভ **কী** ভাবদ হয়ত—কি**ছ** আমি তোমাকে না ডেকে পারলাম না। মনের ভার একলা বইতে পারি না আর। হয়ত অক্তায় করলান— মুস্ফ কি সাধে আমাদের অবজ্ঞা করে—

নানা, সে কি কথা? আমি---

এলিওনোরা সান হেসে ওকে থামিয়ে বলে: শোনো প্ল! আমি ভোমাকে বা বলতে ডেকেছি শুনলে তুমি এতই অবাক হবে, বে হয়ত ভাববে আমি বাড়িয়ে বলছি।

ना ना-

শোনো আগে, তবে না না কোরো। আমি আজ এত তুর্বল বোধ কৰছি—ৰে কথা বলতেও কষ্ট—

তবে এখন থাক না-স্থামার কোনো কাজই তো নেই, একট পরে হবে।

না পল! না ব'লে আমি আর থাকতে পারছি না---নৈলে ভাবো কি তোমাকে ডেকে পাঠিয়ে জ্বোর ক'রে বলাভ চাইভাম বা—বা—এক যুস্কে ছাড়া আর কেউ জানে না? ব'লেই ফের চোখ বোবে।

পরৰ চুপ ক'বে ওর দিকে দিকে চেয়ে ওর একটা হাতে হাত

এলিওনোরা একটু পরে চোখ চেরে বলে: মুস্ক ভোমাকে मानियान मचल्क वल्लाक् निक्तवरे ?

२। क्वी अनुहा। ०। वदा क'रत-क्खी- কিছু বলেছে—ভবে আমাকে ও মনে করে—নাবালক, তাই বেশি বলেনি।

এলিওনোরা সান হাসে: না, ভোমাকে ও মুখে যা বলে মনে মনে তা ভাবে না। ও ভোমাকে বেশি বলেনি কেন ভনবে ?

পল্লব ওর দিকে প্রশ্নে'ৎস্ক নেত্রে তাকায়।

এলিওনোরার হাসি আবো দ্লান হ'রে আসে, বলে: ও ভোমাকে ধ্ব সাবধান হ'রেই বলেছে এই জন্তে যে, বেশি বললে আমার কথাও বলতে হয়—আর দেটা ও পারে না আমার অমুমতি বিনা। কিছা শোনো—সব কথা শুনলে বৃষ্তে পারবে—কিছা—কে জানে—হয়ত ভূল বৃষ্বে ? হয়ত এখনই ভাবছ অবাক হ'য়ে—সিনেমা-তারকাও কি না এমন সেণিটমেন্টাল।

পদ্ধব ওর হাতে হাত বৃলোতে বৃলোতে বলে: না এলিওনোরা, মানুষের পেশা যে তার স্বভাবকে বদলে দিতে পাবে না এটুকু বৃশ্বার মতন সাবালক আমি হয়েছি বিশাস কোরো। কারণ— কারণ ঘা আমিও থেয়েছি হয়ত মুক্ষ তোমাকে কিছু ব'লে থাকবে?

আভাদে কিছু বলেছে। তবে ও ভাবি চাপা মামুধ—কাউকেই কিছু বলে না, যা ভাবে তা গোপন ক'বে এমন ভাব দেখার যাতে লোকে ওকে তা-ই ভাবে যা ও নর। তবে আমাকে ও আইরিনের কথা বেশি না বললেও বিতাব কথা বলেছে বেশ ঘটা ক'বেই যাব—ব'লে দীর্ঘনিয়াদ ফেলে—যে এক কথার সব ছেড়ে চ'লে 'মেতে পারল সত্যি, বিতাকে আমি হিংদে করি।

হিংদে ?

হাা, কারণ সে পেরেছিল যা আমি পারিনি—পারিনি—কারণ—ক্ষিত্ব না, বলি আগে—ভূমিকা রেখে। কেবল একটি ভর্মা চাই—ভূমি ভনতে রাজি আছ তো ?

সে কি কথা এলিওনোরা ? আমার একটি দিদির সাধ ছিল অনেক দিন থেকে। রুসফ আমাকে ব'লে গেছে বে তুমি আমাকে ছোট ভাই ব'লেই বরণ ক'রে নিয়েছ—আমি না চাইন্ডেই—

এলিওনোর। মৃত্ হাসে: যিশুর একটি কথার আমার আপতি আছে। তিনি বলেছিলেন—বে চায় সে পায়ই। আমি বলি—বে প্রেমন ক্ষেত্রে সেই পায় না বে চায়—পায় সেই বে পেতে না চেবুরে দিতেই ছোটে। তুমি এত লোকের স্নেহ পাও এই জন্তেই—তোমার ভাষায়—তুমি দেবার সময়ে প্রতিদানের কথা ভাবো না ব'লে। আর তাই হয়ত দিতে পারো এত সহজ্ঞে। কিন্তু শোনো—কথায় কথায় কথা বেড়ে যাচ্ছে। গিদো ফোন করেছে, সে ডিনারে আসবে। তার আসার আগেই যা বলার ব'লে শেষ করতে হবে।—তোমার হাত দাও, যদি অবশ্য আপতির না থাকে—

পল্লব আর্দ্র হ'রে ওর হুটো হাতই নিজের হাতের মধো নিরে বলে: ভাই-বোন পাতিয়েও এমন কথা বলে ?

এলিওনোরার মুথে ফের সেই করুণ হাসি ফুটে ওঠে: এত মিটি
কথা কত দিন শুনিনি—মারিয়া যাবার পর। ব'লে হাত ছাড়িয়ে
চোথের জল মুছে স্তরু করে: শোনো তবে। মারিয়ার সম্বন্ধে যুক্তফ তোমাকে হয়ত বলেছে—সে সম্পর্কে আমার বোন হ'য়েও স্বভাবে ছিল ঠিক আমার উপ্টো। তার স্থিত্য বিশ্বাস ছিল বাইবেলে। আমি



ক্যাথলিক মাত্র নামে, সে ছিল মনে-আগে। ভার্জিন মেরীর মৃতি, ঐ বে দেখছ— ব'লে বরের কোনো কাচের বেরাটোপ-পরা একটি কুলর মেরী-মৃতি দেখিরে— ঐ কুল্লিছটির সামনে সে রোজ ধৃপ-দীপ ভালাত, স্তব করত নতজাত্ব হ'রে সাঁঝ-সকালে।

তাই যুস্ফ বখন তাকে বলল যে, সে কোরাণ মেনে মুসসমান না হ'লে ওদের বিবাহ হ'তেই পারে না, তখন সে তেতে পড়ল। জামি যুস্ফকে জনেক বোঝালাম, কিন্তু সে-সময়ে যুস্ফ ছিল দারুণ—মাকে বলে গোঁড়া—'বা নেই কোরাণে, তা নেই ভুবনে' গোছের মনোভাব জানোই তো। ওদিকে মারিয়াও ঠিক তেমনি গোঁড়া ক্যাথলিক, রফা হবে কোঝেকে? অথচ দেখ বিধাতার হুর্বোগ্য লীলা: এই হুটি মামুব ধর্মের পায়ে মনকে বলি দিলেও প্রাণকে বাগ মানাতে পারল না। কবি বলেছেন না—প্রেমের পথ নফ্ণ নগ্য? কিন্তু যাক, কথায় কথার কথা বেড়ে যাছে।

যুক্ষ চ'লে গেল অক্সকোর্তে দর্শন পড়তে। মারিয়া কোঁদে বলল

—যাবে কনভেটে। আমি ওকে অনেক বুঝিগ্রে-স্থানিয়ে ওর মন
ভালো করতে ভ্রমণে বেকলাম। জামরা যথন প্যালেষ্টাইনে, তথন
একটি ধনী ইছদি ওর প্রেমে প'ড়ে পাগলের মতন হ'য়ে যায়। মারিয়া
ভাকে ভাগিয়ে দিল, বলল সে ক্যাথলিক। গারিয়েল বলল সে ধুটান
হবে। মারিয়া তথন তাকে বলতে বাধ্য হ'ল, সে আর একজনকে
ভালোবাদে। গারিয়েল বকুলু: সে অপেকা করবে—

তার পর সে জনেক ওঠানীড়া, জাগু-পিছু—শেষটা মারিয়ার মন ডিজন-ওকে বিয়ে করল।

কিছ বিয়ে করার প্রায় সঙ্গে সঙ্গে ওর ভূগে ভাওল। কেমন ক'বে

—সে-সব বলার আজ সমর নেই সে অনেক কাণ্ড—ত। নিয়ে
একটা রীভিমত নাটক লেখা যায়। শেবে মারিয়া মন:কটে
আত্মতাা করল। সে মন:কটের প্রধান কারণ এ নয় যে, গাভিষেল
লক্ষ্যি—প্রধান কারণ—ওর হ'ল আত্ময়ানি বে ও ছিচারিণী হয়েছে।

চোখের অংগ ফের মুছে এলিওনোনা ব'লে চলল: মুত্রক এ খবর পেরেই ছুটে এল রোমে। ওকে সেই একবারই কাঁদতে দেখেছি। বাক।

ভারপর ও উদাস হ'ংর শাস্তির আশায় সারা মুরোপ ঘ্রে বেড়ালে।
ছ'-সাত বৎসর ধ'রে। শেবে গেল রুষ দেশে। সেথানে ১৯১৭
সালের নভেম্বর বিপ্লবের সমরে ওর প্রাণ নিয়ে টানাটানি—কারণ ও
কোধার ব'লে ফেলেছিল বে বললেভিকরা মানুর নয়—দানব।
লেনিনকে টিপ ক'রে বে-মহিলাটি গুলী ছুড়েছিল সে মুক্ষকে চিনত।
কাজেই চেক পুলিশ ওর পিছু নেয়। ও অভিকপ্তে ছন্মবেশে
কোনো মতে পালিয়ে আসে—একেবারে অসহায় ও নিঃম্ব। আমি
ওকে আশ্রম্ম দিই এই ভিলাতেই। বলতে ভূলেছি—মামি ইভিম্বো
সিনেমার চুকে নাম করি। মুক্ষক আমার এথানে এসে শক্ত অক্সথে
পড়ে—নিউমোনিয়া। বহু শুক্ষবায় ওকে আমি সারিয়ে ভূলি।

ওর মনে কুডজভা জেগে ওঠে আশ্ররদানীর প্রতি। তাছাছা মারিরার দিদি জামি। ও জামাকে Sorella ৪ ব'লেই ডাকত।

কিন্ত জ্বৰৰ চতল তাৰ নিজেৰ থেয়ালে—ভালো-মন্দকে পিৰে একাকাৰ কৰে। কলে বছৰ খানেকের মধ্যে—বুৰতেই পাৰছ— আমরা প্রস্পারের প্রতি গভীরভাবে আরুষ্ট হলাম। তারপর আবার সে কভ কাণ্ড ক্রভ ওঠাপড়া ! • • সব বলার দরকার নেই ক্রছ। পরিশামটুকু বলি: আর মারিয়ার জন্তেই পরস্পারের কাছে এসে পদ্ধ সম্বেও মারিরাকেই ভূলে গেলাম ওর প্রতি ত্রনিবার টানে।

কিছে ও ভূলেও ভূল.ত পারেনি। ফলে ওর এল চিত্রানি দে আর এক নাটকীয় কাণ্ড—যাক্। ও বলল: না এ হতেই পারে না—এরি নাম পাপ—মরিয়ার দিদিকে আমি কিছুতেই দে-চোথে দেখতে পারি না বে-চোথে মারিয়াকে দেখেছিলাম: আমার মাথার আকাশ ভেঙে পড়ল। তথন মুস্তফ আমাকে বোঝানো স্থক করল। আমার প্রাণ সার না দিলেও শেবে মন সার দিল—পাপের ভরেই বলব। ক্যাথলিক সংস্কার তো! আমরা ঠিক করলাম—পরশারের সঙ্গে আর দেখা করব না, মারিয়ার মান রাখতে অস্ততঃ আরো কিছুদিন অপেকা করব।

এই সমরে সাল্ভিনি দার নৎসিয়োর এক মেলো ছামার আমার অভিনয় দেখে 'আমার জন্তে পাগল হয়ে উঠলেন। দিনের পর দিন আমাকে ফুল পাঠানো, গান শোনানো—আরো কড কী। আমি তাঁকে বললাম যে আমি আর একজনকে ভালোবাসি। তিনি জানতেন—কা'কে। সিনেমা-ভারকাদের তো ঘনোয়া ব'লে কিছু খাকে না—যাই করি আমরা, রটে যায় হাজার লোকের মুখে। সাল্ভিনি বললেন: আমি একজন ভারতীয়কে বিবাহ করব এ হ'তেই পারে না। তাছাড়া ভয় দেখালেন—মুম্ফকে বিরাহ করলে সে আমাকে আর সিনেমায় অভিনয় করতে দেবে না। কথাটার মধ্যে কিছু সত্য ছিল, কারণ মুফ্ক থিয়েটারের উপরে না হলেও—টিকির উপরে ছিল হাড়ে চটা। বালিনে এক টকিতে কাজ ক'রে ওর কিত্রতা আরো বেড়ে যায়।

্র-কে আমাদের সিনেমার ডিরেক্টর ছিলেন সালভিনির বন্ধু।
তিনিপ আমাকে ধরলেন এসে। সঙ্গে সঙ্গে আমার মামা গিদেওি
একদিন আমাকে ধ্র ধমকালো: সাল্ভিনি শুধু ধনী নন—ইভালির
শ্রেষ্ঠ গায়ক—বিশ্ববিখ্যাত—তা ছাড়া মুসুফ যথন আমার মারিয়ার
ওজর ভূলে সময় চেয়েছে, তখন তার মুখ চেয়ে ব'সে থাকা আমার
সাজে না—আমার কি আত্মসন্মান জ্ঞান নেই—ইত্যাদি ইত্যাদি—
বলতে বলতে ক্ষেপে উঠে আমাকে মুখ পাগল কাণ্ডাকাণ্ডজ্ঞানহীন—
আবো কত কা উপাধিই বে দিল—যাক্।

আমার প্রথমে খ্বই রাগ হয়েছিল বৈ কি—কিন্ত রাগ পড়ে বেতে
মনে হল—সভিাই তো! তা ছাড়া রুস্থফের সমর-চাওরার জন্তে
আমি নিজেও থ্বই বা থেয়েছিলাম—গিলো আমার সেই কাটাবারে
দিল মুনের ছিটে। আমি রোখের মাথার সাল্ভিনির প্রস্তাবে রাজি
হয়ে যুস্ফকে তার ক'রে দিলাম যে সামনের মাসে আমাদের বিরে।

ভাব পেরেই রুম্মক ভুটে এল—তোমাকে সজে ক'রে। বলল: করছ কী? বাকে ভালোবাসো না ভাকে—জামার দারুপ রাগ হ'ল, বললাম: আহি কা'কে ভালোবাসি না বাসি তাতে বে আমাকে ভালোবাসেনি তার কী? রুম্মক ছুঃখিত হ'রে বলল: আমি ভোমাকে ভালোবাসি—কিছ আমার ধিগার কারণ কি তুমি আনো না? আমি কুইকটে বললাম: সে ভো আর কিয়বে না? ভুমি কথার কথার স্বাইকে সেন্টিমেন্টাল বলে বিজ্ঞাপ করো—কিছ এ ভোনার কী সুবৃদ্ধি বলো ভো? ও ভখম বীকার করল বে আনাকে

আপনার জন্যে চিত্রতারকার ঘত অপূর্ব লাবণ্য

মালা সিনহা সতিই অপৃথ বেহলবিশের
অধিকারী। কি করে তিনি লাবণা এক
মোলায়েম ও হন্দর রাখেন ?
"বিশুক্ত, গুল্ল লার টয়লেট সাবানের
সাহাযোঁ", মালা সিনহা আপনাকে
বলবেন। চিত্রতারকাদের প্রিয় এই মোলায়ের
ও হগন্ধ সৌন্দর্য্য সাবানটির সাহাযোঁ
আপনারও থকের বহু নিন। মনে হাধুবেন,
আনের সময় লাল সতিই আনুপ্রায়েক।

বিশুদ্ধ, শুপ্র

চিত্রভারের সৌন্দর্য সাবাদ



হিন্দান লিভার লিখিটেড, করু ক এছত।



ৰে ও ক্তথানি ভালোবেসেছে নিজেই ভালো ক'বে বুঝতে পারেনি, সে অনেক কথা।—শেষে বলস: বিবাহ সহত্তে আমাৰ মতামত ভূমি জানো। আমি বিশ্বাস করি বিবাহে—ৰদি তাৰ প্রতিষ্ঠা হয় শ্রেমের ও ধ্রন্ধার ভিত্তিতে। তোমাকে আমি তথু ভালোবাসিনি,— আছা করতে পেরেছি। তাই আমার মন ব্যথিমে উঠছে ভাবতে লে, তুমি বিবাহ করবে কারুর নামের জল্ঞে বা নিজের স্থাবিধের জন্তে। না, যার কাছে আমি এত ঋণী, যাকে শেষে অনিচ্ছা সত্ত্বেও ভালো না বেসে পাবি নি—সে হীন হ'বে যাবে আৰু আমি বসে শেখব ? আমি ঝরঝর ক'বে কেঁদে ফেসলাম, ও আমাকে জড়িয়ে ধরে বলল: এলিওনোরা, মনগড়া নীতির আইন-কায়ুন মেনে ভুল ক্রেছি বার বার, কিন্তু এখন থেকে সানব না আর মনের মানা, **চলব হাদয়ের নিদে**শিষ্ট। তোমাকে জামি বিবাহ করব—হাতের শল্পী আৰু পাৰে ঠেশৰ নাবুদ্ধির বিধিবিধান মেনে। তুমি ঠিকই ৰলেছিলে – যা গেছে, আর ফিরতে পারে না তাকে জপ ক'রে ভাপই ৰাড়ে, জালো মেলে না—অতীত চাৰণ নিয়ে যে বেঁচে থাকে তাৰ উপাধি জীবন্ম, তই বটে।

আমি আনন্দে অধীর হ'রে সালভিনিকে একটা চিঠিতে সব কথা জানিরে শেবে লিগলাম: তোমার সঙ্গে আমি আর দেখা পর্যন্ত করব না—দরা ক'রে ভূমি আমার সঙ্গে দেখা করার চেষ্টা কোরো না।

খা থেয়ে সালভিনি বেকলেন ভ্রমণে—বিশেষ ক'রে আমাকে ভূলতে। একটি চিঠিতে আমাকে ভগুলিথে পাঠালেন: তুমি রোমে আর একজনকে বিবাহ কয়বে এ আমি রোমে ব'লে দেখতে পারব না।

মনে আমার হৃংথ হ'ল বৈ কি। কিন্তু উপায় কী? সুস্থফ কিরে এসেছে— মুস্থফ আমার হবে— আমি তার—এই আনন্দে আমি উক্তিরে উঠলাম, সালভিনির ক্তন্তে হৃংথ এ-উচ্ছ্যাসের কোয়ারে ধুয়ে মুছে ভেসে গেল।

কিছ বাধা এল এবার এক অচিন পথে। রুমুফ ইতিমধ্যে ভিতরে ভিতরে বদলে গিয়েছিল। আর কেমন ক'রে শুনবে? ভোমার সম্পর্লে।

পদ্ধৰ চমকে উঠল: আমার গ

হাা তোমার। তোমার কাছে বার্লিনে ও দিনের পর দিন শুনত কুরুমের কথা। মুখেও তাকে হেসে উড়িতে দিত—দেশধক, সবুক এই সব ব'লে। কিছ—এ বিধাতার আর এক বিচিত্রলীলা—মুখে ও দেশভজির আদর্শকে যতই বিদ্ধাপ করে ওর মনে ভত্তই যনিরে ওঠে আল্মপ্রানি—দেখতে দেখতে ও কেগে উঠল বেন এক নজুন চেতনার—নজুন বিবেকে—হরে উঠল অলান্তঃ। ওর মনে হ'ল—যে কথা পরে বলেছিল আমাকে—বে, পুরুষমাত্র প্রেমকে বরণ ক'রে সার্থক হ'তে পারে না, তার চাই একটা কর্মের ক্ষেত্র, কিছু গ'ড়ে ভোলার ম্বোগ।—মঞ্জা দেখ: বে-আদর্শকে ও সবুক্ষমনের সেণ্টিমেণ্টালিটি ব'লে বরাবর বাল-বিদ্ধাপ ক'রে এসেছে হঠাৎ সেই বেন ফিরে এসে শোধ জুলল ওর যাড়ে চেপে—ওর মনে হ'ল, নিছক ব্যক্তিগত আনন্দ সার্থকতার পথ দেখাতে পারে না—আদি-র গণ্ডি কাটাতে না পারলে আমি-র ভাবে মান্তুয় কুরে পড়েই পড়ে—এক পরম বার্থতার।

বলেছি—থসৰ কথা ও আহাকে বলে পরে। কাজেই তথন

প্রারই অক্সমনত হ'রে পড়ে। হাসে বটে সমানেই, কিছ সে হাসিতে আর বেজে ওঠে না ওর স্বভাবসিদ্ধ বিজ্ঞতার স্বর, শেবে আমি একদিন ওকে গ'রে পড়লাম। ও তথন বলল যে, ওর মন একটু থিতিয়ে না গেলে কিছু বলবে না।—একদিন হঠাৎ কথায় কথায় বলল ক্র্মের বার বার জেলে যাওয়ার কথা। পরে একদিন বলল—সে অসম্ম্ হ'য়ে জেল থেকে বেজতে না ংক্তে ফের জেলে গেছে। আমি ভর পেলাম—কিছ সে-ভয়ের নাম দেওয়া ভার। ভাবলাম—যাক, কাল কি পীড়াপীড়ি ক'য়ে—ও বলবে পরে কী ভাবছে—বলবেই—যথন কথা দিয়েছে—কারণ স্বভাবে ও সভ্যবাদী।

হঠাৎ পঞ্চ ৰাতে ও আমাকে ৰলগ: এলিওনোরা! জানি—
তুমি কত কী ভেবে তৃঃথ পাছে—কিন্তু—আর একটু ধৈর্য ধরো—
আমার মানে—বতক্ষণ আমার মন না স্থির হছে ততক্ষণ কী ক'রে
বলি যা তোমাকে বলতে চাই ?

আমার মন ফের সেই নাম-না-জানা ভরে ছেরে গেল, কিছ বললাম শাস্ত স্থরেই: আমি জানি—ভোমার মন ভালো নেই। কিছ কী হরেছে একটু অক্তত জাভাস দাও ? কোনো থারাপ থবর ?

ও এড়িয়ে গেল, বলল: এখনো আমাকে জিজাসা কোরোনা।
আমি কাল সকালে তোমাকে ৰলব। আজ রাতে আমি আমার
মনের সঙ্গে একেবারে একলা মুখোমুখি হ'তে চাই। ব'লেই বেরিয়ে
গেল।

এ রকম ও কথনো করে নি এর আগে। সারা রাভ ফিরল না।
আমার ঘূম হল না। কী হল আবার ? আমাদের বিবাহ হবে
মাস হুই পরে সব ঠিক—এ সময়ে আমার মাথা ঘূরে উঠল।

পরদিন সকালে ও ফিরেই বলল: আমার মন দ্বির হয়েছে— আমি এদেশে আর টিকতে পারছি না—এবার দেশে ফিরতেই হবে। সময় এসেছে।

আমি চোথে অন্ধকার দেখলাম, বললাম: সে কি? কথা ছিল—তুমি এদেশেই থাকবে—আমাদের বিবাহ সামনে—

ও মান হেসে বলল: মানুষ যা ভাবে তাই কি পারে? স্থামি ভেবেছিলান প্রেমের জন্তে সব পারা যায়। কিন্তু আমার চোথ খুলে গেছে। আমি দেখতে পেরেছি যে যুরোপের সভ্যতার আছে তর্ বাইরের চেকনাই, সে যতই আদর্শ আদর্শ কক্লক, সভ্যি বিশাস করে তথু ভোগকে। বিজ্ঞান তাকে এনে দিয়েছে এই ভোগের উপকরণ—শান্তিহীন অন্তহীন ভোগ, ভোগ, ভোগ। তাই আৰু পে বিজ্ঞানের উপাসক। কিন্তু ভারতবর্ষের বাণী এ নয়, কারণ তার বাইরের চটক না থাকলেও অস্তবে আছে এমন এক সম্পদ বা ম্বরোপের চোথধাধানো ধুমধামে নেই। তাই আমাদের দেশে এ যুগেও জন্মায় গান্ধী, দেশবন্ধু, তিলক, অরবিন্দ, কুশ্কুমের মতন মামুব। এরা ভোগের মোহ জয় করেছে এমন কোনো সত্যের ষোগে যার দেখা পেতে মুরোপের এখন অনেক দেরি। বলতে বলতে এলিওনোরার কণ্ঠস্বর গাঢ় হয়ে এল ও বলল: তাই তো কুর্ম অর্থ, দেহস্থথ, বিলাস, সাংসারিক প্রতিপত্তি, বড় চাকরির মেহ দব কাটিয়ে উঠতে পেরেছে এত সহজে। সে ফোর জেনে গেছে হরত তার **দ্বীপান্ত**র হবে। এ-হেন যুবকদের সঙ্গে বথন আমি নির্দে তুলনা করি তথন আমার আত্মকেন্দ্র মন ধিক্কারে ভরে ওঠে। ত

আমি আকাশ থেকে পড়লাম, বললাম: আর আমি? ও বলল: তুমি বাবে আমার সঙ্গে ভারতবর্ষে। আর কি?

আমি শুন্তিত হয়ে থানিকক্ষণ চুপ করে রইলাম, তারপর বললাম: তোমার সঙ্গে যাব ভারতবর্ধে বরাবরের জক্তে? ও বলল: নর কেন? আমাকেও কি তুমি এ দেশে বরাবরের জক্তেই ধরে রাখতে চাও নি? আমার কাছে বে দাবি করতে ভোমার বাধেনি তোমার কাছে সে দাবি করতে আমার বাধবে কেন? ব'লেই হেসে: ইংরাজিতে একটা প্রবাদ আছে—What is sauce for the gander should be sauce for the goose.

আমার মাথায় কে ষেন হাতুড়ি মারল। আমি বললাম:
আমাকে একট সময় দাও ভাবতে।

এলিওনোরার চোথে জঙ্গ ভ'রে এল, নিজেকে সামলে ব'লে চলল: সেদিন—মানে কাল সারারাত ঘুমতে পারলাম না, সব ছেড়ে ষেতে হবে অচিন দেশে। মন আমার উঠল কুথে। ওদিকে যুক্তফকে হারাবার কথা ভাবতেও বৃকের মধ্যে ওঠে টন টন ক'রে। যাক। পরদিন মানে আজ সকালে উঠে যুস্থফকে বললাম: তুমি দেশে ফিরে স্বদেশী আন্দোলনে যোগ দেবে বলছ, কিছু আমার সেখানে ঠাই কোথায়? ও অস্লান বদনে বলল: আমার পালে আর কোথার? আমি বললাম কিছ তোমার দেশবাসী? তারা কি আমাকে সাদরে বরণ ক'রে নেবে ? ও বলল ব্যঙ্গ হেলে: আদরের স্থাদ তো পেয়েছে অটেল, **এবার না হয় একটু মুথই বদলালে আমোরে আমারে ৫ ব'লে দান্তের** কাব্য পড়তে পড়তে এত উচ্চুসিত হ'য়ে ৬ঠো. না হয় তার জঞ্চে একট অনাদরই সইলে। আমি বললাম: শুধু অনাদরই তো নয় তোমারি মুখে তো শুনেছি সেদিন রিতার অবস্থা। ও বলল: তার কী অবস্থা এত দুর থেকে কী ক'রে জানব ? কিছ সে ওদেশে গিয়ে অস্থা হ'য়েছে যদি ধ'রেই নিই তা হ'লেও তুমিও যে অস্থা হবে এমন সিদ্ধান্ত করা চলে কি ? তা ছাড়া আমি যোগ দেব মহাম্মাজীর গ্রাম-সংগঠনের কাজে, শহরে থাকব না। তুমি হবে আমার প্রধান সহায়। আমি শিউরে উঠে বললাম: গ্রামে গ্রামে ঘূরব আমি ? ও বলল মন্দ কি ? ছবির জক্তে কি এমন অনেক গ্রামে বাওনি বেখানে ছবির জক্তে না হ'লে যাবার কথা ভারতেও পারতে না? এবার না হয় প্রেমের জন্মেই কিছদিন গ্রামে গ্রামে বুরবে, তা ছাড়া এত আগু পিছু ভাবলে কি কেউ ঝাঁপ দিতে পারে ?

আমার মন বিবাদে কালো হ'রে গেল, বললাম: যুক্ক, তুমি লানো না তুমি কী বলছ! ভাবছ শুধু তোমারি কথা। কিছ আমার দিকের কথাটা কি এতই তুচ্ছ যে এক কথায় সব ডিশমিশ ক'রে দিতে চাও ক'ণ দেবার কথা ব'লে? আমার একটা প্রতিষ্ঠা হয়েছে এদেশে। আমি ভালোবেসেছি আমার প্রতিপত্তিকে, সাফল্যকে, শিল্পে কৃষ্টি করবার আনন্দকে। তুমি প্রেমের জক্তে আমাকে বলছ এ সবই ছাড়তে। কিছ জিজ্ঞাসা করি, তা হ'লে তুমিই বা কেন প্রেমের থাতিরে আমার কাছে থাকতে পারবে না? ও বলল: থাকতে পারতাম যদি এথানে কোনো কাজের মতন কাজ থাকত কিছ এথানে আমি কী করব বলো? আমি বললাম: কেন? আমাদের সহযোগী হবে। আমরা শীগরিরই ভারতবর্ষ সম্বন্ধে একটা

ছবি করব। ও বাঙ্গ হেসে বলল: জানি। এরকম ছবি এদেত করেকটি বেরিয়েছে। ভারতীর রাজা, সাপুড়ে, রোপ-ট্রিক একা মহান্ত্রা গান্ধীকেও হয়ত নামতে হবে কৌপীন পরে আর সবাই শিউরে উঠবে ভেবে—এই অর্ধনগ্ন ফকির যে দেশের নেতা সে দেশের ন জানি কী অবস্থা ? আমি যদি থাকি এদেশে, তবে ভোমানেরি হথে মুক্ষিল; কেন না আমি কিছুতেই এই মানুষের মতন মানুষটিকে তোমাদের ছবিতে অবতীর্ণ হ'তে দেব না। আমার রাগ চ'ডে গেল বললাম: কেন ? তোমাদের দেশে নানা ছবিতে কি তিনি আসেনি এবি মধ্যে ? ভবিষ্যতে আবো আসবেন দেখে নিও। ও ব**লল** : আসতে পারেন যদি তোমাদের ক্যাপিটালিষ্টবা জাঙ্গ ফেলেন। কাউক্টে তাঁরা সাজাবেন সরোজিনী নাইছু, কাউকে মহাত্মা গান্ধী, দেখাবেঃ ত্ব জনে চরকা কাটছেন ভাজমহলের সামনে, টাকার জন্মে ছবিধাজৰ কী না করতে পারেন ? আমি রেগে বললাম: ভগুই টাকার জন্তে 🛊 শিল্পের আদর্শ ব'লে কি কিছুই নেই ? রূপ স্টে-ও বাধা দিয়ে বলত রাখো রাখো। আমি আজ তিন বংসর বার্লিনে একটি সিনেমাতেই কাজ করছি। আদর্শ ? সিনেমার আদর্শকে যদি আনর্শ নাম দিহে হয় তবে তেলাপোকারো নাম দিতে হয় পাথি। ছবিধ্বজদে: একমাত্র লক্ষ্য টাকা, আর তার উপায় হ'ল স্থন্দরীদের নগ্ন মৃতি হাব ভাব, ছলাকলা। এ দিয়ে যা সৃষ্টি করা হয় ভার নাম রূপ স্থঃ নয়, তার নাম কী, নাম ভূমি খুব ভালো ক'রেই জানো। আহি চেচিয়ে বললাম: এই-ই যদি তোমার ধারণা তবে আমাকে কাচে যে বতে দিলে কেন? ও বলল: শোনো এলিওনোরা, রাগ করো না আমি ভোমার বিক্লার ব্যক্তিগত ভাবে কিছুই বলিনি, কিছু সিনেমার আদর্শ আছে ব'লে যথন এই মাত্র তুমি জাক করলে তথন তা নিজমৃতির সম্বন্ধে কিছু না বলে কা ক'রে চুপ করে থাকি বলো-যথন জানি যে খুব সস্তা যৌন উত্তেজনাই তার উপজীৰ্য—থানে বাদ দিয়ে তোমাদের দক্ষ সিনেমার লক্ষ রংমহল ধ্ব'সে পড়বেই

বাগে কোভে আমি কেঁদে ফেললাম। ও আমার কাছে এতে অন্তপ্ত হয়ে আমার হাত ধরতেই আমি ওর হাত ঠেলে দিয়ে বললাত আব তোমাদের রাজনীতির আদর্শ—যাতে তুমি বোগ দিতে যাছে তার নিজ্মতিটি কী আমর। কি কেউ জানিনা না কি ? মুরোণে কি তাকে আমরা চাকুষ করিনি বার বার ? জাহিবিপনা, মিখ্যাচার কনসেন্ট্রেশন ক্যাম্পা, ঘৃষ, গুপ্তচরবৃত্তি, নিষ্ঠুরতা, খ্নখারাপি—কোনটাতে বাধে আজকের সেরা রাজনীতিকদেরও? তুমি কি নিজেবলাটাতে বাধে আজকের সেরা রাজনীতিকদেরও? তুমি কি নিজেবলাটাতে বাধে আজকের সেরা হাজনিতিকদেরও? তুমি কি নিজেবলাটাতে বাধে আজকের সেরা হাজনিতিক কেনি নিরকের বন্ধরে এক আঘটা মহাপ্রাণ দেশভক্তের মহন্ত দেশজোড়া মিখ্যাচার ও আঘটা মহাপ্রাণ দেশভক্তের মহন্ত দেশজোড়া মিখ্যাচার ও আতকবৃত্তির গ্লানিকে মুছে দিতে পারে না। না যুক্তক, হবার না

এলিওনোরা থেমে গাঢ় কঠে বলে চলে: একথা ওনে ও চম্ব উঠল। মুখ ঢেকে খানিক চুপ করে রইল। তারপরে মুখ তুত শাস্তকঠে বলল: তুমি ঠিকই বলেছ এলিওনোরা! আর এখ তোমাকে বলি—ভোমাকে ভালোবেদেও বে তোমাকে কাট টানতে চাইনি তার প্রধান কারণ—এই-ই, মানে তোমাদে কাকে আমার অস্তরের সার নেই। তোমার খাতিরৈ আটি

নিজেকে অনেক ক'রে বোঝাবার চেষ্টা করেছি বে হয়ত সিনেমার মতিগতি বদলানো যেতেও পারে। কিন্ত বুথা চেষ্টা। আমি তো অন্ধ নই, তাই কেমন ক'রে অস্থীকার করব বে সিনেমার বেধান পাণ্ডা যে-প্রবৃত্তি—যাকে খোরাক দিয়ে তোমরা আজ টাকার গদিতে গদিয়ান—দে-প্রবৃত্তিকে বাদ দিলে সিনেমার অতিকায় মৃর্তি ছুদিনে অনাহারে শুকিয়ে হবেই হবে অস্থিচর্মসার। সক্ষ সক্ষ লোকের সাড়াতেই তোমবা ক্রোড়পতি—আর তারা সাড়া দের কিসে ও কেন— বলেছি। এ অবস্থায় সিমেমার সংস্থার অসম্ভব—কেন না অল্লীস বৌন উত্তেজনা বাদ দিয়ে এযুগে সিনেমার রূপস্থাষ্ট হয় না, হ'ড়ে পাবে না। তাই তোমার কথাই আমি মেনে নিলাম! কেবল একটি কথা বলব। তুমি যে বলেছ যে আজকের জগতে রাজনীতির **অবস্থা শোচনীয়, একখা কে না স্বীকার করবে ? কিন্তু এখানে একটা** ক্ৰা মনে রাথতে হবে: সেটা এই বে, ভারতবর্ষে আজ সর্বপ্রথম নেমেছেন কয়েক জন স্তি্যকারের মহাত্মা বাঁরা রাজনীতিকে ঢেলে সাজতে চাইছেন। এঁরা সফল হবেন কিনা জানি না। তবে একথা তুমিও নিশ্চর মানবে বে ভিলক ও মহাল্মাকী রাজনীতির **অনাচারের মূলেই আগাত করেছেন—সত্যকে পুরোপুরি না হ'লেও** ব্যানকথানি মেলে। এ রকম ভ্যাগী ও মহৎ ভারো কয়েকজন 🖛 কাজে বোগ দিরেছেন, বেমন দেশবন্ধু কুন্ধুম 😻 আরো অনেক **অখ্যাতনামা** তরুণ মহাপ্রাণ যুবক। এদের আদর্শেই সামার মন সাড়া দিয়েছে আজ—বিশেষ ক'রে পল্লবের সঙ্গে সংস্পর্শে এসে তার শাধ্যমে আমাদের দেশের এযুগের আনর্শবাদীদের মতিগতি আশা ষপ্লের সম্বন্ধে একটু ভিতরকার খবর পেরে। কলে আমার একটা মক্ত লাভ হয়েছে এই বে, আমার চোখের ঠুলি থ'লে গেছে—আমি আমি দেখতে পেয়েছি দেশের কাজ একটা সন্ত্যিকার আদর্শ, বেখানে সিনেমা হ'ল শুধু ইন্দ্রিরবিলাস নয়, অতি নিরুষ্ট শুরেব ইন্দ্রিয়বিলাস — **অসার আমোদ-প্র**মোদের লোভে পথের পাথের খোরানো। ভালোই হ'ল—এ স্তত্ত্বে তোমার সঙ্গে এবিষয়ে খোলাখুলি আলোচনা **ই'রে। শেবে আ**র একটি **কথা বলব** : তোৰার ভালোবাসাকে *ভালোৰা*সা নাম দেওৱা চলে না! এ হ'ল একটা স্থবিধার ভোগের খ্যবস্থাঃ তুমি চাও একটি পুরুষ যে তোমার মন টানে অথচ **ভোমার তাঁবে থাকতে নারাজ ন**য়। তাকে তুমি স্থথের বিলাসের ূৰ প্ৰচুৰ দেৰে বৈ কি, নৈলে সে থাকবে কিসের লোভে ? কিন্ত এ-ধরণের সংখ স্থবিধা যে চার তার নাম না-মরদ, ভেড়ুয়া। আমি নার বাই হই না কেন-—স্বধর্মে ভেড্যুয়া নই——পুরুষ। তাই এবার বিদায় দাও আমাকে—কেবল ক্ষোভ না বেখে, আর যদি পারো তো নামাকে ক্ষমা কোরো এই ভেবে যে, আমি তোমার মনে হংথ দিতে চরে বলি নি বে সব কথা আজুবললাম: বলেছি—না ব'লে ইপার ছিল না ব'লেই—তেলে জলে বে মিশ থার না সে-দোব ভলেরো নয়, জলেরো নয়—সে দোষ—

এলিওনোরা কথাটা শেব করবার আগেই ভেডে পড়ল: বালিশে ্ধ ওঁলে সে কী ফুঁপিরে ফুঁপিরে কাদ্রা!

পদ্ধবের হাদর অন্ত্রকশার আর্ক্র হ'রে ওঠে—ও পিঠে হাত রেখে রকে: এলিওনোরা—শোনো—আমি—যুক্তককে— কিন্তু এর পরে মুক্তফকে কী-ই বা বলবে ?

খানিক বাদে মুখ ভূলে এলিওনোরা বলে: আমার সবচেরে ছঃখ কী জানো পল ? বিছেদ নর। বিছেদে তৃংখের জানি—কিছ প্রেম বেখানে সভ্য সেধানে গভীর বিছেদেরও ক্ষতিপূরণ মেলে অভ্যরের এক অচিন উৎস থেকে। কিছ ছঃখ বাজে সবচেয়ে—বথল দেখি বে সভ্যি তেমন ভালোবাসতে পারিনি, যদিও মনকে বৃথিয়েছি উন্টোকথা।

যুস্ককে সত্যি ভালোবাসোনি ?

এলিওনোরা করুণ ভাবে মাখা নাড়ে: এর পরেও কেমন ক'রে তার নাম দেব—সভ্যি ভালোবাসা? বদি সভ্যি ভালোবাসতাম তবে কি এত আগুপিছু ভাবনা এসে আমার পথ আগলে দাঁড়াতে পারত—না, পরে কী হবে ভাবতে চোথে অন্ধলার দেখভাম? সভ্যি যে ভালোবাসে সে সব আগে ছাড়ে পরিণাম চিন্তা—এমন কি নিজের সার্থকতার চিন্তাও বিসর্জন দেয়। তার তথু এক চিন্তা, এক সাধনা—কিসে তাকে স্থনী করবে বার কাছে নিজের বা কিছু সব দিকেই আনন্দ। কিছু রাখতে গেলেই চিন্তার্মান। বলে দীর্ঘনিংখাস কেলে: যুস্কফ আমাকে চোথে আমাকে চোথে আঙ্লুল দিরে দেখিরে দিয়েছে আমার ভালোবাসায় কোখায় বাদ। নিলে কি আমি ছাই সিনেমার কথা ভাবি—প্রাপ্ত তুলি ভারতবর্ষে গিরে বদি অস্থবী হই?

পদ্ধব ওর হাতে হাত বুলোতে বলল: এ আত্মধিক্কার কেন এজিওনোরা ? বুস্ফই কি পারল তোমার জন্মে দেশছাড়া হতে ?

এলিওনোরা মান হেসে বলল: ও রুখা সান্তনা পল! রুস্ফ পুরুষ মামুষ। ওবং প্রেমে দেয় নিজের সবটা নয়—চার আনা মাত্র। আমরা, মেয়েরা, দিই বারো আনা—কর্তব্য ভেবে নয়, না দিয়ে পারি না বলে, এইই আমাদের প্রকৃতি ব'লে। তাই হার মানতে হয়েছে এখানে আমাকেই। বলতে বলতে ওর চোখ ফের জলে ভরে ওঠে: ना जारे ना। व्याभाव कात्ना माकारेरे तरे । वल ना: Many are called but few are chosen ? প্রেমের ক্ষেত্রেও তাই। আমি ডাক শুনেছিলাম সব ছাড়বার, কিন্তু পারলাম না সব ছাড়তে। কারণ আমি আহুত হ'রেও বাহাল হ'তে চাইলাম না। তাই নিরতি হেসে আমাকে পাশ কাটিয়ে গেলেন ছয়ো দিয়ে: 'পেরেছিলি তুই মন্ত স্থোগ কিছ পারদি না ঝাঁপ দিতে।' ব'লে একটু থেমে : অথচ ছদিন আগেও আমার প্রেম নিয়ে কভ গৌরবই না করেছি यत्न यत्न—वथन विशाख সালভিনিকে প্রভ্যাখ্যান ক'রে ভাক দিলাম এক অজ্ঞাতকুলনীলকে। কিন্তু কাঁকি দিয়ে কাঁক ভরে না ভাই। তাই না মাণিক কুড়িয়ে পেয়েও কাব্দে এল না—পারলাম না রাখতে। অথচ উপার কী বলো? বে-নদী সাগরের ভাক ওনেছে তথু সেই চলতে পারে ওপু মোহানাকে জপ ক্'রে। থাল বিল হ্লুক হাজার ৰড় হোক না কেন আপনাকে নিয়েই থাকে, তাই ৰা ছিল ভাই থাকে—আরো বড় হ'তে পারে না কোনো দিনও।

कारमित्राता अप्न वननः "जिल्हात विदारिक।"

1

পুরনো অহ্ন-সংস্কার নিয়ে

আপনার উয়ত জীবনযাত্রার সুযোগ নষ্ট করছেন কি 2



এমন অনেক লোক আছেন যারা কোন সংঘাপই হাতছাড়া করেন না মনে ক'বে নিজেদের আধুনিক ব'লে গর্ব যোধ করেন। কিন্তু আদলে তাঁরাই অন্ধ-সংস্কার আর সেকেলে ধারণা আঁকড়ে থেকে নিজেদের সংযোগ নট করেন।

দৃষ্টান্তস্বরূপ, রারার জন্তে স্নেহজাতীয় জিনিসের কথাই ধকন। অনেকেই বলেন "বনস্পতি দিয়ে রাধা খাবার আমি কখনো খাই না। এটা একটা কৃত্তিম স্নেহ। কাজেই প্রাকৃতিক স্নেহপদার্থের মত ভাল হতেই পারে না।" অথচ, সভিয় কথা বলতে কি, একমাত্র তৈরী করতে মাহ্যের অসাধারণ যত্ন ছাড়া এর ভেতর কৃত্তিম ব'লে কিছুই নেই।

আগাগোড়া কঠোর নিয়ন্ত্রণ বনস্পতি চিনাবাদাম ও ভিলের ভেলে ভৈরী একটি বিশুদ্ধ উদ্ভিক্ষ স্নেহ্ণদার্থ। কঠোর নিয়ন্ত্রণাধীনে পরিচালিত আধুনিক ও স্বাস্থ্যসম্ভ কারখানার বিশেষ প্রণালীতে বনস্পতি তৈরী হয়। এই বিশুক্ষ স্নেহপদার্থ সহজেই হজম হয় ও সবরকম রামার পক্ষেই উৎকৃষ্ট—কারণ বনস্পতি দিয়ে রাঁধা খাবারের স্বাভাবিক স্বাদ ও গন্ধ নত হয় না। বনস্পতি কেনার ও ব্যবহারে খরচ কম · · · কারণ এর প্রতিটি আউন্সই খাটি ও পুষ্টিকর।

ভাল স্বাস্থ্য ও ভালভাবে বাঁচার জ্ঞো

বিজ্ঞান প্রমাণ করেছে বে স্বাস্থ্য ও শক্তি বজায় রাখতে হলে প্রত্যেক মাহুষের দৈনন্দিন অস্ততঃ হু' আউল স্নেহজাতীয় পদার্থ খাওরা দরকার। বিশুদ্ধ ও স্থানাহ বনস্পতি অল্প খরচে আপনাকে এই স্বাস্থা দিছে। ভাল স্বাস্থ্য ও ভালভাবে কেঁচে থাকার জন্তে বনস্পতির ব্যবহার হন্ধ করা আপনার উচিত নয় কি?

বনম্পতি — বাড়ীর গিরীর বন্ধু দি বনশতি মাসুকাকচারার এসানিকের অব ইঞ্জি কর্তৃত প্রচারিক

কবি কর্ণপূর-বিরচিত

वानल-त्रकावन

[পূর্ব-প্রকাশিতের পর]

चस्रापक-- बैथारवार्यन्त्रनाथ ठाक्त

১। একদিকে গিরি গোবর্ত্তন, অক্তদিকে জীনশীখর ষয়ুনার
 তীর ধরে অন্ধচন্দ্রাকারে, তাৎকালিক নিবাদ হল শকটকুগুলার।

পূর্ব-তণিত বে (ন শীবর-বর্তিনা) রাজধানীটি এতকাল অংশকট ছিল সেই রাজধানীটিই বেন নিজগুণমাগাস্থোর অন্যনতার অধুনা প্রাকট্যলাভ করে বসল।

শ্রীহবির লীলাধামের সব কটিবই নিতাম বদিও খ্যাতি বা প্রমাণের কোনো অপেকা রাথে না, অর্থাং স্থ-সিন্ধ, তবুও একটির মধ্যে অপরটির এই মিলনবন্ধ সংঘটিত হওয়াতে এই ধামটির কোথাও দৃত্যান হল না অনিত্যতা। তেন্ধ যেমন তেন্ধের মধ্যে, জল বেমন জলের মধ্যে লীন হরে বার, পরিত্যজনীরতা তার আর থাকে না, তেমনি হল বুহম্বনাশ্রিতা পুরলন্ধীর দশা; তিনি আবিষ্ঠা হয়ে গেলেন শ্রীগোবর্দ্ধন ও কালির হুদের অন্তর্ধতিনী এই শক্টাবর্ত্ত নামক রাজধানীটির পুরশ্রীতে।

২। এক হবে গেলেন উভয় পুরক্সী। এবং প্রীকুম্পাবন তথন সর্কতোভাবে উপভোগ করতে লাগলেন তাঁদের উভরেরি আস্তর্যী। বর্ণনার অত্যীত হয়ে দীড়াল তাঁর রামণীয়ক-সম্পত্তি।

গোপেরা এমন কি গোপীরাও আনন্দে উল্লাসিত হয়ে বাক্যহার। হয়ে গেলেন শ্রীব্রন্ধাবনকে দর্শন করে।

এই কি সেই বুন্দারণ্য! নানাচিত্র-পভত্তিহারি বুন্দারণ্য! কত হরিণ, শুরু-মুগের কত সমাবেশ! কত গাছ, কত নিকৃঞ্জ, ঋষ-জতা, দীঘি, সায়র, পুন্ধরিণা! ঝকঝক করছে কালিন্দার কত পুলিন! আর তার মধ্যে গিরি গোবন্ধনের ঐ অন্তত প্রসন্ধতা!

শীর্কাবনের অজরাজপুরীতে প্রবেশ করলেন অজরাজ।
সন্ধক্ষকাদি মুখ্য ঘোষেরা প্রবেশ করলেন স্ব প্রাসাদে। কারও
স্থানাতার হল না এভটুক্ও। গোশালার গোশালার গাতী; বিপশির
বীখিতে বীখিতে বণিক; চতুদ্দিকে দোকান খুলে বদল মালাকর,
ভাষুলিক।

৩। তবু সমস্তই কেমন যেন প্রকট হয়েও অপ্রকটের মত লাগছে

নাগছে

নাগছে

কার্যাল

কার্

৪। বৃশাবনে এসেই কিছু দিনের মধ্যে বালকুকের মধ্যে আবিভূতি হল বংস-পালন-ক্ষমতা। এই কাজের জন্ত বদিও জভাব ছিল না উপবৃক্ত দাস-কুমারের, তবুও বোধ হর প্রীভগবান তাঁর তথাবিধ লীলাকোতুক প্রকটনের উদ্দেশ্তেই ব্রজরাজের জ্বভাকরণে প্রেরণ করেছিলেন একটি জভিসদ্ধি। হঠাৎ ব্রজরাজের বিচারবৃদ্ধি ভটত হরে বলে উঠল— অত্যন্ত স্কুমার হলেও পরম হরন্ত হয়ে উঠেছে কৃষণ, ওকে এখন বংসপালন কর্মে নিযুক্ত বাধাই কর্ত্ব্য।

ব্যবস্থা শুনে মা বশোগা, বিনি বাৎসগ্যরসের শেষ সীমানা,—
তিনি শক্কিনা হরে উঠলেন। ব্যাপারটি বড় উপভোগ্য হবে না
ব্যব্তে পেরে, তিনি বাধা দিলেন, ব্রন্ধরাক্তকে বললেন, ছুধের ছেলেকে
নিয়ে হঠাৎ এ কী তোমার কাণ্ড! এখন থেকেই কঠ দিতে চাও?
কিন্তু লালাবালক অবাক করে দিলেন সকলকে। অমান স্থলরের
মোহন ভালে লালা ভবে হলে উঠল ভাঙা-ভাঙা চুলগুলি, বললেন—
মা, মা, অমন কথা মুখে আনিস নি মা! সভ্যি মা, বাছুরগুলোকে
আমি বজ্জ ভালবাসি। ওদের আমি পুখব, চোখে চোখে রাখব।
বিদি মা ভূই না করিণ, আমার দরকার নেই তোর ভালবাসায়।
ও মা, ভূই বল, খেলার সাথীদের নিয়ে এবার থেকে বাছুর চরাব।
আমি বাছুর চরাছি দেখলে পৃথিবীর সকাই কী খুলীটাই না হবে!

ছোট ছেলের মূথের বৃলি • এতও মিষ্টি হয় ! তার মিষ্টি জাঘাতে শিথিল হয়ে যায় সমস্ত সংকল্প, সমস্ত অভিমান। মা যশোদারও বন্ধ হয়ে গোল মূথ। অনম্ভ কৌতুক বোধ করলেন ব্রজরাজ, আফ্রাদে স্থান্থ সমাজ্জন হয়ে গোল।

তারপরে একটি শুভদিন দেখে ব্রজ্বাজ শ্বয়ং উপস্থিত হলেন আভিনার। কুক্ষের সঙ্গে সঙ্গে এলেন বলভদ্র ও বাল্যসহচরের।। করেকটি বাছুরকে নিয়ে আসা হল তাঁর সম্মুখে। ব্রজ্বাজ পুত্রের হাতে স্বয়ং ধরিয়ে দিলেন লালরঙের পাঁচনবাড়ি। ছড়ি হাতে লীলাবালক চালিয়ে নিয়ে যেতে লাগলেন বংসদের, আর ব্রজ্বাজ পাছু পাছু চললেন লীলাবালকের।

বাছুর হাঁকাতে হাঁকাতে ঘাড় ফিরিয়ে কৃষ্ণ দেখলেন—
পাছু পাছু পিতাও আসছেন, মাতাও আসছেন।

চাৎকার দিয়ে উঠলেন-

বাড়ী ফিরে ধাও ভোমরা। আমামরা বে এখন কাজ করছি। আতে ভয় করিস নি যা!

ব্ৰন্ধরান্ধ ব্ৰজেশ্বরী বলে উঠলেন—বেশ বেশ, কিছ দূরে মাসনি যেন। এইথানেই আজ চরা। আর দেরী করিসনি যেন। শীস্তির করে ঘরে ফিরে আসিস কিছ।

পিতামাতাকে ফিরিরে দিরে সাথীদের সঙ্গে নিরে লাফিরে লাফিরে স-বলরাম নন্দহলালের সে কী বাছুর-চরানো কর্মকাণ্ড! বেন কতদিনকার এই সদভাগে।

व्यथम मिन क्टिं वाद वरम-भानात्व ।

৬। তারপর প্রতিদিন বাছুর চরান ঐকুঞ। একটি একটি করে দিন বার আর একটু একটু করে বেড়ে ওঠে তাঁর বিক্রম; মেধার সঙ্গে সঙ্গে যেমন বাড়তে থাকে মানসিক উদ্লাস। আর ঐ উদ্লাস-ভরা বংসচারণ-লীলার প্রকাশ দেখতে দেখতে আনন্দে মৃদ্র্য বেতে থাকেন আকাশ-পথের অমর পথিকেরা। তাঁরা অমূভব করেন এক অদ্ভূত আমোদের প্রথমতা। ব্রজবাসীরা, সহচবেরা এমন কি বলজ্জাও অমূভব করেন দেই হর্ম-প্রাচুর্বের বৈচিত্রা। ভীত হরে ওঠে জনক-জননীর জানক। জার জারাদের এ নক্ষত্নাল, বিনি নবীন ঘনঘটার মত তাঁর জীবজের জ্মলভামলিমার জ্রুভ্মিকে ভামল করে দিয়ে খেলতে থাকেন বাছুর-চরানো থেলা, তিনি এমন লালাকুশলী হয়ে ওঠেন য়ে, গোঠের সমস্ত বাহুরই পর্যুৎস্থক হয়ে ওঠে, ভাবা সবাই চায় তিনিই তালের চরান। সানক্ষে তারা চরতে থাকে লাল টুকটুকে একটি পাঁচনবাড়ির শাসনে।

৭। এমনি করে দিন যার। আর প্রতিদিন স্থা ওঠবার আগেই শরন ছেড়ে উঠে পড়েন মা যশোদা। ত্রিস্কুবনের যিনি জন-পাবন-জননী সেই কৃষ্ণজননী, দয়ার শরীর তাঁর, উপান দেন ছলালকে। নিজের ছাতে সব কিছুই যে তাঁর করা চাই। মুখ ধোরানো, তেল মাধানো, লান করানো, চন্দন মাধানো, গরনা পরানো সবই করেন নিজের ছাতে। তিনি ছাড়া আর কে-ই বা পারবে বল ? থমন দামাল ছেলেকে সামলানো কি যার-তার কাজ ? কত যে কৌশল করতে হয় মা'কে!

তারপরে থেয়ে-দেয়ে একটু জিরিয়ে নক্ষ্লাল গোঠে যান। মা তার সক্ষে চলেন অর্থেক পথ। আর ছেলের মূথ থেকে মৃত্যু ছঃ কেনত থাকে নিবেদন—ফিরে যা মা, ও মা তুই ফিরে যা।

সেই মধ্ব মধ্ব অতিমধ্ব বৃলি তনে শেবে জরামনে ঘবে ফিরে আসেন মা। আর দাদা বলরামের সঙ্গে নাচতে নাচতে চলতে থাকেন নন্দহলাল, ললিত বুকে নাচতে থাকে বিনোদ ফুলের মালা। স্ববল সদাম চলেন তাঁদের সঙ্গে। পৌছে যান গোঠে। গোঠে গিয়ে বাছুরেরা কচি কচি শম্পাঙ্কুর ছিঁড়ে আস্বাদ পায় নতুন রদের, চরতে থাকে আনন্দে। আর মজার মজার থেলায় মেতে ওঠেন বালগোপালের দল। কাটতে থাকে স্থসময়।

তারপরে ঠিক সময় বুঝে ব্রজপুরপরমেশরীর কাছ থেকে আগু-পরিজনের হাতে গোঠে এদে পৌছয় মাধ্যন্দিন ভোগ।

সে ভোগ—ক্ষকবির কাব্যের মত সরস, পুরুষার্থদার্থের মত সরদা চতুর্বিধ, পুরুষার্থ সাধনের মত অধীতল-প্রায়, এবং বিশ্বের মত প্রভৃত অন্ধ্রময়। নক্ষতুলাল সহচরদের নিয়ে মিলে-মিশে গোল হয়ে থেতে বসেন সেই ভোগ। হাসি-পরিহাসের ছয়োড় বয়ে বায় ভোজনকালে। ভোজনশেবে দীনোদ্ধারণ প্রীক্রফ আবার চরাতে থাকেন বাছুর, কাননে কাননে উঠতে থাকে কিছিণার ববংকার, কোমল চরণতলের কমল-স্পর্ণ পেয়ে জ্ব্ডিয়ে বায় ধরণীদেবীর ছদয়ের আলা।

১। তুলাল বথন ফিবে আসেন ঘবে, তথন অতো দাস-দাসী থাকা সত্ত্বেও নিজের হাতেই মা বশোদা আগের মতই তাঁর হাত-পা ধুইরে দেন, পরিপাটি করে তাঁকে খাইরে দেন সায়ংভোগ; তারপরে, সঙ্ক্যা পার করে দিয়ে তাঁকে শরনে দেন প্রার্দ্ধ মূলের পালকে।

১ । বৎসণালনগীলায় মাত্র কয়েকটি দিন কেটেছে, এমন শম্ম একদা, বাছুর চরাতে চরাতে স্ত্রীকৃষ্ণ হঠাৎ দেখতে পেলেন, গ্রা একটিবার মাত্র দেখেই বৃষ্ঠে পারলেন, জনৈক কংসাত্মন বাছুরের আকৃতি বরে একের বাছুররের মধ্যে সবার অলক্ষ্যে ঘূরে বেড়াচ্ছেন। জিনি যেন একটি বৈক্তববেশধারী মহাশক্তির ছবি; যেন প্রমজ্জালায় আন্তিকভাব চিছ্ন উঁচিয়ে উপস্থিত হয়েছেন বৌদ্ধ চার্বাক; যেন সর্বাস্থ হরবের লোভে মিত্র সেক্তে হয়ারে এসেছেন চোর।

সর্বজ্ঞ চক্রচুড়ামণি শ্রীকৃষ্ণ বিপক্ষকে চিনতে পেরেই অগ্রহ্ম বলরামকে বললেন—

দাদা, এটি কি আমাদের ব্রক্তের বাছুর না বাছুরের নকল ?

সচকিত নরনে যতকংশ প্রীবলরাম সদলবলে সেটিকে দেখছেন, ততকশে তাঁদের স্বরূপ নির্ণয়ের পূর্বেই, প্রীকৃষ্ণ তাঁর পদ্মের পাপড়ির মত বামকরতল দিয়ে ধরে ফেলেছেন বাসুর্বীর পিছনের জোড়া গ্রাং, আর মাধার উপরে অলাভচক্রের মত বোরাতে বোরাতে তাকে আছড়ে মেরেছেন কপিথগাছের কাণ্ডে। যথন প্রাং বেরুছে, তথন দে ধারণ করল তার নিজের বিকৃত আকার। যথ-সদনে পাঠিয়ে দিলন তাকে প্রীকৃষ্ণ।

১১। শ্রীকৃষ্ণের এই শাস্তবৰ প্রীতিপ্রদ হয়ে উঠল অবসভার। প্রশংসার মূপব হয়ে উঠলেন শিক্তব্ধা, যদিও যিনি তুর্গট-গটনপ্রীসান, যিনি তৃষ্ণব-কর্মকর্মক ইটার প্রক্রে এমন ক্ষিছুই অভ্যুত নর এই শাক্রব্যের নগণতো।

১২। কিন্তু সেই সন্বে অভূত হয়ে উঠেছিল প্রীকৃষ্ণের আকৃতি।
সাথীদের মধ্যে যিনি লীলারসের মনোরম আলত্তে ছিলেন মগ্ন তিনি
হয়ে উঠেছিলেন দমুজনমন, এবং তাঁকে উত্তাসিত করেছিল মহাপিছিল
একটি জ্যোতিসম্বতা (। লস)।

তারপবে গগনাঙ্গনের শেষসীমায় যথন উপনীত ছলেন অন্তর্গন, এবং রশ্মিমালিক্তার অনুশোচনায় যথন মান হয়ে এল তামরস, তথন ব্রজ-চর বাছুবদের অনুসরণ করে স্থাদের সঙ্গে নিয়ে রাজপুরীতে ফিরে এলেন শ্রীকৃষ্ণ।

১৩। বাড়ী ঢুকেই ছেলেদের কী কলরব! মায়ের। এদেছেন, যে বার ছেলে নিয়ে গবে ফিরবেন, কিন্তু কে শোনে তাঁদের কথা? তাঁরা প্রথমেই একদোড়ে পৌছে গোলেন অজপুরপরমেশ্বরীর কাছে এবং তারপরেই চীৎকার করে বলতে লাগলেন—

উঃ, কী অগম্যচরিত আপনার ছেলে ! আর দানবটারই বা কী অভূত শরীর ! ঠিক কি একেবারে একটি নধর চোগজুড়োনো বাছুব ! বিনাযুদ্ধে তাকে ভূলে আছড়ে মারলেন আনাদের কুবঃ।

১৪। ভগবান শীর্কাও ভগন জনকজননা পরিষ্ঠ ইয়ে ঘর আলো করে বদে পড়লেন। তাঁকে যেন আরতি করতে লাগল পৌরজনের আনন্দ। তারপার অল্লিনের মতই সায়ন্তন প্রানামূলেপ্রন সাল করে ব্রজরাজের সঙ্গে একত্রে সান্ধ্যা-তোজন করলেন সমাপ্ত। স্থাস্থপ্তির মধ্য নিয়ে কাটিয়ে দিলেন বছনী।

১৫। তার পরের দিন, আকাশে তথনও দেখা দেননি স্থাদেব, প্রীরুঞ আহারশেষে বৃদ্দেব উপর হার নাচাতে নাচাতে সহচরদের দক্ষে এদে মিলিড গুলেন। প্রীবলরামও এলেন। বাছুরগুলিকে যথারীতি সংগ্রহ করে চলে গেলেন বনাস্তরে। দেখানে গিয়ে দেখেন নতুন ঘাস গঙ্গিয়েছে, বনতল ছেয়ে আছে, জলাশ্রের ধারে ধারে নবার্বিত দ্বার মেত্র সমারোহ। বাছুবগুলিক চরতে দিলেন সেগানে।

১৬। আনম্ভরসিক নবীন বংগপাগ বর্থন গেখানে রাজার রাজা
করে বিরাজমান, তথন তিনি অনভিগ্র থেকে গৃষ্টিগোচর হলেন এক
গানবের। গানবটি আব কেউ নন, তিনি প্তনার সভাগর, কংস-সম্মত
মহাবীর। অত্যুত্প বক পক্ষীর মত তাঁর শরীব। গানব-সংহতি
বন্ধনা করতেন তাঁর নীতি। তিনিও ভগবানের অনুস্কানে
ছিলেন—দৈবজানেরের মতে। দৈবগতিকে আছে তিনি বৃষতে
পারলেন, ইনিই তিনি। বোরাও বেই অমনি সেই বক্দানব,
—বেন পৃথিবীটাকে উগ বিল্লে উর্ন্নে ভুলতে ভুলতে নীচের চক্টিকে
ধরণীপৃত্তে এক ম্বর্গটাকে নীচের দিকে ট্রেন নানাতে নামাতে উপরের
চক্টিকে আকাশপৃত্তে সংলগ্ধ করে দিলেন মৃগ্রাং। প্রচ্পে ভরে
ভারব-ভারব হল কৃষ্ণ-সহচরদের হানয়। আভ্রু-প্রিক নায়নে তাঁরা
দেশতে লাগলেন দানবপক্ষীকে; যেন তাঁলের সামনে বিবাট কালপুক্র,
দেককল্পুক্ত-মন্ত্রাদি সর্বস্থাবের ভারনাক্যনের বাসনাম্ন বিশাল তাঁর
সাঁড়াণীটিকে বিক্রিত করে ব্রেভ্ন দাঁছিরে।

১৭। তারা সভয়ে বলে উঠলেন-

স্থা, এটি পক্ষী নয়। এ দানব। আনাদের সকলকে গিলে থাবার চেষ্টায় বয়েছে। বিপুল দল্পে কপ ধারণ করেছে বক-পক্ষার। এ ক্ষেত্রে আনাদের পক্ষে পালাব ক্ষেত্রে আনাদের পক্ষে পালাব কোথায়। কিন্তু পালাব কোথায়। কিন্তু পালাব ক্ষেত্রে যে প্রকাশ্ত এব ক্ষেত্র চেম্বেও যে প্রকাশ্ত এব ক্ষেত্র চেম্বেও যে দার্য দার্য কিন্তুর ওব চঞ্চুপুট।

সমতা ও মীমাংশার মধ্যপথেই মৃত্-নন্দ হাত করলেন দীলাবাদক। বাণীতে প্রধা করিয়ে বললেন—

ভোষরা আনার প্রাণেব সমান। প্রাণ বীচাবার জন্যে অভো জনটা কিনের ? মা ভৈ:।

ৰলতে বলতে প্রীরণ — থিনি অব্যয় অকুতো তার, যিনি অথল লোকের অন্তর্মণাতা, যিনি ভূবনৈক বঞ্জ, গিনি অমুপথি-নিরবধি-করুণৈক সিন্ধু, তিনি কেলা ভবে ধাবিত তালেন পাফীদানবের অভিমুগে। কিছু প্রীকৃষ্ণের অব্যাহত মহাপ্রভাব থাকিলেও তবে কি, দেবলোহী লেই অসমসাহসিক পামর তব্ফলাং তাব অভি করাল তুও বিস্তার করে লাফিরে গিলে ফেলল শ্রীকৃষ্ণেকে। ফাল-ফাল কবে তাকিরে রইলেন ত্যুলোকের দেবতাবা।

১৮। কী ঘোর সংগ্র ! নিরুপার করে হার হার ধ্বনি তুলে চাংকার দিয়ে উঠলেন বলরান। 'অংহা কঠুম্ অংহা ক্রুম্ বলতে বলতে লক্ষাম মান খুইলে, নব-বলনার চেতনা হারিয়ে, হ্রুম্ বাবার উপক্রম হল কর্পের লেবভাদের। কিন্তু ইভাবকাশে হটে গোল এক অভাশ্যের বাপার !

শোকপ্রদ ভীতিপ্রদ ছলস্ত এক থণ্ড অনলের মত প্রীকৃষ্ণকে মুখের মধ্যে প্রহণ করতেই বেন দাই নাই করে ছলে গোল বকাপ্ররেব ভালু। নতুন আমের গল্লন গিললে যে দশা হয় উটের, সেই দশা হল দানবৈর। গাগার নলীটিকে একবার কোঁচকার তো একবার কোলার। কী কাতর সন্ধোচন, কী বাাকৃল বিদ্যার। আর তার সন্দে ছটো প্রচণ্ড ভানার সে কী অসম্ভব প্রকল্পন! শেবে গলা আর ঠোট কাঁক করে বকাপ্রর এক দমকে উদ্ধার করে বিপুলবেগে বাইরে ছুঁছে কেলে দিল কৃষ্ণকে,—বেন ভার নিজেরই বেরিয়ে-বাওয়া

২১। বাছর গ্রাস থেকে চক্রের মত নিজ্ঞার হলেন

লীলা-বালক। ঘনতার খনবটার কোটর থেকে বেরিয়ে এলেন বেন কিরণমালা। ছিমালয়ের গুছাকুছর থেকে বিনিক্রাস্ত হল বেন সিংছশাবক। নিবিভ তমসাদ্ভর সংগার-কুণ থেকে যেন মুক্ত হলেন ভক্তজন।

ৰকাস্থরের কণ্ঠক্রেদে বসন-ভূষণ সিক্ত হয়ে গোলেও সে কী অপূর্বনাভা তথন জীকুফের! বেরিয়ে এসেই তিনি বললেন—ভয় কোরোনা।

দপ্রণর মধ্বত্তর সেই কলম্বর স্থাদের দেহে নিয়ে এল মৃদ্ধ্রির বিরভি। কিন্তু এক মৃহুর্ত্ত। তারপরেই সেই দানবপক্ষী পুনর্বার চঞ্পুট বিঘটন করতে করতে ঠুকরে খেতে এল প্রীকৃষণকে এগিয়ে। আসাও বেই অমনি প্রীকৃষণক তার বাম করকমলকট্টনল দিয়ে তার উদ্ধি চঞ্চু এবং দক্ষিণ করকমলকোশ দিয়ে তার অধরচঞ্টিকে ধারণ করে,—সহচর বালকদের হঃখণোকামৃভ্তির সঙ্গে সঙ্গা, সন্তাপভারনত অমরদের আন্তরিক রাস-জননের সঙ্গে সঙ্গে, হুর্দান্ত মুন্তর্কণত্তির সঙ্গে, তারিসদের হর্ষোৎপাটনের সঙ্গে সঙ্গে,—নিজের মুন্তর্কমলতিক সহসা সাসিতে ফুটিয়ে দিয়ে, বীরণ-ভূণের মত হেলাভ্রের বিদীর্ণ করে ফেললেন বকাম্বরকে। গল্গল করে অনর্গল ঝরে পড়তে লাগল অমরের রক্তধারা, ছিন্নভিন্ন হয়ে গেল নাড়ীনাল, খসে পড়তে লাগল থোলো থোলো চর্বির। ছিন্নভিত্ত হয়ে পত্তন হল বকাম্বরের, বেন ধ্বসে পড়ে গেল হ্'-ছুটো শৈল্পিখন।

২০। বকাল্পবের প্তনের সঙ্গে সাঙ্গে স্থারিছ্যে আনক্ষমদে প্রস্থাদিত হয়ে উঠলেন দেবতারা। সঘনে বর্ষণ করতে লাগলেন নন্দনকাননের গন্ধকুল। দেবজুম ঘিরে গুপ্পনে মেতে উঠল দিবা জুমরেরা; যেন তারা সূর-নায়িকাদের পূল্লকিত নয়নের সক্ষ্ণেল জলবিন্দ্। আনন্দিত বিশ্বয়ে দলে দলে নৃত্য করে উঠল গাল্লবিন্দ্রতীর দল। দিকে দিকে বেজে উঠল অভয় ফুন্ছি। এবং মুনিগণ, বাঁদের আহ্বান করেছিলেন বৈরম্বত মন্থ তাঁরাও উপলব্ধি করলেন প্রমান্চব্য লীলার বিলাস, স্থবগান গেয়ে উঠল তাঁদের হলয়।

২১। আর এথানে কুক্সগচরের।? প্রমোদের চাপে বৃঝি ভাঙে-ভাঙে তাঁদের স্থায়। জনায় জনায় তাঁরা বৃক্তে জড়াঙে লাগলেন তাঁদের কুক্প্রাণকে, তাঁদের হৃদয়াবিনাথকে, ঐ বকারিকে। আর তাঁদের মধ্যে হেলে-ভূলে জীকুফ বিচরণ করতে লাগলেন, বেন জনৈক করিপুসব।

তারপরে যথন বেলা পড়ে এল, তথন আর আর দিনের মতই সকলে সংগ্রহ করলেন বাছুরদের। তারপর তাঁদের লীলাময়টিকে মধ্যিখানে নিয়ে,—তাঁর করকমলে তথন ললিত-লতিত কদম্মুলের নাচচে গেরুয়া,—দেই তাঁদের সেই সকল সৌভাগারান ভগবানটিকে নিয়ে, তাঁরা পৌছে গেলেন যশোদা-ভবনে। পৌছেই আর ম্বর্মর না। দৌড়ে গেলেন অজপুর-প্রমেখরীর কাছে। উৎকঠা সার্থ্য করছে তাঁদের কঠে, অথচ প্থপ্রমে ভেরে আসছে তাঁদের ভাবা। উচ্চারণে তাই মাধুর্ধের ভঙ্গি স্কুড়ে দিয়ে তাঁরা আতোপাস্ত বলে গেলেন বক্তনন-কথা। সব শেবে বল্লেন—

২২। মা জননি, এর পরে—এর চেয়ে আর অসম্ভব কিছু ূর্ব না। এমন কাও কার না চোথ কপালে ভোলে। মালসাট মেরে আরু বা সথা দেখিয়েছেন, হাা, ভাকেই বলে পরাক্রম।



পর্বতের মন্ত পাথী মা, পর্বতের মন্ত পাথী। অহস্কারের পালপার্বেণ। সন্ধলকে গিলতে এল। কিন্তু চোথের পলক প্রতাত না
পড়তেই আনন্দলোপ। তোমার আ মুলের মন্ত ছেলে ছু হাতের পল্ল
নাচিয়ে—কি বলব মা—হেলাভবে অবস্তু পারকের মন্ত বকটাকে উই,
কী ভার ধারালো ঠোট, কী জোরালো ভার নেকে বেঁকে চলা—পুলার
জোব তোমার মা জননি—এক নিমিশে কেঁড়ে ফেললেন অস্বুরটাকে—
বেন দে বেটা একগাছি বেলা-ঘান।

২৩। বাছুব চরাতে যায় যে দব বাসকেরা তাদের মুখের বালীকে কর্গকৌতুক তুলু হল বটে ব্রজনাণীর কিছ সজু সজে শকার জ্বা বাজস তাঁর জ্বারে। একদিকে কৌতুক জন্মদিকে শকা এক বিশাসকর হাজ্যোদীপক পরিবেশ হরে দীদাল। তাই এজেখনী পুরদ্ধীদের দিকে চেয়ে সহসা বলে উঠকেন—

কী কপাল আমার! যে ভয়ে জামি ত্যাগ করলুম মহাবনে ৰ জনস্থান, ছার, এগানেও কি লেই দেয়! সনস্থ কিছুই সেন উপত্তে কেলতে চার দৈজানের ভয়ন্তব উপত্রব। ভাগিলে আমার প্রমচক্ষল ছেলেটির অনীম সাহল, তাই রক্ষে। এখন কোথার হাই, কী করি! পোড়া বিধাতার যে কা ইচ্ছে তা কেমন করে জানি ?

২৪। কণকাল চিন্তা ব রলেন ব্রম্পেরী। তারপর অভানিনের
মৃতই বে বার বাড়ীতে পাঠিবে দিলেন কুম্পেন্ডলনের। সমবোচিড
অভান্তন উন্ধর্ভনাদি সমাপন করালেন তনরের। ভালবাসাই
মারের ব্যবসা। সন্ধার ছেলেকে থাইরে বীরে ধীরে
কলসেন—

এবার থেকে তোকে ঘবেই থাকতে ছবে, ঘনে-বনান্ধবে ৰাছুর চরিয়ে পুরে বেড়ানো আর চলবে না। এ উৎসধে কেয়া দে বাবা। বাছুর পাহারা দেবার জনেক লোক বরেছে। আর তোকে জড়ো কট্ট করতে হবে না।

জননীর মুখে এই জননীভিকর বচন শুনে, ও মা, ভোমাৰ একটুকুও ভারের কিছু নেই মা, এরা সবাই মিছে কথা বলেছে মা। কেন মিছে ভাবিস মা—

ৰলতে বলতে লীলাবালক অভিনয় করতে লেগে গেলেন নিজার। ভগৰতী জননী তথন আৰু কী কৰেন! অভিপথার্দ্ধ শঙ্গনতলে ছেলেকে ভইয়ে দিয়ে তাকে জানর করতে করতে তুম পাড়িবে নিলেন।

ক্রিমশঃ।

অপারগ

মায়া মুখোপাব্যায়

বিশ্বন্ধ্য শ্রেণীযুদ্ধ, আত্মন্তর মান্তবের মান দানবের বাসভূমি। এক দল বিক্ষত প্রাণের আশারীরী আর্তনাদে কেঁপে ওঠে কোমল শিপুরা, যন্ত্রন্ধী যুগের নিশানা উড়ছে বিরাট শৃঙ্জে [ভৃতীয় (বিশ্ব) যুদ্ধের এবা কি ক্ষচনা ?] অসংলয় ভাবনাব নেখ উড়ে উড়েছ চলছেই। উপগত সমস্তার ভীড়ে তাবিয়েছি সেদিনের নীবাভ জাকাশ। শৃঞ্জ চাবের কাপে নিম্মল চুমুক

গলা ভেজাবার এক অনম্য চেষ্টার,
শেষ নেই এর শুধু ক্লান্তির ঝাপটে
নড়ে-চড়ে উঠে বসি।
অপারগ আমি, নরামুগা বিকল বধির
গাস্থায়ু মাংদল দেহে আজ শুধু চেয়ে চেরে দেবি।
মুন্তির দ্রবীণ দিয়ে।
বাঁচবার তাগিদেই যেন
বেঁচে আছি দীপিত স্ভাবেক ছেড়ে।

বেশ লাগে

বকুল বস্থ

বেশ লাগে

নীরৰ ছপুরে ছ**জনে** পাতা-ঝরা বাগানে হৃদয়ের জন্মভবে বোদে বোদে ভাৰতে 1

বেশ লাগে

সোনা-ঝরা সন্ধার চাদোরা আলোর ঘাসভরা পার্কেতে হাতে হাত দিরে বোসতে 1

বেশ লাগে

চূপি চূপি নিগলার হাত হ'টি ধোৰে এমে তোমার হাসি-তরা মুখটি মুখ দিবে খোবতে।

বেশ লাগে

নিরিবিলি জগতে তুমি সাথে থাকবে আর নিশি-দিন জাগবে তথু আমার ভালবাসতে।



ক্ষিত্রাদ বলেছিলেন— পৃথিবীর সর্বন্ধই দেক্ষিপ্ত আছে,
কিছ তা দেখবার মত চোথ কই ?' লাতিগত ভাবে দিন্দ্রে
ছলেও বালালীর কিছুটা চোথ কাছে। যুগে বুগে এ-জাতির লাবন
বছবার বিড়ম্বিত ছয়েছে আভাস্তবীণ ছল্ব-কলছে, বৈদেশিক আক্রমণে।
বিতীয় মহাযুদ্ধের সময় থেকে তার ওপরে বে-অভিশাপ নেমে এসেছে,
তেমনটি বোধ হয় আর কথনও হয়নি। তবু এ-লাতির প্রাণশক্তির
প্রাচ্র্যো ভাটা পড়েনি। হয়ত এই প্রাণশক্তির উৎস খ্রে পাওয়া
বাবে তার বসবোধে, তার সৌন্দর্য-পূজায়। তাই স্থন্দরের আকর্ষণে
সে ছুটে যায় ভারতের এক প্রাস্ত থেকে আর এক প্রান্ত সামান্ত অবসর
পেলেই। আর কাঝার? বাঙ্গালীর নাড়ীর সঙ্গে তার ফেন একটা
আজেল বোগ আছে। বাংলার সমতল থেকে দেড় হাজার মাইল দ্বে
পর্বাত্রেটিত ভুষর্গ কাখ্যীর তাই বাঙ্গালীর কাছে দ্ব নয়—'যো
বন্ত ফল্ড ন হি তত্য দ্বম্।' স্তিট্ট তো, হাদরের যোগ থাকলে
আবার দ্ব কি ?

আগেকার দিনে মধ্যবিত্ত বাঙ্গালীর পক্ষে কাশ্মীর বেড়াতে বাওয়াটা কতকটা স্বপ্নের সামিল ছিল। এখন পথ ঘাট ভাল হরেছে, ট্রেণে কন্সেদান্ পাওয়া বায়, চোর-ডাকাতের ভর নেই আর দল জুটিরে বাওয়াও সহজ। স্বভরাং গত পুজোর ছুটিতে বহু বাঙ্গালী কাশ্মীর গিয়েছিলেন—কেউ বিমানে, কেউ মোটরে, বেশীর ভাগেই ট্রেণে বাসে। সেপ্টেম্বরে অক্টোবরে সেবার প্রায় পঞ্চাশ হাঙ্গার যাত্রী গিয়েছিলেন—তার মধ্যে শতকরা নব্যুই ভাগেরও বেশী বাঙ্গালী। আমরাও অবগ্য এই অভিযাত্রীদের অঞ্জন ছিলাম।

দলে আমাদের এগারো জন—মহিলাই মেজরিটি। লেভিদ কার্চ নীতি জনুসারে নয়, নিছক দক্ষতার জন্তেই দলের নেত্রীর স্থান অধিকার করেছিলেন চন্দননগরের শেকালী নদ্দী—আমাদের শেকালী দি'। ব্যবস্থাপনার ভার এঁদের হাতে ছেড়ে দিয়ে আমরা পুরুষরা রীতিমত নিশ্চিস্কই ছিলাম। খরচ বাঁচিয়ে ভান হাতের ভালো ব্যবস্থা করা, নানা খুঁটিনাটি হিদেব রাখা আবার দরকার মত রপসায়রে ত্ব দেওয়া, একি আর আমাদের মত সাধারণ পুরুষের কাজ? সিকিউরিটি কন্ট্রোল থেকে পাশপোর্ট বোগাড় করা, রেলের কন্দেসানের জন্ত ধলা দেওয়া, কামরা বিজ্ঞার্ভ করা এ সবই করেছিলেন সঙ্গিনীরা।

তুষারপাত দেখবার ইচ্ছে ছিল বলে আমরা অক্টোবরের শেব সপ্তাহে, বেশ একটু বিলম্বেই, কাশ্মীর রওনা হই। রেলপথে কাশ্মীর ছটো পথে বাওরা বার; একটা হচ্ছে দিল্লী হরে আর একটি অমৃতসর দিরে। আমরা ছিব করি, দিল্লী হরেই বাত্রা করব। কামরা বিজ্ঞার্ড করাই ছিল, সুত্রবাং বেশ শান্তিতেই বাত্রারক্ত হোল। প্রদিন হপুরে আমবা আগা ফোর্টে নেমে বাই। অবন্ধ এর জন্তে থেলারত বিশ্বে হরেছিল। বিজ্ঞান্ত কামবা আর মেলেনি। তৃতীর দিন তৃপুরে তুলান মেল ধরে কটেস্ট আমবা সন্ধা নাগাদ প্রাতন নির্নাতে পৌহলাম। মাত্রাপথে রাজধানী দেখলাম দ্ব থেকে, আলোর আলোকিত। সাজে এগারো বর্গনাইল জুড়ে ২৫ কোটি টাকার 'ভারত ১১৫৮' প্রদর্শনী চলছিল। রাজধানীর চেয়ে কাশ্মীরের আকর্ষণই ছিল বেলী। তাই রাত্রি ১টার কাশ্মীর মেল ধরলাম। তাজের মোহে একদিন আগ্রাহ্ম কাটানোয় রিজার্ডেসান ব্যবহা বাতিল হরে গিরেছিল। টেন্টেডে পাঠান আর পাজারীর ভিড়—গরু ছাগলের মতই গাদাগাদি। মহাসমত্যার পড়লাম আমরা পর্যবত্তমাণ লট্বহর নিরে। ক্ষেপর মুথের জয় সর্যবত্ত। মেরেরা বেরে ষ্টেশান-মাষ্টারকে পাকড়াও ক'বে একটি বিজার্ভ মেয়েদের কামরা নিজেদের জত্তে গুছিরে নিলেন। আমরা করেকজন আউট্ অফ বাউণ্ডস্। কোন রকমে তেমাথা অবস্থার রাভটা অত্যাক্ত কামবার কাটিরে দিলাম।

পরদিন সকাল আটিটার মেল পৌছল পাঠানকোটে। রেল-লাইনের এইখানেই শেষ। এদিকে পাঠানকোটই পূর্ম-পাঞ্চাবের শেষ সীমা। হাওড়া থেকে টিকিট করার সময় বাসের ব্যবস্থাও করতে হয়। আমাদের বাসের নম্বর আগে থেকেই জানান ছিল। নেমে দেবীলাম বাস অপেক্ষা করছে। ছিল্-দেক্সানে চলবার উপযোগী মজবৃত, আরামী বাস। দিট-নম্বর অভুসাবে বসতে হয়। ২২'২৪টির বেশী আসন থাকে না। কুলে যাওয়া বে-আইনী। ১টার বাস ছাড়ল।

পাঠানকোট থেকে শ্রীনগর ২৬৭ মাইল, বিমান-পথে মাত্র ৪৫ মাইল। বাস-ভাড়া বিটার্ন ২৭ টাকা। ছ'লিনের সফর। ছটো দিনের জেলখানা ভোগ করতে হবে ভেবে আমরা কিছুটা অস্বস্তি বোধ করছিলাম। কিন্তু কিছুদূর যাবার পরই আমাদের ভূল ভেঙ্গে গেল। বে নয়নাভিরাম দৃগ্গ দেখতে দেখতে চললাম, তার তুলনা মেলে না। হাওয়াই জাহাজে উড়ে গেলে পথের কট কম হয় সভাি কিন্তু গে 'অভাবনীয়ের কটিং কিরণে' মন দীপ্ত হয়ে ওঠে না। পথে মাঝে মাঝে ১০০৫ মিনিটের জঙ্গে বাস থামে, যাত্রীরা প্রয়োজনমত চা পান করেন, গা এলিয়ে বুরে বেড়ান।

রাভী নদী পেরিয়ে তিন মাইল আসবার পর আমরা জন্মু রাজ্যের প্রথম সহর লন্ধণপুরে পৌছলাম। এখানে এসে গাড়ী দাঁড়িরে গেল। ভারতীয় সামরিক অফিসারেরা আমাদের পাশপোর্ট একে একে পরীক্ষা করলেন, কারুর মালপত্র টিপেটাপে দেখলেন। ভারপর অলু দ্লিরার। গাড়ী আবার চল্ল। ৬৭ মাইল সমতলভূমির ভণৰ দিলে চল্বার পর আমবা এলে পৌছলাম জন্ম নগরীতে।
ভণন হপ্র। এথানে এক ঘটা বিপ্রাম। এবই মধ্যে স্নান-ভোজন সেরে নিতে হল। জন্মতে বাত্রীলের থাওরা-দাংব্যার
অস্থাবিধে কিছু নেই। দোকানপাট প্রচুর। কিন্তু জনের অভাব।
বিখ্যাত রঘ্নাথ জীউর মন্দির বাস-ট্যাণ্ডের সামনেই। বিরাট
চলবের মধ্যে চুকেই বাঁ দিকে প্রথমে নজরে পড়ে বোড়হন্তে
ক্তারমান ভক্তবীর হন্তমানজীর মৃত্তির উপর। বিরাট মৃত্তিটি
পাথবে খোলাই। মন্দিরের মধ্যে বামচন্দ্র, সীতাদেবী আর লক্ষ্য
অধিষ্ঠান কছেন। রামচন্দের বর্ণ নবস্রাদলভাম নয়, কাল্যে।
সভবতঃ কালের গোপে রাম আর ক্লম এক হয়ে গেছেন। এথানের
চারপালের ছোটখাট মন্দিরগুলিতে এক লক্ষ্ শালগ্রামন্দিলা আছে।
সে এক অভিনব ব্যাপার। সংগ্রাহকদেব গৈর্হার প্রশংসা করতে

কমু সহরটি মোটের ওপাণ পরিকার-পরিজ্ন। রাজাটি কাম্মীরের সকে ব্কুভাবে শাসিত হয়। কাম্মীরের ডগ্রা রাজাদের কমু কছে শীতের রাজধানী। এ-রাজ্যের শতকরা ৯০-এর বেশী হিন্দু। মাড়োরাটী আর পাঞ্জারী ব্যবসারী সর্ক্রই চোথে পড়ে। শীতকালে জমু সহরে কন্কনে ঠাণ্ডা পড়লেও তুসাবপাত হয়। তবে সহর থেকে প্রায় ৪০ মাইল দূরে পাচাড়ে তুমাবপাত হয়। তী পাহাড়ে বিধ্যাত এক বিফুম্দির আছে।

বেলা প্রার আড়াইটার সময় আমানের বাস সচল হোল।
মাইল থানেক দেতে না যেতেই চোণে পড়ল পর্মত-বিস্তাব।
একটার পর একটা পাচাড় টেট থেলে চলে গেছে। এই পাচাড়
কেটে কেটেই স্থন্দর পিচেব রাস্তা করা হয়েছে। রাস্তাগুলি
বিসর্গিলগতিতে গঁকে-নেঁকে পাচাড় কেটে যুবে ব্বে উঠেছে আর
নেমেছে। এই পর্মতশাসির নাম গীরপঞ্জাল। ভারত বা
ক্ষমুথেকে এই পাহাড়গুলিই নাক্ষারকে বিচ্ছিন্ন করে রেখেছে।
বিস্তাব বড় কম নয়—প্রার হুণো মাইল। কান্দ্রীর সহক্ষে ধারণাটা
পরিষার হয়ে ওঠে দলি ভাবা বাম থে, উত্তর্গকে তিনটে সমাস্তবাদ
বেখা পর পর পড়ে আছে। এর প্রথমটি হচ্ছে পীরপঞ্জাল
পর্বতশ্রেণী, তার পরেবটি কান্ধান উপভাকা আর শেসেটে হচ্ছে
কান্ধানের উত্তরে থাকে থাকে সাকান পাহাড়ের সারি, বারা পরম
ক্ষেহে সমগ্র উপভাকটিকে বিবে বফা করেছে।

মোটর বাদ পাহাড়েব পর পাহাড় হবে ঘ্বে উঠে আনার ঘ্রে ঘ্রে নেম্বে এগিরে চলল। কোনও কোনও পাহাড়ের উচ্চতা ন' হাজার কিট। কন্কনে ঠাণ্ডা বাহাদ থেকে হিনেল হাওয়া পর্যান্ত শৈতের করেক ডিগ্রী অফুভব করলাম চড়াই আর উংবাইনর সমস্ব। এই পার্কত্যপথ অধিকাংশ স্থানেই সন্ধাণ, একটিমাত্র বাদ চলবার মত : ভবে প্রতি মোড়ের মাথার ছটি বাদের পথ করে নেওয়ার মত বারগা আছে। ছ তিন মিনিট পর পর এক একটা মোড় আদে আর হর্ণ বাজিয়ে বাদ মোড় ঘোবে। অত্যন্ত সতর্ক হয়ে মোড় ঘ্রুতে হয় কারণ বিপরীত দিকের গাড়ার সঙ্গে সমাগ্র ধার্রা নাগলেই করেক হাজার ফিট নীচে পড়ে কয়াল দিয়ে জমির উর্করতা বৃদ্ধি করতে হবে! তবে চালকেরা অতান্ত দক্ষ, তুর্ঘটনার সংবাদ এ অঞ্চল প্রার শোনাই বায় না। ভারতীয় সামরিক বাহিনীর কল্যাণে পর্যন্তিনি দিনরাত তদারক করা হছে। স্কুতরাং বিপদ

থাকদেও শহা নেই। বদরীনাথের পথে বেভে বাসৰাত্রীরা আর ড়াইভারেরা ভূপবানের নাম শ্বরণ করেন। বাসের পেছনে লেখা থাকে—'ভগবান, তুমিই একমাত্র সহার।<mark>' নেপালে</mark>র ভিমপেদি থেকে কাঠমণ্ড পর্যান্ত রান্তাটাও ঐরকমই বিপদসমূল। কিছ ভতটা বিপদের ভয় এখানের পাৰ্ব্বত্য-পথে নেই। সামরিক গাড়ী আর মাল-বোঝাই ট্রাক সারাদিন ছুটে চলেছে। তবুও ডাইডাবদের রীতিমত বাজিয়ে নেওয়া হয়। ঝালু চালক ছাড়া এপথে মোটর চালিয়ে বাওয়া সম্ভব নর। অবশ্র খন খন মোড় খোরা, न' हाज्ञाव फिंह है कि कि बाउदा-ताभावता जातिभाद আদে নর। কেউ কেউ ভরে কাতর হরেও পড়েন। গুনলাম পাঞ্জাবী বীরপুঙ্গবদের মধ্যে একজন এমনই ভয় পেরেছিলেন যে, প্রথমে তিনি মৃচ্ছা যান, তারপর জ্ঞান ফিরে পেয়েও জ্রীনগর পর্যান্ত আর চোথ থোলেন নি। বিমানে ফিরে গিয়েছিলেন। অবশ্র ভেতো বাঙ্গালী হলেও আমাদের দলের কারুর স্নায় তত চুর্বল ছিল না। তবে খন খন মোড খোৱার জন্মে মাথা ধরেছিল অনেকেরই, আর কেউ কেউ মুখ দিয়ে ঢেলেও ফেলেছিলেন। ফেরবার সময় একজন মধ্যবয়সী পাঞ্জাবী দৈনিককেও ঐ কন্ম করতে দেখেছি।

ছার দে সকলেই কিছুটা পেরে থাকেন, তার পরিচয় মিলল বাসের ছোত্তর থেকেই। কেউ কোনও কথা না বলে চুপচাপ বলে আছেন, পাছে মোটর-চালকের মনের ওপর বেগাপাত হয়, তার হাত নড়ে চড়ে যায়। আমরা কয়েকজন বেপরোয়া। মরলে অস্ততঃ থাটিয়ায় চেপে মামুলি নিমতলায় যেতে হবে না ত! বীতিমত রজোগুণের পেলা দেখিয়ে পীরপঞ্জালে দেহ-পঞ্জরকে রাগতে পারব! চাই কি, পীরের দয়ায় বেহেস্ত-বাসেরও ব্যবস্থা হতে পারে!

অবাধননিমারে দেখছিলাম পাছাড়-কাটা আঁকানাকা বিচিত্র পথগুলো; মান্তানৰ পায়ে-চলা পুরাতন, পৰিত্যক্ত পথগুলোও নজৰে এল। হয়ত এই পথ ধরেই ললিতাদিত্যের সৈক্ত বাংলাদেশ আক্রমণ করেছিল, আবার হয়ত ঐ পথ ধরেই রাজপুত্র গুণবত্মণ দক্ষিণ ভারতে এসে জাহাজে চড়ে যুবধীপ আর চীনে গিয়ে তথাগতের বাণী ছড়িয়েছিলেন।

দেখলাম দেশলাইয়ের বাক্স চলেছে নীচের পথগুলো ধরে।
মিলিটারি ট্রাক আর যাত্রিবাহী বাসকে তাই মনে হচ্ছিল। দূরে
অগণ্য ত্রারমণ্ডিত পর্কতের চূড়া, সূর্য্যেব সোনালী আলো পড়ার কি
তাদের প্রী! যাত্রাপথে পার্মত্য ঝর্ণাও চোগে পড়ল, পাশ কাটিয়ে
কয়েকটার চলেও গোলাম। নিস্তর, ভামল পর্কতগুলির এক একটা
ভেদ ক'রে সাদা সাদা প্রাণময় প্রোভ নীচে ঝরে পড়ছে। বন-ঝাউ,
দেবদারু আর পাইনের ভামলিমার মধ্যে এই শ্বেতাঙ্গিনীদের আবির্তাব
মনের গহনে গভীর সংবেদন জাগিরে তোলে। ভৃত্মর্গের উপযুক্ত
পরিবেশই বটে।

বিকেল নাগাদ আমরা এসে পৌছলাম কুদ্-এ। অপুর্ব প্রাকৃতিক সৌন্দর্য্যের জন্তে স্থানটির প্রসিদ্ধি আছে। এখানে বন্দী আছেন কান্দ্রীরের 'শের' শেথ আদ্বুরা। দোকানপাট এখানে ভালই। পনের মিনিট বিশ্রামের মধ্যে সবাই চা পান করলেন। চা-ওয়ালা আমার সঙ্গিনীদের এক গুচ্ছু ফুল এনে দিলেন। নামটা নাকি নার্গিস। আসল নামই এ, না এখানেও চিত্র-ভারকার। আসর জাঁকিরে বসেছেন কে জানে। কি ভুনিবার আর্কণ ভারকাদের। এ-যুগে জন্মানে

নতুনের অভিযান...



দিকে দিকে আজ নতুনের অভিযান—নবীন
শিশুর আত্মপ্রকাশের ক্রন্দন বয়ে নিয়ে আসে নতুনের সংকেত,
সাড়া জাগে লক্ষ মানুষের প্রাণে, তায়া জেগে ওঠে, চেষ্টা
দিয়ে, কর্মা দিয়ে জাতিকে তারা নতুন করে গড়বেই.....মহৎ
কাজের প্রচেষ্টা থেকেই একদিন প্রান্তিময়,
ক্লান্তিময় পৃথিবীতে আনন্দ আর সুথ উৎসারিত হবে।
বৈচিত্র আর অভিনবত্ব জীবনকে করে তুলবে সুন্দরতর।
কালের জড়তা ভুলে অতীতের এক মহান
জাতিও আজ তাই জেগেছে, পেয়েছে সে নতুনের আহ্বানন.....

আজ সমৃদ্ধির গৌরবে আমাদের পণ্যদ্রব্য এ দেশের সমগ্র পারিবারিক পরিবেশকে পরিছেন্ধ, স্কুম্ম ও স্থা করে রেখেছে। তবুও আমাদের প্রচেষ্টা এগিয়ে চলেছে আগামীর পথে—স্কুম্মরতর জীবন মানের প্রয়োজনে মাসুষের চেষ্টার সাথে সাথে চাহিদাও বেড়ে যাবে। সে দিনের সে বিরাট চাহিদা মেটাতে আমরাও সদাই প্রস্তুত রয়েছি আমাদের নতুন মত, নতুন পথ আর নতুন পণ্য নিয়ে।

ভাজেও ভাগামীতেও...দশের পেবায় াহন্দুস্থান লেভার PR 2-X52 BO নিউটন হয়ত ওঁদের নিয়েই প্রিজিপিয়া পিথতেন। কুলটি কিছ ভারী ভালো লাগল। প্রতিটি ফুল নস্ব,ই ডিগ্রি কোণ করে আছে। সালা ভার রং, মুখের কাছটা ঈবং হল্দে। মৃত্-মধুর গন্ধ। অন্ত কোথাও এ-ফুল আমাদের নজরে পড়েনি, এমন কি প্রীনগরের মোগল উত্তান-ভালতেও নয়।

সন্ধার আগে বানিহালে পৌছান সম্ভব হ'ল না—বাটোটে পৌছলাম। সন্ধার পর অঞ্চকাবে গাড়ী যাবে না; রাত্রির বিপদের কুঁকি নেবে কে?

পার্মানকোট থেকে জীনগর পর্যান্ত পথে মধ্যে মধ্যে সুরুকারী ভাকবাংলো আছে জন্ম, উধানপুর, কুল, বাটোট, রামবাল, বানিচাল, কাজিওন্দ-এ। বাটোটের ডাকবাংলোটি বেশ্ব বড়। রাস্তা থেকে পাথরের সিঁড়ি দিয়ে নীচে নেমে আসতে হয়। ভাড়াভাড়ি যেরে একটা বড় বর আমরা ভাড়া নিলান। ভাড়া মাথা-পিছু আট আনা আর গাটিয়া-পিছু এক টাকা। মালপত্র বাস থেকে নামিয়ে বাংলোর এনে বঙাল-ভবিয়ত হওয়া গেল। টাদনি রাত। ডাকবাংলোর চার পাশে মরওমা ফুলের সমারোহ। সামনের পাহাড়গুলোতে দীর্থদেহ দেবদাক আর পাইনের সারি আব ভার ওপর একটা হাকা কুর্যানা। রীতিমত ইডিলিক, একটা জীবন্ত কার্যা। স্কটের মর্দারত্ব-এর দৈবী ভলোয়ার এক্সনালিবার জলে ফেলার দিন এমন রূপম্য টাদনি রাত ছিল কিনা জানি না। জুলিয়েটকে প্রেম নিবেদনের সময় রোমিও বলেছিলেন, এ হেন রাতে। কিন্তু সে-বাত কি এমনি ছিল ?

বাটোটে কয়েকটি হোটেল আছে, নিভান্ত মামুলি হোটেল।
মালিকদের অধিকাশেই শিগ। আগ্রা থেকে দেখে আসছি ঘাটর
গাড়ীর আর হোটেল-রেস্তোর রি ব্যবসায়ে এরা কেমন একটেটিয়া করে
ক্লেছে। দেশ-ভাগের ফলে ওরাও আমাদের মতই ক্ষতিগ্রস্ত হয়ে
পথের ভিবিরি হয়েছিল, কিছু সাহস, উজ্ঞম, ঐক্যনেধ ওদের আজ
আবার মামুর করে তুলেছে। একটা শিথকে ভিক্লা করতে কোথাও
দেখলাম না। আর আমরা? এত তুল থাকা সত্ত্বেও এমন লক্ষ্মীছাড়া
ভাত আর আছে কোথায়? আয়সম্মানবোবটা বোধ হয় আমরা
হারিরে ফেলেছি।

বাটোটের হোটেলে কটি, ভাত, মাংস পাওয়া যায়; ভাতের স্বাদ আর আণ চমংকার! জন্মুব বাসমতী ঢালের মতই স্থাক। বাংলা দেশেও এ-চাল উংপদ্ধ হয়, তবে কাঝীর ও জন্মুব মত এতো নয়। মাংসে ক্ষচি এল না—বোটকা গক্ষে ভরা। প্রথমে বাদ্ধার দোব বলে মনে হয়েছিল, পরে জানতে পেঝেছিলাম সারা কাঝীবে পাঠা আর হুম্বার মাংসের গন্ধ ঐ রকনই। একপ্রকার ঘাসই নাকি ঐ গক্ষের জ্বেট্টে দারী। মুবুগীর মাংস খুবই স্ক্রাত্। বানিহাল থেকে আরম্ভ করে শ্রীনগব পর্যান্ত সর্বত্ত আমরা এই 'নিষিদ্ধ মাংসে' ভৃত্তি পেয়েছি।

রাত্রিতে বেশ ঠাণ্ডা পড়ল। সকাল সাতটায় বাস ছাড়বার কথা।
এজন্তে পাঁচটার উঠতে হোল। মেরেরা ট্রোভ বেলে চা করে ফেললেন,
টোইও তৈরী হল। এক কান্মীরী ব্রাহ্মণ-দম্পতি এখানে আমাদের
সঙ্গে রাত্রিবাস করেছিলেন। তাঁরা কিছুই খেলেন না। পথে কল
ছাড়া আর সব তাঁদের কাছে অস্পৃষ্ঠ।

সকাল সাতটার বাস ছাড়লো। শীতে আমরা ঠক্ঠক্ করে কাপছি। ভারী কোটের ভিতরেও ছাত পা কন্কনিয়ে উঠছে। একটা হাজা কুয়াশা ভথনও চারদিক ছেরে আছে। দূর পাহাড়ের উচ্চতম চুড়ার সোনালি আভা দেখে বুঝলাম—তিমিরবিদারের অভাদয় হরেছে।

বন্ধুবর মনোজ মুথার্জি চন্দননগরের পৌর-পিতাদের **অস্ততম**। অকৃত্যার, বামপত্তী, আধা-দার্শনিক। হঠাৎ ভুকুম করলেন-পান লাগাও আমাদের যাত্রা হল হকে।' হেমুপ্রভা, পুষ্প আর ভভাদি'র গলা থাসা। তাঁরাই স্কু করলেন। সেই কুয়াশাভরা হিম-স্লিগ্ধ প্রভাতে কাশ্মীরের পথে ছড়িয়ে পড়ল বাংলার সঙ্গীত ব্রবভি। কবিগুৰুৰ সাধনা যে বিশ্বজ্ঞনীন তা সেদিন অস্তবে অস্তবে উপলব্ধি করেছিলাম। বাসের মধ্যে যে ১।৬ ৪ন অবাসালী ছিলেন জীরাও নিঃশব্দে দে-সুধা পান করছিলেন। বাংলা দেশ থেকে দেড় হাজার মাইল দূরে ·আছি. একথা আমবা ভূলেই গিয়েছিলাম। দূরের পর্বভরাজির দিকে ভাকিয়ে ভাকিয়ে ভাবছিলাম—যাত্রা ভ করু হোল, কিন্তু চলেছি কোখায়? আত্মনিশ্বত হয়ে ভাণছিলাম—এই ত সেই কাশ্মীর ৷ কথাসরিংসাগ্র রচয়িতা কবি সোমদেব, দিতীর চালুকা বংশের রাজ। বিক্রমাঞ্চের সভাকবি বিঞ্লন, যব শৈপে বৌদ্ধধ্য কারক রাজপুত্র গুণবশ্বনের দেশের মাটির উপর দিয়ে চলেছি। মনে পড়ঙ্গ 'শ্ৰীকাশাবিক মহামাত্য চম্পক প্ৰভূপুত্ৰ কহলনকৃত্ত' রাজতরঙ্গিনীর কথা—ভৃত্বর্গের জন্মকথা থেকে দ্বাদশ শতক পর্যান্ত হিন্দুরাজাদের কাহিনী। প্রথম কল্লারম্ভ থেকে ছটি মনুর কাল পর্যান্ত হিমালয়ের কুক্ষিদেশের নিকটবন্তী ভূভাগ জলপূর্ণ ছিল। নাম ছিল ভাবি সভীসর। তারপর বৈবস্বত মহস্তবের সময়ে প্রজাপতি কাঞ্চপ— ব্রগা, বিষ্ণু, ক্সা প্রভৃতি দেবতাকে দেগানে এনে প্রস্রবণগুলির নিরোধ করকোন। জ্বমিতে পরিণত তোল সরোবর। জন্ম হোল কশার পদেশের। তারপর কত অমিত্রক্রিম রাজা রাজ্য করলেন, গড়লেন কভ পাথরের প্রাদাদ, কত মন্দির। মহাভাবতের যুগের কথা। জরাপদ্ধের বন্ধ কাঝীররাজ গোনন্দ শ্রীক্রফের মধ্বাপুরী অববোধ করলেন। বহুকাল পরে শ্বেছতুনপতি, 'ছণ্মতি' মিছিরকুল কান্দীররাজ্বের অনুগ্রহে ক্ষুদ্র রাজ্যের অধিপৃতি হলেন। তারপর বিশ্বাসঘাতকতা করে করন্তেন কাশ্মীর আক্রমণ ও জয়। হুণ্মতি হলেও তিনি ত্রীনগরীতে প্রতিষ্ঠা করলেন মিছিরেশ্বর শিবের। ভারপর রাজা সন্ধিমতি, মহাধাশ্বিক চন্দ্রাপীড়, ভ্রাভূনিধনকারী তাগাণীড়, ললিভাদিত্য, জয়াপীড় অবস্তীবন্ধা, মেঘবাহনদেব, তুঙ্ক আবো কত রাজা রাজত্ব করলেন। ললিভাদিতা কাশুকুক থেকে পুবে প্রাগ্জোভিষপুর, বঙ্গদেশ জয় করলেন। স্ত্রীরাজা বা মণিপুর জয় করতে থেয়ে স্ত্রী-সেনাদের নগ্ন বকোদেশ দেখে তাঁর সেনারা প্রায় ঘায়েল হয়েছিল। এই ললিভাদিত্যই চুৱাৰী হাজাৰ ভোলা সোনা দিয়ে নির্মাণ করেছিলেন মুক্তাকেশব বিগ্রহ। ভারংর নেপা**ণ**রাজ অবমুড়ির সঙ্গে কাশ্মীররাজ জয়াপীড়ের যুদ্ধ ও প্রাজয়। বিধবা রাণী দিদার কাশ্মীর শাসন-বাজা তুলের সময়ে তুরস্কগণের প্রথম আক্রমণ। মনে পড়ল প্রাত:মুরণীয় রাজপুত্র গুণবর্মণের কথা। সিংহাসনের প্রলোভন ত্যাগ করে মহাভাবের আকর্ষণে তিনি ঘর ছেড়ে বেরিরে পড়েছিলেন। সমুক্রপথে তিনি চীনেও গিরেছিলেন। কে জানে কোথা থেকে ডিনি চেপেছিলেন সেদিনের অর্ণবপোতে —হয়ত বাংলার ভাষ্ণনিপ্ত থেকে, হয়ত দক্ষিণ ভারতের কে নও ৰন্দৰ থেকে।· এই কাৰীবাঁ রাজপুত্ৰই চালে এক নৃতন শি**ন্ন**বীতি^র

প্রবর্ত্তন করেছিলেন। এই সেই প্রাচীন কাশ্মীব ধার রাজকন্তাকে বিবাহ করেছিলেন সপ্তম শতকের প্রথম পাদে তিব্বতের রাজা প্রান্তির সন্ গাম্পো। ইনিই ত কাশ্মীরের এক পশ্তিতকে পাঠিরে কাশ্মীবী লিপি তিব্বতে নিরে এসে সামাক্ত অদলবদল করে, তিব্বতের জ্বত্তে তা গ্রহণ করেছিলেন। তারপর পদ্মসম্ভব? চিত্রলের বিগ্যাত সন্ন্যাসী তিনি। অষ্ট্রম শতকে নিমন্ত্রিত হয়ে তিনি তিব্বতে 'গিয়েছিলেন আর দেখানে তেরো বছর কাটিয়ে লানা ধর্ম্বের প্রবর্ত্তন করেন। তারপর ১০০০ গৃষ্টান্দের কথা। তিব্বতি সপ্তিতে, সংস্থারক, সম্থাসী বিন্ সেন্ বজ্ঞান্-পো দেশে মন্দির নির্মাণ, ভাঙ্গগ্য আব চিত্র তৈরীর জ্বত্যে কাশ্মীর, নেপাল আব বাংলা থেকে শিল্পীদের আমন্ত্রণ ক'রে তিব্বতে 'নিয়ে আসেন।

মনের রপালি পর্নায় একটার পর একটা ছবি ভেসে আদছিল। একটা মৃত্ব ধারুার আত্মন্ত হলাম। ছাজার বছরের যবনিকা আবার নেমে এল। গান কথন থেমে গিরেছে। সঙ্গিনী পুষ্প বল্লে— কি ভাবছিলেন তন্ময় হ'য়ে ?

বললাম—না, কিছু না। দূরের পাহাড়টার দিকে চেয়ে চেয়ে বোধ হয় একটু তন্ত্রা এদে গিয়েছিল।

পথের ছোট একটা ঘটনা। বাদের দোগায় আমাদের জলের কুঁজোব মুখটা ভেঙ্গে গেল। সঙ্গী অক্যাত বাঙ্গাঙ্গী যাত্রীরা বগলেন— ফেলে দিন মশাই, কুঁজোটা। ভাঙ্গা কুঁজো অপয়া।

দলের অণিমা রুথে উঠল—না, আমরা ভাঙ্গাই নিয়ে যাব। যত সব কুসংস্কার!

অপের পক্ষ বললেন—বাসটার শুধু আপনারাই বাচ্ছেন না, আনবাও বাচ্ছি। পথে বিপদ হ'লে কে তার জন্তে দারী হবে? ফেলে দিন।

বাঁথা বলপেন তাঁথা সবাই প্রুধ, বাঁতিমত ভন্ত-ছবস্ত, বাঙ্গালী।
শ্বাঙ্গালীরা মাইনবিটি। তাঁথা চূপ করেই ছিলেন। অপ্রীতিকর
পরিস্থিতি এড়ানোর জন্তে কুঁজোটা ফেলেট দিলাম। ভদ্রলোকদের
দোধ দিই না। এসব পার্বভাগথে মানুবের সংস্থার আপনিই সজাগ
হয়ে ওঠে। যে ভগবান আব ভূত মালোকপ্রাপ্ত নাগরিকের কাছে
আটট মক বাউগুস্, তাঁবাও ন' হাজার ফিট উপরে পার্বভাগথে বেশ
করে পান।

বেলা ন'টা নাগাদ আমরা বানিহালে পৌছলাম। স্থানটা নানা কারণে প্রেসিদ্ধ। সামরিক গুরুষও আছে। এথানে চার মাইল স্থেক্সপথ জার্মাণ এত্তিনীয়াংদের তত্ত্বাবধানে তৈরী চলছে। এই চার মাইলের জক্তে হু'শো মাইল পার্বত্যপথের ৪০ মাইল কমে ধারে। স্থেক্সপথ আসলে হুটি—একটি পূবে আর একটি পশ্চিমে। পশ্চিমেরটি প্রথম তৈরী হয় হারা ধরণের মোটরের জক্তে ১৯৫৬ সালে। সেটি মাঝে বন্ধ করে দিয়ে নতুন করে তৈরী হয়। সম্প্রতি এটি গত ২১শে ডিসেম্বর থুলে দেওয়া হয়েছে। এখন সব রকমের গাড়ী আর মায়্মব এই টানেল দিয়ে যেতে পারবে। ১৮ মাইল পথ কমে গেল এই স্থৃক্ষটির জক্তে। এর নাম দেওয়া হয়েছে "জহর টানেল"। প্রধান মন্ত্রী নেহক্র কয়েক মাস আগে এর উদ্বোধন করেছেন। প্বের টানেলটি থোলা হবে ১৯৬০ সালে। কাজ এখনও চলছে। স্থুড়কগুলির জক্তে মাট ব্যর্থ-বর্গান্ধ চার কোটি টাকা।

বানিহালের প্রাকৃতিক দৃশ্য মনোরম। পার্বেত্যনদী নীচে দিরে

ববে যাছে—চারিদিকে স্থামশোভা, বিচিত্র রং-বাছার। এথানকার অধিবাদীদের প্রায় প্রভ্যেকের বাড়ীন্তেই ফুলের বাগান। প্রকৃতির যে কভগানি ক্ষমতা মান্তবের মনে রং ধরাবার তা এথানে এলে বেশ বোঝা বার। বানিছালে বাদ থানে যাবার সময় আধ ঘণ্টা, আসবার সময় এক ঘণ্টা। বিশ্রামান্তে আবার চলা কুরু হোল। গত দিনের অবসাদ, মাথাববা ইত্যাদি দলের কারুর আর ছিল না। চড়াই আর উৎবাই-এর জ্বন্তে ভাবনাও মিলিয়ে গিরেছিল। "শরীরের নাম নহাশর, যা সহাও ভাই সর।"

পূথে পড়ে ভেরীনাগ, শ্রীনগর থেকে ৬০ মাইল দুরে ৷ 💐 💐 নগর যাবার পথে একটা মোড ঘূরে ভিন্ন একটা পথ চলে গিল্পেছে **ভেরীনাগের** দিকে। চার মাইল এই পথে বাঁরা যেতে চান, তাঁদের <mark>মাখা-পিছু</mark> কিছু দক্ষিণা বাসওয়ালাকে দিতে হয়। ভেরীনাগে যেয়ে বে-দৃত্ আমরা দেগলাম, তার তুলনা সারা কাশ্মীরে নেই বলেই শুনলাম, অস্ততঃ আমাদের চোখে পড়েনি। স্বচেয়ে বিচিত্র আকর্ষণ হচ্ছে গভীর লাল রং-এর চীনার গাছগুলির। সারা কাশ্মীর উপত্যকায় চীনারের প্রাচুর্য্য কিন্তু এমন মনমাতানো লাল রং আর কোথাও দেখিনি। চারিদিকের সবুজের মধ্যে প্রকৃতির এই ফাগুয়া, সুন্দর কেয়ারী-করা রং-বেরংয়ের ফুলের বাগান, প্রবহমান বিলামের ধারা, অদূরে দৃশুমান তুষার্কিরীট পীরপঞ্চালের স্বর্ণকান্তি-সে দৃখ্য ভোলা যায় না। ওয়ার্ডসূওয়ার্থ ভাদেখলে পাগস হয়ে যেতেন! চীনার গাছ **জন্মতে হ'-চারটে দেখেছি—থর্বাক্ততি, বিবর্ণ।** একমাত্র কাশ্মীর উপত্যকাতেই এদের লালিমার বিকাশ। শতকে সম্রাট আকবং পারতা দেশ থেকে কয়েকটি চীনার গাস্ত এনে কান্মীরের মাটিতে লাগিয়ে দিয়েছিলেন। করে সারা কাশ্মীরকে আরও সৌন্দর্যাময় করে তুলেছে। শ্রীনগরের এস, পি কলেজের অধ্যক্ষ জিলানী সাহেব আমাকে বলেছিলেন যে, পারত্যেও চীনার গাছ এত বড়, এত স্থলর হয় না। কাশ্মীরীদের কাছে চীনার হচ্ছে জাতীয় বুক্ষ। শালের ওপর চীনার পাতার ডিজাইন, আথবোট কাঠের চীনার পাতা, চীনার পাতা-টে, পেপার-মাসির উপর চীনারের চিত্র—চীনার-প্রীতির**ই বাহুপ্রকাশ**। দিনে চীনারের পাতা দরিজের কৃটিরকে গরম করে রাখে। **অন্তাভ** পাতার চেয়ে এর অগ্নিদেবকে সহু করবার ক্ষমতা বেশী। চীনার

বৈজ্ঞানিক কেশ-চৰ্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্ম্বরোগ ও চুলের যাবতীর রোগ ও দ্বীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসার প্রালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ডাঃ চ্যাটান্দ্রীর ব্যাশন্যাল কিওর সেণ্টার ৩৩, একডালিয়া রোড, কলিকাডা-১৯

गक्ता है।--।।है। क्लान नर 86->७६৮

পাতার সঙ্গে গোবৰ মিশিরে কাশ্মীরীরা যে গুঁটে তৈরী করে, তার তাপ-বিকিরণের ক্ষমতা অপেক্ষাকৃত বেণী আমানের দেশের গুঁটের তেরে।

ভেরীকাগ হত্তে বিলাম নদীর উৎস। মুক্তেরে ধেমন সীতাকুও আছে, এই উৎস্টিও তেমনি একটি কুও। ঠাপা, নীল ভার জল। গভীরতা ৫৪ ফিট। উংগ বলে মনেট হয় না-- এত স্তব্ধ নিধর এর জন। টাউট মাছেবা শতে শতে পেলা কবে বেড়াছে। অথচ আশ্চর্যোর বিষয় এই যে, প্রতি সেকেতে ১৩৫ ক্ষেক্র পরিমিত্ত জ্লু নীচে থেকে ওপরে উঠছে ! এটা বোঝা ষায় কুণ্ডেব বাইরে ষেয়ে, যেগান দিয়ে পাথৰে বাঁগান অগভীর গাদ বেরে জলস্রোচ্চ ভীষণ বেগে বেরিয়ে যাচ্ছে। কুণ্ডের চারপাশে পাথবের তৈবী ঘর আছে। পাথর দিয়ে বাঁগানোর কাজ জাহাঙ্গীর ১৯২০ খুষ্টান্দে সুক করেন আর শাক্ষাহান ১৬২৭ গুষ্টান্দে ভা' শেষ করেন। ছিন্দু-আমলে ভেরীনাগের নাম ছিল নীলনাগ। নীলনাগ ছচ্ছেন সর্পদেবভা। কহলনের 'রাজভরঙ্গিনী'তে আছে—নাগগণের আদেশে নীল নামক নাগ বিতস্তা নদীর প্রস্তবণকে আতপত্রস্থানীর করে সর্মদা কাশ্মীরকে রক্ষা করেছেন। ভেরীনাগ, কোকরনাগ, অনন্তনাগ, শেষনাগ ইত্যাদিতে নাগের ছড়াছড়ি দেখে মনে হয়, এককালে অনু-আর্ঘ্য নাগপুজা এখানে বেশ চল্ত। অবশু সেই নাগ এখন রূপান্তরিত হয়েছেন দেবাদিদেব মহাদেবে। ভেরীদাগে দেবপুজা এখন আরু হয় না।

ভের নাগ দেখে আবার চার মাইল পিছু হটে শ্রীনগরগামী পথে এনে পৌছলাম। ক্রমশঃ সমতল ভূমিতে এনে পঙ্লাম—পার্বত্য-পথের শেষ হোল। বেলা তথন একটা—শ্রীনগরে পৌছলাম। বাদ এনে সহরের মাঝখানে ট্রারিষ্ট রিদেপদান দেটারের বিস্তৃত চথং ব মধ্যে প্রবেশ করল। এই কেন্দ্রটি একটি এল-আকৃতির বড় দোতলা বাড়ীতে স্থাপন করা হয়েছে সম্প্রতি। নুতন বাড়ী--ঝকমকে ভক্তকে; সামনে, আশে-পাশে ফুলগাছের সারি। কয়েক শ' গল্প পুরেই পর্বেতমালার উন্নত বিস্তার। সারা জন্ম আর কান্মীরের জ্ঞমণ সংক্রাপ্ত অধিকর্তার অফিস এখানে। যাত্রীদের স্থপস্থবিধার দিকে তাঁর কড়। নজর । কাশীরের শতকরা ২০ জন অধিবাসী ख्यमकादीलय छेन्द्र खीविकात खन्न निर्द्ध करत, मत्रकारतवन প্রচুর আর হয়। স্কুতরা: খাতকদের স্থবিধে অন্ধবিধের দিকে মজর রাথতেই হয়। এই কেন্দ্রে বহিরাগতদের থাক্ষার জরে অনেকগুলি কামরা আছে। আকার হিসেবে তাদের ভায়া। সাধারণতঃ একদিন মাত্র এখানে থাকতে দেওয়া হয়; তাংপর ষার যেখানে খুদী—হোটেলে বা হাউসবোটে চলে যান। অধিকর্তার **নিক্ষের অফিস দোতলা**র। একতলার বড হল্মরটার নানা বিষয়ে জ্ঞাতব্য তথ্য জানাবার আর বিভিন্ন স্থানে যাবার জন্ম বাসের টিকিটের কাউন্টার আছে। অফিসাররা স্বাই ভদ্র আর সাহায্য করবার জ্ঞা সদাই উন্মুখ। একজনার আর দোজনার সিলিং কাঠের তৈরী-কান্মীরা নক্সা করা। এখানে একটি ডাকঘরও আছে।

দৈনিক পনের টাকা ভাড়া কবুল করে একটা বড় ঘরে আমরা উঠলাম। কামরাটি অবগু তিন জনের থাকবার মত অর্থাৎ তিনটি মাত্র থাট আছে। কিন্তু ঢালাও গালিচার উপর প্রচুর যায়গা— সহজেই সকলের শোধার ব্যবস্থা করা যায়। রাজা-মহারাজা-জমিণার নই, নিতান্তই ম্থাবিত আমরা। তিনজনের কামরাতেই এগারে, জনের ব্যবস্থা করা হোল। এগানের পরিবেশটা এতই মনোরম বে, সহজে ছেতে যাবার ইচ্ছে কারুব দিল না।

টুবিষ্ট বিদেশসান্ সেণীরে চায়ের জন্ম একটি ভালো দেন্তার।
আছে। ভাত কটি বাইরে থেয়ে আসতে হয়। রাজসিক পরিবেশে সে বারিটায় আমাদের ভালই নিজা হোল। পরদিন গুলমার্গ আয় থেলন্মার্গ যাওয়া স্থির হয়েছিল; টিকিট কাটা ছিল। সকাল সাড়ে ন'টাব বাস ছেড়ে যায়। ভাড়া টন্মার্গ পর্যান্ত যাভায়াত ২'২৫ টাকা।
শ্রীনগব থেকে টন্মার্গের দ্বন্থ ৩৪ মাইল। ওখান থেকে যোড়ার চেপে চার মাইল গেলে গুলমার্গ আর সেগান থেকে তিন মাইল দূরে থেলন্মার্গ। টন্মার্গ থেকে ক্রমশং পাহাড়ের উপরে উঠতে হয় তার উপর যোড়ার চড়া। ঘোড়া মানে ওয়েলার নয়, পাহাড়ী টাটু।

ধৃতি আর শাংশী পরে বোড়ার চড়ে পাহাড়ে ওঠা সম্ভব হলেও
উচিত নয়—বিপদের ঝুঁকি আছে। তাই আমরা ইউরোপীর
পোগাকে সক্ষিত হয়েই গিরেছিলাম। মেরেকাও চোস্ত, বা পাংলুর
পকে, কেন্ড বা মারাঠি কায়দার শাড়ী পেঁচিয়ে নিলেন। পাহাড়েও
উপরে কন্কনে ঠাণ্ডা বলে আঙ্গুল চাকবার জন্মে গ্লাভ্, গলার জন্মে
পশমের মাফলার, পুক্ষদের টুপী আর মেয়েদের হেড-স্কার্ফ নিজে
বাওয়া দরকার। ওভারকোট জন্যাবশ্রক। গ্রীম্নকালে জনক্ষ এ-স্বের
প্রয়োজন হয় না।

শ্রীনগৰ সমুদ্রের লেভেল্ খেকে ৫২০০ ফিট উঁচু, গুলমার্গ ১৫০০ ফিট আর থেলনমার্গ ১১৫০০ ফিট। স্থতমাং প্রজাও ছুটিভে গেলে কনকনে গাণ্ডার জন্মে প্রস্তুত হয়ে যেতে হয় উন্মার্গে পৌছতেই যোড়াওয়ালারা যোড়া নিয়ে ভিড় ক'রে দাঁড়ালার ছ'জাতের যোড়া আছে। একটু মোটাসোটা, চিকণ-চাকণে নাম ফার্ন্ত কাস। রেট টন্মার্গ থেকে গুলমার্গ হ'য়ে থেলনমার্গ পর্যান্ত ১৪ মাইল বাভায়াত বাবদ সাড়ে ছ' টাকা। একট্ পংখীরাজ গোছের যোড়ার রেট সাড়ে পাচ টাকা। এর নাম সেকেণ্ড কাস। কলকাতার গুলমার্গ-ফেরত বন্ধুবা সার্ধান করে দিয়েছিলেন—যোড়াগুলোর স্বভাবই নাকি খাদেব দার যেঁকে বাওয়াহারার লাগাম ধ'রে টান মারণেও থাদ যেঁকে যাকেই। স্ভ্রমার লাগাম ধ'রে টান মারণেও থাদ যেঁকে যাকেই চড়া স্থির ক্রমান। অন্ত গেরির ধীরে ত বাবে।

প্রত্যেক খোড়ার সঙ্গে সহিস থাকে। সৎয়ারের ক্থ-মবিধের দিকে তার কড়া নজর। কারণ টাঝটা সিকেটা বঞ্জাসের হে প্রত্যাশ। করে। তাকে ঠেটে ঠেটেই চড়াইয়ে উঠতে হয় মুক্তারাম বারু খ্রীটের বজুবর ভবনৌ আচ্যে সন্ত্রীক গিয়েছিলেন তার গৃহিণী একটা সাদা ঘোড়ায় চেপে সবার আগে আগে চললেন—সহিসের সাহায্যও নিলেন না। মহিলাদের বারবেশ দেখে মনে হোল—এরা বাঙ্গলার ঘরকুণো মেরে, না প্রমীলার দল? অবস্থাবিশেষে মামুব নিজেকে থাপ থাইয়ে নিতে পারে। বানী বাজানেওয়ালা বাঙ্গালীয়ও অসি ধরতে বেগ পেতে হয় না। সেই নির্জ্ঞান পার্বত্যপথে, দেবদারু আর পাইন-জর্গার মধ্যে সন্ধীণ চড়াইয়ে আমরা ছিলাম সেদিন স্বাই কেবাসী। বারা আগে গিয়ে ফিরছিলেন তারাও। মনে হ'ছিল আমরা যেন বাঙ্গলাই দাক্জিল-এই আছি।



ক্রমশ: উপরে উঠতে লাগলাম। ব্রুলাম, বন্ধুঃ। খাদ সম্বন্ধে নিতাস্কই গুলমার্গের গুল মেরেছিলেন। ঠিকভাবে বসতে পারলে বোড়া নিরম্বমতই বার আর খাদও তেমন গভীর নর। গভীরতা কোখাও এক-কোমর, কোখার এক-গলা। পড়ে গেলেও মরবার ভর নেই, হাড়গোড় একটু-মার্থটু ভাঙ্গতে পারে মাত্র। তবে বোড়ারা স্বাই ওস্তান। এ-পথ ভারা ভালভাবেই ঢেনে। জল দেখলে, পথে কাদা দেখলে পথ ভঁকে ভঁকে আন্তে আন্তেই। ভর হচ্ছে উৎরাই-এন সময়। তথন বিদি ভাড়াতাড়ি নামবার লোভ সংবরণ করতে পারা বায়—ভর কিছুই নেই। পারে হেটে ওপরে ওঠা বে কইকর ছা মালুম হোল স্থিসদের দেখে। ওরা এ-পথের ঘুণ ছালেও বীভিষ্কত হাপাছিল।

কথা হচ্ছিল আমার সহিসেব সক্তে—ভাদের জীবনের স্থপ-চুঃথের कथा नित्र । मार्रेन भात्र अता माणिक ১৫ (थएक २৫) होका । এই সামান্ত আয়ে চলে না-জমিজমাও কারুর নেই। যাত্রীরা দয়া করে য' বকশিদ দেয়, ভাতে কিছুটা সুৱাহা হয়, ভবে হু:থ ঘোচে না। অভিদিনের আর যোড়ার মালিকের। অবগু আর অনুসারে তাঁকেও সরকারকে কর দিতে হয়। কিন্তু তিনি মাত্র ঘোড়ার মালিক হয়ে, **बा (थ**रि **क्**न (थरिक **क**रिको रह-नरज्य । भ्रान्त जारा कारा करान । আব বেচারা সূত্র ? এনের কথা কেউ ভাবে না। সৃত্তিস বললে— ভারত স্বাধীন হ্বার আগে গুলমার্গ ছিল বেতকায়দের একটা বড় আন্তানা। হাজারে হাজারে ছারা আসত, উৎসবও হোত। সহিসদের মুথে তথন হাসি লেগে থাকত। আৰুও অনেক সাংহ্রের **কাঠের বাড়ী অবত্বে পড়ে আছে। গুলমার্গে দেখলাম.** কাঠের বাড়ীর ঢালু ছান্তের ওপর শিশির জমে আছে। রোদে ক্রনশ: গলে টুপটুপ করে পড়ছে। সহিদ বৈললে—আপনাদের ভাগ্যি ভালো, আকাশ এখন পরিষার। এখানে ২।৪ দিন জ্ঞান্ত হয়। আকশি মেঘাচ্ছন্ন হলে, নভেষ্যরে কথনও কথনও তুষাৰপাত্ৰও হয়। অভতপক্ষে ঠাণ্ডাটা তথন অগহা হয়ে পড়ে।

অবশেবে সাড়ে ন'হাজার ফিট উঁচুতে গুলমার্গ পৌছলাম।
ওপরটার বেশ থানিকটা সমতলভূমি আছে। এথানে কিছুক্ষণ
বিশ্রাম আর ছুপুরের আহার সেরে চড়াই অভিযান। ছোট-বড়
হোটেল, রেস্তোর'। এথানে অনেক। বোর্ডিং-এরও অভাব নেই।
বারটি বড় বড় বোর্ডিং-হাউস আছে। এদের মধ্যে বাদশাহী
মেজাজের হোটেল হচ্ছে নেহুর হোটেল। দৈনিক থরচ ১৮১ টাকা
থেকে ৪০ টাকা। দৈনিক ৫১ টাকার নীচে কোনও হোটেল
এখানে নেই। কাশ্রীরের মহারাজার একটি প্রাসাদ আর ভারত
সরকারের প্রতিনিধির থাকবার জল্পে রেসিডেলীও আছে। এক সমরে
ভসমার্গের সমভলভূমিতে ইউরোপীররা গল্ক্ থেলতেন। এখনও
বিনারে আর গুলমার্গে সরকারী গলক্ ক্লাব আছে।

কিছুক্ষণ বিশ্রামের পর আবাৰ চলা স্থক হোল। থেলন্মার্গে ওঠবার তিন মাইল পথ এক এক যারগায় বেশ সহী । সক্ষপথের ছ'পালে বিশাল, উন্নত দেবদার আব পাইনেরা বেন সব সতর্ক প্রহরা। মহাদেবের প্রধান অনুচর নন্দীর মত মুখে তর্জ্জনী রেখে ফেন বলছে—
চুপ! ভাত্তিসনে এই স্তব্ধতা! সত্যিই হিমালয়ের এই সব অঞ্চল মালুবের
মনে একটা বিরাট অমুভৃতি জাগায়, ভাষা তথন স্তব্ধ হয়ে আসে।
বত্তই উপরে উঠছিলাম, তত্তই নিঃখাস নেওয়ায় একট বেন কৡবোধ

হচ্ছিল। ভাগীরথীর উৎস-সন্ধানন বেরে আচার্য্য জগদীশচন্দ্র নলাদেবীর পদস্বলে কেন মুচ্ছিত হয়ে পড়েছিলেন, তার কিছুটা আভাদ পাওয়া গেল। প্রায় এক ঘণা লাগল ওপরে উঠতে। ওপরে অপূর্ব দৃশু! সত্যিকার ত্বারের সঙ্গে প্রথম পরিচয় হোল। গাছের নীচে, কাঁকা যায়গায়, পাথরের ওপরে পেঁজা-পেঁজা তুলোর মত পড়ে আছে। আমরা শিশুর মত হয়ে গোলাম। সমতলভূমিবাসী বাঙ্গালীর তা' না হ'রে উপায় নেই। সেই পেঁজা তুলো হাতে নিয়ে এ ওর গায়ে একটু ছড়িয়ে দেওয়া গেল। ওপর থেকে চারিদিকের পাহাড়ের আর সমতলভূমির বিচিত্র দর্শন মেলে। আমাদের গাইড, বললে— ঐ দ্রে দেথুন, নাঙ্গা পর্বত—২৬,৬২০ ফিট। শুনলাম কাশীরের অক্ত এক স্থান থেকে পৃথিবীর দিতীয় বৃহত্তম পর্বত কে—২ বা গড়উইন অষ্টেনও (২৮,২৭৮ ফিট) দেখা যায়।

থেলন্মার্গের ওপবে একটি চায়ের দোকান আছে। মালিক একজন শিথ। যাত্রীদের বসবার জন্মে কয়েকথানি চেয়ার-টেবিলের ব্যবস্থাও ইনি করে রেথেছিলেন সমতলভ্মিটুকুতে। ১৫ই নভেশ্বরের পর আর থাকা চলে না, তাঁকে নেমে বেতে হয়। তথন তুষারপাত স্থা হবার সময়।

গুলমার্গ, খেলন্মার্গ আর সোনামার্গে যোড়াই সবচেরে ভাল বাহন। পারে থেটেও কেউ কেউ ওঠেন। তবে পাইনের ঝরা-পাতার পা পিছলে পটেই যাবার সপ্তাবনাও আছে। ঘোড়াই এ-পথে নিশ্চিম্ব বাহন। যারা বিশেষ স্থলাকৃতি, তাঁদের প্লেড ডাগুী ছাড়া গতি নেই। থবচ কিছু বেশী পড়ে অবগ্য।

খেলনমার্গ থেকে নামবার সময় দেখা ছোল একনল ভারতীয় সৈত্যের সঙ্গে। টহলদারী দল। ব্রেণগান, মেসিনগান, রাইফেল, তাঁারু ইতাদি নিরে এবা উঠে এলেন। জিজ্ঞাদা ক'রে জানলাম, তাঁারা ব মাইল দূরে পাক-ভারত-সীনাস্ত থেকে টহল দিয়ে ফিরছেন। বললাম—এতটা পথ এই ভাবে ভারী নোঝা নিরে হেঁটে হেটেই

উত্তর দিলেন একজন---এ আর কি ! দেশরক্ষার জানে এইকু কট্ট করতে হলে বৈ কি !

ভারী ভালো লাগলো যুবদের দৃগু ভঙ্গাটি। ভা**ৰ**লাম, সব ঠিক আছে। দেশরকার জ্ঞে জোয়ানদের উৎসাহের, আত্মভ্যাগের অভাব নেই। তথু কর্ণধারদের হেড-এ কিছু গোলমাল, এই **যা**।

নানবাৰ সময় ঠিক হোল, গুলমার্গ থেকে বাকী চার মাইল থেটে নামা হবে, ঘোড়াওয়ালাকে পুরো ভাড়া কবৃদ্ধ করেও। চোখ খুলে দৃষ্ট দেখা ত বটেই, উৎরাই-এর কঠোর অভিজ্ঞতাও হবে। মুদ্ধিল হল গুধু একজনকে নিয়ে—গুভাদি'কে। প্রস্থে তিনি আমাদের চেয়ে বেশী। আনিমা ঠাটা করে বললে, গুভাদি', সাববান কিন্তু। মাস্ ইন্টু ভেলসিটির ব্যাপার। দেখে-গুনে পা ফেলবেন। না হলে একেবারে বুল্ডার হয়ে গড়াবেন।

ভাগি রসিকতার চটেন না। মুচকি হেসে সম্ভর্পণে এগিয়ে চললেন।

বহু ইউবোপীয় প্য,টক কাশ্মীরকে 'প্রকৃতির কাপেট' বলেছেন। কথাটা মিখ্যা নয়। সর্বত্রই আমরা প্রাকৃতিক বং-বাহার সক্ষা করেছি। কিন্তু গুলমার্গ থেকে টন্মার্গ প্যান্ত হেঁটে নামবার সময় আমরা যা দেখলাম, বাস থেকে বা ঘোড়ায় চড়ে, তা দেখা সম্ভব নর।



লাল, সব্দ্ধ আর হলদে রভের খেলা। সব্জের সঙ্গে মিশেছে উপভ্যকার লাল চীনারের রং আর মাঝে মাঝে প্যাটার্ণ বুনেছে পাহাড়ের ওপরে হল্দে পাতাওরালা গাছ। থাকে থাকে বেন এক একটি কার্পেট রচনা করেছে। পাহাড়ের ওপর থেকে নীচে প্রবহ্মান পার্ব্বভ্য-নদীর রূপও অপূর্ব্ব দেখার।

প্রীনগরে ফেরবার পর যোড়ার চড়ার প্রতিক্রিয়া স্কর্ক হোল।
শরীরের সর্বত্ত ব্যথা, পা বেন স্থার চলে না। দিন ছুরেক এই
টনটনানি থাকে। ব্যথার চোটে মেয়েরা বললেন—সোনামার্গে আর
নয়। স্পবশ্য পরে এই সিদ্ধান্ত বদলাতে হয়েছিল।

পাততাড়ি গুটিরে পরদিন যাত্রা ক্রলাম প্রলগাঁও। দেশী নাম প্রলগাম। শ্রীনগর থেকে সোজা-পথে ৭২ মাইল। কোকরনাগ, অছাবল হয়ে কয়েকটি দর্শনীয় স্থান দেপে গেলে ১৫৫ মাইল। টুরিষ্টরা এই দ্বিতীয় পথটি বেছে নেন, কারণ, কোকরনাগ, অছাবল দেখবার মত। প্রথম পথের ভাড়া রিটার্ণ ৫॥• টাকা আর দ্বিতীয়টির ৬॥• টাকা। সরকারী টুরিষ্ট বাসে ২২।২৪টি আসন থাকে, মোট্যাট যায় মাথার উপরে। একদিন আগে থেকে টুরিষ্ট রিসেপশান সেন্টারে টিকিট করে রাখলে আসন সম্বন্ধে নিশ্চিস্ত থাকা যায়।

পহলগামের পথে সবচেয়ে যা চমক লাগায় তা হচ্ছে পপলার-এভেমা। সোজা, থাড়াই গাছগুলি। অনেকটা বৈহ্যতিক খুঁটির মত। ওপরের দিকে ছোট ছোট কয়েকটা ডাল-পালা। বড় হ'লে গুঁড়ির রং হয়ে যায় সালা। কাশ্মীরের অক্তত্ত্বও এই রকম পপলার এভেম্যু করবার চেষ্টা কর। হচ্ছে—চারা গাছ লাগান হয়েছে ।

কোকরনাগে এসে বাস প্রথম থামল। এখানে তিনটি উৎস
আছে। পাথর ভেদ করে বেরিয়েছে। জাহাঙ্গীর বাদশাই চারদিক
বাঁধিরে দিয়েছিলেন। চারদিকে পাথরের দেওয়াল আর তার মধ্যে
বাগান। সর্ব্বতই চীনারের দর্শন মেলে। অছাবলে উৎস ছাঙা
স্থলর বাগান আর টাউট মাছের সরকারী পরীক্ষাকেক্স আছে।

তুপুরে প্রলগাম পৌছলাম। পাহাডের মাঝখানে স্কলর, ছোট্ট এই পল্লী। পথগুলি পিচ্ দিয়ে বাঁধান। কয়েকটি ভূষিমালের, মণিহারির আর সব্জির দোকান আছে। শাল-কার্পেটের দোকানগুলিরই এখানে আডিজাত্য। কার্পেট, গাবরা আর শাল এখানেও তৈরী হয়। কম-দামী কাপেট আৰু গাবলা কিনতে হলে **অ**নগরের চেয়ে এ যায়গাই ভালো। এক**টি** ডাকখর **ভাছে—**মরন্তমে চালু থাকে। ১৫ই নভেম্বৰ বন্ধ হয়ে যায়। টুরিষ্টদের আহার ও বাসস্থানের জন্তে কয়েকটি ভালো হোটেল এথানে আছে। বাড়ীগুলি ম্লতঃ কাঠের, কারণ, এ অরণ্য-সম্পদ এখানে এচুর। মালিকদের অধিকাংশই শিথ। পাঁচটি ভাল হোটেলের মধ্যে আমরা এসে ^{উঠি}লাম পহল্গাম হোটেলে। এ-হোটেলগুলির থাকা থাওয়ার ব্যয় জন-প্রতি দৈনিক ১---১২॥• টাকা আর শুধু থাকার ব্যয় জন-প্রতি ८—>० ोका। व्यवश्र व शिरान मन्त्रसम् । त्र-मन्द्रस्य व्यवीर নভেম্বের প্রথম সপ্তাহে গেলে অপেক্ষাকৃত কম। অক্টোব্রের শেষ শস্তাহেই ৰাত্ৰীৰা হোটেল ছেড়ে চলে ৰান, লোকানগুলিও বন্ধ হতে স্ফ করে। তুষারপাত সাধারণতঃ ১৫ই নভেম্বর থেকে স্কল্লহয় কিছ ভার আগে থেকেই আহহাওয়া কন্কনে হয়ে ৬ঠে।

আমরা বথন পহল্গামে এসে পৌছলাম, তখন চাদের হাট ভেকে

গিরেছিল। অর্থেক দোকান বন্ধ। পাঁচ মাসের **অভে**পাকাপাকি ভাবে দরজার উপর কাঠের প্যানেল দিয়ে পেরেক ঠুকে
বন্ধ। ছোটেলেও যাত্রী নেই। আমরা আর এক পাঞ্জারী পরিবার।
মাসখানেক আগে এই আধা—নির্জ্ঞানপুরী ছিল গুলুজার। হোটেলে ভ
তিলধারণের স্থান ছিল না, মাঠের মাঝখানে তাঁবুতে বাস করতে
হরেছিল। হোটেলের হুখানা কামরা ভুটেছিল সন্তাত্তই।
সন্ধিনীদের কল্যাণে স্থপাক ভোজনও চলেছিল। তিন আনা সের
আলু আর সওয়া পাঁচ টাকা সের খাঁটি ঘি। স্ক্তরাং একটু
খাটাগাটনি করলে এখানে খাওয়া ভালই জোটে।

শীনগরের অনেকেই বারণ করেছিলেন ও সময়ে পহল্পানে থাকতে। জমে বাবার নাকি সম্ভাবনা। দেখলাম কন্কনে ঠাণা ঠিকই, তবে জমে বাবার মত নয়। ওথানের সকল লোককেই দেখেছি লঘা পা-পর্যন্ত ঢিলে আলখালা চাপিয়েছে জামার ওপর। প্রভ্যেকের কাছে এক একটা আলোটি। বেত দিয়ে একটা ভাঁড়ের মত তৈরী করা হয়, ভেতরে থাকে একটা পোড়া মাটির পাত্র আর তাতে জলম্ভ অলার। একটা হাতল আছে। তাই ধরে আল্থালার ভেতরে বুকের কাছে আগুনটা রাখে। শীনগরেও এই রীতি। তবে ডিসেম্বর থেকে এটা সার্রজনীন। সন্ধার আগেই হোটেলে ফিরতে হত। তার পরে আর বাইরের ঠাণ্ডা সন্থ করা বায় না। দরজা-জানালা বন্ধ করে দিয়ে লেপক্ষণ মুড়ি দিয়ে তোকা রাত কেটে গেছে। নভেম্বরেও যাত্রীরা



এসেছেন শ্রীনগর থেকে। দিনের বেলা এসে দেখে-ন্তনে সদ্ধ্যের আগে ফিরে গেছেন। আমরা কিন্তু প্রল্গামের শীতকে স্বাগত জানিসেছিলাম।

এখানে তুবারপাত হয় আগেট। সাধারণতঃ ১৫ই নভেম্বরের পার থেকে আরম্ভ হয়। জীনগরে ডিসেম্বরের প্রথম সপ্তাহ থেকে।
কিছু আজকাল নাকি ইতরবিশেষ হছে। একজন কাশ্মীরী অধ্যাপক রহন্ত করে বলেছিলেন, নোধ হয় রাশিয়ার আধাবিক বিক্রোরণের জঞ্জই ঋতু-পর্য্যায়ে এই ব্যতিক্রম। পহলগামে তুবারপাত আট ফিট পর্যান্ত হয় আর জীনগরে তু'ফিট। পাহাড়ের ওপর নাকি পটিল ফিট তুবার জনে। এবার তুবার পড়েছে ডিপেম্বরের তৃতীর সপ্তাহে আটচল্লিশ ঘণ্টা একটানা বৃষ্টিপাতের পর। তুবারপাত নাকি এবার এতই বেশী যে, ভারের চোটে বড় বড় গাছ পড়ে গেছে। মার্কের প্রথম দিকে এই জুবার কাশ্মীরের সর্বত্ত গল্পতে থাকে, সারা মাস ধরে চলে এই গলানির কাজ। তথন পার্বত্ত নদী আবার উল্কুদিত হয়ে ওঠে। বর্ষায় আর এছবার উদ্ভাস। মে-জুন মাস থেকে ভূম্বর্গ আবার গ্রামার তাকা হতে মুক্ত করে, ফুলের বাগানগুলি আবার জ্বেগে ওঠে, ডাল হুদে পদ্মের অরণ্য আনে প্রাণ-তরঙ্গ।

প্রক্রামই আথ্রেটি উৎপাদনের প্রধান কেন্দ্র। বারো আনা থেকে এক টাকা প্র্যুপ্ত শ'। একশো প্রায় সওয়া সের। কলকাতার তাব দাম প্রায় পাঁচ গুণ। আপেলও দশ-বারো আনা সের। প্রীনগরেও তাই। অক্টোবরের প্রথম সপ্তাহ প্র্যুপ্ত নাকি আপেল চার আনা সের ছিল। আথ্রোট গাছ এথানে গ্রামাঞ্জল প্রচ্ব। বহু বড় গাছ—আমাদের আম-জামগাছের মত। এব কাঠ থেকেই নানা কাঠের থেলনা তৈরী হয়। বাদামও প্রচ্ব পাত্রা বার। ছাড়ানো বাদামের দাম সাড়ে তিন টাকা সের, কলকাতার আটি টাকা।

আমাদের হোটেলের সামনে দিয়েই প্রবাহিত শেষনাগ নদী না
নীলগন্ধা। জনপ্রোত প্রথন কিন্তু হেটে পেরিয়ে বারুয়া যায় যদি
সাহস থাকে। রাত্রিতে চাবিদিকের নিস্তব্ধতার মধ্যে নীলগন্ধার
গুরুগান্তীর ধর্মনি দ্রাগত সমুদ্রের গর্জনকে শ্বরণ করিয়ে দেয়।
অমরনাথের পথে কিছুটা এগিয়ে গেলে পহল্পামের স্তব্ধ সৌন্দর্য্য
ভিত্তত ধরে ফেলে। এথানকার জলহার্য্য অভান্ত স্বান্থ্যকর,



পহলগাম : অম্বনাথের প্রেণ

শ্রীনগবের চেয়ে ভালো। বাঁরা নাগরিক জীবনের জ্ঞাল থেকে ক্ষণিক মুক্তির জ্ঞাল কাশ্মীরে আসেন, তাঁদের এথানে করেক দিন কাটিয়ে যাওয়া দরকার। এমন নার্ভটনিক থুব কমই আছে।

আশে-পাশের গ্রামে আমরা গিয়েছি, কুষকদের সঙ্গে আলাপআলোচনাও হয়েছে। আমাদের দেশের চারীদের তুলনায় এরা
আরও দরিদ্র। এদের ছেলেমেরেরা বাত্রী দেখলেই হাত পাতে।
কুলের কচি-কচি মুগ্রালিকে হাত পাততে দেখলে সভিটি ছুঃ
ছয়। বাংলায় দারিদ্রোর চির-অধিষ্ঠান। মান্ত্রকে ডাইবিন থেকে
কুকুরের সঙ্গে আহার খুঁজতে আমরা দেখেছি। আমাদেরই দেশে
পঞ্চাশের মমন্তরে প্রার পঞ্চাশ্রীলক লোক প্রাণ দিয়েছে। তবু এদের
দারিদ্র্য প্রাণে আঘাত দেয়। প্রকৃতিঃরখননে ভূম্বর্গ রচনা করেছেন
অকুপণ হাতে, বে-দেশের মান্ত্রকে এত রূপও তিনি দিয়েছেন,
দে-দেশে অলক্ষীর আবাস মনকে ভাষাক্রান্ত না করে পারে না।

জিজাদা করলান এক কুফককে—এত লোক তুষারপাতের ভয়ে চলে যাছে, তোমরা যাবে না ?

উত্তর এলো—কোথার যাব বাবু ? যাদের প্রদা আছে, যাবার স্থার্মণা আছে, তারাই এখান থেকে অনন্তনাগ বা শীনগরের দিকে চলে বার । আমাদের নডবার উপায় নেই।

বললাম—ভনেছি এখানে নাকি আট কিট বরক জমে যায় ? ভাহ'লে ভোমৰা টিকে থাকে। কি ক'বে ? খাও কি ?

উত্তর দের—প্রতিদিন দরকারনতো তুষার কেটে সরিয়ে দিই।
দিন-বাত আংগন মেলে বাগতে হর ঘরের ভেতর। তার জ্বলে আগেভাগেই কাঠ জোগাড় করে বাগি, জ্বল থেকে কেটে এনে।
মাধ মাদের জ্বে চাল আর ভুটাও জোগাড় করি। তাই বলে বলে
খাই। কোনো রকমে ব্রেচ থাকি। সরে গেছে।

াদের ঘরগুলি শীহান, বেশীব ভাগই আব-ভারা। প্রীব প্রথ গুলিও পরিছের নয়। কিনা প্রদার শিক্ষাব ব্যবস্থা থাকলেও, দে-ক্রমোগ নিতে পারে না। ছেলেমেরেকে স্কুলে পাঠিয়ে করবে কি ? মাঠের কাজে দাহায্য করবে কে ? শের-ই-কান্মীর এদের জল্লে কিছুই করেনি। গোলান মহম্মদ এগনও কিছু ক'রে উঠতে পারেনি। ভবে চার আনা দের দরে কন্ট্রোলে চালের ব্যবস্থা করে কিছুটা ম্বাহা করা হয়েছে। জীনগরে দেখেছি এক ছটাক চাল মাতে চোরাকারবারীর প্রস্কেশ পড়ে তার জল্পেইপ্রতি বালে জার খোলাই হয়। কান্মীরী প্রশি আর ভারতীয় সাম্মরিক বাহিনীকে দিয়েই এই কাজ ক্রানো হয়। আর পশ্চিন বাংলায়? জেলা-মাজিট্রেটরা হতাশার ম্বেব বলেন, এমনই আইনের কাঁক যে, চোরাদের চালানী কারবার চোথের সামনে চলতে দেখেও ঠুটো জগলাখ হ'রে তাঁদের বসে থাকতে হয়। মত্তরাং চালের দাম বাংলায় ত তিরিশ টাকা মণ হবেই।

প্রস্থাম হবে ছলিকে ছটো বড় রাস্তা চলে গেছে—একটা গেছে আক-লিন্দেরওরাত, চরে কোলাহয় গ্লেসিয়ারের লিকে কুড়ি মাইল দ্রে। আর একটা 'গিরেছে চন্দ্ররথারী-শেখরামনাগ-ওরাক্তান-পঞ্চনী হরে অম্বনাথের গুচার ২৮ মাইল দ্রে। বেশ্ছায় চঙে চন্দ্রন্থী প্রস্থো বাওয়া চলে, ভারপর পারে হাটা ছাড়া পতি নেই। কোলাহয় ল্লেসিয়ারও হাটা-পথের শেবে। সেপ্টেম্বের প্রে আর ঐ ছটো যায়গায় বাওয়া অসম্ভব না হলেও নিরাপ্দ নর। স্ক্রেরাং আমান্দের ভাগ্যে হুটোর কোন্টাই হরনি।

(वाका

চাকর-

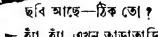
वृद्धिसठी

शिवी

DL. 468-X52 BO

- মা আপনি যে 'ভালডা' চাইছেন ত। আমি কেমন করে পুঁজে পাব ?
- ঠিক। নাম তো ভুই পড়তে পারবিন। কিন্তু— 'ডালডাব' টিনের ওপর থাকে গেজুর গাছের ছবি।
- ও এখন মনে পড়েছে। আচ্ছা মা, বাটি কবে আনৰ না বড কিছু একটা নিয়ে যাব १
- ছর সবজান্তা। 'ভালত।' কংলেও খোলা বিক্রী হয় না। 'ডালডা' পাওয়া যায় একমাত শীলকরা টিনে।
- যাতে কেউ চুরী না করতে পারে 🔈
- হাঁা, ভাছাড়া শীলকরা টিনে মাছি ময়লা বসতে পারেনা, ভেজালের ভয় থাকে না। স্বাস্থ্য থারাপ হওয়ারও ভয় নেই।
- ও সেই জনোই সব বাড়ীতে 'ডালডা' দেখা যায়।
- হাা, কিন্তু কত ওজনের টিন আনবি বল তো ?
- যেটা পাওয়া যায়।
- 'ডালড়া' পাওয়া যায় ½,১, ২, ৫ সার ১০ পাউণ্ডের টিনে। ভূই একটা ৫ পাউণ্ডের টিন আনবি।
- ঠিক আছে না! আমি শীলকরা ডালডা আসব-–যে

একটা ৫ পাউত্তের মার্ক। বনস্পতির টিন নিয়ে টিনের ওপর খেজুর গাছের



🗕 হাঁা, হাাা, এখন ডাড়াতাড়ি কর।



डालडा वतन्मि फिरा वाँधून স্বাস্থ্য ও শক্তি সঞ্চয় করুন

হিনুখান লিভার লিমিটেড, বোৰাই



আবার সেই বুড়ো

ক্রমলেশ ধে আবার সেই বুড়োর কাছেই গিয়েছিল একথা কাউকে ভানায়নি, পাছে এই নিয়ে সবাই হাসি ঠাট্টা করে। বিক্তাপীঠের নানা কাজের মধ্যে সে নিজেকে ভূবিরে দিয়েছে। ভূসতে চেয়েছে সেই যক্ষপুরীর কথা, সেই বুড়োর কথা।

সারাদিনে তাদের কত রকম কাজ। সকালবেলা উঠে প্রভাত-দেরিতে বোগ দিতে হয়। এই নতুন গড়ে-উঠা কলোনীর সব ছেলে মেরেরাই ভোরবেলা গান করতে করতে চারদিকটা খুরে আনে।

প্রথম দিন অবশ্র কমলেশ আর প্রশান্ত অবাক হয়েছিল থুব। প্রভাতফেরির কথা তারা জানতো না। ভোরবেলা ওদের ঘুম ভেঙ্গে বার। তথনো চারদিকে অন্ধকার, কাকেরা সবে ডাকতে সুক্ করেছে। গন্ধীর আওয়াজে তাদের মন নেচে উঠে। কিসের ধ্বনি !

বাইরে বেরিরে এদে দেখে গান করতে করতে ছেলেমেরের দল এগিরে আগছে। শঙ্করদা তাদের মধ্যে ররেছে, সামনের দিকে। কমলেশদের দেখে হাত নেড়ে ডাকে, আরে তোরা আমাদের সঙ্গে বোগ দে।

--- व कि भक्षत्रमा ?

—প্রভাতফেরি।

—কিছ আমি তো গান করতে পারি না ং

—ভাতে কি হরেছে গেয়ে দেখ ঠিক পারবি।

কমলেশ আর প্রশাস্ত ওদের দলের সঙ্গে মিশে যায়। সূর মিলিয়ে গেয়ে উঠে—

> বল বল বল সবে শত বীণা বেণু রবে ভারত আবার ভাগত সভায় শ্রেষ্ঠ আসন লবে।

ভোবের আলো ক্রমশ: প্রকাশ পাছে। চারদিক ধীরে ধীরে দ্বার হয়ে উঠে—চারপাশে একটা ঠাণ্ডা আমেজ। অন্তৃত অমুভৃতি ফুলের গন্ধে বাতাল ধেন মাতাল। গাছের পাধীরা কত রকম শব্দ করে উড়ে চলে যায়। বড় বড় ফুলগুলো তাদের অভ্যর্থনা করে।

প্রত্যেকটা বাংলোর সামনে দিয়ে তারা এগিয়ে চলে। কত ছেলে মেয়ে সব বেরিয়ে আসে। হাত জোড় করে গান করতে করতে ওদের সঙ্গে যোগ দেয়।

সমস্ত কলোনীটা কমলেশরা দেখতে পার। একদিকে গরুর গোরাল, অনেকগুলি গরু, নধর দেহ, চকচকে বঙ, বিশাল চোথে তাদের দিকে চেয়ে আছে। খানিকদ্রে হান-মুরগীর আন্তানা, পালে পালে ঘর থেকে বেরিয়ে চরে বেড়াচছে। কত ধানের গোলা চারদিকে ছড়িয়ে রয়েছে। মাঝখানে একটা মাঝারি পুক্র—দেখানে ছাড়া আছে মাছ। কত ছোট বড় বাড়ী—স্কুল, ডাক্ডারখানা, থিয়েটারের মঞ্চ, সব তাদের চোখে পড়ে। কী স্থল্ব সারবন্দি।

পাক দিয়ে গানের দল ক্ষিরতে স্ক্রক্ষ করে। দূরে সূর্য্য ওঠে। টকটকে লাল বিশাল—চারদিকে তার কোমল প্রভা। সহরের ছেলে, যারা এ দৃশ্ত কথনো দেখেনি, অবাক হয়ে চেরে থাকে।

দল ভাঙতে থাকে। বে যার বাড়ীর কাছ থেকে বিদার নের। এখুনি তারা তৈরী হয়ে কাব্দে যাবে। স্থায়ের তেন্ধ বাড়তে থাকে, চারদিক স্পষ্ট হয়ে উঠে। ভোবের মাধুর্য্য কেটে যায়।

প্রথমদিন প্রভাত ফেরির পর বৈগুদার সঙ্গে দেখা হয়েছিল কমকেশের একটা বাগানের মধ্যে। কমলেশ উচ্ছ্সিত গলায় জিজ্ঞেদ করে—জারগাটা কী স্কর্মর, না দিদি ?

—সত্যিই বড় ভালো, এই বক্ম একটা জ্বায়গাই আমি
থ্ঁজছিলাম। আজ কি ইচ্ছে করছে জানিস? ইচ্ছে করছে
সারাদিন বসে ছবি আঁকি এই রূপক্থার রাজ্যের। আমি এখনও
ভাবতে পারছি না, একি সত্যি না স্বপ্ন ?

—না দিদি, এইতো সন্তিয়, এইতো সন্তিয়কাবের মান্নুবের রাজ্য।
সেদিন চুপ করে ছই ভাইবোনে তাকিরে ছিল অসীম কাঁকার
দিকে। বাধাহীন বিস্তীর্ণ প্রাক্তর।



বেণুকা যা বলেছিল তা সত্যি কথা—এ যেন রূপকথারই রাজত।
ক'দিন এথানে থেকে, এখানকার নিয়ম কামুন দেখে তারা মুগ্ন
চয়েছে। এ কলোনীর সকলেই যেন একটা বিরাট যৌথ পরিবারের
নাসিন্দা। নিজেদের পৃথক সন্তাকে তারা বিসর্জন দিয়েছে।
স্কলেই ওরা কাজ করে, যার যে রকম ক্ষমতা। অনেকখানি জমি
নিম্নে চায় হয়। সেই ফসল থেকেই এতগুলি পরিবারের খাওয়া
চলে। উদযুক্ত হলে বাজারে বিক্রী করা হয়।

বড়রা এখানে চাবের কাজ করে। আনেকে মাছের তদারক করে। সেও তো আবেক রকম চাব। আবার বারা পশুপাধী ভালবাসে, তারা দেখে গরুগুলোকে। প্রয়োজনের অতিরিক্ত ত্ধ সভবে বার বিক্রী হতে, এখানকার ঘাঁটি ত্থের চাহিলা ওথানে খব। পাটি ত্থের মতোই, সমত্রে পোদা মুবগীর ডিমও বাজারে পড়তে পার না। অনেকে তো না জানলে সন্দেহ প্রকাশ করে হাসের ডিম ভবে।

সকাল থেকে সন্ধ্যে পৃষ্ঠান্ত এ কলোনীর বুড়ো জোয়ান কতজনই টে চায় আবাদে বাস্ত থাকে, কা ভাবে আরও তারা উশ্পৃতি করবে টে চিস্তাতেই বিভোর।

এখানকার নিয়ম-কান্তনের কথা জানতে নতুন ছেলেদের বেশ কিছুলিন সময় লেগে যায়। প্রথম প্রথম কমলেশ আর প্রশাস্ত নঙ্গেলৰ মধ্যেই কথাবার্হা বলত। চুপচাপ থাকত, কিছু খুব নিগুলিবি আলাপ হয়ে গেল, ওদেরই বয়েশী একটি ছেলের সঙ্গে, নাম বাব অমিতাত। এখানে হুবছর আছে। পড়ে সেকেও রাশে।

ওব সঙ্গে আলাপ হ'ল খাবার্যরে। সব ছেলেদের একশক্ষে বাবৰ ব্যবস্থা। কাঠের পিছি, সামনের কলাপাতার অল্ল-ব্যঞ্জন।

চুনের গেলাসটা দেখিরে কমলেশ প্রশাস্তকে বলে, দেখছিস্
২গানকার গয়ন্তর ছখ, কি রকম গাচ ?

প্রশাস্ত তেসে বলে, হজম হলে হয়, আমাদের তো সার াট হণ থাওয়া অভ্যেস নেই। এথানকার গয়লাগুলো একেবারে াকা, হথে জল মেশাতে জানে না।

ওদেব কথা শুনে পাশ থেকে একটি ছেলে হেসে ওঠে, সেই স্মাতাভ—গায়লা কোথায় ? আমবাই তো গালা।

—ভার মানে ?

—প্রভাতকেরীর পর আমরাই হুধ হুরে নিয়ে আসি। তবে প্রত্যকদিন সকলকে বেতে হুর না। ভাগ করা আছে, সপ্তাহে কিন। আমার পালা সোমবার।

—বা: বেশ স্থলর ব্যবস্থা।

অমিতাভ নিজের থেকেই বলে, তোমরা নতুন ছেলেতো চল, বৈ জায়গাগুলো দেখিয়ে দি।

থাওয়া দাওয়ার পর অমিতাভ তাদের নিয়ে এল একটা **ৰা**ড়ীর স্মিন, এই হচ্ছে মায়েদের কার্য্যালয়।

ভেতরে চুকে যায় তারা। সত্যিই তাই। কমলেশ প্রা তারই মার মত মায়ের দল। কয়েকজন চরকায় স্থতো িছেন, কয়েকজন সেই স্থতো দিয়ে কাপড়ের জমি তৈরী করছেন। বিশ্ব অনেকে কলে সেগাই করে জাগা-কাপড় তৈরী করছেন।

^{অমি}তাভ বৃঝিরে দের, এইখানেই সব জামা-কাপড় তৈরী ^{হর, এ} কলোনীর সকলেই প্রায় একই রকম জিনিব পরে। একটা বাবান্দা পেরিয়ে হুটো বড় ঘর। প্রথমটায় কোটা হয় তরকারি, অনেকে বঙ্গে তৈরী করে বান্নার সরঞ্জাম। আর ভার পাশের ঘরে হয় রান্ন। সেখানেও মায়ের দল কাজে ব্যস্তা। এতগুলো ছেলেমেয়ের দায়িত্ব তাদের ওপর।

অমিতাভ বলে, সকালে এঁবা এই সব কান্ধ করেন। তৃপুরে করেকজন স্থালের পড়ান। করেকজন রান্ধা সেলাই, গৃহস্থালীর কান্ধ শেথান। বেসব মেয়েরা এই স্কুলে পড়ে, তাদের এ সব কান্ধ শিথতেই হয়।

ক্মলেশ আর প্রশাস্ত অবাক হরে চেয়ে থাকে। **অমিতাভ** ওদের নিয়ে বায় আর একটি বাড়াতে। বলে, এথানে গান শেখানো হয়।

কমলেশরা দেখে, করেকটি ছোট ছোট ছেলেমেরেগা বসে আছে। আর এক ভদ্মলোক তাদের গান শেগাছেন। আনতাভ আলাপ করিয়ে দেয়, এই আমাদের শশান্তদা, এব কাছে ভানবা সকলে গান শিপি।

প্রশান্তর ওঁকে আগেই দেখেছে। প্রভাতফেরার সময় উনিই তো সকলের আগে গান কর্মছিলেন।

স্থানর চেহারা শাশাঞ্চা'ব। ফরসারত চোথে-মুথে প্রিপ্প হাসি। বলেন তোমরা বৃঝি নতুন ছেলে ?

<u>---\$₹</u>1 1

—তোমাদের কথা শশ্বব বলছিল বটে, সময় করে এস আমার কাছে। প্রভাতফেরীব স্থরগুলো সব তুলিয়ে দেব। তাহজে গাইবার স্থবিধে হবে।

---বেশ আমরা বিকেলের দিকে আসব।

অমিতাভ তাড়াতাড়ি বলে, বিকেলে তো আমাদের জিল হয়। বরং স্কুলের টিফিনের সময় এস। আমাদের আগ ঘণ্টাথানেক ছটা থাকে।

শশাহ্বদা' আবার ছেলেদের গান শেখাতে থাকেন। অমিতাভ ওদের পাশের ঘরে নিয়ে যায়। সেগানে কমলেশরা দেখে চারদিকে কত স্থানর স্থানর ছবি আঁকা রয়েছে, চমংকার সাজান ঘর। মাঝখানে একটি ভদ্রমহিলা বদে একটি মেয়েকে ছবি আঁকা শেখাছে। অমিতাভ আলাপ করিয়ে দেয়, ইনি মণিকাদি', আমাদের ছবি আঁকা শেখান।

মণিকাদি হৈসে ওদের অভার্থনা করেন। রোজ এস ভাই, এখানে ছবি আঁকা শিখবে।

প্রশাস্ত উত্তর দেয়। আমরা তো ছবি আঁকতে জানি না ?

—তাতে কি হয়েছে, শিখতে দোষ কি ?

— কি মিটি কথা, তারী নরম স্বতার, মুখ দেখলেই তা বোঝা যায়। বলেন, এই দেখ না আমার একটি নতুন ছাত্রী কি সুন্দর ছবি আঁকছে!

প্রশাস্তর। নতুন ছাত্রীটির দিকে তাকিয়ে দেখে, সে আর কেউ নয়, রেপ্রকা। এত মন দিয়ে গেঁছবি আঁকছে যে একটা কথাও তার কানে যায়নি।

কমলেশ ডাকে, দিদি!

রেণুকা এবার মুখ তুলে তাকায়, হেসে জিজ্ঞেদ করে, কি রে তোরা এখানে ? মণিকাদি' বলেন, কি তোমরা বুঝি ভাই-বোন ? দিদি যথন এত ভালো ছবি আঁকে, ভাইরাও নিশ্চয়,—

কমলেশ ঘন ঘন মাথা নেড়ে বলে, না মণিকাদি[®]। দিদি আমাদের চেয়ে অনেক ভালো—

রেণুকা জলভরা চোপে তাকায়, ওদের কথা শুনবেন না মণিকাদি', ওরা আমার পাগল ভাই।

কলাভবন থেকে বেরিয়ে ওরা এগিয়ে চলে ডালাবথানার দিকে। সোনালী বোদে সবুজ ক্ষেত ঝলমল করতে। কন্যাণ প্রশ্ন করে, এই বে ফসল, এ-ও কি সব ভোমাদের চেষ্টায় ?

- —-গ্রা ভাই ! জমি ঠিক করা, লাঙ্গল দেওয়া, বীজ বোনা, কসল কাটা সুবই আমাদের করতে হয়।
 - —ভোমরা শিখলে কি করে?
- —লেথাপড়ার সঙ্গে সঙ্গে চানেন কাজও যে আনিদেন শেখানো হয়।

তাদের কথা শেষ হয় না, সলাশস্কর এসে পড়ে।

- কি কমল, কি রকম লাগছে তোনাদের এগানে ?
- —থুব ভাগ শঙ্করদা, এ যেন স্বপ্নরাজ্য।
- ——অমিতাভ বৃঝি তোমাদের গাইড হয়েছে। এখন কোন দিকে যাচ্ছ?
 - —ভাক্তারথানায়।
 - —চল। আমি ওদিকেই যাছি।

গুরা এগিয়ে চলে। সামনে পুকুর পেরিয়ে আরও ল'নিকটা গেলে তবে ডাক্তারগানা। কমলেশ নিজের থেকেই জিজেন করে, এধারে রোগের দৌরাস্থ্য কি রকম শঙ্করদা' ?

—হাঁ, তা একটু আছে। তবে অন্ত গাঁরের চেয়ে আনেক কম। এই কলোনীর ডাক্তার আমার বহু মিহির। থুব যত্ন নিয়ে চিকিৎসা করে।

আমিতাভ বলে, সত্যি মিহিরদা যৈন চিকিৎসার বাছ জ্ঞানে! এত সহজে শক্ত রোগ সারায় যে দেখলে অবাক হতে হয়। আছো মিহিরদা বুঝি খুব ভাল ছাত্র ছিলেন ?

সদাশক্ষর হেসে ফেললেন, সে কথা আর বোল না। ওর মত ছাই ছোলে আর ছাটি মেলে না, বাপ্রে বাপ্, মাষ্টারদের চিরকাল পাগল করে মেরেছে। ক্লাশের ফ্যান, জানালার সাশী ভালা ওর ছিল কটীনবাঁধা কাজ। স্কুলের বোর্ডে সরষের তেল মাথিয়ে ও রাথবেই। অথচ ফাইন দেবার নামও করত না। হেড্-মাষ্টার ভয় দেখালে একেবারে পায়ে গিয়ে পড়ত।

কমলেশ অমিতাভ আব প্রশাস্ত হো-হো করে তেসে উঠে।
সদাশক্ষর দূর আকাশের দিকে তাকিয়ে থেকে, ফেলে-আসা দিনের
কথা ভাবতে ভাবতে বলে, সেই মিহির যথন ডাক্ষণর হয়ে বেরুল
আমি তো অবাক! সবে তথন এই কলোনী গড়ে উঠছে। একদিন
ওর কাছে গিয়ে হাজিয়; যদি কিছু সাহায্য করে, দেখলাম সেই
একই রকম ফাজিল, হেসে বললে, কি বে তুই নাকি আশ্রম খুলে
সাধু-টাধু হয়ে বসেছিস্, তা চল্ছে কি রকম ?

- —বললাম ভোর কাছে এসেছি সাহায্য চাইকে:
- —কিসের সাহায্য ?

—নতুন ভাবে ইম্পুল গড়ছি, সত্যিকারের মামুষ তৈরী করার ইম্পুল। শুনলাম তোর প্র্যাকটিশ বেশ ক্ষমে উঠছে।

মিহির কথাটা একেবারে হেসে উড়িয়ে দেয়, দূর দূর একেবাবে ভূল ভনেছিস্, টাকা কোথায় আমার, টাকা দিয়ে সাহায্য করা আমার পক্ষে অসম্রব।

বেগে বললাম, টাকাই যদি না দিবি, তাহলে আৰু কি কৰে সাহায্য করবি ?

মিছির ঠিক আগের মত হেসে বললে, আমাকে যদি কোন কা:ছ লাগাতে পারিস্ ভাচলে যেতে রাজী আছি।

- —ভার মানে ?
- —মানে ভূই চাইলি টাকা, দিতে পারলাম না—তাই নিজেকেই না হয় দিলাম।

আমার চোপে জল ভবে এল। ওকে বুকে জড়িয়ে ধরে বললান, সত্যি যাবি মিচির, এথানকার পশার টাকাকড়ি নাম-ধাম ছেডে সেই পাড়াগাঁয়ে পাঁচ জনের সেবা করে একেবারে সাধারণ জীবন গাপন করতে ?

ঠিক আগের মত হেসে ও বললে, আমাকে বিখাস করা একট্ শক্ত বই কি, সহজে কেউ করতে চায় না। তবে ভর নেই, জীবনের সব কথাই আমার ফাজলামী নয়, অস্ততঃ এটা নয়। যাব যথন বলেছি, আজই যাব।

কথাগুলো বলতে বলতে সদাশঙ্কর-এর মুখ উজ্জ্বল হয়ে ওঠে।
সেদিনের কথা ভাবলেও আমি আনন্দে আত্মহারা হয়ে যাই। সেই
ছাই, মিহির, যার কাছে একটা কানা ভড়ি সাহায্য পাব বলে আশা
কবিনি, সে কোথায় নিজে-ক বিলিয়ে দিলে দেশ আর দশের
মাঝে! আর যারা তখন দেশ দেশ বলে চীৎকার করে বেড়াত
ভাগের মধ্যে কতজ্বনই আজ কালো-বাজারী ব্যবসাদার, কি বিচিপ্ত
সংসার!

আবার একটু থেমে সদাশস্কর বলে, মনে পড়ে ছুলে বাংলার মাষ্ট্রার মশাই বিরক্ত হয়ে মিহিরকে বলতেন, তুমি লেখাপড়া ছেড়ে গোচারণে যাও। তাঁর কথাই আজ ফলেছে, ও গোচারণেই এসেছে। কিছু সেদিনকার সেই সেরা ছেলের চাইতে ও অনেক ভাল কাছে নিজেকে বিলিয়ে দিয়েছে।

ডাক্তারখানায় এসে পড়ায় সদাশক্ষর সামনের দিকে এগিয়ে বাদ কমলেশরা ঘরের মধ্যে চুকে পড়ে। ক্লগীর সারি দাঁড়িয়ে রয়েছে ডাক্তার এক একজনকে পরীক্ষা করে ওবুধ দিচ্ছে, লখা, খ্যামন চেহারা। চোখে চশমা। সারা মুখে সেয়ানা হাসির ঝিলিক।

একটি ছেলেকে পরীক্ষা করে বলেন, কি রে পণ্ট, পেট কামড়াচ্ছে ?

- --- হাা মিহিরদা'। কাল বিকেল থেকে---
- —কামড়বে না! কাল যা আলুর দম থাছিলে, যত সব টিপিন থাওয়া ছেলে।

ডাক্তার টিপিন কথার ওপর এমন একটা জোর দের যে সকলে হেসে ওঠে। কমলেশদের ওপর চোথ পড়তেই জিজেস করেন, এরা বেন ভিন্ গাঁরের লোক মনে হচ্ছে। কি রে অজিত, তৌৰ আমদানী না কি ?

অমিতাভর কথা ৰলার আগেই মিহির কমলেশের কাছে এগিয়ে

যায়। তা বাপু ভোমার বেদনাটা কোথায় ? পিঠে না পেটে, ন। ত'ভায়গায়ই।

কমলেশ হেসে ফেলে। মিহির তড়বড় করে বলে, ছেলে আবার হাসে দেখ, এ যে দেখনহাসি। বলি কিছু কামড়াছে না কি, পেট কি পা ?

অমিতাভ উত্তর দেয়। এদের কোন অ্মুথ করেনি, আপনার সংস্ক আলাপ করতে এসেছে।

—দে কথা আগে বলতে হয় ? আমি তো এখুনি এক শিশি কাঠির ওয়েল খাইয়ে দিছিলাম আর কি। মিহির নিজের মনেই কেস বলে, এখন তো ভাই ব্যস্ত আছি। পরে সময় মত বুঝে স্থান্থ আলাপটা সেরে নেওয়া বাবে।

মিহির ডাক্তারের সঙ্গে প্রথম আলাপেই ওরা থুসী হয়।

বিক্লেলে ছুটীর পর ^{*}ড়িলের আয়োজন। স্বাই এনে জড় হ্র খুলের সামনের কাঁকা মাঠে। ফ্লাগ-পোত্রর ওপর ড্রের দেয় তিনবঙা পতাকা, ভারই নীচে দাঁড়িয়ে সকলে এক সাথে গান করে।

ভাবপর হয় খেলা হয়ে। একদল বল নিয়ে চলে যায় ফুটবল খেলতে। একদল খেলে ভলী। আবার অনেকে করে কুচ্কাওয়াজ। ম্যান ভালে পা ফেলে হাত নৈড়ে এগিয়ে চলে। বীরের মত বৃক্ ্লিয়ে বলে,

> আমরা নবীন তেজপ্রদীপ্ত বীর তরণ বিপদ বাধাব কণ্ঠ ছি ডিয়া শুবিব খুন। আমরা ফলাব ফুল ফদল, অপ্র পথিক রে যুবাদল। জোর কদম চল রে চল।

কথার ছন্দে পা ফেলে তারা এগিয়ে যায়। মেয়েরা আর একদিকে থেলা করে। একদল থেলে ব্যাড্ডিটন। একদল কপাটি। আবার হয়ত একদল একসঙ্গে হাত তোলে, নামায়। প্রান্ধান স্থানিক সারবন্দী ভাবে ড্রিল করে।

এদের মধ্যে কমলেশ রেণুকাকে দেখতে পায়, একসঙ্গে হাত তুলে, নাথা নেড়ে দলের সমতা রাখার চেষ্টা করছে। প্রশাস্ত চলে গেছে ফুটবল থেলতে। কমলেশ একলা দাঁড়িয়ে ছিল।

—কি হে, তুমি কিছু করছ না ?

কমলেশ পেছু ফিরে তাকার, দেখে, মিহিরদা' দাঁড়িয়ে দাঁড়িয়ে গান্ছ।

- —মিহিরদা', আপনি ?
- —আলাপ্ করবে বলেছিলে, তাই ছুপুরে হাজির দিলাম। কিছ থুমি ডিল করছ না কেন ? থুব পালোয়ান বুশি ? কিন্তু দেখে তো মান হব না। দেহের স্বাস্থ্যের চেরে তোমার চুলের স্বাস্থ্য বেশ পরিপাটি বলে আমার সন্দেহ হচ্ছে।

ক্মলেশ লচ্ছিত স্বরে বলে, না তা নয়, আজ নতুন কি না তাই কিছু করছি না। কাল থেকে—

মিহির কথা থামিয়ে দিয়ে বলে, হাা, ক'দিন জিরিয়ে নাও। েট তো জিরোবার বয়েস, শেষ কালে বুড়ো হলে তো আর জিরোবার সময়ই পাবে না, তথন কাজ আর কাজ। কি বল ?

মিহিরদা'র কথার ধরণই ঐ রকম, সারাক্ষণ স্বাইকে হাসিয়ে

এ সবই কিন্তু কমলেশদের প্রথন দিকের কথা। এ কলোনীর সকলের সঙ্গে আলাপ পরিচয় হতেও তো সময় লাগে। ক্রমে এবা এখন সকলের মাঝে মিলে গেছে। হৈ হৈ আনন্দে ভরা দিন কেটে যায়। লেখাপড়া কাজকর্ম, খেলাধ্লোর প্রোতে গুরাও অক্তদের মত গা ভাসিয়ে দিয়েছে।

এ জারগা যে কমলেশের কতথানি ভালো লেগেছে, তা ওর
চিঠি পড়লেই বোঝা যায়। বাবাকে মাকে সে বার বার করে লেখে,
"তোমরা একবারটি এথানটা ঘূরে যাও। দেখবে আমরা কি আননদে
আছি। কলকাতার দেখতাম, ছাত্ররা শুধু ভাঙতে চার, দেখে দেখে
বড় দনে যেতাম। নিরুপারে মন ভরে যেত। এথানে এসে মনে
আশা জাগছে। আমরা শুধু লেখাপঢ়া করছি না, কাছ করছি, কিছু
গড়ে তোলার চেঠা করছি। গড়ার যে কি আনন্দ তা এতদিন
আমরা বুঝতে পারিনি। এই বিজাপীর্ম আমানের তাই ব্রিয়েছে।"

সেদিন শনিবার। কমলেশ গিচেছিল ছেলেদের সচ্চে ফুট্বল থেলতে। থুব ছবরে থেলা হল। শহর থেকে একদল ছেলে এসেছিল থেলতে বিক্তাপীঠের সঙ্গে। কোন পক্ষই জিভতে পারেনি। ছ হয়ে গেল। প্রশান্ত সভ্যিই ভাল থেলেছে, প্রোণপণ চেষ্টা করেছে গোল দিতে, তবে সফল হয়নি।

পেলা শেষ হয়ে গেলে শহরের দল ফিরে গেল শহরে, কমলেশরাও ক্লান্ত শরীরে ফিরছিল হোষ্টেলের দিকে। সন্ধা হয়ে গেছে, পাথীরা ফিরছে বাসায়, ফুরফুরে বাতাস-এর মধ্যে দিয়ে হাঁটতে হাঁটতে তারা এগিয়ে যাছে। হঠাং নজরে পড়লো দূরে গাছতলায় কি যেন একটা জিনিয় পড়ে রয়েছে।

কমলেশ জিডেস করে, ওথানে কি ওটা সালা মত মনে হচ্ছে? প্রশাস্ত এড়িয়ে যায়, কাপড়চোপড় কিছু হবে।

- একবার দেখে গেলে হয় না ?
- না না চল, সন্ধ্যে হয়ে গেছে, হোষ্টেলে ফিবতে বাত গ্রে যাবে।
 তবু কমলেশ কথা শোনে না, কি বকম বেন তার সন্দেহ হয়
 ভারা দাঁড়া, আমি আসছি, বলে কমলেশ ছুটতে ছুটতে

শাহের দিকে এগিয়ে যার। কিন্তু শেষ পর্যান্ত যেতে হর না, থানিকটা গিয়েই বুঝতে পারে ওটা তথু কাপড় নয়, কোন লোক উপুড় হয়ে পড়ে বয়েছে। এথান থেকেই চেঁচিয়ে ওঠে, তোরা শীগ্গিরি এদিকে আয়, কেউ বোধ হয় অজ্ঞান হয়ে গেছে।

ছেলের। ব্যক্ত ভাবে ছুটে আসে, সবাই মিলে আস্তে আস্তে সেই গাছের দিকে এগিরে যায়। দেখে, কমলেশ যা বলেছিল তাই সত্যি, জসকাদার মধ্যে অজ্ঞান হয়ে এক ভদ্রলোক পড়ে রয়েছে। প্রথমটা ভয় পেলেও ক্রমে সাহস সঞ্চয় করে তাবা কাছে গিয়ে বসে, লোকটার মুখ দেখা যাছে না। তবু বয়েস বেশ বেশী হয়েছে বলেই মনে হয়। তিন-চার জনে ধবে আস্তে আস্তে ভদ্রলোককে তুলে ধরে, এতক্ষণে তার মুখটা দেখা যায়, কমলেশ চম্কে ওঠে, এ সেই বুড়ো।

সকলে জিজেস করে, তুই ওকে চিনিস্ না কি ?

—হাা, এ সেই বুড়ো যক্ষপুরীতে থাকে I

সবাই চিস্তিত হয়, তাহলে এখন কি করা যাবে ?

কমলেশ ভেবে নিয়ে বলে, চল্, সবাই মিলে ওকে বাড়ীতে পৌছে দিয়ে আসি। -- ঐ যক্ষপুরীতে ?

—ভয়ের কি আছে ? বুড়ো বিপদে পড়েছে, ওকে সাহায্য করা আমাদের উচিত।

মনে মনে খুসী না হলেও মুখে কেউ আপত্তি করল না। বলল, চল, তবে ভেতরে আমরা চুক্ব না। দোরগোড়ায় নামিয়ে রেখেই চলে আসব।

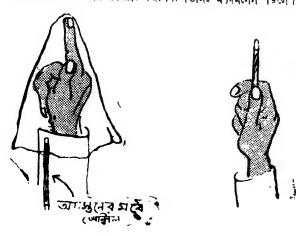
কমলেশ কোন কথার উত্তর দেয় না। একদৃষ্টে বুড়োর মুখেব দিকে ভাকিয়ে ভাকিয়ে সে হাঁটতে থাকে, কিছুতেই সে ভেবে পায় না এখানে এসে বুড়ো অজ্ঞান চয়ে পড়ল কেন ? আবার যদি জ্ঞান ফিরে উঠলে এদেরই বকাঝক। কবে। ফকপুরীতেই বা ওই বুড়োকে দেখাশোনার লোকজন কে আছে ?

কোন প্রশ্নেরই সহত্তর সে নিজের মনে খুঁজে পায় না। আর সকলের সঙ্গে থমথমে অন্ধকাবেব মধ্যে অজান বুড়োকে নিয়ে এগিয়ে যায় সেই ভয়াবহ বক্ষপুরীন দিকে।

ক্রমশ: ।

ক্ষমান্স আর পেন্সিলের ভেক্ষী যাহুরত্নাকর এ, সি, সরকার

কি কে এতোয়ালের ক্যাশিয়ার মঁ দ্রমসেল জিলে ছিলেন আমার ম্যাজিকের বিশেষ ভক্ত। প্যারিসে থাকা কালে মাঝে মাঝেই যেতাম 'কাকে এতোয়াল' এ কফি থেতে। সর্ব্রপ্থম যেদিন ওপানে বাই সেদিন ঘটেছিল এক মজার ব্যাপার! বাইরে পড়ছিল রূপ ঝুপ ক'রে রুষ্টি। গা থেকে রেনকোটটা খুলে দোরের পাশে এলিয়ে দিয়ে কাকের এক কোণে একটি থালি চেয়ারে বসলাম গিগে। আগের দিন ফরাসা টেলিভিসন 'টেলিভিসিও ফু'সে'র মাধ্যমে প্রচারিত হয়েছে আমার যাহুর থেলা। কাকেই গোটেলে অপেফ্রমান থকের থেকে স্কুক্ক কবে পরিচাবক পরিচারিকার। প্রান্ত প্রথম দর্শনেই চিনে ফ্রেলেন আমাকে। টেবিলে টেবিলে উঠল মৃত্তুপ্ত্রন। একটু বিল্লভ্র বোধ করলাম। এই অবস্থা থেকে আমাকে উদ্ধান করে যিনি কাকের ভেত্তর দিককার এক কেবিনে নিয়ে আমাকে বসিয়ে সেগানেই আমাকে খাবার ও কফি স্ববর্গাহ করলেন, তিনিই মঁ দ্বেসেল ভিলে।



তাঁর অমুবোধে সেদিন একটি ম্যাজিক দেখাতে হরেছিল সবার সামনে :
যা নাকি থুব সমাদর লাভ করেছিল সবার কাছে। টেবিলের উপ্রে
পড়েছিল একটা লেড পেজিল। ডান হাতে ঐ পেজিলটাকে উচ্
করে ধরে জনৈক খন্দেরের এক কুমাল দিয়ে ঢেকে দিলাম ঐ পেজিল
ডক্ষ হাত। কুমালচাপা অবস্থাতেই সকলের দৃষ্টি আকল্
করলো ঐ উদ্ধৃত পেজিলটি। এর পরে ওয়ান—টু—খি—বলে
কুমালটা ভূলে নিতে দেখা গেল পেজিল অদৃশু! কুমালের
মালিক কুমাল পকেটস্থ করলেন জার আমি ফিরে গেলাম
কেবিনে।

কেমন ক'বে এই অছুত ব্যাপারটা করেছিলাম তাই শোন। পেন্দিল-শুদ্ধ হাতটাকে রুমালচাপা দিয়ে যথন রুমালের ধার টেনে টেনে রুমালটাকে ঠিক ভাবে হাতের উপরে রাথছিলাম, দেই সমার এক কাঁকে পেন্দিলটাকে দিয়েছিলাম ছেড়ে আর তা আপনা থেকেই চুকেছিল আন্তিনের ভেতরে। উদ্ধৃত তর্জনী নিয়েছিল পেন্দিলের স্থান। কুমালে ঢাকা অবস্থায় তর্জনী আর পেন্সিলের পার্থক্য বোকা যায় নি কোন মতে। বাকী অংশ খুবই সহজ—কুমাল টেনে নেওয়া আর সঙ্গেল গজল তর্জনী শুটিয়ে নেওয়া। ভাল ভাবে অভ্যাস করে দেখাতে পারলে এ দিয়ে সহজেই দর্শকদের অবাক করতে পারনে। যারা যাছবিজ্ঞায় উৎসাহী তারা আমার সঙ্গে A. C. SORCER, Magician, Post Box 16214, Calcutta—29 এই ঠিকানায় জ্বানী পোষ্টকার্ডে চিঠি লিখতে পার।

ছোট গিন্নী বৃদ্ধদেব বাপচী

ছোট খুকি বেড়ার ছলে বোঝে না কিছুই, ছোট একটা দিদির দেওবা কাপড় প'বে। মাধার উপর ঘোমটাট। তার দের তুলে দের. মাবের মতই আলভো কবে চরণ ফেলে। কোলের উপর ছোট পুতৃল মেয়ে নাকি ওর? ত্ব খাওৱাতে বাবে বাবেই হয় নাকো ভুল, শান্ত ছেলে ভাকে আবার বুম পাড়িয়ে, মারের মতই ছবের হিসাব দেয় বুঝিরে। গোষালা তার পুঁটলি বাঁধা ছেঁড়া কাণড়, বাদভিটাই বড় হ'বে বাধার ফাঁপড়। ৰা হোক ওসৰ মেবেৰ বিবে আসছে মাদে, টুকটুকে বর বেনারসী পাচ্ছে না যে। मिमि वरमाइ विरयन चार्म मारवे मारव ওবও বে বিবে হরেছে এই সেদিনই। জামাই নাকি বিলেভ ফেরৎ টাকা অনেক, কলকাভাতে ছ'খান বাড়ী ওর নিজেরই। হঠাৎ গিন্নী পড়ে গেলেন কাপড় বেধে, হাতেৰ চু**ড়ি ভেঙে বাওৱার উঠল** কেঁদে। আওয়াঞটি ভাব ছড়িবে পরে আবে-পালে, ভূলে গেল মেরের বিরে আসছে মাসে।

চেকোশ্লোভাকিয়ার রূপকথা

ত্রীসুলতা কর

ভিমেকা—দেশ-বিদেশের কত স্থন্দর রূপকথা আছে। এই সব দেশ-বিদেশের রূপকথার সক্ষে পরিচয় হলে ছোটদের মন থুসীতে ভরে ওঠে, তাদের জ্ঞানের সীমা বেড়ে যায়। এথানে একটি চেকোপ্রোভাকিয়া দেশের রূপকথা লিথলাম।—লেধিকা]

মেখে-ঢাকা স্থ্য। বৰ্ধাকাল। আকাশ ঘোর কালো মেঘে
ঢাকা পড়েছে আব দিনরাত বৃষ্টি পড়ছে। তিন দিন ধরে
পৃথিবীতে এক ঝলক্ রোদের দেখা পাওয়া যায় না, একটু কড়া আলো
দেখা যায় না।

ছোট ছোট মুবগীছানাবা গজগজ করে মাকে বলতে লাগল
—-গ্য মা, স্থায়মামা আকাশ ছেড়ে কোথায় পালাল? তাকে
ানে আকাশে নিয়ে আসতে হবে। এক কোঁটা বোদ নেই। শীতে
ানবা কাঁপছি, এ কি অকায় বলত ?

নোটাদোটা শ্বীবটা দোলাতে দোলাতে মুবগী মা বলল—সে ত ব্যাছি বাছাবা! কিন্তু স্বিয়মানার বাড়াটা যে কোথায় তা ত ভানি না, সেইখানেই হয়েছে মুদ্ধিল।

মুবগীর ছানারা বলল—ওসব তোমায় ভাবতে হবে না মা। গ্রিনামার বাড়ীর ঠিকানা আমরা ঠিক খুঁজে বার করব। এত আমাদের বন্ধু-বান্ধন রয়েছে তারা কেউ না কেউ নিশ্চয় ঠিকানা ছানে। চল্ রে ভাই-বোনেরা, স্বাই মিলে একটু খুঁজে দেখি। এই বলে কোঁকর কোঁ, কোঁকর কোঁ, কবে ডাকতে ডাকতে মুবগীছানারা থাকে কেলে রেখে বাসা ছেছে বেরিয়ে পড়ল।

মুবগীছানারা একটু এগিয়ে একটা ছোট বাগানে চ্কল।

নাগানের দামনে একটা কপিক্ষেত। দেখানে মস্ত বড় একটা কপির

নগায় এক শামুক বদে বদে হাই তুলছে। মুবগীছানারা শামুককে

নগায় করে জিজ্ঞেদ করল শামুক দাদা, শুষা ঠাকুবের বাড়ীর

কিনাটা বলতে পার ? _বিষ্টিতে ভিজে মরে গেলাম। স্বিট্য ঠাকুবকে

গণে থেকে টেনে বার করতে হবে। তাই আমরা তার বাড়ী

গাছি।

শামুক হাই ভুলতে তুলতে বলল—ঠিকানা ত আমি জানি
না। তবে একটু দ্বে গিয়েই ওই ঝোপের ভিতর মস্ত বড়
কি পাররা দেখবে। সে হয়ত ঠিকানা তোমাদের বলতে পারবে।
তি কথা বলেই শামুক গোলের ভিতর চুকে ঘুমাতে আরম্ভ করল।

মূবগীছানার। ঝোপের দিকে এগোতে লাগল। দূর থেকে ভালের দেখতে পেরে পায়রা তাড়াভাড়ি ঝোপ থেকে উড়ে বেরিয়ে গো। মনের আনন্দে ভাবতে লাগল—বাঁচলাম বাবা, মুবগীর গোনাদের সঙ্গে থানিকটা বক্ বক্ করতে পারব।

মুরগীছানারা কাছে এসে নমস্কার করল। পায়রা বলল—কি
নিব ? কি খবর ভাই ? ছ'চারটে খবর বল। প্রাণটা জুড়োক।
নিব দিনে কারো মুখ দেখবার উপায় নেই, ছটো কথা বলতে পাই
নি, হাপিরে উঠলাম।

মুরগীছানারা বলল—পায়রামাদী? দে জন্মই ত ভোমার কাছে

বংগছি। এমন বর্বার কি কারো প্রাণ বাঁচে? স্থায়ামাকে ঘর

থেকে টেনে বার করব বলে আমরা তার বাড়ী **বাচ্ছি। এখন** স্বিয়মামার বাড়ীর ঠিকানাটা তুমি আমাদের বলে দাও।

পায়রা বক্ বক্ করে অনেক কথা বলে গেল। তারপর বলল—
আমি ত ভাই ঠিকানা জানি না ? তবে আমার বন্ধু ধরগোস নিশ্চর
জানে।

চল তবে খরগোসের কাছে যাই। বলে মুবগীছানারা চলতে আরম্ভ করল। পায়রাও তাদের সঙ্গে উড়ে চলল।

খবগোস দূর থেকে তাদের দেগতে পেয়ে তাড়াতাড়ি গায়ের লোম ঝেড়ে ফিটফাট হয়ে নিল। তারপব তার বাড়ীর দরজা খুলে বলতে লাগল—এস এম। আমাব ঘবে এসে বস। এই বর্ধার দিনে একটু চা থাও।

কিন্ত মুবগীছানারা তার ঘরে চুকল না, দবজাব সামনে দীড়িয়ে বলল—নমস্কার, থবগোস মামা ! বড্ড বাস্ত আমবা, এখন বসতে পারব না । স্থায়মামাকে ঘর থেকে টেনে বাব করতে যাচ্ছি তুমি শুধু স্থায়মামার বাড়ীর ঠিকানাটা বল ।

থবলোদ থতমত থেয়ে বলল— স্থানামার ঠিকানা ত বলতে পারব না! তা আমি না পারলেও আমার বন্ধু পাতিইাস ঠিক জানে। চল তার কাছে তোমাদের নিয়ে যাই। ওই যে সামনে নদী রয়েছে, ওর পাড়ে যে নলখাগড়ার বন, সেইখানেই পাতিহাসের বাড়ী। নদীতে ওই যে একটা নৌকা বয়েছে, চল ওইতে চড়েই যাওয়া যাক।

খরগোদেব কথামত সবাই সেই নৌকায় চেপে বদল। তেলে ছলে নৌকা চলতে লাগল। একটু পরেই নলগাগড়ার বনে এসে আটকাল। সবাই মিলে নেমে পাতিগাদের বাড়ীব দরজায় এল। খরগোদ দরজায় থাকা দিয়ে ডাকতে লাগল—ও ভাই পাতিগাদ, আমি তোনার বন্ধ্ খরগোদ। তোমার দলে দেখা করতে এসেছি। দবজাটা একটু গোল। আমার দলে অনেক দব অতিথিরাও এসেছেন।

ভিজে ডানা ঝটপট করে নাড়তে নাঙ়তে পাতিইাস দরজা খুলে বলল—ও: বিষ্টির জ্বালায় মবে গেলাম। তিন দিন ধরে ডানা শুকোতে পাইনি। কি কঠিই না হঙ্ছে!

পাতিহাসের কথ। শুনে মুবগাছানারা বলল—ঠিক বলেছ হাসনাসী! ছষ্ট সুযানানা, নিজের ঘরে শুয়ে লেপ মুড়ি লিয়ে ঘুনাছে। আকাশে ওঠবার নাম নেই, তাই আমাদের এত কষ্ট। এখন আমরা সবাই সুর্যোরে বাড়ী চলেছি। তাকে টেনে ঘর থেকে বের করে আকাশে নিয়ে আসব। কিন্তু মুদ্ধিল হয়েছে সুর্যোর বড়ীর ঠিকানা আমরা কেউ জানি না। ভূমি মাসা, ঠিকানাটা বলে দাও।

পাতিহাদ বলল আমি ত বাপু, স্থোব বাড়ীর ঠিকানা জানি না। তবে আমার বন্ধু সজাক খ্ব পণ্ডিত লোক। সে জানে না এমন জিনিবই নেই। নদীর অন্ত পাড়ে ওই বে প্রকাণ্ড গাছ দেখা বাছে ওবই একটা কোটরে সে থাকে। চল স্বাই মিলে নৌকায় চেপে সজাক-বন্ধৰ বাড়ী যাই।

তাই চল—বলে সেই প্রকাণ দল নৌকায় চড়ে সজারুর বাড়ী গোল। গাছের কোটরের গ্রম বাতাসে শুযে বাদলার দিনে সজারু দিব্যি নাক ডাকিয়ে ঘ্মাছে। স্বায়ের ডাকাডাকিতে সজারুর ঘ্ম ভাঙ্গল।

বাদা থেকে বেরিয়ে এনে অভিথিদের নমস্কার করে বলল— আন্তন আন্তন। আমার গরম খরে বদে বিশ্রাম করুন। পাতিহাস বলল—না বৃদ্ধু সন্ধান্ধ, আমেরা আর বসব না। একটা শক্ত কাজ করতে হবে, সেজল এই ঝড়-বাদল মাথায় নিয়ে সবাই মিলে ছুটে চলেছি। তুমি হলে আমাদের সবায়ের চেয়ে পণ্ডিত। তুমি না সাহায্য করলে আমাদের কাছ সকল হবে না। কট করেও কোন ফল হবে না।

সজারু নিজের প্রশংসা প্রনে গুণী হবে বলল—তা যা বলেছ ভাই পাতিইাস। সব জীব-জন্তবাই বলে বটে আমি পণ্ডিত লোক। কোন কাজে তোমবা যাঞ্বল ? নিশ্চমই যা পারি সাহায্য করব। তোমবা সনাই আমার বন্ধু।

সভারের কথা শুনে মুরগীর ছারাবা বলল—সভাক লালা, তিন দিন ধরে স্থোমামা নিজের ঘরে শুরে লেশ মৃতি দিয়ে গ্রাছে। আকাশেও ওঠে না, রোনও ছড়ায় না। আমবা স্বাই বিষ্টি-বানলে ভিজে মরে গোলাম। সেজল আমবা স্থোমানার বাড়ী চলেছি। তাকে টোনে ঘর থেকে বার কবে আকাশে বসিরে দেব। তবেই আমাদের প্রাণগুলো বাঁচবে। কিন্তু মুদ্দিল হয়েছে। কেট আমরা স্থোনামার বাড়ীর ঠিকানা জানি না। তমি স্ভাক দানা, ঠিকানা বলে দাও।

সভাক গড়ার ভাবে বলল—দে কথা কেন্দ্র জানে না সে কথা বলতে কেবল আমিই পারি। পণ্ডিত বলে একটা স্থানাম আছে, সেই. ত আর মিথো নর। স্থারে বাড়ার ঠিকানা আমি জানি। তারপর তাছিলোর স্থারে সন্থান্ধ বাড়ার বিকানা আমি জানি। তারপর তাছিলোর স্থারে সন্থান্ধ বাড়া থেকে কতটুকুই বা রাস্তা। তই ধে সামনে প্রকাণ্ড পাচাড় দেশহ, তার মাথার একটা প্রকাণ্ড কালো কুচকুচে মেঘ কুলছে। সেই কালো মেঘের চুড়ার ওপর কপালী চাদ আইকান আছে। তোমাদের প্রথমে সেই চাদের দেশে যেতে াবে। তারপর চাদের দেশ পার হরে বেই এক পা এগোবে আমনি স্থানানার বাড়ী পেয়ে যাবে। চল আমি সঙ্গে গিয়ে পথ দেশিয়ে দি। এই বলে মাথার একটা নতুন টুলা পরে হাতে একটা লাঠি নিয়ে সন্থাক পথ দেখিয়ে এগিয়ে চলল। তার পিছনে পিছনে মুরগীর ছানারা, পাররা, থরগোস, পাতিহাস চলল।

স্কাক গেমন রাস্তা চলেছিল ঠিচ তেমন রাস্তা ধরে চলে তারা প্রকাশু পাহাড়ের মাধায় উঠল, কুচকুচে কালো মেঘের ভিতর দিয়ে চলে গেল। তারপব চাদের দেশে পৌছল। তাদের দেখে চাদ তাড়াতাড়ি এগিয়ে এনে থাতির করে স্বাইকে নিজে সঙ্গে করে নিয়ে গিয়ে স্থেয়ের বাড়ী পৌছে দিয়ে এল।

প্রার বাড়ীর ধারে এসে তারা সবাই দেখে চারদিকে কি থার অন্ধকার, কিছুই চোগে দেখা যার না। তবু তারা মনে সাহস এনে স্থ্যিনানার ঘরে চুকে পছল। ঘরে চুকে দেখে, ঘোর অন্ধকার ঘরে প্রকাশু এক কালো বেঘের কম্বলে আগাগোপা মুড়ি দিরে প্রিয়ামা নাক ডাকিয়ে অগাধে ব্যাচ্ছেন।

জাদের পারের কত শব্দ হল কিন্তু স্থ্যিমামার ঘূম ভাঙ্গল ।।
তথন সমাই মিলে স্থ্যিমামার ঘূম ভাঙ্গাৰার জ্ঞানে বিকট চীংকার
করতে আনমন্ত করণ।

মুরগীছানার। কোঁকর কোঁ, কোঁকর কোঁ করে ডাকতে লাগল, পায়র। বক্ বকম্' বক্ বকম' করে ডাকতে লাগল, পাতিহাস পানক পানক করে ডাকতে লাগল, থবগোস ঝপ ঝপ করে কানঝাপ্ট। দিভে লাগল, সন্ধাক তার লাটিটা নিয়ে হুম হুম করে ঠুকতে লাগল। একসঙ্গে স্বাই চীংকার করতে লাগগ—স্ব্যেমামা ঘূম ভেঙ্গে ওঠ, স্বিমামা ঘূম ভেঙ্গে ওঠ। আকাশে চল, বোদ্বে লাও।

সবারের এত চীৎকারে স্বর্গের যুম্ ভাঙ্গল। থুব রেগে উঠে মেখেব কম্বলটা একটুবানি মুখের কাছ থেকে সরিয়ে, বিছানার শুরে চেচিয়ে উঠন—কে রে, চেচামেটি করে অসময়ে আমার যুম ভাঙ্গাছিল?

স্র্যোর রাগ দেখে তারা কেউ ভয় পেল না, উন্টে আরও চীংকার করতে লাগল। বলতে লাগল—দেখ স্থামামা, অনেক কেলা হয়েছে। ভাল চাও ত আকাশে উঠ পড়, আর নয়ত তোমাকে টেনে তুলৰ।

স্থা দেখল, এদের হাত থেকে কিছুতেই ছাড়া পাবে না। তথন দে বলল—কেমন করে উঠি বল? ভিন দিন ধরে ভারী ভারী কালো মেঘ আমাব সারা শরীৰ আর মুথ চেপে ধরেছে, তাদের ঠেলে সরাতে পারছি না। দেখ না কালো মেঘেরা আমার মুখটা কি রকম কালো করে দিয়েছে। পূর্যোর কথা শুনে খরগোস ছুটে বাইরে গিয়ে একটা বড় কলদী-ভরা ঠাণ্ডা জল টানতে টানতে ঘবে নিয়ে এল। পাতিহাস সেই কলদীশুদ্ধ জল টোট দিয়ে টেনে টেনে স্থোর মুখের উপর উপ্ড কবে ঢেলে দিল। পায়রা একথানা প্রকাশ্ত সানা তোয়ালে নিয়ে দেই জল দিয়ে স্থোর মুখ ঘদে দিতে আরম্ভ করল, আর সজাক কাটা দিয়ে খড় খড় করে টেনে স্থোর মুখেব ওপরের কালো মেঘণ্ডলোকে টুকরো টুকরো করে ফেলতে লাগল। মুখনীর ছানারা দেই সব মেঘের টুকরো চুড়িয়ে নিয়ে ঘরের বাইরে কেলতে লাগল।

দেখতে দেখতে স্থাের মুখের ওপর থেকে সব কালাে মেঘ মাছ।
হয়ে গােল। স্থািমানা এদের হাতে পড়ে ঝক্মকে হয়ে উঠল। তথন
আর কি করে, অগতা৷ ঘর ছেড়ে বিছানা ছেড়ে লাফিয়ে আকাাশে
উঠল। তথন প্রাের এমন তেজ হল, তা দেখে স্বায়ের ঢােথ
ঝলসে গেল।

সমস্ত পৃথিবী প্রচণ্ড বোদে ভবে গেল। ঝড়, বিষ্টি, মেঘ ভয়ে কাঁপতে কাঁপতে কোথায় যে ছুটে পালাল তার ঠিক নেই!

তথন মুবগীছানারা, পার্বরা, পাতিহাদ, ধ্বগোদ, সঙ্গাক মনের আনন্দে বোদ পোহাতে পোহাতে আব গান গাইতে গাইতে বাড়ী ফিরে চলল।

পশু ও পাখা শ্রীরণজিৎকুমার দত্ত

দবুজ পাথী টিয়ে, ডাকে না শিব দিয়ে
দানা পাথী বক, নয়কো জেনো ঠগ
কালো পাথী কাক, কর্কশ,তার ডাক
এবং লাল পাথী কি, মুরগী ও মুবগী।
ডাকে ঘাঙর-ঘাঙ, তারাই কোলাবাঙ
দেখতে নয় থারাপ, জিরাফ তারা জিরাফ
পথে যায় না ঝুট, মফর রাজা উট
লম্বা ডোরা দাগ,—হিংল্র পশু বাব।
জলতে যায় বাদ, দে হিপোপটেমাদ
চান্ছা মোটা যায়, গশুর নাম তার—
কেশর কাব চিহু, পশুরাজ দিহে
দব দিকে কার ভূশ,—মায়ুষ, দে মায়ুষ।



गारम् प्रपण अ

অফ্টার্মিক্ষে প্রতিপালিত

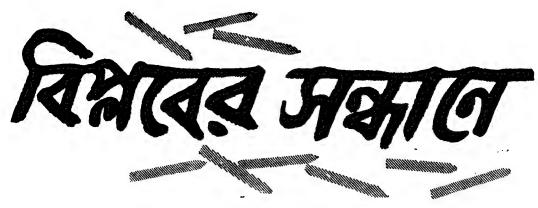
মীয়ের কোলে শিশুটী কত স্থী, কত সম্বৃষ্ট। কারণ গুর শ্লেহময়ী মা গুকে নিয়মিত অষ্টারমিক পাওয়ান। অষ্টারমিক বিশুদ্ধ ছগ্ণজাত পাগ্ন এতে নায়ের ছধের মত উপকারী স্বরক্ষ উপকরণই আছে। আপনার শিশুর প্রতি আপনার ভালবাসার কথা মনে রেখেই, অষ্টারমিক তৈরী করা হয়েছে।

বিনাম্লো-অন্টারমিক পৃত্তিকা (ইংরাজীতে) আধুনিক শিশু পরিচর্ঘার সবরকম তথাসম্বলিত। ডাকথরচের জন্ম ৫০ নয়াপরসার ডাক টিকিট পাঠান — এই ঠিকানায়- ''অষ্টারমিক'' P. O. Box No. 202 বোম্বার্ট সা

...মায়ের দুধেরই মতন

ফারেকা শিশুদের প্রথম থান্ত হিসাবে বাবহার করুন। ফুর দেহগঠনের জন্ম চার থেকে পাঁচ মাস বরর থেকে তুধের সঙ্গে ফারেকা থাওয়ানও প্রয়োজন। ফারেকা পৃষ্টিকর শব্যজাত থান্ত-রানা করতে হয়না—গুধু হুধ আর চিনির সঙ্গে মিশিয়ে, শিশুকে চামচে করে থাওয়ান।





[পৃধ-প্রকাশিতের পর] নারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যার

১৯২১ সালেই ভারতের নানা স্থানে শ্রমিক ও কুধকদের অসন্তোষ নানা ভাবে প্রকাশ হচ্ছিল—সরকারী হিসাব অনুসারে '২১ সালে ৪০০ ধর্ম উ হয়েছিল, এবং ৫লক শ্রমিক তাতে সংশ্লিষ্ট ছিল। দেশের মুক্তিসংগ্রামে শ্রমিকরা সামিল হতে চাচ্ছিল নিঞ্চেদের বিশিষ্ট সংগ্রাম পদ্ধতির মারফং—কিন্তু মহাত্মাজী সেটা পছন্দ করছিলেন না, এবং শ্রমিকনেতাদের তদমুদারে নিরুৎদাহিত করছিলেন। কুষকরাও নানা স্থানে তাদেব ত্রবস্থার প্রতিকারেব জন্মে বিপুলভাবে বিকোভ প্রদর্শন কর্মছিল, এবং স্থানে স্থানে সভ্যাগ্রহের দিকে বাঁকছিল। থপ্রিল মাসে মূলসীতে কৃষ্ক্রা সভ্যাগ্রহ সুরু করতে বাচ্ছিল,— জমির মালিক টাটাগোষ্ঠী—মহাম্মান্ত্রী তাঁদের প্রামর্শ দিয়েছিলেন 'উপযুক্ত' বাবস্থা করতে। । াগুবেবিলীতে বিরাট কুদক বিক্ষোভের পর কুষকনেতাদের গ্রেপ্তার করা হলে কুষকরা বিদ্রোহমুখী হয়ে ওঠে এবং সরকার গুলী চালিয়ে ৭ জন কুষককে হত্যা, এ গং বভূসংখ্যক:ক আহত কর। ফলে সেথানকার ৭০ হাজার কুষ্ক কংগ্রেসে যোগ দেয়। শিখদের তীর্মস্থান ও মন্দিরাদিতে ছিল ত্রুচরিত্র মোহাস্তদের রাক্ত্ব-সরকার ছিল তাদের পুঠপোয়ক-তাদের হাত থেকে পাবলিক কমিটীর হাতে কর্ত্ব আনবার জন্মে শিথেরা চেষ্টা করছিল। এই অবস্থায় নানকানা-সাহেব-এর মোহান্ত ১০০ শিখ তীর্থযাত্রীকে মন্দিরের মণ্যে হতা৷ করে, এবং পেটোল দিয়ে মৃতদেহগুলো জালিয়ে দেয়। ফলে শিথক্ষকরাও দলে দলে কংগ্রেসে যোগ দেয়। মহাম্মাজীর এক বছরে স্বরাজের ভরসায় নির্ভর করে এইভাবে কুষকেরাও তালের তুর্দশার অবসানের আশা নিয়ে কংগ্রেসকে শক্তিশালী করছিল। মহাত্মাজীও প্রাণপণে তাদের অসম্ভোগকে অহিংসার পথে টেনে রাখার চেষ্টা করছিলেন।

মালাবারের সমুদ্রোপক্লের চিবনিধ্যাতিত দরিদ্র মোণলা কৃষ্করা কিন্তু এক রীতিমত সশস্ত্র বিদ্রোহ করে এক থিলাফংরাজ প্রতিষ্ঠা করে ফেলেছিল।

এর আগে তারা বছবার বিলোহ করেছিল, এবং সরকার রক্তের বক্সায় সে সব বিদ্রোহ ভূবিয়ে দিয়েছিল—একদল বিশেষ সশস্ত্র পূলিশ এবং একদল সৈক্ত সেথানে স্থায়িভাবে মোভারেন করেছিল। '২১ সালের কংগ্রেস-থিলাফং আন্দোলনে উৎসাহিত হয়ে তারা এবার পূলিশ, সৈক্ত, জমিনার, মহাজন, স্বাইকে আক্রমণ করেছিল, এবং অবশ্ব হিন্দুদেরও,—যাদের তাবা বর্গাবরই শক্তাশিবিরের সামিলই

দেখে এসেছে। তাছাড়া তারা ইউরোপীয়দের হত্যা করেছে সরকারী-ভবন লুঠ করেছে, রেল, টেলিপ্রাফ বিধ্বস্ত করেছে।

হাওরা ব্রে মহায়ালা মোপলা বিদ্রোহকে ধির্কার না দিয়ে বললেন, তারা সাহসী ও ঈশাভক্ত,—এবং বললেন সরকার তাদের অসক্ষেত্র উংপীড়ন করেছে, এবং ভাদের অপকর্মের সবকারী ফিরিস্টি অতিরঞ্জিত। তিনি এবং নৌলানা মহখদ আলী মালাবারে যাওয়ার পথে ওয়াল্টেয়ারে থেপ্তার হলেন, তাঁদের ফিরিয়ে দেওয়া হ'ল। তার পরেই করাচীতে রাজদ্রোহকর বক্তৃতা ও প্রস্তার পাশ করে মৌলানা প্রভৃতি গ্রেপ্তার হন এবং তাঁদের ছেল হয়।

নোট কথা '২১ সালের শেষেই আইন অনাল ও শেষ পর্যন্ত থাজনা বন্ধ আন্দোলনের কথায় লোকে সর্বর উৎসাহ-উত্তেজনার সাগ্রহে অপেক্ষণ করছিল। অনেকে আশা করেছিল, আহমদাবাদ কংগ্রেসেই থাজনা বন্ধের নিদেশ দেওয়া হবে, কিন্তু তা হল না। জেল ভব্তি কনার নিদেশে বে-আইনী-ভলা দিয়ার দলে নাম লিখিয়ে, বে-আইনী সভা করে দলে দলে লোক জেলে বেভে লাগলো। '২২ সালের গোড়াভেই জেলে ৩০,০০০ লোক জমে গেছে। মহাত্মাজী ছাড়া বড় বড় নেহারাও জেলে গেছেন।

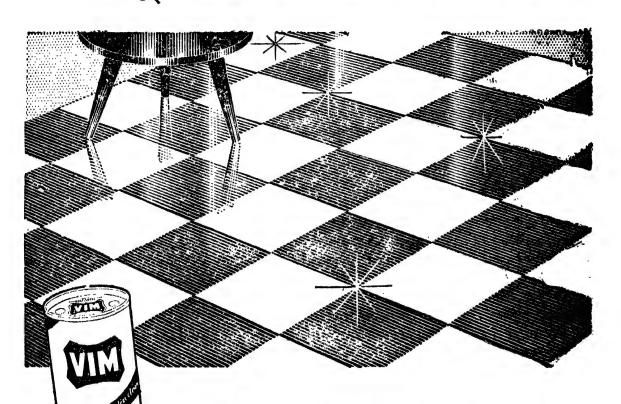
দেশের লোক কিছ থাজনা বন্ধের জন্তে উপান্ত হয়ে উঠেছে।
আনেক স্থান থেকে মহাত্মার কাছে আংবদন আসছে, থাজনাবন্ধ স্থক
করার অনুমতির জন্তে—মহাত্মা অমুমতি দিচ্ছেন না। আন্ধের ছণ্টুর
জেলা থাজনাবন্ধ স্থক করে দিয়েছিল,—১৫ লাথের মধ্যে মাত্র ৪
লাথ টাকার বেশী সরকার আদায় করতে পারেনি,—এই অবস্থার
মহাত্মাজী তাদের নিন্দা করে সব থাজনা চুকিয়ে দেওয়ার নির্দেশ
দিলেন। লোকে হতভন্থ হয়ে গেল।

শেষ পর্যন্ত ফেব্রুগারী মাসে তিনি বড়লাটকে নোটিশ দিলেন, সরকার যদি নির্যাতন বন্ধ করে বন্দীদের মুক্তি না দেয়, তিনি থাজনা বন্ধ আন্দোলন অক্ত করবেন। তিনি সকলকে বলে দিয়েছিলেন, সরকারী নির্যাতন ও প্রেরোচনার মুথে কেমনভাবে সম্পূর্ণ আছিংস থাকতে হয়, তা তিনি নিজে আগে দেখিয়ে দেবেন, তার পরে অক্সত্র থাজনা বন্ধ অক্ত করা যাবে। তিনি এজতাে বারদোলী তালুকে থাজনা বন্ধের পরিকল্পনা করেছিলেন! ইতিমধ্যে মেদিনীপুরে বীরেক্তনাথ শাসমলের নেড়ভে নভুন শাসন সংস্কার অনুবারী ইউনিয়নবার্ড সংগঠনে বাধা দিয়ে একটা নভুন

V. 99-X52 BG

ভিম ব্যবহার করলে পরে

-দেখুন কেমন বালমল করে



ভিম অল্প একটু ব্যবহার করলে পরেই সবজিনিষের চৈইরি। বর্দলৈ বর্দি। মেঝে, বাধক্রমের বেসির ও সিঙ্ক, থেকে, রায়ার হাঁড়ী, ডেক্চী, বাসর-কোসন, কাঁচের ও চায়ের বাসন—সবই এক নতুন রূপ নেবে। ডিম দিঙ্কে। পরিম্বার করলে জিনিষপত্রে কোন রকম আচড় লাগে না। আর কত সোজা ও কম খাটুনিতে হয় ভেবে দেখুন। ভেজা ন্যক্ডায় একটু ভিম দিয়ে আঙে: আন্তে ঘষ্ট্র—দেখবের যত ময়লা আর দাগ নিমেষের মধ্যে মিলিরে যাবে । ভিম ব্যবহার করলে আপনার বাড়ী আপনার গর্বের কারণ হবে এ

* ** ভিম সবজিনিধেরই উজ্জ্বলতা বাড়ায়

হিন্দুখান লিভার লিনিটেউ থারা এউট ১

ম্বকমের আইন অমাক্ত স্মৃত্র হয়ে গিয়েছিল, এবং শেব পর্যস্ত সম্পত্ত হয়েছিল, সরকার ইউনিয়ন বোর্ড সংগঠন করতে পারেনি।

বাই হোক, নারদোলীতে থাজনা বন্ধ স্থক হওয়ার আগেই চৌরীচৌরার বিধ্যাত ঘটনা ঘটে গেল। বিক্ষুব্ধ ক্রবন্ধার ওপর প্রিশ গুলী চালিরেছিল, এবং শেষ পর্যস্ত ক্রবকেরা থানা আক্রমণ করে আলিরে দিয়েছিল এবং ২২ জন পুলিশকে হত্যা করেছিল। ঘটনা প্রবাদাত্র মহাত্মা গান্ধী তীত্র অপমান নোধে জর্জরিত হয়ে আন্দোলন বাভিল করে দিলেন এবং বললেন, তিনি তাঁর হিমালয় প্রমাণ জ্রাস্ত বিচারের জন্তে ঈশ্বর ও মামুদের চোথে বেইজ্জং হয়েছেন। কংগ্রেস ওরার্কিং কমিটা সভা করে নির্দেশ দিলে, অতঃপর আইন অমান্ত স্থগিত থাকবে, এবং কংগ্রসকর্মীদের সর্বত্র দ্রবন অন্প্রভাত নিবারণ, মাদকবর্জন ও শিক্ষাকার্য নিয়ে থাকতে হবে।

সংখ্যামী উৎসাহ-উত্তেজনার উত্ত্ ক তরক স্তর হয়ে গেল,—
কর্মীরা ক্ষ হয়েও নেতৃত্বের নির্দেশ অনুসারে তথাকথিত গঠনমূলক
কাজেই মনঃসংযোগ করলে। আমরা চরকা-থদন এবং আশারাল
কুল নিয়েই থাউতুম—সবটুকু সময় ও শক্তি তাতেই নিয়োজিত
ক্লি—আমরা তাই নিয়েই থাকলুম। কংগ্রেসের স্বরাজ যে স্বাদীনতা
নক্ষ, এবং তাও এখন গিয়ে পড়লো "বিশ বাঁও জলে"—স্বতরাং
আমাদের নিজেদের আদর্শ কংগ্রেসের ম্বের প্রতিষ্ঠার চেষ্টাই এখন
আমাদের করতে হয়ে,—এটা পরিকার হয়ে গেল।

এদিকে চট্টগ্রামে প্রাদেশিক কনফাবেন্স গ্রসে পড়লো—গোলুম দেখানে। সভানেত্রী বাসস্তী দেবীর বস্তৃতার আমাদের সংগ্রামের ক্ষেত্র কাউন্সিলের ভিতর পর্যন্ত প্রসারিত করার ইক্সিত পাওয়া গোল। আমরা উৎসাহিত হলুম, কিন্তু গোড়া গান্ধীবাদীরা তার মধ্যে সি আর দাশের ব্যারিষ্টোক্রেসীর তুর্নীতির গন্ধ পেলো।

মুলীপঞ্জ সাবডিভিশন, এবং ঢাকা সহরের অন্তর্গত নবাবগঞ্জ খালা নিজে হয়েছিল বিক্রমপুর (সাবডিভিশকাল) কংগ্রেস কমিটি ৬টা থানা-তার মধ্যে দোহার এবং নবাবগঞ্জ ছিল প্রফুল যোষ প্রমুখ গোঁড়া গান্ধীবাদীদের আড্ডা—বাকি ৪টে থানা—মুখীগঞ্জ, বাজাবাড়ী, টঙ্গীবাড়ী এবং শ্রীনগর আমাদের আড্ডা। এর মধ্যে বানরী বিক্তাশ্রমের ধীরেন দাশগুপ্ত এবং পূর্ণানন্দ সেন, এবং লোহজন্দে क्रिक्टन क्रुगांदी शींड़ा शाकीवांनी। थक्पदरे हिन এएमद श्रथान অবলম্বন,—কিন্তু আমিরাও তাতে নেহাং পিছিয়ে ছিলুম না—'২২সালে ওধু পঞ্চসার কেন্দ্রেই পৌণে ছণো চরকা চলেছিল। সকল বাড়ীতে তুলোর বীব্দ বিতরণ করে আমরা তুলোর গাছও করেছিলুম অনেক। ক্লালাকাল স্থলের তাঁতে ভাল থদরের ধৃতিশাড়ীও তৈরী হচ্ছিল। আমার স্থান অমুসারে লোকের বাড়ী বাড়ী গিয়ে কিছু কাঠ সংগ্রহ করা হত, এবং কারো বা একটা বড় আমগাছের মোটা সোজা একটা ভাল চাঁদা আদার করা হত। ডালের টকরো দিয়ে চরকার কুঁদো বা "ডিম" তৈরী হক্ত, এবং অক্সান্ত কাঠ দিয়ে অক্সান্ত অংশ ভৈবী হত। বাদের বাড়ী থেকে কাঠ আনা হত,—তাদের একটা চরকা বিনামূল্যে দেওয়া হত,—বাড়তি চরকা অক্সাক্তকেন্দ্র হু টাকা দামে বিক্রী করা হন্ত, তাতে টাকু ও ছুতারের মঞ্জুরীর খরচ চলতো।

দাশ মহাশয় জেল থেকে বেরিয়ে স্বরান্তপার্টি গঠনের পরিকল্পনা প্রচার করলেন। সার্ভেণ্ট ও আনন্দবাজার গোড়া গান্ধীবাদীদের কাগজ দাশ মহাশয়কে প্রভাহ গালি দিরে ভ্ত ভাগাতে লাগলো। দাদাদের সঙ্গে দাশ মহাশরের বন্দোবস্ত হল, যুগান্তরপার্টি স্বরাজপার্টিকে সমর্থন করবে, এবং কাজ করবে। স্বভাবতই কংগ্রেসের কেন্দ্রগুলো ভূভাগে বিভক্ত হরে গোল Nochanger গান্ধীবাদীদের কেন্দ্র, এবং Prochanger স্বরাজপার্টির সমর্থকদের কেন্দ্র। বিক্রমপুরে প্রাক্ত্রা ঘোষেদের সঙ্গে লাগলো আমাদের ঠোকাঠুকি।

কলকাতার দাদারাই প্রথমে আত্মশক্তি কাগজখানা বার করেছিলেন এবং উপেনদা কৈ সম্পাদক করেছিলেন। বৌবাজারের চেবী প্রেস এসেছিল অনবদা'র হাতে। শেষ পর্যন্ত চেরী প্রেসে আত্মশক্তি উঠে গেল,—কাগজটা চালাতে লাগলেন উপেনদা' এবং আমরদা'ই. এবং এই একগানি ছোট সাপ্তাহিক পত্রিকাই হল দাশ মহাশরের সমর্থক, স্বরাজপার্টির কর্মপদ্বার প্রচারক। স্বত্তরাং সেখানে এসে জমলেন ভূপতি মন্ত্র্মদার, স্বভাগচন্দ্র বস্থ প্রভৃতি স্বরাজপ্রাটির প্রাথমিক সর্বজ্বের কর্মীরা। চেরীপ্রেস হল স্বরাজপার্টির প্রথমিক সর্বজ্বের ক্ষীরা। চেরীপ্রেস হল স্বরাজপার্টির প্রথমিক

যুসীগঞ্জ গ্রাশানাল স্কুল থেকে আমরাও একটা হাতে লেঞ্চ মাদিক পত্র বাব করেছিলুম,—প্রথমে জীখনের নাম ছিল লম্পাদক—কিছ জীবন কলকাতার পার্টির কান্ধ এবং স্বরান্ধ পার্টির কান্ধেও বিশেষভাবে জড়িত ছিল। সতরাং পরে সম্পাদক হলুম আমি। সেই কাগজেই আমি আমাদের বৈপ্লবিক আন্দর্শ প্রচাবের মুখকদ্ধরণে দিন-কোন্ধপারেশন ও স্বরান্ধ নামে এক দীর্ঘ প্রবন্ধ লিখেছিলুম, বার মধ্যে প্রেক্তি উদ্ধৃতিগুলো—গান্ধী, হজরৎ মোহানী প্রভৃতির কথাগুলো লিখেছিলুম। ক্লাগজনার প্রকৃতি বোঝা বাবে একটা সংবাদ উদ্ধৃত ব্যরান্ধ-"আনন্দ রাজাবের দেশদেবা—(এটা গ্রা কংগ্রেসের পরের কথা)—"গত ২২লে বৈশাও আনন্দবান্ধারের সম্পাদকীর ভাজে লেখা হয়েছে:

যথন দেশের সকল মতের সকল সম্প্রদারের একযোগে কং প্রেসের পতাকাতলে সমবেত হইরা কার্য করিবার প্রয়োজন আসের হইরা উঠিয়াছে,—সেই মুহুর্তে বৃহৎ নেতৃত্ব পরিচালিত স্বরাজ্য দল প্রতিকৃত্ব সমালোচনার কংগ্রেসের প্রতিষ্ঠা লাঘব এবং কাউলিলের মহিমা কীর্তন করিবার জক্ত দেশের সম্মুখে উপস্থিত হইলেন।

এ কাপজেই দেশবন্ধ মির্জাপুর পার্কের বজ্বতা বেরিরেছে—তাতে কাউন্সিল সম্বন্ধে দেশবন্ধ বলেছেন:

"কাউন্সিল বে অসার তা তিনি বিশাস করেন এবং অসহবোগ নীতি প্রবর্তিত হইবার পূর্বে তিনি অমৃতসর কংপ্রেসেও একথা বলিয়াছিচ্ছান। কাউন্সিল ধারা আমাদের কোন উপকার হইবে না সতা, কিন্তু দেশদেলাহীদিগের সাহায়ে কাউন্সিল দেশের অনেক ক্ষতি ক্ষরিতে পারে।"

আমাদের কাগকে আমরা এইরকম ভাবে প্রচার করতুম। গরা কার্প্রেশে দেশবদ্ধ্ বললেন,—কাউন্সিল বরকট করার ফলে আমরা গভর্ণমেন্টের একটা মস্ত স্থবিধে করে দিরেছি,—কভকগুলো বো-ছকুমের দল দেশের লোকের প্রতিনিধি সেজে সেখানে বসে গভর্ণমেন্টকে সমর্থন করছে—আইনতঃ গভর্গমেন্ট দেশবাসীর সমর্থনেই নির্বাতন চালাছে। আমরা কাউন্সিলের ঐ আসনগুলো দথল কবে সরকারের তুইনীতিকে পদে পদে বাধা দোব, বাতে তারা

দেশবাসীর নামেই দেশের সর্বনার্শ না করতে পারে। কংগ্রেসের তাতে জারই বাড়বে,—বাইরের আন্দোলন কাউন্সিলের জন-প্রতিনিধিদের ধারা সমর্থিত হবে, জোরদার হবে।

গয়া কংগ্রেসের পর এই কাউন্সিল-প্রবেশের প্রচার নিয়ে নো-চেঞ্ব প্রো-চেঞ্চ ছাই দলের গুঁতোগুঁতি বেড়ে চললো। ইতিমধ্যে জ্যাডভোকেট-জেনারেল এস, জার, দাশ এক দিন কাউন্সিলে বক্তৃতার মধ্যে একটি কথা বলে সকলের তাক্ লাগিয়ে দিলেন—"বিপ্লবীরা কংগ্রেসে চুকে সারা দেশে কংগ্রেসের জাড়ালে নিজেদের দল পাড়ছে, এবং তাদের নামের লিপ্ত জামার প্রেটেই আছে।"

জীবন ও আমি গয়া কংগ্রেকে গিয়েছিলুম। এম, এন, বায়ের একখানা ম্যানিকেন্টো সেখানে বিলি হয়েছিল,—মাতে বলা হয়েছিল চাধা-মজুরদের ব্যক্তিগত ভাবে কংগ্রেস-সদত্য না ক'রে, তাদের সংগঠনগুলোকে কংগ্রেসের affiliation দেওয়া চোক। সেটা অবশ্র গ্রাহ্ম হয়নি। এম, এন, রায় তখন কমিউনিট ইন্টারক্রাশাক্তালে ভারতের প্রতিনিধি এবং কশিয়া থেকে কমিউনিট সাহিত্য এবং প্রচারপত্র ভানগার্ড পাঠাতেন, জীবন কলকাতায় সেগুলো পেতো এবং মাঝে মাঝে মুন্সীগঙ্গেও পাঠাতে। ভ্যান্তে তখন তরুণ এবং প্রথম বই লিখেছেন "Gandhi Vs Lenin"—জীবন তার সঙ্গেদ দেখা করে থলো, আমিও সঙ্গে ভিল্ম।

এই গগা কংগ্রেসে অনুশীলনের চারজন নেতার নামে এক ম্যানিফেষ্টো বিলি হয়—

ভারত-দেবক-সংগ্র

সাধারণের অবগতির জন্ম আমরা জানাইতেছি বে, প্রীপুত পুলিনবিহারী দাসের বর্তমান কার্যকলাপের সহিত আমাদের কোন প্রকার সংশ্রব নাই এবং ভারত-সেবক-সংঘ নামক বে সংশ্র প্রতিষ্ঠিত ইইয়াছিল, তাহার অভিত্য অনেক দিন হইল লুপ্ত হইয়াছে।

(বাক্ষৰ) গ্রীযুক্ত নরেন্দ্রমোহন সেন

- " প্ৰত্লচন্দ্ৰ গ**লেপিখাৰ**
- বনেশচন্দ্র আচার্যা
- রমেশচন্দ্র চৌধুরী

এই ম্যানিফেপ্টোটা কলিকাতার আনুশক্তি কাগজেও **ছাপা** হয়েছিল, এবং আমরা আমাদের কাগজে (উন্মন্ত) তা থেকে উন্মৃত করেছিলুম।

রহস্টা পরে শুনলুম। এস আর দাশের পকেটে বিপ্লবীদের নামের তালিকা গেল কেমন করে? অফুশীলনপার্টির কর্মীরা বিভিন্ন কংগ্রেস কেন্দ্রে ভারত-দেবক-সংঘের নামে "হক কথা" প্রচায় করতা, কিন্তু যুগান্তর পার্টির কর্মীদের দ্বারা তাদের প্রচার বানচাল হত। তাদের বার্থতার কৈফিছতে তারা এস, আর, দাশের কাছে (পুলিন দাসের মারফং) লিখতো, যুগান্তর দলের অযুক কর্মীর জল্যে আমাদের প্রচার ব্যাহত হচ্ছে, সে এখানে কংগ্রেস কৃষ্টিটি দখল করে বসে ছেলেদের বিপ্লবের মন্ত্র দিয়ে দল গড়ছে। এমনি করে নানা জারগা থেকে যুগান্তর দলের দাদাদের নাম এস, আর, দাশের

অলোকিক দৈবশণ্ডিসমান ভারতের সক্রামেণ্ড তান্ত্রিক ও তেগাভিত্রিদ

জ্যোতিষ-সম্রাট পণ্ডিত শ্রীযুক্ত রমেশচন্দ্র ভট্টাচার্য্য, জ্যোতিষার্থব, রাজজ্যোতিষী এন্ আর-এ-এন্ (লগুন),



(জ্যোভিষ-সম্রাট)

নিথিল ভারত ফলিড ও গণিত সভার সভাপতি এবং কালীয় বারাণসী পণ্ডিত মহাস্ভার হারী সভাপতি।
ইনি দেখিবামাত্র মানবজীবনের ভূত, ভবিষাৎ ও বতমান নির্ণয়ে সিছহত। হত ও কপালের রেখা, কোটা
বিচার ও প্রস্তুত এবং অন্তভ্জ ও দুষ্ট গ্রহাদির প্রতিকারকল্পে শান্তি-স্ন্ত্যুয়নাদি, ডোহিক ত্রিহাদি ও প্রত্যক্ষ কলপ্রদ কবচাদি হারা মানব জীবনের ফুর্ভাগ্যের প্রতিকার, সাংসারিক অশান্তি ও ডান্ডার কবিরাজ পরিভাজ করিদ রোগাদির নিরামরে অলোকিক ক্ষমভাস্পায়। ভারত তথা ভারতের বাহিরে হথা— ইংছাও, আহমবিকা, আফ্রিকা, অক্টেজিয়া, চীন, জাপান, মালয়, সিজাপুর প্রভৃতি দেশ মনীযীবৃদ্ধ গুলার অলোকিক দৈবশক্তির কথা একবাক্যে বীকার করিয়াহেন। প্রশংসাপ্রস্তুর বিস্তৃত বিবরণ ও ক্যাটাল্য বিনাযুল্যে পাইবেন।

পণ্ডিতজীর অলোকিক শক্তিতে যাহারা মুগ্ধ তাঁহাদের মধ্যে কয়েকজন--

হিজ হাইনেশ মহারাজা আটগড়, হার হাইনেশ মাননীয়া ষ্ট্রমাতা মহারাণী ত্রিপুরা টেট, কলিকাতা হাইকোটের এখান বিচারপত্তি মাননীয় জার মন্মধনাথ মুখোপাধ্যায় কে-টি, সন্তোধের মাননীয় মহারাজা বাহাছর ভার মন্মধনাথ রায় চৌধুরী কে-টি, উচ্ছিয়া হাইকোটেরি প্রধান বিচারপত্তি মামনীয় বি. কে. রায়, বজীয় গভর্গনেটের মন্ত্রী রাজাবাহাছর প্রাঞ্জনদেব রায়কত, কেউনকড় হাইকোটেরি মাননীয় জল রায়সাহেব মি: এম. এম. সাস, আসামের মাননীয় রাজ্যপাল ভার ফলল আলী কে-টি, চীন মহাদেশের সাংহাই নগরীর মি: কে. ক্রচপল।

প্রত্যক্ষ ফলপ্রদ বছ পরীক্ষিত করেকটি তদ্বোক্ত অত্যাশ্চর্য্য কবচ

ধনলা কবচ—ধারণে প্রায়ানে প্রভূত ধনলাভ, মানসিক শান্তি, প্রতিষ্ঠা ও মান বৃদ্ধি হয় (তন্ত্রেভি)। সাধারণ—গান্ত-, শক্তিশালী বৃদ্ধি নান বৃদ্ধি হয় (তন্ত্রেভি)। সাধারণ—গান্ত-, শক্তিশালী বৃদ্ধি—২৯।১৮০, মহাশক্তিশালী ও সত্তর ফলদায়ক—১২৯।১৮০, মের্থিকার আর্থিক উন্নভি ও লক্ষীর কুপা লাভের ভক্ত প্রত্যেক গৃহী ও ব্যবসায়ীর অবস্ত ধারণ কভবি।। সমুক্ষতী কবচ—অরণশন্তি বৃদ্ধি ও পরীকার হ্বকল ৯।১৮০, বৃহৎ—৩৮১৮০। (মাহিমা (বিশাকরণ) কবচ—ধারণে অভিলবিত বী ও পুরুষ বলীভূত এবং চিরশক্তিও মিত্র হয় ১১।১০, বৃহৎ—৩৮১০, মহাশতিশালা ৬৮৭৮৯০। বর্গলামুখী কবচ—ধারণে অভিলবিত কর্মোন্ত্রভি, উপরিষ্থ মনিবকে সন্তর্ভি ও সর্বপ্রকার মামলায় জয়লাভ এবং এবল শক্তনাশ ৯৯০, বৃহৎ শন্তিশালী—৩০৯০, বৃহ্ণশতিশালী—১৮৪। (আমাদের এই কবচ ধারণে ভাওয়াল সন্ত্রাসী জয়ী হইয়াছেন)।

(যাগিতাৰ ১৯٠৭ খঃ) অল ইণ্ডিয়া এষ্ট্ৰোলজিক্যাল এণ্ড এষ্ট্ৰোমমিক্যাল সোসাইটী (রেজিটার্ড)

হেড অফিস ৫০—২ (ব), ধর্মজুলা ব্লীট "জ্যোতিব-সম্রাট ভবন" (প্রেবেশ পথ ওয়েলেস্লী ব্লীট) কলিকাডা—১৩। কোম ২৪—৪০৬৫। শ্বর—বৈকাল ৪টা হহৈডে ৭টা। আৰু অফিস ১০৫, থে ব্লীট, "বসন্ত নিবাস", কলিকাডা—৫, কোন ৫৫—৩৬৮৫। সবর প্রাণমে এটা স্টানন ১৬টা পকেটে জমা ছয়েছে। তিনি নিধােধের মতন সেটা নিয়ে বড়াই করার যুগান্তরের দাদাদের আব্তরীবৃশতে কিছু বাকি নেই। তাই এই কেলেকারী থেকে অমুশীলন পার্টিকে বাব করে আনার জন্তে ম্যানিকেপ্রা প্রচার করা হয়েছে। দোষটা সবই পুলিন দাসের বাড়ে চাপিরে অমুশীলনের নেতাবা সবে এসেছেন। পরবর্তীকালে পুলিন দাস ব্যাপারটার উল্লেখ করে বলতেন,—"বেইমানের দল, আরে তরাই তো সব খাইচদ—আমি একটা প্রসা খাইচি ?"

এর পরই অঞ্নীলন দল যুগান্তবের দক্ষে মিতালী করে কংগ্রেসে বোগ দেয়। এ বিষয়ে ভূপেক্রকুমার দত্তেব বই (বিপ্লবের পদ্ধতিহু) থেকে কয়েকটা কথা উদ্ধৃত করা অপ্রাদ্ধিক হবে না। তিনি লিখেতেন:

ধরা পড়ার কিছুদিন আগে থেকে ('১০ সাল) প্রকুল বাবু ও রমেশ বাবু আমার কাছে যাওয়া-আসা করছিলেন। তথন এর ভারত-সেবক-সংঘ করার দরুণ বাংলা রাজনীতিক্ষেত্র অপা ক্তেয়। প্রভুল বাবু একদিন আমার বলেন, "ও যা করতে গিয়েছিলান, দেশের ভাল হবে বলেই তো করতে গিয়েছিলাম।"

কিছ দেশের ভাল হবে বলে ওঁরা এই সময়ে মিলতে এসেছিলেন, এ কথাটা বে কত অসার, সেটা বুঝি ১৯২৮ সালে থালাসের পর। এসেছিলেন তথন স্বরাজপার্টি গঠিত হচ্ছে বলে।…(১২৪ পুঠ।)

••• ৰাই হোক, স্বরাজ্যদল গঠনের ভার কিন্তু প্রায় সর্বাই পড়লো আমাদেরই উপর। এবং তাই স্বাভাবিক। প্রভূল বাব্দের এই সময় আমাদের সঙ্গে মিলন কামনাও তেমনি স্বাভাবিক।

—(২-**৭** প্রচা)

ফলত, এদ, আর, দাশের পকেটের তালিকার সভাবতই অনুশীলনের নেতা ও বিশিষ্ট কর্মাদের নামও উঠলো। কিছ I B তো দেই তালিকার উপরই নির্ভর করে না—তাদের থাতার আরো বড় তালিকা গড়ে তোলার ব্যবস্থা তারা আগে থেকেই করেছিল। দাদারা এক বছরের জন্মে অহিংস অসহযোগ আন্দোলনকে একনিষ্ঠ ভাবে চাল দিয়ে, তারপর নিজেদের ভবিষ্যৎ পরিকল্পনা নিয়ে কাজ করছিলেন বটে, কিছু সেটা এ কংগ্রেসকে বিশ্লবের পথে টেনে আনার ছন্দেই। মাক্র, এবং তার জন্মে সম্মাসবাদী কার্মকলাপ সম্পূর্ণ ভাবে বাদ দিয়ে চলার নীতিই গ্রহণ করেছিলেন, বাতে কংগ্রেসের ভিতর ছিয়ে তাঁদের দল গড়ার কাজ I B বানচাল করে দিছে না পারে, ঝাঁকভন্ধ গ্রেপ্তার করার কোন স্থ্যোগ না পার।

ভার পর যথন কাউভিগল-প্রবেশের প্রশ্নে নো-চেঞ্চ প্রোচেঞ্চ ছ'লল ভাগ হয়ে গেল, তথন প্রকৃত পক্ষে গান্ধীবাদী, বিপ্লব-বিরোধী, আহিসোপদ্বীরাই হল নো-চেঞ্চার, আর বিপ্লবীরাই হল প্রো-চেঞ্চার I Ba টার্গেট আরো পরিদার হয়ে গেল। কিছু সম্লাসবাদী কার্বকলাপ দেশে চালু করার ব্যবস্থা ভারা আগে থেকেই স্কল্প করেছিল প্রকেট প্রোভোকেটর লাগিয়ে ছুটকো-ছাটকা বিপ্লবী রোমাঞ্চ প্রবশ্ন ভরুণদের দিয়ে সন্ত্রাসবাদী কার্বকলাপের সাহাব্যের ব্যবস্থা করে। এই রকম প্রকল্পন প্রজেট ছিল শিশির ঘোষ। সে মির্লাপুর স্থাটে এক থদ্দরের দোকান করে বসে কাজ চালাভো। আর প্রকলন ছিল, ভূপেন বাবু। ভাষ বইরে ভার ছন্মনাম দিয়েছেন ছিল হাওড়ার ডোমজুড়ের বসস্ত ঢেঁকির পিছনে। শিশির এবং টুমুর মধ্যে আবার পাল্ল। এবং রেষারেবিও চলতো।

বিশিনদা'ৰ চেলা হিসাবে সন্তোঘ মিত্র ভাঁর কাছ থেকে (বা শিশিরের কাছ থেকে ?) রিভলভার বোগাড় করে ভাই দেখিরে ছেলে বিক্রই করভো, এবং নেভা বলে বিশিনদা'বই নাম করভো। বিশিনদা' কংগ্রেসে দাদাদের সঙ্গে যোগ দিরেও এ ব্যাপার বন্ধ করার চেষ্টা করেননি। শিশিরের বন্দোবস্তেই সন্তোষ মিত্রের দল শাখারীটোলা পোষ্ট অফিসে ডাকাভি করতে সিরে পোষ্ট মান্টারকে হত্যা করে। বরেন ঘোষ সঙ্গে সক্র ঘটনাস্থলেই ধরা পড়ে এবং পুলিশের কাছে স্বীকারোক্তি করে। মামলায় ভার বিক্রছে, সাক্ষ্মী দেয় যারা, ভার মধ্যেও শিশিরের লোক ছিল। বরেনের প্রথমে প্রাণ্টশুও, ও পরে Mercy petition কন্ধার যারজ্জীবন কারাদণ্ড হর। তারপর সন্তোগ মিত্রের দল কোণা (হাওড়া) ভাকাভি করে, ডাকাভি ব্যর্থ হয়। তারপর সন্তোগ মিত্রর দল কোণা (হাওড়া) ভাকাভি করে, ডাকাভি ব্যর্থ হয়। তারপর সন্তোগ মিত্রের দল কোণা (হাওড়া) ভাকাভি করে, ডাকাভি ব্যর্থ হয়। তারপর সন্তোগ মিত্রের দল কোণা

পরে মির্জাপুর খ্রীটে শিশির ঘোষের থক্ষরের দোকানে বোমা পড়ে, শিশির পালিরে বেঁচে যায় এবং তার কর্মচারী প্রকাশ বণিক্য বোমার আঘাতে মারা পড়ে। এই সম্পর্কে ডোমজুড়ের বসস্ত টে কি পরে ধরা পড়ে, এবং মামলায় ভার কাঁসি হয়। শিশিরের দোকানে বোমা মারা কাজটা নাকি টুরু সেনের আকৃচা-আকচিব কল । শিশিষ তার পর · I B_{3} চাক্রী নিয়ে ইউ পিতে চ.ল যায়। পরবর্তী কালে গোপী শার পিছনে থেকে টুরু সেনই নাকি ভাকে দিতে ডে সাহেবকে খুন করিয়ে টেগার্টকে বাঁচিয়েছিল। গোপী ৌগার্টকে মারার জতে ঘ্রছিল।

এই সব সন্ত্রাসবাদী কাণ্ড স্তর্জ হওয়ার সময় থেকেই দাদারা মান্দে মনে বিপদ গণছিলেন, দিন বৃষ্ধি ঘনিয়ে এল। ওদিকে আর একইএকমের কাণ্ডও চলছিল। দাদারা মোজাফফর আহমদের মারক্ষ্ণ এম এন রায়ের দঙ্গে গোগাযোগ স্থাপন করে ভারতীয় বিপ্লবে কাশ সাহায্য স্থাহের চেপ্তা স্থাক করেছিলেন, কিন্তু এম এন দামের চায়া-মজুরের বিপ্লবের প্ল্যান গ্রহণ করতে সম্মত হননি। ২।১ জন দাদা, বেমন ভূপতি মজুন্দার, কিন্তু প্রায় কট্টর কমিউনিপ্ত হয়ে উঠেছিলেন। তিনি ২১ সাল থেকেই কান্ত্রী নজরুল ইসলামকে নিয়ে মেতেছিলেন এবং মোজাফফরের আড্ডার (ধ্যুমকেতু অফিস) আন্তানা গেড়েছিলেন। উপেনদা'ও আন্ত্রান্ত্র কাগজে এম এন বারের ভ্যানগার্ড প্রভৃতি থেকে চায়া-মজুরের বিপ্লবের আদর্শ সন্তর্গণে প্রচার করতেন। দাদাদের মধ্যে মনোরঞ্জনদা' ছিলেন এসব কাণ্ডের সব চেক্নে উগ্র বিরোধী।

বস্তত: একদিকে গান্ধী, আর এক দিকে বলশেভিজম দাদাদের মধ্যে রীভিমন্ত ভাব-বিরোধের স্থাষ্ট করছিল। বিপ্লবী দলের জিতেন কুশারী হ'রেছিলেন পরিপূর্ণ গান্ধীবানী এবং নো-চেঞ্জার দলভুক্ত—ভিনি দাদাদের কাছে গোপন রিপোর্ট দিরেছিলেন বে, জীবন ছেলেদের ভ্যানগার্ড পড়তে দিছে। মনোরঞ্জনদা' হয়েছিলেন বারো আনা গান্ধীবানী এবং নো-চেঞ্জার—ভিনি জীবন এবং ভ্সভিদা'কে ভাল চোধে দেখতেন না—কারণ এঁরা ছুজনেই মুলেন প্রো-চেঞ্জার দাদাদের সামিল,

ধেরাল বর্জন করেছিলেন এবং '২৩ সালে তাঁকে বি-পি-সি-সির সেক্রেটারী করে দিরে দাদারা তাঁর কমিউনিজমপ্রেম সম্পূর্ণভাবে মুছে দিয়েছিলেন। জীবন কিন্তু দাদাদের সঙ্গে অরাজ্যপার্টিও করে এবং ভ্যানগার্ডও আচার করে। দাদাদের সঙ্গে মোজাফ ফর আহমদের যোগাযোগ রক্ষার জন্মে দাদারা জীবনকেই নিযুক্ত করেছিলেন।

অতুলদা' পলাতক জীবন শেষ করে বেরিয়ে আসার পর ব্যবসায়ের দিকে ঝুঁকেছিলেন,—দাদাদের সঙ্গে কংগ্রেসে যোগ দেননি—
কলেছিলেন অহিংসাপদ্বা আমার হক্ষম হবে না। অনেকে তথন
তাঁর ওপর চটেছিলেন, কিছু তাঁরাই বছরের পর বছর তাঁর কাছ
থেকে নানা প্রকারে সবচেয়ে বেশী অর্থ সাহায্য গ্রহণ ক্ষতেন।

সতীশদা' বেরিয়েছিলেন সকলে বেরোবার প্রায় এক বছর পরে।
তিনি ও পাঁচুদ।' সকলের সঙ্গে ধোগাযোগ হারিয়ে পৃথক হয়ে
পজেছিলেন,—জানতেই পারেন নি যে সরকারের সঙ্গে আপোষ
হয়েছে,—সকলেই ফিরে এসেছেন। তাই তাঁর নামে বিজ্ঞলীতে
দাদাদের বিজ্ঞাপন অনেকদিন পর্যন্ত চলেছিল। তার ফলে তাঁরা
চন্দননগরে মতিলাল বারের কাছে এসে ওঠেন, এবং সতীশদা' তাঁর
নামে মোটা টাকার সরকারী ঘোষণা কেন্দ্রীর সরকার কর্তৃক বাতিল
হওরার পর আত্মপ্রকাশ করেন ১৯২১ সালের শেষে। তিনি
ভার পরেও গাটোকা দিয়ে থাকার পক্ষপাতী ছিলেন, ভবিষ্যতের
কাজের স্থবিধার জল্ঞে,—কিন্তু শেষ পর্যন্ত দাদাদের সঙ্গে কংগ্রেসে
ভিত্তে গিয়ে খ্লনায় গিরে বসেন, যেমন প্রায় সর দাদাই নিজ নিজ
জ্ঞার বসেছিলেন।

ষাই হোক, গয়া কংগ্ৰেসের পর আমি ও জীবন কয়েক দিন একট মধুপুর, দেওখর, জামদেদপুর ঘ্রে গেলুম লক্ষীদরাইয়ে। দেখানে **জীবনের একটু ছোট্ট জমিদারী ছিল। বংসরান্তে কিছু খাজনা** আলায় হত-জীবন সেটুকু বিক্রী করার বন্দোবস্ত করে এল। এদিকে মুন্সীগঞ্জে রটে গেল জীবনবাব মুন্সীগঞ্জ চলে গেছেন, এবং তার ফল হল, ক্যাশাকাল স্কুল প্রায় উঠে ৰাওয়ার ৰোগাড়—ছেলেরা স্থূলে আদা বন্ধ করতে করলো। ছাত্র এবং অভিভাবকদের মধ্যে জীবনের প্রভাব, তার শ্রতি বিশ্বাস কতথানি, তা দেখা গেল। আমর। মুদ্দীগঞ্জে এসে ষ্থন এই অবস্থা দেখলুম,—তথন জীবন উন্মাদের মতন বাড়ী বাড়ী ছুটোছুটি করতে লাগলো। তথন চৌরীচৌরার মামলায় ১৭২ জনেয় 👣 বি প্রকাষ করেছে—মহাম্মা গান্ধীকেও সরকার গ্রেপ্তার করেছে এবং ৬ বছর জেল দিয়েছে—আন্দোলনের ভাটার মুখে সরকার নির্ভয়ে তাঁর উপর চরম আঘাত হানার বন্দোবস্ত করেছিল।

জীবন চোরীচোরার আসামী ১৭২ জন কুষকের কাঁসির স্থক্ত্রের বিক্লছে এক বিরাট প্রতিবাদ-সভা আহ্বান করলে। প্রকাশু সভা হল, আমি উলোধন সঙ্গীত গাইলুম "দেশ দেশ নন্দিত করি মজিত তব ভেরী—আসিস যত বীরবৃন্দ" ইত্যাদি। সভাপতি বোধ হয় শৈলেশ মিত্রের বাবা সিনিয়র উকীল জ্ঞান মিত্র। জীবনের বস্থুতার প্রমন এক নতুন উৎসাই উল্কেজনা স্থাই হল বে আবার ভাশান্তাল স্থুল জনজ্জনাই হয়ে উঠলো।

থবচ সন্থ্যানের অন্থবিধা বরাবরই ছিল। বতীন দন্ত, গরেশ সেন প্রভৃতি মাটার মুশাররা জেলে গিয়ে জাঁতার গম পোবা শিখে এসেছিলেন—২খানা জাঁতা কেনা হল, এবং টিচারদের ডিউটি হল এক খণ্টা করে গম পেষা। **আনেকের বাড়ী খেকেই** গম আসতো, এবং আফরা চার প্রসা সের হারে গম <mark>পিষে</mark> দিতুম।

প্রাইন্ধ দেওয়ার সমর আসাছ টাকার দরকার—জগন্ধাত্রী থোলার মেবারপাতন অভিনয় হল, কিছু টাকা উঠলো। আমি গানের স্বর গাঠিরে দিলুম। আমাদের পাড়ার, টালার, একবার মেবারপাতন প্লে করেছিল পাড়ার দল। বিখ্যাত নাট্যদিরা ও সুরশিরী রাধাচরণ ভট্টাচার্য্য—করালীর পিসভুতো ভাই, টালার লোক! তিনি বৃত্যশির এবং সর্বপ্রকারের যন্ত্রসদ্ধীতেও ছিলেন ওস্তান। তিনি গানের স্বর বস্ত করে দিয়েছিলেন,—এবং আমি শুনে শুনে মেরে দিয়েছিলেম। জগন্ধাত্রী নাট্য সমাজের প্রেসিডেণ্ট ছিলেন সাবণ্ডিভিদ্যাল অফিসার প্র্রোলিথিত ফ্লী মুখাজি। চাকার ম্যান্ডিটেটের কাছে কেউ আবেদন করেছিল প্লে বন্ধ করার জন্তো—সাম্প্রদারিক বিরোধ্য সন্তাবনার অজুহাতে ম্যাজিট্রেট বন্ধ করার আদেশও জারি করেছিলেন,—কিন্তু ফ্লী বাবু নিজে লিখে সে আদেশ বাভিল করিয়ে নিজে সারাক্ষণ বঙ্গে থেক প্রেয়েছিলেন।

এইখানে একটা মনোবিজ্ঞানের প্যাচের কথা বলে নিই। বারা কোন আদর্শ নিয়ে খাটে, কর্মপদ্ম সঠিক হোক বা না হোক, তারা নিজেরা কবে খাটে বলেই মনে করে, কাজের কাজ অবগুই কিছু হচ্ছে। আমাদের অবস্থাও ছিল কতকটা ঐ রকমের। সারাদিন ভূতের মৃতন ৭েটে বার লাইত্রেরীর গরাদেবিহীন জানালা টপকে ঢুকে লম্বা টেবিলের ওপর লম্বা হরে থানিক ঘূমিরে নেওরা, এই হয়ে দাঁড়িরেছিল প্রাত্যহিক ঘটনা। পঞ্চারের এক কারম্ব



বৃদ্ধ থাকতেন বাব লাইত্রেরীর রাত্রের পাহারা, তাতেই আমাদের এই স্থবোগ হয়েছিল।

খিষেটার শেষ করে বেরোজে রাভ তিনটে বাজলো—পরদিন পাইকপাড়া (আবহুলাপুর) যাওয়ার প্রোগ্রাম আছে, মিটিং করতে হবে—শেব রাজ্টুকু না ঘ্মিয়ে করেকজনে হাঁটা দিলুম—মাইল পাঁচেক হেঁটে সকালেই সেথানে পৌছে গেলুম। '২২ সালেও কংগ্রেসের মেম্বার করা কঠিন হয়নি, কিন্তু '২৩ সালে সেটা কঠিনই হয়ে উঠেছিল, বিশেষত ঐ ক্ষেক্ত প্রধানত চাণীদের বাস, তারা প্রেফ কংগ্রেসে আসতে চার না। স্থানীয় কর্মারা হঙ্কাশ হয়ে পড়েছে।

বিকালে আবহুলাগুবের মাঠে সভা হল, আমি প্রধান ব্যক্তা—
"কলকাতার বস্তা" ! এক মোলবী সাহে ংকে করা হল সভাপতি আর
পাইকপাড়ার (পার্য বর্তী গ্রাম) লাশকাল স্কুলের কর্মারা কংগ্রেসের
রিদা বই নিয়ে সভার মগ্যে ছড়িয়ে থাকলেন। আমি বজুতা
দিলুম, প্রায় কমিউনিজম—"কংগ্রেসে তর্বাবুদের ভিড়, তারাই কর্তা,
স্থতরাং কংগ্রেস তর্বতাদের স্বার্থ সাধনের কল হয়ে উঠছে, আর যদি
স্বরাজ হয়ই, ভাহলে সেটা হবে বার্দের স্বরাজ—ভাতে ক্রমকদের
স্মর্থকিকা হবে না, কারণ ক্রমকদের স্বার্থ আর বার্দের স্বার্থ এক নয়।
স্থতরাং ক্রমকদের দলে দলে কংগ্রেসে প্রেবেশ করা দরকার,—তারাই
কেশের সংখ্যাগরিষ্ঠ ক্রোটা, তারা যদি কংগ্রেসের মধ্যেও সংখ্যাগরিষ্ঠ দল
হয়, ভাহলে তাদের স্বার্থ নাই হওয়ার ভয় থাক্বেন না।"

মৌলবী সাহেৰ বৰন আমাকে সাধুবাদ দিয়ে বভূতা করছেন, ভাৰন ওদিকে ১০ আয়গার কংগ্রেসের সদত্য করে রসিদ কাটা চলছে। সভাতেই বেশ কিছু সদত্য সংগৃহীত হল, এবং তার পর সেখানে কংগ্রেস ক্মিটাও হয়ে গেল।

ৰ দিকে কংগ্ৰেদের এডুকেশন বোর্ডের যে ২কম ভগ্নদশা,—ভাতে ভাশানাল স্কুলে ছেলেদের ভবিবাৎ নিরে আমরা চিভিত হলুম।

Education may wait, but Swaraj cannot—
এ লোগান স্থাজ্যের সঞ্চাবনা দূরে সরে যাওয়ার সঙ্গে সঙ্গে ভোঙা
হরে গেছে। স্থভরাং আমরা মনস্থির করে লেখালেখি করে সংদশী
মূগের National Council of Education-এর অন্তভুক্ত
হলুম, যাতে আন্ত পরীকার পর ছেলেরা Bengal Technical
Institute-এ সহজে ভর্তি হতে পারে। সেটা হয়েছিলও—আমাদের
করেকজন ছাত্র বেলল টেক্নিক্যালে ভর্তি হয়ে পাল করে চাকরী
বাকরী পেরেছিল।

ঢাকায় সরস্বতী লাইবেরীর এক ব্রাঞ্চ থোলা হুয়েছিল, আমাদের
দলের লোক তরুণ ব্রহ্মচারী কালা মহারাজ বোধ হয় চার্জেছিলেন।
একজন ভাল কমীর প্রবোজন হল গ্রামে গ্রামে গ্রে সরস্বতী লাইবেরীর
ক্রান্দিত জাতীয় সাহিত্য প্রচানের জন্তে—আমি কলকাতা থেকে
সারলা ব্যানার্জিকে নিজে গিয়ে লাগিয়ে দিলুম। প্রভাস মল্লিককেও
মূভীগঞ্জে নিয়ে পিয়েছিলুম, সে ছিল সকল কাজেই General
assistant—এয় সর্বজনপ্রিয় করিতকর্মা ছেলে। সেই সময়ে
সরস্বতী লাইবেরী নরেশদার (চৌধুরী) একখানা ছোট বই প্রকাশ
করেছিল—কোরিয়ার বিশ্লব আন্দোলন ও জাপানী বর্জারতার
বিবরণ—কোরিয়ার জাতীয়ভাবাদী নেতা সীয়য়ান রী চীন থেকে
আন্দোলনের নেতৃত্ব করছিলেন। নরেশ চৌধুরী যুগাল্বর দলের
লোক, আর তাঁর দাদা রমেশ চৌধুরী ছিলেন অমুশীলন দলের।

'১৭।'১৮ সালে প্রেসিডেন্সি জেলে ৪৪ ডিগ্রীতে বছকাল নির্জ্ঞন কারাবাসে থেকে জোয়ান বয়সেই নরেশদা'র চেহারা ও স্বাস্থ্যের অবস্থা হয়েছিল বৃদ্ধদের মতন। '২৫ সালে মেদিনীপুর জেলে তাঁর সঙ্গে ছিলুম। ভিনি আমাকে খ্ব প্রেহ করতেন। '২৮ সালে জেল থেকে বেরোবার পর কিছদিন রোগভোগ করে ভিনি মারা গেছেন।

যাই হোক,—২৩ সালের মাঝামাঝি স্বরাজ্যদলের ঘাঁটি চেরী প্রেদে বথন স্থভাব বাবু আড্ডা গাড়েন, তথন উপেনলা' তাঁর ওপর বেশ প্রভাব বিস্তার করেন, এবং দাদাদের মতিগতি দেথে স্থভাববাবৃকে করায়ন্ত করে গোপনে অন্থলীলন পার্টিকে নিয়ে কাজ করার প্ল্যান করেন। অন্থলীলন পার্টি চাইছিলো জনপ্রিয় স্থভাবচন্দ্রকে মুগাস্তর দলের প্রভাব থেকে ছিনিয়ে নিতে এবং তার জন্তে তাঁর একচ্ছত্র নেতৃত্ব মেনে নিতে,—যাতে কংগ্রেম এবং পাবলিক ফিল্ডে তাদের কাজের স্থবিধা হয়। স্থভাববাবৃর মনেও এফটা রোমাঞ্চকর মোহ দেখা দিয়েছিল, উপেনদা'র মতন মন্ত্রী এবং একদল অভিজ্ঞ বিশ্লবী ক্যানুগত্য পেলে তিনি হতে পারেন স্বরাক্ষ সংগ্রামের একটা deciding factor.

এই সময়ে দেশবদ্ধ বেকলেন পূর্ববঙ্গ সফরে—সঙ্গে দিলেন সভাবদ্রন্ত্র, কিরণশক্তর এবং উপেনদা'কে। জীবনও স্থানো বুঝে বেকাবীবাজারে (স্পারেন মজুমদারের সাহায়ে) বিক্রমপুর রাজনৈতিক সম্মেলনের বন্দোবস্ত করে তাঁদের নিমন্ত্রণ করলে। তাঁরা মুজীগঞ্জে এলেন। কমলা ঘাট থেকে মুজীগঞ্জ সহরের মাঝখানের খাল থেকে নোকায় সহরে আসাই স্থবিধা। দেশবদ্ধু আসছেন বলে লোকের বে উৎসাহ, ততোধিক উৎসাহ স্পভাববাবু আসছেন বলে। সবচেয়ে বেশী উৎসাহ মতি সিং-এর। বজ্ঞবোগিনীর চক্রভুষণ ওরজে গৌরার মতন দে হচ্ছে মুজীগঞ্জ কংগ্রেসের পাঁজরার হাড়—সনাতন ভলাি টিয়ার। তক্ষাৎ এই বে, মতি তার চোর কালাে—তার হাতের ছেলােটাও কালাে। কিন্তু পেরটা যত কালাে, ভেতরটা তত সাদা—আর সাদা ভার স্থল্পর দাতির পাটি, যাকে বলে milk white, সাদা মনের পরিচয় তার নির্মল হাসিতে, আর সে হাসির অস্তও নেই বিরামও ছেই—ছাকে ধরে মারলেও সে হাসে। বােধ হয় তার পেট কামড়ালেগু সে হাসে, আর সে হাসিতে যেন মুক্রা ঝরে।

নেতাদের নৌকা ঘাটে ভিড়তে না ভিড়তে উজ্জ্বল গৌরবর্ণ স্থভাবচন্দ্রকে দেখে তার আনন্দ আর উৎসাহ যেন লাফিয়ে উঠলো— সে এক লাকে নৌকোর উঠে পড়ে স্থভাববাবুর একখানা হাত ধরে টেনে জার পালে নিজের কুচকুচে কালো পাতথানা রেখে দেখে হেসে একেবারে লুটোপ্টি। সদাগন্তীর স্থভাববাবুর মুখেও হাসি সুটে উঠলো, স্থভাববাবুক আপনার করে নিলে।

মতি Matriculation Examination এর আগেই আন্দোলন যোগ দিয়েছিল, পরে আগু পাশ করে, এবং শেষ পর্যস্ত কলকান্তায় এসে কর্পোরেশনের স্থলের টিচার হয়েছিল।

ষাই হোক, কনফারেন্সের অধিবেশন চলার মধ্যেই রাজ্রে উপেনদা' প্রতুল ঘার্কে থবর দিরে আনিরে স্থভাষবাব্কে নিরে এক পুকুরের 'ঘাটলার' সাঁকোয় বসে কিছু গোপন পরামর্শ করলেন। ওদিকে কনফারেন্সে কাউলিল প্রবেশ নিয়ে নো-চেঞার প্রোচেঞ্চার গুঁতোগুডি চললো। নো-চেঞার নেডা ভট্টর প্রায়ুদ্ধ বোষ দলবল নিরে গিরেছিলেন। ডিনি জীবনকে লক্ষ্য করে সভার বললেন, যারা অহিংসার বিশ্বাস কলে না, ভাদের কংগ্রেসে থাঁকার কোন অধিকার নেই। তার জবাবে জীবন মহাত্মা গান্ধীর স্বহস্তলিখিত পত্র বার করে পড়ে শুনিরে প্রফুল্ল বাবুদের আহ্বান করলে স্বচক্ষে পত্রখানি দেখে ৰাওয়ার জন্তে। ওঁরা চুপ করে থাকলেন,—থেঁ।ভামুখ ভোঁতা হয়ে গেল। স্বরাজপার্টির সমর্থনে প্রস্তাব পাশ হয়ে গেল।

কাশাকাল স্কুলে বাংলা পাঠাপুস্তক ১ম শ্রেণীর জ্বন্তে নির্বাচিত হয়েচিল,—সাহিত্য ববীন্দ্রনাথের বিসঞ্জন,—কাব্য—নবীন সেনের বৈবতক, এবং প্রবন্ধ ৰঙ্কিমচন্দ্রের খর্মতত্ত্ব বা অমুশীলন। দেশপ্রেম, বীরত, সশস্ত্র সংগ্রাম, রাজনীতি, বস্তুভান্ত্রিক দৃষ্টিভঙ্গী, এই সব নিয়েই इक का:लांहना । कार्ड क्राप्यत कार्ड तम्र हिल এकि मुगलमान हिला, সে হঠাং একদিন আমাকে গোপনে নীরব ও নিরীহ প্রকৃতির। ভার লেখা এক প্রবন্ধ দেখালে—তার প্রতিপাত্ত, ধর্মান্তর্গান এবং ধর্মর প্রচলিত বচনগুলো, ঈশ্ব-আল্লার কুদ্রং-এদবই ব্রুক্কী,-সাধারণ সরল লোকদের ধোঁকা দিয়ে ঠকিয়ে খাওয়ার জন্মে নোল্লা পুরুতদের কৌশলমাত্র। প্রকাশু প্রবন্ধ, প্রত্যেকটি কথার সমর্থনে প্রচুর উদাহরণ ও যুক্তি-দেখে অংমার চক্ষু চড়কগাছ-আমার মাষ্টারীর সন্দেহাত্রীত সাফলা, আশাতীত ফল। এখন সে কোথায় আছে, কি করে জানিনা,—মনে পড়লে জানতে ইচ্ছে করে,—মনে মনে বৃষ্টি, ষেখানেই থাক,--সংকীৰ্ণতা, সাম্প্ৰদায়িকতা, নীচতা তাকে স্পৰ্ণ কবতে পারেনি। তেবে আনন্দ পাই।

বিক্রমপুরের মতন মাণিকগঞ্জেও সাবডিভিস্থাল কনফারেন্স

হল-সেধানকার নেতা ছিলেন নরেন বোস। বিক্রমপুর সাব-ডিভিদগ্রাল কংগ্রেস ছিল আমাদের হাতে। নিমন্ত্রিত হয়ে আমরা ক্ষেক্জনে গেলুম। সকলে ষ্টিমার থেকে মাণিকগঞ্জে নেমে একজন ভলাণ্টিথার গাইডের সঙ্গে ১২ মাইল হন্টন দিয়ে গেলুম ভেওভা গ্রামে—কিরণশঙ্কর রায়ের বাড়ী। এ ১২ মাইল পথের মধ্যে **একটা** बिরোবার জায়গা নেই, খাবার জলের পর্যন্ত বন্দোবস্ত নেই। কিরশবাবু কিছু চাঁদা নিশ্চয়ট দিয়েছিলেন, আন্দান্ত করতে পারি, কিছ তা ছাড়া তাঁর সংস্পর্ণের কোন প্রিচয়ই ছিল্লনা।

'১৩ সালের শেষে ইলেকশন এল,—ঢাকাগ্ন স্বাক্র্যদলের প্রার্থী হলেন কিবণশঙ্কর। ঢাকা ক্লেলা কংগ্রেস কমিটি ভখন **অনুশীলন** পার্টির হাতে। প্রভুলবাবুর ভগিনীপতি উকীল মনোরঞ্জন ব্যানার্ভির সঙ্গে কিরণশঙ্কর ব্যবস্থা করলেন, তাঁগাই নির্ব্বাচনী প্রচার করবেন, একং সারা জেলার ভোটগ্রহণ কেন্দ্রে একেণ্ট পাঠাবেন,—তাঁদের কর্মী আছে সর্বত্র। বলা বাছল্য,--নির্বাচনের ব্যয়ের একটা মোটা অংশ এই প্রচার-এজেন্সীর নামে তাঁরা পেলেন। জীবন কলকাভার তাঁকে আগেট নিশ্চিত্ত করে দিয়েছিল, আমাদের কেন্দ্রগুলো স্থায়। মনোরঞ্জন বাবুর কোন লোকই আমাদের সঙ্গে যোগাযোগ না করার আমরা একটু চিস্তিত হয়েছিলাম। শেষে ইলেকশনের আগের দিন আমরা চারিদিকে ভোটগ্রহণ কেন্দ্রে ছড়িরে পড়লুম,—কারণ স্বরাজ্যদক্রের সাফল্য সম্বন্ধে আমাদের, অবারারীদের, সবচেরে বেশী গরন্ধ-কারণ যুগান্তর দলের হাতেই। স্বরাজ্যপার্টির সাংগঠনিক কাজের দারিও ছিল। আমি গিয়েছিলুম বোলঘরে। হাই ছুলের হেডমান্তার ছিলেন

উজ্জল দিবসের উজ্জল ঢিন্তা



পরিছার ঝক্ঝকে আকাশ, ম্লণালী-মেছ কাশমূলের নাচন, আর শিউলির গব্ধে উৎসবের সাড়া জেগেছে দিকে। আকাপে-বাভাসে এক খুৰিয় আমেজ আছে জড়িরে। এই থক্মকে পরিবেশে নিজেকে উজ্জ্বল করে তোলবার ইচ্ছে সকলেবই সেজন্তে আপনার চাই বোরোলীন ফেস ক্রীমের মত এক অতুলনীয় উপকরণাবোরোলীনের যত্নে নিব্দেকে উজ্জল করে তুলুন। স্থবভিত বোরোলীনের মিষ্টি গঙ্কে আপনার মন খুলিতে ভরে উঠবে।





একজন দরদী, তাঁর বাড়ীতে হাত্রে থাকলুম incoguito, সকালে পোলিং বৃথে গিয়ে বসলুম, লোকজনের সাড়াশন্দ নেই। বেলা হওয়ার সঙ্গে ২।১ জন করে লোক আসতে সুরু করলো, দেখলুম একটু কথা কয়ে, সকলেই স্বাজ্যদলের ভক্ত। তুপুর বেলা মনোরঞ্জন বাবু একজন ছোকরা নিয়ে এলেন, আমি জিজ্ঞাসা কয়তে কললেন, এই য়ে, এ-ই থাকবে এথানে।

ইজেকশন হয়ে গেল, কিবণশন্ধরই নির্বাচিত হলেন। বিক্লমে কে গাঁড়িরেছিল, মনে নেই, বোধ হয় ভাগাকুলের জমিদাবদের কেউ। বিক্রমপুর থেকে বি-পি-সি-সির ইলেকশনে গাঁড়িরে আমিও তথন কি-পি-সি-সির মেহার হয়েছি।

ইতিমধাে '২৩ সালের সেপ্টেখরে দিল্লী কংগ্রেসের বিশেষ আধিবেশন হরে গেছে। নাে চেগ্র প্রো-চেগ্র নিয়ে কংগ্রেস প্রায় বিশতিত হওবার যােগাড় হয়েছিল বলে' একদল সেন্টার গুণ কপেও গজিয়ে উঠেছিল, বাংলায় তার একজন পাণ্ডা ছিলেন বার্ত্তার আসহযারী প্রোফেসর অনিলবরণ রায়। একদিকে গান্ধীভক্তি, আর একদিকে যুগান্তার দলের দাদাদের প্রো-চেগ্র কর্মকাণ্ড, এই দোটানার পড়ে মনোরগুন 'দা'র (গুপ্ত) অবস্থাও হয়েছিল কতকটা মধ্যপদ্ধী। অনিলবরণ বাহের সঙ্গে তাঁর থাতির এবং বনিষ্ঠতাও হুলেছিল। সরস্বতী প্রেস থেকে মনোরগুনদা' এক সাংখাতিক কাগজ বাদ্ধ করেছিলেন "সার্থি" এবং অনিলবরণকে সম্পাদক করে আরাে নিকট বস্তু করে' নিয়েছিলেন।

ষাই ভোক, এই সেন্টার গ্পেব চেষ্টার দিরীতে আপোষ
মীমাংসার উদ্দেশ্তে কংগ্রেসের বিশেব অধিবেশন হয়—মৌপ্রনা মহম্মদ
আলী হয়েছিলেন প্রেসিডেট। বাংলা থেকে দেশবন্ধ্ তাঁর ডে সিগেটের
দলবল নিয়ে দিরী চললেন, মুলীগঞ্জ থেকে আমরাও কংকেজন
দিরী গোলুম—যতীন দল্ত, পরেশ সেন প্রভৃতি—জীবন কলকাতা
থেকেই গিরেছিল।

বৈধ গণতান্ত্ৰিক হাজনীতির রাজা ছিলেন দেশবন্ধ—বেপরোয়া জাদবেল। তথন ডেলিগেটের নির্বাচনত হত না, প্রাদেশিক সম্পাদক ডেলিগেটের চালা নিয়ে certificate ও card issue করলেই যত খুনী ডেলিগেট হতে পারতো, সংখ্যা বাঁধা ছিল না।

দেশবন্ধুব একটা বৈধ গণতান্ত্রিক কারণা দেখা গল অপূর্ব !
সারা ভারতের নো-চেঞ্চার ডেলিগেটদের চেয়ে বেশী সংখ্যক প্রো-চেঞ্চার
ডেলিগেট জমা করে নো-চঞ্জারদের Out vote করে দেওরার অবস্থা
করতে না পারলে তারা আপোষ মীমাংসায় বাগ মানবে না, স্থতরাং
অক্তি ডেলিগেট নিয়ে বেতে হবে । বাংলায় লোকের অভাব নেই,
কিছ দিল্লী যাওয়া-আসার খ্যচ জোগাতে জিভ বেরিরে যাবে।

সুতরাং করেজজন লোক পাঠানো হল কাশীতে, এবং প্রায় সমগ্র বাঙ্গালীটোলাটাকেই খদ্দরে সাজিয়ে তুলে নিফে বাওয়া হল দিল্লীতে, বেঙ্গল ডেলিগেট ! কংগ্রেসে দেশবন্ধু বললেন, যদি আপনারা চান, আমি ভোটাভূটীতে রাজি আছি, কিছু আমি চাই না, কংগ্রেস ভেঙ্গে ছুখানা হয়ে বাক। আমি মিলিত, সংহতি কংগ্রেসই চাই। ইত্যাদি— ডেলিগেটের বছর দেখে out vote ছওরার ভরেই নো-চেঞ্চাররা বাগ মানলেন। ঠিক হল, গুদলই কাগ্রেদের ভিতরে থেকে গুটো বিভাগের মতন কাজ করবে, একদল প্রধানত কাউন্সিলের কাঞ্চ নিয়ে থাকবে, আর একদল গঠনমূলক কাজ নিয়েই থাকবে।

জীবন দিল্লী থেকে বস্ত্রে যাওয়া স্থির করে রওনা হয়েছিল।
আমরা ফিরে ওলুম। কিন্তু ইতিমধ্যেই ১৭ জন নেতার নামে
রেগুলেশন থ্রির ওরারেট বেরুলো, আর অনেকেই ফেরবার সঙ্গে সঙ্গেই
গ্রেপ্তার হয়ে গেলেন। তাঁরা হচ্ছেন—সমরদা' (চ্যাটার্জি),
উপেনদা', যাহুদা', মনোরঞ্জনদা' (গুপ্ত), ভৃপভিদা', ভৃপেত্রকুমার
দন্ত, প্রো: জ্যোতিষ ঘোর (মাষ্টার মশায়), মনোমোচন ভট্টাচার্গ্য,
রবীক্রমোহন সেন, রমেশ চৌধুরী, অমৃত সরকার, সতীশ শকড়ানী
এবং বোধ হয় প্রভাদ দে। জীবন পথে থবর পেয়ে কলকাতার ফিরে
এসে কিছুদিন গা ঢাকা দেওয়ার পর গ্রেপ্তার হল, হঠাৎ একদিন
রাস্তার মধ্যে। পূর্ণ দাশ এবং প্রতুল গাঙ্গুলীও গা ঢাকা দিয়েছিলেন,
এব পরে গ্রেপ্তার হয়েছিলেন।

কাশু দেখে আমি স্কুলে নোটিশ দিলুম,—ভিসেম্বরের পর আরি আর থাকবো না, কলকাভায় ফিরে যাবো। ভিসেম্বরে হল কোকনদ কংগ্রেস সাধারণ অধিবেশন। আমি কোকনদ কংগ্রেস থেকে ক্বিরে কলকাভায় চলে এলুম। সারদাও পরে চলে এল,—প্রভাস মুজীগঞ্জেই থেকে গেল, আমার ভাগ্নেও।

২ দালের জানুয়ারীতে চঠাং একদিন গোপী শা টেগার্ট জমে আর্লেষ্ট ডে নামক এক সাহেবকে গুলী করে হত্যা করে পালাবার পথে ধরা পড়ে গোল। সঙ্গে সঙ্গে পুলিশ আর পাঁচজন নেডাকে গ্রেপ্তার কর ল বেগুলেশন থিতে। তাঁরা হত্তন, অতুলদা' (যোর), সতীশদা' (চক্রবর্তী থুলনা), কিরণদা' (মুখার্জি), গোপেনদা' (পাবনা) এক জরুণ গুহু। সরস্বতী প্রেস ও লাইবেরী একটা বিবাট থাকা থেলো।

কংগ্রেসকে নিপ্নবের পথে টেনে জানার প্রান স্বরাজ্য পার্টি সংগঠনে আপাততঃ পর্ববসিত হয়েছিল,—সেই স্বরাজ্য পার্টিও একটা ধারা থেলে। স্বরাজ্য পার্টির ইংরাজী দৈনিক ফরোরার্ড প্রকাশ করার ব্যবস্থা হয়েছিল ২৩ সালের সেপ্টেস্বরের আগো। উপেনলা থাকবেন সম্পালকীয় বোর্ডে,—মনোমোহন ভটাচার্বের স্মানেজারির আশা ছিল, জিনি খুব থাটছিলেন। বথন প্রথম দাদারা ধরা পজ্লেন, তথন লালবাজারে (বা ইলিসিয়ম্বরেই) মনোমোহন বাবুকে দেখে রবি সেন তাঁর কাছে চুপি চুপি থবর বলছিলেন, বাতে ফরোয়ার্ডের প্রথম সংখ্যার থবরগুলো বেরোয়। মনোমোহন বাবু চুপ করে শুনছিলেন। একন সমর, হরি, হরি! ববিবাবুর সঙ্গে মনোমোহন বাবুকেও কালো গাড়ীতে বোঝাই করলো। তথন এক চোট হাসাহাসি লেগে গেল.—ফন মরণোল্লাস।

যেন বিপ্লব প্রচেষ্টার দিতীয় পর্ব শেব হল। ছরিলা (চক্রবর্তী), স্থরেনদা (ঘোষ), নম্নেশদা প্রভৃতি যারা থাকলেন, তাঁরা আবার ভাকাঘর গোছাতে স্থক করলেন। আমরাও থাকলুম পিছনে।

ক্রেম্পা

"হিন্দুধর্ম ব্ঝিতে হইলে বেদ ও দর্শন পড়িতে হইবে এবং সমুদয় ভারতের প্রধান প্রধান ধর্মাচার্য এবং তাঁহাদের শিষ্যগণের উপদেশাবলী —কামী বিবেকানন্দ



অভাাত্র্য কাপড় কাল পাউডার সাফে কাল জানা-কাপড়ের অপূর্ব শুত্রতা দেখলে আপনি অবাক হয়ে যাবেন। এক প্যাকেট ব্যবহার করলে আপনাকে মানতেই हर्र (य ...

আপনি কখনও কাচেননি জামাকাণ্ড এত ঝকঝকে সামা. এত ফুল্বর উল্ফল করে ! সার্ট, চাম্বর, শাড়ী, তোগলে — সবকিছু কাচার জম্মেই এটি আদর্শ !

আপনি কখনও দেখেননি এত ফেল — ঠাণ্ডা বা গ্রম

ভালে, জেণার পক্ষে প্রতিকূল ভালে, সঙ্গে সঙ্গে আপনি পাবেন (क्ष्प्य न क ममूज !

আপুনি কখনও জানতেন না যে এত সহলে কাপড় কারা হায় ! বেণী পরিশ্রম নেই এতে ! সাফে জামাকাপড় কাচা মানে ৩টি সহজ এজিলা: ভেজানো, চেপা এবং ধাওয়া মানেই আপনার জামাকাপড় কাচা হয়ে গেল।

আপনি কখনও পাননি আপনার প্রদার মূল্য এত চমৎ-কারভাবে দিরে। একবার সার্ফ বাবহার করলেই আপনি এ কথা মেনে নেবেন! সার্ক সব জানাকাপড় কাচার পক্ষেই আদর্শ!

जाभाव विद्यार भवध्य कावरमध्ये प्रार्थिक जाजाकाशङ् अर्जुर्व ज्ञामा कद्ध काठा याद्र !

কল্য†ণী অপরাজিতা ঘোষ

ব থানেক ধরে মানসক্যা কল্যাণীতে আসবার আমন্ত্রণ আসহিল। সংয় আর হয়ে উঠছিল না, তাই এই বাব শিগ্পির, এই সামনের ছুটিতে বাব বলে ওকে কিছুটা শাস্ত ক্ষান্তিলাম আমার দিক থোক। প্রত্যেক চিঠিতেই 'কবে আসংহা' এই কথাটুকু বিশেষ করে সেখা থাকত।

এবার বেলাদির একথানা থ্ব কড়া চিঠি এল। থ্ব অভিমান করে লিথেছে। বেশ ব্যুতে পারলাম, বেলাদিকে চিঠি দিয়ে আর শাস্ত করা বাবে না। বেতেই হবে কল্যাণীতে। মাস খানেকের ছটি নিয়ে তুর্গা নাম জপতে জপতে টেলে চেপে বসলাম।

ট্রেণ একটার পর একটা ষ্টেশন পেরিয়ে বেতে লাগল—কোলটার থামে, কোনটার থামে না। বেশীরভাগই থামে না। এসব দিকে বিশেব ধেরালও ছিল না। কেবল মনের মধ্যে করেকটা আত্মজিক্তাসা হবে ফিরে আসা বাওয়া করছিল। কেনন জারগা কল্যানী, শুনেছি ত খুব ভালো জারগা, যিঞ্জি সভবের নোংরামি এখানে নেই, পথ চলতে পেলে ট্রাফিক পুলিশের দরকার হয় না, ডাই,বিনের গক্ষে জন্মপ্রাশনের ভাত উঠে জাসে মা।

ইয়া, রাস্তাটা ত বেলাদি চিঠিতে ভালোকরে বৃথিয়ে দিংছিল।
তব্ও চিঠিটা এনেছি সঙ্গে করে, কি জানি আবার যদি বাড়ী
চিনতে না পেরে ফিরে বেতে হয়! বেল'দির চেলারাটা ভালা
ভালা মনে আসছিল, কিজানি এখন কেমন দেখতে হয়েছে।
দশ বছরের পুরোণো চেলারার সঙ্গে মিল আছে কি না। আমাকে

চিনতে পাংবে ত বেলাদি? দীর্ঘ দশ বছর পরে দেখা ছবে— সোজ। কথা? এইসব এলোমেলো কথা মনের মধ্যে উঁকি ব্ঁকি মার্ভিল।

হঠাৎ মনে হ'ল কভন্ব চলে এনেছি। পাশের ভদ্রনাককে জিজেস করে জানলাম, এই সামনের ষ্টেশনটা কাঁচড়াপাড়া। ও: ভাইতো, ভাগিসে মনে হল, নইলে কোথায় চলে বেভাম! ক্লাস্ত গাড়ীখানা একবার দম নেবার জক্ত থামল। নেমে পড়লাম। চাবিদিকে ভাকিয়ে দেখলাম, বেশ বড় ষ্টেশন, লোক গিস্গিস্করছে। বেলাদি লিখেছিল কলাণী ষ্টেশনে না নেমে কাঁচড়াপাড়া হয়ে এলে নাকি অনেক শ্বিধে হয়। কি জানি, হয় বেখি হয়। পকেটে হাত দিয়ে দেখলাম, বেলাদিব সেই ডিরেক্সন দেওয়া চিঠিখানা আছে, কি না। ষ্টেশনের বাইরে এলে থানিকটা হেঁটে গিয়ে বাস ধবতে হয়। হাঁটতে ইটিতে রাস্তার তৃপাশ ভাকিয়ে দেওত হাগলাম। মনটা বিষয়ে উঠল। নোরো-বস্তী বললেও অভ্যুক্তি হয় না। নোরো বাস্তা আর তৃপাশে সারি দোকান — মুদির দোকান থেকে বইএর দোকান পর্যান্ত। পালে একটা বাজার।

কণ্ডান্টার 'বাগমোড়' বলে একটা জারগায় নামিয়ে দিল। চৌবাস্তার মোড়। সোজা দক্ষিণ দিকে যে রাস্তারী চলে গিয়েছে, ওটা নাকি কলকাত'ব পথ। মোড়ের পুলিশকে জিজেল করে জানলাম, উত্তব দিকে গেতে হবে। আরো জানলাম, কলাগিব বাস নাকি এখুনি আগবে। প্রায় আধঘন্টা বৈশাখ মাসের ছপুর ছ'টোর সময়ে ছাভিফাটা রোদে অপেক্ষা কংতে লাগলাম বাসের জ্ব্পত। বাস আর এল না। সামনে একটা রিক্ষা পেয়ে উঠে বসলাম। বিক্ষা চলতে লাগল বেশাদির বাড়ীর দিকে।

- —কভদুৰ, জিজ্ঞেদ করলাম।
- এই মাইলথানেক বাবু, পশ্চিমা दिক্সাওয়ালা জবাব দিল।

ত্পাশে বড় বড় গাছের ছায়ায় ঢাকা পিচঢ়ালা পথ সোলা চলে গিয়েছে। মাঝে মাঝে ত্'একটা বাড়ীও চোঝে প্রলা ওকে ঠিক বাড়ী বলা যায় না; জীপ লোনা লাগা, ইট থারে যাওয়া দেওয়াল সব! আপ্রচাড়া ভাবে এখানে সেখানে দাঁড়িরে রয়েছে। বেল বোঝা যায়, এগুলো এককালে সব বড় বড় বাড়ীছিল। আজ সে সব বিছুই নেই। বাড়ীর লোককলোও সব কোথায় চলে গিয়েছে ভানি না, বংশে কেউ আছে কিনা ভাও বলতে পারব না। মনে হচ্ছিল ছুটে গিয়ে দেওয়ালগুলোকে জিজেসকরে আদি,— বলতে পার এয়া সব কোথায় ? খাদের দেথছো ভোমাদেরই পালে পালে গ্রে বেড়াতে, হয়ত ভোমাদেরই গায়ে ঠেল গিয়ে ভান কত গল্প গুজব করেছে প্রিয়জনদের সলে। ভোমবা ত সবই জান, বলতে পার এয়া সব এখন কোথায়? ছায়রে, ওয়া য় কথা বলতে পারে না, নির্বাক। শুরু চুল করে দাঁডিয়ে দেগছে এই আশ্রেষ্ঠ আশ্রেষ্ঠাকে।

চোথে পড়ল কবি ঈশর হুপ্তের গ্রন্থাগাব। শুনলাম ৬⁴ পাশেই নাকি ঈশর শুপ্তের বাড়ী ছিল। আজও সে মিলিয়ে ^{যায়} নি কালের কপোলতলে, ভগ্নপ্রায় অবস্থায় তার অভিত্যকে শী^{কার} করবার জন্ম দাঁড়িয়ে রয়েছে।

- আর কত্ত্ব, জিছেনে করলাম।
- এই ৰে এসে গেছি বাবু।

সভিত এখন মনে হচ্ছে যেন এসে গেছি। বিশ্বাটা একটা গোল ত পার্ককে ডাইনে রেথে এগোছে। মুখ বাড়িয়ে দেখলাম, পার্কটা বেশ রছ এবং ফুলরও। দেখলাম পার্কের এক কোলে পাঁচটা বলগাছ গা 'ঘে বাঘে বি করে দাঁড়িয়ে আছে। পঞ্চবটার খানিকটা ভাব এনে দিছিল। তাদের ভলায় আধাে আলােয় আথাে আগােরে একটি পাথবের গানগভার মৃত্তি দেখলাম—বেশ বড়। মনে হ'ল বৃদ্ধদেবের মৃত্তি। বাস্তবিকই মৃতিটি ভাবি ফুলর। আজও চােথের সামনে ভেসে ওঠে মৃত্তিটি যেমন দেখেছিলাম ঠিক তেমনি।

রিক্সা চলেছে বেশ মন্তর গতিতে। দূরে দেখাযাচেছ হলদে বংএব ছোট ছোট বাড়ী সার সাব ভাবে দীড়িয়ে রয়েছে।

বিক্ষাভয়ালাকে জিজেন কবলাম, ঐ যে বাড়ীগুলো দেখা মাছে, ওগুলো কিগো ?

বলল, ঐ ত বাবু কল্যাণী। আমরা এদে গেছি।

ছপুরের সমস্ত ক্লান্তি থেন কোন যাক্সপর্শে মুছে গেল। আনস্দে ভ'বে উঠল মনটা। যাকৃ, তাহলে বেলাদির অভিমান ভালাতে পারলাম।

বিক্সা হঠাৎ থেমে গেল। জিজেন করলাম ওকে, থামলে কেন? গলায় জড়ানো গামছাটা দিয়ে মুখ মুছতে মুছতে বলল বিক্সাওয়ালা, নামুন, এনে গেছি কল্যাণী।

হা তাইত। বাড়ী ঘর সব স্পষ্ট দেখা মাচ্ছে।

ওকে বলগাম, আমাকে বাড়ী নিয়ে চল। কিছু চিনি না, ভানি না, কোখায় যাব ?

- বাবু আবে যাবে নারিকা। এই পর্যুক্তই আপনার সঙ্গে ভাগুঠিক হয়েছে।
- আৰক্ষা বেশ ত, আমি না হয় তোমাকে বেশী ভাড়া দিছিছ । নিয়ে চল।
 - —না বাবু আর থেতে পারবো না।
 - —কেন ?

কিছুতেই বলণ না ও, কেন আর নিয়ে থেতে পারবে না আমাকে। কতবার জিজেন কবলাম। ঘাড়টা নেড়ে একটু গাল শুধ।

ওর মনের কথা ওর কাছেই থাক্। আর ঘাঁটালাম না। ^{ব্যন} কল্যাণীতে আসতে পেরেছি তথন নিশ্চয়ই বা**ড়ী চিনে নিতে** পাবব। কট একট হবে এই আগাব কি।

চারিদিকে একবার তাকিয়ে দেখলান। বাঁদিকে চোগে পড়ল আধুনিক টাইলের বিরাট গোলাপী বং এর দোতালা বাড়ী। পরে জনছিলাম, ঐ বাড়ীটাই নাকি কল্যাপীর এডমিনিসটেটিভ বিভিং। আব ডান দিকে যতদ্র চোগ বায় কেবল বাড়ী আর বাড়ী—একই রকমের দেখতে, একই বং এর। ত একটা বড় দোতালা বাড়ীও টোগে পড়ল। চোথে পড়ল কাছেই একটা বড় পার্ক। চারিপাশের রাস্তাগুলোর মাঝে গাঁড়িয়ে আছে। পার্কটার ঠিক মাঝখানে উ চু একটা বিরাট ট্যাল। আর ভার চারপাশ দিয়ে গজিয়ে উঠেছে ফলব বাগান—ফুলে গাছ ভিড়ি। এত ফুলর পার্ক খুব কমই দেখেছি। এখানে ফুল ফোটে, আবার আপনিই ভাইরে বায়, কেউ ধনেব শার্শ করে না। প্রকৃতিভৃত্বিতাই বটে ওবা। ওথানে

থাৰতে প্রায়ই বেড়াতে আসতাম এই পার্কে বিকেশের দিকে। বসতাম, গল্ল করতাম, খুঁটিয়ে খুঁটিয়ে প্রকৃতির কাক্ষণার্য দেখভাম। এই পার্কের নাম সেউুলে পার্ক। এথানকার মধ্যে সব থেকে বড়, সব থেকে ভালো পার্ক। এ যে পার্কের মাঝখানে ট্যাক্ষটা দেখা বাচ্ছে, ভনেছিলাম ওর মধ্যে জল সঞ্চিত থাকে, পরে ছড়িয়ে দেল কল্যাণী উপনগরীতে। তথু এ একটাই ট্যাক্ষ গোটা কল্যাণীকে জল যোগাচ্ছে না, এইরকম আরও ট্যাক্ষ আছে।

ঠ', বিশ্বাওয়ালা আমাকে হদিস দিয়েছিল নেহেক্সপার্ক **বাবার।**ঐ সেন্টাল পার্কের সামনে দিয়ে যে বাস্তাটা চলে গিয়েছে, ঐ রা**জা**ধরে বরাবর গেলেই নাকি নেহেক্সপার্ক চোণে প্তবে।

কিন্তু বাস্তা ত আর একটা নয়, গোটা ছয়েক হবে। সব বাস্তাব মোড়ে গিরে দেখি সবই ত সেটাল পার্কের সামনে। তাহলে? চুপচাপ দাঁড়িয়ে এদিক তদিক তাকাছি। কানে এল দ্র থেকে কে যেন বলছে—বাবু, ওধার না। ঐ রাক্তা দিয়ে বান। ঘুরে তাকিয়ে দেখি, সেই বিশ্বাভয়ালা। এডমিনিসফ্রেটিভ বিন্তি এব পাশে দাঁড়িয়ে আমাকে হাত দিয়ে দেখিয়ে দিছে আসল রাস্তাট!। অন্ত রাস্তায় চুকে পড়েছিলাম। ঠিক বুঝতে পারলাম না, আবার ঐ চড়া রোদে ইেটে ওর কাছে গেলাম।

এবার বৃষতে পারলাম। আবার ওকে অমুরোধ করলাম, বেশী প্রসাদেব, বাড়ী পৌছে দাও। এবারও ও একটু হাসল। ওর হাসি দেখেই বৃষতে পারলাম, ও বেতে চাইছে না। আজও বৃষতে পারি না, কেন ও গেল না এ সীমানাটুকুর বাইরে। কি

ইটিতে লাগলাম ওব নির্দেশ দেওয়া রাস্তা দিয়ে। ভারি সন্দর রাস্তাটা। ঐ অলস্ত রোদের মধ্যেও বেন কত স্কল্মর লাগছিল। তু'পাশ দিয়ে সার সার বাড়া চলে গেছে একরকমের, এক রংএয়। আবার রাস্তার তুপাশে লাইন করে গাছ লাগানো হয়েছে। মাঝারি গোছের গাছগুলো প্রত্যেকটা ইট দিয়ে বেরা গোল জায়গার মধ্যে। এটাও বেন কত স্কল্মব।

চলেছি ত চলেছিই, কোথায় নেছের পার্ক। জানভাম না যে, এ রাস্তা ববে সোজা গেলে কোনদিনও নেছের পার্কের দর্শন লাভ হবে না। ঐ বাস্তার ডান দিক দিয়ে একটা রাস্তা চলে গিয়েছে। ঐ রাস্তা দিয়ে গেলে ছটো বড় বড় বাড়ী চোথে পড়বে। তার সামনে দেখা যাবে একটা ছিম ছাম মাঝারি গোছের পার্ক। ওরই নাম নেছের পার্ক। আর বাড়ী ছটো নেছের বিভিং। কংগেস উৎসবে নাকি ঐ বাড়ী ছটোর একটাতে নেছের আর একটাতে বিজয়সন্মী পণ্ডিত ছিলেন।

কোন্দিকে গেলে নেহের পাক পাত্রা বাবে আমি ত তালাভাম না, তাই সোজা চলে গিরেছিলাম। এফটা মোড পেলাম, চারটে রাস্তা এসে মিলেছে চাবদিক থেকে। মোড়ের একপাশে দাঁড়ির আছে বিরাট কমপাউতে থেরা কল্যানীর হাই ইছুল। বেলাদির কাছে পরে তনেছিলাম, তথানে ছেলেমেরে একসঙ্গে পড়ে। বেলাদি ঐ ইছুলেবই টিচার। কোন হৈ চৈ নেই, শাস্তা। আর একটা পাশে দাঁড়িরে আছে কল্যানীর ভাক্ষর। একটা বাড়ীকে সরকার ভাক্ষর কানিকাছন। যাবে মাবে আসভার থাম পাইকার্ড কিল্লেড্র

চিঠি ডাকে দিতে। দেখভাম পোষ্টমান্তার আব একটি পিয়ন নিয়ে. এথানকার কারবার। পোষ্টমান্তারই সব, তিনিই সব কাজ করেন। খাম-পোষ্টকার্ড, ডাকটিকিট বিক্রী করেন, আবার মনিজর্ডারের কাজও করেন। ভজলোককে দেখে ববাক্রনাথের 'পোষ্টমান্তার' গ্লাটা মনে পজে বেড। সেই গল্পের পোষ্টমান্তরই যেন কিবে এসেছেন এগানে।

ইত্বল আৰ ডাক্ছনের পাশ দিয়ে উত্তর মুখো যে বাস্তাটা চলে গিনেছে, সেই রাস্তা দিরে থানিকটা গিয়ে বাঁ দিকের রাস্তা দিয়ে সোজা গেলে দেখা থাবে একটা বেশ বড় বাড়ী। ঐ বাড়ীটা কল্যাণীর বাজার। এগন অল্ল বিস্তর সব জিনিসই পাওয়া থায় বাজারে। বছরখানেক আগেও নাকি পাওয়া যেত না তরি-তরকারি বাছ-মাসে। সরকার আধুনিক ক্চিসম্মত ভাবেই বাজারটা তৈরী ক্রেছেন।

বাদিকে না খুবে ঐ একচ্ছা, আমগাছের ছারার ঢাকা রাস্তা
দিয়ে নাক-বরাবর সোজা গেলে দেখা যাবে একটা বঢ় বিল । ঐ
বিলটাই নাকি এককালে হ্রদ বা লেক হবে । সেইজ্জাই বোধহর
ঐ বিলটার পাশ দিয়ে বে রাস্তাটা চলে গিয়েছে, ওর নাম—লেক
রোড । কয়েকদিন গিয়েছিলাম বেলাদির সঙ্গে আগামী লেকের
বাবে বেড়াতে ৷ বেড়াবার জারগা অবক্ত এখনও হয় নি, দেখে
এসেছিলাম তথু ৷

বাক্, কথায় কথায় অনেক কথা বলে ফেললান। ইস্কুনের মোড়ে এসে একটু সন্দেহ হ'ল মনে। অনেকদ্ব ত চলে এলাম সেটাল পার্ক থেকে। বিশ্বাবিয়ালা ত অতদ্ব আদতে বলে নি। কাকেই বা জিপ্তেস করব এখন? একটি লোকও ত দে ছি না। ডাক্ষরে চুকলাম, বদি কিছু উপায় হয় ভেবে। ভাবাই সার হ'ল। ডাক্ষর বন্ধ। এদিক ওদিক তাকাছি, কাউকেই ত দেখতে পাছি না। হঠাৎ দেখি, ডাক্ষরের পাশের খালি বাড়টা খেকে সন্ত যুম্ম ভাতা একটা লোক আমার কাছে এগিয়ে এল জিজ্ঞান্ত মুম্ম ভাতা একটা লোক আমার কাছে এগিয়ে এল জিজ্ঞান্ত মুম্ম ভাতা একটা লোক আমার কাছে এগিয়ে এল জিজ্ঞান্ত ব্যাবিয়া। দেখে বোধ হয় বুঝতে পেরেছে, আমি একজন নবাগত।

ভাকে বাড়ীর নম্বটা বললাম, ঠিক বৃষতে পারল না। নেহেক পাকের কথা বলতে অবভা দেখিয়ে দিল। কাছেই।

লোকটি জিজেস করল, কি শেপের বাড়ী।

বললাম, তা ভ জানি না। চিঠিতে নম্বরটা লেখা রুরেছে, এর বেশী আর একটুও জানি না। ঠেশন থেকে কল্যাণা আসবাব ডিরেকসান দেওয়া আছে। লিখেছে নেহেকস্পাকের পাশেই ওদের বাড়ী। আর ভ কিছু লেখেনি।

লোকটি নিজে থেকেই ওর পরিচয় দিল। এথানকার দারওয়ান সে। ওকে বেলাদির বাবা অবনীবাবুর নামটা বললাম। তাঁর চেছারার বর্ণনা দিলাম।

এবার ও ঠিক চিনতে পারল। বাস্তবিকই ভদ্রগোকের একটা বিশেষত আছে। চেহারার, গুণে, সব কিছুতেই। চেনে না এখানে টাকে এমন একজনও নেই। তথু এখানে কেন কলকাতার বখন ছিলেন, তখনও না চিনত এমন কেউ পাড়াতে ছিল না। অমায়িক ব্যবহার আব অত্যন্ত রসিক। পথকে আপন করতে তাঁর এক মিনিটও লাগে না। তাঁকে দেখে কেউ বুঝতে পারবে না বে, চার

আলাপ নেই তাই ভাবি। এখানকার চীফ ইঞ্জিনিয়ারও তাঁর বন্ধু আবাব এই অথ,াত দারওয়ানটাও তাঁর অত্যন্ত পরিচিত।

খারওয়ান আমাকে অবনীবাবুর বাড়ীর দরজায় পৌছিয়ে দিরে গেল। বেলাদির সেই মলিন হয়ে যাওয়া চিটিখানা খুলে মিলিয়ে নিলাম ঠিকানাটা। হাা, নম্বটা ত একেবারে অক্ষরে অক্ষরে মিলে যাছে, সামনেইত নেহেরু-পার্ক।

এক নজরে দেখে নিলাম সার সার ভাবে শাঁড়ানো বাড়ীগুলোকে।
প্রত্যেকটা বাড়ীর চারিপাশে খোলা খানিকটা করে জায়গা, সামনে
পাঁচিল দিয়ে, পাশে তারের বেড়া দিয়ে সীমানা ঠিক করে দেওরা
হয়েছে। সামনেই লোহার গেট, ভারপর গেটটা পেরিয়ে পাঁচ
কদম হেটট সিঁড়ি, ঘরে উঠবার। আর হু'পাশে খোলা জায়গায়
নানা রকমের ফুলের গাছ; অবল্ ফুলে ছেয়ে আছে। হুপুরে
সব রাস্ত, ঝিমিয়ে পড়েছে। শুধু ঐ ফুলগুলো নয়, গোটা
সহরটাও ঝিমুছে। একটু শব্দ নেই কোথাও, গুধু সামনের নেহেরু
পার্কের হাওয়া লাগা ঝাউ গাছের শন্ শন্ শব্দ খেকে খেকে

গেটের বাইরে দাঁভিয়ে ভাকলাম, বেলাদি—বেলাদি।

খুট করে দরজা থোলার একটা শব্দ হ'ল। একটি মেরে বেরিয়ে এল ঘর থেকে বছর কুড়ি বয়স হবে। জিজ্ঞেস করল জানাকে,—কাকে চাই।

বললাম, বেলাদি আছে, বেলাদি-

ভেতরে চলে গেল মেয়েটি। একটু পরে সেই মেয়েটি জাব একটি মেয়েকে সঙ্গে নিয়ে বেরিয়ে এল। এই মেয়েটিকে একটু বয়ক্ত বলে মনে হ'ল। চোথে চশমা, মুখে গাঞ্চীর্বের ছাপ।

ওদেবকে আবার বললাম, বেলাদি আছে? একটু ভেকে দিন ত ? বয়স্বা মেয়েটি উত্তর দিল,—আমার নামই বেলা ব্যানাজ্জি। আপনাকে ত ঠিক চিনতে পারলাম না। কোথা থেকে আসছেন আপনি ?

আমার চিনতে একটুও দেরী হ'ল না বেলাদিকে। কত বদলিয়ে গিয়েছে সেই দশ বছর আগের পরিচিতা মেয়েটি!

বেলাদি কিও আমাকে চিনতে পারল না। **আমার** মুখের দিকে তাকিয়ে রইল।

একটু হেদে বলগাম—কি, চিনতে পারছ না ?

মুথের কোন ভাবাস্তর হ'ল না বেলাদির।

এবার দেই চিঠিথানা এগিয়ে দিয়ে বললাম,—দেখত ?

চিঠিখানার দিকে একটুখানি তাকিরে একগাল হেসে বলে উঠল,—আরে তুমি স্বদেশ! এইরকম দেখতে হয়ে গোছ তা চিনতে পারি কি করে বল? রোদে গাঁড়িয়ে কেন? এস এস, বলে গোটটা খুলে আমাকে ভেতরে নিয়ে গেল।

বেলাদির মাকে প্রণাম করলাম। একগাল হেসে নানা কথার ভীড় জমালেন। বললেন একটু অভিমানের প্রবে, সেই দশ বছর আগো যে দেখা করে গেলে তারপর আর এলেও না, একটা থবরও নিলে না। আরো কত প্রশ্ন করতে লাগলেন। কোনটার জ্বাব দিলাম, কোনটার দিলাম না। অবনীবারু ছিলেন না তথন, সন্ধার পর তাঁর সঙ্গে দেখা হল। বেলাদির মারও শরীরে এবং মনে বার্দ্ধকোর ছাপ এসে গিরেছে।
তবে সেই হাসিট্কু আজও লেগে আছে মুখে। বেলাদিকে ত
আর চিনতেই পারা বার না, একেবারে অক্ত বক্ষের হয়ে গিরেছে।
কথায়, চেহারায়, সব কিছুতেই। অবনীবাবৃও বৃদ্ধ হয়ে গিরেছেন,
কিন্তু মনট এখনও তাঁর সেইবক্ষই সভেজ আছে। সেইবক্ষ
বভাব, সেইবক্ষ বসিকতা করে কথা বলা, সব একই বক্ষের
আছে। আশ্চর্য্য, একটুও পরিবর্ত্তন হয় নি এক্ষাত্র চেহারাটা
চাডা 1

বেলাদির মা পরিচয় করিয়ে দিলেন পাশে বদে থাকা মেষেটির সংক্র, এই বাড়ীতে প্রথম যার সকে দেখা হয়েছিল। এর নাম নমিতা, এবার আট, এ, পরীকা দিয়ে বেড়াতে এসেছে এখানে। নমিতা আমার ভাইএর মেয়ে। আলাপ হয়ে গেল মেয়েটির সকে, বেশ মেয়েটি।

আবার যেন ফিরে পেলাম সেই দশ বছর পিছিরে বাওরা জীবন ।
বেলাদিকে আবার বেন জিরে পেলাম সেই অনার্স ক্লাসের মেরে।
এই সুন্দর পরিবেশে হাসি গরে কেটে বেতে লাগল দিনগুলো।
কোন আপনজনের সঙ্গে বছদিন পরে সাক্ষাৎ হ'লে তাকে বেমন
করে আপ্যায়ন করে লোকে, আমাব বেলাতেও ঠিক সেইবক্মই
হয়েছিল বোধ হয় একটু বেশী মাত্রায়।

কল্যাণীর দৈনন্দিন জীবনটা তাকিয়ে তাকিয়ে দেখতাম।

পুৰ সকালে সাইকৈলে করে গৃধ দিয়ে বেড গোয়ালা। একটু পরেই আসত থবরের কাগন্ধ। এ কাগন্ধটা নিরে সকালটা কেটে বেত। চাক্রটার সঙ্গে তু'একদিন বাজারেও গিয়েছিলাম। মনে হ'ল অক্যনায়গার থেকে সব জিনিধের দাম একটু বেলী।

ৰা গ্রম, সমস্ত জানকা দর্জা বন্ধ করে দিতাম একটু বেলা হলেই । ছপুৰ্গুলোঘুম আব গলে কেটে বেত ।

তুপুরটা শান্ত, স্তর্ব। পথে একটিও জনপ্রাণী নেই। পিচের রাস্তাগুলো রোদের তাপ সহু করতে না পেরে ধারে এসে জমা হচ্ছে,। বাইরে বেরোলে শুধু শোনা বাবে, সামনে নেচক পার্কের কাউসাছগুলোর হাওয়া-লাগা শন্ শন্ শন্ধ আর থেকে থেকে ডেকে গুঠা ছু একটা কাকের কা কা রব . সে রবও বেন কন্ত ক্লান্ত।

ছরের ভেতরেরও সেই অবস্থা। তথু জেগে আছে একটা জিনিব। এ টেবিলের ওপর রাখা সমৃত্য বান্ধটা। রেডিওটা গান দিরে, কথা দিরে, আমাদের বিমিরে পড়া ভাবটাকে কাটিরে দেবার ব্যর্থ চেটা করছে।

বিকেলে রোদ পড়লে আমাকে নিরে বেলাদি বেড়াতে বাৰ হ'ত। সঙ্গে বেত নমিতা। কোনদিন তথু রাজা দিরে হেটেই কভদ্র চলে বেতাম, ইস্কুল পেরিয়ে, বাজার পেরিয়ে কতদ্র। কোন কোন দিন ভবিষ্যতের লেকের ধারে বেড়াতে বেভাম। বেশীর ভাগ দিন সেণ্ট্রাল পার্কে গিয়ে বসভাম। ঐ পার্কে আরো অনেক ছেলে মেয়ে বেড়াতে আসত।

আপনার সৌন্দর্য্যের জন্ম প্রসাধন সামগ্রার "মহীশুরের শোভা সো

ব্যবহার করুন।



ইহা ফুলের রেণুর মত স্লিঞ্ধ ও চন্দন গন্ধযুক্ত।

নিয়মিত শোভা সো ব্যবহারে ছককে মন্ত্ৰণ, মোলায়েম এবং মনকে স:তজ র'বে। ইহা দেহে মাখিলে রৌজ ও ধূলা দেহের কোন অনিষ্ট করিতে পারে না। ত্রণ বা ফুসকুজির উপর শোভা স্নো ব্যবহারে অনেক উপকার হয়। একমাত্র শোভা স্নো ব্যবহারের ফলে বগলের ঘর্মের হুর্গজের অবসান হয়।

প্রস্তুতকারক: শোভা ক্সমেটিকস্

মহীপূর

পরিবেশক: হানামিন ইণ্ডাষ্ট্রীজ

७१, (जदकतिया चीरे, कमिकाछ।--१



একদিন বেলাদিকে কথায় কথায় জিজ্ঞেদ কৰেছিলাম, আছে৷ বেলাদি, এথানে গ্রীবের স্থান নেই, না ?

একটু হেসে বেলাদি ঝলেছিল, তোমার বৃদ্ধিটা দেখছি এখনও ছেলেমামুষ্ট রয়ে গেছে। একবার চারিদিকে ভাকিয়ে দেখত. গ্ৰীৰ বঙ্গে কাউকে মনে হয় ? এথানে বারা থাকেন সব মোটা ব্যাক ব্যালান্স হোন্ডার। বেশীর ভাগই ইল্পিনিয়ার, ব্যবসায়ী, প্রফেসর বা কোন অফিসের বড়বাবু রিটায়ার করেছেন প্রায় তিবিশ হাজার ক্যাদ নিয়ে। জানো, এথানকার বাড়ীগুলোর কত দাম ? এই দামে অক্স জায়গায় পছন্দমত ভালো বাড়ী তৈরী, করা যার। আমার একদম তালো লাগে না এখানে, বাবা যে কেন स्वादक ब भाषात्र अथादन वाछी किनत्कन, वृत्यत्त शाति ना । अथानकात गवारे निरक्तमत्र हान निरम् वास्त्र, शवलाद वृक्तित्य तमन आमात्मत এত টাকা আছে, এত ফালিচার আছে। এঁদের মধ্যে আঞ্চরিকতা মেই, আছে বাছিক আবরণ। জান না বোধ হয়, এথানকার ইছুল-মাষ্টারদের সঙ্গে কেউ বড় একটা মেশেন না, তাঁদের ত আর এ দের মত এত টাকা নেই, তারা বে গরীব। একদম ভালো লাগে না আমার এখানে, অন্ত কোন কায়গায় চাক্রী পেলে । हाक कार्य

বললাম, কেন, কাগজে দেখি, লোকের মুখে শুনি, কত সুন্দর জীরগা কল্যাণী। নগরের কোন কোলাহল এথানে চুক্তে পারে না। কাঁকা কাঁকা সব বাড়ী। বাড়ী করতে হলে একমাত্র কল্যাণীন্তেই বাড়ী করতে হয়। আলো বাড়াস প্রচুর । প্রশাস্ত রাজপথ, সুন্দর পার্ক, কলের জল, আলো পাথা, বাজার বিভালয় স্বই এথানে আছে। সব কিছু মিলে নগর-জীব- যাত্রার নতুন রূপ কল্যাণীতে যেন ফুটে উঠেছে। তার ওপর সরকারের বড় বড় প্র্যানও রয়েছে। বিশ্ববিভালয় হবে, বড় বড় অফিসগুলো এখানে উঠে আসবে, আরো কত কি।

আমার কথা বলার ধরণ শুনে বেলাদি, নমিতা, ত্রনেই হেসে কেলা। হাসতে হাসতেই বলল বেলাদি, এতকণ ধরে যা রসিরে রসিরে বললে তা সবই আছে এথানে। আমি ত তা অস্বাকার করেছিনা। আমি যা বলতে চাইছিলাম, তুমি সেটা ঠিক ধরতে পারলে না। আমি বলছিলাম, এথানে মাফুনের মনের নাগাল মেলা ভার। এদের সমাজের সংক্র একটু মেশ, তু'একজনের সক্রেক্ষাবার্তা বল, নিজেই সব ব্যতে পারবে। তোমার হয়ত খুব ভালোও লাগতে পারে। মাফুবের মন ত একবক্ষ না।

একটু থেমে আবার বলল, তথু এথানে কেন, আজ সব জারগাতেই তাই। সবাই আজ নিজের খার্থ নিয়ে ব্যস্ত।

বললাম, এখানকার মান্থবের মনের খবর আমার থেকে তুমি বেশী জান, কারণ, তুমি এখানে বাস করছো। তবে এই ক'দিনে আমার এইটুকু অভিজ্ঞতা হয়েছে কল্যাণী সহছে যে, এত সুন্দর নগর খুব কমই দেখা বার। কল্যাণীর প্ল্যান বিপুল, এককালে নিশ্চরই এ একটি সার্থক নগরী হয়ে উঠবে। এখন ত সে একটা ছোট মেরে। এই ছোট মেরেটি একদিন পূর্ণ বৌবনা হবে উঠবে, জোরার আসবে তার দেহে, আক্র্ণণীর হরে উঠবে সে সকলের কাছে। নির্দাদ ফেলতে হলে দোজা চলে আদতে হয় কল্যাণীতে। প্রকৃতিকে ব'বা উপভোগ করতে পাদে না, শহরের আবজ্জনায় যারা হাঁপিয়ে উঠেছে, এখানে তারা প্রকৃতির সঙ্গে নিজেদের পূর্ণভাবে মিশিয়ে দিতে পার্বে অস্তুতঃ দিন কয়েকের জন্ম।

হয়ত এখানে ট্রাম বাদ মট্রের কনদার্ট নেই, দিনেমা নেই, আকাশ ছোঁয়া বাড়ী নেই, চোখ গাঁধানো চৌরঙ্গীর মোড় নেই, তবুও এখানে আছে শাস্তি। হাঁা, শাস্তি। যার জক্স আজ দ্বাই পাগলের মত ছুটে বেড়াছে ।

[আগামী সংখ্যার সমাপা]

উচ্চ শিক্ষার মাধ্যম শ্রীমতী শান্তি ভট্টাচার্য্য

সাম্প্রতিক কালে উচ্চ শিক্ষার মাধ্যম লইয়া বিভিন্ন মহলে বাদার্থাদ চলিতেছে। কেই মাতৃভাষাকে উচ্চ শিক্ষার মাধ্যম রূপে গ্রহণ করিতে মত প্রকাশ করেন, আবার কেই বা ইংস্টোকেই উচ্চ শিক্ষার মাধ্যম রাথার স্বপক্ষে মত প্রকাশ করেন। কিন্তু সমস্থার কোন সমাধান আজু পর্যান্ত ইইয়া উঠিভেছে না

ৰাধীন ভারতে সমস্তার অন্ত নাই। থাত ও শিক্ষা সমস্তাই বেশী প্রেকটা শিক্ষা সমস্তার মধ্যে ভাষা সমস্তা অক্সতম। দীর্থদিন বিদেশী ভাষার মাধ্যমে শিক্ষা লাভ করিয়া ভারতবাসী উপকৃত কি অপকৃত হইয়াছে, তাহা হিসাব করিয়া দেখিব,র সময় আজ উপস্থিত হইয়াছে।

গ্গের প্রয়োজনে, বিদেশী শাসকবর্গের শাসন-পরিচালনার স্থাবিবাথে, হজে ও বর্গে ভারতীয়, কিন্তু কচি, বৃদ্ধি ও নীতির দিক দিয়া ইংরেজ, এমন এক দল লোকের সৃষ্টি করার উদ্দেশ্যেই ১৮৩৫ ইং লর্ড উইলিয়ম বেণ্টিক মেকলের প্রস্তাব বা "মিনিট" অমুমোদন করিয়াছিলেন। এ ধাবংকাল ধরিয়া সেই প্রস্তাবই সরকারী নীতি রূপে চলিয়া আদিতেছে।

যুগের প্রয়োজন বলার তংপেধ্য এই যে, তখন কোন একটি ভারতীয় ভাষা উল্লেখনোগা ভাবে সমৃদ্ধ ছিল না। অধাৎ মনের সম্পূর্ণ ভাব প্রকাশ করার মত শব্দ-ভাগুরে ছিল না এবং যাহা ছিল ভাহত আয়ন্ত করা আয়াসসাধ্য ছিল। এই কাবণেই এবং পাশ্চাতা শিক্ষার মাধ্যমে জ্ঞান-বিজ্ঞানের নব নব চর্চার দ্বারা জ্ঞাতির পুরু চেতনা পুনক্দাবের আশায়ই রাম মোহন রায় প্রমুখ সমাজ-সংখাবক ব্যক্তিগণ এই ব্যবস্থা প্রত্নির প্রশাতী ছিলেন।

কিন্তু কাল প্রবাদে আজ অবস্থার পরিবর্তন ঘটিয়াছে। ইংবেছী ভাষা শিক্ষার প্রথোজন যদিও আজত রহিচাছে, কিছু ইহাকে উচ্চ শিক্ষার মাধ্যম রাখিয়া দেশের মন্ত্রান্ত ভাষার উন্নতিকে বাধা দেশের গণত ক্র সম্মত ব্যবস্থা নয়। স্বাধীনতা লাভের পর ভারত সব ক্ষেত্রেই স্ক্রনী মনোবৃত্তি লইয়া আগাইয়া আদিতেছে। কাজেই আঞ্চলিক ভাষার উন্নয়ন সাধন করিয়া মাতৃ ভাষার মাধ্যমে উচ্চ শিক্ষা দানে ব্যবস্থা করাও আজ সরকারের একাস্ত প্ররোজনীয় দায়িত্ব বলিগ্না সুহীত হওয়া উচিত।

কোন জাভিকে শিক্ষিত করিয়া, গড়িতে হইলে উচ্চ শিশ্ৰী

টুমারত বেমন শব্জিশালী হয়, মাতৃভাষার মাধ্যমে উচ্চ শিক্ষা কথনই ফলপ্রা লাভ করিতে পারিলে শিক্ষার স্থায়িত্ব দৃঢ় হয়—অকালে ভালিয়া মুক্কিয়ানার গাওয়ার ভার থাকে না। প্রতিটি গণতান্ত্রিক দেশ মাতৃভাষার হুইতে হুইরে। স্মৃত্রি সাধনে তৎপর হয় সেই কারণে।

বিক্ষবাদিগণ একটি প্রশ্ন করিবেন—আঞ্চলিক ভাষার পরিভাষা গোধার ? অর্থাৎ ভারতবর্ষের সমগ্র আঞ্চলিক ভাষা এগনও সম্পূর্ণ উন্নত হয় নাই। বেমন তামিল, তেলেগু, মালরালম, আসামা, উড়িয়া প্রভৃতি। কিন্তু উত্তর হউবে এই বে, সহায়ভূতি এ উদগ্র আকাষা লইয়া সরকার বদি পৃষ্ঠপোষকতা করেন, তাহা হউলে অত্যন্ত্র-কালের মধ্যে ভাহা নিশ্চয়ই উন্নতি করিতে পারিবে।

বাংলা ভাষার আদন সমগ্র বিশে আজ সগোরবে প্রতিষ্ঠিত চইয়াছে। খ্যাতনামা কবি,ও সাহিত্যিকের প্রতিভার স্পার্শে ভাষা স্থাবিত চইয়াছে। ইংরেজীর সংস্পর্শে আসিতে পারিয়া বাংলা ভাষা জীবস্ত চইয়াছে। যে কোন প্রকাব ভাব প্রকাশের পক্ষে বাংলা ভাষা সম্পূর্ণ উপযুক্ত। ইংবেজী ভাষা চইতে বাংলায় অফুবাদ কবাব জন্ম বিদ উপযুক্ত শক্ষ না পাওয়া যায়, ইংরেজী হিসাবেই ভাকে ব্যবহার কবিলে কভি কি ? বেমন ব্যবহার আছে টেশ, পাইক্র্মি, চেকার, টিকেট ইত্যাদি।

বাংলা ভাষার হুর্ভাগ্য এই যে, উন্নত সাহিত্য হুইয়াও রাষ্ট্রভাষার মধ্যাদা সে পাইল না—ভার কারণ হিন্দীভাষীর সংখ্যা এবং আর্তন বেৰী। তাই সরকারী পৃষ্ঠপোষকতা পাইয়াছে হিন্দীভাষা। বনিও ভাষা হিসাবে সমুদ্ধ নয়।

সমগ্র ভারতবর্ধের দিকে তাকাইলে একথা স্বীকার করিতেই চইবে যে, সরকার যদি শিক্ষিত ব্যক্তির সহবোগিতা লট্যা অর্থ সাহায্য বংবন, তাহা হইলে উচ্চ শিক্ষা মাতৃভাষার মাধ্যমে দান কর। মধ্য ভবিষ্যতে নিশ্চয়ই সম্ভব হইবে।

থোলা মন লইয়া, জাতির অতি প্রয়োজনীয় চাহিলা মিটাইবার হণ্ড জাতীর স্বকারকেই অপ্রনী হইতে হইবে। বিশ্ববিদ্যালয়ের গ্রীকায় ফেল করার কারণও এই বিদেশী ভাষা। বিদেশী ভাষা গোর করিয়া চাপানর ফল ধে কিরুপ সময়, শক্তি এবং অর্থের অপচয়, তাহা পরীকার ফেল করার সংখ্যা ঘারা বৃথিতে পারা যার। হাতির বৃহত্তর স্বার্থের প্রয়োভনে এইরুপ অপচয় রোধ করা একাস্ত প্রয়োজন।

অতি উৎসাহী ছাত্র-ছাত্রীর জন্ম ইংরেজীতে শিক্ষার ব্যবস্থা থাকা নিশ্চরই অপরাধ নয়। কিন্তু সাধারণ ছাত্র-ছাত্রীর উপর হইতে বাধ্য-বাধকতা প্রত্যাহার করিতে হইবে। ভাষা হিসাবে ইংরেজী সমৃদ্ধ সন্দেহ নাই। কিন্তু উচ্চ শিক্ষা লাভ করার পথে তাহা বাধা বরূপ হইবে কেন? আজুরিক প্রচেষ্টার দাহা বে কোন মহৎ এবং বৃহং কাজ করা সন্তব। নদা বগন প্রবন্ধ বেগে ধাবিত হয়, কোন বাদাই তার গতি রোধ করিতে পারে না। জাতির প্রয়োজনে ভাতীয় সরকার বদি আস্তরিক সহাকুভূতির সহিত্ত উচ্চ শিক্ষার মাধ্যমরূপে মাতৃভাষাকে প্রহণ করার জন্ম অগ্রণী হন, তাহা হইবে শিক্ষার প্রসার অতি দ্রুত হইবে, জাতির অস্তবে শিক্ষার আগ্রহ বাড়িয়া বাইবে ও শিক্ষার ভবিষ্যৎ উজ্জ্বল হইরা শিক্ষাক্ষেত্রে নৰ বৃণেব প্রবর্তন হইবে। গণভাত্রিক স্যাক্তে চুইরে পড়ার নীতি

কথনট ফলপ্রস্থ ইইবে না। তাট মুষ্টিমেয় শিকিত ব্যক্তির মুক্তবিয়ানায় হাভ চটতে জনগণকে মুক্তি দিতে সরকায়কে সচেষ্ট ছইভে হটবে।

কবিতা ও তার জনপ্রীতি ইন্দুমতী ভট্টাচার্য্য

ত্যা মি কবি নট; কোন কবিতা ভাল কোন কবিতা মৃদ্দ অথবা কেন ভাল, কেন মৃদ্দ, এ বিচার করার মৃত্ত পাশুতা, অন্তর্গটি কিমাধুট্ট আমার নেট!

আমি কবিতা ভালবাসি—আর কবিতার জনপ্রিরতা কমে যাছে, এ সত্যও উপলব্ধি করি, কেন কমছে সে সম্বন্ধেও ভেবে থাকি।

কবিতা-পাঠাগার প্রতিষ্ঠা করলে কবিতার জনশ্রীতি বাড়ৰে জনেকে বলেন। নানা মনীধী আরও নানা কথাই বলেছেন।

কবিতার ছন্দ, পদলালিত্য, ভাববস্তু, বসাত্মক স্ট্রিবৈচিত্রা ও মাধুর্য্য সম্বন্ধেও অনেক আলোচনা হ'রেছে। পাশুনোর পরি-প্রেক্তিতে কবিতা সম্বন্ধে কিছু শিখতে গোলে আমার মত একজন সাধারণ ব্যক্তির পক্ষে বামন হয়ে চাঁদে হাত দেওবার স্পর্কাই প্রকাশ পাবে। আমি শুধু সাধারণবৃদ্ধিতে কবিতা ভাল লাগার বস্তু অথচ ভার জনপ্রিয়তা কেন কমে বাচ্ছে, দেকধা বল্বারই সেই। করব।

আমার যুক্তি সাধারণ পাঠক-পাঠিকারট মৃক্তি ব'লে বুঝে বিদ্যুসমাজ ছাল্ডসাবর করবেন, এই প্রার্থনা করি।

আমরা কবিতা ভাল না বেসে পারি না। কবিতা আমাদের সতা বললেও চলে। ভলে ছলে অন্তরীকে, আমাদের প্রতিটি পদকেপে ছল আছে, স্বতঃ কৃষ্টি হিল্লোল অ'ছে, সেই ছলের, সেই চিল্লোলের, নৃত্যাপর ভাষার ললিভবংকারে স্থাসংবদ্ধ বিচঃপ্রকাশই কবিতা। ছল ভিল্লোল আমাদের হন্তুতে তড়তে, মনের প্রতে প্রতে অলালীভাবে কড়িয়ে আছে। এর কারণ অনুসন্ধান করতে গোলে যেতে চয় সেই তীবের প্রথম উৎপত্তির মূলে, অর্থাৎ সেই আলিম Palaeozoic হুলে, কোন অন্ত্যাত কারণে, কোন ভল্যুত্তি বথন পৃথিবীতে প্রাণ সন্থব হয়েছিল।

অগভীর সমুদ্রের উপকৃলসমীপে জলজ উদ্ভিন্ন ওপর
গ্রাসাচ্ছাদনের জল নির্ভিন্দীল প্রানীবাই জীবের আদি জনক-জনমী।
অগভীর জলে গা ভাসিয়ে থাক্তো তার জার পরম আগতে নিশুর,
তেউএর দোলায় বিভোর হ'ত—অগভীর জলের কৃত্ত তরজগুলি
কর্থনও কথনও বায়-ভিলোলে অথবা লোলাবের আবেগে সৈক্তে
এসে মৃহ মৃত আঘাত করত—মা বেমন শিশুকে চাপড়াতে থাকেন
আদবে সোহাগে। অবস্থিত প্রাণীগুলিও সঙ্গে সঙ্গে তরজভ্তের
দোলনায় তুলতো।

জল ছেতে স্বলে বখন প্রাণ সভব হ'ল, সেই বছবুগের আনক্ষের মৃতি প্রাণী বহন ক'বে নিরে এল ভগ্নীতে তন্ত্রীতে। স্থলের পারিণান্থিকের ছন্দ, হিল্লাল এখন ধ্বনিত হ'তে থাক্ল কর্ণপট্ডে, শক্ষবাহী স্বায়ুভন্ত্রী নিরে বেতে থাক্ল হেড আফ্সি মন্তিছে।

ছন্দহিলোলে গা ভাসিরে প্রমানক আবাদনের অন্ত্তি তাই আদিন, শাবত। আমাদের মন, আমাদের লেক কলোক তালিক কিল ভাই নাচ গান কবিতা কাৰ্য্যকলাপ, সকলের মধ্যেই ছক্ষ স্থাইর প্রারাট লামরা, ছন্দের পূজারী, ছন্দের অন্ধূলীলন প্রবণ।

মানৰ ইতিহাদের প্রথম দিকে এই ছক্ষপ্রিরতার নিদর্শন পাওরা বার প্রাণের আবেগে নৃত্য, করতালি, পদভাড়না প্রভৃতির উদাম অভিযক্তিতে।

পবে ভাষার উদ্ভব হওয়ার পর থেকে তীর অনুভৃতিকে প্রকাশ করা হ'তে থাকুল ভাষার মাধ্যমে—বে ভাষার ছিল হিছো,ল ওঠানামার নুপুর-নিক্কণ।

ভাষার ছশোভিয়োল অথবা প্রাণের লীলায়িত আবেগ বথন অয় সম্পূর্ণনা হ'ত তথন ব্যবহার করা হ'ত নানারপ বার্ত্তবন্ত্রের, বহু প্রাচীন যুগের বে সমস্ত অবশেষ পাওয়া বায়, তা থেকে প্রমাণিত হয় বে, নিওলিথিক যুগের ধমু কুমবিবর্তনে নানারপ তারবদ্রের উত্তব ঘটায়—এছাড়া ঢাক, ঢোল, তনুরা জাতীয় বাত্তব্রেরও অভাব ছিল না!

আমরা যতই সভা হই, ৰতই আধুনিক হই, ৰত মাৰ্জিত, সংস্কৃত, সংৰত হই—চড়ক পূজার ঢাকে কাঠি পড়:ল অথবা কীৰ্তনের স্বলঙ্গে বোল উঠলে আজ-ও কি আমরা সেই কোন কোটি কল্প ৰূপের পূৰ্বপুক্রদের হৃদয়ের স্পান্দন আমাদেব শিক্ষা, দীক্ষা, কৃষ্টি, সংস্কৃতি আধুনিকতা-অধ্যুবিত হৃদয়ে অফুভৰ ক'বে তালে তালে নেচে উঠিনা ?

প্রত্যেকের মনে আছে লুকিয়ে একটি ছল্পাগল বাউন, আনন্দলহরী থানি হাতে নিয়ে যে রসসাগরের অনস্বীকার্য্য দোল্নায় ছুল্ডেই, তুল্ডেই, বড়ির পেওুলামের মত।

কিছ সামুভূত বস প্রকাশ ক'বে অন্ত পাঁচজনের মনকে ভাসিরে
দিতে পারে ধ্ব কম লোকেই—আর সহজাত ছলোহিন্দোল
ওতঃপ্রোভভাবে দেহমনে জড়িরে থাকলেও তা অমুভব ক'বে
রসান্বাদন করতে পারেও কম লোকে। তাই প্রয়োজন কবির—
বিনি নিজের উপলব্ধ রসে ভার বেঁথে পরিবেশন করতে পারবেন
অন্তবে—আর রসচেতনা সম্বন্ধে স্থপ্ত মনের তারগুলিতে বংকার
ভূলতে পারবেন অনাবাদিতের আ্বাদ্দোমুথ ক'বে।

উপমার ঔংকর্য, অর্থগৌরবের বৈশিষ্ট্য ও পদলালিত্যের স্বপ্নমন্ন জোতনা কবিতার প্রাণ। অর্থাৎ কালিদাস, ভারবি ও নৈবধের রস একত্রে জাল দেওরা মাথের বসকদব ।

মুজাবদ্ধের প্রচলন বতদিন না হ'বেছে, ততদিন মাহুবের বস্তৃকা তৃপ্ত করেছেন চাবণ ও কথক কবিরা স্থবের মাধ্যমে তাঁলের উপলব্ধ অনুজ্বতির প্রচার ক'রে; উপলাটিত করে—মাহুবের মনের বন্ধ ছ্যাবের কপাট থুলেছেন, অনুজ্ত রসের আবিদ্ধশ্রোতে জোরার এনেছেন। মনোবোচক, শ্রুতিরোচক, প্রাণের স্পাদন ও একান্ত চাওয়াকে স্থারে ছন্দে বে দোলারিত করতে পেরেছে, সেই হ'রেছে চিরস্তান, সেই হরেছে চিরকাম্য, চির আদৃত।

সেই রামারণ কত ব্য ব্য ধরে বেঁচে আছে—সেই আগমনী 'এলি বলি ঘরে কিরে আর মা উমা কোলে আর ।' চিবস্তন জননীর অক্তরের কথা। সেই বাউল-ভাটিরালী—'রন মাঝি ডোর বৈঠানের।' সেই 'নিভাই এনেছে নাম হরিবোল, হরিবোল।" পাসল ক'রে রেখেছে আজও বাঙালীকে চির অক্তর উৎস হ'রে।

সেই মনগা-মঙ্গলের লখাই এর কক্ষণা ছলছল কাহিনী--"শোনরে

ৰেউলে, বার বেণের বি। তোরে পাইল কালনিজে, মোরে থাইল কি।" তারপর রামপ্রসাদ, "মনরে কৃষি কাল জাননা", মন্ত প্রমন্ত উমন্ত ক'বে দের নাকি মনকে আজও ? পূর্ববঙ্গে এইরপ চন্দ্রাবজী প্রভৃতির কবিতা নাকি এখনও প্রচলিত আছে। তাছাড়া মুখে মুখে বিচিত ছুড়াগান, পালা গান আজও বাছালীর প্রাণের লিনিব হ'বে আছে। ছিজবংলী কেনারামের মত পাষাণেও অমৃত-প্রস্তবণ ছুটিয়ে ছিলেন। রসিক বাঙালী জাতি ধান কাট্তে, নোকা বাইতে সুরের হিলোল তোলে। বিয়ে, পৈতে, পালা পার্ববণ, ব্রত অমুষ্ঠানে ছুড়া কাটে। ব্যুম-পাড়ানি ছুড়া কেটে খোকার চোখে আনে ব্যুম, ভোলায় অবুঝ খোকাকে। এসব ছুড়ার সঙ্গে কেই বা নয় পরিচিত তাই বাছলা বোধে আর উল্লেখ করলাম না সেগুলি।

বে চিত্র এতকণ তুলে ধরা হোল তা সবই প্রাক্-ব্রিটিশ যুগের।
এর পরেই মুম্রাবন্ত্রের উদ্ভব ও পাশ্চাত্তা শিক্ষার প্রভাব মান্ত্রণের
আনক্ষ উপভোগ করবার ধারা ও রীতির মধ্যে আনল এক বিরাট
পরিবর্জন। একথানি বই কিনে ধীরে স্বস্থে প'ডে মামুর তার মনের
ত্বা মিটাতে আরম্ভ করল এবং গানের মাধ্যমে বাঁরা রসস্প্তি করতেন,
তাঁরা ক্রমে ক্রমে নিক্তেদের বৃত্তির জনপ্রিয়তা হ্রাস হ'তে দেখলেন।
পাশ্চাত্য শিক্ষার শিক্ষিত্ত মন ওধু কর্ণ ও হৃদয়কে পরিতৃপ্ত ক'বে
শাস্ত্র থাকতে পাবল না—বৃদ্ধির খোরাক চাইল। তথন বৃত্তিবহুল,
বৃদ্ধিরাহ্ম, বৃদ্ধিরুত্তিকে চরিতার্থ করবার মালমশলাযুক্ত কার্য রচিত
হ'তে লাগল। এমন ক'রে মূল শিক্ত থেকে বিচ্যুত হ'রে গেল
কবিতা—টবের ক্লের মত হ'ল তার অবস্থা—মাটির অতলান্ত্রে

সাধাবণস্তবের আবালবুদ্ধবনিতার হৃদয়রাজ্য থেকে নির্কাসিত হ'লেন কাব্যলক্ষী;—শিক্ষিত, বুধিজীবীদের সংখ্যা কত ? কবিতাব জনশ্রীতি তাই কমে বেতে বাধা হ'ল।

একমাত্র শিক্ষিত অন্তঃকরণ ছাড়া অক্সকারও স্থানর স্পাদন জাগতে পারে, এমন কবিতা আর রচিত ছ'লনা। রবীন্দ্রনাথ বে ববীন্দ্রনাথ—তাঁর কবিতাই বা সাধারণ কটা লোকে পড়েছে। তাঁর গভীর ভাবের কবিতাগুলি কজন বোঝেন বা বোঝ্বার বোগ্যতা রাখেন। অন্ত কবিদের কথা ছেড়েই দিলাম। সিনেমার দেলিতে অবশু রবীন্দ্রনাথের করেকটি গান লোকের মুখে মুখে ফেরে—তবে হিন্দীগান, অথবা জাঁকে ভাঙিরে রচিত চটুল, হাজা গানেবইতো রাজ্ব।

Glamour আর অনবসরের যুগ এসেছে। বাঁচবার কঠোব সংগ্রাম নিরে এসেছে অর্থচিন্তা, রাষ্ট্রচিন্তা, সমাজচিন্তা, এমনি আরও কত চিন্তার পাহাড়। আনন্দ উপভোগের সময় কোথার ? সমগ নেই, সময় নেই। দিনের পর দিন, মাসের পর মাস, সেই চণ্ডীব গান, কথকতা শোনবার নিশ্চিন্ত জীবন কোথার ? ইউরোপে তাই one act drama হ'রেছে—সংক্রিন্তর্বশ—সবেতে—এলাম, দেখলাম, চলে গোলাম—অভিনিখে দেবার, মনঃসংবোগ করবার সময় কোথার ? মাধার ব্রছে রাজ্যের চিন্তা। বিক্রিপ্ত মন, কিছুই বধন মন দিরে করতে পারা বাছেনা তথন সবধানি মন শিরে কবিতা পড়বারই বা সময় বা মন কোথার ?

বোড়নোড় ক'রে সিনেমার ভারকাথচিত বইএর পাতা ^{গেলাম} উলচিরে। বড়জোর একথানা ভিটেক্টিভ গল্প অথবা হাড়া ধর্^{বের} ্ম পাতার **উপক্রাস হ হ শব্দে পড়লমে—আ**র কবিতার *ব*ূহ

হাতে কি বই রে ? ৬: বাবা : ক্যেবিত্যা ! এই হ'ল বেশীর ভুগে লোকের অভিব্যক্তি।

Ready made সৌন্দ্র্য সাজানো থাকবে আমার বিনা ায়াসে একটুও মন থরচ না ক'রে হাওয়ায় গা ভাসিয়ে চানাচুবের মত মচ মচিয়ে থেয়ে বলব, বাঃ! তবেই না!

মেকলে অবশু বলেছিলেন—As civilisation advances, Poetry declines, ভা বোধ হয় দভিত হ'তে চলেছে—আমবা
গ্রেছি না ?

এমন সব কবিতা লেখা হয় আজকাল যার অনেকগুলি পড়ে তেনুস্তি ও অনুষ্ঠ হওয়াতো দ্বের কথা, দস্তক্তি করবার উপায়

— এপথান্ত একজনকৈও এ সকল কবিতার

এবনিহিত অর্থ বোধগন্য করাতে সক্ষম

নাম না। আমরা সাধারণ পাঠক,

ানেরই সংখ্যাধিক্য—তাই মনে হয়

াণ পছবার সময় কবি এদে যদি

ানেহে ক'রে অর্থটি বৃঝিয়ে দেন তবেই

ানিয়ান করতে সক্ষম হওয়া খেতে পারে,

মানারা আর কোনই উপায়্নেই। মিল্টনের

নারাকাব্য Paradise Lost প্রাবার

নারাকাব্য ক্যানিক আনন্দে গ্রণণ হন, কিন্তু

সন্যাধারণের কাছে তা অবহেলিত।

ভাই মনে হয়, পাঠাগার স্থাপনাই করা শেকে কবিতা পড়ো, কবিতা পড়ো, কবিতা পড়ো ব'লে জন বিদাপ ক'বে দেওয়াই হোক্; কোন কাই চবেনা—শতদিন না কবিরা নিজেদের ভালে-খুগী মাফিক কবিতা স্থাষ্টি করা বন্ধ বিভাবন, জনপাধারণের হাদরে স্পান্ধন ভাগোবার মূলমন্ত্রটি ধরবেন, ততদিন কবিতার কিন্তুরতা আগতে পারবেনা।

তুন্তে পাই কবিতা নিয়ে পরীকা নিবাক। করতেই মদগুল আধুনিক কবির।— দে গানের ব্যাপার, অথবা মৃষ্টিমেয় কাব্যজ্ঞান-রাক্র—কিন্তু সাধারণ কাব্যপিপাত্ম জন মাক্ষির পর আকৃশি লাগিয়ে তাঁদের নাগাল পাজ্না।

গামাদের তৃষ্ণা আকণ্ঠ—কিন্তু সে তৃষ্ণা িবৰে কে ?

পাধনিক কবিভার হুর্বেবাধ্যতার প্রযোগ নিজে শব্দের চটকে, ভাষার কাঞ্চকার্য্যে, নিজের অস্বাভাবিকত্বে ও অভিনবত্বে বিজ্ঞান্ত ক'লে অনেক অনধিকার-প্রবেশও ঘটেছে কবিভা-ক্ষেত্রে, ভাও অস্বীকার করবার উপার নেই।

বনেক আধুনিক কবিতা বোধগম্য কয়াও

ধেমন, মনে রাখাও তেমনি কষ্টকর, উদ্ধৃত করাও—ফলে ব্যবস্থত, কথিত বা লিখিত ভাষার ভা নিজন্ব সম্পদ হ'রে যেতে পারে না।

পরিশেষে আমি বল্তে চাই যে, কাব্যবিচার করা বা নম্ম কবিদের বিশ্বর্কর স্টের সমালোচনা করা আমার উদ্দেশু নয়, কেননা তার যোগ্যতাও আমার নেই। আমার প্রিয় কাব্যক্ষী ধাতে সকলের স্বন্ধের বেনীতে অধিষ্ঠিতা হ'য়ে শ্রাস্ত, তাপিত, ক্লিষ্ট, পীড়িত মনকে আনন্দের অমিয় নির্মারে সিঞ্চিত, ড়গু করতে পারেন, তাই তাঁর প্রসাদ প্রাপ্ত গুণী জনকে আমার ভাবনা, আমার আকুলতা জানালাম।

তাঁরা এমন স্থাষ্ট কন্ধন যাতে আমাদের ভগ্নব্বে আশার হিল্লোক্ জাগবে, কাব্যবিমূণতা বিপরীত থাতে প্রবাহিত হয়ে, রসস্কারে শুক জীবন ভূব ভূব হয়ে ভেসেই যাবে আর——

'গৌড়জন যাহে আনন্দে করিবে পান স্থবা নিরবধি।'



বাতিঘর (পৃৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর)

বারি দেবী

ক্রিপর কেটে গেছে আরো স্থানীয় ভিনটি বছর! জগৎ জুড়ে চলেছে ভাঙ্গা-গড়ার থেলা।

মানব জীবনের উপান, পতন, সুথ, দৃঃধ, হাসি কারায় নিত্য রচিত হচ্ছে পুথিবার অলিথিত ইতিহাস।

দীর্ঘ পাঁচবছর পরে স্থাদেশের মাটিতে পা দিয়েছে স্থাদার M. R. C. P,—F. R. C. S.—M. R. C. O. G. ডিগ্রির মালা গলায় পরে। প্রথমে কাকার নির্দেশ মতই সোজা চলে এসেছিলো দে তার মামার বাড়ীতে। ফেরা হয়নি আর সেখানে, যেথান থেকে জনক-জননীর পদধূলি মাথায় নিয়ে, মঙ্গলঘটকে প্রণাম করে যাত্রা স্থক করেছিলো! সে বাড়ী এখন কাকার সম্পত্তি, সেটি তিনি ভাড়া দিয়ে, নিজে বাস করছেন লাকর্টিতে, স্নামের মা গেছেন তাঁর পিত্রালয়ে। মামার বাড়ীতে জবশু বেশীদিন আর থাকছে হয়নি ওকে, সোমনাথের দানপত্র জার এগাট্ণি মারফং একথানি শিলমোহর করা তাঁর লেখা চিঠি পাবার পর প্রথমে বিহব গ ভাবে এসে মাকে বলেছিলো স্থলম—

- —কি করবো মা ? কাকাবাব্ধ দেওয়া এ বাড়ু আর টাকা কোন অধিকারে গ্রহণ করবো আমি !
- —ভাঁকে ভূপ বুঝোনা দামী! মৃত্স্বরে বলেছিলেন যমুনা দেবী!—ভাঁর স্নেহের দানকে উপেক্ষা করে তাঁকে কঠোর আঘাত করতেই কি পারবে তুমি?
- মুথ নিচু করেছিলো স্থদান মায়ের জবাব শুনে! ছুচোথের কুল ছাপিয়ে দর দর করে নেমে এসেছিলো জলের ধারা।

অনেক দিনের সঞ্জিত বেদনার জমাট তুধার আজ অকমাৎ গলতে সুক্ত করেছে।

মায়ের গলাটা ছহাতে জড়িয়ে ধরে তাঁর কাঁধে নাথা রেখে,ফুলে ফুলে কেঁদেছিলো স্থানম, সেই ছোটবেলার মতো!

তারপর মাকে নিয়ে চলে এসেছিলো এলগিন রোডের বাড়ীতে!

থিরেটার রোডের বাড়ী হবে কমল-সেবাসদন ! কাকাবাবুর দেওয়া এ মহানু কাব্যভার সম্রক্ষচিত্তে মাথায় তুলে নিয়েছে স্থান ! আরো কয়েকজন নিঃবার্থ সেবাধর্মী ডান্ডার আর কয়েকজন ধনী ৰাঙালী, অবাঙালীর সহায়তা লাভ করেছে সে! সেবা-ভবনের কাল ক্রন্তগতিতে এগিয়ে চলেছে! নাওয়া-খাভয়ার সময় মেলেনা তার। ফ্লান্ডিহীন এই কর্মবোগের মাঝে আত্মনিমগ্ন রূপটি তার বিশ্বয় লাগিয়ে তুলেছে তার সহক্ষীদের মনে! সেদিন ওর মুথের চোথের ভাব দেখে বিখ্যাত স্থান্তত্ববিদ্ প্রবীণ ডান্ডার সর্বাধিকারী উদ্বিয় ভাবে বল্লেন—

—শরীর অস্তম্থ নাকি হালদার ? দেখি, দেখি। ওর হাডটা ভূলে নিয়ে নাড়ী টিপে_কোভের সঙ্গে বললেন—হা।। বেশ অরতে। দেখছি! বাও, বাও, শিপ্পির বাড়ী গ্লিরে বিশ্রাম নাওগে! শরীরটা গাড়ীর চাকা নর হে, বে ভাকে বেপরোয়া ভাবে চালাবে;— যে রকম অনিয়ম, অত্যাচার দেখছি ভোমার, মিষ্টার ত্রিবেশীর সেবাশ্রমে প্রথমেই ভোমাকেই না ভত্তি করতে হয়!

- লজিভভাবে হাসলো স্থদাম—মুথ নিচু করে বললো,— তেমন কিছু নয়। যতটা পরিশ্রম করা উচিৎ—ভতটা জার পারি কৈ ? হস্পিটালের ডিউটি সেরে, বাকি সময়টা এ কাছের জন্ম যথেষ্ট নয়। তব্ও আপনাদের যথেষ্ট সহায়তা পাছি, ভাই ভাঁর পরিকল্পনাকে সার্থক করে ভোলা সম্ভব হচ্ছে!
- —কি আর করতে পারছি হে! পাঁচজনের উপকার হলে, আমাদের কিছু পূণ্যি সঞ্চয় হবে,—এই আর কি! হা, হা, করে প্রাণ খোলা হাসি হেসে বললেন ডাক্তার সর্বাধিকারী, আমার গাড়ী তোমার পোঁছে দিয়ে আত্মক হালদার, বডচ চড়া রোদ!

—না, না, জামি ট্রামেই বেতে পারবো, তেমন কিছু হছনি
আমার! বিনীত নমস্কার জানিয়ে ধীর পায়ে বেরিয়ে গেলে
য়দাম!

— ৬ ব গমনপথের দিকে চেয়ে ব্যথিত কণ্ঠে মৃত্ত্বরে বললেন ভাক্তার— Poor Soul.

সোমনাথের বাল্যবন্ধ্, গৃহচিকিৎসক তিনি ! দানপত্তের প্রধান সাক্ষী ! কাল্কুঠির ইতিহাস তাঁরে অজানা নয় !

ট্রামে উঠবার পর মাথাটা কেমন টলো, টলো মনে হতে লাগলে স্থদামের। চোথ স্থটো ষেন বড্ড জালা করছে। অতিকট্টে এগিয়ে গিয়ে বসে পড়লো সিটে, মাথাটি হেলিয়ে দিয়ে চোথ বুজলো সে!

পাশের সিটেই বসেছিলো করবী!—স্থদামের দিকে নজৰ ক্ষোলো কিছু পরে!

যেন ভারি চেনা-চেনা মনে হচ্ছে না ?

বার বার দেখলো করবী ওর মুখখানা !

মনের গছন বনে চলগো ব্যাকুল অনুসন্ধান—কে? কে?

চম্কে উঠল অরণ বিহাৎ !—ভার আলোতে চিন্লো করবী ওকে —পরম বিময় ভরে অফুট স্বরে উচ্চারণ করলো—স্থ—দাম !!!

- —কে? চমকে উঠে চোথ মেলে চাইলো স্থদাম।
- —চিনতে পারছো না স্থাম ? আমি করবী!

ফিরলে কবে ?

- —ছোটমাসাঁ ? ওর দিকে চেয়ে হাসলো স্থদাম !
- —তা প্রায় বছরখানেক হয়ে গেলো ফিরেছি!

কথা বলতে বলতে কেমন হাঁফাতে লাগলো সে। চোথ ছাটো লাল, লাল !

ভোমার কি শরীর অস্তম্ভ সদাম ? ব্যস্তভাবে গুধোয় করবী !

- —গ্যা ছোটমাসী। বাড়ীতে ৰোধ হয় হেঁটে যেতে পারবো না।
- —কোথায় নামবে ?
- এলগিন বোডের মোড়ে—
- —ঠিক আছে! আমি যাবো তোমার সঙ্গে স্থদাম ? বাড়টা চিনে আসবো!—এখন আর কথা নর পরে বলবো, আর শুনবো সব!

টাম থামলো! স্থলমের হাতটা ৫েপে ধরে ওকে সাবগানে নামালো করবী!—উ:, কি ভীবণ গরম তোমার গা?—বাপরে! এবে বড্ড অর দেখছি! এই নিয়ে রেরিরেছো? মিতা তনলে—, নিজের জিব গাঁত দিয়ে চেপে ধরল করবী! মহা অপ্রস্তুত ভাবে

ফুটপাথে দাঁড়িয়ে চেয়ে দেখলো স্থলামের মুখপানে ! • বুকটা যেন কেটে গেলো ওর স্থলামের ঠোটের কোণে কক্ষণ লান হাসি দেখে ! একটা চলস্ত ট্যাক্সি যাচ্ছিলো,—তাকে হাতছানি দিয়ে ডাকলো কবলী!

দিন সাতেক বাদে অবটা ছাড়লেও, ডাক্তার সর্বাধিকারীর কড়াশাসনে স্থদামকে আবাবো একসপ্তাহ শাস্তছেলের মত বাড়ীতে থাকতেই হলো।

করবী বোজ এসেছে, ব্যুনাদেবীর সঙ্গে স্থলামের শুঞ্চবায় যোগ শিহতে !

— জরের মাঝেই একদিন স্থলাম বলেছিলো, ছোটমাসী! তুমি ় তে সেবা করতে পারো, তা'তো জানতাম না আগে!

—দেই আগেকার ছোটমাদী আমি আর নেই গো!

ন:সিং শিখ্ছি যে! মানে থোলস পাশ্টেছি! কৃতজ্ঞতায় সংস্থ ১য়ে উঠতো যমুনাদেবীর চোগ হুটো! বলতেন—

—এমন বিপদের দিনে ভগবানই তোমাকে এনে দিয়েছেন ধোন্টি—ভাঃ না হলে একা যে কি কর চুম !

স্থান তার কথা ওঠে না ! ওরা সকলেই বেন—প্রক্ষার পরক্ষারের কাছ থেকে মিভার তথ্যটি বেদনার আড়াঙ্গ দিয়ে গোপন রাগতে চায়!

পথ্য পাবার দিন তৃত্ত্বক পরের সন্ধার থাটের ওপর বালিশে হেলান দিয়ে বলে একটা বই নাড়া চাড়া করছিলো স্থদাম ! ঘরে এলো করবী, সঙ্গে তার অনিক্লম্ম !

—কাকে এনেছি দেখতো স্থদাম, চিনতে পারো কি—না! সকৌতুকে বললো করবী!

একটু বিশ্বিত ভাবে চাইলো সদাম অনিক্দার দিকে !

—অনিক্ষ এগিয়ে এনে খাটের পাশের চেচারটি দথল করে বললো—হর্মল মস্তিষ্টাকে অনর্থক খাটিয়ে আর কাজ কি?— আমার নাম অনিকৃষ্ণ বস্তু, বিলেতে থাকতে করেকদিনের পরিচয় আপনার সঙ্গে!

—ও হো, তা ! মনে পড়েছে ! যুক্তকরে একে প্রণাম জানিয়ে হেদে বললো সনাম—অপরাধ নেবেন না, শ্বভিশক্তির ধারটা আমার দিন দিন কেমন ভোঁতা হয়ে বাচ্ছে! অনেকদিন বাদে আপনাকে দেখে ভাবি ভালো লাগছে আমার !

—গা! আমারও! বললো অনিক্লম! করবী দেবীর কাছে আপনার থবর পেয়ে নিজেই এলান, অবশু পূর্বে পরিচয়ের দাবী নিয়ে এবাবের আমা নয়; আমার এবাবের পরিচয় মিভার দাদা আমি! মানে একমাত্র দাদা!

—তাই নাকি ? হাসলো স্থণাম! তা আপনার ভগ্নির খবর



—থবর ? মাথা চুলকালো অনিক্র ! বিব্রত দৃষ্টিতে চাইলো করবার মুগের দিকে !

— ওর **অপ্রস্তুত ভারগানা দেখে হা**দলো করবী – ভারপর বললো — কি আশা করো ভার সম্বংক সদাম ?

তোমার কাকাকে চিনতে পেরেছো বোধ হয়; তাব সঙ্গিনী হয়ে মিহার অবস্থাটা কি হতে পারে কল্পনা করে নাও — কোরী অত বড় বাড়ী থানায় একেবারে একলা থাকে! কোথাও বেরোয় না; যাকে বলে নির্মাদন দণ্ড; তাই ও ক্ষেন্তায় গ্রহণ করেছে। তার কথা—কি আর বলবো বলো! গুলার অব কেঁপে উঠলো কয়বীর— চোধ ছটি ভবে এলো জলে!

- —সোজা হয়ে উঠে কচপো স্থাম! বেদনা-ছলো-ছলো, চোথ ছটি তুলে চাইলো কলবীৰ দিকে—
 - —একলা ? একলা থাকে কেনো মিতা ?
 তুমি, দিদিমা, ছোট মামা! সকলেই তো আছো।
 - —না সুদাম, আমরা প্রায় বছর চারেক অক্সত্র আছি !
 - সে কি ? জানতাম না ভো ?
- —জানাবার আর সময় পেলাম কই ? অর নিয়ে তো প্রথম দেখা ৷ এবারে সবই বলছি শোনো ! কয়েক মুহূর্ত নীরব থেকে নিজেকে প্রস্তুত করে নিলো করবী !
 - আপনার হাতে কি বই ওগানি ? ভংগালো অনিকৃদ্ধ!
 - —বালুচর ! বললো স্থদাম ! একথানি কবিভাব বই !
 - —বাৰুচৰ ? ইছামতীৰ লেখা ? —কেমন লাগছে ?
- অপুর্ব ! প্রত্যেক কবিভাটি রদোতীর্ণ ! তবে রদটি, বেদনার রস আর কি ! সেই জন্তেই বোধ হয় এত মর্মস্পার্শী ইয়েছে ! একটা ছোট নিঃখাদের সঙ্গে বললো স্লেণ্ম !
- —ঠিক বলেছেন! শুনেছি, লেখিকার প্রথম রচনা এই বইখানি। আশ্চর্যা হলাম বইগানি পোডে—প্রথম রচনা যে এত মনোরম হতে পারে।
- ——আরো আন্তর্যা ছবেন গুনে যে, বইণানি ডাকে কে-যে আমাকে পাঠিয়েছেন জানি না। এমন একজন অখ্যাত দীন তীনকে এমন কাশ্যগ্রন্থের উপায়্ক সমন্দার কে যে ঠাওরাজেন, বুরুলাম না। বোধ হয় পরিহাস করেছেন কেউ, সেই কথামালার শেয়াল আর বকের পঞ্জের মত।
- —না, না, তাইবা ভাবছেন কেন ? হয়তো আপনার পরিচিত বা অতি প্রিয়জন, আপনার জন, কেন্ট পাঠিয়েছেন— পাঠিয়ে হয়তো তিনি নিডেই তৃত্তি পেয়েছেন,—আর এমনো তো, হতে পারে, ছয়্মনামের অবগুঠন সরিয়ে একদিন তিনি উদয় হতে পারেন আপনার সামনে! অসম্ভব নয় কিছু!—সেদিন এ অভাজনকে মরণ করবেন কিছা! কারণ এই ইছামতীটি যে কে, বাস্তবে কি ভার পরিচয় জানবার যথেষ্ট কোতুহল আছে আমার, প্রকাশকের দোরে ধর্ণা বিয়েও এ রহত্যের স্ত্র কিছু মেলেনি!— এই বাভারে বইখানার চড় চড় করে তিন্টে সংস্করণ কেটে গোলো, একবছরের মধ্যেই ?
- —তিনটে কেন, ছ'টা সংশ্বরণ কেটেছে শুনলেও আদ্চর্য্য হবার কিছু নেই; কারণ যথার্ক ভালো জিনিব সমাদর পাবেই!—ই।। গোটমানী কি যেন বলবে বলজিলে ন!? করবীর দিকে চাটলো স্লগায়।

- —তাইতো ভাবছি, বলগো করবী—অপ্রিয় ঘটনাওলে ভোমাকে জানিয়ে----
- —জানলে মনে আখাত পাবো এইতো । সান হেদে বল্লো
 স্থান, সব কিছুকে সহজভাবে মেনে নেওয়ার শিক্ষা করছি ছোটমাসী।
 জানি, যা ঘটবার—ভা অবগুই ঘটুবে, এবং তার সঙ্গে খাপ থাইছে
 আমাদের চলতে হবে। শৃত চেষ্টাতেও ঘটনাস্রোতকে যুগ্রন
 ফেরাবার আমাদের ক্ষমতা নেই, তথন শাস্তুচিত্তে তাকে বাতে মেনে
 নিতে পারি, সেই চেষ্টাই আমাদের করা উচিৎ—এই আমাদ
- —আপনার মূল্যবান অভিমতটিকে জীবনে কার্য্যকরী করতে পাবলে মনে হয় জীবনের জটিল সমস্যাগুলোর সমাধানের স্থত্ত কিছু । মিলতে পারে! বললো অনিকল্প।
- আপনি নয়—তুমি! হেসে বললো স্থান, মিতার দানর ওপর আমিও ভাগ বসালাম, আমারও বে দাদা-দিদির একাত্ট অভাব।
- —অবশুই! আজ থেকে দাদার কড়া শাসনটিকেও কিন্তু মেনে চলতে হবে – হা, হা শব্দে উচ্চরোলে হেলে জবাব দিল অনিকল্প!
- —ভরসা পেলাম এতক্ষণে!—মৃহতেসে বললো করবী;—২৮র চারেক আগে জামাইবাবুর দানপত্রে, তাঁর সম্পত্তির যা ব্যবস্থা হয়েছে, তাঁতো তুমি জানোই! এর করেকদিন পরেই অসাম এসে মার্ক্তিই বললো,—
- —এত বড় বাড়ীটা আমি অম্নি ফেলে রাগতে চাইনা, আগতে ব্যবস্থা করবো,—মানে আপনারা বদি চান্ তো একতলার থাকতেন কাতঃ দিয়ে! দোতালার আমি নিজে থেকে আমার বাড়ী ভাতে দেব।

একটু থেমে,—আবার আরম্ভ করলো করবী—

—মাকে তো জানোই স্থদাম.—তিনি সেইদিনই আমার হার্দ্ধরে রাজায় বেরিয়ে পড়লেন। ক্রেড়া আর আমি কত বোঝালাম যে, একটা ফ্রাট গুঁজে নিয়ে তবে যাবো,—কিন্তু মা কোনো কথাকে। কান দিলেন না!

মা ছোড়দাকেও বললেন সঙ্গে আসতে,—তারও ইচ্ছে ছিল, কিছ তার নতুন বিয়ে করা বৌএক্লেবারে চোথ কপালে ভুল বললে:—

— দ্ল্যাটতো আর বিনাভাড়ার ছুট্বেনা;—তার চেয়ে ভাল দিয়ে এখানেই থাকবো! এমন চমংকার মার্বেলের মর, এমন লন, ফুল ছেড়ে আমি একপাও নড়চিনে,—বেতে হয় তুমি খাও মায়ের আঁচিল ধরে।

আহা কত আরাধনা করে পাওয়া বৌ!

ছোড়দা মায়ের আঁচলের বদলে বোএর আঁচলই ধরলো!

— ছোটমামা বিয়ে করেছেন নাকি ? গুণোলো স্থলাম কৌতু^{চুলী} হয়ে।

—হাা,—দে তো অনেকদিন! মিতার বিষের মাস ছয় সংগ্ পারেই! বৌ তোমার অচেনা নর,—তোমার কাকার বান্ধ^কৈ । শুকুতারা সেন!

—কোন্ ওকভারা ৈ সেই অভিনেত্রী ওকভারা ৈ ^{কাকার} সক্ষে এফবার সিমেটিলের কোন একটা নাচ সানের সাব না তুল জানি না, দেখানে দেখেছিলাম ওঁব নাচ। দেখানকাব—পরিচালিক। যিনি। মাদীমা বলতেন তাঁকে কাকা—ভক্তমহিলা, কি বকম যেন, আমি তখন বেশ বড় হয়েছি,—আমাকে ছুগাত দিয়ে অড়িয়ে ধরে এমন ছেলেমামুষের মত আদর করতে লাগলেন, ভীবণ লজ্জা করছিলো আমার! যাকুগে ওকথা—তারপব রাস্তায় নেমে—

— e! অলকাপুরীর মাদীমাকেও তুমি চেনো দেগছি! চোথ

বড় করে চেয়ে বললো করবী — ছেলে. মেয়ে ধরার জেলেনি তিনি।

ঐ অলকাপুরীটি তাঁর একথানি মোক্ষম জাল। আর ঐ জালে

ধরেই মিতাব গলায় কাঁদ লাগিয়েছেন তিনি। জানভাম না,—

স্থলাম, আগে এসব জানতে পারিনি,—যথন জানলাম, তথন
করবার আর কিছু নেই!

একটা স্থদীর্ঘ নি:শাস ফেলে মুখ নিচু করলো করবী!

—জানবার কোনো উপায়ই ছিলো না,—যদি না পুলিশের হালামা হতো। বললো অনিক্ষ।

—পুলিশের হাক্সামা ? দে কি ? চমকে উঠলো সুদাম।

—মানে, টাক। বোজগাবের নানারকম কৌশল বিস্তার করছিলেন ভক্রমহিলা! নাচ গানটা বাইবের শো মাত্র! ধনী সম্ভানদের নিয়ে জুয়োখেলা, ছেলে মেয়েদের অবৈধ ব্যাপার,—ইত্যাদিতে প্রচুব টাকা লাভ করতেন! ওঁর দলে অবগু ছিলেন কলকাতার আবো সম্ভান্ত নামকরা লোকেরা।—বাঙালী অবাঙালী গব রকমই নিয়ে তৈরী করেছিলেন তিনি ঐ অবৈধ ব্যবসায়ের ঘাঁটিটি!

আমিও দিনকতক ওথানকার মেথার হয়েছিলাম কি—মা, তাই জেনেছিলাম ব্যাপারগুলো। প্রথম প্রথম বেশ মজঃই লাগতো,—তারপর আন্তে আন্তে—এলো সন্দেহ, বিভৃষা। ছেড়ে দিলাম অলকাপুরী।

এর পরেই কাগজে দেখলাম ভয়ানক খবর !

দল বল সহ গ্রেপ্তার হয়েছেন মানীমা! ঐ ছেলে মেয়েদের অভিভাবক কয়েকজন সব জানতে পেরে পুলিশের কাছে সব ফাঁস করে দিয়েছিলেন আর কি!

মামলা অবগ্র চললো না। টাকা ঢাললো রতনলাল ক্ষেত্রি! মাসীমা থালাশ পেলেন বটে, তবে বিষ্ণাতটি খোহা গেলো।

অলকাপুরীর দরজা চিরদিনের মত বন্ধ হয়ে। গেলো।

বতনলাল ক্ষেত্রির উপকারের প্রতিদান
দিতে কিন্তু তিনি ভোলেননি;—পাম্পিরা
রাওকে নিয়ে বোষাই পালানোর মূলে তাঁর
মৃশ্যবান কৌশল দানের কথা রতনলাল কোনো
দিন ভূলবে না আশাকরি ! থালি ত্ঃব হয়
বেচারি বুড়ো, রাজা মহেন্দ্র প্রতাপকে দেখে—

মা-মরা নাজনীটিকে—হারিয়ে কেমন বেন হরে গেছেন। রত্নলালের কাছে— বিস্তর দেনাও ছিলো তাঁব, —আর অর্থকা, দেহের বল কিছুই আর এখন নেই•• তাই•• দ'রে পড়া হাতীর মতই চামচিকের লাখীকে শিরোধার্য করলেন ভিনি।•• একটা নি:খাস ফেলে চুপ করলো অনিকন্ধ !

করবী একবার চোথ তুলে চাইলে। ওর মুথের দিকে—চাপা বেদনার মান ছায়। ভাসছে যেন ওর চোথ ছটিতে।

বিন্দু বিন্দু বাম জমেছে জনামের কপালে, বিশ্বয় ফুটেছে.
চোথের ছটি তারায়!

উ: কি ভয়ানক !!! - এই ভয়াবহ অলকাপুরীতে নাচ গান শিখতো মিতা? কে নিয়ে গেলো দেখানে তাকে ছোটমাসী? সে তো - - - ডসব চিনতো না, - তার প্রকৃতি যে ছিলো বড় কোমল, ভারি ভীতু! — উদ্বেগ-আকুল কঠে — বললো স্থদাম!

কে নিয়ে গিয়েছিলো ? এর জবাব তো ভোমার অভানা নয় স্থাম ! তোনার কাকা,—অসীম হালদারের কীন্তি এটা ! অলকাপ্রীর নামকরা পাণ্ডা ছিলেন তিনি, তাতো ভানতেই! প্রথম প্রথম আমবা কেট কিছু সন্দেহই করিনি—কিন্ত তারপর..

ও প্রদেস—আৰু ধাক্ ছোটনাসী! আর্ত্তকঠে বললো সুদাম!

'ওহো! এ আমি - কি করছি! ওর তুর্বল মাথায় তুঃসহ বোঝাটা চাপাতে চাইছি? মনে মনে নিজেকে ধিক্কার দিলো করবী!

সকল লজ্জার হাত থেকে ওকে বাঁচালেন যম্না দেবী ! ছটি থাৰারের প্লেট হাতে নিয়ে ঘরে চুকলেন,—পেছনে ছকাপ চা নিয়ে এলো বাছো চাকর—মঙ্গল।

—একি ? ক্সীর ঘরে এসব কেন দিদি ? দাঁড়িয়ে উঠে শশব্যক্তে যমুনা দেবীর ছাত খেকে প্লেট ছটো নিয়ে টেবিলে রাখতে, রাখতে, বলগো করবী—আমায় ডাকেননি কেন ? আমিও যোগাড় দিতাম আপনার সঙ্গে,—তাতে আমার শুখাও হতো!

—কি-ই বা করেছি ? মাছ মাংস'র পাট তো বাড়ীতে নেই, তথু চা ধরে দিতে মনটা যে কেমন করে ভাই, তাই সামাত তথানা নিম্কি ভেজে নিয়ে এলাম ! ক্ষীরের পুলি আগেই করা ছিলো !•••

—বেশ করেছেন মাসীমা—খাবারের ডিস্ টেনে নিয়ে বল**লো** ভানিকক! মা মাসীরা থাওয়াবেন না ভো খাওয়াবে কে? ওসব অকেজো ভদ্রভা আমার নেই!

বাড়ীতে চুকে প্রথমেই যন্নাদেবীর সঙ্গে করবী অনিক্ল'র পরিচয় করিয়ে দিয়েছিলো। ভারী ভালো দেগেছিলে। ওকে

পেটের যন্ত্রণা কি মারাত্মক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন / যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দুর করতে গারে একমার

বহু গাছ গাছ্ড়া দ্বারা বিশুষ্ক মতে প্রস্তুত

ভারত গভঃ রেজি: নং ১৬৮৩৪৪

गुनश्रुत् सक्क सक्क ख़ाशी आ**ख़ाগ्र** साख क**ख़रू**न

অন্তর্শাল, পিত্রপূলে, অন্তর্গিত্ত, লিভারের ব্যথা, মুখে টকভার, ঢেকুর ওঠা, বমিভার, বমি হওয়া, পেট ফাঁপা, মন্দারি, বুকজুলা, আহারে অঞ্চি, স্বন্ধানিটা ইত্যাদি রোগ যত পুরাত্তনই হোক তিন দিনে উপশম। চুই সন্তাহে সম্পূর্ন নিরাময়। বহু চিকিৎসা করে মারা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও ন্যান্দ্রকা সেবন কররে নবজীবন লাভ করবেন। বিফলে মুন্তা, ফেরং। ৩২ জেনার প্রতি কোঁটা ৩১টাকা,একরে ৩ কোঁটা — ৮।। আমা। ডাঃ, মাঃ,ও গাইকরী দুরু পুথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। ছেড অফিস-বাক্লিলা (পূর্ব পাকিজন)

— মুখের ভাব যেন অনেকটা সুদামের মত! যমজ ভাই বেন ওর!

—একি আর খাওয়া বাবা ? ভালো করে দামী'র সঙ্গে বদে পরে থেও। বললেন তিনি!

—দে কথা আর আপনাকে বোলতে হবে না মাদীমা, ক্ষীরের পুলি থেতে থেতে বললো অনিক্দ্ধ—এখন আর আপনার একটি ছেলে নয়, এ ছেলেটাও এদে দৌরাদ্ধ্য করবে মাঝে মাঝে! আর যে রক্ষ লোভনীয় থাবার দেখছি আপনার হাতের, এর কাছে কোথায় লাগে বিলিতি হোটেলের মোগ্লাই রায়।!

—খাবাৰ তৈরী করতে তো প্রায় ভূলেই গেছি বাবা, ক্স্ক সান
মুখে বদলেন যননাদেবী—খাবাব লোক কোথার? আগেকার
দিনে,—নিভ্যি নভুন ধবণের খাবার তৈরী করে সকলকে খাইয়ে কভ
আনন্দ তৃত্তি পেভাম, তথন ঠাকুরপো কত ভালো বাসতো
আমার হাতের রাল্লা গেতে, আর এখন•••

অবন্ধদ্ধ বেদনার চাপে কণ্ঠক্ষ হয়ে গেল ওঁর! নিজেকে সংগত করে নিয়ে আবার বঙ্গলেন তিনি—

- —ইয়া বে দামী ! সেই তো এনে একবার গিয়েছিলি । ঠাকুরপোর সঙ্গে তো দেখা হয়নি বল্লি, আর যাসনি সেখানে ? মিতুর সঙ্গেও দেখা কর্লি না একবার ?—আহা, মেয়েটার জন্মে বড্ড প্রাণটা কেমন করে বে।
- —হাা মা গিয়েছিলাম আরেকদিন; তোমাকে বলতে ভূলে গিয়েছি ! তেসে ক্ষবাব দিশো স্তদাম। কাকা নীচেই ছিলেন, গেখানেই বসে চুচাবটে কথা বললেন আমার সঙ্গে;—আরো বললেন মিনার দ্বীরটা ভালো নেই; অঞ্চিন দেখা কোবো।
- ও. ভাই বুঝি! নি:খাস চাপলেন যম্না দেবী। অনেকফণ কিছু থাসনি দামু! ছগটা আনি । রংস্ত পায়ে ঘব থেকে বেরিয়ে গেলেন তিনি।
- —তারপর ছোটমাসী ! এখন নিবাস কোথায় তোমানের ? ছোট মামাতো লালকুঠিতে জ্বাছেন জানলাম, অবগু আমার সঙ্গে ছদিনই দেখা হয়নি । নীচের ঐ কোপের দিকেব যে ঘরটা সর্বলা বন্ধ থাকতো—মানে মিতার দারু খুন হয়েছিলেন শুনেছি যে ঘরটায়, সেই ঘরটা এখন খোলা, আর পর্দা স্বানে। ছিলো, বেশ স্থাসজ্জিত মনে হলো । একজন মহিলা বার হুয়েক এসে কাকাকে জেকে নিয়ে গেলেন, তখন চিনতে পারিনি, এখন মনে হচ্ছে তিনিই ছোটমামার দ্বীবোধ হয়।
- —ব্ৰেছে। ঠিকই; অল্প হেসে বললো করবী। লালকুঠি থেকে চলে আসবার পর আমি মাকে লুকিয়ে ছ'তিন দিন মিতার সঙ্গে দেখা করতে গিয়েছিলাম, তথন দেখেছিলাম এটি ওদের শোবার ঘর হয়েছে।

নিবাস ?—প্রথমে পথে নেমেই মা'ব মনে হল কোথায় যাওয়া বায়! নিজেব বাড়ীতো ভাড়া দেওয়া। অলকাপুনীতে যাবেন ছির কংলেন দেশপ্রিয় পার্কে বসে। কিন্তু আমার মন চাইলো না সেথানে যেতে—গোড়া থেকেই কেমন আমার ভালো লাগেনি ও জায়গাটা। আমি বললাম চলো যাই আলিপুরে অনিকৃদ্ধ বাবুর বাড়ী। তাঁর মায়ের সঙ্গে তো তোমার বেণ আলাপ আছে, আর তিনি বড় ভালো। বাজী হলেন মা। সেথানে গিয়ে একেবারে

ঠাকুর-আদরে কাটলো কয়েকদিন, তারপর ওঁদের টেটাভেই বাড়ী একটা মিললো চেৎলায়। টিউদানী করি, চলে যায় কোনরকমে তৃজনের। জামাইবাবু প্রচুর টাকাও দিয়ে গেছেন। আর কোনো কট্ট নেই, থালি মিতুর জঞ্জে গাঝে মাঝে বড্ড মনটা কাঁদে।

বিমর্থ দৃষ্টি মেলে, চুপ করলো করবী।

- —এত সব ব্যাপার ঘটে গেছে ? আমি এর কিছুই জানি না । ক্লক চুলগুলো, হাতের মুঠোর চেপে ধরে টানতে টানতে বিষয়কঠে বললো স্থদাম; তা মাঝে মাঝে ওখানে গেলেই তো পারো ছোটমাগী! মিতা আসে না ভোমাদের কাছে ?
- না। সে আবাজ চার বছর নির্বাসন দণ্ড দিয়েছে নিজেকে । কোথাও যায় না। কারুর সজে যোগাযোগ রাথেনি। আমি প্রথম প্রথম যেতাম ওর কাছে,— কিন্ত যাওয়া বন্ধ করতে হলো।
 - —কেন ? কেন ছে'টমাসী ?—ব্যাকুল কণ্ঠশ্বর স্থলামের !
- —ওর দিকে মুখ তুলে স্থির দৃষ্টিতে চাইলো করবী, তারপর উঠে গিয়ে স্থানামর একথানি হাত চেপে ধরে আর্ত্তকণ্ঠে বসলো সে—
- —জানো স্থদাম ! আমাকে জাড়িয়ে ধবে মিডুর সেদিন কি কালা। তুমি এথানে আব এসোনা। এলে হয়তো ভোমার স্থান আব থাকবে না।—

আব কিছু বলতে পারেনি সে স্থলাম ! তব্ও আমি ব্যতে পেরেছিলাম সব ! ওর ফত বিক্ষত • মনটাকে আমি স্পষ্ট দেখতে পেয়েছিলাম সেনিন । আঁচলে চোথ মুছলো করবী !

'বালুচর' বইগানিকে অভ্যমনস্ক ভাবে হাতে তৃলে নিয়ে["]নাড়া-চাড়া কবতে লাগলো অলাম !

বাগ!.ন সঞ্জোটা ল্যাভেণ্ডার চাপার গন্ধ মুঠো মুঠো চুরি করে, ঘরে ছড়িয়ে দিয়ে, শন্ শন্ করে, থোলা জানলা-পথে বেরিয়ে গেলো আধিনের উদাসী বাতাস!

বড় চেনা, বড় ভালোলাগা গন্ধটি যেন নিবিড় ভাবে ক্ষড়িয়ে ধরলো অনামকে! কোনু এক হারিয়ে বাওয়া মধুর রাগিণীর বিষাদ-ভরা কর কেঁদে ফিরতে লাগল ওর অস্তবের গভীর অভলে!

লালকুঠির • নীচের তলায় বারান্দায় অস্থির ভাবে পাইচারী করছিলো অনিল।

কালা, বৃক্তরা ওধুই কালা! একালা কার সহ হয়না! বিক্লিপ্ত মনটা তার বার বার প্রশ্ন জানাছে ওর কাছে—

কি পেরেছো ? কি পেরেছে। তুমি ? কি রকম ? কিনের— লোভে মা বোনকে ত্যাগ করেছিলে ?

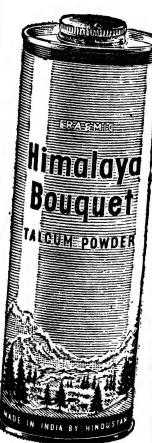
মিতুর সর্বনাশের বিনিময়ে কি লাভ করলে তুমি ? এতদিনের দিবা রাত্রির পরিশ্রমেব অর্থে কার ভোগ বিলাসিতার উপকরণ জ্গিয়েছো ? নিজের মন্ত্রান্তকে বলি দিয়েছো কার পায়ে ? কে ? সে আলেয়া! ওর সবটাই মিধ্যা ছলনা মাত্র!

পেয়েছে বৈকি কিছু ভার কাছে! পেয়েছে বঞ্চনা, অবছেলা, চাতুরী, আর নিদারুণ হতাশা!

চং চং চং কৰে বাত্ৰি বারোটা বেজে গেলো, এখনও বাড়ী কেবেনি ওকভায়া!

কোথায় গেছে ?••

_{অবহারকরন} হিমালয় বোকে ট্যালকাম পাউডাব



সারাদিন সতেজ থাকারজন্যে

। এত जुशक् এত करा थत्रह जाता भतितात्त्र भरक्डरे जामर्थ

बशामिक मध्याव भाष्त्र हिन्दूर्गन् निकार निदे कर्तक कार्यक अवत

HBT 19-X52 BG





বাউল পদ্মলোচন

ব্যাউল-কবিদের মধ্যে স্থনামধন্ত ব্যক্তি ছিলেন জালন ককির। লালন ককিবের মতো এতটা প্রসিদ্ধ না তইলেও, প্রলোচন বা 'পোলো' একজন স্কেবি বাউল ছিলেন।

অধিকাংশ বাউলাপের গানের মধ্যে তর্কথা, জর-সৌন্দর, গীতি-সঙ্গতি প্রভৃতি অধুলনীয় ছইলেও, অশিক্ষিত বাউল-ক্বিদের বছ গানই কাবাংশে নিরুষ্ট। ইচার একাধিক কারণ আছে।

প্রথমতঃ, বাউল সাধকবা জনসমাজ হটতে আত্মগোপন করিয়া দূরে থাকিত, তাহার ফলে তাহাদের গানগুলি রসিক সমাজে প্রপ্রচারিত হয় নাই। ফলে, তাহাদের বহু গানেএই ভাষাভঙ্গা প্রাচীন ধারায় পরিচ্ছিন্ন, সমঝদারদের ধারা পরীক্ষিত হট্যা উৎকর্ষ লাভ করিবার অবদর পায় নাই।

ভক্তর উপেশ্রনাথ ভটাচার্য বলিসাছেন,— বাউল গান আমরা যাহা পাইভেছি, তাহা হইতে ভাষা সম্বন্ধে কোন প্রাচীনম্বের অর্মান করা যায় না! থুব বেশি হইলেও, অষ্টানশ শতাব্দীর শেষের দিক হইতে আরম্ভ করিয়া উনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগ পর্যন্ত ইহাদেব রচনাকাল। লালনের গানের রচনা যদি যৌবনকাল হইতে আরম্ভ হয়, তবে আমরা উনবিংশ শতাব্দীর প্রথম ভাগ হইতে তাঁহার রচনা আরম্ভ হইয়াছে— এইরূপ সঙ্গত অর্মান কবিতে পাবি। বড় জাের, উনবিংশ শতাব্দীর মধ্যভাগ পর্যন্ত বর্তমান গানগুলের রচনাকালের শেষ সীমা ধরা ষাইতে পারে।

শিতীয়তঃ, তথাকথিত অশিক্ষিত বাউল কবিদের বিজাবৃদ্ধি অমুযায়ী গানগুলি বচিত। তাহারা প্রচলিত ভাষায় কোন প্রকারে মনের ভাব প্রকাশ ক্রিয়াছে। উচ্চতর রচনাভঙ্গীর সঙ্গে তাহাদের প্রিচয়ই ঘটে নাই।

তৃতীয়তঃ, লোক-মুথে-মুথে এসকল গানের নানাভাবে পরিবর্তন ঘটিয়াছে। পায়করা নিজেদের মনোমত শব্দের যোজনা করিয়াছে, অর্থ-সঙ্গতির রূপান্তর করিয়াছে। তাহার ফলেও গানগুলির বিকৃতি ঘটিয়াছে। ভবে, ববীক্সনাধ সম্পাদিত 'বা লা কাব্য পরিচরে' বে সকল বাউল গান আছে. সেগুলি কবিছ বনে সমুদ্ধ। কিছ ঐ শ্রেণীর বাউল গান ঐ কয়টি ছাড়া আরু সংগৃহীত হল্প নাই বলিলেই চলে।

পদ্মলোচনের যে বাউল গানটি রবীন্দ্রনাথের কাব্যসংগ্রহে আছে, গেটির কাব্যসোন্দর্য ও প্ররমাধূর্য হুই-ই অতুলনীয়—

আমার ড্বল নয়ন রসের তিমিবে,
কমল যে তার গুটাল দল আঁধারের তারে।
গভার কালোর বমুনাতে রসের লহরী,
(কালোর ঢালা বমুনাতে রসের লহরী)
ও তার জলে ভাসে কানে আসে রদের বাঁশরা।
আমি বাইরে ছুটি বাউল হয়ে সকল পাণরি,
শুরু কেঁদে মরি—ভাসাই কুষ্ণ রসের নীরে।

কার্ডনের ছায় বাউলেও আঁথেরের বাবহার হইত। এই সকল আঁথর গায়করা পূর্ব হইতে নিদিষ্ট করিয়া রাণিত না। গাহিবার সময়েই ভাহাদের কণ্ঠ হইতে আবেগভরে উচ্চারিত হইত। পল্লোচনের গানে এইরূপ আঁথের থাকিত।

প্রলোচন রাচ অঞ্জের বাউল, কাঁচার অনেক গান বর্দ্ধনান অঞ্জেট গীত হয়। গোসাঁট হবি ছিলেন তাঁচার গুফ, প্রায় সবল গানেই তিনি গুকুর নাম উল্লেখ কবিয়াছেন। ভণিতাগুলিতে তিনি নানাভাবে আলগুনি প্রকাশ কবিয়া নিস্তের অকিঞ্নতা জ্ঞাপন কবিয়াছেন—

> 'গোদ'াই হরি বলে, ও পোদে। নচ্ছার, নলে চুরি করলি রে গোঁয়ার, ও তোর মন্তকে দংশেছে ফ্ণী আমার তাগা বাঁধা হ'ল দার।'

এই ধরণের উদ্ধি বাংলা সাহিত্যে প্রপ্রাচীন ! চ্যাপদে, জীকুফ কীর্তনে ঠিফ এই শ্রেণীর স্থবচন ব্যবস্থাত হইগ্রাছে। চর্যা আই সকল উক্তি সে আমলে জনপ্রবাদ হই:। উঠিয়াছিল, তাহার পর হইতে এগুলি, সমানে চলিয়া আসিতেছে।

বাঙলা গানে অফুপ্রাস, শ্লেষ, ষমকের সাহায্যে পদবিক্যাসেব গোন্দর্য্য স্থান্ট করা স্প্রাচীন প্রথা। এই শ্রেণীর বাক্চাতুর্য কবির-গানের আসবে থবই প্রাবল্য লাভ করে। গানের মধ্যে এইরূপ বাক্চাতুর্য ও কথায় কথায় উপমাদি ব্যবহার করা পদ্মলোচনের বচনাবও বিশেষত্ব। এই শ্রেণীর বাউলগান বেশ অভিনয় সহকারে বসাইয়া রসাইয়া গাওয়া হইত:—

গোল ছেড়ে মাল লও বেছে।
গোলমালে মাল মিশান আছে।
গোলমাল বলতে পারে ষে,
গোলের ভিতর মাল থাকলেও চিনতে পারে সে।
ওদে পোদো হ'ল কাণা বেডাল, দই ব'লে কাপাদ থাছে।

'পোদো' কবির আসরী নাম; এই শ্রেণীর খাস্তা-কর। নামের মাধ্যমে বাউল-কবিরা জনসমাজের অস্তরক ছইতে চাহিতেন।

বাউপদের আদর্শ ইইলেন রূপ-স্নাতন। প্রম প্রেমের আহ্বান শ্রবণ করা মাত্র তাঁহার। খ্যাতি-প্রতিপ্তি, পদমর্যদা, ধন-মান সবই ত্যাগ করিয়া বৈরাগী হইরা চলিয়া বান। পদ্মলোচনের নিম্নলিখিত বাউল গানটিতে তাঁহাদের আদর্শ প্রচার করা ইইয়াছে।

॥ আলোকচিত্র॥

••• এ মাসের প্রাছনপটি • • •

এই সংখ্যার প্রাক্তদে একজন বাঙালী মেয়ের আলোকচিত্র মুস্তিত ছটয়াছে। চিত্রটি শ্রীসত্য পাল গৃহীত।



পাহাড়িয়া

—মণ্ট মলিক



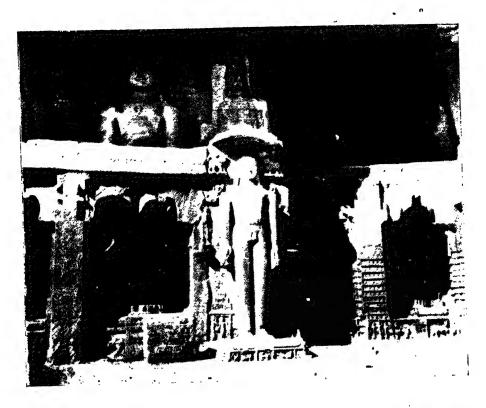
জয়পুররাজ সমাধি

—ভরুণ চট্টোপাধ্যার

চাধীভাই

—থ্ৰত বাগচী





উদয়পিরি (ভ্বনেশ্বর)

–স্ত্ৰত মুখোপাখ্যায়

বিশ্রাম

—নিমাইরতন গুপ্ত

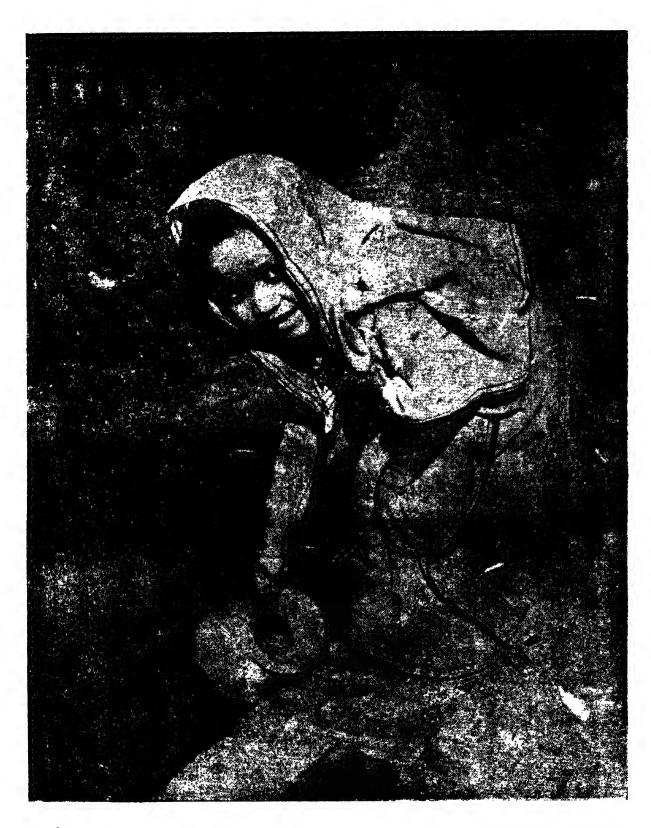




অঞ্জা

—তক্ষণ চটোপাগাৰ





গানটিতে স্বভাবিত প্রবচনগুলি সক্ষণীযু-

'বাগের করণ যজে গেছে গোসাঁট জীরপাসনাতন প্রেমপিরিত করবি যদি ধর গে সাধুর জীচরণ । কথায় কথা সবাই তো কয়, বোবা নর তো জগং জন, ছেড়া চ্যাটায় শুয়ে থাকে, দেখে সাথ টাকার স্বপন । গাভীতে হয় গোরোচনা, সে জানে না তার মরম দেখ, সাপের মাথার মাণিক থাকে, তব্ করে

ভেক ভোজন।

গুলবির নামে প্রচলিত "দিনছ্পুরে চাদ উঠেছে বাত পোহানো ভার" নামক বিখ্যাত গান্টি পদ্মলোচনের রচিত বলিয়া অনেকে মত প্রকাশ কবেন। তাতা হয়ত সত্যও হউতে পারে, গুপুকবি দেশের প্রাচীন কবিদের রচনা সংগ্রহ প্রকাশ করিতেন। তাত বাউল কবিব রচিত স্থান গানটি কাঁচার নামেই চলিয়া গিয়াছে। গানটি বেশ উচ্চাঙ্গের স্বক্লেতালে রচিত; হাত্মস্বস্ব গান বলিয়া বাহাতে সহজ্বেননা হয় তাহার জন্ম গাহিবার সন্যে সাধ্যমত গান্তীর্যমন্তিত রাগিণী ক্রলম্বন করা হইত। গানের শেশে প্রালোচন বলিতেছেন—

'গোস'টি পোদোয় কয় ভেবে এবার, কথা শুনতে চমংকার.
সাধক বিনে বুঝতে পারে এমন সাধ্য কার ?
কথা যে বুঝেছে, সেই মন্ত্রেছে, সিয়েছে দে বেদের পার।'
রক্ষরদের গানে ভবে এই শ্রেণীব ভণিয়া উপযুক্ত হয় নাই।
ইহাতে অতীক্ষিয়তা স্প্রীর বার্থ প্রয়াস হইয়াছে মাত্র!

বাউল গানের মধ্যে ঠারেটোরে আকার ইলিতে গৃঢ় গভীর ব্যঞ্জনা থাকিত, বাউল গানের মনের মাতুষ—বদের মাতুষ প্রমণুক্ষের রপভেদ—

রসের মামুষ থেলা করে বিরক্তাপারে।
তার করণ উন্টা, স্বরূপ রূপের ছটা,
আছে করণ আঁটো, অতি নিনিকারে।
আটে আটে চৌষ টি কুঠুরি ভিতরে,
রসের মামুষ দেখা নিত্য লীলা করে,
তিন ছারে ক্যাট মেরে প্রভূ যান তো বাহিরে,
কভু সিংহছারে, কভু সিরু নীরে।

পদ্ধী-গৃহস্থদের মধ্যে প্রচলিত প্রবাদ, প্রবচন, বাগ্ধারা, টু রো কৈবে৷ রসের কথা পদ্লোচনের গানগুলিকে বন্ধ ফুলের মত স্তরভিত করিয়৷ রাশিয়াছে—

> (ওবে তুই) বইলি বেলা গাছে ব'দে ভূমুব গিলবি কোন সাহদে ? ও ভোৱ ৰাবাৰ এই কি করণ, শোনবে পল্লোচন, পিশীলিকার পাথা ৬ঠে কেবল মরিবার তবে ।

> > श्रीक्यरमय बाय

নতুন রেকর্ড গীতি

হিজ মাষ্টার্স ভয়েস

N 82834—ভামল মিত্রের কঠে হ'বানি আধুনিক গান [†]
^{* হয়}তা দেখিন ও ভালবাদো ভূমি শুনেছি অনেক বার। *

N 82835—ছ'থানি কীর্ত্তন গান "সথি, কহিও নিঠুর আগে"

^{6 কৈন} পেলাম বযুনার কলে" গেরেছেন **ঐযতী ক্টাতি** যোব।

N 828 6-- "ঐ দ্র নীলাকাশ" ও "চম্পক বনে" মানবের মুখে পাধ্যারের কঠে জনবত তু'টি আধুনিক গান।

N 82837—নবাগতা শ্রীমতী প্রতিমা মুখোপাধারের কঠে

- বিক্ত আঁথিব ও "একটি গানেব একটি কলি" স্বাইকে মুক্ত
করবে ।

N 76088 N 7608), 76090 এবং **76091—রেকর্ড** গুলিতে মাত্ত বৃদ্ধে বাণীচিত্রের গানগুলি প্রিবেশিত **হয়েছে**।

কলম্বিয়া

GE 496 — পালালাল ভটাচার্য্যের ভাব মধ্ব কঠের স্থামা স্থীত কোলো বলা স্থানি বলোঁ ও মা বলে মা ভাকতে ভোরে।

GE 24961—কুমারী বনানী থোবের অভিনব আধুনিক গান
— "আম আঁটেব ভেপু" ও "না জানি ঐ কাজস কালো"।

GE 24 62—"মেঘ রাঙ'নো অস্ত আকাশ" ও "ছলকে পড়ে" বৈশিষ্ট্যময় আধুনিক গান – গেয়েছেন শ্রীমতী প্রতিমা বন্দ্যোপাধার।

GE 24963—ভাষল মুখোপাধ্যারের স্থরেল। কঠের স্থলর গান "দেখ শুক্তাগা" ও "চাদের থেকে অনেক দ্বে।"

GE 30427— জীমতী আশা ভোঁসলে ও মারা দে'র কঠে "গলি থেকে র'জপ্থ" বাণীচিত্রের গান।

GE 30428, GE 30429 এবং GE 30430 দ্রেকর্ম গ্রিতের বানাডিতের পানগুলি গেরেছেন জীমতী আশা ভৌগ্লে, হেমন্ত মুখোপাধ্যায় ও জীমতী ইলা বস্থ।

সঙ্গীত-যন্ত্র কেনার ব্যাপারে আগে মনে আসে ডোরাকিনের



क्था, अठे।
थ्रदे चाछाविक, दक्रममा
नवारे जादमन
रणाया किरन्य
ऽ५-१६ नाम
दथरक मोर्चपिरमय जान-

ভাদের প্রভিটি যন্ত্র নিখুত রূপ পেরেছে।

কোন্ যথের প্রয়োজন উল্লেখ ক'রে মূল্য-ভালিকার জন্ম লিখুন।

ডোয়ার্কিন এও সন্ প্রাইভেট লিঃ
শোক্ষ:--৮/২, এস্প্ল্যানেড ইন্ট, কলিকাডা - ১

আমার কথা (৫৬) মঙ্গীত-শিল্পী পরেশ দেব

সাধ পরাগীতি বাঙালীর নিজস্ব সম্পন। এই পরীগীতির মধ্যেই বাংলার গ্রামীন সমাজের সাহিত্য ও সঙ্গীত সহজ ভাবে বিকাশ লাভ করেছে। তাই, এ বাংলার তথা বাঙালী সংস্কৃতির একটি প্রধান উপাদান।

সরল ° রাজীবনের আণা-নিরাশা, প্রেম-বিবহ, সাধন-ভঙ্গন, দৈনন্দিন জীবনের সর্বাধিক ভাবাবেগের অতি সহজ অভিবাক্তি দেখি পরীগীতির ছন্দে চন্দে। নিত্য-বাবহার্য্য কথার সাধারণ অলঙ্কার-উপমায় এ এক অনাধাস খনাড়খন স্থ ধুব সাহিত্য-স্থাই ; পরা-কাননে কার্কুতির আপন পেয়ালে প্রস্কৃতি বিচিত্র ফুলের সন্থান বিচিত্র মার্ক্য-ভরা। কলে খনানা কোন গ্রাম্য কবি আপন থেয়ালে বচনা কারছেন এই স্থালিত পদবাজি, হালয়ের গানীর আবেগ ও দরদ-ভরা স্বরে ছড়িয়ে দিয়েছেন পরাবাসীর কঠে কঠে। বৈবর্গী-বাউলের ভন্তন, নদাতে নৌকা-চালনা বহু মাঝি, পেত্র-খামারে কর্মরত কিয়ালের গানে পরা পরিবেশ কি অপুর্ব্ব মার্ক্য মণ্ডিত হয়ে উঠে। আধুনিক যুগে নাগ্রিক সভাতার এই জ্য়যাত্রাব মাঝে শহরে উচ্চাঙ্গ ও আধুনিক সঞ্চিত্র পার্শে পরী-স্পীত তানার ব্যাবাগ্য আসন করে নিয়েতে।

ঐ প্রাস্থেক গীতিকার ও স্থাকার প্রীপরেশ দেবের নাম উ ল্লখ-ধোগ্য। পল্লীর গায়কদের নিজম্বর্ভার আশ্চর্যাভাবে রূপ পেয়েছে পরেশ বাবুর কঠে। এ ক্ষেত্রে ইনি ঞ্জীশচান দেব বশ্বনের উত্তর-সাধক। দে আজ অনেক দিনের কথা। তক্তপ শিল্পী পরেশ দেবের কঠে 'আমার ভালা বরে চাদের আলো', 'ত্মি কি আমার বন্ধুরে, আমি কি ভোমার বন্ধু' ইত্যাদি গানগুলি কোন এক সরলা পল্লীবালার প্রেম ও বিরহে আমাদের মন ব্যাকুল করে তুলেছিল। পরেশবাব্ একান্টই পল্লীবাংলার মামুব, তাঁর কঠে গ্রাম্য গীতিকারের মনের সহজ্ব সরল অনাড্যার ভাবটি অনায়াস-দক্ষতায় ধরা দিয়েছে।

ত্তিপুরা জেলার "ব্রাক্ষণবাড়িয়।" শহরে ১৯১১ সালে পরেশ দেবের জন্ম। সঙ্গীতের ঐতিহ্ন তাঁচার পরিবারে ছিল না। তাই তীর আবাল্য সঙ্গীতাহ্যরাগ কোন অন্তক্ল পরিব শে বেড়ে উঠতে পারেনি। তবে মাতামহ অনস্ত কুমার দেব ও ব্রাক্ষণবাড়িয়া ছুলের শিক্ষক হরেন্দ্র ভটাচার্ব্যের প্রেরণা ও উৎসাহ তাঁর সাফল্যের সঙ্গাক্ষক হয়। হরেনবার নিজে সঙ্গীতান্ত্রারী ছিলেন, এবং ছাত্রের সঙ্গীত চর্চার তিনি ছিলেন প্রধান উৎসাহদাতা। তাঁর সম্মেহ সাহচর্ব্যে সাংলার পথে পরেশবাব্র যাত্রা শুক্ত হয়। অন্ত করেক বংসবের মধ্যেই তিনি সারা ত্রিপুরা জেলার স্মর্বন্ঠ বলে পরিচিতি লাভ করেন। এই সমরে মাত্র আঠার বংসর ব্য়সে আসামের এক চা-বাগানের সাহেবকে গান শুনিয়ে তিনি চাকুরী লাভ করেন। কিছ এই চাকুরী জীবন বেশি দিন তাঁর ভালে লাগেনি। সঙ্গীত-সাধনার উগ্র বাসনায় আবার তিনি ফিরে এলেন ব্যক্ষণবাডিয়ার।

ननीषाञ्चानी मात्वरे सात्नन, ज्यनकात भूसवाःनात वरे कृत

শহরটি সঙ্গীত চর্চার এক বিশিষ্ট স্থান অধিকার করে ছিল। এখানেই অন্মগ্রহণ করেন ওম্বাদ্ আলাউদ্দীন খাঁ-সাহেব, স্বর্গতঃ কামিনী কুমাব ভট্টাচার্যা, স্বর্গতঃ অঞ্চয় ভট্টাচার্যা, স্বর্গতঃ স্থায়গাগর তিমাংশু দত্ত প্রভৃতি বিশিষ্ট শিল্পী ও গীতিকার। বাংলা সঙ্গীতে সমগ্র ত্রিপুরা জেলার অব্ধান্ত কম্নতে।

কামিনীবাব্ ও ওস্কাদ আলাউদ্দীন থাঁবে নিকট পরেশ দেব তুই বংসরকাব সঙ্গীত সাধনার অংগাগ পান। পরে ১৯৩৪ সালে কলিকাতার এসে প্রসিদ্ধ স্থরশিল্পী জ্ঞান দত্ত, বাণীকণ্ঠ ও অজস্ম ভটাচার্য্যের সঙ্গে তাঁরে পরিচয় হয় এবং স্থরশিল্পী শৈলেন দত্তভগ্রের কাছ তিনি নিয়মিত সঙ্গীত শিক্ষা করেন। এই সমগ্র মেগালোন কোম্পানী তাঁর "ভাঙ্গা ঘরে চাদের আলোঁ গানগানি রেকর্ড করে এবং কলিকাতা বেতার কেন্দ্রেও তিনি গান গাইবার অংবাগ লাভ করেন। ১৯৩৭ সাল ইইতে ১৯৪০ সাল পর্যাম্ব পরেশবাব মেগালোনে সঙ্গীত-শিক্ষকের কাজ করেন। ইতিপুর্বের্ব ১৯৩৫ সালে কালী কিন্দ্রের একগানি ছবিতে তিনি প্রের্বাক গান করেন। ভীম্বদেব চটোপাধ্যায় উক্ত ছবিথানির সঙ্গাত-প্রিচাঙ্গক ছিলেন।

১৯৪° সালের পর তিনি ঢাকা বেতারে যোগদান ক'রে নিয়মিত পল্লাগীতি, ভজন ও ঝ্মুর গানের প্রচার করেন। দঙ্গীতের হব ঢংও পল্লাগীতিতে রাগ-প্রধানের সমন্বয়ে পরেশ নেব শটীন দেব বর্মনেরই অনুবর্তী। জাহাব ভ্রমরা যাওরে মধ্বনে মধ্নাই', 'ওরে ভামের বিহনে মধ্বদোরে গোঠের ধেকু নাহি তৃণ থায়,' 'কোন্ রঙ্গীলা নাইয়া ডিঙ্গা বাইয়া যাওরে' প্রভৃতি গানগুলি ওন্তে শতীনদেবের বিখ্যাত গানগুলিই মনে পড়ে। ১৯৪০ সালে 'রাজকুমারের নির্বাসন' ছবির প্রেব্যাক গাইবার জ্ঞে সঙ্গীত-প্রিচ'লক শচীনদেব বর্মণ প্রেশ্ বাবুকে মনোনীত করেন।

মেগাফোনে কান্ধ করার সময় নজকল ইসলাম পরেশাব্র পরীগীতির প্রতি অমুরাগে অভান্ধ মুগ্ধ হন এবং তাঁহাকে গাহিবার জন্মে গানও লিথে দেন। ১১৩১ সালে স্বর্গত ইম্প্রেমারিও হরেন ঘোষের সম্প্রদায়ের অন্তর্ভুক্ত হ'যে তাঁর ইউরোপ ষাত্রাব কথা হয়। বিদ্ধ যুদ্ধারন্তে এই পরিকল্পনা পরিভাক্ত হয়। ১১৪৭ সল হ'তে ১১৫১ সাল পর্যান্ত ভিনি কলম্বিয়া কোম্পানীর সঙ্গীত শিক্ষক (ট্রেণার) পদে অধিষ্ঠিত ছিলেন। পরে ক্রেক বংসর মেদিনীপুরেব বাসন্ত্রীপুর ষ্টেটের টেট-মিউজিশিয়ান ছিলেন।

পরেশ দেব বিভিন্ন সঙ্গীত-সম্মেলনে যোগদান করিয়া শ্রোভ্নপ্রসীর অভিনন্দন লাভ করেছেন। ১১৪৭ সালে তিনি তানগেন সঙ্গীত-সম্মেলনের বিভাগীয় বিচারক পদে নিযুক্ত হ'হেছিলেন। 'এটালি সাম্মেতিক সম্মেলনে' সঙ্গীতের একটি বিভাগের পরিচালনা ভারও পড়ে পরেশ বাবুর উপর। রাজভবনে সোভিয়েট অভিথিবন্দের সম্বন্ধনা উপলক্ষে আমন্ত্রিত বিশিষ্ট শিল্পীনের মধ্যে তিনিও আমন্ত্রণ লাভ করেন। পরেশবাবু ক্রেক্থানি ছবির সঙ্গীত পরিচালনায় বিশেব কৃতিত্ব প্রদর্শন করেছেন। সঙ্গীত-সাধনায় পরেশান্ জীবন উৎসর্গ করেছেন এবং বতদিন বেঁচে থাক্বেন, সঙ্গীতের সাধনাই করে বাবেন।



এ দেশের অলকার-শিল্প

কালা তথা ভারতে গগনা বা শংস্কারের প্রচলন চলে আঙ্গন্তে শারণাতীত কাল থেকে। আঙ্কন্তের দিনে সেটা অবগুলহ গুলে বেডেছে, দে-ও সঙ্গে সঙ্গে স্বীকার্যা। বাঙালী সাধারণ-ভাবে রূপ ও গৌন্দর্যোর পূজারী—ভাই নারীদেহে যে-ধরণেরই হোক্, অল্ল-বিস্তর অলক্ষর ভার চাই।

এ কিছুমাত্র অভিশয়েংক্তি নয়—বাংলার অলক্কার-শিক্ক বাংলার একটি পরম ঐতিহা। সমগ্র ভারতে তো বটেই, অহিভারতেও এর সনাম ও থ্যাতি ছড়িং আছে। বাঙালী স্বৰ্শিক্ষী ও মণিকারগণ যেমন স্কাও সুন্দর কাজ করতে সক্ষম, অক্তর তেমনটি আজও বিরল।

গচনাশিল্পে বাংলা যে গৌরবময় ঐতিহা সৃষ্টি করেছ তা একদিনে চয় নি, সহজেট অফুমান করা চলে। এর পিছনে এদেশের দুর্ব-বিশিক সমাজের অবদান রয়েছে অপরিসীম া গোড়া থেকেট এ ঠানের জাতীয় ব্যবসা ছিল—এখনও এই উন্নত শ্রেণীর ব্যবসা বা শিল্পে ঠারাট রয়েছেন অধিক সংখ্যায়। আজকাল অক্সসমাজ বা শ্রেণায়র লোকও এদিকে আকৃষ্ট হয়েছেন এবং শিল্পের মান ও ক্ষেত্র ক্ষমেট সম্প্রসারিত হয়ে চলেছে এটি লক্ষ্য করবার।

প্রথমাবস্থার গ্রামেশ্যরে সাধারণ বণিক বা আকরার হাতে ছিল এই শিল্পের মানদণ্ড। সামার মুক্তধনের উপত নির্ভর করে সেদিন ভাদের কাজ-কারবার চলতো। ধারা গ্রনা তৈরী করতেন, প্রফোজনীয় সোনা বা রুপো সরবরাত করতেন তাঁরোই। শিল্পী মনোমত গ্রনা তৈরী কবে দিয়ে হাতে তুলে নিতেন শুধু তাঁর প্রাণ্য সামার্য মজুরী বা বাণী।

সংবশুলো গড়ে উঠতে থাকলে সেখানেও এই ব্যবসা চালু ইয়ে চলে ক্রমিক থারার। বকমারী অলঙ্কাবের চাহিদা বুগে বুগা বিদিত হয়ে চলে দেশের সর্বত্ত। তভ বিবাহ কিংবা অপর কোন মাঙ্গলিক অনুষ্ঠানে যৌতুক দানের প্রশ্ন উঠলেই গহনার কথা বিচ করে দেখা দিতে থাকে। বিগত শভান্ধীতেও দেখা গেছে— রুণার গহনা বা অলঙ্কাবের সমাদরই বেশি—এমন কি, ধনিক ও মুদ্রান্ত লোকের গৃহহও ছিল এরই সমধিক প্রচলন। ক্রমে সেই ইচির রুপান্তর ঘটতে দেখা গেলো—তথন থেকেই রুপোর চেরে সোনার গহনার চাহিদা বেড়ে যায়।

প্রামের পরিবেশে বে শিল্প এক কালে আবদ্ধ ছিল, সহরের ফিন্তর আওতায় এসে উহা উন্নতির প্রচুর স্থবোগ পায়। ফিল্ডান্তের চাহিলা যতই বৃদ্ধি পেতে থাকে, দেখা বায় বে সাবেকি মণের ব্যবসা-কাঠামোতে এ জার চলে না। মাল মঞ্ছুত করে রাধবার প্রয়োজন দেথ। দেয় এইভাবে আর সেটি সম্ভবপর করে ভোলবার জন্ম মূলধন বিনিয়োগ অপরিহার্য। হয়ে ওঠে। বি**ন্তশালী** পোন্দারগণ প্রচুব অর্থ নিয়ে এদিকে এদিয়ে আদতে থাকেন। তাঁলের নিরক্স উভাম ও ব্যবসা-প্রীতি— শিল্পী ও কারিগবদের দক্ষণ। ও অধ্যবসায়ের ফলেই আজ এটি এক বিশাল শিল্পে পংশিত হয়েছে।

অলক্ষার শিল্পে বাংলার ভেতর রাজধানী কসকাতার স্থান সকলের শীর্ষে, এ কারও অজানা নয় । গ্রামে ও ছোট সহরে এখনও কুশসী শিল্পী বা পেশাদার স্থ্যাকরাগণ সোনা-রূপোর কাজ-কারবার করছেন বটে, কিন্তু নতুন নতুন নস্থা বা ডিক্সাইনের ভক্ত কলকাতার দিকে তঁ'দের দৃষ্টি না রাখলে চলে না। দেশ-বিভাগের আগে ঢাকাতেও (বর্তুমান পূর্ব্ব-পাকিস্তানের রাজধানী) এই শিল্পের একটি বড় কেন্দ্র ছিল। সে অঞ্চনের অলক্ষার-শিল্পী ও স্বর্ণকারগণ একটা বৈশিষ্ট্যের দাবী রেগে এসেছেন বরাবর।

কলকাতার বাজারে আজু স্বর্ণালকারের দোকান ব' ব্যবসাকেন্দ্রের অভাব নেই। নগরীর সর্বত্য—এমনকি, অলিতে গলিতে—
এই শিল্পসম্ভা ছড়িয়ে আছে। সবচেয়ে বেশি দেখতে পাওরা
বায় অবক্ত বিপিন বিহারী গাঙ্গুলী ব্লীট বা পূর্বতন বছবালার স্থাটে।
ভাবপরই বোধ হয় রাসবিহারী এভিনিউ—গড়িরাহাটা, কর্ণওয়ালিস
স্থাটি, ভবানীপুর-কালীখাট প্রভৃতি এলাকার নাম করা বায়।
বতপ্র থবর নেওয়া গেছে, তাতে দেখা বায়, কলকাতা ও হাওড়াতেই
বড় রাজায় শো-কেস সাজিয়ে কাজ-কারবার চলছে, এমন দোকানের
সংখ্যা ছই হাজা রয় কম হবে না। অপর দিকে হাজার হাজার
লোক এই সকল দোকানে কর্ম্ব-নিমুক্ত রয়েছেন, এ সহজেই অমুমেয়।

পঁচিশ ত্রিশ ৰছর আগেও কিন্তু এত অধিক সংখ্যক গংনাৰ দোকান মহানগরী ও সহরতলী অঞ্চলে ছিল না। দেশ বিভাগের পর কলকাতা এলাকায় অত্যধিক লোকবৃদ্ধি হয় আর **ভূরেলারী** ফার্ম্মে সংখ্যাও বদ্ধিত হয়ে চলে ধাপে ধাপে। বহু অর্পকার তথা স্তদক্ষ শিল্পী ও কারিগর পূর্ববঙ্গ থেকে এদিকে চলে এসেছেন এবং ছোট বড় দোকান খৃলে তাঁরা বদেছেন নানা বায়পায়। আধুনিক গহনাপত্রে বহু ক্ষেত্রে তাঁদের দক্ষতা ও নৈপুণার স্বাক্ষর চোথে পড়ে।

আর একটি জিনিস এ প্রাংক লক্ষ্য করার বে, পূর্বে এই
মহানগরীতে এই শিল্প বা ব্যরসাটিব রূপ এখনকার চেরে পৃথক
ধরণের ছিল। একটু আগেই বলা হলো—তখন দোকানের সংখ্যা
এত অধিক ছিল না। আক্তকের দিনে কলকাভার এমন কোল
রাজপথ প্রার পাওরা বাবে না, বেখানে ছুই চারটি কুরোলারী শপ

নেই। কত সহত্র স্যাকরা ও অর্থকারের দোকান (লো-কেস বিহীন) রয়েছে নগরীর অসিতে গলিতে—মহরায় মহরায়। বিগত দিনগুলোতে স্বৰ্ণিৱের বাছাবে তেজারতী বা कांक कांववावहै किल विभि। অবগ্র নির্মিত ব্যবস্থায় চলতো সোনা-রপোর বেচা-কেনার व्यक्त গহনাপত্র অর্ডার পেরে তবেই সববরাত করার বীতি ছিল সেদিনে **অনেকটা চলতি। তথনকা**র দিনে আজকার মতো দোকান পাট এমন সজ্জিত ছিল না— ভুয়েলারী ফার্ম সমূতে শো-কেলের প্রচলন **অলদিনেওই বলা যায়। এখন বেশিবভাগ দোকানেই তৈরী** (বেডি-মেড) জিনিষ বিক্রি হয়—গ্রনার অগণ্যা নমুনা শো-কেসে সব সময় ম**জুত থাকে।** ক্রেভাদের পক্ষে অর্ডার দিয়ে পত্সসই **জিনিষ পেতে আগের** চেয়ে স্থবিধা এখন বেডেছে বই কমেনি।

এ দেশের গৃহনা ও গৃহনা-শিল্প আজ সভিয় বিশেষ গর্বের ব্যাপার। অভীত দিনের ভূলনায় এ এগিয়ে গেছে সকল দিক থেকেই, বলতে বিধা নেই। শিল্প কাজ এগন অনেক স্কল্প ও বিশুদ্ধতায় প্রিত হয়েছে—নিত্য নঙুন নক্সা ও ডিজাইনের সর্বত্র হুড়াছুড়ি।

ষ্ণ পরিবর্তনের সঙ্গে সংক্ষ গছনা যারা পারবে, সেই নাঙী সমাজের ক্ষৃতিও বে না পালটিয়েছে, তা নয়। আগোকার দিনের মেরেদের পছক্ষ ছিল ভারী অপক্ষারের ওপর; নক্ষা বা ডিজাইন নিরে এতটা মারামারি ছিল না এখনকার মতো। এ যুগে যেয়েরা গহনা কিনতে এলে সাধারণতঃ হালকা জিনিবেই সম্বাই হন, শুধু, তারা দেখেন কাজটি স্ক্ষ কি না। এখনও সাবেকি ধরণের স্মুমকো পালা, চিক, তাগা (অনস্তু), বালা ইত্যাদি ব্যবহার করা হয় বটে, তবে পূর্বকার ভূলনায় নিশ্চয়ই হাকা ওজনের। অথিনৈতিক কারণ এর পিছনে বিশেষভাবে রয়েছে, দেত্ব অবশু জন্মীকার করা বার না।

শ্বনকুশলী মণিকার ও ম্বর্ণশির্নাদের প্রয়ন্ত ও উভ্তমে অলক্ষারশিক্ষ ক্রমেই উন্নতির দিকে যাবে । সাধারণ গৃহস্থ পরিবারের ক্রয়ক্ষমতা ষতই বাড়বে, এ শিল্পের অগ্রগতির পথও হবে তত প্রশস্ত ।
বৌভুকের প্রশ্ন বাদ দিলে, বিপদের দিনের সম্বল হিসাবেই বহুক্ষেত্রে
মধ্যবিত্ত ও নিম্নমধ্যবিত্ত ঘরে সোনার গহনা কেনা হয় । কিছুদিন
হয় সরকার এই শিল্পের ওপর বিক্রয় কর ধার্য্য করেছেন । এই
কর ব্যবস্থা এমনি করা হরেছে যে, গ্রাহক বা থরিক্ষারের নিজের
সোনার গহনা তৈরীর বেলাতেও উগ্ল প্রযুক্ত হয় । বিক্রয় করের
প্রাশ্রটি নিয়ে তাই একটা অসজ্যোব রয়েছে, সেই থেকেই । যা হোক,
বাংলার অলক্ষার-শিক্ষ নিজের স্থনাম ও ঐতিহ্য বহন করে এগিয়ে
চলুক, সকলেই এই দাবী রাধতে পারে।

মধুর ব্যবসা ও পশ্চিম-বঙ্গ

কি নামে, কি কাজে, সকল দিক থেকেই মধু সভিয় মধুর।
এব আদ ও মিষ্টপ্রের বেমন তুলনা হয় না, তেমনি এব উপকারিতাও
অপরিদীম। মাতৃগর্ভ থেকে ভূমিষ্ট হওরার পর, লিশুর মুখে মধু
দেওরার রীতি বছদিনকার। বার্দ্ধকোর দিনগুলোতেও মামুযকে
কম শক্তি বোগার না এই মধু। পূজা-পার্বণে বা উৎসব-অন্তর্গানে
রখণ প্রশোজন হয়, এশ্ব একটি চিরাচরিক রীতি। অনেক বোগের

ক্ষেত্রেই এইটি মূল্যবান্ ঔষধের কাজ করে থাকে। সর্বোপরি এ যত্ত সহজপাচ্য, তত্তই বুঝি পুষ্টিকর।

বর্ত্তমানে পশ্চিম বঙ্গ একটি ঘনবসভিপূর্ণ রাজ্য। এখানকার বিপুল স থাক অধিবাস র মধ্ব চহিনা নিভান্ধ কম হবার কথা নয়। সে দিক থেকে মধ্কে কেন্দ্র করে আধুনিক ধারায় স্থলের ব্যবসা বা শিল্প গড়ে উঠতে পারে এই দেশে। এর জ্ঞে একদিকে চাই ক্তকগুলি উপ্তমনীল ও ব্যবসা-বৃদ্ধি-সম্পন্ন মান্তব্য, অপ্র দিকে যথাসন্তব স্বকারী সাহায্য ভ সুহযোগিতা।

ব্যবদার কথা উঠলেই, মধুব উৎপাদন কিভাবে বৃদ্ধি করা ধার, সেইটির উপর সক্ষ্য রাথা দরকার আগেভাগো । ভেজালহীন ভালো জিনিম নাজারে সরবরাহ করতে পারলে, কাটিতি সম্পর্কে ভাবতে যাওয়া (অক্সত: মধুব বিষয়ে) নিম্প্রয়োজন । রাজ্য (পশ্চিমবঙ্গ) সরকারের ভ্জাবধানে স্করবন অঞ্জল থেকে যে মধু সংগৃহীত হয়, ভার একটা স্থায়ী বাজার নিশ্চয়ই রয়েছে।

মধুর উৎপাদন বাড়াবার জন্তে বিজ্ঞান-সমত বিভিন্ন পদ্ধতি অনুসরণ করা দব সময়েই সমীচীন হবে। মধু আহরদের প্রান্যে বীতি প্রয়োজন হলে পরিচার করা ছাড়া উপায় নেই। অনেক সমন্ত্র পরীক্ষায় দেখা বায়, মৌচাক থেকে মধু সংগ্রহ করা হলেও, সে মধু নির্ভরযোগ্য হয় না। এর কারণ, অবৈজ্ঞানিক সংগ্রহ-পদ্ধতি— বাতে করে মৌচাকের কত লো দূষিত পদার্থ হয়তো মধুতে মিশে বায়। স্তরাং মৌনাছি পালন থেকে মৌ বা মধু আহ্বণ অবিধি স্বটা কাজই হওয়া দরকার বিশুদ্ধভাবে আর নিতান্ত যতু সহকারে।

পশ্চিমবক্স সরকারের বন-বিভাগের নিষ্টাবিত পার্থিট নিয়ে স্ফারবন অঞ্চল থেকে বে মধু সংগৃহীত হছে, প্রসঙ্গতঃ তার একটি তিগাব পর্যালোচনা করে দেখা যাক্। ১৯৫৭-৫৮ সালে যে মধু সংগৃহীত হয়, উহার পরিমাণ ছিল ৩,৬০১ মণ। ১৯৫৮-৫৯ সালে অর্থাৎ বিগত বর্ষে ২,৬৮১ মণ মধু সংগৃহীত হয়েছিল এবং আলোচ্য বর্ষে সংগৃহীত হয়েছে ৩,৬০০ মণ। সরকার এই (মধু) খাতে বেশ কিছু টাকা রাজ্য সর্বাপ পেয়ে থাকেন, তার সেটি প্রতি বছরই।

অমুসন্ধানে জানা গেছে — পশ্চিমবঙ্গের বিপুল চাছিদা মেটাতে বাইবে থেকে এখনও মধু আমদানীর প্রয়োজন হর। আমদানীর ত মধুব বেশিটাই হচ্ছে অস্ট্রেলিয়ার ও দিংহলদেশের। যেখা ন একটু চেষ্টা থাকলেই স্বয়ং-সম্পূর্ণ হওলা যায়, সেখানে বাইবে থেকে আমদানী করতে যাওয়া সমর্থনিযোগ্য নয়। পশ্চিমবঙ্গে এই ব্যাংসাটি সম্প্রসার এখনও বথেষ্ট স্বয়োগ রয়েছে। জার সঙ্গে সঙ্গে বগতে হয়, এ 'সম্ভা-সঙ্কুল' রাজ্যের বছ পরিবারের জীবিকা নির্বাহ হতে পারে এই থেকেই।

মধ্ব ব্যবদার কথা বলতে গেলে উহার সঙ্গে জড়িত আর একটি জিনিবের কথাও বলার প্রয়োজন হয়। মোলাকে বে মে:ম পাওয়া বায়, সেইটি কেন্দ্র করেও ভাল ব্যবদা বালিজ্ঞা হতে পারে। মে:ম থেকে বছ রহমারী প্রদাধন সামগ্রী তৈরী হয়— বাজারে বার বেল চাহিদা ও দাম বরেছে। যদি দেখা গেলো মোম তৈরী অপেকা মোমজাত পণ্য উৎপাদন লাভকনক হবে তা হলে সেদিকেই বোঁকি থাকা উচিত! মোটের উপর, আভাজ্বরীণ চাইদা মিটিয়ে বাইবে গুণু মধুই নর, মধুব সংগ্রিষ্ট মোমজাত ক্রব্যের বস্তানীও কি উপারে বাছানে। বায়, সেদিকে লক্ষ্য না রাথলে নয়।





আব্তুল আজীজ আল-আমান

সোক্ষানপুর বালিকা-বিদ্যাপীঠে ছুটির ঘণ্টা পড়লো।
চারটের ঘণ্টা। বাঁধভাঙে বঞ্চার জলের মন্ত খিল্পিল
হাসিতে মুখর হ'য়ে হরকী-বাঁধানো লাস গড়কে নামলো ছাত্রীর
দল। নাল আকালে ডানা মেলে হাওরায় উড়ে চলেছে। ফ্রকের
গোল বেড় ঘ্রিয়ে, রভিন ফিতের বাঁধা ঘাড় ছোঁয়া কেশ ছুলিয়ে,
রাস্তায় বেন মাডামাতি শুরু করেছে ছোট মেরের দল। তর্কনীয়
চলেছে বেণী ছুলিয়ে বুকে বই চেপে মন্থর পদক্ষেপে। কিছুক্ষণের মধ্যে
কোলালল ভিমিত হয়ে এল। সহর্তসীর জনবিরল সড়কে আবার
নিজকতা নেমে এল।

বিজ্ঞাপীঠের গেট পেরিরে এবার পথে নামল দিদিম্পির। হাতে বেঁটে ছাতা। কাঁথে ঝোলান রভিন ব্যাপ। অনস্থয়া, গৌরী, রাবেয়া—।

থানিকটা পথ এগিরে এনে অর্থস্থা—গোরী বাঁক ঘ্রে বাড়ীর পথে মিলিরে গেল। নিকটেই বাসা। রাবেয়াকে আরো থানিকটা পথ যেতে হবে। লাল সড়ক বেরে বকুলতলা হয়ে জনপ্রিয় লাইত্রেরীর সামনে দিয়ে থানিকটা এগুতে হবে। ভারপর শেখ পাড়া। প্রায় মিনিট দশেকের পথ।

মাথা থেকে ছাভাটা সিরিয়ে একবার প্র্যুটার দিকে ভাকাল রাবেয়া। ক্লান্ত প্র্যু বটগাছটার আড়ালে হুরে পড়েছে। তারপর আবার ছাভার মাথা ঢেকে মৃত্ ভালে পা চালিরে দিল। শ্রীরটা অভ্যন্ত ক্লান্ত মনে হছেছে। সারা দিনটা একটানা বক্তে হয়েছে ক্লানে ক্লানে। কাঁকি সে দের না। দিতে পারে না। অক্ষের বন্টার অক্ষ করতে বলে দিয়ে দিবিয় বলে থাকা বার, কিছ্ক না, কাঁকি দের না রাবেয়া। ছাত্রী মহলে ভাই ভো তার এত নাম। ঘণ্টার শ্রেথম থেকে শেব পর্যান্ত এতটুকু বিশ্রাম করে না দে। পাঠ্য বিব্রের মধ্যে সমগ্র প্রাণ-মন থেন ঢেলে দের রাবেয়া। অবাক হরে শোনে মেরেয়া। পড়া শুনতে ভানতে ভারাও ভাবে মনে মনে তারাও বিদ অমন করে পড়াতে পারত।

বকুল তগার এনে বেন মুক্তির নির্ধাস ফেলে বাবের। ছাতাটা বন্ধ করে গাঁড়ার। বোল-ই গাঁড়ার এখানে। কোন কোন দিন অনেকণ বসে থাকে সব্জ যাসের উপর। আলও বসল। মুগুল হাওয়ার বকুলের মিটি গন্ধ। ভরাট এক-বৃক নির্ধাস টেনে নিল রাবেরা। ক্লান্ত দেহটা বেন পরম শান্তিতে ভূবে গেল। সালনে সর্জ খাসের উপর একটা চড়ুই বসে সাকালাকি 🗨
করেছে জাপন মনে। একটা কাঠবিড়ালী লেজ স্কুলিরে
জব'ক চোথে তাকিয়ে জাছে সে দিকে। বড় ভাল
লাগে বাবেরার। একটা চিল নিয়ে কোলা লেজে মারতে
গিরে খেমে গেল। কি ফল হবে এই রোমাণ্টিক
দৃশটো নই করে ? সেও মুগ্র বিফারিত হই চোথ মেলে
তাকিয়ে বইলো। অনেকণ।

হঠাৎ মনে হলে। এক সাইকেল-আবোহী ত্রেক কদে নেমে পড়েছে রাস্তায়। মাঝে মাঝে এমন উপদ্রব শুন হয়। বংমহল ইউনিয়ন বোর্ডের প্রেসিডেন্টের বড় ছেলে মুগা এমন আকেমিক ভাবে এসে মাঝে মাঝে ঘনিষ্ঠ হতে চায়! সতর্ক হয়ে ভাকায় রাবেয়া! না, মুগা নম্ম আইসান। ববিউদ্দিন চাচার ছোট ছেলে। রাবেয়া শুধায় কোথার বাচ্ছিসরে আগসান ?

সাইকেক্টা একছাতে ধরে আহসান জবাব দেয়, কুমুণ্মিষ্টাল্ল-ভাণ্ডারে—কিছু মিষ্টি আনতে। একটু থেমে বলে, জান আপা— আজ আড়াটটার মেলে আবিদ ভাই বাড়ী এসেছে।

আবেগে উচ্ছাদে হঠাং বেন ফুল ওঠে গাবেয়া। এঁয়া— আবিদ বাড়ী এনেছে, আবিদ। পাণ্টা শুধায়, সভিয় ?

মিটি আনতে তোষাচ্ছি দে জতে। সাইকেল চড়ে সড়ক বেয়ে দুব পথে মিলিয়ে যায় আহমান।

বাবেয়ার সারা দেইটা যেন কেঁপে ওঠে। ইঠাৎ আলোর বলকানির মত খুলির আমেজে রাস্তি জড়িমা বেন ছিটকে পালিরে গেছে দেই থেকে। ইঠাৎ—ইা একাস্ত ইঠাং-ই এক গুড় শুভ কেতকীর মত হালকা হয়ে গেছে দেইটা। বহু বছর পর কুমারা-জীবনের স্টে প্রথম প্রেম-জাগা প্রভাতের ছনিবার শিহরণের মত অভিনব এাবেগে আন্দোলিত হয়ে ওঠে সারাট দেহের অণুপ্রমাণু। একি—এমন করে কাঁপছে কেন রাবেয়া ? স্থার্থ তিন বছর পর প্রামের শাস্ত পরিবেশে ফিরেছে আবিদ। বলিষ্ঠ স্থঠাম যুবক। ক্মঠি, স্বৃদ্ অভিমতে অচঞ্চল। কিছে তার জল্যে রাবেয়া কাঁপছে কেন এমন করে ?

বকুলভগার সেই শাস্ত্রশীতল নির্জন ছায়াতলে সবৃদ্ধ বাদের ওপর বদে চারিদিক সম্তর্পণে একবার দেখে নিল রাবেয়া; না—কেউ নেই কোথাও। তারপর ছর্নিবার আবেলে লুটিয়ে পডল কোমল ব'সের বৃক্তে। চোথ বন্ধ করে স্বপ্লের বোরে ধেন বলে ফেললো,—ভুমি—ভুমিই এসেছ আবিদ!

উ: সেই ছোট বেলা থেকে আর এই সেদিন পর্যান্ত কত হাসি, কত গল আর কত গান। একই পাড়ায় বর। একই সাথে কুলে বাওরা। একই সাথে থেলা, আর একই সাথে থাওয়া।

বিকেলের অলস বেলার মা কাঁখা সেলাই করতে বসেছে রোরাকে! ছটিতে কোখার ছিল—হঠাৎ এসে হাজির। তারপর আর কি। ছজনেই লুটিরে পড়লো কাঁখার ওপর, তারপর গড়াগড়ি। কাঁখা সেলাই করে আর সাখ্য কার? মা বলি কখনো বলতো— ওবে ছাই ফুটে বাবে—ওঠ, তাহলে গড়াগড়িও আরো জে'র লাগতো ছজনার। শেবে ছাই ছেড়ে দিরে মা বলে উঠতো—মর ভোরা

थानिक हुनहान भरद स्थरक इक्नाद कि हेनावा हरद सक।

ভারণর কাথা ছেড়ে ছুটে চলে বেত ত্তুনাই। নতুন পরিবর্তনার ভগন তারা উন্মাদ। ধীর পদক্ষেপে অভি স**ন্**পণে হ**ঁজ**নে এসে হাজির গালার ধারে। চুজনার হাতেই ইট। আদি আগে। পিছনে রাবেয়।। একটা কুকুব ওয়ে আছে গোলার ভলার। খুব কাছে এসে খান ইট হুটো সজোবে নিকেপ ক'বে একই সাথে টেচিয়ে ওঠে হুড়ন,—মুবগীর পিলে থাবে আর ?

কুকুবটা তথন লম্বা আৰ্তিনাদ কৰে থোঁড়োতে থোঁড়োতে বাইৰে ছুটে পালাছে।

পুকুৰে মাতামাতির কথাগুলো আজো স্পষ্ট মনে পড়ে। কিন্ত থাক সে সৰ কথা। কলেজ-চীবনের কথা যে আথে। স্পষ্ট। একট স্থল থেকে ম্যাটিক পাশ করে বারাদাত কলেজে ভতি হলো ছজন। সোলেমানপুর থেকে মাত্র ছটি টেশন দূরে বারাগাত। কতদিন কলেজ কাঁকি দিয়ে তুটিতে চঙ্গে এসে বাইরে বেড়িয়েছে এখানে ওখানে। গল্প করেছে কবির মত। নীল আকাশে ডানা মেলে কপোত কপে:তীা মত হাওয়াম ভর করে ছটিতে উড়ে গিয়েছে স্থল্ধ দিগস্তের কোলে—যেগানে মিলেছে অদীম আকাশ আর সবুক পৃথিবী, অসমাসসীম বেধানে চুথোচুমি করেছে ব্যপ্ত হয়ে, মুয়ে পড়ে। ও, সে কত স্বপ্ন, কত সাব !

বারাসাত কলেঞ্জ থেকেই এক সাথে বি, এ পাশ কওলো ত্জনে। তারপর আবিদ চলে গেল কলকাতায়—এম-এ পড়তে, আর গোলেমানপুর বিজ্ঞাপীঠে শিশ্দয়িত্রীর পদ নিল রাবেয়া। তারপর থেকে এই তিন বছুৰ; আমাবিদ এম-এ পাশ করেছে সদম্মানে। তারপর একট ভাল চাকগাঁও পেয়েছে আত্মকাল।

ছারা ঢাকা ব†লভলার নিজন প্রাস্তে প্রকে সবল কথা মনে পড়ে বাবেয়ার। কিন্তু এভাবে আর ব:স থাকা যার কভক্ষণ। গাঁ, বাড়ী যাওয়া প্রয়োজন । বুদ্ধ আববা হয়তো চায়ের জ**ক্তে ব্যাকুল হয়ে** উঠেছেন এভক্ষণ। তা ছাড়া—এক্ষুনি গিয়ে একবার দেখা করে আসতে হবে। মনের উপল খণ্ড বেন আনন্দ-বক্তার প্রবল জলকরোলে ভূবে গেছে। নতুন বং লেগেছে দেনে-মনে-প্রাণে। হাঁ। এখুনি গিয়ে একবার पिथा करत कांत्ररू करत देविक ! कांचिम, कांका ! **यात्रत्र कां**चिम !

বাবেয়া ষ্থন বাসায় ফিবল তথন কমলা রংএব নরম বোদ বিকেলের শাস্ত আকাশ খিবে বিছিয়ে পড়েছে। মাথার ওপর পারী পাথালীদের ডানার ঝাপটা শোনা যায়। কনে দেখা আলোর মনোরম পরিবেশে একল কিছুই মনোরম হয়ে উঠেছে। রাবেহার চোথে আজ সব কিছুই সুন্দর। অপূর্ব মনে হর পশুপার্থকৈ। কি হয়েছে আজ বাবেয়াব ?

হাত মুখ ধুরে ডেুসিং টেবিলের সামনে সিয়ে গাঁড়াল র'বের'। ^{'রণের} শাডীটা পালটে নিল। ইন্তিরী করা ঝক্**বকে আকাশ**-নীল শাড়ীটা সে পরে নিংছে। কোন বিশেষ উপলক না হলে সে পরে না এ শাড়ীটা। বিশ্ব আৰু হঠাৎ ট্রাক থেকে শাড়ীটা বেব করে নিয়েছে। ভাল ব্লাউজটাও। শাড়ীর শাথে শোভন করে নিটোল লাবণ্য-দীপ্ত কান্তিতে জড়িয়ে নিয়েছে ওটা। অপূর্ব লাগছে নিজেকে। আয়নার দিকে ভাকিবে ফিক करव इंट्रम स्कूनन जानन मत्न। हैस्क् करवह । है।, शास्त्र টোল পড়েছে। বিকৃষিক করে উঠছে গাঁতভলো। গ্রা, এমন थिष्ठि करतहे हामरछ हरव खाख। हैं।, द्विच अथित करतहे।

কি কৰছে জাবিদ! হয়তো চা খেতে বসেছে হয়তো পল **জুড়েছে সকলের সাথে। স্নে:-মাথা** কোমস গ:৩ পাউভারের গ**ন্ধটা** একবার বুলিয়ে নিল। হাঁ ঠিক হয়েছ। বুভিন বাগাটাও নি**ল** কাঁধে **ক'লিয়ে।** ভারপৰ থানিক ভেবে নি**ল আপন মনে।** আবোল তাবোল। ভাইতোকি বলা যাবে গিয়ে ? ইয়া হয়েছে— বলবে, বেশ মিটি হেসেই বলবে—স্কুল থেকে ফেরবার পথেই ভোমার আসার সংবাদ পেলুম আহসানের মুগে; বাড়ী না গিয়ে একেবারে সোজা চলে আগছি। তারপর মিটি টোল-খাওয়া হাসিতে মুখ উজ্জ্বল করে কুশল সংবাদ জ্বিজ্ঞাস। করবে, কেমন আছ আবিদ ভাই 📍

শেষবারের এত আয়নায় মুখট: দেখে পা ভোলে রাবে**য়া।** ঠিক সেই সময় পাশের যঃ থেকে হিটায়ার্ড বুদ্ধ আকার গল। ভেষে আদে, একটু চা ভৈণি ৰুৱে দেমা রাবু।

দরজার কাছে এসে ধমকে দীড়ায় বাবেয়া। সব আশা সব আনন্দ যেন অক্সাৎ উবে গেছে। তাইতো এই ভাবে সেঙে **ওছে** ষাওয়াটা কি তার শোভন হবে ? কি হবে গিয়ে! কত কাজ বাকী পড়ে রয়েছে সংসারে। সন্ধা হয়ে এল বলে। পাথীপাখালীয়া বাসার কেরা শুকু করেছে। ডানার ঝাপটা শোনা বাচ্ছে। প:শের বাঁকা বনটা নীড়ফেরা পাখীদের কাকলিতে মুখর হয়ে উঠেছে। আববাই বা কি বলবেন দেখে !

অভিসাবের নিখুঁত বেশে দরজার কাছ তে স্তব্ধ হয়ে পাঁড়িয়ে বইলো বাবেয়া। নিৰ্বাক, নিস্তৱ।

অকস্মাৎ র্যাগটা ছুঁড়ে ফেলে দিলে বেডেৰ উপর। শাড়ীটা



মার্ক। গেঞ্জী

त्रिक्टिशर्छ ह्येष्ठमार्क

ব্যবহার করুন

ডি, এন, বস্থুর

হোসিয়ারি ফ্যাক্টরী কলিকাতা---৭

—রিটেল ডিপো—

<u>ভোসিয়ারি</u>

৫৫।১, কলেজ খ্রীট, কলিকাভা—১২

(क्वान: ७८-२ ३३६

পান্টে নিল। ব্লাউফটাও ভাজ ভাঙা শাড়ী ব্লাউজ পড়ে রইলো অবিক্সন্ত হয়ে। কি হবে গিয়ে? একটু দেগা—না, দরকার নেই। ভূকরে কেঁলে উঠতে চাইছে। নিজন, নিজন গৃহ কোণে গাঁডিয়ে আজ স্পাষ্ট অফুড়ব কৰে বাবেয়া, মনের উপলে ভঙ্ক বালুস্তর ভেল করে হ্যস্তবেগে স্বণাক্ত জলোচ্ছাস নাব হয়ে আসতে চাইছে। অবশ ফাস্ত দেহে অবিক্সন্ত শাড়ীর ওপৰ প্টিয়ে প্রলো বাবেয়া।

পাশের ঘর থেকে বৃদ্ধ থাকা আবার বলে উঠেন.—রাব্, একটু চা ভৈরি কর মা।

বাস্ত হয়ে উঠে পড়লো কাক্যা। কললে, গ্রা যাই। কথাটা কেমন বেন ভাঙা ভাঙা শোনালু।

পাশের বংড়ীর ছানীটিকে প্ডিলে মগন পাদায় ফিরলো বাবেয়া।
তথন বাত নটা। কিংতেই আকা বললেন, আনিদ এদেছিলো
রাব্—এই মার চলে গেলো কেন ছেলেটা—অনেককণ ধরে
কত গ্রাই ক্রলো। কাল একবার দেখা করে আসিদ মা। একটা
সমিতি নাকি গঠন ক তে চায়—তোব সাথে অনেক কথা আছে।

অবাক চোপমেলে কথাগুলো ল নলো বাবেরা। তারপর নিজের ববে পিরে লুটিয়ে পড়লো। খুনীতে ডুগুনগা আবিদ এসেছিলো তা'হলে? এগা আবিদ!

দেয়ালের দিকে চোগ পড়তেই যেন চমকে ওঠে রাবেয়া। আয়নায় বাঁধানো তার ফ'টটো টাঙানো রয়েছে দেওয়ালে। ইস—ফটোটা বদি আন্ধ আকার ঘবে থাকতো। এক অক্ট কাতর ধ্বনি বরে ওঠে। রাবেয়া। বেন অপূর্ণ দোনালী স্থপ্ন অক্ষাৎ দা পেয়ে টুকরো টুকরো হয়ে ভেডে গেল।

হ্যা, কাল সকালেই ফটোটা আকার ববে টাভিয়ে দিতে হবে। আবিদ এসে বে ওঘারট বসে।

সোদেন। নপুর বালিক। বিক্তাপীঠ থেকে ফেরার পথে সেদিনও
আহসানের স'থে বে দেখা হল বাবেরাব। ঠিক বকুল তলাতেই।
আহসানের মুগে শুনলো আশিদের ফিরে যাওয়ার সংবাদ। অফিসের
বড় সাহেব নাকি একটা জক্ষণী কাব্দের জ্বা টেলিগ্রাফ করেছে।
আজ হপুরেই এসেছে টেলিগ্রামটা। ভোর পাঁচটার মেলে চ'ল বাবে
কল্কাভায়।

বকুংলর ভালপালা ছলিয়ে মিষ্টি হাওয়। বইছে। বিরবিধের পাতাগুলো মাছালের মত ছলছে। একটা তলুদ হডের পাখী মাথার উপর ডালটায় বসে গান ধবেছে আপন মনে। রাবেয়। একটু তাকাো ওদিকে—ভারপর বসে বইল নিস্তর তরে।

ক্লান্ত বিকালের আকাশ থিবে পেঁকা তুলোর মত রাশ রাশ মেঘ জমে উঠেছে। চোথের জর মত দীঘদ ডানা মেদে নাম নাজানা করেকটা পাখী উড়ে চলেছে মেঘের দেশে। বকুদের ঘলমানিরি পত্রপল্লব ভেদ করে একগুদ্ধ ফলকের মত ঠিক সামনের সব্দ্ধ ঘাদের বৃক্তে পুটিয়ে পড়েছে অবদন্ধ স্থারে আল্ভা-মার্থ রোদ। না, এসব কিছুই ভাল লাগে না বাবেরার। সকল নীরবভার মাঝে সকল চিস্তার মাঝে সেই কথাটাই বার বার মনে পড়ে, আছ ভোরে চলে বাবে আবিদ? দেখা হবেনা শেষবাবের মত? মাত্র একটিবার? একটি শলক?

বাড়ী ধথন ফিবল তখন প্রায় সন্ধ্যা হয়ে এসেছে। আবাকে চা দিয়ে একফালি বাবাশায় ইজিচেয়ারের ওপর গা এলিয়ে দিল

বাবেধা। তথনও ঠিক ঐ চিক্কাই তার মনের অলিতে গলিতে কিবছে। রূপ সুন্দর এই পুরিবীর সাল কিছুই বেন একান্ত বিষয় হয়ে উঠেছে। দক্ষিণের হিমেল ব'তাসটা রাবেয়ার খুম-ভেঞা দেইটাকে শীতল করে যাছে: হঠাৎ এক সময় বেন একটু আশার আলো দেখতে পেলো রাবেয়া। না—যাওয়ার আগে একবার অ'সবে বৈকি আবিদ। সেতো জানে মেরেদের অনেকবাধা আছে। যাওয়া হয়ে ওঠে না ইছেমত। তা ছাড়া সে বে আজ ভে'বেই চলে যাবে, এ সংব দটুকু বাবেয়া নাও জানতে পাবে। অন্ততঃ এটা গেয়াল কবে আবিদের একবার আসা উচিত। ইয়া—আজ বাভেট আসবে আবিদ, নিশ্চয় আদবে।

গবের ভিতরট। বেশ আঁধার আঁধার মনে হচ্ছে। আলোটা মাসিয়ে নিল রাবেয়া। আকারে পরের আলোটাও আলিয়ে দিল। ছড়িটা নিয়ে আকা বেড়াতে গেছেন—এখনই ফিরবেন। তারপর টুকিটাকি সাংসারিক ছ'একটা কাজ সেরে নিয়ে কাপড়-চোপড় পাণেট নতুন সাজ-সজ্জায় ব্যস্ত হয়ে উঠল রাবেয়া। হঠাৎ কখন এসে পড়বে আবিদ কে জানে। আকাশীনীল রংএর সেই কাপড়, সেই ব্লাউজটাই পরে নিল। তারপর অক্তমনস্কতার ভাণ করে বারাশায় সেই ইজি চেয়ারটায় বদে ব্যাকুলভাবে অপেক্ষা করতে লাগলো।

সময় গড়িয়ে চলে । ঘড়ির কাঁটাও ৷ রাত গভীর হয় ।

ঘরের আশপাশ হতে রাভজাগা পোকামাকড়ের গীতালার ধ্বনি ভেসে আসে! পর্লপল্লবে আছাড় থেয়ে মর্মরিত হয়ে ওঠে উদ্পাসী সমীর। চাদের আলোয় চিকচিক করে ওঠে কলাগাছের মাজপাতা। ক্রমে ক্রমে নিস্তব্ধ হয়ে ওঠে ছারা-ঢাকা পল্লীর কলমুখর গৃহপ্রাপণ। এই একান্ত নিস্তব্ধতার মধ্যে বসে মাঝেমাঝে সচ্ছিত হয়ে ওঠে রাবেয়া, আবিদ—আবিদ কই বিধনা কি আসবার সমন্ত্র হলো না? সেই আগের মত চুপিস ড়ে নিংশক প্রক্রেপ এসে পিছন হতে চোথ ধরবে নাকি আজ! সামাল্য শক্ষেই বাঞ্জিতের আগমন সংক্রেত গহন বনাস্তর্থালগানী হঠাৎ থামা হরিনার মত উৎকর্শ হয়ে ওঠে রাবেয়া। না—আবিদ নয়, বাভাস।

খাওয়া-দাওয়ার পাট চুকিয়েও বারান্দায় অপেক্ষা করে। আবলা ঘ্মিয়ে পড়েছেন। নাক ডাকার শব্দ শোনা যাছেছে। রাত কত ? আকোটা ছোর করে মুগোল হাটটা তুলে সময় দেখে নিল রাবেয়া। একটু চম্কে উঠেই টেনে টেনে ইচচারণ করলো, বারো— ওটা। এক রীত হয়ে গেছে।

ত্বরস্ত অভিমানে বুকটা কুলে ৬ঠে বাবেয়ার। অভিমান-বিক্লারিত কঠে বলে, নিষ্ঠুর—একবার এলে না!। একটিবার স্থানার সময় হলো না ভোমার!

যেন পাগল হয়ে ওঠে রাবেয়া। সমগ্র দেহমন ছরস্ত অভিমানে দোল খার। বাইশটা বসস্ত অভিক্রাস্তা বাবেয়ার জীবনে এমন দেহমন মাতান পাগল করা আবেগ-ব্যাকৃল মুহূত থুব কমই এসেছে। না—দেখা একবার করতেই হবে। যুগ-যুগাস্তবের বলীশালা হতে আদিম নারীষ্থ যেন ছনিবার ব্যাকৃলতার মাথা চাড়া দিয়ে উঠেছে।

রাতের ঘন কাশো আবরণ জেদ করে সম্ভূর্পণে পথে নামল রাবেয়া। মাধার উপর এক আকাশ তারা। মিট মিট করে অলছে। একাদশীর চাঁদ তখন নিম গাছটার ওপাশে মুয়ে পড়েছে। সোলেমানপুরের অলিগলি সব রাবেরার নখন্দর্শি। একাস্ট জানাজনা পথেই সে আজ দ্বস্ত অভিমান-ক্ষুত্র অভিসারিকা। ভ্যাক্তর শেবের কলমবাগানের বাবে এসে একটু খমকে দীড়ার রাবেরা। চারদিকটা দেখে নিল ভাল করে। না—কেউ নেই কোধাও। জনবিবল পল্লীপথ গভীর নিশীখে একেবাবে নিজ্জ হয়ে আছে। রাভজাগা পাথী-পাথালীর ভানার ঝাপ্টায় মাঝে মাঝে সচকিত হয়ে ওঠে নিজ্ল পথ-খাট। দ্ব গ্রাম থেকে কুরবের ডাক ভেসে আসে দীর্ঘ লয়ে।

আবিদের বাড়ীর কাছাকাছি এসে বুক্তরা অভিমান যেন ঝরে গেল রাবেরার দেহ থেকে। নব আবাচের সজল মেঘমালার নীচের শুভ কেত্রকী কুলের মত নব বধ্র অপরিসীম লক্ষার কেঁপে কেঁপে গুঠ দেহটা।বিরাট বাড়ীটার দিকে বিক্ষারিত দৃষ্টি মেলে তাকাল একবার। হাা—এতো আলো অলছে। আবিদের ঘবেই। কি করছে এত রাত জেগে ? হরতো যুমিরে গেছে ক্লান্ত দেহে, ভূলে গেছে আলো নেভাতে।

জানালার রড ধরে শাংকিত বুকে সম্বর্গণ একবার উঁকি দিল বাবেলা। একি, এখনো লিগছে আবিদ! টেবিলে হারিকেন অলছে। নত হরে একমনে লিখে চলেছে লাবন্যদীত বলিষ্ঠ যুবক। কি লিখছে এত ? গরা ? উপক্রাস ? চিঠি ?

বাবেয়ার বলতে ইচ্ছা করে,—ওগো পাদাণ-ছাদয়—আমি এসেছি। মুগামুগান্তর ধরে আমি বে তোমার প্রতীকা করছি।

আধাতের সজল মেখনালার আমি তোমারই ছায়া দেখেছি।
শরতের সোনাগলা বিকেশে আমি তোমারই গান করেছি।

বসত্তের ভোরে স্থরতী সমীরণে কোকিসের কঠে আমি বে ভোমারই কঠ তনেছি। ওগো পাবাণ, ওগো দেবভা—।

অকশাৎ পিঠে বেন চাবুক পড়ে বাবেয়ার। একি করেছে সে? একি পাগলামি তার? কেউ বদি দেখে ফেলে। অপবের কথা দ্রে থাক, আবিদ-ই বা কি মনে করবে তাকে দেখে? এই নির্দ্ধন গভীর রাতে? এই অবস্থায়?

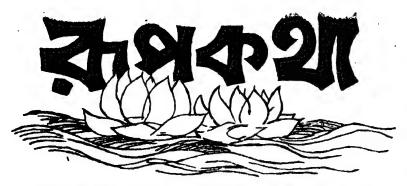
জানালার ধার থেকে সরে এসে পথে নামল রাবেরা। ধান যার ভাঙলো না—কি হবে ভার ধান ভাঙিরে? ত্রস্ত অভিমানে আবার বিক্ষারিত হরে ৬ঠে রাবেয়ার বৃক্। কারার কঠ বেন অবশ্বন্ধ হরে গোছে। ক্রভরেগে সড়ক বেয়ে, আমবাগান পেরিয়ে ছরছ এসে পৌছাল রাবেরা। দরজার খিল দিয়ে বিছানার লুটিয়ে ছরছ কারার ভেডে পড়লো। ৬গে! পাবাণ তুমি স্থথে খাক। কি হবে ভামার কাছে ভিক্ষা চেয়ে? বিশাল বুকের নিরাপদ আলয়ে একটু স্থান চেবে কি হবে? হরতো দেবে না। হয়তো প্রত্যাব্যান করবে। ভার খেকে আমার এই ভালো। কেঁদে কেঁদে কাটুক সারটো জীবন। মর্মভেদী চোথের জল সাধানার উৎস হয়ে খাক। বসন্তের গভীব নিশীথে হঠাৎ ক্রেগে আমি চোথের জলেই সাধানা পাব। ওগো আমার সেই ভাল—ওগো পাবাণ, ওগো—।

ছনিংার অভিমানে এবার অকটুট কঠে ড্করে কেঁপে উঠলো বাবেয়া। এ কালার শেব নাই। একাদশীর চাদ তখন ডুবে গিয়েছে।

বহুরূপী

ভক্ষণতা ঘোষ

মহাকাল-জলধির একটি বুখুদ যেন চেতনার চকিত ঝলক— মৃত্তিকার রঙ্গমঞ্চে ওরই মাঝে কত অভিনয়। এঞ্টি প্লক মাত্র বৃঝি আয়ু তার অনস্টের কালের বিচারে। ভারই মাঝে দেখে বেতে হবে ঘটনার পারম্পর্যে, সত্যৈরে মিছারে। অক্ষমের, অজ্ঞানের, অর্থহীন ক্রন্সনের আর্ক্ত আবেদনে ৰতটুকু দাবী ছিল, বিশ্বতি কুহেলি খেৱা কামনায় প্ৰথম বোধনে, বহুগুণে-বছরূপে মূল্য তার হোরে গেছে পাওয়া, এখন জীবন স্বপ্নে তারই রোমস্থন, তারই গান গাওয়া, সেই শুধু একবার ধরণীর ধূলি চুমি স্বর্গ নেমেছিল, কুটীরের দারপ্রাস্তে অনাহুত দেবতার সমুদ্ধত রথ থেমেছিল। অবক্রম গন্ধ সম তথনও তো চেতনার স্বস্থপ্ত বিকাশ. ভারপর ঘটনার গতিপথে কতই রংএর খেলা, কত বেশ্বাস। নুত্রন ছন্দের তালে আঁকো-বাঁকা, উ চু-নীচু, সমত্রস ভূমি, ষাত্রাবে কঠোর করে, মহ্মণ-পিচ্ছিল কভু পদতল চুমি। শূক্তগর্ভ বুদ্ধ ক্ষণিক জীবনে যত অনিশ্চিত রংএর বাহার, অহংকারে কাঁপে তত। আমিন্বের বোঁঝাটুকু অবশেষ সম্বল তাহার। তবে একি অর্থহীন, জীবনের ঘটনায় বিচিত্র বংএর ফুলে মালা গেঁথে যাওয়া, বঙ্গমঞ্চে নাটকের এত অভিনয়, এত হাসি, এত অঞ্চ, এত গান গাওৱা ? সে বিচাৰে কিবা কাৰু ? বছৰূপী চেতনায় যত পাব বং কৰ লুঠ. विमिन क्यांत क्टब मकलि क्यांकारन, स्कट्ठे यांध्या तुष्ट्रापत मन बर कू है।



Zola র The Fairy amoereuse পল্লের স্বচ্ছন্দ অমুবাদ

জীমতী তুযার স গাল।

এমন ৰাদল-ঝক্ত-ঝক্ত সন্ধ্যা আগে কথনও দেখেছ তুলা? বাইবে আনালার শাবিতে আছড়ে পড়া বৃষ্টিবিন্দুর একঘেয়ে আর্তনাদ আর বাধন-ছেঁড়া ৰাতাসের হুবস্ত দাপাদাপি; এমনি হুংগগের সন্ধ্যাই দিগ-বধ্দের অন্ধরে মৃগ-ব্গান্তের সঞ্চিত অঞ্ধারা উচ্ছ্ সত হরে উঠে ধরিত্রীর বৃক্ ভাসিরে দেয়, আর মানুষকে প্রিয়দদ-কামনায় আকৃত ক'রে ভোলে।

আলকের এ সন্ধার কপ কি, তা জানো? জানো না, তোমার জানার কথাও নর, তোমার মাথার উপরে একটা আছোদন আছে জিনা? গোলা জানালা দিয়ে একবার তাকাও এ অনুবের বড় বাড়ীটির পানে; চেরে দেখো এ তোরণ-ত্যার! কন্কনে ঠাণ্ডার বাদের হাতে-পায় থিল ধরে, তারা মিনতিভ্রা চোথে এ ক্ষত্বারটির উপর মাথা খুঁতছে একটু আশ্রেরে আলায়। কিন্তু ছ্রারের আগল তো মুক্ত হবার নয়; ভিতরের উফ পরি:বলে বারা হাসি-গান-গার বান ডাকিয়ে একান্ত ঘনিষ্ঠ হওয়ার প্রয়াপে প্রবৃত্ত, জদের ভিতরে আশ্রার বিলে সে চেটায় ছন্দ পতন ঘটবে বে!

কাজ নেই, তুলা ওদিকে তাকিয়ে—তুমি ব্যথা পাবে। তার চেরে এস, এখানটিতে আমার পালে এসে বস—খুলে ফেল তোমার জনজালো বেশজ্বা, পর ভোমার সেই নীলাম্বরী—বার ফাঁকে ফাঁকে ফুটে উঠবে তোমার নিরাভরণ দেকের অরপ শ্রী, অসীমের ছেঁটো লাওক তোমার অস্থলতার, আর তারই এককণা ঠিকরে পড়ে রাভিয়ে দিক আমার অস্থলতার।

ওকি, তব্ও মুখ নীচু কেন তুলা ? বাদল-ঝরা এ সম্বাদ্ধ ভোমার মুখ ভার সইতে পারিনে। ভোল মুখ লক্ষীটি, আর এদ এবানে জলভ শিথার পাশে আমার কাছ থেঁবে বদবে এসো। আরিশিখার রভিম আভার তোমার গালে ছটি কুফ্চ্ডা কুটে উঠুক। আমি চেয়ে চেয়ে দেখি আর ভোমায় একটি রপক্থা বলে শোনাই।

দূরে—বহু দূরে—বনের কিনাবার পাহাড়ের উপর কালো কালো পাথর দিয়ে গড়া এক তুর্গ-প্রাসাদে বাস করতেন এক বিশাল-ৰপু দৈত্য। প্রাসাদের রক্ষ ভয়ানক রুপটি বেন প্রাসাদ-অধিকারীর নির্মম কঠোর মনেরই একটা প্রতিচ্ছবি!

এই প্রাসাদের এক কক্ষে বাস করতো বন্দিনী নন্দিনী! বুদ্ধের ভব্দ নীরস মনে কোষাও বুলি বা এই নন্দিনীর কল্প এক কণা স্নেধ্ন সজোপনে সঞ্চিত ছিল। নন্দিনীর পিতাকে বুদ্ধে হত্যা করে তাকে ধ্রে এনে এই প্রোসাদে বন্দিনী করে রেখেছেন। সে তথ্ন ছোট এক কোঁটা মেরে ছিল। আজ সে প্রথম বৌবনের সিংহ্রারে উপনীতা ! বসম্ভ প্রতিতির নৃত্তন অফিনের বার্টো চোধ মেলে চাওয়া পলের সঙ্গেই ওধু নন্দিনীর রূপের তুলনা করা চলে !

নশিনীর মনে স্থপ ছিল না, জ্ঞানা
ব্যথায় তার মন সারাক্ষণ টন্টন করতো;
জ্ঞা খেন তার বাধা মানতো না, ঝরে ঝরে
তার বৃক ভাসিয়ে দিত। বৃদ্ধের পানে সে
চাইতে পারতো না; কেমন খেন একটা
উ কট ভয়ে সারা দেহ ঝড়ে নড়া পাতার
মতই কেঁপে কেঁপে উঠতে।

খোলা জানালার ধারে সে খেত-শখরে

গড়া মৃত্তির মত বদে থাকতো। আকাশের স্বচ্ছ নীলিমা আর ভাম বনানীর বিপুল সম্পদের পানে উদাস দৃষ্টি মেলে অজ্ঞাতে হরতো বা উৎসারিত হতো এক ব্যাকুল প্রার্থনা। কত রাতে নিজাহীন আঁপে মেলে সে চেয়ে থাকত আকাশের এ তারকাপু:জর পানে—চোথে তার অব্যক্ত মৌন জিজ্ঞাসা, কিসের এই ব্যথা, কি তার এস্তরের কামনা? তার অবচেতন মনে বৃন্ধি লেগেছে প্রেমের ছাঁথাচ, অতক্স চোথে তার বৃন্ধি নৃতন জাগা প্রেমের দৃষ্টি। কে তার মনের এই কুধা মেটাবে, কে তাকে দেবে এককণা প্রীতি, যার জন্মে সারা দেহ উন্মৃথ প্রতীক্ষার নিশিদিন ছলে ছলে উচ্ছ। প্রেম আর সোক্ষ্য মিলিয়ে বে ভৃত্তি, সে ভৃত্তি সে পাবে কোধার? তাক কাঠের মত নীরস ঐ বুদ্ধ তার ব্যথা বৃন্ধবে কেন?

একদিন বাতারনে তার নির্দিষ্ট কোণটিতে বলে নিন্দিনী বাইবের পানে তাবিরে একজোড়া ক্রৌক-মিথ্নের প্রেমালাপ দেখছিল, এমন সময় তার কানে ভেসে এলো দ্বাগত বালীর স্থরের নত মিষ্টি একটি কোমল স্বর। নীচে তাকিয়ে নন্দিনী দেগলো কঠে অপুর্ব প্রের কলার ভূলে এক স্থদর্শন তরুপ যুবা প্রাসাদের তোরবের দিকে এগিয়ে সাসছে। যুবকের কঠ-নিংস্ত সে অপুর্ব স্থের নীবল পাবা এর ক্রিলে পড়ছে। যুবকের কথা ভানবার জন্ম নিন্দের বিরম্ভাব কথা ভানবার জন্ম নিন্দিনী বেন উপুর্ব হয়ে উঠলো। এমন মধুক্ররা দ্বনী কঠন্বর সে আগে কথনও শোনেনি। নন্দিনীর হ'চোর হাদিয়ে নেবে এলো জ্ঞার বন্তা, তার নিংসক জীবনের একমাত্র সান্তনা স্ক্রাভাব সঞ্জাত সিক্ত হল তার হস্তপ্ত নীল-পল্লটি।

প্রাসাদের ক্ষ ছ্যার মুক্ত হলো না, ছাত্রীর ক্ষ্কবর্ত গ্রেক্স উঠলো
— "দ্বে বহ— তুমি সৈনিক নও, সৈনিক ভিন্ন অপর কাকর এ
প্রাসাদে প্রবেশ নিবেধ।"

নন্দিনী বেমন তাকিয়ে ছিল তেমনি রইলো। অঞ্চিক্ত নীল কমলটি সে নীচে ফেলে দিল! পদাটি পড়ল ভক্লের পারেব কাছটিতে। ভক্ল চোখ তুলে চাইল, ফুলটি তুলে নিয়ে ভার নর্ম পাপড়িতে এঁকে দিল ছোট একটি চুমো, ভারপর এক-পা এক-পা করে বনের দিকে চলে গেল।

জনাবাদিতপূর্ব এই সুখের জাবেশে নন্দিনীর চোখ ছ'টি বুঁলে এলো, জজানা যাত্ৰতের পরশে তার মনের কছ কপাট খুলে গেল বুঝি।

সে বাতে নন্দিনী স্বপ্ন দেখলো, তক্লণের পায়ের কাছে ^{থেকে}ল দেওরা তার সেই নীল-পন্নটিকে। আর দেখলো—কি দেখলো লান ভূলা? একখলো সেই ক্লবং কল্পমান পাঁপড়িওলির মধ্যে ^{থেক} আৰিকৃতি। হলো এক মারীমৃতি, ডিলোডমার মত বার রুণ, গৌরী ততুসতা আগুন-রাঙা চেলি দিরে ঢাকা। মাধার ফুলের মুক্ট, বেহে কৃত্য আগুন-রাঙা কটিতটে বুর্ণ মেধলা!

নারীমূর্ভিটি ধীবে ধীবে এপিরে এপো; নন্দিনীর ললাটে একথানি হাত রেথে বললো—নন্দিনী চেরে দেখ, আমি এলেছি। আমিই আৰু ভোৱে পাঠিয়েছিলাম তরুপকে—কঠে বার সুধ-ঝ্বা স্থব। তোমাব অঞ্চ আমি মুছিয়ে দেব নন্দিনী।

সেহহীন জীবনের ভার বরে বরে বারা দীর্থবাস ফেলে, তাদের সন্ধানে আমি বিধামর খবে বেড়াই। তাদের ভাঙা বুক জোড়া লাগাই। বাজার প্রাসাদ, দীনের পর্ণকূটার—বিধের সর্বত্ত জামার গভি জ্ববারিত। প্রামাদন মত রাজা-প্রজার ব্যবধান খুচিরে আমি তাদের মধ্যে মিলম ঘটাই। জামার পক্ষপূট-ছারার বারা একবার জাপ্তার পার, কেউ ভাদের জকল্যাণ করতে পারে না। প্রাণের সঙ্গে প্রাণ, দেহের সঙ্গে দেহ বেঁধে দিই জামি প্রেমের জ্ঞারতম বন্ধনে। হিরার হিরার আমি ভাকাই পুলকের উচ্ছাস। বসন্ধ-প্রভাতে বনানীর ভাম-ছারে আর শীতের হিমেল রাতে প্রিরতম-প্রিরভ্যার নিবিড় মিলনেই জামার জানন্দ। প্রেমের নিভ্ত কুল্লরচনাই জামার নিভ্যকার কাজ। ভোমার ব্যথা দুর করবো বলেই জামি ভোমার কাছে এসেছি।

এই না বলে নারীমৃতিটি অন্তর্ধান করলো, পদ্মের দলগুলি বুঁজে গিয়ে আবার কুঁড়িতে প্রিণত হল !

তুমি জান তুলা, স্বপ্নে নন্দিনী বে নারীমূর্ত্তি দেখেছিলো, তিনি ছারাময়ী নন। এই গৃহকোণে চেয়ে দেখ, আজকের এই সন্ধার তীর নৃত্যপরা রূপ তুমিও দেখতে পাবে।

পর দিন ঘুম ভেঙে নিন্দনী দেখলো নৃতন রবির সোনালী হাসি
ছড়িরে পড়েছে তার ঘরে, পাথীর কাকলিতে বনাঞ্চল মুখর হরে
উঠেছে আর ঘুম ভাঙা ফুলের চুখন-স্থরভিত ভোরের বাতাস তার
কালো চুলের রাশির সাথে যেন লুকোচুরি থেলছে। নিন্দনীর
মনে আৰু ছংথের লেশমাত্র নেই; সারা দিনমান তার শরতের
মেঘের মত তারা হারা মনে হল। পাহাড়ের ক্লক সৌন্দর্যাও আবদ
যেন আর ততটা ক্লফ নয়। মাঝে মাঝে ছোট শিশুর মতই
হাততালি দিয়ে সে অকারণে হেসে উঠিছিল!

সেদিন সন্ধার বোজকাব মত নন্দিনীর ভাক পড়লো দৈত্যের কাছে, তার বিগত যৌবনের ছংসাহসিক কথা ও কাহিনী শোনবার জন্ত । নন্দিনী এসে তার নির্দ্ধিষ্ট আসনটিতে বসলো ! বাইরে বিলীর অপ্রাস্ত একবেয়ে আওয়াজ । থোলা বাতারনের পথে ব'ইরের পানে দৃষ্টি মেলে নন্দিনী বৃঝি সেই আওয়াজই শুনছিল।

একটু বাদে দৈত্যের পানে চাইতেই সে কি দেখলো, দৈত্যের পাশে বসে আছে এক তরুণ, হাতে তার নন্দিনীর কেলে দেওর। সকাল বেলাকার সেই পদ্ম।

তার লাজ রাঙা মুখখানি দৈত্যের দৃষ্টি হতে লুকোবার উদ্দেশ্তে সে আবার বাইরের পানে তাকালো।

তরুণ মৃহ মৃছ হাসছিলো, আর মধ্যে মধ্যে মাথা নেড়ে দৈত্যের কাহিনীর তারিফ কবছিল।

বাতায়নের নীচে পশ্ম-দীখিব অল একটু নড়ে উঠল না ? দেখতে না দেখতেই আবিছ'তা হলেন স্বপ্নে দেখা দেই ক্রিইটেই আব নিষ্টি ৰীৰ পাৰক্ষেপে বিৰেছিনী খবে প্ৰবেশ কৰলেন দৈডোৰ নিকট অৰুখ হয়ে। দৈডা ভাৱ কাছিনীতে বিভাৱ। চাপা খবে বিৰেছিনী নিজনী আৰু ভক্ৰণকে বললেন—"বুড়ো ভাৱ অভীত জীবনের কাছিনী বলুক। ভোমাদের ভো বুড়োর গল্প শোনবার সময় নব, ভালাবার সময়, ভালবাসা ছাড়া তক্লণ-তক্ষণীর আর কোন কাল নেই। ভোমাদের প্রেম গভীব হোক; এত গভীব বে ভাষা-হারা। ইজিতে, চাছনিতে, চুখনে ব্যক্ত গোক ভোমাদের প্রেম।"

পুলকের প্লাবন দে ভীক্ষ হিয়া বইতে পারবে কেন ? কম্পাবক্ষ নন্দিনী অসম্ভ আবেশে যেন হয়ের পড়ল।

এব পর কি হল জান জুলা ? বিদেহিনী তার খাম অঞ্চল বিশ্বে একটি বর—নিজনী আর তঙ্গণের মিলন-বাসর—রচনা করলো । এই বাসবে দৈত্যের অলক্ষ্যে তরুণ নিজনীর গণ্ডে এঁকে দিস প্রেমের পরিচরের লেখা । দৈত্যের কাহিনী শেব হল । তরুণ নিজনীর উল্লেখ্য একটি বিদার-চুখন জানিরে দৈত্যের নিকট হতে বিদার নিরে চলে গেল। নিজনীর স্থপের আর অবধি নেই।

প্রদিন ভোবে নন্দিনী কুল-বাগিচার বঙীন পাখনা মেলে এজালাভি বেমন উড়ে উড়ে কুলের মধু থেরে বেড়ার তেমান করে বেড়াছিল কুম হতে কুলে। তেমান একটি কুল্লের পালে শাল্রীর ছুল্লবেশে তক্ষণ তারই প্রতীক্ষার দাঁড়িরেছিল—হাতে তার বত্ত-পল।

় তারা ত্বনে হাত ধরাধরি করে পাহাড়ের কোলে বেধানটি ঝরণার বুকের মধুঝবে পড়ে সেথানে গিয়ে বসল। দিনের আলোর ত্বনে ত্বনকে দেখে কৈ খুসিই হলো। সে দিন বনানীর পাধীরা কত কথাই না ভবেছিল।



সন্ধ্যা নেমে এসেছে! সন্ধ্যাৰ আৰম্ভাৰাৰ বৈড্যেৰ বিশাল বপু উদি দিছে কি? তাৰ পদধ্যমি শোনা বাছে। ভব-চকিতা হবিশীৰ মত নশ্দিনীৰ সাৰা দেহ খেন খেকে খেকে খব খব কৰে উপিতে লাগল। দৈত্য দেখতে পেলে আৰ বন্ধ। নেই।

ৰৰণাৰ শীক্ষকণা হঠাৎ ইপ্ৰথমু বজে বজিন কৰে বিদেহিনীৰ আৰিৰ্ভাব হলো, বজীন আলোন্দায়ে সে নলিনী আৰু ডফুণকে আছবাল কৰে ৰাখলো। সুজো গৈছেয়ৰ কানে দ্বাগত বাঁশীৰ স্থবেব একটা মিট্ট আওয়াল ছেনে এলো, কিছ দৃষ্টিবাৰা তাৰ চোখে কোন সম্মূৰ্তি ধৰা পড়লো মা।

"বাবা ভালবাসে মা, তাদেব চোথের দৃষ্টি আমি হরণ করে নিই; দেউলে তাদের প্রবেশ মিবেধ। অভ ববির এই যাহা-আপোর, তোমবা ছজনে ছফানর বুকে রহজনর আবেশ রচনা করে। নির্তরে। কেউ কোন ক্ষিত্র পারবে না; আমার পক্ষ্যুট ছারে তোমবা বতকণ আছ। প্রেমের হোঁরা লাগিরে তক্ষণ-ডক্ষণীর কর হিরার কপাট খুলে দেওরাই আমার কাজ। প্রেমের মক্ষাকিনী-ধারার বাবা অবগাহনে অক্ষম, ভাবের কলুব দৃষ্টিতে তোমাদের হুবে ছেদ পড়বে না।"

अहे मा तरण मिलनी चात कक्ष्मंदक जिल्हा विद्वादिकी चन्निह करणा!

ভাৰণৰ ভক্ষণ আৰু নশিনীৰ কি হলো জানতে ভোষাৰ খ্ সাথ হছে, না ভূলা ?

ওকি । ঠোঁট তোমার কুলে ফুলে উঠছে কেন ? ছাই মেরে । আর
মুখ ভার করো না । বলছি বলছি—তক্তপ ও নালানীকে বুকে করে
বিদেহিনী কত পারাড়, কত প্রান্তব্য কত নদ, কড় নদী পেরিয়ে গল
ভার ঠিক ঠিকানা নেই । অবলেবে বিদারের কণ এলো, কিছু ভত্তপ
নালানী কেই কাউকে হাড়তে বাজী নয় । বিদেহিনী তথন কি
করলো জান ভুলা ? ভার হাতের বাছদগুটি ওলের কপালে এড্টু
মূলিয়ে দিল—অমনি—ওকি ভুলা—ভোষার চোগ ছাট অত বড়
হর্মে উঠল কেন ?

চোথেব পদক কলতে মা ফেলতে ডঞ্চণ আর নন্দিনী, নন্দিনী আর ডক্তন—চুট্টি আশ্চর্যা সুন্দার বন্ধকায়দের মুগালে পরিণত চলো। এত কাছাকাছি বে, তাদের পাতাগুলি বেন পরস্পারকে নিবিড় আলিদনে আবদ্ধ করে রেখেছে। সেই মুগাল ছটিতে কুটলো চুটি রক্তক্ষল।

এবার বধন আমরা—তুমি আর আমি—বেড়াতে বেছবো, তথন এই বক্ত-কমল তুটি আর তাদের অধিবরীর থোঁক করবো, কি বল

মৃত্যুর অখণ্ড প্রেম জয়তী রায় (লাহিড়ী)

মৃত্যুর অথও প্রেম নের যদি মোবে কাছে টেনে, चमुट्डब शांत्रथानि एषा सादि शांत्र, হয়তো বা তবে এই আঁধারেব রাত্রি হবে শেষ, আলোকের জয়বথে দেখা দেবে স্থন্সর নিমেব। এ জীবনে যেন মোর বেদনার নাই অবসান. ৰুখা মোর সুখ খোঁজা ৰুখা তাবে আকুল আহ্বান। ছ:খ মোরে ভালবাসে. ভাই দে জড়াতে আদে তার বাহপালে, পভীর বিষের রঙে রাভাতে এ প্রাণ, এ कीवरन रवननाव नाहे अवमान। আঁধাবের ফুল যে গো, ফুটেছে যে চির অন্ধকারে, কে দেখাবে আলো ভারে, কবেকার কোন সুর্ধ্য তার লাগি হ'য়েছে আকুল, সে যে চির আঁখারের ফুল। সম্ভ প্রহর ধরে যত তার আলোর সাধনা, রক্তের চন্দনে মাধা যত আরাধনা, মিখ্যে সে কুন্থমে বাঁধা মালার প্রয়াস, এ জীবনে সুখ পরিহাস। ভাইতো আঁধার পথে চলেছিমু আমি একা একা, বসম্ভের কুন্ত নয়—প্রাবণের কেকা, আৰু বৈদনা ভবি ছিল মোৰ সাথী। আমার আকাশ ছিল মেঘ-ছারা পাতি, উত্তপ্ত আলার মাবে বৃত্তির সান্ত্রা जामात्र जीवस्त वार्ष जारमात्र गायस्ः ।

শ্বীন বিশ্ব করতে বেমন সময় নিলে না মমতা, ডেমনি ছিল করেও সমল না করলে না। প্রাথমিক পরীকার পর বোগীকে তেতলার তুলে নিরে বাওরাটা পর্যন্ত বাদ দিলে। এথানেই সেলাইন সার্ট করবে সে। এ্যানিমিকের বোগী, তাতে বক্ত চলে গেছে প্রচ্ন—আর দেবী করা নয়। হাটা দিলো সে ডুকুরস্ ক্ষমের দিকে—অনুহণ্ডর মন্ত্রণাতির ব্রের দিকে।

তেমন প্রয়োজনে এই টেবিলে সেলাইন দেওয়াটা আইনবিক্ছ ভাল নয়। কিছু কোন ডাভাবের উপস্থিতি ছাড়া নাসের পক্ষেত্র রিগেব করে জুনীরার টেণ্ড নার্মের পক্ষে রোগীকে সেলাইন দেওয়াটা রে হাণপাতাল আইন-বিক্ছ কাজ, এটা মগুর জানার কথ নয়, লানেও রা। বুঁকি এবং মনের জোর নিরেই যে মমতা একাজে প্রায়ুক্ত হলো সেটাও সে ব্রাল না। সে তথু দেখল, এই যে এখর থেকেও খবের বিকে হাঁটা দিল মহতা সে হাঁটার সংজ তার কিছুক্ত পূর্বের হাঁটার কণামাত্র রিল নেই। নাস্থের চলার যে বিশেষ ধর্ণের একটা শ্রীর টান করা আর টান-চলায় তড়িৎ জনিব গতি আছে, এবাবের চলায় মমতার শ্রীরে সেই টান ভাব, পারে সেই ভড়িৎ গতি এসে গেছে।

'এখন যা করবার মমতা করবে।' নিদারণ উৎকণ্ঠার ভেতরও এ নিশ্চরতা কম নর। মা একটু শাস্ত হয়ে মেরের পার হাত বুলোতে লাগলেন। প্রতিবেশী ক'জন আর অমল তিন-তিনটে রক্তমাথা দেহ এনে কুলীরা বেথানে নামালো হু' পা এশুলো দেদিকে। মঞ্জু জার বরফের মতো ঠাণ্ডা কপালে হাত রেখে দাঁড়িয়ে রইল। আহত দেহগুলোর দিকে তাকিয়ে ভাবলে, এই লোকগুলোও আবার কতক্ষণ এ ভাবে পড়ে থাকবে কে জানে!

মমতা বেষন গেল প্রায় তেমনি ফিরে এলে হাতের ট্রে শিশি-বোতল নামিরে বাথল একটা টেবিলে। একটি হিল্মুছানী স্ত্রীলোক জ্যার টেবিলের পাশে এনে দাঁড করিয়ে দিল একটা লখা ইণণ্ড।

মমতা ট্রে থেকে টলটলে জল ভরা একটা বোতল তুলে নিয়ে ঝুলিয়ে দিলে সেই ই্ট্যাণ্ডের হুকে। তারপর দক্ষ পরিচ্ছন্ন হাতে মিনিট পোনেরোর ভেতর জয়ার শরীরে সেলাইন সঞ্চরণ করে চটপট হাতে এক টুকরো কার্ডবোর্ডের সঙ্গে ব্যাণ্ডেফ করে ফেলল জয়ার হাতটা। কোঁটায় কোঁটায় টলটলে লবণ জল রয়ারের নল বেরে নেবে এলে স্টের মুপ দিয়ে বেয়ে চলল জয়ার ধমনীর ভেতর।

এ হাতে সেলাই, ও হাতের কভিতে আটেরি ফরশেপ—হাতের মাঝগানের নাড়ীতে তিনটি আঙ্গুল রেখে, ঘড়ির দিকে তাকিয়ে নাড়ীর স্পন্দর ভানলো মমতা অনেকটা সময়। তারপর মঞুকে বললো—এবার আমি একটু একজন ডাক্ডেরের থোঁজে বাচ্ছি—

—হাভটা ধৰে রাধবো আমি, বাতে নাড়াচাড়া করতে না পাবে ? স্থানতে চাইলে মঞ্চু।

— দরকার নেই। ব্যাণ্ডেক এমন ভাবে বাঁধা আছে ও নাড়াতে পারবে না। আছো, আমি আসছি।

মমতার ডিউটির সমর ছিল না এটা। চিলেচালা পোবাকটা বোধ হয় সে অবৃধপত্র আনবার আগেই আঁচলে জড়িরে প্রায় কোমর-বন্ধনীর মতোই শক্ত করে পেঁচিয়ে নিরেছিল। আর মাধার উড়ক্ত চুল গুলোকে বেঁখে নিয়েছিল একটা রুমাল দিরে। ভার দিকে ভাকিয়ে মঞ্জব মনে হলো, মমতা প্রকর্ম ক্রিছে দেটাই



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ] কু**লেখা দাশগু**প্তা

কৃতজ্ঞালায় মাথা নত কৰে আছে—আৰি মমতাৰ সৰ জপ থেন সেইখানে।

হালো, ব্যাপার কি ? প্রিচিত কেস নাকি ? ৬ টবস্ কমের দিকে এগুতে গিয়ে একেবারে ম্যভার মুখোর্থী পড়ে গিরে খেমে পড়লেন এক ডাক্তার।

ভান্তারকে দেখে বেন বর্তে গেল মমতা। সাঞ্জার বলে উঠল— বা: এই তো কেমন আপনাকে পেরে গেলাম। মি: সেন একটু এদিকে আনুন।

চিনল মঞ্ব। একেই দে দেদিন মমতাদের বাড়ীতে দেখেছিল।
মমতার মুখ থেকে তার বহু আকাজিক এই আগ্রহামিত
আ'হ্বান ডা: সেন কিছ এর পূর্বে আর কোন দিনও শোনেননি।
মমতার দিকে চোখ তুলে একবার তাকিয়ে শাহিত জয়ার দিকে
ভাকিরে এগিরে গেলেন ভিনি। — কি হয়েছে?

স্করার কাট। হাজটা নিজের হাতে তুলে নিয়ে ডাস্কারের দিকে বাড়িয়ে ধরল মমতা নীরবে।

মঞ্ তাকে জ্বাব আত্মহত্যা করতে বাধ্যাব কথা বলেনি বা বলবার সময় পায়নি। কিছু মমতা ব্লেড কটোব চেলাবাটা দেখেই বেমন বৃষ্ণে নিয়েছিল এটা সুইস ইড্ কেস, ডা: সেনও ডেমনি কাটা দেখেই সেটা বৃষ্ণে নিলেন। জ্বাব হাতের মাঝথানের শিরার ওপব ঠিক মমতাবই মতো করে তিনটি আঙ্গুল ছুইয়ে তারই মতো ঘড়ির দিকে চোথ রেথে দাঁড়িয়ে বইলেন ডাজার জনেকটা সময়। কালো হয়ে আসা আঙ্গুলের ডগা নথ গোটা ছই তিন তুলে তুলে দেখলেন টিপেটিপে; তারণার টেবিলের কাছ থেকে সরে এসে ঘরের মাঝণানে দাঁড়িয়ে বলকেন,—ব্লাড় টাজফিউশনের ব্যবস্থা করে ফেল। ডা: সিন্হা কোথায় ?

— ডঃ সিনহা হেড ইনজুরী কেস নিয়ে চলে গেছেন ওটিতে। ভাইতো—

—একে সেলাইন দিলে কে ? ডা: দাস ?

আমি। বিনীত কঠে বলল মমতা।

—তুমি ? জ কুচ্কে তাকালেন ডাক্টার বয়ার দিকে।

— উপায় ছিল না। বাধ্য হয়ে আমাকে করতে হয়েছে। সবিনয় কঠে বললো সে।

সংসাহদের পরিচর দিরেছে মমতা—এমনিভাবে প্রশাসার দ্বা

স্বাই-ই ব্রল আইন-বিশ্বত্ব ভাবে মমতা নিজ লাহিছে স্ব ক্রেছে। মঞ্দের স্বার দৃষ্টিভেই কৃতক্রতা প্রশাস্য সূটে উঠল।

—এ কেসটা আপনি একটু দেখুন ডাঃ সেন। এখন কাউকে পাওয়া বাবে না—এই মেয়েটি আমার বি.শব বন্ধু। কিছুটা বন্ধুখেব দাবী, কিছুটা শ্রীভিব স্থব—সেন মিশিরে দিল মমতা ভার আবেদনের সুরে 1

অত্যম্ভ ছক্তৰ একটা ডেলিভাবি-কেস নিবে ডাক্ডাব সেনকে আৰু প্ৰদে বৰ্ষ হতে হয়েছে সম্ভ দিন। তাৰপৰও ভাডাৰিক ভেলিভারি সভব হয়নি। মেহেটির স্বাস্থ্যের অবস্থা, প্রাটের-ক্র্ডিশন দেখে অপারেশনটা এড়াতে চেহেছিলেন কিছ শেষ পর্যান্ত দার্মিক্যাল অপারেশন থিয়েটারে-নিয়ে মৃত শিশু বের করতে হরেছে ভাজারকে সিজাবিয়ান করে। এই মাত্র রোগীকে বেডে পাঠিরে খাঁড়িরে থেকে ব্লাড সেলাইন সার্ট করে বাড়ী ফেববার ছুখে একটু वनकारक अथारन अफ़िक्सन खाकाव। अस्क प्रमुख क्षेत्र सार्थ करव मिछ शरहरक मूछ, ভাতে यात्र अवदा बामका अनव--বিষ্টাই বার্থ মনে হচ্ছিল ডাক্তারের। পরিপ্রাপ্ত পিঠটা হাত পা মেলে ভবে পড়তে চাইছিল কোথাও। কিন্তু মমতার মনজন্ত বোধটা ৰুখা গেল না। ভার গলার সেই প্রীভির সুর-জাবার এক নক্ষর তার দিকে ভাকাতে বাধ্য করলো ডাক্টারকে। সার্টের গুটোনো হাতা অভ্যাস বশেই ঠেলে তুলে দিতে দিতে জয়ার টেবিলের কাছে **গিষে শাড়ালো** ডা**ন্ডা**র। স্কীণ হতে স্কীণ হয়ে আসা নাড়ীর গতিটা দেশল আবার। দেখল বৃত্তের স্পদ্দন। তারপুর বললো-কোরামিন।

মমতা ছুটকো কোরামিন আনতে।

—হাসপাতালের ভিজিটিং আওয়ার। বাইরে বাওয়া-আস।
কথাবার্তায় সরগরম। এগালুলেজ থামার শব্দ হয়। হপ্ দাপ্ শব্দ
ছুলে কতকগুলো পা ছুটে আসতে থাকে এদিকে। ষ্ট্রেচায় এনে নামায়
কুলীয়া। টেবিল গুলো ভব্তি হয়ে হয়ে শেবে ওধ্ সিমেন্টের ওপর
শরীরগুলো নামিয়ে রেখে থালি ষ্ট্রেচায় নিয়ে বেবিয়ে বেতে থাকে
কুলীয়া।

কি হয়েছে 🔊

আহা, বিষ থেয়েছে।

ইণ্, রাজমিন্ত্রী, কাজ করতে করতে আচম্কা তিনতলার ছাদ থেকে ছিট্কে পড়ে গেছে !

মাগো, গাছে চড়ে থেলা দেখতে গিয়ে গাছ উপড়ে পড়ে চাপা পড়েছে ওপরের লোক নীচের লোক।

ঞা, গাডীর তলায় চাপা পড়েছে 🔈

मन थ्या मात्रामाति करत माथा काहिरवरक !

কেউ কাতরাছে। কেউ গোঙাছে। কেউ পড়ে আছে নিথব হরে। জীবিত না মৃত বোঝা বাছে না। বাদের জ্ঞান ররেছে তাদের জিপ্তাসাবাদ করে করে ঘটনা জানতে আর নোট নিতে চেষ্টা করছে। বারা অজ্ঞান, তাদের আর এই জিপ্তিসাবাদটুকুও সম্ভব হছে না। নেড়ে চেড়ে নার্সারা একটু প্রাথমিক এটা এটা দেখে তুলে দিছে ট্রেচারে। ডেটল, লাইজল, ইথার, রোবোফরমের-মিপ্রিত বে হাল্কা সন্ধটা হাসপাতালের গেটে ঢোকার পরই নাকে আসে, তারই উপ্র পদ্ধে ভারি হরে উঠেছে চারিদিকে

ক্ষয়কে উপরে ভূলে নিবে বাওরায় করু বধন ট্রেচার আনা হলো— তথন বেন এখান থেকে বেরুতে পেরে বাঁচল মন্তু।

সক্ষ ছোট্ট প্যাসেকটা গিজগিজ করছে লোকে। শেব হয়ে গৈছে ভিজিটিং আওরার। রোগীদের অংজীর বন্ধু সব বেরিরে বাছে। কাক হাতে থালি টিফিন-কেরিরার। কাক হাতে থালি কোটো। আর এখন হাসপাতালের তেতর থাকা চলবে না বাইরের লোকের। জরার মাকে নিয়ে ভ্রেরও বাইরে চলে আসতে হলো। এক মঞ্জুকে নিয়ে নিল মমতা সঙ্গে করে। জরাকে নিয়ে লিফ্টে তোলা হলো। ওরা চলল সিঁড়ি তেলে। এতক্ষণে ব্রলোমঞ্ ইমারজেলী কমটা ভিছুটা কাজ করে বেন একটানা তেতলার প্রলোক্ষের লেখানে চিকিৎসা শুক্ত করা বেতে পারে, বেমন মমতাকে জরার সেখানে চিকিৎসা শুক্ত করা বেতে পারে, বেমন মমতাকে জরার সেলাই সার্ট করে দিয়েছিল— নইলে তেতলার ব্লকেই নিয়ে আগতে হর স্বাইকে।

কিছ মঞ্ বে ভেবেছিল ঐ খবটা ছেড়ে দে বাঁচলো—তা একেবাবেই মিথো। উপরে উঠে দেখল এটা—আরো জীবন। কাল কাত কেটে ফেলা হরেছে। কাল পা। কাল ব্যাণ্ডেল বাঁধা মুখ একেবাবে গলা পর্যন্ত ঢাকা। কাল পা উপর দিকে টানা। কাল হাত। কাল নাকের ভেতর দিরে নল ঢেকানো। কালর বাছে অলিকেন সিলেগুর। সারি সারি ষ্টাণ্ডে ঝুলছে হক্ত, লবণজল। প্যাসেল থেকে শুল হয়েছে রোগীদের খাটিয়া পাতা। তাতেও কুলোছে না। মাটিতে মেঝেতে এখানে ওখানে পড়েলাছে সব। নোরা, অপরিছের বেশবাস পরিবেশ বিছানাপর অংবহাওয়। এই হাসপাতাল সমানুবের আবোগ্যনিকেতন?

ক্ষিভোৱের বেডগুলোর পাশ দিয়ে কুলীরা ট্রেচার ডান দিকে ঘ্রালো। সঙ্গে সঙ্গে ব্রলো মঞ্ত। এখানেই মেয়েদের ওয়ার্ড। সেই এক অবস্থা—এক চেহারা। অয়ারও খাটিয়া মিলল না। নামিয়ে রাখা হলো ভাকে নীচের একটা খটোনো নোরো ভোষক টান করে।

কোন উপায় নেই।

পেইং ওয়ার্ডের কথা বলতে গিয়েও থেমে গেল মমতা। নেমে গেলেন ডাক্তার। অবস্থা বুঝতে কতক্ষণ লাগে ?

সেই মেঝের বিছানায়ই ব্লাড, ট্রাফাফিউশন দিলেন ডাক্টার।
দিলেন মরফিয়া। করলেন কাটা হাত সেসাই। তারপর বেরিয়ে এসে শাড়ালেন করিডোরে।—তুমি থাকবে এখন এই নেয়েটিব কাছে?

-- থাকা দরকার হলে থাকবো।

— দরকার মানে, ঘড়ি দেখলেন ডাক্টার সেন—এখন সাড়ে সাতটা বেজে গেছে। নটা নাগাদ আমার চেষারে একটারিং করে তুমি এর অবস্থাটা জানাবে আমাকে। তথন আমি বলে দেবো, আজই আর একবার ব্লাভ দেওয়া দরকার, না কাল সকালে দিলেই চলবে। আর তুমি যদি না থাকে। ভবে ওরার্ডনাস্কি বৃথিয়ে বলে বাবে—থামলেন ডাক্টার। আছে, আফিই বলে বাছি। তোমার কথার তেমন গুরুত্ব নিও দিতে পারে।

—मार्भिर थाकरवा। न'होत श्रंत जाशनारक जवहा जानारव

একটু চিস্তা করলেন ডাক্তার—আক সমস্ত দিন ডিউটি দিয়েছেন, কাল সকালে আবার ডোমার ডিউটি রয়েছ—

একটু হাসল মমতা—এটাও ডিউটিই। ন'টা সাড়ে ন'টা প্রস্তু থাকতে আমার কিছু কট হবে না। আমি আপনাকে ঠিক ন'টার ফোন করবো।

ডাজ্ঞার বৃন্দেন,—তিনি বে আবো কিছু সময় রোগীর কাছে এাটেনডেল দরকার মনে করছেন, মমতা তার কথায় সেটা বুবেছে।

—আই উইস্ ইওর সাকসেস্। বলে জুতোর শব্দ তুলে করিডোর পার হয়ে গেলেন ডাক্তার।

দে দিনের জয়াদের বাড়ীতে দেখা ডাক্তার আর এই ব্যক্তি কি একই লোক? মঞ্ব মনে হতে লাগল বেন এক নয়। তা ভিন্ন লোক বৈ-কী। এখানে সে ডাক্তার।

মমতার সঙ্গে থেকে যেতে চাইলো মঞ্ও। কিছ মমতা দিলে না। তুমি, তা ভোমাকে এতক্ষণ আপনি বলছিলাম কিন্ত বলতে একটুও ভালে। লাগছিল না। ছোট ভো। তুমিই বলি, কি বলো? তোমার থাকার কোন দরকার নেই। দরকার থাকলে কি আমি কথনোই ষেতে দিতাম তোমাকে? ভয়ের কারণ কেটে গেছে। আমার থাকার হলো,—অবস্থা टारायन দেখছ তো হাদপাতালে। কি করবে ডাক্তার, কি-ই বা করবে বেচারা নার্স অর্থাৎ আমরা। হাসল মমতা। একেবারে হিনশিম থাই আংমরা। সামনের গুরুত্র কেস পেছনের গুৰুত্ব বোগীৰ কথা ভূলিয়ে দেয় জানি তো। তাই ৰয়ে গেলাম। ক্ষের ব্লাড দিতে হয় তো, দেওয়া হয়ে গেলেট চলে যাবো আর না দিতে হলে তো কথাই নেই। তুমি শুধু শুধু কেন রাত করবে? তারপর তোমাকে রাখাটাও একেবারে নিয়ম-বিকৃত্ব বে---

—কাল সকালে ক'টার সময় আসবো I

সেটাও বেন নাই করতে যাছিল মনতা। বলতে বাছিল গ্রেকবারে হাসপাতালের ভিজিটি সময়ে এলেই চলবে। কিছ থেনে গেল। বক্ত আনতে হয়েছে ব্লাড-ব্যান্থ থেকে, আবারও হয়তো আনতে হবে। অধুণ এলেছে। ইন্জেকসান এলেছে। জয়ার মার আঁচলের টাকায় ভার অনেক কিছুর মূল্য দেওরাই বাকী থেকে গেছে। নিক্ন দায়িছে আনিয়েছে মমতা। কাল টাকা দিতে হবে। বললো—তা ভোমার সময় মতো এলো। কাল আমার ডিউটি সকালে। লেবাহ-ক্রমে থাকবো। থোক করলেই ডেকেদেবে।

মঞ্ যথন হাসপাভালের দালান থেকে বাইবে এলো তথন ওর মুখের বাও ঐ ইমারজেনী-ওরার্ডের খবে, বাইবে, প্যাসেজে, টেবিলে, মেবেতে পড়ে থাকা লোকগুলোর মুখের মতোই কালো চটচটে খামে ভেলা। শ্রীরের অবস্থা ঐ লোকগুলোর মতোই বৃঝি অর্থমৃত। ইমারজেনী ওরার্ড নর তো বেন ব্যের কড়াই থেকে হাত পা গুলো ফ্র ছিল বলে ও ভিটকে বেরিয়ে আসতে পেরেছে।

জয়ার মা সমস্ত পথ গুণগুণ করে বত কথা বলে গোলেন, তা সৰই
মনতার প্রশংসা। এমন রূপ, এমন গুণ, একত্র হয় না কখনো,
বিদি না দেবী হয়। মনতা নিশ্চয়ই শাপ্তভা দেবী। জাহা,
কি ভালো মেরে।

—वी, निःमत्यदर **जारमा स्मरत्र । जात वहे ७५ उर्द्धा** बनाव

বেন কিছুই বলা হয় না মমতার সক্ষম। প্রর আব আনতে ইছে করে – কেনই বা মমতা রত্নার কাকাকে বিয়ে করতে বলার একদিন বাড়ী ছে:ড় বেরিয়ে এনেছিল। কেনই বা সে আর একদিন প্র ছোড়দাকে বিয়ে করতে মত দিয়েছিল। গালে একটু হাসির টোলই বেন থেলে গেল—মঞ্র। এবার ছোড়দা এলে সে তাকে বলবে—ক্ছোড়দা, তুমি কি হারটিয়াছ তাতা তুমি জানো না।

পালের বাড়ীর মি: চৌধুরী—ষিনি উদ্যোগী হয়ে জয়াকে হাসপ তালে নিয়ে এসেছিলেন এবং যার বাড়ীর মেরেরা জয়াকে নিরে ভাদের কাছে বেথেছিলেন। এখন জয়ার মাকেও চৌধুরী তার বাড়ীতেই নামিয়ে দিয়ে বেতে চাইলে নিশ্চিস্তবোধ করলো মঞু। এর চাইতে ভালো ব্যবস্থা আর কি হতে পারে? ওরা নেবে গেলে এবার রুড় গলায় ডাইভার জানতে চাইলো—সে কোথার যাবে।

সেই বেলা তিনটে থেকে তাকে আটকে রাথা চয়েছে। এই ধানা ওয়েটিং চার্যের চাইতে চলার তাদের দিগুণ লাভ। কিছ মঞ্কে সে খুঁলে বের করতে পারে নি। আর খুঁলবেই বা কোধায়—এদিক ওদিক তাকানো ছাড়া। অনলরা বেরিয়ে এলে তাদের ভাড়া মিটিরে দিতে বলেছিল। কিছ ওরা দেবে কোধা থেকে? বাধ্য হয়ে গঞ্জান্ধ করতে করতে থেকে বেতে চয়েছিল তাকে।

বুঝল মঞ্সবই। নাভেবে-চিক্টেই সে বলে কেলল---গ্র্যাঙে চলো।

—গ্রাণ্ড হোটেলে? মজুব দিকে মুখ ঘ্বিরে জানতে চাইলে। সে। একটু অবাক হওয়া ভাব তার জিজ্ঞাসায়। বেন—বেশবাস আদব-কারদা কিছুই তো মজুব গ্রাণ্ডে বাওয়ার সাক্ষ্য দেয় না; ভকে ঐ সমাজের কেউ বলে বলে না।

क्याव निम मञ्जू—ई', ब्याटिश ।

वह९ बाम्हा।

गाड़ी ছুটে চলল।

যদিও মঞ্ ভাবলো সে না ভেবে-চিস্তেই গ্র্যাণ্ডের কথা বলেছে, কিন্ত—তা কি কখনো হয় ? মন প্রস্তুত না হয়ে কোথাও এক পা বাড়াতে চায় না, বাঙায় না ! জোর করে টেনে নিয়ে যাওরা অবশ্র বায় কিছ তার পেছনে জোর খাকে, বল প্রয়োগ খাকে, জুনুম খাকে। হঠাৎ করে কিছু করে বসলেই বে আমরা ভাবি, না ভেবে-চিস্তে করেছি—এটা ভুল। হঠাৎ করা কাজের পেছনে মনের প্রস্তুতি খাকে সব চাইতে বেশী।

ওর এখন এমন একটা জায়গা চাই, বেখানে সাত রকম প্রশ্ন করে ওকে কেউ বিহক্ত করবে না, কোন সন্দিওচিত্ততা নিয়ে ওর দিকে কেউ তাকাবে না।

ৰদি দে কথা বলতে না চায়, একটা কথাও না বলে, বলে বলে নীবৰে সিগাৰেট টেনে চলবে।

মুখ দেখে ওর ছবন্ত কিংধর কথা বুঝতে পেরে খাবার এনে কাঁটায় গেঁথে ছাতে তুলে দেবে।

ঞ্চাইভাবের কর্ল করা বকশিস্, ট্যাজি মিটারের অন্ধ, কালকের বেশীটার প্ররোজন, কোন কিছুব অক্তই ওকে আর ভাবতে হবে না— এর কোন কথাটা মনের অকানা ? ভবে কোখায় বেভে হবে সে জানবে না কেন ? প্রস্তুত হয়েই বা ভবে খাকবে না কেন ?

গ্র্যাণ্ড ছাড়া যে মন্ত্র আর কোথার এখন যাওয়া হতে পারে না, এটা মন জানতো। প্রস্তুত হয়েও ছিল সে। আর কোথাও নিতে হলেই তাকে—জোর ক'বে নিয়ে বেতে হতো।

ভোটেলের দরগায় গাড়ী এদে থামলে মঞ্লেমে পড়লো। নেমে পড়লো ডাইভারও। জানালো আবার সে এক মিনিটও আনপক্ষাকরতে পারবে না। তার টাকা মিটিয়ে দিক মঞ্।

ফ্রাইভারের বলার ভঙ্গিতে, মুথের চেহারায় কোন সম্মান ছিল না। শক্ষিত হলো মগু।

এমনি সময় বজতের গাড়ী এসে ধানল মঞ্ব ট্যাক্সির পেছনে। মঞ্জকে দেখে নেমে এসে সময়মে সেলাম জানালো, বজতের ডাইভার।

এতো বড় গাড়ী থেকে অমন বাসো ঘদা বক্ককে বোতাম আঁটো, সালপোষাক পরা ডাইভারকে নেবে এসে মঞ্কে দেশাম জানাতে পেথে যেন গুটরে গেল ট্যান্ধি-চালক। হাত কচলে জানালো, মঞ্জ বেন মেটেরবাণী করে টাকাটা এফুনি তার পাহিরে বেয়।

হাফ ছেডে গ্র্যাণ্ডের পরিচিত পথে হাটা দিলে মন্তু।

ভেমনি জোড়ায় জোড়ায় দেশী-হিদেশী নাগী-পুক্ষ চলেছে কবিভোর দিয়ে। খোলা হাওয়ার রেষ্ট্রেন্টে তেমনি বাজছে অরকেষ্ট্রা।
তেমনি একটি মেয়ে মাইকের মুথ কিউটেম্ম রিজত আকুলে জালতো
হাতে ধরে গান পাইকে। তার মুজ্যের মতো দাঁত রাকা ঠোটের
কাঁক দিয়ে মাঝে উকি দিছে। বয় ঘ্রছে ট্রে হাতে।
সব কিছু পান কেটে সোজা চলে গিয়ে লিফ্টে উঠল মজু। কিছ
বজতের ঘবের দয়কার বাইবে সন্ধীন কিন্ডোর ঘেঁসা টেবিলটা পেরিয়ে
বাবার জন্ম পা বাড়িয়েও থেমে পড়ে সরে দাঁড়াতে হলো তাকে।
কান তিন চার নারী পুরুষের একটা ছোট দল হৈ হৈ করে বেরিয়ে
এলো রজতের ঘর থেকে। বাইবে এসে দাঁড়িয়ে রজতের ঘরের
উদ্দেশে বলল—নাইট ইজ ছিল ইয়ং—ওচো, রজত নিবেধ জারি
করেছে তো নিজেদের ভেতর ইংরেজী বলায়। বৃষলে রজতে,
রাব্রি এখনও নবীন—জাবার আগছি আমর।।

ভবাব এলো ভেতর থেকে-ও, সিওর।

— দিওর নর, বলো নিশ্চয়। সংকীতৃকে পালাটা ঠেলে ঘরের ভেডর ডাক নিয়ে কথাটা বলতে গিয়ে, 'সরি' বলে মাথা টেনে হো হো করে হেসে উঠল। তারপর হাসির রোল তুলে চলে গেল স্বাই লিফ্টের দিকে।

ওরা লিফ্টে উঠে না যাওয়া পর্যন্ত দাঁড়িয়ে বইল মঞ্ অপেকা করে। এখানে ওবই বিশ্রামের জক্ত ওরা ঘরটা কিছুক্ষণের জক্ত থালি করে দিয়ে গেল। ভাগ্যটাকে একটা ধক্তবাদই দিয়ে ফেলল মঞ্ছ।

কিছ কোথায় বে পত্যিকারের ভাগ্য, তা যদি মানুষ বুঝতে

পারতো তবে তো, কথাই ছিল না। মঞ্ লোকটির বক্তের থবের তেতর মাথা চুকিরেই 'সরি' বলে মাথা বের করে এনে হো হো করে হেসে ওঠার কারণটা ধরে উঠতে পারেনি। নিপ্সারাজন বোধে তাই টোকাঠোকা না দিয়েই দরকার ভারী নিঃশব্দ পালাটা ঠেলে একেবাবে বরে চুকে পড়লো লা। কিন্তু চুকেই হক্চকিয়ে থমকে গাঁড়িরে পড়তে হলো মঞ্জেক।

ৰজতের ভবল শ্রীং এর খাটের ডানলোপী গদীর ভেতর শ্রীর ভালিয়ে দিয়ে অর্থশায়িত ভাবে বসে আছে একটি মেয়ে। তার দিগারেট ধরা অলস হাতটা শিখিল ভাবে পড়ে আছে থাটের বাইরে। বোধ হয় রজতের শ্রীরে বাতে না লেগে যায় সে জ্বুই হাতটা দূরে রেগেছে: ময়েটি। বজতের তুহাত বেষ্টন করে আছে মেয়েটির খালি কোমবা: মুখটা মেটেটির মুখের উপর।

কি করে বেরিয়ে যাবে ঠিক করে উঠবার আগেই মেয়েটির চোধ পড়ে গেল মঞ্ব বিকে। রছতের মুখটা হাত দিয়ে সানার ঠেলে দিয়ে, নেশারতে শুরীর এলিয়ে দিল সে—বিছানায়।

বললো,—বজত, সাম ওয়ান হাজ কাম। কাঞ্চ আগাটা মেটেটির মতোই গ্রাহ্ম করলে না রক্ষত। ধেমন ছিল প্রায় তেমনি ভাবে বদে থেকে—তথু মাথাটা পেছন নিকে ঝুলিয়ে দিয়ে ক্তির সঙ্গে টেটিয়ে উঠলো সে—হালো, কে ?

বেরিরে যাওয়া হলো না মঞ্র। থাকতে হলো গাঁড়িয়েই।

— মঞ্! মেয়েটিকে ঠেলে সবিষে এক দিয়ে উঠে দাঁড়ালে!—
বজত বিছানা ছেড়ে। বিমৃত্ মঞ্ব দিকে তাব মাতাল চোৰ হুটোও
কিছু সময় তাকিষে বইল বিমৃত হয়ে। তারপর পা টলা পার
এপিয়ে কয়েক পা এগিয়ে গেল মঞ্ব দিকে — আঃ মঞ্ছ, তুমি—
তুমি এখন এখানে এসেছ কেন? এখন—এখন তোমাকে আমি
কোবার বসাবো, কি করে তোমার সঙ্গে কথা বলবো? না—না!
তুমি এখন চলে বাবে মঞ্ছ। কথাগুলোর—আদ্দেক বোঝা গেল।
আদ্দেক চাপা পড়ল তার ভারী জিবের তলার।

চলো, ভোষায় এগিয়ে দিয়ে আদি। চলতে গিয়ে কোঁচের পিঠ ধরে টাল সামলালো। ভারণর বলগো—চলো।

হঠাৎ সোজা হলো মঞ্জ।

--- SC#1 1

-a1 1

লাল চোথ ছটো ভূলে বিশ্বিত ভাবে মঞুর দিকে তাকালো বজত—যাবে না বলছ ?

মঞ্মাধা নেড়ে জানালো। ইা সে তাই বলছে। বিহবল কঠে বজত বললো—কি কলবে ?

মঞ্ব মূৰেৰ বিমৃচত। কেটে গিয়ে এখন বেন দেখানে বিছাৎ খেলছে। বললো—বলবো।

[ক্ৰমণ:]

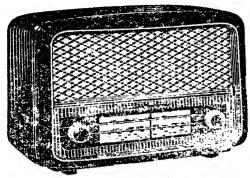
A bad book is as much of a labour to write as a good one—it comes as sincerely from the author's soul.

रिपिंड क्षित्र काल पाक इ, प्य



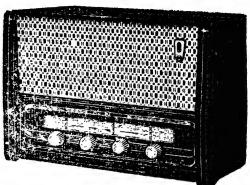
কাজে নেরা ও দামে স্থবিধে ব'লেই ছাশনাল-একো শ্লেডিও এবং ক্লিয়ারটোনের জিনিস বিখ্যাত। আর তা-ও এত বিভিন্ন রক্ষের পাওয়া যায় যে আপনার যেমনটি চাই বেছে নিতে পারবেন।

नगुभानाल



ছাশনাল-একো রেভিও মডেল ইউ-৭১৭-এগ্রি/ ডিসি; ৫ ভালভ, ৩ ব্যাণ্ড, ছাশনাল-একো-র বড় সেটের মত অনেক বিধি-ব্যবস্থা এতে আছে। মনস্মাইজ্ছ

ব্লেডিও



গ্রাশনাল-একো মডেল १২২-এসি অথবা এসি/ ভিসি; ৬ ভালভ, ৩ বাাণ্ড; খুব ভাল কাম দেয়; এই ধরণের রেডিওর মধ্যে সেরা। মনহুনাইজন্ম

Weevene क्रियात्राति वाणि ३ व्यनग्राना मत्रक्षाप्त

ক্লিয়ারটোন বৈহ্যতিক ওয়াটার হীটার— কল ঘুরালেই গরন জল পাওয়া,খায়: ৫ থেকে ১৮ গালেন জল ধরে

ক্লিয়ারটোন বাতি, ফুরেসেণ্ট টিউব এবং ফিক্স্ চার— পরিভার অকবকে আলো অথচ থরচ কম পড়ে

ক্লিয়ারটোন দিংকোনাস বৈছাতিক দেওয়াল ঘড়ি— অসাধারণ নির্ভরবোগ্য ৭ রকম সাইক্লে এবং ফুলর ফুলর রঙে পাওয়া ঘায়

ক্লিয়ারটোন
ঘরোয়া ইস্তি—
থজন ৭ পাউও;
২০০ ভোণ্ট—
১০০ ওয়াট; ধূব
প্ল জোমিয়াম
কলাই করা



। ক্লিয়ারটোন কুকিং ক্লেঞ্জ— দুটো দেট দেওলা উত্তৰ, প্রত্যেকটির জালাদা নিয়ন্ত্রণ বাবস্থা জাছে। শক্তি ৫০০-ওলটি পর্যন্ত



ক্লিমারটোন বৈছাতিক কেট্লি— ক্লেমিয়াম কলাই করা; , পাঁইট জল ধরে; ২৩০ জোন্ট—১০০ ওয়াট



জেনারেল রেডিও আওে আপ্লায়েনেজ প্রাইভেট লিমিটেড

৩, মাাডান ট্রাট, কলিকাডা-১৩ • অপেরা হাউস, বোধাই-৪ • ১/১৮, মাউন্ট রোড, মাডাজ-২ • ক্ষেত্রার রোড, পাটনা • ৩৬/৭৯ সিলভার জুবিলী পার্ক রোড বাজালোর • বোগধিরানু-ক্ষুত্রানী চার্নী চক, দিল্লী • রাইপজি রোজ, সেকেঞারাকাল



ভবানী মুখোপাধ্যায়

এক তিশ

ব্ৰিটিশ দারু ইনসম্নিয়া বোগে আক্রান্ত হলেন। কেউ टक्टबन-कांकाल ऐ: ए विद्युत वामि वानत्म व्यक्ति. তুর্বিও তাই কলে। আকাশে ওড়া তথন নতুন চালু হয়েছে। ্র্মারে। জনেক প্রস্তাব এল। টি, ই লরেন্স (লরেন্স অব আশাবিয়া) বার্ণার্ড ল'র জীকে বললেন, যে আরব দেশে আকৃতি পরিচয় বদলাতে হয়েছিল গোলমালের সুত্রপাতে, তার ফলে অনিক্রা (FICT (SILE)

বার্ণির্ড ম' একথা জনে বললেন—ভাহলে ভোনাদের কি ইছো ৰে আমি লাভি কামিয়ে রাভার কাড়ুদারের কর্মটা গ্রহণ করি ? সে কালে আমার তেমন যোগ্যভাও নেই।

প্রোফেসার আলবাট আইনষ্টাইন একটা নতুন প্রস্তাব দিলেন। हिनि रमालन-- िछ। कत्रा श्रदा ना कदात्र मध्य भीर्य वित्रिष्ठ श्रीका প্রয়োপন। দোভা থাড়া হরে দাড়ানোটা যেমন অস্বাভাবিক চিস্তাও তাই। ভাইত মামুধ 6িস্তা করতে চার না। আইনষ্টাইন বললেন-প্রচুর পরিশ্রম করুন। শ্রীরিক পরিশ্রম প্রয়োজন। কঠি চেলা কক্ষম কৰাত দিৱে, মেঝে পরিছার কক্ষম, কিংবা বাগানের মানীর কাজ ক্ষুত্র করুন।

বার্ণার্ড म' প্রস্তার্যটি ভেবে দেখলেন। তাঁর মনে হল আইনটাইনের কথাগুলি যুক্তিসঙ্গত। তবে আইনটাইন এ কথা হয়ত ভেবে দেখেন নি দাসী-চাকর বা মালী হয়ত কর্ম পরিবর্তনে क्षांको हरनना । अहे कातरणहे धनीत्मत बन्त नानाविध त्येलाधूला वात्रहा ।

১১৩০ থুষ্টাব্দের শেষের দিকে স্থাভায় হোটেলের সম্বর্ধনা ভোক্তে বার্ণার্ড ল'কে আইনটাইনের স্বাস্থ্য প্রস্তাব করার অনুরোধ জানানো হল। বার্ণার্ড শ' সানন্দে এই কর্মভার গ্রহণ করেছিলেন। দার্শনিক শিল্পী (Artist Philosopher) গাণিতিক শিল্পীকে (Artist Mathematician) भाषान श्रामक क्यारन । वार्गाई मांव श्रावता দ্বিল বীলাণাগারে যে সম বিজ্ঞানীয়া পানীকা-নিরীকা করে চলেছেল, ১ সমূলেন, হুমত স্থালিনের সঙ্গেও দেখা হরে বেতে পারে।

কবি ও কলাবিদরা তাদের চেয়েও অগ্রগামী। ধর্ম নিয়তই অল্লান্ত আর বিজ্ঞ নকে সর সময়েই ভূল প্রেমাণ করা বায়।

वार्गार्ड में ভাবলেন, Back to Methuselah नाहित्क ষেণানে তিনি বলেছেন-When a man is mentally incapable of abstract thought he takes to metaphysics; and they make him a professor. when he is incapable of conceiving quantity in the abstract he takes to mathematics; and they make him a professor.

এই সম্বর্ধনাসভার সভাপতি ছিলেন লর্ড র্থসচাই-ড, ডিনি বললেন-আছা মি: শ', আপনি আর আমি আমাদের যথাসর্বস্থ যদি দরিদ্রদেব দিয়ে দিই ভাগলে সকলের ভীবনযাত্রা সহনীয় গুয়ে উঠবে ?

বার্ণার্ড শ' বললেন-জানেন, আমার কোথায় অ'পত্তি! আমার আপত্তি দবিদ তাব যথাসাঁত্ত ধনীর হাতে তুলে দেওয়ার। যা অর্থনীতি হিসাবে ক্রটিপূর্ণ, ধর্ম হিসাবেও ভার ক্রটি থাকবে।

— মি: শ', আপনাব ধর্ম কি ? ঠিক যা বলুন ?

—কাপনাবত যা আনোৱত তাই। আমিও বাইবেল পড়ে মহামানবেৰ আধিহাবেৰ আশায় বদে আছি।

হুর্ড রুথসচাইলড় চোগ ছোট কংর বললেন-আপনার হিসাবে তিনি ভ' গ্ৰমেই গ্ৰেছন।

শ' সেদিনকাৰ সম্মানিত অভিথিও দিকে ফিলে বললেন—দেখন প্রোফেনার আইনটাইন, আমার এই প্রশ্নটা আমি বছ বৈজ্ঞানিককেই করেছি, যদি দেখেন আপনাদের থিয়োরীর সঙ্গে আসল ঘটনার পার্থক্য অনেক তাহলে কি করেন ? প্রশ্ন করার সঙ্গে নিজেই উত্তর দেন— আছল ঘটনা যদি গাপ থাইয়ে নিতে না পারে তাকে বাদ দেওয়াই ETTAL 1

কাইনটাইন হেলে বললেন-বন্ধু। ছঃখের বিষয় আপনার ধর্মরজী ব্যক্তিটি বা বিজ্ঞানী বা কলাবিদ কেউই তর্ক করার অবসর পাৰে না। তাছাড়া তাবা সবাই হয়ত একই ব্যক্তি।

--ভাছলে তাদের জন্ম অপেকা করবে', শুধু সেই কারণেই নয়, উপযুক্ত কথার জন্মও বদে থাকবো। মাত্রুবকে তাদের চিস্তা সম্পর্কে স্চেতন কবার ধলুবাদহীন দায়িখটুকুও আমি নিজের যাড়েই নিয়েছি!

আইনষ্টাইন আবার হাসলেন, বললেন—দে কর্ম আপনি ভালো ভাবেই করেছেন—ভাতে তারা এমনভাবে কথা বলে, মান হয় তার পৃথিবতৈ দর্ব শ্রন্থ চিম্বানায়ক।

मकरम को श करत छेरलन । वार्गाई में शरे म्यद ता नार्टकि निथि हिल्म है, हे, मार्स्सिय हिंद्य महे नाहित्क ब्रामीय करविहासन, বাৰাৰ্ড শ' তার সৰ পরিচিত চরিত্রকেই এই ভাবে অমর করেছেন, তবে বঙ চড়িয়েছেন অনেক বেশী। এই নাটক কিছ সম্পূৰ্ণ হল না, তার আগেই বাশিয়া যাভয়ার একটা স্বযোগ ঘটস।

লর্ড লেখিয়ান ও লেডী আষ্ট্রর প্রভৃতি রাশিয়া বাচ্ছিলেন, তাঁরা বাণার্ড শ'কে আমন্ত্রণ জানালেন। তাঁরা জানতেন, শ' রাশিয়া দেখে থুদী হবেন 1 তেমনই রাশিয়াও থুশী হবে বাণার্ড শ'কে সেকুৰ प्परिश वार्गाई म' स्वन कार्म भार्कम छ म्ब्राभीयदात मः युक्त मः खत्र । এর ফলে বার্ণার শ'র সঙ্গীয়াও কিঞ্চিৎ প্রতিফলিত মর্বাদা লাভ সার্লেটি এলেন না এই তীর্থবাত্রায় তবে বার্ণার্ড শ'কে বার বার বললেন—লেলিনের বিধবা স্থী ক্রপস্কারার সঙ্গে যেন দেখা করা হয়।

এ্যান্তররা সঙ্গে প্রাচ্নর বিনের ঝাবাবের রসদ সংগ্রহ করলেন, যেন ছভিক্লের দেশে চলেছেন। বার্ণার্ড শ' কিন্তু নিজের পোষাক পরিচ্ছদ ছাড়া আর কিছুই সঙ্গে নিলেন না, তিনি ইংলণ্ডে খনেক রাশিয়ান দেখেছেন, তাদের থানা থেয়েছেন, আর কালো কৃটিও তিনি পছন্দ কর্তেন, ছোটবেলার আইবিশ বাদামী কৃটিও তাঁর অপছন্দ ছিল না।

আশ্চর্য কাশু, বার্ণার্ড শ'র সহচরবুন্দ মংলা শহরের চোটেল দে থ তাজ্জব ! তাদের যুরোপীয় থানা আরো তাজ্জব ! মহো শহবের সেই সেই হোটেল তথন মার্কিণ ভ্রমণকারীতে বোঝাই ।

আগমনের পূর্বে শুধু বার্ণার্ড শ'র কথাটাই রাশিয়ান সংবাদপত্তে প্রকাশিত ইয়েছিল। বার্ণার্ড শ' বেন 'মানবীয় বিহাংবন্ধ' তাঁকে বলা হল, Human Dynamo। রুশ দেশের মাপকাঠিতে এই সর্বোচ্চ সম্মান। বে শ্রেষ্ঠ উৎপাদক এবং আবো উৎপাদনে সক্ষম তাকেই জানর করে এই কথা বলা হয়। বার্ণার্ড শ' এই সব লক্ষ্য করে থাকবেন।

বার্ণার্ড শ'কে প্রকাশু 'হল অব নোবেলস'এ সম্বর্ধনা জ্ঞাপন করা হল। তাঁকে ওপেরা, ব্যালে, বস্তৃতা ও ভোজসভায় আপ্যায়িত করা হল।

বার্ণার্ড শ'র সঙ্গে মঃ লিটভিনফের দীর্ঘ দিনের পরিচয়, তিনিই সুহত্ত শোভাষীর কাজ করলেন।

বারণার্ড শ' বঙ্গতেন—সারভাইভাল অব ংদি ফিটেট্ট বা যোগ্যতমের জর হিসাবেই ট্টাপিন তাঁর মর্যালা ও ক্ষমতালাভ করেছেন, অত্যস্ত হর্যোগপুর্ণ মুহূর্ত্ত ও সংকটমর কালের মধ্যে তাঁকে অতিবাহিত করতে হরেছে, নবান সভত্যার প্রসব বেদনার সমস্ত অস্থবিধা তাঁকে ভোগ করতে হরেছে। তাই ট্টালিনের সঙ্গে সাক্ষাৎকারকে তিনি জীবনের শ্রেষ্ঠতম মুহূর্ত্ত বলে স্থাকার করেছেন।

বাণীর্ড শ'ব স্ততিবাদ অত্যস্ত সমঝদার শ্রোতার মত হাত্মুথে তনলেন জোসেফ ষ্টালিন।

বার্ণার্ড শ' অতি ভীক্ষণদার বললেন—বা দেখেছি, বা শুনেছি, বা পেরেছি তুলনা তার নাই, আমি বাধ্যভার্লক প্রমদান এবং বাধ্যভার্লক ব্যবস্থায় আপনার রাষ্ট্রনীতির প্রবর্ত্তন সমর্থন করি। এই সব ঘটনা এখনই ছেড়ে দেওয়া চলে না।

ষ্ট্রালিন অটুছাত করে বললেন—এটা কি তথু আমারই নীতি ? আপনার নয় ?

শ' বললেন—আমার কি ক্রীড বা নীতি তাতে কি এসে যায় ? আমি একজন লেখক মাত্র, নব্য সভ্যতার জনক নই। আমি এক ক্রীণচরিত্র,—জীর্ণ মোমের পুতুল মাত্র।

এর জবাৰে ষ্ট্রালিন বললেন—কার্স মার্কসও এমনই একজন সামায় লেথক মাত্র। অথচ কার্স মার্কস না থাকলে আমরা প্রতিপদেই হয় ত ভূল করতাম। জামরা লেথক চাই, আমাদের মতবাদ প্রচারের সহায়তায় প্রয়োজন লেথকদের। ঠিক এই মুহুর্জে আপনার হাস্তরসের জন্ত হয় ত আমরা প্রস্তুত নই, তবে আবার একদিন হয় ত হাসতে লিখব।

म' वनाम्न-कामारमव 'सरम वर्गन कारना ममकाव पूर्वापूर्वि

হতে ভয় পাই তথন আমবা তা হেসেই কাটিয়ে দিই। এখানের মানুষ জাবনের সমস্তার মুখোমুখি এসে দাড়িয়েছে, তাই তাদের জাবনে এখন হাসিব অবসব নেই। আমাব কবি-বন্ধু টমাস হার্ডি একটি চমংকাব পেনটিং নই করে ফেলেছিলেন, তাতে তাঁর হাত্তমন্থ অবস্থা রূপায়িত করা হয়েছিল।

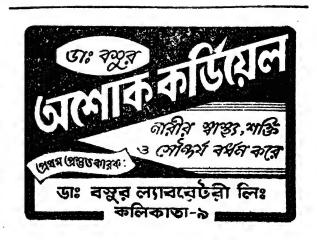
ষ্ট্যালিন বললেন—খাগানের জীবনে তিনজন সর্বশ্রেষ্ঠ লেখক আমনা পেয়েছি—লিও টলষ্ট্র, চার্লাস ভিকেল, জর্জ বার্ণার্ড শা টলষ্ট্র ধর্বের চাপে পড়েছিলেন এই পরাভূত হয়েছিলেন ভিকেশের জাটি তাঁব সেনটিমেনটালিজন আর আপনি— এখনও আপনি বংশষ্ট নবীন, কিদের চাপে পড়ে যে আপনি ব্যক্তিত স্বেন ভা আনার এখন বলা সাজে না।

ছোট ছেলে যেনন পুরাজন ছেড়মাটারকে লেব এরার বিগলিত জরে পড়ে, যাকে সে এতদিন মনে মনে উধাং দান করেছে তার মানবিক রূপ দেখে বিন্মিত হর, ট্যালিনেবও দেই অংছা। বে বার্ণার্ড শাকে মনে মনে এতদিন পুলা করেছেন, তার গড়জড়ানো মৃতি দেখে একটু যেন আনমনা হলেন।

রাশিয়া সম্পর্কে বাণার্ড শার মনোভংগী কিন্তু অভিশর সংবেদনশীল, তিনি যা কিছু দেখেন তাই চাঁব কাছে বিমায় ও চনং চাব! ভালো ছাড়া আর কিছুই তিনি দেখেন নি। কাবখানা লোকান প্রভৃতি সর্বএই তিনি সম্মানিত হয়েছেন। সর্বত্র বাশিয়ার মানুব তীকে অন্তর্ক ভাবে বংগ করেছে, অতিশ্র সম্মান প্রদর্শন করেছে। তার মধ্যে ছিল যথেষ্ঠ অনাড়ম্বর আন্তরিকভা।

যে স্মালোচক এতদিন স্ব কিছুই উপহাস করে কাটিয়েছেন তাঁকে এখন নতুন শব্দ ফাট করতে হর, যে শব্দ আপ্রা ও আশস্তির।

অস্থবিধা হল লেলিনের স্ত্রীব সঞ্জে দেখা কথাই সন্মান বার্ণার্ড শ' অস্থবিধাটা বেশী করে অনুভব কবলেন। ক্রান্সকারা শুনেছিলেন বে বার্ণার্ড শ' অতি ছবিনীত প্রতিক্রমানীল (illmannered reactionary) মানুষে পরিবৃত্তিত হয়েছেন। একদা লেলিন বাকে বলেছিলেন—A good man fallen among Fabious



সেই ব্যক্তি সংবাদপত্রের রিপোর্ট অন্ধুসারে সেই ব্যক্তি A bad man fallen among Tories হয়ে গেছেন।

লেলিনের দ্রীর এই ধাবনক্তি আরও দৃঢ় ছবার কারণ বার্ণার্ড শ'র এই নতুন রাশিয়ার ভীর্থাক্তার স্ক্রীকা সবাই সোভালিক্তমের বিরোধী, এক হিসাবে শক্ত বলা চলে।

অবশেষে ক্রপদকায়া তাঁব বুটারে বার্ণার্ড শ'ব সঙ্গে চা পানে রাজী হলেন। এই দিন বার্ণার্ড শ' অভিশয় বিশ্বিত হলেন। তিনি আশা করেছিলেন, এক কুদর্শনা প্রালোককে তিনি দেখবেন এবং তাঁর সজে অবাস্তর তর্ক করতে হবে। যথাস্থানে পৌছে দেখলেন, ক্রপদকায়া শতি মধুর চবিজের মমতামরী মানুষ! ক্রপদকায়া এক সময় বার্ণার্ড শ'কে বললেন —এই পরিহাদ-সবসতা-বজিত দেশে এই দীর্ঘ নির্বাদনে আপনি কি করে এমন হাদিগুদী বজায় রেথেছেন ? বার্ণার্ড শ'বল্লেন—গথানে আনন্দের থোরাক প্রচুর।

শার্লেটি বালিয়া যাত্রার সময় বার বার বলেছিলেন, যেন লেলিনের বিধবা স্ত্রীর সঙ্গে দেখা করা হয়। সামাজিক বীতি জন্মারেই বার্ণার্ড শ'তাঁর সঙ্গে দেখা করার জন্ম ব্যস্ত হয়েছিলেন। সহবানীরা অবশ্র ষ্ট্যালিনের সঙ্গে দেখা করার জন্মই উদ্গ্রীব।

ক্রপসকায়ার দিক থেকে কোন আপত্তি না হলেও, একটা না একটা ছল-ছুতায় এই সাক্ষাৎকার পিছিয়ে দেওয়া হচ্ছিল। বার্ণার্ড শ' অবলেধে বুঝলেন না দেখা করায়ই চেঠায় এই সব আরোজন।

কথনো বলা হল ক্রপসকায়া অতিশয় অন্মন্থ, কঠিন সদিতে পুপছেন। তাঁর বয়স হয়েছে, নির্জনবাস পছল করেন। এই সময় বিশ্বক করা উচিত হবে না। তা ছাড়া কিনি মধ্যে, শহরে বাস করেন না। গ্রামে অরণ্য অঞ্চলে আছেন। মোটরে সেইখানেই বাধ্যার ব্যবস্থা করলেন শ', আজ শোনা গেল ভিনি মুচ্ছাতে আছেন।

জবশেষে বার্ণার্ড শ' গোঁ ধরে বসলেন আমি বাবই। দেখা না ছর না হবে, একথানি বই তাঁকে পৌছে দেওরার কথা, বইটি জার আমার নামের কার্ড দরজায় রেথে চলে আস্মক। সেই দরজা বেধানেই হোক।

লেডী এটার শুনকেন, ষ্ট্যালিনের সঙ্গে ত্রুপাসকায়ার দারুণ মুক্তবিরোধ, শিক্ষা ব্যবস্থা নিয়ে। সেই বিরোধ এমন জারগায় পৌছেছে যে ষ্ট্রালিন নাকি বলেছেন—মন্ত কাউকে লেলিনের প্রী সাজিয়ে দাঁড় করিয়ে দেবেন। সেই হবে লেলিনের সম্বকারী স্ত্রী। এমন মুথরোচক সংবাদ পেয়ে লেডী এইর বললেন—লেলিনের বিধবা ক্রপসকারাকে না দেথে আমি মস্কো থেকে এক পা নড়ছি না।

সহসা সব কিছু ওজর-আপতি কোথায় অদৃশ্য হল ! দিন স্থির হল এবং লেলিনের স্ত্রীর কুটারে একদিন সদলবলে যাত্রা করজেন।

কুটার নয় একেথারে প্রাসাদ। ক্রপসকায়া তাঁদের এমন অভ্যর্থনা জানালেন যে একথা বিশ্বাস করা অসম্ভব হল যে তিনি নির্জনতা পছন্দ করেন, নি.সঙ্গ জীকনের পক্ষপাতী। ক্রপসকায়ার প্রাসাদের সহচর সহচকীর সংখ্যা অনেক। ছুর্দ মনীয় বার্ণার্ড শ'কে স্বচক্ষে দেখে তিনি অতিশয় প্রীত হলেন বোঝা ক্ষেল। ষ্ট্যালিন সম্পর্কে একটিও কথা হলনা।

আসল কথা, ক্রপসকায়াই এতটিন আপত্তি করছিলেন, তাঁর ধারণা হয়েছিল বার্ণার্ড শ' একজন তুদ'ন্তি, অভব্য, অসামাজিক মামুষ। বার্ণার্ড শ' ক্রপসকায়ার অপূর্ব লাবণাময়ী মৃতি দেখে বিশ্বিত হয়েছিলেন। তিনি বলেছেন—একঘর ছেলেমেয়ের মধ্যে যদি ক্রপসকায়াকে ছেড়ে দেওয়া যায়, তারা স্বাই এই গণেশজননীকে ঘিরে ধরবে। এমনই জননীমুলভ মনোরম আকৃতি ক্রপসকায়ার।

বার্ণার্ড শ' রা.শিলা থেকে ফিরে এসে স্বাইকে বললেন—রাশিলার মামুষ অভিশন্ত সচেতন এবং সজীব। নতুন আদর্শ গ্রহণ করতে তাঁরা মন উন্মক্ত রেথেছেন—ফেবিয়ান আইডিয়া তাঁরা প্রকৃষ্ণ করেন।

বার্ণার্ড শ'র কথা শুনে ওয়েবদম্পতি উৎসাহিত হয়ে রাশিয়ায় ছুট লেন স্বচক্ষে সব দেখার জন্ম। জাঁর। ফিরে এসে লিখলেন Seviet Communism, A New Civilization.

বার্ণার্ড শ' বলেছেন—রাশিরান বিপ্লবের জনক এক ছিসাবে আমি ।
সর্বদাই আমি তাই মনে করি। আমি ১৯১৪—১৮ র মুদ্ধের সমর
বলেছিলাম—সৈক্তদের পক্ষে সবচেয়ে সৎকর্ম হবে তাদের অফিসারদের
গুলী করে মেরে বাড়ি কিরে যাওয়া। রাশিয়ানরাই একমাত্র সৈনিক
বারা আমার সেই সহপদেশ শুনেছিলেন।

বার্ণার্ড শ' তাই রাশিয়া, এমুগের সব পেয়েছির দেশ দেখে আনন্দে, আবেগে, উচ্ছৃসিত হয়েছিলেন। রবীক্ষনাথও প্রায় সেই কালেই বলেছেন—"রাশিয়ায় না এলে আমার এ জীবনের ভীর্থবাত্রা অসম্পূর্ণ থেকে বস্তু ।"

আশ্বিনের ভোর পার্থকুমার চট্টোপাধ্যায়

এখন এখানে শুধু কাঁচা রোদ করিতেছে ভিড় জনেক বর্গণ-শেষে উঁকি দ'ছে সোনাগলা দিন। প্রভাতের একতারা বাজাতেজে ভৈরবীর মীড় এ ক্লাস্ত প্রাণের তীরে তরী নিয়ে এসেছে আখিন।

আমার ব্যক্ত চুলে কাশকুল বুলাতেছে পাথা সবুজ ঘাসের আগ প্রাণভরে নের রাজহাস। শিশিরের অমা অঞ্চ মুছে কেলে জিরলের শাখা এ আখিন নিরে আলে জীবনের গভীর আখান। শিউসিফ্লেরা আজ পথিকেরে জানার স্বাগত
কুমারী সী'থির মত ধূলোভরা পথের তু'ধারে।
কচি কচি ধানচারা হাওরা লেগে হর জ্বনত
সরক্ষের ছোঁয়া লাগে আকাশের বুকে বারে বাবে।

এখন নদীর তীরে শাস্থকেরা করিতেছে থেলা কড়িডেরা খুশীমনে হেখা-হোথা ইতি-উতি বোরে। প্রথম রোদের 'পরে শালিকেরা জমারেছে যেলা প্রথিবীর যত ক্লেদ স্কুছে গেল আধিনের ভোরে।



শীল্ড ফাইন্যাল অনিদিষ্ট কালের জন্ম স্থাপিত

🐷 বৈতের অক্ততম শ্রেষ্ঠ ফুটবল প্রতিষোগিতা জাই, এফ, এ, শীক্তের ফাইন্সালে মোহ্নবাগান ও ইটবেঙ্গল দলের থেলা নিয়ে এবারও জটিল পরিস্থিতির উদ্ভব হয়। বর্তুমানে অনির্দিষ্ট কালের জন শীল্ডের ফাইন্সাল থেলা স্থগিত রাখা হয়েছে। আই এফ এ বাঙ্গালা ত্তবা ভারতের প্রাচীন ক্রীডা-সংস্থা। কিছু বর্তমানে এই সংস্থা তাদের ঐতিভ হারাতে বসেতে বললে বেধি হয় অক্রায় হবে না। এর সত্তাও বিলুপ্ত হবার উপক্রম হরেছে। এখন ভাদের বড় বড় ক্লাবদের মৰ্জ্জির উপর নির্ভর করে চলতে হয়। আই, এফ, এ'র পরিচালনা পদ্ধতিতে ধন ধরতে আরম্ভ করায় শীক্তেব আবর্ষণ বিশেষ ভাবে কুর ছরেছে। একদিন শীভে যোগদান বাইতের নামকরা দলের কাছে একটা বড আকর্ষণ ছিল। কিন্তু এখন দাঁডি ফছে ঠিক অন্তরপ। এখন ৰাইবের কোন নামকরা দল বোগদান করতে রাজি হয় না। কেন দিন দিন শীক্তের আকর্ষণ কমে যাচ্ছে? এ নিয়ে আলোচনা করলেই দেখা যাবে--পরিচালক-সংস্থা আট, এফ. এ'র পরিচালক-মণ্ডলীর ক্রটি-বিচ্যাতি। ক্রীড়া-সূচী তৈরী করার সময় জাঁদের কারসাজি কারও অজ্ঞানা নয়। কোন কোন বিশেষ দলকে স্থবিধে দেওয়াটা ভাদের রেওয়াজ হয়ে দাঁড়িয়েছে। তাদের কেবল কোন বুকমে কবেকটা চ্যানিটি ম্যাচের ব্যবস্থা করার দিকে লোলুপ দৃষ্টি। স্ব সমরই কোন বকমে ছটো জনপ্রিয় দলকে ফাইকালে ভুলে ছ'প্যুসা বোজগার করার ফলি। এদিকে রেফারীর কার্সাজি তো আছেই। বর্তমানে দেখা বাচ্ছে, বাঙ্গালা দেশের ফুটবল খেলাটা ব্যবসা ক্ষেত্রে পরিণম্ভ হয়ে উঠছে।

শীল্ডের থেলা এত ৰেশী পিছিয়ে নিয়ে যাওয়া হচ্ছে তাতে বাইরের নামকরা দলের পক্ষে যোগদান করা সম্ভবপর হয়ে উঠে না। বারা বোপদান করলো ভাদের অবস্থা তো একেবারে সঙ্গান। পচা বর্ধার জন্ম এথানকার মাঠের অবস্থা যেরপ শোচনীয় হয়ে দাঁড়ায় তাতে করে অথম শ্রেণীয় থেলা মোটেই চলে না। তাই বাইরের নামকরা দলেরও বাভাবিক ক্রীড়ানৈপুণ্য প্রদর্শন করা সম্ভবপর হয় না। তাদের শক্তিবোগ বে শীল্ডের থেলার সময় পরিবর্ত্তন হওয়া দরকার।

অবারকার বোগদানকারী বাইরের দলের মধ্যে গুর্থা ব্রিগেডের থেলা সকলের বেশী আনন্দ দিয়েছে। এই দলের সব থেলোয়াড়ই অবার্ছার অধিকারী। কঠিন পরিশ্রম কররার মতন এদের মজবৃত্ত গড়ন। থেলা দেখলেই বেশ বোঝা বার বে এদের থেলার পেছনে শিক্ষা আছে, কঠিন অনুশীলনও আছে। গুর্থা দল ভিন ব্যাক অধার থেলতে অভ্যন্ত। এই দলের সকলের থেলাতেই কিছু না কিছু নৈপুণ্যের পরিচর পাওরা গেছে। ভার মধ্যে অলিম্পিক দলে নির্বাচিত মলর লাহিদীর থেলা দর্শকদের বেশী যারে আয়াক্ত লিক্রেরা।

বাইবের অত্যাক্ত দলের মধ্যে মীরাট থেকে আগত এ, এস, সি, সেন্টার, পাটনা এথেলেটিক এসোসিয়েশন, কটক সাম্মলিত দলের থেলা সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। এথানকার দলের মধ্যে তরুণ ও উদীর্য়মান থেলোরাড় নিয়ে গঠিত এরিয়ালা ও জর্জ্ব টেলিপ্রাফের থেলা প্রশংসার দাবা রাথে। খ্যাতনামা দলের মধ্যে মহমেডান স্পোটিং সেমি-ফাইল্যালের থেলায় সকলকে নিরাশ করেছে। বিশেষ করে ভারা ইপ্রবেশল দলের বিরুদ্ধে শোচনীয় ব্যর্থতার পরিচয় দেয়। তবে এই থেলায় ইপ্রবেশল দল উন্নত ধরণের ক্রীড়ানৈপ্ণ্য প্রদর্শন করে। মোহনবাগান সেমি-ফাইল্যালে এরিয়ালের বিপক্ষে মোটেই ভাদের খ্যাতি অম্যারী থেলতে পারেনি। তাদের এই থেলা দেখে সকলেই হতাশ হয়েছেন।

এশীয় দলে ভারতের নয়জনের স্থানলাভ

আগামী জানুষারা ফেব্রুয়ারী মাসে এশীয় ফুটবল কনফেডারেশনের আমন্ত্রণে পেরু দল ভারত সমেত প্রাচ্যের নানান অঞ্চলে মোট আঠারোটা ম্যাচ থেলবে। এই দলের বিরুদ্ধে থেলার জক্ত এশীর দল গঠনে জোর তোড়জোড় হছে। নভেম্বর মাসে কেরালায় এশীর কাপের পশ্চিমাঞ্জলের থেলার শেবে এশীয় দল চুড়াস্তভাবে গঠন করা হরেছে তাদের মধ্যে ভারতের নয়জন থেলোয়াড়—থঙ্গরাজ, লভিফ, কে,ম্পায়া, রামবাহাত্রর, প্রদীপ ব্যানাজ্জী, চুনা গোস্বামী, দামোদরণ, নেভিল ডি প্রজা ও বলরাম আছেন। অক্সান্ত বাছাই থেলোয়াড়দের দলে হংকং জাপান, কোরিয়া, ভিরেৎনাম ও মালয়ের প্রতিনিধি আছেন। তবে ইপ্রাইল, পাকিস্তান ও ইরানের তর্ফ থেকে এ পর্যান্ত কোন থেলোয়াড়ের নাম পাঠান হয় নি।

এবুশজন থেলোরাড়কে প্রাথমিক ভাবে মনোনীত করে কুয়ালালামপুর অথবা ম্যানিলায় ট্রায়াল খেলার ব্যবস্থা হবে বলে ঠিক হয়েছে।

ডাঃ বিমল চজের ইংলিশ চ্যানেল অতিক্রম

সাবাস ডাঃ বিমল চন্দ্র ! তোমার সাফল্যে বাঙ্গালা তথা ভারতের সকলেই গৌরব অফুভব করছে। কলকাতার নামকরা সাঁহারু ডাঃ বিমল চন্দ্র ফ্রান্ধের উপকুলবর্তী কেপ প্রিন্ধ জেন থেকে ডোভার পধ্যস্ত ইংলিশ চানেল অভিক্রম করেছেন। ডাঃ বিমল চন্দ্রকে নিয়ে আজ পধ্যস্ত হ'জন ভাবতায় এবং তিনজন বাঙ্গালী চানেল অভিক্রমে সমর্থ হয়েছেন। সর্বপ্রথম ভারতায় ও বাঙ্গালী সাঁডাক্ল অভিক্রমে সমর্থ হয়েছেন। সর্বপ্রথম ভারতায় ও বাঙ্গালী সাঁডাক্ল মিছির সেন চ্যানেল অভিক্রম করেন। ডাঃ চন্দ্রের সাফল্যে ভারতের অভাক্র সাঁডাক্লরা চ্যানেল অভিক্রমে উৎসাহিত হোক এটাই সকলে কামনা করে।

ব্রজেন দাসের পুনরায় চ্যানেল অতিক্রম

পাকিস্তানের খ্যাতনামা সাঁথক ব্রজন দাদ পুনরার ইংলিশ চ্যানেল অতিক্রম করে সম্বরণ অসাধারণ সাফল্য অর্জন করেছেন। তিনি একই মাদের মধ্যে উভয় দিক থেকে ইংলিশ চ্যানেল পার হন। ইহার পূর্বে ১৯৫১ সালে স্কটল্যাণ্ডের উইলিয়াম ডালি অন্থকণ কৃতিত্ব প্রদর্শন করেছিলেন। ব্রজন দাদ ডোভার থেকে সম্ভবণ আরম্ভ করে ১৪ ঘণ্টার কিছু বেনী সময়ে কেপ গ্রিজনেজে উপনীত হন। এবার নিয়ে ব্রজেন দাদ তিনবার ইংলিশ চ্যানেল অতিক্রম করলেন এবং এশিয়ার মধ্যে প্রথম ইংলিশ চ্যানেল উভয় দিক থেকে অতিক্রম করলেন এবং এশিয়ার মধ্যে প্রথম ইংলিশ চ্যানেল উভয় দিক থেকে অতিক্রম করলেন এবং এশিয়ার নি

এই প্রদক্ষে উল্লেখনোগ্য যে, ইহার পূর্বে গ্রেট ব্রিটেনের এডওয়ার্ড টমি, গ্রেট ব্রিটেনের ফিলিপ মিকম্যান, আমেরিকান মহিলা সাঁতাক মিদ ফ্লোরেন্স চ্যাডউইক, মিশরের হাসান আকেল রহিম, ব্রিটেনের টমাস ব্লোয়ার, ইটালীর গিয়ামী গাখি, ছটল্যাণ্ডের উইলিয়াম বার্নি, আমেরিকার বার্ট টমাদ প্রস্তৃতি উভয় দিক থেকে ইংলিশ চ্যানেল অভিক্রম করেন।

ভারতীয় দলের ফিল্ডিং খুবই হুর্কল

ভারতীয় ফ্রিকেট কণ্টো ল বোর্ডের সম্পাদক সম্প্রতি ইংলণ্ড থেকে ফিরে এসেছেন। তিনি ভারতীয় দল সম্পর্কে বলেন—কিব্রিং ধুবই তুর্মল হয়েছে। কিন্তু থেলোয়াড়রা ফিব্রিংয়ে অমুশীলনে গাফিলতি করেছেন বলে যে অভিযোগ হয়েছে তা সমীচীন নয়। ইংলণ্ড সকরে সরকারী দলকে সপ্তাহে ছয় দিন গেলতে হয়। এটা অত্যন্ত ক্লান্তিকর। বিশেষ করে ভারতীর গেলোয়াড়রা সাধারণত সপ্তাহে ছই দিনের বেশী থেলতে অনভ্যন্ত নন বলে সপ্তাহে ছয় দিন থেলায় তাঁদের অনেক বেশী থকল ভোগ করতে হয়েছে এবং ইহা ছাড়া ভারতীয় দলের একাধিক থেলোয়াড় আছত হয়ে পড়ায় তাদের অস্ববিধা হয়। কিন্তু বক্তব্য হচ্ছে যে

এই সব অত্মবিধা ব্রেই তো ভারতীয় দলের ক্রীড়া-স্চা ঠেন্ট্র হয়েছিলো। ভারতে বা কেন বেশী দিন থেলার ব্যবস্থা হয় না ব ভারতীয় থেলোয়াড়দেব ফিন্ডিং-এর উন্নতির দিকে দৃষ্টি দেওয়া হয় না ্ এটাই সকলের প্রশ্ন।

অখ্রেলিয়া দলের ভারত সফর

ক্ষট্রেলিরা দল ভাবত সফরে আসছে। তারা ১০ই ডিসেম্বর পাকিস্তান থেকে দিল্লীতে পৌছাবে। পাঁচটা টেষ্ট ম্যাচ ও হুটা প্রদর্শনী থেলায় যোগদান করে ২৯শে জালুয়ারী স্বদেশ যাত্রা করবে, তারা দিল্লীতে (প্রথম), কানপুরে (দ্বিতীয়), বোম্বাইতে (তৃতীয়), মাদ্রাজে (চতুর্থ) ও কলকাতায় (পঞ্চম) টেষ্ট ম্যাচ থেলবে। ১৯৬০-৬১ সালের শীতের মরগুমে পাকিস্তান ক্রিকেট দল ভারত সকরের আমন্ত্রণ প্রহণ করেছে।

খ্যাতনানা ক্রিকেট খেলোয়াড় স্মিথের মৃত্যু

ওয়েষ্ট ইণ্ডিজের টেষ্ট ক্রিকেট থেলোয়াড় ও'নীল গর্ডন শ্বিথ রা কোলি শ্বিথ হাসপাতালে মারা যান। সম্প্রান্ত তিনি এক মোটর হর্ঘটনায় গুরুতর আহত হন। মৃত্যুর সময় তাঁর বয়দ মাত্র ২৫ বংদর হয়েছিল। তাঁর সঙ্গে গারফিন্ড সোবার্স, টম ডিউডগেও আহত হন। ষ্ট্যাফোর্ডশায়ারের কাছে রাক্তাব তাঁদের মোটরের সঙ্গে ১০ টনের এক মালগাড়ীর সংঘর্ষ হয়। তিনজনে চ্যারিটী থেলার জন্ত এক মোটরে যাচ্ছিলেন। কোলি শ্বিথ একজন উদীয়মান চৌশস ক্রিকেট ধেলোয়াড়। তাঁর অভাব ওয়েষ্ট ইণ্ডিজ দলকে বিশেবভাবে অমুভব করতে হবে।

শ্বিথ মোট ২৬টি টেষ্ট ম্যাচ থেলেছিলেন। তাতে মোট বাণ্-সংখ্যা দাঁড়ায় ১৩৩১ বাণ ও গড়পড়তা দাঁড়ায় ৩১ ৬৯ বাণ। এ ছাড়া বোলিং করেও ৪৮টি উইকেট পান।

ভয়

(জাৰান কৰি Peter Baum-এর কবিতা Horror জবলম্বনে)

মাঝে মাঝে এই কথাটাই হয় মনে, তোমার জাঁখি, তোমার যেন কেশ আনছে ক্রন্ত ক্ষয় মনে।
শক্তিত হই, কম্পিত হয় হাত!
যেন আসে রাজ,
গুঠে ফোটে তিক্ত মানি
চুর্প ভাবাবেশ!
সাঁঝের পাথি—যমন্ত পাথি
পালিয়ে গেল রে,
গলিত কি পলিত পাথা
আলিয়ে গেল রে!
কালা আলে চক্ষু ছেরে.
ফিলার বাঙা বেশ!

অম্বাদ: মধুস্দন চট্টোপাধ্যায়



উল্লেখযোগ্য সাম্প্রতিক বই

নীল আকাশ

লোক প্রতিষ্ঠ কথাশিলী অচিত্যাকুমাব সেনগুপ্রের অবদান বাঙলা কবিতার ক্ষেত্রেও সামাক্ত নয়। তাঁর নীঙ্গ আকাশ কাব্যগ্রন্থটি প্রকাশের পর বিপুল সমান্ত্রে বিভ্ষিত হয়েছিল। দীর্ঘদিন পর বতমানে এ গ্রন্থের পুনম্দ্রণ চয়েছে। এই গ্রন্থে অচিন্তাকুমারের ব্যাপ্রিশটি কবিতার বস আস্বাদনে পাঠক সাধারণ সমর্থ জবেন। অচিন্তাকুমারের কবিতাগুলি যেমনই বৈশিষ্ট্যপান, তেমনই বৈচিত্রপর্মী। কৰিতাগুলির মধ্যে কবির বলিষ্ঠ দৃষ্টিভঙ্গী, ভীত্র অনুভূত ও অপূর্ব প্রকাশভঙ্গীর পরিচয় মেলে। কবিতাগুলির আংশেন অন্তংক বিশেষভাবে স্পর্শ কবে। সতা-শিব-স্থন্দরের বর্ণনার কবির মন-প্রাণ নিয়োজিত, কপট্তা, জড়তা ও যাছিকতা তাঁর অসম, কবিতাগুলি ষেমনই জোবালো, তেমনই স্পষ্ট, বেমনই বেগবান, তেমনই আহবগমণ্ডিত, যেমনই স্থানগুলী, তেমনই প্রতিভাদীপ্ত বনীন্দ্রনাথের এবং শবংচন্দ্রের উদ্দেশে লেখা যথাক্রমে জিনটি ও ছ'টি মোট পাঁচটি কবিতা এই গ্রন্থের মধ্যে যুক্ত হয়ে সমগ্র প্রস্তের মর্যাদাবৃদ্ধি করেছে। প্রকাশক—ইণ্ডিয়ান ম্যাসোসিয়েটেড পাবলিশিং কোং আ: সি:। ১৩ গান্ধী রোড। দাম—তু' টাকা মাত্র।

জগতের প্রাসিদ্ধ সাহিত্যগ্রন্থ করেন মধ্যে "কোধাএট ক্লাস দি ডন"
অক্তম। এর স্রাষ্টা মিথাইল শালোগফ-এর ক্ষুক্রনী প্রেডিভার ছাপ
এব পাতার পাতার কুটে ওঠে। বিশেব প্রেষ্ঠ সাহিত্যস্তাধাদের
দ্ববাবে শালাথফ-এর ক্সন্তেও বে একটি বিশেষ স্থান নির্দিষ্ট এ বিষয়ে
বিমত হণার কোন কারণ থাকতে পারে না। উপক্রাসথানি চাব থকে
সমাস্তা। লেথকের চোল্ফ বছরের সাধনার ফল। ডন নদের তারে তারে
হর্ধর্ব কশাকদের কেন্দ্র করে উপক্রাসটি বচিত। তানের নিচিত্র প্রাণচাঞ্চল্য, তুর্দাম জীবনাবেল এবং বিপ্লবের পর সর্বনাশা গৃত্যুদ্ধর
পব সেই জীবনের এক বিরাট রুশান্তরই উপক্রাসটির মুখ্য উপজীবা।
বাঙলার এই গ্রন্থটির ভন্নবাদ করেন যশবা সাহিত্যশিলী অবস্তী
সাক্রাল। কবি খবন্তী সাক্রাল আছকের লেথক নন। বাঙলা

সাহিত্যের সেবা ইনি করে চলেছেন যথেষ্ট পরিমাণ দক্ষতার সঙ্গেই।

^{দী}াৰ্কাল সাহিত্যদেবার ফলে ইনি যথেষ্ট সুনাম অৰ্জন করেছেন। এই

^অনুবাদকর্মেও ইনি প্রভৃত সাফল্যলাভ করেছেন—এ কথা ভূল নয়

ে বিদেশী শাহিত্যের বে প**্রিমাণ অন্ত**থাৰ বাঙলা ভাষায় হয়ে থাকে

^{ভারত্ত}ৰৰ্ষের অস্ত্র কোন ভাষায় ভা হয় না। তবে বাওলা ভাষায় এখন

ধীরপ্রবাহিনী ডন

অনুবাদ-সাহিত্যের আথ্যা নিমে বে সঞ্চল গ্রন্থ প্রকাশিত হচ্ছে তাদের অধিকাংশকেই অনুবাদ তো দ্রের কথা, গ্রন্থও বলা চলে কি না সন্দেহ। এমন কি, গ্রন্থতি শেষ করারও ধৈর্ম পাঠকের থাকে না। এর কারণ অনুবাদকদের বার্থতা। বাঙলাদেশে সন্তিকারের অনুবাদকের সংখ্যা তো বিরল বললেই চলে। তবে আশার কথা, অবস্তী সালালের অনুবাদ যথেপ্ট বলিষ্ঠ, সার্থক ও উন্নত। বহুকাল পরে একটি স্বাদ্ধ্যক্ষর অনুবাদগ্রন্থ চোঝে পড়ল। দীর্ঘায়তন উপস্থামটির প্রতিটি পৃষ্ঠা শীসালালের কৃতিত্যের স্বাক্ষর বহন করছে। প্রচ্ছদ্দিন্তটি একেছেন শ্রীথালেদ চৌধুরী। প্রকাশক—স্থাশানাল বুক এজেলী প্রাইভেট, লিমিটেড ১২ বন্ধিম চ্যাটাক্ষী প্রটি। দাম—ন' টাকা মাত্র।

জগদীশচন্দ্র গুপ্তের স্বনির্বাচিত গল্প

বঙ্গবালীর একনিষ্ঠ সাধকদের মধ্যে বিশেষভাবে উল্লেখবাগ্য
মর্গগত সাহিত্যিক জগদীশ হুপ্তের নাম। আজ প্রায় আড়াই বছর
আগে তাঁর দেহান্তর ঘটেছে, ছার আল্লকাল পূর্বেও তাঁর লেখনী সচল
ছিল। বর্তমানে তাঁর ছোট গল্পের একটি স্থনির্বাচিত সংকলম
আজ্প্রকাশ করেছে। জগদীশ গুপ্তের গলগুলি বথেষ্ট পরিমাণে
বৈশিটোর চিহ্ন বহন করে। সার্থানামা লেখক হিসেবেও তাঁর বথেষ্ট
প্রেসিদ্ধা। চবিত্রস্থিতি, সংলাপ মোজনায় ঘটনাবিল্লাসে অভ্নতপূর্ব
নৈপুণা প্রদর্শন করে গেছেন স্থাত লেখক। মনকে আরুই করার
যথেই ক্ষমতা গল্পান করে গেছেন স্থাত লেখক। মনকে আরুই করার
যথেই ক্ষমতা গল্পান করে। জীবনকে, সমাজকে এবং জগতকেও
নানাদিক দিয়ে খুঁটিয়ে তিনি দেখেছেন—এই উজ্জির সততা তাঁর
গল্পান প্রেমাণিত করে। মানুবের মনের অব্যক্ত অন্তর্থ শের সম্যক
প্রকাশ ঘটেছে গল্পানির করে। মানুবের মনের অব্যক্ত অন্তর্থ শের সম্যক
প্রকাশ ঘটেছে গল্পানির করে। কুল্লিমতাহীন, সহজ সরল জীবনকেই
তিনি কৃটিয়ে তুলেছেন তাঁর সাহিত্যে, প্রকাশক ইপ্রিয়ান
র্যাদোসিয়েটেড পার্বলিশিং কোল্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, ১৩ গান্ধী
র্যাচা দিম চার টাকা মাত্র।

গ্রহাগার প্রচার

আমাদের দেশের গ্রন্থাগারগুলির মধ্যালা অক্সান্ত দেশের তুলনার কম তো নগুট ববং বেশী। এ দেশের গ্রন্থাগারে এমন বহু তুল ও বতু সবতের বহিলত যা সারা ভগভের বহুল উপকার সাধন করার ক্ষমভা হাথে। সাফিত্যাফুশীলনের ক্ষেত্রে তথা মানসিক চেতুনার ক্রম জাগরণের ক্ষেত্রে গ্রন্থাগারের জবদান অসামাল। বর্জান যুগের বিধান অনুবারী কোন কিছুর গুক্ত সম্বন্ধে সাধান্তবের দৃষ্টি আকর্ষণ ক্ষাৰ ক্ষেত্রে প্রচাবের সাহায্য নেওয়া ছাড়া গতান্তর নেই। স্থানাবান্তর প্রচাবের প্রয়োজন। এই বক্তব্যকেই মুক্তি, বিশ্লেশণ এবং নানাবিধ জালোচনার সাহায্যে উপরোক্ত গ্রন্থে প্রান্তিটিভ করেছেন জীরাজকুমার মুখোপাধ্যায়। গ্রন্থাগার বিষয়ক প্রান্ত জ্ঞানের তিনি জ্ঞাকারী। গ্রন্থাগারের প্রচাবের সম্পর্কে কাঁব সাবগর্ভ আলোচনা যেননই ক্ষমপূর্ণ, তেমনই মৃল্যবান। প্রাচীরপত্র, পত্রিকা, সিনেনা, বেভার, বক্তৃতা প্রভৃতির মাধ্যমে গ্রন্থাগারের প্রচার কেমন ধরণে করা বায়, কি ধরণের হওয়া উচিত, প্রচারকর্ম কি ভাবে সম্পাদন করা বায়, এ বিষয়ে কিন্তুত আলোচনা গ্রন্থে পরিবেশিত হয়েছে। লেখকেব চিন্তাশীল মনের পরিচয় গ্রন্থে প্রস্কৃতিত, কাঁব বক্তব্য যথেষ্ঠ সারবান। প্রচাব সম্বন্ধেও তাঁর দক্ষতা বা জ্ঞান অসীন, গ্রন্থটিট এই উক্তির সত্যতা প্রমাণিত করে। প্রকাশক—গ্রন্থভ্বন, ১৩ গান্ধী রোড। দাম—স্থুই টাকা নাত্র।

প্রণয়ী পঞ্চক।

কাছিনী-কাব্য কাব্য-সাহিত্যের একটি প্রধান অঙ্গ। এতাবংকাল অসংখ্য কণি এই কাহিনী-কাব্যের মাণ্যমে আপন আপন সম্ভনী প্রতিভার বিকাশ ঘটিয়েছেন এবং সাহিত্য সেনা করেছেন। তবও এ দেশে বর্তমানকালে কাছিনী-কাব্য রচ্মিতার সংখ্যা যে অমুপাতে হুওয়া উচিত ছিল দে, অফুপাতে যে ২মনি—আশা করি এ কথা কেউ অস্বীকার করতে পারবেন না। অথচ সে যুগে মধ্যুদন, বঙ্গলাল, হেমচন্দ্র, নবীনচন্দ্র প্রয়ুখ প্রাত্তঃস্মর্থীয় কবিগণ এই কংছিনীকাবোর মাধামে দেশীয় কাব্যকে সমৃদ্ধির আলোয় উদ্ভাসিত করে গ্রেছন। আলোচা এখটি সুখ্যাত কবি ও সাহিত্যশিল্পী সুশীল বাগের কাহিনী-কাব্যের একটি সংকলন-গ্রন্থ। তারে পাঁচটি কাহিনী-কাব্য এর মধ্যে স্থান পেয়েছে-মহাভাবত থেকে স্বল্লোলেখিতা পাটট নাৰী চৰিত্ৰক কেন্দ্ৰ করে পাচটি কাছিনী ভিনি কৰিভায় **বচনা করেছেন**। এই পাঁচটি নারীর আশা-আকাজ্যা-আনন্দ-বেদনা হতাশা-যাতনা জাঁৰ লেখনীর মধ্যে দিয়ে ফুটে উঠেছে, পাঁচটির মধ্যে চারটিব মুল স্থর এক, কেবল তৃতীয়টি ভিন্নধর্মী। অন্তর্গলতে নারীর দয়িতা ন্ধপকেই লেখক ফুটিয়ে ভুলেছেন কিন্তু ভুতীয়টিতে নারীর দয়িতারূপের সজে সজে মাতৃহাদয়ের বৃতৃকাকেও কবি অসামায় দক্ষতা সহকারে কাব্যে রূপ দিয়েছেন। কাছিনী-কাব্যগুলি সাবলীল, মনোরম এবং লালিতাপূর্ণ, বর্ণনভঙ্গী, ঘটনা বিশ্লেষণ এবং বিক্যাস-কুশলতা মনকে আরুষ্ট করে। নারীচিত্তের বিভিন্ন বৃত্তি, নারীর জীবন-জিজ্ঞাসা নারী জীবনের চাওয়া-পাওয়ার প্রধান প্রশ্ন সম্পর্কে কবি পূর্ণসচেত্তন, তাঁর বিল্লেষণী, শক্তিই তার পরিচায়ক। বাঞ্জনায়, শিক্ষকর্মে অভিনবতে সকল দিক দিয়েই গ্রন্থটি শ্রীমণ্ডিত হয়ে উঠেছে। প্রকাশক—নতুন প্রকাশক, ১৩/১ বছিম চ্যাটাজী খ্রীট। দাম— তিন টাকা পঞ্চাশ ন্যা প্রসা মার।

এক মুঠো আকাশ (নাটক)

মাসিক বস্থমতীতে ধারাবাহিক ভাবে প্রকাশিত ধনপ্রয় বৈরাগীর বিখ্যাত উপক্রাস এক মুঠো আকাশ সহক্ষে আরু নতুন করে আরু বলার কিছু নেই। বাঙ্গার নাট্যক্রগতও এই সার্থক উপক্রাসটিকে বখাবোপ্যা সম্মান প্রদর্শন করেছেন। লেখক কর্ম্বক উপক্রাসটি নাটকে সম্প্রতি এই নাট্যক্রপ গ্রন্থাকারে আত্মপ্রকাশ করেছে। নাট্যক্রপদানে ধনপ্রত্ন বৈরাগী যথেই কৃতিত্ব প্রদর্শন করেছেন। এ কথা
কাবোর জন্ধানা নম্ন বে, সাহিত্য স্মষ্টির ভুলনার নাট্য স্মষ্টিভেও তাঁর
দক্ষতা বিভুগাত্র কম নয়। নাটকের ধর্ম অন্ম্যানী মূল উপ্রসাদ
থেকে জনেক রকম অদলনদল করা হরেছে এবং কাহিনীর মূলরদ তাজে
কিছুমাত্র ক্র্ম হরনি। আক্রনের দিক থেকে স্বভাবতইই উপ্রসাদীটর
ভুলনার নাটকটি অনেক ক্র্যু। বে সকল গুণাবলীর জন্মে উপস্থাসাটির
ভুলনার নাটকটি অনেক ক্র্যু। বে সকল গুণাবলীর জন্মে উপস্থাসাটির
জনপ্রিয় হরে উঠেছে—সেই দিক দিয়ে বিচার করলে দেখা
বাবে নাটকটিও সমান জনপ্রিয় হরে ওঠার ক্ষমন্তা রাখে। উপস্থাসাটির
সম্বন্ধে পূর্বে আমরা বিশদ আলোচনা করেছি। নাটকটি ধনপ্রস্ক বৈরাগীর স্থান্য অক্র্ম বাধবে, নাট্যজগতে এক বছ-আকাহ্নিক
নভুনথের সন্ধান দেবে এবং বাঙলার নাট্যসাহিত্যের এটি একটি
উল্লেথযোগ্য সংযোজন হলে অভিত্তিত হওয়ের যোগাতা রাখে।
প্রকাশক—গ্রন্থম, ২০০১ কর্পওরালিস ব্রীট। দাম—ভুটাকা মাত্র।

স্বগতো জি

সংস্কৃতির ইতিহাসে এক বিবাট অধ্যায় অধিকার করে আছে নাটক। জাতীয় চবিত্রের বিকাশে নাটাজগতে সহায়তা করে বথেষ্ট। এই নাটাজগতের ইতিহাগও বেমনই গৌরবমর, তেমনই গুরুত্পূর্ণ। বাঙ্গার সাধাবণ নাট্যজগতের বিশদ ইতিহাসকে কেন্দ্র করে কিছকাল আগেও ধাৰাবাহিক ভাবে মাসিক বস্থমতীতে প্ৰকাশিত পূৰ্বোক্ত উপকাসটি বচনা কবে যথেষ্ট শক্তির পরিচয় দিয়েছেন শক্তিমান সাহিত্যিক প্রণাম্ব চৌধরী। উপকাস হলেও এই গ্রন্থটিকে বাঙলা দেশের রঙ্গজগতের প্রামাণ্য ইতিহাস বলে অভিহিত করলে অত্যাজি হয় 🚧 । তথু ইতিহাসও নয়, সাহিত্যও তার সঙ্গে হাত মিলিয়েছে। ক্রেখনীর নিপুণতায়, গ্রন্থটি স্বাঙ্গন্তর হয়ে উঠেছে। তথু বাওলার রঙ্গালয়কে তলে ধরেই দেখক থেমে যাননি ভারতের প্রথম নাটক, কি পরিবেশে, ক্রমন করে জন্মান সে সম্বন্ধেট বর্থেই চিত্তহারী একটি ছবি লেখক ভলে ধরেছেন। অসংখ্য মাত্রুৰ, অসংখ্য নাটক, অসংখ্য শিলীর সম্বন্ধে যে বিহার নাট্যক্ষণত গড়ে উঠেছে সেই জগতের হাসি-কামা আনল-বেদনা-রচন্ত্র-বৈচিত্র অপবিসীম নৈপুণ্যের সঙ্গে লেখক ফুটিয়ে ভুলেছেন। বক্তমঞ্চের শ্রষ্টা বা প্রধান শিল্পী থারা লেথকের আলোচনা কেবল তাঁদের মধ্যেই সীমাবদ্ধ নয়, এই জগতের সঙ্গে অভিজ্ঞ প্রবাণ দর্শক ভিসেবে, শুভারুখায়ী ছিসেবে এবং অস্তরালের নেপথ্যকর্মী হিসেবে বারা যুক্ত এ গ্রন্থে তাঁরা কেউই অবহেলিত নন, বর: লেখক জাঁদের প্রতি যথেষ্ট শ্রদ্ধাই প্রদর্শন করেছেন। সামান্ত কর্মী বারা—রূপসজ্জাকর, ভাগারী, বাদক, স্বারবন্ধী এমন কি জপের দড়ি টানে যারা তারা প্রত্যেকেই লেথকের কাছে শ্রদ্ধা ও সহামুক্ততির পাত্র। উপ**রাসটি**তে রক্ষাঞ্চের নেপথা জগতে দৈনন্দিন বিচিত্র ঘটনা কাহিনী, পরিবেশ লেখনীর কল্যাণে সার্থক ভাবে চিত্রিত হয়েছে। বঙ্গমঞ্চ সম্বন্ধীয় বস্ত তখ্যের আকর এই উপস্থাসটি তার প্রাণ্য সমাদর লাভ করবে, এ বিশাস আমরা রাখি। প্রকাশক ইণ্ডিয়ান য্যানোসিয়েটেড পাবলিশিং কোং প্রা: লি:, ১৩ গান্ধী রোভ। দাম তিন ট্রাকা পঁচিশ নহা পর্সা মাত্র।

মায়াপুরী

বাঙুলা দেশের খ্যাভিমান শিশুসাহিত্যিকদের মধ্যে 🏖 অধিল

শিশু-দাহি ছাঙ্গে দেবা কবে এপে শিশুনহলে নিজের আদান ইনি দৃষ্ট
প্রতিষ্ঠিত করেছেন। বর্তমানকালে শিশুদের উপবোগী নৃত্যনাটোর অভাব
কম নর যা আছে তা-ও স্বল্পসংখ্যক। শ্রীনি যাগীর উপরোক্ত গ্রন্থটি
দেই অভাব অনেকাংশে দৃর করতে সক্ষম হবে বলে আশা করা যায়।
গ্রন্থটি সর্বাক্তে প্রস্থিকাংর দক্ষতার পরিচয় বহন করে, এর কাহিনীর
অভিনবন শিশুমনকে বিশেবভাগে আকঠ করাব, বর্ণনিভঙ্গী, সংলাপ
ক ভিনার গতি সকল দিকেই দার্থকিতার স্পাণ ভবপ্র হয়ে উঠেছে।
শিশুমহল গ্রন্থটি যথাদ্থ সমানবে বিভ্বিত হোক—এই কামনাই
আমরা করি। প্রকাশক—সাহিত্যচয়নিকা ৫৯, কর্ণওয়ালিদ খ্রীট।
দাম—এক টাকা পঞ্চাশ নয়া প্রদা মাত্র।

শেষনাপ

বাঙুলা সাভিত্তার দরবাবে শক্তিপদ বাজগুরু নবাগত নন. একাধিক প্রৱেব মাধামে কাঁব সাঙিতিকে কভিত্রের প্রিচয় পাওয়া গ্রেছে। দিন এগিয়ে চলেছে ঘথানিব্রমে, জগতের গারে প্রতিমৃত্তেই লাগতে পরি জনের ছোঁলাড, জীবনের ধারা কত বদলে চলেতে তাব ঠিক-ঠিকানা নেই। একটি অঞ্চলৰ কথাই ধৰা যাক, আগে যে অঞ্চল ছিল বীতিমত অনুনত, যোপ-বাড-প্রিপুর্ণ, দস্যা-সালোগেনের রাজ্য, য়ে অঞ্চলে সামস্কুতন্ত্রের ছিল বিবাট প্রভাব, আবাবে যে অঞ্চলে প্রকৃতি উন্নাচ করে চেলে লিয়েছিল ভার যা কিছু সমল, সেই অঞ্চল কেম্ন কৰে ঘীৰে ধীৰে ভিলে ভিলে পাবিণত হ'ল বীতিমত উল্লত, আলোকপ্রাপ্ত এক শিল্পপুরী—ভারট বরণেক্সিল বিবরণ দেথক লিপিবন্ধ কবেছেন যথেষ্ট দক্ষতা সহকাবে। কল্প ও মানব পিতাপুরের চরিত্র জটির মাধ্যমে নীতি ও তাদশ্গত সংঘাতের একটি নিৰ্থ'ং ছবি ফটে ওঠে। লেখকেৰ বচনা বলোৱাৰ্ণ, চৰিত্ৰস্থাই শ্রণাসনীয়, বচনার বলিঠভা মনকে বিশেষভাবে আকুঠ করে। গ্রন্থের गांगकतन्ति भरवष्ठे जारभवंश्व । श्रकामक--मानाना न भावनिनार्गः ২০৬ কণ্ডিয়ালিস খ্রীট। দাম-প্রাচটাল প্রধাণ নগা পশা মাত্র।

ছুই পকেট হাসি

বর্তনান যুগো বসসাহিত্যিকরপে সাহিত্যের দববাবে বাঁদের আবিভাব ঘটেছে তাঁদের মধ্যে প্রবৃদ্ধেব নান বি.শব উল্লেখনীয়। শিরোনামা দেখেই আশা করি পাঠক-পাঠিকারা বৃষ্ঠেত পাবছেন মে আলোচ্য প্রস্কৃতিও হাক্তবসময়ক। টুকরো টুকরো অসংখ্য হাসির চুটিক গল্পে হুই শতাধিক পৃষ্ঠায় এই গ্রন্থটি পূর্ণ। কার্টুনিও যুক্ত করা হয়েছে প্রচুর পরিমাণে। চুটকি গল্পজির বিষয়বস্তুও একের মধ্যে সীমাবদ্ধ নয়, বহুর মধ্যে পরিব্যাপ্ত। গ্রন্থকারের মন বর্তমান সমাজ সকলে জাতীব সচেতন। লেখকের চিন্তাধারা, কল্পনাশক্তি ও প্রকাশক্তমী নিঃসন্দেহে প্রশংসনীয়। বস্স্কৃত্তির কাঁকে কাঁকে লেখক খীয় দবনী, সহাত্মভূতিশীল ও বস্বান মনের পরিচয়ও বিয়ে গেছেন।

চুটকি গলগুলি সৰিশেষ উপভোগা, এবং লেখকের বসরচনা পাঠকচিত্তি প্রভূত পরিমাণে আনন্দরস স্থায়ী করে। প্রভূষচিত্রান্ধনে নৈপুণা প্রদর্শন করেছেন খ্রীসভোগ ওপ্ত। কার্টুনগুলিও বাঙলার বিখ্যাত কার্টুনিগুলের তুলিকাজাত। প্রকাশক—বলাকা প্রকাশনী, ২৭-সি আমহাই স্লীট। দাম—তু টাকা প্রভিব্ন নরা প্রসা মাত্র।

ৰুয়েকটি সাম্প্ৰভিক কালীন কাব্যগ্ৰন্থ

সাম্প্রতিক কালে বে ক'টি আধুনিক কবিতাগ্রন্থ প্রকাশিত হরে আধুনিই কাব্যসাহিত্যের মানোরগুনে সহারতা করেছে, ভাবের মধ্যে আনন্দগোপাল সেনগুপ্তের মধুর দিনের গল্প, দেবতোর বটকের রঞ্জবৃত্তি, কুশল মিত্রের চৈত্রের পলাপ ও মারাবতী মেখ এবং বিময় চক্রমলারের नकट्यत ब्यालाय-धे हातथानि वहेरत्त नाम विस्थित উद्धारथत मारी বাবে। কবিতাগুলি উক্তান্তের, স্থানহকে গভীর ভাবে স্পর্ণ করে এবং নভনত্বের সন্ধান দেয়। কবিভাগুলির মধ্যে কবিদের বস-বর্ম অর্ভতিসম্পর শিক্ষিমনের একটি স্থম্পষ্ঠ ছাপ পাওরা বার। ক্রিদের প্রত্যেকের ক্রভকগুলি ক্রিভা এক ক্থায় অনুনশ্ব। ভারের मिक भिरत इंग्मिन भिक भिरत राज्यनात मिक भिरत विठात कनला साथा বায় যে, গ্রন্থগুলি সর্বভোভাবে কবিদের প্রতিভার স্পর্ণ বহন করছে। গ্রন্থ গুলির প্রচ্ছদচিত্র অঙ্কন করেছেন প্রখ্যাত শিল্পী শ্রীদেববার মুগোপাবাায়। কেবল দেবতোৰ ঘটকের গ্রন্থের প্রাক্তদ অন্তন করেছেন কবি ৰয়ং। গ্ৰন্থ চতুষ্টাৰেৰ প্ৰাকাশক গ্ৰন্থভগৎ, ৬ বঞ্জিম চ্যাটাৰ্জী খ্লীট। মুল্য—এক টাকা মাত্র (কেবল কুশল মিত্রের গ্রন্থের মূল্য—গুই টাকা মাত্র)।

নি:সঙ্গ

উপরোক্ত প্রশ্নতি এক বিপ্লবীর আত্মকাছিনী। লেখক
শ্রীসতীশচন্দ্র দে ভারতের মৃক্তি আন্দোলনে একদা সক্রির অংশ
প্রহণ করেন ও ধথেষ্ঠ নির্বাতনও ভোগ করতে বাধ্য হন। অতীতেছ
সেই শ্বতি, দেশের স্বাধীনতার মহান তপান্তার গৌরবোক্ষশ
বিবরণী, শোবকের বিরুদ্ধে মৃক্তিকামীদের মৃক্তি অভিবানের চমকপ্রদ
কাহিনী সকল সময়েই সমান মর্বাদাই পেরে আসে। কালের
ব্যবধানে তার গুরুহ লাঘব হয় না। কারাকাছিনী বর্ণনায় লেখক
বথেষ্ট কৃতিত্বের পরিচয় দিয়েছেন। ইতিহাসগন্ধী এই গ্রান্থ লেখকের
সাহিত্যিক দক্ষতারও পরিচয় মেলে, তখনকার দিনের তরুণ সম্প্রদারের
দেশের জল্পে সকল প্রকার স্বার্থত্যাগের এক স্কল্ব প্রতিছেবি লেখক
এখানে তুলে ধরেছেন। লেখকের শ্রম সফল হোক। শ্রীবরেক্সনাম্ব
দত্তের প্রছেদচিত্রান্ধনও প্রশংসনীয়। প্রকাশক—চক্রবর্তী চ্যাটার্জী
য়্যাণ্ড কোম্পানী লিমিটেড, ১৫ কলেজ স্বোয়ার। দাম, তিন টাকা মান্ত।

Happiness is like coke—something you get as a by-product in the process of making something else.

—Aldous Huxley



জেনিফার জোস

শ্ব বেশী দিনের কথা নয়, গলিউডের জনপ্রিয় অভিনেত্রী মিদ জেনিকার জোল রোম-এ নিষ্বিধ্যাত মাকিল উপস্থাসিক আর্থেটি ছেমিংএরে রচিত এ কেরার ওয়েল টু, আর্মিণ এর স্থাচিং সেবে জাঁর লারী এবাজক পরিচালক মি: ডেভিড ও, দেলজ্নিক সহ ভারতবর্ষে লার করি আমাদের জন্ম অবকাশ যাপন করতে এসেছিলেন। এ থবর লার করি আমাদের দেশের চিক্রামোদীদের কাছে অভানা নেই। বর্জমানে হলিউডে বে কর জন প্রথম ঝেনীর অভিনেত্রী আছেন মিদ জোল উাদের মধ্যে অক্তরমা ও জনকা। অবক্ত এই প্রথম শ্রেণীতে মিদ মেনিলিন মুন্বো, জেন মেন্সাফিত ও অনিতা এব বার্গের কোন ছান নেই। কারণ ভারে ভির স্থবের ও ভির কচিব অভিনেত্রী।

মিস ছোপ মার্কিণ যুক্ত গান্ত্রের ওক্রাছোনা ষ্টেটের টুল্লাতে অন্ধ্রহণ করেন। জাঁব বাবা ইসলে ইক কোম্পানা নানে এক আন্ধ্রমান থিয়েটার পাটির মালিক, পরিচালক ও অভিনেতা ছিলেন। এই থিয়েটার পাটি আমেবিকার বিভিন্ন সহবে তাঁর থাটিয়ে অভিনয় করে বেড়াভেন। এ নের অভিনাত "নি গুড় হোমষ্টেড", "ইষ্ট লান" অভৃতি নাটকগুলি তথনকার দিনে যথেষ্ট শুনাম অর্জন করেছিল। কিছুদিন পরে বিজ্ঞানের মহিনায় নির্মাক ছবি স্বাক ছবিজে অপাত্রিত হওরার ইসলে ইক কোম্পানী উঠে যায় এবং জেনিফার-এর বাবা ক্রেকটি সিনেমা-গৃহ তৈরা করে সেথানে স্বাক ছারাছবি দেখাতে তক্ত করেন।

ছোটবেলা থেকেই নাট্য পরিবেশের মাঝে মান্ত্র হয়েছেন মিদ ভোল। শ্রেভিদিন গভীর আগ্রহে ভিনি থিয়েটার দেখতেন। কলমকের বৃকে অভিনেতা অভিনেত্রীদের স্থু হংখ, আশা হতাশাকে ভিনি অন্তর দিয়ে উপলব্ধি করতেন। মাত্র চার বংসর বর্ষে জেনিফার ডাল্লাস-এর উরস্থলাইন একাডেমীতে ভর্ত্তি হন। এই মুলের ছাত্রী থাকা কালে তিনি আবৃত্তি ও অভিনরের কোত্রে বিশের পারদর্শিতা লাভ করেন। এথানকার শিক্ষাগ্রহণ শেষ হলে তিনি উচ্চতর শিক্ষালাভের আশায় ওকলাহোমা সিটিতে চলে আসেন এবং বিশ্বাতি বিখ্যাত থিয়েটার কোম্পানীতে বোগদান করেন। প্রায় হু' ক্ষের ভিনি এই থিয়েটার কোম্পানীর সাথে যুক্ত ছিলেন। তাঁর বাবা, খিরেটারের প্রতি জেনিকারের গভীর আগ্রহ দেখে তাঁকে নিউইরকের আমেরিকান একাডেমা আই প্রামাটিক আর্টিস-এ ডাঁও করে দেন। কিছ প্রথম দিকে তাঁর ইচ্ছা ছিল অক্তরসা। এ সহত্ত্ব মিস জোল নিজেই বলেছেন—বাবা চেয়েছিলেন আমি আইন পড়ি। কিছ আমার বোঁক ছিল নাটকের প্রক্তি। তাই শেব পর্যান্ত তিনি আমার মতেই মত দিলেন।

কিছুদিন পরে, ১৯৩৯ খুঠান্দে তিনি সহপাঠী মি: ববার্ট ওয়াকারএর সাথে পরিণয় ক্ত্রে আবিদ্ধা হন। ১৯৪০ খুঠান্দের ১৫ই এপ্রিল
ক্ষেনিফারের প্রথম পুত্র ববার্ট ওয়াকার জুনিয়ার ও ১৯৪১ খুঠান্দের ১৭ই
মার্ক দিজায় পুত্র মাইকেল-এর জন্ম হয়। চার বৎসর পরে স্বামীর
সঙ্গে তাঁর বিবাহ-বিচ্ছেদ হয়। এই সময়ে তাঁর মনে ছলিউডের
চিত্রাকাশে 'তাবকা' কপে আগ্লপ্রকাশের ইচ্ছা বিশেষ ভাবে বলবতাঁ
হয়ে ওঠে। কিছ চিত্রক্ষগতের কারো সাথে তাঁর পরিচয় না থাকায়
তিনি প্রত্যাধ্যাত হন ও আবার রঙ্গমঞ্চেই অভিনয় শুকু করেন।

ত্বংসর পরের কথা। একদিন তিনি অভিনয়ের শেষে গ্রীণক্ষম বসে মেক্থাপ্, ভুলছেন। এমন সমর জনৈকা স্বরণা তরুলী দেখানে এসে বিনাত ভাবে তাঁর সাথে আলাপের ইছো প্রকাশ করলেন। একটু বিরক্ত হয়েই জেনিকার তাঁকে বসতে বললেন। কিছুদ্দণ পরে তক্সনীটি তাঁব নিজের পরিচর দিলেন—মামি হলিউডের প্রয়েষক পরিচালক ডেভিড ও সেলজনিকের নিউইয়র্কস্থিত প্রতিনিধি মিষ্ক্যাধ্বিণ প্রাটন।

তাই নাকি ?—খুনীতে ঝলমলিলে উঠল ছেনিফারের মুখ। সঙ্গে সঙ্গে তিনি তাঁর অমাজিত ব্যবহাবের জ্ঞা ক্ষমা প্রার্থনা করলেন।

মিস বাভিন জেনিফারকে চলচ্চিত্রে বোগদানের জন্ম উৎসাহিত করলেন এবং প্রযোদ্ধক-পরিচালক মি: সেলজনিকের সাথে তাঁহ পরিচয় করিয়ে দিলেন। মি: সেলজনিক্ জেনিফারের অভিনয় প্রতিভার সন্তুষ্ট হয়ে তাঁকে নির্মায়নান ছবি সঙ্গ অব বার্ণাদেং এব নামভূমিকায় অভিনয়ের জন্ম মনোনীত করলেন। অবভ এই মনোনয়নেব পূর্বে জেনিফারকে কঠিন প্রীক্ষায় উত্তর্ণ হতে হয়েছিল।

নামভূমিকার অভিনরের জন্ম ছয় জন অভিনেত্রীর নান থোগণা কবা হলেও চুড়ান্ত পরীক্ষার মিদ জোন্দ-ই সদম্মানে উত্তার্পা হন। পরীক্ষার বিষয়বস্ত ছিল দৈবলীলা (Vision) দর্শনের পর বার্ণাদেং-এর মানসিক পরিবর্ত্তন। এথানে উল্লেখনেক্স, মিদ জোনদের অভিন্যক্তি এত স্থক্তর ও নিধৃত হরেছিল দে পরিচালক মনায় নিজে পর্যান্ত এতটা আশা করেন নি। ১৯৪৩ খুষ্টাকে মিদ জোনদ বার্ণাদেং-এর উভুমিকার অভিনয় করে অস্কার পুরস্কার লাভ করেন।

বর্ত্তমানে মিদ জোনদ পারিবারিক জীবনে প্রযোজক পরিচালক ডেভিড ও দেলজনিক-এর পত্নী। ১৯৫৪ খুষ্টাব্দের ১২ই আগই উাদের একমাত্র কল্পা নেরি জেনিফারের জন্ম হয়। মিদ জোনফ মধুবভাষিণী ও দদালাপী। খ্যাতির হিমালর-শীর্ষে আরোহণ করেং তাঁর মনে বিশুমাত্র অহংকার নেই। হলিউডের তথাকথিত চিত্রাভিনেত্রীদের মত পোবাক-পরিচ্ছদের ব্যাপারে তিনি নেগলিগী ও কিন-মার্কা হ্রস্থতা-স্বচ্ছতা পছন্দ করেন না। তাঁর পোবাক-পরিচ্ছদে, আচার-জাচরণে দর্মদাই ক্লচি ও সংযমনীলতার পরিচর্গ পার্যা বায়।

মিস জোনসের হাদয় অত্যস্ত সংবেদনশীল ও আবেগপ্রবণ! তাই ভারবেগপূর্ণ নাটকীর দৃখগুলি রূপায়ণে তার ক্ষমতা অসাধ্বণ! তিনি "সঙ্গ অব বার্গদেং", "দি বাবেটন্ অব উইম্পোল ট্রটি", "উই ওয়ার ট্রেক্সার", "দুরেল ইন' দি সান," "যাদান বোতারি," লাও ইন্ধ এ মেনিপ্লেনন্ডার্ড থিং," "বাঁট দি ডেভিল," "ইন্ডি ক্রিণন্
অব অ্যান আমেবিকান ওরাইফ," "গুড মরণিং," "মিস ডাঙ্জ"
প্রভৃতি ছবিতে অভিনয় করে আন্তর্জাতিক খ্যাতি লাভ করেন।
এ যাবং আঠারোখানি চিক্সে তিনি অভিনয় করেছেন।

প্রতিদিন দেশ-বিদেশের অনুবাগী ভক্তবুন্দের কাছ থেকে তিনি চালার হাজার চিঠি পান। নানা আঞারে ভরা দে সব চিঠি। বালদুর সাধ্য মিস্ জোনস্, তাঁর ভক্তবুন্দের আন্ধার পূর্বের চেটা করে থাকেন। দেকেটারী থাকা সন্ত্বেও তিনি নিজে হাতে লিথে (টাইপ করে নর) ফান্ মেলের উত্তর দিতে ভালোবাসেন। কারণটি সহজেই অন্ধুমের। প্রস্র থাতি ত অর্থের মোহে আজো তিনি বিভাক্ত হননি। এ সম্বন্ধে তাঁর অভিমত হল—আমার অভিনয় যদি কারো জীবনের ক্ষণিক অবসর মুহুর্গুটুকু আনন্দে ভরে দিয়ে থাকে অথবা কোন সন্ধ্যায় তাঁর ছাখভারাকান্ত প্রদারের ব্যথা—বেদনাকে লাখব করতে বিলুমাত্র সাহাব্য করে থাকে তবে অভিনেত্রী হিলাবে সেইটাই হল আমার সবচেয়ে বন্ধু পূর্মার। জনসাধারণের তভেচ্ছা ও ভালোবাসা শিল্পী মাত্রেরই কাম্য। কারণ শিল্পীর মূল্যায়ন তাঁরাই করে থাকেন।

সম্প্রতি বেলজিয়ামের রাজধানী ব্রুসেলস্-এ অনুষ্ঠিত চিত্রমেলার মিদ্ জোনস বছরের দেরা (১৯৫৮) অভিনেত্রীরূপে সর্বাধিক ভোট পেয়েছেন। আশা করি, জেনিফার অনুরাগীরা এ সংবাদে আনন্দিত গ্রেন।

--- ত্রীদেবত্রত ঘোষ

শ্বতির টুকরো

[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর]

সাধনা বস্থ

ক্র লকাতার এবং নোখাইয়ের ইনেটো দিনেমার একবোগে কোট ভালার মুক্তিলাভ করল ১৯৪১ সালে। এর পূর্বে মেটো দিনেমার কোন ভারতীয় ছবি মুক্তিলাভ করে নি। অর্থাৎ ভারতীয় ছবিদেব মধ্যে কোট ভালাবই প্রথম ছবি, যে মেটো দিনেমার মাধ্যমে সাধারণা মুক্তিলাভ করল। এবং বলা বাছলা, মুক্তির সঙ্গে সঙ্গেই বসজ্ঞ শবিনাবারণ এবং অভিজ্ঞ সমালোচকবৃন্দের আন্তুক্তা, প্রশানার এবং মর্থনে ছবিটি সর্বভোৱে পূর্ব গালে। বোম্বাইতে তথম আমরা উপস্থিত থাকতে পারি নি, কারণ ঠিক সেই সময় নিউ খিয়েটার্সের ইয় ছভাগী "মানাকা" ছবিটির গঠনকর্মে আমরা ভীষণ ব্যস্ত, সেইজ্রেই ছভাগাক্রমে ইছ্রা থাকা সন্ত্রেও বোম্বাইতে কোট ভালারের মুক্তিবাল উপস্থিত থাকা কিছুতেই আর আমাদের পক্ষে শেষ অবিদি সম্ভবপর হয়ে উঠল না। বাই হোক, বোরাইতে বেতে পারি নি, তবে কলকাতায় কোট ভালারের মুক্তি তো প্রত্যক্ষ করেছি নার আলোকোজ্ঞল স্বতিও তো মন থেকে মুছে যাওয়ার নয়।

এই ছবির কাছে মুক্তকঠে প্রকাশ্রে স্থীকার করছি, আমার ব্যক্তিগত খণেরও সীমা-পরিসীমা নেই। কারণ সম্পূর্ণরূপে ভারতে নির্মিত প্রথম আন্তর্জাতিক ছারাছবির তারকারপে অভিহিত হওয়ার পীভাগ্য অর্জনে আমি সমর্থ হতে পেরেছি—এই ছবিরই কল্যাণে।

১১৪১ সালের কথা মনে পড়লেই বিশেবভাবে মনে পড়ে বার

শ্বে বাঙলার অভিতীর প্রায়েকক বর্গীর হলক বোজের কথা।

"এক এবং একমান্ত" (one and only) আখ্যাটি বাব প্রসাম

ব্যবহার করলে বিক্ষান্ত ভূল হর না। দেশীয় মৃত্যাশিরের ই ডিফালের

একটি অধ্যার পড়ে উঠেছে হরেনদা'র অভিন্যবাদীর অবদানে। বাদার

বেনকা, উদরাশন্তর প্রমুখ বছ দিখিলয়ী নৃত্যাশিরীদের ভারতীয় বর্ণকের

সামনে প্রথম উপস্থিত করার গৌরব হরেনদা'রই। এ বছর

(১৯৪১) দক্ষিণ-ভারত প্রমণের একটি আয়োজন করছিলেন হরেনদা'।

উাদের সঙ্গ আমিও যেন বাই, এই ইছ্যা হরেনদা' প্রকাশ করলেন—

এ সম্পর্কি অন্ধ্রোধন্ত তিনি জানালেন মধ্ব কাছে। অসম্বান্ধি

আসেনি মধ্ব পক্ষ থেকে—ঠিক সেই সময় বাঙলার চলচ্চিত্রশিরের

গৌরব ও ইছিহাসপ্রস্তা জীবীরেরন্তনাথ সরকারের নিউ থিরেটার্সের

পক্ষে মীনাক্ষী ছবির নির্মাণকার্যে যথেষ্ট ব্যস্ত ছিল মধু। ভাই ভার

নিজের পক্ষে আমাদের সঙ্গে বাওয়া শেষ অব্ধি সম্ভবশ্ব হরে

উঠল না।

ভামগা, ভারপর কোন একটি দিনে অফুবন্ত জানন্দ সঙ্গে বিশ্বে প্রচুদ্ধ কৌতৃহল মনের মধ্যে জমিরে রেখে বাত্রা ওফ করসুম দিশি-ভারত জভিমুখে। বিরাট একটি দল হল পুরো শিল্পিন্দান। ব, হবেনদা', সঙ্গীত পরিচালক ভিমিরবরণ, মাধব বেনন প্রভৃতি শেবোক্ত জন কোচিনে নৃতাশিল্পী হিলেবে বথেই থ্যাতির অধিকারী। আমার নৃত্যদলী চিসেবে আমাদের সঙ্গে আমাদের প্রভ্যেকটি শ্রমণে ইনিও বোগ দিয়েছিলেন। রাজনর্ভকী ছবিভেও আমার নৃত্যদলীয় ভূমিকার আপনার। (গাবা রাজনর্ভকী দেখেছেন) এঁকেই দেখতে পেয়েছেন।

দক্ষিণ-ভারত আমরা মহা আনক্ষে বেড়ালুম, বেখানে পিরেছি সেইথানেই পেরেছি আশাব অতীত সমাদর, আপ্যায়ন, অভার্থনা, পেরেছি আন্তরিকতাপূর্ণ দরদী ব্যবহার, পেরেছি সহ্লদরভার বধুষ্

আমাদের শিল্পাপ্তার দেখানকার দর্শকদের মধ্যে বে কভথাৰি
সাড়া জাগিরে তুলেছিল ভার একটি প্রমাণ আপনাদের সামনে তুলে
ধরছি। একটি হলেও এই প্রমাণ আনকের তুলনার কম নর।
বেগানে বেগানে আমাদের অফুরান সম্পন্ন হরেছে, দর্শকদের আসীর
আগ্রহে নির্দাণিক দিনেই অফুরানের সমাপ্তি ঘোরণা আমাদের পক্ষে
সম্ভব হয় নি। আমাদের পরিকল্পিত শেব অফুরানটিতেও কেথা
গোছে দর্শক সমাগ্রে কিছুমাত্র ভাটা পড়ে নি—আমাদের কিয়
বাড়াতে ইয়েছে, নির্দাণিত সময়সীমা অভিক্রম করেও দর্শকদের
ইচ্ছার আবও ক'টা দিন যুক্ত করতে তার সঙ্গে, অমুরান-রজনীয় সংখ্যা
করতে হয়েছে বুরি।

উচ্চৃসিত প্রশাস। পেয়েছি সাংবাদিকদের কাছ খেকে।
কতঃ ফুর্ত অভিনশনে আমাদের ভবিরে তুলেছেন অনতার
প্রজিনিধি সাংবাদিকদের দল। আমাদের অমুষ্ঠান সম্পর্কে অনতার
অমুকৃল মতামত রূপ পোল তাঁদের বলিষ্ঠ ও দরদী লেথনীর বাধ্যকে।
দেদিনকার দক্ষিণ-ভারতীর সাংবাদিকদের কয়েকটি অভিমতের
অংশবিশেষ আজকের বঙ্গদেশীর পাঠক-সাধারণের সামনে তুলে
ধরছি—একটা কথা ভার আগে বলে নিয়ে বিবয়টি পরিচার করে
নেওরাই ভালো। আজুপ্রশাসার স্ববিস্তৃত প্রচারের স্বপক্ষ আমার

আমি এখানে উত্ত কর্ছি না। আমার প্রধান পরিচয় আমি বাঙালী, আমি বাঙলাদেশের মেরে—জগতের দরবাবে সেইটেই আমার বিশেব চিক্ষ বা পরিচিতি। দক্ষিণ-ভারতে, শুরু দক্ষিণ-ভারতই বা কেন দেশের বাইবে বেখানেই গোছ বাঙালী-পরিচিতিতেই বাঙলা দেশের শিল্পী হিসেবেই, স্কুতরাং বাইবে বে সন্মান আমি পেরেছি দে সন্মান ভা আমার ব্যক্তিগত সন্মান নম, দে তো আমার ক্ষাভূত্তির সন্মান ও দেশের প্রত্যাকতি নকনারীর ভাতে সমান অধিক্ষার, আমার ব্যক্তিগত কামার বাজিগত সমান অধিক্ষার, আমার ব্যক্তিগত প্রথ আসম পার। তুতাগিঙার দ্বিকা হিসেবে দক্ষিণ-ভারতীয়েলা যে অভ্যতপূর্ব সন্মান আমাকে দ্বিমিরছেন ডা শুরু আমাকে নর, আমাকে ক্ষেপ্ত করে সমগ্র বাঙলাভিনত প্রথা ভানাল দক্ষিণ ভারত—ক্ষেপের প্রত্যাক্ষী নরনারীর মন্ত দেই সন্মানে আমিও একটি জ্লোদার মান্ত। অভ্যত্ত করার ক্ষেপ্তে বিভার করলে দেখা বাবে বে অভিয়ত উত্ত করার ক্ষেপ্তে বান বাবা থাকতে পারে না অভ্যতঃ আত্মপ্রশংসার ম্বিপ্তত প্রচারের দোবে ছাই হতে হয় মা।——

"THE SPLENDER THAT IS SADHONA BOSE, BEAUTY THY NAME IS SADHONA BOSE."

"The ballet show which opened before a full house and distinguished gathering at Sun Theatre was indeed a feast for the eye and ear. Sixteen varied items were put across in the ballet and among these the great Sadhona herself—for she is truly great—figured in five. While not one of the items were bad, some were just superb, drawing rousing applause from the enthusiastic audience. After Ranga Puja by the supporting ladies came Sadhona Bose herself to render "DRAUPADI." The composition shows Draupadi at Shiva's temple praying for the boon of a husband. Sadhona portrays each of these qualities with exquisite clarity without loss to the subtlety so essential in art. The "Mudras" through which she interprets these qualities became sheer poetry as she renders them..the audience insisted on enchore.".. Sunday Times, Madras-April 1941.

"LIKE A POEM OF GRACE."

"The opening performance proved such a tremendous success that the conductors have announced extension of the shows"... Free India, Madras, April 1941.

"Grand-daughter of late Mr. Keshub Chunder

Sadhona Bose has made a rich contribution to the reneissance of Indian Dancing and her performance was of a high order..she was particularly brilliant in "Meghduta" adapted from Kalidasa's epic,"..The Mail, Madras, April 1941.

"Sadhona's dancing is a lyric poem of grace, rhythm, pose, abbinaya, Mudras and dexterous foot work. Her movements are lithe and graceful and her mastery of the art superb. She is irresistable in every way,"...The Echo, Madras, April 1941.

"INDIAN MONA LISA IN BANGALORE."

"Slim, lovely looking Sadhona Bose dressed in typical Hindu fashion with a dot of Kumkum . Polse and grace being her character, she is a fit vessel for the spirit of our classical dancing which is often defined as the poetry of poise and grace, emphasizing, as it does, "Mudras" and "Bhavas". In her style she is quite electic.-She takes the best wherever she finds, and concerns herself with creating a thing of beauty, out of that. She blends the four schools-Manipuri, Kathakali, Bharata Natyam and Kathak, forming a new harmonious whole and to that she adds the electric current of her personality. The result is a work of art that which has its own laws and its own features."... Daily News, Bangalore, 1941. ক্রমশ:।

অমুবাদ: কল্যাণাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়

হেড মাষ্টার, নুভ্যেরই তালে তালে এবং অগ্নিসম্ভবা

সাহিত্যিক নরেন্দ্রনাথ মিত্রের অসংখ্য ছোট গল্পের মধ্যে ঁহে মাষ্টার" অক্তম। সেই ছোট গল্পই বর্তমানে পূর্ণাক চলচ্চিত্রের রং নিয়ে বিভিন্ন প্রেক্ষাগৃহে প্রদর্শিত হচ্ছে। ছবিটির বক্তব্য দর্শকে স্কাৰ স্পূৰ্ণ কৰে। এই হাদয়ধৰ্মী ছবিটির কাহিনী এক শিক্ষাব্রতী **জীবনের ঘাত-প্রতিঘাত বিপয়য়কে কেন্দ্র করে গড়ে উঠেছে।** সহ বাধা তুর্যোগকে উপেক্ষা করে প্রতিকৃত্র পরিবেশের মধ্যে দিয়েও নিজে সারা জীবনের আদর্শকে কেম্ম করে বাঁচিয়ে রাখা যেতে পারে সে বিষয়ে এক স্পষ্ট নিদেশি পাওয়া যায় এর কাহিনীর মাধ্যমে হেড মাষ্ট্রার কুক্মপ্রসন্ম চরিত্রটি লেথকের এক অপূর্ব হৃষ্টি—আর এ সার্থক সৃষ্টি চলচ্চিত্রে জীবস্ত হয়ে উঠেছে ছবি বিশ্বাসের অন্সং অভিনয়ে। ছবি বিশাস অভিনীত সমস্ত চরিত্রগুলির মধ্যে রুক্তপ্রস চবিত্রটিকে অক্তম শ্রেষ্ঠ বলে অনায়াসে অভিহিত করা বার। মান^{বিং} আবেদনে ছবিটি ভরপুর। হাদয়বান ব্যক্তি মাত্রেই এর আবেদ সাড়া না দিয়ে পারবেন না। ছবিতে যুক্ত গানটি তাবাশ্রু বন্দোপাধাায় মহাশয়ের লেখনীজাত। স্থরারোপ করেছেন স্থী দাশগুপ্ত। অগ্রগামী পরিচালিত ছবিটিতে ছবি বিশ্বাস ছাড়া বিভি ভূমিকায় রূপ দিয়েছেন নবাগত ভামল ঘোষাল, শিশির বটকাট গঙ্গাপদ বহু, মণি শ্রীমানী, শোভা গেন, করুণা বন্দ্যোপাধ্যার ও নবাগ্র

'নুত্যেরই তা ল তালে' ছবিটি কাহিনীকার পরিচালক স্থবীরবন্ধর বার্থতার স্বাক্ষর বছন করছে। সর্বতোজাবে ছবিটি অসাফস্য বরণ করে নিরেছে। তুর্বল কাছিনীর চলচ্চিত্র রূপার্থের মধ্যেও আশা বা সম্ভাবনা আত্মপ্ৰকাশ করে না। । এক সৰ্বভাৱতীয়তার আদর্শ প্রচাব করতে গিয়ে বাঙলার বৈশিষ্ট্য, স্বাতন্ত্রা ও নিজস্বতার মূলে কুঠারাঘাত ৰবা হয়েছে। ছবির মন্তব গতি দর্শক্ষে বিশেষভাবে পীড়া দের। विद्यमाग्रिक राथष्ठे व्यक्तिपूर्व। इतिविद्य प्राथा द्वीक्षमाथ, माज्यक्रमाथ, জতুলপ্রাসাদ প্রাত্তির গানগুলি যুক্ত করে ভূবির অনেক দোধ ঢেকে থেওয়া হয়েছে। গানগুলি এবং নুজ্যাংশ ছবিটির একমাত্র আকর্ষণ বলসেই হয়, তার ফলেই ছবিট্রির অসংখ্য জ্রেটির অনেকাংশ চাপা পতে গেছে। ছবিব তিনটি প্রধান ভমিকারও তিন্তন অবাধালী--বোপীকৃষ্ ছাগিণীও স্মুমারী। বাঙালী নিছাদের মধ্যে ছবিট্টতে অভিনর করেছের ছবি বিধাস, পাছাত্রী সাক্রাল, অসিতবরণ, ইলুমাধ, অভিত চটোপাধার, পশুপত্তি কুণু, পশ্বা দেবী, সন্ধ্যা রার, ভারতী হার, মিতা চটোপাধ্যার, বাজলন্দী প্রভৃতি। লাজিদেব যোব, স্থতিতা যিত্র প্রভৃতির ক্ঠসন্থীত ভবিটির এক বিশেষ আকর্ষণ।

' আজকের দিনের বছধাবিভক্ত সমাজের প্রধানতঃ ছটো স্তরই COTCH PICE | "HAVE"CHE WE WITE "HAVE NOT"CHE ছব, একনল উপবের মহলে বাস কবে, হাওরায় ওড়ে, নীচের মহলের বাদিলাদের মাতৃধ বলে গণাই করে না। স্থাথের পায়রার দল এবা, আর একদল নীচের মহলে বাস করে, উপরের মহলের উপেক্ষাই যেন এর প্রাপা। বাছরে জগৎ এদের সামনে দেখা দেয় क्टिन मुख्यि, अपने बीहर्क इस युद्ध करत, खीरनयुद्ध। अहे ब ছটো শ্বর এদের পরস্পরকে বিভক্ত করেছে কাঞ্চনকোলীনা। ভবে স্তরগত প্রশ্নের বন্ধ উর্বে প্রতিভার অবস্থিতি, পরিবেশ যত প্রতিকৃপই হোক না প্রতিভার যথায়থ বিকাশ একদিন না একদিন ঘটবেই। ভার প্রাণ্য সমাদর মিলবেই, এই পটভূমিকা অবলম্বন করে "অগ্রিসম্রবা"র গলাংশের সৃষ্টি। লেখিকা শাস্তি দাশগুণ্থের লেখনীর স্বন্ধনীশক্তির প্রকৃত পরিচায়ক বলে গরটিকে অভিহিত করা বার। এর চিত্ররূপ গড়ে উঠেছে সুশীল মন্ত্রমদারের পরিচালনার। এই রক্তচক্রের ছারা ভাজকের সমাজে যে অসাম্য দেখা দিয়েছে তার কল সমাজের পক্ষেই বে কতথানি ভরাবহ, দেদিকেও ছবিটির স্বাধ্যমে সকলের দৃষ্টি আকর্ষণ করা হরেছে। চলচ্চিত্রের মাধ্যমে একটি যুগোপৰোগী বলিষ্ঠ ও সারবান কাহিনী পরিবেশিত করলেন পরিচালক স্থানীল মজ্মদার। ছবিটির জোরালো বক্তব্য বর্ণকমনে বথের প্রভাব বিস্তার করে। ছবির সুরস্থি করেছেন কালোৰৱণ। বিভিন্ন চরিত্রে রূপ দিয়েছেন ছবি বিশ্বাদ, কালী বন্দ্যোপাধাায়, নির্মলকুমার, অমর মল্লিক, ভুবন চৌধুরী, তক্তপকুমার, প্রেমাণ্ড বস্থু, হরিধন মুখোপাধার, নুপতি চটোপাধার, এমান िनक, श्रीमान (नवानिय, मञ्जना वल्लाभाशाय, वनानी क्रीयुत्री, क्रमांदी শিবানী প্রভতি শিল্পবন্দ ।

ইন্দ্ৰজাল

জগতের দরবারে বাঙলার গৌরব বর্ধনে বাঁরা সহারতা করেছেন, বিখ্যাত বাহুশিল্পী প্রভুলচন্দ্র সরকার বা পি, সি. সরকার তাঁদের অন্ততম। শাহুকর হিসেবে তাঁর প্রতিভা সর্বজনবীক্রত खाई बांक्मिश्चीस्पद पदावादत शक्ति विभिन्ने कांत्रम कींव सक गःत्रक्रिक ! ক্লকাতার তাঁর সাপ্রতিক প্রদর্শনীও জনগণের প্রচুর স্মান্ত্র স্বাদ্রস্থানর হরে উঠেছে। জার বর্তমান প্রদর্শনীর বিশেষৰ এই বে, এ বছর নতুন ধরণের করেকটি বাচক্রীড়া তাঁর অনুষ্ঠানস্চীর তালিকা বৃদ্ধি করেছে। জাঁর এই সাম্প্রতিক প্রদর্গনীটি সর্বভোভাবে নৈপুণা, কুণলতা ও চমংকারিছের স্বাক্ষর বছন করে—করেকটি ক্ষেত্রে যাত্রসম্ভাট অবিশ্ববণীয় কৃতিখের পরিচর দিয়েছেন। ক্ৰীড়াঞ্চলৰ প্ৰত্যেকটি অভিনৰ এবং অভ্যনীয়। সমগ্ৰ অনুষ্ঠানটি चाराम्बर्द-रिका निर्वित्याद आक्रांक्ट म्यानसार स्थासा करा भारतम । अधानकः ऐत्वयसाना धरे ए. धरे यात अम्मनीति क्वनमाज करवक्ति कोमानक्षधान क्रीपांत प्रश्ना ग्रीपांतक नत्। यत नत्न मान সমানভাবে ভাল বেখে সিনেমা, থিরেটার, চাতারস অপ্রিসীম দক্ষীব माल পরিবেশন করেছেন বাচসমাট জী স কার। আলোক নিবছণ এবং সৰ্বোপৰি তাঁৰ অভিজ্ঞ সহকাৰীদেৰ কৰ্মনৈপুৰো ^{*}हैक्कान भवम चाकर्रगीय इत्य क्षत्रं, हेक्कान मन्द्रव मस्म প্ৰভাববিস্থাৰ কৰছে সমৰ্থ হয়। বৈচিত্ৰ:পূৰ্ণ এই গৰিতে ও চিত্ৰশিক অফুষ্ঠান্টির মধ্যে একাধিক ভাবার, 🗃 সরকারের ব্যৎপত্তির প্রমাণ মেলে। মনোমুগ্ধকর ব**র্ছ** যাতকোশল প্রদর্শন করে সমগ্র অনুষ্ঠানটির মধ্যে তিনি বে প্রযোগ-নৈপুণ্যের পরিচয় দিলেন, ভা নি:সন্দেহে অভিনন্দনগোগ্য।

রঙ্গপট প্রসঙ্গে

ভক্ষণ পরিতালক অসীম বন্দ্যোপাধ্যারের পরিচালনার স্থবীর হাজবার "কোন এক দিন" কাহিনীটির চিত্ররূপ গড়ে উঠছে। রূপায়ণে দেখা যাবে কমল মিত্র, অসিতবরণ, দীপক মুখোপাধ্যায়, নিৰ্মলকুমার, শোভা সেন, তপতী ঘোষ, রঞ্জনা বক্লোপাধ্যাই প্রভৃতি শিল্পিবর্গকে ৮০-প্রখ্যাত চিত্রকর বিশু চক্রবর্তীর পরিচালনার বিধায়ক ভটাচাৰ্যের কাছিনী "অবাক পুথিবীর" চিত্ররূপ গৃহীত রপালী পর্ণার দেখা যাবে ছবি বিশ্বাস, উত্মকুমার, তক্ৰকুমাৰ, জুহৰ বায়, তুল্দী চক্ৰবৰ্তী, নুপতি চট্টোপাধ্যায়, ভাম লাহা, সাবিত্রী চটোপাধ্যায়, অপর্ণা দেবী, সবিতা গাঙ্গলী প্রভৃতি শিল্পিগণকে। তেমস্তানুজ শ্রীক্মল মুখোপাধাাগ্যকে দঙ্গীত পরিচালক ভিসেবে দেখা যাবে। "প্রফুর চক্রবর্তীর পরিচালনায় "সথের চোর" ছবিটিতে অভিনয়া শে অবতীর্ণ হচ্ছেন ছবি বিশাস, পাহাড়ী সাক্সাল, কমল মিত্ৰ, উত্তমকুমার, ভক্রকুমার, ভারু বন্দোপাধারে ও শ্রীমতী বাসবী নন্দী প্রভৃতি শিল্পিগণ। চিত্রনাট্য রচনা করেছেন প্রসিদ্ধ সাহিত্যিক জ্যোতিশ্বর বার। - বাসবিহারী লালের লেখা "সোনার হরিণ"-এর চিত্রদ্রপ গড়ে উঠতে মঙ্গল চক্রবর্তীর পরিচালনায়। অভিনয়াংশে দেখা যাবে ছবি বিশাস, বিপিন গুপু, উত্তমকুমার, কালী বন্দোপাধ্যায়, মিহির ভটাচার্ব, তক্ৰকুমার, পল্লা দেবী, স্প্রিয়া চৌধুরী, নমিতা দিংহ, কুঞ্বলা চট্টোপাধার প্রভৃতি শিল্পীদের। স্থর-যোজনার দায়িত গ্রহণ করেছেন হেমন্ত মুখোপাধ্যার। - নির্মল চৌধুবীর পরিচালনার নির্মীরমান ছবি "চলতি পথের গ্রন্থি" ছবিতে অভিনয় করছেন বলে বাঁদের নাম জানা গেছে তাঁদের মধ্যে ছবি বিশ্বাদ, অসিতবরণ, দীপক इत्थानाथाय, न्यान यत्थानाथाय, व्यनिन क्रकानाथाय, वरीन वाद

© (फर्ल-विस्प्ति ©

ভাদ্র, ১৩৬৬ (আগষ্ট-নেপ্টেম্বর, '৫৯) অন্ত দেশীয়---

১লা ভাক্ত (১৮ই আগঠ): পণ্ডিচেরী বিধান সভাব অন্তর্মন্ত্রী নির্মাচনে কংগ্রেস দলের অবলাভ—ন্মোট ৩১টি আসনের মধ্যে ২১টি আসন অধিকার।

২রা ভাক্ত (১৯:শ আগষ্ট): কলিকাতার তুই দিবসব্যাপী পাক্-ভারত বৈঠক সম্পদ্ধ—টুকেরগ্রাম ও পাথারিবা বনাঞ্জের (আসাম) সীমারেখা সংক্রান্ত বিপোর্টের অমীমাংসিত আজোচনা;

ওরা ভাক্স (২০শে আগষ্ট): সরকারী থান্তনীতির প্রতিবাদে ও সন্তা দরে থান্তোপযোগী চাউলের দাবীতে মূলা বৃদ্ধিও ত্তিক প্রতিবোধ কমিটির উল্লোপে কলিকাতা ও সারা পশ্চিমবঙ্গে গণ-সংগ্রাম ও আইন অমান্ত আন্দোলন আরম্ভ।

কেবল সম্পর্কে বাষ্ট্রপতির ঘোষণা (কেন্দ্রীয় হস্তক্ষেপ) লোকসভার ২৭০-৩৮ ভোটে অনুমোদিত-—প্রতিবাদে ক্যুানিষ্ট সদস্তদের সভাকক ভাগে।

৪ঠা ভাক্ত (২১শে আগষ্ট) প্রধানমন্ত্রী প্রীনেছকর নিকট কেন্দ্রীর খান্ত ও কৃষি সচিব শ্রীঅজিতপ্রসাদ ক্রৈনের পদত্যাগপত্র পেশ।

৫ই ভাজ (২২শে আগষ্ট): শিক্ত: আসামের রাজ্যপাল সৈরত্ব কজল আলির (৭৩) প্রলোকগমন।

পশ্চিমবন্ধ সরকাবের কলিকাতা ও সহরতলীর প্রায় ৩০ হাজার কর্মচারীর বিভিন্ন দাবী দাওয়া পুরণের দাবীতে মুখ্যমন্ত্রী ডা: বিধানচন্দ্র রারের বাস ভবনের সম্মুখে বিক্লোভ।

৬ই ভাল (২৩শে আগষ্ট): মুসৌ গীতে দালাই লামার বিবৃতি— ভিৰুতের সংগ্রামে এ ধাবং ৮০ হাজার লোক নিহত।

৭ই ভাজ (১৪শে আগও): পে-কমিশন কর্ত্ত্ত কেন্দ্রীর সরকারের নিকট উাহাদের রিপোট পেশ— অবসর প্রভবের বয়স ৫৫ বংসরের স্থলে ৫৮ বংসর ধার্ব্যের স্থপারিশ।

দক্ষিণ আফিকা বসবাসকারী ভারতীয়দেব দাহিও দক্ষিণ আফ্রিকান স্বকারের—লোকসভার প্রধানমন্ত্রী শ্রীনেহক্তর ঘোষণা।

৮ই ভাল (২৫শে আগষ্ট): থাক্ত-আন্দোলনের ৬র্র দিবসে হাওড়া, আমতা, শ্রীরামপুর প্রভৃতি অঞ্চে থাক্ত-আন্দোলনকারীদের উপর পুলিসের লাঠি চালনা।

১ই ভার (২৬শে আগষ্ট): চীনা সৈরুবাহিনী কর্ত্ত ভারতীয় সীমানা লজ্জন ও নেকার (উত্তর পূর্ম সীমান্ত একেন্সী) থাম্পাদের সহিত ভূম্প সংক্ষর্থের সংবাদ।

১০ই ভাজ (২৭শে আগষ্ঠ) : পশ্চিমবঙ্গের থাকাবস্থা পর্ব্যালোচনার জন্ত ১২ জন কংগ্রেসী পার্লামেন্টারী সদক্ষের কলিকাতা উপস্থিতি এবং রাইটার্স বিভিংস-এ মুখ্যমন্ত্রী ভাঃ বিধানচন্দ্র বার ও থাক্তমন্ত্রী প্রীপ্রফুল্লকন্দ্র সেনের সহিত আলোচনা :

১১ই ভাজ (২৮শে আগষ্ট): লোকসভার জ্রীনেহকর বোষণা—
ভারতের নেকা অঞ্চলে রক্ষী ঘাঁটিভে চীনা ফোঁজের হামলা ও প্রবল
ভূলীবর্ণশ—লাভাকে সীমান্ত লক্ষন করিয়া চীনালের ঘাঁটি নাপ্ত :

নিবর্তনমূপক আটক আইনে কাউজিসার প্রেপ্তাবের প্রান্তবাদে ইউ, সি, সি, কাউজিসারদের একবোগে কর্পোবেশন সভা ভ্যাগ।

১২ই ভাত (২১শে আগষ্ট): ভারত্বসভা (কলিকাতা) হলে অনুষ্ঠিত ইবাইনজীবী ও শিক্ষাবিদ্দের সভার পশ্চিমবন্ধ সরকারের দমননীতি ও জনস্বার্থ-বিষোধী থাজনীতির প্রান্তিবাদ—সভার অভিমত বে, ভার্য দাবীর জন্ত শান্তিপূর্ণ আন্দোলনের অধিকার আইনসন্ধত ও সংবিধানসন্মত।

১৩ই ভাদ (৩০শে আগঠ): তিকাতের প্রশ্ন রাষ্ট্রসংঘ উপাপনের সিদ্ধান্ত সম্পর্কে দিল্লীতে দালাই লামার ঘোষণা।

১৪ই ভাদ্র (৩১শে আগষ্ট): থাজের দাবীতে বাইটার্স বিভিন্ন অভিযানকারী গণ-মিছিলের উপর পুলিসের বেপ:রারা লাঠিচার্ক ও কাঁহনে গ্যাস প্ররোগ—পাঁচ শভাবিক লোক আহত ও १০ জন প্রোপার।

১৫ই ভাদ্র (১লা সেপ্টেম্বর): থান্ত আন্দোলন প্রসঙ্গে কলিকাভার পুলিসের গুলীবর্ষণে ৭ জন নিহত ও ৬৫ জন আহত।

পাৰস্পাৰিক আলোচনা মার্ড্ড পাক্-ভারত অমীমাংসিত প্রশ্নসমূহের মীমাংসা প্রভাবে মতৈক্য—প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহক (ভারত) ও জেনারেল আয়ুব থানের (পাকিস্তান) বৈঠকান্তে যক্ত ইন্তাহাব।

১৬ই ভার (২০শে সেন্টেবর): থাত আন্দোলনের জেব—
প্লিসের গুলীবর্গণে কলিকাভার পুনরার ৪০ জন আহত—করেকটি
থানা আক্রান্ত।

প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহরুর অন্থ্রোধে ভারতীর সৈক্তবাহিনীর অধিনারক জেনারেল থিমায়ার উপস্থাপিত পদত্যাগপত্র প্রত্যাহার।

১৭ই ভাদ (৩বা সেপ্টেম্বর): পুলিসের সহিত বিকৃত্ব জনতার সংসাম ফলিকাতা ও হাওড়ার ১৫ ব্যক্তি নিহত—হাওড়ার হারামা (থাকু খান্দোলন সংক্রাস্ক) দমনে মিলিটারী তলব।

ন্লাবৃদ্ধি ও হাজিক প্রতিরোধ কমিটির আহ্বানে পশ্চিম বন্ধ সরকারের অগণতান্ত্রিক খাগ্রনীতি ও পুলিসের গুলীবর্ষণের প্রতিবাদ-স্বন্ধপ কলিকাতা-সহ সারা পশ্চিমবন্ধে পূর্ণ হরতাল পালিত।

দিলীতে রাষ্ট্রপতি ডা: রাজেন্দ্র প্রসাদ, প্রধান মন্ত্রী জ্রীনেহর ও দেশবকা সচিব জ্রীকৃষ্ণ মেননের সহিত দালাইলামার (তিব্বত) দীয় বৈঠক।

১৮ই ভাদ্র (৪১। সেপ্টেম্বর): ৪ দিন হাঙ্গামা ও বিপর্যান্ত অবস্থা চলার পর কলিকাতা মহানগরীতে স্বাভাবিক জীবনবাত্রা চালু।

১৯শে ভাদ্র (৫ই সেপ্টেম্বর): ভারত-চীন সীমান্তে পুনরার সংঘর্ষ- ৭জন চীনা ও একজন ভারতীয় নিহত হওরার সংবাদ।

২০শে ভাদ (৬ই সেপ্টেম্বর): ভৃতীয় পঞ্চবার্থিক পরিকল্পনার লক্ষ্য সমাজতান্ত্রিক সমাজ গঠন—কংগ্রেস পরিকল্পনা সাব্-ক্ষিটিব চারদকা স্থপারিশ সম্বলিত রিপোর্ট প্রকাশ।

২১শে ভাত (१ই সেপ্টেম্বর): প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহর কর্ত্ব চীন-ভারত সীমান্ত বিরোধ প্রসঙ্গে পার্লামেণ্টে ১২২ পৃষ্ঠা ব্যাপী শ্বেতপত্র পেশ।

২২শে ভাক্স (৮ই সেপ্টেম্বর): নরাদিরীতে প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহকর সহিত লাওসের পররাষ্ট্র সচিব মি: থামদাল মজের সাক্ষাৎকার ও লাওস পরিশ্বিতি সম্পর্কে আলোচনা।

ৰাত আন্দোলন ব্যাপাৰে আপোৰের চেষ্টার পশ্চিম বঙ্গের কথাকাট চোট বিভাগনামান সামান্য মানিয়া শ্রীক্ষাকাশ বিভাগ

माँउ अर्थात बाधार

দেখুন পিরামীড ব্র্যাণ্ড গ্লিসারীন্ কেমন করে দাঁত ওঠা সহজ করে তোলে।



দ্ধিত ওঠার সমস্যা ? মাড়ীর বাথা ? একটা নরম কাপড়ে আপনার আঙ্গুল অভিনয় পিরামীত প্লিনারীনে একটু আঙ্গুলটা ডুবিরে নিন তারপর আন্তে আন্তে পিশ্ব মাড়ীতে মালিশ করে দিন এবং তাড়াতাড়ী বাথা কমে যাবে আর এর মিষ্ট ও জ্বান শিক্তদের প্রিয় এটা বিশ্বর এবং গৃহক্ষে, ওম্ব ভিসাবে, প্যাবনে ও নানারকম ভাবে সারা বছরই কাজে লাগে— আপনার হাডের কাছেই একটা বোভন রাপুন।

ডিট্রিবিউটারসঃ জাই. সি. জাই. (আই) প্রাইভেট লিঃ কলিকাতা, বোবাই, দিল্লী, মাল্লাজ

ও শ্রীব্দরবিক ঘোষাল-এই তিনক্ষন ঘামপন্থী পার্লামেট সদজ্ঞের বৈঠক।

২৩শে ভাক্স (১ই সেপ্টেম্বর): স্বাভীয় স্বায়বৃদ্ধির দিক হুইতে দ্বিতীয় পঞ্চ বার্ষিক পরিকল্পনা ব্যর্শতার পর্যাবসিত—ভারতীর বিজ্ঞার্ভ ব্যান্ধের রিপোর্টে তথ্য প্রকাশ।

২৪শে ভাদ (১•ই সেপ্টেম্বর : ম্যাকমোহন লাইনই চীন-ভারত সীমারেখা—এই দাবীর ভিত্তিতে চীনের নিকট ভারতের জার এক দফা কভা নোট প্রে-ণ।

কলিকাতা ও পার্যবর্তী অঞ্চল ত্ইতে খাল আন্দোলন প্রসঙ্গে বলবং ১৪৪ ধারা প্রত্যাহার।

২৫শে ভারা (১১ই সেপ্টেশ্বর): পশ্চিমবঙ্গের বর্ত্তথান বর্বের অভিবিক্ত থাঞ্জশন্তের চাহিলা কেন্দ্র পুরণ করিবে—নব নিযুক্ত কেন্দ্রীর থাজ সচিব 🕮 এস কে পাভিলের ঘোষণা।

২৬শে ভাল (১২ই সেপ্টেম্বর): খাল আন্দোলন প্রসঞ্জ কলিকাতা ও চাওড়ার বৃত বন্দীদের মধ্যে ম্লাবৃদ্ধি ও হাতিক প্রতিবোধ কমিটিব সভাপতি জ্ঞীত্মন্তকুমার বস্ত প্রমুগ ৫৭ জনের (১৬ জন বিধান সভা সদত্য) মুক্তিলাভ।

২৭শে ভাল (১৩ই সেপ্টেম্বর): থাক্ত আন্দোলনে নিহ্ত শহীদদের শুতি শ্রদ্ধার নিদর্শন স্বরূপ মূল্য বৃদ্ধি ও ছুভিক্ষ প্রভিরোধ ক্মিটির উল্লোগে ক্লিকাভায় বিবাট নৌন শোক-মিছিল।

২৮শে ভাক্র (১৪ই সেপ্টেম্বর): ক্রমাগত সপ্তাহকাল প্রবন্ধ ধর্ষণের ফলে বৃহত্তর কলিকাভার ২৫ বর্গমাইল অঞ্চল (বহু উদ্বাস্ত কলোনা)জলমগ্ন ও জনগণের অপরিসীম হঃব হুর্দশা।

৩০শে ভাদ (১৬ই সেপ্টেখব): মৃল্য বৃদ্ধি ও হুভিক্ষ প্রভিরোধ কমিটির থাঞ্চ আন্দোলনের সময় হাওড়ায় পুলিসের সাম্প্রতিক ●লীবর্ধণ সম্পর্কে শাসন বিভাগীয় তদন্তের ব্যবস্থা।

৩১শে ভাদ (১৭ই সেন্টেম্বর): পশ্চিমবঙ্গ সরকারের বিরুদ্ধে কমুনিষ্ট পার্টির পশ্চিমবঙ্গ শাথা রাষ্ট্রপতির নিকট যে অভিযোগ পেশ করে, রাজ্য সরকারে কর্তৃক উহার জবাব দান। জবাবে ক্যুনিষ্টদের সকল অভিযোগ অধীকার ও ক্যুনিষ্ট পার্টির বিরুদ্ধে পান্টা অভিযোগ।

व शिप नीय :--

১লা ভাদ (১৮ই আগষ্ট): আণবিক পরীক্ষা বন্ধের প্রশ্নটি দ্বাষ্ট্রসংঘে আলোচনার্থ রাষ্ট্রসংঘের সেক্রেটারী-জেনারেল দাগ স্থামারস্ক-জোন্ডের নিকট ভারতের প্রস্তাব।

তরা ভাদ (২০শে আগষ্ট): জেনেভা ত্রিশক্তি আগবিক সম্মেলনে রুশিয়ার ঘোষণা—গোপন অন্ত পরীকা সম্পর্কে সন্দেহজনক ছান পর্য্যবেক্ষণ চালনার পশ্চিমী প্রস্তাব নীতিগভাবে মানিয়া লইতে সে প্রস্তাত।

৫ই ভাজ (২২শে আগষ্ট): মাকিন প্রেসিডেট আইসেন-ছাওয়ারের স্বাক্ষর ক্রমে হাওয়াই দীপপুঞ্জ মার্কিন যুক্তরাষ্ট্রের ৫০তম অক্সমাজ্যে পরিণত।

৬ই তার (২৩শে আগষ্ট): লাওদের রাজধানী লুয়াংপ্রবাং-এর ে মাইল মধ্যে বিজোহীদের সশস্ত্র অভিযান।

১ই ভার (২৬শে আগঠ): ইউরোপীর রাজধানীগুলি সক্রের কাষম পর্যারে মার্কিশ ক্রেসিডেণ্ট আইসেনছাওয়ারের বন (পশ্চিম আর্থানী) উপস্থিতি। ১-ই ভাত (২৭শে আগষ্ঠ): ছই কার্মানীর মব্যে শান্তিচ্জি অমুঠানের ব্যাকুলভার পশ্চিম কার্মাণ চান্তেলার ডাঃ কোনারদ আদেমুয়েবের নিকট রুশ প্রধান মন্ত্রী মঃ ক্রুশ্চেভের পত্র।

১২ই ভাত (২১ শে আগষ্ঠ): ভারত-চীন সীমান্ত সংঘর্ব সম্পর্কে বিবের বিভিন্ন দেশে প্রতিক্রিয়া—বাকিংহামসায়ারে বুটিশ প্রধান মন্ত্রী মি: হারত ম্যাকমিলন ও পরবাষ্ট্র সচিব মি: সেলুইন লয়েডের মধ্যে করুৱী আলোচনা।

১৪ই ভাল (৩১শে আগষ্ট): লগুনে প্রধান মন্ত্রী মি: ছাবত ম্যাকমিলানের (বুটেন) সহিত সকরকারী মার্কিণ প্রেসিডেট আইসেনহাওরাবের গুরুত্বপূর্ণ দাক্ষাৎকার।

১৬ই ভাছ (২বা সেপ্টেম্বৰ): চীনভারতীর সীমান্ত লজ্মন করে নাই—চীনা প্রভাষ্ট্র সচিব মার্শাল চেন ইরাই'র ঘোরণা।

ঢাকা হইতে পাক্ প্রেসিডেট জেনারেল আয়ুব থানের ঘোষণা— পাকিস্থানে নৃতন ধাঁচের গণভন্ন প্রবর্তনের আয়োজন করা ইইয়াছে।

১৮ই ভাল (৪ঠা দেপ্টেম্বর): চীন কর্ত্ত ভারতের সীমান্ত লক্ষনের অভিযোগ অস্বাকাব—পাল মেণ্টে প্রধানমন্ত্রী ঐীনেহরুর বোবণা।

অবিলবে লাওসে রাষ্ট্রদংখ বাহিনী প্রেরণের জ্বন্ত লাও সরকারের অনুরোধ—উত্তর ভিরেৎনামের বিরুদ্ধে আক্রমণের অভিযোগ।

২০শে ভার (৬ই সেপ্টেম্বর): লাওস পরিস্থিতি প্রসংস রাষ্ট্রসংঘে নিরাপত্তা পরিষদের জন্মনী অধিবেশন ক্ষমা!

২২:শ ভার (৮ই সেপ্টেম্বর): লাওসের পরিস্থিতি সম্পর্কে তদক্তের জন্ম রাষ্ট্রসংঘ নিরাপন্তা পরিষদ কর্তৃক জাপান, ইতালী, তিউনিসিয়া ও আর্জ্রোন্টিনা—এই চার সদত্ম লইয়া ক্মিটি গঠন।

: ৩শে ভাদ্র (১ই সেপ্টেম্বর): জ্রীনেহরুর নিকট চৌ এন্ লাই এর (চীন প্রধানমন্ত্রী) পদ্ধ—বন্ধুম্পূর্ণ আলোচনার মাধ্যমে চীন-ভারতা সীমান্ত বিরোধের মীমাংসা করা হউক।

২৪শে ভাক্র (১০ই সেপ্টেম্বর): তিব্বত প্রশ্নে আও হস্তক্ষেপের জন্ম শালাইলামা কর্তৃক আনুষ্ঠানিকভাবে রাষ্ট্রসংবের নিকট আবেদন পেশ।

২৫শে ভাল (১১ই কেপ্টেম্বর): চীনা পার্লামেটে প্রধানমন্ত্রী চৌ-এন্-লাই-এর ঘোষণা—পঞ্জীলের (সহ-অবস্থানমূলক) ভিত্তিতে চীন-ভাবত সীমাক্ত বিবোধের মীমাংসা হইবে।

২৬শে ভান্ত (১২ই সেপে স্বর) : সোভিয়েট ইউনিয়ন ৰুপ্ত্ৰক সাফল্যের সৃহিত চন্দ্রাভিমুৰে মহাজাগত্তিক রুকেট (লুনিক-২) উৎক্ষেপণ।

২৭শে ভাজ (১৩ই সেপ্টেম্বর): রুশ বকেট সুনিক-২
পৃথিৰীপৃষ্ঠ হইছে উৎক্ষিপ্ত হওয়ার ৩৪ ঘণ্টা পরই চন্দ্রলোকে
উপনীক—সোভিয়েট বিজ্ঞানীৰেব ঘোষণা।

২৮শে ভাদ্র (১৪ই সেপ্টেম্বর): প্রধানমন্ত্রী ঞ্জীনেহরুর (ভারত) চারদিবসব্যাপী আফগানিস্থান সফর স্কন্ধ।

২১শে ভান্ত (১৫ই সেপ্টেম্বর): আমেরিকার ১৩দিন ব্যাপী ঐতিহাসিক সফরে রুশ প্রধানমন্ত্রী ম: নিকিডা ক্রুন্চেভের ওরাশিটেন উপস্থিতি।

৩১শে ভাক্স (১৭ই সেপ্টেবর): মার্কিণ প্রেসিডেট আইসেনহাওরারের সহিত প্রোথমিক বৈঠকান্তে এক সরকারী ভোকসভার সোভিরেট প্রধানমন্ত্রী কুন্চেভের বোষণা—'ঠাণ্ডা সড়াই-এর গ্যাবদাপ' ভোকিতে সক্ষ করিবানে।

कि विश्वीनान ठक्ववर्षी

প্রস্থাবলী

রবাজ্যনাথ বজেন—"আধুনিক বন্ধসাহিত্যে গ্রেমের সন্ধীত।
এরপ সহস্রধারে উৎসর মত কোখাও প্রোৎসারিত হয় নাই।
এরন স্থার তাবের আবেগ, কথার সহিত এমন স্থরের মিশ্রণ
আর কোখাও পাওরা যাম না।"

ৰাঙ্গালার নৰ গীতিকবিতার এই প্ৰাৰম্ভক, রবীক্তনাৰ, অব্দয় বড়াল, রাজক্ত্বক রায় প্রভৃতির এই কাব্যাঞ্চক শ্ববি কবি বিহারালাল চক্রবর্জার রচনার সমাবেশ।

কৰির জীবনী,স্থবিশ্বত সমালোচমা সহ স্বৃহৎ প্রশ্ মত্য তিম টাকা

বস্থমভার শ্রেষ্ঠ অবদান

भिल्छान्एम् अञ्चाननी

প্রখ্যাত কথাশিন্নী শৈলজালন্দ মুখোপাধ্যায় প্রণীত

শ্নির্বাচিত এই ৭খানি গ্রন্থের মণিমাপিক্য ১। খরজোতা, ২। রার-চৌধুরা, ৩। ছারাছবি, ৪। সতীন কাঁটা বা গঞ্জা-ষমূলা, ৫। অক্লণোদ্য়, ৬। ধ্বংসপথের যাত্রী এরা এবং ৭। কর্মলা কুঠি। রবাল ৮ পেজী, ৩২৮ প্রচার বৃহৎ গ্রন্থ।

बूबा भारक जिस केका

রোমাঞ্ উপক্রানের যাত্ত্বর

मीलिक कुमान बारसन श्राचनी

ইংাতে আছে ৫ খানি পুরুহৎ ভিটেকটিও উপস্থাস বন্দিনী রন্ধিনী, মুক্ত করেদীর শুগুকথা, কুডান্তের দপ্তর, টাকের উপর টেকা, খরের টেকী। মুল্য ৩॥০ টাকা

উপস্থাস-সাহিত্যের যাত্বকর

णइनिम पर्छइ श्रायनी

বামূন বাগ্দী, রক্তের টান, পিপাসা, প্রণন্ন প্রতিমা, কামিখ্যের ঠাকুর (বোঝাপড়া),বন্ধন, মাতৃঋণ প্রাভৃতি। শুল্য ভিম টাকা মাত্র জনতার দরদী নিপুণ কথাশিল্পী মানিক বজ্যোপাধ্যা

মানিক গ্রন্থাবলী

প্রথম ভাগ

ইহাতে আছে তুইটি শ্রেষ্ঠ উপস্থাস এবং পঁচিশটি স্থনির্বাচিত গল্পরাজি। মূল্য সূহী টাকা।

দ্বিভীয় ভাগ

ইংতি আছে ছুইটি সুখপাঠ্য উপস্থাস এবং ব**হুপ্রশংসিত** চৌন্দটি গল্প। **মূল্য তুই টাকা।**

প্রখ্যাত কথাশিল্পী শ্রীরামপদ মুখোপাধ্যায় প্রনীত

রামপদ গ্রন্থাবলী

-নিম গ্রন্থগুলি সন্নিবিষ্ট—
১। শাখত পিপাসা, ২। প্রেম ও পৃথিবী,
৩। মায়াজাল, ৪। অন্যনার মৃত্যু, ৫। সংশোধন,
৬। কড, ৭। প্রতিবিশ্ব, ৮। জোয়ার ভাটা,
১। মৃতন জগতে ও ১০। ভয়।
ামাল ৮ পেলা ৩৯২ পৃঠার অনুহৎ গ্রহাবলী
মৃত্যু তিন টাকা

কণা ও কাহিনীর যাত্ত্বর প্রেমেন্স মিত্তের

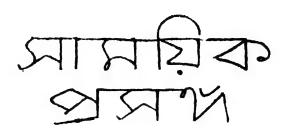
প্রেমেন্দ্র-গ্রন্থাবলী

— এছাবলীতে সন্নিবেশিত —
মিছিল, প্রতিশোধ, পরোপকার, একটি কড়া
টোষ্ট, নিক্লদ্ধেশ, পান্ধশালা, নহামগর, অরণ্যপথ
ছল জ্ব্য, নতুন বাসা, বৃষ্টি, নির্জ্জনবাস, হোট গলে
রবীজ্ঞনাথ (প্রবন্ধ), জর্জিয়ান কবিতা (প্রবন্ধ)।
মূল্য আড়াই টাকা

विष्ठं कथानिको शिक्षभागेन श्रदश्चन

জগদীশ গুপ্তের গ্রহাবলী

লম্ভর (উপভাগ), রতি ও বিরতি (উপভাগ), অসাধু সিভার্থ (উপভাগ), রোমন্থন (উপভাগ), ছুলালের দোলা (উপভাগ), নন্ধা ও কুন্ধা (উপভাগ), গতিহারা আফ্রবা (উপভাগ), বথাক্রেবে (উপভাগ), দ্য়ানন্দ মল্লিক ও মল্লিকা, অভিনা, শরৎচক্রের শেষের পরিচয় মূল্য ভিম টাকা



দেশপ্রেম

কংগ্রেদ সভানেত্রী শ্রীমতী ইন্দিরা গান্ধী নিখিল ভারত কংগ্রেদ কমিটার বৈঠকে দকলকে বুঝাইবার চেষ্ঠা করিয়াছেন বে, কংগ্রেদ আদর্শের মুল ভিত্তি বরাবনট ভাতীয়ভাবাদ এবং এই লক্ষ্য হইছে কোনদিনই কংগ্রেদ বিচাতে ১ইতে পাবে না। এীমতী ইন্দিরার এই বক্তৃষ্কা পাঠ করিয়া আর কিছু না হউক তাঁহার ত্বঃসাহসের প্রশংসা করিতেই হয়। ইতিহাস বিকৃত করিতে হইলে সাহসের চেয়ে ত্:দাহসের আবোজন বেশি। কংগ্রেস সভানেত্রীর সেই ছঃসাহস ইদানীং খুবই **দেখিতে পা**ওয়া যাইতেছে। অথণ্ড ভারতকে সাম্প্রদায়িক ভিত্তিতে ছই টুকৰা কৰিবা। প্ৰও নিজেদের জাতীয়তাবাদী বলিয়া প্রিচয় দিতে বে কংগ্রেদ সভানেত্রী সাহস করিয়াছেন—ইহাও কম কথা নর। কিন্তু ছংসাহস দেখাইয়াও কি দেশের লোকের ঢোগে ধূলি নিক্ষেপ করিতে चिनि गक्कम इंटेरवन । कः रश्चरत्रत्र चानर नेत्र भरत्र चात्र वाहारे थाक, জাতীয়তাবাদ কোনদিন ছিল না—ছিল মুসলিম লীগোর কায় চরম সাম্প্রদায়িক প্রতিষ্ঠানকে তোবণ করার আদি এবং অকুত্রিম চেষ্টা। সেই প্রচেষ্টার ফলেই ধে শেষ অবধি ভারত বিভক্ত চইয়াছে, একথা স্বরং মৌলানা আজাদও 'আজুজীবনী'তে স্বীকার করিয়া গিয়াছেন। ইদানীং কংগ্রেস নেভারা অক্তান্ত বিসোধী দলদের দেশপ্রেমের প্রমাণ উপস্থিত করার জন্ম দাবী জানাইয়া বেড়াইতেছেন। কিন্তু গাঁহার। প্রায় অর্দ্ধেক ভারতবর্ষ ক্ষমতার লোভে বিদেশীদের হাতে তুলিয়া দিয়াছেন, সেই কংগ্রেদ নায়কদের দেশপ্রেমিকভার প্রমাণ কি সর্ব্ব-প্ৰথম পাওয়া দৰকাৰ নয় ?" —দৈনিক বন্তমতী।

ভারত-চীন

"ভারত-চীন সীমাস্ত-বিরোধ লইয়া আলাপ-আলোচনার যে প্রস্তাব উঠিয়াছে সে সম্পর্কে ষথেষ্ট সাবধান থাকিবার প্রয়োজন আছে। আপাতত চীম সরকার ভারতভূমিতে সামরিক অভিযান চালানো হইতে বিরত থাকিতে পারেন। পিকিং হইতে লাসা পৰ্যন্ত বেলপথ নিৰ্মাণে এবং লাদা হইতে ভাৰত সীমান্ত পৰ্যন্ত **সৈত্রচলাচলের** উপ**ৰুক্ত সড়ক ডিয়ারী ক**হিতে চীন সরকারের **আ**রও ছই-এক বংসর সময় লাগিবে। এই সময়ের মধ্যে ভারভের উত্তর **সীমান্ত অঞ্চল সম্পূর্ণ স্থরক্ষিত করিবার ব্যবস্থা হওয়া প্রয়োজন।** তাহা ছাড়া চীনা সৈত্তৰাহিনী ভারতভূমির যে সমস্ত জারগা অভাছতাবে দখল কবিয়াছে সেওলি পুনক্ষার করা না গেলে পিকিং সর্কাল্যর সহিত আলাপ-আলোচনা নির্থক প্রধানমন্ত্রী নেচকুকে লিখিত পত্রে গ্রীচো এন লাই জানাইয়াছিলেন, আলাপ আলোচনার नमग्र "हिए विद्या" वच्चात्र वांशा नक्ष छ। ইহার वार्थ মোটেই जुल्लाहे নর। ভারতভূমির যে সকল জারগা বলপূর্বক দখল করা ইইরাছে নেওলি হইতে চীনা সৈভগণ বিদায় না লইলে "স্থিতাবস্থা"র

নিবিল-ভারত-কংগ্রেদ-কমিটি-গৃহীত প্রস্তাবে বলা ইইয়াছে বে, ভারতীয় এলাকায় চীনের অনাধিকার প্রবেশ অবশ্র প্রতিষোধ করিতে ছইবে (must be resisted) ইহা ভাল কথা। ক্লিপ্ত কেলামাগাঙলি চীন সরকার দথল করিয়াছেন সেগুলি উদ্ধারের জ্ঞাকী ব্যবস্থা হইতেছে? নিথিল-ভারত-কংগ্রেদ-কমিটির প্রস্তাব গৃহীত হইবার পর প্রীনেহর কিছুটা স্থর চড়াইয়া বলিয়াছেন, "দরকার হইলে, সংগ্রাম করিতেই হইবে।" অতঃপর প্রধানমন্ত্রা নহরু কবে কথন এবং কী অবস্থায় দরকারটা মথোচিত দৃঢ়ভাব সহিত উপলব্ধি করিবেন তাহা জানিবার জন্ত দেশবাসী উৎস্কর রহিল।"

কুজ শিল্পের সমস্তা

"দেশের বিভিন্ন স্থানে ১২০টির বেশী ক্ষুদ্রশিল্প সমিতিব প্রতিনিধিগণ দিল্লীতে সমবেত হইয়া সর্ব ভারতীয় ক্ষুদ্রশিল্প সঙ্গ গঠন করিয়াছেন। ইহার ফলে ছোট ছোট শিল্লের সাংগঠনিক তুর্বলভাজনিত **জটিল উপদর্গের প্র**তিকার সম্ভব হুইতে পারে। এখন সংগঠনেব যুগ. কথায় বলে দশের লাঠি একের বোঝা। ছোট ছোট শিল্প নেশের বিভিন্ন স্থানে বিক্ষিপ্ত; যন্ত্রসক্ষায় ও অর্থসঙ্গতিতে নিতাম্ব ত্বল, যথাসম্ভব সন্তা দরে কাঁচামাল ক্রয়ের, তৈয়ারী মাল বিভয় করিয়া ক্যায়াদর পাওয়ার এবং প্রয়োজন অনুসারে দাদন বা ঋণ **জোগাড় করার উপযুক্ত ব্যবস্থাদি করা ইহাদের পক্ষে সম্ভব** হয় না। আকারে এবং এখর্মে নগণ্য বলিয়া সরকারের নিকট আবেদন জানাইয়া ভাষ্য ব্যবহারও ইহার। অনেক সময় পায় না। স্বকাবের পক্ষেত্ত অবশ্য হাজার হাজার ছোট ছোট শিল্পকারবাবের বক্তব্য আলাদাভাবে বিবেচনা করা অস্থবিধাক্ষনক। এই কারণেই সমস্বার্থবান বিভিন্ন প্রতিষ্ঠান কর্তৃক সমিতি বা সভব গঠন করা প্রয়োজন। সাধারণত:, শ্রেণীস্বার্থসংশ্লিষ্ট সংখ্যাগুলি সমাজের বুহওর স্বার্থ অপেকা সঙ্কার্ণ শ্রেণীস্বার্থ প্রসাবের জন্মই চেষ্ট করিয়া থাকে। আলোচ্য কুন্ত্র শিল্পসভেষর সভ্যগণ মধ্যবিত্ত পর্যায়ভূক্ত। তাঁহাদের নিকট দৃষ্টিভঙ্গীর ব্যতিক্রম আশা করিতেছি। জনসাধারণের বৃহত্ত^র স্বার্থের প্রতি দৃষ্টি রাখিয়া কার্যপদ্ধতি ও দাবী-দাওয়া স্থির ৰুরিলে তাঁহারা সৰ মহলেরই সহামুভৃতি ও সমর্থনলাভ করিতে —যুগান্তর। পারিবেন।"

বিধানসভায় জুভা

পশ্চিমবন্ধ বিধানসভায় কালীপদ মুখাজ্জির প্রতি জুতা নিশিব্দ হইয়াছে, তিনিও সেই জুতা ছুঁড়িয়া ফেরৎ দিয়াছেন। ইহার প জারও কিছু জুতা উভয় পক্ষে নিশ্বিপ্ত হইয়াছে। তাঃ রায় বীরেব ভার আগেই পদারন করিয়াছিলেন। এই জুতা ছেঁড়ার ব্যাপারে

আমরা আবারও বলিব—এরপ ঘটনা ঘটিতেছে কেন এবং তার জন্ম দায়ী কে ? আজ জুতা নিক্ষিপ্ত হইয়াছে, কাল বোমা নিক্ষেপ হইবে না ইহার গাারাণ্টি কোথায় ? আমরা দিবা চক্ষে দেখিতেছি বিধান সরকার বাঙ্গলাদেশকে সেই পথেই ঠেলিয়া নিয়া চলিয়াছেন। থাক সম্বন্ধে বাঙ্গালীর অভিযোগ অত্যন্ত সঙ্গত এবং অত্যন্ত গুৰুত্ব অভিযোগ। শাস্ত এবং ভদ্র উপায়ে ইহার প্রতিকার ইইতেছে না, প্রতিকারের সম্ভাবনাও দেখা যাইতেছে না। সোকে যথন গাওয়ার কষ্ট পায় এবং অপুমানিত হয় তথন তাহার। মরিয়া হইয়া ওঠে। পাজের দারী উপেক্ষিত হট্যা যথন তার উপর অপমান ও লাঞ্চনা আসে তথন এই অবস্থা ঘটিতে বাধ্য। ফরাসী এবং জাপানী পার্সামেন্টে এর চেয়ে বেশী খারাপ অবস্থা হইয়াছে। ডাঃ রায় তাঁর ঘরে ৰসিয়া সমস্ত ব্যাপার গুনিতেছিলেন। তিনি যদি তথনই সভাককে আসিতেন এবং বলিতেন — কামি এর জন্ম দায়ী এস, জুতা মারিতে হয় আমাকে মারো, তাহা চইলেও মনুযাথের পরিচয় দেওয়া হইত। সমস্ত তুকার্য্যের প্রকৃত নাধক তিনি, তাঁর উপযুক্ত সাকরেদ জুটিয়াছে ছুইটি – প্রফুল্ল সেন আর কালীপদ মুথাৰ্জ্জি। তৃদ্ধাৰ্য্যের সথ আছে, কিন্তু দায়িত্ব নেওয়ার সাহস নাই—ইহা দেখাইয়া বিধান রায় দেদিন প্রমাণ করিয়াছেন তিনি —যগবাণী। চড়ান্ত কাপুরুষ।"

ভারত-চীন মৈত্রা

"মহাচীন স্বাধীন ভারতকে আক্রমণ করিতে পারে না*-* এই দুট্বিখাস সাম্রাজ্যবাদ্বিরোধী স্বাধীনতাপ্রিয় শ্রুতিটি মায়ুষের থাকা ^{টি}টিত বলিয়া আমরা মনে করি। আমাদের বৈদেশিক নীতির চিবশক্রগণট ভারত-চীন মৈত্রীর বিরুদ্ধে সর্বাধিক উগ্র প্রচারক। সাধাংণ মান্তবের জীবন জীবিকার প্রশ্ন হইতে তাঁহাদের খাষ্ট্র সরাইয়া লইবার উদ্দেশ্যে, গণতান্ত্রিক আন্দোলনকে বিচ্ছিন্ন করার উদ্দেশ্যে প্রতিক্রিয়াশীল শক্তিগুলিই স্থপরিকল্পিত ভাবে যুদ্ধের আবহাওয়া স্ষষ্টি করিতেছে। এই যুদ্ধ আবহাওয়া সৃষ্টির বিরুদ্ধে পণ্ডিত নেহৰুকেও সাবধান বাণী উচ্চারণ করিতে হইয়াছে। চীনের জাতীয় দিবসে আমাদের শপথ হইবে—সীমাস্ত বিরোধের সমস্তা শান্তিপূর্ণ আলাপ-আলোচনার মাধ্যমে স্থমীমাংসিত হওয়া চাই। ভারত-চীন মৈত্রী আমরা হুর্মল করিতে দিব না। সামাজ্যবাদী চক্রান্ত চর্ণ করিয়া ভারত চীন মৈত্রী সম্পর্ককে স্থান্ত করিবার জক্ত প্রাণপণ সংখাম করিতে হইবে। ভারত ও চীন উভয় দেশের **খার্থেই ই**হা প্রয়োজন। ভারতের শান্তি, স্বাধীনতা এবং সাধারণ মানুষের জাবন-জাবিকা ও গণতন্ত্রের জন্মই ইহার প্রয়োজনীয়তা। ভারত ও টানের অবিচ্ছেত সৌহার্ন্য দীর্ঘজীবী হোক।" —স্বাধীনতা।

নূতন ট্যাক্স ও পঞ্চায়েত কৰ্ম্মকৰ্ত্তা

"বিনপুর থানার পঞ্চায়েত নির্বাচনের মাদকতা ও তাগুবতা থামিবার সঙ্গে সঙ্গেই গ্রামবাসী এবং নির্বাচিত কর্মকর্তারা অন্ধকার দেখিতেছেন। পঞ্চায়েং আইনে যেত্রাবে ট্যান্ত্রের চাপ আসিতেছে, তাহাতে সকলে আতঞ্কিত। জমির ফসলের উপর কিজাবে আর ধার্য ইইবে—জমির হিসাব, এবং জমির আয়ের হিসাব কে করিবে? গ্রাম্য দসাদলির প্রকোপে নিরীহ গ্রামবাসীদের ঘাডে বে অক্সার চাল্ত্র

----- श्रांगरणाय प्रोटकंत लिथा

বাঙলা সাহিত্যে বিশ্বয়! কয়েক মাসের মধ্যেই প্রথম সংশ্বরণ নিঃশেষিত!

* यूठी यूठी क्यांगा *

মূল্য মাত্র আড়াই টাকা ভারতী লাইব্রেরী

৬, বন্ধিম চাটাজি খ্রীট, কলিকাতা

"'মুক্তাভন্ম' 'ৰাকাশ পাতাল' প্ৰভৃতি বিশেষ ধ্ৰণের পানকরেক উপকাস লিপে প্রাণডোব ঘটক সনাম অর্জন করেছেন। কিছ ছোটগল্পেও বে তাঁৰ হাত মিষ্টি, তাৰ প্ৰমাণ এই গল্পেৰ বই। বাসি ফুল, স্বৰ্গছাৰ, মুঠো মুঠো কৃষাশা, আলো আঁধানি, মেছমলার আর আশার আলো, এ চ'টি গর। প্রতিটি গরে ভির ভির পরিবেশ এবং তার মধ্যে বিভিন্ন চবিত্র। পরিবেশ আর চরিত্রের পুল সঙ্গতি সত্যিই উপভোগা। আবার প্রতিটি পলে বাল্লব e কল্পনার সংঘাত বেশ নিপুণভাবে চিত্রিত হয়েছে, বিশেষ করে বাসি ফুল', 'সর্গধার' এই ছটি গরে। আলো আধারিতে বে নির্ভুত পর্যবেক্ষণ ও বাস্তববোধ, তা ভীত্র ও সুক্ষ হয়ে ট্র্যাক্ষেডির রূপ নিরেছে 'আশাৰ আলো' নামক শেৰ গল্পে। আবাৰ 'মেখমলাৰে' <mark>বে স্থপ্ৰভঙ্গ</mark> ও মোহমুদ্ধি, 'মুঠা মুঠো কুয়াশা'র ভারই বিপরীত অর্থাৎ একটি অনবভা স্থারচনা। প্রাণভোষ ঘটক এই সেরা গলটিতে ভারুই এক চমৎকার আঞ্চিকের রণ-কৌশলের পরিচয় দেননি, কুয়াশাকে মিডিয়ুম করে একটি নতুন জেগে ওঠা মানর বিস্তাব ও সঙ্গোচ দেখিবেছেন, থ্ব গম্ভীরভাবে। পড়তে পড়তে মন এক স্মৃতি-বিস্মৃতি বাস্তব-অবাস্তবের ছায়ারাজ্যে গিয়ে পৌছয়। স্বপ্নকামনার গোপনতা হিমার্ভ ক্রাশার ভাবি পেলব, স্থন্ন এবং নিটোল এই ছোট গলটি। শেষের চার পাঁচ লাইনেই এর শিল্প-পরিচর। এথানেই এক জম্পন্ত মনোজগতের আসল চাবি 'মুঠো মুঠো কুয়াশা'র মধ্য দিয়ে হাতের मुक्तीत अप्त भवा किरवरक । - किम

---। লেখকের অন্যান্য গ্রন্থ॥-

আকাশ-পাতাল—(ছই খণ্ডে সমাপ্ত) ১ম পাঁচ টাকা। ২য় পাঁচ টাকা বারো আনা। ইণ্ডিয়ান এয়াসো-সিয়েটেড, কলিকাতা-৭। মুক্তাভস্ম—পাঁচ টাকা। বেঙ্গল পাবলিশার্স, কলিকাতা-১২। কলকাতার পথ-ঘাট—তিন টাকা। ইণ্ডিয়ান এয়াসোসিয়েটেড, কলিকাতা-৭। রত্মালা (সমার্থাভিধান)—আড়াই টাকা। ইণ্ডিয়ান এয়সোসিয়েটেড, কলিকাতা-৭। বাসকস্থিজকা—চার টাকা। মিত্র ও বোষ, কলিকাতা-১২। ধেলাঘর—চার টাকা। সাহিত্য ভবন, কলিকাতা-৭।

ধার্য হইবে ভাহার প্রভিকার কে করিবে ? গরুর গাড়ীর উপরেই বা কড ট্যাক্স বদিবে ? ইহা হইল গ্রামনাসীদের আন্তর্ধ। কর্ম-কর্ডারা ভাবিভেছেন আইন মানিয়া এই সমস্ত ট্যাক্স ক্রায়ভাবে ধার্য করিকেও অঞ্চলের প্রধান হইছে আব্স্ক করিয়া গ্রাম পঞ্চায়েতের সদস্তদের পর্যান্ত গ্রামে বাস করা কঠকর। মাহাই হউক নৃতন পঞ্চারেতের ট্যাক্সের হারও কিভাবে প্রয়োগ করা হইবে, সেই সম্পর্কে অনসাধারণের মধ্যে প্রচুর প্রচারের প্রয়োগকর হা আমানের মহকুমায় সাধারণ প্রামনাসীদের যা অবস্থা ভাতে যে কোন বিলয়নের জন্মই হউক নৃতন ট্যাক্সের বেশী বোঝা ভাহার। বহিতে প্রাবিধে না। এই বিবরে পঞ্চায়েতের কর্ম্মকর্ডারা সক্রান থাকিলে ভাগ হয়।"

---নিনীও (কাছলান)।

বিনা মূলো চিকিৎসা-প্রহরন।

"বিনা মূল্যে চিকিৎসার স্বয়েগ দেওয়ার নামে ভাগতে যে প্রহসন
চলিয়াছে ভাষা কোন স্বাধীন দেশের জনসাধারণ হুইটি শ্রেণা হুইলেও
পারে না। সরকারী কর্মচারী ও জনসাধারণ হুইটি শ্রেণা হুইলেও
জনকল্যাণ রাষ্ট্রের কার্য্যে সরকারী ছিমুগা নাটি থাকা বাজুনীয় নয়।
সরকারী কর্মচারীর বেলায় দামা ও ভাল ওগণ প্রের (যাহা হাসপাভাল
ছইতে সরবরাহ করা হয় না) ব্যয় সরকার ব্হন করিবেন আর
জনসাধারণের বেলায় এই স্ক্রোগ থাকিবে না ইছা অভ্যন্ত পরিভাপের
বিষয়। সরকার যথন এক শ্রেণীর রোগার ওয়ধপত্রের মূল্য বহন

বাসবী বস্তুর

ş

বন্ধনহীন গ্ৰন্থি

দাম ছ' টাকা মাত্র।

'বন্ধনহীন গ্ৰন্থি' একখানি খন পঠাৰ উপভাগ। কিন্তু এই উপভাস-থানির মধ্যে লেখিকা এমন একটি ঘটনার অবভারণা করেছেন বার : মধ্যে এডটুকু শিধিলতা ও শালীনভাব মভাব প্রকাশ পেলে বক্তবাটি সম্পূৰ্ণ ব্যৰ্থভায় পূৰ্ববসিত হ'ভ: সাহিৎ্যক্ষেত্ৰে একজন ন্বাগহা লেখিকার পক্ষে আশুর্যা স্থার লিখন শক্তির পরিচর পাঠকমাত্রকেই মুখ করবে। যে কাহিনীর তিনি অবভারণা করেছেন, সংসারে এমন কাহিনী বিবল সন্দেহ নেই, কিছ তা অনান্তবভ বে নয়, লেখার মাধুৰী দিয়ে, মমভা দিয়ে আৰু বক্তব্যের দৃঢ়তা দিয়ে তা প্রমাণ করে দিয়েছেন তিনি। এই প্রমাণের সাক্ষ্য নায়ক নাথিকা অলম ও ক্ৰিকার চৰিত্ৰ হ'টি অভাত জীবন্ধ হয়ে নিজেদের প্রতিষ্ঠা করেছে। এই আলম্ব ও কৰিক। স্বামী-স্ত্রী। দীর্ঘদিনে শান্তিপূর্ণ বিবাহিত জীবন যাপনের পর ছ'টি সম্ভানের মা কণিকা একদিন স্বামী অক্সরের কাছে প্রকাশ না করে পারে না, বিবাহ-পূর্য-কালে ভার অনিজ্ঞাকুত পদৰদনের কথা; ওরু পদৰ্গন নয়, তার এক মেগেমহাশ্রের প্রস্কাত জীবিত এক কভাব কথা। অক্সাং মর্মা তক এই কথা ভাজার স্বামী অন্ধরকে কি ভাবে বে আঘাত করে তা সহজেই অনুমের। ল্লী ক্ৰিকাও বে অবস্থার মধ্যে হ'টি সম্ভানের গর্ভধাবিণী হয়েও প্রাণব্রির স্বামীর কাছে এই স্বীকারোজি করতে বাধ্য হয় তা বেমন ওম্বপূর্ণ ও উত্তেজনামূলক, তেমনি হাদ্যম্পানী —বস্তমভী ১৮.১.৫৯ প্রকাশক: বলাকা প্রকাশনী, ২৭সি, আমহাষ্ট্র ট্রাট, কলি:-৯

করেন তাহা হইলে বৃথিতে ছইবে রোগ নিরাময়ের তাগিদে সরকারী অর্থ বায়ে ঔষধ পত্র থ রিদ করা সরকারের নীতি বহির্ভূত নম। তবে কেন জনসাধারণ এই সংবাগ পায় না? 'বিনা মূল্যে চিকিৎসার মধোগ' এই নীতিটি সম্পূর্ণরূপে প্রয়োগ না করা জনকল্যাণ বিরোধী বলিয়া আমরা মনে করি। পুনর্বার উল্লেখ করিতেছি হাসপাতালের আউটডোর ও ডিস্পোলারীতে সর্বপ্রকার ঔষধ সরবরাহ করা হইলেই 'বিনা মূল্যে চিকিৎসার' নীতিটি ব্থায়থরূপে পালন করা হইবে। আমরা ত্রিপুরা প্রশাসনকে এই ব্যাপারটি নিয়া কেন্দ্রীয় সরকারের নিকট আলোচনা করিতে প্রাম্শ দিতেছি।"

--- সেবক (আগরতলা)

'দর বাঁধা' না পরিহাস !!

"বীবভূমে তথা দেশে চিনি 'কন্ট্রোল' হইয়াছে অর্থাৎ ঠিক कन्ष्प्रील नग्र তবে দর বাধা হইয়াছে। সব দোকানেই দোকান-দাবের মুখের ভাবে ইহা গোপন থাকিতেছে না যে চিনি নাই কথালৈ ভাৰতা কাৰণ সব দোকানেই চিনি আছে, তাহারা সরকারী দর বাঁধাকে অপমান ক্রিবার বা ভাহাকে বুদ্ধাঙ্গুষ্ঠ দেখাইবার জন্তই ইছা করিতেছেন। এদিকে অনেকে আবার খরিন্ধারকে রাত্রে আধিতে বলিতেছেন। ইহা তথু বিশ্বয়দীপক নতে; উপরম্ভ ইহা আইন ও রাষ্ট্রনীতিকে কেয়ার না করার হুঃসাহস। এই হুঃসাহস দেখাইবার স্পদ্ধা আজ এইদব সমাজের কলম্বগণ পাইতেছে কোথায় ? <u>ইহাই ব্রুক্তাক্স।</u> ইহা ছাড়া, জনসাধারণের মধ্যে **অনেকে এথন**ও বলিতেছেন যে বেশ ১৯/• আনা সের যত থুসী **পাও**য়া **যাইতে**ছিল অনর্থক /১০ পরসা বাঁচাইবার অর্থহীন প্রেরণাবোগে মানুষকে একণে নাম্পেরাল করা হইতেছে। এখন সিভিল্সাপ্লাই অফিসে আবাব পার্রমিট এইসব ঝামেলা পোহাইতে হইবে। অর্থাৎ জনগণ এই দর বাঁধাকে সাপ্লাই অফিসে ধর্ণা দেবার পুন:ব্যবস্থা বলিয়া মনে করিতেছে। মাই হোক এখনই এ সখদ্ধে বিহিত ব্যবস্থা দ্রকার —সম্মুখে পূজা, এখন যদি চিনির বিভাট স্থক হয় তা ক**র্ত্তপক্ষকে** निभ्ठयहे मानव भवर्षना कानाहरव ना। त्कला ग्राबिरद्वेढे এक है अ বিষয়ে নজৰ দিন-আইনের মধ্যাদা যাতে সত্য সত্য বক্ষিত হয় তার ব্যবস্থা করুন।" —বীরভম বার্তা।

বফ্যার তাণ্ডব

তিপ্যুপরি কয়েকদিনের ক্রমাগত বৃষ্টির ফলে সহরের ক্ষেকটি অকল, বাঘনাপাড়া, ধাত্রীগ্রাম অপ্তথ্যিরা, পিণ্ডিরা, নান্দাই প্রভৃতি ইউনিয়ানগুলির কতকগুলি গ্রাম প্লাবিত হইয়াছে। জলে মাঠ, ঘাট সব একাকার হইয়াছে। পরিপক্ত অবস্থায় আইস ধান, আমন ধাত্রের চারাগাছগুলি জলের তলে পচিতেছে। এবারে মাঠ ভাত ক্ষল হইয়াছিল, ফলনও ছিল খুব সন্তোষজনক। চাইব মন আনন্দেনাচিয়া উঠিমাছিল। চাউলের দর প্রায় তিন চার টাকা পর্যান্ত নামিয়াছিল। কিন্তু অকমাৎ প্রাকৃতিক তুর্যোগে সব কিছু পশু হইয়াগেল। তুংখে চাবীরা এখন বুক চাপড়াইতেছে, গৃহহারারা কাঁদিতেছে, জনসাধারণের চক্ষে এখন হন্ডালা ও নৈরাগ্রের ছায়া। আমরা গিভ

২৫শে প্রাবণ) সম্পাদকীর নিবকে বক্সার আশ্বা প্রকাশ করিয়াছিলাম। তাহা সত্যে পরিণত হইয়াছে। এখন উপায় কি ? কর্ত্তরা কি ? অভিবৃষ্টি হইলেই ধদি বক্সা হয়, তাহা হইলে ডি, ডি সি, পরিকল্পনার একটি মুখা বিষয় দেশে বক্সা দিয়য়শ ব্যর্থতায় পর্ববসিত হইয়াছে বলিতে হইবে। এক গভীর নৈরাপ্রের মধ্যে জনসাধারণের মনে সংশয় জাগিতেছে বে সমস্ত জ্বকল কদাপি প্রাবিত হইতে না এখন বৃষ্টিব প্রকোপ একটু বেশী হইলে সে অঞ্চলগুলি কেন প্রাবিত হইতেছে ? প্লাবনের পর বিলিফ দান ও নানাবিধ ধরুরাতি সাহায়্য দানে মৃল রোগের উপশম হইবে না। উহা সাময়িক সাহায়্য দিতে সক্ষম। তিনা বিশ্বাকা ।

তুৰ্গাপুৰ ও স্থানীয় বেকাৰ

"দেশের সম্ভান, এই অঞ্চলের বাস্তচ্যত বাসিন্দার কাজ জোটে না। অজুহাত বহু। যেথানে ইচ্ছা নাই সেথানে অজুহাত স্টিতে বাধা জন্মে না। তাই এই শিল্পনগরীতে লোক নিয়োগ কেন্দ্র করিয়া পশ্চিমবঙ্গে বিশেষ করিয়া বর্দ্ধমান জেলায় অসভোষ ধুমায়িত হইয়া উঠিতেছে। রচকেল্লার রূপ লইবে কি না জানি না তবে এখন হটতে সাবধানতা অবলম্বন না করিলে বিপর্বয় দেখা দিতে পারে এ শাশস্কা করিবার ষথেষ্ট কারণ আছে যদিও তাহা আদে কাম্য নহে। প্রশ্ন জাগিবে ইহার জন্ম মূলত: দায়ী কে। অবগ্রই বহুসাংশে সরকারই দায়ী। তুর্গাপুরে নিয়োগ সংস্থা খোলা হইরাছে। নিত্য শত শত বান্ধালী যুবক নাম লেখাইতেছে। সুবকার আইন করিয়া নিয়োগ-সংস্থাকে সংবাদ দিবার ব্যবস্থা করিয়াছেন। শিল্পতি ও िकामायरमय निकं धार्यमन जानाता क्षेत्राष्ट्र स्नानीय लाक अधिक সংখ্যার যাহাতে নিয়োগ করা হয়। কিন্তু ইহাই কি কর্ত্তব্য শেষ বলিয়া পরিয়া লইতে পারা যায় ? বাগ্য করিবাব ধারা কোথায়-স্থানীয় লোকদের অগ্রাধিকার দিবার গ্যারাণ্টি কোথায়। পুর্বের বলিয়াছি অজুহাতের অভাব হয় না। দক্ষতার প্রশ্ন তুলিয়া অভিজ্ঞতাব ধুয়া ভূলিয়া স্থানীয় যুবকদের নিরাশ করা হইতেছে। কেন্দ্র হইতে প্রাদেশিক সরকারী মুখপাত্রদের অনুনর বিনয়, মানবভা উত্যাদির আবেদন জানাইয়া কোন ফল হয় নাই। অবশু অকেবারে হয় নাই বলিলে ভুগ হইবে। তবে নিয়োগের হার উল্লেখ করিতে যুগপং লক্ষা ও তুঃথ হয়। তুর্গাপুরে স্থানীয় বেকার নিয়োগের চিত্র এইরূপ ।" -- বৰ্দ্ধমান বাণী।

মামলা আছে, হাকিম নাই

"লালবাগ, ২৩শে দেণ্টম্বর—গত ১৯শে সেপ্টেম্বর শনিবার লালবাগ ফৌজদারী আদালতে কোন নতুন নালিশ দায়ের করা সম্ব হয় নতে এবং জেনেরাল ফাইলও হয় নাই। কারণ নালিশ করার লোকের অভাব নয় হাকিমের অভাব। উক্ত দিবসে সেকেও অফিসার সরকারী কাজে অল্পত্র পিয়াছিলেন এবং মহকুমা শাসকও ভাহার জকুরী সরকারী কার্যের তাগিদে সেইদিন আদালতের কার্য ছাড়িরা অক্সত্র গিরাছিলেন। উপস্থিত ছিলেন কেবলমাত্র
থার্ড অফিসার। কিন্তু তাঁহার কগনিজেলী নেবার কোন ক্ষমতা
নাই। এইরূপ ক্ষেত্রে ডিব্রীর মাাজিট্রেট স্পোণাল পারমিশন
দিরে থাকেন। সেই দিন থার্ড অফিসাবকেও সেইভাবে কগনিজেলী
নেবার অমুমতি দিয়ে আদালতের কার্য চালু রাথা ঘাইত। এই
অব্যবস্থার জন্ম বহু লোককে নানা অস্থবিধা ভোগ করিতে
ইইরাছিল। —িনজন্ব — ক্রনমত (মুর্শিদাবাদ)!

শোক-সংবাদ

কবি শৌরীক্রনাথ ভট্টাচার্য্য

খ্যাতনামা কবি শৌরীক্রনাথ ভট্টাচার্য গত ৮ই ভাদ্র ৭৩ বছর বরেসে লোকাস্তবিত হরেছেন। কবি হিসেবে ইনি বথেষ্ট খ্যান্তির অধিকারী ছিলেন এবং স্থলীর্থকাল বাবং কৃতিছের সঙ্গে বঙ্গাহিত্যের সেবা করে এসেছেন। ছন্দা, বাঙলার বাঁশী, পন্মরাগ, নির্মাল্য এবং সগুপ্রকাশিত বাঁশীর আগুন প্রমূপ গ্রন্থসমূহ তাঁর স্ত্রনীপ্রতিভার পরিচায়ক।

শিল্পতি স্থারকুমার সেন

সেনর্যালে ইণ্ডাষ্ট্রীজের চেয়ারম্যান ভারতবর্ষে সাইকেল শিক্সের প্রতিষ্ঠাত। বিশিষ্ট শিল্পতি প্রীন্থনীরকুমার সেন পশ্চিম জার্মানিতে কর্মোণলকে অবস্থিতিকালীন গত ১১ই ভাদ্র ৭২ বছর ব্য়েসে শেষ নিখাস ত্যাগ করেছেন। ফ্যাঁয়া কবি কামিনী রায় এঁর অগ্রজা! বাইসাইকেল শিল্পের প্রতি ইনি প্রথম জীবনেই অমুরক্ত হন এবং ভারতবর্ষে ঐ শিল্পের প্রসার কর্মে আত্মনিয়োগ করেন। উত্তরকালে ভারতীয় বাইসাইকেল শিল্পের প্রধানপুক্ষ রূপে জগতের শিল্পমহলে এক বিশেষ আসন অধিকারভুক্ত করেন। বর্তনানকালে বাইসাইকেল শিল্পে ভারতের অভ্যতপূর্ব অগ্রগতি স্বর্গত সেনের কর্মদক্ষতার প্রকৃষ্ট নিদর্শন। স্বর্গীয় ডাঃ ভার নালরতন সরকার মহাশয়ের অক্সতমা কল্প প্রমতী মীরা দেবী এঁর সহধ্যিনী।

ডা: গণপতি পাঁজা

বাঙলার স্থনামধন্ত চিকিৎসক এবং ভারতের প্রথাত চর্মরোগবিশেষজ্ঞ ডা: গণপতি পাঁজা গত্ত ২১শে ভার ৬৬ বছর বরেদে
পরলোকগমন করেছেন। চর্মরোগ সম্বন্ধে এর প্রগাঢ় পাণ্ডিন্তা এবং
জ্ঞান চিকিৎসক্ষহলে এঁকে একটি প্রধান আসনে প্রতিষ্ঠিত করতে
সমক্ষ হর। উক্ত বিষয়ে প্রভৃত জমুশীলনের ফলে সারা ভারতবর্ষে
খ্যাতি ছড়িয়ে পড়ায় বাঙলার গোঁরর বুদ্ধি পায়। ১৯৪৭ সালে
জন্মন্তিত ভারতীয় বিজ্ঞান ক্রেসের মেডিক্যাল ও ভেটিরিনাদ্ধী শাখার
সভাপতির আসন স্থগিতঃ ডাঃ পাঁজা জলক্ষত করেন।

গম্পাদক--- প্রথাপতভাষ ঘটক



কাব্যে অনাদৃতা

গত বংসর কার্ত্তিক সংখ্যার প্রকাশিত পুরবী চক্রবর্তী লিখিত "কাব্যে অনাদৃত।" প্রবন্ধটির সক্তমে আমার কিছু বক্তব্য আছে। लिथिकात्र त्राञ्चारकोणन ७ वागविकाम अनःमनीय। किन्न विवसवर्वाहे তিনি কিছু ভুগ ভাবে প্রকাশ করিয়াছেন। সেইজ্ঞ মনে হয় শিরোনামাটিও যথায়থ হয় নাই। প্রথমতঃ, দেবধানীর প্রতি সহাত্মভৃত্তির উচ্চাদে তিনি কচ ও ব্যাতির প্রতি অক্সার দোবারোপ কচ শুক্রসকাশে বিক্তার্থিরূপে মাত্র আসেন নাই। আসিয়াছিলেন দেবকুলের জীবন মান রক্ষাকারী মন্ত্রাহরণের জন্ম। গুৰুগৃহবাস কালে গুৰুককা দেবধানীর স্নেত্বে মৰ্য্যাদা তিনি অকুঠ সেবার ধারা দান করেন। অতঃপর সঞ্জীবনীমন্ত্র লাভাত্তে কচ স্বর্গে প্রয়াণের পূর্বের দেবধানীর নিকট বিদায় গ্রহণ করিতে আসেন। কিন্তু মুদ্ধা, কচকে চিরভরে স্বর্গ হইতে দূরে, আপন অঞ্জভায়া বাঁধিতে চায়। নবযৌবনা প্রবাসস্বিনীর এই মধুর আবেদন অম্বীকার করা, তাহার শ্লেহধন্ম যুবকের পক্ষে যে কত কঠিন, ভাহা সহজেই অনুমেয়। জাতির স্বার্থের জন্ত আত্মহার্থ বলিদান, শ্রেয়ঃর জন্ম প্রেয়কে ত্যাগ, ওধু স্নকঠিন নয় স্নমহান! সত্যই ইহা তুল জনেৰত ! কিন্তু লেখিকা এত বড় ভ্যাগের মধ্যাদা না দিয়া কচৰে স্বার্থপর কুচক্রীরূপে বর্ণনা করিয়াছেন। গুরুকুপা লাভের জ্জু কচ দেবধানীর হাদয় হরণ করিয়াছেন, এরপ দোধারোপ ক্রিয়াছেন। কিন্তু, কার্য্যতঃ দেখা যায়, দেববানী স্বেচ্ছায় স্থানয়দান করিয়াছিল আর কচ সে প্রেম প্রত্যাখ্যান করিয়াছিলেন স্বর্গস্থলোভে নর স্বন্ধাতির বন্ধার জন্ম। কি প্রয়োজন ছিল তাঁর এই স্বন্ধাতিপ্রীতির ? অনায়াদেই তিনি, শুক্রাচার্যোর জামাতারপে সদম্মানে সম্বরপুরে দেবহানীর সঙ্গম্পে স্বপ্নধদির দিনহাপন করিতে পারিতেন। लिथिकात्र भएछ, कह प्रविधानीत्र कीवत्न व्यथम भूक्त । प्रविधानी कि कर्फत कीवरन अथम नांत्री नम्र ? তবে, मिवरानीत मूथत विषना অপেকা কচের নীরববেদনা কোন জংশে কম ? দেখিকার মতে কচের অভিশাপ ভাহার "অলজ্জ পৌরুষের" বিকুত পরিচয়। কিছ, প্রথমেই কুতবিক্ত ভ্রাহ্মণের প্রতি দীর্ঘ সাধনার বিক্তার বিফলতাম অভিশাপ, বুঝি দেবধানীর অসংযতন্ত্রদয়ের উন্মত্ত হিংসার পরিচন্ন নম্ন ?

দ্বিতীয়তঃ, মহাভারতে দেখা যায়, পুণ্যবান ষ্যাতি প্রাণ থাকিতে প্রার্থীকে বিমুখ করিবেন না, এরূপ সত্যুবদ্ধ হওয়ায় শর্মিষ্ঠার পুত্র প্রার্থনা পূর্ণ করেন; মাতৃত্ব নারীর শ্রেষ্ঠ সৌভাগ্য। তাই, লেখিকার বনাত্মসারে "বৌবনন্ধালায়" নয়, পুত্রলাভের জন্ত শর্মিষ্ঠা পুত্রদান প্রার্থনা করে। সত্যুবদ্ধ হইলেও হ্যাতি শুক্রের নিবেধ শ্বরণে অনীকৃত হন। কিন্তু শর্মিষ্ঠা বলে দেববানী তাহার ঈশ্বী, তিনি

দেবধানীর ঈশ্বর। স্থতরাং ধর্মতঃ তাহারও স্বামী। অভএব ষ্যাতি ধর্মচ্যুত নহেন। কিন্তু লেখিকা তাঁহাকে অক্সায়ভাবে "হুর্মলচিত্ত" ও "রূপমুগ্ধ" বলিয়াছেন।

অত:পর দেবযানী ধথন পিন্ডার নিকট পতির বিরুদ্ধে অভিযোগ করে, তথনও দেখি, লেখিকার তাহার প্রতি সমান সহাত্মভৃতি। সতী সাবিত্রীর শাখতাদর্শের কথা ছাড়িয়া দিলেও **এ আচরণ সমর্থনযোগ্য নয়। "ভাগে স্থথ ভোগে গ্লানি"** যাহাব তাহাই প্রেম। কিন্তু ভোগলোলুপা দেবধানী পট্টমহাদেবী হইয়াও বিন্দুমাত্র ত্যাগস্বীকার স্বামীর জন্ম করিতে পারে নাই। কুমারী-জীবনেও দয়িতকে না পাইয়া নিষ্ঠুর অভিশাপে তাঁহাকে জর্জাবিত ক্রিয়াছে। অথচ, শশ্মিষ্ঠা পিতার রাজ্য-পরিজনের জন্ম যাবজ্জীবনেব স্থা বিদর্জ্জন দিতে কুঠিত হয় নাই। তার পরে, দেবধানীর পুনরায় পরাজ্ব হর শব্দির্মার কাছে মাতৃত্বের পটভূমিকার। কারণ, শুক্রশাপে জরাগ্রস্ত ষ্বাতি যুখন পুত্রদের যৌবনদানের জন্ম আহ্বান করিলেন, তথন শশ্মিষ্ঠানন্দন পুকু পিতার জরা গ্রহণ করিল। কিন্তু অস্থিঞ্ মাতা দেববানীর অসহিষ্ণু পুত্রদ্বয় তাহা অস্বীকার করিল। পুত্রের মাঝেই মাতার চরিত্রের সমাক বিকাশ হয়। শশ্মিষ্ঠার মহান্ ভ্যাগ পুর প্**×কেও ত্যাগে মহিমায় মহিমাখিত ক**রিয়াছে। কিন্তু দেবধানী পারে নাই। এর পর, লেখিকার মতে, ব্যাতিকে **দ্ব**ণা ব্য**ীত দে**ব্যানীর **দেবার কিছুই থাকিল না। নিশ্চন্ন তাহা**র কারণ, যযাতির উপ^র চিরতরে দেবযানীর একাধিপত্য ক্ষুণ্ণ হওয়া। এখানেও ভাহার ভ্যাগের **অভাব পরিস্কৃ**ট। **অভ**এব স্প**ষ্টই দেখা ঘাইতেছে ধে, দেবযানী**র মুগ্ন স্বভাব তাহাকে মোহিনী করিয়াছে সত্য। কিন্তু গৃহিণী ও জননী মণে মহিমময়ী করিতে পারে নাই।

লেখিকার মতে, তাহার এ বিজ্বনার জন্ত দায়ী তাহার শ্লেহান্ধ পিতা, কিন্তু এই অভিযোগ অম্লক, একটু বিবেচনা করিলেই বুঝা বার। শুক্রাচার্য্য বাহা করিরাছিলেন তাহার চেয়ে বেশী ভাল কোন পিতাই পারেন না। সমাজের বিরুদ্ধেও তিনি কর্ত্যকে, স্থখ-সোভাগ্যের জন্তু, রাজাধিরাজ যবাতির হস্তে অর্পণ করেন। কিন্তু দেবধানী "পট্টমহাদেবী" হইয়াও কর্মদোরে রাজপ্রিয়াও রাজমাতা হইতে পারিল না। সে ইহার জন্তু স্বয়ং দায়ী তাহার পিতা নহেন। ভূতীয়তঃ, আমার মতে প্রবন্ধটির শিরোনামাও বধার্যথ হয়্ম নাই। হওয়া উচিত ছিল "ভাগ্যবিভ্ষিতা কাব্যনামিকা" অনাদৃতা নহে। কারণ, অনাদৃতা অর্থ উপেক্ষিতা। কিন্তু মহাকবি ব্যাস দেবধানীকে আদৌ উপেক্ষা করেন নাই। উপরন্ধ বিস্তৃত্ব বর্ণনা দিয়াছেন। যে বর্ণনা যুগান্ত পরেও বর্ত্যান লেখিকাও অসংখ্য জনের এমন কি করীক্ত রবীক্তনাধের সহামুভূতি আকর্ষণ করিরাছে ও করিতেছে। "অনাদৃতা" তাকেই বলা চলে

রে সকল সৌকুমার্য্য সন্তেও পাঠকের ও শ্রষ্টার সহায়ুভূতি আকর্ষণ করিতে পারে না। এবিবরে রবীক্রনাথ, তাঁহার "কার্য্যে উপেক্ষিতা" প্রবন্ধ "রামায়ণের লক্ষণিশ্রেয়া উর্মিলা" এবং "কালম্বরীর প্রক্রেশা" সম্বন্ধ সার্থক আলোচনা করিয়ছেন। "উর্মিলা" নবোঢ়ার বেশে দেখা দিয়াই আমাদের শ্বতি হউতে চিরতরে বিলুপ্ত হউন। সীতার হংথের স্রোতে আরপ্ত হংথিনী "উর্মিলা" ভাসিয়াগেল। আর "পত্রলেখা" পরমসৌকুমায়্যময়ী হইয়াও "কালম্বরী" ও "মহাখেতার" পার্মে চিরনিন্দ্রত • হইয়া রহিল! রাজকুমার চন্দ্রাপীড়ের" সহিত ভাহার অসম্ভব সখ্য, কিছ কোন আকর্ষণ ছিল না। "চন্দ্রাপীড়ে" ভাহাকে পুরুষবান্ধর মতে ভাহার নারীখের প্রভিষ্ বিচ্ছিল না। কন্দ্রাপীড়ে" ভাহাকে পুরুষবান্ধর মতে ভাহার নারীখের প্রভিষ্ বিচ্ছিতার ইহা চরম উপেক্ষা।—কিছ দেবয়ানীর এরপ কোন সমস্যানাই। স্মতরাং সে "অনাদৃতা" বা "উপেক্ষিতা" নহে। অর্চনাদেরী। গুরুষাম। কলিকাতা—২।

বৌদ্ধ পঞ্চশীল

গত জাবণ সংখ্যার 'বেদির পঞ্জীল' শীর্ষক সমালোচনার বেদের বৰদ নিৰ্ণয়ে শ্ৰীক্তম সমাজদাৰ মহাশয় যুৱোপীয় ভাৰততত্ত্ববিদগণের মত তুচ্চ করে প্রক্ষেয় আচার্য শ্রীপ্রনীতিকুমার চট্টোপাধ্যায় প্রমুখ ভারতীয় মনীধীদেব উক্তি উদ্ধৃত করে ক্ষান্ত হতে পারেন নি। শ্রুত্বর স্বামী অভেদানন্দ্রত্বীর উক্তিকেও তিনি অবলম্বন করেছেন। শ্বের স্থামিজী যে ঐতিহাসিক ছিলেন না তা লেখক উত্তেজনার মাধ্য ভুলে গেছেন। থা:-পু: ৫০০০ বংশব পুর্বে বেদ রচিত গ্যেছিল বলে কোন ঐতিহাসিক বলেন নি। **লেখক বেভাবে** পাশ্চাতা মনীবিবর্গকে অবজ্ঞা করেছেন, তা লেখকের ভ্রান্ত ধারণা-প্রস্ত বিষোদগার মাত্র। তাতে ভারতীয় সংস্কৃতির গবেষণা ক্ষেবে তাঁদের অক্ষয় কীণ্ডি এতটুকু মান হতে পারে না। ন্দার্গীয় কুসংস্থারের ধ্বনিকা উত্তোলন করে তাঁরাই আমাদের উজ্জল সংস্কৃতির সঙ্গে আমাদের নৃতন করে পরিচয় করিয়ে দিয়েছিলেন। ভাঁদেরই পদাস্ক অমুসরণে ভারতীয় মনীযিগণ ভারতীয় প্রাচীন গাহিত্য ও দর্শনের ক্ষেত্রে আধুনিক পরিপক গবেষণারীতি প্রবর্তন করেছেন। স্থতরাং মেক্সমূলর প্রমুথ পাশ্চাত্য চিস্তানায়কগণের সমৃদ্ধ চিম্বাধার। দীর্ঘকাল একেত্রে পথনিদেশ করবে। বেদের **অ**র্থ মুরোপীয় পশ্চিতগণের কাছে তুরধিগম্য—লেথকের এ অভিমত নিতান্ত হাত্যাম্প্র। বেদের আধ্যাত্মিক ব্যাখ্যা ওধু স্বামী দয়ানন্দজীর সত্যার্থ প্রকাশে কেন, শ্রীতুর্গাদাস লাহিড়ী মহাশয়ের অমুবাদেও রয়েছে। বেদের প্রাকৃত অর্থ স্থাদয়ঙ্গম করতে হলে সে মুগের ভাবধারা ও পরিবেশ অমুভব করার শক্তি থাকা চাই। তা হলেই অনাক্ষ মনে বেদাধায়ন সম্ভব হৰে।

বৃদ্ধাবির্ভাবের অব্যবহিত পূর্বে ভারতের আধ্যাত্মিক ও নৈতিক অবনতি ঐতিহাসিক সভা। একে ধামা চাপা দেবার লেখকের অপচেষ্টা করুণোদ্দীপক। প্রীমন্ভাগবতের ও বোগবাশিষ্ঠ রামারণের বৃদ্ধ প্রসঙ্গে নিছক কারানিক ব্যাখ্যাপ্রদানের অপকৌশলও তেমনি করণাদ্দীপক। 'আত্ম' শন্দের উল্লেখ করে বৃদ্ধকে উড়িয়ে দেবার ইবল মৃদ্ধি অভ্যন্ত কৌতুকাবহ। বৃদ্ধ পরিনির্বাণ শ্বামে ওয়েও শিষ্যদের উল্লেখ্য কেলাক প্রস্তাক কিলাকে কিলাক ক্ষাক্ত বিহর্প,

অন্তস্ত্রণা, অনঞ্সরণা । 'অন্তানং উপমং কথা ন হনেষ্য ন ঘাতরে' অর্থাৎ আত্মোপমার কাকেও হত্যা করবে না আঘাত করবে না। ইত্যাদি উক্তিগুলি 'লেথককে অন্থাবন করতে অন্থবোধ করি। বুদ্দের অনভবাদ বা অনাম্ববাদের মর্মার্থ পদ্ধবগ্রাহিতার বোধগম্য নয়। তথু অনাম্ববাদের উদ্ধেপে বিভ্রান্তি স্পৃষ্টি করে লাভ নেই। এই প্রসঙ্গে লেথকের বৃহস্পতি বৃদ্দের কষ্টকল্পনা দেখে বিজ্ঞ পাঠকবর্গ কেইক অন্থভব করবেন।

বৌদ্ধত্ব থেকি সংস্কৃতি সম্বন্ধে যদি লেখনের ধারণা জ্বন্দান্ত হয়, তবে ভারতের ইতিহাস জনাভ্রন্ধ মনে অধ্যয়ন একান্ত আবশুক। প্রীসমাজদার মহাশার উত্তেজনার বশে আলোচা বিধর অভিক্রম করে প্রীশীশক্ষরাচার্য ও কুমারিল ভট্টকে টেনে এনে বৌদ্ধননকৈ ভারতবর্ধ থেকে বিভাতিত করেও কান্ত হননি। তার পরও তিনি এশিয়ার মানচিত্র থেকে বৌদ্ধর্মের বিলোপের স্বপ্নে বি ভার হয়ে আমাদের চীন ব্রিয়ে তিবরতে নিয়ে এসেছেন। জবশেরে সিংহল, এক্সদেশ, থাইলেও প্রভৃতি দেশে অহিংস বৌদ্ধর্মের সহিংস রূপ দেখে তিনি পরম তৃত্তি লাভ করেছেন।

লেখকের শালীনতাবোধের জ্বভাব ও ভাষার জ্বসংষত ব্যবহার দেখে আমরা বিন্দুমাত্র বিশ্বিত হইনি। বলা অপ্রাসঙ্গিক হবে না, দড়োক্তি ও শালীনভার সীমাতিক্রম মার্জিত মনের পরিচারক নর।
—শীলানন্দ অক্ষচারী!

গ্রাহক-গ্রাহিকা হইতে চাই

৬ মাদের গ্রাহক মৃল্য বাবদ ৭'৫০ ন প পাঠাইলাম।
আগামী আধাঢ় হইতে অগ্রহায়ণ পর্যান্ত সংখ্যাগুলি নিয়মিত
পাঠাইবার ব্যবস্থা করিবেন।—শ্রীমতী মিনতি বস্থ—সম্বলপুর।

মাসিক বস্থমতীর বার্ষিক মৃল্য ১৫১ টাকা পাঠাইগাম।
নির্মিত পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।—জীমতী নীলিমা মুখোপাধ্যায়,
পাটনা।

Remitting herewith my subscription for M. Basumati from Ashar to Agrahayana.—Leela Ghose, Meerut. (U. P.)

I am sending herewith Rs 15/- for Masik Basumati.—Secy. Hasimara I. Club.

Remitting herewith our subscription for one year with effect from Asar for your Monthly Basumati.—Head Master, Nasigram High School, Burdwan.

Subscription for Monthly Basumati.— Supdt. C & Z Mission, Howrah.

Please receive Rs. 15/- as my subscription for Basumati—Banee Roy, New Delhi.

১৫১ টাকা বার্থিক চালা মাসিক বস্তমতার জন্ম পাঠাইলাম— বেশুকা মিত্র, ভাগলপুর।

আমার অনেক দিন হইতে বস্তমতী পত্রিকা পড়বার বে আগ্রহ তাহা প্রকাশ করবার আর অবকাশ পাই নাই। অনুগ্রহপূর্বক মাসিক পত্রিকা V.P. বোগে পাঠাইবেন—Sree Charan Pathak—Chakradharpur. Singhbhum.

মাসিক বস্তমভীর বার্ষিক গ্রাহিক। ছইবার উদ্দেশ্তে ডাকুরোগে বার্ষিক চালা ১৫, টাকা পার্মাইলাম।—Geeta Das Guptoo, Bina, M. P.

বস্তমতী মাসিক সংখ্যার জন্ম বাংসরিক ১৫১ পাঠাইলাম।
দল্ম করিয়া আবাঢ় সংখ্যা বস্তমতী পাঠাইবেন।—Aloka
Sadhukhan—Calcutta.

Herewith sending Rs 9/- as an advance for half-yearly subscription for your Monthly Basumati.

মাসিক বস্ত্রতীর বার্ষিক মূল্য বাবদ ১৫১ পাঠাইলাম।— শ্রীমতী মীরা বস্তু, জামসেদপুর।

I send herewith Rs. 15/- for the subscription of Masik Basumati for one year.—H. N. Bailung, Secy., Baghjan Indian Club, Assam.

I am remitting Rs. 15/- towards the annual subscription for continuing supply of "M. Basumati" from Sravana issue.—Mrs. Maya Barat, Bombay.

I send herewith Rs. 15/- as yearly subscription for your Monthly Basumati.—N. Khatun, Cachar, Assam.

আবাঢ় মাস হইতে ৬ মাসের মাসিক বস্ত্রমতীর টাকা পাঠানে। হইল।—Sm. Santi Lahiri, Kanpur, U. P.

Herewith Rs. 15/- for one year's subscription. Please continue to send your Magazine as usual.

—Sri R. Barthakur, Assam.

জাগামী ৬ মাদের চাল পাঠালাম। প্রাবণ মাদ[্]থেকে নিয়মিত বস্ত্মতী পাঠাবেন।—Mrs. Indira Mukherjee, Shahdol, গ্রাহকমূল্য এক বংসারের জন্ম ১৫ ্টাকা পাঠাইলাম। 'নাসিক বস্ত্মমতী' প্রাবশ সংখ্যা হইতে পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।— Mrs. Bela Bagchi, Allahabad.

One year's subscription for Monthly Basumati from the issue of "Aswin."—Mrs. Sudhira Ghosal, Varanashi.

Please accept subscription for "Monthly Basumati" for the period Aswin to Chaitra 1366.

—Ava Rani Debi, Kanpur.

Please receive our yearly subscription towards your Monthly Journal.—Welfare Library, Wellington Mill, Hooghly.

১৫১ বার্ষিক চালা পাঠাইলাম। এক বংসরের জ্বন্ত গ্রাহক করিয়া ও বর্তুমান মাস হইতে 'মাসিক বস্ত্রমতা' পাঠাইয়া বার্ষিত করিবেন। আপানাদের পত্রিকা প্রবাদী বাঙালীদের সম্পদ-বিশেষ।
—Hansara Union Club, Doom Dooma, Assam.

I am sending herewith Rs. 15/- for Monthly Basumati for one year only.—Sm. Manoka Sundari Devi, Lalpur, Ranchi.

Herewith please find Rs. 15/- being the annual subscription for Masik Basumati—Pailway Institute, Masiani, Shibsagar, Assam.

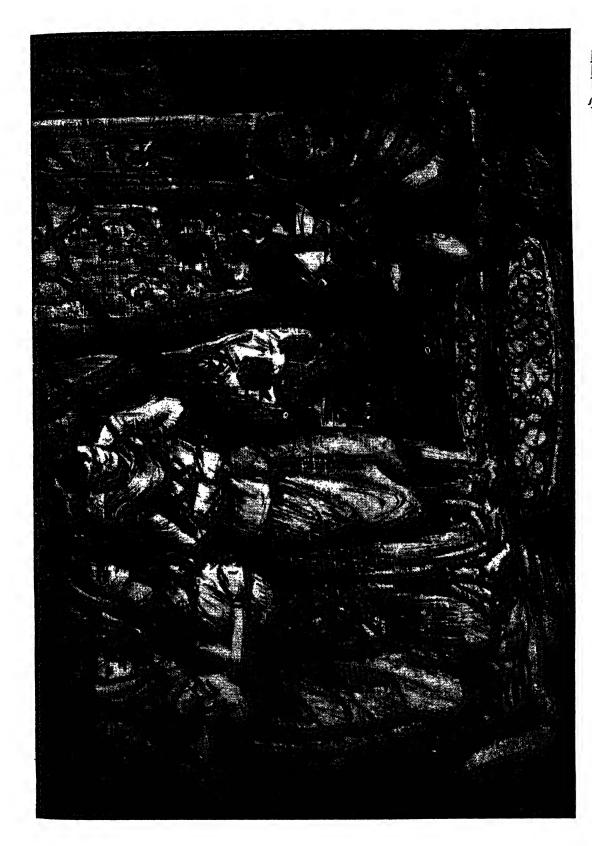
মাসিক বন্ধমতীর ধাণ্মাসিক চাদা বাবদ ৭।। • টাকা পাঠালাম।
নির্মিত বই পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।—গ্রীমতী লাবণ্যপ্রভা দেন
দিল্লী।

Please send my copy for another year.
---Mamata Sen, Burdwan.

Renewal subscription for Masik Basumati for one year till Ashar 1367.—Burdwan Raj College, Burdwan.

মাসিক বস্ত্রমতীর বাগ্মাসিক চাদা পাঠাইলাম। দরা করিরা আমাকে গ্রাছক-শ্রেণিভূক্ত করিরা লইবেন।—ঞ্রীমতী বেণু বন্দ্যোপাধ্যার, পুণা।

বর্তমান বৎসরের বৈশাথ হইতে 'মাসিক বস্ত্রন্থতীর' গ্রাহিকা হইবার 🕶 ১৫ টাকা মনিজ্ঞান্ত ক্রিলার ৷—Kamala শিক্ষানিজ্ঞানীয়ে লা টিকালে শিক্ষান



শতাশচন্দ্র মুখোপাখ্যায় প্রতিষ্ঠিত



৩৮৭ বর্ষ—আশ্বিন, ১৩৬৬]

॥ স্থাপিত ১৩২৯॥

[প্রথম খণ্ড, ৬ষ্ঠ সংখ্যা

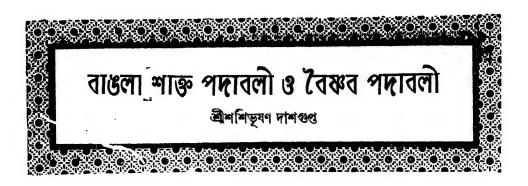


সর্বনা মনে রাখিও, আমাদের সামাজিক প্রথাগুলির উদ্দেশ্য ব্যেরপ মহৎ, পৃথিবীর আর কোন দেশেরই তদ্ধপ নহে। আমি পৃথিবীর প্রায় সর্বত্রই জাতিভেদ দেখিয়াছি, কিছ এখানে উদ্দেশ্য ব্যেরপ মহং, অল্প কোধাও তদ্ধপ নহে। অত এব যথন জাতিভেদ খনিবার্য, তথন অর্থগত ভাতিভেদ অপেক্ষা পবিত্রতাসাংন ও আয়ত্যাগের উপর প্রতিষ্ঠিত জাতিভেদ বরং ভাল বলিতে হইবে। ঘতএব নিন্দাবাদ একেবাবে পরিত্যাগ কর।

ভোমরা আর্ঘ, জনার্ঘ, শ্বমি, ব্রাক্ষণ অথবা অভি নীচ অস্তাজ ভাতি—নাহাই হও, ভারতভূমিনিবাদী সকলেরই প্রতি ভোমাদের পূর্ণপুক্ষগণের এক মহান আদেশ রহিয়াছে। ভোমাদের সকলের প্রতিই এই এক আদেশ, সে আদেশ এই—'চুপ করিয়া বদিয়া থাকিলে চলিবে না—ক্রমাগত উন্নতির চেষ্টা করিতে হইবে। উচ্চতম জাতি হইতে নিম্নতম পারিয়া (চণ্ডাল) পর্যন্ত সকলকেই মাদর্শ ব্রাক্ষণ হইবার চেষ্টা করিতে হইবে।' বেদান্তের এই আদেশ উধু বে ভারতেই খাটিবে, ভাহা নহে—সমগ্র জ্বগৎকে এই

আদর্শামুবারী গঠন করিবার চেষ্টা করিতে হইবে। **আমাদের** জাতিভেদের ইচাই লক্ষা। ইহার উদ্দেশু বীরে ধীরে সমগ্র মানব-জাতি বাহাতে আদর্শ ধার্মিক—অর্থাৎ ক্ষমা, মৃতি, শৌচ, **শান্তি,** উশাদনা ও ধ্যানপ্রায়ণ হয়। এই আদর্শ অবলম্বন করিলেই মানবজাতি ক্রমশ: ঈর্বসাযুক্ত্য লাভ করিতে পারে।

শ্ববিগণের মত চালাইতে হইবে; মন্থু, বাজ্ঞবদ্ধা প্রভৃতি শ্ববিদের মন্ত্রে দেশটাকে দীক্ষিত করিতে হইবে। তবে সমরোপবানী কিছু কিছু পরিবর্তন কবিয়া দিতে হইবে। এই দেখ না, ভারতের কোধাও আব চাতৃর্বর্গ-বিভাগ দেখা বায় না। প্রথমতঃ আন্ধান, করিয়, বৈশু, শৃন্থ—এই চারি জাভিতে দেশের লোকগুলিকে ভাগ করিছে হইবে। সমস্ত আক্ষণ এক করিয়া একটি আক্ষণজাভি গড়িতে হইবে। এইরূপ সমস্ত ক্ষরিয়, সমস্ত বৈশু, সমস্ত শৃক্ষদের নিয়া অল্ল তিনটি জাতি করিয়া সকল জাতিকে বৈদিক প্রণালীতে আনিতে হইবে। নতুবা শুরু (তোমায় ছোঁব না বিলিসেই কি দেশের কল্যাণ হইবে? কথন নয়।



খ্ৰীয় অষ্টাৰণ শতক পৰ্যন্ত বিবিধ মঞ্চল কাব্য ও শিবাহন প্রভৃতির ভিতর দিয়া বাল্সা সাহিত্যে শক্তির যে বিভিন্ন রূপ ও চরিত্র ফুটিয়া উঠিগ্রাছে তাহার একটা সাধারণ পরিচয় আমরা জানি। অধীনশ শতকের মধ্যভাগে সাধক রামপ্রদাদের আবির্ভাব হয় (अष्ठीमन महःकत्र विशेष मन्द्रक हैं शत क्या त्लाया शहन करा ষাইতে পারে)। রামপ্রসাদও বিতাত্ত+রের কাহিনীকে মুগ্যত: অবলম্বন করিয়া 'কালিকা-মঙ্গল' কাব্য বচনা করিয়াছিলেন ; কিছ এই 'কালিকা-মঙ্গলে' বামপ্রসাদ আরাধিত কালিকারও বথার্থ পরিচয় নাই, রামপ্রসাদের সাধক কবিলপে যে প্রতিভা তাহারও কোনও উল্লেখবোগা পরিচয় নাই। কিছু বাঙলার শাক্তধর্মে ও শাক্ত-সাহিত্যের একটি নৃতন দিক খুলিয়া দিলেন এই সাধক কবি; ইছা হইল শাক্তদঙ্গীতের দিক। বছসংখ্যক দঙ্গীত রচনা করিয়া এবং ভাহাকে নিজেব একটি বিশেষ শ্রুর সংযুক্ত করিয়া (ষাহা আজকাল প্রসাণী স্থৰ নামে খাতে) তিনি একদিকে যেখন মারের মতিমা প্রকাশ করিলেন-অক্সদিকে মাবের জন্ম সম্বানের ভাতিকে এমন ভাষা ও সূর দিলেন যাহা আমরা পূর্ববর্তী কোনও সাহিত্যেই আৰ দেখি দাই। এই আৰ্তি যেন বাঙালী-মনে সঞ্চিত হইয়। ক্ষ হইবাছিল। একবার বামপ্রসাদের গানগুলির মধ্যে যথন তাহার প্রকাশ ঘটিল তথন বাঙলাদেশের এথানে দেখানে ছোট বড বছ সাধককবির মনের হুয়ার খুলিয়া গেল। আমরা অষ্টাদশ ও উনবিংশ শতকে বছসংখ্যক শাক্তগীতি পাইলাম। ইহাই বর্তমানে বাঙলা সাহিত্যে বৈক্ষৰ পদাৰলীৰ প্ৰসিদ্ধিকে অবলম্বন কৰিয়া শাক্ত পদাবলী নামে খাতে।

বৈষ্ণৰ পদাবলীর সমগোত্রীয় বলিয়া শাক্ত গানগুলির শাক্ত পদাবলী নাম দেওয়া হইলেও বৈষ্ণৰ পদাবলী এবং শাক্ত পদাবলীর মধ্যে একটা মৌলিক পার্থক্য রহিয়াছে; কিছু এই মৌলিক পার্থক্য সন্থেও উভরের মধ্যে কতগুলি প্রভাক্ষ এবং পরোক্ষ মিলের কথাও ভামরা অর্থীকার করিতে পারি না। শাক্ত সঙ্গীতের প্রথম কবি রামপ্রসাদ; রামপ্রসাদের সঙ্গীত রচনার মধ্যে একটা স্বতঃ উৎসারণ সহজেই লক্ষ্য করিতে পারি। স্বতরাং রামপ্রসাদের শাক্ত সঙ্গীত রচনার পশ্চাতে বৈষ্ণব পদাবলীর কোনও প্রভাক্ষ প্রভাব ছিল এ কথা বলিতে পারি না। রামপ্রসাদের প্রেরণার উৎস জাঁহার নিজের মধ্যেই ছিল। কিছু প্রেরণার বর্ধন বহিঃপ্রকাশ ঘটে তথন পরিবেশের নিকট ইইজে তাহা অনেক কিছুই গ্রহণ করে—ভাবের দিক হইতেও, প্রকাশভন্ধির দিক হইতেও। হাদশ শভক হইতেই বাঙলা দেশে বৈষ্ণব পদাবলীর প্রসার বলিতে পারি। অষ্টাদশ শভক পর্যন্ত সহস্র সহস্র বৈষ্ণব পদ রচনার ভিতর দিয়া সেধারা প্রায় অবিচ্ছিন্ন ভাবেই চলিয়া অসিয়াছে। এইরপে বছ শতকে প্রবৃহত সাহিত্যের একটি অভি সমৃদ্ধ ধারা একটি বিশেষ সাহিত্যিক পরিমধ্যন গড়িয়া তুলিয়াছিল ও রামপ্রসাদ এবং তাঁহার সম-সামিরিক ও পরবর্তী শাক্ত কবিগণের সঙ্গীতগুলির উপরে এই পবিবেশের প্রভাব অভি স্থাভাবিক ভাবেই পড়িয়াছিল। তবে উভয় জ্বাতীয় পদাবলীব মধ্যে মৌলিক পার্থক্যের কথা আমরা প্রথমেই উল্লেখ করিয়াছি। এই পার্থক্যের কথা আমরা পরে আলোচনা করিব। প্রথমে আমরা মিলের কথাটাই আলোচনা করিছেছি।

বৈষ্ণৰ কবিতাৰ প্ৰতিষ্ঠা মধুৰ বদে। জীবনেৰ মাধুৰ্য প্ৰেমে; मिंडे (श्रीमें दिक्श क्रिश्लिय अधीन नाइ—ध्कमां व्यवनयन। এই মধুর প্রেমের স্পর্যে দেহও মধুর—গেহও মধুর। বৈষ্ণব কবিগণের এই সর্বাতিশয়ী মাধ্র্যের প্রভাব পড়িয়াছে বাঙ্কা দেশের শক্তিদেবীর উপরেও। সর্ব সৌন্দর্য মাধুষের ঘনীভূত প্রতিমা রাধার প্রভাবে মঙ্গলকাব্যগুলিতে বর্ণিতা দেবীগণও যে অনুরূপ মাধ্রমণ্ডিতা হুইয়া উনিয়াছেন তাহা আমরা সহজেই লক্ষ্য করিতে পারি। কিন্ত পেৰীগণের দেহসৌন্দর্যের বর্ণনায় এই যে রাধা-সৌন্দর্যের প্রভাব ইহাই স্বাপেকা ২ড কথা নয়। বড় কথা লক্ষ্য করি এই শাক্ত সঙ্গীতগুলিব मार्या वथन मिशि रव छ्यु वाहित्वत्र मिहरमोन्मर्यत्र वर्गनांग्र नग्न, मिवीव মূল পরিকল্পনাতেই দেবী মধুর রসে প্রতিষ্ঠিতা হইরাছেন। উমা সম্বন্ধে আমরা দেখিতে পাই—তিনি প্রথমাবধিই মধুররসাঞ্রিতা; তাই উন্নাকে অবলম্বন করিয়া যথন মধুর রূপ বর্ণনা দেখিতে পাই— বা উমাকে যখন মধুর রুসেই প্রতিষ্ঠিতা দেখিতে পাই তথন স্থামরা সচকিত হই না; কিছু অত্যস্ত ভাবে সচকিত হইয়া উঠি যথন দেখি, শুধু অস্থ্রনাশিনী ছুর্গা-দেবী নহেন—ভয়ক্ষরীপের চরম নিদর্শন যে কালীর মধ্যে তিনিও তঁ৷হার সকল ভয়স্করী রূপ লইয়াই মধুর রুসে প্রতিষ্ঠিতা হইয়া উঠিতেছেন।

দেখা যাইন্ডেছে, বাঙালী কবিগণ বৈষ্ণবই হোন আর শাক্তই হোন, মৃলে সকলেই মধুব রসের উপাসক। আমরা দেখিতে পাই মাতৃদেবীর ইন্টিহাসে পার্বজী উমার একটি বিশিষ্ট ধারা, অন্তরনাশিনী দেবীর আর একটি পৃথক ধারা। পৌরাণিক যুগেই এই ছই ধারা একত্রে মিশ্রিড হইয়া একাকার হইয়া গিয়াছে। বাঙালী কবিগণ ঐতিহস্তরে মায়ের এই মিশ্ররপকেই প্রাপ্ত হইয়াছেন। কিছ একটু লক্ষ্য করিলেই দেখিতে পাইব, জল ও হুগ্ধের মিশ্রণের ভিত্রব ইতে হংস যেমন হুগ্ধকেই পান করিবার চেষ্টা করে, বাঙালীর করিমনাহংসও তেমনই ভাবে মারের মধুবরুপিনী ও ভয়করী মৃতির

মিশ্রণ হইতে সহজাত প্রবণতাবশে মধুররপিণীকেই বাছিয়া আসাদন ক্রিবার চেষ্টা ক্রিয়াছে। মাকে লইয়া বাঙলা দেশের জনমনেরই ষেন এই মধুব রসের দিকে ঝোঁক। তাই দেখি, বাঙলাদেশের প্রদিদ্ধতম মাতৃপূজার উংসব শারনীয়া ত্র্গোৎসবকে পশ্তিতমত্লে বা উচ্চকোটি মহলে যতই নাৰ্কণ্ডেয় চণ্ডী'র সহিত যুক্ত করিয়া অসুবনাশিনী দেবীর পূজা-মহোংস্ব করিয়া তুলিবার চেষ্টা হোক না কেন, বাঙ্গার জনমান্দ মার্কণ্ডের চণ্ডার তেমন কোনও ধার ধারে না। জনগণ প্রতিমায় দেবীকে অস্থরনাশিনী মূর্তিতে দেখেন— কিন্তু ঐ পর্যস্তই, তাহার পরে তাঁহারা স্থির নিশ্চিত রূপে জানেন-নানলে আর কিছুই নয়—মাধের স্বামিগৃহ কৈলাস ছাড়িয়া বংসরাস্তে একবার কন্সান্তপে পুত্র-কন্সাদি লইয়া বাপের বাড়ি আগমন। তিন দিনের বাপের বাড়ির উৎসব-আনন্দ—তাহার পরেই আবার চোথের জলে বিজয়া—স্বামীর গুহে প্রত্যাবর্তন। গণমানদের এই সত্যকে অবলম্বন করিয়াই ত আমাদের এত 'আগমনী-বিজয়া' সন্ধীতের উদ্ধ। এই সঙ্গীতগুলিতে লক্ষ্য করিতে পারিব, গিরিরাজ যথন ক্যা উমাকে শইয়া গিরিপুরে ফিরিয়া আসিলেন তথন গিরিরাণী ক্তাকে বুকে লইতে এলোকেশে ধাইয়া আসিলেন বটে, কিন্তু দাশর্থি বায় তাঁহার পাঁচালীতে বলিলেন, মেনকা দশভুজা রণরঙ্গিণী দেবীকে ক্যা বলিয়া গ্রহণ করিতেই চাহিলেন না, মা স্পষ্টই বলিলেন,—

কৈ হে গিরি, কৈ সে আমার প্রাণের উমা নন্দিনী! সঙ্গে তব অঙ্গনে কে এলো রণরঙ্গিণী!

এই বাবজিণীকে মেনকা—এবং জাঁহার মারফতে বাঙালী কবিমন— গুব্ যে গ্রহণ করিতে চাহিলেন না ভাহা নহে—তাঁহাকে উমা বলিয়া চিনিতেই পারিলেন না; মা স্পাঠ বলিলেন,—

> দিভূজা বালিকা আমার উমা ইন্দুৰ্দনী, কক্ষে ল'য়ে গ্ৰানন, গমন গজগামিনী, মা ব'লে মা ডাকে মূখে আধ-আধ ৰাণী।

তথন আর উপায় নাই ! বাঙালী কবির মনগুটি করিবার জন্ম দশভূজা বণরজিনী মাকে মেনকার সামনে রূপ বদলাইতে হইল।—

মারের প্রতি মহামায়া ত্যজিলেন মারা।
ধরেন অপূর্ব রূপ পূর্বের তনয়।।
ছিত্তুলা গিরিজা গৌরী গণেশজননী।
নগেন্দ্রনন্দিনী যেন গজেন্দ্রগামিনী।।
ছই কক্ষে ছই শিশু আকুডোযদারা।
উদয় হলেন চঞ্জী যেন চক্রে ঘেরা।। ১

বসিকচন্দ্ৰ বাবেৰ গানে দেখি, তাঁহাৰ মেনকাও অভিনৰ এই নাৰ্যাকে চিনিতে পাৰেন নাই অৰ্থাৎ চিনিতে চাহেন নাই।

> গিরি, কার কঠহার জানিলে গিরিপুরে ! এ জো সে উমা নয়—ভয়ন্করী হে, দশভুজা মেরে !

মুথে মৃত্ হাসি, স্থারাশি হে, আমার উনাশৰীর;
এ যে মেদিনী কাঁপার হুঙ্কারে ৰক্ষারে।
হার এ হেন রণ-বেশে, এল এলোকেশে,
এ নারীরে কেবা চিনতে পারে! ২

मानवि बारवद शीकानी। २। मांक शमावनी।

তথু বে ভয়করী মৃতি চাই না তাহা নয়, ঐপর্বমর্থী মৃতিও চাই না—তথু মাধুর্বময়ী মৃতি চাই।—

বলে গেলে হে গিরি, যাই—
আনি সে গিরিজার,
সে মেয়ে তেথে এলে কোথার ই—
শাবী ভান্ন আসি উদুয়ু শদি পদে
উভয় পদে উভয়ে আছে অবিবাদে: ৩

অপর কবি বলিতেছেন-

গিরি, উমা-প্রদক্ষে সঙ্গে আনিলা খরে কার মেরে ?

সর্বদেব-তেজ দেহ, জটাজূট শিবোক্তহ,
আমার উমা নহে এহ, দেথ দেখি মুখ চেয়ে।

কনক-চম্পকদামা, অতসী-কুমুনোপমা,
এই নাকি দেই উমা, সংশয় আমার।৪

একটু লক্ষ্য করিলেই দেখিতে পাইব, কবি এই গানটিতে উমার বে সব বর্ণনা করিতেছে তাহা চণ্ডীর পৌরাণিক বর্ণনা; সেই অস্ত্রবনাশিনা চণ্ডীকেই যেন কবিগণের একাস্তভাবে 'ল্লেহের ছুলালা' উমার সঙ্গে মিঞাত করিয়া লইবে আপেন্ধি। পদের শেবে কবিরা একটা আপোস-রফা করিয়া লইবার চেষ্টা করিয়াছেন বটে, কিন্তু বৃন্ধিতে মোণ্টই কষ্ট হয় না যে এ আপোস-রফার চেষ্টা তাহাদের তত্ত্ববৃদ্ধিভাত—কিন্তু হন্দযের প্রবণতা অক্ত দিকে।

পূর্বেই বলিয়াছি যুগে যুগে সাহিত্যে, চিক্সে ও ভাঙ্কর্মে রূপান্থিত
মধুররূপিনী উমাকে অস্তরনাশিনী চন্ডীর সহিত মিলাইয়া লইতে একটা
প্রাচান ধারাগত আপত্তি স্বাভাবিক হইতে পারে, কিন্তু বাঙালী
কবিগণ এই আপত্তি জ্বানাইয়াই ক্ষান্ত হন নাই, তাঁহারা অস্তরনাশিনী
ভয়ন্করী কালী মৃত্তিকে নিজেদের হৃদয়-পদ্ম স্থাপিত করিয়া ষে
রূপান্তর ঘটাইয়াছেন তাহাই বিশেষভাবে লক্ষণীয়। কালীকে এইভাবে
রূপান্তরিত কবিবার চেষ্টা অষ্টাদশ শতাকীর বাঙালী কবিগণের ভিতরেই
প্রথম পাই না'; চতুর্দ শ বা পঞ্চদশ শতকের মৈথিলী কবি বিভাপতির
'অস্তর-ভয়িনী' 'পশুপতি-ভামিনী' ভৈরবী কালীর বর্ণনা
কবিতেছেন—

বাসর বৈনি স্বাসন সোভিত চরণ, চন্দ্রমনি চূড়া। কতওক দৈত্য মারি মুঁহ মেলল, কতও উগিল কৈল কুড়া।।

৩। ঐ, ঠাকুবদাস দত্ত।

৪। ঐ, রামচক্র ভটাচার্য। আরও তুলনীর—
কে রণ-রঙ্গিনী!
কে নারী অঙ্গনে এলো, চিনিতে না পারি।
অঙ্গণে দাঁড়াইরে এ নর আমার প্রাণকুমারী।
দশ দিক্ দীপ্ত করা, এ রমনী দশকরা,
বিবিধ আয়ুধ-ধরা, ময়ুজ-দলনী হেরি।
নহে মম কল্পে এ ধে, এ সমর-সাজে সাজে,
মানসে অমরে প্রে এ নারী-চরণ, গিরি।

(এ, বজমোহন বার)

সামর বরণ, নয়ন অমুবঞ্জিত অসদ-কোগ ফুল কোকা। কট কট বিকট ৩ঠ-পুট পাঁড়বি

निधुत-त्कन **डिर्फ त्काका ॥** €

দিন-রজনী, তে: দাব চরণ শবাসন শোভিত, তোমার চূড়ায় শোভে চক্রমণি; কত দৈত্যকে মারিএ: মুখে ফেলিলে, কত না উদ্গীরণ করিয়া জড় করিয়াছ । ভামল ভোমার বর্ব, তাহাতে রক্তিম নয়ন, বেন কালো মেবে লাল পদ্ম; তোমার পাটল ওঠপুটে বিকট ধ্বনি, ক্লিবের ক্ষেনায় বৃদ্ধ উঠিতেছে।

এই বিকট মৃতির মধ্যেই শ্লামার শ্লাম বর্ণের মধ্যে রক্তিম নরনের শোভা কবির মনে আনিয়াছে শ্লাম জলদের গায়ে রক্তপল্লের শোভার কথা। রামপ্রসাদের কালীমৃতির একটি অমুরূপ বর্ণনায় দেখিতেছি— চলিয়ে চলিয়ে কে আসে, গলিত চিকুর আসব আবেশে,

ৰামা রণে ক্রতগতি চলে, দলে দানবদলে,

ধরি করতলে গঞ্জগরাসে॥

কে বে কালীয় শরীরে, কৃষির শোভিছে.

কালিন্দীর জলে কিংওক ভাসে।

क त नोनकमन, और्थमधन,

অর্ধ চন্দ্র ভালে প্রকাশে॥

কে রে নীলকান্ত মণি নিতান্ত,

নগর-নিকর তিমির নাশে ;

কে বে রূপরে ছটার তড়িত ঘটায়,

খন ঘোর রবে উঠে আকাশে ॥৬ পদটির পশ্চাতে বে কবি-মানস বহিয়াছে তাহাকে ভাস কবিয়া दुविद्या नटेट ट्टेंटन পদটির একটু ব্যাখ্যা-বিলেষণ দরকার। কালী আসৰ-আবেশে—অর্থাং সুরাপানে বিহ্বলা ইইয়া এলোকেশে চলিয়া ঢলিয়া বণক্ষেত্রে আসিতেছেন; কিন্তু ঢলিয়া ঢ*ি*লয়াও ভাঁহার ক্ষিপ্রগতি—এবং চরণের ভিনি দানবপক্ষের গব্ধগুলিকে করে ধরিয়া গ্রাস করিতেছেন, রণোমাদিনী দেথীর সর্বাঙ্গে ক্ধিরচিহ্ন। এই পর্যস্ত কালীর পৌরাণিক রূপ: কিন্তু সাধকের মনের মাধুরীর স্পর্ণে এইরূপও গুমুম্বরী হইমা উঠিকেছে না; কালীর কালো দেহে রুধিরের ছটা বেন কালিন্দীর কালো জলে ভাসিয়া যাওয়া কিংলকের ছটা। আবার মনে হইভেছে, মুথথানি মায়ের नीमक्रमम- हुए। व वर्ष हन्त्र यह নীলকমলের উপরেই অপূর্ব শোভা ধারণ করিয়াছে। নীলচরণের নথরগুলি হইতে নীলকাস্তমণির ছাতি বিচ্ছবিত হইগা অন্ধকার নাশ করিতেছে; नीनवर्णन উপরে রূপের ছটায় যেন বিদ্যাৎ থেলিতেছে—দেবী বে

এই বর্ণদাটি কাব্যের দিক হইতে নিথুঁত না হইতে পারে—

খোর রবে রণে লক্ষ দিতেছেন—তাহাতে মনে হয় আকাশে গর্জনকারী

নীলনবীন মেংখ ধেন বিহাৎ থেলিতেছে।

অতিরেক দোবে গৃষ্ট হইতে পারে—কিছ লক্ষ্য করিতে হইনে, পোরাণিক ভয়ক্ষরী দেবীর কোনও লক্ষণকে বাদ না দিয়া তাহাকেই হৃদয়মধ্যে কতথানি মধুর করিয়া লওয়া যাইতে পারে তাহার কি একটি ব্যাকুল প্রয়াস রহিয়াছে কবিদ্ব সব্টুকু বর্ণনার মধ্যে।

মহারাজ বতীক্রমোহন ঠাকুরের একটি অপূর্ব বর্ণনায় দেখি-

ভূষার ধবল হুদে নীলিম নলিনী। হর-হৃদি-মাঝে আমার ভাষা মা জননী। রূপ দে ভিমিররাশি, অথচ তিমির নাশি' উজলিছে ত্রিভূবন জিনি সৌদামিনী।

তুবার-ধবল মহাদেব—ভাহার হৃদয়োপর নীলবরণী খ্রামা ধেন
তুবার-ধবল হলে প্রফুটিতা একটি নীলিম নলিনী! তিমিররাশি
দিয়াই সে রূপ গড়া—কিন্ত রূপের বিজ্ ৫-বিভার দশদিক আলো
করাই হইল ভাহার হাজ। কোনও কোনও কবি আকার মারের
পদন্ধে ছবি-শলীর বিভা আনিরাই কাভ হন নইই; উন্নাদিনী
রণরঙ্গিনী মারের চরণে নূপুরও বাঁধিয়া ছাড়িয়াছেন। ৮ কেছ আবার
চরণে নূপুরের সহিভ কটিতে যুকুর্যুক্ত করিরাছেন। ১ কোনও কবি
আবার সর্বত্র শুর্ অমিরা রূপই লক্ষ্য করিয়াছেন।—

অসিয়া জিনি মুখ শোভা ভাষ, অসিয়া সম শ্রমজন ভাষ, অসিয়া সম পিকভাধে গায়, অসিয়া রূপে তুথাকর।। ১০ মহারাজ শিবচন্দ্র রায়ের—

> নীলবৰণী, নবীনা বমণী, নাগিনী জড়িত জটা বিভ্ৰণী। নীল নলিনী জিনি ত্ৰিনৱনী, নিৰ্বিধ্যাম নিশানাথ নিভাননী॥ ১১

প্র*াত বর্ণ*না শুধু মধুর ভাবের দিক্ হইতে নয়, মধুর ভাষার দিক হইতেও বৈক্ষব কবিতাকে খারণ করাইয়া দিবে।১২

রামপ্রসাদেরও এই বৈফার ভাষা ভঙ্গিতে কালীর বর্ণনা দেখিতে পাই—

ইয়াপতি, প্রীথগেজনাথ মিত্র ও ডক্টর বিমানবিহারী
মন্ত্রদার সম্পাদিত, ৭৬৬ সংখ্যক পদ।

৬। শা, প, (स, বি) (শাক্ত পদাবলী, কলিকাভা বিশ্ববিভালয়)।

৭। শা, भ, (क, वि,)।

৮। কে ও বিহরে, হর-হাদি পরে, হর-মন হরে মোহিনী।
চমকে অঞ্চণ রবি শালী যেন, নথরে প্রথরে আপনি।।
শোভিত প্রপদ, দেয় মোক্ষপদ, আপদে সম্পদদায়িনী।
চমকে নৃপুর, আলো করে পুর, মণিময় পুরবাসিনী।।
কাসী মির্জা (কালিদাস চটোপাধায়) শা, প, (ক, বি)।

৯। নব জলধর কার।
কালো রূপ হেরিলে আঁথি জুড়ার।।
কপালে সিন্দ্র, কটিতে ঘৃঙ্গুর, রতন নৃপ্র পার।
হাসিতে হাসিতে কত দানব দলিছে, রুধির লেগেছে পার॥
ইত্যাদি।

কমলাকান্ত ভটাচার্য ; শা, প, (ক, বি ⁾।

১ । शीतवाहन तात्र, भा, भ, (क, वि,)।

১১। भा, भ, (क, वि.)।

১২। মঙ্গল-কাব্যগুলির ভিতরে পার্বতীর মনোহর মৃতির বর্ণনার জামরা বৈষ্ণব-সাহিত্যের রাধার রূপ-বর্ণনার প্রভাবের কথা পূর্বে উরেণ

नव नील नीवन खबुक्ति (क ? बे मत्नात्माहिनी ता। ডিমির শশধর, বাল দিনকর, नम्बन हत्रल क्षेत्रांग । কোটিচন্দ্র ঝলকত, প্রীমুধমণ্ডল, নিন্দি সুধামুভভাৰ॥ ১৩

অথবা-

এলোকেশে, কে শবে, এলো রে বামা। নথৰ নিক্ব হিমক্বৰৰ, বঞ্জিত খন তনু মুখ হিমধামা।। নৰ নৰ সজিনী, নৰ বসবজিণী, হাসত ভাষত নাচত ৰামা। কুলবালা বাছবলে, প্রবল দমুক্ত দলে, ধরাতলে হতরিপু সমা।। ১৪

অথবা---

শঙ্কর পদত্তলে, মগনা বিপুদলে, বিগলিভ কুম্বলজাল। विमन विश्वत्र, श्रीमूच स्नात्र, তন্ত্ৰকটি বিজিত তঙ্গণ তথালা।। ১৫

হাতে যে ভয়াল করবাল লইয়া কালী অন্তর ক্রিতেছেন তাহাকেও বাঙালী মন রূপাস্ত্রিত ক্রিয়া লইবার চেষ্টা কবিয়াছে।

করিয়। আসিয়াছি। দেবীর রূপ-বর্ণনাতে আমরা শাক্ত-পদাবলীতেও মাঝে মাঝে এই ভঙ্গির অনুসরণ দেখিতে পাই। বেমন—

> অপরপা কে ললনা হেরি বক্তাখুকাসনা, কিস্কিণী মণি বচিত্ত, মুকুট শিবোভ্ৰবণা। কুটিল কুন্তল জাল, আবৃত মুখমণ্ডল, ওষ্ঠ ব্রিত বিস্বফল, প্রকুল পঞ্চলাননা। ধরু সদৃশ ভ্রন্সভা, ত্রিনয়ন-স্থশোভিতা, সহাত্য বদনাখিতা, মধু মধুর বচনা 🛭 ইত্যাদি মহাতাব চাদ, শা প (ক বি)

১৩। ডক্টৰ শিৰপ্ৰদাদ ভটাচাৰ্বেৰ 'ভাৰভচন্দ্ৰ ও ৰামপ্ৰদাদ' শ্ৰন্থে ধুক্ত পদ (১৩৭ সং)।

১৪। ঐ, (১৪৮ সং)। ভুলনীয়— क ख नव-नील-क्रमल-क्लिक। विल, অঙ্গুলি দংশন করিছে অলি, মুখচন্দ্র চকোরগণ, অধন অর্পণ করত পূর্ণ শশধ্ব বলি। ভ্ৰমৰ চকোৰেতে লাগিল বিবাদ, এ करह नीनकमन, ও करह हान, দৌতে দোঁত করততি নাদ.

> **हिहिकि ७**० ७० क्षिएं श्रामि । हेजानि । বাৰপ্ৰসাদ, পূৰ্বোক্ত গ্ৰন্থে ধৃত (১৩৮ সং)।

১৫। এ (১৫৩ সং)। **এই আনন্দে** ১৪২, ১৪**১**, ১৫•, ১৫১. ১৫२ भएकानि सहेवा।

ভূবন ভূলালে রে কার কামিনী ঐ রমণী।

বামার করে করাল শোভিছে ভাল করবাল বেন সৌলমিনী ১১৬ ভক্ত-স্থান্যে এই কালী-রূপের আকৃতি বস্বনরূপ লাভ করিবাছে ক্মলাকান্তের একটি গানে-- মজিল মন-ভ্রমরা, কালী-পদ-নীলকর্মলে।' বামপ্রসাদের ছই একটি গাল্লে প্রই রূপকে লইয়া ভক্ত-ছন্ত্রের রীতিমত একটি উল্লাস্থ্য উঠিয়াছে । বেমন—

कान भाव छेन्द्र इंटनी चस्रत-चत्रक्री নৃত্যতি মান্দ-শিখী কৌডুকে বিহুরে 1১৭

অথবা---

কান্তি স্থন্দর. সজল জলধর, ক্ষধির কিবা শোভা ও বরণে। প্রসাদ প্রবদ্ভি, মন মানস নুহাতি, রূপ কি ধরে নয়নে ।১৮

কালীকে অবলম্বন করিয়া এই 'রূপাত্বরাগ' সহসা খুব স্বাভাবিক বলিয়া মনে হয় না। এ-ক্ষেত্রে মনে হয়, দীর্ঘ প্রায় ছয় শভাবী ধরিয়া বাঙ্গা দেশে শত শত বৈষ্ণব কবি রূপান্নরাগের সাধনা ক্রিয়াছেন ; সেই সাধনা বাঙলার ক্রিমানসে 'রূপা**নুরাপে'র** একটা বাসনাকেই প্রবল ক্রিয়া রাখিয়াছিল; সেই বাসনাই অপ্টাদশ শতকে কালীমূর্জিকেও নৃতন দৃষ্টিতে গ্রহণ করিয়াছে। নৃতন দৃষ্টি ৰলিভেছি, কারণ কালীকে অবলম্বন কবিয়া এই 'রূপামুরাগে'র আভাস কোনও পুরাণে নাই—তন্ত্রেও নাই।

তবে এই 'রপামুরাগে'র পশ্চাতে মধুররস-প্রীতি ব্যতীত শাক্ত সাধককবিগণের একটি গভীর অমুভৃত্তির প্রশ্ন ছিল। এই সাধক কবিগণ বভ্স্থানে কালীর কালো-রূপে হৃদয় আলো করিবার কথা ক্লিয়াছেন। ইহার ভিতবে একটি গভীর সাধন-রহস্তের কথাও নিহিত আছে, তাহার আলোচনা আমরা এই সাধক কবিগণের সাধনার কথা বিবৃত করিবার সময়েই আলোচনা করিব।

আমরা উপরে লক্ষ্য করিলাম, দেবীর রূপ বর্ণনার কভকওলি পদে ভাষা ও ভঙ্গিজে বৈক্ষ্য সাহিত্যের প্রভাব প্রভাক্তাবে দেখা দিয়াছে। বৰ্ণনায় এই **প্ৰা**ক্তাক প্ৰভাব আৰও স্পষ্ট হইয়া উঠিয়াছে ভক্ত কমলাকান্তের 'সাধক-রঞ্জন' নামক সাধন-সঙ্গীত গ্রন্থ। কমলাকান্ত এ-সব ক্ষেত্ৰে কেবার কোনও বাহু মৃষ্টির বর্ণনা করেন नाहे, प्रवी अशान 'कृत-कुशकिनी' मेखि-वात्र काहात बहेहरक्षव ভিতরকার সর্বনিম্ন মূলাধারচক্রে। তিনি কথনও বালিকা, কথনও किल्मानी,-कथन अन्योना यूवजो। डाँर्न मश्चि नित्तन व्यवश्चि জ্র-মধ্যস্থ[®]আক্রাচক্রে। মূলাধার হইতে আজাচক্রে চলে এই নবীনা যুবতা'র অভিসার যাত্রা। এই আজাচক্র-রূপ দরিতথামে আসিরা মিলিরাছে গলা, ষমুনা ও সরবতার (ইড়া, শিক্ষনা ও অধুয়া নাড়ীর) ধারা---এখানে জাগিয়াছে ছিবেণী-সঙ্গম। 'সাধক-রঞ্জনে'র এই নবীনা যুৰতাকে সাধক-কবি গ্ৰহণ কৰিয়াছেন কৃষ্ণ-অভিসাৰিণী বাধাৰ প্রতিচ্ছবিতে: সমস্ত বটচক্র-সাধনাই এখানে বৈফববর্ণিত লীলার

১७। भश्चाक इरविस्तावायन वाय. म. भ. (क. वि.)

১৭। ডক্টর শিবপ্রদাদ ভটাচার্য সিঞ্চিত 'ভার**ডচন্দ্র ও রামঞ্জসাদ'** গ্রন্থে সন্ধলিত রামপ্রসাদের পদাবলী (১০৪ সং)।

SEI डी. (308 मि)।

অবলয়নে বাণুত হইরাছে। ওধু বৈক্ষৰ-সীপার রূপক্ট নর—তাবা ছ হলও গৃহীত লম্পূর্ণভাবেই বৈক্ষৰ সাহিত্য হইছে। কিছু কিছু নৰুনা দিতেছি। বজনীর শেষে প্রভাতে (অজ্ঞান-অক্ষাবের বিনাশে জ্ঞানালোকে দেহমন উদ্যাসিত হইলে) এই 'রম্নী' (শিবসঙ্গে রমণের অভিসাহিনী কলকুণ্ডাসিনী শক্তি) জাগ্রত হইলেন; ভিনি ভবন ত্রিবেশী তব্লিশীতে স্নানে ক্লিজেন।

ত্তিওবা তিবেণী তরাঙ্গনি ধার।
কেলি করে কুলকামিনী ভার।
বিহরই বঙ্গিনী সবীগণ সঙ্গে।
বিভরম বারি পরাপর অঙ্গে।
হেরি হেরি কুলবী চকিত লক্ষান।
ভড়িত কুচঞ্চল করি অনুযান।
সমবম সঙ্গিনী নৰ অমুবাগে।
কিসলম পরশে কুকুমধন্য ভাগে।১৯

আজ্ঞাচক্রস্থ ত্রিবেণীতে চলে শিবের সঙ্গে স্নানকেলি; সেই কেলি সমাপন হইলে আবার ধীরে ধীরে তিনি চলেন আপন নিবাসে (মূলাধারে)। এই আপনার খবে ফিরিবার বর্ণনা দেখি—

গন্ধপতিনিন্দিত গতি অবিলবে।
কুঞ্চিত কেশ নিবেশ নিতবে।।
চাক চরণসতি অভ্যানুদে।
নথাযুকুরকর হিমকর নিন্দে।।
উরসি সরসীকহ বামা।
করিকর শিখর নিতবিনী রামা।।
মৃগপতি দূর শিখারমুখ চাম।
কটিতট ক্ষীণ স্মচঞ্চল বামা।।
ইত্যাদি।

এই দেবীকে অবসম্বন করিয়া ভাজিভাবের কিছু কিছু বর্ণনাও

(मिथे। ইহার বালাভাবের বর্ণনায় দেখি-

কিন্দে ধনী পেখপু হেরি হেরি ভত্ন বেরি বেরি মন ধার।

ইহ তমু অবস দিবস বজনী

व्रभी भून औषि ज्ञात्र ॥

मन এ ऋमत्रौ यहि कद्द स्वी।

বচন পরামৃত মৃত্ত তমু মুঞ্জরে

এ তনু সকল করি মানি॥ ইত্যাদি।

তাহার পরে মধ্যভাবে-

কদৰ কুন্তম অনু

সভত সিহবে ভমু

ষদবধি নিরবিলাম ভারে।

ৰদি পাসৰিতে চাই

আপনা পাসরে জাই

এনা হুখ কহিব কাহাবে॥

সেই সে জীবন মোর

রসিকের মনোচোর

বমণী বসের শিরোমণি।

পরিহরি লোকলাকে

রাখিব হাদর মাঝে

ना ছাড়িব দিবস বজনী।।

১১। সাধক-রঞ্জন, বসম্ভরঞ্জন রাম ও মটলবিহাদী বোব সম্পাদিত (বন্ধীয় সাহিত্য-পরিবং) শ্বিক উদ্ধৃতির প্রয়োজন নাই; উদ্ধৃতি দিতে হইলে প্রায় গোটা বইবানিই তুলিয়া দিতে হয়। যেটুকু উদ্ধৃতি দিলাম তাহা দারা শাক্ত সাধকগণও বে নিজেদের সাধনতত্ত্ব বা সাধনতাব প্রকাশে বৈক্ষৰ ধারা ধারা কতথানি প্রতাবিত হইরাছিলেন তাহারই একটি বিশেষ নমুনা দিবার চেষ্টা করিলাম।

প্রসাদক্রমে আমর। লক্ষ্য করিতে পারি, বাঙলার প্রতিবেশী মৈথিলী সাহিত্যেও দেবীর বর্ণনার বাঙলা সাহিত্যের অমুরূপ প্রবিণতা লক্ষ্য করা যার। দেবীর বর্ণনার দেবীর ভরত্কর রূপের সব বর্ণনাই আছে, তথাপি একটি ছইটি ছত্রে দেবীর কমনীয় মাধুর্যকে ফুটাইয়া তুলিবার চেষ্টা হইয়াছে। প্রথমে আমরা মৈথিল কবি বিভাপতির একটি দেবী-বন্দনার পদ দিয়াই আরম্ভ করিয়াছিলাম। পরবর্তী কালের অপেক্ষাকৃত আধুনিক মৈথিল কবিগণের দেবী-বর্ণনার মধ্যেও এই প্রবিণতা লক্ষ্য করি। মহারাজ মহেশ ঠাকুরের ভারা বর্ণনার ভিতরে দেবী—

ব্দর ব্দর ব্দর ভয়ভঞ্জিনি ভগবন্তি

আাদি শক্তি তুব্ব মায়া।

জনি নব সজল জলদ তৃথ তমুক্চি

পদক্ষি পক্ষক ছায়া।।২•

মহারাজ মহিনাথ ঠাকুরের কার্লী-বর্ণনার প্রথম ছত্ত্র— বদন ভয়াল কান শব কুণ্ডল

বিকট দশন ঘন পাতী।

কিছ দিভীয় ছত্ৰেই দেখি---

ফুজল কেল বেল তুথ কে বহ

ব্দনি নব জ্লধ্য কাঁতি। ২১

কবি মুকুন্দের হুর্গা-বর্ণনায় দেখি,---

সিংহ চড়লি মাত। অন্তথ-মিকন্দিনি,

মেদিনী ডোল গতি-দাপে।

ব্দায়ুধ উগ্র শোভএ আঠো কর,

জাহি ভরে অবি উব কাঁপে।

কিন্তু ঠিক পরের বর্ণনাই হইল—

দূর্বাদল সন কান্তি মনোহর,

শিরেঁ শোভ চান কলাপে।২২

আধুনিক কবি বিশ্বনাথ ঝা ভগবতীর সীতে বলিয়াছেন—

অব জর সকল অস্ত্রবকুলনাশিনি, আদি সনাতনি মারা।

গিন্নিবর বাসিনি, শঙ্করভামিনি, নিজ জন পর করু দারা।।
ভামল কচির বদন তৃত্য রাজিত, ভড়িতবিনিন্দক নয়নে।

বঘছাল পহিবন, কটি অতি শোভিত, ফণিকুগুল যুগ কানে।।২৩

বাঙলা বৈষ্ণব পদাবলীর সহিত বাঙলা শাক্ত পদাবলীর আর

একটি গভীর মিল লক্ষ্য করিতে পারি উভর জাতীয় পদাবলীতে
বাংসল্য-রসের বর্ণনায়। এই বাংসল্য রসের প্রাবল্যে বাঙালী
কবিমনে বৃন্দাবন ও গিরিপুরের মধ্যে ব্যবধান ও ভেদচিছ জনেক
সমর জন্মাই ইয়া গিয়াছে—ছানে ছানে মুছিয়াও গিয়াছে।

এইরপ হইবারই ত কথা, কারণ বাছালী কবিমনে বৃন্দাবনও উত্তর

२ । गीकि-बाना, बैकियानन स्था कर्ज् क महनिक । २১ । थे । २२ । थे । २७ । थे ।

প্রদেশে অবস্থিত নয়, গিরিপুরও হিমালয়ের কোনও কন্দরে স্থিত নয়; উল্যের অবস্থিতিই বাঙলাদেশের মাট-ঘাট-জোড়া স্থামল অঞ্চলে। সূত্রা ভাবপ্রাবদ্যে আন্তে আন্তে স্বাভাবিক ভাবেই ভেদচিছের একই চিত্তপ্রক্রিয়ায় গিরিয়াজ ও নন্দরাজ এবং গিবিরাণী ও নন্দরাণীরও আপোদে ভাব বিনিময় হইয়া গিরাছে; <u>রুহার মাঝখানে একস্থলে দাঁড়াইয়া 'স্লেহের ছলালী উমা' অপরস্থলে</u> 'স্লেহের ছলাল গোপাল'। বাঙলাদেশের বৈক্ষব কবিভার গোপালের বালালীলাকে অবলম্বন কবিয়া বুকের সমস্ত স্নেহ উৎসারিত করিয়া দিয়াছেন যে বাঙালী মা, বাঙলাদেশের শাক্ত কৰিতার মধ্যে উমাকে অবলম্বন করিয়াও তেমনই ভাবে স্নেহ উৎসারিত করিয়া দিয়াছেন একই মা। অবশ্য লীলার এবং লীলাক্ষেত্রের 💵 পার্থক্য আছে। একজনের বাল্য-লীলা মুখ্যত: গোঠ অবলখনে—অপরের বাল্য-লীলা অষ্টমবর্দেই স্বামীর খর করণে। কিছ পুত্রকে অবলম্বন করিয়াই হোক আর কল্যাকে অবলম্বন করিয়াই হোক, মা বশোণা রূপেই হোন আর মা মেনকা রূপেই হোন—দেই একই 'মা'কে চিনিয়া লইতে কোনও অস্থবিধা হয় না। রামপ্রসাদের গিরিরাণী মেনকা বেখানে গিবিৰাজ হিমালয়কে ডাকিয়া বলিতেছেন-

গিরিবর, আমি আর পারিনে ছে, প্রবোধ দিতে উমারে। উমা কেঁদে করে অভিমান, নাহি কবে স্তল্পান, নাহি খায় ক্ষীর ননী সরে।।

দেখানে চিত্রটিকে সামান্ত একটু পরিবভিত করিয়া 'উমা'র স্থলে গোপাল এবং মেনকা স্থলে ধণোলা এবং গিরিরাজের স্থলে ব্রজনাজের কথা শ্মরণ করিতে জামাদের কোনই অন্মবিধা হয় না। গোপোলের গোঠে যাওয়া লইয়া কবিওয়ালার গান দেখি—

> দিব না গোঠে বিদায় মোর নীলমণি ধনে; কপাল মন্দ ভাইতে সন্দ, বলাই হচ্ছে রে মনে। কুম্বপন দেখেছি ভারি। বেন হারাস্থেছি হরি, বলাই রে তোর করে ধরি, মন মানে ত নয়ন না মানে। আজকের মতন বারে ভোরা, ঘরে থাক মোর মাখনচোরা, পলকেতে হইরে হারা নয়নভারা দিয়ে বনে।।২৪

ইহারই ঠিক পালে রাথিয়া দিতে পারি জামরা শাক্ত সঙ্গীত গিরি, কি অধাও হে সমাচার ? বলিতে সে অপন, না সরে বচন, থেদে পোড়ে মন, বহে অঞ্চধার। নিশিতে বেমন ভেবে উমাধন, জনেক আয়াসে মুদেছি নয়ন,

২৪। মনুলাল মিশ্র; শ্রীনিরঞ্জন চক্রবর্তী লিখিত 'উনবিংশ শতাদীর কবিওয়ালা ও বাংলা সাহিত্য' গ্রন্থে উদ্ধৃত। শমনি বপনে করি দরশন—
শিষ্করে বসিয়া বেন মা আমার।
বাছার নাই সে বংণ, নাই আভরণ,
হেমানী হইয়াছে কালীর বরণ;
হেবে তার আকার চিনে উঠা ভার,
সে উমা আমার উমা কাই হৈ আর।২৫

লীলা-কেত্রের সকল পার্থক্য নত্ত্বও মান্ত্-মনের প্রক্রিকে জন্ত্রীকার ক্ষিবার উপায় নাই।

বৈক্ষৰ পদাবলীতে আমরা দেখিতে পাই, গোপালকে পোঠে বিদায় দিয়া নন্দরাণী সারাদিন উদ্বেগ-আশকায় পথ চাহিরা বসিরা থাকিতেন এবং গোঠ হইতে গোপাল ফিরিরা আসিলে ক্ষীব-সর-ননী লইরা আগাইথা বাইতেন।

রাণী ভাসে আনন্দ সাগরে।

বামে বসাইরা ভাম

দক্ষিণে বসাইয়া বাম

চুম্ব দেই মূধ-স্থাকরে ॥

कीय ननी एकना मय

আনিয়া সে খরে থর

আগে দেই রামের বদনে।

পাছে কানাইয়ের মুখে

দের রাণী মনোন্তথে

নিরপয়ে চাঁদ মুখপানে ॥২৬

শাক্ত পদাবলীতেও অনুস্তপভাবে দেখিতে পাই, উমা কৈলাস হইতে ফিরিয়া আসিলে মা মেনকা আগাইয়া গিয়া বলিয়াছেন—

পথ-প্রমে স্থেদে সিক্ত কলেবর, ক্ষুধার মলিন হয়েছে অধর, হুঞ্জ ক্ষীর সর রেখেছি, সাধর,

पित तपन-कमत्म ।२१

কাত্ৰ সন্ধ্যাৰ গোষ্ঠ হইভে ফিবিয়া আসিলে—

গোগণ সবহু

গোঠে পরবেশল

मिन्द्र हन् नमनान।

আকুল পত্তে

বশোমতি আওল

মোহন ভণিত ৰুসাল ॥২৮

এবং ভাহার পরে---

পঞ্চদীপে নিরমঞ্চন কেল। কত শত চুম্ব বয়নপর দেল॥২৯

আগমনী সঙ্গীতেও দেখি কৈলাস হুইতে ফিরিয়া উমা আসিলে গিরিয়াণী মেনকা—

জমনি উঠিরে পুলকিত হৈরে, ধাইল যেন পাগলিনী।
চলিতে চঞ্চন, থাসল কুন্তল, অঞ্চল লোটারে ধরণী।।
আঙ্গিনার বাহিরে, হেরিরে গৌরীরে, ক্রুত কোলে নিল রাণী।
অমির বরবি উমা-মুখ-শশী চুম্বরে ধেন চকোরিণী।।৩•

२०। भा, भ, (क, वि,)।

২৬। বল্যাম দাস, পদ্ধল্পক ।

२१। মহেলুশাল খান (व्राका), म, প, (क, वि,)

২৮। পদকলতক

২১। মেহিন, পদকল্পতক।

৩ । কমলাকান্ত, শা, প, (ক, বি,)

্কুক্সের মাধুরাগমনের বিচ্ছেদ ব্যথা এবং উমার কৈলাসগমনের বিচ্ছেদ-ব্যথাও বাঙালী কবিগণের মনে থানিকটা সমজাভীর অফুভূভি স্ট করিয়াছে। আমরা কুফের মধুরাগমনে বেমন দেখিতে পাই—

কুন্তম তেজিয়া অলি

ক্ষিভিতলে লুঠই

ভক্তগণ মদিন সমান।
শাৰী ভক শিক মুগুৱী না নাচত
কোকিল না ক্ৰততি গান।৩১

তেমনই উমার কৈলাস গমনেও দেখিতে পাই— রাণি সৌ, স্বধু ভোমারি বেদনা ব'লে নয়।

प्तथ प्रिथि गिविभूद्व,

পশুপক্ষী আদি ক'রে,

खेमांद लानिया युद्द, मृद्ध निदानसम्बद्ध । ७२

কৃষ্ণ মথ্যায় চলিয়া ৰাইবাৰ পৰ বাজিতে কৃষ্ণের স্বপ্ন দেখিয়া নন্দালী বশোলা কাঁদিয়া উঠিতেন। এই জাতীয় চমংকার একটি পদ দেখিতে পাই কৃষ্ণক্ষল গোষামীর 'স্বপ্ন-বিলাস' পালার মধ্যে। স্বপ্নে গোপাল আসিয়া দেখা দিয়া আবার কোথায় লুকাইয়াছে— স্কাল বেলা ব্রজ্ঞাণী কাঁদিয়া কাঁদিয়া সেই কথা ব্রজ্ঞাজ নন্দকে বলিতেছেন।

শোন ব্ৰহ্মাজ, স্বপনেতে আজ,
দেখা দিয়ে গোপাল কোঞা লুকালে।
কেন সে অঞ্চল চাদে অঞ্চল গ'সে কাঁদে,
জ্ঞাননী, দে ননী দে ননী ব'লে।
নীল কলেবর ধ্লায় ধ্সর,
বিধ্যুখে বেন কন্তই মধুস্বর
সঞ্চারিয়ে তাকে "মা" ব'লে।
ক্ত কাঁদে বাছা বলি সর সর,
আমি অভাগিনী বলি সরু সরু,

আমনি সরু সরু ৰলি কেলিলেম ঠেলে।। ইত্যাদি।

সমজাতীয় বহু গাল দেখিতে পাই আমাদের আগমনী
সঙ্গীতের মধ্যে। এখানে উমার স্থা দেখিয়া গিরিরাণী মেনকা
গিরিরাজকে বলিতেছেন—

বললেম নান্থি অবসর, কেবা দিবে সর,

আমি কি ছেবিলাম নিশি-স্পনে ! গিৰিবাজ, আচেতন কত না গুমাও হে । এই এখনি শিবৰে ছিল গৌৱী আমাৰ কোশায় গেল হে, আধ আধ মা ৰলিয়ে বিধু-বদনে !

মনের তিমির নাশি। উদর ইইল থাসি। বিতরে অমৃতরাশি স্মল্লিত বচনে।

অচেতনে পেরে নিধি, ১০তনে হারালাম গিরি হে!

रिश्वयं ना श्रद्धा भग जीवतन ।००

षावान-

কাল স্বপনে শঙ্রী মুখ হেরি কি আনন্দ আমার হিমগিরি হে, জিনি অকল্প বিধু, বদন উমার।। বসিরে আমার:কোলে, দশনৈ চপলা থেলে, আধ আধ মা বলে বচল স্থধাধার, জাগিরে না হেরি তারে, প্রাণ রাধা ভার। ৩৪ দাশর্থি রারের প্রসিদ্ধ গান রহিয়াছে—

গিরি, গৌরী আমার এসেছিল।
স্বপ্নে দেখা দিরে, চৈততা করিয়ে
চৈততারপিনী কোথা লুকালো।।
কহিছে শিখরী, কি কবি, অচল,
নাহি চলাচল, হ'লাম হে অচল,
চঞ্চলার মত জীবন চঞ্চল,—
অঞ্চলের নিধি পেয়ে হারালো।

কিন্তু এই বাংসল্য-রসের ক্ষেত্রে বৈক্তব-কবিভায় বাংসল্য-রসের শুধু একটানা স্রোভই দেখিতে পাই—মাতৃ-স্কদয়ের বিগলিত স্নেহধারার সম্ভানের উপরে—অবিরল বর্ষণ। বাৎসল্য-রসের **অপর একটি** শ্রোন্ত আছে—উহা মাত-পাগল সম্ভানের মাতার প্রতি তীব্র আকর্ষণ—বে আকর্ষণ তাচাকে সংসারের অন্য সকল আসক্তির বন্ধন চইতে একেবাবে মুক্তি দিয়াছে। মায়ের প্রতি সন্তানের আকর্ষণ বাৎসল্য নামে বহুখ্যাত বলিয়া মায়ের প্রতি সম্ভানের এই আকর্ষণকে প্রতিবাংসল্য নাম দেওয়া হটরাছে। প্রতিবাৎসল্য-রূপ সম্ভানের এই সর্ববিশ্বারক আকৃতি বৈক্ষৰ সাহিত্যে নাই—গুণ বৈক্ষৰ সাহিত্যে নয়, অন্ত কোনও সাহিত্যেই-এমন ক্রিয়া নাই যেমন আছে বাঙ্গা দেশের এই শাক্ত সঙ্গীতের মধ্যে। বামপ্রাসাদ এই ধারার প্রবর্তক—রামপ্রসাদেই এই ধারার মর্বোচ্চ পরিণতি। স্থথে তঃথে, আশার নৈরাক্তে পাওয়ায় না পাওয়ায়, হাসিতে ভঞ্চতে মিলাইয়া এই 'মা' ডাক। সর্বব্যাপিনী সবৈশ্র্যময়ী আনন্দরপিণী মাকে অন্তবে উপলব্ধি করিং৷ রস-বিক্ষাবিত নেং করণার্ড কঠে যেমন মা নাম, তেমনই আবার ভবের গাছে জু:ড় দেওয়া' চোথে ঠুলি বাঁধা বলদের মত বানির গাছে বুরিতে ঘুরিতেই প্রাপ্ত কঠে মায়ের নাম. (৩৫)—-না-জানা অপরাধে দীর্গ মেয়াদে সংসার গারদে ভূগিতে ভূগিতেই মায়ের নাম, (৩৬) আবার ডাকিতে ডাকিতে সাড়া না পাইয়া অভিমানের অবিরল অঞ্চত অথবা অভিমানের কঠিন রোষেও সেই একই মায়ের নাম। এই সাধন-শক্তিতে ৰিখাস লইয়াই বামপ্রসাদ মায়ের নাম বলিয়াছিলেন--

> এমন ছাপান ছাপাইব খোঁজে খোঁজে নাহি পাবা। বংস পাছে গাভী ষেমন তেমনি পাছে পাছে ধাবা।

হাদয়ের সমস্ত আর্ডি আকৃতি উত্তরহীন নৈ:শব্দ্যের কঠিন শিলাতটে মাধা কৃটিয়া কুটিয়া একদিন হয়ত ফুঁসিয়া উঠিয়া বলিয়াছে—

মা ব'লে আর ডাকিস্না-রে মন, মাকে কোথা পাবি ভাই। থাকলে আসি দিত দেখা, সর্বনাশী বেঁচে নাই। ৩৭

৩১। গোবিক্ষ দাস। ৩২। রমাপতি বন্দ্যোপাধ্যার; শা. প. (ক. বি.)

৩৩। কমলাকাভ ভটাচার্য, শা, প, (क, বি,)।

৩৪। কমলাকান্ত ভট্টাচার্ছ, শা, প, (ক, বি,)।

৩৫। 'মা আমায় ঘ্রাবি কত' প্রভৃতি, রামপ্রসাদ।

৩৬। 'তারা কোন্ অপরাধে, এ-দীর্ঘ মেয়াদে, সংসার গারদে ধাকি বল'। নীলাঘর মুখোপাধ্যায়, শা, প,

৩৭। নরচন্দ্রায়; শা, প,

অভিমানে স্থাপরকে কঠোর কৰিয়া সন্তান বলিয়াছে—

যে ভাল কবেছ কালী, আর ভালতে কাল নাই।
ভালয় ভালয় বিদায় দে মা, আলোয় আলোয় চলে বাই।।৩৮
পূঞ্জীভূত অভিমানের আলায় রামপ্রসাদও একদিন মায়ের সহিত
স্ব চিসাব-নিকাস বৃঝাইরা দিতে চাহিয়াছিলেন।

মা মা ব'লে আর ডাকব না।
ওমা, দিয়েছ দিছেছ কন্তই যন্ত্রণা।
ছিলেম গৃহবাসী, করিলি সন্নাদী,
আর কি ক্ষমতা রাখিদ এলোকেশী,
ঘরে ঘরে যার, ভিক্ষা মগে খাব,
মা ব'লে আর কোলে যাব না।।
ডাকি বারে বারে মা মা বলিয়ে,
মা কি রয়েছিস চক্ষ্কর্ণ খেয়ে,
মা বিভামানে এ হুংশ সম্ভানে,
মা ম'লে কি আর ছেলে বাঁচে না।।

কিছ সভাকারের মাতৃ-সাধক এই সব সঙ্গীতকারগণ। এই অভিমানের চোপের জলেই হয়ত তাঁহারা বৃদ্ধিতে পারিলেন, মা বে খাশানবাসিনী, মার মায়ের আগমন নাই। তথন চলিগ একটু একটু করিয়া নিছের স্থান্থকে খাশানে পরিণত করিয়া মায়ের লীলা-ক্ষেত্র রচনা কবিবার সংধনা। কামনা-বাদনা-আসজিকে নিঃশেবে আলাইয়া পোড়াইরা তবে স্থান্থকে খাশান করিতে হয়; দয় কামনা-বাদনার চিভাভশের উপরেই স্থাপন করেন স্বশান্তিদায়িনী মা তাঁহার ছই চরণ। সেই মাতৃ-সাধনার রভ রামলাল দাস শত্রের গান—

শ্বণান ভালবাসিস্ ব'লে শ্বশান করেছি হৃদি। শ্বশানবাসিনী শ্বামা নাচৰি ব'লে নিরবধি॥

আমরা বাঙ্গা বৈষ্ণব পদাবলী ও শাক্ত পদাবলীর ভিতরকার মিলের কথাই আলোচনা করিতেছিলাম এবং দেই প্রসঙ্গে উভ্যু-জাতীয় পদাবলীতে বর্ণিত বাৎস্ল্যু-রসের কথা বলেতেছিলাম। এই মিলের প্রসঙ্গে আমরা আরও একটি জ্বিনিস লক্ষ্য করিতে পারি। বাঙলা দেশে শাক্ত ও বৈফবের ঘন্দের কথা স্থপ্রসিদ্ধ। নববাপে মহাপ্রভু জীচৈতক্যদেবের আবির্ভাবের পূর্বে দম্ভপূর্বক বিষ্ঠ্যার পূজা, মঙ্গল-চণ্ডার গীতে জাগরণ এবং বাসনা পৃক্ষার উল্লেখ দেখিতে পাই। সেই পটভূমির উপরে বৈফবদর্মের জাপরণ, ফলে শাক্ত-ধর্মের সহিত ছম্ম-কলহ অনিবার্ষ। নবরাপে এই দক্ষ-কলহ বছদিন পর্যন্ত চলিয়াছে, তাহার চিহ্ন আজিও বর্তমান। এখন পর্বস্তুও বৈষ্ণবগণের একটি প্রধান উৎসব বাস্বাত্রার পূর্ণিমা রাত্রিভে নবদীপের প্রধান প্রধান রাস্তান্তলির ভেমাথা-চৌমাথার বিরাট বিরাট দেবীমূর্ভি প্রভিন্তিত হইয়া মহাসমারোহে ^{প্ৰিভা} হন। কিন্তু অষ্টাদশ শতকে আমন্বা এই শাক্ত-বৈষণ **ৰদেৱ**ন একটা জনপ্রিয় সম্বয়ের প্রবণতা দেখিতে পাই। ^{সত্ত্}ভাবে অবলুপ্ত হইয়া বার তুই**জাতী**র হানরে, এক বর্ণার্থ সাধক-^{সন্মে,} দিতায় কবি-হাদয়ে। বেখানে এই সাধক-হাদয় ও কবি-^{ৰদং}য়ৰ ষোপ ঘটিয়াছে সেখানে ত আৰ[়] কথাই নাই। সাধাৰণভাৰে দেখা বার, সমাজের জনসাধারণও ধর্মের ক্ষেত্রে সমন্বর্যাদী; স্কুজরাং ক্বিগণের প্রচারিত সমন্বর্গন জনসাধারণ সাদ্রেই গ্রহণ ক্রিরা থাকে।

অষ্টাদশ ও উনবিংশ শতকে আমাদের যে সকল যাত্রা-পাঁচালী প্রভৃতি গড়িয়া উঠিয়াছে তাহার মধ্যে একটা শাক্ত-বৈষ্ঠবেৰ সমন্বরের সর দেখিতে পাই। এই সব যাত্রা-পাঁচালীতে দেখিতে পাই, রাধার স্বামী আয়ান ঘোষ ছিলেন শক্তি-উপাসক—কালী উপাসক। রাধা লুকাইয়া লুকাইয়া করিতেন 'কুকের পৃত্তা। ননদিনী কুটিলা পিরা ভাহা আয়ানের কাছে অভিযোগ কবিল, বধু রাধা লুকাইয়া কুকের পূত্তা করে। আহান ভগিনীকে লইয়া গোপনে স্বচক্ষে সব দেখিতে আসিলেন—আসিয়া দেখেন—

কুঞ্জকাননে কালী, তাজে বাঁশী বনমালী, করে অসি ধরে প্রীরাধাকান্ত। খ্যাম খ্যাম' ভেদ কেন কররে জীব ভ্রান্ত ॥ পীভাশ্বৰ পরিছবি, হরি হলেন দিপস্বরী, মরি মার হেরি কি রূপের অস্ত। কি বা কাল শৰী, লোলজিহ্বা এলোকেৰী, ভালে শৰী অট্টগাসি বিকট দম্ভ।। স্থগন্ধি তুলদী দিয়ে যে গোবিন্দ পদন্বয়ে স্থব নরে সাধে সারা দিনাস্ত। রঙ্গিণী বাই করে সেৱা দিয়ে সে চরণে রাঙ্গা শুবা কে পাবে শ্রাম চিম্তামনির ভাবের অস্ত ।১১

বাঙলা দেশে চলিত কৃষ্ণ-যাত্রায় এই পালাটি দর্শকবৃদ্দের সোরাস সমর্থন লাভ করে—এ সংগ্র আমরা নিজেগাই বছবার প্রভাক করিয়াছি। রামপ্রসাদের গা নও এই কৃষ্ণ-কালীর উল্লেখ আছে।৪০

ইহার অপর পিঠ দেখিতে পাই শাক্ত পদাবলীতে। সেধানে কৃষ্ণ-কালী বিষয়ে কবিওয়ালা লালু নন্দলালের বিস্তৃত বর্ণনা পাটান কবিওয়ালার গান' (শ্রীপ্রফুর্কুমার পাল সঙ্কলিত) প্রস্থের ৪২—৪৬ পৃষ্ঠার দ্রপ্তরা।

সমন্বয় দেখা দিয়াছে শুরুমাত্র জনপ্রিয় কবিছের মারফতে নয়, সেই সমন্বরের গভার রূপ দেখা দিয়াছে সাধক রামপ্রসাদের সত্যামুভ্তির মধ্যে । রামপ্রসাদের অধাকু অমুভ্তির মধ্যে তিনি লাভ কবিয়াছিলেন যে প্রমজ্যোতি: ও প্রম-আনন্দ তাহার মধ্যে জ্ঞাম ও স্থামার তিনি কোথাও কোন ভেদ দেখিতে পান নাই। ভাই তিনি অতি সহজ ভাবেই গাছিতে পারিলেন—

कानी इनि मा वात्रविश्वी नहेरद-रवर्ण दुक्षांवरन ।

নিজ-ত্রু আধা গুণবতী রাধা, আপনি পুরুষ, আপনি নারী।
ছিল বিবসন কটি, এবে পীতধটি এলোচুল চূড়া বংশীধারী।
সাধকের নিকটে রূপ ত কেবল ভিতরে কতগুলি ভাব উদুদ্ধ
ক্রিয়া লইবার জন্ত এবং ক্যালারস আবাধন ক্রিবার জন্ত।

৩৯। দাশর্থি হারের পাঁচালী।

৪০। কালবহণ প্রজের জীবন, অজালনার মন উদাসী।
 ছলেন বনমালী কৃষ্ণ-কালী, বাঁপী ডাজে কৃষে অসি।।

१७ । जवस्य वाव, भा,भ,

বাদ্ধানাদ প্রধানত: কাল'কে অবস্থল করিবাই নিজের ভিতরকার ভারগুলিকে উপুদ্ধ করিবার চেষ্টা করিহাছেন,—মারের বে একই সমরে অবি-মুণ্ড-বর্ম-বভারের লালা চলিহাছে ভালাই আমাদ করিবার চেষ্টা করিবাছে কি এ ভাই বলিয়া যে এক প্রমুসভার কালীয়পে লালা—ভালাই, কুফ লালা কোনভ সময়ে আমাদন করিতে সাধকের কিছুই বাধা নাই। ভাই লালা-বৈচিত্রা-প্রয়াসী রামপ্রসাদেরই গানে দেখি—

> ৰশোলা নাচাত গোমা ব'লে নীলমণি-দে বেশ লুকালে কোথা ক্যালবদনা ?

প্রীর অন্যাক্ষাগুড়তির সহিত সরল কবিপ্রাণ মুক্ত ইইয়া রামপ্রসাদের গানে এ সত্য প্রতিভাত হইল তাহারই প্রতিধ্বনি দেখিতে পাই অন্যান্ন কবিগলের মধ্যেও। সাধক কমলাকান্তও কালাকে প্রম কারণ বলিয়াই অন্তন্ত্র কবিতে পারিয়াছিলেন। এই প্রম কারণের নাবাহপে প্রকাশিত হইতেও কোন বাধা নাই। তেমনই পুরুষরপে প্রকাশিত হইতেও কোন বাধা নাই।

জান না কি মন, প্রম বারণ, কালী কেবল মেয়ে নয়। মেঘের বরণ করিয়ে ধারণ, কথন কথন পুরুষ হয়। হ'য়ে এলোকেশী, করে ল'য়ে মাস, দত্তজ্ব তারে করে সভয়।

হত্য অন্যালেশ্য পত্য সাল্য গান্ধ গমুজ তলত্ম করে সভায়। কাসু অজপুৰে আসি, বাজাইয়ে বাঁশী, অজাঙ্গনায় মন হরিয়ে লয়।৪১

এ সম্বন্ধে আত চমংকার একটি গান দেখিতে পাই নবাই
মসুরার। ইতাবা কবি মর্বাম্যা সহস্কপদ্ধাদের দলের। হৃদয়ের
যে মন্দিরে অসি-ম্ভাগরিবা কালীমান্ত্রে প্রতিষ্ঠা সেই মন্দিরে
একই প্রম সত্ত্বে কুক্রণের মধুর-লীলা-কাম্বাদন করিবার
অভিসাদ

জন্ম বাসম্ক্রিক দাঁড়াও মা ক্সিভক হসে : একবার হ'য়ে বাঁকা, দেমা দেখা,

জীবাগারে বামে ল'লে। নর কব কটি বেড়া, খুলে পর মা পীতধড়া, মাথায় দে মা মোহনচুড়া, চরণে চরণ খুয়ে।

8) শা প (ক বি); তুলনীয়—
অভেদে ভাব বে মন কালা আর কালা।
মোহন ম্রলীধাবা চতুর্ত্তা মুগুমালা।
কালা কি কালা বলিলে, কালে ছোঁর না কোন কালে,
কালের কর্ত্রী কালা সেই, কালা আমার মা কালা।

রামলাল দাস দত্ত, ঐ।

ভাজি নর-শিক্ষমালা, পর গলেংকনমালা, একবার কালী ছেড়ে হও ম! কালা, ওগো ও পাবাপের মেরে। হৃৎ-কমলে কাল শন্তী, আমি দেখতে ভালবাসি, একবার ভাজে অসি ধর মা বাঁনী,

ভক্তবাঞ্ছা পুরাইয়ে ॥ (8२)

একটু প্রশিধান করিলেই বোঝা বাইবে, শাক্ত পদাবলীতে এই জাতীয় গান কোনও তরগ প্রভাবজনিত নয়; এখানে প্রভাব একবারেই কিছু নাই এমন কথা বলিতে পারি না; তবে প্রভাব আপেক্ষা এখানে অনুভাতির ব্যাপকতাকেও মর্বাদা দিতে হইবে। বৈফব সাহিত্যের প্রভাব প্রভাবও শাক্ত সাহিত্যে কিছু কিছু পতে নাই এমন কথা বলিতে পারি না। গোবিন্দ আধকারীর রচিত্য রাধা কুককে লইয়া শুক-সারীর ধন্দ একটি প্রসিদ্ধ গান। (৪৩) ইহারই অনুকরণে পরিপ্রাক্তক কুকপ্রসন্ধ সেনের একটি নন্দী জয়া দ্বন্ধী দেখিতে পাই হর-গারীকে লইয়া।

আমার শস্তু যেন রক্সভগিরি, নন্দী বলে, গোবী আমার স্বর্ব বল্লবী, জয়া বলে, রূপে জগং আলো। ননী বলে, আমার প্রভুর শিরে কাপ ফণী, মা'ব নুপুরে ফ্ণীর মাথার মণি, জয়া বলে, শোভা বলব কত। नको दल, আমার শিবের ভক্ম গামে মাথা, জয়া বলে, পাবে ব'লে আমার মাহের দেখা, ভোলা তাই উদাসী। नकी राम, শোভা পঞ্চ বদনমগুলে, তুৰ্গা নামেৰ গুণ গাইবে ৰলে, জয়া বলে, পাগল পঞ্চানন। ইত্যাদি। ৪৪

8 र। শ, প, (ক, বি)

নৈলে পারৰে কেন? ইজাদি।

৪৪। শ,প,(ক,বি,)।



মিঃ লোমেন হত্যার নায়ক বিনয় বসু

শ্রীপ্রতিপ্রসন্ন ঘোষ

ৰে দিবীছ-শাস্ত গো-বেচারী ধরণের ছেলে, ঢাকা
মেডিকেল স্থলের ছাত্র, কোন দলাদলিতে বাকে কোন দিন
দেখা যার নাই—সেই বিনয় বন্ধ বে বিপ্লব যুগের প্রলয়-বহ্নিরূপে
কোন দিন প্রকাশ পাইবে তাহা মি: লোমেন হত্যার পূর্ব্বে কেহ কি
বিখাস করিতে পারিয়াছে? সতাই এটা একটা অভাবনীয় ও
ছচিত্বনীয় ঘটনা।

ঢাকা নগরীতে (বর্ত্তমানে পূর্ম-পাকিস্তানের অন্তর্ভুক্ত)
আমাদের বাসার নিকটে একটি ছাত্রাবাসে থাকিয়া বিনয় বস্থ ঢাকা
মেডিকেল স্কুলে পড়িত। সে ধুব স্থান্দর বাসী বাজাইত, উহাই যেন
ছিল তার একমাত্র আনন্দ। আনাদেব বাসা হইতে উহাদের ছাত্রাবাসটি
দেখা যাইত। ঐ ছাত্রাবাসের ছাদে বাস্যা উহাকে কত দিনই না
বাশী বাজাইতে দেখিয়াছি। বত্তকাল পূর্সের ঘটনা ইইলেও সমস্ত
বাপাবটা আজও চোথের সামনে স্পষ্ট ভাসিতেছে। মনে হয় উহা
যেন অন্তর্জার ঘটনা।

আজ ভারত স্বাধীন হইয়াছে—এই স্বাধীনতা লাভ কবিতে কত তকুণ্ট না তালের অমৃল্য জাবন অকালে মৃত্যুর যুপকাঠে আছিতি দিয়া অমবং লাভ কবিয়া চিবঅবশীয় হইয়া বহিয়াছে।

ৰত্তকালব্যাপী প্রাধীনতার নাগপাশ ছিন্ন কবিয়া ভারত আজ স্বাধীনতার আলোকে উজ্জ্বল এবং মুক্তির আনন্দে উচ্ছল।

বাঁরা স্বাধীনভার সার্থক রূপ দেখিবার পূর্ব্বেই অবিরাম সংগ্রাম করিয়া চিরবিদায় লাইয়াছেন তাঁঙাদের উদ্দেশ্যে জানাই সপ্রাম করেয়া। ম্মরণ করি তাঁদের—বাঁরা শক্তি দিয়া সাহস দিয়া কঠোর সাধনা দিয়া উংগাড়নের অভাবনীয় তুঃখ-কণ্ঠ সম্থ করিয়া অকুঠ চিত্তে সকল পার্থিব স্তথ ত্যাগ করিয়া প্রাজ্যকের জীবন এক একথানি ইভিছাদ রচনা করিয়া গিয়াছেন।

আৰু শ্বরণ করি তাঁদের, বাঁরা দেশকে—'মা' মনে করিয়া প্রাণীনের অবসাননা হুইতে তাঁকে উদ্ধার করিতে হাসিমুখে নিজেদের অমৃল্য জীবন বিসর্জন দিতে বিশুমাত্র বিধাবোধ করেন নাই। কবির ভাষায়—'জীবন-স্বৃত্যু পায়ের জ্বত্যু চিত্ত ভাবনা হীন।' এই সকল বরেণ্য ও চিরশ্মবণীয় বিপ্লৱী—ও স্বাধীনতার অগ্রন্তরূপে বাঁরা প্রণম্য—বিনয় বস্তু যে তাঁহাদের অক্ততম ইহা কে না স্বীকার করিবে ?

তাঁদের চিন্তাগারার সাথে, তাঁদের হিংসাত্মক কাজের আদর্শের শাথে আমাদের বিলুমাত্র মিল না থাকিলেও তাঁদের জীবনব্যাপী কঠোর সাধনা, শাসকদের হংথ-কট্টের নিষ্ঠুর জত্যাচার সহু করা ও দেশমাত্কার পদত্তলে জীবন বিসর্জনের চরম ত্যাগকে চিরকাল ইতজ্জ-ভিত্তে শ্বরণ করিয়া নিজেরাই ধক্ত হইব। তাঁরা বে ভারতের বাধীনতার পথপ্রদর্শক!

আৰু আমি পাঠকদের নিকটে মি: লোমেন হত্যার কাহিনী ও সেই সাথে উহার নায়ক বিনয় বস্তুর কথা বাহা নিজ চোথে দেখিয়াছি — ৰলিব। বিনয় ৰন্দ্রর নাম কোন্ বালালী না জানেন? বিনি ভানেন না, ভাহাকে ৰাজালী বালিয়া পরিচয় দিতে বভাৰভাই শকােচ হয়।

১১৩ - সনে জুলাই মাসে এই ঘটনা চাকাব মিটকোর্ড হাসপাতালে প্রাতে অমুমান দশ ঘটিকার ঘটে।

ি: লোমেন ছিলেন সেই সন্মে পুলিশেব হন্তা কন্তা বিধাতা অর্থাৎ I. G. P. এবং মি: হড়সন ছিলেন চাকার পুলিশ মুণারিনটেঞ্জেট। হিন্দুর প্রতি বিশেষেত: ছার্মের ও মেড়িকেল স্কুলের ছাত্রদের প্রতি—ভাষাদের অক্টায় ও অ্যথা অত্যাচারের জক্ত সকল হিন্দু অধিবাসীর নিকটে কথাত ছিলেন।

চালা নগৰীতে ও উঠাৰ সংলগ্ন ও হস্তভুক্তি প্রামগুলিতে ঐ সময়ে প্রবল বেগে অসহবোগ আন্দোলন চলিচ্ছেছিল এবং সেই আন্দোলনে কত স্ত্রী-পুরুষট না গোগদান কবিশা হাসিমুখে অজ্জ্ অজ্যাচার ও তুংগ-কট সহু করিয়াছেন। উাহাদের সংখ্যা বেমন গণনাতীত—ভাঁহাদের তুংগ-কটের কাহিনীও তেমনি বর্ণনাতীত।

ঐ অসহযোগ আন্দোলনের ফলে মদের দোকান, আবগারী দোকানগুলিতে সর্বদা পিকেটি চলিত। সেজনা সরকারের আমের পথে ষথেষ্ট বিশ্বেন স্পষ্ট চইত। সেই সাথে প্রায়েশ: হরতানের জন্ম চাকার পুলিশ প্রাসূবা থবই চঞ্চল ও বিত্রত হইয়া উঠিয়াছিল। এই সকল কান্তেন জন্ম তাহাবা ছার্নেন—নিশেষত: মেডিকেল স্থলের ছাত্রদের দায়ী করিত। ফলে প্রায়ই নিশ্পাপ ও নিরীত ছাত্রবা অকাবণে নির্ভূব ভাবে প্রস্তুত হইও। গভীব রাত্রিতেই ভাহাদের এই পিশাচিক কাগ্য চলিত। অনেক রাত্রিতে এই সকল ছাত্রের করুণ কায়া ভারবাছি।

আমার দৃত্বিশ্বাস—এইরূপ অভ্যাচারের ফলে অনেক নিরীক ছাত্র অবশেষে বিপ্লবীর খাতায় নাম লিগাইয়াছে। প্রতিশোধ-ম্পৃতার এই সকল তরুণ যুবক যে চঞ্চল ইইনে ইকা আর আশুর্যা কি? এইবার সেই মূল ঘটনায় যাই। ১৯৩০ সনেব ১লা জুলাই প্রাতে অনুমান দশ ঘটকায় যি: লোমেন ও মি: হুডসন এক সাথে কাসপাতালে তাহাদের এক বন্ধুকে দেখিতে আসেন—বন্ধুটি River S. P.—
তিনি পূর্কদিন লাটসাহেবের বাড়ীতে কঠাং অজ্ঞান ইইয়া পড়েন ও তাঁহাকে কাসপাতালে চিকিৎসার্থ পাঠান হয়।

সেই দিন হাসপাহাল ও বাস্তাঘাট পূর্ব হুইটেই পুলিশে ভ্রাছিল। কারণ সেই দিন প্রাতে দাড়ে দশ ঘটকায় তদানীস্তন লাটসাহেবের পক্ষ হুইয়া তাঁহার ককার হাসপাতাল পারদর্শনের কথা। মি: লোমেন ও মি: হুডসন উভ্যের হাতেই প্রকাশু পিস্তল ছিল। তাঁহারা, তাঁদের পুর্বোক্ত বন্ধুকে দেখিয়া হাসপাতালে ডাক্ডার সাহেবের সাথে দাঁড়াইয়া কথা বলিতেছিলেন, ঠিক সেই সময়ে বিনয় বন্ধু ও তাহার এক সাথী যাহার নাম বা কোন পরিচয় আজ্পর্যান্ত ভানা যায় নাই একং সে কি ভাবে যে বহু পুলিশের দৃষ্টি এড়াইয়া পলাইবার স্বয়োগ পাইল, তাহাও আজ্পর্যান্ত ক্ষাভাত রহিয়া গিরাছে। হুঠাৎ মি: লোমেনদের নিকটে আসিয়া দাঁড়াইল। বিনয় বন্ধু উহাদের প্রায় ১০ হাত দূরে আসিয়া মি: লোমেনকে সম্বোধন করিয়া বলিল ভিড মর্নি মি: লোমেন। দাই কিঃ কোমেন। দাই কিঃ কোমেন ও বিহা বন্ধ বাহা মি: লোমেনকে উপধ্পাপরি গুলী করিল ও থাকা বিভাবর হুবা মি: লোমেনকে উপধ্পাপরি গুলী করিল ও

বিনয় বস্তব স্প্রীটিও সাথে সাথে মি: হড্যমনকে গুলী করিয়া পিজ্ঞলসহ প্লাইল।

মিঃ লোমেন ও মিঃ হড়দন উভ্যের হাতের পিন্তল হাতেই বহিয়া গেল। ব্যবহারের স্থয়োগ হওয়ার পূর্ব্বেই আতভারীদের শুলীতে বিদ্ধ ভইয়া উভ্যেই রক্তাক্ত দেহে হাসপাভালের সি ড়িতে পাড়িয়া গেলেন। হাসপাভালে ভীষণ গোল্যোগের স্থাই হইল। ঐ স্থযোগে বিনয় বস্তুর সঙ্গীটি যে কোন পথে পলাইয়া গেল কেছই সঠিক বলিতে পারে না।

বিনয় বস্থ ভার হাতের রিজ্ঞাবার ছুড়িয়া ফেলিয়া দিল ও পায়ের চটি জুতা দেখানে রাখিয়া তার মেদের দিকে দনর রাস্তা দিয়া দৌড়াইয়া চলিল। হাদপাতাল হইতে ভাহার মেদ অনুমান হই হাজার হাত হইবে। রাজ্ঞায় লোকে লোকারণা এর: কেবল চীংকার ভানিভেছি "পাকড়াও"—"পাকড়াও"। এত লোকের ভিতর দিয়া নির্বিয়ে দিন্য বস্ত ভাহার মেদে চলিয়া গেল। এত লোকের মধ্যে কেন যে কেহই ভাহাকে ধরিতে সাহদী ইইল না ভাবিলে সভাই আশ্চর্য্য হইতে হয়!

এই ঘটনার প্রায় পনের-কুছি মিনিট পরে বিনয় বস্থ তার মেস হইতে একটি সাইকেলে নিশ্চিম্ভ মনে পলাইয়া গেল। তথন রাম্ভাঘাটে অসংখ্য লোক দাঁড়াইয়া এ দৃগু দেখিতেছিল,—কিছ কেহই বিনয় বস্থকে ধ্বিবার চেষ্টা প্রয়ম্ভ ক্রিল না।

প্রায় আধ ঘণ্টা পরে অজস্র পুলিশের দল হাসপাতাল ও
নিকটবন্তী রাস্তা-ঘাট ছাইয়া ফেলিল ও গতামুগতিক ভাবে তাদের
কার্যক্ষমতা দেখাইতে জটি করিল না। যেখানে যাহাকে পাইতেছে
খানাতল্লাসী করিয়া যতথানি সম্ভব বিবক্ত করিতে জটি করিল না।
বহু নিরপরাধ যুবক তাদের কোপদৃষ্টিতে পড়িয়া জেলখানায়
প্রেরিত হইল। পুলিশ বাহিনী বিনয় বস্থকে ধরিতে পারিল না;—
তবে তাহার পরিতদ্তে রিভলবার ও চটিজুতা লইয়া সম্ভই ইইল।

অনেকেট হয়ত জানেন যে, এই ঘটনার কিছুকাল পরে বিনয় বস্ত্র কলিকাতায় অন্য একটি বিপ্লবী ঘটনায় মাবা যায়।

অব্দ্র পুলিশের চোগে ধুলি দিয়া বিনয় বস্থ কবে কি ভাবে ঢাকা ত্যাগ করিয়া কলিকাতায় গিয়াছিল তাহা আজ পর্যান্ত জানা বায় নাই—কোন দিন যে জানা যাইবে তাহারও কোন সম্ভাবনা দেখি না। বাহা হউক, মি: লোমেন আছত হইয়া অজ্ঞান অবস্থায় করেক ঘন্টা বাঁচিয়া ছিলেন—পরে মারা মান। তাঁছার জ্ঞান আর ফিরিয়া আসে নাই।

মি: হডসন মৃক্যুর ছয়ার হইতে ফিরিয়া আসিলেন। যদিও তিনি প্রাণে রক্ষা পাইলেন কিন্তু জাঁহার চরিত্রের আমূল পরিবর্ত্তন ছইল। তিনি অকালে অতি বৃদ্ধ হইয়া পড়েন। আচার-ব্যবহারেও প্রবর্ত্তী কালে তিনি থুবই সংযত হইয়াছিলেন।

কলিকাতার বিনয় বস্থব জীবন বিসর্জ্জন দেওমার পূর্ব্ব মুহুর্ত্ত পর্ব্যস্ত ঢাকার উচ্চপদস্থ পূলিশ বাহিনীর ধাবণা ছিল যে, বিনয় বস্থ ঢাকাতেই আছে, ঢাকাতেই ধরা পড়িবে এবং ঢাকাতেই বিচারে কাসীর মঞ্চে বুলিবে এবং পূলিশ বাহিনীর জন্ম-জন্মকার হইবে। কিন্তু তাহাদেই সেই আশা-জাকাতকা সম্পূর্ণ ব্যর্থ হইরাছে।

ৰে বিভ্ৰুসবার দ্বারা বিনয় বস্ত্র মিঃ লোমেনকে হত্যা করে উহার একটা ইতিহাল আছে। সেই ইতিহাস উদ্ধারের কুভিত্ব রায় সাহেব বিতেন্দ্র ধর, সি-আই-ডি বিভাগের পুলিশ ইন্স্পেক্টার মহাশরের। শত্র মনে পড়ে, এই ঘটনার ভগন্তের ভার ভাঁকে দেওরা হইবাছিল।

মি: হাচিত্র নামে একটি থাস বিলাতী সাহেবের পাঠ ব্লীটে সোনা রপা জহরতের থুব বড় দোকান ছিল। দোকান ও আত্মরকার জক্ম তিনি এই বিভলবারটি লগুন হইতে ক্রম্ম করেন। মি: হাচিত্র ও মি: লোমেনের মধ্যে যথেষ্ট বন্ধুত্ব ছিল। ১৯১১ সনের শেষভাগে মি: হাচিত্র কিছুদিনের জক্ম থাজিলিংএ বেড়াইতে বান এবং তিনি যে হোটেলে জায়গা নেন, মি: লোমেনও সরকারী কাজে সই স্থানে ঠাই নেন। দাজিলিংএ এ বিভলবারটি লগুন হইতে মি: হাচিত্রের নামে ভি: পি'তে আসে। এ বিভলবারটি দেখিতে খুবই সম্পর্ম ছিল। উহা দেখিয়া মি: লোমেন পারহাস করিয়া বলেন যে, এমন একটি বিভলবার যদি কেহ আমাকে উপহার দিত, তাহা হইলে আমি নিজেকে মোগল বাদশা মনে করিতাম আর উপহারদাতাকে এক শত একটা মোগল বাদশাহী-মোহর উপহার দিতাম। তখন মি: হাচিত্র হাসিয়া উত্তর দিলেন যে, তুমি যথন পুলিশের মি: হাচিত্র হাসিয়া উত্তর দিলেন যে, তুমি যথন পুলিশের মারচ্ছেবের মুগে নিজে শুনিমাছি।

মি: লোমেন তথন তরুণ যুবক এবং Asst. Police Suptd. রূপে সরকারী কান্ধে নিযুক্ত ছিলেন। কে জানিত বে দেই বিভলবারই মৃত্যুর দূতরূপে মি: লোমেনের প্রতীক্ষায় ছিল।

মি: হাচিন্দের অলঙ্কারের দোকানের সিন্দুক হইতে ১৯১৪ সনেব ২৬ শে সেপ্টেম্বর ঐ রিভলবারটি চুরি যায়। সমতে ও একান্ত সাবধানে রক্ষিত রিভলবারটি বিনয় বহুর হাতে কবে ও কি ভাগে আসিল তাহা আজ পর্যন্ত প্রকাশ পায় নাই।

বিপ্লবীদের কাহিনী ও বিপ্লবের পূর্ণ ইতিহাস যদি কথনও কোন ঐতিহাসিক অসীম পরিশ্রমের দায়িত্ব লাইবা রচনায় প্রাবৃত্ত হন, এই কাহিনী হয়ত তাঁহাদের আরম্ভ কাজের সহায়ক হইতে পারে।

১৯১৪ সনের চুরি যাওয়া হিভলবারটি, যেটি দেখিয়া মি: লোমেন এত মুগ্ধ হইয়াছিলেন, তাছাই পুন: ১৯৩০ সনে তাহার নিকটে আত্মপ্রকাশ করিল। কিছ সে ইতিহাস আনন্দের নহ—বেদনাব করণ-কাহিনী।

মি: হাচিন্দ এই ঘটনায় থুবই ব্যথিত হইয়াছিলেন এবং তার চূবি যাওয়া বিভলবারটি দেখিয়া বখন বলিলেন ধে আমি মিঃ লোমেনকে পরিহাদ করিয়া বলিয়াছিলাম বে তুমি বখন Inspector General of Police হুইবে তখন, এটি তোমাকে উপহার দিব। বোধ হয় আমার পূর্বে প্রতিশ্রুতি রক্ষার জন্মই বিভলবারটি এ ভাবে দেখা দিল। এই প্রকাশ চিরকাল আমাকে আঘাত দিবে। এই ভাবে দেখা না দিয়া বদি চিরকাল বিভলবারটি অপ্রকাশ থাকিত তাহা হুইলেই আমি সব চেয়ে বেশী খুদী হুইতাম। এই কথাগুলি বলিবার সময়ে লক্ষ্য করিলাম বে তাঁর চোধ দিয়া ক্লল গড়াইয়া পড়িবার উপক্রম হুইয়াছে।

এইরপ হত্যার পূর্বে রিভসবারটি অন্ত কোন ঘটনার লিপ্ত ^{ছিল} কি না তাহা আনা বায় নাই।

জীবনরকার জন্ধ বেটির প্রয়োজন মনে হইয়াছে তাহাই কি না মৃত্যুর বাহনরপে নিষ্ঠুর ঘটনার এই তাবে দেখা দিল!

ইহাকেই বলে নির্ভি! অদৃষ্টের নির্ম্ম পরিহাস!!

की वन शै छा

ঞ্জীগোত্তম সেন

ি গীতাকে আমরা ধর্ম-গ্রন্থ ব'লেই জানি। নিত্য পাঠ করি, পূজা করি। কিছ এর ভেতরে কি আছে—তা জনেকেই জানি না। আমাদের জীবনের প্রত্যেকটি কাজে জড়িরে আছে এই গীতা। নিয়মিত আচরণ করলে জীবনকে সুঠুভাবে বন্ধা করা যায়— এ প্রত্যক্ষ সত্য। তাই এর নাম দিয়েছি জীবন-গীতা। গীতার ভাষ্য করেছেন জনেকেই। তা আরও ছুর্বোধ্য। আমি নতুন কিছুই লিখিনি। তাঁদেরই কথা ভেঙে ভেঙে সাধারণকে বোঝাবার জন্তে সহন্ধ ক'রে বলেছি মাত্র।—লেখক]

কুরুক্তেরে স্থাতনা

ক্র করতে পারলেন না। স্নেহাদ্ধ পিতা, পুত্র কুর্বেক্তরের মুদ্ধ
বন্ধ করতে পারলেন না। স্নেহাদ্ধ পিতা, পুত্র কুর্বোধনের
কুরিনীত ব্যবহার অসহায়ের মতো সহু করছেন। জ্ঞাতি বন্ধু আদ্মীরক্ষলন সকলেই চান তার অপরাধের শান্তি হোক, শান্তি আসেও তার
বন্ধ-কঠিন হাত নিয়ে এগিয়ে, কিন্তু কুর্বোধনের মুখের দিকে চেয়ে
সে লৌহ-কঠিন হাত শিখিল হয়ে বায়। পিতামহ ভীমা, আচার্য
দ্রোণ, মহামতি বিত্র সকলেই দেন উপদেশ। কিন্তু সকল
উপদেশকে অগ্রাহ্ম ক'রে মদমত কুর্বোধন পাশুবের বিক্তমে মুদ্ধ
ঘোষণা করলেন।

মহাজ্ঞানী ধৃতরাষ্ট্রেব কাছে এ বৃদ্ধের পরিণাম অক্তান্ত নয়, কিছা তাঁর চেতনাকে আছের ক'বে আছে তাঁর সর্বনাশা পুরস্নেহ। পুত্র হুর্যোধন এই হুর্বলতার স্থাোগকে জীবনের সর্বক্ষেত্রে কাজে লাগালেন। কৌশলে পাগুবদের রাজাচ্যুত্ত ক'বেও রাজা হুর্যোধন নিশ্চিম্ব হতে পারলেন না—গোপন ষড়মন্ত্রে তাঁদের বধের ব্যবস্থাও করলেন। স্ক্রানে একটি পরিবারকে তার অভিত্বের দিক দিয়েই তথু নয়, তার ঐতিহ্য, তার যুশ:খ্যাতি প্রভাব-প্রতিপত্তি—এক কথায়, জগৎ-ইতিহাসের পাতা থেকে পাগুবের নাম মুছে ক্ষেত্রে দেবার সংকল্প নিয়ের রাজা হুর্বোধন কৃট রাজনীতিক্ষেত্রে প্রবেশ করলেন।

পুত্রবংসল রাজা ধৃতরাষ্ট্রের কাছে পুত্রের কীতি ও অকীতি বখন সমান উপভোগ্য হয়ে উঠেছে তখন গান্ধারা এলেন আবেদন নিয়ে—পুত্রকে ত্যাগ করবার আবেদন নিয়ে। রাজাকে তিনি ভিরন্ধার করেন, কটুন্তি করেন—পাপ-পুণেরে কথা বলেন, ধৃতরাষ্ট্র বিচলিত হন, শাসন করবার প্রতিশ্রুতিও দেন, কিন্তু গ্রন্থজালিক হুর্যোধন তাঁর বাকচাতুর্যে ধৃতরাষ্ট্রকে বার বার সম্মোহিত করেন।

এমনি সম্মোহত ইয়েছিলেন তিনি যথন তাঁকেই সমুখে রেখে রাজকুলবধ্ জৌপদীকে তারা লাঞ্চিত করলো! সতীর সেই করণ কঠের আবেদন তিনিও স্বকর্ণে ওনেছিলেন। তাঁর দৃষ্টিশক্তি ছিল না, কিছ প্রবণশক্তি তিনি হারান নি। তিনি স্বকর্ণে ওনেছিলেন, হয় ভগবানের আবাসবাণী। যে-আবাসবাণী পাওবদের সমুদ্ধ করেছিল। গান্ধারী বললেন, এত বড় পাপ সইবে না মগারাজ!

মহারাজ বললেন, ধর্মই তাকে শাসন করবে, খে-ধর্মকে সে শংঘন করেছে।

কিন্তু মহারাজ পাপী-পূত্র বিধাতারও ত্যাজ্য। ভাইতো ভাকে ত্যাগ করতে পারি না মহারাণি, আমি বে তার

একমাত্র।

গান্ধারী বললেন, আপনি তো ভগু পিতা ন'ন—আপনি ৰে অগ্নণিত অমুগতের বাজা।

আমাকে ভধু পিতা হয়ে থাকতে দাও মহারাণি!

গান্ধাবী তথন অঞ্পূর্ণ লোচনে বললেন, হায় অন্ধরান্ধা, মুর্ভাগ্য আমার, ভোমাকেও আজ উপদেশ দিতে হচ্ছে! নইলে একথা আজ কেন ভূলে গোলে মহারাজ, দেহের একটি অঙ্গে পচ্ ধরলে. সে-অঙ্গ ভাগে করাই ধর্ম?

কিন্তু তুর্বল পিতা, নিরুপার পিতা অসহারের মতো সেই পচা-অঙ্গকেই মমতা দিয়ে আঁকড়ে ধরলেন।

বনবাসের পর পাশুবদের ফিরে জাসবার সময় বর্থন জাসন্ধ হয়েছে, ভবন এলেন ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বাজা-প্রান্ত্যপূর্ণের প্রস্তাব নিরে। ছর্বোখন সে-প্রস্তাব প্রভাগ্যান করলেন। শ্রীকৃষ্ণ বললেন, ভারা রাজ্য চার না, চার বাস করবার একথশু ভূমি। দান্তিক ছর্বোখন জানালেন, বিনা যুদ্ধে স্থচ্য প্রমাণ ভূমিও তিনি দেবেন না।

এই যোষণায় সকলেই বিচলিত হলেন। ধৃতরাষ্ট্র তিরন্ধার করলেন, ভীম দ্রোণ কুপাচার্য সকলেই এই পাপযুদ্ধ থেকে বিরন্ধ হতে বললেন। কিন্তু ভূর্যোধনের পদক্ষেপে তথন ধরণী কম্পিড হচ্ছে। বললেন, যুদ্ধ করতে ভয় পেরে থাকেন—বর্দ হরেছে অবসর গ্রহণ কর্মন।

ভগবান কিবে গোলেন শৃগগাতে। **অন্ত:পূ**রে বসে গান্ধারী প্রত্যক্ষ করলেন, আগামী-কালের কুরুক্তেত্<u>ত</u>-প্রান্তর।

অন্তু নের প্রথম প্রশ্ন

বৃদ্ধ-আয়োজন সম্পূর্ণ ক'রে অজুন যথন ক্লান্ত হরে পড়েছেন, তথন তিনি ভগবান ঐকৃষ্ণকে বসলেন, এত বে আয়োজন, এ কার জঞ্জে ? আর কেনই বা এ আয়োজন ? তুদ্ধে রাজ্য সে আয়াকে কি দেবে ?

যুদ্ধ দেবে জগৎকে শান্তি। পাণীর উচ্ছেদ হবে। মাছুবের কল্যাণে এই যুদ্ধের প্রয়োজন আছে বন্ধু! যুদ্ধ বেধানে আছেহেডু, সেখানে সে পাপ। তুমি বাবে ভৃষ্তের বিনাশের জক্তে—ধর্ম করবে অধর্মকে আঘাত।

আৰ্জুন বললেন, কোন্টা ধৰ্ম, কোনটা অধৰ্ম সে ভূমিই জানো কুক, কিছ আমি জানি, যুদ্ধ হত্যারই ভিন্ন নাম।

কৃষ্ণ হাসলেন। বললেন, এ ডম্ব আমি তোমাকে পরে বলবো।
কিন্তু ভূমি ক্ষত্রিয়, জগতে কোনো ক্ষত্রিয় যুদ্ধকে পরিহার করবার
জন্তে বৃদ্ধি-কাল বিভার করে না। কৌরব আজ ভোমাকে বৃদ্ধে
আহবান করেছে—ভূমি ক্ষত্রিয়, ভূমি ডোমার স্বর্ধ পালন করো।

মূখের বদলে যুক্ট কি ভাগ ফান্তিলার একসাত্র বধা কুক ? ভোষার বর্গ মার ভাঙ্গণের বর্গ এক নয় অর্জু ন !

বেশ বেশ কৃষ্ণ, অন্ত্র্ন হাগতে হাসতে বলসেন, আমি কিছু আনি না, তুমি যা করাপে তাই করবো। এ-যুদ্ধে আমি হবো রথী, ভূমি হবে সার্থি।

নিজেকে এমনি সমর্পণ বদি করতে পারে। অভুনি, জয় আমি ভোমাকে এনে দেবে।

অভুনের অন্তত্যাগ

পাশুব এরং কৌরব। ধর্মের সঙ্গে অধর্মের সংখাত ! আজ্বীরের মতো অভিয়ে আছে দানবের সঙ্গে দেবতা। পাপের সঙ্গে পুরা। 'সম্ভবামি যুগে যুগো।' ভগবান শ্রীকৃষ্ণ বললেন, এই অধর্মকে নাশ করতে আমিই এসেছি বাবে বাবে, হে পার্ম্ব, ভাইভে আমার প্রয়োজন ভোমাকে।

অন্ত্রন যুদ্ধসক্ষায় সাল্পত হরে এনে দাঁড়ালেন শত্রু-সৈন্তের মুখোমুখি। বললেন, শত্রু কে? এরা যে আমার আত্মীয়, কার আদে করবো অস্ত্রাঘাত? দে-অস্ত্র যে আমারট বুকে ফিরে এনে লাগবে। কে শত্রু, কে মিত্র জানি না—আমি দেখছি, ওঁদেরই মধ্যে যেছেন আমার পিতামহ, আমার পিতৃরা, আমার আচার্য—ওদেরই মধ্যে রয়েছে আমার বংশের ধারা পুত্র-পৌত্রাদি—আমার স্থা, বছু আত্মার আত্মায়—হে কেশব, থামাও তোমার সর্বনাশা যুদ্ধ, আমার শরার অবসন্ন হরে আসছে। তুছু রাজ্য, তুছু বশ: থ্যাতি। আর কার জন্মেই বা এ সব? কে ভোগ করবে দে সম্পদে? আমার বলতে বারা, তাদের বিনাশ ক'রে কি পরম-এখর্ষ ভোগ করবো আমি? আর যুদ্ধ যদি করতেই হয়, তবে বলো কুফা, আমিই সে-মৃত্যু বরণ কার। নইলে সম্ভানে আমি আমার স্থলন-অব্যেক্ত পারবো না।

বুদ্ধে স্বজন-নিধন সন্থাবনা দেখে অন্ত্ৰুন অনুতাপ করলেন।
কৃষ্ণ বললেন, কার জন্তে তোমার এ শোক? জগতে কেউ কি
মবে? মবে না। তোমার আমার মতো ওরাও—ধারা এই
কৃষ্ণক্ষেত্র প্রাস্তবে সমবেত হয়েছে, তারা কেউই মধবে না।
আমরা সকলেই ছিলাম, আছি এবং থাকবো—থাকবো জাবনধ্বংসের পরেও। 'বাসা'সি জার্গানি যথা বিহার' জার্প বিশ্লের মতো
দেছকে পরিত্যাপ ক'রে আমতা অনস্ককাল বেঁচে থাকবো।

'এক কাপড়ে ক'দিন চলে ! তেমনি দেহ জার্ণ হলে

भেটা ছেড়ে নৃতন দেহ পরি।'

তবে হংথ কিসের ? হংথ ভোগ করে কে ? সে তো আনি ?
কিন্তু আমি কে ? 'আমি'ই আআা। আমিই ভোগ করি,
আমিই হংথ পাই। কিন্তু এ কোনু আমি ? আমার দেহটাই কি
আমি ? কিন্তু দেহের অনুভব-শক্তি তো তভক্ষণই, বতক্ষণ থাকে
দেহে প্রোণ। কিন্তু বথন প্রাণ থাকে না, তথন ভোগ করে কে ? দেহ,
না দেহাতীত আব কিছু ? বলে, অপমান গারে এসে লাগে। মিছে
কথা। গারে লাগে না। গারে লাগলে দেহের বিকৃতি হ'তো।
দেহের কোনো পরিবর্তনই হর না, ভবু হুংথ পাই। ভবে এ-হুংথ
পার কে ? বে পার, সে দেহ নয়—সে স্বভ্রা। সেই আমি।

লেহ নর, দেহাভীত আহবা। আহোকে লোহা কথা বাব না।
চোথে কি সব কিছু দেখা বার? কিছু দেখা বার, কিছু অভুমান
ক'রে নিতে হর। এই বে ইন্দ্রিগগোচর নর, অথচ ক্থ-ভ্:ধের
ভোগকর্তা---সেই আহা।

আছা সকলেরই আছে। তোমারও আছে, আমারও আছে—
পৃথিবীর সকল প্রাণীর মধ্যেই আছে। ভিন্ন আধার বলে আছা ভিন্ন
নয়। একই আছা ভিন্ন ভাষাধারকে আশ্রায় ক'রে আছে মাত্র।
ধেমন আকাশ আছে সকল পাত্রে। পাত্র ভেত্তে গোলে, সেই একই
আকাশ—খণ্ড আকাশ, বৃহৎ আকাশে বিলীন হয়ে যাছে। আছাও
সেই থণ্ড থেকে বৃহত্তে জগদাছায় এসে মিশছে। এই জগদাছাই
হলে। পরমাছা। আকাশের বমন বিনাশ নেই, এই পরমাদ্ধারও
তেমনি ক্ষয় নেই।

কয় নৈই আছাব, কিন্তু দেহের ছো আছে ? অর্জুন এই দেহের কথা চিন্তা ক'রেই চঞ্চল হয়ে উঠলেন: দেহই তো মানুবের সব। দেহই বদি থাকলো না, তবে থাকলো কি ? দরদ তো এ দেহকেই নিরে। কারণ, দেহ আব তথন দেহ নয়—বিশেষ একজন হয়ে আনার নয়ন-মন অধিকার ক'রে বসে আছে। কত বত্তু, কত আদর, কত সাল্ল-স্কুল। সেই দেহকে ভোলা কি সংজ্ কথা? দেহ তো তুৰু ভখন পুরাতন বল্ল নয়—'প্রতি অঙ্গ লাগি কাঁদে প্রতি অঙ্গ মোর।' এই দেহান্তরে সেই বিশেষ-মানুষ্টিকে পাচ্ছি কোথায়? সে তো আর ভখন সে নয়। প্রাণ কাঁদে তো সেই তাবই ছন্তো।

অজুনিকে বিহ্বল হতে দেখে ভগবান হাসলেন। বললেন, কে কিছ হ:থ তো ভক্তকণ, বভক্ষণ বস্তুর সঙ্গে থাকে ইন্দ্রিয়ের যোগ। এই সংযোগ ষতক্ষণ থাকে, ভতক্ষণই ছু:খ। বোদে গা পো**ছে—**ৰোদেৰ সক্ষে গাত্র-চর্মের স্থোগ পর্যন্তই। যেই সংযোগের অভাব হয়, তথন আর সে অনুভূতি থাকে না। তবে যা থ'কে না, যা অনিত্য? ভাকে সম্ভ করাই ভাল। যে-হঃথ সহু করলেই ফুরিয়ে যাবে, তার 🕶 ব্দাবার কষ্ট কি ? মৃত্যুকেও তেমনি সহু করতে শেখো। তাহলে ভয় আৰু থাকবে মা। দেহ তো অমিত্য। দেহের বদলে দেই, রূপের বদলে রূপ। এই একট নিয়মে জগতের সকল বস্তুর রূপান্তর হচ্ছে। দেহীব মৃত্যু অবশুস্তাবী, কেউ রোধ করতে পারে না। বুজে তাক, ক্ষয়ে তোক, বোগে শোকে— মৃত্যু ভার হৰেই। ভাই ভগবান বলছেন, তে অজুনি, মিথ্যা শোক তুমি পরিহার করো। শোক ত্যাগ করে স্বধর্ম পালন করো। স্বধর্ম অর্থাৎ আপন ধর্মের আচরণ করো। কারণ সকলের ধর্ম এক নয়। ব্রাহ্মণ ক্ষত্রিয়ের আচরণ করবে না, ক্ষত্রিয়ও করবে না শুক্তের আচরণ। ক্ষত্রিয়ের ধর্ম বেমন যুদ্ধ-দে করবে শত্রুকে আঘাত, ভাক্ষণের ধর্ম তেমনি ক্ষমা, শৃক্তের ধর্ম সেবা। কর্ম যত ধর্ম তক্ত। আপন আপন কর্মই তার ধর্ম। ক্ষত্রিয়ের স্বধর্ম যুদ্ধ হলেও, অকারণ যুদ্ধ সে করে না। শক্রকে বিনাশ করতে অধর্মকে আঘাত করতে সে করে অল্ল-ধারণ। স্বধর্ম হলেও সে করে না অপরকে আর্রোচিত। তবে ৰুদ্ধ ষেখানে অপরিহার্য, সেখানে সে ক্লীবের মতো নিশ্চেষ্টও থাকে না।

বৃদ্ধ-সাজে সজ্জিত মহাগাণ্ডীবা কুক্তকেত্র-প্রাপ্তরে গাঁড়িরে বৃদ্ধের ভারী পরিণামকে লক্ষ্য করলেন। সম্প্রকান সহাপ্যশালে মহাকালের মহাজিজ্ঞাসা! অন্ধ্য বললেন, এ-ফুকের শেষ কোথার ? এক অবর্ধকে নাশ করতে সহল্র পাপে পূর্ব হলো ধরনী। কুল গেলো, ভূলধর্ম গেলো, মানুবের সমাজ-বন্ধনে পড়লো আচণ্ড আঘাত। মানুব ভূলে গেলো কোনটা ধর্ম, কোনটা অধর্ম। ভরহীন, কুঠাহান, নির্লহ্ম ব্যভিচারে পারিবারিক জীবন ভেঙে গেলো। পাপ আজ আর পাপ নর—তাই জন্ম নের নিজ্লুর ধরিত্রার বৃক্তে লক্ষ লক্ষ জারত সভান। কুবের পরিধাম যদি এই হর, তবে কাজ নেই কুক্ত, আমার সে-বৃদ্ধে। অর্জুন ধর্মবাণ ত্যাপ করে রথের পাশে বনে পড়লেন।

क्रश्तात्मत्र अथम उँखत

আনু নিকে ধনুর্বাণ ভ্যাগ করতে দেখে অপেক্ষমান শক্ত-দৈর মহা উল্লাসে শত্থাবনি করতে লাগলো। অনু নের ক্ষত্রিস-মক্ত উত্তপ্ত হুরে ওঠে, কিন্তু বৃদ্ধি ভাকে শাস্ত করে। মুক্তিন পত বিচার করতে জানে না, সামাস্ত্রস্থ উত্তেজনাতেই শে বাঁপিছে পড়তে পারে। কিন্তু মানুষ ভা পারে না—দে বৃদ্ধির অহংকার রাগে।

অন্ত্রন বিচার ক'বে দেখতে চান, বৃদ্ধির পরিমাপে বাচাই করে
নিতে চান, এ যুদ্ধে কতটুকু জাঁর কাতি আব কি-ই বা জাঁর লাভ।
আমি জয় করি, অথবা তারাই আমাকে জয় করুক— এর মধ্যে
কোন্টি জোন, বৃদ্ধি দিয়ে তা বিচাব করতে পারলেন না।

উত্তর দিলেন ভগণানঃ তুমি কে? তুমিই কি সব করে।?
এই আমিব অহংকার তোনার সকল বৃদ্ধিকে আছে করে আছে।
তুমি তোনার কাজ করে যাও, কর্মের জন্মেই তুমি এসেছো। কর্মেই
তোনার অধিকার—'কর্মনোরাধিকারতে মা ফলেম্ কাচন' ফলের
দিকে চেও না। এই যে নিরাসক্ত কর্ম, অর্থাৎ সফলতা, নিম্মলতা
বিষয়ে সমান ভাব রাখা সেই তো যোগ। সমতা তো মুখের কথা
নয়, তাকে পেতে হয়— অক্সাস ছারা জয় করতে হয়।

"যোগন্তঃ কুকুকর্মাণি সঙ্গং তাঞ্জা ধনজ্ঞয় শিক্ষসি ক্ষাঃ সমোভ্যা সময় যোগ উচাতে।"

যোগত্ব হয়ে সঙ্গ ভাগে ক'বে কর্ম করতে হবে। বোগ কি? সিদ্ধি ও অসিদ্ধিতে স্থান জ্ঞান। সঙ্গ কি? কর্ত্বভিনিবেশ। আমি কর্তা নই, কর্তঃ তুমি, ভগগন। কর্মবোগের এই হলো বড় কথা। কৰ্ম তো সুধাই কৰে--পশু-পক্ষী জীবমাণত্ৰই। কিছু ভাৱা করে নিজের জন্মে, নিজের বা পরিবারের ভরণ-পোরণের জন্ম। কিছ মানুষের কর্ম-জীবন গালের উপের্শ-চেষ্টা ক'রে ভাকে সকলেছ উপরে উঠতে হয়েছে। স্বন্ধের পর থেকেই সে থাড়া হয়ে উঠতে চেষ্টা করেছে। এই চেষ্টার ফলেই হাতকে দে ব্যক্ত কাব্দে লাগিছেছে —যা অন্ত অন্ত-জানোয়ারে পারেনি। দেহের দিক থেকে মাছুব বেমন উপৰ্য শিবে নিজেকে টেনে তুলেছে থণ্ডভূমিৰ থেকে বিশ্ব-ভূমিৰ দিকে, নিজের জানা-শোনাকেও ডেমনি স্বাতন্তা দিয়েছে জৈবিক আরোজন থেকে, ব্যক্তিগত অভিকৃচির থেকে। এই বে আপন শ্রেষ্ঠভাকে প্রকাশ করবার জন্মে প্রভৃত প্রয়াস, এ একমাত্র মানুবেরই আছে। নিজেৰ মধ্যে যে কল্পনাকে সকল কালের সকল মানুদের ৰ'লে সে অভুতৰ করেছে তারি দারা সর্বকালের কাছে নিজের পরিচর দিতে ভার কত বল, কত কৌশল। ছবিডে, মৃতিভে, খরে, বাবহারের সামগ্রীতে সে বাংক্তগত্ম মাতুবের থেবালকে প্রচার করতে চায়ান, বিশ্বগত মাছুবেৰ আমন্তকে স্থায়ীরূপ দেবার জন্তে ভাব হংসাধ্য সাধনা। এই সাধনার পথেই সে উদর্ব হতে উদর্ব লোকে

উঠবাদ কঠা করছে। কিন্ত ৩পরে উঠতে গেলে নীচের ধাপটাকে অথীকার করা চলে না—ভাকে এত্যেকটি বাপ উত্তার্গ হতে হবে। তেবেই ওপরে ওঠা বাবে।

ভগবান সেই ওপরে উঠবার কৌশসটিই দেখিরে দিলেন। বললেন কর্ম করো। পত্ত-পঞ্চীর কর্ম নর, জাব-খ্রেদ্ধ মানুবের কর্ম। ফললাভের প্রত্যাশার কর্ম নর, ফল-অফলে সমান জ্ঞান রেখে বে কর্ম, সেই কর্ম ভোমাকে ক্রতে হবে।

আর্থুন বললেন, কর্ম চো ক্রিয়া। যা করা যায় ভাই কর্ম। ভগৰান হাসলেন, বললেন—এ যে বললাম, কর্মে অনাসন্তি। কর্মে মানেই স্থান। তোমার বা ধর্ম সেই অনুযারী কর্ম করো। প্রধর্ম কথনো গ্রহণ করবে না। কর্ম স্থানাচরণের বাছ স্থাল ক্রিয়া।

অর্জুন ব্রুতে পারলেন না। ভগবান বললেন, কর্মের সঙ্গে খনের বিজন হওরা চাট। এই মনের সহযোগ হলেই কর্ম ভগন বিকর্ম হরে বার। বাইবের কর্ম সাধারণ কর্ম। আর আন্তর্গিক কর্মই ছলো বিশেষ কর্ম। আবার এই কিশেষ কর্ম নিজ নিজ মানসিক প্রস্থোজন অনুসারে জিল্ল ভিন্নও হতে পারে। এই বিশেষ কর্মের, এই নানসিক সংগতির সংবোগ-সাধন কর্মেলই নিকামভার জ্যোতি ফুটবে। কর্মের সঙ্গে আন্তরিক ভাবের যথন মিলন হন্ম ওপন সে আর-কিছু হয়ে যার।

অজুন প্রশ্ন করেন, সে কি রকম ?

উত্তরে ভগবান বললেন, তেল-পলিভার সংযোগেই কি আলোৰ উৎপত্তি হয়? হয় না। আলোর উৎপত্তি হয়, তার সঙ্গে জ্যোভির মিলন হলে। কর্মের সঙ্গে বিকর্মের মিলন হলে তবে না নিছামতা আগে। এই কর্মে বিকর্ম ঢাললে তবেই কর্ম দিব্য হয়। তদ্ধের সঙ্গে মন্ত্র থাকা চাই। যেমন বাহ্য তদ্ধের কোনো মৃল্য নেই তেমনি কর্মহান মন্ত্রেরও মৃল্য নেই। হাত দিয়ে যেমন, হাদয় দিয়েও তেমনি সেবা করা চাই। সম্ভানের কাছে মায়ের দেবা যেমন। কর্মের সঙ্গে বিকর্মের সংযোগ হলেই শক্তির ক্রুবণ হয়। আর তা থেকেই আলে অকর্ম।

সে আ'ার কি ? কাঠ পুড়ে ছাই হয়। প্রথমে কত বন্ধ কাঠ ছিল,
কিন্তু পুড়ে নিন্তেজ ছাই হয়ে গেল। বেমন ইচ্ছা বাবহার
করো। কর্মে বিকর্মের জ্যোভি স্পাণ হলেই অকর্ম হয়। কোধার
কাঠ, স্পার কোধার ছাই! ওদের ভাপর্মে এখন কোনো সমতাই
নেই। কিন্তু সে বে এ কাঠেরই ছাই এতে তো আর ভূল নেই।

ভণাপি অর্জুন প্রশ্ন করলেন: কর্মে বিকর্মের সংযোগ হলে অকম হয়---এর অর্জ কি ?

এর অর্থ হলো—কর্ম বে করছি তা মনেই হয় না—অর্থাৎ করের বোঝা অন্থভব হয় না—কর্ম করেও অক্রা। কর্মকে নির্মল করার জ্বেল বথন অবিয়াম চেষ্টা স্থক হয়, তথন আপনা থেকেই কর্ম নির্মল হছে থাকে। নির্মি কর্ম বর্ধন সহজ্ঞতাবে পর পয় হছে থাকে ভথন কর্ম কর্মন বে হয়ে সিয়েছে ভা টের পাওয়া বায় না। কর্ম সহজ্ঞ হয়েছে মানে, কর্ম অকর্ম হয়েছে। ছেলে হাটতে শেখে—প্রথমে কত কন্তই না হয়—পরে সে কর্ম তায় সহজ্ঞ হয়ে বায়। কর্মকে অকর্ম করাই আমাদের লক্ষ্য। এই লক্ষ্যে পৌছবার অক্তে স্থানাচরণক্ষপ কর্ম করতে হয়ে। কর্ম করতে করতেই পোর বয়। পড়বে, তথন বিস্কর্মের আন্তাম নিতে হবে। এই চেষ্টার ক্ষ্মেল য়ন এমন অভ্যান্থ হয়ে বায় বে কর্মে আয় তথন ক্ষ্মিলাধ থাকে না। হাতে হাজার ক্ষ্ম

চলতে পাকে কিন্তু মন পাকে শুদ্ধ, শাস্ত। বড় বড় কঠিন অবস্থাও আৰু তথন কঠিন মনে হয় না।

चक्र न खत् बुक्षण्ड भारतम मा, रालम, कर्म विकर्भ चकर्मत कथा ভাল ক'রে বলো। ভগবান বললেন, কর্ম বিকর্ম অকর্ম মিলে সকল गांधना পूर्व इय । कर्म इतना चून तक्त । य च्रध्म-कर्म आंगवा कवि ভাতে আমাদের মনের সহযোগ থাকা চাই। কর্ম ও বিকর্ম তুইই দরকার। এই ফুইরের আচৰণ করতে করতে অকর্মের ভূমিকা প্রস্তে হয়। এই কর্মের স্থায়তার জ্বরেট বিকর্ম নিরম্ভর দরকার। অর্থাং কর্ম মানেই ছলো স্বধর্মের আচরণ করা। चर्य कि ? च-धर्य--निर्द्धत धर्म। ठातौ त्व, ठावहे खात धर्म। ব্দপ্ত ধর্মের আচরণ ভার বিরুদ্ধ কর্ম। এই ব্ধর্মাচরণের ৰাহ্য কৰ্ম চলতে থাকা কালে ভাব সহায়ভাব জ্ঞে মানসিক (व कर्म कता इम्र जाने विकर्म। এने कर्म ७ विकर्म शक इस्म ষধন চিত্ত পূর্ণ-শুদ্ধ হয়----সকল ময়লা ধুয়ে যায়। বাসনা ক্রীণ इब, विकाद भाक्त इद, त्डम-डार भित्ते साय-जारे व्यवहारकरे ज्यन व्यक्त यमा इत। यह व्यक्त प्रतक्षाहे कता बाहा। এক, দিন-বাত কাজ ক'বেও কিছুমাত্র কাজ করছি না এরপ বোধ--- बाद किছू ना क'द्रित अवग्राहरू कर्म करा।

त्म आवाद कि दक्य? अपू न क्लान्न।

বেমন স্থের কর্ম। স্থের আলো—দানই হ'লো তার সহজ-ধর্ম। তার আলো দেওয়াটাই হলে। স্বাভাবিক। আলো যে সে निष्क्र—त्म निष्कु कांन ना। **जोद्र कक्षिक्**रे कांत्मा। कांत्रा-দেওয়া-রপ-ক্রিয়ার কট্ট তার নেই। ভাইতো চরিবণ ঘটা কর্ম করেও সুর্য লেশমাত্র কর্ম করে না। সাধুদের অবস্থাও তাই। পুর্বের আলোক দানের মতোই তাঁদের কর্ম স্বাভাবিক। ে কর্ম करबु करद मा- । इत्ना मन्नारमय अवनिक, आवाद अभूतिक इत्ना-त्र नित्क कारना कर्यरे करत् ना, व्यथे भावा विधाक कर्म প্ৰবৃত্ত কৰাছে। অৰুৰ্নেও বিশেষছই হলো এই। তাতে অনস্ত কর্মের উপযোগী শক্তি ভরা **থাকে। বেমন বা**ম্প-মনস্ত শক্তি ব্রেছে তার মধ্যে। না-বলাও ক্রোধের এক রপ। ভাতেও কর্ম ছব। কর্ম না-করার পরিণাম, अভাক্ষ-কর্ম-করার পরিণাম থেকে অনেক বেশী প্রচণ্ড হয়ে থাকে। এ অ-বলায় যে কাজ হয়, সহস্র ৰলাছেও দে-কাজ হর না। পিতার উপদ্বিতিই পুত্রের শাস্তির পক্ষে যথেষ্ট। জ্ঞানী পুরুষের তাই হয়। তার অকর্ম, তার শাস্ত ভাব প্রচণ্ড কর্ম ক'বে থাকে। অক্মী থেকেও দে এত কর্ম করে ৰা নানা ক্ৰিয়া ভারাও করা বায় না।

ভগবান বললেন, কামনাশৃষ্ঠ হরে কাজ করলে করেও আনক্ষ

হয় না, আবার ক্ষতিতেও হয় না হঃখ। স্থ-ছঃথের
সমামুভ্তিই সমত্ব জান। বাঁর আত্মা সমতাবাপর তিনি
ছঃথভোগ করেন বটে, কিছ ঘুণা করেন না—ছথকে তিনি গ্রহণ
করেন, কিছ তাতে উল্লসিত হোন না। জন্ম, মৃত্যু, হঃখ, বন্ত্রণা থেকে
পালিয়ে যাওয়া কাপুক্বতা। ওলের তীকার করতে হবে, ওলের
উপেকা ক'বে জয় করতে হবে। অভ্যাদ করলেই মামুব তা
পারে। অভ্যাসই তো বোগ। অভ্যাসে মামুব কাম-ক্রোথকেও জয়
করতে পারে। এয় নাম তিজিকা—সভ্ব করবার সংকর ও শক্তি।
জ্বর্জন বললেন, স্ববিভূ সভ্ব করবার জভেই বদি, মামুব এসে

খাকে এই পৃথিবীতে, তবে কি প্রয়োজন ছিলে। এই স্থান্ত ভোগের সহস্র উপকরণ সম্মুখে রেখে মামুব ভোগ করবে না এই বা কি কথা! তাই যদি, তবে ভগবান ভোগের স্পৃহা দিলেন কেন? কামনাই বা দিলেন কেন? পিপাদার্ভের মুখের কাছে জল রেখে তাকে বঞ্চিত করারই বা কি জার্থ?

ভগবান বঙ্গলেন, ও-কথার অর্থ তা নয়। ভোগে আনন্দ্র আছে, কিন্তু হংগও ভো আছে। ভোগের শেষ নেই—বত দেবে, তত থাবে। এই দেওয়ার ইজ্ঞাকেই ভোমার সংযত করতে বলা হরেছে। তার মানে, কামনা ও ইক্রিয়াদি থেকে নিজেকে সরিয়ে নেওয়া। হংবে কাতর হঙ্গেই মানুষ হংগ পায়। কিন্তু হংগ বাকে স্পার করে না, তার হংগ কোধার ? হংগকে ভো দে জ্লয় করেছে। আবার স্থাপ বাব স্পারা, সেও হংগী, স্পারাই হলো পাপ। ভর, ক্রোগ অনুবাগ—ন্থাং ইক্রিয়-ভোগা বস্তুতে অনুবাগ, এও হংগের কারণ। স্থাপ স্থাক ভোগ করতে।

অর্জ্জুন বললেন, কিছা এ কামনা তার্গ করা কি সংজ্ঞা কথা ? দশ ইন্দ্রির দশ দিক থেকে বাধা দিছে। ভগবান উত্তব দিলেন: ঐ ইন্দ্রিরকেই তো জর করতে হবে—ইন্দ্রির-সংখ্যই হলো জীবন-বেদের প্রথম কথা।

মন মুখ এক করে।। মনই তো হলো যত নষ্টের গোড়া। ভোগ গেলেও মন খাকে। মনের বাদনা কিছুতেই বেতে চার না। তাই ভগবান বলছেন, কচ্ছপের মতো নিজেকে শুটিরে নিতে শেখো, তাইলে ছংখ থাকবে না। শক্ত ক'রে ঘোড়াব লাগাম ধরে থাকো— ছাই, ঘোড়াকে বশে রাখতে হলে, রাশ টেনে রাখা চাই। যে সকল বিষরে রাশ টানতে জানে, সে ছংখ পার না। তাই ব'লে মানুবের কি বিপু থাকবে না! বিপু আছে, তার প্রয়োজনও আছে। কিছ থেতে গ্বে বলে কেউ অতি ভোজন করে না। তার ছংখ আছেই। এখানেই আগছে সংখ্যের কথা। এই সংখ্যের মধ্যেই আছে জানন্দ। বিনি বিধ্যাল্বা অর্থাং জিতেক্সির, তিনি স্বাগবেরবিযুক্ত ইক্সিরেম উপভোগে আনন্দলাত করেন।

রাগন্বেষবিষ্ঠজন্ত বিষয়ানিজ্ঞিইয়ন্চরণ আত্মবশ্রেবিধেয়াত্মা প্রসাদমধিগজ্ঞতি।

রাগবেষবিমৃক্ত-ইন্দ্রিয়, অর্থাৎ বার ই**ন্দ্রিয়-আচরণে অমুরাগও নেই,** বিধেষও নেই।

অর্জুন হেদে বললেন, দে আবার কি কথা ? ভগবান বললেন, কেমন জানো ? রোগী বা দেহ মনে বে জন্মত্ব তার কি ভোগে কৃচি থাকে ? ভোগে কৃচি স্থ্য মাধুবের, তার বিষেব নেই। আদজি ভো আদে বিষরের চিন্তা থেকেই। আবার আদজি থাকলেই মনে কামনা জাগে। সে কামনার আর শেব নেই। ডখন না পেলে মামুর বাগ করে। এই রাগ থেকেই অনর্থের স্থাই। সেই জক্তেই ভগবান উপদেশ দিলেন, রাগ এবং দেব বজিত হরে ভোগ করে। চিন্তের প্রসন্নতা আদরে। চিন্তের প্রসন্নতাই বৃদ্ধিকে ছির করে। বার সমঘ নেই তার বিষেক নেই, ভক্তিও নেই। ভক্তি থাকলেই শান্তি, আর শান্তি থাকলেই স্থা। 'অপ্রমানমচল প্রতিষ্ঠাং' কড নদীর জল এসে পড়ছে সাগরে, সমুত্র কিন্তু সে জন্দে উদ্বেশিত হরে মা। সে ছির, অচঞ্চল—সে সকলের জলকে আত্মব ক'রে ছির। কামনাকেও করতে হবে আমনি করে আত্মব।



অমল দেন

তেবা ফিগ্নার কণ-বিপ্লবের একজন নায়িকা।

অভ্যাচারিত ক্লশিয়ার বুকে নিহিলিষ্ট সংঘের তথন নব-অভ্যাপান। এই সংঘের সভ্য সংখ্যা ক্লী-পুক্রে মিলে চিরিশের বেশী ছিল না, কিন্তু এদেঃই আভাকে সমগ্র ক্লশিয়া কেঁপে চিসেরা। সংঘ যথন প্রথম গ'ড়ে ওঠে তথন সংঘের সভ্য সংখ্যা ছিল মাত্র জাঠ, কিন্তু তবুও তারা মহৎ আদর্শে অনুপ্রাণিত হরে এই সংঘকে বাঁচিয়ে বেখেছিল।

ভেবা ফিগ্নাব এই তু:সাহসীদেরই একজন। আনাদের দেশের মতো শাস্তশিষ্ট লক্ষীমন্ত মেরেদের সংখ্যা কোনো দেশেই কম নয়। এইদর লক্ষীমন্ত মেরেরা শাস্তশিষ্ট জীবন যাপন ক'রে, গুরুজনদের উপদেশ পালন করে, ঘর-গৃহস্থালীর কাজ শৃংখলাব সাথে স্বন্দর পরিপাটিরূপে সম্পন্ন করে আস্থায়-স্বন্ধন পাড়া-প্রতিবেশীর কাছে দ্রন্ত যশ কুড়িয়ে বেড়ায়—এর হ'ল এক টাইপের মেয়ে।

কিপ্ত ভেরা হ'ল নতুন টাইপের মেয়ে। তার পণ হ'ল— মলায় মত্যাচার আব অবিচার সইবো না, কারুর 'পরে অল্লায় অত্যাচার কাব মবিচার করবো না। ধথনই দেখবো কারুর উপরে অল্লায় মত্যাচার আব অবিচার হচ্ছে বুক দিয়ে ভাকে রক্ষা করবো।

এই প্রতিজ্ঞা রক্ষা করতে গিয়েই ভেরার প্রথম চোথে পড়লো তার গু:খিনী জননী জন্মভূমি কশিরা এই অত্যাচারে কর্জবিত। তার প্রথম পণ হল এই অক্তার অত্যাচারের হাত থেকে, এই পরাধীনতা থেকে দেশকে মৃক্তি দিতে হবে। এই প্রতিজ্ঞাই ভেরাকে বিপ্লবের পথে ঠলে দিল।

গুব জন্ধ বয়সেই বিশ্ববিদ্যালয়ের সাথে সব সম্পর্ক ছিল্প করে ভেবা কিগনার নিছিলিষ্টদের দলে যোগ দিল।

কিন্ত বিপ্লবের পথে পা বাড়াবার আগে ভেরার মনও সাশরে দোল থেতো, বিধাযুক্ত স্থানরে সে ভারতো—এই গুপুহত্যা—মানুবকে মতর্কিতে খুন করা—এ কি বড় সহজ ?

না !

এ আতাভ অভাতি বিক, আতাত কক্ষণ—বৈ খুন করে এমনি লাবে, ভারও মনে বেদনা ভাগে অজ্ঞাতে। এ নিষ্ঠুব কার্যা ইচ্ছে কবে কেউ করে না, করা উচিতও নয়। কিছু ভবু কেন করতে হয় এ কাছ ? কে দায়ী এর জন্ম ?

ভে' । ভেবে দেখলো, দায়ী ফুশ্দরকার। অক্সার স্বভ্যাচারে জাতি ৪ হয়ে উঠে মান্ত্র বিচার চাইতে গৈছে বারে বারে। পোরেছে কি ? চতুর্গুণ অক্সায়, চতুর্গুণ স্বভ্যাচার।

লক্ষাচারে অভ্যাচারে কঠলের, হস্ত অসাড় ! সমগ্র কশিয়ার

সাধারণ মানুষের এই অবাক্ত বেদনা ভেবা ফিগনার **আপনার অন্তর** দিয়ে অনুভব করলো।

জারকে ছত্যার চেষ্টা করার অপরাধে ধরা পড়ে ভেরা**র এক বন্ধুর** কাঁসী হল !

ভেরা ধবরটা শুনে অত্যন্ত চঞ্চল হয়ে উঠলো। কাঁসি? কেন? জারকে সে খুন করেনি! এব চাইতে কম শান্তি দিলে চলতো নাকি? কিন্তু কণ-সরকাব তা দের না। তাবা কথার কথার ক্রীচালায়, মানুষের প্রোণের কোন দাম নেই বেন!

কশ সরকাব অন্থক সভা৷ কবনে দলে দলে মান্ত্ৰ—ভা হবে আইন! আব বে-আইনী ভাবে সভাকোবী সেই জ্লাসদেৰ—বারা গুলী চাসাবার জন্ম দায়ী—ভাদের সভা৷ করা স্বে—অপরাধ ?

কেন ?

কেন না, কশ-সর হার বা করবে তা-ই আইন।

ভেবার মন থেকে গুপ্তহাত্যাব প্রতি বে একটা ভীষণ ঘূণা ছিল, তা ধীরে চলে গেল।

রুশ-সরকার বলবান্—থোলাখুলি হতা করছে—শভ সহতা। ভারা তো গোলাখুলি পারে না, কাজেই গুপ্তভাবে বে ক-জনকে পারে। এই দৃঢ় সংকক্স হ'ল ভেরার।

বিশ্ববিজ্ঞালয়ের সাথে সম্পর্ক ছিল্ল করে শিক্ষয়িত্রীর কা**ল নিবে** এক গ্রামে বাস করছিল ভেবা কার তাব বোন।

পুলিশ এদেছিল গ্রামে—বিপ্লাদের উপর বোর সন্দেহ। এ প্রাম আর নোটেই নিরাপন নয়—এক্ষ্নি চলে বেতে হবে—বিদারের আরোজন করু হল। প্রানবাদী ছেলে-বুড়ো স্ত্রী-পুরুব নিবাই তোকেঁদে আকুল। পরম প্রিয়ক্তনকে কে বেন তাদের বুক থেকে ছিলিরে নিয়ে যাছে। বেতে দিতে ইছা নাহি, তবু হার বেতে দিতে হয়।

সেই স্কুল। ছোলে-মেনে, সকল ছাত্রছাত্রীর মুখ স্বাক্ত আবিদের জলভরা মেঘের মতো। আজে শেব পাঠ!

ভেবার বোন ইভ্জিনিয়া পড়ানো সাগ করে বললো, আমরা যাছি, বিদায়—আব কিছু সে বল:ভ পারলো না, কঠকর।

কোথাধ বাচ্ছ দিদিমণি ?

অনেক দূরে।

আর আসবে না ?

ভা কি করে বলবো ভাই ^{*}

কেন বাচ্ছ?

এ প্ৰাশ্বের কী উত্তৰ দেবে ? সেই সংখ্যে স্থৰ্গ হতত ভাষা

বেরিরে প্ডলে: গ্রামবাদীদের অঞ্-অর্থের শ্বৃতি বহন করে। রাজধানী পেটোগ্রাডে গ্রেস পৌছালো ভেরা ফিগ্নার আর তার বোন ইভ্জিনিয়া।

নিদিষ্ট দিনে কাঁসি হ'ল ভেরার বন্ধ্ব, কাঁসীর মঞ্চে জীবনের জনুগান গেয়ে গেলেন তিনি।

ভেগাকে সে আবাদাত স্টতে হ'ল। অক্সায় থবিচাব তাকে কুমাগত ছিল্ল করে তুললো। এ জার-তন্ত্রের ধ্বংস করা চাই।

এব কিছুদিন পরে ভেৰোনিক্তে একটা সভা হ'ল বিপ্লবীদের। ভেরা ফিগনাব এই সভার অগ্নি-গর্ভ ভাগার প্রচাব ক'বলো, বিপ্লবীদের এখন সবচেয়ে বছ কাজ ভবে জাবকে হাত্যা করা। যেমন ক'রে হোক জাবকে হাত্যা করাব আয়োজন ককন আপনাব।

অনেকেট এ প্রস্থাবে সম্মতি দিল। আয়োজন চ'ললো। ডিনামাটটের ভাব প'ড়েশে ফ্রিনালশির উপর।

ফিবালশি জেল-কেরং ১৮৭৮ সালে ছাড়া পেয়েছে। সেই থেকে বাড়ীতে ব'লে গোপনে ডিনামটিট তৈরি ক'বে আবাছে। আচুব ডিনামাটিট জম!—

জার কিমিয়া গেছে। তার ফেয়ার পথে খাঁটিতে খাঁটিতে বোমা নিয়ে ওঁং পেতে থাকা চাই।

কাৰ ফিনছে শীগ গিবই, কাজেই ঝটপট তৈৰি ছওয়া চাই ৰোমা-নিক্ষেপ-কাৰী দৰ।

কিন্তু তৈরি হওছার কোন লক্ষণই দেখা গেল না। বিপ্লবীদের মধ্যে তথন উপদল স্থাষ্টি হ'ছেছে। একদল,—তারা বলে, জারের উপর নোনা ছাড়ার জন্ম ব্যান্ত তারা প্রস্তুত হয়নি।

গ্রম দল ভাতে ফেপে গেল। ফলে, ছ'ভাগ দ'রে গেল বিপ্লবীরা।

"মৃত্যুঞ্জয়ী দল"-এবা বলে, একটু দেবী করো।

"প্রজাব দানী" দল—এবা চায়, একুণি জারকে নিপাত ক'রবো। এদের সংগঠনও ছিল ভালো। ভেরা ফিগনার এই গ্রুফ দলের সভাহ'ল।

এই দলই হ'ল শক্তিশালী—এরা প্রজার দাবী প্রতিষ্ঠা করার মহান্ বত নিয়ে কার্যক্ষেত্রে অবতীর্ণ হ'ল।

কৃশিয়ার প্রায় প্রত্যেকটি প্রধান প্রধান স্থানে এর শাখা-সমিভি গঠিত হ'ল—সকল সমিতিগুলির কান্ধ এক স্থবে বাঁধার জন্ম একটি কার্যানির্বাহক সমিতি গঠিত হ'ল। মেতৃস্থানীয় বারা, ভারাই এই কার্যানির্বাহক সমিতির সভ্য।

এই কার্যানির্ধাহক সমিভিই এই বিপ্লবীদলের প্রাণ।

ভেরা ফিগনারের মতো তেজখিনী নারী এই কার্যানির্বাহক সমিতিকে আরো শক্তিশালী ক'বে তুললো।

এবার বোমা নিক্ষেপের আয়োজন শুক্ত হ'ল।

কুশ সমাট জার যে যে পথ দিয়ে ফিরতে পারেন সেই সেই পথের পাশে তিন জায়গায় বোমা নিয়ে ট্রেনের অপেক্ষায় ব'সে থাকতে হবে—

ওডেঙ্গা--থার্কভ-নম্বো।

লোক ঠিক কৰা হ'ল—কারা বাবে, কোন্ ছলে, কি চাকুৰী নিয়ে বাবে !

ভেবা এটা স্থির ধ'রে নিয়েছিল, ভারকে হত্যা করার উদ্দীপনা

সঞ্চাবে তার আগ্রহট যথন স্বচেয়ে বেশী তথন তাকে এ ডিনের এক ভায়গায় পাঠানো হবেট।

কার্য্যকালে দেখা গেল, তার নাম নেই কোথাও।

বেশ একটু উক্ত হ'য়ে লোক-নির্বাচনকারী কমিশনারদের কাছে গিয়ে ব'ললে—জামার নাম দেন নি কেন ?

দিইনি, যোগ্যতর লোক পেয়েছি ব'লে।

আমাকে আপনারা অযোগ্য মনে ক'রলেন কিসে?

আবোগ্য মনে করিনি। ও ছাড়া আরো আনেক কান্ধ আছে এখানে, ৰা আপনি ব্যতীত কেউ জার ক'রতে পাববে না।

জামি সে সব কথা শুনতে চাই না। আপনার জানেন, জারের হত্যার জন্ম আমিই প্রধানত: আপনাদের উত্তেজিত ক'রে তুলেছি, কাজেই আমার একটা নৈতিক দায়িত্ব আছে এ কাজে। জামার নাম ভ'রে দিন।

ওডেসায় বোমা নিয়ে ষাওয়ার ভার প'ডলো ভেরার উপর।

ভেষা যাত্ৰার উজোগ ক'রতে লাগলো। কাজের বদলি দিরে যেতে হবে। বোন জিনিয়া গরমের ছুটিতে বিয়াজান গিয়েছিল সম্প্রতি ফিরে এসেছে। ভেধা তাকে ঠিক ক'বল।

ভেরা ওড়েদায় চ'লে গেল।

সেখানে গিয়ে দেখে, ফিবান্সশিশ হাজির। একথানা ঘব ভাড়া করা হ'ল। কী ক'বে বোমা ফাটানো হবে তারই নানা রকম পরীক্ষা চ'লতে লাগলো সেই ঘরে। ফিবালশিশ দেখাতে লাগলো, কি ভাবে বিহ্যুতের তার যোগ ক'বে দুব থেকে বোমা ফাটানো হবে।

বিপ্লবীরা স্বাই কায়দাটা শিথে নিল—ফোলেংকা, কলোদফিভিল্, নেবেডেভা।

এখন সমস্যা—রেললাইনের তলাম গর্গ খুঁড়ে বোমাগুলি বসানো। বছ আলোচনার পর ঠিক হ'ল, রেলের গার্ডের চাকুরী জ্বোগার ক'রে ক্লেডে হবে।

ফোলেংকা পার্ড হ'য়ে চুকবে—গার্ডের কামর। সাধারণতঃ নিদিষ্ট স্থানেই থাকে, কাজেই বোমা বসানো সহজ হবে থুবই। আর, তাকে যাতে কেউ কোন সন্দেহ না করে, সেজন্য লেবেডেভাকে তার বউর পার্ট ক'রভে হবে।

চমৎকার প্ল্যান !

কিছ চাকুরী জোগার করে কে? প্ল্যান তো দিয়েছে ভেরা ফিগ্নার।

ভেরা ব'ললো, চাকুরীও আমিই জোগার ক'রে দিচ্ছি।

ভেরা রেলওয়ে অফিসে গেল।

কোন রেল-গার্ডের পদ থালি নেই।

তাই তো--আচ্ছা, দেখা ৰাক্।

ওভেদার শাসনকর্ত্তা কাউণ্ট টট্লেবেনের ভাবী জালাই ব্যাবণ সেনবার্গ ভেরার পরিচিত। তার সংগে দেখা। ভেরার ক্রমদান ক'বে দে ব'ললো, আপনি এখানে? এমন বেশে?

ভেরা গন্তীর হ'রে ব'ললো, হাা, ভারি বিপদে প'ড়ে এসেছি । কি বিপদ বলুন ভো!

ভেৰা ৰললে, আমাব একটি বন্ধুব পত্নী ক্ষমবোলে ভূগছে—কাৰ খোলা জায়গায় থাকা দৰকাব, তা যদি হয় তবে তাঁৱ বাঁচবাব কিছু আশা থাকে। তো আৰু পাছিছ কই গৈ যদি একটা ৰেলের গার্ডেব চাকুৰী জুইজো—হাা, ^{*}ভালো কথা, আপনাৰ তো ধুৰ প্ৰভাৰ-প্ৰভিপত্তি আছে বেলওয়েতে। আপনি পাৰেন না সাহায্য কৰতে ?

ব্যারণ বললেন, ও চাকুরী তো আমার হাতে নয়, দেকশন মাঠারের হাতে। আর ও সব পদ থালি আছে ব'লেও মনে হরুনা।

ভেরা বললো, ভা হ'লে অনুগ্রহ ক'রে দেক্শন মাষ্টারের কাছে এক লাইন দিখে দেবেন কি ?

ব্যারণ নেহাং চক্ষুলজ্জার খাতিরে লিখে দিয়ে তাড়াতাড়ি চ'লে।

ख्या **এक**ট হাসলো মনে মনে ।

অভিজাত বংশের মেয়ে ভেরা—তার পোষাক হবে ঝলমলে— হারভাব হবে হাণীর মতো, তা না হ'য়ে নোঙরা পোষাক পরে সে পথে পথে চাকুরী খুঁজে বেড়াডেছ—এই ভেবেই ব্যারণের মাথা হেঁট হছিল তা বুরতে বাকী বুইলো না তার।

আছো, ময়ুরের মতো পেখন ধ'রে পথচলা বছদিন হয় ছেড়েছে দে, 'পলিদি', ছিদাবে আবার আজ সাজতে হবে তাকে।

ব্যারণ এ পোষাক দেগে লচ্ছিত হয়েছেন দেক্শন মাষ্টারও নিশ্চয় কথা কইবেন না। সর মাটী হবে তা হ'লে, অতএব—বে দেবতা ৰাতে ভোলে।

ভেরা পোষাক্ ব'দলে ফেললো। স্বভাবতই সে স্থন্দরী! আজ যেন সে সৌন্দর্য্য-সাগরে বান্ জেকেছে!

বেচারা দেক্শন মাষ্টার ভাতে ভেসে গেল কিনা জানি না, তবে প্রাথিত চাকুরীর নিয়োগ পত্র লিখে দিতে মোটেই ইতস্তত ক'রলো না।

ভেরা নিম্নোগ-পত্র নিম্নে ছুটে এলো। ঘরের সবাই অবাক্। একি বিশ্ববিমোহিনী মৃতি ভেবার! ভেরা ময়ুবের পেথম খুলে

ফেলে ফ্রোলেংকোকে নিয়োগ-পত্র দিল। শিমেন্ এই ছন্মনাম নিয়ে দে কর্মনানে চ'লে গেল, লেভেডভাও তার সংগে গেল।

মেইন ষ্টেশন থেকে সাজ-জাট মাইল দূরে সে স্থান। বোমা এক কাঁকে নিয়ে পুঁতিতে হবে। সব ঠিক—

এমন সময় গোভেনবার্গ ওড়েসায় গিয়ে হান্দির।

থবর কি ?

বোনা চাই--মঞ্চো লাইনের জন্ম যথেষ্ঠ বোমা নেই।

সে কি ! বোমা দিলে এখানকার কা**জ** কি ক'বে হবে ?

স্বোর গুজুব এ লাইন দিয়ে জার ফিরবেন না।

ভেরা খবর ভানে ছঃথিত হ'ল। এতো উল্লোগ <mark>আয়োজন সব</mark> রুণা?

গোল্ডেনবার্গ চ'লে গেলো বোমা নিয়ে, কিছ পৌছুতে পারলো না গস্তব্য স্থানে। পথে ধরা পড়লো।

সঠিক খবরও এসে পড়লো, জার ওড়েসার পথে আসবেন না। গার্কভ জার রক্ষো লাইন দিয়ে বাবেন।

কাজেই, ফ্রোলেংকো, লেবেডেভা—ওরাও চ'লে গেল ওডেসা শেকে। ভেরা র'রে গেল দেখানে আরো কিছুদিনের জন্তু।

জাৰ ফিৰে আসছেন ক্ৰিমিয়া থেকে ছ'থানা গাড়ী, সামনের ধানায় তার কর্মচারীবর্গ। ৰিহাৎ গভিতে ছুটে চ'লেছে গাডী।

থাৰ্কভের মধ্যে নিয়ে যাবে—বিপ্লবী দল—বিল্যাবিভ্, ইয়াকি-মোভা, ওকালংস্কি—বোমা পেতে ওং পেতে আছে।

পূরে ট্রেনের শব্দ শোনা গোল—বিদ্যাবিজ্, ইয়াকিমোভা একদৃষ্টে চেয়ে আছে দ্বে—

ওকালংস্কি চূপি চূপি হামান্ডড়ি দিয়ে ব্যাটাবির কাছে এলো— সংগীন্বকে অন্ত দিকে নিবন্ধ-চফু দেখে ব্যাটাবিটা খুলে ভার ভিভরের বন্দোবস্তটা আলগা ও অচল করে আবার বেমনটি ছিল তেমন রেখে দিল। এক মিনিটেব কাজ। ভার পরেই আবার সংগীন্ববের কাছে এসে দাঁ ঢালো।

ইঞ্জিনর বাতি দেখা গেল।

ওকালংস্কি ৰললো, আমি সিগনাগ দিচ্ছি—ভোমবা ব্যাটারিতে ভার সংযোগ কর।

সংগীদ্বয় ব্যাটারির কাছে গিয়ে উৎকর্ণ হ'য়ে ব'লে বইলো। ঘর্ষর ববে টেন এলে প'ডলো।

ওকালংস্কি সিগনান। দিল। সাগীদয় তংক্ষণাং ভার সংৰুক্ত করলো। কিন্তুনিকল সে সংযোগ—গাড়ী বেন ভাদের উপসাস ক'বেচ'লে গেল।

ওকালংস্থি থাপ্লা э'রে বললে, তোমবা নেহাং অপদার্থ, তারটা যোগ ক'রতে পাবল না।

সংগীদ্বর হতাশ হ'য়ে বললো,—তাইতো, কিছুকণ আগেও দেখলুম ঠিক আছে, এরি মধ্যে বাটারি থারাপ হ'রে গেল! আঁা, বলো কি? ব্যাটারি থারাপ! ওকালংশ্বি আকাশ থেকে প'ডলো।

লোকটা ওস্তাদ গুগুচর রুশ-সরকারের।

মঙ্গো লাইনের কাছেও বোমা নিয়ে বদে আছে একদল বিপ্লবী। এ দলে যিনি সিগ্নাল, দেবেন, তিনি একজন মহীয়সী নারী—শোফিয়া লুভনা পেরোভস্বারা, কুলিয়ার এক জাদরেল শাসনকর্তার মেরে। ভেরা ফিগনারের মত্তই অভিজ্ঞাত বংশের মেরে। পিতা ছিলেন একটি মৃত্তিমন্ত শয়তান, দ্বিতীয় ভাব! শোফিয়ার মা—দেবীর মতো ছিলেন যিনি—তাঁর উপর অকথ্য অত্যাচার হ'ত। ছোট ছেলে—পিতা ভাকে বাধ্য কর্যতা মাকে মাবতে, গাল দিতে।

শোফিয়া সইতে পারলো না এ অকায় শতাচার।

সোজান্তক্তি বাপের কাছে গিয়ে বললো, তুমি, এ বাড়ী বাসের অবোগ্য ক'রে তুলেছ। আমি বিদায় নিলুম।

পিতা ভয় দেখালেন, বটে। কোথায় যাবে শুনি ? যেথানে যাবে পুলিশ পাঠিয়ে ধ'রে আনবো না।

পুলিশের ভয় ! কোনোদিনই করেনি শোফিয়া।

গোপনে পিতৃগৃহ ত্যাগ ক'বে সে এসে আশ্রয় নিল সহপাঠিনী কোন বন্ধুর বাড়ী, সেখানে থেকে ডাক্তারি পাশ ক'বে পল্লীসেবার বেরিয়ে প'ড়লো ঠিক ভেরারই মতন। বিপ্লব মন্ত্রে দীক্ষিত সে বছ আগেই হয়েছিল। সেই ১৯৩ বিচাবের সেও অক্তম আসামী।

শোফিয়ার প্রাণ ছিল অত্যন্ত কোমল লোকের ছঃথ কট্ট দেখলে কেঁলে ফেলতো। অথচ জারতদ্বের বিদক্ষে যথন ল'ড়তো তথন এই নারীই হ'বে উঠতো ভীষণ', ভৈরবী, অতি নির্চুরা— এর উপর প'ড়লো সিগনাল দেওরার ভার। রেললাইনের পাশে একখানা হর ভাড়া ক'রে বিপ্লবী অথোর স্ত্রীর পার্ট নিয়ে এই দিনটির জন্ত তৈরি হচ্ছিল সে। জারের গাড়ী কাছে এলো শো ফ্যা সময়মতো সিগনাল দিল—কিছ ব্যাটারির তার যোগ ক'বতে একটু দেরি হ'য়ে গেল।

অধিম গাড়ীটা বেরিয়ে গেল খিতীয় গাড়ীটা সশ.ক চূর্ণ-বিচূর্ণ হ'য়ে

ই'য়ে গেল।

ঘটনাচক্রে জার বেঁচে গেল। প্রাণ গেল ভার কর্মচারীদের।

কার মারা না গেলেও এ বোমা-ফাটা বুধা হ'ল না। সমগ্র কশিরা সন্ত ঘুম ভেডে কেগে উঠলো যেন, বিপ্লবাদের কেরামতিতে সারা দেশ তোলপাড় হ'য়ে উঠলো।

কিছ জার তোমাকে শ্বস্থ হ'য়ে বাঁচতে হবে না, অক্সত্র ভীষণতর আগ্নোজন আগে থেকেই করা হনেছে।

সম্রাটের শীভাবাদ। অনেক কর্মচারী কাজ করে। নানারকম কাজ—দক্ষির কাজ, মুচির কাজ, মিস্তার কাজ।

ষ্টিফেন ব'লে একটা লোক বান্ধো তৈরা করে। রক্ষীদের সংগে তার গলাগলি ভাব। কেউ দোস্ত, কেউ চাচা।

কাব্দে আসার সময় ষ্টিফেন রোজই মোড়কে ক'রে কী নিয়ে আসে—রক্ষীরা ষথন অসতক থাকে, তথন প্রাসাদের ভিতের তলায় একটা গহরবে লুকানো একটা বাব্দে তা ফেলে রাখে।

এমনি ক'বে সে জিনিখটা খানিকটা জ'মলো সেই প্রাসাদের জলায় বালো।

ৰক্ষীরা ঘূণাক্ষরেও কিছু জানলো না। তারপর একদিন—

কিন্তু তার আগে ভেরার বোন ইভ জিনিয়ার থবর ব'লে নিই। পেবরোজকায়া নাম নিয়ে সে থাকে—তারই সংগে বিপ্লবী বন্ধু ভিয়াংকোভন্ধিও থাকেন।

কলেজে থাকতে বোগো নামে একটি মেয়ে ইভ্জিনিয়ার কাছে
বিপ্লব মন্ত্রে দাক্ষা নেয়। মেয়েটির প্রণয়া ছিল একজন পুলিশের
ভপ্তচর। একদিন বোগোকে এসে পুলিশ গ্রেপ্তার ক'রলো।
আদালতে বোগো পোব্রোজকায়ার কথা ব'লে ফেললো।

পুলিশও ঠিক পোব্বোজকাধার অর্থাৎ ইভ জিনিয়ার খর খেরাও ক'রলো।

খনে চুকে ইভ জিনিয়াকে প্রথমে কদী ক'বলো। তারপর ভার ব্বক বন্ধকেও ধ'বলো।

ভিন্নাৎ টপ্, ক'রে পকেট থেকে একটুকুরো কাগাঁজ বের ক'রে চিবিয়ে ঘরের এক কোণে ফেলে দিল।

পুলিশ সে কাগজ কুড়িয়ে নিয়ে গেল। একটা বাড়ীর নক্সা—
কিছ কোন্ বাড়ী? তদস্ত চ'লতে লাগলো খুব জোর।

সমাটের শীতাবাসে। তারপরে এক দন জার সপরিবারে ভোজ-কক্ষে চুকেছেন। হঠাৎ একটা প্রলয় শব্দ। ভিনামাইট।

নীচের ঘরটা নষ্ট হ'ল পঞ্চাশজন বডিগার্ডের প্রাণ গেল। ভোজ-কক্ষ দোতালায়, কাজেই জার এবারও বেঁচে গেলেন।

ষ্থেষ্ট পরিমাণে ডিনামাইট দিলে সে বরটাও নির্বাৎ উর্জে বেজো। তা হ'ল না। তথু দেয়ালের ছবি, টেবিলের বাসন-কোষণই স্বান্ধ্য প'ড়ে চুর্ণ হ'রে গেল। (महे नम्रा।

এবার তার রহস্ত ভেদ হ'ল। এই শীতাখাদেরই নশ্ধ। নশ্ধাব এক জারগায় একটা X চিহ্ন-দেইখানে ডিনামাইট রাগা হয়—ঠিক ভোজনকক্ষের তলায়।

र्भ थंख, ५ छ मरवा।

স্কুতরাং পোব্রোজকায়া আর ভি**রাং নিশ্চ**য়ই **অপরাধী** ! ভিয়াতের **কাঁ**সি হ'ল—

আর ইভ্জিনিয়ার সাইবেরিয়ায় নির্বাদন।

ভেরা দূর থেকে শুনলো সবই। তবুও ওডেসা থেকে আসতে পারলো না। সেথানে সে আর একটা কাজ হাতে নিয়েছে।

কাউণ্ট টেলেবেন গ্রন্ডেমার শাসনকর্তা।

শাসন, অর্থাং পীড়নকার্যের স্মবিধার জন্ম একজন "নিরো"কে তিনি আমদানি ক'রেছেন। নাম তার পান্যুটিন।

পান্যুটনই বেন সেখানকার রাজা-তার অত্যাচারে লোক ধ্রহবি কম্পনান।

একবাব ২৮ জনকে গ্রেপ্তার ক'বে বিপ্লবী ব'লে বিচার কবা হয়, পাঁচজনেরই প্রাণদণ্ড।

এতেও তৃপ্তি নেই পান্যুটিনের।

মুনুকে যতে। তেজস্বী লোক ছিল তাদের সকলকে ঝেটিগ্র গ্রেপ্তার করা হ'ল। শিক্ষক-ছাক্স-প্রস্থকার-শ্রমিক ও অফান কর্মচারী—কাঙ্গকে বাদ দিল না। শহরে একটা সংঘ ছিল,—'তা বে-আইনী ব'লে ঘোষণা ক'রে তার প্রায় সব সভ্যকেই গ্রেপ্তাব করা হ'ল।

তারপর—বিচার নর, বিচারের প্রহসন। স্বেচ্ছাণ্ডগ্রের চুল্ন বিকাশ।

সাইবেরিয়ার নির্বাসন, আজীবন কারাদণ্ড- এ ছাড়া কথাই ।

দণ্ডিতের আব্দায়রা এলে এমন হাদয়হীন পিশাচের মতো ব্যবহার ক'রতো সে।

বাপ-মা ছেলেকে—একমাত্র ছেলেকে দেখতে আসতেন, ভগিনী ভাই-এর সংগে দেখা ক'রতে আসতো, স্ত্রী এনে কেঁলে প'ড়তো— স্বামীকে দেখবো।

হাদরহান পশু এদের সংগে বা-তা ব্যবহার ক'রতো। গর্ভবতা একটি রমণী এদেছেন স্থামার সংগে দেখা ক'রতে। স্থামা শৃংখলাবদ্ধ অমূলক অপরাধে চিরদিনের মতো চ'লেছেন নির্বাদনে চোখে জল কত আশা ছিল, কত রঙীন স্থন্ন তক্ষনী বধুর কুলের তোড়ার মতো শিশু দেখবেন—জীবনের সকল সাধ অপূর্ণ রেখে চ'লে বেতে হ'ছে আজ একান্ধ অসহায়।

ভার চোখের জলে বেন স্পষ্ট হ'রে এ কথাগুলি ফুটে উঠলো।

ন্ত্ৰী আৰু সহ ক'বতে পাৰলো না কেঁদে ফেললো।

পান্যুটন মুখ খিঁচিয়ে ব'ললে, কী আবালা! বাইরে গিয়ে চেচাও ৰত পারো। তুমি কি এইখানেই ঐ বেজন্মাটার জন্ম দিতে চাও না কি ?

এই পান্যুটনের পরলোকষাত্রার পথ প্রস্তুত করার ভার

ললের একটি যুবকের সংগে মিলে ভেরা পাৰ্র্টিনের গভি^{বিধিব} উপর লক্ষ্য রাখতে লাগলো। ' লোকটা রোক্তই একটা নির্দিষ্ট সমরে বেড়ান্ডে বেরোয়— একজন রক্ষী সংগেই থাকে, আর একজন পিছনে অনতিদ্রে জনুসুরণ ক'রতে থাকে।

একজনের উপর ভার দেওয়া হ'ল—সে পান্যুটিন্কে ছোরা মেরে একটা নির্দিষ্ট দিকে ছুটে যাবে, সেথানে একটা ঘোড়া থাকবে ভার পলায়নের সাহাযোর জন্ম।

ভেগা সব বন্দোবস্ত এমনি ভাবে ষথন ঠিক ক'রেছে, তথন বাধা প'ডলো।

হেড় কোরাটার থেকে শোকিয়া এবং সেব্লিন এসে হাজির। ববর পাওয়া গেছে, জার শীব্রই ক্রিমিয়ার গ্রীয়াকাসে যাচ্ছেন। এই শহর দিয়েই যাওয়ার কথা। বেলওয়ে ষ্টেশন থেকে জাহাজ্বটি পর্যন্ত। এর মধ্যে কোথাও একটা ঘাঁটি পেতে মাইন তৈরি ক'রে রাখা চাই।

মাইন হ'ছেছ ভ্-প্রোথিত ডিনামাইটের স্থপ। লোক চক্ষুর জ্পোচর থাকে,—কাজেই ধ্বংসের স্থলর অস্ত্র।

সেই রাস্তাব পাশে হুটো **प**त ভাড়া করা হ'ল।

মনোহারী দোকান।

দিনে দোকান,—দোকানদার সেবলিন, দোকানদারণী শোফিয়া।
বাত্রে—টানেল থোড়া ডিল দিয়ে। দোকানের জিনিষপত্তর
ভগন সবিয়ে নেওয়া হ'ত। কাদা-মাটি, ডিল ভালো চলে না।
দাকণ পরিশ্রম, কেন্দ্র থেকে মাইন্-পাতায় ওস্তাদ ইয়াকিমোভা এবং
গ্রিগরি এসে যোগ দিয়েছে।

রাত্রে টানলে খুঁড়ে যা মাটি ৬৫৯, তা ভোরের বেলায় নানা রকম কায়না ক'বে—মোড়কে, ঠোডায়, পাকেটে ভর্তি ক'রে ভেরার ঘয়ে এনে জড়ো করা হয়।

এমনি ক'রে বহুপুর পর্যস্ত দীর্ঘ টানেল তৈরি হ'ল।

ভিনামাইট্, ঠিক ক'রে সাজাতে গিরে গ্রিগরির তিনটে আঙ্কুল উড়ে গেল। থানিকটা ভিনামাইট ফেটেছে। শব্দও কম হ'ল না, তবে কেউ কিছু স্থির ক'রতে পারলো না।

কিছে দোকানে আব কিছু জমা ক'বে রাথা সমাচীন নয়।
ডিনামাইট্, মাকারি-ফালমিলেট, তার ইতাদি যাবতীয় সরঞ্জাম ভেরা
ফিগ্নার নিজের ঘরে নিয়ে গেল। গ্রিগরি এখন অকর্মণা। তবুও
জত কাল অগ্রসর হ'তে লাগলো। জার মে-মাসে আসবেন। সবাই
তার আসার দিনটির অপেকার উৎকহিত হ'রে রইলো। কিছ
সম্রাট এলেন না সে শহরে। তাইতো, এত আয়োজন একেবারেই
রুখা হবে? আছো, অভ্যাচারী শাসনকর্তা টটলেবেনকে মার লে
ইয় না এ দিয়ে ?

কেন্দ্রীয় সমিতির কাছে হুকুম চেয়ে পাঠানো হ'ল।

জবাব এলো, না,—ও-সম্মান জাবের জন্মই ভোলা খাক, টট্লেবেনকে মারতে চাও অন্ত উপায়ে মারো।

আক্ত উপায়ের মধ্যে বোমাটাই প্রধান ! ভেরা ফিগ্নার বন্ধুদের নিরে আবার লেগে গেল টটলেবেনের পশ্চাদকুদরণে। শস্ত শত যুবকের প্রেতাক্সা প্রতিহিংসার জক্ত ব্যশ্ন। এর রক্তে তাদের ভর্গণ করা চাই!

থকদিন ভাদের ফাঁকি ্দিরে টট লেবেন সে স্থান ভ্যাগ ক'রে চ'লে গেল। কাজেই পাত্তাড়ি গুটিয়ে ভেরা এবং অক্সান্ত বিপ্লব নারকরা পেজেগ্রাদে চ'লে এলো।

ভেরা ৰখন রাজধানীতে গেলো তখন গেখানে আব একটা উল্লম চলেছে জারকে মারার।

গোরস্কভায়া ব'লে একটা রাস্তা দিয়ে জার বাবেন। রাস্তাটার গায়েই একটা পাথবের সেতু। নীচে, জলের তলায় লুকাবো থাকবে ডিনামাইট, ডাঙায়, দূর আড়াল থেকে, ব্যাটারির সাহাত্যে তা ফাটানো হবে।

জার এ কাঁদেও ধরা প'ড়লেন না। নির্দিষ্ট দিনের আংগের দিনই তিনি ক্রিমিয়ায় চলে গেলেন—সেপথে বেড়াতে এলেন না। জারকে মারার কাজও বাধা হ'য়ে স্থাসিত রাথতে হ'ল কিছুদিনের জন্ম।

বিপ্লৱীদল আর একটা জন্মরী কাজে মন দিল। সৈন্ত-সংগ্রহ এবং সৈত্ত-সংগঠন।

দেশবাসীর যে অসন্তাষ্টি-ভাব তা ক্রমেই বেড়ে বাছিল। সৈন্ত-বিভাগেও তা প্রবেশ ক'রেছে। অনেক সামরিক কর্মচারীকে ব'লতে শোনা যেতো,—ক্রশ্টেসগুরা বি:দেশের মুক্তি-মুক্তে সাহায্য করার সর্ব করে, কিন্তু তাদের নিজের দেশ যে আজও বন্ধনিক্লণ্ঠ তা তো দেখে না।

নো-বিভাগ এবং গোলন্দান্ত সৈন্তদের মধ্যেও **অসন্তোবকে আরে।** উসকিয়ে তুললো।

লেফটেনেণ্ট স্থানভ নৌ-বিভাগীয় কৰ্মচারী, ইনিই বোধহয় প্রথম বিপ্লবীদের দলে এসে বোগ দিলেন। এঁ রই মধ্য দিয়ে নৌ-বিভাগে প্রচার-কার্য চলতে লাগলো।

গোলন্দাক বিভাগে—ডিগায়েড্। ক্রোনষ্টা তুর্গে কাজ করতেন আগে, রাজনৈভিক মতের জন্ম কর্মচূতে হ'য়ে বিপ্রবীদলে বোগ দেন।

বোগাচেড, পৃথিনোটোড, পেপিন, নিকোলায়েড—এরাও যোগ দিলেন ক্রমে ক্রমে। স্থির হল,—সৈক্স-বিভাগ 'প্রজার দাবী' দলের কার্য-নির্বাহক সমিতির অধীনে থাকবে। সাধারণ বিভাগের সংগে এদের কোন সম্পর্ক থাকবে না। কার্য-নির্বাহক সমিতি ব্যবন স্থকুম দেবেন—এখন সশস্ত্র বিজ্ঞাহের সময় এসেছে, তথন বাঁপিরে প'ড়বে তারা অস্ত্র নিয়ে।

এ ছাড়া, বিদেশে 'প্রকার দাবী' দলের পক্ষে লোকমত গঠন করার জন্ম প্রচার-কার্যও চলছিল। বহু নির্বাসিত যুবকের উপর এ-ভার জন্ত হল। কোদের মধ্যে হাটম্যান এবং ল্যাভিরভ প্রধান।

সভা-সমিতিতে বজুতা ক'রে, আলোচনা ধারা, বই ছাপিরে এবং বিপ্লব-দল সম্বন্ধে সঠিক থবর প্রচার করা হ'ত। হাটম্যান ফ্রান্ত-আমেরিকা-জার্মানী— ছনিয়ার সকল রাষ্ট্রের নারকদের কাছে উপস্থিত হ'য়েছেন বিপ্লবদলের কার্যপদ্ধতি নিয়ে। স্বাই প্রতিশ্রুত হ'য়েছেন, বার যেভাবে ষভটুকু শক্তি সাহায্য করবেন।

সমাজভন্তবাদের জন্মদাতা মনাধা কাল মার্কস। কার্য-নির্বাহক সমিতি তাঁর কাছে চিঠি দিলেন, ধাতে তিনি হার্টম্যানকে সাহায্য করেন প্রচার-কার্যে।

মার্কস অত্যস্ত আনন্দিত হ'লেন। জবাবে তিনি জানালেন, আপনাদের কোন রকম সেবা ক'রতে পারলে জামি নিজেকে গৌরবাছিত মনে ক'রবো। অবাবের সংক্রে মার্কস নিজের একথানা কোটোও পাঠিরে ছিলেন। মার্কসের এ 'আনন্দ অকৃত্রিম। ক্রশবিপ্লবীদের চিঠিখানা তাঁব কাছে মহামুল্য বস্তু—বদ্ধুদের তিনি সগর্বে সেটা দেখিয়ে বেড়াতেন।

এমনি অরাস্ত চেষ্টার ফলে কশের দিকে ছনিয়ার নজর প'ড়লো। ধবরের কাগজ থলে দবাই প্রথমেই দেখতো, কুশের থবর কি ?

তারা যাতে সঠিক খবর পার, বিপ্লবীদল তারও বন্দোবস্ত ক'রলো। নির্মাতভাবে বিপ্লব-সমিতি থেকে রিপোর্ট আসতো, আর তাই ছাপা হ'ত খবরের কাগজে। কাজেই রুশবিপ্লবীদল সম্বন্ধে স্বারই বেশ সহায়ুভূতির ভাব জন্মালো।

ক্ষশ সরকার তো হার্টম্যানের উপর রেগে অন্থিব। দৃত পাঠালো ক্রান্সে—হার্টম্যানকে যাতে ক্লশ সরকারের হাতে দেয়। কিন্তু দৃতকে বার্শ হ'রে ফিরে আগতে হ'ল। ক্রান্সে—যাব যা-ই বৈপ্লবিক মতবাদ থাকে না কেন, আশ্রুর পাবে।

কিন্তু কশে থেকে—বিদেশে এ-থবর চালান্ দেয় কে? কশ পুলিশ তার ওঁত পেতে রইলো। কিন্তু কিছুতেই তাকে বের ক'রতে পারলোনা।

কী ক'বে পারবে গ

এ হচ্ছে ভেরা ফিগনার,—পুলিশ বার বাঁশী শুনেই পাগল, চোঝে দেখাবার সোভাগ্য হয়নি।

পুলিশ বিপ্লবীদের ধ'রে ধ'রে ফাঁসি দেয়।

কত ছকণ জীবন-কুমন অকালে ক'বে ৰায়—কে তার থোঁজ রাথে ?

এমন অনেক বিপ্লবী আছে, অসীম শক্তি—বিচিত্র জীবন খাদের, নেপোলিয়নের মতো প্রবল হ'তে পারতো যারা বিপ্লবের পথে না গোলে—তারাও ক্রমে বিশ্বতির সাগরে লীন হ'বে যার। তারা বে বিপ্লবী তাদের জীবন-কথা যতই বিচিত্র হ'ক্ না কেন, তা লিপিবদ্ধ করার অধিকার নেই কারো। তা রাজদোহ।

এই বিশ্বতির হাত থেকে এমন অমূল্য জীবন-কথা রক্ষা করার ভার ভেরাব উপব। সে-ই বিপ্লবীদের ছবিসহ বিশেষ বিবরণ বিদেশে প্রকাশের জন্ম পাঠাতো। বিপ্লবীদের মধ্যে ভেরার চেয়ে বোগ।তর ব্যক্তি ছিল না কেউ।

বাৰধানীতে একটা জায়গা আছে—মিথায়লোভস্কি-ফেনিঙ।

কার প্রতি রবিবার দেখানে বেড়াতে বান। কিছ রোজই এক রাস্তা দিয়ে নয়, এক এক দিন এক এক রাস্তা। বিপ্লবীরা এবার তারই একটা রাস্তায় মাইন পাতবে ঠিক ক'রলো।

মলম-শদোভয় ব'লে রাস্তাটার উপর ত্থানা থালিবর ছিল, ভারই একথানা পছন্দ ক'রে পনিবের দোকান খোলা হ'ল। দোকানদার কে হবে ?

ভেরা কিগ্নার ব'ললে, আমার মনে হয় 'মূবি' এ-কাজের বোগ্য ব্যক্তি! কমিটি দেখলো, সভ্যই তাই। মূরির বোগ্যন্তা সম্বন্ধে তো কথাই নেই, চেহারাও তার দোকানদার মাফিক। কাজেই ভাকেই এ-পদে বাহাল করা হ'ল—ভার ছন্মনাম দেওয়া হ'ল কবোজেক ।

ইয়াকিমোভা ক'রবে বউর পার্ট প্লে। ছন্মনাম বাদকা। কবোজেভ-বাদকার পনিরের লোকান।

পকান্ত পনিব ব্যবসায়ীবা প্রথমটা ঈর্বান্বিত হ'ল আর একটা

নতুন পনিবের দোকান দেখে, কিছ কিছুদিনের মধ্যে তাদেন শংকা দুর হ'ল। এরা তেমন অভিজ্ঞ ওস্তাদ দোকানদার নয়।

মাত্র ভিনশো ক্লবল জোগার ক'বে পনিরের দোকান খোলা হ'রেছে। মালের ষ্টক্ থুবই কম।

কবোজেভ অভি কোশলী—কারও ৰাইরে থেকে বোঝার যো ছিল না, দোকানে জিনিষ এতো কম বা এরা জাল দেশকানী।

দোকান থেকে রাস্তার দিকে টানেল থোঁড়া চ'লতে লাগলো।
থুঁড়ে মাটি বা ওঠে তাতে বাক্সকে বাক্সো ভতি ক'রে লেবেল এঁটে
দেওয়া হয় 'পনির'। ক্রেতারা ভাবে, ওঃ, এদের কত মাল
স্মানদানি!

এমনি ক'রে বছদিন কেটে গেল।

টানেল তৈরি শেষ।

দোকানের এক কোণে মাটির স্ট্পা, কয়ল স্বার থড় দিরে মাটি ঢাকা। তার উপরে একটা মাহর বিছানো।

এখন মাইন-পাতা বাকী।

১৪ই ফেব্রুয়ারী জার সেই পথ দিয়েই চলে গেলেন। মাইন পাতা হয়নি তথনও, কাজেই কিছু করা গেল না তার।

বিপ্লবীদল রাগে অস্থির।

ওঃ, এমন সুষোগ ! স্থার কতদিনে জার এ পথে স্থাবার স্থাসেন তার ঠিক কি ৷ যাক্, মাইন পেতে তৈরি হ'য়ে থাকা বাক।

ভিনামাইট ইত্যাদি জমা ছিল অন্তত্র এক খরে। পুলিশ বেন কী একটা সন্দেহ ক'রে থুব খানাতল্লাস শুরু করে দিল। কাজেই সে খর থেকে ভিনামাইট সরানো হ'ল।

ভেরার তীক্ষ চোখ। একদিন দেখে, দলের একজন লোকের পিছু নিয়েছে একটা পুলিশের গুপ্তার।

ব্যাপার কী? মাইনের সম্বন্ধে কোন খবর পেয়েই নাকি? ভাই-ই হবে।

ভেরা তৎক্ষণাৎ বেশ পরিবর্তন ক'রে নিয়ে দোকানের দিকে গেল।
ক্রেতার বেক্সায় ভিড়—বাসক। দিয়ে দিয়ে আর কুলোতে পারছে
না। হঠাৎ নতুন এই ক্রেতাটিকে দেখে সে বেশ সচকিত হ'রে
উঠলো।

খুব ভালো পনির দিতে পারেন ?

হাঁ, স্বাহ্মন না, ভিতরে এসে দেখুন। নতুন ক্রেডা ভিতরে গেল।

এ হচ্ছে ভেরা ফিগনার। ভেরা পনির দেখার ছলে ব'লে গেল, পুলিশের সাড়া-টারা পাছ্ছ কিছু?

না জে! তুমি পেয়েছ নাকি?

হা। খুব সাবধানে থেকো ভোমরা।

বাসকা-কবোজেভ বেশ সতর্ক হ'য়ে চ'লতে লাগলো।

২ ৭শে কেব্রুয়ারী।

পূলিশ সন্দেহক্রমে ত্রিগোনী ব'লে একটি কর্মীর ধর অবরোধ করলো। ত্রিগোনী ধৃত হ'ল (ধরাটা চালাকী, কেন না ত্রিগোনী পূলিশের চর) কিছু পরে ঝিল্যাবভ এসেছে ত্রিগোনীর কাছে, তৎক্ষণাৎ গ্রেপ্তার।

কোপাও ডিনামাইটের লীলা-খেলা চলছে, এটা বোধ হয় পুলিশ টের পেরেছে, কিন্তু বের করতে পারছিল ন্।, কোধার ! ঠিক পাওয়া থ্বই শক্ত, এমনি বিপ্লবীদের বন্দোবস্ত । যাদের উপর কান্দের ভার দেওয়া হ'ত, তারা ছাড়া অক্স কেউ জানতো না কোথার কথন কেমন ক'রে ডিনামাইট ফাটানো হবে।

কাজেই পুলিশ অন্ধ কুকুরের মতো গন্ধ ভঁকে ভঁকে বেড়াতে লাগলো।

পুলিশের এ ভক্কাস বিপ্লবীরা টের পেয়েছে।

একদিন দলের কয়েকটি লোক পথ চ'লছে। হঠাং তনতে পেলো, আড়ালে কারা তু'জন কথা কইছে।

ও কারা ?

একজন পুলিশ, আৰু একজন দরোয়ান।

দরোয়ান ব'লছে, এ বাড়ীতে খানাতল্লাস ক'রবেন? সে কি? কেন?

পুলিশ বললে, কর্তাদের মরজি।

থবর প্রনে ভেরা বুঝলে, পুলিশ অনেকটা কাছাকাছি এসে প'ড়েছে ঠিক জায়গার।

বিপ্লবীরাও পুলিশের চোথে ধৃলি দিতে ওস্তাদ।

কবোজেভ-বাসক। দোকানে বলৈ পানির বিক্রী করছে, এমন সময়ে একটা লোক এসে হাজির। কি চাই আপনার ?

আমি বাস্থ্য-বিভাগীয় ডাক্তার। এ দোকান পরিদর্শন ক'রবো। ককন।

লোকটি ডাক্তার নয়, ডাক্তারবেশী পুলিশ। ঘরে গিরে চ্কলো। উঁচু জারগাটার গিরে মাত্রটা তুলে দেখে, কয়লা, আর থড়। আর কোথাও কিছু নেই। অপ্রতিভ হ'য়ে চ'লে গেল।

দোকানদাররা একটু মুচকি হাসলো !

আব একদিন আব একজন পুলিশ। মাটি-ভর্তি বার্মগুলোর গা দিয়ে জল ঝবছিল, তা দেখে পুলিশটা জিজ্ঞাসা ক'বলো, ওতে কি?

কুবোজেভ হাত-মুখের অপূর্ব ভাগী কবে ব'ললো আবার ব'লবেন না ভ্রুর। লোকসানের একশেষ। সস্তার দশ অবস্থা!

ও কি সস্তার কিনেছিলে ?

হা, নইলে কি বাজো-কে-বাজো পঢ়া বেরোয় ?

পুলিশটা বৃঝতেই পারলো না—এর পরেও সন্দেহের কিছু **ধাকতে** পারে। এতএব সে চ'লে গেল।

পুলিশরা কিছুতেই বের করতে পারলো না কোথার চক্রান্তের আগুন ধুমারিত হ'ছে। [ক্রমশঃ।

রাজধানীর পথে পথে

উমা দেবী

শো-কেশে একটি হাতঘড়ি

শো-কেসে দেখলাম একটি হাতবড়ি।

ডালহাউসি কোষারের এক হিম-ঝরানো ঘরের বাতাসে

বন্ধ কাঁচের সাজানো বাজে

শুরে আছে স্কল্বী—মহাকালের প্রণিয়নী।

তার কালো মণিংজনীর উপরে সোনার হুটি ঋজুরেখা—

অবশ হরে পজে আছে স্থির প্রতীক্ষার।

তার চতুজোণ স্থংপিণ্ডের তুর্লভ্রুভাতি টিক্-টিক্ শবদ
প্রাণের প্রত্যাশা ধ্বনিত হচ্ছে প্রতি মুহুর্তে।

কালো বেশমের মণিবন্ধনী বেন বাত্রির নীল অন্ধকার

তাইতে নিলীন হ'রে আছে একটি স্বর্গ-ক্মল।

কোন লীলাময়ীর হাতে লীলাকমল হ'য়ে উঠবে দে ?
কোন আধুনিকা বরবর্ণিনীর গৌর মণিবান্ধ বাঁধা পজে
সধীর মত দে জানিয়ে দেবে প্রিয়-মিলনের সময-সঙ্কেত ?
কিবো ঐ আঠার শ' টাকা দামের ত্ব্ল্য হাত্তভি
এখনও বহুকাল থাক্রে শায়িতা—
অপেক্ষারতা বয়স্থা রূপনী কুলীন কন্যার মত
তথু এক বৃদ্ধ ব্যবসায়ীর বোমশ শিরাবছল হাতে
পড়বার জক্ত।

হায় বে—হিম-ঝরানো খবের শীতল বাহাস—
জনারণ্যে জনবিবল নিরালা !
হায় বে—রাত্রির রহজময় নীল অন্ধকার—
বেন মুষ্টিগ্রাহ্ম নীল বেশমের মত !
হায় বে—নিওন আলোর নীল শাভ' ছড়ানো জ্যোৎস্নার ছলনা—
তিমিরাভিসাবের স্বান্ধার আতুর—
হায় বে—কাচাধাবের স্বচ্ছ কবরে শাহিতা—
মহাকালের বিবহিনী নীলবদনা স্ম্বর্ণছ্বি মুদ্ধিতা রুপসী প্রশ্বিনী।

मि मि त= जा ति तथर

রবি মিত্র ও দেবকুমার বস্থ

11811

কুড় পঁচিশদিন পরে আবার আসবেন বলে গেলেন। মাঝে কথা ছিলো চন্দ্রভণ্ড'তে চাণক্য করতে বাবেন বর্ধমানে। বর্ধমান ধাবার পথে হাওড়া ষ্টেশনে পড়ে গিয়ে ডান হাডটি ভাওলেন এবং তার ফলে তু'ভিন মাস তাঁকে শ্ব্যাশারী হ'বে থাকতে হ'লো। এই সমস্থ তাঁর সঙ্গে দেখা করতে গিয়েও কথা হ্যনি কিছুই।

ছুলাই মাদের মাঝামাঝি এক সংস্কার আমরা করেকজন বদে গল্পজন করছিলাম এমন সমর বিনয়দা এদে হাজির। বিনয়দার আসাটি আতান্ত আকিমিক বলে রীতিমত অবাক হ'লাম। প্রাক্ করতে হ'লো না, উনি নিজেই বললেন—ভাছড়ি মশায় আজ ডেকেছিলেন। তাঁর ইচ্ছে একটি দল খোলা, বেখানে পুরোনো নাটক পড়া, আলোচনা করা নাটকেব বিষয়ে, নতুন আর পুরোনো নাটক বিহাস্যাল দেওয়া, অভিনয় করাব ব্যবস্থা থাকবে। তা ভোমরা যদি দায়িছ নাও তো এ কাজ করা সম্ভব।

চোর চার ভাঙা বেড়া ! এমনিতেই খিরেটারের স্থাগ পেলে নাওরা খাওয়া ছেড়ে এক পায়ে খাড়া, আব স্বয়ং শিশিরকুমারের নেড়স্বাধীনে অভিনয় শেখবাব আব অভিনয় করবার স্থাগ পানো নতুন বই হবে, এতো অবিখাল্য সোভাগ্য ৷ চটপট বাজি হ'লে সেলাম ৷ আমাদের ছ'ল্ডনকে যুগ্ম সম্পাদক করা হ'লো ৷ মভাপতি ও সহ-সভাপতি হ'লেন বথাক্রমে ববীক্রনাথ ঘোর ও কুমারেশ পাষ ৷ ভোলাল দলের নামকরণ করলেন—নব্য বাংলা নাট্য পরিষদ ৷ ছির হ'লো আপাততঃ প্রজি বুহম্পতিবার নাটক পাঠ হবে, পরে স্থাবেণ স্বিবিধ মতো পুরোনো বা নতুন নাটক (বপন ধেমন পাওয়া বাবে) রিহার্ম্যাল দিয়ে অভিনয় করা হবে।

সেই অনুষায়ী ২৪শে জুলাই তিনি প্রথম এলেন ও তারপর থেকে মাঝে এক আধ হপ্তা বাদ দিয়ে প্রতি বৃহস্পতিবারে এলেন, নানা বিষয়ে আলোচনা করলেন, নাটক পড়লেন। নভেম্বরের শেষে যথন ডিসেম্বরের নাটোৎসন করার কথা দ্বির হ'লো তারপন থেকে প্রায় প্রতিদিনই এসেছেন। দৈনিক ওঁর নাসা থেকে ওঁকে নিয়ে এসেছি এবং পৌছে দিয়ে এসেছি আমরা, আসা যাওয়ার পথেও জনেক কথা হরেছে ওঁর সঙ্গে।

প্রবর্তী পাতাগুলোভে দেই সময়কার কথাই লিপিবদ্ধ করছি।
২৪শে জুলাই এলেন কি নাটক পড়বেন, কিভাবে কি করা হবে
সেই সহদ্ধে আলোচনা করতে। প্রথমে বললেন—যাত্রার চলন
হয়েচে আমালের দেশে ৭ম-৮ম শতাবদী থেকে। তথনকার
নাটককে যাত্রা বলভ, যাত্রাটি চারদিক থোলা জারগার হবে না
তিন দিক থোলা জারগার হবে দে কথাটি ভাবতে হবে। চারদিক
খোলা জারগার অন্ধবিধে হবে এই যে, ঘুরে ঘুরে অভিনর করতে
হবে। মাইক ব্যবহার করলে অন্ধবিধেই হবে।

্র কাজ করতে হলে রাষ্ট্র বা কর্পোরেশনের সাহাষ্য নিজে হবে

এ কথা ঠিকই, কিছু অভিনয় করবে কারা ? আজকালকার অভিনেদ্ধারা ত অভিনয় করতেই জালে ন', সিনেমায় অভিনয় করতে গোলে অনেক নাবিয়ে অভিনয় করতে হয় কারণ সিনেমায় মুখটি ছম' গুণ বাড়ে কাজেই সুম্ম ভঙ্গীও অত্যস্ত বিকৃত লাগে।

শামাদের দেশে অভিনেতার মৃল্য নেই, তাই গিরিশবার্ও কোথাও যেতেন না; অস্ত অভিনেতাদের ধমকাজ্ঞেন—রঙ মেথে সামনে দিয়ে বেকুবি কেন? তাঁর ৰঙ্গার কাবণ এ রকম করলে অভিনয়ের মাহাটা কুল্ল হয়:

এবার কি নাটক পাড়বেন প্রশ্ন করা হলো, একজন বললেন—
ইংরেজি নাটক পাড়ুন, উত্তরে বললেন—ইংরেজি নাটক পাড়তে হলে
সেক্সপীয়র পাড়তে হল, কিন্তু তাতে অন্তর্নিধে অনেক, তার চেয়ে
দিশী বই পাড়াই ভাল, মাইকেলের কৃষ্ণকুমারী খুন ভাল বই, টডেব
সাহায্য নিলেও অনেক কিছু বদলেছেন, বিদেশী এলিজানেখীয় নাটকের
ওপর নির্ভির করেই পদ্মাবতী নাটকটি লিখেছেন অথচ সংস্কৃতেরও কত
সাহায্য নিয়েছেন।

গিরিশবাবুর বেশির ভাগ বইই হয়ত অপাঠ্য কিন্তু যে কটি ভাল বই আছে তা এতই ভাল যে বাংলা ভাষায় অমন নাটক প্রায় দেখাই যায় না।

প্রাদেশিকতার প্রশ্ন উঠলে তথন বললেন—জাতীয়তাকে এর জনে রবীন্দ্রনাথ দোদ দিয়েছেন, কিন্তু জাতীয়তার দোষ কী ? এ ত ভূস ধরণের জাতীয়তা।

আগেকার দিনে লোকে তীর্থভ্রমণে বেরোলে দেশের কোথাও কোনো রকম বিপদে পড়তে হতো না, অথচ তথন হয়ত এই তুই দেশে বাকায় বাজায় যুদ্ধ হছে।

রবীন্দ্রনাথ বাংলা ভাষায় কথা বলা যায়, এ কথাটা প্রথম আমাদের বৃঝিয়েছিলেন, রবীন্দ্রনাথের পাবলিদিটি খুব ভাল ছিল, ঠাকুববাড়িব অন্তদের অত ছিল না। দ্বিদ্রেন্দ্রনাথের কোথায় ছিল ? দ্বারকানাথ একজন মহং লোক ছিলেন।

অভিনয়ের প্রসঙ্গে বললেন—ছিজেন্দ্রলাল রায় বাংলা দেশের মঞ্চে প্রথম অভিনয় ঢোকালেন। (বোধ হয় বলতে চাইছেন বান্তবামুগ অভিনয়।) দানীবাবু চাণক্য আব আওরঙ্গজেব না করলে দেশে অভিনয় আসত না, নয়ত দানীবাবু বা অমর দত্ত ভালভাবে অভিনয়ই কংশেনই বা কোখা ? শুধু এগিয়ে গিয়ে চেচিয়ে বল'।

গিবিশ বাবু প্রমহংসদেবের আনীর্বাদ পেয়েছিলেন কিছু প্রার্থপর হলেন কই ? ছেলের কথা আর নিজের নাটক ছাড়া জন্ম সব বিবরে careless ছিলেন। তবে অনেক পড়াশোনা ছিল। কত বে পড়েছিলেন তা কেউ জানে না। লে সময় সামগ্রিক চিস্তা আর drill-এর বড় জভাব ছিল, ব্যক্তিগত জিনিয়াসই ছিল প্রবল।

গিবিশ প্রসঙ্গ থেকে স্বামীজির কথা উঠল, কালেন—বিদেশে

ববীক্সনাথ থ্বই সন্মান পৈরেছেন, কিন্তু ভাব চেবে ঢেব বেশি পেয়েছেন স্বামীক।

সমসাময়িক (অর্থাৎ আজকালকার) মঞ্চ সম্বন্ধে তাঁর মতামত জানতে চাইলে বললেন—সমসাময়িক মঞ্চ সম্বন্ধে কিছু বলা আমার পক্ষেশতঃ।

বাংলা দেশের মাসিক পত্তের কথা উঠল, বললেন—একটা ভাল মাসিকের জারগা এখনও বাংলা দেশে আছে। ভাল বলতে পুরোণো প্রবাসী আর ভারতীর মত। প্রবন্ধ প্রথমতঃ লেখাতে হয়। লিখতে লিখতে কাঁচা লেখা পাকে। সে চেষ্টা যে করবে সে খাবে কি ?

বিজ্ঞমবাব্র লোকের ক্ষমতা বিকাশ করানোর অপূর্ব দক্ষতা ছিল, কিল্ক বাংলা দেশের ছর্ভাগ্য বে মাত্র পঞ্চান্ন বছর বয়দে তিনি মারা গেলেন। তাঁর প্রবিদ্ধাবলী অতুলনীয়, বিবিধ প্রবদ্ধের মৃল্য দেয়ই বাকে?—জানেই বাকে?

—সব মামুবের মনোবৃত্তি এক; কিন্তু আমাদের মধ্যে একটা এলানো ভাব আছে। আমাদের থিয়েনার স্বরু হ'তেই ছ'ভাগ হলা। একটা হ'লে যা মহৎ হ'তে পারত তা' ঝগড়াঝাটির মধ্যে ছ'আগ হ'রে কিছুই হলো না।

কথা শেষ হবার পর কি বই পড়বেন স্বাইকে প্রশ্ন করলেন, জনেক তর্ক-বিতর্ক করার পর ঠিক হ'লো গিরিশচন্দ্রের জনা পড়া হবে। বাংলা মঞ্চেব নটগুরু গিরিশচন্দ্রের নাটক দিয়ে নব্য বাংলা নাট্য পরিষদের নিয়মিত অধিবেশন শুরু হওয়া যে আনন্দের কথা তা স্বাই স্বীকার করলেন।

৩১শে জুকাই উনি এলেন, পরিচিত মহলে ইতিমধ্যেই থবর রটে গেছে বে, শিশিরকুমার পুরোনো সব নাটক পাঠ করবেন। কাজেই ঘরের মধ্যে ছোটখাট জনতা এসে তক্তাপোবের ওপর বসলেন, পরিচিতদের সঙ্গে আলাপ করলেন। ত্রুএকজন তথনও আসেননি বলে বই পড়া কিছুক্ষণের জন্মে ছুগিত রেখে অন্ত সমস্ত আলোচনা স্কর্ম করলেন।

প্রথমেই বললেন নাট্য সমালোচক কেমন হবে সেই কথা—
প্রকৃত নাট্য সমালোচনা হয় না কারণ সমালোচক হ'তে গেলে নাটকের
গলে নাট্যর বোগ থাকতে হয়, নয়ত ভালবাসতে হয় নাটককে।
বাংলা নাটক ভাল ,করে পড়া থাকা দরকার তা ছাড়া
নির্মিতভাবে রিহার্গ্যাল আর অভিনর দেখতে হয়। নয়ত leader
লেখার মত লেখা লিখিয়ে ত সহজেই কাগজওয়ালায়া নাম করিছে
দিতে পারে। মৃতব্যক্তিদের মধ্যে অমর দত্ত আর দানীবাবু এক
সমরেই অভিনর করতেন। কিছু অমর দত্ত কাগজকে কাজে
লাগিয়ে খ্রু পপুলার হয়ে উঠেছিলেন, দানীবাবু কিছু অভ
পপুলার ছিলেন না, অমর দত্তর মত অল্লাস্ত কমী বাংলা
নাট্যশালায় খ্রু কম ছিলো, কিছু অভিনেতা—লে কথা না বলাই
ভালো।

—দানীবাবুকেও দাঁড় করালেন গিরিশবাবু। অভিনেতাদের একটি ডোল বা conventional mode of acting ঠিক করে সিরাজদ্দোলা, মীরকাশিম, ছত্রপতি সেই অমুযারী সিথে ছেলের ম্বিধে করে দিলেন।

—আমাদের দেশে আগে থিয়েটারের দাম ছিলো, ভরত কালীদাদের আগেই দেখা হয়েছিল আর রাজশেখর বস্তুর রামারণের অমুবাদের উনিশ পাতার দেখা আছে বে, অবোধ্যার অলিতে গলিতে থিরেটার ছিলো।

—ইভিছাসে bias একটু থাকবেট, কি**ন্ত** ভা establish কৰা চাই।

কালিদাসের ভৌগলিক জ্ঞান খুবই ভালো ছিল; শান্ত্রীমশার জিনিষটা ভালো করেই শিখিয়েছিলেন, শান্ত্রীমশায়ের লেখা সব এক করে বাব করা উচিত। উনি বড় গেঁতো ছিলেন, জোর করে সেখাতে হ'তো। হবে তাঁব সঙ্গে কথা বলনেই কত জান বোঝা বেত।

— গিরিশবাবৃকে আমার প্রচেলিকা মনে হয়। এদিকে
পরমহংসদেবের শিষ্য অথচ কথন ত ঠকেননি। মিথো মোকদমাতেও
জিতেছুন। গাড়ীতে চড়বার সময় বলছেন— হাজ অনেকগুলো
মিথ্যে কথা বলব, লোকটি বড়ড জালিহেছে। তবে থিয়েটার উনি
না ছ'লে চলত না। ভূবন নিয়োগী, অমৃতলাল আর অর্জেন্
মুস্তাফি কি থিয়েটার চালাতে পারতেন নাকি ?

— অর্দ্ধেন্দুবাবুর কথা ছেড়ে দাও, মববাব সময় বলেছিলেন, সর্বাব্দে দেশী মদ ঢেলে তবে যেন পোড়ানো হয়। মামূষ বড় ভালোছিলেন, বিহার্দ্যালে আমারই মতো ঝোঁক ছিলো, দশ-বিশ-পাঁচিশ্বার বলতে কট্ট পেতেন না। বিহার্দ্যাল আরম্ভ করলে আছ শেষ করতে চাইতেন না, তা লোকে মক্তক আর তক্তক।

মামুখটি খুব তু:সাঙ্সা ছিলেন। 'দস্তাবক্রে' সৌরীক্রমোছনের নকল করে তাঁর বাড়ি থেকে বিতাড়িত হলেন। তবে কালীকেট ঠাকুর খুব ভালবাসতেন। শিথিয়েছেন কিছ পাত্র-অপাত্র ভেদ নাকরে।

—গিরিশবাবু কিন্তু কাউকে শেখাতেন না। রিহার্স্যালে বসতেন এক ডাবা পান, আর ব্যাণ্ডি বা ছইন্ধির বোতল নিরে চাকর সোডার বোতল নিয়ে তৈরী থাকত। ছ'তিনবার বলেই বলতেন—ঠিক হ'য়েছে, তোমার বয়সে অমন আমি পারতুম না, এগিয়ে গিয়ে টেচিয়ে বল তাহলেই হবে।

—তিনকড়িই একমাত্র অভিনেত্রী বাঁকে—গিরিশবাবু থাতির করে চলতেন। একবার মহেন্দ্র মিত্রকে যা বলেছিল, তা (লধবার একাদশী) নাটকেই লেখা আছে। মীরকাশীমে তারার ভূমিকায় অভিনয় করছে, কে ব্রিয়েছে, আল তু'জন স্থলীলা আর তারা, থ্ব ভাল পোবাক পরছে আর তোমার বেলা শুধু গেরুরা! তিনকড়ি সঙ্গে সঙ্গে বেঁকে দাঁড়াল, ভাল পোবাক ছাড়া নাববে না।

—গিরিশবাবু বললেন তিনকড়িকে কোন অমুরোধ ক্ষতে পারবেন না। কে বায় 'বোঝাতে শেষ পর্যন্ত চারজানি মালিক মহেন্দ্র মিত্র সাহস করে বোঝাতে গেলেন। তিনকড়ি সাক মুখের ওপার বলে দিলে—তুমি আর টকথাই-টকথাই করে। না বাপু, বাও আর ওকালতি করতে হবে না। তোমার মত উকিলের মামলার আমি ফুকোর জল ঢেলে দি।

মহেন্দ্রবাবু পালিয়ে বাঁচলেন, শেষ পাইস্ত একজন বৃদ্ধিমান লোক (ভোলাদা বলেন—সমস্তটাই রসিকতা আর ভা মিটমাট করাল আর্দ্ধেন্দ্রাবু) গিয়ে বোঝালে—আরে, ভোমায় কি এমনি পেছর পরাব, পরাব একেবারে থাটি সিক্ষের গেরুয়া, তখন ঠাওা হলো ভিনকভি।

ডা: অধিকারী মাঝে মাঝে থোঁচা দিরে কথা বার করভে চাইতেন।

বললেন—ভারার কিছ থ্ব দছ ছিলো। বললেন—খাকবে না কেন, এক সময় থিয়েটারের মালক পর্যন্ত ছিলেন। অপরেশবার ষ্টার থিয়েটার ঠকিরে আট থিয়েটারকে বেচে দিলেন আর তার টাকায় ভালুক পাড়ার ছ'খানা বাড়ি কিনলেন, পরে আবার সে বাড়ি বেচে দিয়ে টাকাটা ভোগ করলেন। উনি ছিলেন আওরক্তকেব। প্রথমে আমাকেও থ্ব দাবাতে চেয়েছিলেন।

—পাণ্ডৰ গৌৰৰ ভ্ৰাৰ কৰেছি, কিন্তু ওব ওপৰ আমাৰ কোন sympathy নেই।

এই দিন জনার আধামাধি পড়ে শোনালেন।

৭ই আগষ্ঠ এলেন। প্রথম কথা হল—দেদিন আমি ভূল করেছিলুম, মাইকেলের শর্মিষ্ঠার আছে সংস্কৃত নাটকের প্রভার আর প্রীক নাটকের প্রভাব আছে পদ্মাবতাতে। তার পর বললেন— একজন অভিনেত্রী অনেককাল অভিনয় করছে, মহতী আকাজকা মানে জানে না। বলে—সুদ্ধ হবে আর কি? তথন আমি বললুম—কথাটার মানে হ'লো পৃথিবীশ্বর হবার ইছে।। বিজিগীবা মানে জানে না।

পুবোনো দিনের অভিনেতাদের সম্বন্ধে বললেন — গিরিশবার্
একটা ভোল করলেন, ছেলেকে বড় কববার কলে কতকগুলো বড়
বড় পার্ট লিথে গেলেন, দানীবার অবল লেখাপড়া জানতেন না।
ভবে তথন তাঁরা স্বীকাব করতেন যে, লেখাপড়া জানেন না।
কুমুম বড় ভাল বলেছিল। একটি ছেলে না মেরেকে শেখাছি,
পার্টটা বোঝানোর জন্মে গোটাকতক ইংরেজি sentence বলেছি
ভা দেখি দে 'থা' করে শান্ধিয়ে আছে। কুমুম বললো—ওত খুবই
বুরোছে। যে ভাষায় বললেন, ও ভাষায় যে ও পথিত।

বামকুকের কাছে গিরিশবার গিরেছিলেন বলে বেঁচে গিগেছিলেন।
প্রমহংসদেবের শিষ্টার খুব সাহায্য করেছিলেন। স্বামীজি ছিলেন পেছনে। স্বামীজির অপূর্ব জনপ্রিয়তা ছিলো। পশ্চিমেও স্বামীজির বা জনপ্রিয়তা ছিলা, ববাজনাথের তা ছিলো না। কিন্তু এদেশে
স্বামীজির নাম হ'লো আমেরিকা থেকে নাম করে এসে।

—ওদেব দেশে কতকগুলো গরীব গোক থিরেটার খুললেন, তারপর মিস হর্নিম্যান টাকা দিতে দীড়িরে গেল। আমাদের দেশেও গরীব লোকেরাই থিড়েটার খুলেছিলেন। গিরিশবার ছাড়া কারো কিছু ছিলো না। অর্দ্ধেশ্বার ছিলেন অর্দাস। সৌরীক্রমোহন ঠাকুরের বাড়িতে থাকতেন, কালীকৃষ্ণ ঠাকুর বছআছি করতেন, পঞ্চাশ টাকার বেশি কথনও একসঙ্গে চোথে দেখেননি। শীতকালে ওভারকোট আর গরমকালে ডেসিং গাউন পরে কাটিরেছেন। থাবার মথ্যে থেতেন দিশী মদ। দিশী ছেড়ে বিলিভিতে কথনও উঠতে পারেননি। দিশী মদ বোধ হয় তথন চোক আনা বোতল ছিল।

এবার এলেন জনার প্রাপকে, বললেন—জনা বলা হয় লেভি
ম্যাকবেথের ঘারা অনুধাণিত কিন্তু পড়লে ত তা মনে হয় না।
কাবা হিদেশে থুবই ভাল বই। ওঁর আবে একটা ভাল বই 'পাওবের
অজ্ঞাতবাদ'। বিশ্ববিভালয়ের পাঠ্য হওরা উচিত। নাটকটির ছটি
ক্তে—ফীচকবধ আর উত্তর গো-গৃহযুদ্ধ। অবগ্র এরকম তুটো কেন্দ্র
জনাতেও কিছুটা আছে। প্রবীরের মৃত্যুর পরের অংশটাও ন হুন।
ওঁর নাটক গ্রীক বা দেশ্বপীসবের নাটকের ছকে নর, একেবারে
মিশ্রন, সম্পূর্ণ নিজন্ব। মার্চেণ্ট অব ভেনিলে শাইলকের ব্যাপার

চোকার পর সেক্সশীয়র যদি পোর্টিয়া আর' তার রিং নিয়ে একট। বাড়ভি অংক লিখতে পারেন ত' গিরিশবাবুই বা পারবেন না কেন?

— আইন হর পরে। আরিষ্টটেল এরিষ্টোকেনিস আর্
এসকিউলাদের কত পরে আইন বাঁধলেন। তাছাড়া বিখ্যাভ লেখকরা আইন পুরো মাত্রার কখনই মানেন না। জেন অষ্টেনের লেখার সঙ্গে ডিকেন্সের লেখার বেমন অনেক তফাং।

ইংরেজি লেখকদের কথায় বললেন—স্থান ভ বেনেট ত ভাল লিখতেন। স্থামা অব ফাইভ টাউনদ থ্ব ভাল বই। ৩ও ওয়াইভদ টেলসও বেশ ভাল লেখা। ওয়েলসও ভাল লিখতেন। মি: পলি পড়েছি।

কথার কথার 'মহাপ্রস্থান' নাটকের কথা উঠল। বললেন—
মহাপ্রস্থান হটি লোক লিখতে পারতেন—ক্ষীরোদ পণ্ডিত আর
গিরিশবার্, গিরিশবার্ লিখলে ভীবণ ট্রাজিক হ'তো। অবশ্ব এর
চেয়ে ট্রাজিক আর কি হতে প রতো! তবে উনি বোধচয়
মহাপ্রস্থান পর্যন্ত বেতেন না। অর্জুন বেখানে গাণ্ডীব
তুলতে পারলেন না দেখানেই শেষ করতেন। ক্ষীরোদ
বার্কে বলতে উনি লাফিরে উঠলেন, কিন্তু একদিন ভেবে এসে
বললেন—ভামা, এখনো গাট বছর হয়নি, এরি মধ্যে পূর্ণব্রন্ধ নাবায়ণের
মৃত্যু দেখালে কি আর বাঁচবো।

জনার কথা তুললেন আবার, বললেন—জনা বিশ্ববিদ্যালয়ের পাঠ্য কি? ভাল করে পড়ানো দরকার, শ্রদ্ধা নিয়ে পড়ানো দরকার, এতে নাটকীয়তাও আছে, কান্যগুণও আছে, বারা পড়ান তাঁরা ভাগ করে পড়ান না। কিছু ভাগ ভাগ সমালোচনা থাকলেও তাতে এমন অনেক জায়গা আছে না পড়লে বোঝা বায়, তাঁরা বইটা ভাগ করে পড়েননি। তা ছাছা শ্রদ্ধা না থাকলে কী করে বুঝবেন।

মাইকেলের প্রতি গিরিশ বাব্র অভ্যন্ত প্রছা ছিল। আমার বর্থন সভেরো বছর বর্স, তথন প্রথম গিরিশ বাব্র কাছে যাই ইনষ্টিটিউটে রেসিটেশন কশিশটিশনে, কি ভাবে রেসিটেশন করথে শিথতে। মাইকেলের লেখার বে অংশটি নির্দিষ্ট ছিল সেটা পড়েছঃথ করে বলেছিলেন এটাও মাইকেলের লেখার ভালো অংশ নর, এর চেয়ে অনেক ভালো লেখা আছে তাঁর, এই বলে নিলাধকের প্রতি অনা পড়ে শোনালেন।

তিনি বে নিজে নাটক লিখবেন, একথা কথনও ভাবেননি। কিছ
থুব ভালো অভিনেতা ছিলেন। ইউনিভারসিটির উচিত গিবিশ বাব্
সম্বন্ধে থোঁজ খবর নেওয়া। তাঁর নাটকের Genesis সম্বন্ধেও থোঁজ
নেওয়া উচিত। ববীক্রনাথ আমায় বলেছিলেন—গিরিশ বাব্র লেথা
পড়িনি আর এ বুড়ো বয়েসে পড়তে বলো না। তবে তিনি খুব বড়
অভিনেতা ছিলেন।

—দানী বাবৃকে বে দেখতে পারজেন না ভার কারণ তিনি ত' কেবল ভোগে চলছেন, গিরিশচন্দ্রের মৃত্যুর পর থেকেই তাঁর থারাপ অবস্থার স্থক হয়। এক দেবলাদেবীতে থিজির থাঁ হরে চেঁচিয়েছিলেন কিছুদিন' তবে প্রসা পাননি।

আঞ্চকের দিনে বে বাই করুক, Publicity Conscious স্বাই, আমাকে তু বছর কেন্ত mention করেনি।

এক বিখ্যান্ত ইংরাজী দৈনিকের সম্পাদকের নাম করে বললেন ওকে উনিশ'শ সাতাশ-জাটাশ সালে বলেছিলুম, সমালোচনার জন্মে একটি ভাস ছেলেকে তিন-চারশ টাকা মাইনে দিয়ে রাখাে, আমবা তাকে সাহায় করবাে, তাতে বললে, এমনিংত্তই কতলাকে লেখা দিতে চাইছে। জার একটি পত্রিকা গোটির পরিচালকের নাম করে বললেন—সে বললে, কেউ ভ কিছু জানে না । যা লেখবার আপনি বরং লিখে দেখেন, কাগজে ছাপিরে দেখে।। আমি তাতে রাজি হইনি।

যাবার সময় ঠিক হলো পরের দিন পড়বেন পাগুবের জ্বজাতবাস। জাবার এলেন চোদ্দই আগষ্ট। ইতিনধ্যে বার্ণপুরে জ্বজিনয় করতে গিয়েছিলেন, সে সম্বন্ধেই প্রথমে বললেন—বার্ণপুরে মেজর জেনারেল পি চৌধুরীর বাজিতে ছিলুম। ভদ্য-লাক ex—

I. M. S.। শুর স্ত্রীকে জামার বড় ভালো লেগেছে। কোনো রকম রং চং মাখা নয়, একেবারে সাবারণ বাঙালী-ঘরের বউ। জ্বচ বারা তাঁর সঙ্গে দেখা করতে জ্বাসছেন স্বাই রংমাখা। আর কী বত্ত। থাইরেছেও খুব ভালো। তাইত বললুম, I am feeling quite at home,

—চৌধুরী সাহেব আই, এন, এ,তেও ছিলেন, জীবনে অনেক গ্রাডভেঞ্চার আছে।

— অভিনয় থ্ব ভালো হয়নি। (একজন অভিনেতার নাম কবে)— এব অবস্থা থ্ব স্বাভাবিক ছিল না। একবার চুকে আব যখন চুকলো না তথনই বৃশ্বলুম কিছু গোলমাল হয়েছে। বাঁধা হাততালি পাবার জায়গায় না পেলে এক কথা তিনবার করে বলেছে।

— .हे জটি খ্ব ভাস, গভীরতা চল্লিশ ফুট, তবে মাঝথানে একটা বাধা আছে (সম্ভবতঃ পিলার) নীচে ছ'শ পঞ্চাশজন লোক ধরে। ষ্টারেও ধরত না। জিজ্ঞাসা করলুম—সবই ত তোমাদের ভাসো, কিন্তু মাঝথানে ওটা কেন ? ষ্টারের নকস, তা উত্তর দিলে—না, আগে ওই পর্যন্তই ষ্টেজ ছিলো, এখন বাড়ানো হয়েছে। আমি বসপুম—ওটা সরিবে দিয়ো। আর একটু জিজ্ঞাসা বাদ করো। গভিনয় করতে পয়সা নিই বটে কিন্তু এসব কথা জানতে চাইলে ত' আর প্রসা নেবোনা।

এবাবে কতকগুলো সাধারণ কথা বললেন—স্মামাদের দেশে জাতীরতা বোধ এদেছে পরে। আর্ধরা যে বাইবে থেকে এদেছিল একথা হয়ত সত্যি নয়, নয়ত এদেশের লোকেরাই নিজেদের আর্ধ বলে চালিয়ে দেয়। মুসলমানরা ধথন এদেশে আসে সামাদের অবস্থা তথন থুবই থারাপ।

পাণ্ডবের ক্ষপ্তাতবাস প্রদক্ষে ৰসলেন—পাণ্ডবের ক্ষপ্তাতবাস লেখা হর ক্ষাঠারশ' বিরাশি সালে। তার ক্ষাগের বছর লেখা হর বাবণ বধ। প্রথম দিনে উত্তরা কে করেছিল তার নাম পাণ্ডয়া বার মা। ক্ষমতলাল মিত্র করেছিলেন ভীম ছাড়া ক্ষারো ছটো পার্ট। গিবিশবাবু কৰেছিলেন কীচক আব ত্ৰোধন। গিবিশবাবু কীচক খুব ভাগ কৰতেন, কিছ আধম বাত্ৰিব পৰ ছেড়ে দিয়েছিলেন। অথন কৰতেন মভিগাল হব। তাই নিবে তুমূল হৈ চৈ। শেব প্ৰস্তু বাধ্য হবে আবাব ধ্বলেন। অমৃভবাবু ছিলেন লখা চওড়া দশাস≷ পুক্ষব।

পাওবের অঞ্চাতবাদের হুট কেন্দ্র, এক কীচক বধ স্থার এক উত্তর গো গৃহ যুদ্ধ। হুটিকে ভূড়েছে উত্তরা-অভিমন্থ্য বিবা**হ আর** কুক্ষক্ষেত্রে যুদ্ধের ইঙ্গিত।

পাওবের অজ্ঞাতবাসে বিদেশী কোনো ছে'ওিয়া নেই। এর মৃত্য হ'লো পুরো কাশীরাম দাস। এর গড়নটাও সম্পূর্ণ গিরিশবারুর নিজস্ব।

দেক্সপীয়রের থ্ব ভক্ত ছিলেন গিরিশবাব্। অসাধারণ ব্যক্তিম সম্পন্ন লোক ছিলেন উনি। যত কাল ছিলেন, ন হুন কোনো ধারাকে চুকতে দেননি।

পাশুবের অজ্ঞান্তবাস বিশ্ববিকালয়ের পাঠ্য হওয়া উচিত। কিছ
পড়াবে কে? সেল্পনিরর বোধ হর শ্রীকুমার পড়াতে পারে,
পার্সিভাল সাহেবের সব নোট ওর মুখস্থ। প্রফুলবাব্ও ভাল পড়াতেন
ভনেছি। তবে আমাদের যা পড়িয়েছিলেন—ফাইলোলজি—
তা ভাল পড়াননি। ফাইলোলজি জানে স্থনীতি, একেবালে
সব মুখস্থ।

প্রাকুল্ল বাবুকে পড়ানোর লাইনে আনলেন পার্সিভাল সাহেব। ধমকে বললেন—ভেপ্টিগিরি করবে তো আমার কাছে এতদিন পড়লে কেন ?°

প্রাকুল্লবাবু আগেও এসেছিলেন, কিন্তু আমাদের আলোভনে পালিয়ে বাঁচলেন। পার্সিভাল সাহেব ওঁকে থ্ব ভাল বাসতেন। নিজের সব নোট লেথা বই দিয়ে যান।

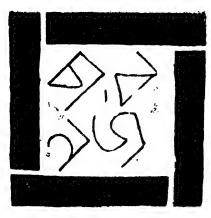
ওঁৰ সময় পাৰ্সিভাল আৰু এম, ঘোৰ ভাল পড়াতেন। আৰু
একজন ভাল পড়াতেন—বিনৰ্দ্ধ দেন। উনি ফিলদফি, হিট্টী আৰু
ইক্নমিকসের প্রফেগর ছিলেন। কিন্তু কোনো দিকে বেতেন না
ভাই আভবাব পছন্দ করতেন না। ভবে দলে টানতে চেয়েছিলেন।
বিনয়বাবুকে এক কথার ইলপেটর অব কলেছেস করেছিলেন।
ভিনি খ্ব রাদভানী লোক ছিলেন। ভাঁকে স্বাই নাম ধ্বে ডাকতে
পাৰতেন না, বাবু বলতে হ'তে।।

আওবাবুর মাঝে মাঝে ওরকম ঠিকে তুল ছ'তো। ওরদাস বাবুৰ সন্দেও একবার হয়েছিল। ওঁর ছেলে ছারাণের চাকরী করে ওঁর কাছে ভোট চান। তাতে ওরুদাসবাবু অতান্ত কুল হয়েছিলেন।

ঐ সময়ে পণ্ডিতরা তাঁদের জ্ঞান দেখাতেন না, নিতাস্কই থোঁচা দিয়ে জানতে হ'তো।

••• अ माद्यत् श्राह्मको । . .

এই সংখ্যার প্রছেদে সাঁওতালী বল-ললনা ছুই বোনের আলোকচিত্র প্রকাশিত হইরাছে। আলোকচিত্র জীরামকিছর সিংহ কর্তৃক গৃহীত।



রাজেন্দ্রলাল আচার্য্য

েহশুমুন, বঙ্কিমচন্দের মৃত্যু উপলক্ষে অঞ্জীত শোকসভায় আমর৷ বঙ্কিমের গড়ে' তোকা বাংলা ভাষাতেই সকল কথা ভনতে চাই, ইংরাজিতে নয়।" বালকের কঠে তীব্র প্রতিবাদ ধ্বনি ন্তনিয়া সভাস্থ সকলে সচকিত চইয়া উঠিল। সাহিত্যসম্রাট বৃদ্ধিমচন্দ্র চট্টোপাধ্যায়ের পরলোকগমনের পর রাজদাহী কলেজিয়েট স্থুলে সাহিত্যসমাটের মৃতিপুজার জন্ম শোকসভা অমুঠিত হইতেছে। সভাপতির আসন গ্রহণ করিয়াছেন রাজসাহীর তংকালীন ম্যাজিট্রেট লোকেজনাথ পালিত। সভাপতির অভিভাষণে তিনি ইংরাজিতে বলিতে আরম্ভ করিয়াছিলেন যে বঙ্কিষ্চন্দ্রের রচনাবলী তিনি লওনে বসিয়াও পাঠ করিয়াছেন এবং তিনি বঙ্কিমচন্দ্রের একজন জমুরক্ত ভক্ত। তবুও ইংরাজি ভিন্ন অন্ত ভাষায় বক্তৃতা করিতে পারেন না **এজন্য তিনি ইংরাজিতে**ই বঙ্কিমচন্দ্র সম্বন্ধে বাহা কিছু বলিবেন। **সমস্ত সভা নিস্তৱ হইবা সভাপতির অভিভাষণ তনিতেছিল।** সহসা সভাব এক প্রাপ্ত ১ইতে বালকের কঠে প্রতিবাদ ধ্বনিরা **উঠিন বন্ধিমচন্দ্রে**র শ্বুতিপুজায় বন্ধিমের গ'ড়ে তোলা বাংলা ভাষা ভিন্ন অক্স কোন ভাষায় বক্তভা করা চলিংব না। এই বালক बाबगारी कलिखराउँ भूत्नव छिनीहमान छात् बालक्सनान चाठावा। বালকের প্রতিবাদের সার্বতা অন্তব্ত করিয়া সভাপতি মহাশয়



রাবেজ্ঞাল আচার

নিস্তব্ধ্ব হট্যা বসিয়া
পড়েন এবং সমুদ্য
সভার হৈ চৈ আরম্ভ
হট্যা বার। শেব
পর্যান্ত বারী য
অক্ষরকুমার মৈত্রের
মহাশয় বাংলা ভাষার
বস্তুতা করিয়া লাহিত্য
সমাটের শ্বুভির প্রভি
শ্রন্থা নিবেদন করেন
এবং সভার কার্য্যও
সমাপ্ত হয়।

বঙ্গ ভাষার প্রতি এই অসাধারণ অনুরাগ এবং বঙ্গীর জাতীরভার প্রতি অকুত্রিম প্রস্থাই রাজেক্রলাল আচার্য্য মহাশরের জীবনের মূল করে। কংগ্রেস নেজবর্সের বিরাগভাজন হইরাও তিনি তাঁহার 'বিপ্লবী বাংলা' নামক গ্রন্থে প্রমাণ করিয়াছেন ভারতরর্বের কর্তমান আধীনতা গান্ধীবাদের হারা আদে নাই—আসিয়াছে অপরাপর কারণের সহিত আজাদ হিন্দ ফোজের সর্কাধিনামক বাঙ্গালী বীর সভাবচন্দ্রের প্রচেষ্টায় এবং আত্মত্যাগে। ভাইত বঙ্গজননীর আব একজন প্রেট সন্তান স্থপিতঃ আমাপ্রসাদ মুখোপাধ্যায় মহাশয় 'বিপ্লবী বাংলা' পাঠ করিয়া আচার্য্য মহাশরকে লিখিয়াছিলেন 'এই প্রন্থে আপনি সত্যকারের ইতিহাস বিবৃত করিয়াছেন। আপনার প্রচেষ্টা জয়মুক্ত হউক।"

শ্রীষ্ক্ত রাজেন্দ্রলাল আচার্য্য রাজসাহী জেলার এক বিশিষ্ট পরিবারের সন্তান। তাঁহার পিতা স্বর্গাঁর ডাক্তার কেলাবেশ্বর আচার্য্য এম্, বি উত্তরবঙ্গের একজন বিখ্যাত চিকিংসক ছিলেন। কিন্তু শুর্ব চিকিংসক হিসাবেই তাঁহার খ্যাতি সামাৰদ্ধ ছিল না। রাজসাহীর প্রতিটি জনহিতকর প্রতিষ্ঠান যথা মিউনিসিপ্যালিটি: জেলাবোর্ড, পাবলিক লাইব্রেরী, হরিসভা, কলেন্দ্র, স্থুল প্রভিতি প্রতিষ্ঠানের সহিতই তিনি অগ্রণীন্ধণে যুক্ত ছিলেন। আজিও রাজসাহীর আপামর জনসাধারণের নিকট কেলার ডাক্তার্ণ গরীবের মা বাপ ছিলেন বলিয়াই পরিচিত। এই বিখ্যাত পিতার জ্যেষ্ঠপুত্র রূপে ১৮৮০ খুষ্টান্দে জীমুক্ত রাজেন্দ্রলাল আচার্য্যের জমহয়। অতি শৈশবেই তাঁহার মাত্বিয়োগ হয়; কিন্তু বিমাতা সেহছায়ার বন্ধিত ইলেণ্ড তিনি মায়ের অভাব কোনদিন অমৃত্র করেন নাই।

বাজেন্দ্রলাল বাল্যকালে রাজসাহী কলেজিয়েট স্থলে লেখাগড় আরম্ভ করেন এবং প্রথম হইতেই একজন মেধারা এবং কৃতি ছাত্র হিসাবে পরিচিত হন। শুধু তাহাই নহে; খেলাধূলা, গান-বাজনা সম্ভবণ প্রভৃতিতেও তিনি বিশেষ পারদলী ছিলেন। বর্ষাকালে ছবস্ত পদ্মা নদাও ভিনি একাধিকবার সাঁতরাইয়া পার ইইয়াছেন ছাত্র জীবনে রাজসাহার ধেখানে বে সহদেশগুন্দক আন্দোলন হইয়াছে তাহাতেই তিনি একটা প্রধান স্থান গ্রহণ করিতেন। রাজনৈতি আন্দোলনের সহিত্ত তিনি যুক্ত ছিলেন এবং প্রোদেশিক কংগ্রেশে করেকটি অধিবেশনে স্বেছ্রাদেবক হিসাপে কাজ করিয়াছিলেন।

স্থুলের ছাত্র জাবন হইতেই রাজেক্সলালের সাহিত্য চর্চচী সুই হয় এবং রাজসাহীর হিলুরঞ্জিকা পাত্রকায়' এবং 'শিক্ষক' নামই জার একথানি পত্রিকায় ডিনি নির্মিত ভাবে লিখিতে থাকেন রাজসাহী হইতে এন্ট্রান্ত পাশ করিয়া তথাকার ছাত্র জীবন সমাই করিয়া তিনি কলিকাভার পড়িতে আসেন এবং রিপণ কলেই (আধুনিক স্থরেক্সনাথ কলেজ) ভতি হন। রিপণ কলেজ হইটেরাজেক্সলাল ১৯০০ খুট্টান্দে বি, এ পাশ করেন। রিপণ কলেই জালেক্সলাল ১৯০০ খুট্টান্দে বি, এ পাশ করেন। রিপণ কলেই জালেন এবং তাঁহার কথা মত "Bengali" পত্রিকার নির্মিত ভার্টিকের লিখিতে থাকেন। রাজেক্সলাল স্থরেক্সনাথের ছাত্রও ছিলেন

অতঃপর ১৯ ২ খুটান্দে বাংজপ্রলাল সরকারী চাকুরী সাব তেপ্টী পদে নিযুক্ত হন এবং বোগ্যতার সহিত কার্য্য সম্পাদন করিছ খাকেন। কিছ খাবীন মনোবৃত্তির জন্ম তিনি প্রতিপদে ইংরা শাসকগণের বিরপ্তাজন হন। তাঁহার প্রথম চাকুরী জীবং মেদিদীপুরে বছাত্রাণ কার্য্যে অক্তপুর্বর স্থনাম অর্জন করেন ঐ সময় ভিনি Famine Rules সম্বন্ধে যে নিবন্ধ লেখেন, তাহাতে ইংরাক্তর প্রচলিত নীতির যে সমালোচনা করেন, তাহা শাসক মহলে আলোড়ন আনয়ন করিয়ছিল এবং উহা তাঁহার পরবর্তী ভীবনের উন্ধতির প্রতিবন্ধক প্রমাণিত হইয়ছিল। রাক্তেপ্রলাস বন্ধ ভঙ্গ আন্দোলনের একজন উংসাহী সমর্থক ছিলেন। তিনি বগুড়ায় সার ডেপুটি থাকা কালে ইংরাজ শাসকগণ কর্ত্ক 'বন্ধ আমার জননী আমার থাত্রী আমার আমার আমার দেশ' শীর্ষক গানটি নিযিদ্ধ হয়। ইহাতে বিচলিত না ছইয়া বগুড়ায়—'ভিক্টোরিয়া থিয়েটার' রাক্তেপ্রলালের পরামর্শক্রমে ঐ গানটি প্রতিবার বিবৃতির সময় কনসাটে বাজাইবার ব্যবস্থা করেন। গুজিতে পাওয়া যায় রাজসাহী বিভাগের তদানীস্থন কমিশনার রিড সাহেব (পর্যবর্তীক ব্যব্দার করিবার জন্ম স্থারিণ করিলেও বন্ধ ভন্ধ আন্দোলনের সহিত যুক্ত থাকিবার জন্ম স্থারিণ করিলেও বন্ধ ভন্ধ আন্দোলনের সহিত যুক্ত থাকিবার অপরাধে ফুলার সাহেব তাঁহার মনোনারন অগ্রাহ্ম করেন।

বাজেন্দ্রলালের প্রথম মুদ্রিত গ্রন্থ 'বাংলার প্রতাপ' তাহার পরে তিনি 'রাণী ভবানী,' 'বীর কাহিনী,' মারাঠির কথা,' ছত্রপতি শিবাজি,' 'দিৰিজ্বে বাঙালী,' 'বাঙ্গালীৰ বল,' 'বাঙ্গালার ধর্মগুরু' (চুই খণ্ডে), 'বিপ্লৰী বাংলা,' 'মৃত্যুর প্রপাবে' (ছই থতে), 'স্থামা অভেদানল' প্রভৃতি গ্রন্থ রচনা করেন এবং জুলে ভার্ণের '৮০ দিনে ভূ প্রদক্ষিণ,' 'চম্রলোকে যাত্রা,' 'পাভালে,' বেলুনে পাঁচ সপ্তাহ' প্রভৃতি গ্রন্থ অমুবাদ कार्यन । हेमहोरकु Ressurection चित्रेत करनात Hunch Back of Notterdum, আনাতোল ফ্রানের Red Lily-র মধামুবাদ 'পুনৰ্জ্বন্ন,' দেব দেউল'ও 'ংক্তকমল' নামে বিভিন্ন মালিক পত্ৰিকায় প্রকাশিত হয়। 'নিকালোকালিটর' ভারত বুত্তান্ত তিনি 'শেষ হিন্দু সাম্রাক্ত্য' নাম দিয়া অমুবাদ করিয়া 'সাহিত্য পত্রিকায়' প্রকাশ করেন। অক্ষরকুমার মৈত্রেয়ের 'ফিরিঙ্গী ব'নকের' মত রাজেন্দ্রলালের 'ক্ষিক্লিক বাণিজ্যও' এককালে বিশেষ প্রাসিদ্ধি লাভ করিয়াছিল। বৰীক্রনাথের সম্পাদনায় বখন 'বঙ্গদর্শন' প্রকাশিত ইইতে থাকে, তথন বাজেক্রলাল ছিমান্ডবের মহম্ববের উপর ধারাবাহিক ঐতিহাসিক প্রবন্ধ লিখিতে থাকেন। 'মহস্তঃ' উপলক্ষ করিয়া রবীন্দ্রনাথ তাঁহাকে লিখিয়াছিলেন, 'আপনার মন্তব অপুর্বর ঐতিহানিক তথা হইয়াছে কিছ ভব হয় উহা ছাপিতে গিয়া বঙ্গদৰ্শন বন্ধ করিতে না হয়।' ধাবাদী সম্পাদক স্বৰ্গীয় বামানন্দ চাটাপাধ্যায় একবার ভোটগ্রহণ করিয়াছিলেন—ভাহাতে রাজেক্রলালের 'বাঙ্গালীর বল' বাংলা সাহিত্যের একশতখানা ভাল বইয়ের অক্সতম বলিয়া নির্বাচিত হর। ইহাই বাজেনুলালের বচনার শ্রেষ্ঠত্বের অক্তম নিদর্শন। ক্ৰিতা ও প্ৰবন্ধ যে তিনি কত লিখিয়াছেন ভাষার ইয়তা নাই।

এই প্রাসঙ্গে উল্লেখযোগ্য বে নাটক রচনা ও অভিনয়েও রাজেন্দ্র শালের কৃতিত্ব দেখা যায়। পূর্বের রাজসাহীর আচার্যাপরিবারে হর্গোৎসবের সময় নাটক অভিনীত হইত। উক্ত অভিনয়ের জন্ম রাজেন্দ্রলাল প্রতিবংসরই নৃতন নৃতন নাটক রচনা করিয়া দিতেন এবং উহারই অভিনয় হইত রাজেন্দ্রলালের লিখিত এবং প্রকাশিত নাটকের মধ্যে উহা এবং প্রায়শ্চিত্ত উল্লেখযোগ্য।

তৃথু সাছিভ্যিক হিসাবেই রাজেন্দ্রলালের কৃতিছ নহে—গঠনকারী কর্মী হিসাবেও তিনি স্থাপনিচিত। রাজসাহী বরেক্ত অন্থসকান শীমতির প্রতিষ্ঠা ও উন্নতি সাধনের জন্ত বে সকল ব্যক্তি সুগীয়

অক্ষরকুমার মৈত্রেয় মহাশয়ের পাখে সমবেত হইরাছিলেন রাজেলাল আচাগ্য তাঁহাদের অন্তর্ম। পরবর্ত্তী কালে রাজসাহী ত্যাগ কৰিয়া বারাকপুরে বাস করিতে আবস্তু করিলেও তাঁহার দেশ হিতৈগণা লোপ পায় নাই। বারাকপুর উচ্চ বালিকা বিল্লালয় এবং বারাকপুর অবেক্সনাথ কলেজেবও তিনি অন্তর্ম প্রতিষ্ঠাতা এবং পরিচালক সমিতির সভা। বারাকপুর জীরামৃকৃষ্ণ সমিতি ও মঠ প্রতিষ্ঠাও তাঁহার অন্তর্ম কীতি। স্বামা অভেদানন্দ মহারাজ্যর নিকট দীক্ষিত হইয়া তিনি স্বামীজি মহারাজের বিশেষ স্নেহ ও কুপাভাজন হইয়াছিলেন এবং স্বামীজির অনেকগুলি ইংরাজি রচনার বাংলা অনুবাদ করেন। স্বামী অভেদানন্দ মহারাজ্যর একথানি জীবনীও তিনি বাংলা ভাষার রচনা করিয়াছেন।

প্রথম মহাযুদ্ধের সময় ৰখন বাদালা যুবকেরা দলে দলে বুছে বাইতে থাকেন, রাচ্ছেন্দ্রলাল ভাঁচাদের একজন উৎসাহী সমর্থক এবং প্রচারক ছিলেন। ১৯শ সংখ্যক বেদলী রেজিমেটের অন্ত তিনি কয়েকটি জাতীয়সন্ধীতও রচনা করিরা দিয়াছিলেন; যথা—

- ১। বঙ্গবীরের বংশ আমরা কভুনা শত্রু করিব ভয়।
 অর্থা আনিব দেশের তরে অরাতি কিরীট করিয়া জয়, ইত্যাদি।
- ২। কোথা গোৰুৰ্ণ কোথায় কেদাৰ কোথা রাম সেতু কোথা গান্ধার বণহুলার ধ্বনিল বাহার জলধি:ইইতে জলবি শেব। ইত্যাদি।

বাজেজ্ঞালের সাহিত্য বচনার মুদ্ধ ইইরা ১৩২৬ সালে 'বন্ধ সাহিত্য সাবস্বত মণ্ডল' তাঁহাকে 'পুরাতত্ত্বত্ব' এবং নিধিল ভারত সাহিত্য সভ্য ১৯২৭ খুটাকে তাঁহাকে 'বিভাভ্বণ' ও 'সাহিত্য সরস্বতী' উপাধিতে ভ্বিত করেন। পরবন্তীকালে ইংরাজ সরকারও তাঁহার সাহিত্য সাধনার জন্ম রাজেজ্রলালকে রায় সাহেব উপাধি দান করেন। ইহাব্যভীত বহু পদক ও পুরস্কারও তিনি সাহিত্য রচনার জন্ম পাইরাছেন।

পাবনা জেলার ভারেকা প্রামের বিখ্যাত চৌধুরী অমিদার বংশের ৵যোগেশচন্দ্র চৌধুরী মহাশয়ের মধ্যমা ভগ্নী ঐীযুক্তা হেমনলিনী দেবীর সহিত বাজেন্দ্রলাল আচার্য্যের বিবাহ হয়। তাঁহাদের দাম্পত্য-জীবন অভিশয় মধুর। কিন্তু কয়েকটি পুত্রের পর পর মৃত্যু হওয়ায় ভাঁহার শেষ জীবন কতকটা শোকাবহ হইয়াছে। দ্বিতীয় মহাযুদ্ধে**র সময়** তাঁহার তুইটি পুত্র রঞ্জনলাল ও দিহিবলাল যখন যুদ্ধে গমন করেন, তাহাতে স্বামী-স্ত্রী গৌরবই অন্তভ্র করিয়াছিলেন এবং উভয়ে একলে যাইয়া সম্ভানম্বয়কে ফোট উইলিয়ামে পৌছিয়া দিয়া আসেন। "কেন যুদ্ধে যাইভেছ ?" জিজাসিত হইয়া বঞ্জনলাল বলিয়াছিলেন—"দেশের জন্য-- যদি ফিরিয়া আসি, তবে আমাদের সমর-কৌশল শিক্ষা স্বাধীন ভারতের সেবায় নিয়োজিত হইবে। আর যদি না ফিরি, ভবে যুদ্ধক্ষেত্রে আমার ৰুত্য 'বাঙ্গাদীর বলের' লেথকের উপযুক্তই **হইবে।**" ৰঞ্জনলাল সত্যই আর ফিরেন নাই। ব্রহ্মদেশের মিটকিনীর সমন্ত্র-ক্ষেত্রে জীবন দিয়া নিজ পিতার 'বাঙ্গালীর বল' রচনার বাথার্থ্য প্রস্লাণ ক্রিয়া গিয়াছেন। ইহার পর হইতেই রাজেল্রলাল প্রলোক্তছ সম্বন্ধে গবেষণা করিতেছেন এবং পরলোকতন্ত্ব সম্বন্ধে তাঁহার মৃত্যার পরপারে' ১ম ও ২র থও অতি উপাদের গ্রন্থ।

প্রায় অনীতিবর্ধ বয়সে রাজেজ্ঞলাল এখনও অটুট মনোবল লইবা সাহিত্য সাধনা করিতেছেন। বোগ তাঁহাকে নীর্ণ করিবাছে। শোক তাঁহাকে জীর্ণ করিয়াছে, তবুও অবিচলিতচিতে তিনি সাহিত্য সাধ্যা ক্রিয়া চলিয়াছেন, যাহার মূল স্থরই হইল বাজালীর জাতীয় চেতনা ও শ্রেষ্ঠায়। 'ঐ সঙ্গে জ্ঞান্ত ভাবে তিনি করিয়া চলিয়াছেন স্থ্যেন্দ্রনাথ কলেজ ও শ্রাধানকৃষ্ণ সমিতি ও মঠের মাধ্যমে সমাজসেবা। রাজেক্সলাল শীদ্রই জ্লীতিবর্ধে প্লাপ্ণ ক্রিবেন;—তিনি শতায়ু হটন।

শ্রীচারুচন্দ্র ভট্টাচার্য্য

[বিশিষ্ট বৈজ্ঞানিক ও সাহিত্যিক]

স্পূর্ব কর্ম নঠা, বিজ্ঞান সাধনা ও সাহিত্যচর্চা এঁব জীবনের মূল মন্ত্র। বহুগুলে বিভূবিত হলেও এই তিনটি বিষয়ের তিনি একনিষ্ঠ পূজারী। তাই এই সাহাত্তর বছর বয়সেও তিনি নিরলস্ ভাবে সাহিত্য চর্চা করে চলেছেন। বঙ্গ জননীর অমৃত ভাণ্ডার সমৃত্ব করে চলেছেন আজও।

বর্তমান কালে বে করেকজ্বন শক্তিমান লেখক বিজ্ঞানালোচনায় জ্মাণী হ'রেছেন তন্মধ্যে বিশিষ্ট শিক্ষাবিদ, সাহিত্যিক ও বৈজ্ঞানিক শ্রীচাক্ষচক্র ভট্টাচাব্যের নাম বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য। একথা আজ অস্বাকার করবার উপায় নেই বে—পদার্থ বিজ্ঞানের অধ্যাপক ও বিজ্ঞানের কৃতী ছাত্র চাক্ষচক্র আধুনিক বৃগের একজন জনপ্রিয় বিজ্ঞান-সাহিত্যিক। সরস বর্ণনাভঙ্গী এবং অভি আধুনিক বৈজ্ঞানিক আবিজ্ঞান-বিভিন্ত দান করেছে। চাক্ষচক্রের রচনার ভারতীয় চিন্তাধারার ক্রভাব স্পাইই প্রভীয়মান হয়।

এই জ্ঞানা, গুলা নিমহকার অধ্যাপক ভট্টাচার্য্য বর্তমান কালেব শ্রেষ্ট কাব কবিগুরু রবীক্রনাথের সাল্লিয় ও সংস্পানে এনে বিশ্বভারতী প্রকাশনার সমৃদ্ধ করেন নানাভাবে ও নানাদিকে। বাংলা দেশে বে পাঁচ জন বৈজ্ঞানিক রয়াল সোসাইটার সদস্য মনোনাত হয় বিশ্বে বৈজ্ঞানিক অবদানের জল্পে ভ্রমধ্যে আচার্য্য জগদীশচন্দ্র বস্থ্য মেখনাদ সাহা, প্রশাস্ত মহলানবাশ, শিশির মিত্র, সত্যেক্রনাথ বস্থ প্রস্থাবর নাম উল্লেখযোগ্য। এনদর মধ্যে আচার্য্য জগদীশচন্দ্র ব্যত্তীত জপর চার জন হচ্ছেন চার্ক্সন্তের্দ্র ছাত্র। এবা ছাড়াও বিশিষ্ট বৈজ্ঞানিক স্বর্গতঃ জ্ঞানচন্দ্র ঘোষ, জ্ঞান মুখাক্ষ্মী এবং আরও বহু বিশিষ্ট ব্যাক্ত অধ্যাপক চার্ক্সন্ত ভট্টাচাধ্যের ছাত্র। এর জীবনের মাঝে দেখতে পাই উনবিংশ ও বিংশ শতাব্দার সংক্ষিশ্রণ—জ্ঞানী ভানিক অপুর্ব্য সংযোগ।

১৮৮৩ সালের ২১শে জুন ২৪ পরগণা জিলার ছরিনাভি গ্রামের এক মধ্যবিত্ত পরিবারে ঐভিটাচাধ্য জন্মগ্রহণ করেন। পিতা স্বর্গতঃ বসন্তকুমার ভটাচার্য্য।

শ্রীভটাচাধ্যের বাল্য ও কলেজ জীবন সম্বন্ধে শ্রীভটাচার্ধ্যের নিজের
মুখের কথাই এখানে উদ্যুক্ত করছি—

বাল্যকালে একটি নৃতন ছুলে ৩ বছৰ পড়ে ১ - বছৰ বরসে ফলকাডার আসি। কলকাতা মেটোপলিটান ছুলে (বউবাল্লার থানা) এসে ভর্ত্তি ইওয়ার ছুই মাস পবে একদিন শুনতে পেলুম সাহিত্য সম্রাট বিষ্কিষ্টক্র চটোপাধ্যার মহাপ্রয়াণ করেছেন। এত কাছে থেকে তাঁকে দেখা হলো না। এজন্তে মনে ক্লোভ বরে গেল। আমার স্পষ্ট মধ্য আছে সেদিন আমাদের ছুল হ'লো না। ১৮১১ সালে মেটোপলিটান ইন্টিটিউলান থেকে এনুট্রাল প্রীক্ষার উত্তীর্ণ

হই এক মেটোপলিটান (বর্ত্তমান বিভাসাগর) কলেন্তে এফ. এ পড়ি। সে সময়ে আমাদের ইংরেজী ভাষার অধ্যাপক ছিলেন মুর্গতঃ এন, এন, ছোধ, জ্ঞান ব্যানাজী, মোহিতচক্র সেন এক ক্ষেত্রগোপাল ঘোষ প্রমুখ। ১১·১ সালে এফ, এ পরীক্ষায় ব্রভকার্যালাভের পর প্রেসিডেন্সী কলেক্সে বি, এ (বি কোস') ক্লাসে ভর্ত্তি হলুম। সে সমরে প্রেসিডেন্ডা কলেকে আমাদের অধ্যাপক ছিলেন আচাৰ্য্য জগদীশচক্ৰ বস্থ, আচাৰ্য্য প্ৰাফুলচক্ৰ বার, অধ্যাপক মি: পার্শিভেল প্রমুথ তংকালীন অধ্যাপকগণ। আমি ৰথন ৪র্থ বাবিক শ্রেণীতে পড়ি তথন ডুক্তর পি, কে, রায় ভারতীয়দের মধ্যে সর্বপ্রথম প্রেসিডেনী কলেকের অধ্যক্ষের পদসাভ করেন কিছদিনের জক্তে। ১১০৩ সালে প্রেসিডেন্সী কলেজ থেকে বি, এ, পরীক্ষায় সাফল্যলাভ করে পদার্থ বিভায় এম. এ. পড়ি এবং ১৯০৪ সালে পদার্থ বিত্তার সসম্মানে এম, এ প্রীক্ষার উত্তীর্ণ হই। এম, এ পড়বার সময় আচার্য্য জগদীশচক্র বস্তুর অধীনে গবেষণা আরম্ভ করি এবং এম, এ পাশ করার পরও আচার্য্য বসুর অধীনে গবেষণা কাৰ্য্যে বত থাকি। তার পর প্রেসিডেনী কলেনে পদার্থ বিজ্ঞায় লৈকচারার হয়ে যোগ দিই। সন ভারিথ মাস আর মনে নহি। তার পর প্রেসিডেন্সী কলেজেই পদার্থ বিজ্ঞার অধ্যাপক হই এবং বিজ্ঞান বিষয়ের অধ্যাপনা করতে থাকি।

ছাত্রাবস্থায় আচার্য্য জগদীশচন্দ্র বস্তুর সান্ধিধ্য লাভ করি এবং ভারে মৃত্যুদিন পর্যান্ত আচার্য্যদেবের সঙ্গ লাভ করি।

দীর্থকাল অধ্যাপনার পর ১৯৪০ সালে প্রেসিডেন্ড্রী কলেজের পদার্থ বিশ্বার অধ্যাপকের পদ থেকে শ্রীভট্টাচার্য্য অবসর গ্রহণ করেন : অক্যাবিধ ছিনি বিশ্বভারতী ও অক্যাক্ত বছ প্রেভিষ্ঠানের মঙ্গে গভীর ভাবে সংশ্লিষ্ট। তন্মধ্যে বর্তুমানে তিনি রামবোহন লাইব্রেরীয় সভাপতি, রবীক্র ভারতীর সহ-সভাপতি। বঙ্গীয় বিজ্ঞান প রবদের সহ সভাপতি, অবনীক্র পরিবদের সভাপতি, ভারত সভার সহ-সভাপতি প্রভৃতি করেকটি সংস্থার নাম বিশেষভাবে উল্লেথযোগ্য।

প্রীভটাচার্য্যের দার্ঘ কর্মমন্ত্র জাবনে অপর একটি দিক হছে কবিগুরু রবান্দ্রনাথের সান্ধি। ও সহযোগিতা। ১৯১৭ সালে বিশ্বভারতী সন্মিলনা প্রাভিট্টিত হ'লো। সে সমন্ন রবান্দ্রনাথ সেখানে রচনা ও কবিতা পাঠ করতেন। প্রীভট্টাচার্য্য তাতে বিশেব আরুষ্ট হন। তিনি উক্ত সন্মিলনার সম্পাদক ছিলেন। বিশ্বভারতী বধন ছাপিত হ'লো তথন কবিগুরু রবীন্দ্রনাথ প্রকাশনী বিভাগটির পরিচালনা তাঁর হাতে ছেড়ে দিলেন। প্রীভট্টাচার্যের মুগের কথাই বলি, ১৯২২ সাল থেকে ১৯৫৭ সাল পর্যন্তর রবীন্দ্রনাথ বে ভার আমার উপর অর্পণ করেছিলেন সে দায়িত্ব ভার বহন করেছিলাম। আজ ত্ববছর হ'ল সে ভার হ'তে অব্যাহতি নিরেছি। বিশ্বভারতীর কার্য্য নির্বাহক পরিষদ ও তার অ্রাক্ত সংস্থার সঙ্গে গোড়া থেকেই আমি মুক্ত ছিলুম।

বর্ত্তমানে 'বত্তধারা' মা:সিক পত্রিকার সম্পাদনার ভার আমার উপরেই পড়েছে। ববীক্স ভারতী ও বিশ্বভারতীয় পুত্তক প্রকাশন বিভাগের উপদেষ্টা হিসেবে এখনও আমি সংশ্লিষ্ট আছি।

শ্রীভটাচার্য্য বিজ্ঞানের সাধনার বত থেকেও পরম শ্রন্থা ও নিঠার সঙ্গে বঙ্গ সাহিত্যের সেবা করে চলেছেন আজও। প্রাঞ্জল ও সরল বচনাবলী এঁর জপর বৈশিষ্ট্য। এঁর হচিত গ্রন্থভূলি পাঠক সমালে

যথেষ্ট সমাদর লাভ করেছে। এঁর প্রচেষ্টার বাংলা বিজ্ঞান সাছিত্য ক্ৰমেট সমৃদ্ধিৰ দিকে এগিৰে ৰাচ্ছে। প্ৰীভটাচাৰ্য এ বাৰত ২৫ খানার উপর পুস্তক প্রণয়ন করেছেন তন্মধ্যে নব্য বিজ্ঞান (১৩২৫), वाक्रांनीय थाछ (১৩২৬), वित्यंत উপाদान (১৩৫٠), ভড়িতের অস্থান (১৩৫৫), আচার্য জগদীশচন্ত্র বস্থ (১৯৩৮), জ্বগদীশচক্ষের আবিষ্কার (১৩৫০), বাাধির পরাজয় (১৩৫৬) পদার্থ বিজ্ঞার নবযুগ। বৈজ্ঞানিক আবিষ্কার কাহিনী প্রভৃতি গ্রন্থের নাম বিশেষ ভাবে উল্লেখযোগ্য।

আমরা এই জ্ঞান তপশ্বী, বঙ্গ ভারতীর একনিষ্ঠ পূজারী অধ্যাপক ভটাচাৰ্য্যের দীৰ্যজীবন কামনা কবি এবং আশা রাখি তিনি আরও দীর্ঘকাল বেঁচে থেকে বঙ্গন্ধননী তথা ভারত ও বিশ্ববানীর জ্ঞান ভাণ্ডার-সমৃদ্ধ করবেন।

অধ্যক্ষ শ্রী সমিয়কুমার সেন

প্রিখ্যাত জান-তপরী

'প্রীণীৰ গৃহস্থ ব্যবের ছেলে বন্ধ কণ্টের মধ্যে জ্ঞীবন চালিয়েছি সংসারের অভাব অন্টন সম্বন্ধে বেশ অভিজ্ঞতা চয়েছে তাই মধাবিত্ত খরের ছেলে মেয়েদের শিক্ষাদীক্ষা কিকপে হয় আমার ভাল ভাবে জানা আছে'-জানাদেন অভিজ্ঞ শিক্ষক ও ছাত্র দরদী অধ্যক্ষ গ্রীঅমিষকুমার দেন। কথাগুলো বলার সময় তাঁগার চোপের সঙ্গল ভাব আমার নজ্জর এড়িয়ে বায় নাই।

কলিকাতা সিটি স্থলের প্রধান শিক্ষক প্রলোকগভ অন্ধণাচরণ সেন ও ৺বসস্তকুমারী দেবীর প্রথম সন্তান অমিয়কুমার ১৮৯৭ সালের ৭ই আগষ্ট ববিশাল সহবে জন্মগ্রহণ কবেন। স্বগ্রাম ভিল ববিশাল ভেসার গুটিরা আম। ৺মনোবস্থন গুলুসাকুবতার দীকার তাল্য±র্ম গ্ৰহণ কৰাৰ অৱদাচৰণ নিজ পৰিবাৰ হটতে বিচাত হটৱা কলিকাতা গিটি স্থুলে শিক্ষক হিসাবে যোগদান করেন এবং শিশু পুত্র সঙ্গ জ্রীকে লইয়া কলিকাভার চলিয়া আসেন। সাত বংসর পরে উলুবেডিয়া মহতুমার বানীবন-প্রামে তাঁহার পরিবারবর্গের বসজি স্থাপনা করেন। অমিষকুমাৰ স্থানীর বালিকা বিজ্ঞালর হইতে ছাত্রবৃত্তি পরীকার উত্তীর্ণ ইইয়া কলিকাতা সিটি স্থলের পঞ্চম শ্রেণীতে ভর্ত্তি হন। তথা হইতে দশ টাকা বৃত্তি সহ ১৯১৩ সালে প্রবেশিকা, সিটি কলেজ হইতে ১৯১৫ দালে আই-এ-তে ধিতীয় ও ১৯১৭ দালে ইংবাৰী দাহিত্যে প্ৰথম শ্ৰেণীৰ প্ৰথম স্থানাধিকাৰীৰূপে গ্ৰাজুয়েট হন এবং ১৯১৯ সালে উক্ত বিষয়ে প্রথম শ্রেণীতে দিতীয় ছাত্র হিসাবে এম, এ পাশ করেন। ১৯২০ সালে তিনি ক'লিকাত' বিশ্ববিদ্যালয়ে লেকচারার হেসাবে কার্য্য বোগদান করেন। ১৯৪৫ সালে তিনি কলিজাত। সিটি কলেজের প্রাক্ত রূপে নিযুক্ত হন। ভাঁহার ছাত্রজীবনের সমসাময়িক ও गडीर्यत्वत मत्या (नडाको छडाव, तमाश्रमान मूत्थाभाषाच, श्रियत्वन সেন, কিতীশ চ'টাপাধ্যার প্রভৃতির নাম উল্লেখযোগ্য।

অণ্যক সেনের সহধর্মিণী হলেন ৺এককড়ি সি:হরারের কলা শ্রীমতী স্বরমা সেন, তৃতীয় দ্রাতা কলিকাতা কর্পোরেশনের চীফ ইান্থনিয়ার শ্রীব্দ্যুল্য সেন এবং কনিষ্ঠ ভ্রান্ডা ব্যাবিষ্ঠার অকুণ সেন ^{হলেন} সিটা কলেজের কমার্স বিভাগের অধ্যক।

শীদেন বিগত চোদ্দ বংসর বিশ্ববিত্তালরে সিনেটের সহিত জড়িত, পশ্চিমবন্ধ কলেজ ও বিশ্ববিত্তালয় শিক্ষ সমিতির ভূতপূর্বে সভাপতি

ও প্রতিষ্ঠাতা সদস্ত, পশ্চিমবন্ধ শিক্ষক সমিভির সভাপতি, আক্ষসমাক্ষ কাৰ্য্যকৰী সমিতিৰ ট্ৰাষ্ট্ৰী ও সদস্ত, আন্ধ্ৰ ৰালিকা বিজ্ঞানবেঁৰ পৰিচালৰ কমিটার সদত্য ও মঞ্চান্ত প্রতিষ্ঠানের সহিত যুক্ত আছেন।

আমার জিজাসার অভতম প্রবীণ শিকাবিদ ও ছাত্র সমাজের কল্যাণকামী হিদাবে তাঁহার অভ্যত জানালেন:--

- ১। শিকা ও সংস্কৃতিৰ ধাৰক ও বাহকদল বা**লালী** নিমু মধাবিত্ত পৰিবাৰ মেধাবী ছাত্ৰ পাওয়া বায় সে স্থান হতে। কিন্তু হুংখের কথা ৰে আজ ওই পরিবারগুলি আর্থিক ও অর্থ নৈতিক চাপে এবং শিকার বিরপ °আনবহাওয়ার ধন্দের পথে। এর কথনও ভামবিরু**থ হতে**
- 🤏। উচ্চশিক্ষার সমাস্তিতে ছাত্রবা ধ্থন স্বদেশ, বিদেশ তথা পৃথিবীর চারিপ্রাক্তের সঙ্গে সুপরিচিত হবে—তথনই ভাহারা হে কোন আন্দোলনে যোগ দিতে পারে। তার আগে তাহারা পাঠা বিষয়ের মধ্যে নিজেনের নিয়েজিত রাথবে—রাজনৈতিক আন্দোলন থেকে দূরে থাকৰে—আর কলেজ কর্ন্তপক্ষের সাথে তাদের হবে শিক্ষার ব্যাপাৰে পূৰ্ণ সহযোগিত।।
- ৩। শিকাধীন বিষয় হবে--হিউমাকাইটিজ ও বিজ্ঞান। কিছ বিদেশে পাঠ্য করা হয়েছে—সমাক্ষবিজ্ঞান, কলাবিজ্ঞান ও প্রাকৃতিক বিজ্ঞান। তিনটি স্তবই প্রথমদিকে প্রতিছাত্রকে পড়ান প্রয়োজন —শিক্ষাব উচ্চস্তবে যে কোন একটি গ্রহণ করিলে শিক্ষার্থীর মানসিক বিকাশে পূৰ্ণতা আদিবে। পরিণত মননশীগতা হবে বিশেষ শিক্ষার উর্বব ক্ষেত্র।
- s। সুষ্ঠু পরিবেশে ও সুপরিচালনার ভিন বংসরের দ্বিগ্রী কোস দেশের শিক্ষাধারাকে উপ্রভন্তর করিরে।
- e। সরকারী ও বেসবকার[†] কলেজগুলির মধ্যে কোন প্রজেল-চিহ্ন থাকা বর্তুমান ভারতে বাঞ্নীর নর।
- ৬। আর কলেজী-শিকা.ক সর্বতে'মুখী উন্নত করিতে হইলে মাধ্যৰিক শিকা বোৰ্ডের স্থাহ পুথক 'আগুাৰ-গ্ৰান্থ্যেট' উপদেশ্ল করা প্রয়োজন-বিশ্ববিভালয়, সরকার ও কলেজ প্রতিনিধিদের নিরে। তবে কলিকাতা বিশ্ববিক্তালয়ের অধীনে থাকরে এই বোর্ড। ইহার প্রধান কান্ত হবে কলেঞ্জী-শিক্ষাকে সুন্দরভাবে

কালের উপযোগী করে পুনর্গঠিত

করা।

৭। বিশ্ববিত্যালয় গ্রাণ্টস ক্মি শন অধ্যাপকদের বেভনবৃদ্ধি সম্বন্ধে মনোবোগী হয়েছেন—ইহা আন-ের কথা। কিন্তু অন্যায় বিষয়ে ইছাব তৎপর হওয়া প্রয়োজন হলে দেশে শিক্ষা-কর ধার্যা করা ষেতে পাৰে—প্রতিটা স্বাধীন (मत्न रेश) जानू चाहि।

শেষে তিনি ব্যথিত চিত্তে বলেন প্রকৃত क रवपर्वव বদি আমরা স্থাপনা করি, তবে দেশ থেকে হুর্নীভি, অনাচার ও অবিচারকে চিম্বতরে নির্মাল



অধ্যক্ষ প্রীঅমিরকুমার সেন

বার। আর অন্নুরোধ করলেন রাজনৈতিক দলগুলিকে—বেন বাসসা ও বালাসীর উজ্জ্বল ভবিষ্যতের জন্ম ছাত্র সম্প্রদারকে রাজনীতির আবর্ত্ত হতে দূরে রাখা হয়।

७ इत विष्कुल्वितिनाम निःश् तांग्र

[কলিকাতা বিজ্ঞান কলেকের অধ্যাপক]

বিদ্যাব বছমূল ধারণা বে প্রত্যেকে প্রত্যেকের নির্দ্ধানিত কাজ বিদ ঠিকমত করে তবে দৈনন্দিন সমস্থার অনেকটা লাখব হতে পারে। আজ দেখা যায় বে সর্বস্তবে পরিশ্রমবিমুখতা বালালা ও বালালীর হৃদ'লা বৃদ্ধির কারণ। তাই সবকারী, বেসরকারী ও ব্যক্তিগত প্রতেষ্টায় বালালী ও বাললার সমাজ জীবনকে উচ্চপ্র্যায়ে নি'য় ব্যুত হবে—৺বিজ্য়ার প্রীতিসম্ভাবণের পর আমায় জানালেন কলিকাতা বিজ্ঞান কলেজের অশ্যতম অধ্যাপক ডক্টর জ্রীভিজেক্রবিনোদ সিংহয়ায়।

ছয় ভাই ও চাব বোনের মধ্যে তৃতীয় সম্ভান দিকেন্দ্রবিনোদ ১১১২ সনের জ্লাই মাসে স্থাম চাদপুর বাবুরহাটে (আশীকাঠীতে) জন্মগ্রহণ করেন। বাবা ৮যামিনীমোহন সিংহরায় কুমিলা কোটে মুছৰী হিসাৰে বথেষ্ঠ উপাৰ্জ্মন কৰেন এবং প্ৰতিটি ছেলেমেয়েকে মুশিক্ষিত করার জন্ম স্থব্যবস্থা করেন। চাদপুর ও কুমিল্লার স্থপরিচিত, স্থাশিকিত উত্তোগী যামিনী বাবুকে হারালেন তাঁহার প্রভুষা সম্ভানের। ফলে সংসারে দেখা দিল আর্থিক অসুবিধা। ভখন ছিজেন্দ্রবিনোদ কলিকাতা বিল্লাসাগর কলেন্তে বি, এস-সি-র ছাত্র। ইতিমধ্যে ১৯২৯ সালে বাব্যহাট উচ্চ বিজ্ঞালয় হতে প্রবেশিকা ও কুমিল্লা কলেজ থেকে ১৯৩১ সালে তিনি আই, এস-সি পাশ করেন। কিজিলে অনাস সহ গ্রাকুয়েট হটয়া ১৯৩৫ সালে ভিনি Applied Physics-এ প্রথম শ্রেণীর ততীয় ছিদাবে এম. এস-সি ডিগ্রী লইয়া কলিকাতা বিজ্ঞান কলেকে গ্বেষ্ণা করিছে থাকেন। ইহার পর ১৯৩৭ সালে তিনি আণ্ডতোর কলেজের অধ্যাপক নিৰ্ফ্ত হন ও ১৯৪৪ সালে বিজ্ঞান কলেন্তে আংশিক সমধেৰ 🕶 লেকচারার হিসাবে যোগদান করেন। ১৯৫০ এর এপ্রিল



ডুক্টর বিজ্ঞেলবিনোদ সিংহ বার

মাসে (দীর্ঘ তের বংসর আওতোর কলেকে থাকার পর) ডিনি বিজ্ঞান কলেকে পাকাপাকি ভাবে যুক্ত হন।

रचाव द्वाराज्जितः स्वरतानिश महेवा अभित्रहत्वाव ১৯৫২ मन টেভিটেন জাতীর গবেষণাগারের ফিজিল্প বিভাগে ব্যেগদান করেন। ১৯৫৩র জামুয়ারী হইতে তিনি লগুন ইম্পিরিয়াল কলেজে পবেষণা কাৰ্য্যে লিপ্ত হন এবং A study of the Mechanism of Nuclear Boiling নামক প্রবন্ধ দাখিল করিয়া তিনি লগুন বিশ্ববিল্ঞালয়ের Ph. D. লাভ করেন। ইহা ছাড়া ভিনি काकानि वर देनिजनियाती: वद D. I. C. इन। Specialized in Heat Transfer তাঁহার গবেষণার মুখ্য বিষয় ছিল। এই সময়ে তাঁণকে ব্ৰিটিশ ফিল্লিক্যাল সোসাইটা ও লণ্ডন ইন: অব ফিজিক্সএব সদত্য করা হয়। টেডিংটন ও লগুনে তিনি অঞ্চাপক ह গ্রিফিথস এফ, আর, এস এবং অধ্যাপৰ ডি. এম, নিউইট এফ, আর, এস, ব অধীনে কার্য্য করেন। বিলাতে থাকার সময় ছুটাতে তিনি পশ্চিম জার্থাণীর কয়ঙ্গা, ইম্পাত ও অক্সিজেন শিল্পাঞ্চলসমূহ, ফ্রান্স, হল্যাও, বেলজিয়াম প্রভৃতি যুদ্ধোত্তর দেশসমূহ পরিভ্রমণ করেন। Gottingen বিশ্ববিল্লালয়ে অমুক্তিত জার্মাণ ও ব্রিটিশ Physical Societyৰ যুগা সম্মেলনে একমাত্ৰ ভাৰতীয় প্ৰতিনিধি হিসাবে ডাঃ সিংহ্রার যোগদান করেন। আমেস্টার্ড্যাম Van-Der-Wal @ ইংল্যাণ্ডের Cavendish Laboratory পরিদর্শন ও উল্লেখযোগ্য। ১৯৫৫ সালের মে মাসে ভারতে ফেরার পর বংসর এপ্রিলে তিনি विख्वान करमाज्य दोष्ठांत्र नियुक्त हन । भारता योषवभूत विश्वविकामायुव ফিজিন্ধ এর এসো: প্রফেসর নিযুক্ত হন কিন্তু ডা: সিংহরার বোগদান ক্রিভে পারেন নাই। তাঁহার অধ্যাপনা জীবনের প্রথমে প্রলোকগত ডা: ভামা প্রদাদের অকুঠ দরদ ও বিজ্ঞান কলেজে যোগদানের পর অণ্যাপক পি, এন, ঘোষ এবং অধ্যাপক পি, সি, মহাস্তির স্বার্থহীন গহৰোগিতা বিজেজবিনোদবার কৃতজ্ঞচিতে শ্বরণ করেন।

ছাত্রাবস্থায় তিনি বিভাসাগর কলেজ ও কলিকাভা বিশ্ববিভালরের ফুটবল দলের নিয়মিত থেলোয়াড় ছিলেন। পোষ্ট প্রাজুহেট ইউনিয়নের সম্পাদক, বিজ্ঞান পরিষদের (বিঃ কলেজ) প্রথম সম্পাদক, তারতীর ফিজিকাল সোসাইটায় বর্ত্তমান কর্মসচিব। সিনেটের সদশ্য প্রভৃতি প্রতিষ্ঠানগুলির সহিত তিনি জড়িত ছিলেন বা আচেন।

১৯৪১ সাস হইতে এই পর্যান্ত তিনি বছ পাঠ্যপুন্তক রচনা করিরাছেন এবং ভারতীয়, সিংহল ও ব্রহ্মদেশের বিশ্ববিদ্যালয় প্রনির্বাচিত বই হিসাবে সেগুলি চলিতেছে। ১৯৪১ সালে তিনি করিদপুরের প্রীপ্রতাপচন্দ্র চৌধুরীর তনয়া প্রীপ্রতী কণিকা দেবীকে বিবাহ করেন। ছবি তোলা তাঁহার 'হবি'। ছাত্রজীবনে 'লীগ অব নেশনস' বিবয়ক প্রবন্ধ লিথিয়া তিনি পুরস্কার পান। মুরোপে থাকার সময় তিনি মহাকবি গ্যেটে ও সেক্সনীয়ারের গুহে প্রায়ই হাইতেন।

শেবে তিনি বলেন যে, বিজ্ঞান কলেকে এমন করেকজন প্রবীণ
অধ্যাপক বহিয়াছেন—বাদের সহায়তায় রাজ্য বা কেন্দ্রীর সরকার
বক্সানিয়ন্ত্রণ, নদানিয়ত্রণ, ঝাতাবুদ্ধি পরিরুদ্ধনা প্রভৃতি সমাজহিতকর
কার্যাঞ্জলি সুষ্ঠুভাবে নির্বাহ করিতে পারেন। কারণ এই সমস্ত
বৈজ্ঞানিক অধ্যাপকগণ বাঙ্গালা তথা ভারভের নানা সমস্তার
সমাধানে আগ্রহনীল আর তাঁহারা বরাবর নাজনৈতিক দলাদালর
বাহিবে থাকিয়া নিজেনের গবেবণা কার্য্যে লিপ্ত রইরাছেন।



ত্রমী

। আলোকচিত্র॥

শ্ৰকশী

—তপত্তী ব্দাচার্য্য

অবগু:ঠিত৷

—মিহির কল্যোপাথাৰ





—বামকিন্তৰ সিংহ



হিমালয়

—ভীপথিক মুগোপাধ্যায়

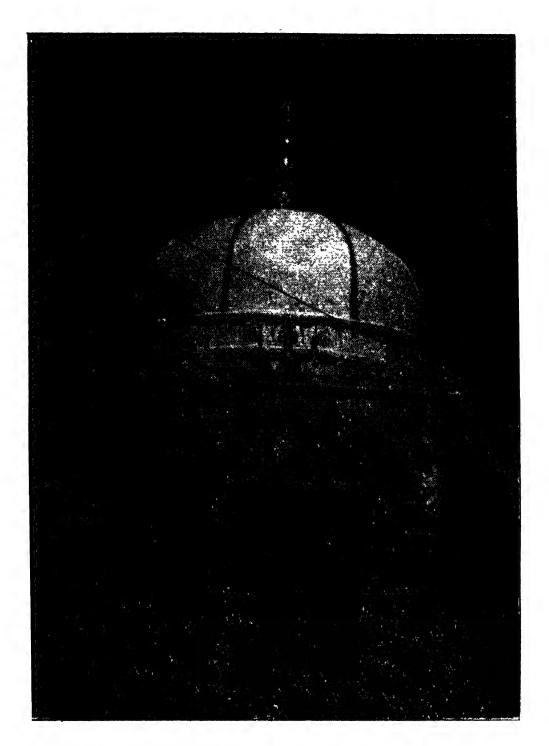
থেয়ালী শিশু

—ডা: অমূল্যকুমাব ঘোষ











ধারাবাহিক জীবনী-রচুদা

চলো জীশরের ওখানে যাই এবার। নিমাই বললে পড়ুয়াদের। যদি সেখানে জিততে পারি তবেই আমার জয়কার।

শ্রীধর বাজারে কলার খোলা বেচে, বেচে থোর মোচা। সামাস্ত আয়ের মান্ত্র্য, তা থেকে যদি বা কিছু উদ্বন্ত থাকে কৃষ্ণসেবায় ব্যয় করে। যদি উদ্বৃত্ত না থাকে তাতেও ছঃখ নেই, মুখের নাম কে হরণ করবে ? দিবানিশি উচ্চকণ্ঠে কৃষ্ণ বালে। এত জোরে চেঁচায় পাশের বাড়ির লোক মুমুতে পারে না।

'এই উপদ্বের মানে কী ?' নিমাই প্রায় তেড়ে আসে।

নিমাইকে ভীষণ ভন্ন করে শ্রীধর। বলে, 'বেশ এবার থেকে আস্তে আস্তে নাম করব।'

'কী দরকার এত হাঁক ডাকে ? এতকাল তো হরি-হরি করলে কিন্তু হল কী ?' নিমাই রুখে থাকে তেমনি। 'অগ্রবস্ত্রের অভাব ঘুচল ?'

'কই আমার অভাব কই ? আমি তো উপোস করে থাকিনা, আর ছোট হোক বড় হোক কাপড়ও তো পরি। রাজা রত্বয়রে থাকুক কিন্তু পাখিও তো আছে কৃষ্ণশাখে। রত্ব নেই বলে পাখির হুঃখ নেই। তেমনি তো তার আকাশ আছে।'

'তোমার যখন এত স্থুখ তখন বিনাদামে জিনিস দাও।' শ্রীধরের সওদাপাতিতে হাত দিল নিমাই।

মুঠো চেপে ধরে বাধা দিল ঞীধর। বললে, 'জিনিস নেবে ভো দাম দিয়ে নেবে, কেড়ে নেবে কেন ?'

'তোমার তো অনেক আছে। তবে দেবে না কেন ?' 'আমি গরীব, আমার আবার কি থাকবে ?'

ভূমি আসলে কুপণ, দান করতে চাও না।' নিমাই চোখ পাকাল।

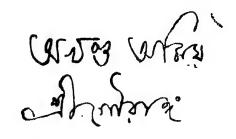
বাই হ'ই, পণ্যের দাম ছাড়তে পারব না। তুমি বরং অক্স দোকানির কাছে যাও।'

'তুমি বললেই হবে ? আমার জোগানদার তুমি, আমাকে তোমার কাছ থেকেই নিতে হবে।' নির্বিচল দাঁড়িয়ে রইল নিমাই।

ঠাকুর, ভোমার পায়ে পড়ি। আমার সঙ্গে দ্বন্দ্র কোরো না।' করজোড়ে মিনতি করল শ্রীধর।

না, দ্বন্থ কিসের ? নিজের জিনিস নিজে নেব তাতে কার কী মাথাব্যথা ? একখাবলা তরকারি তুলে নিল নিমাই।'

'তোমার পায়ে পড়ি।' পরীবের তুমি ক্ষতি কোরো



moditions (2) 3.3

না। অন্ত দোকানে পিয়ে দৌরাত্ম্য করো। হাতের থেকে প্রায় আদ্ধেক জিনিস কেড়ে নিল শ্রীধর।

নিমাই ক্রুদ্ধ হয়ে বললে, 'তুমি আমার হাতের জ্বিনিস কেড়ে নিচছ ?'

'সবটা নিতে পারলাম কই ? ওপো, বাকিটাও ফিরিয়ে দাও।'

নিমাই তবু নরম হল না, বললে, 'এই দেওয়া জিনিস ফিরিয়ে নেওয়াটা কি ভালো হল ?'

'বা, আমি তোমাকে দিলাম কখন ? তুমিই তো জোর করে তুলে নিয়েছ।'

'জানো আমি কে?'

'তা কে না জ্বানে ? তুমি টোলের পণ্ডিত, ওল্পডোর অবতার।'

'আজ্ঞেনা। তুমি গঙ্গাকে চেন তো ? যে গঙ্গান্ত প্রতিদিন নৈবেছ দাও ? কি, চেন ?'

বা, পারকর্ত্রী ভগভাগ্যবতী গঙ্গাকে চিনি না ? সর্বশ্রমহরা সর্বত্ব:খ প্রশমনী। শুদ্ধস্রোতা, তেঞাজ্জলা, মধুরক্তবা। হরিক্যা পরমার্থা-পুরাতনী।

'বা চিনি বৈকি।'

'সেই গঙ্গার বাপ আমি।'

'ছি-ছি-ছি।' ছ হাত দিয়ে কান ঢাকল প্রীধর। বিষ্ণু-বিষ্ণু কৃষ্ণ-কৃষ্ণ বলতে লাপল। 'বয়সের সঙ্গে সঙ্গে লোকে ধীর হয়, ভদ্র হয়, তুমি একেবারে বিপরীত। যতই তোমার বয়স বাড়ছে ততই তুমি ছবিনীত হছে। তোমার কি পঙ্গাকেও ভয় নেই গু'

আমার কাউকেই ভয় নেই। তুমি যদি ভোমার দেবতাকে, গঙ্গাকে, বিনিদামে রোজ নৈবেত দিতে পারো, আমাকে বিনিদামে না বোক কিছু স্থান্ত তো দিতে, পারো। মেয়ে অমনি অমনি পাবে তার বাপ দাম কিছু ধরে দিলেও পাবেনা খানিকটা !'

'বেশ, তোমাকেও অমনি দেব। দাম ক্ষাতে পারবনা।' হাত ছেড়ে দিল শ্রীধর।

'দেবে ?' উ,জ্জল চোখে হাসতে লাগল নিমাই। 'যা বিনিদানে পাও্যা যায় তার মূল্যুই অসীম। হোক সে সামান্ত, দেওয়ার গুণেই অপরপ। কিন্তু দেবে কী শুনি ?'

'রোঞ্চ একটুকরো থোর আর খোলার পাত্র দেব তোমাকে আঞ্চীবন।'

'দেবে গ'

'দেব। হাঁা, আমার সঙ্গে আর দ্বন্দ্ব কোরো না।'

'না, দ্বন্দ্ব কোথায় ? তোমার খোলায় আমি খাব।
তোমার খোর মোচাই শ্রীব্যঞ্জন হয়ে উঠবে।'

প্রভূ, আমি মূঢ়, অক্র শ্রকণের স্তব করছে: স্বপ্নতুলা দেহ পুত্র গৃহ দারা অর্থ ও স্বজনকে সভ্য ভেবে चুরে মরছি। অজ্ঞানে আচ্ছন্ন হয়ে অনিত্যে ও অনাত্মে বিপরীত বৃদ্ধি করছি, দ্বন্দে ক্রীড়া করছি সর্বক্ষণ। যা আমার সর্বাপেক্ষা প্রিয় সেই আত্মাকেই জ্বানছি না। তৃণাচ্ছন্ন প্রিঞ্ধ জল ছেড়ে মুপতৃষ্ণার দিকে ছুটছি। তোমাকে ত্যাপ করে ছুটছি দেহাভিমুখে। আমি বিষয়-বাসনায় বিভ্রান্ত, ক'মে ও কমে ক্ষুভিত, উন্মাদী। মনকে সংযত করতে অসমর্থ। প্রভু, মান্তুযের সংসারের সিমাপ্তি যথন কাছে আসে তখনই সাধুসেবায় তোমার প্রতির তার মমতা হয়। কিন্তু তোমার কুপা না হলে কে বা করে সাধুসেবা, কার সাধ্য তোমাতে মতি আনে। তুমিই সমস্ত জ্ঞান-বিজ্ঞানের কারণ-আকর। তুমিই পরিপূর্ণ। তুমিই সকলের নিয়ন্তা, অধিষ্ঠাতা। তোমারই পদপরবশ হলাম. আমাকে পরি ত্রাণ করো।

20

'মা, আমি কিছু দিন প্রবাস করে আসি,।' শচী চমকে উঠল। 'কোথায়!' 'পিরায়। পূর্ববঙ্গে।'

শচী চাইল নিবৃত্ত করতে কিন্তু নিমাই টলল না। লন্দ্রীকে বললে, মাকে দেখো। মাকে বললে, দেখো লন্দ্রীকেন

অধ্যাপক-শিরোমণি নিমাই পণ্ডিত এসেছে, দলে দলে লোক আসছে দিক-দিপন্তুর থেকে। পড়ুরার। বললে, ভেবেছিলাম নবৰীপ থাব, মূর্তিমন্ত বৃহস্পতি ছারে এসে দাঁড়াল। তোমার টিপ্পনী মিলিয়ে ব্যাকরণ অভ্যাস করি আমরা, এবার সাক্ষাৎ শিষ্য করে। আমাদের। তোমার মুখের অমৃতবচন শুনি।

অমৃতবচনই শোনাতে এসেছি তোমাদের কাছে। প্রথমে নবখীপে না হয়ে এই পকাপৃত পূর্বাঞ্লে। সে বচন পার্থিব বিভা নয়, অমর্ত বিভা।

সে বিভার নাম কি ?

সে বিভার নাম হরিনাম। পরিণামে হরিনাম। এ কী আশ্চর্য কথা।

যে নিমাই উদ্ধতের শিরোমণি, চঞ্চলের ক্সয়োত্তম, দিবানিশি যে পুঁথি-পাঁতি নিয়ে বিভার, বৈষ্ণবে যার প্রগাঢ় বিক্তম্বা, সে কি না এখন হরিনাম বলছে। শুধু বলছে না স্ফুটকঠে কীর্তন লাগিয়েছে। শুধু পথে-পথে নয়, নদীতে, নৌকোর, এপারে-ওপারে। সজ্জন-তর্জন আ গরী-বিচারী অক্ষম-অধম, পতিত-পীড়িত—স্বাইকে এক নৌকোর সোয়ারী করে এক বন্দরে নিয়ে যাচ্ছে। এক আনন্দের বন্দরে।

নিমাইয়ের সামনে দণ্ডবৎ হয়ে দাঁড়াল এক ব্রাহ্মণ। শুচিভাম্বর মূর্তি।

(क ९'

'আমি তপন মিঞা।'

'কী চাই ?' দৃষ্টি আয়ত করল নিমাই।

'সাধ্য-সাধন বুঝতে চাই। বছ শাস্ত্রে বছ বাক্যে তিত্তের বিজ্ঞম, ঘটেছে।' তুই হাত মুক্ত করল তপন। তাই আপনার কাছে এসেছি।'

'আমি সাধ্য-সাধনের কী জানি ?'

'প্রান্ত, আপনি জানেন না তো আর কে জানে ? কাল রাত্রে স্বপ্ন দেখেছি, এক ব্রাহ্মণ এসে আমাকে বলছে, তপন, নিমাই পণ্ডিত এসেছে, যদি সাধ্যসাধন জানতে চাও তো তার কাছে গিয়ে প্রার্থনা করো। জানবে সেই নরনারায়ণ, সেই পূর্ণব্রহ্ম। তার কাছ থেকে জেনে নাও রহস্ত। আর এ ঈশ্বরতত্বের কথা কোথাও যেন আর প্রকাশ কোরো না।'

'শুন শুন ওহে দ্বিজ্ঞ পরমস্থীর।

চিন্তা না করিহ আর মন কর স্থির।

নিমাই পণ্ডিত-পাশ করহ গমন।

তিহোঁ কহিবেন তোমা সাধ্য-সাধন।

মন্ত্র্যা নহেন তিহোঁ—নরনারায়ণ।

নর্মারণে লীলা ভার জগত-কারণ॥

বেদগোপ্য এসকল না কহিবে কারে। কহিলে পাইবে ত্বঃখ জন্মজন্মান্তরে॥

যা পাবার জন্মে লোকে ভজনা করে তার নাম সাধ্য। আর সাধ্যবস্তুকে পাবার জন্মে যে অনুষ্ঠান বা আচরণ তার নাম সাধন।

তোমার সাধ্য যদি স্বর্গপ্রাপ্তি, তাহলে সাধন তোমার বেদবিহিত কর্মের উদ্যাদপন। তোমার সাধ্য যদি পরমাত্মায় মিলন, তাহলে সাধন তোমার যোগ। তোমার সাধ্য যদি ব্রহ্মসাযুজ্য তাহলে সাধন তোমার জ্ঞান। তোমার সাধ্য যদি ভগবৎসেবা, তাহলে সাধন তোমার ভক্তি, ভক্তি-অঙ্কের অক্ষষ্ঠান।

এখন বলো সাধ্য-সাধনের শ্রেষ্ঠ কী ? কর্মযোগ, জ্ঞান, ভক্তি—কোনটা ? তুমি সাক্ষাৎ ঈশ্বর, তুমি না বললে আর কে বলবে ?

'না, এসব কথা বলবে না। জীবে ভগবৎবৃদ্ধি মহা পাপ।' নিমাই পাশ কাটাতে চাইল।

'ওসব কথা শুনছি না। তুমি যৃদি গোবিন্দ না হবে, মাধব না হবে, তবে এই অখ্যাত দেশে আসবে কেন ? কেন দেখা দেবে এই অবজ্ঞাতকে ?'

'তুমি কী ভাগ্যবান !' বললে নিমাই, 'কৃষ্ণভন্ধনে তোমার রতি হয়েছে।'

'কৃষ্ণভজন ?'

'হাঁ, কুক্ষই সাধ্য, ভজনই সাধনা।'

ব্রজবিহারী প্রীকৃষ্ণের প্রেমসেবাই সাধ্য, একমাত্র কাম্যবস্তু। আর, সাধন এককথায় নামকীর্তন। মধ্রমধ্রমেতশাঙ্গলং মঙ্গলানাং সকলনিগমবল্লীসংফঙ্গং চিংস্বরূপম্। ভগবানের নাম সকল মধ্রের মধ্র, সকল মঙ্গলের মঙ্গল, সকল নিগমলতার সংফল এবং অপ্রাকৃত চৈত্যাস্বরূপ।

শিষ্য গুরুকে বললে, আপনি সাধনের যে উপদেশ দিয়েছেন, তা আমার পক্ষে অশক্য। যদি শর্থরের দ্বারা নিস্পান্ত কোনো সাধন থাকে তাই আমাকে বলুন। মনের দ্বারা নিস্পান্ত কোনো কিছুই করতে পারব না, কেন না মন বড় চঞ্চল।

শুরু বললে, বেশ, তোমাকে একটি স্বল্প সাধনের কথা বলছি। তা আর কিছু নয়, গোবিন্দকীর্তন। উঠতে-বসতে চলতে-ফিরতে কুধায়-ভৃষ্ণায়, ঘুমুতে যাবার আগে ঘুম থেকে চোধমেলে এমন কি পতনকালেও গোবিন্দ-গোবিন্দ বলবে। নামকীর্তন চিত্তচাঞ্চল্যেরও অপেকা রাখে না। চিত্তচাঞ্চল্যেও চলে মামকীর্তন।

কৃষ্ণ প্রাণ কৃষ্ণ ধন কৃষ্ণ সে জীবন।
হেন কৃষ্ণ বোল ভাই হই এক মন ।
ভজ কৃষ্ণ শার কৃষ্ণ শুন কৃষ্ণ নাম।
কৃষ্ণ হউ সবার জীবনধন প্রাণ॥
'কী ভাবে ভজন হবে গু' জিগু গেস করল তপন।
'শুরু কেশবের নাম করবে। কলির যুগধর্মই

'শুধু কেশবের নাম করবে। কলির যুগধর্মই নামকীত ন।' বললে নিমাই। 'সত্যযুগে ধ্যান, ত্রেভায় যজ্ঞ, দ্বাপরে অর্চনা আর কলিতে শুধু হরিকীত ন।'

'শুন মিশ্র ! কলিযুপে নাহি তপ্যজ্ঞ। যেই জন ভজে কৃষ্ণ তার মহাভাপ্য॥ অতএব গৃহে তুমি কৃষ্ণ ভজ পিয়া। কুটিনাটি পরিহরি একান্ত হইয়া॥'

'শুধুই নাম ?' 'হাা, শুধুই নাম।' 'এই সাধ্য-সাধন ''

'হাাঁ, এই সাধ্যসাধন। সমস্ত তত্ত্ব এই হরিনাম-সঙ্কীত নে।'

'কিন্তু মন্ত্ৰ কী ?'

শিল্প যোল নাম বত্রিশ অক্ষর।' নিমাই তদগততদ্ময় হয়ে বললে, 'কলিকল্মখনাশক তারকব্রহ্ম নাম।
হরে কৃষ্ণ হরে কৃষ্ণ কৃষ্ণ কৃষ্ণ হরে হরে। হরে রাম
হরে রাম রাম রাম হরে হরে॥ কলিতে অশেষ দোষ,
তবু তার একটি মাত্র গুণ আছে। সে হচ্ছে কৃষ্ণকী নের আরাম। একমাত্র কৃষ্ণকীত নের ফলেই
সংসারাসক্তি থেকে মুক্তি ঘটে। যাওয়া যায় প্রমধামে।'

আদিপুরুষ নারায়ণের নামেই কলির সর্বদোষের নিবারণ। কলিদোযাপহারক কৃষ্ণনাম। সর্বচিত্তহর বলে হরি, সর্বতিত্তাকর্ষক বলে কৃষ্ণ, সর্বচিত্তাভিরাম বলে রাম।

'তন্নাম কিমিতি।' নারদের জিজ্ঞাসা ব্রহ্মাকে। সেই নামটি কী ?

্ন সেই নাম যোল নাম বত্রিশ অক্ষর। ব্রহ্মা বললে, সমস্ত বেদে এর চেয়ে পরতর আর কিছু নেই।

সেই নাম কীত নের বিধি কী ?

এর কোনো বিধি নেই। আসন নেই বাসন নেই,
রীতি নেই নীতি নেই, নেইবা সংখ্যাপুরণের দায়িছ।
গোপন-পোচর নেই। সজন বিজন নেই। শুনতে হলে
লোকে শুমুক, না শুনলেও বা কী এসে গেল। সর্বত্র
পুতি, সর্বত্র ফুতি, সর্বত্র স্বতন্ত্র।

প্রভূ বলে কহিলাম এই মহামন্ত। ইহা সভে জপ পিয়া করিয়া নির্বন্ধ। ইহা হৈতে সর্ব সিদ্ধি হইব সভার।
সর্ব ক্ষণ বোল, ইথে বিধি নাহি আর ॥
দশে পাঁচে মিলি নিজ ছয়ারে বসিয়া।
ফী নি করিহ সভে হাথে তালি দিয়া ।
রাত্রিদিন নাম লয় খাইতে শুইতে।
তাহার মহিমা বেদে নাহি পারে দিতে॥

সমস্ত মন্ত্রের শ্রেষ্ঠ হরিনাম। তার কিছু নয়, শুধু নামৈকশরণ হয়ে থাকো।

'কিন্তু মনের মধ্যে যে অনেক মল, অনেক কুটিলতা।' করুণ নেত্রে তাকাল মিশ্রা।

নাম করতে করতে দেখবে মন স্থির হয়েছে, স্বচ্ছ হঙ্কেছে, স্বাত্ হয়েছে। জানো তো, যার পিত্ত বেশি তার মিছরিও তিক্ত লাপে। ঐ তিক্ততার ওষুধই আবার মিছরি।' নিমাই বললে, 'মিছরি আগে তিক্ততা কাটাবে পরে প্রতিষ্ঠিত করবে তার মিষ্ট্রত। তাই নাম আগে চিত্তকে শুদ্ধ করবে পরে জাপবে কৃষ্ণরতির মাধুর্য। অভ্যাস থেকে চলে আসবে অমুরাগে। আর তখনই বৃধবে কোন্ সাধ্যের জত্যে কী সাধন। কৃষ্ণ প্রেম পাবার জত্যেই কৃষ্ণ কীর্তন। সাধিতে সাধিতে যবে প্রোমান্কর হবে। সাধ্য সাধন তত্ত্ব জানিবা সে তবে।'

বারে বারে প্রণাম করতে লাগল তপন। বললে,
'যদি অমুমতি করেন তো আপনার সঙ্গে যাই নবদ্বীপ।'
নিমাই উঠে দাঁড়াল। আলিঙ্গন করল তপনকে।
বললে, 'না নবদ্বীপ নয়, তুমি কাশী চলে যাও।'

'কাশী ? আপনার সঙ্গ ছেড়ে কাশী।' প্রেম-পুলকিত অঙ্গে বিভোর তপন মিঞা।

'হ্যা, আমিও শিপপির যাচ্ছি সেখানে। মায়াবাদী সম্যাসীদের উদ্ধার করতে হবে। সেখানে তোমার সঙ্গে আমি মিলব, সেখানে তুমি আমার সহচর।'

প্রভুর অতর্ক্য লীলা নির্ণয় করি কী করে ? যাত্রার উচ্চোপ করতে লাপল তপন।

কয়েক মাস পরে বছ ধন-জন নিয়ে নিমাই বাড়ি ফিরল। কিন্তু বাড়িতে আনন্দ নেই কেন ? মা এসে দাঁড়ালেন, ক্ষিপ্ত মুখে হাসি কই ?

'अ कि मा, की शरप्रत्र ?'

অবেণারে কেঁদে ফেললেন শাচী দেবী। 'ঘর লক্ষ্মী শৃষ্য। লক্ষ্মী চলে পেছে বৈকুঠে।'

এক মূহত স্থক হয়ে রইল নিমাই। কালা ভরা চোখে জিগগেস করল, 'কী হয়েছিল ?'

নিজের মনে শাস্তি নেই, স্বাস্থ্য নেই, তবু নিরবিধি

শাশুড়ির সেবা করে চলেছে। নাম মাত্র খায় আর একলা ঈশ্বরবিরহে সমস্ত রাত কাঁদে। ভোর হলে বিষাদের প্রতিমার মত সংসারসীমায় এসে দাঁড়ায়। প্রভুর বিরহই বুঝি একদিন সাপ হয়ে দেখা দিল ঘরের মধ্যে। লক্ষ্মীর পায়ে এসে দংশম করল। কত ওঝা ডাকলেন শচী, কত বিষ্ঠৈষ্ট, কিছুতেই কিছু হল না। প্রভুর পাদপর হৃদয়ে নিয়ে লক্ষ্মী চোখ বুজল।

প্রাভূর বিরহসর্প লক্ষ্মীরে দংশিল। বিরহসর্প বিষে তাঁর পরলোক হৈল॥ তারপর ?

তুলসীদামে সাজিয়ে তাকে আনা হল পঙ্গাতীরে। উঠল হরিনাম কীত নের তুফান। ধ্বনিত হল লক্ষ্মীর বিজয়-যাত্রার রথধনি।

শচী শোকে একেবারে ভেঙ্কে পড়লেন।

লোকামুকরণ ত্বংথ নিমাইকেও পেয়ে বসল ক্ষণকাল। পরে আত্মন্থ হয়ে বললে, 'মা, কার কে পতি ? কার কে পুত্র ? শুধু মোহই পতি পুত্র প্রতীতির কারণ। সমস্ত সংসার ঈশ্বরের অধীন, ঈশ্বরের অন্নবর্তী। যত সংযোগ বিয়োগ সব ঈশ্বর ইচ্ছায়। স্বতরাং যা ঈশ্বর ইচ্ছায় ঘটছে তার জন্মে তুংথ কিসের ?'

চোথ মুছলেও জল থেকে যায় শচীর চোথে।

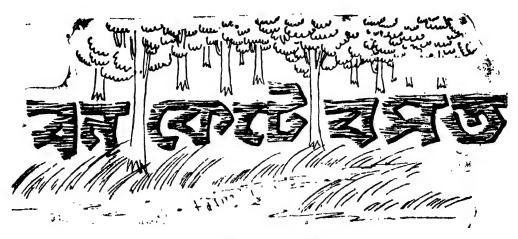
নিমাই বললে, 'তার কত বড় স্কৃতি বলো তো। সে স্বামীর আপে পিয়েছে, স্ত্রীর এর চেয়ে আর বড় কী আকাক্ষার থাকতে পারে ? স্বামীর অগ্রেতে পঙ্গা পায় যে স্কৃতি। তার বড় আর কেবা আছে ভাগ্যবতী ? মৃত্যু কোথায় ? সমস্ত শোকের পরপারে আনন্দস্বরূপের অবস্থান। তাকে দেখ'

> একলে ঈশ্বর তব—হৈততা ঈশ্বর। ভক্ত ভাবময় তাঁর শুদ্ধ কলেবর॥ কৃষ্ণমাধুর্যের এক অন্তুত স্বভাব। আপনা আস্বাদিতে কৃষ্ণ করে ভক্তভাব॥

অন্থানিরপেক্ষ ভগবান ভক্তভাব ধরেছেন অভাববশে নয় স্বভাব বশে। রসিকশেখর কৃষ্ণ ভক্তভাব অঙ্গীকার করে 'চৈতন্মরূপে অবতীর্ণ হয়েছেন। কৃষ্ণ নিজের বিগ্রহ বা শরীরের চেয়েও ভক্তকে প্রিয়তর বলে মানে। ভক্ত শুধু কৃষ্ণমাধুর্য আস্বাদন করে না কৃষ্ণমাধুর্য চর্ব গ করে।

তুমি আমার প্রিয়তম। উদ্ধবকে বলছেন শ্রীকৃষ্ণ।
তুমি যত প্রিয় আত্মযোনি ব্রহ্মা তত নয়, নয় শঙ্কর,
নয়বা সন্ধর্ণ। অন্তে কা কথা লক্ষ্মীও তত প্রিয় নয়।
তোমাকে বলব কি উদ্ধব, আমি নিজেও আমার কাছে
তত প্রিয় নই।

ক্রিম্পার্ণ।



প্ৰকাশিতৰ পৰ] মনোজ বস্থ

বাইশ

তল গেল জগা চৌধুরিগঞ্জের আলার। অনিক্রম্ব বালোসোনা
এবং আরও কত পুবানো সাডাৎ—হা করে তারা তাকিরে
থাকে। চোধে দেখেও বেন চিনতে পারছে না। এমন আচমকা এসে
পড়া—কোন মডলব নিরে এসেছে কে জানে? বসতে বলে না
তাকে কৈউ। অনিকৃত্ব তামাক থাছিল, হাতের কলকেটা এগিরে
দিল না। অর্থাৎ সেই বে জাতকোধ নৌকা সরানো থেকে, এত
দিনেও সেটা কিছুমাত্র নরম হয় নি।

জগাই তথন কৈফিয়তের মতো ছুটো চারটে কথা থাড়া করে: চলে বাচ্ছি তোমাদের তল্লাট ছেড়ে। তাই ভাবলাম, কে কেমন আছু একবার ধ্বরটা নিয়ে ধাই।

কাঁক। কথা বলেই বোধহয় কানে নিচ্ছে না। আবও তাই বিশদ করে বলতে হল। উদাদী মন নিয়ে এদেছে, কোনরকম বদ মতলব নেই—ভাল করে শুনিয়ে দিয়ে ওদের নিশ্চিম্ব করে। বলে, বয়ারখোলা হাচ্ছি, আর আদব না। গগন দাদ তো কালকের মাছ্য, বাদাবনে এই দেদিন এল। যাবার আগো, বলছিলাম কি, আমাদের পুরানো আছে। জমানো হাক করেকটা দিন। সেই আমাদের পুরানো স্বাইকে নিয়ে।

এতক্ষণে অনিক্ষর মুখ খুলল। জগার দিকে চেয়ে সতর্ক ভাবে প্রশ্ন করে, বয়ারখোলার কেন ?

বাত্রার দল খুলছে ওরা। খুব ধুমধাড়াকা।

কালোগোনা বলে, পাঠদালা খোলে তো ওরা বছর বছর। এবারে যাত্রায় ঝোঁক উঠল ?

ফলন বে ছনো-তেছনো এবারে। মা-লক্ষী ঝাঁপি উপুড় করে চেলেছেন। মনে বজ্জ সুধ। তাই বলছে, পাঠশাল শুধু ছেলেদের নিরে। বাত্রা হলে ছেলে-বুড়ো সবাই গিরে বসতে পারবে। বিবেক পাছে না, আমার ধরে তাই টানাটানি। আর সাত্যই তো-পাছে-থালে বার মাস মেছো-নোকো বেরে বেড়াবার মামুর কি আমি? গলাধান তো শুনেছ—বল ডোমরা সব। শুথ হয়েছিল, ছটো-তিনটে বছর এই সব করা গেল। এ মুলুকে মাছের থাজা ছিল মা, গুড়ে পিটে দিরে গেলাম একটা।

পর্সা-কড়ি আসিছে—রজের গদ্ধে ছিনেশেনির মতো গাঁ-ঘর থেকে কিলবিল করে সব এসে পড়েছে। করে থাক সগােষ্টি মিলে। আমি আর ওর মধ্যে নেই দাদা। ইস্তকা দিরে বেরিরে পড়েছি। বাত্রার মান্তব আমরা হলাম বসজ্জের কোকিল। বে বাড়ি মছেব সেইথানে ডাক আমাদের। নেচে গেরে আমোদক্ষ ডি করে যুরব।

কালোসোনা অধীর আগ্রহে জিজ্ঞাসা করে, বাচ্ছ করে এথার থেকে?

পা বাড়িয়ে বনে আছি। গেলেই হল। কিছ বে অস্তে এসেছি
শোন। যাবার আগে ক'টা দিন গলাথান মেজেখবে শান দিরে
নিই। গানবান্ধনা তো একলা মায়ুবের ব্যাপার নর। সন্ধ্যের
সমর যে যে পার চলে যেও আমার বাড়ি—আমার চালাছরে।
পথ তো এইটুকু। আলায় মাছ উঠবার সমর হলেই আবার
চলে আসবে।

অনিক্ন বলে, আমরা যাব তোমার ওথানে ?

জগা অনুনয় করে বলে, পুরানো ঝাগ মনে পুবে রেথ না। জায়-জলায় যা কিছু করেছি, সে তো গগন দাসের জলা। তোমবাও যেমন চৌধুরি বাবুদের জলা করে থাক। শথ করে কি করি কিছু আমরা ? কাজের গরজে করতে হয়, আমাদের হাত ধবে করিয়ে নেয়। নিজেদের মধ্যে কি জলো তবে গরম হয়ে ঘাড় ফুলিয়ে থাকি ?

বৃষিয়ে স্থাজিয়ে একরকম মিটমাট করে জগা ফিরে এলো। সে ফোলদ-বালাই—বিদায় হরে গোলেই তল্পাটের মানুষ বাঁচে। লোক-দেখানো ভাবে মুখেও ওরা কেউ বলতে পারত, একেবারে চলে বাবে কি জল্ঞে, এসো ফিরে আবার। ভা কেউ বলল না—বাওয়ার ব্যবস্থা পাছে সে বাভিল করে দের ঐ একটু অনুরোধের অজুহান্ড পেরে। চৌধুরিগঞ্জ শত্রুপক্ষ, ভাদের কথা থাক—কিছ নভুন আলার গগনের দলবলই বা কা! কাজকর্ম দিব্যি চালু হরে গেছে, বলাই-পচা মেছো নোকো নিয়ে নির্গোলে কুমিরমারি বাছে, আর জগাকে কার কোন দরকার ? সেই একটা মানুষ চালাবরে একলা পড়ে গজরার, সে কথা মনে রাখার গরন্ত নেই এখন কারও।

শ্বেটেই বিশেষ করে মনে করিরে দেবার বাঞ্চা। চালাববৈর মধ্যে ভিন্ন একটা দল করে ঢোল পিটিয়ে গান গেয়ে জানান দেওঁয়া বে আমর্থাও আছি অনেক তন—তোমরা সমস্ত নও। তোমাদের বড় বাটন হয়েছে বলাই, আর বড় গায়েল বোধ করি গগন দাস—ওই এক মন্ত্রাদার গান হয়ে থাকে, আর গান শুনো আতকে আমাদের।

চৌধুরিগঞ্চ থেকে ফিরে করালী পার হয়ে একবার বরাপোতার দিকে বেতে ইল। মানুবজন এসে জুটবে, পান-মুপারি তো চাই। ভাষাক বড়-তামাক ঘটোবই ব্যবস্থা থাকা উচিত। আর কিছু ছাচ-বাতাসা আনলেও মন্দ হয় না, আড্ডা ভাঙার পর হরির লুঠের নামে আরও কিছু ছল্লোড় করা বাবে।

সন্ধা হয়ে আনে। জগা ফিরে আসছে বরাপোতা থেকে।
খালের ঘাটে ডিভি। ফিরেছে তবে পচা-বলাই। গাতে গোন
পেরেছে, পিঠেন বাতাস—ভাই এত সকাল সকাল ফিরল ।
আলার ঢুকে মালিক গগন দাসের সঙ্গে হিসাবপত্র মেটাছে।
ফিরে এসে নোকো খোবে এখনই। ভাল হয়েছে, পচা বলাই
আলা খেকে বেরোক, ধরবে তাদের। ধরে সোজাম্মজি বলবে,
আজকের আভা নতুন আলার নয়, সাঁইতলার পাড়ার মধ্যে—
নিজেদের চালাঘরে। গাওনা-বাজনা সেথানে আজ। চৌবুরিগঞ্জ
খেকে ওরা সব আসছে—ঘরের মানুব ভোমরা থাকবে না, সেটা
কোন মতে হতে পারে না।

বাঁধের ধারে ঝোপের একটু আড়াল হরে সে দাঁড়াল। আচমকা বেরিরে অবাক করে দেবে। আলার কাজ সেরে পচা-বলাই বাঁধে এলে পড়ল। তু-হাতে তুটো কলসি প্রতি জনের। কলসি নিরে চলল কোথা এখন এই অবেলার ?

খালে নেমে যাছে। জগা ডাকল, বলাই— বলাই খমকে দাঁড়াল।

নৌকোর আবার বেরোবি নাকি ? এই তো ফিরে এলি।

মুখ কাচুমাচু করে বলাই বলে, আলার মিঠে জল ফুরিয়ে গেছে। একেবারে ফুরিরেছে। রান্তিরে থাবার মতোও নেই। না এনে দিলে নর। বুবে আসি বরাপোভার পার থেকে। কতক্ষণ আর লাগবে!

জাবার বঙ্গে, কুমিবমারি থেকে থালি ডিঙি বেয়ে নিয়ে এলাম। সকালে যদি বলে দিভ, টিউকলের জল ধরে আনতান ওথান থেকে। যন্ত কললি খুশি। এই ভোগ ভূগতে হ'ত না।

জগা বলে, চার চারটে কলসি নিরে চললি—এত জল কে থাবে ? সন্ধিপাতের তেষ্টা কার পেল বে ?

পচা বলে, থাবে, রাল্লাবাল্লা করবে---

চানও করবে নাকি? বাদাবনে এত নবাবি কার—চারি ঠাকসনের?

বলাই বলে, কলসি-মাপা জল—চান করে আর কেমন করে ? চান-টান সেরে এসে কলসির জলে গামছা ভিজিয়ে ভার পরে গা-হাত-পা মুছে নের, গারে ঢালে এক ঘটি হু-ঘটি। নর ভো মোনা জলে ওর গা চটচট করে।

জগা কিন্তু হরে বলে, মরেছিস ভোরা হতভাগা। একেবারে গোল্লার গেছিস—

बनाहै राम, जाकान नहें, कि कन्नाव । शांद माकि कि नव

উঠেছে মুনে জরে গিয়ে। অন্ডোস হয়ে যাবৈ, তথন আর মিঠে জল লাগবে না।

মরদ হয়ে মেরেমানুদ্রের নাওয়ার জল বয়ে বেড়াস, মুখ দেখাছিছে কেমন করে তোবা ?

বলাই মুদড়ে যায়, মুখ নিচু করে। পচা কিছ কিছুমার জ্ঞলা পায় না। গালি শুনে দাঁত মেলে হাদে। কী মেন মুছং কর্ম করেছে, প্রমানন্দে তার যশোকীর্তন শুনছে।

বলাইকে ধরে ফেলল গিয়ে জগা। কটিন মুষ্টিতে হাত চেপে ধরেছে। বলে, কলসি রাখ। মানুষজন আসছে আজ বাড়িতে। চৌধুরির আলা থেকেও আসছে। তোর এখন কোথাও যাওয়া হবেনা। যায় পচা একলা চলে যাক।

বলাই চুপচাপ দাঁডিয়ে—হাঁ-না কিছু রাকাড়ে না। জগন্নাথ গর্জন করে বলে, ফেলে দে কলসি। ভালর তরে বলছি।

একটা কলদি কেন্ডে নিয়ে বাগের বশে সত্যি সন্তিয় ছুঁড়ে দিল। চুবনার হয়ে গোল। পচা টেচিয়ে ওঠে, আছো মামুষ তো। কলদি ভেঙে দিলে, কদুর থেকে কোগাড় করে আনতে হয় জান ?

হাত ছেড়ে দিয়ে জগা বলাইকে বলে, আসবি নে ?

পচা ইতিমধ্যে ডিভিতে উঠে পড়েছে। পিছন ফিরে বলাই একবার তার দিকে তাকাল।

জগা বলে, জবাব দে।

বলাই বলে, ফিরে এসে তার পবে যা। একুণি ফিরব, বেশি দেরি হবে না।

মরগে যা-

নাগালের মধ্যে পেলে জ্বগা গলাধাক্কা দিত হয়তো। বিশ্ব বলাই তথন নৌকোয় উঠে পড়েছে।

কাউকে দরবার নেই। ভারি তো কাক্স! এবাড়ি ওবাড়ি থেকে একটা হুটো হোগলার পাটি কিম্বা মাছুর চেয়ে এনে পেতে দেওয়া। না দিলেও ক্ষতি নেই, মাটিতে সব বঙ্গে পড়বে।

চৌধুবির আলা থেকে অনিকল্প এক তিন চার জনকে সঙ্গে নিয়ে।
পাঁচার ভিতর জগার ঘরে জনায়েত—সাঁইতলা ও আশপাশের মাছন্মারারা সব এলো। রাত গভার হলে এইখান থেকে জালের কাজে বেরারে। ছোট চালাযরে জাহগা দিতে পারে না। থুর চলল। এখানে বংস যা মুগে আসে বলতে পারে, বে গান খুলি গাইছে পার। শাসন-বাঁধন নেই—উচ্ছখল, বেপরোয়া। আড্ডার মাঝখানে উঠে একবার ক্ষা চুপি চুপি বাঁধের উপরে ঘ্রে দেখে এলো। নতুন আলায় সাড়াশন্দ নেই. মিটমিট করে আলো ফলছে একটা। খালের ঘাটে ডিভি—পচা-বলাই অভ্যাব ফিরে এসেছে। কিছা অক্স দিনের মতো নাম-কীর্তন নয়, ভক্ত ক'টিকে নিয়ে গগন দাস আক্তকে বাধ হয় ধানে বসে গেছে।

আসর ভাঠার মুখে জাঁকিয়ে হরিধ্বনি। একবার জু-বার নর, বাববার পাশানে মড়া নিয়ে যাবার সময় হরিবোল দিতে দিতে ঘার, এই চিৎকার তারও চেয়ে ভরানক। তার সঙ্গে চপাটপ ঢোলের বেতালা পিটুনি। জগাই বাজাছে। ছাউনির চামড়া না ছে'ডে পিটুনির ঠেলার। সমস্ত মিলিয়ে জঙ্গলের প্রাস্তে একটা তোহপাড় কাও। লোকজন বিদার করে জগলাধ অনেক দিন পরে আজ মনের স্থাধে অযোর হব মুমাল।

ক্যা প্রের দিন অনেক বেলার উঠল। নতুন আলার আসর কাল একেবারে বন্ধ গেছে—ব্র থেকে জেগে উঠেও সেই আনন্দ। সকালবেলা ওদিককার গতিকটা কি দেখবার জক্ত বাঁথে এসেছে। নিতান্তই প্রাতর্ভ্জমণ করে বেডাছে, এমনি একটা ভাব। কোটালের ক্সপ্লাবা জোলাব। পাল ভাপিয়ে পারের গাভ্গাছালি ভূবিরে দিরে বাঁথের গারের জল ভ্লাং-ছলাং কবতে।

কাত হরে-পড়া একটা বড় বানগাছের গুঁড়ি জলে ডুবে গেছে।
চার পাঁচটা ডাল বোররেছে চতুর্দিকে। ডালেরও গোডার দিকটার
জল। জলার নজব পড়ল দেখানে। কে মামুষটা দিব্যি ডাল
ঠোন দিয়ে বদে আছে কোনর অবধি জলে ছুবিয়ে ? আবাব কে—
নবাবনন্দিনীর চানে আগা হয়েছে। আলার ডোবায় কালা-পচা
জল—সে জল প্রীঅকে লাগানো চলে না। কেন যে এদন শৌখিন
মানুষ বাদাবনে আগে ? দালান-কোঠার বান্ধবন্দি হয়ে থাকলেই
পারে, গারের চামড়ার মরচে ধরার বাতে শক্ষা নেই।

চাক্রবালার পছন্দের ভারগা। জল ভেতে এসে গাছের ডালে চচে বসেছে। হাতে ঘটি। স্রোতের ভলে ঘটি ভরে ভবে গায়ে চালছে। ঘটি কথনো বা ডালের কাঁকে গুঁকে বেথে গামছা ভরে ভরে গায়ে দিছে। ডালপা ভার অন্তবালে লোকেব হুটাং চোথ পড়ে না—আক্র রেথে স্থান হয়। বলাইসের আনা কলসি-ভরা মিঠে কল—বাড়ি ফিরে সেই জলে গায়ের নোনা ধুয়ে ফেলবে।

জল বাড়ছে, কল-কল বেগে প্রোত এসে চুকছে। কোমর পর্যন্ত জলতলে ছিল, দেখতে দেখতে বুক অবিধি ভূবে গেল। ক্তি চাফুবালার বেড়ে বাছে তত্তই। ডাল ধরে পা দাপাছে। গাঁয়ের পুকুরে যে দাঁতার কাটত। স্থতীত্র প্রোতের মধ্যে তত্থানি আরু সাহস হয় না, দাপাদাপি করে দাঁতাবের স্থ কবে নিছে থানিকটা। ধন ধন করে গানও ধরেছে বুঝি।

আপন মনে ছিল মেয়ে। বাঁথের দিক দিয়ে হঠাং বাব ঝাঁপ দিয়ে পড়ল বৃঝি। এলে কামড়ে ধরে উল্টো এক লাফ। এক লাফে ডাঙার উপর। তথন ঠাহর কবে দেখে—কামড়ে ধরেনি, ছই বাছ দিয়ে ধরেছে আপটে। বাঘ তো নর, জগা। ছি-ছি, কী লজ্জা। চান করার মধ্যে কী অবস্থায় আনল গো টেনে। টেনে এনে বাঁথের উপর ফেলল। চাক কিল দিছেে দমাদম জগার বৃক্বে উপর, ঘূৰি মারছে পাগলের মতো হয়ে। জগাও কি ছাড়বার পাত্র—সজ্জোরে চাকর মুখ খ্রিয়ে ধরল যে ডালে বলে চান করছিল সেই দিকে: নয়ন তুলে দেখ একবার প্রীমতী, কী কাণ্ড হয়ে যেত এই করে।

স্রোতের উপর ভয়াল আবর্ত তুলে কুমীর ভেনে উঠেছে ডালের ভিতরে।

নেখছ ? এটা হল বাদাবন। মেরেমান্যের সুথ করে ঘর-কলার আরগা এটা নর। শিকার তাক করে অনেক দূর থেকে কুমির ভূব দেয়। জলের নিচে দিয়ে সাঁ-সাঁ করে এসে ভেনে উঠবে ঠিক তার সেই ভাক-করা ভারগায়। আমি নেখেছিলাম ভাই। এভক্তপে, নরতো, কুমীরের মুণে কাঁহা-কাঁহা মুক্ চলে বেভে।

প্রাণ বাঁচিয়ে দিল, তবু চাকুবালা করকর করে ওঠে । ভা সরতাম আমি—বরে বেতাম। ভোমার কি ? ভূমি কেল ভৱে ভৱে

থাকৰে ? বেদিকে বাই, ভূমি খুবগুর করতে থাক। কানা বুৰি আমি---দেখতে পাইনে ?

জগা বলে, ভূল চরেছে আমার। বাঁথে নৈনে না এনে ধারা মেরে জলে ফেলে দিলে ঠিক হত। আপদের শান্তি হত, দাঁটতলা জুড়োত, বাদার মামুব মনের স্থাথে কার্জকর্মে লাগতে পাণত।

গ্ৰুত্ব গঞ্জৰ কৰতে কৰতে যাছে ভগা। নিমকলাবান মেৰেমানুষ। কলিকাল কিনা—ভাল কৰলে মন্দ্ৰ লয়, গোঁলাই পুজলে
কুড়ি হয়। বাগে পেলে আলটপকা যাৰ মুণুই কাঁথেৰ উপৰ থেকে
ছিঁডে নেবে, সেই মানুষেৰ পিছন পিছন ঘোৰে নাকি জগা।
পাচা-বলাই শুনতে পেলে কভ না হাসাহাসি কৰৰে এই কলক্ষেৰ
কথা নিয়ে।

আশ্চর্য ব্যাপার, উর্মানের উপর বড়দা। প্রথমটা মনে হংরছিল গুণমন্ত্রী ভগিনী কিছু নাগানি-ভাঙানি করেছে, তেন্তে এসেছে ঝগড়া করবার জন্ম। জগা তৈরি আছে বোল আনার উপর আমার আনা। অনেক দিন ধরে জনে জমে মনেব আফোশ বিষেব মড়ো ফেনিরে কণ্ঠ ছাপিয়ে উঠছে। দাওয়া থেকে উকি মেরে দেখে জ্বগা খাতির করে ডাকে: এসো এসো—কী ভাগি।, নতুন খেরির খোদ মালিক গগনবাবু আজ বাড়িব উপর এসেছেন!

পরিহাস গগন কানে নের না। চাক্রবালার বাপাবও কিছু নর ! বলে, নৌকোর কান্ধ একেবারে ছাড়লে জগরাথ ? ঘর থেকে জো নড়ে বোসো না।

জগা বলে, কাল্ল তো তা বলে আটকে নেই। আন্তেরা কাল্ল শিথে গেছে। কুমিবমারির গল্পে মাছের ঝোড়া নাখিরে দিয়ে বমারল টাকা নিয়ে আসে, টাকা বাজিরে তুমি হাতবালে তোল। কাজকর্ম তো দিব্যি চলেছে।

গগন বলে, সে যাই হোক, তিনটে চারটে দিন তোমার ঠেকিরে দিতে হবে জগা। কাল সকালে নৌকো নিয়ে যাবে।

কেন, পচা-বলাই গেল কোথা ? মরে গেছে ?

বলাই আছে। পচা আর আমার শালা নগেনশনী বরাপোডার হাটুরে নৌকোর রওনা গেল গাইগরু কিনতে। গোয়াল হল গরুতো চাই এবারে। পচা হাটিরে নিবে আনবে গরু, কবে কেবে ঠিকঠিকানা নেই।

ৰূগা এক কথায় কেটে দেয়: আমি পারব না। **অন্ত** মা**ত্**ৰ দেখ।

গগন বলে, মানুৰ একজন ভো ছ'লই ছল না। কোটালের টান—জলে কুটোগাছটা ফেললে ভেঙে ছই থণ্ড ছবে যায়। যে দে মানুৰ পাৰৰে টান কাটিয়ে নোকো ঠিক মতো নিয়ে যেতে ?

অনুনয় করে আবার বলে, ভোমার পাওনাগ**্ডা প্রিয়ে দেব** জগা। একেবারে হাত-পা কোলে করে বসলে হবে কেন ? নি**জ্ঞি** দিন না পার, দারে বেদায়ে দেখতে হবে তো! না দেখলে **হাই** কার কাছে? ধর, ভোমার উম্।গেই তো এ সমস্ত।

ৰুগা হেলে ওঠে: গত্ন কিনতে চলে গেছে, সে গত্নৰ ছুধ থেছে দেবে আমাৰ এক ছটাক ?

হাসতে হাসতে বলছিল। বলতে বলতে বর বঠিন হল:

উৰ্গেশ্ব কথা জুললে—বৰ্ধন ছিল, তথন ছিল। পুরানো সেসব মনে ৰাখ ভূমি সভলা ?

वार्वि (न ?

না। ছাড়াছাড়ি পুৰোপুরি হয়ে গেছে। আজকে কেবল দারে পড়ে ডোমার আসতে হয়েছে।

বলে জ্বপা কথার মধ্যেই প্রেশ্ন করে, কাল গান গুনলে কেমন বড়দা ? ছুই দল হয়ে গোল আমাদের। আমার একটা, তোমার একটা !

গগন বলে, দল হুটো হোকগে, কিন্তু আমার কোন দল নয়। আমি তোমার দলে জগা।

চারিদিক তাকিরে দেখে গগন মনের কথা ব্যক্ত করে : শ্রেমাদের পাড়া বলে কেন, কোনথানেই তো হাই নে। দেখেছ কোনদিন আলার বাইরে ? আমি মরে আছি জগল্লাথ। বেরুতে পারিনে ঐ নগেন শালার কলে। ইা, সম্পর্ক না থাকলেও শালা ডেকে বলতাম। বিষম থচ্চর। দিবারাত্রি চোথ ঘূরিয়ে পাহারা দেয়। খোড়া মানুষ নিকে বেলি দৌড়বাপ করতে পারে না, অঞ্জে করলে ছিলে হয়। কি জানি, তোমায় এতা একেবারে পয়লা নম্বরের শক্ত ঠিক করে বলে আছে। নগনা নেই বলেই আজ তোমার কাছে আসতে পারলাম।

ৰপা বলে, সে বানি। শত্রু সকলের তো আমি। তোমার বোনটাও বড় কম বায় না। তাই তো ভাবি বড়দা, কভ কঠের ব্যানো আছ্ডা—সে দিকে এখন চোথ তুলে তাকাবাব উপায় নেই। এ আরপায় পোকা ধরে গেছে—থাকব না এখানে। ঠিক করে কেলেছি। তোমরা থাক প্রসাক্ডি আর সংসারধর্ম নিয়ে।

গগন বলে, তা আমায় ত্যছ কি জব্যে ? আমি কি আনতে গিৰেছিলাম ? আন তো সবই। আসবার আগে মুখের কথাটা ভবা জিল্ফাসা করেছিল আমায় ? কিছ ডোমার ডো ডেল চুকচুকে দেখাছে দিব্যি। মুখের বচনের সঙ্গে চেহারার মিলছে না। খুব বে ছঃখের পাখার ভাসছ, চেহারা দেখে কিছ মনে হয় না বড়দা।

গগন ৰঙ্গে, বেটা তো মার খেতে পারে—আবে, ধরে মারে ডবে উপায়টা কি ? তথু নগনা কেন, নগনার বোনটাও তো চোখে তুলে নাচার। চানের আগে আছে। করে তেঙ্গ রগড়াতে হবে, নয়তো হাড়ে না। থাওয়ার সময় সামনে বঙ্গে এটা খাও ওটা খাও করবে। থাওয়া না হতে তামাক সেকে নিয়ে আসৰে চারি। থেরে তার পরেই বিহানায় গড়ানো। শোওয়ার পরে দেখে দেখে যায় ঠিকমতো যুমুছি কিনা। দেহে তেঙ্গ না চুইয়ে যায় কোখায় বল ?

কগাও এমনি ভাবছে। নগনার বোনকে মে ভাল জানে না, কিছ গগনের বোনকে জেনে বুঝে ফেলেছে। গাই-বকনা কিনে এনে নতুন গোয়ালে ঢোকাবে। বাদাবাজ্যের ছদ'ভে মানুবঞ্জাকে মেরেটা ইতিমধ্যেই জাবনা থাইয়ে শিষ্টশাস্ত করে গলায় দিছি পরিয়ে টান কুছে দিয়েছে।

বেলা ডুবে গেছে অনেকক্ষণ। অন্ধকার হয়েছে। কথা বলতে বলতে গগন আব জগা বাঁধের উপরে এলো। ভাঁটা এখন। কলকল স্থনে উদ্ভল আবর্তে জলধারা দূর সমুদ্রে ধেরে চলেছে। তারা-ভরা আকাশ, তারার আলো চিকচিক করছে জলে। মাটিতে নেমে-আলা মেঘের মতো ওপারের ঘন কালো বাদারন। সেই দিকে চেরে চেয়ে জগার মনটা পিছনের কালে ঘূরে বেড়ায়। এই বেখানটায় ঘূরছে, এখানেও ভো বন ছিল আগে। আন্তে আল্তে বসভির পত্তন ছছে—জনালয় একটু একটু করে হাত বাড়িয়ে বনরাজ্য মুঠির মধ্যে চেপে ধরছে। এখানকার লীলাখেলার ইতি। নতুন চালা বাঁধতে ছার ভাঁটি ধরে আবার কোন নতুন জারগা খুঁজে পেতে নিরে। ক্লাকা মধ্যে হৈ-ছলার কিছুদিন কাটাবে সেখানে, ঘরগৃহস্থালীর বিশ্বন্ত্র যতক্ষণ সেই অব্বিনা গিয়ে পড্ছে।

অদ্রাণের রং

রথীন্দ্রনাথ সেন

ভাহলে আবার আমি হেমন্তের ক্লান্ত মেণে মেণে
নিবিড় থানের গক্ষে অল্লাণের আশ্চর্য আল্লাণে,
আবার ভাবন খুঁজি শুখারাগ স্থপ্নের আবেগে,
নরম রোদের হতে মুগ্ধ চোথ শিশিরের ল্লাণে।
ভাহলে আবার আমি লাইলাকে ক্লক ঝাউচরে—পাইনের বনে বনে উদ্ভান্ত হাওয়ার শরীরে,
নিভৃত হিমের স্পাশে বিম বিম হরিণ-প্রহবে,
প্রাণের আখার খুঁজি স্বশির্গ্ধ আন্থার গভারে।
রাত্রিব নির্জন মেঘে তারাদের দীপ আনমন্দে—
ক্লেলে গেলে, জীবনের স্বর্গাপি আবার বরং
খুলে দেখি। আদিগস্ত আক্ল শুধু আলোর চক্লনে
থ্রো থ্রো আশ্বর্ধ অল্লাণ আর অল্লাণ্র রং।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ]

[সি, এফ, আণ্ডুক লিখিড 'What I Owe to Christ' গ্রন্থের বক্লামুবাদ]

শান্তিনিকেতন

বুবীশ্রনাথ ঠাকুরের জীবনকেন্দ্র শান্তিনিকেতন আশ্রমের আদি কাহিনী বেমনি বমণীয় তেমনি রোমাঞ্চকর। রবীশ্রনাথের পিতা মহর্ষি দেবেজনাথ তাঁর কর্মজীবনের অবসানে একটি উপযুক্ত নির্কন ছানের অবহণ করহিলেন, যেথানে শান্ত বানপ্রস্থে তাঁর শেষ জীবন তিনি নির্বাহ করবেন। এই অবেবণে তিনি এক কক্ষ অমূর্বর প্রান্তরে এসে পৌছলেন,—বেথানে তুরু দত্যাদের বাস। ভূত্যরা তাঁর পাক্রী নামাল, আর অগ্রসর হতে সাহস করল না। বৃদ্ধ এবি তাদের অভ্রম দিলেন—পাক্রী উঠিরে আবো কিছুটা এগিয়ে বেতে নির্দেশ দিলেন। সামনে ভূণশৃত জনহীন প্রান্তরের মাঝ্যানে কিছু উচু একটি টিবি। তার উপর পাশাপাশি ছটি গাছ। সেইখানে তিনি থামলেন।

তথন ক্র্রান্তের অপূর্ব শোভা। সেই যুগল বুক্তলে উপবেশন করে স্তব্ধ হরে পশ্চিম দিগস্তের দিকে তাকিরে রইলেন দেবেজনাথ। সেই আশ্চর্রকণে জগদীশ্বরের পরম উপলব্ধি এমন গভীর ভাবে তাঁর খানে বাজল বে সমস্ত রাত তিনি সেখানে আনন্দ-বিভোর জাগরণে অতিবাহিত করলেন। প্রদিন প্রোক্ত তিনি সেই স্থানের নাম দিলেন,—শান্তিনিক্তন।

এই শান্তিনিকেতনে মহবি তাঁর আশ্রম প্রতিষ্ঠা করলেন।
জীবন-সারাক্ষের বছ বংসর তিনি এই আশ্রমে বাস করেন। এথানে
নিন্তর গ্যানে তাঁর অধিকাংশ সমর অভিবাহিত হোতো। বিশ্বগাত
কবি রবীক্রনাথ তথন বালক মাত্র। তিনি দেবেক্রনাথের কনিষ্ঠ
পুত্র। বালক পুত্রের কঠে স্বর্নচিত ও রাজা রাক্রমাহন রার রচিত
ধনসঙ্গীত শুনতে মহবির বড়ো ভালো লাগত। রারমোহন ছিলেন
নহবির বৌরনের শুক্ত, তিনিই তাঁকে গোঁড়া হিন্দুধর্মের আওতা
থেকে বাল্কসমাজের উদারতর আশ্রেরে আহ্বান করে নিরে
গিরেছিলেন। সংভারবিষ্কে মানবধর্মের শিক্ষা রবীক্রনাথ তাঁর
পিতার কাছ থেকেই লাভ করেছিলেন।

মহর্মির আশ্রম-প্রতিষ্ঠা যুগের একটি চমংকার সভ্য ঘটনা থাছে। একদিন সন্ধ্যাবেলা মহর্মি বখন তাঁর ঝির ছান্টিতে গোননিমর, তখন দ্যাদলের এক সদার চুপি চুপি তাঁর করছে আনে। কে তাকে রলেছিল বে এ গাছ ছটির তলার জনেক সোনা আছে, তাই ঐ বৃদ্ধ ঐথানে চুপটি করে বসে থাকে।
হত্যা করবার উদ্দেশ্য নিয়ে ঠিক বধন সে সামনে এল, সেই মুহুর্তেই
খবি তাঁর চক্ষ্ উদ্মীলন করেন। তাঁর করুণ আঁথির শান্ত গৃষ্টিতে
মুহুর্তে অভিভ্ত হয়ে দস্ত্য তার তীক্ষ ছুরিকা কেলে হু' হাতে তাঁর
পা জড়িরে ধরে, অকপটে স্বীকার করে তার পাপ-অভিথার।
মহর্ষি শান্তভাবে উঠে দাঁড়িরে দস্ত্যকে আলিক্ষন করেন। সেই
থেকে দস্তার জীবনধারা পরিবর্তিত হরে গেল। সে মহর্ষির শিব্যন্থ
গ্রহণ করল ও বাকি জীবন ধর্ষপথে অতিবাহিত করল।

অতি বৃদ্ধ বরসে মহর্ষি দেহত্যাগ করেন। আমি যথন শান্তিনিকেতনে এলাম, তথনো আশ্রমের সর্বস্থান তাঁর পুণ্যমৃতি বিজ্ঞান্ত । প্রাচীন সেই হুই ৰুক্ষ, বার তলার বলে তিনি উপাসনা করতেন সেইখান তাঁর প্রির বাণী উৎকীর্ণ ররেছে। সেই বাণীতে উদ্বোহিত ররেছে পরমেখরের নাম, বিনি প্রাণের আরাম, স্ক্রান্ত্রে পারমের আনক্ষ, আত্মার লান্তি। বারা মহর্ষির সাহচর্ষে এসেছিলেন তাঁরা আমাকে বলতেন যে মহর্ষির অপূর্ব মুখছ্ছবি ছিল তাঁর শান্ত সমাহিত অন্তরের প্রেতিছবি। অনেকে এল্ড আমাকে বলেছেন বে বর্তমানে পরিণত বরুসে তাঁর কনিষ্ঠ পুত্র ব্রীক্রনাথকেও ট্রক্

শান্তিনিকেতন পুণ্যাশ্রমের প্রান্তসীমার তিনটি মাত্র অমুশাসন নিশিবত্ব আছে। প্রথম অমুশাসন এই বে, এখানে মৃতিপুলা বারণ। বিভীয় অমুশাসন এই বে, এখানকার পরিধির মধ্যে কোনো প্রকার কীবহত্যা বারণ। আর তৃতীর এই বে এখানে ধর্ব সম্পর্কিত কোনো প্রকার বিভর্ক চলবে না। এই তিনটি মাত্র বাধা ব্যতিরেকে শান্তিনিকেতনে কাতি ধর্ম নির্বিশেবে পৃথিবীর সমস্ত নরনারীর উন্ধৃত্ব আমন্ত্রণ।

প্রতি সপ্তাহে একদিন করে অতি প্রত্যুগে কবি আশ্রমবালকদের ধর্মোপদেশ দান করেন। নিতান্ত সহজ সরল ভাষার তিনি ইশ্বরের পূণ্য পিজ্বদের কথা বলেন। আশ্রমবাসীরা প্রতিদিন প্রত্যুগে ও সন্ধ্যার ইশ্বরোপাসনা করে। শৈশব থেকে এই স্ব্যানবিক ধ্রশিক্ষা ও ধর্মাচরণ তারা লাভ করে।

শান্তিনিকেজনের শান্তিপূর্ণ আশ্রারের মধ্যে অন্তর্কিতে ক্লেন্তে পান্তপ ইউরোপের মহাবৃদ্ধের সরোদ। এই সংবাদ প্রচণ্ড ভূমিকন্দ্রের মধ্যে আমার অনেক স্বপ্ন চূর্ণ-শিচুণ করে দিল। স্বরং খুষ্ট বে-দিনের ভবিষ্যৎবাণী করেছিলেন,—আমার মনে হোলো সেই দিন বেন ঘনিরে এসেছে,—মহাবিচারের দিন। মানবপুত্রের নব-অভ্যুত্থানের দিন।

ইংলণ্ডে আমার বৃদ্ধ পিতা ভাবলেন তাঁর এতোদিনের আকাজ্জিত ভবিষ্যৎ এবার বুঝি সফল হতে চলেছে। অশীতিপর জাঁর বয়স, দেহ অভাস্ত তুর্বন। আমার ভগিনীদের কাছ থেকে আমি বেদনা-করুণ চিঠি পেতাম, তারা দিখত আমার মা বর্তমান থাকতে আমাদের বাড়ি ঘরের অবস্থা যেমন ছিল, পিতা স্ব্ৰিছ ঠিক সেইমত রাখতে চাইলেন। মা-র অবর্তমানে কোনো পরিবর্তন তিনি সহ করতে পারতেন না। স্থামার ৰুদ্ধ পিতৃদেবের ধারণা হোলো যে এইবার প্রভুর পুনরাবির্ভাবের সময় সমাগভ, ভিনি এলেন বলে। তাঁর এই বিশাসের কথা দীর্ঘ পত্তে তিনি আমাকে জানালেন। মুক্তছন্দে একটি স্বচিত কবিতাও পি হৃদেব এই সময়ে আমাকে পাঠিমেছিলেন। এই কবিতা ও তাঁর শেষ জীবনের পত্রগুছ অতি শ্বহার্য সম্পদ বলে আমি সমত্রে রক্ষা করে এসেছি। মহাযুদ্ধ শেষ ছবার পর্বেই আমার পিতদেব দেহরকা করেন।

মহামুদ্ধ যথন পূর্বভাবে খোষিত হোলো এবং এই যুদ্ধে আমার খদেশ অভিত হয়ে পড়ল, তথন আমার মনের অবস্থা হোলো অতি অন্তৃত। আমার মনে জাগল নানা প্রশ্ন, নানা সমত্যা,—সন্দেহ আর অন্থিরতার মুহুর্তে যুহুর্তে বিপরীতমুখী চিস্তার টানাটান। আমি অবশ্র বৃষতে পারছিলাম এমনি শিখিল অন্থিরতা বিপজ্জনক,—
অবিলব্দে যদি কঠিন মনে সত্যা সিহান্ত করতে না পারি, তাহলে বিভ্রুক আবেগের বক্সার ভেনে যেতে হবে।

আপাতদৃষ্টিতে এই যুক্তক আমার অত্যন্ত সাধু ও মহান্ বলে
মনে হবেছিল। আমি দেখছিলাম বিল্তম প্রতিবাদ না করে প্রতি
দেশের জন্ত সম্প্রদার মৃত্যুর পথে অগ্রসর হছে,—বে উদ্দেশ্তকে
ভার ও সত্য বলে মনে করেছে, সেই উদ্দেশ্তের সফলতার জতে জীবন
ও জীবনের চেরেও মহার্যতর সব কিছুকে বিসর্জন দিতে মৃত্তের জন্ত
বিধা করছে না।

এই মহামুদ্ধের পরিপ্রেক্ষিতে সমগ্র মানর সমাজের বে বিপুস্ নৈতিক পরীকা উপস্থিত হরেছিল, সেই পরীকা রবীক্রনাথের সুদ্ধ অন্তুভূতি অন্তর্গক গঙীরভাবে নাড়া দিরেছিল। এই বংসবের গোড়ার দিক থেকে আমি তাঁর সঙ্গে ছিলাম। মানবাত্মার বেদনার্ড অন্থলার—বে বেদনার কোনো তল নেই, বে অন্ধলারের কোনো সামা নেই,—সেই বেদনার মথিত হচ্ছিল কবির মন, সেই অন্ধলার আস করছিল তাঁর হৃদয়,—সর্বনা তিনি ভাবতেন সারা পৃথিবীর মহা সর্বনাল বৃঝি দিনে দিনে ঘনিরে আসছে। শেব পর্যন্ত মহাযুব বথন বাধল, পরম আশার তিনি বৃক্ বাধলেন এই ভেবে বে প্রাচীন পৃথিবীর রণবিধনত ভূপভিত্তির উপরে এক নবীনতর মহত্তর পৃথিবীর জ্পা হবে।

পৃথিবীর এই গভীরতম বেদনার মুহুর্তে রবীন্দ্রনাথের মনে সর্বপ্রথম আশার একটি আখান বেজেছিল। কিন্তু আধুনিক যুদ্ধের স্বরপকে উপদক্ষি করতে তাঁর দেরি হরনি। এই যুদ্ধ সত্যের বিক্লক্ষে, মানবতার বিক্লক্ষে। মিথ্যা ও কলুমকামনার বে হলাহলকে

এই যুদ্ধ উৎক্ষিপ্ত করল, অমাছ্যবিক নিঠুবতা ও পাশব বর্ষর চার বে নিল জ্বতাকে দিকে দিকে প্রকাশ করল, তাতে কবি বেন হত্তবৃদ্ধি হরে গোলেন। যুদ্ধের সমস্ত আখাত বেন তাঁর একলা অস্তবের গভীবে গিরে বাজন। যুদ্ধকে তিনি ঘুণা করলেন। বছরের পর বছর ধরে যুদ্ধ চলতে লাগল, যুদ্ধের প্রতি তাঁর ঘুণাও গভীর থেকে গভীরতর হয়ে উঠতে লাগল।

মহাযুদ্ধের স্চনাকালে আমার মনে যে বিধা উপস্থিত হয়েছিল সেই বিধা আমার নৈতিক পরা**জ**র। উত্তেজনার সংকামক ব্যাধিতে সমস্ত পৃথিবী আক্রান্ত, রণোন্মাদ তথন বন্ধার মতো সর্বদেশের মানব সমাজকে গ্রাস করছে। এই বিপুল তরঙ্গকে প্রতিহত করবার মতো শক্তি আমার ছিল না। যুদ্ধের উন্মাদনা আমাৰ মনের মধ্যে মাথা উঁচু করেছিল, তাকে সংৰত করতে আমি পারি নি। যুদ্ধের প্রভ্যেক্ট সংবাদ আমি তথন উদ্গ্রীব উৎসাহ নিয়ে অমুধাবন করতাম, কেন না হিংসার বীজ আমার মনে তথন উপ্ত হয়েছে। এই বীজ বথন তার মুণ্য দানবীয়তা নিয়ে অবচেতন থেকে চেতনার স্তবে এসে পৌছলো,—তথন আমার চমক ভাঙ্গ। নিজ্ঞকে ঘুণা করলাম,—নিজের মনের সঙ্গেট লড়াই সুকু হোলো আমার। কেন না বখনই আমি উল্লেখনাবিহীন শাস্ত মুহুর্তে চিস্তা করেছি, মনের শুভ্রোধ সর্বদা স্বীকার করেছে পৃষ্টনীতি যুদ্ধনীতির পরিপন্থী। এ ছাড়া শীঘ্রই আমি বুঝতে পারলাম যে স্থূলিকের অকে বাতাস দিরে দিয়ে যেমন সেই স্থূলিককে লেলিচান অগ্নিশিখায় পরিণত করা হয়, তেমনি শক্তর প্রতি ঘুণাকে লেলিহান ধ্বংস্শিখায় পবিণত করা হচ্ছে মিখ্যার ঝটিকার সাহাব্যে। সেই মিথাকে চিনতে পেরে সাবধান হলাম আমি।

ক্রমে আমার আছের চোথের মিখ্যা দৃষ্টি থসে পড়ল। মনের খোর কাটল। পাল্ত অথচ আশংকাভর। মন নিবর আমি আমার ধর্বপ্রস্থের আশ্রর গ্রহণ করলাম,—আরো স্বতনে ও আরো নিবিট্টভাবে পড়তে লাগলাম প্রভুব বাণী। প্রভু খুট্ট আমাকে পথ দেখালেন, আমি ব্যলাম যে ধর্ব ও যুদ্ধ এই চুই-এর মাঝে কোনো সন্ধি নেই। দ্বর ও বক্ষ—এই চুই প্রভুব উপাসনা একসলে করা বার না। বীতথ্ট সম্প্রভাবার খোবণা করেছেন—

ভোমার পক্রেকে তুমি প্রেম করো; বারা ভোমাকে অবজ্ঞা করে তাদের তুমি মঙ্গল করো, যারা ভোমার প্রতি দুণাপূচক ব্যবহার করে, তাদের কল্পে তুমি প্রার্থনা করো। তবেই তুমি ভোমার পরমণিভার উপযুক্ত সন্তান হতে পারবে।

থুঠের এই বোষণার কোনো হার্প নেই, কোনো ছর্বোহাতা নেই।
আমি ব্যুলাম, সঙ্গান সমস্তা আমার সন্মূথে। ঈশরের মহিমাকে
নৃতন করে উপলব্ধি করতে হবে আমাকে। কা'কে আমি পূজা করব ?
কে আমার ঈশর ? ওন্ড টেটারেন্টের গোষ্ঠাদেবতা বিনি টিনিই কি
আমার ঈশর ? নিউ টেটামেন্টের অস্তর্গেবতা বিনি, বার মহিমাকে
গৃঠ বিশ্বমানবের অস্তরে প্রতিষ্ঠিত করেছেন, তিনিই কি আমার
ঈশর ? আমি দেখলাম, রণোমাদনাকে মনের মধ্যে বাসা দিরে আবি
আমার পরম প্রান্ত পুটের প্রতি বিশ্বাসহস্তা হরেছি। কিছ প্রেণ্ড
আমাকে রক্ষা করেছেন, তিনি তাঁর নিতাবাণীর সম্মার্জনীবান্তে আমার
ক্রিল্প মানসকে পরিছার করেছেন, আবার আমাকে কিরিয়ে প্রনেছেন
তত্ত পর্বাধীনানার।

এই সম্বে ববীক্রনাথের কাছ থেকে আমি নিবিউত্তম সাহাব্য
লাভ করেছিলাম। তাঁর প্রতি আমার প্রস্কা ও প্রেম দিনে দিনে
গভার থেকে গভারতর হরেছিল। তিনি তাঁর লাস্ত বৃদ্ধি দিরে
আমার সংশ্র উপলব্ধি করতে পেরেছিলেন। আমার অন্তর্গপ্রের কথা
আমি অকপটে নিবেদন করতে পেরেছিলাম তাঁর কাছে। অবৃষ্টান
হিল্মু হলেও ববীক্রনাথ 'সার্থন অনু দি মাউট' পাঠ করেছিলেন ও
এই উপদেশাবলীর গভার তাংপর্য হলমুল্লম করেছিলেন। তিনি
আমাকে বলেছিলেন,—'তোমরা খুষ্টান হরে এ কী করছ? স্পাইতম
নৈতিক নির্দেশ বরেছে তোমাদের ধর্মে,—সেই নির্দেশ তোমরা পালন
করে না কেন?'

অপর এক তৃতীর স্ত্র থেকেও আমি সংকটে সাহায্য লাভ করি।
এই স্ত্র গান্ধীজির জীবনবেদ। দক্ষিণ আফ্রিকাতে মহাত্মা গান্ধীর
সাহচর্যে আমি দেখেছিলাম 'দার্মন জন দি মাউণ্ট'-এর উপদেশাবলীর
নিহিত্ত অর্থ কর্মের মাধ্যমে কা ভাব তিনি প্রকাশ করেছেন।
খৃষ্টানদের তিনি লক্ষা দিয়েছেন,—তাঁর উদাহরণ আমার চিত্তপটে
অবিশ্ববণীর। সত্যই তাঁর শক্তি, তাঁর 'সত্যাগ্রহ' খুঙোপম
অন্প্রাণনা। এই বুন্দ সত্যাগ্রহের বিপরীত,—খুষ্টকে বে অনুসরণ
করে বুন্দ তার অমিত্র।

ববীক্রনাথ, মহাত্মা গান্ধী ও আমার ধর্মগ্রন্থ—এই তিন প্রভাব একটি অচঞ্চল বিশালের ক্ষেত্রে আমাকে প্রাছে দিল। সংল্যছারাহীন স্প্রপ্তিতে স্ত্যের আলোকে আমি দেখলাম বে, এই যুদ্ধ খৃষ্ট-নির্দেশের পরিপন্থী। আমি দৃঢ়নিশ্চর ছিলাম বে, এই যুদ্ধ আমার মর। বুদ্ধের কাজে বোগদানের জন্ম বখন নির্দেশ এল, তখন আমি নির্ভীক্তিতে অবীকার করলার। এই অবীকারের অর্থ কারাবরণ। তার জন্মেও আমি সোৎসাহে প্রস্তুত হলাম। বদিও শের পর্যন্ত প্রশিশ্ধী বলে আমাকে শান্তিভোগ করতে হয়নি, তব্ও সমগ্র মহাযুদ্ধ কালে মুহুর্তের জন্মেও আর কখনো আমার মনে আবিলতা আসেনি। বিশাসই মুক্তি। এই বিশাল আমাকে মহাযুক্তি দিল। এই বিশালের জন্মেও ভবিব্যতে কখনো অম্তাপ ক্রিনি।

এই মহাযুদ্ধ আমার জীবনে এক মহা পরীকা। এই পরীকার মধ্যে অবর্ণনীয় মানসিক বন্ধণার আমার চিত্ত বিব্যক্ত হয়েছে। কিছ এই বন্ধণার মধ্যে আমার প্রান্ত বৃধিষ্টের প্রসাদ আমি লাভ করেছি,— দব নব বন্ধ অগোচর রূপে তিনি আমার মনশ্চকুর সম্পুথে আপনাকে প্রতিভাত করেছেন। ছটি প্রতিজ্ঞা আমি করতে পেরেছিলাম,— প্রথম প্রতিজ্ঞা যে বৃষ্টান-গোচীর মত গণ্ডীর মধ্যে আর কখনো থাকব না। ছিতীর প্রতিজ্ঞা, যুদ্ধকে সমর্থন করব না। এই উত্তর প্রতিজ্ঞাই আমার জীবনে সার্থক হয়েছে। এই প্রতিজ্ঞা বহণের পর আমার জীবনে বীতর শক্তিকে আমি গভীরতর ভাবে লাভ করেছি, তাঁর প্রসন্তব্ধ মৃতি উদ্যাটিত হরেছে আমার দৃষ্টির সম্পুথে।

এই সমরে ক্ষমীল কল্লের পুত্র স্থাীর আমার কাছে এসেছিল।
কিছুদিন আমার কাছে থাকার পর আার্লেলের কাজ নিবে সে
কাজে বার। স্থাীর আমাকে বলেছিল, সান্ধ এখানে এই
শাভিনিকেজনে আপনি আছেন কী করে। এখানে তো হোলি
ক্ষিত্রিয়ন নেই।

আমি বলেছিলান,—এই সৰ শিশুৰ দল, বাদের আমি শিক্ষা দিছি, একাই আমাৰ 'হোলি কমিউনিয়ন'। আমি বলেছিলান, ঈশবের নামে শরণাগত ভ্যার্তকে এক পাত্র জলদানই প্রাকৃত হোলি কমিউনিয়ন, ভাই নয় ?

আমার এই কথা সুধীর চিরদিন মনে রেথেছিল। ফ্রান্স থেকে প্রভ্যাবর্তনের পর সে বথন তার পিতার শেব রোগশব্যা পালে, আমিও তথন তার সঙ্গে ছিলাম। সুধীর তথন আমাকে বলেছিলেন শোস্তিনিকেতনের সেই সকালটিতে বে কথাগুলি আমাকে বলেছিলেন সেকধা ফ্রান্সে থাকতে আমাকে বাবে বাবে সাহাব্য করেছে। ফ্রান্সে বিভিন্ন হাসপাতালে সৈনিকদের বথন আমি শুশ্রাবা করতাম, তথন বুবেছিলাম আপনার কথা কতো সতা। এই সব রোগীদের দিকে তাকিয়ে আমিও বলভাম, এই আমার হোলি কমিউনিয়ন।' গুষ্ট বলেছিলেন, "আমি অস্ক ছিলাম, তুমি আমার সেবা করেছিলে।' গুষ্টবাণীর নিগৃঢ় তাৎপর্ব আপনার কথাতে আমি উপলব্ধি করেছি।

খুঠের এই পরম বাণী আমার দৈনন্দিন জীবনে আমাকে
নিরবছিল্ল সাহায্য করেছে, প্রেরণা দিয়েছে, খালি দিয়েছে, আনদ্দ
দিয়েছে। কেন না, প্রাচীন ধর্মপ্রে আবদ্ধ তথু মাত্র একটি
নৈর্বান্তিক মহা আদর্শ বলে আমি খুঠকে দেখিনি। তাঁকে
আমি জীবন্ত মানুর বলে উপলব্ধি করেছি, বার পরমান্তার সঙ্গে
আমার অন্তর্গল্পর প্রত্যক্ষ সংযোগ আমি সর্বনা অন্তর্ভব করেছি।
মহাযুদ্ধের প্রারম্ভে বে নৈতিক অন্তর্গল্পর কথা উল্লেখ করেছি,
তাঁর প্রত্যক্ষ বাণীর প্রসাদে শেব পর্যন্ত আমি দেই অন্তর্গল্প থেকে
মুক্তি পেরেছিলাম। প্রভের দেই বাণীর মব্যে তাঁর অন্তরের গভীরতম
বেদনা ও পরমত্ম আবাসকে আমি অনুতব করেছিলাম। আমি
বেন বকর্ণে তনেছিলাম বে ধ্বংসের উন্মন্ত শোভারাত্রার বোগদানের
বিরুদ্ধে তিনি আমাকে সাবধান করে বলছেন, আমার পশ্চাতে বে
আগতে চার সে বেন আপন সত্ত কে পি হার করে আপন করে
কুসকে গ্রহণ করে একান্ত ভাবে তথু আমা কই অনুসরণ করে।

এমনি সময়ে একটি নৃতন চিন্তা আমার মনকে অধিকার লাগল। যুক্তর আগ আমি আফ্রিকায় গিবে আফ্রিকাবাসীদের প্রতি বৰ্ণবৈষম্যমূলক ব্যবহার প্রত্যক করেছিলাম,—সেখানকার ভারতীয় চুক্তিদাসদেরও বামি দেখেছিলাম। তথন এই বলিষ্ঠ প্রতায় আমার চি**ত্তে সুস্পষ্ঠ হয়েছিল** বে ম'মুকের এই অবমাননার বেদনা মানবপুত্র যীক্তই অস্তর বেদনা। এবার এই ইউরোপীয় মহাযুদ্ধ দেখে আমি ধ্রিনিশ্চয় হলাম বে বাণিজ্যিক প্রতিযোগিতা ও শোষণনীতি পাপ এই যুদ্ধের মূল কারণ, এবং পৃথিবীর অনুন্নত জাতিরাই এই পাপের প্রধান বলি। **ধারা** অনুন্নত, যারা তুর্বল, খুষ্ট তাদেরই দলে। ভাগ্য যাদের করুণ, তাদেরই দিকে তাঁর অনম্ভ করুণা ধাবিত, তাদেরই তিনি আহ্বান করে বলেছেন,—"এসো ভোমরা,—ধারা আন্ত বারা গুরুভার— আমার কাছে ভোমরা এস,—আমি ভোমাদের দেব বিশ্রাম।

আমার মনের এই সব প্রবল চিন্তা আমি কবির কাছে ব্যক্ত করলাম। আমার ভাবনার সঙ্গে তাঁার ভাবনার মিল দেখে আমার বড়ো আনন্দ হোলো। বর্ণ-বিবেষ বা জাতীয় অহমিকার সামান্ততম কালিয়া তাঁব মনকে কথানা স্পূৰ্ণ করেনি। অপ্রদিকে মাবার বৈজ্ঞানিক প্রগতির জীক পাশ্চাত্য জগতের প্রতি তাঁর গভীর জিল্পান্তির ছিল। কিছু পাশ্চাত্য জগতের প্রতি অভিযোগও তাঁর মনে ছিল প্রবল। বে স্বাজান্ত্যগর্ব ও বাণিজ্যিক লালদার বলে পাশ্চাত্য জগত সারা পৃথিবীকে গ্রাস করতে চলেছে, তাকে তিনি ক্ষমা করতে পারেননি। মহাযুদ্ধ প্রসক্ষে কবি বলতেন,— অনেক কিছু গ্রাস করেছে ওরা, এবার এসেছে মৃত্যুর বিষ্ণ্রাস।

আমি কবিকে বলেছিলাম বে আমার মনে হয় হয়তো এ মহাযুদ্ধ মামুবের বছ মালিন্য মোচনের মুক্তিস্নান। আমার এ কথার কবির মুখে বে বেদনার প্রতিচ্ছবি আমি দেগেছিলাম ভা জীবনে ভূলব না। উত্তরে তিনি বলেছিলেন,—

'তোমার কথা সত্য হোক চার্লি, এতে তোমাদেরও 'মঙ্গল, আমাদেরও মঙ্গল। কিন্তু এই পাপের ন্লে ব্যেছে লোভ। মনের গভীর কলব থেকে এই লোভের শিকড়কে যদি নির্লু করা না যার, তাহলে এই মহাযুদ্ধের অবসানের সঙ্গে সঙ্গে আবার উন্নুক্ত প্রতিবাসিতা তক্ত হবে অর্থনৈতিক ক্ষতিকে পূর্ণ করবার, দরিজ অহ্মতকে শোষণ করবার। এই লোভ আর এই শোষণ স্কৃহাই হোলো আসল ব্যাধি, এই কালব্যাধি বদি না সারে, তাহলে ব্যাধির বাছিক প্রতিক্রিয়ার চিকিৎসা করে লাভ কি গ'

্রিলো তোমবা, ধারা প্রান্ত বারা গুরুভার, আমার কাছে তোমবা এসো"—ব্রটের এই কথাওলি এ সময় নিরন্তর আমার মনে প্রতিধানিত হোতো। ভারপর ধীরে ধীরে আমার মন এক প্রম চৈতত্তে অতুশ্রোণিত হয়ে উঠল, আমার অস্তব আমার প্রভুব কাছ থেকে এক পরম নির্দেশ লাভ করল। তিনি আমাকে আহব।ন করলেন এক বৃদ্ধে, ইউরোপের বিভিন্ন রণক্ষেত্র জুড়ে বে মহাযুদ্ধ চলেছে, তার চেরে মহন্তর যুদ্ধের সম্মুখীন হতে তিনি আমাকে ডাক দিলেন। এ যুদ্ধ খুষ্টের নিজের যুদ্ধ, সমস্ত পৃথিবীর পদানত নিপীড়িত মায়ুবের স্থপক্ষে অত্যাচারের বিরুদ্ধে হিংসার বিরুদ্ধে ঘুণার বিরুদ্ধে জীর নিভাকালের যুদ্ধে তিনি আমাকে তাঁর সৈনিক করে নিলেন। সৈনিক আমি হব না, সামৰিক কাৰু আমি কিছুতে গ্ৰহণ করব না, ভাতে বে বিপাৰই আত্মক এই ছিল এতদিন আমার দৃঢ় সংক্র। কিছ এই সংকল ছিল নঙৰ্থক। কিছ প্ৰত্যক্ষ কৰ্তব্যের আহ্বানে প্রভার নির্দেশে আমি গৈনিক হতে পারলাম এবার, বহতার ক্ষত্রে বিরাটভম ধর্মবুদ্ধে আত্মনিবেদনের নি:সঙ্কোচ' আখাস আমার মনে क्षांत्रम ।

এই আখাসের কথা আন্ত এথানে লিপিবছ করা নিতান্ত সহজ।
সেনিন কিছ এই আখাসকে একনিষ্ঠ আন্তার সক্তে আঁকড়ে রাথা
মোটেও সহজ ছিল না। তথন সারা পৃথিবী জুড়ে মহাযুদ্ধ চলেছে,
পূর্বে ও পশ্চিমে প্রতিদিনের জয় পরাজয়ের সংবাদে উত্তেজনার
তরঙ্গে মন সর্বলা আলোড়িত। এই নিত্য আলোড়নের হাত থেকে
পরিত্রাণস্বন্ধপ কোনো প্রত্যক্ষ কর্তব্যের সন্ধান করা তথন সহজ
ছিল না আমার পক্ষে। পৃথিবীর অক্যান্ত বর্ণ ও জাতির প্রতি
ইউরোপীর জাতিবুন্দের ব্যবহার সম্পর্কে তথনো এ আশাও আমার
মমে ছিল, বে ইংরেজ জাতি সাধারণের ব্যতিক্রম, ইংরেজ জাতির
ব্যবহার মঙ্গল। এই জাতি বে আমারই জাতি, এই জাতির আন্তর্ণ
বে আমারই গৌরব। স্কাতির প্রেক্তির স্বন্ধে আমার পিতার বনে

বে অলক্ত বিধাস ছিল, সেই বিধাস আমারও বজে পোষিত হয়েছিল। বিদেশে এসে অনেক অভিজ্ঞতা লাভ সত্ত্বেও আমার মনের গভীর অস্তম্ভল থেকে সে বিধাসকে আমি মুছে ফেলতে পারিনি।

বে সমরে দাসভ্রথা বদ হয় ও বিখ্যাত বিফর্ম আইনগুলি পাল হয়, ঠিক সেই সমরে আমার পিতৃদেবের অছ হয়। স্বাধীনতার প্রতি হুদ্য আছা ও সমর্থ মানবভাবোধের ঐতিহ্য তিনি লাভ করেন জার পূর্বপুরুষদের কাছ থেকে। স্বাধীনতা ও মানব কল্যানের আদর্শ আমাদের উষ্ট অ্যাংলিক্যান রক্তের ধারায় প্রবাহিত। এই আদর্শের সঙ্গে আমাদের দেশের উনবিংশ শতাকীর পূর্বযুগের চিস্তাধারায় গভীর সংবোগ। বৃটিশ ইতিহাসে উনবিংশ শতাকীর প্রথমার্ম একটি মরনীর কাল। ক্লাক্সন, উইলবারফোর্স, লিভিংগ্রোন, গ্রাফ্টিন বেরি, ফ্লোরেন্স নাইটিংগেল, জ্লোস্ফিন বাট্লার প্রভৃতি মানবরত্ব বে দেশের সস্তান, মানবকল্যাণ এতের ইতিহাসে সে দেশের অবদান অকিঞ্জিক্ত কর নয়।

কিছ ১৮৮০ সাল নাগাদ আমার স্বজাতির ধানধারণায় এক বিচিত্র পরিবর্তনের স্থচনা হয়েছিল। আফ্রিকা ভ্রথণ্ডে ও অক্তর ইউরোপীয় জাতিদের সামাজ্যলোলুপভার সঙ্গে সঙ্গে এই পরিবর্তনের শুক্র। এই সঙ্গে খুষ্টীয় নির্দেশের পরিপদ্ধী বর্ণবিছেব ও জাতি-অহমিকা সারা পৃথিবীতে প্রকটতর হরে উঠল। 'বেতকার' মানুব সদল্ভে যোষণা করল যে সেই পৃথিবীর শ্রেষ্ঠ মামুষ, ভার জাতিই উচ্চতম জাতি। অন্ত মাতুৰ অন্ত জাতির সংস্পর্শ থেকে সে নিজেকে পুরে সরিয়ে নিতে লাগল। শুক্ন হোলো মায়ুবের প্রতি শামুবের ভিক্ত বিৰেষ। বিদেশে ভ্রমণ করার ফলে আমি বে-সব দুখ্য দেখেছি আমার পিতৃদেব তা দেখেন নি, আমি বে অভিজ্ঞতা লাভ করেছি তা ছিল তাঁর কল্পনারও বাইরে। এই বুণ্য বৰ্ণবিষেষ বিশেষ করে পৃথিবীয় উষ্ণ অঞ্চলে কী লক্ষাকর ৰীভংস তার দঙ্গে প্রকট হয়েছে জাত্যতিমানের নামে নিল জ কুঠাহীনতার সঙ্গে কতো সাংখাতিক অপকর্ম অনুষ্ঠিত হয়েছে, আমি তা জানি। এও আমি জানি বে আমার প্রতিদিনের কর্মেও চিস্তার সূতত বদি খুষ্টের দৃষ্টি না থাকত তাহলে হয়তো স্বার্থপরতা ও বিজ্ঞাতিব প্ৰতি ঘুণায় আমি অনেক শেতকায়কেই ছাড়িয়ে বেভাম। আমি জানি, এই পাপের বীজ আমার মনের মধ্যেও ছিল,—প্রভূ বীতং আমাকে বকা করেছেন।

এই সমগ্রকার সমস্ত অন্তর্গাহের নিবৃত্তি হোলো অতর্কিতে।
১৯১৫ সালের মে মাস। আশ্রমে প্রীন্মের ছুটি হোলো। ছাত্র ও
শিক্ষকেরা বে বার বাড়ি ফিরল। করেকটা দরকারী কাগক সংগ্রহের
জন্ত কলকাতা থেকে আবার শান্তিনিকেতনে বেতে হোলো আমাকে।
হঠাৎ বিকেল পাঁচটা নাগাদ আমি অনুত্ব হরে পড়লাম। অবিলবে
একট হোলো বে এশিরাটিক কলেরার সাংঘাতিক কাল বাাধি আমাকে
ধরেছে। কাছাকাছি কোনো অভিজ্ঞ চিকিৎসক নেই। বাকে বে
রাত্রের মধ্যেই আনা বার। সমস্ত রাত কাটল নিরবজ্জির ব্যানার—
তবু আমার আছের চৈতত্তে মারে মারে ভেসে উঠতে লাগল বীত্র
বেদনাহত কক্ষাবন মূর্তি।

कनकां (शरक करि हुत्वे अलान मास्तिनिरक्करन । स्रोतीय

রোগের সংবাদ পেরে এক মুহূর্ত বিলম্ব তিনি করেন নি। পরদিন প্রভাতে কবির মুখ দেখে আমি বেন নবজীবন লাভ করলাম। তাঁকে বে আমি কতো ভালোবাসি তা আমি সেই মুহূর্তেই বেন সমাক উপলব্বি করলাম। তাঁর প্রতি, গভীর প্রবা আমার ছিল কিছ এই ভালোবাসা প্রছার চেয়ে জনেক গভীর, জনেক আন্তরিক।

কলেরা রোগ অভ্যন্ত সংক্রামক। কবি এবং আমার অন্তান্ত স্থলনা বাঁদের নিরম্ভর সেবার আমি পুনর্জীবন লাভ করেছিলাম, উরো নিজেরাই বে কোনো মুহুর্তে এই রোগে আক্রান্ত হতে পারতেন। আপন প্রাণের মমতা না করে তাঁরা আমার ভশ্রষা করেছিলেন,— গভীর স্নেছ্ডেরে আমাকে মৃত্যুম্থ থেকে ফিরিয়ে এনেছিলেন।

বেশ কিছুদিন পরে আমাকে কলকাতায় এক নার্সিং হোমে স্থানাস্তবিত করা হোলো। তারপর স্থতস্বাস্থ্যলাতের আশায় আমি গেলাম সিমলায়।

ফিজি দ্বীপ

দিমলা পাহাড়ে প্রভাবর্তন করে দিনের পর দিন উক্ত রোজের নিচে এক দীর্ঘ বারান্দার আমি ভরে থাকতাম। শরীর এতো তুর্বল বে, কিছু পড়তে পর্যন্ত রাস্তি আসত। সেই সময় চুক্তিদাসথবদ্ধ ভারতীর শ্রমিকদের সহকে একটি সরকারী বিবরণী আমার হাতে এল। দক্ষিণ আফ্রিকার অভিজ্ঞতার পরে এই পুস্তিকার বিষয়বস্ত সম্বদ্ধে আমার স্বাভাবিক আগ্রহ ছিল। বইটির পাতা উলটিরে দেখতে লাগলাম। কিন্তি দীপপুঞ্জে ভারতীয় শ্রমিকদের আয়ুহত্যার সংখ্যা ও বিবরণ দেখে আমি চমকে উঠলাম।

ফিজি দ্বীপ বছদ্বে,—দক্ষিণ প্রশান্ত মহাসাগরে। সেথানেও বছ ভারতীর শ্রমিকের বাস, বাগিচার চুক্তিদাসত ভাদের জীবিকা। রিপোট পড়ে দেখলান ভারতবর্বে কৃষক সম্প্রদায়ের' মধ্যে আল্লহত্যার সংখ্যা যভো, তার বছগুণ বেশি এই ফিজিপ্রবাসী ভারতীয় বাগিচা-শ্রমিকদের মধ্যে। এর কারণ গৃহগত্পাণ প্রবাসাদের তুংসহ জীবনধারা।

নাটাল ও অপ্তত্ত্ব ভারতীয় শ্রমিকদের জীবনধাত্রার পাশাপালি ফিজির ভারতীয়দের জীবনধাত্রার বিবরণ তুলনামূলক ভাবে এই প্রস্থে লিশিবদ্ধ ছিল। ফিজির বিবরণ এতোই কফণ বে, আমি তা পড়ে জ্ববাক হয়ে গোলাম। নাটালের চুক্তিলাসত্ত প্রথা আমি নিজে চোখে দেখে এসেছি। ফিজি দ্বীপের ভারতীয় শ্রমদাসদের জীবনধাত্রা বে কতো বীভংসতর তা আমার মানস চক্ষে স্পাই ফুটে উঠল। আমি বইটি বন্ধ করলাম। বেশি পড়ার শক্তি আমার ছিল না। কিছে বেটুকু পড়েছি তার চিস্তা ছংল্পের মতো মনে জ্বেগে বইল।

করেকদিন পরের কথা। তুপুর বেলা আমি চোথ বুঁজে বারাশার তরে আছি। হঠাৎ আমার বছদৃষ্টির সামনে এক বিচিত্র দৃশ্য বেন ভেসে উঠল। নাটালের সেই দরিদ্র ভারতীয় শ্রমিকটিকে আমি ধেন দেখলাম, শেতকার মালিকের বেত্রদণ্ডের আবাতে আঘাতে বার সমস্ত শিঠ ক্ষতবিক্ষত। দে বেন উপ্আন্ত কক্ষণ দৃষ্টি মেলে আমার মুথের দিকে তাকিয়ে আছে। তার মুথের দিকে তাকিয়ে আমার মানস চক্ষের সামনে তার মুখটি বদলে গেল, আমি দেখলাম মানবপালক পরমন্তাত্ত্ব বীশুর মুখ, বে মুখকে শিশুকাল থেকে আমি চিনেছি ও একান্ত করে ভালোবেসেছি। এই মুখক্তিব আমার মৰ্যুক্তরে এবনই সুল্পাই হরে কুটে উঠল যে আবি

আন্থাহার। হয়ে গোলাম, সমস্ত প্রাণ আমি বেন স্পাপ দিলাম কু ঠিউ আন্ধানিবেদনে। ক্রমে দৃষ্ঠটি মিলিরে গোল। আমি তব হরে পড়ে রইলাম সেই নিংসক বারালায়। বহুক্ষণ পরে ব্রকাম আমি বা দেখছিলাম তা জাপ্তত স্বপ্ত, মাহুবের বেদনা-বঞ্চনার সভীয় আবেগের ফলে আমার মহা চৈতক্ত এই স্বপ্নের স্টে করেছে।

আমার বিশাস, সেদিন আমার প্রস্থাকৃতই আমার সামনে প্রকাশিত হয়েছিলেন। ইন্দ্রি দিয়ে প্রত্যক্ষ উপলব্ধি করা আর অন্তর দিয়ে অফুতব করা,—তুইই একই প্রকাবের অভিজ্ঞতা। মুখে বতো আলাদা বলিনা কেন, এই তুইয়ের মধ্যে অতি সংকীর্ণ সীমারেশা, অনেক সময় এই রেখা কোথায় তা খুঁজেই পাওয়া যায় না।

সেই উষ্ণ দিপ্রহাবের উজ্জন প্রালেকের মতো এই কথাটি আমার মনে উদ্ভানিত হয়ে গেল বে গৃষ্ট আমাকে আহ্বান করছেন ঐ অনুব সমুদ্রপারের ফিজি দ্বীপপুল্লে,—তাঁর আহ্বান বার্থ হবেনা আমার জাবনে। কোনো প্রশ্ন নেই, কোনো দিখা নেই,—পৃষ্ট-নির্দিষ্ট কর্তব্য আমাকে পালন করভেই হবে। ফিজি দ্বীপে বাজার চিন্তার আকুল হয়ে উঠল আমার মন। কোন পথে বাব, বেতে কতোদিন লাগবে,—এই সব থোঁজ ধবর আমি নিতে শুক করলাম। আমার জাবনের থক নৃতন অর্থ নৃতন আশা আমি পুজে পেলাম, সেই সজে নবহান্থার স্পার্শ লাগল আমার ছবল দেহে। একটু ইছ হবার সঙ্গে সংলে কবির কাছে আমার উদ্দেশ্ত নিবেদন করলার। কবি সানন্দে তাঁর আশ্রমের কাজ থেকে আমাকে ছুটি দিলেন। প্রমবদ্ধ উইলি পিয়ার্সন আমার সহবাত্রী হোলো, এতে অপ্রিনীম আনন্দ হোলো আমার। কবির উরার হালরের প্রালম আমার। কবির তারার ভারতবর্ব থেকে ফিজি দ্বীপুঞ্জে বাত্রা করলার।

ক্ষিত্তে পৌছিয়ে আমরা দেখলাম সেখানকার অবস্থা বই-এ বা
পড়েছিলাম তার চেয়ে অনেক ভরাবহ। প্রমন্থানের নিপড়বর
ভারতীর নারীদের অবস্থা এতো হংসহ বে ভা বর্ণনা করা বার না।
নাটালে কুলি লাইনে বে নৈতিক অবনতির কুৎসিত চিত্র দেখেছি
এখানেও তার ব্যতিক্রম দেই। বরং ফিজির ভারতীর প্রমিকদের মধ্যে
নৈতিক কলকে গাঢ়তর। এমনি প্রমচ্জির নিগড়ে আবদ্ধ হয়ে
হাজার হাজার দরিজ ভারতীর সারা পৃথিবীর বিভিন্ন উপনিবেশে
ছাজ্যে পড়েছে,—ফিজি, মরিশাস, নাটাল ও বুটিশ গায়নার অভিবাহিত
করছে বর্ণনাতীত হুংথের জীবন। তাছাড়া ভারতবর্ধ থেকে আড়কাটিরা
প্রতি বংসর বাঁকে থাকে ভারতীয় প্রমিককে দ্র-দ্রান্তে থেঁটিয়ে
নিরে যাছে। আমি দুঢ়নিশ্চয় হলাম যে এমনি শ্রমিক-সংগ্রহকে
পুরোপুরি রদ,করা ছাড়া অক্ত কোনো মধ্য পদ্বা নেই।

উপনিবেশের কৃষি-মালিকদের দৃষ্টিভঙ্গী বে বদলাবে এ আশা করা বৃথা। কিন্তু ভারতবর্ধের জনমত এই পদ্ধতির বিক্লছে বিক্লুছ হয়ে উঠেছে। মহাত্মা গান্ধী ও পণ্ডিত মদনন্দেহন মালব্য এই চুক্তিদাসপ্রথার অবসানকে ভারতবাসীর প্রথান রাজনৈতিক লাবী বলে ঘোষণা করেছেন। ভারতবর্ধের সম্রান্ত মহিলার। তাঁদের সাগর পারের হঃথিনী ভগিনীদের বেদনাকে আপন হাদদের প্রছণ্ করেছেন। ফিন্তি দ্বীপপুঞ্জ থেকে আমার প্রভাক অভিজ্ঞতার বিষরণ বড়গাট লর্ড হার্ডিজের কাছে পেশ'করা হোলো। তিনি এই বিষরণীর বাধার্ধ্য বীকার করলেন, কলে চুক্তিদাসপ্রথার অবসান ঘনিরে এল।

ফিজি থেকে ভাষতে প্রত্যাবর্ত্তন করে আমরা বে বিপোট বিভাষ

ভার অব্যবহিত পরেই চুক্তিদাসপ্রথা বদ আইন পাশ হোলো।

ক্রিল্লর বিভিন্ন বাগিচার ছুর্নীতি ও জনাচারের যে সব তথ্য আমরা
সংগ্রহ করে এনেছিলাম তা এমনি প্রত্যক্ষ ও স্থাদরম্পানী বে, ভাইসরর
স.জ সঙ্গে ইংলণ্ডের ভারত সচিবের সঙ্গে বোগাবোগ স্থাপনে কিছুমাত্র
বিলম্ব করলেন না। চুক্তিদাসপ্রথা বদ করার আইন বাতে বতো

ক্রিল্ল করলেন না। চুক্তিদাসপ্রথা বদ করার আইন বাতে বতো

ক্রিল্ল বন্ধত তার ক্রেল্ড তিনি তৎপর হরে উঠলেন। কিছ
শেব পর্যন্ত ঔপনিবেশিক দপ্তরের অফুরোধে এই আইনে এমন
একটি বিপত্তিকর বাক্য জুড়ে দেওয়া হোলো বাতে আমাদের অনেক
আশায় বাদ সাধল। আইনের একটি ধারার বলা হোলো বে
এই প্রথার প্রয়োজনীয় বদবদলের জ্বন্তে কিছু বিলম্ব ঘটবে।

চ্জিদাসপ্রথা রদ হোলো, এই জানন্দের উচ্চাদে আমুরা ঐ একটি ধারা সম্বন্ধ প্রথমে অবহিত হইনি। কিন্তু এই ধারার কলে সমস্ত ব্যাপারটা এমনি জটিল হয়ে উঠল বে এক বংসর বেতে না বেতে আবার নৃতন করে কাজ শুরু করতে হোলো। আমরা অনুসন্ধান করে জানলাম বে এ বিলম্বকর ধারার মবোগ নিয়ে লগুনে এক চ্জি সম্পাদিত হরেছে বাতে আবাে পাঁচ বছর ধরে প্রমিক সংগ্রহ করা চলবে এবং এই পাঁচ বছরের মধ্যে এক নৃতন প্রথার শ্রমচ্জির দাসপ্রথাকে এক নৃতন রপে চালু করা হবে। এই প্রথার কলকে সর্বজনস্বীকৃত হরেছে, এখন নৃতন চাকুরীর মাধ্যমে এই প্রথাকেই প্নজীবন দান করা হবে এ করানা করাও অসম্ভব। অতথব আবার নৃতন করে শুকু হোলো আমাদের সংগ্রাম।

বিজি বীপে প্রথম বাত্রা আমার এক অবিশ্বরণীর আনক্ষ-অভিযান।
আহার তাগ্যবিধাতা প্রেভু আমাকে সেথানে আহ্বান করে নিরে
গিরেছিলেন, এই নির্দেশের জন্তে তাঁর প্রতি আমার অনস্ত বক্তবাদ।
আমার সমস্ত জীবনের প্রেচ্চ অভিজ্ঞতা আমি লাভ করেছিলাম এই
কিলি বীপে। ভিন্ন দেশে ভিন্ন মুগে লভাকী ও যোজন পারের
দূর-প্রান্তে পৃষ্টবিশ্বাসী, নরনারীর মত পৃষীর সেবার আদর্শে কী
বর্গীর আবেগে বারে বারে অন্প্রাণিত হয় তার প্রেচ্চ নিদর্শন আমি
এখানে লক্ষ্য করেছিলাম, লক্ষ্য করে বক্ত হয়েছিল আমার জীবন।

সেধানে একজন মিশনারী সাধুর সঙ্গে আমি পরিচিত হরেছিলাম।
তাঁর নাম মিটার লেলীন। ফিজিবাসীদের তিনি সমস্ত মন
আপ দিরে ভালোবাসতেন। ফিজিবাসী খৃষ্টানী তরুণদের এক
'হোলি কমিউনিয়ন' উৎসবে তিনি আমাকে আমন্ত্রণ করেন। এই
তক্ষণ খৃষ্টানদের মধ্যে অনেকে করেক দিনের মধ্যেই সলোমন ও
নিউ হেরাইভেস দ্বীপপুঞ্জের বিভিন্ন দ্বীপে যাত্রা করবেন, গ্রাথানকার
আমত্র অধিবাসীদের মধ্যে প্রচার করবেন খৃষ্টার আদর্শ। খুষ্টের
অধম শিব্যরা বেমন একত্র ভোজনের জমুঠানের মধ্য দিয়ে
দ্বীর প্রেরণাকে আপন আপন অন্তরে ভবে নিরেছিলেন,
ভেমনি অন্থ্রেরণাকে আমরাও বরণ করে নিলাম এই ধর্মান্থগান।
একজন ফিজিরান খুটান একটি ধর্মগাখা রচনা করেছিলেন।
দ্বানীর যাত্রসঙ্গাতের সঙ্গে সেই গানটি স্ববেত কণ্ঠে গাওরা হোলো।
সানের প্রধান কলিটি নিয়রপা:

"অদ্ব সমুজপার থেকে কার কঠ ভেসে ভেসে আসে ? কে ডাকে নিরস্তর ? সে ভাক বাজে আমার কানে,
সে ভাক বাজে তোমার প্রাণে,—

এসো, এসো সমুদ্র পার হয়ে এসো,—
ভোমার হাত মিলাও আমার হাতে।

ফিজিবাসী খৃষ্টভক্তদের কঠে এই সঙ্গীতের অনির্বচনীয় কারুণ্য ভাষার প্রকাশ করা বার না। ফিজিবাসী কতো খৃষ্টান প্রচারক সদেশ ছেড়ে সমুত্রপারের দূর দ্বীপে সেছে, এই অভিষাত্রীদের মধ্যে কতোজন প্রাণ বিসর্জন করেছে হুর্গম প্রবাসে। তাদের শ্বতি নিযুপ্ত রয়েছে এই সঙ্গীতের মধ্যে। এই সঙ্গীতের বেদনা বে সব স্থানীর খুঠান অধিবাসীদের কঠে আজ ধ্বনিত হচ্ছে, তাদেরই নিকটতম পূর্বপূর্ক্ষ ছিল অসভ্য বর্বর। আজ তারা বর্বরতার বিরুদ্ধে খৃষ্টীয় অভিবানে জীবনোৎসর্গ করতে চলেছে। তাদের কানে তাদের প্রাণে দ্ব-দ্বান্তের ডাক এসে পৌছেছে। বে ডাক মামুবের প্রতি মামুবের ডাক,—সাহায্য করো, সেবা করের, হাতে হাত মিলাও।

ধর্মানুষ্ঠান সমাপ্ত হোলো। আমি এক দোভাষীর সাহায্য নিয়ে এই সব তরুণ ফিজিয়ান খুষ্টান প্রচারকদের প্রতি আমার পরিপূর্ণ অস্তরের প্রেমণ্ড শুভকামনা জ্ঞাপন করলাম। বিদেশী তরুণ বন্ধুরা আমার কাছে যিরে এল, হাতের মুঠির মধ্যে ভবে নিল আমার হাত।

এমনি আশ্চর্য মুহুর্তে আমার জীবনে আরো এসেছি। এমনি মুহুর্তে প্রতিবার এই কথাই আমার মনে বেজেছে গুষ্টের সর্বমানবিক প্রেমের প্রদার আলোক আঘাতে ধর্মসম্প্রদারের মাতুবে-গড়া সমস্ত বাধা নিষেধের যবনিকা দুর হয়ে যায়। আমি ধখন নিজে হাই চার্চের অন্তর্গত ছিলাম তথন আমি মিজেও বিশাস ক্রতাম বে অ্যাংলিকান পুষ্টানগোষ্ঠী ও অক্সাক্ত পুষ্টান সম্প্রদায়ের মধ্যে বে বিভেদ তা ঈশবেরই বিধান ৷ কিন্তু এই বিশাস বে অসভ্য তার কতে। সহজ প্রমাণ খুটই দিয়ে গিয়েছেন। ববিবার দিন বে 'সাবাথের' দিন, এও তে। ঈ**ৰ**রেরই বিধান। কিছ খুট্টই আবার সমস্ত বিধান থেকে মানব-মনকে গেছেন, যখন তিনি খোষণা করেছেন যে মানুষই রবিবারের বিশ্রামকে সৃষ্টি করেছে, রবিবার মান্তথকে সৃষ্টি করেনি,—মঙ্গলকর্ম ষদি করতে হয় তার জলে রবিবারই বা কি, আর অক্সবারই বা কি! একজন ইংরেজ বিশপ একদা বলেছিলেন, সমস্ত বিধানের উপরে মঙ্গল বিধান। খুষ্টের বাণীই তিনি প্রতিধ্বনিত করেছিলেন।

আমি আমার সমস্ত মন প্রাণ দিরে বিশাস করি যে ঈশবের প্রেম আরে। ব্যাপক আরে। উদার। বীশুগৃষ্টের বাণী যদি সত্য হয়, এবং ঈশব যদি প্রকৃত আমাদের সকলের শিতা হন, তাহলে জাতি ধর্ম বর্ণ সম্প্রদার নির্বিশেষে পৃথিবীর প্রতিটি মানুষ আমার ভাই, কেন না প্রতিটি মানুষ আমার পারমপিতারই সন্তান। গৃইধর্মবিলম্বীরূপে আমাদের কর্তব্য সর্ব দেশের সর্ব জাতির মানবকে আপন বলে গ্রহণ করা, ঈশবের অথশু প্রেমের শক্তিতে আপন অন্তরের প্রেমকে সর্বমানবের মধ্যে পরিব্যাপ্ত করা। বীশুগৃষ্ট আমাদের সংখাবের বন্ধনে বাবেন নি। বিশাসের উন্মৃক্ত আকাশে তিনি আমাদের মহামৃত্তির আশীবাদে অভিবিক্ত করেছেন। জাতি ধর্মের ভেলাভেল বদি বর্জন করে সারা বিশ্বমানবকে আলিক্সন করতে পারি, তবেই প্রভুর সেই মৃত্তির আশীর্বাহকে অন্তরে উপ্সাক্তর আমরা লাভ করব। খুরান নামে

অভিহিত নর এমন অনেক মামুবের স্থাদরে পৃষ্টীর আদর্শের কর্ত্তগারার সক্রে আমরা পরিচিত হব। ভারপর শেষ বিচারের দিন বগন আসবে সেমিন লক্ষ্য করব বে সেই সব অথুষ্ঠানরাই ঈশর-চরণে স্থান পেরেছে, বারা মুখে খৃষ্টের নাম নের অখচ জীবনে খৃষ্ট-আদর্শকে সম্মান দেয়নি, ঈশ্বর তাদের ঠিকট চিনেছেন, আপন পাদপ্রাস্ত থেকে অনেক দরে সরিয়ে রেখেছেন তাদের।

ভারতীয় শ্রমিকদের চুক্তিদাসপ্রধার সম্পূর্ণ অবসানের জন্তে শেষ जात्माम्तान काहिनी मरक्ला और পরিচ্ছেদের শে ব বিবৃত করা যাক। পূর্বেই ব লছি যে একই কু-প্রথাকে নৃতন নামের সজ্জা পরিয়ে পুনকৃষ্ণীবিত করার প্রচেষ্টা আমরা লক্ষ্য করেছিলাম। ভারতীয় নেতারা আমাকে অনুরোধ করলেন ফিজি দ্বীপে যেতে। সেথানকার প্রকৃত অবস্থা সম্পর্কে ব্যাপকতর ভাবে আমাকে তথ্য সংগ্রহ করে

আনতে হবে। যে অভিশাপ অবর্ণনীয় নৈতিক কলংকের সৃষ্টি করেছে থবং যার ফলে ভারত ও বৃটেনের মধ্যে প্রচুব ভিক্ততার সৃষ্টি হয়েছে সেই অভিশাপ ধেন আবার নৃতন করে মাথা তুলতে না পারে, তার

দায়িত্ব নিয়ে আমি আবার সমুদ্রযাত্রা করলাম।

প্রথমবার আমার সঙ্গে উইলি পিয়ার্সন ছিল। এই বিতীয়বারের ফিজিযাত্রায় আমি সম্পূর্ণ একা। এবার প্রায় এক বংদর আমি দক্ষিণ প্রশাস্ত মহাদাগর অঞ্জে ছিলাম। এইবারে প্রায়ই শারীরিক অনুস্থতার কট্ট যেমন ভোগ করি তেমনি ভোগ করি স্থানীর স্বার্থ-শত্রুতার অধিকতর আঘাত। প্রথমবার ফিছিতে গিন্তে যে আনন্দ আমি পেয়েছিলাম তার কণ'মাত্রও এবার পাইনি। নি:সঙ্গতা আৰু অবসাদে সৰ্বদা আমার অন্তর ভবে ছিন্স। তবে প্রথমবারের চেয়ে এবার আমি কাজ করতে পেরেছিলাম আন হ বেৰী। এবার আমি যা তথ্য সংগ্রহ করে এনেছিলাম তা বেমনই বাপক ও যেমনই গভীৰ যে এই প্ৰমদাসপ্ৰথাৰ ৰূপক্ষে কোনো যুক্তিৰ আর স্থান ছিল না।

ফিজি দীপপুঞ্জে আমার এই দিতীয় যাত্রার শুভুমুতি আছে বৈ কি। ফিঞ্জি ভারতীর প্রমিক নারীদের পক্ষ নিয়ে অষ্টেলিয়ার নারীসমাজ ফভাবে গাঁড়িয়েছিলেন তা ভূলবার নয়। আমি সেবার অষ্ট্রেলিয়ার বিভিন্ন শহরে গিয়ে বিভিন্ন মহিলা-সভার প্রমচ্ক্তিবন্ধ ভারতীয় नातीलत प्रःथ लिखात कथा छनिरत्छिनाम.—कमन मिथा। इनहा ठुतीत স্বোগে ভাদের ভূলিয়ে বিদেশে নিয়ে যাওয়া হয় ও দেখানকার वाशिष्ठांत्र की बीज्यम चुना जीवन-चानात्म खात्मव वाधा कवा हत्र। আমি ওনিবেছিলাম কী জ্বান্য হুনীতির পাকে এই ভাগ্যহারা শ্ৰমিকনাৰীদেৰ জীবন নিমজ্জিত, তাৰ ফলে কতো খুনোখুনি, কতো শাত্মহত্যা, সুস্ক ভদ্র সংসারষাত্রার কী ভরংকর পরিণাম !

আমার কথা প্রথম প্রথম মষ্ট্রেলিয়াবাদিনীরা বিশ্বাসই করেন নি। তাঁদের নিজ'র প্রতিনিধি হিসাবে স্বাধীনভাবে অবস্থা পর্যবেক্ষণের জন্তে তাঁরা মিদেদ্ গার্ন হাম নামী এক মহিলাকে হিজিতে প্রেরণ করলেন। মিসেশু গার্ম হাম যে রিপোর্ট আনলেন ভার চিত্র আমার বর্ণনার চেয়ে অনেক ভয়াবহ ৷ অষ্ট্রেলিয়ার নারীসমাজ এই রিপোর্ট পেরে তৎক্ষণাং সচেত্তন হয়ে উঠলেন, সম্বরেও দাবী করলেন বে এমনিভাবে বিদেশী প্রমিক সংগ্রহ অবিদৰে বন্ধ কৰে বিজে হবে। মিদু প্ৰীষ্ট ও মিদু ডিক্সন নামে ছুই অট্টেলিয়ান মহিলা তৎক্ষণাৎ ফিক্সি যাত্রা করলেন। এই ছই মহিলা থিয়োজকিক্যাল সোনাইটির সম্প্রা ছিলেন। ভারা ফিজিতে গিয়ে ভারতীয় শ্রমিক নারীদের সঙ্গে বসবাস করে ভাদের সেবায় নিজেদের উংস্র্র করলেন। ভারতবর্ষে শ্রীষতী ৰুৱৰী পেটিটেৰ নেতৃত্বে একদল মহিলা বড়লাটের দলে সাক্ষাৎ করলেন এবং প্রতিশ্রতি আদার করলেন বে, অবিলবে প্রমচ্জিপ্রথা রদ করবার জন্মে যা কিছু.করা দরকার তা করা হবে।

শেষ পর্যন্ত ১৯২০ সালের ১লা জাতুয়ারী তারিখে এই স্থানিত প্রথার সম্পূর্ণ উচ্ছেদ হোলো। ভারতীয় পুরুষ ও নারী যারা সেদিন পর্যন্ত শ্রমচুক্তিতে আবদ্ধ ছিল সেদিন থেকে পূর্ণ বাধীনতা পেল তারা। সমস্ত উপনিবেশে এই দিনটি মুক্তিদিবস নামে শ্বরণীর। ভারতবর্ষের ইতিহাসেও এই দিনটির স্মান স্থানন্দ-ভাতি।

সম্প্রতি ফিজি-প্রত্যাগত কয়েকজনের সঙ্গে আমার লগুনে সাক্ষাং হয়েছে। তাঁদের কথা শুনে আমার স্পষ্ট ধারণা হয়েছে বে. সত্যই অল্ল সময়ের মধ্যে ফিজিতে অনেক সুফল ফলেছে। 吮 🛊 অর্থনৈতিক ক্ষেত্রে নয়, নৈতি হ ও শিক্ষামূলক কল্যাণক্ষেত্রেও। শ্রমিকদের স্বাধীনতার প্রভাক্ষ ফলস্বরূপ পুরাতন কুলি লাইনের তুর্নীভিম্লক জীবনধাত্রার অবদান হয়েছে, সামাজিক জীবনে স্মৃত্তর ও আনন্দকর পরিবেশের স্মষ্ট হয়েছে, নব গৌরবে প্রভিত্তিত হয়েছে নবস্বাস্থ্যসমৃদ্ধ ভারতীয় কমীর নৃতন সংসার।

ফিজি বীপপুঞ্জে আমার এই শেব বাত্রার আমার প্রধান পাথের ছিল ববীক্রনাথ ঠাকুবের প্রীতি ও প্রেরণা। নি:সঙ্গতার ছারার, শক্তভার পংকে ও হভাশার অন্ধকারে বধনই আমার মন ডুবে গেছে, তথনই আমার মানস চক্ষে আমি শান্তিনিকেতনের প্রশান্ত পরিবেশকে কলনা করেছি, বেখানে প্রতিদিন প্রত্যুব-মাভার বছ পূর্ব থেকে রবীক্রনাথ খানমগ্ন জনভার উপবেশন করে আছেন। আমার উত্যক্ত অবসর মন এই স্থৃতিচিত্র থেকে অশেব সাৰুনা লাভ করত। রবীন্দ্রনাথের পত্রাবদী থেকেও আমি গভীর অন্তুপ্রেরণা লাভ করভাম। সমুদ্রপারের দেই স্থান দ্বীপে তাঁর একটি চিঠি বেদিন আসত, সেই দিনটিকে জীবনের আশীর্বাদরূপে আমি গ্রহণ করতাম।

ঈশবের পরম অনুগ্রহে এই পৃথিবীর ক্ষণস্থায়ী জীবনে এমনি ভাবে মানুষের কাছ থেকে বে প্রেম বে স্নেহ আমি লাভ করেছি, তুলনাতীত তার এখর্ষ। আমি এ-ও জানি, মানুষের ভালোবাসাকে অভিক্রম করে মানুষের ভালোবাসাকে আপন মঙ্গল ক্রোড়ে স্থান দিরে আমার সমগ্র জীবনকে খিবে রয়েছে ঈশ্বরের ভালোবাসা, আমার পরমপিতার প্রম প্রেম। সেই প্রেম তার নিত্য অঙ্গুলি-নির্দেশে আমাকে সেই চিবস্তন অনস্ত সভ্যের পথে পরিচালিত করে চলেছে। এই সভোর আলোকে সমগ্র স্থাষ্ট উদ্ভাসিত, সর্ব অন্ধকারের নিবৃদ্ধি। শাস্তম্ শিবম অবৈতম্—এই মল্লোচ্চারণের মধ্য দিয়ে কবি রবীজনাথও এই অনম্ভ অথণ্ড সভ্যের পথে আমাকে আকর্ষিত করেছেন। আমার মরদৃষ্টি এই পরম সভাকে বীতপৃত্তির পরমন্ধপের মধ্যে দর্শন करत थन स्टब्स् ।

> क्रमणः। অম্বাদ---নিৰ্মলচন্দ্ৰ গলোপাধ্যায়



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ ·]

नीतपत्रक्षन माम छल

ক্রি লালকাকার একটু পরিচর দেওরা দরকার।
মি: লালকাকার দেকেই থাকেন—ঠিক সেলে নর, সেলেরই
অন্তর্গত সন্নিছিত পল্লী প্রকলীনে, আমাদের বাড়া থেকে মাইল
থানেক দ্বে। নবদেনডেন রোজে ত আমার সার্ক্রারী, নরদেনডেন
রোজ সোলা দক্ষিক্র্যথা গিরে মিশেছে আর একটি বড় রাজঃর—
নাম মার্সলাও রোড। এই মার্সলাও রোডটিও কোণাকৃপি
ভাবে চলে গিরেছে উত্তর-দক্ষিণে এবং বেখানে নরদেনডেন গোড
এসে মিশেছে তারই কাছাকাছি প্রমুখো চলে গিরেছে আমাদের
ওক্ত হল লেন। এবং এই মার্সলাও রোডে উত্তরমূখো প্রার্থ
ছাইলথানেক গেলেই মি: লালকাকার বাড়া পাওরা বার। এ
প্রাটির নামই ক্রকনীন।

মার্গ লাও বোডের বাড়ীখানি মি: লালকাকার নিজেরই। বেশ ভাল বাড়ী। মার্গ লাও বোডের এ দিকটার অনেক দোকান পদার আছে, তাই এখানকার বাড়ীগুলি কোনটাই বাগানখেরা নম, রাজার ফুটপাথের উপর খেকেই উঠেছে। মি: লালকাকারও ভাই। শুনেছিলাম—মি: লালকাকার ভাল ব্যবসা আছে এলেশে, এবং ভার বাড়ীর একতলারই তাঁর নিজর বেশ বড় লোকান—হরেক রকম জিনিবের—নাম গ্রেস গ্রেরন। বার নামে এই দোকানটি, অর্থাৎ গ্রেস, মি: লালকাকারই জ্বী—এদেশী মহিলা। এই মহিলাটিকে অনেকবার দেখেছি—ক্ষম্মরী ঠিক বলা চলে না, ভবে কুত্রী, লে বিবরে কোনও সন্দেহ নাই। কথায়- বার্ডার, বরণে বারণে একটা স্বাভাবিক মাধুর্ব্য স্বসম্মরই চোখে পড়ে। ছোটবাট মাধুব্রটি, হিমছাম গড়ন, মুখখানিও মন্দ নয়—সব সম্মই বেন একটি হাসি লাগান আছে মুখে। বর্ষ বছর গ্রে ত্রিশ-প্রতিল হবে।

দি: লালকাকার বরদ কিছু বেনী—দেখলে পঞ্চালের উপর বলে মনে হর। লখা-চঞ্জা চেহারা, মাধার মাঞ্ধানটিতে পরিছার টাক এবং মাধার ছ'পালের চুলে পাক ধরেছে। অসাধারণ পঞ্জীর প্রকৃতির মান্ত্র—কথা প্রায় বলেনই না তবে তাঁর সহদর্ভার প্রিচর সহক্ষেই পাওরা যায়।

এই লালকাকা-দম্পতির সঙ্গে আমাদের আলাপ হরেছিল— ব্যালক্ষ্ পালক্ ক্লাবে। ব্যবিন্তত গালক ক্লাবটি, বেধানে নরদেনডেন রোড মার্স ল্যাণ্ড রোডে মিশেছে, সেখান থেকে
মার্স ল্যাণ্ড রোড ধরে আরও মাইল তুই দক্ষিণে সিরে মার্ক্স নদীর
ধারে। ধৃ-ধৃ করছে সবুজ ভবঙ্গারিত মাঠের মধ্যে ঠিক নদীর
কিনারারই ক্লাবের ঘরথানি—বেষন এদেশে হর, চারিদিকে বড় বড়
জানালার সার্সি আঁটা একটা বড় চারচালা বাংলো।

ভিতরে কোনও অষ্ঠানেরই ক্রাট নাই—রারাবারা থাওবাদাওবার ব্যবস্থা ত আছেই, তাছাড়া নদীর গবের বড় হলটি দাবী
দামী কেটি সোফা ও কার্পেট দিরে সাজান এবং চার কোলে চারটি
ছোট ভাস থেলার টেবিল ও তৎসংলগ্ন চেরার। এই হলটিরই
একপাশে একটি কাঠের পর্দার আড়ালে থাওবার টেবিল ও
চেরারগুলি সাজান—একেবারে বারোজন বসে থাওবার টেবিল ও
চেরারগুলি সাজান—একেবারে বারোজন বসে থাওবার বার।
এ ছাড়া হলটির সালগ্ন পাশে আনেক ছোট ছোট ঘর আছে
পুক্রবদের কাপড় ছাড়ার, মেরেদের কাপড় ছাড়ার, গলক থেলার
জিনিবপত্র রাথার ইত্যাদি। নদীটির অপর দিকে বাংলোটির উভরে
ঘনসবুজ গলফ থেলার মাঠ—সরভল মোটেই নয়, নানাদিকে টেউ
থেলানো। আমাদের দেশে নদী বলতে বা বোঝ, এ নদীটি মোটেই
সেরকম নয়—ছোট একটি ঝোপঝাড়ের মধ্য দিরে চলে সিরেছে।
বোধ হয় লাফিরে পার হওরা বার। তার উপরে, ক্লাব্যরের কাছেই
ছোট একটি সেতৃও আছে।

বাংলোটির সংলয় পুবের দিক্ষে আর একটি হোট বাংলো
আছে—মি: ও মিসেস পেল থাকেন একটি বছর পঁচিশেকের
অবিবাহিত মেরে নিরে। বৃদ্ধ মি: পেল ও মিসেস পেলের উপরেই
এই ক্লাবটি বথায়থ ভাবে চালাবার ভার দেওরা হরেছে। প্রবোজন
মত রালাবালার ব্যবস্থা ওঁরাই করেন—তথু সকালে টেলিকোম
করে বলে দিতে হয় ক'লন বাবে বা ক'লন থাবে। বৃদ্ধা মিসেস
পেলের পরীর তত্ত ভাল ছিল না, তিনি বেশীর ভাগই এক কোপে
একটা চেরারে চুপ করে বসে কাছ কি প্রবোজন সক্ষ্য করতেন।
কিছ মি: পেল এবং বিশেষ করে মেরেটি সর্বাল বুলে বেড়াভসকলের প্রবোজন অন্থবালী পরিবেশন করার লভ। ক্লাবে বার্বা
অর্থাং মদ থাওরারও ব্যবস্থা ছিল—ভারও চাহিদা মতন এরাই
সরবলাহ করতেন।

বুলা! ভোমাকে আগেই বলেছি, ক্লাবে বাওয়ার আমার থ্য নোঁক ছিল। দিনটি পরিষার থাকলে প্রায় প্রত্যেক রবিবারই সনালবেলা ব্রেকফার থেয়ে আমি ও মার্লিন গাড়ী হাঁকিয়ে চলে যেতাম কাবে। সমস্ত দিন কাটিয়ে সন্ধ্যাবেলা আসতাম ফিরে—লাঞ্চ ও বিকেলের চা'সেইথানেই থেয়ে নিয়ে। আমি অবশু দিনের বেশীর ভাগট কাটিয়ে দিতাম গলফ থেলে। মার্লিনও যে গলফ একেবারে পেলত না এমন নয়, তবে বেশী থেসতে পারত না। বাকী সময়টা কাবে গল্লছৰ করে কিবা তাস থেলে কাটিয়ে দিত।

এই ক্লাবেই লালকাকাদের সঙ্গে আমাদের পরিচয় হয় এবং ক্রমে ওদের সঙ্গে বেশ ভাব হয়ে গেল আমাদের। তার প্রধান কারণ বাধে হয়—আমি ও লালকাকা ত্'জনেই ছিলাম ভারতবাসী —অন্ত কোনও ভারতবাসী ক্লাবের সভ্য ছিল না। লালকাকা ছিল ভাবতের বংশ অঞ্চলের লোক—পার্সী। কিন্তু বিশেষভাবে ভাবটা জ্মল মালিনের সঙ্গে গ্রেমের। তারও কারণ—যতন্র আমার মনে হয়েছে—ত্জনেরই স্বামী ভারতবাসী এবং সেই দিক দিয়ে অক্ত সব মেয়েদের সঙ্গে একটা স্বাভন্ন ছিল ত্জনের। যদিও এইখানেই বলে বাখি—ক্লাবের সভ্যনের কাছ থেকে কোনও দিন এই স্বাভন্ন ক্রমণ আভাবে ইঙ্গিতে পার্যন্ত ব্যবহারের কোনও ভারতম্য লক্ষ্য করিনি।

লালকাকার সঙ্গে আমার ভাবটা একটা সহাদয়তার বন্ধনে নিশ্চঃই দুচ ছিল কিন্তু আমালের মধ্যে নেলামেশা যে খুব বেশী ছিল, এনন কথা বলতে পারি না। তার কারণ, লালকাকা আমান চেয়ে বয়সে জনেক বড় ছিলেন এবং তাঁর স্বভাবও ছিল একটু অঞ্চল্য—ঠিক আমার সঙ্গে মেলেনি। আগেই বলেছি—লোকটি কথাবাতী খুবই কন বলতেন এবং কাবে এসে নদের প্লাস নিয়ে এক কোণে বসে ঘটার পব ঘটা কাটিয়ে দিতেন—কোনও খেলাবুলার মধ্যে খেছেন না। সকলের সঙ্গেই দেখা হলে, সৌতক্তের অভিবাদন জানাতে জটি করতেন না কিন্তু এ প্রান্ত । তার পরে চুপ হয়ে বেতেন—নিজের স্কার মধ্য সম্প্রক হয়ে।

স্বাটির অর্থাৎ থেকের চরিত্র ছিল ঠিক বিপবীত। অসাধারণ প্রাণবন্ত মেরে ছিল সে—সেকথা আছও দোব করে বলতে পারি। সকলের সঙ্গে মেলামেশার প্রাণ দিত ঢেলে এবং বিশেষ করে মালিনের সঙ্গে ঘটার পর ঘটা গল্প করতে তার যেন কাতি ছিল না। প্রাণের উৎসাহে গলক থেলা শিথত এবং তাগ গেলার টেবিলেও তার উৎসাহের ঘটা ছিল না। প্রথম প্রথম লক্ষ্য করতাম—স্বামীকে সব জিনিষেব মধ্যে টেনে নেওয়ার চেঠা করেছে কিন্তু শেষ প্রান্তে মেন হাল ছেড়ে দিয়েছিল। স্বামীরও ভাবটা ছিল—আমাকে নিবিবিলি চুপচাপ থাকতে দাও, তুমি জীবনটাকে বেমন খুনী উপভোগ কর, আমার মাপতি নেই।

এ নিয়ে একদিন মার্লিনের সঙ্গে আমার কথাও হয়েছিল—মনে ভাছে। কথার কথার মার্লিন বলেছিল—যাই পল, প্রেস মেয়ে থ্ব

বললাম, আমি তা ত অস্বীকার করছি না ? কিন্তু লালকাকাও লোক থারাপ নয়।

মার্লিন বলল, ভা হতে পারে, কিন্তু প্রেমের প্রতি একটু উদাসীন। ভগালাম, ভা কেন বলছ—লালকাকার স্বভাবই এ রকম।
বলল, স্বভাব হাই হোক, গ্রেদের সঙ্গে জীবনে স্বরুমিলিরে
চলে না—চলতে চায়ও না।

গুণাপাম, গ্ৰেদ কিছু বলেছে নাকি তোমাকে ?

বলল, না না। গ্রেদ দেরকান মেয়ে নয়। তবে বোঝাত কঠিন নয়।

নললাম, বাইবে থেকে দেখলে ভূমি যাদ বলছ তাই মনে হয় বটে, কিছ হয়ত ভোমার ভূল। অন্তবের নিবিছে হয়ত ছজনেই একই স্থারে বাধা।

মাথা নেড়ে মার্লিন বলল, না না। গ্রেসের ওদিক দিয়ে একটা গভীর হঃশ আছে, কথায়বান্তীয় সেটুকু আমার লক্ষ্য এড়ায় নি।

একটু চুপ করে থেকে বললাম, দেখ, একটা জ্বিনিস ভূলনা— ওদের বয়সের অনেক পার্থক্য। লালকাকা থোবনের সীমানা ছাড়িয়েছে, তাই শরীর এবং মনের দিক দিয়ে সে চায় বিশ্রাম। গ্রেসের এখন ভার থোবন—তাই সে চায় উপভোগ। একটু গরমিল ত সেদিক দিয়ে হবেই।

মার্লিন বলল, তা কেন? বরসের ওরকম পার্থক্য ত আরও অনেক স্বামি-স্ত্রীর মধ্যে আছে—কৈ তাদের ত ঠিক ওরকম হয়নি?

মনে মনে ভাবলাম—কি জানি, হয়ত ঐথানেই ভারতবর্ধের মনের সঙ্গে এদেশের মনের তফাং! একটু বরস হলেই, ভারতবর্ধের মন হয়ত এলিয়ে পড়ে, এদেশের ক্রত চলার ভালে ঠিক চলতে পারে না। মার্লিনকে কিন্তু সে কথাটি না বলে বললাম, হয়ত লালকাকার মনে ধোনও একটা নিবিড় হুঃথ আছে—ভাই সেনিজেকে ওবকম গুডিয়ে বাগে।

মালিনি বলল কিছে সেটা গ্রেসকে বলে প্রিছার করে নিলেই হয়। গ্রেসত অবুঝ নয়।

মৃত্ হেসে বললাম, হয়ত সেক্**থা গ্রেসকে ঠিক ব্লার নম।** মার্লিন একটু যেন গছীব হয়ে গেল। শুধু বলল, হবেও বা।

যাই হোক, ৰখন থেকে মাস আষ্ট্রেক পরের কথা। হঠাৎ একদিন শুনলাম—থেস লালকাকাকে ছেড়ে পালিয়ে গেছে। পালিয়ে গেছে—লালকাকারই দোকানের একটি যুবক কর্মচারী—নাম নাইট—তার সঙ্গে। শুধু তাই নয়, একটি মাত্র সন্তান বছর আট-নয়ের একটি বালক—তাকেও রেখে গেছে। শুনে আমি ও মার্লিন শুস্তিত হরে গিয়েছিলাম—আজও মনে আছে। মার্লিন শুধু একবার বলেছিল, গ্রেসকে কি ভুকট বুঝেছিলাম—ভাল মেয়ে বলেই ও-ভানুতাম।

পরের দিন সন্ধার পরে লালকাকা এলেন আমাদের বাড়ীতে। আমরা ডিনার থেয়ে ব্সবার ঘরে তাঁর জন্মেই অপেকা করছিলাম।

গোস চলে যাওয়ার পর প্রায় আট মাস লালকাকাকে দেখিনি। লালকাকা যথন এলেন তাঁবে চেহারা দেখে সভাই অবাক হলাম। এ কি চেহারা হয়েছে মি: লালকাকার। মাথার ছপাশের চুলগুলি একেবারে সাদা হরে গেছে এই ক'মাসের মধ্যেই। মুখের ভাঙনে বার্দ্ধিকার চিহ্ন সুম্পাই হরে উঠেছে। একটু যেন কুঁজোও হয়ে গেছেন।

সাদর অভ্যৰ্থনায় লালকাকাকে বসালাম। জানি-লালকাকা

মদ থেতে অত্যস্ত ভালবাসেন। তাই এক পেগ ছইন্ধি সোভা মিশিরে দিলাম জাঁর সামনে। আমিও একটা শেরী নিরে বসলাম।

বুলা! এইখানেই বলে রাখি—আমাদের বাড়ীতে এসবের কিছু কিছু ব্যবস্থা ছিল। অবাক হয়োনা,—এদেশে ভন্তলোক মাত্রেরই বাড়ীতে সুরাপানের বন্দোবস্ত থাকে—নিজেরা না থেলেও অতিথি-অভ্যাগতদের অভ্যর্থনীয়ে, জন্ম রাখতেই হয়। আমি অবশু নিয়মিত তাবে কোনও দিনই স্থরাপান কৃরিনি, তবে ঠাণ্ডার দেশে মাবে মাবে একটু খেতেই হয়, এবং বখনই থেয়েছি—ভইন্ধি আমার কোনদিনই ভাল লাগেনি; হয় শেরী না হয় পেটি এইরকন একটা কিছু। মার্লিন সুরাপান একেবারেই পছন্দ করত না।

আমি, লালকাকা— ছজনে বদেছি ঘরে। নার্গিন একপাশে গাড়িয়ে লালকাকার দিকে চেয়ে ভগাল, বব্ ভাল আছে ভ ?

বব্ লালকাকার ছেলের ডাক-নাম।

বঙ্গলেন, হাা। ধন্ধবাদ। তাকে ত বোডিং-স্কুলে দিয়েছি— ভালই আছে দেখানে।

মালিনি ৰলল, আপনায়া বদে কথাবার্তা বলুন। আনায় যদি মাপ করেন, আমি যাই, আমার একটু কাজ আছে।

লালকাকা বিষয় চোৰ হটি তৃলে মার্লিনের দিকে তাকালেন। বললেন, আপনি থাকবেন না ? আমার কথা আপনার সামনে বলতে পারলে আমি খুনীই হতাম।

মার্লিন বলল, বেশ যদি অনুমতি দেন, পাঁচ মিনিটের মধ্যে আমি আসছি।

বলে ঘর থেকে বেরিয়ে গেল। অতি অল্লফণের মধ্যেই মার্লিন ঘুরে এসে বসল আমাদের ছজনার থেকেই একটু দূরে।

লালকাকা এতক্ষণ কোনও কথাই বলেন নি। মাথা নীচু করে চুপ করে বসেছিলেন—মাঝে মাঝে সুবার গ্লাসে দিচ্ছিলেন চুমুক।

আমরা তৃজনেও চুপ করে বসে আছি—কি আর বলব। কিছুকণ পরে লালকাকা চোথ তুলে আমার দিকে চেরে গুণালেন, আপনারা যথন জেভন, কর্ণপ্রয়ালের দিকে বাচ্ছেন, ট্রকাতে বাবেন নিশ্চরই ?

বললাম, অবশু ! টকী না দেখলে ত ইংল্যাণ্ডের সমুদ্রতীর দেখাই হল না। যাওয়ার পথে টকীতে ছ'তিন দিন থেকে 'লু'তে গিয়ে বাস করব—এই ত ইচ্ছে।

একটু চুপ করে থেকে আবার বললেন, একটা কাব্দের ভার আপনাদের দিতে পারি কি ?

বললাম, বলুন ?

বললেন, টকীর পাশেই সমূদ্রের ধারে বেবাফে। ব বলে একটি গ্রাম আছে—টকী থেকে মাইল ত্ই-তিন দ্বে। সেইখানে এণ্টন্ লক্ষ বলে একটি বোর্ডিং-ছাউসে—

হঠাৎ চুপ করে গেলেন ৷ ভইস্কির গ্লাসে প্রকার এক চুমুক দিয়ে একটু পরে মাথা নাচু করে বললেন, এসটন লজে গ্রেস থাকে ?

আমি ও মার্লিন পরস্পরে চোথ চাওরাঢ়ায়ি করলাম।

আবার বললেন, গ্রেসকে টকী দিয়ে বাওয়ার সময়ে যদি কিছু টাকা দিয়ে বান।

পকেট থেকে একভাড়া নোট বার করে সামনে টেবিফোর উপর রাধকোন।

ৰললেন, হ'লো পাউও।

আমরা ত্জনেই অবাক হয়ে লালকাকার মুখের দিকে তাকালাম। কেউ কিছু বললাম না।

্থকটু পবে লালকাকাই বলে বেতে লাগলেন, গ্রেসের বড় হুর্দ্ধশা
——আমি থবর পৈয়েছি। শরীরও অস্কস্থ, টাকা-পয়সাও গতে
একেবারেই নেই—একলাই আছে।

বুঝলাম—বার সঙ্গে গিয়েছিল সেই লোকটি গ্রেসকে ফেলে পালিয়েছে।

ন্তধালাম, গ্রেস আপনাকে চিঠি লিথেছে বুঝি ?

তাড়াতাড়ি বললেন, না—না। সে বড় অভিমানী মেয়ে, মরে গেলেও আনাকে চিঠি লিখবে না। তবে আমি খবর পেয়েছি।

ইচ্ছা হল গুধাই—তাহলে কোথায় আছে, কি ভাবে আছে আপনি কানলেন কি করে, প্রাইভেট ডিটেক্টিভ লাগিয়েছিলেন নাকি ? কিছ সে কথা জিজ্ঞাসা করলাম না।

মার্শিন ওধাল, গ্রেদের নিজের হাতে ত অনেক টাকাকড়ি ছিল। লালকাকা বললেন, সে টাকা ঠিকই আছে। গ্রেস ত এক প্যুসাও নিয়ে যায়নি। এমন কি, তার চেক্বইপানাও রেখে গেছে।

একটু চূপ করে থেকে মার্লিন বলল, সত্যিই আপানি থ্ব উদার। না—না বলে একচুমূকে ভুইস্কির গ্লাসটি শেষ করলেন।

উঠে দাঁড়িয়ে বললাম, আপনাকে আর এক পেগ হুইদ্ধি দি ?

সে কথার কোনও উত্তর দিলেন না। আর এক পেগ হুইদ্ধি ও সোড়া দিলান মি: লগলকাকাকে। এক চুমুকে হুইদ্ধির থ্লাসের তিন ভাগের একভাগ থেরে নিয়ে হুঠাও যেন কথা বলার অমুপ্রেরণা এল। বললেন, মিসেদ চৌধুরী! আমাকে ভুল বুঝবেন না—মামি উদার একেবারেই নই। গ্রেদ যে আমাকে হুড়ে চলে গেছে—সে ত আমারই অপরাধ। গ্রেসের ষথাযথ মূল্য আমি তাকে দিতে পারিনি। একটু চুপ করে থেকে আবার বললেন, ভাল ভাকে আমি বাদি—থ্বই বাদি। কিছ সে ভালবাদা জানিয়ে নিবেদন করার শক্তি আমার ছিল না। তাই সে আমাকে ভুল বুঝল। অভিমান করে গেল চলে। সে ত তার অপরাধ নয়।

মার্লিন ভগাল, কিন্তু গ্রেস ত বোকা ছিল না ? সে কি সেটুকু বুঝতে পারেনি ?

মি: লালকাকা বললেন, ক্ষমা করবেন মিসেন চৌধুরী—মেরেদের ব্যোঝা না বোঝা নির্ভর করে প্রোণের অনুভ্তির উপরে, বৃদ্ধির বিচারের উপর 'নর। তার সেই অনুভ্তিতে যে কোনও সাড়া জাগাতে পারিনি আমি।

বল্লাম, তা আপনি ত ভাকে অনেক ট্রান্সাইজ্ দিয়েছিলেন তনেছিলাম—থুবঁই স্বাচ্ছন্দ্যে রেখেছিলেন তাকে—

ৰুত্ হেনে লাসকাকা বললেন, টাকাক্ছি পেলেই খুদী হওয়াৰ মেরের অন্ত জাতের—গ্রেদ ঠিক দে জাতের নয়।

থানিককণ সকলেই চুপচাপ। পরে মি: লালকাকা বললেন মিদেস চৌধুরী! বিখাস কলন—সে-ও আমাকে ভালবাসে। আমার বিখাস—আভও ভালবাসে। তাই ত চলে গেল। ভাল না বাসলে গ্রেসের মতন মেরে চলে বাবে কেন? আজ তার এই রক্ষ ভ্রবস্থা—আমি তাকে টাকা না পাঠিরে পারি?

কথাওলি বলে কি শ্বকম ক্রণ ভাবে চাইলেন মার্লিনের মূপের দিকে। সক্লেই থানিককণ চুপচাপুঃ। ছুঠাৎ মার্লিন প্রশ্ন করল, মি: লালকাকা! সে যদি আপনার কাছে ফিন্ত্র আসতে চার আপনি তাকে নেবেন ?

মি: লালকাক। একটু হাদলেন। বললেন, দে ফিরে আসবে না
—মিসেদ চৌধুরী! অসম্ভব অভিযানিনী দে।

একটু চূপ করে থেকে বঙ্গলেন, তবে ভার সঙ্গে 'দেখা হঙ্গে বঙ্গবেন—স্মানার দরজা চিবদিনই তার জন্ম খোলা।

মার্লিন বলল, আপনারই যোগ্য কথা মি: লালকাকা !

শুধালাম, টাকাটা সোজা মনিজ্ঞভার করে পাঠিরে দিলেন না কেন?

বললেন, সে কথা আমিও ভেবেছি। কিন্তু তাহলে টাকাটা দেনিত না। তাই আপনাদের কাছে ছুটে এলামা এক মিদেদ চৌধুনী যদি তাকে বুঝিয়ে টাকাটা নেওয়াতে পারেন। পারলে উনিই পারবেন।

কিন্তু টাকাটা নিম্নে গ্রেসের সঙ্গে গিয়ে দেখা করতে আমার মন একেবারেই সায় দিছিল না। মনে হল—স্বামিন্ত্রীর এনব বাপারের মধ্যে না থাকাই ভাল। বাছিছ আনন্দ করে বেড়াতে— মালিনকে আবার এসব ঝামেলার মধ্যে জড়ান কেন? ভদ্রভাবে কি বলে লালকাকার অমুরোধ প্রভাগ্যান করা যায়! ভেবে বললাম দেখুন মিঃ লালকাকা! এসব ব্যাপারে হস্তক্ষেপ করা কি আমান্দের উচিত—প্রেদ কি স্টো পছন্দ করবে! সে হয়ত—

হঠাৎ মার্লিন উঠে পাঁড়াল। লালকাকার সামনে গিয়ে টেবিলের উপর থেকে টাকাটা নিল ডুলে।

বঙ্গদ, আপনি নিশ্চিত থাকুন মি: লালকাকা, আমি আমার যথাসাধ্য করব। গেদ আপনার এ উদারতার মর্যাদা দিতে জানে বলে আমার বিধান।

মিঃ লালকাকা যেন স্বস্তির নিশাস ফেলে কৃতপ্রতা ভরে চাইলেন মালিনের দিকে।

মিঃ লালকাকা চলে গেলে মার্লিনকে বললাম, শেষ পর্য্যস্ত তুমি এ দায়িত্ব নিলে ?

মার্লিন ওধু বলল, গ্রেসের প্রতি এটা আমার একটা বড় কন্তব্য বলে মনে করি।

একটু চুপ করে থেকে বঙ্গাগ, গ্রেস ভালবাসতে জানে বঙ্গা মনে ইছে।

শুধালাম, কি বকম ?

বলল নালিকীকুৰ কথা ওনে মনে হল—গ্ৰেম হয়ত বা সভিটে শালকাকাকে ভালবাদে।

হেসে বলসাম, তুমি বড্ড ছেলেমান্য লীনা—লাপকাকার কথায় অভিভূত হয়েছ। ভালবাসলে কেউ কথনও স্বামীকে ছেড়ে পালায়?

মার্লিন বলল, পালালই বা কেন? লালকাকাব একটা কথা লক্ষা করলে না—ভাল না বাসলে চলে যাবে কেন? সত্যিই ও। লালকাকা ত গ্রেদের জীবনে কোনও কাছে কোনও দিন কোনও বাধার স্থাই করেননি—দেটা লালকাকার স্বভাবই নয়। গ্রেদ ত লালকাকার চোথের জাড়ালে নিংক্লর প্রেমের লীলা জনায়ানে চালিয়ে বেতে পারত সব দিক ব্যন্ত্র রেথে, পালাবার কি দরকার? টাকাকড়ি, মান সম্মান এমন কি নিজেব ছেলেটিকে প্রয়ন্ত ছেড়ে এমন করে ক্ষমকারে ঝাঁপ দেওয়া—

মার্লিন চূপ করে গেল। তথালাম, তাতে করে লালকাকার প্রেভি ভালবাসা প্রমাণ হল কি করে? বড় কোর এইটুরু মানতে রাজী আছি—গ্রেস হরত আসলে মেরে তত থারাপ না, একটা বিখ্যা লুকোচুরির জীবন ঠিক সইতে পারেনি।

মার্লিন ইতন্তত করে বলল, তা হতে পারে। কিছ প্রেলের কাজে একটা বেন অদ্ধ অভিমানের আভাব পাচ্ছি, বেন দিক-বিদিক জ্ঞান হারিয়েছিল।

ছেসে বসলাম, লীনা—একটা কথা ভূলনা। স্বামীকে ভালবাসলে কেউ অলু প্রেমিক জোটার না।

মৃত হেসে মালিন আমার মুখের দিকে চাইল। বলল, দেইখানেই ত ঠিক বৃষ্তে পারছি না। তাই ভ আমি একবার গ্রেদের সঙ্গে দেখা করতে চাই।

ভগালাম, দেখা করেই বা কি বুঝবে ? গ্রেস কি এ অবস্থার সরলভাবে কিছু বলবে ভোমাকে ?

নিজের মনেই বলল, দেখা যাক। তবে একটা কথা বলে বাৰি।

ভ্যালাম, কি ?

বলস, যদি বৃথি গ্রেস সভ্যই লালকাকাকে ভালবাসে, ভবে ভাকে আমি ফিবিয়ে দেব লালকাকার কাছে—ভোমাকে বলে বাখছি।

চার

মুঠার ডেভন্ কর্ণপ্রাল্ প্রভৃতি যুবে ছ'-ভিন জারগার হোটেলে।
রাত্রিবাস করে এলাম টকিছে। উঠলাম—এবিলন হোটেলে।
সমুদ্রের ধার দিরে পঞ্চমী কি বন্ধীর চাদের মতন যুবে গিরেছে টকি
সহরটি—ক্রমে উঠে গিরেছে উচ্চত্তর ভূমিতে। সমুদ্রের গারে
রাজাটির ধারে বড় বড় সব বাড়ী—ভার মধ্যে কডকণ্ডলি ভাল ভাল হোটেল—এবং বাড়ীগুলির নীচে বেশীর ভাগই নানারক্ষের লোকাল পদার ইত্যাদি স্থান সাজান। তা'ছাড়া সমুদ্রের ধারের রাজাটির পালে পালে কয়েকটি পার্কও জাছে—য়ং-বেরংরের আলোবাছারে রাত্রে যেন একটা মায়ারাজ্যের স্প্রী হয় সেবানে।

এবিলন হোটেলটি ঠিক সমূদ্রের ধারের বড় রাজাটির উপরে নর। তবে সমূল থেকে খুব বেলী দুরে নর—একটি ছোট রাস্তার উপরে। এবং এবিলন হোটেলটির পিছনে একটি বাগান—ববে বসে ভার কাঁকে কাঁকে দুরে সমূল দেখাও বার। হোটেলটিঃ সামনেও ছোটখাট একটি বাগান।

বখন টকিতে গিরে পৌছলাম তখন সন্ধা হরে এসেছে। প্রথম সমুদ্রের ধারের হ'-এড়টা হোটেলে স্থান পাওরার চেটা করেছিলাম—কন্ধি পাইনি, সবই ভতি ছিল। আরও অনেক হোটেল ঘুরে ঘুরে শেষ পর্যন্ত এবিলন হোটেলে স্থান পেরে বেন স্বস্তির নিংখাস কেলেছিলাম। সামনের বাগানটিতে সারি সারি অনেক গাড়ী ছিল—সেইখানেই রেখে দিলাম আমার গাড়ী।

পরের দিন সকাল বেল। ত্রেকফাট থেয়ে বেবাকোন্থ যাব—এই রকষই ঠিক ছিল এবং সেইভাবেই ভৈনী হরে ভোজনাগারে ত্রেকফাট থেতে বসলাম—আমি ও মালিন। থাবার ঘরটি বেশ বয়ু এবং চাবিদিকে ছোট ছোট থানাব টেবিল ও চেয়ার দিরে সাজান—কোনটার বা কুজন বলে থাবার এবং কোনটার বা চার পাঁচজন। সব টেবিলই ধ্বধ্বে সাদা চাদরে ঢাকা এবং প্রত্যেকটির উপব একটি ফুলদানিতে নানা বংরের ফুল সাজান। আমরা থাবার ঘরে ঢোকা মাত্র একটি পরিচারিক। এল আমাদের কাছে—তার পোঁচাকের উপর একটি ধ্বদ্বে সাদা এপ্রনে গলা থেকে প্রায় পা প্রয়ন্ত ঢাকা। একে মুহু হেলে আমাদের দিকে তাকিয়ে বন্ত, ওপ্রভাত! আপনাদের ঘরের নথরটি কত ?

বললাম, সভেরো।

'এই দিকে আন্তন' বলে আমাদেব নিয়ে গেল একটি গু'জন বলে থাবার মন্তন টেবিলে এবং দেবলাম, তার উপ্র আমাদের ঘনের সতেরো নম্বরটি আলগা পিজনের হবতে বসান। ব্যুলাম—এইটেই আমাদের টেবিল, আগে থেকে নিশ্বিষ্ট করা হয়েছে।

ব্রেক্ষাষ্ট ঝাচ্ছি—সেই পরিচারিকাটিই থাবার এনে এনে দিছে আমাদের টেবিলে। ঘরের আনো-পাশে আবও নৈবিলে ও'ন্টার জন বদে ব্রেক্ষাষ্ট থাচেছে—অনেক টেবিল থালি, স্মত ভারা থেয়ে গেছে কিবো হয়ত এখনও আদেনি। ঘড়িতে ভখনও দশটা বাছতে দশ মিনিট বাকী—এ হোটেলের নিয়ম অনুসারে সাড়ে দশটা পর্যান্ত ব্রেক্ষাষ্ট।

আমরা ধে টেবিলে বসে থাচ্ছি ভার অনতিদূরে একটি টেবিলে একটি স্থদৰ্শন ইংরেজ যুবক বলে থাচ্ছিল--পরিধানে বেশ দামী পোৰাক, সেটা সহজেই চোথে পড়ে। যুবকটি খেতে থেতে সজ্ঞাগীনের মালিনের দিকে চেয়ে চেয়ে মতন অনব্যত সেট্রু 🐚 আমি নয়, মার্লিনও লকা করেছিল। মার্লিন ত সুক্রী—বুলা! তা ত জানই। যে কথাৰ আভাৰ ঐতিপুর্বে আমার ছাত্রজীবনের কাহিনীতেই দিয়েছি। এখন একটু পরিণত বয়সে সে রূপ যেন আরও উজ্জন হয়ে উঠেছে। কার্জেই মার্সিন যুৰ্কটির মুগ্র দৃষ্টি আক্ষণ করেছে, এ আর বিচিত্র কি ? মনে মনে এই বৰুম কিছু ভেবে বোধ হয় একট কৌ হুক্ড অনুভব ক্ৰছিলান। মালিনৈর দিকে যেন নতুন করে চেয়ে দেখলাম-সভিটে বড় স্তব্ধ দেখাচ্ছিল ডাকে! দিনটা মেষাচ্ছন্ন ছিল, তাই বোৰ হুৱ একটা গার্চ সবজ রংয়ের পোষাক ছিল ভাব পরিধানে। কালো চল এক সেই অভসম্পর্ণী কালো ছটি টোখের মধ্য দিয়ে গুধু মুখের লাবণটেকুই নয়, পরিধানের পারিপাটো তার দেহেব বৌবনগ্রীভ যেন চারিদিকে ঠিকরে পড়ছিল, তার বসার ভঙ্গিমার মধ্যে। আমিক যেন একটা नक्रन शर्यत मुक्क इत्य रहत्य वहेनाम-मार्निरन व पिरके। अकट्टे भरत চাপাগুৰায় বলগাম—জীনা ৷ লোকটি ভোমাকে দেখে মুগ্ধ হয়েছে, চোখ ফেরাতে পারছে না।

মার্লিনও যেন একটু বিবক্তি স্থপে চাপার্থলায় বলন লোকটি অসভা—ওদিকে ভাকিও না।

বেবাকোন্বে যথন সিত্রে পৌছলান তথন সাত্য দশ্চা বেজে গেছে।
মি: লাসকাকা ঠিকই বলোছদেন—টকি থেকে মোটরে বেবাকোন্ব বেতে মিনিট দশ-পনেবোর বেকী লাগে না। বেবাকোন্ব মোটেই টকির মতন নয়—সমুদ্রতীরের একটি গ্রাম বললেও চলে। টকি থেকে একটি পাহাড় ক্রমে উঁচুতে সিয়ে উঠেছে এবং তারই মাথার উপবে বে গ্রাকোম্ব গ্রামখনি—সমুক্ত অনেক নীচে পাহাড়ের তলার।
পাহাড়ের উপর সমুদ্রের ধার দিয়ে একটি রাস্তা এবং তার পাশে
গুটিকয়েক ভাল ভাল বাংগীও আছে—তার মধ্যে তিন চারটিই
হোটেল। কিন্তু পিছনের বাড়ীগুলি বেশীর ভাগ মোটেই বড় নর,
চারিদিকে ছড়ান সাধারণ ছোট ছোট বাংলো-কুটার বলাও চলে।
সমুদ্রের ধারের রাস্তাটি বাদ দিয়ে পিছন দিকে একটি মাত্র মাস্তা।
পাহাড়ের মন্য দিয়ে একেবেঁকে নেমে গিয়েছে টকির দিকে।
এই রাস্তাটির আশে-পাশে সক্র সক্র সিমেন্টর্নানান ছ-চারটি পথ হয়ভ
ভিপরের দিকে উঠেছে না হয় নেমে গিয়েছে নিচের দিকে—এই
পথগুলির ধাবে ধারে সর বাংলো।

্রাপটন লক্ষ এই রক্ষই একটি নাংলো - খুঁছে নিতে জামাদের দেবী ইল না। টকির বাস্তা থেকে নিচে নেমে যাওয়া একটি বাঁবান পথের সাধ্যেশ্বের বাড়া।

বাজার গাণী বেগে এই পথ দিয়ে নেনে একটি লোহার গোণ খুলে চুকলান এসটন লক্ষে। তখন নে মাস, সবুক্ষের গাঁচ অভিযান সাম হাসেছে। আন্দ্র মেলা দিনে চারিদিকে পাহাড়ের ঘন সবুক্ষে যেন চোথ জুড়িয়ে গোল। এসটন লক্ষের বাইবের প্রান্ধণে সমন্থরকিত বাগানটির ফুলের বাশাবেও মুদ্ধ হলাম। সদর দরজার গিয়ে কড়া নাছলাম। একটি বৃদ্ধা এসে দরজাটি খুলে প্রশ্নস্কক দৃষ্টিতে আমাদের দিকে তাকাল। তাকে স্প্রভাত জানিয়ে হঠাৎ আমাদের মনে বিধা কল। কি বলি ? মিসেদ লালকাকা বলা কি চলবে ? হয়ত অভ্যনামে আছে এখানে। মালিন কথা কইল।

শুবাল, গ্রেস বলে কোনও মহিলা থাকে এথানে ?

বুঝাটি একটু ইতস্তত করে তথান, গ্রেম ! গ্রেম **লালকাকা**! ভালনারা কি ভাকেই চাইছেন !

भागित जनन शा-सम्मापा

বৃদ্ধটি বলন, তিনি ও অস্তম্ভ। যাই লোক, আপনারা লিড্র আজন।

ত্তনে ভিতৰে দ্কলাম। সামনেই একটা ঘোৱা সাসিজীটা বারান্দা—কাপেটপাতা করেনটি কোঁচ সোনা দিয়ে সাজান। বুঝলাম—কাপেটপাতা করেনটি কোঁচ সোনা, তবুও বাড়ীটির কেওমানের দিকে তাকিয়ে বহু পুরাতন বাড়ীর স্বাভাবিক দৈল সহজেই বোজা ধায়। ত্বের জাসবাবপত্তর মধ্যেও যে একটা দৈল আছে—মেটাও চোগে পড়তে দেরা হয় না। জানালার পদাগুলি গুটিরে দেওয়া হয়েছে আলো আসার জন্ম।

বৃদ্ধটি বলল, বজুন—দেখি খবর নিয়ে। কি নাম বলথ ?
নালিন বলল, বলুন—ডা: ও মিদেস চৌধুরী—দেল থেকে।
বসলাম। বৃদ্ধটি ভিতরে চলে গেলেন উ কি মেরে দেখলান—
বাবালাটির পাশের ভিতরেব ঘরটিই খাবার ঘর। একটু পরে বৃদ্ধটি
কিরে এল।

বল্লেন, তিনি ত শোধাৰ ঘবেই বিশ্রাম করছেন। তবে— মার্লিনের দিকে চেয়ে বল্লেন, আপনি আম্বন। আমার দিকে চেয়ে বল্লেন, আপনি একটু অপেকা কর্মা

দয়া করে।

মার্লিন তুমি একটু বদ বলে বৃদ্ধাট্টর সঙ্গে ভিতরে চলে গেল। আব ঘণ্টার উপর কেটে গেল। / আমি যেন অস্থির হয়ে উঠলাম। থানিকটা খরের মধ্যে পাথচারী করি, থানিকটা বদে আজকের পড়া থবরের কাগজটি আবার হয়ত পড়ি, থানিকটা জানালার ধারে দাঁড়িয়ে বাইরের শোভা দেখি—এই ভাবে সময়টি কাটতে লাগল। হঠাৎ খরের পদাঁ সরিয়ে মালিনি চুকল, সঙ্গে গ্রেস। গ্রেসের দিকে চেরে সত্যিই চমকে উঠলাম—এ কি ছেহারা হয়েছে তার! অভ্যন্ত শীর্ণ চেহারা, চোপের কোলে কালি দিয়েছে চেলে, মুখ্যানি এত রুয় হয়েছে যে গাল হটি ভেন্সে চোরালের হাড় হটি যেন এগিরে এসেছে। আমার দিকে চেয়ে ইবং মৃত্ ছেসে বলল, দয়া করে আমার থবর নিজে এসেছেন, সেজন্ম সভাই আমি অভ্যন্ত কৃতজ্ঞ। এতক্ষণ আপনাকে একলা অপেকা করতে হয়েছে—দে জন্ম মাণ চাইছি। বস্তন!

থেস ও মার্লিন ঢোকামাত্র আমি উঠে গাঁড়িংছছিলাম। তিন জনেই বসলাম। বল্লাম, না---না। তার জন্য আর কি হরেছে। ভবে আপনাকে দেখে অনুধু মনে হছে।

বললাল, হাা। সন্ধার দিকে বোকট একটু এর হয়। ভাই তুর্বল হয়ে যাচিছ।

কথালাম, তা চিকিৎদার কি রকম ব্যবস্থা হয়েছে? একটু চুপ করে থেকে বলল, এথানকার একজন ডাক্তার এদে দেখে বান—ওবুণ দিছেন।

মালিন উঠে দাঁড়াল। আনার দিকে চেয়ে বলল, চল, আজ আমরা যাই। গ্রেদের এখন একট বিশ্রামে থাকা দরকার।

छेर्छ मीफिस्य वननाम, छन ।

গ্রেদণ্ড উঠে দাঁড়াল। আমাকে বলল, আবার আনি আপনাকে

নালিন আমাকে বলল, ও শুয়েই ছিল। আমি ধকে উঠতে বাবণ করেছিলাম। শুনল না। নিজের মুগে ভোনাকে ধলবাদ জানাবার জক্ত বেরিয়ে এল।

বলগাম, ওঁর বিশেষ করুণা !

গ্রেসকে ছ'জনে বিদায় অভিবাদন জানিয়ে বেরিয়ে বাওয়াব সময় মার্লিন গ্রেসকে ৰলল, তাছলে ঐ কথাট রইল। কাল একফাষ্ট থেয়ে আবার আসব।

গ্রেস বলল, হা।।

গাড়ীতে এসে মালিনকে বললান, আবার কাল আসতে হবে— আজ শেষ হল না ?

মার্লিন বলল, না। ছ'-তিন দিন বোধ হয় আরও আসতে হবে। টকিতে দিনস্থইয়ের বেৰী থাকবনা—এই রকমই কথা ছিল। বললাম, তাহলে ভ টকিভেই অনেক দেরী হয়ে যাবে।

হেসে মার্লিন বলগ, তার আবার উপায় কি বল ? গ্রেসের যা অবস্থা দেখলাম—ওর একটা ব্যবস্থা করে যাওরা দরকার—নইলেও ° বাঁচবে না।

ভাষালাম, কি কথা হল আা ?

মালিন বলস, চগ—সমুদ্রের ধারে কোবাও পাছাটা মৃত্তির নিয়ে বাব। সমুদ্রের ধারে বসে কমা হবে।

মার্কিনের কথামত গাড়ীটা ঘ্রিয়ে নিরে সমুদ্রের ধারর রা**ন্তার** সমুদ্রের গা ঘেঁষে রাধলাম।

আবার শুধালাম, আজ কি হল ?

মার্লিন বলল, আমি ওর খবে গিয়ে দেখি—ও বিছানার ভরে আছে। খবে গিয়ে ঘরের দৈল দেখে মনটা থারাপ জল—পিছনের দিকে টোট একখানি ঘব, একটি মার, স্কি-জানালা, জাসবারপত্র বিশেষ কিছুই নাই। আমি ওর বিছানার গিয়েই বসলাম। বীরে ওর একখানি হাত ভূলে নিলাম হাতে।

মালিন একটু চুপ করল। গুণালাম, কি কথা হল ?

বঙ্গল, থানিকক্ষণ কিছু বঙ্গেনি—স্বামাৰ দিকে একবার চোধ ভূলেই চোধ নামিয়ে চূপ করেছিল। আমিই কথা কইসাম।

শুণালাম, কি বললে ?

বল্ল প্রথমেই বল্লাম—গ্রেস বন্ ভাল আছে—বোভিংস্কুলে ভাল ভাবেই মানুধ হছে—সেইটেই ধে ওর মনে সন্চেয়ে বড় কথা, সেটা বুগতে আমার দেরা হয়নি। লক্ষ্য ক্রলাম—চোথ দিয়ে ত্'-চার ফোঁটা জল গড়িয়ে পড়ল।

ভগালাম, লালকাকার কথা কিছু ছলনা ?

বলল, হল বৈ কি। কিছুক্ষণ পরে শুধাল, আমার ঠিকানা ভোমরা পেলে কি করে ?

তথন বললাম, মি: লালকাকা তোমার ভন্ত বিশেষ অন্থির হরে আছেন। তোমার বিষয় তিনি সবই জানেন। ছিনিই ত তোমার ঠিকানা দিয়ে আমাদের বিশেষ করে অফুরোধ করলেন দেখা কবে তোমার খার নিতোঁ। তারপর গ্রেসকে তানিয়ে নিজের মনেই যেন বললাম—কি আশ্চর্যা উদার লোক লালকাকা। কি দরদী প্রাণ!

কথাগুলি বলে মার্লিন মৃত্ হেসে আমার দিকে ভাকাল।
হেসে বললাম, বুঝেছি। যাই হোক, কি কলল ওকথা তনে?
বলল, কিছু না। চুপ করেই রইল।
ভ্যালাম, টাকার কথা কিছু বলনি?
বলল, না—আজ অভটা নয়।

শুবালাম, ভারপর ?

বলল, তাগণৰ আৰু কি ? তাৰপৰ ওৰ শৰীৰেৰ কথাৰান্তা কিছু হল। শেব পথান্ত উঠে বসল—বেরিয়ে তোমার সঙ্গে দেখা করৰে ৰলে। ৰললাম, তা আন্তৰেই টাকাটা দিয়ে দিলে পারভো। ৰে তুরবস্থার আছে—টাকা নিতে দিধা করত বলে আমার মনে হয় না।

বললা, ভূমি প্লেসকে এখনও ঠিক চেননি। লক্ষ্য করলাম
— ও, ওদিক্কার বিষয় একটি প্রশ্ন করেনি, এমন কি ববের দিক
দিয়েও নর, যা বলবার আমিই বলেছি।

বলনাম, সেটা স্বাভাবিক লজ্জা।

বললে, ভবে , দেই লজা কাটিয়ে আজই কি টাকা নিভে পারে ? আর তা[হাড়া—

ভগালাম. কি १/

বলণ, শুধু টাকা দিলেই ভ আমার হল না। আমি প্রেসকে লালকাকার কাছে কিরিয়ে দিভে চাই। ক্রমশঃ।

Learning to love oneself is the beginning of a life-long romance.

—Oscar Wilde

ভাবি এক, হয় আৱ

শ্রীদিলীপকুমার রায় ভেরো

ক্রিনা হোটেলে ফিরে এসে পল্লবের মন বিষাদে কালো হয়ে এল।
কিন্তু সজে সর্জে ওর বিময়েরও অবধি রইল না: সুস্থফ দেশের
কাল করবে, মহাল্মা গান্ধীর ডাকে সাড়া দেবে এ কি ভাবা বার ? ওর
দেহে-মনে একটা পূলক ছেয়ে গেল ভাবতে বে, মুস্থফ বাইবে সচরাচর
প্রগল্ভতা ক'রে চললেও জীবন নিয়ে এত গভীর ভাবে ভেবে
দেখেছে! মুস্থফকে ও ভালোবাসত বরাবরই, কিন্তু আজ সেই, সঙ্গে
জেগে উঠল ওর প্রতি শ্রন্ধা: ছাজার টানাছে ডা ওঠাপড়া সন্তেও
ওর মেকদও তুর্বল হ'সে বায়নি তো!—বেখানে হাত বাড়ালেই পেত
স্থল্মী নারী ও সেই সঙ্গে আধুনিক বিলাসের ক্ষত্রে উপকরণ, সেখানে
ক্ষেন করে ও মোহ কাটালো—আরামের লোভেও চাইল না তো
বাবা পভতে ?

কিছ সঙ্গে সংক্র ওর মন আবো অভিষ্ঠ হ'রে উঠল: এবার দেশে কেরাই চাই। সুস্ফে-বে-যুক্ত সেও ধথন দেশে ফিবে বাচ্ছে তথন ও কেন আর মিথ্যে সময় নষ্ট করে বিদেশী গান শিথে ?

কেবল এলিওনোরার কথা ভেবেই ও ফের পড়ে গেল সংশ্রের দোলার। দেশে ধণন ফিরবেই এবার—তথন কেন আর ওর মনে ছঃখ দিয়ে বাওয়া? আশ্চর্য ! মানুষের হুগ দেওয়াব ক্ষমতা কত ক্ম, অথচ চলতে ফিরতে সে অপরকে কত ছঃখই না দিতে পারে! না, ও সালভিনির সঙ্গে দেখা করেই ফিরবে—বিশেষ মথন এলিওনোরাকে কথা দিয়েছে।—যে ওকে সত্যি এত প্রেচ দিয়েছে ভার স্লেচ্ব মান রাখতেই হবে: মন ওর কারণো ভিজে ওঠে।

কিছ মুশকিল হ'ল—সময় যে আব কটিতে চায় না। এলিওনোরার ওথানে মাঝে মাঝে নায় বটে, কিন্তু ঠিক এই সময়েই তাকে সকাল থেকে রাত আটটা ন'টা অবিধি ই ডিলোতে কাটাতে হ'ত একটা নভুন ছবির জঞাে। ভাই রাস্ত এলিওনোরার সঙ্গে ভিনারের পর বড় বেশী কথালাপের সময় থাকত না। ও মাঝে মাঝেই স্থান্তের সময়ে যেত টাইবাবের তীরে বেড়াতে—রাঙা আলোয় বিখ্যাত সান পিয়েরো গিঞার অপরপ উদাস শোভা উপভোগ করতে। কথনাে বা বেত ভাটিকানে মাইকেল এজেলাের ফেছাে দেগতে, বা চূপ করে চেয়ে থাকত রাজেলের অপরপ মাইকেল এজেলাের ফেছাে দেগতে, বা চূপ করে চেয়ে থাকত রাজেলের অপরপ মাইকেল এজিলােক। ছবি ওর মাকে কথনাে এমন ক'বে স্পান করেনি তাে এর আগে—ভাবে ও আগের হ'বে! মনে পড়ে—কোথার পড়েছিল একটি কবিতা: "তোমার বাথাব দানে আমার উঠল বে প্রাণ জেলা।"

কিছ ভৰু বাখা বাখাই। এক দিকে সে ড'বে দের বটে, কিছ
জ্ঞা দিকে বেন বিক্ত ক'বে দেয়। সঙ্গে স্ঠান্ন একটু একটু ক'বে
ওর মনে ভার জেগে ওঠে: মারিয়াকে এক ভালোবাসা সংযুত্ত হো
মুক্তক পরে ভাকে ডিভিয়ে গিয়ে নাগাস পেতে চাইল এলিওনোরার!
ভবে ? তবে প্রেম স্থানী—এমন ভবসার পথ কোধার? কে
জানে—হয়ত জাইবিনও আজ পেয়ে গেছে এমনি কোনো নতুন

মনের মান্থকক বে ওকে সর্বাছ্যকৈরণে ঠেলে দেবে শিল্পীর জীবনের দিকেই ? কে বলতে পারে ? জার বলি জাইরিনের মন ওকে পাশ কাটিয়ে ঝুঁকে থাকে আর কাক্তর দিকে, ভবে ভাকে দোর দেবেই বা কেমন ক'বে ? সে ভো ওকে শেষ দিন খোলাখুলিই বলেছিল—কোনো জন্মভূমিই ওর কাছে স্বার্থসাধিকা নয়—সে চার সঙ্গীতে স্ঠাই কর্মতে স্থারর প্রমানন্দ, দেশ ওর কাছে জড়—মাটি—নিপ্রাণ।

COTW

এলিওনোরার সঙ্গে চার-পাঁচ দিন দেখা হয়নি। সেদিন বিকেলেও Via Appia-সু বেড়িয়ে এনে হোটেলের টেবিলে সান্ধানভাজনে ব'দে ভাবছে কী করা যার, এমন সময়ে হোটিলের ম্যানেজার ওকে এনে বললেন সোৎসাহে বে রুব দেশ থেকে একটি থিয়েটারি দল এক সপ্তাহের জন্তে বোমে এসেছে। অভিনয় করবে চেকভের "চেরি বাগান" আর ডক্তয়েভক্তির "ব্রাদার্স কারামাজভ।"

পশ্লব উৎসাহ বোধ করণ না—যদিও মাস কয়েক আগে হ'লে আনন্দ ও রাণতে পারত না। ও শুক্তঠে জিজ্ঞাসা করল: "বাদার্স কার্যামাজভ হবে করে ?"

Domani Signore! Bellissima dramma! ১ ধদি যেতে চনে তবে এখনি টেলিফোন কন্ধি—নৈলে কাল টিকিট পাবেন না।

পালৰ পাশ কাটিয়ে ছেতে বলগ : বেতে ইচ্ছা তো হয়, কিছ ক্ষবভাষার একটি কথাও জানি না বে! মন ওর বিধানে ভ'বে গোল। এ বইটি আইবিনের আভি প্রিয় বই—বিদ পাল সে থাকত তবে কা আনন্দেই না ছ'জনে মিলে নাটকটি দেখতে ষেত্র।

পাশের টেবিলে সেই ক্র বুবকটি রোজকার মন্তন একলাই গা; ভ্লে, ছঠাৎ অভিবাদন ক'বে পরিকার ফরাসী ভাষার বলল: আমি ক্র'টি টিকিট পেরেছি।

পরব আশ্রয় হ'য়ে বলল: বছবাদ, কিন্তু অন্ত টিকিটটা---

বার আসার কথা ছিল তিনি হঠাৎ অসুথে পড়েছেন।
আমি আপনাকে প্রতি দৃষ্ঠই বুঝিয়ে দিতে পারব। এ-নাটকটি
আমি পাঁচ হ' বার এ খেছি ময়োতে। ব'লে ঈরং গর্ব ক'রেই
বলল: দেখবার মতন অভিনয়—স্বরং ক্ট্যানিশ্লাভ্স্কি নাটকটির
প্রতিউসার। আর অভিনয়ে ক্ষ্বা জগতের সবার সেরা, জানেন
হয়ত?

পানৰ প্ৰীভকঠে ৰলক: বহু বছৰাক। থা, ক্ৰব্ৰ আপানপ অভিনয় কৰে শুনেছি আমাৰ এক বন্ধুৰ কাছে। কিন্তু টিকিটেৰ দাম কতা?

যুবকটি উঠে পল্লবের টেবিলের কাছে এসে গাঁড়েরে বলল:
টিকিটের লাম আমার লাগেনি। আমি প্রতিদিন ছ'টি করে
ফী পাস পাই। ব'লে পল্লবের সাম্নের চেয়ারটি দেখিরে বলল:
Vous permettez > ২

১। কাল, সিভোৱে । অভি চমংকার নাটক।

২। বসতে পারি कि?

পল্লৰ সাগ্ৰহে বলল: বিলক্ষণ! আপানার সক্ষে আলোপ করার ইচ্ছা ছিল অনেক দিন থেকে। কী পান করবেন ? ধ্রবাদ, আমি মদ খাট না।

পরিচয়ের উপক্রমণিকা সুরু হ'ল। প্রন্থ নিজের পরিচয়
দিল বথাবিধি। আগন্ধকও দিলেন নিজের পরিচয়, বদিও সংক্ষেপে:
এখানে কাপ করেন একটি রুফ-আফিসে। মা নেই। বাপ রুষ,
সুইডেনে থাকেন—ক্টকহল্যের ডাক্তার—ধনী। মা ওর পনের
বংসর বয়সেই সংসায়ের ছিসেব নিকেশ সাক্ত ক'রে পাড়ি দেন
পরপারে। ও সেই থেকে মস্কোতেই মামুষ ওর এক কাকার কাছে।
ওর বাপ-মা ক্যাথলিক। কিছে ও পনের বংসর বয়স থেকে ঈশবে
বিশাস হারিয়েছে। নাম শাপিরো।

পৰের

শাণিবোর সঙ্গে আলাপ হ'তেই ওর মন গান গেরে ওঠে। মনের বিষাদ কাটল না অবশু, কিন্তু আঁধার কেটে গেল। ওর একটি প্রিয় গানের একটি চরণ ফিরে ফিরে বাজে ওর প্রাণের ভাবে:

> জায় মা এখন তারারূপে শ্বিতমূখে শুভ্রবাদে, নিশার ঘন আঁধার দিয়ে উধা যেমন নেমে আসে।

কী অপরূপ উপমা ! যেমন সত্য তেমনি আলোভরা। 🛮 হুসাং ওব মনে পড়ে যায় ভগবানের কথা, অনেক দিন পরে। তিনি এক হাতে মারেন আর এক হাতে রাখেন। এক হাতে জীবনের পেয়ালা শুক্ত করেন আশাভঙ্গে, শোকে, বিচ্ছেদে, বিরহে—কিন্ত যেই মন ভারে আর বইতে পারবে না, ভেঙে পড়বে, অমনি আসে তাঁর করণা, রিজ্ঞ-পাত্র ফের ভ'বে ওঠে সংগায়। হঠাৎ মনে হ'ল আইরিনের অভাবের জন্ম ধে-তুঃখ ওর কাছে এত দিন মনে সয়েছে ২ন্ধ্যা—সমুভ সেই অভাবের, সেই বিরহেরই ওর দরকার ছিল। এ পর্যস্ত ও একটানা পেয়েই এসেছে। ওর পিতার মৃত্যুর পরে কোনো বড় হ:খ কি শোক পায়নি। আইরিন আনক্ষময়ী হ'য়ে ওর জীবনে হানা দিয়ে প্রথম ওকে গভীর আঘাত দিল—কাছে ভেকেই দূরে ঠেলে। সে বেদনার মন্থনে মনে হ'ল ওর—চিত্ত যেন ওর অজ্ঞাতে উঠেছে উর্বব, গ্রহিফু হুরে। বেদনার কর্ষণের পর বীব পড়তে না পড়তে নৰ আশার অঙ্বোদ্গম হ'ল যেন। সাঝা ঝাত ওর মন এক আশ্চর্য আনন্দে ছেয়ে গেল। লুনা হোটেলের লাইত্রেরি থেকে ডষ্টয়েভদ্ধির 'ব্রাদার্স কারামাজভে'র পাতা উন্টোতে উন্টোতে হঠাৎ এসে পড়ল একটি ভাষগায় • বাটবিনের সঙ্গে ঠিক এই অধ্যায়টিই ও একদিন পড়েছিল সে ক্র্যু আনলে বুঁ সেই হারানো আনন্দ যেন শ্বতির মর্মকুছরে ফের বেকে উঠল আবো নবীন হ'রে, আবো গভীর হ'যে। কী স্থন্দর, পৰিত্ৰ, ওক্তৰী ! মনে পড়ে গেল উপনিযদের একটি বিশেষণ-ভগৰৎ ৰুকুণা শুধু শুভদাই নয়, বলদাও বটে।' মনে ওর্ কুভজ্ঞতা জেগে ওঠে: প্রভু, কত তো পাই দিনে দিনে, তবু ভূলে ষাই কেন যখন কিছু পেয়ে হারাই? বলি কেন তখন কুক চিত্তে তুমি নিষ্ঠুর? মনে করি কেন বে যা আমি পেরেছি তা আমার প্রাপ্য ? এই বে আলিয়াশাও বলছে ঐ কথা-বেন ওরি মনের কথা টেনে:

আলিরাশা গাঁড়িয়ে একদৃষ্টে তাকিয়ে থাকে, তারপরে হঠাৎ সে মাটিতে লুটিয়ে পাঞ্জ—ভৌব পায় না কেন সে মাটিকে চুম্বন করছে

পড়তে পড়তে পল্লবের চোথেও জল আসে। মনে পড়ে বার কুছুমের একটি কথা: স্বামিজী বলতেন—'গুলার ব'সেও যদি মহৎ চিন্তা করো, জেনো সে-চিন্তা বার্থ হবে না, ছড়িয়ে পড়বে সারা বিশ্ব।' হুসিং ওর বৃক ভ'রে যার—সাধু-সন্তের চিন্তার ও প্রার্থনার চেউ হয়ত এমনি অলক্ষ্যে এসেই লাপে কছ-শত ছ্রাশীর প্রাণের তটে—অন্ত মহাত্মাদের বিশ্বকল্যাণ কামনার স্পানন হয়ত এমনি প্রভাক ভাবেই স্থামর্থরে বেজে ওঠে কত-শত স্বপনীর অন্তরে! পবিত্রতা, অমুকন্দা, সহিফুত(—জারো কত কী ভাগবত বরাভ্র মাছবের তপ্ত মনকে করে ভোলে স্লিন্ধ, বিপদে জাগার নির্ভয়, কোভের অন্ধকারে কমার কিরণ, চুন্দিবের নিরাশার সাহসের জাগরণী!

সব ছাপিয়ে ওর বোমে বোমে জেগে ওঠে এক নাম-না-জানা আশার ওঞ্চারপান: অবিধাসীর নাজিবাদ ধুয়ে মুছে ভেসে বার যুগ-যুগাস্তের বিধাসীর অন্তিবাদের কলকল্লোলে। আনন্দে ও ঘূমতে পাবে না। একটি আরামকেদারা টেনে নিয়ে জানালার কাছে এসে ব'সে চেয়ে থাকে উনার আরুনের পানে, কান পেতে শোনে জ্লান নক্ষত্রনীপালির বর্যাভ্য কংকার।

আছে আছে আছে আছে—কিছুই জীবনে ব্যৰ্থ হয় না, হ'তে পাৰে না।

ধোল

প্রদিন হু'জনে মিলে 'ব্রাদাস' কারামাজভ' অভিনয় দেখতে গেল। কী প্রাণম্পানী অভিনয় করে এই আন্চর্য ক্লয়জান্তি! মনে পড়ে ওর মানবপ্রেমিক প্রিন্স ক্রপট্রিনের একটি কথা বে, কব জাতির মধ্যে আছে একদিকে যেমন নাটকীয় নিষ্ঠু বতা তেমনি অক্তদিকে—অগাধ গুদাৰ্য। প্ৰতিভাৱ **অবস্থা**র ডষ্টয়েভন্কি 'ব্ৰাদা**স' কাৰামাজভে'** দেখিয়েছেন রাশিয়ানদের এই ছটি প্রবৃত্তির স্বতবিরোধ। একদিকে অপরপ সন্ন্যাদী-পবিত্রতার প্রতিমৃতি-যুবক আলিয়াশা, অন্তুদিকে জ্বন্য হৈছিলী গুলেংকা। লম্পট ডিমিট্রির মধ্যেও কীমহত্ত। যে-রপসী কুমারীকে সে চেয়েছিল কাম-চরিতার্থ করতে সে-কিশোরী ষথন এল তার পিতাকে বাঁচাতে তথন ডিমিটি বলল: বে টাকা চাইছ, দেব, যদি এক বাতের জন্যে আমার হও। **কুমারী** বেদনায় দিশাহারা হ'য়ে শেনে রাজি হ'ল, এল ওর কাছে গভীব বাতে, ্টলৈ তার পিতার সর্বনাশ ! ডিমিটি তাকে টাৰা দিয়ে বলল : তোমার মহত্তে আমি অভিভত হয়েছি-ফিরে যাও অনাহত দেহে-এই টাকা নাও। ব'লে কুমারীকে স্পর্ন না ক'রে তার হাতে দিল অঙ্গীকৃত স্বর্ণযুদ্রার থলি। ওর মনে হ'ল---क दिन भइ९ १ कूमाती, ना मन्नि १ व्यनाम कत्रम मिहे महीन জ্ঞষ্টাকে বে নরকের রাজ্যে বাস ক'রেও উচ্চারণ করেছিল **স্থর্নের** সাম্ম : I believe in the eternal harmony in which, they say, we shall one day be blended.

শাপিবো ওকে চাপা স্থবে ব্বিয়ে দিছিল, যথনই কোনো চরিত্রের মুখে ফুটে উঠছিল এই ধরণের কোনো অবিশ্বরণীয় বাণা। পদ্ধব কেবলই ওর মুখের দিকে চেয়ে চেরে দেখে। এসব কথা যথনই ও বলে, ওর চোপে জলে ওঠে সে কী এক অপরপ হাতি! ওর আর সন্দেহ বইল না যে শাপিবো মনে-প্রাণে স্থপনী, আদন্বাদী। লুনা হোটেলে ওকে প্রথম দিন দেখেই গভীর ভাবে আর্প্ত হবার সে আছ কারণ তথা সমর্থন থুঁজে পেল।

অথচ এর পরেই শাপিরোর অক্ত রূপ। রোক্স যায় সকালে ওর কালে, ফিরে আসে লাঞ্চে—পরে ফের বেরিয়ে যায়, ফিরে আসে সৃদ্ধ্যায় রাজ হ'রে। পরবের সক্ষে দেখা হয় বটে, ছপুরে ও সদ্ধায় খেতে থেতে কথাবার্তাও হয় বৈ কি, কিছ পল্লবই কথা ব'লে চলে দিনের পর দিন। শাপিয়ো নিজের কথা কিছুই বলে না—মন্তব্য হিসেবে কচিৎ এক-আঘটা কথা ছাড়া।

একদিন হঠাৎ পরবের মনে কেমন বেন ঈবং অভিযান মতন এল। ও শাপিরোকে কাছে পেতে না পেতে ওর জীবনের কত কথাই না ব'লে ফেলেছে—এমন ফি আইরিনের কথাও বলেছে— কিছ শাপিরো তো প্রভিদানে কিছুই বলে নি—এমন ফি রোমে ও কী কাজ নিয়ে আছে দে-সম্বন্ধেও কোনো উচ্চবাচ্য করেনি! ভাবল ওকে আর বলবে না নিজের মনেব কথা। এর নাম কি কছা । একতরকা অন্তরক্তা হর কথনো ?

সভেরো

সেদিন ববিবার স্প্রিমা। এলিওনোরা প্রক্তে ওর মোটর পাঠিরে দিল সন্ধ্যা হ'টার, লিখল: আজ সন্ধ্যায় ছুটি নিয়েছি, চাদের আলোর হুদে নোকাবিহার করা যাবে। মাতে যদি আমার এখানে থেকে বাও তবে পুথী হব।

পল্লব শাপিবোর জন্তে একটি ছেগ্ট চিঠি বেথে গেল বে আজ সন্ধার ও এলিওনোরার ওপানে বাচ্ছে, রাতে হয়ত না ফিরতেও পারে। এলিওনোরার কথাও ও শাপিবোকে বলেছিল, কিছ শাপিরো ভ্যু এইটুকু মন্তব্য করেছিল: এবা বিলাসিনীর দল পল! ওলের সঙ্গে বিশে ডোমার সতন মায়ুষ তৃত্তি পেতে পারে না।

পরৰ একটু খা খেয়েছিল ৰ'লেই আবে। শাণিবোকে জানিয়ে দিল ৰে এলিওনোরার সংস্পান ওব কাছে শাণিবোর চেরেও কাম্য। কথাটা সভ্য নর, কিছ চিঠিতে তবুও ঈবৎ গোঁচা না দিয়ে পারল না: এলিওনোরা বহু সরগ—ভত্ত ওব মন। অথচ বিচারকের দল ওকে না কেনে কতাই না বিচার করে!

মোটরে চড়ে ওর মন খুঁংথুঁং করে: গারে পড়ে এ-সব কথ।
শাপিরোকে কেন বলভে গেল ? কিছ রোখ চেণে উঠন সঙ্গে সজে:
কেন বলব না—ও বখন এলিওনোরাকে ঠেল, দিরে কথা বলভে
পারল—ভার সম্বন্ধ কিছুই না জেনে ?

ক্লুদ্ধেকে পোপের বসন্তানিলয় কী ক্লুব দেখার! চারিদিকে গাছপালা। হঠাৎ এক বুলবুল ভান ধরে দেয়।

প্লৰ বলে: की স্থলব ! হাল ওর হাছে।

এলিওনোরা গাঁড় টানডে টানডে বলে: গত্যি। এমন ভান দিকে পারে না আর কোনো পাঝি।

পল্লব টোকে: তা ৰলতে পারি না। আমাদের দেশে বসন্তে কোকিল বধন প্রথম ডেকে ওঠে আমি কিছুতেই কোনো কাছ করতে পারি না, তথু একমনে তনি আম তনি।

এলিওনোরা মৃত হেদে বলে: কারো মিরো! সামি কুলবুলকে বড় করিনি ভোমাদের কোকিলকে ছোট করতে। তুমি বড় ছেলেমায়ুল।

পালৰ ঈষং অংশস্ত হ'বে বলে: আমিও কিছু ভেবে বলি নি ওকথা। আমি দেশভক্ত বটে, ছেলেমাছ্যও হ'তে পানি, কিছ এটুকু ব্ৰুবাৰ বয়স আমাৰ হয়েছে যে দেশ বড় ছ'লেও সৰচেঃ ৰড় মানুষ।

এলিওনোরা চুপ ক'রে থাকে।

পল্লব বলে: কী হয়েছে ? ফের বেকীশ কিছু ব'লে ফেলেছি নাকি ?

এলিওনোরা মান তেসে বলে: না পল! কেবল—খাক গে— কী হবে ব'লে—যথন এর কোনো চারা নেই ?

পল্লব উদ্বিগ্ন হ'বে ৬১ : কী হয়েছে এলিওনোৱা ?

না থাক্। নিজের ছ:থ নিজে বওয়াই ভালো। সাল্ভিনি লিথেছেন তিনি এলেন ব'লে—দিন দশেকের মধ্যেই।

সাপভিনি থাক্। বলো কী হয়েছে ?

কাঁবলৰ ভাই ? সেই একই কথা ভো ঘুৰে ফিৰে—

না। আবার কিছু একটা হয়েছে। রুমুক লিখেছে না कি কিছু ?

এলিওনোরা মুখ নিচু ক'বে হঠাং ব্লাউসের হাভার চোখ

की लिप्थर्ह? यलस्य ना एडा १

এলিএনোরা চুপ ক'রে থেকে বলে গাচকঠে: কী জার লিগবে? ঠিকই লিগেছে। প্রথমে রাগ হরেছিল। কিছু সতা অপ্রিয়হ'লেই তো মিখ্যা হয় না স্ব সময়ে ?

কী অপ্রিয় সভ্য ও বলল ফের ?

ৰলিওনোৱা একটু চুপ করে থেকে বলে: জামাদের একটি প্রবচন আছে: 'Dal dire al fare, c'e di mezzo il mare'—ভনেছ কি ?

ना। की रामाल ?

এর মানে—বলার আর করার মারখানে গাঁড়িয়ে আছে অতল সমুদ। এটা ব্ঝেছি হাড়ে হাড়ে সেদিন। মুক্তফকে করেক মাস আগেও বঙ্গেছিলাম—ভালোবাসার জ্ঞে মেরেরা কী না করতে পারে? বিধাতা নিশ্চর সেদিন অলক্ষ্যে মুচ্চিক হেসেছিলেন।

পল্লব চূপ করে থাকে। এলিওনোরা ব'লে চলে: তবে আমার কি বনে হয় জানো? মনে হয়, যে কথা সেদিন তোমাকে বলেছিলাম: যে, কাল আমাদের দিনে দিনে জ্ঞান দান করতে পারে, কিন্ধ শক্তি হরণ করে—বিশেষ ক'রে আফ্মদানের শক্তি। ব'লে পল্লবের দিকে চেয়ে: আর একথা কতু সত্তিয় বুঝতে পারি— তোমাদের দেখে।

আমাদের ?

ভোমাকে, মোইনলালকে, বিতাকে। গব চেবে বেশি মনে হয় আজ বিতার কথা: এক কথায় সে সব হেড়ে চলে যেতে পারল তা। ব'লে একটু থেনে: যতই কেন না বিজ্ঞতার কণগান কবি পল, চিবলিন যোবনই হ'রে এসেছে জীবনের রাজা—থাকবেও জীবনের রাজা—কেন না, কেবল যোবনই এক কথায় ছাড়তে পারে পরিণাম-চিতা। আমরা—বিজ্ঞরা—পারি শুরু বড় বড় কথা বলতে। অথচ তেরু ওমর কত আমাদের—বে আমরা জানি! কিছ জেনে কী হয়? পারাই সব।

পদ্ধব একটু চুপ ক'রে থাকে, পরে বলে: কিন্ত এর মূল হারণ কি যৌবন, না স্বভাব ?

यात ?

মানে বারা পারে ভারা বোঁবন পেরিরেও পারে। ব'লে একটুথেমে: আর বারা পারে না বোঁবন তালের উচ্ছল করতে পাবে, কিন্তু বল দিতে পারে কি ?

থলিওনোরা হঠাৎ বলল: ভূল বুঝে অংবিচার কোরো না পুল! আইরিন তানয়—বা ভূমি ভাবছ।

পালব চম্কে ওঠে: কে বলল ? য়ুপুফ কি কিছু লিখেছে ?
এলিওনোরা ইতক্ত করে: না ঠিক্ আইরিনের কথা
লেগেনি, তবে—কিছ থাক ও কথা, আমাকে ও বলতে বারণ
করেছে।

পারব ক্ষা কঠে বলপ: কী এমন কথা যা তোমাকে লিখতে গারল অথচ আমাকে বলা মানা ? বলো—বলতেই হবে তোমাকে। খাইবিনের গঙ্গে কি ওব দেখা হয়েছে ? না, এ-ও বলা মানা ?

না। আইরিন এখনো বার্লিনে ফেরেনি—কবে ফিরবে কেট জানে না। এখনো সে স্থইজল তে। শরীর নাকি তার ভালো নয়—লিখেছে তাব দিদিকে।

প্রবের মনে অভিমান কুলে ওঠে, বলে: এই কথাটা জানাতে এড নিষেধ ? এলিওনোরার উত্তর না পেয়ে: বলো, বলভেই ইবে—আবো আছে নিশ্চর ?

এলিওনোরা বলল: কী বলব ভাই ? রুক্তফ করেকটা শ্বনা-কল্পনা করেছে মাত্র। আইরিন বে ঠিক কী ভাবছে তা ফেউ জানে না—কারণ সে কাউকেই কিছু লেখেনি।

ত্ৰু-

ভূমি বড় নাছোড়বান্দা। তবে শোনো। যুক্ষ লিখেছে বে আইবিনের দিনি মনে করে না আইবিণ তোমাকে বিবাহ করলে তার ফ্য ভালো হবেঃ

শুভ-দিনে মাসিক বস্থমতী উপহার দিন-

এই অন্তিমুল্যের দিনে আত্মীয়-শ্বজন বজু-বাছনীর কাছে
নামাজিকতা বক্ষা করা বেন এক গুর্কিবছ বোঝা বহুনের সামিল
হরে গাঁড়িরেছে। অথচ মান্তুবের সঙ্গে মান্তুবের মৈত্রী, প্রেম. শ্রীতি,
ত্বেহ আর ভক্তির সম্পর্ক বজার না রাখিলে চলে না। কারও
উপনয়নে, কিংবা জন্মদিনে, কারও ওভ-বিবাহে কিংবা বিবাহ
বাবিকীতে, নহুতো কারও কোন কুকুকায়্তার আপনি মাসিক
বন্ধমতী উপহার দিতে পারেন অতি সহুজে। একবার মাত্র উপহার
দিলে, সারা বছর ব'বে ভার শুভি বহন করতে পারে একমাত্র

किस चारेतिम किन लाप मा ता कथा शूल ?

এলিওনোরা বিজ্ঞ করে বজে: কুর হোরো না ভাই।
আইরিন ভালো মেরে—আমি বলছি ভোমাকে।

কেৰ এড়িবে বাহয়া ?

কী বিপদ! আমি কী বলব বলো দেখি—বখন, আমরা কেউই জানি না? আমি কেবল বলতে পারি একটি কথা: বে বাইরের ঘটনার যোগাযোগে মামুঘের যে ছবি ফুটে ওঠে অনেক সমরেই সে ছরি তার করপের দিলা দের না। একথা আমি জানি নিজেকে দিরে। আমি বিলাসে থাকি—কিছ তাই বলে সত্যিই বিসাসিনী আমি নই। ব'লে দীর্ঘনিখাস ফেলে: একথা বললে কে বিশাস করবে বলো? শেবের কথাগুলি বলে ও ধ্রাপলার।

পরবের হানর কারণো ড'রে ওঠে, বনে: তুমি বে বিলাসিনী নও আমি সম্পূর্ণ বিধাস করি। কেবল তুমি ছরত— তী ?

একটু কম উচ্চাশিনী হ'লে ভালো হ'ত। তবে হয়ত এখানেও আমি ভোমাকে তুল বুঝেছি। যদি তাই হয় তবে এই ভেবে আমাকে কমা কোরো বে, মানুব মানুবকে ঠিক বুঝতে চাইলেও প্রায়ই পারে না। বোধ হয় সেই জভেই যিত বলেছিলেন কাউকে বিচার না কয়তে।

এলিওনোরা সার দিরে শাস্ত হারে বলে: ঠিক সেই জান্তেই আমিও বলি তোমাকে, আইরিনকে বিচার না করতে। ব'লে একটু চুপ ক'বে থেকে আহা, ওকে একটু সময় দিলেই বা। ওর মনে অনেক কুঠা সংশব অশাস্তি হয়ত টগবগিয়ে উঠেছে। একটু খিতিরে বেতে শাও না।

পদ্ধৰ একটু ভেৰে বলে, ঠিক বলেছ এলিওনোরা ! ভাছাড়া— ৰদি ওকে সত্যি ভালোবেসে থাকি তবে ওব চিঠিই বা চাইব কেন ? তুমি বড় সময়ে কথাটা বলেছ। বওরা যথন ভার হয় তথনো ৰে সইতে পারে অফুবোগ ভাভিৰোগ না ক'রে, সেই না জেতে।

এলিওনোরা হঠাৎ বলে, জেতে? তথু স'রে? আমার তো ভাই মনে হর।

এলিওনোরা উদাস কঠে বলে, তুল পল, তুল। জেতে তরু সেই বে সব ছাড়তে পাবে। আর এ-সব-ছাড়ার দক্তি পার ও তথু সেই বে চলে হালরের ত্কুম মেনে, মনের মানাকে আমল দিরে নর। কিছ চলো—কিবি: মেখরা জড়ো হ'ছে।

চাদ চেকে গেছে, ওবা এতক্ষণ লক্ষ্য করে নি। হাওয়া উঠল। ওরা ক্ষিরলন।

মানিক বক্সমতী। এই উপহাবের জন্ত ক্ষুণ্য আবরণের ব্যবস্থা আছে। আপনি ভূষু নাম ঠিকানা টাকা পাঠিয়েই থালাস। প্রদন্ত ঠিকানার প্রতি মানে পত্রিকা পাঠানোর ভার আমাদের। আমাদের পাঠক-পাঠিকা জেনে ধুনী হবেন, সম্প্রতি বেশ করেক শত এই বরণের প্রাহকপ্রাহিকা আমরা লাভ করেছি এবং এবনও করছি। আশা কবি, ভবিষ্যতে এই সংখ্যা উত্তরোত্তর বৃদ্ধি হবে। এই বিষয়ে যে-কোন ফ্রাভব্যের জন্ত লিখুন—প্রচার বিভাগ ধাসিক বক্সমতী। কলিকাভা।



[Osamu Dazai's The Setting Sun"-44 अधूरीण]

यके जयात्र

বিজেৎের পুচনা

ি গদিন শোকসাগরে নিমজ্জিত অবস্থায় বেঁচে থাকা অসম্ভব!
কোন একটা কারণ নিশ্চরত আছে, বার জন্ত আমায় যুদ্ধ
থোবণা করতে হবে। নৃতন শান্ত—ভণ্ডনার রূপান্তর মাত্র। প্রেম. সে-ও
ভাই। অথনাতির নৃতম দৃষ্টিভঙ্গা বেমন রোজা লাজেমবার্গকে বেঁচে
থাকার প্রেবণা জ্গিয়েছিল, ঠিন তেননি আমার সমস্ভ সত্তা দিয়ে
প্রেমকে জাক্চড়ে থাকতেই হবে। সরসাময়িক আইনিশোরদ
আচারনিষ্ঠ অধান্দিক, প্রভাপসম্পন্ন ব্যক্তিদের ভণ্ডামীর মুখোশ
পুলে দিয়ে। নির্ভয়ে ঈশবের পায়ে আজুবিস্ক্রেন দেওয়ার যে বাণী
বাভ তাঁব বাবে৷ জন শিব্যের মুখে দিয়েছিলেন, আশার বর্তমান
অবস্থায় তা বিশেষ অপ্রযোজ্য হবে না।

ধ্যানা, রপো, তামা দিয়ে ঝুলি বোঝাই করো না। স্বাত্তাপথের বিবরণ, ছ'খানা কোট, জুড়ো কিখা ছড়ি কিছুই সঙ্গে নিও না, মনে শেখে: ভোমাদের আমি নেকড়ে-বৃচ্চের'ডেডর মেবশাবকের মত পাঠাছি, শ্বভবাং সপের ভার চ্ডুব ও কপোডের ভার নিরীই হ'তে হবে।

ৰার। দেহকে আঘাত দিরে আত্মার ক্ষতি করতে পারে লা, ভাদের ভর পেও না, বরং বে ব্যক্তি দেহ, মন উভরেবই শ্রীনাশ ক্ষতে পারে, তার কাছ থেকে দুবে থেকো। তোমধা ভাবো, ধরার শাভি আঁনাই বুবি আঁমার শাভি নর তরবারি বংব এনেছি আমি।

কারণ আমি পিতার বিরুদ্ধে পুত্রকে, মাতার বিরুদ্ধে ক্রন্তাবে, শান্তভীর বিরুদ্ধে পুত্রবধূকে উদ্ভেজিত করতে এগেছি এবং আপদ পৰিবারের মধ্যেই শত্রু বিজীবণের দেখা পাবে।

বে আমার চেয়েও তার বাবা-মাকে বেশী তালবাদে—দে আমার বোগা নয় এবং বে আমার চেয়েও তার পুত্রকভাকে বেশী ভালবাদে, দেও আমার বোগা নয়।

বে জন্মলান্ত করেছে, সে মন্তবেই, আর বে আমার জন্ত জীবন দেবে, ভার মরণ নেই।

বিজোহের স্থচনা।

বাদ প্রেমের কারণে আমি বীশুর এই বাণী পুখায়পুখ জয়সরণ করি, তবে তিনি আমার অপরাধী করবেন কি? দেহজ প্রেমের তুলনার আধ্যাত্মিক প্রেমকে কেনই বা উচ্চতর আসন দেব? এ আমার বোংগম্য নয়। আমার ধারণা তুই-ই এক। বে নানী প্রেমের অন্ত, অজানা এক প্রবৃত্তি চরিচার্থ করার জন্ত কিয়া আয়ুর্যাদক তুংখের কারণে, দেহ-মন নরকে বিসর্জন দিতে প্রস্তুত, আমি সেই নারী। এই আমার গর্ম।

ইজুতে সমাধি দিয়ে, টোকিওতে অনুষ্ঠানাদির ব্যবস্থা কবলেন মামাবাব্। অতঃশর নাওজি এবং আমি, গুজনের বৌধ সংসার এমন বিজ্ঞী মোড় নিল বে. মুখোমুখি পড়ে গেলেও পরস্পারের মধ্যে কথা হয় না। মারের সমস্ত গছনা বিজ্ঞিকবে, নাওজি পুছক অকাশনীর মূলধন সংগ্রহ করল। টোকিওতে নেশার চুড়াল্ল করে ও বখন টল্ভে টল্ভে বাড়ী ফিনড, তথন তার মড়ার মত সালা মুখখানা দেখে চুরল্প ব্যাধিগ্রন্ত রোগীর শেব অবস্থা বলে মনে

একদিন বিকেলে নাউকীশ্রেণীর এক মেরেকে নিরে সে বাড়ী বিবল। এর পর আর এক দণ্ডও ডিপ্রনো বার না দেখে বললাম—আন কটা দিন টোকিওতে ঘ্রে আসতে চাই। আমার এক প্রনো বন্ধ সঙ্গে বহুকাল দেখা হয় নাই, তার ওখানে ঘূটো-তিনটে রাড খেকে আসব। তুমি একটা দিন সংসার দেখো—কেমন? ভোমার বান্ধবী রালা করে দেখেখন।

নাওজির তুর্বকাতার প্রবোগ নিতে এক দণ্ডও ইডন্তত করলাম না। প্রভরাং এক্ষেত্রে সাপের ধৃন্তামি প্রয়োগ করে ব্যাগের ভেতর প্রসাধনের টুকিটাকি সার কিছু থাবার নিয়ে টোক্টিওতে অভিসারে বেক্সাম।

এক সময়ে কথাছলে নাওজির কাছ থেকে জেনে নিলাম থে, টোকিওর ছোট লাইনে ওগিকারু টেশনের উত্তর ফাটক থেকে মিটার উরেহারার বাড়া মাত্র কৃতি মিনিটের রাজা। সেদিন এলোমেলো বেগে শরতের হাওয়া উঠেছিল। ওগিকারু টেশনে নামতে অককার ঘনিয়ে এল। এক পথচারীকে মিটার উরেহারার বাড়ীর ঠিকানা জিজেদ করলাম। সঠিক নির্দেশ পাবার পরেও প্রার ঘণ্টাথানেক অককার গলিতে উদ্দেশবিহীন তাবে ঘুরে বেড়ালাম। একা ঐ অবহার চোথে জল এল। হঠাৎ একটা পাথরে হোঁচট্ট থেরে চাটির ট্রাণ আল্গা হয়ে এল। অসহার হ'য়ে ভাবছি কি করা বায়, এমন সময় আমার ভানহাতি বাড়ীর সারির ব্রুছি করিটার গারে গৃহক্রীর নাম টোথে পর্কা, অস্কার্যর এক ধ্যাব্ডা সালা। এমনি কেমন বেন

रुव्य এবার কেনবার সময়

जिल्यान-अध्या काजि युक्त प्ताथ कितावत

कलिकाण-୬ नैस, नल, वज्रु ग्रांख त्काः आरेख्णे लिः মদে হ'ল, এ নিশ্চর মিষ্টার উরেছারার মাম। এক পারে চটি পরে থুঁড়িয়ে থুঁড়িয়ে দরজা পর্যন্ত এপোলাম। নামের ওপর ছম্ড়িথের দেখলাম বাস্তবিক তাই। উরেছারা জিরো। কিন্তু ভেকুরটা যে একেবারে জন্ধকার!

যিনিট থানেক চূপ করে ভাবলাম, কি করা বায়। শেব পর্যন্ত ছবিয়া হরে দরজার গায়ে দেহ এলিয়ে দ্বিলাম—মনে ছুল এখানেই অক্সান হয়ে পড়ে বাব।

জানালার নার্নিতে হ'ছাতের আকুদ দিরে টোকা মেরে ফিন্ফির জুরে বদলাম—মাপ করবেন মিটার উরেছারা!

गांका भिज्ञत वाहे किन्त बामानत्ते। त्वाज्य श्रीत्व काका शृत्व ह्वाज जामाद काल जिम कात्र बहुदतत्त म्ह्न, त्यादका शक्ताशा जीवाकी श्रीक महिलादक व्यवकात प्रदेश मात्म (श्री श्रीका) मुद्द ह्वाज क्वित्वज्ञ कर्नालन—दिक श्री श्री शंजीय प्रदेश मा जाहि बांगी। भ्री जाहि जहां।

মাপ করবেন, আমি—নাম বলার অবসর হ'ল মা, আমার প্রেম ৩ম চোখে বুলা রূপ নিতে পারে, এই আশকার সবিনর প্রায় করলাম— মিটার উরেহারা বাড়ী আছেন কি ?

সা। আমার প্রতি দৃটিতে তীর করণার ছারা কিব সাধারণতঃ তিনি বেখানে বান---

এথান থেকে অনেক পুর ?

না। মনে হ'ল আমার কথার তিনি কোঁতুক বোধ করছেন। ওগিকাবুতে। টেশনের সামনে শির্ছিশি থাবারের লোকানে থোঁজ নিলে, তারা বলতে পারে।

উত্তেজনায় নাচতে ইচ্ছে इन।

ও কি ? আপনার চটির এ অবস্থা কি করে হল ? আমার ভেতরে ভেকে নিরে গেলেন। বৈঠকথানার বেঞ্চের ওপর বসতে, মিষ্টার উরেহারা আমার একথানা চামড়ার ট্র্যাপ দিলেন। আমি যথন চটি মেরামতে বাস্ত, তথন তিনি একথানা মোমবাতি ছেলে আনলেন। অত্যস্ত লজ্জিত, আমাদের হ'থানা বাবই পুড়ে গেছে। আমার স্বামী বাড়ী থাকলে একথানা আনিরে নিতাম। কিছ হ'বাত হ'ল তিনি ফেরেননি এবং মেরে নিরে আমি সকাল সকাল ভবে পড়ি। পকেটে একটা প্রসা প্র্যান্ত নেই।

তিনি অত্যন্ত সরল, সহজ গাসিমুখে কথাগুলি বললেন। তাঁর পেছনে দাঁড়িয়ে বছর বারো-তেরার একটি নীর্ণ মেরে রড় বড় চোথে আমার লক্ষ্য করছিল। মনে হল একেবারেই মিশুকে নর। এদের আমি কিছুতেই আমার শক্ত মনে করতে পারলাম না, কিছু এতটুকু অনুমান করা কঠিন ছিল না যে, একদিন এরা আমার কি রকম ঘূণার চোথে দেখবে। এই চিন্তা মনে আসতে আমার সমস্ত প্রেমের তাপ নিবে হিম হরে গেল। চটি মেরামত করে দাঁড়িয়ে উঠে হ'হাভ দিরে হাতের ধূলো ঝেড়ে নিলাম। সেই মূহুর্তে জলানা হুঃখে, আশকার আমার মন ভারী হরে উঠল। ইছে হল বৈঠকখানার ঐ অন্ধকারে দােড়ে গিয়ে মিসেন উরহারার হাত ছ'বানা নিজের হাতের মধ্যে তুলে নিই। তাঁর সঙ্গে গালা জড়িয়ে কেঁদে মনটা হাতা করে নিই। এ চিন্তার আমার সারা শরীর কেঁপে উঠল, কিছু ভবিব্যুতে আমার আচরবের মধ্যে কি পরিমাণ ভগ্তামী ও কদর্য্যতা প্রমাণিত করে, সে কথা মনে করে এ সকর ত্যাগ করলামা

আমার আভবিক কৃতকতা প্রহণ ক্রবেন। এই কথা বলে আভুমি নত হবে প্রণাম করে ছুটে বাইবে পালিবে এলাম। করে ছাওরা আমার সারা দেহ ছিন্নভিন্ন করে দেবে মনে হ'ল। মনে মনে বিদ্রোহ ঘোষণা করলাম। আমি তাঁকে ভালবাসি, তাঁর কল আমার অভ্যাত্মা কেঁদে মরে, তাঁকে আমার চাই-ই। তাঁর প্রতি ভালবাসার বেগ রোধ করার শক্তি আমার নেই। এ-ও আমি জানি রে, তাঁর স্ত্রীর মন্ত্র বাধ করার শক্তি আমার নেই। এ-ও আমি জানি রে, তাঁর স্ত্রীর মন্ত্র বাতার মহিলা ভচিৎ চোথে পড়ে। তাঁর মেরেটিও ক্রন্তর্গ, ক্রিক আমি ক্রাবের আলালতে আসামীর কাঠগড়ার বাঁড়িরে আহি; মনে আমার অপরাধের প্রানির বেথামাত্র নেই। প্রেম ও বিল্লোচর ভারণে মানুবের করা। আমার পান্তি ঘেষার কোন মুক্তিন্তর ক্রাবেণ মানুবের করা। আমার পান্তি ঘেষার কোন মুক্তিন্তর অভুভাত ক্রমবের হাতে নেই। আমি অসতী নই। আমি ওঁতের ঘণ্ডার্থ ভালবাসি এবং জান্ত্র সক্রসাত্তর করা হেন কান্ত এই বা আমার আসার। প্রয়োজন হ'লে ছ'-ভিন রাত আমি ঘার্টে-মন্টে ওয়ে কান্তির দিয়ের পারি। বাা, আমার ইক্সা পূর্ণ হবেই হবে।

ট্রেশনের সামনে শিরাইশি থাবার দোকান খুঁছে হিছে

অস্থবিধা হল না, দেখানে তাঁকে পেলাম না। তবে নিশ্চর্য
আসাগাওয়াতে আছেন। সন্তবতঃ আসাগাওয়া টেশনে
উত্তর ফাটক থেকে সোজা দেড়শ' গল্প এগিয়ে বেতে হবে

সেখানে এক লোহার মিন্তার দোকান পোরের আরও প্রার প্রশাল
গল্প এগিয়ে উইলো নামে ছোট হোটেল। তারই এক পরিচারিকারে
নিরে বর্তমানে মিষ্টার উরেহারা মেতে আছেন, সেইখানেই সারাট

দিন পড়ে থাকেন। আপাতত তাঁর কারবার এখানেই সীমাবদ :

ট্রেশনে টিকিট কেটে টোকিওর ট্রেল ধরলাম। আসাগাওলে নেমে নির্দ্ধেশ অনুষায়ী শেষ পর্য্যস্ত উইলোভে গিয়ে উপস্থি ই'লাম কিছু সেই হোটেল তথন খাঁ-খাঁ করছে, কেউ নেই।

একদল লোকের সঙ্গে এইমাত্র বেরিয়ে গোলেন। এখান ংগত তারা নিশিওগির 'চিজেরি'তে রাততর মাতলামী করতে গেলেক এই পরিচারিকার বয়স আমার চেয়ে কমই হবে, ধীর, দ্বির মাজি বলেই মনে হ'ল। জানি না, এই মেয়েই তাঁর বর্তমান প্রগতি কিনা!

চিচ্ছেরি ?—নিশিওগির কোন্ জায়গায় হ'তে পারে ? হতাশা চোথে জল আসার জোগাড়। হঠাৎ সক্ষেহ হ'ল আমার মাধা কেমন গোলমাল হ'বে গোল না তো ?

ঠিক জানি না, তবে মনে হয় ষ্টেশনের দক্ষিণে হবে। শাহাক, পুলিশবল্পে থোঁজ নিলে নিশ্চয় তারা বলে দেবে। কিন্তু ? এক জায়গায় আটুকে থাকার মত মানুষ তিনি নন। পথের মানুষ জার কোথাও না জড়িয়ে পড়েন।

আমি চিজেরিতেই আগে থোঁক করব।—ধন্তবাদ! আব টেশে উঠলাম—এবার একেবারে উল্টো দিকে। নিশিওগিতে নে ঝড় মাধার নিয়ে পুলিশবক্সের সন্ধানে পথে পথে ঘুরে বেড়াসান সেধান থেকে চিজেরির ঠিকানা জোগাড় করে অন্ধকার পথে প্র ছুটে চললাম। চিজেরির নীল বাতি চিনে সোজা গিরে দরজা গ্র চুকলাম। দম-বন্ধ-করা ধোঁরার ভরা ছোট ঘরে দশ-বারো ই মাতাল একটা মস্ত টেবিল ছুড়ে হৈ-হৈ করে মদ থাছে। ভার মর্ ভিন জন মেরে। আমার চেরেও ছেলেমানুষ পুক্রদের সঙ্গে স্ট খরের এক পানে সরে সিরে চারি নিকে চোখ বুলিরে তাঁকে খুঁজে বের করলাম। মনে হল খপ্প দেখছি বুঝি! এ বেন ভিন্ন মান্ত্ব! মাবের ছ'টা বছরে গোটা মান্ত্রটাই পান্টে গেছে।

এই কি আমার রামধন্ত এম, সি, বিনি আমার জীবনের একমাত্র আরাধ্য-দেবতা ? ছ' বছর ! আগের মতই অবিভক্ত কেশদাম— বর্ত্তমানে বিবর্ণ ও বিরঙ্গ হরে এসেছে । মুখখানা ফীত ও নিপ্তাত, চোখের কোল বেঁবে কক্ষ লালিমা । সামনে ক'টা দাঁত পড়ে গেছে এবং ক্ষমাগত কি বেন বিড়-বিড় করে চলেছেন । দেখে মনে হ'ল ব্রেৰ কোণে একটা বুড়ো বাঁদর পিঠ উচিবে বলে আছে !

আমার দেখে একটি মেরে মিটার উরেহারাকে চোথ টিপে ইশারা করল। ডড়লোক বসে বসেই গলা বাড়িবে আমার দেখলেন এবং নির্মিকার ভাবে থুতনি নেড়ে আমার ডেডবে ডাকলেন। দলের আর সকলে বেন আমার দেখতে পায়নি, এই ভাবে সমানে হৈ-হৈ করডে লাগল, কিছু ওরই মধ্যে নিজের একটু সবে ব'সে মিটার উরেহারার পাশে আমার জারগা করে দিল।

আমি কোন কথা না ব'লে চূপ করে বসে বইলাম। মিঠার উরেছারা গেলাস তরে ধেনোমদ ঢেলে দিলেন। তারপর নিজের গেলাসটিও তরে নিমে হেডেগলার বললেন—থেরে নাও।

আমাদের গোলাস হু'টি কোন মতে পরস্পারের গৈছ স্পর্শ করে মৃত্ করুণ ট্রং লক্ষ তুলল।

কে যেন চিংকার করে উঠল,—গিলোটিন্, গিলোটিন্, সু, সু, সু। সঙ্গে সঙ্গে আর একজন ধুরো ধরল, গিলোটিন্, গিলোটিন্, সু, সু, সু। তারা পরম্পর গোলাস ঠেকিয়ে মদে চুমুক দিল। দলে দলে তারা ঐ তাবে অর্থহীন কথাগুলি সুর করে বলে আর গোলাস ঠুকে মদ খার। যেন ঐ পাগলের প্রালাপ তাদের মদ খারার প্রেরণা বোগাছে। যেই একজন কোন অজ্হাতে বেরিয়ে বাছে, সঙ্গে সঙ্গে নতুন অতিথি ঘরে চুকে মিষ্টার উর্যেহারাকে মাথা নেড়ে অভিবাদন করে দলের মধ্যে ভিড়ে বাছে।

মিষ্টার উরেহারা, আপনি জানেন একটা জারগার নাম?
আহার! আছা বলুন তো, কথাটার সঠিক উকারণ কি হ'তে পারে? আ:-আ:-আ:। না আহা:-আ:? যে লোকটি সামনে বুঁকে এই প্রশ্ন করল আমি ডাকে ষ্টেকে অভিনর করতে দেখেছি, আমার পরিকার মনে আছে, এর নাম কুন্দিটা, কথাটা আহা:-আ:। মর ভূমি বললে, আহা:-আ:; চিজেরির মদ সন্তা নর।"

একটি মেয়ে বলে উঠ্ল—লাপনি একটি মাত্র বিবরে কথা বলতে জানেন, সেটি হ'ল টাকা।

এক ছোক্রা ভদ্রলোক—এক ফাদিং-এ ছ্-ঢোক, ৰামী হ'ল, না সন্তা হ'ল !

আর এক ভদ্রলোক—বাইবেলে বলে ভোষার শেষ কালিটা পর্যান্ত দিরে যেতে হবে। একজনের গাঁচটি গুণ আছে, আর একজনের আছে হ'টি, আরও একজন একটি মাত্র গুণের অধিকারী— বাবাঃ, লম্বা ফিরিস্তি। যীশুর হিদেবের বজ্ঞ কড়াকড়ি ছিল।

আর একজন বললেন—আবে, তার চেরেও বড় কথা হ'ল, তিনি নিজে মদ খেতেন। বাইবেল ভর্তি মদের গল। বে সব লোক মদ ভালবাসে তাদের নিয়ে অনেক আলোচনা পাবে, ছিছু বারা মদ খার, তাদের সক্ষে উচ্চবাচ্য নেই। গুরু ভালবাসলেই পাপ; এতে প্রমাণ হর বীও নিজে নিশ্চরই মর্থ থে চন। আমি বাজি রেখে বলতে পারি, উনি এক নাগাড়ে ছই কোরার্ট মদ টানতে পারতেন।

হরেছে, হরেছে, বংগ্রন্ত হরেছে। আমাদের মধ্যে ধর্মজীক বারা, তারাই যীওকে নিয়ে টানাটানি করে। ও-সব রেখে মদ চালিবে বার্ড। গিলোটিন, গিলোটিন, সুস্কুস্তু।

মিষ্টার উরেহার। দলের মধ্যে স্বচেরে ক্রন্সরী তর্নণীর সেলাদের লজে সজোরে নিজের গোলাস ঠুকে মদে চুম্ক দিলেন। ঠোঁটের কণ বেরে গাড়িরেন্পড়া তরল পদার্থটুকু অসভ্যের মন্ত হাতের চেটোডে ছুছে নিলেন। পর বুহুর্জে পাঁচ-ছুম্বার প্রচণ্ড হাঁচি দিলেন।

আমি নিঃশকে উঠে পাবের ঘরে গেলাম। ফ্যাকাশে, কর্ম চেছারার ছোটেলকর্ত্রীকে ভিজ্ঞেস করে কলমারর পথটা ভেলে নিলাম। ঘরে চুকে দলে পৌছবার পথে দেখি 'চী'—সেই স্থলবী ছেলেমাছব মেরেটি আমার জন্তে অপেকা করে দীড়িয়ে আছে।

মধ্ব হেলে আমার প্রশ্ন করল—ক্ষিদে পারনি ভোমার ? না, সঙ্গে কটা আছে।

হুৰ্মল চেহারার পূর্বোক্ত মহিলাটি তিটাবের ওপর ক্লাক্তভাবে
ক্রুকে পড়ে বললেন,—দেবার মন্ত বিশেব কিছু নেট আমাদের ;
সামান্ত বা আছে ছটি মুখে দেবে এস। এই মাহালদের পালার
পড়লে সারা রাভ পেটে কিছু পড়বে সে ভরসা নেই। এদিকে চী-এর
পাশে বদে পড়।

এই কিমু—এদিকে মদ ফুরিয়েছে। পাশের ঘর থেকে এক ভদ্রলোকের সাড়া পোলাম। কিমু ঝি 'বাই' বলে দশ বোডল থেনো মদ একটা টের ওপর বসিরে রাল্লাঘর থেকে বেরিয়ে এল।

হোটেলকর্ত্রী তাকে মাঝপথে ধামালেন—এক মিনিট দাঁড়াও, আমাদের এথানে হ'বোতল রেথে যাও। পবে মৃত্ েদে যোগ দিলেন—তোমায় কিন্তু একটু কট দেব। স্থল্ট্যার কাছ ধেকে হ'বাটি মুডল নিয়ে এস। যাবে আর আসবে।

আমি চী-এর পাশে বসে পড়ে ভিটারে হাত শেঁকতে লাগলাম।

আয়াস করে বসো, এই নাও কুশন, দিবা ঠাণ্ডা পড়েছে—না ? মদ থাও না ভূমি ? মাদাম্ প্রথমে বোতল থেকে মদ ঢেলে নিজের পেরালা ভর্তি করলেন, পরে আমাদের ভু'জনের পেরালাও ভবে দিলেন।

আমবা তিনজনে নীরবে পান করতে লাগলাম। আশুর্ব্য অস্তরক স্থবে মাদাম বললেন—ভোমরা ত্বজনেই হল থেতে অভ্যক্ত শেখছি!

সামনের দরজা খোলার শব্দে চেরে দেখি, এক তরুণ যুবা বলছে—
মিষ্টার উরেহারা, মালিক এমন কিপটে যে, কিছুতেই বিশ হাজার ছাড়তে রাজী হল না, শেষ অবধি কোন রক্ষে দশ হাজার বাগিন্থ এনেছি।

চেক ? মিষ্টার কক গলার ভ্স্কার দিলেন।

ना, याथ क्वरवन । नगम।

ঠিক আছে, আমি একথানা রসিদ দিবে দেব'খন। দলের আং পাঁচজন একটানা গিলোটিন, গিলোটিন, অ-ছ-ছ গেছে চলল। এমন অবস্থা বে, কথাবার্তার মাঝেও থামে না।

মানাম্ বথেষ্ট চিন্তিত ভাবে চীকে জিজ্জেস করলেন,—নাওি কেমন আছে !

চী-এর গালে লালের ছোপ লাগন—ইডন্তত করে **অ**বাব দিল— 🗣 কৰে জানৰ বল ? আমি তোমাৰ গাৰ্জেন নই।

चारली विक्रिक ना हरद बालाम् चाराद वनरनम-भरन हद সম্রতি মিটার উয়েহারার সঙ্গে তার কোন পথগোল হয়েছে, নইলে ছু জনে ভো বন্ধাৰর একসকে থাকেন।

ভনেছি আত্মকাল সে নাচ শিথছে, সম্ভবতঃ কোন নাচওয়ালীর পালার পড়েছে।

নাওজি বড় বেহিসেবী, মদের ওপর আবার মেয়েমানুর !

मिड्डीब উराइहाबा এই बकमरे वस्कारख करबरहन।

একেবারে গোল্লায় যাবে ছেলেটা, যখন ওর মত নষ্ট ছেলে একবার এ বাজাৰ পা ৰাড়িয়েছে---

ষ্ঠ ছেলে আমি বাবা দিত্তে বাধ্য হলাম। চুপ করে শোন। **डेहिड हरद ना घरन करद रमनाय---धान कदररान, ना**ङ्खि आ

मानाम व्यक्षक इ'रव वामात मूर्थित निरक (हरद तरेटनन । हो কিছ সহজ গলার বলল—তোখাদের চেহারার কিছ খুব সাদৃত্য আছে। ভোমার বাইবে গাড়িয়ে থাকতে দেখে আমি এক মিনিটের জন্ম চমকে **উঠেছিলাম, মনে হয়েছিল সেই বঝি।**

মাদামের গলার স্বরে প্রস্নার ভাব ফুটে উঠল।

হাা তাই ভো। তাহ'লে ভূমি এই নরকে এলে কেন? মিষ্টার উরেহারার সঙ্গে আলাপ ছিল বৃঝি ?

হাা বছৰ ছয়েক আগে আমি ওঁকে একবার দেখেছিলাম-মামার গল। বুল্লে এল, চোখ নীচু করলাম।

মুড়ল হাতে ঝি দেখা দিল, এত দেরী হয়ে গেল, ভারী লক্ষায় পড়লাম।

মাদাম আমার দিকে বাড়িয়ে দিয়ে বললেন—ঠাণ্ডা হংার আগে থেয়ে নাও।

ধক্সবাদ, বলে জুডল-এব ধোঁয়ার মধ্যে মুখ গুঁজে দিয়ে চটপট খেতে হক করলাম। বেঁচে থাকাব অসীম তু:খ আমি বেন জীবনে এই প্রথম এমন গভীর ভাবে অনুভব করলাম।

অসুট কঠে গিলোটিন, গিলোটিন, স্থ, স্থ, স্থ, গুন্তন্ করতে করতে মিষ্টার উয়েহার। ঘরে চুকলেন। আমার পাশে ধপ করে ব'সে পড়ে নীববে একখানা মন্ত থাম মাদামের হাতে তুলে দিলেন।

থামে কি আছে না দেখেই মাদাম সেটিকে দেয়াজে চালান করলেন। হাসিমুখেই বললেন—ভেবো না এতেই তুমি পার পাবে। আমাকে কাঁকি দিয়ে পালাতে পথ পাবে না।

হবে, হবে, সামনে বছর সব শোধ করে দেব।

এত কি বিশ্বাস করতে বল ?

দশ হাজার ইয়েন্—কভ অজ্জ বাল্ব কেনা যায় এ দামে। ঐ টাকায় আমার মত মাস্থ্র একটা বছর হেসে-খেলে কাটিয়ে দিছে পারে।

এই লোকগুলোর মাথায় ছিট্ আছে, কিছু বোধ হয় ঠিক আমার ৰে দশা, এদেরও ভাই। এমনি করে বাঁচতে না পারলে এরা মরে ৰাবে। এ কথা যদি সভ্যি হয় বে, এ পৃথিবী ত জন্ম নিলে মানুবকে ৰা হোকৃ কৰে জীবন কাটিয়ে ষেতেই হবে, তাহ'লে তার বেঁচে থাকাৰ প্ৰয়াস, হোকু না তা কৰ্মগ্ৰা—নিজেৰ চেহাবাৰ মত বিত্ৰী,

তবু তাকে বোধ হয় সুণা করা উচিত নয়। 'ভগু বেঁচে থাকা, ভগু জ্ঞাণ ধারণের গ্রানি এ এক পর্বতপ্রমাণ দারিখ—বার সামনে মানুষ বোকার মত ফ্যাল-ফ্যাল্ করে ওধু চেয়েই থাকতে পারে।

ষাই হোক—পাশের বরে এক ভদ্রলোকের গলা পোনা গেল— এখন থেকে টোকিওর মানুষ যদি মৌথিক ভত্রতামাত্র বন্ধায় রেখে. অভ্যস্ত ভাসা-ভাসা ভাবে পরস্পরকে গ্রহণ করতে না পারে, তবে শিক্ষিত মছলের সর্বনাশ খনিরে আসবে। আভকের দিনে সন্মান, বিশ্বাস আদি গুণাবলি লোকের কাছে আশা করা মূর্য তা। এ বেন কাঁসিকাঠে ঝোলানে। মাছুৰকে ঠ্যাং ধরে টান মারা। শ্রন্ধা ? সততা ৷ ৰাজে কথা ৷ এরা তোমায় ৰদি আট্টে-পুঠে জড়িয়ে থাকে, তবে ভোমার আর রক্ষা নেই। আজ কীবনসমুদ্রের ওপর দিয়ে আলগোছে গা ভাসাতে না পাৰলৈ তিনখানি মাত্ৰ রাস্তা খোলা খাকে—গ্রামে ফিনে চাববাস করা, আত্মহত্যা করা, অথবা বেঞাবৃত্তি।

আৰ একজন বললেন—ৰে হডভাগা এ তিন ৰাস্তাৰ একটাও নিতে পারে না, তার জন্মে শেষ রাস্তা খোলা আছে—উয়েছারার কাছে ধার করে পাঁড় মাতাল হ'য়ে পড়ে থাকা।

সিলোটিন্, গিলোটিন্। স্থ, স্থ, স্থ।

আধ্চাপা গলাম মিষ্টার উয়েহারা জিজ্ঞেদ করলেন—এখানে ভোমার রাভ কাটাবার কোন ব্যবস্থা নেই বোধ হয়। আছে ?

আমি ? মনে হ'ল একটা সাপ নিজেকে ছোবল্ দেবাৰ জ্ঞ মাথা থাড়া কৰে উঠেছে। বিদ্রোহ। বিজাতীর বুণার আমার সাবা শবীব শক্ত হবে টঠল।

আমার এই বিভূকাকে সম্পূর্ণ উপেকা করে আবার প্রশ্ন করলেন—আমাদের সকলের সঙ্গে একখরে ভতে পারবে? বাইবে যা দাকণ শীভ।

মাৰাম বাধা দিয়ে বললেন—না, অসম্ভব! ভোমার হানয় বলে কোন পদার্থ আছে ?

মিষ্টার উরেহারা দাঁতের গোড়ায় ভিড্ ঠেকিয়ে বিবক্তি স্চক শব্দ করংলন-ভাছলে ওর এখানে আসাই উচিত হয়নি।

আমি চুপ করেই রইলাম। তাঁর গলার স্বৰ আমায় সেই মুহুর্তে বুঝিমে দিল যে, আমার সব চিটিই উনি পড়েছেন এবং সঙ্গে সঙ্গে অমুভব করলাম, আমার প্রতি ভদ্রলোকের তুর্বলভার অস্ত নেই।

তিনি বললেন—উপায় কি এখন ? ফুকির ওখানে একখানা বিছানার ব্যবহা হ'তে পারে। চী, এঁকে সেধানে নিয়ে যাও— কেমন ? না, ছটি মেয়ের পক্ষে এত রাতে পথে বেরুনো ঠিক হবে না। को আল।! আমায় নিজেকেই বেভে হল দেখছি।

পথে বেরিয়ে ৰেশ বোঝা গেল রাভ প্রায় মাঝবরাবর পৌছেছে। ৰাতাসের ৰেপ কমেছে, ভাষারা আকাশ জাঁকিয়ে সভা ভেকেছে। আমরা পাশাপাশি হেটে চললাম।

আমি বলগাম-অন্তদের সঙ্গে বেশ গুডে পারতাম। মিষ্টার উরেহারা ঘূমচোখে ঘোঁৎ-ঘোঁৎ করে উঠলেন। ৰুছ হেসে আমিই আবার বললায—আপনি ইচ্ছে করেই আমার সঙ্গে এলেন—

বিবক্ত হাসিতে মুখ বিকৃত কৰে অবাব দিলেন—সেই তো হয়েছে ৰত আলা।

সংখ্যান অনুভার কর্মান, ওদ্রালোক আমার প্রেমে পড়েছেন। আপনি দেখছি দাকণ মদ খান। এই কি রোজ রাজের ব্যবস্থা?

প্রভাক দিন। ভোর থেকে ইঞ্ল হয়।

মদ এত ভাল লাগে ?

বিশী গন্ধ।

গলার স্বরে এমন কিছু ছিল, বা ওনে আমি শিউরে উঠলাম। আপনার কাজ কেমন চলছে ?

থুব থারাপ। এখন যাই লিখতে বসি, ভাই বোকার মত ছিঁচ্কাঁছনে হয়ে দীড়ায়। জীবনে সন্ধ্যা, শিল্পপতে সন্ধ্যা, মানবজাভির সন্ধ্যা! কি চরম অধঃপতন!

মুখ ফদুকে বেরিয়ে পেল,—ইউট্রেলো।

হাঁ ইউট্লো। লোকে বলে ভক্তলোক থাজও জীবিত আছেন—
কিন্তু মদ এখন তাঁকে থাছে। কন্ধালদার দেহ। গত দশ বংশর
যাবং তাঁর ছবি অবিশাস্ত রকম অশ্লীল এবং ভতোধিক লগত ছবি
আঁকছেন ভক্তলোক।

তথু ইউটেলোই নন—বেশীর ভাগ প্রতিভাবান লোকেরই আজ এই দশা—না ?

হাা—তাদের স্জনীশজিতে ভাটা পড়ছে। কিছ নডুন বারা, তাদেরও ঐ একই অবস্থা, কুঁড়িতেই শুকিরে বাছে। তুবারাঘাত! বেন অবালে তুবারপাত হয়ে সারা ছনিয়াটা আছেল করে ফেলেছে।

হাজা হাতে আমার কাঁধ বেষ্টন করে আছেন। এ বেন তাঁর গরম আচ্ছাদনের অন্তরালে আমায় রক্ষা করার প্রয়াদ। এক প্রত্যাগ্যান করার শক্তি আমার কই ? হাঁটতে হাঁটতে তার আলিঙ্গনের মধ্যে নিজেকে ঘনীভূত করে আনলাম।

পথের পাশে বৃক্ষশাখার দল, পত্রমাত্র-বিবর্জিত অবস্থায় তারা দল বেঁধে রাতের আকাশ ভেদ করে ভিক্ষে করতে বেহিয়েছে। ভারী ক্ষমত ভালগুলি—না ? মিজের মনেই বল্লাম।

কেমন যেন না-বোঝা স্থার প্রশ্ন করলেন—তুমি বল্তে চাও— এই কালো-কালো ভালগুলির সঙ্গে ফুলেনের মিতালির কথা,— তাই না ?

না। ফুল, পাতা, কুঁড়ি কোনটাই না। আমি ভাসবাসি গাছের ডাল। সম্পূর্ণ রিক্ত অবস্থাতেও তারা সম্পূর্ণ প্রাণরসে সিক্ত। মরা ডালের সঙ্গে এদের কতে তফাং!

কর্মাত প্রকৃতির প্রাণরসের ভাণার এখনও পরিপূর্ণ আছে এই ভো ? বলতে গিয়ে ভন্তলোক করেকটা প্রচণ্ড হাঁচি দিলেন।

শাপনার ঠাণ্ডা লেগেছে !

না, তা নয়। আমাদের মদের নেশা যথন চরমে ওঠে তথ্ন এমনি হাঁচি। এ বেন আমার নেশার পরিমাপ বস্তু।

আর প্রেম ?

क ?

অনুবাগের

শিখরে উঠেছে ?

ঠাটা করো না আমার নিরে। মেরেরা সব সমান। এমন উটিল তাদের মনোভাব। গিলোটিন্, গিলোটিন্ সু-সুস্থ। বাস্তবিক্ট একজন আছে। না ঠিক একজন নয়, আধ জন আছে। চিঠিগুলো পড়েছিলেন ?

ग्र ।

আপনার কাছ থেকে কি রকম উত্তর আলা করতে পারি ?

আসলে বনেদি চালে আমার অকচি। সব ব্যাপারেই তাদের কেমন বেন উদ্ধৃত, নাক-উচু ভাব। সেদিক থেকেঁ ভোমার ভাই নাঙকি যথেষ্ঠ উৎবে গেছে, কিছু সে-ও মাবে মাবে এমন জমিদারী মেজাক করে যে, আমার পক্ষে ভা অসহ হয়ে ওঠে।

এই রকম ছোট নদীর পাশ দিয়ে গেলেই ছেলেবেলার গাঁরের নদীতে জাল ফেলে মাছ ধরার কথা মনে পড়ে, বুকের ভেতরটা হাহাকার করে ওঠে।

অন্ধকারে অস্পষ্ট শব্দ করে বরে চলেছে এক ছোট্ট নদী, আমরা ভার পাশ দিরে গাঁটছিলাম।

তোমবা বড়লোকেরা শুরু যে স্থামাদের ছঃখ বোঝ না তাই না, উপরস্ক ছণা কর।

ভাহৰে তুৰ্গেনিভকে কি বলতে চান ?

গে-ও ভো ভোমাদেরই দলে—এর প্রতি আমার যথেষ্ঠ বিভ্রুল আছে।

তার স্পোটস ম্যান্স ক্লেচেস ?

হাা, ওর ঐ একমার বই মন্দ হয়নি বলা বার।

গ্রাম্যজীবনের বেদনায় ভরা বইখানি।

বেশ, মানলাম তিনি গ্রান্য অভিজ্ঞাত সম্প্রদায়ভূক্ত মানুষ। এই বার হ'ল তো ?

আমিও গ্রামের ময়ে। জমি চাধ করি, একেবারে গরীব চারী মেয়ে।

ভূমি কি এখনও আমায় ভালবাদ ? এবার তাঁর গলা রুক্ত হরে এল, এখনও কি ভূমি সম্ভান কামনা কর ?

এর উত্তর দেওয়া অসম্ভব।

পাহাড়ে যেমন ধ্বস নামে, তেমনি হঠাং তাঁর মুখখানা আধমার মুখের ওপর নেমে এল। সশব্দে আমার চুম্বন করলেন। সেই চুম্বনের ভেক্তর দিয়ে তীত্র কামনার আভাব পেলাম। গ্রহণ করতে গিয়ে আমার চোখে অল এল। গভীর মুজ্জায় আম্মুগ্রানিতে সে কারা

— স্ত্রীরোগ, ধবল ও— বৈজ্ঞানিক কেশ-চর্চ্চা

ধবল, বিভিন্ন চর্দ্মরোগ ও চুলের যাবতীর রোগ ও জীরোগের বৈজ্ঞানিক চিকিৎসার প্রালাপ বা সাক্ষাৎ করুন।

ডাঃ চ্যাটান্দ্রীর র্যাশন্যাল কিওর সেণ্টার ৩৩. একডালিয়া রোড. কলিকাভা-১৯

नक्षा ।।--।।है। काम नः ४७-२७१४

আমার অন্তরের অন্তন্তল ডেগ করে চৌধের ভেতির দিরে বজার ছত মেমে এল।

পাশাপাশি চল্ছে গিরে তিনি বললেন—একটা কাওই করে ফেললান। বুড়ো বয়সে ভোমার প্রেমে মজে গেলাম। নিজের মনেট হেসে উঠ্লেন ভদুলোক।

আমার কিছ একটুও হানি পেল না। জ কুঞ্চিত, অধর ক্রিত, আমার দে সময়ের মনোভাব ভাষায় ব্যক্ত করলে এই পাড়াই——
অগতা।

আমি ষেন অন্ধকারে একা চলেছি।

সব গোলমাল হয়ে যাচ্ছে—ভদ্রলোক বললেন, কি বল মহলা চলবে?

থাক, আর অভিনয় করতে হবে না। শৃত্তান! মিটার উরেহারার মুট্টবন্ধ হাত আমার স্বন্ধদেশে নেমে এল। আবার এক বিঃট হাচি।

মিষ্টার কৃষ্ণির বাড়ীতে স্বাই শুরে পড়েছে মনে হ'ল। টেলিগ্রাম, টেলিগ্রাম। মিষ্টার ফুকি টেলিগ্রাম এসেছে। মিষ্টার উরেহারা চেঁচামেচি করে দরকার ধাকা দিতে লাগলেন। কে? উরেহারা ছমি? পুক্ষকঠে সাড়া পেলাম। গ্রা আমি। রাজপুত্র রাজকরা এসেছে এক রাতের আশ্রমের আশায়। বাইবে এক শীত বে ইচ্ছেত ইচ্ছেত প্রাণ বেরিয়ে গেল। প্রেমের অভাগরের এ কি হাত্মকর পরিশতি।

সদৰ দৰজা থুলে গেল। টাক মাথা, গ্ৰগতে বং-এর পাজামাপরা এক পঞ্চাশ বছবের বুড়ো—কেমন বেন সলজ্জ হাসি হেসে আমাদের অভার্থনা করলেন। মিষ্টার উল্লেচারা খরে চুকেকোট না থুলেই অভিযোগ করলেন—কিছু মনে করো না, ভোমার বুভিভ্যবথানা বড়ড ঠাওা, দোভলার খর আমার চাই। চলে এস। বলে আমার হাত ধবে হল্যবের প্রান্তে সিঁছির দিকে নিয়ে চল্লেম। সিঁছি বেয়ে উঠে আমরা একথানা অদ্ধকার খর পোলাম, মিষ্টার উয়েহারা সুইচ টিপে আলো আল্লেন।

আমি বললাম, এ বেন হোটেলের নিজ্ত ধারার ঘর—তাই না ?
নতুন বড়লোকের ক্ষচি আর কতাই বা ডাল হবে ? তব্ ফুকির
মত বাজে মার্ক। আটিষ্টের পক্ষে এও বাড়াবাড়ি। ভাগ্য বথন
তোমায় খুঁজে বেড়ার, তথন আর পাঁচজনের মত পতনের ভর
খাকে না। এই সব লোকদের খাড় ভালাই উচিত। বাই হোক
তয়ে পড়, এখন শুয়েই পড়।

এ বেন ওঁর নিজের খর-বাড়ী, এমনি ভাবে আলমারি থেকে বিছানাপত্র টেনে-টুনে বের করলেন। ভূমি এথানে ঘূমোও—আমি তবে আসি। কাল সকালে এসে ভোমার নিয়ে বাব। নীচে নেমে ডানহাতি কলঘর পাবে।—সিঁড়ি দিরে এমন প্রচণ্ড শব্দ করে নেবে গেলেন যে মনে হ'ল, গড়িয়ে পড়েই গেলেন বুঝি! ব্যস্থী পর্যান্ত। এর পর চারিদিক নিস্তব্ধ, নিশুতি।

আলো নিবিরে—বাবার বিদেশ ক্রমণের স্বতিচিহ্ন ভেসভেটের কোটখানা থুলে কিমনো পরেই বিছানার চুকে পড়লাম। রেশমী কোমরবন্ধটা তথু চিলে করে নিলাম। ক্লান্তির মুখে মদ খেরে শনীরটা ভার ইবেছিল, সইকেই খুমিরে পর্কণাম। কোন সমরে ঠিক মনে নেই চোপ থুলে দেখি, ভক্রলোক আমার পাশে ওরে। গ্রোর ঘটাখানেক নীরবে যুদ্ধ করে, শেব অবধি ওর জন্ত মারা হ'ল, আহাসমর্পণ করলাম।

ব্দাপনার জীবনে এই কি একমাত্র গাবনা ?

ঠিক ভাই।

কিন্ত এতে আপনার শরীর খারাপ হর না ? আমার ধারণা আপনার কাশির সঙ্গে রক্ত উঠেছে।

কি করে বুঝলে? সন্তিয় সেদিন সাংখাতিক কট্ট পেয়েছি— অবশ্য একথা কেউ জানে না।

মায়ের মৃত্যুর আগে এই রকম গদ্ধ পেয়েছিলাম।

আমি হাল ছেড়ে দিরে মদ থাই। ছর্বিবহ, জনকারমর এ জীবন বৃথা। ছংখ, নিংসক্তা, জড়তা প্রদয় বিদীর্ণ করে। তোমার চার পালের দেওরাল থেকে বে হাহাকার ওঠে, তা থেকে থরে নিতে পার এ ছনিয়ার তোমার জল্প কোন স্থথ আর অবশিষ্ট নেই। সব শেষ। মাহ্য বথন উপলব্ধি করে বে ছনিয়াতে বেঁচে থেকে কোন স্থথ বা যশের মুখ দেখতে পাবে না, তথন তার কি অবস্থা হয় বলতে পার? এ কি প্রচণ্ড জীবন-সংগ্রাম! এ শুধু কুণার্ত প্রাণীদের মুখে অল্লের বোগান দেওয়ার পণ্ডশ্রম। অসংখ্য মানুবের এই বে বেদনা, এ-ও কি অভিনয়?

মা।

একমাত্র গ্রেমই অনুল্য,—ঠিক থেমনটি তুমি চিঠিতে লিখেছ।

আমার প্রেমের বাতি ফুংকারে নিবে গেল।

ভরে বখন জম্পাঠ আলো হ'ল, দেখলাম সেই ঘুমস্ত মাহুবের চেহারা : দেখলাম মৃত্যুপখবাত্রীর মুখে চরম ক্লান্তির ছায়া ! এ মুখ বলির পভর: এক অনুল্য বলিদান ! আমার প্রেমাম্পাদ । আমার রামধনু। আমার সন্তান । ঘুণ্য পুরুষ । ব্যভিচারী পুরুষ ।

ক্সন হ'ল এই অপূর্ব ম্থখানার সঙ্গে তুলনা দিতে পারি-পৃথিবীতে এমন কিছুই নেই। পুনন্ধীবিত প্রেমের উত্তেজনার আমার অস্তরায়া কেঁপে উঠল। চুলের মধ্যে হাত বুলিয়ে দিতে দিতে আমি তাঁকে চুমন করলাম।

প্রেমের কি মর্শান্তিক প্রহসন !

মিষ্টার উয়েহার। চোর বন্ধ রেখেই আমায় বুকের মধ্যে টেনে নিলেন। ভূল, আবার ভূল করলাম। চাবার ছেলের কাছে এর বেশী কী-ই বা আশা করা বায়।

এর পর ওঁকে ছেড়ে বাওয়া আমার পক্ষে অসম্ভব।

এতদিনের স্থাধের সন্ধান পেরেছি। যদি চার পাশের দেওরাল ভেদ করে হাহাকার ওঠেও, তবু আমার স্থাধর মাত্রা চরমেই থাকবে। আনন্দে আমার হাঁচতে ইচ্ছে করছে।

মিষ্টার উয়েহার। হেসে উঠলেন,—কিন্তু বড় বেলী দেরী হ'রে গেল, সন্ধ্যা খনিরে এসেছে।

সবে ভোর ই'ল।

সেই দিন সকালে আমার ভাই নাওজি আত্মহত্যা করে। [ক্রমশ:।





শ্বীদারেশচন্দ্র শর্ন্মাচার্য্য

এঁ য়া, সভি কি ভাগ এলেছে ? হা। ভারা এলে গেছে। তাদেরই পায়ের শব্দ পাছেছ শীলা। ফিস-ফিস কথার আভিয়াক কানে ভেসে আসছে। ভয়ে বকটা বেন কুঁকড়ে বার, ভাইত মৃত্যুদ্তেশা তাকে নিয়ে ষেতে এসেছে। ভাহলে বা ওনেছে, বইতে বা পড়েছে, ভা সত্যি ? পঞ্জোক অ ছে — প্রেভলোক আছে। মৃত্যুর সংক্ষ সংক্ষ তারা নিয়ে যেতে আসে। মুত্তাদুভেরা তাকে কোঁথায় নিয়ে থাবে :—থাঁত কে ওঠে শীলা।

মরণের অপর পারটা ভাব মনে বিভীবিকাব সৃষ্টে করে। কই ? ৰীলা কাউকে দেখতে পাছে না। চোথ মেলে তাকাতে চাত্ৰ, কিছ পারে না। দেহটা খেন অসাড় হয়ে গেছে। ন হবার চভবারও मिला श्रीतास्क नीला। मः अब ७ चाङाक नीला ठकन श्राय अर्छ। সভিয় কি কলোৰ মন্ত এ জগৎটাকে সে ছেড়ে চলে যাছে ! সভিয় कि छोत्र मुठ्डा श्रवाह ?

না, না, না। ভাহলে এ কি হল । ভাৰতে গিয়ে স্বই পোলমাল হরে যার। সভিয় কি সে পটানিয়াম সায়েনাইড থেয়েছিল ?

মা, সে তা পারেনি। ওর্ তারই উজোগ করছিল শীলা। चानक करहे चानक इनमात्र रिकामिक चामीत्र शरवश्नाशात्र स्वरक का हिंद करव अस्ति हिन।

ম্পাইই মলে পাড়ছে, লাভ টেৰিলের বাবে বনে চিঠি লিথছিল।

গেই মারাক্তক শেব চিঠি। কিব চিঠি লেখা জার শেব হবার সঞ সঁপেই মাথাটা হরে গেল। টেৰিলের মন্তারেই সেই সাংঘাতিক জিনিসটা বেবে দিয়ে চিঠি নিখতে বনেছিল স্কীনা।

চিঠির শেষের কথ'—"মৃত্যু আমার মুক্তি দেবে कি না জানি না : কিছ ভোমার কমা পেলেই আমি মুক্তি পাব।"

চিঠি শেষ করে দীর্ঘনিঃখাস ফেলেছিল শীলা। তমনি উঁয়া-উঁয়া-উঁয়া,—পাশের কোন এক বাড়ি থেকে ভেসে আসছিল সজোকাত শিশুর কারা। আর ভার সঙ্গে শাঁথের আওয়াক আকাশে-বাভাসে নব জীবনের বার্তা যোবণা করছিল। তুপুরের স্তব্ধ বাভাসও ৰেন মৃত্ হিল্লোলে স্বাগত জানাচ্ছিল সেই নবাগত মানব-শিশুকে।

তার নিজের বুক চিরেও ধেন উঁয়া-উঁয়া কাল্লার প্রোত বের হয়ে এক 'মৃতিমান শিশুর রূপ ধরে শীলার গলা জড়িরে ধরেছিল। কুটস্ত কমলকলির মত সে মুখগানি। সেই মুখে চুমা খেতে গিয়ে সব ভূলে গেল শীলা। সেই শিশুর বাছবন্ধনে শীলার দম বন্ধ হরে গেল। কিছুতেই তাকে ছাড়াতে পাবলে না শীলা। আব ত কিছুই তার মনে পড়ে না।

মরতে চেয়েছিল শীলা। কিছ এ কি হয়েছিল ভার? সে কি মনের তুর্বলভায় এ-সব বিভীষিকা দেখেছে ? ভাহলে কি এ অবস্থায় ড়য়ার থেকে বের করে সেই সাংঘাতিক জিনিসটা সে মুখে দিয়েছিল ? এরকম কিছুই তার মনে পড়ে না।

তবু মনে সংশয় জাগো,—সত্যি কি সে মুক্তি গেরে গেছে ? মাটির পৃথিবী থেকে সভিয় কি সে চির্হিদায় নিয়ে চলে যাচ্ছে? থাঁ৷ তার সে চিঠি পড়ে প্রশাস্তৰ মনে কি হল, তা জানতে চার শীলা। নিশ্চয়ই ঘুণায় অংশাস্ত তাকে আভিশাপ দেবে। না, না, প্রশান্ত তাকে ক্ষমা করবে।

ফিস্-ফিস্ কথার আওয়াজ শীলার কানে ভেসে আসছে। নিশ্ড∢ই মৃত্যুদূতেরা কথা কইছে। কই, কোথায় ভারা ? কিছুই (५४८९ भाष्क् ना नीना। प्रवह (द चक्कावा । मतन मतन जातन,— সে নিজেও অশবীরী হয়ে গেছে। তবু কেন দেহে অবসাদ এসেছে। তার মনে হল,—দেহের মধ্যেই সে এখনও ছটফট করছে। ভাছলে আগ্রাটা দেহ ছেড়ে এখনও যেতে পারে নি !

কিছ এ কি হল ? সে বে বিছানায় ওয়ে আছে। নরম বিছানার বাহিনে মাথা দিয়ে ভয়ে আছে শীলা। কে ভাকে এখানে নিয়ে এমেছে ৷ এ ঘরেও বিছানা ছিল না ৷ আর প্রশাস্তর এখনো ध्यवदाव ममय इय नि।

ভূপুরবেলা প্রশাস্ত কলেজে চলে গেছে। দরজা ভেজিয়ে দিরে নিরিবিলিকে চিঠি লিখছিল শীলা :—শেষ বিদারের চিঠি। প্রশাস্তর কাছে তার অভিশপ্ত জীবনের স্বীকৃতির কথা জানিরে মার্জনা চেয়েছিল শীলা।

কারহত্যা হাড়াবে আর কোন উপার ছিল না। আত্মভোলা বিজ্ঞানী অধ্যাপক প্রশাস্ত। এমন স্থশ্ব মধুব স্বভাব স্বামীকে সে সুখী করতে পারল না। এশাস্তকে হুত্রনা করে নিজের পাপের বোঝা বাড়াতে চায়নি শীলা।

অভীতের সব কথা মনে পড়ায় একটা গভীৰ দীর্ঘনি:খাস কেনে শীলা। সোনার বাপ্লে বিভোর হয়ে সে মৃত্ত বন্ধ ভূল করেছিল। সেই ভূসের আরিশ্চিত সে আজ বরছে। এ ছাড়া বে বোল উপায়ই ছিল না।

সমীর তার সর্বনাশ করেছে। তথন অভ-শত ব্থতে পারেনি
দীলা। সমীর তার দেহে-মনে কি এক উল্লাখনা আগিয়ে দিয়েছিল।
দীলা সে উল্লাখনার আছ্সমর্পণ করেছিল। সমীর আখাস দিয়েছিল;
দিক্ষের সর্বনাশ সে নিক্ষেই ভেকে এনেছে। সমীর আখাস দিয়েছিল;
সেই সমীরই করেছে চরম বিখাস্থাতকতা।

ৰে সমীর কাত মানে না ধর্ম মানে না, সমাক্ষ মানে না। সেই সমীরই বাপ-মারের দোহাই দিরে দূরে সরে গেল। আক্ষের মেরেকে তার বাপ-মা বরে তুলবেন না; বরং সমীরকে তাক্ষাপুত্র কর্মবন।

সমীরের বৃকে মাধা রেখে শীলা কত কেঁলেছে। এমন কি ভার পা চুটি জড়িয়ে ধরে ভাকে উদ্ধাব করতে বলেছিল। সমীরের সঙ্গে পালিরে বেভে চেরেছিল শীলা। মিধ্যা আখাসও দিবেছিল সমীর। কিছ শেব কালে সমীর গাঢাকা দিবেছিল।

অধ্যাপক শিবনাথের একমাত্র বন্ধা শীলা। আপনভোলা খবিতুলা অধ্যাপকের ছাত্রেরা তাঁর অধ্যাপনায় মুগ্ধ। কথায়-বার্তার, উৎসাছ-উদ্দীপনায় তিনি ছেলেদের মাতিরে তুলতেন। শীলার অল্প ছাইবোনও ছিল না। সমীর কলেকে উপরের ক্লানে পড়াত্ত। কলেকেই তার সকে শীলার আলাপ হয়। শিবনাথের ছাত্র বলে শীলাদের বাসগৃহেও তার সেই ক্রের বাতায়াত স্কর্ক হরে বার। বছর করেক আগে শীলা তার মাকেও ছারিরেছে। প্রায় এই নিংসক জীবনে সমীর এক আনক্ষের ইচ্ছান নিয়ে হাজির হল। তাদের তৃজ্বনের মেলামেশায় শিবনাথ খুশীই হতেন বলে মনে হয়েছিল।

উছিল বোৰনে সমীৰ মারা-মনীটিকাৰ মন্ত দীলাৰ চোধ ধাৰিছে।

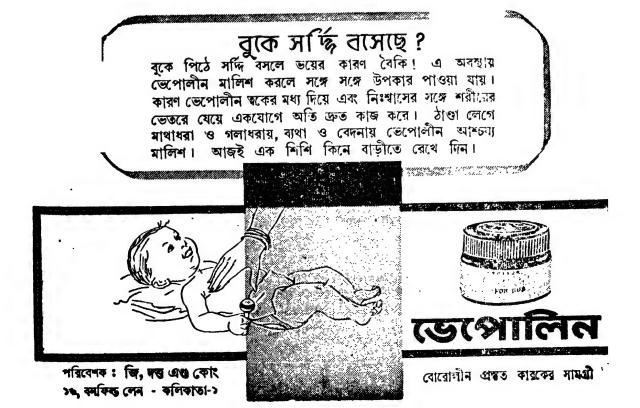
দিল। আত্মভোলা অধ্যাপক দে খবৰ নাথেল নি। সমীৰ ভাল
ছেলে। তাৰ উপৰ শহৰেৰ নামজালা এডভোকেট ছবিশ -ৰুপ্জেলৰ
একমাত্ৰ ছেলে দে। হল্পত আছেল কোন আপৰ্ডি মলে মনে
পোৰণ কৰতেন শিবনাধ।

ব্ৰহ্মপ্ৰানী অধ্যাপক শিক্ষাথের কল্পাকে আহল হয়িও মুণুজ্জে বৰে তুলতে পাবেন, এমন চুৱালাও হয়ত শিক্ষাথ করেছিলেন। আন্তকাল ত এ বকন প্ৰায়ই সটে থাকে। আৰু শীলা অভ-শত চিন্তাও করেনি। সমীওই শেষ মুহুর্তে তাকে শেষ আভাত শিয়ে তা জানিয়ে দিলে।

নিজের অপরাদের বোঝা পাবের খাছে চাপিরে দিরে স্থীর সরে পড়স। শীসা কোন উপায়ই দেখতে পার না। এখন সময় নিজের মারের কথা মনে পড়ল। ছার, মা যদি বেঁচে থাকছেন!

বিজ্ঞানী অধ্যাপক কি ভাবলেন বুঝা গেল না। সমীর আব আদে 'না। তিনি হয়ত ভাবলেন,—শীলা সমীরকে গ্রহণ করছে পারবে না। কিছু মেরের মনেব কোন ধবরই তিনি রাধতেন না। বাধবার কোম উপারও ছিল না। এমন সমব এল প্রশাস্ত। বিজ্ঞানের ছাত্র প্রশাস্ত। ত্রুর সে কলেকে এসেছে। শিবনাথেরই প্রাক্তন ছাত্র প্রশাস্তর আনাগোণা চলল। বিলাব সহরোধী চল। শিবনাথের গৃহে প্রশাস্তর আনাগোণা চলল। বিলাব সহস্ব তার পরিচয়ও হল।

শীলার মনোজগতে তথন ধরানক ভোলপার চলছে। নিজেকে



সূৰিকৈ ৰাখতে চার শীলা। তবুও প্রশান্তর আকর্ষণ সে এড়িরে থাকতে পাবে না। নিজের নিছ্টির উলার থুঁকছে শীলা; এর য়াকে প্রশান্ত এসে গাড়িরে সবই তথুল করে দিলে।

হঠাও একটিল শিবনাথ ভ্রালক অস্তুত্ব হরে পড়লেন।
ভাকাৰভা বিলে গেছে, তথ্য ব্রুসে হাটের আটিছে। খুব সাবধান
ভাকাত হবে।

এই অভান্ধ অবভার কীলার অভাই বেকী ব্যাকুল হবে উঠলেন শিবনাথ। ইণিছে ইণিছে বলতে লাগলেন লিবনাথ,—আমি ভ ইনলাম। কিভ ভোৰ কি উপায় হবে য়া ?

ক্রিক নেই সমতে প্রাপান্ত এনে ছাজিব চল : শিবনাথের ক্রমা তাব কানে গিবেছিল। প্রাপান্ত বলঙ্গে, স্প্রীলার ক্রম্ভ আপ্রি বাস্তু ইবের না সাব ৷ আপ্রি আগে সেবে উঠন।

ৰঠাৎ নাটভীৰ ভলীতে এক অবটনীর ব্যাপার ঘটালেন শিষদার্থ। ডিনি শীলার ছটি হাত প্রশাস্ত্র হাতে দিয়ে জড়িরে ধবে বলতে লাগলেন,—কুমিই এর ভার নাও প্রশাস্তঃ আমি আমির্কাদ করছি, ভোষরা ক্রথী হবে।

শীলা বাধা দিতে পারেনি। ভরে কোন কথা বলতে পারেনি
শীলা। পরের দিনই বিনিসঙ্গত ভাবে শীলার সঙ্গে প্রশাস্তর বিবাহ
হরে পৌল। শীলা অনেক ভেলেছে। প্রশাস্তকে সব কথা দিখে
শানিকে হিরে নিইন্ডি পেতে চেয়েছিল, কিছু পারেনি।।মুম্বু পিভার
স্থাবে দিকে চেরে দে সংকল্প ভাকে ত্যাগ করতে হয়েছে।

শিবনাথ ৰে হঠাৎ এমন কাণ্ড করে বসবেন. শীলা তা ভাবতেও পারেনি। সেদিন রাত্রেই আত্মহত্যা করত শীলা। এ কি করলেন ভার বাবা ? সমাজ, বন্ধুবান্ধর এমন কি প্রশাস্ত পর্যাস্ত তার কাছে সেদিন মৃত্যিমান বিভীবিকা হয়ে উঠল।

উপার চিন্তা করতে লাগল শীলা। না, না, তাকে বাঁচতে ছবে, ছলনার অভিনয়ে নামল শীলা। ঐ প্রশান্তকে আঁকিড়ে ঘরেই তাকে বাঁচতে হবে। বাঁচাতে হবে তার মুম্র্ পিতাকে; ছলনার অভিনয় হাড়া বে আর কোন উপার নেই।

শাভব হাত ধরে নৃতন জীবন সক করল শীলা। অভুত এ মাছবটি! সদা হাসিম্থ। একান্ত শীলার উপরই তার নির্ভর। শাভর জাপ্যায়নে জার তার মাধুর্ব্যে শীলা মুগ্ধ হয়ে গেল। নিজের কপট ছলনার কথা ভারতে 'গিয়ে মাঝে মাঝে আঁথকে ওঠে শীলা। মনে বনে ভর,—যদি এ ছলনা ধরা পড়ে ? এ মামুষটিকেও কি শীলা আবাভ দেবে ? প্রশান্ত কি ভাকে ক্ষমা করতে পারবে ? এ কি কোন মাছবের পক্ষে,—কোন পুক্রের পক্ষে সন্থব ?

না, না। প্রশাস্তকে সে আঘাত দিতে পারবে না।
প্রশাস্তকে শীলা ভালবাসে। অতীতের ভূল একটা ছেলেখেলা মাত্র।
তা কি শোধবান বার না? মেরে হরে জন্মানো কি এতই অপরাধ?
স্বীর কি করেছে? সে অপরাধী হরেও নির্দেশ্য। সমাজে উচ্চ
ভাসন পাবে সমীর। স্তী-পূত্র নিরে সে সুখী হবে। আর তারই
পাপের বোঝা শীলাকে পিরে মারবে।

নীলা অভীতকে কুলে বেতে চার। কিছু অভীতের সাক্ষ্য বে সে বছন করেছে। এ বে জীবস্ত সাক্ষ্য। এ সাক্ষ্য বে ধুরে-মুছে কেলবার কোন উপায় নাই। তারই দোবে তার বাবা আর তার খানীর মুখেও কলকের ছাপ পড়বে। তারও গাঁড়াবার ঠাই থাকবে না। ঘরে বাইরে কোথাও গাঁড়াবার টাই নাই শীলার, হরে করলেও গা শিউরে ওঠে। এই ত আমাদের সমাজ। কেন, জঙ্গ দেশে ত এয়ন নয়।

এরণ অন্তর্গ ব্যের মধ্যেও টিকে থাকে শীলা। মুষ্র্ শিবমাথের সেবার তার। চ্ন্সনেই এখন ব্যস্ত। কখন বে কি হর বলা বাছ না। মাসথানেকের মধ্যেই তার সমান্তি ঘটল। শিবনাথ মারা গেলেন। এবার আন্থির হয়ে উঠল শীলা। না, আর ত কোন বাবাই বইল না। নিজের অথবাধের বোঝার আবেকজন নিবীহ লোক্তে বিক্রত করা তার উচিত হবে না। ছলনার মুখোপ বে তার আধানা-আপনি ধ্যে পড়বে। এরকম অন্তর্গ বো আরো সালখানেক কেটে গোল।

প্রাণান্তকে হেড়ে বেডে তার কট চল্ডে। তাকে পেরে নিজেছে জনেকথানি সামলে নিষেছিল দীলা। এ মানুষটিকে ছলনা করতেও তার কট লাগে। তেবেছিল, খোলাখুলি সব কথা বলে ক্ষমা চাইবে।
কিন্তু সাহস হর নি। তবু ভরসা ছিল, প্রাণান্ত তাকে ক্ষমা-করবে।

এত দিন সবই ছলনার ঢেকে রেখেছিল শীলা। কিছ দৈছিত লক্ষণগুলি ত ঢাকবার নয়। শীলার দেহে সব লক্ষণই প্রকাশ প্রতে স্কু হয়েছে। কিছু কি আশ্চর্যা! প্রশান্ত সহজ্ঞতাবেই তা নিয়েছে। খূশীর চাঞ্চল্যে প্রশান্ত উচ্চ্ সিত হয়ে উঠেছে। কিছু প্রশান্ত জানে না যে শীলা সর্বনাশের বোঝাই বইছে।

প্রশাস্ত আপন থেয়ালেই বিভোর। দরদেভরা তার মন। প্রশাস্ত বলে, এ অবস্থায় তোমাকে দেখাশোনা করবার **জন্ত লোকের** দরকার। এখন থেকেই ডাক্টারের প্রামর্শ মত চলা উচিত। কি বল ?

শীলা বাধা দের। ডাক্ডারের নাম শুনলেই ভবে আঁচেকে ওঠে শীলা। প্রশাস্তর বন্ধ্ ডাক্ডার গ্রীমস্ত হ'-একদিন এসেছিল। কিছ ভার কাছেই শীলা বায়নি! তাকে এড়িয়ে চলত শীলা।

এ সুকোচ্বি আৰ ভাল লাগে না। তাই ত শেব পছা সে ধরেছে। এই ত ফিস-ফিস আওয়াক হছে। নিশ্চরই তারা এসেছে। কান পেতে থাকে শীলা।। নাঃ, মিছামিছি এ জগতের কথা তেবে আর কি হবে? সে বেট্ট পরলোকের পথে পা ৰাড়িয়েছে। কেহৰিশ্বর থেকে তার আত্মা মুক্তি পেয়ে গেছে। এখনই দ্বে গাড়িয়ে শুভে ভেসে ভেসে সবই সে দেখতে পাবে। তার জন্মীরী আত্মা তাৰপর মহাশৃত্তে মিলিরে যাবে। মুক্তির নিঃখাস কেলে শীলা। বিভ

কি জানি অজানা সে প্রেতলোকে কার কাছে গাঁড়াবে বীলা ? তবু মনকে শক্ত করে নের। তার বাবা-মা পরলোকে বরেছেন। তারা মিশ্চয়ই তার জন্ম অপেকা করছেন। বারের বুকে শুটিবে পড়বে বীলা। তার মা নিশ্চয়ই তাকে ক্ষমা করবেন।

কোথার মৃত্যুদ্তেরা ? এ বে পরিচিত কঠবর। ভাহলে এরাও এতকণ এসে গেছে। চোথ মেলতে চার শীলা, কিছ পালে বা, মলে সংশর জাগে। সভি্য কি পে মুক্তি পেরে গেছে ? ঐ বে শীলা স্পষ্ট ভনতে পাছে,—না ডাক্তার ! শীলাকে বাঁচাতে হবে।

প্রশান্তর কঠবৰ। কি ব্যাকুলতা এ-কঠবৰে । শীলাৰ চিঠিখানা টেবিলের উপরই পড়েছিল। প্রশান্ত নিশ্চয়ই এজকবে সে চিঠি পড়ে ফেলেছে। কি লক্ষা ? কি ভাবছে প্রশান্ত ? শীলার কলভের কথা কেনেও শীলাকে বাঁচাতে চাইছে। ৰনে মনে ভাবে শ্বীলা,—আমি ত বেঁচে নাই। ওলের নিশা-আনংগার বাইরে চলে গেছি। ওরা ব্যুতে পারছে না বে আর কোন ভাকারই আমাকে আর কেরাতে পারবে না।

হাসতে চার বীলা। কিন্তু তার মূখে হাসি ফুটল কি না সে বুৰজে পারে না। হঠাৎ কেমন বেন ভয় হয়। তবে কি এমনও 'তার আভা কেহ ছেড়ে বায় নি ?

এবার দীলা ডাক্ডারের উত্তর শুনতে পার,---মেন্টাল পক্। এ অবস্থার রোগী উন্নদে হরে বেতে পারে প্রশাস্ত। এঁর জ্ঞান ফিরে আনতে ডিন-চার দুর্গী। লাগতে পারে।

কি সর্বনাশ ! এ বে প্রশাস্তব বন্ধু সেই গাইনোকোলাজিই ডাকার অনস্তব গলা ৷ কি বলতে চাইছে জীগন্ত ডাকোর ?

শীলার মন উৎকণ্ঠার ভবে ওঠে।

ডাক্লাৰ বলতে থাকে — নামাৰ মনে হয়, ওঁৰ বেঁচে থেকে কোন লাভ নেই প্ৰালম্ভ ৷ ভোমাৰও নব, ডাঁৰও নব।

প্রশাস্ত উত্তর দের,—বাঁচাতে হবে ডাক্তার ! শীলাকে বাঁচাতে হবে।

ভাজার কলে,—তারই চেষ্টা করছি প্রশান্ত ! কিছ ভেবে দেখো, মাত্র হ' মাস ভোমাদের বিয়ে হয়েছে ; কিছ এ বে পাঁচ মাদের কেস ! এ ভার, এ বোঝা বইতে পাবরে তুমি ?

প্রশাস্ত শাস্ত্রকঠে উত্তর দেয়,—নিশ্চরই পারব ডাক্তার! শীলার সমস্ত হারিছ বে এক দিন শপথ করে আমি নিরেছি। তাকে তুমি ভাল করে ভোল।

ডাক্তার বলে,—হাঁা, ভারই চেষ্টা করছি আমি। কিছ আমার কথা হয়ত তুমি ব্রুতেই পারনি প্রশান্ত!

শ্রশান্ত উত্তর কেম্ব,—সবই বৃদ্ধতে পেরেছি আমি। বৃধতে পেরেছি বলেই অন্ত কাউকে না ডেকে ভোমাকেই ডেকেছি।

ভাক্তান ৰলে,—তার কলত্ব তোষাকে বইছে হবে প্রশান্ত! ভোষার মনের সে জোর আছে ?

প্রশাস্ত বেন হাসিমুখে উত্তর দেব,—কলফ নর ডাজার! এটা আমাদের সমাজেরই গলদ। বৌবনের উন্মাদদার মাছুব সহজেই এবকম ভূল করে থাকে। ছেলেদের বেলা কোন দোব হয় না; ভারা নির্বিকার ভাবে সরে পভে। মেরেরাই এভাদের অপরাধের বোঝা বরে বেড়ার। হয় ভাদের আত্মহত্যা করতে হয়, না হয় সমাজের বাইবে চলে বেভে হয়। এ বকম আর চলভে পারে না ডাকার।

ডাক্তাৰ বলে,—কি করবে তুমি ?

প্রশান্ত বলে,—সহজ ভাবেই ভাবে গ্রহণ করেছি ডাক্তার ! সংজ্ঞ ভাবেই ভার সজে চলব। শীলার কোন দোব আছি দেখতে গাইনি। ভার ভালবাদাই ভাকে জয়ী করবে।

ডাক্তাৰ ৰলে,—কোন দোষ নেই ?

প্রশান্ত উত্তর কের,—না, 'শীলার কোন দোব দেই। শীলা ভার সুল ভাবে নিয়েছে। শীলাকে বাঁচিরে সম্ভ পুরুষজাতির হরে শানাকে প্রারশিত্ত করতে হবে ডাজার।

ডাক্তার বিষয়ভরা কঠে উত্তর কের,—প্রায়শ্চিত্ত ?

প্রশান্ত কলে,—হাা, প্রায়ন্দিত্ত। আমার ভালবাদা দিয়ে তার শক্তিশাদ থেকে সমান্তকে বাঁচাতে হবে ডাক্তার। ভাকার বলে,—সমূত সাত্য তুমি প্রশাস্ত। সেই ছেলেকো। থেকেই দেখছি,—সভিয় তুমি অন্তত।

প্রশাস্থ বলে,—জানি না, কবে এক্সপ অভিশাপ থেকে আলাকের সমাক মুক্ত হবে ডাক্তার! জানি না কবে আমরা শাণমুক্ত হব ?

প্রশান্তর কথাগুলি শুনে শীলার দেছে-মনে কি এক উদ্ভেজনার স্থান্ত হয়। ইনি মানুষ না দেবভা ? না, না, জামি বাব বা । জামি বাঁচতে চাই। জামি বাঁচতে চাই।

कूँ शिद्ध कूँ शिद्ध (केंग्र ६८५ मीना ।

ছুটে বালে প্ৰশান্ত। বাৰ ছুটে বালে ডাকাৰ।

আশান্ত শীলার হাত ছ'থানি নিজের কোলে টেনে নের। শীলার মাথার পরম রেছে হাত বুলিরে দের প্রণান্ত।

আবেগে উজ্সিত প্রশাস্তর কঠবর,—বীলা। বীলা। তব নেই।
ভূমি কাঁবছ কেন ? এই বে আমি বহেছি।

শ্রীমন্ত নাড়ী পরীক্ষা করে বলে,—ট্রাঞ্ছ। আর বিশেব কোল তর নাই। তবু সাবধান প্রশান্ত! কোন উত্তেজনার কারণ বেন না ঘটে। এই ওযুধটাই চলবে। আমি আবার আসব।

ডাক্তার বেরিয়ে বার।

প্রশান্তর কোলে মাথা রেখে তার মুখের দিকে তাকিরে থাকে শীলা। তার হু চোথে ধারা বয়ে যায়।

প্রশাস্ত ৰলে,—ছি:, কি পাগলামি করতে পেছলে শীলা! আৰ ওরকম করো না।

উত্তর দিতে পারে না শীলা। আজ আর কোন লক্ষা নাই, সংকোচ নাই; সমস্ত ভর, সমস্ত আতঙ্ক তার বেন মুহুর্তের মধ্যে কোথায় উধাও হয়ে গেছে। কি তু:সহ যাতনা সে পাঁচটি মাস বুকে করে নিয়ে আছে; আজ আর কোন বাতনা নাই। নির্ভয় হয়েছে শীলা।

প্রশাস্ত বলে, সব ওলট-পালট হয়ে গেল ত ? যা হবার হরে গেছে; তার জন্ম পাগলামি করো না।

প্রশান্তর মুখে প্রসর হাসি।

শীলার মুখে উত্তর নাই। প্রশাস্তর বৃকে মুখ লুকিরে **অঞ্**থারার তাকে ভাসিয়ে দের।

কার শাপম্ভি ? সমাজের না শীলার ? প্রশাস্তর স্পর্ণে আজ শীলার পুনর্জন্ম ঘটেছে। প্রেভলোক থেকে ফিরে এসেছে শীলা। আর যে তার কোন ভর নাই।





श्रुनीन बाय

ন্তুনই তবে এসেছেন এপাড়ায়। এর আগে কোনো দিন দেখিনি। কিন্তু এখন রোজ তু'বেলাই দেখছি এই রাস্তা দিরে যাতারাত কয়তে।

পারে মরলা কেড্স্ ছুল্ডো, গায়ে ঢিলে পাঞ্চাবি। চলনেও বিশেব আঁটিসাট ভাব নেই। জীবনটাকে যেন ধরে রাথার জল্মে আর ব্যঞ্জ নন; কিন্তু জীবনটা বেন নাছোড়, ওঁকে ছাড়তে চার না কিছুতে।

ক'দিন বাদে ছন্তলোকের পরিচর জানতে পারলাম। নাম দীপারর সেন; বর্নার রেলে চাকরি করছেন, রিটারার করে দেশে ফিবে এসেছেন। নলিনী বাবুর বাড়ির নীচভলার একটা ঘর ভাড়া নিরেছেন। বিপায়ীক। কিন্তু সকস্তক।

খবরটা জানার জন্মে এবগুকোনো আগ্রহছিল না। কানে এসে গেল, ভাই কনে গ্রাথা গেল।

কথনো-কথনো দেখি পাংশর মুদির দোকানে দাঁড়িয়ে আছেন। তার পর একটা সিগারেট মুখে দিয়ে ধোঁয়া ছাড়তে ছাড়তে নিজের মনে হেঁটে চক্রেছন।

আশ্রুষ্ঠ লাগে! এত হেঁটে চলে বেড়াবার কি দরকার গ্রঁর ? ভার হাটার ভঙ্গি দেবে অস্থান্তিই লাণে। শরীর যেন চলে না। বদি না-ই চলে, ভবে শরীরটাকে ওভাবে টেনে টেনে বয়ে বেড়াবার শরকার কি

অবশেবে আলাপ হল একদিন। বললেন, উদ্দেশহীনের মৃত্ত ঘুরি বটে, কিছ উদ্দেশ্য একটা থাকে।

কী সেই উদ্দেশ্য—এ কথাটা জিজ্ঞাসা কবতে বাধল।
ভদ্ৰলোকের মুখের দিকে চেয়ে রইলাম। দেখসাম, বিকারও নেই,
বিকৃত্ত নেই, আবেগও নেই, উদ্বেগও নেই। এমনি নিম্পাহ জাঁর
দৃষ্টি।

জিজাসা করলাম, কে কে জাছেন এখানে ? একা বুঝি ? সংক্ষেপে জবাব দিলেন ভিনি। বললেন, আহ তাই।

এ ভাবে তাঁৰ জবাব দেবার অভিপ্রায় ব্যুতে পারলাম না। বল্লাম, বর্ষায় ছিলেন শুনলাম। দেশটা কেমন ? witer I

क'-वहद अल्पा कांग्रीलम ?

দীপক্ষর সেন আমার মুখের দিকে ভাকাদেন, বললেন, অনেক বছর। সারাটা জীবন।

কথার বাবে মনে হল কী বৃক্ম বেন একটা আক্ষেপ আছে ওই কথার।

সেদিন কথা এই পর্বস্তুই হল। দীপদ্ধর সেন বারাক্ষা থেকে নেমে বাঁ দিকের মুদির দোকানে গিরে দাঁড়াজেন। একটা সিগারেট কিনলেন, তার পর ধোঁয়া ছাড়তে ছাড়তে কের আমার বারাক্ষার সম্মুখ দিরে চলে গেলেন। আমার দিকে কিরে তাকালেন না। মনে হল, আমার ওই সব গারে-পড়া প্রশ্ন ভনে ভক্তলোক সম্ভবতঃ আমার উপর বিরক্ত হয়েছেন।

এই জন্তে এই রাস্তা দিয়ে তাঁকে বেতে দেখলেও তাঁর সঙ্গে বয়েক দিন আর কথা বলিনি। কিছ

লোকটার চলন দেখে ওর উপর কেমন বেন মায়ার ভাব জেগেছে। একদিন বলে ফেললায়, কোখায় চললেন?

এই—ব'লে সামনের হাস্তার দিক দেখিরে দিয়ে সোমা সেই পথে ধীরে ধীরে চলে গেলেন।

ভদ্ৰনোক বিপত্নীক। তা হোন। কিছু উনি নাকি সক্তুক!
তবে সেই কল্লাটি কই ? তাকে এই পথ দিয়ে বেতে দেখিনে কেন !
তাকে দেখে যে ধল্ল হয়ে যাব—এমন না হলেও মেয়েটিকে দেখার
ভব্লে কৌতুহল হতে লাগল।

কোথায় চললেন ?

ভীপন্ধর সেন আমার দিকে আলগোছে চেরে বললেন, এই— এদিকে। একটু ব্যস্ত আছি।

ব্যস্তভার কথা জানা গেল কেবল জাঁর কথায়। চলার ধরণ দেখে ব্যস্তভার কোনো লক্ষণই বোঝা গেল না।

দিন কয়েক বাদে ভদ্রলোকটি একটু ঠাণ্ডা ছয়ে পাড়ালেন আমার বারান্দার সামনে। বললেন, একেবারে ঠাণ্ডা হয়ে গিয়েছিল মশাই! ওই সব দেখে আমার সর্ব স্ব গিয়েছিল হিম হয়ে।

কিসের কথা বললেন ?

আনার মেরে। বিশেব কোনো অসুখ নেই। কিছ কেমন ফিট হয়। আবু সংস্কৃসকে হিন হয়ে বায় হাত-পা।

চোখে-মুখে চিন্তার ভাব আনার চেষ্টা ক'রে. গলার সহাত্মভূতিৰ স্বর আনার চেষ্টা করে বললাম, এখন কেমন ?

ভালো। অনেকটা সুস্থ।

দীপকর সেনের সঙ্গে ছনিষ্ঠ চা হয়ে উঠল ক্রমণ। ভক্তলোকের বরস বর্থন তেরো তথন নাকি তিনি পলাতক হন দেশ থেকে। চলে যান আকিয়াব, দেখান থেকে বেসিন, তারপর রেলুন। প্রোপ্রাণ বছর তিনি কাটিয়েছেন ওই দেশে। এখন তাঁর বরস চোবি টি। খুঁটিনাটি হিলেব দিলেন ভিনি। পথে-ছাটে বে সমর থরচ হয়েছে, আর এ দেশেও এসেছেন মাস ছয় হল—এই সব খুচরোকরেকটা মাস একত্র কংলে হয়ভো একটা পুরো বছরই গাঁড়িরে

ता, ता! (अ 'डालडा' तरा! ('डालडा' कथतड (थाला (जवसारा विक्री स्रा ता!

আক্রে হ্যা, ভালভা বনস্পতি আপনি কেবল শীলকরা
টিনেই কিনতে পাবেন। এই জন্যেই এতে কোনও ধূলো
মধলা লাগতে পারে না আর না পারা যায় একে নোংরা
হাত দিয়ে ছুঁতে। ভাছাড়া পোলা অবস্থায় 'ভালভা'
কেনার দরকারই বা কী যথন আপনার স্থবিধের জন্য
ভারতের যে কোন জায়গায় আপনি ১০, ৫, ২, ১ ও
১ পাঃ টিনে 'ভালভা' কিনতে পাবেন।





হাঁ, এই তো 'ডালডা'! এর হলদে টিনের ওপোর খেজুর গাছের ছবি দেখলে সবাই চিনতে পারে।

মনে রাধবেন 'ডালডা' কেবল একটি বনস্পতির নাম।
আপনার এবং পরিবারের সকলের স্বাস্থ্য স্থারন্ধিত
রাখতে সব সময়েই ডালডা বনস্পতি কিনবেন শীলকরা
বন্ধ টিলে। কেন না কোন রকম ভেঙ্গাল বা দোয়নুক্ত
হবার বিপদ্ এতে থাকে না আর যা কিছু এই দিয়ে

রাঁধ্বেন মেই সন থাবারের প্রকৃত স্থান বন্ধায় থাক্বে।

ডালড়া বনস্পতি দিয়ে রাঁধুন—আর স্বাস্থ্য ও শক্তি সঞ্চয় করুন। বাবে। ভাহলে বিদেশে ভার কেটেছে ঠিক একটা অর্থ-শতাকী। এই কথা জানানোর মধ্যে দীপকর সেনের আক্ষেপ জার অহংকার বেন মেশানো বলৈ বোধ হল।

ছর মাস হল এসেছেন, কিন্ত আপনাকে পুৰ বেশি দিন হল তে।
দেখছি নে।

আপনাদের এদিকে এসেছি মাত্র করেক দিন হল। বেদিন এসেছি সেই দিন আর আছকের দিন ছিসেবে ধরতো মোট আটাশ দিন হল। তা, দেখতে দেখতে অনেক ক'টা দিনই হরে পেল বলতে হবে।

ৰুখে বললাম, ভা ৰটে !

কিছ মনে-মনে বলভে লাগলাম অন্ত কথা। এতওলো বিন কেটে গেল কিছ ওঁকে একা ছাড়া আর কাউকে এ-পর্যন্ত দেখা গেল না কেন?

এ 'কেন'র উত্তরের জন্তে অবন্ত কোনো প্রাপ্ত করলাম না।

দীপদ্ধর সেন মাথে মাথে আদেন। তাঁর দীবনের বিচিত্র আভিত্যতার কথা বলেন। ভিনি নাকি পূরো বর্মীই হরে পিরেছেন। বিবে করেছেন এই দেশে। মোট তিনটি নাকি বিরে ওঁর। তিনটিই বর্মী বউ। তাঁর এই মেরেটি মেজো বউ-এর। কিন্তু সব কেমন বেন—দীপদ্ধর বীকার করেন—ভাঁর নিজের অভাবেই নিশ্চর কোনো প্রসদ্ধ আছে, নইলে বউগুলো টে কসই হল না কেন?

সবাই মামা গেছেন বুঝি ?

উঁহ। তাৰের কী ইচ্ছে কে জানে—তারা আমাকে ছেড়ে দিয়ে আন্ত সংসার পেতে বসেছে। আর, তনেছি বেশ সংবই নাকি আতে।

. একটু ভাবলেন দীপঙ্কর দেন। বললেন, একটা টুচাস্ত বাঙালী ছেলে খুঁজছি। বেমেটাকে গছাব।

ভন্তলোকের ভাষা ভনে অবাক হলাম, বললাম, বিয়ের বয়েদ ছয়েছে আপনার মেয়ের ?

কি জানি। এ দেশে কোন বয়সে বিষে হয় জানিনে। বয়স হল তার বাইশ; গত মার্চে বাইশ পূর্ব হয়েছে।

বলগান, কিন্তু ওকে আপনার সঙ্গে দেখিনে কেন ? খুব লাজুক বুরি, খুব বুরি পর্দানসীন ?

ছুটোর একটাও না। দীপ্তর দেন হাসলেন, বসলেন, আসা একোক ও ফিটহ, বাস্তার বের হতে দিতে ভর পাই। কথন কোখার বেহু শ হরে পড়ে ঠিক কি।

নলিনী বাব্র বাড়ির একতলার বাসিন্দে এই বৃদ্ধট এ-পাড়া মাত করে রেখেছেন।

নলিনী বাবুব ব্রী একজন বিশ্বনিশৃক। কিছ ভ্রনলাম, তিনি
নাকি দীপদ্ধর সেনের মেয়েটির প্রশংসার পঞ্মুব। বাপের উপর
মেয়েটির বা মমতা—কোনো বাঁটি বাঙালী মেয়েবও নাকি তেমন দেখা
নার না। গুণের জাঁচ এর থেকে একটু করতে পারা গেল। রূপ
দেখিনি, কিছ ভ্রনাম—রূপেও নাকি সে তেমনি।

এই সৰ গুলৰ গুলে সারা পাড়া চঞ্চ হয়ে উঠেছে। ছেলে-ছোকরাদের কথা না হয় ধরা না-ই হল, বুড়োদের চোবে-মুখেও বেশ ছাকল্য দেখা দিয়েছে।

निनी रावृत हो नाकि মেরেটির ওপকীর্তন করে বেড়াচ্ছেন।

এমন সেবা আর এমন বন্ধ তিনি নাকি কথনো দেখেননি। দেখা পুরের কথা, তিনি নাকি কল্পনাও করতে পারেননি।

ভাঙা-ভাঙা বাংলা নাকি বলতে পাবে মেরেটা। নলিনী বাব্র লীব সঙ্গে নাকি থ্ব ভাব হরেছে। অস্তবের কথাও নাকি অকপটে বলে নে নলিনী বাব্র লীর কাছে।

পাড়ার পুরুষরা এই সব গল্প ভনে বেমন পুস্কিত, মেরেরা নাকি তার বিপরীত—তারা নাকি সব মুখ ভার করে আছে; তাদের সবাত্তনকে ধামা-চাপা দিরে বিদেশিনী ওই মেরেটা সবার উপরে টেক্কা দেবে—এ নাকি বরদান্ত করা কঠিন।

তার বাপকে ছেড়ে গেছে তার মা। এইজন্তে মারের উপরে সে নাকি খুলি নর। বাপের এই অথর্ব অবস্থা দেখে সে ভাই নাকি তার সমস্কটুকু রেহ আর মমতা বাপের উপর ঢাকছে।

মেরের ক্ষেত্রমমতা পেরে ধন্ত হরে যাচ্ছেন দীপকর সেন। আর, আমরা এই তফাতে বসে এক বিদেশিনী সলনার স্থানের পরিচয় পেরে মনে মনে হয়তো নানা রকম জল্পনা-কল্পনা করছি; হয়তো নিজেরা বে ক্ষেত্রমন্তার মধ্যে সালিত হচ্ছি, তা অকিঞ্ছিংকর বলে অবজ্ঞা করছি। এবং দীপকর সেনের মত বক্ত হরে বাবার জন্তে মনের মধ্যে ব্যাকুলতা জাগিরে তুলছি।

কিছ হঠাৎ ধন্ত হয়ে গেলাম একদিন। তৈরী ছিলাম না। আচমকা বিস্তাতের একটা ঝলক এনে লাগল যেন চোখে।

সত্যি, চোথ আছে নলিনী বাবুব স্ত্রীর। বর্মী নারীর লারীরিক কোমলভা এবং বঙ্গনারীর দৈহিক লাবণ্য একসঙ্গে মিশে এক অবর্ণনীর শোভার স্পৃষ্টি হয়েছে।

চলমান সেই সৌন্দর্বের নির্বাস সঙ্গে নিয়ে ইেটে চলেছেন দীপকর সৈন।

বাৰ্ বন্ধ হয়ে গিয়েছিল, জিজ্ঞানা করতে পারলাম না—কোধার চলেছেন ?

কিন্ত দীপত্তর সেন নিজে থেকেই বললেন, একটু লেকের দিকে চলেছি বেড়াতে। বন্ধুবান্ধব কিছু জোগাড় হয়েছে ওদিকে; বাই। গল্পভন্তৰ করে আসি।

বললাম, আছো।

ৰীরে বীরে ওঁরা চলে গেলেন। মনে হল, সারা পথে লাবণার বক্সা ছড়িবে দিরে চলে গেল বেন এক মারাবিনী! বাডাসে স্থগছের প্রাবন কৃষ্টি হল বেন এ অঙ্গের স্থবাসে।

এই সৌন্দর্য দেখে খুলিতে উপলে ওঠাই উচিত, কিন্তু, অকপটে বীকার করি, আমার সমস্ত মন একটা চাপা বেদনায় কেন বেন ভারী হয়ে উঠন । নিজেকে বড়ই ভাগ্যহীন বলে মনে হতে লাগল। মনে হতে লাগল, এই বমনীয় ঐ রমণীয় সৌন্দর্য কোন ভাগ্যবান মালাকরের উল্লান স্থানোভিত করবে কে জানে।

সকাল আৰু বিকাল এই রাস্তা ধরে তিনি বাতারাত করেন। প্রায়ই তাঁর কলাকে সঙ্গে নিবেও বান। এই ক্রন্তে রাস্তাটার মর্বালাই বেড়ে গেল আমার কাছে। বে প্রথম দিকে জাকাতাম কদাচিম, সেই প্রটার দিকে চেরে খাকার একটা রোমাঞ্চকর আরাম বোধ করি।

সকালের দিকে তিনি একা যান, বিকেলের দিকে বান মেরেকে সঙ্গে নিবে। সেদিন সকালে ভিনি চলেছেন এই পথ ধরে, তাঁকে একা পেরে জিল্লাসা করলাম, থোঁজ কিছু পেলেন ?

কিসের ?

কোনো চোম্ভ বাঙালী ছেলেৰ ?

আনার প্রশ্ন ওনে একটু কেনে তিনি বললেন, অত শীগ্গির কিপাওয়াবায় ? থোঁজ চলছে। পেতেই হবে।

বলগাম, দেদিন অত বন্ধবান্ধবদের কথা বলছিলেন ?

বললেন, হাা। লেকে ছাওয়া খেতে আসেন সবাই। শ্বিটায়াব-করা ভদ্রলোকেরা। বেশ হাসি-খুশি। বেশ মিশুক।

পরামর্শ দেবার মত করে বললাম, ওঁদেরই কারো একটা যোগা ছেলেকে খোঁজ করুন না।

হাসলেন দীপদ্ধর সেন। বললেন, সেই মতলবেই আছি।

বাধ-বাধ ঠেকছিল, কিন্তু শেষবেশ জিক্কাসা করেই বসসাম, মেয়ে জানে আপনার এই প্লানের কথা ?

ৰুদ্ধি তো আছে। নিশ্চয় কিছু বোঝে।

বিকেলের দিকে যথন তিনি মেয়েকে সজে নিয়ে যান তথন তাঁর সংক্ষ অবশ্য এত কথ। বিসনে।

কমেক দিন বাদে দেখি, দীপক্ষরের বন্ধ্বান্ধব সভিত্তে ক্রোগাড় চয়েছে। তাঁরাও দীপক্ষরের সক্ষেমানতে আবস্ত করেছেন। এবং অর্নিনের মধ্যে তাঁর অবে বুড়োদের বেশ-একটা মন্দ্রনিশ বসতে আবস্তু করেছে।

নলিনী বাবুর স্ত্রী একেবারে মুগ্ধ হরে গিয়েছেন। বুড়োদের

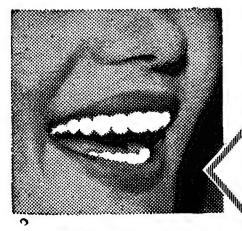
উপর সভিাই মেরেটোর কি আন্তরিক দরদ! এমন না হলে আর মেরে! মেরেদের মন হবে তুলোর মত নাম আর মাধনের মত মোলারেম—তবেই না সে মেরে মেরে। তুলোর হারা গাদিতে বেমন সন্তর্পণে রাখতে হয় আঙুর, বুডোদের তেমনি সাবধানে জীইরে রাখার জল্ঞে সে নাকি বাগ্র। তার বাপের সহারহীন অবস্থা দেখেই সন্তর্গত তার মনে এই ধরণের সেহ জ্মা হয়েছে।

আনেকে আসেন দীপক্ষরের কাছে। এঁদের মধ্যে জনকরেককে আমি চিনি। পূণীশ ওপ্ত, হিমাদ্রি পাকড়াশি, বিশিন চাকী, বেবতী চক্রবর্তী—সকলেট রিটায়ার করেছেন। এঁদের মধ্যে হিমাদ্রি বাবু একটু ছিমছাম।

ছিমছাম ছই দিক থেকে—ধৰধবে ফর্সা রং, মাধা-ভর্তি পরিছ্ম চকচকে টাক, পরনে ফিনফিনে ধোয়া ধুডি-পাঞ্চাবি। তিন ছেলে ছই মেয়ে হিমাদ্রি ৰাব্র। সকলেই বাইরে থাকে, অর্থাৎ বাংলা দেশের বাইরে। ছেলেদেরও বিয়ে হয়ে গিয়েছে, একটি মেয়ে বাকিছিল, তারও বিয়ে হয়েছে মাস কয়েক হল। আরও একটা দিক অবশু আছে—হিমাদ্রি ৰাব্ বিপত্নীক। তার মস্ত বাড়িছে তিনি একা।

হিমাজি বাবৃৰ সঙ্গে দীপকৰ সেনেৰ ভাব আৰাৰ নাকি একটু বেশি। ছুই জনেই বিপত্নীক—একজনেব ন্ত্ৰী জীবিছ থেকেও নেই, আৰ এক জনেব ন্ত্ৰী লোকাস্তবিত। কিছ ছু'-জনেৰ মিল এই—ছু'জনেই ন্ত্ৰীহান। স্মতবাং তাঁদেৰ অন্তবঙ্গতা থকটু গাঢ় হওৱাই স্বাঞ্চাৰিক।

আমাদের এই দিক্টা একটু যেন ভেত্তত উঠেছে; আর, সেই সকে



'নিয়'<u>এর</u> তুলনা নেই

২০০০ বছর ধরিয়া ইহার উপকারী গুণগুলি স্প্রতিষ্টিত

HALISALA KATANTA BARATA KATAN BARATA BAR

দাঁত সূদৃঢ় করে মাঢ়ীও স্থম্ব রাখে

विश

টুথ পেষ্ট

ইহা নিমের সক্রিয় ও উপকারী গুণ এবং আধুনিক টুথ পেষ্টগুলিতে ব্যবহৃত ঔষধাদি সমধিত একমাত্র টুথ পেষ্ট



. पि कानका है। दक मिकाल काम्भानी • निमिटि छ क्लिका छा-२३

একটু বেন মেতেই উঠেছে। ভিন দেশ থেকে এক জন্ধানা মানুৰ এসে আমানের এই অঞ্চলটাকে উচ্চকিত করে ভূলেছে।

যে বাস্তা দিয়ে একা-একা ক্লান্ত পদক্ষেপে চনতেন দীপঞ্ব সেন, সেই বাস্তা এখন একটু সৱগ্ৰমই হয়ে উঠছে। এখন দীপঞ্বের সমবরসীরা আফোন। দল বেঁধে গল্প করতে করতে। তার পর, আনেকক্ষণ বাদে তাঁরা আবার দল বেঁধে গল্প করতে করতেই ফিরে যান। ক্ষাটি আড্ডা ক্লমে দীপক্ষরের ঘরে।

নলিনী বাবৃৰ প্রী নাকি পাড়ার সকলের চফুশূল হসে উঠেছেন। বিশ্বনিশূক তিনি, কিন্তু তাঁর বান্ধির ভাড়াটেদের ঘরে এই আড্ডা বসা সন্ত্রেও তিনি কেন বিরক্ত না হয়ে ঐ মেরেটার প্রশংসায় এখনো প্রকর্ম্ব—এইটেই হচ্ছে সকলের প্রবল আপত্তি।

কিছ নলিনী বাবুর প্রীরও বলাব কথা আছে। অমন একটি ফুটকুটে মেয়ে যদি বাঙাসীব ঘবে হত, ভাহলে দেয়াকে মাটিতে তার পা নিশ্চর পড়ত না। কিছ এই মেয়েটি অতগুলো বৃদ্ধের তদারকে আর ভিবিবে নিজেকে কেমন ব্যস্ত রাথে, আর, সকলের জান্ত কিম প্রাণপাত পমিশ্রম করে। অত থাটুনি থাটে, কিন্ত মুখের হাসিটা কেমন অস-অস করতে থাকে সারাক্ষণ।

ছপুরের দিকে এক বার আদেন হিমাজি পাকড়াশি। সার। ছপুর বনে বনে গল্ল ছর। তারপর একদঙ্গে তিনজন—দীপ হর, দীপফবের কলা ও হিমাজি—সাদ্ধাভ্রমণে বের হন।

নপিনী বাবুৰ জ্বী এবার নাকি চটেছেন। জাঁৰ ভাড়াটে নাকি উঠে ৰাছে।

এই থবরে পাড়ার সকলের মনে বৃদ্ধি আনন্দের বান ডাকল। ছেলেমহলে হয়তো একটু বিযাদের ছায়া পড়ল, কিন্তু নেয়েমহলের মুশের উজ্জল দীপ্তি দে ছায়াটুকু উছ্ করে দিল।

সভ্যিই। একদিন উঠে গেলেন দীপঞ্ব সেন।

কোথায় গেলেন, সে-খবৰ জানার আগ্রহ আর কারে। বইল না।

নিসনী বাবুব স্ত্রী কিছ থোঁক করে সেটা বা'ব করলেন। ওরা ছিমান্তি পাকড়াশির বাড়িতে গিল্পে উঠেছে। মস্ত বাড়ি—অনেক জারগাক। জনেক জারামে পাকতে পারবে ওথানে।

এ-খবরটা অবশু কিছু না। আমি এই রকম আন্দাজই করেছিলাম। হিমালি বাবুকে আমি চিনি বলেই খবরটা আমার কাছে ছয়তো কিছু না। কিছ যারা তাকে চেনে না, তালের কাছে খবরটা অবস্থ একটা খবরই।

ধীবে ধীবে এদিকের সমস্ত চঞ্চলতা স্তিমিত হয়ে এল। বে যার নিজের কাজে এবার বসতে পারল মনোযোগ দিয়ে। অথচ নিখাদ শাস্তি কিছ সেই কারোবই মনে। একটা স্ক্র বেদনা মনের একটি নিভৃত কোণায় চিমটি কেটে বসে বইল। অস্তত আমাব কথা যদি বলেন, আমার অবস্থাটা এই রকমই হল।

দীপ্তর সেনের সঙ্গে অনেক দিন দেখা নেই। তাঁর কথা ভোলা কট্ট, অথচ প্রায় ভূলতেই বুঝি বসেছিলাম।

এমনি একদিন স্ঠাং এসে উপস্থিত ছবেন তিনি। তাঁর এই স্ঠাং আবিভাবে একসঙ্গে পুলকিত ও বিশ্বিত হয়ে উঠলাম। বঙ্গলান, কি ধবর বলুন ? কেমন আছেন ?

ভালোই আছি। চলে যাচ্ছে কোনো বৰুমে।

জিজ্ঞাসা করজান, জাপনার মেয়ের ধ্বর কি? আপনাব মনের মত পাত্র জোগাড় করতে পারলেন?

দাপত্বর বারু বললেন, বড্ড ভালো মেয়ে। বেমন মায়া তেমনি মমতা। আমাকে দেখে-দেখে ওর বুঝি হয়েছে ওই দশা—অসহায় মামুবের উপর ওর বড় টান।

বঙ্গলাম, এ তো ভালো লক্ষণ। এর জন্মে স্থাপনার গবিত ভ্রমার কথা।

উত্তরে তিনি বললেন, নিশ্চয়। গর্ব আমার আছে।

আর কিছু না বলেই তিনি উঠে চলে বাছিলেন, বারাল। পর্যস্ত গিরে ফিরে এশে বললেন, ভেরি দ্পাইভেট ক্লিছ। কাউকে বলবেন না। হিমালি পাকডাশিকে বিয়ে করেছে আমার মেরে।

যেন চমকে উঠলাম, বলনাম, বলেন কি ?

হা। বড় অসহায় মাহুষ ওই হিমাদি।

হু'-চোথ ছল্ছল করে উঠল দীপক্কর সেনের। সেটা ভো দেখাগেল।

কিন্তু আর কার বুকের ভিতরটা ছঃসহ বেদনার ভারাক্রান্ত হয়ে উঠল, সেটা কারো চোখে পড়ার কথা নয়।

বঙ্গাম, স্থী হোক ওরা।

দীপকর দেন বললেন, আমিও ওই আশীর্বাদই করছি। বলেই তিনি নেমে গেলেন বারান্দা থেকে।

শ্লান দৃশ্য নয় শিবশভু পাল

বিষয়তা সম্ভবত কয়, জীৰ্ণ শৰীবেৰ মান দৃশ্য নয়।

বোধের প্রাক্তান্তে নেমে বছের সন্ধানে মগ্র আণিকারকের সমগ্র হৃদের, মন পরিপ্রমে অকাত্তব, দৃঢ় ইচ্ছার ভান্ধনা ভারে দিক থেকে দিগস্তব্যে কত না ইটির কেন না সে স্মুস্স ভি বছের ছটার যত থিবা অপগত করে বাবে, এই ভার সংকল্প মনে। দৃষ্টি ভার দীপ্তব্যোভি, কোতুসলে সৌরক্রেক্সেল। এবং বোধের নীচে যতদ্র চোথ বার—শৃষ্ণ, কিছু নেই।
সেই সব বিগংগুলি তমিশ্রাই চিরকাল থাকে
যেখানে হারার সব আয়ুকান, যুগলতা, অমর কবিতা।
আন্মেণে ব্যর্থ, তবু বোধের গভীরে ক্লান্তিহীন
পথযাতা দৃশ্যমান শরীরের বহিরঙ্গে শুধ্
মামুবের উজ্জলতা, তুর্বলতা মহিমার আভাসিত রাখে।
তু' চোঝে প্রশ্নের ভাবো; সন্তবত তার পাশে থেকে বেতে পারে
পরিশ্রান্ত মান্সের ভাবে ক্লান্ত কতঞ্জি রেখা।



অভ্যাশ্রণ্য কাপড় কাচা পাউডার সাফে কাচা ভামা-কাপড়ের অপূর্ব গুড়তা দেখলে আপনি অবাক হয়ে . যাবেন। এক প্যাকেট ব্যবহার করলে আপনাকে মানতেই

আপনি কথমও কাচেননি নামানাপড় এত থকগতে সানা, हृद्व (व ... এত সুন্দর উজ্জল করে ! সাঁট, চাদর, শাড়ী, ভোগালে — স্বকিছু काठाव सरम्बरे अहि जामर्ग !

আপনি কখনও দেখেননি এত ফেশ — ঠাতা বা গরম

হুলে, কেণার পক্ষে প্রতিকূল জাল, সঙ্গে সঙ্গে আপনি পাবেন

আপনি কখনও জানতেন না বে এত সহজে কাণড় ফেণার এক সম্প্র! अा। त्राच प्रत्याच जानावचन ना १५ वामाकालेख कार्च कार्च प्रत्याच जानावचन ना १५ वच गराज মানে ৩টি সহজ প্রক্রিয়াঃ ভেজানো, চেপা এবং থেওিয়া মানেই আপনার জামাকাপড় কাচা হয়ে গেল।

আপনি কথনও পাননি আপনার প্রনার মূলা এত চমৎ-কারভাবে ফিরে। একবার সাফ বাবহার করলেই আপনি এ কথা सामनाच । परमा वाक्यांत्र नाम कामानाशक कांत्रांत्र आसनं ! सामनाच । परमा वाक्यांत्र नाम कामानाशक कांत्रांत्र आसनं !

जायित तिलारे भवंध कति रिध्यतः प्रार्थिक जान्नाकाशक् छाशूर्व माना करत कान याग्र SV. 25-X53 BG

হিশুস্থাৰ লিভাৱ লিমিটেড কৰ্ত্বৰ প্ৰবঙ্গ



বেদনাবিদ্ধ অন্তরে শ্ব্যা ত্যাগ করে নীচে শীড়ালো শুক্লা। বেদনাহত চোখে তাকার পরিত্যক্ত শ্ব্যার দিকে। দান হয়ে ৬ঠে ছটি চোখ—বিকল মনের বিবশ বেদনায়।

শ্যা কি তথু শ্রনের উপক্রণ? না, এ বে বিদেহী মনের অনুপম ভাবের আশ্রা। এর আছে রূপ, রং, প্রাণ। সম্রবিশেষে, ব্যক্তিবিশেষে এ হয় পরিবভিত্ত, কখন বাসকসজ্জিতা, আসহ-ঈল্পি তা, আভি সনপিয়াগী। কখন বা এফ ব্যাকুল বেদনা, মৃত্যুধুসর মন্ত্রণ।

এত দিন এই শ্বা থিবেই শুক্লার প্রতীক্ষিত কুমাগী-ভীবনের জাভিলাব, আশা, আকাথা মুকলিত হয়েছে। কত বিনিদ্র রজনী, কত দীর্ঘ দিবস ধরে এই জন্মপুম মুহূর্ভটিকে থিবে ক্রমার জাল বচনা করেছে সে। আজ সেই শ্রাপ্তিহীন, ক্লাপ্তিহীন, বিরামহীন প্র গ্রাক্ত মার্কি।

চারিদকে নিবিড় আঁধার। রজনীর তিমির-মন্দিরে কোন
কৃষ্ণকার পুরোহিত গভীর তপালারত। তাঁর তপাগ্নে দিগন্ধন
মালন। আঁথারের বক্ষ চিত্রে চিত্রে তাঁর আহ্বানবাণী আহ্বান
করছে আলোককে। শুক্লারই অন্তর-উৎস উৎসারিত এই আহ্বান।
বেদনাদীর্শ ক্লারে সে তপালা করছে এতটুকু সহামুভ্তির জ্ঞা।

কিন্তু নেই। কেউ নেই। কে ব্ঝবে তার অন্তর-বেদনা? কে দেখাবে পথ ?

কি ভেবে বে ওর মা ওর নাম শুরা রেখেছিলেন তা আজু আর জানার উপায় নেই। শুরুতা কিছুই তো ছিল না তার। তার মন কালো, রয়ের নেই ছিটেকোটা সালা। এমন কি তার চোথের মনির চারিপাশের সালা অংশও বেন রংয়ের ছাপ পড়ে হয়ে উঠেছে কালডে-নীল, তবু তার নাম শুরা। ইদানীং শুরুার মনে হোত, তার নামের সঙ্গে বেন মিল আছে তার জীবনের। সংস্থ শুরুপক ধরে চন্দ্রমা নিজেকে ক্ষয় করে শুস্তুত হয় অমানিশার জ্বন্তা। তেমনি ভাবেই সমগ্র জীবনভার নিজেকে বিন্দু বিন্দু ক্ষয় করে সে তিমির-তমসার প্রতীক্ষিতা, সেই প্রতীকার আজ হয়েছে অবসান। অভিসারে আমন্ত্রিতা হয়ে আজ সে ধরা। কিছ—

ব্যারাকপুর ট্রাক্ক রোড ধরে এগিরে গোলে বেশ থানিকটা দূবে একটি বাড়ী ডানদিকে পড়ে—সেই বাড়ীটিই দেবানন্দ রায়ের। গাগ্রির আঁধারে বাড়ীটা চোপে পড়ে না কিন্ধ দিনের আলোর পাঁচীলদেরা বাড়ীটি লোকের দৃষ্টি আকর্ষণ করে। আনেকটা জায়গা পাঁচীল দিয়ে ঘেঠা—মাঝখানে মাঝারী আকারের দালান। বাড়ীর চারিপাশের বিস্তৃত জায়গায় ডগ্ ঘাস। এত জায়গা পড়ে আছে কিন্ধ কোথাও একটা ফুলগাছ নেই! জ্বাফ্রে কোন বুনো ফুলও ফোটে না!

বাড়ীর মালিককে বে জানে দে এতে মোটেই আশ্চর্ম হবে না। বরঞ্চ বাগান দেখলেই বিশ্বিত হবে। দে জানে, পথে ফুলগাছ পড়লে দেবানন্দের গাড়ী তাকে

দলিত করে চলে যাবে, হাতের সামনে কোন ফুল পেলে দেবানন্দ নিজে ভাকে নিম্পেষিত করবে। ঐ যে হাতে একটু ফ্লেনাক্ত আঠার মত লেগে থাকা, এই তার উপভোগ রীতি। সে বলে, দূর থেকে নাক টেনে টেনে গন্ধ নেব, মাথা বেঁকিয়ে বেঁকিয়ে রূপ দেথব—ও সব লাকা লাকা অলস কাব্য-বিলাস আমার নেই। ও সব হচ্ছে তাদেরই—যারা শক্তিহীন, বাক্তিহান, নণ্ডেক। ভারাই একটি মেয়ের পায়ের তলায় পড়ে গদগদ হবে ললবে—ভুছুঁ মম জাবন। আমি সমস্ত জীবন তোমাকে চেডেছি, আজ তোমাকে পেরে ধল্য হয়ে গোলাম আমি।

কথাটা সতা। দেবু বলে, কাবেণ তারা অক্ষম। ত'রা জানে বহু পরিশ্রমে, প্রাণপণ অন্যবসায়ে আত্ম ছারা যাকে পেয়েছে তাকে হারালে আর কোন গতি নেই। তাই এর মাঝে জতীক্রিত। আবেগ করে, বড় বড় ছ'-চার কথা বলে, স্বর্গের ভাব টানাটানি করে বিশিষ্ট করে তুলতে চায় শেই সামাল ভাব কিন্তু গোড়ায় আমি যা বলেছি তাই চরম কথা। তালের পৌরুষ নেই, বিষ্হীন সাপের মত তাই তালের মুগে একনিপ্রতার অহিংসামন্ত্র, প্রেমের হরিনাম।

—এ তোমার জন্মায় কথা—কোন কোন বন্ধু প্রতিবাদ করতো—তুমি বলতে চাও প্রেম নেই জগতে ?

—না। প্রেম চলতি অর্থহীন এক শব্দ। প্রেমের দোহাই শক্তিহানের সহল। সম্বলহান পুরুষ প্রেমের বাণী অপতে অপতে নারার কাছে যায়। পণ্যগুলা নাবীকে যেতাবে ব্যবহার করি আমি ঠিক সেই তাবেই সেই প্রেমিক ব্যবহার করে প্রেমগুলা নারীকে। ঠিক তেমনি আকাখা-পূরণ—ঠিক তেমনি প্রাপ্তির তৃপ্তি। আবার যে সব নারীর প্রেমিক জোটে না তারাই আঠার মত লেগে থাকে একজনের প্রতি। মুথে বলে প্রেমে পড়েছি।

—নরনারীর সম্পর্ক কি শুধু দেহজ ? প্রশ্ন করতো কেউ।

— শুধুদেহ ! তীক্ষ বিজপে বলতো দেবানন্দ, দেহ ভিন্ন আৰ কি আছে নারীব ? বিভা ? বৃদ্ধি ? তোমবা তোমাদেব এই মোইনিয়া মন নিয়েও নিশ্চয় স্বীকার করবে বে, বিভাব গরিমায়, বৃদ্ধির দীপ্তিতে পুরুষ নারী অপেকা শ্রেষ্ঠতর। তবে ? তবে কেন পুরুষ বমণীর নিকট যায় ? বমণী বৃদ্ধিজাবিনী নর, রূপরিঙ্গণী। সে নরকের দ্বার নয়, স্বর্গের চাবীও নয়—ভোগের সামগ্রী, পুরুষের পরিপুরক। সে কামবনের কোমল কামলতিকা, রসপুর্ণ রসবতী।

ৰন্ধনের বিশ্বয়াবিষ্ট নীরৰ দৃষ্টিৰ সম্পূৰে দাঁড়িয়ে গন্তীৰ গবিত স্ববে বলে—আমার ক্ষমতা ক্ষয়তীন, আমার বাই অন্তর্হান। আমি কি জন্ম চোরের মত চুপিসাড়ে উঁকি দিয়ে এসে দেই চিন্তার কণ্ডুমন করবো? মনকে চোথ ঠেবে কি লাভ? বিদেহী প্রেম আমার নয়। দেহকেই আমি কামনা করি, উপভোগ করি এবং দেই দেহকে অধিকার কিংবা আহরণ করবার ক্ষমতা আছে আমার।

দস্তোক্তি দেবানন্দ রাধ্যের মূখে সাজে। সত্যই, কিছুবই অভাব নেই তার। অপরূপ স্থন্দর দেহ—অপরিমিত এখার্থ।

এই দেবানন্দ রায়কে ভালবাসলো কি না ওরা মিত্র ? ওরা মিত্র— যার রূপ নেই, থৌবন নেই, ওজ্জ্বল্য নেই । উধর মঙ্ককে ভালবেসেছে ক্ষীণকায়া নির্বির্ধারা।

শুরা যথন থুব ছোট তথনই ওর মা স্বামীর মৃত্যুর পর ইন্দ্রনাথের গৃহে চলে আসেন। শুরার মার হাতে অর্থ ছিল, কাজেই কোন অসমানজনক পরিস্থিতিতে তাঁকে পড়তে হয়নি। ইন্দ্রনাথ তাঁর দ্রসম্পর্কের আত্মীয়। নিকট-আত্মীয়ের সঙ্গে না থেকে এঁর সঙ্গে থাকায় কিছু কিছু বক্রোক্তি এবং কৃটিল কটাক্ষ বে না হয়েছিল তা নয়। তবে এঁরা কেউ তা গ্রাহ্থ করেননি। কেন বে তিনি এখানে এসেছিলেন তা কেউ জানে না। হয়তো ইন্সনাথই জোর করে আনিয়েছিলেন। তাঁর গৃহে পরিজনের আধিক্য ছিল না, কাজেই আন্থীয়-স্বজন কেউ এলে সুখী হতেন।

ওদের আপননে সব চেয়ে সুখী হয়েছিল দেবু। ইন্দ্রনাথ ওকে বাইবের কারো সজে মিশতে দিতেন না। কাজেই আত্মীর-স্বজনহীন বিয়াই গৃহে বালক দেবু ছিল নিভান্ত একাৰী। সে বেন তথু মাতৃহীন নয়, পৃথিবী-পরিত্যক্ত এক আদিম শিশু।

ভঞ্গাকে পেলে ও যেন থেঁচে গেল। প্রাকাণ্ড মাঠে ছ'টি সমবরসী শিও গোলা করতো । একজন যেমনি স্থন্ধর অপর জন ঠিক তেমনি কুম্পত না হলেও যথেষ্ট কুৎসিতা। সকলেই তা লক্ষ্য করতেন ভগ্ন ওরা হ'জন ছাড়া।

কৈশোরের স্পর্ণ থুলে দেয় ওদের মনের গুহার রুদ্ধ কপাট। ধীরে ধারে গড়ে ওঠে ব্যক্তিস্বাভন্তা, ক্ষচিবোর, দেহ ও মনের পরিবর্তনের ধূপছায়ায় সমস্ত পৃথিবী ভিন্ন রূপ ধারণ করে। অস্তব-গুহা ৮ তে নিমায়ত হয় আদিন আ্যা।

বয়:সন্ধিমুথে সেই আয়া বেরিরে আসে। তার উপর পড়ে পৃথিবীর প্রলেপ। তাতে প্রতিফলিত হয় গগনের গরিমা, বিশের মহিমা, অরুণের অঞ্পিমা, সাগরের কলকল্লোল, সবুক শতের



তারুণ্য, কালো কয়লাব কর্ষণতা, ইটকাঠ-পাথবের কাঠিকা। আজকের মানবতা প্রথা প্রাকৃতির স্ঠি নয়—সে মানব-স্থাজিত সভ্যভারও বাই-প্রোডাঠা। উভরের মিলিত সতা।

বিশ্বস্থার আদরে এবং মানবের অজ্ঞাদরে গড়া দেবু এই মহুণ জগতে বেশ দুভই গড়িয়ে বেতে লাগলো। প্রায়ই তাকে বাড়ীতে দেখতে পাওয়া বেত না। কথন আদতো, কথন যেত, কোন ঠিক-ঠিকানা নেই, ইক্রনাথ অনুপস্থিতির কারণ জিজ্ঞাসা কংলে ক্লাব, স্থুল, পার্টি, জলশা ইত্যাদি নানা রক্ম কথা বলে দিত।

এদিকে বড় হবার উপক্রমণিকান্তেই ভুক্রাকে আটকে রাখা হরেছে, বাইবে বাওরা বারণ—ছেলেদের সঙ্গে মেশা নিবেদ।

ছেলে বলতে তো এ বাড়ীতে আদি এব অকুত্রিম এক দেবু।
তা-ও দে বাইবে বাইবে এত ব্যস্ত থাকে যে তার থোঁজ পাওয়া
বার না। তবু বাল্যসঙ্গীর সংক্ষে এই সতর্কবাণী ওর মনে গভীর
পরিবর্ত্তন এনে দিল। যার সংজ্ঞ এত দিন থেলাধুলো, ঝগড়া, থাওয়া
ওঠা-বলা সবই চলেছে আজ তার সম্পর্কে এই নিষেধাক্তা কেন?
নীরব সঙ্কার্থ প্রেমধারা কন্ধ আবেগে হয়ে ওঠে উচ্চু সিত।

কবি লিখেছেন—সকালবেলা কাটিয়া গেল, বিকাল নাহি কায়—
কিছ শুক্লার সকাল-বিকাল কিছুই কাটতে চায় না। কি করে কাটবে ?
মহানগরীর উপকঠের অধিবাসিনী দে। প্রকৃতির সঙ্গ থেকে
একান্ত বঞ্চিত। এখানে প্রভাত প্রতিদিন পৃথক পোষাকে আদে
না, মধ্যাহের বৌদ্রমর বিক্ততা, ঘণ্র ডাকে, কর্তবের হলর
ভাগেনে হয়ে ওঠে না বমনীয়। সদ্ধারে ধ্দর ছায়া সমগ্য জগতের
হুংখ দৈল মালিলকে আঁচিলে চাপা দিয়ে মানব-মনে স্লিগ্ধ, কঞ্চণ ভাগ
বুলিরে দেয় না। শুশু—

ভধু রাত্রি এখানে ঐথর্থময়ী। কালোর নিবিভ্তার মাঝে কুষ্ণতর পিচের রাস্তায় দ্রুত সঞ্চয়ান আলোর বিলুগুলিকে দেখে একটু শিউরে ৬১৯ শিশুগাছগুলি। বয়ন্তরা মাথা নেড়ে কি বেন বলে বিভবিভিয়ে।

দিনের পর দিন, রাত্রির পর বাত্রি ঐ প্রাচীরবেরা প্রকাশ্ত গৃহের এক কক্ষে বাস করে কুমারী শুক্লা। সঙ্গী শুধু বই। ভার নিজস্ব খরের কোণে কোণে বইরের স্তৃপ। মনের কোণেও কি ভাই?

এই বইয়ের জগৎ সম্পূর্ণ মানস-জগৎ। আশা-আকাজ্ঞা, প্রেম, মোছ, মায়া মম হা, প্রতিহিংসা, পাপ-পূণ, জীবন-মরণ সবই সেখানে আছে। আছে জরুণ মনেব গোবাক। কিন্তু সবই বাস্তবতাহীন এক জারুণম আবহাওয়ামণ্ডিত। অপক্স স্থপ্নস্থা

শুরার স্বপ্নতগ্র নায় গ্লেবানন্দ। স্ববল্গ, শুর্ শুরার কেন, শিলনেকরই সে চিত্তচোব। শুবে, শুরার কথা স্থাসাদা। তার বৌবনের প্রারম্ভে সে শুর্ একটি পুক্ষকেই দেখছে— র তার শৈশবের সাখী। পরিচিত্রের সংগ্রাহরা এই যে অপরিচিত যুবক, এই কি তার ধলাখবের নায়ক দেবুদা'? এব হাসি অজ্ঞানা, কথা অজ্ঞানা, ভাষা ভাষ সবই স্বন্ধানা। তবু মনে হয়, একে চিনি। একে সানি। বাইবের অপরিচিতিটুকু মধ্বতর করে ভোলে মনের পরিচিতিটকে।

কোন ব্যবস্থা অবসরে অনৃত্য পথে প্রেম শুক্রার স্থানরে স্থায়ী ব্যাসন পেতে বনেছিল! অসীদের স্থার শুনেছিল সে। বখন সে চনকে দেদিকে দৃষ্টিপান্ত করলো তথন ক্লম্ব হরে গেছে প্রভ্যাবর্তনের পথ। সেই ক্লম্ব কক্লে হাদরের রঙ্গে জারিত, প্রাণের উত্তাপে প্রতপ্ত হরে প্রেম এক অমুপম অপরণ রূপ পরিগ্রহ করলো। কল্লনার বাকে প্রির মনে হয়েছিল, এখন সে হল দেবতা।

এদিকে শুক্লাৰ মা নিশ্চিন্ত ছিলেন ন।। তিনি চারিদিকে
পাত্র থোঁক করতে থাকেন। ছেলে ভাল পাওয়া যায় ভো কুল ভাল
নয়। ব.শ ভাল ভো পাত্র অনুপযুক্ত। আবার ত্ই-ই যদি ঠিকমত
কুটলো ভবে হয়তো শুক্লাকেই ভাদের পছন্দ নয়। একটা না
একটা ঝঞ্চাট লেগেই আছে। রোক্লই পাত্রী দেখা চলতে থাকে।

ওদিকে দেবানন্দ রায়ও রোজ পাত্রী দেবছে। তবে তা তার নিজস্ব রীতিতে। বন্ধুণান্ধব নিয়ে হল্লা করতে করতে এক জারগায় চুকে পড়া—পছন্দ হলো তো দেবানেই রইলো নইলে চল অল্প স্থায়। মধুসন্ধানী মত্ত মধুকর।

আৰু দিনের তফাতে শুক্লার মা ও দেবানন্দের বাবা গুজনেই মারা গোলেন। দেবানন্দের মা আগেই মারা গিয়েছিলেন। স্থতরাং গুজন বেন অকমাৎ একান্ত বাবীন চয়ে ওঠে।

শুরার নিকট এ স্বাধীনতা কিছু নর—শুধু সন্তাব। পাত্রের নিকট নিজেকে বার বাব দেখানোর হাত থেকে মুক্তি পাওয়া মাত্র। কিন্তু দেবানন্দ গৃহকর্তা হরে গৃহকেই পরিবর্তিত করে ফেলে। বাইরের আচ্চাকে দে ঘরে টেনে আনলো। সমস্ত দিন বন্ধুদের যাতারাতে জ্ঞান মুখরিত হয়ে ওঠে। সন্ধার আঁধার নিবিড় হতে না হতে আনন্দ-মন্ত্রতা উল্লাসে পৃহ মুখর হয়ে ওঠে। তারপব ধারে ধারে বাত্রি বাড়ে। শুধু একটি ঘরে আলো অলে—আব দূর থেকে একটি নাবীর স্থান-জনল এ ঘরের চারিদিক ঘিরে জ্বলতে থাকে।

গাঁনীর রাত্রিতে সবাই বর্থন ঘ্মিরে পড়ে, বিনিদ্রা শুক্রা বর ছেড়ে বেরিয়ে আসে। পা টিপে টিপে ও এগিরে বার এ আলোকালা বরের দিকে।

মৃত আলোক-উচ্ছাল ঘর। সাদা চাদরের উপর শুদ্রে আছে দেবানন্দ আর কোন অপরিচিতা। মৃত্র হাসি,—প্রণয়োচ্ছাদ-পরিহাস!

এই বে নারী আছে দেবানন্দ রায়ের শ্যার অংশভাগিনী হয়ে রয়েছে, এ যে শুধু শুক্লার অপরিচিত তাই নয়; হয়ভো দেবু নিক্তেও একে চেনে না। তবু এ শুক্লার কামা স্বর্গে বিচবণ করছে আর প্রতিদিনের পবিভিত্তা শুক্লা লুনিয়ে লুকিয়ে দংখ দীর্যখাস ফেলছে।

প্রতি রজনীতেই দেবানন্দের নর্ম-উৎসব ৰথাবধ স্তব্ধ ও সমাপ্ত হতো। কিন্তু সে এসেও জানতো নাফে এক গোশন গুঢ়চাবিশা নারা তার সমস্ত ব্যক্তিচাবের নাবব সাক্ষী।

এই ঘটনাব দৃশুগুলি শুক্লার চিস্তাধারার মোড় ফিরিয়ে দেয়।
আগে তার প্রেমে এক শাস্ত স্থির সৌন্দর্যমহিমা ছিল। প্রিয়তমকে
পাবার আকাজনার হু:খ, দাহ, বেদনা ছিল, উপ্থতা ছিল না।
প্রেমাম্পদের দৈহিক মৃতির বিদেহী কপ কল্পনা করতো সে।
কামহীন, কলুবহান, শুল্র নিজলুব ছিল তার প্রেম। কিন্তু, এখন
তার চারিদিকে কক্ষদাহ। আগুনের হন্ধা। ও এখন পেতে
চার—দিতে চায়। দেহের বে কামনাগুলি, ইন্দ্রিয়ের বে ঘারগুলি
সে এত দিন অতীক্রির ভার দিরে কন্ধ করে রেখেছে—লাজ তারা
স্বাই আকুল হরে উন্মাদ হরে উঠেছে। যত মেরে এখানে আসে

তাদের প্রতিটি মেরেকে সে অভিশাপ দের। বা তার একা**ন্ত** নিজস্ব তাকে কোন ববাহুত ভোগ করছে।

এই ভাবেই চলছিল। তারপৰ আঞ্জ-

আজ সকাল থেকেই টুকবো টুকবো মেবে ছেম্বেছিল আকাল।
ছপূৰের দিকে প্রবল বাছ লাব বৃষ্টি। বিকেলে বাছ কমে গোল বটে
কিছু বৃষ্টি কমে না। বৃষ্টির একটানা লাদ, ভিজে-ভিজে হাওয়া
মনে কি বেন ভাব আনে। কোন এক নাম-না-জ্ঞানা অমুভৃতি
ভাদিন স্বীস্থপের মত জড়িয়ে ধরে মন। পিষে ফেলে, উত্তপ্ত
ভাক। নি:খাসে জন্থির করে তোলে।

দেবান ক্ষাত সমস্ত দিন বেক্তে পারেনি। বধ্বাও কেউ আংস নি। কি করে আসেবে ? বাস্তার জল গাঁড়িয়ে গেছে। গাড়ীচসছে না।

তুপুর থেকেই দেবু পান করতে স্কুক করেছে, রক্তের ধারার মত লাগ পানীর। উট মদিরা তার রক্তকে করে তুলেছে উক্তর। রাত্রি যথন আহার বার্টা সে তার থাস চাকরকে ডেকে বলে—ভ্রাকে একবার এখানে আসতে বল।

অবাক হয়ে স্থানি মত দাঁড়িয়ে থাকে ভূতা, জীবনে হয়তো এই প্রথম আদেশ পাওয়া মাত্র তামিল করে না। শুক্লাদি'কে ডাকবে। এইখানে। সে কি আসবে!

দেবু ভালভাবেই জানে শুক্লা আসবে। সে জানে তাব ত্বিত নারীস্থন্য এত দিন এত মাস ধরে শুধু এটি প্রতীক্ষার প্রতীক্ষিতা। বার বাব জার ব্যাকুলতা প্রকাশিত হয়েছে হাতের ভঙ্গীতে, পায়ের গতিতে, হাসির বেষার, কথার স্থরে, অক্রাসজ্জতায়। এতিদিন জাকে দেবুর প্রয়োজন ছিল না, কাজেই সে ইচ্ছে করেই এদিকে লক্ষা করে নি। কিন্তু, আজু যথন আর কোন উপায় নেই তখন ওকে ধলা করাই ভাল, মনে মনে ভারতে থাকে—ওর ডাক শুনে কি রকম মুখভাব হবে শুক্লার ? কি অপরণ ভৃপ্তির হাসি ফুটে উঠবে সেই পিপাসার্ভ অথবে ? একটু হাসে দেবু।

ভূজা জেগেই ছিল। আকুলি-বিকুলি হাওয়া, বৃষ্টির মাতাল পদধ্বনি তার আশাস্ত গুদয়কে আরও উধেল করে তুলেছে। ধ্বংস! ধ্বংস হরে যাক পৃথিবী—এমন সময় চাকর এসে থবর দিল।

প্রথমে যেন কথাটা বিশাস করতে পারলো না শুরা। দেবু তাকে ডেকেছে ! ধ্বংদের কালো গহররের অভলে সে ছুটে বাচ্ছিল তথন তাকে কে ফেরাল ? প্রেম। এভদিনে অভিসারিকার অপেকা কি শেষ হলো ?

কিছ, দেবুৰ ঘবে চুকে, সেই শব্যা স্পৰ্শ মাত্ৰই এক অভুত অফুত্তিতে সমস্ত মন বিধিয়ে ও:ঠ। সেই ঘর—সেই শব্যা।

তার তপজার সিদ্ধি নয়, দেবুব বাসনা পরিত্তির জক্তই তাকে এথানে জানা হয়েছে। প্রেম নয়, ধ্বংসই বড়িয়েছে হাত।

সাদা চাদরে চাকা নিজাঁব শ্যা। নিজাঁব কি ? ওর দিকে তাকাতে ওর প্রতি কণা বেন কথা করে ওঠে—আবরণের প্রতি স্ত্রে বেন কামনার ক্লেনজ ইতিহাস—বিবাক্ত ব্যাধির নির্মম উলঙ্গ প্রকাশ। শুক্লার স্বচক্ষে দেখা বিভিন্ন নারীর একই রূপ বিকৃত ও বিক্রীত অভিবাক্তি শীতল বিভ্ননা, কলুব হাসি বেন ওকে সহস্র বার্ছ দিরে ঘিরে ধরে। শুক্লার মনের সেই নিজিত অমুভ্তিগুলি বেন জাগরিত হয়ে তাকে মৃত্যুগম্বরে ঠেলে দেবার জন্ত মরিয়া হয়ে ওঠে। প্রেমের অমৃতকুগু নয় মৃত্যুর নারকীয় গহরর। এই কামনার অ্লিক্তেগ্র সামনে শাঁড়িয়ে শুক্লার মনের সমস্ত বিধা-বন্দ্র পুড়ে ছাই

হবে গেল। দেহভোগ স্থপ, ইন্দ্রিয় চরিতার্থতার উদ্বেশ, তাগে ও বিজ্ঞতার কোমল আসনে যে অলোকিক চিরন্তন প্রেম এতদিন মুর্ছিত হয়ে পড়ে ছিল, আজ এই মুহূর্তে সে নবজীবনের অমৃত পরশে আনাবশুক, বিশাল নয়নে তাকালে। দেবুকে সে যেন আরও ভালবাসলো। কুল, সানাল প্রবৃত্তিগুলি পুড়ে যেতে থাকে আর তারই আলোতে দীপ্ত দেখালো অনশ্ব প্রেমের প্রদীপ।

দেৰু ঘবে ঢোকে। ওব দিকে সহজে হাত বাড়িয়ে বলে—এ**স।** এখানে বোস।

—না॰। দামাল একাক্ষর শব্দ কিছ তাই যেন অসামাল হয়ে বার বার দেব্ব"তীক্ষ নাদায়, গবিত ওঠাধরে, দৃঢ় চিধুকে আঘাত করতে থাকে। না—কিছ কেন?—কেন?

—কোন উত্তপ দেয় না ভুৱা।

ওর দিকে তাকায় দেব। এই মৌনা নারীর নয়নে অঞ্চলেথা নেই। তবু যেন তার আপাত ভঙ্গতার পেছনে কোন অঞ্চনির্বর প্রকট। কিন্তু কেন ভরা তাকে এই অনাবস্থক অপমানে অপমানিত করছে ? নিজেও ভোগ করছে চবম ছংখ?

- —তুমি ভো আমাকে ভালবাস। দেবু না বলে পারে না।
- সে কথার কোন প্রয়োজনীয়তা নেই তোমার কাছে।
- —না নেই। স্বীকার করে দেবু—কিন্তু ভোমার—ভোমার কাছে নিশ্চয়ই তা প্রয়োজনীয়।
 - —আমারও নেই—মৃত্ হেসে বলে শুরা।
- —হঠাৎ এ রকম নিম্পৃহতার কারণ জানতে পারি কি ? বছকট্টে নিজেকে সংখত করে শাস্তভাবে বলে দেবু।
- —কোন দিনই বা স্পাধ-স্পাহনীয়তা দেখেছিলে? ঠিক সমান ভাবে উত্তর দেয় শুক্লা। তারণর একটু ভিন্ন স্থারে বলে—দেবুদা', স্মামি তোমার বোগ্যা নই।

বোগ্যা যে নও সে কথা থুবই সতা—কিন্তু তাই বলে অবোগ্যতার অহলারে আমাকে অপমান করবে ? দেবানন্দ রায়ের মুখের উপর বলবে—না ? কিন্তু কি করে জব্দ করা যায় এই স্পদ্ধিতা নারীকে ?

- —কি চাও তুমি ?
- —কি চাই আমি ? জ্রটা একটু বেঁকে উঠেই আবার প্রশাস্ত হয়ে উঠলো—আমি কিছু চাই না কিংবা যা চাই তা দেবার সাধ্য তোমার নেই।—আমার সাধ্য :নেই ? দেবানন্দ রায়ের অমিত অহঙ্কার যেন বিকৃত মুখে বীভংস চীংকার করে ওঠে।

একটু পরে অপেক্ষাকৃত লাস্ত বিজপে বলে—দেবানল রায়ের সাধ্য নেই শুক্লা মিত্রের প্রার্থনা পুরণের ?

মৃত্ হাসে শুরা। আর সেই শাস্ত শুভ হাসির দিকে তাকিরে এই প্রথম বেনু নিজের জক্ষমতা উপলব্ধি করে দেবানন্দ রার। রূপ যা দিতে পারে না, তেমনি তুর্ল ভ ধনের অধিকারিনী এই শাস্ত প্রীহীনা মেরেটি। সমস্ত রজনীর নীরব বেদনার পুরীভূত শুভ্রতার সমগ্র পৃথিবীর ব্যথিত হাদরে মধুসৌরভে বে বজনীগদ্ধা ফুটে উঠেছে, তার কাছে রক্তরাভা গোলাপও হার মেনে হার! এই তপঃরিষ্ঠা তরুণীর দিকে তাকিয়ে দেবানন্দ রায় মাথা নত করলো। তার মন বেন কোন এক প্রশমণির প্রভাবে ধীরে ধীরে পরিবর্তিত হতে থাকে। মৃক্র বুক্ত জেগে ওঠে এক করুণ ক্রন্দন, দেহাতীতকে পারার জনম্য অপুরনীর কামনা।



ঠিক এই মরপ্রমে অর্থাৎ বিভীয় ঋতুর গুরুতে একটা জাহাজ চাটগাঁ ধন্দবে এনে নোঙ্গর কেলে। মাল-টানা জাহাজ; নাবিকী পঞ্জিবার যাকে বলে কার্গো শিপ। নাম এস, এস, ক্যামেরুণ।

ব্দাহান্দটার থোল, হাচ, লোমার ডেক কার্গোতে ঠাসা। কার্নো থালাস হতে পুরো দু'টি মাস লাগবে।

ছু"মাস পর নোনা জল থেকে জঙ্গ-ধরা নোওর উঠবে। তারপর বছরের মধ্যম ঋতুতে হঠাং একদিন আকাশের দিকে খানিকটা সাদা খোরা ছুড়ে, তার আক্ষিক একটা ভোঁ বাজিয়ে আস্তে আস্তে ক্যামেকণ জাহাজ চাট্টা বন্ধব ছেড়ে চলে বাবে।

শশ বছর ধরে জাহাজটা সমানে চাটগাঁ বলবে আসছে।

এবারও এলা

ঘড়-ঘড়, কর্কশ শব্দ কবে ভারী ভারী শিকলগুলোর সঙ্গে চারটে নোঙর জলে নামল। মাল্লা আর রসিম্যানবা জেটির ক্যাপঠানে মোটা মোটা কাছি পেচিয়ে জাহাজটাকে কেঁধে ফেলল। গ্যাংওয়ে লাগাল।

প্যাংওয়ে বেরে পরলা যে জেটিতে নামস, বিয়াজুদিনের পলির বাসিন্দারা তাকে বলে সাত ছবিবায় কুটুম। আসলে তার অত্য একটা নাম আছো নাম তার হবাব। ক্যানেকণ জাহাজের ছোট সাবেও সে।

কোন দিকে তাকাল না হবীব। ছেটিটা পিছনে ফেলে, বন্দরটা ভাইনে রেথে সোজা রিয়াছুদ্দিনের গলিতে গিয়ে চুকল।

দ্বিতীয় ঋতুর দিনটা একটু আগে মবেছে। আর্কাশটা আবছা আবচা, ছারা-ছারা । ভ্যো কালিব বং গ্রেছে সেথানে।

স্বেমাত্র সন্ধা হয়েছে। এর মধ্যেই বিয়াজুদ্দিনের গলির খুপবিজে খুপরিজে কেরোসিনের ডিবে ব্রুলে উঠেছে। বিকিঞ্চিনির হাট বনে গিয়েছে।

কাপড় না, মরিচ না, চাল না, ডাল না—এখানে বা বিকিকিনি হর, ভা হল মাংস। ঠিক মালুবের নর, মেরেমালুবের ডাঁটো শরীরের কাঁচা, ডাজা নাংস। দালাল-আড়কাঠিরা শিকার ধরে ধরে আনছে। দরাদরি কথাক্ষি চলছে।

যারা শিকার পায় নি, এমন একদল মেরে গলির মুখে দলা পাকিসে দাঁড়িয়ে রয়েছে। কামঠের মত জুল-জুল করে সামনের দিকে ভাকিয়ে আছে।

ঠিক এমন সময় হবীব এল।

বিয়াজুদ্দিনের গলিতে সোরগোল পড়ে গেল। এখানকার বাসিন্দারা সবাই চেনে হবীবকে।

একটি মেয়ে নাক টেনে টেনে বলল, আইল লো, দশ মাদ পর সাত দরিয়ার কুটুম আইল। তোরা দগলে জোকার (উলু) দে।

কল-ৰুল কৰে এক ঝাঁক উলু পঙ্ল।

ফেছেদীমাথা লালচে হ্ব ছ্বীবের। একটি মেছে হ্বসমেত থ্তনিটা নেড়ে দিয়ে বলল, এয়াতদিনে আমাগোর মনে পড়ল লাগব ?

তীক্ষ ধারাল শাল কবে তেনে চেলে চলে পড়তে লাগল চাম পাশের মেবেগুলো।

করুই দিরে স্বাইকে ঠেলে গুঁতিয়ে একটা বেঁটে মাংসল মেয়ে সামনে এল। বলল, এইবার চলানি থামা লো মাগীরা! সাত দ্বিরার কুটুমরে নিয়া তোরাই যে মজলি! উইদিকে আসমানের বুক্থান টুটাকটো হইয়া যাইতে আছে। এইবার কুটুমেরে ছাইড়া দে।

ছৰীব কিছু বলে না। মেছেদী-মাগা চোখা ভুৱে হাত বুলোতে বুলোতে মিট-মিট করে হাসে।

রিয়াজুদিনের গলিব বাসিলাদের কাঁচে না চেনে সে? এক আগুদিন না, দশ বছর ধরে সে এখানে আগছে।

াষ**ভার অভুর** শুক্তে ক্যামেরণ জাহাল ধেই মাত্র চাটগাঁ বন্ধরে এসে লাগে, গ্যাপ্তেরে বেয়ে প্রলা নে মানুষ্টি নামে, সে হ'ল হ্বীব। কোন দিকে না তাকিয়ে সোলা এই গ্লিখে এসে ঢোকে সে।

্রেটে মেরেটা বলে, খাড়ইরা খাড়ইর। ভাব কী**ং** বেকুব মরদ! **ধাও, স্থাসমানের কাছে ধাও কুটুম**।

এক পাশে চুপ্চাপ দাঁড়িয়ে ছিল আনমান। অসম এক কুথের কাঁপুনি ভার বুকের ভিতৰ ধর্থর কর্মছল। পা কাঁপছিল।

লম্বা লম্বা পা কেলে আসমানের সামনে এসে দাঁড়াল হবীব।

গলিব মুখটা ছায়া-ছায়া; ফিকে আন্ধকারে জড়িয়ে রয়েছে। এখন মুখের চেহারা দেখা যায়, কিন্তু তাব ভাবা পড়া বার না, বং বোঝা বায় না।

ফিস-ফিস করে আসমান বলল, আইলা মিয়া ? আইলাম।

5₹1

जारा जारा हरमाइ जामगान । निहान इंगैव।

চলতে চলতে তারা বিয়াজ্দিনের গলির শেব মাধার এসে পৌছাল। এধানেই স্থাসমানের খুপরি।

খুপরিতে চুকে ভিত্তর থেকে ঝাঁপ এঁটে দিল আসমান। বাঁশের মার্চানে পা বুঁলিরে বদল হবীব।

ঠিক মাঝখানে একটা কেরোসিনের ভিবে জ্বলছে। ভিষেটা থেকে বত জালো পাওরা বার, তার চের বেশি মেলে ধোঁরা।



যায়ের মমতা ও

অম্টারমিক্ষে প্রতিপালিত

মীয়ের কোলে শিশুটী কত সুখী, কত সন্তুষ্ট। কারণ ওর স্নেহময়ী মা ওকে নিয়মিত অষ্টারমিক খাওয়ান। অটারমিক বিশুদ্ধ ছগ্মভাত খাত এতে মায়ের ছধের মত উপকারী স্বরক্ম উপকরণই আছে। আপনার শিশুর প্রতি আপনার ভালবাসার কথা মনে রেথেই, অষ্টারমিক্স তৈরী করা হয়েছে।

বেনামূলো-অষ্টারমিক পুত্তিকা (ইংরাজীতে) আধুনিক শিশু পরিচর্যার সবরকম ভ^{র্মী}সম্বলিত। ডাকধরচের জন্ম ৫ - ন্য়াপয়সার ডাক টিকিট পাঠান — এই ঠিকানায়- ''অষ্টারমিক'' P. O. Box No. 202 বোঘাই ১৷

...মায়ের দুধেরই মতন

ফ্যারেক্স শিশুদের প্রথম থাক্ত হিসাবে বাবহার করুন। ফুত্ত দেহগঠনের জক্ত চার থেকে পাঁচ মাস বরস থেকে দুধের সঙ্গে ফারেক্স থাওয়ানও প্রয়োজন। ফারেক্স পৃষ্টিকর শব্যজাত থাক্স-রালা করতে হয়না—গুধু দুধ আর চিনির সঙ্গে মিশিয়ে, শিশুকে চামচে করে থাওয়ান।



আজ বেশ সাজগোছ করেছে আসমান। চোথে স্থার টান বেরেছে। বোর লাল কাঁচুলি পরেছে। চোকো চোকো থোপ-কাটা একটা শাড়ি পরেছে। হাতের পাতার মেছেনীর রস বেথেছে। নাকে বেশর গেঁথেছে। লক্ষা লক্ষা চুল থোঁপার বেঁধে লাল টুকটুকৈ মান্দারকুল ভূঁতে দিয়েছে।

চকচকে, শাণানো চোথে আদমানকে দেখেছে চবীব। এই তো মাজ দশ মাস আগে তাকে ছেড়ে গিয়েছে। এই দশ নাসে আসমান শারো থ্বস্থবন্ত হয়েছে। তার শরীবটা ধাবালো বেগে ফুটিয়ে আরো বেস ভবে উঠেছে। টান-করা তামাটে চামছাস জাবো জেরা কুটেছে।

নীচে, সুই হাঁটুর কাঁকে থুতনি ওঁকে একদৃঠে চেলে আছে আসমান।

এক সময় আসমান বলল, আজ বুঝি ভাহাত আইল ?

र ।

এয়াত দিনে আমারে মনে পড়ল ?

ভুমাবে সগল সমন্ত্ৰ মনে পড়ে। কিন্তুক কী করুম ? জাহাজের কাম। ইঞাল-ভুকাল, পুট় (পোট) ইন্ডন, মুম্বাসা, পুট ইসমাইলা, পুট, লিবার পুল—হ্নিয়ার পানি ভুলফাড় কইরা বেড়াই। তনিয়ার এক মাথা থিকা জান এক মাথাস চলে বাই। দিল তো তুমার লেইগা পাগ মেলেই আছে। কিন্তু ইচ্ছা থাকলেই কী আসা বায় ?

একটু থেমে হ্ৰীব আবাৰ শুকু কৰে, যাউক উই দুগল। পুট ইতেনে মুখতাৰ মিয়াৰ লগে দেখা। তাৰ কাছে খণৰ দিয়া দিছিলাম। পাইছ?

भारे। है।

पत्र कामा करेवा द्रांशस ?

পাথছি।

1 PG PS#

আৰু না কাল সভাগে বায়।

चाक्।।

প্রের দিন স্কালে বিষ্ণাকুদিনের গলির মূরে একটা ঘোড়ায়
টানা গাড়ি এসে গাড়াল। একটা টিনের বান্ধ বিভানা, টুকিটাকি
ছু'-চারটে বোঁচকা নিয়ে হবীর আর আসমান গাড়িতে উঠল। ভারা
পাছাড়ভলীর দিকে যাবে। সেগানে যর ভাড়া কবেছে আসমান।

পালর মুখে এ পাছার বাসিন্দারা দল পাকিয়ে দীড়িয়ে আছে।
ক্লিন্ফস করে ভালের মধ্যে থেকে কে যেন বকল, আসমান
মাসী কড বলই জানে। মাগা বেবুগু, হুই মাসের সোংসার পাততে
পেল।

বোড়ার গাড়ি ছুটতে তুক করল।

বিরাজ্যুদ্দনের গলি একটা ত্রেরপ্রেব মত পিছনৈ পড়ে এইল। বন্দর রোড পেরিয়ে, অনেক চড়াই-উত্তরাই ঘূরে পাহাড়তলীয় কাছে এসে পড়েছে গাড়িটা!

হ্বাব আর আসমান—হ'-ছনের মধ্যে অস্কৃত একট। সম্পর্ক। ঠিক সম্পর্ক না, ছটি জাবন একটি সর্ভে, একটি বিচিত্র বোঝাপড়ায় জোড়া সেগেছে।

এক-আৰ দিন না। দশ বছর আগে এই দও আর এই বোৱাপাড়া ভদ হয়েছিল। দশ বছর আগে খিতীর ঋতুর পারলা দিনটিতে ক্যানেক্ষণ আহার চাটগাঁ বন্দরে প্রথম নোভর কেলেছিল।

জেটিতে নেমে শহরে গিয়ে চুকেছিল ইবীব। কসবীপাঢ়া খুঁজছিল।

চাটগাঁর তাদের জাহান্দ সেই প্রথম এসেছে। এথানকার কিছুই চেনে না হবীব। ঘূরতে ঘূরতে সে আড়কাঠির কাঁদে পড়ে গিয়েছিল। আড়কাঠিই তাকে বিয়াকুদ্দিনের গলিতে নিয়ে এসেছিল।

গলির মুখে চোখে-মুখে রং মেখে মেয়েগুলো কামঠের মত ঘ্রছিল।
শিকার ক্ষাই হবীবকে দেখে তারা থমকে গাঁড়িয়ে পড়ল।

এক কাণ্ডই করেছিল হবীব।

বাছল না, বিচার করল না, বাজালো না; দরাদরি, ক্যাক্ষি করল না। এমন কী ভালো করে দেখল না পর্যন্ত । হাতের সামনে যাকে পোল, ছেঁ। মেরে ছাকে তুলে নিল। এক হাতে তার কোমরটা জড়িয়ে টানতে টানতে নিয়ে চলল। বলল, তুমার ঘর কুনটা ?

উই গলিব ভাব মাথায়।

খবে চুকে নিজেই কাঁপ আঁটল হবীব। চিমিয়ে চিমিয়ে একটা কুপী জলছিল। ফুঁদিয়ে দেটাকে নিবিয়ে দিল।

যার ঘরে চুকে।ছল, সেই মেগ্রেটা এতক্ষণ এক পালে চুপচাণ মুথ বুজে দাড়িয়েছেল। কুপাটা নিববার পর তাকে দেখা মাচ্ছিল না। গাঢ় শহকারে সে হারিয়ে গিয়েছিল।

হাতড়ে হাতড়ে নেয়েটাকে ধরে ফেলল হবাব। তিন তুড়ি নেরে পাতলা একটা শোলার মত তাকে বুকের উপর ভুলে নিল। তাব নরম মাংসল শরারটাকে ইচ্ছামত ডলে, পিষে, ছেনে, আঁচড়ে, কামড়ে, ছিড়ে ফেলতে লাগল।

সমস্ত বাত অক্ষকার খুপারটা অক্ষ, আদিন এবং বর্ণর হয়ে বইল। সকালে উঠে মেয়েটার মুখে একটা দশ টাকার নোচ খুঁড়ে দিয়োছল হবাব। বলেছিল, আৰু রাত্রে আবার আগ্রম।

মেসেটা জ্বাব দেয়ান। জ্বাব দেবার মত অবস্থাও তার নয়। কাল রাত্রির বর্বর ঝড়টা তার উপর দিয়েই বয়ে গিয়েছে।

শাড়ি আর কাঁচুলে ফালা-ফালা হয়ে গিয়েছে। নথ আর দীতের মা থেয়ে চামড়া ছিঁড়েরক্ত জমে আছে। শ্রীরটা ডেলা শাকিয়ে রয়েছে।

ইবীব যথন চলে যায়, প্রায় বেছ শ, ছোর ছোর চোথ মেলে একবার তাকিয়েছিল মেয়েটা। তারপরেই চাথ বুঁজে ফেলেছিল।

সেই বাত্রেও এল হবীব। তার পরের রাত্রেও। তার পর থেকে রোজ আসতে লাগল। রিয়াজুশ্দনের গলিতে সেই মেয়েটির খুপরিতে আসা একটা নিহমে শীভিয়ে গেল।

সমস্ত রাভ আঁচড়ে, কামড়ে ছিঁড়ে সকালে মেরেটাকে, না, মেরেটাকে নর, মাগ্রুবের আক্বতি পাওয়া এক ডেল। নিজীব মাংসকে খুপারটার ভিত্তর ফেলে রেখে বায় হবীব।

াদন দশেক আসার পরও হবীব একটা কথা বলেনি। শ্বীবিণী মেয়েটার দেহ ছাড়া কোন ব্যাপারে তার কৌছুহল নেই।

এমন আৰুব মেহমান বিয়াজুদিনের গলিতে কোন দিন আসে নি।

দন পনের পর মেকেটিই প্রথম জিগ্যেস করেছিল, ভূমার নাম কী ?

हरीय ।

ভূমি কী চাটিগাঁর মামুব ?

মা। আমি জাহাজী, সাত দরিয়ার মানুষ। আমার নাম ছবীৰ। একটু থেমে হবীৰ বলেছিল, এই প্রলা আমাগো জাহাক্র চানিগাঁ পুটে আসছে। তুই মাদ আমরা এইখানে থাকুম। তুমার কাছে আমি কজ আহম।

আইসো।

কথার পিঠে কথা আদে। হবীর বলে, নাম কী তুমার ? আসমান।

বাহারের নাম। জুমি বেয়ুন থ্বস্থরত, তুমার নামধানও তেয়ুন থ্বস্থবত।

আসমান জবাব দের না। নীচের নরম ঠোটে ধারাল চোখা দাঁত বসিরে হালে! তার হাসিতে ধার আছে, শব্দ নেই। কথার কথার রাত বাতে। অন্ধকার গাঢ় হতে থাকে।

হঠাৎ এক^ইসময় আসমান বলে, মেহমান, তুমারে একখান কথা জিগামু ?

কী কথা ?

তুমি আমারে আয়ুন কুতার লাগান কামডাও ক্যান? আয়ুন ডল ক্যান? ছানো ক্যান? স্কালে শ্রীলথান দরদে জয়জব চইয়া থাকে।

হবীব হাদে। বলে, আমি হইলাম জাহাকী, সাত দরিয়ার মায়ষ। কালা পানির তুফান গুণে আমার জনম কাটে। ইণ্ডিয়ান উদেন, পিদিফিক উদেন, বেড সী, সুইজ থাল—সাবা ছনিয়ার পানি মাপতে মাপতেই জনম গেল। পানিতে যখন থাকি, বাঁচার আশা থাকে না। কুনো দিন যে ডাঙ্গার দেখা পামু, এম্ন ভবসা থাকে না।

একটু দম নিয়ে আবার শুক্ত করে, পানি দেখতে দেখতে আমরা ধুবা হইয়া যাই। পুটে নেমেই তুমাগো কাছে আসি। জানি, পানিতে তো এক কজ মক্রমই। ডাঙ্গা থিকা, মেয়েমানুষের শরীল থিকা ষতটুকু ফুত্তি ষতটুকু স্থুখ আলায় করে নিতে পারি! নিজেরে বাগ মানাইতে পারি না আসমান! তুমাগো কামড়াইয়া খামচাইয়া ফুত্তি করি।

হবীবের গলানা কেমন যেন গাঢ় শোনায়। আসমান কিছু বলে না। একুদৃষ্টে সাত দরিয়ার আজেব মানুষটার দিকে তাকিয়ে তাক্জণ ইয়ে তার কথা শোনে। বৃঝি বা হবীবের জক্ত একটু হুংখই হয়।

প্রথম বার এদে ক্যামেক্লণ জাচাজ চাটগাঁ বন্দরে মাস দেড়েক বইল। ঠিক হ'ল প্রত্যেক বছর দিতীয় ঋতুর শুক্ততে ছনিয়ার নানা বন্দর থেকে কার্গো নিয়ে জাচাজটা এখানে আসবে।

জাহার বেদিন ছাড়বে, তার জাগোর রাত্রেও আসমানের ধুপরিতে এসেছিল হবীব। বলেছিল, কাল ক্লাহাক্ত ছাড়ব আসমান!

আসমান চমকে উঠেছিল, কই, আগে তো আমারে কও নাই ? আগে তো জাহাল ছাড়নের ঠিক আছিল না। গলাটা কেমন বেন ধরে গিয়েছিল হবীবের। জাহাজী মানুষ সে। সাত দ্বিয়ার তুমান গুণে ভার দিন কাটে, বাত কুবোয়। দিন-বাত, মাস-বছবের ভিসেব নেই। দিনের প্র দিন কালো, নোনা, অকুবল্প সমূদ্র দেখতে দেখতে জীবন সক্ষে হবীবের দৃষ্টিভঙ্গিটা হয়ে গিয়েছে একবোখা, বেপরোয়া। তুনিয়ার কোন কিছু সম্পর্কে তার মোহ নেই।

ইবাণ-জুবাণ, পোর্ট এডেন, পোর্ট মোস্বাসা—্যে বন্ধরেই জাহান্ধ ভিজুক, হবীব আগে ছেণ্টে কসবীপাড়ায়।

দরিয়ার জাবন নারীসঙ্গহান, নিরুৎসব। সেথানে আশা নেই, নিরপেন্তা নেই, ভূরসা নেই, বেঁচে থাকাটা সেথানে একবেরে, বিস্বাদ, অসম্ভ।

আহাজ থেকে ডাঙায় নেএই হবীব হলে হয়ে ওঠে। কসবীপাড়ার মেয়েদের দেহ আঁচিড়ে-কামড়ে যতটুকু ফুডি আদায় করা বার! ডাঙার সঙ্গে মাটির সংস্ক তার সম্বদ্ধ এটুকুই।

কিছ সে বার যেন কী হয়ে গিছেছিল। দেড় মাসের প্রত্যেকটা রাজ আসমানের থুণবিতে কাটিয়ে দেহ বিকিকিনির ভৈব সম্পর্কটা ছাপিয়ে ছজনের মধ্যে একটা ফ্লু, গুড় সম্পর্ক গড়ে উঠেছিল। ব্যাপারটা আগে বুক্তে পারেনি হবীব। জাহাজ ছাড়ার আগের রাত্রে টেব পেল।

সাত দ্বিহার বেপ্রোয়া মানুষ্টার গলা খনে গেল, আবার



আহম : ফিরতি বছরে জাহাজ বখন চাটিগাঁর আগব, তুমার কাছে।

কাঁপাগলার আসমান বলেছিল, আইনো কিছক। মাধার কিরে (দিব্যি)।

ষ্ট্রের বিতীয় ঋতু বেই শুক্ত হয়, ক্যামেকণ আছাক চাট্ট্রা বন্দরে আলে। তেটিতে গাাংওয়ে লাগাবার সজে সজে হবীব নেমে পড়ে। ক্লোন দিকে না তাকিয়ে মোকা আসমানের খুণবিতে চলে আলে।

ক্যামেকণ ভাষাক প্রো ছ' মাস চাটগা বক্ষরে থাকে। এ ছ' মানের প্রত্যেকটা রাভ আসমানের গুপরিভে কাটার হবীর। সে ই'স বিভীয় খাতুর কুটুম। মহশুমী মেছমান।

বিরাজুদ্দিনের গলিব বাসিদারা সবাই চিনে কেলেছে হবীবকে।
ভারা ভাকে বলে, বর্ষার আভিথি, সাত দরিয়ার কুটুম।

ৰছৰ চানেক আসাৰ পৰ হবীৰ একদিন বলল, এয়ুন কৰে তো আৰু চলে না।

আসমান বলে, কেমুন করে ?

এই বে বছবের দশখানা মাস আমার দরিরার দরিরার কাটে, আম বেবুগাপাড়ার আদ্ধারে তৃমি গুঁইজা থাক। এমুন করে চলব না।

বছরের একটা নিদিষ্টি মরগুমে আসমানের ববে করেকটা দিন কাটিরে বায় হবীব। আসমানের ববে জীবনের অন্ত একটা স্থাদ পার সে। বে স্থাদটা দরিয়ার উন্মাদ তুফানে নেই, বে স্থাদ ইরাণ ভূষাণ মোস্থাসা বন্দরের ভিতর নেই। এ স্থাহটা হল মাটির স্থাদ, ভাঙার স্থাদ, জীবনে নোঙর ক্ষেলার স্থাদ।

এই স্থাদটার টানে বছরে বছরে আসমানের কাছে আসে হবীব। সাক দরিয়ার মানুষটা কয়েক দিনের জগু ঘরের আশ্রর পায়। এই ঘরই তাকে একদিন অস্থির, আছের করে ফেলন।

ছবীব বলে, ভাবতে আছি, দরিয়ার কাম আমি ছেড়ে দিয়ু।
তুষারে এই বেবুখাপাড়া থিকা নিয়া যায়। তুমারে সাদি করে
সোংসার করুম।

কিস-ফিস করে আসমান বলে, সভ্যি ?

স্তি।

শাসমান খার কিছু বলে না। খড়ুত এক স্থাধের শিহরণে ভার বুকে তির-ভির করে কাঁপতে থাকে।

সভিত্ত একদিন জাহাজের কাজ ছেড়ে দিল হবীব। পাহাড়তলীতে একটা ঘর ভাড়া নিল। তারপর বিরাজ্জিনের গলি থেকে আসমানকে নিয়ে গেল।

সে বার ক্যামেরুণ জাছাজ হ্বীবকে রেখেই চাটগাঁ বন্ধর ছেড়ে চলে গেল। ভিন-চারটে মাস ঋড়ের মত উড়ে গেল।

আসমান আর হবীব প্রস্পরকে তারা উন্মাদ সোহাগে জড়িরে রাখল। কিন্তু তারপর ? তারপর কোথায় যেন তাল কটল।

উদাস চোথে এক একদিন আকাশের দিকে চেয়ে বদে থাকত ধবীব।

আসৰান বলত, কী হইল ? ফিন-ফিস করে হবীব বলত, কিছু না। আমার মনে হয়, নিখ্যাত কিছু হইছে। কী আহার হইব ?

হইছে হইছে। আমি বৃঝি।

পদ্ধ একটু হাংস হবীব। নির্জীব, বিষয় হাসি। ভোঁত। খ্যানখ্যানে অভিয়াজ হয়। সে বলে, কী বোঝ আসহান ?

হবীবের কানে মুখ ওঁজেঁ আসমান বলে, সকল বুঝি আমি সকল খপর মাঝি। দরিবার লেইগা ভূমার পরাণ থির নাই।

বুকের ভিতরটা ধরক করে উঠল হ্বীবের। আসনান কেমন করে তার দিলের কথাটা জানল ? বিষ্চু চোথে তার মুথেব দিকে তাকিয়ে রইল হবীব।

আসমান ৰলে, তাক্ষৰ ছইয়া গেলা, তাই না ?

ডাইনে এবং বাঁরে মাথা ঝাঁকার ছবীব। বাঁ হাঁ, ফাঁ দে ৰোঝাতে চায়, দে-ই জানে।

আসমান থামে না, তুমি ক্লক ক্লক কাছাজের থোঁক নিচে যাও। তুমি হইলা দরিয়ার মাতুৰ, খবে তুমার মন বশ থায় না।

2क─

আন্তে আতে রাথা নাড়তে থাকে হবীব। গাঢ়, মন্তব এইটা স্থাস ফেলে।

ষার রক্তে দরিয়া মিশে রয়েছে, খরে কত দিন তার মন বসে ?

তালটা আগেই কেটেছিল। এবার হু' জনের মাঝখানে চিড় ধরল। চিড়টা একটু একটু করে বাড়তে লাগল।

বে মেয়েমান্থবের রজে ক্সবীপাড়ার বীজ রয়েছে, সংসার-ঘর সাজাতে কত দিন তার ভাল লাগে ?

একদিন হবীরের চোথে পড়ল। রাত্রির অন্ধকারে পাহাড়তলীর সেই বাড়িটার চারপাশে কতকগুলো লোক নেশার চুরচুরে হয়ে হল্লা করছে।

হবীর গর্জে উঠল, উই কামঠগুলো এখানে আসছে ক্যান ?

জাসমান জবাব দেয় না। সেই হাসিটা হালে, যাতে ধার আছে, শব্দ নেই

আদমানের রক্ষম-সকম দেখে ক্ষেপে উঠল হবীব। থানিকটা কুটস্ত রক্ত তার মাথার চড়ে বসল, ছ'হাতে তার গলা টিপে ধরল হবীব। বলল, মাগী বেবুগুা, এই দিকে সোংসার করে, উই দিকে কুন্তা এনে চুকার ঘরে!

গলায় জোবে কোবে চাপ দেয় হবীর। আসমানের চোগ হুটো ঠিকরে বৈরিয়ে পড়েছে। খাসটা আটকে আসছে।

মরিয়া হয়ে হবীরের তলপেটে লাথি ছুড়ল আসমান। টাল সামলাতে না পেরে ছিটকে পড়ল হবীব।

ক্রথমী ক্রানোয়ারের মত ছটো মানুষ একই দরের ছুই কোণে দাঁড়িয়ে ফুঁসতে থাকে।

পরস্পারের ভালবাসা, বিশাস এবং নির্ভরতার স্ত্তে তু'টি জীবন জ্বোড়া লেগেছিল। কিছ এই মুহুর্তে তাদের সম্পর্কটা ছাবিশাস, সন্দেহ আর শত্রুতার সম্পর্ক।

হবীব থেঁকায়, মাগী কুত্তী, কামঠগুলারে ঘরে এনে চুকায়!

ক্যান ঢ্কায়ুনা? তুই যাবি দরিয়ার। আমার চলব কেমনে? ব্যবসা চালুনা রাধলে খায়ুকী? ব্যবসাই চালু রাধ মাসী, ভোরে নিরা আমার চলব না। হাপাতে হাপাতে হ্বীব বলে, আমি দরিয়ায় চলে যামু।

সেই ভাল। তুরে নিরা আমার চলব না। বার মতি থির নয়, তুই-চার ক্ষত্ত খব করতে না করতে বে ছবিয়ার বাইতে চার, তাব উপূব আমার ভবদা নাই। আমি পাড়াতেই চলে বায়ু।

দ্বিয়াৰ মাতৃৰ একদিন দ্বিয়াতেই চলে গৌঙ্গ। আৰু বিশ্বান্ধুদ্দিনের গাঁলিতে এনে চুকল আসমান।

আসমানকে দেখে গলির বাসিন্দারা ফিস্ফিসিয়ে ছালে। বলে, কীলো আসমান, অর-সোংসার ও ইরা আবার এই দোজথে (নরকে) আইলি বে ?

স্থ ছউছিল; ছই-চার দিন সোংসার করসাম। কিছক স্থটা বেশি দিন রইল বা। রজে রইছে বেব্ছাপাড়ার বিষ। কয় দিন সংসার ভাল লাগে ?

বলতে ৰলতে নিজের পুরনো খুপরিতে গিয়ে ঢুকল আসমান।

ভারপরের বছরও ক্যামেরুণ জ্ঞাগাল্প এল চাটগাঁর।

হবীব এল আসমানের খুপরিতে। আসমান খুশীই হল। করেক মাস একসঙ্গে সংসার করে হবীবের উপর কেমন একটা টানবসে গিরেছে।

আদমান বঙ্গল, আছ কেয়্ন ? ভালই।

আদেখানের উপর অন্ত এক আক্রোশ নিরে দরিয়ার চলে গিরেছিল হবাব। দরিয়ায় দরিরায় ঘুরে দেই আক্রোশটা উবে গিরেছে।

হবাব বলল, ভাগ আসমান, তুমি ক্সবীপাড়ার মাত্র, আমি

দবিষার মান্ত্র। তুমি এই পাড়া ছাড়তে পারবা না, স্বামিও দবিষা ছাড়তে পাক্ষম না।

ঠিক ৷

আসমান সার দেব।

দৰ্বিয়া আর কস্বীপাড়া ছেড়ে বে আমৰা সারা স্থনম সোংসার কক্ষম, তার উপায় নাই।

हिक।

এক কাম করলে কেয়ুন ছয় ?

ভী কাম !

বছৰে ছই মাদ আমাগে। কাহাত চাটগাঁর থাকে। এই তুই মাদ ভূমি আমি সোংসাব পাতলে কেমুন হয় ? পুটে পুটে ব্রি। কভ মাগীর কাছেই তো বাই। কিছু সোংসাবের ব্বের বালু তো পাই না!

আসমান বলে, সারা জনম বারো মাস তো এই দোজথেই কাটাই। ছই মাস বদি সংসার পাততে পারি, সুধও মিটে। শান্তিও পাই।

ত্ব' জনের মধ্যে সর্ত্ত হল।

বছবের দ্বিতীর ঋতুতে ক্যামেকণ জাতাক্স যথন আসবে তথন আসমানকে নিবে এই শহরের কোথাও চলে বাবে হবীব। একটা বর ভাড়া করে থাকবে।

ত্ব'-মাস জাহাকটা চাটগাঁ বন্ধৰে থাকৰে। এই ত্ব' মাসের মেবাদে তারা মবশুমী সংসার পাতবে। এই সর্তে, এই চুক্তিতে চটি জীবন জোড়া লাগল।

রাত গাঢ় এচ্ছে, খন হচ্ছে। গাড়িটাকে টেনে টেনে যোড়া গুটো পাহাড়তলীর সেই ঘরটার কাছে এসে দাঁড়াল, যেটা আসমান ভাড়া করে রেখেছে। যেখানে ভাদের গু'মাসের মরশুমী সংসার পাতা হবে।

এক মুঠো ভিক্ষে পাবো মা ! জীধীরেন বস্থ

নিরীহ জীবন-দ্বন্দ্থে
মরণের জাবৈত মহড়া
নিঃম্ব রদে পূর্ণ করে
নিজাকার ভরা।
নিমগ্ল রাজ্যের পাঝা
থুলে দের স্তর বাতায়ন,
বিশ্রামের পরনায়
রাতভর করে আপায়ন।

ভোর হ'লে,
সুকু হলে অভিবান
অনিবার্য ভয়ার্ত ভিড়ে
যাত্রাপথ অসম্প্রান।
মুক্ত দারপথে
এক মুঠো দানা পেলে,

মধ্যাহ্ন অবশ হাতে
ছিন্ন বন্ধথানা মেলে
কুড়াই শতেক।
দূব প্রাক্ত হতে কর্তু
স্মদূরের ফালিক পাহাঝ দেখে
থেনে বাই অনিমেথ।

চারি পাশে
নেমে আনে
অপ্তাই গোধৃলি:
নিজেরে হারটে আমি নিজে।
মরনের কমা নিরে
তবু কেন বেঁচে আছি আমি ?
বছেন অত্ব নীবে
দারিজ্যের বীকে।



শ্বস্মার্গের মন্ত পছলগামেও সকালে দেখেছি একটা সালা আন্তরণ দিয়ে বাড়ীর ভাদ, মাঠ আর উপলথও ঢাকা। শিশির ক্ষমে এরকম হয়। এইক্সকে সকালে শেবনাগ নদীর ধারে উপলথওের উপর দিরে বেড়াবার সমর সাবধানে চলা উচিত। শিভলে আবাত পাওয়ার সম্ভাবনা আছে।

এখানে এক কুকুব নিবে বেশ মজা হবেছিল। সারা কাশ্মীরের কুকুবওলো বেশ প্রাম-ফেড্ গোছের। বেশীর ভাগই পথের বাসিলা কিছাকি তাদের পুরুষ্ট্র কপ! বাংলাদেশের খেরো কুকুর একটাও চোখে পড়েন। শ্রীনগব খেকে পগল্গাম আর ওপালে উনবি—শানসবল্ অববি সব পথের কুকুবই রীতিমত ভদ্র-ত্রস্তা। চয়ত আবহাওয়াই এর জজে দারী। নেপালে দেখেছি মান্য গুলো—বিশেষ করে পাহাজীরা রীতিমত গারে-গতরে। কিছা পথের কুকুবের এমন নৈকর কৌলীল্ল চোখে পড়েনি। এমনি এক কুকুবকে রাস্তাং বিশ্বট্ট থেতে দিলাম। শ্রস্, অমনি বন্ধ্য হয়ে গোল। হোটেলে ফেববার সমর দেখি পিছু নিয়েছে। তারপর সোজা দোতলার আমাদের কাম ায় এসে হাজির। তথন সক্ষা হয়েছে—বাইরে কন্কনে ঠাঙা। আমি বিদায় করতেই বাছিলাম। এগিয়ে এল পুপা। বললে—মাহা, এত ঠাঙায় বাইরে থাকবে? থাকুক না আজকের রাতটা খরের ভেতরে?

বললাম—কতি কিছু নেই। কুকুর ত দূবের কথা, বাখা-বাখা খাপদের সঙ্গেও থাকতে রাজী আছি। মহস্তবেও মরিনি মোরা, মারি নিয়ে খব করি। কভ মারি-ধালা, কভ রাগব-বোয়াল, কভ নেকড়ে-হায়েনা নিয়ে আমরা বাঙ্গালীবা খব করছি। এ ভো নিভাস্কই নিবামিব সে ভূলনায়।

বাধা দিয়ে হেমপ্রভা বললে—থামুন, থামুন। আপনার সব ভাইতেই রসিকতা। কুকুবটা বাইবেট থাকবে।

তথান্ত। বাইবেই থাকা সাব্যস্ত হোল। পূস্প তাকে খাইরে এল। সাবা বাতটা সে বাইবেই কাটিরে দিলে। সকালে দরভা খুলে আমি তাকে ভেতরে টেনে আনতে গোলাম—কি আশুর্বা, সে আগবে না! রাতে আগতে দিইনি। তাই অভিমান! অভিমান অধার তথ্ বাঙ্গালীবই একচেটে নয়! সাবা দিন থেয়ে দেয়ে আমাদের সঙ্গে সঙ্গালীবই একচেটে নয়! সাবা দিন থেয়ে দেয়ে আমাদের সঙ্গে সঙ্গালীবই একচেটে নয়! সাবা দিন থেয়ে দেয়ে আমাদের সঙ্গে সঙ্গালীবই একচেটে নয়! কাবা ওপরে এল। এবারে সঙ্গামানে, সাদরে অক্ষর মহলে প্রবেশ করতে বললাম। কিছুক্বণ ত্রামের। সে এলো না। পুশ্র হাত থেকেই থেলো। কিছুক্বণ পরে বাড়ীর দরোহান এসে লাঠি মেরে তাকে তাড়িবে

বিলে। সকালে যথারীতি তার সক্ষে দেখা হোল—তবে বাড়ীর বাইবের মাঠে। অনেক সাধ্য-সাধনাতেও ওপরে ওঠা ত দ্বের কথা—বাড়ীর চৌকাঠও মাড়াল না। বাণ্স ! কি অভিমান! সব অপমানগুলিই শ্বরণ করে রেখেছে ! কাশ্মীরের কুকুরই বখন এই, তথন না জানি ও-দেশের অঙ্গনাদের মনটি কতই শ্বিকাতর!

মনোক বাৰু গন্ধীর মুখে বললেন—লালা, এমন ছিমছাম লেশের পুক্ষেরা দেচিপদপল্পবের চর্চা করবেন আর তার ফলে— ঐ ওদিকের ওরা ক্রমশঃ পারাভারি হয়ে অভিমানহরস্ত হবেন— এ আর বিচিত্র কি! বৈশ্বকাব্যের অভিমান চর্চার যায়গাই ত এই!

বলসাম—কিন্তু ভারা, ও-ব্যাপারের চরম ত হয়ে গেছে মধুরা-বুলাবনে। নিতান্তই ধূলোমাটির পরিবেশে! এথানকার আরবন কাটিনের তপাশে বারা আছেন, তাঁদের সঙ্গে ত পরিচর হল না? স্কতনাং কুকুরের অভিমানটা যে এ-দেশের মাটির ফ্সল, তা তো বলা যায় না?

কল্যাণী রান্নাথর থেকে বললে—অভিমানের বিলাস থুব হয়েছে। ও সব আপনারা বৃষ্ণবেন না, খাবেন আম্লন।

এর পরে আর কাব্যদর্শন চলে না। স্বতরাং উঠতে হোল।

ফেরবার পথে আমরা সোজাপথেই চললাম— ৭২ মাইলের পথ। এ-পথে প্রথম দ্রপ্তীয় স্থান হচ্ছে মাওন্। ঝর্ণা আর প্রাকৃতিক দৃহাবলী। এর পর অনস্তনাগ। এটি একটি ছোট সহর। চারিদিকে বহু ঝণী আছে। তারপর অবস্তীপুর। গ্রীনগর থেকে ১৮ মাইল দূরে। বাদ এখানে কিছুক্ষণ থামে। দ্রষ্টব্য হচ্ছে একটি পুরাতন মন্দিরের স্বংসাবশেষ। মন্দির, বড় বড় থামওয়ালা বারান্দা, চম্বর-স্বই পাথবের। এককালে জমকালো মন্দির ছিল। সরকারী এক বিজ্ঞান্তিতে বলা হয়েছে বে, ৮৬৫ থেকে ৮৮৫ খৃষ্টাব্দ পর্যাস্ত অবস্তাবর্মণ ছিলেন কাশ্মীরেব অধিপতি। ইনিই এই বিফুমন্দিরটি নির্মাণ করেন। স্থতরাং মন্দিরটি নবম শতকের। "রাজতরঙ্গিনী"তে আছে—অবস্তীবর্মার রাজ্বকালে সুপবিত মুক্তাকণ, **णित्यामी, कवि धानम्मर्वर्कन ও द्रष्टाकद विकाद ख्रान्छ** হয়েছিলেন। মন্ত্রী শ্রবর্ত্মাকে দিয়ে উমানাথ-মহেশরের মদিবটি (বিষ্ণুমন্দির ?) নির্মাণ করান। কিন্তু জনসাধারণের বিশাস এই ৰে, ৬টা মন্দিরই নয়, একটা রাজবাড়ী। পঞ্চপা**গু**ব এখানে নাকি সদ্রোপদী বাস করেছিলেন। আমাদের অবগুতা মনে হোল না। সরকারী আটস কলেজের পাশকরা, শিল্পনিপুণা হেমপ্রভা চার্দিক

আপনার জন্য

চিএতারকার মতি মধ্রুর লাগেন্য



200 11 14 2

বিশুদ্ধ, শুদ্ধ শৈক্তি ভিয়লেউ সাবান

চিত্রতারকাদের সৌনর্য্য সাবান

हिन्तूशन निভाद निः, कईक धाउठ ।

LTS/12-X52 BQ

পরীক্ষা করে বললে বে, সরকারী ভাষ্যই ঠিক। আইম শতকের মুকাপীড় ললিভাদিভার প্রতিষ্ঠিত কাশ্মীরের বিখ্যাত মার্ত্ত-মন্দিবের সঙ্গে এর প্রাউত প্রাানের একটা মিল আছে। পেছনের দিকের বড় বড় থামওর্মালা কলোনেড বা হলগুলো গ্রীকরীতিতে তৈরী। মার্ত্ত-মন্দিবে তঃ স্থাপ্ত। গান্ধারনিলের প্রভাব এথানে আছে হয়ত।

চুঁচ্ডার হুই ভাই-বোন——অনিমা ও কল্যাণ শীল যথন ফটো
নিতে ব্যস্ত, ধ্বংসন্ত্পের ওপর দিয়ে ইটিতে ইটিতে তথন ভাবছিলাম
—একে ধ্বংস করল কে ? পাঠান সিকালার লোদী না নোগলরা ?
কালাপাহাড়া ঐতিহে ত ওদের ইতিহাস ভরা। ইসপামারাদ থেকে
ধ মাইল দ্বে একদা-বিখ্যাত মার্ত্ত-মন্দিরকে ও সিকান্দার লোদীই
ধ্বংস করেছেন ধুঁঠার পঞ্চলশ শতকে ! আজও সেই বিখ্যাত মন্দিরের
নীলাভ-পুনর রংয়ের পাথবস্তলো পড়ে রয়েছে। বিখ্যাত সোমনাথ
মন্দির গুজরাটে দেখেছি। মামুনের পৈশানিক হাতে তার করক্ষণ
মনকে পীড়া দিয়েছে। তাঁরই সভার প্রখ্যাত ঐতিহাসিক অল্
বেক্নী দম্ভ করে বলেছিলেন—"মামুন ভারতকে ধ্বংস করে আশ্রহ্যা
সাহসিকতার পরিচর দিয়েছেন। অধিক্ষ ভান থেকে জ্ঞান-বিজ্ঞান
বিদায় নিয়ে কাঞ্যার, বেনাবস প্রভৃতি যে-সব স্থানে মামুদের হাত
পৌছাতে পাবেনি, সেই সব দেশে পালিয়েছে।"

धल (बक्रीव बस्वाइश्वरवर्धे श्रीकान, मामूलव ममस्य कान्मीरव, বারাণদীতে শক্তিমান হিন্দু রাজ। ছিলেন। তথনও হিন্দু-সংস্কৃতি কাঝারে করদ্ধন্ব প্রাপ্ত হয়নি। সেদিনের আর তার আগের কাশ্মাবের হিন্দু রাজাদের শক্তির কথা মনে পড়ল। গুর্জুর্যাজ বামভারের পুর ভোজ উত্তব-ভারতে পালদের প্রাক্ষিণ করে ভারতের অনিকাংশ অংশ জয় কবেন। কিন্তু কাশ্মীর, বাংলা, সিদ্ধ আর মুগ্ধ জ্বর করতে পারেননি। মনে পড়ল অষ্টম শতকের মুক্তাপীড় ললিতানিত্যের কথা, খাদশ শতকের রাজতর্গিনীর লেথক কংলন ধার কীন্তি অমর করে বেথে গেছেন। কাশ্মীরের কর্কোট বংশের শ্রেষ্ঠ রাজা ইনি। এঁবই সময় হিউয়েন্থ-সাং কাশ্মীর ভ্রমণে গিয়েছিলেন। মগধ, বঙ্গদেশ কামরূপ, উড়িষ্যা, মালব 电 বাটেও ইনি প্রাধান্ত বিস্তার করেছিলেন। ষশোবপ্রণের মত ইনিও, বাঙ্গালী সমাট শশাঙ্কের মৃত্যুর পর, বাঙ্গালাদেশ আক্রমণ করেছিলেন। পাহাড়-পর্বত ডিঙ্গিয়ে দেড় হাজার মাইল হেটে আসা সোজা কাজ নয়! এই খ্যাতনামা ললিতাদিত্যই সেদিন এক বাঙ্গালী বাজাকে ভূলিয়ে কাশ্মীরে নিয়ে গিয়ে হত্যা করতে কুঠাবোধ করেন*ি। অব*হা তাঁর সেই জঘন্য কাজের **প্রতিশো**ধও নিমেছিল আর এক বাঙ্গালী রাজপুত্র; কাশ্যীরে গিয়ে আর এক রাজার বুকে ছুরি বসিয়ে ললিতাদিত্যের আগে গুষ্টায় প্রথম শতকে আর এক মহাত্ত্ব সমাট কাশ্মীরকে গরীরান কবেছিলেন। কুষাণ কণিছ কাশ্মীর শুধু জয় করেন নি, চতুর্থ বৌদ্ধ সঙ্গীতিও (মতান্তরে জলদ্বরে) সেথানে করেছিলেন।

ভাবছিলাম, একটাও বৌদ্ধান্দির শ্রীনগরে বা ভার আ্বাশে-পান্দে নেই কেন? লাভাক্ ছাড়া আর কোথাও বৌদ্ধ-মারক আছে কিনা জানি না। গাইডবুকেও কোনও উল্লেখ নেই।

বাস ছাড়সো। আমরা ক্রমে পাষপুরে এসে পৌছলাম। ছ'পাশে ফিকে বেওণী রংরের জাফরাণক্ষেত দেখা যাছে। সমগ্র কান্সীর জন্মৰ মধ্যে এই পামপুর ছাড়া কান্যনাথ কোথাও জন্মে না। অন্ত জার্মসায় জান্যনাণ চাবের অনেক চেটা করা হয়েছে, সাফস্য আসেনি। মাটির বিশেষ গুণের জন্মেই এ অঞ্চল ছাড়া আর কোথাও জান্যনাথ জন্মায় না। পামপুরের জান্যরাণক্ষেত শুধু যে কান্মীরকে রাজস্বের একটা অংশ এনে দেয় তাই নয়, এর সৌন্দয়াও দেশ-বিদেশের মান্ত্রকে মুগ্ধ করেছে। সিংহাসনলাভের চৌদ্দ বছর পরে জাহাঙ্গার শাহ বখন কান্মীর ভ্রমণে যান চার শত বেগম বাদী আর চার শত পালভোলা জাহাজ নিয়ে, তখন পামপুরের এই জান্ত্রাণক্ষেত ভাঁকে মুগ্ধ করেছিল। আল্লান্যনীতে এ কথা তিনি স্বীকার করেছেন।

জাকরণকুলগুলি চমংকার দেখতে! মাঠে যখন ফুটে থাকে তথন বং হাল্কা-বেগুণী। কিন্তু তুলবার পর নীলাভ-বেগুণী হয়ে যায়। এই ফুলের হল্দে পরাগের সঙ্গে থয়েরী র যের যে স্ক্ষা স্ক্ষা শোষা আছে, তাই জাকরাণ। স্কতরাং এক ভোলা জাকরাণের জন্তে কত ফুল সংগ্রহ করতে হয়, সহক্তেই অনুমেয়। ইংরেজী অভিধানে এই ফুলকে গাঢ় ছলদে রংয়ের বলা হয়েছে। কিন্তু কাশ্মীরে সে বং দেখিনি। ওল, কচু ইত্যাদি গাছের মত এরও ন্ল থেকে গাছ হয়। সরকারী এল্পোরিয়ামে জ্রীনগরে থাটি জাকরাণ পাওয়া যায়। ভোলা ১২'৬০ টাকা। হাউসবোটে জনেক সময় আড়াই টাকা তিন টাকা তোলা পাওয়া যায়। আমাদের বোটেও বিক্রেতা এসোছল কিন্তু ভেলাকের ব্যাপারটা জানা ছিল বলে আমরা সাবধান হয়েছিলাম। অধিকাংশ সন্তার জাকরাণই বং-করা কাগজকাটা মাত্র।

সন্ধার আগেই আমরা প্রীনগরে ফ্রিলাম। টুরিষ্ট রিসেপশান দেটারে হাজির হতেই বোটওয়ালার। টানাটানি আরম্ভ করল। বে-মব্তুম কি না! চিন্তা হোল—ঝিলামে না ডাল-এ. কোথার থাকা যাবে কোনু জায়গার পরিবেশ রমণার ? অবশেষে ডাল-এই স্থির হোল—নেহেক্স পার্কের কাছে।

হাউদবোট চার রকমের আছে। স্পেশাল, এ, বি, সি। মধ্যবিত্তের উপযোগী হচ্ছে বি আর সি শ্রেণীর বোট। চার কামরাওয়ালা বি শ্রেণীর মাসিক ভাড়া ৩৫০১ টাকা আর সি শ্রেণীর ২৫০১ টাকা। চার কামবার ছ' জন সহজেই থাকতে পারেন। ডুইংকম আর খাবার খবের গালিচার উপর বিছানা পেতে ভতে ষ্মাপত্তি না থাকলে, দশ-বার জনেরও যায়গা হয়। বি শ্রেণীর প্রতিদিনের জন-প্রতি রেট ৮১ টাকা, অস্তত:পক্ষে পাঁচ জন থাকলে। সি শ্রেণীর জন-প্রতি দৈনিক রেট ৬১ টাকা ; অস্ততঃ পাঁচ জন থাকতে হয়। গাইভবুকে হাউসবোট, দিকারা, টক্লা, বাদ ইত্যাদির সব বেট বেঁধে দেওয়া আছে। তার বেশী কেউ নিঙ্গে ড়িয়েক্টার তার প্রতিবিধান করে থাকেন। কিছ বে-মরন্তমে, যথন বোটে বোটে "টু-লেট" बुलएंड शांक- ज्या वांधा-ववान त्वेह हरा ना । তথন নিছক ডিমাও আর সাগ্লাইয়ের নীতি। তথন গ্রহ বোটওয়ালার। মে আর নভেম্বর হচ্ছে বে-মরগুম। এই সময় দর রীতিমত কমানো বাষ। আমরাও এই স্থবোগটার সভাবহার করেছিলাম।

বেটের বেট শুধু বেটভাড়া নয়—থাকা, থাওয়া, বৈত্যতিক জালো, চাকর ইত্যাদি থাতে সব থবচ ধরে। সকাঙ্গে বেডটী, তারপরে প্রাত্তরাশ, ছুপুরে ভাত বা কটি, বিকেন্সে চা-টোষ্ট জার রাত্রে কৃটি বা ভাত। ট্রাউট মাছ বা ডিম ছবেলাই দের। মাংস মধ্যে মধ্যে। যাত্রীর ইচ্ছাস্থসারে খান্তের মেন্থ বদলার। যাত্রীদের মধ্যে এবার শতকরা নক্ই ভাগই ছিলেন বাঙ্গালী। স্থতবাং বাঙ্গালী-খানার জল্জে আমরা পীড়াপীড়ি করেছিলাম। ওস্তাদ বাঁধিরে শেকালী দি' ওদের রান্নাশ্বরে গিরে নির্দেশ দিয়ে বাঙ্গালী-খানা তৈরী করাতেন।

বোটে গিরে ওঠবার আগে একটা চুক্তিপত্রে সই করতে হয়।
সই করবার সময় সিকারা সমেত চুক্তি করা দরকার। পারাপারের
জন্তে এর প্রয়োজন। বোটের সক্তে সিকারা না থাকলে, বোটওরালার
মুখাপেকী হরে থাকতে হয় পারাপারের জন্তে। চুক্তির মধ্যে
সিকারা ধরা না থাকলে, অতিরিক্ত ভাড়া দিরে সিকারা নিতে হয়।
ডাল্ হুদে বা ঝিলামে বেড়াবার জন্তে অবগু আলালা করে সিকারা
ভাড়া করতে হয়। বোটওয়ালাই তার ব্যবস্থা করে দেয়। তথন
ভাড়া দিতে হয় ঘণ্টা হিসেবে।

বাঙ্গালীদের জলে ছাউদবোটে বাদ করার একট। মোহ আছে।
আমাদের কিন্তু হাউদবোটের জীবন খুব ভালে। লাগেনি। জবে
একটা বিচিত্র অভিজ্ঞতা হর, বাব মৃণ্য কয় নয়। সম্বতঃ ভাল হুদের
জলেই য়ায়া হয়। হয়ত এইজন্সেই বহু য়াত্রীর প্রথম ক্রেক দিন
পেটের অবস্থা ভাল থাকে না। খাবার জলটা অবশু ভালই।
শ্রীনগরের এবং আশে-পাুশের সব দর্শনীয় স্থান দেখাশোনা আর
কেনাকাটা হয়ে য়াবার পয়, হু'-ভিন দিন হাউদবোটে কাটানই ভালো
ব্যবস্থা বলে মনে হয়।

শ্রীনগরের আরতন মাত্র এগারো বর্গমাইল। উত্তর দিকের বড় পাহাড়টার চূড়ার আছে "হবিপর্বত হুর্গ" আর প্র্বেদিকের পাহাড়ের উপরে আছে একটি স্থব্দর পাথরের মন্দির—"তথ্ত্-ই-হলেমান" বা "সোলোমনের সিংহাসন।" ভাল হুদ এই তৃটি পাহাত্যেরই পা ধুরে দিছে। দক্ষিণ দিকে আছে শক্তর পর্বত আর তার ওপরে শঙ্করনাথের মন্দির। পাহাড়টি হাজার ফিট উঁচু আর মন্দিরটিও হাজার বছরের পুরাতন। নেছেক পার্কের দক্ষিণে, রাজার ডান দিকে আছে শঙ্কর পার্ক। তার ভেতর দিরে শঙ্করনাথের মন্দিরে বাবার পাহাড়ী পথ উঠে গেছে। এই পথে সময় বেশী লাগে—ভিনটি পাহাড় ডিঙ্গিরে মন্দিরে পৌছতে হয়। সোজা পথ হ**ছে—টুরিষ্ট** সেন্টারের কাছ থেকে। মন্দিরটিতে বাহাছরী কিছু সরকার পাহাড়ের ওপর পর্যন্ত বৈহ্যতিক আলোর ব্যবস্থা করেছেন। বাত্তিতে সমগ্র জীনগর সহরটার ওপর মন্দিরটি যেন কর্ত্তহ করছে বলে মনে হয়। ভাল হ্রদ থেকেও রাত্রিতে আলোকোজ্বল শহর পর্বতের দৃশু মনোরম !

হাউসবোটের মালিকেরা বিশাসী। বাডুদারের কান্স ছাড়া আর সব কান্সই পরিবারের ছেলেমেরেদের নিরে এরা করে। হাউসবোটের সক্ষেই একটা ছোট বোট থাকে। পরিবারের মেরেরা তাতে বাত্রীদের জঙ্গে রাল্লার কান্সটা করে। বাত্রীরা জিনিবপত্র সবই এদের জিল্লার ফেলে রেথে ঘূরে বেড়ান—চুরি হর না। ব্যবসা এরা জানে, সভ্যাং থাত্তকের ক্ষতি করে না। আমাদের হাউসবোটের মালিক আলি গুসানী অভ্যন্ত ভদ্রকোক। সাত দিনের চুক্তি করে পাঁচ দিন থাকার ক্ষতে কিছুটা উন্না প্রকাশ প্রথমে ক্রেছিলেন কিছু

নিক্টে আবার কমা চেরে নেন। করেকটা জিনিব আমরা কেলে এসেছিলাম। নিলামের তীরে আমাদের হোটেল খুঁজে বের করে, ছেলেকে দিরে সেগুলি পাঠিয়ে তবে বস্তি পান।

একদিন এঁকে বলেছিলাম—গুদানীজি, আপুনার নাম **ওনে** আমাদের দেশের গোস্বামীদের কথা মনে হচ্ছে।

উত্তরে বলেছিলেন—বাবৃত্তি, আমগা ছিন্দু ব্রাহ্মণ ছিলাম।
মুসলমানরা এ-দেশ জয় করে জোর করে আমাদের মুসলমান
করেছিল। আসলে কিত আমরা ব্রাহ্মণ।

কথাগুলো বলবার সময় জাঁর চোগে-মুখে একটা প্রাদীপ্ত ভাষা কুটে উঠেছিল।

বোটের মালিকেরা দরিন্ত নর। আমাদের অনেককে সাত বার কিনতে পারে। এক একটা হাউসবোট তৈরী করতে থরচ পড়ে পঞ্চাশ হাজার টাকা বা তারও বেনী—অবশু কার্লেট, সোফা, কোঁচ ইন্ড্যাদি দিয়ে সাজানোর থরচ ধরে। নীতের সময় অর্ধাৎ ডিসেম্বর থেকে মে পর্যাস্ত এরা শাল, কার্পেট ইন্ড্যাদি নিয়ে নেমে আমে ভারতের বিভিন্ন প্রাদেশে। তাতেও ভালো রোজগার হয়। কোনও কোনও হাউসবোটে একাবিক ব্যক্তির পার্টনারশিপ্ আছে।

সকাল থেকেই হাউদবোটে নানা পশারী সিকারা নিয়ে আলে—
ফুল, ফল, মানাহারী জিনিব, ফিল্ম, পেপারমাসি, শাল, জাফ্রাণ
আরও কত কি সওদার ভ'রে। বালার দর জানা থাকলে এদের
কাছ থেকে কেনা চলে। নবাগতদের না কেনাই ভালো, কারণ
এবা বাজার দর অপেকা বেশী নেয়। জাফ্রাণ এদের কাছ থেকে
কিন্দেল ঠকবার সন্তাবনাই বেশী।

সেদিন বোটে প্রথম প্রভাত। সোনালি রোদে চারিদিক ঝল্মল করলেও ঠাণ্ডার ভবে ডইংক্সমে বসে আমরা আছ্রা জমিরেছি। এমন সমর মনোজ বাবু বাইবে থেকে ডাকলেন—দাদা, মহারাজ এমে গেছেন, দর্শন করে বান।

আমরা সবাই দৌড়ে বেরিরে এলাম। ভাবলাম কাশ্মীরের বা কোন্ দেশের মহারাজ বুঝি বাচ্ছেন। দেখি—একটা কার্পেট পাড়া সিকারার হুবেশ মাধার পাগড়ী এক হুদর্শন প্রোচ বসে আছেন।

বিজ্ঞাসা করলাম—মহারাজ কে ? কোথার তিনি ? চোথের ইসারায় মনোজ বাবু বললেন—এ বে উনি।

- —ব্যাপার কি ?
- উনি নাপিত মহারাজ, কামাবেন কি ?

মেরের। স্বাই ছেসে উঠল। ভবানী বাবুর স্থ হাছিল মহারাজের কাছে কামিরে দেখেন, কি রক্ম সাফু কামান হয়। হয়ত ওব মধ্যেও কিছু চারুকলার সন্ধান পাওয়া যাবে! জিজ্ঞাসা করলেন—বাড়ি বনানেকা ভাও কিত্না?

—জি, আটে আনা। উত্তৰ এল গভাৰ মহাবাজেৰ কাছ থেকে।

ভবানী বাবুৰ গৃহিণী সুমতি বললেন—থাকু থাকু, জার মহারাক্তে কাল নেই! সেফ্,টি বেজার জাছে না ?

বেচারা মহারাজ বঙ্গবাসীদের ভাবগতিক দেখে গন্ধীর চালে সরে পড়ল।

সিকারার ভাল ও ঝিলামে বেড়াবার কাছিনী মনে থাকবে। আমরা আট ঘটার চুজি করেছিলাম ছুটো সিকারার লভে নশ্ টাকায়। মরগুনে অবগ আরও বেশী লাগে। তাল ছুদ সাড়ে পাঁচ মাইল দৈর্ঘ্যে আর প্রস্থে মাড়াই মাইল। এর লাগাও আছে নাগিন হুদ। এ ছটি ছাড়া দূরে দূরে আরও এগারোটি হুদ কাল্মীরে আছে । তাদের মধ্যে প্রধান হচ্ছে উলার, মানসবল, দেব রামনাগ। ক্রফ্যায়র আর গলাবল।

এদেশে ফুলের রাজত জুন মাদ থেকে দেপ্টেম্বর পর্যাপ্ত। দে-সমর গোলাপ আর পদ্ম সারা দেশটাকে মাভিয়ে তোলে। আরও যে কত রকমের ফুল ফোটে তার ইয়ারা নেই। রাজতবিদ্ণীর মতে গ্রীমই কাশ্মীরের প্রেষ্ঠ পাতু।

> দ চাতিরমাঃ কান্মীরো প্রীম্মস্থিদিবতুর্স ভ:। হিমলিকার্গুটনেঃ প্রায়াদ্ বনাস্তের্ কুতার্থতাম্॥

অর্থাৎ কাশ্মীরের গ্রীয় অতি রমা, স্বর্গেও তা ত্র্পাত। সেই সময়ে (রাজা সন্ধিপতি) বন্দধ্যে হিম্লিকের (অমরনাথের) পূজা করে কুতার্থ বােধ করতেন।

দিকারার বেতে যেতে দেখলাম, পল্লপাতার সমারোহ—ফুল কিছ
একটিও নেই। হিন্দু আমলে ডাল কে পল্লপরোবর কেন বলা হত তা
বুঝলাম। আফশোব হোল, আরও আগে এলাম না কেন। পদ্মের
গোলালী অরণ্যের মধ্য দিয়ে ভূত্বর্গের স্থমা অমূভ্র করার সোভাগ্য
হল না। প্রের আফশোব মেটালেন দলের গারক-গারিকারা।
ভবানী বাবু, মনোজ বাবু, হেমপ্রভা, পুশা আর গুভাদি গান দিরে
ভাল-এব ওপর ছড়িয়ে দিলেন মোহ-মদিরতা।

একটা ঘাটে এসে শিকারা লাগল। মাঝিরা জানাল চজরতবাল।
মুসলমানদের পবিত্র তীর্থকৈত্র। আমরা এগিরে গিলে এক বড়
ম্পালিন দেপলাম। নির্দ্ধাতা শাজাহান—১৬৪২ গৃষ্টাকে। এথানে
হজরত মোহাম্মদের মাথার বারটি চূল সমত্রে রক্ষা করা হচ্ছে। বছরের
মধ্যে একদিন তা সব জাতের মামুষ্কেই দেখতে দেওয়া হয়।
মসজিদটির পরিচালকেরা অভ্যন্ত ভদ্র। অফিসে টেলিফোন আছে,
বে-কেউ বিনা প্র্যার ব্যবহার করতে পারেন। কাশ্মীরে পাবলিক
টেলিফোনে দাম দিতে হয় না। অফিস-সংলগ্ন একটি ধর্মলালাও
আছে। বে কেউ থাকতে পারেন, জাতিভেদ নেই। পরিবেশটি
আমাদের পুবই ভাল লাগল।

সিকারার কবে মোগল উন্তানগুলিতে বেড়ান যার। ফেরবার পথে আমরা হাসনাবাদ হয়ে আসি। ওথানে পেপারমাসি বা কাগজের মণ্ড জমাট ক'বে নানা আকৃতির টয়লেট সেট, ফুলদানি, টে ইত্যাদি তৈরী হয়। ওথানেই সারা কাঝীরের সেরা পেপারমাসি প্রস্তুতকারক জাফর আলির কারথানা আছে। আমরা কারথানা আর শো-ক্রম দেখলাম। কাগজের মণ্ডকে জমিরে তা দিরে কি ফুল্মর যে একটা কুটিরলিয় গ ড তোলা যায়, তা এথানে না এলে বিশাস করা বেত না, জাফর আলি মালিক হলেও নিজেই আটিই, এথনও নিজে পরিশ্রম করেন। তাঁর কারথানায় পঞ্চাশ জন লোক কাজ করে বললেন। শোক্রমে বে সব কাছ আমরা দেখলাম, বেমন কাশ্মীরী নক্ষা সরকারী আট এল্পোরিয়ামেও দেখিনি। তবে জিনির অমুপাতে দামও খুব। বাজার অপেকা চাব পাঁচ গুল বেলী। জাফর আলি একটি উর্কু পাত্রিকা নিজে এসে, স্বর্গত স্থামাপ্রসাদ আর তাঁর নিজের ছবি দেখালেন। বললেন—স্থামাপ্রসাদ বাবু তাঁর কারথানাকে এতই ভালবাসতেন বে, কাশ্মীরে এলে তাঁর কারথানায় ঘটার প্র ঘটা কাটিয়ে দিতেন।

শ্রী নেহের, পণ্ডিত পছ্ ইত্যাদি ব্যক্তিরাও তাঁর কারথানার এসেছেন। সব চেরে ভালো লাগল পেপারমাসির ট্রের ওপর ওমর থৈয়াম, তাঁর সাকী আর স্থরার চিত্রটি। কি নিপুঁত আর জীবস্ত ছবি! এঁদের তৈরী আথ বোট কাঠের জিনিবগুলিও প্রলা নম্বরের।

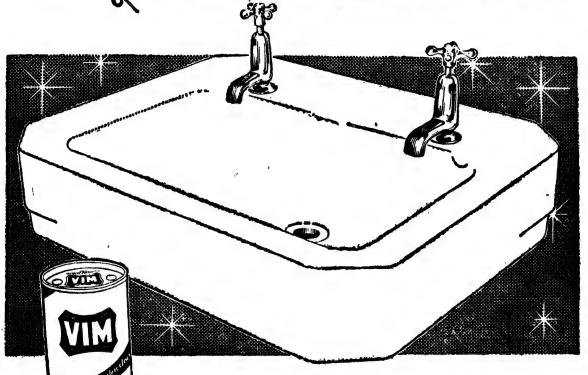
বিকেলের দিকে সিকারার করে ঝিলামে বেড়াই। আগেট বলেছি শ্রীনগরে ঝিলাম সঙ্কীণ—অধিকাংশ ছানে বাগবান্ধারের খালের মন্ত। এক এক বায়গার ছ'পাশে বাড়ীর মাঝখান দিয়ে ঝিলাম চলেছে। তথন মনে হয়েছে ভেনিসে গণ্ডোলার করে চলেছি।

হাউসবোটে থাকাকালীন একদিন আমন্না মোগল উভানগুলি দেখতে গেলাম। ট্রিষ্ট বিসেপসান সেন্টার থেকে বাসে করে যেতে হয়। কেউ কেউ ভাল বা ঝিলাম থেকে সিকারাক্তেও যান। বাস-ভাজা ১'৭৫ টাকা ৰাজায়াত। তু'বার বাস ছাড়ে--স্কাল সাড়ে আটটার আৰু বেলা হুটোয়। বাদের প্রথম বিশ্রাম হারওয়ান-এ। এখানে জলের রিজার্ভার আর নানা পশুপাখীর কুদ্র উপনিবেশ আছে। প্রতান্ত্রিক থননকার্যাও চলেছে দেখলাম। হারওয়ান-এ চীনার গাছের এভেফুটি দেখবার মন্ত। এব পরের বিবতি-শালিমার, উত্তানে। শালিমার কথাটির অর্থ—"প্রেমনিলয়।" বাস এখানে এক ঘণ্টা থামে। স্বতরাং ভাল করে দেখবার অবসর পাওয়া যায়। জাহাঙ্গীর শাহ এটির নির্মাতা। উচ্চানটির দৈর্ঘ্য ১৭৭৭ ফিট আর প্রস্ত ৮০১ ফিট। তিনটি বিভিন্ন অংশে বিভক্ত। জাহাঙ্গীর বাদশাহ কাশ্মীরে এক মাসের সকরে আসবার আগেই সম্ববত: উত্তানটি তৈরী করানো হয়েছিল। নির্মাতাও সম্ভবত: খোরা ওয়েসী। জাছালীরের আত্মলীবনীতে আছে—ছিনি খোলা ওয়েসীকে পিয়ে লাহোরের কাছে শীর ছিল-এ উত্তান বচনা করিয়েছিলেন।

মিলেগ ষ্ট ছাটোৰ মডে. উপ্তানটি চোস বোজ নামক এক পারসিক কার্পেটের ডিজাইনের অনুকৃতি। হার নাম থেকে কার্পেটের নাম, সেই ইরাণীর সম্রাট প্রথম চোসুরোক সাশানীর वंभीय ছिलान धरः १७১ थरक ११५ वृष्टीय भूषान्य बाज्य क वन। প্রতিটি উক্তানের ভেতর দিয়ে চলে গেছে এক একটি ঝর্ণা-খাল। এক ছাদ থেকে আৰ এক ছাদে নাচতে নাচতে নেমে আসছে আর জনা হচ্ছে এক একটা বড় কুণ্ডে। কুগুগুলিতে আছে ফোরারা। জল বখন বেশী থাকে তথন ফোরারাগুলি খুলে দেওরা হর। আমরা ফোরারার খেলা দেখতে পাইনি, কারণ ছল তথ্ন ছিল না বললেই হয়। বর্ষাতেই এর সৌন্দর্য্য খোলে। খালেই দেওবালগুলি কোথাও বা মার্ফেল পাথর কোথাও বা পুরাতন চুশাপাথর দিয়ে তৈরী। মাঝে মাঝে বৈত্যুতিক আলোর ব্যবস্থা আছে। রাত্রে জলের ওপর আলোর খেলা চমংকার। উৎসবম্^থ বজনীতে এই সব জালো জালা হয়। ক্রুন্চেভ-বুলগানিন ^{হ'ান} কাশ্মীর ভ্রমণে গিয়েছিলেন, তথন খুবই সমারোহ হয়েছিল: ভি, আই, পিদের আগমন ছাড়া আলো আর ফোরারার বৈত খেল সাধারণত: দেখানো হয় না। তা তো হবেই—নীচের ভালাং মানুৰ সৌন্দৰ্ধ্যের বোঝেই বা কি আর ভাদের জীবনে "প্রেমনিলয়ের মহাভাব উপলব্ধির অবস্তই বা কোথায় ? লাছালীর-শালাহানে? মভ প্রেমের সম্বাদারই বা ক'জন ? বুলোকে তাঁদের চরিত্রণে! मिला कि हरत, अक्ट्री विभाग माजारकात होकात स्वारत नीन

ভিম ব্যবহার করলে পরে

-দেখুন কেমন ঝলমল করে



ভিম অল্ল একটু ব্যবহার করলে পরেই সবজিনিষেরই চেহারা বদলে যার। কার্টের ও চায়ের বাদন, রালার জিনিব, থালা বাটা ও ডেক্টা হাঁড়ী থেকে ঘ্রের মেঝে—সবই এক নতুন ক্লপ নেবে। আর ভিম দিয়ে পরিষার ক'রলে জিনিষপত্রে কোন রকম আঁচড় লাগে না আর কত সোজা ও কম খাটুনীতে হয় ভেবে দেখুন। ভেজা ন্যকড়ায় একটু ভিম ফেলে, আত্তে আত্তে ঘর্ন আর আপনার চোথের সামনে জিনিষ গুলোর রূপ বদলে যাবে। ভিম ব্যবহার করলে আপনার বাড়ী আপনার গর্বের কারণ হবে।

ভিম সবজিনিধেরই উজ্জ্বলতা বাড়ায়

दिन्यान निष्ठात निर्मित्वेष, कर्त्व क्षेत्रक ।

কীর্তির মাধ্যমে, তাঁদের প্রেমকে কাঁসের কাঁপোলতলে শুভ্র সমুজ্জল করে রেখে গেছেন ৷ মহাকাগকেও ঘূব দেওরা বায় !

এর পর বাদ খামলো নিশাতবাগে। কথাটির অর্থ গার্ডেন
অফ প্রেজার বা "প্রমোদোলান"। এর নির্মাতা শাজাহানের শশুর
আদক্ থান, আগ্রার বন্ধনাপারের "ইডমন্দোলা" বার বিখ্যাত
সমাধি-মন্দির। উল্লানটি তৈরী হয় ১৬৩৪ গুষ্টান্দে। দৈর্ঘ্যে ৫১৫
ফিট আর প্রেছে ৩৬১ ফিট। উল্লানটি বারটি ছাদে বিভক্ত।
ভাল হুদের তীর থেকে স্কুক্ত হয়েছে। ক্রমশ: এক একটি ছাদে
বিভক্ত হয়ে গাহাড়ের কোল প্রান্ত উঠে গেছে। প্রতি ছাদে ওঠার
জক্তে কয়েকটা পাথরের সিঁড়ি আছে। সম্ভোগের মাত্রা ধাপে
খাপেই বাড়ে। ধাপে ধাপে বাদশাঠী খুসু বাড়িয়ে একেবারে
ব্যোমমার্গে পৌছে দেওয়াই বোধ হয় আদক্ খানের উদ্দেশ্য ছিল।
বারটি ছাদে ওঠবার পর এত শীতেও কিছে আমানের ঘাম এসে
গিরেছিল। মোগলাই আর বালালাই-এ তফাৎ ত হবেই।

মোগল উজানগুলির মধ্যে সেরা এই নিশান্তবাগ। পরিকল্পনাটি চমংকার! ডাল্ হ্রদে বর্থন পদ্ম ফোটে আর কুলের সমরে বর্থন গোলাপ, বৃঁই ইত্যাদি নানা কুলে নিশাত রূপদী হরে ওঠে, তথন ভাল্-এর জলরাশি থেকে পাছাড়ের কোল পর্যস্ত একটা বিশাল, বিচিত্র, অপরূপ কার্পেট রচিত হয়। ডাল্-এর ওপারে কুড়ি মাইল দুরে শীরপঞ্জাল ভর্থন রচনা করে দক্ষিণের ব্বনিকা।

শীতকালে এথানে দানা জাতের গাঁদা, মল্লিকা, ডালিরা, জিলেনথিমাম, বাটন্হোল ইত্যাদি কুল ফোটে। গাঁদার চেহারা জার রং দেখবার মত। নাগপুর, আমেদাবাদ এমন কি থালো দেশের মত বড় বড় মলিকা এথানে দেখিনি। তবে হলদে আর সাদাবেশুনী ছোট ছোট মলিকাকে এমন অজ্ঞ কুটতেও আর কোধাও দেখিনি। এথানের হলদে রংটা বাঙ্গলা দেশের হল্দের চেয়েও গান্তীর আর মনোহারী। ছু' পাশের করেকটি গাছ ছাতার মত ছুঁটা হরেছে। তাতে গৌলর্ম বেড়েছে।

কামোন কাগো—কাগো দেখুন—বলে উঠল অণিমা। সে আবার কি ?

এ বে—কি স্থলর মিটি আওয়াজ !

ও ত কাক মনে হচ্ছে—কাগো আবার ভোমার কোথায় ?

বাং । কাক বলে ওদের অপনান করবেন ? নিতান্ত অভিমানের পুরেই বললে অণিমা।

ভোমার কথাই শিরোবার্য। ওরা কাগোই—অমন ছোট ছোট কালো চেহারা আর অমন মিষ্ট স্থর—কাকই বা বলি কি করে ?

মনোজ বাবু বললেন—অণিমা বোধ হয় কাকের সঙ্গে ওগো বোগ করে কাগো করেছে। তা ঠিকই করেছে। এই স্থলর পরিবেশে একা একা কি ভালো লাগে—পালে 'ওগো' না থাকলে? ওর একটা ওগোর সন্ধান করতে হয়—

শেষালীদি' ঝাঁঝিয়ে উঠলেন—বলিছারি তোমাদের করনাশজিব ! কোখা খেকে ৰে কোখায় নিয়ে ৰেজে পারো তোমবা—

কান্মীরী কাক বা কাগো-প্রসঙ্গ চাপা পড়ল। বাসের হর্ণ বেলে চলেছে—সময় উত্তীর্ণ। ভাড়াভাড়ি সদলে উঠে পড়লাম।

নিশাত-এর পরে পড়ে চলমাসাহী। চলমা শব্দের অর্থ ঝণা। জাহাজীর এর পরিকলনা রচনা করেন জার শাজাহান ১৬৩২ খুটাকে

ভা কাজে পরিণত করেন। এখানের বিখ্যাত ঝণীর জলের হজ্ম করাবার শক্তি ভারত-বিশ্রুত। শোনা গেল, প্রধান মন্ত্রী নেহরুর জল্তে নাকি এখান থেকে জল বিমানে করে প্রায়ই দিল্লী যায়। নিশাতের মত এখানেও ছাদের উপর উল্পান আছে। তিনটি মাত্র ছাদ। উল্পানও তেমন স্যত্নর্তিত নয়। হয়ত বাদশাহী আমলে এব চেহাবা অক্সরুপ ছিল।

নসীমবাগের খ্যাতি এককালে খুবই ছিল। কিছ ডালহুদের তীর বরাবর এব বিস্তৃতি নম্ন, এটি সহরের মধ্যে। নসীমবাগের অর্থ "শীন্তল বায়ুর উজান।" চীনার গাছের খ্যাতি এককালে এই উজানে খুবই ছিল। কিছ সম্প্রতি এটিকে কাশ্মীর সরকার বিশ্ববিদ্যালয়ে রূপান্তরিত করবার পরিকল্পনা করেছেন। শিক্ষা-অধিকর্তার কাছে ভ্রনলাম, বাড়ী তৈরীর কাক্ত এই বছর মুক্ত হবে আর ৬২ সালের মধ্যে সম্ভবতঃ শেব হুরে যাবে। আমরা ষেয়ে দেখলাম, উজানত্ব আর কিছু নেই। গাছপালা কেটে বিশ্ববিদ্যালয়-ভবন নির্মাণের উজ্যোগপর্ব্ব চলেছে। ভবে নতুন করে উজানও রচনা করা হবে।

একদিন উলার হ্রদ দেখতে যাওয়া হোল। এটি এশিয়ার বৃহস্তম হ্রদ। রাজতরঙ্গিণীর আমলে এর নাম ছিল মহাপদ্মহুদ। টুরিষ্ট রিদেপসান দেউার থেকে বাস ছেড়ে যার বেলা ন'টার। ভাড়া যাতায়াত ৪'৫ • টাকা।

প্রথম বিশ্রাম গদ্ধরবলে। এখান থেকে সিদ্ধু উপত্যকার দৃষ্ঠ দেখা যায়। লাডাক বৌদ্ধর্মের দেশ। গদ্ধরবল্ থেকে সাত দিন পদবক্তে যাত্রা করবার পর ১১৩০০ ফিট উঁচু ফোজি-লা গিরিবর্ম অতিক্রম করে রাজধানী লে অঞ্চলের দিকে যাওয়া যায়। কাশ্মীবের অন্তর্গত একটি আদেশ হচ্ছে লাডাফ্। এই লাডাকের বিখ্যাত লামা কুশক বাকুলা এখন কাশ্মীর সরকারে এক মন্ত্রী। গুলমার্গ, গহলগাম, সোনামার্গ, কোকরনাগ আর ইউসমার্গের মত গদ্ধরবলও একটা স্বাস্থানিবাস।

এর পর কিছুদূর গেলে উলার হ্রদ চোথে পড়ে। কিন্তু বাস উপার-তীরে অনেক পরে থামে। পথিমধ্যে পড়ে ক্ষীরভবানী। একান্ন পীঠের অন্তর্গক্ত কীর্যুবানী মন্দির ছিন্দুমাত্রেরই পবিত্র ভীৰ্মস্থান। এখানে নাকি সভীর কণ্ঠ পড়েছিল। পাধরে বাঁধান একটা বিস্তৃত চম্বের মধ্যে এই মন্দির। **চরিদিকে বিশাল**কার চীনারের সমারোহ। এমন মোটা 🖲 ড়িওয়ালা চীনার গাছ খুব কমই দেখা বায়। ভবানীদেবীর মন্দিরটির তিন দিকেই ক্ষীর বা জ্লে^হ तिका (मञ्जा च्यां क्वां विकास के नाम । (माना साम, चामी विविकास করেছিলেন এবং দৈবাদেশও নাতি এখানে এদে তপস্থা পেয়েছিলেন। পাণ্ডারা আছেন কিন্তু অক্তাক্ত অনেক তীর্থস্থানের ম भनाकाठीत जन वास नन। चटनरे ठीवा मुक्हे। চারিদিকে: পরিবেশের মধ্যে একটা প্রিক্রতা আছে। দেখলাম, আনেই বাত্রীই পুরে। করছেন। হেমপ্রভা ফুল নিয়ে প্রকানত হয়ে প্রো? বলে গেল। দলের কেউ কেউ মনে মনে প্রার্থনা জানালেন ভবানী নেতাজীৰ উপাতা দেবী। শিবাজীও এঁৰ সাধনা কৰতেন মনে মনে বললাম—মা বাংলা ৰেশ থেকে লাবেলালা দূব কর चात्र त्यव करत दार्थ ना ।

মানসবল-এ এসে বাস খামলো। উলার-এর সংলগ্ন এই । কুল। দুখাবলী চমৎকার। বাত্রীদের বিধ্যাবের করে এখা একটি নৃত্ন ঘর তৈরী করা হরেছে। সম্প্রের পাহাড়ের ঝর্ণাঞ্জির চলমালাহীর মতাই স্থাতি আছে। এর পরের দর্শনীয় ছান হচ্ছে বাতলাব। এখানে বাদ দেড় ঘণ্টা থামে। উলার এখান থেকে ভালভাবেই দেখা যায়। যতক্ষণ উলার দেখিনি ততক্ষণ মনে মনে এশিয়ার বৃহত্তম হুদ সম্বন্ধে একটা রঙ্গীন করনা ছিল— অবস্থাটা ঠিক ওয়ার্ডদ,ওয়ার্থের "ইয়েরো আন্ভিজিটেড্"-এব বা মোনালিসার হাসির প্রাতন কাব্যিক ব্যাখ্যার মত। কিন্তু যথন দেখলাম তথন বলতে পারলাম না—

নয়ন ন তিরপিত ভেল।

বড় বড় চড়া পড়ে, চড়ার ওপর আগাছা জন্মে ডাল্ লেকের মতই ওকে নিতাস্ত "ডাল্" করে দিয়েছে। তবে বিস্তার বেশ আছে। উলাবেও বোটে করে বেড়ান বার, তবে সহজে নর। তনলাম সাত-আট দিন থাকবার চুক্তি করলে ভবে বোটওয়ালার। বাত্রী নের, খরচও জনেক পড়ে। আমরা কোনও যাত্রীকে উলারে বেড়াতে দেখিনি।

এই উলাবের উপরেই বন্দীপুর নামে একটি বারগা আছে।
দেখান থেকে ট্রাগবল্ হরে বার্জিল আর কামরী গিরিবর্ত্ম অভিক্রম
করে গিল্গিটে আর পৃথিবীর ছাদ পামীরে বাওয়া যায়। এখন
ও-পথ বন্ধ। গিলগিট পাকিস্থানের অধীনে আর পামীর
রাশিয়ায়। ভারতীয় সামরিক বাহিনী এই সীমাস্ত অঞ্চলভালিতে
তৎপর।

শোপুর আর বারাম্কার বাস থামে কেরবার পথে। বারাম্সাতে
শাহীদ শেরওয়ানীর একটি স্বৃতিস্তস্ত আছে। ১৯৪৮-এ পাকিস্তানের
উরানিতে উপজাতিরা যথন কাশ্মীর আক্রমণ করে তথন তারা
শ্রীনগরের উপকঠে এই বারাম্সার এসেছিল। এক যুক্ষর পর
ভারতীর সৈভারা ভাদের ভাড়িরে দেয়। সীমাস্ত সক্ষার ব্যাপারে
এর যথেষ্ট শুরুত্ব আছে। একে কাশ্মীরের স্বারও অনেকে বঙ্গে
থাকেন।

উলারের পথে মানসবল্ হরে "লোলা উপত্যকা" আছে। গাইডবুকে এর কোনও উল্লেখ নেই। কাশ্মীর ত্যাগ করবার পর এক কাশ্মীরী যুবক সংবাদটো দেন। তাঁর মতে, সমগ্র কাশ্মীরে নাকি তত স্থক্ষর উপত্যকা আর নেই। ঐ উপত্যকার যেতে হলে মানস্বল্-এ নেমে বেসরকারী বাসে ৩৫ মাইল বেতে হয়. ভারপর কিছুটা পদরজে। উপত্যকার মাঝামাঝি একটা হ্রদ আছে; নাল, ফটিক স্বচ্ছ নাকি তার জল। এক পাহাড়ের মধ্যে এক গুহা আছে। তার এক প্রান্ত কাজির হল্লেছে রাশিয়ায়। তাই নাম "কারাক্রশ" বা "ক্লেশের মাঝা"। ভদ্রলোকের কাছে গল্ল ভ্রমাম—করেকজন ইউরোপীর বুটিশ আমলে ১২০০ লোক নিয়ে ঐ স্থড়েলের ভেতর দিয়ে গিয়েছিল। আর কিরে আসেনি। অবভা ওপাশে যদি সভ্যিই রাশিয়া থেকে থাকে ভাহ'লে ফেরবার কথা নয়। একটা কিছু রহগ্র ছানটাকে ঘিরে আছে তা না হ'লে সরকারী গাইডবুক-এ তার উল্লেখ নেই কেন? আমাদের আফ্লোব হল যে, এমন আশ্রেণ্য বারগাটা দেখতে পেলাম না?

সোনামার্গ-এর বৈশিষ্ট্য হচ্ছে তার গ্রেনিয়ার বা হিমাবাহ।
ভাচার্ব্য কর্গদীলচক্র ভগীরথীর উৎস-সন্ধানে বেয়ে বে-হিমবাহ
দেখেছিলেন, তার ভরণ কিছুটা বোঝা বার সোনার্গের হিমবাহ দেখে।

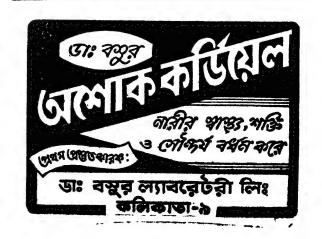
শ্রীনগরের টুরিষ্ট দেন্টার থেকে সপ্তাহে মাত্র ছদিন বাস ছাড়ে।

অক্সান্ত দিন সামরিক প্রয়োজনে প্রায়ই পথ বন্ধ থাকে। গুলমার্গ
বা থেলন্মার্গের মত এখানেও খোড়ার চড়ে বেতে হর। দৃশ্রাবলী
অপূর্ব ! হিমবাহ থেখান থেকে বেরিয়ে আগছে তার চেহারা অনেকটা
বহুদাকার মাছের খোলা মুখের মতন।

হাউপবোটের ছবির জীবন কারো কারো থুবই জালো সামে।
আমাদের কিন্তু করেক দিনেই মোহ কেটে গিয়েছিল। বাদের
মধ্যে সেই আদিম বেতুইন জেগে ওঠে, তাদের পক্ষে একই পরিবেশে
শান্ত, সমাহিত জীবন কাটিয়ে ধাওয়া সম্ভব নয়। আমাদের
রক্তে বোধ হয় তার আহ্বান পৌছেছিল। তাই আমরা 'কর
পাশ্চাস নিউ'—নৃতন পরিবেশের সন্ধানে চলে এলাম বিলামের
তীরে এক হোটেলে। মোগল আমতের সাভটা সেতু আছে এই
বিলামের উপর। অবশু এখন সেগুলোর চেহারা কিছুটা আধুনিক
করা হয়েছে। জাহাঙ্গীরের আত্মনীবনীতে আছে, কাশ্মীরে আসবার
সময় তিনি বহু সৈক্ত সঙ্গে নিয়ে এসেছিলেন। তিনি গিয়েছিলেন
জলপথে আর সৈক্তরা সমান্তরাল ভাবে হলপথে। তাদের বাত্রাপথ
সগম করে জাহাঙ্গীর নৃর্উন্ধিন কুলি বেগকে দশ লক্ষ টাকা
দিয়েছিলেন জঙ্গল পরিভার আর নদীর উপর সেতু তৈরীর জলো।
সেই সময়েই সেতুগুলি নিমিত হয়। একটা সিকারা নিয়ে বিলামের
সপ্ত সেতু সহজেই দেখা বায়।

শ্রীনগরের শিক্ষা-ব্যবস্থা দেখবার ইচ্ছা ছিল। তনেছিলাম, জমু কাশ্মীরে প্রাথমিক থেকে বিশ্ববিত্তালরের শিক্ষা পর্যন্ত বিনাবেতনে দেওরা হয় আরু সমূহ অর্থের বোঝাটা ভারত সরকারই বহন করে থাকেন। স্থতরাং ওধু চীনার, পপ্লার আর ভূষার নিয়ে সন্তঃ হতে আমবা পারিনি। তাই একদিন কল্যানীকে নিয়ে রেসিডেন্সী রোডে শিক্ষা-বিভাগের ভিরেকটারের অফিসে গেলাম। প্লিপ, পাঠাতেই ভিরেক্টার মুক্ষার আহ্মেদ নিজে এসে থুবই থাতির করলেন। সহকারী ভিরেক্টরের অফিসে নিয়ে গিয়ে বললেন—প্ররোজনীয় পরিচরপত্র বেন আমাদের দিয়ে দেওয়া হয়।

সহকারী ডিরেক্টার ভামলাল রায়না কাশ্মীরী হিন্দু। **যথেষ্ট** থাতির করে বসিয়ে আলাপ জুড়ে দিলেন। কক্ষে উপস্থিত **ছিলেন**



জন্মুও কান্সীরের শিক্ষা-বিভাগের শারীর শিক্ষার অধিকর্তা শ্রীযুত মালহোত্র আর জনৈক জীবতত্ত্বের অধ্যাপক।

শুমপাল রায়না বললেন—কেমন লাগছে আপনাদের কাশ্মীর ?
বললাম—'ইয়েরো রিভিজিটেডের'মত নয়। কল্পনার আর
বাস্তবের কাশ্মীরকে একই রকম মনে হচ্ছে। বারা ভূমর্গ বলেছিলেন,
তারা মিথ্যা বলেন নি।

বললেন— তা ঠিক। প্রকৃতি এ দেশে মুক্তহত্তে সৌন্দর্য্য ছড়িয়েছেন কিন্তু একটা জিনিষের খুবই অভাব—অংগর। দেশটা বড়ই দরিক্র।

বললাম—আমিও সেকথা আপনাকে বলতে ৰাচ্ছিলান। আমরা বাঙ্গালীরা দারিন্ত্রের সঙ্গে চির-পরিচিত। কিন্তু এখানের দরিক্রদের দেখে সভিটি বেদনাবোধ করেছি। আপনাদের দেশে মধ্যবিত্ত প্রায় নেই। অবশু থাকলে ভাল হত কিনা বলতে পারছি না। কারণ, স্বাধীনতার পর থেকে বাঙ্গালী মধ্যবিত্তের প্রাণ উপরের ওলার আর নীচের ভলার ছই বাঁতার চাপে পিবে ফেলা হছেছ। আমাদের দেশে মধ্যবিত্তেরাই সহত্র কট্ট সন্থ করে সভ্যতার আলোকবভিত্তা তুলে বরে রেবছিল। ইংরেজ বাদের বিনষ্ট করতে সাহস করেনি, দিল্লীর মসনদওয়ালারা তাদের জাবনকে নরকে পরিণত করছে। এদের নীতি টেনে ওঠানো নয়—টেনে নামানো। তবুও আমার মনে হয়, মধ্যবিত্ত থাকলে কাশ্মীরে সৌন্দর্ব্যের সজে কাল্লীরী আসতো। তারাই নিত্যন্তন কল্যাণ চেটার ফাঁপ দিতে পারত।

কথাগুলো বোৰ হয় জোরালো হয়েছিল জার জামার প্রোতারাও ছিলেন উচ্ছলার মান্ত্র। স্থতরাং কথার মোড় ফেরালেন শারীর শিক্ষা বিভাগের অধিকর্তা মালহোত্র। বললেন—দেখুন, আমার মনে হয়, বাঙ্গালীদের সঙ্গে কাশ্মীরীদের একটা নাড়ীর যোগ আছে। মানা ভাবেই তার প্রমাণ পেয়েছি—

মনে মনে থুলি হলেও বললাম—তা হয়ত সত্যি। তবে আমি
মৃতাত্মিক নই। তাই কোর দিয়ে খীকুতি জানাতে অকম। তবে
মনে হয়, কোনও একটা ৰন্ধন নিশ্চয়ই আছে, তা না হলে দেড়
হাজার মাইল দূর থেকে বাঙ্গালীরা ছুটে আসবেই বা কেন? প্রতি
যক্তরই ত আমাদের দেশ থেকেই বেশী লোক এখানে আদে।
এ-বছরের কথাই ধকন না। করেক দিন আগে পর্যান্ত শ্রীনগর নাকি
কলকাতা হয়ে গিরেছিল। আগামী বছর হয়ত আরও বেশী
বাঙ্গালী বেড়াতে আসবেন। স্মৃতরাং দৈহিক না থাকলেও আজিক
সম্পর্ক একটা আছেই।

শ্রীষ্ত রারনা বললেন—বাঙ্গালীদের আমরা শ্রহা করি। এদেশে উচ্চশিক্ষার স্ত্রপাত করেছেন তাঁরাই।

জিজ্ঞাসা করলাম—আপনাদের সম্পূর্ণ শিক্ষা-ব্যবস্থাটা কি আইবডনিক ? অপ্রগতি কেমন হচ্ছে ? বাজেট কত ?

বললেন—এদেশে বিনা বেতনেই প্রাইমারী থেকে বিশ্ববিভালর পর্যন্ত শিক্ষা দেওরা হয়। গত পাঁচ বছরে আমরা তিন গুণ এগিরে দিরেছি। অপ্রগতির হার ক্রতই বলতে হয়। আগে বারেট ছিল ৪০ লক, এখন আড়াই কোটি টাকা। কিছু এ তো সমুক্রে পাছ-আর্ডা। টাকা প্রিপেলে দেখিরে দিন্তাম আমরা কি করতে পারি।

শারীবশিক্ষার অধিকর্তা বললেন—টাফাটাই বড় কথা নয়। বিজ্ঞান-সম্মত পরিকল্পনা চাই। তা না হ'লে টাকা কোন্ অভলে তলিয়ে যাবে!

বললাম—অতি সত্য কথা। ছটোরই দরকার। এ-ছটোর ঠিক ঠিক কো-অর্ডিনেশান না হলে কি ছ্রবস্থা হয়, তা পঞ্চাবিকীর কল্যাণে বেশ বুয়তে পারছি।

শ্রীযুত রায়না বললেন—এগারো বছরের কোর্স পশ্চিম-বাংলায় কি রকম চালু হয়েছে? তিন বছরের ডিগ্রী কোর্সেরই বা ভবিষাৎ কি?

বললাম—পশ্চিম-বাংলার ১৬৮০টি মাধ্যমিক ছুলের মধ্যে ২৮০টিতে এগারো বছরের কোর্স চালু করা হয়েছে। সবস্তুলি অবশ্য সর্কার্ষণাধক নয়। সরকারী টাকায় ছুলের বড় বড় বাড়ীও তৈরা হয়েছে এবং হছে। তবে ছেলেমেয়েদের শিক্ষার উন্ধৃতি হছে কিনা, এখনও তা বলা যাছে না। ত্র'-পাঁচ বছর পরে সমাপ্তি পরীক্ষার ফল দেখে হয়ত বলা সম্ভব হবে। ইতিমধ্যে উপযুক্ত পাঠ্যপুস্তকের অভাবে শিক্ষক-ছাত্র ত্র'জনেই মুছিলে পড়েছেন। পশ্চিম-বাংলার কলেজগুলির কর্ত্তপক্ষরা দীর্ঘকাল তিন বছরের ডিগ্রী কোর্সের বিরোধিতা করেছিলেন। তার ফলে প্রাণ্টদ কমিশনের টাকা তাঁদের হাতে পৌছায়নি। সম্প্রতি তারা নয়া তালিম মেনে নিয়েছেন। আশা করা মার্ছে শীগ্রির তিন বছরের কোর্স চালু হবে।

কল্যাণী করণ চোথে স্থামার দিকে তাকাল। স্থানী এই— নীবস আলোচনা রেখে চটুপট উঠে পড়ুন। বাইরে বেরে পাকোড়ি থেলে কাজ দেখবে। স্থামিও চোথের ইক্সিন্তে স্থানাগাম—এই উঠলাম বলে! স্থাবার আলোচনায় ডুবে গেলাম।

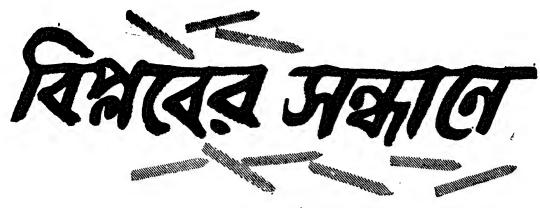
াজজ্ঞাসা করলাম—আপনারা এ-বিষয়ে কি করেছেন ?

শ্রীষ্ত বায়না বললেন— জমু আব কাণ্টারের মাত্র ছ'টি ছুলে জামরা এগারো বছরের কোর্স চালু করেছি। কলেক্তে তিন বছরের কোর্স এখনও চালু হয়নি। ছেবে করা হবে ছির হয়েছে।

বলগাম—আপনার কি মনে হয়, নয়। শিক্ষা-ব্যবস্থায় ছাত্রণ ছাত্রীদের উপকার হবে? সর্বার্থপাধক বিভালয়গুলিয় কাণা-ছেলে পদ্মলোচন হবে না ত? পরিচালনার আর আর্থিক ব্যবস্থার দিক থেকে এগুলো একটা বিপর্যায় ডেকে আনবে না কি? ইংলপ্তে ১৯৬৮ সালেয় স্পেল বিপেটি সর্বার্থপাধক স্থলগুলোকে তুলে দেওয়ার স্থপাবিশ করা হয়েছিল—এ ত আপনি জানেন। বুটিশ সরকার তারপর মালটিলেটায়েল্ বিজ্ঞালয় গড়তে আর এগোন নি। আমাদের মত দহিত্র দেশের এতো ছঃসাহস কেন বুঝি না। আমেরিফার টাকা ভালছে। সে পরীক্ষা-নিরীক্ষা করতে পারে। আমাদের তা করা কি তোগলকী পাগলামি নয়? উদ্দেশ্ভ ভাল হলেই কি কাজ ভাল হয়, না বাস্তব বুদ্বিরও দবকার?

শ্রীযুত রায়না বললেন—মাপনার যুক্তির মৃদ্য আছে।
আমরাও নরা ব্যবস্থা সক্ষে এখনও স্থিরসিদ্ধাক্তে পৌছাইনি—
এখনও আমরা ভাবছি।

এর পর তিনি করেকটি সার্কুলার টাইপ করিরে আমাদের হাতে দিলেন—বিভিন্ন স্থূল, কলেজকে লেখা। আমরা আন্তবিক ধন্তবাদ দিরে বিদার নিলাম।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পর] নারায়ণ বন্দ্যোপাধ্যার

১৯২৪ সালের প্রথমেই বথন আমি কলকাতার চলে এলুম—
ঘটনাচক্রের সঙ্গে জীবনধারাও যেন পরিবতিত হয়ে গেল।
জীবন যেখানেই থাক, বাইরে ছিল,—যেন পাশেই ছিল। এখন
সে জেলে—কতদিন থাকবে কিছুই ঠিক নেই—বুকের পাশটা যেন
থালি হয়ে গেছে। গত কয়েকটা বছর ধরে সে ছিল আমার বন্ধ্,
পরামর্শদাতা, পথপ্রদর্শক। আমিও তার ডেপুটা হয়ে উঠেছিলুম।
বস্তুত জীবন না থাকলে আমার রাজনৈতিক জীবনের বিকাশ হয়ত
অভ ধারার চলতো,—আর সেটা হত একটা গুরিপাকের নামান্তর।

আমি "জীবনবাব্" লিখি না, কারণ তা লিখতে কেমন বেন বাধে। ১৯২০ সালের আগে প্রস্পারে "আপনি" বলেই কথা বলতা । একদিন জীবন বললে, "আপনি-আজে" গুলো আর ভাল দেখার না, ওগুলো বাদ দেওরা যাক্,—"তুমি" সম্পর্ক হৈ ভাল—কি বলেন? আমি বললুম, "বেশ।" তারপর কে আগে "তুমি" বলবে, তাই নিরে প্রার ভোটাভূটি! তুদিকেই সমান ভোট—কাজেই ফ্রনালা হওরা মুজিল। তারপর জীবন দক্ষ বিকলিত করে বললে, "ভূমি আগে বলুন!" তারপর একচোট হাসাহাসি হরে ক্রনালা হরে গেল। সে ফ্রনালা আজও বলবং আছে,— বেমন শত মতভে দর মধ্যেও মুল আদর্শে মিল বরাবহই আছে।

কণকাতার প্রথমেই প্রয়োজন হল একটা রোজগারের ঠাট—
Ostensible means of livelihood - বংক্রারের বাড়ীতে থেকে ভারীজামাই বা ব্যবসা চালাছিলেন— ভাড়ার কাজ—দেটার হরেছিল অন্ধিমললা। তাকে থাড়া করতে গেলে, আর সব ছেড়ে সংসারেই জড়াতে হর। তথনও কিছু টাকা হাতে ছিল,—তাই দিরে কলকাতার জ্রীগোপাল মন্লিক লেনে এক ঘর ভাড়া করে সারদাকে (ব্যানার্জি) বসালুম—হল এক কার্ণিচারের ব্যবসা—
নিলেম থেকে ফার্ণিচার কিনে বিক্রী। থরচ চলে প্রার পকেট থেকেই। কিছুদিন পরে মরমনসি এর আক্রম মজুমলার—স্থরেনদার এক বৃদ্ধ সহক্রমী—কলেজ রো'তে এক ব্যাভিং করলেন,—বোর্ডাররা সবই দলের লোক—স্থরেনদার আছ্ডা। আমি সেথানেই নীচের তলার একখানা ঘর নিয়ে উঠে গেলুম। ২৪ সালের অক্টেরের গাঙ়ী থেকেই স্বরেন দা প্রভৃতির সঙ্গে রেজলেন থি তে ধরা পড়ি।

ৰাই হোক,—ব্যবদার Outdoor work কৰার নামে ৰাইবে বোৰাফেরা বীজিমত চললো। চৌরীচৌরা কাণ্ডের পর আইন অবাদ্র আন্দোলন বন্ধ করার সঙ্গে সজে অসহবোগ আন্দোলন মোটাষ্টি বর্ণ হল বলেই লোকে ধরে নিয়েছিল,—এবং তারপর মহান্তান্ত্রীর গ্রেপ্তার ও জেল হওয়াতে আন্দোলনের ভাঙ্গন প্রায় সম্পূর্ণ হরেছিল। কতকওলো জাহগায় থদ্দর উৎপাদন কেন্দ্র, আর কতকওলো জাহগায় একমাত্র সংগ্রামী রাজনৈতিক কর্মপন্থা স্থান পার্টির প্রচার শেক্ত,—এই ছিল কংগ্রেসের মোট শক্তি। শতকরা ১০ জন উনীল এবং ছাত্র কোট-কলেজে ফিরে গিরেছিল,—এবং বহু ভাত্রগাতেই স্থানীর কংগ্রেস কমিটাও উঠে গিরেছিল—টালা, বরানগর, আলমবাভারেও।

কিছ স্বাজ্য পার্টির গণভিত্তি রক্ষার জন্তও স্থানীর কংগ্রেস কমিটীর পুনক্ষজ্ঞাবন প্রেরোজন। আমি টালার আবার এক কংগ্রেস কমিটী গঠন করলুম—আলীপুরের উকীল প্রীরামচক্র মিত্র (অমৃল্য সিংহের মাতৃল) প্রেরেডেড, —আর আমি সেক্টেটারী। বরানগরে করেকজনকে নেডেচেড়ে দেখে হাল ছেড়ে দিলুম। আলমবাজারে তুলসী ঘোষ ও ধীরেন চাটুজ্যে আবার কংগ্রেস কমিটী করে কাজ করতে রাজা হলেন—সেথানে এক কমিটী হল। ভাটপাড়াতে আমালের একজন পুরাতন সহক্রমী—নগেন দাস. অন্তরীণ থেকে মুক্ত হয়ে এক দোকান করে বসেছিলেন.
—আর ছিলেন কালী ভটাচার্য—আগে তিনি বিপিনদার সঙ্গে সংগ্রিষ্ট ছিলেন, এবং পরে হরেছিলেন একজন প্রমিণ নেতা। যজ্জেম্বর গালুলী বলে আমাদের একটি ছেলেও ছিল (এখন একজন ইনকাম ট্যাক্স অফিসার)—এঁদের নিরে ভাটপাড়াতেও এক কংগ্রেস কমিটা করা হল।

কংশ্রেসকে বিপ্লবের পথে টেনে আনা ছিল আমাদের লক্য—
আমাদের সংগ্রামনীল চেতনার ভ্রের সথ ঘোলে মেটানোর জরে
আমরা ধরেছিলুম স্বরাজ্য পাটির সংগ্রামী কর্ম স্টাকে। কিছ
জনগণের সংগ্রামী চেতনা অক্ত হুই ধারার প্রবাহিত হতে স্কর্
করেছিল।—এক ধারা হচ্ছে শ্রমিক ও ক্রবক আন্দোলন,—আর
তার মধ্যে বীরে বারে বললেভিকবাদের অন্প্রবেশ,—এবং আর
এক ধারা হচ্ছে সাম্প্রদারিক চেতনা ও হালামা। এই সাম্প্রদারিক
চেতনা এবং হালামাটাই সব চেরে জত বেড়ে উঠছিল,—এবং
হিন্দু-মুসলমান মিলন যেহেতু কংগ্রেসের কর্ম পদ্বার একটা বড়
অক, স্বতরাং কংগ্রেস নেতারা,—কি হিন্দু, কি মুসলমান,—সকলেই
সব চেরে ইবিদ্ব হরে উঠেছিলেন। মুসলমানেরা মসজিদে নমাছ

পড়ছে,—এমন সমর এক হরিনাম সংকীর্ত্তনের দল এক শ্বরাত্তা করে বাছে। মসন্ধিদ থেকে মুসসমানেরা বেরিধে বললে—এখন নমান্ত হল্ডে,—ভোমরা সংকীর্ত্তন একটু বন্ধ করে বাও। ছিন্দুরা রাজী হল না.—মুসলমানরা ইট পাটকেল ছুঁড়ে শ্বরাত্তার মিছিল ভেলে দিলে। এই ভাবে একজায়গায় গোলমাল প্রক্ষ হতেই সব জায়গায় সেটা ছড়িরে পড়লো অনেক বড় হয়ে! মুসলমানেরা দাবী করলো, নমাজের সময় হোক বা নাই হোক,—মসন্ধিনের স্থাপ্প দিয়ে বাজনা বাজিয়ে বাওয়া কোন সময়েই চলবে না। হিন্দুদেরও জেন চড়লো, ভারা মন্ত্রিদের স্থাপ্প দিয়ে বাজনা বাজিয়ে বাওয়া কোন সময়েই চলবে না। হিন্দুদেরও জেন চড়লো, ভারা মন্ত্রিদের স্থাপ্প দিয়ে সংকীর্ত্তন করে বাবেই—গান-বাজনা থামানে না। ইটপাটকেল গিয়ে গাঁড়ালো লাঠিবাছীতে। নিত্তা নতুন জারগা থেকে লাঠালাঠির খবর আনে।

অসংবাগ আন্দোলন বার্থ হরেছে,—খরাজ এক বছরে দ্বে থাক, কত বছরে হবে তার ঠিক ঠিকানা নেই। অসহযোগের ফলে কিছু মুদদমান ছাত্রেরও লেথাপড়া বন্ধ হয়েছিল,—এখন সাম্প্রদারিক মুদদমান নেতারা বলতে স্থক করলে—হিন্দুরা লেথাপড়ায় অনেক এগিরে আছে,—তাদের চেয়ে মুদলমানদের ক্ষতি হল বেশী।

বিসাক্ষ্য আন্দোলনও ব্যর্থ হয়েছে। মুস্তাফা কামাল পালা সেন্তার্থ সন্ধির বিক্লছে বিদ্রোহ করলে ভারতের থিলাফ্য কমিটা উৎসাহিত হরে চালা তুলে একগানা এরোপ্লেন কিনে তাঁকে উপহার কিরেছিল। সেই কামাল পালা বখন নতুন তুকী রাষ্ট্র গঠন করলেন, তখন সর্বাথ্যে তিনি খিলাফ্যই ভেঙ্গে দিলেন। তুর্থের অলতান হিলেন সমগ্র মুসলমান জগতের ধর্মগুরু। তাবই নাম খিলাফ্য। প্রেসিডেন্ট কামাল পাণা মুসলমান জগতের সঙ্গে তুর্বেকে জড়িরে রাখার বাবস্থা তুলে দিলেন এবং তুর্বাক্তে করলেন একটা মভার্গ ষ্টেট। ভারতের থিলাফ্য আন্দোলনের স্থাবতই স্নাধি হয়ে গেল।

ভারতের মুদদমানে গা. বারা থিলাফং আন্দোলনের সঙ্গে স্বাজ चार्त्णामत्मव (वार्ग मिरव्यक्तिम, এवः वृष्टिन प्रवकारव विकृत्य अक्ठा **मुर्श्याय क्वडिल्मन, इहे निक १५८क गुर्थ इत्य, कालन मरनव विव** সাম্প্রদায়িকভার চোরা গলিতে প্রবাহিত হল। অসহবোগ আন্দোলনের ছোয়ারের মুগে দিল্লীতে আর্থ সমাজের নেতা স্বামী अदानकरक मृत्रनमारंनदा कृषा मनिकार रक्षणा पिरण पिरविक्ति। সাম্প্রদারিও হাজামা ক্ষত্ম হওয়ার পর হিন্দুরা বেমন হিন্দুসভার সংগঠন সুত্ত করেছিল, তেমনি প্রস্থানত ভব্তি আন্দোলনও সুত্র কবেছিলেন,—মুসলমানদের "ওঙ্বি" করে হিন্দু করে নিতে স্কু ক্রেছিলেন। আবার হিন্দুদের এই তদ্ধি ও সংগঠনের পাণ্ট। ৰ্যবন্ধা সুক করেছিলেন কংগ্রেদ নেতা ভক্তর সৈফুদীন কিচলু (এ মুগে বিনি শান্তি সংসদেব প্রেসিডেণ্ট রূপে টেসিন প্রাইজ পেরেছেন) কিচলুর আন্দোলনের নাম তবলীগ ও তাঞ্জিম আন্দোলন — মুণলমান সংহতির আন্দোলন। এই সব সংগঠনের ৰুঙ্গে—বোধ হয় ২৩ সালের শেবে—দিলীতে স্বামী প্রস্থানন্দ একদিন এক মুদলমান আহাতারীর ছুরির আহাতে নিহত হলেন। সাম্প্রনায়িক বিরোধ আরে। বেড়ে গেল। প্রকান্ত স্থানে গোহত্যা, এবং তা নিয়ে দাকাও হল।

এই সৰ ব্যাপাৰের পাশাপাশি আর এক বক্ষের আর একটা

আন্দোলনও মুসলমানদের মধ্যে স্থক হরেছিল—সে মুসলমানদের কাউলিলে সদত্ত সংখ্যা এবং সরকারী চাকুরীতে নিরোগের সংখ্যার অন্থাত বৃদ্ধির আন্দোলন। বাংলার এ আন্দোলন বেশ জোর পেরৈছিল,—কারণ এখানে মুসলমানের সংখ্যা বত বেশী, পদাধিকার ছিল তার তুলনার অনেক কম। কাজেই দেশবন্ধু মুসলমানদের অসক্ষোধ নিবারণের জন্ম বিশেব ভাবে চেষ্টা করছিলেন, বাতে ক্রমবর্দ্ধমান সাম্প্রদারিক হালামা শাস্ত হয়। তাঁর নেতৃত্বে এক ছিন্দু মুসলমান প্যাক্ত বা চুক্তি হরেছিল,—বাতে মুসলমানদের পৃথক নিবারিক মণ্ডলী এবং কিছু বেশী কাউলিলের সদত্ত পদ এবং চাকুরী স্বীকৃত হরেছিল,—এবং ছির হরেছিল,—হিন্দুরা মসন্ধিদের কাছ দিরে সংকীর্তনাদি নিরে যাওয়ার সময় মসন্ধিদের কিছু আগ্যে থেকে কিছু পরে পর্যন্ত গান বাজনা বন্ধ করে বাবে,—মার হিন্দুদের ধর্মভাবে বাতে আখাত লাগে, মুসলমানেরা এমনভাবে গোহত্যাবি করবে না।

স্বভাবতই মুসলমানদের পক্ষ থেকে এই চুক্তিতে বিশেষ আনন্দ প্রকাশ করা হয়েছিল,—এবং সাম্প্রদায়িক বিরে:ধের শান্তি-কামনাও कता रुखिह्न । अमन कि अरे, कृष्टित १ दत्र २८ मार्लिक ध्येषस्य (বা ২৩ সালের শেৰে?) ঈলের সময়, কলকাভার—ইভিহাসে এই একটা মাত্র বৎসর গো-কোর্বাণী হয়নি—বড় মসজ্জিদ কোর্বাণী হয়েছিল একটা উট্ট,—মন্তব্ৰ ভেড়া। সৰস্বতী প্ৰেস থেকে প্রকাশিত সার্থি পত্রিকায় আমি এই চ্ব্লি সমর্থন করে এক প্রবন্ধ লিখেছিলুম (২৪ সাল)—যার জঙ্গে—মুরেনদা বলেছিলেন — মরমনসিংএ সারখির কিছু মুদলমান প্রাহক বেড়েছিল। চুক্তির বিরুদ্ধে হিন্দুদের তর্ফ থেকে প্রেতিবাদের ঝড়ও উঠেছিল। বিশেষত নো-চেলার কংগ্রেসীদের তর্ফ থেকে প্রো-চেঞ্চ নেতার বিকরে ৰিষোদগাবের বেন একটা মহাস্মাধাগ জুটে গিয়েছিল। ফলে কংগ্রেসের মধ্যে হিন্দুসভা-খেঁবা একটা দল গড়ে ওঠার স্থ্রেশাত হয়েছিল,—বে দল পরবর্তী কালে হিন্দুমহাসভার রীতিমত বি টিমে পরিণত হবেছিল। স্মুতরাং বথন কোকোনদ কংগ্রেসে দেশবন্ধ তাঁর হিন্দু মুসলমান-চুক্তি মঞ্বীর জব্তে উপস্থাপিত ক্রলেন, তথন মে মঞ্রী প্রত্যাথ্যাত হল। মৌলানা মহম্মদ আলী বিরক্ত হরে वनल्नन, आकान आंत्र मः शैर्छनहे यनि हिन्नू-बूमनमान मिनल्नत চেয়ে বড় ধর্ম হয়, ভাছলে আমাদের এ চুপ্তেষ্টা ভাগে করাই ভাল।

জেলে মহাত্মান্সীর অ্যাপেণ্ডিসাইটাস হরেছিল, এবং তাঁকে বারবেদা জেল থেকে পুণার সান্তন হাসপাতালে এনে অপারেশন করা হরেছিল,—এবং তিনি আরোগ্য হওয়ার পর গভর্নফেট তাঁকে মুক্তি দিরেছিল। তাঁর মুক্তির পরই উত্তর-পশ্চিম সীমান্ত প্রদেশে কোহাটে এক প্রকাশু দাঙ্গা হয়, এবং সংখ্যাগরিষ্ঠ মুসলমানদের হাতে হিলুবা বহু সংখ্যায় হতাহত হয়। মহাত্মান্সী আত্মতি রুব জঙ্গে ২১ দিন অনশন করেন। অনশনের সমর তাঁর শব্যাপার্শে সকল সম্প্রাণারের নেতারা উপস্থিত হয়েছিলেন।

বাই হোক, এদিকে স্বরাজ্য পার্টি কাউজিলের সাধারণ সিট প্রার সবস্তলো দথল করেছিল, এবং কলকাতা কর্পোরেশনেরও সব সিট দথল কঙেছিল। কাউজিলের নির্বাচনে হুটো কেন্দ্রে হরেছিল স্বচেরে বড় জয়। বারাকপুরে স্থরেন্দ্রনাথ পরাজিত হয়েছিলেন বিধান রারের কাছে, এবং বড়বাজারে এস, জার, দাশ পরাজিত ইরেছিলেন সাতকজিপতি বাবের কাছে। এস, আর দাশের তথনকার নিনে, ৬০ হাঙ্গার টাকা খরচ হরে গিয়েছিল। তিনি দেশবদ্ধে বলেছিলেন,—তোমানের স্বরান্ধ যেদিন হবে, সেদিন আমি বিলেতে পালাবো!

বিধান রারকে নির্বাচনে নামিরেছিলেন দেশবন্ধু বরং। তিনি
প্রথমে তাঁকে বলেছিলেন, ডুমি কংগ্রেসের সদক্ষ (চার জানার)
চরে বাও আমরা তোমাকে ইলেকশনে দাঁড় করাই। বিধান বার্
কর্পের দদক্ষ হতে রাজী চননি—ইলেকশনেও দাঁড়াতে চাননি।
তারপর দেশবন্ধু বলেন,—বেশ, কংগ্রেসের সদক্ষ না-ই হও,—
ইণ্ডিপেণ্ডেণ্ট প্রার্থী হয়ে ইলেকশনে দাঁড়াও, আমরা ভোমাকে সমর্থন
করবো। তা-ই শেষ পর্যস্ত হল, বিধান রার জিতলেন,—এবং
ভার প্রে কংগ্রেসের সদক্ষ হলেন।

ময়মনসিং-এ নলিনীরঞ্জন সরকারকেও ইলেকশনে নামিয়ে ছিলেন ক্ষাং দেশবন্ধু,—এবং তিনি পরাজিত করেছিলেন এস, এম, বোদকে, যিনি পরবর্তী কালে বোধ হয় জ্ঞাড়েভেংকেট জেনারেল হয়েছিলেন। বিরবীরা, বিশেষ গ বুগান্তর পার্টি,—এবং তার তথনকার নেতা ক্রমেন দা এই সব নির্বাচনে দেশবন্ধ্ব স্থায়া হাতিয়ার রূপে প্রতিষ্ঠিত হয়েছিলেন।

অনুশীলন পার্টি কংগ্রেসে যোগ দেওয়ার পর থেকেই ছুই পার্টির মিলনের বচন পর্যবিদিত হয়েছিল ছুই পার্টির প্রতিষোগিতায়, এবং সে প্রতিষোগিত। ক্রমে রক্তারক্তি পর্যন্ত উঠেছিল। ঢাকা ছিল হর্ত্বশীলনের দুর্গ,—ঢাকা কেলা কংগ্রেস কমিন ভানের দখল করা চাইই,— মথচ দেখানে স্প্রপ্রভিত্তিত নেতা ছিলেন প্রীশ চাটান্ধি, বিনি অনুশীলনের লোক নন, এবং ছুটো বছরের আন্দোলনের মধ্য দিয়ে যাঁর যুগান্তবের দাদাদের সঙ্গে, এবং বিশেষভাবে জীবনের মধ্যে ঘনিষ্ঠ সম্বন্ধ গড়ে উঠেছিল। অনুশীলনের নেতা প্রভূল গাঙ্গুলী তাঁর ভগিনীশতি উকীল মনোরগ্রন ব্যানার্জিকে প্রীশ বাবুর সঙ্গে প্রতিযোগিতায় নেতৃত্ব দথল করতে খাড়া করেছিলেন। সেপ্রতিযোগিতায় রুথে একদিন শ্রীশ বাবুকে খুন করবে ভর দেখাতে এক ছোকরাকে রিভলবার দিয়ে পাঠানো হয়েছিল,—কিন্তু ঘটনা গড়ালো অন্ত দিকেন। ছোকরাকে রিভলভার সমেত ধরে প্রীশ বাবু প্রিসের হাতে দিলেন।

খবরটা বথন কলকাতার এল, তথন দেশবন্ধ অফুশীলন পার্টির ওপর চটে আগুন হয়ে গেলেন,—এবং যুগাস্তবের দাদাদের তরফ থেকে জাবনকে পাঠানো হল ঢাকায়, এক দিকে প্রীশ বাবৃকে অভয় দেওয়ার জল্ঞে,—আর একদিকে প্রতুলবাবৃকে জানিয়ে দেওয়ার জল্ঞে যে, প্রীশ বাবৃর ওপর আরু কোন আক্রমণের চেষ্টা হলে যুগাস্তব পার্টি সেটাকে নিজেদের ওপর আক্রমণ বলেই মনে করবে। তার পরে আরু পার প্রীশ বাবৃর ওপর আক্রমণ হয়নি।

আর একদিকে রিক্টিংরের টানা-হেঁচছা। আগে বিক্টিংরের প্রদেশতো ছিল এক একটি ছেলের পিছনে ছ'নাস হরে লেগে থেকে তাদের ভারত মাতার হুংথে কাতর হতে শেখানো,—এবং কিছু বোমা শিস্তান বোগাড় করে ভবিষ্যতে একদিন ইংরেজগুলোকে মেরে তাড়াতে পারলেই বে ভারতমাতার শৃহ্বান ঝন করে ভেলে মারে, পরাধীনতার বেদনার টন্টনানি আর ধাকবে না, এবং স্বাধীনতার পতাকা পৎপৎ করে উড়বে,—এই কথা কটা মুখস্ত করানো। কি

করে কতদিনে কি হবে, সেটা দাদারা জ নেন, ছেলেদের কাজ তবু দাদাদের ইঙ্গিতে চলা,—কারণ, তারাতো বিপ্লবের দেপাই মাত্র!

নোমা-বন্দ্ৰের কাজকর্ম বথন সামনে কিছুই নেই,— তথন হৰু গ্যারিবভীরা সহক্রেই কথা কটা শিথে ক্ষেলতে এবং আওড়াতে স্কেকরে দিত। এই সচজ রিজুটিংরের স্থলে এক নতুন প্রদেশ দেখা দিল,—ছেলেন্ডলোর ছাই কাণ দিরে ছাই দর্গের নিন্দে চুকতে স্কুক করলো। অত্নীলন পরে আসরে নেমেছে, স্মতরাং আংগে তারা স্কুক করেলা। অত্নীলন পরে আসরে নেমেছে, স্মতরাং আংগে তারা স্কুক করে দিতেই প্রনেশ্টা হুপক পেকেই পাকা হবে গেল— স্ভরাং ছেলেগুলো "তেএঁটে মারতে" গুরু করলো। কিছু দিন টানাটানির মধ্যে ছাই দলেরই সত্য-মিখা। সন্থাব্য-অসন্থাব্য নিন্দাগুলো শিথে ক্লেলে শেষ পর্যন্ত একটা দলে ভিড়ে গিয়ে ছেলেটা আর এক দলের নিন্দা প্রচার করে—এই শাড়ালো এ যুগের আনেক ভাল ভাল ছেলেরও পরিণতি। যাদের হাত ফ্সকে যায়, তারা বলে, ছেলেটা প্রমাল।

ঢা ধার সারা জেলা থেকে ছেলের। কলেছে পড়তে আসে,—
গ্যার পাণ্ডার মত ত্ই দলের এজেট টেশনে হাজির থাকে তাদের
ধরবার জন্মে,—বে যাকে পারে ধরে নিয়ে যায় নিজেদের মেস-বোডিং
বা স্বাস্তানার—এই হয়ে দাঁড়োলো বেওরাজ। শেষ পর্যন্ত টানাটানি থেকে ছুরিনার। পর্যন্ত স্থক হল। হাত ফ্রানো ছেলেকে
পর্যন্ত ছুরি মারা হয়েছে। ঢাকার অমুশীলনের ইতিহাদে এই ছুরিবাজীর বাগাহুরী একটা বেকর্ড। এসব কথা বাইরের লোক
জানেনা,—কিন্ত জানার প্রয়োজন আছে, পরবর্তী কালের ইতিহাদ
বোঝবার জন্মে।

প্রায় এই ব্রুক্ম টানাটানি স্থভাববাবৃক্তে নিয়েও চলেছিল। তবে তিনি যেতেতু সুল পালানো স্থলবন্ধ নন, স্মন্তবাং তাঁকে ভারত উদ্ধাবের গুপুপ্রক্রিয়া শিক্ষা দিতে যাওয়া চলে না,—আর কানে কানে অপ্রদলের নিশ্বেও চলে না। প্রেসিডেন্ডিল কলেজের প্রিন্ডিপ্যালকে পদাবাত,—I C S চাকুরীর মোহের মন্তকে পদাবাত,—ছাত্র ও ভক্তপদের কাছে প্রচুর জনপ্রিয়তা,—কর্মাৎ বোমা-বন্দুক্ব- খ্নাতির সম্পর্ক ছাড়া সকল বিষয়েই নেতৃত্বের গুণসম্পন্ন। স্থত্বাং তাঁকে রিক্র্ট করার একমাত্র কারদা হল গুণমুগ্ধ ভক্তের মতন ক্ষাপানে কথা বলা। তাঁকে নিয়ে হই বিপ্লবী দলে তারই প্রতিযোগিতা চলেছিল। কিন্তু সে প্রবর্তীকালের কথা—পরে হবে।

২৪ সালে তিনি ছিলেন নেতৃত্ব-লোভহীন বিনয়ী নীরব কর্মী। তাঁকে নেতা করে অফুশীলন পার্টিকে নিয়ে কাজ করার যে প্ল্যান উপেনদা করেছিলেন,—দেটা কেঁদে গিরেছিল,—থবং তার একমাত্র ফল হংছিল,—খুগাস্তবের দাদারা বুবলেন উপেনদাকে কনটোল করা যাবে না,—স্কতরাং তাঁরা স্থির করলেন দাদাকে কোনসাগ করতে হবে। সঙ্গে সঙ্গে অমরদাকেও তাঁরা থরচের থাতার লিখলেন, কারণ তিনি উপেনদার প্রাম্শেই চলেন, এবং চলবেন।

এদিকে গোপী শার কাঁদীর পর একণল ছাত্র তার স্তলেছ নিয়ে সংকার করবে বলে দাবী করলে—সভাষবাবু তাদের নেতৃত্ব নিয়ে জেল পেটে গিয়ে ছাত্রির হলেন। স্বরাজপাটি উপলক্ষে তাঁর বে বিপ্লবী দাদাদের সঙ্গে ঘনিষ্ঠতা হয়েছিল তা ^{I B}র জ্ঞানা নয়। তারপর এই ঘটনায় তাঁর নাম ^{I.B}র খাতায় পাকা হয়ে পেল।

গোপী শা'র সহক্ষে মহাস্থাতী বলেচিলেন, তার প্যাটিষটিক মোটিভ থাকতে পারে,—কিছ দে কাজটা করেছে অত্যন্ত গহিত। দেশবন্ধু বলেছিলেন, ভার কাজটা ঠিক হয়নি বটে, কিছ ভার দেশপ্রেমের তুলনা নেই। এই ত্রকমের কথা নিম্নে অ্যালবাট হলের এক সভার নো-চেঞ্চ প্রো-চেঞ্চ ছই দলে প্রায় মারামারি হওয়ার স্বোগাড় হরেছিল।

ৰুগান্তবের দাদারা সরস্বতী লাইত্রেরীর স্থাদে গোপীকে নিজেদের দলের ছেলে বলে দাবী করেন,—কিছ ভার উপর সবচেয়ে প্রভাব বিস্তার করেছিলেন প্রো: জ্যোতির ঘোষ (মাঠাব মশাই)—বিনি সজোব মিত্রেরও সমর্থক ছিলেন। যুগাস্তরের দাদারা যে তথন সন্ত্রাসবাদী কার্যকলাপের বিরোধী, এটা ভুললে চলগে না।

बांडे ट्रांक. खतासामल कर्लीरतमन प्रथल कतात शत ठीक **এত্রিকিউটিভ অফি**সারের পদ নিয়ে এক গণ্ডগো**ল** স্থাষ্ট হল। বীরেজ্রনাথ শাদমল মেদিনীপুরে ইউনিয়ন বোর্ড গঠনের বিহ্নদ্রে সভ্যাঞ্জং আন্দোলন করে জয়ী হয়ে খুব জনপ্রিয় হয়েছেন,—ভিনি চান, তাঁর কর্মশক্তি প্রমাণ করার বুগতর ক্ষেত্র কর্পোরেশনের কর্মকত ছ। দেশবন্ধ স্থির করলেন, তাঁকেই দে পদে বসাবেন।

কিছ বে স্বরাজ্য পার্টির সাঞ্চল্যের জন্মে যুগাস্তবের সমস্ত শক্তি বিধোক্তিত হারতে, সেই স্বাকাদলের হাতে কলকাতা কর্পোরেশনের ৰুতুৰি আসার পরেও সেই যুগাস্কুর দলের অর্থসমস্থার কোন স্থরাহা হবে না,—এ কেমন কথা? ঝুনো শাসমলের গায়ে দাঁত বসানো অসম্ভব,--- খুতরাং স্থরেন দা ঠিক করলেন কপোবেশনের কর্মকর্তা করতে হবে সুভাষ বাবুকে। তাতে প্রভাষ বাবুর সংক্ষ**ত স**শার্ক খনিষ্ঠতর হবে, আর কতকশুলো ছেলের চ'করী-বাক্বী এবং কিছু আর্থের সংস্থানও হবে। তিনি স্থভাষ বাবুকে বললেন। স্থভাষ বাবু বললেন, তা কেমন করে হবে !-- দেশবন্ধ যে শাসমলকেই বসাতে চান।

ख्यन नाकि ऋरवन मा वामञ्जीदमशीदक शिद्य धवरलन, এवः छाँदक দিয়ে দেশবন্ধকে বাগ মানিয়ে শাসমলের বদলে স্থভাষ বাবুকে कर्लार्यम्पान्य श्रमोरङ यमायात्र यावसा कत्रामन । भामप्रम विश्लवी দাদাদের ওপর এমন ক্ষেপে গেলেন বে, ২৫ সালে (কুফনগর)-ल्याप्तिक कनकारदस्म विश्ववीपात्र मच्या वनात्मन, এवा प्रयान करन ভাকাতি সুক্ষ করে' শেষ পর্যন্ত পেশাদার চোর ডাকাতে পরিণত ভয়।

ঘটনা সব দেখে যাচ্ছিলুম। খাটছিলুম আর চিন্তা করছিলুম। शान-शावनाव मध्य अकृषा পরিবর্তনের স্থাপাত হয়েছিল,—অনেক জিনিষ্ট নতুন ভাবে দেখতে সুকু করেছিলুম। হিল মুসলমান भिन्न त्व धर्मा व प्लाहारे पिट्य स्वाव नयु,-धर्माव-पार्णनिक वा নৈতিক কাঠামোর বে জনগণ পরোয়া করে নাল-বর্মের আফুষ্ঠানিক বহিরক নিয়েই যে তাদের কারবার, স্মতরাং ধর্মের দোহাই দিরে হিন্দুমুদলমান মিলন কোন দিনই হবে না,—বরং দেশের শতকরা ১১ जन मानूबरे अध्वीदि कृषक-अभिक रात्न जात्व कीरानद नास्वय অর্থনৈতিক স্বার্থের ভিত্তিতে কৃষক-শ্রমিক সংগঠনের মধ্য দিয়েই কথা ধীৰে ধীৰে মনের মধ্যে শিকড় গাড়ছিল।

আর বিপ্লব ? শতকরা ১১ জন শোবিত শ্রমজীবি মামুবের म:श्रामी म:गर्ठन,—मिठाँहे कि विश्लावर मन कार के बारबाबन नह ? শোষণের অবসানের চেমে বিপ্লবের আর কি মহত্তর উদ্দেশ্যই থাকতে পাবে ? এ সব কথাও ক্রমশ পরিকার হয়ে উঠছিল। কিন্ত তার অজল বাধা এবং বিপরীত যুক্তিও তথনও মনের মধ্যে একটা বিরাট **অস্পষ্ট** হি**জি**বি**জি**র মত যুরপাক থাচ্ছিল।

জীবনের সঙ্গে একবার দেখা করার জন্তে মনটা ছট্ফট করছিল, কিছ তার তো উপায় নেই—স্বতরাং ভেবে চিছে ঠিক করলম. —বাইবে থেকে রাজবন্দীদের যথন জিনিসপত্র পাঠানো যায়,— জেল গেটে দিয়ে এলে রাজবন্দীরা পায়,—সেই রকম কিছু চেষ্টা করতে হবে। তদমুদারে শেষপর্যস্ত একদিন একগাড়ি বাগবান্ধারের রুসগোল্লা নিয়ে (বোধ হয় দশসের) মেদিনীপুরে রওনা হলুম-এবং বৃদ্ধ উকাল শ্ৰীশীতল চটোপাধ্যায়ের বাড়ীতে অতিথি হলুম। রাত্রে তাঁর বাড়ীতে থেকে সকালে জ্বেল গেটে উপস্থিত হলুম হাঁড়ি নিষে। আমার নামটা এবং বসগোলার হাড়িটা পৌছে গেল নিবিবাদে,—কিন্তু দেখাটা কিছুতেই সম্ভব হল না। ষাই হোক. বসগোলা পেয়ে এটুকুতো অস্তত বুঝবে যে, খবর দব ভ,ল! আমি যে কলকাতায়, এটাও বৃথবে।

কর্পোরেশনের ষাষ্ট্র ডেপুটা এক্সিকিউটিভ অফিদার করা হয়েছিল নোয়াথালীর উকীল হাজি আবহুর রুদিদ খাঁকে। নোয়াখালীর সভ্যেন্দ্র মিত্র, আমাদের সভ্যেনদা ছিলেন স্বরু:জ পার্টির সেক্রেটারী। উপেনদার সহকর্মী আন্দামান ক্ষেরৎ ভিতি সরকারও একটা চাকুরী পেয়েছিলেন,—ট্যান্স কালেকটিং সরধার! বছকাল সেই চাকরী-করতে করতেই তিনি মাবা গেছেন।

এক নেতার এক বাহন ছিল—লোকে তাকে বাহনই বলতে, এবং কেউ কারো কাছে অমুকের বাহন বললেই লোকে তাকে চিনতেও পাবতো। সে হয়ে গেল এক কাইদেল ইনস্পেক্টর। এ নেতাটি কি । জেলে যাননি। যথন এ:ক একে সব নেতা জেলে যাচ্ছেন, তথন তিনি কাৰীবাদী হয়েছিলেন।

ষাই হোক, চাকরী বন্টনের এই সব বিশেষ বিশেষ নমুনা ছাড়াও. এমন একটা নমুনা ছিল, যার তুলনা হয় না। বিপ্লব যাদের লক্ষা, তারা অভান্ত হয়ে বায় একা একা কানেকানে কথা বলতে। সকলে সব কথা জানতে পায় না,—ভঞ্চাভজ্ঞি নেই। এ অবস্থায় পাক। জ্মাচোরেরা স্থযোগ নিজে চেষ্টা করলেই সফস হতে পারে। এই বকম এক জুরাচোর মাঝে থেকে একটা বেশ বড় চাকরী বাগিয়ে নিয়েছিল। উপেনদা বলতেন, বেঁটে লোকগুলো হয় জাঁাদোড়,— ব্দার ঢ্যাক্সাগুলো হালা। বুলু, শর্ভান, ধুরন্ধর অর্থেই উপেনদা "ত্যাদোড়" কথাটা বলতেন। উদাহরণও দিভেন কিরণশঙ্কর এবং জমবদাকে (চাটজ্যে) দেখিয়ে। তিনি নিজে বেঁটে ছিলেন, একখা তাঁকে বললে বলভেন,—বেশ, মিলিয়ে নাও।

क्लीर्यम्यान वे क्वारावे हिन कि कि कि के वे वे कावनां ছিল চন্ৎকার। একটা গরীব জুয়াচোরের সন্ত্যিকারের দৃষ্টাস্ত मिट्नाई कायमाहै। व्याटक भावत्वन ।

এক ব্যবসায়ী গুদাম থেকে দোকানে এক গাড়ী (গক্কর গাড়ী) দেশের শতকর। ১১ জন হিন্দুম্পলমানের মিলন সম্ভব,—এই সা ু মাল নিতে এগেছেন, সঙ্গে আব লোক নেই। বাস্তা থেকে একটা গাড়ী ডাকলেন,—গাড়োয়ান গাড়ীটা হাঁকিয়ে নিয়ে আসছে,—আর গাড়ীর পিছনটা ধরে একটা খোটা হেঁটে আসছে। গুদামের সামনে এসে মালিক বললেন, গাড়ী ঘ্রাও। খোটাটাও বললে ঘ্রাও।

গাড়োয়ান মাল বোঝাই কবে নিলে, খোটাটা তাকে সাহায্য করলে। মাল নিয়ে গাড়ী চললো দোকানের ঠিকানা লেখা "পূর্থা" নিয়ে,— গোটাটাও চললো।

গাড়ী দোকানে পৌছালো,—থোটাটা দকে নেই। ভাড়া দেওয়া হল, গাড়োয়ান বললে, আটর দশ আনা? মালিক বলনেন, কাঙে? গাড়োয়ান বললে আপকা আদমী আপকা ওয়াস্তে মাক লিয়া। মালিক অবাক।

ব্যাপারটা হচ্ছে এই বে, থোটাটা জুয়াচোর। সে এমন বেপরোয়া ভাবে মালিক ও গাড়োয়ানের মধ্যে চুকে পড়েছিল যে, গাড়োয়ান বরাবর তাকে মালিকের লোক মনে করেছে, আর মালিক মনে করেছেন, ও গাড়োয়ানের লোক। গাড়ী গুদাম ছেড়ে কিছু দ্ব আসতেই সে গাড়োয়ানকে বলেছে, ভূমারা পাশ রূপরা হায়?— একটো দেওতা,—বাবুকা পাশ থূচরা রূপেয়া নেই হায়,—ছকানমে যাকে ভাড়াকা সাথ দিয়া বায়গা। গাড়োয়ান বলেছে, ক্পেয়া নেই হায়ে, দশ আনা পয়সা হায়। সে বলেছে, আছ্রা ওহি দেও। বলে দে দশ আনা পয়সা নিষে সরে পড়েছে।

এ জুয়াচোরটাও ঠিক ঐভাবে সভাববাব ও স্থবেনদার মাঝথানে চুকে পড়েছিল। কথনো বা স্থবেনদা দেখেন সে স্থভাববাবুর সঙ্গে পড়েছিল। কথনো বা স্থবেনদা দেখেন সে স্থভাববাবুর বঙ্গুলোক,—জাবার কথনও বা স্থভাববাবু দেখেন স্থবেনদার সঙ্গে ওর ঘনিষ্ঠ ভাব,—ভিনি মনে করেন সেও একজন বিপ্লবী, স্থবেনদার দলের লোক। জ্বাহ্ন কোন কালেই না ছিল স্থভাববাবুর, না ছিল স্থবেনদার দলের।

বাই হোক, ছোটবড় চাকরী অনেকেই পেরেছিল। চাকরী পাওয়ার আগে এক চাকরী পাওয়ার পরে মানুব একরকম থাকতে পাবে না,—বেমন এডওয়ার্ডদ টনিক বা স্থরবল্লী কবার থাওয়ার আগে আর পরে মানুষ একরকম থাকতে পারে না। বড় চাকরী বটন মারকং দলের কিছু অর্থসি ছানের আশা স্বাভাবিক,—কিন্তু চাকরী বটনের পরে পেরা বায়, অনুগত অনুগৃগীত বিপ্লবের বন্ধু— বিলেভক্রে কিছু চাদা এবং মাঝে মাঝে কিছু চাদিভাড়া ছাড়া বিপ্লবের অব্যে আর কিছু ছাড়তে নারাজ। সবই দেখলুম এই জানসাভ করলুম। কিছ তথনও মুথ ফুটতে দেরী ছিল।

তারপর,—১৯২১-২২ সালে যুগান্তর অনুশীলন ছট দলেরই কিছু
অথির সংস্থান ছিল, এক দলের সংস্থান কংগ্রেস থেকে,—আর
এক দলের ভারত দেবক সংঘ থেকে। ২২ সালের পর ছ'দলেরই
আগের সংস্থান ফুরিরে গেছে। কিন্ত যুগান্তর দল পেরেছে দেশবন্ধ্
ও স্বরাজ্যদলকে,—অনুশীলন তা পায়নি। কাজেই তারা মাঝে মাঝে
ক'আগটা জায়ুগায় ওক্ত মেপড চালিয়ে বাচ্ছিল। ২৪ সালে
যগান্তর দল পেলো কর্পোরেশনের সুবোগ।

কিন্ত স্বৰাজ্যদদেবও টাকার প্রয়োজন বেড়ে চলছিল।

অর্থাগমের নতুন স্থায়ী পথ থুঁজে পাওয়া বাচ্ছিল না। দেশে

অনক মঠ-মন্দির ও দেবোত্তর সম্পত্তি আছে, বেগুলো লুটে থার

জ্যাচোর দেবাইৎ-মোহাস্তের দল। দেগুলোকে পাবলিক ম্যানেজ
যেন্টের হাতে আনতে পারলে, এবং দেখানে নিজেরা বদতে পারলে,

অতিথিবেবাও নিয়্মিত হতে পারে,—প্রজাদের জ্ঞে নানাবিধ

ৰুল্যাণকার্ষেরও ব্যবস্থা হতে পারে,—আর সঙ্গে সালে স্বরাজ সংগ্রামের কিছু স্বায়ী অর্থসংস্থানও হতে পারে।

হাতের কাছে ছিল তারকেশ্ব মন্দির—বিরাট আয়, অথচ মোহান্ত একটা হশ্চবিত্র জমিদার ছাড়া আর কিছুই নয়। মোহান্তকে গদীচাত করে ম্যানেজমেন্ট দথল করতে পারলে এ বিরাট আয় দেশের ও দশের কাজে লাগানো যায়। স্কতরাং দেশবন্ধুর নেতৃত্বে কংগ্রেসীরা প্রান্ধাদের তরফ থেকে আন্দোলন স্কুক করলে। ইতিপূর্বেই অসহযোগ আন্দোলনের এক "বেওয়ারিশ" নেতা স্থামী বিশানন্দ এবং "হঠাৎ স্থামী" সন্ধিনান্দ (হুজনেই গোটা) স্থানীয় লোকদের সাহায্যে মন্দিরটা দথল করে বসেছিলেন—স্থানীয় লোকদের সাহায্যে মন্দিরটা দথল করে বসেছিলেন—স্থানীয় লোকের বসে থাকে, মোহান্তের লোকেরা মন্দিরে চ্কতেই পারে না। মন্দিরের দৈনন্দিন আয়টা স্থামীদের হস্তগত হয়েছে,—মোহান্তের লোকদের সঙ্গে স্থানীয় লোকের গুঁতোগুতি চলছে,—এবং ষথাশান্ত্র তুই স্থামীশতেও গোকাঠুকি স্কুক হয়েছে। বিশানন্দ হটে গেছেন, সন্ধিদানন্দ মন্দিরের পাশেই আস্তানা গেড়েছেন প্রায় পাকাপোক্ত ভাবে।

কিছ আইনগত সমস্তা হচ্ছে মোহাস্তকে গদীচ্যত কৰে দেবোত্তর এবং বেনামী জমিদারী দখল করা। আবার আইমগত সমস্তা আরো জটিল করে তুলেছে আক্ষণ সভা (ভাটপাড়া)।—তারা তারকে ধর মন্দিরের প্রতিষ্ঠাতার এক বংশধর খুঁজে বার করে তাকে দিরে আদালতে নালিশ করিয়েছে—তুশ্চরিত্র মোহাস্তকে গদীচ্যত করে মন্দির ও দেবোত্তর সম্পত্তির ম্যানেজমেন্টের ভাব আক্ষণসভার হাতে দেওরা হোক।

দেশবদ্ধ সে মামনারও বাদী, মোহান্তরও বাদী—একটা ত্রিভূজাকার বামলা চলে। এ দিকে মোহান্তর বাড়া দথলটা মন্দির দথলের পরবর্তী সমস্যা—তার জন্তে স্থক হল সত্যাগ্রহ। প্রথম দিন মিটিং করে বছ লোক জড়ো করে—বাইবে থেকে, কলকাতা থেকেও অনেক লোক এসেছিল—বেশ বড় একদল ভলাতিয়ার মোহান্তর বাড়ীতে হানা দিলে। গেটে পুলিদ পাহারাও বাড়ানো হয়েছিল। ভলাতিয়ার গ্রেপ্তার হল,—থবরটা দেশময় ছড়িয়ে পড়লো। নানা স্থান থেকে ভলাতিয়ার আসতে লাগলো। একটা ক্যাম্প তৈরী হল ভগাতিয়ারদের থাকা-খাওয়ার জল্তে। ক্রমে শেওড়াকুলীতেও বিতীয় একটা ক্যাম্প হল! তারকেশ্বর ক্যাম্পের চার্জে স্থারেনল মর্মনসিং থেকে নিজন্ব লোক এক সতীশ চক্রবর্তীকে বদালেন, আর শেওড়াকুলীর কাম্পে থাকলেন পাঁচু দা' (ব্যানাজি)। পরে এই সতীশ চক্রবর্তী কর্পোরেশনে একটা বড় চাকরী প্রেছিলেন।

প্রথম উত্তেজনা ষ্ণাশাস্ত্র মিইয়ে আসার সঙ্গে সঙ্গে ভলা িট্রারও কমতে লাগলো। প্রভাব ৪ জন করে ভলা িট্রার মোহাস্কর গেটে নির্দিষ্ট সময়ে গেপ্তার হয়, তার পর দিনরাত চলে ভাগরেপ্তা ভাজা। নতুন উত্তেজনা স্থাইর জলে প্রান হল, স্বামী সচ্চিদানন্দকে সভাগ্রেছ করে জেলে যাওয়াতে হবে—ভাতে এক টিলে ছই পাখী মরবে—সচ্চিদানন্দকে মন্দির থেকে হঠানো হবে। কিছ সে কিছুতেই নড়তে চার না,—নানা অভ্যাতে প্রস্তাব প্রত্যাথানে করে। অবশেবে এক দিন স্বয়ং দেশবন্ধ্ এলেন তাঁর কাছে প্রস্তাব নিয়ে। দেশবন্ধ্ আসছেন শুনে বিরাট ভিড় ছল মন্দিরের কাছে, দেশবন্ধ্ সেই ভিড়ের সামনে সচ্চিদানন্দরে পারের কাছে সাম্ভালে প্রবিপাত করলেন—লোকে ধন্ধ থক্ত করতে লাগলো।

তারপর অবের ভেতরে সচিদানন্দকে ডেকে নিয়ে দেশবন্ধ্ ক্ষম্তি ধরে বগলেন, মোহাস্ত ছবার সথ হয়েছে ?—কাল যদি সত্যাগ্রহ করে কেলে না যাও, তা হলে—ইত্যাদি—

সংস্থাপত কাগজে ধবর বেরিয়ে গেল, বয়ং স্থামী সচিদানন্দ কাল সভ্যাগ্রহ করে কারাবরণ করবেন। এই স্টেকাভরণ চিকিৎসার ফলে আবার কিছু ভলাি উরার এল,—কিছু সে যেন নিদানের ওয়্ণ,—প্রদীপ নিভবার আগে একবার জলে ওঠার মতন। স্থাভরাং ভখন দেশের নানা দিকে দলের লাক পাঠিয়ে ভলাি উরার সংবাহ করে আনার প্রান হল। আমাকে পাঠানো হল বিক্রমপুরে —আমি সেধানে কেন্দ্রে কেন্দ্রে যুবে জন ২০ ভলাি উরার সংগ্রহ করে নিয়ে এলুম। স্থানেদার প্রধান দায় ভারকেশ্বর সভ্যাগ্রহ— ভিনি কোন রক্ষম কাল চালান।

এই ছড়-হাঙ্গামার মধ্যে মধ্যে কর্পোরেশনের কাজ আছে,—আর তার ওপরে আছে কাউন্সিলের কাজ। নতুন শাসন-সংস্থারে ব্যবস্থা হয়েছিল, দ্বীদের বেতন কাউন্সিলের ভোটে গাশ করাতে হবে। বৈধ বিধিব্যবস্থার এইখানে একটু কাঁক, একটু ত্র্বলতা আবিদ্ধার করে দেশবল্ এইখানেই আঘাত হানার ব্যবস্থা করছিলেন। মন্ত্রাদের বেতন বছরে ৬৪০০০ টাকা নির্ধারণ করে সরকার কাউন্সিলে এক বিল উপস্থাপিত করলেন। স্ববান্ধ পার্টি তার এক সংশোধনী প্রস্তাব উপস্থাপিত করলেন,— মন্ত্রাদের বেতন বছরে এক টাকা।

সাধারণ ছাড়াও যেসব বিশেষ নির্বাচকমগুলী ছিল, তাদের প্রেভিনিধিদের মধ্যে অনেকে দেশ্বস্থুব থাতিরে এবং অনুরোধে স্বরাজ্যদলের দিকে ভোট দিলেন—স্বাজ্যদলের সংশোধন প্রস্তাব পাশ হয়ে গেল। ব্যাপারটাকে মন্ত্রীদের প্রতি কাউন্সিলের অনাস্থার সামিল বলে গণ্য করা হল,—মন্ত্রীরা পদত্যাগ কগলেন। স্বরাজ্য পার্টির জয়য়য়য়লারে দেশ উৎবল হয়ে উঠলো।

এদিকে মছাস্বাক্তী অবস্থা বুনে ঘোষণা করলেন—বর্তমান অবস্থার স্বরাজ পার্টির কর্মসূচীই কংগ্রেসের কর্মসূচী বলে গৃহীত হওয়া কর্তব্য। তিনি নিজে তথনকার মত কংগ্রেস নেতৃত্ব স্বরাজ পার্টির হাতে দিয়ে সবে গিরে অল ইণ্ডিয়া স্পিনাস অ্যাসোসিয়েশন গঠন করে তাঁর ভক্তবাহিনী নিবে চরকা-খদবের কাজেই আস্ক্রনিয়োগ করলেন।

ওদিকে শ্রমিক আন্দোলন এগিয়ে চলেছিল গান্ধী-ক'গ্রেসের মোহ কাটিয়ে নিজে'দর বিশেষ পথে, এবং তার মধ্যে ভঙ্গীভাব এবং বলশেভিকবাদের প্রচার বেড়ে চলছিল। তৃতীয় আন্তর্জাতিকের (কমিউনিই—মন্ধো) প্রেসিডিয়ামের সদক্ষ এম, এন, রায়ের যোগাবোগে বাংলায় মোজাফ্ফর আহমদ প্রভৃতি ক্রমশ ধ'রে ধীরে বলশেভিকবাদের আদর্শ নিয়ে শ্রমিকদের মধ্যে কাজ করছিলেন—সেমন বধ্বতে ড্যাঙ্গে, মাজাজে শিলাবাভেলু প্রভৃতি—

২০ সালেব আগে শ্রমিক আন্দোলন ছিল প্রধানত শ্রমিকদের মধ্যে জনকল্যাণের কাজ্জ-সংঘবদ্ধ শ্রমিকদের ট্রেড ইউনিয়ন ছিল নাম মাত্র। ২০ সালে লালা লাজপথ রায়কে সভাপতি করে প্রথম এক সভায় সারা ভারত ট্রেড ইউনিয়ন সংগঠনের চেঠা হয়। তার পর অসহযোগ আন্দোলনের হুড়োছড়ি থামলে ২২ সালে দেশংক্র সভাপতিকে প্রথম সারা ভারত ট্রেড ইউনিয়ন প্রতিষ্ঠিত হয়। তথন ইউনিয়নের সংখ্যাও নিভান্ত কম, এক অতি অল্প-

শ্রমিকই তাতে সংখবদ্ধ ছিল। কিন্তু আন্দোলন তাড়াতাড়ি বেঙে চলছিল,— এবং সরকারের নির্বোধ নির্বাধন নীতির ফল বিপরীত হয়ে শ্রমিক সংঘত্তলো ক্রমে সময়ত্ব ও শক্তিশালী হয়ে উঠছিল।

এর এক চমংকার দৃষ্টাস্ত হচ্ছে বন্ধের পিবনি কামগার ইউনিয়ন।
একবার ধর্মঘট হল—সরকারী সাহায্যে এক পাঠান শ্রমিক বাহিনী
বিক্রুই করে লাগিয়ে দেওয়া হল ধর্মঘট ভাঙ্গতে । ফলে একদিকে
বন্ধে সহবে লাগলো এক সাম্প্রদায়িক দাঙ্গা, কিন্তু গিরনি কামগার
ইউনিয়ন হয়ে উঠলো সবচেয়ে বড় ও শক্তিশালী ইউনিয়ন।
ভার নেভাদের অঞ্চতম ছিলেন মিরাজকর, যিনি এয়ুপে বন্ধের মেয়য়
হয়েছিলেন।

ষাই হোক,—বলশেভিকবাদের প্রচার অঙ্গুরে বিনাশ করার জন্যে সরকার ২৪ সালে কাণপুরে এক বলশেভিক বড়ংছ্র মামলা খাড়া করলেন। বলশেভিক এজেন্টে বলে আটজনের নামে মামলা হয়েছিল।—তার ১ নম্বর আসামী এম এন রায়ু—তিনি দেশে ছিলেন না বলে তাঁকে হাজির করা গায় নি। মান্তাভের শিঙ্গারাভেলুর স্বাস্থ্যের অজ্হাতে তাঁকেও হাজির করা হয়নি—লাকে বলে তিনি নাকে খং দিয়ে রেছাই পেয়েছিলেন। পাঞ্জাবের এক প্রোফেসব—গোলাম হোসেন বা এ রকম কি নাম—তিনি নাকি স্বীকারোজি করে বলেছিলেন, পাটির জভ্রে প্রেস করবো বলে এম এন রায়ের বাছ থেকে টাকা নিয়ে মেরে দিয়ে আমি নিজের নামে প্রেস করেছি,—সরকাবের তো আমাকে ধক্যবাদ দেওরাই উচিত!

শেষ পর্যস্ত নামলায় বাংলার মোজাফ্কর আছেমাণ ও কুতৃবৃদ্দিন আছমাণ বাংষর ড্যাঙ্গে এবং সন্তক্ষ ওসমানী (কোথাকার, তা ভূলে গেছি)—এই চারজনের কারাণও হয়। বলশেভিকবান প্রচার কিছু দিনের জত্যে থমকে বায়।

এদিকে নৃত্তন মন্ত্রী নিয়োগ করে গভর্ণমেন্ট তাঁদের ৬৪০০০ টাকা বেতনের বিল বিতীয়বার কাউন্সিলে পাশ করাতে চেষ্টা করে, এবং দেবারও পরান্ধিত হয় এবং স্বরাত্র পার্টির সংশোধনী প্রস্তাব ১ টাক! বেতন পাশ হয়। দেবার পদচ্যত মন্ত্রী প্রভাস মিত্রকেও দেশবন্ধু সরকারের বিকন্ধে ভোট দিতে সম্মত করিয়েছিলেন। মোট ভোট শুনতি করে সরকার ও স্বরাজ পার্টির পক্ষীয় নিশ্চিত ভোট বাদে কয়েকটা অনিশ্চিত ভোট স্থপক্ষে আনতে পাংলেই মেজরিটা হয়—এইভাবে হিসাব করে, অনিশ্চিত ভোটের মধ্যেকটা ভোট হাত করতে হেং,—এবং তার জ্বন্তে কাকে কাকে কাকে কাকে কারের এই ক্সরৎ একটা দেখবার জ্বিনিস—দেখলাম।

শেষ পর্যন্ত একজন এম, এল, দি-কে ছুদিন একটা বিশেষ জারগায় আটকে রেখে দেওেরা হল, আমোদ-প্রমোদের সর্ববিধ আরোজনের মধ্যে আকণ্ঠ ভ্বিয়ে রেখে। তাব জন্তে একদল অমুরূপ রিদিক কর্মী বিশেষ ভাবে নিয়েজিত থাকলো এক এই ভাবে সরকার পক্ষের একটা ভাট নিজ্ঞির করে দেওরা হল। সরকার পক্ষের আরু একটা ভোট নিজ্ঞির করাব ব্যবস্থা হল—তিনি ময়মনসিংরের জমিণার অজ্ঞেল কিশোর আচার চৌধুনী। অভ্ভাবে কাম্যা করতে না পেরে তাকে ইবর বাড়ীতে আটকে রেখে দেওরা হল—তারকেশ্বের মন্দির জাগলাবার কাম্যার। তাঁর স্থ্যিয়া ব্রীটের বাড়ীব দংজার ভিত্র

থেকে ক্ষুক্ত করে' চাঁরিদিকের রাস্তায় জনতার এমন ঠাসা ভিড় সৃষ্টি করা হল বে, তিনি বাড়ী থেকে বেরোতেই পারলেন না—
ঠিক বখন কাউন্সিলে ভোটাড়টী চলছে। আমরাও দেখানে ছিলুম। সরকার পরাজিত হয়েছে বলে খবর আসার পর ভূমুল কয় ধেনির মধ্যে পথ পরিকার হয়ে গেল। এখনকার গান্ধারাজ হলে অবগু লাঠি-গুলী চলতো, এটা এখন স্বাই বোঝে, কিন্তু তখন লাঠিগুলী এত সন্তা ছিল না। এ হল ২৪ সালের ২৬ শে আগঠেব কথা।

মাঝে মাঝে এই বৃক্ষ খোলেই আমাদের সংগ্রামের ত্থের সথ মেটে। আনন্দবাব্ব বোর্ডিরে রাত্রে দোতালার খবে একটা আডডা জমে, বাইবের লোকও আসে,—আমরাও গিয়ে বিসি। জিতেন লাহিড়ীও প্রায়ই আসেন। হরিদা (চক্রবর্তী) এবং অমর বোসও। আর মাঝে মাঝে ক্যারিকেচারিষ্ট অভুল সেন। তিনি এলে একটু হাত্র-কৌতুক হয়। অক্তদিন হয় দলের Informal meeting এব মত আলোচনা,—বর্তমান কাঞ্কর্ম ও ভবিষ্যতের আশার খপ্পনিয়ে। চুপি চুপি কথাও ছচারটে হত।

বোম, বন্দুকের মত বিপজ্জনক রাজনীতি ও গুপ্ত সমিতির আমলে বেওয়াল্প ছিল, একজন বিপ্লবীর কাছে একজন তৃতীর অপরিচিত ব্যক্তিকে "আমাদের লোক" বলে সুপারিশ করলেই সে ঐ তৃতীয় অপরিচিত ব্যক্তিকে পরম আত্মীয় জ্ঞানে অবাধে বিশ্বাস করে। সে মুগে সেটা ছিল এক অপরিহার্য ব্যবস্থা,—এবং তাতে কোন ফতিও হত না,—কারণ লগুভাবে কেউ কাউকে সুপারিশ করতে পারতো না সে মুগে।

কিন্ত বথন বোমা বল্কের মতন বিপজ্জনক ব্যাপার কিছুই নেই,—অথচ দে যুগের রেওয়াজটা অভ্যন্ত হয়ে গেছে,—তথন অভ্যন্ত লঘু ও দায়িজজ্ঞানহীন ভাবেই—এমন কি দাদারাও— জনেককে "আমাদের লোক" বলে চালাতেন :—নিভ্য নৃতন "আমাদের লোক" দেখা যেত,—এবং বিখাসও করা হত লঘ্ভাবেই। ফলে জ্বাচোর বা গুপ্তচরদের নিশ্চয়ই খুব স্ববিধে হয়েছিল। বন্ধত গ্রেপ্তার হয়ে জেলে গিয়ে পরস্পারের সঙ্গে কথাবার্ভা কয়ে ফল দাদাই ব্যতেন যে, সরকার আহ্বাদের দলের ভিতরকার কথা, খুটিনাটি কথাও, প্রায় সবই জানে। সম্বত্ত আনন্দবাব্র বোর্ডিরেরও সকল কথা ভারা জানতো।

এইভাবে দিন কাটে। আমার নীচের বরে গরম—কাজেই মাঝে মাঝে খোলা ছাদে ভই। প্রকাণ্ড ছাদ,— অনেকে রোজই ছাদে শোর। একনিভাবে একদিন সারা ছাদ জুড়ে অনেকেই ভয়ে আছি,—হঠাৎ সিঁড়িতে ছুপদাপ শব্দে ঘূম ভেঙ্গে গেল। চোথ চাইতেই টর্চের আলোভে চোথ খেঁখেঁ গেল। ছাদ ভবে গিজগিজ করছে পুলিশ,—আবো আসছে। ব্যক্ষ, আপাততঃ লীলা সাক্ষ লগা কাকে কাকে নেহব কে জানে—স্বরনদা ভো আছেন-ই। নরেশদা এবং মণিদাও (চৌধুরী) আছেন। এঁরা গেলেই সব গড়বড় হয়ে বাবে।

সবাই চললেন নিজ নিজ ঘরে—আমরাও। সকলেবই পিছু পিছু
চললো করেকজন করে প্লিশ এবং অফিসার। সমগ্র বাড়ীটা
ভন্ন ভন্ন করে সার্চ হল। এসেছিল ভোর হওরার আগে—বেগা
অনেক হল সার্চ শেব করতে। ভারণর করেকজনকে নিয়ে গিয়ে

ভূললে গাড়ীতে—আমাকেও। সারদাকে একটু সাত্তনা দিরে বললুম, অবস্থা বুঝে হা ভাল মনে কর, অসংস্কাচে ক'রো।

সে হচ্ছে ২৪ সালের ২৫শে ছটোবরের সকাল। 'থকবার ইলিসিয়াম বো দেখিয়ে কাগলপুর ঠিকঠাক করে আমাদের নিয়ে গিয়ে তুললে আলিপুর সেন্ট্রাল জেলে। সেথানেই প্রথম দেখলুম আমাদের ওয়ারেট রেগুলেলন থি অলুসারে—অর্থাই প্রেজনার—ভারত সরকারের বন্দী। এদিন এক অর্ডিক্সান্স জারী হয়েছিল, এবং সারা বাংলায় থানাজ্বাসা করে প্রায় হুশো জনকে গ্রেপ্তার করা হয়েছিল। কলকাতা এলাকার অতিক্যান্স প্রিজনারদের নিয়ে গিয়েছিল প্রেসিডেন্সি জেলে।

ানন্টাল জেলে ষ্টেট ইয়ার্ড বা সিপ্রিপেশন ইয়ার্ডে আমাদের তুললে। দেখলুম আমরা ১৮ জন জমেছি— হভাববাবু এসেছেন, অনিলবরণ রায়ও এসেছেন,—তাছাড়া এসেছেন সত্যেন লা (মিক্র— স্বরাজ পার্টির সেক্টোরী) স্বরেন লা, নরেশ লা'তো আছেনই, হরিলাও আছেন— অমুকুললা (মুগাজি), গিরীনলাও (ব্যানার্জী) আছেন—অমরকুফ ঘোষও আছেন—পাবনার রমেন লাসও আছেন,—মলঙ্গার অংশু ব্যানার্জী,—অমুশীলনের স্বরেশ ভরম্বাজ,—আর স্থুটী ভক্রণ—বঞ্জিৎ ব্যানার্জী এবং পনেশ ঘোষ (চট্টগ্রামের জুলু সেনের সঙ্গে সংলিষ্ট)—আর ২।ও জনের কথা ঠিক মনে নেই।

কিন্তু মন্থা হল, আমাদের ওয়ারেন্টের তারিথ ২৭শে আগষ্ট !
অর্থাৎ ২৬শে আগষ্ট বিতীয়বার মন্ত্রীদের বেতন ব্যাপারে সরকারের
পরান্ধরে যেন কেপে গিয়ে ২৭শে আগষ্ট ওয়ারেট ইন্দু করা
হয়েছিল,—কিন্তু তথন গ্রেপ্তার করা হয়নি,—কারণ তাতে স্পাই
বোঝা যেত ব্রাক্ত পার্টিই আক্রমণের আসল লক্ষ্য । পরে অভিকাশ
ভারি ও গ্রেপ্তারের সঙ্গে ২৫শে অক্টোবর আমাদের গ্রেপ্তার করা
হয়েছে।

লর্ড লিটন মালদহে এক বক্ত ভায় বলেছিলেন, বাংলার ছটো প্রধান বিপ্লবী দল সায়া দেশ জুড়ে বিপ্লবী দল গড়ছিলঃ—একটা দল অবিলম্বে কি হু করার পক্ষপাতী, আর একটা দল আরো প্রস্তুতির পক্ষপাতী।

দেশবদ্ কাউন্সিলে বক্তভায় দেখিয়ে দিয়েছিলেন, স্বরাজপাটিই আক্রমণের লক্ষ্য—স্বরাজপাটির কাছে ভোটে পরাক্ষিত হয়ে কেপে গিয়েই সরকার স্বরাজপাটির ভাল ভাল কর্মীকে (best workers) গ্রেপ্তার করেছে।

তথন উপেনদা, অমরদা (চটোপাধাার), অতুলদা (ঘোর),
মনোমোরন ভটাচার্য এবং এক তরুণ নুপেন মুখার্ক্র— ষ্টে প্রিজনার—
ফিমেল ইয়ার্ডে থাকতেন— সেটা খালি ছিল ব'লে। আর এক ইয়ার্ডে
ফরেনার্স ইনতার ইনটু ইণ্ডিয়া আইনে বন্দী ছিলেন এক আবহুর
রিদি, খেতকার পাজামা-ফেজপরা শাশ্রুগুড্ফ শোভিত মুসলমান—
দিনরাত কোরাণ আর নমাজ নিয়ে থাকেন—প্রিশের মতে
বলগেভিক এজেন্ট—বে-আইনী ভাবে ভারতে প্রবেশ করেছিলেন।

সস্তোৰ মিত্র, গারেন বাগচি, স্থবোধ লাহিড়ী তথন দাজিলিং জেলে বদলা হয়েছেন। টেট ইয়ার্ডের পাবে ছিল বস্থ ইয়ার্ড (পরে বেথানে দক্ষিপেশ্ব মামলার আসামীরা থাকতেন)—সেথানে তথন আছেন আক্ষামান-ফের্থ বাবজ্জীবন দণ্ডে দণ্ডিত শিবপুর ডাকাতি মামলার নরেন ঘোষ চৌধুরী, ভূপেন যোষ, সামুকুল চ্যাটার্জি এবং বাজাবাজার বোমার মামলার অনু হলাল হাজরা (শুণান্ধ বাবু)
প্রভৃতি। ভূপেন ঘোষ ছিলেন সর্বপ্রকারের রাল্লায় ওজ্ঞাদ।
আমাদের থাওয়ার ব্যবস্থা প্রথমে তাঁর সঙ্গে করা হল আমাদের
মোট food allowance এর টাকা ছিসেব করে তিনি বাজারের
ফর্দ করে দেবেন, এবং মালের ভাগুার এবং রাল্লার ব্যবস্থা তাঁর
হাতেই থাকবে। ডেপুটা জেলার বাঁরেন বাবু আমাদের দেখাশোনার
ভারপ্রাপ্ত ভিনিই এ বন্দোবন্ত করলেন।

তারপর তিনি কার কি কাপড়চোবছ বিছানাপ্র লাগবে জেনে নিয়ে বাজারে গেলেন। এই বাজার করার কাজটা বে লোভনীয়, তা কি বলে দিতে হবে? তিনি থুব যত্ন নিয়ে, সব ব্যবস্থা করলেন। কয়েনীদের হাতের ধারাম চেয়ে পুরানো বধার দরদের রায়া,—সকলেই গুমা হলেন।

কিছ প্রথম দিনই আমাদের সত্যেনদা (মিত্র) দইরের পরিমাণ কম হরেছে বলে রেগে টেবিল চাপড়ে চীংকার করে এক কাশু বাধালেন—ডেপুটা ক্লেনার বাবুকে ডাকিয়ে হিদেব চাইলেন, ১৮ জনের থোরাকী কত ? ইঙাদি। তিনি লজ্জায় জড়সর হলেন,—আমরাও অনেকেই লুকিয়ে লজ্জা ঢাকলুম,—আর বেচারী ভূপেন বাবু কাতর ভাবে কৈফিয়ং দিলেন,—রাত্রে তিনি ভালো কিছু খাওরাবেন বলে মাস মঞ্ভ রেথেছেন,—সকালে তাড়াভাড়ির জ্লে দেটা করে উঠতে পাবেননি।

বাই হোক,—সঙ্গে সঙ্গে ব্যবস্থা পরিবর্তন করে ষ্টেটইয়ার্ডেই
নিজেদের তত্তাবধানে করেদীদের দাবা রালা করানোর ব্যবস্থাই
হরে গেল। এ সব কুট কৌনল জেল কর্ত্বপাক্রের সঙ্গে সংগ্রামাদি
ব্যাপারে অভিজ্ঞ ঘাঘা বিপ্রবাদের এলাকা—স্ভাববাবু বা অনিলগ্রশ বাবু এসব ব্যাপারে অনভিজ্ঞ—স্কুতরাং তাঁরা 'থ' হরে গেলেন—
চুপ করেই সব দেখলেন।

স্থভাববাৰুব যে বিপ্লবীদেব খাতায় নাম উঠেছে,—দাদারা তাতে সন্থাই হংচেছন। অনিগববণ সোভনীয় নৱ, কাবণ তাঁর গান্ধী গুক্তি বাগ মানবে না, সকলেই ব্যুতেন—হয়ত মনোরঞ্জনদা ছাড়া। বন্ধত বিপ্লবীদেব সঙ্গে আটক থেকে তাঁর মন এমন হাঁপিয়ে উঠেছিল যে, পরে মুক্তি পেয়েই তিনি পণ্ডিচেরীতে গিয়ে আশ্রয় নিরেছিলেন।

ৰাই হোক,—এৰ পৰ এগ ভাতা দ্বিৰ কৰাৰ পালা। আইনানুসাৰে ভাতা নিৰ্ধাবিত হবে according to rank and station in life. সূভাববাৰু I.C. S, সভোনদা সৈন্টাল জ্যাসেম্বলির সদক্ত, অনিলবৰণ বাংলা কাইন্সিনের সদক্ত—এবা বিশেব, এক বান্ধি সকলে সাধাৰণ।

গভর্ণমেণ্ট অনিলবাবৃকে সাধারণ ভাতার চেয়ে কিছু বেশী দেওমার প্রস্তাব করলে তিনি সেটা প্রত্যাখ্যান করে বললেন, আমি এখানে ধখন এম, এল, সি হিসেবে আসিনি,—খতএব সাধারণ ভাতাই নোব। সভ্যেনদা এম-এল-এ হিসেবে দৈনিক ১০ টাকা হিসাবে ভাতা দাবী করে দরখান্ত করলেন—সরকার সেটা নামপুর করসেন। তথন রণনীতির পরিবর্তন করে সত্যেনদা লিখলেন, তথু এম-এল-এ বলেই নয়,—তাঁর বহুমূত্র রোপের লক্ষণ আছে, স্থত্বাং আহারাদি সম্বন্ধে সাবধানতা প্রয়োজন। শেষ পর্যন্ত সরকার "মেডিক্যাপ প্রাউও" বলে তাঁর ১০ টাকা দৈনিক ভাতাই মঞুর করলেন।

পরে তাঁর আর একটা নতুন দাবী এল, এবং দোটা নিয়ে দাদামহলে প্রথমে বিময়, ও পরে চাপা হাশ্তকে তুকের গুল্পরণ চললো। দে হচ্ছে তাঁর স্ত্রী-কল্যার জল্প ভাতার দাবী। স্বাই জানতেন, তিনি অবিবাহিত,—এই প্রথম শুনলেন, তাঁর স্ত্রী বল্তা বর্তমান। সরকার জবাব দিলেন, তাঁরা অনুসন্ধান করে দেখেছেন, তাঁর স্ত্রী-কল্যা নেই,—তিনি বিবাহ করেছেন বলেই কোন প্রমাণ নেই। দাদা বললেন, বৌদির সঙ্গে তাঁর বিবাহ হয়েছিল কালীতে, দেশবদ্ধর উপস্থিতিতে—কোনো বিশেষ কারণে তিনি দে বিবাহের কথা গোপন রেখেছিলেন।—যাই হোক, পরে বৌদির ভাতাও ময়ুর হয়েছিল।

তারপর স্থভাষবাবুর কথা। তিনি I. C. S., এবং কর্পোরেশনের চাফ এক্জিকিউটিভ অফিসার,—স্থতরাং তাঁর standard of living ইউরোপীয়ানদের মতন—এই মুক্তিতে তাঁর আহারাদির ভাত। সরকার স্থির করলেন মাসিক ২০০ টাকা। তিনি স্থির করলেন, ইউরোপীয়ান ষ্ট্যাণ্ডার্ড তিনি স্থাকার করবেন না, এবং এ ভাতা প্রত্যাধ্যান করবেন।

সংস্নেদা প্রভৃতি তাঁকে বোঝাতে লাগলেন, এ ভাতা তাঁকে নিতেই হবে। কারণ এবার জেল থেকে বেরোবার পব তাঁকে যুগান্তব দলেব অলাই শুয়া প্রতিনিধি, পাবলিক ফিল্ডের নেতা হিসাবে কাজ করতে হবে,—ক্সভরা: তাঁর স্থান যে সবার উপরে, সেটা দেখতে ও ভাবতে লোকের অভ্যন্ত হওয়া দরকার,—এবং উঁচু ষ্ট্যাপ্তার্ড ও বেশী ভাতার হিপ্নোটিক এফের তাতে সাহায্য করবে।

এতবড় একটা বিপ্লবী দলের নেতা বলে পরিচিত হওয়া, হঠাৎ ডবল প্রোমোশন, এ অবস্থায় লোকের মাথা ঘূরে যাওয়ারই কথা— বিশেষত তথনও স্ভাষবাবৃর মাথাটা খুব পাকেনি। তিনি ভাতা প্রত্যাখ্যান করার মতলব ছেড়ে দিলেন।

যাই গোক, আমরা ছয়দিন আলিপুর সেন্ট্রাল জেলে থাকার পর বদলীর অর্ডার এল। স্থভাষবাবৃ, অনিলবরণ বাবু প্রভৃতি করেকজন চললেন বহরমপুর জেলে। অনুকৃলদা, গিরীনদা, এবং অংশুনাবু চললেন মেদিনীপুরে এবং আমি, রঞ্জিৎ ব্যানার্জী এবং গণেশ ঘোৰ বাকুড়ায়। আবার কোন্নতুন অভিজ্ঞতা আমাদের জঙ্গে অপেকা করছে, কে জানে!

িগত মাদের লেগায় অনবধানবশত একটা মস্ত ভুল হরে গেছে—১৯২৩ সালের শেষে দিল্লী কংগ্রেদের পর যে ১৭ জন বিপ্লবী নেতা গ্রেপ্তার হয়েছিলেন, তাঁদের নামের তালিকা থেকে বিপিনদার নামটা বাদ পড়ে গেছে—বিপিনদা ছিলেন তাঁদের মধ্যে অক্সতম।

An idea, to be suggestive, must come to the individual with the force of a revelation.

মিষ্টি সুরের নাচের তালে মিষ্টি মুখের খেল। আনন্দ-ছন্দে আজি, —হাসি খুসির মেলা



श्थिंगिक (क) लि



বিস্কৃটএর

প্রস্তুত্বারক কর্তৃ ক আধূনিকতম বন্ধপাতির সাহাব্যে প্রস্তুত্ত কোলে বিস্কৃট কোম্পানী প্রাইভেট লিমিটেড, কলিকাতা, ১০

কবি কর্ণপূর-বিরচিত বিশ্ব-ব্রশ্বিন

२७। এই ধরণের যিনি লীলা-প্রাহী, এই ধরণের ঝলমলে বার আচরণ, তাঁর এই শৈশবাদি পোগগু দশা অতএব নিত্যলীলা-বস্তার কল্পতা-রপেই প্রতিভাত হয় ভক্তজ্বনের কাছে। যদিও এই দশাগুলি বিবাদি এবং পরস্পার-বিরোধী, যেনেতু এগুলিতে রয়েছে মুর্স্তানশত্ব, রয়েছে নিত্য-কিশোরত, র:মছে অবিকারিত,•• তথাপি, বাঁর স্বেচ্ছায় আচ্ছন্ন থাকে প্রমৈশ্ব্যা, এগুলি যে তাঁরই ৰুল্যাণধৰ্মী প্ৰবিষ্ধান্ত বেগ-ললিত লীলা-প্ৰকাশ, তা কেমন কৰে অস্বাকার করা চলে? বিবিধ ভক্তজন আপন আপন বাগনা অনুষায়ী ভগবানকে লভে করতে চান; এবং তাঁদের অনুগ্রহাধীন বলেই, যিনি সচিচদানন্দ্যন নিভাকিশোর, তিনিই নিজেকে প্রকাশিত করেন বাৎসল্য-স্থা-মধ্রাদি সর্বভাব-পোষ্ক বপুংতে। ক:ল-কুত নমু এই অবস্থা। ভবৰ বেখানে বিজ্ঞজিত হয়ে বয়েছে অচিন্ত্য-বৈভবতে, সেধানে বাল্যপৌগণ্ডাদির এই সমস্ত লীলা-প্রকাশ হতেই হবে নিস্তর্ক্য-নিষ্ক্য এবং এইভাবেই তিনি একদা বিশায় ৰাভিয়েছিলেন ব্ৰহ্নপুৰস্তাদেৰ, খেদিন তিনি আকাশে বাতাসে ছড়িয়ে দিলেন তাঁর মোহন মুরলার ধ্বনি। বাক্যহারা হয়ে গেদেন পুরস্তার। কান পেতে ওনলেন সেই ধান। কী অনব্য বেণুবাদন-শীলতা! মুবলীতে বেজে চলেছে মধুর অফুট ষেন গান।

২৭। কুষ্ণের সমীপে ছুটে এবে তাঁর। বললেন • "ওরে কুষ্ণ, মারের বুকের বোঁটা টান্তে পারতন। তোর ঐ ঠোট হটি, আজ হঠাৎ কেমন করে সেই ঠোট হটো দিয়েই বাজালি • এমন মুরলী? কদিনের মধ্যে কোন্ গুজর কাছে নিলি কলবেগুর এমন পাঠ?"

•• ভবে ছেলে, তোর মুখের আরতি করে মরি, আবার বাজা, আবার বাজারে তোর বেণ ।"

ভাঁরাও বলছেন আর ততক্ষণে নন্দছুলাল পৌছে গেছেন জনক-জননীর কাছে। দেখানে গিয়েই তিনি বাজিয়ে দিলেন বেণু। ৰাজাতে বাজাতে সরস করে তুল্লেন বাশের বাঁশরী।

২৮। সেই দিন থেকে ভশ্বধারা শস্তুর সঙ্গে, ক্মল্যোনি ব্লহ্মার সংগে, নভামগুলে প্রতিদিন উপস্থিত হতে লাগলেন স্থানগরের নাগবের। তাঁরা সকলেই দর্শনার্থী লীলাবালকের — তমালবরণ বাঁর অঙ্গা, হরিতাল ববণ বাঁর বসন, যিনি বকুলফুলের রেণুনাথা তমাণে শাখার তুলারূপ, যিনি বনকুল্পরের শিশুর মত পা-পর্যান্ত খ্রিরে চলেন বন্মালা, যিনি বাঙ-মানসের অবসান, মুরলীতে দেন মোহন তান।

২১। এই রকম করে দিন কাট্ছে। ছে' গর একদিন, দিনমণি তথনো অফ্দিত গগনে, পদ্মজাঁথি নন্দত্লাল তাঁর জননীকে জড়িরে ধরে বললেন— মাগো মা, ও আমার জনেশ্রী মাগো, জামার ভর্ত্বর মন হয়েছে বন-ভোজনের। সত্যি বলছি, এতটুকু

ছষ্টুমি করব নামা। খরে বলে খাব না আবাল, বনে গিছে খাব। ও আমার লক্ষী মা আমার, কথা ঠেলিস নি মা ট

পুত্রের বাক্যের মৃধ্যে বরেছে নিশ্চর কোনো হাইবৃদ্ধি - বুবতে বিলম্ব হল না ব্রন্থরাজ্ঞ বধুর। সাত তাড়াতাড়ি মাথা নাড়তে নাড়তে বেই বগে উঠেছেন—'না না, না না,' সেই আবার লীলাবালকের কপালথানির উপর নেচে নেচে উঠল ভাঙা ভাঙা চুল, অঙ্গের আভায় আর চোথের আলোকে দ্র হয়ে গেল অন্ধ্রুরার এই সিন্ধির পথ নিতাস্ত বিদ্বিত হয়েছে দেখে নীলাবালককে প্থ বেছে নিতে হল শপথের। নিরস্ত নিক্পার অমুন্র শেব প্র্যুম্ভ আদায় কনে ছাড়ল জননীর অনুম্তি।

৩ । তারপার আর সঙ্গী জোটাতে কতক্ষণ ? সজোরে শৃঙ্গা বাজিয়ে উ ।স্থিত হয়ে গোলেন দাদা শ্রীবলরাম । নিজের নিজের ঘর ছেড়ে দেখতে দেখতে থেকার সাথীরা ছুটে এসে জুটলেন। বসরামের শৃঙ্গা বাজলে দূরও যে নিকট হয়ে যায়।

ত্রিভুবনের নাথতিলক তথন মায়ের কাছে গিয়ে ভিকা চাইলেন—"মা, এমন থাবার করে দে মা, বাতে সবাই ভোলে, সকলের মূথে রে[†]চে। ^{*} তথন এল বন-ভোজনের উপযোগী ভোজান্তব্য । বাসি খাবার নয় এক টও। এল • চাপ চাপ দই; দ্ধিমহোদ্ধির যেন প্রকাণ্ড প্রকাণ্ড উদ্ভট পঙ্কপিণ্ড। ভাবে ভাবে এল ললিত নবনীত ···চাঁদের গাঁরের বেন ডেলা ডেলা মাংস। এল পুরু পুরু ছুধের সর; ক্ষীব-সমূত্রের যেন রাশি রাশি ফেনা। এল শছলী প্রভৃতি সুর্দম্বভি বহুমূল্য খালা। এল পাঁপড়, এল বড়া••আহা দেখলে সব চোৰ জুড়োয়। এতোতেও শেষ নেই। আসছেই তো এগ মোদক, দেবভাদেরও চোথ টাটায় আমোদক। পিঠে গুলোরও কা সুন্দর চেহারা, । এক একটি যেন প্ৰিমার চক্ৰমণ্ডল। মিশ্ৰীর কুঁদোগুলোরও কী বাহার • জমাট শিলার মত দেখতে অথচ গল্ছে না। এল দইভাত, কী তার পবিত্র থবাস। এল তথে-ভেজা চিত্ত, ভুরভুর করে গদ্ধ উঠছে কপুরের, বেন টল্টল করছে অমৃতের মাধুর্য্য, এল প্রমান্ন, - আবর্ত্তিত স্লোৎস্না সার দিয়ে যেন প্রস্তুত্ত। এল আমের আচার, নেবুর আচার • •টুপটুপ করছে, রদে গন্ধে।

সমস্ত খাওগুলিই অপরিমিত উপাদের ও পের • নাভ্বাংসদ্যের মত। সত্যিই লেইগুলিকে তো মন দিয়েও উছ করা ধার না। চর্বাগুলিও অহো, নয়নের আরাম, অপূর্ণা। চুষাগুলি একাস্তই অনুষ্যা। ছুর্ল ভ পুষ্টিকর সেই খাভ-সমারোহ অবলোকন করে আফ্লাদে আটখানা হয়ে উঠলেন বশোদাছলাল। সহচরদের হাঁক দিয়ে বললেন—গেল গো • মদ-মাংস্গ্যু সব ধ্বংস হয়ে গেল গো। এবার ভাই, এওলো ছুলে নাও, চল বনে গিয়ে মোদকগুলোকে ধ্বংস করা বাক।

এমন প্রণয়ভবে এই কথাগুলি উচ্চারণ করলেন নক্ষরলাল বে, একমুহুর্তে অভিমানমুক্ত হয়ে গেল সকলের মনোবৃত্তি। থাল্ড সন্তার গ্রহণ করবার জন্তে এলিয়ে এলেন সকলে। কিন্তু বিনি সৌল্ধেয় • • • অবুদ কলপেরিও জনরে অবুদ ঘটিয়ে ছাড়েন, • • তিনি পুনরার বললেন— "থাল্ডগেল সব আধ্যাত্মিকদের হানরের মত ২ড়াপাকের। ওগুলো তুলে নিয়ে বাছুরদের পাছু পাছু দৌড়লেও গলে বাবে না কিন্তু • বলতে বলতে লীলাবালক বথোচিত ২ন্টন করে দিতে লাগলেন থাল্ডভার, স্থারাও নিতে লাগলেন, বার বেমন ক্ষমতা। কিন্তু ধাবার মত হলে হবে কি, কম পড়ে গেল; কুফ্রের স্থাদের স্থাও

তো আর কিছু কম নয়। বগড় দেখে হাসি চাপতে পারলেন না ভগ্যজননী। নিয়ে এসেন আবো খাবার, আবো খাবার।

৩১। প্রত্যেকেরি নিজের নিজের স্থলর স্থলর বাঁক। শিকের থোলানো ভাঁড়! ভাঁড়ে ভাঁড়ে ভাগ করে থাবার নামিরে রাধলেন কৃষ্ণাসচরেরা। তারপর সেকেশুলে বেই যাতা করবেন সকলে, অন্নি ভগবজননা নিজের হাতে আবার একবার হিমছাম করে গুছিয়ে দিলেন প্রভগবানের বেশভ্লা এবং বিশেষ করে ভাঁতে ভূলে দিলেন বেণ্, গলার ভূলিয়ে দিলেন বনমালা। প্রেচল্ভ কারধারার দিক্ত হয়ে গেল তাঁর কঞ্কের অগ্রাবিসর। পুরক্তিবে সঙ্গে কিছুল্ব সঞ্ল নিলেন বালকদের।

আগে আগে চলেছে কুন্তের অসংখ্য বাছুর। পাছে পাছে চলেছে অসংখ্য অনুচরদের প্রত্যেকের অগণিত বাছুর। তারপরে জীক্ষ। কীবেন কীকারণে, কিসের বেন কৌত্গলে বরে রয়ে গেলেন চলধারী বলরাম।

গেতে বেতে দাঁড়িবে গেলেন মা। দেখতে লাগলেন উ'ব চেলেটিকে। শীকৃষ্ণ চলেছেন আব তাঁব পাছু পাছু চলেছেন সধারা। দে এক অতিলোকোত্তৰ সৌন্দর্য্য-দর্শন।

শ্রীকুফের বাম ছাতে ররেছে বেণু, ডানছাতে চাক বাঁট, কটিদেশে বেত্র এবং পাভায়ারচা অভ্যন্ত্ত একটি শৃঙ্গ; চিকণ চুলের চূড়ার কপছে শিলি-শিখণ্ড; কিন্তু কঠের উপকঠে গুঞ্জাহার; আব তাঁর কান গুট্টকে চেকে বেবেছে নীলোৎপলের নির্মল হুটি মাধুরী।

সভ্যিই, বছ আশ্চর্য ঠেকল মারের চোথে বধন তিনি দেখলেন • বরে অতো আর অমন ভালো ভালো অলক্ষার থাক্তে কুঞ্বের ঘটেছে ভাতে অবকেলা । আর বংসপালদের অনুকরণে হঠাৎ অত্যন্ত অনুরাগ গটেছে তাঁর বল বেশভ্যার ! কিছ কুঞ্চ তথন ছুটেছেন এজালকদের স্থাতি • • বৈজ্ঞান্ত মালা নাচিরে। তাঁর বক্ষের ভিত্তিতে আভা কাটছে জীবৎস-চিছের কর্ণ রেখা।

ব্রহ্মানকদেরও শোভা কিছু কম বায় না। তাঁদেরও প্রভ্যেকোর বাঁ কাঁবে স্থান্দর গঢ়নের বাঁক, বাঁকের ডগায় শিকের বাগছে ভাঁড়ভার্তি থাবার; কোমরে বেণু, বিষাণ, পত্র-মুবলী আর শৃঙ্গ। তাঁদেরও হাতে— যাষ্ট্র, কানে কুঁচফালের কর্নপুর, মাথায় মন্ত্র-পিচ্ছের রচনা, গলায় গুলাহার। প্রভ্যেকটিকেই মানিয়েছে ভালো কটিইটের ধটর বাহারে।

মাতৃদেবীরা ধদিও তাঁদের প্রত্যেকেরই ত্গতে পরিষে দিয়েছিলেন কের্ব, বলর, ঘটা করে কোমরে বেঁধে দিয়েছিলেন কিছিণী আর মণিময় কোমরবন্ধ, গলার পরিয়ে দিয়েছিলেন হার, কানে কুণ্ডল, চংগে মন্ত্রীর, তেরবৃত্ত এই ব্রহ্মশিশুদেরও কেমন যেন তেমনটি আগ্রহ ছিল না সেই সব ভ্রণে, বেমনটি ছিল তাঁদের এ বাছুর চরানো বক্ত সাজে।

৩২। ধেলতে ধেলতে দ্বে চলে গেলেন ব্রজ্বালকেরা, আর কৌত্কের আকুলভার চোথ কুঁচকিয়ে বছক্ষণ তাঁদের দিকে তাকিয়ে বইলেন ব্রজ্বাজমহিবী। তারপরে অতিব্যবধানের বাধার আর্তা হয়ে বীরচরণে ফিরে এলেন রাজভবনে।

৩৩। বংস-থাহিনীটিকে অঞ্জেনিরে প্রীভগবান বখন চলেছেন, চথন প্রম-স্থবিরতম হলে হবে কি, সর্বলোকপিতামহ ব্রহ্মারও স্থবতে উক্সল হরে উঠন অন্তুপম-কুত্তল-বিলোকমের বৃত্তিনিচর। পর্ব আস্থারাম হলে হবে কি. নীলক্র্স শিবেরও জনস্থ ভরে উঠল উৎকৃতিত আনক্ষে। মেয় দেখে বেন নেচে উঠল মর্ব, পূর্ব দেখে বেন মুখ খুলল কমল। নভোৱাজ্যে নিমেষ হারিষে তাঁরা ছজনেই দাঁড়িয়ে বইলেন চিত্রলিখিতের মত। ইন্দাদি প্রসূধ্ কৌতুকলম্পন দেবভাদের কথা না ভোলাই মঙ্গল।

৩৪। এগিয়ে এগিয়ে চলেছেন শ্রীভগবান, আর ভাঁষ
পিছিরে-পড়া সধারা এদিকে বাজী ধবছেন নকে আর্গে ছুঁভে পারবে
ভাকে। আমি আগে আমি আগে বলেই দৌড়লেন সকলে।
ভারপর ছুঁয়েই ন আমি আগে ছুঁগেছি, আমি আগেণ নকে রগড়াও
করতে লাগলেন নিজেদের মধ্যে। পরম্পারকে এই জয়েছা! শেবে
সকলেন শ্রীকৃষ্ণকেই বরণ করলেন সাফীরপে। তেন অবস্থার প্রথমে
হেদে কেললেন শ্রীভগবান। হাদির শ্রময়ায় ভেদে গেল দশন-বদন,
দিক্দিগস্থে যেন ফুটে উঠল শেতক্রবী। ভারপরে সংচরদের মুখের
উপর দৃষ্টি রেখে ভিনি দৃদ্ধরে বললেন—"কে আগে, কে পরে, লে
বিচারে ভোমাদের এত প্রয়োজন কিসের? এই স্থানেই ভো
ভোমরা রয়েছ, ভোমরা ভো একসঙ্গেই আমাকে পেরছ।"

৩৫। মুনিমানস-হল ভি দম্জদমন যথন এই প্রকারের আলাপন করতে করতে বাছুবদের পাছু পাছু ছুটলেন, তথন কৌমুদীকদম্বকে অমুবর্ত্তন করে তাঁর দেই চঞ্চল তিমিরাক্র সদৃশ অপ্রসরণ গোপবালকদের সকলের মণ্যেই উচ্ছলিত করে ভুলল ক্রীড়ারদের এক অপুর্ব আনন্দ গদ্ধ। একদল হরণ করলেন অপর দলের শিক্যা; তাঁদের হাত থেকে আবার দেইটি নিবে নিলেন আর একদল; আবার দে দলের হাত থেকে সেইটি ছিনিয়ে নিলেন আর একদল; নিরেই হেণ: হোং হাসি। বাঁদের জিনিয় নিলেন আর একদল; নিরেই হেণ: হোং হাসি। বাঁদের জিনিয় নিলেন থাতা। বদলানের বেই, ধরাটি পড়াও সেই, ফিরিয়ে দেওয়াটিও সেই; আর তারপরেই হোং হোং হোং হাসির রোল। একথানা বিলাস বটে হাসিয়, ভারপরেই আবার বিলাসভবা আলভা!

ঐ বে, ঐ দেখ, ও চ্বি করেছে ওর পাঁচনবাড়ি। ছি: ছি:, ঐ দেখ, ও ছিনিয়ে নিয়েছে ওর বেণু। নিয়েছে, চ্বি করে নিয়েছে শিডা, গলা থেকে সবিয়ে ফেলেছে গুলামালা! হা: হা: হো: হো:, এঁব কাছ থেকে নিয়েছেন উনি, ওনার কাছ থেকে তিনি, জার কাছ থেকে ঐ উনি; এ বে একেবাবে চ্বির মোছেব। কি মঙা বে কি মঙা, যাব বেটি হারাল, তার হাতেই বে ফিবে আসছে সেটি। হো: হো:।

্ ৩৬। এইভাবে থেলতে থেলতে কিছুদ্র এগিরে বেতেই তাঁদের সামনে পড়ল এক গোচারণ ভূমি। নবীন তৃণাঙ্গ্রের পর্যান্তি দেবে বাছুরদের কী চারপেরে আনক্ষ! তৃত্তির থাওরা থেরে বধন তারা বিশ্রাম করতে বসল, তখন ব্রক্তবালকেরা আবার রক্তে উঠলেন মেতে। অভি সুক্ষর দেখে একটি গাছের তলা বেছে নিম্নে নিজের বাক ইত্যাদি সামগ্রী সেধানে ভারা রাধ্যের। তার পরে শ্রীকৃক্ষের সঙ্গে বর্গড় করতে করতে ভাঁকে হাসাতে হংসাডে রচনা করতে লেগে গোলেন থেলা থেকে থেলাক্কর।

নিকটেই একটা ময়ূব নাচছিল, আনন্দে ডাক ছেড়ে। তাই না দেখে তারি নাচের চঙে নাচতে লেগে গেলেন কেউ কে**উ**। দীবির পাতৃড় চুপ করে শীড়িরেছিল এক বড়; ভার অভুকরণ গা কুঁচকিবে বদে পড়লের কেউ কেউ। ব্যাত লাকাচ্ছে জনে; অমনি কতকগুলি বালককে ব্যাতের মত তড়াক তড়াক করে লাকিবে, বাঁপিয়ে পড়তেই হল জলে। আকাশ নিয়ে এদিক ওদিক উড়ে বায় পাগীরা; অমনি তাদের ছায়া-ধ্যাব গেলায় মেতে উঠতেই হল একদলকে।

বঁদের বদে আছে গাছের ডালে। মুখ ভেডিয়ে ভীষণ চেঁচিয়ে সেগুলোচে ভর্ম দেগানোর বেলা খেলেন কেউ কেউ। কেউ আবার ঝোলানো ল্যাক্ত খবে মারেন টান্। বাদরগুলো তড়্তড় করে চড়ে যার গাছের ডগায়। কিছে এবাও কি কেউ কম যান ? এবাও ভড়তড় করে গাছে চড়েন নিমেরে, বাদরের সঙ্গে সমানে মারেন লক্ষ। কেউ গােরে ওঠেন, কেউ নেচে ডঠেন, কেউ আবার হানেন নিবেনের লক্ষ্য করে হিল্ছিপিরে।

ওদিং আবার আর এক থেলার কেট হলেন রাজা, কেউ বা হলেন মহী। একজন হলেন কোটাল, অন্তেরা হলেন সামস্থ। অতঃপর কাউকে হতেই হল চোর। অত্তব চোরটিকে ধরে রাজার কাছে হাজিব করে জুরম্ভিতে কাউকে নিবেদন করতেই হল অপরাধের বিজ্ঞাপনা। বাজা জারা করে দিলেন চোর-শাসনী আজা।

৩৭। তারণর ব্রঞ্জবাগকেরা সকলে মিলে মন্ত্রণা করলেন—
"আছো দেখা বাক, কে বেনী জোরে দৌড়াতে পারে, কুফ না
আমর।?" সকলেই দিলেন দৌড়। প্রীবৃষ্ণও দৌড়লেন বটে, কিছ
একটু বেতে না বেতেই তাঁকে অতিক্রম করে চলে গেলেন
সাধীরা।

৩৮। চারনে, প্রকৃতি বা ব্রহ্মারও অথ্য বিজ্ঞমান বাঁর অপ্রমন্ত জাগৃতি, তাঁকে, সেই হেন শীকৃষ্কেও দৌড়ে হানিরে দিতে গেলেন ব্রজ্বালকের। আশ্চর্যা, চাড়িয়েও গেলেন তাঁকে। কিন্ত আশ্চর্যা ব্যাপার, কিছু দূর গিয়েই তাঁরা দেখতে পেলেন, সভিয়ই কটি বিরাট অভ্যাশ্টর বস্তু। বস্তুটি আর কিছুই নর, মাত্র মৃত্তিমান পাপের মৃত এক অশ্বর, নাম অধাশ্বর।

্ এই অবাস্থান কৰী (প্তনা) ও বকাস্থবের সহোদর। বক-বকী চ্ছানেই ইতঃপূর্বে বমালরে সিরেছিলেন, তাই অসীম হরে উঠেছিল অবাস্থবের কোষ এবং শোক। হালবের সমস্ত অ'গ্রহ ও আবেগ নিয়ে ভাই তিনি এতকাল কামনা করেছিলেন বৈশ্বভিদ। ক্রুরমতি অভিপামর সেই অবাস্থার আজ নিঃশন্তে কিন্তা আবির্তাবে ক্লুকরে বাড়ালের অজ্বালকদের পোচারণ-পথ। পৃথিধী চুঁরে বইল

তাঁর ঠোটের নীচের পাটি এবং উদ্ধে মহাকাশ ছুঁরে রইল তাঁ; উর্লুলমন্তকের উপর পাটি। বেন চরাচর প্রাস করতে চার একচি বিপুল হা। ভীত হয়ে উঠকেন অন্ধাদি দেবপণ। এই অনুদ্র আবিদ্ধারে বিশ্বয়-বাচাল হলেন অন্ধানকেয়া—

৩৯। "আবে, এতো এক বিভিত্ত গি িগাইবব দেখা যাছেবে ভাই। দেখ নেগ, চোপ মেলে দেখ; মনের ভূস, চোথের ভূস, সব ভূসগুলাকে ছেঁটে ফেলে দেখ। • • • পৃথিবীতে কিনি এমর বহনেছেন বিনি এই গহরুটার শোভা আর বন্ধ দেখে না মন্তবেন? • • • দেখেছিস্ ভাই, এটি বেন একটি মহাদর্শ, বিরাট আলভে মুখ হাঁ করে বেন বদে বয়েছে।"

৪০। সন্তিটি ভো, সর্পাণ্ড ব্রীর মতই তো দেখাছে এই সিরিদরীয় শৃক্তলি। ভয়ও পাছে, আনক্ষও হছে। সন্তিট বেন-সাপের দোলি কিড আমাদের ভরগুলোকে নেমন্তর করে ডাকছে। গুলার বাইরে বেরিয়ে এসে নিশ্চয় একজোড়া বোজন-লক্তা কুর কুর করে বাতাদে কাঁপছে।

৪১। মহাসপের বিষের ক্লেকের মত এই গুহাটা থেকেও ছুটে বেরিয়ে আসছে নানান ধাতৃর কণা। বুরুলে হে, মহাসপের তালুতে থাকে অতিভয়, শোক আর বিকার; এই গুহার উপর দিকটাতেও দেগছি, ছড়ানো রয়েছে কুরুবিদ্ধালার বিলাস। দেখিস্ ভাই, মহাসপের কুংদিত ধমনীর মত ঐ লভাওলো গর্তের দিকে ভোদের না টেনে নিয়ে বায়।

৪২। বটেই তো, বটেই তো. সাপের মাথার তপাশে থাকে বেমন তু-তুটো স্থানর চোগ, এই গুহাটারও তুপাশে রয়েছে তেমনি তু-তুটো বড় বড় কমলবাগা-মণি। সাপের নিঃখাসের মত এই দরীটাতেও বইছে উপ্রন-ওপ্ডানো প্রথম প্রন; বিবানশের ধ্নশোভার মত এতেও উঠতে ম্রক্তমণির আভা। গুহার মাথাটাও কি ঠিক কণার মতনই দেখতে ?

৪৩। তাগলে ভাই সব, এখন এন; এই শুহার মধ্যে আমরা প্রবেশ কবি। গহবর দেখে আর কে সরছে বল ভবে ?

মন: স্থির করলেন বটে সকলে, কিছু প্রক্ষণেই জাবার কেমন বেন তাঁদের সকলেরি বৃদ্ধিনে বাটি কালিয়ে সেলেন সলেহে জার শহার। শেবে স্থির করলেন—

দিতিটে বদি এটা প্রবল প্রতাপ দর্গট হর : ভাইলে : গ তাহলে আর কি ? তাহলে ভাই দব, আমাদের অভিনাম প্রিয়-দথা এটিকে নির্ঘাং মেরে ফেলবেন : বকাম্ররের মত। আর উর্বার করবেন আমাদেরও। অভ কারোর দাধ্য নেই অমন ব্যাপার দামলানো ।

এই বলে সকলে মিলে তথন তড়তড় করে সাপ-ভাড়ানোর ভিলিতে তালি বাজাতে লাগলেন হাতে। প্রীভগবানে ভাঁদের সম্পূর্ণ বিশাস, একান্ত ভাঁদের আশবভাঙা। কই প্রীকৃষ্ণ ভোঁ ভাঁর স্থগান মুখ্যানির একটি চাক্ষ চাউনি দিয়েও তাঁদের নিবেধ করছেন না। ব্যাস্, তালির করতাল বাজাতে বাজাতে তখন দেবতনর সকলে ব্রজগোপালের। প্রবেশ করলেন অবাস্থরের আনন-বিবরে।

फित्तव भव फिल প्रणिफिल ...





বিখ্যাত সাংবাদিক পদ্মিনীমোহন নিয়োগীকে লেখা বিশিষ্ট ব্যক্তিদের অপ্রকাশিত পত্রাবলী

ি রাষ্ট্রগুক্ত স্থরেক্সনাথ পরিচালিত "বেঙ্গলী" পত্রিকার সহ-সম্পাদকরূপে পদ্মিনীমোহন নিয়োগী বাঙলার অগ্নিযুগে যথেষ্ট স্থনাম অঞ্জন করেছিলেন। এঁর সাংবাদিক খ্যাতি সর্বজনস্থীকৃত। বাঙলার বহু জ্ঞানী-গুণী ও নেতৃস্থানীয় পুক্ষের ঘনিষ্ঠ সংস্পর্শে ইনি আংসন এবং তাঁদের সংজ্ঞ এঁর পত্র বিনিময় হয়। এই অসংখ্য অঞ্জ্ঞাশিত পত্রের মধ্যে কয়েকখানি মাত্র এখানে প্রকাশ করা হল। ১৯৫৪ সালের ১২ই মার্চ পদ্মিনীমোহন প্রলোকগমন করেন। পত্রগুলি শ্রীমতী সাধনা নিয়োগীর সৌজ্জে প্রাপ্ত।—স:

রাষ্ট্রগুরু স্থরেন্দ্রনাথের পত্র

मि 'বেঙ্গলী' [স্থাপিত ১৮৫৯] টেলিফোন নং ৯৩৭ ১২৬, বছবাজার খ্রীট কলিকাতা ১২৮৮১৯১৬

প্রিয় পল্লিনী বাবু,

আমি আপনার পত্র পাইরাছি। আপনি যে নবাবজাদার 'অন্তত:' একটি ভোট আমার জন্ত সংগ্রহ করিয়াছেন, সেজক্ত আপনাকে নিতান্ত আপরিকতার সহিত বকুবাদ জানাইতে ইচ্ছা করি। 'অন্তত:' কথাটি তাৎপর্য্যপূর্ণ। ইহাতে প্রমাণিত হয় যে, আপনি আপনার চেটা এখনও ত্যাগ করেন নাই এবং সম্ভব হইলে উভয় ভোটই আপনি আদায় ক্রিবেন। প্রতিস্থিতিতা জোর হইলে এবং আমি আমার বন্ধুদের যতদ্ব সম্ভব সমর্থন চাই।

আৰা করি আপনি বেশ কুশলেই আছেন। আপনাদের (ভা:) সুবেক্সনাথ ব্যানাজ্জী

পুনক—নবাবজাদা কথন কলিকাতার আসেন, অনুগ্রহপূর্বক জানাইবেন এবং তাঁহার ঠিকানাটাও দিহবন। (স্বা:) এস, এন

আচার্য্য প্রফুল্লচন্দ্র রায়ের পত্র

৯১, আপার সার্কার রোড, কলিকাডা

ব্রিয় নিয়োগী বাবৃ

१ नाव द्यांड, कानकाडा ১৯শে खांत्रहें, ১৯১২

আপনার সাম্প্রহ পত্রের জন্ত অসংখ্য ধক্তবাদ। আমি আপনাকে অকপটভাবে আখাস দিজে চাই বে, আমার বন্ধুদের সম্পর্কে আপনার সম্ভাগর মতামত ও ওভেছার আমি খুব মূল্য দিয়া থাকি। ইংল্যাণ্ডে থাকাকালে আমি কথনও কোন ফটো নিতে দিই নাই বলিলেই চলে। কারণ, এই জিনিসটাকে আমি ভয়ের চোখে দেখিয়া আসিয়াছি। বছর হুই হুয় রামানন্দ চটোপাধ্যায় মহাশয় য়য়পাজি সহ আমার বাড়ীতে আসিয়াছিলেন। 'মডার্শ রিভিমু'-এ তাঁহার ভোলা একটি ছবি প্রকাশিত হয়। উহাই পুন্র জিত করিয়া এই সঙ্গে দেওয়া হইল।

সাংবাদিকতার স্থান্থর কাজটি আপনাকে ছাড়িতে হইয়াছে, সেলব ছংখিত। তবে আমি ভালরকম কানি বে, এই ভিন্ন আপনার উপায় ছিল না।

জাপনার 'জাতীয় এলবামটি' পাওয়ার প্রভ্যাশায় বহিলাম। ইতি— জাপনাদের

(चा:) भि, ति, बांब

মহাত্মা অশ্বিনীকুমার দত্তের পত্র

ভীহরি

শ্রহ্মাম্পদেয়্,

বরিশার **৭ই বৈশাগ**, ১৩১৪

আপনার পত্রখানি কাল পাইয়া আপ্যায়িত হইয়াছি। আনা
শরীর আজকাল বড়ই অস্তম্ব। Diabetes নাড়িয়াছে, ক্ততনা
হর্বল হইয়া পড়িয়াছি। আবার আপনাদিগের সাম্মলনীর দিনেপূর্ব দিনই আমার জ্যাকের মামলার তারিখ। অত্যস্ত তুঃধের সিল্

এবারও ক্ষমা প্রার্থনা করিতে হইতেছে। কি করিব? ইছ্
থাকিলেও আপনাদিগের উৎসবে ধােগ দিতে পারিতেছি না।

আর যে Indian World পাই নাই মৃল্য বাকী কত লিখিলেই ত পাঠাইয়া দিতে পারি। আমি বোধহয় লিখিয়াছিল February মাদে একথানি V. Pতে পাঠাইতে। আ সাধারণত: পত্রিকার মূল্য ঐ মাদে ঐ ভাবে দিয়া থাকি। থাক মূল্য বাকী কত লিখিলে অমুগৃহীত হইব। ইতি— অমুগত (স্বা:) অধিনীকুমার দ

অধ্যক্ষ হেরম্বচন্দ্র মৈত্রের পত্র

৬৫, হারিসন রোড, কলিকা ২২শে ডিসেম্বর, ১৯১৩

প্রিয় পদ্মিনী বাবু,

চলিত মাসের ১লা তারিখে লিখিত আপনার পত্রের উত্তর ^{নিত} গৌণ হইল বলিয়া দয়া করিয়া মার্জ্জনা করিবেন। আমি থু^{বই বা} ছিলাম এবং দেই কারণেই এই বিলম্ব ঘটিয়াছে।

বাবু ভ্রনমোহন হাওলাদার আমার সহিত্ত সাক্ষাং করিয়াছে কথাবার্ত্তার সম্পর্কে আমার বেশ ভাল ধারণাই হইরাছে। বি হুংখের বিষর, আপনি যে পদের জন্ত তাঁহার নাম স্থানি করিরাছেন, সেইটিতে তাঁহাকে নিযুক্ত করিতে পারিব ব'লয়া ম হর না। আমাদের পরিবদ একজন গ্রাজুরেট কিম্বা অনুগ্র শিক্ষাপ্রাপ্ত লোক চাহেন। এখন মিনি লাইব্রেরীর ভারপ্রা সেই ভ্রেলাকের চেয়েও অধিক বোগ্যভাসম্পন্ন একজন লাইব্রেনীই আমাদের দরকার। যদি ভূলনায় নিশ্চিত্তরূপে ভাল না হইক্টেমন কোন লোককে নিয়োগ করার আদে। বাজ্যকতা থাকিবে না

বাৰু শশিভ্যণ বায়কে আমার আন্তরিক শ্রন্ধা নিবেদন করিবেন। তাঁহাকে এই কথা বলিবেন যে, ভবানীপুরে তিনি হথন অস্থ্র ছিলেন, দেই সময় তাঁহাকে দেখিতে যাইতে পারি নাই বলিয়া তিনি যেন আমার ক্ষমা করেন। তাঁহার সহিত্ত দেখা-সাক্ষাৎ করার বিষয় আমি প্রায়ই ভাবিয়াছি, কিছ, কাজের বিশেষ চাপে ইহা করিতে সময় পাই নাই। তিনি কেমন আছেন—জানিবার জক্ত ব্যাকুল ছিলাম। স্থন্থ আছেন জানিতে পারায় আমি থুবই আনন্দিত। ইতি—

আপনাদের (স্বা:) হেরস্বচন্দ্র মৈত্র

স্থার রাজেজনাথ মুখোপাধ্যায়ের পত্র

নং ও ৭ নং ক্লাইভ খ্রীট, কলিকাতা।
 ১৪ই সেপ্টেম্বর, ১৯১০

প্রিয় মহাশয়,

১ই সেপ্টেশ্ববের পত্রে আপনি যে অমুরোধ জানাইরাছেন, ভদমুসারে আমি এই সঙ্গে আপনাকে আমার ছইখানি ফটো এবং হানীয় ছইটি পত্রিকার কাটিং পাঠাইতেছি। কাটিংগুলি হইতে আপনার বইয়ের জন্ম কিছুটা নোট করিয়া নিতে পারিবেন। এই পত্রিকাগুলির তারিব হইতে আমি কলিকাতা বিশ্ববিত্তালয়ের ফেলো (তহপরি উক্ত সংস্থার ফ্যাকাল্টি অফ ইঞ্জিনীয়ারিং-এর অক্সতম সদস্য), শিবনুর ইঞ্জিনীয়ারিং কলেজের একজন গভর্ণর ও ভারতীয় যাছ্বরের (কলিকাতা) অক্যতম অছি নিযুক্ত ইইয়াছি।

আননি যে ফটোথানি পছন্দ করেন, তাহাই কাজে লাগাইতে পারেন। ব্যক্তিগত ভাবে আমি অবগ্য ইহার ভিতর ছোট বে ফটোটি, তাহাই পছন্দ করি। ছু:থের বিষয়, আমার কোন হাফটোন ব্লক নাই। তবে থুব সম্ভব ছুই তিন সপ্তাহের ভিতর আপনাকে আমি একটি দিতে পারিব।

> একান্ত অনুরাগী (স্বা:) আর, এন, মুধা**ক্র্টা**।

वाव अभिनीत्माहन नित्यांशी

' বরাবরে

শাব এডিটর, 'বেঙ্গলী'

দেশনায়ক ভূপেন্দ্রনাথ বস্তুর পত্র

১৪, বলরাম ঘোৰ দ্বীট, কলিকাতা।

২রা জুলাই, ১৯১৭

প্রিয় পদ্মিনী,

তোমার সন্থদর অভিনন্দন পত্রের হক্ত অসংখ্য ধক্তবাদ। কবে পর্ব্যস্ত আমার পক্ষে রওয়ানা হওয়া সম্ভব, আমি নিজেই জানি না। তবে কলিকাতা হইতে ১৫ই আগ্রেইর পূর্বেই যাত্রা করিব। ইতি—

> ভভাকাজ্জী (খা:) ভূপেক্সনাথ বস্থ

ডাঃ স্থার নীলরতন সরকারের পত

৬১, স্থারিসন রোড, কলিকাতা

74-7-7970

প্রিয় পদ্মিনী বাবৃ,

আপনার সাম্গ্রহ পত্রধানি আমার হস্তগত হইরাছে। আমার প্রিয় ভাগ্রের মৃত্যুর কথা বলিতে গেলে এই আঘাত এতই নিদারুপ ও অপ্রত্যাশিত বে সহ্য করা কঠিন। কিছু আমাদের অভিযোগের অবকাশ নাই, সহ্য করাই আমাদের কাজ। আমাদের শোকের মাথেও ঈশ্বরকে ধল্পবাদ, এই শোকও অল্পভাবে তাঁহার করুণা মাত্র। বঙ্গীয় পরিষদের সদক্ত হিসাবে আমার নিয়োগের ব্যাপারে আমির (১) আমার পেশা ও (২) লর্ড কারমাইকেলের কাছে ঋণী। এই মর্য্যাদার আমি কত্তথানি অবোগ্য, সে আমার অজ্ঞানা নয়। কিছু আমার কাছে আমি কাজ করিতে চাই ও শিখিতে চাই। একণে আমার কাছে এইটি আমার শিক্ষার আর একটি ধাপ ছাড়া কিছু নয়। আমি একজন কৃতী ছাত্র হইব কিনা, জানি না। তবে আমি কঠোর শ্রম করিতে চাই। এগন আমার আন্তরিক প্রার্থনা, আমি বেন জামার মাতৃভূমির কোন না কোন কার্য্যে লাগিতে পারি।

আপনাদের

(স্বা:) নীল্বতন স্বকাৰ

বি, কে, রায়চৌধুরীর পত্র

গোরীপুর

>219156

প্রিয় পদ্মিনী বাবু,

ু এইমাত্র আমি আপনার পত্র পাইলাম। আপনি বেঁ আমার জন্ত এতটা বত্র নিয়া থাকেন, সেজক অলেষ ধক্তবাদ। বাবু হেমেন্দ্রনাথ রায় এক হিসাবে জলপাইগুড়ি এটেটে বোগদান করিলেও আমি সরকারী ভাবে অক্তত্র তাঁহার চাকুরী অনুমোদন করিতে পারি না; কিংবা বালিহার এটেটের পরীক্ষিত হিসাব তাঁহার দাখিল করার পূর্বের এই এটেটের সম্পর্ক ছিন্ন করিতে তাঁহাকে অনুমতি দানে আমি অক্ষম। স্থতবাং আমি ঘংখিত বে, ঠিক এই মুহুর্তে আমি আপনার অনুবাধটি বিবেচনা করিতে পারিতেছি না। সে বাহাই হোক: আপনি কুমারের নিকট ও ভূপেনবাবুর নিকট এই সম্পর্কে পত্র লিখিতে পারেন। কুমার খুব শীত্র সাবাদকত্ব প্রাপ্ত হইছে চলিয়াছেন। স্কাহার নিজের নির্বাচনের উপরই আমি বিশ্বেম ভিত্রিক করিব।

এখন আমি অপেকাকৃত ভাল আছি। । ই আগষ্ট কাউন্সিলে: পরবর্ত্তী বৈঠকে বোগদান করিতে পারিব। আপনারা ভাল আছেন এই বিশাস বহিল। ইতি—

> একান্ত আগনার (খা:) বি, কে, রারচৌধুর্ন

পীবৃৰকান্তি ঘোৰের পত্ৰ

দি অনুত্ৰাজাৰ পত্ৰিকা লিঃ

২, আনন্দ চাটাৰ্জী সেন,

বাগবাজাৰ, ক'লকাছা

১১ই কেব্ৰুয়াৰী, ১৯১১

প্রেয় পশ্মিনী বাবু,

হা, আপনার বই-এর জন্ত ঠিক যে সময় প্রয়োজন হুইবে, ভখনই ব্লকটি পাইবেন, পূর্বে নহে। কাম্বণ, বন্ধু-বান্ধবদের মধ্যে বাহারা এইটি চাহিয়া লিখিভেছেন, তাঁহাদের জন্ত আরও কড়ক কপি মুদ্রণ ক্রিতে চাহিভেছি। হাঁ, ব্লকটি ১১৫, আমহার্ভ ফ্লিটছ্ Acme Pressaর বাবু ডিন্ততোর বন্ধব নিকটেই আছে।

হিন্দু স্পি:বচুবেল মাগান্ধিনের একটি সমালোচনা আপনার কাগজে মাহাতে প্রকাশ পার, জনুপ্রচপূর্ণক দেখিবেন কি? কিছুকাল আগে ঐ কাগজের পঞ্চম বর্ষের সম্পূর্ণ সেটখানি এবং জন্ধদিন হয় জামুমারীর একটি সংখ্যা আপনাকে পাঠাইয়াছি।

আপনাদের

(সা:) পীমুবকান্তি ঘোষ

কবি প্রমথনাথ রায়চৌধুরীর পত্র

मन्द्रे शिन, मार्किनिष

2612-125

व्यिय शिवानी,

চলিত মাসের ১ই তারিখে লিখিত তোমার পত্রথানি পাইলাম। জুমি জান ন। বে, আমাদের নৌকাগুলি ভাগাভাগি ইইরা পিরাছে। সব্ল নৌকাটি অথাং পিনিস (Pinnece) নৌকাটি আমার ভাগে পড়িরাছে আর বড় ভাওয়ালটি পড়িরাছে আমার ভাইদের ভাগে। সামসাতা পুকুবে আমার সব্ল নৌকাটির এখন মেরামতী চলিয়াছে। স্থতরাং তোমার কালে উহা আমি দিতে পারিভেছি না এবং তাহার জন্ত হুংথিত। আমার এক পান্সি (Panshi) নৌকো জাছে। তোমার অভিপ্রায় অফুবারী সেইটি আমি তোমার কালে দিতে পারি। যদি ইহাতে তোমার হয়, ভাহা হইলে সম্ভোবে আমার ম্যানেজাবের নিকট একথানি লিপি পাঠাইতে পার। ভাহাতে ঠিক কবে ভোমার নৌকাটি দরকার, সেইটি উল্লেখ কবিও। আমি সম্ভোবে সেইভাবে নিজেশ দিয়া রাখিতেছি।

আমৰা এখানে চেঞ্জে আসিয়াছি এবং আমাদের ভালই কাটিভেছে। আশা ক্ষি, তোমরা ৰেশ স্বস্থ আছে। ইণ্ডি

ভভাৰাজ্যী

(बाः) अवयनाथ वाग्रकीश्री

(সম্বোবের)

সমরেন্দ্রনাথ ঠাকুরের পত্র

১৬ই মে, ১৯১৪ 6, Dwarakanath Tagore's Lane

।विनय निर्वानन

আপনার পত্র পাইয়া অত্যন্ত সুখী হইলাম। আপনি বে হলেটির সন্ধান দিয়াছেন তাহার সহন্ধে আপাতত: আমি কোন কথা দিতে পারিতেছি না, কারণ আমি ছুই একটি ছেলে দেখিরাছি এবং প্র সম্ভবতঃ তাহাদের একজনের সঙ্গে এই বিবাহ হুইবে। বদি কোন কারণে এই বিবাহ না হয় তথন আপুনার এই পাত্রটি সম্বদ্ধে বিবেচনা করিয়া দেখিব—আপুনি গিরীনবাবুকে লিখিতে পারেন বে তাহারা আপুনার এই প্রস্তাব বিবেচনা করিয়া দেখিতেছেন।

আপনি এই বিষয়ে যে কট্ট স্বীকার করিতেছেন, ভাহার জন্ত আমার আন্তরিক কুতজ্ঞতা ও ধল্লবাদ জানিবেন।

> ভবদীয় (স্থা:) জ্ঞীসমরেন্দ্র

সাংবাদিক পৃথীশচন্দ্র রায়ের পত্র

৩৯, ক্রীক রো, কলিকাতা ১৩ই জামুয়ারী, '১৫

প্রেয় পদ্মিনী,

এই মাসের ১০ই তারিখে লেখ। তোমার পত্রখানি গতকল্য সন্ধ্যার আমার হস্তগত হইয়াছে।

ভূমি গত শনিবার কিংবা রবিবার কলিকাতার আসিয়া পৌছাও নাই বলিয়া আমি আর আমার সঙ্গে এখানকার ভোমার বনুরাও খুবই হঃবিত। ভোমার বে পত্রের এখন উত্তর দিতেছি, তাহাতে তুমি নিজে ক্ষেপ আভাগ দিয়াছ, তাহার চেয়েও স্থাবিধান্সনক সর্তে ভোমার জন্ত একটা কাজ দেখিয়া রাখিয়াছিলাম। উহা ছিল মাননীর রায় সীতানাথ বায় বাহাতবের কাউজিল মেকেটাবীর কাজ এবং দেইটি নয় মাসের জন্ম। আমাব কথামত তোমার দিল্লীর পোষাক পরিচ্ছদের জন্ম তিনি পঞ্চাশ টাকা দিতে রাজী-হইয়াছিলেন। ইহা ছাড় তিনি নিজ হইতেই তোমার থাকা ও প্রথম শ্রেণীর গাড়ীলাড়া—সকল খরচ বহনের প্রতিশ্রুতি দেন। তিনি বিশেষ স্বাগ্রহ সহকারে ভোমার প্রতীকা করিতেছিলেন, এমন কি, তাঁছার এক স্থলে বাত্রার নির্দ্ধারিত ভারিথ পর্যান্ত শনিবার হইছে গভ রবিবারে পিছাইয়া লন। কিন্তু তোমার ভারবার্ত্ত। পাওয়ার পর তাঁহার পক্ষে তোমার জন্ম আর অপেক্ষা করা অসম্ভব হইয়া পড়ে। এই মাসে কাউন্সিলের মাত্র একটি বৈঠক ছিল এবং সেইটি গতকল্য হইয়া গিয়াছে। পরবর্তী বৈঠক জাগামী মাসেম ২৩শে তারিখের পুর্বেব হইবে না। এই অবস্থায়—আমার অত্যন্ত তু:থ হইতেছে .বে. তাঁহাকে পুনরায় প্রবোধবাবুকে ডাকিতে হইল। আমার মনে হয়, .এই প্রবোধবাৰুই বায় সীতানাথের সহিত আবার সিমলায় গিয়াছেন। ইহা একটি বেশ অভিপ্ৰেড পদ ছিল এবং তুমি যে ষথেষ্ট কারণ ছাড়াই 🕬 এই স্নৰোগ ছাড়িয়া দিলে, সেজক্ত আমি তু:খিত। ৰাহা হউক, ৰাহা গত হইয়া গিয়াছে, তাহার নিমিত্ত তুঃথ করিয়া লাভ নাই। শামি এই মাত্র আশা করিব শীন্তই আর একটি স্থযোগ আসিবে এবং তুমি সেই স্কৰোগ গ্ৰহণে এইভাবে ইতন্তত করিবে না।

তোমার দ্বীর ভালট যাইতেছে—ইহাতে ক্ষমি সুখী। আদা করি, জামালদার আরও বেশ কিছুদিন থাকিয়া শারীরটা সম্পূর্ণ সুস্থ করিয়া লইতে সমর্থ হইবে।

রার সীতানাথের চাকরিট ডোমার উপযুক্ত হুইবে, আমি এ মনে করি না। তিনি একটুতেই চটিয়া বাইবার লোক আর তাঁহার ভাইপো—যিনি তাঁহাদের যৌথ সম্পত্তির অংশীদার, সব ব্যাপারেই কাহার উপেটা কাজণ ছুইজন মনিব ছুই পথে চলিলে, সেখানে চাকবি
অভিপ্রেত নয়। কাজটি জোগাড় করা সম্ভব হুইলেও আমি তোমাকে
সেইটি গ্রহণ করিতে যাওয়ার পরামর্শ দিতাম না। যতদ্ব মনে হুইতেছে
তাঁহারা একজন অবসংপ্রাপ্ত জেলা-ম্যাজিট্রেটকে নিবেন। ভূমি
আমার আন্তবিক শুভেছা গ্রহণ করিও। ইতি—

ভভাকাজ্ফী (স্বা:) পৃথ্যাশচন্দ্র রার

হেমচক্র নাপের পত্র

Mymensingh 13. 4. 15.

My dear Padmini Babu

আপনার চিঠি কাল পাইরাছি। আজ ১২২ বার টাকা মনিঅর্ডার করিরা আপনার নিকট পাঠাইলাম। বাকী ১০২ব postage stamp এই চিঠির সঙ্গে পাইবেন। আমি আসিবার সমর আমার টেবিলের উপর আপনার Hindusthan Review ও ভাহার মধ্যে summaryটা বাধিয়া আসিয়াছিলাম—মাশা করি পাইরাছেন। নাটুবা বাড়ী চলিয়া গিয়াছে কি? আমার চেয়ার ইত্যাদি বিক্রণ করার জন্ত যে কন্ত আপনি স্বীকার করিয়াছেন, তক্ষম্ভ আপনাকে অন্তরের সহিত ধল্পবাদ।

Yours

Sd/-Hem Chandra Nag

অধ্যক্ষ সুরেন্দ্রনাথ দাশগুপ্তের পত্র

. े **७ ७ १. वह वालाव द्वी**ढे २**था**। ३२

প্ৰিয় পদ্মিনী কাৰু,

বন্ধ দিন হইল আপনাকে একথানি পোষ্ঠ কার্ড লিখিয়াছি, আপনার কলিকাভায় আদার পর আমাদের দেখাদাকাং হয় নাই। আমাদের ছই জনকে হয়ত নীঅ কলিকাভা ছাড়িতে হইবে। সেই কায়ণে একবার যাহাতে আমবা মিলিতে পারি, সেইটি ঠিক রাখুন। একিন ভারবেলা কিংবা ১-৩০টা ও ১০-৩০টার ভিতর কিংবা রাজি ৭-৩০টার, পর এখানে আদিবার স্থযোগ করিতে পারিবেন কি? কখন আদিবেন, অমুগ্রহপূর্কক আমাকে জানাইবেন। আপনার সহিত আমার কয়েকটি বিষয়ে আলাপ আছে।

আপনাদের (স্বা:) স্থরেন দাশগুপ্ত

সকাল ৭ ঘটিকা

জাশা করি, এগানে জাপনি স্থথেই আছেন। জামি জাগামী মঙ্গলবার কি বুধবার রওয়ানা হইয়া বাইতেছি। প্রিয় পদ্মিনী.

নিমলা হইতে হঠাং ভোমার একথানি পত্র আনায় আমি সত্যই বিশিত হইরাছি। বিশ্বরের হইলেও এমন পত্র পাওয়া প্রীতিপ্রদ ও কামা। কলেজ হইতে বাহির হইবার পরই টাঙ্গাইলে বে কতক দিন কাটাইয়াছিলাম, দে দিনগুলি আমার জীবনের আনক্ষময় দিনগুলির জগতন। আমার শ্বতিপটে সেই সকল দিমের কথা আজ স্পাঠ গাঁথা

আছে। সেই সমর ৰাহাদের আমার পড়াইবার স্থানা হইরাছিল, আমার প্রতি তাহাদের আন্তরিক শ্রন্ধার কথা আমি কথনও ভূলিতে পারি না। আর তোমার ও আমার ভিতর ইহা ছাহাও একটি বন্ধন ছিল।

পরিবার ও ছেলেনে: মসহ আমি এখানে আছি। তুমি আমার বাড়ীতে অতিথি হইয়া আাসলে খুবই অনুনন্দিত হইব। একজন গরীবের পক্ষে বতদ্র সম্ভব হয়, সেই পরিমিত আতিথেয়তা তোমাকে প্রদান করা হইবে। দয়া করিয়া অবশু আসিও। কোন কারণে আমি নিজে ষ্টেশনে বাইতে না পারিলেও আমার বাড়ীতে ডোমার লইয়া আসার জন্ম লোকের ব্যবস্থা বাধিব। পত্রোন্ডরে ডোমার বন্ধব্য আনিতে চাই। ইভি—

গুচাকাচ্ছী (স্বা:) এস, এন, দাশগুর

সৈয়দ নবাব আলির পত্র

২৭, ওয়েষ্টন **স্থাট, কলিকাভা**। ১লা এপ্রিল, ১১১৬

ব্ৰেয় পদ্মিনী বাৰু,

আপনার ৩০শে মার্চের পত্র পাইলাম। 'হেরান্ড' অফিস ছইতে
আমি স্থার চার্লাস বেইলি'র টাইপ করা ভাষণ পাইয়াছি। সেইজন্ত
আপনাকে ধন্তবাদ। মনে হুইতেছে ভাষণটি সম্পূর্ণ প্রকাশ পার
নাই।

নাগ মহাশর তাঁহার পত্রে আমি যেন তাঁহার কাগন্তের গ্রাহক হই, সেজস্তু আপনাকে আমায় বিশেষভাবে বলিতে অনুরোধ জানাইয়াছেন। ব্যাপারটি কি রকম. আমি যে একদম গোড়া হইতেই ভাঁহার পত্রিকার গ্রাহক, এই সাবাদটা তিনি রাখেন না। এদিকে কাগজ্বানি পর্যন্ত নির্মিতভাবে ধানবাড়ী যাইতেছে।

আপনাদের (স্বা:) সৈয়দ নবাব আদি

কিশোরীমোহন রায়ের পত্র

Pabna

সোদবপ্রতিমেযু,

74125127

আদা করি ভগবং কুপার আপনি ভাস আছেন। এথানে বিবাবের সভার নিমন্তিত হইরা আমি আনন্দ প্রকাশ প্রসঙ্গে বিনারির সভার নিমন্তিত হইরা আমি আনন্দ প্রকাশ প্রসঙ্গে বিনারির না। অবাদ যদি কুবাজ হয়, তাহার শাসক সম্প্রান্ত বিদ্ধার্থ ও নিরপেক না হন, সে আশ্রেরে বদি জনসাধারণের শান্তিলুগভ না হয়, অজাতির মধ্যে বদি পরস্পার হিংসা বিষেব বিরাশ করে, সাম্প্রদারিক সক্ষীর্ণতা বদি যেমন তেমনি থাকে, তবে সে অংকাজ কি? আপনার নিকট আমাদের এই নিবেদন, এই কথাটি উল্লেখ করিয়া 'বেললীতে' একটু সহাক্সভৃতিস্চক মন্তব্য প্রকাশিত হইলে অন্নৃগ্রীত হইব। স্থাপের বিষয়, পাবনার সকলেই এই নৃতন কথাটিতে সভাত্বিক আসাধারণ আমান্দ প্রকাশ করিয়াছিলেন।

চিবদিনই আমার কার্ব্যের প্রতি আপনাদের স্নেহদৃষ্টি প্রকাশ পাইরাছে, ভাই আপনাকে লিখিলাম। নিবেদনমিতি।

ন্মেহাকাজনী

ঐকিশোরীে। হন বার।

সৈয়েদ হোসেনের পত্র

৭নং দিদারবন্ধ লেন ১২ই নভেম্বর ১৯০৮

প্রিরবরেযু,

সকল দিকে কুশল থাকিলে ইহার ভিতৰ ষাইয়া আপনার সহিত দেখা করা আমাব কর্ত্তব্য ছিল। এক শোচনীয় তুর্ঘটনায় আমার ডান পাথানি জ্বম হুইয়াছে এবং ইহাব ফলে গত তিন সপ্তাহ ধ্রিয়া আমি শ্যাশায়ী বহিয়াছি। আমি এখনও বলিতে গেলে নডাচডা ক্ষিতে পারি না। তবে তুই এক দিনের মধ্যে খোঁড়াইয়া চলিতে পাৰিব বলিয়া আশা বাবি। আমি ষে ভাগ্যের কবলে পড়িয়াছি, ভাহার বিষয় আপনি ভানেন, দেখিতেছি। স্পাপনার অত্যস্ত সন্তর্ম অভিনন্দনপত্তের জন্ত আপুনাকে আন্তরিক ধন্তবাদ। কিন্তু বলিতে বাধা বে. যে স্থয়োগ আমি পাইতেচি, ইহাতে আমার মন আদৌ সায় দের না। ইহার চেয়ে আব কি খাবাপ হইতে পারে। কাজটি জামার পক্ষ কতথানি অগ্রীতিপ্রণ হইবে, তাহা আপনি নিশ্চয ৰুঝিবেন। স্মতরাং আপনার সহামুভৃতি আমি পাইব। কিঙ অদৃষ্টের বিৰুদ্ধে লড়াই দেওয়া চলে না! এবং এক্ষেত্রেও আমার পক্ষে ষত্তই অম্বস্তিকর হউক, সর্বোপরি ঘটনার গতিবেগ অবোধা। তবে আমার ব্যক্তিগত হুর্ভাগ্যের বিষয় জানাইয়া আপনাকে ভারাক্রাস্থ করিব না।

শাবারিক সক্ষমতা ফিরিয়া আসিলেই আপনার সহিত দেখা হইবে এবং সেই সময় আরও আলোচনা করিব। ইতি

> আপনাদের (স্বা:) সৈয়দ হোসেন

পি, এল, গাঙ্গলীর পত্র

ঝিন্দ হাউস সিমলা ডব্লিউ ৬ই অক্টোবর, ১৯০৯

প্রিয় নিয়োগী বাবু,

আপনি আমার এথানে আসিয়া থাকিলে থুবই সুখী হইব। ছুংখের বিষয়, কাজের চাপে আপনাকে আনার জ্ঞ আমি নিজে টেশনে আসাতে পারিব না। ইহাতে আপনি কিছু মনে করিবেন না, এই বিশাস বাথি। পত্রবাহক আপনাকে আমার দীন কুটীরে লাইম আসিতে সাহাব্য করিবে।

আপনার (স্বা:) পি, এল, গাঙ্গুলী

কিশোরীমোহন চৌধুরীর প্ত

বাজসাহী ১-৭-১৬

প্রির পদ্মিনী বাবু.

আপনার সন্থানয় অভিনন্ধন থাণীর জন্ম ধন্তবাদ। ভগবৎ কুপার এই বংসর আমি নির্বাচিত হইয়াছি। সকলের সস্তোধজনক কাজ যাচাতে করিতে পারি, সেইজন্ম তাঁছার নিকটই প্রার্থনা জানাই। কাজের চাপে যথা সময়ে উত্তর দিতে পারি নাই, সে কারণে হুঃথিত। বিলম্ব ঘটিল বলিয়া দয়া করিয়া মার্গ্জনা করিবেন। আবার আপনাকে গল্পবাদ।

> একান্ত শাপনার (স্বা:) কিশোরীমোহন চৌধুরী

সত্যানন্দ বস্থুর পত্র

কলিকাতা ৪ঠা মে, ১৯০১

প্রিয় পঞ্চিনী,

তোমার পত্রগুলির আগে জ্বাব দিতে পারি নাই বলিয়া মার্জ্মনা চাহিতেছি ¹

স্থান্দ্রমাতার হাতে স্থানাটোরিয়ামের নির্ম-কান্ত্র ও সার্টিফিকেট ফর্মটি দিয়াছি।

আদার টাকা পরিশোধের জন্ম তোমাকে ব্যস্ত হুইতে হুইবে না। নিজস্ব দার্জিলি: সংবাদদাতার নিকট 'দি বেঙ্গলী'র দীর্ঘ পত্ত পাওয়া উচিত ছিল। কাগজের 'কলানে' ই<u>হার</u> জ্বন্ত আমি বৃথাই সুক্তিসাম।

আশা করি, খারাপ আবহাওয়ার হাত হইতে তোমরা রেচাই পাইরাছ এবং শুদ্র হিমালয়ের সম্পূর্ণ দুখ্যই দেখা যাইতেছে।

তোমার স্বাস্থ্যোদ্ধতি হইয়াছে, এই বিশ্বাস রাখিলাম। ইতি স্লেহাকাঞ্জী

(স্বা:) সত্যানন্দ বস্থ

আলতাফ আলির পত্র

দাজ্জিলিং ১৩ই অক্টোবর, ১৯১৬

ব্রিয় পদ্মিনী বাবু,

এই মাসের ১১ই তারিখে লিখিত আপনার কার্ডখানি পাইয়া প্রীত হইলাম। আপনি সপরিবারে বগুড়া আসিতেছেন জানিয়া আমার আনন্দ হইরাছে। আমার বিখাস, আপনার নৃতন 'হোম'-এ ঠিকঠাক করিয়া বৃদিতে বেশী সময় লাগিবে না।

শীঘ্র আপনার উদ্ভব পাইতে ইচ্ছা করি।

ভৰদীর (স্বা:) আনতাফ **আ**নি

I don't mind living in a man's world as long as I can be a woman in it.



श्रुक स्मिल्प्स्य इस्तर...

হিমালয় বোকে

শ্রেষ্ঠ

প্রেসাধন



স্থিদ্ধ এবং অগন্ধ হিমালয় বেকে ল্যে আপনার

স্বৰুকে মহণ এবং মোলাগেয় গ্ৰহ্মা, মুখমলের মত হিমালয় বোকে টয়লেট

পাইডার আপনার লাবণ্যর স্বাহারিক নৌদর্য্যকে বাডিয়ে ভোলে।

शिप्तालय खाक स्त्रा अवश्र दियल्टि शाउँडाव





[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতের পৰ] অপরাজিতা ঘোষ

্রকটা বেজে গেল ঢং কবে। নিম্নাদেবী আছ আমার ওপর বিরপ। একফালি চাদের আলো জানালা দিয়ে আমার বুকের ওপর এনে পড়েছে। বলছে যেন ইদারায়, বোজই ত স্মাও, দেখানা আজকে ঘুমিয়ে-পড়া কাতে আমার রূপ কত স্কুন্দর। তোমার মনের পাতায় লেখা হয়ে থাকবে চিরদিন। গর্ব করে বলতে পারবে প্রিয়াকে।

সভ্যি এত সম্পর তুমি । এত স্থপ্পমর । আগে ত কথনও এত ভালো করে তোমাকে দেখিনি । তাই ত তোমাকে নিরে কত কাব্য, কবিতা, গান । কণ্ঠ-আলিজন করে প্রেমিকমুগল সারা রাভ ধরে তোমাকে দেখে, আল আর মেটে না তাদের । তাইত তোমাকে দেখে পাশিয়া ভেকে ওঠে শিষ্ট কাঁহা বলে ।

বাইবে হাওয়া-লাগা পার্কের ঝাউগাছগুলো শন্শন্ করছে। হঠাৎ জেগে-ওঠা ছোট পাথীগুলো কিচির-মিচির করে উঠছে—ভাবছে বোধ হয় ভোর হয়ে এল।

একটু একটু করে চোখের সামনে ভেগে উঠছে দশ বছর আগের দিনগুলো। বেলাদি। হাা বেলাদির কথা।

পার্ড ইয়ারের প্রথম দিন। অনার্স প্লাদ করতে সাত নখর খরে চুকেছি। দেখি, একটি মেয়ে চুপচাপ বসে রয়েছে। জুতোর শব্দ হতেই মেয়েটি পেছন ফিরে ভাকাল। অনেককণ ধরে আমাকে দেখতে লাগল ভাবি ভাবি করে। কি দেখল ওই জানে।

মনে হল মেয়েটি আমার থেকে বড়, দিদির মত। বেশ ছিমছাম চ়েছারা। লক্ষা পেলাম খুব, চোখ নামিয়ে নিলাম ঘণ্টা পড়ল। আর একটি ছেলে এল, অধ্যাপকও এলেন। ক্লাস চলার মধ্যেও দেখি, মেরেটি আমার দিকে মাঝে মাঝে তাকাছে ।

সাবাটা দিন কেমন ধেন একটা অস্বস্তি বোধ ক্রলাম। কেবলই মনে হয়েছে,—কেন মেয়েটা আমার দিকে অমন ভাবে ভাকাচ্ছিল। কোনদিন ওকে পথে-খাটে কোথাও দেখেছি বলেও ত মনে হয় না।

পরের দিন জ্বনাস ক্লাস ছিল প্রথম ঘণ্টায়। একটু জাগে এনেছিলাম। কিছুকণ পরে মেয়েটা এল: ভাকালাম না, একটা বই খুলে পড়ার ভাণ করলাম।

- 4हे त्यान।

লজ্জাজনিত চোখে তাকালাম মেহেটির দিকে।

—ভোমাকে 'তুমি' বৃশ্চি বলে মনে কিছু ক'রোনা কিছু। ভোমার থেকে আমি অনেক বড়। চার বছর আগে আই এ পাশ ক্রেছি। হেদে হেদে বলে গেল মেরেটি।

লজ্জাজনিত কঠে বললাম, আপনি ত আমার দিদির মত।

—হাঁা, আমাকে তুমি দিদি বলেই ডেকো। কি নাম জান তো আমার—বেলা ব্যানাৰ্জ্জি।

আবার বলে বেতে লাগল মেয়েটি, কোন ডিভিশনে পাশ করেছ, কোন কলেজ থেকে পাশ করেছ, বাংলায় অনার্গ নিলে কেন, খ্ব ভালো লাগে বুঝি বাংলা সাহিত্য পড়তে ?

এক টার পর একটা প্রশ্নের উত্তর দিয়ে গেলাম।

বেলাদি আমার দিদিও বন্ধু হয়ে উঠতে লাগল দিনে দিনে।
থমন একদিন এংসছিল, বেলাদি আমাকে দেখতে না পেয়ে থাকতে
পারেনি, আমিও পারিনি ওকে না দেখতে পেয়ে। যেদিন ও না
আসত, মনটা ভীষণ থাবাপ হয়ে থেত। আইকের দিনটা মাটি হয়ে
শেল, গল্প করা হ'ল না।

এক দিন বেলাদিকে হাসতে হাসতে জিজ্ঞাসা করেছিলাম,—আছা বেলাদি, আমাকে তোমার এত ভালো লাগল কি করে, আমাকেই তুমি ভাইরের মর্যাদা দিলে কেন? আমার ভ রূপও নেই, গুণও নেই।

একটা সুদ্দর উত্তর দিয়েছিল বেশ মনে আছে—'এক নক্তরে তোমাকে ভাল লেগে গিয়েছিল। ভাই বলে ডাক্তে ইচ্ছে হয়েছিল। আর কিছু শুনতে চাও?'

তারপর বেলাদির সঙ্গে কত গল্প করেছি, পড়াগুনা নিয়ে কত আলোচনা করেছি, একসজে বেড়িয়েছি।

সেদিন কি একটা কারণে দেড়টার সময় কলেজ ছুটি হয়ে গেল। বেলাদি আমাকে ওদের বাড়ী বাবার জন্ত বিশেয় করে অনুবোধ করল।

वननाम, - आक थाक, अश्रमिन यांव।

— না না, ওদৰ শুনছি না। দেই কৰে থেকে ত বলে আসছ একদিন বাব, একদিন বাব। আজ আর ছাড়ছি না। বেতেই হবে তোমাকে।

—না না, আৰু থাক। বলে কাটিছে দেবাৰ চেষ্টা ক্রলাম।
বোধ হয় বুঝতে পারল আমার মনের ভাব, ভাই অভিমান করে
বলল,—ভাহলে হোমার সঙ্গে আজই আমার সম্বন্ধ ছেল। আর আমাকে বেলাদি বলে ডেকো না। কি আর করব ? বললাম, চল ।

একটু হেদে বলল বেলাদি, গদেশ, ছষ্টু, বোড়াকে কি করে শায়েস্তা করতে হয় জান ?

—কি করে ?

—থাক।

চলতে চলতে বেলাদি বলে বেতে লাগল,— দোমাকে আমি িজের ভাইএর মত ভালবাসি। নিজের একটা ভাইও নেই, বোনও নেই— ভাইত তোমাকে আমার সব ভালবাসাটুকু উজাড় করে দিয়েছি। আরো বলল,— আমাদের এই ভাই-বোনের সম্পর্ক যেন চিরদিন এমনি ভ'বে থাকে, ফাটল যেন না ধরে এতে।

বেলাদির বাবা মার সঙ্গে আলাপ হ'ল। ওঁদের আপনজন হয়ে দেতে বন্ধীদিন লাগল না। প্রায়ই ষেতাম, চূটো মনখোলা গল করে ঘটাকয়েক কাটিয়ে আসভাম, সেই সঙ্গে এক-পেট থেয়ে।

দেখতে দেখতে কলেছ-জীবনের হুটো বছর কেটে গেল। পরীকা হয়ে গেল। বেছান্টও বার হ'ল। আমারা হ'জনেই সেকেণ্ড ক্লাস অনাস পেলাম।

গেদিন বিকেলে কত আনন্দ করে বেড়াতে বেরিয়েছিলাম ত্জনে, কিছু বাড়ী ক্ষিলাম ভারী মন নিয়ে।

গ্রসার ধারে বদেছিলাম। নদীর বুকের ওপর জাহাজগুলো দারি হারে দাঁড়িয়ে রয়েছে।

জাহাজগুলোর দিকে তাকিয়ে বেলাদি বলল,—একদিন হয়ত তুমি ঐ একটা জাহাজে করে সাত্যাগবের পারে চলে যাবে। তোমাকে সি অফ'করতে বাব আমি। ফিবে আসবে মন্তবড় হয়ে, দেদিনও যাব আমি তোমাকে 'ওগুলে কাম'করতে।

বলগাম,—না বেল'দি, অতদ্ব স্থপ্র আমার নেই। তবে এম, এ, পড়ব তু।ম আর আমি একসঙ্গে।

মুখের কথা কেড়ে নিয়ে বেলাদি বলল, এক সঙ্গে না ত কি ? আমগা একসজে বিশ্ববিভালয়ে চুক্বো, একসঙ্গে বেরিয়ে আদব । দ্বধাস্ত কৰে করতে হবে বলত ?

—অত ব্যস্ত হচ্ছ কেন। অনাস বিখন পেরেছি, সীট নিশ্চয়ই মিলবে। আমি না পাই, ভূমি ত নিশ্চয়ই পাবে!

এই রকম কন্ত ভালো-লাগা টুকরো টুকরো কথাবার্তা হ'ল।

একটু ঠাটা করে বেলাদিকে বললাম,—তোমাকে যে গাবে, তার কত জন্মের পুণোর ফলে, একথা মানতেই হবে। এত গুল, এত কণ—তোমাকে সে মাধার করে রাথবে।

হঠাং যেন বড় গন্তীর হয়ে গেল বেলাদি। গন্তীরভাবেই বলল, বিয়ে আমার হবে না।

—কেন ?

কোন উত্তর নেই, চোথত্টো ওর চলে গিয়েছে ভাহাজগুলোর গোর। নিজেরই একটু কেমন জানি লাগল। বেলাদিনে ত ক্ষরত এরকম গান্তীর হতে দেখিনি। মনে হ'ল কথাটা বলে জ্ঞার করে ফেলেছি। কাটিয়ে নেবার জ্ঞাত হেসে বললাম, একটা সামাল গান্তীও ব্যুতে পার না বেলানি? ভাইএর কি দিদির সঙ্গে একটু গিটা করারও অধিকার নেই ?

হঠাং আমার দিকে দৃষ্টি নিক্ষিপ্ত হ'ল। থানিককণ ভাকিয়ে ^{ধাকল} আমার মূপেব দিকে। ভারপর গভীর কঠে থেনে থেনে বলল,—এতদিন কেবল ঠাটাই কবে এগেছি ভোমাব সঙ্গে—আছ একটু আমার ভেতবের কথা শোন। ক উকে কোনদিন বলিনি, আজ ভোমাকে বলছি। শুনে হংত একটু ছংখ পেতে পার এই অভাসী বেলাদির জন্ম।

বেটা দির মনে আবার ছাখ আছে নাকি ? সৈব সময়েই ত হাসে, কত ঠাটা ইয়াকি করে আমার সঙ্গে। বাপের একমাত্র মের। কোনদিন অভাব কাকে বলে জানে না, তার আবার তাথ আছে নাকি ? কিজানি হয়ত থাকতেও পারে। অর্থপূর্ণ দৃষ্টিতে তাকাদাম ওর মুথের দিকে।

বেলাদি যেন একটু চেপে চেপে বলল,—আমার স্বামী ছিল, আমি বিবাহিতা।

— কি ষা তা বলছ তুমি ?

—গ্রা, ঠিকই বলছে ভোমার বেলাদি। তথু ভনে যাও।

বোমার ভরে বে যেথানে পারে পালাচ্ছে কলকাতা ছেড়ে, থাবাও আমাকে পাঠিয়ে দিলেন আমার এক ঠাকুমার কাছে।

মাছের ঝোল দিরে ভাত মেথেছি, ঠাকুমা হঠাৎ জিজ্ঞেস করলেন,
—-গাঁরে বেলা, তুই মাছ খাস্ ? শাড়ীটারী না হয় পবিস্ছেলেমামূর বলে, তাই বলে মাছ মাংস গাস ?

—কেন ঠাকুমা, অবাক হয়ে জিজ্ঞেদ স্বলাম।

— जुड़े ना विश्वा — ?

চমকিয়ে উঠলাম কথাটা গুনে। আমি বি-ধ-বা। আমার বামী ছিল!

—চমকিয়ে উঠাল কেন? কেন, তুই এসব কিছু জানতিস না? কাকর কাতে কখনও শুনিসনি?

অবাক হয়ে তাকিয়ে থাকলাম ঠাকুমার মুখের দিকে। কিছুই ব্যতে পারছি না। ঠাকুমা বলে যেতে লগালেন, ভোর ওপরে, ভোর আহো তিন বোন ছিল। সব কটারই পাঁচ বছর আর পেরোলো না। পাঁচে পড়ল কি স্বকটা ট্পাইপ মরে গেল। ভোর ওপ্রেরটা, যথন, মরে গেল তথন ভূই তিন বছরের মেয়ে। ভোরের বাড়ীর স্বাই থ্ব চিস্তিত হয়ে পড়ল।

সেই সময়ে তোদের ওথানে এক সাধু এসেছিলেন, তোদের বাড়ীর কাছেই তাঁর ডেরা দিল। আমি তথন ডোদের ওথানে ছিলাম। আমার দিদি মানে তোর বাবার মা কেঁদে পড়লেন সেই সাধুর পারে। সেই সাধু অনেককিছু বলতে পারতেন। দিদির কথা ওনে লাধু বললেন, তোদের বাড়ীতে একটা অভিশাপ আছে। পাঁচ বছবের বেশী কোন মেরে বাঁচবে না তোদের বাণো এই মেরেটাকে যদি বাঁচাতে চাস ত পাঁচ বছর বরস হবার আগে এর বিরেদিরে দে। বে কোন বর হলেই চলবে।

তোর বিষের জক্ষ উঠেপড়ে সেগে গেলেন তোর ঠাকুমা আরু তোব দাহ। সারা গা খুঁজনেন তোর দাহ, পাত্র একটাও মিলল না। শেবে এক বুড়ো বিরে করতে চাইল পণের লোভে। অপতা। তোর দাহ সেই বুড়োর সঙ্গে তোর বিষের ব্যবস্থা করলেন। তোর বাপ মা আপত্তি করেছিল কিছ তোর দাহু ঠাকুমার কাছে তাদের আপতি টিকলো না। আমারও মনটা খচ্ খচ্ করছিল।

বিয়ে হয়ে গেল ভোর ঢেই ঘাটের মড়ার সঙ্গে। জানিস্ আমার কোলে বদে ভোর বিয়ে হয়েছিল; ভোকে আমিই সাজিয়ে দিয়েছিলাম। বছর ঘ্রতে না ঘ্রতে একদিন খবর এক, ভোরে সামী মরেছে সাপের কামড়ে। ভোর হাতের নোয়া আর সিঁথির সিঁপ্র মুছে গেল জন্মের মত। ভবে একটা লাভ হ'ল, ভূই বাঁচলি।

তোর বাবা রলল, মেয়ে বড় হলে আমি আবার ওর বিয়ে দেব।
এটুকু মেয়ে বিষৈয় কি বোমে। গোটা জীবন ওকে আমি বিংবা
থাকতে দেব না। আমরা ত তোর বাবার কথা শুনে কালে আঙ্ল দিলাম। ভি, ভি, কি কেলেকারী কাশু। বাপ হয়ে মেয়ের আবার
বিয়ে দেবে, হিন্দুলাল্লে কেউ কথনও দেখেছে, না শুনেছে!

কদিন পরে ভোর বাবা ভোর মাকে আর ভোকে নিরে কলকাতা চলে গেল, নিজের চাকুরীস্থলে ।

পরে শুনে ছিলাম, তুই নাকি শাংী গ্রনা প'বে পায়ে ছিত্তো লাগিয়ে গট গট করে ইস্কুল কলেজে বাস্। তানা হয় হ'ল, ছোট মেয়ে শাড়ী গ্রনা পরে, কিন্তু ভাগ বলে তোর মা বাবা তোকে মাছ মাংল থেতে দেয় ? ছি, ছি, কি যেয়া। কালে কালে কত দেখব!

একটু খামল বেলাদি, বোধহর ধরা গলাটাকে একটু সাফ করে নিতে। আবার বলে চলল, পরদিনই আমি সোজা বাবার কাছে চলে এলাম। ঠাকুমার কাছে বা বা শুনেছি সব বললাম মাকে। মা আমাকে শাস্ত করতে চাইলেন। বললেন, ছি: ওর জক্ত আবার মন খারাপ করে? ওটাত একটা ছেলে-খেলা। কোন কালে কি ঘটেছে—ধত সব অনাস্টি। বিয়ে বললেই বিয়ে হরে গেল? একটা ছোট শিশু, কি জানে সে বিরের? আমি এ বিরে মানি না। বেশ জোর গলার মা বললেন।

আমিও সঙ্গে সংস্প বলপাম,—না মা, আমিও এ বিরে মানি না। কিছু ব্রলাম না, জানলাম না—ভিন বছরের ছোট মেয়ে, বিয়ে ছয়ে গেল আমার এক বুড়োর সঙ্গে! এসব সেকালে ছিল, এখন আর নেই!

এর একটা কারণও ছিল, বুঝলে খলে। তোমার কাছে আমি
কিছুই লুকোবো না, আজ উজাড় করে সব বলে বাব। আমি
তথন ভালবাসতাম একটি ছেলেকে, নাম সুজিত। একরকম
তার আমি বাগ্দভাই ছিলাম। কিছু পরে সেই ছেলেটি আমাকে
যে চথম প্রতিদান দিল, ইতর না হলে কেউ পাবে না এইবক্ম
করতে।

আছা, প্ৰথম থেকে ফলে যাই, তা হলে সৰ ৰুষতে পাৰৰে। একটু ধামল বেলাদি বোধ হয় ভেবে নিতে!

আৰু আমার ধারণা পালটিয়ে গেল। এছদিন বুক্তে পারিনি, কত ত্বংথ এই মেয়েটির ভেতরে শুকিয়ে আছে। কি করে পারতে তুমি হেসে থেলে কাটাতে, একদিনও ত ভোমাকে গস্থার হ'তে দেখিনি।

ু আবার বেলাদি ক্ষক করল,—তথন আমার বয়স বছর বারো বোধ সর, একদিন দেখলাম একটা ছেলে বাবার কাছে এল, একেবারে ভিথিবীর মত চেহারা। শুনলাম ছেলেটা বাবাদের দেশের। বাপ মা কেউ নেই। দেশ থেকে বাবার কাছে এদেছে একটা চাকরীর আশার। ছেলেটিকে দেবে বাবার একটু ত্থে হ'ল। এইটুকু ছেলে চাকরী করবে? কি চাকরীই বা পাবে, বড় জ্বোর একটা পিকনের চাকরী।

বাবা ওকে চাকরী করতে দিলেন না, আহাদের বাড়ীতে থেকে

পড়াগুনা করবার ব্যবস্থা করকেন। ছেলেটা অভাস্থ লাজুক প্রকৃতির, গাঁরের ছেলে বেমন হয়— দাধারণভঃ। ভবে লেখাপড়ায় খুব ভালো।

বাধার জন্মই ও আজ এতবড় হয়েছে; দিলীতে বেশ বড় অফিসর হরেছে, ভালো কোয়াটার পেয়েছে, গুদিন বাদে হয়ত গাড়ীও কিনতে পারে। ভাবি, বাবা বদি না থাকতেন, ও বেশিয়া তলিয়ে বেত। বেশ লাগত ছেলেটাকে তথন, ওর কাছে মাঝে মাঝে পড়া বুঝে নিতে যেতাম। তারপর ত বুঝতেই পারছ, যা হয়ে থাকে। ত'জন ত'জনকে ভালবেদে ফেললাম।

বাবারও পছন্দ হয়েছিল মুজিতকে, ঠিক কবেছিলেন ওর সঙ্গে আমার বিয়ে দিবেন।

এম-এ পাশ করে স্বঞ্জিত দিল্লীতে ভাল চাকরী পেল।
বাবার সময়ে বলে গেল ছুটিতে আদবে, চিঠি দেবে। তবে অবশ্র প্রথম প্রথম কথা বেথেছিল। সত্যি কথা বলতে কি, ও বেদিন চলে গেল, বাড়ীর সবাই আমরা কেঁদেছিলাম, স্কৃতিতও বাবার সরয়ে ক্রমাল দিয়ে চোথ মুছেছিল। বাবা মার ছঃগটা খুব বেশী চয়েছিল। হবারই ত কথা, নিজেদের কোন ছেলে ছিল না, ওকে নিজের ছেলের মত করে এত বড়টা করলেন।

দিনে দিনে স্থাজিতের পরিবর্ত্তন লক্ষ্য করতে লাগলাম।
চিঠিপত্র একেবারে কমে আগতে লাগল, ছুটিছেও আর আদে না।
চিঠি দিলে উত্তর পেতাম না।

তারপর একদিন চরম পরীক্ষা হয়ে গেল আমার, নিজের জীবনের সঙ্গে। অতটা ভাবতে পারি নি। এখন মনে হর ধর্ম না মেনে বোধ হয় ভূলই করেছি—চরম ভূল। হিন্দু ধর্মের বা শাখত তাকে বিদ মেনে নিতাম, বৈধব্যকে বিদ জীবনের সঙ্গা করে নিতাম, হয়ত খতটা আঘাত পেতাম না। সেদিন সাকুমার কথাগুলো সুত্ত করতে না পেরে পরের দিনই কিরে গিয়েছিলাম কলকাভার, কিছ এগানে পালিয়ে গিয়েও বাঁচতে পারি নি। স্থাজত আমাকে না ডাকলেও ত পারত, রাজার মাঝে আমাকে এমনভাবে অপমান করল! সত্যি, ভোমরা বড় নেমকহারাম।

যাছিংগাম এক বিদ্বুর বাড়ী শ্রামধানারের দিকে। ধর্মতলার ট্রামধ্ববার জক্ত দাঁড়িয়ে আছি। হঠাং পেছন থেকে কে বেন ডেকে উঠল, বেলা—া ঘ্রে তাকিয়ে দেখি স্বজ্ঞিত, এক গাল হেসে আমার দিকে এগিয়ে আসছে। তার সঙ্গে একটা অবাঙ্গালী মেয়ে। প্রথমটা বৃধতে পারিনি, পরে স্বজ্ঞিতের সঙ্গে কথাবার্তার বৃধলাম ঐ মেয়েটি স্বজিতের স্ত্রী।

সমস্ত শ্রীরটা কি রকম করে উঠল, মনে হল সমস্ত মাটিটা কাপছে, এফুনি পড়ে বাব। কোন রকমে টলতে টলতে সামনের টামটার উঠে পড়লাম, টালিগঞ্জ বাচ্ছে ট্রামটা। ফিরে গেলাম বাড়ীতে। সব শুনে বাবা বললেন,— জানতাম। আক্রের অগ্নটা এই রকমই, বাকে যত করবে, সে ভেজই এমনি করে প্রতিণান করে।

আমার মনটা সেই বে স্থান্ধিত ভেঙ্গে দিয়ে গেল, আজও জোড়া লাগল না, লাগবেও না বোধ হয় কোনদিনও। আমারই ভূল, চরম ভূল করেছি।

বেলাদির শ্বর ভারী হয়ে গিয়েছে, চোথ দিয়ে জল গড়িরে পড়ছে।

রাস্তার লাইটের অ¹লোয় গাল ছটো চিক চিক করছে । মনটা ভীবণ খারাপ হরে গিরেছিল। কত মেরের জীবনে এই বকম হয়, আমরা ক'জনের খবর রাখি।

স্বাত হরে গিয়েছিল, উঠে পড়লাস। আরো থানিককণ চয়ত বসতে পারতাম, বেলারি আরো হয়ত কত কি বলে বেড, কিছ কি লাড? আরো লোনা মানেই বেলারির মনে আরো হুংথের প্রজেপ লাগান। পথে হুঁজনে একটিও কথা বললাম না, বলবার মত মনও ছিল না। তথু বিলারের সমরে বললাম, আছে। চলি বেলারি। উত্তর এল, এস ভাই। তারপর সিঁড়ি নিয়ে তবু তবু করে ওপরে উঠে গেলবেলারি।

বাড়ী ফিবলাম তথন ন'টা বেজে গিয়েছে।

সেই আমার শেষ দেখা বেলাদির সঙ্গে, আর আজ দশ বছর পরে দেখা। ধেন একটা যুগ পেরিয়ে গিয়েছে। তবে এই দশ বছরের মধ্যে ভূলতে পাথিনি বেলাদিকে একটা দিনের জন্তও। মনে হয়েছে ছুটে চলে বাই, কিন্তু পারিনি, পারিনি কজ্জায়। লজ্জাই আমার পথ রোধ করে দাঁড়িয়েছিল।

এম-এ পড়া আৰ আমাৰ হ'ল না। কত স্বপ্ন দেখেছিলাম, কোধার সব মিলিয়ে গেল। ছিটকিয়ে গেলাম কচ সংসাৰের চাপে। একটা কেবাণীর পদে বহাল হলাম। ফাইল নিয়ে চৃ:কছি সুপারিকেতেনের চেবারে। দেখলাম একজন বৃদ্ধ গোছের ভহলোক থুব গল্প করছেন সুপারের সঙ্গে। তাঁদের কথাবার্ডার সংহাধন পদ 'তুই' করে। মি: সেন আমার সঙ্গে পরিচয় করিবে দিলেন। বললেন, আমার বন্ধু, একসঙ্গে আমরা বি-এ পাল করেছি। এর নাম অবনা বাড্ডুডেজ্যা, গেজেটেড অফিসার ছিলেন, অবসর নিয়েছেন।

তাকালাম ভপ্রলোকের দিকে, খুব থেন চেনা চেনা মনে হছেছ।
ভদ্রেকের দেখি আমার দিকে ভাকিয়ে রুসেছেন। হঠাৎ বললেন,
ভোনার নাম স্থাদশ না । আমার মেষে বেলাব সঙ্গে ভূমি
পড়তে না ।

• আমার অনুমান সভা হয়ে গেল। অবনীবাবু আপনি ? ঠিক চিনতে পেরেছি। বেলাদি এখন কোধায়, বিষে টিয়ে হয়ে গেছে বোধ হয় এভদিনে। তারপর আপনি কেমন আছেন ? এক নিঃখাদে বলে গেলাম কথ গুলো।

ষ্থনীবাবু বললেন, এতদিন কোখায় ছিলে । বেলা তোমাকে দারা কলকাতা খুঁজে বেড়িয়েছে, তোমার পোন পান্তা নেই। বললে হয়ত বিখাদ করবে ন', মা আধার কেঁলেও ছিল পর্যান্ত তোমার জন্ম। কল্যাণীতে বাড়া কিনেছি, বেলা তথানকাব স্কুপের টিগার হয়েছে। করে বাছে বল।



"এমন স্থন্দর গহন। কোপায় গড়ালে ?"
"আমার সব গহন। মুখার্জী জুমেলাস দিয়াছেন। প্রত্যেক জিনিষটিই, ভাই, মনের মত হয়েছে,—এসেও পৌছেছে ঠিক সময়। এঁদের ক্ষচিজ্ঞান, সততা ও দায়িন্তবোধে আম্বা সবাই খুসী হয়েছি।"



्मिन त्यातात भरता तिसीला ७ इष्ट : ख्रेस्क्री बहुवाकात भारकी, क्**निकाला-५**२

টেলিফোন : ৩৪-৪৮১০



--- हैं।, यांव এक निन । निन्ध्य है यांव व्यापनारन्त उथारन ।

— একদিন গুদিন বৃঝি না, কবে যাবে ঠিক করে বল। বেলাকে ভোমার কথা বলবো, তার হারানো জিনিব খুঁজে পেরেছি। জানো, এখনও বেলা ভোমার কথা বলে।

অনেক কথা হ'ল অবনীবাবুর সক্ষে। বাধার সময়ে, কল্যাণীতে আসবার ভক্ত বার বার করে বলে গেলেন।

দেখলাম, কত বদলিয়ে গিয়েছেন অবনীবাবু। মনের দিক থেকে নৱ, চেহাবার দিক থেকে।

ছ'দিন পরে বেলাদির একথানা পামভবি চিঠি এল। অনেক কথা লিখেছে, পুনশ্চ: দিয়ে লিগেছে, 'করে আসছো'। এরপরে আরো অনেক চিঠি এদেছিল। প্রত্যুক চিঠিরই বড় কথা হ'ল, 'করে আসছো'। প্রত্যুক্তীরই উত্তর দিয়েছি, 'নীগ্রির যাছিং' বলে। প্রায় একটা বছর কেটে গেল, এখনও গেলাম না। বেতে ভীবল ইচ্ছে করছে, কিছু পার্ছি না। সেই লজ্জাটা আবার যেন আমার পথ রোধ করে দিড়াছে। তাছাড়া কাজের চাপে সময়ও আর হয়ে উঠিছিল না।

এবার বেলাদির একখানা ভীবণ কড়া চিঠি এল। খুব অভিযান কবে লিখেছে। লিখেছে 'এটাই আমাব শেষ চিঠি।'

আর ত বেলাদিকে এড়িরে চলা যাবে না । এবার ওর সামনে দাঁড়াভেই হবে। চিঠি দিয়ে আর শাস্ত করা যাবে না ওকে। দশ বছর পরেও আমাকে ভূলতে পারেনি, কত আপন করে চিঠিকলো লিখেছে, তাকে মিথ্যে আশা দিয়ে কি লাভ ? লজ্জা কাটিয়েও তার সামনে আমাকে দাঁড়াতেই হবে।

মাস থানেকের ছুটি নিয়ে ট্রেনে চেপে বসলাম। পকেটি ডিবেকসন দেওয়া বেলাদির চিঠিটা নিতে ভুলি নি।

থেয়াল হ'ল, ঘট্নুটে অন্ধকার চারিদিক। তাকিয়ে দেখি চাদ কথন চলে গিয়েছে আমাকে ছেছে। ছোট পাথীগুলো কিচির মিচির করছে ভোবের ইঙ্গিত পেয়ে বোধ হয়—1

যুমে চোথ জু'ড় আনেছিল। পাশ কিবে ভালাম। কথন যুমিয়ে পড়েছিলাম জানি না।

দরজা ধারুনারে শব্দে হয় ভেঙ্গে গেল। গ্রমণ্ড করে উঠে বসলাম। চারিদিকে রোদ এট এট করছে, অনেক বেলা হয়ে গিরেছে। দরজা খুলেই দেখি বেলাদি দাঁড়িয়ে। মুচ্কি হেসে বলল, যাও, আর একটু গ্মাও গে। এখনও স্কাল হয়্মনি। বাবলাং কি ঘ্যোতেই না পার!

মাষ্টার মশায় আশা দেবী

মাইনৰ মশায়েৰ বিদায়ী-সভানি গৰু জোবই হয়েছিল—একথা
সবাই-ই একবানের ছাঁকাৰ কৰলো। তথু যাকে উপলক্ষ কৰে এছ আয়োজন, সেই মাইনৰ মশায় নীবৰে নিজীবেৰ মাত বলে বইলেন যেন শেকড় ছাঁড়া গাছ। মাথাটা চেয়াৰ থেকে চলে পড়েছে—নাক থেকে খনে পড়েছে নিকেলেৰ চাঁটে ভালা চশমাটা—— প্ৰচোৱে বাৰা না থাকলে হয়তো কাঁচটা ভেলেই যেত। বন্ধ চোধ-ছটোতে জলেৰ ধাৰা। মাইনৰ মশায় মুৰ্জ্য গেছেন। গলায় তারে সাঁথা খেতপদ্মের মালা, পরনৈ মেরেদের দেওয়া তাঁতের থান ধৃতি। কোলে টকটকে লাল গীতা থানিকটা রক্তের মত জমে আছে—এটি প্রেসিডেন্টের বিদায়ী উপহার। ত্রিশ বছর ধবে স্কুলে কাজ করছেন,—তাঁরট হাতে গড়া স্কুল। তিনি স্কুলের প্রতিষ্ঠাতা—ছাত্রীদের কাছ থেকে এতটুকু দান তিনি নেবেন বৈকি! গুরুদিকিশার চেয়েও এর সঙ্গে যে তাদের সমস্ত হৃদয় মিশে আছে।

কি ষেন একটা করুণ রাগিণী গাইলো একটি মেয়ে। গান থামলে সক হলো প্রেসিডেণ্টের বক্তভা। ছু'বার ইলেকস্নে হারা, বছ ঘাটের জল থাওয়া হরিতোব সমাদার গলা কাঁপিয়ে—নানা ন্তবে তালে—নানা কায়দায় ভাষণ দিলেন। একেত্রে বা-যা বলা দরকার, কোন কথাই তিনি বাদ দিলেন না—"দীর্ঘ ভ্রেশ বছর ধরে অক্লান্ত পরিশ্রম করে শ্রন্থের স্থগীরচন্দ্র দাস মশায় আজ আমাদের মধ্যে থেকে বিদায় নিচ্ছেন। বিত্যালয় এখন ক্রংমান্নতির দিকে-উচ্চ থেকে উচ্চতর গাপে সে এগিয়ে যাচ্ছে—আমরা একে বছমুখী বিক্তালয়ের পর্যায়ে উন্নীত করতে চাই। কাব্রেই নম-মাট্রিক শিক্ষকের আহার এখানে স্থান হবে না। কাজেট আমহা বাধা হয়েট এঁকে অবসর —বশেই প্রেসিডেণ্ট এই বস্থাজনিত গুরুতর পরিশ্রমের জক্তে টেবিলের উপর স্যত্নে পূর্ব্বসঞ্চিত জলের গ্লাস থেকে টক টক করে থানিকটা জল থেয়ে নিলেন। আর এই ফাঁকে স্থূল-কমিটীর মেস্বাররা পটাপট হাততালি দিয়ে নিলেন। জলটা থেয়ে ভিজে-গলাটার একটা খাঁকারি দিয়ে তিনি আবার সুক্ করলেন— অবশ্র চেষ্টা করলে যে রাখা একেবারে যেত না, এমন নর। িছ কি জানেন —বলেই তিনি নিজের হাতের হারের আংটিটা একবার ঘোরালেন— টুইক্ট প্রিন্সিপলের দিক থেকে মেয়েদের বিজ্ঞালয়ে আর পুরুষ টিচার রাখা হবে না—আমি এই নীতিরই পক্ষপাতী ৷ অবগ্র জানি, এখানকার চাকরী ৷ েলে ওঁর বিশেষ কষ্ট হবে। বাড়ীতে ১০।১১ জন থাইয়ে লোক-পাকিস্থানের কল্যাণে আত্মায়-মন্তনেধ অভাব নেই বাডীতে। রোজগারের লোক উনিই একা— চাক্ৰীটা গেলে সে রাস্তাত বন্ধ; ভা সত্তেও আমরা শিকাবিদ্—ভাই নীভির মধ্যাদা সর্বদাই রক্ষা করবো— এই আমাদের আদর্শ--

পটাপট করে হাততালি পড়লো কর্ত্পক্ষের তরফ থেকে। শুধু মেয়েরা বেন আছ্রের মন্ত বদে রইলো—হাততালি দিতে গিয়ে যেন পাধর হয়ে গেছে মাষ্টার মশায়ের ছায়াম্ভিটির দিকে তাকিয়ে। একদিনেই যেন লোকটি একেবারে বদলে গেছেন; একদিনেই যেন তাঁর বয়েস একমুগ পার হয়ে গেছে; তিনি বেন একেবারে অপরিচিত হয়ে গেছেন। এত কাছে তিনি ছিলেন এতদিন, বেন এক য়ৢহূর্তে অনেক—অনেক দ্বের মায়ুষ হয়ে গেছেন তিনি। আজ বছ চেষ্টা করেও তাঁকে কেউ চিনে বের করতে পারবে না।

- : মাষ্টার মশায় !— উঠুন, একটু মিষ্টিমুখ করতে ছবে। একটা মিষ্টিগলার ডাক এলো যেন অনেক দূর থেকে।
- ত্ত্বা । যুম থেকে জেগে উঠলেন স্থীর দাস। আছে র চোথের ভেতর দিয়ে যেন সবটুকু দেখে নিতে চাইলেন, বুঝে নিতে চাইলেন সব বাপারটা। তাবপর একবার শৃক্ত ঘরটার দিকে, আব একবার ছলছলে চোথেব উৎস্কক দৃষ্টিমাথা মেরেদেব দিকে তাকিরে একটু লান হেসে বললেন: তোবা বা, আমি আগছি।

ভেঁড়া ছেঁড়া মেখির ফাঁকে ধেন আলোর ঝিকিমিকি, মন্ত্রার মশায় ক্রতপদে এলেন স্থলের মাঠে। সমস্ত স্থলবাড়ীটাকে তিনি একবার চোথভরে দেখে নিলেন। সমস্ত দৃষ্টির অপূর্ণত। যেন মনে হলো—"ভারি স্থন্ধ তো ভবে খেল এক মুহূর্ত্তে। স্থলটা"-এ খেন এক নৃতন আবিষ্কার, অভিনব উপলব্ধি মাঠার মশায়ের। যারা বিদায়ী সভা উপলক্ষে এসেছিলেন, জারা বক্তৃতা দেবার ত্রুত কর্ত্ত্য সমাধা করে তেডমাষ্টার মশায়ের ঘরে গিয়ে বসেছেন চিরাচরিত নিয়ম মত। তাঁদের কলকঠের বিজয়ী হাসির আওয়াক ভেসে আসতে চারতলা থেকে। হয়তো এতকণ তারা হাসির ফাঁকে ফাঁকে চা---আর রসগোলা থাচ্ছেন ; কিছ কি আশর্ষ, একট্ট আগেও তো এদের গলা ভবা কান্না ছিল-অকুপণ অঞ্চবর্ধণে সভাকে করুণ রুদে ভবে দিয়ে ছিলেন এঁরা—এঁরা কি স্বাই পাকা অভিনেতা ? বুকের ভেতরটা একটা গভীর ব্যথার টন্ টন্ করে উঠলো মাষ্টাৰ মশায়ের। কেন-কেন এমন হয়? কেন এত নিষ্ঠুর হয় এরা ? পাণের ছিটে লাগা পাঞ্চাবীর ছাতে চোথের জল মুছতে গিয়ে চমকে উঠলেন মাষ্টার মশায়। সিঁড়িতে খুট খুট কৰে গোটাকত পারের শব্দ। না-এরা তাঁকে এখনি ধরে নিয়ে ধাবে থাওয়াতে। সরল-পবিত্র ফুলের মত মুথগুলো এদের-পৃথিবীর ক্ষমতা-লোলুপতা এখনও স্পর্শ করেনি মনকে। এখনও কাঁদে এরা অপ্রোজনে—ম্রেছের উৎস বইছে অক্ত:শীলা ফল্লর মত, এরা তো কিছুই বোঝে না ওপর তলার কথা, সূত্রাং আর থাকা চলে না। এদের মুণ দেখলে মন্তার মশার সব ভূলে যান। এথুনি-এথুনি পালাতে হবে এদের হাত থেকে বাঁচবার জব্তে—নইলে এরা থাওয়াবার कत्म कैंक्टिन, थुनै कैंक्टिन ।

রাস্তার ছুটে বেরিয়ে পড়ে মাষ্টার মশার একটা বিক্সায় চড়ে বসলেন। কোলের থেকে পড়ে যাওয়া গীতার উড়ক্ত পাতাগুলো নিচু মাঠের মধ্যে পড়ে পড়ে বনমর্মবের মত ফুঁপিয়ে ফুঁপিরে উঠছিল এলোমেলো তাওয়ায়।

দিয়ার পয়স। মিটিয়ে দিয়ে প্রায় হমড়ি থেতে থেতে ঘরে ঢ্কলেন।

বাড়ীটা আন্ধ থালি মন্তারমশারের। ভারি ভালো লাগলো বাড়ীতে ঢুকেই। অন্তত কিছুক্ষণ একা থাকা বাবে। কিছুক্ষণ নিঃশব্দে কাঁদা বাবে। সমস্ত বাড়ীটা অন্ধকারে তলিয়ে আছে—ভাঁরই অনাগত ভবিব্যতের মত। আন্ধ গিন্নীর বোনের বিয়ে। সকালেই সবাই বেবিরে গেছে। তিনি বাবণ করে ছিলেন। গরীবের আবার আনক্ষ—! গরীবের আবার নেমস্তর থাওয়া! ভারতে গিয়ে হাসি পেল মান্তার মশারের। না: যাকগে ওরা। এই উপলক্ষেত্র ওরা একটু খুসি হবে। কিছু সময়ের জন্তেও এই বিবাস্থ দারিস্রোর দম বন্ধ করা পরিবেশ থেকে মৃক্ষি পাবে, একদিন অস্তত ওরা প্রাণভবে আনক্ষ করবে। আর? মান্তার মশায় হাউ হাউ করে কেঁদে উঠলেন—লক্ষ্তে পেট ভবে ভালো মশ্দ থাবে—ভারপর তো অনক্ষ উপবাস।

ঘরে পুঞ্জ পুঞ্জ অন্ধকার জনা হয়ে আছে। আজো আর আলালেন লা তিনি। এখনও পকেটে উনবাট টাকা বার আনা আছে। টায়কে আছে ডিয়ারনেস এলাউন্সের পাঁরত্রিশ টাকা। একভিডেন্ট ফাণ্ডের টাকা এখনও পাননি। তবে পাবেন। কুড়ি বছরের মধ্যে এই প্রথম বিশ্বা চড়লেন তিনি। মিথ্যে চার আনা প্রসানই করলেন, থাকলে আধ দের আলু হতো।

ঘর অন্ধকার হলেও সবই তাঁর পরিচিত। কাজেই 'সন্ধর্গণে একটা কাঠের বান্ধ খুলে একটা মাটির ভাঁড়ে ডেলে ভেন্ধানো একদলা আফিং বের করলেন। জীবনের সব কিছুকে আন্ধ ভিলে ভিলে না মেরে একবারেই সব শেষ করে দেবেন তিনি। কভ এলোমেলো ডিস্তা যেন পাগলের মত মাথার বাসা বাঁগতে চাইছে—কত কথা আজ বলতে ইছে হছে,—কভ আশার কথা—কভ অপূর্ণ সাধেব কথা।

খাতা-পেনসিল নিয়ে আদ্ধ তাঁকে স্ব কথাই লিখে বেন্ডে হৰে। প্রথমেই ভাবলেন কর্তৃপক্ষকে একটু অফুরোধ ক্রনেন বে, তাঁর মৃতৃষ্ট উপসক্ষে বেন একদিন ছুটী দেওয়া হয়। কিন্তু না—কেন তিনি অফুরোধ ক্রবেন—বারা তাঁকে অক্তায় কবে,—জোর করে তাড়িয়ে দিয়েছে। পেনসিল দিয়ে ঘবে ঘবে ও ভায়গাটা কেটে দেবেন ভিনি।

আবার নৃতন করে ক্লফ হলো লেখা—"মাত্র দশ প্রসা পকেটে নিয়ে কলকা ভায় স্থল খুলেছিলাম আমি। মনের মধ্যে যেন এখনও শেই ছবি ভেদে উঠছে। দশটি নাত্র ছাত্র; মাতুর পেছে রকে বসে পড়াভাম। মনে পড়ে কার বেন একথানা বই একবার গরুতে পথ দিয়ে যেতে যেতে মুথে করে চলে গিরেছিল। ধৰ্থন আকাশ কালো কৰে সন্ধ্যে নামতো, তথন ছাত্ৰুজন আর একটা কাঁচা লক্ষা দিয়ে সান্ধ্য ভোজন সেরে সেই মাতুরটাজেই শুয়ে পড়তান। তথন বয়দ ছিল অল,—মন ছিল শক্ত-দেহে ছিল मिक्ति। आमा ? हैं।, जानां हिल-इल এक मिन वर्फ स्टारे, এ বিখাস ছিল আমার। স্বাস্তা ছিল ভালো, লোহা থেয়ে লোহা হজম করতাম। কিন্তু আমার ছাত্ররা ? তারা আমাকে ছাছতো না; মানে মানে তাদের বাড়ী নিয়ে গিয়ে থাওয়াত স্বত্তে। তাদের ভালোবাসায় আমার মন ভবে থাকতো। ছিলাম ভালই—খেতামও ভালোমন্দ প্রায়িই। মনে পড়ে, আমারই ছেঁড়া মাছরে বসে পড়ে আমাংই ছাত্র তালক দাস বড় স্কুলে গিয়ে জলপানি পেন্নেছিল। সেদিন আমি ৩কে কোলে নিয়ে নাচতে চেয়েছিলাম কিছ ও লজ্জা পেল ভারি—তবে হাা, আমাকে পেটভবে সন্দেশ থাইয়েছিল। এত ভাল সম্পেশ আমি আমার জীবনেও গাইনি।

তারপর ঘরভাড়া বাকী পড়লো। বাড়ীওরালা তাড়িয়ে দিল ঘব থেকে। রকও গেল। সম্পত্তির মণ্যে একটা ছেঁড়া মাছ্র, এক্ট্র্টিনের ফুলকাটা স্ট্কেশ, আর একটা ব্লাকবোর্ড। সব ঘাড়ে করে বাস্তার নেমে পড়লাম। চার দিন না থাওয়া—না দাওরা, একটা পার্কের মধ্যে ব্লাকবোর্ড পেতে মাহুর মাধায় দিরে শুরে পড়েছি। স্ট্কেশ চ্রি গেছে। ফিছের যক্ত্রণায় প্রাণ বেন বেরিরে বাছে।

গায়ে ঠাণ্ডা ছাত পড়লো কার—্যন মা'র ছাত, বড় ঠাণ্ডা— বড় স্লিশ্ব।

- : কে বে ?—চোথ বুজেই জিজাসা করলাম।
- : আমি মণিরাম তার। আজ চার দিন থেকে আমরা আপনাকে
 থুঁজছি—চলুন একবার আমাদের বাড়ী। মা আপনাকে নিরে বেতে
 বলেছেন। ঠিক মনে পড়ছে স্পাই,—ওলের চীৎকার করে বলেছিলাম:
 একটু জল, আগে একটু জল কে বাবা, গলাটা শুকিরে কাঠ
 হরে গেছে।

ওবা আঁকুলা ভবে ভৱে জল এনে দিলে আমায়—

আঃ আটটি ছোট ছোট হাতের কি মিঠে জনই না দেদিন খেরেছিলাম—তু'হাত তুলে বললাম, মণিরাম, সতে, নীলে, বেণু—বেঁচে খাক—বেঁচে থাক বাবা।

মনিরানের বংরা থাকবার ঘর দিলেন—পড়াবার রক দিলেন।
সতের মার ঘরে ছবেলা থাবার ব্যবস্থা হলো—নালে মাটির ভাঁড়ে
চা কোগাত—আমি বেন ইক্ষম পেলান। আন্তে আন্তে স্কুল বাড়ী
ভাড়া নিলাম—সকালে মেরেদের স্কুল হড়ো, তুপুরে ছেলেদের, তাও
পার্টনার সীপে। আবার দাল। এলো—সবাই পালাল স্কুল-বাড়ী
ছেড়ে; তুরু চেগাব বেফি আগলে পড়ে রইলাম আমি—ছাক্রছাত্রীরা
পালিরেছে—সামনে অনাহার।

আগার চাকা গ্রলো। এখন আবে ছাত্র ছাত্রী ধরে না।
স্থুল বড় হয়েছে—স্থুলের উন্নতি হচ্ছে—এখন আর আয়ার আগগ।
সলোনা

কেখাটা শেষ করে থাতাটা টেবিলের ওপর রাধলেন। তারপক্ষ থীবে থীবে আফিতের বাটিটা হাজে তুলে নিলেন। কাল সকালেই সমস্ত পৃথিবী থেকে তাঁর নাম মুছে হাবে। পরিবারের এগারটি লোক ধীবে থীবে নিশ্চিত মুহূরে দিকে এগিবে বাবে—এ মুহূরে কেউ রোধ করতে পারবে না।—যা কিছু থাকে ভা বিঞ্চি করে বড়জোর একমাস চলতে পাবে, প্রাভিডেণ্ট্ ফাণ্ডের টাকার আব্রো মাস ভিনেক।—তার পর!

কিন্ত কেন এমন ছব ? কেন বুকেব সমস্ত শিরাগুলো স্থলের নামে মুচ্ছে উঠতে চায়—অসহ বেদনার টনটন করে ? বাবা তার ভলে একবারও ভাবলো না, জিনিই বা কেন তাদের জভে এভ ভাববেন ? নাঃ আর ভাববেন না তিনি। ইতেজিত শিবাগুলো দপ্লপ্করছে। গলাটা শুকিয়ে কাঠ হয়ে আস্চে। সমস্ত শরীব দিয়ে আগুনের হলক। বের হচ্ছে।

একটু জল—একটু জল গেছে হবে। আজাই শেব তাঁর জল বাংহার পালা। কুঁজোছে ছুটে গিয়ে হাত দিলেন। দেটা একেবারে খালি, গড়িয়ে পড়লো—ওতে জল নেই এক কোঁটোও। বাড়ীর সবাই ত'ড়াড়াড়ি বেলিয়ে গেছে, কুঁলোর জল ভরতে ভূলে গেছে ওবা। আকঠ তেষ্টায় যেন জিভটা টেনে টেনে নিছে মুখেব ভেতা। সমস্ত শরীরে একটা ভীর আলা—যেমন সেইদিন লেগেছিল পার্কের মধ্যে ভয়ে।

থেন একটা জেদ চেপে গেল মাটার মশায়ের। এডটুকু দাবীও তাঁর মেটবার নয়? এক-বৃক তৃকা নিম্ন মবতে হবে তাঁকে? একটা ছোট্ট দাবী,—এক গ্লাস জল,—এ-ও তিনি মৃত্যার সময় পাবেন না? না,—জল তাঁর চাই-ই! অস্তত আজ এই মুহুর্কেই -পেতে হবে।

আজ্ব কাৰে এক পা—এক পা করে এগিছে গোলেন মাষ্ট্রীর মশাস্থ কলের দিকে। বাঁ-সাতে কসটাকে খুলে দিয়ে তার নীচে ছাভটা অঞ্চল করে পেতে দিলেন।

- : প্রার-! মাষ্টার মশার-! মিষ্টিগলার একটা ডাক এলো।
- : (4)
- : আমরা। আমাদের দেওরা চাদর, কাপড়, বই—সব কেলে, না থেরে চলে এলেন কেল মাষ্ট্রার মশার ? আমরা কি লোব

করেছি ? এই যে থাবার—আমরা নিরেই 'এসেছি। একি ! কাঁপছেল বে আপনি ? হাতে এটা কি ? বাটি ? জল থাছেন ? দিন, আমরা দিছি—ওমা, গ্লাসে কি বেন। গাঁড়ান, একটু মেজে দি।

: ওরা দিল না মবতে — ওরা আমাকে কিছুতেই দেবে না একটু শান্তি — তুকরে কেঁদে উঠলেন মাষ্টার মশার । — পাগলের মত নিজের কপালে করাঘাত করতে লাগলেন।

আবাৰ সেই মায়স্পাৰ-তিমনি স্নিগ্ধ-তেমনি ঠাণা। ওদের হাতে জল থেয়ে আবাব তেমনি স্নন্থ লাগছে, আবার নিশ্চেতন মনে ন্তন কৰে উপলব্ধি জাগছে, যেমন জেগেছিল সেদিন পার্কে চার দিন না থাবাব প্র সন্তের হাতে জল থেয়ে।

সভ্যিই তো—কি দোষ ওদের ? ওরা তো আমার জ্যাগ করেনি। একটা আশ্চর্য্য উপলব্ধির ওরঙ্গ খেন বয়ে গেল তাঁর শিবার শিবায়। আর মৃত্যুর মধ্যে পলায়নে নর জীবনের মধ্যে বাঁচবার প্রেরণায় মাষ্টার মশার উঠে বসলেন। মণিরামের ভেলে, সভ্যের ছেলেদের কে পড়াবে ? মীরা, লীলারা ভাদের বাঙীর বকে নিশ্চরই তাঁর পাঠশালা বসাবার ব্যবস্থা করে দেবে।—নর ভো—নিক্ষের বাড়ীর বারান্দার—? ওবে মীরা— আলোটা আলাভো—?

- : कालार्वा चात ? विनि वलरता।
- ঃ এত অন্ধকার দেখছিন্না; আলোনা আলালে কি হয় ?
- : একি আপনি কি বেক্লবেন ? বিনি বললে।

: দে—তো তোকের নৃতন চাদর—কাপড়, আমি এখুনি মণিরামের বাড়ী বাছি। বাদের বাড়ীর তিনটি ছেলে এবার ছুলে সাট পায়নি,—আর তোর ভাই খাবাকে বলিস্, কাল থেকে আমার বাড়ীর ঝারান্দার কোচিং ক্লাশ বসবে।—আর শোন, আমি বেক্লছি। ভোরা পাবারটা ভালো করে ঢেকে খরে চাবি দিয়ে বাড়ী বা। আমি ফেরবার পথে ভোর বাবার সঙ্গে দেখা করে চাবি নিরে বাড়ী ফিববো।

অন্ধকারের মধ্যেই মাষ্টার মশার ^জপুথে নেমে পড়লেন। নতুন যাত্রায়।

সুযা-সম্ভবা

পূরবী চক্রবর্ত্তী

প্রেক অক্লোদযের কাঞ্চন মৃহুর্ত্তি তোমায় আমি প্রথম দেখেছিলাম। দেবতার মেয়ে এক দেবিকার রূপে আমার দৃষ্টিকে উদ্ভাসিত করে তোমার সেই স্থক্ষর উদরন আমাকে বিভাস্থ করেছিল, মুয় করেছিল। আমি নির্কাক্ষ বিষয়ে শুরু চেয়েছিলাম ভোমার পথে। কথন বে তৃমি আমার নগুনের সব আকুলতাকে বার্থ করে দূরে চলে গিরেছিলে—তা আমি জানিনি, বুঝিনি। শুরু বছক্ষণ পরে অবহিত হয়ে আমি জমুভব করেছিলাম—প্রথম দর্শনের সেই পরম ক্ষণে আপন অজানিতে মর্ভের বালুর ভীবন আমার বস্তু হয়ে গেছে,—বস্তু হয়েছে বুঝি এক অমরলোকবাসিনীর মহনীর আবিভাবে।

দীর্থ জিনবাদ পরে কিনে এসেছি—কাবার এসেছি আমার চিন্নপমিটিভ কলকাভার। প্রবাসের বেদনা আমার দৃটিকে নতুন করেছে, সৃষ্ণ তর করেছে, আমার অন্নভ্তির চেতনাকে। সন্ধাণ কণে আমি কিবেছি। আলোকোজ্বল পথের সেই চলমান জনপ্রোতের মাঝে আমি নিজেকে হারিয়ে ফেলেছি। প্রতিটি মায়ুবের সঙ্গে আমি একাজ্বতাবোধ করেছি—প্রতিটি জিনিবের দিকে পরিচিতকে দেখার আগ্রহে চেয়েছি। কি বেন এক আনন্দের ব্যাকুলতা আমাকে অধীর করেছে। বারে বারে মনে ভেবেছি, এই প্রাণচঞ্চল মহানগরীই তো ছিল দেশের প্রাণকেন্দ্র চবার আদর্শ ক্ষেত্র। রাজধানী দিল্লীর সেই মাপা হাসি আর মেকি জীবনের অস্বজ্বন্দ গতি আমাকে অস্থির করে তুলেছে। তাই তো ছুটি পাওনা হতেই ছুটে এসেছি আমার আপনস্থানে—এই স্বজ্বন্দ জীবনের দেশে।

গাড়ী থামল আমার বাড়ীর দরজায়। বাড়ীর গাড়ী নর্ম
টাল্লী। না জানিরেই আমি চলে এসেছি—সকলকে খ্লীতে অবাক্
করে দেব। ওই তো ঘারোয়ান আমাকে দেখতে পেরেছে।
বিশ্বের আনন্দে সে এগিয়ে এসে আমাকে অভিবাদন
ভানাল। আমি শিতমুখে নেমে এলাম। আর আমার চিন্তা
নেই। মালপত্র নামিরে, ভাড়া মিটিরে, ওরাই আমার
ঘরে সব কিছু ভূলে রাখবে। আমি এখন ছুটে বেতে পারি
আমার আয়জনের প্রীতির উচ্ছলভার। ভূলে বেতে পারি আমার
পদমর্ব্যাদা। আর গাজীখ্যের মুখোল দূরে ফেলে সঙ্গীসংখীর
সাচচর্ব্যে পরিপ্রত্বিশে উপভোগ করে নিতে পারি এই দশটি দিনের
সীমিত মুক্তির প্রতিটি পল অমুপল।

কাকভোৱে আমাৰ ব্য ভেকে গেল। নিশ্চিম্ভ শ্যাৰ আনন্দ থেকে দোর খুলে আমি বাইরে বেরিরে এলাম। অপব্যরের অবসর তো আব নেই। সময় যে আব সোনা হরে গেছে। মুক্তিব মৃত্ত গুলিতে ৰতটুকু মধু-মাধুরী আমি মনের অঞ্চলিতে সঞ্যু করে নেৰ—ভবিষাতের কর্মমুখর দিনগুলির গ্লানিতে তাইতো আমাকে নবতর উদ্দীপনায় সঞ্জীবিত করবে—প্রেরণা বোগাবে আমার কর্তব্যের বন্ধুর পথে। সুন্দরের কোন অণুকণা থেকেও তাই আমি আজ নিজেকে বঞ্চিত করতে চাইনা। শেষরাতের আবচায়ায় এই ব্লবারান্দার অকিড আর মনি প্ল্যান্টের স্মারোছের মাঝে দাঁড়িয়ে এই বে বিচিত্র অহভুতি—এর তুলনা কোণার! পশ্চিমের আকাশে টাদটা মন্তবড় ছায় উঠেছে— লখট নীলের সার্রে যেন ফুটে ওঠা রপার বরণ ফুলটি। ও তো ওণুই অ'কাশকুত্রম নয়। যাবার বেলার মুঠি মুঠি আলোর বেণু ছড়িয়ে ও বুঝি পূর্বাচলের সেই জবাকুত্ম-সন্ধাশ-এর পরম আবির্ভাবের কথাই জানিয়ে যেতে চায়। বাতের অন্তরে আলোর আবাহন—সৈ বে শাবত, সুন্দর। দিগন্তের বুকে দৃষ্টি মেলে দেখলাম উবার প্রথম আভাব। এত ভোৱে প্রকৃতিকে এমন করে আর কখনও দেখিন। মন আমার ভ:র গেল। রাত্রিশে: বর রিশ্ব বাভাস আমাকে তুলিরে দিয়ে গেল। ব্দার আমি ওধু চেয়ে চেয়ে দেখলাম একৃতির কোলে পৃথিবীর সেই শাস্ত মধুর রূপটি।

শহর কলকাতার এক মর্থসত্য আমি অমুভব করেছি। বালপথের ত্থারে ছোটবড় অনেক বাড়া। প্রাসাদের পাশেই হয়তো বজীর সারি। আর তারই মাঝে স্থে-তঃখে শোকে-আনম্পে অনেক মানুব দিন কাটায়। শ্রেণীগৃত বৈবয়া তাদের মাঝে আপতি বিভেশের আর বিরোধের গ্রাচীয় তুলেছে— তবু তাদের বেদনার কায়া আর আনন্দের গান এগানকার আকাশে বাভাসে এক হয়ে মিশে আছে। ষ্টেশনের কলবোল-মুখবভাকে অতিক্ম কৰে বাস্তুলারার দীর্ঘণাস শুনেছি, আবাব, মিনিষ্টারের বাড়ীর পাশে স্বস্থ সম্ম নেব শীবনে বেঁচে থাকবার মত আর্থিক সঙ্গতির তম্ম হর্ভাগোর বিদয়ে অপরিসীম প্রাণশক্তির সাগ্রাম আর ভার জয়ৰাত্ৰা—তাও দেখেছি ^৷ ভালবাদার মাধুৰ্ব্য আৰু বড়ব**ন্ত্ৰের** কুব**ভা,** বঞ্চনাৰ বাৰ্থতা আৰু জীবনযুদ্ধেৰ সাৰ্থকতা এখানে বড় পাশাপাশি আর কাছাকাছি আছে। বিত্তেব শুধু অহমিকা নয় উদারতাও আছে, দীনতার মাবে তথু হীনতাই নয় উচ্চতর মনোধত্তির প্রকাশও আছে। আৰ সৌন্দৰ্য্যের পাশে মালিক আছে বলেই তো তাণেক আবেদন এমন স্বৰ্ষকানীন হয়েছে। দক্ষিণ কলকাভার এই অভিকাত অঞ্চল,—স্কুদ্র আর স্তব্ধুহৎ বাড়ীর স্থাস্থপ্ত মাতুষগুলির ওধু অর্থের আতিশ্যাই নয়, সামাজিক সমানের প্রচুবতাও আছে। তারা দেশ আর সমাজের শীর্ষস্থানে। তবু তাদের অনেকের চরিত্রগত আদর্শে ষে ঘূণ আছে. ভা ব্যক্তির অস্তবের সীমারেখা ছাড়িয়ে ব্যষ্টিকে তুর্গতির পথে নিয়ে বার। আর ঐ বস্তীর মাঝে বারা তাদের পাশেই আছে—ভারা ভো সমাজের অবহেলা আর অনাদরের জীংন। ভারা ছুলনা করে, কল্ফ করে, শুধু বেঁচে থাকার আগ্রহে প্রাণাম্ভ করে আবার পরস্পাতকে ভালও বাসে। সুথে হুংখে ধরা একে অক্তের সাধী হয়ে থাকে। শেবরাত থেকে রক্ষনীর মধ্যবাম পর্যাস্ত রাস্ভার ঐ জলকলটির খারে ওদের প্রবহমান কাজের মাঝে নিম্নতই প্রকাশ পার যে, ওদের জীবনেও একটা শৃথলার ধারা আছে— আর আরং আছে সমাজচেতনা। অনস্ত রূপবৈচিত্র্য এই শহর কলভাতার তবু তার অন্তরে কোথায় যেন এক মিলনের স্থর বাঁধা আছে, ৰ ভনতে আৰু বুঝতে আমাদের ভূল হয় না। তাইতো কলকাতাৰে এমন করে ভালবেসেছি।

রাজধানী দিল্লার শৃথালাবোধও রাজকীয়। সেখানে রীতিনীতিং শাসন বড় কঠিন। নয়াদিলী আর তার আলেপাশের সংগ্রশন্ত পথের ধারের ঐ বে বাড়ীগুলি, ওয়া যেন বাস্তব পৃথিবীর নয়— ব্রডে রূপে আর কল্লনায় ওরা ছবি হয়ে উঠেছে। এক এক পণ খেন একট ছবির অনেকগুলি অমুকরণ! স্থানের ভিন্নভায় ৩১ ভিন্নত্র হ**েছে ছবির আদর্শ—আর তাতেই সার্থকভাবে র**পায়িছ হয়েছে অর্থ ও সম্মানের মাপকাঠিতে পাওয়া জীবন-ব্যবধানের বিচিত্র রূপ। বড় রাজ্ঞার পাশে গলিঘুঁজির সোজা শথের মভই মানীব্রুন্তর পাশে সাধারণের ভীড় রাক্সধানী এড়িয়ে চলতে চার আর নিজের দীনভাটুকুও সে স্বত্তে বিলাসসজ্জার অস্তর সেই রেছে দেয়। তাই স্বাধীন ভারতের মর্মকেন্দ্র-মহানগরা দি**লী--তা**র অভীত ঐতিহের গৌৰবদীপ্তি নিয়ে দেশ আর বিদেশের কৌতুহল জনতাকে প্রতিনিয়ত আকর্ষণ করে। তথু দূরের দেই মহাভারতে। ইন্দ্রপ্রস্থের ধ্বংস-শেবের উপরে গড়া, পুরাতন ভারতের বি**জয়কী**& পুরাণ কেল্লার ভয়ক্তপের দিকে চেয়ে, একটিবার দর্শনার্থী মন চমকে Gtb । वे त माधूनश्रमि कताकी पी कीरतत अमिपतत मारक मारक क्यूष পরিবেশে মৃত্যুর সঙ্গে মুখেমুখ বুরে চলেছে—মনে হয়, ওরা বেন চিবস্তন বেদনা আর লাজনার মূর্ত প্রতীক—আপাতমধুর বিলাসনগরীকে ভার প্রকৃত রূপের কথাই বাবে বাবে শ্বরণ করিরে দিতে চার। আরও একবার দর্শক **অক্**র ব্যবিত হরে ভাবে,—

সুপরিক্ষিত নগররূপের অন্তর্গালে বে শ্রেণীবিভেদের রেখা প্রছের রুবেছে, জাতীর চেতনা কবে তাকে বিদেশের অন্ত অহিত অমুকরণের মন্তই ত্যাগ করতে পারবে—আর ব্যক্তিসব। তার সব উচ্চতা আর ভূছতা নিয়ে এক ভারত-আত্মায় বিলীন হয়ে যাবে! রাজধানী দিল্লী তার সব সৌন্ধ্য আর গরিম। নিয়ে শ্রেষ হয়েছে—কিছ প্রিয় সে হবে কবে, আরও কত ত্ঃধ তপতার অন্তবে!

আরও একটি নৃতন দিনের আলে-উজ্জ্ল জাগ্রণ আমাকে **চিস্তার আচ্ছন্নতা থেকে বাস্ত**বের উদ্দীপনায় ফিরিয়ে আনল। পথে লোক-চলাচল শুকু হয়েছে। গাড়ীগুলো প্রায় নি:শব্দে ছুটে চলেছে। সামনের ্এ গরুভলোর গলার ঘণ্টা টুং টাং বাজছে। একটু টাটকা ছুধের অন্ত কল এসে গাঁড়িয়ে আছে ওখানে। মুরগী গুলো **ইতস্তত: ছুটে বেড়াচ্ছে আর ঠুক্রে ঠুক্বে খাচ্ছে কি যেন।** প্রভাত-ভ্রমণে চলেছে কক্ত জন। গৃহহীনের দল ফুটপাথের আখার হেড়ে উঠেছে একে একে। বাড়ীর লোকজনও বেশে উঠেছে। বাগানে মালী গাছে জল দিচ্ছে। দ্বারোয়ান গেট খুলে দিল। আমি নীচে নেমে একাম পথে। আবে সিগাবেটের ধোঁরায় মায়াজাক বিস্তার করে সংকিছুই আমার মনের মধ্যে ধরে নিতে চাইলাম। হোস পাইপে জল দিতে এসেছে রাস্তার। কেমন একটা দোঁদা গদ্ধ বাব হচ্ছে। ওদিকে **অ্যালগেসিরানটা**কে বেড়াতে নিয়ে পেল। পরিষ্কার করছে। ৰাওবার আগে বনি এল আমার কাছে। পা ভঁকে, ল্যাঞ্চ নেড়ে, একটু আদর পেতে আর জানাতে চাইল ও পুরাতন প্রভুকে। ভারও পরে বাস চলাচল শুরু হল। আকাশে লালের ছেঁায়! লেগেছে কভক্ষণ। সুর্য্য উঠতে আরও কত দেরী! শহরের ইটকাঠের অন্তরাল থেকে স্থ্যের উদয়কাল পাজি-পুঁথির হিসাবকে কতকটা ছাড়িয়ে যায় জানি। তবুও তো কাম্য সেই আবির্ভাব। নগরীর विवन कीवरन रम रव न्यून्यदात्र अकवन! प्रश्नुत कामी स्वाप ।

প্রারে বৃঝি সাত বছ, । আমার দৃষ্টির আকাশ আছের করে আছে শুর্ব এক বছ, — সে রঙ, অমুরাগের। শুর্বাত্রির রানিমাকেই অবপুর করেনি ঐ আলোর লালিমা— আমার জীবন মনকেও বৃনি রাত্রিরে তুলেছে সব কামনা আর কলক্ষের কালিমা মুছিয়ে। কোনও এক উজ্জ্বল উল্লেহের তিয়াসা বেন আমাকে জ্বীর করেছে। তাই অনম্ব প্রীতির আগ্রহ ব্যাকুলতায় অন্তর আর বাহির প্রকৃতির দিকে চেয়ে আছি: আমি নিনিমেরে—কোন অপ্রপের আসার আশার!

শান্ত ধীর পদক্ষেপে রাজ্পথ বসে তোমার দেই আগমন—দেব বেন আমার জীবনসরণিতে এক পরম রমণীয়ের প্রথম সঞ্চরণ! আলুলারিত কুন্তলং, থরঙ্গ কুন কেলকলাপের মানে তোমার ঐ অনিন্দ্য ভামকত্রী নিয়ে ভূমি এল আমার ত্রার প্রান্তে—মহাবিতায়ংনের পথচারিণী এক কলাকুমারী—বাহাঙ্গে বিপায়ন্ত আঁচিল সামলিয়ে হাতের বই কটিকে সরত্ব ধরে চলতে চ ইলে আপন পথে একান্ত উলাসিনীর মত। তথু একটিবার অলুমনা দৃষ্টিতে বৃথি নিন্দ্ত হলাম আমি—আর তথনই উদয়াচলের সেই আলোক-দেবভার ছাভিময় হাসি মৃঠি মৃঠি সোনার আনীর্বাদ হয়ে বাবে পড়ল ভোমার মুখে, বুকে স্বান্তে। ভোমার তুই আয়ত নারনের স্থিত স্থিত বন্দনার ভাস্ব হলেন ভাকর, আর এক মৃত্তিমতী আলোক-কল্পার উদ্দেশে আমার মুগ্ধ মনের আরতি তথন ধর হলে গেল।

মূহুর্তে বাস্তবকে ভূললাম আমি। মনে হল আমি বেন দেই মহাভারতের রাজা সংবরণ—চলার পথে দেখেছি আমার মানসী প্রতিমা স্ব্যুক্তা তপতীকে। এক ভূশ্চর তপত্তার শেষে অমর্তলোকবাসিনী অধরা ধরা দিয়েছিল পৃথিবীর প্রণয়মান্যের বন্ধনে— আদিত্যকতা হয়েছিল সংবরণজায়া। কিছ ঐ যে শ্রীমতী মেরে লাবণার অমৃতধারায় স্লাত হয়ে পৃথিবীর সব নিবিভৃতাকে ভূলে দ্র আকাশের আলোক-চেতনায় ময় হয়ে গেছে—ওর ঐ দীপ্তোজ্জল রপের কাছে আমার সব স্পর্কার কামনা বে স্লান হতে চায়। আমি তো পুরাণের সেই স্কৃত্তী রাজা নই। তথু উচ্চু অল আর তুরস্তবোবন—আজকের পৃথিবীর মর্ত্ত পুরুষ আমি। ভটিভার প্রতিমৃত্তি ঐ দেবপ্রকৃতি মেয়ের প্রিয়হাতের বরণমালার স্বরভিতে স্লিম্ম হয়ে যাব —দেহমনের সে অকলক্ষতার গৌরব কোথায় আমার! তুঃসহ আল্লারানির চিত্তভূজ্বিতেও কি এই ছ্বার জীবন-ব্যবধানকে অতিক্রম করা যায়!

অলোক সামালা কি কথনও অন্তর্তমা হয়ে ধরা দেয় পৃথিবীর গেহকোণে! আর সব উচ্ছ্রলতা হারিয়ে জীবন তথন সার্থক হয়ে যায় পরমঞান্তির আনক্ষমধুরতায়!

আরও এক সোনাঝরা সকালের আলোকময় স্মৃতি বারেবাংই উচ্ছল আব উচ্ছল করে আমার অন্তরকো বাত্রার প্রস্তুতি চলেছে শহরতলীর পথে—শাস্ত আর স্লিগ্ধ পরিবেশে এক সারাদিনব্যাপী পিকনিকের আয়োজনে। চারখানা গাড়ী বোঝাই করা হচ্ছে জিনিয় আবে মানুষে। বন্ধুজন আবে আত্মীয় পরিজন—কেউ বা উঠেছে কেউ বা ওঠেনি এখনও। ষ্ট্রন্তিবেকারের কাছে পাড়িয়ে ক্যাবিয়াবে কি উঠল না উঠল তাই দেথছি গাঁড়িয়ে—পালে থেকে কাজ সাহায্য করছে বৌদি আর ছোটবোন তিথি। হঠাৎই ওদৈর যুগাকঠের মুগ্ধধনিতে সচকিত হয়ে ফিনে চাইলাম আমি—"একী থাঁ! আর তথনই ওদের দৃষ্টিকে অনুসরণ করে আবারও দেখলাম আমি তোমাকে। কলরোলমুখরতায় বৃঝি মুহূর্ত্তেকের ক্লম্ভ বাাহত হল তোমার **অ**চকসতা। কৌতুক আর কৌতৃহলের দীবিতে নয়ন উদ্বাসিত করে বারেকের জন্ম চেয়ে দেখলে এই বিচিত্র ক্যারাভ্যানের দিকে। শুধু ক্ষণিকের দৃষ্টিবিনিময়। আর তথনই উদীচীর সেই আলোর আবির্ভাবের নোনালী প্রশে রঞ্জিত হয়ে উঠল তোমার তমুখ্রী। সুর্যাকাম্বমণির মত আলো উছলে-ওঠা ভোষার গুই দৃষ্টিদ`পের আনন্দ-আরভিতে বৃঝি প্রীত হলেন আলোর দেবতা, আর দে প্রীতিব অম্পুভবে তুমি হলে তথন প্রম রুমণীয়া! মুহূর্তে সব মুগরতা হারিয়ে কোন অলথ আকর্ষণে বেন সবাই ফিরে দেখল তোমার মুখে! স্কারের অনুভৃতিতে আছের হল তাদের অন্তর, আর তোমার অজানার নীরব শ্রন্ধার ডালি সাজাল তারা ভোমারই উদ্দেশে।

ভঙ্গবদনা তোমাকে দেখে ওরা বলেছিল মৃত্তিমতী বাগ্দেবী।
আমি পরিহাদের আবরণে আমার মনের এক মধুর সন্তাবনাকৈ
অন্তর্গল করতে চাইলাম ওদের চোখে—"অবাক দেবী বলো। বে
অকলনীর সিচুরেশনের স্ঠি হল তাতে, এ ছাড়া আর কি ই বা বলা
বেতে পারে!" আকর্ষা! ভাবলাম আমি সবার চিভাগারার নাবেই



এক সঞ্চির আভাব খুঁজে পেরে ! মর্জ্যের কোনও ভক্তণসাবণ্য নর, অর্থ্য-আত্মজার রূপেই তো তুমি আমার জদরকে হরণ কবেছ। তুরি বুমি এই পৃথিবীর মেরে নর, দেবীছের অচলায়তনেই তোমার নিতাপ্রতিষ্ঠা !

আমার জীবনে প্রথম। নও তুমি—তুমি তথু—একতমা। তবু তুমিই আমার অনকা! সপ্তদশ বসন্তের সন্তার আমার দেহখনকে eবে থবে সাঞ্জিয়েছে। আর ভা**ংই অনতিক্রমণী**য় আকর্ষণে ওরা ছুটে এগেছে জনে জনে—এ মুকুলিত যৌবনার দল। ওরা এসেছে, হেসেছে, আর ডারও পরে ওরা ওধুই কেঁদেছে। ব্যক্তিখের প্রথব व्यमाध्या উচ্ছ अत्र चक्रभ लुकिरत उरन्द निः त्यस चाचामान चामि शहर করেছি। আমার ধৌবনের খরতাপবালায় ওরা শুকিরে গৈছে— প্লান হয়ে করে গেছে মাটির কলকে একের পরে এক। আর আমি শুৰু অলজ্জ অবহেলার হালিতে এগিয়ে চলেছি আমার জন্নবারার পথে—মারও একটি জীবনকুমুমকে বৃস্তচাত করবার নির্ভূর আনন্দ-অধীরতার। রূপ, গুণ, বিজা, অর্থ আর সামাজিক প্রভাবের ব্যাপকতা—এরাই তো চির্নালের চরিত্রবানদের পরিচিতির মাধ্যম! বিধাতার অপার দাক্ষিণ্যে এর সব কটিতেই আমি ধক হার্ছি। সব সন্দেহের স্পর্বা আর অপ্রাদের চক্রাস্ত আমার পথে এসে তাই থমকে সরে গেছে। ডনজুয়ানের ভূমিকা নিয়েও খরে-বাইবে আমার নিক্সক পরিচয় ব্যাহত হবার অবকাশ ঘটেনি কখনও। মারীম্বের চরমতম অপমান করেছি আমি নিৰি'ধায়। রূপবিলাসিত পৃথিবীতে নারীকে প্রেনেছি ভুধ পুরুবের বিগাসের এক পুষ্মর উপকরণ। তবু দেই অসংখ্য বিভাস্ত আৰ অশাৰ খলনেৰ কালেও বুঝি সাকী মায়েৰ প্ৰীতিমিশ্ব পৰিত্ৰতাৰ দ্ধপ আমার অবচেতন মানসে এক প্রতিক্রিয়ার সৃষ্টি বরেছে। ভাই আমার অলগকণকে বারেবারে চমকিত করেছে এক কলান্ম পার্শ্বচারিণীর মধুময় কলনা। আজ এতদিনে বুঝি আমার সেই প্রতীক্ষার অবদান হল। মধুমতী ভূমি এলে আমার জীবনে আর মুহূর্তে আমাকে জর করে গেদে প্রমা-প্রকৃতির রূপবিহ্বপতায় !

কলকাতার এসেছি গেছি আরও কয়েক বার। জীবনের একটা নতুন দিককে জেনেছি আমি। প্রথম ভালবেসেছি এক নারীকে পরম নিবিড়তায়। তাই আদা বাওয়ার কণে মিলনের আনন্দ আর বিরহের বেদনা অমুভব করেছি গভীরভর ভাবে। কডদিন উন্মুখ হবে থেকেছি। ভোমাকে দেখার আগ্রহে। কোনও দিন বা দেখেছি তোমার। আর সেই সৃতির আলোর আমার নিঃসঙ্গ দিনগুলির বিপদছায়াকে দূরে সংিয়ে রাখতে চেয়েছি। এর বেশী কিছুই তো আমি কামনা করিনি। তোমাকে অনুসংগ করবার মত প্রাকৃত প্রবৃত্তি আমাও হয়নি। হোমাকে কাছে পেতে চাইনি আমি। তোমার জাগতিক পরিচয় জানবার আগ্রহও জাগেনি আমাৰ মনে। আমাৰ অন্তর মাঝেই যে তোমাৰ নিরন্তর অনিষ্ঠানের উজ্জ্বসভা! জামার জীবন মন ওধু এক মতুন ধারায় বয়ে চলেছে এখন। পার্টি, ক্লাব, আর পিকনিকের উক্তলতার মাঝে আমার সংবম দেখে বিশ্বিত হচেছে সকলে। কত স্থকভার অভিভাবক আমার নির্নিপ্ততায় হতাশ হয়েছে। অন্তব্দজন এই আক'মক পৰিবৰ্তনেৰ স্থা অহুসন্ধান করতে চেয়েছে কভবাৰ— আৰু থিনে গেছে বাৰ্থমনোৰ্থ হয়ে। আমি নিজেও কি সঠিক

বুঝেছি এর কারণ! তথু জেনেছি ডিক্যান্টাবের রক্তিম পানীরের চেরে অনেক আক্বনীর এই আন্তব অভ্বাগের সংগ্র আবাদন!

কতদিন পরে আর দেখিনি তোমার। হরতো তোমার কংগ্রের পাঠ সাঙ্গ হয়েছে এতদিনে। আমার দৃষ্টি থেকে তুমি দ্বে সরে গেছ—কিছ আরও নিবিভ্তাবে অধিকার করেছ আমার চেতনাকে। প্রিয় অমুধ্যানের কঠিন ব্রত্চর্য্যার এই তো সবে প্রথম পর্ম্ম। জীবনসমূদ্রের মন্থনে শুধু নিরবছিন্ন স্থাথের অমিয়ধারাই নর—ব্যথা আর ব্যর্থতার গরলও বে উঠে আসে—সে কথা আমি ভূলেছিলাম। বিশাস আর প্রীতির প্রতিদানে নারীকে দিয়েছি শুধু বঞ্চনা আর লাজনা। তার সকরুণ আর্থি আর দীর্থখাসের অভিশাপকে পৌক্ষবের অহমিকার ভূছে করেছি। আজ বৃষি তারই প্রায়শ্চিত্তের লগ্ন এল আমার জীবনে। তাই সংশ্বিত চিত্তে তাবি—এ বরণীয়ার দেহলীপ্রান্তে আমার মনের প্রার্থনা কি সার্থক হবে কথনও, আর বিচ্ছেদের ভূংখ সাধনার অস্তে দয়িভার হাসির মাধুরীতে মধুমন্ত হবে বাবে আমার মিলন-বাসরের শুভ্লগ্ন!

হিতাথীজন বিচলিত হয় আমার নিক্ছাণ বিংগ্রভার। মনে ভাবে এ বৃঝি যৌবনধর্মের এক স্বাভাবিক পরিণতি—একক জীবনের মনোবিকলন মাত্র। তাই শুক হর খোঁজার পালা—আমার নিঃসঙ্গুত্ব করে মনটাকে সুখী করে দেবার জন্ম প্রয়েজন হয় এক স্থামিতা সহম্মিনীর। আমি বিবস্তু হই আর এড়িয়ে চলতে চাই এই অবাঞ্চিত প্রসঙ্গ। বিজপ আর বেদনার হাসিতে সব আলোচনা আর সমালোচনা থেকে দ্বে সবে আপনহার। হরে যাই আমার মনোহারিণী সেই শুচিমিতার অভিধানে।

কবে যেন কথাচ্চলে মেয়েমহলে অবতারণা করেছিলাম আমার একান্ত প্রিয় প্রসঙ্গের। নিম্পূরভাবেই উপাপন করেছিলাম দেই পূৰ্ব্বদৰ্শিতা সৰ্বভন্নাৰ কথা—ভাৰ বৰ্ত্তমানেৰ উপৰ কেউ আলোকপাত করতে পাবে কিনা, প্রকাণাস্তবে সেটা জেনে নেৎয়াই ছিগ আমাব প্ৰচ্ছন্ন উদেখ। কিছ আমাৰ কৌতুকেৰ কুহকে ওয়া ভ্ৰাস্ত হয়নি। অনতিপরিচিতা এক পথসঞ্চারিণীর হুতি আমার এই অনাবখক কৌতৃহল প্রকাশের আকম্মিকতায় ওরা বিমিত হয়েছিল, স্থতীন্দ্র ব্যক্তের অর্ক্ডরিড করেছিল আমাকে। আর আমি তথন সলজ্জ সকোচে কোনও অছিলায় দূরে চলে গিয়েছিলাম। তথু যাবার বেলায় সানন্দ আগ্রহে বৌদির মুখে এক মধুর মস্ভব্য ওনেছিলাম—এ মিলন সম্ভব হলে সে নাকি বড় স্থন্দর আরু স্থযোগ্য হয়! স্নেহের আলহার মাঝে আশার মৃত্র স্পর্শে উজ্জীবিত হরে মা সেই অনবলোকিতার সবদ্ধে অনুসন্ধিৎস্থ হয়েছিলেন। কিছ অজানার কুহেলীতে সেই অদর্শনাকে বে সকলে হাতিয়ে কেলেছে-তাই ব্যর্থকাম হয়ে গেল তাঁরে কলনার সব অমিতি। আরও একদিন পরিভাষণের মাঝে আমার আদর্শ নারীর বর্ণনাকে প্রভাবিত করেছিল স্থাসাতা সেই অতুলনা কঞ্চার জীবন-প্রতীতি। সেদিনও পরিহাসত আর লজ্জিত হয়ে সরে গিয়েছিলাম আমি। আর অবাক হয়ে ভেবেছিলাম—ভালবাসার মোহন ছোঁগায় আমার উবৰ মনেৰ বুকেও কি অবশেষে লব্জাৰ মত লালত বুতি ফুল হয়ে कुटि डेर्रंग ववाव !

িজাগামী বাবে সমাপ্য।

তেজজিগ্রতার সম্প

মুহাবুদ্ধের দাক্রপ বিপর্বাবের মধ্য দিরে সাধারণ মানুষ পরমাণু শক্তির প্রথম পরিচর পেবেছে। পরমাণুর বিজ্ঞোহণ-ক্ষমতা এবং জীবদেহে তার প্রভাব বর্তমানে পৃথিবীবাণী প্রবল উৎকণ্ঠার কারণ। জনেকে মানুবের এই জায়তাধীন শক্তিকে বিজ্ঞানের অভিদাপ রূপে ধারণা করেছেন। কিছু এ হলো একদিক মাত্র। নদী বলতে জামরা বেমন শুরু বক্তাকেই বৃঝি না. বাহাদ মানে ধেমন শুরু ঝড় নয়, পরমাণু শক্তিও তেমনি কেবল ধ্বংদেরই কারণ হয়নি, আমাদের জীবন বিকাশের পক্ষে নানাদিক দিরে কল্যাণকরও হরেছে। যে প্রদীপ ভার ভলদেশ জ্জকারে আছের রাবে, তাই জাবার দশদিক আলোকে উভাসিত করে তোলে।

পরমাণুর বিকিরণ

বিকিরণ বলতে আমরা এতোদিন আলো বা তাপ রপে শক্তির এক স্থান থেকে অপর স্থানে গমন বোঝাতাম। কিছ ১৮৯৫ সালের পর থেকে এই ধারণার পরিবর্তন হলো। ঐ বংসর ফরাসী বিজ্ঞানী বেকারেল লক্ষ্য করেন যে, বিকিরণের পরিস্থাত উৎস হতে স্বতম্ম রূপে ইউরেনিয়াম খাতু অভিনব এক রশ্মি নির্গত করে। বেডিরাম, এটেনিয়াম, খোরিয়াম ইত্যাদি থেকেও এই রশ্মি প্রকাশ পার। পদার্থ বিশেবের এই বিকিরণকে আমরা ভেজজ্রিক্মতা বলেছি, ইংরেছাতে রেডিও-একটিভিটি।

তেজবিদয়তার স্বরূপ

পিরের ক্রী, রাদারকোর্ড এবং ভিলার্ডের গংহেগার ফলে ক্রমণ জান। গেলো বে, ভেল্লক্রিয়ত, অবৌগিক বিষয় নয় (Composite phenomenon), আল্ফা, বিটা ও গামা—এই ভিনটি রগ্নির উপাদানে গঠিত। আমর' ইচ্ছা করলে বাতির আলো বন্ধ বা শ্রেকাশ করতে পারি, কিছ ভেল্লক্রিয়ভার সম্বন্ধ আশ্রেষ্টার কথা এই বে, মানবসাধ্য কোন প্রক্রিয়ায় এই বিকিরণতে রোধ করা যায় না।

কুত্রিম তেজজ্ঞিয়তা

তেজ জিরতা স্বংক্রির, অপ্রতিরোধ্য; তবে কৃত্রিম উপারেও তা সৃষ্টি করা চলে। আইরিণ কুরী এবং জোলিও সর্বপ্রথম এ বিষ্
রে সফল হন। সে হলো ১৯৩০ সালের কথা। পরমাণুর কেন্দ্রগুলে ইলেকটুলের আঘাত হেনে এই বৈজ্ঞানিক-দম্পতি তেজজ্রির আইসোটোপ সৃষ্টি করেন। আইসোটোপ হলো এক কথায় পদার্থের ভিন্নরথ। সোনার আইসোটোপ আসলে সোনা-ই, তবে একটু তফাৎ এই মাত্র—সোনার ১৯৮ নম্বর পরমাণু থেকে তেজজ্রির রখ্যি বিটাও সামা নির্সন্ত হয়ে থাকে। সকল আইসোটোপই তেজজ্রির নর, তবে এ পর্যন্ত সৃষ্ট ১,৩০০ আইসোটোপের মধ্যে প্রার

পরমাণ্র বিভাজন ঃ শক্তির মৃতন উৎস

১৯৩৪ সালে ইটালীতে এনরিকো কার্মি ইলেকট্রণের পরিবর্তে
নিউট্রণের আঘাত হেনে কৃত্রিম আইসোটাপ স্বান্তর উপার
আবিধান করেন। এর চার বছর পরে জার্মানীতে একটি অভি
উল্লেখবোগ্য ঘটনা ঘটে। হান এবং ব্রাসম্যান (Hahn and
Strassman) নিউট্রণের আঘাতে ইউবোনিয়ামের প্রমাণ্ ভাঙতে
সমর্শ হন। (আযাসের জানা উচিত বে, সৌরক্ষণতের অতি ক্ষন্ত



প্রতিকৃতিরূপে পরমাণ্র মৃলকণা ইলেকট্রণ কেন্দ্রবন্ধ বা নিউক্লিয়াসকে क्ट करत अम्बिन करत । भगार्थत कृतां क्रिय **अम्बर्ग अहे भत्रमाप्**त অধিকাংশ স্থানই কাঁকা, নিউট্ৰণ গ্ৰোটন ইত্যাদি নিয়ে গঠিত নিউক্লিয়াস তার স্বল্পতম আয়তন গ্রহণ করে আছে মাত্র, স্মতবাং কোন প্রমাণুর ঘথাস্থানে আঘাত হেনে তা তু'ভাগে ভাগ করা ি: সন্দে: ছ ছাত তুরু প্রক্রিরা।) লিভে এবং ফ্রিস (Lise Meitner and Otto Frisch) এই পদ্ধতিৰ নাম দেন 'ফিস্ন' (Fission), অর্থাৎ প্রমাণুব বিভাজন। তাঁরা আবো (मथात्मत, किमत्तेत कत्म चा=bया मक्ति क्षकाम भाषा। भागार्थव শক্তিতে রূপান্তরের ফলেই তা সম্ভব হয়েছে। ইতিপূর্বে (১১•৫ সালে) আইনট্রাইন তাঁরে বিখ্যাত আপেক্ষিক তত্তে উল্লেখ করেন যে, শ'ক্ত (ধার সাহাব্যে কাল হয়) এবং পদার্থ (বে কোন জারগ। জুড়ে আছে) একই জিনিষে বিভিন্নল মাত্র, পদার্থ শক্তিতে এবং শক্তিও পদার্থে রূপান্তরিত হ'তে পারে। করলা যথন অলে তথনো কিছ পরিমাণ পদার্থ ভাপদাক্তিতে প্রকাশ পার, কিছু পর্মাণ্র বিভাগনের ক্ষেত্রে এই পথিমাণ কল্পনাতীত ভাবে অধিক—প্রায় ২৬, • • • • গুণ !

ফিসন প্রক্রিয়ায় জাত ভগ্নাংশগুলি এক একটি নৃতন পরমাণু, সাধারণত এরাও তেজজ্জিয় হয়ে থাকে। ইউবোনিয়ামের বিভাজনের ফলে সাধারণত তে খাক্রুয় ধা হু ক্রিপ্টন ও রেড়িয়াম পাওয়া বায়। এরপে প্রমাণুণ বিভাকন তেজক্রিগার একটি নৃতন উৎস। ভাছাড়া, ফিসানৰ প্ৰভাবে ছুই ৰ। ততোধিক নিউট্ৰণ নিৰ্গত হয়ে থাকে। আমরা জানি, নিউট্রণের সাহাধ্যে প্রমাণুর বিভাজন স্কুতরাং উপযুক্ত পৃথিমাণ ইউথেনিয়ামের বর্তমানে একবাৰ ফিসনের ফলে জাত নিউট্রণ একাংধক প্রমাণু বিদীপ করবে, এই হটি বা ভিনটি নিউট্রণ আবার চার থেকে নয়টি इंडेरबिन्द्राम भवमान विভाकत्नव कावन इरव। अक्रल अधि থেকে হুটি বা ভিনটি, ভিনটি থেকে ছুটি বা নয়টি প্রমাণ্— সুত্রাং ফিদন প্রক্রিয়া প্রায়বদ্ধ ভাবে অগ্রদর হবে—বেমন এক সাবি সিগারেটের খোল কাছাকাছি দাঁড কার্যে একটিকে ধাকা দিলেই স্বহুলি খোল একে একে পড়ে বায়। ফিনন-এর কেতে অবশু এ ক্রিয়া অতি ক্রত অনুষ্ঠিত হয়ে থাকে, ফলে নিদিষ্ট পরিমাণ (critical mass) ইউরেনিয়াম একত্তিত হওয়া মাত্রই পারমাণ বিকোরণ ঘটে—অর্থাৎ স্বরতম সময়ে অধিকতম শক্তি প্রকাশ পায়। বিজ্ঞানীরা এর নাম নিয়েছেন পর্যায়বন্ধ প্ৰতিক্ৰিয়া (chain reaction)। বিষয়টি খুবই আশ্চৰ্যাজনৰ— ক্রুলার দহন-ক্রিয়ার জন্ম অন্মিজেনের সরবরাহ প্রয়োজন, কিছ ফিসন প্রক্রিয়ায় ইউরেনিয়ামের প্রমাণ প্রয়োজনীয় "অক্সিজেন"

অর্থাৎ নিউট্টণ নিক্তেই স্ট্রী করে নেয়, প্রক্রিয়াটি স্কুক্ করার জন্ম প্রধাম কয়েকটি নিউট্টণ থাকলেই মথেষ্ট।

প্রমাণু বিভাজন প্রক্রিয়া আবিজাবের পর ফেন্ট্রিক জোলিও এবং এনরিকো ফামি ইউবেনিয়ামের ফিননকে সর্বপ্রথম পর্যায়বদ্ধ বলে অর্থাবন করেছিলেন। কিন্ধু বিষয়টি তথনো প্রমাণ্নাপেক ছিল। অবশেষে ১৯৪২ সালের ২রা ডিসেম্বর ফামির নেতৃত্বে ৪১ জন বৈজ্ঞানিক সত্যসতাই তা সম্বর্গ করলেন। আমেরিকার চিকাগো বিশ্ববিভালরে একটি বিচিত্র "রিয়ের্রার"-মন্ত্র (তৎকালীন নাম পরমাণু "পাইল"—চিকাগো পাইল নম্বর এক, СР1) স্থাপন করে এই বৈজ্ঞানিকগোষ্ঠী দেখলেন যে, ফিসন প্রক্রোর বাস্থ্যবিক্ট পর্যায়বদ্ধ ভাবে এগিয়ে চলে। ইউবেনিয়ামের পরিমাণ অধিক হলে এই প্রক্রেয়া তৎক্ষণাৎ প্রবল বিক্ষোরণের আকার ধারণ করে, এই বিক্ষোরণ-শক্তিকে আবার সংমত করাও চলে। এরূপে প্রমাণ্র কেক্স্থল আঘাত করে আবৃনিক মামুষ মৎস্টাক্র ভেদকারী অন্ধুনির স্লোপদীলাভের লায় এক নৃত্র শক্তির আধকারা হলো।

কল্যাণশক্তি পরমার্

প্রমাণুশক্তির নিয়ন্ত্রণ সর্গকালের মানবজাতির একটি অতি উল্লেখবোগ্য ঘটনা। কিছ তংকালীন মহাযুদ্ধের কারণে বিজ্ঞানের এই অগ্রগতি সর্বপ্রকারে গোপন রাখা হরেছিল। ফলে ১৯৪৫ সালের ৬ই আগ্রন্ত জাপানের একটি বিখ্যাত সহরে পরমাণুর বিক্ষোরণের আগে পর্বান্ত মামুবের এই আয়ন্তাধান শাক্ত সাধারণের মধ্যে ব্যাপক পরিচয় লাভ করোন। পরমাণুকে আম্বান প্রথম ধ্ব-সশক্তিরপে জেনেছি, কিছ মহারুদ্ধের পর এই নৃতন শাক্ত প্রধান ভাবে তথু সামারক হন্দেগ্রেই নিয়োজিত থাকেনি, বহু ক্ষেত্রে তা মামুবের কল্যাণ সাধনেও তৎপর হয়েছে। পরমাণুশক্তির বলে বহু আত্মঘাতী অল্লে। উত্তাবন সম্ভব হলো সত্যা, কিন্ত সেই সংগে তা মামুবের অগ্রগতি: সামনে অনম্ভ সন্তাবনার ঘার খুলে দিয়েছে। পরমাণু আজ শক্তি: বিকল্প উৎস, পরমাণু আজ চিকিৎসা-বিজ্ঞানে, পরমাণু শিল্পকাক্ষে কৃষ্কিমে—পরমাণু আজ সকল ক্ষেত্রে মামুবের কল্যাণে প্রতী হয়েছে।

পরমাণ্র "অদৃখ হাত"

জল বলতে ষেমন সিক্ততা, পরমাণ্র সাথে তেমন তেজজ্বিতা অলাকীভাবে জড়ত। আমরা জানি, এই তেজজ্বিতা তিবিধ রশির উপাদান। আল্ফা ও বিটা—বল্ধকণার প্রবাহ মাত্র। আল্ফা নিউট্বের এবং বিটা-র হলো ইলেকট্রণ। গামা কিন্ত প্রকৃত আর্থে বল্কচীন রশির, এবং এক্স্-রে বা আলোর সংগে তুলনীর। আলো কাচ ডিডিয়ের যার, এক্স্-রে মোটা মোটা কন্কীটের দেওয়াল পর্যান্ত ভেদ করতে পারে—গামা রশির এর ভেদন ক্ষমতা (Penetrating power) এক্স্-রের তুলনায় করেক শ গুণ। তেজজ্বির রশির ভিনটির মধ্যে গামা-রেই সবচেয়ে শক্তিশালী, তারপর বিটা রে, এবং সবচেয়ে কম আলকা রশির।

এইচ, জি, ওয়েলস্-এর অদৃত্য মাহুবের গার আমরা ওনেছি। বে মাহুবকে চোথে দেখা ধায় না, পারের ছাপ লক্ষ্য করে তাকে কেমন অনুসরণ করা চলে। প্রমাণুর কেত্রে তেজজিরতাও এমনি "অদৃত্য হাত"। এই "অদৃত্য হাত" আমাদের কেমন কাজে আসছে, ভার করেকটি এখন উল্লেখ করছি।

পরসাণু শিল্পকাজে '

তৈল অঞ্চল বা শোধনাগার হতে সাইমোজেন, পেট্রোলিয়ামইথার, পেট্রল, গ্যামোলিন, কেবোসিন ইত্যাদি বিভিন্ন প্রকারের
তেল একই নলপথে প্যায়ক্তমে পাঠানো হয়ে থাকে। পরিবহনব্যর এতে কম হয় সত্যা, কিছ ভিন্ন ভিন্ন তেল কথন আসবে তা
জানতে না পারার হু রকম তেল একত্র মিশে বেতে পারে।
তেজজ্জিয়তার সাহাযো এর সমাধান আছে। এক শ্রেণীর তেল
বথন পাঠানো শেষ হলো তথন তেজজ্জিয় এন্টিমনি বা বেড়িয়াম
নলপথে কিছু পরিমাণে ঢেলে দেওয়া হয়। এই তেজজ্জিয় পদার্থ
বথন অপর প্রান্তে গিয়ে পৌছায়, কোন তেজক্রিয়তা সন্ধানী ব্যর
(Geiger-Muller Counter)-এর সাহায়ের সহজেই তা ধরা
পদ্বে। তেজজ্জিয়তা তৈলবাহা নলগুলিকে বাধামুক্ত রাথার কাজেও
সাহায়া করে।

ছটি ধাতৃপণ্ডের ঘর্ষণে ক্ষণিকের জন্ম যে উচ্চ ভাপমাত্রা ও চাপের স্টি হয় তার ফলে ধাতুর ক্ষয় হয়ে থাকে। এই ক্ষয়ের পরিমাণ খুবই কম, অণুবীক্ষণের সাহায্যেও সহসা ধরা বায় না, কিন্তু নিয়ত সচস থাকার ফলে যন্ত্রের বিভিন্ন অংশে এই ক্ষরের পরিমাণ সহজ্ঞেই প্রকট হয়ে ওঠে। যন্ত্রকে ক্লো করার জন্ম তাই মাঝে মাঝে তেল (Lubricating oil) দেওয়ার বিধি আছে। এই উদ্দেশ্তে বিভিন্ন ভেলের কার্য্যকারিত। লক্ষ্য করার জন্ম পূর্বে পরীকা-মুলক ভাবে যন্ত্রকে চালিয়ে ক্ষয়ের পরিমাণ হিসাব করা হতো। কিছ কাজটি সময়সাধ্য এবং ব্যয়সাধ্যও বটে—কারণ এই পদ্ধতিতে দামা দামী বত্তের বিভিন্ন অংশ শুধু পরীকাকার্য্যেই নষ্ট হতো। সাধারণ থাডুফলকের পরিবতে বিদ বল্লের অংশকে তেঞ্জিন্তর করা হয়, কো হলে ন্যুনতম ক্ষয়প্রাপ্ত অংশের পরিমাণও গাইগার কাউণ্টার জানিয়ে দেবে। একটি উদাহরণ দেওয়া ভাল। কালিফার্নিয়া বিসাচ করপোরেশনের কর্তৃপক্ষ জানাচ্ছেন, এই পদ্ধতি আবলখনে পঁয়ত্তিশ হাজার ডলার খনচ করে চার বছরে বে তথ্য তাঁরা সংগ্রহ করেছেন, সাধারণ উপারে তার অন্তত পঁচিশৃঙণ অর্থব্যয় ও বার গুণ সময় নষ্ট হতো।

শিল্পে তেব্দক্রিয়তার আবা বিচিত্র প্রয়োগ আছে। কাগক বা ধাতুর পাত কারখানার প্রস্তুত হচ্ছে। জানা দরকার, পুরুর সমতা রকিত হচ্ছে কিনা। তেব্দক্রিয় খ্যালিয়াম নিমেবেই তা করে দেবে। খ্যালিয়াম রিটা রশ্মির বিকিন্নক, চলম্ভ পাতের নিচে এটি রাখা হয়। পাতটি যত পুরু, রশ্মির তীব্রতাও তত হ্লাস পাবে। তেজক্রিয়তা সন্ধানী যন্ত্র সহজেই তা ধরতে পারে।

বাতুতে ধাতুতে জোড়া লাগানো হলো, কিন্তু ভিতরে গলদ থাকতে পারে। বক্সা নিয়ন্ত্রণের জক্স বঁংধ দেওরা হরেছিল, বলা বার না জলের চাপে কোথাও বলি ফাটল ধরে। তর নেই, তেজান্ত্রিয়তা আছে। বিভিন্ন তেজান্ত্রিয় পদার্থ বিশি বিকিরণে ভিতরকার ছবি তুলে দেবে—ঠিক বেন 'ওটোগ্রাফ' (Auto Graph)। পাচ গেটিমিটার (ছ' ইঞ্চি)-এর ভিতর হলে তেজান্ত্রিয় ইরিডিরাফ, তার বেশী চাইলে কোবাটে (জ্রিশ গেটিমিটার প্রভ্রান্ত)।

রাষ্ট ফারনেস্ (Blast Furnace) এব ভিতরটা বিশেষ ইট (Fire Brick) দিরে গাখা খাকে। করেক বছর পরে কিছ এই ইট ধবসে বার। তেজজির কোবাণ্টের সাহাব্যে সহজেই আমন চুলীৰ দেওৱালের পুৰুত্ব মেপে নিতে পাৰি। ফলে কথন সাবাই কৰা উচিত তা নিৱে আবু সমুখ্য থাকে না।

এমন অনে হ বাসায়নিক ক্রিয়া আছে বাদের পরিণত পর্যায় মাত্র আমাদের জানা আছে, কিন্তু প্রাথমিক অবস্থা থেকে কি করে বিভিন্ন ভবে এই পরিবর্তন সাধিত হয়েছে, তা আর জানা নেই। যেনন ধকন, ববাবের ভালকানিজেশন (Vulcanization), কার্বোহইড়েটের অক্সিজেন-সংযোগ (oxidation) ইত্যাদি। কার্বনে-সূই- অক্সিজেন (Carbon Dioxide) জল ও স্থাকিরণ হতে কি করে যে উদ্ভিদ কার্বোহাইড়েট প্রোটিন ও চর্বি গঠন করে (Photo Synthesis) তা-ও আমাদের অজ্ঞাত। কিন্তু তা বদি কোন দিন জানা যায়, থাত সামগ্রীর জন্ম মানুষকে আর কৃষি ও গৃহপালিত পশুর উপর নির্ভ্র করতে হতো না। এই কয়টি সামান্ত জিনিব থেকেই থাত সমস্তার মীমান্যো হরে বেতে। যদি তা কোন দিন পারা বার, একমাত্র তেজজ্রিয়তার সাহাব্যেই সম্ভব হবে।

আপাতত প্রমাণুর "অদ্খ হাত" ক্যেক্টি গুরুত্বপূর্ণ বিষয়ের সংকেত করেছে। লোহ-শোধন কার্য্যে ব্লাষ্ট ফারনেস্-এ গন্ধকের পরিমাণ ধাতুর গুণাগুণ নিধারণ করে। চুলীর ভিতর গন্ধকের ক্রিয়া জনুধারন করা আগে সম্ভব ছিল না, কিন্তু তেজজ্রিয়তা তা সহজ্ঞ করেছে। তেজজ্রিয় গন্ধকের গতি অনুসরণ করে ফারনেস্-এ তাম ক্রিয়া উন্নত্তর করা এখন আর ত্রহ নয়।

ভেল্পক্রতার ফলে শংকর ধাতু বা Alloy-এর গঠন-প্রণাগী সম্বন্ধে বা জানা গেলো, তা সভাই বিশ্বয়কর। অ্যালয়ের দানার ভিতর পরমাণ্ডলি নিয়ত গভিসম্পন্ন থাকে, বাইরের কোন পরমাণ্ জ্যালয়ের সম্পর্গে দানার এই "আবর্ডে" ভূবে য়েতে পারে। কার্বনে-ছই-জ্বিজেন গ্যাসের কথাই ধরা যাক। এই গ্যাসের কার্বন পরমাণ্ ইম্পাতের ভিতর সহজেই প্রবেশ করে। নাইট্রোজেনের ক্ষেত্রেও তা-ই। ইঞ্জিনিয়ারিং বিভাব দিক থেকে অ্যালয়ের এই জ্বয়ঙ্গ (Proterty) জ্বয়্যস্ত কার্যকারী।

পরমাণু ক্লমিক্কেত্রে

কটোসিন্থেসিস্-এর কথা আমরা বলেছি, বার রহস্ত মোচন হলে পৃথিবীতে কৃষিকান্ধ নিবর্থক হয়ে থাবে। গত্নর লেকটিক প্রস্থি (Lactic Gland) সম্বন্ধেও বিজ্ঞানীরা অমুক্রপ চিস্তা করছেন। এই প্রস্থিব কৈবিক ক্রিয়া (Metabolism) জ্ঞানা গেলে ঘাস খেকে হুই তৈরী করা বৃথি আর সমস্তা থাকে না। ভেড়ার গারে কি করে সোম জন্মে, দেকে কিভাবে চর্বি সঞ্চয় হয়—এ সমস্ত এখনো মস্ত জিজ্ঞাসা। তেজজ্জির বশ্মি একদিন তার উত্তর দিতে পারে। কৃষিকান্ধ এখনো নির্থক হয়নি, ফলে তেজজ্জিরতা এখন আমাদের এই কাছে সাহার্কারী হয়েছে।

সাব কথন কিভাবে দিলে গাছেব সর্বাপেকা উপকার হয়, তেজজ্ঞিয়তা তা আমাদের জানিয়ে দেয়। তেজজ্ঞিয় পদার্থের সাহারের গাছের ভিতর সারের কাজ অম্পরণ করা এখন আরু সমপ্রা নর্ম করোলিনা কলেজ এইভাবে জম্পন্দান করে দেখেছেন, তামাক চারার গোড়ায় বে স্থপার ফস্ফেট (Superphosphate) সার দেওয়া হয়, তা সম্পূর্ণ নিরর্থক, কায়ণ বাড়স্ক অবস্থায় তামাক এই সার গ্রহণ করে না। এই একটি মাত্র আবিকারে ফ্লেশানকার চারীয়া বছরে প্রায় ৪,৩০০ টন সার বাচাতে পেরেছিল।

অনেক সময় দেখা বায় সামাত কোন পদাৰ্থের জড়াবে উদ্দিশ বা জীবদেহ রোগ ধারণ করে। এক সময় রাশিহার লাটডিরান প্রদেশে গরু ও ভেডার পালে মড়ক দেখা দের। মন্ত্রোর জীব-প্রজনন প্রতিষ্ঠান ভানালেন, দেহে কোবান্টের জড়াব তেতু রোগ দেখা দিয়েছে। তথন সাধারণ থাজের সাথে পশুদের কোবান্টের বটিকা খাওয়ানোর বাবস্থা হলো। ইংলতে আল্ফাল্ফা (Alfalfa) এবং অভাক বে সকল উদ্ভিজ্ঞ শীতকালে নই হয়ে খেতো, ভামিতে কস্ফরাসের ভাবই তার কাবে, তেক্তছিদ্যুতার সাহায়েই এই সন্ধান পাওয়া গেছে।

তেন্ত্রজ্বিতার সাহায্যে শশুকীট ধ্বংসও সম্ভব। এই রশিরে সাহায্যে সম্প্রতি লক্ষ্য করা হয়েছে, ডি, ডি, টি কীট ইন্ত্যাদি সকল শ্রেণীর পোকার পক্ষে মারাত্মক নয়, ডি, ডি, টির সাথে অন্তাভ রসায়নিক পদার্থ মিশিয়ে বর্তমানে তা আব্যো শক্তিশালী করা প্রয়েজন, এবং তা করাও হয়েছে।

কিছ শশুক্ষেতে তেজজিয়তার প্রত্যক্ষ প্রয়োগ গাছের পক্ষেক্তিকর হতে পারে। বৃশলাগু (Bushland) নামে এক জীবাপ্রিদ এই উদ্দেশ্যে এক নৃতন উপায় উভাবন করেছেন। আমরা জানি, তেজজিয় বিকিরণ বদ্ধ্যাত আনে। বৃশলাগু পুজোতীয় পোকাকে বিকিরণে বিদ্ধ করে উপদ্রুত অঞ্চলে প্রেড়ে দেন। বাভাবিক স্ত্রী-পোকা এই সকল "তেজজিয়" পোকার সংশোর্জে এসে বে ডিম পাড়ে তা কুটে আর বাচনা বেরোয় না। এইভাবে সহজেইেই কীট ধ্বংস করা বেতে পারে।

রালাঘরে পরমাণু।

পরমাণ্ শুধু কুণিক্ষেত্রেট কাজ করে নি, রান্নাখরেও চলে এসেছে। থাতা সংরক্ষণ একটি মস্ত সম্প্রা। কিছ ভীবাণুকুলের জন্ম তা দস্তব হচ্ছে না। তেজজ্জিনতা এই উদ্দেশ্যে ব্যবহার হতে পারে। কিছ জীবাণু নিম্পা করতে শক্তিশালী রশ্মির প্রয়োজন । ইতিমধ্যে বিকিরণের প্রয়োগে কলা ইত্যাদি কয়েক প্রকার ফল জনেকদিন পর্যান্ত স্বাভাবিক বাথা সম্ভব হয়েছে বলে জামরা জানতে পেরেছি। কিছ এই ব্যবস্থান্ন থাতের স্বাভাবিক সাদ ও বর্ণ নাই হরে থাকে। মোট কথা, থাতা সংরক্ষণে তেজজ্জিন্নতা এখনো সম্পূর্ণ সফল হতে পারে নি। তবে পেনিসিলিন ইত্যাদি কয়েক প্রকার ওম্বুধ্ এই প্রক্রিয়ান্ন জীবাণুমুক্ত করা হয়, তাপ প্রয়োগে পেনিসিলিন নাই হয়ে থাকে।

রোগকল্যাণে পরমাণ্

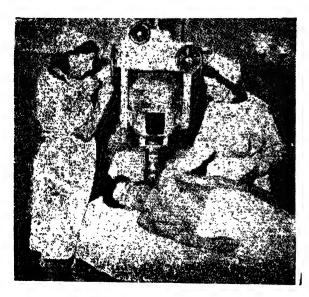
চিকিৎসায় এতোদিন আমবা রেডিয়ামের কথা শুনেছি. রেডিয়াম ক্যানসারে বাবহার হয়। এই ক্যানসার কি ? আমাদের দেহকোবে বে প্রোটন ও নানাবিধ নিউল্লিখিক আাদিড (Deoxyribonucleic Acid ইত্যাদি) আছে, তার পরিমাণ ২খন অত্যস্ত বেড়ে যায়, তথন দেহকোবের সংখ্যাবৃদ্ধি ঘটে—তারই ফল হলো ক্যানসার।

কিছ দেহকোবে অ্যাসিডের পরিমাণ কেন বেড়ে বাবে ভা এখনো অজ্ঞাত আছে। তাই ক্যান্সার আজও হ্রারোস্য ব্যাধি। তবে করেক প্রকার তেজজ্ঞির খাইসোটোপের বাবহার এই রোগকে আনেকটা সংবত করে এ'নছে। তেজজ্ঞিয় কোবাণেটর কথাই ধরা বাক। রূপোর ভার তত্র এই মৌলিক পদার্থটিকে আগে বলা হজ্ঞে "বিস্তহীনের স্বর্ণ"। কিছ ক্যান্সারের চিকিৎসার আজ কোবাণেটর বে দান তা রেডিরামের সংগেই তুলনীর। বিক্রিরণের ছারা দেহকোর নই হয় বলে আমবা জানি, এই অক্সই ক্যান্সারে আক্রাক্ত কোষকে
ধবংস করার জন্ত তেজজ্ঞিয় রশ্মির ব্যবহার। কিন্তু সমস্যা হলো
এই বে. তেজজ্ঞিয়ত্বার ফলে কয় দেহকোবের সংগে প্রবােজনীয়
যাভাবিক কোষেওও ক্ষতি হয়। স্করাং তেজজ্ঞিয় পদার্থকে এমন
আকারে প্রয়োগ করতে হবে যাতে স্বাভাবিক দেহকোবে তার প্রভাব
অতান্ত পরিশিত হয়ে থাকে। চিকিৎসার প্রয়েজন ব্যে বিত্তগীনে ব
ব্যক্তি সচকেই বিভিন্ন আকারে রূপ দেওয়া যায়। এই উদ্দেশ্তে
কোবাল্ট লাইলন ভল্কও ব্যবহার করা হয়েছে। সম্প্রতি আমাদের
দেশেও তেজজ্ঞিয় কোবাল্টের ব্যবহার হছে। ক্যান্সার চিকিৎসায়
কিন্তু ক্রমণা তেজজ্ঞিয় কেসিয়াম (cesium)-এর ব্যবহার চালু
হবে, কারণ এর তেজজ্ঞিয়তা অনেকদিন প্রয়ন্ত স্থায়ী পাকে।

গলদেশে অবস্থিত থাইসমিত প্রস্থি (Thyroid Gland)
আমানের জৈবিক ক্রিয়া অনেকাংশ নিয়মন করে। এই প্রস্থি যথন
অধিক মাত্রার সক্রিয় হয়, তথন থাইরোটো ক্লিকা সিদ্
(Thyrotoxicosis) রোগ জ্বো, মাইক্সোডেনা (Myxoedema) হলে এই ক্রিয়া হ্রাস পার। তেজজ্বিয় আইওডিনের স'হাব্যে থাইরোইড প্রস্থিব ব্যাধি সহক্রেই নিরামর হয়।

মাধার ভিতবে টিটমার (Tumour) সন্ধানের জক্স এথন এক নৃতন পদ্ধতি আবিস্থার হয়েছে। শিরার থানিকটা তেজজ্ঞির কস্করাস্ চুকিরে দেওয়া হলো। এই তেজজ্ঞির পদার্থটি প্রধানত টিউমারে গিরে সঞ্চিত হবে, টিউমারে তেজজ্ঞির পদার্থ কয় স্থানে বেশীর ভাগ ক্ষমা হয়। তেজজ্ঞির সন্ধানী কোন স্ক্ষম বত্রের সাহায়ে ভা ক্ষমারন করা তথন আব সম্বাধাকে না।

ভেক্সকিষতার একটি সক্ষপ প্রয়োগ হলো রক্ত চিকিংসার।
রক্তরসে (Plasma) শ্বেত ও লোহিত ক্লিকা থাকে বলে আমরা
ক্লানি। স্বাভাবিক অবস্থায় প্রতি ঘন সেণ্টিমিটারে পাঁচ হাজার
শ্বেত ক্লিকা থাকে। এই সংখ্যা ব্যন অভ্যন্ত বেড়ে যার (প্রতি



প্রমাপুর "নাশীর্বাল"। রোগ চিকিৎসায় যান্ত্রিক কৌশলে ভেলজ্বিক বৃদ্ধি বৃদ্ধিত চচ্ছে।

ঘন সেটিমিটারে এক লক্ষ বা তারও অধিক) তথন তা হলো রজের ক্যান্দার বা লুকেমিয়া (Lukaemia)। এই মারাস্থাক রোগে এক্স্-রের ব্যবহার আছে, তেজজ্ঞির ক্স্করাস্থ এই উদ্দেশ্যে ব্যবহার করা হয়!

ল্যু কেমিয়ার বিপরীত হলো পলিসাই-থেমিয়া ভেরা (Polycy-Thaemia vera)—এই বোগে রক্তে লোহিত কণিকার সংখ্যা বৃদ্ধি পায়। তেজক্রিয় ফস্ফরাসের প্রেয়োগে এ ক্ষেত্রে এক্স্-রের চেয়েও অধিক কাঞ্জ দিয়েছে।

রোগ নিতাময়ের কথা আমরা মোটামুটি আলোচনা করলাম-মাত্র কৃতি বছবের অভিজ্ঞতায় মানুর আইসোটোপকে বে কত বিচিত্র উদ্দেশ্যে প্রায়োগ করেছে তা ভাবলে সভাই অবাক হতে হয়। এই কুড়ি বছরে সভাতার বিভিন্ন ভবে পরমাণু যে প্রভাব বিভার করেছে, তা শ্বরণ করলে আজ নৃতন করে মনে হয়-হা, কথাটা ঠিক বটে, জ্ঞানই শক্তি। তেক্সজিয়তা আমাদের জন্ম এডট করেছে ৷ এট প্রসংগে মান্তবের দেহ সম্বন্ধে সম্প্রতি বে তথ্য গুলাত হয়েছে তা এখানে উল্লখ না করে পার্ছি না। আথাদের দেহ—তার মাংসপেশী, হাড়, নথ, চুল—কিছুই স্থির অপরিবর্তিত नश्. वदः निषेत्र महारे हक्ष्णः नमोत क्षण स्थम निष्ठ नस्य बास्क. আমা:দর দেহগঠনের মৌলিক উপাদানগুলিরও তেমনি সর্বদা পরিবর্তন হয়, আৰু যে প্রোটিন বা ক্যালসিয়াম আমার দেহে আছে, কাল তা না-ও থাকতে পারে। এদিক দিয়ে দেখতে গেলে মাছুৰ প্রতি বছর নুতন করে জন্মগাভ করছে। ডাঃ স্কোরেনহিমার (Schoenheimer) তেজজ্ঞিয়তার খারা পরীকা করে দেখেছেন, লবণ আমাদের শ্রীরে প্রবেশ করালে তা শিরার মাধামে বর্ম গ্রন্থিতে এনে কংকণ থ ঘাম হয়ে বেবিয়ে বায়-এক সেকেণ্ডেরও বেৰী সময় অপেকা করে না। মানুবের দেহ সম্বন্ধে এমন আশ্চর্ব্য ধারণা शूर्व कामाप्तव हिन ना ।

পরমাণ, "পত্তজাত"

পছ থেকে পদ্ম জাগে, এ কথা আমরা শুনেছি। পরমাণ্ বিকিরণের ক্ষেত্রে তা শ্বরণ করা চলে। তেঞ্জিন্যতার প্রয়োগ-কৌশল অ'ক বে ভবে উন্নত হয়েছে, তার মূলে ছিল মুক্কামী ৰাষ্ট্ৰপজ্জিৰ প্রপোষকতা। কিছ কেবলমাত্র সামরিক প্রয়োজনে পরমাণ বেশী দিন আটকে রাথা যায় নি : "শান্তির ললিত বাণী" আজ দিকে দিকে ऐक्राविक क्राक्त, देवब्रानिकतां अनुमाधात्रावे मा: वाश मिरवरक्रन. তাঁদের কেউ কেউ এমন পর্যাস্ত যোষণা করেছেন যে, মারণাত্র তৈরীর কাজে তাঁরা প্রমাণু শক্তি নিয়োগ ক্রতে আর সাহায্য कत्रराज ना । कान कान बाह्रेम किएं व विश्वास महिएन हास्ताहन । নতন স্চনা দেখা দিয়েছে—অন্ত তৈরীর আত্মঘাতী সম্ভাবনা হতে পূরে তেছজিয়তা আৰু মামুষের বল্যাণের কালে নিযুক্ত হচ্ছে। মাত্র বেন আৰু এই বিশাস পোরণ করতে পারে,—হিরোসিমা ও নাগাসিকিতে বা একদিন ক্ষম হয়েছিল, তা সেখানেই শেব হয়ে গেছে; প্রমাণু-শক্তি এখন আমাদের সভাতার লালন করবে। পুৰিবীতে থাজের অভাব, চিকিৎসায় ওবুধের সমস্তা প্রমাণু শক্তির वल वृत इत्व, कारनव क्षेत्रांव इत्व-शत्रभाष्ट्र-शक्तांवर के,वन বিকাশের পক্ষে সকল দিক দিরে কুল্যাপকর হবে।

ः ज्ञानकृताव गङ्





(পূর্ব-প্রকাশিতের পর)

বারি দেবী

ত্যপূবে অসীমেব গাড়ীর হর্প বেজে উঠতেই, ঘবে গিলে সোকায় বসলো অনিল, তাজ নজর রইলো গাড়ী-বারাকার দিকে। গাড়ী এসে দাড়ালো গাড়ী-বারাকাব জেতুর।

মস মস জুলোর শব্দ তুলে ভেতবে চলে গেলো অসীমৃ, আর টলারমান অবস্থায় ঘরে চুকলো শুকভাবা।

আনিলকে বসে থাকতে দেখে জড়িয়ে জড়িয়ে বললো—এথনও বসে কেন ডার্লিং ? থাওয়া হয়নি ? শোবে না ? কথা বলতে বলতে ধপ করে ওর পাশে বসে পাড়ে মাধাটা ওর বুকের ওপর এলিয়ে দিলো সে।

দারুণ ঘুনাব সঙ্গে প্রকে সবিহে দিবে উঠে খাটে বসলো অনিল। তীক্ষকঠে বললো—এটা অভিনয় দেখাবার জায়গা নয়। আজ ভোমার কাছে গোজা জবাব শোনবাব জন্ত বসে থাছি।

—তাই নাকি ? তা বলো। লাল লাল ফুলো ফুলো 6োখ ফুটো ওব চোণেৰ ওপৰ মেলে ধৰলো তকতাবা।

সিগারেট ধরালো অনিল। লক্ষাহানা রমণীর সর্বাক্তে একটা মুণাভরা দৃষ্টি বৃলিয়ে বললো—রাজ বারোটার সময় পণপুরুষের সঙ্গে বেড়িরে, মরে এ স মাজলামো করতে তোমাব একট্ও সরম হলো না ? জন্তু পরিবারের সঙ্গে বে তোমাব একটা সহক্ষ আছে, দেটা কি একেবাবেই ভূলে গেছ? বাজারের মেয়েমানুষগুলোকেও বে হার মানালে দেখছি!

উত্তে জন্ধ ভাবে ঘনময় গোরা ফেরা কবতে কবতে কললো আনিল—বহুদিন সাবধান করেছি ভোমাকে কিন্তু আজ বুণলাম চরম অবনতির পাকে ভূবছো ভূমি, ভোমাকে সে পাক থেকে ভোলবার সাথা বোধ কৰি স্বয়ং ভগবানেরও নেই।

—তবে এটাও স্থিব জেনো, আমি মবামানুব নই। দিনের পর দিন তোমার বেলেরাপনার অসহ অত্যাচার আৰু আমাকে কিপ্ত কুকুরের চেয়েও ভয়ন্তব কবে তুলেছে।

কাঁতে কাঁত খনে, ওব দিকে অগন্ত দৃষ্টিতে চেয়ে চরম উত্তেজনায় হাপাতে থাকে অনিল।

সোফার আবশোরা ভাবে এলিরে থেকে চোথ বুকে কথাগুলো ভনছিলো ভকতারা।

হাই তুলে ছহাতে চোথ কচলে বললো—আ:। এনন আমেজটা একদম দিলেভো মাটি কবে? নালিশ আব নালিশ। কি এমন আবাধ করেছি গো? জানতেই তো অসাম জামাব জনেক—অনেক প্রোনো বন্ধ। তার সঙ্গে একটু বেড়ালে বা তৃ-এক গোলাশ থেলে বাদের জাভ বার আমি তো ভেমন সতী সাবিত্রীদের দলের কেউ নই গো!— আর, তোমারও ভো অনেক মেয়ে বন্ধ্ আছে; ভাদের নিয়ে তুমি বদি একটু ফুজি করো, তাহলে আমার দিক থেকে একটুও আপতি হবেনা, এ আমি হলপ করে বোলভে পারি বরং ভোমারও একটু মুখ বছলাবে, সঙ্গে সঙ্গে আমারও।

শানী ! বাং চমংকার ! বাংগ কিও ইবে টেবিলের ওপর একটা প্রচণ্ড গ্রিমেরে বললো অনিল, বেছাচারিলী ! কি লরকার ছিলো তবে এই লোক দেখানো বিবে করার ?—একটা ভক্ত পরিবারের মুখে কালি মাখিরে কি লাভ হল তোমার ? কোন অধিকারে আশার জীবনটা বিবিয়ে তুলেছো তুমি ? জবাব লাও !

ভক্তারার উঠে বসবার অবস্থা আর ছিলো না. সোফার ভরে পড়ে থিল্ থিল্ করে হেসে বললো—আহামক আর কাকে বলে। অভিনেত্রার স্বামী হস্তেও সাধ যায়, আবার ভাকে সভীলন্দ্রী বউ বানাভেও সগ! যাক্ গে এই রাভ ত্পুরে গলা ফাটিয়ে পাড়ার লোক জড়ো করে আর কি কল হবে বলো, তার চেয়ে কেখে ভনে ঐ স্থমিভার মতো জড়ভরত একটি বিয়ে করে নিষে এসো, সব হালামা চুকে যাবে। আমি কিন্তু এখন এক পাও নড়ছিনা, কাল ভেবে দেখবো ভোমার কথা।

নাক ডাকতে লাগলো গুকতারার।

ঠোঁট কামড়ে মনের আলার অলতে অলতে ভুটে বাইরের লনে বেরিয়ে গেলো অনিল। প্রিপ্রাস্ত দেহধান এলিরে দিলো নরম যাসের বিচানার ওপর।

প্রচণ্ড বিস্ফোরণ যেন ঘটে গেছে ওর মস্তিকে, ভারই স্থতীর . উত্তাপ ওব দেহ মনকে দগ্ধ করতে লাগলো! এমনি ব্যাপার ওদের প্রায়ঃ ঘটছে আজকাল! উপায় কি? উপায় কি?

মনের-গভীর অধ্যকার অভল গুচাপথ হাত্তে বেড়াতে লাগলো অনিল, কোন ছিদ্র পথে আছে একটু আলো!

প্রদিন ওকতাবার ডাকে যখন গ্ম ভাঙলো অনিলের হাকা রোক্র তখন ঝিল্ মিল্ করছে ঘাদের ওপর !

অভাবের শাশব জুড়েয়ে দিয়েছে ওর শাহ জালাকে !

বছদিন পরে আজ ভাবি ভালো লাগলো ওব শুক্ হারাকে !

প্রনে ওর চওড়া লালপাড় খনেথালি সাদা সাড়ী! সভ্যান করা ভিজে চ্লের রাণ পিঠের ওপর ছড়ানো,—কপালে কুর্মের টিপ! সাকাং গৃহলক্ষাব প্রতিমৃতি!

মিটে হেসে অনিলের একখানি হাত চেপে ধবে মৃত্ টান দিতে দিতে বললে শুকতারা—ওমা, কত গ্যুবে গো ? ন'টায় যে শুটিং আছে ! চলো, চলো, চা জল হয়ে গেলো যে !

কাল রাতের সেই লাক্তনয়া শুক্তারা দেন তো, এ ক্র'। —এ থে মঙ্গলম্যা চিরন্তনা নারা। কাল রাতের অভ গোলোথোগের বিন্দুমাত্র চিছ্ন নেই ওর চোথে, মুখে, সংগত ব্যবহারে।

ওর মুখের দিকে যেন চোথ ভূলে চাইতে পারছিলো না জ্নানিল। গত রাজের নিজের উদ্ধৃত আচরণগুলোকে দিনের জালোতে কেমন জনক্ত অর্থহান বলে মনে হল। নিঃশব্দে উঠে বাথকুমে চলে গোলোনে।

স্থান সরে চায়ের টেবিলে যোগ দিলো অনিল।

—থেরে দেখো ভো মাংস'র প্যাটিসগুলো কেমন হরেছে? অনেকদিন বাদে করেছি কি না, হেদে ওর দিকে চেরে বললো শুক্তারা।

চমৎকার ! প্যাটিসে কামড় দিয়ে বললো অন্তিল এই সক্কালবেলা আবার এক পরিশ্রম করে এণ্ডলো করতে গেলে কেন ? —ৰাঃ! ভোষাকে থাওৱাতে ইচ্ছে কৰে না বৃকি ? সমহ পাইনা ভো হবে কি ?

খাওয়া কেলে, অনুবাগভরে শুক্তারার একথানি হান্ত নিজের বাঁ হান্তে টেনে নিয়ে বুকে চেপে ধরে মিনভিত্তরা গলার বললো জনিল—আমাকে ক্ষমা করো তারা! কাল রাতে বজ্জ অবিচার করেছি তোমার ওপর! বলো, বলো মাই সুইট হার্ট বাগ নেই ভো জামার ওপর?—বুঝতে পারিনা তারা, কেন যে মনটা দিন দিন জামার এত উগ্র হরে উঠেছে। একটা লম্বা নিঃখাস ছাজ্লো অনিল।

নিপূণা অভিনেত্রী ব্যবদা তার নতুন অভিনয় কডথানি সাক্সেসফুল হরেছে। অনিলেব কাঁধে মাথাটি তেলিয়ে দিয়ে আদরে গলে পড়া স্থাবে বললো সে—বেণ করেছো বলেছো। মাগো, একটু ঝগড়াঝাটিও কি করবো না আমরা ? তার জন্তে আবার মন ধারাপের কি আছে ? নাও এবার তাড়াতাড়ি ভৈরী হরে নাও তো ?

গন্ধ বাত্রে থাওর। হয়নি অনিলের। মনের আলা জুড়িয়েছে; এবারে পেটের আলার তাগিলে পরম ভৃত্তি ভবে থাবারের প্লেট থালি করতে শুক্ত করলো।

শীত পেছে এসেছে বসম্ভ ! পাছে গাছে কেপেছে ফচিপাতার শিহরণ। আবির কুষ্মের ছোপ লেগেছে ডালে ডালে নীল, বেগুনী, বাসম্ভী ফুল ঝরিরে, উভিরে, বিচিত্র বর্ণের আল্পনা দিয়ে বেড়ার মদির চঞ্চল, দখিনা বাতাদ।

ৰক্ষপুরাতে বন্দিনী রাজক্তার ক্লম ভবনের ঘারে ঘারে ব্যাকুল

করাঘাত করলো সেই উত্তলা প্রন। গুর আকুল আহ্বানে আর ঘরে থাকতে পারে না সুমিতা। লালকুঠির ছ্বে-থোগুরা সালা মার্কেল-পাথরের সিঁড়ির ধাপে পা দিরে সে নিচের তলার নামতে থাকে। ধূলোর আন্তরণে চেকে গেছে সিঁডিটা, এক ধারে আছে খেত মর্মুরের ভেনাসের মৃতি। তার খাঁজে খাঁজে জমেছে পুরু ধূলো। প্রকাশু আরনা সোনার ফ্রেমে বাধানো সিঁড়ির বাঁকের মুথে আটকানো। আয়নার কক্ষতে বেল্জিয়াম কাঁচটা, বেন বড় মাপাসা মনে হল শুমিতার চোখে।

সাৰি সাবি ক্ষটিকের বছে বাজিদানগুলো আর বলে না। মৃত্য দৃষ্টিতে বেন ওবা চেয়ে আছে সুমিতার দিকে। ওদের দিকে একবার নিম্পার ভাবে চেয়ে থাপের পর থাপ বেরে চললো প্রমিতা ধূলোর ওপর পারের ছাপ এঁকে এঁকে। অব্দরে বাবার সিঁড়ি এটা। ব্যবহার করে একমাত্র স্থমিছা। সদরে কাপেট মোড়া সুসজ্জিত কাঠের সিঁড়িটা শুর্থ অসীম আব তার সঙ্গাদের ব্যক্ত। চাকর দাসীদের গুঠা নামার করু আছে লোহার খোরানো সিঁড়।

কত—কত দিন; প্রার বছর থানেক নামেনি সিঁড়ি দিরে সমিতা! বারনি বাগানে। বাইরে বেকনো ছেড়েছে এ বাড়ীতে এসে অবধি, তবে মাঝে মাঝে বাগানে বেড়াতো, অবিভ হাউসে বসতো একা, একা। কখনও বা ওর ভজনদা এসে আপন মনে বলে বেতো লালকুঠির সমৃদ্ধ কাহিনী। কিন্তু তাও বন্ধ করতে হলো, শুক্তারার বিজ্ঞপদ্ধবা বাক্য-বাণের আলার। আর মাঝে, মাঝে চোথে বা পড়েছে—অসীম, আর শুক্তারা—কি জানি ওরা এখন ওখানেই আছে ক না. সিঁড়ির মাঝমাঝি নেমে



খ্যকে খাড়িরে ভাবে স্থামিতা, ওদিকে বাবে কি মা। থুল দিলো বন্ধ শাশিটা। ভানলা দিয়ে ছু, ছ ববে বয়ে গেলো দমকা বাতাস, ঝন ঝন শব্দে ভেঙে পড়লো সিঁড়িতে টাঙানো একখানি ছবি।. প্রতিধ্বনি তার গম গম করে বেড়াতে লাগলো পুভ প্রাসাদের ভেতর। বাশি বাশি কাঁচ ভাঙা ছড়িয়ে বইলো চঙ্ডা সিঁড়ির চাভালটার ওপর।

জনহীন পৃথা পুরা। ছ একজন চাকৰ ৰায়ুন যা আছে সৰ লাইবের ছাটট হাউনে আছে। দিছে, ৰেল পেলে তবে ওরা ভেতৰে জালে। তাই কেউ এলোনা অতথানি শব্দের বস্তাৰ শুনে। ছবিখানা সাবধানে তুলে দেওবালের গাবে ঠেন দিবে গাঁড় ক্রিবে ছাপলো ক্রিয়া। আনেক প্রোনো লগুনের বাজনবরাবের ছবি ভটা। ছবির গারের পূরু ধুলো লাগলো ওর হাতে।

ব্যথিত দৃষ্টি মেলে বাজি ছবিগুলোর দিকে চাইলো স্থমিতা।

কত পবিভাব ককককে ছিলো আগে ওওলো, আর আজ কি হাল

হরেছে ওলের চু কোনটার কাঁচ নেই কোনটি কাং হরে ঝুলছে।

ধুলোর ঢাকা পড়েছে ফেনের সোনালী বং। মাকড়সার বড় বড়

হুঁড়া জাল ছবিগুলোর গারে ঝালবের মত গুলছে।

নিংখাস ফেলে আন্তে আন্তে নীচে নেমে এলো সে। সিঁ ড্রিল শেব বাপের ছুপাশে ছটি ব্রোঞ্জের সৈনিক মৃত্তি, ঈবং নত মন্তক বাঁড়িরে। অটল গাল্পার্য্যের কাঠিল ওদের চোবে মুথে, গাঁড়াবার জলিতে। ওরা বেন এই রাজ-প্রাসাদের মৌন দর্শক মাত্র। বহুলুখন নাটকটির স্থক্ক দেখেছে, আজও গাঁড়িরে আছে শেব অকটি দেখবার জন্তা। মৃত্তি ছুটোর গারে পরম স্নেহ ভরে হাত বুলোতে গিয়ে সভরে হাত সরিয়ে নিলো স্থমিতা। ওদের পাবাণ বুকে কি ম্পান জেগছে? না। তা নয়। ঝট পট শব্দ করে মৃত্তিগুলোর খাঁজের ভেতর থেকে ছুটো বড় আকারের চামচিকে বেড়িরে সাঁই সাঁই শব্দ ভুলে ওর মাধাব ওপর উড়তে লাগলো। মান আলোতে ওদের বিস্তারিত ছায়াগুলো বিভীবিকার মত নাচতে লাগলো দেওয়ালে দেওয়ালে। সভরে পিছু হুটে দরজা দিরে ছুটে বাইরে বেরিয়ে এলো স্থমিতা!

আঁচল দিয়ে কপালের যাম মুছে বুক ভবে টেনে নিলো ৰাইরের মুক্ত বাতাস। তার পর এদিক চেরে নেমে এলো কাঁকর বিছানো পথের ওপর। দেওদাবেব ছায়াচ্ছন্ন পথ ধরে ক্লান্ত পারে এগিরে চললো সে। না কেউ নেই, ভক্তনদাও নয়।

বকুল ফুলের গাছটার তলার শাদা পাথর দিরে বাঁধানো বেদিটার ওপর গিরে ক্সলো স্থমিতা! বন গদ্ধপূর্ণ ছারাদ্ধকারে নি:সাড়ে ডেসে এলো অনেক ছারাছবি! ওর অমুভূতির মানসিক কেন্দ্রগুলোকে ধীরে ধীরে আছ্ল করে ফেলগো ওরা। তিক্ত বর্তমানটা, পালালো মন থেকে!

্ত্রপুদ রঙের কানা ভাঙা চাদ আত্তে আত্তে উঁকি মারসো দেওদারের পাতার কাঁক দিয়ে। টুপ টাপ করে বকুল ফুল ঝরতে লাগলো ওর মাধার গারে।

কতক্ষণ কেটে গেছে থেরাল ছিলোনা ওর। নারী পুরুবের মিশ্রকণ্ঠের উচ্চগাসির শব্দে চমকে উঠলো স্থমিতা।

গাছের ক্রীক দিয়ে নজরে পড়লো, শুকভারার বরের বন্ধ দরজা বুলে বেরিয়ে আসছে অসীম আর শুকভারা। শ্দীমের একথানি হাত ভকতারার কোমরে জভানো। অপর হাতের আঙ্লের কাঁকে বসস্ত সিণারেট। বাড়ীর পেছনে গ্যারেকের দিকে চলে গেলো ওরা।

মনে পড়লো ছোটমামার কথা। সেই ছাসিথুসিতে সদা চঞ্চল ছোটমামার আঞ্চ কডই না পরিবর্তন ঘটেছে। গরলে অমৃত জ্বম ভ্রু তারই হয়নি, ছোটমামারও হরেছিলো। তাই ছু'কনে একসঙ্গে আকঠ বিবপান করে, অসভ্ত আলার অলো মরছে। সাধারণ বিব সকল আলার অবসান ঘটার। আর এই অসাধারণ বিব অভবে আলিরে দের আলায়রী অনির্বাণ লিথা। সেই ভরাবহ উদ্বাণে দপ্ত হচ্ছে ওবের ছু'জনের আলা।

একবাশ খোঁয়া উড়িছে অসীমের গাড়ী বেরিছে গোলো গেট দিয়ে। ওর পাশে বসে শুক্তারা ছাইড কবছে।

দেওদারের আড়াল থেকে কথন টাদটা এলে গাঁড়িয়েছে অযিভার টিক সামনের আকাশে। অবারিত জোহনার উদ্ভেলধানার ভেনে গেছে দিক্ দিগন্ত। পাতার, পাতার, কুলে, কুলে, বিশ্মিল কুরছে নীলাভ আলো।

উত্তোল বাতাদের অশাস্ত কলবোলে মুথর হরে উঠেছে ঝাউ, দেওদার। ওরা বেন মহাশৃত্তে শত শত বাছ বিস্তার করে কার উদ্দেশে জানাছে ব্যাকৃল আহ্বান অধীর প্রভীক্ষার বিপূল আবেগে কেঁপে কেঁপে ত্লে, ত্লে উঠছে। জাবার মাঝে মাঝে ওরা স্থির হরে গাঁড়িরে কন্ধনালে কান পেতে শুনছে কার পদধ্বনি।

না সে বৃঝি আর কোনোদিন আসবে না ফিরে। কোন্ আদৃত্র নিয়তির নিষ্ঠর, কঠোর হাতে গঠিত হবেছে এক তুর্গভ্যা বিরাট পৌত প্রাচীর ওদের ত্বভনের মাঝখানে। তাকে অতিক্রম করে আগা কি সম্ভব ? উ:। তবে ? তবে কি হবে ?

এই ভয়াবহ পাৰাণ কারার অতদ অন্ধকারে কে দেখাবে একটু আলো! কে তার তুর্বল ভীক হাতথানি ধরে নিয়ে বাবে এখান থেকে! উ: মাগো। আর্ত্তকণ্ঠে কেঁদে ওঠে স্থমিতা, দামীদা'! দামীদা'।

—মিতা। মিতু।

ভীবণ চমকে উঠলো স্থমিতা। কার কণ্ঠস্বর ?

ওর ঠিক সামনে সারা গারে চালের আলো দেখে গাঁড়িন্টে আছে স্থলাম।

— বণ্ণ ? হাঁ। তাই হবে। এরকম বণ্ণই তো কত বার দেখেছে সে। কেই মন ভোলানো চোথ জুডানো বণ্ণই তার সামনে ভাসছে। বিক্ষারিত দ্বির দৃষ্টি মেলে বণ্ণ দেখতে লাগলো সুমিজা।

ওর স্বপ্নের ছবিখানি ধীরে ধীরে এগিয়ে এলো কাছে, আরো কাছে। ছ'হাত বাড়িরে ধরলো ওর হাত ছ'খানি।

- স্বমন করে চেয়ে কি দেখছে। মিতা ? চিনতে পারছো না ? স্বামি বে তোমার দামীদা'।
- खाँ।। দা'-মী'-দা ? ? ? তুমি ? তুমি সভ্যি দামীদা'?
 তুমি এসেছো দামীদা'? সাত বছর পরে, তুমি ফিরে এসেছো
 দামীদা'?
- —হাঁ মিডা এই ভো, এই ভো ডোমার কাছে এসেছি। রাপ করেছো? এতদিন আসিনি বোলে? না মিড়। লগুন থেকে ফিরে ছুদিন এসেছিলাম, ভাকা বললেন তোয়ার শরীর

হাদি আপনি জীবনহাক্রার মান উঁচু করতে চান



আঞ্জকাল ভালভাবে বাঁচবার কত সুযোগ হরেছে—তবু পুরণো সংখ্যার আর সেকেলে ধারণা আঁকড়ে থেকে কত লোক সে সৰ সুযোগ নষ্ট করে।

দৃষ্টান্তবরূপ, আমাদের ধাবার জভাসের কথাই ধরুন।
বিজ্ঞান প্রমাণ করেছে বে বাছা ও শক্তি বজার রাধতে হলে
প্রত্যেক মামুবের দৈনন্দিন অন্ততঃ হু' আউল মেহপদার্থ থাওরা
দরকার। বনস্পতির ভেতর এই মেহপদার্থ আমরা সহজেই
পাই। তবুও বনস্পতি দিরে রারা করতে এখনো অনেক
লোকের সংকারে বাধে। তারা মনে করে বে এই উদ্ভিজ্ঞ
কেহপদার্থ কেবল ভারতেই তৈরী হয়—কিন্তু মোটেই ভেবে
দেখে না বে সারা পৃথিবীতেই বাহ্যবান লোকেরা বিশেষ
প্রশালীতে তৈরী উদ্ভিজ্ঞ মেহ দিরে রারা করা গছন্দ করেন।
এমন কি ডেনমার্ক, হল্যাও ও আমেরিকার মত পৃথিবীর মধ্যে
নামকরা মাধনের দেশেও চুক্ষজাত মেহপদার্থের চেরে বনস্পতির

মত উদ্ভিক্ষ গ্রেহের ব্যবহার ঢের বেশী। কেন্ বলবো? কারণ লোকে জেনেছে বে এই সব উদ্ভিক্ষ গ্রেহ হন্ধজাত গ্রেহপদার্থের মতই পৃষ্টিকর ও স্বাস্থাপদ এবং এতে ধরচও কম।

পুরোপুরি পুষ্টিকর ও প্রয়োজনীয় ভিটামিনে সমৃদ্ধ
বনশতি চিনাবাদাম ও তিলের তেলে তৈরী। কঠোর
নিরন্ত্রণাধীনে পরিচালিত আধুনিক স্বাস্থ্যসন্থত কারথানায় বিশেষ
প্রণালীতে বনশ্বতি তৈরী হয়—যাতে আপনার কাছে তা
নিঃসন্দেহে বিশুদ্ধ ও ঘনীভূত উপকারিতার আকারে পৌছর।
উপরন্ধ, বনশ্বতির প্রতি আউল এ-ভিটামিনের ৭০০ আন্তর্জাতিক ইউনিটে সমৃদ্ধ। এই ভিটামিন ত্বক ও চোধ ভাল
রাধবার পক্ষে একান্ধ প্রয়োজনীয়।

থে সব লোকের জীবনযাত্রার মান খুব উঁচু তাঁরা রান্নার ।
জক্তে বিশুদ্ধ শ্লেহজাতীর পদার্থ পছন্দ করেন—আপনারও শ বনশতি ব্যবহার হার করা উচিত নয় কি ?

বনস্পতি — বাড়ীর গিন্নীর বদ্ধ

থারাপ, তাই আর বিবক্ত করিনি ডোমার। তারপর কাকাবাব্র হসপিটালটার কাব্দে এক ব্যক্ত ছিলাম, বে আসবার সমর পাইনি মোটে। থিরেটার রোভের বাড়াখানা খানিকটা ভেঙে চুরে হসপিটালের উপবোগী করে তৈরী করা হলো। এবারে অক্তাক্ত কাকওলো আরম্ভ হরেছে। তাই এসেছি তোমাদের বলবার জক্ত। ছুমি আর কাকা একদিন গিরে বদি দেখে আসো, আরও কি করলে ভালো হয়, তোমাদের মতামত বে আমার বড় প্রয়েজন মিতু। ওব পাশে বসলো স্থদাম। একটু হেসে বসলো—ভেতরে বাজিলাম, হঠাৎ তোমার দামীদা' ভাক শুনে ফিবে দেখলাম তুমি এখানে বসে আছো। তুমি কি আমাকে দেখতে পেয়েছিলে মিতা?

—না দামীদা'। আৰু এখন তোমার দেখতে পাটনি।' তবে দেখেছি। এর আগে অনেক—অনেকদিন দেখেছি ভোমায়। বখনই ডেকেছি তখনট তো এদেছো তৃমি। তথু আকট নর।

— কি বলছো মিতু। ঠিক বুঝতে পাবছিনা বে। চলো ভেতরে বাই। কাকা কোথার ?

—বাজী নেই। বেবিছে গেলেন একটু আগে। ভেতরে বেতে চাইছো ? না, না দামীদা' অনেক অনেককাল বন্দী আছি ওখানে কতদিন আনা? প্রায় চার বছর হতে চললো কিছু আর পারছিনা আর বে আমি পারছি না। আমাকে এখান থেকে নিরে বেতে পারো দামাদা'?

— কি বলছো ভূমি মিভু? নিজের বাড়ী কেলে কেন বাবে ভূমি? স্থিয় হও লক্ষ্মটি। ওসব ইচ্ছে মন থেকে একেবাৰে মুছে কেলো। ওব পিঠে আন্তে আজে হাত বুলিং বললো স্থদাম,—সংসারে থাকতে গেলে কত কি হয় মিঠু! সব কিছুকে যে মানিয়ে নিয়ে জামাদের চলতে হবে ভাই!

—বাড়ী ? কোনটা আমার বাড়ী দামীদা' ? নিজের বাড়ীতে কেই বন্দী জীবন যাপন করে ? সংসার ? কোথায় আমার সংসার ? কোথায় মানিয়ে নেব নিজেকে ? আমার চার পাশে দাউ দাউ করে অলছে শুধু নরকের তাতন, আর তার মাঝখানে পেতনীর মতো পাক্ খেয়ে বেডাছ্ছি আমি ! পালাবার চেষ্টা করছি, কিন্তু পথ যেন কিছুতেই খুঁজে পাছ্ছি না দামীদা'! এই পাঁচ বছর ধরে আমি শুধু ঘূরে মরছি!

—মিতা! মিতু! বেদনার্ত্ত গলার ডাকলো স্মদাম! এত কট্ট তোমার কিসের জব্যে মিতা? কিছুই যে ভানি না আমি। বলো, কি করবো তোমার জব্যে কিসে শান্তি পাবে তুমি?.

— দামীদা'! স্নান হেসে ওর মুখের দিকে চোথ ছটি ভূলে ধরলো স্কমিতা।

স্মদাম ফিরে চাইলো ওর দিকে। এতক্ষণে ভালো করে নজর দিয়ে দেখলো ভার পরম স্নেতের পাত্রীকে!

ুসক কালাপাড় সাদা সাড়ী পরনে ওর ! হাতে অল্প কয়েকগাছি সোনার চুড়ি ছাড়া আর কোনো অক্সে নেই আভরণ। একরাশ রক্ষচুল খোলা পিঠের ওপর ! ছরস্ত বাতাস, বার বার চোথে মুখে ছড়িয়ে দিছে সোনা রং এলো চুলগুলোকে। মুখখানি যেন বড় করুণ বড় মান। অনেক রোগা হয়ে গেছে আগের চেরে মিতা। গালের হাড় ছটো একটু উঁচু লাগছে যেন। চোথ ছটো আরো বড় দেখাছে মুখের ওপর ! থকে ? এতো সেই আগেকার হান্ত চঁঞ্চলা শাস্তি শ্রীতিমরী
মিতা নর ! এ বেন হংগ ভারাকান্তা এক উদাসিনী নারী !
আবাল্য সাথীর জন্ত অন্তর্বা ওর হাহাকার করে উঠলো !
দে ভেবেছিলো মিতা প্রথে আছে, তার স্থাই ছিলো ওর একমাত্র
লান্তনা ।—কিছ সব ভূলের ছারাগুলো আজ মিলিরে গেলো থাটি
সত্যের আলোয় ।

—কি দেখছো দামীদা' ৰজ্ঞ থারাপ লাগছে আমার চেছারা থানা,—তাই না ।

—না মিতা, ঠিক তা নয় ৷ তবে একটু বোগা হয়ে গেছো, আব,—আব—

—আর দামী বসন ভ্রবণ নেই আঙ্গে, এই তো । এথনও কেয়ন স্বরে বেঁচে আছি, সেটা তো জিজ্ঞেস কর্লেনা দামীদা'।

এই নীর্ঘ সাত বছর ধরে কত ঝড়, তুফান গেলো আমার ওপর দিয়ে—তা যদি জানতে তুমি । জীবনটা আমার একেবারে ছিন্ন, ডিল্ল হরে গেছে। দামাদা । কেন এমন হোল । কেন তুমি আমাকে একলা ফেলে চলে পিয়েছিলে । বদি তুমি পাশে থাকতে—আর বলতে পারলো না স্থমিতা। অবক্ষম কল্লার বেগে কণ্ঠ ক্ষম হয়ে গেলো। ওর বুকের ভেতর উথলে উঠেছে কারার সাগর। হুটি চোথের কুল ছাপিরে দর দর করে অঝোর ধারার ঝবতে লাগলো এত দিনের সঞ্চিত বেদনাঞা। হুহাতে চোথ ঢেকে স্থুলে কুলে কাঁদলো স্থমিতা।

কি করবে ভেবে পারনা স্থলাম। অবক্ষ বেদনার পাষাণ ভারে ওর বৃকটাও কি ভেত্তে ষাচ্ছেনা? কিছ উপায় কি? তাকে চোথের জঙ্গে ঝরিয়ে দেওয়া কোন মতেই সম্ভব নয় ভাব পক্ষে। এতে মিতার আবো ক্ষতি হবে।

কঠোর সংযমের বাঁধ দিয়ে অববোধ করলো স্থান অন্তর্গ আলোড়িত করা অসহু বেদনার উদ্বেলিত ধারাকে। নিজের ছটি হাতে মিতার হাতথানি চেপে ধরে নত মস্তকে বঙ্গে রইলো নির্বাক হয়ে রুখা সাম্বনার বাণা উচ্চারণ করে ওকে শাস্ত করবার চেষ্টা করলো না। প্রাণভ্তরে কাঁছ্র ও। হাঝা হোক কিছুটা মনের গুরুভার। কভক্ষণ কেটে গোছে খেয়াল ছিলোন। ওদের। বিষাদভ্রা ছবিখানি বৃষি চালেরও ভালো লাগেনি, তাই সে হাঝা মেঘেরু। আবরণে মুখ চেকে ধীরে ধীরে সরে গোছে ওদের সামনে থেকে।

নরম নরম আলো লাগা অন্ধকার ওদের বৃক্তে জড়িরে ধরেছে স্নেহমরী মারের মতো। গাছের দীর্ঘ বিলম্বিত ছায়াগুলো গভীর মমতাভবে হাত বৃলিয়ে দিছে ওদের সর্বাঙ্গে। টুপ টাপ করে বকুল ফুল ঝরে পড়ছে ওদের গারে মাথায়।

ৰাট পট করে ডানা বেড়ে, সিঁ, সিঁ শব্দ করতে করতে মাধার ভণর দিয়ে উড়ে গোলো এক ঝাঁক রাভজাগা পাখী।

চমকে উঠলো স্থদাম। কত রাত হলো ? হাতে আজ ঘড়িটা পরে আসা হয়নি, সব কাজেই ধেন বড় ভূল হচ্ছে আজকাল। শাস্ত্যালার ডাকলো সে—মিতা।

— কি বলবে ? রাভ হলো চলে যাবো এইতো ? ফুলো, ফুলো চোথছটো ওৰ চোথের ওপর মেলে, ভাঙা গলায় বললো স্থমিতা পৃথিবাটা কি আশ্চর্য্য দামীদা'।

আৰু বা ভাজ্জন্যমান সভা কাল সে মিখা ছায়া মাত্ৰ।

এখানে কি সব মেকি ? সব মুটো গ কোনো কিছুব ওপরেই কি নিশ্চিক্ত নির্ভব করা চলে না দামীনা ?

সেই বকুলতলা আছে, সেই আছি ভূমি, আমি শুরু নেই বুঝি সেই আগের বন্ধনটা আমাদের। ধারালো ভুরি দিয়ে কে যেন সেটা নির্মৃত্য করে কেটে দিয়েছে। তাই আজ ভোমাকে চলে বেতে হবে, আর ধরে রাথবার অধিকারও আমার হারিয়ে গেছে।

—না। না। ওকথা বোলোনা মিতা। তা হয় না, কোনোদিন হবে না—গভীব দবদ ভরা গদায় বললো স্থান—
সব মিথাার উদ্ধি আছে আমাদের এক অবিনশ্ব সন্তা—এক
শাশত কপ। সেথানকার সম্বন্ধ কোনোদিন মিথাা হয় না,
—সে বন্ধন ছিন্ন কববার শক্তি কাকর নেই মিতৃ। তার
স্বন্ধপ ভাষা দিয়ে প্রকাশ করা যায় না—অন্তবের উপলব্ধি
দিয়ে জানতে হয় তাকে। কিসের আলো যেন চক্ চক্ করে
অলে উঠলো স্থানায় স্থিব দৃষ্টি বিকাষিত ঘৃটি চোথে।

শিব শিব কবে উঠলে। সুমিতাব সর্নাঙ্গ। এক অপার্থিব আনন্দ বিজ্ঞানী থেলে গোলো ধেন ওব প্রতিটি শিবার। সকল অঙ্গে জাগলো পুলক রোমাঞ্চ।

সতা সুৰ্ব্য উদিত জল অন্তব মহাকাশে। মিথাা কুছেলিকার কাল ছিন্ন ভিন্ন কমে দীনে মিলিয়ে ধেতে লাগলো।

মেবাববণ সনিয়ে মমতাময়ী চাল মুঠে৷ মুঠে৷ আলোর ফুল ছঙ্জিরে দিলো ওলের সর্বাঙ্গে!

হাা আনেক বাতই সংগ্ৰেছে ! গাড়ী বারান্দাব জলা দিয়ে কাঁকব বিছানো পথটা গোল সরে ঘ্বে গেটের দিকে গেছে,—সেই পথ ধরে চলেছে স্থমিতা আরু স্থদাম।

ঢং, ঢং কবে লালকৃঠিব ছড়িতে এগারোটা বেজে গেলো।

একটু চনক লাগলো ওবের ছজনার। চার ঘণ্টা সময় এমন ছুটে পালালো কি করে ?

কাঁকরেব ওপর থব খব শব্দ কনে সেদিকে চেন্নে বসলো স্থমিত।— ছেটিমামা আদতে।

—তাই নাকি। ওর সঙ্গে ওতো এসে অববি দেখা হয়নি। জ্বতপদে এগিয়ে অগিয়ে অনিলকে প্রণাম করে পায়ের ধুলো নিরে মাথায় ঠিমালো স্থদাম।

—াবশ্বর ভরে ওর দিকে থানিক ক্লেরে থেকে সোলাদে চেচিয়ে উঠলো অনিল—মারে একি,—একি, স্থলম বে! কবে স্থিরলে? বুক্রের ভেতরের বিবেকের কাঁটা স্থটো থচ থচ করে উঠলো আবার।

—তা বছর দেড়েক হরে গোলো। হেসে
বললো স্থলাম। ভালো আছেন ভো ছোট
মামা! মামীমা কই ? আজ আর তার
সঙ্গে আলাপ করা হলো না, বজ্জ রাত
ইয়ে গোছে, আরেকদিন এলে ও কাজটা সেরে
কেলবো

—মামীমা ? হো, হো, করে হেসে উঠলো শ্বনিল। তাঁর নাগাল তুমি পাবে ভেবেছো ? ভূপ করছো ভারলিং। হাঁ। ওণু তুমিই নও, ভূপ আমরা সকলেই করেছি। আমি, ওকতারা, আমার মা, জামাইবাবু এমন কি মিতাও—আমরা সকলেই যেন একটা ভূপের চাকার চড়ে অনবরত পাক থাছি। ছাড়, মাংস মন, প্রাণগুলো সব পিবে যাছে, কিছু ওর কবল থেকে ছাড়ান নেই কারুবই।

একটু হেসে আবাৰ বললো অনিল—কিছ জানো স্থদাম! ক্ৰিটা ৰডড বেঁচে গেছে। এখন বৃঝ ছ, আনাইবাবু ওর কানে ভালো মন্তবই দিয়েছিলেন। আমরা কেউ আব বেশীদিন বাঁচবো না! যে আগুন ক্লছে এ বাড়ীতে স্বাই জলে পুড়ে শেষ হয়ে যাবো!

প্রম বিশ্বয়ে ওর দিকে চেয়েছিলো স্থদাম। এই কি সেই সদা ক্রিবান্ত, প্রোণচাঞ্চল্য ভরপুর ছোটনামা ?

্এ যেন জ্বাবন সংগ্রামে প্রলাভক কোনো হতাল সৈনিক। কণালে ফুটেছে কয়েকটি গভার চিপ্তাবেথ। চোবের কোলে কালি জমেছে। গাল হটো গাওঁ হয়ে গেছে। গভাব ফ্লান্তি আর হতালা ছড়ানো চোথে মুখে।

আপনারা সকলেই বদি অতটা শ্রেঙ পড়েন ছোটমানা। তবে কে কাকে দেখবে ? বাখিত ভাবে বললো স্থলান। স্থা, হুঃখ, মিলিয়েই তো মায়ুবেৰ পূর্ণ জীবন।

—ও সব ফাঁক। বুলি কোনো কাজে লাগবেনা চে ছাপি বয় । কি যাতনা বিষে, ৰুঝিবে সে কিসে কভু আশীবিবে দংশেদি যাবে।

হাত নেড়ে, অভিনয়ের ভঙ্গিতে বলতে বলতে হঠাই মুহাতে অনামকে বাক জড়িয়ে ধরে কায়া ভবা গলায় বললো অনিল—ক্ষমা করো আনাকে স্থানা। তুমি আর মিতা আমাকে ক্ষমা করে।। গোধবো সাপ মিতাকে ছোবল দিতে আসছে, আমি দেখে ভানত, ওকে বাঁচাবার চেষ্টা করিনি। কেন জানো? নিজের বার্থসিদ্ধির জত্তে। কিন্তু তথন কি বুঝেছিলাম? বে বিষধর কালনাগের সঙ্গে মিতালী করলে তার বিষের ছোবলটাও নিতে হবে? তাই মামা ভাগ্নী তৃজনেই আজ বিষের আলার অলে মবছি ভাই।

স্থামকে ছেড়ে দিয়ে স্থমিতার একথানি হাত নিজের হাজে চেপে ধরে বলতে থাকে অনিল—জানিস মিতু! এতকাল পরে

পেটের যন্ত্রণা কি সারাত্মক তা ভুক্তভোগীরাই শুধু জানেন / যে কোন রকমের পেটের বেদনা চিরদিনের মত দূর করতে পারে একম্যন্ত

বহু গাছ গাছড়া দ্বারা বিশুর মতে প্রস্তুত

ভারত গভঃ রেজি: নং ১৬৮৩৪৪

ব্যবহারে লক্ষ**লক্ষ** রোগী আ**রোগ্য** লাভ করে**ছেন**

অন্ধ্রুল, পিত্রপুলে, অন্ধর্পিন্ড, লিভাবের ব্যথা, মুথে টকভাব, ঢেকুর ওঠা, বমিভাব, বমি হওয়া, পেট ফাঁপা, মন্দায়ি, বুকুড়ানা, আহারে অরুচি, স্বন্ধনিদ্রা ইত্যাদি রোগ যত প্ররাতনই হোক তিন দিনে উপশম। দুই সন্তাহে সম্পূর্ন নিরাময়। বহু চিকিৎসা করে মাঁরা হতাশ হয়েছেন, তাঁরাও আক্রন্থা সেবন করলে নবজীবন লাভ করবেন। বিফলে মুর্ল্য ফেরুৎ। ৩২ গোলার প্রতি কৌটা ৩১টাকা, একত্রে ৩ কৌটা — ৮॥। আনা। ডাঃ, মাঃও পাইকারী দর পৃথক।

দি বাক্লা ঔষধালয়। ছেডঅফিস-ব্রক্তিশাক্ত (গুর্ব পাকিন্তান)

জাজ মার কাছে গিয়েছিলাম। ক'দিন ধরে বজড মার জঙে খ্রীণটা কেমন করছিলো রে।

মা কিন্তু প্রথমে আমার সঙ্গে কথা কইলেন মা—আমি মারের পারে ধরে কমা চাইলান। তাবপর মারের সে-কি কারা! আমাকে বুকে টেনে নিয়ে বলজেন,— তুই আমার কাছে চলে আর বাবা। তোদের ছেড়ে আমি যে মরে বেঁচে আছি।

তাই ম:ন করছি—সব ছেড়ে ছুড়ে মাকে নিয়ে দিনকতক তীর্ব জমণে বেডিয়ে পড়বো।

নত মুখে চুপ করে দীড়িয়েছিলো স্থমিকা। চোখের জলে গাল সুটো ওর ভেগে যাছে।

সুদামেরও চোগহটো অকস্মাং জলে ভরে উর্নলা। পকেট থেকে ক্লমাল বার করে চোথ মুছে—ধরা গলায় বললো—যা হয়ে গেছে, তাকে ভো আর ফেরানো বাবে না ছোট মামা! অদৃষ্ট বলে মেনে নেওয়া ছাড়া উপায় কি ?—আমাকে যদি কোনো কাজে দরকার মনে করেন ভাকরেন। জানেন বোনহর, আমি কাকাবাবুর এলগিন রোভের বাড়াতে আছি। বাবেন একদিন সময় মত। কাকাবাবুর হৃদ্।পটালের কাজ হড়েছ, দেখে আস্বেন। আছ্রা আজ তাছলে চলি।

—শাবো, বাবো। আবার তোমাদের কাছে ফিরে না গোলে, কি বে হবে এর পরে ভাবতেও ভর করে, জানো স্থলাম কেমন জর পাই আজকাল। এক হাতের মুটোর নিজের মাধার চুলগুলো চেপে ধরে মৃত্ গলার বললো অনিল। মিতার দিকে একটা মমতাভরা দৃষ্টিশাত করে বিবাদ ভারাকাপ্ত স্থানরে ধীব পারে পেটের দিকে এগিয়ে চললো স্থলান।

বড় অশান্ত চিত্তে তিনটে দিন কাটালো স্থমিতা। একি হোলো? সাথা পৃথিবী থেকে বিচ্ছিন্ন হয়ে নিজেব ক্ষুদ্র গণ্ডী রচনা করে তার ভেতর এতদিন আয়ুগোনন করেছিলো সে। কিন্তু সহসাদে গণ্ডীর আগল কে যেন ভেঙে দিলো।

খুলে গেছে তাব রুদ্ধ ভবনের সব জানলা দবোজাগুলো। হাত ছানি দিয়ে ডাকছে ওকে বাইরের জাকাশ, বাতাস। জার যে ঘরে খাকা যায় না। লজ্জা, সঙ্গোচ, দিবা, ভয়, কোন বাঁবনই জার গুকে বেঁধে রাষতে বৃদ্ধি পারবে না।

দেদিন ভোর না হতেই বাইবে বেরবার জন্ম নিজেকে প্রস্তুত্ত করে নিলো প্রনিতা। সাদা সাত্রী সবিরে বাবলো। পড়লো চাপা বং এর ডাকাই সাড়াখানা তার সঙ্গে মানিবে লাল সিকের ব্লাউজ। কালে গলার হার। ধরণের দোনার গহনা পরে, আরনার সামনে গিয়ে দাড়ালো চুলটা ঠিক করে নেবার জল্মে। নিজের ছারাটি আরু কেমন বেন ভালো লাগলো ওর কাছে। না। থুব খারাপ একনো হয়ে বায়নি মুববানা।

শ্বাপন মনে হাগলো স্থমিতা। কালো একথানি ওড়নার স্কান্ত চেকে নিয়ে নিচে নেমে এলো স্থমিতা।

তথন অসম পটভূমিকার ধূসর রং এর গুপর ফিকে লালের সবে ছোপ লেগেছে। দিগপ্তে থৈ থৈ আঁবার সার্বে আলোর কমল, একটি একটি করে দল মেগতে স্থক্ত করেছে। গাছে, গাছে, মনপর্ব অন্তর্মালে জেগেছে মুম্ভাঙা পাখাদের অক্টুট কলবন। শিশিবের মণিমুক্তো ছড়ানো গাছের পাতার কুলে। ভোরের ঝিরঝিরে ঠাণ্ডা ছাত্রার বেল, যুঁইরের গন্ধ। এমন মন প্রাণ কুরোনো প্রতাত গৌলব্য অনেকদিন পরে আবার দেখলো স্থমিতা।

জালের বের দেওয়া সারি সারি সবুজ বং কাঠের শৃক্ত ঘরগুলোর কাছে গিরে একবার পমকে গীড়ালো সে।

মযুর, নানা জাতের পাখী, জার গিনিপিগ খরগোস পাকতো ঐ ব্রগুলোতে।

ছ' সাত বছর আগে ওরাই ছিলো তার নিতাসক ওকে দ্ব থেকে দেখতে পেলে, কাছে ছুটে বেতো ওরা। হাত থেকে থাবার থেতো। গারে মাথার উঠে কত আদর জানাতো ওকে। আজ আর তারা কেউ নেই।

ওদের ঘরগুলো আগাছা জঙ্গলে ভবে গেছে। কয়েক মিনিট ওখানে দীঞ্জিয়ে থেকে, একটা মৃত্ নি:খাস ফেলে, গেটের কাছে এগিয়ে গেলো হুমিতা।

—গেটে তালাবন্ধ। দবোৱানটা ওদের খরের সামনের রোয়াকে পড়ে নাক ডাকাচ্ছিলো, স্থমিতার ডাক ওনে ধড়মড় করে উঠে ব্যে হাক দিলো—কৌন হায় ?

—গেট খুলে দাও, বাইরে বাবো। আনেশ করলো স্থমিতা।

— দিছিমাণ ? ব্যস্তভাবে উঠে দাঁড়িয়ে সেলাম জানিয়ে গেট থুলে দিলো দরোয়ান। জাইভারকে ডাক্বে কি-না জানতে চাইলো সে।

—না দরকার নেই! বাবুকে বোলো আমি এলগিন রোডের বাড়ীতে গেছি।

ক্রতগার রাক্তা দিয়ে এগিয়ে চললো স্মমিতা চলতি ট্যান্তি দেখন্ড পেলে ডাকবে ভাবলো।

শ্বত ভোবে ট্যারি মেলা সহজ ব্যাপার নয় । জনশৃক পথটা বৃষ্প্ত অজাগরের মতেল পড়েছিলো নিঃশকে। ছ্চারটে ভিত্তিওলা ওর গায়ে ভখন জল ছিটিয়ে দিছিলো।

জোবে পা চালালো স্থমিতা। এদিক, ওদিক চাইলো—ট্যান্ত্রির আলার, না কোথাও নেই তার সারা শব্দটুকুও। অমেকখানি পথ হৈটে একটা গাছের তলার এসে দম নের স্থমিতা। কপালে বিন্দু বিন্দু খাম জমেছে, জাঁচল দিয়ে মুছে ফেলে—দাঁড়িয়ে এদিক-ওদিক নক্তর ফেরায়! রাস্তার ওপারে ছ তিনজন, ভিস্তিওলা জার রাষ্ট্রার দাঁড়িয়ে মুখ নিচু করে কি বেন দেখছিলো।

ছ, চারটে কাক আশে পাশে উড়ে উতে ডাকাডাকি করছে। একটু দূরে একটা কুকুর গাঁ.ছেয়ে লেজ নাড়ছে; মাহন, মানে সভ্কচোখে চাইছে সেই দিকে।

সংল্যাক্তাত শিশুৰ কচিগলাৰ ক্ষীণ ব্যৱের কাছা শুনে চমকে উঠলো স্থামতা। চঞ্চল পায়ে এলিছে গিয়ে খলের শুৰোলো।—কি হয়েছে গুৰানে ?

—ं त्कान् वनमारेन मानी अक्टो ह्हल त्करन निरम्भ मा ! अवर्धना विंद्ध भारक (क्लिटो।

— कि मर्काताम कथा । ताथि, ताथि—

বলতে ডাষ্টবিনের কাছে এগিয়ে গেলো স্থমিতা। একগাল সোংবার পালে এথথানি সাল। কাপড়ে জড়ানে। সন্তকোটা পদ্মস্থলের মন্ত একটি ছেলে পড়ে জাছে।

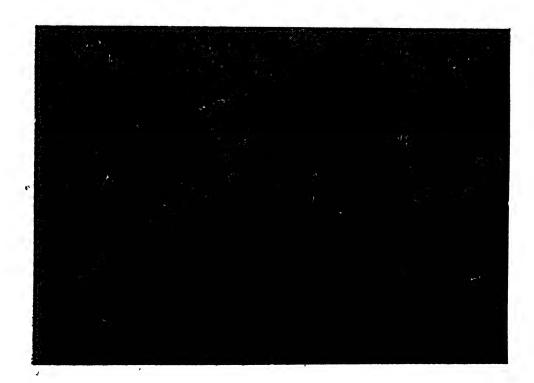


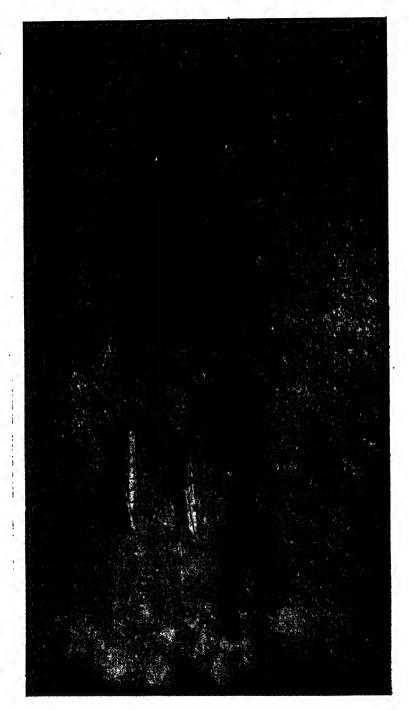


যুক্তেশ্বর ও মুক্তেশ্বর মন্দির-তোরণ

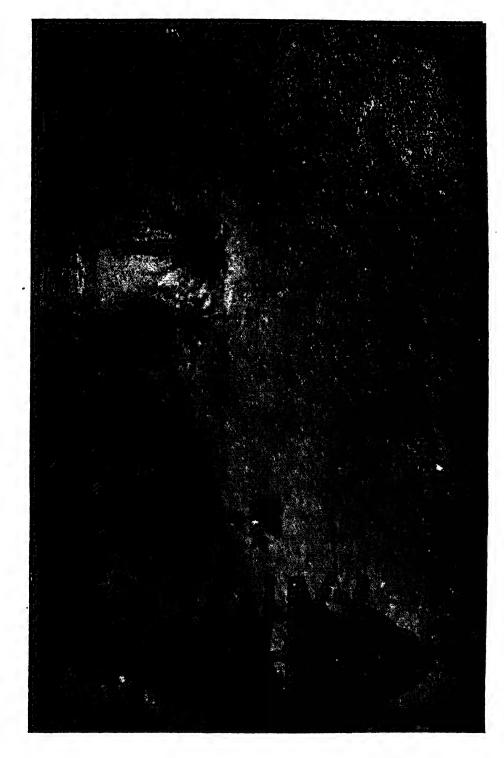
—গীভ। বস্মলিক

সপিল-পথ শ্ৰীপাধিক (মুখোপাধ্যায়)





नारका बावकार





পদ্মকৃদ ফুটেছে পাঁকেব ভেডর। কিন্তু তার গায়ে তো পাঁক মেই। কি অপরণ, কি পবিত্র ফুলটি ?

ক্ৰে প্ৰেচাৰ ত্টো মেলে অবাক হয়ে বেণছিলো আৰু গৃথিবাটাকে এই অবাহিত অভিৰিট। মাথে মাথে ভাত-পা ছুঁছে মানুবের ছনীভিঃ বিক্লছে বিলোহ ঘোষণা ক্রছিলো।

ংট হবে পরমাশ্রণ ভবে ওকে দেখলো স্থমিতা। তারপর হু'হাতে ওকে সাবধানে কোলে ভূলে নিলো।

— এ মাণী। বাচ্ছাটা লিবেন আপুনি? অবাক হয়ে ওধোলো বুড়ো ঝাড়ুদারটা।

— হাা বাবা। নিয়ে বাবো। আছা । এমন টাদের টুকরো ছেলেনাকে কোন পাংগী ফেলে দিরেছে গো ?

— রাকুনী আছে মা। এই মানুবেব ভিতরেই ডান, রাক্ষ্য, ভূত, পেরেছ, স্ব আছে, আবার দেওতাও আছে মা।

বাকুণী দান্বীতে কি সম্ভান পালে মা ? সে জন্ম নিতে পাবে, কিন্ধক মা হতে পাবে না। তুমি, দেবা তগবতা মা আছো, সম্ভানকে বাঁচাতে সেই দেওভাই ভোমাকে হেৰান্ম পাঠিয়েছে মা। কিন্ধক আৰু দেৱা কোবোনা মা, সোক জনে বাবে, পুলিনের হাঙ্গাম। হোবে, জল্দি চলে বাও। কোথাৰ নিয়ে যাবে একে? একটু জাবলো স্মতিল ভাষপৰ বসলো—কাছাকাছি ট্যান্ত্ৰি পাওয়া যাবে?

—থাবে মা, আর একটু গেলেই পাবে। হেট ইবে ওরা প্রণাম করলো স্থমিতাকে। ওলের দিকে চেরে একটু হাদলো মিডা। ছোট্ট হাতব্যাগাট থুলে পাঁচ টাকা ওলের দিরে বললো—ভোমরা থাবার কিনে পেও। রাভ প্রভাত না হতে হতে এমন বৰশিব কথনও ওলের বর্গাতে মেলেনা। মহানন্দে ওরা টাকাটা নিয়ে বললো—চলো মা ভোমাকে গাড়ীতে চড়িয়ে দিরে আসি। একজন আগে ছুটলো ট্যাজির সন্ধানে। ওর সঙ্গে সঙ্গে চললো বুড়ো ঝাড়ুলার। তুল হুলে নরম মাসে শিশুটি বুকে চেপে ধরে থাঁরে থাঁরে হেটে চলেছে স্থমিতা।

এক অনাবাদিত বিপূল আনন্দনয় সতা বেন জড়িরে ধরেছে ওকে। বিগলিত করুণায় সিক্ত হবে গেছে, ওর সারা ব্রুরটা। নারী স্থান্ত্রে সহজাত কোনল বৃত্তি গুলো সঙ্গাস হবে উঠেছে ই কুলু নানব শিশুব ছোঁলা লেগে।

ট্যাদ্ধি নিবে এলো ভিত্তিওলাটি। স্থমিতা উঠে বসলো ভাৰ ভেতৰে। ওবা সকলে লাবার প্রণান করলো স্থমিতাকে। বৃজ্যে স্বামুপার্রটি কোনবে জড়ানো কাশড়ের খুটটি খুলে চোপ মৃত্তো ভারপ্র একগাল চেদে বললো—ভগরান ভোমার ভালো করবে মা। ট্যাদ্ধি চলতে স্বক্ষ করলো এলগিন বোডের দিকে।

টিয়াপাথি রঙ

রমেশ্রনাথ মল্লিক

ৰসস্ত বাতালে হ'লে প্ৰচ্ব সৰ্জপত্ৰ পৌৰালীৰ হলুদে পাতায় ছারপৰ বৈশাথেৰ ধূলো তমে যাৱ; কোথায় স্থানৰ কচি সৰ্জেৱ বঙ? সেখানে ভাসতে যেন বেননায় খেয়ালী সাবঙ! জীবন-সেতাৰে বাজে ব্যথাৰ মূৰ্ছনা যথন জাগতে আৰু জীবনের সামানায় কঠিন ব্যঞ্জনা।

স্থানর প্রশাস্ত তীর খুঁজে ক্ষেরে যদি
তথন তো চাই তার একটি ঝিরঝিবে নদী;
অক্রম্ভ স্থর আর অজ্ঞ ঝাশার
দেখানে তো ঢেউ আনে দক্ষিণীয় সাগর-ধাবার।
ধ্য-কুটো ভেনে যা হুঁদিনের রান যত কিছু
ভাসের স্লোভের পিছু-পিতু।

মবিচা ধরার প্রাণে তৈলাক্তের যেন স্পর্ণ চাই

চিকচিকে কপ দেখা চোথেব নেশাই;

তুঁকোঁটা বৃষ্ট শো এলো মাদির অঙ্গনে

কত নিয়ে পিছনে-পিছনে—

একটি নতুন পৃথিব'র

তুলছে হয়তো সভিয় জন্মের জিগির।

অবাক দৃষ্টি বে তাই মেলে দিই আজ ব্যমকষ্ বৃষ্টি করে আল-পালে, ফেলে রাখি কাজ ও অকাজ; বাড়িগুলো ভিজে গেছে কড়ো কাক ষ হ, মাটি-ভেজা সোনা আণ কত আনন্দ বর্ধার দিনে বৃজে দেখি যাস আর পাতা টিয়াপাখি রঙ ধরে স্কল্য সবুজে।



সঙ্গীতশিলী শর**্চন্দ্র** শুবলাইকৃষ্ণ সরকার

পূর্বেট বলেছি প্রখাত কথাশিলা শরংচক্রকে সঙ্গীতশিলী বলে কম লোকেই জানে। এই সম্প ক বিস্তৃত আপোচনার শ্বকার। শ্বংচক্রের সঙ্গাত প্রতিভাব পরিচ্য কার দেশনিদেশের অগ্রবিত বিমুগ্ধ পাঠক পাঠিদাব কাছে দেওয়ার যথেষ্ট সার্থকতা আছে। আমরা এদেশী এবং বিদেশী অনেক কবি সাহিভিকে মাট্যকার, শিল্পী, সাধক ও মনাশার জীবনে এই গুণটিব কথা তারা অনেকেই গান ভানতেন, সঙ্গীত সাধনা 🛲 নেছি। করতেন। তীদের নাম কবা শকলামাত্র। জানি না সঙ্গীতের প্রেরণা জাদের জাবনের সাধনাকে সফলতার ধারায় প্রশাহিত হ্বরতো 奪 না। নাটা কলা সাহিতা 🗷ভৃতি মানুবের সুকুমার ৰুভিত্তলির মধ্যে সঙ্গীত শ্রেষ্ঠতম প্রকাশ। এটি সর্বাপেকা বসময়, সৌন্দব্যময় ও আবেদনময়। ভাব বা অনুভবি পুলাপগ্যায়ে উঠলে ভবে ভা সঙ্গাতে প্রকাশ পার। সঙ্গাতকে দৈবভাবের একটি সোপানও বলা চলে। মাতুদের আবাগ্রিক জীবনের বিকাশ ব। 🛊 মূৰে সঙ্গীত কম সহায়ত। কবে না। ভগবনলাভের জন্মে মাফুবের ৰে আকুলতাতা সঙ্গীত অপেকা এঘন প্ৰকাশ লাভ আৰু কিসের ছারা হতে পারে। এইজন্মই বন্ধ মহাপুরুব শ্রীভগবানের নাম গান करताह्म, जीव क्ष्मकोर्डन करताह्म केरक भाषा व करा

শ্বংচক্স চটোপাধার ছিলেন খ্যাভিনান উপরাসিক।
রবীক্সনাথকে বাদ দিরে পর উপরাসের কেত্রে চাঁর মত জনপ্রিরতা
আর্জন করতে আর কোন সাহিত্যিক ইদানীং পেরেছেন কিনা সন্দেহ।
তিনি একজন পৃথিনীর প্রথম প্রেণীর লেগক চিসাবে স্বীকৃত।
তার জন্মে সারা বাংলা দেশ, ভারতবর্ষ গর্ম অফুতর করে। সেই
ক্থাপিরী শ্বংচক্স সঙ্গীতশিরীও ছিলেন। যৌশনে তিনি সঙ্গীতচ্চী
ক্রেছেন, প্রভৃত যশ অর্জনও করেছেন। কিছু তার সঙ্গাতজীবনের
ক্ষোর পূর্ণাক্স ইভিন্নাস আমনা আজও পেলাম না। কোন অনুত্র

শিক্তির ই সিংক্ত তাঁব সঙ্গাতজীবন সাহিত্যের নিধে নির্দেশিত হোল, তিনি জাবনের মোড় ফাবরে তামপুরা ছেড়ে ফলম ধরলেন—সে রহত তাঁর বহুবৈচিত্রামর জাবনের মতই আমাদের কাছে বহুতামর ও ছুপ্রের্য ররে গেল।

ষতদ্ব জানা যার প্রবেশিকা পরীকার পর থেকেই শবংচক্র গান বাজনার মেতে ওঠেন বেশী করে। তাঁর প্রির সঙ্গা বাজুর কাছে বাশী শেখতে আরম্ভ করে দেন। ভাগলপুরে সেই জুজুড়ে বাড়ার গলার বাবের জন্স তপোবনে তাঁর সাধনার আজ্ঞা ছিল। বন্ধুনের সংগে গানবাজনা তথন রীতিমত চলছে। কিছু একটা হারমোনেয়ম নেই। কেনবার টাকাও নেই। আদম্য শবংচক্র উপার খুজনেন। সগত পিয়াসা কলম ধরলেন সাহিত্য রচনা।। কুন্তলান প্রস্থারের জল্পে তাঁর মন্দির গল্পতি হল। ১৩১০ সালে ভাল মাসে তাঁর মাতুল স্বরেক্রনাথ গঙ্গোপাধ্যারের নামে সকল প্রথম ছাপার অঞ্জরে এটি প্রকাশত হয়। সল্লেটি প্রতি বাতবোগিতার ১ম স্থান আধকার করে ২৫১ টাক। পুরস্কার লাভ করে ও তাঁর বন্ধুনের প্রয়োজন মেটে। এই ইল সঙ্গাতের প্রেরণার শবংচক্রের সাহিত্য প্রথম সঞ্চল প্রক্ষেপ।

এমান করে শ্রংচন্দের সঙ্গাতের সাধনা চলতে থাকে। এর প্রই দেখতে পাই মাঝে গান বাজনার বাধা ও বিরক্তি এবং ভবগ্রে শ্বংচন্দের ছাব।

শিতার ভংগনার শার্হজ্ম বেরিরে পাড়জেন বাড়ী ছেড়ে সন্মানার বেশে। সাধু-সন্নাসাদের সংগ ঘৃথতে ঘ্রতে হাজের হলেন মজ্ঞকবপুরে। দেখানে উঠপেন এক ধন্মানার যা রাভ তথন গভার। ধন্মানার সামনের বাড়াতে কে একজন বেহাসা বাজা ছেলেন। নিস্তর নিখর রাত সেই প্রের মৃদ্ধনার ভেঙে ভিডে পাড়ছেল। শাব্হনিশ্ব আর খাকতে না পেরে ভার স্থরে ভন্মর হয়ে ছালে উঠে গাই ত লাগ্লেন—

'জীকন ষত পূজা হল না সার। জানি হে জানি তাও হয় নি হারা।'

কবিওফব এই গান ট বোধ হয় তখন তাঁর ছয়ছাড়া জাঁবনকে শপাশ করেছিল। প্রদিন উভয় স্থর সাধকের আলাপ হল। বেহালা বাদকটি ছিলোন নিশানাথ— অনুক্রণা দেবীর স্বামা শিখর বাব্র পিস হত ভাই। শবংচশ্রের মান্ত নিশানাথও ছিলোন ছয়ছাড়া, ভাষ্বে, প্রোপকারী নিংমার্থ যুবক। এইখানেই বিচিত্র পরিবেশের মধ্যে অনুক্রণা দেবী ও তাঁর স্বামা শিখরনাথ বন্দ্যোপাধ্যায়ের সংগে শবংচশ্রের পবিচয় হয় ও মজ্ঞাম্বলার তাঁবণ জলাপ্রের হয়ে ওঠেন তিনি। এখানে থাকাকাদীন শবংচশ্রু বছ গান শ্রন্থেয়া অনুক্রণা দেবী ও শিখর বাব্বেক তনিয়েছেন। গানের সংগে সংগে কিছু কিছু লিখেছেনও তিনি এই সময়।

এরপর এখানে চাকবা না পাওয়ায় ভাগ্যের অবেবলে আর পাঁচটা বাঙালার মতই শবংচক্র চলে বান বর্মা মূলুকে। ১৯০৫ সালে রঙ্গুন এয়াকাউণাট জেনারেল আফদে তার চাকরী পাওয়ার চলেও আছে তাঁর গান। সম্পূর্ণ অপরিচিত্ত জায়ণায় নিঃসম্বল শবংচক্র বখন বাউলবেশে হবে বেড়াছিলেন সেই সময় এম্, কে, মিত্র ম'লাই তাঁর গান শোনেন। তখন তাঁর সংগে শবংচক্রের পরিচয় ও বজুফ হয়। তিনি দ্বিংচ ক্রব বেঙ্গুনে আসার কাবণ জেনে স্বেচ্ছায় তাঁকে একটি চাকুরা বোগাড় করে দেন। এরপর শবংচক্র বেঙ্গুনে অনেক্ষিন

থাকেন এবং দেখানকার সামজিক জীবনে অভ্তপূর্ব জনপ্রিরভা আর্জন করেন। সে ইভিবৃত্ত অনেকেই ভানেন। তাঁব নানা ওপাবলীর মধ্যে ভিনি কবি নবীনচন্দ্রের কাছে 'স্ক্রেন্ডর' উপাধিটি লাভ কবেন। স্থানীর বেললী সোভাল ক্লাবের উল্লোগে ১৯০৫ সালে কৰিবর নবীনচন্দ্র সেনের যে স্প্রিনা সভা হয় তার উল্লোবন সঙ্গাতে শ্রংচন্দ্র যে সান্টি গোযেছিলেন তার পূর্ণ রূপ হ'ল—

'ব্ৰহ্ম সংশাভিত বন্ধ বন্ধন আজি হে এস কৰিব এস জে।
সমবেত যত দেশবাসী
দৰ্শন তব অভিগাৰী
এস কাৰ্যানিলাদী শৰী হে।
এস বন্ধ হাৰ্য ভ্ৰণ—
এস স্থান্য হিয় দৰ্শন
শ্ৰীতি পূস্প ভা ল লহ হে
এস কৰিবৰ এস তে।'

বেসুনে থাকবার সময় শত্চন্দ্র বছ কায়গায় বছ স্থাগাগে বছ
গান গোগেছিলেন। সে সব গানের ও অনুষ্ঠানেব কোন হিসেব
পবিচয় বা তথ্য কিপিবল্প হয় নি। তাব প্রয়োসন হয়ত তথন
ছিল না কিছু এখন তার জল্ঞে আপ সাস হয়। তবু ফেটুকু
জানা বায়—তিনি বে সমস্ত গান গাইতেন বা তাঁর প্রিয় ছিল—
ভার মধ্যে—

'কোথা ভবশুরা! তুর্গনি হাবা,ক হদিনে হোব করুণা হবে কবে দেখা,পদিবি কোলে তুলে নিবি সকল যাতনা জুড়াবে।'—, 'আমার সাধ না মিটিল আশা না পুরিল'—,

'এই করেছ ভাল নিঠ্ব ডে'—,

ভালবাসা নহে ত আলেয়া, আলো সে বে ওব্ আলো'—, 'প্ৰের প্ৰিক কৰেছ আমায় সেই ভালো বে দেই ভালো

আলেরা আলালে প্রান্তরে ভালে সেই আলো মোর সেই আলো'—
ইত্যাদির উল্লেখ করা বার।

বেলুনে বামকৃষ্ণ দেবা সমিভির উল্লোগে অনুষ্ঠিত ঐীশ্রীবামকৃষ্ণ জন্মোৎসনে তিনি গেরেছিলেন—

> 'তেমনি করে' আবার এসে ডাকাও ঠাকুর প্রেমের বাণ ডাতে ভেসে বাবে ভূবে বাবে জীবের দাকণ অভিমান !! সেদিন ব্যেম জীবের দাগি' কথামূত' করলে দান প্রেম পিরাসী, বিশ্ববাসী, প্রেমেন তথা কনতে পান।—'

শরংচক্রের গানবাজনা সহদ্ধে সুবিখ্যাতা নিরুপমা দেবী ও তাঁর আতা শ্রীবিভূতি ভট্ট লিখেছেন—

শবংচক্র বস্ত্রেপ্টা কপেই শেব জীবনে প্রকটিত। কিন্তু বেশিবনে একধারে নট, সঙ্গাভক্ত, যন্ত্রী এবং কাষাবসন্ত কলি—কত না নৃত্রন নৃত্রন রপেই তাঁচাকে দেখিয়াছি।—শ্বংচক্র চিবদিনই বেশবায়া—কোন ছিলা তাঁগাকে কখনো বাধা দিতে পারিত না।—
আমাদের ধন্ধবপুরের বাড়ীর পাশেই একটা মদক্রিদ ছিল এবং হয়ত এখনও আছে। তাহাব মধ্যে কতকগুলো কবব আছে। কত গানীর জমাবকার আক্রকার বাত্রি এই কববস্থানেই মধ্যেই কাটিয়া গিয়াছে। শবংদার বঁ নী চলিতেছে—না হয় ছার্মানির্ম-সছ গান চলিতেছে এবং আম্বা তুটার জনে

বসিয়া তথ্য হইবা তুনিতেই।— কোনও প্রীর বাত্তে সেই
মস্ভদের স্তউচ প্রাক্তণ চহব চইতে গানের শব্দ, কথনো
বমানিয়া নদার তীব চইতে বানীর আওয়াল ভাসিয়া আসিলে
মেজলা মেজবৌদিকে তুনাইয়া বলিতেন, এ ভাড়াচক্রের কাও।
— আমানের দল একদিন বায়ুপথে ভাসিয়া আসা গানের এক
লাইন আবিহার ক্রিল—

'আমি ছাদন আসিনি, ছুদিন দেখিনি জন্মনি মুদলি আঁথি।'

ইছাৰ পৰে দাদাৰের গৈঠকখানার জাঁচার কঠের আবিও গাঁন আমরা ভিতর ছইতে ও নয়ছি; াকন্ত বাঁণী কখনো দে সব বৈঠকের মধ্যেতিন বাজান নাই। নবকুফ ভটাচাধ্যের একটি গান তাঁছার প্রিয় ছিল—

> 'গোকুলের মধু ফুবারে গেল, আঁনার আজে কুঞ্জবন া—-'

শ্বংচন্দ্র শুধু যে গানই জানতেন থা নয়। তিনি বেশ ভাল ভালচীও ছিলেন। এক শব কলকাথায় এক ববিবাসরীয় আসরে সাজিতা ও সঙ্গাত সভাব আবোজন হয়েছে। শবংচন্দ্রের চেষ্টায় সভা আব্যোজিত। তিনি সভাব থাকেবা ঠেস দিরে কসে আছেন। বশীক্রনাথেকও সে সভার আসবার কথা ছিল, কিছু সম্বাভাবে তিনি আসতে পারজেন না।

সভায় কবিতাপাঠ, বনীক্স সঙ্গত ইত্যাদিব ব্যবস্থা **ছিল। কবিতা** পাঠ প্রস্তৃত হরে বাবাব পর গান আবস্থ হ**ল। কিছ ভাল**

সঙ্গীত-হন্ত্র কেনার ব্যাপারে আগে

মলে আসে ডোয়াকিনের



কথা, এটা
থুবই ঘাডাবিক. কেনমা
সবাই জানেন
ডোয়াকিনের
১৮৭৫ সাল
থেকে দার্ঘদিনের অভিভার ফলে

ভাদের প্রভিষ্ট যন্ত্র নিশৃত রূপ পেয়েছে। কোন্ যন্ত্রের প্রয়েজন উল্লেখ ক'রে মৃগ্য-ভালিকার জন্ম লিখুন।

ডোয়ার্কিন এণ্ড সন্ প্রাইভেট লিঃ

শো-ক্ষ :--৮/২, এস্প্ল্যানেড ইস্ট. কলিকাডা - ১

ভবলচীৰ লভাবে গান ভেমন জমলো না। তথন প্ৰংচন্ত্ৰ নিজেকে আৰ ছিব বাথতে না পেৰে একটু আঞ্চিং আৰু চাবেৰ ভোগাছ ক্ষতে বলৈ লৈগে পড়লেন। তারপার সভা ও গান চুই কমে ভিত্তি আৰু দেৱী হল না। সভাগ শেৰে সকলে ধবলেন ভাঁকে ---কোখার এমন স্বন্ধব ৰাভাত্তে বিগলেন ? শ্বিত তালিব বেণাটুকু ৰ্ভবে ভ্ৰলাট্টা শিখেছি লক্ষেত্ৰি এক ভ্ৰলচীৰ কাৰ্ডে। ভঞ **ভবলাই মহ---সেতারও পাজাতে পাশতেন তিনি চন্দ্রকার।** বছদিন পৰে একদিন পানিত্ৰালে সামভাবেত্ত্ব বাড়ীচক স্ফুলাক্ষ্যদের लिकांव अभिरविक्तिम कारम्ब क्षुरवांव प्रतिष्टित। এककारन शासके हिन मनश्करतात्र कोविका । भटन सिथम इस काँच गांधमा । ताहे লাখনাৰ দিছিলাভ কৰেও কিনি ঠাব প্ৰিয় গান ভাগা কৰতে भारबत नि । भवनकी कीनाम गाम मा गाहरन अमरका अहव। এইকভে একটি বেভিও সেই কিনে রেখেছিলেন সামভাবেডের ৰাজীতে। এখনও ভয় ভাবস্থায় সেটিকে দেখতে পাওৱা যায়। সামভাবেড়ে তাঁৰ শেৰ জীবনেৰ অসসৰ আসহাটি সভিটে স্তৰেৰ আবহাওয়ার ভ্রনপুর ছিল। ভীরনের সার্যান্তে গড়গড়া ভারে কভ **জন্ম অপরাত্তে** বাভীৰ বাবাক্ষায় ইঞ্জিচেয়াবে বসে দিগল্প প্রসারিত মার্টের ওপর দিবে মেঘ চাকা কপনাবারণের দিকে নিষ্পৃত্রক চোপে চেয়ে পাকতে জীবনম্পকার শ্রংচন্দ্রের মনে কত কথা আরু পান্ট না গুল্পন ভূলেছে তা কে ভানে।

আমার কথা (৫৭)

শ্ৰীমতী ইলা বন্থ

স্থাতের পরিবেশ বাঁচাব জন্ম—মাত্র ছব্ব বংসব বহসে বিনি নিশিল বন্ধ স্থাতি সংখ্যালনে অংশগ্রহণ করেন—প্রবন্তীকালে বিনি বাংলা তথা ভাষভীর সন্থাতে এক বিশিষ্ট স্থান গ্রহণ করেছেন—সেই শ্রমভী ইলা বন্ধু বলেন:

১৯৩৬ সালের ১০ট আগষ্ট হাওড়া প্রধাননভাগর জন্মাই।
বাবা প্রবসন্তব্যার চক্রবর্তী ডাক্রনিজাগের অবসরপ্রাপ্ত উচ্চপদস্থ
কর্মার চিক্রবর্তী ডাক্রনিজাগের অবসরপ্রাপ্ত উচ্চপদস্থ
কর্মার বিশ্বলম আর মা হলেন প্রীমতা নির্মানা দেবী। রাজসাতী
ক্রেলার বাপ্তদেশপুর হল আমাদের স্বপ্রাম। প্রশ্বলিকা প্রেণী পর্যন্ত
লেখাপড়া করেছি। চারি বংগর পূর্বে হাওড়া জেলা সম্মাননে প্রথম
সান করি—পনর বংসর বরসে এলাহারাল নির্মিল ভারত সঙ্গীত-সম্মেলনে বোগ দিই এব ভ্রমার প্রপদ গানে প্রথম হরে ক্রপিদক ও
ক্রান্স সাটিকিকেট পাই। তার আগের বছর নিথিল বঙ্গ সঙ্গীত
সম্মেলনে গান গাই। উন্তাভ সঙ্গীতে আমার প্রথম গুরু ছিলেন
ক্রীনাগোণাল মিত্র ও পরে শ্রীধীবেন্দ্রচন্দ্র মিত্র। প্রীহীক গাঙ্গুলীর
নির্কট, আমার ভাই লীপক তবলা শেখে। প্রার বার বংসর আগে
আমি কলিকাতা বেতার কেন্দ্রের শিশু বিভাগে বোগবান করি।
প্রে আমি উহার সঙ্গীত-শিল্পী হই। হিন্দুগান বেকর্ডে ৺অফুপম



এমতী ইলা বন্দ্ৰ

ঘটকের পরিচালনার আমার প্রথম রেকর্ড 'মোর গানেরই ইশ্রধমু' চয়। ইতার পর এচ, থম, ভি তে জীচিমায় লাতি ডার শিক্ষাবানে বেকটে চল বনে বনে গাহে কোহেলিয়া। এ পর্যান্ত আমার গাওয়া গানের অনেক বেকর্ড ছয়েছে। শারদীয়ার আমার বেকর্ড হবে 'ভোমানেই বেদেচি ভালো' ও 'ছোট করে বলতে গেলে গল্প।' ছোট বয়'স বদিও প্রথম ৰূপদ গান শিখি. প্রবর্তী সময়ে ঠংরী, দাদরা ও গজন ভালভাবে আয়ন্ত করি। ছায়াছবিতে আমি নেপথা পারিকা হিসাবে পান পেরেছি। বর্তমানে 'নৃংযুরই ভালে ভালে,' এ জহর সে জহর নর,' আকাশ পাতাল,' 'মুধা ও সারহাদ'-এ গানে আংশ প্রচণ করেছি। হিন্দী ভাষার অনুদিত রবীক্র-সঙ্গীত আমি পেরে থাকি। প্রীকশোক বন্ধুর সহিত আমি পরিণয় পুত্র আবদ্ধা। আমার 'হবি' হল কুকুব পোৱা এবং তজ্জন্ত আমি অনেক টাকা ধরচ করে থাকি। বংসবে করেক মাস পাটনার আমার কাকার নিকট অশ্বান করি। আমার মনে হর বে আধুনিক সঙ্গীতেঃ সহিত উচ্চাঙ্গ সঙ্গাতের সংমিশ্রণ হলে শ্রোভাদের মনের গভীরে রেখাপাত করে। গঞ্জ গান আমার পুব ভাল কাগে।

To be without some of the things you want is an indispensable part of happiness.

-Berirand Russel

फाँउ अठाइ बुज्याः

দেখুন পিরামীড জ্রাও গ্লিমারীন্ কেমন করে দাঁত ওঠা সহজ করে তোলে।



দ্ধান্ত ওঠার সমস্যা ? মাড়ীর ব্যথা ? একটা নরম কাপড়ে আপনার আঙ্গুল কড়িয়ে পিরামীত গ্লিসারীনে একটু আঙ্গুলটা ডুবিরে নিন তারপর আন্তে আন্তে শিশুর মাড়ীতে মালিশ করে দিন এবং তাড়াতাড়ী ব্যথা কমে যাবে আর এর ফিষ্ট ও হংখাদ শিশুদের প্রিয়। এটা বিশুক্ত এবং গৃহকর্পে, ওব্ধ হিসাবে, প্রসাধনে ও নানারকম ভাবে সারা বছরই কাজে লাগে—আপনার হাতের কাছেই একটা বোতদ রাধুন।



| আমাকে অ | ন্য প্তিকা: এই কুপনটা ভরে নীচের ঠিকানার পাঠাম ন নিভার নিমিটেড,পোষ্ট অফিস বন্ধ নং ৪০৯,বোঘাই মুগ্রহ করে পিরামীড ব্যাপ্ত গ্লিসারীনের গৃহকর্মে ব্যবহা |
|-------------------|---|
| _ | ত্ৰা বিনামূল্যে পাঠান । |
| আমার মাম ও ঠিকানা | আমার ওবুণের দোকানের নাম ও ঠিকান |
| | |

ডিট্রিবিটটারস: আই. সি. আই. (আই) প্রাইভেট লি: কলিকাতা, বোদাই, দিলী, মাদ্রাদ্ধ

বাঙলা অভিধান সঙ্গলন

জিশোরীস্ত্রকুমার খোষ

(9)

১৮৩৩. ১২ই জানুয়ারি সমাচার দর্গণে এক বিজ্ঞাপন আকাশ হয়—

জীবামপুরের মুদ্রায়স্তালরে।
ইশ্বরেজী ও বাঙ্গালা ভাষায় প্রকাশিত
পুস্তকের বিষয়ণ।
ইশ্বরেজী ও বাঙ্গালা ভাষায়
১ বাঙ্গালা ডিক্সনেরি।

আর্থাৎ প্রীযুত ডাকাব কেবি সাহেব কর্তৃক বচিত বারাল। ডিকানবি ভাষাতে বারাল। শব্দ সম্ভেব অর্থ ইরুবেজীতে ব্যক্ত আছে ভাষা বৃহৎ তিন বালামে প্রকাশিত মূল্য ৭০ টাকা।

২ এ বামপুরের বাঞ্চালা ডিক্সানরি ২ বালম।

ভারের প্রথম বালমে প্রেক্তি গ্রেব। শব্দ সংক্রেপে অর্পিড আছে। ২৬০০০ বালালা শব্দের অর্থ ইকরেজীতে করা গিরাছে। ছিতীর বালমে ২০১৬০ ইকরেজা শব্দের অর্থ বাললাতে লিখা গিরাছে। ছই বালমের মূলা ১০ টাকা। পৃথকসপে লইলে ৬টাকা। (অম্লাচবণ বিজ্ঞাভূবণ কৃত সংগ্রহ হতে)। উপবোক্ত ২নং অভিধানটি কেবী সাহেবের অভিধানেরই সংক্ষিপ্ত সংগ্রহণ। জন লার্ক মার্সমান ১৮২৭ খুং ইচা প্রকাশ করেন। (কেরী সাহেবের অভিধানের বিস্তৃত বিবরণ বাংলা গ্রের প্রথম বুগ, সা-প-প, ৪৬শ বর্ব, ৩ল্ল স্বাণ্য জুইবা)।

ডা: কেরী সাতেবের বৃহৎ অভিধানের পরে বাঙালী বচিত সর্বপ্রথম বর্ণাত্ত্ত মিক বাঙলা অভিধান-কার বলে প্রাসিদ্ধি আছে স্বার্চ পণ্ডিত, বান্দ্রমাজের প্রথম আর্চার্য, সংস্কৃত কলেড, তিন্দু পার্মশালার অধ্যাপক পণ্ডিত রামচন্দ্র বিজ্ঞানাগীশেব। বিজ্ঞানাগীশ মভাশয়ের ১৭৮৬ থঃ (१) (১৭০৭ শক ২৯শে মাব) পালপাড়ার জন্ম ও ১৮৭৪ খু: ২রা মার্চ মৃত্য। পিতা লক্ষীনাগায়ণ তর্কভ্ষণ। বিভাগাগীৰ রাজা রামমোহন ৰায়ের অঞ্পেৰণায় কলকাতায় এসে প্রথমে শাস্ত্রচায় প্রবৃত্ত হন আর অধাপনা কবেন। ৬ থানি বই লেখেন, তাব মধ্যে 'প্রথমেই তিনি একথানি অভিগান প্রস্তুত করেন। অভিগানথানির নাম-^{*}বঙ্গডাবাভিগান^{*}। ১৮১৭ সালে প্রথম প্রকাশিত হর্ টাকা। শোনা যাব তংকালে এই অভিবান ও জে তিবলায়ের গ্রন্থ 'জেনাতিষ স গ্রহসাবে'ব বিক্রণলব্ধ অর্থে তিনি সিমলা-হেত্যার উত্তরে এক বাড়ী ভিনিয়া তথায় বসবাস কবেন। ১৮২০ সালে অভিধান-খানির ২য় সাম্বরণ হয়। ইচা পূর্বাপেকা বর্বিতাকারে। এই সংস্করণের স্বত্ব ভিনি সোগাইটিকে বিরুদ্ধ করেন। অমুসন্ধানীরা এই অভিশানের যে কয়গানির সন্ধান পেলেছেন—সেঞ্জির কোনটারই আখাপ্র নেই। কেরী সাত্র এই অভিধানধানিকে ভংকালে শ্রেষ্ঠ বিবেচনা করায় শিক্ষার্থীদের মধ্যে বিভরণের জ্বন্তে २०० किन क्य कःवन।

এর পরে নাম পাওরা বায় মোছনপ্রসাদ ঠাকুরের। ইনি একথানি অভিবান রচনা করেন ১৮১৮ সালে।

এই ১৮১৮ সালেই পীতাশ্বর মুখোপাধার সংস্কৃত অমরকোর থানিকে অকাণাদি ক্রমে সাজারে বাঙলা ভাষার তার অর্থ প্রকাশ করে 'শক্ষিকু' নামে বাঙালাদের ব্যবহাবোপ্যোগী অভিধান বের করেন। বইখানির আখ্যাপত্র এইরপ—

ভিগ্নান অনুনস্থি। কুন্ত। অভিধান অকারাদিক্রমে। ভাষার। বিবরণ ক্রেয়া শব্দনস্থা। নাম। রাথিয়া কলিকাতায় ছাপা। হইল। সূন ১২২৫।

ৰইখানির ভূমিকার শেবে গ্রন্থ সমাপ্তির তারিথ (১৭৪০ শক) এইভাবে দেখা আছে—

> গগন গণেশ ভূজ গৰুৰ্ব ভূমিতে। গ্ৰন্থ সমাপ্তর শাক জানিবা পণ্ডিতে॥

সমাচার দর্পণের (২৫ জুগাই ১৮১৮) নতুন বইয়ের এক ইস্থাহার প্রকাশ হর---

ইস্তাহার। গ্রীপী হাস্বর শর্মাঃ। এতদেশীর অনেক অনেক বিশিষ্ট বাক্তি ব্যাকরণাদি শাস্ত্র অপাঠ হেতু পত্রাদি সিখনকালীন তদ্ধান্ত হি বিবেচনা করিয়া লিগিতে অশক্ত এ কারণ এ আকিঞ্চন ভগবান অমরদিত কত অভিধান অকারাদিক্রমে অর্থাৎ ইংরাজী অর্থ ডেক্সিনানাগীর জার ভাবার বিবরিয়া দস্ত্য ওঠা ব কাবের প্রভেদ করিয়া মেদিনী রভদাদি নানা অভিধানের অর্থ দিরা নানার্থ স্থরপ ৪৯১ পৃঠা এক প্রস্থ কেতাব করিয়া উত্তম অকরে ছাপাইয়াছে তাহার চাণিশত বিক্রয় হইরাছে শেষ এক শত আছে ছব তক্তা মৃল্যো যাহার বাঞা ত্র তবে ক্রমাং উত্তরপাঢ়ার প্রীযুক ছর্গাচরণ মুখোপাধারে মহাশ্রের বাটীতে অথবা মোং কলিকাতার শ্রীযুক দেওয়ান রামমোহন রায় মহাশ্রের সোসাইটা অবাং আছার সভাতে চেঠা করিলে পাইবেন নিবেদন মিতি। বিংদে-কথা, ১ম. ৬৬)।

১৮১১ সালে ইংরেজ পশুত ডাব্রুর হোরেস হেমান উইলসন (Horace Hayman Wilson) এক সংস্কৃত-ই থেজি অভিধান প্রস্তুত কবেন। বইথানির নাম—A Dictionary in Sanskrit and English, translated. . from Original Compilation prepared by learned Natives for the college of Fort William, Calcutta 1819 পুঠা সংখ্যা ১১০০। বইখানির তু বকম দাম ছিল—ভাল বিলিতি কাগজে ছাপা—১০০১ আর পাটনাই কাগজে ছাপা—৮০। ডা: উইলমন সাহেব ১৭৮৬ খু: ২৩৭ সেপ্টেম্বর লগুনের লোভো স্বোয়ারে জন্ম গ্রহণ করেন। ১৮০৮ সালে ইট্ট ইণ্ডিয়া কোম্পানীর অধানে ডাব্রুার হয়ে ভারতে আসেন। बमायून-भारत भावनभी वत्न हैं।। कमात्न assay master नियुक् হ্ন : কয়েক বছর পরে ১৮১১-৩৩ থু: পর্যন্ত এসিয়াটক সোসাইটি এব বেঞ্জের সেক্রেটারী নিযুক্ত হন। অবসর সময় সংস্কৃত অধ্যয়ন करवन। ১৮১० সালে कालिगानव स्वयुट्डव देश्विक व्यव्यान, ভারপর আনকণ্ডলি কাবাে অনুবাদ করেন। এই সমরেই সংস্কৃত-ইংবেজি অভিগানের বচনা হয়। তিনি হিন্দুদের থিয়েটার নিয়েও গ্রন্থ লেখেন-বামচরিতের অনুবান করলে তাঁরই অধ্যক্ষতার প্রসন্ধকুমার ঠাকুরের বাড়াত্তে এই নাটক অভিনাত হয় (১৮৩১)৷ ১৮৩৩ সালে অন্নফোর্ডে সংস্কৃত্তর অধ্যাপক, ১৮৩১এ ইণ্ডিয়া হাউস লাইব্রেরীর্ व्यक्त ३৮५० माल ५३ म प्रजा।

জা: উইপদন সাঁহেবের অভিবানখানির একদিকে সংস্কৃত ও আব এদদিকে ইংবেজি শদ। ইংবেজিতে এক এক শদের ছ'তিন বক্ষের মানে হার নানা কোব গ্রন্থকৈ তার প্রনাণ দেওয়া আছে।

১৮২ - সালে ক্যান্টেন ফেল (Captain Fael) সাহেব মেদিনী কোষ ইংবেজিতে তর্জনা করে সস্তুত-ইংবেজি এক অভিধান প্রস্তুত করেন। এই বইখানি ইংলণ্ডে বাঁগা সংস্কৃত শিক্ষা করতে চান তাদের জন্মই বিশেব ভাবে বচিত হয়েছে।

বেভা: উইলিয়ান মটন (Rev. William Morton) সাতেবের বাঙ্গাভাগায় এক অভগানের উরেও পাওয়া যায়। বইথানির নাম—A Dictionary of the Bengali Language, Calcutta 1828. বইগানি এগিয়াটিক গোলাইটি অব বেকলে রক্ষিত আছে। এ ছাড়াও তিনি "Biblical and Theological Dictionary, English and Bengali, Calcutta 1845" নামে একথানি অভিগান বচনা কবেন। ইহাও উক্ত গোলাইটাতে বক্ষিত 'আছে।

ডাং কেরীর পুত্র ফিলিক্স কেবা (Felix Carey) ও রামক্যক্স দেন (১৭৮০—১৮৭৪) (বিনি তংকালে ব্যান্ধ অব বেশলের দেওয়ান ছিলেন) উভর মিলির। তু' গণ্ডে এক অভিনান তৈবী করেন। অভিবানধানির স্বপাতের প্রণয় তু' বছরের মধ্যেই ফিলিক্স কেরীর মৃত্যু হধ (১৮২৩)। পরে রামক্ষল দেন সংস্কৃত কলেক্ষের সম্পাদক হন। তিনি এপ্রকান্তার ও হটিকাল্যার সোনাইটির অক্ততম প্রতিষ্ঠাতা ছিলেন। ইনি ব্রন্ধানক্ষ কেশ্রচক্ষ্ম পেনের পিত মহ। কেবি ও রামক্যলপন্ম উভরের মিলিত যে অভিবান তার ক্ষম্পতির স্বান সমাচার দর্পণে (১৮২১, ৩১শে মার্চ) প্রকাশ হয়েছিল—

শ্রীষ্ত ফিলিক্স কেরি সাহেব ও প্রীরানকমল দেন কর্তৃ ক ইংরেজী ও বাঙ্গল। ভাষাতে এক অভিধান তর্জন। হইয়া প্রীরামপুরের ছাপাথানাতে ছাপা। হইতেছে দে পুস্তক ক্ষুদ্ধ অক্ষরে হই বালামে কমবেশ হাজার পৃষ্ঠা হইবেক। যে বাজি সহী করিবেন তিনি পঞ্চাশ টাকাতে পাইনেন তেতির লোকের দেগের লইতে হইলে সম্ভবি টাকা লাগিবেক যাহারদিগের সহা করিবার বাসন। থাকে তাহারা হিন্দুস্থানার প্রেমে প্রীযুত পেরেরা সাহেবের নিকটে কিয়া প্রীরামপুরের প্রীযুত ফিলিক্স কেরি সাহেবের নিকটে কিয়া প্রীরামপুরের প্রীযুত ফিলিক্স কেরি সাহেবের নিকটে আপন নাম শাঠাইবেক।

বিলেতে জনসন সাহেবের ইংরেজি ডিক্সনারীথানি থুব বিখ্যাত। এদেশেও তৎকালে ইংরেজি শিকানবীশদের কাছে অভিধানথানি বিশেব প্রয়োজনীয় ছিল। জন মেণ্ডিস (John Mendies) সাহেব.এই অভিধানথানিকে ইংরেজি ও বাঙ্জা ভাষার প্রকাশ করেন। নাম—Companion to Johnson's Dictionary in English and Bengalese. ইহা প্রীরামপুরের ছাপাখানার ছাপা হয়। দাম হয় ৮ । ১৮২৮ সালে এই গ্রন্থের ২য় থণ্ড প্রকাশ হয়। ছাপাও হয় ঐ প্রীরামপুরে।

১৮২৫ সালের ২২এ জানুয়ারির সমাচার দর্পণে দেখা বায়— "মোং কলুটোলা চক্রিকা বন্ধালরে ক্রীলেবেপ্তার সাহের কর্তৃক সংগৃহীজ জানসেন ডিল্পনারীর ইংরাজা সমেত বাঙ্গাল।" জভিধানের বিজ্ঞাপন।

১৮ই জুন ১৮২৫এব বিজ্ঞাপনে দেখা বার "জনসন জিকসিয়ানারি।—- এযুভ বাকু রামকমল সেন ভারুগর জানদেন সাহেব

কৃত ইংরাজী ডেকসিয়ানাবির তাবং শালের যথার্থ আর্থ বাসালা ভারতি
তর্জনা কবিয়া প্রীবানপুরের ছাপাথানায় ছাপাইতেছেন। এই পুরুকের
ত্বই নক্ষর অর্থাং প্রায় তুই শত পূর্রা প্রস্তুত হইয়া প্রাহকদের নিকট প্রেরত হইডেছে এংং ইহার পর এক ২ নক্ষর বেমন ছাপা হইবেক
তেমন গ্রাহকদের নিকট প্রেরণ করা যাইবেক। এই পুরুকের প্রভাক
নক্ষরের মৃলা ছয় টাকা নির্দ্ধিত হইয়াছেল । (সং-সেক্থা, ১ম. ৭৪)। ১৮০৪ সালে এই গ্রের ২য় গণ্ড সমাপ্ত হয়। নাম—
"A Dictionary in English and Bengalee, translated
from Todd's Edition of Johnson's English
Dictionary, 2 Vols. Seerampore Press, 1834."

শ্রীবামপুরের পাদরী কেরী সাচেবের সহক্ষী জোন্তরা মার্স মান ।
(J. C. Marshman) রে অভিগানখানি সংকলন করেন, তাব নাম "A Dictionary of the Bengali Language," etc. ইছা তু থণ্ডে প্রকাশিত হয়। ১ম খণ্ড ১৮২৭ খৃঃ, প্রক্র সংখ্যা ৫৩১ এবং ২র খণ্ড ১৮২৮ খৃঃ, প্রক্র সংখ্যা ৪৪০। এই অভিগ নটি শ্রীবামপুরে ছাপা হয়।

১৮২৭ সালে ভারাঠাদ চক্রবর্তী এক অভিধান করেন। অভিধানথানির নান—A Dictionary of Bengali, Calcutta, 1827. "ইংরাজি বালা অভিধান।" ভারাঠাদ তংকালে ইয়ং ক্যালকটি।" দলের ও পরে বর্ণমান রাজের অধীনে কর্ম করিতেন।

১৮২১ সালে বামধন সেন—পারসী ই জি অভিধান *Dictionary in Persian and English, Calcutta, 1829* রচনা করেন।

১৮৩১ সালে শক্ষকামধুবাভিগানের এক বিজ্ঞাপন প্রকাশ হর। তাতে তিন জন পাণ্ডত ও একজন সংগ্রকাবের স্বাক্ষর থাকে এবং উহাচন্দ্রিকা ব্য়ালয়ে মুদ্রিত হবে বলো বিজ্ঞাপত হয়।

১৮৩২ সালে জগরাথ মলিক সংস্কৃত অনগ্রকাবের প্রত্যেকটি
শব্দের প্রতিশক্ষ দিরে বাঙলা ভাষার প্রকাশ করেন। বইখানির
পৃষ্ঠ সংখ্যা ছিল ৪০০। সনাচার দর্পনের (৫ই ফেব্রুয়ারি
১৮৩২) সংবাদ—

শ্রী বৃত্ত বাবু জগন্নাথ মন্ত্রিক সম্প্রতিত সংস্কৃত অসমকাৰ প্রস্থানিক করিলাছেন। তালাতে প্রত্যেক সংস্কৃতের অর্থ বাকালাতে প্রস্তুত হইরাছে তালা প্রায় ৪০০ পৃঠ পরিমিত হইবে। এই মৃল্ প্রস্কে বাবাদের আবহুক তালাদের ইহবে। এই প্রস্থানিক বিক্তালস্কার কর্তৃকি সংগৃহতি ইইরাছে।

১৮৩০ সালে স্থাব গ্রেভদ চামনি হটন (Sir G. C. Haughton. ১৭৮৮—১৮৪৯) এক বাঙ্গা-ইংরেজি ও সংস্কৃত-ইংরেজি অভিধান প্রণয়ন কবেন। স্থার ইটন ১৮০৮ সালে ভাগতে এলে বেকল আমিতে যোগ দেন। বাগাসাতে ও ফোর্ট উইলিয়াম কলেকে এদেশীয় ভাষা শিক্ষা কবেন। স্থান্থান্তক হেতু ১৮১৫ সালে বিলাতে কিবে যান—সেখানে প্রান্থান জ্বাপেক হন এক একথানি বাংলা-অভিধান তৈরী কবেন। অভিধানখানির নাম—"A Dictionary, Bengali and Sanskrit Explained in English..to which is

added an index, serving as a reversed dictionary, London \ 1833. সমাচার দর্শনে (১৮৩৪, ৪ঠা জুন) প্রকাশ—লামান শুনিয়া পরম আপ্যায়িত হইলাম শ্রীযুক্ত শুর থেবল হৌটন সাহেব লগুন নগরে সংস্কৃত ও বাংলা ও ইংরাজিতে ন্তম এক ডিল্লনারী মুদ্রান্তিত করিয়াছেন এবং এ গ্রন্থের শেষে এতদ্রপ নির্বাচ দিয়াছেন—থে তাহা উলট করিয়া পঢ়িলে ইংবেজী ভাবায় সংস্কৃত ও বাঙ্গালা অর্থ লভ্য হয় ভাহার মূল্য এথানে ৮০ টাকারও অধিক।

১৮৩৭ সালে ডি'রোক্সবিও (P. S. D'Rozario)
"A Dictionary of Principal Languages of Bengal
Presidency in Bengali, Hindi, 1837" নামে একথানি
অভিধান করেন।

১৮৩৭ সালে আর একথানি অভিধান পাওয়া বায়। নাম— Dictionary of English, Bengali & Manipuri অন্ত্রাবের নাম অক্তাত।

১৮৩৮ সালে ব্রন্থনাথ তর্বভ্বণ বচিত অভিধান। "প্রীব্রন্থনাথ তর্বভ্বণ এক পণ্ডিত তাঁচাকে সর্বলোকে জ্ঞাত আছেন তিনি এতংকশীর ভাগার এক অভিধান প্রস্তুত করিতেছেন—এই অভিধান এতক্ষেশীর সর্বলোকের উপকাবক হইবেক কাবল বাংলা ভাগার এতাদৃশ অভিধান প্রায় হয় নাই প্রীয়ত রামচন্দ্র বিল্পাবাগীশ কর্ত্ব র্মিচন্ত বে অভিধান বাংলা একণে ইন্থুলে ব্যবহাগ্য হইতেছে—দেই অভিধান বাংলা অধিক বান্ধালা শিক্ষা করেন তাঁহাদিগেব উপকারক নহে এই ভারি অভিধান পূর্ব পূর্বোক্ত সকল অভিধানাপেক্ষা অভ্যাত্তম হইবে কারণ ইহা অত্যাত্তম বিষ্ণুত কর্ত্ব প্রস্তুত হইতেছে। (সমাচার দর্শণ, ৮ই আগষ্ট ১৮৩৮)।

সম্বাচার দর্পনের পণ্ডিত জয়গোপাল তর্কালকারের অভিধান—
সমাচার দর্পনের ১৮ই আগঠ ১৩৩৮এর সংবাদে প্রকাশ
শারস্ত ও বঙ্গভাবাতে অভিধান। আদালতের কার্ষে পারস্ত ভাবা
উঠিয় যাওয়তে বঙ্গভাবার অভান্ত সমাদর হইয়ছে। • • বিজ্ঞাবর
বিষ্কুল জয়গোপাল তর্কালকার ভট্টাচার্য পারস্ত ও বঙ্গভাবাতে এক
অভিধান মুদ্রাক্তিত কবিলেন। তল্পনাে পঢ়িশ শতেয়ে। অবিক
পারস্ত শন্দের অর্থ বঙ্গায় সাধ্ ভাবাতে সংগ্রহ কবিয়ছেন।
এইখানে ঐ মহোপকাবক বত্দ্লা গ্রন্থ স্থানস্পন্ন হইয়া অভান্ন
মৃল্যু একটা টাকা মানে স্থিবীকৃত হইয়াছে। "

জ্বব্যোপাল তর্কাল্কার বাঙলা ভাষা সংক্রান্ত সংস্কৃত লব্দ সঙ্কলন করেন। নাম—বঙ্গাভিধান। সেই লব্দগুলি অকারালিক্রমে সাজান হয় এবং তার সঙ্গে ইংরেজি ভাষায় অর্থন্ত প্রকাল করেন। বেমন—

"অংশ s. a share, a part

জা s. a partner

खक्था a. unutterable

चक्था कथा s. unutterable word

আকর্ত্তব্য a. improper আকর্মণ্য a. useless অকল্যাণ s. misfortune

--- উত্যাদি। (সং-সে-কথা, ২য়, ১১৫)।

এই ১৮৩৮ সালে ক্ষমীনারায়ণ ক্সায়ালকার ভট্টাচার্য যিনি সংস্কৃত কলেজের পুস্তকাধ্যক (১৮২৪-৩১) ছিলেন ও পরে মুন্সেফ, সদর আনিন, পুর্ণিরা জেলার আদালতের জব্ধ পণ্ডিত হন, তিনি আইন সংক্রোন্ত পারত শন্দের বাঙলা সমেত অভিধান প্রস্তুত করেন। নাম—"ব্যবহার-বিচাবে শব্দাভিধান। সম্বত ১৮৯৫, আবাঢ়, পৃঃ ৩৬।" ব্যবহার বিচারোপ্যোগি পারত্য শব্দের সাধু গৌড়ীর ভাষায় অমুবাদ।" ইহা কলকাতায় পুর্ণচন্দ্রাদর যত্তে মুক্তিত হয়।

এই গ্রন্থের ভূমিকার গ্রন্থার যাহা লিখেছেন—তাহা আমি সংবাদপত্রে দেকালের কথার ১ম খণ্ডের ৪১৬ পৃ: হতে উদ্ভ কর্মছি—

শসমাবেদন মিদং

ভারতবর্ষন্ত রাজধানীর সকল বিচাবন্তলে পারতা ভাষার পরিবর্ণে দেশীয় ভাগা বারা রাজ শাসন ও রাজক আদায় ও **অন্য অব্য তা**বং কর্মনির্বাহ করিতে স্থপ্রিম কৌন্শুল হইতে যে অবধি আজা হইয়াছে এইক্ষণ প্রাপ্ত ভাচা প্রচার রূপে নির্বাহ হওয়া স্বচৰ প্ৰাহত প্ৰতাত বঙ্গদেশে। মধ্যে নানা স্থানে নানাবিধ শব্দ প্রয়োগ ভইয়া অত্যস্ত গোলযোগ উপস্থিত হুইয়াছে ইহাতে বোধহয় ঐ সকল স্থানের ব্যবহাব নিম্পত্তি হইয়। যুখন বিতীয়বিচারার্থে সদরদেওয়ানিতে উপঞ্চিত হইবে সেদময়ে বিচারকর্তানিগের এবং পাঠকলেথকদিগের অনর্থক কাল হরণ ও বৈরক্তি অন্মিতে পাৰে অতথৰ এই বিষয়ের যত আবশুদ পারতা শবা আমি শাপন প্রাপ্তব্যবহাব বিচার সময়ে ক্রমে ২ প্রাপ্ত হইয়াছি তাহার অর্থ মিতাক্ষণাদি ধর্মশান্ত্র হইতে সঙ্কলন করিয়া সাধু-গৌড়ীর ভাষায় এক অভিধান প্রস্তুত করিয়া তাহা স্থপ্রিমকেটের পণ্ডিত শ্রীযুক্ত রামজ্য ভর্কালভার ভটাচাধ্য মহাশয় কঠা চ্ছানেক শব্দ পুন ঝিবেচিত হইয়া মুদ্রিত হইল আমার বাসনা এই পুস্তক স্প রাজধানীয় সকল বিচাএকর্তা মহাশয়দিগের নিকটে স্বীয়ামুকুল্যে বিনা মুল্যে বিভরণ কবিব ভাহাতে রাজকর্ম নির্ধাহ স্থচাক্তরণে ইইডে পাবে তাহাতে আমার প্রমোপকার হইবে ইতি।

পুনর্বার নিবেদন পারক্ত শব্দের গৌড়াক্ষরে লিখনে কোন ছানে বর্গরিন্তর হওরাতে মহাশ্রেরা ক্রাট ধরিবেন না কারণ ছরাপ্রযুক্ত পারক্তাক্ষর বিক্তাস করা যার নাই পরে তাহাতে প্রয়োজনও নাই কেবল সাব্ ভাষা গৌড়ীয় দিগদর্শনার্থ ইহা প্রস্তুত করা নতুবা পারত্যাভিধান অনেক আছে কিম্বিকং বিজ্ঞব্বের শ্রীকল্পীনারায়ণ ক্তায়াল্ডরার পণ্ডিত।

সদর্থামীন পুরনিয়া।"

क्रमणः।

Money can't buy health, but I'd settle for a diamond-studded wheelchair.



তৃস্পাপ্য জিনিস সংরক্ষণ

প্রনো তৃশাপ্য বিনিসের দাম দব দমর্থই র্যেছে, পরেও । থাকবে। বরং বদা বার, দিন যতই বাবে, জভীত যুগের ৰে কোন দম্পদের মূল্য বাড়বে বই কমবে না। তৃপ্তি বিনিস সংগ্রহ ও সংবক্ষণের দাবী দেক্তভেই ওঠে।

একটা জিনিদ বলতে হয় এই স্থে এবং সে গোড়াতেই। এইমাত্র দাম বা মৃশ্যের কথা বা বলা হলো, সে বস্তুগত বতটা নয়, তার চেয়ে বেশি কালগত। অর্থাৎ এ অনেকটা বস্তু বা শিল্পের এতিহাসিক মৃল্য—ওর প্রাচীনখের মর্য্যাদা।

সভ্যতাগৰী ও অপ্সসর দেশসম্হে পুরনো তুল্পাপ্য জব্যের সমাদর বিশেষভাবে লক্ষ্য করা যায়। কত অমুসন্ধান ও কত খননকার্ধ্যের প্রয়োজন হরে থাকে এজজ্ঞে, বলবার নয়। উল্লম, দৃষ্টি ও প্রয়ন্ত এই বেখানে নিবিভ্তাবে থাকে, সেখানেই তুল্পাপ্য জিনিসের সন্ধান পাওয়া সক্তব্পর।

ৰা কিছু প্ৰনো, তা-ই পৰিত্যান্ত্য, এ ধাৰণা অচস প্ৰমাণিত হয়েছে বহুকাল। অনুসদ্ধানে অতীতের গর্ভে নিহিত অনেক জিনিসই বর্তমানের চোধে নতুন ঠেকতে পারে। এই বে সহসা চোধে লাগা, মনের ওপর আপনি প্রভাব বিস্তাব, প্রনো সামগ্রীর মৃল্য বীকৃত ও নিনীত হয় সর্বাগ্রে এইখানেই।

পূর্বনো দিনের মুদ্রা, ডাকটিকিট, শিব্ধকলা প্রভৃতির মূল্য অনস্বীকার্যা। এই ধরণের তুম্পাণা জিনিস সংগ্রহ ও সংবক্ষণে পশ্চিমী দেশগুলোর প্রবন্ধ ও তৎপরতার অভাব নেই। পূর্বে ধাই হোক, ও গুরুহপূর্ণ ব্যাপারে পশ্চিমী দেশগুলোর মতো ভারতও এখন এগিয়ে আসতে চাইছে বেশ কিছুটা।

প্রাচীন যুগের হুপাপ্য জিনিসের জন্ত সোভিরেট দেশের দরদ ও
মমত্বের বৃথি ভূপনা হয় না। একটি মাত্র ঘটনা থেকেই এই উল্ভিব
মাধার্য উপসন্ধি করা বেতে পারে। কুশ বিপ্লর ভ্রথন প্রাদমে
চলেছে—সমগ্র বিধ তথন প্রকলিপত। পাছে সব ধ্বংস হরে বার,
তাই প্রনো ভূপভি ক্রব্য সংগ্রহে বেরিরে পড়ে একটি প্রকাশু দল।
সেদিনের অম্ল্য সংগ্রহ বা লিল্ল সম্ভার নিরেই ক্লম্বার বিধাত্ত সংগ্রহশালাগুলা (মিউজিরাম) আজ্ঞও পর্ব করতে পারছে।

এখনকার যুপে অবশ্য পূরনো জিনিসের স্থারী বাজার গড়ে উঠেছে প্রাচ্য-প্রতীচ্য জনেক দেশেই। বিলেকে এই প্রেণীর বড় বড় বাজার বা ব্যবদা কেন্দ্র বছ দিন থেকেই চালু বরেছে। ছম্পুণ্য আসবাবই ক্ষাক, অপন্ন ক্ষেত্রন মনোময় শিল্প সামনীই হোক্, বাদাকতর বাজার এর মিল্লবেই। পুরনো শিল্পদ্রতা নিয়ে নিয়মিত ব্যবসা-বাণিজ্য করে চলেছেন, বিশ্বের এমন কয়েকটি নামকরা ফাগ্ম বা সংস্থা: ক্রিষ্টি'ল ও সোলেবাই'জ (লগুন), পার্কে-বার্শেটিস (নিউইয়র্ক), স্যালারী কার্পেণ্টিয়ার (প্যারিস) ইত্যাদি।

একটি কথা মানছেই হবে—সাধারণভাবে পুরনো ত্বভাপ্য জিনিসের মূল্য ক্রমে বাড়বেই, সহসা কমবে না। বিলেডী বাজারের সাম্প্রভিক বিবরণ—কয়েক বছর আগোও সেখানে প্রাক্ কলছিয়। (১৮০১) মূগের জহরতের যে দান ছিল, আজ ছা দাঁড়িরেছে অস্ততঃ ভিনগুণ। প্রাচীন চিত্রকলার মূল্যও আজকের দিনে বেড়েছে অভিমাত্রায়। বাণিড বাকেটের হাতের একখানি শিল্লের প্রেক্ত একখানি গিল্লের প্রক্রেক উল্লেখ করা মেতে পারে। করেক বছর আগেও এব বাজার মূল্য যেখানে ছিল মাত্র ২৫ পাউণ্ড, আজ ২৫০ পাউণ্ডের কমে তা পাবার উপাদ নেই।

প্রাতত্ত্ববিদ্দের আবিষ্কৃত বিভিন্ন অম্প্য জিনিস তথা সেকালের ছম্প্রাপ্য নিল-সামগ্রীর দাম বাছবার পেছনে অবশু করেকটি কারণই রয়েছে। একটি প্রধান কারণ বা স্ত্র—সরবর্গাহ থেকে চাহিদ্যা বৃদ্ধি। মানুষ পুরনো সম্পদের মাধ্যমে পুরনো মুগের সাথে পরিচিত্ত হতে চার কিছে সে সম্পদ চাওয়া মাত্রই হাতে পৌছতে পারে না। প্যারিসের বাজারে ত্'বছর আগে মাত্র ৮লক পাউও মৃল্যের ছম্পুণিয় শিল্প সংগ্রহ সম্ভব হয়েছিল। বাইবে এফের চাহিদা কতো বেশি হবে পড়ে বে, দেখতে দেখতে এই খাতে পাঁচতণ অর্থাৎ ৪০ লক্ষ্পাউও এসে বার।

মোটের ওপর, আজ এই নিরে ছিমতের অবকাশ নেই বে,
শতাকী আগেকার মুদ্রা, ডাকটিকিট, পুঁথি-পুস্তক (বিশেষ করে
পাণ্ডলিপি), শিল্প, ভাদ্ধর্য—এসকলের সংগ্রহ গুরুষ অপরিসীয়।
কথন কার কোড়্ছল আকর্ষণ করে কোন্ জিনিসের মৃন্যু কড
দাঁড়াবে, কেউ বলতে পারে না। এই সব মন্ত্রাম্ন্য সম্পদ জাতীর
সংগ্রহ-শানার যত্ন করে রাথবার ব্যবহা হলে, সবচেরে ভালো হর।

প্রনো ত্র্প ভ জিনিস সংগ্রহ ও সংবক্ষণ ব্যাণারে সবকারী লারিছ জনদাকার্য। মিউজিয়াম বা সংগ্রহণালার রেখে, এবং প্রচার-পৃত্তিকা মারফত তাঁরাই এসফল সম্পদের দিকে সাধারণ মানুবের পৃষ্টি আকর্ষণ করতে পাবেন সহজে। ভারতের জাতীর সরকার ও প্রাক্তম্ব বিদ্যাণ এদিকে উভোগী বয়েছেন, এ আশার কথা। সম্প্রতি আর্থানীতে প্রাচীন ভারতের শিল্প-সম্পদের একটি প্রদর্শনী হয়ে গেছে। এমনি ধরনের প্রদর্শনী দেশে-বিদেশে বত বেশি হবে, ভাজাই ভালো, প্রতে সম্পদ্ধ নেই।

তাসের ব্যক্তার ও আধুমিক যুগ

আককের দিনে এনন দেশ নিভান্ত বিবস, বেখানে তাসের ব্যবহার নেই। মনকে উংক্র রাখবার এবং অবসর উপভোগের একট চমংকার মাধ্যম এই ভাস। ব্রিজ, ব্রে, ছইট্ট, পোকার প্রভৃতি অসংখ্য রকমের ভাস থেলা এযুগে চলতি। জুরার কেন্দ্র বা আডভাওলোতেও ভাস ব্যবহাত হর অভিমাত্রার।

ভাগের ব্যবহার ঠিক কোন্ যুগে ত অবস্থায় স্থক হয়েছে, এ নিশ্চর কবে বলা বার না। ভারতে কিন্তু এর প্রচলন ছিল বহু শভাদী আগগেই। ভবে আধুনিক যুগের বিজ্ঞানদম্মত ভাগ খেলা ইউরোপের অবদান, বিশেষ করে বুটেনের। সে দেশ খেকেই সাবা ছনিয়ার সম্প্রদারিত সংয়ছে ভাগের নতুন নতুন জনপ্রিক্ত খেলা।

ইভিহাস পর্যালোচন। কবে জানা যার, ইউরোপে ভাস খেলার ক্রপাত হয় চতুর্নণ শতকে। তথনকার দিনের তাস আক্রের দিনের মতে। এত স্থান্ধ ও মত্থ ছিল না, এ সহজেই জন্মুমের। আধুনিক যুগে বাজাবে কত চিত্তাকর্ষক সুযুদ্ধিত তাস দেখতে পাওয়া যায়। এই উরতির জাজে বিলেতের টমাস ভালা বিউ কোম্পানী বছসাংশে দানী।

সে ১৮৩২ সালের কথা। তথন অবধি ইউবোপে বে তাস ব্যবহাত হতো, সে হাতে ষ্টেনসিল করে। কাজটি সহক্ষাধ্যও ছিল না মোটেই, ব্যরও হতো প্রচুব। টনাস ত লা বিউ (তাঁবই নামে পরে কোম্পানা হব) ব্যাপারটি নিয়ে ভাবলেন—মাবিকার করলেন তাস ছাপারার ছাঁচ বা যন্ত্র। ১৮৩২ সালের ফেব্রুয়ারী মালে চহুর্থ উইলিয়ন ঐ মুদ্রণ যন্ত্র দিয়ে তাস উংপাদনের ছাড়পত্র তাঁকে অর্পণ করেন। এই অভিনব আবিকারের পর থেকে তাস ছাপা হয়ে চলে হরদম—অরায়াসে তৈরী হয় তাসের এক একটি তাড়া। ক্রমে অনেক মনোরন শিল্লকান্ধ চলতে থাকে এর ওপর পাতায়—সাহের, বিবি, গোলামকেও নানাভঙ্গিতে বসানো হয়। ভালো ভালো ভিজাইনের তাস বাজারে যতই আসতে থাকে, তাসের ব্যবহারও বেড়ে যায় সেই অনুপাতেই।

ভাগ উৎপাদন এ ৰূগে কি পৰিষাণ বৃদ্ধি পেৰেছে, সে সম্পৰ্কে একটি হিনাব পাওৱা গেছে। ১৮৩২ সালের মাগে বছরে ভানের ভাছা ভৈনী কৰা সম্ভৰ হভো প্ৰাৰ ঘুই লক। ১৮৫৭ সালে অৰ্থাং ত্ৰিশ বছৰ হ'তে না হতেই বান্ত্ৰিক ব্যবহাৰে বছৰে উৎপাদন ৮ লকে দীড়াম। এর পর শত বর্ব অভিক্রান্ত হয়ে গেছে। এই দীর্ষ সময় মধ্যে উৎপাদনের মাত্রা ক্রমেই বিশ্বিত হয়েছে, আব্দু তা পরিকার। একণে একমাত্র বৃটেনেই ভাস ভৈরী হয় বছরে ১ - কোটি ভাড়া আৰ ৮ কোটি তাড়া মাৰ্কিন মূলুকে। ইউবোপ ও আমেরিকার আজ শতকরা প্রায় ৮০টি গৃহেই তাসের নির্মিত ''ব্যবহার লক্ষ্য করা বার। ভ লা বিউ কোপোনীর ১২৫ ভর 'এইভিষ্ঠা বাৰ্ষিকী উপদক্ষে লওনে ভাদ ব্যবসায়ীদের একটি আন্তর্জাতিক সম্মেদন অভ্তিত হয় ১১৫৭ সালে। সেইসলে ্একটি আন্তর্জাতিক প্রদর্শনীরও আরোজন করেছিলেন উক্ত নামজাদা ব্যবসা-প্রতিষ্ঠান। ১৫টি দেশ থেকে ২১টি কোম্পানীর সম্মেলনে ৰোগ **দিবেছিলেন** র্জাসংখ্য ডিঙ্গাইনের খেলার ভাস জনা হরেছিল অভীভ দিনের এবদ দি পাঁচ শত বছর আপেকারও বুকুবারী

ভাস দেখতে পাওৱা বার ঐ সমর। হাতীর দাঁত, কচ্ছপের খোলা, মাছের আঁব, জন্ধ-চামড়া প্রভৃতি কত জিনিস দিরে তৈরী সে সক্ষ ভাস। রাজা প্রথম চার্ল দের ব্যবস্থাত এক তাড়া দামী ভাস আলোচ্য প্রদর্শনীর একটি উল্লেখবোগ্য আকর্ষণ ছিল। আর হাতে তৈরী প্রনো ডিজাইন বা নমুনার তাসের ছড়াছড়িও হরেছিল জুলনার কম নর।

আধুনিক যুগে খেলার তাস সত্যি একটি প্রকাণ শিল্পে পরিণত হরেছে। সংশ্লিষ্ট সরকারগণ এই থাতে কর বা রাজ্বও পেরে খাকেন বেশ মোটারকম। একমাত্র বুটেন ও আমেরিকাডেই বছরে ডাস কেনা হর ১ কোটি তাড়া। ভারতেও তাস খেলার প্রসার দিন দিন বেড়েছে ছাড়া কমছে না। শুরু পুরুষরা নয়, অনেক ক্ষেত্রে নারীরাও এই খেলার বোগদান করছেন, তাও লক্ষ্য করবার। সরকারী পৃষ্ঠপোষকতা পেলে এদেশেও তাসকে কেন্দ্র করে একটি বড় শিল্প গড়ে ওঠতে পরে। দেশীর তাদের মান আশামুরূপ উদ্ধৃত হলেই অর্থাৎ আধুনিক মুগ-চাহিদা অমুষারী আভান্তরীণ ব্যবস্থাবীনে তাস সরবরাহের স্মন্থ্য ব্যবস্থা বদি হয়, তা হলেই পরনির্ভরতা আপনি হ্লাস পেয়ে বাবে এবং সেই অবস্থাই কাম্য।

পশ্চিমবঙ্গে শিল্প-শ্রমিক

নদীমান্তক বাংলা বরাবরই কুষিপ্রধান দেশ। ক্বৰি প্রধান দেশে কুষি-প্রমিকের সংখা। বেশি থাকবে, এ বলবার অপেক্ষা রাখেনা। তবে আধুনিক যুগে সকল দেশই শিল্পমুখী। এই পশ্চিমবঙ্গ বাজ্যেও শিল্পায়নের ব্যাপক উপ্তম চলেছে। সে দিক থেকে শিল্প-প্রমিকের সংখ্যাও এথানে বাড়ছে দিন দিন।

পশ্চিমবঙ্গের ভেতর কলকাতা ও এর আর্শে পাশে অর্থাং বৃহত্তর কলকাতার অসংখ্য কল-কারখানা ও শিল্প-সংস্থা চালু রয়েছে। এই কর্ম-সংস্থানগুলোতে দিনরাত কাব্দ করে চলেছে লক্ষ লক্ষ প্রামিক—কেউ আনু-কুশলী (ট্রেনিং প্রাপ্ত), কেউ বা তা নয়। এদের ভালোমশ প্রশ্ন নিয়ে বহু ট্রেড ইউনিয়ন বা প্রমিক সংগঠন রয়েছে সক্রিম।

এই কুলারতন পশ্চিমবঙ্গ রাজ্যে বিভিন্ন শিল্প ও ব্যবসারে বাঙালী প্রমিক কডজন নিযুক্ত আছে, সঠিক সংখ্যা হাজির করা কঠিন। কিছুদিন হয় রাজ্য সরকারের প্রমানচিব মিঃ আজাদ সাভার পশ্চিমবঙ্গে প্রমিক নিয়োগ ব্যাপারে একটি বিরুতি দিয়েছেন। বিবৃতিটি তথ্যবহুল এই দিক থেকে বে, প্রমিকদের একটা পরিসংখ্যান এতে পাওরা বার। মিঃ সাভার বা জানিয়েছেন—১৯৫৮ সালে পশ্চিমবঙ্গের বেসরকারী শিল্প ও বাণিজ্য সংস্থা সমূহে প্রমিক নিযুক্ত থাকে মোট ৮, ৮৭, ৪০৬ জন। এর ভেতর বাঙালী প্রমিকের সংখ্যা মাত্র ৩,৬৮,০০০ অর্থার বাঙালী নর, এমন প্রমিক ৫ লক্ষের, ওপর। ঘোট প্রমিকের মধ্যে প্রার তুই লক্ষ জন কাজ করছে বিভিন্ন ব্যবসাবাণিজ্য সংস্থার। অপর দিকে বাজ্যের শিল্প সংস্থারনে করকারী প্রমিকের সংখ্যা ৭ লক্ষের কাছাকাছি। এই পরিসংখ্যানে সরকারী প্রতিষ্ঠানসমূহে কর্ম্বরত প্রমিকেদের বরা হ্মনি, প্রসক্তঃ এটি লক্ষ্য করবার।

বাংলার বাঙালী শিল্প-শ্রমিকের সংখ্যা তুলনার কম কেন, এই
নিবে প্রাপ্ত প্রতা অবাতাবিক নর। একটু বিচার বিলেবণ করলে
দেখা বাবে—এই অবস্থার জন্ত কর্মীর অক্ষমতা ও অবোগ্যভার চেরে
অনাগ্রহ ও অমনোবোগিতাই বেশিটা দারী। আর তাই বদি বুরে,
থাকে, তবে এই মনোভার ও গৃষ্টিক্রমির পরিবর্তন না হলে নর।



তারপর একদিন ...

বাবার হাতের গাঁইতি থানাও ওর কাছে থেলনা। ইম্পাতের ঐ
গাঁইতি থানার সাপে বাবার শক্ত হাত ছটোর সম্পর্কের কথা ওর জানা
নেই। বাবার মতো বাবা সেজে ও খেলা করে। টেলিগ্রাফের ঐ টানা
টানা তারগুলো ওর কাছে এক বিশ্বর, আরও বিশ্বর তারের
ঐ গুণগুণানি। কিছু আজু ও বে শিশু…
তারপর একদিন ঐ শিশুই হয়ে উঠবে দেশের এক দায়িত্বপূর্ণ
নাগরিক। কর্ত্বর্য আর কর্ম্ম হবে ওর জীবনের অল; ছেলেবেলার সব
থেলাই স্ক্রেদিন কর্ম্মে রূপান্তরিত হবে। জীবনে আসবে ওর বোধন
আর চেষ্টা। মহৎ কাজের প্রভেটা থেকেই একদিন প্রান্তিমর, ক্লান্তিমর
পৃথিবীতে আনন্দ আর স্থধ উৎসারিত হবে। বৈচিত্র আর
অভিনবন্ধ জীবনকে করে ভূলেবে শ্বন্দর্ভর।

আজ সমৃদ্ধির গৌরবৈ আমাদের পণ্যন্তব্য এ দেশের সমগ্র পারিবারিক পরিবেশকে পরিচ্ছন্ন, স্থন্দ ও সুধী করে রেখেছে। তবুও আমাদের প্রচেষ্টাঞ্জিরের চলেছে আগামীর পথে—স্থন্দরতর জীবন মানের প্রয়োজনে মান্দুবের চেষ্টার সাথে সাথে চাহিদাও বেড়ে যাবে। সে দিনের সে বিরাট চাহিদা মেটাডে আমরাও সদাই প্রস্তুত রয়েছি আমাদের মন্তুন মন্ত, মন্তুন পথ জার নতুন পণ্য নিয়ে।

মহাশেতা ভটাচার্য

20

১৮৭৭ সালের সে বস্ত্তে প্রকৃতি বড় ১ধুর হরে উঠলো। বে সালার সারা বছর নৌকা চলে, তার জলে টান এল সত্য। কিছ ভ্রমানের বেলা স্রকৃ হ'ত না হতে অগণিত আন্তর্কুঞ্জে মুকুল তরে এল। সে মুকুলে মধু সঞ্চার হলো কি না সে সংবাদ নিতে ব্যস্ত হরে এলো মৌমাছি ও তোমরা। আকাশে বাতাসে এক লঘ্ আলক্ত বিস্তৃত। কো'কল ও বছ পাধীর কুজনে মধ্যাছ ভ্রমারত। এ কাওবাতে বং খেলা হবে কি না সে খবর না রেখেই হোরিগানের মহলার মেতে উঠলো প্রামশাসী। বাত্রি গভীব হলেও শোনা বেছে লাগলো ঢোলক বাজিরে গান করে চলেছে কোন উৎসাহী কঠ ——খেল্ বহে শিচকারী নক্ষলালা খেল্ বহে শিচকারী!

কিশোর খামের পিচকারীর রঙে নিজের মনের মায়্ব কোন প্রাম্য কিশোরীর আ'গুয়া রঙিয়ে হয়তো দেখে গায়ক মনের চোথে। পানের স্থর ভাই মধুমন্ত কোন করুণ প্রান্তিতে কিরে কিরে বাজে। আমবাগানের মারে মারে স্পরুহৎ ইনারার ক্ষণ নিতে এনে মেরেরা এই তথ্য বসন্ত দিনের আলভ্য বেন অম্ভব করে। গভি হয় বীর। চলিতে চরণ ধুলি ছুঁরে ছুঁরে বার। বেন পথ ও পথের ধুলো বড় প্রিয়, বড় সুন্দর। মধ চরণ আর ছেড়ে বেতে চাইছে না লে ধুলো।

শহর কানপুরের সহস্র কর্মগুক্তভার মধ্যেও সে মারা ছড়িরে পছে। সকালের মানুষ চলাচল ও জীবনের মুখর মন্ত্রে বোঝা বার না। তবে ঠিক ছপুরে মানুষ বিরতি নের। মিঠাইওরালার লোকানের সামনে সভ্ক চোঝ চেরে বসে থাকে ছটো একটা কুকুর। টালা, একার ঘোড়াগুলো কপালে পিডলের সাল পরে চুপ করে থাকে। শহর বাজারের খুলোতে, চামড়ার বাজারের তীর গজে সর্বত্র থিপ্রহরে একটা বিষ্বিষ্ ভাব সঞ্চারিত হতে থাকে। উক্তপ্ত বার্ক্তরের মতো কাপতে কাপতে থারে থারে।

কোন বৈষম্য চোধে পড়ে না ইভান্স বাইট ও তাদের সমসোত্রীর বেভান্স সম্প্রদারের। বসন্ত বলতে তাঁরা বা বোবেন, এ বসন্ত নে বন্ধম নর। কিন্তু তবুও মন্দ কি ? আলক্ত একটা মধুর আলক্ত, একটা লঘু আরামের ভেলার শরীর মন ভাসিরে ভেসে চলবার মতোই অমুকূল মনে হর পরিবেশ। ক্যাষ্ট্রনমেন্টের চওড়া স্থলর রাজ্যভালির ছুইপানে কভ না মেহলিনি, শিরীব, বই, অথধ, শিপুল ও কেওদার পাছ। বিভ্নুড প্রাবিভ ভাদের শাধাঞ্রশাধার কি স্থলর মর্থর ভোলে বাভাস। নে পথে প্রভাহে প্রভাতে অধচারণা। বাছাই করা স্থলর ডেজহী বোড়া ও বোড়ী। সহিসের সবন্ধ মার্জনার তাদের গা থেকে আলো ঠিকরে পাড়ে। আর উৎকৃষ্ট জিনপোবের সাজে তাদের আরো পুলর দেখার। সুশিক্তি সে ভুরকম চুলকি কদমে চলে। চলতে চলতে কথা হর ছই আরেহীর মধ্যে। গলক ও পোলো প্রাউও তৈরী হলে। কিনা—মাহশীর ধরবার জন্ত ফতেহপুর ও নবাবগঞ্জে বাবার আর কভ দেরী—ভালে। ছইল এনে দেবে বলেছিলো পার্দি সাহেব—কই, দিল না ভো? বড় ঢিলে ঢালা হয়ে গিয়েছে পার্দি। এই তো! কলকাতা বেকে তালো ব্র্যাণ্ডি আনানো. তাই কি পারলো? বিদ ব্র্যাণ্ডি বাইয়েছে, তারপর আর কিছু মুর্বে লাগবে না। বাঁটি কর্ণাসী ব্র্যাণ্ডি। আর সেই ক্যাম্পন ? কি চমৎকার ভাবে রাবা। নানাসাহেবের চেরেও তার বংকারী আজিমুলা এ সব জানে ভালো। আর এ সব জিনিব এসেছে ওখানে নানাসাহেবের বা সেই বুড়ো পেশোরার আমলে।

- —কি**ন্ধ** নানাসাহেব গেল কেন এবন ?
- -शर्म क्वरक ।

কি হাসির কথা! আছো. কথার কথার মনে হলো, এই বে শোনা গেল ভালভাবে নতুন করে আশ্রয় নেবার মতো স্থরকিত একটা বাঁটি বানানো হবে? তার কি হলো!

—ছইলার জানেন। তবে তেমন দরকার কি ?

সকালের অশারোহণ পর্ব শেব হলে প্যারেড বা কাছারীতে হাজিরা দিতে হয়। তার আগে প্রতিরাশের স্ববৃহৎ বন্দোবন্ধ। প্রশক্ত টেবিল। তাতে অজল কাচ ও ভটিকের বাসন। ইংল্যাণ্ডের ছাপমারা এই বাসন কলকাতার বন্দর হবে পৌছিরেছে এবানে। ডিম, বেকন, টোগট। স্থণাভ মাখন গলে গলে ববে পড়ে। কাঁচের বাটিতে কুমারুন ও গাড়োরাল অঞ্জলের উৎকৃষ্ট মধু। দিল্লী ও আলো উত্তরের আপেল, পীচ নাসপাতি। উত্তর পাশ্চিম পাঞ্চাবের আস্ব্র। ভটিকের আধারে আস্ক্রের ওচ্ছ। রসে টলমল লে ফল সন্থারের কি বিনীত প্রভীক্ষা। কুক্ষবার ভূত্যানের সমন্ত্রম অপেকা।

ভারপর নভেল বা ম্যাগাজিন পড়া। বিপ্রহরে আবার তেমনই এলাহী মধ্যাহুভোজন। সন্ধার ভিনার, নাচ বা নতুন কোন প্রমোদ। মহিলাদের সমর আর কাটেনা কোনদিন বা স্থ বার হামাম প্রানের। বন্ধ কুঠুরীতে হুইজন আরা নার দেহে বেসম সোলা মাধার। বেসসাহুবুইচোধ বুকু চুপ করে থাকেন। ক্রমেই ক্র

বেসমের সে আছরণ ভকিরে ওঠে। চার্যার টান লাগে। দাসীরা ডৰন উত্তপ্ত অলের বড় বড় পাছ আনে। সে বন্ধ কুঠুরীতে জলের বাষ্প উঠে গা ভিজিরে দের। নিপুণ হাতে দাসীরা বেসম ভূলে কেলে। তারপর ল্যাভেণ্ডার গন্ধী উক্ত জলে নেমে জবগাহন।

ল্লানের পরিশ্রমে এলিয়ে পড়ে বরদেহ। সদ্ধার ক্লাবে বা বাগান পাটিতে বা ক্যাফীকেয়ারে অনাত্মীয় কোন অকিনার বেজরেছ সজে কথা কইবার সময়েও সেই অলস লাভ নয়নের কোণে ডেঙে ভেচ্চে পড়ে। পুরুষকর্ত্ত থেকে সৌন্ধর্যে স্ববস্তুতি ওনতে ওনতে কৌতুক ছলে পালকের পাখা দিয়ে মৃহ তাড়না করতে চান স্থলবী— কিছ কেমন বেন ভলীমাটা আদর করবার মতো হরে বায়।

ব্যাও ৰাজে। ব্যাওে বাজে পরিচিত স্থন্দর স্থানর স্থর। কানপুৰে বসে ব্যা**ও**পাটিৰ কাছে কেউ উচ্চাঙ্গ সঙ্গীত আশা কৰে ना। ऐक्टबाठीकवा ठालू शान अनलाहे मनठा थुनी हात्र ६१५। বড় বড় মোমৰাতির আলোতে ছায়া নাচে খবে। বড় বড় দরকা দিয়ে কৃষ্ণাক ভূত্যরা পানীয় নিয়ে চলাক্ষের। করে। হাসি, আলাপ, ৰণাৰাৰ্ডা। বিশেত থেকে অবিবাহিত বোন বা ননদকে ভরগা দিরে আনিরেছেন বারা, সেই সব মহিলারা বিবাহযোগ্য ছেলেদের কোণে টেনে নিয়ে আলাপ করেন। খবের মাঝে কার্পেটে ছুই পা কাঁক করে গাড়িয়ে কোনো বৃত্তাপুক্ষ নেপাল বা বর্মা বা পিণ্ডারী ৰুদ্ধে স্বীর ক্রতিছের পুনরাবৃত্তি করেন। কথাবার্চার মধ্যে ক্রনো ৰা নেটিভ বনমাসদের কোন আসন্ন নিৰ্বৃদ্ধিভাব কথা এসে পড়ে। कि रान कर्दार छोता। कि रान लाना बाह्यला ?

রেজিমেন্টের কাব বরের চুড়া থেকে কানপুরের আকাশে

গিংহলাভিড বিটিশ পভাৰ। এড়ে। সিংহেছ, বাবার প্রক্রিছ সাম্রাজীব বুকুট।

আর এ পভাষার আধানেই প্রক্রিভ খেডাল সঞ্চানুরের নির্পিভার জীবন।

সভাবনের সে বসভে চক্লের পিভাষ্ চল্লনের সাকাধানার চারিপাশে কুমার্নের জু-একৃতি সহসা ক্ষর হরে উলো। সমস্ত বনভূষি এক জাত্মশ্রে কেটে পভূলো ওছ ওছ মূল ও কলে। মূল ও জাম জাতীয় বনজ কলের গজে ওধু মৌমাছি-ই ভিড় জমালো না। বুৰাল ও চিত্ৰল হরিণের সজে সজে ভালুককেও ছাংগার বজো চলাক্ষরা করতে দেবা গেল। গোছা গোছা কল ছিঁতে লোভীর মতে৷ মুখে পুরে দিরে ভালুকশিত মায়ের **মুখের দিকে** চেয়ে থাকলো ছাড় বাঁকিরে। অপরূপ থার্বমরী এই অর্বাভূমি। অজন তাৰ প্ৰলোভন ইতম্ভত ছড়ানো, ছেটানো। কাঠবিভালী, সজাৰু এইসৰ ছোট ছোট প্ৰাণীদেশ বাদের মরকত গালিছার উল্টে পান্টে বেলা করতে দেখা সেল। সামাধানা থেকে দেড়মাইল দূরে যে পার্বতী নদী আছে, ভার দিকে একদিন গাদাবন্দুক বগলেও জাল কাঁৰে চল্লো চন্মন! সকালের রোগে আকর হরেছে অরপ্যের শিবর। ভালপালার কাঁকে কাঁকে রোদ পড়েছে বাসে। তথ্য একটা বিধা সৌরতে মছর বাভাসের গভি। নিংশফ অতি নিংশফ প্রিবেশ। শিকারীর সতর্ক ভাবণে চন্মনের মনে হলো গুরাক্টের অলকানকা নদীয় গভাব শব্দও বেন শোনা বাছে। বাভাগ ভাকে আৰ

व्यपूरे सास्रा वजाग्न जासून

'পান্তের দারাংশ দম্পূর্ণ मशैदात था द्वां क न নিয়োগ করলেই অটুট चाका बकाव दांश गांव। ভাষা-পেপ্দিন ব্যবহার করলে এ বিষয়ে নিশ্চিন্ত एट भारत न, कांत्र 'ভায়া-পেপ্সিন খাল হজমের সাহায্য করে।



তুবেলা ধাবার সমর নিয়মিত ছোট এক চামচ থাবেন।

নৈস্থন ভাগে • কলিকাতা



চোৰে স্ব দেখে উৎফুল্ল হয়ে উঠলো চন্দ্রন। এবার শিকার জমবে।
শিকারের প্রান্ত নিয় সময়। নদীর ধারে গিয়ে সে বন্দুক নামালো।
গতকাল বুড়ি পাথর দিয়ে জলে বাঁধ দিরে গিয়েছিল আজ বুকে নিচ্
হরে পাথর সরিয়ে সরিয়ে দেখে তার জরাক্রান্ত প্রশান্ত মুখবানি
হাসিতে ভরে গেল। রূপোলী লঘাটে মাছের কাঁক সিহর হয়ে
আছে সেবানে। চুপ করে আছে। জাল ফেলে দিলো চন্দ্রন।
ভুলে আনলো কয়টা মাছ। তারপরেও ঘাসের পারে নিচ্ হয়ে
জলের দিকে চেয়ে রইলো। হাা। এবারকার মতো আশ্রুর্ব
ভব বোগাযোগের বছর আর কখনো আসেনি। তার শ্বৃতিতে নেই।
প্রাকৃতি এমন করে প্রজলা স্কলা হয়ন। এষার সেবুড়া মাকিমেছিনকে
চিঠি সিথবে। লিথে জানাবে যে শিকারের ও মাছ ধরবার এক
ফর্ল সংযোগ উপস্থিত। সাহেব চলে আস্রুক। অনেকদিন ধরে
কথা হছেছ। সাহেবকে যদি আসতে হয় তো তাড়াতাড়ি আসতে
হবে ঘরে, যাবে চন্দ্রন। ছুটি মঞ্বুর। কিছুদিন ঘরে না থাকলে
হবে না।

ফিরতে শিরতে সাফাথানার বাংলোঘরের কাঠের ছাল চোথে পড়লো। ছাদটার পেছনে শাথাপ্রশাথার ফুলসম্ভাবে ফেটে পড়ছে ঞা:কাশিয়া গাছটা। চন্দন এসে সেবার লাগিয়েছিলো।

দেশে যেতে হবে চম্মনকে। ঐ হতভাগা চন্দদের জবো।
চম্মনের ছেলে আর বৌ চন্দদকে বশ মানাতে পারে নি। 'আবার সেই
বদমায়েশ ছেলেটা পালিয়েছে। জোয়ান বক্ত। দোব-ই বা কেমন
করে দের চম্মন। ও বয়দে কি ফর্গা মুখ দেখলে মনটা নোলে না?
নিজের যৌবনে সে-ও তো কম বসিক ছিল না।

সহসা চোখের সামনে পড়ে তাক্সা বাবের থাবার ছাপ।
একেবারে ডাক্সা। আবার হাসির রেখায় ভেডে পড়ে চন্দ্রনের মুখ।
এ হলো ঐ তরুণ বাঘটা। বাকে দে বাচ্চাবেলায় দেখেছিলো মারের
সঙ্গে থেলতে ঘাসের 'পরে। যে কিছুদিন ছিলো ঐ কালাছুদ্রির
হাটেশ্রের পেছনে পরিভ্যক্ত কাঠগোলার ক্ষদ্রলে। এবার সে
মদক্রণ করে জোয়ান হয়ে উঠছে। সদ্রিনী খুঁজে গন্ধীর বর্তে
ভাক্রকাল দে প্রায়ই ডাকে। ডাকে রাজির প্রথম প্রহরে।
কভিদিন ভানেছে চন্মন। সাহেবকে বলবে এটাকে নয়। ঐ কানা
বাঘটাকে মারে। সত্রেব। এক চোখ নেই। কিছ জ্লল থেকে
বোৰ বাছুর ধরে বড় আলাতন করছে।

চন্দ্ৰন চলে, আৰ নিৰ্ভৱে তাৰ গাৰেৰ কাছে, দূৰে, বাসেৰ 'পৰে, ভালেৰ 'পৰে উড়ে বেড়ায় ঝাঁকে ঝাঁকে পাৰী। কত বড়েৰ, কত আতেৰ, কত আতেৰ। বনভূমিৰ থূশিয়ালীৰ দূত এৱা। কত ৰকম কুজনই ৰেশোনা বায়। চুণিৰ মতো লালচোথ বাঁকিয়ে, বড়ীন ল্যাক ঝাপটে ভাৰা কত বকে ব বাহাৰ দিয়ে বেড়ায়।

সাফাখানার পৌছিরে মাছের বোঝা নামার চমন। নৈনিভাল থেকে ক্ষরা থবর পেরে চলে বাছেন এক মেডিক্যাল অফিসার। ভার টেশিলে গরম মাছ ভাজা ও কফি পৌছিরে দের। ভারপর চিট্টির মুসাবিলা করতে বসে। ভার বদলীতে বে কাজ করবে সে ছেলেটা লিখতে জানে। ভাকে নিয়ে বসে।

এলাহাবাদের সরিকটে পাপাষ্টবের বাংলোর বনে বুড়ো জলী ক্যাকগোহৰ চলনের সে চিঠি পেরে আনমনা হরে চেরে থাকেন। চন্মনের চিঠি তাঁকে অনেক প্রনো কথা মনে পড়িরে দেয়। চন্মনের স্নেই প্রীতি ভরা রেখান্তিত মুখখানি মনে পড়ে। চন্মন আছও মনে ভাবে হয়তো, বে ম্যাকমোহন সেই একই মামুৰ আছেন 'কিছ ঈশর জানেন ভরতপুর ও বর্মা, রোহটক, ও পিণ্ডারীমুদ্ধ ফেরং সে অসমসাহসী ম্যাকমোহন অনেক বদলিরে গিরেছেন। বে ম্যাকমোহনকে তাঁর সিপাহী সওয়াররা ভালবেসে বুঢ়া সাহেব বলতো—বে ম্যাকমোহনের সঙ্গে কানপুরের ছইলার রেওয়াতে বাজিরেখে চাদমারী প্র্যাকটিস করতো, সে ম্যাকমোহন আর নেই।

চিঠিখানা হাতে নিয়ে চেরে থাকেন স্যাকমোহন। তাঁর ৰাগানে বড় বড় খাস হয়েছে। খাস ফুলের ওপর ফড়িং উড়ছে। মালীর ছোট ছেলেটা ছুটেছুটে সেই প্রজাপতি ধরছে। মনে পড়ে ষায় অনেক কথা। নিজের বোন এমিলির কথা। জার ভ্রাইটের মুখখানাও মনে পড়ে। অস্তরটা কুঞ্জী বলেই কি ছেলেটার মুখ অমন সুন্দর ? সুন্দর দেহ সুন্দর মনের আধার তোনয়। কেন এমন হলো? তবে তার ত্র্যবহারে তাঁর জীবনটা মিছে হয়ে গেল কি? তা নয়। আসলে ম্যাকমোহন শাস্ত হয়ে গিয়েছেন। ভেতৰে ভেতৰে ঝিমিয়ে এসেছে বক্তকৰিকা। ম্যাকমোহন নতুন করে আগ্রহ নিয়ে স্থক করেছেন একথানা বই লিখতে। 'Fifty years in India'-এই 'বইখানায় তিনি হিন্দুছানকে বেমন জেনেছন, তেমনি লিখে যাবেন। এদেশের মানুবের পরিচয়— ভাদের আচার ব্যবহার, উৎসব, দ্বপকথা। এখন যেন ম্যাকমোহন ৰুষতে পাৰেন এই দেশটাকে কেমন করে মনে মনে ভালবেসে কেলেছেন ভিনি। এই দেশটাকে, এ দেশের মাহুবগুলিকে। মনে হচ্ছে বয়সই হলো, সঞ্ব কিছু করলেন না। সঞ্চয় যদি কিছু করে থাকেন-সে হলো এ দেশের মানুষের স্বত: সূর্ভ ভালবাসা। তাঁর সক্ষদয় ব্যবহারে মুগ্ধ হয়ে যা তারা ঢেলে দিয়েছে। এর **জন্তে** স্থান্দ্রবাদীর থেকে কিছুটা দূরে সরে আসতে হয়েছে বটে। কিন্তু তাতে ৰেন ক্ষতি বোধ হয় না। এথানকার বিস্তার্ণ আকাশ, সবুক মাঠ, व्यवग्र, अथानकाव महस्र मदल भवीर मासूरकाल, अल्पद माज मीर्च পঞ্চাশ বছর বাস করেছেন তিনি। আজ সত্তরের প্রান্তে এসে মনে হয়। এই দেশের মামুব, পরোক্ষে তাঁর চরিত্রের পরিবর্তন चित्रिष्ठ्। भन्छ। নেহপ্রবণ, ক্ষমাপ্রবণ হয়েছে। বাইরেটা টিলেচালা হয়েছে। সাধে কি আর সাহেবরা বলে, বড় ওরিয়েটাল **ঢত্তের হরে বাচ্ছ তুমি**!

তাঁর বাংলোর সামনের জমিটুকু নিয়েছে একটি মালী পরিবার।
কঠোর পরিপ্রমে আর স্থানিপুণ বৈর্যে চাষ করেছে জমি। বুনেছে
সজী। মোতিয়া বেলফুল, চামেলি। অসীম আগ্রছে ঐ
দরিক্ত কম্পতি এক একটি গাছের জন্ম থেকে পূপ্প
সঞ্চার পর্যন্ত বত্ব নের। ম্যাকমোহনেরও মন্দ লাগেনা।
জীবনের অনেকওলো বছর ছুটোছুটি করেছেন। লড়াই কংছেন।
সে সব কাজকে মহনীর বঙ্গেই জানতেন। এ কাজটাকেও
এখন তুছ্ক মনে হয়না। মনে হর মন্দ কি—বাগান কংগ আর
মৌভনী পারীদের দেখে দেখেই তো কেটে বাবে বাকি দিন ক-টা!

চন্দ্ৰন কি কুৰতে পারবে তাঁকে ? শিকার খেলবার মন আর নেই। তবে ঝা, বাছ ধরবার কথাটা মন্দ্র নয়। আর এই সমরকার অবণ্যপ্রকৃতি-ও তাঁর ভালো লাগবে। কিছু এখন ভো ভিনি বেতে পারবেন না। সহসা কি জক্তরী অবস্থার স্থাই হলো কে জানে ! বার জক্ত তাঁর মতো বুড়োজগীদেবও ভাক পড়েছে এলাহাবাদে। ভিনি অবক্ত ভনেছেন, বে নেটিভ সিপাহীবা গোলমাল করতে পারে। কিন্তু সে স বাদের কোনো ভিত্তি আছে কি? রেভিনিউ কলেক্ট্রব ফেয়ার বলচিলেন বটে সেদিন।

ম্যাকমোহন চিঠি লিখতে মুক্ত কবেন। জাঁব খুব্ই তুর্ভাগ্য, যে চম্মনের সামর আমন্ত্রণ ভিনি রাখতে পারছেন না। একদিন তিনি বলেছিলেন বটে, যে খাও আপনা ঘর মেঁ সি কা দিরা আলাও'—অর্থাং প্রস্তুত হও—আমি আস্হি নিমন্ত্রণ রাখতে! তবুদেখা বাছে সেদিন আজ-ও আসেনি। বা হোক, আবার দেখা যাবে। চম্মনের সাহেব বুড়ো হরেছেন বটে। তবে এমন বৃদ্ধ হননি, যে চম্মনের নিমন্ত্রণ না রেথেই মরে বাবেন।

বুঢ়া সাহেবের হাতের হিন্দী লেখাটি চমংকার। যেন ছাপার
আকরে লিখছেন। চিঠি শেব করলেন। বারান্দার এসে আবার
দাঁড়ালেন। তাকালেন জ চ্ঞুন কবে। কি প্রশাস্ত উজ্জ্বল নীলিমা
আজকের আকাশে। ধরণীর বুক থেকে কি তপ্ত স্থবাস উঠছে
আকাশের দেকে। সহসা ম্যাকমোহনের মনে হলো—এত স্কল্প শ এমন মনোহারিণী বসস্তুসালা আর বেন তিনি দেখেননি। স্ব্রি-ই যেন একটা অভুত প্রত্যাক্ষা, আনন্দ ও উত্তেজ্বনা স্কারিত। ঐ মৌন
প্রেক্তির মধ্যে-ও।

ইভাক-এর প্রেমিক চোখে মনে হলো এমন অপক্ষণ বাসন্তী শোভা আৰু কথনো দেখনি দে—এই সাভান্নতে যেমন দেখছে। রেজিমেটের অনভিদ্রে 'টেংরামদের-ই ছোট্ট একটি বাংলো নিতে ইছে ছিল ইভান্দের—বাড়ীটি নিল। সাজাল-ও সাধ্যমতো আসবাবে। মেঝের গালিচা, কুশী, ডেকচেয়ার, সেজদানিতে বাভি, এই সব। তবে ছইলার সাহেবের ঢালা ছকুম। কোন ইংরাজ অফিসার ক্যান্টনমেটের বাইরে রাভ কাটাত পাববেন না। কানপুরে সিভিলিয়ান, মিশনারীদেব সংখ্যাও নেহাৎ নগণ্য নয়। প্রয়োজন হলে তাঁবাও আসবেন ক্যান্টনমেটে।

তা হোক, তবু অবসর বিনোদনের
স্ক্রমর পরিবেশ। ইভান্স-এর নেটিভ পরীতে
চম্পার বাড়ীতে বেতেও আপত্তি ছিল না।
কিছ চম্পা মেহেদী ব্যক্তিত ছোট হাতথানি
চাপা দিয়েছে ইভান্স-এর মুথে ইভান্স
বলেছে—কেন, তুমি কি বিশাস কর না ?

- **—**কিসে ?
- —আমার প্রেমে ?
- আমার প্রেমের মামুষ যে আরো আনেকে আছে। এমন মামুষটি পেরে হদি ভারা অনিষ্ঠ করে ?
 - —কি হবে ?
 - আমাৰ ছ:খ হবে না ? ·

ব'লে চম্পা থিলখিল করে হেসেছে।
ছ:বের প্রকাশ এমন হাসিতে হয় কি না।
ইউভানস সে প্রশ্ন ভোলেমি। চম্পায় হাসিটিও

বেন অক্ষর। ইভান্স মুখ্য চোপে জেরে চেয়ে দেখেছে। ভারপদ কথা খুঁজে না পেরে বলেছে—চম্পা গান কর i

- —কোন গান ?
- —যা ভোমার প্রাণ চার।

ইভান্দের অনেক আচার ব্যবহারে জনেক সময় চম্পার তাকে ছেলেমানুব বোধ হয়। ইচ্ছা করে সে গাঁরে শোনা রামসীভার বিয়ের গান ধরে:

— জনকপুরসেঁ রামচক্র কী সীতা লে কর, আয়ে—

রাম ও সীতার মোতির কুগুল সোনার মালা ও আরত নরনের বর্ণনার কড়টুকুই বা বোঝে ইভান্স। দেখে চম্পাব সহাত্ম নরন ও গ্রীবার মনোরম ভঙ্গিমা। খন কালো চুলগুলি বস্তু করে টেজে তুলে বেণী বাঁধা। খন ভুকর নিচে কালো চোঝ। কালে ও সাঁথিতে সাধারণ গহনা। কালো রেশমে নানরপ্তের কাল করা খাগরা। সবৃক্ষ চোলি ও সোনালী আলিয়াহেও চম্পাব বোষন শাসন মানেনি। ওড়নী নেমেছে তার পরে। ভড়নীর উদ্দেশ্ত কিছ আবরণ নয়, আভরণ হয়ে ওঠা। তাই লক্ষ্ণীয়ের চিক্প মলমনের জালি কাজের ওড়নী গলা ছুঁনে পড়ে আছে। তার কাঁকে নিটোল ও কঠিন হুই মুগাকোরকের আভাস অতি স্পাই।

বিজ্ঞত্লারীর দেখাদেখি চম্পা-ও আত্তরজনে স্নান করে। আজ্ মৃত্ একটা স্থপদ্ধের জাল জাল্ল একটা জাদুল ওড়নার মতোই তাকে থিবে বয়েছে। গান শেষ করে চম্পা চায় ইভান্সের দিকে। পড়্জ বিকেলের রাঞ্জালো তার মুখে চোখে পড়ে আভনের বিজ্ঞম স্থাই করে। সত্যই আগুন। মদিরা যৌবনা চম্পা যেন আরো ক্লে ক্লে ভরে উঠেছে দিন হতে দিনে। বিমুগ্ধ ইভাল চেয়ে চেয়ে একটা কথাই লেতে পারে—চম্পা, বড় স্কলর ভূমি।

চম্পার টানা টানা চোথ হাসে। বলে—তোমাদের মেয়েরা আরো কত স্থলর।

- —ভোমার মতো নয় চম্পা।
- —কিছ আমি ভোমার উপর রাগ করেছি সাহেব।
- —কেন চম্পা <u>?</u>



—দেশ শহৰ ভব সাতুৰ হালে আখার দিকে জেরে। আসাকে ভূমি কেমন ভালবাস ? এখানে ভো এক দেন ও বইলে না। বলেছিলে শামাৰ তোমাৰ একখৰ হবে। সেধানে খেন কত কি ?

— চল্পা. তাহলে তুমি সু**খাহতে** ?

——बि**न्ध्य** !

ইভান্সের বুকে মাথা ছেলিয়ে ৰলে চম্পা। চম্পার স্থরভি নিখাদের দক্ষে ক্ষাৰ নিজের বুকৰ'না-ও ধখন ভোলপাড় হয় ভথন ইভান্স অনেক কথা ভাবতে পারে। ভার সভার্থ অক্সান্ত ষ্বকরা অবশ্ব নেটিভ একটা নাচপার্গ-এর সঙ্গে এতটা আন্তরিকতা পृद्ध करत ना। चात्र डेजांश-७ मन्न मन्न बान। र अहै व्यवहोटक नियः है ति किंदू विवकान भाउ शाकरत ना । छात वृथन, এমনি সময় ভার মনে হয় মন্দ কি। ভার নন্দার ভো এই কানপূরে-ই चारक् ! तम विन विराय करत शहे स्मरशिक्ति ? अशानीत मारहवरमव মতো কিছু সম্পত্তি করে ফেলে এই উত্তর ধনেশে ? विभाग वाशास्त्र मध्य क्षण वा वा वा वा श. शाहीत्यां । हा कव, দাগা। দেওনা হয় আলবোলা ফাসিতে তামাৰ খাবে —নিচু क्रिकिट रमर्ग-अर्घाञ्चल मन् भान। भारत। यनि ছেলেমেয়ে হয় ? ভা-ও ভাবতে পারে ইভান্স এখন, তার বক্ত এ কৃষণাঙ্গার মুক্তে মিঞ্জি হবে। পৃষ্ট হবে নব নব বক্তকণিকা। বৰ্ণসঙ্কৰ শিশুৰ ছল। তাদের শিক্ষাদাক। সদিকে অবন্ত নজর দিতে হবে।। নিজেকে ছোট করবার কথা-ই বা সে কেন ভাবছে ? এমনও তে। ছত্তে পাৰে ৰে চম্পাকেই সে গাউন পাররে জাতে তুলবে। চম্পাকে শিখিরে পড়িরে মাছুব করবে ?

- **ৰ ভাবছ** ?
- কি হু নয় চম্পা।
- —আমাৰ কথাৰ .ভা জ্বাব দিলে না ?
- —ও। কি জান, কোন কাৰণ নেই, শহৰে ও বারাকে ছিন্দুস্থানীরা বড় িস্তিত করে পড়েছে। মিছেমিছি গুলাৰ উড়ছে ৰাভাগে। এমন সময় ভধু ক্যান্টনমেন্টের কেন, সকল ইংরেজদেরই পাকবার মতো ব্যবস্থ। ক্যান্টনমেন্টেই করলে ভাল হর ।
 - —(**क**न !
 - এমনিই চম্পা। ভূমি বুঝবে না।
 - —ভ , সকলে ভো **বাছে** না "হর ছেড়ে ?
- --- **গঠাং সা পাছেবরা বাবে কেন** ? তাহলে সন্দেহ করবে না ব্যারাক আর বাজানের মানুষ ?

চ~প ধেন ব্রুডে পার না এমনই বিশ্বরে ভাকিয়ে ঋ'কে।' ইভাব্যর সংসামনে হয়, এত বড় কণাটা বলে সে ঠিক কবেনি। अकित अमहर्क कथांक तिकवाद अन्त तम आव्य वांक कथा वांक । बल-जारहरवा कि खत्र भाव रह हरन बारव ?

,—সাহেবরা কখনো ভর পার ?

ধ্বপাও সার দিরে বলে। ইভাল বলে—কথনো তর পার না। ভোষার দেশের মানুর পান গুনে কালে, ধমক খেলে কাঁলে, শরীরে আখাত লাগলে কাঁদে। আমরা কাঁদি না।

- —বেশ, সাহেবদের আকর্ষ ক্ষমতা না থাকলে কেমন করে তারা ্আনেন। টাকা ক্ষমার হিমারেৎদার আঁকেও করতে পারেন। अब एक स्थानिक जानांक्ह ?

—निम्ह्य ।

ইভাল বলে—চম্পা, তুমি নাকি বাচ্ছ মগনলালদের বাড়ীতে ? বড় জলসাৰ ?

- —ভূমি মানা করছ ?
- —ক**ড** টাকা পাবে ?
- —অনেক।

ৰাড় কাং করে চেরে থাকে চম্পা। ইভাল বলে—কিসের তোমার এত দরকার চম্পা ? এত টাকার ?

চম্পা এবার বঙ্গিনী মোহিনী। বলে—সাহেব, আমি বং কিনে ব্দানব। কাগুয়ার বঙে ভোমার সঙ্গে হোলি খেলব।

- —Heathen festival!
- —্রও দিয়ে ভোমাকে রাভাব। তুমিও রঙ দেবে আমাকে। দেবে না ? এই এখানে রঙ দিতে পার সাছেব 🎙

চম্পা ইভাব্দের হাডটা নিয়ে নিব্দের বুকের ওপর ধরে।বঙ্গে— স্থংপিণ্ডের শব্দ শুনতে পাও সেখানে রং চায় চম্পা !

-You vixen !

বলে চম্পাকে কাছে টানে ইভান্স।

মপনলালদের সে জলদা সাক হবে বার। তবুভেডবের খবে বাতি অলে। মগনলালদের পূর্বপুক্র এসেছিলেন কাশ্মীর থেকে। চিবকাল তাঁর পরিবার সবকারের মোহরাঙ্কিত ছাড়পত্র নিরে খাত্তশশ্য স্ববরাংহর ব্যবসা করেছেন। আজও তাঁদের সে ব্যবসা আছে, কিন্তু বেজিমেণ্ট বা বিসালার বানিয়। কারধারীর চিট ভাঁকে দেননি ফৌক্রী কর্ত্বপক্ষ। বড় অপমানিত হয়েছেন ভিনি।

ক্ষাঁর কুঠিতে এক গালিচা বিছানো খরে অনেকে আজ সমাগত। কানপুর ফতেপুর ও বিঠুরের সম্ভান্ত লোক কয়জনকে দেখা যায়। সম্পূরণের পাশে বসে শোনে চম্পা। আশুর্য সব কথা। চৈৎরাম স্বয়ং, এবং আরো বারা আছেন—জাদের আর তার মাঝধানে বে ত্ত্বর খাদ। সামাজিক বাধা। কি এমন ঘটলো যে সেই বাধার কোন অন্তিত্বই আৰু নেই ? চৈৎয়াম বলেন—দিল্লীতে মোগলশাংহী কারেম হোক, বা এখানে পেশোরারা হিন্দুরাজ্য কারেম কক্সন-স্পামাদের তাতে স্থাবধা হবে। এই ক্লেচ্ছ কিরিঙ্গীর চেয়ে সে ব্দেক ভাল।

- —এরা এর মধ্যেই টাকা সরিবে নেবার মতসবে আছে থাজাঞ্চিখানা থেকে।
 - श्रीपदक इल कि ?
- —ৰামবা বাজাৰ থেকে টাকা **ও**টিয়ে নিচ্ছি! সোনা ভূলে নিচ্ছি। চট করে বাজার চূড়লে এক সঙ্গে শ'ভোলা সোনা মেলা बुक्ति ।
 - —वनद्भाः
 - —वांहित्व (मधून !
 - —কিছ থাজাকিখানার টাকা ?

চম্পা একটু কেনে জানান দেয় নিজের উপস্থিতি। বলে —বুঢ়া হুইলার শাদা মনের মামুব পেশোয়াকে ভিনি দোভ

কর জোড়া তীত্র জীক্ন বৃষ্টি চন্পার ওপর পড়ে। তারপর কথাণ

চন্দ্ৰন্থানবাহনেব ° বাবস্থা কেমন! নোকো না কি গলাব মাব তেমন চলবে না। নোকো তুলে কেলা হবে। ডাকগাড়ী, একা, টালা বা পাড়ীও যাতে সহজে পান সহবেব নোকডীয় বাফিলারা, তাও দেখতে হবে। চম্পার মনে হলো আলোচনাটা বাজে এমন ভাবে, বে এই কথাই হচ্ছে, প্রেরোজন বেন সমবেত মানুযদেব ব্যক্তিগত অস্ত্রবিধে না হব। আবার নিকেকে তিবস্কার করলো সে। ছি! এমন ছোট মন

আবে! কিছু কথার প্র ভার সঙ্গেও কথা কইলেন মগনলাগ সঙ্গন্য কঠে। ভার প্রাপ্য টাক' ভার হাতে দিলেন। বললেন— টাকার আন্দানের অনেক দরকার হবে। তথ্ন যেন পাই। বাই টর বিবির সঙ্গে দোন্তি আছে ত গ

- -- श. जी।
- —বংলা মত গছনা বেন না পবে। লুঠ হয়ে বাবে। পারো ত ফিছু চেগে নিও।

ষধন উঠ দাঁড়ালো চম্পা—তার সে উংসব সজ্জাব দিকে চোৰ না পতে পাবলো না সকলেব। সকলেবই ননে অভিসন্ধি আছে, দালা আছে। কিন্তু সেল্ডাৰ আন্তনে পুড়ে মবতে এই বোবন-মূক্লমঞ্জৰী কেন এলো? তাঁবাই বা কেন তাকে ঠেলে দিছেন দুইন নি চিত জেনে? না কি, উদ্দেশ্য এমনই বৃহৎ বে তাতে এমন প্রফুট চম্পাকলি অনারাসে ছিঁড়ে কুচিকুটি কবে ভাসিরে দেওরা চলে ?

ফিংতে ফিরতে সম্পুরণের সেই কথা মনে হর। সেনাবলে পারেনা—চম্পা, ভোকে টেনে এনে যে কি করলাম—

চম্পা ঈবং হাদে। হাদি ছাড়া তার মুখে কোনদিন কথা শুনলোনা সম্পূরণ। কি স্থান, কি হুংখে। চম্পার হাদি আজ শুকে ক্জ্জা দেয়। চম্পা বাল—বুড়া আমি বদি নিজে না ভাগতাম, তুমি কি তোমাব ঐ মগনসালের কি ক্ষমতা হে আমাকে দরিরার ভাগাও?

সম্পূৰণ ভারার আলোয় তবু চম্পার মুখে উত্তর থোঁজে। বলে—চম্পা, মাপ করিস। ভোর ভো চন্দন ছিল। তবু তুই মানলিনা কেন? কেন এ পথে এলি?

—বুঢ়া, সৰ কথায় জবাৰ হয় না।

জবাব হয় না, জবাব জানে না চল্পা—কি জবাব সে দেবে সম্পূৰ্ণকে ? হাা, তাব চন্দন আছে। কভবানি আছে, সে কে ব্যবে? চন্দা জানে তাব বজে বজে আছে, তাব স্থংস্পদনে আছে। শৈশব থেকে চন্দনের সঙ্গে সে যে এক নিয়ভিতে বাঁবা। সে কথা কাকে বোঝাবে?

তব্ কেন অনিশ্চিত এই ভাগোর দরিবার, এই মৃত্যুর আহ্বানে শাঁপিরে পড়তে বার বার সাধ বার ? কেন সর্বনাশ তাকে এমন করে ডাকে? এ কোন প্রেন বে চন্পা স্থির থাকতে পারে না? এ প্রেন কি চন্দনের প্রেনের চেয়ে অনেক শক্তিশালী? না, চন্দন আর এই প্রেন এক হরে গেছে? ব্যুক্তে পারে না চন্দা। তবে এই তার বিধিলিপি। সে খবের নয়, দে পরিবাবের নয়, দে ত্র্যুর্শাধ কামনার নয়। তার ক্রে অল্প নির্ভি। অল্প পথ। তা বদি না চন্দা করে ভো দেই দিবুত শৈশ্য থেকে কেন প্রতিভূকা কেউ ছকে চেউরের

মাধার সে উৎক্রিপ্ত হরেছে বাব বাব ? কেন চলুনকে পাবার মুখে শৈশবের সেই নাউতে নাড়ীতে জড়ানো সন্ধাবের তুর্গভ্য বাধা ? প্রেম. তাই তার কাছে গরল মিপ্রিত। বিধকভার মতো প্রেমের সঙ্গে সে অভিশাপ কি চল্পা অবহেলে বহন করেনি ? অবহেলে ? চার মনি অবহেলে হবে ছো আজ ও কেন সন্ম কালে ? কিরে বেডে চার সেই অবনে সেই গ্রামে, সেই ননীপ্রান্তের বউপাছের শীভসভারার—চল্পনের সঙ্গে ?

তার ছিলো গৃহপ্রান্তে প্রদীপ হবার কামনা। তা**গা তাকে** কবেছে দাবানল সঞ্গরী ক্ষুলিজ। এখন তাকে অলতে হবে, **আর** জালিয়ে চলতে হবে—এই তার অলজ্য পরিণাম।

সম্পূৰণৰা ভাকে সাহাৰ্য-ই কবেছে। সন্তব হা চম্পাৰ মনের এই কথান্ত,লিতে কোন শক্তি ছিলো। সম্পূৰণের মনে হচ্ছিলো এ নীবব ভাও মুখর। চলতে চলতে নিশীখের এ প্রশাস্তি বড় ভাল লাগলো ভাব। অকুটে বলুলে—বড় জন্দর হয়েছে দিন।

সভাবনের আকাশ চিরে একটা উদ্ধার স্কীবেখা হ্বলে উঠে নিজে গোল সম্পূর্বের কথার জ্বের টেনে ।

সেই সমর বিশ্রামের জক্ত অক্ষরমহনে চলতে চগতে মগনলালের সহসামনে পড়লো একটা কথা: মনে পড়তেই এ-ও বুরলেন, বে সারাসক্ষা এই ছোট কথাটি মনের ভলার ব্বপাক খাছিলো। হাত-পা ধুরে চৌকিতে বদেছিলেন। একটি বালক ভূতা পা দাবাছিলো। পিল্পাই আছে। পোদ ও বাতের ব্যধার কট পান মগনলাল। কিন্ধু এই থবর যা জক্তা, তার কাছে আর কিছু ভাববার নেই। তিনি বললেন—আমার ভাতিস্থাকে ডাক!

- **এখন** ?
- ---গ্ৰ বেওকুৰ!

ৰঞ্গী এন্তেলা পেয়ে ছুটতে ছুটতে এলো ভাইপো। মগনলালের ছোট ছোট লাল চোথ ছটি অনহিষ্ণ। জিনি বললেন—সে হাজার মণ জাটার কথা ভেবেছ?

- —কোন আটা গ
- —সেই গাজিপুবের বদমায়েসের পাঠানো **?**
- —হা। বন্দোবস্তও কবেছি।
- ---কি কবলে ?

রেজিমেটের বানিরারাই নিছে। জাটা পাবে কোথার ? গম স্বিরে ফেল্ডে না হাজি সাহেব ?

- কৈ করলে ?
- * —পচা আটো ফেলে বিলাম বিশ বস্তা। বাকি আটা পচারভালোয় মিশার দিয়েছি। একটু কালো হলো, আর সম্ম চা চলে
 বাবে! বাকি ভিন-শো মণ সহবে চালান করে দেব
 কাল-ই!
- —ভাল করেছ। হাঙ্গামা একবার বাবলে কে ঐ **সাটার বক্তি** সামলাতো ? কেউ না।

এমনি করে আটার ব্যবহা হবে গেল মগনলালের। চাকরটি আবার গোন-পা টিপবার অধিকার পেল। ঈবৎ পচা, কালো বং, গল আটা—গুলাম বন্দী মাল—ভার ব্যবস্থা হ'তে মগনলাল প্রম্

(Table 1



পত্ৰদেশক কে ?

ৃত্তি কোরা চেখেছিল বুড়োকে ধক্ষপুরীর গোটের কাছে নামিরে বেখোদয়ে চলে আসবে, কিন্তু কমলেশ তাতে রাজী ইয়নি, বুড়োকো নিয়ে গিরে দরো নির্বহরের মধ্যে তক্তাপোবের ওপর ভাইরে দেয়। বুড়ো তথনও অজ্ঞান, কমলেশ বলে আমাদের আর একটু অপেকা করা উচ্চ। বভক্ষন না ওব জ্ঞান ফিবে লাদে।

তাতে কিন্তু অন্ত ছেসেব। আপত্তি করে। প্রেশস্তে বৃধিরে বলে, আর দেরী করলে ঠিক হবে নারে কমল, চল আমবা হোঙেলে ফিরে বাই। শক্ষরদা'রা নিশ্চয় আমাদের জন্তে লাইব্রেরাতে অপেকা করছে।

প্রশান্তর কথা উভিয়ে দেবার মন্ত নয়। সন্তাই সন্ধা পেরিয়ে রাত্রি নামতে সুরু করেছে। ভাছাড়া সকলেরই বধন ফিরে বাবার ইচ্ছে, কমলেশ একলা আর কি করবে। অনিচ্ছাসন্ত্রেও বুড়োকে সেই অবস্থায় ফেলে রেখে গোওঁলের দিকে রওনা হয়।

কমলেশের মন থেকে কিছ বৃণ্ডার চিন্তা কিছুতেই বার না। লাইবেরী ঘরে স্বাই পড়তে বসলেও সে জানালা দিয়ে দূর আকাশের দিকে তাকিরে থাকে। ঐ বিবাট যক্ষপুরীতে আর কি কেউ বাস ? করে তারা কি জানবে বুড়ো ঐ দরোরানের ঘরে জ্জান হয়ে পড়ে আছে? না, না, ও ভাবে ওকে- ফেলে রেখে আসা মোটেই উচিত হয় নি।

সন্ধাশহর এসে কমলেশের পিঠে হাত রাখে। কি ভাবছিস রে কমল ?

কমঙ্গ সহজ্ব হবার চেষ্টা করে, কিছু না।

- —আমি জানি, বুড়োর জন্মে মন কেমন করছে ?
- —আপনি কি করে জানলেন।
- আমি সব শুনেছি। অত ভাববার কি আছে, কাল সকালে গিয়ে একবার দেখে আসিস বরং।
- —আমি কি ভাবছিলাম জান শঙ্কলা', বুড়োকে নিয়ে এসে এখানকার হাসপাতালে মিহিরলা'কে দিয়ে চিকিৎসা করালে হয়।

সমাশক্ষৰ মান হাসে, ওয়া কি আৰু এখানে আসৰে।

- ক্ৰম আসবে না শঙ্কবদা^{*} ?
- —তা জানি না, স∗শক্ষর যেন ইচ্ছে করেই কমলেশের কথার জ্বাব দেয় না।

প্রদিন ভার বেলা উঠে কাউকে কিছু না বলে গ্যারেজ থেকে একটা সাইকেল নিয়ে কমলেশ চললো বক্ষপুবীর দিকে। সবে ভবন ভোর ছচ্ছে, রাতের ক্ষদ্ধকাবকে সরিয়ে দিনের আলো ক্রমশ চার্বদিকে ছড়িয়ে পড়ছে, চার্বদিকে পাখীদের কলরব, বাসা ছেড়ে গাছের ডালের ওপর ভারা বসে।

ষক্ষপুরীর গেটের কাছে সাইকেল রেথে কমলেশ ভাড়াভাড়ি দারোয়ানের ঘরের কাছে হাজিন হয়। কিছু আশ্চর্য্য বুড়ো দেখানে নেই। তক্তাপোষের ওপর এখনও তার গলার চানর পড়ে ররেছে, মাটিতে জুলা জোড়া, এমন কি ঘরের কোলে শাঠিটাও। তবে দেবুজো কোখায় গেল? তবে কি কেউ তাকে ভেতরে নিরে শেছে? না নিজেই সে উঠে গেছে? চাবদিক ভাল করে দেখে কমলেশ চঙ্গুল পরিরাট প্রাদাদের দিকে। দৈতোর মত তার বিরাট চেহাবা নিরে সে চুপচাপ দাঁড়িয়ে আছে। কড় দক্ষার কাছে দাঁড়িয়ে বুড়ো বুড়ো বলে বারবার ডেকেও সে কোন সাড়া পেল না। ত্রে গিয়ে দেখা বিড়কীর দরজাও বন্ধ। কোখাও একটি জানালা খোলা নেই। জনপ্রাণী এর মধ্যে বাস করে বলে বাইরে থেকে মনে হয় না। বিকল মনোরথে কমলেশ ছোষ্টেলে দিরে আদে। কিছু বুড়োর কথা নিরে কারুর সঙ্গে আলোচনা করে না। নানান কাজের মধ্যে নিজেকে ডুবিয়ে দেবা।

দিনকয়েক পরের কথা। কলোনীর ছেলেরা রাস্তা কাটতে মেতে গেছে শহর থেকে কলোনী পর্যাস্ত একটা সোম্ভা রাস্তা তৈরী



করা হচ্ছে, বাজে সকলেওই বাতারাতের স্মবিধে হয়। ঘূর প্রে রেখানে সাত মাইল বেতে হয় এ হাস্তা তিন মাইলে সেখানে পৌছে লেবে, সকলেই পালা করে রাজ্য কাটার কাজে হাত লাগায়।

কমলেশ আর অন্মিতাভ পাশাপাশি কাল করছিল, অমিকাভ নিজের মনেই গঙ্গ গল্প করে, এটা কিন্তু শহরদার অন্তায়।

কমলেশ মুখ তুলে তাকায়, কেন কি হয়েছে ?

- আমাদের দিয়ে কেন রাস্তা কাটাছে? আমরা তো হোষ্টেলের ছেলে। এ রাস্তা হলে স্থবিধে হবে কলোনীর লোকদের, নর ত গ্রামবাসীর। আমরা থেটে মরব কেন?
- —বে কোন জিনিব গড়তে হলে সকলকেই কাজ করতে হর। দেখানে ভো ভোমার আমার বদলে হবে না।

ও-সব বড় বড় কথা আমি বৃঝি না। বদি এমনি করে ব্যাগার খাটানো হয় এ স্থুল আমরা ছেড়ে দেব।

কমলেশ আর কথা বাড়ার না। চুপ:চাপ নিজের কাজ করে, কিছু:বোঝে অথিতার চুপ করে নেই। সে কাজ করতে করতে প্রতাক ছেলের সঙ্গে এই বিদরেই আলাপ করছে। হাত-পা নেড়ে কত বকম বোঝাছে।

সেই দিনই বাবে শোবার সমত কমলেশ এই কথাই তোলে, আমার ভর করছে বে প্রশাস্ত অমিতাত বোধ্সয় দল পাকাবার চেষ্টা করছে, আমতা সবাই মিলে-মিশে কাজ করছিলাম, ওরা না সব গোলমাল করে দেয়।

প্রশাস্ত গল্পার গ্রাম বলে, চোষ্টেলের বেশীর ভাগ ছেলেই কিছ দেখছি ওর দিকে, কেউ এই রাস্তা কাটার হাত দিতে চাইছে না। কাল নাকি ওরা শ্রেধদাকে বলবে।

—ছি. ছি. শঙ্করদা' কি ভাব বন বলতো? নিক্তর উনি মনে ধুব হুঃধ পাবেন।

প্রদিন অমিতাভ সতি।ই পোলমাল পাকাল। কাজ করতে বাবার আগে ছেলের। জড় হয়ে দাঁড়িরে রইল রাস্তার ছ'ধারে।
শবর দা' এসে কাজ করতে বলতেই তার। সমন্বরে জানিরে দিল বে
শার ভারা রাস্তা কাটবে না। সনাশবর চূপ করে সব কথা ভনল,
মনে ব্যথা পেলেও তা প্রকাশ না করে বলল, রাস্তাটা তৈরী হলে
স্বলেরই স্থবিধে হবে, তাই তোমাদের কাজ করতে বলেছিলেম।
কাকর ওপরই আমি জোর করিনি।

শ্বমিকাভ টেচিয়ে বলল, আমরা এখানে পড়ান্তনো করতে এনেছি, কুলাগিরি শিথতে আসিনি।

সদাশক্ষর দান হাদে, আনেরা চাই এথানকার ছাত্রবা যাতে মাতুর হর, এই রাজা কাটাটা মানুহেরই কাজ। তাই ভোষাদের করতে বলেছিলাম। নাইছেছ হয় কোর না।

ক্মলেশ আৰু প্ৰশাস্ত শ্বর-এব কাছে এগিরে বার, স্পাই গলার বলে, আমরা কিন্তু কাজ করব শ্বরনা'।

সদাশকর তাদের দিকে তাকিরে হাসে। এ আমি আন ঃম।

শু লেখাপড়া শিখে কিছু হর না, আমাদের মানুব হতে হবে,
মানুবের মত মানুব।

আর্থেক লোক কাজ না করলে বাকি বারা কাজ করে তাবের উপর চাপ পড়ে বেনী। তবু কমলেশরা ছাড়বার পাত্র নয়। পুরোবনে তারী কাজ করে বাছে। এ নতুল রাস্তা বুড়োর বাড়ীর পিছল দিক দিবে বাবার কথা। এ ক'দিনের অক্লান্ত চেঠায় বাল্ড। মক্ষপুরী ছাড়িবে গেল।

অমিতাতরা তথু বে কাল করে না, তাই নর, অভানের বাগড়া দিতেও ছাড়ে না। কড সময় ভনিবে ভানবে বলে, শহরদা থাসা এক লোড়া বলদ এনেছে ধা, বৃদ্ধির বালাই নেই, ওদের বা বোরাছে ওরা তাই করছে।

জোড়া বলদ ওর। কাদের বলছে তা বুঝতে কমলেশ আর প্রশাস্ত্র দেরী হয়না, কিন্তু কোনদিন তা নিয়ে ঝগড়া করে না। হাসে, বলে, এমনি বলদই বেন থাকতে পারি, অস্তুত কাজ করেও আনক্ষ পাবো। অক্তদের দেখাদেখি শেয়াল হলে আর রক্ষে নেই, ভুগু কেন্ট ডেকে বেডাভে হবে।

এ কথার আর কেউ উত্তর দিতে পারে না।

এরই মধ্যে একদিন কমজেশ মণিকা'দর বাড়ীর সামনে দিরে বাচ্ছিল, দেখে রেণুকা শুকনো মুখে জানলার কাছে দাড়িরে আছে। ক্মজেশ এগিরে গিরে । জভ্জেস করে, কি হয়েছে দিদি, ওরকম অক্তমনম্ব হরে কি ভাবছ ?

কমলেশের কথার রেণুকার চমক ভাঙ্গে, এমনি গাঁড়িয়ে আছি, কালে বাচ্ছিন ? সমর থাকে তো ডেডরে আর না—

ক্মলেশ ব্রের ভেতরে ঢোকে, একটু আসে রেণুকা মাত্রের ওপর বসে কয়েকটা ছবির স্বেচ্ ক্রছিল। সেগুলো এখনও চারদিকে ছড়ানো আছে। ক্মলেশ সেই দিকে ভাকিয়ে বলে, এতক্ষণ আঁকছিলে বৃঝি ?

রেণুকা ক্লাম্ভ হেদে বলে, আর ছবি আঁকিছে ভাল লাগছে না—

- **—কেন, তোমার আবার কি হোল ?**
- —মনে হচ্ছে সারা কলোনী জুড়ে কোন একটা গোলমাল হবে।
 ঠিক ঝড় ওঠবার আগে আকাশ বেমন থমথম করে এখন সেই
 অবস্থা।
 - कृषि कि काय बुवाल ?
- মণিকাদির কথা থাক, উনি তো আর আমাদের কাজ শেবাতেই পারছেন না। সব সমর কি বেন ভাবছেন। অনিতাভরা বে হোষ্টেলের ছেলেদের নিয়ে দল পাকিয়েছে, সে শুরু নিজেদের বুদ্ধিতে নয়, এর পেছনে লোক আছে।

कमरनम छेन और इस्त्र किल्डिन करत्र, कि ?

— ক তা ঠিক ব্ৰুডে পাৰছি না, ভবে শহরদা', মণিকাদি সবাই বেন কোন একজনকে সন্দেহ করছেন। আমিও তো ভাই ভাবছি লোকটা কে ?

ক্রলেশ দৃঢ় গলায় বলে, সে বেই হোক এ আমাদের স্বপ্নরাজ্য। এখানে কোন দলাদলি আমবা আসতে দেব না। কাউকে ভাঙ্গতে দেব না।

সেই দিনই ছপুর বেলা রাস্তায় কাজ করতে করতে ক্লান্ত হয়ে ক্রমলেশ গাছের ছায়ায়, জিফছিল। পেছন থেকে কে বেন কথা বলে, ভোমরা এথানে কি করছ ?

ক্মলেশ ফিবে ভাকায়, দেখে সেই বুড়ো। এতদিন জনেক বৃক্ষ হালামাব মধ্যে খেকে বুড়োর কথা এক বৃক্ষ সে ভূলে গিয়েছিল। এখন ভাকে সামনে দেখে আবার পুরোন কথা মনে পড়ে বায়। জিজ্ঞেল করে, এখন কি বৃক্ষ আছেন। वृत्का जूक कूँ हरकात, त्वम आत्रात्र कि स्टब्रिक ?

—বা:, আপুন অভান হয়ে মাঠে পড়ে গিরেছিলেন না ? আমবাই তে। তুলে নিয়ে এলাম।

—ও, তোমরা ? তাই আমি ঠিক ব্যুতে পারছিলাম না।
সংদ্যাবেলা বেড়াভে বেরুলাম। তারপর শরারটা খারাপ লাগছিল।
মাধা ঘুরে গেল। তারপর কি করে বে বাড়াভে এলাম ব্যুতত
পারছিলাম না। তাহলে তোমরাই—

ক্মলেশ উঠে গাড়িয়ে বলে, বড় জল তেষ্টা পেয়েছে, জল শাওয়াবেন ?

—চল আমার ৰাজীর মধ্যে।

কথলেশ জিনিষপত্র নিয়ে বৃড়োর পেছনে পেছনে চন্ল।

বক্ষপুরীর বাগানের বেড়া পেবলেও বেশ খানিকটা হাটতে হর বাড়ী
পৌহবার জঙ্গে, বুড়ো হাটতে হাটতেই জিজ্ঞেদ করে। রাজ্ঞা কাটার

উৎসাহ ভোমাদের কমে গেছে বুঝি ?

--क्रे, मा।

--- (क्ल (बन कम मत्न इंट्क ।

-- ৪ বা, হোষ্টেলের ছেলের। কাব্দ করছে না।

বুড়ো নিজের মনেই বিড় বিড় করে, আমি আগেই বলেছিলাম, ব্যাগার ঝাটালেই হোল। আজে আজে সব টেব পাবেন।

কমদেশ কিছু বৃদ্ধতে পারে না, বলে, কার কথা বলছেন ?
বুড়ো ঠিক আগের মত কর্কশ গলার বলে, ভোমার তাতে কি ?
বিড়কীর দরজার কাছে এনে বুড়ো গাঁঃরে পড়ে, বলে, তুমি
এইখানে অপেকা কর আমি জল নিয়ে আগতি।

বুড়ো বাড়ার মধ্যে চলে বার। কললেশ চুপচাপ শীড়িরে থাকে, চারদিকটা ভাল করে দেবে আম. কাঁঠালের কি বিরাট বাগান, সারা মাঠটার শুক্নো পাত। ছড়ানো ররেছে, কমলেশের মনে হ'ল দ্ব থেকে কে যেন আলছে, পাতার ওপর দিয়ে ইটার মচ মচ শব্দ শোনা বাজে। কমলেশ তাড়াতাড়ি গাছের আড়ালে সরে বার। মনে মনে ভাবে, কে আলছে এ বাড়াতে, বক্ষপুনীর সঙ্গে বাইরের কাকর বোগাবোগ আছে বলে তো এত দিন শোনেনি গাছের কাঁক দিয়ে শে তীক্ষ চোবে সামনের দিকে তাকিরে থাকে। পারের শব্দ ক্রমণ এগিরে আলে, কাছে, কাছে, আরো কাছে। আগত্তক কে কমলেশ এগার স্পান্ত লেখতে পার। কমলেশের বিশ্বরের অবধি থাকে না, সে আর কেউ না, অমিতাভ। চোরের মত চার দিক চেরে পকেট থেকে একটা থাম বার করে চিঠির বাজে কেলে দেয়: তার পর আবার যে রকম এসেছিল তেমনি ক্রমত পারে বালিরে বার।

সৰ ব্যাপাৰটাই কমলেশের কাছে সন্দেহজনক বলে মনে হয়।
কলোনীয় খেকে বুড়োকে চিঠি লিখছে কে? সে কি অমিতাভ?
ছাহলে তো সরাসরি বুড়োর সঙ্গেই কথা বলতে পারতো। ও
নিশ্চর পিওন ছাড়া আর কিছু নয়। তবে পারলেখক কে?
বুড়োও কি তাহলে এই কলোনা ভাঙ্গার দলের একজন? সব
সন্দেহেরই নিরসন হয় চিঠিটা একবার পড়তে পারলে, গাছের
আড়াল খেকে বেরিয়ে কমণেশ খিড়কীর দরজার দিকে এগিরে
বায়। চিঠির বাজের কাছে গিরে ভরে ভয়ে চার দিক দেখে নিরে
বাজটা খোলার ভেটা করে। চিঠির বাজটা পুরোন হলেও মজবুত।

কিছুতেই খোলে না। হয় ভ গা-চাৰী লাগান আছে। ভাল করে দেখবার আর স্থযোগ পায় না, বুড়ো এসে পড়ে। এক গোলাদ সরবং কমলেশের দিকে এগিয়ে দিয়ে বলে এই নাও বাও।

কমলেশ সরবং থেতে থেতে লক্ষ্য করে বুড়ো পকেট থেকে একটা চাবী বার করে চিঠিব বান্ধটা খুলে অমিতাভর দিয়ে বাওয়া থামটা বার করে। ওপরের হাতের লেখাটা দেখে নিয়ে নিজের মনে হেসে সবজে চিঠিটা ফকুরার পকেটে রেখে দের। কমলেশ এর হাত থেকে গেলাসটা নিরে বলে, এবার ভূমি বাও, আমার একটু কাল আছে।

কমলেশ বুঝতে পাবে চিঠিটা পড়ার জল্ঞে বুড়ে থুব বাস্ত হয়ে পড়েছে! কমলেশ চলচ্চে স্কুক করলেই বুড়ো বাজীর ভেতর চুকে বিভ্ৰমীর দরজাটা বন্ধ করে দেয়। সারা রাস্তা কমলেশ ভাবতে ভাবতে কেরে, এই পত্রলেধক কে? বুড়োর সঙ্গে তার কি স্বন্ধ?

ক্রমশ:।

আধুনিক আফ্রিকাতে পাঁচ মাস

যাহসমাট পি, সি, সরকার

ক্ষেকা বনন্ধকলের দেশ। অবণ্য সম্পদ্ধ আফ্রিকাকে সমুদ্ধ করে তুলেছে। স্বন্ধনা স্বক্ষা হয়েও আফ্রিকা শত্র জ্ঞানলা হয়ে উঠেনি। এদেশের চাব আবাদ আমাদের দেশের মতন নয়। অবনে পুলার গাছে তুলা কলে, কলা আর আনারস গাছে প্রচুর কলা, আনারস অসার, আফ্রিকাবাসীরা সেগুলি বিক্রয় করে আইববার সংস্থান করে। কেনিয়া রাজ্যে খুব মকাই ভূটার চাব হয়—ওটা নাকি ভারতীরদের আমদানী। সেয়ালীভারায় 'মহিন্দা' অর্থ ভূটা এয় 'মহিন্দা' অর্থ ভারতবাসী। ভারতীয়রা এই ভূটার আমদানী করেছিল কিনা সে বিবয়ে স্থির মত না থাকলেও এদেশে ইক্ষুব চাব ভারতীয়রাই আরম্ভ করেছেন—ভারা এদেশে ইক্ষুব চাব করে বছ বছ বছ চিনির কল বসিয়েছে। বছ চা-বাগান ও কমি বাগান আছে ভার অবিকাশেরই মালিক ভারতীয় ব্যবসাধীণ বাকী আল ইউরোপীয়দের। সমগ্র আফ্রিকাতেই জঙ্গল—কাঁটা গাছে ভক্তি, টাঙ্গানাইকা অঞ্চলে এ কাঁটা গাছের চাব করে এক নৃতন শিল্প গছে উঠেছে।

করেক বংসর আগে আমরা বখন অট্রেলিয়াতে খেলা দেখাছিলাম তথন একজন ইংবেজ দোকানদার আমাদের একটা পার্দ্ধেল সক্ল দড়ি দিয়ে বেঁধে দিয়েছিল। বাণ্ডিলটার দড়ি ছিঁড়ে পড়ে বাবে আল্রান্থ আমি তাকে আরও শক্ত দড়ি দিয়ে বেঁধে দিছে বলাতে তিনি উত্তর দিয়েছিলেন বে ওটা পাটের দড়ি নয় ভটা শিলা দড়ি তীবল শক্ত। আমি শিশাল দড়ি চিনতুম না, তিনি দেখালেন আমাদের দেশের শণ স্তার দড়ির মন্ত আরও মোটা মোটা আঁশের খুব বপরণে সাদা শক্ত দড়ি। তিনি বললেন আফ্রিকাতে এই শিশালের চাব হয়—এই শিশাল এখন তোমাদের ভারতবর্ষ-পাকিস্তানের পাট এবং ম্যানিলার শবের দড়িকে প্রাস্ত করেছে। এ ভীবণ শক্ত, স্মৃষ্ট এবং অপেকাকৃত সন্তা। এ দড়ি সন্তা কিনা আনিনা, তবে পাট বা শবের দড়ির চাইতে বছন্তণ শুক্ত এবং স্থপ্ত একথা অবস্তই স্বীকার করেছিলাম। তারপর সারা

আট্রালিয়া নিউন্নিল্যাতে টুবের সমর সর্বন্ধ ৰ শিশলের দড়ির ব্যবহার দেখেছি। কলিকাতার নিশলের দড়ির প্রচলন নেই বললেই চলে—
বিলাত থেকে হথন বড় বড় পার্দোল আসে সেগুলি প্রায়ই ঐ শিশলে দড়ি দিয়ে বাঁধা থাকে। আমরা আফ্রিকাতে এসে এই শিশলের চাব দেখতে পেলাম। সব চাইতে বেকী শিশলের চাব দেখলের কাব বনভূমিতে। শিশল গাছ আমরা ভাততবর্ধেও অনেক দেখি—আনারস গাছের মতন গাছ পাতার ডগাটা ভীবণ স্টালো এবং শক্ত। অনেকে ফুলের বাগানে সথ করে বসান, কেউ কেউ টবেও পুঁতেছেন লক্ষ্য করেছি। আফ্রিকাতে এই শিশলের চার খ্ব বেকী হয়, জকলের গাছ অবত্বে বিদ্বিত হয়ে ওঠে, ওর পাতা কেটে ফার্ট্রনীতে স্তা বের করা হয়। এখন এই শিশলে টালানাইকা এবং কেনিয়ার বড় কৃষিজাত সামগ্রী হয়েছে—
উউরোগীয়ানরা : ভ্ ফার্ট্রা গড়ে ভুলে শিশলের চায় করেছেন।

কেনিয়া প্রসিদ্ধ তার ভূটা (Maize)র জন্ম আর উপাণ্ডা বিব্যাক তার কলা এবং ভূলার জন্ম। উপাণ্ডাতে এ কলা আর ভূলা ছাণ্ডা অন্ত কোনও শত্মের চাব নেই। আফ্রিকার লোকেরা তাই ঐ দেশে ওপু কলা খেয়ে জীবন ধারণ করে। ওরা কলাকে বলে 'মেই কুং' আমার মতে ওটা "মেইন ফুড"। উপাণ্ডার প্রতিটি আফ্রিকাবাদী ঐ কলা খেয়েই বেঁচে আছে। কাঁচাকলা জলে ভিজিয়ে ওরা ওদের প্রধান খাল্ল হৈরী করে। কেনিয়া ও টাঙ্গানাইকা এই তুই দেশের যে সব জারগায় ভূটা জ্যায় সেখানে লোকেবা ভূটা খেয়ে জীবন ধারণ করে।

টাকানাইকার মাসাই অঞ্লে অনেকটা মক্ষমর আগ্নেয়গিরি স্ষ্ট জলা ভূম অছে সেধানে একপ্রকার ঘাদ কাঁটা গাছ ছাড়া কিডুট জনায় না—শতাধিক মাইলবাণী ঐ মরুম্য অঞ্চলে কে'নপ্রকার খাতাশত পাওয়া বায় না— ভাই ওঝানকার মাদাইর অ্বিবাদারা ভধুমাত্র গরুর হুধ এবং গৰুর টাটকা হক্ত থেয়ে বেঁচে থাকে। ওরা জংলী জাতি জঙ্গলেই বাস করে, গরু পোষে এবং গরুর ছুধ খায়। গরুর ছুৰ স:গ্ৰহ করে প্রথমে দেবতার জ্ঞ্জ উৎসর্গ করে তার পর ওরা নিজেরা পান করে। একপ্রকা। তার ধন্ত্রক দিয়ে গরুর গলায় ছিদ্র করে সেখান থেকে প্রচুর রক্তপাত করাতে আরম্ভ করে সেই রক্ত সংগ্রহ করে ওরা বাড়ীর সকলে মিলে পান করে। অনেকগুলি গন্ধকে এইভাবে তাদের Blod Bankএ ব্রক্তদান করতে হয়। ওবা দেশী লাউয়ের খোলা দিয়ে ভাদের পান-পাত্র (kibuyu) তৈরী করে নেয়—প্রত্যেক মাদাইরের হাতে ঐ পানপাত্র কিবুয়ু দেখা ষায়, আর ওণের পুরুষদের হাতে থাকে ভীর ধন্তুক বর্ণবা বল্লম। ওরা জঙ্গলে নির্ভয়ে যাতায়াত করে দবকার হ'লে ঐ বল্পম দিয়ে সিংহ পথাপ্ত বধ করতে পাবে। মাসাইদের শীস্থ্য খুবই ভাল-শ্রীর কুকবর্ণ এবং চকচকে। ওরা লাল বং খুব जीनरामि, रक्त रक्त পरिधान कत्रम भूर धूनी हह। उत्पन्नक प्रथमि ভয় কবে,—মনে হয় ছদ্ধবিতার প্রতিমৃত্তি।

আফ্রিকাতে কালো আদমীদের মধ্যে অনেক রকম ভাষা প্রচলিত হলেও স্বাই সোহালা (swahili) ভাষা ভানে এক বুৰতে , পারে। সোহালা ভাষায় এদের সঙ্গে কথা বললে সহক্রেই বদ্ধুত্ব কয় বার। এরা হুর্দ্ধর্ব হলেও থুবই বদ্ধুবংসল। ভাল ব্যবহার করলে, বছুর মত চললে এদের কাছে খ্বই স্থলর, সদয় ব্বেক্যর পাওরা বার ।
কিন্তু এদের বিরুদ্ধে চললে কোন্ অজানা সংক্রেত সারা বনভ্মিতে
এদের বার্তা অদৃগুভাবেই ছড়িয়ে পড়ে, এদের চক্ষ্, এদের হাত এড়ানো
অসম্ভব ! গাছে এরা ঢোল ঝুলিয়ে রাথে সেই ঢোল বাজিয়ে ওয়া সমস্ত জললে ওদের সাক্ষেতিক বার্তা জানিরে দেয় । যে জললে কোথাও
কিছু নাই—মুহুর্ত মধ্যে শত শত বজু এসে জুটতে পারে, আবার পরক্ষণে তারা স্বাই অদৃগু হতে পারে—যেন স্বই স্ভিত্রার বাছবিত্তা—মুহুর্তে আবির্তাব বা মুহুর্তে জনগরের অদৃগু হওরা এটা ওদের জললের ম্যাজিক—ওথানে আমার ম্যাজিক অক্ষম !

কেনিয়াতে "মাউমাউ" আন্দোলন চলেছিল—ভটা এদেশের পাৰ্ধিত্য কিকুয়ু জাতিদের খাধীনভা সংশ্রামের অভ্যুখান ৰলে অভিহিত করা হয়। '৪২ সালে ভারতে যেরূপ আন্দোলন চলেছিল বা মালয়ের জললে সন্ত্রাসবাদীদের ক্রিয়াকলাপ চলেছিল—এই আন্দোলন ঠিক ভেমনই। শেতাঙ্গ বহিরাগত জাতিদের **আফ্রিকা** থেকে উচ্ছেদ করাব জন্ম এ যেন আফ্রিকার জংলী (এক খেলী) জাতির স্বসংবদ্ধ গরিলা যুদ্ধ !-- গত ১৯৫২ সাল থেকে আরম্ভ रुखिर । গভর্ণমেণ্ট এই 'মাউমাউ'কে বেআইনী বোৰণা করে কঠোর হস্তে দমন করেছেন এখনও ৮,৪১৪ জন 'মাউমাউ'কে **জেলে** বন্দী করে রাখা হয়েছে। সম্প্রতি জাঞ্জিবার সহরে নিখিল জাঞ্জিকা স্বাধীনতা আন্দোলনের এক বিনাট অধিবেশন হয়েছে তাতে সভাপতির ভাষণে বলা হয়েছে যে কেনিয়ার মাউমাউ আক্লোলনকে সাইপ্রাস দ্বীপের সংস্প্রতিক স্বাধীনতা আন্দোলনের সঙ্গে ভুগনা করা চলে। সাইপ্রাসে আক্বিশপ মাকারিওকে একদিন বিজ্ঞাহী বলা হয়েছিল আজ ভিনিই দেখানকার সভাপাত নির্বাচিত হয়েছেন —ঠিক সেইভাবে 'মাউমাউ' আক্ষোলনেব নেতা জোমো কেনিয়েটাকে আব্দ বিদ্রোহী বলে ঘোষণা করে বংসরের পর বৎসর কারাক্তর করে রাখলেও, সেই কেনিয়েটাই একদিন মাকারিওর মতই একজন দেশপ্রেমিক নেতা বলে স্বাকুত হবেন।

সমগ্র আফিকাতে বর্তমানে বিরাটভাবে স্বাধীনত। আন্দোলন চলেছে—চারিদিকে সভা, সামিছি, আইন অমান্ত, গরিলাযুদ্ধ, সাদ্ধ্যমাইন, আপংকালীন জকরী স্বাস্থা—ঠিক বেন '৪২ সালের ভারতে বসে আছি। আফিকার কৃষ্ণকার লোকেরা স্বাধীনতা লাভের জন্ত এক্যবদ্ধভাবে সক্রিম আন্দোলন চালিয়ে যাছে স্বাইর মুখে এক বৃলি 'আফিকা ছাড়। আফিকা তথু আফিকানদের জন্ত।' এড দিন এই আন্দোলন তথু খেতাক্ষ ইউরোপীয়দের বিক্লান্তই প্রযোজ্য ছিল এখন এরা ভারতায়দিপকেও এদেশ ছেড়ে বেতে বলাছ। সবাই এখন ইস-এশির লোকদের দোকানপাট ব্যবদা স্ববিভূকে অহিংসভাবে ব্যক্টা করতে আরম্ভ করেছে। আমরা থাকতে খাকতে এই ক্ষেক মাসের মধ্যেই এই আন্দোলন বেশ প্রবলভাবে মাধাত ডা দিয়ে উঠেছে দেখতে পাছি— এর ফল কি হবে তা তথু ভারবাই জানেন।

আফ্রিকা বনজঙ্গলের দেশ—এ দেশের পথ চলতে বথন তথন অসংখ্য বুনো জন্ধ জানোয়ার দেখাত পাওয়া যায়। গভর্ণমেন্ট এসব অবণ্যকে সংবৃক্ষিত অঞ্চল ঘোষণা করে বন্তুজন্ত হ'ব করে চলেছেন। দেশের সর্বত্র গভর্ণমেন্টের ক্রাশনাল পার্ক বা game reserve সড়ে উঠেছে। শত শত মাইল গলা উঁচু ভারের জালের বেষ্টনী দিরে

বড় বড় জেপখানা কৈণী হয়েছে ওতে বলী হয়েছে ছাতী, সিংছ, গঞাৰ জনহন্তা, ক্সেত্রা, ক্সিব'ফ, কুমাব, ব ইদন, উটপাথী প্রভৃত্তি আফ্রিকার বিব্যাত বন্য ভদ্ধ জানোয়ার। এণ্ডলি সংবৃক্ষিত অঞ্চল এখানে শিকার করা বেলাইনী এমনকি জঙ্গলৈ প্রবেশ করার সময় কোনপ্রকার আগ্রেয়াল্ল সঙ্গে লওয়াও আইনবিক্তম। গাড়ীব 'হৰ' ৰাজানো निरवध पूरे में छ होका क वर्षाना रूप । फिरनव चारलाय कन्त মোটৰ গাড়ী নিবে ৰাওয়া চলে, ৰাত্ৰিতে থাকা নিবেধ কাৰণ গাড়ীৰ আলো আলা চলবে না। গাড়ীর দর্জ। জানালা বন্ধ করে—'গাইড়' সঙ্গে নিয়ে জঙ্গলে চুকতে হয়। প্রবেশবারে বড় বড় জন্মবে লেখা আছে-আপনার জীংনের জন্ত আপনি নিজে দায়িত্ব নিরে অকলে প্রবেশ করছেন। গাড়ীর দরজা থোলা নিবেধ। হর্ণ वाकात्मा वा चात्मा कानात्मा निरंहर । गांडी (शत्क नांगरवन नां, বক্স প্রাণীকে কোন ভাবে ভয় দেখাবেন না, চুপ করে বসে পাকবেন। মাঝে মাঝে বড় বড় সাইনবোর্ড পাছে Elephants have the right of way. অৰ্থাৎ আগে হাতীকে পথ ছেড়ে मिन ।

ভথানে পথ চলতে অসংখ্য বুনো হাতী নক্তরে পড়ে, আগে চপ করে দীড়িয়ে থেকে ছাতীকে পথ ছেড়ে দিতে হয়। যারা निर्कार होडी (मथएक होन कावा मितन कारकारक Tree Top Hotel অর্থাৎ (ফিলার টার্জ্জানর বাড়ীর মক্ত) গাছের ভগার হোটেলে ভাষায় নিয়ে ভালভাবে নেখতে পারেন। গভর্ণমেন্টের ভদ্বাবধানে অনক এরপ গাছেব হোটেল এ দেশে আছে। আমরা বেল[ভয়াম কলো, উগাও। এবং স্থদানের মধ্যধানে এলবাট্ছদে 'মার্চেশন ফলস' দেখতে গিয়ে গভর্ণমেটের রেট হাউস পারা সম্বরী - লক্ষে' কেরাত্রি ছিলাম-পরদিন একটা লক্ষে চেপে এলবাট <u>হ</u>দে বেড়াতে গিয়াছিলাম। রাত্রিতে বুনো হাতীর দল এসে আমাদের মবের জানালায় ৩ ড় ঘদ ছলো নানাভাবে গঞান করছিলো। ছুদের কলে কুমার এবং জলগ্ড়ী মোট বোধ হয় মুই তিন হাজার (मध्यहि--- आभारत पाउँद लक्ष्य ५३ छिन कृष्टे पृत पिरा अनश्यो ७ কুমীরের পাল থেটে আর সাঁতরিরে বেড়াচ্ছিল। পথে আমরা হাতীও দেখেছি জন্তত: একগঞার। জিনজা স্থরে মিশরের বিখাত নীল নদেব উৎসমূপ ভিক্টোরিয়া হ্লদ ও রিপন জলপ্রপাতের Ripon Falls Hotel a আমরা অনেকদিন ছিলাম। বাজিতে ब्बलाब भारत होटिएन किराएक्टे एम्बि वड वड वड़ि बलहुकी बामाएमब হোটেলের গেটের কাছে পাড়িরে বরেছে—আমাদের গাড়ীর ভীত্র আলোক দেখে এ ছুইটি জন্তু পিচ ঢালা রাস্তা অভিক্রম করে আবার ছুবের জলে নেমে গেল।

প্রকণেই দেখি একটু দ্বে মান্তার পাশে আরও চারিটা বড় বড় জলহন্তা গাড়িরে বয়েছে—ওরাও গাড়ীর আলো দেখে জলে নেমে গেল।. প্রথম দর্শনে ভীবণ ভর পেয়েছিলাম কারণ এত কাছে থেকে এর আগেঁ "হিপো" (জলহন্তা) আমি জাবনে আর কথনও দেখি নাই। পরে প্রতিদিন হিপো-দর্শন আমাদের অভ্যাসে পরিবভ হরে গিরোইল। এই অঞ্চলে যখন তথন বাজাবাটে "হিপো" দেখা বার। নাইরোবীতে গেলে লোকে বে কোন দিন সিংহ দেখতে পারে—সহর থেকে ভিন মাইল দ্বে সংরক্ষিত বন-জকলে গেলে করেক মিনিটের মধ্যেই অক্তত গাঁচ সাহটা সিংছের দেখা পাওয়া বার।

ভন্ন মোটৰ গাড়ী আৰু মান্ত্ৰ দেখে দেখে অভ্যন্ত হয়ে গেছে।
কলিকাভায় বান্তার ব্যয়ন ব'ড়ি দেখা যায়—বনপথে ভেমনি মাঝে
মাঝেই সিংহদের দৰ্শন পাওয়া যার। দশ বংসৰ আগে নাইবোৰী
সহবের বান্ত্ৰপণ্ডেও মাঝে মাঝে সিংহের দেখা পাওয়া বেত।
জ্বনারেল পোট্টাফ্নির কাছে নাকি প্রভিন্দন সন্ধ্যায় সিংহের পাল
এসে জমা হ'ত। এখন ওরা ওবু সংবিক্ষিত বনেই চড়ে বেড়ায়।
বাইবে চলে এলেই লোকেবা গুলী করে হত্যা করে ফেলে।

আফিকাতে এখন অনেক বড় বড় ক্রাশনাস পার্ক "সংরক্ষিত বন" পড়ে উঠেছে আব ভাবের বেষ্টনী এলাকাও কম নয়। একমাত্র বুটিশ ইষ্ট আফিকার হিসাব নিলে দেখা যাবে—কেনিয়াতে ৮টি সংবক্ষিত অঞ্চল আছে (১) নাইরোধী রয়েল ক্যাশনাল পার্ক এলাকা ৪৪ বর্গ মাইন (২) ট্যাভো রয়েল জ্ঞালনাল পাক ৮,০৬৯ বর্গ মাইল. (৩) মার্গাবিট ক্যাশনাল পার্ক ১০,০০০ বর্গ মাইল ইহা ছাড়াও গেড়া ক্রাশনাল পার্ক, আছোসেলী, প্রমুধ জনেক সংৰক্ষিত বন আছে। উগাণ্ডা বাজ্যে চারিটি সংৰক্ষিত বন আছে ভন্মধ্যে মার্চেশন ফলস্ আশনাল পাঠ' এবং 'কুইন এলিজাবেও ভাশনাল পার্ক থুবই আদিদ্ধ টাঙ্গানাইকার মধ্যে বে ক্য়টি সংৰক্ষিত বনভূমি আছে, তার মধ্যে সেরেনগেটি এলাকাই সব চাইতে বিধাত। এই তিনটি দেশের মণ্যে কেনিয়া অঞ্চল তার সিংহের জন্ত প্রসিদ্ধ, কাব্দেই কেনিয়া রাজ্যের প্রতীক চিহ্ন এই সাংহকেই করা रुप्तरह, ट्राक्नानारेका व्यक्टल एकदा ध्वर क्रिताक थ्व दर्भी प्रथा शाय । আমর। নাইবোবী থেকে টাঙ্গানাইক। আগার সময় ৭৩০ মাইল পথে কমপক্ষে তিন-চার হান্ধার জেব্রা, জিরাফ ও উটপাখী মোটরে বদে বসেই দেখেছি।--এই ক্লিরাফ্কে এই দেশের প্রতীক চিহ্ন করা হয়েছে উগাতা বাজ্যে বুনো হাতী এবং জলহন্তা বেশী পাভয়া ৰায় ভাই উপাঞ্চা রাজ্যের প্রভৌক হচ্ছে এ জলী হাভী। জিনজা गरूद अनुरुषो चूर दिली, छारे थे गरूद्वत भिष्ठिनिमिशानिष्ठि थे জলহন্তাকেই জাঁদের প্রতীক চিচ্ছ করেছেন। ভারী বিচিত্র এই দেশ। বাজাঘাটে পথ চলতে যথন-তথন যে কোনও বল্লপ্রাণীর থেখা পাওয়া विविध नम् ।

এদেশে একপ্রকাব মাছি আছে (যার নাম Tsetse fly) এওলি সাধাৰণ মাছিৰ মছট উড়ে বেড়ায়—কিছ এ মাছি কামড় দিলে লোকেরা এক মৃতন ব্যাধিতে আক্রান্ত হয়, যার নাম aleeping sickness। বিগত ১১০১-১১০৯ স'লে (পাঁচ বংগরে) একমাত্র উগাৰা কাজ্যেই মোট ২০০,০০০ ছই লক্ষ লোক ঐ মাত্ৰিঃ কামড়ে 'alceping sickness4 छूल मात्रा शिरप्रदेख । है:रवक्या नानास्तर गचर्कका निरंत, धैर्यभव्य पिरंत्र कन्नन भटिकात करन-अथन चान्ना অবস্থায় অনেক উন্নতি করে তুলেছে। আফিকার অঙ্গলে সিংহ-গ্রার-বুনোহাতী, অস্করীকে জ্লোদের বিষাক্ত ধনুক-তীর, জলে क्लब्की, कूमीव-त्यार्थ बाए क्ल्मबङ्ग होताराणि, भाषां माहिब কামড়ে অভুত ব্যাধি, জনলে মহুব্যভক্ষক অভুত গাছ্পালা। চাৰিদিকের শক বিপদকে উপেক্ষা করে ভারভীয়র৷ এবং ষেতাক বণিকেরা এদেশে ভাগ্যাবেষণ করতে এসে জকল পরিকার করে নৃতন নৃতন সহর গড়ে ডুলেছে—জনপদের স্পষ্ট করেছে। ইকুর চাৰ করে চিনির কল বসিরেছে, চা এবং কক্ষির চাব করে বড় বড় কাষ্ট্ৰৰী ৰসিয়েছে, চাৰিদিকে শিশলেক চাৰ, তুলাৰ চাৰ,

ভূটার চাব, জন্মলের তুলা, কলা, আনারসের পাশেই গড়ে উঠেছে বড় বড় সিমেণ্ট ফ্যাক্টরী। বড় বড় বিরাট পিচঢালা রাজপথ, জ্বসবিচাৎ কেন্দ্র, বড় বড় সেতৃ—আধৃনিক বৈজ্ঞানিক বুণের স্বপ্রপ্রকার স্কবোগা স্কবিধা।

ভাৰতীয়না এদেশের ব্যবসায়ে প্রবেশ করে এদেশের সমাজ এবং রাজনৈতিক জীবনে বথেষ্ট প্রাধান্ত করে নিরেছে। টাঙ্গানাইকায় রাজধানী ভাবেদ সালের সহবের বর্তমান পৌরপাল (মেয়র) একজন ভারভীর। এদেশের লোকেরা যথন জনলে জনলে গাছের ডালে ডালে কলা খেয়ে দূৰে বেড়িয়েছে—ভারতীয় বণিকরা এবং ইউরোপীয় বণিক ও বাজনৈভিকরা ভতদিনে এদেশে নিজেদের প্রভূষ ভালভাবে বসিয়ে নিয়ে দেশের উন্নতির সাথে সাথে নিজ্ঞদের ভাগ্যোরভি করে তুলেছেন। বৃষ্ণালয়া আজ ইউরোপীয়দিগকে এদেশ ছেড়ে চলে যেতে বলছে—ভারতীয়দের নিকট থেকে জারা সাব'নতা আন্দোলনের ধারা শিকা করেছে—বোধহয় ভারতীয়রা তাদেগকে পেছন থেকে কি হু কিছু শিক্ষাও দিতে চেষ্টা করেছে—বার ফলে আজ কাদের চক্রান্তে ঐ আন্দোলন আজ ভারতীয়দের বিশ্বন্তেও চালানো হচেচ। ঠাগু। লড়াইয়ে অভ্যক্ত বৈদেশিক কৃটনৈ। জ্বনের চালে ভূলে কুফকায় আফ্রিকাবাসীরা আজ্র হয়ত সম্ভব্ড ভুলই করতে বদেছে। ভারতও এই বৃদ্ধিতেই থগুছির বিক্ষিপ্ত হরেছে। আফ্রিকা আজ কোনপথে চলেছে—্ক জানে ১

হৈমবতী উমা

শ্রীঅমিতাকুমারী বস্থ

স্থান হাজার বছর আগের কথা। একবার দেবতা আর অস্তরে ভীষণ যুদ্ধ গাগল। ছই দলই পরাক্রমশালী, কে হারে কে জেতে বোঝা বার না। কিন্তু শেষ পর্যন্ত বহুদিন যুদ্ধের পর দেবতাদেরই জিত হল। তাদের উল্লাসে আর আফালনে বর্গ তোলপাড়। অহস্কারে মন্ত হরে দেবতারা বলাবলি করতে লাগলেন, আমাদের কি রকম শক্তি। আর অভুত ক্রমতা, তাই না অস্তরদের পরাজার করতে পারলাম।

দেবতাদের এই অহস্কাব দেবে সৃষ্টিকর্তা ব্রহ্ম! ভাবলেন তাদের এ অহস্কার একটু চূর্গ করা দরকার। একদিন তিনি এক ক্যোতির্ম্মর মক্ষরণে দেবতাদের সামনে দাঁড়োলেন। দেবতারা আমে।দ আহ্লাদে মশগুল। এমন সময় হঠাং অচেনা এক দীপ্তিময়ী মৃতি দেখে বিস্মিত হলেন, ভগ্ন পেলেন। তিনি কে এই পরিচয় জানবার জন্তে তারা অন্থির হরে উঠলেন। দেবতাদের বৈঠক বসল, তারা অগ্লিদেবকে তাঁদের প্রতিনিধি করে সেই জ্যোতির্মরের কাছে পাঠালেন।

অগ্নি সেখানে গিয়ে দাঁড়াতেই দেই জ্যোভিত্মর বক্ষ তাঁর পরিচর ব্যক্তিস করলেন।

স্বায়ি সগর্পে উত্তর দিলেন। আমি স্বায়ি। স্বামাকে স্বাই স্বাতবেদা: (স্বত্তঃ) বলে জানে।

যক জিজেদ করলেন, তুমি কোন শক্তির অধিকাবী? অগ্নি বললেন, আমার শক্তি এই, বর্গ, মর্ত্ত, পাতাল এই বিভূমনে, বা আমার সামনে পড়ে ডাই আমি দগ্ধ করতে পাবি। —ভথন সেই বক্ষ ছই অঙ্গুলীতে একটি ওক ছেণখণ্ড ধরে বললেন, একে দগ্ধ করে।।

কিছু দাহিকা শক্তিশালী অগ্নির অহকার চূর্ণ হল, তিনি প্রাণপণ্ শক্তিতেও সেই ভূণখণ্ড দগ্ধ করতে পাবলেন না নত মস্তকে দেবপুরীতে গিরে নিজের অক্ষমতা জানালেন।

ভথন দেবভারা প্রন দেবকে পাঠালেন। পুরনদেব স্বীর শক্তিতে আস্থাবান হয়ে ভীথেবগে ধক্ষের সামনে উপস্থিত হলেন।

ৰক তাঁৰ শক্তিৰ পৰিচর জিজ্ঞেদ কৰলে। তিনি সুগৰ্বে উত্তৰ দিলেন আমি বাৰু, আমাৰ সামনে বা পড়ে তাই আমি উ উৰে নিৰে বেতে পাৰি।

ৰুক্ষ ভূপ থণ্ড ধৰে বললেন, এটা উড়িয়ে নিমে বাও।

বাষু তার প্রচণ্ড শক্তি দিবেও সেই ভূপথণ্ডকে মোটেই ভেলাতে পারলেন না। উড়িয়ে নিয়ে যাওয়া তো দ্বের কথা। লজ্জার অধোবদন হয়ে প্রনদের ফিরে এলেন।

দেবপুরীতে ভীবণ উত্তেজনার স্থাই হল। এই মহাপারাক্রমণালী জ্যোতির্ময় পুরুষ কে তা জানবার জন্ত দেবতারা অস্থির হয়ে উঠলেন। দেবরাক্র ইন্দ্রকে ভারো পাঠালেন। কিছু দেবরাক্র সেখানে গাঁড়াবামাত্র নিমেবের মধ্যে সেই জ্যোতির্মির পুরুষ অদৃত্য হলেন। দেবরাক্র বিমৃত্ হয়ে গাঁড়িয়ে রইলেন।

তথন চতুর্দ্ধিক আলোকিত করে অতি স্থলরী রপলাবণ্যমরী এক নারী মৃতির আবিভিনি হল। তিনি কে? না, বিশ্বনিদ্তা সেই হৈমবতী-উমা। তাঁকে দেখে দেবভারা ছাতি বন্দনা করতে লাগলেন। তারপদ দেববাজ ইন্দ্র ঐ আশ্চধ্য জ্ঞোভির্মন্ত প্রক্রের পরিচয় জানতে চাইলেন।

তথন হৈমবতী-উমা বললেন, হে দেবগণ। তোমরা যে আশুর্য্য স্থানর অন্তুত তেজামর পুক্র দেখে বিশ্বেত, ভীত হয়েছে তিনি আর কেউ নন, তিনি এই বিশ্বক্ষাণ্ডের স্পৃষ্ট কর্তা সেই পরমপুক্ষর। তোমরা অহুর্কারে ফীত হয়ে উঠেছিলে ভেবেছিলে তোমাদের নিজ্ঞ শক্তিতে তোমরা অস্থ্রকারে ক্ষয় করেছ, কিছু না, তা নয়, জেনো ঐ বিরাট পুক্রের অঙ্গুলি হেলনে জগতের সমস্ত কাজ নিয়ন্ত্রিত হচ্ছে। আর তাঁরই শক্তিতে শক্তিমান হয়ে তোমরা অস্থ্র জয় করতে পেরেছ। তোমাদের নিজেদের বিন্দুমাত্র ক্ষমতা নেই, তার প্রমাণ এখনই পেরেছ।

দেবতাদের অহরার চুর্গ হল। তাঁরা নিজেদের শ্রম বুঝতে পারবেন, লজ্জিত হয়ে সেই সর্ব শক্তিমান প্রমেশ্বরের বন্দনা করতে লাগলেন।

কালি থেকে সন্দেশ

যাত্রত্বাকর এ, সি, সরকার

্রার বে খেলাটার কথা বলছি সেটি খুবই মজানার । যাত্তকরের হাতে আছে একটি কাচের গ্লাস বা ভর্তি আছে কালিছে। ঘন কালো কালি । টেবিলের উপর এই গ্লাস নামিরে রেখে তিনি হাতে ভূলে নিলেন এক কালি সাদা কাগজ। স্বার সামনে এই সাদা কাগজের ফালিটাকে বাত্তকর ভোরালেন কালির গ্লাসে আর ভার কলে কাগজের কালির একটা প্রাক্ত কালিতে কলজিত হল। এ দেখার পরে দর্শকদের আর কোন সন্দেহই রইলো না বে গ্লানে সভ্যি সভিটেই কালি আছে 🏚 এব পরে বাহকর আরম্ভ করলেন বাগাড়বর:

্ৰন্ধণ, এখন সে খেলা আপনাদের সামনে হাঞ্চির করছি ভা দেখলে আপনাদের সবারই কিন্দে পাবে! আর সে কিন্দে দূর করার ব্যবস্থাও হরে বাবে সঙ্গে সঙ্গে।

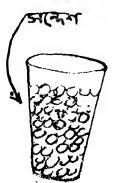
টেবিলের উপর থেকে কালির গ্লাস আর একটা কালো কমাল ভূলে নিয়ে ঐ কমাল দিরে তিনি আছে। করে মুড়ে দিলেন গ্লাসটাকে। আর সুর ক'রে পড়তে থাককেন ম্যাজিকের মন্ত্র:

আরক্তসাদের সক্ষে আড়ি
তাই মাছি ধার ময়রা বাড়ি
হুতোম পাঁচোর হুতো হুতোম ডাক
মিহিদানার মিহি দানা
রাজভোগ বে বাজার খানা
তাই নিয়ে এই গেলাদ ভবা যাক।

গ্লাদের ঢাকনা গুলতে তো সবাই অবাক হয়ে গলেন। কালি উবাও। গ্লাস ভর্তি হয়ে গেছে কড়া পাকের সন্দেশে। একটি একটি করে ডুগে নিয়ে যাত্কর তা পরিবেশন করলেন তাঁর দর্শকদের।

এথারে শোন কেমন ক'রে এই অসম্বর সম্বর্থ হল। ব্লাসটাতে কিছ আসলে কোনও কালেই ছিল না। ব্লাসটাতে একটু কারসাজি ক'রে নিরে ছিলেন যাতৃকরমশাই। কানার দিকে আধ ইঞ্চি পরিমাণ জারগা ছেড়ে দিয়ে ঐ গ্লাসের সারা গায়ে লাগিয়ে ছিলেন ভূবো কালি জার গ্লাসটার ভেতরে বেথেছিলেন সন্দেশ। তোমরা এই খেলা করার সময়ে ব্যবহার ক'রো লক্ষের ভূবো কালি। একটা কেবাসিনের লক্ষ্ জালিয়ে ভার শিথার উপরে ধনে ধরে সহজেই গ্লাসের গায়ে ভূবো





কালির পলস্তরা লাগাতে গ্রাদের ভেডরে পারবে ৷ বদলে বিস্কৃট, সন্দেশের লেবেনচ্ব এমন কি মুড়িও বাখতে পারো তবে কোনও ক্ষেত্রেই গ্লাসের জিন চতুর্থাংশের विनी चः भ यन ভर्छिन। इय। কালো কুমাল দিব্বে মুড়ে নেবার সময়ে গ্লাসের গা ভালভাবে মুছে নেবার কৌশলটা কিছ অভ্যাস করে নেবে বেশ ভাল ক'ৰে তা না হলে কিছ সব ভণ্ডল হবে যাবে। বে কাগজের ফালিটা দিয়ে যাতৃকর গ্রাসে কালির অস্তির প্রমাণ করেন ভাতেও আছে কৌশল। সামুনের দিকটা সাদা হলেও পেছনের দিকে নীচের প্রান্তে থাকে কালির দাগ। গ্রাসে ঢুকিয়ে ভোলার সময়ে

ঘ্রিয়ে দের আর দর্শকের। ভাই দেখতে পান যে •কাগজের ফালিতে কালি লেগেছে।

ষাত্রবিজ্ঞার উৎসাহী পাঠক পাঠিকারা আমার সঙ্গে উপযুক্ত করাবী ডাকমান্তলসহ পত্রালাপ করতে পার A. C. SORCER. Magician, Post Box 16214, Calcutta-29 ঠিকানার:

স্মরণীয় **যাঁরা** কবি কর্ণপূর

প্রীব সমুদ্রের ধারে মহাপ্রস্থ শ্রীচৈতক্তের মঠ। প্রতিবারের মত সেবারেও এসেছেন বাংলাদেশ থেকে অসংখ্য তীর্ধবারী। সকলেই বৈষ্ণব এঁদের মধ্যে আবার কেউ বা মহাপ্রপুর একান্ত অন্তর্গে। তাঁরা বংসরাক্তে মহাপ্রপুর আর জগন্নাথদেবকে দেখতে আসেন। তাঁর সংগে নাম সংকীতন করে কিছুদিন কাটিরে আবার ফিরে বান দেশে।

প্রতিবারের মত এবারেও প্রণছেন নদীয়া জেলার কাঞ্চনপন্নী হ'তে সেন শিবানন্দ, মহাপ্রভুর প্রিয় পার্থন। নীলাচল যাত্রীদের অনেককেই তিনি নিজের বর্ধচে সংগে নিয়ে আনুদেন। অতুল প্রথব্যের মলিক হয়েও তিনি ভগবানকে নিজের সমস্ত কিছু দান করে নিয়ে ভিপিরীর মত জাবন সাপন করছেন। গৃহবিগ্রহ ক্ষুণায়ের নামে সমস্ত সম্পত্তি উৎসর্গ করে দিয়েছেন। এবারকার তীর্থবারার তিনি একলা ন'ন। সংগে তাঁর স্ত্রা আর সাত বছরেব ছেলে প্রমানন্দ। শিবানন্দ এসেছেন মহাপ্রভুর কাছ থেকে পরমানন্দের জন্ম আনিবাদ ভিন্না করতে। বার ফলে ছেলের ধর্মে মতি হয় এবং মানুষ হয়ে উঠতে পারে।

কিন্তু মহাপ্রভূব সামনে এসে সাত বছবের ছেলে প্রমানশ গেঁ। ধ্বল। কিছুতেই কুষ্ণ নাম করে না। মহাপ্রভূ কত চেষ্টা করলেন তব্ও প্রমানশ নীরব। বিরক্ত হয়েই মহাপ্রভূ বললেন, জগতের সকলকেই আমি কৃষ্ণ নাম নেওয়ালাম আর এই বালকের কাছে আজ প্রাজিত হলাম এ অতায়ে আশ্চর্যের কথা।

সকলেই ছেলের এই ভাব দেগে বিএক্ত হল। শিবানন্দ আর তাঁর স্ত্রা তো মনে মনে চটেই গেলেন। কিন্তু ভবু তাঁরা হাল ছাড়লেন না। আরও দিনকয়েক পরে ছেলেকে আবার তাঁরা নিয়ে গেলেন মহাপ্রভুর কাছে আর আশ্চর্য্যের বিষয় এবার প্রমানন্দ মহাপ্রভুর পারে মুখ রেখে বলে উঠলেন একটি সংস্কৃত শ্লোক। বে শ্লোক কোন শাস্ত্র বা প্রাণের নয় বালকেরই স্বর্বিত্ত। শ্লোকটিতে ভিনি প্রীকৃক্ষের বন্দনা করেছিলেন।

সাত বছবের শিশুর মুখে এমন স্থানর অথচ নির্ভুল স্লোক শুনে সকলেই বিশ্বিত হলেন, এমন কি মহাপ্রভু পর্বস্ত। তিনি আন্তর্ম হরে গেলেন এই শিশুর এমন পরিবর্তন দেখে। আর সেই সংগে তথনই তাঁকে কবি কর্ণপূর' উপাধি দান কবলেন। মহাপ্রভুর প্রাদন্ত এই কবি কর্ণপূর উপাধিই উত্তর কালে তাঁকে বৈক্ষব সমাক্ষে বিখ্যাত করে ভূলেছিল।

শিবানন্দ ছেলের এই পরিবর্তনে আত্মহারা হয়ে গিয়েছিলেন। তথন থেকেই তাঁকে সবাই কবি কর্ণপুর নামে ডাকতে শুকু করলেন।

কৰি কৰ্ণপুৰ ছিলেন শিবানন্দেৰ ছোট ছেলে। ১৫১২ খুষ্টাব্দে ভাৰে জন্ম হৰ! জ্ঞানক্ষতীল বই জিনি লিখেছিলেন। সম্ভাৱনিই জীচৈতকাও জীক্তকের লীকাকে কেন্দ্র করে। এদের মধ্যে জীচিতকা চল্লোদর নাটক'ই মনে হয় সর্বশ্রেষ্ঠ। এ নাটকে মহাপ্রভূব দাকিবাত্তা ভ্রমণের পর থেকে প্রীতে বদবাদের সময় পর্যন্ত ঘটনাগুলো লিপিবদ্ধ করা আছে।

প্রাচীন সাকিত্যের অভান্ত পুঁথির মত এ নাটকটির রচনা কাল নিরেও পণ্ডিতদের মধ্যে মহতেদ আছে। কেন্দু বলেন ১৫১৯-৮০ লালে আবার কেন্দু বালন ১৫৩২-১৫৪০ সালের মধ্যে নাটকটি লেখা হয়। তাবে নানা অভ্যন্তানের পব ঠিক হয়েছে যে নাটকটি ১৫৪০ সালের আগেকার রচনা।

নাটক বচনাব কয়েক বছর পরে 'ঐটচজ্জ্জ্চবিভাস্ত মহাকাব্য' বচনা করেন কৰি। ১৫৪২ স'লে এটি বচিত হয়। এ কাব্য বচনার কবি তাঁৰ আগেকার কবি মুবারি শুপুকে অফুস্বণ করেছেন।

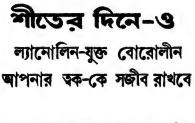
কৰিব তৃতীয় গ্ৰন্থ হচ্ছে 'গৌৰগণোদ্দেশদীপিকা'। এ বইটি নিব্ৰেও বৈক্ষৰ সমাক্ষে প্ৰচুৱ বাক্ৰিতণ্ডা হয়ে গিয়েছে। অনেকে এ:ক কৰ্ণপুৰেৰ বচনা বলে স্বীকাৰ কৰেন না, কিছ নানা বাক্ৰিতণ্ডাৰ পৰে তাঁৰ সমৱেৰ কৰি নৱহৰি চক্ৰবৰ্তীৰ কথাৰ পুনক্ষজ্ঞি কৰে বলা বায় যে এটিও কৰ্ণপুৰ ৰচনা কৰেন।

এছাড়া 'আনন্দব্নাবনচ-পূ,' 'আর্বাশতক,' 'অসংকাব কৌস্কড়'

এ বইগুলিও তিনি লিখেছিলেন। **জ্ঞীমন্তাগ্**বজের **অন্তক্ষণে** আনন্দবৃন্ধাবনচন্দ্ লিখিত হয়েছিল। অলংকারক্ষেত্ত, কাব্যে, অলংকারকে কেন্দ্র করে কবির পাণ্ডিত্যপূর্ণ বচনা।

কিছ বিখানের বিষয় যে এত পাশ্তিতা সাজেও এত পুঁথি বছলা করেও তাঁর নাম আজ সাধারণের কাছে অক্তাত হরে বরেছে। বৈশ্বব সমাজেও কবি হিসাবে ভিনি তেমন খাছি পাননি। তথনকার দিনে বৃন্দাবনের হয় গোরামী ছিলেন গ্রন্থ অনুমোদনের অধিকর্তা। তাঁরা কবি কর্ণপ্রকে ভাল চোথে দেখভেন না। কবির সংগে তাঁদের ধর্ম বিষয়ে বেশ কিছুটা পার্মকা ছিল আর তাহাড়া তাঁরা চেয়েছিলেন তাঁদের রচিত পুঁথিই বাংলাদেশে বেশী প্রচার হোক। কলে কর্ণপ্রের কোন প্রন্থকেই তাঁরা অনুমোদন করেননি। কিছু না করলেও তাঁর প্রন্থ থেকে রথেট ঋণ অনেকেই প্রহণ করেছিলেন।

বাংলাদেশে বসে কৰি কৰ্ণপুৰ বে পাণ্ডিতাপূৰ্ণ বইগুলি রচনা করেছিলেন বাঙালী তা একে যথেষ্ট আনন্দ আৰু জ্ঞান লাভ করেছিল। বুলাবনের গোঁদাইরা তাঁকে স্থান না দিলেও তিনি বাঙালীর স্থানর রান করে নিয়েছিলেন। মহাপ্রভুর রেহাশীর্বাদপ্পত এই ভক্ত কবিব কথা তাই বাংগালী ভক্তের মনে চিরশ্বরণীর হরে থাকবে।



শীতের কন্কনে হাওরার হাত থেকে শাভাবিক সৌন্দর্য্য রক্ষা করতে বোরোলীন-ই হচ্ছে আদর্শ কেন্ ক্রীম। নিয়মিত ব্যবহারে, ওর্মান্তণ-মুক্ত, স্থ্যভিত বোরোলীনের সক্রিয় উপাদান স্বক-কে কোমল, নক্ষণ ও সন্ধীব ক'রে ভুলবে আর আপনার অন্তর্লীন শাভাবিক সৌন্দর্য্যকে বিকশিত করবে। বোরোলীনের বঙ্কে নিক্ষেকে রূপোক্ষাল করন।



পরম প্রসাধন

পরিবেশক: জি, দত্ত এণ্ড কো:



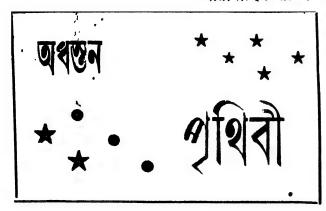
বোরোলীনে—ল্যানোলিন আছে বলে নীডের দিনে-ও গাল, বাড ও ঠোটফাটার হাড থেকে রক্ষা করে আর রুক্তম সকের-ও লাবণ্য বৃদ্ধি করে।

১৬, বনফিল্ড লেন • কলিকাত:-১



darle /59

ধারাবাহিক রচন।



[পূৰ্ব-প্ৰকাশিতেৰ পৰ]

ডঃ পঞ্চানন ঘোষাল

ব্ৰেক্ট্ৰাকাৰ্যা নৱ বিপোট খেকে গালমন্দ্ৰ খেৱে ফিৰে এসে চিৰ্ঞাব বাবু আৰ একটু মাত্ৰও নীচের আফিসে দেরী না করে ভড় ভড় ক র সি ভ বেয়ে তাঁর উপরের কোরাটারে এসে 🗬পশ্বিত হলেন। এই দিন তাঁর কোমাটারের ভিতরে ঢোকার দরকাটি খুলাই ছিল। কোনও দিকে না দেখে তিনি ভিতবে এসে একটি চৌকীর ওপর শুম হায় বলে পড়কেন। চিরঞ্জীব বাবুর মনের এই বিশেষ অবস্থাটি কাঁব স্ত্রী সারদামণির নজর এডার নি। প্রায় ঘুট ভিন দিন ধাবৎ ভান তাঁর স্বামীকে চিস্কিড দেখেছেন। তবে পুলিখেব কাজে মানে মানে এইরপ হয়েই খাকে। কয়েকদিন মনমতা হয়ে থেকে পুনরায় এঁরা এদের মনের স্বাভাবিক অবস্থায় ফিরে আমেন। তথন এঁা বিগুণ উৎসাহে প্রিয়ন্তনের সাঙ্গ পুনরায় কথাবার্ত। স্থক করেম। তাঁদের মন তথন প্রিয়ক্তনদের প্রা • বিশুপতর মেহ ও প্রীতিতে ভাগ যায়। এই সব এতোদিনে সারদামণির গা সওগা হয়ে গিয়েছে। কিন্তু এইদিন তাঁর মুখে শুরু চিন্তা নর, একটা নিদারুণ বিবাদও বেন ফুটে উঠেছে। এই অবস্থার স্বামীকে বিরক্ত করবার ইচ্ছা সারদামণির ছিল না। ভবু বাল্লা খবেৰ দিকে বেভে বেভে ভিনি স্বামীকে একবাৰ জিজ্ঞেদ করলেন, অমন করে মন খারাপ করে বসে আছে৷ কেন ? অঞ্চি:সর কাজে নৃতন কোনও আবার বঞ্চাট एঞ্চাট হলো না কি ? প্রাণব বাবুকে তো আবার আজকে মধ্যাহ্নভোজনের নিমন্ত্রণ করেছিলে। কখন পুরী থেকে ফিরবেন ডিনি? একটা ডো বেকে গেল এদিকে। ভূমি না হও এর ৰধ্যে একটুখানি খেয়ে নাও। পরে আবার তাঁর সঙ্গে বসে খাবে আখুন।

নীচে মেবের উপর একটা মাতৃর পেতে বদে চি০লীব বাবৃর শিশু
পূত্র চেচিরে চেচিরে একটা বাঞ্জা পাঠ্যপুস্তক পড়ছিল। অন্তদিন
এই সময় স্থানাহারের পূর্বে চিরলীব বাবৃ পূত্রের পঠন পাঠন সহছে
একটু খবর নেন। ছেলে কি পড়ছে বা না পড়ছে তা জানবার
বা দেখবার জন্ত অন্ত কোনও সময় তাঁর হাতে থাকে না।
একটু পরেই তাঁকে খেরে দেরে আবার নীচের অফিসে নেমে
বিতে হবে। উপরে কিরে আসতে কোনও কোনও দিন
পভীর রাত্রও হয়েছে। প্রভ্যুক্ত পুত্র তাঁব জেগে উঠে ভাঁব

দিকে চোধ মেলে চেয়ে দেখবাব পূর্বেই তাকে সরকারি কাজের জন্ম নীচে নেমে বেতে হয়। পুত্রর দিকে একবার সকরুণ নেত্রে চেয়ে দেখে অক্সমনন্ধ ভাবে চিরঞ্জীব বাবু তাঁর স্ত্রীকে জানালেন, ট্রেণ ভো বছক্ষণ এসে পড়েছে। এধুনি প্রণব বাবু এসে পড়লো বলে। এক সঙ্গে খেতে বসবো আখুন। হয়তো এতোক্ষণ স এসেও পড়েছে। তাঁর কোয়াটারে একবার খোঁল নিয়ে দেখছি: তুমি যাও—

মাতুবের মন যথন অত্যধিক খাবাপ থাকে, তখন প্রিয়ন্তনের সম্পর্শ বোধ হয় অধিকতর অসহনীয় হয়ে উঠে। স্ত্রীকে স্থয়ুখ থেকে অস্ততঃ কিছুক্ষণের মত বিদেয় দিয়ে চিরঞ্জীব বাবু বেন একটু স্বস্তির নিখাস ফললেন। সৌভাগ ক্রমে স্বামীর মন খারাপের কারণ সম্বন্ধে খুটিয়ে খুটিয়ে জিজেস করে তার এই অসহনীয় অবস্থাকে আরও অসহনীয় করে ভূলবার মত সারদামণির হাতে এইদিন পর্যাপ্ত সময় ছিল না। বহিৰ্জ্ঞগং সম্বন্ধে নিতাস্ত অভিজ্ঞ প্ৰিয়তমা স্ত্ৰীকে ভীর মন খারাপের কারণ সম্বন্ধে কোনও মনগড়া ঘটনার উল্লেখ করে রেহাই পাথার মত মনের অবস্থাও আজ যেন আর তাঁর নেই। নানারপ প্রার দ্বারা তাঁকে উত্যক্ত করার ভক্ত তাঁর কাছে জেকে না বসে তাঁর প্রিয়তমার চলে যাওয়াটিই যেন তাঁকে একটা শাস্তির প্রলেপ এনে দিলো। মন থারাপের কারণ সম্পর্কীয় ঘটনা সমূহের প্রকৃত স্বরূপ সম্বন্ধে যে আদপেই ওয়াফিবহাল নয় তাঁর কাছ থেকে এই বিষয়ে কোনও সান্তনার বাণী ওনা বোধ হয় আরও পীড়াদায়ক। ভাঁর এইরূপ মানসিক অবস্থায় একমাত্র প্রণব বাবুর মভ লোকেই বোধ হয় তাঁকে সাম্বনার বাণী ভুনাতে পারে। এইজন্স অস্তবের সঙ্গে চিরঞ্জীব বাবুর মন মাত্র প্রাণব বাবুকেই এই সময় কামনা করছিল। মানুষ যা মনে প্রাণে কামনা করে বহু কেতে তা প্রা**জন মত এসেও** যায় ৷ হঠাৎ কান খাড়া করে চিরঞ্জীব বাবু ওনলো, দরজার কলিভ বেলটি ক্রিভ ক্রিড করে বেজে ইঠছে। তাড়া তাড়ি উঠে বেৰিয়ে এসে চিরঞ্চীব বাবু দেখলেন যে ইতিমধ্যে প্রণব বাবু ষ্টেশন থেকে নিজের কোয়ার্টারে ফিরে স্লান করে মধ্যাহ্নর আহারের ব্দক্ত তাঁদের কোয়াটারে নিমন্ত্রণ রক্ষার্থে এসে গিয়েছেন।

নীচের আফিসের মুন্দী বাবুদের কাছ হতে এই দিনের বিপোট ক্লমের ঐ ঘটনা সক্ষমে সবিশেব সংবাদ প্রধাব বাব ইভিমধ্যেই পেয়ে গিরেছিলেন। সম্মেহে চিরঞ্জীব বাবর কাঁধে হাত রেখে প্রণব বাবু সান্তনার স্করে বলে উঠলেন নীচে এসেই সাহেবদের কীর্ত্তিকলাপ সম্বন্ধে কিছুটা শুনলাম। আমি হঠাং বাইরে না গেলে বোধহয় এতোটা হতে পারতো না। অস্তত: স্পামাদের বড় বাবুকেও সময় মত আমি রিপোট ক্লমে হাজির করে দিতে পারতাম। বড় বাবু বে মাঝে মাঝে কাণ্ডজান হীন হয়ে পড়েন। অথচ তাঁকে বাঁচালোর জন্মেই আমাদের এতো ফুর্ভোগ। তা না হলে ছোট সাহেবের সক্তে আমাদের বিরোধের আর কি কারণ থাকতে পারে। সব কথা খুলে তাঁকে না বলার জক্তই না তিনি মিছামিছি আপনাকে সন্দেহ করছেন। এঁরা দেখছি মাত্বকে আর মাত্রব বলেই মনে করতে চান না। আপুনার সেই জ্রোড়া বাগানের সিংহীর হুমকীর গল্লটাও ভ্রুড়ে পেলাম। ইতিমধ্যেই দেখছি ব্যাপাঞী সর্বত্তই প্রকাশ হয়ে পড়েছে। তা এমন কথা বে শুনছে সে ওদেরই নিব্দে করছে। আমাদের আব কি? ওঁৱা ওঁদেৰ ওপৰওৱালাদেৰ অনাহাদে ব্ৰাফ দিতে পাৰেন, কিখা তাদের নীচে**ওরাজাদের তে। তা তাবা** পারেন না। এদের

প্রতিটি ছুর্বল্ডা ° তাঁদের ওপরওরালারা না জানতে পারলেও তা তাঁদের নীচের অকসারদের কাছে কোনও দিনই অজ্ঞাত থাকে নি। একদিন আমাদের হাতেও তাঁদের মত এইরূপ অসীম ক্ষমতা আদরে। কিছু সেদিন বেন একখা আমরা না ভূলে যাই। এখন এঁদের অবসর গ্রহণ করা পর্যান্ত আমাদের ধৈর্য ধরে অপেকা করতে হবে। আসন, ভেতরে আসন। মন খাহাপ করবেন না। ভূলে যানেন না বে আমরা পুরাতন ও নৃতন যুগের সন্ধিক্ষণে দাঁড়িয়ে আছি। অলু বিবয়ে ভিন্নমত হলেও এই একটি বিবয়ে খামি আমাদের বড়বাবুর সঙ্গে একমত।

যে অসদব্যবহার একই ভাবে সকলকে সহ্য করতে হয় ভার জন্তে ভুক্তভোগীদের কেউ কাকুর কাছে সম্মানে ছোট হয়ে যায় না। প্ৰস্পার প্রস্পারের উপর প্রযুক্ত কটবাক্য জানতে পারলে তা তাদের কাছে অপমানকর না হয়ে বরং শান্তির পর্যায়ে পড়ে। তবে তা তাদের গোষ্টির বাইংরর কেউ না জানতে পাংলেই হ'লা। ছোট সাহেব কিংবা বড় সাহেরকে তাঁল কোন ওপরওয়ালার ঘর থেকে বের হসে এসে তাঁবেদার অফ্সারদের গাল পাড়তে দেখলে উবা বুঝে নেন তবে ওপরওয়ালাদেরও ওপরওয়ালা আছে—ওইটুকু যা তাদের সান্তনা। বাব নাজেহাল করে তুলে নেকড়েকে। নেকড়ে অফুরপ ভাবে খেদিয়ে বেড়ায় শৃগালকে। শৃগাল ইচ্ছা করলে খরগোদকে এই একই ভাবে বিব্রত করতে সক্ষম। সমগ্র পৃথিবীই এইই নিয়মের বশবন্তী। এদের বিরুদ্ধে ঘরে শভাতে হলে হস্কীর মত বলশালী হতে হবে। নয় তো গণ্ডারের মত শুক্লের সৃষ্টি করতে হবে। অন্তথার তাদের অঞ্চন আত্মরক্ষার জন্মে হবিণ ও অখ্যনীবের মত পারের জার। ৰে এৰপ গালই তিনিও তাঁৰ উৰ্নন্তন **অফ**সাৰে**ৰ কাছ হতে** একটু আগে খেয়ে এ:সছেন। ভবে পদমর্যাদা ভেদে ভাষার একট তারতম্য হলেও হতে পারে। উপরন্ধ ভারা বুবে বে ভূক্তভোগীদের মধ্যে তারা কেউ একা নয়, এই ব্যাপারে তার আরও অন্তরূপ বছ দোসর আছে*। এইরূপ অবস্থার কটুবাক্যগুলি কাণক্র*মে ভার তীক্ষতা ও দাহুশক্তি হারিরে ফেলে। ওগুলো তথন ঘর্ষগীন

করেকটি উচ্চনাদ যুক্ত শক্ষে ১াত্র পহিণুত হয়ে পঞ্চে।
এই সব নিত্য নৈমিত্তিক ঘটনা তাদের কাছে ত্রান একটা
বাভাবিক পরিণতি মাত্র মনে হয়। অক্লদিকে কটুবাক্যকারী,
উদ্ধিতন অফসার নিভেই তাদের অধস্তন অফসাবদের নিকট একটা
উপগাসের বিধয়বস্থ হয়ে উঠেন। কিন্তু এইরপ এক চিত্তপ্রস্তুতি সময়
ও অলাস সাপেক। চিবঞ্জীর বাবু নবাগত বিধায় ভপ্তনও পর্যাক্ত
মনের এই অবস্থায় পৌছতে পারেন নি। তাই বিক্ষুক চিত্ত
নিয়েই চিরঞ্জীর বাবু প্রণব বাবুকে নিয়ে তাঁর ঘরের ভিতরকার
চিকিটার উপর পুনরার বসে প্রত্তেন।

চিংজীৰ বাবুৰ মনেৰ ভিতৰ তখনও পৰ্যান্ত জাগুন জলছিল। তাঁর খ্য কিছু প্রতিরোধ শক্তি তা বোগ চয় সম্পূর্ণ রূপেই চারিয়ে ক্ষেলিছিলেন। থেকে থেকে তাঁর মনের মধ্যে এসে পড়ছিল ছোট সা হবেৰ কয়েকটি কটক্তি, ভানো আমি ভোড়াাগানে সিংহী বসে আছি। এখান থেকে হুন্ধার দেবে। আর হু'টা খানা কেঁপে উঠনে, ধর ধর। হঠাং আসা উত্তেক্তনার হারা সভ্যটিত প্রতিবোধ শক্তির অভাবের জন্ম ছিলা বিভক্ত মনের মধ্যে অক্তর্বন্দ্র সৃষ্টি হলে মানুধ সময় বিশেষে শিশুরও অধম হরে বার। अहे ममग छेलाहारमा वसात छात्मत निकृष्ठे विमनामायक हात छेळे। এই সাধারণ সত্যটি কিন্তু চিরঞ্জীব বাবু এই দিন বেন বুঝেও বুঝে উঠতে পারছিলেন না। হঠাৎ এই সময় চিরঞ্জীব বাবু ভনতে পেলেন তাঁর শিশু পুত্রটি মেঝের উপর বঙ্গে তার পাঠ্য পুস্তকে বর্ণিত একটি সিংহ সম্পর্কীত কাহিনীই স্থাপন মনে চেচিয়ে চটিয়ে পড়ে বাছে—পুগাকালে ভারতবর্ষে প্রচুব সিংহ পাওয়া যাইত। প্রাচীন সাহিত্যে হিমালরের পাদদেশে সিংহের বছল অবস্থিতিঃ কথা জান। ৰায়। একংশ ভারতবর্ষে কুত্রাপি আর সিংগ দৃষ্ট হয় না। একংশ কেবলমাত্র গুর্জার প্রাদেশে তিনটি সিংহ বাস করে। পুত্রের মুখের এই কথা কয়টি কালে বাওয়া মাত্র চিরঞ্জীব বাবু হঠাং নেমে এসে পুত্রের কপালের উপরে এনে ঝুলে পড়া পাতলা দোনালী রঙ্গের চল মুঠি কবে ধরে নেড়ে দিয়ে বলে উঠলেন, মাত্র গুর্জার দেশে ভিনটি সিংহ আছে কিরে? লেখ লেখ। গুজার প্রদেশে তিনটি এবং ভোডাবাগানে একটি।

চিরজীব বাবুর শিশুপুত্র সঞ্জীবচক্র পিতার নিকট হতে

প্রভাবের দরে রাখিবার মতু বই শ্রীবিজয়কান্ত রায়চৌধুরী, এম-এ প্রণাত (সই বিখ্যাত

চিকিৎসা সোপান

পরিবর্দ্ধিত চতুর্থ সংখরণ বাহির হইস

ববে বসিয়া হোমিওপ্যাধিক চিকিৎসা শিক্ষা ও আহত করিবার অপূর্ব স্থযোগ। প্রত্যেক রোগের পরিচয় ককণ ঔবধ, পথ্য সকলের উপবাসী সরল ভাষায় দেখা কাছে। মিহিজানের প্রসিদ্ধ দাতব্য চিকিৎসালয়ের বছ বংসরের অভিজ্ঞতার ফল এই অমূল্য গ্রন্থথানি ছাপানব আগে ডাঃ পি, বানার্জি মহাশার আগাগোড়া দেখিরা দিয়াছেন। কম্পারেটিভ মেটিরিয়া মেডিকা, হিপাটারী, পথ্যতথ্য ঔষধের সমৃত্তু সবই দেওয়া আছে। এই একুধানি বই ঘরে থাকিলেই চলিবে। মূলা সাড়ে চার টাকা ৪॥•, ডাকমাণ্ডল একু টাকা।

এইরপ ধরণের সম্পূর্ণ ও অন্দর বই বাংলায় আর নাই।

চতুর্থ সংস্করণের বিশেষত—ইহাতে ছুইটি কঠিন ও ছংসাধ্য রোগ "ধবল" ও "কুঠের" বছ অভিজ্ঞতালত্ত হোমিওপ্যাধিক ফলপ্রাদ চিকিৎসার বিবরণ দেওরা ইইরাছে।

প্রকাশক: প্রক্রাত্রী—৮।২ ভবানী দত্ত লেন, কলিকাতা-৭

এইরপ ব্যবহার ইভিপূর্বে কথনও পায়নি। সে পিতাকে শুসী করবার জন্মই এইদিন চেচিরে চেচিরে ভার পাঠ্যপুস্তক ংহতে একটির পর একটি কাহিনী পড়ে গুনাচ্ছিল। সে হতভত্ম **হয়ে ছল ছল** চো:খ চিরঞ্জীব বাবুব দিকে চাই**ভে**ই চিরঞ্জীব বাবুৰও চোৰে জল এসে গেল। তাঁৰ মন তথনই পুত্ৰকে কোলে জুলে নিকে চাইদেও প্রণব বাবুর সম্মুখে তুর্বলতার পর তুর্বলতা **দেখাতে ভার কেমন ধেন একটা সমীহ হলো। এককণে একটা** আচও আঘাতে চিরঞ্জীব বাবু তাঁর মনের স্বাভাবিক সন্তা ফিরে পেরেছিলেন। তিনি ওধু ফ্যাল স্থাল কবে প্রণৰ বাবুর দিকে অসহাবেৰ মত চেয়ে বইলেন। টিবজীব বাবুকে তাঁব সকল কুঠা হতে মুক্ত কৰে প্ৰাণৰ বাবু চিরঞ্জীন বাবুৰ লিণ্ড পুত্রটিকে কোলে তুলে निष्य ितकीय वावुष्क अर्मनात खरत वरण छेरानन, এ चारात कि वक्ष हला ? वैं। १ जाव कबला अक्षत चाव मास्टि हला चाव একজনের। এই না আপনি সেই দিন বড় গলা করে স্থবিচারের ওকালভি করেছিলেন, বা: বা: ! সহনশীলভার অভাব পৃথিবীতে সর্ব্বত্রই। তা আপনার জুয়াড়াদের মামলার কল কি হলো। নিশ্চয়ই আপনার সেই উপকারী ব্রুটির কোনও স্থবিচার কর। বায়নি। **জরিমানা দিয়ে সে বেরি**য়ে এলে, বা তাকে করেকদিনের মত জেলেই (बर्फ इंगा ।

চিরঞ্জীৰ বাবুও শেবের কথাটা কাণে বাওর। মাত্র তার মনটা বেন আর প্রকার প্রোরে নাড়া দিরে উঠল। চিরঙীৰ বাবু তার বুকের মধ্যে কোনার অপর একটি নৃতন ঝন্ধার অমুক্তব করলেন, উপকারী বন্ধু সন্ত্রাসর্গানের বিচার জ্ঞপনও শেব না হলেও অবিচারের একটা অশকা উবার মনের মধ্যে থেকে থেকে থেঁটা দিয়ে উঠে। কিন্তু আজকের বেদনার কাছে সেই দিনের বেদনা নিতান্তই অকিঞ্চিংকর। কিন্তু আজকের এই মুহুর্ত্তে তিনি কি এক ছেলেমাম্বি করে বসালন, তাঁর মনে হলো সর্বপ্রথম তাঁর দ্রীর কথা, অবোধ পুর্ত্তের প্রতি তাঁর এই অমুক্ত আচরণ জানতে পারলে ভো সে আর এক অনর্থ বাধাবে। চিরজীৰ বাবু শক্তিত হয়ে উঠলেন।

সৌভাগ্যক্রমে টিরঞ্জীব বাবুব ন্ত্রী সাবদান্ত্রি কাছাকাছি কোধাও ছিলেন না। বারাখবের পথের দিকে সভর্ক দৃষ্টিতে একবার ভাকিরে চিরঞ্জীব বাবু সলক্ষম্প্রের তাঁর একমাত্র প্রের গালটি সল্লেহে একটু নেড়ে দিরে প্রণব বাবুকে বললেন, কি আর বলবো প্রণববাবু! আন্ধ রিজাইন দোবোই ভেবেছিলাম। কিছ ছলের মুখের দিকে ভাকিরে এই সম্বর আমাকে পরিভাগাই করভে হলো। ভাই-ই বোধ হর প্রথমে ওর ওপরই আমার রাগ এসে সিমেছিল। এখান বুঝছি বে অবসর প্রহণের দিন পর্বন্ধ এই পুলিল বিভাগে থেকে বাওরার জন্মই বোধ হর আমার প্রতি ইম্বরের নির্দেশ লাছে। নিভান্ধ ছাত্র অবস্থার বিরে করেই না আমি এইরূপ বিপদ্দে প্রডেছি। আপনি কিছ প্রণব বাবু এখনও পর্যান্ত বিরে না বরে ভাগোই করেছেন। আর বা চাকরী আমাদের, ধ্যেৎ। পুলিশের লোকেদের বিরে করার মধ্যে কোনও বৃক্তিই নেই।

কি সৰ আপনি ৰাজে কথা বলছেন, হেসে কেলে প্ৰণৰ বাবু উত্তৰ করলেন ! - বুজিন সলে বিয়ে করার কি সম্পর্ক ? তা ছাড়া বুজি ভো হছে একটা উকিল। সে নিজে কিছুই বুঝে না। সে অপরকে বুঝার মাত্র। আমার কমবাইও ভাওটির রালা থাওরার কাঁকে কাঁকে বৰ্ধন আপনাদের এথানে এনে সঞ্চীবের মার হাতে রারা থাই, অন্ততঃ তথনকার মত তো মনে হর বে বিরে একটা করে কেনাই তালো। তা ছাড়া বিরের বাংপারে কোনও মুক্তি দেখিরে কেউ কখনও মুক্তি পেরেছে বলে তো গুনিনি। অন্ততঃ বাতাবিধ মানুষ সম্পর্কে এ কথা আদপেই প্রবাজ্ঞা ব'লে আমি মনে করি না। বিরে না করে যারা সংসার ধর্মের দার এছাতে চার তারা তীতু তবু তাই নয় তাদের অসামাজিক জীবও বলা বেতে পারে। অন্ততঃ এই সব তীতু ও দায়িছ জানহীন নিউরিটাক লোকদের পুলিশ বিভাগে স্থান হওয়া উচিত হবে না। মতাস্তবে এদের স্থাউপ্রেল বা আন-প্রোডাক্টিভ বলে অভিহিত করলেও অন্তার হবে না। আমি বিরে এখনও করি নি ব'লে বে তা কখনও কববো না, এমন কথা কিছু আপনাকে আমি কোনও দিনই বলি নি।

এমনি হাছা কথা-বার্তার মধ্যে চিরঞ্জীব বাবুর মনও বে কথন হাছা হরে গািয়ছে তা তিনি টেবও পান নি। হঠাৎ পিছন হতে চুড়ির একটু ঠুনঠান আওরাজ তনে পিছন কিবে তাঁরা দেখলেন সাবদামণি সাহাত্ত মুখে তাঁদের সামনে এসে গাঁড়িরেছেন। সারদামণিকে দেখে সন্ত্রন্ত হরে উঠে চিরঞ্জীব বাবু তাঁরে শিশু-পুত্রের দিকে একবার চেয়ে দেখলেন। কিছু ততক্ষণ পুত্র সঞ্জীবচন্তেরে মুখে পুনরায় হাসি কুটে উঠেছে। আবস্ত হরে চিরঞ্জীব বাবু ও প্রধান বাবু উঠে গাঁড়ালেন। প্রণব বাবুকে সমন্ত্রমে উঠে গাঁড়ালে দেখে সারদামণি বলে উঠলেন, খুব তাড়াভাড়ি রাল্লাবাল্লা শেব করে ফেলাম। আবার এখুনি বার হতে ডাক প্রলে ভো কাউরিই বাওরা হবে না। আর সেই সঙ্গে আমাকেও সন্ত্র্বে থাবারের থালা সাজিরে বেথে আপনাদের মন্তই সারাদিন উপবাসাঁ থাকছে হবে। মাসের মধ্যে দিন দশেক ভো এই রকম হরই। তা আর কি করা বাবে বলুন। আস্থন, ভিতরে আস্থন। সব তৈরি হয়ে গিরেছে।

সারদামণি দেবার সন্দেহ আম্পৃক ছিল না। তাঁর মুখের কথা কয়ট শেব হবার পূর্বেই দরজার বাইরে থেকে একজন সিপানী প্রণব বার্কে উজেশ করে তার বভাবসিদ্ধ বার্কবাই পলার বলে উঠলো, হজুর। বজু সাহেব থানা ভিসিটমে আ'গরা। বড়ি বারু আকিসমে হাজির নেহি হার। আপ আ'গরা, জনকে আপকো বোলতা হার। সিপাহীজীর কথা করটি চিরঞ্জীব বার্ব জী সারদামণি দেবারও কানে পৌছিরে ছিল। সিপাহীর এই হাঁক ডাকে লজ্জিত হরে উঠে আপন মনে জিনি বলে উঠলেন, ছি: ছি:। পাপ মুখে আমার কি পোড়া কথা বার হয়েছিল! সত্য স্তাই কি তা'হলে আপনাদের আজ বাওরা হবে না।

এই সমরে বড় সাহেব থানা ভিজিটে এসেছেন ভনে এবৰ বাৰু ও
চিরঞ্জীব বাৰু ছ'জনাই জবাক হরে সিরেছিলেন। তবে কথনও
কথনও এই রুপ ব্যতিক্রম বে পূর্বেও না হরেছে তা'ও নর। চিরঞ্জীব
বাবুকে অপেকা করতে বলে প্রথব বাবু জুতা ছটা পারে দিছে দিছে
বলে উঠলেন, আপনি এখোন আর নামবেন না। আপনাকে
দেখেই আবার হয়তো ছিন ভেলে বেওনে অলে উঠবেন। আবি
উকে সামলে এখুনিই আবার ফিরে আসছি।

কোনও দিকে আৰু দুক্পাত না করে নেমে এসে প্রথম বাুুর দেখনেন বড় সাহেব মহীজ বাবু ইভিমধ্যেই খানার ইল-চার্ক অক্সার ধীরাজ বাবু দস্তখতের জন্ম প্রয়োজনীয় রেকর্ড বছিগুলি জীর সম্মুথে একে একে এগিয়ে দিচ্ছিঙ্গেন। প্রণব বাব খবে চুকে ভাকে অভিবাদন করা মাত্র বড় সাহেব মহীকু বাবু ভাঁকে সমুবের চেয়াইটিতে বসতে বলে স্মিত হাস্তে বলে উঠলেন, আমুন। আমুন, প্রণ্য বাব। ভাগলে এসে গেছেন আপনি। ভা বৌমা ভালো আছেন ? আর আপনার বাচ্চাটিও ভালো আছে তো ! এঁটা ?

বড় সাহেবের এই অদ্ভুত প্রশ্নে প্রণব বাবু হতভম্ম হয়ে গিয়েছিল। তাঁর মনে হলো বোধ হয় তিনি অন্ত থানার কাউকে মনে করে কথা বলছেন। একটু কিন্তু কিন্তু করে মাথা চুলকে প্রণব বাবু উত্তর করলেন, কি বলছেন স্থার, আপনি। আমার বৌ বা বাচ্চা ছোনেই। আমি তোঁ এখোনো বিয়ে থা কিছুই করি নি। প্রণাব বাবুৰ এই উক্তি ভানে বড় সাহেব মহীকুবাবুও কম বিশিষ্ট একটু সামলে নিয়ে ক্রোধে হন নি। বিশ্বয়ের ঝোকটা **আত্ম**হারা হয়ে হাতেঃ মুঠি পাকিয়ে তিনি একবার তড়াং করে পাঁড়িয়ে উঠলেন, ভাব পর সজোরে চোয়াবের উপর তাঁর পাছাটা ঠুকে मिरव वरम পড़ে छाँव नक्त्रभूष्टि मिरा रहेविसमत छेशत এकहा वृंवि स्मरत বলে উঠলেন, কি-ই। এতো বড়ো আম্পর্না তার। আমাকে মায় ডেপুটি সাহেবকে প্রান্ত কিনা বোকা বানাবে। উ। আমি একটা সিংহা; উ। বাব দি হাকে পর্যান্ত ভর কবে না। গাড়াও আমি মজা দেখাছি। ডিসহনেষ্ট স্কাউণ্ডেল। বলে কিনা প্রণবের বৌএর আপেৰ বেদনা হয়েছে। তাকে সে হাসপাতালে নিয়ে গিয়েছে। ব্দার কিনা এদিকে প্রণবের বিয়েই হয় নি। এঁয়া, দেখে নেবো ভাকে আমি এখন।

প্রবিব ১তভম্ব। অফিসে উপস্থিত সকলেই হতভম্ব। আজ ৰম্ভ সাহেবের কলমের একটি আঁচিড়ে তাদের বড় বাবু সাসপেশু হরে বাবেন। মামলা কঠিন। সাক্ষীসাবৃত যথেষ্ট। এক প্রণব ও বড় সাহেবের সাক্ষ্যভেই বড় বাবু সাসপেও হয়ে ধাবেন। তাঁর বিরুদ্ধে প্রেসিডিও সুরু হলে প্রণব বাবুকেই হয়তে৷ করা হবে এক নম্বরের শাক্ষী। বড় বাবুর উপস্থিতিতে বড় বাবুর সামনে এমন সব কং। ভাঁকে ৰলভে হবে যার জন্ত বড় বাবুকে চাকুরী হতে একেবারে বরখান্ত না কর্বলেও ভাকে কোনও এক নিম্নের পদে নাবিয়ে দেওয়া হবে। ৰে বড় বাবুর অধীনে প্রণব বাবুরা কাজ করছে সেই বড় বাবুকে ভাদেরই পাশাপাশি তাদেরই একজনের মত হয়ে কাজ করতে হবে। পুলিশ অফিসার হিসেবে তাঁর ৰত দোষই থাক, প্রণব বাবুদের উপর তীব সদ্ব্যবহার ছিল আশাতীত। তাঁর আত্মীয় সুলভ ব্যবহারে व्यक्तां इट जिलाही स्मानावता পर्वास मञ्जूदा। কিছ এখন উপায় ? এখন উপায় কি? এখন বড় বাবুকে বাঁচাবার জ্ঞাে যদি সে মিখ্যে সাক্ষ্য দেয় ভাছলে বড়বাবু ভো বাঁচবেনই না, উপরস্ক ভারই বিরুদ্ধে একটি নৃতন প্রেসিডিঙ ড করা হবে। মিখ্যে বলার অভিযোগ তাঁর বিক্লমে প্রমাণ করারও কোনও শস্মবিধে নেই। বড় বাবুর উপকারার্থে কয়েকটা মিথ্যা কথা বলতে ৰাব বাবু প্ৰস্তুত ছিলেন। কিন্তু জলজ্যান্ত একটা বধু নবজাত শিশুসহ সে এখুনিই তৈরী করে কি করে? তা ছাড়া হাতের তীর এপক্ষার বেরিয়ে গেলে তা ফিরিয়ে আনাও অসম্ভব।

বড় সাহেৰ মহীক্ৰবাবুৰ কিছ প্ৰণৰ বাবুৰ মুখেৰ দিকে একবাৰ

অকুসারের জন্ম নির্দিষ্ট চেয়ারটি দখল করে বলে ররেছেন। সহকারী ৯ চেরে দেথবারও অবসর ছিল না। ভিনি কার্কাডাড়ি কেউপি ক'টার পাতা করটার একটা করে দক্তথত দিরে ক্লেনারেল ডাইরীটা টেনে নিলেন। ভারপর তার পাতার পাতার বড়বাবুর বিরুদ্ধে মস্ত একটা বিপোর্ট লিখে প্রণব বাবুকে বললেন, কাল সকাল আটটার মধ্যে এই রিপোর্টের একটা কপি আমার অক্সিরে পাঠিরে দেবে। আমি কালই ওঁকে খতম করে দেবো।

> প্ৰাণৰ বাবুকে তাঁৰ শেৰ আদেশ জানিয়ে বড় সাহেৰ মই জ বাৰু শাস্তভাবেই উঠে দাঁড়ালেন। এতক্ষণে ভার রাগটা একেবাছে পুড়ে গিয়েছিল। অধিকক্ষণ অহেতৃক ক্রোধ ধরে রাথবার ভাঁর কোনও কারণ ছিল না। তিনি উঠে গাঁড়িয়ে বাম হাজে ভার চুলটা ৰুপালৈর উপর থেকে একটু সরিয়ে দিলেন। ভারপর ক্ষমাল বাব করে মুখটা পুঁছে নিয়ে বুক পকেটের ফাউনটেন পেনটা সোকা করে বসিয়ে নিলেন। আৰু বিকালের দিকে কোনও এক আত্মীয়ের বাড়ীতে তাঁর নিমন্ত্রণ ছিল। তাই নিয়মমত সভ্যার দিকে থান। ভিজ্ঞিটে না এসে তিনি এইদিন একটু সকাল সকালই এসে গিয়েছেন। ঠাট ছটো দাঁত দিয়ে আলতো ভাবে একবার কামড়ে তিনি একটু ভেবে নিলেন। তার পর শিশ দিতে দিতে বেমন প্রাফুল মনে এসেছিলেন, তেমনি প্রকৃত্ত মনেই এই পানা থেকে ডিনি বেরিয়ে গেলেন। সেকালে রাজারা এমনি করেই গর্দ্ধান নেবার ছকুষ पिछा अवनीनाक्त्म कालाव आमानाता अवन करायन। अकाला বিচারকরা তেমনি করেই কাঁসির ভকুম দিয়ে হাসতে হাসতে চায়ের পাটিতে গিরে ।নমন্ত্রণ রকা করে আদেন। অভাসে মানুবের প্রকাশ वा अकाक गकन काकरे गरुष करत जुला। जा ना रूल पार्जावक



জীবন খাত্র। পালন করা তাদের পক্ষে অসম্ভব হরে উঠতো। মানুষ দেহকে তুভাগ না করতে পাবলেও দে ভার মনকে তথা ব্যক্তিমক ছুভাগ কেন বহু ভাগে বিভক্ত কৰে নিতে সক্ষম। তাই মাহুবের চরিত্রের বা মনের একটি দিকই তার সব দিক না। ভাই কাকুর মাত্র একটি দিক দেখে তাকে বুঝতে চেষ্টা করলে তাকে ভূলই বুঝা হবে। তাই প্রণব বাবু বড়সাহেবের উপর একটু মাত্রও বিংক্তি প্রকাশ না করে বরং সশ্রদ্ধ ভাবেই ভার প্রভ্যাগমনের পথের দিকে চেয়ে किइक्ष १र्यास निम्हल जात्वरे नीजित बरेल। ঘটনায় প্রণব বাবু এগনিই অভিভৃত হরে গিয়েছিল যে অক্তদিনের মত এইদিন তাঁর পিছন পিছন ছুটে তাঁকে তাঁর মোটরে পৌছে সেলাম मिर्य छाँक विमाय अधिनम्बन कानाएँ अर्थास छ।व গিয়েছিল। কিন্তু প্রণৰ বাবুর এই ভূস বা ত্রুটি বঞ্চাহেবের নজৰ এড়ায় নি। তিনি ফুটেৰ উপৰ নেমে গি.য়ই এ চবাৰ থমকে পাঁড়ালেন। ভাঁর মনে হয়েছিল প্রণব বাবু বুঝি অক্স দিনের মত এই াদনও ভার পিছন পিছন আগছেন। তিনি তাঁকে বারণ করবার জন্তই থমকে দ।ড়িয়েছিলেন। কিছু পিছন ফিবে প্রণব বাবুকে না দেখে তিনি ঠোঁট বেকিয়ে ধীরে ধীরে মোটরের দিকে অগ্রসর হতে থাকলেন। এতক্ষণে প্রণব বাবুরও সন্থিত ক্ষিরে এসেছিল। হঠাৎ তাঁৰ মনে হলো যে একি তিনি করলেন। কাঁচা খেকো ওরা। ভূপ বুখলেন না ভো আবার। কথাটা মনে হবা মাত্র প্রণববারু দৌড়ে গাড়ীর কাছ পধ্যস্ত এসে মাধা নীচু করে গাড়ীর ভিতরের দিকে চেয়ে বলতে যাচ্ছিলেন, গুড নাইট, স্থার। কিছু ভা আর তাঁর

বলা হলো না। সংসা ভিনি দেখতে পেলেন বড় সাহেবের স্ত্রীও গাড়ীর মধ্যে বলে আছেন। অপ্রতিভ ভাবে প্রণববারু হু' পা পিছিয়ে আসামাত্র গাড়ীখানা ভ্সভ্স করে সামনের দিকে এগিয়ে গেল। ফিনে আসতে আসতে প্রণববাবু ভাবছিলেন, কিনে বাবা! বড় সাহেৰ আমাকে দেখেছে ভো। না ভদ্ৰলোক মনে করলে আমি তাঁকে তাচ্ছিল্যই কবলাম। প্রণববাবুর কাশকা অমূলক ছিল না। নিষ্ত সম্মান পেয়ে পেয়ে এক সময় মানুষের মন সম্মান পাওয়া বা না পাওয়া সম্বন্ধে বোধ হয় অভিন্দীয়তা লাভ করে। সামাগ্রতম অবহেলাও তথন আঘাতের আকারে তাদের মনকে বিক্ষুদ্ধ করে **অপরাধী-মন্ত ব্যক্তিদের উপর তাঁঞের প্রতিহিংসাপরায়ণ করে ভূলে।** थानाम्न फिरवरे व्यववर्गत् प्रथला हिवक्षीववात् कथन न्नारव अप्र তাঁৰ পিছনে এসে দাঁডিয়েছেন। উপৰেব বাৰণাৰ উপৰ একটা কাপড তকাচ্ছিল। সেই কাপড়খানা আড়াল করে তিনি লক্ষা করছিলেন, বড় সাহেব কখন চলে যান। বড় সাহেবের গাড়ী ষ্টাট দেওয়ামাত্র চিরঞ্জাব বাবু নীচের অফিদ ঘবে নেমে এদেছেন। চিরঞ্জীব বাবুকে **দেখে প্রণ**ৰ বাৰু **অভিযোগের স্থার বলে উঠলেন, আচ্ছা** চিরঞ্জীৰ বাবু। আপনিও তো আজ রিপোটে গিয়োছলেন। বড় বাবু সেখানে আমার সম্বন্ধে কি বলেছেন বা কি না বলেছেন ভা'তো আমাকে আগে ভাগে কানিয়ে দিতে হয়। ওসব কথা শুনলে তো আজ আর

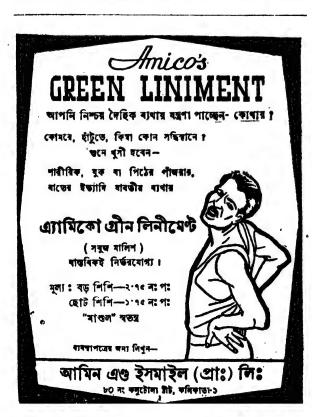
কি কাণ্ড হয়ে গেলো। এখন উপায়?

বেখানে একক আত্মবক্ষা সন্তথ নয়। সেখানে দলগত ভাবে আত্মবক্ষা করতে হয়। তাই কোনও এক ঘটনা ঘটামাত্র সে সপ্পন্ধে প্রস্পার প্রস্পারকে ভানিয়ে দেওয়া এখানকার একটা বেওয়াজ। এই ভাবে প্রস্পার পরস্পারের সহযোগিতা করে তারা আত্মবক্ষার জন্ম প্রস্তুত হয়। এইভাবে বুঝে ক্রেম কথা বলে তারা বহু আসয় বিপদ এড়িয়েও বেভে পেয়েছে। এই নিয়ম বহিত্তি কাজের জন্ম ভধু প্রণন বাবু কেন খানার প্রত্যেক অফসারেরই চিরঞ্জীব বাবুর উপর বিরক্ষ হবার কথা। এইভাবে দলীয় স্বার্থ চিরঞ্জীব বাবু ক্রম করবেন ভা সকলের বিশাসের বাইরে ছিল। তাই প্রণব বাবুর কথায় বিক্লুব হয়ে চিরঞ্জীব বাবু উত্তর করলেন, বিশাস কল্পন প্রণব বাবু। আমি এই ব্যাপার মাত্র এখন জানতে পারলাম। বাইরের অফিসে বসে খাকায় বিপোর্ট ক্রমের ভিতরের ঘটনা আমি একটুও জানতে পারিনি। ভা' হাড়া বড় বাবু আমাকে এ বিবয়ে কোনও রপ সত্রকও করে দেননি।

আমি বড়ো সাহেবের সামনেই আসতাম না। আপনি ওধু বললেন

ষে বড় বাবু বিপোর্টে খুউব দেবী করে এসেছিলেন। দেখুন তো

সারা থানায় সিপাহী জমাদায়দের মধ্যেও ইতিমধ্যে এই গণ্ডগোলের কথা মুখে মুখে প্রচার হরে গিছেছে। সকলেই তানের বড় বাবুর বিপদের জন্ত মনে মনে আত্তন্ধিতও বটে। এ ওর মুখ চাওয়া চাওয়ি করে ভাবছে বড় বাবু কখন থানায় ফিবে আসবেন। ঠিক এই সময় কোথা থেকে থবর পেরে বড় বাবু হস্তদক্ত হয়ে খানায় ফিবে এলেন। খুব সন্তবতঃ খান রই কোনও বিশ্বস্ত অনুচর ট্যাক্সিকরে তাঁকে খবর দিয়ে এলেছে। খুব সন্তবতঃ সেই ট্যাক্সিকরে তাঁকে খবর দিয়ে এলেছে। খুব সন্তবতঃ সেই ট্যাক্সিকরেই তিনি ছবিং গতিতে ফিরে এসেছেন। কাছাকাছি কোখা খেকে টেনিফোনেও তাকে খবর দেওয়া অসম্ভব নয়। বড় বাবু সোজা অফিসে এলে জাঁর নির্দিষ্ট চেয়ারে বসে প্রধার ও চিয়নীর বাবুকে জাঁর সন্ত্বের চেরারগুলিতে বসতে অনুবোর করে বললেন, হয়।



(मात्र चामात्रहे। जै। कि कदत्र कानद्या अन्तर चाक्रहे किदत्र चामद्य। বাৰু ঠিক আছে। ভূল ধখন আমিই করেছি তখন সেই ভূলের সমুখীন আমাকেই হতে হবে। বড় সাহেবের সঙ্গে আমার এইবার প্রভাক্ষ সংগ্রামে বাঁধলে।। তাই এখন হতে ভোমাদের একটু সাবধানে থাকতে হবে। কোনও কাজ কর্মে বেন ভূস জ্ঞাটি নাহয়। অবঞ্জুল মায়ুবের হবেই। যে সব ভূল সাধারণত: তিনি অপ্তাহ্ম করতেন সেই সব ভূল এখন হতে হয়তো বড় করে ধরবেন ষেখানে আগে লিখতেন ডাইবীগুলি লিখতে এ'ভা কাটাকুটি করেছো কেন? এ ভেবি কেয়াবদেশ অফিসাব। সেথানে এখন হয়তো তিনি লিখে বশ্বেন, ফলসিফিকেদন অব গভর্মেন্ট বেকর্ড উইথ আলটেরীয়ার মোটিত। তা ৰদে বদে পোচা বাছতে আরম্ভ করলে অনেক পৌকা বার করে আনা যায়। আমার অফিস পুশারুপুথকপে চেক করলে উনি বা পাবেন, ওঁর অফিদ চেক করলে আমিও তাই পেতে পার। বিশ্ব সে স্থবোগ আমাদের বখন নেই তখন এখন থাক। যাকৃ, এখন কিছুদিন তোমাদের একটু সাবধানে থাকতে হবে। এর কারণ আমাকে বাগে না পেলে ভোমাদের তিনি ধরবেন শুধু আমার শাসন ব্যবস্থার দোষ ধরবার জন্তে। একবার মণ্ট মল্লিককে বলে রাত্রের দিকে বড়সাহেবের ওখানে একবার ঘূরে আসবো, আখুন। সহজে মিটে গেলে আর অৰথ। শক্তি ক্ষয় করবো না। কাল রববার আর পরও ছুটি। হ'দিনতো'সময় পাওরা যাছে। তবে ভূমি তোমার পূর্মের ষ্টেট্মেন্টেই ঠিক করে থেকো। সকালে ডাইরী বইতে যা ছাই ভম্ম লিখেছে তা কশি করে ওঁর অফিলে পাঠিয়ে দিও। আমি এখন তা'হলে চলি—

বড়বাবু খানার বাইরে চলে গেলে প্রণব বাবু আপন মনে বলে উঠলো, বাবা:। মনেঃ জাের বটে। ভর ডর বা ভাবনার কােনও বালাই নেই ভল্লাকের মধ্যে। প্রণব বাবু আক্টু হরে কখা কয়টি উচ্চারণ করলেও ছা চিরঞ্জীব বাবুর কানে গিয়েছিল। চিরঞ্জীব বাবুও ষ্থাসম্ভব গলার হব খাদে নামিরে বলে উঠলো, দেখবেন আধুন প্রণব বাবু। উনি সব ঠিক করে নেবেন। শুনেছি মন্টু মহিকে বড় বাবুর বিশেষ বস্কু। ডিপ্টো সাহেবের সঙ্গে গাঁতর আছে। নেপ্থাে থেকে ক্লকাটি টিপে দিলেই হলো।

প্ৰণৰ বাবু চিৰণ্ণীৰ বাবুৰ এই স্বগতোক্তিৰ কোনও উত্তৰ দিলেন না। চিরঞার বাবুর এই কথাওলো তার মনংপুত হয়েছিল। তাই মনে মনে ভিনিও কামনা করলেন, ভগবান। এই কথাই বেন্ সত্য হয়। তার পর একটু ভেবে নিয়ে ঘড়ির দিকে চেবে তিনি চিরপ্লীব বাবুর দিকে মুখ ফিরিবে বলে উঠলেন; আরে। ছটো বে বাজে। বেতে বেতে হবে না। আমাদের সঙ্গে উনিও কি উপোদ করবেন। চলো চলো, উপরে বাই। কথা কচটা বলে প্ৰণৰ বাবু চিৰঞ্জীৰ বাবুৰ হাভটা ধৰে একটা টান দিবে সিঁড়ীৰ দিকে এগিয়ে চললো। ভার পিছন পিছন , অপ্ৰতিভ ভাবে চললেন চির্ঞীৰ বাবু। সি ডার উপব হচিত্ৰ। वावाः ! ভাঁৰ বাবে বাবে মনে ধারার জব্দ এতো কাণ্ড। কে জানে ভাগ্যে আরও কি षां हा

উভরে উপরে এসে দেখলেন চিরঞীব বাবুর স্ত্রী খাবারের থালি ভূটো ও পাশের বাটা কয়টা কয়েকটা শিভদের গামলা ও ঢাকনী দিয়ে ঢেকে রেখে গালে হাত দিয়ে মেকের উপর চুপ করে বসে আছেন। তাঁকে এই অবস্থায় বদে থাকতে দেখে সলজ্জ ভাবে প্রণব বাবু বঙ্গলেন, মাপ করবেন বৌদি। বড্ড কষ্ট দিলাম আপনাকে। নাচে যে একটা অঘটন ঘটছিল তা চিরঞ্জীব বাবুৰ ন্ত্ৰীর বুঝতে বাকি থাকে নি। খাবারের ঢাকনিগুলি এক একটি করে উঠাতে উঠ তে ভিনি উত্তর করলেন, একি বলছেন ঋাপনি বলুন ভো। এ রকম কষ্ট কি আমার নৃতন না কি ? এর পর চিরঞ্জীব বাবুব দিকে ফ্রিবে তিনি অনুধোগের শ্বরে বললেন, তোমার কি মাথা খারাপ হয়েছে নাকি? মিছি-িছি ছেলেটাকে মেৰে গেছো। কেঁদে কেঁদে খেরে নিয়ে চোথ মুথ ফুলিয়ে বোধছয় সে ঘূমিরে পড়লো। বাও ও'ববে গিয়ে ভকে একটু আদর করে ভার পর মুখ ছাত ধুয়ে খেতে বদো। তোমার আবা প্রণৰ বাবুণ জন্ম বাথকমে জন সাবান ভোৱালে ঠিক করে রেখেছি। মাংসটা আর একবার না হয় প্রম করে দিলাম। ভবে ভাতটাত সব ঠাণ্ডাই খেতে হবে। তা' কি আৰু কৰা ৰাবে বলো। তা'ছায়া এতে তো তোমৰা অভ্যন্ত। বাক— ক্রমশঃ।

বাসবো ভালো সাধনা দেবী

আজিকে আমার নাইকো তেমন কিছু সেই অতীত দিনে এসেছি ফেলে সব, তথু হাদরখানি করব অজ্ভব আজি তোমার ওঙ্গো বাসবো ভালো কিছু।

দেবীর বেশে যথন ভূমি মায়ার ছিলে ঢেকে—
রহস্ত আর রূপের থেকে ছিলেম অনেক দূরে
লদর শুধু থাকত ভূলে বেশ্ররো সব শুবে;
অবাকারে দেবির দূরে ছিলেম ভোষার থেকে।

তোমার তবে জীবন ভ'রে চলেছি ভূলের পিছু জোর ক'রেই কি শুভ-দৃষ্টির চোধ মেলাতে পারি ? ববে সকল দিয়ে ব্যর্থ হ'য়ে করেছি মাথা নিচু---পথের দিশা পেলেম ভবন বাসনা জ্বপদারি।

আজিকে আমার বিজ্ঞানের তিক্ত অভিক্সতা দীনের বেশে শৃষ্ণ হাতেও হটবে না সে পিছু বাহিবটুকু চার না সে তো থোঁজে মনের কথা এবার আমি ভোমার ভূলে বাসবো ভালো কিছু! আজিকে আঘার নাইকো কেব্র কিছ!



ভবানী মুখোপাধ্যায়

ৰজিখ

১৯১৭ খুটাবে কশ বিপ্লব অমুষ্টিত হওয়ার পর মার্কসীর কর্মনিক্ষম সর্ব প্রথম ব্যবহারিক ভাবে পরাক্ষিত হল, কিন্তু বলপেভিকরা ইংলতের ক্যাপিটালিষ্টদের চাইতে তাত্র ভাবে আক্রান্ত হলেন সোন্তালিষ্টদের হাতে। খ্রিটিশ শ্রমিক নেতারা বা খুসী বলতে ক্ষক করলেন।

এর কিছু কাল পরে কেবিয়ান গোসাইটির এক সভা অনুপ্তিত হয়, বার্ণার্ড শ' সেই সভায় উঠে দাঁড়িয়ে শুধু বল্গেন We are Socialists, The Russian side is our side বেহেতু আমরা সমাজবাদী আমাদেরই দল কশ দল।

এই উদ্ধির পর সভাগৃহে অথগু স্তর্কতা বিরাজ করতে লাগল। ভারপ্র বংন সভার কাজ আবার স্কুল্ল, তথন আর লোভিয়েট সরকার সম্পর্কে কোনো কটুজি ব্যবিত হল না।

বার্ণার্ড শ' বখন রাশিয়ায় গেলেন তখন প্রচুর অর্থের বিনিময়ে Hearst Press of America বার্ণার্ড শ'কে অমুরোধ করেছিল ভার ভ্রমণ বুরাস্ত তাদের মারকং প্রচারের জন্ত । বার্ণার্ড শ' এই প্রস্তার প্রত্যাখ্যান করলেন । বার্ণার্ড শ' জান্তেন প্রাথমিক অবস্থার সোভিয়েট সরকারের সমত কিছু ক্রান্ট বিচ্যুতি থাকতে পারে কিছু সারা পৃথিবীকে তা জানাবার কোনো প্রয়োজন নেই । ১৯৩১ খুইান্দে বখন লেডী গ্রাষ্ট্রর প্রভৃতির সঙ্গে রাশিয়া ভ্রমণে বাত্রা করলেন তখন সোভিয়েট সরকারের প্রাথমিক ক্রান্ট বিচ্যুতির কাল প্রিক্তর গেছ, জারা তখন পবিপূর্ণ গ্রিমার স্থপ্র ভৃতিত ।

লর্ড লোখিয়ান (তথন ফিলিপকের) এক সদ্ধ্যায় বার্ণার্ড শ'র বাস ভবনে এসে বললেন—লেন্ডী গ্রাষ্টবের কিছুদিনের জন্ত বিশ্রামের প্রয়োজন, লর্ড এ্যাষ্ট্রবন্ত সঙ্গে বাবেন। জ্বাপনি সঙ্গে থাকলে ভালো হয়।

বাৰ্ণাৰ্ড শ'বেন এই চাইছিলেন, তিনি তৎক্ষণাৎ বাজী হয়ে শালনাঃ। নাশিকা ভ্ৰমণাৰ পালন লেপ্টেখন অক্টোখন হকত প্ৰশাভ। বার্ণার্ড শ' সম্প্রদার গিরেছিলেন জুলাই মাসে। তথন আচও গ্রীদ্ধ, এমন কি থিরেটার ওপেরা সব বন্ধ।

বংশির্ড শ' কথা এই জ্বমণের একটি বিবরণ লিথেছেন ১১৩২ খুষ্টাব্দের ভামুবারী কেব্রু:বিরী মাসের Nash's Pall Mall Magazine নামক অধুনালুপ্ত মাসিক পত্রিকার, এই রচনাটি বার্ণার্ড শ'র কোনো প্রস্থে সংবোজিত হয়নি। এ ছাড়া বার্ণার্ড শ' ঐ পত্রিকার প্রকাশিত উইনসটন চার্টিলের বার্ণার্ড শ' নামক প্রবন্ধের ১১৩৭ খুষ্টা ক্ষর সেপ্টেম্বর মাসে আর একটি আলোচনার কিছু বস্তুন্য প্রকাশ করেন, সেই রচনাটি Sixteen Self Sketches এর মধ্যে আছে। বার্ণার্ড শ'র বাশিরা পর্যানের বিবরণ মূলতঃ এই তথ্যের ভিত্তেই পরিবেশন করা বাবে।

শ' বলেছেন, বাওয়া স্থিম হওয়াব পথ কেউ বলে না থেৱে মবতে হবে, কেট বলে গারে উকুন ধরবে, কেউ বলে শেষ পর্যন্ত কোতল (liquidated) করবে। স্থতবাং এমন একটা নির্ধোধের মত কর্মনা করাই গ্রেম। দলের সমস্ত স্ত্রালোককে জাতীয়করণ করা হবে আর তারা মা দেখাবে তাই শুধু দেখতে পাবে।

বার্ণার্ড শ' বলেছেন, তাই অকুন্ডোভরে এই হু:সাহসিক অভিধান্তার বেরিয়ে পড়া গেল। বা কেউ করেনা তাই করাটাই ত' বাহাছুরী। সীমান্তে দেখলাম তোরণ শীর্নে লেখা আছে Communism will do away with all frontiers. সীমান্তের গণ্ডি দূর করবে ক্যানিজ্য। নিশ্চরই একদিন তাই হবে, তবে উপস্থিত এই তোরণ লিপি সরণ করিয়ে দিল পাসপোট বার করতে হবে আর আমি রাশিরায় পৌছলাম।

ৰভটা ভগ্নেকৰ এবং বিভীষিকামৰ শোনা গিছল, আসলে গোভিয়েট ভূমি তেমন ভয়াবহ নয়। বাশিয়ায় অৰ্থ, পদমৰ্থাদা প্ৰভৃতি কোনো সন্ত্ৰম উদ্ৰেক কৰে না, অৰ্থ না থাকলেও সমান সমাদৰ। বাৰ্ণাৰ্ড শ'বলেছেন—I was certainly treated as if I were Karl Marx in person and given a grand reception in the Hall of Nobles, which holds 4000 people and was crammed.

রাশিয়ার এক সাহিত্য শিল্প ও বিজ্ঞান সভার সম্বন্ধনায় র্যান্ডেক, লুনাচারসকী, খালাটোক প্রভৃতি উপস্থিত ছিলেন।

বার্ণার্ড শ'র রাশিয়ার অনেক বিচিত্র বস্তু চমৎকার লাগল। রেলষ্টেশনের সঙ্গে প্রকাশু হল সন্ধিবেশিত করা হয়েছে আর সেই সব
হলের প্রাচীরগাত্রে ভেনিসের scuola di San Rocco-র মতো
ক্রন্সর দেয়ালচিত্র আঁকা রয়েছে, বার্ণার্ড শ' বলেছেন, এইগুলি
'রিলিজিয়ন পেইনটিং' এবং সেই ধর্মের নাম মার্কসবাদ। তিনি সথেদে
বলেছেন বিখ্যাত শিল্পী জি, এফ, ওরাটস্ বখন লশুন গ্রাশ্ত ওরেষ্টার্ণ রেলওয়ের লশুন ষ্টেশনটি বিনা মৃল্যে অলংকরণের প্রস্তাই করেছিলেন
তা ঘুণাভরে প্রত্যাখ্যাত হয়েছিল, কর্তু শক্ষরা মনে করেছিলেন বে
ব্যবসাগত ক্ষবিধার চেয়ে এই ছবি দেখার জক্ত ভবযুরেরা ভীড় করবে।
শ' মক্তব্য করেছেন, সোভিয়েট সরকারের বিচারবৃদ্ধি অনেক উল্লেড,
ভাই তাঁরা শিল্পীকে তাঁর উপযুক্ত মর্বাদা দান করে এই ছবি
আঁকিয়েছেন।

বাশিবার শ্রমিক সম্পর্কে বার্ণার্ড শ' বলেছেন—রেলের কাছ বারা করছে বেন ছুটিরবেলার বেছালেকে কথা বলতে বলতে একটি



মালগাড়ি এসে গেল, সঙ্গে সংক্ষ স্বাই একবোগে এমন ছন্দোমর ভলীতে ট্রেণের কাজ করল বে মনে হল যেন ব্যালেন্ত্য দেখছি, রাশিয়ার এই একটি ব্যালেন্ত্য দেখেছি।

· বার্ণার্ড শ'র বাশিয়া ভ্রমণের প্রাক্কালে অনেকে তাঁদের ভয় দেৰিয়েছিল বে দেখানে খালাভাৰ কিছুই জুটৰে না। লেডী এছিব ভাই প্রচুর টিনে সংবক্ষিত খাত্রসম্ভার সংক্র নিয়েছিলেন, পরে সেগুলি বিলিক্সে দিতে হয়। শ'বলেছেন—বালিয়ান থাত পৃষ্টির দিক থেকে আদর্শস্থানীয়। রাশিয়ানর। কালো কৃটি (Black bread) আর বাঁধাকপির স্থপ থেয়ে বেঁচে মাছে ক্রেনে পান্চাত্য জগৎ শিউরে ওঠে। कारनव मरे बब्बा मार्फ मात्रा वारक् । व्यामारनव माना कृतिव ठांहेरङ কালো কটি সম্প্রগুণে ভালো। ক্যাবেল স্থপের নাম Stichi, ভাতে ক্যাবেজ ছাড়া আরো অনেক কিছু বস্তু মাছে. এক হিসাবে স্কচরপৈর প্রতিঘন্তী। থারা আঙ্বের রস, ভূগ বা সেবুর রসে জীবন ধারণের बाब मुक्ती मुक्ती होका चवह करवन, छै।एनव व्यक्तदांश कानाई ब्रामिया ভ্রমণে এসে ব্রাক ব্রেড আর ক্যাবেজ স্থপের স্থাদ গ্রহণ করতে। আবো অনেক পদ আছে, বেমন সব বকম পরিজের নাম Casha। কোঠবন্ধবোগী পশ্চিমের গো-খাদকদের রাশিয়ান কালো কৃটি আর ক্যাবেন্দ্র স্থপ, আর সেই সঙ্গে চীক্ত আর মোটা শলা (রাশিয়ার এই জিনিৰটি প্ৰচুৰ পাওয়া যায়) যদি নিয়মিত ভাবে প্ৰভাতী খানা হিসাবে গ্রহণ করেন, তাহলে তাব মানসিক ও নৈতিক শক্তি লক্ষ্য করে শিউরে উঠবেন। এখন বেমন প্রতিবেশীর সৌভাগ্য ও সমৃদ্ধিকে নিজেদের ক্ষতি ও ধ্বংসের হেতুমনে করে তাঁরা আতংকিত হয়ে क्कंन ।

বার্ণার্ড শ লিখেছেন যে বালিয়ায় আব্রু বাঁচিয়ে থাকা শক্ত, বেমন ব্যারাকবাড়ি বা যুদ্ধ জাহাজের অবস্থা। স্তালিন বিনি রাশিয়ার সর্বাধিনারক তিনি সপরিবারে মাত্র ভিনথানি ঘরে থাকেন। অবস্তু হোটেল মেটোপোলে বার্ণার্ড শ'টের বেশী জারগা পেরেছিলেন হাত্ত-পা ছড়িয়ে থাকার মতো। তিনি তাই বলেছেন, আমার মতো দরিক্র সোন্তালিষ্ট লেখকের অদৃষ্টে বদি এই জোটে তাহলে হারসট বা রক্ষেকারের সইকরা চেকের বিনিমরে কি না পাওয়া যাবে ?

একদিন পুলিস আদালতের বিরাট প্রাসাদে বেড়াতে গেলেন বার্ণার্ড ল'। সে বাড়িতে জারো অনেক সরকারী অফিস আছে। অবশেবে তিনি দেখলেন একটি ঘরে কিছু লোক জড়ো হরে আছে, একটি উঁচু টেবিলের ধারে জনৈক কর্মণক মহিলা বসে আছেন। প্রশ্ন করে ল' জানলেন তিনিই ম্যাজিষ্ট্রেট। তাঁর ত্বপালে বসে আছেন একজন পুকর ও মহিলা। তাঁরা হজনে জনসাধারণের পক্ষে তায় বিচার ছছে কিনা তা লক্ষ্য রাধছেন। সেই আদালতের কোথাও পাহারাওলা নেই। জানা গেল লোকটি একটি মাত্র ল্বায়ার অধিকারী সেই জায়গায় একটা প্রা কামরা দখল করে রেথেছিল এই অপ্রাধ। কি শ্লান্তি হল তা আর নার্ণার্ড ল জানতে পারেননি, তিনি অক্ত ঘরে গিয়ে জার একটি বিচার দেখতে গেলেন।

এই ঘরের ম্যাজিট্রেটও একজন মহিলা। তিনি রায়দানের পূর্বে বিশ্রাম ককে চুকেছেন। বার্ণার্ড শ' শুন্লেন বে এথানকার কেসটা বেশ গুরুত্তর। একটি মেরে গর্ভপাতের অপরাধে আগে শান্তি পেরেছিল, সে আবার সেই অপরাধ করেছে। অথচ এই কক্ষেও পাহারাওলা নেই, অপরাধী ও দর্শক চেনার উপার নেই। শ'

বিষিত হলেন। রাশিয়ার তথনকার আইনাফ্সারে তু মাসের গর্ভ অবস্থায় গ্রহণবোগ্য কারণ দেখিরে গর্ভবতী মহিলারা গর্ভপাত ঘটাতে পারেন, তার জ্বন্ত লাইদেলধারী ডাক্ডার আছেন। বিভারাধীন মামলার আসামী কোনো নীতিই মানেন নি, নিজ্বের খুশীমত কর্ম করেছেন, তাই বিচার। ম্যাজিট্রেট অবিলম্বে হ্রন্তন জুরীসহ কিরে গ্রসে স্ফিল্ডিত রায় দিলেন। এক বৎসর কারাদণ্ড। বার্ণার্ড শ'ভাবলেন এইবার বোধহয় ওয়ার্ডার এসে চুলের মুঠি ধরে নিয়ে বাবে। একটি জ্রীলোক দেওয়ালের ধারে এতক্ষণ বসেছিলেন ভিনি চিৎকার করে কেঁলে উঠলেন। আকাশের দিকে হাত তুললেন। তাঁর ভাষা বার্ণার্ড শ'ব্যকেন না। হয়ত স্থবিচার হয়নি এই কথা বলতে চায়়। তারপর মেয়েটি দীপ্ত ভঙ্গীতে বিচারসভা ত্যাগ করে চলে গেল।

সবিশ্বরে শ' প্রশ্ন করলেন—ওকে কি কারাগার নিয়ে বাবে না ? উত্তর হল—না, ওর কাজে ফিরে বাচ্ছে।

অর্থাৎ এক বছর তাকে কোনো কারখানার কাজ করতে হবে, এই তার শান্তি। থিয়েটার বা সিনেমা দেখার অধিকার নেই, রাতে বন্দী কাে বাখা বে।

বার্ণা 'প্রাচীন চিত্র গ্যালারী, বাছ্যর প্রভৃতি দেখে বিশ্বিত হরেছেন। লেলিনগ্রাদ ও মন্ধে শহরের এই সব সংগ্রহশালার বছমূল্য দ্রুবাদি প্রদর্শনীতে রাখা হয়েছে। কুশ বিপ্লবের ফলে বে এতটুকু লুঠতরাজ, ওণ্ডামি হয়নি এই দেখে বার্ণার্ড শ' অবাক। তিনি প্রদর্শকদের বললেন—ভোমরা বিপ্লবী বলে বড়াই করে।, আর এইসব অমূল্য সম্পদ লুঠতরাজ হর না বিপ্লবের কালে? কোনো রক্ম ওণ্ডামি বা লুঠ হয়নি ? পশ্চিমে হলে এর কিছুই থাকভো না। হোমাদের সম্জা পাওয়া উচিত।

গির্চাঙলি পর্যস্ত একেবারে অক্ষত।

বার্ণার্ড প' লিখেছেন বে আমি ভেবেছিলাম লেখক, শিল্পী, বিজ্ঞানীর দল বড়ই কটে আছেন। হয়ত ছ বেলা ছ মুঠো অল্ল জোটে না। তাঁরা হয়ত অবহেলিত অবজ্ঞাত। এঁদের প্রতিনিধিরা হখন বার্ণার্ড শ'র সঙ্গে দেখা করলেন, তাঁরা কেউ একখণ্ড সাবান বা একজ্ঞাড়া পুরানো জুতা ভিন্দা করলেন না। বার্ণার্ড শ'র কাছে লণ্ডনের বিদ্যার সমাজের চাইতে এঁদের আনক্ষময় মনে হল। তিনি বিশ্বরে তার হয়ে গেলেন, বললেন—আপনারা ত' লোক সম্প্রদার, বিদ্যার সমাজভূক্ত (intelligentsia ?) তাঁরা অশ্বাভ্ঞা ভবে বললেন—বামো, আমরা ইনটেলিজেন্টসিয়া নই। বার্ণার্ড শ' বললেন—তা অবশু আমি জানতাম, অবশু বালিয়ান সরকার তা জানেন কিনা জানতাম না। তাহলে আপনারা হদি ইনটেলিজেন্টসিয়া না হন তবে কি আপনাদের নাম এবং পরিচয় ?

তাঁরা জবাবে বললেন—আমরা ইনটেলেকচুরাল প্রলেটারিয়েট। বৃদ্ধিজীবি সর্বহারার দল।

বার্ণার্ড শ' বলেছেন—এর নামই ক্য়ানিষ্ট রীতি। বদি তাঁদের জ্বল্প অপরাধের জল্প মানব সমাজের দরবারে হাজির করা হয় তবে দেখা বাবে তাঁদের সেই অপরাধই হচ্ছে একমাত্র বৃদ্ধিশ্রাহ্ম ব্যবস্থা, নিজের হতভাগ্য দেশে কিরে এদে আপনি সেই ব্যবস্থা প্রতিষ্ঠার সচেষ্ট্র

ৰে সংখ্যা Nash's Magazine-এ বাৰ্ণাৰ্ড ল'ব এই প্ৰবন্ধ প্ৰকাশিত হয়েছিল সেই সংখ্যায় জি. কে, চেষ্টাবটনেৰ—The true. Sin of Bolshevism নাৰে একটি কুল্ল প্ৰবন্ধ প্ৰকাশিত হয়। এই প্রবন্ধটিও উল্লেখবোগ্য, আমি সেই প্রবন্ধের কিছু অংশ উদ্ধৃত করেছি:

ষে কোনো বিপ্লব প্রকৃত ঘটনার অনেক আগেই প্রাচীন হয়ে বায়। কশ বিপ্লবের এই বিশেষ অস্থবিধা। কশ বিপ্লব অনক দেরীতে ঘটেছে। এতদারা এই কথাই বলতে চাই স্বাসল মুহুর্তের অনেক আগে এদেছে মনস্তাত্ত্বিক মুহূর্ত। সাম্যবাদ উনবিংশ শভাকীর বন্ধ, বিংশ শভাকীর নয়। শ্রেষ্ঠ ক্যুানিষ্টরা ক্যুানিজমের আবির্ভাবের অনেক আগেই বিগত হয়েছেন। বিশ্বয়কর ভাবে আমেরিকার বিপ্লব সৌভাগ্যবান, সে কালে শ্রেষ্ঠ রিপাবলিকানরা জীবিত ছিলেন, তথনই রিপাবলিকের জন্ম ঘটেছে। প্রকৃত যুগান্তকারী ক্য়ানিষ্ট বিপ্লব ১৮৬৮ খুষ্টাব্দে ঘটা উচিত ছিল। কিছ তা তথন অসকল হয়েছে। আমার বাল্যকালে উইলিয়াম মরিদ একটি কথার ক্য়ানিষ্ঠ আদর্শ প্রকাশ করেছেন-Fellowship is heaven and lack of fellowship is hell-ৰূপি উইলিয়াম মরিদের কালে রুণ বিপ্লব ঘটতো তাহলে দারা পৃথিবীতে আনন্দরোল উঠত। আজ বলশেভিকবাদ সংখ্যাগগদের ডিকটেটরশিপ মাত্র। এই কারনেই বার্ণার্ড শ' মস্কো ভ্রমণে বাওয়ার সময় খুসী হয়েছিলেন। বার্ণার্ড শ'র প্রগতি মানবিক, কিছু সে প্রগতি পিছনের দিকে। ঈগলপাখির মডো বার্ণার্ড শ' তাঁর মনোভংগী নতুন করে ঝালিয়ে নিয়েছেন। তিনি উনবিংশ শতাব্দীতে ফিরে গেছেন। তিনি আর আর্মি উভয়েই বখন বালক ছিলাম তখনকার স্বপ্ন সেইকালে সীমাবদ্ধ। বার্ণার্ড শ' আজো বালক থেকে গেছেন। একথা সত্য রাশিয়া ভ্রমণে বৃদ্ধ বার্ণার্ড শ' ভার পুরাতন স্বপ্ন সফল হতে দেখেছেন, সমাক সরল ও সহজ্জাবে সেখানে সক্রিয়—যদি অবাধ স্বাধীনভার তর্ণ মনীয় কামনার হাত থেকে যুক্তি পাওয়া বায়। আমি অবশ্য তা চাই না।

প্রবন্ধটির মূল কথাগুলি মাত্র এইখানে উদ্যুত করা হল বার্ণার্ড শ'র বিশিষ্ট বন্ধু ও সমসাময়িক চিস্তানায়কের মত হিসাবেই প্রবন্ধটি মূল্যবান।

আর একজন এই Nash's Magazine এ ১৯৩৭ এ বার্ণার্ড শ'র জীবনী প্রসঙ্গে লিখেছিলেন—

Multitudes of well-drilled demonstrators were served out their red scarves and flags. The massed bands blared. Loud cheers from sturdy proletarians rent the welkin. এই লোকের নাম উইনসটন চার্চিল।

একথা বার্ণার্ড শ' হজম করার পাত্র নন। তিনি এর জবাবে লিখেছেন—এ নিছক করানা মাত্র। ব্যাণ্ড নর, পতাকা নর, লাল চাদর নর, পথের চীৎকার ও রাশিয়ার এক প্রাক্ত থেকে অপর প্রাক্ত জ্বরণকালে শুনিনি। আমি অবগু হরং কার্ল মার্কন স্পরীরে হাজির হলে বে অভ্যর্থনা পেতেন তা পেয়েছি Hall of Nobles, দেখানে চার হাজার লোক ধরে। দেই ককে তিল ধারণের স্থান ছিল না। বস্তুতাদি সংক্ষিপ্ত। লুনাচারদকি বস্তুতা কর্লেন। তিনি এবং লিটভিন্ফ প্রায় সব সমরে আমার সঙ্গে ছিলেন, আমি আবিছার করলাম বে সোভিয়েটবাদের বিশ্বরুক্ব

সাফল্য স্বচক্ষে দেখার সময় তাঁদের হয়ে ওঠেনি। বথাসম্ভব ভক্ততা ও সৌজন্ত আমার প্রক্তি প্রদর্শিত হয়েছে অনাড়স্বর ভাবে। এই সফরের চূড়ান্ত হয়েছে ক্তালিনের সঙ্গে সাকাৎকারে। যে সাত্রী ক্রেমলিনের দোরগোড়ায় আমাদের পরিচর জিজ্ঞাসা করেছিল সেই একমাত্র সৈনিক সারা রাশিয়ায় আমার চোখে পড়েছে।

ন্তালিনের সঙ্গে বার্ণার্ড শ'র এই সাক্ষাৎকার বার্ণার্ড শ'র অক্ততম জীবনীকাব ভদতেয়ারের সঙ্গে ক্রেডবিক দি প্রেট বা নেপোলিয়নের সঙ্গে গায়টের সাক্ষাৎকারের ভুদ্যনীয় বলেছেন।

তথনকার কালে স্তালিনের সঙ্গে কাবো বড়ো একটা সাক্ষাৎকার ঘটতোঁ না, এখন কি ব্রিটিশ বা মার্কিণ রাষ্ট্রপৃতদেরও নয়। বার্ণার্ড শ'র দলবলের বেলায় কিন্ধ একটু ব্যতিক্রম করলেন স্তালিন। লর্ড প্রাষ্টর প্রভৃতি সকলেই এই স্থবোগ পেলেন। এই ব্যবস্থার বেশ একটা শাড়া পড়ে গোল। বার্ণার্ড শ' এই সাক্ষাৎকার করে নিজের কৌতুহল চরিতার্থ করতে চান নি। স্তালিনের ম্ল্যবান সময় নষ্ট করার তাঁর ইচ্ছা ছিল না। লর্ড এ্যাষ্ট্রর সব ব্যবস্থা ঠিক করলেন।

বার্ণার্ড শ' বলেছেন—স্তালিনের অদম্য রসজ্ঞান ছিল। তিনি রাশিয়ান নয়, স্থদশন কর্জিয়ান। স্তালিনের আফুতি বেন পোপ আর কিন্ত মার্শালের সংমিশ্রণ! স্তালিন আমাদের যা বলার আছে সব উলাড় করে দেওয়ার স্থরোগ দিলেন। তারপর করেকটি সংক্ষিপ্ত প্রশ্ন করলেন। তার এক বর্ণও ব্রলাম না। তর্ধ 'Wrangel' কথাটি বোঝা গেল, বলশেভিকদের বিক্তম্বে বে সব জেনাবেলকে ইংলও লেলিরে দিয়েছিল তাঁদের অল্লভম। স্তালিন ধ্সিতে উপছিয়ে পড়ছিলেন। তবে দোভাষী ভয়ে এমনই তটয় বে তার কম্পানা ওঠে সে শক্ষাধ্রী উপভোগ কয়া সেল না। লিটভিনক না থাকলে আমরা এতটুকু অন্থবাদ পেভাম না।

লেক্টী এ। ষ্টির স্তালিনকে বলেছিলেন—সোভিয়েটরা শিশুপালনের কিছু জানে না।

স্তালিন জানতেন, বাশিষার সব ব্যবস্থাই নিখুঁত। এই কথা শুনেইতার মুখ গল্পার হয়ে গেল, তিনি বজ্ঞনিনাদে যেন বলে উঠলেন—ইংলণ্ডে ত' শুনেছি আপনারা ছেলেদের প্রহার করেন।

লেডী এ্যাষ্টর দমবার বা ভর পাওরার পাত্রী নয়। শিশুপালন শিশুকল্যাণ ব্যবস্থা সম্পর্কিত জ্ঞান তাঁর নথাগ্রে। শিশুকল্যাণে তাঁর অনেক অর্থ ব্যর হয়েছে। তিনি স্তালিনকে বললেন—আপনি কোনো সন্থার রমণীকে লশুনে পাঠাবেন, আমি তাঁকে সবত্বে শিশিবে দেব কিভাবে পাঁচ বছরের শিশুদের পালন করতে হয়।

স্তালিন অভিভূত হয়ে পড়লেন। তিনি ব্যলেন এই প্রলয়ন্ধরী ব্যনী সত্যই হয়ত কিছু সাহায্য করতে পারেন। একটি থাম নিয়ে তিনি তার ওপর লেডা এ্যাইবের ঠিকানা লিখে দিতে অমুবোষ্ করলেন।

এই ঘটনাটি স্তালিনের ভদ্রতার পরিচায়ক মনে করলেন বার্ণার্ড শ' এবং তার দলের সবাই। ভদ্রতার থাতিরেই হয়ত ঠিকানা রাথলেন তারপর কেউ আর কোনে। থবরই করলেন না হয়ত।

কিছ এই দেশের নাম রাশির।। সেঙী এয়াষ্ট্রর একজন মছিলা পাঠাতে বলেছিলেন, তিনি লগুনে পা না দিতেই স্তালিন প্রায় যারোজন মহিলাকে পাঠিয়ে দিলেন শিকা গ্রহণের উদ্দেশ্তে। লেডী গ্রাষ্ট্রের সঙ্গে বিতর্কের পর লর্ড লোথিয়ান আলোচনা স্ক্রন্ধর নি তিনি ইংলণ্ডের উদারনীভিক বৃদ্ধিজীবিদের ত্দ'লার অসক ' তুললেন। সেই দলের দক্ষিণপদ্ধা বোগ দিয়েছেন সংবক্ষণশীলদের সঙ্গে আর বামপদ্ধীরা ভাগছেন অকুলে। ব্রিটেনে লেবরপার্টির দারাই প্রকৃত বৈজ্ঞানিক ভিভিত্তে কম্যানিজম প্রতিষ্ঠা ক্যা সন্থব। ব্রিটিশ রাজনীতির বছবিধ সমস্থার কথা।

বেশ চলছিল, সহসা লও লোথিয়ান বললেন—পোলিটব্যুরোর উচিত লয়েও জর্জকে রাশিবার আমন্ত্রণ করে এনে রাশিবার উন্নতি দেখানো। এই প্রস্তাবে স্তালিন হাসলেন।

ভালিন হেনেই বললেন—দেটা ঠিক সন্থব হবে মা, মাত্র দশ বছর আগে কথ বিদ্রোহে লয়েও জর্জের ভূমিকাটি গ্রীতিকর ছিপ না, জেনারেল য়াংগেল সেইকালে লালফৌজের বিরুদ্ধে সৈন্ম চালনা করেছেন। তাঁকে তাই সরকারী ভাবে আমন্ত্রণ জানানো যায় না, ভবে তিনি বে কোনো সময় বে-সরকারী ভ্রমণকারী হিসাবে এলে সব কিছুই দেখতে পাবেন।

এইবার সর্বপ্রথম বার্ণার্ড শ'কথা বললেন। তিনি হঠাৎ বলে উঠলেন—উইনসটন চার্চিলকে কি আম্প্রণ ভাননে। সম্ভব।

স্তালিন এইবার বলদেন—মি: চার্চিলও এইভাবে আসতে পারেন। তাঁকেও সব স্থাবোগ দেওয়া হবে। আমরা আবার তাঁর কাছে কুতজ্ঞ।

এই কৃতজ্ঞতার কারণটুকু বড় মজার। সে বছণত বাখ্যা করেছেন বার্ণার্ড দ' হেসকেথ পীয়রসনের কাছে। চার্চিল জাল ফৌজের দুড়া, সাজ পোষাক আর বন্দুক সরবরাহ করেছেন। চার্চিল যথন সেক্রেটারী অব ওয়ার তথন একশত কোটির ওপর মুদ্রা পার্লামেটে পাশ করিয়ে নেন। রাশিয়ার প্রতি-বিপ্লবী দলের সাহাব্যে। বলশেভিকদল বিজয় লাভ করে বৃটেনের সেই টাকায় জামা-কাপড়, অস্ত্র ইত্যাদি কিনেছিলেন।

এই সাক্ষ'ংকাবের মূল গায়েন লর্ড এগ্রন্টর তথন স্তালিনকে বোঝাতে শুরু করলেন—যদিও ইংলণ্ডের সংবাদপত্র সোভিয়েট বিষোধী, ইংলণ্ডে সোভিয়েটের প্রতি ধথেষ্ট শুভেদ্ধ। আছে। ভবিষ্যতে স্থাতামূলক বোঝাপ্ডার বথেষ্ট শুযোগ পাওয়া বাবে।

ৰাণীৰ্ড শ' এই সময় স্তালিনকে প্ৰশ্ন করলেন—আপনি ওলিভাব ক্ৰমওয়েলের নাম স্তনেছেন !

স্তালিন লিটভিনকের সঙ্গে আলোচনা করে ক্রমণ্ডরেল বৃত্ত'স্ত জেনে শিলেন। লিটভিনক সবিদ্মরে প্রশ্ন করলেন—এই প্রত্তা সে কথা বলার অর্থটা তেমন স্পষ্ট হল না।

বার্ণার্ড শ' বললেন—উদ্দেশ্যটা ব্রিবে বলি, আয়ার্গাণ্ডে ওলিভাব ক্রমওন্দেল সম্পর্কে একটি গাথা প্রচলিত আছে। ক্রমওন্তেল তাঁর সেনাশ্যিনীকে নাকি উপাদশ দিরেছিলেন—

Put your trust in God, my boys,
And keep your powder dry.

কর্মটি হাদয়ক্ষম করলেন স্তালিন। ইশ্ব ব বিশ্বাস সম্পর্কে কোনো মস্তব্য না করে বললেন—বালিয়ার বারুদ বথেষ্ট তথনো রাধা হবে । বার্ণার্ড শ' বলেছেন—স্তালিনের বস্ত্রান আগাগোড়াই বেশ স্পষ্টি ছিল। তিনি হাসতে পারেন, হাসতে জানেন। এব পর আমরা আধ্যটারও কিছু সময় বেশী ছিলাম, আমাদের ঘড়িতে দেখলাম তু ঘটা প্রত্রিশ মিনিট পার হয়ে গেছে।

সোভিষ্টে দেশ ভ্ৰমণ কালে বাৰ্ণাৰ্ড শ'ব মনোভংগী নিঃসন্দেহে সোভিষ্টে সরকারের প্রতি বিশেষ অমুকূল ছিল। তাঁর ধারণা এই বিবাট পরিবর্তনে তাঁব ভূমিকা কম নয়। তিনি বলতেন—I always regard myself as the real author of the Russian Revolution because I said that the best thing the soldiers could do in the 1914-18 war was to shoot their officers and go home; and the Russians were the only soldiers who had the intelligence to take my advice.

তা ছ'ড়া চেষ্টারটন যা বালছেন ভাও ঠিক, বার্ণার্ড **শ' মন্ধো সক**রে তাঁর জীবনের স্বপ্ন সফল হতে দেখেছেন, ভাই তাঁর আনন্দ শিশুর মতো।

যাভ্যাব সময় সালোটি শ' লেডী প্রাষ্ট্রবকে বিশেব অন্থ্রোধ জানিয়েছিলেন শ'ব প্রতি নজর বাখতে, কারণ বার্ণার্ড শ' ছাড়া পাওয়া শিশুর মতো আশপাশের অবস্থা বিশ্বত হয়ে বা ধুসী করে ফেলতে পারেন, নিজের শরীবের প্রতি অবহেলা করে ব্রে বেড়াতেও পারেন। কথাটি ঠিক, ত্রাসেলসে বার্ণার্ড শ' সহসা দলজ্ঞ হয়ে অক্সনিকে চলে যাছিলেন, লেডী প্রাষ্ট্রর ছুটে গিয়ে তাঁকে টেনে আনেন। বার্ণার্ড শ' বলেছেন আমাকে কাল মার্কসের সম্মান দিয়েছে রাশিয়া। লেডী প্রাষ্ট্রর বলেছেন—They received him as if he had been God, we were just no bodies, he was the great man—বার্ণার্ড শ' অবশু সকলের সমান মহাণ র প্রতি লক্ষ্য রেখেছিলেন।

বার্ণার্ড শ' ইংলতে ফিরে আসার পব ঠার মধ্যে সফরের স্বটুকু বাদ দিয়ে বে সংবাদ ইংরাজ ও মার্কিণ সাংবাদিকরা প্রচার করল,— ভা অভি হাস্তকর। দেড়ী এগাইর নাকি রাশিরায় বার্ণার্ড শ'র দাড়ি শুইরে দিয়েছেন।

বার্ণার্ড ল' স্বয়ং এই ঘটনা সম্পর্কে বলেছেন—রাশিয়ায়
সাংবাদিকের ভীড় এনে প্যাতনামা ব্যক্তিনের ওপর উৎপাত করে না,
এ পশ্চিমের ব্যাবি। তিন রাত্রি তিন দিন ট্রেলে কাটানোর পর
আমাদের স্নামের প্রব্যাঙ্গন হর। লেডী এগ্রন্টরের কাছে প্রয়োজনীয়
সাবান ছিল। আমি তাঁকে যথন বললাম, আমার সাটি বে ভিজে
গেল। তিনি বললেন—খুলে ফেলুন। আমি কোমর পর্যন্ত খুলে
ফেলুলাম আমার সাটি। আমরা ময় হয়ে কথা বলছি, গা মুছছি,
আলপালে তাকাইনি। সহসা কলরবে সচকিত হয়ে দেখি আনপালে
ভীড় জমে গেছে, স্বাই আমাদের দেখছে। তারা রিপোটার নয়,
সঙ্গে ক্যামেরাও ছিল না। তবে মেট্রোপোল হোটেলের সমস্ত কর্মচারী
এবং ময়ো সহরের বোধ করি যথাসন্তব লোক ভীড় করে এই দৃত্য
দেখছে। যভদুর জানি এর জন্য জ্বন্ত কোনো প্রেবেশ-মূল্য
ভারবা মিইনি।

এই প্রসঙ্গ শেব করি নিয়লিখিত কথোপকথনে। বার্ণার্ড শ' দিটভিনককে প্রশ্ন করলেন—Now tell me honestly would not you rather not have had a revolution at all?

দীর্ঘনি:শ্বাস ফেলে লিটভিনফ উত্তর দিলেন--- My whole



ভাতীয় ফুটবল প্রতিযোগিতা

বভের জাতীয় ফুটবল প্রতিষোগিত। সন্তোষ ট্রাফির মূল প্রতিষোগিতার থেলা গত ১৫ই অক্টোবর থেকে আসামের নওগা সহরে অরু হয়েছে। বিভিন্ন অঞ্চলের বিজয়া আটটি দল আলোচা প্রতিষোগিতায় অংশ গ্রহণ করিয়াছে। তুইটি গপে লাগের ভিত্তিতে সেমিকাইকাল পর্যান্ত খেলাগুলি অমুষ্ঠিত হবে। সেমিকাইকাল থেলা অমুষ্ঠিত হবে'নক আউট প্রথায়। প্রথম গুলে গত বংসরের বিজয়ী বাঙ্গলা, অন্ধু প্রদেশ (পূর্প্তে হারজাবাদ নামে খ্যাত), বিহার প্রদেশ এবং বিতীয় গুলে বোখাই, সাভিন্তিস আসাম ও

প্রথম গুণের খেলার বাললা দল অপরাজিত থাকিয়া শীর্ষন্থান জাধিকারীর সন্থান জজ্জন করে। প্রত্যেক খেলার তাহারা উন্নত ক্রীড়া নৈপুণ্য প্রদর্শন করেছেন এবং এ পর্যান্ত অফুন্তিত খেলার তাদের বিক্লছে কোন গোল হয় নাই। শেব খেলায় বাললার কাছে প্রাজিত হওয়ার অজু এই গুণে বিভীয় স্থান অধিকার করে। বিভার ছই প্রেণ্ট ও উত্তর প্রদেশ কোন প্রেণ্ট না পাওয়ায় তাহারা ব্যাক্রমে তৃতীয় ও চতুর্থ স্থান অধিকার করে।

দ্বিতীর গু,পে বোস্বাই আসাম ও কেরালার বিরুদ্ধে জরী ইইলেও গত্তবংসরের রানার্স আপ সার্ভিসেস দলের সাঙ্গ জমানাংসিত ভাবে থেলা শেব করতে বাধ্য হয়। সার্ভিসেস দল কেরালার বিরুদ্ধে জরী হইলেও আসামের সন্থিত পয়েন্ট বন্টনে বাধ্য হওরায় তাহারা মাত্র চারিপরেন্ট লাভ করিতে সমর্থ হয়। এই গু,পে বোস্বাই ও সার্ভিসেস দল মথাক্রমে প্রথম ও দ্বিতীয় স্থান অধিকার করায় তাহারা সেমিকাইল্যালে খেলিবার বোগ্যতা অর্জ্জন করে। সেমিকাইল্যালের ধেলার বাঙ্গলা সার্ভিসেস দলের এবং বোস্বাই অন্তের বিরুদ্ধে প্রতিদ্বিতা করিবে।

এই বংসর জাতীয় ফুটবল প্রেতিযোগিতার থেলার বিভিন্ন দল বেশ্ উচ্চমানের পরিচর দিরেছেন। শেব পর্যান্ত বে কোন দল খেলার বিজয়ীর আখ্যা লাভ করবেন, বলা যার না। তবে ৰাঙ্গলা দল যে চ্যাম্পিরানশিপের গৌরব অক্ষুর সাধার আপ্রাণ চেষ্টা করবে, তা বলাই বাহলা।

আরতি সাহার ইংলিশ চ্যানেল অতিক্রম

বাঙ্গলা তথা ভারতের প্রথম মেন্তে-প্রতিমিধি কুমারী আরতি সাহা ইংলিশ চ্যানেল অভিক্রম করে ভারতের মুব উজ্জ্ব করেছেন। তথু ভারত নর, এশিরাধ প্রথম মেন্তে-প্রতিমিধি হিসাবে ইংলিশ

চ্যানেল অতিক্রম করে বিশ্বের দরবারে তিনি যে ভারতের সন্মান বাড়িয়েছেন, ভার ভন্ম প্রতিটি ভারতবাসী গর্ববাধ করবে। কুমারী আরতি সাহা সাধারণ মধ্যবিত্ত ঘরের মেবে হয়েও একাগ্র সাংনা অটুট মনেশ্বল ও ঐকান্তিক আগ্রতের ফলে বে সাফস্য অর্জ্জন করেছেন, ভা সকলের কাছে উজ্জল দৃষ্টাস্তধরূপ হয়ে থাকবে।

আরতি সাহা এখন সিটি কলেজের হিতীর বাধিক কলার ছাত্রী। সাঁতারে এই অসামাত সাফল্য অজ্ঞানের ভত্ত প্রত্যেক ভারতবাসীর সঙ্গে আমরাও তাঁকে জানাই আমাদের অকুঠ অভিনন্দন।

সিংহল সফরে ভারতীয় ভলিবল দলের সাফল্য

ভারতীয় পুৰুষ ও মহিলা ভলিবল দল সিংহলে টেষ্ট খেলার 'বাবাব' লাভ করিবার কৃতিত্ব প্রদর্শন করে। মহিলা দল উপর্যুপরি টেষ্ট খেলায় সিংহলকে পরাজিত করে। পুরুষ দল প্রথম ও বিতীর টেষ্টে জয়লাভ করে। শেষ টেষ্ট খেলাটি পর্যাপ্ত আলোর অভাবের জন্ম প রত্যক্ত হয়। পুরুষ ও মহিলা দল সকল স্থানেই খেলার প্রাধান্য প্রকাশ করে। তাহার; মোট ৩-টি খেলার অংশগ্রহণ করিয়া সকল খেলার অপ্রাজিত থাকিয়া সফরের নৃতন রেকর্ড করেন।

পারফিল্ড সোবাদের বিরুদ্ধে সমন জারী

ওয়েই ইণ্ডিজ্বের খ্যাতনামা টেই ক্রিকেট খোলোরাড় গারক্তি সোবাসের বিরুদ্ধে ইাফোর্ডসায়ারের বিচারালয় হইতে কোটে উপস্থিত হইবার জন্ম সমন জারী করা হইরাছে। অভিষোগে ওঁচোকে বেপরোয়া গাড়ী চালাইয়া মৃথ্যু ঘটাইবার বিবন্ধ জবাব দিহি করিতে বলা চইয়াছে। এই প্রদক্ষে উল্লেখ করা বাম উক্ত হুর্ঘটনাম ওয়েই ইণ্ডিজের খ্যাতনামা টেই খেলোয়াড় কোলি মিধ মারা যান এবং কংগ্রুজন খেলোয়াড় গুরুতর রূপে আহত হন।

नक जनादत्रत हुकि

প্রাক্তন উইম্বলভেন চ্যান্সিয়ন যুক্তরাষ্ট্রের মিস এলেধিয়া গিবসন
ও ফ্রোরিদার ক্যারন স্থারগমও পেশাদারী বৃত্তি গ্রহণ করিয়াছেন।
বাক্ষরিত চুক্তি অমুষায়ী উপরোক্ত হুইজনে চার মাসে যুক্তরাষ্ট্রের
নক্ষ্টিটি সহর পরিভ্রমণ করে পরস্পরের সঙ্গে টেনিস খেলবেন।
বিখ্যাত বাল্পেট বল দল হারগেম গ্লোবটটার্সের সঙ্গে যুক্ত খেকে তাঁরা
বিভিন্ন স্থানে বাল্পেট বল খেলার আগে প্রদর্শনী টেনিসে অংশগ্রহণ
ক্যবেন। চুক্তি অফুসারে গিবসন প্রায় এক লক ও সারগ্রেপ
ভিশে হাজার ভলার পাবেন। এই প্রসঙ্গে উল্লেখ করা যায় বে^{*}ভ্যাক
ক্রেমারের দলভুক্ত সেরা পুরুষ পেশাদার খেলোয়াড় বিচার্ড গণজালেসও
এলেখিয়া পিরসংনের মত এত অধিক পরিমাণ পারিশ্রমিক পান না।

Of all liars, the smoothest and most convincing is memory.

—Olin Miller



রাজভাষা

ব্রভিনা সাহিত্যের সর্বাদ্ধীণ উন্নতির ক্ষেত্রে, গঠনের ক্ষেত্রে, পুষ্টির ক্ষেত্রে বস্থমতী সাহিত্য মন্দিরের অবদান **অনস্বীকার্য।** আজকের দিনে বাঙলা সাহিত্য যে মানে উপনীত হতে পেরেছে তার মুলে বস্তমতী সাহিত্য মান্দরের কৃতিত্ব যে কতথানি তার সাক্ষ্য দিছে ইতিহাস। স্থলভ মৃল্যে সাহিত্যের প্রচার করে সর্বসাধারণকে সাহিত্যের অমৃত্রস আধাদন করানোর যে মহৎ সঞ্চল কমুমতী সাহিত্য মন্দির একদা গ্রহণ করেছিলেন আছও তার বিরাম নেই। "রাজভাষা" বস্থমতীর প্রাণ প্রতিষ্ঠাতা পরমভটারক শ্রীশ্রীরামকুকের আশীর্বাদধ্য শিব্য স্বৰ্গীয় উপেন্দ্ৰনাথ মুখোপাধায়ের এক অনবত্ত কীৰ্ভি যাব মৃল্যায়ন সহজ্ঞসাধ্য নয়। পৃথিববৈ সমস্ত ভাষার মধ্যে সর্বাধিক প্রচারিত ইংরাজা ভাষার প্রসার বা তাংপর্য আজ জগংজোড়া, বিশ্ব-সভাতার ঐ ভাগার দানও অসীম, তা ছাড়া ঐ ভাগার সাহিত্যের একটি বলিষ্ঠ অপারহার্য ও শ্রেষ্ঠ অংশ রূপ পেয়েছে স্কুতরাং এ ভাষার গুরুত্ব স্বীকার করতে আনর। বাদ্য। এ ভাষা সম্পূর্ণরূপে আয়ত্তে আনার ব্যাপারে উপরোক্ত গ্রন্থটি এক অন্যাসাবারণ সহায়ক—একটি শব্দের মধ্যে সমগ্র ভাষাটিকে সহস্থ সবল ও বিস্তারি হভাবে সর্বসাধাবণের বোধগম্য করে তুলে ধরেছেন উপেন্দ্রনাথ। ভাব। শিকার্থীদের দল এই গ্রন্থটি থেকে বজন উপকৃত হবেন। এই গ্রন্থটি আয়ত্তে থাকলে ইংরাজা ভাষা সংক্ষে সংস্থানিপে পারদশী হওয়ার কোন অসুবিধা বা বাবা থাকতে পারে না এ বিশ্বাস আমরা পোষণ করি। है:बाको ब्राकबन, मकानित्र উक्रावन, मब्स्वत्र बावशाव, अध्यान-अनामो, পত্র রচনার কৌশগ, সাঞ্চেতিক চিহ্ন, বানান শিক্ষা, কথোপকথন ইত্যাদি সম্বন্ধে প্রাঞ্জন আলোচনা ইংরাজী ভাষা সম্বন্ধে সকলপ্রকার অক্ততার অন্ধকার দুব করে এ ভাষা সম্বন্ধে যথেই। পরিমাণে আলোক বিকীরণ করে। প্রকাশক—বত্মমতা সাহিত্য মন্দির, ১৬৩ বিপিন পান্তলী ষ্টাট। দাম-তিন টাকা মাত্র।

শুভনিৰ্মাল্য

বাঙলা তথা ভাবতের অবিশ্ববণীয় কবিদের মধ্যে নবীনচন্দ্র সেন
একটি বিশেষ নাম। গত শতাকীতে বাঙলা কাব্যের মবরূপায়ণ
সম্ভবণর হয়েছিল যে কীতিমান সন্তানদের সাধনার নবীনচন্দ্র তাঁদেরই
অক্তব্য। বাঙলাদেশের কাব্য জগতে তাঁর বিরাট অবদানের ইতিবৃত্ত
ইচিহাসে অমর হয়ে আছে। নবীনচন্দ্রের সেখনী কেবলমাত্র কাব্য
স্থাই করেই ক্ষান্ত হয়নি, তাঁর লেখনী থেকে নাটিকাও জন্ম নিয়েছে।
ভক্তনির্মান্ত্য গীতিনাটাটি তাঁর নাটিকা বচনার দক্ষতার চিহ্ন বহন করে।
১৯০০ থুটাকে পুত্রের বিবাহেশ্বেস উপক্ষেক সীতিনাটাটি রচিত হয়।

বিবাহেশংসবকে পটভূমিকা করেই গীতিনাটাটি রূপ পেয়েছে। ৰবীনচন্দ্ৰের জীবনী, সাহিত্যস্থি নিয়ে এতাবং অনেক আলোচনাই হয়েছে কিন্তু সার্থক গীতিনাট্যকার হিসেবে তাঁর সম্বন্ধে বিশেষ কোন আলোচনা হয়নি বললেই চলে। বলা বাছলা মাত্র যে বাঙলা সাহিত্যের তংকালীন মানামুসারে ভভনিশাল্যকে বিচার করলে দেখা বাবে বে ভভনিশাল্য এক অণুর্ব সাহিত্য স্ষ্টি। মহাকবির দেহাস্তের অর্ধ শতান্দীকাল অভিক্রান্ত হবার পর সম্পাদনকারী শ্রীদীপককুমার সেন এই স্বস্থানত অথচ প্রায় বিশ্বত গ্রন্থটি পাঠক স্থাকে নতুন করে উপহার দেওয়ার জক্তে সকলের ধন্তবাদ লাভ কন্নবেন। গ্রন্থটি সম্পাদনার ক্ষেত্রেও তিনি যথেষ্ট নৈপুণাের পরিচয় দিয়েছেন। চির প্রণমা লোকাম্বরিত সাহিত্য রথীদের এই জাতীয় মূল্যবান গ্রন্থগুলিকে বিশ্বতির অতল অন্ধকার থেকে যত উদ্ধার করা যায় ততই দেশের পক্ষে মঙ্গল। এদের প্রসার ও প্রচাবের ব্যাপক্তার দিকে বত্ববান হওয়ার সময় এসেছে। ডক্টর ঐাযভীন্দ্রবিমল চৌধুরীর ভূমিকা বচনা সম্পাদিত গ্রন্থটির জীবৃদ্ধি করেছে। প্রকাশক নবীনচন্দ্র গ্রন্থাগার, ৪৪-২, ক্লাইভ কলোনী, কলিকাতা--২৮। দাম আট আনা মাত্র !

উনবিংশ শতাব্দীতে বাঙলার নবজাপরণ

উনবিংশ শভান্দীর কাছে বাঙালীর ঋণ অপরিশোধনীয়। উনবিংশ শতাব্দী সর্ববিষয়ে যে ভাবে বাঙালীকে ভরিয়ে তুলেছে অক্সাক্ত শতাব্দীর ইতিহাসে তার তুলনা মেলে না। উনবিংশ শতাব্দীতে বাঙ্গার জাতীয় জীবনে নবজাগরণের এক জোয়ার এল-তার ফলেই বাঙালীর মননভূমি হতে লাগল উর্বর থেকে উর্বরতর। বিভিন্ন মনীয়ী, চিস্তানায়ক, দিৰুপালবুন্দের শুভ আবির্ভাব উনবিংশ শতাব্দীর গৌরবময় এতিহের উজ্জল নিদর্শন। উপরোক্ত পটভূমিকা অবলম্বন করে বাঙলাভাষায় এতাবং অসংখ্য গ্রন্থ রচিত হয়েছে। আমাদের আলোচ্য-খ্যাতনামা কবি ডক্টর স্থনীলকুমার গুপ্তের গ্রন্থটিও উপরোক্ত পটভূমি অবলম্বন করেই রচিত। অবশ্র এ কথা অনৰীকাৰ্য যে ডক্টর গুণ্ডের প্রস্থৃটি যথেষ্ট পরিমাণে নিজৰতা, বিশিষ্টতা ও স্বকীয়তার দাবী রাখে। ১৮৬০ গৃষ্টাত্ম পর্যন্ত লেখকের আলোচনার পরিধি। গ্রন্থটি রচনায় লেখককে প্রভৃত্ত পরিশ্রম স্বীকার করতে হয়েছে, বলা বাছল্য সমগ্র গ্রন্থে তার প্রমাণ পাওয়া ৰায়। গ্ৰন্থটি সাহিত্যানুৱাগী ও ছাত্ৰ সাধারণকে বুগপৎ ভাবে আনন্দ দেবে ও উপকৃত করবে। বাঙালীর নবজাগরণের অন্তর্নিহিত মূলসূত্রটির বিশ্লেষণের ক্ষেত্রেও লেখক অসামান্ত দক্ষভার পরিচয় দিয়েছেন। ১৮০১ থেকে ১৮৬০ পর্যস্ত বাঙালীর সাহিত্য, শিক্ষা, বাজনীতি, সমাক, ধর্ম আন্দোলন সম্বন্ধে স্থাচিন্তিত ও স্থবিস্কৃত জালোচনা গ্রন্থটিতে সন্নিবেশিত হরেছে। প্রকাশক—এ মুখার্কী য়াণ্ড কোং প্রাইভেট লিমিটেড, ২ বন্ধিম চ্যাটার্কী খ্রীট। দাম— সাত টাকা মাত্র।

রম্যাণি বীক্ষ্য (সৌরাষ্ট্র পর্ব)

ভারতবর্ষের প্রভিটি ধূলিকণার সঙ্গে মিশে আছে একদিকে বৈশিষ্ট্য অক্তদিকে বৈচিত্রা। স্বস্থতীর উপাসকদের ভারতমুক্তিকার মহিমা লিপিবদ্ধ হল সাহিত্যের পাতায়। একটি শতর বিভাগ সৃষ্টি হল ভ্রমণ কাহিনী। তারপর একাধিক লেথকের অবদানে এই বিভাগটি পৃষ্টিলাভ করে চলেছে। ভ্রমণ-কাহিনীর উল্লেখযোগ্য লেখকদের মধ্যে সুসাহিত্যিক সুবোধকুমার চক্রবর্তীর নাম অন্তল্লেখা নয়। তাঁর রম্যাণি বীক্ষা প্রথম প্রকাশের সঙ্গে সঞ্জেই সাড়া জাগিয়েছিল সাহিত্যজগতে। বর্তমানে রম্যাণি বীক্ষার সৌরাষ্ট্র পর্বটি প্রকাশিত হয়েছে। সাহিত্যের মধ্যে ভ্রমণ-কাহিনীর বে একটি বিশেষ শাসন স্বীকৃত স্থবোধকুমার চক্রবর্তী সেই আসনেরই মর্যাদার্শ্বির ক্ষেত্রে সহায়তা করলেন এই গ্রন্থটির মাধ্যমে। বচনার প্রসাদগুণে সমগ্র গ্রন্থটি যথেষ্ট বসসমুদ্ধ হয়ে উঠেছে। গ্রন্থটি সারবান, তাৎপর্যপূর্ণ এবং অতীব সুথপাঠ্য। আলোকচিত্রও গ্রন্থে যুক্ত করা হয়েছে। বর্ণনা বেমনই বলিষ্ঠ দেমনই সাবহীল। বর্ণনভঙ্গী এবং বচনাশৈলী পাঠকচিত্তকে আৰুষ্ট করবার ষথেষ্ট শক্তি বাখে। গ্ৰন্থটিৰ ইতিহাস মৃল্যও অসীম। প্ৰসেক্তমে নানাবিধ ঐতিহাসিক তথা পরিবেশন করে লেথক গ্রন্থটিকে সর্বাঙ্গ স্থক্তর করে তুলেছেন। গ্রন্থের আঙ্গিকটিও গভামুগতিক নয়। ভ্রমণ-কাহিনী হলেও গ্রন্থটি উপকাসগন্ধী। টকরো টকরো সংলাপের মধ্যে বিভিন্ন স্থানের মাহাত্মা, বৈ শিষ্ট্য ও ইতিহাস বর্ণনায় লেখক অনক্রসাধারণ ক্রতিত্বের পরিচয় দিয়েছেন। প্রকাশক এ, মুথার্জী য়াত কোং প্রাইভেট লিমিটেড, ২ বঙ্কিম চ্যাটাজী ষ্টাট। দাম ছ'টাকা মাত্র।

জাতিশ্মর কথা

জাতি মরবাদ সম্পর্কে মানুষের জিন্তাসার অস্ত নেই। জীবিত্ত
মানুষের মুখে তার গত জন্মের ইতিকথা আজও যে পরিমাণ বিশ্বর
সঞ্চার করে তার ভূলনা মেলা ভার। বিগক্ত জীবনের পরিচর, কাহিনী,
ঘটনাবলী সম্বন্ধে ত্র্বার কৌতৃহল এক চিরস্তন প্রস্তির রপ নিরে
মানব মন অধিকার করে আছে। জাতি মরবাদ নিরে আজ পর্যন্ত
হুল আলোচনা হরে গেছে, অসংখ্য গ্রন্থ আজুপ্রকাশ করেছে তর্
মানব মনের এই কোতৃহলের কুধা মেটে নি, তাতে ভাটা পড়ে নি,
ভা এখনও অক্ক্রন্ত। এই জাতি মরবাদ সম্বন্ধেই উপরোক্ত গ্রন্থটি
রচনা করেছেন প্রীম্বনীলচন্দ্র বস্থ। গ্রন্থে জাতি মরবাদ সম্বন্ধে স্ক্র্মা বিশ্লেষণ, বিজ্ঞানধর্মী বাধ্যা এবং সারবান আলোচনাদি উক্ত শান্ত্রকে
সাধারণ পাঠকের কাছে বোধগম্য করে ভোলে। লেখকের সহজ্ব সরল ধারায় ঐ শান্তের বিভিন্ন ত্বন্ধ জটিল-বিষয়গুলি সম্বন্ধ আন্তেহনীল এই গ্রন্থ পাঠে তাঁরা উপরোক্ত বিষর সম্বন্ধে প্রভৃত জ্ঞান জর্জন করতে পারবেন। ক্রেক্টি জাতি মরের কোতৃহলোদীপক কাহিনী পরিবেশিত হরেছে। প্রকাশক—দি ঘাটনীলা কোশ্পানী, ও ম্যান্ধো লেন। দাম—চার টাকা পঁচাত্তর নহা পংসা মাত্র

ताना जल गिर्क गाँछ

বাঙ্কা দেশের বর্তমানকালের প্রতিষ্ঠাবান সাহিত্যসেবীদের মধ্যে প্রফুল রায় অক্সভম এবং করণভমও। ইতিপূর্বে কয়েকটি স্থলি**বিভ উপভাসের মাধ্যমে তিনি যথেষ্ঠ স্থনামের অধিকাণী হয়েছেন। আলোচা** উপকাসটি আন্দামানকে কেন্দ্র করে লেখা। আন্দামানকে কেন্দ্র করে আজ প্রান্ত বাঙলা ভাষায় থ্য নগণ্য সংগ্যক গ্রন্থই আরপ্তশাশ কবেছে, এই উপন্যাসটি ভাদেনই মধ্যে একটি বিশেষ আসন দাবী করার যোগাতা ৰহন করে। আয়তনের দিক দিয়ে গ্রন্থটিইবিরাট হলেও ব্রচনাশক্তির উৎকর্ষে পাঠকের কোথাও গৈর্যচ্যতি ঘটে না। কেবলমার লেখন ই প্রফল্ল বায়ের একমাত্র সম্পদ নয়, বৃকভরা অমুভতি তাঁর এক বিরাট সম্পদ আব সেই মন্তভুতিরই পরিচয় তিনি লিপিবদ্ধ করে গেলেন এই গ্রন্থটির পাতার পাতার। উপন্যানের কয়েকটি আশবিশেষ পাঠকচিত্ত গভীর ভাবে স্পর্ণ করে। সমগ্র শালামান যেন চোখের সামনে ভেসে ওঠে। লেখকের বচনাশৈলী মনোরম। সকল দিক দিরে আন্দামানকে লেখক সাহিশ্যে পাতায় যে ভাবে প্রকাশ করেছেন সেই প্রকাশভঙ্গী নিংসলেতে অভিনন্দনীয়। স্থাবাধ দাশগুরের প্রচ্ছেদ পরিকল্পনাও প্রশংসাই। গ্রন্থের নামকবণ কথেছেন কবি শ্রীঞামের মিত্র। প্রকাশক—ভরুদাস চট্টোপাধারি য়াওি সন্থ। ২০৩I১I১ কর্ণভিয়ালিশ ষ্ট্রটি। দাম আটি টকো পঞ্চাশ নয়া প্রসা মাত্র ।

একান্ত আপন

আছ কর দিনের বাঙলা সাহিত্যকে সমৃদ্ধিব পথে অগ্নসর হতে বারা সহায়তা করেছেন স্থবাছ বন্দোপাধ্যার তাঁদেওই অক্সতম। সার্থক কথাশিল্পীরপে যথেষ্ট সনামেব ইনি অধিকারী এবং সাহিত্যে দরবারে একটি মূল্যবান আসন গ্রহণে সমর্থ হয়েছেন। আলোচ্য উপক্রাসটি সর্বভারারে তাঁর স্থনাম অস্ত্র্য রেখেছে। এক অপূর্ব পটভূমিকা অবলম্বন করে উপক্রাসটি বচিত। লেখকের ভাষা, ভারধারা, বক্রব্য সরকিছ্ই বৈশিষ্টোর পবিচায়ক। লেখকের ভাষা, ভারধারা, বক্রব্য সরকিছ্ই বৈশিষ্টোর পবিচায়ক। লেখকের তাঁর স্থলায়ভূতি, তাঁর অন্তর্গৃষ্টি বলিষ্ঠ দৃষ্টিভুলীর চিক্ষ উপক্রাসটির পাতায় পাতায় বহন করছে। চবিত্র-চিত্রণে, কৌশনের ঘাত-প্রতিঘাতময় আলেখ্যের ভাষার মাধ্যমে প্রকাশের ঘটনাদির ধারা রক্ষণে লেখক যথেষ্ট নৈপুণার পরিচয় দিয়েছেন। প্রকাশক— ত্রিবেণী প্রকাশন, ২ শ্রামাচরণ দে খ্রীট। দাম তিন টাকা মাত্র।

ফুলবর্ষিয়া

ব'ওলা সাহিত্যেব ছোটগল্লেব দববাবে শক্তিমান কথাশিল্লী
সমবেশ বপ্ধ যে আজ একটি বিশিষ্ট আগনেব অধিকারী এ সযকে
নতুন করে কিছু বলা অথিহীন। ছোটগল্লেব কেত্রে সমবেশ বস্থাই
বিশেষত্ব সম্বন্ধে পাঠকমহলও সবিশোষ অবহিত আছেন। ফুলব্যিরা ভারে ছোটগল্লের একটি সংকলন, এতে মোট ছ'টি গল্ল স্থান পেরেছে। গল্লগুলি উচ্চাঙ্গের, স্বকীয়তায় ভবপুর এবং যথোচিত বৈচিত্র্যপূর্ব। চবিত্র স্থাইতে, ঘটনা সংস্থাপনে এবং সংলাপ ধোজনায় লেখক ভারে সভাবস্থাত নৈপুণাই দেখিয়েছেন। লেখকের দৃষ্টিভালী প্রশংসাছ গল্পগল্প মধ্যে কাঁবি দৰদী মনেবই ছারা দেখা যায়। স্থা-গ্রংগ, ছাত-প্রতিষাত, আনন্দ-বেদনাকে বিবে বে জীবন-সেই জীবনকে বিভিন্ন দৃষ্টিকোণ খেকে খ্রুটিয়ে দেখতে চেষ্টা করেছেন লেখক, দবদী মনেব সঙ্গে সঙ্গে লক্ষানী মনেবপ্র পরিচর দিয়েছেন ভিনি। জীপনেব সঙ্গে সঙ্গে আর পারিপার্থিক আবেষ্টনীও গল্পগলির মধ্যে চিক্তিত হয়েছে জসীম দক্ষতা সহকারে। গ্রীগণেশ বন্ধ প্রচ্ছেদচিত্র জ্পানে ব্রেষ্ট নিপ্রাের পরিচর দিয়েছেন। প্রকাশক-কালিকাটা পাবিদশার্স, ১০ ভামাচবণ দে খ্রীট। দাম-ছাড়াই টাকা মাত্র।

অগ্রদৃষ্টি

"হ্রাভ" আর "হ্রাভনট"দের বিবোধ চিরকালের। হ্রাডেদের দল দর্পে অন্ধ, চিরকালের জন্মে ছাভনটদের ভারা পায়ের তলার চেশে রাখতে চায়, কিন্তু ছাত্তনটদের অস্তবাত্মাও পীচনে অর্করিত হুরে ক্রেগে ওঠে, মুরণ পণ করে, মেরুদণ্ড সোকা করে দাঁড়ায় শোষকের বিরুদ্ধে। এই ঘটনাই আজকের দিনের এক বাস্তব সত্যের রূপ নিয়েছে, তারই প্রতিচ্ছবির প্রতিফ্সন হয় সাহিজ্যের পাভায়। শক্তিমান লেথক স্থনীল ঘোৰের "অক্তদৃষ্টি" উপকাদটি পাঠ করলে উপবোক্ত মস্তুব্যের **অর্থ** পরিকার হয়ে বায়। শ্রমিক-মালিক বিরোধ এই গ্রন্থের মুখ্য উপজীবা হলে আরও একটি বিষয়ে লেখক আমাদের দৃষ্টি আকর্ষণ করেছেন বে আমাদের মৃত সুস্থ জীবন যাত্রার পরিবর্তে যাবা স্থানিত জীবনধাত্রা বেছে নিল, তাদের জ্বন্তেও ভাববার একটা দিক আছে। लथक वकीं। ह्रालाक कंख करत वह मध्यानारात उत्काम नालाहन व এই পথ ভারা স্বেচ্ছায় বেছে নেয় নি. নিয়েছে পারিপার্শ্বি দ অবস্থাকে অস্থীকার করতে না পেরে, তিনি স্পষ্ট দেখিয়েছেন যে সময় ও সংবাগ পেলে ভারা জনায়ালে তাদের বিগত জীবনে ফিবে আদতে পাবে। লেখকের দৃষ্টিভঙ্গী উন্নত, বক্তবা কোবালো এবং দবদ অমুভৃতি সাপেক। উপত্রাসটিঃ মাধানে আজকের দিনের সমাজের নানাবিধ পদদ, মুনীতি ও বাভিচারের এক নগ্নচিত্র লেথক ফুটিয়ে তুলেছেন। এবং সেই আচেষ্টার লেখক জগুৰুক্ত হয়েছেন, একথা বলতে বাধা নেই। প্রকাশক—ভাশনাল পাবলিশার্গ, ২০৬ কর্ণওয়ালিশ খ্রীট, দাম है दोका माज।

শৃঋলিতা

ভধু একজন আইনজ্ঞ বা শিক্ষাপ্রতী ছিসেবেই ডক্টর প্রতাপচক্ষ চল্লের খ্যাভি সীমাবদ্ধ নয়, সাহিত্যসেবা হিসেবেও তাঁর খ্যাভি স্থানিক । দীর্ঘকাল সাহিত্য সেবা করে সাহিত্যের দ্ববারেও আঁজ তিনি সম্মানের অধিকারী হয়েছেন । উপরোল্লিখিত উপগ্রাসন্তির পটভূমিকা ঐতিহাপিক । শিবাজীর বর্গ লাভের পর তাঁর আসন ব্যন তাঁর অযোগ্য, ইন্দ্রিয়পরায়ণ, অপদার্থ পুত্র শক্ষাজীত অধিকাঞ্ছক স্নেট সময়ে একদিকে মোগল মারাঠা সংঘর্ষ অক্সদিকে পর্ভুগীজনের সর্বপ্রাদী শোবণ—এই ত'য়ের যোগাযোগে গোয়ার আভাজ্বর'ণ সর্বশিষ্মক অবস্থা কি রূপ নিয়েছল সেই সম্বভীর একটি পূর্ণাঙ্গ চিত্র ভর্টীর চন্দ্র এই উপভাসিত্রির মধ্যে কৃত্রিয়ে ভূলেছেন । গোরার তংকালীন সামগ্রিক পরিবেশ, রীভিন্নীতি, আইন, সমাজ এবং সর্বোপরি পর্ভুগীজনের বিক্লছে গোরার মৃত্তি সংশ্লামের বিশাদ, চমকপ্রেদ ও জক্ষপূর্ণ বিবরণ লেখক উপভাসের মাধ্যমে পাঠক সমাজের সামনে ভূলে ধরেছেন। ক্যাথারিনা ও অন্মুব মত প্রেমের ছটি প্রকৃত পুরুরিরীর চরিত্র উপরাদে মুক্ত হওরার উপরাদটি আরও আকর্ষনীর হরে উঠেছে। পঞ্জিত বেলভেলকার তো একটি অপূর্ব চরিত্র স্কৃষ্টি। তথু মাত্র এই একটি চরিত্র স্থাইর জন্তে লেখক পাঠকসমাজের আন্তরিক হল্পবাদ হাবী করতে পারেন। আমরা আনজের সঙ্গেই এ কথা বলতে পান্তি যে ইতিহাস-গন্ধী বে কটি সার্থক উপরাদ বাঙলা সাহিত্যের মর্বাদাবৃদ্ধি করে এসেছে এভাবৎকাল, শৃথালিতা তালেরই সংখ্যাবৃদ্ধি করল। সমগ্র উপরাদটি লেখকের কৃতিখের, কুললভার ও ক্ষমভার স্কুল্পই আক্ষর বহন করছে। প্রকাশক রীডার্স কর্ণার, ৫ শন্তর ঘোষ লেন। দাম তিন টাকা পঞ্চাশ নয়া পথ্যা মাত্র।

চা—মাটি—মামুষ

কি শিক্ষিত, কি অশিক্ষিত, কি ধনী কি নির্ধান, কি পুরুষ কি মহিলা, চায়ের 'গভিবিধি সর্বত্রই অবারিও। আবাল-বৃদ্ধ-বনিতা নিবিশেষে প্রায় সকলেই চায়ের অনুবাগী। ভারতের যে যে অঞ্লে চাএর জন্ম হয় সেই উৎপাদন কেন্দ্রগুলি বিবিধ বৈচিত্রো ভরপুর— পাঠক সমাজকে সেই বৈচিত্ত্যের সন্ধান দিয়েছেন শ্রীবীরেশর বস্থ আলোচ্য উপন্যাসটিব মাধ্যমে। চা-বাগান এই উপস্থাসের পটভূমিকা। চা-বাগানের নরনারী, তাদের জীবনের হাসি-কালা, সুধ-তৃ:খ, আনন্দ-বেদনার এক সুস্পষ্ট বাস্তব চিত্র দেখক এখানে যথেষ্ট কুতিছের সঙ্গে পরিবেশন করেছেন। এর নায়ক **জী**বনের প্রতি পদে পদে তিক্ত অভিজ্ঞতা সঞ্চয় করল, আঘাত পেল ভালবাসার ক্ষেত্রে, বারংবার পেল লাজুনা ভবু ভালবাসার নেশা ভার মন থেকে গেল না। এই হাদয় পাৰী চরিত্রটির মাধ্যমেই জীবনের এক বিরাট সত্য দিনেৰ আলোৱ মত স্পষ্ট হয়ে ওঠে। চা, মাটি আৰু মানুবের ষে নিবিড় সংবোগ, তার সূত্র অবেষণে লেথক চিছ তৎপর। উপকাসটি বৈশিষ্টোর দাবী করতে পারে, কাহিনী স্নদয়স্পর্নী, লেথকের আন্তরিকভাও প্রশংসনীয়। সুবোধ দাশগুণ্ডের প্রচ্ছদচিত্র অঙ্কনও স্বন্দর 'হয়েছে। প্রকাশক-কথামালা প্রকাশনী, ১৮-এ কলেজ ষ্টীট মার্কেট। দায-চার টাকা মাত্র।

অচিরা

সার্থকনামা কবি প্রভাতবোদ্ধন বন্দ্যোপাধ্যায়ের কবি খ্যাতি আজকের নয়, দীর্থকাল ধরে সাহিত্যের তিনি সেবা করে আসছেন এবং তাঁর সেবার কাব্য সাহিত্য লাভবায়ই হয়েছে। বাঁদের কবিতা ভাবে, ভাবায়, কয়নায়, বয়য়নায়, চিত্রশে সকল দিক বিয়েই য়য়েছার্গ হয়ে ওঠে প্রভাতমোহন সেই কবিদের-ই অল্যভয়। তাঁর প্রতিশার্টি কবিতাকে একত্রে সংকলিত করে "আচিয়া" গ্রন্থটির সৃষ্টি হয়েছে। কবিতাহলি অপাঠ্য, চিত্তশ্পার্শী এবং বৈশিষ্ট্যবাম। বলা বাহল্য "আচিয়া"র কবিতাহুলি প্রভাতমোহনের কবি হিসেবে স্করাম অক্ষ্ম রেখেছে। প্রভাতমোহন জীবন দেবতায় একনিই উপাসক, তাঁয় কাব্যে সত্য, ও শিব স্কল্পরের মহিমা মুর্ক হয়ে ওঠে। তাঁর সৌক্রবাধ, শ্বন্ধরম এবং প্রকাশকোশল সাধ্বাদের দাবী রাখে। রসজ্ঞ ও স্থবোদ্ধাদের দ্ববারে তাঁর কাব্য তার ব্যাপ্রাণ্য সমাদরই লাভ কক্ষ এই কামনাই করি। প্রকাশক শার্ষি লাইত্রেরী, ১০-বি, ক্লেজ রো। দাব চাব টাবা মাত্র।

১লা আম্বিন (১৮ই সেপ্টেম্বর): পশ্চিমবঙ্গের বক্সা-বিধনন্ত অঞ্চলসমূতের সমস্তাবলী পর্ব্যালোচনাম জন্ম রাজ্য সরকার কর্তৃত্ব মন্ত্রিগভা সাব কমিটি গঠন—চেয়ারম্যান মুখ্যমন্ত্রী ডা: বিধানচন্দ্র হার।

২রা আধিন (১৯শে সেপ্টেম্বর): পশ্চিমবঙ্গ বিধান সভায় বিরোধী পক্ষের অধিকাংশ দলেব পক্ষ হুইতে বিধান সভা দপ্তরে রাজ্যের কংগ্রেসী মন্ত্রিসভার বিকাদ অনাস্থা প্রস্তাবের নোটিশ দাখিল।

তরা আছিন (২০শে সেপ্টেম্বর): বর্দ্ধমান; নদীয়া, স্থগলী, মেদিনীপুব জ্বেকার বিস্তীর্ণ অঞ্চল অভাবনীয় ব্যার প্লবিত হওয়ার ফলে লক্ষ লক্ষ নব নাবীর অবর্ণনীয় তুঃব-মুদ্দশাব সংবাদ।

৪ঠা আখিন (২১শে সেপ্টেম্বর): পশ্চিমবক্স িধান সভাব শ্বংকালীন অধিবেশনের প্রথম দিনে খাল্য আন্দোলন সম্পর্কে পুলিশের গুলীবর্ষণ ও লাঠিচালনা প্রসক্ষে বিবে।নী সদক্ষদের আনীত মূলতুবী প্রস্তাবকে কেন্দ্র করিয়া কংগ্রেস ও কম্যুনিষ্ট সদপ্যদের মধ্যে শেষ অববি থতাযদ্ধ।

৫ই আখিন (২২শে সেপ্টেম্বৰ): পশ্চিম্যর ম্লাবৃদ্ধি ও ছর্ভিক প্রেভিবোধ কমিটির আহ্বানে থাজেব দাবীতে এবং সরকারী দমন নীতির প্রান্তবাদে ক'লকাতাব বিবাট ছাত্র মিছিল—বিধান সভার অন্তিদ্ধে ১৪৪ ধাবা ভল কবিয়া ১১৭ জনেব গ্রেপ্তাব বরণ।

ভই আখিন (২০শে সেপ্টেম্বর): ভাষার ভিত্তিতে পশ্চিমবঙ্গের পুনর্গীনের দাবী জানাইয়া পশ্চিমবঙ্গ পুনর্গীন সংযুক্ত পরিষ্টের পক্ষ ইইতে প্রধান মন্ত্রী শ্রীনেহরুর নিকট আরকলিপি পেশ।

৭ই আখিন (২৪শে সেপ্টেম্বর): পশ্চিমবঙ্গের থাজসচিব শ্রীপ্রফুলচন্দ্র সেনের পদতাাগের জ্ঞা বিরোধা পক্ষের দাবী মানিয়া লইতে ডা: রায়ের ক্ষমন্মতিস্চক বোষণা।

৮ই আখিন (২৫শে সেপ্টেখর): চীনা ফোজের ভারতীর সীমানা লজ্মনে দিলাতে কংগ্রেস ওয়াকিং কমিটির বৈঠকে গভীর উত্তেস প্রকাশ।

কলিকাতার ভারতীর কম্নিষ্ট পার্টিব কেন্দ্রীর কমিটিব বৈঠকের অভিমত-ভারত চান সীমান্ত সম্পর্কিত বিবেধ উত্তর রাষ্ট্রের বন্ধুত্পূর্ণ আলাপ-আলোচনা মার্কত মীমাংসা সম্ভব।

১ই আৰিন (২৬শে সেপ্টেশ্বর): পাঞ্জাবের নবীন নগবে নিথিল ভারত কংগ্রেস কমিটির অধিবেশন শ্রক—তৃতায় পঞ্চবাধিক পরিকল্পনার ক্ববি ও শিল্পের উপর সমান গুরুত্ব আরোপ করা হইবে বলিয়। সদক্ষদের অভিমত প্রকাশ।

১০ই আধিন (২৭শে সেপ্টেম্বর): চীন-ভারত সীখানা বিরোধ সম্পর্কে কংগ্রেস-ওয়াকিং কামটির সংশোধিত প্রস্তাবে ঘোষণা—ভারত সীমাজে চানাদের আক্রমণ সর্বভোভাবে প্রাভরোধ করা হইবে।

১১ই আখিন (২৮শে সেপ্টেম্বর): পশ্চিমবঙ্গ বিধান সভায় রাজ্য সরকারের বিরুদ্ধে বিরোধী পক্ষের আনীত তৃইটি অনাস্থ। প্রস্তাব ভোটাধিক্যে অগ্রাহ্ম।

আই, এফ, এ, শীক্ত ফাইকাল (মোহনবাগান দনাম ইপ্তবেদল) খেলা অনিধিপ্তকাৰ প্ৰগিত—আই. এফ, এ ট্ৰিমেণ্ট কমিটিব দিয়াস্ত।

১২ই আখিন (২৯শে দেপ্টেম্বর): পশ্চনবন্ধ মন্ত্রিসভার বিরুদ্ধে জনাস্থা প্রস্তার রাজ্য বিধান পরিবদে বিনা ডিভিশ্নে অগ্রাহা।

(फ्रान-विक्रिक्ण ©

আখিন, ১৩৬৬ (সেপ্টেম্বর-অক্টোবর, '৫৯)

মুর্নিদাবাদ, ২৪-পরগণা, বর্দ্ধান, নদীয়া, হাওড়া প্রভৃতি জেলার পাঁচ লকাধিক একর জমি জলমগ্র —ছই লকটন ধান বিনষ্ট হওয়ার আশাকা।

১৪ই আখিন (১লা অক্টোবর): পশ্চিমশঙ্কের গাল্পের অঞ্চলে বিশেষভাবে ২৪-প্রগণা, হাওড়া, হুগলা, মেদনাপুর জেলার তৃই দিবস্ব্যাপী প্রলয়স্করা ক্ষাবাত্য:— মসংখ্য লোক হতাহত, শত শত শত খং-বাড়ী বিধবস্তা।

ম্যাক মাজন কাইনই ভাবত ও চীনের সীমারেখা—প্রধান মন্ত্রী জীনেহক কর্ত্তক চীনা প্রধান মন্ত্রী চৌ এন লাই-এর পত্রের কবাব।

১৫ই আখিন (২রা অস্টোবর): সহ্পারী বেলওয়েসচিব মিঃ শাহ নওয়ান্ধ থাঁ-এর ঘোষণা—শিয়ালদ্য ডিভিশ্নে সম্ভবতঃ তিন বংসবের ভিতর বৈত্যাতিক ট্রেণ চসাচল কহিবে।

মহায়া গান্ধীর একনবতিতম জন্ম-জয়স্তা উপলক্ষে সমগ্র দেশের সঙ্গে বাংকপুর গান্ধীঘাটে ভারগন্ধীর অনুষ্ঠান।

১৬ই আখিন (তথা অক্টোবস): দামোদর ভ্যালী কর্পোরেশনের (ডি, ভি, সি) বতা নিম্মণ পরিকল্পনা ব্যর্থতায় পর্যাবসিত ছইয়াছে— ডি, ভি, সি ষ্টাফ এলোসিয়েশন সম্পাদকের বিবৃতি।

১৭ই আখিন (৪ঠা অস্টোবর): আগে সৈক্তাপসারণ—পরে সীমান্ত বিরোধের আলোচনা—চীনের প্রধানমন্ত্রী চৌ এন লাইএর পত্রের উত্তরে জ্ঞানেচকুর স্পষ্ট উল্পি।

১৮ই আখিন (৫ই অক্টোবর): বর্দ্ধমান, নদীরা, হুগলী, মুর্শিদাবাদ ও মেদিনীপুর--পশ্চিমবঙ্গের এই পাচটি জেলার জলপ্পাবনে বিচ্ছিত্র চুর্বিগম্য অঞ্চলগুলির তুর্গত অনশনক্লিট নব-নারীদের অভ্যান্ত্রিক বাহিনীর বিমান হইতে থাত স্বব্ববহের ব্যক্ষা।

১৯শে আখিন (৬ই অক্টোবর): পশ্চিমবঙ্গের মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ
বিধানচন্দ্র বায় ও উভিষ্যার মুখ্যমন্ত্রী ডাঃ হরেকুঞ্চ মহতাবের সহিত্ত
বৈঠকান্তে কেন্দ্রীর থান্ত সচিব শ্রী এস কে, পাতিলের ঘোষণা—
থান্ত বন্টন ব্যাপারে পশ্চিমবঙ্গ ও উড়িব্যাক্তে লইয়া শীন্তই একটি
নৃতন থান্তাঞ্জল গঠন করা হইবে।

২.০শে আখিন (৭ই অক্টোবৰ): ভাৰত চীন সম্পর্কের ক্রমান্নতি সম্পর্কে আশা প্রকাশ কবিয়া প্রধান মন্ত্রী প্রীনেহকর নিকট চীনা প্রধান মন্ত্রী চৌ এন লাই-এব ভারবার্ডা।

২১শে আখিন (৮ই অস্টোবর): ম্যাকমোহন লাইন প্রসক্ষে
দিল্লীতে প্রধান মন্ত্রী ঞ্রীনেহফ ও জে: নে উইন (বক্ষ প্রধান
মন্ত্রী) বৈঠক।

২২শে জাখিন (১ই জটোবর): নদীয়ার সীরীজে পাকিজানী ভূর্তাদের হানা—ভারতীর সীমান্ত টহলদার পুলিসের জুমীবর্ষণ।

২৩শে আদিন (১০ই অক্টোবর): ভারতীর নিরাপতা বাহিনী কর্তৃক ১২ সপ্তাহে এক সহস্র নাগা রিক্রোহীকে আটক কিংকা জান্তুসমর্পণে বাধ্যকরণের সংবাদ। ২৪শে আৰিন (১১ই অটোবর): তিন দিবস বথাবীতি শারদীয়া হুর্গাপুতা অফুঠানের পব কলিকাছা ও সহরতলীতে নির্কিছে নির্কল উৎসব সম্পন্ন।

২৫শে আশ্বিন (১২ই অস্টোবর): ভিলাই ইস্পাত কাৰ্থানার ইস্পাত উংপাদন স্কল-ভারত সোভিয়েট সহ্যোগিতার ইতিহাসে নুত্র অধ্যায়ের সূচনা।

্ ১৬শে আখিন (১৩ই অক্টোবর): পশ্চিমবক্স স্বকারের এক প্রেসনোটে বিজ্ঞান্তি-বাজ্যের ৭৫টি সহর (মিউনিসিপ্যাল) এলাকার কলেরার প্রাতৃ্ভাব হওরার আশকা।

২৭শে আখিন (১৪ই অস্টোবর): বৃহত্তর কলিকাভায় জল সরবরাহ ও জল নিকাশন সমস্যা সম্পর্কে পর্যালোচনার জ্ঞা বিশ্বস্বাস্থ্য সংস্থার বিশেষজ্ঞদলের কলিকাভা উপস্থিতি।

প্রপাত শিকাবিদ্ ও নাট্যকাব আহার্য মন্মধমোহন বজর (১১) কলিকাভার বাসভবনে জীবনদীপ নিশাণ।

১৮ শ আখিন (১৫ই অক্টোবর): পন্চিমবক্সের সাক্ষতিক ভয়াবহ বল্ল। সম্পর্কে অবিলক্ষে তদস্ত দাবী—পন্চিমবঙ্গ বন্ধার্ত্ত সহায়তা সমিতির সভাপতি জী এন, সি, চাটোজীও সম্পাদক জীব্রিদিব চৌধুৰী, এম পি'র প্রধান মন্ত্রী জীনেহক্সর নিকট পত্র।

২৯শে আখিন (১৬ই আন্টোবর): দিল্লীতে রাষ্ট্রপতি ভবনে পুর্ম সীমান্ত বিবোধ সম্পাঠি পাত্-ভারত প্রতিনিধিকের বৈঠছ আবিও।

পশ্চিমবক্সের বলা পরিস্থিতি সম্পর্কে নয়া দিল্লীতে প্রধানমন্ত্রী শ্রীনেহকর সহিত রাজ্য মুগ্যমন্ত্রী ডাঃ বিধানচক্র বাবের সাক্ষাৎকার।

ত শে আধিন (১১ই অক্টোবৰ): দিল্লীতে তিন দিবসব্যাপী আলোচনার পর সানান্ত প্রদক্ষে পাকৃ-ভাবত বৈঠকের প্রথম পর্ব শেষ।

ত গোল আবিন (১৮ই আসোবর): কেবলের নির্নাচন স্থাপিত রাখা ছটবে না—বাজ্যপাল ডো: রামকৃষ্ণ রাওএর ঘোষণা।

বহিদে শীয়—

১লা আখিন (১৮ই সেন্টেখর): রাষ্ট্রসংঘে (নিউইর্ক) সোভিয়েট প্রধান মন্ত্রী ম: নিকিতা ক্রুন্চেডের ঐতিহাসিক ভাষণ ও পূর্ণান্ত নির্ত্রীকরণের প্রক্রাব পেশ।

তরা আখিন (২০শে সেপ্টেছর): প্রো: নাসেবের আটুট সঙ্গল—ইপ্রায়েলকে কিছুতেই স্থায়েক থালে প্রাবেশাধিকার দেওয়া ছটবে না।

৫ই আধিন (২২শে সেপ্টেবর): ইরানের শাহ ও প্রধানমন্ত্রীর সহিত ভারতীয় প্রধানমন্ত্র শ্রীনেহের মালোচনা শেব—আলোচনাস্ত্রে মনাক্রনণ নীতির উপর উভয় পক্ষের যুক্ত ইস্তাহার।

ভই আধিন (২০শে সেপ্টেম্বঃ): রাষ্ট্রসংবে চীনের প্রতিনিধিছের প্রায় আসোচনার প্রস্তাব রাষ্ট্রসংঘে সাধারণ পরিষদে ভোটাধিকো অপ্রাহ—ভারতের দেশবক্ষা সচিব শ্রীকৃষ্ণমেননের চেষ্টা ব্যর্থ।

েই আধিন (২৫শে সেপ্টেম্বর): সিংহলের প্রধানমন্ত্রী মিঃ সলোমন বন্দরনায়ক গুলীতে আহত —বৌদ্ধভিকুর বেশধারী আতভারী গ্রেপ্তার—সমগ্র দেশে জন্ধনী অবস্থা ঘোষণা।

১ই আখিন (২৬শে সেণ্টেম্ব): গেটিসবার্গের (আমেরিকা) নিভ্ত শৈলশিধরে বিশ্পবিস্থিতি সম্পর্কে আইক-কুন্ডেন্ড (মার্কিন্রের্গেড়েন্ট ও কণ প্রধান মন্ত্রী) গুরুষপূর্ণ বৈঠক। আততায়ীর বিভলবারের গুলীতে আহত ীয়: বন্ধংনায়কের (সিংলৌ প্রধানমন্ত্রী) চাসপাতালে শেষ নিংখাস ত্যাগ। ন্ত্র প্রধানমন্ত্রী হিসাবে মি: বিজয়ানন্দ দহনায়কের শুপুর প্রচণ।

১০ই আখিন (২৭শে সেণ্টেম্বর): গেটিসবার্গে তুই দিবস ব্যাপী বৈঠকের পব পাঁচ শত শব্দ সম্বাজিত আইক-ক্রুশ্চভ যুক্ত ইস্তাহার প্রচার। উভয় নেতার সম্মিলিত ঘোষণা— বল প্রয়োগ দারা নতে, শান্তিপূর্ণ আলোচনার মাধ্যমে অমীমাংসিত আন্তর্জাতিক প্রস্থাবলীর মীমাংসা করিতে হইবে। আগামী বৎসর (১৯৬০) বসন্তবালে প্রেসিডেণ্ট আইকের সোভিষ্টে ইউনিয়ন পরিদশ্ন।

ভয়াবহ সামুদ্রিক ঝড়ে জাপানে প্রায় আড়াই সহস্র নব-নারী নিহত বা নিথোঁজ—তিন লকাধিক লোক গুহহার।

১১ই আখিন (২৮ শে সেপ্টেম্বর) যুক্তরাষ্ট্রে ১৩ দিবস্ ঐতিহাসিক সফর শেষে রুশ প্রধানমন্ত্রী কুম্পেডের ময়ে। প্রতাবর্তন।

১৩ই আদিন (৩০শে সেপ্টেম্বর) এশিয়ার প্রথম মহিলা হিসাবে কলিকাতা কলেক্ষের ছাত্রী কুমারী আরতি সাহার (১৯) ইংলিশ চ্যানেল অভিক্রমের গৌরব অর্জন।

১৪ই আখিন ('১লা অক্টোবর): কয়ানিই চীনের দশম বার্ষিকী উৎসব উপলক্ষে পিকিং-এ অন্তৃতিত বিবাট কুচকাওয়াজে রুশ প্রধানমন্ত্রী ম: ক্রুণ্ডেভের যোগদান।

১৬ই আখিন (৩বা অক্টোবর) সন্মিলিত আবৰ প্রকাতন্ত্রের পিকিংস্থ দৃতাবাস চীন কঠুক অবরোধ।

১৭ট আখিন (৪ঠা অক্টোবৰ): কশিরা কর্তৃক সাফল্যের সহিত বকেট গোগে চন্দ্র প্রদক্ষিণকারী **আন্তঃগ্রহ টেশনে উৎক্ষেপ।**

: ১শে আধিন (৬ই অক্টোবর) রাষ্ট্রসংখে ভাবতের দেশরকা মন্ত্রী ক্রিনুক্ষমেননের খোষণা—ভাবত চীনা আক্রমণ বরদান্ত করিবেনা।

২ • শেরীকাখিন (৭ই অক্টোবর) ইবাকের প্রধানমন্ত্রী মেঃ বেঃ আব্দুল ক্রিম •কাসেম বাগদাদের পথে মোট্রে আতভায়ীর ওলীতে আহত।

২৩শে আখিন (১০ই অক্টোবর): বুটেনে সাধারণ নির্বাচনে প্রধান মন্ত্রী মি: ছারত ম্যাক্মিলনের রক্ষণশীল দলের নিরভুশ সংখ্যাগরিষ্ঠতা লাভ।

ং ২৪শে আখিন (১১ই আক্টোবর): চন্দ্রলোক অভিযুখে উৎক্ষিপ্ত কুশিয় র সর্বশেষ মহাজাগতিক হকেট (লুনিক-৩) পৃথিবী হইডে সর্ব্বোচ্চ উক্তে উপস্থিতি সম্পূর্ক মন্ধ্রো বেতাবের দাবী।

২৮শে আখিন (১৫ই অক্টোবর): রাষ্ট্রসংখ সাধারণ পরিবদে তিব্বত পরিস্থিতি আলোচনার দাবীতে আয়ার্ল্যাণ্ড ও মালরের আনীত প্রস্তাব ভোটাধিক্যে গুহীত—ভারত ভোটদানে বিরত।

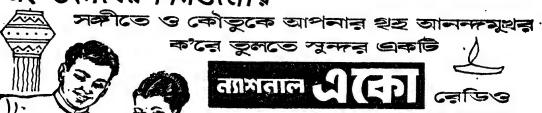
২১শে আধিন (১৬ই অক্টোবর): পাক্ প্রেসিডেট জেনাকেশ আহুর থার ঘোষণা—১১৬• সালের শেব নাগাদ পাকিস্তানের নুতন শাসনতন্ত্র বচিত ইইবে।

ত শে আৰিন (১৭ আইটোবর): চৌ ইউ অভিবাত্তী মহিলা কলের নেত্রী সহ ৮ জন সদস্ত নিহত হওয়ার বিশ্বের যঠ উচ্চতম শুক বিভাগের চেটা পরিতাক্ত।

৩১শে আখিন (১৮ট অক্টোবর): পূর্বে সীমান্ত বিভোগ সম্পর্কে দিল্লী বৈঠকান্তে চাকার, পাক-ভারত উচ্চ পর্বাবে আলোচনা স্থক।

স্থাশনাল-একো সপ্তাহ—১৮ই থেকে ২৪-এ অক্টোবর

এरे উৎসবের দিনগুলোয়—



ঘৰে রাখুন

উৎসব রভীন দিনগুলি। এমন দিনে গাড়ীর স্বাইকে একটি মনোর্ম অল-ওয়েভ স্থাশনাল-একো রেডিও উপহার দিন যা তারা বহু বছর ধ'য়ে সানলে উপভোগ করবে! বাড়ীর প্রত্যেক এতে প্রতিদিন গান ও প্রমোদ-অনুষ্ঠান ভূনে খুশী হবেন; অথচ এর হতে খরচ গুবই কম। প্রত্যেকর সাধ্যাসুযায়ী দাসের ভেতর ফুন্দর ফুন্দর অল-ওয়েভ স্থাশনাল-একো নেডিও কিনতে পারেন। এসব হুদ্র মডেলের ভেতর কোনটি পছন্দ এখনুই দেখে নিন। আজই আপনার কাছাকাছি স্থাপনাল-একো ভিলারের লোকানে আহন।



এসি বা ডিসি। বাদামী রঙের ব্যাকে-मारेषे कितित्नष्टे—२००, होका। ফ্রীম, নীল ও সবুজ রঙের।

२७०, ठीका।



মডেল বি-৭১৭: ৪ ভানভ, ৩ কাণ্ড, ष्ट्रांटे वाणिती। वाणांभी त्रदंत बारक-गारें कि कि कि निर्मा की मारे নীল ও সবুজ রঙের। ২৬০ টাকা।



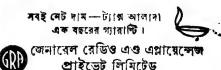
মডেল - ৭২২ : ৬ ভালত, ৩ ব্যাপ্ত, मर्डन अ-१२२ - ७४ अति। त्राडन ইউ- ৭২২ এসি বা ডিসি।

७०० होका।



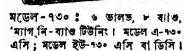
মডেল এ-৭০১ : ৭ ভালভ, ৮ ব্যাণ্ড, এসি। শব্রহণ ক্ষতা অত্যন্ত উচ্ দরের। বর্নিয়ন্তিত আরু এফ, স্টেডযুক্ত। সমন্ত স্থাপনাল-একো রেডিওর মধ্যে সেরা। ৬২৫ টাকা.

नवह विषे माम--- हें। स आनाना এক বছরের গ্যারাণ্টি।





মডেল বি-৭২২: ৫ ভালড: e ব্যাও, ড্ৰাই ব্যাটারী।



স্থাশনাল-একো রেডিওই সেরা



8xe ् ठीका।

ত ম্যাডান ক্রীট, কলিকাতা-১৩। অপের হাউস, বোদাই-১। ফ্রেডার রোড, পাটনা। ১/১৮, মাউট রোড, নাডাজ। ৩৬/৭৯, সিলভার স্থবিলী পাক রোড, বাঙ্গালোর। जार्गियान करनानी, ठीमनी हक, मिनी । वारोभिक्टि साम्बर्ग सामनामाना

প্রাইভেট লিমিটেড

श्रावा राया स्थाप के स्थाप के

, এর প্রদিনই বাত্রে আমরা থবর পেলাম যে শিউচরণ ওরফে শিউচরণিয়াকে কে বা কাহারা হত্যা কবে কুমারটুলীর ৰাস্ভার একটি রোয়াকের উপর ফেলে বেগে গিলেছে। আমরা ভংকণাৎ ঘটনাস্থলে এদে দেখি, শিউচরণের মৃতদেহ রক্তাপুত আবস্থার একটি গৃহের রোয়াকে পড়ে বয়েছে। অকুস্থলে বহু লোককেই এই হত্যা সহদ্ধে আমরা ভিজ্ঞাসাবাদ করেছিলাম, কিছু তারা কেচই ঐ নুশংস হত্যা সম্বন্ধে কোনও থবর আমাদের দিতে পারেনি। মৃত পাগলাবাবুর দেহের ক্যায় শিউচরণিয়ার দেহেও আমি একই প্রকারের 🕶 লক্ষ্য করেছিলাম। এই উভয় ব্যক্তিকে একই ভাবে বক্ষে ছবিকা বাবা আবাত করে হত্যা করা চরেছিল। বলা বাছল্য বে, তথনও প্রান্ত আমরা এই খুনের কোনও কিনারা করতে সমর্থ হইনি। সম্ভবতঃ অমুরূপভাবে নিহত হবার ভরে এথানকার বস্তি অঞ্চলের কেছ খাঁদাভভার বিরুদ্ধে সাক্ষ্য দিতে বাজী সম্মনি। এ মামলাটি ব্যতীত অপর আর একটি মামলারও আসামীরূপে তাকে আমি গোঁজার্থ জি করেছিলাম। এই মামলাটি ছিল একটি দিঁদেল চুরির মামলা। কুমারটুলীর এক নামকরা জমিদার বাড়ী হতে একটি টোটাভরা বিভসভারসহ সহস্র সহস্র মুদ্রার জুয়েলাবী দ্রাবা চুবি হওয়ায় এই মামলাটি দায়ের করা হয়েছিল। ইতিমধ্যে গঙ্গাবকে নৌকা করে পার হবার সময় হাওড়ার জনৈক পুলিশ-অফিসার তাকে ঐ নৌকাতে প্রেপ্তারও করেছিল। কিন্তু থানাগুণা তাকে অভকিতে গলাবকে নিকেপ করে নিজে সাঁতার কেটে ওপারে উঠে পালিয়ে গিয়েছিল। প্রকৃত পক্ষে থাদাগুণা ছিল এইরপ এক সংখাতিক ব্যক্তি ! এইবার আমার আর. কোনও সন্দেহ বইলো না বে, এই থোকা ও ধাদা একই বাক্তি এক তারা হুজনে কখনই বিভিন্ন ব্যক্তি হতে भारत ना ।

এরপর আমরা আব দেরী না করে লালবাজারের পূলিশ ছেডকোয়াটারস্ থেকে একদল সশস্ত্র বাহিনী আনিয়ে নিলাম। তারপর তৃইথানি লগীতে তৃইদিক থেকে অভিযান চালিয়ে অত্তৰিতে ঐ বাড়ীটি আমবা ঘেরোয়া করে ফেলে উহার মধ্যে আমরা ছরিত: গভিতে চুকে পড়লাম। এই বাড়াটি ১০ নম্বর কুপানাথ লেনের একটি বন্তির সম্মুখভাগে অবস্থিত ছিল। স্থানীয় লোকেদের কেউ কেউ চুপি চুপি আমাদের জানিয়ে দিল যে ঐ বন্তির কোনের ঘরখানিতে ঐ খানাগুণা নিজে থাকতো এবং তার পালের ঘরখানিতে এখনও তার আল্লায় স্বজনেরা বসবাস করছে। এই মামলার হত্যাকারী আসামী থোকা বা থানাকে সেখানে পাওরা গেল মা। কিছু আমাদের সন্দেহ হলে। বে হয়তো ঐ ঘরের মাটির মেঝের পাগলার কাটা মুণ্ডটা পুতে রাখা হয়েছে। আমরা তৎক্ষণাৎ শাবল ও কোলা এনে ঐখানকার মুন্ডিকা অপসারিত করতে স্বক্ষ ক্ষপাল। অবস্থ্য সেখানে বহু থোঁলাগুলি করেও কাটা-মুপ্টের সন্ধান

পাওয়া গেল না। কিছ তার পরিবর্তে মাটির তলা হতে বার হরে? আদতে লাগল বাশি বাশি হাবা-মুক্তা ও জহরত অলকার এবং বাল্পবন্দী হাজার ও একশত টাকার কারেন্সি নোট। এইদিন এ স্থান হতে অঙ্গহারে ও নগদ টাকায় প্রায় ৭০ হাজার টাকার অপস্তত সম্পত্তি আমরা উদ্ধার করতে সক্ষম হয়েছিলাম। শুধু তাই নয় ঐ ১বের একটি কোণ হ'তে একটি রক্তরঞ্জিত ধুতি, একটি রক্তরঞ্জিত অন্তৰ্বাস, হুইটি বক্তবঞ্জিত পাঞ্জাবী এবং অক্সাক্ত কয়েকটি কাপড চোপড আমরা উদ্ধার করতে সক্ষম হলাম। এইগুলি খরের ঐ কোণে একত্রে জড় করে বাখা হয়েছিল। ঐ সকল পরিধের বল্লাদি প্রীকা করে আমরা দেখতে পেলাম বে উছার প্রতিটি কোণে কোণে একটি ইংবাজী 'S' অক্ষর স্থতির দ্বারা উৎকার্ণ করা হয়েছে। এই বাড়ীর অপরাপর খবে বারা বাস করে ভারা সকলেই ছিল গৃহস্থবেশী বেলা নারী। এরা সাধারণত: দিনের বেলা ঝি'গিরি কবে এবং রাত্রে ভারা করে পেশা। এদের মধ্যে তুই একজন আবার সাধারণ বেগা নারীর পধ্যায়ে নেমে এসেছিল। আমি এদের সকলকেই একে একে জিজ্ঞাসাবাদ করে জানলাম বে খেকাবাবুৰ পিতা ও খুল্লতাত নামে প্ৰিচিত তুই ব্যক্তি সাধাৰণতঃ থোকবোৰ কৰ্ত্তক ভাড়া করা এই ঘর তুইটিতে বসবাস করে। ত্রা খোকাবাবুর আসল বা নকল আত্মীয় কিনা ভা তারা ৰলতে পারে না। তবে তাদের মতে এরা থোকাবাবুর নকল বা পাতানা আত্মীয় মাত্র। প্রথমে এগ খুন সম্পর্কে কোনও বিবৃত্তি দিতে চায় নি। খোকাবাবু সম্বন্ধে তাদের জিজ্ঞাসা করা মাত্র উঠছিল। আমাদেব পীড়াপীড়িতে ভারা আতম্ভে কেঁপে এদের কেউ কেউ ভয়ে কেঁদেও ফেললে। ইতিমধ্যে খবর পেয়ে ইনেসপেক্টার স্থনীল রায়ও সেখানে এদে উপস্থিত হলেন। স্থামাকে এই সকল রপজাবিনীদের নিকট হতে প্রয়োজনীয় বিবৃতি আদায়ের ব্যাপারে ব্যর্থ মনোরথ হতে দেপে তিনি আমাকে বললেন, এরা এখন যা বলে তা ভনে যাও মাত্র। প্রথম দিনে এরা কোনও দিনই সতা কথা বলেনি। আজ হতে তিন চার দিন পর এরা সত্য কথা বলবে। সাধাবণতঃ বেন্তা নারীদের সত্যভাষণের নিয়মই হচ্ছে এই। সুনীল বাবু এদের মধ্যে থেকে বেছে বেছে একটি যুবতা নাৰী এবং একটি ভিঙ্গক পৰা বুদ্ধাকে বার করে এনে আমাকে বললেন, এখোন এদের পৃথক পৃথক ভাবে অর্থাৎ একের অবর্ত্তমান অপরকে ভিজ্ঞাসাবাদ করো। ভূলে যেও না যে বিভিন্ন বয়সের মামুষ বিভিন্ন ধননের মিথ্যা কথা বঙ্গে। এই জন্ম পৃথক পৃথক ভাবে জিজাদা করলে ভূমি বৃষতে পারবে বে এদের কে কতটুৰু মিখো বললে। মিষ্টি কথায় ভূলিয়ে জিজ্ঞাসাবাদের জন্ম ভূমি এখন এদের ঐ পাশের খরে মিয়ে বাও। ভতকণ আমি মেনেটা, ব্যারও একট্ট খুঁড়ে দেখি। খোকাবাবুর খবের মেবের তলা থেকে

এতো সোনা-দানা ,বেরিয়েছিল বে একজন দারিখপুর্ণ অফসারের দেখানে উপস্থিতি একাম্ব রূপে প্রয়োজন ছিল, তা না হলে স্প্ৰায় এবং বিপক্ষীয় ব্যক্তিদের দ্বার৷ কয়েঞ্টি দ্রব্য লুঠ পাট ছত্রাও অসম্ভব ছিল না। এই জন্ম ইনেসপেটার সুনাল রায়ের উপদেশ শিরোধাধ্য করে বেখা নাত্রী চুইটিকে পৃথক পৃথক ভাবে তাদের নিজ নিজ ঘরে নিয়ে তাদের বহুবার অভয় দিলাম এবং এ কথাও তাদের বললাম যে তারা যা বলবে তা কাউকেই জানানো হবে না। এইভাবে বহু সাধা সাধনার পর তারা স্বীকার করলো ৰে তারা থাঁদা বাবুকে একজন থুনে গুণা বলেই জানে। তবে থোকা নামে কোন্ও খুনে বা গুণ্ডাকে তারা চেনে না। তা ছাড়া থোকা ও থানা এক ব্যক্তি কিন। তাও তাদের জানা নেই। খাঁদা বাবু প্রায়ই আজকাল তার এই বাঙাতে আসেন কিছ রাত্রিবাস তিনি কদাত এথানে করে থাকেন। এইাদন ৪ঠা সেপ্টেম্বার ১৯৩৬ আব্দাজ ১২-৩০ মি: ঘটিকায় আমাদের কেউ কেউ দরজার গলির মুখে থকেবের আশায় দাঁড়িয়েছিলাম. এমন সময় হঠাৎ থাদা বাবু বাড়ার ভিতর চুকতে চুকতে চেচিয়ে উঠলেন এই ভাগ যা সব যে যার বরে! যতক্ষণ আমি এখানে থাকবো তত্তকণ কেউ ককনো বেফুবি না। থববদার। পেথছিল তো এই ছুরি। এই বলে হাতের আন্তিন থেকে একটা ছুবি বার করে তিনি আমাদের দেখিয়ে দিলেন।—এর পর ভরে যে যার খরে চলে এসে আমবা দরজা বন্ধ করেছিলাম। প্রায় এক ঘটা পরে কাউর সাড়া না পেয়ে আমরা মনে করেছিলাম থাঁদাবাবু চলে গিয়েছে। তাই আমরা কেউ কেউ সাহস করে বাইরে এসে দেখি থাদ। বাবুর বাবা চৌবাচ্চা থেকে বালতি করে জ্ঞ ভূলে কতকগুলো কাপড় চোপড় কাচ্ছে। উঠানের উপর এই সময জোছনার তীব্র আলো এদে পড়েছিল। এই আলোতে আমরা দেখলাম ৰে বালভির জল টকটকে লাল। এই সময় খাদাবাবু হঠাৎ ভার খর হতে বার হয়ে এদে ধমকে উঠলো, কের বের হয়ে এ দছিল। ৰাবাবে বার ঘরে। আনমরা থাদা বাবুকে সকলে বমের মতই ভয় করে থাকি। তাই 'যাচ্ছি যাচ্ছে' বঙ্গে আমরা আপন আপন ঘরে এদে ভয়ে অর্গল বন্ধ করে দিয়ে ধে যার বিছানায় ভয়ে পড়েছিলাম। এই কষ্টি বিষয় ছাড়া এই খোকা বা থাদাবাবুর কার্য্যকরণ সম্বন্ধ আমরা আর কিছুই বলতে পারবো না। তবে একথা আমরা সকলেই জানি যে থাদাবাবুৰ ব্যবদ্ধত প্ৰতিটি পৰিচ্ছদে ইংৰাজী 'S' অক্ষরটি তারই ইচ্ছা মত লিখে রাথা হতো। আমরাও মধ্যে মধ্যে অমুক্ত হয়ে ঐ 'S' অক্ষরটি তার কাপড় জামার কোণে কোণে স্থৃতির সাহায্যে ভূলে দিয়েছি। এই 'S' অক্সরটি থাদাবাবুর নিকট একটি বিশেষ সথের বন্তু ছিল।

এই সময় আমরা থোঁজাখুজি করে থাঁদার পাতানো পিতার
নিকট হতে ধোপার হিসাব সহ একটি নোটবৃকও উদ্ধার করতে
সমর্থ হই। ঐ নোটবৃকের লেথা হতে প্রমাণিত হয় বে কতকগুলি
কাপড়-চোপড় ৫ই সেপ্টেম্বর ১৯৫৭ তারিথে ধোপার বাড়ী পার্টিয়ে
দেওয়া হয়েছে। এই ধোপাটির নাম ঠিকানাও ঐ নোটবৃকে লিখে
রাখা ছিল।

এর পর আমি অভান্ত অফসাবদের থাদার পিতার বাটাতে তদম্ভবত রেখে ঐ নোটবুকটি সহ মাণিকতলা স্লীটে তাদের খোপা

হুতিবাস বিৱচিত

ভক্টর স্থনীতিকুমার চট্টোপাধ্যায়ের ভূমিকা সন্থলিত এবং সাহিত্যরত্ব শ্রীহরেক্ক মুখোপাধ্যায় সম্পাদিত বাঙলার এই অতিপ্রিয় গ্রন্থখনি মুদ্রণ পারিপাট্যে একটি যুগপ্রবত ক। ভারত সরকার কত্র্ক পুরস্কৃত। ৮টি বছবর্ণ ও ১৫টি একবর্ণ চিত্রসম্ভাবে সমৃদ্ধ। [৯১]

জীবনের বারাপাতা

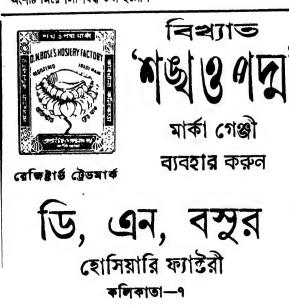
রবীন্দ্রনাথের ভাগিনেয়ী সরলা দেবীচোধুরাণীর জীবনালেখ্য। গত শতকের শেষাধের নবজাগরণ মুগের সামাজিক, রাজনৈতিক ও ঘরোয়া ছবি অতি সরস ভদ্দীন্দে এই বইয়ে পরিবেশিত হয়েছে। ভারত সরকার কর্তৃক পুরস্কৃত। [8]

মহানগরীর উপাখ্যান

শ্রীকরুণাকণা গুপ্তা রচিত অভিনব উপস্থাস।
পটভূমিকা—কৈবর্তা বিদ্রোহে বাঙলা দেশের
গণঅভ্যথান; চরিত্র স্থিতে—চিরায়ত সাহিত্যের
বে কোন চরিত্রের মত রসমাধুর্যে সমুজ্জন। [২॥০]

সাহিত্য সংসদ ৩২এ আচার্য প্রফুল্লচন্দ্র রোডঃঃ কলিকাতা-১ ॥ অফ্রাফ্র প্রকালয়েও পাইবেন॥

মাথ্রামের ভাটাথানায় এসে উপস্থিত হলাম। সৌভাগ্যক্ষে ওদের সেই ধোপাটে সেইখানে উপস্থিত ছিল। এতদ্বাভীত সে তখনও প্রাস্ত থাদার এ সকল কাপড়-চোপড় কাচাকাচি করতে আরম্ভ করেনি। আমরা ঐ নোটবুকের লেথামুঘারী প্রতিটি বস্ত্র উদ্ধার করে দেখি বে তাদের প্রতিটিতেই এক একটি 'S' অকর স্তির সাহায্যে তোলা হয়েছে তো বটেই, অধিকত্ত ঐ সকল বস্ত্র ও সাটের স্থানে স্থানে তথনও পর্যান্ত শুরু রক্তের প্রান্তেশ দেখা যাছে। আমি তৎক্ষণাৎ ছট জান স্থানীয় সাক্ষার সমক্ষে ঐ সকল পরিধেয় পরিচ্ছদ সমৃত্র উত্থাদের যথায়থ বিবরণ সহ তালিকাভুক্ত করে আপন হেপাঙ্গতে গ্রহণ করে নিই। এই সকল কাপড়ে রক্তের দাগগুলি মতুষ্য বক্ত বলে সরকারী রক্তপরীক্ষক অভিমত প্রকাশ করলে উহা যে আসামীদের বিরুদ্ধে এক আকট্যি প্রমাণ রূপে বিবেচিত হবে ভাতে আমাদের কোনও সন্দেহ ছিল না। তবে ক্ষেক্টি ব্ৰুমাথা কাপ্ড-চোপড় ধোপার বাড়ী পাঠিয়ে দিয়ে অপর করেকটি রক্ত মাথা কাপড়-চোপড় ঘরে মজুত রাগার অর্থ আমরা বুঝতে পারলাম না। কিছ তা সত্ত্বেও আমি উংফুল হয়ে খাঁদার পিভার বাটিতে ফিরে এসে দেখি ইনেসপেকটার রায় বহুলোককে জিজ্ঞাদাবাদ করার পর ঐ পল্লী হতে দেবেনবাবু নামে একটি নির্ভবযোগ্য সাক্ষীকে খুঁজে বার করেছেন। আমি তাকে কিছুক্ষণ ক্সিজ্ঞাসাবাদ করার পর সোধ্রাদে তাঁর বিবৃতিটুকু লিপিবন্ধ করতে স্থুক্ত করে দিলাম। তাঁর মহামূল্যবান বিবৃত্তির উল্লেখযোগ্য অংশটি নিমে লিপিবন্ধ কৰা হলো।



रकाम : ७३-२ ३३६

১৯৩৬ সালের ৪ঠা সেপ্টেম্বর মাসে ১২-৩০ মিনিটে ১০ কুপানাথ লেনে থাঁদাবাবুর বাটির রোয়াকে বসে আমি বায়ু সেবন করছিলাম। এমন সময় আমি থাঁদাকে নয় পদে একটি সাদা ধুতি ও একটি নাল রভের সাট পরা অবস্থায় সেথানে উপস্থিত হতে দেখি। থাঁদা বাবুর পিছন পিছন তার বন্ধু কেট বাবুকেও আমি আসতে দেখেছিলাম। আমার বেশ মনে পড়ে বে আমি থাঁদার ধুতি ও সাটের উপর রভেরর দাগ দেখে চমকে উঠেছিলাম। আমার ভীত হয়ে উঠার অপর কারণ হচ্ছে এই বে এই সময় থাঁদা একটি উন্মুক্ত ছুরিকার ব্লেড ভার সাটের হাতলের মধ্যে সেঁদিয়ে দিয়ে ভার সাদা বাটের হাতেলাটি সে ভার হাতের মুঠির মধ্যে ধরে রেথেছিল।

খাঁদা কোনও দিকে দুকপাত না করে ছবিত গতিভে তার পিতার ঐ বাটাটির মধ্যে প্রবেশ করলো। কিন্তু কেটোবাবু খাঁদাকে অনুসরণ না করে আমাকে বোধ হয় আগলাবার জন্মই সেখানে দাঁড়িয়ে রইলো। আমি ভরে এমন অভিভৃত হরে পড়েছিলাম বে উপান শক্তি প্রায় আমার রহিত হয়ে গিয়েছিল। প্রায় এক ঘণ্টা পরে খাঁদা বাবু তার বাটি হতে বার হয়ে এলো। ভাকে দেখে আমি বেশ বুঝতে পারলাম যে সে ভালোকরে চান করেছে। এই সময় খালা নীল সার্টের পরিবর্দ্তে একটি ক্রাম্ রঙের সাট পরে ফেলেছিল। এ ছাড়া সে সারা দেহে প্রচুর সুগন্ধি সেণ্টও মেখে নিয়েছে। আমাকে তথনও পর্যান্ত সেখানে বসে থাকতে দেখে খাঁদা পকেট থেকে একটা রিভলবার বার করে তা আমাকে দেখিয়ে ইসারায় আমার চুপ কবে থাকতে উপদেশ দিল। ভারপর সে নিবিবছে শিষ দিতে দিতে কেষ্টোর সঙ্গে পুনরার শোভাবাজার খ্রীটের দিকে চলে গেল।

এই সাকী দেবেনবাবুর বিবৃতি বে বিশেষ উল্লেখযোগ্য ছিল তাতে আমরা সকলেই একমত হয়েছিলাম। কিছ একলে এই দেবেনবাবুব সহিত থোকাবাবুর পূর্বে পরিচয় সম্বন্ধে কিছুটা তদস্ত করারও আমরা প্রয়োজন মনে করলাম। এই সম্পর্কে দেবেনবাবুকে আমরা বিশেষ রূপে জিপ্তাসাবাদও করেছিলাম। নিমে উলিখিত প্রশ্লোকর সমূহ এই সম্পর্কে বিশেষরূপে প্রশিধানযোগ্য।

প্র:—আপনার সন্থিত থাঁদাবাব্র পরিচয় কতদিনের । আশা করি আপনি ওদের একজন দলের ইলোক নন। এইরূপ একটি দৃশু দেথার পরও আপনি খানায় থবর দেননি কেন । এদিনকার এ নৃশংস থুনের সংবাদটি নিশ্চই আপনার অসোচর ছিলান।

উ:—আত্রে, সে আমার বাল্যবদ্ধ্। আমি, থোকা, কেটো ও হরিপদ এককালে স্থানীয় ওরিরেন্টেল দেমিনারীতে পড়ান্তনা করতাম। তবে নীচের ফ্লাল হতেই আমরা একে একে ঐ স্থুল ত্যাগ করে আদি। আমাদের মধ্যে আমি এবং হরিপদ এই পাড়াতেই বাস করি। আমরা ব্যবদা বালিন্তা করে হ'ব জীবিকা অজ্ঞান করে থাকি। আমাদের পূর্বতন বন্ধু থোকা ও কেটোর কথা আর জিজ্ঞেস করে লাভ কি? আজকাল আমরা ওদের সঙ্গ বিশেষ রূপে এড়িরে চলে থাকি। পাড়ার আর পাঁচজনের মত আমরা ওদের হের করেও চলি। এই কারনেই আমরা কেউই ওদের সহক্ষে কোনও সংবাদ থানায় পৌছিরে দিতে সাহসী হইনি। এ দিনকার থুনটা বে থাদাবাব্রাই করেছিল ভা সহজেই আমরা অধুমান করে নিতে পেবেছিলাম।——আজ্ঞে, এই সহক্ষে কোনও থবর আপানাদের দি ল এ নিহত ব্যক্তিশ লায় আমবাও একে একে মুঞ্চাত হয়ে যেতাম। এই জল্মই সব বুঝে বা জেনেও আমরা চুপ করে থাকাই খেন্ডঃ মনে করেছিলাম।

এক্ষণে এই দেবেন, মলিনা এবং অন্থিকাৰ নিবৃত্তি ভিনটি ভাতেব আলত্ত বিবিধ সময়ঞ্জীর পশিপ্রেক্তিতে বিবেচনা করে আফবা নিশ্চিত বিরপে বঝতে পারলাম যে এ দিন সন্ধা আট বা সাতে আট ঘটিকায় থোকা ওবকে খাদা ভাব সাকরেদের সাহায্যে পাগলা ওবকে প্রত্লকে পাকড়াও করে ঐ মেথর গলিতে নিয়ে এসে সন্ধা নর ঘটিকা আন্দান্ত সমরে তাকে ছবিকাহত করে ফেলে রেখে যায়। এরপর নিকটের কোনও এক নিভূত বা নিবালা বাড়ীতে বা একপ কোনও এক স্থবিধা ন্ধনক স্থানে কিংবা পোকাবই কুপানাথ লেনের বাড়ীতে অলকো এসে তাবা একস্থানে তাদের বজুবঞ্জিত পবিচ্চদ প্ৰিবৰ্তন করে তাবা রপজীবিনী উবাবাণীব গুতে এসে মলিনা কুন্দবীর সভিত্ত সাঁকাৎ কবে। ভবে ঐ বাত্তে উষার কক্ষে ভারা অধিকক্ষণ সময় অসিনাহিত করেনি। স্বল্লকণ পরে ভারা পুনবায় বভির্নত হয়ে ঐ মেথব গঙ্গিতে ফিবে এসে পাগলার মুখ্টা কেটে নিয়েছে। এবপর তাবা এ মুখ্টা নিকটে কোনও এক স্থান নিক্ষেপ কবে খোকা ও কেটো আবাৰ গোকার কুপানাথ লেনের বাড়ীতে এনে উপস্থিত হয়। সমূদত: গোক। পাগলাব पात करक कांत्र अध्यक्त कांक्षा এकांत्रे मिश्र करवित्र । **अत्रेक्त मा**ज তারই পরিচ্ছদ এই সময় বক্তবঞ্জিত হয়ে দৈঠে। এই বন্ধ এই সময় একমাত্র ভারট পুনবার পরিচ্ছদ পরিবর্তনের প্রয়োভন চ য়ছিল। সম্ভবতঃ এট ভাল কেটুবাবুর প্রথম অপাবেশানের সময় পবিচ্ছদ পরিবর্তনের প্রয়োজন চলেও ওট বিতীয় অপাবেশনের সময় ভার পোৱাৰ পৰিবৰ্ত্তনের প্রয়োজন চমনি। যতপ্র ব্যা যায় বে খাঁদাকে ঐ বাত্তে ভুটবার ভার রক্তরঞ্জিত পবিজ্ঞা পবিবর্তনের প্রণোজন হরেছিল; প্রথমবার যথন দে পাগলাকে বন্ধুদর সাচাযো পর্যাদন্ত করে তাকে ছুরিকাচত করে এবং দিতীয়বাব ষপন তাকে ভাব মুগুকর্তন কাধ্যে লিপ্ত হতে হয়। মুগুকর্তন রূপ দিতীর অপাবেশানব সময় কেটোবাবুৰ গাত্তে বক্ত না লাগায় তাকে এইবাৰ পোষাক পরিবর্জনের বর খোরার বাড়ীর ভিতর চুকতে হয়নি। প্রকৃতপক্ষে মলিনা ও দেবেন—এই উভব সাক্ষীর বিবৃতিখয় সময়ের পরিপ্রেক্ষিতে পারি-পাৰিক ঘটনাৰ সহিত একত্ৰে গ্ৰহণ কৰলে বুঝা বাবে বে খোকাকে ঐ রাত্রে শ্বর সময়ের ব্যবধানে তৃইবার পোবাক পরিবর্তন করেতে হরেছিল। বল্পতঃপক্ষে থোকার রক্ষিতা মলিনামুক্তরী তার দ্বিত খোকাৰাবুকে নীল বড়েব সার্ট পরে উবার বাড়ীতে ক্ষিরে আসতে দেখেছে এবং দেবেন তাকে নীল সার্ট ছেড়ে ফীম রঙের সাট পরে তার বাড়ী থেকে তাকে বেরুতে CACACE !

এই খুন সহজে উপরের এই খিওবাটি আপাতদৃষ্টিতে সভা ব'লে
মনে হলেও উহাতে সন্দেহ করারও বথেই কারণ ছিল। সাক্ষা
মালিনাক্ষমরীর বিবৃত্তি হতে আমরা, অনেছি বে, সে উবার ককে
খোকার মীল সাটোর উপর লাল বর্মেল লাগ লেখেলিল। কিছু ক্রটি

বিশেষ কারণে এ রাত্রে মলিনা খোকার সাটের উপর সভাই রজের দাপ দেখেছিল কিমা ভাতে আমাদের যথেষ্ঠ সাক্ষয় হরেছিল। প্রথমতঃ ঐ নীল সাটটি পরে থোকা পাগলাকে ছুরিকাহত করলৈ ভার ঐ সাটের অনেকথানি স্থানে রক্তরঞ্জিত হয়ে উঠতো। এর কারণ ছবিকা দেছে প্রবেশ কবলে সেথান হতে ফিনকী দিয়ে বক্ত বহিগত হার্যা স্বাভাবিক ছিল। অবগু ষদি অসাবধানতা বশত: থোকার পোবাক প্রিংজনের সময় ভাব ঐ নুজন নীল সাটের সভিত তার রক্তর**লি**ত পরিত্রাক সাটের সংযোগ হয়ে থাকে তা'হলে সে কথা স্বতন্ত্র। কিছ পরে আমবা প্রীকা কবে দেখেছি বে নীল কাপড়ের উপর মনুষারক পড়লে উহা রাত্রিকালে কালো দেখার। 🙆 অনস্থার মনুষ্য রক্ষেবিন্দু কখনও লোহিত বর্ণের রূপে প্রতীত হয়নি। অন্যদিকে পানের পিচ কোনও এক নীল বল্পথণ্ডের উপৰ নিক্ষিপ্ত হলে উচা বাত্রকালে हेकहेटक लालवर्राव प्रथा बारत। এडेक्स आमारमय मत्न इन व খাঁদা ব্যন মলিনার প্রান্তের উত্তবে বলেছিল, যে ট্চা রক্ত নয় পানের পিচ তখন সে সভা কথাই বলেছিল। থ্উব সম্ভবত: খোকা ওরকে খাঁদাবাবু প্রথম অপারেশনের পর পোষাক পবিবর্তুন করে পান চিবুতে চিবৃতে মলিনার সঙ্গে দেখা করবার জন্ম উ্যারাণীর খবে এসেছিল। এইরপ ক্ষত্রে মলিনার দেখা রক্তের দাগ পানেব পিচের দাগ রূপে স্বীকার কবে নিলে অবগু আমাদের পরিকল্লিভ এই খিওরিটি সভ্য রূপে প্রতীত হবে।

ক্রিমশ।







বিপুল সাড়া এল জনভার দল থেকেও. আর কেবলমাত্র সাড়া দিয়েই তারা ক্ষান্ত থাকেনি—আমাদের প্রতি তাদের সন্তদয মনোভাবের পরিচয় দিতেও এতট্টকু হাপণা তারা করেনি প্রকাশ। এই সময়ে এদের গ্রাভি, সমাদর, আপ্যায়নের মধ্যে দিয়েই আমার জীবনে স্বচেয়ে যা বড লাভ হয়েছিল— যাকে আজও আমি অসাম-সৌভাগোর নামান্তর বলেই মনে করি এবং ভগ্গ আজ কেন চিরকালই ক্রে যাব তা হচ্ছে সবোজিনী নাইছুব সঙ্গে সাক্ষাৎকার। জনগণের প্রীতি, সমানর, আপ্যায়ন আমায় ভবিয়ে তুলেছে অনেকথানি, তাদের সমাদর আমাকে ঋণী কবেছে আমাকে জুগিচেছে উদ্দীপনা, আমার সামনে দেখা দিয়েছে আমার শিল্পদাননার গৌধবময় স্বীকৃতির রূপ নিবে কিছু সবোজিনী নাইছৰ সান্ধিধালাভের গুরুত বা ভাৎপর্য যে অমলা, অসীম, অশেষ-আমাৰ দৃঢ় বিশাস এ বিষয়ে আমাৰ সঙ্গে ছিমছ কেউ হবেন না। ভাষদ্রাবাদে সবোভিনী নাটড় ও জার পরিজনবর্গ बार्ष है है नाइ धर नमानत धर क्यूट्यमाय खिरा जुल्हिलन धामारमञ्जा এই উপলক্ষ্যে, এই বচনাৰ স্থবোগ নিবে সপ্তান্ধ প্ৰৰতি জিমর্গ করি ভারত জননীর মনস্বিনী ছহিতা, ভগতের কবিকুলের অক্সতম শ্রেষ্ঠ ভারকা এবং ভাংতের প্রথম মহিলা রাজ্যপালিকা (ভারত-কল্লাদের মধ্যে এঁব পব এই আসন অলক্ত্র করাব গৌর্ব অর্জন করেছেন একমাত্র এঁবট কক্ষা শ্রীমতী পদ্মজা নাইছু) স্থগীয়া ক্ৰি স্বোজনী নাইড়ব অমৰ স্বৃত্তির উদ্দেশে।

খগীর তার আকবর চায়দাবীও আপ্তবিক সমাদরে আমার ভবিবে ভূলতে দিধা বোধ করেননি। শিল্পের প্রকৃত সমন্দার লোক ছিলেন তার আকবর হায়দাবী। তাঁব শিল্পবিসিক মনের পবিচয়ও পাওয়া বায় তাঁর মৃদ্যাবান শিল্প সংগ্রহশালা দেশে, এক বথার বাকে বলা বায় অপূর্ব। তার আকবর যে কভ বড় শিল্পবোদ্ধা ছিলেন ভা তাঁর সংগ্রহশালাই প্রমাণ করল। আমাদের আবও মুগ্ধ করেছিল নবাব সালারভালের প্রাসাদ। তার আকবরের বাড়ীতে দেখেছি শিল্পের অপূর্ব সংগ্রহশালা, নবাব সালারভালের বাড়ীতে শিল্পবিশালা তো

বাহ্বর' আব্যাটি এবানে প্রবেজ, না হলে বিবিধ সংবক্ষণাস।
কথাটি এ ক্ষেত্রেজনারাসে ব্যবহার করা বেতে পারে।) প্রচুর সংখ্যক
স্প্রপাচীন হর্লন্ড বছর এবং বছ সিদ্ধ হল্পের ক্ষমিপুণ সৃষ্টি সম্চের্
সংবক্ষণ নবাবের সমগ্র প্রাসাদের মর্যাদা বছলাংশে বৃদ্ধি করেছিল এবং
সমাগত অতিথিবান্দর করেছিল চিত্ততরণ। আমাদের বদ্
শ্রীক্যগোপাল পিল্লাইয়ের পরিজনবর্গের আন্তরিকতাও এ প্রসঙ্গে

বালো লাবে—মতীশ্বে কি স্থন্নৰ ভাবে দিনগুলো কেটেছে আমাদের
—ৰবতত্ৰ ভ্ৰমণ এবং প্ৰাকৃতিক দৃগাবনী অসলোকন এবং তদ্ধনি
মুগ্ধ স্থন প্ৰতাত ভ্ৰমণে যে অপাব আনন্দের বক্তা ''বাববার এই
কথাটিই মনে প্ৰতাত্ত্ব

্তাবপর মাদ্রাক। মন্তদেশ। বিশাল ভারতের দক্ষিণপ্রাস্ত।
পিঠাপুবমের মহাবাক্তা এবং তাঁব পবিবাববার্গব কাছে পাওয়া গেল
প্রভান্ত আদর আপ্যাসন। কৃতজ্ঞান পাশে আবদ্ধ করলেন জীমতী
অন্দু স্বামীনাথনও। মাদ্রাক্তের Y. M. C. A আমার জাল্ল একটি
সম্বর্ধনা সভাব আণোজন কবেছিলেন, আমার মনে আছে সেগানে
জীনতা কন্মুব স্কুলার মধ্যে আমাদের নৃত্যামুষ্ঠান সম্পর্কে ধ্রথষ্ঠ
প্রশাসন, উৎসাত, সুগাতি এবং প্রশাস্তিও ছিল।

মালাংক বাদ কবাৰ সময় আমাৰ জীবান সবচেয়ে উল্লেখযোগ্য, সন্চেয়ে বিস্মানকৰ এবং সন্চেয়ে অবিস্মানণীয় যে ঘটনা ঘটল ভা হল বালা সবস্থাীৰ সাদিধালাত। শ্ৰীমতী বালা সবস্থী—ভাৰত-নাট্যমেব ইতিহাসে বাঁব নাম চিবকালের ভালে ভাড়িয়ে থাকবে। ভারতবর্ষের নুকাশিল্পের প্রচুষ উঞ্জি সম্ভবপর হয়েছে বার কলাণে ! ষে তিনদিন সেগানে আমাদের অনুষ্ঠান ভয়েছিল সেই তিনদিনের প্রতিটি দিনট তিনি এসে আমাদের উৎসাহ বর্ধন করে গেছেন ---আৰু কেন্ডে নিয়ে গেছেন আমাদের সকদের স্থগভীর শ্রন্ধা। আমৰা উঠেছিল্ম হোটেল কোনেমাবায় (Hotel Connemara) : সেই হোটেলে এলেন বালা সরস্বতী শামাকে এবং আমাদের সম্প্রদায়ের প্রতিটি শিল্পকৈ অভিনন্দন ভানাতে, বোঝা গেল, আমাদের নুত্যাওঠান শ্রেষ্ঠ শিল্পাকৈও আনন্দ দেশে মত নেতাৎ অনুপাযুক্ত হয়ে ভঠে নি ৷ স্রেষ্ঠ শিল্পীৰ চোথে আমাদের অমুষ্ঠান অপাংক্তের রূপ নিয়ে দেখা দেয় নি—মাথা পেতে গ্রহণ করলুম শিল্পীর সমেহ व्यावेदीम । व्यानम एथन क्रमग्र छे १८५ १५ एछ । शामन व्यास्तान আমাদের জানিয়ে গেলেন তাঁর বাসভবনে। আমাদের পরিতৃতি (मन्यात करना निरामद नाह (मथारमन । हैं)। त्रिमन निराम निराम বালা সরস্বতী আর সেই নাচের স্মৃতি কোনওদিন মুছবে না আমার মন থেকে, সে দুখ্য আ'ম জাগনে কথনও ভুলতে পাবৰ না সেই দুখ বেন এখনও আমার চোথের সামনে ভেসে ওঠে, পারিপার্শিক আবেষ্টন'কে ভূলিয়ে দেয় সমকালীন ঘটনারও অনেক কিছু হয়তো বা ক্ষণকালের জন্যে সারে মান থেকে, আপান অস্তিখন্ত এক এক সমবে তাবিষে যায় — চোপেব সামনে ভেসে ওঠে সেই দুছা। সেই মুদ্রা, দেই তাল, দেই ভঙ্গীমা, দেই কুশ্কতা, দেই মাধুর্য। চার ঘণ্ট। নেচেছিলেন বালা সংস্থতী। ভাশতে পারেন? একমাগাড়ে নেচেছিলেন—কোন বিয়াম, কোন বিয়তি বা কোন ছেদ ছিল না সেই নাচে। তাঁৰ এই ষাহকৰী প্ৰতিভা ভূলিৰে দিয়েছিল আমাংদর স্থান-কাল-পাত্র। কেড়ে নিষেছিল মুখের ভাষা-বিশ্বাস



সাধনা বস্থ

হতবাক। তিনি কি শুধুই শিল্পী? না—শুধু শিল্পী তিনি নন— তিনি নিজেই একজন জীবস্ত বিশ্বয়। জীবস্ত আশচৰ্ষের তিনি একজন জীবস্ত প্রভাক।

মধুমাণ্ডত অভিজ্ঞতা আর অকুরস্ত সুথন্মতি সমল করে কলকাতার কিবে এলুম। দক্ষিণ-ভারত অমণ হল সমাপ্ত। কর্মজাবনের তরঙ্গে আবার নিজেকে ভাগিয়ে দিলুম স্বভাবতঃই। 'মানাঞ্চা'র নাষিকারপে নিউ থিয়েটাসে র ছবির কাজ আবার শুরু করলুম'। মধুর পরিচালনার। বাঙলা এবং হিন্দী ছটি ভাষায় তোলা হল মানাক্ষী। আজকের দিনের প্রখ্যাতনাম প্রধান্তক-পরিচালক শ্রীবেমল রায় ছিলেন এর চিত্রকর। চিত্রকর ছিসেবে জাঁর অসাধারণ ানপুণতা সর্বজনবিদিত। এখান প্রধান চরিত্রগুলিতে चरडीर्व इत्सन नहेत्मथर जीनद्रमहत्त्व भिज, नहेन्द्र जीवशिक्त চৌধুৰী, প্রীকৃক্চন্দ্র দে, প্রীপ্রীতি মন্ত্রদার, শ্রীমতী দেববাল। এবং এমতা সন্ধ্যারাণী প্রভৃতি। স্থ্রবোজনার দায়িপভার গ্রহণ করেছিলেন শ্রীপক্ষত্র মল্লিক। আগেট বলেছি নায়িকার চরিত্রে ক্ষপ দেওরার ভার পড়েছিল আমার উপর। নায়িকা চরিত্রটি একটি নাটকীয় চরিত্র, একটি অন্ধ মেয়ের ভূমিকা। ছবির হিন্দী সংস্করণে নায়কের ভূমিকায় দেখা দিরেছিলেন নাজ্মল হোসেন। বোম্বে টকাজ খেকে দেবিকারাণীর সঙ্গে অভিনয় করার পর থেকে ইনি রুখেষ্ট প্রাসন্ধি অর্জন করতে সমর্থ হন। ছবির বাঙলা সংস্করণে নায়কের ভূষিকার অভিনয় করেছিলেন বাওলার তৎকালীন চিত্রজগতের

অক্তম প্রধান স্থদর্শন অভিনেতা স্বর্গীর ক্যোতিপ্রকাশ, রাজনর্কী ছবিতেও আমার সঙ্গে নারকের ভূমিকার বাঁর অভিনর দর্শকসাধারণ দেখেছেন।

এইবার এখনকার একটি কথা ৰঙ্গি। মাঝে মাঝে বখন "বিষ্ণুদ্ধন, বিবুল কাড়" অবস্থায় একা বলে থাকি 'অসংখা চি**স্তাকে** সন্সী করে তথন এক-এক সময়ে আমার মনে কয়, আমি ভাবতে চেষ্টা করি ঐ অসংখ্য চিস্তারাশিব মধ্যে থেকে একটি চিস্তাই আমার মন অধিকার করে সর চেয়ে বেশী। খ্যাতি, যশ, বৌবন, ঔজ্জনা স্বকীয়তা উপরের করুণায় আমি তো অফরস্ত পেষেছি—তাঁর স্বাসীয় অমুগ্রতে আমি তো পূর্ণ হবে উঠেছি প্রাপ্তির পরম প্রাচুর্বে। তাঁর কুপার্ট্ট করুণাগারার মত করে পড়ে ধরু করেছে আমাকে। কিছ দে দখলে কোন সচেতনতা জাগে নি আমার মধা। ভার কারণ আমার মতে আমাকে এক "এরিফেল"এর সঙ্গেই তুলনা করা চলে। গৃঢ গভীর রহস্যতদ্বের স্বপ্তস্থাতের চিরস্থায়ী বাসি**ন্দার** মত, মন বেন সতত নভোচাবী, ভাবাশ্রমী, কল্পনাবাদী—অসীমের স্ত্রসদ্ধানে ব্যাকৃল, তৎপব, উন্মুখ এশ স্বভাবত:ই সেই জন্তেই জাগতিক পরিবেশ প্রলুদ্ধ করতে পাবে নি আমার চেতনাকে, আমার অনুভতিকে, আমার সত্তাকে। এখন প্রশ্ন জাগতে পারে বে এখানে আমি ভ্রাস্ত কি অভ্রাস্ত—তারও উত্তর আছে। ভ্রাস্তই হই কি অভ্ৰান্তই হট, যাই হই না কেন—তা নিয়ে আমাৰ ভাৰাইই বা কি আছে ? কেন না এখনও পর্যস্ত আমি নিজে তার বিচারিকা নই। ক্রমশঃ।

অমুবাদ—কল্যাণাক্ষ বন্দ্যোপাধ্যায়

ইন্দ্রনাথ, জীকান্ত ও অন্নদাদি

শ্রংচন্দ্রের কাহিনী বাঙলার চিক্রজগতকে যে কভখানি গৌরবাম্বিত করেছে ভার তুলনা নেই। বাঙলার চিত্রলোকের ইতিহাস-স্টির ক্ষেত্রে শ্রং-কাহিনীর অবদান অতুলনীয়। বাঙ্লার অন্যতমা শ্রেষ্ঠা অভিনেত্রী শ্রীমতী কানন দেবাও প্রথম জীবনে শ্বংচক্রের একাধিক কাছিনীর চলচ্চিত্রারণে অভিনয়ে অংশগ্রহণ করে এবং পরবর্তীকালে মিভেই একাধিক শরৎ-কাহিনীকে চিত্তরূপ দিয়ে বধেষ্ট স্থনাম ও প্রসিদ্ধি অর্জন কবেছেন এবং শবংচন্দ্রের বিভিন্ন কাহিনীর চিত্ররপ দেও ার জন্ম দশকের অকুষ্ঠ সাধুবাদের অধিকারিশী হয়েছেন। চিত্রভগতে তাঁর সাম্প্রতিক অবদান ^{"ইন্দ্রনার্থ}, **একান্ত ও** জন্নদাদি।" শ্রীকান্তের প্রথম পর্কের প্রথমাধ কে অবলম্বন করে এই ছবিটিব রূপ দেওয়া ছংখছে। আমংা মুক্তকণ্ঠে স্বীকার করছি বে এ ধরণের সর্বাক্তক্ষর বাঙ্গা ছবি অনেক দিনেব ব্যবধানে 🖚 🕞 কথনো আত্মপ্রকাশ করে। সকল দিক দিয়ে ছবিটি ত্রুটিহীন। পিসীমার বাড়ীতে বাঙ্গক শ্রীকান্ত সময় অতিবাহিত করছে, ভারপর ইন্দ্রনাথের সঙ্গে তার যোগাযোগ, তার সঙ্গে ডিঙ্গীতে নৈশবিহার, মাছ চুবি, বীভিমত হ্যাডভেঞ্চাবের মধ্যে দিয়ে ভালের সাজা, নতুনদার আবিভাব, অমুদাদির সঙ্গে ষোগাৰোগ, শাভ্ভীর পরিচয় লাভ, শান্তজীর মৃত্যু, জ্রীকাস্ককে চিঠি লিখে রেখে জন্নদাদির निक्र-क्रमवाजा, िठिटेव मध्य मित्र क्र भिन्तात्क व्यवसामित व्यास्त्रभविष्य দিরে-এই ভাবে ছবিটির চিত্ররূপ দেওরা হবেছে, সব শেবে পিছন

থেকে দেখানো হচছে শরৎচক্র সেই অমর কাহিনী লিখে চচ্ছেছেন।
ছবির পরিচালনা এত উচ্চালের হয়েছে বার কলে সাহিত্যগুরুর
রচনার রুগ কিছুমাত্র নষ্ট হয়নি, কাছিনীর মূল বস ছবিতে পূর্ণমাত্রায়
বজার আছে। শীকাস্তের এই অধায়িটিতে এমন কয়েকটি বর্ণনা
বা বিবরণ আছে যাকে ছবিতে ফোটানো নিভান্ত তুরুহ, আনন্দের
সঙ্গে পরিলক্ষ্যণীয় যে সেই সব বর্ণনা বা বিবরণীয় চিত্রায়ণে পরিচালক
ছবিদাস ভট্টাচার্য অসাধারণ নিপুণ্যের পরিচয় দিয়েছেন।

ছবিটিকে এত নিখু ভভাবে ফোটানো হয়েছে, যাতে মনে হয়েছে যে বইয়ের কাগজের পাতাকেই এত বড় জাকারে দেখতে পাচ্ছি, কিশোরদের য্যাডভেঞ্চার বলতে যা বোঝায়, বাঙলা ছবিতে তো তার উপস্থিতি নেই বললেই চলে—কিন্তু ইন্দ্রনাথের সংক্স শ্রীকান্তের ডিঙ্গীতে নৈশ অভিযান এমন ভাবে দেখানো হছেছে, যা রীতিমত শিকরণ বইয়ে দেয় দর্শকমহলে। ছবিটি পরিচালনার ক্ষেত্রে পরিচালক যথেষ্ট সংযমেবও পরিচয় দিয়েছেন। ছবিতে গান একটিও ক্লোড়েননি অথচ ইচ্ছে করলে বিভিন্ন পরিবেশে পাঁচ ছ'টি গান অনায়াসে ভূডতে পারতেন, বাইজীকে তিনি আগাগোড়া ভস্তরালে রেখে এমেছেন, বিমলার সঙ্গে শাহু প্রীর যে সম্পর্ক, তা মাত্র হু'টি সংলাপের মধ্যে প্রকাশ করেছেন। এই বাইজীপর্ব ও খালী-ভগিনীপতির প্রেমপর্ব নৃত্য-গীত সহযোগে ফেনিয়ে-কাঁপিয়ে স্থবিস্তৃত হয়ে ছবির একটি বিবাট অংশ জুড়ে বসেনি। আভাসে-ইঙ্গিতে, স্বল্প বিসরে সমগ্র অধ্যায়টি দর্শকদের কাছে সম্পূর্ণরূপে বোধগম্য হয়ে উঠেছে, আভাস-ইঙ্গিতের মধ্যে দিয়েই আগাগোড়া অংশটি হৃদয়ক্ষম করতে কিছুমাত্র বেগ পেতে হয় না দৰ্শকসাধারণকে। মূল গ্রন্থে আমরা জেনেছি ে, অনুদা. দিদিকে হত্যা করে শাভ্জী নিরুদিষ্ট হন। ছবিজে সেই জায়গায় একটু পরিবর্তন করা হয়েছে, দিদিকে রূপায়িত করা হয়েছে বোনে, একটু ভাবলেই বোঝা বাবে যে এই পরিবর্জনের পিছনেও বর্থেষ্ঠ কারণ বিজ্ঞমান। মেজদার অধ্যায়টিকে স্থার একটু বড় করলে খুব অশোভন হোত কি ? বড় করা মানে অভিরিক্ত সংলাপ দিয়ে নয়—শরংচন্দ্রই তাঁর গ্রন্থে মেজদাকে আরও খানিকটা চিত্রিত করে গেছেন—সুতরাং তাঁরই বর্ণনামুসারে 'মেজদা চরিত্রটিকে আর একটু বড় করা ৰেতে পাবত—বেমন হুদ'ান্ত গ্রীম্মের ভরা হুপুরে ঐকান্তদের বেতে হোত ছু মাইল রাস্তা থেটে তাঁর তাস খেলার বন্ধুকে ডেকে আনার জন্তে, দাৰুণ শীতে কখল মৃড়ি দিয়ে ৰসে মেজদা ৰই পড়তেন, শ্ৰীকান্তদের ঠার হাজিরা দিতে হোত বইম্বের পাতা উন্টে দেবার জন্মে।

সবচে র প্রশংসনীয় নৈপুণার স্বাক্ষর রেখে গেলেন স্থামল ওপ্ত। অতিরিক্ত সংলাপ রচনার দায়িছভার তাঁর উপর ক্রম্ভ ছিল। তাঁর সংলাপ রচনা এত নিথুঁত হয়ে উঠেছে রে শরৎচন্ত্রের সংলাপের সঙ্গেল সঙ্গেই তাঁর সংলাপও ব্যবস্থাত হয়েছে—কিন্তু কোথাও তা বেমানান লাগে নি, কোন অংশে তা নিয় মানের হয় নি। এই অসাধারণ কৃত্তিত্বের করে স্থামল ওপ্ত নিক্তরই ব্যুবাদার্হ। অভিনরাংশে কোনও একজন শিল্পীর কথা বলা চলে না। প্রত্যেকটি শিল্পীর অভিনয় স্ব স্ব ভূমিকান্ত্রায়ী অপূর্ব্ব। প্রথান শিল্পীদের অভিনয় তো নি:সন্দেহে চমৎকার পার্শ্ব শিল্পীরাও রথেই শক্তির পরিচয় দিরেছেন। ভূমিকালিপি এইভাবে হয়েছে—অল্পদাদি—কানন দেবী, শাহু ী—ঃবিকাশ রায়, পিসীমা—মলিনা দেবী, পিসেমশাই—ভক্ষদাস বন্ধ্যোগাহার, ইন্দ্রনাধ—পার্গপ্তিয়, শ্রীকান্ত্র

—সজল ঘোৰ, বায় সাহেব—বীরেশ্বর দেন, বিমলা—শেকালি দেবী,
নতুনদা—অতন্থ ঘোৰ. নবীন (বড়দা)— শৈলেন মুখোপাখ্যার, সভীশ
(মজদা)—শীতল বন্দ্যোপাখ্যায়, জীনাথ—অভিত চটোপাখ্যার
প্রভৃতি। থিয়েটারের মেখনাদের চরিত্রে বারেকের জন্তে অনেকদিন
বাদে মোহন মুখোপাধ্যায়কে দেখা গেল। ছবির চিত্রকর ও সজীত
পরিচালক হচ্ছেন বথাক্রমে জি, কে, মেহতা ও পরিত্র চটোপাধ্যার।

সোনার হরিণ

অপরাধমূলক রহস্তকাহিনীর ষথাষথ চলচ্চিত্রায়ণ দর্শকমহলে বে ষথেষ্ঠ সমাদর পাবে, এ সম্বন্ধে অস্তবে নিশ্চয়তা পোষণ করার কোন বাগা নেই। কিছ সেই "যথায়থ" চিত্রায়ণের জ্বন্তে কুশলী হাতের স্পর্শ প্রয়োজন, অপটু হাতের কাক্ত নয়, এই ক'টি কথাই বার বার মনে পড়ছিল "সোনার হরিণ" দেখতে দেখতে। ছবির নামকরণ ও ক্যামেরার কাজ ছাড়া ছবির আব কিছু উল্লেখবোগ্য, আকর্ষণীয়, চিতাকর্যক বলে প্রতিভাত হয় না। ছবিটিকে অবণা দীর্ঘ করা হয়েছে। সমগ্র ছবিতে গতির নিতান্ত অভাব। ছবির অর্ধাংশ প্রদর্শিত হয়ে গেছে, তথ-ও মৃলগলটি কি বা ছবিটি অপরাধমূলক না মনস্তত্ত্বমূলক না সাধারণ প্রেমোপাখ্যান এই প্রশ্নই বিরাট রূপ নিয়ে দশকের সামনে দেখা দেয়। পরিচাঙ্গক সবচেয়ে হাত্মকর পরিচয় দিয়েছেন ঘরের জানলার পাশে হাতে-পাওয়া চাদের মত কুত্ব-মীনার দেখিয়ে। দিল্লী দেখানো হচ্ছে, দশককে বৌঝাতে হবে সে কথা, অভএব কৃত্ব-মীনার দিয়ে বুঝিয়ে দাও—হা-হতোথন্মি, দিলী বিনি চোথে দেখেছেন তিনিই জানেন মৃল দিল্লী থেকে বন্থ দূরে কুছুব-মীনার এবং কুতুবের আশে-পাশে জনবসতি কোথায় ? বছ দূর থেকে কুড়াকে দেখা যায় শৃকপ্রাক্তরে কে যেন ইট-চুণ-স্থরকি দিয়ে বাঙলা ভাষার "চার আনা"র গাণিতিক চিছ্ন এঁকে রেখে গেছে। একটা হোটেলে খুনোখুনী চলছে। হত্যাকাও। অন্তান্ত বাসিকাদের কানে সে গুলির শব্দ পৌছয় না—জনেককণ বাদে দেখা যায় সিঁড়ির নীটে চারটি লোক কাঠের পুতুলের মত গাঁড়িয়ে আছে। একটা আকমিক হত্যাকাণ্ডের এই প্রতিক্রিয়া ? যে বিমান নষ্ট করা নিয়ে এত কাও, এত রহস্ত, এত থুনোথুনী সেই বিমান কেন নষ্ট করা হল ? কি তার উদ্দেশ্য, সেই ব্যাপারে কার-কার যোগাযোগ ছিল, এই বিষয়গুলি ভো আগাগোড়া ছবিতে জম্পষ্ট, এ সম্বন্ধে পরিচালকের নীরবতাই চোধে পড়ল, দৰ্শকমনে যে এই প্ৰশ্ন জাগতে পারে বোঝা গেল এ সম্বচ্ছে পরিচালক মাথা খামাবার বিন্দুমাত্র প্রহোজন অনুভব করেন নি। মঙ্গল চক্রবর্তী পরিচালিত এই ছবিতে প্রধান চরিত্রগুলিতে অবতীর্ণ হয়েছেন ছবি বিশ্বাস, উত্তমকুমার, কালী বন্দ্যোপাধ্যায়, তক্লাকুমার, স্থপ্রিয়া চৌধুরী, নমিভা সিন্হা, অক্তাক্ত চরিত্রে রূপ দিয়েছেন বিগত দিনের বিখ্যাত চিত্রনায়ক ভামু বংশ্যাপাধ্যায়, বিপিন গুপু, মিছিব ভটাচার্ব, বিমান বন্দ্যোপাধ্যায়, ঋষি বন্দ্যোপাধ্যায়, স্বরূপকুমার, আশোক সরকার, শ্রীমান তিলক, পদ্মা দেবী, কুম্বলা চটোপাখার প্রভৃতি। ছবির কাহিনীকার রাসবিহারী লাল এবং স্থরকার হেম**ত** মুখোপাধ্যায়।

বস্থাত দের সাহায্যকল্পে রঙমহলের প্রচেষ্টা বনঞ্জর বৈরাগী সর্বজন-সমাদৃত নাটক 'এক মুঠো আকাশু' সগৌরবে অভিনীত হরে চলেছে রঙ্গমহল রঙ্গমণে। নাটকটির শতক্ষ অভিনয় রজনী অনেক 'আগেই অভিক্রান্ত হয়ে গেছে—কিছ ভার উৎসবটি উদযাশিত হবে আগামী ১৬ই নভেম্বার। আমরা অবগত হলুম যে বর্ত্তপক্ষ ঐ দিনের টিকিট িক্রেলক টিকিটেব সমস্ত অর্থ বক্তার্তদের আগকলে দান করবেন। বাঙলা দেশের জনসাধারণ স্থাবিদিত আছেন যে আজকাল এই জাতীয় বিশেষ অভিনয়েৎসব উপলক্ষেরজমঞ্চের কর্তৃপক্ষদের তরফ থেকে শিল্পীদের পুরস্কার দেওয়া হয়, উপরোক্ত কারণেই হঙ্ডমহলের শিল্পিগণও পুরস্কার না নিয়ে ঐ বাবদ যে পরিমাণ টাকা নির্ধারিত সেই টাকা বক্তার্ডদের সাহায়ে ব্যক্তিত হোক, এই ইচ্ছা প্রকাশ করেছেন। অসহায়, ভাগ্যবিভ্ষতিত সর্বহার বক্তার্ডদের কল্যাণ কামনায় থিডেটারের স্বথাধিকারিগণ এবং শিল্পার দল এই উভ্যুপক্ষই যে দরদ, সহামুভুতি ও উদার মনোভাবের দৃষ্টান্ত রেখে গেলেন তা নিঃসন্দেহে সাধুবাদার্হ।

রঙ্গপট প্রসঙ্গে

শ্রদ্ধের প্রেমেন্দ্র মিত্রের রচনা "হাত বাড়ালেই বন্ধ্" চলচ্চিত্রায়িত হচ্ছে স্কুমার দাশগুপ্তের পরিচালনায়। স্থর দিচ্ছেন নচিকেতা ঘোব। বিভিন্ন চরিত্রে রূপ দিচ্ছেন ছবি বিশাস, পাহাড়ী সাঞাল, উত্তমকুমার, তত্বপকুমার, পদ্মা দেবী, সাবিত্রী চট্টোপাধ্যার প্রভৃতি। * * শক্তিমান পরিচালকদ্বয় শভু মিত্র ও অমিত মৈত্রের চিত্রামোদাদের দর্বারে আগামী উপহার "ভভবিবাহ"। বিভিন্ন ভূমিকার অবতীর্ণ হচ্ছেন ছবি বিশাস, পাহাড়ী সালাল, শভু মিত্র, নির্মল চট্টোপাধ্যার,

অমর গ্রেপাধাার, ছারা দেবী, তৃত্তি মিত্র, বরুণা বস্থোপাধার, স্থাপ্রিয়া চৌধুরী, মণিকা দেবী, কমলা মুখোপাধ্যায় প্রভৃতি শিল্পিরক। * * একাখারে পারচালক ও অভিনেতারপে বিকাশ রায় আবার আত্মপ্রকাশ করবেন "রাজাগাজা" ছাবটির মাধ্যমে। এর সংলাপ রচনার ভার নিয়েছেন বিণায়ক ভটাচার। রূপারণে দেখা ধাবে ৰিকাশ বায় উত্তমকুমার, গঙ্গাপদ বস্থ, তরুণকুমার, ভান্থ বায়, চন্দ্রাবতী দেবী, সাবিত্রা চট্টোপাব্যায় ই এখাদ শিল্পার দশকে। * "কুহক" ছবিটি পরিচালনা করছেন অগ্রদূতগোপ্তা। সুরারোপ করছেন ছেমস্ত মুখোপাখায়। এই ছবিটির মাধ্যমে আপনারা উত্তমকুমার, গঙ্গাপদ বস্থু, প্রেমাংক ংস্থু, তরুণকুমার, গোপাল মজুমদার, তুর্ণনী চক্রবর্তী, শ্রীমান দীপক এবং শ্রীমতী সাবিত্রী চট্টোপাধার প্রমুখ রূপদক্ষ শিল্পীদের অভিনয় দেখতে পাবেন। • • দীর্ঘকাল পরে পঞ্চজ মল্লিকের স্থবসমৃদ্ধ একটি ছবি বিভিন্ন প্রেক্ষাগৃছে মুক্তিলাভ করবে। ছবিটির নাম "নিমাই"। পিনাকীভ্**ৰণ** পরিচালিত এই ছবিটির কাহিনীকার অনস্ত চটোপাধ্যায়। এই ছবিতে অভিনয় করছেন বলে বে সকল অভিনয়শিল্পীর নাম বোষিত হয়েছে তাঁদের মধ্যে ছবি বিশ্বাস, জহর গাঙ্গুলী, পাহাড়ী সাক্তাল, বিশ্বজিৎ, एक्नाम बल्लाशिशाय, कहत दाय, जुलमी हळवजी, इतिथन মুখোপাধ্যায়, প্রীমান্ বাবুয়া ও তিলক, মলিনা দেবী, পদ্মা দেবী, ভারতী দেবী, রেণুকা রায় এবং শ্রীমতী অনুরাধা গুছের নাম সবিশেষ উল্লেখনীয়।

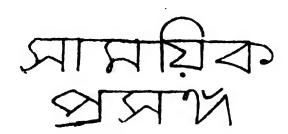
গৃহপালিতের কথা মহিমরঞ্জন মুখোপাধ্যায়

হিমান্দ শিখর তার পরিপূর্ণ বক্ষের উপমা স্থক্মার সূর্যকরে প্রথমা সে মুগ্ধ-মনোরমা লক্ষ ক্ষেনচূড় দেহ—মনে মনে সমুদ্রকে সথা মেনে সে সমুদ্রে গিয়ে তাক্ট ভরে হল পলাভকা;

পাধির টোটের মুক্ত ব্যঙ্গবিদ্ধ বালুকার শর ভার পারে পারে ঘূরে ঢেকে দিল দিগস্ত প্রান্তর নগ্ল-শজ্জা বুকে নিয়ে সৈকতের বিজপের হাতে সে হয়ত ধরা দেবে সমুদ্রের পৌক্ব পোড়াতে:

আৰি তাই ভাৰলাম, নিৰ্বাণিতা, বৰ কড ভাল— বাইবে দেয়ালে নিবে ত্ৰিসদ্ধাৰ ইন্দ্ৰবস্থু আলো সভাৰ সমস্ত দ্লিন্ধ শ্লানি থাকে সদ্ধীণ ভিতৰে আৰু সে মৃত্যুই সাধ্য দুৱাকাজনী বিশন সাগৰে;

আবার বিপূল সজ্জা—সৈকতের শৃক্ত হলে তৃণ চেরে দেখি অধিকৃত তথু সেই গরের নকণ !



দিল্লীতে রাজ্যপালবর্গ

প্রিক্তি রাজ্যপাল সম্মেলনে রাজ্যপালগণ নাকি এই অভিমত প্রকাশ করিয়াছেন দে, আইন ও শৃখালা রক্ষার জন্ম জনতার উপর অলীচালনা যাহাতে এড়ান ধার তাহাব চেট্টা করা দরকার। আন বিদি অলী চালাইতেই হয় তবে তাহা দেন একেবারে শেষ আর হিসাবে ব্যবহার করা হয়। জনতার উপর গুলীচালনার এতিয় এদেশে বৃটিশ আমল ইইতে চলিয়া আসিতেছে। দেশের আধীনতাকামী জনসাধারণকে দাবাইয়া রাধার জন্ম বৃটিশরা এ অর দেশ শাসনের আভাবিক উপায়ে পরিণত করিয়াছিলেন। আদেশী আমলে এ এতিয় আনেক আগেই পরিত্যক্ত হওয়া ডাচিত ছিল—কিন্তু তাহা হয় নাই! কলে বহু লোককে নিজেদের গণতান্ত্রিক দাবী আদায়ের জন্ম আন্দোলন করিতে গিয়াও প্রাণ দিতে ইইয়াছে এবং শাসকশক্তি ও জনসাধারণের মধ্যে তিক্ততা ও বিভেদের প্রাচীর গড়িয়া উঠিয়াছে। এবার যাদ সমস্যাকে শাসকর্বর্গ নৃতন দৃষ্টি লইয়া দেখিতে চান ভো মন্দের তাল বলিতে হইবে।"

বাঙলার নদ-নদী

ঁপন্চিমবঙ্গে বক্সার ফলে নদীর যে সব বাঁধ ভাঙিয়া গিরাছে ভাহা বেরামন্তের জক্ত ভারত সরকার পশ্চিমবঙ্গ সরকারকে চলতি সরকারী ৰৎসবের হিসাবে ২০ লক টাকা দিতে রাজী হইরাচেন। প্রকাশ বে, এজন্ত ৬০ লক টাকা ব্যয়ের বরাদ আছে। কিছ চলতি বৎসরে এত টাকা ব্যয় করিয়া উঠা সম্ভবপর হইবে না বলিয়া চলতি বংসরের ৰাকী পাঁচ মাদের ভক্ত উপরোক্ত পরিমাণ টাকা বরাদ্দ হইয়াছে। বাঁধ ভাঙার জন্ম বকুার ফলে এই বৎসর পশ্চিমবঙ্গ যেরপ ক্ষতিগ্রস্ত হইয়াছে ভাহাতে আগামী বৎসরে যাহাতে উহার পুনরাবৃত্তি না ঘটে ভক্ষ্য আগামী বৰ্ধাঋ হুব পূৰ্বেই সমস্ত ভাঙা বাঁধ মেরামত করার আয়োজন ছিল। বর্ত্তপক্ষ আগামী পাঁচ মাদের মধ্যে এই কাজ সম্পূর্ণ করা কেন যে অসম্ভব মনে করিলেন তাহা আমরা হাদয়ঞ্চম কারতে পারিতেছি না। এই কাব্দে তেমন জটিল কোন কারিগরী ব্যবস্থার প্রয়োজন নাই । উহার জন্ম দেশে শ্রমিকেরও কোন অভাব নাই। এক্নপ অবস্থার এই কাজ ছুই-ছিন ২ৎসর বিলখিত করিবার কোন হেতুই নাই। ধাহা হউক, কিছুমাত্র কাজ না হওয়া অপেকা কিছু কাজ হওয়া মন্দের ভাল এবং সেই হিসাবে চলতি সরকারী ৰংসবে এজন্ত যে ২০ লক্ষ টাকা ব্যয়ের বরাদ হইয়াছে সেজন্ত আমরা আনন্দিত। তবে আমরা আশা করিব বে, নদীর জল আর একটু ৰ্ষিলেই এই কাজ ওক হইবে এবং আগামী বৰ্ষাৰ পুৰ্বেই ষাহাতে অভীপ্সিত কাজ সম্পূর্ণ হয় তাহার ব্যবস্থা করা হইবে। আরও আশা ক্রিব বে, এই টাকার ফোন অংশ তুর্নীভির রন্ধপথে উবিয়া বাইবে

না। আমাদের নিজের গ্রণ্মেন্টকে এ কথা বলিয়ানিজেরাই লক্ষাবোধ করিডেছি। কিছু না বলিয়া উপায় নাই।"

—ভানন্দবাজার পত্রিকা।

পৃথিবী থেকে চাঁদ

"সোড়িয়েট বাশিয়ার চন্দ্র আবর্জনকারী রকেট লুনিক-৩ চাদের অপর পিঠের যে ছবি বেভারযোগে পুথিবীতে পাঠাইয়াছে, ভা সম্প্রতি প্রকাশিত হইয়াছে। চাদের যে পিঠটি পৃথিতী হইতে দেখা যার, তাহার পিছন পিঠটা ইভিপূর্বে কোনদিনই মানুষের দৃষ্টিগোচর হয় নাই। লুনিক-৩ এই প্রথম তা মাত্র্যের দৃষ্টিতে অবারিত করিল। কিছ এই দিকের ছবিতে দেখা গেল, শুষ্ক সমুদ্রের গর্ভ, বন্ধ বিছ্কীর্ণ মৃত মক্স-অঞ্চল ও ছোট-বড় পাছাড়ের ফাঁকে কাঁকে সিক্তভাই'ন হ্রদ ছাড়া চাদের পিছনে কোন নৃতন্ত বা বৈচিত্র্য নাই। অর্থাৎ চন্দ্রলোক জলবায়ু ও প্রাণশূত্য মৃত মরু বলিয়া যে ধারণা বছদিন হইতে চলিত আছে, তা এতদিনে হাতে-কলমে প্রমাণিত হইল। কিন্তু এই যেখানে অবস্থা, সেখানে চালে যাওয়ার অন্ত মানুষের আর আগ্রহ থাকিবে কি ? 😘 খাল, মৃত আগ্নেয়গিরি ও ক্ষুদে পাহাড় সমাকীর্ণ এই মুল্লুকে সোনা রূপা ইউরেনিয়াম কোন লোতের বস্তু নাই। নগর বন্দর উল্লান কার্থানা কোন কিছু বানানোর স্থযোগ নাই। কোন স্থথে মাফুষ সেথানে ঘাইবে ? গল্প আছে প্রেসিডেন্ট ক্রুগার বলিভেন, আর যেখানেই থাক, চাঁদে সোনা নাই। থাকিলে ইংরেজ্য়া ঠিক সেথানে হাজির হইত। ইংরেজদের আজ আর সেদিন নাই, তবে আমেরিকা চাঁদে যাইবার ৰুৱা এ প্ৰযন্ত লাগাড়ো আয়োজন কবিয়াছে। জানি না লুনিক ৩এর ফোটোগ্রাফের পর ভাহার উজন অটট আছে কিনা! ভবে রাশিয়া চাদে হাজির হওয়ার আগেই ও দেখিতেছি সেথানে ভাহার পতাকা প্রোথিত করিয়াছে এবং সমস্ত মরু পাছাড় ও প্রান্তরকে রুশ নামে চিহ্নিত করিয়াছে। এর পর আর দখলী হব দাঁড়াইবে কি ?

—যুগা**ত**র।

রিলিফ কেলেঙ্কারী

"বিষয়টি সামান্ত নছে। বিলিঞ্চে বাজনীতি করার ধে-সকল অভিযোগ উঠিতেছে ইহা তাহারই একটি দৃষ্টাস্ত মাত্র। সংবাদে ইহাও প্রকাশ, ডাঃ রায়ের সভাপতিবে বকাত্রাণ কমিটি গঠিত হওয়ার কংগ্রেসকর্মীদের প্রয়াস • বিধাবিভক্ত • হইয়াছে এবং যদিও খালমন্ত্রী প্রক্রমে সেন বংশ্লেসের নামে অর্থ ও অক্সান্ত সাহায্যের উপকরণাদি সংগ্রহ করিতেছেন তথাপি কংগ্রেসের প্রতিপত্তিশালী ও বিত্তশালী সমর্থকগণ স্বভাবতাই এইবার মুখ্যমন্ত্রীর কমিটির দিকে বেশী করিয়া ক্রিয়াছেন। কংপ্রেসকর্মীদের এই বিধাবিভক্ত প্রয়াস সত্যই

লক্ষাজনক ব্যাপার! পশ্চিমবাংলার অর্থনোট্ট মানুষ বখন বঞ্চার
মূর্গতি ভোগ করিতেছেন ঠিক তথনই রিলিক সংগ্রহ ও বিজ্ঞবনের
ক্ষেত্রে এই সকল ঘটনা ইহাই প্রমাণ করে বে, মানুষকে সতাকার
রিলিক ও সাহায্য করা অপেকা দলগত বার্থ এবং গোট্টাগত
বার্থসিদ্ধিই বড় করিয়া দেখা দিয়াছে। বিরোধী রাজনৈতিক
দলতালির প্রার্থাস সরকারী ও বেসরকারী দলের প্রয়াসের সহিত একত্রিত
করিয়া স্মন্ত্র্যু বিলিক ব্যবস্থা গঠনের বে-প্রভাব শ্রীজ্যোতি বস্ম
দিয়াছিলেন, তাহা অভিশ্র তৎপরভার সহিত ডা: রার প্রজ্যাখান
করিয়াছিলেন। ভাহার উপর কংপ্রেমের নিজ দলের ভিতরেই
ভাবার এইরূপ বিধাবিভক্ত প্রচেষ্টা!"

—বাধীনতা।

পূজার আসর

দ্বাদপ্রদের পোরা বারে। মা ছর্গাব ছবির সাথে বছাপ্লাবিত অঞ্চলব ছবির দারুণ প্রতিবাসিতা! ছুর্গতদের ছবি ও কাহিনী নিতা পাত। ছুত্ত মাছে। নাই কেবল সাহায্য বিতরণের ছবি! নাই কোন কথা—কত কঠ স্বীকার করে ছর্গত এলাকার সরকারী কর্মচারীরা স্বববাহ পৌছে দিছে! তা কি করে হয়? ভ্যাবহ চিত্র ক্ষর-ক্ষতিব বীভংস রূপ না দিলে কালো বাছার কাঁপ্রে কেন? মোদা কথা গত পুজোর আসর এই ভাবেই কাটলো।"

—বর্ত্বমানবাণী।

ত্বাস্ত ঋণ বন্টনে গলদ

"করিমগঞ্জ পুনর্মসতি অফিলে একই উত্বাল্কর নামে মঞ্জরীকুত ৫০০১ শত টাকা ঋণ ভিন্ন ভিন্ন ব্যক্তির নামে হুইবার বণ্টন করার পর ভূজীয়বার বন্টন করা কালে তাহা ধরা পড়ে। করিমগঞ্জের পুলিশ এক বংসর এই ব্যাপারে তদস্কক্রমে করিমগঞ্জ উদান্ত পুনর্বসতি অফিসের তুইজন কেরাণা শ্রীনলিনী নাথ ও শ্রীষভীম্র দত্ত এবং অপর পাঁচজনকে ভারতীয় দশুবিধির ৪১১, ৪২০ ও ৪৬৮ ধারাসুষায়ী থেপ্তার করিয়া বিচারার্থ প্রেরণ করিয়াছেন। প্রকাশ বে, ১১৫৬ ইংরাজীতে শ্রীরাইমোহন নাথের নামে ৫০০১ শৃত টাকার পুনর্বাসন ঋণ মঞ্ব হয়। প্রীহরিশ দেবনাথ নামক এক ব্যক্তি করিমগঞ্জ উঘাত্ত শাহাষ্য ও পুনর্বসতি অফিসে কোন কোন কর্মচারীর সহিত বোগাবোপ ক্রিয়া অপর এক ব্যক্তিকে রাইমোহন নাথ নামে পরিচয় দিয়া আবেদনপত্রের ফটো পরিবর্ত্তন ক্রমে উধাস্ত ঋণ গ্রহণ করে। এব পর বর্থন প্রকৃত রাইমোহন নাথ উপস্থিত হন তথন দর্থাস্তের কটো ঠিক কবিয়া আবার ভাছাকে একই দরখান্তের উপর ঋণ দেওয়া হয়। এর পর নকল রাইমোহন নাথের নামে তৃত্তীয়বার ঋণ বউনের চেষ্টা করা হয়। ফিন্স্ড ইনভেষ্টিগেটার গ্রী এ সিদ্দিকী এই সম্পর্কে **ख**मञ्जूक्टम विरामि एम य, এই मबनारञ्जद छेलद भूर्ट्स इरेबाद अन দেওয়া হইয়াছে। পুলিশ তদস্কক্ষে তুইবান কেবাণী, নকল विहिप्पादन नाथ, छाहात हुहेजन आधिननात ও अभव हुहेजनरक গ্রেপ্তার করিয়াছেন। প্রীহরিশ দেবনাথ পদাতক বলিয়া ज्ञा संय ।"

যুগশক্তি (করিমগঞ্জ)

শিখার উপর ময়ুর পাখা

"প্রতি বছর রাজ্য বিধানমগুলীর সদস্যদের বিনা থকচার রোট
দুই হাজার মাইল পর্যন্ত জ্ঞমণের প্রবোগ দিবার উদ্দেশ্যে সদস্যদের
বেজন ও ভাতা সংক্রান্ত আইনের উপন্ন একটি সংশোধনী বিল আনা
হুইতেছে। রাজ্যের ক্রুত উল্লয়নের পরিপ্রেক্সিন্তে বিধানমগুলীর
সদস্যদের রাজা ও গৃহ নিশ্মাণ, শিল্প, কুরি, সেচ প্রভৃতি পরিকল্পনাওলির
সহিত ভাগভাবে পরিচিত করার উদ্দেশ্যে বিধানমগুলীর অধিবেশন ও
ক্মিটি মিটিংয়ে বোগ দিবার জন্ম বে বেজন ও ভাতা সদস্যদের দেওরা
হয়, ভাহা হাড়াও তাঁহাদের বিনা খরচার উপরোক্ত ক্রমণের প্রবোগ
দেওয়া হইবে। এ বিলটি আইনের পরিণত হইলে উহার ব্যবস্থা
অম্পারে সদস্যদের হুই হাডার মাইল জ্মণের ক্রম্থা বিধান রেল অথবা
স্থামারের ভাড়া এবং এ আইনের বিধি অম্পারে নিদিষ্ট অন্তান্ত ভাতা
দেওয়া হইবে।"

—क्षमी (सिमिनी पुत्र)

যৌতুক নিবারণ বিল

"বোতৃক নিবারণ বিলের উদ্দেশ্য যৌতৃক গ্রহণ বা দান নিবারণ করা। বিবাহের ছুই পক্ষের মধ্যে যে কোন পক্ষ বিবাহের সময়ে যে সকল গহনা, বস্তাদি এবং অভান্ত জব্য উপহার দিবেন, সেইগুলির মোট মূল্য বদি ছুই হাঞার টাকার অধিক না হয় ভৰে তাহা 'যৌতৃক' বলিয়া গণ্য হইবেনা। যদিকোন ব্যক্তি ৰৌতৃক বা দান গ্ৰহণ করেন অথবা বৌতৃক বা দান গ্ৰহণের জন্ত পণবদ্ধ হন, তবে তাঁহাদের ছম্ন মাস পর্যান্ত কারাদতে বা পাঁচ হাজার টাকা পর্যান্ত অর্থদণ্ডে অথবা উভয় দণ্ডে দণ্ডিত করা বাইবে। ষৌতৃক দাবী করাকেও অপরাধ গণ্য করা হইয়াছে। বিবাহে, যে নারীর বিবাহ হইতেছে তিনি ছাড়া আর কোন ব্যক্তি বদি কোনও যৌতুক গ্রহণ করেন তবে সেই বিবাহের তারিখ হইতে এক বংসরের মধ্যে সেই ব্যক্তিকে সেই ষৌতুক অরভাই সেই নারীর নিকট হস্তাম্ভবিত কবিতে হইবে। না কবিলে সেই ব্যক্তি দণ্ডিত ইইবেন। প্রস্তাবিত আইন অমুসারে কোন অপরাধের অমুদ্রান হইলে কেবলমাত্র প্রথম শ্রেণীর ক্ষমভাবিশিষ্ট একজন জেলশাসকের দ্বারাই তাহার বিচার হইতে পারিবে।" —বারাসাতবার্তা।

সরকারের গাফিলতি

দ্বিতীর পঞ্চবাধিক পরিকল্পনায় পশ্চিমবঙ্গ সরকারের নিদারণ গাফিলতির কলে গৃহ নির্মাণ পরিকল্পনা প্রায় ব্যর্থ ইইওে বসিরাছে। কোন কোন থাতে মোট বরান্দের পাঁচ ভাগের এক ভাগ মাত্র ব্যর্থ ইইরাছে। পশ্চিমবঙ্গের প্রামে ও সহরে ধখন কক্ষ লক্ষ নরনারী বাসস্থানের অভাবে অস্বাস্থ্যকর স্থানে মাথা গুঁজিয়া থাকিতে বাধ্য ইইতেছে, কলিকাভার হাজার "হাজার লোক ধখন ফুটপাতকুই বাসস্থান করিয়া লইয়াছে, ক্ষমভাভিবিক্ত ভাড়া গণিয়া মধ্যবিদ্ধ নাগরিককে বে সময় যেখানে সেখানে বাসা করিছে ইইতেছে, সেই সময় বাসগৃহ নিম্মাণ থাতে বাজেটে কয়েক কোটি টাকা বরাদ্ধ দিজীর পরিকল্পনার মধ্যে পাঁচ বৎসরের মধ্যে তিন বৎসর কারার ইইয়া গেলেও ঐ বরান্দের নাম মাত্র টাকা বাজ্য সরকার ব্যর করিতে সক্ষম ইইয়াছেন।

ৰস্তার প্রতিকার

⁴১১৫৬ আৰ এবছবের সর্ব্যধ্যসী বক্তা সকল তর্কের মীমাংসা করে, সরকারা পরিকল্পনার ব্যর্থতা প্রমাণ করে দিয়েছে। পশ্চিম বাংলায় জলাধার আর থালের জল মানুবের সকল আশায় বালি দিয়ে সারা রাজ্যে আজ ধ্বংস-উন্মাদনার বিচিত্র রূপ প্রকট করেছে। খালের বাধগুলোও অনেক যায়গার জল নিকাশী ব্যবস্থায় বাধা দিয়ে হাজার হাজার এবর জমির ক্সল নষ্ট করেছে। তাই প্রশ্ন कवि, मानुशक এভাবে গৃহহার। সর্বহাার, ছন্নছাড়া করার কারণ कि ? আজও কি সরকার তাঁরে পরিকল্পনার বার্থতা স্বীকার করবেন না ? चाक्छ कि मान वीठांत्नात कन्न, ट्राथ त्राहित्त्व, शमक मित्र्य, গুলীর ভর দেখিয়ে সকলের জন্ম ভবিষাতের সকল আশা আকার্মী কি निश्च म करायन ? ডि. ভি. मि. कर्द्ध भक्ष थवः कोन कीन मन्नी বলচেন যে এরকম অভিবৃষ্টি প্রায় প্রতি পঞ্চাশ বছরে একবার হয়। ভিজ্ঞাস কবি, এ সকল প্রতিভাবান ত্রিকালজ্ঞ পঞ্চিত বিশারদদের এ তথ্য তাঁরা কোথা হতে পেলেন ? আমরা জানি পুর্বে কোথায় কত ৰুষ্টিপাত হয় তার বিস্তৃত বিবরণ পাওয়ার ব্যবস্থা ছিল না, বিশেষ করে বর্দ্ধমা জেলায় ও ডি, ভি, সি'র জলাধার এলাকাঃ। আর ৰদি এরপ তথা তাঁদের জানা ছিল তাহলে তার প্রতিকার ব্যবস্থা —নিশান (বৰ্ষমান)। হয়নি কেন ?"

সরকারী সাফাই

"দামোদর উপত্যকা পরিকল্পনার মুখপাত্র এই সমালোচনার জবাবে কতকগুলি সাফাই গেয়েছেন। প্রথম, এবারের মত বস্থা আভাবিক নয়। অতীতের হিসাব নিয়ে দেখা পেছে যে ৫০ বছরে একবার এইরকম বস্থা হয় এবং এই বিশেব অবস্থার বস্থা নিরোধ করার ক্ষমতা বর্তমান পরিকল্পনার নাই। বিতীয় সংফাই হচ্ছে বে, আবহাওয়া কি রকম থাকবে, কোন্ অঞ্চলে কবে কভটা বৃষ্টি হবে, এ সম্পর্কে যদি সঠিক ও যথেষ্ট আগো থেকে থবর না পাওয়া যায়, তবে বাধের হুদে কভটা জল রাখতে হবে আর কভটা কোন্ সময়ে ছেড়ে দিতে হবে, তা সিদ্ধান্ত করা বায় না। অর্থাৎ দোবটা হচ্ছে আবহাওয়া ংবজ্ঞানীদের। ভৃতীয় একটি হাত্মকর সাফাই হচ্ছে অতিবৃষ্টির ংফলে টেলিগ্রাফের ভার ছিছে বোগাবোগ ব্যবস্থা বিচ্ছিল হওয়ার বৃষ্টিপাতের সঠিক থবর বাধ-কর্তৃপক্ষের কাছে না পৌছানর এই বিপত্তি ঘটছে। "

শোক সংব দ

আচাৰ্য্য মন্মথমোহন বস্থ

ক্সপ্রবীণ শিক্ষাব্রতী, নাট্যকলাবিশেষজ্ঞ, বঙ্গীর সাহিত্য পরিবদের প্রাক্তন সভাপতি প্রম শ্রন্ধের আচার্ব্য মন্মথমোহন বন্ধ মহালর গৃত ২৭০ আখিন ১১ বছর ব্য়সে লোকান্তর বাত্রা করেছেন। ইরোজী, বাঙলা ও সংস্কৃত ভাষায় এর প্রগাঢ় বাুৎপত্তি সর্বজনবিদিত। অভিনেতা ও সম লোচকরপেও ইনি বধেষ্ট খ্যাতির অধিকারী

ছিলেন। নটওক শিশিবকুমার ও নটশেশর নারেশচন্ত্রও এঁর কাছে অভিনয় সম্বন্ধে শিক্ষালাভ কবে পরবর্তী জীবনে খ্যাতির উচ্চতম শিখরে আসন অধিকার করেন। **স্কটি**শ চার্চ কলেজের বাজেন ভাষার ইনি প্রধান অধ্যাপক ছিলেন, পরে এমারিটাস প্রফেসারের গৌরবে বিভূষিত হন। কলকাতা বিশ্ববিদ্যালয় এঁকে সরোজিনী স্বৰ্ণদক এবং গিরিশ লেকচারারের আসনে বরণ করে স্মানিত করেন। কলকাতা ইউনিভার্দিটি ইনষ্টিটিউটের প্রতিষ্ঠাকাল থেকে ঐ প্রতিষ্ঠানের সঙ্গে ইনি মানাভাবে জড়িত। সাহিত্যবিভাগের প্রথম সভাপতি হন বঙ্কিমচন্দ্র, প্রথম সম্পাদকের আদন অলক্ষত করেন মন্মথমোহন। ভারতীয় সংবাদপত্রসেবী-সজ্যেৰও ইনি একজন প্ৰতিষ্ঠাতা-সদস্য ছিলেন। এঁব প্ৰতিভা বা কর্মদক্ষতা বভ্ৰুখী। শিয়ালদহ কোটে প্রথম শ্রণীর **অনা**রারী ম্যাজিষ্ট্রেটের আসনেও মন্মথমোহনকে অধিষ্ঠিত দেখা গেছে। অনায়ারী ম্যাজিপ্টেটরূপে তাঁর বিশেষত্ব এই যে, তদানীস্তন বুটিশ যুগে শাসনবিভাগের প্রতিকৃল পরিবেশ সংস্তৃও মন্মথমোহন বাঙলা ভাষায় রায় লিখে এক দুষ্টাম্ভ রেখে গেলেন। এর উভয় পুত্রই (অমিতাভ বস্থ ও লালমোহন বস্থু) অভিনেতারূপে ষ্থষ্ট প্রসিদ্ধি অর্জন করেন। উভয়েই বর্তমানে পরলোকগত। এই বর্ষীয়ান স্থাবিবের তিরোধানে বাঙ্গালার সংস্কৃতি জগতে একজন প্রধান পুরুষের অভান घटेन।

স্থার রূপেব্রুক্সার মিত্র

ক'লকাতা হাইকোটের প্রাক্তন বিচারপতি, লেবার য্যাপিলে ট্রাইবুনালের ভৃতপূর্ব চেরারম্যান, বিশিষ্ট আইনজ্ঞ ভার রূপেন্দ্রকুমা মিত্র মহাশয় গত এই কার্তিক ৭০ বছর বরেসে শেব নিঃস্থাস ত্যাং করেছেন। প্রথম জাবনে হাইকোটের জাইন ব্যবসায়ী রূপে ইঃ বথেষ্ট প্রাসিদ্ধ ছিলেন। ১৯৩৬ সালে ইনি অহুতম বিচারপতি নিযুক্ত হন। ১৯৫০ সালে অবসর গ্রহণের প্রাক্তালে কিছুকাং জন্মরাজ্ঞাবে প্রধান বিচারপতির আসনে অধিষ্ঠিত ছিলেন ভুমরাজনের মামলায় ইনি ভায় আক্ততাবের সহকারার অংশগ্রহ করেন। কলকাতা বিশ্ববিত্তালয়ের ফেলো এবং আইন ফ্যাকালিট ভীনের আসনও এর বারা অলক্ষত। ১৯৪৬ সালে বুটিশ সরকা একে নাইট' উপাধিতে ভ্ষিত করেন। ভার রূপেনের মৃত্যুত্তি একজন তাল্পণী, ভারনিষ্ঠ, নিজীক আইনরখীর আসন শৃক্ত হল।

শরৎচন্দ্র চক্রবর্তী

প্রবীণ আইনজ্ঞ এবং পূর্ববাঙলার অসহবোগ আন্দোলনের অক্ত নেতা ফ্রিদপুরের বিশিষ্ট ভূষামী শবংচক্র চক্রবর্তী গভ ১২ই আদি ৮৫ বছর বয়সে প্রলোকগমন করেছেন। ফ্রিদপুরে ওকাল ব্যবসায় ওক করার অল্পকালের মধ্যেই ইনি দেওয়ানী ফৌল্লদারী উভ ক্ষেক্রেই একজন বশ্বী আইনজ্ঞরূপে প্রিগণিত হন। অসহবো আন্দোলনের সময় প্রভূব প্রসার সম্বেও জাতীয়তার আহ্বানে উদ হয়ে আইন ব্যবসায় প্রিত্যাগ করেন।

গ্লাৰৰ-এপ্ৰাণতোৰ ঘটক



শ্রীক্ষার জন্মকাল

মতে 'ঐতিহাসিক পতিতের কে'ন কোন শ্রীকৃষ্ণের জন্মকাল খু:-পূ: ১৫০০ থেকে ১২০০ বংসর অনুমিত হ'হেছে। এ বিষয়ে কিঞ্ছি আলোচনার অপেক্ষা বাবে বলে মনে করি। সমগ্র বেদের ছ'টি অঙ্গ। তন্মধ্যে জ্যোতিষ একটি। জ্যোভিষ আর্থ Astrology নয়। Astronomy জ্যোতিবিজ্ঞান। বা গাণিতিক জ্যোতিষ। বৈদিক মুগে জ্যোতিবিজ্ঞানের সাহায্যে কাল নিকপিত হ'ত। প্রায় ৩৩০০ কংসর পূর্বে বেদাঙ্গ জ্যোতিষের আবির্ভাব কাল ব'লে নিরূপিত হ'য়েছে। তথন থেকেই বিভিন্ন গ্রহ-নক্ষত্রাদির সম:বেশ ও অধিষ্ঠান, বিষ্বপাত, অক্ষাংশ ও অয়নাংশ ইত্যাদির গণনা গাহায্যে 'অনৈতিহাসিক' প্রাচীন যুগের কাল নির্ণয় অনেকটা সহায়ক হ'যে উঠেছে। পববতী যুগে গাণিতিক জ্যোতিবের আরও সমধিক চর্চা ও উন্ধতি সাধন হ'য়েছে। এর ফলে আমরা পাই—বুহৎসংহিতা, সুর্যসিদ্ধান্ত, পল্লসিদ্ধান্ত, গুর্গসিদ্ধান্ত, ত্রন্ধসিদ্ধান্ত, আর্য ভট ইত্যাদি গাণিতিক জ্যোতিষ শাস্ত্র বা জ্যোতির্বিজ্ঞান। পরবন্ধ ভগবান 🗐 রু:ক্বে প্রকট লীলার স্থাবির্ভাব-কাল দ্বাপর মুগের শেষ ভাগে। (ভাগবঙাদি গ্রন্থ দ্রপ্তরা।) 'স চ দ্বাপর যুগশেষে ভাদ্রকুফাষ্টম্যাং রোহিণী নক্ষত্রে নিশীথে আবিভ ত:। নৈশীথ: সময়োহষ্টমী বধদিনং ব্রহ্মক মত্র ক্ষণে শ্রীকুকাভিধমণুক্তেক্ষণমভূদাবি: পরং ব্রহ্ম তৎ ।।"—ইতি থ মানিকা নাম জ্যোতিগ্ৰন্থ:। থুষ্টাম ৬৪ শতাব্দীতে শকাবি বিক্রমাদিতে র রাজসভার নবরত্বের অক্তভম রত্ন আচার্য বরাহদেব বা ববাহ মিহির। বরাহদেব যে গাণিতিক জ্যোতিষে বিশেষ ব্যৎপন্ন ছিলেনু তার পরিচয় আমর৷ পাই তাঁর রচিত্ত সূর্যসিদ্ধান্ত ও বৃহৎ সংহিতা নামক গ্রন্থে। আধুনিক পঞ্জিকা গণনা প্রথা আচার্যদেবের এই স্থাসিদ্ধান্তের নিকট কণা বললে অত্যক্তি হ'বে না। অবশ্র এই সময়ে ইউরোপে গ্রীস ও রোম ব্যতীত অক্সত্র গাণিভিক জ্যোভিষের চর্চা ছিল ব'লে মনে হয় না। পরবর্তী কালে ইউরোপ এবং আমেরিকার গাণিতিক ক্র্যোতিধের বছল চর্চা আরম্ভ হয়। এর কলে জামরা H. Jacoby, M. Winternitz, W. D. Whitney প্রভৃতি মনীবীদের গাণিতিক জ্যোতির গণনার পরিচয় মহাভারতের যুধিষ্টিরের রাজ্তকালের কাল নির্ণিয় হয়েছে বরাহদেবের ৰুহৎসংহিতার। আচার্ব বরাহ গর্গাচার্যের একটি বচন উদ্ধৃত করে দেবিয়েছেন যুধিষ্ঠিরের বাজ্ঞতের বয়:ক্রম কাল খু:-পু: ২৪৪১ বংলর। তিলক মচারাজের Orion নামক গ্রন্থেও অমুরূপ সমর্থন পাওয়া ৰায়। স্বসিধান্তেৰ গণনাম্বায়ী কলিযুগের বয়:ক্রম কাল অভাবধি ৫৯৬ - বংসর নির্ণীত হরেছে। অভএব ছাপর যুগের শেবভাগ খৃষ্ট-ব্দীমন প্রায় সাড়ে চার হাজার বংসর পূর্ব ধরা উচিত। অভঞ্র

আচার্যদেবের মতে প্রীকৃষ্ণের জন্মকাল নির্নুপণে কিছুটা বিজ্ঞানি কাছি করে তুলেছে। বৈচেতু মহাভারতের কালও ত দ্বাপরমূদে শেষজ্ঞাগে নির্ণীত হয়েছে। ঐতিহাসিক প্রীকৃষ্ণের জন্মকাল ১৫০ হতে ১২০০ খৃঃ-পৃঃ এর স্বপক্ষে কোন মৃক্তি বা তথা নির্নুপিত হয়ের বলে মনে পড়ে না। তবে হয়ত কোন কোন পাশ্চাতা পাঁজিতে মতের অমুক্ষপ প্রতিফলন ৬টা হতে পারে। আতএব এ মতবাদ সমর্থনবাগ্য বলে মনে হয় না।

আধুনিক পুরাতত্ত্ব আলোচনা বা উদ্খাটনের পুত্র বা ফরফু অভ্যমায়ী 'অনৈতিহাসিক' বৈদিক্যুগের বা পৌরাণিক যুগের ক' নির্ণয় করা এক তুরুহ ব্যাপার বলে মনে হয়। স্প্রাচীন বৈদি যুগের কাল নির্ণয়ের জন্য শিক্ষালিপি, ভয়কুপ, ভৃস্তর, শিলাস্তর এই কি লিপিমালার আঙ্গিক গঠন বৈচিত্র এ বিধয়ে কোন সাহায্যই কর পারবে ন।। একমাত্র ভাষা ও বর্ণমালার বা ব্রান্ধীলিপির গঠনে সূত্র ধরে পাশ্চান্ডা পণ্ডিতেরা যে সকল কাল নির্ণয় করেছেন সেগুলিট অনেক বিভ্রাপ্তির সৃষ্টি করেছে। অধুনা বেদগ্রন্থ বলে যা পরিচি উহা শ্রেতিগ্রন্থ। হাজার হাজার যুগ ধরে শ্রুতিপরস্পরা বেদজ্ঞানে বিষয়বস্ত্র চলে এসেছে। এইজন্য বেদের আর এক নাম শ্রুতি। বেনে সেই আদিম যুগে অর্থাৎ শ্রুভিপরস্পরার কালে বৈদিক লিপি বা ভা কি ৰূপ জানা ছ:সাধ্য। প্ৰাচীন বৈদিক ভাষা ও পরবভীকালে রূপান্তবিত বৈদিক ভাষা ও বর্ণমালার গঠনাকুতির পর্যালোচনার ক্য আধনিক পণ্ডিতদের, বিশেষত পাশ্চাত্য পণ্ডিতদের কাল নির্ণয়। অভ্ৰান্ত, এইৰূপ মানসিক প্ৰবণতাৰ কিছুটা পৰিবৰ্তুন সাধনেৰ প্ৰয়োজ আছে বলে মনে হয়। ঐকুফের জন্মকাল নির্ণয় সম্বন্ধেও ঐ এক কথা প্রয়োজ্য। অবখ্য গাণিতিক জ্যোতিষ নির্ণীত জ্রীকুঞ্ফের জন্মে সমসাম্য্রিক বে হুইটি সময়ের উল্লেখ করা হয়েছে তা যে একেবার অভান্ত এরপ মতের গোড়ামী পোষণের মনোভাব আমার নেই গণিত বিচারে বে সময় সময় কিঞ্চিৎ ভ্রান্থির উদ্ভব না হয় এমন কি ৰঙ্গা চলৈ না। ভবে তা মারাত্মক ব্যবধান বচনা করে না। ভত গাণিডিক জ্যোতিষের সাহায্য ব্যতীত উক্ত কাল নির্ণয়ও যে ছুকু ব্যাপার, এ বিষয়ে সন্দেহ নেই।—হেম সমাজদার।

পত্রিকা-প্রসঙ্গে

ছেলেবেলা থেকেই মাসিক বস্ত্রমতীর সঙ্গে আমাদের পরিচুর ভবে গত দশ বছরের মধ্যে সেই পরিচর গাঢ় হতে গাঢ়তর ছট উঠেছে। যত দিন যাছে, আপনার সম্পাদনার অনক্সাধারণ কৃতিত বিশ্বর-বিহ্বল হরে যাছি। বাঙলা-দেশে ব্যান্তের ছাতার মত কেব্দ মাত্র নাটকই নয় কাগজও গজিয়ে উঠছে কিন্তু অধকাংশই যা চোকে পড়ে সবই পভাছগতিক ধারার কোনরকমে এগিরে চলেছে; না আল ভাদের কোন বৈশিষ্ট্য, না কোন নিজস্বভা, না ভারা রেখে যাছে কোন্ উল্লেখযোগ্য অবদানের গৌরবমগ্য চিহ্ন ! কিন্তু বদিও এ কথা বলা বাজ্পাই তব্ বলছি যে, মাসিক বস্তমতী তাদের ব্যক্তিক্রম, শুরু ব্যক্তিক্রম বললে ভুল হয়, এক উজ্জ্পতম ব্যক্তিক্রম । মাসিক বস্তমতীকে অন্তর দিরে ভালবাসি বলেই কয়েকটি বিষয়ে আপনার দৃষ্টি আকর্ষণ করি বা আপনাকে জন্মরোধ জানাই । "বর্ণালী" আগে সভিচ্ট ভাল লাগত, বেশ লিখছিলেন স্থলেখা দাশগুল, তবে এখন বেশ লিখছেন এ কথা বলা চলে না । কেন না থকটি উপস্থাস শেষ করতে তিনি এক দীর্ঘ সময় নিছেন যাব ফলে ঐ উপস্থাস এখনও কেউ পড়ছেন বলে মনে হয় না, এখন বর্ণালী ভয়ানক এক্যেয়েন্ত্র মনে হছে এবং পড়ারও আর ধৈর্ঘ থাকছে না । আছে!, বর্ণালী তিনি কবে শেষ কর্মবেন জানানের কি ? আর একটি অন্থবোধ— মাসিক বন্ধমতীতে আক্রকাল ছেটে গল্পের স্থা। কিছু কম দেখিছি, এ বিষয়ে একটু দৃষ্টি নিক্ষেপ ক্রলে স্থা হব !— বিনীতা সেনজ্বা, লক্ষ্রো, উত্তরপ্রশ্রদণ ।

বঙ্গ রমণীর মৌনবিক্রম

মাসিক বস্থমতী আমি নিয়মিত পড়ি। এই ভাল মাসের মাসিক বস্থমতীতে নির্মালক চৌধুবীর লিখিত "বন্ধ রমনীর মৌনবিক্রম" (P 185) পড়িলাম। ঐ প্রবন্ধের প্রথম (paragraph) "আর করেক দিন—বেণ্টিক্কের প্রতিমৃত্তি অপসারিত হইয়াছে। ইহা লইবা- প্রকাশিত হইয়াছে—" এই অপসারবের কথা ৭৫০ পৃষ্ধার ওপরেই আবার উল্লেখ করা আছে। বেণ্টিক্কের মৃত্তি কবে অপসারিত হইয়াছিল কিখা থবরের কাগান্দে কবে অনেক আলোচনা হইয়াছিল ভালা আমি অভ্যত ৩৫ বৎসর যাবৎ High Court র main gate a High Court' এর দিকে মুখ করিয়া ঐ প্রতিমৃতিটি দেখিরা আদিতেছি; High Court' এর লালা gate দিয়া বে High Court এ প্রবেশ করে সে ঐ প্রতিমৃতিটি দেখিতে পায়। Sensation ও Interest'র জন্ম ঐরপ ভূল সংবাদ দিলে কখন কখন কাজ হয় কিছ সর্বাদ কাজ হয় না, বয়ং হালাম্পাণ হইতে হয় — শ্রীপ্রবেশচন্দ্র কর। ৩৮ এ, রমেশ মিত্র রোড। কলি—২৫।

রাজনৈতিক বন্দিনী

আপনার বাঙ্গালী পরিচিত (চারজন) ভান্ত সংখ্যা ১৩৬৬ সনের শ্রীরতী করনা যোশীর (পৃষ্ঠা ৭৭৫) বিষয়ে এক জায়গায় জানিয়েছেন বে "কবিশুরু বর্গালনাথের প্রতিবাদে মেয়ে বাজনৈতিক বন্দিনীদের () আন্দামানে প্রেরণ করা হয় নাই।" এ সম্বন্ধে শ্রীমতী বীণা দাসের "শৃষ্ণাল-বঙ্কার" (পৃষ্ঠা ৬৮) আপনার দৃষ্টি-আকর্ষণ করছি। "— বর্থন আমাদের আন্দামান বাবার কথা হয়, মা বাবা অভ্যন্ত ব্যক্ত হয়ে পড়েন। সে সময়ে বাদের চেষ্টায় আমাদের (মেয়েন্দের) আন্দামান বাওয়া বন্ধ করা হয়—জাদের একজন ববীন্দ্রনাথ আর একজন এই সাঁ। সি, এক, এই সাল্বনাথ একজন ববীন্দ্রনাথ আর একজন এই সাঁ। সি, এক, এই সাল্বনাথ আর একজন ববরুটি অসম্পূর্ণ থেকে বাবে।—শ্রীসময় ভার্ম্বটা। ২৫।১, চৌরুবীপাড়া লেন। পোঃ সাঁত্রাগাছি। হার্ম্বটা।

গ্ৰাহক-গ্ৰাহিকা হইতে চাই

আমি আপনাকে ১০০ পাঠাইলাম। এই বংসর ভাজ মাস কুইড়ে তৈজু নাস পর্যন্তে (৮ মাস) দলা কবিবা আপনার মাসিক বস্ত্রমতীর প্রাহিকা শ্রেণীভূক্ত কুরিবেন। ভটিনী দত্ত। গোরক্ষপুর।

>< টাকা পাঠাইলাম। ১৩১৬ সালের ভাত্র হইতে ১৩৬১ সালের প্রারণ পর্বান্ত নির্মিত মালিক বস্ত্রমতী পাঠাইরা বাধিত করিবেন। ডা: এক ক্রীষ্টান। সাঁওতাল প্রগণা।

Being the yearly subscription for Monthly Basumati. Please send the same regularly. Principal, Sibsagar College, Joysagar.

আমাকে পুনরায় ভাক্ত মাস হইছে গ্রাহক করিয়া লইবেন।

• • নরা প্রসা পাঠাইলাম। দয়া করিয়া নিয়মিত প্রিকা
পাঠাইয়া বাধিত করিবেন।—জ্যোৎসা সেন। বাঁকা ভাগলপুর।

বস্থমতীর ছব মাদের চাদা ৭°০ নয়া প্রসা পাঠাইলাম। কার্ত্তিক হইতে চৈত্র পর্যন্ত নিয়মিত পত্রিকা পাঠাইবেন। প্রাঞ্চলি দাশক্তর। মীরাট।

জামার ছয় মাসের চাদা ৭°৫০ নয়া প্রসা পাঠাইলাম। দয়। করিয়া ছিসাবে জমা করিয়া লইবেন ও পত্রিকা নিয়মিত পাঠাইবেন। —জারতি মুখোপাধ্যায়। বুলান্দ সহর।

Sending subscription for next twelve months. Rs. 15-0-0 only. R. N. Sikder. Jalpaiguri.

১৫ ্টাকা পাঠাইলাম। নিয়মিত পত্রিকা পাঠাইয়া বাধিভ করিবেন। অমিতা দেবী, পূর্ণিয়া।

Sending herewith Rs. 7·50 n.p. towards our subscription for the monthly Basumati commencing from Bhadra to Magh. সেকেটারী, কুমুম ক্লাব, হুগলী।

Remitting herewith the subscription for Monthly Magazine Basumati for the period from Kartick to Chaitra 1366 B.S. aginst receipt No. 49764. Plsase arrange to supply same regulary, Sm. Radharani Mitra, 27B India Biswas Road. Cal-37.

Sending herewith halfyearly subscription with effect from Sravan 1366 B. S. Please acknowledge the receipt of the amount. Headmaster, Rajganj M. N. High School. Jalpaiguri.

ফিলাভেলন্দিরাতে অমলকুমার বোবের নামে মালিক বস্থমতী পাঠাইবার অন্ত আগামী কার্ত্তিক হইতে চৈত্র বাবদ ১২১ পাঠাইলার। ভক্ষপতা বোব, চাকুরিরা, কলিকাডা-৩১।

আপনার প্রান্ত্রারী রেভেট্র খরচ বাবদ ৩ পঠিইলাম। সম্বন্ধ মাসিক বন্ধমতী পঠিছিবেল। নলিনী দিলা, বেদিনীপুর। ১